

## संकेत-परिचय

अग्ने०—अग्नेजी शब्द

अ०—अरवी शब्द

अनु०—अनुकरण शब्द

अव्य०—अव्यय

उप०—उपसर्ग

क्रि० अ०—क्रिया अवसंज्ञ

क्रि० वि०—क्रियाविशेषण

क्रि० स०—क्रिया सवसंज्ञ

तु०—तुरकी शब्द

दे०—देखिए

पु०—मुल्लिग

प्रत्य०—प्रत्यय

प्रे०—प्रेरणार्थक रूप

फा०—फारसी शब्द

मू०—मूनानी शब्द

पुत्तं०—पुत्तंगाली शब्द

वदु०—वदुवचन

मुहा०—मुहाविरा

यौ०—यौगिर (दो या अधिक शब्दों के पद)

वि०—विशेषण

व्या०—व्याकरण

म०—मस्तुत

म० पु०—मन्ना पुन्निग

सर्व०—सर्वनाम

स्त्री०—स्त्रीलिंग

\*—इस चिह्नवाले शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होते हैं।

†—इस चिह्नवाले शब्दों का प्रयोग प्राचीन है।

‡—इस चिह्नवाले शब्द प्राम्प हैं।

अ

अ-संस्कृत और हिंदी वर्णमाला का प्रथम वर्ण है। कठ से इसका उच्चारण होने के कारण इसको कण्ठ्य वर्ण कहते हैं। इस अक्षर की सहायता के बिना व्यंजनो का अलग उच्चारण नहीं हो सकता, इसी में वर्णमाला में क, च, त, प आदि वर्ण अकारयुक्त समझे, लिखे और बोले जाते हैं। शब्द के पूर्व आकर यह विपरीत अर्थ सूचित करता है, यथा—अकारण, अयोग्य। (सं०) पु०—विष्णु, कीर्ति, सरस्वती।

(वि०) निषेध, घोड़ा, अभाव, कृपा, भेद। गणित में अ १ सख्यावाची है। व्यंजन वर्णों में आरम्भ होनेवाले शब्दों के पहले इसे जोड़ देने से उस शब्द का अर्थ निषेधसूचक या विपरीत हो जाता है। जैसे—असफल। उप० विशेषण और सज्ञा शब्दों के पहले लगाकर यह उनके अर्थों में परिवर्तन करता है। यह जिस शब्द के पहले लगाया जाता है, उस शब्द के अर्थ का प्रायः अभाव सूचित करता है। जैसे—अधर्म, अन्याय, अचल। कही कही यह अक्षर शब्द के अर्थ को दूषित भी करता है। जैसे—अभागा, अवाल। स्वर में आरम्भ होनेवाले संस्कृत शब्दों के पहले जब इस अक्षर को लगाया जाता है, तो उसे 'अन' कर देते हैं। जैसे—अनंत, अनेक, अनोदयर।

सज्ञा पु० १ विष्णु। २ अग्नि। ३ विराट्। ४ ब्रह्मा। ५ विश्व। ६ ललाट। ७ वायु। ८ इन्द्र। ९ कुबेर। १० प्रभूत। ११ नीति। १२ सरस्वती। वि० १ रक्षा करनेवाला। २ पैदा करनेवाला।

सज्ञा पु० अउर-और (ब्रह्ममाया या स्वयी में) १ आप, चिह्न, सचेत, ज्ञा, अपराध, पर्वत, पाप, समीप, छाप। ऐय। ग्ल्यापट। ३ मर्यादा का चिह्न, १, २, ३। औगडा। अदद। ४ नाम्य। दिठोना=नगर से बचाने के लिए इसी के माये पर लगाई जानेवाली

काजल की चिन्दी। ६ घच्चा। दाग। ७ नौ की सख्या (क्योंकि सख्या के अक ९ ही हैं)। ८ नाटक का एक अंश जिसके अंत में यवनिका गिरा दी जाती है। ९ दस प्रकार के रूपों में से एक। १० गोद। ११ शरीर। अग। १२ पाप। दुख। १३ बार। दफा।

मुहा०—अक लेना, देना या लगना=गले लगना। अलिंगन करना। अक भरना=हृदय से लगाना। लिपटाना।

अककार—सज्ञा पु० युद्ध या द्वन्द्व जीत अथवा हार का निर्णायक।

अकगणित—सज्ञा पु० अज्ञात से सबंध रखनेवाली बातों का ज्ञान करानेवाली विद्या। अक-विज्ञान। हिसाब। दे० "अंकुरोरी"। सख्या की भीमासा।

अंकटा—सज्ञा पु० (दे०) छोटा कण्ड।

अंकटी—सज्ञा स्त्री० छोटी बक्की।

अंकडी—सज्ञा स्त्री० १ हुक। बटिया। २ तीर का टेढ़ा फल। टेढ़ी गांती। ३ लता-बेल। ४ लम्बी। फल तोड़ने का बाँस का बड़ा डंडा।

अंकुडी—सज्ञा स्त्री० लता-विशेष। बाकला। बरकला।

अकधारण—सज्ञा पु० [वि० अकधारी] चिह्नो को दगवाना। गरम धातु से चक्र, त्रिशूल आदि के चिह्न बाँह पर छपवाना। (वैष्णव)।

अकन—सज्ञा पु० [वि० अकनीय, अकित, अकय] लिखने की क्रिया। गिनती करने की क्रिया। १ निशान करना। २ चिह्न या लिखना। ३ गरम धातु से शस्त्र, चक्र या त्रिशूल के चिह्न बाँह पर छपवाना। ४ अपभ्रंश—आंशिक अपभ्रंश अनुमान करना।

अकना—वि० लिखना, छापना, सकेत करना, चिह्न करना, मोलभाव करना। जाना या बूझा जाना। अनुमान करना।

अकपलई—सज्ञा स्त्री० एक बड़ विद्या जिगमें अंगों को अक्षरों के स्थान पर रखकर उनके गमूढ़ में वाक्य के गमन तानाये निकालने है।

अक्षपाली-गजा स्त्री० दाई। भाय।

अक्षमाल-गजा पु० १ भेंट। २ आलिंगन।  
गले लगाना।

अक्षमालिका-गजा स्त्री० १. छोटी माला या  
हार। २ भेंट। आलिंगन।

अक्षरा-गजा पु० एक सुण (पात) जो गेहूँ  
के पीपों के साथ उगता है।

अक्षरी-गजा स्त्री० अक्षरा।

अक्षरोरी, अक्षरीरी-गजा स्त्री० गपड़े या  
बन्द या छोटा टुकड़ा। दे०-अक्षटा,  
अक्षटी।

अक्षवार, अक्षवार-गजा स्त्री० बाण, बोग।  
दे० "अक्ष" [छाती। गोद।]

मुहा०-अक्षवार देना या भग्ना-गले  
लगाना। छाती से लगाना। भेंटना।  
आलिंगन करना। अक्षवार भरी रहना=  
गोद में बच्चा रहना अर्थात् सनान का रहना।  
जैसे-बड़ तुम्हारी अक्षवार भरी रहे।—  
आशीर्वाद।

यी०-भेंट अक्षवार=आलिंगन। मिलना।  
अक्षवारना=त्रि० स० गले लगाना। आलिंगन  
करना।

अक्षविद्या-गजा स्त्री० अक्षो, सख्याओं का  
हिस्सा। दे० "अक्षगणित"।

अक्षार्द-गजा स्त्री० १ आँक। वृत्त। अटकल।  
अनुमान। २ उपज में से किसान और  
जमींदार के हिस्से का बँटवारा।

अक्षाना-त्रि० स० अदाज लगवाना। कूत  
लगवाना। मूल्य निर्दिष्ट कराना। २  
जँचवाना, परीक्षा कराना।

अक्षाय-गजा पु० आँकने का काम। कुत्ताई।  
मोल-भाव ठहराना।

अक्षायतार-स० पु० पाशों द्वारा नाटक के एक  
अंक के अंत में अगले अंक के अभिनय का  
संकेत या सूचना।

अक्षित-वि० १ निशान किया हुआ। चिह्नित।  
२ लिखित। ३ वर्णित। ४ मुद्रित।

अक्षुडा-गजा पु० दे० अक्षडी। १ लोहे की  
छड़ जिसका एक मिरा टेढ़ा या झुका हुआ  
होता है जो दूर से वस्तुओं को खींचने के  
काम में आती है, जैसे भट्ठी में ये बाँच का

गामान खींचने में। २ गाय-बैल के पंठ की  
मरोड़ या दंड़ या ऐंठन या ऐंसा। ३ पायजा।  
मुन्हावा। ४. लोहे का एक मोल पच्छट  
ता बिबाड की गूँठ में टुका रहता है।

अक्षुड़ी-गजा स्त्री० १. हुक। बटिया। २ लोहे  
की लकी हुई छड़।

अक्षुड़ीदार-वि० जिगमें अटकने के लिए  
अक्षुड़ी, बटिया या हुक लगी हों।

गजा पु० एक विशेष धोली का पर्मादा। गटागी।

अक्षुर-गजा पु० [त्रि० अक्षुग्ना, वि०  
अक्षुग्ति] १. अक्षुआ। गाम। अंगुसा।

२ वनवा। टाम। वन्ग। बाँपल। आंग।

३. कली। ४. नील। ५ रक्त। गुन।

रधिर। ६ रोया। ७ पानी। ८ मांस के  
छोटे-छोटे लाल दाने, जो घाव भरते  
ममय उस पर निबल आते हैं-भराप।

अक्षुर। ९ अक्षुग। पुनगी।

अक्षुरना, अक्षुराना\*-त्रि० अ० उगना।

जमना। अक्षुर फोड़ना।

स० पु० चिडियों का घोंसला। नीड।

अक्षुरित-वि० उगा हुआ। जिगमें अक्षुर हो

गया हो।

अक्षुरितयौवन-वि० युवावस्था की पहली

दशा। यौवन का आरम्भ।

अक्षुरितयौवना-वि० युवनी। ऐसी स्त्री

जिसमें यौवन के चिह्न दिखाई पड़ने

लगे हों।

अक्षुश-गजा पु० १ अक्षुम। हाथी को हाँकने का

भाला। लोह का एक शस्त्र जो प्रायः एक हाथ

रखा होता है और जिसके एक सिरे पर

भाले के समान नोक होती है। यह हाथी

हाँकने के काम में आता है। २ मुंडा हुआ

काँटा। ३ दबाव। रोक। प्रतिबंध।

अक्षुशग्रह-गजा पु० १ फीलवान। महावन।

हाथीवान। २ निपादी।

अक्षुशदता-वि० ऐसा हाथी जिसका एक

दाँत सीधा और दूसरा नीचे की ओर झुका

हो। मुंडा।

अक्षुसी-गजा स्त्री० १ हुक। बटिया। शुर्ग

या टेढ़ी कील जिसमें कोई चीज फँसाई या

लटवाई जाय। २ टडी छड़ जिसे बाहर

से किवाड़ के छद में डालकर सिटकिनी खोलते हैं।

अकोट-सज्ञा पु० एक पहाड़ी पेट। दे० "अकोल"।

अकोर-सज्ञा पु० १ गोद। अक। दे० "अकवार"। २ नजर। भेंटा। ३ रिश्वत। घूस। ४ कलेवा या सुराक जो सेत में काम करनेवालों के पास भेजा जाता है। छाक। कोर। दोपहर।

अकोरना-(पाठभेद-अकोरना) क्रि० स० १ गरम करना। भूजना। २ घूस लेना।

अकोरी-स्त्री० १ आलिंगन। २ गोद।

अकोल-स० पु० एक पहाड़ी पेट। "अकोर"।

अक्य-वि० निशान लगाने के उपयुक्त। चिह्न करने योग्य। अक लगाने योग्य।

सज्ञा पु० १ दागने के योग्य (अपराधी)। २ तबला पखावज आदि वाजे जो गोद में रखकर बजाये जाते हैं।

अखड़ी-स्त्री० नेत्र। दे० 'आँख'।

अख-मीचनी-सज्ञा स्त्री० दे० "आँख-मिचौली"।

अखिया-सज्ञा स्त्री० १ हथौड़ी से ठोक ठोककर नक्काशी करने का ठप्पा या कलम। २ दे० "आँख"।

अखुआ-सज्ञा पु० दे० "अकुर"। १ बीज से फूटकर निकली हुई वह टेढ़ी नोक जिसमें से पहली पत्तियाँ निकलती हैं। अकुर। २ बीज से निकली हुई पहली कोमल बँधी पत्ती। कल्ला। डाम। कापल।

अखुआना-क्रि० अ० उगना। जमना। अकुर फटना या फाड़ना।

अग-सज्ञा पु० १ देह। शरीर। बदन। गात्र। २ अवयव। ३ खड़ा अंग। भाग। टुकड़ा। ४ प्रकार। भेद। भाँति। ५ उपाय। ६ पक्ष। अनुकूल पक्ष। सहायक। सुहृद। तरफदार। ७ प्रत्यययुक्त शब्द का प्रत्ययरहित भाग। प्रकृति। (व्या०)। ८ जन्म-लग्न। ९ वह साधन जिसके द्वारा कोई काम हो। १० बिहार में भागलपुर क

आसपास के प्रदेश का पुराना नाम जिसकी राजधानी चपापुरी थी। ११ एक सवोधन। प्रियवर। प्रिय। १२ छ की सख्या। १३ ओर। पार्श्व। १४ नाटक में अप्रधान रस। १५ नाटक में नायक या अंगी का कार्यसाधक पात्र। १६ सेना के हाथी, घोड़े, रथ और पैदल चार विभाग। १७ योग के आठ विधान। १८ राजनीति के स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोप, राष्ट्र, दुर्ग और सेना सात अंग। १९ शास्त्र विशेष। वेदांग। जैन शास्त्र विशेष। २० बलि राजा का क्षत्रज पुत्र।

मुहा०-अग छूना=माया छूकर कसम खाना। अग टूटना=अँगडाई आना। आलस्य में जँभाई के साथ अंगो का फँसाया जाना। अग तोड़ना=अँगडाई लेना। अग लगना या लगाना=छाती से लगना। आलिंगन करना। लिपटना। अग लगना या बलवान् करना=१ शरीर को पुष्ट करना (भोजन का) जैसे, भोजन का अग लगना। २ काम में आना। ३ हिलना। परचना। अग गोदना=शरीर के किसी भाग में तिल के नकली दाग बनवाना। अग करना=अंगीकार करना।

वि० १ गोण। अप्रधान। २ उलटा। दे०-अगराग, अगरराज।

अगग्रह-सज्ञा पु० अकड़वायु। वातरोग।

अगज-वि० शरीर से पैदा हुआ।

सज्ञा पु० [स्त्री० अगजा] १ बेटा। पुत्र। लड़का। २ पसीना। ३ केश। बाल। रोम। ४ काम, क्रोध इत्यादि विकार। ५ साहित्य में कामिक अनुभाव। ६ कामदेव। ७ मद। ८ रोग।

अगजा-सज्ञा स्त्री० पुत्री। कन्या। बेंटी।

अगजाई-सज्ञा स्त्री० दे० 'अगजा'।

अगड-खगड-सज्ञा पु० १ लोहे पत्थर, ईंट, लकड़ी आदि का टूटा फूटा सामान।

वि० २ टूटा फूटा। ३ गिरा-पड़ा।

अँगडाई-सज्ञा स्त्री० शरीर या बदन टूटना। शरीर मरोड़ना। आलस से जँभाई के साथ अंगो को लानना।

अंगडाई लेना—आलस्य दूर करने के लिए शरीर को तानना।

अंगझाना—क्रि० अ० मुन्नी ने ँझाना। आलस्य के कारण शरीर तोड़ना। बंद या जोड़ने के भारीपन को हटाने के लिए अंगों को तानना या पगारना।

अंगण—संज्ञा पु० मटन। आंगन।

अंगप्राण—संज्ञा पुं० १. अंगरसा। मुरता। अंग को ढकनेवाला। २. कवच।

अंगद—संज्ञा पु० १. बाहु का एक विशेष गहना। विजायठ। बाजूबन्द। २. बालि नामक बदर का पुत्र। ३. लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम।

अंगदान—संज्ञा पु० १. लड़ाई से भागना। पीठ दिखलाना। २. शरीरदान। तन-समर्पण। रति या मुरति (स्त्री के लिए)।

अंगनाई—संज्ञा पुं० दे० "आंगन"। अंगनाई, चौक, मकान के बीच की खुली भूमि।

अंगना—संज्ञा स्त्री० १. सुन्दरी, स्त्री। कामिनी। सुन्दर अगवाली स्त्री। २. सावं-मीम नामक उत्तर दिग्गज की हथिनी।

अंगनाई—संज्ञा स्त्री० दे० "आंगन"।

अंगनवाड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० "आंगन"।

अंगन्यास—संज्ञा पु० मन्त्रों को पढ़ते हुए एक एक अंग का स्पर्श करने की क्रिया। (तथ)

अंगभंग—संज्ञा पुं० १. शरीर के किसी भाग की हानि। किसी अवयव का नाश या खण्डन। अंग का खडित होना। २. स्त्रियों की मोहित करने की चेष्टा। अंगभगी। चेष्टा। वि० अपाहृज। जिसका कोई अवयव टूटा या कटा हो। लंगडा, लूटा, लुज।

अंगभगी—संज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों की मोहित करने की एक विधि। २. चेष्टा।

अंगभूत—वि० १. किसी वस्तु का अंग। २. भीतर। अतर्गत। अतर्भूत।

संज्ञा पु० बेटा। पुत्र। दे० "अंगज"।

अंगमर्द—संज्ञा पु० १. गठिया। २. सबाहक। हाथ पैर की मालिश करनेवाला नीकर।

अंगरक्षक—सं० पु० राजा-महाराजा आदि के साथ रहकर उनके शरीर की रक्षा करने-वाले सैनिक या सेवक। राज्यपाल या राष्ट्र-

पति आदि के साथ रहनेवाले अधिपारी। अंगरक्षा—संज्ञा स्त्री० बचाव। शरीर की रक्षा या बचाव।

अंगरखा—संज्ञा पु० वस्त्र-विशेष जो पट्टनों के नीचे तक लवा होगा है और जिगमें बांधने के लिए कपड़े की तनी होती है। एक प्रकार की जकन।

अंगरा—संज्ञा पु० १. अंगारा। दहनता हुआ कोयला। २. बेलों के पैर का रोग-विशेष।

अंगराग—संज्ञा पु० १. उबटन। २. बेमर, कपूर, वस्तूरी आदि मुगधित पदार्थों में मिश्रित या केवल चदन, जो शरीर में लगाया जाय। ३. आभूषण। ४. शरीर की शोभा के लिए महावर, अल्ता आदि। ५. मुँह पर लगाने की एक प्रकार की मुगन्धित देशी बुक्की।

अंगराज—संज्ञा पु० कर्ण का नाम।

अंगराना—क्रि० अ० दे० "अंगझाना"। अंगडाई लेना।

अंगरी—संज्ञा स्त्री० कवच। जिरह बख्तर। झिलम। परिच्छद।

संज्ञा स्त्री० अंगुलिप्राण।

अंगरेज—संज्ञा पुं० [वि० अंगरेजी] इंग्लैंड देशवासी।

अंगरेजियत—संज्ञा स्त्री० अंगरेजीपन। अंगरेजी चाल-ढाल। अंगरेजी की तरह का रंग-ढंग।

अंगरेजी—वि० विलायती। अंगरेजों का। इंग्लैंड देश का।

संज्ञा स्त्री० अंगरेजी की भाषा। इंग्लैंड-वासियों की बोली।

अंगलेट—संज्ञा पुं० देह का ढाँचा। शरीर की गठन। वाठी।

अंगवना—क्रि० स० १. स्वीकार करना। २. ओढ़ना। अपने ऊपर ले लेना। ३. सहना। उठाना।

अंगवार—संज्ञा पु० १. गाँव के किसी छोटे अंग का स्वामी। २. खेत की जोताई में एक दूसरे की सहायता।

अंगपिकृति—संज्ञा स्त्री० १. मुँह का बनाना।

मुँह बिगाडना। २. मूच्छा। मृगी या भिरगी रोग। अपस्मार।

अंगविक्षेप—सज्ञा पु० १ नृत्य की मुद्रा। २ शरीर द्वारा भाव बताना। ३ एक प्रकार का नृत्य।

अंगविद्या—सज्ञा स्त्री० अंगों की शुभाशुभ चिह्न-गन्धन्धी विद्या।

अंगशोष—सज्ञा पु० सूखा नामक रोग। एक रोग जिसमें शरीर सूखता जाता है।

अंगसिहरी—सज्ञा स्त्री० जूड़ी ज्वर आने के पहले शरीर का कप। बपकौनी। मानसिक विकारों से अंगों की सिहरन।

अगहार—सज्ञा पु० १. अंगों द्वारा भाव प्रदर्शन। अंगविक्षेप। २ नाट्यशाला में नृत्य की १०८ मुद्राएँ।

अंगहीन—वि० अंगरहित। अंग-भग। सज्ञा पु० कामदेव का एक नाम।

अंगगिभाव—सज्ञा पु० १ अश का सपूर्ण के गाथ मवध। अयय और अययवी का परस्पर सवध। २ गीण और मुख्य का परस्पर सवध। ३ अलकार में सकर का एक भेद।

अगा—सज्ञा पु० पहनने का एक लवा वस्त्र। अंगरखा।

अगाकरी—सज्ञा स्त्री० मवुकरी। अगारों पर मेंकी हुई मोटी रोटी।

अंगार—सज्ञा पु० दहकता हुआ कोयला। बिना धुएँ की आग का दहकता हुआ टुकड़ा।

मुहूँ—अंगार उगलना=बड़ी कड़ी बातें बहना। अगारों पर पैर रखना=१ जान बूझकर हानिकर काम करना। खतरे में डालना। २ शोध प्रकट करना। ३ जमीन पर पैर न रखना। इतराकर चलना। अगारों पर लोटना=१ अत्यंत शोध प्रकट करना। आगबबुला होना। २ दाह से जलना। ईर्ष्या में व्याकुल होना। लाल अगारा= १. गहरा लाल। २ अत्यंत रोषित।

अंगारक—सज्ञा पु० १. मंगल ग्रह। २ अगारा। ३ नटसरैया का पेड़। ४ भृगराज। अंगग। भंगरैया।

अंगारधानिका—सज्ञा स्त्री० अंगोठी। अंगार रखने का पात्र।

अंगारनाचित—सज्ञा पु० दहकती हुई आग पर पकाया हुआ। जैसे, नानखताई। कवाब।

अंगारपुष्प—सज्ञा पु० हिगोट का पेड़। इगुदी वृक्ष।

अंगारमणि—सज्ञा पु० मूंगा। प्रवाल।

अंगारमती—सज्ञा स्त्री० कर्ण की स्त्री।

अंगारवल्ली—सज्ञा स्त्री० घेंघची, गुजा।

अंगारा—सज्ञा पु० दे० “अंगार”।

अंगारिणी—सज्ञा स्त्री० १ अंगोठी। बोग्मी। बरोसी। २ वह दिशा जिस पर अस्त होते हुए सूर्य की लाली छाई हो।

अंगारी—सज्ञा स्त्री० १ चिनगारी। २ छोटा अंगारा। ३ बाटी। लिटटी। अगाकडी। ४ बोरसी। अंगोठी।

अंगारी—सज्ञा स्त्री० १ गन्ने के सिरे पर की पत्ती। २ गेंडरी। गन्ने, ईस के छोटे कटे टुकड़े।

अंगिका—सज्ञा स्त्री० चोली। स्त्रियों की कुरती। अंगिया। कचुकी।

अंगिमा—सज्ञा स्त्री० दे० “अंगिका”।

अंगिरस—सज्ञा पु० १ एक प्राचीन ऋषि जो दस प्रजापतियों में गिने जाते हैं। २ बृहस्पति। ३ साठ सवत्सरों में से छठा। ४ कटीला गोद। कतीरा।

अंगिरा—सज्ञा पु० दे० “अंगिरस”। तारा। ब्रह्मा के मानस पुत्र। ‘अंगिरा-संहिता’ के रचयिता, बृहस्पति के पिता।

अंगिराना\*—क्रि० अ० दे० “अंगडाना”।

अंगी—सज्ञा पु० १ देहधारी। शरीरवाला।

२ अवधवी। उपकार्य। समष्टि। अशी।

३ मुरय। प्रधान। ४. चौदह विद्याएँ।

५ नाटक का प्रधान नायक। ६ नाटक में प्रधान रस। ७ किसी समुदाय का मुखिया। अंगीकार—सज्ञा पु० ग्रहण। स्वीकार। मजूर।

अंगीकृत—वि० ग्रहण किया हुआ। स्वीकृत। मजूर। स्वीकार। आनाया हुआ।

अंगोठा—सज्ञा पु० बड़ी अंगोठी। अंगिनार।

अंगोठी—सज्ञा स्त्री० आग रखने का बरतन। बोग्मी। आतिथदान।

अंगुरा—सज्ञा पु० दे० "अंगुल"।  
 अंगुरी—सज्ञा स्त्री० दे० "उंगली"।  
 अंगुल—मज्ञा पु० १ आठ जो के बराबर लंबाई। २ ग्रास या चारहवां भाग। (ज्यो०)  
 ३ नापने में एक गिरह का तीसरा भाग।  
 अंगुलिप्राण—मज्ञा पु० उंगलियों का वह परिधान जो घाण चलते समय उंगलिया पर चढ़ा लिया जाता है और जो गोंह के चमड़े का बनता है। एक प्रकार का दस्ताना।  
 अंगुलिपर्व—सज्ञा पु० उंगलिया की पोर।  
 उंगली की गाँठों के बीच का भाग।  
 अंगुली अंगुरी—मज्ञा स्त्री० १ उंगली।  
 २ हाथी की सूँड का अंगुल भाग।  
 अंगुल्यादेश—सज्ञा पु० संकेत। उंगली से इशारा करना।  
 अंगुल्यानिर्देश—सज्ञा पु० कल्क। बदनामी।  
 लाछन। किसी पर अंगुली का उठ जाना।  
 अंगुस्ताना—मज्ञा पु० [फा०] १ उंगली पर पहनने की पीतल या लोहे की टोपी जिसे दरजी सीते समय उंगली में पहन लेते हैं। २ अडसी। आरसी। हाथ के अँगूठे की मुँदरी विशेष।  
 अंगुश्टरी—सज्ञा स्त्री० अँगूठी।  
 अंगुश्टनुभाई—सज्ञा स्त्री० बदनामी। कल्क।  
 अंगुष्ठ—सज्ञा पु० अँगूठा। हाथ या पैर के सिरे की सबसे मोटी उंगली।  
 अँगुसी—सज्ञा स्त्री० १ सोनारा की टेढ़ी नली जिससे दीये की ली को फूँककर टँका जोड़ते हैं। बकनाल। २ हल का फाल।  
 अँगूठा—सज्ञा पु० अंगुष्ठ। मनुष्य के हाथ व पैर के सिरे की सबसे मोटी उंगली।  
 मुहा०—अँगूठा चूमना=१ शुश्रूषा करना। सुशामद करना। २ अधीन होना। अँगूठा दिखाना=१ किसी वस्तु को देने से अवज्ञापूर्वक नाही करना। २ किसी काम को करने से हट जाना। किसी कार्य का करना अस्वीकार करना। अँगूठे पर मारना= परवा न करना। तुच्छ समझना।  
 अँगूठी—सज्ञा स्त्री० १ मुद्रिका। मुँदरी। छल्ला। उंगली में पहनने का गहना

विशेष। २ उँगली में लिपटाया हुआ तागा (जुलाह)।  
 अंगूर—मज्ञा पु० [पा०] १ एक लता और उमवे फल का नाम। दाख। द्राक्षा।  
 मुहा०—अंगूर का मटवा या अंगूर की टट्टी= १ अंगूर की बेल के चढ़ने और फँसने के लिए बाँम की खपच्चियों का बना हुआ टट्टर या मटप। २ एक प्रकार की आनिसबाजी।  
 सज्ञा पु० [रा० अकुर] १ घाव का भगव। २ मांस के छोटे छोटे लाल दाने जो घाव भरते समय दिखाई पड़ते हैं।  
 मुहा०—अंगूर सटवना या फटना=भरते हुए घाव पर बंधी हुई मांस की शिन्नी का हट जाना।  
 अंगूरशोफा—मज्ञा पु० [पा०] हिमालय पर्वत की जड़ी विशेष।  
 अँगुरी—वि० १ अंगूर के रंग का। सज्ञा पु० हलवा हरा रंग। २ अंगूर से बना हुआ।  
 अँगोजना\*—क्रि० सं० १ स्वीकार करना। २ उठाना। सहना। बरदान्न करना। अंगीकार करना।  
 अँगोठी—सज्ञा स्त्री० दे० "अँगोठी"।  
 अँगोरना\*—क्रि० सं० स्वीकार करना। मजूर करना। सहना। बगदस्त करना।  
 अँगोछना—क्रि० अ० गीले कपड़े या अँगोछे से शरीर को पोछना या साफ करना।  
 अँगोछा—सज्ञा पु० १ देह पोछने का कपड़ा। तौलिया। गमछा। २ उपरना। उपवस्त्र। उत्तरीय।  
 अँगोछी—सज्ञा स्त्री० १ छोटी धोती जिससे कमर से आधी जाँघ तक ढक जाय। २ देह पोछने का छोटा कपड़ा।  
 अँगोजना\*—क्रि० सं० दे० "अँगोजना"।  
 अँगोरा—सज्ञा पु० मच्छर।  
 अँगोरी—सज्ञा पु० देवता को चढ़ाने या धर्म्मार्थ वाँटन के लिए अलग निकाला हुआ अन्न आदि। पुजोरा। अँगुँ।  
 अँगोरिया—सज्ञा पु० वह हलवाहा जिसे मजदूरी न देकर हल बेल उधार देते हैं।  
 अँघडा—सज्ञा पु० कबि का छल्ला जिसे स्त्रियाँ पैर के अँगूठ में पहनती हैं।

अधस-सज्ञा पु० पातक। पाप।  
 अधिया-सज्ञा स्त्री० छलनी जिससे आटा या मैदा चाला जाता है। अँगिया। आखा।  
 अधि-सज्ञा पु० १ पवि। चरण। पैर। २ वृक्षों की जड़।  
 अधिप-सज्ञा पु० वृक्ष। पेड़।  
 अधरा-सज्ञा पु० दे० "आँचल"। अचल।  
 अचल-सज्ञा पु० [सं०] १ आँचल। पल्ला। साड़ी का छोर। दे० "आँचल"। २ देश का वह प्रांत या भाग जो सीमा के पास हो। ३ नदी के किनारे की भूमि। ४ तट। किनारा। ५ क्षेत्र।  
 अँचला-सज्ञा पु० १ कपड़े का एक टुकड़ा जिसे साधू लोग धोती के स्थान पर लपेटे रहते हैं। २ दे० "आँचल"।  
 अँचवना-क्रि० अ० भोजन के उपरान्त हाथ और मुँह धोना। आचमन करना।  
 अँचित-वि० आराधित। पूजित।  
 अछर-सज्ञा पु० १ मुँह के भीतर का एक राग जिसमें काँट से उभर आते हैं। २ अक्षर। ३ जादू। टोना।  
 मूश-अछर मारना-मन का प्रयोग करना। जादू करना। टोना करना।  
 अज-सज्ञा पु० दे० "कज"।  
 अजन-सज्ञा पु० १ विशप प्रक्रिया से तैयार की हुई आँख में लगाने की ओषधि। २ काजल। मुरमा। ३ रात्रि। रात। ४ रोसानाई। स्पाही। मसि। ५ छिपकली। ६ मैत्रेयकोण या पश्चिम का दिग्गज। ७ यगला विशप। ८ नदी। ९ पेड़ विशेष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है। १० सिद्धाजन जिम्मे लगान म गड़ा हुआ धन दिखाई पड़ता है। ११ पर्वत-विशप। १२ कटु से उत्पन्न एक सप का नाम। १३ त्रिप। १४ माया। १५ एक प्रकार का धान्य। १६ मिथिला देश का एक प्राचीन राजा। १७ एक प्रकार की घास जो उत्तर प्रदेश में होती है और जिसे पशु खाते हैं। १८ अँगरेजी 'इजन' का अपभ्रंश। १९ इषर्पक मन्द। वि० धारा। मुरमई रंग का।

अजनकेश-सज्ञा पु० १ दिया। दीपक। २ वह पुरुष जिसके बाल अजन के समान काले हों।  
 अजनकेशी-सज्ञा स्त्री० १ एक सुगंध द्रव्य जिसे नख कहते हैं। २ वह स्त्री जिसके बाल अजन के समान काले हों।  
 अजन-शलाका-सज्ञा स्त्री० सुरमचू। चाँदी, जस्ते आदि की वह सलाई जिससे आँख में सुरमा आदि लगाया जाता है।  
 अजनसार-वि० अजन-युक्त। काजल या सुरमा लगा हुआ।  
 अजनहारी-सज्ञा स्त्री० १ बिलनी। गुहजनी। आँख की पलक के किनारे की फुन्सी। अजना। २ एक प्रकार का उड़नवाला कीड़ा जिसे बिलनी या कुम्हारी भी कहते हैं। भृगु। ३ यह स्त्री जो किसी के अजन या काजल लगावे।  
 अजना-सज्ञा स्त्री० १ हनुमान् की माता। २ गुहजनी। बिलनी। दो रंग की छिपकली।  
 सज्ञा पु० एक प्रकार का मोटा धान। \*क्रि० सं० दे० 'आँजना'।  
 अजनाद्रि-सज्ञा पु० पर्वत विशप।  
 अजनादन-सज्ञा पु० हनुमान्।  
 अजनो-सज्ञा स्त्री० १ अजना जो हनुमान् की माता थी। २ माया। ३ कुटकी। ४ चदन आदि लगात योग्य स्त्री। ५ बिलनी। आँख के पलक की फुडिया।  
 अजबार-सज्ञा पु० [फा०] एक पौधा जिसकी जड़ का काढ़ा और शरबत सरदी और कफ के रोग में दिया जाता है।  
 अजर-मजर-सज्ञा पु० ठठरी। शरीर का जोड़। पसली।  
 मूश-अजर-मजर ढीला होना-शरीर के जोड़ों का हिल जाना। उखड़ना। देह का बढ़ बढ़ टूटना। मिथिल होना।  
 त्रि० वि० पार्श्व म। अगल बगल।  
 अजल, अजला-सज्ञा पु० दे० "अजली" और अजल।  
 अजलि, अजली-सज्ञा स्त्री० १ दोनो हथेलियों को मिलान म बना हुआ गढ़वा। दोनो

हयेलियो को मिलाकर बनाया हुआ मण्ड।  
 २. उत्तरी वस्तु जितनी एव अंजुली में आवे। अजलि भर अनाज जिस प्रम्य या कुडव भी बहते हैं। अजुलि। ३ सोलह तोले के बराबर की नाप दोषधर या पत्ता।  
 ४. हयेलियो से दान देने के लिए निशाला हुआ अन्न। ५ अजलि-अजलि से दिया हुआ जल। अजलि देना। तर्पण करना।  
 ६ श्रद्धा में अर्पित करना। ७ श्रद्धा में अर्पित किये हुए पुष्प आदि। ८ श्रद्धा। नति। आशीर्वाद।  
 अंजलिफल-सज्ञा पु० सुशीलता। प्रणाम। नमस्कार। विनय करना।  
 अंजलिफल-वि० १. प्राप्त। हाथ में आना हुआ। २. दोनों हयेलियो पर रक्खा हुआ। अंजुली में आया हुआ।  
 अजलिपुट-सज्ञा पु० अजलि। दोनों हयेलियो के मिलाने से बनी हुई दोनों जैमी मुद्रा।  
 अंजलिबद्ध-वि० बद्ध-बद्ध। हाथ जाड़े हुए।  
 अंजलिबधन-सज्ञा पु० हाथ जोड़ना।  
 अंजवाना-क्रि० स० सुरमा या अजन लगवाना।  
 अंजसा-अ० शीघ्रता से। शीघ्रता।  
 अजहा-वि० हि० [स्त्री० अजही] अन्न से बना हुआ। अनाज का।  
 अजही-सज्ञा स्त्री० ऐसा बाजार जहाँ अन्न विन्ता हो। अनाज की मंडी। मिठाई जो अनाज से बनी हो।  
 अंजाना-क्रि० स० अंजवाना। अजन या सुरमा लगवाना।  
 अंजाम-सज्ञा पु० [फा०] १ परिणाम। फल। २ अंत। समाप्ति। पूर्ति।  
 मूहा-अंजाम देना=पूर्ण करना।  
 अजिद-वि० अजिद हुए। अजल लपटाए हुए।  
 अंजोर-सज्ञा पु० [फा०] एक पेड़ तथा उसका फल जो गूलर के समान होता है और खाने में मीठा होता है।  
 अजुमन-सज्ञा स्त्री० (फा०) गन्ध। मजलिम।  
 अंजरी, अंजुली\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "अजलि"।  
 अंजोर\*†-पु० दे० "उजाला"। प्रकाश, रोशनी, चांदनी।  
 अंजोरना\*†-क्रि० म० १ मचय करना।

टकड़ा करना। बटोरना। २ हरण करना। छीन लेना। वि० स० प्रकाशित करना। जलाना-बालना। जैम-दीपन अंजोपना।  
 अंजोरा†-वि० दे० "अंजोर", "उजाला"।  
 यो०-अंजोरा पाप-शुद्ध पक्ष।  
 अजोरी\*†-सज्ञा स्त्री० १. उजाली। चमक। रोशनी। प्रकाशयुक्त। २ चट्टिका। चांदनी। वि० स्त्री० प्रकाशमयी। उजाली।  
 अज्ञा-सज्ञा पु० छुट्टी। नागा। तानील। जवनाश।  
 अंजना-क्रि० अ० १ समाना। किसी वस्तु के भीतर आ जाना। २ किसी वस्तु के ऊपर सटीक बैठना। ठीक में चिपकना। ठीक उतरना। ३ बैठ जाना। भर जाना। ४ काफी होना। पूरा पड़ना। काम चलना। ५ खपना। पूरा होना।  
 अटा-सज्ञा पु० १ गोला। गेंदा। बड़ी गोरी। २ रेशम या सूत का लच्छा। ३ तिलिपड़। एक खेल जो हाथी-दाँत की गोलियों से मेज पर खेला जाता है। ४ बड़ी कौड़ी।  
 अटा-गुडगुड-वि० १ अचेन। वसुध। २ नये म चूर। बेहोश।  
 म० पु० एक प्रकार का जुआ।  
 अटापर-सज्ञा पु० ऐसा पर जिसमें गोली या खेल गेला जाय।  
 अटाचित-क्रि० वि० चित। नीचा पीठ के बल। पीठ जमीन पर किये हुए।  
 मुहा०-अटाचित होना=१ अवाक् होना। मग्न होना। स्तमित होना। २ बरबाद होना। बेकार होना। किसी काम का न रह जाना। ३ नदी में अचेन होना। बेधर होना। बेमुश्क होना।  
 अटाबधू-सज्ञा पु० कौड़ी जो जुए में फँसी जाती है।  
 अंटिया-सज्ञा स्त्री० सर, घाम या पतंगी लकड़ियों आदि की बँधी हुई गठरी। छोटी गठरी। गटिया। मुट्ठी। पूरा।  
 अंटियाना-क्रि० म० १ हथेली में या उँगलिया के बीच में छिपाना। २ चारों उँगलियों में लपेटकर डोरे को पिंडी बनाना। ३

सर, घास या पतली लकड़ियों का मुट्ठा बांधना। ४ हजम करना। गायब करना।

५ अटी में रख लेना।

अंटी-सज्ञा स्त्री० [त्रि० अंटियाना] १ घाई जंगलियों के बीच का अंतर या स्थान। २ घोती की कमर पर रहनेवाली गाँठ। घोती के किनारे की लपेट जिसके कारण घोती बँधी रहती है।

मुहा०-अटी करना=कोई वस्तु ले लेना।

अपने अधिकार में करना। अटी मारना=

१ जुआ खेलते समय कौड़ी को जंगलियों के बीच में छिपा लेना। २ आँस बचाकर धीरे से दूसरे की वस्तु को उड़ा लेना।

पाखा देकर कोई चीज ले लेना। ३ लपेट में

कमर की दाहिनी या बाईं ओर वह स्थान

जिसमें रुपया, पैसा लपेट कर रख लिया जाता

है। ४ डोड़या। तर्जनी के ऊपर मध्यमा को

चड़ाकर बनाई हुई मुद्रा। डंडोइया।

(जब कोई लड़का खेल में किसी अप्सृश्य

वस्तु को छू लेता है तब और लड़के छूत

से बचने के लिए ऐसी मुद्रा बनाते हैं।)

५ रेशम या सूत की लच्छी। अट्टी।

६ सूत लपेटन की लवड़ी। अँटरन।

७ विगाड होना। विरोध या अटी पड़ना।

८ मुरवी। कान में पहनने की छोटी वाली।

अँटीतल-सज्ञा पु० डककन। जो तेली के बेल

की आँस पर बाँधा जाता है।

अँई-सज्ञा स्त्री० किलनी।

अठी-सज्ञा स्त्री० १ बीज। गुठली। चीयाँ।

२ गाँठ। गिरह। ३ कडापन। गिलटी।

अड-सज्ञा पु० १ अडा जिसे फोड़कर विशेष

जोषा ना बच्चा निकलता है। २ फोना।

अडकोश। ३ विश्व ब्रह्मांड। ४ वीर्य।

गुल। बीज। ५ मृगनाभि। कस्तूरी का

नाफा। ६ निव का एक नाम। ७ मानसिक

अज्ञान (जैन)। ८ मराना की छाजन के

ऊपर के गोल कलश।

अडकटाह-सज्ञा पु० अंगार, मसारा, विश्व।

ब्रह्मांड। जीव का कर्म विपाक स्थान।

अडकोश-सज्ञा पु० १ पागु। आँड। खुनिया।

वृषण। २ ब्रह्मांड। अविश्व विश्व। ३ सीमा।

४ फल का छिलका। ५ कस्तूरी की थैली। अडज-सज्ञा पु० जीव, जो जीव अडे से उत्पन्न होते हैं जैसे, पक्षी, सर्प, मछली इत्यादि। अडे से उत्पन्न।

अडबड-सज्ञा स्त्री० १ वे सिर पर की बात।

ऊटपटांग बात। असबद्ध बार्ता। बकबक।

अनाप अनाप। २ गाली।

वि० असबद्ध। अस्त व्यस्त। वे सिर पर

का। इधर उधर का। व्यर्थ का।

अँडरना-क्रि० अ० रेडना। गर्भना। धान

के पीधे की बाल निकलने की अवस्था।

अडस-सज्ञा स्त्री० सकट। बाधा। अमुविधा।

कठिनाई।

अडबुद्धि-सज्ञा स्त्री० फोते का बढ़ना। एक

रोग-जिसमें अडकोश या फोता फूलकर

बहुत बढ़ जाता है।

अडा-सज्ञा पु० [वि० अडैल] १ वह

गोल वस्तु जिसे फोड़कर जलचर, पक्षी

और सर्प आदि अडज जीवों के बच्चे

निकलते हैं। बीजा। गोलाकार।

मुहा०-अडा सेना=१ पक्षिया का अपने

अडा पर गर्मी पहुँचाने के लिए बैठना।

२ अडा मिलना या पाना=परीक्षा में क्षुण्य

अव मिलना। बेकार बैठे रहना। किसी

कार्य के फल की प्रतीक्षा करना।

अडाकार-वि० अडे के आकार का। लबाई

लिये हुए गाल। बीजाबी।

अडाकृति-सज्ञा स्त्री० अडे की शकल। अडे

का आकार।

वि० दे० "अडाकार"।

अडी-सज्ञा स्त्री० १ रेंडी। २ रेंड या एरंड

का पट, फल या बीज। ३ एक प्रकार का

मोटा रस्सी कपड़ा।

अँडुआ-सज्ञा पु० बिना बधिया बिना हुआ

जानवर। दे० "अँड"।

अडअल्ला-क्रि० म० बधिया बग्ना-अडडे के

अडकोश को निकलवाना।

अँडुआ बेल-सज्ञा पु० १ वह बेल जो

बधियाया न गया हो। गाँठ। २ मुन्न

आदमी। ३ वडे अडकातवाला जादमी

जो उमने कारण चल न सके।

अतर्दाह-सज्ञा पु० छाती की जड़न। शरीर की ज्वाला। मानसिक ताप।

अतर्द्धान-सज्ञा पु० छिपाव। लोप।

वि० अदृश्य। गुप्त। अलक्ष। गायब।

अतर्हित। अप्रकट। छिपा हुआ। लुप्त।

अतर्ध्यान-सज्ञा पु० मानसिक ध्यान। मन सवधी ज्ञान।

अतर्नयन-सज्ञा पु० ज्ञानमय दृष्टि। भीतरी या ज्ञान के नय। ज्ञानचक्षु।

अतर्निविष्ट-वि० १ भीतर बैठा हुआ।

अदर रक्खा हुआ। २ मन में जमा हुआ।

अतर्करण में स्थित। हृदय में बैठा हुआ।

अतर्निहित-वि० अदर छिपा हुआ।

अतर्पट-सज्ञा पु० देरों "अतरपट"।

अतर्बोध-सज्ञा पु० १ आत्मा की पहचान। आत्मज्ञान। २ आतरिय अनुभूति।

अतर्भाव-सज्ञा पु० [ वि० अतर्भावित, अतर्भूत ] १ अतर्गत होना। भीतरी ममावेस। सम्मिलित होना। २ छिपाव। निरोभाव। विलीनता। ३ नाश। अभाव। ४ भीतरी मतलब। अभिप्राय। आशय। मन्ना।

अतर्भावना-सज्ञा स्त्री० १ सोच विचार। ध्यान। चिंत। २ गुणन फल के अन्तर में सरयाओं को सुधारना।

अतर्भावित-वि० १ अतर्गत। अतर्भूत। सम्मिलित। भीतर। २ भीतर किया हुआ। छिपाया हुआ। लुप्त।

अतर्भुक्त-वि० भीतर आया हुआ। शामिल।

दे० "अतर्भूत"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

अतर्भूत-वि० दे० "अतर्भाव"।

रखनेवाला। ३ मन की बात ज।

सज्ञा पु० ईश्वर। परमेश्वर।

अतर्त्वाष्टीय-वि० दे० अतर्त्वाष्टीय (सुच)

मसार के सब या अनेक राष्ट्रों से रखनेवाला।

अतर्लंब-सज्ञा पु० ऐसा त्रिकोण क्षेत्र भीतर लंब का पतन हो।

अतर्लपिका-सज्ञा स्त्री० ऐसी पहेली। उत्तर उसी पहेली के अक्षरों में हो

अतर्लन-वि० डूबा हुआ। मग्न। छिपा हुआ। विलीन। बाह्य प्रपच विमुख।

अतर्लन-वि० भीतरी। भीतर रहनेवाला।

अतर्लन-वि० अतिम वर्ण का। चतुर्थ वर्ण का।

अतर्लन-वि० पंडित। विद्वान्। को जाननेवाला।

अतर्लन-वि० भय, व्यास, पीडा शरीर के धर्म।

अतर्लन-वि० ज्वर-सज्ञा पु० ज्वर विशेष। रागी का पसीना नहीं आता।

अतर्लन-वि० [ वि० अतर्लन ] १ देश जिसमें यज्ञ की वेदियाँ हो। २ वर्ण। गंगा और यमुना के बीच का

३ दोआबा। दो नदियों के बीच का

अतर्लन-सज्ञा स्त्री० अतर्लन की वे भीतरी या मानसिक पट्ट। भा पीडा।

अतर्लन-वि० अतर्लन का निवासी। यमुना क दोआबा में बसनेवाला।

अतर्लन-सज्ञा पु० अतर्लन-स्थान। मग्न।

अतर्लन-वि० गुप्त। छिपा हुआ। निरोहित। अज्ञात। अदृश्य।

अतर्लन-सज्ञा स्त्री० (गुह्य रूप-अतर्लन) १ भूमिगम्या। मृत्युगम्या। २ रमण। मग्न। ३ मृत्यु।

अतर्लन-सज्ञा पु० अतर्लन। चित्त। ६ अतर्लन-सज्ञा पु० शिष्य। चेल।

अतर्लन-सज्ञा पु० अतर्लन। मृत्युनाश। दे० "इतर्लन"।

अतर्लन-सज्ञा पु० अतर्लन। मृत्युनाश। दे० "इतर्लन"।

हिस्तल-संज्ञा पु० मन। चेतना। हृदय।  
तीर का भीतरी या मध्यवर्ती न्यान।

हिस्ताप-संज्ञा पु० मानसिक कष्ट। आन्तर्गिक  
गोड़ा।

तस्य-वि० [विशे० अतस्थित] १. भीतरी।  
२. बीच या मध्य में स्थित। बीचवाला।  
मध्यवर्ती ३. य, र, ल, व, अतस्य वर्ण  
कहलाते हैं। (व्याकरण)।

तिस्नान-संज्ञा पु० यज्ञ-विशेषों के समान  
होने या पूर्णाहुति होने पर किया जानेवाला  
उन यज्ञों का अगमूत स्नान। (धर्मशास्त्र)

तंतस्सलिल-वि० [स्थी० अंतस्सलिला]  
जिसके जल का प्रवाह भीतर हो, बाहर न  
देख पड़े, जैसे सरस्वती नदी, जो गुप्त  
बही जाती है।

तंतस्सलिला-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती नदी।  
२. पल्लु नदी।

अंतराष्ट्रिय-वि० समार के मय या अनेक  
देशों से सम्बन्ध रखनेवाला। अनेक राष्ट्रो  
से सम्बन्धित। मार्वराष्ट्रीय।

अंतावरी-संज्ञा स्त्री० अंतो का समूह।  
अंतडी।

अंतावसायी-संज्ञा पु० १. गाँव की सीमा  
के बाहर रहनेवाला। २. अस्पृश्य।  
अछूत।

अंतावसायी-संज्ञा पु० १. नाई। २. हिंसा  
करनेवाला। चाडाल।

अंतिक-संज्ञा पु० समीप। पास। निकट।

अन्तिम-वि० १. आखिरी। जो अंत में हो।  
सबके पीछे का। २. सबसे बढकर। हृद  
दरजे का। चरम।

अंतैवर, अंतैवर\*-संज्ञा पु० रनिवास। जनान-  
खाना। अंतपुर।

अंतैवासी-संज्ञा पु० १. गुरु के समीप रहने-  
वाला विद्यार्थी। शिष्य। चेला। २. ग्राम  
के बाहर रहनेवाला। चाडाल। अत्यज।  
अछूत।

अंतःकरण-संज्ञा पु० १. मन। वह इंद्रिय जो  
संकेत, चित्त, निश्चय, स्मरण तथा सुख-  
दुःखादि का अनुभव करती है। २. नैतिक  
बुद्धि। विवेक।

अंतःपटी-संज्ञा स्त्री० किसी चित्रपट में नदी,  
पर्वत, नगर आदि का दिखलाया हुआ दृश्य।

१. मोम-रम छानने का वस्त्र। २. विवाह  
में यमराज को आहुति देते समय बर-बधू  
और अग्नि के बीच डाला जानेवाला पर्दा।  
३. रगमच पर नयने आगेवाले पर्दे के बाद  
के पर्दे।

अंतःपुर-संज्ञा पु० [संज्ञा अंतःपुरिक]  
जनानखाना। रनिवास। भीतरी महल।  
परदे में रहनेवाली स्त्रियों के रहने का  
स्थान।

अंतःपुरिक-संज्ञा पु० बचुकी। अंतपुर का  
रक्षक।

अंतःराष्ट्रिय-वि० दे० अंतराष्ट्रिय।

अंतःशरीर-संज्ञा पु० आत्मा। लिंगशरीर।

अंतःसंज्ञा-संज्ञा पु० १. वह जीव जो अपने सुख-  
दुःख के अनुभव को प्रकट न कर सके।  
जैसे, बृक्ष। २. अनुभव, चेतना।

अंत्य-वि० अन्तिम। नीच। अधम जाति का।  
आखिरी। सबसे बाद का।

संज्ञा पु० १. वह जिसकी गणना अंत में हो।  
जैसे, लग्नों में मीन, नक्षत्रों में रेवती।

२. दस सागर की संख्या (१०००,०००,  
०००,०००,०००)। यम।

अंत्यकर्म-संज्ञा पु० अत्येष्टि किया। प्रेतकर्म।  
मरण के बाद से त्रयोदशाह तक की पिंड-  
दानादि विधि।

अंत्यज-संज्ञा पु० १. जिसका जन्म अन्तिम  
वर्ण में हुआ हो। शूद्र जो अछूत समझा  
जाय या जिसका छुआ हुआ जल द्विज  
ग्रहण न कर सकें; जैसे, घोड़ी, चमार  
आदि। २. चाडाल, डोम आदि, जिनका  
स्पर्श भी वर्जित है।

अंत्यवर्ण-संज्ञा पु० शूद्र। १. अन्तिम वर्ण।

२. वर्णमाला के अंत का अक्षर, 'ह'। ३.  
पद के अंत में जानेवाला अक्षर। अन्त्याक्षर।

अंत्यविपुला-संज्ञा स्त्री० आर्या छंद का एक  
भेद।

अंत्या-संज्ञा स्त्री० १. चाडाल की स्त्री। चंडा-  
लिनी। २. अंत की। अन्तिम।

अंत्याक्षर-संज्ञा पु० १. वह अक्षर जो किसी

अङ्गल-वि० अहेवाग्नी। जिगने पेट में अहे हा।  
 अत-सजा पु० १ सोपान। २ प्रान्त।  
 ३ सीमा। अवधि। पराकाष्ठा। ४ प्रलय।  
 नाग। मृत्यु। समाप्ति। अवगान। ५ स्वरूप।  
 स्वभाव। ६ गुण भाव। भेद। रहस्य। मन  
 की बात। ७ पदचान्। पीछे। ८ मुद्र।  
 ९ दृति। जीवन की समाप्ति। १० फल  
 निष्पत्ति। परिणाम। ११ निदान। निर्णय।  
 १२ भीतरी भाग। भीतर। १३ समीप।  
 निबट। १४ अन्यत्र। दूर। और जगह।  
 मुहा०-अन बनना। मद्गति होना=अच्छा  
 परिणाम होना। अत विगडना=मृत्यु के बाद  
 जगति होना। परिणाम बुरा होना। अन  
 करना=समाप्त करना। अन हो गया=  
 सीमान्तर हो गया। सीमा में वह गया।  
 अतक-वि० १ नाश करनेवाला। अतकरनेवाला।  
 २ वह शक्ति जो जीवन का अन करती है।  
 सजा पु० १ मृत्यु। २ काल। यमराज। ३  
 सतिपात ज्वर का एक भेद। ४ ईश्वर, जो  
 प्रलय में सबका नाश करता है। ५ शिव।  
 अतकर-वि० विनाशक। नाशकर।  
 अतकारी-सजा पु० सहारक। मार डालने  
 वाला। समाप्ति करनेवाला।  
 अंतकाल-सजा पु० १ मरने का समय।  
 अंतिम समय। २ मौत। मृत्यु।  
 अतक्रिया-मजा स्त्री० अयेष्टि कर्म। मृत्यु  
 के बाद का निया कर्म। मृतक क्रिया।  
 अतग-मजा पु० पारगामी। पारगत। पूर्ण  
 जाता। निपुण।  
 अतगति-सजा स्त्री० मृत्यु। मरण। मौत।  
 अंतिम दशा।  
 अतघाई\*-वि० घाँसा देनेवाला। विद्वान्  
 घानी।  
 अतङो-मजा स्त्री० आंत।  
 मुहा०-अंतङो जलना=बहुत भूख लगना। पेट  
 जलना। अंतङी गले में पडना=किसी सवट  
 में पडना। अंतङिया का बल खोलना=वर्ष  
 दिना के बाद भाजन मिलने पर पेट भर खाना।  
 अतच्छद-सजा पु० अंदर में दखनवाला।  
 आच्छादन।  
 अतज, अत्यज-मजा पु० शूद्र में भी नीच।

जा डिजागि के सम्बारा में विहीन हो  
 है उनकी "अत्यज" मजा मानी गई है।  
 महत्तर-चाडाङ।

अतत-अध्य० अन्त में। आगिर में। गोपन  
 धर्म गोमा पहुँचने पर।

अतपाल-मजा पु० १ राज्य की सीमा पर  
 रहनेवाला पहरेदार। २ दग्वान। दारपा  
 उपाधीदार।

अतरग-वि० १ भीतरी। २ घनिष्ठ। स्वजन  
 ३ दिने। गुण वाता का जाननेवाला  
 जिंगरी। ४ अतकरण का। मानमिव।

मजा पु० मित्र। दिली दोस्त। आत्मीय।  
 अतरग-सभा-मजा स्त्री० किसी समस्या के  
 चुनो हुई वह छाटी सभा या समिति जे  
 उसकी व्यवस्था करती है।

अतरगो-वि० दे० "अतरग"।

अतर-मजा पु० १ भेद। अलगाव। विभिन्नता।  
 २ मध्य। बीच। भीतर। फामग। दूरी।  
 अवकाश। दो वस्तुआ के बीच की जगह।  
 ३ मध्यवर्ती समय। दो घटनाआ के बीच  
 का काल। बीच। ४ आड। आट। परदा।  
 व्यवधान। दो चीजा के बीच में पड़ी हुई  
 वस्तु। ५ छद। रछ। छिद्र। ६ अलग  
 भिन्न। अलग। जदा। भेद।

अतरांन-वि० सामने सलुप्त होना। दिखला  
 न पडना। दृष्टिगोचर न हाना।

अतरचक्र-मजा पु० १ दिशाआ और वि  
 दिशाआ के बीच के अंतर को चार चार  
 भागा में बाँटने में बने हुए ३२ भाग।  
 २ भिन्न भिन्न दिशाआ में चिड़िया की  
 बोली सुनकर शुभाशुभ फल बनाने की  
 विद्या। ३ शरीर के पट चक्रों में से  
 कोई चक्र। ४ भाई बच्चा की झल्लरी।  
 आत्मीय बर्ग।

अतरजामो-मजा पु० दे० अतर्यामी।  
 अतरदिशा-मजा स्त्री० दो दिशाआ के बीच  
 की दिशा। दिशाआ के कोण।

अतरस्तम-सजा पु० हृदय का सबसे भीतरी  
 भाग। अन्तकरण। किसी वस्तु का सबसे  
 भीतरी भाग।

अतरपट-मजा पु० १ आड। ओट। आँ

ने का कपड़ा। परदा। २ विवाह में  
को आहुति देते समय अग्नि और वर-  
के बीच में डाला हुआ पर्दा। ३ दुराव।  
पाव। ४ कपडमिट्टी=घातु या ओषधि  
फूँकने के पहले उसकी लुगदी या  
घुट पर गीली मिट्टी के लेप के साथ  
पड़ा लपेटने की क्रिया। कपडौरी। ५  
गीली मिट्टी का लेप देकर लपेटा हुआ  
पड़ा।

रस्य-वि० अंदर रहनेवाला। भीतर का।  
० 'अतर'।

रक्ष-सज्ञा पु० भेद जाननवाला। दे०  
'अतर्यामी'।

ररा-सज्ञा पु० १ अनर। बीच। अज्ञा।  
रागा। २ ज्वर जो एक दिन के अन्तर  
में आता है। ३ कोना। ४ किसी गीत में  
स्थायी या टेक के अतिरिक्त बाकी और  
नव या चरण। ५ प्राप्त काल और सध्या  
के बीच का समय। दिन।

वि० बीच में एक छोड़कर दूसरा।

तरा-क्रि० वि० १ बीच। मध्य। २ निकट।  
पास। ३ शिवाय। अतिरिक्त। ४ अलग।  
पृथक्। ५ रहित। बिना।

तरपेट-सज्ञा पु० अत करण। हृदय। मन।

तरतान-सज्ञा पु० मन के अंदर होनेवाला  
ज्ञान। अतर्बोध। प्रज्ञा।

तरगुही-सज्ञा स्त्री० काशी की सीमा में  
प्रधान पुण्य-स्थलों की यात्रा।

अतर्जानु-वि० हाथ की घुटनों के बीच  
रखे हुए।

अतरात्मा-सज्ञा स्त्री० १ अत करण। २  
जीवात्मा।

अतरापत्न्या-सज्ञा स्त्री० गर्भवती। गर्भिणी।  
गुर्विणी। द्विजीवा।

अतराय-सज्ञा पु० १ विघ्न। बाधा। रुकावट।  
२ ज्ञान का बाधक। ३ योग की सिद्धि  
के नीचे विघ्न।

अतराना-क्रि० स० अलग करना। पृथक्  
करना। अन्दर करना।

अतराल-सज्ञा पु० १ घेरा। मडल। घिरा  
हुआ स्थान। २ बीच। मध्य।

अतरिक्ष-सज्ञा पु० १ पृथिवी और अन्य लोको  
के बीच का स्थान। दो ग्रहों या तारों के  
बीच का शून्य स्थान। गगन। वायु। शून्य।  
आकाश। अघर। २ स्वर्गलोक। ३ वैतुशाल  
नामक एक भूखंड।

अतरिख, अतरिच्छ\*-सज्ञा पु० दे०  
"अतरिक्ष"।

अतरित-वि० १ भीतर रखा हुआ। भीतर  
रखा हुआ। छिपा हुआ। २ गुप्त। अतर्धान।  
तिरोहित। ३ ढका हुआ। आच्छादित।  
४ स्वतंत्र। अलग किया हुआ। ५ गर्भस्थ।  
अतरिया-सज्ञा पु० एक दिन का अन्तर  
देकर आनेवाला बुखार। बीच देकर आने-  
वाला ज्वर।

अतरीप-सज्ञा पु० १ भूमि का वह भाग जो सँकरा  
होता हुआ अत में समुद्र में लुप्त हो जाय।  
२ द्वीप। टापू।

अतरीप-सज्ञा पु० धोती। अधोवस्त्र। कमर में  
पहनने का वस्त्र।

वि० भीतरी। भीतर का। अंदर का।

अन्तरीया-सज्ञा पु० भीतर का। विचला। मध्य  
का। परिधान। वस्त्र।

अंतरीटा-सज्ञा पु० महीन कपड़ा जो सारी  
के नीचे पहना जाता है।

अतर्गत-वि० १ मध्यस्थ। पंटा हुआ। भीतर  
आया हुआ। अतर्भूत। समाया हुआ।  
शामिल। सम्मिलित। २ गुप्त। भीतरी।  
छिपा हुआ। ३ अत करणरियत। हृदय  
के भीतर का।

\*सज्ञा पु० मन। चित्त। जी। हृदय।

अतर्गति-सज्ञा स्त्री० १ मन का भाव।  
मन की तरंग। चित्तवृत्ति। भावना।  
२ चित्त की अभिलाषा। कामना। हादिक  
इच्छा। ३ विस्मृति।

अतर्दशा-सज्ञा स्त्री० मनुष्य के जीवन  
में मुख्य ग्रह के भोग-माल में अन्य  
ग्रहों के आगमन के समय की दशा  
(ज्योतिष)।

अतर्दशाह-सज्ञा पु० वह कर्मकांड जो  
मरने के बाद के दस दिनों में किया  
जाता है।

अतर्दाह-मज्ञा पु० छानी की जग्न। शरीर की ज्वाला। मानसिक ताप।  
 अतर्दान-मज्ञा पु० छिपाव। छोप।  
 वि० अदृश्य। गुप्त। अश्व। गायन।  
 अतर्हित। अप्रकट। छिपा हुआ। लुप्त।  
 अतर्ध्यान-सज्ञा पु० मानसिक ध्यान। मन मगधी ज्ञान।  
 अतर्धन-मज्ञा पु० ज्ञानमय दृष्टि। भीनरी या ज्ञान के नेत्र। ज्ञानचक्षु।  
 अतर्निचिष्ट-वि० १ भीतर बँटा हुआ।  
 अदर रक्का हुआ। २ मन में जमा हुआ।  
 अतर्करण में स्थित। हृदय में रँटा हुआ।  
 अतर्निहित-वि० अदर छिपा हुआ।  
 अतर्पट-सज्ञा पु० देखो "अतर्पट"।  
 अतर्बोध-सज्ञा पु० १ आत्मा की पहचान।  
 आत्मज्ञान। २ आत्मिक अनुभूति।  
 अतर्भाव-सज्ञा पु० [ वि० अतर्भावित, अतर्भूत ] १ अतर्गत होना। भीतरी सन्देश।  
 सम्मिलित होना। २ छिपाव। तिरोभाव।  
 विनीतता। ३ नाश। अभाव। ४ भीतरी मतलब। अभिप्राय। आशय। मज्ञा।  
 अतर्भावना-मज्ञा स्त्री० १ सोच विचार।  
 ध्यान। चिन्ता। २ गुणतत्त्व के अंतर से मत्स्याज की सुधारना।  
 अतर्भावित-वि० १ अतर्गत। अतर्भूत। सम्मिलित। भीतर। २ भीतर किया हुआ।  
 छिपाया हुआ। लुप्त।  
 अतर्भूत-वि० भीतर आया हुआ। शामिल।  
 द० "अतर्भूत"।  
 अतर्भूत-वि० दे० 'अतर्भाव'  
 अतर्भूत-वि० अनमना। उदास।  
 अतर्मल-सज्ञा पु० मन का कलुष या दुराद।  
 अतर्मुत्-वि० जिसका छिद्र या मुह भीतर की ओर हो। भीतरी मुँहवाला, जैसे अतर्मुत् फोडा।  
 क्रि० वि० जा बाहरी प्रपञ्च से हटकर परमात्मा की ओर उन्मुख हो। भीतर की ओर प्रवृत्त।  
 अतर्भावो-वि० १ जिसकी गति मन के भीतर तक हो। भीतर जानेवाला। २ अतर्करण से प्रेरणा करनेवाला। चित्त पर अधिकार

गगनेवाग। ३ मन की बात जाननेवाला मज्ञा पु० ईश्वर। परमेश्वर।  
 अतर्दाह्य-वि० दे० अतर्दाह्य (पु० मज्ञा)  
 मज्ञा के सब या अनेक गच्छों में सम्मिलित होनेवाला।  
 अतर्लब्ध-मज्ञा पु० ऐसा त्रिकोण क्षेत्र जिस भीतर छत्र का पतन हो।  
 अतर्लपिका-मज्ञा स्त्री० ऐसी पहली जिस उत्तर उसी पहली के अक्षरों में हो।  
 अतर्लान-वि० डूबा हुआ। मग्न। भी छिपा हुआ। विहीन। बाह्य प्रपञ्च विमूर।  
 अतर्बर्त्तो-वि० भीतरी। भीतर रहनेवाली अतर्बर्त्त-सज्ञा पु० अन्तिम वर्ण का। दन् चतुर्थ वर्ण का।  
 अतर्बर्त्तो-मज्ञा पु० पटित। विद्वान्। शा की जाननेवाला।  
 अतर्बिकार-सज्ञा पु० भ्रव, ध्याम, पीडा आ शरीर के धर्म।  
 अतर्बर्त्तो-मज्ञा पु० उर्वर विशेष जिस गेगी की पसीना नहीं आता।  
 अतर्बर्त्त-सज्ञा पु० [ वि० अतर्बर्त्त ] १ दश जिममें यज्ञो की वेदियाँ हो। २ बर्त्त वर्त्त। गंगा और यमुना के बीच का देश ३ दोआबा। दो नदियों के बीच का देश  
 अतर्बर्त्तना-मज्ञा स्त्री० अतर्करण की वेदना भीनरी या मानसिक कष्ट। मार्मिक पीडा।  
 अतर्बर्त्त-वि० अतर्द का निवासी। गंगा यमुना के दोआबा में बसनेवाला।  
 अतर्बर्त्त-सज्ञा पु० अतर्पुर-रक्षण। स्वाजा सरा।  
 अतर्हित-वि० गुप्त। छिपा हुआ। तिरोहित। अतर्दान। अदृश्य।  
 अतर्गम्या-सज्ञा स्त्री० (सुष्ठु रूप-अतर्गम्या १ भूमिशय्या। मृत्युगम्या। २ मरपट श्मशान। मसान। ३ मृत्यु।  
 अतर्ग-सज्ञा पु० अतर्करण। चित्त। हृदय अतर्ग-सज्ञा पु० शिष्य। चेला।  
 अतर्गम्य-सज्ञा पु० अतर्वाल। मरणवाक्य मृत्युवाक्य। दे० "इतर्वाल"।

अतस्तल-मज्ञा पु० मन। चेतना। हृदय।  
शरीर का भीतरी या मध्यवर्ती स्थान।

अतस्ताप-सज्ञा पु० मानसिक कष्ट। आन्तरिक  
पीडा।

अतस्थ-वि० [विशे० अतस्थित] १ भीतरी।  
२ बीच या मध्य में स्थित। बीचवाला।  
मध्यवर्ती ३ य, र, ल, व, अतस्थ वर्ण  
बहनाते हैं। (व्याकरण)।

अतस्मान्न-सज्ञा पु० यज्ञ विशेषों के समाप्त  
होने या पूर्णाहुति होने पर किया जानेवाला  
उन यज्ञ का अगम्य स्नान। (धर्मशास्त्र)

अतस्मल्लि-वि० [स्त्री० अतस्मल्लिला]  
जिसके जल का प्रवाह भीतर हो, बाहर न  
देख पड़े, जैसे सरस्वती नदी जो गुप्त  
पड़ी जाती है।

अतस्मल्लि-सज्ञा स्त्री० १. नरस्वती नदी।  
२ पल्लु नदी।

अताराष्ट्रिय-वि० संसार के सब या अनेक  
देशों से सम्बन्ध रखनेवाला। अथवा राष्ट्रीय  
से सम्बन्धित। सार्वराष्ट्रीय।

अतापरी-सज्ञा स्त्री० आँता का समूह।  
बैठडी।

अतावगापी-सज्ञा पु० १ गाँव की सीमा  
के बाहर रहनेवाला। २ अस्पृश्य।  
अछूत।

अतावगापी-सज्ञा पु० १ नाई। २ हिंसा  
करनेवाला। चाडाल।

अतिक-सज्ञा पु० समीप। पास। निकट।  
अतिम-वि० १ आखिरी। जो अंत में हो।

सयन पीछ का। २ सबसे बड़कर। हृद  
दर्जे का। चरम।

अतेउर, अतेवर-सज्ञा पु० रनिवास। जनान-  
स्थान। अतपुर।

अतेयासी-सज्ञा पु० १ गुर के समीप रहने-  
वाला विद्यार्थी। शिष्य। बेल। २ ग्राम  
के बाहर रहनेवाला। चाडाल। अत्यज।  
अछूत।

अतकरण-सज्ञा पु० १ मन। वह इन्द्रिय जो  
सम्बन्ध, विन्य, निश्चय, स्मरण तथा सुस्-  
दृग्नादि का अनुभव करती है। २ नैतिक  
गुण। विवेक।

अतपटी-सज्ञा स्त्री० किसी चित्रपट में नदी,  
पर्वत, नगर आदि का दिखलाया हुआ दृश्य।

१ सोम रस छानने का बर्तन। २ विवाह  
में यमराज को आहुति देते समय वर वधू  
और अग्नि के बीच डाला जानेवाला पर्दा।  
३ रंगमंच पर सबसे आगेवाले पर्दे के बाद  
के पर्दे।

अतपुर-सज्ञा पु० [मज्ञा अतपुरिक]  
जनानस्थान। रनिवास। भीतरी महल।  
परदे में रहनेवाली स्त्रिया के रहने का  
स्थान।

अतपुरिक-सज्ञा पु० कछुकी। अतपुर का  
रक्षक।

अताराष्ट्रिय-वि० दे० अताराष्ट्रिय।

अतशरीर-सज्ञा पु० आत्मा। लिगशरीर।

अतसज्ञा-सज्ञा पु० १ वह जीव जो अपने मुख-  
द्वारा के अनुभव को प्रकट न कर सके।  
जैसे, वृक्ष। २ अनुभव, चेतना।

अत्य-वि० अतिम। नीच। अधमजाति का।  
आखिरी। सबसे बाद का।

सज्ञा पु० १ वह जिसकी गणना अंत में हो।  
जैसे, लक्ष्मी में मीन, नक्षत्रों में रेवती।

२ दस सागर की सख्या (१०००,०००,  
०००,०००,०००)। यम।

अत्यकर्म-सज्ञा पु० अत्येष्टि क्रिया। प्रत्यकर्म।  
मरण के बाद से त्रयादशाह तक की पितृ-  
दानादि विधि।

अत्यज-सज्ञा पु० १ जिसका जन्म अतिम  
वर्ण में हुआ हो। शूद्र जो अछूत समझा  
जाय या जिसका छुआ हुआ जल द्विज  
ग्रहण न कर सकें, जैसे, घोड़ी, चमार  
आदि। २ चाडाल, डाम आदि, जिनका  
स्पर्श भी वर्जित है।

अत्यवर्ण-सज्ञा पु० शूद्र। १ अतिम वर्ण।  
२ वर्णमाला के अंत का अक्षर, 'ह'। ३  
पद के अंत में आनेवाला अक्षर। अत्याक्षर।

अत्यविमुक्त-सज्ञा स्त्री० आर्मा छत्र का एक  
भेद।

अत्या-सज्ञा स्त्री० १ चाडाल की स्त्री। चडा-  
स्त्री। २ अंत की। अतिम।

अत्याक्षर-सज्ञा पु० १ वह अक्षर जो किसी

शब्द या पद के अंत में आवे। २ वर्णमाला का अंतिम अक्षर "ह"।

अत्यासरी-सज्ञा स्त्री० किसी बड़े हुए दशाव या पद्य के अंतिम अक्षर के आरम्भ होने-वाला दूसरा पद्य या श्लोक कहना। (विद्या-धियों में प्रचलित)।

अत्यानुप्रास-सज्ञा पु० पद्य के शब्दों के अंतिम अक्षरों का सजातीय होना। एव शब्दालंकार। (साहित्य)

अत्येष्टि-सज्ञा पु० श्रिया कर्म। शवदाह से सम्पन्न तब की विधि।

त्रि० स० शवदाह।

अत्र-सज्ञा पु० अंतर्गत। अंत।

अत्रकून-सज्ञा पु० आँतों की गुडगुडाहट। आँतों का शब्द।

अंत्रवृद्धि-सज्ञा स्त्री० वह रोग जिसमें आँत उतर जाती है।

अंत्राडवृद्धि-सज्ञा स्त्री० विशेष रोग जिसमें आँतें उतरकर पाने में चली आती हैं और वह फूल जाता है।

अन्त्री\*-सज्ञा स्त्री० आँत। अंतर्गत।

अवअ-सज्ञा पु० सूर्यास्त से पहले का भोजन (जैन)।

अवर-त्रि० वि० [फा०] भीतर।

अवरसा-सज्ञा पु० मिठाई विशेष।

अवरुनी-वि० [फा०] भीतर का।

अदाज-सज्ञा पु० [फा०] [सज्ञा अदाजी, त्रि० वि० अदाजन] १ अनुमान। अटकल। मान। नाप जोख। कूत। तख्मीना। दे० 'अदाजा'। २ ढग। ढव। तोर। तर्ज। ३ चेष्टा। मटक। भाव।

अदाजन-त्रि० वि० [फा०] १ अनुमान से। अन्दाज से। अटकल से। २ लगभग। करीब।

अदाजा-सज्ञा पु० [फा०] अनुमान। अटकल। कूत। तख्मीना।

अदु, अदुब-सज्ञा पु० १ पाजेब। स्त्रिया के पैर में पहनने का वस्त्र पहना। पैरी। पैजनी। २ हाथी को बाँधने का साँवडा या रस्सी। अँडुआ-सज्ञा पु० लकड़ी का बना बाँटेदार यंत्र जो हाथियों के पिछले पैर में डाला जाता है।

अंदेशा-सज्ञा पु० [फा०] १. मोच। चिन्ता। २ मदेह। सद्यः। अनुमान। ३ खटवा। आनका। भय। डर। ४ ५ दुविधा। पगोपेश। अगमजम। पोछा।

अध-वि० [सज्ञा अधता] १ अधा। २ चक्षु-विहीन। चिन्ता और का। ३ व्यक्ति। २ मूर्ख। अज्ञानी। ४ अविशेषी। बुद्धिहीन। ३ अचेत। ५ गाफित। ४. उन्मत्त। मन्मत्। मनवाला

सज्ञा पु० १ वह व्यक्ति जिसे अ न हो। नेत्रहीन प्राणी। अधा। २ पाजल। ३ चमगादड़। ४ उन्मत्त। ५ ६ कार। अधेरा। ६ कवियों द्वारा नि

पद्धति के विरुद्ध वर्णन का वाच्य-शेष

अधक-सज्ञा पु० १ अधा। बिना और का मनुष्य। दृष्टिहीन व्यक्ति। २ दैत्य।

कश्यप और दिति का पुत्र था। ३ वे विशेष। ४ मुनि विशेष। महाभारत

वर्णित एक देश-विशेष के निवासी।

अधकार-सज्ञा पु० तिमिर। अधेरा।

अधकप-सज्ञा पु० १ अधा कुआँ। सू कुआँ। वह कुआँ जिसका जल सूख गया और जो धाम-पात से ढका हो। २ एक न

का नाम। ३ अधकार।

अधलोपडो-सज्ञा स्त्री० मूर्ख। भोड़ू। नाममत्त बुद्धि रहित।

अधड-सज्ञा पु० आँधी। तूफान। गर्द से भ

बड़े शोक की वायु।

अधतमस-सज्ञा पु० १ घोर अधकार

गहिरा या गाढा अधेरा। २ नरक-विशेष

अधता-सज्ञा स्त्री० १ दृष्टिहीनता। अधापन

२ मूर्खता (लाक्षणिक प्रयोग)।

अधतामिल-सज्ञा पु० १ घोर अधेरेवा

नरक। २ साम्य में इच्छा के विपर्यय।

विधात के पाँच भेदों में से एक। ३ जीने व

इच्छा रहने भी मरने का भय। ४. पाँ

कलेशों में से एक। मृत्यु का भय। (योग

५ इस नाम का नरक।

अधधुध\*-सज्ञा स्त्री० दे० "अधाधुध"। अध

के समान, बिना नियम के।

अंधपरपरा-सज्ञा स्त्री० १ बिना विचारे या समझ-बूझ दूसरो का या पुरानी चाल का अनुकरण। २ भेडियाघँसान। ३ लकीर के फकीर।

अंधपूतना-ग्रह-सज्ञा पु० बालको का एक रोग-विशेष।

अंधवाई\*-सज्ञा स्त्री० अंधड। तूफान। आंधी।

अंधेरा\*-\*वि० दे० "अंधा"।

अंधेरी-सज्ञा स्त्री० १ अंधी स्त्री। २ पहिए की गोलाई को पूरा करनेवाली धनुष के आकार की लकड़ियों की चूल।

अंधविश्वास-सज्ञा पु० बिना विचार किये किसी बात पर विश्वास। विवेकशून्य धारणा। तब की कमीटी पर प्राय खरा न उतर सनेवाला विश्वास।

अपस-मज्ञा पु० भात। रांधे हुए चावल।

अपमृत-सज्ञा वि० अच्ये का पुन। राजा दुर्गायन आदि।

अपसंख्य-मज्ञा पु० सेना जो शिक्षित न हो।

अपा-मज्ञा पु० [स्त्री० अंधी] जिसे कुछ दिखलाई न पड़े। दृष्टिरहित जीव।

वि० १ बिना आव बा। दृष्टिरहित। २ विचार-रहित। मूर्ख। अविवेकी। जो अच्छे-बुरे का विचार न रखता हो।

मुहा०-अपा बनना=जान बूझकर किसी बात पर ध्यान न देना।-अंध की लकड़ी या लाठी=१ एकमात्र सहारा। आधार या आगरा। २ दबलोता लड़ना। अंधा दीया=

यह दीपन जो मद या धुंधला जलता हो।-अपा भेसा=एक प्रकार का लटका का गल।

अपा बनाना=ग्रम में डालना। मूर्ख बनाना। ३ जिगमें कुछ दिगाई न दे। अपहार।

मो०-अपा सीमा या आटना=धुंधला दपण। कट सीमा जिगमें घेरा माप न दिगाई देना रा। अपा बुझा=१ गूना बुझा। वह बुझा जिगमें पानी न हो और जिगका मुँह पाप पान में दबा हो। २ लटका का गल दिगना।

अपापुप-मज्ञा स्त्री० १ अंध अपेरा। पाप अपहार। २ अन्याय। अधर। अधिपार। धोनाधीनी। गन्धर।

अंधार\*-\*सज्ञा पु० दे० "अंधेरा"। सज्ञा पु० रस्ती का जाल जिसमें भूसा, घास आदि भरकर बेल पर लादते हैं।

अंधाहुली-सज्ञा स्त्री० दे० "चोरपुष्पी"।

अंधियारा\*-\*सज्ञा पु० वि० दे० "अंधकार" या "अंधेरा"।

अंधियारा\*-\*सज्ञा पु० वि० दे० "अंधकार" या "अंधेरा"।

अंधियारी-सज्ञा स्त्री० वह पट्टी जो शिकारी पक्षियों, उपद्रवी घोड़ों और चीतों की आँख पर बांधी जावे।

अधिसधि-स० पु० छिद्र। छेद। भोंका। गढा।

अधु-मज्ञा पु० कुआँ। जल।

अधर-सज्ञा पु० १ उत्पात। अन्याय। अत्याचार। जुल्म। २ कुप्रबंध। अधाधुध। उपद्रव। गडबड। धोनाधीनी।

अधेरखाता-मज्ञा पु० १ गडबडी। व्यतिक्रम।

हिसाब-किताब और व्यवहार में गडबडी। २ अविचार। अन्याय। कुप्रबंध। अन्यथा-चार।

अंधेरना\*-\*वि० स० अंधेरा करना।

अंधेरा-मज्ञा पु० [स्त्री० अंधेरी] १ प्रकाश का अभाव। अन्धकार। तम। २ धुंधला-पन। धुंध।

यो०-अंधेरा गुप=घोर अंधकार। ऐसा अंधेरा जिसमें कुछ दिखाई न दे। ३ परछाई। छाया। ४ शान। उदामी। उत्साहहीनता।

वि० अंधकारमय। प्रकाशरहित।

मुहा०-अंधेरे घर का उजाला=१ अत्यंत सुंदर। वाणिमान्। २ दुम लड़नावाला। कुलदीपक। बरा की मर्यादा बढानेवाला।

३ दब-सीता बंटा। मुँह अंधेरे या अधरे मुँह=बड़े मन्त्रे। बड़े तक्के।

अंधेरा-उजाला-मज्ञा पु० "रात-दिन" का मिश्रण। कागज मोड़कर बनाया हुआ लटका का एक लियौना।

अंधेरिया-मज्ञा स्त्री० १ अंधेरा। अंधकार। २ अंधेरी रात। काली रात। अंधेरा पाग।

मज्ञा स्त्री० [देन०] उज की पहली गोलाई।

अंधेरी-मज्ञा स्त्री० १ अपकार। नम। प्रकाश का अभाव। २ अंधेरी रात। काली

रात। काली रात। अंधेरा पाग।

मज्ञा स्त्री० [देन०] उज की पहली गोलाई।

अंधेरी-मज्ञा स्त्री० १ अपकार। नम। प्रकाश का अभाव। २ अंधेरी रात। काली

रात। काली रात। अंधेरा पाग।

मज्ञा स्त्री० [देन०] उज की पहली गोलाई।

रात। ३. आंधी। अधड। ४. घोडो या बैलों की आँख पर डालने का परदा। दे० 'अंधियारी'।

मुहा०—अंधेरी डालना या देना = किसी को आँख मूंदकर उसकी दुर्गति करना। वि० प्रकाशरहित। सममाच्छादित। बिना उजले की। जैसे—अंधेरी रात।

मुहा०—अंधेरी कोठरी = १. पेट। गर्भ। घरन। कोख। २. गुप्त भेद। रहस्य।

अंधोटी—सज्ञा स्त्री० अंधियारी। घोड़े या बाल की आँख बंद करने का ढक्कन।

अंध्यार\*—सज्ञा पु० दे० "अधकार" या "अंधेरा"।

अंध्यारी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "अंधेरी"।

अंध्र—सज्ञा पु० १. गिनारी। बहेलिया। चिड़ीमार। व्याध। २. वैदेहक पिता और करावर माता से उत्पन्न नीच जाति। दक्षिणदेश का एक प्रान्त विणेष। अंध्र या आंध्र देश का निवासी।

अंध्रभृत्य—सज्ञा पु० मगध देश का एक प्राचीन राजवंश।

अंध्र—सज्ञा स्त्री० दे० "अवा"। माता। सज्ञा पु० आम का वृक्ष। पेड़।

अंधक—सज्ञा पु० १. नेत्र। आँख। चक्षु। २. पिता। ३. ताँबा।

अंधत—सज्ञा पु० खट्टा, खटाई।

अंधर—सज्ञा पु० १. कपडा। वस्त्र। पट। २. स्त्रियों के पहनने की एक रंगी किनारेदार धोती। ३. आसमान। आकाश। ४. कपास। ५. एक सुगंधित वस्तु जो ह्वेल मछली की अँठडियों में जमी हुई मिलती है। ६. इत्र। ७. अन्नक धान। अवरक। ८. गजपूताने का एक प्राचीन नगर। ९. अमृत। १०. प्राचीन ग्रंथों के अनुसार उत्तरीय (वच०)

भारत का देश-विशेष। ११. मेघ। बादल। अंधरवारी—सज्ञा पु० विनोप झाड़ी जिसकी लकड़ी और जड़ से रसवन या रमीत निचलता है। दाह हन्दी। चित्रा।

अंधर-अंधर—सज्ञा पु० संध्या-समय की लाली जो सूर्य के डूबते समय होती है। (मेघ)

अंधरबेलि—सज्ञा स्त्री० आनामबेल।

अंधराई—सज्ञा स्त्री० आम की बारी। आम का बगीचा। अंधराव।

अंधराव\*—सज्ञा पु० दे० "अंधराई"।

अंधरात—सज्ञा पु० १. कपड़े का किनारा।

२. शिनिज। वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिले हुए दिगई देने हैं।

अंधरीप—सज्ञा पु० १. भाट। २. बा

मिट्टी का बर्तन जिसमें भट्ठभूजे गरम दाल डालकर दाना भूतते हैं। ३. शिव।

४. विष्णु। ५. सूर्य। भास्कर। ६. विद्योप

अर्थात् ११ वर्ष से छोटा बालक। ७. विनोप नरक। ८. अयोध्या का एक सूर्यवंशी

परम वैष्णव राजा। ९. आमड़े का पेड़ और फल। १०. अनुताप। पञ्चात्ताप।

११ लड़ाई। युद्ध। समर।

अंधरीक—सज्ञा पु० देवता।

अंधल—सज्ञा स्त्री० मादक वस्तु। खट्टा रस

अवष्ट—सज्ञा पु० [स्त्री०] १. पञ्चाव के मध्यभाग का प्राचीन नाम।

२. अवष्ट देश में बसनेवाला मनुष्य। ३. ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न जाति-विशेष। (स्मृति)। ४. हाथीवान।

पोलवान। महावत। हस्तिपक।

अवष्टा—सज्ञा स्त्री० १. अवष्ट की स्त्री।

२. ब्राह्मणी लता। पाटा।

अंबा—सज्ञा स्त्री० १. जवनी। माता। मा। अम्मा। २. दुर्गा। पार्वती। देवी। ३. एक

लता। पाटा अवष्टा। ४. वासी के राजा इन्द्रधुम्न की तीन बन्ध्याओं में सबसे बड़ी जिन्हें भीष्म पितामह अपने भाई विचित्र-

वीर्य के लिए हर लाये थे।

अवापोली—सज्ञा स्त्री० अमावस। अमरम।

अवार—सज्ञा पु० [पा०] समूह। डेर। राशि।

अंबारी—सज्ञा स्त्री० १. चंदवा। हाथी की पीठ पर रखने का हीरा जिसके ऊपर एक छज्जेदार भटप होता है। २. छज्जा।

अंबालिका—सज्ञा स्त्री० १. माता। मा। दे० 'अवष्टा' २. अवष्टा लता। ३. वासी के राजा इन्द्रधुम्न की उन तीन बन्ध्याओं में

ते सबसे छोटी जिसे भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए हर कर लाये थे।  
विका-संज्ञा स्त्री० दे० 'अंवा' १. माता।  
मा। २. देवी। दुर्गा। पार्वती। ३. जनों की एक देवी। ४. कुटकी का वृक्ष। ५. अंघठा लता। ६. काशी के राजा इंद्रद्युम्न की उन तीन कन्याओं में मझली, जिसे भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए हरकर लाये थे।

अंबिकेय-संज्ञा पुं० १. गणेश। २. कात्तिकेय।  
३. धृतराष्ट्र। ४. अंबिका के पुत्र।  
अंबिया-संज्ञा स्त्री० टिकोरा। केरी। बिना जाली पड़ा आम का छोटा कच्चा फल।

अंबिरया\*-वि० वृथा। व्यर्थ। बेकार।  
अंबु-संज्ञा पुं० १. जल। पानी। सलिल।  
नौर। २. सुगंधवाला। ३. चार की संख्या।  
४. जन्मकुंडली के १२ स्थानों या घरों में चौथा।

अंबुकण-संज्ञा पुं० ओस। तुषार। शीत।  
सीकर।

अंबुज-संज्ञा पुं० [स्त्री० अंबुजा] १. कमल।  
पद्म। २. जल से उत्पन्न वस्तु। ३. वज्र।  
४. वेत। ५. ब्रह्मा। ६. शंख। ७. जल से उत्पन्न कोई भी वस्तु।

अंबुजम्-संज्ञा पुं० कमल। पद्म। पंकज।  
अंबुद-वि० जो जल दे।

अंबु-संज्ञा पुं० १. मेघ। घटा। बादल। २. मोथा।  
अंबुधर-संज्ञा पुं० वारिद। मेघ। बादल।  
वारिधर।

अंबुधि-संज्ञा पुं० समुद्र। सागर। सिंधु।  
जलधि। पायोधि।

अंबुनिधि-संज्ञा पुं० समुद्र। सागर। पयोधि।  
वारिधि।

अंबुप-संज्ञा पुं० १. सागर। समुद्र। २. वरुण।  
३. शतभिषा नक्षत्र।

अंबुपनि-संज्ञा पुं० १. सागर। २. वरुण।  
अंबुभूत-संज्ञा पुं० १. मेघ। बादल। २. सागर।  
३. मोथा।

अंबुराशि-संज्ञा पुं० सागर। समुद्र।  
अंबुरह-संज्ञा पुं० कमल।

अंबुवाह-संज्ञा पुं० मेघ। बादल। वारिद।  
अंबुवेतस-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पानी में होनेवाला वेंत।

अंबुशायी-संज्ञा पुं० भगवान् विष्णु।  
अंबोद-संज्ञा पुं० बादल। जलद। अम्र। मेघ।  
अंबोह-संज्ञा पुं० [फा०] शूंड। समाज।  
जमघट। भीडभाड़। समूह।

अंभ-संज्ञा पुं० दे० 'अंबु' १. पानी। जल।  
२. पितरलोक। ३. लग्न से चौथी राशि।  
४. चार की संख्या। ५. देवता। ६. पितर।  
७. असुर। राक्षस।

अंभसू-संज्ञा पुं० [सं०] अंबु। जल। पानी।  
अंभसार-संज्ञा पुं० मोती।

अंभनिधि-संज्ञा पुं० दे० "अंभोनिधि"। समुद्र।  
सागर। जलधि।

अंभोज-वि० जल से उत्पन्न।  
संज्ञा पुं० १. पद्म। कमल। २. चंद्रमा।

३. सारस पक्षी। ४. शंख। ५. कपूर।  
अंभोघर-संज्ञा पुं० १. जलद। बादल। मेघ।  
२. मोथा।

अंभोनिधि-संज्ञा पुं० सागर। समुद्र।  
अंभोराशि-संज्ञा पुं० सागर। समुद्र।

अंभोरह-संज्ञा पुं० पद्म। नलिन। अरविद।  
कमल।

अंबरा-संज्ञा पुं० दे० "अंबला"।  
अंश-संज्ञा पुं० १. विभाग। भाग। टुकड़ा।

२. बांट। हिस्सा। ३. भाज्य अंक। ४. भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। ५. चौथा भाग। ६. सोलहवां भाग। कला। ७. वृत्त की परिधि का ३६०वां भाग जिसे इकाई मानकर कोण वा चाप का प्रमाण बतलाया जाता है। ८. कारबार या लाभ का हिस्सा। ९. वारह आदित्यों में से एक। १०. दिन। ११. पितृधन का भाग।

अंशक-संज्ञा पुं० [स्त्री० अंशिका] दे० 'अंश' १. टुकड़ा। भाग। २. दिन। ३. पट्टीदार। हिस्सेदार। सासीदार।  
वि० १. अंश धारण करनेवाला। अश-धारी। २. विभाजक। बाँटनेवाला।  
अंशतः-क्रि० वि० किसी अंश में। कुछ हद तक। थोड़ी मात्रा में।

अंशपत्र-सज्ञा पु० वह भागज जिसमें पट्टी-  
दारो वा हिम्सा या अश लिपा हो।

अंशल-मज्ञा पु० बाँटनेवाला। भाग करने-  
वाला। चाणक्य मुनि।

अंशमुता-सज्ञा स्त्री० यमुना।

अंशवतार-संज्ञा पु० वह अवतार जो पूर्ण  
न हो और जिसमें परमात्मा की शक्ति का  
कुछ अंश ही हो।

अंशांश-सज्ञा पु० भाग का भाग।

अंशी-वि० [ स्त्री० अशिनी ] १. अंशधारी।  
अंश रखनेवाला। २. अवतारी। देवता  
की सामर्थ्य या शक्ति रखनेवाला।

सज्ञा पु० हिस्सेदार। अवयवी। बटाऊ।  
भागी। बाँटनेवाला। बटवैया।

अंशु-सज्ञा पु० १. रश्मि। किरण। प्रभा।  
आभा। २. लता का कोई भाग। ३. तागा।  
सूत। ४. बहुत सूक्ष्म हिस्सा। ५. दिनकर।  
सूर्य। ६. मयूख।

अंशुक-सज्ञा पु० १. रेशमी कपड़ा। २. पतला  
या महीन कपड़ा। ३. दुपट्टा। उपरना।  
४. ओढ़नी। ५. तेजपात।

अंशुजाल-सज्ञा पु० रश्मि-समुदाय।

अंशुघर-मज्ञा पु० १ रश्मिधारी। सूर्य।  
२ अग्नि। ३ चन्द्रमा। ४ दीप। ५ देवता।  
६ ब्रह्मा। ७ प्रतापी।

अंशुनाभि-सज्ञा स्त्री० वह बिंदु जिस पर  
समानांतर प्रकाश की किरणें तिरछी और  
इकट्ठी होकर मिलें।

अंशुमान्-सज्ञा पु० १. दिनकर। सूर्य।  
२. अयोध्या के सूर्यवंशीय राजा विशेष।

अंशुमाला-सज्ञा स्त्री० सूर्य की किरणें या  
उजवा जाल।

अंशमाली-मज्ञा पु० १. सूर्य। २. तिग्मरश्मि।

अंश-सज्ञा पु० दे० "अश"। १. भाग।  
हिस्सा। २. कथा।

अंशल-वि० बलवान्।

अंशुआ, अंशुवा\*-सज्ञा पु० दे० "आँसू"। अश्रु।

अंशुवाना\*—क्रि० अ० आँसू से भर जाना।  
अश्रुपूर्ण होना।

अंश-सज्ञा पु० १. दुष्कर्म्म। अपराध। पाप।  
२. व्याकुलता। दुःख। ३. बाधा। विघ्न।

अंशुहा-मज्ञा पु० बटवारा। तोलने का

अंशुपात-मज्ञा पु० मल मास। क्षय मास।

अंशुही-मज्ञा स्त्री० लना-विशेष। बाकला  
बरकला।

अउर\*-मयो० दे० "तया" "और"।

अउत\*-वि० [ स्त्री० अऊनी ] १ पुत्रहीन  
जिमके सन्तान न हो। विना पुत्र का। निपूता  
निर्वंश। क्वारा। २ मूर्ख। जाहिल।

अऊलना\*-क्रि० अ० १. जलना।  
होना। २. गरमी पड़ना। दे० "ओलना"  
३ छिदना। चुभना। ४. छिपना।  
छिलना।

अकंटक-वि० १. बिना काँटे का। २. वा  
रहित। बिना रोक टोक का। ३ शत्रु-रहित,  
अविरोधी। निरुपाधि। चैन से।

अकंपन-वि० [ वि० अकपित, अकप्य ]  
१ दृढ़। कठोर। न कांपनेवाला। स्थिर  
२ मजबूत।

सं पु० रावण के एक सेनापति का नाम

अक-सज्ञा पु० १. पाप। २ दुःख।

अकउआ-सज्ञा पु० अकं। मदार। अकवन

अकच-सज्ञा पु० केतुग्रह।

वि० बिना बालो का।

अकच्छ-वि० १. नगा। नग्न। २. व्या  
चारी। परस्त्रीगामी। ३. मेहरा। लम्पट  
४. जैन सम्प्रदाय के साधु, विशेषतः  
निर्ग्रन्थ कहे जाते हैं। ५. जो धोती ॥  
की लाँग न बांधे।

अकड़-सज्ञा स्त्री० १. ऐंठ। सिखाव। बल।  
मरोड़। २. बड़ाई के साथ ऐंठ। ३.  
अहंकार। घमड़। शेखी। ४. घुप्टता।  
ढिठाई। ५. हठ। जिद। अड। ६. टेढ़ापन।  
बाँकापन। ७. फुलाहट।

अकड़ना-क्रि० अ० [ सज्ञा अकड़, अकड़ाव ]  
१ ऐंठना। सूखकर सिकुटना और कड़ा  
होना। २. ठिठुरना। मुन्न होना। ३. तनना।  
छाती को उभाड़कर डील को थोड़ा पीछे  
की ओर झुमाना। ४. शेखी करना। घमड़  
दिखाना। ५. घुप्टता या ढिठाई करना।  
६. हठ करना। जिद करना। अडना।  
७. चिटकना। मिजाज बदलना।

अकडवाई-सज्ञा स्त्री० ऐंठन। कुड़ल। सरीर की नसों का पीड़ा के सहित खिचना। अंगग्रह। वातरोग। नसों का अकडना। अकडवाज-मज्ञा पु० अकडैत। छेला। बाँका। वि० धोखीबाज। अभिमानी। ऐंठदार। अकडवाजो-सज्ञा स्त्री० धोखी। अभिमान। ऐंठ।

अकड-मकड-सज्ञा स्त्री० ऐंठकर चलने की चाल। घमड। अभिमान।

अकड़ा-पज्ञा पु० रोग-विशेष।

अकड़ाव-सज्ञा पु० खिचाव। तनाव। ऐंठन।

अकडैत-वि० दे० "अकडवाज"। अभिमानी। बाँका। छेला।

अक\* -वि० पूर्ण। सारा। समूचा।

नि० वि० बिलकुल। सरासर।

अक्य-वि० १. अवर्णनीय। जो कहा न जा सके। अनिवर्चनीय। २. न कहने योग्य।

अक्या-पज्ञा स्त्री० १. कुकथा। मन्दकथा। २. अपभाषा।

अक्यनीय-वि० दे० "अक्य"। जो न कहा जा सके। अनिवर्चनीय। अवर्णनीय। न कहने योग्य।

अक्य्य-वि० दे० "अक्य"। अवर्णनीय। अनिवर्चनीय। न कहने योग्य।

अक्यक\* -सज्ञा पु० १. आगा पीछा। सोच विचार। २. आशंका। डर। भय।

अकनना\* -क्रि० स० १. आहट लेना। कान लगाकर सुनना। २. सुनना।

अकना-क्रि० अ० धवराना। ऊब जाना।

अकपट-वि० कपटहीन। सरल। सीधा। छल-रहित।

अकपटता-सज्ञा स्त्री० उदारता। सरलता।

अकवक-सज्ञा स्त्री० १. निरर्थक वाक्य।

अनाप शनाप। व्यर्थ का वकना। असबद्ध प्रलाप। २. घडका। धवराहट। खटका।

३. चतुराई। छवका-पज्ञा।

वि० [स० अवाव] निस्तब्ध। भीचक्का।

अकवकाना-क्रि० अ० धवराना। चकित या भीचक्का होना।

अकवरी-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. मिटाई-

विशेष। २. लकड़ी पर की एक प्रकार की नक्काशी।

वि० अकवर बादशाह सबधी।

अकवाल-संज्ञा पु० दे० "इकवाल"। प्रताप।

अकर-वि० १. कठिन। न करने योग्य।

विषट। २. बिना हाथ का। हस्तरहित।

३. बिना महमूल या कर का।

अकरकरा-सज्ञा पु० पौधा-विशेष की जड़ जो दवा के काम में आती है।

अकरखना\*-क्रि० स० १. तानना। खीचना।

२. चढ़ाना।

अकरण-सज्ञा पु० [वि० अकरणीय] १. कर्म

की कमी या अभाव। २. फलरहित

या कर्म न किये हुए के समान होना।

३. बिना इन्द्रियों के। ईश्वर। परमात्मा।

वि० कठिन। न करने योग्य।

\*वि० बिना कारण का।

अकरणीय-वि० जो करने के योग्य न हो।

न करने लायक।

अकरा\* -वि० [स्त्री० अकरी] १. मोल

न लेने योग्य। तेज। महंगा। अधिक

दान का। २. श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया।

खरा।

अकरास-सज्ञा स्त्री० देह टूटना। अंगडाई।

सज्ञा स्त्री० मुस्ती। आलस्य।

अकरासू-वि० स्त्री० गर्भिणी। गर्भवती।

अकरी-सज्ञा स्त्री० लकड़ी का चोगा जो

हुल में लगा रहता है और जिसमें से

बीज डालते जाते हैं।

अकर्त्तव्य-वि० जो करने योग्य न हो।

जिसे करना उचित न हो।

अकर्त्ता-वि० १. कर्म न करनेवाला। कर्म

से विरत। २. 'शास्त्र' का पुरुष, जो कर्मों

से निलिप्त रहता है।

अकर्त्तक-सज्ञा पु० जिसका कोई रचयिता

या कर्त्ता न हो।

अकर्म-सज्ञा पु० १. न करने योग्य

काम। कुकर्म। अपराध। पाप। अपर्म।

बुराई। बुरा कर्म। २. कर्म का अभाव।

वि०-कामहीन, बेकार बैठ। निगोडा।

चाण्डाल। अपराधी।

अवमंश-मज्ञा पु० ऐसी प्रिया जिसे किसी पुरुष की आवश्यकता न हो। (व्या०)  
अवमंश्य-वि० आलसी। कुछ काम न करने वाला। काम करने के अयोग्य। गया-बीता।

अवमंश्यता-सज्ञा स्त्री० अवमंश्य होने का भाव। निवृत्तापन। आलस्य।

अवमर्मी-सज्ञा पु० [स्त्री० अवमिणी]  
पापी। दुष्टर्मी। अपराधी। बुरा कर्म करनेवाला।

अकलक-वि० निष्कलक। निर्दोष। दोषरहित।  
†सज्ञा पु० लाछन। दोष।

अकलकता-सज्ञा स्त्री० निष्कलकता। निर्दोषिता।

अकलकित-वि० निर्दोष। कलकरहित।

अकल-वि० १ जिसके अवयव न हों। जिसके खंड न हों। समूचा। २ जिना चतुराई या कला का।

वि० विक्ल। व्याकुल। बेचैन।

सज्ञा स्त्री० दे० "अकल"।

अकलुष-वि० जिसमें कोई पाप या दोष न हो। पवित्र। शुद्ध। निर्मल। साफ।

अकल्पित-वि० सच्चा। कल्पना-रहित।

अकल्याण-वि० अमंगल। अशुभ। अनुभ, मन्द। बुरा।

अकलखुरा-वि० १ अकेला खानेवाला। मतलबी। स्वार्थी। २ मनहूस। रूखा। जो मिलनसार न हो। ३ डाही। ईर्ष्यालु।

अकलवीर-सज्ञा पु० १ भाग की तरह का पीछा विशेष। २ वज्र। कलवीर।

अकवत-सज्ञा पु० मदार। आक। अकौआ।

अकवार-सज्ञा पु० कुक्ष। काँव। गोदी। दोना हाथों के बीच का स्थान।

अकस-सज्ञा पु० १ शत्रुता। द्वेष। अदावत। घेरा। २ घुरी उत्तेजना। ईर्ष्या।

अकसना-क्रि० स० १ शत्रुता रखना। घेरा करना। २ बराबरी करना।

अकसर-क्रि० वि० [अ०] बहुधा। प्रायः। अधिकतर। विशेष करके। बहुत करके। \*क्रि० वि०, वि० बिना किसी साथ के। अकेले।

अकसीर-मज्ञा स्त्री० [अ०] १ रसायन कीमिया। वह रस या भस्म जो धातु सोना या चाँदी बना दे। २ वह अ जो प्रत्येक रोग का नाश करे।

(वि०) अत्यर्थ। अत्यन्त गुणगारी।

अकस्मात्-क्रि० वि० १ सहसा। अचानक। एकवारगी। अनायास। २ अपने देवयोग से। मयोगवश।

अकह\* -वि० दे० "अकथ"। न कहने अवर्णनीय।

अकहुवा\* -वि० दे० "अकथ"। कथनीय

अका - (वि०) निर्दोष। जड़। मृद। पागल। अकाड-वि० शास्त्रारहित।

क्रि० वि० सहसा। एकवारगी।

अकाडताडव-मज्ञा पु० बितडावाद।

की उछल-बूद या बक्वाद।

अकाडपात- (वि०) होने ही मर जाना वाला।

अकाज-मज्ञा पु० [वि० अवाजना, वि अवाजी] १ बिगाड़। कार्य की हानि। विघ्न। नुकसान। हर्ज। २ बुरा या खोटा काम। दुष्टकर्म।

\*क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बिना काम अकाजना\* -क्रि० अ० १ हानि होना। २ मरना। गत होना।

क्रि० स० हानि या हर्ज करना।

अकाजी\* -वि० [स्त्री० अनाजिन] करनेवाला। वाधक। कार्य की हानि करने वाला।

अकाट्य-वि० न काटने योग्य। जिसका खंडन न हो सके। मजबूत। दृढ़।

अकाम-वि० बिना इच्छा के। कामनारहित। निःस्पृह।

क्रि० वि० बिना काम के। अकारण। निष्प्रयोजन। व्यर्थ।

अकामनिजरा-सज्ञा स्त्री० जेना के मतानुसार कर्मनाश का भेद विशेष।

अकाम-वि० १ शरीररहित। बिना दह के। २ जन्म न लेनेवाला। शरीर न धारण करनेवाला। ३ निराकार।

अकार-मज्ञा पु० "अ" अक्षर।

गरज\*—सज्ञा पु० १ वाम की हानि। हर्ज।  
वसान। २ बुरा वाम।

गरम-वि० दे० "अकारण"।

गरण-वि० १ बिना कारण का। बिना  
जह का। २ स्वयम्भू। जिसकी उत्पत्ति  
न कोई कारण न हो।

क० वि० बिना कारण। घेसबय। व्यर्थ।  
निरर्थक।

हारय\*—क्रि० वि० निष्फल। बेकाम। बिना  
प्रयोजन। व्यर्थ। जिसमें कोई लाभ न हो।  
काल-सज्ञा पु० [ वि० अवालोक ] १  
कुसमय। अनवसर। २ दुर्भिक्ष। दुष्काल।  
नजी। महेशी।

कि० अ०—भुखमरी पड़ना।

३ कमी। घाटा। ४ सिक्ख संप्रदाय में  
परमात्मा का नाम।

कालकुसुम-सज्ञा पु० १ बिना क्रतु या समय  
का फूल (अशुभ)। २ बेसमय की चीज।

कालपुरष-सज्ञा पु० सिक्खों के ग्रन्थों में  
दैत्यर नाम है।

कालमूर्ति-सज्ञा स्त्री० अविनाशी या नित्य  
पुरुष।

कालमृत्यु-सज्ञा स्त्री० कुसमय की मीत।

असामयिक मृत्यु। कम अवस्था में मरना।

प्रकालिक-वि० असमय में होनेवाला। बे-  
मौका। असामयिक।

प्रकाली-सज्ञा पु० [ सिक्ख विशेष ] नानक-  
पंथी साधु जो चक्र के साथ सिर में बाले  
रस की पगड़ी बांधे रहते हैं।

अकाश\*—सज्ञा पु० दे० "आकाश"। मदार।

अकास\*—सज्ञा पु० दे० "आकाश"।

अकासदीप-सज्ञा पु० दस में लटकया जाने  
वाला दीप (वास्तविक मास में एक धार्मिक  
विधि)।

अकाशबानी-सज्ञा स्त्री० दे० "आकाश  
वाणी"।

अकाशी\*—सज्ञा स्त्री० १ धौल। २ ताड़ी।

अकिंचितकर-वि० जिससे कुछ न हो सके।

अशय्य। अशमर्थ।

अकिंचन-वि० १ खरिद। होना। दुखी। निर्धन।  
बगाल।

अकिंचनता-सज्ञा स्त्री० गरीबी। निर्धनता।

अकिल\*—सज्ञा स्त्री० दे० "अकल"। बुद्धि।

अकिलबाद-सज्ञा पु० पूरी युवा अवस्था  
प्राप्त होने पर निकलनेवाला अतिरिक्त  
दांत।

अक्कीक-सज्ञा पु० [ अ० ] एक प्रकार का  
लाल पत्थर जिस पर मूहर खोदी जाती है।

अकीर्ति-सज्ञा स्त्री० बदनामी। अयश। अप-  
यश।

अकीर्तिकर-वि० दुर्नाम करनेवाला।  
अयशस्वर।

अकूठ-वि० १ तेज। तीव्र। २ चोखा।  
तीक्ष्ण। ३ उत्तम। खरा।

अकुताना\*—क्रि० अ० दे० "उकताना"।  
ऊबना। धक्काना।

अकुल-वि० १ जिसके कुल में कोई न हो।  
२ नीच या बुरे कुल का। निगोडा।

सज्ञा पु० बुरा कुल। नीच कुल।

अकुलाना-क्रि० अ० १ ध्वाकुल होना।  
पबराना। २ लीन होना। मग्न होना।

३ जल्दी करना। उतावला होना।

अकुलीन-वि० कमीना। धुंद। कुलहीन। नीच  
वश में उत्पन्न। कुशाति।

अकुशल-वि० अमंगल, अशुभ। बुरा।

अकूत-वि० अपरिमित। जो कूता न जा सके।  
बेअंदाज।

अकुल-वि० जिसका किनारा न हो। जिसका  
कोई अन्त न हो।

अकूहल\*—वि० (देश०) अधिक। बहुत।  
उछादा।

अकूत-वि० १ बिगाड़ा हुआ। २ बिना  
किया हुआ। ३ स्वयम्भू। जो किसी का बनाया  
न हो। नित्य। ४ प्राकृतिक। ५ बेकाम।

निकम्मा। ६ मदा। बुरा।

अकूतज्ञ-वि० कृतघ्न। बिय हुए उपकार  
को न माननेवाला।

अकूतम-वि० प्राकृतिक। जो दनाष्टी न हो।

अकूती-वि० जिससे कुछ न हो सके।  
अवर्ण्य।

अकेला-वि० [ स्त्री० अकेली ] १ बिना  
साथी का। तनहा। २ निराला। अद्वितीय।

यो०-अवेल दम=एक ही जीव। अवेल  
दुवेल=एक या दो। अधिक नहीं।  
सज्ञा पु० एसात। निर्जन स्या।

अवेले-त्रि० वि० १ एवामी। सापी-रहित।  
२ केवल।

अवोतर सौ\*-वि० एक सौ एक। गो के  
ऊपर एर।

अवोर-स० स्त्री० घृग। मुहमरी। तोहपा।  
अवोसना\*-त्रि० स० दे० 'वोसना'। बुरा-  
बला कहना। गालियाँ देना। धाप देना।  
अवोया-सज्ञा पु० १ आव। मदार। २ गले  
का बोझ। घटी।

अकं-सज्ञा पु० मदार। द० अवोवा।

अक्लड-वि० १ उद्धत। किसी का कहना  
न माननेवाला। उच्छृंखल। २ शगडालू।  
विगडल। ३ बेहतर। निर्भय। ४ अशिष्ट।  
असम्य। उद्गड। ५ उजड। जड।  
६ सरा। स्पष्टवक्ता।

अक्लडपन-सज्ञा पु० १ उजडपन। अशिष्टता।  
असम्यता। २ उग्रता। कलहप्रियता।  
३ स्पष्टवादिता। ४ निशकता।

अक्ला-सज्ञा पु० खुरजी। गोन। बैला पर  
अनाज आदि लादन का दोहरा बैला।  
अक्खो मक्खो-सज्ञा पु० दीपक की लौ तब  
हाथ ले जाकर बच्चे के मूँह पर 'अक्खो  
मक्खो' कहते हुए फेरता। (नजर से बचाने  
के लिए)

अकूत-वि० जो कूता न जा सके। ब  
अदाज। अपरिमित।

अक्रम-वि० बसिलसिले। बिना क्रम का।  
अडबड। बेतरतीब।

सज्ञा पु० क्रम का अभाव। व्यक्तिक्रम।

अक्रम संप्राप्त-सज्ञा पु० सन्यास जो क्रम से  
(ब्रह्मचर्य, गृहस्थ्य और वानप्रस्थ के  
पोछे) न लिया जाकर बीच ही में लिया  
गया हो।

अक्रमातिशयोक्ति-सज्ञा स्त्री० अतिशयोक्ति  
अकार का भेद बिना जिसमें कारण के  
साथ ही वाक्य का वर्णन होता है।

अक्रिय-वि० १ निश्चेष्ट। स्तब्ध। जड। २  
जो काम न करे। क्रियारहित।

अकुर-वि० गरज। बामल स्वभाव। दयाट  
गज्ञा पु० स्वधत्त्व का पुत्र एक यादव  
श्रीरुपा का चाचा रणता था।

अश्ल-गज्ञा स्त्री० [ अ० ] समझ। बुद्धि  
ज्ञान। प्रज्ञा।

मुह०-अश्ल का दुश्मन=वेदकूट। पू  
अश्ल का पूरा=(ध्यग) मूर्ख। जड।

राचं करना=ममज्ञ का प्रमाण का  
सोचना। अश्ल का चलने जाना=  
का जाता रहना। बुद्धि का  
होना। अश्ल मारी जाना=बुद्धि का  
होना।

अश्लमद-सज्ञा पु० [ पा० ] [ मज्ञा  
मदी ] बुद्धिमान्। समझदार। चतुर।  
अश्लमवी-सज्ञा स्त्री० [ पा० ] विजता  
चतुराई। समझदारी।

अश्लिष्ट-वि० १ सगल। सुगम।  
सहज। २ बिना कष्ट के।

अश्ली-वि० अकुर या बुद्धि-सम्बन्धी तब  
अनुकूल। समझ के अनुसार। उचित  
वाजिव।

अश्ल-सज्ञा पु० [ स्त्री० अश्ल ] १ ख  
का पाँसा। २ चौसर। पाँसा का  
३ गाड़ी। छक्का। ४ घुरी। ५  
कल्पित स्थिर रेखा जो पृथ्वी के  
केन्द्र से होती हुई दोनों ध्रुवों पर  
है और जिस पर पृथ्वी घूमती हुई  
गई है। ६ तराजू की डींडी। ७  
दमा। मामला। ८ आँख। ९ इन्द्रिय। १०  
साप। ११ द्वादश। १२ आत्मा। १३  
गरुड। १४ मण्डल। १५ ज्ञान।

अशकूट-सज्ञा पु० आँख की पुनली।

अशक्रीडा-सज्ञा स्त्री० चौपड। पाँस का  
खेल। चौसर।

अक्षत-वि० समूचा। जो टूटा न हो।  
अखण्डित।

सज्ञा पु० १ बिना टटा हुआ चाबल जो  
दवताओं को चढ़ाया जाता है। २ जी।  
३ घान का लावा।

अक्षतयोनि-वि० ऐसी कन्या या स्त्री जिगका  
पुरुष से ससग न हुआ हो।

अक्षरा-वि० जिसका पुरुष से संयोग न हुआ हो (स्त्री)।

सज्ञा स्त्री० वह विधवा स्त्री जिसने पुनर्विवाह तक पुरुष संयोग न किया हो।

अक्षपाद-तं पु० १ गौतम ऋषि जो न्यायशास्त्र के प्रवर्तक माने जाते हैं।

२ नैयायिक। ताकिक।

अक्षम-वि० [सज्ञा अक्षमता] १ असहिष्णु। क्षमरहित। २ असमर्थ। अशक्त। क्षमतरहित।

अक्षमता-सज्ञा स्त्री० १ क्षमा की कमी।

असहिष्णुता। २ डाह। ईर्ष्या। ३ असामर्थ्य।

अक्षय-वि० १ जिसका नाश या क्षय न हो। अविनाशी। २ कल्प के अंत तक रहनेवाला। अमर। चिरजीवी। स्थिर।

अक्षयकुमार-पज्ञा पु० रावण के उस पुत्र का नाम जो हनुमान द्वारा मारा गया था।

अक्षयतृतीया-सज्ञा स्त्री० आखा तीज। वैशाख शुक्ल तृतीया।

अक्षयनवमी-सज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ल नवमी। (स्नान-दान आदि)।

अक्षयवट-सज्ञा पु० बरगद का पेड़ जो प्रयाग और गया में है, पौराणिक जिसका नाश प्रलय में भी नहीं मानते।

अक्षय्य-वि० अक्षय। अविनाशी। जिसका नाश न हो। नित्य।

अक्षर-वि० नित्य। अविनाशी। निर्विकार। सत्य।  
मज्ञा पु० १ अक्षरादि वर्ण। २ आत्मा। ३ आकाश। ४ ब्रह्म। ५ धर्म। ६ तपस्या। ७ मोक्ष। ८ जल।

अक्षरमाला-सज्ञा स्त्री० वर्णमाला।

अक्षरग्यास-सज्ञा पु० १ लिखावट। लेख।  
२ मंत्र के एक एक अक्षर को पढ़कर हृदय, नार, कान आदि छना। अग्न्याम। (तत्र तथा धर्मशास्त्र)।

अक्षरविन्यास-सज्ञा पु० लेख। लिपि।

अक्षरश-वि० वि० मित्रुल। गद। एक एक अक्षर।

अक्षरेणा-सज्ञा स्त्री० वह मोची रेखा जो चित्रों गात्र पदार्थ के भीतर केन्द्र के होकर दोना पृष्ठा पर लय रूप से बिरे।

अक्षरोटो-सज्ञा स्त्री० १ लेख। लिपि का ढग। २ वर्णमाला। ३ पद्य जो क्रम से वर्णमाला के अक्षरों को लेकर आरंभ होते हैं।

अक्षाश-सज्ञा पु० १ भूगोल पर उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अंतर के ३६० समान भागा पर-से होती हुई ३६० रेखाएँ जो पूर्व पश्चिम मानी गई हैं। २ वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है। ३ किसी नियत स्थान और भूमध्य रेखा के बीच में याम्योत्तर का पूर्ण झुकाव या अंतर। ४ किसी नक्षत्र के क्रान्तिवृत्त के उत्तर या दक्षिण की ओर का कोणांतर।

अक्षि-सज्ञा स्त्री० आँख। नयन। नेत्र।

अक्षिगत-वि० आँख पर चढ़ा हुआ (शत्रु)।

अक्षिगोलक-सज्ञा पु० आँख का टेंटर।

अक्षितारा-सज्ञा स्त्री० आँख की पुतली।

अक्षिपटल-सज्ञा पु० आँख का परदा।

अक्षिविभ्रम-क्रि० अ० आँख धुमाना। कटाक्ष करना।

अक्षिविक्षेप-सज्ञा पु० कटाक्षपात।

अक्षीव-वि० सहनशील। शान्त।

अक्षुण्ण-वि० १ जो टूटा न हो। अविकृत। समूचा। २ अनादी। ३ अछूत। अर्घुणित। ४ मनस्ताप रहित।

अक्षोट-सज्ञा पु० अक्षरोट।

अक्षोनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "अक्षोहिणी"।

अक्षोभ-सज्ञा पु० क्षोभ की कमी। शांति। वि० १ शांत। गंभीर। क्षोभरहित। २ बिना मोह के। ३ निर्भय। निडर। ४ जिसे बुरा काम करते हिचक न हो।

अक्षोहिणी-सज्ञा स्त्री० चतुरगिणी मेना जिसमें १,०९,३५० पैदल, ६५,६१० घोड़े, २१,८७० रथ और २१,८७० हाथी होते थे।

अक्षड-वि० गँवार। जगली।

अक्ष-सज्ञा पु० [अ०] १ छाया। प्रति-विम्ब। परछाईं। २ चित्र। तमबीर।

अक्षर-वि० वि० दे० "अक्षर"। प्राप्त। कमी-कमी।

खखग\*—वि० जो न चूके। अविनाशी।  
 अखड—वि० १ सपूर्ण। समग्र। पूरा। जिसके खड न हो। खण्डरहित। २ जो बीच में न रहे। लगातार। ३ निविघ्न। बेरोक।  
 अखडनीय—वि० १ जिसके खड या टुकड़े न हो सकें। २ पुष्ट। युक्तियुक्त। जिसके विरुद्ध न कहा जा सके।  
 अखडल\*—वि० [अखड] १ अविच्छिन्न। अखड। २ सपूर्ण। समस्त। पूरा। समूचा। सजा पु० दे० “अखडल”।  
 अखडित—वि० १ अविच्छिन्न। जिसके खण्ड या टुकड़े न हुए हों। २ सपूर्ण। समस्त। ३ बाधरहित। ४ लगातार। जिसका क्रम न टूटा हो।  
 अखज—वि० [अखाद्य] १ जो खाया न जा सके। न खाने योग्य। २ बुरा।  
 अखडित—सज्ञा पु० (प्रत्य०) पहलवान। मल्ल। बलवान् मनुष्य।  
 अखती-अखतीज—सज्ञा स्त्री० दे० “अक्षय-तृतीया”।  
 अखनी—सज्ञा स्त्री० [अ० यपनी] शेरवा। मांस का रस।  
 अखवार—सज्ञा पु० [अ०] समाचारपत्र।  
 अखवार-नवीस—सज्ञा पु० अखवार लिखने-वाला। पत्रकार।  
 अखवार-नवीसी—सज्ञा स्त्री० अखवार लिखने का कार्य। पत्रकारी।  
 अखरना—त्रि० स० कष्टकर होना। खलना। बुरा लगना। अनुचित मालूम होना।  
 अखरा\*—वि० बनावटी। कृत्रिम। झूठा। सज्ञा पु० जो का आटा जिसमें भूँसी मिली हो।  
 अखरावट, अखरावटी—सज्ञा स्त्री० दे० “अशरीटी”।  
 अखरीट—सज्ञा पु० वृक्ष एवं फल-विशेष।  
 अखरव—वि० जो खरं या छोटा न हो। बहुत बड़ा।  
 अखलाक—सज्ञा पु० [अ०] आचार। शिष्टाचार। मुरब्बत। नील।  
 अखलाश—सज्ञा पु० १ कुश्ती लड़ने या कमरत

करने का म्यान। २ साधुओं की मडली। ३ गाने बजानेवाली ओग दिखानेवाली की मडली। दल। ४ दरबारगमूमि। मभा।  
 अखात—सज्ञा पु० उपमागर। खाही। चील। बड़ा तालाव।  
 अखाद्य—वि० अमद्य। जो खाने में न हो।  
 अखिल—वि० १ सब। सारा। समग्र। सपूर्ण। समस्त। २ सर्वांगपूर्ण। अग्रद।  
 अखिलेश—सज्ञा पु० अखिल जगत् का स्वामी। ईश्वर।  
 अखोर—सज्ञा पु० [अ०] १ समान्ति। २ छोर। अंत।  
 अखूट—वि० अखण्ड, जो न घटे। जो कम न हो। अक्षय। बृहत्।  
 अखेट—सज्ञा पु० आखेट। शिकार।  
 अखेटक—सज्ञा पु० शिकारी।  
 अखबर—सज्ञा पु० अक्षयवट।  
 अ-खोर\*—वि० १ मज्जन। भद्र। २ मुदर। ३ निर्दोष।  
 वि० [फा०] आखोर। खराब। निक्म्मा। बुरा। सज्ञा पु० १ कूड़ा-बरकट। २ बुरा चाग। खराब घास। विषाली।  
 अखोह—सज्ञा पु० ऊबड़-खावड़ या ऊँची नीची भूमि।  
 अखोह—सज्ञा पु० १ चक्की या जाँते के बीच की कीली। २ लोहे या लकड़ी का डटा जिस पर गडारी घूमती है।  
 अखलाह—अव्य० आश्चर्यसूचक या उद्देग शब्द।  
 अखितयार—सज्ञा पु० दे० “इक्षितयार”। अधिवार।  
 अख्याति—सज्ञा स्त्री० अकीर्ति, अपयश। दुर्नाम।  
 अख्यायिका—सज्ञा स्त्री० आख्यायिका। छोटी कहानी। प्रचलित कथा।  
 अख्यान\*—सज्ञा पु० दे० “आख्यान”।  
 अगड—सज्ञा पु० कवच। वह घड जिसका हाथ-पैर बंद गया हो।  
 अग—वि० १ जो न चूके। अटल। अचट। २ टेढ़ा चढ़नेवाला।

मंज्ञा पु० १. वृक्ष। पेड़। २. पहाड़। ३. मृग। ४. साँप।

अगज-वि० जो पर्वत से उत्पन्न हुआ हो।

मंज्ञा पु० १. हाथी। २. शिलाजीत।

अगदना-क्रि० अ० एकत्र होना। जमा होना।

अगड़\*-संज्ञा पु० अभिमान। ऐंठ। दर्प। अगड़।

अगड़धत्ता-वि० १. ऊँचा। लया। तडंगा। २. बड़ा। थ्रेण्ड।

अगड़वगड़-वि० [अनु०] क्रमविहीन।

अगड़वड। जिमका सिर पैर न हो। पचमेल।

मंज्ञा पु० १. प्रलाप। घे सिर पैर की बात।

२. अगड़वड काम। व्यर्थ का कार्य।

अगण-संज्ञा पु० छंदशास्त्र में चार घुरे

गण-जगण, रगण, सगण और तगण।

अगणनीय-वि० १. सामान्य। जो गिनते योग्य

न हो। २. असह्य। अनगिनत।

अगणित-वि० अपार। अनगिनत। बहुत।

अमन्य।

अगण्य-वि० १. अनगिनत। २. तुच्छ।

साधारण। असार। ३. बहुत। असह्य।

गता-क्रि० वि० अग्रिम। पेशगी।

अगति-संज्ञा स्त्री० १. दुर्दशा। खराबी।

बुरी गति। २. नरक। मृत्यु के पीछे की

बुरी दशा। ३. मरने के पीछे शव की दाह

आदि क्रिया। ४. अकालमृत्यु।

वि० गति का अभाव। स्थिरता। आश्रयहीन।

अगत्या-क्रि० वि० आगे से। भविष्य।

अकस्मात्। विवश हो। लाचारी हालत में।

जब और कोई गति न हो।

अगती-वि० दुराचारी। पापी। जिसकी

बुरी गति हो।† वि० [म० अग्रत]

पेशगी। अगाऊ।

वि० वि० पहले से।

अपद-पञ्चा पु० दवाई

वि० नीरोग। आरोग्य।

अगनित\*-वि० दे० “असंख्य”। “अगणित”।

अगनु\*-पञ्चा स्त्री० अग्निकोण। उत्तर-

पूर्व का कोना।

अगनेउ\*-पञ्चा पु० आग्नेय दिशा। अग्निकोण।

उत्तर-पूर्व का कोना।

अगनेत\*-संज्ञा पु० अग्निकोण। आग्नेय दिशा।

अगम-वि० १. दुर्गम। अवघट। जहाँ पहुँच

न हो सके। २. विकट। कठिन। ३.

अलभ्य। दुर्लभ। ४. बहुत। अत्यंत।

अधिक। ५. दुर्वोध। बुद्धि के परे।

६. बहुत गहरा। अथाह।

संज्ञा पु० दे० “आगम”।

अगमन\*-वि० वि० १. पहले। प्रथम।

आगे। २. पहले से। आगे से।

अगमनीया-वि० जिस (स्त्री) के साथ सभोग

करने की मनाही हो, जैसे गुरु-पत्नी आदि।

अगमानी\*-पञ्चा पु० सरदार। अगुआ।

नायक।

संज्ञा स्त्री० दे० “अगवानी”। आगे जाकर

स्वागत।

अगम्य-वि० १. जहाँ किसी को पहुँच न

हो सके। गहन। अवघट। २. कठिन।

मुश्किल। ३. अधिक। अत्यंत। ४. जहाँ

बुद्धि काम न दे। दुर्वोध। अज्ञेय। ५.

अथाह। बहुत गहरा।

अगम्य-वि० (स्त्री) जिसके साथ सभोग

करने की मनाही हो। जैसे गजपत्नी,

गुरुपत्नी, विगाता आदि।

अगर-संज्ञा पु० विशेष पेड़ जिसकी लकड़ी

मुगधित होती है। अव्य० [फा०] जो।

यदि।

मुहा०-अगर मगर करना=१ आगा पीछा

करना। २. तर्क करना। हुज्जत

करना।

अगरई-वि० रग-विशेष। श्यामता लिये हुए

सुनहले सदली रंग का।

अगरचे-अव्य० [फा०] यद्यपि। गोकि।

अगरना\*-क्रि० अ० बड़ना। अगुआ

बनना।

अगरबत्ती-संज्ञा स्त्री० घूपबत्ती।

अगरवाला-पञ्चा पु० वैद्यवर्ग के अन्तर्गत एक

शाखा। एक जाति।

अगरा\*-वि० १. पहला। अगला। प्रथम।

२. उत्तम। थ्रेण्ड। बड़का। ३. अधिक।

बहन।

अगराता\*—त्रि० म० दुलार दिमाना।

अगरी—सज्ञा स्त्री० धान-विशेष।

[स० अर्गज] ब्योड़ा। लोहे या लकड़ी का डंडा जो निचाड़ में रोक की तरह पल्लो के पीछे बँटा लगाया जाता है। निचाड़ बंद करने के लिए इसे दीवाल में छेद करने या पल्लो के पीछे कुंडों में छेद दिया जाता है।

गज्ञा स्त्री० पूस की छाजन का एक विशेष।

\*सज्ञा स्त्री० बुरी बात। अनुचित बात। अड़बड़ बात।

अगद—सज्ञा पु० ऊद। अगर की लकड़ी।

अगरी\*—वि० १ अगला। आगे का। बड़ा।

२ निपुण। चतुर।

अगल बगल—क्रि० वि० [पा०] आमपात। दोनों पार्श्वों में। दोनों बगलों में। दोनों ओर। इधर उधर।

अगला—वि० [स्त्री० अगली] १ सामने का। आगे का। "पिछला" का। विपरीत। किसी वस्तु के आगे की (अप्रवर्ती) वस्तु। २ प्रथम। पहले का। पूर्ववर्ती। ३ पुराना। प्राचीन। ४ आनेवाला। आगामी। ५ दूसरा। अपर।

सज्ञा पु० १ प्रधान। मुखिया। २ चतुर मनुष्य। ३ पुरखा। पूर्वज। (बहुवचन में) अगवना—त्रि० अ० तैयार होना। आगे बढ़ना। उद्यत होना।

अगवा—स० पु० दूत। अगवानी।

अगवाई—सज्ञा स्त्री० अगवानी। स्वागत।

सज्ञा पु० अगुआ। आगे चलनेवाला।

अगवान—सज्ञा पु० १ अगवानी करनेवाला। २ कन्याप्रश्न के लोग, जो बरात का आगे बढ़कर स्वागत करते हैं।

सज्ञा स्त्री० दे० "अगवानी"।

अगवानी—सज्ञा स्त्री० १ स्वागत। अभ्यर्चना। अतिथि के निकट पहुँचने पर आगे बढ़कर उससे सादर मिलना। पेशवाई। २ बिवाह में आगे बढ़कर बरात का स्वागत करने की रीति।

\*सज्ञा पु० नेता। मुखिया। अगुआ।

अगवार—सज्ञा पु० १ हलवाहे आदि लिए अन्न दिया हुआ अन्न। २ १५ में भूमे के साथ चला जानेवाला अन्न अगवौसी—सज्ञा स्त्री० १ हल की लकड़ी जिगमें फाल (लोहे का भाग) लगा रहता है। २ उपज हलवाहे का भाग।

अगवाही—स० स्त्री० अग्निदाह।

अगस्त—सज्ञा पु० दे० "अगम्प"। वर्ष का आठवाँ मास।

अगस्त्य—सज्ञा पु० १ विशेष ऋषि। २ समुद्र सोता था। ३ विशेष तारा जो ना में मिह के मूर्य के १७ अंश पर उदय होता है। ३ पेड़ विशेष जिसके फूल अर्द्धचंद्राकार सफेद या लाल होते हैं।

अगह\*—वि० १ चंचल। जो हाथ न आ सके। जो पकड़ में न आवे २ अवर्णनीय। अचिन्तनीय। ३ कठिन।

अगहन—अगहन—सज्ञा पु० [वि० अग्रहायण अगहनिया अगहनी] मार्गशीर्ष। हेमन्त ऋ का पहला महीना। मगसिर।

अगहनिया—वि० अगहन में होनेवाला (धान) अगहनी—सज्ञा स्त्री० अगहन में काटी जाने वाली फसल।

अगहार—सज्ञा पु० वह भूमि जिसे बेचने का अधिकार न हो।

अगाउनी\*—त्रि० वि०, अगवानी।

, सज्ञा स्त्री० दे० "अगोनी"।

अगाऊ—क्रि० वि० पेशगी। अग्रिम। निश्चित समय से पहले।

\*वि० आगे का। अगला।

\*त्रि० वि० प्रथम। पहले। आगे।

अगाडू—सज्ञा पु० तरी। गाँजर। खादरा कछार।

सज्ञा पु० वह सामान जो पहले से आगे के पड़ाव पर भेज दिया जाता है। पेशखेमा।

अगाडी—क्रि० वि० १ आगे। २ भविष्य में। ३ समक्ष। सामने। ४ बाद में। पहले। पूर्व।

सज्ञा पु० १. किसी वस्तु के मागने या आगे का अग या भाग। २. घोड़े के गरीब में बंधी हुई दो रस्सियाँ जो इधर उधर दो खूंटों से बंधी रहती हैं। ३. हल्ला। सेना का पहला धावा।

मुहा०—अगाडी मारना—मोहरा मारना। बैरी की अगली सेना को हराना।

आग—वि० १ असीम। अपार। बहुत। २ जिसकी थाह न मिले। अगाह। बहुत गहरा। अथाह। ३ दुर्वोध। जो समझ में न आवे।

सज्ञा पु० गड़ढा। छेद।

आगर—सज्ञा पु० दे० "आगार"।

कि० वि० १ पहले। आगे। प्रथम। २ भडार।

आगत\*—सज्ञा पु० चवूतरा जो दरवाजे के सामने हो।

आगह\*—वि० १ अगाध। अथाह। बहुत गहरा। २ बहुत। अत्यंत। अधिक।

कि० वि० पहले से। आगे से।

\*वि० [पा० आगाह] जिसे सूचना या चेतावनी मिल गई हो। विदित। प्रकट। ज्ञात।

अगाही\*—सज्ञा स्त्री० किसी बात के होने की पहले से सूचना या सबेत्।

अग्नित\*—सज्ञा स्त्री० [कि० अग्नियाना] १ आग। आँच। वह्नि। २ एक छोटी चिड़िया जिसका आकार गोरैया के बराबर होता है। ३ अग्निया घास।

वि० अग्नित। बेसुमार। अग्नितनी।

अग्निलोला—सज्ञा पु० वह गोला जो फटने पर आग लगा दे।

अग्नितोड—सज्ञा पु० म्टीमर। वह बड़ी नाव जो भाप, तेल या बिजली से चलती है।

अग्नित\*—वि० दे० "अग्नित"।

अग्न्या—सज्ञा स्त्री० [स० अग्नि, प्रा० अग्नि] १ एक प्रकार का खर या घास। २ नीली चाय। यशकुश। अग्नि घास। ३. पहाड़ी पीथा-विशेष जिसके, पत्तों और डठकों में जहरीले रोएँ होते हैं। ४ बेलों और

घोड़ों का रोग-विशेष। ५. अग्न्या सन। कीड़ा।

अग्न्या कोइलिया—सज्ञा पु० दो कल्पित बैतालों के नाम जिन्हें विक्रमादित्य ने वश में कर लिया था।

अग्नियाना—कि० अ० १ अग का दाहयुक्त होना। तप उठना। जलन होना। २ आग तापना। आग से कोई वस्तु सुखाना।

अग्न्या बैताल—सज्ञा पु० १ विजयमादित्य के सिद्ध किये हुए दो कल्पित बैतालों में से एक का नाम। २ मुँह से आग की ली निकालने-वाला कल्पित भूत। ३ अत्यंत क्रोधी आदमी।

अग्नियार, अग्नियारी—सज्ञा स्त्री० धूप देने की क्रिया। आग में सुगंध-द्रव्य डालकर पूजन करने की विधि।

अग्न्यासन—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का कीड़ा। २ एक प्रकार की घास। ३ एक चर्मरोग जिसमें फफोले निकल आते हैं।

अगोठा\*—सज्ञा पु० १ आगे का भाग। २ एक कन्द। यह जमीकन्द की भाँति जमीन के नीचे पैदा होता है। छोटे-छोटे फल इसकी लता में भी लगते हैं।

अगोत पछोत\*—कि० वि० आगे और पीछे की ओर।

सज्ञा पु० अगाडी-पिछाडी। आगे का भाग और पीछे का भाग।

अगुआ—सज्ञा पु० १ अग्रगामी। पहले चलने-वाला। कोई काम प्रथम बार करनेवाला। नेता। आगे चलनेवाला। २ प्रधान। नायक। मुखिया। ३ पथ-दर्शक। रास्ता दिखाने-वाला। मार्ग बतानेवाला। ४ विवाह या सवध तय करनेवाला।

अगुआई—सज्ञा स्त्री० १ अगुआ होने का काम। अग्रसरता। २ प्रधानता। नेतृत्व। सरदारी। ३ रास्ता दिखाना। मार्ग-प्रदर्शन। किसी काम को पहले करना।

अगुवानी—सज्ञा स्त्री० दे० "अगुवानी"।

अगुण-वि० १. निर्गुण। जगमें रज, तम आदि गुण न हैं। २. गुणहीन। निर्गुणो। मूर्ख। सज्ञा पु० दोष। अधगुण। युगर्ह।  
 अगुताना\*†-त्रि० अ० दे० "उक्ताना"। ऊचना।  
 अगुह-वि० १. हड़वा। जो भारी न हो। २. जगने गुह से दीक्षा न पाई हो। जिसने कोई गुरु न किया हो। दीक्षाहीन। सज्ञा पु० ऊद। अगर पेड़।  
 अगुवा-सज्ञा पु० दे० "अगुआ"। १. मार्ग दिखानेवाला। २. एक पक्षी का कीड़ा विशेष। ३. देवता-विशेष।  
 अगुसरना-प्रत्य० आगे बढ़ना। अप्रमर हाना।  
 अगुसरना†\*-त्रि० स० आगे बढ़ाना। आगे करना।  
 अगुठना†-त्रि० म० १. ढक्कना। तोपना। २. रोक्कना। घेरना। छेकना।  
 अगुठा-त्रि० वि० घेरा। मुहामिग।  
 अगुह-वि० १. प्रकट। जो छिपा न हो। २. आसान। सहज। सरल। सज्ञा पु० साहित्य में गुणीभन व्यंग्य के आठ भेदों में से एक जो वाच्य के समान ही स्पष्ट होता है।  
 अगुता-त्रि० वि० सामने। आगे।  
 अगुह-वि० जिसका घरवार न हो। बिना घरवार का। गृहविहीन।  
 अगुचर-वि० जिसका ज्ञान इन्द्रियों को न हो सके। जो इन्द्रियों के अनुभव से परे हो। इन्द्रियातीत।  
 अगुह-सज्ञा पु० १. आड़। ओट। २. सहारा। आधार। आश्रय।  
 अगुहना-त्रि० स० १. घेरना। रोक्कना। २. पहरे में रखना। कैद करना। ३. छिपाना। गुप्त रखना।  
 प्रत्य० १. स्वीकार करना। मानना। २. चुनना। पसन्द करना।  
 क्रि० अ० १. ठहरना। रुकना। २. फँसना।  
 अगुरना-त्रि० स० १. रास्ता देखना। प्रतीक्षा करना। २. रगवाली करना। ३. रोक्कना।

अगोरिया-सज्ञा पु० रगवाला।  
 अगोनी\*-त्रि० वि० आगे।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "अगवानो"। भेंट के लिए आगे जाना।  
 अगोरा-सज्ञा पु० गन्ने के ऊपर का पतला मिना रग का भाग जिसमें रस कम होता और जो स्वादहीन होता है।  
 अगोह\*-त्रि० वि० आगे की तरफ।  
 अग्नि-सज्ञा स्त्री० १. ताप। आग और प्रकाश। (आपान आदि पंच भूतों में से एक) २. वेद के तीन प्रधान देवताओं में से एक। ३. पाचन-शक्ति। जठराग्नि। ४. पित्त। ५. तीन की मन्त्रा। ६. मोना। ७. चित्रन वृक्ष। ८. ज्वाला। वह्नि। ताप।  
 अग्निउत्पात-सज्ञा पु० आग लगना। आकाश से अग्नि बरसना। धूमकेतु दर्शन। उल्कापात।  
 अग्निकर्म-सज्ञा पु० १. हवन। अग्निहोत्र। २. शवदाह।  
 अग्निकौट-सज्ञा पु० समुद्र नामक कीड़ा-विशेष जिसके विषय में जनश्रुति है कि वह अग्नि में रहता है।  
 अग्निकुड-म० पु० अग्नि जलाने के लिए गढ़ा। हवन करने का धातुनिमित्त चौकोर बर्तन।  
 अग्निकुमार-सज्ञा पु० १. शिव के ज्येष्ठ पुत्र। कात्तिकेय। २. क्षुधाबद्धक औषध-विशेष।  
 अग्निकुल-सज्ञा पु० क्षत्रियों का वंश-विशेष जिसकी उत्पत्ति यज्ञ की अग्नि में हुई बतलाई जाती है।  
 अग्निकोण-सज्ञा पु० पूर्व और दक्षिण का कोना जिसमें अग्नि का काम रहता जाता है।  
 अग्निक्रिया-सज्ञा स्त्री० मुर्दा जलाना। शव का अग्निमन्त्रण।  
 अग्निक्रीडा-सज्ञा स्त्री० आनन्दवाजी।  
 अग्निकर्म-सज्ञा पु० आतिथी दीक्षा। मूर्ख-वात मणि। वह मणि जिसमें मूर्ख की किरणों में आग पैदा हो।  
 वि० जिसमें आग है।

अग्निज-वि० १ अग्नि में पैदा हुआ।  
 २ अग्नि का पैदा करनेवाला। ३ पाचक।  
 अग्नि-मदीपर। भूस बढ़ानेवाला।  
 अग्निजिह्वा-सज्ञा स्त्री० आग की लौ या  
 लपट। (अग्नि देवता की सान जिह्वाएँ  
 नहीं गई हैं—वाली, कराँली, मनाजवा,  
 अहिना, धूम्रवर्णा, स्फुलिमिनी और  
 विद्वत्पा।)

अग्निज्वाला-सज्ञा स्त्री० १ अग्निजिह्वा।  
 आग की लपट। २ आँखों का पेड़।  
 अग्निदाह-सज्ञा पु० १ मुर्दा जलाना। यवदाह।  
 २ जलाना।

अग्निदीपक-वि० पाचनशक्ति या जठराग्नि  
 का बढ़ानेवाला। भूस बढ़ानेवाला।  
 अग्निदेव-सज्ञा पु० वैदिक देवता। अग्नि-  
 वाणध्वनि।

अग्निदीपन-सज्ञा पु० १ पाचन-शक्ति का  
 बढ़वान् हाना। २ पाचन शक्ति को बढ़ाने-  
 वाली दवा।

अग्निपरीक्षा-सज्ञा स्त्री० १ अग्निशुद्धि।  
 प्राचीन काल में सदिग्ध व्यक्ति को जलती  
 हुई आग पर चलाकर अथवा जलता हुआ  
 पानी, तेल या लाहा स्पश कराकर दोषी  
 या निर्दोष सिद्ध करने की क्रिया।  
 २ कड़ी परीक्षा। सतरनाक जाँच।  
 ३ सोने चादी आदि को आग में तपाकर  
 परखना।

अग्निपुराण-सज्ञा पु० अठारह पुराणा में  
 एक पुराण।

अग्निपूजक-सज्ञा पु० अग्नि की पूजा करने-  
 वाला। अग्नि को देवता मानकर उसकी  
 पूजा करनेवाला पारसी।

अग्निबाण-सज्ञा पु० १ ऐसा बाण जिसमें से  
 आग की ज्वाला निकले। २ एक प्रकार की  
 आतिशबाजी।

अग्निबाव-सज्ञा पु० रोग विशेष। पित्ती या  
 जुड़ पित्ती नाम का एक रोग।

अग्निमय-सज्ञा पु० १ अरणी नामक वे  
 । रुद्रियाँ जिनका रंगद्वार यज्ञ के लिए आग  
 निकाली जाती है। २ अरणी वृक्ष।

अग्निमाद्य-सज्ञा पु० भूख मर जाना।

भूय वम या त्रिलुल न लगने का  
 रोग। मदाग्नि।

अग्निमुख-सज्ञा पु० १ देवता। २ ब्राह्मण।  
 ३ प्रत। ४ चोते का पेट।

अग्निघ्न-सज्ञा पु० बहूक। तोप। तमचा।  
 अग्निहिता-सज्ञा पु० १ आग की लौ का  
 रंग और उससे झकाव को देखकर गुभाशुभ  
 फल बतलाने की विद्या। २ अग्नि का  
 लगावार पुज।

अग्निवश-सज्ञा पु० अग्निबुल।

अग्निशाला-सज्ञा स्त्री० वह कोठरी जगमें  
 अग्निहात्र की अग्नि स्थापित हो।

अग्निशिखा-सज्ञा स्त्री० १ आग की लौ।  
 २ कलियारी।

अग्निशुद्धि-सज्ञा स्त्री० १ आग डालकर  
 या उसके स्पर्श द्वारा किसी वस्तु को शुद्ध  
 करना। २ अग्निपरीक्षा।

अग्निष्टोम-सज्ञा पु० १ अग्नि-सबधी वेदोक्त  
 अग्निस्तव। २ यज्ञ विशेष जो ज्योतिष्टोम  
 यज्ञ का रूपांतर है।

अग्निस्कार-सज्ञा पु० १ जलाना। तपाना।  
 २ शुद्धि के लिए आग छुलाना। ३ शय के  
 जलान की क्रिया। मृतक का दाह-कर्म।

अग्निहोत्र-सज्ञा पु० वेद के मंत्रों को पढ़ते  
 हुए यज्ञ की अग्नि में आहुति देने की  
 क्रिया।

अग्निहोत्री-सज्ञा पु० १ ब्राह्मण का एक  
 वंश विशेष। कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक  
 शाखा। २ अग्निहात्र करनेवाला।

अग्न्यस्त्र-सज्ञा पु० १ अग्न्यास्त्र। वह अस्त्र  
 जिससे आग निकले। २ वह अस्त्र जो  
 आग द्वारा चलाया जाय।

अग्न्याधान-सज्ञा पु० १ अग्निहोत्र। २ अग्नि  
 की विधि के अनुसार स्थापना। अग्निरक्षण।  
 अग्न्य-वि० दे० अज्ञ"।

अग्नारी-सज्ञा स्त्री० १ धूपदान। आग में  
 सुगंधित द्रव्य जलाना। २ अग्निबुल।

अग्र-सज्ञा पु० १ सिर। नोच। आग का  
 भाग। जगला हिस्सा। २ ऊपर का भाग।  
 सिर। शिखर। ३ एक राजा का नाम।  
 त्रि० वि० आग।

वि० १ प्रथम। पहले। आगे। २ मुख्य। श्रेष्ठ। उत्तम। प्रधान। अगुआ।  
 अप्रगण्य-वि० प्रधान। श्रेष्ठ। मुख्य। गिनती करते समय जो गणने पहले गिना जाय।  
 अप्रगामी-सज्ञा पु० नेता। आगे चलनेवाला। उत्पत्तिशील।  
 अप्रज-सज्ञा पु० १ जो आगे पैदा हुआ हो। ज्येष्ठ भ्राता। बड़ा भाई। २ ब्राह्मण। ३ नेता। अगुआ। नायक।  
 \*वि० उत्तम। श्रेष्ठ।  
 अप्रणी-वि० समाज का मुखिया। आगे चलनेवाला। अगुआ। श्रेष्ठ।  
 अप्रजन्मा-सज्ञा पु० १ जन्मका जन्म पहले हुआ हो। २ ब्राह्मण। ३ ब्रह्मा। ४ बड़ा भाई।  
 अप्रवृत्त-सज्ञा पु० आगे बढ़कर किसी के आन की सूचना देनेवाला। आगे-आगे चलनेवाला दूत।  
 अप्रभाग-सज्ञा पु० पहला भाग। पहला हिस्सा।  
 अप्रसोची-सज्ञा पु० दूरदर्शी। पहले से सोच लेनेवाला। आगे की बात सोच लेनेवाला।  
 अप्रसर-सज्ञा पु० १ नेता। मुखिया। आगे जानेवाला व्यक्ति। अगुआ। २ आरम्भ करनेवाला। ३ आगे बढ़ा हुआ।  
 अप्रसोची-वि० दे० "अप्रसोची"। पहले से सोचनेवाला। दूरदर्शी।  
 अप्रहायण-सज्ञा पु० अग्रहण या मार्गशीर्ष मास।  
 अप्रहार-सज्ञा पु० १ राजा की ओर से ब्राह्मण को दी हुई भूमि। २ देवता को अर्पित सम्पत्ति। ३ धान्यपूर्ण खेत।  
 अप्राशन-सज्ञा पु० भोजन के आरम्भ में देवता के लिए निवाला हुआ अन्न।  
 अप्राप्त-वि० १ त्याग्य। छोड़ने योग्य। २ जो ग्रहण करने योग्य न हो। ३ अमान्य। न मानने लायक। ४ तुच्छ। निस्तार। ५ शिवनिर्मल्य।  
 अप्रिम-वि० १ अगला। पहले से। पेदागी। २ आगामी। आगे जानेवाला। ३ उत्तम। श्रेष्ठ। मुख्य। प्रधान।  
 अघ-सज्ञा पु० १ पाप। अधर्म। अपराध।

दोष। पानक। २ व्यसन। ३ दुःख। ४ अपायगुरु।  
 अधरवानि-सज्ञा पु० १ पापी। अधर्मी। २ पापी का समुदाय।  
 अधट-वि० १ अमभाव्य। जो घटित न हो। जो हानि योग्य न हो। २ बठिन। दुर्घट। \*३ बेमेल। अनुपयुक्त।  
 वि० १ जो घटे नहीं। अक्षय। २ स्थिर। एवरम।  
 अधटित-वि० १, अस्तनव। न होने योग्य। अनहोना। अयोग्य। २ जो घटित न हुआ हो। जो हुआ न हो। \*३ अवश्य होनेवाला। अमिट। अनिवार्य। ४ अनुचित।  
 \*वि० बहुत अधिक। जो घटकर न हा।  
 अधनाशक-वि० जो पाप का नाश करे। पाप दूर करनेवाले प्रयोग, मन्त्र जप करना आदि।  
 अधमर्षण-वि० १ पापनाशक। पाप हटानेवाला वैदिक मन्त्र। २ एक क्रिया जो मन्ध्योपासन में की जाती है।  
 अधवाना-क्रि० सं० १ पेट भर खिलाना। २ तृप्त करना। चक्क कर देना।  
 अधाट-सज्ञा पु० ऐसी भूमि जिसे उसका स्वामी बेच न सके।  
 अधात\*-सज्ञा पु० दे० 'अधात'।  
 वि० अधिक। बहुत। (व्रज) तृप्त होना। सन्तुष्ट होना। इतना खाना पि और खाने की इच्छा न रहे।  
 अधाना-क्रि० अ० १ इतना भोजन करना कि और खाने की इच्छा न रहे। छक्कर भोजन करना। भोजन से सन्तुष्ट होना। छकना। पेट भर खाना या पीना। २ तृप्त होना। ३ प्रसन्न होना। खुशी होना। ४ धकना।  
 मुहा०-अधाकर=मन भर। यथेष्ट।  
 अधारि-सज्ञा पु० १ पापी का नाश करनेवाला। २ श्रीकृष्ण।  
 अधासुर-सज्ञा पु० बस का सेनापति अध दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था।  
 अधी-वि० पाप करनेवाला। पानकी।

अधोर-वि० १ सुन्दर। सौम्य। सुहावना।  
 २ बहुत भयवर। अत्यंत घोर। ३ बीभत्स।  
 मुणित।  
 सज्ञा पु० १ शिव का रूप विशेष।  
 २ एक संप्रदाय जिसके अनुयायी मल-मूत्र  
 आदि को अस्पृश्य नहीं मानते। ३ उपासना-  
 विशेष। दे० 'अधोरी'।  
 अधोरनाय-सज्ञा पु० शंकर। महादेव। शिव।  
 अधोरपथ-सज्ञा पु० अधोरियो का संप्रदाय  
 या मत।  
 अधोरपथी-सज्ञा पु० अधोरी। औघड। अधोर  
 मत का माननेवाला।  
 अधोरी-सज्ञा पु० [स्त्री० अधोरिन] १ अधोर-  
 पथी। अधोर मत का अनुयायी। औघड।  
 २ मक्ष्यामक्ष का विचार न करनेवाला।  
 वि० पिनीना। घृणित। बीभत्स।  
 अधोप-सज्ञा पु० व्याकरण का एक वर्णसमूह  
 जिसमें प्रत्येक वर्ण का पहला और दूसरा  
 अक्षर तथा दा, प और स भी हैं।  
 अध-सज्ञा पु० स्वरवर्ण, सज्ञा विशेष। छिपाकर  
 करना।  
 अधड-वि० धीर। शांत। सुशील। मंदु। सरल  
 स्वभाववाला।  
 अधचल-वि० १ स्थिर। जो चंचल न हो।  
 २ धीर। गभीर। जो घबड़ाया न हो। दृढ़  
 चित्तवाला।  
 अधभय\*-सज्ञा पु० आश्चर्य। अधभा।  
 अधभा-सज्ञा पु० १ विस्मय। आश्चर्य।  
 अधरज। २ अधरज की बात। चमत्कार।  
 अधभा करना-क्रि० अ० विस्मित होना।  
 आश्चर्यित होना।  
 अधभित\*-वि० चकित। विस्मित। आश्च-  
 र्यित।  
 अधक-वि० पूर्ण। भरपूर। खूब। ज्यादा।  
 बहुत।  
 सज्ञा पु० घबराहट। भौचक्कापन। आश्चर्य।  
 अ०-अचानक। हठात्। अकस्मात्। बिना  
 जान बूझे।  
 अधकन-सज्ञा पु० अंगरत्ना। एक प्रकार का  
 लवा अंग। शरबानी।  
 अधक्का-सज्ञा पु० अपरिचित। अनजान।

अचगरा\*-वि० छेड़छाड़ करनेवाला। शरास्ती।  
 नटखट।  
 अचकरी, अचकरी\*-सज्ञा स्त्री० नटसती।  
 शरास्ती। छेड़छाड़। लपटता। खिलवाड़पन।  
 अनुचित काम। धोगा-धोगी। अत्याचार।  
 अचना\*-क्रि० स० [स० आचमन] पीना।  
 आचमन करना।  
 अचपल-वि० १ गभीर। स्थिर। अचंचल।  
 धीर। २ शीघ्र। बहुत चंचल।  
 अचपली-सज्ञा स्त्री० ग्रीडा। अठसेली।  
 किलोल।  
 अचर-वि० अचल। न चलनेवाला। स्थावर।  
 जड।  
 अचरज-सज्ञा पु० अचभा। आश्चर्य।  
 अचरा-सज्ञा पु० साडी का वह छोर जो  
 छाती पर रहता है। पल्ला।  
 दे० "अचल" और "अचल"।  
 अचल-वि० १ स्थिर। अटल। जो न चले।  
 ठहरा हुआ। २ चिरस्थायी। सब दिन  
 रहनेवाला। ३ दृढ़। पक्का। ध्रुव। ४ जो  
 नष्ट न हो। मजबूत। पुष्ट।  
 सज्ञा पु० १ पर्वत। पहाड़। २ वृक्ष।  
 ३ जैनियों का पहला तीर्थंकर।  
 अचलधृति-सज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त विशेष।  
 अचला-वि० न चलनेवाली। ठहरी हुई।  
 स्थिर।  
 सज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरणी। धरती।  
 अचला सप्तमी-सज्ञा स्त्री० माघ शुक्ला  
 सप्तमी। इस दिन के किये शुभ कर्म अचल  
 होते हैं।  
 अचवन-सज्ञा पु० [क्रि० अचवना] १  
 भोजन के पीछे हाथ-मुंह धोकर कुल्ली  
 करना। २ आचमन। पीने की क्रिया।  
 अचवना-क्रि० स० १ पीना। आचमन करना।  
 २ भोजन के पश्चात् हाथ-मुंह धोकर  
 कुल्ली करना। ३ छोड़ देना। खो  
 देना।  
 अचवना-क्रि० स० १ आचमन करना।  
 पिलाना। २ भोज के पश्चात् हाथ-मुंह  
 धुलाना।  
 अचाचक-क्रि० वि० दे० "अचानक"।

अचाक\*—प्रि० वि० महमा । अचानक ।  
 अचान\*—प्रि० वि० दे० "अचानक" । महमा ।  
 अचानक\*—प्रि० वि० सहमा । हटान । एवाएक ।  
 प्रिना कारण । देवयोग से ।  
 अचाना—प्रि० सं० दे० "अचाना" ।  
 अचार—मज्ञा पु० [ पा० ] ममात्र के साथ  
 तेल म कुछ दिन रखकर मट्टी की हुई  
 तरकारी या फल । कचूमर । अथाना ।  
 \*सज्ञा पु० दे० "आचार" । व्यवहार ।  
 चाल-चलन ।  
 सज्ञा पु० चिरोजी का वृक्ष ।  
 अचारी\*—सज्ञा पु० १ सदाचारी मनुष्य ।  
 समयी पुरष । २ रामानुज संप्रदाय का  
 वैष्णव ।  
 सज्ञा स्त्री० [ पा० अचार ] छिले हुए  
 कच्चे आम की धूप में पकाई-सिझाई फाँक ।  
 अचाह—सज्ञा स्त्री० चाह या इच्छा का अभाव ।  
 अर्चि । उदासीनता ।  
 वि० जिसे चाह या इच्छा न हो ।  
 अचाहा\*—वि० अनचाहा । जिस की चाह  
 न हा ।  
 सज्ञा पु० १ वह व्यक्ति जो प्रेमपात्र न हो ।  
 \*२ निर्मोही । प्रीति न करनेवाला ।  
 अचाही\*—वि० इच्छारहित । निष्काम ।  
 अचित\*—वि० चिन्ताहीन, निर्बुध । बेमुघ ।  
 चितारहति । निश्चित । वेकिन्न ।  
 अचितनीय—वि० दुर्बोध जो ध्यान में न आ  
 सके । अज्ञय ।  
 अचितित—वि० १ जो ध्यान में भी न आया  
 हो । २ जिसके विषय में विचार न किया  
 गया हो । ३ जिस पर विचार न हुआ हो ।  
 ४ बिना सोचा विचारा । ५ 'अक्स्मिक'  
 ६ वकिन्न । निश्चित ।  
 अचित्य—वि० १ दुर्बोध । जिसकी चिन्ता न  
 की जा सके । अज्ञय । कल्पना से परे । २  
 जो कृता न जा सके । अतुल । ३ अनुमान  
 या आशा से अधिक् ।  
 अचित्—मज्ञा पु० चेतनहीन । जड प्रकृति ।  
 अचिर—प्रि० वि० तुरन्त । शीघ्र । अविश्रय ।  
 जदी ।  
 अचिरात—प्रि० वि० जल्दी ।

अचीना—वि० [ स्त्री० अचीनी ] १ जि-  
 इच्छा न की गई हा । २ आक्स्मिक ३  
 जिसका पहले से अनुमान न हो । ४ अधिक्  
 बहुत ।  
 वि० वेकिन्न । निश्चित । चिन्ता  
 रहित ।  
 अचूक—वि० १ सच्चा । जो न चूके । जो  
 अवश्य सफल हो । २ पक्का । ठीक ।  
 क्रि० वि० १ कीमल में । निपुणता के नाथ ।  
 निश्चित । २ अवश्य । निश्चय । जम्पर ।  
 अचेत—वि० १ प्रेमुघ । बेहोश । मूर्च्छित ।  
 चेतनारहित । २ व्याकुल । घबराया हुआ ।  
 विकल । ३ प्रेक्षवर । अनजान । ४ मूर्ख ।  
 नाममय । मूढ़ । \*५ जड ।  
 \*सज्ञा पु० [ सं० अचित् ] जड प्रकृति  
 जडत्व । अज्ञान । माया ।  
 अचेतन—वि० चेतनाहीन । जिसे इन्द्रि-  
 जनित ज्ञान अथवा सुख-दुःख आदि के  
 अनुभव की गति न हा । जड । सज्ञागून्य  
 मूर्च्छित । वहीरा ।  
 अचेतन्य—मज्ञा पु० १ अनात्मा । जड ।  
 वह जो ज्ञानस्वरूप न हो । २ सूर्यना ।  
 अज्ञता । निर्जीव । जट पदार्थ ।  
 अचैन—मज्ञा पु० बेचैनी । व्याकुलता ।  
 विकलता । परेशानी ।  
 वि० वचैन । व्याकुल । दुखी । विकल ।  
 अमुष । अरम्य ।  
 अचीना\*—सज्ञा पु० पूजा का कटोरा ।  
 पक्षपात्र । आचमन करने या पीने का  
 बरतन ।  
 अच्छ—वि० स्वच्छ । निर्मल ।  
 मज्ञा पु० दे० 'अक्ष' ।  
 अच्छत—वि० अधिक् । बहुत ।  
 सं० पु० १ देवताओं पर चढ़ान का  
 चाकर । २ संपूण । ३ क्षण हीन जिग  
 धाव न ग्या हो । दे० "अक्षत" ।  
 अचितनीय—वि० जो ध्यान में न आ सके ।  
 चिन्ता म परे ।  
 अच्छर—मज्ञा पु० वर्ण । दे० "अक्षर" ।  
 अच्छरा, अच्छरी\*—सज्ञा स्त्री० स्वय की  
 गणिका । अप्सरा ।

च्छा-वि० १ उत्तम। भला। मनोहर।  
वडिया।

मुहा०-अच्छे आना=उपयुक्त अवसर पर  
आना। अच्छा दिन=सुख संपत्ति या दिन।  
अच्छा भला=स्वस्थ। अच्छा लगना=स्वि-  
कर जान पड़ना। अच्छा होना=नीरोग  
हो जाना।

२ नीरोग। स्वस्थ। चगा।

सज्ञा पु० अच्छे पुरुष=१ श्रेष्ठ मनुष्य।  
बड़ा आदमी। २ गुलजन। बड़े बूढ़े। (बहु-  
वचन)।

क्रि० वि० अच्छी तरह। खूब।

अव्य० स्वीकारोक्ति।

अच्छाई-सज्ञा स्त्री० दे० 'अच्छापन'। गुण।

उत्तमता। सुघराई।

अच्छापन-सज्ञा पु० गुण। अच्छे होने का

भाव। उत्तमता। भलाई।

अच्छाबिच्छा-वि० १ उत्तम। श्रेष्ठ। चुना  
हुआ। २ चगा। स्वस्थ। नीरोग।

अच्छोत\*-वि० दे० अच्छत\*। अधिक।  
बहुत।

अच्छोहिनी-सज्ञा स्त्री० दे० 'अक्षोहिणी'।

अच्युत-वि० १ अटल। स्थिर। जो गिरा  
न हो। २ अविनाशी। नित्य। अमर।  
सबदा वर्तमान रहनेवाला। ३ जो विचलित  
न हो। ४ जिसका स्वलन न हो। सज्ञा  
पु० विष्णु।

अच्युतानन्द-वि० जिसका आनन्द सदैव हो।

सज्ञा पु० ईश्वर। परमेश्वर।

अछक\*-वि० जो छका न हो। भखा।  
अतृप्त। असंतुष्ट।

अछकना\*-क्रि० वि० न अघाना। तृप्त न  
होना।

अछन\*-क्रि० वि० ['आछना' का कृदत  
रूप] १ सम्मुख। सामने। उपस्थिति  
में। रहते हुए। २ सिवाय। अतिरिक्त।  
वि० न रहता हुआ। जो उपस्थित न हो।  
अविद्यमान।

अछताना पछताना-क्रि० अ० किये हुए बुरे  
कर्मों से दुःखी होना। पछताना। पश्चात्ताप  
करना।

अछत्र-सज्ञा पु० जिसके छत्र नहीं। राज्य से  
च्युत। राज्य-हीन।

अछन\*-सज्ञा पु० बहुत दिन। बहुत समय।  
निरवाला।

क्रि० वि० धीरे धीरे। एक-एकवर। ठहर  
ठहरवर

अछना\*-क्रि० अ० उपस्थित रहना। विद्यमान  
रहना।

अछय\*-वि० दे० 'अक्षय'।

अछरा\*-सज्ञा स्त्री० स्वर्ग की वेश्या।  
अप्सर।

अछरी-सज्ञा स्त्री० दे० 'अछरा'।

अछरीटी-सज्ञा स्त्री० (प्रत्य०) ककहरा।  
वर्णमाला।

अछवाना-क्रि० स० कधी करना। साफ  
करना। सँवारना।

अछवानी-सज्ञा स्त्री० [हि० अजवाइन] अज-  
वाइन, साठ तथा मेवा को पीसकर घी में  
पकाया हुआ द्रव, जो प्रसूता स्त्रियों को  
पिलाया जाता है।

अछाम\*-वि० १ मोटा। २ बड़ा। भारी।  
३ बलवान्। हृष्ट-पुष्ट।

अछूत-वि० १ अस्पृश्य। जिसे अपवित्र  
मानकर लोग न छुएँ। जो छुआ न गया  
हो। न छूने योग्य। २ जो काम में न  
लाया गया हो। कोरा। ताजा। (आधुनिक)

अछूता-वि० [स्त्री० अछूती] १ जो छुआ  
न गया हो। अस्पृश्य। २ जो वर्तन  
गया हो। नवीन। नया। कोरा। ताजा।

३ पवित्र। ४ कुमारी।

अछेद\*-वि० अमेघ। अखण्ड। जिसका छेदन  
न हो सके। अविनाशी।

सज्ञा पु० अमेद। अभिन्नता।

अछेद्य-वि० १ जिसका छेदन न हो सके।  
अमेघ। २ अविनाशी।

अछेव\*-वि० छिद्र या दीप रहित। वेदांग।  
शुद्ध।

अछेह\*-वि० १ सदैव। निरंतर। लगातार।  
२ बहुत। अधिक।

अछोप\*-वि० १ बिना वस्त्र के। नंगा।  
२ तुच्छ। दीन।

“अजगर” ।

मैं आते हूँ। यवानी ।  
अजस\*—सज्ञा पु० वदनामी । अपकीर्ति ।

अपर्याप्त ।

जसो-वि० यशस्वित । अपयशी । निच ।  
यदनाम ।

जख-वि० वि० सर्वदा । निरन्तर । सदा ।  
हमेना । नित्य । प्रतिक्षण ।

अजह्स्वार्थी-सज्ञा स्त्री० लक्षणा का वह भेद  
जिसमें शब्द अपने वाच्यार्थ को धारण  
करता हुआ भी भिन्न या अतिरिक्त अर्थ  
प्रकट करे ।

अजह्द-कि० वि० [ फा० ] हृद से ज्यादा ।  
वहुत अधिक ।

अजह्-कि० वि० आज तक । अभी तक ।  
‘दे० अज’ ।

अजा-वि० जन्मरहित । जिसका जन्म न  
हुआ हो ।

सज्ञा स्त्री० १ वकरी । २ माया या प्रकृति ।  
३ दुर्गा । शक्ति ।

अजाचक-सज्ञा पु० दे० “अयाचक” । अयाची ।  
‘मरापूरा । सम्पन्न । न माँगनेवाला ।

अजाची-सज्ञा० पु० दे० “अयाची” ।  
अजात-वि० अजन्मा । जो पैदा न हुआ  
हो । जन्मरहित ।

अजातशत्रु-वि० जिसका कोई शत्रु न हो ।  
‘गुरुरहित ।

सज्ञा पु० १ शिव । २ राजा मुघिष्ठिर ।  
३ उपनिषद् में वर्णित काशी का एक  
ज्ञानी राजा । ४ राजगृह (मगध) के  
राजा विक्सार का पुत्र, जो नीतिम बुद्ध  
व समय में हुआ था ।

अजाति-सज्ञा पु० दे० ‘अजाती’ ।

अजानी-वि० जो जाति से निकाल दिया  
गया हो । जाति से च्युत ।

अजान-वि० १ अनजान । अवोध ।  
नासमझ । अज्ञान । मूर्ख । अविवेकी ।  
निर्वोध । जो न जानता हो । २ अपरिचित ।  
अज्ञात ।

सज्ञा पु० एक पेड़ जिसके नीचे जाने से बुद्धि  
भ्रष्ट हो जाती है, ऐसा लोग समझते हैं ।  
सज्ञा पु० [ अ० अजान ] यांग । मसजिदा  
में होनेवाली नमाज की पुकार ।

मुहा०-अजान में-जानकारी के अभाव  
में । अज्ञान से । अनभिज्ञता से ।

अजानपन-सज्ञा पु० अज्ञान । नासमझी ।  
अजाब-सज्ञा पु० [ अ० ] दुख । कष्ट । विपत्ति ।  
आफत ।

अजामिल-सज्ञा पु० भागवत पुराणानुसार  
एक पापी ब्राह्मण, जो मरते समय अपने  
पुत्र ‘नारायण’ का नाम लेने में तर गया  
था ।

अजाय\*-वि० अनुचित । बेजा ।

अजायब-सज्ञा पु० [ अ० ] अजब का  
बहुवचन । विलक्षण पदार्थ या व्यापार ।  
अद्भुत वस्तु । विचित्र पदार्थ ।

अजायबखाना-सज्ञा पु० [ अ० ] वह भवन  
जिसमें अनेक प्रकार के अद्भुत पदार्थ ररो  
रहते हैं । अद्भुत वस्तु संग्रहालय । म्यू-  
जियम । अजायबघर ।

अजायबघर-सज्ञा पु० दे० ‘अजायबखाना’ ।

अजार\*-सज्ञा पु० दे० ‘आजार’ ।

अजारा-सज्ञा पु० दे० ‘इजारा’ ।

अजिओरा\*†-सज्ञा पु० दादी या आजी के  
पिता का घर ।

अजित-वि० जो जीता न गया हो ।

सज्ञा पु० १ बुद्ध । २ शिव । ३ विष्णु ।

अजितेंद्रिय-वि० जो इन्द्रिया के वश में  
हो । जो विषय में आसक्त हो ।

अजी-अव्य० जी । सर्वोधनसूचक शब्द ।

सज्ञा स्त्री० वकरी ।

अजीमर्त-सज्ञा पु० एक ब्राह्मण जो शुन शेष  
का पिता था ।

अजीज-वि० [ अ० ] प्रिय । प्यारा ।

सज्ञा पु० सुहृद । मवधी । नातेदार ।

अजीब-वि० [ अ० ] अनोखा । विचित्र ।  
विलक्षण । अनूठा ।

अजीरम-सज्ञा पु० दे० ‘अजीर्ण’ ।

अजीर्ण-सज्ञा पु० १ अन्न न पचने का  
दोष । अपच । बदहजमी । २ बहुतायत ।

अत्यत अधिकता । जैसे, बुद्धि का अजीर्ण ।  
(व्यग्य)

वि० नया । जो पुराना न हो ।

अ-जीव-सज्ञा पु० जिसमें चेतना न हो ।

जड़ पदार्थ ।

वि० मृत । बिना प्राण का ।

अजुगत-सज्ञा स्त्री० अन्धेर। उत्पात। अत्याचार। उत्पातो पापं।

अजुगत-गज्ञा पु० दे० "अजुगत"।

अजुज्ञा\*-सज्ञा पु० [ देश० ] विज्ञा की तरह का जानवर जो मुर्दा खाता है।

अजुवा-वि० [ अ० ] अनीला। अद्भुत।

अजुरा\*-सज्ञा पु० जो जुटा न हो। पृथक्। अलग।

(अ०) मजदूरी। भाड़ा।

अजुह\*-सज्ञा पु० युद्ध। लड़ाई।

अजोय-वि० जो जीता न जा सके।

अजोग-वि० जो योग्य न हो। दे० "अयोग्य"।

अजोता-गज्ञा पु० चंद्र मास की पूर्णिमा।

(इस दिन बैल नहीं नाचे जाते।)

अजोरना\*-त्रि० स० इकट्ठा करना। जमा करना।

क्रि० वि० दे० "अजोरना"।

अजो-अजो\*-क्रि० वि० आज तक। अब भी। अब तक।

अज्ञ-सज्ञा पु० न जाननेवाला। अज्ञानी।

जड। मूर्ख। नासमझ। अवोध।

अज्ञता-सज्ञा स्त्री० नादानी। नासमझी। जडता। मूर्खता।

अज्ञा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "आज्ञा"।

अज्ञात-वि० १ अप्रकट। अपरिचित।

जो जाना हुआ न हो। अविदित। २ जिसे मालूम न हो। जैसे, अज्ञातयीवना।

\*क्रि० वि० अनजान में। बिना जाने।

अज्ञातनामा-वि० १ जिसका नाम ज्ञात न हो। २ तुच्छ। अविख्यात। साधारण।

अज्ञातवास-सज्ञा पु० छिपकर रहना। ऐसे स्थान पर रहना जहाँ कोई पता न पा सके।

अज्ञातयीवना-सज्ञा स्त्री० वह मुग्धा नायिका जिसे अपने यौवन के आने का ज्ञान न हो।

अज्ञान-सज्ञा पु० १ मूर्खता। ज्ञानहीनता।

जडता। २ जीवात्मा का गुण और गुण के कामों से अलग न समझने का अविवेक।

३ न्याय में निग्रह स्थान।

वि० जड। मूर्ख। नासमझ।

अज्ञानत-अव्य० अज्ञान से। बेसमझी से।

अनजाने।

अज्ञानी-वि० जड। ज्ञानग्न्य। मूर्ख। नासमझ।

अज्ञेय-वि० दुरुह। न जानने योग्य।

जो समझ में न आ सके। बोधगम्य।

अज्ञर\*-वि० जो न सरे, न गिरे और न बरने।

अटवर-सज्ञा पु० ठहर। अटाला। रात्रि।

गमूह।

अट-गज्ञा स्त्री० प्रतिवध। रोक। शतं। कंद।

अटक-सज्ञा स्त्री० [ त्रि० अटवाना। वि०

अटवाऊ] १. रखावट। अडचन। रोक।

विघ्न। बाधा। २ सकोच। हिचक। ४

मिथ्य नदी का दूसरा नाम। ५ हर्ज

अनाज। ६ एक गहर का नाम।

अटकन\*-सज्ञा पु० रोक। दे० "अटक"।

अटकन-वटवटन-सज्ञा पु० [ देश० ] बच्चों

का एक खेल।

अटकना-त्रि० अ० १ अठना। एकना।

ठहरना। २ लगा रहना। फँसना। ३

प्रीति करना। प्रेम में फँसना। ४ विवाह

या झगडा करना।

अटकर\*-सज्ञा स्त्री० अन्दाज। दे० "अटकल"।

अटकरना-त्रि० स० कूतना। अटकल

लगाना। अदाज करना।

अटकल-सज्ञा स्त्री० १ अनुमान। कल्पना।

विचार। २ अदाज। कूत।

अटकलपच्छू-सज्ञा पु० बिना प्रमाण। मात्र

अदाज। कल्पना। अनिश्चित।

वि० ऊटपटांग। खयाली।

क्रि० वि० अनुमान से। अदाज से।

अटका-सज्ञा पु० १ जगनाथजी को चढ़ाया

हुआ भात तथा धन। २ मिट्टी का पात्र-

विशेष।

अटकना-क्रि० स० १ उलझाना। फँसाना।

२ छेकना। किसी कार्य में विघ्न डालना।

रोकना। ठहराना। अडाना। ३ पूरा

करने में देर करना।

अटकाय-सज्ञा पु० १ रखावट। रोक।

बधन। २ विघ्न। बाधा।

अटखट\*-वि० अडबड। अट्ट-सट्ट।

अटखेल-वि० बहुत, खेलनेवाला। खिलाडी।

चंचल।

दट-वि० मोटा। पोटा। दूढ़।  
 दन-सज्ञा पु० चलना। घूमना। फिरना।  
 भ्रमण। यात्रा।  
 दना-क्रि० अ० १ घूमना। फिरना।  
 २ यात्रा या सफर करना।  
 क्रि० अ० आड करना। ओट करना।  
 छकना। ३ समाना। भरना।  
 अटपट-वि० [स्त्री० अटपटी] १ टेढ़ा।  
 विकट। मुश्किल। कठिन। २ दुर्गम।  
 ३ गूढ़। जटिल। ४ अनियमित। ऊटपटांग।  
 ५ बाँका। टर्का।  
 अटपडाना-क्रि० अ० १ गड़बड़ाना। चूकना।  
 २ लड़खड़ाना। अटकना। ३ सकोच  
 करना। हिचकना।  
 अटपटी\*-सज्ञा स्त्री० १ नटखटी। झरझरी।  
 २ निरली। ऐंड़ी। टेढ़ी। बेढगी। ३ कठिन।  
 अटव्वर-सज्ञा पु० आडवर। अभिमान।  
 २५।  
 अज्ञा पु० कुटुंब। परिवार। कुनवा।  
 अज्ञानी-सज्ञा पु० [अज्ञ०] कलकत्ता और  
 गवई हाईकोर्टों में मुअविकलो के मुकद्दमे  
 २५ केरवी के लिए बैरिस्टर नियुक्त  
 करावाला वकील या मखतार।  
 अटल-वि० १ अचल। स्थिर। जो न टले।  
 २ विरथायी। सदैव बना रहनेवाला।  
 तिल। ३ अवश्यभावी। जिसका होना  
 निश्चित हो। ४ ध्रुव। पक्का। दृढ़।  
 पोटा। ५ गुसाइयो के एक अखाड़े का  
 नाम।  
 अटवाटी छटवाटी-सज्ञा स्त्री० साज ममाज।  
 मात-मटोला।  
 महा०—अटवाटी अटवाटी लेकर पडना—  
 कामकाज छोड़ बैठकर अलग पड रहना।  
 अटवी-सज्ञा स्त्री० मानन। जगठ। घन।  
 अट्टर-सज्ञा स्त्री० १ राशि। डर। २  
 पगड़ी। पैंटा।  
 मना पु० कठिनाई। मुश्किल।  
 अना-मना स्त्री० अटारी। घर के ऊपर का  
 बाड़ा।  
 मना पु० अटाठा। राशि। दर। गमूह।  
 अनाट-वि० वि० कु०। निनात। पूरे तौर पर।

अटारी-सज्ञा स्त्री० घर के ऊपर की छत  
 या कोठरी। कोठा। दे० 'अटा'।  
 अटाल-सज्ञा पु० धरहरा। वृज्ज।  
 अटाला-सज्ञा पु० १ राशि। डर। २  
 सामान। असबाब। सामग्री। ३ कराइयो  
 की बस्ती।  
 अटिया-सज्ञा स्त्री० छोटी मंडिया। झोपड़ी।  
 छोटा मकान। पर्णकुटी।  
 अटैक-वि० निराश्रय। उद्देश्यहीन। भ्रष्ट-  
 प्रतिज्ञ।  
 अटूट-वि० १ जो टूटने योग्य न हो। दृढ़।  
 मजबूत। पुष्ट। २ अजेय। जिसका पतन  
 न हो। ३ लगातार। अखंड। ४ अधिक।  
 बहुत। ५ संपूर्ण। पूरा। कुल।  
 अटैरन-सज्ञा पु० [क्रि० अटैरना] १ ओटना।  
 सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक  
 यंत्र। चरखी। फेरी। २ घोड़े को  
 बाधा या चक्कर देने की रीति।  
 अटैरना-क्रि० स० १ अटैरन से सूत की  
 आँटी या गड़ड़ी बनाना। २ मात्रा से अधिक  
 नशा पीना। ३ मोड़ना।  
 अटट-सज्ञा पु० अटटालिवा। अटारी।  
 मकान में सबसे ऊपर का कोठा। हाट।  
 बाजार।  
 वि० ऊँचा। जिसमें जोर का शब्द हो।  
 अटट-सटट-सज्ञा पु० [अनु०] अट-सट।  
 अनाप शनाप। प्रलाप। व्यर्थ की बात।  
 अटटहास-सज्ञा पु० जोर की हँसी। ठाकर  
 या खिलखिलाकर हँसना।  
 अटटालिका-सज्ञा स्त्री० १ कोठा। अटारी।  
 २ राजगृह। प्रासाद।  
 अटटी-सज्ञा स्त्री० लच्छी। अटरन पर  
 पड़ा हुआ मूत या ऊन।  
 अटठा-सज्ञा पु० ताश का आठ वूटिया  
 चांग पत्ता।  
 अटठाइस-वि० दे० 'अटठाईस'।  
 अटठाईस-वि० बीस और आठ। २८।  
 अटठानवे-वि० नव्य और आठ। ९८।  
 अटठावन-वि० पचास और आठ। ५८।  
 अटठासी-वि० द० अठानो। अस्सी और  
 आठ। ८८।

अठंग\*-सज्ञा पु० अष्टांग योग ।  
 अठ\*-वि० दे० "आठ" । (समाप्त में) । ८ ।  
 अठइसी-सज्ञा स्त्री० २८ गाही । १४० की  
 सरया जिसे फल आदि के लेन-देन में  
 सेकड़ा मानते हैं ।  
 अठई-सज्ञा स्त्री० अष्टमी तिथि ।  
 अठकौशल-सज्ञा पु० १ मन्त्रणा । मलाह ।  
 २. पचायत । गाष्टी ।  
 अठखेली-सज्ञा स्त्री० १ ग्रीडा । विनोद ।  
 २. चुलबुलाहट । चपलता ।  
 अठनी-सज्ञा स्त्री० आधा रुपया । आठ  
 आने का सिक्का । अघेली ।  
 अठत्तर-वि० दे० "अठहत्तर" । सत्तर और  
 आठ । ७८ ।  
 अठपहला-वि० आठ कोने का । आठ  
 पार्श्ववाला ।  
 अठपाव-सज्ञा पु० ऊधम । शरारत । उपद्रव ।  
 अठमास-सज्ञा पु० दे० खेत जो आठ मास  
 तक जोता जाय । वह गर्भ जो आठ महीने  
 में उत्पन्न हो जाय । "अठवाँस" ।  
 अठमासो-सज्ञा स्त्री० गिनी । आठ मासो  
 का सोने का सिक्का । आठवें मास उत्पन्न  
 वालिका ।  
 अठल-सज्ञा पु० सस्कार-विशेष ।  
 अठलाना\*-क्रि० अ० १ इतराना । ठसक  
 दिखाना । ऐँठ दिखाना । गर्व जनाना ।  
 २ नखरा या चोचला करना । ३ मदोन्मत्त  
 होना । मस्ती दिखाना । ४ छेड़ने के लिए  
 जान बूझकर अनजान बनना ।  
 अठवाँस-वि० अठपहला । अठपहली बन्ध ।  
 अठवाँसा-वि० वह गर्भ जो आठ ही मास  
 में उत्पन्न हो जाय ।  
 सज्ञा पु० १ सीमित सस्कार विशेष । २  
 वह खेत जिसमें ईख बोई जाय और जो  
 असाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता  
 जाय ।  
 अठवारा-सज्ञा पु० १ सप्ताह । हफ्ता ।  
 आठ दिन का समय । २ आठवाँ दिन ।  
 अठहत्तर-वि० गत्तर और आठ । ७८ ।  
 अठाई\*†-वि० उपद्रवी । उत्पाती । नटगट ।  
 शरीर ।

अठान-सज्ञा पु० १. जो वाय्य ठानने को  
 न हो । अयोग्य या दुष्कर कर्म । २. शत्रुता  
 शगडा । घेर ।  
 अठाना\*†-त्रि० स० मताना । पीड़ित करना  
 त्रि० स० ठानना । मचाना ।  
 अठारह-वि० दस और आठ । १८ ।  
 सज्ञा पु० १ चोमर का एक दाँव । २  
 वाय्य में पुराणमूचक मवेत या शब्द ।  
 अठासी-वि० अस्सी और आठ । ८८ ।  
 अठेल-वि० १ जो ठेला न जाय ।  
 बलवान् । मजबूत । ज़ोरावर । जो हट न  
 सके । २ यथेष्ट । प्रचुर । ३ दृढ़ । स्थिर ।  
 अठोठ-सज्ञा पु० आडंबर । पागड़ । ठाट ।  
 अठोतरसौ-वि० एक सौ आठ । १०८ ।  
 अठोतरसौ-सज्ञा स्त्री० १०८ गुरियों की  
 माला । १०८ का नमूह ।  
 अडग-सज्ञा पु० १ मण्डी । हाट । बाजार ।  
 विदेशीय या प्रांतीय वस्तुओं के उतारने  
 की जगह । उतार । २ विघ्न । रुकावट ।  
 अडंगा-सज्ञा पु० १ विघ्न । बाधा । २ रोक ।  
 टाँग अडाना । रुकावट । प्रतिबन्ध ।  
 अड-सज्ञा पु० १ हट । ज़िद । २ झगडा ।  
 विरोध । ३ गमन । चेष्टा ।  
 अडकाना\*†-त्रि० स० दे० "अडाना" ।  
 अडग-वि० स्थिर । न डिगनेवाला । अचल ।  
 अटल ।  
 अडगडा-सज्ञा पु० [अनु०] १ घोड़ो या  
 बैलियों के बिकन की जगह । २ बैलगाड़ियों  
 के ठहरने का स्थान ।  
 अडगोडा-सज्ञा पु० लम्बी का लम्बा टुकड़ा  
 जिसे नटखट चौपायो के गठे में बाँधते हैं ।  
 दुल्ना । डेगना । ठेकुर ।  
 अडचन-सज्ञा स्त्री० दे० "अडचल" । रुकावट ।  
 बाधा । विघ्न । आपत्ति ।  
 अडचल-सज्ञा स्त्री० अडचन । विघ्न । बाधा ।  
 अडम । आपत्ति । कठिनाई । दिक्कत ।  
 अडतल-सज्ञा पु० १ ओट । आड । ओवल ।  
 २ शरण । ३ हीला । बहाना । रक्षा ।  
 अडतल-सज्ञा पु० बचानेवाला । रक्षा  
 करनेवाला । दे० "अडतल" ।  
 अडतलीस-वि० चालीस और आठ । ४८ ।

अडतीस-वि० तीस और आठ। ३८।  
 अडदार-वि० १ अडिपल। ख ख रर,  
 चलनेवाला। २ ऐंरुदार। ३ मतवाला।  
 मन्त।  
 अडना-क्रि० अ० १ खना। घमना।  
 ठहरना। २ हठ या जिद पगना। ३  
 द्विविधा करना। ४ निश्चय में च्युत  
 होना।  
 अडग\*+वि० १ टेढ़ा मेढ़ा। अटपट।  
 अडवड। ऊँचा-नीचा। २ दुर्गम। कठिन।  
 ३ विलक्षण। अनोखा। बाना। तिछा।  
 ४ विघ्न। रुकावट।  
 अडवगा-वि० दे०\* 'अडवग।  
 अडगप-सज्ञा पु० कटिगप्य। बोपीन।  
 अडबल-सज्ञा पु० अड जानेवाला। खनेवाला।  
 हठी। मगरा। अडआ।  
 अडर\*-वि० बिना डर के। निर्भय।  
 अडसठ-वि० साठ और आठ। ६८।  
 अडहुल-सज्ञा पु० देवी फूल। जपा या  
 जपापुष्प।  
 अडाड-सज्ञा पु० १ चौपाया के रहन का  
 बाड़ा। खरिक्। २ दे० 'अडार'।  
 अडाडा-सज्ञा पु० ढाग।  
 अडान-सज्ञा स्त्री० १ पडाव। २ रुकन का  
 स्थान।  
 अडाना-क्रि० स० १ उलझाना। ठहराना।  
 रोकना। टिकाना। अटकाना। २ टेकना।  
 डाट लगाना। ३ ठेंसना। भरना। ४  
 कोई वस्तु बीच में देकर गति रोकना।  
 ५ गिराना। ढरकाना।  
 सज्ञा पु० १ राग-विशेष। २ वह लकड़ी  
 जो छत या बीवार आदि का गिरने से बचाने  
 के लिए लगाई जाती है। डाट। पना।  
 चाँड। पनी।  
 अडानी-सज्ञा स्त्री० छाता। रोकनवाला। बड़ा  
 पखा।  
 अडायता-वि० आड या जाट चूरनवाला।  
 अडार-सज्ञा पु० १ राशि। ढेर। समूह।  
 २ वेचन के लिए रक्खा हुआ ईधन।  
 ३ लकड़ी या ईंधन की ढूकान। ढाल।  
 \*वि० टेढ़ा। आडा। तिरछा।

अडारना+क्रि० ग० देना। डारना।  
 अडिग-वि० न डिगनेवाला। दृढ़। स्थिर।  
 अटल।  
 अडिपल-वि० १ ख-ख या अडख  
 चलनेवाला। जो चलते चलने रुक जाता  
 है। २ मुस्त। मट्ठर। ३ जिद्दी।  
 हठी।  
 अडिया-सज्ञा स्त्री० अण्डे के आकार की एक  
 लकड़ी जिसे टेककर फनीर बँटत है। लम्बे  
 आकार की नच्चे सूत की पिण्डी। फेंटी।  
 अडो-सज्ञा स्त्री० १ हठ। आग्रह। जिद।  
 २ आपस्यता का समय। ३ रोक।  
 वि०-हठी। आग्रही।  
 अडोठ-वि० जो दिखाई न दे। छिपा हुआ।  
 गुप्त।  
 अडलना\*-क्रि० स० उडेलना।  
 अडसा-सज्ञा पु० पौधा-विशेष जिसके पत्ते  
 और फूल आदि दवा के काम आते हैं।  
 हसा। पसा।  
 अडोल-वि० १ जो न हिले। स्थिर। अटल।  
 अचल। दृढ़। २ स्तब्ध। ठकमारा।  
 अडोसपडोस-सज्ञा पु० पास ही में।  
 आम-पास। करीब।  
 अडोसो-पडोसो-सज्ञा पु० आस-पास का  
 रहनवाला। हमसाया।  
 अडडा-सज्ञा पु० १ दिवने का स्थान।  
 ठहरने की जगह। २ केंद्रस्थान। प्रधान  
 स्थान। ३ मिलने या इकट्ठा होने की जगह।  
 ४ चिडिया के बैठने के लिए लकड़ी या  
 लोहे की छड़। ५ कबूतरो की छतरी।  
 ६ बरघा। ७ सेना रहने का स्थान।  
 छावनी।  
 अडतिया-सज्ञा पु० १ आहत करनेवाला।  
 वह दूकानदार जो ग्राहक या महाजनो  
 का माल खरीदकर भेजता और उनका  
 माल भेगाकर बेचता हो। २ दलाल।  
 अडवना-क्रि० स० काम में लगाना। आज्ञा  
 देना।  
 अडवायक\*-सज्ञा पु० जो दूसरो से काम लेता  
 हो।  
 अडई-वि० सख्या विशेष, दो और आधा।

अङ्गाङ्गुना-वि० दो ओर आपे के बराबर।  
अङ्गिया-सज्ञा स्त्री० [देश०] गाठ, पग्यर  
या ढाँटे का छोटा बर्तन।

अङ्गु-मज्ञा पु० चोट। ठोकर।

अङ्गुक्ता-त्रि० अ० '१ गहारा लेना। २  
ठोकर मारना।

अङ्गुकि-अध्य० उद्वेगकर। सहारा लेकर।

अङ्गुया-सज्ञा पु० १ ढाई गुने का पहवाडा।  
२ २½ मेर की तौल या बाट।

अणि-सज्ञा स्त्री० तीखी धार। नोक। सीमा।  
विनारा। अक्षाग्र। कीलक। पहिये के  
अग्रभाग का काँटा। बाढ़। घात।

वि० बहुत छोटा।

अणिमा-सज्ञा स्त्री० अष्ट सिद्धियाँ में पहली  
सिद्धि, जिसमें योगी छोटे से छोटा रूप  
धारण कर सकता है।

अणी-सज्ञा स्त्री० दे० 'अणि'। अनी।

अणीय-वि० अति सूक्ष्म। वारीक।

अणु-सज्ञा पु० १ द्व्यणुव से सूक्ष्म और  
परमाणु से बड़ा कण (६० परमाणुओं  
का)। २ छोटा कण या टुकड़ा। ३ रजकण।  
४ अत्यंत सूक्ष्म मात्रा। ५ धान्य विशेष।  
वि० १ बहुत छोटा। अति सूक्ष्म। २  
दिखाई न देनेवाला।

अणुमात्र-वि० छोटा-मा। अत्यन्त सूक्ष्म।

अणुवाद-सज्ञा पु० १ वैशेषिक दर्शन। २ वह  
दर्शन या सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा  
अणु माना गया हो (रामानुज का)।

अणुवादी-सज्ञा पु० १ जो वैशेषिक दर्शन  
को माने। नैयायिक। २ रामानुज का  
अनुयायी।

अणुवीक्षण-सज्ञा पु० १ खुदवीन। सूक्ष्म  
दृशक यंत्र। २ छिद्रावेपण। बाल की खाल  
निकालना।

अतद्रिक-वि० १ चुस्त। चंचल। आलस्य  
रहित। २ बेचैन। व्याकुल।

अत-क्रि० वि० इसलिए। इससे। इस  
कारण। इस वजह से।

अतएव-क्रि० वि० इसलिए। इस हेतु से।  
इस कारण से।

अतम्य-वि० असत्य। झूठ।

अतद्गुण-मज्ञा पु० वह अङ्गुवार जिग  
पयोपत्ति कारण रहने पर भी किसी वस्तु  
या प्राणी में दूसरी वस्तु या प्राणी के गुण  
का ग्रहण नहीं दिसलाया जाता।

अतनु या अतन-वि० १ देह या शरीर-गहित  
२ स्थूल। मोटा।

सज्ञा पु० कामदेव। अनग।

अतरण-सज्ञा पु० वह त्रिया जिसमें लग्न  
जमीन में उगाडकर रखा जाता है।

अतर-सज्ञा पु० [अ० इत्र] पूरों की  
मुग्धि का मार। निर्यास। पुष्पसार। द०  
'इत्र'।

अतरदान-सज्ञा पु० [का० इत्रदान] इत्र  
रखने का बर्तन।

अतरसौ-त्रि० वि० १ आनेवाला तीसरा  
दिन। परसो के आगे का आनेवाला  
दिन। २ तीसरा बीता हुआ दिन।  
परसो से पहले का बीता हुआ दिन।

अनकित-वि० १ आकस्मिक। जिसका पहले  
से अनुमान न हो। २ जो सोचा समझा  
न गया हो। जिस पर विचार न हुआ हो।  
अतर्क्य-वि० तर्क वितर्क के अयोग्य। अचिंत्य।  
अनिर्वचनीय।

अतल-सज्ञा पु० १ पाताल का एक भेद। २  
बिना तल का। बिना पेंदे का। ३ गोल।

अतलस-सज्ञा स्त्री० [अ०] एक रेशमी  
कपड़ा।

अतलस्पर्श-वि० अगाध, अति गभीर। जिसके  
तल का स्पर्श न हो सके।

अतलस्पर्शी-वि० अथाह। अतल को छूने  
वाला। बहुत गहरा।

अतलातक-सज्ञा पु० [अग्ने० एटलान्टिक]  
एक महासागर जो यूरोप और अफ्रीका के  
पश्चिमी किनारे से अमेरिका के पूर्वी किनारे  
तक फैला हुआ है।

अतसी-सज्ञा स्त्री० अलसी। तीसी। सन।

अत्तवार-सज्ञा पु० इतवार। ऐतवार। दे०  
"रविवार"।

अता-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रदान।

अताई-वि० [अ०] १ प्रवीण। दक्ष।  
कुशल। २ चालाक। धूर्त। ३ किसी नाम

को बिना सीखे हुए बरनवाला । ४ गर्वया ।  
 ५ जन्मी वजानेवाला, वजवैया ।  
 अति-वि० अधिक । बहुत । ज्यादा ।  
 सजा स्त्री० बहुतामत । अधिकता । ज्यादाती ।  
 अतिउक्ति-सजा स्त्री० अत्युक्ति । असभव ।  
 प्रशंसा वाक्य का एक अल्पाकार । दे०  
 "अत्युक्ति" ।  
 तिकाय-वि० मोटा । स्थूल ।  
 सजा पु० १ बड़ा शरीर । २ भयानक  
 शरीरवाला । ३ रावण का एक पुत्र ।  
 तिकाल-सजा पु० १ देर । विलंब ।  
 २ कुसमय ।  
 तिकुचल-सजा पु० १ अत्यन्त कष्ट ।  
 २ १२ दिना का व्रत विशेष । (धर्मशास्त्र)  
 तिकृति-सजा स्त्री० १ पचीम वर्ण के  
 वृत्ता की सजा । २ मात्रा से अधिक की  
 हुई ।  
 अतिश्रम-सजा पु० १ विपरीत व्यवहार ।  
 मर्यादा या नियम का उल्लंघन । २ पार  
 होना । ३ अपमान करना । अन्यथाचरण ।  
 ४ रुमभय करना ।  
 अतिक्रमण-सजा पु० सीमा के बाहर जाना  
 या भीतर आना । उल्लंघन । बढ़ जाना ।  
 अतिक्रान्त-वि० १ सीमा के बाहर गया  
 हुआ । पार गया हुआ । २ व्यतीत । बीता  
 हुआ ।  
 अतिगति-सजा स्त्री० मोक्ष । मुक्ति । अन्तिम  
 गति ।  
 अतिचार-सजा पु० १ व्यतिक्रम । विघात ।  
 २ ग्रहों की शोभन चाल । एक राशि का  
 भोगवाल समाप्त किये बिना किसी ग्रह  
 का दूसरी राशि में चला जाना ।  
 अतिजगती-सजा स्त्री० तेरह वर्ण के वृत्तों  
 की सजा ।  
 अतिथि-सजा पु० १ अभ्यागत । मेहमान ।  
 पाहुने । साधु । यानी । घर में आया हुआ  
 पनात व्यक्ति । २ वह सन्यासी जो  
 किसी स्थान पर एक रात से अधिक न  
 ठहरे । आत्य । ३ यज्ञ में सोमलता लाने  
 वाला । ४ अग्नि । ५ राम के पौत्र तथा  
 बुध के पुत्र का नाम । ६ अग्नि का एक

नाम । ७ राम के पौत्र और अयोध्या के  
 राजा सुहोत्र का एक नाम ।  
 अतिथिपूजा-सजा स्त्री० १ मेहमानदारी ।  
 अतिथि का आदर-सत्कार । २ पंचमहायज्ञ  
 में से एक ।  
 अतिथिभयत-सजा पु० अतिथियों की सेवा  
 करनेवाला । अतिथिपूजक ।  
 अतिथिपूजा-सजा पु० १ अतिथिपूजा । अतिथि  
 का स्वागत । २ पंचमहायज्ञ में से एक ।  
 अतिदेश-सजा पु० १ वह नियम जो अन्य  
 विषयों में भी काम आवे । बहुत व्यापक  
 नियम । २ बदली । ३ अति प्रभाव । ४  
 पूर्ववर्णित । ५ पहले कही बात या नियम की  
 उपक्षा करनेवाला उसे न माननेवाला ।  
 अतिवृत्ति-सजा स्त्री० १ उनीस वर्ण के  
 चार चरणोवाले वृत्ता की सजा । २ उनीस  
 की संख्या (गणित) ।  
 अतिपत्था-सजा पु० बड़ा मार्ग । राजपथ ।  
 सड़प ।  
 अतिपर-सजा पु० १ अतिशय । महाबेरी ।  
 २ उदासीन । ३ असम्बन्ध ।  
 अतिपराक्रम-सजा पु० वज्र प्रताप । बड़ा तेज ।  
 अति तेजस्वी ।  
 अतिपात-सजा पु० १ गड़बड़ी । अव्यवस्था ।  
 २ अन्याय । उत्पात । उपद्रव । अतिक्रम ।  
 ३ विघ्न । बाधा । विरोध । ४ भिषाद  
 समाप्त होना । ५ उपक्षा । ६ दुष्प्रयोग ।  
 अतिपातक-सजा पु० पुरुष के लिए माता  
 बटी और पतीह के साथ और स्त्री के लिए  
 पुत्र पिता और दामाद के साथ गमन ।  
 अतिपान-सजा पु० बहुत पीना । मत्तता । पीने  
 का व्यसन ।  
 अतिपाश्र्व-सजा पु० सन्निकट । समीप । अति  
 निकट । बहुत ही पास । दूर नहीं ।  
 अतिप्रसंग-सजा पु० अत्यंत मल । पुनरुक्ति ।  
 अतिविस्तार । व्यभिचार । तम का नाश  
 करना ।  
 अतिथरवे-सजा पु० छंद विशेष ।  
 अतिवृत्ति-वि० प्रचंड । अत्यंत बला ।  
 अतिबला-सजा स्त्री० १ एक प्राचीन युद्ध  
 विद्या जिसके सीखने से शत्रु और ऊपर

आदि की बाधा का भय नहीं रहता था ।  
२ बगही या कचही नामक पीधा । पीत-  
यला । घरियारी का पेड़ ।

अतिमुक्त-वि० १ विषयवामना-रहित । २  
जिम्हीं मुक्ति हो गई हो । ३ अनुचर । वंश ।  
अतिधोग-सज्ञा पु० एक वस्तु का दूसरी वस्तु के  
साथ नियत परिमाण में अत्यधिक मिलाव ।  
अतिरेजन-सज्ञा पु० अत्युक्ति । बड़ा-बड़ा-  
कर कहने की रीति । वर्णन का अतिरेक ।  
अतिरथी-सज्ञा पु० अतिशय थोड़ा । वह जो  
अकेले बहुतों के साथ लड़ सके ।  
अतिरिक्त-क्रि० वि० १ अलावा । छोड़कर ।  
सिवाय । परिमाण से अधिक ।

वि० १ बचा हुआ । शेष । २ भिन्न । अलग ।  
अतिरिक्त पत्र-सज्ञा पु० थोड़ा पत्र । अखबार  
के साथ बँटनेवाली सूचना या विज्ञापन ।  
अतिरेक-सज्ञा पु० आधिक्य । अतिशय ।  
बहुत ही । बाहुल्य । ज्यादाती । व्यर्थ या  
अनावश्यक वृद्धि ।

अतिरोग-सज्ञा पु० महाव्याधि । यक्ष्मा ।  
क्षयी । असाध्य रोग ।

अतिवाद-सज्ञा पु० १ मच्चि वात । २ कड़ई  
वात । अपमानजनक भाषा । ३ शेखी । डींग ।  
अतिवादी-वि० १ सत्य बोलने वाला ।  
२ कटुवादी । ३ डींग मारने वाला ।  
यक्ष्मादी ।

अतिवाहिक-सज्ञा पु० पाताल-निवासी ।  
अतिविद्या-सज्ञा स्त्री० १ अतीस । २ अत्यत  
विषवाली ।

अतिबेल-वि० बेहद । असीम ।  
अतिवृष्टि-सज्ञा स्त्री० १ अत्यत वर्षा ।  
२ छ ईतियों में से एक ।

अतिव्याप्ति-सज्ञा स्त्री० लक्षण के अतर्गत  
लक्ष्य के अतिरिक्त अन्य वस्तु के गृहीत  
हो जाने का दोष (न्याय-शास्त्र) ।

अतिशय-वि० अधिक । बहुत ।

सज्ञा पु० १ प्राचीनो के अनुसार एक  
अलवार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर  
सभावना या असभावना दिखलाई जाय ।  
२ यज्ञ । बाहुल्य । ३ बहुत बड़े हाथवाला ।  
अतिशय उक्ति-सज्ञा स्त्री० अत्यन्त चतु-

राई । नाव्य का अलवार-विशेष । दे-  
"अतिशयोक्ति" ।

अतिशयी-वि० श्रेष्ठ । अधिप । अत्यन्त ।  
अतिशयोक्ति-सज्ञा स्त्री० अलवार-विशे-  
जिममें भेद में अभेद, अवयव में सब  
तथा इनके विपरीत आदि दिखाकर वि-  
वस्तु का बहुत बड़ा-बड़ाकर वर्णन करते हैं  
अतिशयोपमा-सज्ञा स्त्री० दे० "अनन्वय"  
अलवार ।

अतिशय-सज्ञा पु० आज्ञा या प्रतिज्ञा का  
भंग करना ।

अतिशयान-सज्ञा पु० १. अतिशयमण । घोषा  
० विद्वान्मथात ।

अतिशामान्य-सज्ञा पु० वह वान जो इत-  
अधिक नाधारण रूप में बही जाय कि  
पूरी पूरी सब पर न घटे (न्याय) ।

अतिसार-सज्ञा पु० १ सग्रहणी । रोग-विशेष  
जिसमें खाया हुआ पदार्थ अँट्रिया में से  
पतले दस्तों के रूप में निकल जाना है  
२ जठर की व्याधि । पेट की पीड़ा ।

अतिहसित-सज्ञा पु० हँस के छ भेदों में  
से एक जिसमें हँसनेवाला ताली पीटे और  
उसके नेत्रों से आँसू निकले ।

अतीन्द्रिय-वि० अप्रत्यक्ष । अगोचर । अव्यक्त ।  
जिसका अनुभव इन्द्रियों से न हो ।

अतीत-वि० १ बीता हुआ । भूत । गत ।  
व्यतीत । २ पृथक् । अलग । ३ मग्न हुआ ।  
क्रि० वि० बाहर । परे । अतिक्रान्त ।

सज्ञा पु० १ सगीत शास्त्रानुसार परिमाण-  
विशेष । २ मन्वासी । यति । साधु ।

अतीतवाल-सज्ञा पु० बीता हुआ समय ।  
अतीतना\*-क्रि० अ० बीतना । गुजरना ।

क्रि० स० १ व्यतीत करना । बिताना ।  
२ त्यागना । छोड़ना ।

अतीव\*-सज्ञा पु० दे० "अतिधि" ।

अतीव-वि० अतिशय । यथेष्ट । बहुत । अत्यत ।

अतीस-सज्ञा पु० पहाड़ी पीधा-विशेष जिसकी  
जड़ दवाजा में काम आती है । विषा ।  
अतिविषा । औषध-विशेष ।

अतिसार-सज्ञा पु० दे० "अतिसार" । एव  
रोग ।

रुआई\*—सजा स्त्री० १ शीघ्रता। आतुरता।  
रुदी। २ चपलता। चचलता।

रुताना\*—क्रि० अ० अकुलाना। आतुर  
होना। पयसाना। शीघ्रता करना।

तुल-वि० १ जिसकी तोल न हो सके।  
२ बहुत अधिक। अमित। असीम। ३.  
अनुपम। अनोखा। बेजोड़। असदृश। तुलना  
रहित।

सजा पु० १ केशव के अनुसार अनुकूल  
नायक। २ तिल का पेड़।

तुलनीय-वि० १ अपार। बहुत अधिक।  
२ उपमारहित। सर्वश्रेष्ठ। अनुपम।  
अद्वितीय।

तुलित-वि० १ जो तोला हुआ न हो। २  
अपरिमित। अपार। बहुत अधिक। ३  
असरय। ४ अनोखा। अनुपम।

अतुल्य-वि० १ अमदृश। अममान। २  
अनुपम। बेजोड़।

अतुय\*—वि० विचिन। अप्रुवं।

अतुल\*—वि० दे० “अतुल”।

अतुप्त-वि० [सजा अतृप्ति] १ जो तृप्त  
न हो। २ भूखा।

अतृप्ति-सजा स्त्री० असंतुष्टि।

अतृज-वि० क्षीणता। हतथी। हतप्रभ।

अतोर\*—वि० दृढ़। न टूटनेवाला। अभय।

अतोल-वि० १ अप्रमाणित। जिसका अंदाज  
न किया गया हो। २ बहुत अधिक। ३  
बेजोड़। अनुपम।

अतोल-वि० दे० “अतोल”।

अत\*—सजा स्त्री०। अधिकता। ज्यादाती  
दे० “अति”।

अत्ता-सजा स्त्री० १ माता। २ ज्येष्ठा  
वहिन। ३ बड़ी मौमी। ४ साम।

अत्तार-सजा पु० [अ०] १ गधी। इत्र का  
तेल बेचनेवाला। २ मूनानी दवा बनाने  
और बेचनेवाला।

अस्तिका-सजा स्त्री० जेडी वहिन।

अत्यत-वि० बहुत ज्यादा। सीमा से अधिक।  
अतिशय। अतीव।

अत्यताभाव-सजा पु० १ पूर्ण अभाव। बिलकुल  
कमी। सत्ता का बिलकुल न होना। २ पाँच

प्रकार के अभावों में से एक। तीनों कालों  
में अमंभव। जैसे, आकाशबुसुम, वध्या-  
पुत्र। (वैशेषिक) नितान्त अभाव।

अत्यतिक-वि० १. समीप का। नजदीकी।  
२ जो बहुत घूमता हो।

अत्यम्ल-सजा पु० इमली।

वि० बहुत खट्टा।

अत्यय-सजा पु० विस्तार। अनिशय। अधिक।

अत्यय-सजा पु० १ विनाश। मृत्यु। नाश।

२ सीमा के बाहर जाना। अतिक्रम।

राजाज्ञा का उल्लंघन। अपराध। पाप।

३ दंड। ४ कष्ट। ५ दोष।

अत्यष्टि-सजा स्त्री० १७ वर्ण के चार पदों  
के वृत्तों की सजा।

अत्याचार-सजा पु० १ कुव्यवहार। आचार।

अन्याय का अतिक्रमण। ज्यादाती। २

दुराचार। पाप। निषिद्ध आचरण। ३

पाखंड। आडंबर। ढाग।

अत्याचारी-वि० १ अत्याचार करनेवाला।

अन्यायी। निष्ठुर। २ पाखंडी। ढोंगी।

३ दुरात्मा। कुकर्मी।

अत्याज्य-वि० १ जो छोड़ने योग्य न हो।

२ जो छोड़ा न जा सके।

अत्युक्त-वि० जिसका वर्णन बहुत बड़ा  
चढ़ाकर किया गया हो।

अत्युज्जि-सजा स्त्री० १ बड़ा-चढ़ाकर  
वर्णन करने की शैली। २ काव्य में एक  
अलंकार।

अत्युक्त्या-सजा स्त्री० छंद-विशेष।

अत्युत्कट-वि० अतिगय कठिन। अतितीव्र।

अत्युत्कण्ड-सजा स्त्री० अतिशय मनस्ताप।

अत्यन्त चिन्ता।

अत्युत्कृष्ट-वि० अत्युत्तम। बहुत अच्छा।

अत्युत्तम-सजा पु० वि० अति रमणीय।

अतिशय। उत्कृष्ट। बहुत अच्छा।

अत्युत्तर-सजा पु० मिद्वान्त। निश्चय करना।

सीमासा निर्धारण।

अत्र-त्रि० वि० यहाँ। इस स्थान पर।

\*सजा पु० “अत्र” का अपभ्रंश।

अत्रत्य-[अपभ्रंश] त्रि० वि० यहीं ना।

इसी स्थान का। दे० ‘अत्र’।

अप्रक-वि० १. यहाँ का। २. ऐहिक। इस लोक का।

अ-त्रप-वि० निर्लज्ज। लज्जाहीन। वेशमं। वेह्या।

अप्रभवान्-मज्ञा पु० [स्त्री० अप्रभवनी] माननीय। श्लाघ्य। पूज्य। श्रेष्ठ।

अप्रस्थ-मज्ञा पु० इसी स्थान का वागी। यही रहनेवाला। यहाँ का।

अग्नि-सज्ञा पु० १. आकाश में सप्तपि-मण्डल का एक तारा। २. मन्त्रपियों में से एक जो ब्रह्मा के पुत्र माने जाते हैं।

अग्निगुण्य-मज्ञा पु० सत्व, रज, तम गुणों का न होना।

अथ-अव्य० १. अव। २. अनंतर। ३. एक शब्द जगमे प्राचीन लोग श्रव या लेख का आरम्भ करते थे। ४. प्रश्न। ५. अधिकार। ६. मन्त्र। ७. अवस्था। ८. समुच्चय। ९. तदन्तर। तदुपरि। पश्चात्।

अथर्जु-मज्ञा पु० जैन लोगों का मूर्ध्नि के पहरे करने का भोजन।

अथक-वि० न थकनेवाला। अथान। अथकित। अवकाश।

अथक्ष-अव्य० और। और भी।

अथना\*-वि० अ० डूबना। अस्त होना।

अथमना†-सज्ञा पु० 'उपमना' का उलटा। पश्चिम दिशा।

अथरा-मज्ञा पु० [स्त्री० अथरी] नाँद। मिट्टी का लुले मुँह का चौड़ा वर्तन।

अथर्व-सज्ञा पु० १. चार वेदों में अतिम वेद जिसके मन्त्र-द्रष्टा या ऋषि भृगु और अगिरा गोत्रवाले थे। २. अतिवृद्ध।

अथर्वण-मज्ञा पु० १. गिव। महादेव। २. अथर्ववेद।

अथर्वणो-मज्ञा पु० पुरोहित। अथर्ववेदज्ञ ब्राह्मण।

अथर्वन्-सज्ञा पु० दे० "अथर्व"।

अथर्वनी-सज्ञा पु० पुरोहित। कर्मकांडी। यज्ञादि करानेवाला।

अथर्वशिल-मज्ञा पु० एक उपनिषद।

अथर्वश्रुति-मज्ञा पु० एक उपनिषद।

अथर्वशिर-मज्ञा पु० अथर्ववेद का गानवा उपनिषद।

अथर्वा-मज्ञा पु० ब्रह्माके ज्येष्ठ पुत्र का नाम अथर्व-मज्ञा पु० वह भूमि जो लगान देकर दूसरे को जानने को दी जाती है।

अथवना\*-वि० अ० १. (मूर्ध्नि, चंद्र आदि का) डूबना। अस्त होना। २. चल जाना। लुप्त होना। अदृश्य होना।

अथवा-अव्य० १. या। वा। किवा। एक वियोजक अव्यय जिनका प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कई शब्दों या पदों में से किसी एक का ग्रहण अभीष्ट हो। २. प्रकाशान्तर। पक्षान्तर। ३. विकल्प का सूचक शब्द।

अथाई-सज्ञा स्त्री० १. बैठक। बैठने की जगह। २. झुकते होकर पचायत करने की जगह। ३. घर के सामने का चबूतरा। ४. मभा। मडली। जमावडा।

अथान, अथाना-सज्ञा पु० अचार। खटाई। वि० बिना स्थान। बैठकाने।

अथाना\*-वि० अ० दे० "अथवना"। नि० म० १. डूबना। २. थाह लेना। गहराई नापना।

अथाह-वि० १. अगाध। बहुत गहरा। जिसकी थाह न हो। २. बहुत अधिक। जिसका अंदाज न हो सके। अपरिमित। ३. गूढ। गंभीर।

सज्ञा पु० १. गहराई। २. जलाशय। ३. समुद्र।

अथिर\*-वि० जो स्थिर न हो। दे० "अस्थिर"।

अथोर\*-वि० १. बहुत। अधिक। २. पूरा। षोडा नहीं।

अथाध-अप्रज्वलित। अपक्व। न जला हुआ। कच्चा।

अथक\*-सज्ञा पु० भय। डर। भीति।

अथङ-वि० १. जो दंड के अयोग्य हो। सजा में मक्त। २. जिस पर कर न लगे। ३. निडर। निर्भय। श्वेच्छाचारी। ४. बली। ५. पलाश आदि के दंड से रहित (धर्मशास्त्र)। ६. उद्द।

सज्ञा पु० वह भूमि जिसकी मालगुजारी न लगे। मुआफी।  
 दडनीय-वि० १ जो दड पाने के अयोग्य हो। अदडय। २ स्वधर्मनिष्ठ। सदाचारी। महात्मा।  
 दडमान-वि० जो दड के योग्य न हो। दड से मुक्त।  
 दडय-वि० जिसे दड न दिया जा सके। दड से मुक्त।  
 ददत-वि० १ जिसके दाँत न हो। २ दुध-मुहाँ। बहुत छोटी अवस्था का। ३ वे अक्षर जिन्हें बोलने में दाँत की सहायता न लनी पड़े (व्याकरण)।  
 ददभ-वि० १ पाखंडविहीन। दभ या अभिमान से रहित। २ निश्चल। सच्चा। निष्कपट। ३ प्राकृतिक। स्वाभाविक। ४ शुद्ध। स्वच्छ। साफ।  
 सज्ञा पु० शिव।  
 ददग-वि० १ शुद्ध। वेदग २ निर्दोष। निरपराध। ३ अक्षूत। अस्पृष्ट। ४ साफ।  
 ददत-वि० १ न दिया हुआ। असमर्पित। २ अप्रतिपादित।  
 सज्ञा पु० वह वस्तु जिसके दिये जान पर भी लेनवाले को उसे रखने का अधिकार न हो (स्मृति)।  
 ददता-सज्ञा स्त्री० कुमारी। अनूठा। अविवाहिता कन्या। वह कन्या जिसका अभी पाकदान न हुआ हो।  
 दद-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ गिनती। सरया। २ सरया का संकेत या चिह्न।  
 ददन-सज्ञा पु० [ अ० ] पैगवरी मता के अनुसार स्वर्ग का वह उपवन जहाँ ईश्वर न आदम को बनाकर रखा था।  
 ददना-वि० [ अ० ] १ क्षुद्र। तुच्छ। नीच। २ सामान्य। साधारण। मामूली।  
 ददय-सज्ञा पु० [ अ० ] बड़ो का आदर मन्मान। शिष्टाचार। कायदा।  
 ददयदाकर-क्रि० वि० हठ परखे। अडकार। अवज्य।  
 ददभ-वि० १ अधिग। बहुत। प्रचुर।

२ अनंत। अपार। ३ यथेष्ट। ४, सपूर्ण। पूरा।  
 सज्ञा पु० स्लेच्छोत्पादक पुरुष।  
 ददम-सज्ञा पु० अभाव। न होना। अनुपस्थिति। परलोक।  
 ददमसबूत-सज्ञा पु० प्रमाण का अभाव। सबूत का न होना।  
 ददमहाजिरी-सज्ञा स्त्री० गैरहाजिरी। अनुपस्थिति।  
 ददमपेरवी-सज्ञा स्त्री० किसी मुकद्दमे में आवश्यक कार्रवाई न करना।  
 ददम्य-वि० प्रबल। जिसका दमन न हो सके। दुर्दान्त। प्रचंड।  
 ददय-वि० १ निदय। निष्ठुर। (व्यक्ति) २ दयारहित। (व्यापार)।  
 ददरक-सज्ञा पु० एक पौधा जिसकी तीक्ष्ण और चरपरी जड़ या गाँठ औषध और मसाले के काम में आती है। हरी सोठ।  
 ददरकी-सज्ञा स्त्री० टिकिया। जो सोठ और गुड़ मिलाकर बनाई जाती है।  
 ददरसा-सज्ञा पु० अनरसा। मिठाई बिनाप।  
 ददरा-सज्ञा पु० आर्द्रा नक्षत्र। दे० 'आर्द्र'। वि० दुलखा (पुत्र आदि)।  
 ददराना-क्रि० अ० इतराना। बहुत आदर पाने से शेखी पर चढ़ना। नि० स० आदर देकर शखी पर चढ़ाना। धमडी बनाना।  
 ददशन-सज्ञा पु० १ अनुपस्थिति। असाक्षात्। २ विनाश। लोप।  
 वि० छिपा। दबा। लुका। गुप्त।  
 ददशनीय-वि० १ जो देखने के योग्य न हो। २ बुरा। कुलूप। भद्दा। अदृश्य।  
 ददल-सज्ञा पु० [ अ० ] न्याय।  
 ददल बदल-सज्ञा पु० [ अ० ] परिवर्तन। उलट पुलट। हेर फेर।  
 ददली-सज्ञा पु० [ अ० अदल ] न्याय करनेवाला।  
 ददवान-सज्ञा स्त्री० अदवायन। चारपाई के पैताने की रस्सी। योनचन। औचन।  
 ददहन-सज्ञा पु० आग पर चढ़ा हुआ वह गरम पानी जिसमें चावल दाल आदि पकाते हैं।

अदात-वि० १ विना दात का (पशुओं के  
संघ में)  
अदात-वि० १. विपयासक्त। जो इन्द्रियों का  
दमन न कर सके। २ अग्रगण्य। उद्द।  
अदा-वि० [अ०] चुकता। देवान्।  
मुहा०—अदा करना=पालन या पूरा करना।  
जैसे—फर्ज अदा करना।  
सज्ञा स्त्री० [अ०] १ नगर। हाव-भाव।  
२ तर्ज। टग।  
अदाई\*—वि० [अ० अदा] १ चालबाज।  
२ ढगी।  
अदापाँ\*—वि० बायाँ या वाम। प्रतिकूल।  
बुरा।  
अदाघ\*—वि० १ विना दाग के। माफ।  
२ पवित्र। निर्दोष।  
अदाशीर्ष\*—वि० दे० 'अदाग'।  
अदाता—सज्ञा पु० १ भूमि। कृपण। कजूस।  
अदानी। २ लीचड। ३ दान-शक्ति  
हीन।  
अदान\*—वि० १ नासमझ। नादान। २ दान  
का अभाव।  
अदानी—वि० दान न देनेवाला। कजूस। कृपण।  
अदापणी—सज्ञा स्त्री० ऋण या देन का चुकाया  
जाना।  
अदापा—सज्ञा स्त्री० दयागून्यता। कठारता।  
निंद्यता। निष्ठुरता।  
अदालत—सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० अदा-  
लती] १ न्यायालय। बचहरी। २ न्याय  
करनेवाला।  
यो०—अदालत सफीरा=बह दीवानी अदा-  
लत जिसमें छोटे मुकद्दमे लिये जाते हैं।  
अदालत दीवानी=बह अदालत जिसमें  
संपत्ति या स्वत्व-संबंधी बातों का निणय  
होता है। अदालत मात्र=बह अदालत  
जिसमें लगान और मालगुजारी संबंधी  
मुकद्दमे दायर किए जाते हैं।  
अदाशती—वि० [अ० अदालत] १ जो  
मुकद्दमा लड़े। २ अदालत का। अदा-  
लत संबंधी।  
अदावे—सज्ञा पु० बुरा दाव। कठिनाई।  
अग्रमज्ज।

अदावत—सज्ञा स्त्री० [अ०] धैर्य। शत्रुता।  
दुश्मनी।  
अदावती—वि० १ अदावत रखनेवाला।  
२ विरोध में उत्पन्न। द्वेष-मूलक।  
बरी। शत्रु।  
अदाह\*—सज्ञा स्त्री० हाव-भाव। नाज-  
नकन।  
अदित\*—सज्ञा पु० दे० "आदित्य"।  
अदिति—सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। २ प्रवृत्ति।  
३ दक्ष प्रजापति की कन्या जो वदस्यप की  
पत्नी और देवताओं की माता हैं। ४  
अतर्गि। ५ बुलोक। ६ माना। ७ पिता।  
अदिनिनदन—सज्ञा पु० देवता। गुरु।  
अदितिमुत—सज्ञा पु० १ सूर्य्य। २ देवता।  
अदिन—सज्ञा पु० १ कुदिन। बुरा दिन।  
संनट या दुख का समय। २ अभाग्य।  
बुरी दशा।  
अदिव्य—वि० १ बुरा। २ नाधारण।  
लीजिक। ३ स्वर्ग का नहीं। पृथ्वी का।  
अदिव्य नायक—सज्ञा पु० बाव्यादि का वह  
नायक जो मनुष्य ही (साहित्य)।  
अदिष्ट\*—वि० दे० "अदृष्ट"। १ भाग्य।  
प्राप्त्य। विपत्ति। २ न देखा हुआ।  
अदिष्टी\*—वि० १ अभाग्य। २ मूर्ख।  
जो दूर तक न मोचे। ३ भाग्य को  
न माननेवाला। नारितन।  
अदीठ\*—वि० १ अलक्ष्य। बिना देखा  
हुआ। लुप्त। २ अनोखा।  
अदीन—वि० १ उग्र। प्रचंड। २ दीनता-  
रहित। निडर। ३ उदार।  
अदीपमान—वि० जो न दिया जाय।  
अदीर—वि० मूर्ख। महीन। छोटा।  
अवद\*—वि० १ निर्द्वंद्व। द्वंद्वरहित। जिसमें  
संज्ञ न हो। याथा रहित। २ शांत।  
निश्चित। ३ अनोखा। अद्वितीय।  
अदूर—क्रि० वि० पाम। समीप।  
अदूरदर्शी—वि० नासमझ। अविचारी। जो  
दूर तक न मोच।  
अदूषण—वि० शुद्ध। दोष-रहित। पवित्र।  
अदूषित—वि० शुद्ध। निर्दोष। पवित्र। मल-  
रहित।

अदृश्य-वि० १ गुप्त। जो दिखाई न दे। २ अगोचर। जिसका ज्ञान इन्द्रियों का न हो। ३ छिपा हुआ। लुप्त।

अदृष्ट-वि० १ जो देखा हुआ न हो। २ लुप्त। अदृश्य। ३ प्राकृतिक।

सज्ञा पु० १ भाग्य। २ अग्नि और जल आदि से उत्पन्न आपत्ति।

अदृष्ट पुण्य-सज्ञा पु० १ किसी कार्य में स्वयं कूद पड़नेवाला। २ बिना बनाये बननेवाला। ३ भाग्य। ४ ब्रह्मा।

अदृष्टपूर्व-वि० १ अद्वितीय। जो पहले न देखा गया हो। २ अनोखा। अद्भुत। विलक्षण।

अदृष्टफल-सज्ञा पु० पूर्व जर्मों के फल। सुख-दुःख। भाग्य-फल।

अदृष्टवाद-सज्ञा पु० सिद्धांत विशेष जो परश्व आदि परोक्ष वाता का निरूपण करता है। भाग्य को प्रधानता देनेवाला वाद।

अदृष्टार्थ-सज्ञा पु० वह शब्द-प्रमाण जिसके वाच्य या अर्थ का साक्षात् इस ससार में न हो, जैसे, स्वर्ग, परमात्मा इत्यादि। भाव्य वाक्य मात्र का विषय।

अदेख\*-वि० १ गुप्त। अदृश्य। २ जो देखा हुआ न हो। दे० 'अदृष्ट'।

अदेखी-वि० डाही। ट्रेप करनेवाला। ईर्ष्यालु। जो न देख सके।

अदेय-वि० जो देने योग्य न हो। जिसे दिया न जा सके।

अदेयदान-सज्ञा पु० अयोग्य को दान। अपात्र को दान।

अदेस\*-सज्ञा पु० १ आदेश। आज्ञा। २ दहवत्। प्रणाम। (साधु)

अदेह-वि० जिसके शरीर न हो।

सज्ञा पु० १ अनय। कामदेव। २ गजा जनक।

अदोख\*-वि० दोष रहित। दे० 'अदोष'।

अदोखिल\*-वि० निष्कलक। निर्दोष।

अदोष\*-वि० १ निरपराध। २ दोष-रहित। निष्कलक।

अदीरी+-सज्ञा स्त्री० उर्व की मुट्ठाई हुई बरी।

अद्वरज\*-सज्ञा पु० दे० "अध्वय्यु"।

अद्वा-सज्ञा पु० १ आग। २ आधी बोटल। अद्बी-सज्ञा स्त्री० १ एक पैसे का सोल-हवां भाग। आधी दमटी। २ आधा। बराबर भाग। ३ महीन सूती कपड़ा। तनजेब।

अद्भुत-वि० अनोखा। आश्चर्यजनक। विचित्र। सज्ञा पु० काव्य के नौ रसा में से एक। अद्भुताल्य-सज्ञा पु० दे० 'अजायबघर'। अद्भुतोपमा-सज्ञा स्त्री० उपमा अलंकार का एक भेद।

अद्य-क्रि० वि० आज। अब। अभी। वर्तमान दिन।

अद्यतन-वि० १ आजकल का। वर्तमान समय का। इस समय तक का। २ काल विशय (व्याकरण)।

अद्यापि-क्रि० वि० आज भी। आज तब। अभी तक।

अद्यावधि-क्रि० वि० अब तक। आज से लेकर।

अद्रव्य-सज्ञा पु० शून्य। सत्ताहीन पदार्थ। अभाव।

वि० दरिद्र। गरीब। द्रव्यहीन।

अद्रा\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'आद्री'।

अद्रि-सज्ञा पु० १ शैल। पहाड़। पर्वत। अचल। २ वृक्ष। ३ सूर्य। ४ परिमाण विशेष।

अद्रिकील-सज्ञा स्त्री० भूमि। पृथ्वी।

अद्रिज-सज्ञा पु० शिलाजीत। गेरू। पर्वत जात वस्तु।

अद्रिजा-सज्ञा स्त्री० १ अद्रितनया। पार्वती। २ सहेली। ३ वृक्ष। ४ पहाड़ पर उत्पन्न होनेवाली रत्ना।

अद्रितनया-सज्ञा स्त्री० १ दुर्गा। पार्वती। २ गंगा। ३ वृक्ष विशेष। दे० "अद्रिजा"।

अद्रिपति-सज्ञा पु० पर्वतराज। हिमालय पर्वत।

अद्रिचक्षि-सज्ञा स्त्री० पर्वत से उत्पन्न अग्नि।

अद्रिमिद-सज्ञा पु० १ पर्वतमेदक। २, वज्र। ३ इन्द्र।

अद्रिराज-सज्ञा पु० हिमालय पर्वत।

अद्रिशय-सज्ञा पु० पर्वत के ऊपर का भाग। पर्वत शिखर। चोटी।

अद्वितीय-वि० १ अकेला। २. बेजोड़।  
 जिगमै ऐमा दूसरा न हो। अनुय। अनुपम।  
 अनोखा। ३ मुख्य। प्रधान।  
 अद्वैत-वि० १. एकाकी। २. अनोखा।  
 बेजोड़। ३. भेदरहित।  
 सजा पु० दंड। सजा। (वेदान्त)  
 अद्वैतवाद-मज्ञा पु० यह सिद्धांत जिगमै  
 सजा के अतिरिक्त और किसी की सजा  
 नहीं मानी जाती तथा आत्मा और परमात्मा  
 में भी भेद नहीं माना जाता। (वेदान्त)।  
 अद्वैतवादी-सज्ञा पु० १ जो अद्वैत मत को  
 माने। २. बौद्ध-विरोध।  
 अधः-अव्य० नीचे। तले। आधा।  
 मज्ञा स्त्री० पैर के नीचे की दिशा।  
 अधपतन-सज्ञा पु० १ नीचे गिरना। २  
 अवनति। बुरी गति। ३ दुर्दशा। ४ नाश।  
 अधपात-सज्ञा पु० १ नीचे गिरना। पतन।  
 अवनति। २. ध्वंस। नष्ट। दुर्दशा।  
 ३ सौभाग्य-सम्पत्ति में वंचित होना।  
 अधप्रस्तरण-सज्ञा पु० कुशासन। नृण-शरणा।  
 अधशिरा-सज्ञा पु० १ अधामुख। २ स्यं-  
 वशीय त्रिशकु राजा।  
 अधक्षिप्त-सज्ञा पु० (वि० निन्दित।) त्रिशकु।  
 मयानि राजा।  
 अध-अव्य० दे० "अध"।  
 वि० आधा। 'आधा' शब्द का छोटा रूप।  
 जैसे—अधकचरा। अधखिला।  
 अधकचरा-वि० १ अपरिपक्व। २ अधूरा।  
 असंपूर्ण। ३ अकुशल। अक्ष। ४ आधा  
 कटा या पीसा हुआ। दरदग।  
 अधकचारी-सज्ञा स्त्री० १. आधा सीसी।  
 आधे सिंग का बंद। २ सूर्यवर्त।  
 अधकचरी-मज्ञा स्त्री० १. कर। मालगुजारी।  
 २ महसूल या निराये की आधी रकम  
 जो किसी नियत समय पर दी जाय।  
 अटनिया विस्त।  
 अधबहा-वि० आधा या अस्पष्ट रूप में  
 बहा हुआ।  
 अधभूत-वि० अधीन। नीचे किया हुआ।  
 १-वि० अर्द्ध विकसित। आधा  
 १. हुआ।

अधपुष्पा-वि० आधा गुला हुआ।  
 अधपट-वि० अस्पष्ट। जिगमै टोंक अर्ध  
 निगड़े। अटपट।  
 अधधरा-वि० आधा गायी या चम हुआ  
 अधझा\*-वि० [स्त्री० अधड़ी] १. न ०  
 न नीचे का। बिना आधार का।  
 अधवद्ध। ऊटपटांग। बे गिर-पंग का।  
 अधन\*-वि० दरिद्र। बगाल।  
 अधनिया-वि० दा पंगे का। आध आने का  
 अधम्रा-मज्ञा पु० आध आने या दा पंगे  
 का सिक्का। टका।  
 अधपर्द-मज्ञा स्त्री० दो छट्टीय की तीर  
 गल नेर के आठवें हिस्से का बाट।  
 अधफर-सज्ञा पु० बीच का भाग। अधर  
 अंतरिक्ष।  
 अधधर-\*मज्ञा पु० १ बीच। २ आध  
 रास्ता।  
 अधबुध-वि० जिगमै ज्ञान अधूरा हो  
 अर्द्ध-शिक्षित।  
 अधवैम्बू-वि० [स्त्री० अधवैम्बी] मध्य  
 अवस्था की अर्धेड (स्त्री)। अर्धेड।  
 अधम-वि० १ निवृष्ट। नीच। बुरा। २  
 दुष्ट। पापी। ३ नीची श्रेणी का।  
 अधमई\*-मज्ञा स्त्री० अधमता। नीचता  
 अधमता-मज्ञा स्त्री० नीचता। खोटापन  
 अधमरा-वि० मरने के लगभग। मृतप्राय  
 अधम्रा।  
 अधमर्ण-मज्ञा पु० उधार लेनेवाला। ऋणी  
 अधमाई-मज्ञा स्त्री० दुष्टता। नीचता  
 अधमता। दे० "अधमई"।  
 अधमा दूती-सज्ञा स्त्री० बटु वानें बहक  
 नायक या नायिका का मदेश एन दूसरे के  
 पहुँचानेवाली दूती।  
 अधम नायिका-सज्ञा स्त्री० ऐसी नायिका  
 जो प्रिय या नायक के हितकारी होने  
 पर भी उसके प्रति कुव्यवहार या अहित  
 करे। अकारण क्रुद्ध रहनेवाली नायिका  
 अधमुआ-वि० दे० "अधमरा"।  
 अधमुख-सज्ञा पु० "अधोमुख"।  
 अधर-सज्ञा पु० १ ओठ।  
 बिना आधार का स्थान

४ बचल। ५ जो पकड़ में न आवे।  
 ६ नीच। दुरा। ७ मध्य। ८ दून्य।  
 मूहा—अधर में झूलना, पडना या लटकना—  
 १ पूरा न होना। अधूरा रहना। २  
 दुविधा या परापेश में पडना।  
 अधरज—पज्ञा पु० दे० १ ओठो की ललाई।  
 २ ओठ पर की पान या मिस्सी  
 की धड़ी।  
 अधरपात—मज्ञा पु० ओठो का चुम्बन।  
 अधरवृद्धि—वि० नासमझ।  
 अधरम—सज्ञा पु० दे० "अधर्म"।  
 अधरमधु—सज्ञा पु० अधररस। अधरामृत।  
 अधरा—सज्ञा स्त्री० दे० "अधीर"। नीचा।  
 अधराधर—सज्ञा पु० नीचे का ओठ।  
 अधरामृत—सज्ञा पु० अधररस। ओठो की  
 मिठास।  
 अधरीकृत—क्रि० सं० १ अपवादित। २  
 पराहत। ३ तिरस्कृत। निन्दित।  
 अधरीभूत—वि० अधरीकृत। विप्रकृत।  
 अधर्म—सज्ञा पु० धर्म। दुरा काम। दुरा  
 चार। धर्म के विरुद्ध कार्य।  
 अधर्मिन्मा—वि० अधर्म करनेवाला। पापी।  
 अधर्मी—सज्ञा पु० [स्त्री० अधर्मिणी] दुरा-  
 चारी। पापी। अधर्म करनेवाला।  
 अध्या—मज्ञा स्त्री० विधवा स्त्री।  
 अधम—अव्य० नीचे। निम्न। तल। पाताल।  
 अधोरा—मज्ञा पु० दो पाव की शील।  
 गज का आधा।  
 अधस्तल—मज्ञा पु० नीचे की तह या कोठरी।  
 तहाना।  
 अधार्थ—क्रि० वि० दे० "अधार्थ"। अमन्य।  
 अधार।  
 अधान—मज्ञा पु० नूर पर गिरा हुआ पानी।  
 दे० "अदहन"।  
 अधावट—वि० आधा ओठा हुआ। (दूध)  
 अधार—मज्ञा पु० गहरा। दे० "आधार"।  
 अधारी—मज्ञा स्त्री० १ आधाय। आधार।  
 गगन। २ वाट के डटे में गंगा हुआ  
 गांधवा का पीडा। ३ गांधा का मामान  
 करने का धेन्ना या धोना।  
 ४ जो की मगग दनवाणी। दिव।

अधार्मिक—वि० अन्यायी। धर्महीन। जो  
 धार्मिक न हो। अधर्मी। दुराचारी।  
 अधि—शब्दो के पहले लगाया जानेवाला उप-  
 सर्ग जिसके ये अर्थ होते हैं—१ प्रधान।  
 मुख्य। जैसे—अधिपति। २ ऊपर। ऊँचा।  
 जैसे—अधिराज। अधिकरण। ३ अधिक।  
 ज्यादा। जैसे—अधिमास। ४ सद्वच में।  
 जैसे—आध्यात्मिक। ५ पास। जैसे—  
 अधितट अर्थात् तट के पास। ६ में।  
 जैसे—अधिकांश अर्थात् बांशो में।  
 अधिक—वि० १ बहुत। अधिक। विशेष।  
 २ शेष। बचा हुआ। फालतू।  
 सज्ञा पु० १ अलवार-विशेष। २ न्याय  
 में एक निग्रह-स्थान। ३ प्रतिपक्षी को पकड़  
 में लाने का एक माधन।  
 अधिकता—सज्ञा स्त्री० बढ़ती। वृद्धि। बहु-  
 तायत। विशेषता। ज्यादाती।  
 अधिक मास—सज्ञा पु० मलमास। लौंड का  
 महीना। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमा-  
 वास्या तक ऐसा समय जिसमें सशान्ति  
 नहीं पड़ती। (प्रति तीसरे वर्ष)  
 अधिकरण—सज्ञा पु० १ आश्रय। आधार।  
 महारा। २ नातवां कारक। व्याकरण  
 में कर्ता और कर्म द्वारा क्रिया का आधार।  
 ३ दीर्घक। प्रकरण। ४ अधिष्ठान।  
 दर्शन में आधार विषय।  
 अधिवाण—वि० जिनके कोई अंग अधिव हो।  
 जैसे—छ अंगुलीवाला।  
 अधिवाश—मज्ञा पु० अधिक भाग।  
 वि० बहुत।  
 नि० वि० १ अधिकतर। विशेषकर।  
 २ प्राय। आगर।  
 अधिकाई—मज्ञा स्त्री० १ अधिनता।  
 ज्यादाती। बहुतायत। २ महिमा। यश।  
 अधिकाता—क्रि० अ० पडना। अधिक या  
 ज्यादा होना।  
 अधिकार—मज्ञा पु० १ आधिपत्य। राज्य-  
 भार। प्रभुत्व। प्रपातता। २ दीर्घक।  
 प्रमाण। ३ स्वयं। एक। अग्निमान।  
 ४ बन्ना करना। प्राप्ति। ५ स्ति।  
 मामक्य। ६ उत्तराणी। मातृता। ७

स्वयं के प्रधान पद की प्राप्ति की योग्यता ।  
(नाट्यशास्त्र)

† वि० पु० अधिक ।

अधिकारी-गजा पु० [ स्त्री० अधिकारिणी ]

१. स्वामी । प्रभु । मालिक । २. हारदार ।

३. जिगमें योग्यता है । उपयुक्त पात्र ।

४. नाटक का वह पात्र जिमें रंग का प्रधान फल प्राप्त होता है ।

अधिरुत-वि० प्राप्त । अधिकार म आया हुआ । उपलब्ध ।

सजा पु० अध्यक्ष । अधिकारी । अधिकार-पूर्वक कहा हुआ । प्रामाणिक ।

अधिरुत-सजा पु० चढ़ाई । चढ़ाव । आरोहण ।

अधिगत-वि० १. प्राप्त । २. ज्ञात ।

अधिगत-सजा पु० १. ज्ञान । पहुँच । गति ।

२. वह ज्ञान जो दूसरे के उपदेश में प्राप्त हो । ३. बढप्पन । ऐश्वर्य ।

अधिगम-वि० १. धनुष पर ज्या चढ़ाये हुए । युद्धार्थी । २. वीर ।

अधित्वका-सजा स्त्री० ऊँचा पहाड़ी मैदान । पहाड़ के ऊपर की चौरस जमीन ।

अधिदेव, अधिदेवता-सजा पु० [ स्त्री० अधि-देवी ] कुलदेव । इष्टदेव ।

अधिदेव-वि० आवत्तिमय । दैविक ।

अधिदेवत-सजा पु० वह मन्त्र या प्रवरण जिसमें वायु, अग्नि, सूर्य आदि देवताओं के नाम-कीर्तन से ब्रह्म-विभूति की शिक्षा मिले ।

वि० देवता से संबन्ध रखनेवाला ।

अधिनायक-सजा पु० [ स्त्री० अधिनायिका ] मुखिया । अगुआ । सरदार ।

अधिनायकतन्त्र-सजा पु० वह शासन-प्रणाली जिसमें राज्य के सब कार्य उसके अधिनायक की ही इच्छा और आज्ञा में होने हैं । (अंग्रेज-डिक्टेटरशिप) तानाशाही ।

अधिनायकवाद-सजा पु० अधिनायकतन्त्र का सिद्धान्त ।

अधिनायकी-सजा स्त्री० अधिनायक का कार्य, पद या भाव ।

अधिप-सजा पु० १. राजा । २. मालिक । स्वामी । ३. मुखिया । सरदार । ४. अधिक की रक्षा करने में समर्थ ।

अधिपति-गजा पु० [ स्त्री० अधिपती ]

१. स्वामी । २. नायक । मुखिया । अपसर ।

अधिपति-गजा पु० जाँच का फोटा ।

अधिपात-गजा पु० दे० "अधिक मात" । मलमाग । लोड का महीना ।

अधिपा-गजा स्त्री० १. आधा भाग ।

२. गाँव में आधी पट्टी की हिस्सेदारी ।

३. रीति-विशेष जिसमें अनुयाय उपज का आधा मादित को और आधा परिश्रम करनेवाले को दिया जाता है ।

गजा पु० आधे गाँव का पट्टीदार ।

अधिपाता-त्रि० स० आधा करना । दो बराबर भागों में बाँटना ।

अधिपार-गजा पु० [ स्त्री० अधिपारिणी ]

१. किसी जायदाद में आधा भाग ।

२. आधे का स्वामी । ३. वह आसामी या जमींदार जो गाँव के हिस्से या जोत में आधे का सामीदार हो ।

अधिपारी-सजा स्त्री० किसी सम्पत्ति में आधी हिस्सेदारी ।

अधिरथ-सजा पु० १. साखी । २. बड़ा रथ ।

अधिराज-सजा पु० राज्य का स्वामी । राजा । महाराज ।

अधिराज्य-सजा पु० साम्राज्य ।

अधिरोहण-सजा पु० ऊपर उठना । चढ़ना । सवार होना ।

अधिवास-सजा पु० [ वि० अधिवासित ]

१. रहने का स्थान । २. मुगन्धि । ३. विवाह से पहले हलदी-तेल चढ़ाने की रीति ।

४. उवटन । ५. यज्ञ या मंदिर में स्थापना के पहले मूर्ति को पवित्र जल में रखना (धर्मशास्त्र) ।

अधिवासी-सजा पु० रहनेवाला । निवासी ।

अधिवेदन-सजा पु० विवाह । सस्वार ।

अधिवेशन-सजा पु० जलसा । बैठक । उत्सव ।

अधिष्ठाता-सजा पु० [ स्त्री० अधिष्ठात्री ]

१. अध्यक्ष । प्रधान । मुखिया । २. वह जिसके हाथ में किसी कार्य का भार हो । ३. ईश्वर ।

अधिष्ठान-सजा पु० [ वि० अधिष्ठित ]

१. रहने की जगह । २. शहर । नगर ।

३. स्थिति । पड़ाव । आधार । आश्रय ।

५ वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो। जैसे, रस्सी में सर्प और सीप में चाँदी का।  
 ६ (साध्य) भोक्ता और भोग का संयोग।  
 ७ राजसत्ता। अधिकार। शासन।  
 अधिष्ठान शरीर—सज्ञा पु० सूक्ष्म शरीर, जिसमें मरण के उपरांत पितृलोक में आत्मा का निवास रहता है।  
 अधिष्ठित—वि० १ स्थापित। २ नियुक्त।  
 ३ निर्वाचित।  
 अधीत—सज्ञा पु० पढ़ा हुआ। पठित। शिक्षित।  
 पि० जो पढ़ा जा चुका हो।  
 अधीन—वि० [सज्ञा अधीनता] १ आश्रित। मातहत। २ लाचार। विवश।  
 ३ अवलंबित। आश्रित।  
 सज्ञा पु० सेवक। दास।  
 अधीनता—सज्ञा स्त्री० १ पराधीनता। पर-तनता। २ विवशता। ३ दीनता।  
 कि० अ० अधीन या वश में होना।  
 अधीर—वि० [सज्ञा अधीरता] १ उद्ध्विग्न। पबराया हुआ। २ व्याकुल। बेचैन।  
 विह्वल। ३ असंतोषी। ४ चंचल।  
 उतावला। आतुर।  
 अधीरज—सज्ञा पु० पबराहट। अधीरता।  
 अर्धयः। चंचलता।  
 अधीरा—सज्ञा स्त्री० ऐसी नायिका जो नायक में पर-नारी विलास सूचक चिह्न देखने से अधीर होकर कोप प्रकट करे।  
 अधीश, अधीश्वर—सज्ञा पु० [स्त्री० अधी-स्वरी] १ स्वामी। मालिक। २ राजा।  
 अधुना—नि० वि० [वि० आधुनिक] इस समय। संप्रति। आजकल।  
 अधुनातन—वि० वर्तमान काल का। 'सनातन' का उलटा। विरुद्ध।  
 अधूत—सज्ञा पु० १ निडर। निर्भय। २ अकंपित। ३ उबका। ४ ठीठ।  
 अधूरा—वि० [स्त्री० अधूरी] जो पूरा न हो। अपूर्ण।  
 अधोड—वि० जवानी और बुढ़ापे के बीच का।  
 दलनी जवानी का।  
 अधोला—सज्ञा पु० पंखे का आधा। आधा पैना।

अधेली—सज्ञा स्त्री० अठनी। रुपये का आधा सिक्का। आठ आना।  
 अधैर्य—सज्ञा पु० उतावला। अस्थिर। व्याकुल।  
 अधैर्यवान्—वि० आतुर। व्यग्र। उतावला।  
 अधो—अव्य० दे० "अध"। नीचे। तले।  
 अधोगत—वि० अवनत। नीचगामी।  
 अधोगति—सज्ञा स्त्री० १ पतन। अवनति।  
 २ दुर्गति। दुर्दशा।  
 अधोगमन—सज्ञा पु० १ गिरना। नीचे जाना।  
 २ पतन। अवनति।  
 अधोगामी—वि० [स्त्री० अधोगामिनी] १ जो गिर गया हो। २ जिसका पतन हो गया हो।  
 अधोतर—सज्ञा पु० १ दोहरी बुनावट का देशी मोटा कपड़ा-विशेष। २ वंशसंकर।  
 अधोवम—सज्ञा पु० अति नीच। नीच से नीच।  
 अधोभुवन—सज्ञा पु० पाताल। बलि के रहने का स्थान।  
 अधोमस्तक—सज्ञा पु० १ सूर्यवश के विशंकु राजा का नाम। २ नीचा सिर।  
 अधोमार्ग—सज्ञा पु० १ नीचे का मार्ग। २ गुदा। ३ सुरंग का रास्ता।  
 अधोमुख—वि० १ उलटा। अधो। २ नीचे मुह किए हुए।  
 क्रि० वि० मुँह के बल।  
 अधोलब—सज्ञा पु० लव। वह खड़ी रेखा जो किसी दूसरी सीधी आड़ी रेखा से समकोण पर मिलती हो।  
 अधोवस्त्र—सज्ञा पु० नीचे के अंगों में पहनने का कपड़ा। धोती।  
 अधोवायु—सज्ञा पु० पाद। गोज। अपानवायु।  
 अधोक्षज—सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण। २ नाग-यण। ३ इन्द्रियजन्य ज्ञान को वश में करने वाला। ४ योगिराज। ५ वामुदेव।  
 अध्यक्ष—सज्ञा पु० १ स्वामी। २ मुनिय। नायक। ३ अधिष्ठाता।  
 अध्यक्षर—सज्ञा पु० प्रणव। ओं। ओंकार।  
 अध्ययन—सज्ञा पु० पढ़ाई। पढ़ने का काम।  
 अध्यवसाय—सज्ञा पु० १ लगातार। किसी काम में परिश्रम के साथ लगे रहना।  
 २ निश्चय। ३ उत्साह।

अध्वयसायी-वि० [ स्त्री० अध्वयसायिनी ]  
 १. उद्योगी। उद्यमी। उद्योग में निरन्तर लगा रहनेवाला। २. कार्यशील। ३. उन्मादी।  
 अध्वस्त-वि० जिसका भ्रम किसी अधिष्ठान में हो, जैसे रज्जु में सर्प का। (वेदांत)  
 अध्वशन-सज्ञा पु० भोजन करने के बाद ही फिर भोजन करना। अधिव्य परिमाण में खाना।  
 अध्यात्म-सज्ञा पु० आत्मज्ञान। ज्ञानतत्त्व। ब्रह्मविचार।  
 अध्यात्मवाद-सज्ञा पु० वह सिद्धान्त जिसमें ब्रह्म और आत्मा का ज्ञान ही मुख्य माना जाता है।  
 अध्यापक-सज्ञा पु० [ स्त्री० अध्यापिका ] पढ़ानेवाला। गुरु। शिक्षक।  
 अध्यापकी-सज्ञा स्त्री० अध्यापक या शिक्षक का कार्य। पढ़ाने का काम।  
 अध्यापन-सज्ञा पु० पढ़ाने का काम। शिक्षण-कार्य।  
 अध्याप-सज्ञा पु० पाठ। परिच्छेद। संग।  
 अध्यारोप-सज्ञा पु० १. दोष। अध्यास। एक व्यापार का दूसरे पर आरोप करना। २. झूठी कल्पना। एक वस्तु का दूसरी वस्तु में भ्रम।  
 अध्यारोहण-सज्ञा पु० चढ़ना। आरोहण।  
 अध्यारोही-वि० चढ़नेवाला। आरोहण-कर्त्ता।  
 अध्यास-सज्ञा पु० झूठा ज्ञान। मिथ्या ज्ञान। अध्यारोप।  
 अध्यासन-सज्ञा पु० १. बैठना। उपवेशन। २. आरोपण।  
 अध्याहरण-सज्ञा पु० कल्पना करना। वितर्क करना।  
 अध्याहार-सज्ञा पु० १. विचार। वहस। तर्क-वितर्क। २. स्पष्ट वाक्य को अन्य वाक्यों में स्पष्ट करने का कार्य। ३. वाक्य को पूरा करने के लिए उसमें और कुछ शब्द ऊपर से जोड़ना।  
 अध्वयित-वि० बसा हुआ। रहता हुआ।  
 अध्वयज्ञा-सज्ञा स्त्री० १. ज्येष्ठा पत्नी। २. वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले।

अध्वदा-सज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री। परिणीता।  
 अध्वेता-सज्ञा पु० छात्र। शिष्य। पाठन।  
 अध्वेय-वि० जा पढ़ने योग्य हो।  
 अध्वेषणा-सज्ञा स्त्री० १. याचना। माँगना। २. आदरपूर्वक प्रार्थना। ३. प्रश्न।  
 अध्व-वि० १. अस्थिर। चंचल। डाढ़ी-डोल। जो दृढ़ न हो। २. अनिश्चित। जिसका कोई ठीर-ठिकाना न हो।  
 अध्व-सज्ञा पु० वाट। मार्ग। पन्थ।  
 अध्वग-सज्ञा पु० १. पथिक। बटोही। २. उष्ट्र। ३. सूय। ४. गेहर। ५. वृक्ष विशेष। ६. पन्थ।  
 अध्वगा-सज्ञा स्त्री० भागीरथी। गंगा। जाह्नवी।  
 अध्वगामी-सज्ञा पु० १. पथिक। २. पन्थ।  
 अध्वजा-सज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष।  
 अध्वनीन-सज्ञा पु० १. पथिक। २. भ्रमण-कर्त्ता। पर्यटन।  
 अध्वन्य-सज्ञा पु० पथिक।  
 अध्वर-सज्ञा पु० १. यज्ञ। याग। २. वसुभेद। ३. सावधान।  
 अध्वर्यु-सज्ञा पु० वह ब्राह्मण जो यज्ञ में यज्ञवेद का मंत्र पढ़े। २. यज्ञादि में हवन आदि करनेवाला प्रधान व्यक्ति।  
 अन-अव्य० अभाव या निषघसूचक अव्यय। जैसे—अनादि। अनधिकार। ना। नहीं। प्रिता। रहित।  
 अनग-वि० [ प्रि० अनगना ] देह-रहित। जिसके शरीर न हो।  
 सज्ञा पु० कामदेव।  
 अनगभीष्टा-सज्ञा स्त्री० १. सभोग। गति। २. छंद शास्त्र में मुक्तक नामक विषय वृत्त का भेद-विशेष।  
 अनगना\*—क्रि० अ० शरीर की मुघ छोड़ देना। मुघवुग भुला देना।  
 अनगशेखर-सज्ञा पु० इडक नामक वर्ण-वृत्त का भेद-विशेष।  
 अनगारि-सज्ञा पु० महादेव। शिव।  
 अनगी-वि० [ स्त्री० अनगिनी ] १. जिसके अंग न हो। २. बिना शरीर का। ३. भाग

या हिस्से से रहित। ४ स्वतन्त्र, जो किसी का अंग न हो।

सज्ञा पु० १ वामदेव। २ ईश्वर।

अनत-वि० १ असीम। सीमारहित। बहुत बड़ा। २ बहुत अधिक। ३ अविनाशी।

सज्ञा पु० १ विष्णु। २ लक्ष्मण। ३ शेषनाग। ४ बलराम। ५ आकाश। ६ बाँह का गहना। ७ अनन्ता। सूत का गड्ढा

जिसे अनन्तचतुर्दशी के व्रत के दिन बाँह में पहनते हैं। ८ अश्रक। ९ काश्मीर का एक राजा। १० मिन्दुवार-वृक्ष। ११

अनन्तजित् नामक जैनाचार्य वासुकि।

अनन्तगौर-सज्ञा पु० संगीतशास्त्र। स्वरभेद।

अनन्तचतुर्दशी-सज्ञा स्त्री० भाद्र शुक्ल चतुर्दशी। अनन्तदेव का व्रत विशेष।

अनन्तमूल-सज्ञा पु० एक बेल या पीधा जो ग्वत शुद्ध करने की दवा है।

अनन्तर-क्रि० वि० १ पश्चात्। पीछे। उपरात्। २ सदैव। निरन्तर। लगातार।

अनन्तरीय-वि० १ अपरिसीम परान्त। २ अपार पौरुषशाला।

अनन्ता-वि० जिसका अन्त न हो।

सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। २ पार्वती। ३ कलियारी। ४ द्रुव। ५ अनन्तमूल। ६ अनन्तसूत। ७ पीपर।

अनन्त-सज्ञा पु० १ चौदह वर्णों का वृत्त-विशेष। \* २ दे० 'आनन्द'।

अनन्दी-सज्ञा पु० १ धान-विशेष। २ दे० 'आनन्दी'।

अनन्त-वि० बिना पानी का।

\* वि० विच्छन्न रहित। बिना बाधा के।

अनन्त-सज्ञा पु० अश-रहित। घटवारे में हिस्सा पाने का अनधिकारी।

अनन्त-क्रि० वि० बिना रहित।

वि० दूसरा। अन्य।

अनन्त-सज्ञा पु० १ शकट। २ अन्न। ३ जननी। ४ जन्म। ५ अत्यल्प काल।

अनन्तहिमात-सज्ञा पु० बिधवापन। वेधपन्थ। रैदाया।

अनन्तच्छा-सज्ञा स्त्री० बिना चाह। बिना प्रयोजन।

अनन्तच्छित्त-सज्ञा पु० बिना चाह का। जो अभीष्ट न हो।

अनन्त-सज्ञा स्त्री० १ असमय। वेगोसम। २ अकाल। ३ ऋतु के विरुद्ध कार्य।

अनन्त\*-सज्ञा पु० दे० 'आनन्त'।

अनन्तरीय-क्रि० वि० (अ०) करीब करीब। प्रायः। लगभग।

अनन्त\*-क्रि० स० १ सुनना। २ छिपकर या चुपचाप सुनना।

अनन्त-वि० [स्त्री० अनन्तही] जो कहा हुआ न हो। अकथित।

मुहा०-अनन्तही देना=चुपचाप होना।

अनन्त-सज्ञा पु० १ कोप। क्रोध। नाराजी। २ द्वेष। ईर्ष्या। डाह। ३ खिन्ता। दुःख।

ग्लानि। ४ झगड़। अनन्तरीति। ५ डिठोना।

वाजल की बिंदी जिसे डीठ (नजर) से घसाने के लिए माथे में लगाते हैं।

वि० जिसके नाखन न हो।

अनन्त\*-क्रि० अ० क्रोध करना। रुष्ट होना। खीजना। रिसाना। बिडना।

अनन्तगार-सज्ञा पु० क्रोधयुक्त गाली। क्रोध की गाली।

अनन्ताना\*-क्रि० अ० क्रोध करना। रिसाना। खीजना। रुष्ट होना।

क्रि० स० अप्रसन्न या नाराज करना।

अनन्तहृद-सज्ञा स्त्री० अनन्त दिखाने की प्रिया या भाव। गुस्सा। क्रोध। नाराजगी।

अनन्त\*-क्रि० वि० क्रोध करनेवाला। जल्दी नाराज हो जानेवाला।

अनन्तही\*-क्रि० वि० [स्त्री० अनन्तहीही] १ क्रोधी। रुष्ट। कुपित। २ बिडबिडा। शीघ्र क्रोध करनेवाला। ३ क्रोध दिलानेवाला। ४ दुरा। अनुचित्र।

अनन्त-वि० १ स्वयम्भू। जिसे किसी ने बनाया न हो। २ बिना गड्ढा हुआ।

३ भड़ा। वेडगा। वेतुका। अडबड। ४ सज्जड। अवगड। गंवार।

अनन्त\*-वि० [स्त्री० अनन्तनी] असम्पन्न। अगणित।

अनन्त-वि० जो गिना हुआ न हो। बहुत। अपार।

गज्ञा पु० गर्भ का आठवां महीना।  
 नि० अ० देर गयना।  
 अनगयना-नि० अ० एतत्पर विलम्ब परना।  
 जान वशकर देर करना।  
 अनगिनत-वि० गणना-रहित। असंख्य।  
 अपार। बहुत।  
 अनगिना-वि० १ जो गिना हुआ न हो।  
 २ अगण्य। बहुत।  
 अनगरी\*-वि० दूगरे का। पराया।  
 अनघ-वि० पाप-रहित। निर्दोष। शुद्ध।  
 पवित्र।  
 सज्ञा पु० जो पाप न हो। पुण्य।  
 अनघरी\*-वि० जा बुलाया न गया हो।  
 बिना निमन्त्रण के। अपरिचित।  
 अनघोर\*-सज्ञा पु० अघोर। अन्याय।  
 अत्याचार। ज्यादमी।  
 अनचाहूत\*-वि० जो न चाहता हो। प्रेम  
 न करनेवाला।  
 अनचाहा-वि० जिसकी इच्छा न की जाय।  
 अनचीन्हा\*-वि० जो परिचित न हो।  
 अज्ञात।  
 अनजनमा-वि० जिसका जन्म न हुआ हो।  
 ईश्वर का एक विशेषण।  
 सज्ञा पु० ईश्वर। दे० "अजन्मा"।  
 अनजान-वि० १ मूर्ख। अज्ञानी। नादान।  
 नासमझ। २ अज्ञात। जो परिचित न हो।  
 अनट\*-सज्ञा पु० १. अत्याचार। उपद्रव। २  
 अनीति। अन्याय।  
 अनडीठ\*-वि० जो देखा हुआ न हो।  
 अनत-वि० सीधा। जो झुका हुआ न हो।  
 \*त्रि० वि० अन्यत्र। और कहीं। दूसरी जगह।  
 अनति-वि० थोड़ा। कम।  
 सज्ञा स्त्री० अहंकार। अभिमान। नम्रता  
 का अभाव।  
 अनदेखा-वि० [स्त्री० अनदेखी] जो देखा  
 हुआ न हो।  
 अनद्यतन भविष्य-सज्ञा पु० व्याकरण में  
 भविष्यकाल का एक भेद।  
 अनद्यतन भूत-सज्ञा पु० व्याकरण में भूतकाल  
 का एक भेद।  
 अनधिकार-सज्ञा पु० १ अधिकार का न

होना। २. विवशता। लाचारी। ३  
 अयोग्यता।  
 वि० १ अधिकार-रहित। २ योग्यता रहित।  
 घी०-अनधिकारार्थी=जिम विषय में शक्ति  
 न हो, उसमें दांग अडाना।  
 अनधिकारी-वि० १ अधिकार-रहित हो।  
 २ योग्यता-रहित। अपात्र।  
 अनधिकृत-वि० जिम पर अधिकार न किया  
 गया हो।  
 अनधिगन-वि० बिना जाना या समझा  
 हुआ। अज्ञात।  
 अनध्यवसाय-सज्ञा पु० १ ढिलाई। अध्यवसाय  
 की कमी। अतत्परता। २ किसी एक वस्तु  
 के मग्न न साधारण अनिश्चय का वर्णन  
 किया जाना।  
 अनध्याय-सज्ञा पु० १ छुट्टी या अवकाश  
 का दिन। २ वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार  
 पढ़ने-गढ़ाने का निषेध हो। (अमावास्या,  
 परिव्रा, अष्टमी, चतुर्दशी और पूर्णिमा  
 आदि।)  
 अनप्राप्त-सज्ञा पु० [पुं० अनानाप्त] राम-  
 रास की तरह का एक छोटा पीघा जिसने  
 डठल के अकुरा की गाँठ सटमीठी और  
 खाने योग्य होती है।  
 अनन्य-वि० [स्त्री० अनन्या] एकनिष्ठ।  
 एक ही में लीन। अन्य से सबध न रखने  
 वाला। जैसे--अनन्य भक्त।  
 सज्ञा पु० विष्णु का एक नाम।  
 अनन्यता-सज्ञा स्त्री० १ एकनिष्ठा। २ अन्य  
 के सबध का अभाव।  
 अनन्यम-सज्ञा पु० अलंकार-विशेष। जिसमें  
 किसी वस्तु को उससे ही समान बनाया  
 जाय। जैसे, आप तो आप ही हैं।  
 अनन्यत-वि० १ पृथक्। असम्बद्ध। २ अड  
 धड़। इधर-उधर का।  
 अनपच-सज्ञा पु० अपच। अजीर्ण। अफरा।  
 अनपङ्क-वि० जो पड़ा न है। मूर्ख। अधिभित।  
 अनपढा-वि० मूर्ख। अज्ञ। विद्याहीन।  
 अधिभित।  
 अनपत्य-वि० नि सन्तान। निर्वंश। पुत्रहीन।  
 अनपश्य-वि० निलंज्ज। फूहड़। रज्जाहीन।

अनपराध-वि० निर्दोष। निरपराध। दोष-  
शून्य। शुद्ध। सच्चरित्र।  
अनपाय-वि० १ अनश्वर। अक्षय। अनाश्रय।  
विरस्थापी। २ अलंकृत।  
अनपायी-सज्ञा पु० १ स्थिर। निश्चय। अवि-  
नश्वर। २ पाप-रहित।  
अनपायिनी-सज्ञा स्त्री० नाशरहित। अचल।  
दृढ़। नित्य।  
अनपेक्ष-वि० स्वाधीन। निरपेक्ष। लापरवाह।  
अनपेक्ष्य-वि० अननुरुद्ध। अमान्य-वृत्त। वजित।  
अनिच्छित।  
अनपेक्षा-सज्ञा स्त्री० अपेक्षा का न होना। लाप-  
रवाही।  
अनपेक्षित-वि० जिसकी चाह या परवा न हो।  
अनपेक्ष्य-वि० जिसे किसी की अपेक्षा या  
परवा न हो।  
अनफांस\*-सज्ञा स्त्री० छुटकारा। मुक्ति।  
मोक्ष।  
अनबन-सज्ञा पु० झगडा। विगाड। विरोध।  
\*वि० भिन्न भिन्न। विविध। भाँति  
भाँति के।  
अनविधा-वि० जिसमें छद्म न किया गया हो।  
विना वधा हुआ। जैसे, अनविधा मोती।  
अनवज्ञ-वि० नासमझ। अनजान। अज्ञान।  
बुद्धिहीन। निर्बोध। जो वृक्षा या समझा  
न जा सके।  
अनबोल-वि० १ मौन। चुप्पा। न बोलने  
वाला। २ गूंगा। ३ जो अपन सुख-दुःख  
को न बता सके। (पशुओं के लिए)  
अनबोलना-वि० गूंगा। न बोलनेवाला।  
(पशु)।  
अनबोल-सज्ञा पु० बोलचाल या बातचीत  
न होना।  
वि० दे० "अनबोलता"।  
अनव्याह-वि० [स्त्री० आव्याही] क्वारा।  
जिसका विवाह न हुआ हो।  
अनभ्रत\*-सज्ञा पु० अमगल। बुराई। अहित।  
हानि।  
अनभिगमन-सज्ञा पु० अस्यान-गमन। भयवर  
स्यान न गमन।  
अनभिज्ञ-वि० [स्त्री० अनभिज्ञा, सज्ञा,

अनभिज्ञता] १ मूर्ख। अनजान। अज्ञ।  
२ विना जान-महचान का अपरिचित।  
अनभिज्ञता-सज्ञा स्त्री० मूर्खता। अनाडीपन।  
अनजानपन।  
अनभिप्रेत-वि० अनिच्छित। अभिप्राय विरुद्ध।  
अनभिमत।  
अनभिमत-वि० असम्मति। मत विरुद्ध।  
अनिष्ट। अभिमत या राय का न होना।  
अनभिष्यक्त-वि० अस्पष्ट। अव्यक्त।  
अप्रकाश।  
अनभीष्ट-वि० जो अभीष्ट न हो। अवाञ्छित।  
आशय के विरुद्ध। जिसकी इच्छा न की गई  
हो।  
अनभो\*-सज्ञा पु० अचभा। आश्चर्य।  
अनहोनी बात। अलौकिक। अपूर्व।  
वि० अनोखा। अद्भुत।  
अनभोरो\*-सज्ञा स्त्री० भुलावा। चकमा।  
अनभ्यस्त-वि० १ जिसका अभ्यास न किया  
गया हो। अपठित। २ जिसने अभ्यास न  
किया है। अपरिपक्व। नौसिखुआ।  
अनभ्यास-सज्ञा पु० अभ्यास का अभाव।  
अव्यवहार। अशिक्षा। अनध्ययन।  
अनमन-अनमना वि० [स० अन्यमनस्क]  
१ जिसका जी न लगता हो। खिन्न। सुस्त।  
उदास। २ अस्वस्थ। रोगी।  
अनमापा\*-वि० जो नापा जाने योग्य न  
हो।  
अनमापा\*-सज्ञा पु० बुरा रास्ता। कुमार्ग।  
अनम्य-वि० अविनत। अविनयी। उद्धण्ड।  
अनमिल\*-वि० अटपट। वेमल। बेजोड।  
असबद्ध। टूटे फूट।  
अनमिलता-वि० जो मिलता न हो। अलभ्य।  
अदृश्य।  
अनमोलता\*-वि० स० नम्र खोलना।  
अनमेल-वि० १ असबद्ध। बेजोड। २ जिसमें  
मेल न हो। विगुड।  
अनमोल-वि० १ अमूल्य। २ बहुमूल्य।  
मूल्यवान्। ३ उत्तम। गुदर।  
अनय-सज्ञा पु० १ विपद्। बुराई। अमगल।  
२ पाप। अनौति। अयाय। ३ व्यसन।  
४ भाग्य।

अनरत्ना\*-त्रि० स० अपमाना यन्ना। घेद्वज्जती  
 यन्ना।  
 अनरत्न-मन्त्रा पु० १ रत्न का न होना।  
 मुष्णता। २ रगाई। कोष। मान। ३ अन-  
 चन। मगमाटाव। मनोमालिन्य। ४ रोद।  
 दुग। रज। ५ यह पाव्य जिममें रत्न  
 न हो।  
 अनरत्ना-त्रि० अ० उदाग होना। नाराज  
 होना। दुग्नी होना।  
 अनरत्ना\*-वि० रागी। बीमार। अनमना।  
 अनरत्ना\*-वि० १ मादा। जो रेंगा हुआ  
 न हो। २ जो प्रेम में न पड़ा हो।  
 अनरीति-सज्ञा स्त्री० १ बुरी रीति। कुचाल।  
 २ अनुचित व्यवहार।  
 अनरुचि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "अरुचि"।  
 अनरूप\*-वि० १ बदसूरत। कुत्प। २  
 जो समान न हो। असदृश।  
 अनरुल-वि० १ अडगड। व्यर्थ। २ बेवडव।  
 ३ लगातार।  
 अनरुप-वि० १ बहुमूल्य। कीमती। २ सस्ता।  
 कम कीमत का।  
 अनरुप-वि० १ जो पूज्य न हो। २ बहु  
 मूल्य। अमूल्य। अत्युत्कृष्ट।  
 अनरुजित-वि० अनुपाजित। बिना कमाया  
 हुआ।  
 अनरुप-सज्ञा पु० १ अन्य अर्थ। उलटा मतलब।  
 २ काव्य की हानि। नुवसान। ३ विपद।  
 बुरा। ४ वह धन जो अधम से प्राप्त किया  
 जाय। ५ अनुचित।  
 अनरुप-वि० १ व्यर्थ। बेकार। २ जिसका  
 कोई अर्थ न हो।  
 अनरुपकारी-वि० स्त्री० [अनरुपकारिणी] १  
 विरुद्ध अर्थ करनेवाला। २ अनिष्टकारी।  
 अहितकर। ३ उत्पानी। उपद्रवी।  
 अनरुप-सज्ञा पु० १ अनायास। २ आना-  
 रत्न। उष्णदेशीय फल-विशेष।  
 अनरुह-वि० अनुपयुक्त। अयोग्य। कुपात्र।  
 अनरु-सज्ञा पु० १ आग। २ तीन की  
 संख्या। ३ पूणता रहित। ४, पाचन-  
 शक्ति। ५ अष्ट वस्तुओं में से एक का  
 नाम।

अनलपदा-सज्ञा पु० मिट्टिया विशेष। गहने  
 हैं कि यह मदा आवाग में उठा करती है।  
 \* और बड़ी अडा देती है।  
 अनलप्रभा-सज्ञा स्त्री० १ ज्योतिष्मती नामक  
 रत्ना विशेष। २ अग्नि की शिखा। दीप्ति।  
 अनलप्रिया-सज्ञा स्त्री० अग्नि-नार्या। स्वाहा।  
 अनलप-वि० जो अल्प या थोड़ा न हो। बहुत।  
 अधिक। ज्यादा।  
 अनलमूल-वि० जो अग्नि द्वारा पदार्थों का  
 ग्रहण करे।  
 मन्त्रा पु० १ ब्राह्मण। २ देवता।  
 अनलस-वि० जिसमें आलस्य न हो। फूर्तिला।  
 चैन्य। परिश्रमी। उद्योगी।  
 अनलेख-वि० अगोचर। अदृश्य।  
 अनलकाश-वि० अवकाश रहित। निरवसर।  
 अवकाश या फुरसत का न होना।  
 अनलच्छिन्न-वि० १ समुन्न। जुड़ा हुआ।  
 २ अटूट। अलङ्घित।  
 अनलवट-सज्ञा पु० पर के अँगूठे में पहनने  
 का एक प्रकार का छल्ला। विछिया।  
 सज्ञा पु० ढोका। कोलू के बेल की आंवा  
 का ढक्कन।  
 अनलवध-वि० १ दोष रहित। २ अनिन्दित।  
 ३ सुन्दर। स्वच्छ। ४ सम्मान्त।  
 अनलवधान-सज्ञा पु० सुन्दर अंग। सुडील  
 शरीर।  
 अनलवधान-सज्ञा पु० असावधानी। बेपरवाही।  
 अनलवधानता-सज्ञा पु० मनोयोग-शून्यता।  
 प्रमाद। असावधानता।  
 अनलवधि-वि० असोम। जिसकी सीमा न हो।  
 त्रि० वि० सदैव। निरतर।  
 अनलवरत-त्रि० वि० सदैव। निरतर। लगा-  
 तार। हमेशा।  
 अनलसर-सज्ञा पु० १ अवकाश का न होना।  
 २ बुरा समय। बेमौका।  
 अनलवस्था-सज्ञा स्त्री० १ अध्यवस्था। दुदगा।  
 २ अधीरता। ३ न्याय में एक प्रकार का  
 दोष।  
 अनलवस्थित-वि० १ चंचल। अचिर। अशांत।  
 २ बिना आधार का। निरवलंब।  
 अनलवस्थिति-सज्ञा स्त्री० १ अधीरता। २

अश्रयहीनता । ३ समाधि प्राप्त हो जाने  
 र भी चित्त का स्थिर न होना (योग) ।  
 ४ वासरहित ।  
 आसना-वि० वि० नये वस्त्रन को पहले-पहल  
 राम में लाना ।  
 नवांसा-सज्ञा पु० औंसा । बटो हुई फसल  
 का एक बड़ा गुट्ठा या पूला ।  
 नवांसी-सज्ञा स्त्री० एक बिस्वे का चूर्च्छ  
 हिस्सा । बिस्वासी का वीसवा भाग ।  
 नयाद\*-सज्ञा पु० बटु वचन ।  
 नयाव-सज्ञा पु० उपवास । अन्न का त्याग ।  
 नयवर-वि० जो नष्ट न हो ।  
 अविनाशी । १ सनातन । २ स्थिर । अटल ।  
 त-सखरी-सज्ञा स्त्री० निखरी । धी में पका  
 हुआ भोजन । पक्की रसोई ।  
 नतमज्ञा\*-वि० १ नासमझ । २ बिना  
 समझा हुआ ।  
 मनसहत\*-वि० असह्य । जो सहन न हो  
 सके ।  
 अनमुन-वि० आनाकानी करना । न सुना हुआ ।  
 अनमुना-वि० अनमुनी । अश्रुत । जो सुना  
 हुआ न हो ।  
 मुहां-अनमुनी करना=आनाकानी करना ।  
 टालमटोल करना । वहाँटियाना ।  
 अनुसूषा-सज्ञा स्त्री० १ नुवताचीनी न  
 करना । पराये गुण में दोष न देखना ।  
 २ ईर्ष्या का न होना । ३ अत्रि मुनि की  
 स्त्री ।  
 अनुहद नाद-सज्ञा पु० दे० "अनाहत" । योग  
 का साधन । वह शब्द जो कान वद करने  
 पर भी भीतर सुनाई पड़ता है ।  
 अनहित\*-सज्ञा पु० १ अपकार । बुराई ।  
 अहित २ शत्रु । वैरी । द्वेषी ।  
 वि० अहित या बुरा चाहनेवाला । अशुभ  
 चित्तव । भला न चाहनेवाला ।  
 अनहोता-वि० १ निर्धन । दरिद्र । गरीब ।  
 २ अलौकिक । न होनेवाला । अनोखा ।  
 अभूतपूर्व ।  
 अनहोना-वि० असम्भव । अनोखा । अलौकिक ।  
 अनहोनी-वि० न होनेवाली । अनोखी ।  
 राज्ञा स्त्री० अलौकिक बात ।

अन्होरी-सज्ञा स्त्री० गर्मी ऋतु की पुरियाँ ।  
 अमहोर । अम्होरी । मसरियाँ ।  
 अनाकानी-सज्ञा स्त्री० (अन्य रूप-आनाकानी)  
 मुनी-अनमुनी । टाल-मटोल । जान-बूझ-  
 कर बात को टाल देना या बहलाना ।  
 अनाकार-वि० बिना आवार का । निराकार ।  
 अनासर\*-वि० १ अनगढ़ । पेटगा । पेड़ोड ।  
 २ अपट ।  
 अनागत-वि० १ जो न आया हो । अनुपस्थित ।  
 २ होनहार । भावी । भवितव्य । ३  
 अज्ञात । अपरिचित । ४ जिसका आदि न  
 हो । अजन्मा । ५ आश्चर्यजनक । अपूर्व ।  
 अनोखा ।  
 कि० वि० अचानक । अप्रत्याशित । सहसा ।  
 एकबारगी ।  
 अनागम-सज्ञा पु० न आना । आगमन का  
 अभाव ।  
 अनाघ्रात-वि० १ बिना सूधा हुआ । २  
 अस्पृष्ट । अभिनव । ३ कारा । नया ।  
 अनाचार-सज्ञा पु० [वि० अनाचारी] १  
 दुराचार । बुरा आचरण । २ कुत्सित  
 कार्य । नियम या सदाचार के विरुद्ध काम ।  
 कुचाल । ३ अद्भुत ।  
 अनाचारिता-सज्ञा स्त्री० १ दुराचारिता ।  
 बुरा आचरण । २ बुरी चाल । कुरीति ।  
 अनाज-सज्ञा पु० अन्न । दाना । धान्य ।  
 शस्य ।  
 अनाडी-वि० १ मूर्ख । नासमझ । अनजान ।  
 २ अवक्ष । जो निपुण न हो । अकुशल ।  
 अनाडीपन-सज्ञा पु० अनभिज्ञता । मूर्खता ।  
 अनाड्य-वि० १ दरिद्र । २ दुखी ।  
 अनातप-सज्ञा पु० १ छाया । छाह । २  
 धर्माभाव ।  
 वि० ठंडा । शीतल । ३ तापरहित ।  
 अनातपत्र-वि० छत्ररहित ।  
 अनात्म-वि० १ प्रजाहीन २ अपने से भिन्न ।  
 सज्ञा पु० १ आत्मा का विरोधी । २  
 जड़ । अचेतन ।  
 अनात्मवान्-वि० १ जो अपने मन को वश  
 में नहीं कर सक्ता । २ आत्मा को न  
 माननेवाला ।

अनिमिष-आचार्य-गङ्गा पु० देवगङ्गा । यक्ष्मणि ।  
 अनिप्रति-वि० १ स्पर्छाचारी । जिम पर  
 कोई नियंत्रण या प्रतिप्रध न हो । बिना रोष-  
 टोष का । जिम पर कोई आगुशागता या  
 अकुश न हो । २ मनमाना ।  
 अनियत-वि० १ अनिश्चित । २ अग्निय ।  
 जो दृढ़ न हो । ३ अमीम । अपरिमित ।  
 नियम-हीन ।  
 अनियम-सज्ञा पु० नियम का न होना ।  
 व्यवस्थाहीनता । व्यनियम ।  
 अनियमित-वि० १ गडगड । अव्यवस्थित ।  
 नियमरहित । प्रेकायदा । २ अनिदिष्ट ।  
 अनिश्चित । ३ नियमहीन ।  
 अनियारा\*-वि० [ स्त्री० अनियारी ] नुबोला ।  
 पैना । नेज ।  
 अनिरुद्ध-वि० बाधारहित । जो राका हुआ  
 न हो । बेरोक ।  
 सज्ञा पु० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के  
 पुत्र जिनका विवाह ऊपा के माय हुआ था ।  
 अनिरण्य-सज्ञा पु० द्विविधा । मदह । मशय । दो  
 वाता में से किसी का निश्चय न हागा ।  
 अनिश्चय । अनवधारण ।  
 अनिर्णीत-सज्ञा पु० अनिर्धारित । अनिश्चित ।  
 अनिदिष्ट-वि० १ अनिर्धारित । जो बताया  
 न गया हो । २ अनिश्चित । ३ असीम ।  
 अनुहिष्ट ।  
 अनिर्दय-वि० अनिवचनीय । जिसके विषय  
 में न बतलाया जा सके ।  
 अनिवेचनीय-वि० अवणनीय । अवचनीय ।  
 जिसका वाणी से ठीक-ठीक वर्णन न किया जा  
 सके । २ जिसका वर्णन करना उचित न हो ।  
 अनिर्याव्य-वि० जो वाणी से न कहा जा  
 सके । जिसका बतलाना शक्ति से परे हो ।  
 २ जो चुनाव के योग्य न हो ।  
 अनिर्याप्य-वि० जिसका निर्वापन न हो सके ।  
 जो बुझाई न जा सके (आग) ।  
 अनिल-सज्ञा पु० १ हवा । वायु । पवन ।  
 २ आठ वसुओं में से एक विशेष वसु  
 का नाम । ३ वायु का देवता । ४ गठिया ।  
 ५ पक्षाघात । ६ एक ऋषि का नाम ।  
 ७ ४९ सख्या ।

अनिलकुमार-गङ्गा पु० १ पवनकुल ।  
 मातु । २ जेनो व एव देवता ।  
 अनिलघनक-गङ्गा पु० विभीषण वृक्ष ।  
 का वृक्ष ।  
 अनिलसत्ता-गङ्गा पु० अग्नि । आग ।  
 अनिलात्मज-गङ्गा पु० १ वायुपुत्र ।  
 हनुमान । ३ नीममेन ।  
 अनिलामय-गङ्गा पु० वातरोग ।  
 अनिलाशी-गङ्गा पु० १ वायु ।  
 द्वारा जीवन धारण करनेवाला । २  
 ० गर्भ । ३ व्रन-विशेष ।  
 अनिवारित-वि० अप्रतिपिद्ध ।  
 बाधाग्रहित । वाग्न-शून्य ।  
 अनिवार्य-वि० १ अवश्यम्भावी ।  
 जिमको रोका न जा सकता हो । जा  
 नहीं । २ जिसका निवारण करना  
 हा । ३ जो अवश्य हो । ४ जिमके  
 काम न चल सके ।  
 अनिश्चित-वि० अनियत ।  
 अनिदिष्ट । जिसके हाने न होने में सदेह  
 अनिष्ट-वि० जा इष्ट न हो ।  
 अवाछित ।  
 गङ्गा पु० कष्ट । शत्रु । अमगल ।  
 खराबी । बुराई ।  
 अनिष्टकर-वि० अपचारक ।  
 अनिष्टर-वि० अनिर्दय । सरलचित्त ।  
 अनिष्णात-वि० अप्रवीण । अहृती ।  
 अनी-सज्ञा स्त्री० १ अणी । नोक ।  
 २ किसी चीज का अगला सिरा । ३ मर्म  
 दल । झुड । ४ मेना ।  
 सज्ञा स्त्री० ग्लानि ।  
 अनीक-सज्ञा पु० १ सेना । २ युद्ध । ३  
 ममूह । ४ आकार प्रकार । ५ सि  
 ६ चेहरा ।  
 \*वि० बुरा । जो अच्छा न हो । खर  
 अनीकस्य-सज्ञा पु० सेनारक्षक । हस्तिप  
 राज रक्षक । चिह्न ।  
 अनीकिनी-सज्ञा स्त्री० अक्षोहिणी सेना  
 दगाश । कमल ।  
 अनौठ\*-वि० १ अनिष्ट । अप्रिय । २ खरा  
 बुरा ।

त-सज्ञा स्त्री० १ कुचाल। दुर्नीति।  
माय। अत्याचार। २. शरारत। ३  
र।

श-वि० अतुल्य। असमान। बराबर  
। बेजोड।

प्सित-वि० [सज्ञा स्त्री० अनीप्सिता]

सकी चाह या इच्छा न हो। अनचाहा।

ज्ञ-वि० [स्त्री० अनीशा] १ जिसके

गामी न हो। २ असमर्थ। अनाथ।

सबसे उत्तम।

ज्ञा पु० १ विष्णु। २ जीव। माया।

श्वर-वि० ईश्वर-भित्र। नास्तिक।

श्वरवाद-सज्ञा पु० १ वह वाद या

चार जो ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार

ही करता। नास्तिकवाद। २० मीमासा।

श्वरवादी-वि० १ नास्तिक। ईश्वर के

स्तित्व को न माननेवाला। २ अभक्त।

मीमांसक।

स-सज्ञा पु० अनाथ। जिसकी रक्षा

रनेवाला कोई न हो।

सिंह-सज्ञा पु० इच्छारहित। निर्लोभ।

नेस्पृह। निश्चेष्ट। बेपरवाह। आलसी।

सिंह-सज्ञा स्त्री० निर्लोभ। अनिच्छा।

उदासीनता।

उ-उप० एक उपसर्ग। जिस शब्द के पहले

सह उपसर्ग लगता है, उसमें इन अर्थों

का संयोग करता है—१ पीछे। पश्चात्।

जैसे, अनुचर। २ सद्गति। जैसे, अनुरूप।

३ साथ। जैसे, अनुगमन। अनुलोभ।

४ प्रत्येक। जैसे अनुदिन। ५ बार-बार।

जैसे अनुशीलन। (अनुसार, जैसे अनुकूल)

अध्य० हा। ठीक है।

नृकृपा-सज्ञा स्त्री० १ सवेदना। सहानु-

भूति। २ कृपा। अनुग्रह। ३ करुणा। स्नेह।

नृकृपित-वि० वह जिस पर कृपा की

गई हो। अनुगृहीत।

नृकृप्य-सज्ञा पु० अनुग्राह्य। कृपापात्र।

नृकृप्यन-सज्ञा पु० रहने के बाद कथन।

पश्चात् कथन। बार-बार कथन।

नृकृप्य-सज्ञा पु० [वि० अनुकरणीय,

अनुकृत] १ नकल। किसी काम की

देखकर वैसा ही काम करना या वैसा ही

काम। २ वह जो पीछे किया जाय। ३

अनुरूप ४ सद्गकरण। प्रतिरूपकरण।

अनुकरणीय-वि० नकल करने योग्य।

अनुकर्त्ता-सज्ञा पु० [स्त्री० अनुकर्त्री]

१ आज्ञाकारी। २ अनुकरण करनेवाला।

अनुकरण-सज्ञा पु० सीख। आवर्पण।

अनुकार-सज्ञा पु० अनुसरण। दे० “अनु-

करण”।

अनुकारी-वि० [स्त्री० अनुकारिणी] १

अनुकरण करनेवाला। २ आज्ञाकारी।

३ अनुकर्त्ता।

अनुकूल-वि० १ अनुसार। २ हित।

हितैषी। सहायक। पक्ष में रहनेवाला।

३ प्रसन्न।

सज्ञा पु० १ नायक जो अपनी विवाहिता

स्त्री में अनुरक्त हो। २ काव्य में एक

अलंकार-विशेष जिसमें प्रतिकूल वस्तु के

द्वारा अनुकूल वस्तु को सिद्ध किया जाता है।

अनुकूलता-सज्ञा स्त्री० १ पक्ष या हित में

होना। २ अविरोधता। अप्रतिकूलता।

३ सहायता। पक्षपात। ४ प्रसन्नता।

अनुकूलना\*-वि० स० १ सदाय होना।

२ लाभदायक होना। ३ प्रसन्न होना।

अनुकृत-वि० अनुकरण किया हुआ। नकल

किया हुआ। किसी वस्तु को देखकर वैसा

ही बनाया हुआ।

अनुकृति-सज्ञा स्त्री० १ नकल। २ किसी

वस्तु को देखकर वैसा ही कार्य किया हुआ

या वैसी ही बनाई हुई वस्तु। काव्य में एक

अलंकार जिसमें किसी कारण से एक वस्तु

दूसरी वस्तु के समान दिखलाई जाय।

अनुक्त-वि० [स्त्री० अनुक्ता] अव्यथित।

जो कहा हुआ न हो। अधृतपूर्व।

अनुक्रम-सज्ञा पु० परिपाटी। क्रम। सिल-

सिला। रीति-भाति।

वि० सिलसिले के अनुसार। एक के बाद

दूसरा। क्रम से। यथाक्रम।

अनुक्रमणिका-सज्ञा स्त्री० १ किसी क्रम

से (जैसे वर्णमाला के अनुसार) बनाई हुई

सूची। २ क्रम। ३ सिलसिलेदार वनी

अनिमिष-आचार्य-सज्ञा पु० देवगुरु । बृहस्पति ।  
अनियन्त्रित-वि० १ स्वच्छाचारी । जिस पर  
कोई नियन्त्रण या प्रतिबन्ध न हो । बिना रोक-  
टोक का । जिस पर कोई अनुशासन या  
अवरोध न हो । २ मनमाना ।

अनियत-वि० १ अनिश्चित । २ अस्थिर ।  
जो दृढ़ न हो । ३ अमीम । अपरिमित ।  
नियम-हीन ।

अनियम-सज्ञा पु० नियम का न होना ।  
व्यवस्थाहीनता । व्यतिश्रम ।

अनियमित-वि० १ गटवड । अव्यवस्थित ।  
नियमरहित । बेकायदा । २ अनिर्दिष्ट ।  
अनिश्चित । ३ नियमहीन ।

अनियारी\*-वि० [स्त्री० अनियारी] नुकीला ।  
पैना । तेज ।

अनिरुद्ध-वि० बाधारहित । जो रोक हुआ  
न हो । बेरोक ।

सज्ञा पु० श्रीकृष्ण के पीत्र और प्रद्युम्न के  
पुत्र जिनका विवाह ऊपा के साथ हुआ था ।

अनिर्णय-सज्ञा पु० द्विविधा । मदेह । मशय । दो  
बातों में से किसी का निश्चय न होना ।

अनिश्चय । अनवधारण ।

अनिर्णीत-सज्ञा पु० अनिर्धारित । अनिश्चित ।

अनिर्दिष्ट-वि० १ अनिर्धारित । जो बताया  
न गया हो । २ अनिश्चित । ३ अमीम ।

अनुद्दिष्ट ।

अनिर्देश्य-वि० अनिवर्चनीय । जिसके विषय  
में न बतलाया जा सके ।

अनिर्वचनीय-वि० अवर्णनीय । अवर्णनीय ।  
जिसका वर्णन से ठीक-ठीक वर्णन न किया जा  
सके । २ जिसका वर्णन करना उचित न हो ।

अनिर्वाच्य-वि० जहाँ जहाँ से न कहा जा  
सके । जिसका बतलाना शक्ति से परे हो ।

२ जो चुनाव के योग्य न हो ।

अनिर्वाच्य-वि० जिसका निर्वाचन न हो सके ।  
जो चुनाई न जा सके (आम) ।

अनिल-सज्ञा पु० १ हवा । वायु । पवन ।

२ आठ यमुना में से एक विशेष यमु-  
ना नाम । ३ वायु का देवता । ४ गठिया ।

५ पक्षाघात । ६ एक ऋषि का नाम ।

७ ४९ सख्या ।

नुरत-वि० आसक्त । लीन ।

नुराग-सज्ञा पु० १ देखने के बाद की प्रीति ।  
२ प्रीति । प्रेम । ३ रुझान । ४ लाल  
रंग । ५ लगन । ६ लेप ।

नुरागना-क्रि० स० प्रीति या प्रेम  
करना ।

नुरागी-वि० [ स्त्री० अनुरागिनी ] १  
विरागी का विपरीत । प्रमी । अनुराग  
करनेवाला । २ जिस पर लेप किया हो ।  
३ संगीत में एक स्वर विशेष ।

नुराध-सज्ञा पु० १ प्रार्थना । विनय ।  
२ समाप्त करना । ३ जो मनुष्य अनुराधा  
नक्षत्र में उत्पन्न हो ।

नुराधपुर-सज्ञा पु० लका में एक प्राचीन नगर ।  
नुराधना\*-क्रि० स० १ मनाना । विनय  
करना । २ समाप्त करना ।

नुराधा-सज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में १७व  
नक्षत्र का नाम ।

नुरूप-वि० १ प्रतिकृति । तुल्य रूप का ।  
एक-सा । अनुहार । सदृश । समान ।  
० याम्य । उपयुक्त ।

नुरूपता-सज्ञा स्त्री० १ सादृश्य ।  
समानता । ० उपयुक्तता ।

नुरूपना\*-क्रि० अ० किसी के अनुरूप  
होना ।

क्रि० स० किसी के अनुरूप बनाना ।

नुरोध-सज्ञा पु० १ नम्रतापूर्वक किसी  
बात के लिए आग्रह । दबाव । सिफारिश ।  
२ प्रेरणा । ३ सम्मान । ४ विचार करना  
या ध्यान देना ।

नुरोप-सज्ञा पु० कथित का पुनः पुनः  
कथन । मुहु ।

नुरोप-वि० अभिविक्त । लिप्त । दिग्ध ।

नुरोप-सज्ञा पु० अंग लेप । उबटन । पोतन ।  
लेपन ।

नुरोपन-सज्ञा पु० १ लेपन । लेप करना ।  
२ उबटन लगाना । बटना । ३ लीपना ।  
रूप । उबटन ।

नुरोम-सज्ञा पु० १ उल्टा । ऊँचे से नीचे  
का आर आग का क्रम । २ सबरोही ।  
संगीत में मुरा का उतार ।

पा० ५

अनुरोम-सज्ञा पु० दस्त लगानेवाली वह दवा  
जो पेट में से गाँठों को निकाल दे । मज्जित  
दूर करनेवाली दवा । कोष्ठवद्धता की  
ओषधि ।

अनुरोम विवाह-सज्ञा पु० उच्च वर्ण के  
पुरुष का निम्न वर्ण की स्त्री के साथ  
विवाह ।

अनुवर्तन-सज्ञा पु० १ अनुकरण । किसी के  
आचरण के अनुसार आचरण । अनुगमन ।  
समान आचरण । २ किसी नियम का  
अनेक स्थानों पर लगाना ।

अनुवर्त्ती-वि० [ स्त्री० अनुवर्त्तिनी ] पीछे-  
पीछे चलनेवाला । अनुगामी । अनुयायी ।

अनुवाक्-सज्ञा पु० १ पुरतव का एक भाग ।  
किसी अध्याय या प्रकरण का एक अंश ।  
२ ग्रन्थावयव । ३ वेद के अध्याय का एक  
अंश ।

अनुवाद-सज्ञा पु० १ उल्था । भाषांतर ।  
२ फिर कहना । दोहराना । ३ न्याय'  
में वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात  
का बार-बार कथन हो (न्याय) ।  
४ निन्दा । अपवाद ।

अनुवादक-सज्ञा पु० उल्था, अनुवाद या  
भाषांतर करनेवाला ।

अनुवाचित-वि० अनूदित । अनुवाद किया  
हुआ ।

अनुवाद्य-वि० अनुवाद करने योग्य । जिसका  
अनुवाद किया जाय ।

अनुवर्त्ति-सज्ञा स्त्री० १ किसी पद के  
पहले अंश से कुछ वाक्य उसके आगे के  
अंश में अर्थ समझाने के लिए लाना । २  
उपजीविका । ३ सेवा मार्ग ।

अनुशाय-सज्ञा पु० १ पश्चात्ताप । पछतावा ।  
अफसोस । अनुताप । २ जिज्ञासा । ३ द्वेष ।  
घृणा । पुराना बैर । झगडा । ४ घनिष्ठ  
संबंध । ५ परिणाम । ६ वाद विवाद ।

अनुशायना-सज्ञा स्त्री० परकीया नायिका  
जो अपने प्रिय के मिलन के स्थान के नष्ट  
हो जान या दुखी हो ।

अनुशायी-सज्ञा पु० पश्चात्तापी । रोग विशय ।  
बरी ।

२. किसी के द्वारा अनुकरण। ३. आरम्भ।  
४. मित्र। मुहूर्त। ५. शिष्य में अनुकरण करने की प्रवृत्ति। ६. बाधा। ७. फल (कार्य आदि का)। ८. प्रधान रोग के कारण उसके साथ ही दूसरा रोग। ९. छोटी वस्तु (गणित)। १०. वेदात् का एक तत्त्व।

अनुभव-संज्ञा पु० [वि० अनुभवी] १. वह ज्ञान जो स्मृति से प्राप्त न हो। २. वह ज्ञान जो पर्यवेक्षण, साक्षात्कार या प्रयोग द्वारा स्वयं प्राप्त हुआ हो। प्रत्यक्ष से प्राप्त ज्ञान। ज्ञान प्राप्त होने के बाद जो संस्कार हो जाते हैं उनका मस्तिष्क पर परिणाम। ३. परीक्षण। ४. परीक्षण द्वारा प्राप्त ज्ञान। ५. यथार्थ ज्ञान। तजवर। अनुभवी-वि० जानकार। जिसने अनुभव प्राप्त किया हो। तजवरकार।

अनुभाव-संज्ञा पु० १. वड़ाई। महिमा। प्रताप। तेज। २. दृढ़ विश्वास। ३. वाक्य में रस का द्वितीय उत्तेजक। चित्त के भाव को व्यक्त करनेवाली कटाक्ष आदि शारीरिक चेष्टाएँ।

अनुभावी-वि० [स्त्री० अनुभाविनी] १. अनुभवी। ज्ञाता। २. साक्षी।

अनुभूत-वि० १. परीक्षित। २. जिसका साक्षात् ज्ञान हुआ हो। अनुभव किया हुआ। जिसका ज्ञान, देखने चलने, सूँघने आदि से हुआ हो।

अनुभूति-संज्ञा स्त्री० १. अनुभव की बात। अनुभव। २. बोध। परिज्ञान। ३. स्मृति को छोड़कर किसी भी प्रकार से प्राप्त ज्ञान। ४. न्याय शास्त्र के आप्त वाक्य आदि चार प्रमाणों से प्राप्त ज्ञान।

अनुमत-वि० सम्मत। स्वीकृत। अंगीकृत। एवमत। सहमत।

अनुमति-संज्ञा स्त्री० १. सम्मति। स्वीकृति। २. आज्ञा। हुक्म। ३. इजाजत।

अनुमरण-त्रि० अ० एक सग मरना। सहमरण। सती होना।

अनुमान-संज्ञा पु० [वि० अनुमित] १. अनुभव। बोध। अटकल। अदजा। २.

न्याय के यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के प्रमाणों में से एक, जिसमें प्रत्यक्ष और तर्क के द्वारा अप्रत्यक्ष का किया जाय।

अनुमापक-संज्ञा पु० निर्णायक। अनुमान हेतु। निश्चय का कारण।

अनुमानना-क्रि० सं० अनुमान या अनुमान करना।

अनुमित-वि० अनुमान किया हुआ। आदि के द्वारा भावित।

अनुमिति-संज्ञा स्त्री० अनुमान।

अनुमेय-वि० अनुमान का विषय।

अनुमोदन-संज्ञा पु० १. स्वेच्छा से किया हुआ मत। २. आनन्दयुक्त सम्मति प्रसन्नतायुक्त स्वीकृति। ३. प्रसन्नता का प्रकाशन। प्रसन्न होना।

अनुयायी-वि० [स्त्री० अनुयायिनी] १. अनुकरण करनेवाला। पिछलगा। २. चलनेवाला। ३. अनुगामी। अनुसर।

संज्ञा पु० अनुचर। दास। सेवक।

अनुयोग-संज्ञा पु० १. ताडना। २. धमकी घुड़की। ३. तिरस्कार। आक्षेप। ४. प्रश्न जिज्ञासा। ५. निन्दा। शिक्षा। ६. उपदेष्ट।

प्रबोध। ७. ब्रह्मासन।

अनुयोगकारी-संज्ञा पु० १. तिरस्कारक। आक्षेपक। २. प्रश्नकारक।

अनुयोगी-संज्ञा पु० १. निन्दित। तिरस्कृत। २. मिलानेवाला।

अनुयोजक-संज्ञा पु० अनुयोगकारी। उपदेष्टक।

अनुयोजन-संज्ञा पु० प्रश्न। जिज्ञासा। पृष्ठपाछ। अनुयोज्य-वि० १. अनुयोगार्थ। आज्ञाप्य। २. निन्दा योग्य। ३. सेवक। ४. प्रतिनिधि।

अनुरंजन-संज्ञा पु० १. प्रीति। अनुराग। २. प्रसन्नता। ३. मनबहुलाव। ४. शरीर पर मीला या मूला लेप जैसे-चदन, पाउडर लगाना।

अनुरजित-प्रसन्न। रेंगा हुआ। आनन्द। अनुरक्त-वि० १. आमक्त। अनुराग से युक्त। २. लीन। ३. प्रेमी। ४. भक्त।

अनुप्राण।

अनुहारना\*—क्रि० स० सदृश या समान करना ।

अनुहारी—वि० [स्त्री० अनुहारिणी] अनुकरण करनेवाला ।

अनुहार्य—सज्ञा पु० १ मासिक श्राद्ध । २. समान करने योग्य । ३ अनुकूल करने योग्य ।  
अनुहा—वि० [स्त्री० अनुहो] १. अपूर्व । अनोखा । विलक्षण । अद्भुत । २ अच्छा । बढ़िया । ३ नया । निराला ।

अनुहापन—सज्ञा पु० १ अनोखापन । विचित्रता । विलक्षणता । २ अच्छाई । सुंदरता ।

अनुहा—सज्ञा स्त्री० १ वह बिना व्याहोरी जो किसी पुरुष से प्रेम करती हो । कुंवारी । अविवाहिता ।

अनुहायी—सज्ञा पु० व्यवहारी । गणिका-वो । लपट ।

अनुहा—वि० १ कहा या किया हुआ । अनुवाद किया हुआ । भाषांतर या उल्था या हुआ ।

अनुहा—पु० वह स्थान जहाँ जल अधिक । जलप्रधान देश ।

अनुहा—० १ जिनकी उपमा न हो । उपमा उन । बेजोड़ । २ अच्छा । सुंदर । म—वि० अनोखा ।

अनुहा—सज्ञा पु० १ जो सत्य न हो । असत्य । मिथ्या । २ अन्यथा । विपरीत । य ।

अनुहा—वि० मिथ्यावादी ।

\*—वि० बुरा । सराव । कुटिल । टेढ़ा ।

अनुहा—वि० एक से अधिक । कई । बहुत ।

अनुहा—सज्ञा पु० १ द्विज । २ पत्नी । ३ पति ।

अनुहा—सज्ञा स्त्री० १ भेद । विरोध । आपत्ति । एक से अधिक होना ।

अनुहा—अव्य० बारंबार ।

अनुहा—अव्य० अनेक प्रकार । बहु प्रकार ।

अनुहा—वि० बहुत-से बर्णोंवाला ।

अनुहा—अव्य० अनेक प्रकार से ।

२ अन्यायी । दुष्ट । ३ झूठ । व्यर्थ । वेगमल्ल । ४ निकम्मा ।

क्रि० वि० व्यर्थ ।

अनुहाय—सज्ञा पु० १ मतभेद । फूट । एका न होना । २ विरोध । ३ असंयोग ।

अनुहा—सज्ञा पु० १ दिन के आरंभ में कोई अप्रिय कार्य या अनुभव जिससे चित्त क्षुब्ध हो जाय । २ वह दिन जब बाजार बंद रहे । ३ अनिष्ट । बुराई ।

अनुहायिक—वि० जो नैतिक न हो । नीति-विरुद्ध ।

अनुहा—सज्ञा पु० अहित । बुराई ।

वि० बुरा ।

अनुहा—सज्ञा\*—वि० अ० रूठना । बुरा मानना ।

अनुहा—वि० [स्त्री० अनुहा] गंवार । अप्रिय । बुरा ।

अनुहा—वि० क्रि० वि० कुदृष्टि । बुरे भाव से ।

अनुहा—सज्ञा पु० उपद्रव । उत्पात ।

अनुहा—वि० [स्त्री० अनोखी] १ विचित्र । अजीब । विलक्षण । निराला । अपूर्व । अद्भुत । २ नया । ३ सुंदर । ४ दुर्लभ ।

अनुहापन—सज्ञा पु० १ विचित्रता । निराला-पन । विलक्षणता । २ नयापन । ३ खूब-सूरती । सुंदरता ।

अनुहा—वि० अलोना । नानरहित ।

अनुहाचित्य—सज्ञा पु० उचित बात का न होना । अनुपयुक्तता । अनिबधता । जो उचित या व्यापनगत न हो ।

अनुहा—सज्ञा पु० दे० अनवट ।

अनुहा—सज्ञा पु० १ अनाज । वह घास जो खाने के काम में आता हो । २ दाना । गल्ला । ३ मूष । ४ पृथ्वी । ५ जल । ६ प्राण ।

अनुहा—सज्ञा पु० दुर्भिक्ष । ब्रष्ट में अन्न मिटना ।

अनुहा—सज्ञा पु० १ पर्व विशेष । २ एक उत्सव जो प्रायः वासिष्ठ गुरु प्रविष्टा के दिन होता है । इसमें आठ प्रायः के ध्यजना का भोग भगवान् को लगाया जाता है । ३ एक माघ की प्रथा का ।

अनुशासक—सजा पु० १ शासन करनेवाला। आज्ञा या आदेश देनेवाला। २ शिक्षक। उपदेश देनेवाला। ३ राज्य का प्रबंध करनेवाला।

अनुशासन—सजा पु० १ आज्ञा। आदेश। हुक्म। २ उपदेश। शिक्षा। ३ व्याख्यान। विवरण। ४ महाभारत का एक पर्व।

अनुशास्ता—सजा पु० १ शिक्षक। उपदेष्टा। २ अनुशासक।

अनुशीलन—सजा पु० १ अध्ययन। मनन। चिंतन। विचार। २ बार बार का अभ्यास। ३ आन्दोलन।

अनुशोक—सजा पु० पश्चात्ताप। खेद। अनुशोचन—सजा पु० पश्चात्ताप करना। अनुशोचना—सजा स्त्री० अनुताप। पछतावा। अफसोस।

अनुधुत—वि० परम्परा से चला आया हुआ। परम्परागत।

अनुधुति—सजा स्त्री० बहवात जिसे लोग परम्परा से सुनते चले आये हों। परंपरागत बधा या उक्ति।

अनुपग—सजा पु० [वि० आनुपगिक] १ दया। कृपा। २ सबध। लगाव। ३ मिलन। ४ प्रणय। ५ प्रसंग से एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना। ६ शब्द का शब्द से और कार्य का कारण से सबध। ७ पूर्व कर्म का अवश्यभावी फल (धर्म शास्त्र)।

अनुष्टुप्—सजा पु० १ ३२ अक्षरो के वर्णवृत्त का एक भेद। इलोको का एक प्रकार जिसमें आठ आठ अक्षरो के चार पद होते हैं। २ सरस्वती।

अनुष्ठान—सजा पु० १ किसी विशेष सकल्प से किया हुआ कार्य। उपक्रम। कार्य का आरम्भ। २ नियमपूर्वक कोई काम करना। शास्त्र-सम्मत कर्म करना। ३ सूचना। ४ प्रयोग। फल के निमित्त किसी देवता की पूजा। पुरश्चरण। ५ आचरण।

अनुष्ठान-शरीर—सजा पु० लिंग-देह। आद्य देह।

अनुष्ठित—वि० आरम्भ। आचरित। जिसका

अनुष्ठान किया गया हो। जिसका प्रयोग या आचरण किया गया हो।

अनुष्ठेय—वि० १ उपन्यास। कर्मरिब्ध। २ किया जानेवाला। करने योग्य।

अनुसंधान—सजा पु० १ पीछे लगना। २ खोज। अन्वेषण। जांच-पड़ताल। ३ चेष्टा। ४ शोध-कार्य। प्रयत्न।

अनुसंधानी—सजा पु० अनुसंधानकारी। अनेक विषयों का अन्वेषण करनेवाला।

अनुसंधानता\*—त्रि० स० १ खोज करना। ढूँढना। २ सोचना।

अनुसंधि—सजा स्त्री० गुप्त परामर्श या मधि। पड्यत्र। कुचक्र।

अनुसरण—सजा पु० १ अनुवर्तन। पीछे या साथ चलना। पश्चाद्गमन। २ नवल। अनुकरण।

अनुसरता\*—क्रि० स० १ साथ साथ या पीछे चलना। २ अनुकरण करना।

अनुसार—वि० अनुरूप। तुल्य। अनुकूल। समान। मुअस्बि। जिसमें सादृश्य हो।

अनुसारता\*—त्रि० स० १ अनुकरण करना। नवल करके चलना। २ आचरण करना। ३ कोई काम करना।

अनुसारी\*—वि० जो अनुसरण या अनुकरण करता हो।

अनुताल\*—सजा पु० पीडा। वेदना। कष्ट। रज।

अनुसूचन—सजा पु० विचार। ध्यान। अनुसूचना—सजा स्त्री० आन्दोलन। सुचिन्ता। अनुष्ठान।

अनुस्वार—सजा पु० १ स्वर के ऊपर की बिंदी। २ स्वर के बिल्कुल बाद का हलत वण जिसका चिह्न ( ) है। ३ निगूहीत।

अनुहरत\*—वि० [हिं० अनुहरना का कृदत रूप] १ अनुरूप। समान। २ योग्य। अनुकूल। ठीक।

अनुहार—वि० १ समान। सदृश। तुल्य। २ अनुसार। अनुकूल।

सजा स्त्री० १ प्रकृति। भेद। २ आवृत्ति। ३ समानता। सादृश्य।

अनुहारना\*-क्रि० स० सदृश या समान करना ।

अनुहारी-वि० [स्त्री० अनुहारिणी] अनुकरण करनेवाला ।

नुहार्य-सज्ञा पु० १ मासिक श्राद्ध । २. समान करने योग्य । ३ अनुकूल करने योग्य ।  
नुहा-वि० [स्त्री० अनूठी] १. अपूर्व ।  
अनोखा । विलक्षण । अद्भुत । २ अच्छा ।  
बढ़िया । ३ नया । निराला ।

नुहापन-सज्ञा पु० १ अनोखापन । विचित्रता ।  
विलक्षणता । २ अच्छाई । सुदरता ।

नुहा-सज्ञा स्त्री० १ वह बिना व्याही स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम करती हो ।  
२ कुंवारी । अविवाहिता ।

नुहागामी-सज्ञा पु० व्यभिचारी । गणिका-  
संघी । लपट ।

नुवित-वि० १ कहा या किया हुआ ।  
२ अनुवाद किया हुआ । भाषांतर या उल्था  
किया हुआ ।

नुप-सज्ञा पु० वह स्थान जहाँ जल अधिक  
हो । जलप्रधान देश ।

वि० १ जिसकी उपमा न हो । उपमा  
रहित । बेजोड़ । २ अच्छा । सुंदर ।

अनुपम-वि० अनोखा ।

अनुत-सज्ञा पु० १ जो सत्य न हो । असत्य ।  
झूठ । मिथ्या । २ अन्यथा । विपरीत ।  
वितथ ।

अनुतवादी-वि० मिथ्यावादी ।

अनेक\*-वि० बुरा । खराब । कुटिल । टेढ़ा-  
मेढ़ा ।

अनेक-वि० एक से अधिक । कई । बहुत ।

अनेक-सज्ञा पु० १ द्विज । २ पक्षी । ३  
यहजात ।

अनेकता-सज्ञा स्त्री० १. भेद । विरोध ।  
२. आधिक्य । एक से अधिक होना ।

अनेक्य-अव्य० धारदार ।

अनेक्य-अव्य० अनेक प्रकार । बहु प्रकार ।

अनेकार्य-वि० बहुत-से अर्थवाला । जिससे  
एक से अधिक अर्थ निकलने हैं ।

अनेक\*-वि० दे० "अनेक" ।

अनेक-वि० [स्त्री० अनेगी] १ झूठा ।

२ अन्यायी । दुष्ट । ३ झूठ । व्यर्थ ।  
वेमतलब । ४. निकम्मा ।

क्रि० वि० व्यर्थ ।

अनंघ-सज्ञा पु० १ मतभेद । फूट । एका,  
न होना । २ विरोध । ३ असंयोग ।

अनंत-सज्ञा पु० १ दिन के आरंभ में  
कोई अप्रिय कार्य या अनुभव जिससे चित्त  
क्षुब्ध हो जाय । २ वह दिन जब  
वाजार बंद रहे । ३ अनिष्ट । बुराई ।

अनंतिक-वि० जो नैतिक न हो । नीति-  
विरुद्ध ।

अनैस\*-सज्ञा पु० अहित । बुराई ।  
वि० बुरा ।

अनैसना\*-क्रि० अ० रुठना । बुरा मानना ।

अनैसा\*-वि० [स्त्री० अनैसी] मगब ।  
अप्रिय । बुरा ।

अनैस\*-क्रि० वि० बुद्धि से । बुरे भाव से ।

अनैहा\*-सज्ञा पु० उपद्रव । उत्पात ।

अनोखा-वि० [स्त्री० अनोखी] १ विचित्र ।  
अजीब । विलक्षण । निराला । अपूर्व । अद्भुत ।  
२ नया । ३ सुंदर । ४ दुर्लभ ।

अनोखापन-सज्ञा पु० १ विचित्रता । निराला-  
पन । विलक्षणता । २ नयापन । ३ खूब-  
सूरती । सुंदरता ।

अनोना-वि० अलोना । नोनरहित ।

अनौचित्य-सज्ञा पु० उचित बात का न  
होना । अनुपयुक्तता । अनैतिकता । जो  
उचित या न्यायसंगत न हो ।

अनौट\*-सज्ञा पु० दे० "अनघट" ।

अन्न-सज्ञा पु० १ अनाज । वह धान्य जो  
पाने के काम में आता हो । २ दाना ।  
गल्ला । ३ सूर्य । ४ पृथ्वी । ५ जल ।  
६ प्राण ।

अन्नघट-सज्ञा पु० दुग्ध । घट में  
जल मिलना ।

अन्नघट-सज्ञा पु० १ पर्व विशेष । २ एक  
उत्सव जो प्रायः वास्तिक शुक्ल प्रतिपदा  
के दिन होता है । इसमें अनेक प्रकार के  
व्यंजनों का भोग भगवान् को लगाया जाता  
है । ३ एक गाय कई प्रकार का  
भोजन ।

अन्नक्षेत्र-सज्ञा पु० वह जगह जहाँ भूखों को अन्न मिलता हो। दे० "अन्नक्षेत्र"।

अन्नजल-सज्ञा पु० १. दाना-पानी। खान-पान। अन्न-पानी। २. जीविका।

मुहा०-अन्न-जल त्यागना या छोड़ना=उपवास करना। अन्नजल उठ जाना=जीविका छूट जाना।

अन्नदाता-सज्ञा पु० [ स्त्री० अन्नदात्री ]  
१. अन्न देनेवाला। २. पोषक। रक्षक। प्रतिपालक। ३. स्वामी।

अन्नदान-पज्ञा पु० आहार-दान। अन्नव्यय।  
अन्नदास-सज्ञा पु० १. पेट के लिए दास बननेवाले। २. पेट।

अन्नपानी-सज्ञा पु० भोजन और जल।

अन्नपूर्णा-सज्ञा स्त्री० १. दुर्गा का एक रूप। अन्न की अधिष्ठात्री देवी। २. काशीस्वरी। विश्वेश्वरी। ३. वह स्त्री जो भली भाँति भोजन कराती हो। ४. पार्वती जी का एक नाम।

अन्नप्राशन-सज्ञा पु० सस्कार-विशेष जब बच्चों को पहले पहल अन्न खिलाते हैं।

अन्नभाजन-सज्ञा पु० भोजन करने का बर्तन।  
अन्नभिक्षा-सज्ञा स्त्री० अन्न के लिए प्रार्थना। अन्न माँगना।

अन्नभोक्ता-सज्ञा पु० १. अन्न खानेवाला। २. जिनके साथ खान-पान है।

अन्नमय-१. अन्नस्वरूप। २. अन्न द्वारा वर्धित। ३. अन्न से पूर्ण। ४. अन्न से बना हुआ।

अन्नमय कोश-सज्ञा पु० १. पच कोशों में से पहला। २. अन्न से बना हुआ। त्वचा से लेकर घीर्म्म तक के अंगों के समूह का नाम। ३. स्थूल शरीर (वेदात)।

अन्नरस-सज्ञा पु० माँड। अन्न का मार भाग।  
अन्नरिप्ता-सज्ञा स्त्री० क्षुधा। बुभुक्षा।

अन्नविकार-सज्ञा पु० १. शुक। वीर्य। २. विष्ठा। मल। ३. अन्न से उत्पन्न रोग।

अन्नब्रह्म-सज्ञा पु० अन्नस्वरूप ब्रह्म।

अन्नसत्र-सज्ञा पु० वह स्थान जहाँ भूखों को भोजन बाँटा जाता है।

अन्ना-गज्ञा स्त्री० १. धाय। दाई। धात्री। २. उपमाता।

अन्नाभाव-सज्ञा पु० अन्न की कमी। दुर्भिक्ष। अकाल।

अन्नार्थी-सज्ञा पु० भोजन के लिए अन्न माँगनेवाला।

अन्नाहारी-सज्ञा पु० अन्नभोक्ता। अन्न खानेवाला।

अन्नो-सज्ञा स्त्री० दाई। धाय। धात्री। उपमाता।

अन्य-वि० १. भिन्न। दूसरा। गैर। और। कोर्ट। और कुछ। २. पृथक्।

अन्यकृत-वि० अन्य द्वारा किया हुआ। भिन्न-संपादित।

अन्यस्याति-सज्ञा स्त्री० अस्याति। दुष्प्रीति। दुर्नाम। (दर्शन में इस शब्द का प्रयोग आत्मविषयक भिन्न ज्ञान के अर्थ में होता है।)

अन्यगामी-सज्ञा पु० १. व्यभिचारी। २. परस्त्रीगामी। लपट। ३. परिवर्तन। बदला किया हुआ।

अन्यचरण-सज्ञा पु० उलटा चलन। विपरीत व्यवहार। विरुद्ध आचरण।

अन्यचाली-सज्ञा पु० स्वधर्मत्यागी। कुपथ-गामी।

अन्यज-सज्ञा पु० वृयोनि। हीन जाति। जारज।

अन्यत-क्रि० वि० १. किसी और से। २. किसी अन्यत्र स्थान से। अन्यत्र से। ३. स्थानांतर।

अन्यतम-वि० बहुतो में से एक। सबसे बड़कर। प्रधान। मुख्य।

अन्यत्र-वि० दूसरी जगह। और कहीं।

अन्यथा-वि० १. उलटा। विपरीत। प्रतिकूल। विरुद्ध। २. झूठ। असत्य।

अन्य० नहीं तो।

अन्यथासिद्धि-सज्ञा स्त्री० १. न्याय में एक दोष, जिसमें तर्क से अथार्थ बात की सिद्धि की जाय। २. अभावनीय कार्यों की उत्पत्ति।

अन्यदेशी या अन्यदेशीय-सज्ञा पु० दूसरे देश के वासी। भिन्न देशी।

अन्यपुरुष-मज्ञा पु० १ दूसरा मनुष्य । २ व्याकरण में वह पुरुष जिम्मे सन्ध में कुछ कहा जाय। जैसे, 'यह', 'वह', 'कोई'।  
अन्यपुष्ट-मज्ञा पु० १ कोकिल। बौद्ध।  
पिक। २ परपाठित। दूसरे के द्वारा पालित।

अन्यपूर्वा-मज्ञा स्त्री० १ परपूर्वा। २ जिस विवाहित स्त्री का पति के मरने पर पुनर्वा विवाह हो। द्विहृदा। दो बार व्याही हुई।  
अन्यभूत-सज्ञा पु० १ बाव। बीजा। २ बौद्ध। पिक।

अन्यमनस् या अन्यमनस्क-वि० अनमना।  
जिमका मन न लगता हो। चितित। उदास।  
अन्यमनस्कता-सज्ञा स्त्री० १ अन्यमनस्क होना। २ दूसरी ओर मन लगाना।  
३ प्रभुता बात पर असावधानी।

अन्यसभोगदु खिता-सज्ञा स्त्री० वह नायिका जो अपने प्रिय के शरीर पर अन्य किसी स्त्री के साथ सभोग के चिह्न देखकर दुखी हो।

अन्यसुरतिदु खिता-सज्ञा स्त्री० दे० "अन्य-सभोगदु खिता"।

अन्यदृश-वि० अन्य प्रकार। भिन्न रूप।  
विसदृश।

अन्यान्य-वि० अपरापर। भिन्न भिन्न। दूसरे दूसरे। और और।

अन्यापदेश-सज्ञा पु० दे० "अन्योक्ति"।

अन्याय-मज्ञा पु० [ वि० अन्यायी ] १ अत्याचार। अनुचित व्यवहार। अनीति।  
वेइमाफी। जविचार। २ अधरे। ३ जुलूम।  
उपद्रव।

अन्यायी-वि० [ सज्ञा अत्याचारी ] अन्याय करनेवाला। अधर्मी। न्यायदृश्य। दुष्ट।

अन्यारा\*-वि० १ जो अलग न हो। २ अद्भुत। अनाया। ३ अधिक। बहुत।

अन्यून-वि० [ मज्ञा स्त्री० न्यूनता ] जो न्यून न हो। बहुत। अधिक।

अन्योक्ति-सज्ञा स्त्री० अन्यापदेश। वह कथन जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से वयित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जय।

अन्योदय-वि० दूसरे के पेट से उत्पन्न :  
'सहोदर' का उलटा।

अन्योन्य-सर्व० आपस में। परस्पर।

सज्ञा पु० काव्यालंकार-विशेष जिसमें दो वस्तुओं की किसी प्रिया या गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना कहा जाय।  
उभयत मिलाप।

अन्योन्याभाव-सज्ञा पु० किसी एक या दूसरी वस्तु का न होना।

अन्योन्याश्रय-सज्ञा पु० [ वि० अन्योन्याश्रित ]  
१ आपस का सहारा। एक दूसरे की आवश्यकता। २ सापेक्ष ज्ञान। न्याय में एक वस्तु के ज्ञान के लिए दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा।

अन्वय-सज्ञा पु० [ वि० अन्वयी ] १ तारतम्य।  
परस्पर संबंध। २ मेल। संयोग। ३ पद्यों के शब्दों को वाक्यरचना के नियमानुसार यथास्थान रखने का कार्य। ४. शून्य। ५ अवकाश। खाली स्थान। ६ कार्य-कारण का संबंध। ७ खानदान। वंश। ८ एक बात की सिद्धि से दूसरी बात की सिद्धि का संबंध। ९ पदच्छेद। १० सतति।

अन्वय-वि० वशावलि जाननेवाला। वन्दी। भाट।

अन्वयी-वि० संबंध विशिष्ट। संपर्की। पश्चाद्गती।

अन्वह-सज्ञा पु० नित्य। प्रत्यह। प्रतिदिन।

अन्वान्वय-वि० संयोजित। संयुक्त। द्वन्द्व।  
गमास का एक भेद।

अन्वित-वि० १ युक्त। २ मिला हुआ।  
संबंधित। ३ पूरा।

अन्वितार्क-सज्ञा पु० अन्वय के द्वारा निकलने-  
वाला अर्थ। अन्दर प्रिया या मिला हुआ अर्थ।

अन्वीक्षण-सज्ञा पु० १ ध्यान। विचार।  
२ अनुसंधान। खोज। पता लगाना।

अन्वीक्षा-सज्ञा स्त्री० १ ध्यान में देखना।  
२ खोज। अनुसंधान।

अन्वेषक-वि० [ स्त्री० अन्वेषिका ] खोज करनेवाला। पता लगानेवाला। अनुसंधान-  
कर्ता।

अन्वेषण-सज्ञा पु० [ स्त्री० अन्वेषणा ] खूँड़। खोज। अनुसंधान। पता लगाना।  
 अन्वेषी-वि० [ स्त्री० अन्वेषिणी ] खोज करने-वाला। अन्वेषक।  
 अन्हवाना\*-वि० स० स्नान कराना। नहलाना।  
 अन्हान-पज्ञा पु० १ स्नान। नहाना। स्नान का पर्व।  
 अन्हाना\*†-वि० अ० दे० "नहाना"।  
 अन्होना-पज्ञा पु० १ अगाध्य। २. असंभव। जो न हो सके।  
 अप-मज्ञा पु० पानी। जल।  
 अपग-वि० १ अगरहित। जिसके कोई अंग न हो। २ बेवम। अगन्त। ३ लूला। लैगाटा।  
 अप-उप० १ विम्ब। उलटा। २ नीचे। अधम। घुरा। ३ अधिक। ४ विभाग। ५ विपर्यय। ६ चौर्यनिर्देश। ७ यज्ञ-मं। ८ हर्ष। ९ निर्देश्य। १० प्रज्ञा। यह उपगर्ग जिस शब्द के पहले आता है उसके अर्थ में निम्नलिखित विग्रहना उत्पन्न करता है। १ निषेध। जैसे अपमान। २ अपकृष्ट (दूषण)। जैसे, अपकर्म। अपपाठ। दूर, जैसे अन्तर। ३ विवृति। जैसे, अपाग। ४ विशेषता। जैसे, अपहरण। सर्व० आप का मक्षिप्त रूप (योगिक में)। जैसे—अपस्वार्थी। अपकाजी।  
 अपकर्त्ता-सज्ञा पु० [ स्त्री० अपकर्त्री ] १ घुरा करनेवाली। २ पापी।  
 अपकर्म-सज्ञा पु० पाप। घुरा काम। कुकर्म। कुचलन।  
 अपकर्म-सज्ञा पु० १ गिराना। २ नीचे की ओर खींचना। ३ उतार। कमी होना। ४ अनादर। अपमान। ५ मुख्य काल के रहने अमुर्य काल में कर्म करना। ६ अधन्यता।  
 अपकर्षण-सज्ञा पु० खींचना। तानना।  
 अपकलक-पु० अपयश। कलक। मिथ्यापवाद। दुर्नाम।  
 अपकाजी-वि० मतलबी। स्वार्थ पूरा करने-वाला।

अपकार-सज्ञा पु० १. अहित। बुराई। अनिष्ट। हानि। क्षति। २. अनुपकार। नुवसान। ३. अनादर। अपमान।  
 अपकारक-वि० १. अनिष्टकारी। बुराई करनेवाला। हानिकारी। २. विरोधी। द्वेषी।  
 अपकारिता-सज्ञा स्त्री० अपकार (बुराई या हानि) करने की प्रिया या भाव।  
 अपकारी-वि० [ स्त्री० अपकारिणी ] १. हानि। बुराई करनेवाला। २. द्वेषी। विरोध करनेवाला।  
 अपकारीवार-वि० हानि करनेवाला। विघ्न डालनेवाला।  
 अपकीर्ति-सज्ञा स्त्री० अकीर्ति। अपयश। बुराई। बदनामी। निंदा।  
 अपकृत-वि० १ अपकार प्राप्त। २ जिसका विरोध किया गया हो। 'उपकृत' का उलटा। ३ अपमानित।  
 अपकृति-सज्ञा स्त्री० दे० "अपकार"।  
 अपकृष्ट-वि० [ सज्ञा अपकृष्टता ] १. पतित। भ्रष्ट। गिरा हुआ। २. अधम। नीचे। ३. घुरा। घराब। निवृष्ट। ४. न्यून। ५. हटाया हुआ। ६. दूर। ७. नीचे लाया हुआ। ८. नीचा।  
 अपकृष्टता-सज्ञा स्त्री० १. अधन्यता। निवृष्टत्व। नीचता। २. दूरी।  
 अपक्वम-सज्ञा पु० १ क्रम का न होना। व्यतिक्रम। उलट-मलट। गड़बड़। २. भागना। छूटना। पलायन।  
 अपक्वोश-सज्ञा पु० निन्दन। भर्त्सन।  
 अपक्व-वि० १ कच्चा। जो पका हुआ न हो। २. जिसे अभ्यास न हो। असिद्ध।  
 अपगत-वि० [ सज्ञा अपगति ] भागा हुआ। हटा हुआ। दूर गया। भरा। मृत। नष्ट। गत।  
 अपगा-सज्ञा स्त्री० नदी।  
 अपघन-सज्ञा पु० शरीर।  
 वि० बिना वादल का। मेघ-रहित।  
 अपघात-सज्ञा पु० [ वि० अपघातक, अपघानी ] १. वध। हत्या। २. विस्वासघात। धोखा।  
 सज्ञा पु० आत्महत्या।

अपघातक—सज्ञा पु० विद्वत्साधानी। घातक।  
 अपच—सज्ञा पु० कुपच। अजीर्ण।  
 अपचय—सज्ञा पु० अजीर्ण। उग्रवाई। नाश।  
 बर्बादी। गंवाना। खोना।  
 अपचार—सज्ञा पु० [ वि० अपचारी ]  
 १ बुरा चर्त्ताव। अनुचित आचरण।  
 २ अनिष्ट। ३ बुराई। निंदा। अपयश।  
 ४ कुपथ्य। स्वास्थ्य-नाशक व्यवहार।  
 ५ टोटा। घाटा। क्षति। क्षीणता।  
 ६ अनुपस्थिति। ७ अपराध। दाप।  
 अपचाल\*—सज्ञा पु० बुरा रास्ता। कुचाल।  
 मटबटी। खोटाई।  
 अपचिति—सज्ञा स्त्री० पूजा। नाग।  
 अपचीकृत—सज्ञा पु० मूकम भून। आकाश आदि  
 पाँच भूता के पृथक्-पृथक् भाव।  
 अपची—सज्ञा स्त्री० गडमाला रोग का भेद  
 विषय।  
 अपछाया—सज्ञा स्त्री० प्रत। उपदेवता।  
 अपजय—सज्ञा स्त्री० हार। पराजय।  
 अपजस\*—सज्ञा पु० दे० अपयश। बदनामी।  
 अपट—वि० [ सज्ञा अपटुता ] १ जो चतुर  
 न हो। २ आलसी। गुस्त।  
 अपटक—सज्ञा पु० अर्द्धांगी। पक्षपाती।  
 अपटन—सज्ञा पु० द० उवटन।  
 अपटो—सज्ञा स्त्री० वस्त्रावरण। कनात। तबू।  
 अपटु—सज्ञा पु० १ अचतुर। निर्वुद्धि। अकुशल।  
 अनिपुण। २ व्याधित। रोगी।  
 अपट—वि० १ जो पढ़ा न गया हो। अपढ़।  
 २ मूर्ख। ३ अनभ्यस्त।  
 अपठित—सज्ञा पु० अशिक्षित। अध्ययनरहित।  
 अपठमान\*—वि० १ न पढ़ने योग्य। २ जो  
 न पढ़ा जाय।  
 अपठ—सज्ञा पु० स्वायी। अटल। पोढ़ा। दृढ़।  
 अपठर\*—सज्ञा पु० १ झका। भय। २ मिथ्या  
 भय। निष्कारण डर।  
 अपठरना\*—क्रि० अ० डरना। भयभीत होना।  
 शकित होना।  
 अपठाना\*—क्रि० अ० [ सज्ञा अपठाव ] १ रार  
 या शगडा करना। २ खीचा-तानी करना।  
 अपठाव\*—सज्ञा पु० [ क्रि० अपठाना ] तक-  
 रार। शगडा। रार।

अपठ—वि० जो पढ़ा न हो। अनपठ। मूर्ख।  
 अपत\*—वि० १ पद-रहित। जिसमें पते  
 न हो। २ नग्न। आच्छादन-रहित।  
 ३ नीच। अधम। ४, निलंज्ज।  
 ५ पापी।  
 अपतई\*—सज्ञा पु० १ बंधुवाई। निलंज्जता।  
 २ चंचलता। ३ उपात। ठिठ्ठाई।  
 अपताना\*—सज्ञा पु० जजाल। प्रपच। झगडा।  
 माया।  
 अ-पति\*—वि० विधवा। बिना पति की।  
 वि० दुष्ट। पापी।  
 सज्ञा स्त्री० १ दुदशा। दुर्गति। २ अप-  
 मान। अनादर।  
 अपतिपारा—वि० विद्वत्साधायक। कपटी।  
 अपतोस\*—सज्ञा पु० दुस्त। रज। असतोष।  
 अपत्य—सज्ञा पु० सतान।  
 अपत्य शत्रु—सज्ञा पु० ककट। ककडा।  
 अपत्य-स्नेह—सज्ञा पु० सतान के प्रति स्वा-  
 भाविक माह।  
 अपत्य—वि० लज्जाहीन। निरुज्ज।  
 अपत्य—सज्ञा पु० १ दीहड रास्ता। विकट  
 मार्ग। २ कुपथ। बुरा मार्ग। ३ मार्ग-  
 रहित।  
 अपत्य—वि० १ जो पथ के याग्य न हो।  
 स्वास्थ्यनाशक। २ अहितकर। बुरा।  
 सज्ञा पु० रोग बढ़ानेवाला आहार-  
 विहार।  
 अपय्यासी—सज्ञा पु० कुपथ्य भोक्ता। कुपथ्य  
 अभिलाषी।  
 अ पद—सज्ञा पु० १ पदरहित। २ बिना पैर  
 के रेंगनेवाले जंतु। जैसे, साँप, कबुआ  
 आदि। ३ पगु। ४ कर्मच्युत।  
 अपदस्थ—वि० स्थानभ्रष्ट। कमच्युत। पद-  
 च्युत। अपने पद से हटाया गया।  
 अपदार्थ—सज्ञा पु० अयोग्य वस्तु। अवस्तु।  
 पदार्थभित। अनुपम पदार्थ।  
 अपदेखा—वि० १ अपने को बड़ा समझने  
 वाला। धमडी। आत्मश्लाघी। २ स्वार्थी।  
 अपदेवता—सज्ञा पु० प्रेत। पिशाच। निकृष्ट  
 देवता।  
 अपवेश—सज्ञा पु० छल। कपट। बहाना।

अपद्रव्य-गजा पु० १ बुरी चीज। निरुद्ध यन्तु। २ बुरा धन।

अपध्वस्त-गजा पु० अपमानित। परास्त।  
अपध्वस्तक-गजा पु० [ वि० अपध्वगी, अप-  
ध्वस्त ] विनाश। क्षय। अध पतन। अप-  
मान। पराजय। हार।

अपनी\*—सज्ञा पु० १ आत्मीयता।  
२ सबध। ३ आत्मभाव। आत्मस्वरूप।  
४ मज्ञा। सुध। चेतना। होश। ज्ञान।  
५ अहंकार। गर्व। ६ मर्यादा।

अपनीयन-गज्ञा पु० [ वि० अपनीत ]  
१ हटाना। हट करना। स्वान्तरित  
करना। २ गणित के समीकरण में विभी  
परिमाण का एक पक्ष से दूसरे पक्ष में  
ले जाना। ३ सडन। ४ मरण। ५  
निष्पत्ति।

अपना-सर्व० [ क्रि० अपनाना ] निज का  
(तीना पुरुषा में)।

सज्ञा पु० स्वजन। आत्मीय। सबधी।  
मुहो-अपना-सा करना=अपने सामर्थ्य या  
विचार के अनुसार करना। भरसक करना।  
अपना-सा मुह लेकर रह जाना=किसी बात  
में असफल होने पर लज्जित होना। अपनी  
अपनी पडना=अपनी अपनी चिंता में  
रहना। अपने तक रखना=किसी से न  
कहना। गुप्त रखना।

मो०-अपने आप=स्वयं। खुद। स्वतः।  
अपनाना-क्रि० स० १ अपना बनाना। अपनी  
धारण में लेना। २ अपने अधिकार में  
करना। ३ अपने अनुकूल करना। अपनी  
ओर करना। ४ अपना सन्ध जोडना।  
अपनापन-सज्ञा पु० १ स्वजनता। आत्मीयता।  
२ आत्मभिमान।

अपनाम-सज्ञा पु० बदनामी। निंदा।  
अपनायत-सज्ञा स्त्री० १ आत्मीयता। अपना-  
पन। अपने से सबध। २ नाता। ३ गोता।  
घराना। ४ भाईचारा।

अपनीत-वि० हटाया गया। हरीकृत। अप-  
सारित।

अपनोदन-सज्ञा पु० १ हटाना। २ सडन।  
तोडना।

अपश-१ स्वार्थी। म्रनत्र। २ अपने  
यश में।

अपमय-सज्ञा पु० १ निडरता। निर्भयता। २  
व्यर्थ भय। ३ डर। भय।

त्रि० जो न डरे। निर्भय।  
अपभ्रष्ट-वि० गिरा हुआ। पतित। विरुद्ध।  
विगडा हुआ।

अपभ्रष्ट-सज्ञा पु० [ वि० अपभ्र गिन ]  
१ विगडा हुआ शब्द। २ विट्टि।  
विगाडा। ३ पतन। गिराव। ४ व्याकरण-  
विरुद्ध शब्द। ग्राम्य भाषा। ५ तद्भव  
शब्द का ओर विगडा रूप।

अपभाषा-सज्ञा स्त्री० १ गैवारी बोली। २  
कुवाक्य। अस्माधु शब्द।

अपमान-सज्ञा पु० १ अस्मान। अनादर।  
२ अवज्ञा। ३ बेइज्जती। तिरस्कार।  
अपमानना\*-त्रि० स० अनादर या अपमान  
करना। तिरस्कार करना।

अपमानित-वि० १ अपमान प्राप्त। निंदित।  
२ बेइज्जत।

अपमानी-वि० [ स्त्री० अपमानिनी ] तिरस्कार  
या निरादर करनेवाला।

अपमार्ग-सज्ञा पु० बुरा रास्ता। कुपथ।  
अपमृत्यु-सज्ञा स्त्री० १ असामयिक मृत्यु।  
असै-साँप आदि के काटने से मरना।  
२ अस्वाभाविक कारणों से अकाल  
मृत्यु।

अपयश-सज्ञा पु० १ बुराई। बदनामी।  
दुर्नाम। २ लाछन। कठक्। अख्याति।

अपयोग-सज्ञा पु० बुरा योग। कुसमय।  
अगमन।

अपरच-अव्य० और भी। पुनः। फिर भी।  
अपरपार\*-वि० १ असीम। जिसका पारा-  
वार न हो। २ बेहद।

अपर-वि० [ स्त्री० अपरा ] १ प्रथम।  
पहला। २ पिछला। ३ इतर। भिन्न।  
अन्य। दूसरा।

अपरग-सज्ञा पु० अन्यमार्गी। अन्यगामी।  
व्यभिचारी।

अपरछन\*-वि० १ जो छया न हो। २  
प्रच्छन्न। छिपा। गुप्त।

अपरता—सज्ञा स्त्री० परायापन । भेद-भाव का न होना । अपनापन ।

\*वि० मतलबी । स्वार्थी ।

अपरती\*—सज्ञा स्त्री० १ स्वार्थ । मतलब । २ बेईमानी । ३ खेती न की गई भूमि ।

अपरत्व—सज्ञा पु० १ पुरानापन । अर्वाचीनता । २ परायापन । बेगानगी ।

अपरना\*—सज्ञा स्त्री० । १ बिना पत्तेवाली । जो पेड़ों के पत्ते भी न खाए । २ उमा । पार्वती । भवानी ।

अपरबल\*—वि० प्रबली । बलवान् ।

अपरम्पार—सज्ञा पु० अपार । अनन्त । असीम । अशेष ।

अपरलोक—सज्ञा पु० स्वर्ग । परलोक ।

अपरस—वि० १ जो किसी से न छूआ गया हो । २ छून के अयोग्य ।

सज्ञा पु० चर्मरोग विशेष जो हथेली और तलवे में होता है ।

अपरात—सज्ञा पु० पश्चिम का देश ।

अपरा—सज्ञा स्त्री० १ ब्रह्मविद्या या अध्यात्म के अतिरिक्त दूसरी विद्या । लौकिक विद्या । पदार्थविद्या । २ पश्चिम दिशा । ३ एकादशी विशेष का नाम । अपराग—सज्ञा पु० द्वप । बैर । अरवि । विरक्ति । उदासीनता ।

अपराजय—सज्ञा पु० अपराभव । जीत । पराभव हीनता ।

अपराजित—वि० जो जीता न जाय । अजय । अनिजित ।

स० पु० १ विष्णु । २ ऋषि विशेष । ३ शिव ।

अपराजिता—सज्ञा स्त्री० १ विष्णुकाता लता । २ दुर्गा । ३ कोआठोठी । ४ कौयल । ५ अयोध्या का एक नाम । ६ चीदह अक्षरों के एक वृत्त का नाम । ७ जयन्ती । जयती वृक्ष । अशनपर्णी । स्वल्पफला । शफाली । शमी भेद । शक्विनी ।

वि० न जीती हुई । उपमा के अयाम्प । अपराध—सज्ञा पु० [ वि० अपराधी ] १ दण्ड । पाप । गलती । जुर्म । २ अधर्म । अन्याय । ३ भूल । चूक ।

अपराधी—वि० [ स्त्री० अपराधिनी ] अपराध करनेवाला । दोषी । पापी । मुल्जिम । अन्यायी ।

अपराधीन—वि० स्वाधीन । जो परतन नहीं है ।

अपराध—सज्ञा पु० दोषहृ के पीछे का समय । तीसरा पहर । दिन का शेष भाग ।

अपरिग्रह—सज्ञा पु० १ अस्वीकार । दान का न लेना । २ विराग । आवश्यक धन से अधिक का त्याग । ३ सगत्याग । योगशास्त्र में पाँचवाँ यम । ४ अप्रतिग्रह ।

अपरिचय—सज्ञा पु० परिचय का न होना ।

अपरिचित—वि० अनजान । अज्ञात । जिससे परिचय न हो । जो जाना-बूझा न हो ।

अपरिच्छद—वि० १ वस्त्रहीन । २ मलिन वसन । अनुपयुक्त वेश ।

अपरिच्छिन्न—वि० १ अभेद्य । जिसका खंड न हो सके । २ मिला हुआ । ३ सीमारहित । असीम । ४ खुला । अगडका ।

अपरिणत—वि० १ अपरिपक्व । कच्चा । २ ज्यों का त्यों न बदला गया ।

अपरिणामी—वि० [ स्त्री० अपरिणामिनी ] १ परिणाम शून्य । विकार-रहित । जिसकी दशा या रूप में परिवर्तन न हो । २ व्यर्थ । निष्फल । बेकार ।

अपरिणीत—सज्ञा पु० अविवाहित । कुमार । ब्यारा ।

अपरिणीता—सज्ञा स्त्री० अविवाहिता कन्या । अनूठा ।

अपरितुष्ट—वि० १ असन्तुष्ट । तृप्ति रहित । २ निरानन्द ।

अपरिपक्व—वि० १ कच्चा । अपक्व । २ अधकच्चा । अधवक्त्रा । ३ अपटु । ४ परिपक्वहीन ।

अपरिपाटी—सज्ञा स्त्री० अतरीति । बुद्धि ।

अपरिमित—वि० १ पैहद । असीम । २ असंख्य । अगणित । ३ अधिक । प्रचुर । ४ परिमाणहीन ।

अपरिमेय—वि० १ जिसका अंदाज न हो ।

अकृत । २. अनगिनत । असह्य । जिसका नाप या सोल न हो सके ।

अपरिभ्रान-वि० १. भ्रान्तरित । २. मिला हुआ ।

अपरिवर्तनीय-वि० जिसमें कोई परिवर्तन या हेर फेर न हो सके ।

अपरिष्कार-गंजा पु० १. मलिन । मैला-मुचला । २. अनिमल । ३. असुद्ध । ४. अस्पष्ट ।

अपरिसर-वि० गकीर्ण । सकुचित ।

अपरिहार-मज्ञा पु० [ वि० अपरिहारित, अपरिहार्य ] १ जिसका निवारण न हो । जो रोना न जा सके । २ दूर करने के उपाय का न होना ।

अपरिहाय्य-वि० १ अनिवार्य । अवश्य-भावी । जो किसी उपाय में दूर न किया जा सके । २ न छोड़ने योग्य । अन्याय्य । ३ सम्मान योग्य । आदरणीय । ४ जो छीनने के योग्य न हो । ५ जिसके बिना काम न चले । आवश्यक ।

अपरीक्षित-वि० अनर्जाचा । जिसकी जाँच न हुई हो ।

अपरद्ध-वि० १. खेदी । पछताऊ । पश्चात्तापी । क्षुब्ध । २. अप्रस्तुत ।

अपरूप-वि० १ भेदा । बदसूरत । बेडोल । २. अनोखा । अपूर्व । विवृत रूप ।

अपरोक्ष-वि० प्रत्यक्ष । समक्ष । आँखों के सामने ।

अपर्णा-सज्ञा स्त्री० १ उमा । पार्वती । २. दुर्गा । दे० "अपरना" ।

वि० बिना पत्ते की ।

अपर्णाप्त-वि० स्वरूप । योडा । न्यून ।

अपलक-वि० जिसकी पलकें न गिरें । एकटक । क्रि० वि० बिना पलक झपकाए टक लगाए ।

अपलज्ज-सज्ञा पु० १ बेहया । निर्लज्ज । २ नपचडा ।

अपलक्षण-सज्ञा पु० बुरे लक्षण । बुरा चिह्न । अपराधुन ।

अपलाप-मज्ञा पु० १ व्यर्थ की बकवाद । २ ऊटपटांग बकना । ३ असत्य कहना । छिपाना ।

अपलोक-सज्ञा पु० १. अपयज्ञ । २ दुर्गति । बदनामी । अपवाद । मिथ्या दोषारोपण ।

अपवर्ण-सज्ञा पु० १ निर्वाण । मोक्ष । मुक्ति परमगति । २. त्याग । ३ दान । ४ निर्जन

अपवर्जन-मज्ञा पु० [ वि० अपवर्जित ] त्यागना । मुक्त करना । छोड़ना ।

अपवर्तन-सज्ञा पु० १ अपवर्त । २ मक्षेपकरण उत्पत्ति । ३ लेन-देन । ४ अक पाटना ।

अपवर्ण\*-वि० अपने वर्ण में । अपने अधीन । 'परवर्ण' का उलटा ।

अपवसना\*-त्रि० अ० निमग्नता । भागना । चल देना ।

वि० बुरे बन्ध पहिने हुए ।

अपवाद-सज्ञा पु० [ वि० अपवादित ] १. प्रतिवाद । सडन । विरोध । २ निंदा । कलह । अपकीर्ति । ३ पाप । दोष । ४ वह नियम जो व्यापक नियम में न आवे । उन्मर्ग का विरोधी । ५ राय । सम्मति । ६ आज्ञा । जादेश ।

अपवादक, अपवादी-वि० १ निंदा करने-वाला । २ विरोधी । बाधा पहुँचानेवाला ।

अपवादित-वि० दुर्नामग्रस्त । परिवादयुक्त । अपवारण-मज्ञा पु० [ वि० अपवारित ]

१ रोक । व्यवधान । ओट । आड़ । २ हटाने या दूर करने का काम । ३ अतर्कान । गायब ।

अपवाहन-सज्ञा पु० १ दुष्ट वाहन । २ फुसलाकर लाना । भगा देना । ३ एक राज्य से मगाकर दूसरे राज्य में बसाना ।

अपवित्र-वि० असुद्ध । जो पवित्र न हो । नापाक । मलिन ।

अपवित्रता-सज्ञा स्त्री० असुद्धता । असुद्धि । अशीच । मैलापन ।

अपविद्ध-वि० १ त्यक्त । छोड़ा हुआ । २ बेया हुआ । विद्ध । प्रत्याख्यात । निराकृत । वर्णित ।

सज्ञा पु० बह पुत्र जिसको उसके माता-पिता ने त्याग दिया हो और किसी दूसरे ने पुत्र के समान पाला हो (स्मृति) ।

अपविद्ध पुत्र-सज्ञा पु० १. बारह प्रकार

के गौण पुत्रों में से एक पुत्र २. पिता-माता से छोड़ा हुआ पुत्र।  
 अपव्यय-संज्ञा पुं० १. निरर्थक व्यय। वृथा व्यय। फजूलखर्ची। २. कुकर्म में धन फेंकना। बुरे कामों में खर्च।  
 अपव्ययी-वि० १. अधिक खर्च करनेवाला। फजूलखर्ची। अर्थनाशक। २. निरर्थक।  
 अपशकुन-संज्ञा पुं० बुरा शकुन। अशुभ।  
 अशुभ-मूचक। अमंगल लक्षण।  
 अपशब्द-पञ्चा पुं० "अपसद"। नीच। यह शब्द जिस शब्द के अन्त में आता है, उस शब्द का नीच अर्थ कर देता है—  
 यथा:-धृतराष्ट्रपशब्द=नीच धृतराष्ट्र।  
 ब्राह्मणपशब्द=नीच ब्राह्मण।  
 अपशब्द-संज्ञा पुं० १. बुरा शब्द। गाली। कुवाच्य। २. पाद। अपान वायु। गोज। ३. व्यर्थ का शब्द। ४. अशुद्ध शब्द। ५. दूसरी भाषा का शब्द।  
 अपशकुन\*-संज्ञा पुं० दे० "अशकुन"।  
 अपसना\*-क्रि० अ० १. भागना। चल देना। २. सिसकना। सरकना।  
 अपसर-वि० १. अपने मन का। २. आप ही आप। मनमाना। ३. सटकना। खसकना।  
 अपसरण-संज्ञा पुं० प्रस्थान। चला जाना।  
 अपसर्जन-संज्ञा पुं० त्याग करना। छोड़ देना।  
 अपसर्प-संज्ञा पुं० १. प्रणिधि। २. गूढ़ पुरुष। ३. हरकारा। ४. दूत। चर।  
 अपसव्य-वि० १. 'सव्य' का उलटा। शरीर का दाहिना हिस्सा। दक्षिण। २. विरुद्ध। उलटा। ३. दहिने कंधे पर जनेऊ रखे हुए।  
 अपसौन-क्रि० अ० उपस्थित होना। पहुँचना।  
 अपसोसना-क्रि० अ० सोच या अफसोस करना।  
 अपसौन-संज्ञा पुं० अशुभ। बुरा शकुन।  
 अपस्नान-संज्ञा पुं० [वि० अपस्नात] मृतक-स्नान। स्नान जो प्राणी के कुटुंबी उसके मरने पर करते हैं।  
 अपस्मार-संज्ञा पुं० मूर्च्छा। मिरगी। रोग-

विशेष जिसमें रोगी कांपकर पृथ्वी पर मूर्च्छित हो गिर पड़ता है।  
 अपस्वर-संज्ञा पुं० बुरा। वेसुरा या कर्कश स्वर।  
 अपस्वायी-वि० अपना मतलब साधनेवाला। खुदगर्ज।  
 अपह-वि० विनाशक। नाश करनेवाला। जैसे प्लेशापह।  
 अपहत-वि० १. मारा हुआ। नष्ट किया हुआ। २. अलग किया हुआ।  
 अपहनन-संज्ञा पुं० हत्या। वध। घात।  
 अपहरई-क्रि० स० १. चुराता है। २. नाग करता है। ३. चुरा ले। ४. छीन ले। ५. नाश करे।  
 अपहरण-संज्ञा पुं० [वि० अपहरणीय, अपहरित, अपहृत, अपहर्ता] १. लूट। हरण। २. चोरी। ३. छिपाव।  
 अपहरना-क्रि० स० १. लूटना। ले लेना। छीनना। २. चुराना। ३. घटाना। कम करना। नाश करना।  
 अपहर्ता-संज्ञा पुं० १. हर लेनेवाला। छीननेवाला। ले लेनेवाला। २. चोर। लुटेरा। लूटनेवाला। ३. जो छिपावे।  
 अपहा-वि० १. हत्ता। हत्याकारी। २. हिसक। अधिक।  
 अपहार-संज्ञा पुं० १. अपचय। हागि। २. धन का निष्कारण व्यय।  
 अपहारक-वि० १. अपहरणकर्ता। २. तस्कार। चोर।  
 अपहारी-संज्ञा पुं० [स्त्री० अपहारिणी] दे० "अपहर्ता"। अपहरण करनेवाला।  
 अपहास-संज्ञा पुं० १. उपहास। २. मजाक। दिल्लीगी। ३. अकारण हँसी।  
 अपहत-वि० छीना हुआ। लूटा हुआ। चुराया हुआ।  
 अपहृत्य-संज्ञा पुं० १. दुराव। छिपाव। २. कपट। ३. बहाना। मिस। टाल-मटूल। ४. अपलाप।  
 अपहृत्य-संज्ञा स्त्री० १. छिपाव। दुराव। २. टाल-मटूल। बहाना। ३. काव्यालंकार विशेष जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान का स्थापन किया जाय।

अपांग-गज्ञा पु० अंग की योर। नेत्रकोण।  
कटाक्ष। अंग या मोता। नेत्र का अन्त  
भाग।

वि० अगहीन। अगभग।

अपानिधि-गज्ञा पु० ममुद्र। सागर।

अपा-गज्ञा पु० घमट। गर्व।

अपाव-वि० १ अपाङ्ग। २ अजीर्णता।

सज्ञा पु० १ उदरामय। २ अपाव।

३ आम। ४ अमिद्ध।

अपावरण-गज्ञा पु० १ पृथक् करना।

अलगाना। हटाना। दूर करना।

२ चुभता करना।

अपाव दर्शन-गज्ञा पु० १ टेढ़ा देगना।

२ कटाक्ष।

अपादव-सज्ञा पु० १ अपट्टता। अनिपुणता।

अचतुराई। २ चोटापन। मूर्खता।

अपात्र-वि० १ अयोग्य। कुपात्र। अगत्पात्र।

२ मूर्ख। अनारी। ३ श्राद्धादि में निमंत्रण

के अयोग्य (श्लाघण)।

अपात्रीकरण-गज्ञा पु० १ नवनिधि पापा

में से एक पाप विशेष। २ अयथा निणय।

३ जाति-भ्रष्ट करना।

अपादान-सज्ञा पु० १ स्थानान्तरीकरण।

हटाना। विभाग। अलगाव। २ व्याकरण

में पाँचवाँ धारक जिससे एक वस्तु से

दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारम्भ सूचित

होता है। इसका चिह्न 'मे' है। जैसे

'घर से'।

अपान-सज्ञा पु० १ वस या पाँच प्राणा में

से एक। २ अपान वायु। ३ वह वायु जो

तात् से पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक

व्याप्त है। ४ मल मूत्र को बाहर निकालने

वाली वायु। ५ गुदा। गुह्यस्थान।

\*सज्ञा पु० १ आत्मज्ञान। आत्मभाव।

आत्मतत्त्व। २ भ्रम। ३ आपा।

आत्मगौरव। ४ सुध। चेतना। होश-

हवास। ५ अहम्। घमट। अभिमान।

\*सर्व० दे० "अपना"।

अपान-वायु-सज्ञा पु० १ पाँच प्रकार की

वायु में से एक। २ पाद। गुदास्थ वायु।

अपाप-वि० १ निर्दोष। २ निष्पाप। धर्मी।

अपामार्ग-सज्ञा पु० निचडा। निाडी। अम-  
क्षारा। एटजीरा।

अपाय-गज्ञा पु० १ अलगाव। विच्छेद।

२ पीछे हटना। अपगमन। ३ नाम।

४ अन्यथाचार। गुरीनि। ५ क्षय। हानि।

अपचय।

त्रि० १ ग्लेश। बिना पैर का। २

अपाहिज। निरुपाय। अममयं।

अपापी-वि० १ मृत। २ चलिता। ३

पलायिन।

अपार-वि० १ जिसकी सीमा न हो।

असीम। प्रेहद। २ अनिशय। अमन्य।

बहुत। ३ पागवारहीन। ४ बूलग्हिन।

अपारक-सज्ञा पु० अक्षम। क्षमताशून्य।

अपार्य-सज्ञा पु० कविता का वह दोष जिसमें

वाक्याय स्पष्ट न हो।

अपार्यवय-सज्ञा पु० १ अभिन्नता। २ पृथक्

ताशून्य। अनेद। ३ एकरव।

अपाव\*-गज्ञा पु० अत्याचार। अयाय।

उपद्रव।

अपावन-वि० [स्त्री० अपावनी] अनुचित।

अशुद्ध। जो पवित्र न हो। मलिन।

अपाश्रय-वि० १ अनाथ। २ दीन। ३

निराश्रय। आश्रयरहित।

अपाधित-वि० १ त्यागी। २ एकात्मसेवी।

अपाहज या अपाहिज-वि० १ लला-लंगडा।

अगभग। खज। २ जो काम करने के

योग्य न हो। ३ आलसी। सुस्त।

अपि-अव्य० १ भी। ही। २ ठीक। निश्चय।

अपि च-अव्य० वास्त्यान्तर-द्योतक।

अपिडो-वि० पिड या शरीर रहित। अशरीरी।

अपितु-अव्य० १ कितु। लेकिन। २ वलिक।

अपिधान-सज्ञा पु० आवरण। आच्छादन।

ढक्कना। ढक्कन।

अपीच-वि० सुन्दर। खूबसूरत।

अपीन-वि० १ हल्का। २ क्षीण। ३ हृण।

अपीनस-सज्ञा पु० नाक का रोग विशेष।

पीनम।

अपील-सज्ञा स्त्री० [अप०] १ विचारार्थ

प्रार्थना। पुनर्निर्धार के लिए निवेदन।

२ मान्यता अदा करने के समये के विरुद्ध

जैसी अदालत में फिर से विचार के लिए  
अभियोग उपस्थित करना ।  
अपुत्र-वि० पुत्रहीन । जिसके सत्तान न हो ।  
नियंत्रण ।  
अपुनपो-सज्ञा पु० अपनापन ।  
अपुनोत-वि० १. अनुद्ध । जो पवित्र न हो ।  
२. दोषयुक्त । दूषित ।  
अपुष्टन\*-क्रि० स० १. नाश करना । ध्वस्त  
करना । २. उदट देना ।  
अपूठा\*-वि० १. अनभिज्ञ । अपरिपक्व ।  
अज्ञानकार ।  
वि० अविकसित । जो खिला न हो ।  
अपून-वि० १. अनुद्ध । अपवित्र । २. निपूता ।  
जिमके पुत्र न हो ।  
\*सज्ञा पु० बुरा लड़का । कुपूत ।  
अपूप-सज्ञा पु० यज्ञीय हविष्यान्न विशेष ।  
पुआ ।  
अपूर-वि० १. पूर्ण । २. भरपूर । ३.  
बहुत ।  
अपूरना\*-क्रि० स० १. भरना । २. कुँवना ।  
३. बजाना (शब्द) ।  
अपूरा\*-सज्ञा पु० [ स्त्री० अपूरी ] १.  
फलाहुआ । २. व्याप्त । ३. भरा  
हुआ ।  
अपूर्ण-वि० १. जो पूरा न हो । २. अपूरा ।  
जो पूर्ण न हो । असमाप्त । ३. कम ।  
अपूर्णता-सज्ञा स्त्री० १. अपूरापन । २.  
कमी । न्यूनता ।  
अपूर्णभूत-सज्ञा पु० व्याकरण में त्रिया का  
वह भूत बाल जिसमें क्रिया की समाप्ति  
न पाई जाय । जैसे—वह खाता था ।  
अपूर्व-वि० १. जो पहले न रहा हो । २.  
अनोखा । अद्भुत । अनुपम । विचित्र । ३.  
श्रेष्ठ । उत्तम ।  
अपूर्वता-सज्ञा स्त्री० अनोखापन । विलक्षणता ।  
अपूर्वरूप-सज्ञा पु० विशेष काव्यालंकार  
जिसमें पूर्व गुण की प्राप्ति का नियेध  
हो ।  
अपेक्षा-सज्ञा स्त्री० [ वि० अपेक्षित ] १.  
आवश्यकता । २. इच्छा । आकांक्षा । अभि-  
लाषा । चाह । ३. सहारा । भरोसा ।

आशा । ४. कार्य-कारण या अन्योन्य मन्वय ।  
५. तुलना । बराबरी । समानता ।  
अपेक्षाकृत-अव्य० बराबरी में । तुलना में ।  
अपेक्षाबुद्धि-सज्ञा स्त्री० अनेक विषयों को  
एक करनेवाली बुद्धि ।  
अपेक्षित-वि० १. जिसकी आवश्यकता हो ।  
जिसकी अपेक्षा हो । आवश्यक । २. अभि-  
लषित । वाञ्छित । चाहा हुआ ।  
अपेक्ष्य-वि० अपेक्षा करने के योग्य । दे०  
“अपेक्षित” ।  
अपेक्ष-वि० अदृश्य । अलक्ष । अदृष्ट ।  
अपेय-वि० जो पीने योग्य न हो । पान  
निषिद्ध ।  
अपेल\*-वि० १. अचल । जो हटे या टले  
नहीं । अटल । २. मानने योग्य ।  
अपैठ\*-वि० जहाँ पैठ न हो सके । दुर्गम ।  
अगम ।  
अपोगड-वि० १. सोलह वर्ष के ऊपर  
की अवस्था का । २. बालिग । ३.  
बालक । ४. मूर्ख । ५. कम या अधिक  
अगोवाला ।  
अपोहन-सज्ञा पु० तर्क के द्वारा बुद्धि को परि-  
भाजित करना ।  
अपोरूप-सज्ञा पु० १. कापुरुषत्व । २. असाहस ।  
पुरुषार्थहीन । ३. नपुंसक ।  
अप्रकट-वि० जो प्रकट न हो । गुप्त । छिपा  
हुआ ।  
अप्रकाश-वि० १. अप्रकट । अप्रसिद्ध । २.  
गुप्त । छिपा ।  
अप्रकाशित-वि० १. अंधेरा । जहाँ प्रकाश  
न हो । २. जो गुप्त हो । अप्रकट । छिपा  
हुआ । ३. जो सबके सामने न रखा गया  
हो । ४. जो छपा न गया हो ।  
अप्रकाश्य-वि० गोपनीय । न प्रकाश करने  
योग्य ।  
अप्रकृत-वि० १. अप्राकृतिक । जो स्वाभाविक  
न हो । २. कृत्रिम । बनाबटी । ३. असत्य ।  
झूठ । ४. उपस्थित विषय से असंबद्ध ।  
अप्रगल्भ-वि० १. अप्रीड । कच्चा । २.  
निष्साहित ।  
अप्रचलित-वि० जिसका चलन न हो । जो

अपांग-गज्ञा पु० आंग की योग्य। नेत्रकोण।  
कटाक्ष। आंग ना होना। नेत्र का अन्त  
भाग।

वि० अगहीन। अगभग।

अपानिधि-गज्ञा पु० समुद्र। गागर।

अपा-गज्ञा पु० घमड़। गर्व।

अपाव-वि० १ अपचार। २ अजीर्णता।

गज्ञा पु० १ उदगमय। २ अपस्व।

३ आम। ४, अगिद्ध।

अपाकरण-गज्ञा पु० १ पृथक् करना।

अग्याना। हटाना। दूर करना।

२ चुवता करना।

अपाग वशन-गज्ञा पु० १ टेढ़ा देखना।

२ कटाक्ष।

अपादव-गज्ञा पु० १ अपटुता। अनिपुणता।

अचतुर्गई। २ घोदापन। मूर्खता।

अपात्र-वि० १ अयोग्य। गुपात्र। असत्पात्र।

२ मूर्ख। अनारी। ३ आद्धादि में निमग्न

के अयोग्य (ब्राह्मण)।

अपात्रीकरण-गज्ञा पु० १ नवनिधि पापा

में से एक पाप विशेष। २ अमया नियम।

३ जाति भ्रष्ट करना।

अपादान-गज्ञा पु० १ स्थानान्तरीकरण।

हटाना। विभाग। अग्याव। २ व्याकरण

में पाँचवाँ कारण जिसमें एक वस्तु से

दूसरी वस्तु की क्रिया का प्रारम्भ सूचित

होता है। इसका चिह्न 'ने' है। जैसे

'घर से'।

अपान-गज्ञा पु० १ दस या पाँच प्राणों में

से एक। २ अपान वायु। ३ वह वायु जो

ताटु में पीठ तक और गुदा से उपस्थ तक

व्याप्त है। ४ मल मूत्र का बाहर निकालने

वाली वायु। ५ गुदा। गुह्यस्थान।

\*गज्ञा पु० १ आत्मनान। आत्मभाव।

आत्मतत्त्व। २ भरम। ३ आपा।

आमगीरव। ४ मुग्ध। चेतना। होश-

हवाम। ५ अहम्। घमड़। अभिमान।

\* सर्व० दे० "अपना"।

अपान-वायु-गज्ञा पु० १ पाँच प्रकार की

वायु में से एक। २ पाद। गुदास्थ वायु।

अपाप-वि० १ निर्दोष। २ निष्पाप। धर्मी।

अपामार्ग-गज्ञा पु० पित्रा। चिचड़ी। अज्ञा-  
द्वारा। लट्जींग।

अपाय-गज्ञा पु० १ अग्याव। विस्मय

२ पीछे हटना। अपगमन। ३ नाग

४ अन्यवाचार। कुर्गेनि। ५ क्षय। हानि

अपचय।

वि० १ गैरज्ञ। पित्रा पैर का।

अपाहिज। निष्पाय। असमर्थ।

अपायी-वि० १ मृत। २ चलिन।

परायिन।

अपार-वि० १ जिसकी सीमा न हो

असीम। वेष्ट। २ अनिशय। असम्य

चटुन। ३ पारानाहीन। ४ ब्यूँहिन

अपारव-गज्ञा पु० अक्षम। क्षमनागून्व।

अपार्य-गज्ञा पु० वक्रिता का वह दोष जिस

वाक्याय स्पष्ट न हो।

अपार्यव्य-गज्ञा पु० १ अभिन्नता। २ पृथक्

ताग्न्य। अभेद। ३ एकत्व।

अपाव\*-गज्ञा पु० अत्याचार। अन्याय

उपद्रव।

अपावन-वि० [स्त्री० अपावनी] अनुचित

अगूढ़। जो पवित्र न हो। मलिन।

अपाश्रय-वि० १ अनाथ। २ दीन। ३

निराश्रय। आश्रयरहित।

अपाश्रित-वि० १ त्यागी। २ एकात्मकी

अपाह्न या अपाहिज-वि० १ ल्ला-ल्लैगडा

अगभग। खज। २ जो काम करना के

योग्य न हो। ३ आलसी। मुस्त।

अपि-अव्य० १ भी। ही। २ ठीक। निश्चय।

अपि च-अव्य० वाक्यान्तर-स्रोतक।

अपिडी-वि० पिंड या शरीर रहित। अगरीरी।

अपितु-अव्य० १ वितु। लेनिन। २ बलिक।

अपिधान-गज्ञा पु० आवरण। आच्छादन।

ढक्का। ढक्कन।

अपीच-वि० सुन्दर। खूबसूरत।

अपीन-वि० १ हलवा। २ क्षीण। ३ हृग।

अपीनस-गज्ञा पु० नाव का रोग विशेष।

पीनस।

अपील-गज्ञा स्त्री० [अप्रे०] १ विचारार्थ

प्रार्थना। पुनर्पिचार के लिए निवेदन।

२ मातहत अदागत के फैसले के विरुद्ध

अभरण\*-सज्ञा पु० दे० "आभरण"।  
 आभूषण। अलंकार। गहना।  
 वि० १ अनादृत। अपमानित। २ दुर्दशा-  
 ग्रस्त। ३. जलील।  
 अभरण\*-वि० १ जो भ्रम न करे। अध्रात।  
 २ निडर। निश्चय। ३ अमर्यादा।  
 वि० वि० निश्चय। निःसंदेह।  
 अनल\*-वि० जो अच्छा न हो। बुरा।  
 अभव्य-वि० १ जो होने योग्य न हो। २  
 अनोखा। अद्भुत। ३ बुरा। अशुभ।  
 अभाङ्ग\*-वि० १ अच्छा न लगनवाला।  
 २ असोभित।  
 अभाग\*-सज्ञा पु० दे० "अभाग्य"। विपत्ति।  
 दुर्दशा। विपदा।  
 अभाग-वि० [स्त्री० अभागिनी] भाग्य  
 हीन। मदभाग्यी। बदकिस्मती।  
 अभागी-वि० [स्त्री० अभागिनी] १ भाग्य-  
 हीन। २ जो सम्पत्ति के भाग का  
 अधिकारी न हो।  
 अभाग्य-सज्ञा पु० भाग्यहीनता। दुष्टभाग्य।  
 बदकिस्मती।  
 अभाजन-वि० १ पात्र-रहित। २ कुपात्र।  
 ३ अविश्वसी।  
 अभास-वि० १ हलका। २ लघु। अगुरु।  
 अभाव-सज्ञा पु० १ अविद्यमानता। अनुपस्थित  
 होना। न होना। २ कमी। त्रुटि। ३ टोटा।  
 घाटा। ४ बुरा भाव। ५ विरोध।  
 अभावना-वि० जो अच्छा न लगे। अप्रिय।  
 अभावनीय-वि० अचिन्तनीय। अतर्क्य।  
 जिसका पहले से अनुमान या विचार न  
 किया गया हो। अकल्पित। अचिन्त्य।  
 अभि-उप० एक उपसर्ग, जो शब्दों में लगकर  
 उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—  
 १ सामने। २ बुरा। ३ इच्छा। ४ समीप।  
 ५ बारम्बार। ६ अच्छी तरह। ७ दूर।  
 ८ ऊपर। ९ ओर। तरफ। १० आता  
 हुआ। ११ चौहेरा। १२ आगे। १३  
 समन्तत्। १४ उपसर्ग। १५ बीप्सा। १६  
 इत्यम्भाव। १७ धर्षण। १८ अभिलाष।  
 १९ अभिमत्य। २० । २१

अभिक-सज्ञा पु० कामुक। लम्पट। ११  
 अभिग्रमण-सज्ञा पु० १. धावा। चढ़ाई।  
 पात आना। पहुँचना।  
 अभिख्या-सज्ञा स्त्री० १ नाम। २  
 ३ उपाधि।  
 अभिगमन-सज्ञा पु० १ निवृत्तगमन।  
 जाना। २ सभाग। सहवाम। ३  
 वे मार्ग को गोबर से लीपकर रक्  
 करना।  
 अभिगामी-वि० [स्त्री० अभिगामिनी]  
 १ निवृत्त जानेवाला। २ सभाग या  
 करनेवाला।  
 अभिग्रह-सज्ञा पु० १ अभिग्रमण। २  
 याग। ३ आश्रम। ४ गौरव। ५ सुकीर्ति  
 ६ अपहार। ७ लुण्ठन। ८ चोरी। ९  
 के लिए आह्वान। १० उत्साह।  
 वाला। ११ योद्धा का परस्पर।  
 अभिघात-सज्ञा पु० [वि०  
 अभिघाती] १ डडा आदि के द्वारा  
 चोट पहुँचना। आघात। प्रहार। मार  
 २ दाँत से काटना।  
 अभिचार-सज्ञा पु० १ पुरश्चरण। २  
 द्वारा मारण और उच्छादन आदि हिंसात्मक  
 अभिचारक-सज्ञा पु० यज्ञ-मन्त्र का। ३  
 आदि कम करनेवाला।  
 अभिचारी-वि० [स्त्री० अभिचारिणी]  
 अनिष्टकारक। २ यज्ञ-मन्त्र आदि  
 प्रयोग करनेवाला।  
 अभिजन-सज्ञा पु० १ परिवार। २ वंश  
 कुल। ३ जन्मभूमि। ४ पूर्वजों का नि  
 स्थान। ५ जो घर में सबसे बड़ा हो  
 ६ पालक। पोषी। रखवा। ७  
 ८ प्रमिद्धि। ख्याति।  
 अभिजात-वि० १ कुलीन। जो अच्छे कुल  
 पैदा हुआ हो। २ पंडित। बुद्धिमान्।  
 ३ योग्य। उपयुक्त। ४ मान्य।  
 ५ मनोहर। सुंदर। रूपवान्।  
 अभिजित-वि० विजयी।  
 सज्ञा पु० १ नक्षत्र-विशेष, जिसमें  
 तारे हैं। २ महर्त-विशेष। ३ दिवस  
 अष्टम महर्त।

भिज्ञ-वि० १ विज्ञ। जानकार। ज्ञाता।  
पंडित। २ कुशल। निपुण।

भिज्ञता-सज्ञा स्त्री० १ विज्ञता। जानकारी।  
२ पांडित्य। निपुण्य।

भिज्ञा-सज्ञा स्त्री० १ स्मृति। याद।  
२ अलौकिक ज्ञान-बल जो ध्यान की  
चारा अवस्थाओं के बाद होता है।

भिज्ञान-सज्ञा पु० [ वि० अभिज्ञात ] १  
स्मृति। याद। खयाल। २ पहचान। लक्षण।  
३ चिह्न। निशानी। सहिदानी।

भिधा-सज्ञा स्त्री० १ नाम। २ सज्ञा।  
३ शब्द के नियत अर्थ को ही प्रकट करने-  
वाली शक्ति। (साहित्य)

भिधान-सज्ञा पु० १ एक नाम। २ कथन।  
३ शब्दकोश। ४ सज्ञा।

भिधायक-वि० १ जो नाम रखे। २  
बहनेवाला। ३ सूचक।

भिधेय-वि० १ प्रतिपाद्य। वाच्य। अभिधान।  
अर्थ। अभिधागम्य। २ जिसका बोध नाम  
लेने ही से हो जाय।

सज्ञा पु० नाम।

प्रभिनदन-सज्ञा पु० १ आनन्द। २ प्रसंसा।  
प्रोत्साहन। ३ सतोष। ४ उत्तेजना।  
५ विनीत प्रार्थना। ६ बुद्धि-विशेष।  
७ आनन्दन। हर्षण।

शी०-अभिनदनपत्र=वह आदर या प्रतिष्ठा-  
सूचक पत्र जो किसी महान् पुरुष के आगमन  
पर हर्ष और सतोष प्रकट करने के लिए  
उसे गुनाया और अर्पित किया जाता है।  
[ अंग्रे० एड्रेस ]।

अभिनदनीय-वि० वदनीय। जा प्रशंसा के  
योग्य हो। पूजनीय।

अभिनदित-वि० प्रशंसित। वदित।

अभिनय-सज्ञा पु० १ स्वांग। नकल। दूसरे  
व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा को कुछ काल  
के लिए धारण करना। २ नाटक का खेल।

अभिनय-वि० १ नूतन। नव्य। नया। नवीन।  
२ साजा।

अभिनवपुस्त-सज्ञा पु० संस्कृत के एक प्रसिद्ध  
अलंकार शास्त्री तथा 'रत्न' के अंतिम मत  
के स्थापक।

अभिनविष्ट-वि० १ गड़ा या धँसा हुआ।  
२ बंटा हुआ। ३ लिप्त। मग्न। अनन्य  
मन से अनुरक्त। ४ मनोयोगी। ५  
आविष्ट। ६ प्रणिहित।

अभिनवेश-सज्ञा पु० १ पंठ। प्रवेश। २  
गति। ३ लीनता। मनोयोग। एकाग्रचित्तन।  
४ तत्पराता। दृढ संकल्प। ५ मृत्युशका।  
योगशास्त्र में मरण के भय से उत्पन्न क्लेश।  
६ मनोनिवेश। ७ प्रणिधान। विचार।

अभिनीत-वि० १ निष्कट लाया हुआ। २  
अलंकृत। सुसज्जित। ३ न्याय्य। उचित।  
४ खेला हुआ। अभिनय किया हुआ।  
(नाटक)।

अभिनेता-सज्ञा पु० [ स्त्री० अभिनेत्री ]  
१ अभिनय करनेवाला। स्वांग दिखानेवाला  
पुरुष। ऐक्टर। २ नट।

अभिनेय-वि० खलने योग्य (नाटक)। जिसका  
अभिनय किया जा सके।

अभिन्न-वि० [ सज्ञा अभिन्नता ] १ जो  
मिला हो। सबद्ध। २ समुक्त। मिश्रित।  
अभिन्नपद-सज्ञा पु० श्लेष अलंकार विशेष।  
अभिप्राय-सज्ञा पु० मतलब। आशय।  
तात्पर्य। अर्थ।

अभिप्रेत-वि० अभिप्राय का विषय। वाछित।  
अभीष्ट।

अभिभव-सज्ञा पु० पराजय। हार। पराभव।  
नीचा दिखाना।

अभिभावक-वि० १ पराजित करनेवाला।  
२ वशीभूत करनेवाला। ३ स्तमित कर  
देनेवाला। ४ सहायक। रक्षक। सरपरस्त।  
५ आश्रय देनेवाला।

अभिभावकता-सज्ञा स्त्री० [ अभिभावकत्व  
पु० ] १ सहायता। २ तत्त्वावधारकता।  
अभिभाषण-सज्ञा पु० भाषण। व्याख्यान।  
वक्तृता।

अभिभूत-वि० १ पराभूत। हराया हुआ।  
पराजित। २ पीड़ित। ३ वशीभूत। जो  
बस में किया गया हो। ४ विपलित।  
५ अज्ञान। ६ अचैतन्य। ७ विह्वल।

अभिमन्त्रण-सज्ञा पु० [ वि० अभिमन्त्रित ]  
१ मन्त्रार, जो मन्त्र द्वारा हो। २ आवाहन।

अवधू\*—वि० अवोध। अज्ञानी। मूर्ख।  
 अनाष्टी।  
 गज्ञा पु० अवधूत। त्याग करनेवाला।  
 विरक्त।  
 अवधूत—गज्ञा पु० १. यांगी। २. मन्यासी। ३.  
 महात्मा। ४. जीवन-मुक्त। ५. पाप-रहित।  
 अवध्य—वि० [ स्त्री० अवध्या ] १. जिसे  
 मारना उचित न हो। २. जिसे शास्त्रानु-  
 गार प्राणदंड न दिया जा सके। जैसे, मर्त्री,  
 मूर, स्नातक, दूत, ब्राह्मण। ३. जिसे  
 कोई मार न सके।  
 अवनी—गज्ञा स्त्री० दे० "अवनी"। पृथ्वी।  
 धरणी। धरती।  
 अवन्धित—वि० १. प्रधनरहित। स्वच्छंद।  
 २. स्वेच्छाचारी।  
 अवर\*—वि० निर्वल। कमजोर।  
 अवरक—सज्ञा पु० १. धातु विशेष, जिसकी  
 तहें बाँध की तरह कमकीली होती हैं।  
 भोंडर। भोडल। २. पत्थर-विशेष।  
 अवरज—सज्ञा पु० दे० "अवरक"।  
 अवरस—सज्ञा पु० [ फा० ] १. घोड़ का  
 रंग-विशेष, जो सब्ज से कुछ खुलता हुआ  
 सफेद होता है। २. इस रंग का घोड़ा।  
 अवरा—सज्ञा पु० [ फा० ] १. उपल्ला।  
 उपल्लो। 'अस्तर' का उलटा। दोहरे वस्त्र  
 के ऊपर का पल्ला। २. गाँठ जो न खुल  
 सके। ३. उलझन।  
 अवरी—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. एक तरह का  
 धारीदार चिबना कागज। २. पीला पत्थर-  
 विशेष, जो पच्चीकारी के काम में आता  
 है। ३. एक तरह की लाह की रंगाई।  
 अवह—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] भौंह। दे०  
 "अवू"।  
 अवल—वि० बलरहित। निर्वल। दुबला।  
 कमजोर।  
 अवलख—वि० दोरगा। कबरा। सज्ञा पु०  
 वह धूल या घोड़ा जिसका रंग सफेद और  
 काला हो।  
 राजा पु० काला पक्षी-विशेष।  
 स्त्री० बलहीना। नारी। स्त्री।  
 अवीर\*—वि० १. निर्वल। कमजोर।  
 २. निरक्षर। ३. निरक्षर।  
 अवे—अव्य० हे। अरे (छोटे या नीचे के  
 लिए संबोधन)।

अवरा—वि० वि० जो अपने यज्ञ में न हो।  
 अवहन—गज्ञा पु० उवहन। देह माफ करने के  
 लिए मरगो, चिरोजी आदि का लेप।  
 अवयाव—गज्ञा पु० [ अ० ] वह अधिक बर  
 जो गरखार मालगुजारी पर लगाती है।  
 अया—गज्ञा पु० [ अ० ] पहनावा-विशेष जो  
 अंगों के नीचे पहना जाता है।  
 अवाती\*—वि० १. वायुग्रहित। २. जिसे  
 हवा न हिलानी हो। ३. जो भीतर-भीतर  
 गुलगुलानेवाला हो।  
 अवादान—वि० [ अ० आवाद ] भग-भूरा।  
 भूरा बना हुआ।  
 अवादानो—गज्ञा स्त्री० [ फा० आवादानी ] १.  
 आवादी। बस्ती। २. पूर्णता। ३. रीतक।  
 चहल-पहल। ४. शुभवाग्ना।  
 अवाध—वि० १. निर्विघ्न। बाधाग्रहित। बिना  
 रोक-टोक का। २. असंयत। अपार। ३. जो  
 असंगत न होता हो।  
 अवाधित—वि० १. निर्विघ्न। बेरोक। २.  
 स्वतंत्र।  
 अवाध्य—वि० १. जो रोक न जा सके।  
 २. आवश्यक।  
 अवान\*—वि० १. निरुत्था। २. शस्त्र या  
 हथियार-रहित।  
 अवाबील—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] काले रंग की  
 चिड़िया विशेष। बन्हेया। वृष्णा।  
 अवार\*—सज्ञा स्त्री० दे० "अवेर"। वेर। देर।  
 विलंब।  
 अवास्त\*—सज्ञा पु० धर। मवान। वास्तव्य।  
 अवोर—सज्ञा पु० [ अ० ] रंगीन बुकनी या  
 अवरक का चूर जिसे लोग होली में इष्ट-  
 मित्रों को लगाते हैं।  
 अवोरी—वि० [ अ० ] अवोरी के रंगवाला।  
 कुछ कुछ स्याही लिये लाल रंग का।  
 सज्ञा पु० अवोरी रंग।  
 अवृक्ष—वि० अज्ञानी। अवोध। नाममज्ञ।  
 मूर्ख। नादान।  
 अवृत\*—वि० १. निर्वृत्ता। व्यर्थ का।  
 २. निरसता। ३. निरसता।  
 अवे—अव्य० हे। अरे (छोटे या नीचे के  
 लिए संबोधन)।

मुहा०—अवे-तवे करना=अपमानजनक वाक्य बोलना।

अवेप-वि० जो वेधा या छेदा न गया हो।

अवेर\*—संज्ञा स्त्री० देरी। विलव।

अवेश\*—वि० बहुत। ज्यादा। अधिक।

अवोध—संज्ञा पुं० नासमझी। अज्ञता। मूर्खता।

वि० अनजान। मूर्ख।

अवोल\*—वि० १. चुपचाप। अवाक्। मौन।

२. जिसके बारे में कह या बोल न सके।

अनिर्वचनीय।

संज्ञा पुं० दुरे वचन। दुरा बोल।

अवोला—संज्ञा पुं० जो न बोले। दुष्ट या

रुठने के कारण मौन।

अवज—संज्ञा पुं० १ जो वस्तु जल से उत्पन्न

हुई हो। २. पद्म। कमल। ३. शंख।

४. कपूर। ५. चंद्रमा। ६. धन्वन्तरि।

७. हिण्जल। ईजड ८. अरव। सौ करोड।

९. चक्र।

अरजद—संज्ञा पुं० [अ०] वर्णमाला। अरवी में

अक्षरों द्वारा अक्ष सूचित करने की प्रणाली।

अज्रा—संज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

अज्द—संज्ञा पुं० १. सवत्सर। २. वर्ष। साल।

३. मेघ। ४. बादल। ४. आकाश। ५. एक

पर्वत। वि० जल देनेवाला।

अज्वा—संज्ञा पुं० [फा०] पिता। बाप।

अज्वि—संज्ञा पुं० १. समुद्र। २. तालाब।

३. सरोवर। ३. चार और सात की सह्या।

४. अर्णव।

अज्विज—संज्ञा पुं० [स्त्री० अज्विजा] १.

समुद्र से उत्पन्न हुई वस्तु। २. चंद्रमा।

३. शंख। ४. अश्विनीकुमार।

अज्विनगरी—संज्ञा स्त्री० द्वारकापुरी।

अज्यास—संज्ञा पुं० [अ०] [वि० अज्यासी]

गुले अज्यास। गुलाबी। पीधा-विशेष जो

फूल के लिए लगाया जाता है।

अज्यासी—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. एक प्रकार

की कपास, जो मिल में होती है। २. लाल

रंग-विशेष।

अज्र—संज्ञा पुं० [फा०] मेघ। बादल।

अज्रू—संज्ञा स्त्री० [फा०] भीड़।

अज्रहण्य—संज्ञा पुं० १. अत्राहणोचित

कर्म। जैसे—हिंसा-आदि। २. जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो। ३. एक प्रकार, जो पुराने काल में 'अनुचित कर्म' हो गया की सूचक थी।

अभंग—वि० १. पूरा। अखंड। २. जिसका नाश न हो। जो मिटे या नष्ट न हो।

३. बराबर। लगातार।

अभंगपद—संज्ञा पुं० अलंकार-विशेष। वह

श्लेष, जिसमें अक्षरों को इधर-उधर बिना

किये ही अर्थ प्रकट हो।

अभंगी\*—वि० १. पूरा। जो बटा न हो।

अखंड। २. जिसका कोई कुछ ले न सके।

अभंजन—वि० अखंड। अटूट।

अभक्त—वि० १ भक्तिरहित। श्रद्धाहीन।

२ भगवद्विमुख। ३. शठ। ४. जो अलग

न किया गया हो। ५. पूरा।

अभक्ष या अभक्ष्य—वि० १. न खाने योग्य।

अखाद्य। २. जिसका खाना मना हो।

अभग्न—वि० पूरा। अखंड।

अभद्र—वि० १ अशिष्ट। बेहूदा। २. नीच।

कमीना। ३. अशुभ।

अभद्रता—संज्ञा स्त्री० १. अशिष्टता। बेहूदगी।

२. अमागलिकता।

अभयंकर—वि० जो भयकर न हो। दे०

“अभयकर”।

अभय—वि० [स्त्री० अभया] १ निडर।

निर्भय। २. आसरहित।

मुहा०—अभय देना या अभय बाँह देना=

शरण देना। भय से बचाने का वचन

देना।

अभयकर—वि० अभय देनेवाला। डर दूर

करनेवाला। दुष्ट से उद्धार करनेवाला।

अभयदान—संज्ञा पुं० १. शरण देना। रक्षा

करना। भय से बचाने का वचन देना।

२. दुष्ट से उद्धार।

अभयपद—संज्ञा पुं० मोक्ष। मुक्ति।

अभयवचन—संज्ञा पुं० रक्षा का वचन। भय

से बचाने की प्रतिज्ञा।

अभया—संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। भगवती। २. हरे

या हरीतकी-विशेष।

अभर\*—वि० जो डोने योग्य न हो। दुर्बल।

अभरन\*-संज्ञा पु० दे० "आभरण"।  
आभूषण। अलंकार। गहना।  
वि० १. अनादृत। अपमानित। २. दुर्दशा-  
ग्रस्ता। ३. जलील।

अभरन\*-वि० १. जो अभ्र न करे। अघ्रात।  
२. निडर। निःशक। ३. अमर्यादा।  
मि० वि० निश्चय। निःसंदेह।

अभल\*-वि० जो अच्छा न हो। बुरा।

अभव्य-वि० १. जो होने योग्य न हो। २.

अनोखा। अद्भुत। ३. बुरा। अशुभ।

अभाक्\*-वि० १. अच्छा न लगनेवाला।  
२. अशोभित।

अभाग\*-संज्ञा पु० दे० "अभाग्य"। विपत्ति।  
दुर्दशा। विपदा।

अभागा-वि० [स्त्री० अभागिनी] भाग्य-  
हीन। मदभागी। बदविस्मृत।

अभागी-वि० [स्त्री० अभागिनी] १. भाग्य-  
हीन। २. जो सम्पत्ति के भाग का  
अधिकारी न हो।

अभाग्य-संज्ञा पु० भाग्यहीनता। दुष्टभाग्य।  
बदकिस्मती।

अभाजन-वि० १. पात्र-रहित। २. कुपात्र।  
३. अविश्वासी।

अभार-वि० १. हलका। २. लघु। अगुरु।

अभाव-संज्ञा पु० १. अविद्यमानता। अनुपस्थित  
होना। न होना। २. कम। त्रुटि। ३. टोटा।  
घाटा। ४. बुरा भाव। ५. विरोध।

अभावना-वि० जो अच्छा न लगे। अप्रिय।

अभावनीय-वि० अचिन्तनीय। अतर्क्य।

जिसका पहले से अनुमान या विचार न  
किया गया हो। अकल्पित। अचिन्त्य।

अभि-उप० एक उपसर्ग, जो शब्दों में लगकर  
उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है—

१. सामने। २. बुरा। ३. इच्छा। ४. समीप।  
५. बारबार। ६. अच्छी तरह। ७. दूर।

८. ऊपर। ९. ओर। तरफ। १०. आता  
हुआ। ११. चौकैरा। १२. आगे। १३.

समन्तत्। १४. उभयायं। १५. वीप्सा। १६.

इत्यम्भाव। १७. धर्पण। १८. अभिलाष।  
१९. अभिमुख्य। २०. चिह्न। २१.

औत्पुन्य।

अभिक-संज्ञा पु० कामुक। लपट। लुब्धा।

अभिक्रमण-संज्ञा पु० १. धावा। चढ़ाई। २.

पाग आना। पहुँचना।

अभिरुपा-संज्ञा स्त्री० १. नाम। २. शोभा।

३. उपाधि।

अभिगमन-संज्ञा पु० १. निवटगमन। पाव  
जाना। २. सम्भोग। महवास। ३. देवमूर्ति  
के मार्ग को गोबर से स्त्रीपकर स्वच्छ  
करना।

अभिगामी-वि० [स्त्री० अभिगामिनी]  
१. निकट जानेवाला। २. सम्भोग या सहवास  
करनेवाला।

अभिग्रह-संज्ञा पु० १. अभिग्रमण। २. अभि-  
योग। ३. आश्रम। ४. गौरव। ५. मुकीर्ति।  
६. अपहार। ७. लुण्ठन। ८. चोरी। ९. लड़ाई  
के लिए आह्वान। १०. उत्साह बढ़ाने  
वाला। ११. योद्धाओं का परस्पर वधन।

अभिघात-संज्ञा पु० [वि० अभिघातक,  
अभिघाती] १. डडा आदि के द्वारा मारना।

चोट पहुँचाना। आपात। प्रहार। मार।

२. दाँत से काटना।

अभिचार-संज्ञा पु० १. पुरस्चरण। २. मन्त्र-यन्त्र-  
द्वारा मारण और उच्चाटन आदि हिंसा-कर्म।

अभिचारक-संज्ञा पु० यन्त्र-मन्त्र द्वारा उच्चाटन  
आदि कर्म करनेवाला।

अभिचारी-वि० [स्त्री० अभिचारिणी] १.  
अनिष्टकारक। २. यन्त्र-मन्त्र आदि का  
प्रयोग करनेवाला।

अभिजन-संज्ञा पु० १. परिवार। २. वंश।  
कुल। ३. जन्मभूमि। ४. पूर्वजों का निवास-  
स्थान। ५. जो घर में सबसे बड़ा हो।

६. पालक। पोपी। रक्षक। ७. गोष्ठी।  
८. प्रसिद्धि। स्याति।

अभिजात-वि० १. कुलीन। जो अच्छे कुल में  
पैदा हुआ हो। २. पंडित। बुद्धिमान्।

३. योग्य। उपयुक्त। ४. मान्य। पूजनीय।  
५. मनीहर। सुंदर। रूपवान्।

अभिजित-वि० विजयी।

संज्ञा पु० १. नक्षत्र-विशेष, जिसमें तीन  
तारे हैं। २. मूहूर्त-विशेष। ३. दिवस का  
अष्टम मूहूर्त।

अभिज्ञ-वि० १ विज्ञ। जानकार। ज्ञाता।  
 पंडित। २ कुशल। निपुण।  
 अभिज्ञता-मज्ञा स्त्री० १ विज्ञता। जानकारी।  
 २ पांडित्य। नैपुण्य।  
 अभिज्ञा-सज्ञा स्त्री० १ स्मृति। याद।  
 २ अलौकिक ज्ञान-रत्न जो ध्यान की  
 चारा अवस्थाओं के बाद होता है।  
 अभिज्ञान-सज्ञा पु० [ वि० अभिज्ञात ] १  
 स्मृति। याद। खयाल। २ पहचान। लक्षण।  
 ३ चिह्न। निशानी। सहिदानी।  
 अभिधा-सज्ञा स्त्री० १ नाम। २ सज्ञा।  
 ३ शब्द के नियत अर्थ को ही प्रकट करने  
 वाली शक्ति। (साहित्य)  
 अभिधान-सज्ञा पु० १ एक नाम। २ कथन।  
 ३ शब्दकोश। ४ सज्ञा।  
 अभिधाप्रक-वि० १ जो नाम रखे। २  
 कहनेवाला। ३ सूचक।  
 अभिधेय-वि० १ प्रतिपाद्य। वाच्य। अभिधान।  
 अर्थ। अभिधागम्य। २ जिसका बोध नाम  
 लेने ही से हो जाय।  
 सज्ञा पु० नाम।  
 अभिनदन-सज्ञा पु० १ आनन्द। २ प्रशंसा।  
 प्रोत्साहन। ३ सतोष। ४ उत्तेजना।  
 ५ विनीत प्रार्थना। ६ बुद्धि-विशेष।  
 ७ आनन्दन। हर्षण।  
 यौ०-अभिनदनपत्र=वह आदर या प्रतिष्ठा-  
 मूलक पत्र जो किसी महान् पुरुष के आगमन  
 पर हर्ष और सतोष प्रकट करने के लिए  
 उसे सुनाया और अर्पित किया जाता है।  
 [ अंग्रे० एड्रेस ]।  
 अभिनदनीय-वि० वदनीय। जो प्रशंसा के  
 योग्य हो। पूजनीय।  
 अभिनदित-वि० प्रशंसित। वदित।  
 अभिनय-सज्ञा पु० १ स्वांग। नवल। दूसरे  
 व्यक्तियों के भाषण तथा चेष्टा को कुछ काल  
 के लिए धारण करना। २ नाटक का खेल।  
 अभिनय-वि० १ नूतन। नव्य। नया। नवीन।  
 २ ताजा।  
 अभिनयगुप्त-सज्ञा पु० सञ्ज्ञित के एक प्रसिद्ध  
 अलङ्कार-शास्त्री तथा 'रस' के अंतिम मत  
 के स्थापक।

अभिनिविष्ट-वि० १ गड़ा या धँसा हुआ।  
 २ बँठा हुआ। ३ लिप्त। मग्न। अनन्य  
 मन से अनुरक्त। ४ मनोयोगी। ५  
 आविष्ट। ६ प्रणिहित।  
 अभिनिवेश-सज्ञा पु० १ पंथ। प्रवेश। २  
 गति। ३ लीनता। मनोयोग। एकाग्रचित्तन।  
 ४ तत्परता। दृढ़ सकल्प। ५ मृत्युशका।  
 योगशास्त्र में मरण के भय से उत्पन्न क्लेश।  
 ६ मनोनिवेश। ७ प्रणिधान। विचार।  
 अभिनीत-वि० १ निकट लाया हुआ। २  
 अलंकृत। सुसज्जित। ३ न्याय्य। उचित।  
 ४ खेला हुआ। अभिनय किया हुआ।  
 (नाटक)।  
 अभिनेता-सज्ञा पु० [ स्त्री० अभिनेत्री ]  
 १ अभिनय करनेवाला। स्वांग दिखानेवाला  
 पुरुष। ऐक्टर। २ नट।  
 अभिनेय-वि० खलने योग्य (नाटक)। जिसका  
 अभिनय किया जा सके।  
 अभिन्न-वि० [ सज्ञा अभिन्नता ] १ जो  
 मिला हो। सवद्ध। २ समुक्त। मिश्रित।  
 अभिन्नपद-सज्ञा पु० श्लेष अलङ्कार विशेष।  
 अभिप्राय-सज्ञा पु० मतलब। आशय।  
 तात्पर्य। अर्थ।  
 अभिप्रेत-वि० अभिप्राय का विषय। वांछित।  
 अभीष्ट।  
 अभिमव-सज्ञा पु० पराजय। हार। पराभव।  
 नीचा दिखाना।  
 अभिभावक-वि० १ पराजित करनेवाला।  
 २ वशीभूत करनेवाला। ३ स्तमित कर  
 देनेवाला। ४ सहायक। रक्षक। सरपरस्त।  
 ५ आश्रय देनेवाला।  
 अभिभावकता-सज्ञा स्त्री० [ अभिभावकत्व  
 पु० ] १ सहायता। २ तत्वावधायकता।  
 अभिभाषण-सज्ञा पु० भाषण। व्याख्यान।  
 वक्तृता।  
 अभिभूत-वि० १ पराभूत। हराया हुआ।  
 पराजित। २ पीड़ित। ३ वशीभूत। जो  
 बस में लिया गया हो। ४ विचलित।  
 ५ अज्ञान। ६ अचैतन्य। ७ विह्वल।  
 अभिमन्त्रण-सज्ञा पु० [ वि० अभिमन्त्रित ]  
 १ सत्कार। जो मन्त्र द्वारा हो। २ आवाहन।

अभिमंत्रित-वि० यत्र पढ़कर पवित्र किया हुआ। आवाहन किया हुआ।

अभिमत-वि० १. वांछित। मनोनीत।  
२. राय के अनुसार। सम्मत। अनुमत।  
सज्ञा पु० १. मत। राय। सम्मति। २. विचार। ३. इष्ट। मनचाही बात।

अभिमत-सज्ञा स्त्री० १. घमंड। अभिमान।  
अहंकार। गर्व। २. अहंभाव। ३. इच्छा।  
अभिलाषा। चाह। ४. विचार। राय। मति।  
अभिमन्यु-सज्ञा पु० १. अर्जुन का पुत्र-विशेष।  
२. काश्मीर के एक राजा का नाम।

अभिमर्षण-सज्ञा पु० १. मनन। चिन्तन।  
२. परस्त्री-गमन।

अभिमान-सज्ञा पु० १. गर्व। अहंकार।  
घमंड। मद। २. आक्षेप।

अभिमानजनक-वि० गर्वजनक। अहंकार-युक्त।

अभिमानि-वि० [स्त्री० अभिमानिनी] १. घमंडी। अहंकारी। २. अकड़बाज।  
३. अनादर से विव्र। ४. अभिमानयुक्त।  
५. आक्षेपान्वित।

अभिमुख-क्रि० वि० समक्ष। आगे। सामने।  
सम्मुख।

अभियान-सज्ञा पु० १. प्रस्थान। चढ़कर या  
चलकर आगे जाना। २. चढ़ाई। धावा।

अभियुक्त-वि० [स्त्री० अभियुक्ता]  
अपराधी। प्रतिवादी।

अभियोक्ता-वि० [स्त्री० अभियोक्त्री] वादी।  
मुद्दी। जो अभियोग उपस्थित करे।

अभियोग-सज्ञा पु० १. आवेदन। जो किसी  
के विरुद्ध न्यायालय में किया जाय। २.  
नालिश। मुकद्दमा। ३. आक्रमण। चढ़ाई।  
४. उद्योग।

अभियोगी-वि० नालिश करनेवाला। करि-  
यादी। जो अभियोग चलावे।

अभिरत-वि० लीन। अनुरक्त। युक्त। सहित।  
अभिरता\*-क्रि० अ० १ लडना। भिडना।  
२. टंकना।

क्रि० स० मिलाना।

अभिराम-वि० [स्त्री० अभिरामा] १. रमणीया।  
सुंदर। मनोहर। २. प्रिय। रम्य।

अभिरचि-सज्ञा स्त्री० १. पगद। चाट।  
२. प्रयुक्ति। ३. आस्वाद।

अभिरूप-वि० १. योग्य। उपयुक्त।  
२. विद्वान्। ३. कामदेव। ४. चन्द्रमा।  
५. शिव। ६. विष्णु। ७. गन्ध।

अभिलवणीय-वि० वांछनीय। मनोहर। मुंदर।  
अभिलषित-वि० इष्ट। वांछित। इच्छित।  
चाहा हुआ।

अभिलाष\*-सज्ञा पु० दे० "अभिलाष"।  
आकांक्षा। स्पृहा। कामना।

अभिलाष-सज्ञा पु० १. चाह। इच्छा।  
कामना। मनोरथ। २. प्रिय में मिलने  
की इच्छा। ३. वियोग-शून्यता के अतर्गत  
दम वशाओं में से एक।

अभिलाषा-सज्ञा स्त्री० चाह। इच्छा।  
आकांक्षा। कामना।

अभिलाषी-वि० [स्त्री० अभिलाषिणी] जो  
इच्छा करे। आकांक्षी। इच्छुक।

अभिलाषुक-वि० इच्छान्वित। सस्पृह।  
अभिलास-सज्ञा स्त्री० दे० "अभिलाष"।

अभिवंदन-सज्ञा पु० प्रणाम। नमस्कार।  
स्तुति आदि।

अभिवंदना-सज्ञा स्त्री० दे० "अभिवंदन"।  
अभिवाद-सज्ञा पु० दुर्वचन। गाली।

अभिवाद-सज्ञा पु० प्रणाम। नमस्कार।  
वदना। स्तुति आदि। "अभिवंदन"।

अभिवादनीय-वि० प्रणम्य। प्रणाम के योग्य।  
अभिव्यक्त-वि० १. प्रकाशक। २. बताने  
वाला। ३. सूचना देने वाला। ४. बोधक।

अभिव्यक्त-वि० प्रकाशित। विज्ञापित। प्रकट  
किया हुआ। स्पष्ट किया हुआ।

अभिव्यक्ति-सज्ञा स्त्री० १. साक्षात्कार।  
स्पष्टीकरण। प्रकाशन। २. विज्ञापन।

घोषणा। ३. सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण  
का प्रत्यक्ष कार्य में आविर्भाव। जैसे, बीज  
से अकुर निकलना।

अभिज्ञप्त-वि० १. जिसे शाप दिया गया  
हो। २. जिस पर झूठा दोष लगा हो।

अभिज्ञस्त-वि० मैथुन का दोषी।  
अभिज्ञस्ति-सज्ञा स्त्री० याचना।

अभिज्ञाप-सज्ञा पु० १. शाप। वदहुआ।

२ मिथ्या दोष लगाना। ३. बुरा मानना।  
**अभिशापित**—वि० दे० “अभिशाप्त”।  
**अभिषेक**—सज्ञा पु० १. हार। पराभव।  
 २. आक्रोश। निंदा। कोसना। ३. झूठा  
 घोषारोपण। मिथ्या अपवाद। ४. आलिंगन।  
 दूध मिलाप। ५. वसम। शपथ। ६.  
 भूत-प्रेत का आवेश। ७. शोक।  
**अभिषेक**—सज्ञा पु० १. यज्ञस्नान। २. चिर  
 स्थापित। ३. मद्योत्पादक द्रव्य। ४  
 सोमलता-पान।  
**अभिषिक्त**—वि० [स्त्री० अभिषिक्ता] १  
 कृताभिषेक। जिसका अभिषेक हुआ हो।  
 २. राजपद पर निर्वाचित। ३. कर्म में  
 नियुक्ति। पदस्थ। ४. बाधा-शांति के लिए  
 जिस पर मंत्र पढ़कर दुर्वा और कुश से  
 जल छिड़का गया हो।  
**अभिषेक**—सज्ञा पु० १ छिड़काव। जल से  
 सीचना। २ ऊपर से जल डालकर स्नान।  
 ३. मार्जन। बाधाशांति या मंगल के लिए  
 मंत्र पढ़कर कुश और दूब से जल छिड़कना।  
 ४. विधिपूर्वक मंत्र से जल छिड़ककर राज-  
 पद पर निर्वाचन। ५. शान्ति-स्नान।  
 ६. शिवालिंग के ऊपर छेदवाला घड़ा रस-  
 वर धीरे धीरे पानी टपकाना। ७. कर्म में  
 नियोग करना। पदस्थ करण।  
**अभिष्यंद**—सज्ञा स्त्री० १ खाव। वहाव।  
 २. आँख आना। ३. अत्यधिक वृद्धि।  
**अभिसंधि**—सज्ञा पु० १ घोखा। वचना।  
 २. बुचक। चुपचाप कोई काम करने की  
 बड़ी आदमियों की सलाह। पटव्यन।  
 ३. मेल करना। संधि करना। ४. इच्छा।  
 कामना। ५. जोड़।  
**अभिसंधिता**—सज्ञा स्त्री० कलहातरिता  
 नायिका।  
**अभिसंधात**—सज्ञा पु० १. अभिशाप। २. सघाम।  
 ३. शोध। मन्थ। रिंग।  
**अभिसर**—सज्ञा पु० १. भायी। संगी। सहचर।  
 २. अनुचर।  
**अभिसरण**—सज्ञा पु० १. आगे जाना।  
 २. मभीप जाना। ३. प्रिय से मिलने के  
 लिए जाना।

**अभिसरना**\*—क्रि० अ० १ जाना। संचरण  
 करना। २ किसी वांछित स्थान को गमन।  
 ३. प्रिय से मिलने के लिए सकेत-स्थल  
 पर जाना।  
**अभिसार**—सज्ञा पु० [वि० अभिसारिका,  
 अभिसारी] १ सहारा। सहाय। २.  
 लड़ाई। युद्ध। ३. प्रिय से मिलने के लिए  
 नायिका या नायक का सकेत-स्थल में  
 जाना। ४. बल।  
**अभिसारना**\*—क्रि० अ० दे० “अभिसरना”।  
**अभिसारिका**—सज्ञा स्त्री० वह स्त्री जो सकेत-  
 स्थान में प्रिय से मिलने के लिए स्वयं जाय  
 या प्रिय को बुलावे।  
**अभिसारिणी**—सज्ञा स्त्री० दे० “अभिसारिका”।  
**अभिसारी**—वि० [स्त्री० अभिसारिका] १.  
 साधक। २. सहायक। ३. जो प्रिया  
 से मिलने के लिए सकेत-स्थल पर  
 जावे।  
**अभिहित**—वि० १ कथित। कहा हुआ। उक्त।  
 २. प्रकाशित। व्यक्त।  
**अभी**—क्रि० वि० १ इसी समय। इसी वक्त।  
 २. शीघ्र।  
**अभीक**—वि० १ निडर। निर्भय। २. कठोर-  
 हृदय। निष्ठुर। ३. उत्सुक।  
**अभीक्षण**—सज्ञा पु० पुन-पुन। बार-बार।  
 भूयोभूय।  
**अभीत**—सज्ञा पु० निडर। निर्भय। साहसी।  
**अभीप्सा**—सज्ञा स्त्री० [वि० अभीप्सित,  
 अभीप्सु] किसी वस्तु के पाने की प्रयत्न  
 इच्छा। उत्कट अभिलाषा।  
**अभीप्सित**—वि० अभीष्ट। वांछित। प्रिय।  
 मनोभिलषित।  
**अभीर**—सज्ञा पु० १ खाला। गोप। अहीर।  
 २. छंद विनोय।  
**अभीष्ट**—वि० निर्दोष। निर्भय।  
 सज्ञा पु० १. महादेव। २. भैरव। ३.  
 घनावर्ग।  
**अभीष्ट**—वि० १ इच्छित। चाहा हुआ।  
 २. मनोनीत। चुना हुआ। ३. आनय के  
 अनुकूल। अभिलषित।  
 सज्ञा पु० मनचाही बात। मनोरथ।

अभुआना-क्रि० अ० हाथ-पैर पटकने और जोर-जोर से गिर हिलाने आदि के लक्षण, जिगमे यह समझा जाय कि गिर पर भूत आया है।

अभुवत-वि० १. जो गम्या न गया हो। न लौला हुआ। २. अव्यवहृत। बिना वर्त्ता हुआ।

अभुवतमूल-सज्ञा पु० ज्येष्ठा नक्षत्र के अत को दो घड़ी तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घड़ी। (ज्योतिष)। गङ्गात।

अभू\* -क्रि० वि० दे० १. "अभी"। अब ही। अथ। २. आज।

अभूखन\* -सज्ञा पु० दे० "आभूषण"। गहना।

अभूत-वि० १. जो हुआ न हो। वर्तमान। २. अनोखा। अपूर्व।

अभूतपूर्व-वि० १. अनोखा। अद्भुत। विलक्षण। २. जो पहले न हुआ हो।

अभूतरिपु-सज्ञा पु० अजातशत्रु। शत्रुहीन। रिपुहीन। जिसका कोई वैरी न हो।

अभेद-सज्ञा पु० [ वि० अभेदनीय, अभेद्य ] १. अभिप्रता। अवशेष। एकत्व। २. समानता। एकरूपता। ऐक्य। ३. रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक। ४. परस्पर।

वि० भेदरहित। समान। एकरूप।

\*वि० दे० "अभेद्य"। जो भेदा न जा सके। क्षत न होना।

अभेदनीय-वि० जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।

सज्ञा पु० हीरा।

अभेदवादी-वि० जीव और ब्रह्म में भेद न माननेवाला सम्प्रदाय। अद्वैतवादी।

अभेद्य-वि० १. जो टूट न सके। अलण्डनीय। २. जिसका भेदन, छेदन या विभाग न हो सके।

अभेय-सज्ञा पु० दे० "अभेद"।

अभेरना-क्रि० सं० १. सटाकर रखना। २. भिडाना। मिलाकर रखना। ३. मिश्रित करना। मिलाना।

अभेर\*-सज्ञा पु० दे० "अभेद"।

अभेर-सज्ञा पु० १. टक्कर। रगड़। २. मुठ-भेड़।

अभोजन-गज्ञा पु० भोजनाभाव। अनाहार। उपवास। अनयन।

अभोजी-सज्ञा पु० अत्यादक। अभोगी।

अभौतिक-वि० १. जो सागारिक न हो। जपचभूत पान बना हो। २. अगोचर। अदृश्य।

अभ्यंग-गज्ञा पु० [ वि० अभ्यक्त, अभ्यजनीय ] १. लेपन। चारों ओर पोतना।

२. शरीर में तेल लगाना।

अभ्यञ्जन-गज्ञा पु० तेल लेपन। उवटन।

अभ्यन्तर-गज्ञा पु० १. बीच। मध्य। २. हृदय। ३. अन्तराल। अन्तर।

क्रि० वि० अंदर। भीतर।

अभ्यन्तरवर्ती-सज्ञा पु० मध्यवासी।

अभ्यर्चना-सज्ञा स्त्री० [ वि० अभ्यर्चनीय, अभ्यर्चित ] १. चिनय। सम्मुख प्रार्थना।

चिन्ती। २. अगवानी। सम्मान के लिए आगे बढ़कर लेना। ३. आदर। ४. सम्भाषण।

अभ्यसित-वि० दे० "अभ्यस्त"।

अभ्यस्त-वि० १. बार-बार किया हुआ। जिसका अभ्यास किया गया हो। २. जिसने अभ्यास किया हो। ३. निपुण। दक्ष।

४. चतुर।

अभ्यागत-वि० १. अतिथि। मेहमान। पाहुना। २. सामने आया हुआ।

अभ्यास-सज्ञा पु० [ वि० अभ्यासी, अभ्यस्त ] १. साधन। पूर्णता प्राप्त करने के लिए फिर-फिर एक ही क्रिया का अवलंबन। आवृत्ति। मक्क। २. टेब। बान। आदत।

३. चिन्तन। ४. शिक्षा।

अभ्यासी-वि० [ स्त्री० अभ्यासिनी ] जो अभ्यास करे। साधक।

अभ्यूतान-सज्ञा पु० १. उठना। २. किसी बड़े के आने पर उसके आदर के लिए उठकर खड़ा हो जाना। ३. समृद्धि। बढ़ती।

उन्नति। ४. उठान। उदय। आरम्भ। ५. उत्पत्ति।

अभ्युदय-सज्ञा पु० १. ग्रहों का उदय। २. उत्पत्ति। प्रादुर्भाव। ३. कामना या मनोरथ की सिद्धि। ४. विवाह आदि शुभ अवसर। ५. बढ़ती। वृद्धि। उन्नति।

६. ऐश्वर्य। ७. प्रारम्भ। शुभ्रात।

अभ्युपगम-सज्ञा पु० [ वि० अभ्युपगत ]  
 १ प्राप्ति। सामने आना या जाना। २  
 अंगीकार। स्वीकार। मजूर। ३ किसी  
 ऐसी बात को मानकर, जिसका खडन  
 करना है, फिर उसकी विशेष परीक्षा करना।  
 (न्याय)  
 अन्न-सज्ञा पु० १ अन्नक धातु। २ नम।  
 आकाश। ३ बादल। ४ सोना। स्वर्ण।  
 ५ नागरमोथा। ६ ऋतु। ७ धूल। ८  
 कपूर।  
 अभ्रक-सज्ञा पु० भोडग। अव्रक। धातु-  
 विशेष।  
 अभ्रात-वि० १ भ्राति-रहित। भ्रम का न  
 होना। २ स्थिर।  
 अभ्रान्ति-सज्ञा स्त्री० भ्राति का न होना।  
 स्थिरता।  
 अमगल-वि० अशुभ। मगलशून्य। दुर्लक्षण।  
 सज्ञा पु० १ दुःख। २ अशुभ। अकल्याण।  
 अमगलजनक-वि० अशुभ-जनक। दुर्लक्षण-  
 युक्त।  
 अमगल्य-वि० अशुभ-जनक। अनिष्ट-सूचक।  
 अमद-वि० १ तज। जो मद न हो।  
 २ श्रेष्ठ। उत्तम। ३ उद्योग करनेवाला।  
 अम-अव्य० १ शीघ्रता। २ अल्प।  
 सज्ञा पु० आँव। रोग विशेष।  
 अमका-सज्ञा पु० १ ऐसा। २ अमक।  
 फलाना।  
 अमका डमका-सज्ञा पु० फलाना। अमुक।  
 अशत अथवा गोपनीय नाम के पुरुष का  
 बोधक।  
 अमचूर-सज्ञा पु० १ सुखाए हुए कच्चे  
 आम का चूर्ण। पिसी हुई आम की फाँकें।  
 २ पटाई।  
 अमडा-सज्ञा पु० पेड़-विशेष, जिनमें आम  
 की तरह वे छाटे-छोटे गट्टे फल लगते  
 हैं। अमारी।  
 अमत-सज्ञा पु० १ असम्मत। मत का न  
 जाना। २ बीमारी। रोग। ३ वाद। मृत्यु।  
 अमत-वि० १ जा मत न हा। मदगर्हित।  
 २ बिना पमट का। ३ तात। स्थिरचित्त।  
 अमत्तर-सज्ञा पु० द्वेषाभाव। मत्तर-रहित।

अमन-सज्ञा पु० [ अ० ] १ चैन। शांति।  
 आराम। २ वचाव। रक्षा।  
 अमनस्क-वि० मन या इच्छा से रहित।  
 उदासीन। अनमन।  
 अमनिया\*-वि० [ देश० ] पवित्र। शुद्ध।  
 अच्छा।  
 सज्ञा स्त्री० रसोई पकाने की क्रिया। (साधु)  
 अमनिया करना-क्रि० सं० १ शाक को  
 छीलना। बनाना। २ अनाज को बीन  
 फटककर साफ करना।  
 अमनैक-सज्ञा पु० १ हकदार। अधिकारी।  
 २ अवध सूबे के एक किस्म के काश्तकार  
 जिनका पुरतनी लगान के बारे में कुछ  
 खास अधिकार प्राप्त हैं। ३ सरदार। ४  
 डीठ।  
 अमनोक्त-वि० अमुन्दर। कुरूप। पिनीना।  
 अमनोयोग-सज्ञा पु० अनवधानता।  
 अमर-वि० चिरजीवी। जो न मरे। नित्य।  
 चिरस्थायी। मरणरहित।  
 सज्ञा पु० [ स्त्री० अमरा, अमरी ] १ दवता।  
 २ हडजोड़ का पेड़। ३ पारा। ४ उन-  
 चास पवना में से एक। ५ अमरकोश।  
 लिगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के कर्ता  
 अमरसिंह। ६ कुलिश वृक्ष। अस्थि-सहारक  
 वृक्ष। ७ गणित में ३३ सख्या। ८ एक  
 पर्वत का नाम।  
 अमरख\*-सज्ञा पु० [ स्त्री० अमरखी ] १  
 क्रोध। क्रोध। गुस्ता। २ दुःख। क्षोभ। रज।  
 अमरखी\*-वि० १ बुरा माननेवाला। २  
 दुखी होनेवाला। ३ क्रोधवर्णनवाला।  
 अमरज-वि० देवजात। देव से उत्पन्न।  
 देवभाव।  
 अमरता-सज्ञा स्त्री० १ देवत्व। देवभाव।  
 देव-भाष्य। २ मृत्यु का न होना।  
 अमरत्व-सज्ञा पु० दे० 'अमरता'।  
 अमरद्विज-सज्ञा पु० देवल ब्राह्मण। पुजारी।  
 अमरपक्ष\*-सज्ञा पु० पितृपक्ष।  
 अमरपति-सज्ञा पु० इन्द्र। देवा का राजा।  
 अमरपद-सज्ञा पु० मास। मुक्ति।  
 अमरपुर-सज्ञा पु० [ स्त्री० अमरपुरी ]  
 दयताआ के रहने का स्थान। अमरावती।

अमरवेल-सज्ञा स्त्री० दे० "अम/वेल"।  
आराग वेल। पीली रत्ना या बीर जितमें  
जड़ और पत्तियाँ नहीं होती। आराग-बीर।  
अमरलोह-सज्ञा पु० स्वर्ण। इद्रपुरी।  
देवलोच।

अमरवल्ली-सज्ञा स्त्री० अमरवेल। अमर-  
घोरिया। आवाग-वैवर।

अमरस-सज्ञा पु० दे० "अमावस"। १ आम  
की पूड़ी। २ आम का रस और दूध  
मिलाकर बनाया गया पेय।

अमरसिंह-सज्ञा पु० विजयमालिक्य के नौ रत्ना  
में से एक रत्न। अमरकोष के ग्रन्थकार।

अमरसी-वि० सुनहला। जिमका रंग आम  
के रस की तरह पीला हो।

अमरा-सज्ञा स्त्री० १ दूध। २ गुर्घ।  
३ सेंहुड। ४ गूहर। ४ नीली कोयल।  
५ विल्ली जी गर्भ के बालक के बदन  
में लिपटी रहती है।

अमराई-सज्ञा स्त्री० आम का बगीचा।  
आम का घना बाग।

अमरायल-सज्ञा पु० स्वर्ण।

अमराव\*†-सज्ञा पु० दे० "अमराई"।

अमरावती-सज्ञा स्त्री० स्वर्ण। इद्रपुरी।

अमरी-सज्ञा स्त्री० १ देवपत्नी। देवता की  
स्त्री। २ देवकन्या। ३ पेड़ विशेष।  
सुग। पियासाल। ४ आसन।

अमरु-सज्ञा पु० १ रेघमी कपड़ा विशेष।  
२ एक राजा ३ एक कवि का नाम।

अमरुत-सज्ञा पु० अमरुद। पेड़ तथा फल  
विशेष।

वि० सुस्थिर। शात। अचंचल। निर्वात।

अमरुद-सज्ञा पु० सफरी। बिही। फल  
विशेष।

अमरेश-सज्ञा पु० देवताओं का राजा।  
इद्र। अमरेश्वर।

अमरया-सज्ञा स्त्री० 'अमराई'।

अमर्याद-वि० १ जो मर्यादा के विरुद्ध हो।  
वकायदा। २ जो प्रतिष्ठित न हो।

अमर्यादा-सज्ञा स्त्री० १ वैद्वज्जती।  
अममान। अप्रतिष्ठा। २ मानहानि।  
३ अनौत्ति।

अमर्य-सज्ञा पु० [वि० अमर्यित, अमर्यी  
१ श्राध। गुस्मा। २ वह द्वेप या दु।  
जा ऐसे मनुष्य का कोई अपवार न क  
सकने के कारण उत्पन्न होता है जिग  
अपना तिरस्कार किया हो। ३ अक्षमा  
असहिष्णुता।

अमर्यण-सज्ञा पु० गुस्मा। श्राध।

वि० १ शोधी। कोपान्वित। २ रोगी  
अमर्यी-वि० [स्त्री० अमर्यिणी] १ शोधी  
२ जो सहन न कर सके। शीघ्र ही बुर  
माननेवाला।

अमल-वि० १ स्वच्छ। निर्मल। २ निर्दोष  
पापरहित।

सज्ञा पु० [अ०] १ आचरण। व्यवहार  
२ कार्य। ३ साधन। ४ शासन। अधिकार  
हुकूमत। ५ आदत। धान। रत्न। देव  
६ नशा। ७ असर। प्रभाव। ८ समय  
वक्त। भोगकाल। ९ प्रयोग। १० राज्य  
अमलता-सज्ञा स्त्री० १ स्वच्छता। निर्मलता  
२ निर्दोषता।

अमलतास-सज्ञा पु० १ पेड़-विशेष जिसमें  
लची गोल फलियाँ लगती हैं। २ औषध-  
विशेष।

अमलदारी-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दसल।  
शासन। अधिकार। २ एक प्रकार की  
काश्तकारी जिसमें असामी को पैदावार  
के अनुसार लगान देना पड़ता है।  
कनकूत।

अमलपट्टा-सज्ञा पु० वह दस्तावेज या  
अधिकार-पत्र जो किसी प्रतिनिधि या  
कार्दारों को किसी कार्य में नियुक्त करने  
के लिए दिया जाय।

अमलबेत-सज्ञा पु० लता-विशेष जिसकी  
सूखी हुई टहनियाँ खट्टी होती हैं और चूरण  
में पड़ती हैं। २ पेड़-विशेष जिसके फल  
की खटाई बड़ी तीक्ष्ण होती है।

अमला-सज्ञा स्त्री० १ लक्ष्मी। २ सालता  
वृक्ष। ३ पाताल। ४ आँख।

सज्ञा पु० [अ०] कचहरी में काम करने-  
वाला। कार्याधिकारी। कर्मचारी।

गो०-अमलाफला=कचहरी के कर्मचारी।

अमली-वि० [ अ० ] १ व्यावहारिक ।  
अमल में आनेवाला । काम में आने  
वाला । २ कर्मण्य । अमल करनेवाला ।  
३ नशा करनेवाला ।

सज्ञा स्त्री० इमली ।

अमलोनी-सज्ञा स्त्री० नोनी । नोनियाँ घास-  
विशेष ।

अमहर-सज्ञा पु० अमचुर । सूखी खटाई ।

अमहल-सज्ञा पु० १ व्यापक । जो सर्वत्र हो । २

जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो ।

अमा-अव्य० मुसलमानों का एक संबोधन ।

ऐ मियाँ ।

अमा-सज्ञा स्त्री० १ घर । २ मर्त्यलोक ।

३ अमावस्या की कला । ४ रात ।

अमातना\*-क्रि० स० १ बुलाना । आमन्त्रित

करना । २ निमन्त्रण देना । न्योता देना ।

अमात्य-सज्ञा पु० मंत्री । दीवान ।

अमान-वि० १ मानरहित । जिसका मान

या अदब्ब न हो । बहुत । बेहद । अपरि-

मित । २ सीधा-सादा । सर्वरहित । निरह-

कारी । ३ तुच्छ । अप्रतिष्ठित । अनादृत ।

मज्ञा पु० [ अ० ] १ बचाव । रक्षा । २ शरण ।

अमानत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ अपनी वस्तु

कुछ समय के लिए दूसरे के पास रखना ।

२ धरोहर । याती ।

अमानतदार-सज्ञा पु० याती रखनेवाला ।

वह जिसके पास अमानत रखी जाय ।

अमानतनामा-सज्ञा पु० वह पत्र जिस पर

अमानत में रखी हुई चीजों का विवरण हो ।

अमाना-क्रि० अ० १ अटना । समाना ।

२ इतराना । फूलना । धमड करना ।

३ खपना ।

अमानी-वि० जिसमें धमड न हो । निरभि-

मान । अहंकाररहित ।

मज्ञा स्त्री० १ रास । मरकारी भूमि । २

वह जमीन या कोई काम जिसका प्रबंध

अपने ही हाथ में हो । ३ लगान की

वह वसूली जिसमें पसल के विचार से

रियायत हो ।

अमना स्त्री० मनमानी न अपने मन का

काम । अघोर ।

अमानुष-वि० १ जो मनुष्य की सामर्थ्य

से बाहर हो । जो मनुष्य से न हो सके ।

२ जो मनुष्य स्वभाव के विरुद्ध हो ।

पंशाचिक । पाशव ।

सज्ञा पु० १ जो प्राणी मनुष्य से भिन्न हो ।

२ देवता । ३ राक्षस ।

अमानुषी-वि० १ जो मानव स्वभाव के विरुद्ध

हो । पाशव । पंशाचिक । २ मानवी दक्षित

से भिन्न । ३ देवी । ४ देवयोनिमवद्ध ।

अमान्य-वि० अस्वीकार । नामजूर । इनकार ।

त्याज्य ।

अमाय\*-वि०-दे० "अमाया" । कपट-रहित ।

वास्तव । यथार्थ । माया-रहित ।

अमाया वि० १ निर्लिप्त । जो माया से

प्रभावित न हो । २ नि छल । निष्कपट ।

अमारी-सज्ञा स्त्री० दे० "अवारी" ।

अमार्ग-सज्ञा १ पु० बुरा मार्ग । कुराह । २

बुरी चाल । ३ दुराचरण ।

अमावट-सज्ञा स्त्री० १ आम के सुलाये

हुए रस की पत या तह । २ पहिना जाति

की मउली विशय ।

अमावस-सज्ञा स्त्री० दे० "अमावस्या" ।

चान्द्र मास का अन्तिम दिन ।

अमावस्या-सज्ञा स्त्री० कृष्ण पक्ष की

अन्तिम तिथि ।

अमाह-सज्ञा पु० नाखूना । अरस के डेले से

निकला हुआ लाल मांस ।

अमिड-सज्ञा पु० अमृत । सुधा ।

अमिट-वि० १ नित्य । २ जो मिट न सके ।

जो नष्ट न हो । ३ अटल । बढ । स्थायी ।

अवश्यभावी । जिसका हाना निश्चित है ।

अमित-वि० १ बहुत । अधिक । प्रचुर ।

असीम । बेहद । २ बहुत । अधिक ।

अमिताभ-सज्ञा पु० गौतम बुद्ध ।

वि० अत्यंत आभावाला । जिसकी आभा

की कोई सीमा न हो । असीम वातिवाग् ।

अमिताशन-सज्ञा पु० अग्नि ।

वि० बहुत खानेवाला ।

अमित्रीजा-सज्ञा पु० मर्यादितमान् ।

अमित्र-वि० १ वैरी । शत्रु । अरि । दुश्मन ।

२ जिसका कोई दास्त न हो ।

अभिन्नभूत-वि० विपक्ष। वैरी। अहितकारी।  
अभिय-सज्ञा पु० मुधा। अमृत।

अभिय-मूरि-सज्ञा स्त्री० सजीवनी जड़ी।  
अमृतमूटी।

अभिरती-सज्ञा स्त्री० दे० "इमरती"। १.  
एक प्रकार की मिठाई। २. एक प्रकार का  
जल पीने का धातु का गिलास।

अमिल-वि० १. जो मिलने योग्य न हो।  
अप्राप्य। २. बेजोड़। बेमेल। ३. जिससे  
मेल-जोल न हो। ४. अँचा-नीचा। जवड़-  
सावड़।

अमिली-सज्ञा स्त्री० १. दे० "इमली"।  
२. विरोध। मन-मुटाव। मेल या  
अनुकूलता न होना।

अभिधराशि-सज्ञा स्त्री० इकाई से लेकर  
नौ तक के अंक। वह राशि जो इकाई से  
प्रकट की जाय।

अभिधित-वि० १. खालिस। २. जिसमें मेल  
न हो। जो मिलाया न गया हो।

अभिय-सज्ञा पु० १. बहाना या छल का  
न होना। २. दे० "आभिय"।

वि० निरच्छल। जो बहानेबाज न हो।  
अमी\*-सज्ञा पु० दे० "अभिय"। अमृत।

मुधा। आमव।  
वि० रोगी। पीडित।

अमीकर\*-सज्ञा पु० चद्रमा।

अमोत\*-सज्ञा पु० वैरी। शत्रु।

अमीन-सज्ञा पु० [अ०] वह अदालती  
कर्मचारी जिसके सुपुर्दे बाहर का पैमाइशी  
काम हो।

अमीर-सज्ञा पु० [अ०] १. धनाढ्य।  
धनधान्य। २. सरदार। कर्षाधिकार रखने-  
वाला। ३. उदार। ४. अफगानिस्तान के  
राजा की उपाधि।

अमीराना-वि० अमीरो के समान। जिससे  
अमीरी प्रसूत होती हो।

अमीरी-सज्ञा स्त्री० १. धन-सम्पन्नता।  
धनाढ्यता। २. उदारता।

वि० अमीर के समान। जैसे अमीरी ठाट।

अमृत-वि० १. वह। कोई व्यक्ति। ऐसा  
एमा। फलाँ। (इस शब्द का प्रयोग किसी

नाम के म्यान पर करते हैं।) २. बुद्धिम्य  
व्यक्ति। ३. सम्मुखगत।

अमृत्र-अव्य० परकाल। परलोक।

अमृत्त-वि० निराकार। बिना आकार के  
गज्ञा पु० १. ईश्वर। परमेश्वर। २. जीव।

३. आत्मा। ४. दिशा। आकाश। ५. काल।  
६. वायु।

अमृत्ति-वि० आकृति-रहित। निराकार।  
विष्णु।

अमृत्तिमान्-वि० १. जिसकी मृत्ति न हो। निरा-  
कार। २. जो दिखलाई न पड़े। अप्रत्यक्ष।

अमूल-वि० मूल-रहित। निर्मूल। जड़-शून्य।  
जड़-रहित। प्रमाण-रहित।

सज्ञा पु० प्रवृत्ति। (साग्य)

अमूलक-वि० १. मूल-रहित। निर्मूल।  
जिसकी कोई जड़ न हो। २. असत्य। मिथ्या।

३. अप्रामाणिक।

अमृत्य-वि० १. जिसका मृत्यु न हो।  
अनमोल। २. बहुमूल्य। बेशकीमती। ३.  
उत्तम। बढ़िया। श्रेष्ठ।

अमृत-सज्ञा पु० १. मुधा। वह वस्तु जिसके  
पीने से जीव अमर हो जाता है। पीयूष।

२. घी। ३. जल। ४. अन्न। ५. यज्ञ के  
पीछे की वची हुई सामग्री। ६. दूध।

७. औषध। ८. विप। ९. मुक्ति।  
१०. सुन्दर। प्रिय। ११. महादेव का

एक नाम। १२. ४ की सह्या। १३. बिना  
मांगे मिला दान। १४. मोती। १५. एक

छद। १६. सोना। १७. धन। १८. पारा।  
१९. बछनाग। २०. मीठी वस्तु। २१.

अवाचित वस्तु। २२. अक्षणीय द्रव्य। सुस्वादु  
द्रव्य। २३. शरद। २४. जीवित। २५.

धन्वन्तरि। २६. वाराहीकन्द। २७. वनमूग।  
२८. देवता।

वि० मरणरहित।

अमृतकर-सज्ञा पु० निशाकर। चद्रमा।

अमृतकुण्ड-सज्ञा पु० अमृत का पात्र।

अमृतकुडली-सज्ञा स्त्री० १. छद-विशेष।  
२. चाजा-विशेष।

अमृतगति-गज्ञा स्त्री० छद-विशेष।  
अमृतजटा-सज्ञा स्त्री० जटानीसी।

अमृततरंगिणी-सज्ञा स्त्री० १ ज्योत्स्ना।  
 २ प्रकाशमयी रात्रि।  
 अमृतत्व-सज्ञा पु० १ न मरना। मरण का  
 अभाव। २ मुक्ति। मोक्ष।  
 अमृतदान-सज्ञा पु० १ भोजन की चीजें  
 रखने का एक प्रकार का ढकनेदार वर्तन।  
 २ अचार रखने का वर्तन विशेष।  
 अमृतदोधिति-सज्ञा पु० चन्द्रमा। शशांक।  
 शशधर।  
 अमृतधारा-सज्ञा स्त्री० १ औषध-विशेष।  
 २ वर्णवत् विशेष।  
 अमृतध्वनि-सज्ञा स्त्री० एक २४ मात्राओं  
 का दौगिक छंद।  
 अमृतफल-सज्ञा पु० पटोल। परवर।  
 अमृतफला-सज्ञा स्त्री० १ दाख। अमूर।  
 २ आमलकी।  
 अमृतबान-सज्ञा पु० लाह का रोगन किया  
 हुआ मिट्टी का बरतन जिसमें अचार  
 कौरह रखा जाता है।  
 अमृतमूरि-सज्ञा स्त्री० सजीवनी बूटी।  
 अमरमूरि।  
 अमृतयोग-सज्ञा पु० एक शुभ फल-दायक  
 योग। फलित ज्योतिष।  
 अमृतरस-सज्ञा पु० सुधा। अमृत।  
 अमृतलता-सज्ञा स्त्री० गिलोय। गुर्चं।  
 अमृतवल्ली-सज्ञा स्त्री० गुर्चं लता।  
 अमृतविन्दु-सज्ञा पु० एक उपनिषद् का नाम।  
 अमृतसजीवनी-वि० दे० "मृतसजीवनी"।  
 अमृतसम्भवा-सज्ञा स्त्री० गुर्चं।  
 अमृतसार-सज्ञा स्त्री० अमूर।  
 सज्ञा पु० १ घी। २ मक्खन। नवनीत।  
 अमृतलवा-सज्ञा स्त्री० कदली वृक्ष। लता  
 विशेष।  
 अमृताशु-सज्ञा पु० चद्रमा।  
 अमृता-सज्ञा स्त्री० १ गुर्चं। २ दूर्वा।  
 ३ तुलसी। ४ मदिरा। ५ आमलकी।  
 हरीतकी। ६ पिप्पली।  
 अमृती-सज्ञा स्त्री० लुटिया। मिठाई विशेष।  
 अमृष्य-वि० अमय। अक्षन्तञ्।  
 अमेजना\*-वि० म० मिजाना। मिलावट  
 करना।

अमेधा-वि० मूर्ख। मूढ़। अयोध।  
 अमेध्य-सज्ञा पु० अशुद्ध पदार्थ। अपवित्र  
 वस्तु। विष्ठा, मल-मूत्र आदि।  
 वि० १ जो वस्तु यज्ञ में काम न आ सके।  
 जैसे, पशुओं में कुत्ता और अज्ञेय में मसूर,  
 उर्द आदि। २ जो यज्ञ कराने योग्य न हो।  
 ३ अशुद्ध। अपवित्र।  
 अमेय-वि० १ मीमारहित। वेहद। २ अज्ञेय।  
 जो जाना न जा सके।  
 अमेरिका-सज्ञा पु० पश्चिमी गोलार्द्ध का  
 एक महादेश, जो उत्तरी और दक्षिणी दो  
 भागों में है।  
 अमेल-वि० असम्बद्ध। बेमेल। जो एक  
 तरह या एक समान न हो। जिसमें मेल-  
 मिलाव न हो।  
 अमोला-सज्ञा पु० आम का नया निवलता  
 हुआ फल।  
 अमोही-वि० १ मोहरहित। निर्मोही। निष्ठुर।  
 २ विरक्त।  
 अमोआ-सज्ञा पु० १ आम के सूखे रस का-  
 सा रस जो कई प्रकार का होता है, जैसे  
 पीला, सुनहरा, मूँगिया, इत्यादि। २  
 इस रस का कपड़ा।  
 अम्मा-सज्ञा स्त्री० माँ। माता।  
 अम्माभा-सज्ञा पु० एक प्रकार का बड़ा साफ।  
 अम्मारो-सज्ञा स्त्री० दे० "अवारी"। हाथी  
 का होदा।  
 अम्ल-सज्ञा पु० १ खटाई। २ तेजाब।  
 वि० खट्टा। तुर्श।  
 अम्लजन-सज्ञा पु० दे० "आमिसजन"।  
 अम्लपित्त-सज्ञा पु० एक रोग जिसमें जो कुछ  
 भोजन किया जाता है, सब पित्त के दोष  
 से खट्टा हो जाता है।  
 अम्लवेत-सज्ञा पु० अमलवेत।  
 अम्लसार-सज्ञा पु० १ बाँजी। २ शूक।  
 ३ अमलवेत। ४ हिताल। ५ आमलासार  
 गन्धक।  
 अम्लान-वि० १ जो उदाम न हो। मलिनता-  
 रहित। २ साफ। म्यच्छ। निर्मल। ३  
 हृष्ट। ताजा।  
 अम्लानता-सज्ञा स्त्री० हृष्टभाव। प्रसन्नता।

अम्ली-सज्ञा स्त्री० अमिली। इमली।  
 अम्होरी या अम्होरी-सज्ञा स्त्री० बहूत छोटी-छोटी फुसियाँ जो गर्मी के दिना में पानी के कारण दरीर में निकलती हैं। अम्होरी। अँधोरा। घमोरी।  
 अय-सज्ञा पु० १ लोहा। २ हथियार। अस्त्र-शस्त्र ३ आग।  
 अयत्न-सज्ञा पु० १ औदास्य। २ अयतन। ३ असत्वार।  
 अयया-वि० १ झूठ। मिथ्या। अतय्य। २ अयोग्य।  
 अययार्थ-सज्ञा पु० मिथ्या। अन्याय। अन्धेर।  
 अय पिण्ड-सज्ञा पु० लोह-पिण्ड। लोहे का गोला।  
 अयन-सज्ञा पु० १ चाल। गति-गमन। २ वर्ष का आधा भाग। ३ आश्रय। ४ मार्ग। ५ सूर्य या चन्द्रमा की दक्षिण और उत्तर की गति या प्रवृत्ति जिसको उत्तरायण और दक्षिणायन कहते हैं। ६ बारह राशियाँ के चक्र का आधा। ७ राशिचक्र की गति। ८ ज्योतिषशास्त्र। ९ एक प्रकार का सेनानिवेश (ववायद)। १० आश्रम। ११ स्थान। १२ घर। १३. काल। समय। १४ अश। १५ एक यज्ञ जा अयन के प्रारम्भ में होता था। १६ गाय या भैंस के थन का वह ऊपरी भाग जिसमें दूध रहता है।  
 अयनकाल-सज्ञा पु० १ छ महीने का काल। २ वह काल जा एक अयन में लगे।  
 अयनसक्रम-सज्ञा पु० मकर और कर्क की मन्त्राति। अयन-सन्त्राति।  
 अयनसक्राति-सज्ञा स्त्री० दे० "अयनसक्रम"।  
 अयनसपात-सज्ञा पु० अयनाशी का योग। दे० "अयनाश"।  
 अयनाश-सज्ञा पु० सूर्य की गति विशेष के काल का भाग। अयनभाग।  
 अयश-सज्ञा पु० १ बुराई। अपयश। निंदा। २ कलक। ३ अस्वाति।  
 अयशस्कर-वि० दुर्नामजनक। अस्वानिष्कर।  
 अयशी-वि० बदनाम। अस्वानियुक्त। प्रतिष्ठा रहित।  
 अयस-सज्ञा पु० लाहा।

अयस्कांत-सज्ञा पु० १ चुपक पत्थर। २ मणि विशेष।  
 अयाचक-वि० १ न माँगनेवाला। जो माँगे नहीं। याचाग्रहि। अमिधुक्। २ सतुष्ट ३ पूर्णकाम।  
 अपाचित-वि० बिना माँगा हुआ। जि याचा के प्राप्त। अप्रापित।  
 अपाचित श्रत-वि० बिना माँगे हुए प्राप्त पदार्थों से जीविका निर्वाह करनेवाला।  
 अपाची-वि० १ अयाचक। न माँगनेवाला। २ धनी। सपन्न।  
 अपाच्य-वि० १ भरा-पूरा। जिसे माँगने की आवश्यकता न हो। २ तृप्त। सतुष्ट।  
 अपान-वि० दे० "अजान"। १ पैदल। बिना सवारी का। २ लडवाई। मूर्खता। अनजानपन।  
 अपानप, अपानपन-सज्ञा पु० १ अजता। वैसमशी २। लडकपन। मूर्खता। ३ भोलापन। सीधापन।  
 अपाना-वि० भोला। अज्ञ। मूर्ख।  
 अपानी\*-वि० [पु० अपाना] अज्ञानी। मूर्ख। बुद्धिहीन।  
 अपाल-सज्ञा पु० [पा०] वैसर-घोड़े और सिंह आदि की गर्दन के बाल।  
 अपास-क्रि० वि० बिना परिश्रम के। बिना मेहनत के। अनापास।  
 अपि-अध्य० हे। अय। अरे। अरी। सवोधन का शब्द।  
 अपुक्त-वि० १ असगत। अयोग्य। अनुपयुक्त। अनुचित। बेठीक। २ अमिश्रित। अलग। असमुक्त। ३ आपद्ग्रस्त। ४ अनमना। उदास। ५ असयत्न। ६ युक्तिशून्य।  
 अपुषित-सज्ञा स्त्री० १ गडबडी। युक्ति का न होना। असबद्धता। २ योग न देना। अप्रवृत्ति।  
 आयु, आयुस्-वि० १ विपन्न। ताब। २ एकाकी। अकेला।  
 अपुत-सज्ञा पु० दस हजार की सख्या। वि० बिना जोड़ का।  
 अपुत्-वि० अपुक्त। अमिलित। अमिश्रित।  
 अपुष-सज्ञा पु० आयुध। अस्त्र-शस्त्र। हथियार।

अधे-अव्य० सम्बोधनार्थ। विपादार्थ। स्मर-  
णार्थ। कोपार्थ।

अयोग-सज्ञा पु० १. योग का न होना।  
विश्लेष। विच्छेद। अनैक्य। २. दुरा योग।  
फलित ज्योतिष के अनुसार दुष्ट ग्रह-नक्षत्रादि  
का पटना। ३. दुरात्म्य। कुकाल। ४.  
सकट। कठिनाई। ५. वह वाक्य जिसका  
अर्थ सुगमता से न लगे। कूट। ६  
अप्राप्ति। ७. असम्भव।

वि० दुरा। अप्रसस्त। अनुचित। अयोग्य।  
अयोग्य-सज्ञा पु० शूद्र के औरस से वैश्या  
पत्न्या के गर्भ से जात सन्तान। जाति-  
विशेष।

अयोग्य-वि० १ अकुशल। जो योग्य न हो।  
अनुपयुक्त। २ निकम्मा। नालायक।  
अपान। ३ अनुचित। ना-मुनासिव।  
४ चेकाम।

अयोधन-सज्ञा पु० एकत्रीभूत लोह-पुज।  
निहाली। हथोडा। निहाई।  
अयोध्या-सज्ञा स्त्री० अवधपुरी। कोशल।  
अयोध्यानाथ-सज्ञा पु० अयोध्याधिपति।  
अयोनि-वि० १ अजन्मा। जो उत्पन्न न  
हुआ हो। २ नित्य।

सज्ञा पु० जीव-विशेष। योनिजात मित्र।  
वृक्ष आदि।

अरड-सज्ञा पु० दे० "एरड", "रेड"।  
अण्डी वृक्ष।

अरभ\*-सज्ञा पु० १ दे० "आरभ"। २  
शोर। हलचल। ३ शब्द। नाद।

अरभना\*-क्रि० अ० १ बोलना। नाद करना।  
२ शोर करना। ३ आरभ होना।  
शुरू होना।

क्रि० स० आरभ करना।

अर\*-सज्ञा पु० अड। जिद।

अरई\*-सज्ञा पु० मयानी। मई पनैठी  
जिसमें बैलो आदि के लिए लोहा लगा  
रहता है।

अरक-सज्ञा पु० [ अ० ] १ आसव। किसी  
पदार्थ का रस जो ममके से खींचने  
से निकले। २ रस। तत्त्व। ३  
पसीना।

अरकना-क्रि० अ० १ टपारना। अरराकर  
गिरना। २. फटना। दरकना।

अरक नाना-सज्ञा पु० अरक विशेष जो  
पुदीना और सिरका मिलाकर खींचने से  
बनता है।

अरकना-अरकना\*-क्रि० अ० खींचा-तानी  
करना। इधर-उधर करना।

अरकाटी-सज्ञा पु० बूली भरती कराकर  
बाहर टापुओं में भजनेवाला।

अरग-सज्ञा पु० [ देश० ] सुगंध का झोका।

अरगजा-सज्ञा पु० एक सुगंधित द्रव्य जो  
केसर, चंदन, कपूर आदि को मिलाने से  
बनता है। दे० "अर्गजा"।

अरगजी-सज्ञा पु० रग-विशेष जो अरगजे  
की तरह होता है।

अरगद\*-वि० १ अलग। पृथक्। भिन्न।  
२ निराला।

अरगनी-सज्ञा स्त्री० दे० "अलगनी"। बांस,  
लकड़ी या रस्सी जो कपड़े आदि ढाँगने  
के लिए लटकवाई जाय।

अरगवानी-सज्ञा पु० [ फा० ] लाल रंग।  
नि० १ लाल। २ बैंगनी।

अरगल-सज्ञा पु० दे० "अर्गल"।

अरगला-सज्ञा पु० १ अर्गल। व्योडा। २  
सयम। रोक।

अरगना\*-क्रि० अ० १ पृथक् या अलग  
होना। २ मौन होना। सन्नाटा खींचना।  
चुप्पी साधना।

क्रि० स० छाँटना। अलग करना।

अरप-सज्ञा पु० दे० "अर्प"। अर्घ्य।  
पोहशोपचार में से पूजन का एक  
उपचार।

अरपा-सज्ञा पु० [ स० अर्प ] १ एक गाव-  
दुम पाय जिसमें अरध का जल रखकर  
दिया जाता है। २ जलधरी। वह आधार  
जिसमें शिवालिंग स्थापित किया जाता है।  
जलहरी। ३ चैबना। कुएँ की जगह पर  
पानी के लिए बना हुआ रास्ता।

अरधान\*-सज्ञा पु० मोहक। गंध।

अरचन\*-सज्ञा पु० दे० "अर्चन"। १ पूजन।

अरघना\*—त्रि० म० पूजा करना।

अरज—सज्ञा स्त्री० [ अ० अर्ज ] १ निवेदन।  
घिनती। घिनप। २ चौड़ाई।

अरजना\*—त्रि० स० अर्ज करना। निवेदन  
करना।

अरजल—सज्ञा पु० १ वह घोड़ा जिमसे  
दोना पिछले पैर और अगला दाहिना पैर  
राफेद या एक रंग के ह। (ऐसी)। २  
वर्णशेखर। ३ नीच जाति का पुरुष।

अरजी—सज्ञा स्त्री० [ अ० अर्जी ] प्रार्थना-  
पत्र। आवेदन या निवेदनपत्र।

†[अ० अर्ज] प्रार्थी। अर्ज करनेवाला।

अरक्षना—त्रि० अ० उल्लङ्घना। फेंकना। यज्ञना।

अरणा—सज्ञा स्त्री० जगली भेसा।

अरणि, अरणी—सज्ञा स्त्री० १ वृक्ष। २  
गनियार। अंग्रेयू। ३ सूर्य। ४ पीपल या  
शमी काष्ठ का बना हुआ यत्र विशेष जिससे  
यज्ञो में भाग निकालते हैं। अग्निमय।

अरण्य—सज्ञा पु० १ वानन। विपिन। वन।  
जंगल। २ कायफल। ३ सन्यासियों के  
दस भेदा में स एक।

अरण्यरोदन—सज्ञा पु० १ निष्फल रोना।  
२ ऐसी बात जिसपर कोई ध्यान न दे।  
३ ऐसी पुकार जिसे सुननेवाला कोई न हा।

अरण्यवासी—सज्ञा पु० वनस्थ। वनवासी।  
तपस्वी। मुनि।

अरति—सज्ञा स्त्री० चित्त का न लगना।  
विराग। बेचैनी।

अरय\*—सज्ञा पु० दे० "अर्थ"।

अरयाना\*—त्रि० स० समझाना। विवरण  
करना। व्याख्या करना।

अरयी—सज्ञा स्त्री० टिखटी। सीढ़ी के आकार  
का ढाँचा जिसपर मुर्द को रखकर श्मशान  
छे जाते हैं।

सज्ञा पु० पैदल। जो रखी न हो।

वि० दे० "अर्थी"।

अरदना—त्रि० स० १ चुचलना। रौदना।  
२ नाच या वध करना।

अरदली—सज्ञा पु० [ अग्ने० आर्दरली ] साथ  
में या दरवाजे पर रहनेवाला चपरासी।

अरदास—सज्ञा स्त्री० [ फा० अर्जदास्त ]

१ नम्र। निवेदन के साथ भेंट। २ देवता  
के निमित्त भेंट निवाल्ना। ३ नानक  
पथिया के विशेष ध्येयवाक्य का शब्द।

अरप्रग—सज्ञा पु० दे० "अर्द्धांग"। आधा अंग  
अरप्रगी\*—सज्ञा पु० दे० "अर्द्धांगी"।

अरव\*—वि० दे० "अर्थ"। आधा।

त्रि० वि० भीतर। अंदर।

अरशन—वि० बिना दाँत का। दे० "अर्द्धन"।

अरन\*—सज्ञा पु० दे० "अरण्य"। वन।

अरना—सज्ञा पु० जगली भेसा। अन्ना भेसा।  
\*त्रि० अ० दे० "अरना"।

अरनि\*—सज्ञा स्त्री० दे० "अर्द्धनि"।

अरनी—सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की लकड़ी  
जिसे रगड़कर आग पैदा करते हैं। २  
छोटा वृक्ष-विशेष जो हिमालय पर होता  
है। ३ यज्ञ का अग्नि-मयन काष्ठ।

वि० दे० "अरणि"।

अरपन\*—सज्ञा पु० दे० "अर्पण"।

अरपना\*—क्रि० स० अर्पण करना।

अरब—सज्ञा पु० १ सौ करोड़। २ इस म्यान  
की सख्या। ३ घोड़ा। ४ इद्र।

सज्ञा पु० [ अ० ] १ एशिया खंड का एक  
मरदेश। २ अरबी घोड़ा।

अरबर\*—वि० दे० "अर्द्धवह"।

अरबराना\*—त्रि० अ० १ हड़बड़ाना। धव-  
राना। व्याकुल होना। पिचलित होना।  
२ चलने में लड़खलाना।

अरबरी\*—सज्ञा स्त्री० धबराहट। हड़बड़ी।  
व्याकुलता।

अरबी—वि० अरब देश में उत्पन्न।

सज्ञा पु० १ अरबी घोड़ा। ऐराकी। तामी।

२ अरबी ऊँट। ३ ताशा। अरबी बाजा।

अरबीला\*—वि० भोलाभाला। सीधा।

अरभक\*—वि० दे० "अर्भक"।

अरमान—सज्ञा पु० [ तु० ] लालसा। इच्छा।  
हीसला। चाह।

अरर—ज्व्य० अत्यंत व्यग्रता तथा अचभे का  
सूचक शब्द।

अरराना—त्रि० अ० १ अररर शब्द करना।  
टटने या गिरने का शब्द करना। २ भहरा  
पडना। एवाएग गिरना।

अरवा-सज्ञा पु० वह चावल जो कच्चे अर्थात् बिना उबाले धान से निकाला जाय।  
 सज्ञा पु० ताखा। आला।  
 अरविन्द-सज्ञा पु० १ कमल। पकज। उत्पल। २ सारस।  
 अरबी-सज्ञा स्त्री० कद विशेष जो तरकारी के रूप में खाया जाता है। धुइयाँ। कच्ची। बटा।  
 अरस-वि० १ बिना रस का। नीरस। फीका। २ अनाड़ी। गंवार। मूख। उजड़।  
 सज्ञा पु० आलस्य।  
 सज्ञा पु० [अ० अर] १ छन। २ धरहरा। ३ महल।  
 अरसटा-सज्ञा पु० आँकाव। निरख। परख।  
 अरसन-परसन-मज्ञा पु० एक प्रकार का लटको वा खेल। आँखमिचीनी।  
 अरसना\*-क्रि० अ० डीला पडना। मद होना। निथिल पडना।  
 अरसना-परसना-क्रि० स० मिलना। भेंटना। आलिंगन करना।  
 अरस परस-सज्ञा पु० आँखमिचीनी। लडको का एक खेल। छुआ छुई।  
 सज्ञा पु० देखना।  
 अरसा-सज्ञा पु० १ काल। समय। २ विलंब। देर। अतिकाल।  
 अरसात-सज्ञा पु० २४ अक्षरों का वृत्त-विशेष।  
 अरसान-सज्ञा पु० वृत्त-विशेष जिसमें २४ अक्षर, ७ भगण और १ रगण होता है।  
 अरसाना\*-क्रि० अ० १ अरसाना। २ निद्राग्रस्त होना।  
 अरसिक-वि० अरसज्ञ। अविदग्ध।  
 अरसी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "अलसी"। तीसो।  
 अरसीला\*-वि० आलसी। आलस्य से भरा।  
 अरसीही-वि० दे० "अलसीही"। आलस्य से पूर्ण।  
 अरहट-मज्ञा पु० रेहटा। रहट नामक यंत्र जिसमें कुएँ से पानी नियालते हैं। पानी का चरखा।  
 अरहन-सज्ञा पु० रेहन। वह आटा या बेसन जो तरकारी आदि पकाने (प्रमय) उममें मिलाया जाता है।

अरहना\*-सज्ञा स्त्री० पूजा। अर्चा।  
 अरहर-सज्ञा स्त्री० दाल विशेष। तुवरी। तुअर। तूर।  
 अराक-सज्ञा पु० [अ० इराक] १ देश-विशेष जो अरब में है। २ वहाँ का घोड़ा।  
 अराज-वि० १ बिना राजा का। २ बिना क्षत्रिय का।  
 सज्ञा पु० हलचल। अराजकता। शासन-विप्लव।  
 अराजक-वि० जहाँ राजा न हो। राजसून्य। राजाहीन। बिना राजा का।  
 अराजकता-सज्ञा स्त्री० १ राजा का अभाव। २ शासन का अभाव। ३ हलचल। असाति। अधेर।  
 अराति-सज्ञा पु० १ शत्रु। रिपु। वैरी। २ काम, लोभ आदि विकार। ३ छ की सख्या।  
 अराधन-सज्ञा पु० दे० "आराधन"।  
 अराधना-क्रि० स० १ आराधना करना। पूजना। सेवा करना। २ मंत्र जपना। ध्यान करना।  
 अराधी-वि० आराधना या पूजा करनेवाला। पूजक।  
 अराधा-सज्ञा पु० [अ०] १ रथ। गाड़ी। २ चरख। वह गाड़ी जिस पर तोप लादी जाय।  
 अराम-सज्ञा पु० दे० "आराम"।  
 अरारा-मज्ञा पु० अरराने का शब्द। ददोरा।  
 अराहट-मज्ञा पु० [अ० एरोहट] पीछा-विशेष जिसके कद का आटा तीखुर की तरह काम में आता है।  
 अराहोट-सज्ञा पु० दे० "अराहट"। पदार्थ-विशेष।  
 अराल-वि० टेढ़ा। कुटिल।  
 सज्ञा पु० १ राल। २ मन्त्र हाथी।  
 अराबल-सज्ञा पु० दे० "हराबल"।  
 अरि-सज्ञा पु० १ शत्रु। रिपु। वैरी। २ चक्र। ३ काम, लोभ आदि। ४ छ की सख्या। ५ लग्न में छटा स्थान। (ज्यो०) ६ विद् सदिर। दुर्गंधित घर।  
 अरिन्दम-वि० शत्रुजयी। मोड़ा। बली। शत्रुओं को दमन करनेवाला।

अरिगण्ड-गंगा पु० धनुगमह। धनु राज्य।  
अरिगंगा\*-त्रि० ग० निरुगंगा करना। अरे  
बहुर बालना।

अरिह-सज्ञा पु० साहज मायाया या छद-  
विनोप।

अरिषड्वयं-सज्ञा पु० छ धनुजा का समुदाय।  
काम, प्रीय, लोभ, मद, माह, और गमर।

अरिष्ट-सज्ञा पु० १ पीडा। दुःख। २, तत्र।  
३ विषा। ४ विपत्ति। आपत्ति। ५ अमगल।

दुर्भाग्य। ६ बुरा प्रवृत्त। ७ दुष्ट प्रहा  
का योग। मरणकारक योग। ८ मद्य-

विनोप जा धूप में औषधिया का समीर  
उठाकर बनता है। ९ वाडा। १० धूपभा-

सुग। ११ अनिष्ट सूचन उत्पत्ति, जैसे  
भूषण। १२ मृतिवागह। सौरी।

वि० १ अविनाशी। दृढ। २ शुभ। ३  
अशुभ। बुरा।

अरिष्टनेमि-सज्ञा पु० १ वर्यप प्रजापति  
का एक नाम। २ वर्यपजी का एक पुत्र

जो विनता से स्नान हुआ था। ३ राजा  
सगर का समुद्र का नाम। ४ २२व तीर्थंकर

का नाम (जैन)।

अरिह-सज्ञा पु० १ शत्रुघ्न। २ दे०  
'अरहर'। वि० शत्रु को मारनेवाला।

अरिह-वि० जो शत्रु का नाश करे।  
सज्ञा पु० लक्ष्मण के छोटे भाई शत्रुघ्न।

अरी-अव्य० स्त्रियों के लिए सर्वोपन।  
अरीठा-सज्ञा पु० रीठा।

अरुबुद्-वि० १ भर्मभेदी। भर्म तक को कष्ट  
पहुँचानेवाला। २ बडोर। वक्ता। ३ नाश

करनेवाला। हानिकारक। अपथ्य।  
अरुषती-सज्ञा स्त्री० १ वशिष्ठ मुनि की

स्त्री। २ दक्ष की एक कन्या जो धम से  
व्याही गई थी। ३ एक बहुत छोटा

तारा जो राक्षसिमंडलस्थ वशिष्ठ के पास  
पड़ता है।

अरु-सयो० दे० 'और'। फिर। पुन।  
अरुई-सज्ञा स्त्री दे० 'अरवी'। गभवती स्त्री

का चिह्न। उसकी अरुषि।  
अरुचि-सज्ञा स्त्री० १ अनिच्छा। रुचि का न

होना। २ मन्दाग्नि रोग जिसमें भोजन

की इच्छा नहीं होती। ३ जी मन्त्राना  
४ नपरन। घृणा। ५ अथवा।

अरुचि-वि० जो अच्छा न लगे। जो रुचि  
कर न हो।

अरुज-वि० १ जो बीमार न हो। नीरोग। नेप  
से मुक्त। पीडा-रहित (पीडा आदि)। २ प्रसन्न

अरुणा-वि० अ० दे० "उल्लाना"। शगडना।  
अरुणा-वि० ग० दे० १ "उल्लाना"।

पेंमाना। २ कांसना।  
अरुण-वि० [स्त्री० अरुणा] १ लाल। २,

रक्त। ३ वृक्ष। ४ अव्ययन राग। ५ ईषद्वत  
वर्ण। ६ सध्या-राग। ७ शब्द-रहित।

सज्ञा पु० १ सूर्य। २ सूर्य का सारथी।  
३ गुड। ४ लालिमा जा मध्या

मयेर पश्चिम में दिखलाई पड़ती है  
५ कुट्ट राग विशेष। ६ गहरा लाल रंग

७ कुमकुम। ८ सिंदूर। ९ देश विशेष  
१० माघ के महीने का सूर्य। ११ गूंगा।

१२ जटायु के पिता का नाम। १३ सोना।  
१४ लाल नामक रत्न।

अरुण कमल-सज्ञा पु० रक्त कमल।  
अरुणचन्द्र-सज्ञा पु० मुर्गा। कुक्कुट।

अरुणप्रिया-सज्ञा स्त्री० १ छाया और सज्ञा,  
सूर्य की स्त्रियाँ। २ एक अप्सरा का नाम।

अरुणलोचन-सज्ञा पु० १ लाल नेत्र। २  
वपौन। कवूतर। ३ कौविल।

अरुणशिला-सज्ञा पु० मुर्गा।  
अरुणसारथि-सज्ञा पु० सूर्य। भानु। दिवाकर।

अरुणाई-सज्ञा स्त्री० १ लालिमा। रक्तता।  
लाली। २ लाल रंग।

अरुणाभ-वि० लाल आभा से युक्त। लाली  
लिय हुए।

अरुणिमा-सज्ञा स्त्री० लालिमा। सुर्खी।  
अरुणोदय-सज्ञा पु० उषा-काल। ब्राह्म

मुहूर्त। तडका। भोर। विहान। प्रात-  
काल। प्रभात।

अरुणोपल-सज्ञा पु० १ पद्मराग मणि विशेष।  
२ लाल।

अरुण\*-वि० दे० "अरुण"।  
अरुणाता\*-त्रि० श० लाल होना।  
क्रि० स० लाल करना।

अक्षराना-वि० १ लाल। २ लाल रंग का।  
 अक्षराना\*-क्रि० अ० बल खाना। लनकना।  
 मुडना।  
 अक्षराना-सज्ञा पु० लता-विशेष जिसका कद  
 खाया जाता है।  
 सज्ञा पु० उल्लू पक्षी। घुग्घू।  
 अक्षर-वि० दे० "आरुह"। १ सवार।  
 २ तत्पर।  
 अक्षराना-क्रि० अ० १ घाव होना। छिदना।  
 २ पीड़ित या दुखी होना।  
 अक्षर-वि० १ रूपरहित। निराकार। २  
 कुरूप। कुरिसत रूप। ३ कुथी।  
 अक्षर-अव्य० १ ए। ओ। सवोधन का शब्द।  
 २ एक आश्चर्यसूचक अव्यय। ३ नीच  
 सम्बोधन। ४ सन्तोष आह्वान।  
 अक्षर-सज्ञा पु० पाप। अपराध। दोष।  
 अक्षराना\*-क्रि० अ० रगडना।  
 अक्षर-वि० रोगरहित। भला। चंगा।  
 अक्षराना\*-क्रि० अ० १ दे० "आरोगना"।  
 (मेवाड़ी भाषा में) २ भोजन करना।  
 अक्षर-सज्ञा पु० दे० "अरुचि"।  
 अक्षर-सज्ञा पु० रोग-विशेष जिसमें अन्न  
 आदि का स्वाद नहीं मिलता। अरुचि रोग।  
 वि० जिसमें अरुचि हो। अरुचिकर।  
 अक्षर-सज्ञा पु० खनियों की एक शाखा जो  
 पंजाब में विशेष सख्या में पाई जाती है।  
 अक्षर-सज्ञा पु० दे० "आरोहण"।  
 अक्षर-क्रि० अ० [ दे० आरोहण ] चढ़ना।  
 अक्षर-सज्ञा पु० १ इद्रा। २ सूर्य। ३  
 ताँबा। ४ स्फटिक। ५ विष्णु। ६  
 पंडित। ७ मदार। आव। ८ बारह  
 की मरुगा। ९ रविवार। १० प्रशसा।  
 स्तुति। ११ विद्वान्। १२ बड़ा भाई।  
 सज्ञा पु० [ अ० ] उतारा या निचोड़ा  
 हुआ। रन। दे० "अरन"।  
 अक्षर-सज्ञा पु० १ सूर्य के पुत्र। यम।  
 २ अश्विनीकुमार। ३ धनि। ४ वर्ष।  
 ५ गुपीत।  
 अक्षर-सज्ञा स्त्री० १ यमुना। सूर्य की  
 गन्या। २ तानी।  
 अक्षर-सज्ञा स्त्री० सनपंता। सावधानी।

अक्षर-तनय-सज्ञा पु० १ कर्णराज। २ सावणि  
 मनु। ३ शनि। ४ यम।  
 अक्षराना-सज्ञा पु० [ अ० ] पुदीने का अक्षर  
 जो सिरके के साथ भवके में उतारा जाता है।  
 अक्षर-सज्ञा पु० १ राजा का प्रजा की  
 वृद्धि के लिए उससे कर, लेना। २ आरोग्य-  
 सप्तमी का व्रत। ३ सूर्य का व्रत।  
 अक्षर-सज्ञा पु० १ सूर्यकांत मणि।  
 २ पद्मराग। लाल।  
 अक्षर-दे० "अरगजा"।  
 अक्षर-सज्ञा पु० "अरगनी"।  
 अक्षर-सज्ञा पु० १ यह लकड़ी जिसे किवाड  
 बंद करके पीछे से आड़ी लगा देते हैं।  
 अरगल। अगरी। ब्योडा। हुडका। २  
 किवाड। ३ अवरोध। ४ कल्ल। ५  
 वे रंग-विरंग के बादल जो सूर्योदय या  
 सूर्यास्त के समय पूर्व या पश्चिम दिशा में  
 दिखाई पड़ते हैं। ६ मास। ७ एक नरक-  
 विशेष।  
 अक्षर-सज्ञा स्त्री० १ अरगल। अगरी।  
 २ ब्योडा। ३ किल्ली। किल्ली। सितविनी।  
 खील। ४ हाथी बाँधने की जंजीर। ५  
 एक स्तोत्र जिसका दुर्गासप्तशती के आदि  
 में पाठ करते हैं। मत्स्यसूक्त। ६ वायक।  
 ७ रवावट। अवरोध।  
 अक्षर-सज्ञा स्त्री० भेड़ की एक जाति जो  
 मिस्र, स्पाम आदि देशों में पाई जाती है।  
 अक्षर-सज्ञा पु० १ पौडशोपचार में से एक।  
 जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, तड़ुल और  
 जौ को मिलाकर देवता को अर्पण करना।  
 २ अर्घ देने का पदार्थ। ३ सामने जल  
 गिराना। जलदान। ४ अर्चनाना। हाथ  
 धोने के लिए जल देना। ५ भाव। मूल्य।  
 ६ भेट। ७ जल से सम्मानार्थ सींचना।  
 ८ शहद। मधु। ९ घोडा।  
 अक्षर-सज्ञा पु० १ ताँबे का बरतन जो दाग  
 से आकार का होता है और जिसमें सूर्य  
 आदि देवताओं को अर्घ्य दिया जाता है। अर्घा  
 अर्घा-सज्ञा पु० १ तपण का पात्र विशेष।  
 अर्घपात्र। २ जम्हरी।  
 अर्घ्य-वि० १ पूजनीय। २ बहुमूल्य। ३

पूजा में देने योग्य (जल, फूल, मूल आदि) ।  
४. भेंट देने योग्य ।

सज्ञा पु० १ दर्शनी । भेंट । उपहार । २. उत्तम । ३ गृह में आये हुए को जल आदि देना ।

अर्चक-वि० अर्चनाकारी । पूजा करनेवाला ।  
अर्चन-सज्ञा पु० १. पूजन । पूजा । २ सम्कार । आदर ।

अर्चनीय-वि० १. आदरणीय । २. वदनीय ।  
३. पूजनीय । पूजा करने योग्य ।

अर्चा-सज्ञा स्त्री० १. पूजा । २. सेवा । ३. आराधना । ४. प्रतिमा । ५. देवमूर्ति ।

अर्चि-सज्ञा स्त्री० १ सूर्य की किरण । २ अग्नि-  
शिखा । आग की लपट । आंच । ३ चमक ।  
ज्योति । ४ धूप ।

अर्चिन-वि० १. आराधित । पूजित । २.  
आदृत ।

अर्चिरादिमार्ग-सज्ञा पु० देवयान । उत्तर मार्ग ।  
वह मार्ग जिससे मृत जीव भगवान् के  
पास जाते हैं ।

अर्चिष्मान्-सज्ञा पु० १. अग्नि । २. सूर्य ।  
वि० दीप्तिमान् । देदीप्यमान ।

अर्च्य-सज्ञा पु० पूजनीय । पूज्य ।

अर्ज-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] विनय । विनती ।  
सज्ञा पु० १ आयत । २ चौड़ाई ।

अर्जक-सज्ञा पु० उपाज्जनकर्ता । कमानेवाला ।  
अर्जदत्त-सज्ञा स्त्री० प्रायश्चा-मन्त्र ।  
निवेदन-मन्त्र ।

अर्जन-सज्ञा पु० [ वि० अर्जनीय ] १  
कमाना । पैदा करना । लाभ । उपाजन ।

कमाई । प्राप्ति । २ संग्रह करना । संग्रह ।  
अर्जमा-सज्ञा पु० दे० "अर्जमा" ।

अर्जित-वि० १ इकट्ठा किया हुआ । संचित ।  
मनुहीन । २ कमाया हुआ । प्राप्त । लब्ध ।

अर्ज-सज्ञा स्त्री० आवेदन मा प्रायश्चा-मन्त्र ।  
अर्जोदावा-सज्ञा पु० वह प्रायश्चा-मन्त्र जो

अदालत में न्याय के लिए दिया जाय ।  
अर्जोद्योत-सज्ञा वि० दूसरी की अजियों  
लिखने का काम करनेवाला ।

अर्जन-सज्ञा पु० १. वृक्ष-विशेष । काहू ।  
२. पाँच पाँहवों में से तीसरे का नाम ।

३. हृह्यवनी राजा-विशेष । सहस्रार्जुन ।

४. मोर । ५. सफेद कनेर । ६. एक शीता  
वेटा । ७. इद्र । ८. चाँदी । ९. मोना ।

१०. आँख की कूली ।

अर्जुनी-सज्ञा स्त्री० १ सफेद रंग की गाय ।  
२. उषा । ३. वृद्धनी । ४. वग्नीया नदी ।

अर्ज-सज्ञा पु० १ अक्षर । वर्ण । जमे, पचावर्ण=

पचाक्षर । २. पानी । जल । ३. एक दडक  
वृत्त । ४. दालवृक्ष । ५. लहर । ६. नदी ।  
७. वाह ।

अर्णव-सज्ञा पु० १. सागर । समुद्र । २.  
सूर्य । ३. इद्र । ४ अतरिक्ष । ५ दडक  
वृत्त-विशेष । ६. चार की मर्या ।

अर्णवपोत-सज्ञा पु० जहाज । बृहत् नौका ।  
समुद्र-यान ।

अर्णवयान-सज्ञा पु० जहाज ।

अर्थ-सज्ञा पु० [ वि० अर्थी ] १. शब्द  
का अभिप्राय । २. शब्द की शक्ति ।

मानी । ३ प्रयोजन । अभिप्राय । मतलब ।  
४. इष्ट । काम । ५ हेतु । कारण । निमित्त ।

६ इन्द्रियो के विषय । ७ मपत्ति । धन ।  
अर्थकर-वि० [ स्त्री० अर्थकरी ] जिससे धन

उपाजन किया जाय । लाभकारी । जिससे धन  
पैदा हो । जैसे, अर्थकरी विद्या । लाभप्रद ।

अर्थगौरव-सज्ञा पु० अर्थ की गम्भीरता ।  
अर्थज्ञ-सज्ञा पु० भाव-मर्मज्ञ ।

अर्थज्ञान-सज्ञा पु० तात्पर्य ।  
अर्थत-अव्य० फलत । वस्तुतः ।

अर्थदंड-सज्ञा पु० वह धन जो किसी अपराध  
के दंड में अपनाधी में लिया जाय । धन का

दण्ड । जुर्माना ।  
अर्थदूषण-सज्ञा पु० अपरिमित व्यय ।

अर्थनाश-सज्ञा पु० १. निराश । २ धननाश ।  
अर्थनति-सज्ञा पु० १. कुबेर । २ अति धनी ।

राजा ।  
अर्थपर-वि० १. हृषण । २ व्यय । ३. शक्ति ।

अर्थपिशाच-वि० धनलोलुप । धन के सामने  
वर्तव्याकृतव्य पर ध्यान न देनेवाला ।

बहुत बड़ा कजूस ।  
अर्थप्रयोग-सज्ञा पु० १. वृद्धि । २ निमित्त ।

३. धनदान ।

अर्थप्राप्ति-सज्ञा स्त्री० धनलाभ। लभ्य।  
 अर्थमन्त्री-सज्ञा पु० दे० "अर्थसचिव"।  
 अर्थवत्त्व-वि० प्रयोजनार्हता। प्रयोजनीयता।  
 अर्थवाद-सज्ञा पु० १ वह वाक्य जिसमें  
 किसी विधि के करने की उत्तेजना पाई  
 जाय। २ वह वाक्य जो सिद्धांत के रूप  
 में न कहा जाय, केवल किसी ओर मूर्खों  
 का चित्त प्रवृत्त करने के लिए कहा जाय।  
 ३ काल्पनिक। ४ फलश्रुति। ५ स्तुति।  
 ६ प्रशंसा। ७ प्ररोचक वाक्य।  
 अर्थविज्ञान-सज्ञा पु० शब्दार्थज्ञान।  
 अर्थवृद्धि-सज्ञा स्त्री० धनवर्द्धन।  
 अर्थवेद-सज्ञा पु० शिल्पशास्त्र।  
 अर्थशाली-सज्ञा पु० धनशाली। धनवान्।  
 अर्थशास्त्र-सज्ञा पु० १ वह शास्त्र जिसमें  
 अर्थ की प्राप्ति, रक्षा और वृद्धि का विधान  
 हो। २ राज्य के प्रबंध, वृद्धि, रक्षा आदि  
 की विद्या। ३ धन उपाजक शास्त्र।  
 अर्थसचिव-सज्ञा पु० अर्थमन्त्री। वह मन्त्री जो  
 राज्य के आर्थिक विषयों की देख-रेख करे।  
 अर्थान्त-अव्य० १ मानी। मतलब यह कि।  
 २ विवरणगूचक शब्द। ३ वस्तुतः।  
 अर्थतः। फलतः।  
 अर्थान्तर-सज्ञा पु० अन्यार्थ। दूसरा अर्थ।  
 अर्थान्तरन्यास-सज्ञा पु० काव्यालंकार-विशेष  
 जिसमें सामान्य से विशेष का या विशेष  
 से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य-द्वारा  
 समर्थन किया जाय।  
 अर्थाना\*—त्रि० स० अर्थ करना। मतलब  
 लगाना।  
 अर्थोपपत्ति-सज्ञा पु० १ ऐसा प्रमाण जो  
 स्व-मन्यवद् दूसरी युक्ति को भी सिद्ध कर  
 दे (मीमांसा)। २ अर्थालंकार-विशेष  
 जिसमें एक बात ने कथन से दूसरी बात  
 की सिद्धि दिखलाई जाय।  
 अर्थालंकार-सज्ञा पु० अलंकार जिसमें अर्थ  
 का चमत्कार दिखाया जाय।  
 अर्थो-वि० [ स्त्री० अर्थिनी ] १ याचक।  
 जो इच्छा रखे। चाह रखनेवाला। २  
 प्रयोजनवाला। जिमकी गरज हो। सज्ञा  
 पु० १ मुद्दी। बादी। २ सेवक। ३ धनवान्।

सज्ञा स्त्री० दे० "अर्थी"। मुरदे की खाट।  
 अर्द्धम-सज्ञा पु० १ हिंसा। पीड़न। २ जाना।  
 ३ याचना करना। मांगना। ४ बेचनी।  
 ५ शिव का एक नाम। ६ भयकर पीड़ा।  
 अर्द्धना\*—त्रि० स० पीड़ित करना। सताना।  
 अर्द्धली-सज्ञा पु० दे० "अर्दली"।  
 अर्द्धावा-वि० मोटा आटा। दलिया।  
 अर्धित-वि० १ पीड़ित। यत्रणायुक्त। हिंसित।  
 २ याचित। ३ गत।  
 अर्द्ध-वि० १ आधा। २ तुल्य-विभाग।  
 सम विभाग। ३ मध्य।  
 अर्द्धचन्द्र-सज्ञा पु० १ चन्द्रखण्ड। अर्द्धेन्दु।  
 आधा चाँद। अष्टमी का चन्द्रमा। २ चंद्रिका।  
 मोरपख पर की आँख। ३ नखसत। ४  
 एक प्रकार का बाण। ५ चंद्रबिंदु। सानु-  
 नासिक का एक चिह्न। ६ एक प्रकार का  
 त्रिपुट्ट। ७ गरदगिया। गलहस्ता। निकाल  
 बाहर करने के लिए गले में हाथ लगाने  
 की मुद्रा। (अँगूठा और उसके बाद की  
 अँगुली को फैलाने से उक्त मुद्रा बनती है)।  
 अर्द्धजल-सज्ञा पु० मुमूर्षु को स्नान करा के  
 आधा जल में और आधा बाहर रखने की  
 क्रिया।  
 अर्द्धनयन-सज्ञा पु० देवताओं के मस्तक की  
 तीसरी आँख।  
 अर्द्धनारीश-सज्ञा पु० शिव। १ महादेव। हर-  
 गौरी। २ मूर्ति-विशेष।  
 अर्द्धनारीश्वर-सज्ञा पु० तत्र में शिव और  
 पार्वती का सम्मिलित रूप।  
 अर्द्धनिमेष-सज्ञा पु० आधा क्षण।  
 अर्द्धमागधी-सज्ञा स्त्री० १ प्राकृत का भेद-  
 विशेष। २ काशी और मथुरा के बीच  
 के देश की पुरानी भाषा।  
 अर्द्धरथ-सज्ञा पु० एक रथी से न्यून योद्धा।  
 अर्द्धरथी।  
 अर्द्धरात्र-सज्ञा पु० महानिशा। रात्रि का  
 आध भाग। आधी रात।  
 अर्द्धवृत्त-सज्ञा पु० मध्यबिन्दु से समान अन्तर  
 पर खींची हुई गोला रेखा का आधा अंश।  
 आधा गोला या वृत्त।  
 अर्द्धसमवृत्त-सज्ञा पु० वृत्त का आधा भाग।

अद्वैतमयूति-सज्ञा पु० छद्-विशेष जिसका पहला चरण तीसरे चरण के बराबर और दूसरा चौथे के बराबर हो। जैसे, दोहा और सोरठा।

अर्द्धांग-सज्ञा पु० १ आधा अंग। २ लक्ष्मी रोग जिसमें आधा अंग बेकाम हो जाता है। शीतान। रोग-विशेष। पालिज। ३ पक्षाघात।

अर्द्धांगिनी-सज्ञा स्त्री० पत्नी। स्त्री।

अर्द्धांगी-सज्ञा पु० शिव।

वि० अर्द्धांग-रोग-ग्रस्त।

अर्द्धांश-सज्ञा पु० अर्द्धभाग।

अर्द्धाली-सज्ञा स्त्री० चौपाई की दो पक्षियों में से एक। आपी चौपाई।

अर्द्धोदय-सज्ञा पु० पूर्व-विशेष जो उस दिन होता है जिस दिन माघ की अमावास्या रविवार की होती है और श्रवण नक्षत्र और व्यतीपात योग पड़ता है।

अर्धग\*—सज्ञा पु० दे० “अर्द्धांग”। आधा अंग।

अर्धंगी-सज्ञा पु० दे० “अर्द्धांगी”।

अर्धण-सज्ञा पु० [ वि० अपित ] १ भेंट। नजर। २ समर्पण। ३ दान देना। ४ स्वापन।

अर्पना-क्रि० स० दे० “अरपना”।

अर्ब-सज्ञा पु० दश कोटि। सख्या-विशेष।

अर्ब-सर्ब-असङ्ख्य।

अर्ब-दर्व\*-सज्ञा पु० सम्पत्ति। धन-दौलत।

अर्वाह-वि० १ प्राक्। पूर्व। आदि। २ अग्र। ३ निकट। ४ पश्चान्।

अर्बद-सज्ञा पु० १ दश कोटि। गणित में नव स्थान की सख्या। दस करोड़। २ अरावली पहाड़। आबू पर्वत। ३. राक्षस-विशेष। ४ बटु का पुत्र, सर्प-विशेष। ५ बादल। मेघ। ६ गन्ध जो दो मास का हो। ७ रोग विशेष जिसमें एक प्रकार की गाँठ शरीर में पड़ जाती है। बतौरी।

अर्भ-सज्ञा पु० १ बालन। २ शिशिर ऋतु। ३ शिष्य। ४ राग-मात।

अर्भक-वि० १ छोटा। २ अल्प। कम। ३ मर्ल। ४ पतला। दुबला। वृद्ध।

सज्ञा पु० लडका। बालक। शिशु।

अर्भ्य-सज्ञा पु० [ स्त्री० अर्भा, अर्भाणी, अर्भा ] १ ईश्वर। स्वामी। मालिक। २. वैद्य। वि० १ वक्रिया। श्रेष्ठ। उत्तम। २ दृष्टाल। ३ प्रिय। ४ निष्ठ।

अर्भ्यमा-सज्ञा पु० १. सूर्य। २. चारह आदित्यों में से एक। ३ पितर के गणा में से एक। ४ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र। ५ अर्क वृक्ष। मदार। ६ नित्य। ७ घनिष्ठ मित्र।

अर्भना-क्रि० अ० एक बेर आ पड़ना।

अर्भरा-सज्ञा पु० एक ही समय गिरना। अव-स्मात् गिरना।

अर्वाह-अव्य० १ पीछे। २ इधर। ३ पास। निवट। समीप।

अर्वाचीन-वि० १ बाद का। पीछे का। २ आधुनिक। प्राचीन का उल्टा। ३ नया। नवीन। नूतन। ४ अज्ञान। ५ विरुद्ध।

अर्श-सज्ञा पु० रोग-विशेष। बन्-सीर।

सज्ञा पु० [ अ० ] १ स्वर्ग। २ आकाश।

अर्श-पर्श-सज्ञा पु० १ छुआछूत। २ अनुद्ध।

अह-वि० १ पूज्य। श्रेष्ठ। २ योग्य। उत्तम पात्र। उपपुक्त। जैसे, पूजाहं, मानाहं, दडाहं।

सज्ञा पु० १ ईश्वर। २ इद्र। मूख्यवान्। कीमती।

अहंणा-सज्ञा स्त्री० [ वि० अहंणीय ] पूजा। उपहार।

अहंत-सज्ञा पु० जैन-विशेष। जैनियों के एक तीर्थंकर का नाम।

अहंत, अहंत-वि० पूजा।

सज्ञा पु० जिनदेव।

अहर्ष-वि०. मान्य। पूज्य। पूजनीय।

अभ-अव्य० दे० “अलभ”।

अलकरण-सज्ञा पु० सजाना। किसी चीज को अल्फारा या बेलपूटों से अलंकृत करना। सजावट।

अलंकार-सज्ञा पु० [ वि० अलंकृत ] १ गहना। आभूषण। जेवर। आभरण। २ वर्णन करने की वह रीति जिससे समस्तार

और रोचकता आ जाय। ३ नायिका का सौंदर्य बढ़ानेवाली चेष्टाएँ। हाव-भाव। अलकारहीन-वि० १ भूषणरहित। २ अशोभित।

अलकृत-वि० १ भूषित। शोभित। विभूषित। सँवारा हुआ। २ अलकारयुक्त। अन्ग-सज्ञा पु० १ ओर। तरफ। दिशा। पाग। छार। २ एक तरफ।

मुहा०—अलग पर आना वा होना=घोड़ी का मस्ताना।

अलघनीय-वि० अलघ्य। जो लाँघा न जा सके। अलघ्य-वि० जिसे फाँद न सक। जो लाँघने योग्य न हो। २ जिसे टाल न सकें। ३ जिससे पीछा न छुड़ा सकें।

अलव-सज्ञा पु० दे० “आलव”। सहारा। अल-अव्य० १ भूषण। २ पर्याप्त। ३ वारण। ४ वृथा। ५ शक्ति। ६. निरर्थक। ७. मधु-मक्खी तथा बिच्छू का डक। ८ पानी में रहनेवाला।

अलव-सज्ञा पु० १ केश। लट। मस्तक के इधर-उधर लटकते हुए बाल। घुँघराले बाल। २ चुटिया। ३ हरताल। ४ मदार। अलकृतारा-सज्ञा पु० धूना। कोलतार। पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा जाला पदार्थ।

अलक उडैश\*-वि० [स्त्री० अलकलडैती] दुलारा। लाडला।

अलकसलोरी\*-वि० [स्त्री० अलकसलोरी] प्यारा। लाडला। दुलारा।

अलका-सज्ञा स्त्री० १ कुनेरपुरी। २ आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की।

अलकाधिव-सज्ञा पु० कुनेर। धनेश्वर।

अलकापति-सज्ञा पु० कुनेर।

अलकायलि-सज्ञा स्त्री० वेणी। केशों का गमूहा। बाग की लटें। घुँघराले बाल।

अलस्त, अलस्तक-सज्ञा पु० १ चपड़ा। लास। २ लाह या बना हुआ रंग जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं।

अलक्षण-सज्ञा पु० [स्त्री० अलक्षणा] बुरे चिह्न। मुलक्षण। अमुभ चिह्न या लक्षण। बुरे लक्षणवाला। लक्षण का न होना।

अलक्षित-वि० १ अज्ञात। अप्रकट। २ गायब। अदृश्य। गुहा।

अलक्ष्य-वि० १ गायब। अदृश्य। जो दिखाई न पड़े। २ जिसका लक्षण न बताया जा सके।

अलख-वि० १ अनदेखा। जो दिखाई न पड़े। अप्रत्यक्ष। अदृश्य। २ इन्द्रियो से परे। अगोचर। ईश्वर का एक विशेषण।

मुहा०—अलख जगाना=१ पुकारकर परमात्मा का स्मरण करना या कराना। २ परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना।

अलखधारी-सज्ञा पु० दे० “अलखनामी”।

अलखनामी-सज्ञा पु० साधु विशेष। जो भिक्षा के लिए जोर जोर से “अलख अलख” पुकारते हैं।

अलखित\*-वि० दे० “अलक्षित”।

अलग-वि० न्यारा। पृथक्। भिन्न। अलहदा।

मुहा०—अलग करना=१ दूर करना। हटाना। २ छुड़ाना। बरखास्त करना।

३ बेलाग। रहित।

अलगनी-सज्ञा स्त्री० ‘अरगनी’। आड़ी रस्सी या बाँस जो कपड़े लटकाने या फैलाने के लिए घर में बाँधा जाता है। डारा।

अलगरज-वि० दे० “अलगरजी”। लापरवाही।

अलगरजी-१ [अ०] लापरवाह। वेगरज। २ चिन्ता न करनेवाला। बेफिक्र।

सज्ञा स्त्री० वेपरवाही।

अलगाना-क्रि० सं० १ छाँटना। अलग करना। २ हटाना। दूर करना।

अलगोजा-सज्ञा पु० बाँसुरी विशेष।

अलच्छ\*-वि० दे० ‘अलक्ष्य’। जो दिखाई न पड़े।

अलज्ज-वि० बेहया। निर्लज्ज। वेशमं। अलडबलड-सज्ञा स्त्री० १ जड़। निर्मुक्ति।

२ अवयव। ३ अव्यवस्थित।

अलतनी-सज्ञा स्त्री० ‘हाथी की बागडोर।

अलता-सज्ञा पु० १ महाघर। जाबक।

२ गम्भी की मूत्रन्द्रिय। ३ आगता। लाग का

रग जिस म्त्रियो पैर में लगाती है।

अलपाका-सज्ञा पु० १ जानवर विशेष जो

दक्षिण अमेरिका में मिलता है और ऊँट की तरह होता है। २ इस जानवर का ऊँट। ३ एक प्रकार का महीन पंपडा। अलका-सज्ञा पु० [ अ० ] [ स्त्री० अलकी ] घिना बाँह का लड़ा मुरता-विशेष। अलवत्ता-अव्य० १ निस्संदेह। वेश्म। नि-संग। २ बहुत ठीक। हूँ। ३ परन्तु। लेकिन। किन्तु।

अलवम-गज्ञा पु० [ अग्रे० ] वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के चित्र एकत्र करके रखे जाते हैं। चित्र-संग्रह। दे० "चित्राधार"।

अलवेल-वि० [ स्त्री० अलवेली ] १ छँल-छमीला। वाँवा। छँला। बनावना। २ अनूठा। अनोखा। अद्भुत। सुन्दर। ३ अलहड। लापरवाह। मनमौजी। सज्ञा पु० नारियल का बना हुक्का।

अलवेलापन-सज्ञा पु० १ सज-धज। छँला-पन। २ अनूठापन। अनोखापन। ३ सुन्दरता। ४ अलहडपन। लापरवाही।

अलबी तलबी-सज्ञा स्त्री० जरबी, फारसी या कठिन उर्दू। (उपेक्षा)

अलभ्य-वि० १ जो मिलने योग्य न हो। अप्राप्य। २ दुर्लभ। जो कठिनता से मिल सके। दुष्प्राप्य। ३ अतमोल। अमूल्य। बहुमूल्य। अलम्-अव्य० १ यथेष्ट। काफी। पर्याप्त। २ पूर्ण। ३ सामर्थ्य। ४ पूर्णता। ५ निर्वय। ६ निरर्थक। ७ बहुत। बस। ८ समूह। भीड़।

अलम-सज्ञा पु० १ दुख। रज। २ जडा। अलमसर-वि० १ मस्त, मतवाला। बेहोश, बदहोश। २ बिन्ता रहित। बेकिर।

अलमारी-सज्ञा स्त्री० लकड़ी की खड़ी सन्दूक जिसमें चीजें रखने के लिए खाने या दर बने रहते हैं।

अलक-सज्ञा पु० १ पागल कुत्ता। २ सफेद मदार या आक। ३ प्राचीन राजा विशेष जिसने एक अथ ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखें निवालकर दे दी थी। अलक-पु०-वि० अड यड। अटवलपचू। बेठिकाने का। बे सिरपैर का।

अलक-पेटेडा-सज्ञा पु० १ घोट का जवान बच्चा। २ अलहड आदमी।

अलकम रिताय-त्रि० वि० बिना हिम धिये धन लेना या देना।

अललाना-त्रि० अ० १ चिल्लाना। गला फाटकर बोलना।

अलयाँती-वि० जिसके बच्चा उत्पन्न हुआ हो (स्त्री)। जच्चा। प्रभूता। अलवाई-वि० (गाय या भेन) जिसमें बच्चा जने एक या दो महीने हुए हो "वापसी" का उरठा।

अलवा-सज्ञा पु० [ अ० ] ऊनी चादर अलस-वि० १ ढीला। मुस्त। आलसी मन्द। २ बर्मा में अनुल्माही। थपा हुआ ३ कुत्ते के ज्वर का नाम।

अलसन-सज्ञा स्त्री० आलस्य। शैथिल्य। अलस न, अलसानि\*-सज्ञा स्त्री० १ मुस्ती आलस्य। २ शैथिल्य। शिथिलता।

अलसाना-क्रि० अ० १ आलस्य से ग्रस्त होना। शिथिलता अनुभव करना। २ ऊँचना। झुमना। ३ हिलना।

अलसी-सज्ञा स्त्री० १ एक पीपा विशेष जिसके बीजा से तेल निकलता है। २ उस पीपे के बीज। तीसी। मसीना।

अलसेड\*-सज्ञा स्त्री० [ वि० अलसेटिया ] १ ढिलाई। व्यर्थ का विलव। २ चक्का। भुलावा। हीला-हुवाला। ३ बिघ्न। बाधा। अटकन। ४ झगडा। लडाई।

अलसेटिया\*-वि० १ व्यर्थ में विलव करने-वाला। २ बिघ्न पैदा करनेवाला। ३ टालमटोल करनेवाला। ४ लडाई-झगडा करनेवाला। झगडाल।

अलसीहां-वि० [ स्त्री० अलसीही ] १ आलसी। फलात। शिथिल। २ उनीचा। निशामस्त।

अलहदी-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] अलगाव। जुदा या अलग होने का भाव। पार्यंक्य।

अलहदी-वि० [ अ० ] अलग। पृथक्। अलहदी-वि० दे० "अहदी"। आलसी।

अलाई-वि० आलस्ययुक्त। आलसी। काहिल। सज्ञा पु० घोड़े की जाति-विशेष।

अलात-सज्ञा स्त्री० जलती हुई एकड़ो। अगारा।

अलातचक्र-सज्ञा पु० १. जलती हुई लकड़ी को जोर से घुमाने से बना हुआ मडल। २. बनेठी।  
अलान-सज्ञा पु० १. हस्तिबन्धन। हाथी बाँधने का खूटा या सिक्कड़। २. बेडी।  
वधन। ३. बेल चढ़ाने के लिए गाड़ी हुई लकड़ी।

अलाप-सज्ञा पु० दे० "आलाप"। राग स्फुट करने के लिए स्वरविस्तार।

अलापना-क्रि० अ० १. स्वरों का विस्तार करना। २. गाना। ३. बोलना। बातचीत करना।

अलानिया-क्रि० वि० खुले आम। सबके सामने।

अलानी\*-वि० १. स्वरों का विस्तार करने वाला। गायक। २. बोलनेवाला।

अलाव-सज्ञा स्त्री० १. तूँबा। २. लौवा। ३. केदू।

अलाम\*-वि० बात बनानेवाला। झूठ बोलने वाला।

अलामत-सज्ञा स्त्री० १. बीमारी। रोग। २. निशानी।

अलापक\*-सज्ञा पु० नालायक। अयोग्य। जो लायक न हो।

अलार-सज्ञा पु० दरवाजा। कपाट। किवाड़। \*आग का ढेर। अलाव। भट्ठी। आँवा।

अलाल-वि० १. सुस्त। आलसी। २. निकम्मा। अकर्मण्य।

अलाव\*-सज्ञा पु० १. आग का ढेर। तापने के लिए जलाई हुई आग। कौड़ा। २. धूनी। जखीरा।

अलापा-क्रि० वि० अतिरिक्त। सिवाय।

अलिय-वि० १. चिह्न या लिंग-रहित। २. जिसकी कोई पहचान बतलाई न जा सके।

सज्ञा पु० १. व्याकरण में वह शब्द जो दोनों लिंगों में व्यवहृत हो। जैसे—हम, तुम, मैं, वह, मिन। २. बह।

अलिजर-सज्ञा पु० अक्षर। घडा। पानी रखने का मिट्टी का बरतन।

अलिद-सज्ञा पु० मकान के बाहरी द्वार के आगे का छज्जा या चबूतरा।  
सज्ञा पु० भौरा। अलि।

अलि-सज्ञा पु० [स्त्री० अलिनी] १. भौरा। २. कौवा। ३. कोयला। ४. विच्छू। ५. कुत्ता। ६. वृश्चिक राशि। ७. मदिरा।  
सज्ञा स्त्री० दे० "अली"। सखी।

अलिन-सज्ञा स्त्री० भ्रमरी।

अली-सज्ञा स्त्री० १. सहेली। सखी। आली। २. कतार। पक्ति। लाइन।

\*सज्ञा पु० भौरा। भ्रमर।

अलीह-वि० १. झूठा। मिथ्या। असत्य। २. जिसके मर्यादा न हो। प्रतिष्ठा-रहित।

सज्ञा पु० १. अप्रतिष्ठा। २. असार। अमर्यादा। ३. माया। ४. स्वर्ग।

अलीन-सज्ञा पु० १. साह। वाजू। द्वार के चोखट की खड़ी लची लकड़ी। २. दालान या बरामदे के किनारे का खम्भा जो दीवार से सटा होता है।

वि० १. अप्राप्त। २. अनुप-युक्त। अयोग्य। अनुचित। बेजा।

३. जो मग्न न हो। विरत। अमनो-योगी।

अलील-वि० [अ०] रोगी। बीमार। रुग्ण।

अलीह\*-वि० १. झूठ। मिथ्या। असत्य। २. अनुचित।

अलुक्-सज्ञा पु० व्याकरण में समास का भेद-विशेष जिसमें बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता। जैसे सरसिज, मनसिज।

अलुझना\*-क्रि० अ० दे० "अरुझना" और "उलुझना"।

अलुटना\*-क्रि० अ० गिरना-पड़ना। लड़-खड़ना। डगमगाना।

अलुमीनम-सज्ञा पु० [अर्थ० एंलुमीनियम] एक धातु-विशेष जो कुछ-कुछ नीलापन लिये सफेद होती है।

अलूला\*-सज्ञा पु० १. भ्रूपा। लपट। बबूला। २. बुलबुला।

अलेख-वि० १. दुर्बोध। अज्ञेय। जिसके विषय में कोई भावना न हो सके। २. लिखने के अयोग्य। अनगिनत।

वि० जो दिखाई न पड़े। अदृश्य।

अलेखा\*-वि० १. जिसका हिसाब न हो। २. निष्प्रयोजन। व्यर्थ। निष्फल।

क्षेत्री\*—वि० १. अक्षर का नाम मन्त्रवाला।  
२. गङ्गा की मन्त्रवाला। अक्षरी। अक्षर-  
मन्त्री।

क्षेत्रपञ्चा—मज्ञा पु० अक्षरी। प्रलाप। गूढ  
बालना। मनमग्न। वरसाद।

अक्षरपञ्चा—मज्ञा स्त्री० १. निष्ठाप।  
२. गेह।

अक्षर—वि० १. अक्षर। जो दिखाई न पड़े।  
२. एकात्म। निरुद्ध। ३. पुष्पगृहीत।

गज्ञा पु० १. पञ्चोत्तर। पातात्रादि लोच।  
२. वस्त्र। निदा। मिथ्या दोष।

अक्षरपञ्चा—मज्ञा पु० गुप्ता हाना। अक्षरपता।  
पञ्चा होना।

अक्षरपञ्चा\*—त्रि० स० साधना। देयना।  
अलोना या अलोणा, अलोना—वि० [ स्त्री०  
अलोनी ] १. जिसमें नमक न हो।

०. जिसमें नमक न माला जाय।  
जमे, अलोना द्रव। ३. फीका। बेस्वाद।

वेमजा।

अलोष—वि० दे० "लोष"। गायव। छिपा।  
अलोलिख\*—सज्ञा पु० १. स्थिरता। अच-  
चलता। धीरता। अटल।

अलोलिख—वि० १. लोचोत्तर। इस लोच  
में दिखाई न देनेवाला। २. अद्भुत।

अपूर्व। ३. अमानुष। ४. अनोखा। ५. सर्व-  
मुन्दर। सर्वश्रेष्ठ।

अलत—वि० [ अ० ] काटा या रद्द किया  
हुआ।

अल्प—वि० १. कम। थोड़ा। कुछ। विचित्र।  
२. लघु। छोटा।

सज्ञा पु० काव्यालंकार-विशेष जिसमें आशय  
की अपेक्षा आचार की अल्पता या छोटाई  
का वर्णन होता है।

अल्पजीवी—वि० जिसकी आयु कम हो।  
अल्पायु। शीघ्र मरनेवाला।

अल्पज्ञ—वि० १. छोटी बुद्धि का। थोड़ा ज्ञान  
रखनेवाला। २. नासमझ।

अल्पता—सज्ञा स्त्री० १. न्यूनता। कमी।  
२. छोटाई।

अल्पता—वि० दे० "अल्पता"।

अल्पप्राण—मज्ञा पु० १. जिन वर्णों का उच्चा-  
रण में प्राणवायु का उपयोग थोड़ा निय-  
जाय। २. व्यञ्जनों के प्रत्येक वर्ण का प्रत्येक  
नीमरा और पाँचवाँ अक्षर तथा य, र, ल  
और व।

अल्पमत—मज्ञा पु० थोड़े में लागू का मत  
बहुमत का उल्टा। वे लोग जिनकी मर्त्य  
या मत-ओरों में मुवाविज में कम हो  
अल्पमतपक्ष।

अल्पवयस्क—वि० कमगिन। छोटी आयु का  
अल्प—त्रि० वि० प्रमज। थोड़ा थोड़ा  
परवे। धीरे धीरे।

अल्पवयस्क—वि० गिनती के थोड़े या कम।  
मज्ञा पु० यह समाज जिसमें सदस्यों की  
गणना औरों की अपेक्षा कम हो।

अपसर—सज्ञा पु० छाटी तरंग।

अल्पायु—वि० छोटी अवस्था का। जिसकी  
आयु कम हो।

अल्पाहार—सज्ञा पु० थोड़ा खाना। अल्प आहार  
अल्ल—मज्ञा पु० उपगोत्रज नाम। वंश का  
नाम। जमे-पाँडे, त्रिपाठी, मिश्र।

अल्लम-मल्लम—सज्ञा पु० अटमट। अनाप-  
सनाप। प्रलाप। व्यर्थ की वचवाद।

अल्लाना\*—त्रि० श० दे० "अल्लाना"।  
अल्लामी—वि० [ अ० ] कर्वाँदा। लडाकी। लहने-  
वाली (स्त्री०)।

अल्लाह—सज्ञा पु० (अ०) ईश्वर।

यो०—अल्लाहो अबरर—ईश्वर महान् हैं।  
अल्लुजा\*—सज्ञा पु० गप्प। इधर उधर की  
बात।

अल्लुह—वि० १. लापरवाह। मनमोजी। २.  
अनुभव-रहित। जैसे व्यवहार-ज्ञान न हो।

अनमिल। ३. उजड़। उद्धत। ४. गँवार।  
अनाड़ी।

सज्ञा पु० नया बैल या बछड़ा जो निकाला  
न गया हो।

अल्लुपन—मज्ञा पु० १. मनमोजीपन। ला-  
परवाही। २. भोलापन। व्यवहार-ज्ञान का  
अभाव। ३. अल्लुपन। उजड़पन। ४.  
गँवारपन। अनाड़ीपन।

अवशी—सज्ञा स्त्री० उज्ज्वल। उज्ज्विनी (यह

सप्तपुरियो मे से एक है) । विशाला । यह  
महाराज विरमादित्य की राजधानी थी ।  
अव-उपसर्ग-विशेष । १ विशेष । २  
निश्चय । ३ अनादर । ४ आलवन । ५  
विज्ञान । ६ व्याप । ७ बुद्धि । ८ अल्प ।  
९ परिभव । १० नियोग । ११ पालन ।  
यह जिस शब्द में लगता है, उसमें निम्नलिखित  
अर्थों की योजना करता है—१ निश्चय, जैसे—  
अवधारण । २ अनादर, जैसे—अवज्ञा । ३  
न्यूनता या कमी, जैसे—अवघात । ४ निचाई  
या गहराई, जैसे—अवतार । अवक्षेप । ५  
व्याप्ति, जैसे—अवकाश । अवगाहन ।  
\*अव्य० दे० “और” ।

अवकपन-सज्ञा पु० स्तुति । उपासना ।  
प्रसादक वाक्य ।  
अवकर्तन-सज्ञा पु० सूत बनाने का यन्त्र ।  
चरला ।  
अवकर्षण-सज्ञा पु० उद्धार । निष्कर्षण ।  
बाहर खींचना ।  
अवकलन-सज्ञा पु० [ वि० अवकलित ]  
इकट्ठा करके मिला देना । २ देखना ।  
जानना । ज्ञान । ४ ग्रहण ।  
अवकलना\*-क्रि० अ० ज्ञान होना । समझ  
में आना ।

अवकाश-सज्ञा पु० १ खाली । रिक्त स्थान ।  
२ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।  
३ अंतर । दूरी । फासिला । ४ समय ।  
अवसर । मौका । ५ खाली वक्त । फुसंत ।  
छुट्टी । ६ सुभीता ।  
अवकीर्ण-सज्ञा पु० [ वि० अवकीर्ण,  
अवहृष्ट ] फैलाना । छितराना । बिखेरना ।  
अवकीर्ण-वि० १ बिखेरा हुआ । फैलाया  
या छितराया हुआ । २ नष्ट । नाश  
पिया हुआ । ३ चूर चूर किया हुआ ।  
४ विक्षिप्त । ५ अनाहत ।

अवकीर्ण-वि० १ क्षतव्रत । नियमभ्रष्ट व्रत ।  
२ निषिद्ध वस्तुओं के ससर्ग से जिसना व्रत  
भंग हो गया हो । ३ अयोग्य वस्तुसेवी  
भनुष्य ।

अवकुष्ठन-सज्ञा पु० वशीकरण । टेढ़ा करना ।  
माहना ।

अवकुष्ठन-सज्ञा पु० साहस-परित्याग । भीरु  
होना । असाहसी होना ।

अवकुष्ठित-सज्ञा पु० असाहसी । भीरु ।  
अमृषा-सज्ञा स्त्री० कृपा का न होना ।  
नाराजगी ।

अवकेशी-वि० बाँझ । बन्ध्या । निष्पुत्र ।  
पुनहीन । सन्तान-रहित ।

अवकतबर-वि० अकथ्य । कथन के अयोग्य ।  
अवकन्दन-सज्ञा पु० खूब जोर से रन्दन ।  
चिल्ला चिल्लाकर रोना ।

अवकलन-सज्ञा पु० देखना ।  
अवकुष्ठ-वि० १ भस्मित । निन्दित । २ मन्द  
ध्वनित । ३ कुशब्दयुक्त । गाली दिया  
हुआ ।

अवलण्डन-सज्ञा पु० खनन । खोदना ।

अवखान-सज्ञा पु० गहरा गड्ढा ।

अवगत-वि० १ ज्ञात । विदित । मालूम ।  
जाना हुआ । २ परिचित । ३ गिरा  
हुआ । नीचे गया हुआ ।

अवगतना\*-क्रि० स० विचार करना ।  
समझना ।

अवगति-सज्ञा स्त्री० १ बुद्धि । धारणा ।  
समझ । ज्ञान । बोध । विज्ञता । २ दूरी  
गति । ३ गमन ।

अवगाढ़-वि० १ निमज्जित । कृतस्नान ।  
२ घुसा । प्रविष्ट । छिपा ।

अवगत-सज्ञा पु० अपघात । अपमृत्यु ।

अवगारना\*-क्रि० म० जताना । समझाना-  
बुझाना ।

अवगाह\*-वि० १ बहुत गहरा । अथाह ।  
२ कठिन । अनहोना ।

\*सज्ञा पु० १ गहरा स्थान । २ कठिनाई ।  
३ सड़क का स्थान । ४ हलना । भीतर  
प्रवेश करना । ५ जल में हलकर स्नान  
करना । ६ बाल्टी ।

अवगाहन-सज्ञा पु० [ वि० अवगाहित ]  
१ पानी में हलकर स्नान । डुबकी । गना ।  
निमज्जन । २ पैठ । प्रवेश । ३ बिलोडन ।  
मथन । ४ खान-खीन । खोज । ५ रीज  
होकर विचार करना । नित लगाना ।  
६ अथाह । अति गहरा ।

दलेली\*—वि० १. अटवट काम करनेवाला।  
२ गटवट्टी करनेवाला। अन्वयायी। अधेरे-  
वाली।

अर्द्धकपट्या—मज्ञा पु० अर्द्धक। प्रलाप। मूठ  
बोलना। मनमाना। बकवाद।

अर्द्धपा बलेपा—मज्ञा स्त्री० १ निछावर।  
२. मेल।

अलोच—वि० १ अदृश्य। जो दिखाई न पड़े।  
२ एकांत। निर्जन। ३ पुष्परहित।

मज्ञा पु० १ परतोर। पातालदि लोर।  
२ मजरा। निंदा। मिथ्या दोष।

अलोचन—मज्ञा पु० गुण होना। अदृश्यता।  
धम्पा होना।

अलोचना\*—त्रि० सं० तावना। देगना।  
अलोना या अलोण, अलोना—वि० [ स्त्री०  
अलोनी ] १ जिसमें नमक न हो।

२ जिसमें नमक न खाया जाय।  
जैसे, अलोना द्रव। ३ फीका। बेस्वाद।

बेमज्ञा।  
अलोप—वि० दे० "लोप"। गायब। छिपा।

अलोलिक\*—मज्ञा पु० १ स्थिरता। अच-  
चलता। धीरता। अटल।

अलौकिक—वि० १ लोकोत्तर। इस लोका  
में दिखाई न देनेवाला। २ अद्भुत।

अपूर्व। ३ अमानुष। ४ अनोखा। ५ सर्व-  
मुन्दर। सर्वश्रेष्ठ।

अलक्त—वि० [ अ० ] काटा या रद्द किया  
हुआ।

अल्प—वि० १ कम। थोड़ा। कुछ। निचित।  
२ लघु। छोटा।

सज्ञा पु० बाव्यालकार-विशेष जिसमें आधेय  
की धर्पणा आधार की अल्पता या छोटाई  
का वर्णन होता है।

अल्पजीवी—वि० जिसकी आयु कम हो।  
अल्पायु। शीघ्र मरनेवाला।

अल्पबुद्धि—सज्ञा पु० मन्दबुद्धि। असमझ।  
अल्पज्ञ—वि० १ छोटी बुद्धि का। थोड़ा ज्ञान  
रखनेवाला। २ नासमझ।

अल्पता—मज्ञा स्त्री० १ न्यूनता। कमी।  
२ छोटाई।

अ—सज्ञा पु० दे० "अल्पता"।

अल्पप्राण—मज्ञा पु० १. जिन वर्णों के उच्चा-  
रण में प्राणवायु का उपयोग होता किया  
जाय। २ व्यञ्जनों के प्रत्येक वर्ण का पहला,  
तीसरा और पाँचवाँ अक्षर तथा य, र, ल  
और व।

अल्पमत—मज्ञा पु० थोड़े में लोगों का मत।  
बहुमत का उल्टा। वे लोग जिनकी मर्यादा  
या मा ओरो के मुकाबिल में कम हो।

अल्पमध्यम।  
अपययस्व—वि० कमगिन। छोटी आयु का।

अल्पज्ञ—त्रि० वि० कमज्ञ। थोड़ा थोड़ा  
परखे। धीरे धीरे।

अल्पसम्पत्त—वि० गिनती के थोड़े या कम।  
मज्ञा पु० वह गमाज जिसमें सदस्यों की  
मर्यादाओं की अपेक्षा कम हो।

अपसर—सज्ञा पु० छाटी तलैया।  
अन्वायु—वि० छाटी अवस्था का। जिसकी  
आयु कम हो।

अल्पाहार—मज्ञा पु० थोड़ा खाना। अल्प आहार।  
अल्ल—मज्ञा पु० उपगोत्रज नाम। वन का  
नाम। जैसे—पीठे, त्रिपाठी, मिश्र।

अल्लम-अल्लम—सज्ञा पु० अटमट। अनाप-  
सनाप। प्रलाप। व्यर्थ की बकवाद।

अल्लाना\*—[ क्रि० अ० दे० "अल्लाना" ]।  
अल्लामाँ—वि० [ अ० ] कर्कशा। लडावी। लड़ने-  
वाली (स्त्री०)।

अल्लाह—सज्ञा पु० (अ०) ईश्वर।  
पौ०—अल्लाहो अकबर—ईश्वर महान् हैं।

अल्हजा\*—सज्ञा पु० गप्प। इपर उधर की  
बात।

अल्हड—वि० १ लापरवाह। मनमौजी। २  
अनुभव-रहित। जिसे व्यवहार-ज्ञान न हो।

अनसिखा। ३ उजड़। उद्धत। ४ गँवार।  
अनाड़ी।

सज्ञा पु० नया बैल या बछड़ा जो निकाला  
न गया हो।

अनुडपन—सज्ञा पु० १ मनमौजीपन। ला-  
परवाही। २ भोलापन। व्यवहार-ज्ञान का  
अभाव। ३ अक्लडपन। उजड़पन। ४  
गँवारपन। अनाड़ीपन।

अवनी—मज्ञा स्त्री० उज्जैन। उज्जयिनी (यह

सप्तपुरियो में से एक है) । विशाला । यह महाराज विक्रमादित्य की राजधानी थी ।

अव-उपसर्ग विशेष । १ विशेष । २ निश्चय । ३ अनादर । ४ आलवन । ५ विज्ञान । ६ व्याप । ७ बुद्धि । ८ अल्प । ९ परिभव । १० नियोग । ११ पालन । यह जिस शब्द में लगता है, उसमें निम्नलिखित अर्थों की योजना करता है—१ निश्चय, जैसे—व्यवधारण । २ अनादर जैसे—अवज्ञा । ३ न्यूनता या कमी जैसे—अवघात । ४ निचाई या गहराई जैसे—अवतार । अवक्षेप । ५ व्याप्ति जैसे—अवकाश । अवगाहन । \*अव० दे० और ।

अवक्षयन-मना पु० स्तुति । उपासना । प्रपादक वाक्य ।

अवकलन-सज्ञा पु० सूत बनाने का यन्त्र । चरवा ।

अवक्षयण-सज्ञा पु० उद्धार । निष्कपण । बाहर लावना ।

अवकलन-सज्ञा पु० [ वि० अवकलित ] झुका करके मिला देना । २ देखना ।

अवकलन-सज्ञा पु० [ वि० अवकलित ] जानना । ज्ञान । ४ ग्रहण ।

अवकलन-सज्ञा पु० [ वि० अवकलित ] जानना । ज्ञान । ४ ग्रहण ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकाश-मना पु० १ खाली । रिक्त स्थान । २ आकाश । अंतरिक्ष । शून्य स्थान ।

अवकुष्ठन-सज्ञा पु० साहस परित्याग । भीरु होना । असाहसी होना ।

अवकुष्ठित-सज्ञा पु० असाहसी । भीरु । अगृह्य-सज्ञा स्त्री० कृपा का न होना ।

नाराजगी । अवकेशी-वि० बांझ । वन्ध्या । निष्पुत्र ।

पुत्रहीन । सन्तान-रहित । अवस्तव्य-वि० अकथ्य । कथन के अयोग्य ।

अवक्रन्दन-सज्ञा पु० खूब जोर से नन्दन । चिल्ला चिल्लाकर रोना ।

अवकलन-सज्ञा पु० देखना । अवकृष्ट-वि० १ भर्त्सित । निन्दित । २ मन्द ध्वनित । ३ कुशब्दयुक्त । गाली दिया हुआ ।

अवखण्डन-सज्ञा पु० खनन । खोदना । अवखा-सज्ञा पु० गहरा गड्ढा ।

अवगत-वि० १ ज्ञात । विदित । मालूम । जाना हुआ । २ परिचित । ३ गिरा हुआ । नीचे गया हुआ ।

अवगतना\*-वि० स० विचार करना । समझना ।

अवगति-सज्ञा स्त्री० १ बुद्धि । धारणा । समझ । ज्ञान । बोध । विज्ञता । २ दूरी गति । ३ गमन ।

अवगाढ-वि० १ निमज्जित । कृतस्नान । २ घुसा । प्रविष्ट । छिपा ।

अवगात-सज्ञा पु० अपघात । अपमृत्यु । अवगारना\*-वि० स० जताना । समझाना- बुझाना ।

अवगाह\*-वि० १ बहुत गहरा । अथाह । २ कठिन । अनहोना ।

\*सज्ञा पु० १ गहरा स्थान । २ कठिनाई । ३ सकट का स्थान । ४ हलना । भीतर प्रवेश करना । ५ जल में हलकर स्नान करना । ६ बालटी ।

अवगाहन-सज्ञा पु० [ वि० अवगाहित ] १ पानी में हलकर स्नान । डुबकी । गोता । निमज्जन । २ पैठ । प्रवेश ।

अवगाहन-सज्ञा पु० [ वि० अवगाहित ] १ पानी में हलकर स्नान । डुबकी । गोता । निमज्जन । २ पैठ । प्रवेश ।

अवगाहन-सज्ञा पु० [ वि० अवगाहित ] १ पानी में हलकर स्नान । डुबकी । गोता । निमज्जन । २ पैठ । प्रवेश ।

अवगाहन-सज्ञा पु० [ वि० अवगाहित ] १ पानी में हलकर स्नान । डुबकी । गोता । निमज्जन । २ पैठ । प्रवेश ।

अवगाहना\*—त्रि० अ० १ निमज्जन करना।  
हलत् नहाना। २ धँसना। पँठना। ३  
एकाग्रचित्त होना।

त्रि० स० १ गीज या छान-बीन करना।  
२ विचलित करना। हलचल डालना।  
३ हिलाना। चलाना। ४ विचारना।  
सोचना। ५ धारण करना। ६ ग्रहण  
करना। लेना।

अवगत-सज्ञा पु० निन्दा। दोषदुष्ट। अति  
निन्दित। विशेष लक्षित।

अवगुह्य-सज्ञा पु० [वि० अवगुह्य] १  
खनन। छिपाना। ढँकना। २ रेखा से घेरना।  
३ घूँघट। ४ बर्का।

अवगुह्य-सज्ञा पु० गूँथना। गुहना।  
[वि० अवगुह्य]।

अवगुण-सज्ञा पु० १ ऐव। दोष। २ बुराई।  
साट। अवगुण। "औगुण"।

अवगूहन-सज्ञा पु० आलिंगन। आदलेप। प्रेम  
से परस्पर अंग-मस्पर्श।

अवग्रह-सज्ञा पु० १ रोक। बाधा। २ घृष्टि।  
३ बालटी। ४ अकुश (हाथी को समत  
रखने का)। ५ बहुवाल। ६ ग्रहण। ७ अप-  
हरण। ८ हाथी का गस्तक। ९ हाथिया का  
झण्ड। १० स्वभाव। ज्ञान ११ ज्ञान विशेष।  
(जैन-दर्शन)। १२ अङ्गन। १३ वर्षा  
का न होना। अनावृष्टि। १४ वद।  
वाँघ। १५ सधि-विच्छेद (व्या०)। १६  
'अनुग्रह' का उलटा। १७ प्रकृति। स्वभाव।  
१८ कोमल। साप।

अवघट-वि० १ कुपाट। २ विकट। दुर्गम।  
कठिन। ३ अडबड। ऊँचा-खाला। टूटा-  
फूटा।

अवघट-सज्ञा पु० १ ओचक। अवक।  
अनजान। २ सबट। कठिनाई। अडस।  
त्रि० वि० अचानक। अकस्मात्। अनजान  
में।

अवचर-वि० १ एक दृष्टि। २ ओचक।  
अचानक। एकावरी।

अवचय-सज्ञा पु० चुनकर इकट्ठा करना।  
फल-फूल आदि तोड़कर भा चुनकर इकट्ठा  
करना।

अवचेतन-वि० जिते गुरी चेतना न हो  
आसित या चोड़ी चेतनावाला।

अवचेतना-सज्ञा स्त्री० चेतना की  
मुपलब्धी अवस्था जिसमें किसी  
का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता।

अवचेष्टा-सज्ञा स्त्री० मन्द चेष्टा।

अवच्छिन्न-वि० १ अलग किया हुआ  
पृथक्। २ विशेषण-सहित। ३ सीमाबद्ध।

अवच्छेद-सज्ञा पु० [वि० अवच्छेद,  
छिन्न] १ भेद। अलगवा। २ सीमा  
हृद। ३ छानबीन। अवधारण। ४ विभाग  
परिच्छेद।

अवच्छेदक-वि० १ अलग करनेवाला। भे  
वतानेवाला। २ हृद बाँधनेवाला।  
निश्चय करानेवाला। अवधारक।  
सज्ञा पु० विशेषण।

अवछग\*—सज्ञा पु० दे० "उछग"।

अवज्ञा-सज्ञा स्त्री० [वि० अवज्ञात, अ  
ज्ञेय] १ अनादर। अपमान। २ उपेक्षा  
अमान्यकरण। आज्ञा न मानना। अ  
हेला। ३ हार। पराजय। ४ काव्याल  
कार विशेष जिसमें एक वस्तु के गुण  
से दूसरी वस्तु का गुण या दोष  
प्राप्त करना दिखलाया जाय।

अवज्ञात-वि० उपेक्षित। अनादृत। अपमा  
नित।

अवज्ञेय-वि० तिरस्कार, अनादर या अप  
मान के योग्य।

अवट-अव्य० १ ओटाकर। खीलाकर। २  
गर्त गह्वर। छिद्र। ३ नटयुक्ति से जीव  
काटनेवाला।

अवटना-क्रि० स० १ मथना। २ किस  
द्रव पदार्थ को आँच पर गाढ़ा करना  
क्रि० अ० फिरता। घूमना।

अवडेरना-क्रि० स० १ झझट में फँसाना  
फेर में डालना। २ परेशान करना। ल  
करना। ३ शांतिमग्न करना।

अवडेर-सज्ञा पु० [दे०] १ चक्कर। फेर  
२ बख्श। शमट। ३ रंग में मग्न। बापा

अवडेर-वि० १ फेरना। चक्करदार  
२ जिसमें झझट हो। ३ कुटना। वेडव

अवदर-वि० नीच पर भी ढलने या दया करनेवाला। बिना विचारे दया करने वाला।

अवतंस-संज्ञा पु० [ वि० अवतंसित ] १. गहना। अलंकार। भूषण। २. शिरोभूषण। चूड़ामणि। सिरपेच। टीका। ३. मुकुट। ४. सबसे उत्तम पुरुष। श्रेष्ठ व्यक्ति। ५. हार। माला। ६. वाली। मुरकी। ७. कर्ण-फूल। ८. दूल्हा।

अवतरण-संज्ञा पु० १. पार होना। उतरना। अवरोहण। २. जन्म लेना। ३. नकल। प्रतिकृति। ४. प्रादुर्भाव। ५. सीढ़ी। ६. घाट। ७. भाषान्तर। अनुवाद।

अवतरणिका-संज्ञा स्त्री० १. भूमिका। प्रस्तावना। वस्तुविषय की सूचना। उपोद्घात। २. परिपाटी। ३. आभास।

अवतरना\*-क्रि० अ० १. प्रकट होना। उपजना। जन्मना। २. प्रकाश पाना। ३. नीचे उतरना।

अवतरित-वि० १ ऊपर से नीचे उतारा हुआ। किसी दूसरे स्थल से लिया हुआ। उद्धृत। २ जिसने अवतार धारण किया हो।

अवतार-संज्ञा पु० १. नीचे आना। उतरना। २. जन्म। शरीर-ग्रहण। ३. देवता का मनुष्यादि ससारी प्राणियों के शरीर को धारण करना। ४. विष्णु या ईश्वर का ससार में शरीर धारण करना। भगवान् का लीलार्थ प्राकट्य। \*५. सृष्टि।

अवतारण-संज्ञा पु० [ स्त्री० अवतारणा ] १. नीचे लाना। उतारना। २. नकल करना। ३. उदाहृत करना।

अवतारना-क्रि० स० १. रचना। बनाना। २. पैदा करना। ३. जन्म देना।

अवतारी-वि० १. उतरनेवाला। २. अवतार लेनेवाला। ३. देवादा-धारी। ४. अनौघ्या। अलौकिक। ५. अलौकिक शक्तिवाला।

अवतीर्ण-वि० १. आविर्भूत। जन्मा हुआ। उत्पन्न। अवतार लिया हुआ। २. ऊपर से नीचे आया हुआ। ३. उत्तीर्ण।

अवतीर्ण-संज्ञा स्त्री० वह गाय जिसका गर्भ गिर गया हो।

अवदशा-संज्ञा स्त्री० घुरी गति। बुद्धि। अवदात-वि० १. स्वेत। उज्ज्वल। २. स्वच्छ। शुद्ध। निर्मल। ३. गौर। शुक्ल वर्ण का। ४. पीत। पीला।

राज्ञा पु० १. अच्छा काम। पवित्र आचरण। २. तोड़ना। खंडन। ३. पराक्रम। बल। शक्ति। ४. अतिक्रम। उत्लंघन। ५. पवित्र करना। ६. साफ करना। ७. त्याग। उत्सर्ग। ८. निवेदन। ९. कुत्सित दान। १०. वध। मार डालना। ११. अत्यंत यशस्कर कार्य, जिसकी कहानियाँ चलीं।

अवदान-संज्ञा पु० १. निवेदन। २. खण्डन। ३. उत्सर्ग। ४. शुद्धाचरण। ५. सुकर्म।

अवदान्य-वि० १. बली। पराक्रमी। २. हृद से बाहर जानेवाला। अतिक्रमणकारी। ३. कजूस। सूम।

अवदारण-संज्ञा पु० [ वि० अवदारित ] १. विदारण करना। तोड़ना। फोड़ना। चीरना। २. खता। मिट्टी खोदने का रत्ता।

अवदाह-संज्ञा पु० खास।

अवदोर्ण-वि० पिघला हुआ।

अवदोह-संज्ञा पु० दूध दुहना।

अवदीच-संज्ञा पु० गुजराती ब्राह्मणों की शाखा-विशेष। उत्तर भारत के रहनेवाले ब्राह्मण जो गुजरात में रहने लगे, वे अवदीच्य या अवदीच कहे जाते हैं।

अवद्ध-वि० बन्धन-शून्य। अनियंत्रित।

अवद्धमुख-वि० अप्रियवादी। दुर्मुख। मुखर।

अपद्य-वि० १. पारी। अघम। २. निन्दनीय।

कुत्सित। त्याज्य। नीच। ३. दोषयुक्त।

४. अतथ्य। ५. अनिष्ट।

अवद्योत-वि० ईषदुज्ज्वल। किचिदीप्त। अल्पप्रकाश।

संज्ञा पु० सस्मृत व्याकरण का एक ग्रन्थ-विशेष।

अवध-संज्ञा पु० १. कोशल देश। २. अयोध्या नगरी।

संज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।

अवधान-संज्ञा पु० १. एवाग्रनिष्ठ होना।

मनोयोग। मन मगोजन। चित्त का लगाव। २. चित्त की वृत्ति का निरोध

पर उगे गये और लगाना। समाधि।

३ चौपमी। सावधानी।

\*मज्ञा पु० गर्भ। पेट।

अवधारण-सज्ञा पु० [वि० अवधारित, अव-  
धारणोय, अवधार्य] निश्चय। स्थिरीकरण।  
विचारपूर्वक निर्धारण करना।

अवधारना\*-त्रि० सं० १ धारण करना।  
ग्रहण करना। लेना। २ अपनाना।  
अवधारो-त्रि० वि० निश्चय किया गया।  
सोचा गया।

अवधि-सज्ञा स्त्री० १ सीमा। हृद। २  
निश्चित समय। मिथाद। ३ अंतिम काल।  
अंत समय।

अव्य० १ पर्यंत। तक। २ से। लों।

अवधिमा\*-मज्ञा पु० सागर। समुद्र।

अवधी-वि० अवध स संबंधित। अवध का।  
सज्ञा स्त्री० अवध की घेरी।

अवधीय-अव्य० १ विचार कर। सोचकर।  
२ अपमानित कर।

अवधूत-सज्ञा पु० [स्त्री० अवधूतिन]  
१ सन्यासी। साधु। योगी। २ उदासीन।  
३ कम्पित। कम्पायमान। ४ परिवर्जित।  
परिष्कृत।

अवध्य-वि० बंध के अयोग्य। जिसको प्राण-  
दण्ड न दिया जा सके।

अवन-सज्ञा पु० १ प्रसन्न करना। २ रक्षा।  
वचाव।

सज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।

अवनत-वि० १ नीचा। झुका हुआ। २  
गिरा हुआ। पतित। ३ कम। ४ विनीत,  
५ अधः पतित। दुर्दशाग्रस्त।

अवनति-सज्ञा स्त्री० १ कमी। न्यूनता।  
घटती। २ अधोगति। दुर्दशा। हीन दशा।  
३ झुकाना। झुकाव। ४ नम्रता। ५  
विनती। ६ प्राप्त। आया हुआ। उपस्थित।

अवना-नि० अ० दे० "आवना"।

अवनि-सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। जमीन।  
२ रक्षण। पालन।

अवपात-सज्ञा पु० १ पतन। गिराव। २ कुट।  
गड़टा। ३ गड़ा। माला। हाथिया के फूसाने  
का गड़टा। ४ नाट्य में भयादि से भागना

व्याकुल हाता आदि दिव्यान्तर अव प  
ममाधि।

अवनित-सज्ञा पु० राजा। नृप। नरत्त।

अवनित-सज्ञा पु० मगलग्रह। भीम।

अवनी-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी। मेदिनी। भूमि।

अवनीकुमारी-सज्ञा स्त्री० मीता। मिथिपञ्च-  
कुमारी।

अवनीपति-सज्ञा पु० भूपति। राजा।

अवनीपरमणो-सज्ञा स्त्री० गनी। राजा की  
पत्नी।

अवनेजल-सज्ञा पु० घोटकरण। मार्जन।

अवन्द-वि० अपूज्य। अवन्दनीय। प्रणाम  
के अयोग्य।

अवन्द्य-वि० शपथ। पञ्चान्।

अवभास-सज्ञा पु० १ प्रकाशकरण। प्रकाशन।  
२ माया। प्रपञ्च।

अवभूय-सज्ञा पु० १ वह वचा हुआ काम  
जिम करने का विधान मुख्य यज्ञ के

समाप्त होने पर है। २ यज्ञ के अंत का  
स्नान। ३ अंत। ४ यज्ञ शेष। ५ यज्ञ

आदि की समाप्ति का स्नान। ओषधि  
आदि में लिप्त होकर कुटुम्ब परिजन

सहित स्नान का अवभूय स्नान कहते हैं।  
अवबोध-सज्ञा पु० ज्ञान। बोध। जागना।

अवस-सज्ञा पु० १ पितरा का गण विशेष।  
२ मरुमास। अधिमास। ३ तीन तिथियाँ

जिस दिन में हों। ४ निम्नतम। सबसे छोटा।  
५ अन्य। दूसरा। ६ अंतिम। ७ सौर और

चाद्र मास का अंतर।  
अवनत-वि० अपमानित। तिरस्कृत। अवज्ञात

अवम तिथि-सज्ञा स्त्री० एमी तिथियाँ जिसका  
क्षय हो गया हो।

अवमर्दन-सज्ञा पु० (वि० अवमर्दिन) कष्ट  
पहुँचाना। बुझाना। रौंदना या मलना।

अवमर्श सधि-सज्ञा स्त्री० सधि विशेष।  
(नाट्य शास्त्र)।

अवमर्षण-सज्ञा पु० लोप। अपक्षय। परिक्षय।

अवमान-सज्ञा पु० [वि० अवमानित] तिर-  
स्कार। अपमान। अपयस।

अवमानता-सज्ञा स्त्री० अनादर। अपमान।  
दे० "अवमान"।

क्रि० स० अपमान करना।  
 अवमानित-वि० अपमानग्रस्त। असम्मानित।  
 अवमूर्द्ध-सज्ञा पु० अध शिर। अधोमस्तक।  
 अवयव-सज्ञा पु० १ भाग। अंश। हिस्सा।  
 २ शरीर का अंग। ३ तर्कपूर्ण वाक्य का एक भेद या अंश। (न्याय)। ४ हस्त, पाद आदि भाग। एक देश।  
 अवयवी-वि० १ बहुत से अवयवोंवाला।  
 अंगी। २ कुल। संपूर्ण। समस्त। अगसहित।  
 सज्ञा पु० १ वह वस्तु जिसके बहुत-से अवयव हों। २ शरीर। देह।  
 अवर\*-वि० १ दूसरा। अन्य। और। २ नीचे। अधम। क्षुद्र। ३ कनिष्ठ। ४ मन्द।  
 ५ चरम।  
 अवरज-सज्ञा पु० १ अनुज। कनिष्ठ भ्राता।  
 २ शूद्र।  
 अवरजा-सज्ञा स्त्री० कनिष्ठा भगिनी। छोटी बहिन।  
 अवरत-वि० १ विरत। निवृत्त। २ स्थिर। ठहरा हुआ। ३ पृथक्। अलग।  
 \*सज्ञा पु० दे० "आवर्त"।  
 अवराधक-वि० पूजा करनेवाला। उपासक।  
 सेवक। ध्यानी। दास। सेवा करनेवाला।  
 आराधना करनेवाला।  
 अवराधन-सज्ञा पु० उपासना। सेवा। पूजा।  
 आराधना।  
 अवराधना\*-क्रि० स० पूजना। सेवा करना।  
 उपासना करना।  
 अवराधी\*-वि० उपासक। पूजक। आराधक।  
 अवरुद्ध-वि० १ रुका हुआ। २ छिपा हुआ।  
 गुप्त। ३ रोका हुआ। छेका हुआ। ४ कंठ में रखा हुआ। ५ दबा हुआ। ६ गुप्त वेष में छिपा हुआ। ७ निकाला हुआ। भगाया हुआ। ८ प्राप्त। लब्ध।  
 अवरुद्ध-वि० उतरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। 'आरुद्ध' का उलटा। पास आया हुआ।  
 अवरेख-सज्ञा स्त्री० १ लेख। लकीर।  
 २ प्रतिज्ञा।  
 अवरेखना\*-क्रि० स० [स० अवलेखन] १ लिखना। चित्रित करना। उरेहना। २

अनुमान करना। सोचना। कल्पना करना।  
 ३ दखना। ४ जानना। मानना।  
 अउरेख-सज्ञा पु० [रेख=गति] १ टेढ़ी गति।  
 तिरछी चाल। २ कपड़े की तिरछी काट।  
 यो०-अवरेखदार=तिरछी काट का।  
 ३ कठिनाई। सरापी। ४ उलझन। पेंच।  
 ५ विवाद। झगडा। सीचा-सानी।  
 अवरोम-सज्ञा पु० १ रोम। रखावट। अटक।  
 अडबन। २ घेर लेना। ३ बंद करना।  
 निराध। ४ अनुरोध। दवाव। ५ अंतपुर।  
 रनिवास।  
 अवरोधक-वि० विघ्न डालनेवाला। रोकने-  
 वाला।  
 अवरोधन-सज्ञा पु० [वि० अवरोधित,  
 अवरोधी, अवरोध] १ छेड़ना। रोकना।  
 २ जनाना। अंतपुर।  
 अवरोधना-क्रि० स० मना करना। निषेध  
 करना। रोकना।  
 अवरोधित-वि० जो रोका गया हो। रोका  
 हुआ।  
 अवरोधी-वि० [स्त्री० अवरोधिनी]  
 रोकनेवाला।  
 अवरोह-सज्ञा पु० १ नीचे की ओर ढाल।  
 उतार। २ गिराव। अध पतन। अवनति।  
 स्वरा का नीचे उतरना (संगीत)। पेड़  
 की ढाल से भूमि की ओर लटकी जटा  
 (जैसे बड़ की)।  
 अवरोहन-सज्ञा पु० [वि० अवरोहक,  
 अवरोहित अवरोही] उतार। गिराव।  
 नीचे की ओर जाना। पतन।  
 अवरोहना\*-क्रि० अ० नीचे आना।  
 उतरना।  
 क्रि० अ० ऊपर जाना। चढ़ना।  
 \*क्रि० स० अंकित करना। खींचना। चित्रित  
 करना।  
 \*क्रि० स० रोकना।  
 अवरोही-(स्वर)-सज्ञा पु० क्रमानुसार  
 उतरते हुए स्वर (संगीत)। आरोही  
 का उलटा। विलोम।  
 अवर्ण-वि० १ जिसका कोई वर्ण या रंग न  
 हो। २ वर्ण-धर्म-रहित। ३ बुरे रंग का।

कर उमें एक ओर लगाता। गमाधि।  
 ३ चौकनी। सावधानी।  
 \*सज्ञा पु० गर्भ। पेट।  
 अवधारण-सज्ञा पु० [वि० अवधारित, अव-  
 धारणीय, अवधार्य] निश्चय। स्थिरीकरण।  
 विचारपूर्वक नियंत्रण करना।  
 अवधारना\*-प्रि० ग० १ धारण करना।  
 ग्रहण करना। लेना। २ अपमान।  
 अवधारी-प्रि० वि० निश्चय किया गया।  
 सोचा गया।  
 अवधि-सज्ञा स्त्री० १ सीमा। हृद। २  
 निश्चित समय। मियाद। ३ अंतिम काल।  
 अंत समय।  
 अव्य० १ पर्यंत। तक। २ से। लीं।  
 अवधिमाम\*-सज्ञा पु० भागर। समुद्र।  
 अवधो-वि० अवध में संबंधित। अवध का।  
 सज्ञा स्त्री० अवध की बोली।  
 अवधीय-अव्य० १ विचार कर। सोचकर।  
 २ अपमानित कर।  
 अवधूत-सज्ञा पु० [स्त्री० अवधूतिन]  
 १ सन्यासी। साधु। योगी। २ उदासीन।  
 ३ कम्पित। कम्पायमान। ४ परिवर्जित।  
 परिष्कृत।  
 अवध्य-वि० वध के अयोग्य। जिसको प्राण  
 दण्ड न दिया जा सके।  
 अवन-सज्ञा पु० १ प्रसन्न करना। २ रक्षा।  
 बचाव।  
 राज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।  
 अवनत-वि० १ नीचा। झुका हुआ। २  
 गिरा हुआ। पतित। ३ कम। ४ विनीत,  
 ५ अधःपतित। दुर्दशाग्रस्त।  
 अवनति-सज्ञा स्त्री० १ वमी। न्यूनता।  
 घटती। २ अधोगति। कुदशा। हीन दशा।  
 ३ झुकाना। झुकाव। ४ नम्रता। ५  
 विनती। ६ प्राप्त। आया हुआ। उपस्थित।  
 अपना-प्रि० अ० दे० "आवना"।  
 अदनि-सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। जमीन।  
 २ रक्षण। पालन।  
 अयपात-सज्ञा पु० १ पतन। गिराव। २ कुड़।  
 गड्ढा। ३ छाँटा। माला। हाथियाक फूसान  
 का गड्ढा। ४ नाटक में भयादि से भागना,

व्याकुल होना आदि दिखाकर अथ वी  
 गमाधि।  
 अवनिप-सज्ञा पु० राजा। नृप। नरेश।  
 अवनिभू-सज्ञा पु० मगधह। भोग।  
 अवनी-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी। मेदिनी। भूमि।  
 अवनीकुमारी-सज्ञा स्त्री० गीता। मिथिस्थ-  
 कुमारी।  
 अवनीपति-सज्ञा पु० भूपति। राजा।  
 अवनीपरमणी-सज्ञा स्त्री० रानी। राजा की  
 पत्नी।  
 अवनेजन-सज्ञा पु० धीतवर्ण। मार्जन।  
 अवन्द-वि० अप्रुज्य। अवन्दनीय। प्रणाम  
 के अयोग्य।  
 अवन्द्य-वि० सफल। फलवान्।  
 अवभास-सज्ञा पु० १ प्रकाशवर्ण। प्रकाशन।  
 २ माया। प्रपञ्च।  
 अवभूय-सज्ञा पु० १ वह वन्य हृष्टा वाम  
 जिस करने का विधान मुख्य यज्ञ के  
 समाप्त होने पर है। २ यज्ञ के अंत का  
 स्नान। ३ व्रत। ४ यज्ञ जैप। ५ यज्ञ  
 आदि की ममाप्ति का स्नान। औपधि  
 आदि में लिप्त हाकर कुटुम्ब परिजन  
 सहित स्नान का अवभूय स्नान कहते हैं।  
 अवबोध-सज्ञा पु० ज्ञान। बोध। जागना।  
 अवम-सज्ञा पु० १ पितरा का गण विशेष।  
 २ मल्मास। अधिमास। ३ तीन तिथियाँ  
 जिस दिन में हा। ४ निम्नतम। सबसे छोटा।  
 ५ अन्य। दूसरा। ६ अंतिम। ७ सौर और  
 चान्द्र मासा का अंतर।  
 अवमत-वि० अपमानित। तिरस्कृत। अवज्ञात  
 अवम तिथि-सज्ञा स्त्री० ऐसी तिथियाँ जिसका  
 क्षय हुआ गया है।  
 अवमर्दन-सज्ञा पु० (वि० अवमर्दित) बघ्ट  
 पहुँचाना। कुचलना। रौंदाया या मलना।  
 अवमर्श सधि-सज्ञा स्त्री० सधि विशेष।  
 (नाट्य शास्त्र)।  
 अवमर्षण-सज्ञा पु० लोप। अपक्षय। परिक्षय।  
 अवमान-सज्ञा पु० [वि० अवमानित] तिर-  
 स्कार। अपमान। अपमन।  
 अवमानता-सज्ञा स्त्री० अनादर। अपमान।  
 दे० "अवमान"।

क्रि० स० अपमान करना।  
 अवमानित-वि० अपमानयस्त। अस्मानित।  
 अयमृद्ध-संज्ञा पुं० अधःशिरः। अधोमस्तक।  
 अवयव-संज्ञा पुं० १. भाग। अंश। हिस्सा।  
 २. शरीर का अंग। ३. तत्पूर्ण वाक्य का एक भेद या अंश। (न्याय)। ४. हस्त, पाद आदि भाग। एक देश।  
 अवयवी-वि० १. बहुत से अवयवोंवाला। अंगी। २. कुल। संपूर्ण। समस्त। अंगसहित।  
 संज्ञा पुं० १. वह वस्तु जिसके बहुत-से अवयव हों। २. शरीर। देह।  
 अवर\*-वि० १. दूसरा। अन्य। और। २. नीचे। अधम। क्षुद्र। ३. कनिष्ठ। ४. मन्द। ५. चरम।  
 अवरज-संज्ञा पुं० १. अनुज। कनिष्ठ भ्राता। २. सूद।  
 अवरजा-संज्ञा स्त्री० कनिष्ठा भगिनी। छोटी बहिन।  
 अवरत-वि० १. घिरत। निवृत्त। २. स्थिर। ठहरा हुआ। ३. पुत्रक। अलग।  
 \*संज्ञा पुं० दे० "आवर्त"।  
 अवराधक-वि० पूजा करनेवाला। उपासक।  
 सेवक। ध्यानी। दास। सेवा करनेवाला।  
 आराधना करनेवाला।  
 अवराधन-संज्ञा पुं० उपासना। सेवा। पूजा।  
 आराधना।  
 अवराधना\*-क्रि० स० पूजना। सेवा करना।  
 उपासना करना।  
 अवराधी\*-वि० उपासक। पूजक। आराधक।  
 अवबद्ध-वि० १. रका हुआ। २. छिपा हुआ।  
 गुप्त। ३. रोका हुआ। छेका हुआ। ४. कद में रखा हुआ। ५. ढका हुआ। ६. गुप्त वेष्ट में छिपा हुआ। ७. निकाला हुआ। भगाया हुआ। ८. प्राप्त। लब्ध।  
 अवबद्ध-वि० उतरा हुआ। ऊपर से नीचे आया हुआ। 'आबद्ध' का उलटा। पास आया हुआ।  
 अवरोह-संज्ञा स्त्री० १. लेख। लकीर। २. प्रतिज्ञा।  
 अवरोहना\*-क्रि० स० [ सं० अवरोहण ] १. लिखना। चित्रित करना। उरोहना। २.

अनुमान करना। सीचना। कल्पना करना।  
 ३. देसना। ४. जानना। मानना।  
 अवरोह-संज्ञा पुं० [ रेव=गति ] १. टेढ़ी गति।  
 तिरछी चाल। २. कपड़े की तिरछी काट।  
 यो०-अवरोहदार=तिरछी काट का।  
 ३. कठिनाई। सराबी। ४. उलझन। पेंच।  
 ५. विवाद। झगड़ा। खीचा-तानी।  
 अवरोध-संज्ञा पुं० १. रोक। रुकावट। अटक।  
 अड़वन। २. घेर लेना। ३. बंद करना।  
 निरोध। ४. अनुरोध। दवाव। ५. अंतःपुर।  
 रनिवास।  
 अवरोधक-वि० विघ्न डालनेवाला। रोकने-  
 वाला।  
 अवरोधन-संज्ञा पुं० [ वि० अवरोधित, अवरोधी, अवबद्ध ] १. छेकना। रोकना।  
 २. जानना। अंतःपुर।  
 अवरोधना-क्रि० स० मना करना। निषेध करना। रोकना।  
 अवरोधित-वि० जो रोक गया हो। रोक हुआ।  
 अवरोधी-वि० [ स्त्री० अवरोधिनी ]  
 रोकनेवाला।  
 अवरोह-संज्ञा पुं० १. नीचे की ओर ढाल।  
 उतार। २. गिराव। अधःपतन। अवनति।  
 स्वरां का नीचे उतरना (संगीत)। पेड़ की ढाल से भूमि की ओर लटकी जटा (जैसे बड़ की)।  
 अवरोहण-संज्ञा पुं० [ वि० अवरोहक, अवरोहित, अवरोही ] उतार। गिराव।  
 नीचे की ओर जाना। पतन।  
 अवरोहना\*-क्रि० अ० नीचे आना।  
 उतरना।  
 क्रि० अ० ऊपर जाना। चढ़ना।  
 \*क्रि० स० अंकित करना। खीचना। चित्रित करना।  
 \*क्रि० स० रोकना।  
 अवरोही-(स्वर)-संज्ञा पुं० क्रमानुसार उतरते हुए स्वर (संगीत)। आरोही का उलटा। विलोम।  
 अवर्ण-वि० १. जिसका कोई वर्ण या रंग न हो। २. वर्ण-धर्म-रहित। ३. बुरे रंग का।

चदरा। ४. अकार। ५. निन्दा। ६. परिवाद।  
 अवर्ण-वि० अवर्णनीय। वर्णन के अयोग्य।  
 गज्ञा पु० उपमान। जो वर्ण या उपमेय न हो।  
 भस्त्र-गज्ञा पु० पानी का चक्कर। भस्त्र। घुमाव। चक्कर।  
 अवर्णमान-वि० अभाव। अनुपस्थित। मृत।  
 अवर्ण-सज्ञा पु० वर्षा का अनाव।  
 अवलंघना-क्रि० स० लांघना।  
 अवलंब-सज्ञा पु० १. सहारा। आसरा। आश्रय। आधार। २. शरण। पडाव।  
 अवलंबन-गज्ञा पु० [ वि० अवलंबित, अवलंबी ] १. सहारा। आश्रय। आधार। २. ग्रहण। धारण। ३. ठेस। पडाव।  
 अवलंबना\*-क्रि० स० १. टिकना। अवलंबन करना। सहारा लेना। २. ग्रहण या धारण करना।  
 अवलंबनीय-वि० आश्रयणीय। अवलंबन करने के योग्य।  
 अवलंबित-वि० १. सहारे पर टिका हुआ। आश्रित। २. लटकता हुआ। ३. निर्भर। किसी बात के होने पर स्थिर किया हुआ।  
 अवलंबी-वि० [ स्त्री० अवलंबिनी ] १. सहारा लेनेवाला। २. सहारा देनेवाला।  
 अवलिप्त-वि० १. लगा या पोता हुआ। २. आसक्त। ३. घमडी।  
 अवली\*-सज्ञा स्त्री० १. पांती। पवित। २. झुड़। समूह। ३. वह वन की डाँठ जो तवाग्र करने के लिए खेत से पहले पहल काटी जाती है।  
 अवलीक-वि० १. पवित्र। शुद्ध। २. कलक-रहित।  
 अवलेखना-क्रि० स० १. चिह्न डालना। २. सूरचना। खोदना।  
 अवलेप-सज्ञा पु० १. लेप। उबटन। २. अहकार। घमंड। गर्व।  
 अवलेपन-सज्ञा पु० १. पोतना। लगाना। २. वह वस्तु जो लगाई जाय। लेप। ३. अभिमान। घमंड। ४. दोष। बुराई। दूषण।

अवलेह-गज्ञा पु० [ वि० अवलेह ] १. लेई जो न अधिक गाढ़ी ओर न अधिपतनी हो। २. माजून। चटनी। ३. वह औषध जो चाटी जाय। ४. चाटनेवाली कोई चीज। भोज्य-विशेष।  
 अवलेहन-१. जिज्ञा में आम्बादन। चगना। चाटना। २. चटनी।  
 अवलोक्त-सज्ञा पु० [ वि० अवलोकित, अवलोकनीय ] १. देगना। २. दर्शन। ३. दृष्टि। ४. गोज-बोन। देख-भाल। जाँच-पड़ताल।  
 अवलोकना\*-क्रि० स० १. देगना। २. पता लगाना। अनुसंधान करना। जाँचना।  
 अवलोकन\*-सज्ञा स्त्री० १. दृष्टि। २. आँख। चितवन। ३. देखने का ढग।  
 अवलोकनीय-वि० दर्शनीय। देखने योग्य।  
 अवलोक-क्रि० म० देख। देखें। देखिए। दृष्टि दीजिए।  
 अवलोचना\*-क्रि० स० अलग करना। दूर करना।  
 अवश-वि० १. विवश। लाचार। बाध्य। २. पराधीन। बलहीन। असमर्थ। ३. अवाध्य। अनायत। अनधीन।  
 अवशिष्ट-वि० बाकी। शेष। बचा हुआ। अवशेष।  
 अवशेष-वि० १. शेष। बचा हुआ। बाकी। २. समाप्त। अन्त।  
 सज्ञा पु० [ वि० अवशिष्ट ] १. शेष वस्तु। २. समाप्ति। अंत।  
 अवशेषित-वि० बचा हुआ। बाकी। जो बच रहा।  
 अवश्य-क्रि० वि० निश्चय करके। निःसंदेह जरूर।  
 वि० [ स्त्री० अवश्य ] १. जो वश में न हो। २. जो वश में न आ सके।  
 अवश्यम्भावी-वि० निस्तान्देह। होने के योग्य। एकान्त भावी। बटल। आवश्यक।  
 अवश्यमेव-क्रि० वि० निश्चय ही। अवश्य ही। जरूर। निःसंदेह।  
 अवर्ण-सज्ञा पु० दृष्टि का अभाव। वर्षा का न होना। अनावृष्टि।

अवसद्व-वि० १ दुःखी। विपाद प्राप्त। २ नष्ट होनेवाला। ३ आलसी। सुस्त। ४ निवन्मा। ५ श्रान्त। क्लान्त। गिरा हुआ। थका हुआ। ६ जडीभूत। ७ उदास। ८ गहरा (जैसे पाव)। ९ समाप्त (जैसे दृष्टि)।

अवसर-सज्ञा पु० १ काल। समय। २ अवकाश। फुरात। ३ इतफाक। समीप। मौका। ४ विराम। विश्राम। ५ प्रस्ताव। ६ मंत्र विशेष। ७ वपण। ८ वस्तर। ९ क्षण।

मुहा०—अवसर चूकना=मौका हाथ से जाने देना।

१० एक वाक्यालंकार जिसमें किसी घटना का ठीक अपेक्षित समय पर घटित होना वर्णन किया जाय।

अवराधी\*-वि० पूजा या उपासना करनेवाला। पुजारी।

अवसर्पिणी-सज्ञा स्त्री० जैन शास्त्रानुसार पतन का समय जिसमें रूपादि का क्रमशः ह्रास होता है।

अवसाव-सज्ञा पु० १ क्षय। नाश। २ दुःख। विपाद। ३ दीनता। ४ कमजोरी। ५ बकावट।

अवसान-सज्ञा पु० १ अंत। समाप्ति। २ ठहराव। विराम। ३ हृद। सीमा। ४ सायकाल। ५ मरण। मृत्यु। ६ शेष।

अवसि-क्रि० वि० दे० 'अवश्य'।

अवसित-वि० १ जिसका अवसान या अन्त हुआ हो। समाप्त। गत। बीता हुआ। २ बदला हुआ। परिणत।

अवसेख\*-वि० दे० 'अवश्य'।

अवसेचन-सज्ञा पु० १ पानी देना। सींचना। २ पसीना निकलना। पसीजना।

३ रोगी के शरीर से पसीना निकालन की क्रिया। ४ शरीर का खून निकालना।

अवसेर अवसेरि\*-सज्ञा स्त्री० १ अटकाव।

उल्लंघन। २ विलंब। देर। ३ चिन्ता।

व्यग्रता। उच्चाट। ४ हैरानी। परेशानी।

५ चाह। ६ आशा।

अवसेरना-क्रि० रा० तग करना। दुःख देना।

कष्ट देना। छेड़ना।

अवस्था-सज्ञा स्त्री० १ गति। दशा। हालत। २ काल। समय। ३ उम्र। आयु। ४ स्थिति। ५ मनुष्य की चार अवस्थाएँ—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। ६ मनुष्य-जीवन की आठ अवस्थाएँ—बाल-वैभार, पैगड, कैशोर, यौवन, तरुण, वृद्ध और वर्षीयान्। ७ उपस्थिति (जैसे बदालत में)। ८ स्थायित्व (दे० "अनवस्था")। ९ स्त्री की जननेंद्रिय और मल्लेन्द्रिय।

अवस्थांतर-सज्ञा पु० दूसरी अवस्था। अन्य दशा।

अवस्थात्रय-सज्ञा पु० जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति ये तीन अवस्थाएँ हैं।

अवस्थाता-सज्ञा पु० अधिष्ठाता। अवस्थानकारी।

अवधान-सज्ञा पु० १ जगह। स्थान। २. वास। ठहराव। टिकना। ३ स्थिति।

अवस्थापन-सज्ञा पु० स्थापित करना।

अवस्थित-वि० १ उपस्थित। विद्यमान। मौजूद। २ ठहरा हुआ। कृतावस्थान। ३ स्थिरीभूत।

अवस्थिति-सज्ञा स्त्री० १ स्थिति। सत्ता। २ वर्तमानता। मौजूदगी।

अवहित-वि० १ विज्ञात। २ अवधान। ३ गत।

अवहित्वा-सज्ञा स्त्री० १ छिपाव। भाव। छिपाना। २ छपवेश। चालाकी से अपने को छिपाना।

अवही-सज्ञा पु० बवूर विशेष।

अवहेलना-सज्ञा स्त्री० १ आज्ञा न मानना। तिरस्कार। २ ध्यान न देना। लापरवाही।

\*क्रि० रा० तिरस्कार करना। उल्लंघन करना।

अवहेला-स्त्री० दे० "अवहेलना"। अन्याय। अश्रद्धा। अयज्ञा।

अवहेलित-वि० तिरस्कृत। जिसकी अवज्ञा हुई हो।

अवा-सज्ञा पु० दे० 'आवां'। पजावा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बरतन पकाते हैं।

अव छनीय-वि० जिसके न होने की इच्छा की जाय। जिसका होना अच्छा न समझा जाय।

अवातर-वि० मध्यवर्ती । अतर्गत ।

सज्ञा पु० योच । मध्य ।

यौ०-१ अवातर दिशा=योच की दिशा ।  
विदिशा । २ अवातर भेद=अतर्गत भेद ।  
भाग का भाग ।

अवांर-सज्ञा स्त्री० विलम्ब । अत्याचार ।  
अवांसी-सज्ञा स्त्री० वह बोझ जो नवाग्र  
के लिए फसल में से पहले काटा जाय ।  
अवली । कवल ।

अवाई-सज्ञा स्त्री० १ आना । आगमन । २  
गहरी जोताई । 'सिव' का उलटा ।

अवाक्-वि० १ मौन । चुप । वाक्य-  
रहित । २ स्तब्ध । स्तमित । चकित ।  
विस्मित ।

अवाङ्मुख-वि० १ उलटा । अधोमुख ।  
नत । नीचे मुँह का । २ लज्जित ।

अवाची-सज्ञा स्त्री० दक्षिण दिशा ।

अवाच्य-वि० १ अनिदित । विशुद्ध । जो  
कहने के अयोग्य हो । २ जिससे बात  
करना उचित न हो । नीच ।

सज्ञा पु० १ कुवाच्य । गाली । अकथ्य ।  
२ मौनी । गुप्तचुप । ३ दक्षिण दिशा का ।

अवाज\*-सज्ञा स्त्री० दे० "आवाज" ।

अवाध्य-वि० अतर्क्य । बिना विषा ।

अवाधी-वि० बाधाहीन । दुःखरहित ।  
मुख-रूप ।

अवार-सज्ञा पु० नदी के इस पार का  
किनारा । 'पार' का उलटा ।

अवारजा-सज्ञा पु० [ फा० ] १ जना-खर्च  
की वही । २ विशेष वही जिसमें प्रत्येक  
असामी की जोत आदि लिखी जाती है ।

अवारना\*-क्रि० स० १ मना करना ।  
रोकना । २ दे० "वारना" ।

सज्ञा स्त्री० १ मोड़ । किनारा २ मुख-  
विवर । मुँह का छेद ।

अवास\*-सज्ञा पु० दे० "आवास" । वास ।  
घर । निवासस्थान ।

अधि-सज्ञा पु० १ सूर्य । २ आकाश । मदार ।  
३ भडा । ४ वक्ता । ५ पहाड़ । ६  
रक्षक । प्रभु । ७ वायु । ८ एक पक्ष ।  
९ दीवाल । १० चूहे के चमड़े का दवरन ।

अधिकच-वि० बिना विला हुआ । जो विकसित  
न हुआ हो ।

अविरल-वि० १ बँसा ही । यथायथ । उदा-  
का त्यो । २ समस्त । पूरा । पूर्ण । ३  
वृद्धिरहित । ४ शान्त । निश्चल । ५  
नियमित । नियमबद्ध ।

अविकल्प-वि० १ निश्चित । २ निःसंदेह ।  
असंदिग्ध । असंशय ।

अविकल्पित-वि० सन्देहरहित । असंशय ।

अविकार-वि० १ निर्दोष । विकृति शून्य ।  
विचार-रहित । अविकल । २ जिसका रूप-  
रंग न बदले ।

सज्ञा पु० १ विकार का अभाव । जन्म-मर-  
णादि विकार-शून्य । अज । २ अविनाशी ।  
ईश्वर । अविकारी ।

अधिकारी-वि० [ स्त्री० अविकारिणी ] १  
जो एक-सा रह । निर्विकार । जिसमें विकार  
न हो । २ जो किसी का विकार न हो ।  
जो किसी में विकार न उत्पन्न करे ।

अविकृत-वि० पु० जो विगड़ा या बदल  
न हो । जिसमें विकार न आया हो ।

अविगत-वि० १ जो ज्ञात न हो । २ अज्ञात  
अनिर्वचनीय । ३ नित्य । जिसका नाश न हो ।

अविचल-वि० १ अचल । स्थिर । अटल । जो  
विचलित न हो । स्थावर । २ भयशून्य ।  
निष्कम्प । निडर ।

अविचलित-वि० स्थिर । दृढ़ । निश्चित ।

अविचार-सज्ञा पु० १ विचार का न  
होना । २ अविवेक । अज्ञान । ३  
अत्याचार । अन्याय । अधर्म । ४ भूल ।

अविचारित-वि० अविचेचित । अतृप्त विचार ।

अविचारी-वि० [ स्त्री० अविचारिणी ] १  
विचाररहित । बेसमझ । २ अन्यायी ।  
अत्याचारी । ३ अविषक्षण ।

अविच्छिन्न-वि० लगातार । अटट । अभिन्न ।  
सलग्न । युक्त । भेद रहित ।

अविच्छेद-वि० जिसका विच्छेद न हो ।  
लगातार । अटट ।

अविज्ञ-वि० अनजान । अनभिज्ञ । अज्ञानी ।  
अविज्ञता-सज्ञा स्त्री० अनैपुण्य । अप्रवीणता ।  
अबोध ।

अविज्ञान-वि० १ अज्ञात । जो जाना हुआ न हो । २ अर्थ-निश्चय शून्य । येसमज्ञा ।  
अविज्ञेय-वि० न जानने योग्य । जो जाना न जा सके ।

अविज्ञ-वि० पाला हुआ ।  
अविज्ञ-वि० उलटा । विरुद्ध । विपरीत ।  
अविज्ञ-वि० विस्तार-रहित । संकुचित ।  
अविस्तृत ।

अविज्ञ-मज्ञा पु० सत्य । यथार्थ ।  
वि० सत्यवान् । यथार्थ । विशिष्ट ।  
अविज्ञ-वि० निश्चित । निस्पन्देह ।  
अविज्ञ-वि० अपाण्डित्य । अचतुर । अनभिज्ञ ।

अविज्ञ-सज्ञा स्त्री० अनिपुणता ।  
अविज्ञ-वि० अज्ञात । जो विदित न हो ।  
अनपगत । विना जाना हुआ ।

अविज्ञ-वि० मूर्ख । अनभिज्ञ । विचाररहित ।  
अविज्ञान-वि० १ अनुपस्थित । जो उपस्थित न हो । अवलम्बित । २ असत् । ३ असत्य ।  
झूठ । मिथ्या । ४ अभाव । ५ असत्ता ।

अविधि-सज्ञा स्त्री० १ अज्ञान । विरुद्ध ज्ञान ।  
मिथ्या ज्ञान । मोह । २ माया का एक भेद ।  
३ कर्मकाण्ड । ४ जड । सांख्यशास्त्रानुसार प्रकृति । ५ मूर्खता । अज्ञता ।

वि० नियम के विरुद्ध । जो नियमानुसार न हो । अनियमित ।

अविनय-सज्ञा पु० उद्धृता । डिठाई । विनय का न होना । नम्रतारहित ।

अविनश्य-वि० विरस्थायी । जिसका नाश न हो । जो विगडे नहीं । नाश न होनेवाला । ईश्वर ।

अविनाश-सज्ञा पु० १ संपन्न । २ किसी भी वस्तु का दूसरी वस्तु से आवश्यक संपन्न, जैसे अग्नि और घूम का (अग्नि रहेगी तो ही घूम होगा, और घूम होगा तो अग्नि रहेगी ही) ।

अविनाश-सज्ञा पु० अथाय । विनाश का अभाव ।

अविनाशी, अविनाशी-वि० [स्त्री० अविनाशिनी] १ अक्षय । अक्षर । जिनका नाश न हो । २ नित्य । शाश्वत । सर्वदा रहनेवाला । ३ परमात्मा ।

अविनीत-वि० [स्त्री० अविनीता] १ उद्धृत । जो विनीत न हो । २ अदात । दुर्दात । सरकश । ३ दुष्ट । ४ डीठ । अन्यायी ।  
ध्वल । उच्छृंखल । उद्धृष्ट ।

अविभक्त-वि० १ मिला हुआ । २ जा बांटा न गया हा । ३ एक । अभिन्न । ४ अविभाज्य ।

अविभिन्न-वि० दे० "अभिन्न" । एक में मिला हुआ । जो विभिन्न या अलग न हो ।

अविमुक्त-वि० बद्ध । जो विमुक्त न हो ।  
सज्ञा पु० १ कनपटी । २ काशी के पास एक तीर्थ ।

अविमुक्त क्षेत्र-वि० काशी ।

अविर-वि० १ विराम का अभाव । लगातार । निरंतर । २ लगा हुआ ।

कि० वि० १ लगातार । निरंतर । २ नित्य । हमेशा । सदैव ।

अविरति-सज्ञा स्त्री० १ लीनता । निवृत्ति का अभाव । २ विषयासक्ति । ३ वेचनी । अशांति ।

अविरल-वि० १ अविच्छिन्न । मिला हुआ । २ सघन । घना । ३ निरन्तर ।

अविराम-वि० १ बिना विश्राम किये हुए । २ निरंतर । लगातार । अनवरत ।

अविरोध-सज्ञा पु० १ बराबरी । समानता । २ विरोध का न होना । अनुकूलता । ३ मेल । संगति । मिलाप । प्रीति । द्वेष का अभाव । एकता । ४ सुख । चैन ।

अविरोधी-वि० १ अनुकूल । जो विरोधी न हो । २ मित्र । ३ मित्रापी । धीर । शान्त ।

अविरोधिनी-सज्ञा स्त्री० धीरज या शान्ति रखनेवाली स्त्री ।

अविलम्ब-सज्ञा पु० बिना विलम्ब या देर के । जोर । बुरल । बटपट । फौरन ।

अविषादी-वि० मेली । सहज स्वभाव-वा । शान्त । जगडा न करनेवाला ।

अविवाहित-वि० [स्त्री० अविवाहिता] पुंआग । जिसका व्याह न हुआ हो ।

अविचार-सज्ञा पु० १ अविचार । विवेक का न होना । २ ज्ञान । नादान । मग । विचारहीनता । मूर्खपन । ३ अन्याय ।

अधिवेष्टा-मज्ञा स्त्री० १. अज्ञान। नादानता।

२ विवेक का अभाव।

अधिवेष्टो-वि० १ मूर्ख। मूढ। विवेक-रहित।

२ गरीब विचारणवाला। अधिवेष्टी। ३ धन्यायी।

अधिवेष्ट-वि० १ भेदक धर्मरहित। बगवत।  
तमान। सदृश। २ सामान्य। विशेषता-  
रहित।

सज्ञा पु० १ भेदक धर्म का अभाव। २  
साक्ष्य में सातत्व, धीरत्व और मूढत्व जादि  
विशेषताओं से रहित सूक्ष्म भूत।

अविश्वास-वि० १ जो न रहे। २ जो  
पके नहीं।

अविश्वासी-वि० अविश्वासी। जिस पर  
विश्वास न किया जा सके।

अविश्वास-सज्ञा पु० १ विश्वास का न  
होना। बेवफाई। २ अप्रत्यय। अवि-  
श्चय। ३ अप्रतीति। प्रतीतिहीनता।

अविश्वासी-वि० १ विश्वास न करने  
वाला। २ जिस पर विश्वास न किया  
जाय।

अविषय-वि० १ अगोचर। जो मन या  
इन्द्रिय का विषय न हो। २ अनिवेचनीय।  
३ पहुँच के बाहर का। ४ अमभव या  
अनुचित बात।

अविहङ्ग-वि० अलङ्घ्य। अनवर। खडित न  
हानेवाला।

अविहित-वि० जो विहित या ठीक न हो।  
अनुचित।

अव ग-वि० १ स्वतन्त्र (स्त्री)। २ जिसके  
पुन और पति न हो (स्त्री)।

अवेक्षण-सज्ञा पु० [ वि० अवेक्षित, अवेक्ष-  
णीय ] १ देखना। अवलोकन। २  
देख भाल। जाँच-पड़ताल।

अवेज\*-सज्ञा पु० [ अ० एवज ] बदला।  
प्रतीकार।

अवेर-सज्ञा स्त्री० शिल्प। जवेर। देरी।  
अधिक समय।

अवेस\*-सज्ञा पु० दे० "अवेश"।

अवेतनिक-वि० जा बेतन या तनस्वाह  
न ले। आनरेरी।

अवेदि-वि० जो वेद में विरुद्ध हो।

अवेध-वि० विधि या कानून के विरुद्ध।  
गैर कानूनी।

अव्यक्त-वि० १ अज्ञात। अनिवेचनीय।

२ अगोचर। अप्रत्यक्ष। जो प्रकट न हो।  
अप्रकाशित। ३ जिगमें रूप-रंग न हो।

मज्ञा पु० १ विष्णु। २ शिव। ३  
कामदेव। कन्दर्प। मूर्ख। परमात्मा।

क्रियारहित। ४ प्रवृत्ति-प्रधान। (साक्ष्य)।

५ सूक्ष्म शरीर और सुषुप्ति अवस्था।

६ ब्रह्म। ७ बीजगणित में वह  
राशि जिसका नाम अनिश्चित हो।

अनवगत राशि। ८ जीव। ९ एक  
उपनिषद् का नाम। १० अस्पष्ट रूप से  
कथित।

अव्यक्त गणित-सज्ञा पु० बीजगणित।  
अव्यक्तराग-सज्ञा पु० १ ईषत् लोहित वर्ण।

हल्का लाल। २ गौर। दन्त।

अव्यक्तलिङ्ग-सज्ञा पु० १ साक्ष्य के अनुसार  
महत्त्वादि। २ सन्यासी। ३ वह रोग  
जो पहचाना न जाय।

अव्यग्र-वि० पक्का-रहित। अनाकुल।

अव्यय-वि० १ अक्षय। नाशरहित। जो  
विकार को प्राप्त न हो। मदा एकरस  
रहनेवाला। २ कृपण। ३ नित्य। आदि-  
अत-रहित।

सज्ञा पु० १ व्याकरण में वह शब्द जिसका  
सब लिंग, सब विभक्ति या और सब  
वचना में समान रूप से प्रयोग हो। शब्द-  
विशेष। २ परब्रह्म। ३ शिव। ४ विष्णु।  
परमेश्वर।

अव्ययानाद-सज्ञा पु० समास का भेद-  
विशेष (व्याकरण)।

अव्यय-वि० १ सफल। सार्थक। २ अमोघ।  
जो न चूँ। ३ अचूक। ४ अवश्य अनर  
करनेवाला।

अव्यवस्था-सज्ञा स्त्री० [ वि० अव्यवस्थित ]  
१ निमगरहित। बेव्यावधी। २ स्थिति  
या मर्यादा का अभाव। ३ शास्त्रादि-  
विरुद्ध व्यवस्था। अनुरोति। अधिधि।  
४ बेइतजामी। गहबड़। ५ असम्मति।

अव्यवस्थित-वि० १ सिद्धान्त-रहित । शास्त्रादि-मर्यादा-रहित । २ वेठिकाने का । ३ अस्थिर । चंचल ।  
 अव्यवहार्य-वि० १ जो व्यवहार में न लाया जा सके । २ पतित । नीच । ३ जातिश्रद्धा ।  
 अव्यवहित-वि० १ व्यवधान रहित । २ सन्निकट । अत्यन्त समीप ।  
 अव्याकृत-वि० १ विकार-रहित । २ गुप्त । अप्रकट । ३ कारणरूप । ४ साख्यशास्त्रानुसार प्रकृति ।  
 अव्याप्ति-सज्ञा स्त्री० [ वि० अव्याप्त ] १ व्याप्ति का न होना । २ किसी वस्तु का ऐसा लक्षण, जो उसी पर न घटे, अर्थात् लक्ष्य में लक्षण का न घटना, जैसे, गौ का लक्षण करने के लिए कहे कि जिसके एक सींग होता है, वह गौ है । यह अव्याप्ति दोष हुआ, क्योंकि यह लक्षण गौ पर न घटा, गड़ पर घट गया । (न्यायशास्त्र) । ३ न फलना । ४ अप्राप्ति ।  
 अव्यय-वि० १ लगातार । निरन्तर । अटूट । २ जैसे वा तैसा । ज्या का त्या ।  
 अव्यय-वि० १ बेरोक । अप्रतिरुद्ध । अपराध-रहित । २ टीक । मत्स्य । युक्तियुक्त ।  
 अव्युत्पन्न-वि० १ अनाद्यो । मूल । अनभिज्ञ । २ वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके (व्याकरण) ।  
 अव्यय-वि० [ अ० ] १ आदि । पहला । प्रथम । २ श्रेष्ठ । उत्तम ।  
 सज्ञा पु० आदि । प्रारम्भ ।  
 अशर-वि० १ उडर । निर्भय । निडर । २ दाता रहित । ३ निश्चिन्त ।  
 अशक्त-वि० अर्थहीन । माग-व्यय शून्य । पायेय-हीन ।  
 अशक्त-गना पु० अशक्त । भावी के लिए पुरे सिद्ध । युग शक्त । युग लक्षण ।  
 अशक्त-वि० [ गज्ञा अशक्ति ] १ शक्ति रहित । कमजोर । निवृत्त । २ असमर्थ ।  
 अशक्त-मज्ञा स्त्री० अशक्तता । अपात्रता । शक्ति-हीनता ।  
 अशक्ति-गज्ञा स्त्री० [ वि० अशक्ति ] १

क्षीणता । शक्तिहीनता । कमजोरी । निर्वलता । २ इन्द्रिया और बुद्धि का बेकाम होना (साख्य) ।  
 अशक्त-वि० न होने योग्य । असाध्य । शक्य-रहित । असम्भव ।  
 अशक्यता-सज्ञा स्त्री० असाध्य । साध्याति-रिक्त ।  
 अशन-सज्ञा पु० १ आहार । अन्न । भोजन । २ खाने की निया । खाना । भक्षण ।  
 अशना-वि० खानेवाली ।  
 अशनाच्छादन-सज्ञा पु० अन्न-वस्त्र । रोटी-कपड़ा ।  
 अशनि-सज्ञा पु० विजली । वज्र । इन्द्र का शस्त्र ।  
 अशम-सज्ञा पु० लुब्ध । विकल । अशान्ति । विश्रामाभाव ।  
 अशम्य-वि० विरामयोग्य । अविश्रान्ति ।  
 अशरण-वि० १ जिसे कहीं शरण न हो । अनाथ । २ निराश्रय । रक्षाहीन । निरालम्ब ।  
 अशरफी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ सोलह से पचीस रुपये तक का सोने का एक सिक्का । मोहर । स्वर्णमुद्रा । २ पीले रंग का एक फूल ।  
 अशराफ-वि० [ अ० ] शरीफ । भद्र । भला ।  
 अशर-सज्ञा पु० वन्द्य । काम । मदन । वि० शरीर-रहित ।  
 अशरीरी-वि० विना शरीर का । जिसका शरीर न हो ।  
 अशात-वि० १ जो शान्त न हो । अस्थिर । चंचल । २ अशिष्ट । दुरन्त । ३ अधीर । ४ असंतुष्ट ।  
 अशातता-सज्ञा स्त्री० अशिष्टता । शीरात्म्य । घबड़ाहट ।  
 अशान्ति-सज्ञा स्त्री० १ अस्थिरता । हलचल । परवर्ती । चंचलता । २ असंतोष । क्षोभ । ३ उत्पान । ४ अगुणी ।  
 अशालीन-वि० धुष्ट । छोट ।  
 अशासित-वि० अकृत शासन । शासन-रहित ।  
 अशास्यरी या अशास्यरी-सज्ञा स्त्री० रागिणी विशेष ।

अशास्त्र-वि० शास्त्र-विरुद्ध। अवैध। विधि-हीन।

अशास्त्रीय-वि० वेद-विरुद्ध। अवैध।

अशिक्षित-वि० अनसोखा। जिमने शिक्षा न पाई हो। अनपढ़। वेपढ़ा-लिखा। असभ्य। अनभिज्ञ। अपण्डित।

अशित-वि० भुक्त। खादित।

अशिर-सज्ञा पु० १. हीरक। हीरा। २. अग्नि। ३. राक्षस। ४. सूर्य।

अशिरस्क-वि० मस्तकहीन। कवन्ध। धड़।

अशिश-सज्ञा पु० अमगल। अहित।

वि० अमगल या अहित। नुकसान करनेवाला।

अशिशिर-वि० अधीतल। ग्रीष्म। उष्ण।

अशिश्विका-सज्ञा स्त्री० अनपत्या। पुत्र-कन्या-हीना स्त्री।

अशिष्ट-वि० १. वेहूदा। उजड़। २. प्रगल्भ। ३. असभ्य। ४. मूर्ख।

अशिष्टा-सज्ञा स्त्री० १. उजड़पन। वेहूदगी। असाधुता। २. छिटाई। ३. असभ्यता।

अशुचि-वि० [ सज्ञा अशौच ] १. अपवित्र। २. अशुद्ध। ३. मैला। गदा।

अशुद्ध-वि० १. नापाक। अपवित्र। २. अस-स्कृत। बिना शोधा। ३. गलत। बेठीक। अकृत-शोधन। अपरिष्कृत। अशुचि। ४. त्रुटिसहित।

अशुद्धता-सज्ञा स्त्री० १. गदगी। अपवित्रता। २. गलती।

अशुद्धि-सज्ञा स्त्री० दे० "अशुद्धता"। १. अशोधन। २. भूल। ३. अशौच।

अशुन\*-सज्ञा पु० अश्विनी नक्षत्र।

अशुभ-सज्ञा पु० १. अहित। अमगल। २. अपराध। पाप। ३. बुराई।

वि० बुरा। जो शुभ न हो।

अशुभचिन्ता-सज्ञा स्त्री० अनिष्ट सोचना। बुरा चिन्तन।

अशुभदर्शन-सज्ञा पु० अमगल दर्शन। मन्द लक्षण।

अशुभ्यशयनव्रत-सज्ञा पु० व्रत-विशेष। श्रावण कृष्ण द्वितीया को यह व्रत किया जाना है।

अशोय-वि० १. समूचा। पूरा। सम्प्र। २.

शेषहीन। निशेष। गतम। समाप्त। ३. अनत। बहुत।

अशेषज्ञ-वि० सर्वज्ञ। सर्ववित्। सब जान-वाला।

अशेषतः-अव्य० सब प्रकार से। अनेक रूप से अशेष विशेष-मज्ञा पु० अनेक प्रकार। बहुत तरह।

अशोक-वि० १. दुःख-शून्य। शोकरहित। २. शोक न देनेवाला।

सज्ञा पु० १. पेड़-विशेष जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लकी-लकी और किनारों पर लहरदार होती हैं। २. पारा। ३. राजा-विशेष।

अशोकपुष्पमंजरी-सज्ञा स्त्री० दंडक वृत्त का भेद-विशेष।

अशोक-वादिका-सज्ञा स्त्री० १. रम्य उद्यान। जो शोक मिटावे। २. रावण का वह प्रसिद्ध बगीचा जिसमें उसने सीताजी को ले जाकर रखा था।

अशौच-सज्ञा पु० १. अविचार। २. अशुचि। अपवित्रता। अशुद्धता।

अशौच्य-वि० न सोवने योग्य। जिसके बारे में चिन्ता न करने की जरूरत हो। अशौच-नीय। शोक के अयोग्य।

अशोभन-वि० मन्द। कुदृश्य। दुर्दर्शन। अधी।

अशोभनीय-वि० कुत्सित आकार। बुरा।

अशोभा-सज्ञा पु० अगण्ड। बुरूप। बुरा।

अशौच-सज्ञा पु० [ वि० अशुचि ] १. अशुद्धता। अपवित्रता। २. हिंदू शास्त्रानुसार वह अशुद्धि जो घर के किसी प्राणी के मरने या सत्तान होने पर कुछ दिन मानी जाती है।

अशौर्य-सज्ञा पु० भीरुता। अविग्रह। अशूरत्व।

अशमंकर-सज्ञा पु० १. पात-विशेष जिससे प्राचीन काल में मेखला बनाते थे। २. ढक्कन। आच्छादन। ३. चूल्हा। अँगोठी। ४. दीप का ढक्कन।

अश्म-सज्ञा पु० १. पत्थर। पहाड़। २. बादल।

अश्मक-सज्ञा पु० दक्षिण का एक प्रदेश जो

प्राचीन समय में इसी नाम से पुकारा जाता था। नावकोर।

अश्मकुट-सज्ञा पु० १ वानप्रस्थ-विशेष जो केवल पत्थर से अन्न बूटकर पकाते थे।

२ मग-तराश (वैराज-मतरास) पत्थर काटनेवाला।

अश्मज-सज्ञा पु० गिलाजीत। लोह। पत्थर से उत्पन्न वस्तु।

अश्मधारण-सज्ञा पु० पत्थर काटनेवाला अस्त्र।

अश्मरी-सज्ञा स्त्री० पथरी नामक रोग-विशेष। मूत्रकृच्छ्र रोग।

अश्रद्धा-सज्ञा स्त्री० [वि० अश्रद्धेय] १ श्रद्धा का न होना। २ अभवित। ३ धृष्ट। धिन्। ४ अविश्वास।

अश्रद्धेय-वि० धृष्ट। धृष्टा के योग्य। अनादरणीय।

अश्व-सज्ञा पु० राक्षस। निशाचर।

अश्रात-वि० श्रान्तिहीन। जो थका-माँदा न हो।

वि० वि० अतवर्ग। विश्रामरहित। निरतर। लगातार।

अश्वान्ति-सज्ञा स्त्री० अविश्राम। अनवरत।

अश्राद्ध-वि० प्रेतधर्म-रहित।

अश्राव्य-वि० सुनने के अयोग्य। अश्रोतव्य।

अश्वि-सज्ञा स्त्री० १ धार। पैना। तीर। तीक्ष्ण। २ कान।

अश्व-सज्ञा पु० नेत्रजल। आँसू।

अश्रुत-वि० १ अनाकर्णित। २ जो सुना न हो। जिसने कुछ देखा-सुना न हा।

३ सुनने न पड़ा हुआ। ४ अपठ। मृग।

अश्रुतपूर्व-वि० १ जो पहले न सुना गया हो।

२ अनोखा। विज्ञान। अदभुत।

अश्वपात-सज्ञा पु० रक्त। राना। आँसू गिरना।

अश्वेयम-वि० निर्गुण। अयम। अमग।

अश्वेष्ट-वि० दुग। साधारण। उत्तम नहीं।

अश्विष्ट-वि० जो जुटा या मिला न हो।

अश्वत्थ। अश्वत्थ।

अश्वीत्-वि० १ भद्र। पृष्ट। अश्वीत्वात्।

२ नीर। अपम।

सज्ञा पु०-धृष्टा अथवा लज्जासूचक बात। वाच्यगत दोष। ग्राम्य भाषा।

अश्लीलता-सज्ञा स्त्री० भद्रापन। लज्जा का उल्लंघन। फूहड़पन। (काव्य में एक दोष)

अश्लेष-सज्ञा पु० १ श्लेषरहित। २ अप्रणय। ३ असख्य। ४ अप्रीति। ५ श्लेष-भिन्न।

६ अपरिहास।

अश्लेषा-सज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से नवाँ। इस नक्षत्र में ५ तारे हैं।

अश्लेषाभव-सज्ञा पु० केतुग्रह।

अश्व-सज्ञा पु० १ घोड़ा। २ शतरंज का एक मोहरा। ३ सात (७) सख्या। ४ एक नायक (कामशास्त्र)।

अश्वकर्ण-सज्ञा पु० १ लता-आल। २ एग प्रहार का शालवृक्ष। ३ घोड़े का कान।

अश्वगधा-सज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। असगंध।

अश्वगति-सज्ञा पु० १ छन्द-विशेष। २ एक चित्रकाव्य।

अश्वतर-सज्ञा पु० [स्त्री० अश्वतरी] १ खच्चर। २ नागराज।

अश्वत्थ-सज्ञा पु० १ वृक्षविशेष। पीपल। २, चल्द्रुम।

अश्वत्थामा-सज्ञा पु० १ द्राण-चार्य के पुत्र। २ पाण्डव-पक्षीय मालवराज इन्द्रवर्म का हाथी।

अश्वपति-सज्ञा पु० १ रिसालदार। २ घडभवार। ३ घोड़ा का मालिक। ४ केवय देश के राजकुमारों की उपाधि।

५ भरतजी के मामा।

अश्वपाल-सज्ञा पु० मार्ग। घोड़े की देख-भाल करनेवाला।

अश्वमेध-सज्ञा पु० चतुर्वर्ती राजाओं का एक यज्ञ, जिसमें घोड़े का भूमंडल में घूमने के लिए छोड़ा दते थे। फिर उसको मार्ग पर उगरी चर्वा में हवन किया जाता था।

अश्वदार-सज्ञा पु० अश्वारोही। पुरुषवार।

अश्ववैद्य-सज्ञा पु० अश्व-चिकित्सक।

अश्वशाला-सज्ञा स्त्री० अश्वार। तपोना।

अश्वगन्ध। अश्वगन्ध। का श्याम जहाँ घोड़े रहते हैं।

अश्वशिक्षक—सज्ञा पु० चारुण सवार ।  
 अश्वसेन—सज्ञा पु० तक्षक का पुत्र । नाग-  
 विशेष । सन्तत्युमार ।  
 अश्वसेवक—सज्ञा पु० साईस ।  
 अश्वारूढ़—सज्ञा पु० असवार । घुड़चढ़ा ।  
 अश्वारोहण—सज्ञा पु० [ वि० अश्वारोही ]  
 घोड़े की सवारी ।  
 अश्वाराही—वि० १ घाड़े का सवार ।  
 २ घोड़े पर चढ़ा हुआ ।  
 अश्विनी—सज्ञा स्त्री० १ घोड़ी । २ २७  
 नक्षत्रा में से पहला नक्षत्र । ३ दक्ष प्रजापति  
 की कन्या और चन्द्रमा की स्त्री ।  
 अश्विनीकुमार—सज्ञा पु० त्वष्टा की पुत्री  
 प्रमा नाम की स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो  
 पुत्र जो देवताओं के वैध माने जाते हैं ।  
 अस्मी—सज्ञा पु० सूर्या विशेष । ८० ।  
 अषाढ—सज्ञा पु० १ दे० “आषाढ” मास ।  
 २ व्रतपराशदण्ड ।  
 अष्ट—वि० [ पु० ] आठ की संख्या ।  
 अष्टक—सज्ञा पु० १ वह स्तोन या काव्य  
 जिसमें आठ श्लोक हैं । २ आठ की  
 पूति । ३ आठ वस्तुओं का समूह । ४  
 पाणिनि की अष्टाध्यायी का ज्ञाता ।  
 अष्टकमल—सज्ञा पु० हठयोग के अनुसार  
 मूलाधार ने ललाट तक के आठ कमल ।  
 अष्टपर्यं—सज्ञा पु० ब्रह्मा । प्रजापति । विधि ।  
 अष्टका—सज्ञा स्त्री० १ अष्टमी क दिन  
 का कृत्य । अष्टवायाग । २ अष्टमी ।  
 ३ अगहन, पूस, माघ तथा फागुन  
 मासों के वृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि ।  
 अष्टकुल—सज्ञा पु० पुराणानुसार सपों के  
 आठ कुल—शेष, वासुकि, वदल, वज्रोत्क,  
 पद्म, महापद्म, शस और कुलिश ।  
 अष्टकृष्ण—सज्ञा पु० चन्द्रम कुल के मतानुसार  
 आठ कृष्ण या कृष्ण-मूर्तियाँ—श्रीनाथ,  
 नवनीतप्रिय, मयुरानाथ, विट्ठलनाथ,  
 द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचन्द्रमा और  
 मदनमोहन ।  
 अष्टद्वय—सज्ञा पु० हवन में काम आनेवाले  
 आठ द्रव्य—अश्वत्थ, मूलर पात्रर वट,  
 तिल सरसा, पायस और घी ।

अष्टधाती—वि० १ जो अष्ट-धातुओं में  
 बना हो । २ उपरवी । उत्पाती । ३-  
 मज्जूत । दृढ़ । ४ वर्णसवर ।  
 अष्टधातु—सज्ञा स्त्री० सोना, चाँदी, ताँबा,  
 रंगार, जस्ता, मीसा, लोहा और पारा  
 आठ धातुएँ ।  
 अष्टपदी—सज्ञा स्त्री० गीत-विशेष जिसमें  
 आठ पद होते हैं ।  
 अष्टपाद—सज्ञा पु० १ सार्दूल । धरम ।  
 २ मक्ड़ी । लूता ।  
 अष्टप्रकृति—सज्ञा स्त्री० राज्य के आठ प्रधान  
 कर्मचारी । यथा—मुख्य, पंडित, मंत्री,  
 प्रधान, सचिव, अमान्य, प्राड्विवाक और  
 प्रतिनिधि ।  
 अष्टप्रहर—सज्ञा पु० आठ प्रहर । आठ याम ।  
 अष्टभुजा—सज्ञा स्त्री० देवी विशेष । दुर्गा ।  
 अष्टम—वि० आठवाँ ।  
 अष्टमगल—सज्ञा पु० १ आठ मंगलद्रव्य—  
 सिंह, वृष, नाग, वलश, पक्ष, वैजयंती,  
 भेरी और दीपक । २ आठ शुभ लक्षणों  
 से युक्त घोड़ा ।  
 अष्टमी—सज्ञा स्त्री० जिस दिन चन्द्रमा की  
 आठवीं कला की क्रिया हो । शुक्ल या  
 वृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि ।  
 अष्टमूर्ति—सज्ञा पु० १ शिव की जाठ  
 मूर्तियाँ—शर्व, भव, रुद्र, उग्र, नीम,  
 पशुपति, ईशान और महादेव । अथवा पंच  
 महाभूत, सूर्य, चंद्र तथा यजमान (कालि-  
 दास) । २ गिव ।  
 अष्टपर्यं—सज्ञा पु० १ आठ ओपधियों का  
 समाहार—जीवन, ऋषभक, मेदा, महामेदा,  
 काकोली, क्षीरकाकाली, ऋद्धि और वृद्धि ।  
 २ ज्योतिष का गोचर-विशेष । ३ राज्य  
 के ऋषि, चरित, दुर्ग, सोना, हस्तिप्रधान,  
 खान, करग्रहण और सैन्य-सम्भाषण का  
 समूह ।  
 अष्टवसु—सज्ञा पु० देश विशेष । आप । घृव ।  
 सोम । धव । अनिल । प्रत्यूर । प्रभाम ।  
 अष्टतिथि—सज्ञा स्त्री० याग की आठ तिथियाँ  
 यथा—अणिमा रुधिरा, महिमा गरिमा,  
 प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वसित्व ।

**अष्टांग-सज्ञा पु०** [ वि० अष्टांगी ] १. योग की क्रिया के आठ भेद—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। २. आयुर्वेद के आठ विभाग—सत्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूतविद्या, कौमारभूत, जगदत्त, रसायनतन्त्र और वाजीकरण। ३. आठ अंग—जानु, पद, हाथ, उर, शिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि, जिनसे प्रणाम करने का विधान है।

**वि०** १. अठपहल। २. आठ अध्यायवाला।  
**अष्टांगार्घ्य-सज्ञा पु०** आठ द्रव्यों से सद्युक्त पूजा की सामग्री-विशेष।

**अष्टाक्षर-सज्ञा पु०** मन जिसमें आठ अक्षर हों।

**वि०** आठ अक्षरवाला।

**अष्टादश-वि०** सख्या-विशेष। अठारह।

**अष्टादशांग-अठारह औषधियों के मिलने से बनी हुई पाचन की गोमयियाँ।**

**अष्टादशधर्म-सज्ञा पु०** अठारह प्रकार के अतः।

**अष्टादशपुराण-सज्ञा पु०** अठारह पुराण।

**अष्टादशविद्या-सज्ञा स्त्री०** अठारह विद्या।

**अष्टादशस्मृतिकार-सज्ञा पु०** स्मृतियों के बनानेवाले आर्यों के धर्मशास्त्रकार।

**अष्टादशोपचार-सज्ञा पु०** पूजा की अठारह सामग्रियाँ यथा—आसन, स्वागत, पाद, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवीत, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, अन्न, तर्पण, अनुलेपन, नमस्कार, विसर्जन।

**अष्टादशोपपुराण-सज्ञा पु०** पुराण-विशेष। गौण पुराण।

**अष्टाध्यायी-सज्ञा पु०** पाणिनिकृत व्याकरण का ग्रन्थ, जिसमें आठ अध्याय हैं।

**अष्टापद-सज्ञा पु०** १. सोना। स्वर्ण। २. भकटी ३. मिह। शेर। ४. कौलाश।

**अष्टावक्र-सज्ञा पु०** १. टेढ़े-मेढ़े अंगों का मनुष्य। (संस्कृत व्याकरण में 'अष्टवक्र' शुद्ध है।) २. ऋषि-विशेष।

**अष्टात्रिंश-सज्ञा पु०** अठ्ठावन।

**अष्टि-नग्न स्त्री०** बीज। गुठली। अड़ुनी।

**अष्टौ रा-मन्त्र स्त्री०** रोग-विशेष जिसमें पचास नहीं होता और साठ पड़ जाती है।

**असंक-वि०** दे० "अशक"।

**असंक्रांति मास-सज्ञा पु०** मलमास। अधिक-मास।

**असंख्य-वि०** वेशुमार। अनगिनत। बहुत। अगणनीय। सह्यारहित। अपरिमित।

**असंख्यात-वि०** असह्य। अगणित। अपरिमित।

**असंख्येय-वि०** अगणनीय। जिसकी सख्या न गिनी जा सके।

**असंग-वि०** १. एकाकी। अकेला। २. निर्लिप्त। किसी से वास्ता न रखनेवाला। ३. अलग। जुदा। पृथक्। ४. विरक्त।

**असंगत-वि०** १. अयुक्त। जो ठीक न हो। २. नामुनासिब। अनुचित। ३. अयोग्य। मिथ्या।

**असंगति-सज्ञा स्त्री०** १. बेतरतीबी। बेमेल होने का भाव। २. अनुपयुक्तता। ना-मुनासिबत। ३. काव्यालंकार-विशेष जिसमें कारण कही बताया जाय और कार्य कही।

**असंग्रह-सज्ञा पु०** सचयहीन। एकनित नहीं। असत-वि० दुष्ट। खल।

**असंतुष्ट-वि०** [ सज्ञा असंतुष्टि ] १. जो संतुष्ट न हो। सम्यक् तुष्टि-रहित। २. जिसका मन न भरा हो। अतृप्त। ३. नाराज।

**अप्रसन्न।**

**असंतुष्टि-सज्ञा स्त्री०** दे० "असतोष"। अतृप्ति।

**असतोष-सज्ञा पु०** [ वि० असतोषी ] १. अव्यर्थ। सतोष का न होना। २. अतृप्ति। ३. अपरितोष। ४. अप्रसन्नता।

**असंबद्ध-वि०** १. अलग। पृथक्। २. अनमिल। जो मेल में न हो। बे-मेल। अड-बड। जैसे, असंबद्ध प्रलाप।

**असंबाधा-सज्ञा स्त्री०** वर्णवृत्त-विशेष।

**असंभव-वि०** १. अनहोना। जो हो न सके। ना-मुमकिन। २. अचरज।

**गज्ञा पु०** काव्यालंकार-विशेष जिसमें यह दिखाया जाता है कि जो बात हो गई,

उसका होना असंभव था।

**असंभार-वि०** १. जो सँभाला न जा सके। २. बहुत। अपार। बड़ा।

असभावना-सज्ञा स्त्री० अनहोनापन। सभावना  
का न होना।

असभावित-वि० जिसका अनुमान न हो।

असभाव्य-वि० अगहोना, जिसकी सभावना  
न हो।

असभाष्य-वि० १ जो कहा न जा सके।

२ बुरा। जिससे बात-चीत करना उचित  
न हो।

असमत-वि० अमेल। अस्वीकार। अनभिमत।  
सम्मति-रहित।

असम्यक्त-पु० असलन। अमिलित। पृथक्।

असम्यक्त-वि० १ समहीन। २ अनिमित्त।  
३ सुला (जैसे द्वार)।

असयोग-वि० निश्चय। निस्सन्देह। सशय-  
रहित।

सज्ञा पु० अनमेल। भिन्न।

असलग्न-वि० अमिल। असगत।

असस्फुट-वि० १ अपरिमार्जित। बिना सुधारा  
हुआ। २ घात्य। जिसका उपनयन संस्कार  
न हुआ हो। ३ अनलवृत्त। ४ असम्य  
(जैसे भाषा)।

अस\*†-वि० [स० ईदृश] १ ऐसा। इस  
प्रकार का। २ समान। तुल्य। ३ इस  
चाल का।

असक्त-सज्ञा स्त्री० आलस्य। उँघास।

असक्ताना-त्रि० अ० अलसाना। आलसी  
बनना।

असक्तसी-वि० आलसी। मिथिल। ढीला-ढाला।

असक्ता-सज्ञा पु० ओजार-विशेष जिससे  
तलवार की म्यान के भीतर की लकड़ी साफ  
की जाती है।

असकृत्-अव्य० पुन पुन। बार बार।

असगध-सज्ञा पु० अद्वगधा। एक सीधी  
झाड़ी जिसकी मोटी जड़ पुष्ट है और दवा  
के नाम में आती है। औषध विशेष।

असगुन-सज्ञा पु० दे० "असगुन"। बुरा गुण।

असज्जन-वि० १ दुष्ट। खल। २ कुपाय।

३ द्वेषी।

असत्-वि० १ जिसका अस्तित्व न हो।

सत्कारित। २ खराब। बुरा। ३ असाध।

असज्जन। ४ अन्यायी। ५ अधर्मी।

असती-वि० कुलटा। पुच्छली। जो सती न  
हो। दुर्गचारिणी स्त्री।

असत्ता-सज्ञा स्त्री० १ अस्तित्व। सत्ता।  
का न होना। २ असज्जनता।

असत्य-वि० १ झूठ। मिथ्या। २ अन्याय।

असत्यता-सज्ञा स्त्री० झूठाई। मिथ्यात्व।

असत्यवादी-वि० झूठा। मिथ्यावादी।

असफल-सज्ञा स्त्री० दे० "विफल"। जो  
सफल न हुआ हो। अनुत्तीर्ण। नाकाम-  
याव।

असफलता-सज्ञा स्त्री० दे० "विफलता"।

असवर्ग-सज्ञा पु० [फा०] सुरामान की  
लकी घास-विशेष जिसके फूल रेशम रंग के  
के काम में आते हैं।

असवाय-सज्ञा पु० [अ०] सामान। प्रयो-  
जनीय पदार्थ।

असभई-सज्ञा स्त्री० असम्यक्ता। अशिष्टता।  
बेहूबगी।

असम्य-वि० १ गँवार। अशिष्ट। २ खल।  
नीच। ३ अपान। ४ अनामाजित।

५ असम्यक्।

असम्यक्ता-सज्ञा स्त्री० १ अशिष्टता। गँवार-  
पन। नृवृत्त, उजड़पन। २ असम्यक्ता।

असमजस-सज्ञा स्त्री० १ दुधिया। चाथा।  
आगा पीछा। २ कठिनाई। अडचन।

३ असगत। अनुपयुक्त। ४ अतुल्य।  
असदृश।

असमत\*-सज्ञा पु० बूढ़ा।

असम-वि० १ जो बराबर न हो।  
अतुल्य। असदृश। २ ताढ़। विषम।

३ ऊबड़-खाबड़। ऊँचा-नीचा। ४ वाक्या  
लकार-विशेष जिसमें उपमान का मिलना  
असमय बतलाया जाय।

असमक्ष-वि० परोक्ष। अगोचर।

असमग्र-१ अपूर्ण। अनिखिल। अधरा।  
२ अल्प।

असमय-सज्ञा पु० १ बुरा समय। विपत्ति  
का समय। २ अवकाश। दुर्भिक्ष।

वि० वि० वृत्तवसर। बुबला। व-मीका।

असमर्थ-वि० १ अशक्त। सामर्थ्यहीन।  
धीन। दुर्बल। २ अयोग्य।

असमवायि-कारण-सज्ञा पु० न्यायदर्शन के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण या कर्म हो। जैसे—१ घट के प्रति दो कपालों का संयोग। २ वैशेषिक मतानुसार वह कारण जिसका कर्म से नित्य संबंध न हो और आकस्मिक संबंध हो।

असमशर-सज्ञा पु० कामदेव।

असमसाहस-सज्ञा पु० १ दुःसाहस। असमान साहस। २ अतुल्य उत्साह। सामर्थ्य से बाहर उत्साह।

असम्मत-वि० १ विरुद्ध। जो सहमत न हो। २ जिस पर किसी की राय न हो।

असम्मत-सज्ञा स्त्री० [वि० असम्मत] सम्मत का न होना। विरुद्ध मत या राय।

असम्मान-सज्ञा पु० अपमान। असत्कार।

असनाधि-सज्ञा स्त्री० अचिन्ता। अविवेचन। अविमर्ष।

असमान-वि० जो बराबर न हो। छोटा बड़ा। विषम। विभिन्न।

सज्ञा पु० दे० "आसमान"।

असमापिका क्रिया-सज्ञा स्त्री० जिस निया से पाक्य पूर्ण न हो। काल-बोधक वृद्धन्त।

असमाप्त-वि० [सज्ञा असमाप्ति] जो पूरा न हुआ हो। अपूर्ण। अधूरा। समाप्ति रहित।

असमेध\*-सज्ञा पु० दे० "अश्वमेध"।

असमाना\*-वि० १ जो चतुर न हो। भोला। सीधा-सादा। २ मूर्ख। अनाड़ी।

असर-सज्ञा पु० [अ०] प्रभाव। दबाव।

असरार\*-वि० वि० निरतर। बराबर। लगा-तार।

असल-वि० [अ०] १ खरा। सच्चा। २ श्रेष्ठ। उच्च। ३ शुद्ध। खलिस। मिला-वट-रहित। ४ जो मूला या बनावटी न हो। मजा पु० १ बुनियाद। जड़। २ मूल धन।

असत्स्थित-सज्ञा स्त्री० १ वास्तविकता। तथ्य। २ जड़। मूल। ३ गार। मूल स्वरूप।

असली-वि० १ वास्तविक। सच्चा। खरा। २ प्रधान। मूल। ३ शुद्ध। बिना मिला-वट का।

असवार-सज्ञा पु० दे० "सवार"। घुड़सवार। असह\*-वि० दे० "असह्य"। जो सह न जा सके।

असहन-सज्ञा पु० १ शत्रु। वैरी। २ असह्य। ३ अधीर। ४ उग्र। भयंकर।

असहनशील-वि० [सज्ञा स्त्री० असहन-शीलता] १ असहिष्णु। जिसमें सहन करने की शक्ति न हो। २ तुनक मिजाज। चिड़चिड़ा।

असहनीय-वि० असह्य। जो सहने योग्य न हो। जो बर्दाश्त न हो सके।

असहयोग-सज्ञा पु० १ आधुनिक राजनीति में प्रजा या उसके किसी वर्ग का राज्य से असंतोष प्रकट करने के लिए उसके कामों से बिल्कुल अलग रहना। २ सहयोग से दान न करना।

असहाय-वि० १ नि सहाय। निराश्रय। २ अनाय।

असहिष्णु-वि० [सज्ञा असहिष्णुता] १ जो सहन न कर सके। असहनशील। २ चिड़चिड़ा।

असहिष्णुन-सज्ञा स्त्री० असहनशीलता। चिड़-चिड़ापन।

असाही-वि० ईर्ष्यालु। दूसरे को देखकर जलनेवाला। डाही।

असह्य-वि० १ असहनीय। जो बर्दाश्त न हो सके। सहन करने में अयोग्य। २ कठिन।

असंत\*-वि० अट। अमर्त्य।

असा-सज्ञा पु० १ डडा। सोटा। २ चाँदी या सोने से मड़ा हुआ सोटा। 'आना'। असाई-सज्ञा पु० दे० "आपाइ"। बर्ष का चौथा महीना।

असाही-वि० आपाड का। सज्ञा स्त्री० १ मरीच। बर फगल जो आपाड़ में बोई जाय। २ आपाडी पूर्णिमा।

असाधारण-वि० अमामान्य। जो साधारण न हो।

असाधु-वि० [ स्त्री० असाध्वी ] १ अधर्मी। पापी। दुष्ट। दुर्मन। २ अगज्जन। अतिष्ट।

असाध्य-वि० १ मटिन। जो रामय न हो। दुष्कर। २ न आरोग्य होने में योग्य। जैसे असाध्य राग। ३ दुष्प्राप्त।

असाधविक-वि० बिना समय का। समय पर न होनेवाला। जो नियत समय पर न हो। बिना अवसर का। अनवसर। बिना अनु का (जैसे फूट या फट)।

असामर्थ्य-सज्ञा स्त्री० १ अधमता। शक्ति का न होना। २ कमजोरी। निर्मलता।

असामान्य-वि० जो साधारण न हो।

असामी-सज्ञा पु० [ अ० आसामी ] १ व्यक्ति। प्राणी। २ वह जिसने लगान पर जानने के लिए जमींदार से खेत लिया हो। रेंयत। वादनवार। खेत जोतनेवाला। ३ जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो। ४ देनदार। मुद्दालेह। ५ अपराधी। ६ वह जिससे किसी प्रकार का स्वार्थ निगलना हो।

सज्ञा स्त्री० जगह। नौकरी।

असार-वि० [ सज्ञा असारता ] १ निरार। गार-रहित। २ खाली। शून्य। ३ छूटा। पीला। सूखा। ४ तुच्छ।

असालन-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ कुलीनता। २ मचाई। तत्त्व।

असालवन-क्रि० वि० [ अ० ] स्वयं। खुद।

असावधान-वि० १ जो सचेत न हो। जो सावधान या सतर्क न हो। २ लापरवाह। जेगजर।

असावधानी-सज्ञा स्त्री० लापरवाही। बं-सदरी।

असावरी-सज्ञा स्त्री० एक रागिनी।

असासा-सज्ञा पु० [ अ० ] संपत्ति। माल-असवाव।

असि-सज्ञा स्त्री० १ तलवार। २ छुरी। ३ बाशी के पास एक नदी।

असित-वि० १ टेढा। कुटिल। दुष्ट। बुरा। २ काला। जो सफेद न हो। ३ शनि। ४ एक पर्वत।

असिद्ध--वि० १ जो सिद्ध न हुआ हो।

२ कच्चा। बे-गा। ३ अपूर्ण। अपूर्ण।

४ व्यर्थ। निष्फल। ५ जो प्रमाणित न हो।

असिद्धि-सज्ञा स्त्री० १ अनिष्पत्ति। अप्राप्ति।

२ कच्चापन। ३ अपूर्णता।

असिपथ वन-सज्ञा पु० नरक-विशेष।

असिस्टेंट-गज्ञा पु० (अंग्रे०) महापत्र। मदद-गार (कर्मचारी)।

असी-सज्ञा स्त्री० नदी-विशेष जो कानी के दक्षिण में गया में मिली है।

असीन-वि० १ जिसकी सीमा न हो। २ बहुत। अपरिमित। अनंत। अपार।

असीर\*-वि० दे० "अमल"। १ मरा। सच्चा। २ शील में हीन।

असीर\*-सज्ञा स्त्री० दे० "आशिप"।

असीसना-वि० स० आशीर्वाद देना।

असु\*-सज्ञा पु० देखो "अस्व"। प्राण। जीवन। राग।

असुप्त\*-वि० जल्दी चलनेवाला।

सज्ञा पु० १ वायु। २ नीर। वाण।

असुन्दर-वि० जो सुंदर या सुवसूरत न हो। बदसूरत। कुत्त्व। भद्दा। जो अच्छा न लगे।

अमुर-सज्ञा पु० १ राक्षस। दानव। दैत्य। २ रात। ३ पुरुष जो नीच वृत्ति का हो। ४ पृथ्वी का निवासी। ५ बादल। ६ सूर्य। ७ राहु। ८ एक प्रकार का उन्माद।

९ मुर विराधी।

अमुरसेन-सज्ञा पु० राक्षस विशेष। (कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर यसा है।)

अमुराई-सज्ञा स्त्री० अमुरो का सा काम या व्यवहार। राक्षमता। राक्षसपन।

नीयता। खोटाई।

अमुरारि-गज्ञा पु० १ विष्णु। २ देवता।

अमुरविना-सज्ञा स्त्री० १ कठिनाई। अड-चन। २ कष्ट।

असुख-वि० सुखस्थिति-रहित। रागी।

असुखता-सज्ञा स्त्री० १ अस्वास्थ्य। २ अस्वच्छन्दता।

असुप्त-वि० १ अचेत। अकारमय। २

अपार। जिसका वारपार न दिखाई पड़।  
 बहुत विस्तृत। अदृश्य। ३ चिकट। कठिन।  
 जिसके करने का उपाय न सूझे। ४ भूल।  
 असूत\*—वि० अनुत्पन्न। जो उत्पन्न न हुआ हो।  
 असूय—सज्ञा स्त्री० [वि० असूयक] १ पराये  
 गुण में दोष लगाना। ईर्ष्या। डाह। निन्दा।  
 द्वेष। २ परिवाद। ३ नोष। एक सचारी  
 भाव (साहित्य)।  
 असूयपदमा—वि० परदे में रहनेवाली। पर्दा  
 नहीं। जिसका सूर्य भी न देखे।  
 असूल—सज्ञा पु० दे० १ 'उसूल' और २  
 'वसूल'।  
 असूक—सज्ञा स्त्री० खत। रुधिर। लोहू।  
 असेग\*—वि० जा सहने योग्य न हो। असह्य।  
 कठिन।  
 असेसर—सज्ञा पु० [अ०] वह व्यक्ति जो  
 पज को फौजदारी के मुकद्दमे में राय देने  
 के लिए चुना जाता है।  
 असैल\*—वि० [स्त्री० असैली] १ अनुचित।  
 शैली के विरुद्ध। २ रीति-नीति के विरुद्ध  
 काम करनेवाला। कुमार्गी।  
 असा—सज्ञा पु० यह साल। यह वर्ष। वतमान  
 सवत्सर।  
 असोच—वि० चिन्तारहित। निश्चित। अवि  
 चारित। बिना सोचा हुआ। अशोच।  
 असोची—वि० निर्मोही। प्रमादी। सुस्थिर।  
 असोज\*—सज्ञा पु० आश्विन मास। क्वार  
 या महीना।  
 असोस\*—वि० न मूलनेवाला।  
 असोष\*—सज्ञा पु० बदबू। दुर्गंध।  
 असूरु—सज्ञा पु० रक्त। खून।  
 अस्तपन्न—वि० १ नष्ट। अस्त का प्राप्त। २  
 अन्तहित। ३ हीन। अवनत।  
 अस्त—वि० १ तिरोहित। छिपा हुआ।  
 २ अदृश्य। जा न दिखाई पड़। ३ डूबा  
 हुआ (सूर्य, चंद्र आदि)। ४ नष्ट।  
 ध्वस्त। ५ क्षिप्त। ६ शवधान।  
 ७ अंतर्धान। ८ निक्षिप्त। ९ प्रग्न।  
 १० तपन। ११ मृत। १२ गालवा  
 पाद मान।  
 सज्ञा पु० १ लग्न। २ अदसन। ३ मृत्यु।

मौ०—सूर्यास्त। शुनास्त। चंद्रास्त।  
 अस्तबल—सज्ञा पु० [अ०] घुड़साल।  
 तबेला।  
 अस्तमन—सज्ञा पु० [वि० अस्तमित] १  
 सूर्यादि ग्रहा का अस्त होना। २ अस्त होना।  
 अस्तमित—वि० १ छिपा हुआ। तिरोहित।  
 २ डूबा हुआ। ३ नष्ट। ४ मरा हुआ।  
 अस्तर—सज्ञा पु० [फा०] १ भितरला।  
 नीचे की तह या पल्ला। दोहरे कपड़े में  
 नीचे का कपड़ा। २ चदन का तेल जिसे  
 आधार बनाकर इन बनाय जाते हैं।  
 जनीन। ३ वह कपड़ा जिसे स्त्रियाँ चारीक  
 साड़ी के नीचे लगाकर पहनती हैं। अतरपट।  
 अंतरोटा।  
 अस्तरकारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सफेदी।  
 कलाई। चून की लिपाई। २ पलस्तर।  
 गचकारी।  
 अस्तव्यस्त—वि० १ छिन्न भिन्न। नितर बितर।  
 उलटा पुलटा। २ मकीर्ण। ३ विक्षिप्त।  
 आकुल।  
 अस्ताचल—सज्ञा पु० पश्चिमाचल। वह कल्पित  
 पर्वत जिसके पीछे सूर्य का अस्त होना  
 कहा जाता है।  
 अस्ति—सज्ञा स्त्री० १ सत्ता। भाव। २  
 वत्तमानता। विद्यमानता।  
 अस्तित्व—सज्ञा पु० विद्यमानता। होना।  
 सत्ता का भाव।  
 अस्तु—अध्य० १ जा भी हा। चाहे जो हो।  
 २ अच्छा। खैर। भला।  
 अस्तुति—सज्ञा स्त्री० बुराई। निंदा।  
 \*सज्ञा स्त्री० दे० स्तुति।  
 अस्तुरा—सज्ञा पु० [फा०] उन्तर। बाएँ  
 वाने का छुरा।  
 अस्तय—सज्ञा पु० चोरी का त्याग। चारी न  
 करना। (घम के दस लक्षणों में से एक)।  
 अस्त्र—सज्ञा पु० १ हथियार विशेष। जिसे  
 फेंकर मनुष्य पर चलावे। जैसे बाण, गतिन।  
 २ हथियार जिसमें शत्रु का पलायन हथि  
 यार की राय है। जंग बाण। ३ वह  
 हथियार जिसमें निश्चित ही घात लग्ग  
 ४ वह हथियार जो मंत्र द्वारा चलाया

जाय। ५ हवियार। अस्त्र। जायुष। अट्टग।  
६ धनुष। ७ विभीषण का पत्र, अग्नि  
प्रचलित करने आदि के पहले पढ़ा जाने-  
वाला मंत्र।

अस्त्रगिरि-सज्ञा पु० अस्त्रालय। चरम पर्वत।

अस्त्र-चिकित्सक-सज्ञा पु० अस्त्ररोग, अस्त्र के  
द्वारा रोग दूर करनेवाला। जरीह।

अस्त्रचिकित्सा-सज्ञा स्त्री० चीर-फाट की  
चिकित्सा।

अस्त्रपिच्छ-सज्ञा स्त्री० अस्त्र चलाते की  
विद्या। धनुर्वेद।

अस्त्रवेद-सज्ञा पु० धनुर्वेद।

अस्त्रालय-सज्ञा स्त्री० अस्त्रागार। वह न्याय  
जहाँ अस्त्र-अस्त्र रखे जायें।

अस्त्रागार-सज्ञा पु० अस्त्रालय।

अस्त्री-सज्ञा पु० [स्त्री० अस्त्रिणी] १ हवि-  
मारवद। २ जो स्त्री न हो। स्त्री-लिंग से  
भिन्न, अर्थात् पुल्लिंग और नपुंसक (व्याक-  
रण)।

अस्थायी-वि० स्थिति-रहित। अस्थाय। अतल-  
रसम।

अस्थि-सज्ञा स्त्री० १ हड्डी। हाड। शरीर  
का पजर। २ शरीर का धातु-विशेष। ३  
गुठली (फल की)।

अस्थिर-वि० १ डावांड़ोल। अनिश्चित।  
अस्थायी। चंचल। चलायमान। २ जिसका  
कुछ ठीक न हो।

\*वि० दे० 'स्थिर'।

अस्थिरता-सज्ञा स्त्री० चंचलता। डावांड़ोल  
पन। अस्थिर होना का भाव। अस्थिर्य।  
अनिश्चय।

अस्थिरगता-सज्ञा पु० अस्थिरता का भाव।  
अस्थिरगति करण। चंचल चित्तवाला।

अस्थिसंच-सज्ञा पु० अस्थि संचार के  
अंतरात् जलने से बची हुई हड्डियाँ एवम्  
करने का कर्म।

अस्थूल-वि० १ सूक्ष्म। २ जो स्थूल न  
हो। ३ कोमल। ४ पतला।

\*वि० दे० "स्थूल"।

अस्थिर्य-वि० अनिश्चय। स्थिरताभाव।  
अस्थिरता। चंचलता।

अस्त्राद\*-सज्ञा पु० दे० "स्त्रान"।

अस्त्राद-सज्ञा पु० [अग्ने० हास्यटल]  
चिकित्साग्रह। औषधाग्रह।

अस्त्राद-वि० १ न छूने योग्य। २ नीच  
या अत्यन्त।

अस्त्राद-वि० १ अस्पष्ट। २ जटिल।  
गूढ़। ३ अनिश्चित (मर्यादा आदि)। ४  
अस्पष्ट भाषण (माहित्य)।

अम्भरण-सज्ञा पु० नुल। निम्नति।

अभिगता-सज्ञा स्त्री० १ दृष्ट, द्रष्टा और  
दर्शन क्षमि की एक मानना या पुष्प  
(आग्ना) और बुद्धि में अभेद मानने की  
भाति (योग)। २ मोह। अहंकार।

अक्ष-सज्ञा पु० १ काना। नोन। २ अधिर।  
३ जल। ४ आँसू। ५ केसर। ६ एक  
देश।

अक्ष-सज्ञा पु० १ राक्षस। २ मूल नक्षत्र।  
वि० खन पीनेवाला।

अक्ष-सज्ञा पु० निर्धन। कगल। दरिद्री।

अस्थिर्य-वि० १ बीमार। रोगी। २ अन-  
मना। उदास।

अस्थिर-सज्ञा पु० हल् व्यजन। कुस्वर। निन्दित  
शब्द। प्रेस्वर।

अस्वाभाविक-वि० १ प्रकृति-विरुद्ध। जो  
स्वाभाविक न हो। २ यनापटी। वृत्रिम।

अस्वास्थ्य-सज्ञा पु० बीमारी। रोग।

अस्थीकार-सज्ञा पु० [वि० अस्थीकृत]  
जो स्वीकार न हो। नाहीं। इतना।

अस्थीकृत-वि० जो स्वीकार न हो। ना-  
मजूर किया हुआ।

अस्ती-वि० ८० की मर्यादा। दस का अठगुना।  
अह-सर्व० में।

सज्ञा पु० अभिमान। अहंकार।

अहंकार-सज्ञा पु० [वि० अहंकारी] १  
गर्व। घमंड। अभिमान। दम्भ। २ "मैं  
हूँ" या "मैं करता हूँ" इस प्रकार की भावना।  
अहंकृति। ३ ससार की मूर्ति के तत्त्वों  
में तीमरा (सात्य)।

अहंकारी-वि० [स्त्री० अहंकारिणी]  
अभिमानी। घमंडी।

अहंता-सज्ञा स्त्री० गर्व। अहंकार।

अह्वाद्-सज्ञा पु० डींग मारना । रोखी हाँकना ।  
अभिमान की भावना का होना ।

अह-सज्ञा पु० १ विष्णु । २ सूप । ३ दिन  
का देवता । ४ दिन ।

अव्य० आश्चर्य, खेद या बलेश आदि का  
सूचक शब्द ।

अह\*—सज्ञा स्त्री० इच्छा ।

अहकता—क्रि० अ० प्रबल इच्छा करना ।  
लालसा करना ।

अहसान\*—क्रि० अ० पता चलना । आहट  
लेना । दुखना ।

नि० स० आहट लेना । टोह लेना ।

अहह-सज्ञा पु० [ अ० ] वादा । प्रतिज्ञा ।

अहयित्री—वि० दे० 'स्थिर' ।

अहशनामा—सज्ञा पु० [ फा० ] १ प्रतिज्ञापन ।  
इकरारनामा । २ सुलहनामा ।

अहदा—वि० [ अ० ] १ आलस्ययुक्त ।

आलसी । आसक्ती । २ अकम्प्य । निठल ।

सज्ञा पु० [ अ० ] अकवर के समय के  
सिपाही विंशप, जिनसे बड़ी आवश्यकता  
के समय काम लिया जाता था और जो  
सब दिन बैठे खाते थे । (रिजव पुलिस  
के सिपाही) ।

अहन्—सज्ञा पु० दिन ।

अहना\*—क्रि० अ० (अव यह क्रिया केवल  
वर्तमान रूप अहै' में ही बोली जाती  
है) ।

अहनिश\*—अव्य० दे० अहनिश ।

अहन्व—वि० [ अ० ] नादान । बकूफ ।  
मूर्ख । सनकी ।

अहन्व—सज्ञा पु० अभिमान । गव ।  
घमडा ।

अहम्पति—सज्ञा स्त्री० १ गव । अहवार ।  
२ अविद्या ।

अहर—सज्ञा पु० डोया । पायरा । अहर । पानी  
वा गडडा ।

अहरन—सज्ञा स्था० निहाई ।

अहरना—क्रि० न० १ डोयना । २ लकड़ी  
वा छोटा-छोटा गुडी करना ।

अहरह—सज्ञा पु० प्रतिदिन । अगन्तार । निर-  
न्तर । निरन्तर । गदा ।

अहरा—सज्ञा पु० १ कड़वा डेर । २ लोभी  
के ठहरने का स्थान ।

अहनिश—क्रि० वि० १ अष्ट प्रहर । रात  
दिन । २ सदा । निरन्तर ।

अहर्नक्ष—सज्ञा पु० प्रातःकाल । सवेरा । भोर ।  
प्रत्युष ।

अहर्षित—वि० अप्रसन्न । मलिन ।

अहलकार—सज्ञा पु० [ फा० ] १ कम  
चारी । २ कारिदा ।

अहलमद—सज्ञा पु० [ फा० ] अदालत का  
वह कमचारी जो मुकद्दमा की मिमिक  
रखता तथा अदालत के हुक्म के अनुसार  
हुक्मनामे जारी करता है ।

अहव्या—सज्ञा स्त्री १ गौतम ऋषि की पत्नी ।  
२ अप्सरा विजये । ३ जोती भूमि ।

अहवान\*—सज्ञा पु० आह्वान । आवाहन ।  
बुलाना ।

अहसान—सज्ञा पु० [ अ० ] १ उपकार करना ।  
किरी के साथ नकी करना । २ अनुग्रह ।  
कृपा । ३ हृत्तजता ।

अहह—अव्य० आश्चर्य खद बलेश, पीडा,  
अप्रसन्नता या शोक सूचक एक शब्द ।

अहा—अव्य० आह्लाद और प्रसन्नता-सूचक  
एक शब्द ।

अहाता—सज्ञा पु० [ अ० ] १ बाडा । हाता ।  
घरा । २ प्रावार । चहारदीवारी ।

अहार\*—सज्ञा पु० १ आहार । १ भोजन ।  
खाना । २ लैई । माँड़ी ।

अहारना\*—क्रि० स० १ खाना । भक्षण  
करना । २ चपकाना । ३ कपड़े में माँड़ी  
देना । ४ द० अहरना' ।

अहारी—वि० दे० आहारी' ।  
सज्ञा स्त्री० साधुआ के ध्यान में बैठने के  
समय हाथ टेक्कर बैठने का मापन ।

अहाहा—अव्य० हर्ष-सूचक अव्यय ।

अहिसा—सज्ञा पु० १ 'अहिंसा'  
वि० हिंसा न करना ।

अहिंसा—सज्ञा स्त्री० हिंसा का दुश्मन ।  
हिंसा जीव का न मारना या न मारना ।

अनिष्ट करना की अपेक्षा ।  
अहिंस—वि० अहिंसक । जो हिंसा न करे ।

डाना=१ त्रि० अ० आँखा म आँख मर  
 आना। २ त्रि० स० आँख म आँख लाना।  
 आँखें तरेरना=क्रोध की दृष्टि से देखना।  
 आँख दिखाना=क्रोध प्रकट करना। आँख  
 न ठहरना=चक्रावृत्ति होना। आँख निगा-  
 लना=क्रोध करना। आँख ठण्डो करना=इष्ट  
 मित्रों के मिलने से चित्त की प्रसन्नता। आँख  
 नीची होना=सिर का नीचा होना। लज्जित  
 होना। आँख पयारना=पलक का निपमित  
 रूप से न गिरना और पुतली की गति  
 का मारा जाना (मरने का पूर्ण लक्षण)।  
 आँखा पर परदा पडना=गुडि का नष्ट  
 होना। भ्रम होना। आँख पडकना=आँख  
 की पलक का बाग्वार हिलना। (शुभ-अशुभ-  
 सूचक)। आँख फाडकर देखना=अच्छी तरह  
 आँख खोलकर देखना। आश्चर्य से देखना।  
 आँख फिर जाना=१ पहले की सी कृपा  
 न रहना। बेमुरीअनी आ जाना। २ मन  
 में पुराई आना। आँख फूटना=१ आँख की  
 ज्योति या नष्ट होना। २ कुडन होना।  
 बुरा लगना। आँख फेरना=१ मित्रता  
 ताडना। २ पहिले की सी कृपा या स्नेह-  
 दृष्टि न रखना। ३ विशद होना। प्रति-  
 बूल होना। आँख फँलाना=दूर तक देखना।  
 आँख फोडना=१ आँखों की ज्योति का  
 नाश करना। २ कोई ऐसा पान करना  
 जिसम आँख पर जोर पड़े। आँख बन्द  
 होना=१ आँख अपकना। पलक गिरना।  
 २ मृत्यु या मरण होना। आँख नन्द  
 करे या मँदकर=दिना सखवान  
 दखे, सुने या विचार किए। आँख  
 बचाना=सामना न करना। बनसना।  
 आँखे बिछाना=१ प्रेम से स्वागत करना।  
 २ वाट जोहना। प्रेमपूर्ण प्रतीक्षा करना।  
 आँख पडक जाना=पूर्वव व्यवहार का न  
 रहना। आँख भी टेढ़ी करना=क्रुद्ध होना।  
 आँख भर आना=आँख में आँसू आना।  
 आँख भर देखना=नृप हाकर देखना।  
 नृप अच्छी तरह देखना। इच्छा भर देखना।  
 आँख मारना=१ मर्त करना। सन-  
 पारना। २ आँख के इशारे से मना

करना। आँख मिलाना=१ आँख न  
 करना। वरावर ताकना। २ सामने आना  
 मुँह दिखाना। प्रेम करना। मिथ्या पयार  
 आँखा में गूल उतरना=क्रोध न आँखें  
 हाना। आँख में गडना या चुभना=  
 बुरा लगना। २ जँचना। पसद आना  
 आँखा में चरमी छाना=मदारा होना।  
 होना। आँखा में धूल डालना=धारा देना  
 भ्रम में डालना। आँखा में फिरना=मृति  
 घना रहना। ध्यान पर चला  
 आँखा में रात पाटना=विभी कष्ट, धि  
 या व्यग्रता से सारी रात जागने कीवता  
 आँखा में समाना=हृदय में बगना। चित्त  
 जमना। विभी पर आँख रखना=१ चोख  
 करना। नजर रखना। २ चाह रखना  
 इच्छा रखना। आँख लगना=१  
 जाना। नोद लगना। सोना। २ लग  
 लगना। दृष्टि जमाना। (विभी से)।  
 लगना=प्रोति होना। प्रेम होना।  
 लडना=१ आँख मिलना। देखा  
 होना। २ प्रेम या प्रोति होना।  
 लाल करना=क्रोध दृष्टि से देखना।  
 से गिरना=भन से उतरना। आँख सँकना=  
 दशन का मुख उठाना। नैमानद लेना  
 आँखों से लगाकर रखना=बहुत प्रिय करने  
 रखना। बहुत आदर-सत्कार से रखना  
 आँख होना=१ परख होना। परख  
 होना। २ जान होना। विवर होना।  
 ३ विवेक। विचार। परख। पहचान।  
 ४ दया-भाव। कृपादृष्टि। ५ मतान।  
 सतति। ६ आँख के आवार का छेद व  
 बिल्ल। जँये=गुई का छेद। आँख  
 बदलना=कृपा न करना, बेमुरीजत होना।  
 विभी की आँख न देवना=विभी के वन में  
 होना। आँख फिरना=१ कृपा नष्ट होना।  
 २ मरण-काल की स्थिति। आँख न  
 गुलना=१ नोद न दटना। २ ययार्  
 स्थिति का जान न होना। आँख  
 देतना=१ अपमान सहना। २ मुँह  
 दबना। आँख जाना=दृष्टि नष्ट होना।  
 आँख नष्ट होना। आँख

न लगना=नीद न आना। चैन न पाना।  
 आँख में उँगली करना=१ कण्ट देना।  
 २ सावधान करना। आँख के आगे अँधेरा  
 छाना=१ भूच्छित होना। २ धवरा जाना।  
 आँख से उतरना=मन से उतर जाना, आदर  
 या प्रेम नष्ट हो जाना। आँख पर चढ़ना=  
 १ ध्यान में बसना। २ शयुता होना।  
 आँख झपकना=हल्की नीद आना। आँख  
 चकना=असावधान होना। आँखों पर  
 लेना=प्रेम और आदर से ग्रहण करना।  
 अत्यन्त सत्कार करना।

आँखड़ी-सज्ञा स्त्री० दे० "आँख"।

आँखकोड टिड्डा-सज्ञा पु० १ हरे रंग का  
 कोडा या फतिगा विशेष। २ कुतप्न।

आँखमिचौली, आँखमीचली-सज्ञा स्त्री० लडको  
 का खेल विशेष जिसमें एक लडका किसी  
 दूसरे लडके की आँख मूँदकर बैठता है और  
 बाकी लडके डूधर-उधर छिपते हैं जिन्हें  
 उस आँख मूँदनेवाले लडके को ढूँढकर  
 छाना पड़ता है।

आँग\*†-सज्ञा पु० अंग। भाग। देह। शरीर।

आँगन-सज्ञा पु० चीक। अजिर। अँगनाई।

प्राण। घर के भीतर का सहन।

आगिक-वि० अंग का। अंग-सम्बन्धी।

सज्ञा पु० १ चित्त के भाव को प्रकट करने-  
 वाली चेष्टा। जैसे भू-विक्षेप, हाव आदि।  
 २ नाटक के अभिनय के चार भेदों में से  
 एक। ३ रस में काव्यिक अनुभाव। ४ वाद्य-  
 विशेष।

आगिरस-सज्ञा पु० १ अगिरा के पुत्र बृह-  
 स्पति, उत्तप्य और सवर्त्त। २ अगिरा के  
 गोत्र का पुरुष।

वि० अगिरा का। अगिरा-सम्बन्धी।

आगिवर्त्त\*-सज्ञा पु० दे० "अग्निवर्त्त"।

आँगी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "आँगिया"।

आँगुरी-सज्ञा स्त्री० दे० "ऐंगली"।

आँधी-सज्ञा स्त्री० महीन बपड़े से मढ़ी हुई  
 चलनी।

आँच-सज्ञा स्त्री० १ ताप। गरमी। २  
 आग की ज्वाला। ३ अग्नि। आग।  
 ४ एक चार पहेंवा हुआ ताप। ५

प्रताप। ६ चोट। आघात। ७ अहित।  
 अनिष्ट। हानि। ८ सकट। विपत्ति। ९  
 प्रेम। १० काम-ताप।

मुहा०-आँच खाना=तपना। गरमी पाना।

आग पर चढ़ना। आँच दिखाना=आग  
 के सामने रखकर गरम करना।

आँचना\*-क्रि० सं० तपाना। जलाना।

आँचर\*†-सज्ञा पु० दे० "आँचल"।

आँचल-सज्ञा पु० १ पल्ला। छोर। किनारा।

धोती, दुपट्टे आदि के दोनों छोरों पर का  
 भाग। २ साड़ी या ओढ़नी का वह भाग  
 जो सामने छाती पर रहता है। ३ सांजुओं  
 का अँचल।

मुहा०-आँचल देना=१ बच्चे को दूध

पिलाना। २ विवाह की रीति विशेष।

आँचल फाड़ना=बच्चे के जीने के लिए

टोटका करना। आँचल में बाँधना=१

प्रतिक्षण पास रखना। २ किसी की कही

हुई बात को अच्छी तरह याद रखना। कभी

न भूलना। आँचल लेना=आँचल छूकर

सत्कार या अभिवादन करना।

आँजन-सज्ञा पु० दे० "अजन"।

आँजना-क्रि० सं० अजन लगाना।

आजनेय-सज्ञा पु० हनुमान्। अजना के पुत्र।

आँसू-सज्ञा पु० आँसू। अश्रु।

आँट-सज्ञा स्त्री० १ हथेली में तजनी और

अँगूठे की नीचे का स्थान। २ दाँव। वश। ३

लाग-डाँट। चैर। ४ गाँठ। गिरह। ऐँठन।

५ पूला। गठठा। ६ विरोध। ७ आड़ी।

आँटना\*-क्रि० अ० दे० "अँटना"।

आँट-साँट-सज्ञा स्त्री० १ गुप्त अभिसंधि।

साजिश। बदमाश। २ मेल-जोल। ३ माया।

हिस्सेदारी।

आँटी-सज्ञा स्त्री० १ पूला। लगे तूणों का

छोटा गट्ठा। २ सूत का लच्छा। ३ लडका

के खेलने की गुल्ली। ४ टेंट। घाती की

गाँठ। मुर्त। ऐँटन। ५ गमाता। भग्ना।

पैठना। ६ गठली।

आँटी-सज्ञा स्त्री० १ बत्ती, मन्दाई आदि

वस्तुओं का लच्छा। २ गाँठ। गिरह।

३ बीज। गुठली।

आँह-सज्ञा पु० अङ्कश।

आँही-गज्ञा स्त्री० गाँठ। कद।

आँह-वि० जो घषिया न हो। अङ्कशयुक्त (यैल)।

आँत-मज्ञा स्त्री० अत्र। अँतडी। लाद।

आँत-प्राणिमो के पेट के भीतर की वह लयी नली जो गुदा-भाग तक रहती है और जिससे होकर मल या रही पदार्थ बाहर निकल जाता है।

मुहा०-आँत उतरना=रोग-विशेष जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे उतर आती है और अङ्कश में पीडा उत्पन्न होती है। आँतो का बल खुलना=पेट भरना। भोजन से तृप्ति होना। आँतें फुलफुलाना या सूखना=भूख के पारे घुरी दशा होना। आँत गले में पडना=तंग होना। झगड़े में पडना।

आँतर\*-सज्ञा पु० दे० "अतर"।

आँतरिक-वि० अतःकरण सबधी। अतरस्थ। मनोगत। मानसिक।

आँदू-सज्ञा पु० १ बँटी। लोहे का कड़ा। २ हाथी बांधने की जंजीर। बांधने का सीकड़।

आदोलन-सज्ञा पु० १ बार-बार हिलना डोलना। झूलन। कपन। २ हलचल। घूम। इधर उधर जाना। उथल-पुथल करनेवाला प्रयत्न। ३ अनुगीलन। कपन। चलन।

आँव\*-सज्ञा स्त्री० १ अँधेरा। अधकार। धुंध। २ स्तोधी। ३ कष्ट।

आँवना\*-क्रि० अ० दूटना। वेग से धावा करना।

आँवरा\*-वि० दे० 'अधा'।

आँवरभ-सज्ञा पु० १ अँधेराला। २ बिना समझा-बूझा आचरण।

आँधी-सज्ञा स्त्री० एकान। तेज हवा। सक्कड़। बड़े वेग की हवा जिससे इतनी धूल उड़े कि चारों ओर अँधेरा छा जाय। अधवाह। वि० १ आँधी की तरह तेज। २ चुस्त। चतुर।

आधे-सज्ञा पु० ताप्ती नदी के किनारे का देश।

आँवाँ हल्दी-सज्ञा स्त्री० दे० "आमा हल्दी"।

आँव घाँव-सज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात। प्रताप। अनाप-बानाप। अडगड।

आँव-सज्ञा पु० एक प्रकार का चित्रना सफेद लसदार मल जो अन्न न पचने में उत्पन्न होता है।

आँवठ-सज्ञा पु० धोती का छोर। किनारा।

आँवडना\*-क्रि० अ० दे० "उमडना"।

आँवडा†-वि० गहरा।

आँवरा-सज्ञा पु० आँवला। घाघ्री फल।

आँवल-सज्ञा पु० सँडी। जेरी। साम। झिल्ली जिससे गर्भ में बच्चे लिपटे रहते हैं।

आँवला-सज्ञा पु० पेंड-विशेष जिसके गोल फल खट्टे होते तथा साने और दवा के काम में आते हैं।

आँवलासार गधक-सज्ञा स्त्री० खूब साफ की हुई गधक जो पारदर्श्य होती है।

आँवाँ-सज्ञा पु० मिट्टी के बरतन पकाने का गडडा।

मुहा०-आँवा का आँवा विगडना=किसी समाज के सब लोगों का विगडना।

आँश-सज्ञा स्त्री० रेशा। सूत।

आशिक-वि० १ अश-सबधी। अश-विषयक। विभागी। हिस्सेदार। २ प्रतापी। तेजस्वी।

आशुकजल-सज्ञा पु० वह जल जो दिन भर घूप में और रात भर चाँदनी या ओस में रखकर छान लिया जाय (वैद्यक)।

आँस-सज्ञा स्त्री० १ सवेदना। २ दर्द।

३ सूत। सुतली। डोरी। ४ रेशा।

सज्ञा पु० १ दे० "आँसू"। २ वाद्य के तार बादि पर आपात के बाद देर तक शब्द की स्थिति (संगीत)।

आँसीर-सज्ञा स्त्री० १ बँला। मिट्टी जो इष्ट मित्रा के यहाँ बाँटी जाती है। २ भाजी।

आँसू-सज्ञा पु० अश्रु। वह जल जो आँखों से शोक, पीडा आदि के कारण निकलता है।

मुहा०-आँसू गिराना या डालना=रोना।

आँसू पीवर रह जाना=भीतर ही भीतर रोकर रह जाना। आँसू पछना=आश्वासन मिलना। डारम बेंचना। आँसू पोछना=

दारस वैधाना। दिलासा देना। आँसू से मुँह धोना=वहृत रोना।  
 आहङ-सज्ञा पु० वरतन।  
 आहं-अव्य० अस्वीकार या निषेध-सूचक एक शब्द। नहीं।  
 आ-अव्य० वष्टसूचक शब्द। खेदोक्ति।  
 आइदा-वि० [ फा० ] भविष्य। आनेवाला।  
 आगतुक। आगामी।  
 सज्ञा पु० भविष्यकाल।  
 क्रि० वि० आगे। भविष्य में।  
 आइना-सज्ञा पु० दे० "आईना"। दर्पण।  
 आइसक्रीम-सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] एक प्रकार की फुलफी मलाई।  
 आई-सज्ञा स्त्री० मृत्यु। मोत। दे० "आइ"। १ आयु। वय। अवस्था। २ आकार।  
 आईन-सज्ञा पु० [ फा० ] १ नियम। कायदा। २ राजनियम। कानून। ३ व्यवस्था। विधि।  
 आईना-सज्ञा पु० [ फा० ] १ दर्पण। शीशा। आरसी।  
 मुहा०-आईना होना=स्पष्ट होना। आईने में मुँह देपना=अपनी योग्यता को जाँचना।  
 २ विवाद का दिलहा।  
 आईनाबंदी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ झाड़-फानूस आदि की सजावट। २ फर्श में पत्थर या ईंट की जुड़ाई।  
 आईनासाश-सज्ञा पु० [ फा० ] आईना बनानेवाला।  
 आईनासाजी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] बाँच की चदर के टुकड़े पर बलाई करने का काम।  
 आईनी-वि० [ फा० ] राजनियम के अनुकूल। यानुनी।  
 आज-सज्ञा पु० दे० "आयु"।  
 आजवाड\*†-सज्ञा पु० अडवड बात। असमझ प्रलाप।  
 आजम-सज्ञा पु० पाठ का भेद विशेष। भदई। ओमहन।  
 आक्षपन-सज्ञा पु० पापना। चण्डगहट। पाटी-मी कपकपी।  
 आक्ष-सज्ञा पु० अवोक्षा। भदार।

आकट-सज्ञा पु० खानि। खजाना।  
 आकटि-नि० वि० कमर तक।  
 आकडा†-सज्ञा पु० दे० "आक"।  
 आकवत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] परलोक। मरने के पीछे की अवस्था।  
 आकवाक-सज्ञा पु० ऊटपटांग बात। अक-वक। अडवड बात।  
 आकर-सज्ञा पु० १ खान। २ उत्पत्ति-स्थान। खजाना। भांडार। ३ भेद। जाति। ४ तलवार चलाने का भेद-विशेष। ५ मूल। ६ समूह। ७ श्रेष्ठ। ८ बाहुल्य। ९ बहुतायत। आधुनिक खानदेश।  
 आकर-भाषा-सज्ञा स्त्री० वह मूल प्राचीन भाषा जिससे किसी नई भाषा के लिए आवश्यकतानुसार नये नये शब्द लिये जायें।  
 आकरिक-सज्ञा पु० खान खोदनेवाला।  
 आकरी-सज्ञा स्त्री० खान खोदने का काम।  
 आकर्ण-वि० जो वान तक फैला हुआ हो।  
 आकर्ण चक्षु-सज्ञा पु० कर्णपर्यंत विस्तृत चक्षु। दीर्घ नयन। विशाल नेत्र।  
 आकर्ष-सज्ञा पु० १ सिखाव। एक जगह के पदार्थ का बल से दूसरी जगह जाना। २ चौपड़। विसात। ३ पास का खेल। ४ इद्रिय। ५ धनुष चलाने का अभ्यास। ६ कसीटी। ७ चुंबक। ८ आकुशी। ९ झुकाना, चढ़ाना (धनुष आदि)। १० फंसाने का चारा (पक्षी आदि के लिए)।  
 आकर्षक-वि० १ आकर्षण करनेवाला। खींचने-वाला। २ शिला-विशेष। चुम्बक पत्थर।  
 आकर्षण-सज्ञा पु० [ वि० ] आकर्षित, आकृष्ट। १ सिखाव। २ किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से लाया जाना। ३ एक प्रयोग जिसके द्वारा दूर दूरस्थ पुरष या पदार्थ पाम में आ जाता है (तत्र)। ४ झुकाना। चढ़ाना (धनुष आदि)। ५ पल आदि तोड़ने के लिए सिर पर देवी रखी।  
 आकर्षणशक्ति-सज्ञा स्त्री० भौतिक पदार्थों की गतिवि जितने के अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचने हे।

आवर्पण\*—वि० म० सीचना । दे० "आवर्पण"  
आवर्पित—वि० सीचा हुआ ।

आकलन—सज्ञा पु० [ वि० आकलनीय, आ-  
कलित ] १ ग्रहण । लेना । २ समग्र । मचय ।  
इकट्ठा करना । ३ गिनती करना । ४  
अनुष्ठान । सपादन । ५ अनुसधान । ध्वनन ।  
बटोरना । जींच ।

आकला—वि० खटपटिया । उतावला । उच्छ-  
द्वल ।

आकलित—सज्ञा पु० १ बद्ध । पकड़ा हुआ ।  
२ कुत । ३ परितरयात । ४ अनुष्ठित ।  
आकली—सज्ञा स्त्री० व्याकुलता । आकुलता ।  
बेचिनी ।

आकस्मिक—वि० १ अचानक होनेवाला ।  
सहना होनेवाला । २ जो बिना कारण के हो ।  
आकाशक—वि० दे० "आकाशी" । आकाशा-  
रखनेवाला ।

आकाश—सज्ञा स्त्री० १ बाछा । चाह ।  
इच्छा । अभिलाषा । २ अपेक्षा । ३ अनु-  
सधान । खोज । ४ वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान  
के लिए एक शब्द का दूसरे शब्द पर आश्रित  
होना (न्याय) ।

आकाशित—वि० १ अभिलषित । इच्छित ।  
वाञ्छित । २ अपेक्षित ।

आकाशी—वि० [ स्त्री० आकाशिणी ]  
इच्छुव । इच्छा करनेवाला ।

आकार—सज्ञा पु० १ आकृति । स्वरूप ।  
सूत्र । २ डील-डोल । ३ वनापट । सघ-  
टन । ४ सधेत । इगित । निगान । चिह्न ।  
५ चेष्टा । ६ 'आ' धण । ७ बुलावा ।  
८ चेहरे की वनापट ।

आकारान्ति—सज्ञा स्त्री० भय, हृष आदि स  
उत्पन्न अणविवार को छिपाना ।

आकारलोपन—सज्ञा पु० भय हर्ष आदि सूचक  
भावा का छिपाना ।

आकारतः—अव्य० स्वरूपतः । मनुष्य । आकृति मे ।  
आकारात—सज्ञा पु० वे शब्द जिनके अन्त में दीर्घ  
'आ' हो ।

आकारादि—वि० जिस शब्द का आद्यक्षर आकार हो ।  
आकाल—सज्ञा पु० अकाल । दुर्मिथ । दुःसमय ।  
महंगा ।

आशालिख—वि० असामयिक । असमय में  
उत्पन्न । अवालम्भव ।

आकारा\*—वि० [ स्त्री० आकारिणी ] बुलाने-  
वाला । आह्वान करनेवाला ।

आकाश—सज्ञा पु० १ गगन । शून्य । अवर ।  
व्योम । अतस्त्रि । आसमान । २ वह स्थान  
जहाँ वायु के अनिरिक्त और कुछ न हो  
(पञ्चभूतों में से एक) । ३ अग्रज । अवरक ।

मुहा०—आकाश छूना या चूमना=बहुत ऊँचा  
होना । आकाश-मातार एक करना=१  
भारी उद्योग करना । २ आदोलन करना ।  
हलचल करना । आकाश-मानाल का अंतर=  
वेटा अंतर । बहुत फर्क । आकाश में बात  
करना=बहुत ऊँचा होना ।

आकाशकुसुम—सज्ञा पु० १ सपुष्प । आकाश  
का फूल । २ असंभव या अनहानी बात ।

आकाशगंगा—सज्ञा स्त्री० १ स्वर्ग-गंगा ।  
बहुत से छोटे-छोटे तारा का एक विस्तृत  
समूह जो आकाश में उत्तर-दक्षिण फैला  
है । आकाशजनेऊ । दहर । २ मदाकिनी ।  
पुराणानुसार आकाश की गंगा ।

आकाशग—वि० आकाशगामी । आकाशचर ।  
आकाशगामो—वि० खेचर । आकाश में चलने-  
वाला ।

आकाशचारी—वि० आकाशगामी । आकाश  
में फिरनेवाला ।

सना पु० १ नक्षत्र । सूर्यादि ग्रह । २ वायु ।  
३ देवता । ४ पक्षी ।

आकाश-जल—सज्ञा पु० वर्षा का जल । ओम ।  
आकाशदीप—सज्ञा पु० वह दीपक जो वास्तिक में  
हिंदू लोग बड़ी में रखकर एक ऊँच बॉम के  
भित्ति पर बांधकर जलाने हे । आकाशदीपक ।  
आकाशदीपा—सज्ञा पु० दे० 'आकाशदीप' ।  
आकाशधुरी—सज्ञा स्त्री० आकाशधुर । स  
गोल का धुर ।

आकाशनीम—सज्ञा स्त्री० नीम का बाँदा ।  
आकाशपुष्प—सज्ञा पु० १ आकाशपुष्प ।  
आकाश का फूल । २ असंभव वस्तु । अन-  
होनी बातें ।

आकाशखेल—सज्ञा स्त्री० दे० 'अमरखेल' ।  
खता विनोय ।

आकाशभाषित-सज्ञा पु० आकाशवाणी का उत्तर। नाटक में पात्र का ऊपर की ओर देखकर स्वयं कुछ प्रश्न करना और फिर उसका उत्तर देना। अदृश्य व्यक्ति की बात सुनने या उससे कहने की मृदा प्रकट करना (नाट्य)।

आकाशमंडल-सज्ञा पु० खगोल।

आकाशमुखी-सज्ञा पु० साधु-विशेष जो आकाश की ओर मुंह करने तप करते हैं।

आकाशलोचन-सज्ञा पु० मानमंदिर। आवजर-वेटरी। वह स्थान जहाँ से ग्रहों की स्थिति या गति देखी जाती है।

आकाशवाणी-सज्ञा स्त्री० १ देववाणी। वह शब्द या वाक्य जो आकाश से देवता लोग बोलें। २ रेडियो।

आकाशविद्या-सज्ञा स्त्री० वायु निरूपण करने की विद्या।

आकाशवृत्ति-सज्ञा स्त्री० १ ऐसी आमदनी जो बँधी न हो। अनिश्चित जीविका। २ निराश्रय। वरिष्ठ।

आकाशी-सज्ञा स्त्री० वह चाँदनी जो धूप आदि से बचने के लिए तानी जाती है।

आकाशीय-वि० १ आकाश का। आकाश-संबंधी। २ आकाश में होने या रहनेवाला। ३ आकास्मिक। दैवागत।

आकिंचन-सज्ञा पु० १ दरिद्रता। अकिंचनता। २ प्रयाग। ३ यन्त्र।

आकिल-वि० [ अ० ] बुद्धिमान्।

आकिलखानी-रंग विशेष जो कालापन लिये लाल हाता है।

आकीर्ण-वि० १ व्याप्त। भरा हुआ। पूर्ण। २ विस्तारित। ३ सकीर्ण। सकुल। ४ समकुल।

आकुचन-सज्ञा पु० १ राकीचन। सिकुड़ना। सिमटना। २ वस्त्रता। ३ न्यायमत के पंच प्रकार के वर्गों में से एक वर्ग।

आकुचित-वि० १ सिमटा हुआ। सिकुटा हुआ। २ टेढ़ा। तिरछा। ३ कुटिल।

आकुठन-सज्ञा पु० [ वि० आकुटित ] १ गुटला या कुद होना। २ लज्जा।

आकुटित-वि० लज्जित। अवान्।

आकुल-वि० [ सज्ञा आकुलता ] १ उद्विग्न। व्यग्र। घबराया हुआ। २ विह्वल। कातर। ३ सकुल। व्याप्त। ४ व्यस्त। ५ आर्त। ६ पूर्ण। आकीर्ण।

आकुलता-सज्ञा स्त्री० [ वि० आकुलित ] १ व्याकुलता। घबराहट। २ व्याप्ति। आकुलित-वि० दे० "आकुल"। १ व्याकुल। घबराया हुआ। २ कातर। व्याप्त। ३ व्यस्तचित्त।

आकृत-सज्ञा पु० अभिप्राय। मतलब।

आकृति-सज्ञा स्त्री० १ मनु की तीन नन्याओं में से एक। २ उत्साह। ३ सदाचार।

आकृति-सज्ञा स्त्री० अवयव। १ डीलडौल। शरीर। आकार। बनावट। ढाँचा। गठन। २ रूप। मूर्ति। ३ मुख। ४ मुख का भाव। चेष्टा। ५ २२ अक्षरा की वर्णवृत्ति-विशेष। ६ नमूना। ७ २२वीं सख्या। ८ किसी नियम से बद्ध शब्दों का एक नमूना (व्याकरण)।

आक्रष्ट-वि० आकर्षित। खींचा हुआ।

आक्रद-सज्ञा पु० १ रोदन। २ भयकर युद्ध। ३ आह्वान।

आक्रदन-सज्ञा पु० १ रोना। २ चिल्लाना।

आक्रम\*-सज्ञा पु० दे० "पराक्रम"। १ आक्रमण। चढ़ाई। २ अतिक्रम। ३ क्रान्ति।

आक्रमण-सज्ञा पु० १ चढ़ाई। बलपूर्वक सीमा का उल्लंघन करना। २ आघात पहुँचाने के लिए किसी पर झपटना। ३ घेरना। छेड़ना। ४ निंदा। आक्षेप।

आक्रमित-वि० [ स्त्री० आक्रमिता ] जिस पर आक्रमण किया गया हो। जिस पर चढ़ाई की गई हो।

आक्रमिता-सज्ञा स्त्री० वह प्रौढ़ा नायिका जा मनसा, वाचा, वर्मणा अपने मित्र का वश करे।

आक्रत-वि० १ जिस पर आक्रमण या चढ़ाई हो। २ आवृत्ति। घिरा हुआ। ३ विवश। वशीभूत। पराजित। ४ आकीर्ण। व्याप्त।

५ दबा हुआ। क्षुभित।

आयोड-सज्ञा पु० पीड़ा करने का स्थान।

मेलिखानन। उपवन। याग। विहार। दे०  
 "श्रीडा।" राजमहल के समीप का याग।  
 आश्रीश-सज्ञा पु० मृगया। शिवार। आग्रेट।  
 आश्रीश-सज्ञा पु० १ गाली देना। कोसना।  
 शाप देना। २ आशेष। ३ राग। ४ क्रोध।  
 कोप।  
 आश्रीशन-सज्ञा पु० अभिशाप। पटूनि।  
 भर्त्सना। अभिगपात।  
 आश्लक्ष-वि० श्रान्त। अवसन्न। सिन्न।  
 आश्लिप्न-वि० १ गिराया हुआ। फेंका  
 हुआ। २ निदित। ३ दूषित। ४ पनडा  
 हुआ। जीता हुआ। ५ लटवाया हुआ।  
 ६ निदिष्ट। प्रसंग में बयित। ७ अपमा-  
 नित। ८ ललकारा हुआ। ९ अग्र्यमनस्व।  
 आश्लेष-सज्ञा पु० १ गिराना। फेंकना। २  
 दोष लगाना। अपवाद लगाना। ३ ताना।  
 बटूनि। ४ वातरोग-विशेष जिसमें अंग  
 में कंपकंपी होती है। ५ ध्वनि। ६ व्यग्य।  
 आश्लेषरु-वि० [स्त्री० आश्लेषिका] १ फेंकने-  
 वाला। २ खींचनेवाला। ३ निंदा करने-  
 वाला। आश्लेष करनेवाला।  
 आखड-वि० समुदाय। खण्डरहित। सम्पूर्ण।  
 आखडल-सज्ञा पु० इन्द्र। सहस्राक्ष। शची-  
 पति। देवराज।  
 आखत\*-सज्ञा पु० १ अक्षत। बिना टूटा  
 चावल। २ चदन या केसर में रंगा चावल  
 जो मूर्ति या दूल्हा-दुलहिन के माथे में  
 लगाया जाता है। ३ नेग विशेष जो बमीना  
 या नेगिया को दिया जाता है।  
 आखता-वि० [फा०] गुस्सहीन। जिसके  
 अङ्गोश चीरकर निकाल लिये गये हों।  
 बधिया किया हुआ (घोडा)।  
 आखन-क्रि० वि० प्रति क्षण। हर पडी।  
 आखना-क्रि० स० बहना। चाहना। तानना।  
 देखना।  
 आखर\*-सज्ञा पु० अक्षर।  
 आखा-सज्ञा पु० १ शीने वपडे से मनी हुई  
 मेढा चालने की चलनी। २ बोरा। गठिया।  
 वि० कुल। पूरा। समूचा।  
 आखात-सज्ञा पु० देवखात। शील। देवनिर्मित  
 जलाशय।

आखा तीज-सज्ञा स्त्री० वैशाख मृदी तीज।  
 (स्त्रियो-द्वारा वट का पूजन और दान)।  
 आखार-सज्ञा पु० [फा०] १ जानवरों के  
 खाने से बची हुई घास या चांग। २ निरम्मी  
 वस्तु। ३ कूड़ा-बरबट।  
 वि० १. वेंकाम। निरम्मा। २ रद्दी।  
 सडा-गला। ३ मंला-कुचला।  
 आखिर-वि० [फा०] पीछे का। अंतिम।  
 सज्ञा पु० १ अंत। २ परिणाम। फल।  
 वि० वि० अंत में। अंत को।  
 आखिरकार-वि० वि० [फा०] अंत में।  
 आखिरी-वि० [फा०] पिछला। अंतिम।  
 आखु-सज्ञा पु० १ चूहा। २ देवनाल।  
 देवशाह। ३ मूअर। चोर।  
 आखुपायाण-सज्ञा पु० १ चुबक पत्थर।  
 २ सखिया।  
 आखेट-सज्ञा पु० अहेर। मृगया। शिवार।  
 आखेटक-सज्ञा पु० शिवार। शिवारी।  
 वि० १ अहेरी। बहेलिया। २ अन्वे-  
 पित। ३ भयानक।  
 आखेदी-सज्ञा पु० [स्त्री० आखेटिनी]  
 शिकारी।  
 आख्या-सज्ञा स्त्री० १ नाम। सज्ञा।  
 अभिधान। २ यश। कीर्ति। ३ व्याख्या।  
 ४ सख्याओ का जोड। ५ आचार-  
 प्रकार।  
 आख्यात-वि० १ विख्यात। प्रसिद्ध। २  
 कथित। उक्त। ३ राजवंश के लोगो का  
 वृत्तांत। ४ व्याकरण का धातु प्रकरण।  
 आख्याति-सज्ञा स्त्री० १ प्रसिद्धि। ख्याति।  
 २ कथन। प्रवटीकरण। ३ नाम। ४  
 किसी वस्तु का पूरा यथार्थ वृत्तांत प्रकाशित  
 करना।  
 आख्यान-सज्ञा पु० १ कहानी। कथा।  
 वृत्तांत। बयान। २ वर्णन। नाम। सज्ञा।  
 इतिहास ३ उपन्यास के ती भेदो मे  
 से एक। कथा व जिसे स्वयं कवि  
 ही बहे। ४ भूतपूर्व पटना का नयन  
 (नाट्यशास्त्र)।  
 आख्यानक-सज्ञा पु० १ आख्यान। वर्णन।  
 वृत्तांत। २ कथा। कहानी। ३ कथा-

नक । पूर्व वृत्तात् । ४. उपेन्द्रवज्रा तथा इन्द्रवज्रा को मिलाकर बना छद-विशेष ।  
आख्यायिका—सज्ञा स्त्री० दडक वृत्त का भेद विशेष ।

आख्यायिका—सज्ञा स्त्री० १ कथा । कहानी । इतिहास । उपन्यास । उपकथा । २ शिक्षाप्रद कल्पित कथा । ३ एक प्रकार का आख्यान जिसमें पात्र अपने-अपने चरित्र अपने मुँह से कुछ-कुछ कहते हैं ।

आगनुक—वि० १ आगमनशील । जो आवे । अतिथि । २. जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आ जाय । ३ अनित्य । अस्थायी । ४ मुख्य रोग की दशा में अन्य तत्संबद्ध रोग (वैद्यक) ।

आगनुक ज्वर—सज्ञा पु० पीड़ा-विशेष । आकस्मिक ज्वर । धातु-प्रकोप के बिना ज्वर । आग—सज्ञा स्त्री० १ अग्नि । बसुंदर । आगी । तेज और प्रकाश का पुंज जो उष्णता की पराकाष्ठा पर पहुँची हुई वस्तुओं में देखा जाता है । २ ताप । जलन । गरमी । ३ कामाग्नि । ४ प्रेम । वात्सल्य । ५ ईर्ष्या । डाह ।

वि० १ बहुत गरम । जलता हुआ । २ जो गुण में उष्ण हो ।

मुहा०—आगबबूला (बगूला) होना या बनना=क्रोध के आवेश में होना । अत्यंत कुपित होना । आग बरसाना=बहुत गरमी पड़ना । आग बरसाना=शत्रु पर खूब गोलियाँ चलाना । आग लगना=१ आग से किसी वस्तु का जलना । २ क्रोध उत्पन्न होना । घुड़न होना । ३ महँगी फेलना । गिरानी होना । आग लगे=बुरा हो । नाश हो । (स्त्री०) आग लगाना=१ आग से किसी वस्तु को जलाना । २ गरमी करना । जलन पैदा करना । ३ उद्वेग बढ़ाना । जोश बढ़ाना । भड़काना । ४ क्रोध उत्पन्न करना । ५ चुगली खाना । ६ बिगाड़ना । नष्ट करना । आग होना=१. बहुत गर्म होना । २ क्रुद्ध होना । रोष में भरना । पानी में आग लगाना=१ अनहोनी बर्तन बहना । २ असंभव कार्य करना । ३ जहाँ

लड़ाई की बात न हो, वहाँ भी लड़ाई लगा देना । पेट की आग=भूख । आग उठाना=झगडा करना । आग का पुतला=महानोधी । आग खाना, अगार हगना=जैसी करनी वैसी भरनी । आग देना=शव-संस्कार । आग पानी का बैर=स्वाभाविक शत्रुता । आग में पानी डालना=झगडा निपटाना । आग लगाकर तमाशा देखना=दूसरो को लडवाकर स्वयं प्रसन्न होना ।

आगत—वि० [ स्त्री० आगता ] आया हुआ । उपस्थित । प्राप्त । पहुँचा । आयात ।

आगतपतिका—सज्ञा स्त्री० नायिका-विशेष जिसका पति परदेश से लौटा हो ।

आगत-स्वागत—सज्ञा पु० आव-भगत । आये हुए व्यक्ति का आदर । सत्कार ।

आगम—सज्ञा पु० १. आगमन । अवाई । २ आनेवाला समय । भविष्य काल । ३ होनहार । ४ उत्पत्ति । ५ पुन आगमन ।

६ बहाव (द्रव का) । ७ निकलना (रुधिर आदि) । ८ वैद्य कब्जा । परंपरा-प्राप्त वस्तु ।

९ सगम । समागम । १० आय । ११ व्याकरण में किसी शब्दसाधन में वह अर्थहीन वर्ण जो बाहर से लाया जाय । १२ वेद ।

१३ शब्द-प्रमाण । १४ शास्त्र । १५ तत्त शास्त्र । १६ नीति । नीतिशास्त्र ।

वि० आनेवाला ।

मुहा०—आगम करना=ठिकाना करना । उपक्रम बाँधना । लाभ का डोल करना ।

उपाय रचना । आगम जानना=होनहार की सूचना देना । आगम बाँधना=आनेवाली बात का निश्चय करना ।

आगमजानी—वि० होनहार का जाननेवाला ।

आगमज्ञ—वि० वेदज्ञ । तत्रवेत्ता । भाष्य का ज्ञाता ।

आगमज्ञानी—वि० भविष्य का जाननेवाला । आगमन—सज्ञा पु० १ आना । २ प्राप्ति । लाभ । आय । ३ पहुँचना । उपस्थित होना ।

आगमवाणी—सज्ञा स्त्री० भविष्यवाणी । आगमविद्या—सज्ञा स्त्री० वेदविद्या ।

आगमसोची-वि० अग्रसोची। दूरदर्शी।

आगमी-गज्ञा पु० ज्योतिषी।

आगमोपेत-वि० तत्रसाधन विहित वम।  
साधनोपेत साधन उपासना।

आगम-गज्ञा पु० [स्त्री० अगरी] १ आगर।  
खान। २ गमूहा। छेर। ३ निधि।  
कोष। गजाना। ४ वह गड्ढा जिसमें  
नमक जमाया जाता है।

सज्ञा पु० १ गृह। घर। २ छप्पर। छाजन।  
वि० १ बढकर। प्रेष्ट। उत्तम। २ चतुर।  
कुशल। दक्ष। जानवार। नागर। सपाना।  
३ पूर्ण।

आगरी-सज्ञा पु० लोनिया। नमक बनानेवाला  
पुरष।

सज्ञा स्त्री० कुशल। चतुर। दक्ष।

आगल-सज्ञा पु० अगरी। व्योडा।

त्रि० वि० आगे। सामने। वि० अगला।

आगलात-वि० गले तक। वठ पर्यंत।

आगला\*-त्रि० वि० दे० "अगला"।

आगवन\*-सज्ञा पु० दे० "आगमन"।

आगा-सज्ञा पु० १ अगाडी। किसी चीज  
के आगे का भाग। २ शरीर का अगला  
भाग। ३ वक्ष स्थल। छाती। ४ मुँह।  
मुख। ५ ललाट। माथा। ६ लिङ्गोद्भय।  
७ अंगरखे या कुरते आदि की काट में  
आगे का टुकड़ा। ८ हरावल। सेना  
या फौज का अगला भाग। ९ घर के  
सामनेका मैदान। १० आगडा।  
११ भविष्य। आग आनेवाला समय।  
१२ स्वामी। सरदार। १३ बाबुली।  
अफ़ग़ान।

आगाडी-सज्ञा स्त्री० घोड़े की गर्दन की रस्ती।  
आगान\*-सज्ञा पु० प्रसंग। आख्यान। वृत्तान्त।  
यात।

आगा-पीछा-सज्ञा पु० १ दुविधा। हिचक।  
सोच-विचार। २ परिणाम। ३ शरीर  
का अगला और पिछला भाग।

मुहा०-आगा-पीछा करना=दुविधा में  
पड़ना। सशय में पड़ना। हिचकना।

आगामि, आगामी-वि० [स्त्री० आगामिनी]  
भावी। होनहार। आनेवाला।

आगार-सज्ञा पु० १ घर। मकान। गृह।  
२ गजाना। ३ जगह। स्थान।

आगाह-वि० [पा०] जानवार।

सज्ञा पु० हानहार। आगम।

आगाही-सज्ञा स्त्री० [पा०] जानवारी।  
पहले से मालूम होना।

आगि\*+सज्ञा स्त्री० दे० "आग"।

आगिल\*-वि० दे० "अगला"। १ होनहार।

भविष्यत्। २ अग्रसर। अग्रगामी।

आगी\*+सज्ञा स्त्री० दे० "आग"।

आगुल्फ-वि० गुत्थ पर्यंत। टिट्टना तक।

आगुनी-त्रि० वि० दे० "आगे"। सामने।

मम्मुख। अगाऊ।

आगे-त्रि० वि० १ ओर बढकर।

ओर दूर पर। 'पीछे' का उल्टा।

२ समक्ष। सामने। ३ जीते जी। जीवन-

काल में। ४ इसके पश्चात्। ५ भविष्य में।

६ अनंतर। पश्चात्। ७ पहले। पूर्व। ८

अतिरिक्त। अधिक। ९ गोद में। लालन-

पालन में। जैसे, उसके आगे एक लडका है।

मुहा०-आगे आना=१ सामने आना।

२ सामने पड़ना। मिलना। ३ मामला

करना। भिड़ना। ४ घटित होना। घटना।

आगे करना=१ उपस्थित करना। प्रस्तुत

करना। २ अगुआ बनाना। मुखिया

बनाना। आगे को=आग। भविष्य में।

आगे चलकर या आगे जाकर=भविष्य

में। इसके बाद। आगे निकलना=बढ

जाना। आगे का कदम पीछे पड़ना=अवनति

होना। पीछे हटना। आगे पीछे=१ एक

के पीछे एक। एक के बाद दूसरा। क्रम

से। २ आस-पास। किसी के आगे पीछे

होना=किसी के वस में किसी प्राणी का

होना। आगे से=१ सामने से। २ आइदा

से। भविष्य में। ३ पहले से। पूर्व

से। बहुत दिनों से। आगे से लेना=

अभ्यर्थना करना। आगे होना=१ आगे

बढना। अग्रसर होना। २ बढ जाना।

३ सामने आना। ४ मुकाबला करना।

भिड़ना। ५ मुखिया बनना।

आगोन\*-गज्ञा पु० दे० "आगमन"।

अग्नीध्र-सज्ञा पु० १ यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से एक। २ वह यजमान जो सामन्त हो या अग्निहोत्र करता हो। ३ यज्ञमण्डप। होता का गृह। ४ धन के द्वारा वरण किया जानेवाला ऋत्विक्।  
 आग्नेय-वि० [स्त्री० आग्नेयी] १ अग्नि का। अग्नि सबधी। २ जिनका देवता अग्नि हो। ३ अग्नि से उत्पन्न। ४ अगस्त्य मुनि। पाचक। ५ सबधीय। ६ जिससे आग निकले। जलानेवाला।  
 सज्ञा पु० १ सीना। सुवर्ण। २ रुधिर। सून। ३ कृत्तिका नक्षत्र। ४ अग्नि के पुत्र कात्तिकेय। ५ दीपन औषध। ६ ज्वालामखी पर्वत। ७ प्रतिपदा। ८ दक्षिण का देश विशेष जिसकी प्रधान नगरी महिष्मती थी। ९, वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठे, जैसे बाखर। १० बाह्य। ११ अग्निकोण। दक्षिण-पूर्व का कोण।  
 धी०—आग्नेयस्नान—भस्म पोतना।  
 आग्नेयगिरि-सज्ञा पु० धधकनेवाले पर्वत। ज्वालामुखी।  
 आग्नेयास्त्र—सज्ञा पु० अग्निबाण। बन्दूक। प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिनसे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी।  
 आग्नेयी-वि० १ अग्नि को दीपन करनेवाली औषध। २ पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा। ३ अग्नि की स्त्री स्वाहा।  
 आप्रह-सज्ञा पु० १ अनुरोध। हठ। २ परायणता। तत्परता। ३ बल। ४ आवेश। ५ कृपा। ६ प्रेम। ७ अतिशय बल। ८ प्रयास। ९ अनुग्रह। आसक्ति। १० आक्रमण। ११ ग्रहण। १२ उपकार। १३ साहस।  
 आप्रहायण-सज्ञा पु० १ मार्गशीर्ष मास। अग्रहन। २ मृगशिरा नक्षत्र।  
 आप्रहायणेष्टि-सज्ञा स्त्री० नवाग्र भक्षण। नूतन अन्न का प्रारम्भ।  
 आप्रही-वि० हठी। जिद्दी।  
 आध\*-सज्ञा पु० मूल्य। कीमत।  
 आघात-सज्ञा पु० १ धक्का। ठोकर। २

प्रहार। मार। चोट। पीडा। आक्रमण। ३ वध स्थान। बूचड़खाना। ४ हनन। वध। ५ कोप। ६ अपक्षय।  
 आधार-सज्ञा पु० मन्त्र-विशेष से अग्नि को धृत प्रदान करना।  
 आघूर्ण-वि० १ हिलता हुआ। २ घूमता हुआ। फिरता हुआ। लड़खड़ाता हुआ।  
 आघूर्णन-सज्ञा पु० चक्र के समान घूमना। फिरना। चक्कर खाना।  
 आघूर्णित-वि० चक्कराया हुआ। इधर उधर फिरता हुआ। घूमता हुआ। घुमाया हुआ।  
 आघोषण-सज्ञा पु० प्रचारण। प्रकाशकरण। घोषणा करना। मुनादी करना।  
 आघ्राण-सज्ञा पु० [वि० आघ्रात, आघ्रेय] १ सूँघना। वास लेना। २ तृप्ति। अघाना।  
 आघ्राणार्ह-वि० सुगन्ध लेने के उपयुक्त। सूघन योग्य।  
 आघ्रात-वि० सूँघा हुआ।  
 आघ्रेय-वि० सूँघने के योग्य।  
 आचमिन्त-वि० १ हठात्। देवात्। अवस्मात्। २ अदभुत। अचरज।  
 आचका-वि० १ अगणित। २ अवस्मात्। हठात्।  
 आचमन-सज्ञा पु० [वि० आचमनीय, आचमित] १ जल पीना। २ पूजा या धर्म-सबधी चम्म के आरम्भ में दाहिने हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर मग्नपूर्वक पीना।  
 आचमनी-सज्ञा स्त्री० एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं। चमचिया।  
 आचरज\*-सज्ञा पु० दे० अचरज। आश्चर्य। अचभा।  
 आचरण-सज्ञा पु० [वि० आचरणीय, आचरित] १ अनुष्ठान। २ आचार-शुद्धि। सफाई ३ व्यवहार। रीति। बर्ताव। चाल-चलन। ४ लक्षण। चिह्न। ५ लोचन। ६ रथ। पुराने जमाने की बेल-गाड़ी। ७ अभ्यास।  
 आचरणीय-वि० आचार के योग्य। व्यवहार के योग्य।  
 आचरन\*-सज्ञा पु० २० 'आचरण'।

आगमसोची-वि० अग्रसाची। दूरदर्शी।  
 आगमो-सज्ञा पु० उगोतिपी।  
 आगमोक्ष-वि० तत्रशास्त्र-विहित यम।  
 सांख्योक्त तत्त्विक उपासना।  
 आगर-सज्ञा पु० [स्त्री० अगरी] १ आवर।  
 माग। २ समूह। ढेर। ३ निधि।  
 कोष। रजाना। ४ वह गड्ढा जिसमें  
 नमक जमाया जाता है।  
 सज्ञा पु० १ गृह। घर। २ छप्पर। छाजन।  
 वि० १ बढकर। श्रेष्ठ। उत्तम। २ चतुर।  
 कुशल। दक्ष। जानकार। नागर। सयाना।  
 ३ पूर्ण।  
 आगरी-सज्ञा पु० लोनिया। नमक बनानेवाला  
 पुरप।  
 सज्ञा स्त्री० कुशल। चतुर। दक्ष।  
 आगल-सज्ञा पु० अगरी। व्योडा।  
 त्रि० वि० आगे। सामने। वि० अगला।  
 आगलात-वि० गले तक। कठ पर्यंत।  
 आगला\*-त्रि० वि० दे० "अगला"।  
 आगवन\*-सज्ञा पु० दे० "आगमन"।  
 आगा-सज्ञा पु० १ अगाडी। किसी चीज  
 के आगे का भाग। २ शरीर का अगला  
 भाग। ३ बस स्थल। छाती। ४ मुँह।  
 मुख। ५ लगाट। माथा। ६ लिंगेन्द्रिय।  
 ७ अँगरखे या कुरते आदि की बाट में  
 आगे का टुकड़ा। ८ हरावल। सेना  
 या फौज का अगला भाग। ९ घर के  
 सामनेका मैदान। १० आगडा।  
 ११ भविष्य। आगे आनेवाला समय।  
 १२ स्वामी। सरदार। १३ काबुली।  
 अफगान।  
 आगाडी-सज्ञा स्त्री० थोड़े की गदन की रस्सी।  
 आगान\*-सज्ञा पु० प्रसंग। आस्थान। वृत्तान्त।  
 बात।  
 आगा-पीछा-सज्ञा पु० १ दुविधा। हिचक।  
 सोच विचार। २ परिणाम। ३ शरीर  
 का अगला और पिछला भाग।  
 मुहा०-आगा-पीछा करना=दुविधा में  
 पड़ना। सगम में पड़ना। हिचकना।  
 आगामि, आगामी-वि० [स्त्री० आगामिनी]  
 भावी। हानहार। आनेवाला।

आगार-सज्ञा पु० १ घर। मकान। गृह।  
 २ रजाना। ३ जगह। स्थान।  
 आगाह-वि० [पा०] जानकार।  
 सज्ञा पु० होनहार। आगम।  
 आगाही-सज्ञा स्त्री० [पा०] जानकारी।  
 पहले से मालूम होना।  
 आगि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "आग"।  
 आगिल\*-वि० दे० "अगला"। १ होनहार।  
 भविष्यत्। २ अग्रमर। अग्रगामी।  
 आगी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "आग"।  
 आगुल्ल-वि० गुत्थ पर्यंत। टिटुना तक।  
 आगू†-त्रि० वि० दे० "आगे"। सामने।  
 सम्मुख। अगाऊ।  
 आगे-त्रि० वि० १ और बढकर।  
 और दूर पर। 'पीछे' का उलटा।  
 २ समक्ष। सामने। ३ जीते जी। जीवन-  
 काल में। ४ इसके पश्चात्। ५ भविष्य में।  
 ६ अनंतर। पश्चात्। ७ पहले। पूर्व। ८  
 अतिरिक्त। अधिक। ९ गोद में। लालन-  
 पालन में। जैसे, उमने आगे एक लड़का है।  
 मुहा०-आगे आना=१ सामने आना।  
 २ सामने पड़ना। मिलना। ३ सामना  
 करना। भिड़ना। ४ घटित होना। घटना।  
 आगे करना=१ उपस्थित करना। प्रस्तुत  
 करना। २ अगुआ बनाना। मुखिया  
 बनाना। आगे को=आग। भविष्य में।  
 आगे चलकर या आगे जाकर=भविष्य  
 में। इसके बाद। आगे निकलना=बढ  
 जाना। आगे का बंदम पीछे पड़ना=जबनति  
 होना। पीछे हटना। आगे पीछे=१ एक  
 के पीछे एक। एक के बाद दूसरा। क्रम  
 से। २ आस-पास। किसी के आगे पीछे  
 होना=किसी के चर में किसी प्राणी का  
 होना। आगे से=१ सामने से। २ आइदा  
 से। भविष्य में। ३ पहले से। पूर्व  
 से। बहुत दिना से। आगे से लेना=  
 अभ्यर्थना करना। आगे हाना=१ आगे  
 बढना। अग्रसर होना। २ बढ जाना।  
 ३ सामने आना। ४ मुकाबला करना।  
 भिड़ना। ५ मुखिया बनना।  
 आगोन\*-सज्ञा पु० दे० "आगमन"।

तृतीय-सज्ञा पु० १ यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से एक। २ वह यजमान जो मागिक हो या अग्निहोत्र करता हो। ३ यज्ञमंडप। होता का गृह। ४ घन के द्वारा वरण किया जानेवाला ऋत्विक्।  
 आग्नेय-वि० [स्त्री० आग्नेयी] १ अग्नि वा। अग्नि सबधी। २ जिनका देवता अग्नि हो। ३ अग्नि से उत्पन्न। ४ अगस्त्य मुनि। पाचक। ५ सबधीय। ६ जिससे आग निकले। जलानेवाला।  
 सज्ञा पु० १ सोना। सुवर्ण। २ रुबिर। रूख। ३ कृत्तिका नक्षत्र। ४ अग्नि के पुत्र कातिकेय। ५ दीपन औषध। ६ ज्वालामयी पर्वत। ७ प्रतिपदा। ८ दक्षिण का देव विशेष जिसकी प्रधान नगरी महिष्मती थी। ९ वह पदार्थ जिससे आग भड़क उठ, जैसे बारूद। १० ब्राह्मण। ११ अम्बिकोण। दक्षिण-पूर्व का कोण।  
 यो०—आग्नेयस्नान=भस्म पोतना।  
 आग्नेयगिरि-सज्ञा पु० धधकनेवाले पर्वत। ज्वालामयी।  
 आग्नेयास्त्र-सज्ञा पु० अग्निबाण। बन्दूक। प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिससे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी।  
 आग्नेयी-वि० १ अग्नि को दीपन करनेवाली औषध। २ पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा। ३ अग्नि की स्त्री स्वाहा।  
 आपट-सज्ञा पु० १ अनुरोध। हठ। २ पापघनता। तत्परता। ३ बल। ४ अवेग। ५ कृपा। ६ प्रेम। ७ अनिच्छय यत्न। ८ प्रयास। ९ अनुग्रह। आगमिक। १० आक्रमण। ११ ग्रहण। १२ उपहार। १३ साहस।  
 आपश्रवण-सज्ञा पु० १ मार्गशीर्ष मास। अग्रहन। २ मृगशिरा नक्षत्र।  
 आपश्रवणोष्टि-सज्ञा स्त्री० नवाग्र नक्षत्र। मृत्यु क्षय का प्रारम्भ।  
 आपशी-वि० हठी। जिद्दी।  
 आप-सज्ञा पु० मूल। कीमत।  
 आपान-सज्ञा पु० १ धक्का। ठाकर। २

प्रहार। मार। चोट। पीडा। आक्रमण। ३ वध-स्थान। दूचडखाना। ४ हनन। वध। ५ कोप। ६ अपशय।  
 आधार-सज्ञा पु० मन विशेष से अग्नि को धृत प्रदान करना।  
 आधूर्ण-वि० १ हिलता हुआ। २ घूमता हुआ। फिरता हुआ। लडखडाता हुआ।  
 आधूर्णन-सज्ञा पु० चक्र के समान घूमना। फिरना। चक्कर खाना।  
 आधूर्णित-वि० चक्कराया हुआ। दधर उभर फिरता हुआ। घूमता हुआ। घुमाया हुआ।  
 आधोषण-सज्ञा पु० प्रचारण। प्रकाशकरण। घोषणा करना। मनादी करना।  
 आध्राण-सज्ञा पु० [वि० आध्रात, आध्रेय]। १ सूँघना। वास लेना। २ तृप्ति। अधाना।  
 आध्राणाह-वि० सुगन्ध लेने के उपयुक्त। सूँघने योग्य।  
 आध्रात-वि० सूँघा हुआ।  
 आध्रेय-वि० सूँघने के योग्य।  
 आचभित्त-वि० १ हठात। देवात्। अवस्मात्। २ अद्भुत। अचरज।  
 आचका-वि० १ अगणित। २ अवस्मात्। हठात।  
 आचमन-सज्ञा पु० [वि० आचमनीय, आचमित] १ जल पीना। २ पूजा या धर्म-सबधी कर्म के आरम्भ में दाहिने हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर मंत्रपूर्वक पीना।  
 आचमनी-सज्ञा स्त्री० एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं। चमचिया।  
 आचरज\*-सज्ञा पु० दे० "अचरज"। आश्चर्य। अचम्भा।  
 आचरण-सज्ञा पु० [वि० आचरणीय, आचरित] १ अनुष्ठान। २ आचार-शुद्धि। सफाई। ३ व्यवहार। रीति। वर्तव्य। चाल-चलन। ४ लक्षण। चिह्न। ५ लोचक कर्म। ६ रय। पुराने जमाने की बैलगाड़ी। ७ अभ्यास।  
 आचरणीय-वि० आचार के योग्य। व्यवहार के योग्य।  
 आचरन\*-सज्ञा पु० दे० "आचरण"।

आगमसौची-वि० अग्रगौची । दूरदर्शी ।  
 आगमी-सज्ञा पु० ज्योतिषी ।  
 आगमोक्त-वि० तत्रन्माश्र-विहित वम ।  
 नारदोक्त तान्त्रिक उपासना ।  
 आगर-सज्ञा पु० [स्त्री० आगरी] १ आवर ।  
 प्यान । २ गमूहा । ढेर । ३ निधि ।  
 कोष । राजाना । ४ वह गड्ढा जिसमें  
 नमक जमाया जाता है ।  
 सज्ञा पु० १ गृह । घर । २ छप्पर । छाजन ।  
 वि० १ बढकर । थोड़ा । उत्तम । २ घनुर ।  
 मुसल । दक्ष । जानवार । नागर । सयाना ।  
 ३ पूर्ण ।  
 आगरी-सज्ञा पु० लोनिया । नमक बनानेवाला  
 पुरुष ।  
 सज्ञा स्त्री० मुसल । चतुर । दक्ष ।  
 आगल-सज्ञा पु० अगरी । व्योडा ।  
 त्रि० वि० आगे । सामने । वि० अगला ।  
 आगलात-वि० गले तक । बूढ पर्यंत ।  
 आगला\*-त्रि० वि० दे० "अगला" ।  
 आगवन\*-सज्ञा पु० दे० "आगमन" ।  
 आगा-सज्ञा पु० १ अगाडी । किसी चीज  
 के आगे का भाग । २ शरीर का अगला  
 भाग । ३ वक्षस्थल । छाती । ४ मुँह ।  
 मुख । ५ ललाट । माथा । ६ लिंगेन्द्रिय ।  
 ७ अंगरखे या कुरते आदि की काट में  
 आगे का टुकड़ा । ८ हरावल । सेना  
 या फौज का अगला भाग । ९ घर के  
 सामनेवा मैदान । १० आगटा ।  
 ११ भविष्य । आगे आनेवाला समय ।  
 १२ स्वामी । सरदार । १३ कादुली ।  
 अफगान ।  
 आगाडी-सज्ञा स्त्री० घोड़े की गर्दन की रस्सी ।  
 आगान\*-सज्ञा पु० प्रसंग । आख्यान । वृत्तान्त ।  
 बात ।  
 आगा-पीछा-सज्ञा पु० १ दुविधा । हिचक ।  
 सोच-बिचार । २ परिणाम । ३ शरीर  
 का अगला और पिछला भाग ।  
 मुहा०-आगा-पीछा करना=दुविधा में  
 पड़ना । ससय में पड़ना । हिचकना ।  
 आगामि, आगामी-वि० [स्त्री० आगामिनी]  
 भावी । होनहार । आनेवाला ।

आगार-सज्ञा पु० १ घर । मकान । गृह ।  
 २ राजाना । ३ जगह । स्थान ।  
 आगाह-वि० [पा०] जानवार ।  
 सज्ञा पु० होनहार । आगम ।  
 आगाही-सज्ञा स्त्री० [फा०] जानागरी ।  
 पहरे में मालूम होना ।  
 आगि\*]-सज्ञा स्त्री० दे० "आग" ।  
 आगिल\*-वि० दे० "अगला" । १ होनहार ।  
 भविष्यत् । २ अग्रतर । अग्रगामी ।  
 आगी\*]-सज्ञा स्त्री० दे० "आग" ।  
 आगुहफ-वि० गुहफ पर्यंत । टिहूना तक ।  
 आगु\*]-त्रि० वि० दे० "आगे" । सामने ।  
 सम्मुख । अगाऊ ।  
 आगे-त्रि० वि० १ ओर बढकर ।  
 ओर दूर पर । 'पीछे' का उलटा ।  
 २ समक्ष । सामने । ३ जीते जी । जीवन-  
 काल में । ४ इससे पश्चात् । ५ भविष्य में ।  
 ६ अनंतर । पश्चात् । ७ पहले । पूर्व । ८  
 अनिरिक्त । अधिक । ९ गोद में । लालन-  
 पालन में । जैसे, उसके आगे एक लडका है ।  
 मुहा०-आग आना=१ सामने आना ।  
 २ सामने पड़ना । मिलना । ३ सामना  
 करना । भिड़ना । ४ घटित होना । घटना ।  
 आग करना=१ उपस्थित करना । प्रस्तुत  
 करना । २ अगुआ बनाना । मुखिया  
 बनाना । आगे को=आग । भविष्य में ।  
 आगे चलकर या आगे जाकर=भविष्य  
 में । इसके बाद । आगे निकलना=बढ  
 जाना । आगे का पदम पीछे पड़ना=अवनति  
 होना । पीछे हटना । आगे पीछे=१ एक  
 के पीछे एक । एक के बाद दूसरा । क्रम  
 में । २ आस-पास । किसी के आगे पीछे  
 होना=किसी के वश में किसी प्राणी का  
 होना । आगे से=१ सामने से । २ आइदा  
 से । भविष्य में । ३ पहले से । पूर्व  
 से । बहुत दिनों से । आगे से लेना=  
 अभ्यर्थना करना । आगे होना=१ आगे  
 बढना । अग्रतर होना । २ बढ जाना । ३  
 सामने आना । ४ मुकाबला करना । ५  
 भिड़ना । ५ मुखिया बनना ।  
 आगौन\*-सज्ञा पु० दे० "आगमन" ।

सागुनीध-सज्ञा पु० १. यज्ञ के सोलह ऋत्विजों में से एक। २. वह यजमान जो सामिक हो या अग्निहोत्र करता हो। ३. यजमडप। होता का गृह। ४. धन के द्वारा वरण किया जानेवाला ऋत्विक्।  
 आग्नेय-वि० [स्त्री० आग्नेयी] १. अग्नि का। अग्नि सबधी। २. जिनका देवता अग्नि हो। ३. अग्नि से उत्पन्न। ४. अगस्त्य मुनि। पाचक। ५. सबधीय। ६. जिससे आग निकले। जलानेवाला।  
 संज्ञा पु० १. सोना। सुवर्ण। २. रधिर। खून। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. अग्नि के पुत्र कातिकेय। ५. दीपन औषध। ६. ज्वालामुखी पर्वत। ७. प्रतिपदा। ८. दक्षिण का देश-विशेष जिसकी प्रधान नगरी महिष्मती थी। ९. वह पदार्थ जिससे आग भटक उठे, जैसे वाहद। १०. ब्राह्मण। ११. अग्निकोण। दक्षिण-पूर्व का कोण।  
 यो०—आग्नेयस्तान=भस्म पोतना।  
 आग्नेयगिरि-सज्ञा पु० धक्कनेवाले पर्वत। ज्वालामुखी।  
 आग्नेयास्त्र—सज्ञा पु० अग्निवाण। बन्दूक। प्राचीन काल के अस्त्रों का एक भेद जिनसे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी।  
 आग्नेयी-वि० १. अग्नि को दीपन करनेवाली औषध। २. पूर्व और दक्षिण के बीच की देश। ३. अग्नि की स्त्री स्वाहा।  
 अह-सज्ञा पु० १. अनुरोध। हठ। २. ग्रायणता। तत्परता। ३. बल। ४. आवेश। ५. कृपा। ६. प्रेम। ७. अतिशय यत्न। ८. प्रयास। ९. अनुग्रह। आसक्ति। १०. आक्रमण। ११. ग्रहण। १२. उपकार। १३. साहस।  
 आप्रहायण-सज्ञा पु० १. मार्गशीर्ष मास। अग्रहन। २. मृगशिरा नक्षत्र।  
 आप्रहायणेष्टि-सज्ञा स्त्री० नवान्न भक्षण। नूतन अन्न का प्रारम्भ।  
 आप्रही-वि० हठी। जिही।  
 आप-सज्ञा पु० मूल्य। कीमत।  
 आपात-सज्ञा पु० १. धक्का। ठोकर। २.

प्रहार। मार। चोट। पीडा। आप्रमण। ३. वध-स्थान। बूचड़खाना। ४. हनन। वध। ५. कोप। ६. अपक्षय।  
 आपार-सज्ञा पु० मय-विशेष से अग्नि को घृत प्रदान करना।  
 आपूर्ण-वि० १. हिलता हुआ। २. घूमता हुआ। फिरता हुआ। लडगड़गाता हुआ।  
 आपूर्णन-सज्ञा पु० चक्र के समान घूमना। फिरना। चक्कर खाना।  
 आपूर्णित-वि० चकराया हुआ। इधर उधर फिरता हुआ। घूमता हुआ। घुमाया हुआ।  
 आपोषण-सज्ञा पु० प्रचारण। प्रकाशकरण। घोषणा करना। मनादी करना।  
 आप्राण-सज्ञा पु० [वि० आघ्रात, आघ्रेय] १. सूँघना। बारा लेना। २. तृप्ति। अधाना।  
 आप्राणाहं-वि० सुगन्ध लेने के उपयुक्त। सूँघने योग्य।  
 आप्रात-वि० सूँघा हुआ।  
 आप्रेय-वि० सूँघने के योग्य।  
 आचंभित-वि० १. हठात्। देवात्। अस्मात्। २. अद्भुत। अचरज।  
 आचका-वि० १. अगणित। २. अकस्मात्। हठात्।  
 आचमन-सज्ञा पु० [वि० आचमनीय, आचमित] १. जल पीना। २. पूजा या धर्म-सबधी कर्म के आरम्भ में दाहिने हाथ में थोड़ा-सा जल लेकर मन्त्रपूर्वक पीना।  
 आचमनी-सज्ञा स्त्री० एक छोटा चम्मच जिससे आचमन करते हैं। चमचिया।  
 आचरण\*-सज्ञा पु० दे० "अचरज"। आश्चर्य। अचभा।  
 आचरण-सज्ञा पु० [वि० आचरणीय, आचरित] १. अनुष्ठान। २. आचार-शुद्धि। सफाई। ३. व्यवहार। रीति। दत्ताव। चाल-चलन। ४. लक्षण। चिह्न। ५. लौकिक कर्म। ६. रथ। पुराने जमाने की बैलगाड़ी। ७. अभ्यास।  
 आचरणीय-वि० आचार के योग्य। व्यवहार के योग्य।  
 आचरण\*-सज्ञा पु० दे० "आचरण"।

१. \*—क्रि० अ० आचरण करना। व्यव-  
हार करना।

क्रि० आचरणीय। वस्तुस्थिति। करणीय।

क्रि० वि० व्यवहृत। किया हुआ।

संज्ञा पु० अनादृशता। अनिपुणता।

संज्ञा पु० १. रहन-सहन। व्यवहार।

२. चरित्र। ३. शील। ४. बुद्धि।

५. रीति।

—संज्ञा पु० दे० "आचार्य्य"।

क्रि० \*—संज्ञा स्त्री० पुरोहिताई।

१. होने का भाव।

क्रि० वि० आचाररहित। अनाचारी।

परंपरा के विरुद्ध, अतः वर्जित।

आचारवान्—क्रि० [स्त्री० आचारवती]

शुद्ध आचार का। पवित्रता से रहनेवाला।

अच्छे आचरणवाला।

आचार-विचार-संज्ञा पु० शौच। आचार

और विचार। रहने की शुद्धता।

आचार-विरुद्ध—क्रि० व्यवहार विरुद्ध। कुरीति।

आचार्य—क्रि० [स्त्री० आचारिणी] चरित्र-

वान्। आचारवान्।

संज्ञा पु० रामानुज संप्रदाय का वैष्णव।

आचार्य्य—संज्ञा पु० [स्त्री० आचार्य्याणी]

१. गुरु। उपनयन के समय गायत्री मंत्र का

उपदेश करनेवाला। २. वेद पढ़ानेवाला।

३. पुरोहित। ४. यज्ञ के समय कर्मोपदेशक।

५. ब्रह्मसूत्र के प्रधान भाष्यकार शंकर,

रामानुज, मध्व और बल्लभाचार्य्य। ६

अध्यापक। ७. वेद का भाष्य करनेवाला।

विशेष—स्वयं आचार्य्य वा काम करने-

वाली अर्थात् अध्यापन करनेवाली स्त्री

आचार्य्या कहलाती है। आचार्य्य की

पत्नी को, जो पढ़ाती न हो, आचार्य्याणी

कहते हैं।

आचार्यमित्र—क्रि० आर्य। पूजनीय। गुरु।

आचार्य—संज्ञा स्त्री० मन्त्री की व्याख्या करने-

वाली। उपदेशदात्री।

आचित्य—क्रि० सब प्रकार से चिंतन करने

योग्य। पूर्ण रूप से विचारणीय।

संज्ञा पु० ईश्वर जो चिन्तन में नहीं आ सकता।

आचोद—संज्ञा स्त्री० १. आघात। क्षत-

विदात घाव। २. अनादृष्ट। बिना ज-  
भूमि।

आच्छन्न—क्रि० १. आवृत। ढका हुआ।

आच्छादित। २. छिपा हुआ। ३. व्याप्त।

४. रक्षित। ५. वस्त्र से ढँका।

आच्छादक—संज्ञा पु० १. जो ढँके। ढाँकने

वाला। गोपनकारी। २. रक्षा करनेवाला।

बचानेवाला।

आच्छादन—संज्ञा पु० [क्रि० आच्छादित,

आच्छन्न] १. कपड़ा। वस्त्र। परिधान।

२. ढकना। ३. छाजन। छवाई। ४. ढीला,

लगा अंगरवा। अवा-कवा। ५. फर्क-

पोना। ६. लँगोटा। ७. धोनी।

आच्छादित—क्रि० १. आवृत। ढका हुआ।

२. तिरोहित। छिपा हुआ।

आच्छाद्य—क्रि० आच्छादनीय। आवृत करने

के योग्य। ढकने के योग्य।

आच्छिन्न—क्रि० छेदना। काटना। कर्तन।

आच्छोदन—संज्ञा पु० शिकार। आखेट।

आछत\*—क्रि० वि० १. रहते हुए। होते

हुए। विद्यमानता में। सामने। २. सिवाय।

अतिरिक्त। छोड़कर।

आछना\*—क्रि० अ० १. होना। २. विद्यमान

होना। रहना।

आछी—संज्ञा स्त्री० अच्छी। उत्तम। सुधरा।

बढ़िया। नीकी। मली।

आछे\*—क्रि० वि० अच्छी तरह।

आछेप\*—संज्ञा पु० दे० "आक्षेप"।

आजन—संज्ञा पु० काजल। मुरमा। अजन।

आज—क्रि० वि० १. जो दिन बीत रहा है,

उसमें। वर्तमान दिन में। २. वर्तमान समय

में। इन दिनों। ३. अब। अज। अभी।

४. मित्र-विशेष। ५. राजा अज के पुत्र।

वि० बकरी से उत्पन्न या उससे सबड़ा।

आज-कल—क्रि० वि० वर्तमान दिनों में। इस

समय।

मुहा०—आजकल करना=डाल-मटोल करना।

हीला हवाला करना। आजकल लगना=अब

तब लगना। मरण-काल निकट आना।

आजगव—संज्ञा पु० शिष्यजी का धनुष।

पिनक।

आजन्म-क्रि० वि० जन्म भर। जीवन भर।  
उम्र भर। जन्म से लेकर।

आजमाइश-सज्ञा स्त्री० [फा०] जांच।  
परख। परीक्षा।

आजमाना-क्रि० स० [फा० आजमाइश]  
परीक्षा करना। जाँचना। परखना।

आजमूदा-वि० [फा० आजमूद] आजमाया  
हुआ। परीक्षित।

आजका-सज्ञा पु० पसर। दो हाथ भर।  
अजलि।

आजा-सज्ञा पु० [स्त्री० आजी] बाप का  
बाप। पितामह। दादा।

आजागुरु-सज्ञा पु० गुरु का गुरु।

आताद-वि० [फा०] [सज्ञा आजादी, आजा-  
दगी] १ स्वतन्त्र। स्वाधीन। छटा हुआ।

जो बढ़ न हो। बढ़ी। २ बेफिक्र। लापर-  
वाह। ३ बचन मुक्त। ४ निभय। निडर।

५ स्पष्टवक्ता। ६ उद्धत। ७ सूफी  
सम्रदाय के फकीर जो स्वतन्त्र विचार के  
होते हैं।

आजादी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ स्वाधीनता।  
स्वतन्त्रता। २ छुटकारा।

आजानु-वि० घुटन या जाँघ तक लंबा।

आजानुबाहु-वि० जिसके हाथ घुटने तक  
पहुँचें। जिसके बाहु जानु तक लंबे हों  
(बीरो का लक्षण)।

आजार-सज्ञा पु० [फा०] १ रोग। २  
दुख। कष्ट।

आजि-सज्ञा स्त्री० १ युद्ध। लड़ाई। संग्राम।  
रण। २ आक्षेप। आक्रोश। ३ गमन।  
गति। ४ समान भूमि।

आजिब-वि० [अ०] १ विनीत। दीन।  
२ तग।

आजिबी-सज्ञा स्त्री० [अ०] दीनता।

आजी-सज्ञा स्त्री० दादी। पितामही। पिता  
की माता।

आजीव-सज्ञा पु० जीविका। जीवोपाय।  
वृत्ति। व्यवधान।

आजीवन-क्रि० वि० जीवन पर्यंत। जब तक  
जीवित रहे।

आजीविका-सज्ञा स्त्री० वृत्ति।

आजीवी-वि० उपजीवी। उपजीवक।

आजु-सज्ञा पु० आज। वर्तमान दिन।

आजु-सज्ञा स्त्री० बिना वेतन के काम करती  
वाला। बेगारी। अवैतनिक। अवैतन।

आज्ञापन-वि० अनुमति प्राप्त। आदेशिनि-  
निदेशित। जलाने

आज्ञप्ति-सज्ञा स्त्री० १ आदेश। निदेश चिन्-  
आज्ञा। २ विधि। न हुए

आज्ञा-सज्ञा स्त्री० १ आदेश। वडो  
छोटा को किसी काम के लिए कह-दक।

२ अनुमति। निदेश। शासन। गने  
आज्ञाकारी वि० [स्त्री० आज्ञाकारिणी]

१ आज्ञा माननवाला। २ दास। सेवक।  
आज्ञाचक्र-सज्ञा पु० पट्टचक्रों में से छठवाँ  
चक्र (योग)।

आज्ञातिक्रम-सज्ञा पु० आदेशातिक्रम। आज्ञा  
का उल्लंघन।

आज्ञादायक-सज्ञा पु० आदेशकर्ता। अनुमति-  
कारी।

आज्ञानुवर्तन-सज्ञा पु० आज्ञा के अनुसार  
चलना।

आज्ञापक-वि० [स्त्री० आज्ञापिका] १  
स्वामी। प्रभु। २ आज्ञा देनेवाला।

आज्ञापत्र-सज्ञा पु० वह लेख जिसके अनुसार  
किसी आज्ञा का प्रचार किया जाय।

आदेशलिपि। निदेशलिखित।

आज्ञापन-सज्ञा पु० [वि० आज्ञापित] १  
सूचित करना। बतलाना। २ आदेश करना।

आज्ञाप्रतिपात-सज्ञा पु० स्वामिद्रोह। राज-  
शासनत्याग।

आज्ञापालक-वि० [स्त्री० आज्ञापालिका] १  
आज्ञाकारी। आज्ञा का पालन करनेवाला।

२ दास। सेवक।

आज्ञापित-वि० जिसके लिए आज्ञा दी गई  
है। आदेशित।

आज्ञापाल-सज्ञा पु० आज्ञा के अनुसार  
काम करना।

आज्ञाभग-सज्ञा पु० आज्ञा का उल्लंघन  
करना।

आज्ञावर्ती-वि० आज्ञा के बराबर। आज्ञाबह।  
आज्ञाधीन।

आय-गजा पु० १. आहि दी जानेवाली  
अयरुर्ण। एनि। २ पी। धूनी। ३ दर्जी।  
आ-दूध।

आय-गजा पु० १. विगोत्र विगोत्र। २ धूत-  
आचारी।

चलन-वि० ग० दयाना। तोपना।

५ त-गजा पु० १ पिमान। नन। किसी  
आचा या पूर्ण। गूजी। २ धुवनी। किसी  
आचा के वा पूर्ण।

आ-आटे दाल का भाव मात्रम होना =  
आ-गमार के व्यवहार का ज्ञान होना। आटे दाल  
की किन्न-जीविता की चिता।

आटोप-गजा पु० १ आच्छादन। फंदाव।

२ आटवर। विभव। ३ दर्प। गर्व।

अहवार। ४ वायुजन्य उदर शब्द।

आठ-वि० चार का दूना। ८। अष्ट।

मुहा०-आठ आठ आँसू रोना=रुत अधिक  
विलास करना। आठ गौठ कुर्मन=१ सर्व-  
गुण-संपन्न। २ चतुर। ३ धूर्त। छेटा हुआ।

आठों पहर=दिन-रात।

आठपहर-गजा पु० दिन रात। आठ याम।

आठवीं-वि० किसी वस्तु या सभ्यता का  
आठ हिस्से का अंश। जिसका स्थान आठ  
पर है। सातवें के बाद। अष्टम।

आठवर-गजा पु० [वि० आठवरी] १

डाग। ऊपरी घनावट। तडक-भडक। टीम-

टाम। २. गभीरशब्द। ३ तुम्ही का शब्द।

४ हाथी की चिप्याड। ५ तबू। ६ आच्छा-

दन। ७ पटह। बड़ा डील जो युद्ध

में बजाया जाता है। ८ प्रसन्नता। ९

पलक।

आठवरी-वि० ढोपी। आठवर करनेवाला।

ऊपरी बनावट रखनेवाला।

आठ-गजा स्त्री० १ ओट। जोसल। २

शरण। रक्षा। आश्रय। सहारा। ३

रोक। ४ टेक। यूनी। ५ लकी टिकली

जिसे स्त्रियों माथे पर लगानी है। ६

स्त्रिया के मस्तक पर का तिलक। ७ टोना।

माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक

गहना।

गजा पु० बिच्छू या भिड़ आदि का डक।

आठन-गजा स्त्री० डाल।

आठवड़-गजा पु० लेंगोटी।

आठना-वि० म० १ मना करना। न ५

देना। रोचना। छेचना। २ बांधना

३ गहने रखना। गिरवी या २८

रखना।

आठ-गजा पु० १ एक धारीदार कपड़ा

२ लट्टा। गहनीर।

वि० १ आँखों के समानांतर दाहिनी

से बाईं ओर का या बाईं ओर से दाहिनी

ओर को गया हुआ। २ बाएँ से पार तर

रगा हुआ।

मुहा०-आठे आना=१ बाधक होना।

स्वावट डालना। २ कठिन समय में महायत्न

होना। आठे हाथों लेना=किसी व

व्यंग्योक्ति द्वारा लज्जित करना।

आठो-गजा स्त्री० दे० "आरी"। १ तबला

मृदंग आदि बजाने का ढग विगोत्र। २ चमत्

की छुट्टी। ३ ओर। ४ सहायक।

अपने पक्ष का।

वि०-१ रक्षक। २ स्वर-विगोत्र।

आठ-गजा पु० फट्टे-विगोत्र जिमका स्वा-

नटमिट्टा होना है।

आठे आना-क्रि० वचाव करना। बाधक

होना। बाधा डालना। काम आना।

आठ-गजा पु० चार प्रस्थ अर्थात् चार सेन

की तील।

\*गजा स्त्री० १ ओट। पनाह। परदा।

\*१२ वीच। अतर। ३ नागा।

वि० दक्ष। कुशल।

आठक-गजा पु० १ चार मेर की तील।

२ इतना अन्न नायने का काठ का एक

वरतन। ३ अरहर।

आठत-गजा स्त्री० १ वह स्थान जहाँ आठत

का माल रहता हो। २ किसी अन्य

व्यापारी के मालकी विप्री करा देने का

व्यवसाय। ३ वह धन जो इस प्रकार विप्री

कराने के बखले में मिलता है। ४ अड्डा।

५ माल का चालान।

आठतिपा-गजा पु० दे० "अठतिपा"।

आठय-वि० १ पूर्ण। संपन्न। युक्त। २

विनिष्ट। ३ धनवान। ४ अन्वित।  
 गुणलब्ध।  
 आणक-सज्ञा पु० आना। एक रूप का सोलहवां भाग।  
 आणि-सज्ञा पु० कोण। अस्ति। सीमा।  
 आतर-सज्ञा पु० १ रोग। प्रताप। दबदबा।  
 २ भय। डर। शका। ३ रोग। पीडा।  
 आतत-वि० आरोपित। विस्तारित।  
 आततायी-सज्ञा पु० [स्त्री० आततायिनी]  
 १ सतानेवाला। २ आग लगानेवाला।  
 ३ विष देनेवाला। ४ दधोदत शस्त्रधारी।  
 हत्यारा। ५ जमीन, धन या स्त्री हरने-  
 वाला। ६ अनिष्टकारी। ७ महापापी।  
 ८ डाकू।  
 आतप-सज्ञा पु० १ धाम। धूप। २ उष्णता।  
 गर्मी। ३ सूर्य का प्रकाश।  
 आतपत्र या आतपत्रक-सज्ञा पु० छाता।  
 छत्र। धूप से बचानेवाला।  
 आतपन-सज्ञा पु० शिव का नाम।  
 आतपात्यय-सज्ञा पु० धूप का अभाव। सूर्य  
 की किरणा का नाश।  
 आतपाभाव-सज्ञा पु० छाया। धूप का अभाव।  
 आतपी-सज्ञा पु० सूर्य।  
 वि० धूप सबधी। धूप का।  
 आतपोदक-सज्ञा पु० मृगतृष्णा। मरीनिका।  
 आतम-वि० दे० आत्म।  
 आतमा-सज्ञा स्त्री० दे० आत्मा।  
 आतर-सज्ञा पु० १ अन्तर। बीच। २  
 उतराई।  
 आतरंज-सज्ञा पु० १ पीडन। २ तृप्ति।  
 ३ मंगलालेपन।  
 आतश-सज्ञा स्त्री० [फा०] अग्नि। आग।  
 आगी।  
 आतशक-सज्ञा पु० [फा०] [वि० आतशकी]  
 उपदश। गर्मी। किरण रोग।  
 आतशजाना-सज्ञा पु० [फा०] १ वह  
 स्थान जहाँ कमरा गर्म करने के लिए आग  
 रखते हैं। २ वह स्थान जहाँ पारसिया  
 की अग्नि स्थापित हो।  
 ३ आतशदान-सज्ञा पु० [फा०] अंगीठी।

आतशपरस्त-सज्ञा पु० [फा०] १ अग्निपूजक।  
 अग्नि की पूजा करनेवाला। २ पारसी।  
 आतशवाज-सज्ञा पु० आतशवाजी के खिलौने  
 और सामान बनानेवाला।  
 आतशवाजी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ अग्नि-  
 कीड़ा। वारूद के बने हुए खिलौने जो जलाने  
 से कई आकार और रंग-विरण की चिन-  
 गारियाँ छोड़ते हैं। २ वारूद के बन हुए  
 खिलौना के जलने का दृश्य।  
 आतशो-वि० [फा०] १ अग्नि-उत्पादक।  
 २ अग्नि रावधी। ३ जो आग में तपाने  
 से न फूटे, न तडके।  
 आता-सज्ञा पु० अत्ता। फल विशेष। सीता-  
 फल। शरीफ।  
 आतायी-सज्ञा पु० १ असुर विशेष जिसे  
 अगस्त्य मुनि ने अपने पेट में पचा डाला  
 था। २ चील पक्षी।  
 आतायी-वि० धूर्त। शठ।  
 सज्ञा पु०-पक्षी विशेष। चील।  
 आतायीपन-सज्ञा पु० धूर्तता। शठता।  
 खलता।  
 आतिथेय-वि० १ अतिथि की सेवा करने  
 वाला। अतिथि-पूजक। २ अतिथि सेवा की  
 सामग्री। अभ्यागत का सम्मान करने  
 वाला।  
 आतिथ्य-सज्ञा पु० अतिथि-सत्कार। अतिथि-  
 सेवा। मेहमानदारी। पहुनाई।  
 आतिदेशिक-वि० अतिदेश प्राप्त। दूसरे प्रकार  
 से उपस्थित।  
 आतिश-सज्ञा स्त्री० दे० 'आतश'। आग।  
 अग्नि।  
 आतिशय्य-सज्ञा पु० आधिक्य। अतिशय होने  
 का भाव। बहुतायत।  
 आतीपाती-सज्ञा स्त्री० बच्चा का एक खेल  
 जिसे हाथ पर हाथ रखकर खेलते हैं।  
 पहाडवा।  
 आतुर-वि० [सज्ञा आतुरता] १ घबराया  
 हुआ। व्यग्र। व्याकुल। उतावला। अस्थिर।  
 २ उद्दिग्ध। अधीर। बेचैन। ३ दुःख।  
 ४ उत्सुक। ५ रोगी। ६ पीडित। ७  
 कातर।

आय-सज्ञा पु० १ आरुति दी जनवाग  
अपुष्टुर्ल० हति। २ पी। पू। ३ दरी।

आ-दूध।

आय-सज्ञा पु० १ पितृमोक्ष विधय। २ घृत-  
आचारी।

आ-वि० म० दवाता। तोपना।

५-सज्ञा पु० १ पिमान। जन। मि०

आचा-का चूण। गूजी। २ चुकनी। रिमी

आचा-का चूण।

आ-आटे दाग का भाग मात्रम हाता=

आ-मारके व्यवहारवाजान हाता। आटे दाग

की किश=जीविता की गिता।

आडोप-सज्ञा पु० १ आच्छादन। फंगव।

२ आडवर। विभव। ३ दप। गव।

अहवार। ४ वायुजन्य उदर मंद।

आठ-वि० चार का दूना। ८। अष्ट।

मुहा०-आठ आठ आँसू राना=रुहुन अधि-

विलास करना। आठा गठि कुम्भन=१ सब

गुण सपन्न। २ चतुर। ३ घृत। छंटा हुआ।

आठा पहर=दिन रात।

आठपहर-सज्ञा पु० दिन रात। आठ याम।

आठवीं-वि० विसी वस्तु या सम्पत्ति का

आठ हिस्से का अंश। जिसका स्थान आठ

पर है। सातवें का बाद। अष्टम।

आडवर-सज्ञा पु० [वि० आडवरी] १

टाग। ऊपरी चनापट। तडक भडक। टीस

टाग। २ गभीर शब्द। ३ तुम्ही का शब्द।

४ हाथा की चिग्याड। ५ तदु। ६ आच्छा

दन। ७ पटह। बडा ढोल जा युद्ध

में बजाया जाता है। ८ प्रसन्नता। ९

पलक।

आडम्बरी-वि० दागी। आडवर करनेवाला।

ऊपरी बागवट रखनेवाला।

आड-सज्ञा स्त्री० १ ओट। ओझल। २

शरण। रक्षा। आश्रय। सहारा। ३

रोक। ४ टक। झूनी। ५ स्त्री नक्ली

जिसे स्त्रियाँ माथे पर लगाती हैं। ६

स्त्रियाँ के मस्तक पर का तिरक। ७ टीका।

माथे पर पहनने का स्त्रिया का एक

गहना।

सज्ञा पु० बिच्छ या भिड़ आदि का डक।

विशिष्ट। ३ धनधान। ४ अन्वित।  
गुणाढ्य।

आश्व-सज्ञा पु० आना। एव रूप का  
सालहर्षा भाग।

आशि-सज्ञा पु० काण। अस्ति। सीमा।

आतक-सज्ञा पु० १ रोव। प्रताप। दयदवा।

२ भय। डर। शका। ३ रोग।  
पीडा।

आतत-वि० आरोपित। विस्तारित।

आततायी-सज्ञा पु० [ स्त्री० आततायिनी ]

१ सतानेवाला। २ आग लगानेवाला।

३ विष देनेवाला। ४ वधाहत शस्त्रधारी।

हत्यारा। ५ जमीन, धन या स्त्री हरन-  
वाला। ६ अनिष्टकारी। ७ महापापी।

८ डाकू।

आतप-सज्ञा पु० १ घाम। धूप। २ उष्णता।

गर्मी। ३ सूर्य का प्रकाश।

आतपत्र या आतपत्रक-सज्ञा पु० छाता।

छत्र। धूप से वचानेवाला।

आतपन-सज्ञा पु० शिव का नाम।

आतपात्यय-सज्ञा पु० धूप का अभाव। सूर्य

की किरणा का नाश।

आतपाभाय-सज्ञा पु० छाया। धूप का अभाव।

आतपी-सज्ञा पु० सूर्य।

वि० धूप सवधी। धूप का।

आतपीडक-सज्ञा पु० मृगतृष्णा। मरीचिका।

आतम-वि० दे० आत्म।

आतमा-सज्ञा स्त्री० दे० आत्मा।

आतर-सज्ञा पु० १ अन्तर। बीच। २

उतराई।

आतर्वण-सज्ञा पु० १ पीडन। २ तृप्ति।

३ मंगलालेपन।

आतश-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] अग्नि। आग।

आगी।

आतशक-सज्ञा पु० [ फा० ] [ वि० आतशकी ]

उपदश। गर्मी। किरण रोग।

आतशजाना-सज्ञा पु० [ फा० ] १ वह

स्थान जहाँ कमरा गर्म करने के लिए आग

रखते हैं। २ वह स्थान जहाँ पारसियों

की अग्नि स्थापित हो।

आतशदान-सज्ञा पु० [ फा० ] अंगीठी।

आतशपरस्त-सज्ञा पु० [ फा० ] १ अग्निपूजक।

अग्नि की पूजा करनेवाला। २ पारसी।

आतशबाज-सज्ञा पु० आतशबाजी के खिलाते

और सामान बनानेवाला।

आतशबाजी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ अग्नि-

नीडा। बारूद के बने हुए खिलाते जो जलाने

से कई आकार और रंग विरग की चिन-

गारियाँ छोड़ते हैं। २ बारूद के बने हुए

खिलौना के जलन का दृश्य।

आतशो-वि० [ फा० ] १ अग्नि-उत्पादक।

२ अग्नि-सम्पन्नी। ३ जो आग में तपाने

से न फूट न तडके।

आता-सज्ञा पु० अत्ता। फल विशेष। सीता-

फल। शरीफ।

आतारी-सज्ञा पु० १ असुर विशेष जिस

अगस्त्य मुनि ने अपन पट में पचा डाला

था। २ चील पक्षी।

आतापी-वि० धूत। शठ।

सज्ञा पु०-पक्षी विशेष। चील।

आतापीपन-सज्ञा पु० धूतता। शठता।

सलता।

आतिथेय-वि० १ अतिथि की सेवा करने

वाला। अतिथि पूजक। २ अतिथि सेवा की

सामग्री। अभ्यागत का सम्मान करने

वाला।

आतिथ्य-सज्ञा पु० अतिथि सत्कार। अतिथि-

सेवा। मेहमानदारी। पहुनाई।

आतिदेशिक-वि० अतिदेश प्राप्त। दूसरे प्रकार

से उपस्थित।

आतिश-सज्ञा स्त्री० दे० आतश। आग।

अग्नि।

आतिशय्य-सज्ञा पु० आधिक्य। अतिशय होने

का भाव। बहुतायत।

आतीवर्ती-सज्ञा स्त्री० बच्चों का एक खेल

जिसे हाथ पर हाथ रखकर खलते हैं।

पहाडवा।

आतुर-वि० [ सज्ञा आतुरता ] १ घबराया

हुआ। व्यग्र। व्याकुल। उतावला। अस्थिर।

२ उद्विग्न। अधीर। बेचैन। ३ दुःख।

४ उत्तुङ्ग। ५ रोगी। ६ पीडित। ७

कातर।

वि० वि० शीघ्र। जल्दी।

आतुरता-गज्ञा स्त्री० १. व्यातुलता। येनर्णा  
घबराहट। २ शीघ्रता। जल्दी।

आतुरतर्दि\*-गज्ञा स्त्री० दे० "आतुग्ना"।  
व्यग्रता। उतावलापन।

आतुरसग्यास-गज्ञा पु० मरने के कुछ  
पहले धारण कराया जानेवाला सग्यास।

आतुरी\*-गज्ञा स्त्री० १ व्यातुलता। घब-  
राहट। २ शीघ्रता।

आतु-सज्ञा स्त्री० गुरुवायन। पण्डितायन।  
आनीछ-वि० वाद्य। वीणा। मुरज। वगी  
का वाद्य। चतुर्विध वाद्य।

आत्त-वि० गृहीत। प्राप्त। पकड़ लिया  
गया।

आत्तगन्ध-वि० १ गृहीत गन्ध। २ हृतदर्प।  
अभिभूत। पराजित।

आत्तगर्व-वि० सण्डित गर्व। अहंकार चूर्ण।  
भग्नदर्प।

आत्म-वि० १ अपना। स्वीय। निज का।  
२ जीव।

आत्मक-वि० [ स्त्री० आत्मिका ] सहित।  
युक्त (योगिक शब्दों के अन्त में)।

आत्मकार्य-सज्ञा पु० अपना काम। गोपनीय  
कार्य।

आत्मगत-वि० अपने में आया या लगा  
हुआ। स्वगत।

आत्मगरिमा-सज्ञा स्त्री० आत्मश्लाघा। दप।  
अहंकार।

आत्मग्राही-वि० स्वार्थपर। स्वार्थी। आत्म-  
म्भरि।

आत्मगौरव-सज्ञा पु० अपने गौरव, बड़ाई  
या प्रतिष्ठा का ध्यान।

आत्मघात-सज्ञा पु० अपने हाथों अपने को  
मार डालने का काम। आत्महत्या। स्वयं  
मरण।

आत्मघातक, आत्मघाती-वि० आत्महत्या  
करनेवाला।

आत्मज-सज्ञा पु० [ स्त्री० आत्मजा ] १  
लड़का। पुत्र। सन्तान। २ कामदेव।

आत्मजन्मा-सज्ञा पु० १ पुत्र। सन्तान। २  
ईश्वर। ३ कामदेव।

आत्मरति—सज्ञा स्त्री० ब्रह्मज्ञान।  
 आत्मलाभ—सज्ञा पु० १ उत्पत्ति। २ स्वलाभ।  
 स्वार्थ।  
 आत्मवचक—सज्ञा पु० १ कृपण। २ पापी।  
 ३ नास्तिक।  
 आत्मवत्—वि० आत्मसदृश। अपने समान।  
 आत्मवश—वि० स्वाधीन। स्ववश। स्व-  
 प्रधान।  
 आत्मवाद—सज्ञा पु० वह सिद्धान्त जिसमें  
 आत्मा और परमात्मा का ज्ञान ही सबसे  
 बढ़कर माना जाता है। अध्यात्मवाद।  
 आत्मवादी—सज्ञा पु० आत्मवाद के सिद्धान्त  
 का अनुयायी या उसे मुख्य माननेवाला।  
 आत्मविक्रय—सज्ञा पु० [ वि० आत्मविक्रीय ]  
 अपने आपको बेच डालना।  
 आत्मविक्रोता—सज्ञा पु० अपने को बेचनेवाला।  
 वह जो अपने आपको बेचकर दास बना हो।  
 आत्मविद्—सज्ञा पु० आत्मा और परमात्मा  
 के स्वरूप को पहचाननेवाला। ब्रह्मविद्।  
 आत्मविद्या—सज्ञा स्त्री० १ ब्रह्मविद्या। अध्या-  
 त्म-विद्या। वह विद्या जिससे आत्मा और  
 परमात्मा का ज्ञान हो। २ मिस्मरिज्म।  
 आत्मविश्वास—सज्ञा स्त्री० अपने ऊपर  
 भरोसा। स्वयं अपने पर विश्वास।  
 आत्मविस्मृति—सज्ञा स्त्री० अपना ध्यान न  
 रखना। अपने को भूल जाना।  
 आत्मश्लाघा—सज्ञा स्त्री० [ वि० आत्म-  
 श्लाघी ] अपने मुँह अपनी प्रशंसा या  
 बड़ाई। घमंड।  
 आत्मश्लाघी—वि० अपनी प्रशंसा आप करने-  
 वाला।  
 आत्मतपम—सज्ञा पु० इच्छाओं को रोचना।  
 अपने मन का वश में करना।  
 आत्मसम्मान—सज्ञा पु० दे० “आत्मगौरव”।  
 अपनी प्रतिष्ठा या इज्जत।  
 आत्मसात्—वि० अपने अधीन। स्वहस्तगत।  
 मुहूर्त—आत्ममात् करना—हजम पर जाना।  
 हडप जाना।  
 आत्मसिद्धि—सज्ञा स्त्री० मोक्ष।  
 आत्महत्या—सज्ञा स्त्री० आत्मघात। अपने  
 आपको मार डालना। स्ववध।

आत्महा सज्ञा पु० अपने को मारनेवाला।  
 आत्मघाती। अपने प्रयत्न से मृत।  
 आत्महिंसा—सज्ञा स्त्री० आत्महत्या।  
 आत्मा—सज्ञा स्त्री० [ वि० आत्मिक,  
 आत्मीय ] १ द्रष्टा। मन या अंतःकरण से  
 परे उसके व्यापारों का ज्ञान करनेवाली  
 सत्ता। जीव। जीवात्मा। चैतन्य। २ मन।  
 चित्त। ३ हृदय। ४ यत्न। ५ धृति। ६-  
 बुद्धि ७ ब्रह्म। ८ पुनः। ९ अर्क। १०-  
 हुताशन। ११ वायु। १२ अग्नि। १३-  
 सूर्य। १४ देह। १५ स्वभाव। धम्म।  
 मुहूर्त—आत्मा ठंडी होना—१ सतोष होना।  
 प्रसन्नता होना। तृप्ति होना। तृप्ति होना।  
 २ भूख मिटना। ३ पेट भरना।  
 आत्मानंद—सज्ञा पु० १ आत्मा में लीन होने  
 का सुख। २ आत्मा का ज्ञान।  
 आत्माभिमत—वि० आत्मसम्मत। अपना  
 मतानुयायी।  
 आत्माभिमान—सज्ञा पु० [ वि० आत्मा-  
 भिमानी ] अपनी प्रतिष्ठा या मान-अप-  
 मान का ध्यान।  
 आत्माराम—सज्ञा पु० १ जीव। २ ब्रह्म।  
 ३ आत्मज्ञान से तृप्त यागी। ४ तोता।  
 गुग्गा (प्यार का शब्द)।  
 आत्मावलंबी—सज्ञा पु० जो सब काम अपने  
 बल पर करे। आत्मनिर्भर।  
 आत्मिक—वि० [ स्त्री० आत्मिका ] १-  
 आत्मा-संबंधी। २ मानसिक। मन का।  
 ३ अपना। ४ प्यारा।  
 आत्मीय—वि० [ स्त्री० आत्मीया ] अपना।  
 स्वकीय। निज का।  
 सज्ञा पु० १ संबंधी। स्वजन। २ अन्तरंग।  
 आत्मजन।  
 आत्मीयता—सज्ञा स्त्री० १ अपनापन। स्नेह-  
 सवध। २ मैत्री। ३ प्रणय। ४ संयुक्ता।  
 ५ सद्भाव। ६ हृद्यता। ७ अन्तरंगता।  
 आत्मोत्कर्ष—सज्ञा पु० अपनी श्रेष्ठता। अपनी  
 प्रभुता। अपनी बड़ाई।  
 आत्मोत्सर्ग—सज्ञा पु० दूसरे के हित के लिए  
 अपना उत्सर्ग करना।  
 आत्मोद्धार—सज्ञा पु० १ मोक्ष। अपनी

आत्मा की गति के दुःख में लुप्तता या प्रसन्न में मिलना। २ अज्ञात उद्धार या पुनरागम।

आरमोद्धवा-मज्ञा स्त्री० अज्ञात। पुत्री० आरमज्ञा।

आरमोद्धति-मज्ञा स्त्री० आत्मा की उन्नति। अपनी बढ़ती। अपनी उन्नति।

आरमोद्धति-वि० [स्त्री० आरमोद्धति] अति-मय। विद्वान्। प्रसन्न। अधिक।

आरमोद्ध-वि० १ अतिमर्यादी। २ अति गति-वाला।

गज्ञा पु० १ अति के पुत्र दत्ता, चद्रमा, दुर्वाणा। २ आरमोद्धी नदी के तट का उग, जो दीनाजपुर जिले के अन्तर्गत है। ३ नगरस्थ रम। ४ धानु।

आरमोद्धी-मज्ञा स्त्री० १ एक तपस्विनी का वेशास में बड़ी लिप्ता थी। २ नदी विनोद।

आरमोद्ध-वि० अ० १ ज्ञाना। २ अन्त हाना (अन्तर्गत)।

आरमोद्ध-मज्ञा पु० १ वह व्याकरण का अक्षरवेद जागता हा। २ अक्षरवेदविहित कम। ३ अक्षरममूह।

आरमोद्ध\*-मज्ञा स्त्री० १ स्थिरता। २ पूँजी। जमा।

आरमोद्ध-मज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रकृति। मयमाव। २ अभ्यास। धान। देव।

आरमोद्ध-मज्ञा पु० [अ०] इन्द्रगनी और अरुंधी मता व अनुसार मनुष्यो का आदि प्रजापति।

आरमोद्ध-वि० आरमोद्ध की उच्चाई के बराबर (विन, मूर्ति या जोर कोई चीज)।

आरमोद्धा-मज्ञा पु० १ मनुष्य। २ आरम की सतान।

आरमोद्ध-मज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनुष्यत्व। मानवता। २ मनुष्यता।

आरमोद्ध-मज्ञा पु० [अ०] १ मनुष्य। मानव जाति। नर। २ आरम की सतान। ३ मेवक। नौकर। दास।

मुहो-आरमोद्ध बनना=मनुष्यता गीवना। अच्छा व्यवहार सीखना।

आरमोद्ध-वि० आरम के समान दिव्य। आदि के अग गव।

आरमोद्ध-मज्ञा पु० १ मन्कार। मन्मान। प्रतिष्ठा। २ आरमोद्ध। ३ मन्मान।

आरमोद्ध-वि० १ मान्य। माननीय। २ आरम याव्य।

आरमोद्ध-वि० म० मन्मान करना। माना। आरम करना।

आरम भाव-मज्ञा पु० मान। प्रतिष्ठा। मन्मान।

आरमोद्ध-मज्ञा पु० १ दांग। मीना। आरमोद्ध। २ व्याख्या। टीका। ३ वह जिनके रूप और गुण आदि का अनुकरण किया जाय।

४ निदान। ५ प्रति-मुक्तक। ६ मूल-मुक्तक। ७ विद्व। ८ पूर्णता। पूर्णत्व।

आरमोद्ध-मज्ञा पु० मूल-विनोद। अरमोद्ध। आरमोद्ध-मज्ञा पु० १ ग्रहण। लेना। स्वीकार। २ राग लक्षण।

आरमोद्ध प्रदान-मज्ञा पु० देन-देन। त्याग-ग्रहण। लेना-देना।

आरमोद्ध-मज्ञा पु० [अ०] १ नियम। २ धान। लिहाज। ३ नमस्कार।

आरमोद्ध-वि० १ पहला। प्रथम। प्रारम्भ का। २ निवान। विलुप्त।

मज्ञा पु० १ मूल कारण। उत्पत्ति-स्थान। आरम। २ ईश्वर। ३ आकार।

अव्य० वगैरह। आदि। इत्यादि। (इस शब्द में यह सूचित होता है कि इसी प्रकार और भी सन्को।)

आरमोद्ध-अव्य० वगैरह। पहले में। इत्यादि। और मय। आदि।

आरमोद्ध-वि-मज्ञा पु० वात्सीवि बुद्धि। आरमोद्ध-मज्ञा पु० मूल कारण। पहला कारण। पूर्व निमित्त। जैसे, ईश्वर या प्रकृति। निदान।

आरमोद्ध-मज्ञा पु० दे० "आदित्य"। आरमोद्ध-वि० आरमोद्ध के पुत्र। देवगण। आरमोद्ध-मज्ञा पु० १ देवता। २ आरमोद्ध के पुत्र। ३ इन्द्र। ४ सूर्य। ५ वसु। ६ वामन। ७ विश्वदेवता। ८ वारह मावाओ के छदा की मज्ञा। ९ अर्क

वक्ष। अकौआ का पेड़। १० वामनवेपी विष्णु। ११ मातवाँ चाद्र मास।  
 आदित्य-मंडल-सज्ञा पु० सूर्यमण्डल। सूर्य-  
 लोक।  
 आदित्यवार-सज्ञा पु० रविवार। सूर्यवार।  
 एतवार।  
 आदित्यसूनु-सज्ञा पु० १ सुग्रीव वानर।  
 २ यम। ३ चर्नश्चर। ४ सार्वाणि मनु।  
 ५ वंस्वत मनु। ६ कर्ण।  
 आदित्य-सज्ञा पु० नारायण। विष्णु।  
 आदिपुरुष-सज्ञा पु० १ ईश्वर। परमेश्वर।  
 २ वक्ष या कुल का प्रथम ज्ञात पुरुष।  
 आदिम-वि० प्रथम। पहला।  
 आदिराज-सज्ञा पु० सर्वप्रथम राजा। पृथु  
 राज।  
 आदिल-वि० [ फा० ] न्यायी। न्यायवान्।  
 आदिवराह-सज्ञा पु० विष्णु का वराह  
 अवतार।  
 आदिशुक्ल-सज्ञा स्त्री० आर्या छंद का  
 भेद-विशेष।  
 आदिशूर-सज्ञा पु० राजा विशेष। योग्येन।  
 आदिष्ट-वि० जिसे आदेश मिला हो।  
 आदेशित। आज्ञप्त। अनुमत। कथित।  
 आदी-वि० [ अ० ] अग्र्यस्त।  
 सज्ञा स्त्री० अदरक।  
 आवृत्त-वि० सम्मानित। जिसका आदर किया  
 गया हो।  
 आदेश-वि० जो लेने योग्य हो।  
 आदेश-सज्ञा पु० [ वि० आदेशक, आदिष्ट ]  
 १ आज्ञा। २ उपदेश। ३ प्रणाम। नम-  
 स्कार। (साधु)। ४ ज्योतिष शास्त्र में  
 ग्रहा का फल। ५ अक्षर-परिवर्तन।  
 व्याकरण में एक अक्षर के स्थान पर दूसरे  
 अक्षर का आना। ६ प्रकृति और प्रत्यय की  
 मिलानेवाले कार्य।  
 आदेशी-सज्ञा पु० १ आज्ञापक। आज्ञाकारक।  
 २ गणरा। ३ देवज्ञ।  
 आदेश्य-सज्ञा पु० १ पुरोहित। २ यानक।  
 आज्ञाकारक। आदेशकर्ता।  
 आदेश-सज्ञा पु० दे० "आदेश"।  
 आधो-अ० प्रथम। आगे। आदि।

आग्रत-क्रि० वि० आदि-अत। आदि से  
 अत तक। प्रथम और अत। आद्योपान्त।  
 आध-वि० १ प्रथम। पहला। २ भोजनीय  
 द्रव्य। ३ अत।  
 आधा-सज्ञा स्त्री० १ दस महाविद्याओं में  
 से एक। २ दुर्गा।  
 आधोनात-क्रि० वि० समस्त। सपूर्ण। प्रारभ  
 से अत तक।  
 आधा-सज्ञा स्त्री० दे० "आधा"। नक्षत्र-  
 विशेष।  
 आध-वि० आधा। दो बराबर भागों में से  
 एक। (गौणिक में)।  
 यो०-एक आध=घोड़े से। चद।  
 आधा-वि० ० [ स्त्री० आधी ] दो बराबर  
 हिस्सा में से एक। अर्द्ध।  
 मुहा०-आधो आध=दो बराबर भागों में।  
 बराबर भाग। आधा तीनर आधा बदेर=  
 कुछ एक तरह का और कुछ दूसरी तरह  
 का। बेजोड़। बेमेल। अडबड़। आधा होता=  
 दुबला होता। आधे आध=दो बराबर  
 हिस्सा में बँटा हुआ। आधी बात=जरा  
 सी भी अपमानसूचक बात।  
 आधाकरात्री-सज्ञा पु० आधासीसी। शिरोरोग-  
 विशेष।  
 आधान-सज्ञा पु० १ स्थापन। धारण। रखना।  
 २ वधक रखना। ३ गर्भावान। गर्भ-  
 धारण। ४ स्थापित द्रव्य। ५ यज्ञ में  
 अग्नि प्रज्वलन। ६ अग्निहोत्र।  
 आधानिक-सज्ञा पु० गर्भावान सम्भार।  
 आधार-सज्ञा पु० १ अवलंब। आश्रय।  
 सहारा। २ व्याकरण में अविवरण  
 वारक। ३ धाला। आलसल। ४  
 आहार। पात्र। ५ नींव। मूल। ६ मूल-  
 धार। योगशास्त्र में एक चक्र। ७ आश्रम  
 देनवाला। पालन करनेवाला।  
 यो०-प्राणाधार=परम प्रिय। जिससे आधार  
 पर प्राण है।  
 आधारित-वि० किसी के आधार पर ठहरा  
 हुआ। अवलंबित। निर्भर।  
 आधासी-वि० [ स्त्री० आधारिणी ] १  
 सहारा रखनेवाला। सहारे पर खड़ेवाला।

२. आपुत्री की देव की या अष्ट के आचार की एक प्रकार की लक्ष्मी।  
 आपासोमो-गंगा स्त्री० प्रापे मित्र की पीठा।  
 रोग-विशेष। अधकपायो।  
 आपि-गंगा स्त्री० १. धिया। २. भागित्त व्यसा। ३. यधन। रेहा। ४. ध्यमन। ५. प्रत्यासा। ६. आपार। ७. म्यान। ८. नीव। ९. केराया। १०. उतापि (जंगे 'गंगा')। ११. द्वितीय विवाह करने पर प्रथम पत्नी को प्रदत्त धन या भूमि आदि।  
 आपिब\*-वि० आपा। त्रि० वि० योटा। आपे के लगभग।  
 आपिकारिब-गंगा पु० १. दुग्ध पाष्य में मूल-मयायन्तु। २. गर्वाज्य नागव। ३. प्रधान व्यक्ति या यन्तु से सवद। ४. पितृ विनिष्ट विभाग या प्रवरण या परिच्छेद के अतंगत स्थित।  
 आपिषय-गंगा पु० अधिपता। अधिवर्य। अतिनाय। बहुतायत।  
 आपिदेविक-वि० १. देवनाट्ट। (दुग्ध) देवता, भूत आदि द्वारा होनेवाला। देवप्रयुक्त। देवाधीन। २. बुद्धि-सवधी।  
 आधिपत्य-गंगा पु० ऐश्वर्य। अधिकार। प्रभुत्व। स्वामित्व।  
 आधिभौतिक-वि० जो भूतो या तत्त्वा के सवध से उपन्न हो। व्याघ्र, सर्पादि जीवों के द्वारा कृत। जीवा या शरीरधारिया-द्वारा प्राप्त (दुग्ध)।  
 आधिदेनिक-वि० द्वितीय विवाह के नम्र प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन।  
 आधीन\*-वि० दे० "आधीन" १. वज्र। आज्ञाकारी। स्वाधिकार्युक्त। वाक्वर्ती। २. नम्र।  
 आधीनता-गंगा स्त्री० अधीनता। वचवर्ती। आधी रात-गंगा स्त्री० वह समय, जब रात का पहला आधा भाग बीत जाय।  
 आधुनिक-वि० १. आज-कल का। वर्तमान समय का। २. नवीन। नया। साम्प्रतिक।

आधेय-गंगा पु० १. विभी सहारेपर टिपी हुई चीज। २. गवने योग्य। टहगने योग्य। ३. गिरो गवने योग्य।  
 आधेय-वि० शालित। ध्यापुल। कपित। ईप्सुपित।  
 आधेधाय-गंगा पु० आधीआप। आप का भाषा। अर्धादि।  
 आधेय-गंगा पु० अर्धभाग। मृत्युदो भागों का एक भाग।  
 वि० जो आपा पर स्थित हो।  
 आधीरण-गंगा पु० हृत्पिपक। महापत। हृत्पीवान। पीलवान।  
 आप्मात-वि० १. गन्धिन। २. अग्नि-सयागान्वित। दग्ध।  
 गंगा पु० १. वानरोग-विशेष। २. युद्ध। ३. मयत।  
 आप्मान-गंगा पु० वायुरोग। वायु से पैट फूटना।  
 आप्मात्मिक-वि० १. आत्माश्रित। आत्मा मवधी। २. ग्रह और जीव-मवधी। ३. मनमवधी।  
 आप्मान-गंगा पु० १. ध्यान। चिन्ता। स्मरण। २. दुर्भाषना। अनुसोचना। ३. उत्तराष्ट्रपूर्वक स्मरण।  
 आप्मनीन-गंगा पु० १. पथिक। पान्य। २. पापेय। मार्ग-व्यय।  
 आनतर्प-गंगा पु० १. परचादनाव। शय। २. अननरार्थ। ३. नैकट्य। सन्निकर्ष।  
 आनत्य-गंगा पु० अपरिसीमता। अमन्यता। अत्यधिकता। बहुत ही।  
 आनद-गंगा पु० [वि० आनदित, आनदी] प्रसन्नता। हस। ह्लाद। मुच।  
 यो०-आनदमगल।  
 आनदकर-वि० मुखजनक। आह्लादकर।  
 आनदकानन-गंगा पु० १. आनददायक वन। २. काशी का नाम।  
 आनद गिरि-गंगा पु० एक दार्शनिक पण्डित।  
 आनदचित्त-वि० हृष से प्रपल्लवित्त।  
 आनदना\*-वि० अ० प्रसन्न होना। आनन्दित होना।  
 आनदपट-गंगा पु० नई विवाहिता स्त्री का

वस्त्र, विशेषतः सुहागरात को पहना जान वाला।

आनदपूर्ण—वि० आनद से भरा हुआ। अधिक आनद।

आनदप्रभव—सज्ञा पु० रेत। बीर्म। शुरु।

आनद-वधाई—सज्ञा स्त्री० १ मंगल-अवसर। २ मंगल उत्सव।

आनदवन—सज्ञा पु० काशी नगरी।

आनदमत्ता—सज्ञा स्त्री० दे० 'आनदसम्मोहिता'।

आनदमय कोप—सज्ञा पु० १ कोप विशेष। २ सत्त्व। ३ प्रधान ज्ञान। ४ कारण। ५ शरीर। ६ सुषुप्ति।

आनदवर्द्धन—सज्ञा पु० काश्मीर निवासी प्रसिद्ध कवि और अलंकारशास्त्री।

वि० आनद बढ़ानेवाला।

आनदशय्या—सज्ञा स्त्री० नवोढा शयन।

आनदसम्मोहिता—सज्ञा स्त्री० वह प्रीटा नायिका जो रति के आनद में अत्यंत निमग्न होने के कारण आपा भूल जाय।

आनदार्णव—सज्ञा पु० सुख समुद्र। आह्लाद सागर।

आनदाधु—सज्ञा पु० हप। आह्लाद।

आनदि—सज्ञा पु० हप। आह्लाद। सुख।

आनदित—वि० १ प्रसन्न। हर्षित। सुखी।

आनदयुक्त। हर्षान्वित। २ हृष्ट।

आनदी—वि० १ प्रसन्न। हर्षित। २ प्रसन्न रहनेवाला।

आनददुर्द्धमि—सज्ञा पु० १ बहुदुःख भरी।

बड़ा नगाडा। २ कृष्ण के पिता वसुदेव।

आन—सज्ञा स्त्री० १ शपथ। शीघ्रद। प्रतिज्ञा। वराम। २ मय्यादा। ३ दुहाइ। विजय घोषणा। ४ दण। ५ क्षण। पल। ६ भित। ७ अवड। ऐंठ। ठमक। ८ अदय। गिहाज। ९ प्रतिज्ञा। प्रण। टेक। १० उद्यवास।

मुहा०—आन की आन में=शीघ्र ही। चट पट। फौरन।

वि० दूसरा। और। अन्य।

वि० ग०—लानर।

आनक—सज्ञा पु० १ डका। भेरी। पटह। दुदुभी। २ गरजता हुआ बादल। ३ मृदंग। ढक्का। ४ नाक से सांस लेना।

आनत—वि० स० लाता है। ले आता है। लाते ही।

वि० अवतल। झुका हुआ। नम्र।

आनद—वि० १ वद्ध। मिलित। जोड़ा हुआ। मढ़ा हुआ। २ कल्पमान। ३ वेश रचना आदि। ४ कसा हुआ तैयार।

सज्ञा पु० वह राजा जो चमड़े से मढ़ा हो।

जैसे—ढोल, मृदंग आदि।

आनन—सज्ञा पु० १ मुँह। मुत्त। २ चेहरा। मुखड़ा। वदन।

आनन फानन—वि० वि० [अ०] तुरत। अतिशीघ्र। झटपट।

आनना—वि० स० लाना।

आनवान—सज्ञा स्त्री० १ ठाट-वाट। सजधज। तडक-भडक। सजावट। बनावट। २ ठसक। अदा।

आनयन—सज्ञा पु० १ लाना। ले आना। २ उपनयन संस्कार। ३ स्थानांतरण।

आन-तान—सज्ञा स्त्री० १ ठसक। जिद। अड़। २ मोखी। बे सिर पैर की बात।

आनरेरी—वि० [अंग्रे०] अवैतनिक। जो प्रतिष्ठा के लिए बिना वेतन के काम करे। जैसे—आनरेरी मजिस्ट्रेट। आनरेरी सेनेटरी।

आनरेबल—सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] माननीय। प्रतिष्ठित। मान्य। (राज्य या केन्द्र के मंत्रिया, विधान सभाओं के सदस्य तथा उच्च न्यायाध्या के न्यायाधीश आदि की उपाधि)

आनर्त्त—सज्ञा पु० [वि० आनर्त्तक] १ द्वारका। २ आनत देश का रहनेवाला। ३ नाचघर। नृत्यशाला। ४ मुद्र।

आनर्त्तित—वि० १ कपित। २ नृत्य-विशेष। आनवी—वि० स० ले आया। ले आइये। ले आइय।

आनहु—वि० स० लाओ।

आना—सज्ञा पु० १ एक रुपए का सोन्हाई हिस्सा। चार पैसा। एक आना। २ किसी वस्तु या सोन्हाई अंश।

क्रि० अ० १. पास आना । आगमन करना । यन्त्रा के स्थान की ओर चलना या उस पर प्राप्त होना । २. जाकर लौटना । ३. गमय प्रारम्भ होना । ४. फूलना-फलना । फल-फूल लगना । ५. किसी भाव या उठना । जैसे—आनंद आना ।

मुहा०—आए दिन=प्रतिदिन । रोज-रोज । आता-जाता=आने-जानेवाला । पवित्र । चटोही । आ पमकना=एकवारगी आ पहुँचना । आ पटना=१. आक्रमण करना । (अनिष्ट घटना का) घटित होना । २. सहसा गिरना । एकवारगी गिरना । आया-गया=१. अतिथि । अभ्यागत । २. विस्मृत । उपेक्षणीय । आ रहना=गिर पटना । आ लेना=१. पास पहुँच जाना । एकड़ लेना । २. दूट पटना । आक्रमण करना । (किसी की) आ बनना=लाभ उठाने का अच्छा अवसर हाथ आना । किसी को कुछ आना=किसी को कुछ ज्ञान होना । (किसी वस्तु) में आना=१. ऊपर से ठीक या जमकर बैठना । २. सनाना । भीतर अटना ।

आनाकानी-सज्ञा स्त्री० १. टाल-मटोल । हीलाहवाला । २. सुनी-अनसुनी करने का कार्य । न ध्यान देने का कार्य । ३. कानाहूसी ।

आना जाना-क्रि० स० आवागमन । यातायात । आनाह-सज्ञा पु० १. मलमूत्र रुकने से पेट फूलना । २. मूत्र न होना । रुक जाना । ३. लवाई । ४. कोष्ठवद्धता । कब्ज ।

आनि-सज्ञा स्त्री० दे० "आन" ।

क्रि० स० लाकर । ले आकर ।

आनिहीं-क्रि० स० लाऊँगा ।

आनी१-वि० आनयनकरण । ले आना ।

आनुपत्य-सज्ञा पु० अनुगत होने की क्रिया या भाव । अनुकरण ।

आनुपूर्व-सज्ञा पु० क्रमिक । अनुक्रम । पर्याय । बंद ।

आनुपूर्वी-वि० १. एक के बाद दूसरा । क्रमानुसार । २. परिपाटी । अनुक्रम ।

आनुमानिक-वि० १. अनुमान-सिद्ध । २. अल्पविक ।

आनुवन्निह-वि० यन्त्रानुक्रमिक । जो किसी वस्तु में बराबर होता आया हो ।

आनुधविक-या आनुध्राविक-वि० जिसको परंपरा में सुनते चले आए हो ।

आनुपंगिक या आनुसंगिक-वि० गीण । अप्रधान । प्रामाणिक । माध-भाय होनेवाला । जिसका माधन किसी दूसरे प्रधान कार्य को करने समय बहुत थोड़े प्रयास में हो जाय । आन्योक्षिकी-सज्ञा स्त्री० १. तर्कविद्या । न्याय-शास्त्र । २. आत्म-विद्या ।

आप-सर्व० १. स्वय । खुद । (तीनों पुरुषों में)

२. "तुम" और "वे" के स्थान में आदरायक प्रयोग । ३. भगवान् । ईश्वर । परमेश्वर । सज्ञा पु० जल । पानी ।

यौ०—आपकाज=अपना वान । जैसे—आपकाज महाराज । आपनाजी=स्वार्थी । भल्लरी । आपवीती=पटना जो अपने ऊपर

वीत चुकी हो । आपरूप=स्वय । आप ।

मुहा०—आप आपकी पटना=अपने-अपने काम में फँसना । अपनी-अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना । आप आपको=अलग-अलग । न्यारे-न्यारे । आपको भूलना=

१ किसी मनोवेग के कारण बेमुग्ध होना । २ मदाश होना । घमंड में चूर होना । आप से=स्वय । खुद । आप से आप=स्वय । खुद

व-खुद । आप ही=स्वय । आपसे आप । आप ही आप=१. बिना किसी और

की प्रेरणा के । आपसे आप । २ मन ही मन में । किसी को सबोधन करके नहीं । स्वगत ।

आपकाज-वि० स्वार्थी । आपकाजी ।

आपसा-सज्ञा स्त्री० नदी ।

आपजजनक-वि० विपदजनक । अनिष्टकारी । आपण-सज्ञा पु० पण्य । विनयशाला ।

दुकान । हाट । बाजार ।

आपणिक-सज्ञा पु० वणिज । व्यवसायी । दुकानदार ।

आपत्काल-सज्ञा पु० १. दुर्दिन । विपत्ति । २. कुसमय । दुष्काल ।

आपत्य-वि० अपत्य या सतान-संबन्धी । औलाद का ।

आपत्ति-सज्ञा स्त्री० १. विघ्न । दुःख । क्लेश ।

२. सकट। विपत्ति। ३. कष्ट का समय।  
४. जीविका-कष्ट। ५. दोषारोपण। ६.  
उज्र। एतराज।

आपद्-सज्ञा स्त्री० १. विपत्ति। विपद।  
आपत्ति। २. कष्ट। विघ्न। दुःख।

आपदा-सज्ञा स्त्री० १. क्लेश। दुःख।  
२. विपत्ति। कष्ट।

आपद्ग्रस्त, आपदाग्रस्त-वि० विपन्न। आपत्ति  
में पड़ा हुआ।

आपद्धर्म-सज्ञा पु० १. वह धर्म जिसका  
विधान केवल आपत्काल के लिए हो।

२. किसी वर्ण के लिए वह व्यवसाय  
या काम जिसकी आज्ञा और कोई जीवनी-  
पाय न होने की अवस्था में ही हो। जैसे  
ब्राह्मण के लिए वाणिज्य। (स्मृति)  
आपन, आपना\*-सर्व० दे० "अपना"। निज  
का।

आपन्निक-सज्ञा पु० १. पत्न्य। २. पत्नी।  
मरकत। ३. इन्द्र। ४. नील मणि। ५. देश-  
विशेष।

आपन्न-वि० १. दुःखी। आपद्ग्रस्त। २.  
प्राप्त। जैसे, सबटापन्न। ३. अभागा। ४.  
प्रविष्ट। घुसा हुआ। ५. लब्ध। ६. लाभ  
में प्राप्त।

आपन्ननाश-सज्ञा पु० आपदनाश। विपत्ति-  
नाश।

आपन्नसत्त्वा-सज्ञा स्त्री० गर्भवती।

आपन्नित्यक्त-सज्ञा पु० विनिमय-प्राप्त। बदला  
किया हुआ। गृहीत द्रव्य।

आपषा\*-सज्ञा स्त्री० नदी।

आपरेक्षन-सज्ञा पु० [अपे०] फोडा-आदि  
की चोरक ड। अस्त्र चिबित्ता।

आपरूप-वि० मूर्तिमान्। साक्षात्। अपने  
रूप से युक्त। (महापुरुषों के लिए) ईश्वर।  
सर्व० साक्षात् आप। आप महापुरुष।  
हजरत (व्यग्य)।

आपस-सज्ञा स्त्री० १. नाता। संबंध। भाई-  
धारा। जैसे—आपसवालों में, आपस के  
लोग। २. एक दूसरे का संबंध। एक दूसरे  
का साथ। (नेचल संबंध और अधिनरण  
कारण में)

मुहा०—आपस का=१ इष्ट-मित्र या भाई-बंधु  
के बीच का। २. परस्पर का। एक दूसरे का।  
आपस में=परस्पर। एक दूसरे के साथ।  
पौ०—आपसदारी=परस्पर का व्यवहार।  
भाईचारा।

आपसा-सज्ञा स्त्री० आप-समान। अपने-जैसा।  
आपसी-वि० आपस का। पारस्परिक।

आपस्तव-सज्ञा पु० [वि० आपस्तवीय] १.  
ऋषि-विशेष जो कृष्णयजुर्वेद की एक  
शाखा के प्रवर्तक थे। २. आपस्तव शाखा  
के कल्प सूत्रकार जिनके बनाये तीन सूत्र-  
ग्रन्थ हैं। ३. स्मृतिवार विशेष।

आपा-सज्ञा पु० १. आप ही। अपना अस्तित्व।  
अपनी सत्ता। २. अपनी वास्तविकता।  
३. अहंकार। गर्व। घमंड। ४. सुध-बुध।  
होश-हवास।

सज्ञा स्त्री०। बड़ी बहिन। (मुसल०)

मुहा०—आपा खोना=१ अहंकार त्यागना।  
नन्त्र होना। २. अपना गौरव छोड़ना।

मर्यादा नष्ट करना। आपा सजना=१

आत्मभाव का त्याग। अपनी सत्ता को  
भूलना। २. निरभिमान होना। अहंकार

छोड़ना। ३. मरना। प्राण छोड़ना।  
आपे में आना=होश-हवास में होना।

चेत में होना। आपे में न रहना=१  
आपे से बाहर होना। अपने ऊपर

वश न रखना। ब्रैकावू होना। २.  
घबराना। ३. अत्यंत क्रोध में होना।

आपे से बाहर होना=शोध और हर्ष  
आदि के आवेश में सुध-बुध खोना। क्षुब्ध

होना। उद्विग्न होना। घबराना।

आपाक-सज्ञा पु० अँका। पचाया।

आपात-सज्ञा पु० १. किसी घटना का अचानक  
हो जाना। २. पतन। गिराव। ३. गारम।  
४. अत।

आपातत-क्रि० वि० १. अचानक। अचानक।  
२. अत की। ३. सम्प्रति। इस समय के  
समान।

आपातलिका-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार  
का छन्द।

आपादपर्पन्त-अव्य० पैर से पैर सिर तक।

आपादमस्त्र-गज्ञा पु० गिर ग चरगावधि ।  
सिर से पैर पर्यन्त ।

आपापापी-सज्ञा स्त्री० १. अपनी-अपनी  
धन । अपनी-अपनी चिन्ता । २. जाग-  
डाँट । गीच-नाच ।

आपापन-गज्ञा पु० घराबियों की मडली । घग्घ  
पीने का स्थान । मतवाली का झुण्ड । मत्तप ।  
मतवाला ।

आपापयी-वि० कुमार्ग पर चलनेवाला ।  
आपामर-साधारण-गज्ञा पु० सर्वमात्राण । अन्य  
मनुष्यों से लेकर सभी मनुष्य ।

आपिष्कर-सज्ञा पु० स्वर्ण । हेम । कनक ।  
'काचन ।

आपी\*-सज्ञा पु० पूर्वापाठ नक्षत्र ।

आपीष्ट-सज्ञा पु० १ सिर पर पहनने की  
चीज, जैसे—पगड़ी, सिरपेंच, डट्यादि ।  
शेखर । शिरोमाला । मुकुट । कलेंगी । २  
पिगल में विषम वृत्त-विशेष । ३ आश्लेष,  
आलिङ्गन । ४ भीचना ।

आपीन-सज्ञा पु० १ गोस्तन । ईपतस्थूल ।  
गो नाथन । २ बडोर । मोटा । बडा ।

आपु\*†—सर्व० दे० "आप", "अपना" ।

आपुन\*†—सर्व० दे० "आप", "अपना" ।

आपुस\*†—सज्ञा पु० दे० "आपस" । परस्पर ।

आपूरना\*-क्रि० अ० भरना ।

आपूति-सज्ञा स्त्री० ईपतपूरण । सम्यक्  
पूरण ।

आपेक्षिक-वि० १ अपेक्षा रखनेवाला । सा-  
पक्ष । २ निर्भर रहनेवाला । दूसरी वस्तु के  
सहारे पर रहनेवाला ।

आपोशन-सज्ञा पु० वर्म-विशेष । भोजन के  
पूर्व का आचमन ।

आपुच्छा-सज्ञा स्त्री० आभाषण । आलाप ।  
जिज्ञासा । प्रश्न ।

आप्त-वि० १ प्राप्त । लब्ध । (योगिक में)  
सत्य । सच्चा । बन्धु । अग्रान्त । विश्वा-  
मित । किसी भी कारण से कभी झूठ न  
बोलनेवाला । २ दक्ष । कुशल । ३ विषय  
को ठीन तीर से जाननेवाला । ४ प्रामाणिक ।  
सज्ञा पु० १ ऋषि । २ शब्द-प्रमाण ।  
३ भाग का लब्ध ।

आप्तकाम-वि० पूर्णकाम । जिगची गव काम-  
नाएँ पूरी हो गई हो ।

आप्तकारी-गज्ञा पु० विश्वागी । विश्वस्त  
व्यक्ति ।

आप्तगर्ध-वि० आत्माह्वार । दम-विगिष्ट ।  
दामिव ।

आप्तग्राही-गज्ञा पु० स्वार्थपर । आत्मम्भरि ।  
लोनी ।

आप्तवर्ग-गज्ञा पु० आत्मीय । स्वजन । मान-  
नीय । मित्र ।

आप्तसार-गज्ञा पु० आत्मग्राहण । स्वशरीर-  
गोपन ।

आप्ति-गज्ञा स्त्री० लाभ । प्राप्ति ।

आप्तोक्ति-गज्ञा स्त्री० गिद्वान्-वाक्य ।  
आप्तवचन । विश्वस्त व्यक्ति का  
कथन ।

आप्यायन-सज्ञा पु० [ वि० आप्यायित ] १  
वर्धन । वृद्धि । २ तर्पण । तृप्ति । ३. मृत  
घातु को जगाना या जीवित करना । ४  
एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त  
होना । पोष्टिक औषध ।

आप्यायित-वि० १ तृप्त । प्रीत । सन्तुष्ट ।  
आनन्दित । तर । २ बडा हुआ । दूसरे रूप  
में बदला हुआ ।

आप्रच्छन-सज्ञा पु० आने या जाने के समय  
मित्रों में परस्पर कुशल-प्रश्न-जनित आनन्द ।

आप्लव-सज्ञा पु० स्नान । अवगाहन । जल-  
मय । सर्वत्र डूबाव ।

आप्लवणी-सज्ञा पु० स्नात्रव ब्राह्मण ।

आप्लावन-सज्ञा पु० [ वि० आप्लावित ]  
वोरना । डूबाना । जल का छिड़काव ।

आप्लुत-सज्ञा पु० स्नान । स्नातक ।

वि० वृत्तस्नान । निहितावगाहन । सिक्त ।  
भीगा ।

आप्लुतवती-सज्ञा पु० १ ब्रह्मचर्य त्यागकर जो  
गृहस्थ आश्रम अवलम्बन करते हैं । स्नातक  
ब्राह्मण । २ समाप्त-वेदाध्ययन । ३ स्नान-  
शील ।

आफन-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ बला ।  
विपत्ति । आपत्ति । २ दुख । कष्ट । ३  
मुगीवत का दिन ।

मुहा०—आफत उठाना=१ दुख सहना। विपत्ति भोगना। २ ऊधम मचाना। हलचल मचाना। आफत का परवाला=१ पटु। किसी काम को बड़ी तेजी से करनेवाला। कुशल। २ घोर उद्योगी। आकाश-पाताल एक कर देनेवाला। ३ उपद्रवी। हलचल मचानेवाला। आफत खड़ी करना=विपद उपस्थित करना। आफत दाना=१ ऊधम, उपद्रव या हलचल मचाना। २ दुख पहुँचाना। अनहोनी बात कहना। आफत मचाना=१ दगा करना। हलचल करना। २ गुल-गपाड़ा करना। ३ जल्दी मचाना। उतावली करना। आफत लाना=१ विपद उपस्थित करना। २ झसट पैदा करना। बखेड़ा खड़ा करना।

आफताब—सज्ञा पु० [फा०] [वि० आफ तारी] सूर्य।

आफताब—सज्ञा पु० [फा०] हाथ-मुँह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ।

आफताबी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार की आतशवाजी। २ पान के आकार का पत्ता जिस पर सूर्य का चिह्न बना रहता है और जो राजाओं के साथ या बारात आदि में झंडे के साथ चलता है। ३ ओसारी। दरवाजे या खिड़की के सामने का छोटा सायबान।

वि० [फा०] १ गोल। २ सूर्य-संबंधी।

यौ०—आफताबी गुलकद=वह गुलकद जो वप में तैयार किया जाय।

३ निर्भर रहनेवाला। दूसरी वस्तु के सहारे पर रहनेवाला।

आफू—सज्ञा स्त्री० १, अफीम। २ अमल। ३ अहिफेज।

आब—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ आभा। काति। चमक। तडक भडक। २ शोभा। रौनक। छवि। ३. उत्कर्ष। ४. महिमा। प्रतिष्ठा। ५ गुण।

मज्ञा पु० पानी। जल।

आबकारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ होली। गराबखाना। मलबेरिया। वह स्थान जहाँ गराब चुआई या बेची जाती हो। मट्टी।

२ मादक वस्तुओं से सबध रखनेवाला सरकारी मुहकमा।

आबखोरा—सज्ञा पु० [फा०] १ गिलास। पानी पीने का बरतन। २ कटोरा। प्याला।

आबजोश—सज्ञा पु० [फा०] गुनक्का जो गरम पानी के साथ उबाला गया हो।

आबटना\*—सज्ञा पु० १ जयल-पुयल। अस्थिरता। हलचल। २ ऊहापह। सकल्प-विकल्प।

आबताब—सज्ञा स्त्री० [फा०] चमक-दमक। तडक-भडक। श्रुति। छवि। भान्ति। छटा।

आबदस्त—सज्ञा पु० [फा०] सोचना। मल-त्याग के पीछे गुदेन्द्रिय को धोना। पानी छूना। पानी का स्पर्श करना।

आबदाना—सज्ञा पु० [फा०] १ अन्न-जल। अन्न-पानी। २ रहने का समोग। ३ दाना-पानी। जीविका।

मुहा०—आब दाना उठना=जीविका न रहना। समोग टलना।

आबदार—वि० [फा०] श्रुतिमान्। कातिमान्। चमकीला।

सज्ञा पु० वह आदमी जो पुरानी तोप में सुबा और पानी का पुचारा देता है।

आबदारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] काति। चमक।

आबदोज—वि० [फा०] पानी में डूबा हुआ। पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाला।

(जहाज या नाव)।

सज्ञा पु० दे० "पनडुब्बी।

आबद—वि० १ बघनयुक्त। ब्रंघा हुआ। २ कैद।

आबनूस—सज्ञा पु० [फा०] [वि० आबनूसी] पेड़ विशेष जिसके हीरे की लकड़ी बहुत काली होती है।

मुहा०—आबनूस का कुदा=चिलगुल वाला मनुष्य।

आबनूसी—वि० [फा०] १ गहरा काला। आबनूस के समान काला। २ आबनूस का बना हुआ।

आबपाशी—सज्ञा स्त्री० [फा०] सिचाई।

आयदानी-सज्ञा स्त्री० दे० "अयदानी"।  
आवरयाँ-सज्ञा स्त्री० [पा०] बहुत महीन  
मलमल-विशेष।

आवरू-सज्ञा स्त्री० [फा०] भाग। प्रतिष्ठा।  
यडपन।

आवला-सज्ञा पु० [फा०] छाला। फूटवा।  
पन्नीला।

आवहा-सज्ञा स्त्री० [फा०] जलवायु।  
सरदी-गरमी। स्वास्थ्य-आदि के विचार  
से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति।

आवाद-वि० [फा०] १ स्थित।  
यसा हुआ। २ कुशलपूर्वक। प्रसन्न।  
३ उपजाऊ। जोतने-बोने योग्य  
(जमीन)।

आवादवार-सज्ञा पु० [फा०] वे कादत-  
वार जो जंगल काटकर आवाद हुए हों।  
आवादी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ जनस्थान।  
बस्ती। २. जनसह्या। ३ वह भूमि जिस  
पर खेती हो।

आद-सज्ञा पु० आयू नामक पहाड़।

आसी-वि० [फा०] १ पानी का। पानी-  
सम्पत्ति। २ पानी में रहनेवाला। ३ फीका।  
रंग में हलका। ४ पानी के रंग का। हलका  
नीला या आत्माना। ५ जल के किनारे  
रहनेवाला।

सज्ञा पु० समुद्र-लवण। सांभर नमक।  
सज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसमें किसी प्रकार  
की आयपाशी होती हो। (खाकी के  
विरुद्ध)।

आन्दिक-वि० वापिक। सालाना।

आभ-सज्ञा स्त्री० १ शोभा। बान्ति।  
२ पानी।

आभरण-सज्ञा पु० [वि० आभरित]  
१ अलंकार। गहना। आभूषण। इनकी  
गणना १२—(१) नूपुर। (२) विकिणी।  
(३) चूड़ी। (४) अंगूठी। (५) कनन।  
(६) बिजायठ। (७) हार। (८) कठन्नी।  
(९) वेसर। (१०) विरिया। (११)  
टोका। (१२) सीसफूल। (२) पालन।  
पोषण।

आभरण\*-सज्ञा पु० दे० 'आभरण'।

आभा-सज्ञा स्त्री० १ चमक। प्रभा। शोभा।  
द्युति। दमक। बानि। दीप्ति। २ शजन।

प्रतिबिम्ब। छाया। ३ प्रकाश। ज्योति।  
आलोच। उज्ज्वलता। भटक। वर्ण, रंग।

आभार-सज्ञा पु० १ वोज। २ गृहस्त्री  
या वात्र। गृह प्रबंध की देख-भाल की  
जिम्मेदारी। ३. वर्णवृत्त-विशेष। ४ उपहार।

आभारी-वि० उपकृत। उपहार माननेवाला।

आभाष-सज्ञा पु० १. भूमिका। अनुष्ठान। उप-  
क्रमणिका। २ प्रबन्ध। सभाष।

आभाषण-सज्ञा पु० आलापन। वचन। सभा-  
षण।

आभास-सज्ञा पु० १ प्रतिबिम्ब। झलक।  
छाया। २ संकेत। पता। ३ मिथ्या

ज्ञान। जैसे—रस्ती में राप का। ४  
अवास्तविक। वह जिसमें असल की कुछ

झलक भर हो। जैसे, रसाभास। हेत्वाभास।  
सदृश। ५ अभिप्राय। ६ दीप्तिदीप।

७ अवतरणिका। ८ वह तर्क जो दस्तुत  
ठीक न हो। (न्याय)

आभासीन-वि० आभास रूप में दिखाई  
देनेवाला।

आभास्वर-सज्ञा पु० चौसठ सहायक गण। देवता  
विशेष।

आनिचारक-सज्ञा पु० हिता कर्म का प्रयोग  
करनेवाला। अभिचारकर्ता। (तत्र)

आभिजात्य-सज्ञा पु० १ वश-सम्बन्धी। कुली-  
नता। कुल-संस्कार। २ सदृश। ३ पाण्डित्य।

४ अच्छे घराने के लक्षण और अगुण।

आभिधानिक-वि० बोधवेत्ता। अभिधान में  
प्रसिद्ध। अभिधानोक्त।

आभिमुख-सज्ञा पु० संबोधन। अभिमुख-  
करण। समुत्तीर्णत्व। सम्मुखता। सामना।

आभेर-सज्ञा पु० [स्त्री० आभीरी]  
१ गोप। अहीर। ग्वाल। २ देश विशेष।

३ ११ मात्राओं का छन्द-विशेष ४ रान-  
विशेष। ५ भील। ब्राह्मण के जीरस से

अवष्टा जाति की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न  
जाति विशेष।

आभोरपक्षि या पक्षी-सज्ञा स्त्री० गोपग्राम।  
गोष्ठ घोष। आभीरी। ग्वालनी।

आभीरी-सज्ञा स्त्री० १. अदीरी। एक सकर रागिनी। २. प्राकृत का एक भेद। ३. गोप या अहीर की स्त्री। ४. गोप या अहीरी की भाषा।

आभूषण-सज्ञा पु० [ वि० आभूषित ]  
अलंकार। भूषण। गहना। आभरण।

आभूषण\*-सज्ञा पु० दे० "आभूषण"।

आभोग-सज्ञा पु० १. रूप में कोई कसर न रहना। २. पूर्ण लक्षण। किसी वस्तु को लक्षित करनेवाली सब बातों की विद्यमानता। ३. किसी पद्य के बीच में कवि के नाम का उल्लेख। ४. आनन्द-प्राप्ति। ५. साद्य पदार्थ। ६. पद आदि के पदों का एक अंश (संगीत)।

आभ्यंतर-वि० अतरंग। भीतरी। अन्दर का।

आभ्यस्त्रि-वि० अतरंग। भीतरी।

आभ्यासिक-वि० श्रुतिपर। अभ्यासकर्त्ता। अभ्यास से उत्पन्न।

आभ्युदधिक-वि० १. अभ्युदय। २. मंगल। ३. सौभाग्यवान या कल्याण सवन्धी। शुभाग्नित।

सज्ञा पु० नादीमुख श्राद्ध। उन्नति से सवद्ध।

आमंत्रण-सज्ञा पु० [ वि० आमन्त्रित ] १. संबोधन। बुलाना। आह्वान। २. न्योता। निमन्त्रण।

आमन्त्रित-वि० १. आहूत। न्योता दिया हुआ। निमन्त्रित। २. बुलाया हुआ।

आम-सज्ञा पु० १. रसाल। एक बड़ा पेड़ जिसका फल हिंदुस्तान का प्रधान फल है। २. इस पेड़ का फल।

यौ०-अमचूर। अमहर।

वि० अपक्व। कच्चा। असिद्ध।

सज्ञा पु० १. आव। खाये हुए अन्न का कच्चा, न पचा हुआ मल जो सफेद और लसीला होता है। २. वह रोग जिसमें आव गिरती है। वि० [ अ० ] १. साधारण। मामूली।

२. जनता। जन-साधारण। ३. विस्थात। प्रसिद्ध। (वस्तु या बात) ४. उत्तम। ५. कोमल। ६. छिलके सहित अन्न।

यौ०-आम खास=महलों के भीतर वह वह भाग जहाँ राजा या बादशाह बैठते हैं।

दरबार आम=वह राजसभा जिसमें सब लोग जा सकें।

आमगन्धि-सज्ञा पु० गन्धयुक्त। चित्ता का धूम प्रभूति दुग्न्ध। कच्चे मांस जैसी गन्ध से युक्त पदार्थ।

आमचूर-सज्ञा पु० आम का मूला चूर्ण। आम की खटाई।

आमड़ा-सज्ञा पु० एक बड़ा पेड़ जिसके फल आम की तरह खट्टे और बड़े बेंग के बराबर होते हैं।

आमद-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. आगमन। आना।

यौ०-आमदरपत=आवागमन। आना-जाना। २. आय। आमदनी।

आमदनी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. आनेवाला धन। आय। प्राप्ति। २. व्यापार की वस्तु जो और देशों से अपने देश में आवे। आयात। आमद।

आमन-सज्ञा स्त्री० वह भूमि जिसमें साल में एक ही फसल हो। जाड़े में होनेवाला धान।

आमनाय-सज्ञा पु० दे० "आम्नाय"। अभ्यास। परम्परा।

आमना सामना-सज्ञा पु० भेंट। मुलाकात।

आमने सामने-कि० वि० एक दूसरे के समक्ष।

आमथ-सज्ञा पु० १. पीड़ा। व्याधि। रोग।

यौ०-आमारी। २. अपच। कोष्ठवद्धता। कब्ज।

३. एक पीषा जिससे औषध बनती है।

आमयाली-वि० रोगी। पीड़ित।

आमरधत-सज्ञा पु० उदर रोग विशेष। अतिसार। उदर रोग, लाल मल निकलने की पीड़ा।

आमरकान्तिसार-सज्ञा पु० रोग जिसमें आव गिरती है।

आमरस\*-सज्ञा पु० दे० "आमरस"।

आमरखना\*-कि० अ० दुख-पूर्वक क्रोध करना। क्रुद्ध होना।

आमरण-कि० वि० जीवन पर्यंत। मृत्यु-समय तक।

आमरस-सज्ञा पु० दे० "अमरस"।

आमर्दन-सज्ञा पु० [ वि० आमर्दित ] १-

पायना या गङ्गा। २. आर मे मलना। ३. भीचना। ४. बलपूर्वक दवाना।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० १. परामर्ग। गङ्गा। २. रिंगन। गुणित्वा। ३. गमना। ४. मिटा देना।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० १. शोष। शोष। २. अमर्ग-नीलता। ३. एक गवारी भाव। (माहिण्य) ४. राग।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० [ स्त्री०, ध्वनि० आम-लरी] आवला। आमला। पानीरुद।  
 श्रामर्ग-गङ्गा स्त्री० आवली। छोटी जानि का आवला।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० दे० "आवला"। वड-विशेष। पानीरुद।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० राग-विशेष जिममे आव गिरती है और शरीर मूजान पीला पड़ जाता है।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० राग-विशेष। बाय गोले का दर्द। बायुसूत।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० आव के बाग्न अधिक दस्ता या हुना।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० दे० "अमर्ग"। प्रधान-मन्त्री।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० स्त्री० [ फा० ] तत्परता। तैयारी।  
 श्रामर्ग-वि० [ फा० ] तैयार। यन्नद। तत्पर। उद्यत। उत्तम।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० कच्चा और बिना पकाया हुआ अन्न। रमद।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० [ अ० ] कम। करनी।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० [ अ० ] वह रजि-स्टर जिसमें नौकरा के चाल-चलन और योग्यता आदि का विवरण रहता है।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० शरीर के भीतर पाचन-यन। पेट के भीतर की वह धली जिममें खाये हुए पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० स्त्री० पीवा विशेष जिसकी जब रग में हल्दी की तरह और रग में बचूर की तरह होती है।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० दे० "आमिष"।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० [ अ० ] १ वस्तव-

परामर्ग। २. वामवर्तवला। ३. वमचारी। ४. अपितारी। ५. गवना। आजा। ६. पर्वता हुआ गाव। गिज।  
 वि० पर्वता अमल।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० १. माग। माग। २. भाग्य वस्तु। ३. जान। लाज। ४. लाभ। ५. वाम व गुण। ६. रूप। ७. भोजन। ८. पूम। ९. गय।  
 श्रामर्ग-गङ्गा-वि० १ जिम माम प्याग हो। २ बाज पशी। वर पशी। ३. गश्म।  
 श्रामर्ग-गङ्गा-गङ्गा पु० मागभोरता। मागानी। गश्म।  
 श्रामर्ग-गङ्गा-वि० [ स्त्री० आमिषागिनी ] १ मागभधक। जो माग गाता हो। २ राशन धामो-गङ्गा स्त्री० १ अविद्या। छोटा कच्चा आम। २ पहाड़ी पेट विशेष। ३, जो और गहरे ती भूनी हुई रंग बाल।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० नाटक की प्रस्तावना। भूमिका (पुस्तक आदि की)। प्रारम्भ।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० मूल पर्वन। पर्वते मे। जट तव। करणावधि।  
 श्रामर्ग-वि० मर्दित। उच्छेदित। अपमा-नित। मृष्ट।  
 श्रामर्ग-वि० [ फा० ] आमज। सानना। मिलाता। एक करना।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० [ फा० ] पड़े हुए पाठ की आवृत्ति। उद्धर्णा।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० [ वि० आमोदित आमोदो ] १ हर्ष। आनन्द। प्रमत्तता। २ मनोरञ्जन। ३ अति दृग्गामी गन्व। ४ मीरम। ५ बहुत अच्छी और उन्नत गय।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० १ भाग-विभाग। २ आनन्द-भगल। आराम। चैन। हँसी-सुखी।  
 श्रामर्ग-गङ्गा-वि० १ प्रमत्त। २ आनन्दित। ३ जो बहला हुआ। दिला लगा हुआ। ४ सुगन्धित।  
 श्रामर्ग-गङ्गा-वि० १ प्रसन्न रहनेवाला। २ गुप्त को गुप्तस्थित करनेवाली वस्तु।  
 श्रामर्ग-गङ्गा पु० १ परपरा। २ अम्याय। ३ सम्प्रदाय। ४ तद्र। ५ कुड। वस।  
 यो०-अदराम्नाय=वर्णमाला। शुलाम्नाय=

कुल की रीति। कुलपरंपरा।  
 ६ वेद आदि का पाठ और अभ्यास।  
 ७ वेद। निगम। ८ उपदेश।  
 आम्बर-सज्ञा स्त्री० कहरुवा। बनावटी मूँसा।  
 आम्भ-सज्ञा पु० १ रसाल। आम का पेड़ या  
 फल। २ सहकार।  
 आम्भकूट-सज्ञा पु० अमर-कटक पर्वत।  
 आम्भई-सज्ञा स्त्री० आम का वाग। अम-  
 राई।  
 आम्भेडन-सज्ञा पु० एक ही बात का पुन-  
 पुन कथन। पुनरुक्ति।  
 आयतो पायँतो-सज्ञा स्त्री० सिरहाना।  
 पायतान।  
 आय-सज्ञा स्त्री० उपाजन। लाभ। प्राप्ति।  
 धनागम। आमदनी।  
 औ०-आयव्यय=आमदनी और गचं।  
 सज्ञा पु० १ आगमन। राज-कर। २ ग्यार  
 हवाँ चांद्र मास। ३ पासा। गोटी। ४ चौथी  
 सख्या। ५ एक धार्मिक विधि। ६ अत पुर  
 का रक्षक।  
 आयत्त-वि० दीर्घ। विशाल। विस्तृत। लंबा  
 चौड़ा।  
 सज्ञा स्त्री० [अ०] इजील या कुरान का  
 वाक्य।  
 आयतन-सज्ञा पु० १ घर। स्थान।  
 २ ठहरने की जगह। ३ देवताओं की  
 वदना की जगह। मंदिर। ४ यज्ञस्थान।  
 ५ ज्ञान के संचार का स्थान। ५ बैठने  
 का साधन। ६ आधार। ७ यज्ञीय अग्नि  
 का स्थान। ८ वेदी। ९ गृह बनाने के  
 लिए भूमि। १० रोग का कारण। ११  
 पंचेंद्रिय और मन (बौद्धदशन)। १२  
 पंचेंद्रिय और मन के विषय (बौद्धदशन)।  
 आयत्त-वि० १ अधीन। वश में। २ उद्योगी।  
 ३ सावधान।  
 आयत्त-सज्ञा स्त्री० उत्तरकाल। भविष्यकाल।  
 आयत्ति-सज्ञा स्त्री० १ परवसता। अधीनता।  
 २ शक्ति। अधिकार। ३ सीमा। घेरा। ४  
 भविष्य। ५ लंबाई। ६ दान। ७ सदाचरण।  
 आयद-वि० [अ०] १ लगाया हुआ।  
 आरोपित। २ घटता हुआ। घटित।

गायदा-वि० १ आगन्तुक। २ आगामी।  
 भविष्य।  
 आयस-सज्ञा पु० [वि० आयसी] १ लोहे  
 का कवच। २ लोहा। ३ लोहे का। धातु  
 का। ४ एक सुपिर वाद्य।  
 आयसी-वि० लोहे का बना हुआ।  
 सज्ञा पु० कवच। जिरहवस्त्र।  
 आयसु\*—सज्ञा स्त्री० १ आज्ञा। २ प्रेरणा।  
 आया-क्रि० अ० आना का भूतकालिक रूप।  
 सज्ञा स्त्री० [पुर्त०] अँगरेजों के वक्त्रों को  
 दूध पिलाने और उनकी रक्षा करनेवाली  
 स्त्री। धानी। धाय।  
 अव्य० [फा०] क्या। कि। (व्रज० 'कैधो'  
 के समान) जैसे, आया तुम जाओगे या नहीं।  
 आयात-सज्ञा पु० १ आगत। देश में बाहर से  
 आया हुआ सामान। उपस्थित।  
 आयान-सज्ञा पु० १ विस्तार। लंबाई।  
 २ नियमित करने की क्रिया। नियमन।  
 जैसे, प्राणायाम।  
 आयास-सज्ञा पु० १ श्रम। २ परिश्रम। मेह-  
 नत। प्रयास। यत्न। ३ क्लेश। व्यायाम।  
 आयु-सज्ञा स्त्री० जीवन-समय। वय। उम्र।  
 जिंदगी।  
 मुश०-आयु खुटाना=आयु कम होना।  
 आयुष-सज्ञा पु० १ शास्त्र। हथियार। अस्त्र।  
 २ धनुष। ३ गहना बनाने का सोना।  
 आयुस्मार-सज्ञा पु० अस्त्रगृह।  
 आयुषिक-वि० अस्त्रजीवी। शस्त्राजीव।  
 अस्त्रधारी।  
 आयुनीय-वि० अस्त्रधारी। शस्त्राजीव।  
 आयुर्वल-सज्ञा पु० जीवन-काल। उम्र।  
 आयुर्वेद-सज्ञा पु० [वि० आयुर्वेदीय]  
 चिकित्सा शास्त्र। वैद्य विद्या। आयु-सवधी  
 शास्त्र।  
 आयुर्वेद-वि० आयुर्वेदज्ञ। वैद्य।  
 आयुर्वर-वि० परमायुजनक। आयुष्य। आयु-  
 वद्धक। आयुवृद्धिकारक।  
 आयुष्माम-वि० दीर्घजीवी। आयुप्राप्ति।  
 आयुष्टोम-सज्ञा पु० यज्ञ विशेष। आयुवृद्धि  
 यज्ञ।  
 आयुष्मान्-वि० [स्त्री० आयुष्मती] ७ दीर्घायु।

दीर्घजीवी। चिरजीवी। २ ज्वातिप के गन्तविशति योगा में तीसरा योग विशेष। आपुष्य-सज्ञा पु० १ उग्र। आपु। २ आपु या हितकारक। आपुचर्दक।

आधगय-सज्ञा पु० वैश्य स्त्री और दूध पुरुष से उत्पन्न एक सक्कर जाति। (स्मृति)। विशेष-आधोगय की जीविका बड़ईगोरी है।

आयोजन-सज्ञा पु० [ स्त्री० आयोजना, वि० आयोजित ] १ नियुक्ति। किसी कार्य में लगाना। २ प्रवष। तैयारी। ३ सामान। सामग्री। ४ उद्योग।

आयोजना-सज्ञा स्त्री० दे० "आयोजन"। आयोघन-सज्ञा पु० युद्ध। रण। संग्राम।

आरम्भ-सज्ञा पु० १ प्रारम्भ। किसी कार्य की प्रथमावस्था का संपादन। उत्थान। अनुष्ठान। २ किसी वस्तु का प्रारम्भ। ३ उपक्रम। ४ उत्पत्ति।

आरम्भार्त्ता-क्रि० अ० प्रारम्भ होना। क्रि० स० आरम्भ करना।

आर-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का कच्चा लोहा। २ अकुश। ३ मगल। ४ शनैश्चर। ५ लुहार। ६ चमार। ७ ताँबा। ८ पीतल। ९ कोना। जैसे द्वादशार चक्र। १० बिनाग। ११ पहियेवा आरा। १२ हरताल।

सज्ञा स्त्री० १ लोहे की पतली कील जो सॉटे या पैंने में लगी रहती है। पैंनी। अनी। २ नर मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३ बिच्छ, भिड़ या मधुमक्खी आदि का डब।

सज्ञा स्त्री० १। सुतारी। चमड़ा छेदने का सूआ या टबुआ। २ राँपी।

सज्ञा पु० हठ। जिद। सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ घृणा। शिरस्कार। २ बैर। अदायत। ३ लज्जा। ४ छिद्र। पोल। ५ एक वृक्ष।

आरपत-वि० १ लाज। २ ललाई लिए हुए। आरपध-सज्ञा पु० अमिलतास। वृक्ष विषाण। आरपा-सज्ञा स्त्री० १ मूर्ति। प्रतिमा। २ अर्चा। पूजा।

आरज\*-वि० दे० "आर्य"। बड़ा। श्रेष्ठ। पूज्य। महाराज।

आरजा-सज्ञा पु० [ अ० ] बीमारी। रोग। आरजू-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ विनती। अनुनय। विनय। २ इच्छा। वाछा।

आरण्य-वि० वा। जंगल वा। वन में उत्पन्न। जगती जानवर।

आरण्यक-वि० [ स्त्री० आरण्यकी ] वन या जंगल वा।

सज्ञा पु० १ वेदा की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्या का विवरण और उनके लिए उपयोगी उपदेश हैं। २ जंगली। जंगल का निवासी।

आरत\*-वि० दे० "आर्त"। ध्यातुल। अत्यंत दुःखी। दुःख का दयोचा हुआ। अति पीड़ित। आरता-सज्ञा पु० दूल्हे की आरती। विवाह की एक गीति विशेष।

आरति-सज्ञा स्त्री० १ विरक्ति। २ दे० "आर्ति"। ३ देवता को दीप दिखाना। दीप-दर्शावन। नीराजन। ४ निवृत्ति।

आरती-सज्ञा स्त्री० १ किसी के सामने दीपक को घुमाना। नीराजन। (पोड़नों पंचार पूजन में) २ वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है। ३ वह स्तोत्र जो आरती के समय पढ़ा जाता है।

आरन\*-सज्ञा पु० अरण्य। वानन। जंगल। वन।

आर-पार-सज्ञा पु० यह किनारा और यह किनारा। यह छोर और वह छोर।

क्रि० वि० एक किनारे से दूसरे किनारे तक। जैसे, आर-पार जाना, आर पार छेद होना।

आरवल, आरवला-सज्ञा पु० दे० 'आपुवल'। आरण्य-वि० उपवान्त। आरभ किया हुआ।

आरभती-सज्ञा स्त्री० १ नाटक में वृत्ति विशेष का नाम जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है, और जिसका व्यवहार इद्रजाल, संग्राम, बोध, आपात, प्रतिघात, रोद्र, भयानक और बीभत्स रस आदि में होता है। २ उग्र भावों की चेष्टा।

आरव्य-सज्ञा पु० १ शब्द। २ आहट। ३ आवाज। बड़काहट। ४ बादल की गरज। ५ निस्लाहट। प्रदन।

आरखी\*-वि० ऋषिसंबन्धी। आप ।  
 आरस\*-सज्ञा पु० दे० "आलस्य"।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "आरसी"।  
 आरसी-सज्ञा स्त्री० १. दर्पण । शीशा ।  
 आईना । २. शीशा जड़ा कठोरीदार  
 छल्ला, जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे  
 में पहनती हैं। आरसी ।  
 आरा-सज्ञा पु० [ स्त्री० अल्पा० आरी ]  
 १. लोहे की दाँतीदार पटरी जिससे  
 लकड़ी चीरी जाती है । २. सुतारी । चमड़ा  
 सीने का सूजा ।  
 सज्ञा पु० लकड़ी की चीड़ी पटरी जो  
 पहिए की गडारी और पुट्टी के बीच जड़ी  
 रहती है । बरात । दरात । कुरुच । चर्म और  
 काष्ठभेदक अस्त्र ।  
 आराइश-सज्ञा स्त्री० (फा०) सजावट ।  
 यौ०-आराइशी सामान=कमरे की सजा-  
 वट का सामान, जैसे मेज, कुर्सी आदि ।  
 आराकस-सज्ञा पु० (फा०) आरा चलाने-  
 वाला । लकड़ी चीरनेवाला ।  
 आराजी-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. खेत ।  
 २. भूमि । जमीन ।  
 आराति या आराती-सज्ञा पु० विपक्षी । शत्रु ।  
 वैरी । अरि । रिपु । दुश्मन ।  
 आरात्-अ० १. दूर । २. निकट । समीप ।  
 आरात्रिक-सज्ञा पु० १. आरती । नीरा-  
 जन । २. नीराजन पात्र । ३. आरति-  
 प्रदीप ।  
 आराधक-वि० [ स्त्री० आराधिका ] पूजक ।  
 सेवक । अर्चक । पुजारी । उपासक । पूजा  
 करनेवाला ।  
 आराधन-सज्ञा पु० [ वि० आराधक, आरा-  
 धित, आराधनीय, आराध्य ] १. सेवा ।  
 परिचर्या । २. साधना । पूजा । उपासना ।  
 ३. प्रसन्न करना । तोषण ।  
 आराधना-सज्ञा स्त्री० १. सेवा । पूजा ।  
 उपासना । २. श्रद्धा ।  
 \*क्रि० सं० १. पूजा या उपासना करना ।  
 २. प्रसन्न करना । सुतुष्ट करना ।  
 आराधनीय-वि० आराधना करने योग्य ।  
 पूज्य । उपास्य ।

आराधित-वि० जिसकी पूजा या आराधना  
 की जाय । उपासित । पूजित ।  
 आराध्य-वि० आराधना के योग्य । पूज्य ।  
 उपास्य । सेवनीय ।  
 आराम-सज्ञा पु० दाग । उपवन ।  
 सज्ञा पु० [ फा० ] १. सुख । चैन । २.  
 स्वास्थ्य । रोहत । ३. विश्राम । थकावट  
 मिटाना । दम लेना । आराम्य । पीडा की  
 शान्ति ।  
 मुहा०-आराम करना=सीना । आराम में  
 होना=सीना । आराम लेना=विश्राम  
 करना । आराम से=फुरसत में । धीरे-धीरे ।  
 वि० [ फा० ] स्वस्थ । चरा ।  
 आरामकुरसी-सज्ञा स्त्री० [ फा०+अ० ]  
 कुरसी जिस पर आराम से बठा जा  
 सके ।  
 आराम-तलब-वि० [ फा० ] १. सुकु-  
 मार । सुख चाहनेवाला । २. आलसी ।  
 सुस्त ।  
 आरामगाह-सज्ञा पु० [ फा० ] शयनगार ।  
 सोने की जगह । आराम करने की  
 जगह ।  
 आरास्ता-वि० [ फा० ] सजा हुआ ।  
 आरि\*-सज्ञा स्त्री० आडा । हठ । टेक ।  
 आरिषा-स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी जो  
 चौमासे में उत्पन्न होती है ।  
 आरी-सज्ञा स्त्री० १. छोटा आरा । लकड़ी  
 चीरने का लोहे का एक अस्त्र । २. अकुशी ।  
 ३. जूता सोने का सूजा । ४. और ।  
 ५. कोर । अवैठ ।  
 आर्यधना-क्रि० सं० गला दवाना । श्वास  
 रोकना ।  
 आर्य्य-सज्ञा पु० 'अरुण' का भाव । अरुणता ।  
 लाली ।  
 आरुड-वि० १. असवार । चड़ा हुआ । २.  
 स्थिर । दृढ़ । किसी बात पर जमा हुआ ।  
 ३. तत्पर । सन्नद्ध । कटिवद्ध । ४. वृक्ष-आदि  
 पर चड़ा हुआ ।  
 आरुडयोवना-सज्ञा स्त्री० नायिका विशेष ।  
 मध्या नायिका के चार भदों में से एक ।  
 आरो\*-सज्ञा पु० दे० "आरव" ।

दीर्घजीवी। चिरजीवी। २ ज्योतिष के सप्तविंशति योगों में तीसरा योग विशेष। आपुष्य-संज्ञा पु० १ उमा। आयु। २ आयु का हितकारण। आपुष्यदंडक।

आयणव-संज्ञा पु० वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक स्वर जाति। (स्मृति)। विशेष-आयणव की जीविका बड़ी गरीबी है। आयोजन-संज्ञा पु० [स्त्री० आयोजना, वि० आयोजित] १ नियुक्ति। किसी कार्य में लगाना। २ प्रबंध। तैयारी। ३ सामान। नामग्री। ४ उद्योग।

आयोजना-संज्ञा स्त्री० दे० "आयोजन"। आयोघन-संज्ञा पु० युद्ध। रण। सग्राम। आरभ-संज्ञा पु० १. प्रारम्भ। किसी कार्य की प्रथमावस्था का संपादन। उत्थान। अनुष्ठान। २ कितो वस्तु का प्रारम्भ। ३ उपक्रम। ४ उत्पत्ति।

आरम्भना-क्रि० अ० प्रारम्भ होना। क्रि० स० आरम्भ करना।

आर-संज्ञा पु० १ एक प्रकार का कच्चा लोहा। २ अकुश। ३ मगल। ४ शनै-श्चर। ५ लुहार। ६ चमार। ७ ताँवा। ८ पीतल। ९ कोना। जैसे द्वादशार चक्र। १० किनारा। ११ पहियेका आरा। १२ हस्ताल।

संज्ञा स्त्री० १ लोहे की पतली कील जो साँटे या पेंने में लगी रहती है। पेंनी। अनी। २ नर मुर्गे के पंजे के ऊपर का काँटा। ३. बिण्ट, भिड या मयु-मखी आदि का डक।

संज्ञा स्त्री० १. सुतारी। चमड़ा छेदने का सूआ या टेकुआ। २ रौपी।

संज्ञा पु० हड। जिद। संज्ञा स्त्री० [अ०] १ घृणा। तिरस्कार। २ वैर। अदावत। ३ लज्जा। ४ छिद्र। पोल। ५ एक वृक्ष।

आरयत-वि० १ लाल। २ ललाई लिए हुए। आरय्य-संज्ञा पु० अमिलतास। वृक्ष विशेष। आरचा-संज्ञा स्त्री० १ मूर्ति। प्रतिमा। २ अर्चा। पूजा।

आरज\*-वि० दे० "आर्य"। बड़ा। श्रेष्ठ। पूज्य। महाराज।

आरजा-संज्ञा पु० [अ०] बीमारी। गैर आरजू-संज्ञा स्त्री० [फा०] १ विनती। अनुरोध। विनय। २ इच्छा। वाछा। आरज-वि० वन। जंगल का। वन में उत्पन्न जंगली जानवर।

आरण्यक-वि० [स्त्री० आरण्यकी] वन या जंगल का।

संज्ञा पु० १ वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों का विवरण और उनके लिए उपयोगी उपदेश हैं। २ जंगली। जंगल का निवासी।

आरत\*-वि० दे० "आर्त"। व्याकुल। अत्यंत दुखी। दुख या दर्दोका हुआ। अति पीड़ित। आरता-संज्ञा पु० दूल्हे की आरती। विवाह की एक रीति विशेष।

आरति-संज्ञा स्त्री० १ विरक्ति। २ दे० "आर्ति"। ३ देवता को दीप दिखाना। दीप-दर्शान। नीराजन। ४ निवृत्ति।

आरती-संज्ञा स्त्री० १ किसी के सामने दीपक को घुमाना। नीराजन। (पोडशो पचार पूजा में) २ वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रखकर आरती की जाती है। ३ वह स्तोत्र जो आरती के समय पढ़ा जाता है।

आरन\*-संज्ञा पु० अरण्य। वानन। जंगल। वन।

आर-मार-संज्ञा पु० यह विनारा और वह विनारा। यह छोरे और वह छोरे।

क्रि० वि० एक विनारे से दूसरे विनारे तक। जैसे, आर-मार जाना, आर-मार छेद होना। आरवल, आरवला-संज्ञा पु० दे० "आरवल"। आरव्य-वि० उपनाम्न। आरभ किया हुआ।

आरभटी-संज्ञा स्त्री० १ नाटक में वृत्ति विशेष का नाम जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है, और जिसका व्यवहार इद्रजाल, सग्राम, क्रोध, आघात, प्रतिघात, रोद्र, भयानक और बीभत्स रस आदि में होता है। २ उग्र भावों की चेष्टा।

आरव-संज्ञा पु० १ शब्द। २ आहट। ३ आवाज। फड़कड़ाहट। ४ वाद की गरज। ५ चिल्लाहट। घदन।

आरखी\*—वि० ऋषिसंवधी । आर्ष ।  
 आरस\*—सज्ञा पु० दे० "आलस्य" ।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "आरसी" ।  
 आरसी—सज्ञा स्त्री० १ दर्पण । शीशा ।  
 आईना । २ शीशा जड़ा कटोरीदार  
 छल्ला, जिसे स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे  
 में पहनती हैं । आसी ।  
 आरा—सज्ञा पु० [ स्त्री० अल्पा० आरी ]  
 १ लोहे की दाँतीदार पटरो जिससे  
 लकड़ी चीरी जाती हैं । २ सुतारी । चमड़ा  
 सीने का सूजा ।  
 सज्ञा पु० लकड़ी की चौड़ी पटरो जो  
 पहिए की गडारों और पुट्टी के बीच जड़ी  
 रहती हैं । करात । दरात । कुरुच । चर्म और  
 काष्ठभेदक अस्त्र ।  
 आराइश—सज्ञा स्त्री० ( फा० ) सजावट ।  
 यौ०—आराइशी सामान=कमरे की सजा-  
 वट का सामान जैसे मेज, कुर्सी आदि ।  
 आराकस—सज्ञा पु० ( फा० ) आरा चलाने-  
 वाला । लकड़ी चीरनेवाला ।  
 आराजी—सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ खेत ।  
 २ भूमि । जमीन ।  
 आराति या आरानी—सज्ञा पु० विपक्षी । शत्रु ।  
 वैरी । अरि । रिणु । दुश्मन ।  
 आरातु—अ० १ दूर । २ निकट । समीप ।  
 आरात्रिक—सज्ञा पु० १ आरती । नीरा-  
 जन । २ नीराजन पात्र । ३ आरति-  
 प्रदीप ।  
 आराधक—वि० [ स्त्री० आराधिका ] पूजक ।  
 मक्क । अर्चक । पुजारी । उपासक । पूजा  
 करनेवाला ।  
 आराधन—सज्ञा पु० [ वि० आराधक आरा-  
 धित, आराधनीय आराध्य ] १ सेवा ।  
 परिचर्या । २ साधना । पूजा । उपासना ।  
 ३ प्रसन्न करना । तीर्पण ।  
 आराधना—सज्ञा स्त्री० १ सेवा । पूजा ।  
 उपासना । २ क्षुधा ।  
 \*क्रि० स० १ पूजा या उपासना करना ।  
 २ प्रसन्न करना । सन्तुष्ट करना ।  
 आराधनीय—वि० आराधना करने योग्य ।  
 पूज्य । उपास्य ।

आराधित—वि० जिसकी पूजा या आराधना  
 की जाय । उपासित । पूजित ।  
 आराध्य—वि० आराधना के योग्य । पूज्य ।  
 उपास्य । सेवनीय ।  
 आराम—सज्ञा पु० वाग । उपवन ।  
 सज्ञा पु० [ फा० ] १ सुख । चैन । २  
 स्वास्थ्य । रोहत । ३ विश्राम । यकायद  
 मिटाना । दम लेना । आरोग्य । पीडा की  
 शान्ति ।  
 मुहा०—आराम करना=सोना । आराम में  
 होना=सोना । आराम लेना=विश्राम  
 करना । आराम से=पुरुसत में । धीरे-धीरे ।  
 वि० [ फा० ] स्वस्थ । चगा ।  
 आरामकुरसी—सज्ञा स्त्री० [ फा०+अ० ]  
 कुरसी जिस पर आराम से बठा जा  
 सके ।  
 आराम-तलब—वि० [ फा० ] १ सुकु-  
 मार । सुख चाहनेवाला । २ आलसी ।  
 सुस्त ।  
 आरामगाह—सज्ञा पु० [ फा० ] शयनागार ।  
 सोने की जगह । आराम करने की  
 जगह ।  
 आरास्ता—वि० [ फा० ] सजा हुआ ।  
 आरि\*—सज्ञा स्त्री० आड़ । हठ । टेक ।  
 आरिया—स्त्री० एक प्रकार की ककड़ी जो  
 चौमासे में उत्पन्न होती है ।  
 आरी—सज्ञा स्त्री० १ छोटा आरा । लकड़ी  
 चीरने का लोहे का एक अस्त्र । २ अकुशी ।  
 ३ जूता सीने का सूजा । ४ खोर ।  
 ५ कोर । अँवट ।  
 आरंभना—क्रि० स० गला दवाना । श्वास  
 रोकना ।  
 आरभ्य—सज्ञा पु० 'अरुण' का भाव । अरुणता ।  
 लाली ।  
 आरुड—वि० १ असवार । चड़ा हुआ । २  
 स्थिर । दृढ़ । किसी बात पर जमा हुआ ।  
 ३ तत्पर । सन्द । यटिबद्ध । ४ वृक्ष-आदि  
 पर चड़ा हुआ ।  
 आरुड्यौवन—सज्ञा स्त्री० नायिका विशेष ।  
 मध्या नायिका के चार भेदा में से एक ।  
 आरो\*—सज्ञा पु० दे० "आरव" ।

आरोग-वि० १ रोगरहित । नीरोग । २ सुखी ।

आरोग्य-वि० म० खाना । भोजन करना ।

आरोग्य-वि० स्वस्थ । रोग-रहित । रोग-हीनता । रोगाभाव । अनामय ।

आरोग्यता-सज्ञा स्त्री० स्वास्थ्य । तदुत्तरी ।

आरोग्यता-वि० स० अडचन में डालना । रोकना । छेड़ना ।

आरोग्य-सज्ञा पु० १ मटना । लगाना । जैसे, दोपारोग । २ रोपना । एक जगह से दूसरी जगह लगाना (वृक्ष) । बँटाना । ३ कपना । ४ एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ के धर्म की कल्पना । ५ एक वस्तु में दूसरी वस्तु के धर्म की कल्पना (साहित्य) । ६ बनावट ।

आरोग्य-सज्ञा पु० [ वि० आरोग्य, आरोग्य ] १. मटना । लगाना । स्थापन । चढ़ाव । चढ़ाना । २. रोपना । पौधे को एक जगह से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना । बँटाना । ३. किसी वस्तु में स्थित गुण को दूसरी वस्तु में मानना । ४. मिथ्या-ज्ञान । ५. ज्योतिष । प्रत्यक्षा । ६. समर्पण । सौपना ।

आरोग्य-वि० स० १ मटना । लगाना । २ स्थापित करना ।

आरोग्य-वि० मडा हुआ । कृतारापण । लगाया हुआ । स्थापित किया हुआ ।

आरोग्य-सज्ञा पु० [ वि० आरोग्य ] १ चढ़ाव । ऊपर की ओर गमन । २ चढ़ाई । आक्रमण । ३ सवारी । घोड़े, हाथी आदि पर चढ़ना । ४ वेदात में क्रमानुसार जीवात्मा की ऊर्ध्व गति या क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों की प्राप्ति । ५ कारण से कार्य का होना या पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी अवस्था की प्राप्ति । जैसे—जीन से अकुर । ६ शुद्ध और अल्प चेतनावाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति । विकास । अभिवृद्धि । (आधुनिक) ७ निवृत्ति । ८ स्वरा का चढ़ाव या नीचे स्वर के बाद क्रमशः ऊँचे स्वरों का आयोजन (संगीत) । ९ सवार । १०

ढेर । ११. पर्वत । १२. वृद्धि । १३. कमरा । १४. लवाई । १५. एक माप । १६. अभिमान ।

आरोग्य-सज्ञा पु० [ वि० आरोग्य ] १ चढ़ना । सवार होना । उत्थान । चढ़ाव । नीचे से ऊपर जाना । २ अकुर निवृत्ति । ३ स्वरा का क्रमशः चढ़ाव (संगीत) । ४ गाड़ी, सवारी । ५ लवड़ी की मीठी । ६. नृत्य या नृत्य के लिए सज्जित मंच रंगशाला । ७ नये पत्ते निवृत्ति । विमल-योद्धा । ८ एक नाप ।

आरोग्य-वि० [ स्त्री० आरोग्य ] ऊपर जानेवाला । चढ़नेवाला ।

सज्ञा पु० १ उत्तरोत्तर चढ़ते जानेवाले स्वर (संगीत) । २ सवार ।

आरोग्य-सज्ञा पु० १ नम्रता । विनय । सारल्य । सरलता । सुगमता । २ सीधापन । ऋजुता । ३ व्यवहार की सरलता । ईमानदारी । स्पष्टतादिता । ४ लगन ।

आरोग्य-वि० १ नातर । बुखी । २ पीड़ित । चोट खाया हुआ । ३ अस्वस्थ ।

आरोग्य-सज्ञा स्त्री० १ क्लेश । दुःख । २ पीडा ।

आरोग्य-सज्ञा पु० १ नातर स्वर । दुःख-सूचक शब्द । २ क्लेशजन्य चीत्कार । पीडा में निकली हुई ध्वनि ।

आरोग्य-वि० [ स्त्री० आरोग्य ] १ मीममी । ऋतु में उत्पन्न । सामयिक । २ स्त्री का रज । ३ ऋतु-समूह । ४ वर्षा का विभाग विभाग । ५ पुष्प । फूल । ६ मादा के मस्त होने पर मद-साव ।

आरोग्य-सज्ञा पु० आरोग्य । दुःख-सूचक शब्द ।

आरोग्य-सज्ञा पु० अतिवृद्धि का कर्म । पीरोग्य । पीरोग्य का कर्म ।

आरोग्य-वि० रूप-रंग का । धन-सवधी । माली ।

आरोग्य-सज्ञा स्त्री० दे० "कैतवापहृति" ।

आरोग्य-वि० १ सजल वस्तु, मीला । भोया । गीला । २ सरस । कोमल । भावुक । आरोग्य-सज्ञा पु० अदरक । अदक । अदरक ।

आर्द्रा-वि० [ सजा आर्द्रता ] १ गीला। तर। ओढ़ा। २ लभ्यपथ। मना। सजा स्त्री० १ गताइस नक्षत्रों में से छठा। २ वह समय जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र का होता है। आपाद के प्रारंभ का समय। ३ ग्यारह अक्षरों की वर्ण-वृत्ति-विशेष। ४ अदरक।

आर्द्रा लुब्धक-सजा पु० वेतु।

आर्द्रावीर-सजा पु० वाममार्गी।

आर्द्राशनि-सजा स्त्री० विजली। एव अस्त्र।

आर्य-वि० [ स्त्री० आर्या ] १ बड़ा। पूज्य।

श्रेष्ठ। उत्तम। २ मान्य। वृद्ध। ३ उच्च कुल में उत्पन्न।

मज्ञा पु० १ श्रेष्ठ पुरुष। उच्च कुलीन।

२ ससार में बहुत पहले सम्भ्रता प्राप्त करने वाली जाति विशेष। आर्यावर्त का निवासी।

३ स्वयं रत। द्विजाति का सदस्य। ४ प्रभु। स्वामी। ५ मित्र।

आर्यशेखर-सजा पु० संस्कृत का एक कवि।

आर्यस-सजा पु० आर्य या श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न होने का भाव। आर्यपन्न।

आर्यपुत्र-सजा पु० १ पति को पुकारने का संबोधन (प्राचीन)। २ पति। स्वामी।

३ गुरु पुत्र।

आर्यभट्ट-सजा पु० विख्यात भारतीय ज्योतिर्वेत्ता विद्वान्।

आर्यमिश्र-वि० १ गौरवान्वित। २ मान्य पूज्य।

आर्यसमाज-सजा पु० स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित धार्मिक समाज।

आर्या-सजा स्त्री० १ सास। २ पावती। ३ पितामही। दादी। ४ अर्द्ध माश्रिक छद्म-विशेष।

आर्यापोत-सजा स्त्री० आर्या छद्म का भेद-विशेष।

आर्यावर्त-सजा पु० १ आर्यों का निवास स्थान। २ उत्तरीय भारत। ३ हिमालय और पच्छिमांचल के बीच की भूमि।

आर्य-वि० १ ऋषि प्रणीत। ऋषिकृत। २ ऋषि-संबंधी। ३ ऋषि-सेवित। ४ वैदिक।

आर्य प्रयोग-सजा पु० व्याकरण विरुद्ध वे प्रयोग, जो ऋषियों ने किये हों। उन पर व्याकरण के नियम लागू नहीं होते और सर्व-साधारण उनका प्रयोग नहीं कर सकते।

आर्य विवाह-सजा पु० विवाह का वह भेद, जिसमें कन्या का पिता घर से दो बेल बटले में लेकर कन्या देता था।

आलक्षारिक-वि० १ अलक्षारयुक्त। २ अलक्षार-संबंधी। ३ जो अलक्षार जानता हो। कविजनोचित (भाषा)। ४ वतावटी।

आलग-सजा पु० घोड़िया की मस्ती।

आलय-सजा पु० १ सहारा। आश्रय। अवलंब। २ शरण। गति। ३ उपजीव्य।

आलबन-सजा [ पु० वि० आलवित ] १ आश्रय। अवलंब। सहारा। २ जिसके अवलंब से रस की उत्पत्ति होती है। वह जिसके प्रति किसी भाव का उदय हो।

जंमे, शृंगार रस में नायक और नायिका। हास्य रस में मूर्ख (साहित्य)। ३ कारण। साधन। ४ बोद्ध मत में किसी वस्तु का ध्यान-जनित ज्ञान। ५ नींव। ६ मीन होकर की जानेवाली प्रार्थना या स्तुति।

७ पंचद्रवियों के विषय (रूप, रस आदि)।

आलभ-सजा पु० १ पकड़ना। मिलना। छूना। २ अध। मारण।

आल-सजा पु० १ हरताल। २ जहगील जानबरा का जहर। ३ उत्तम। श्रेष्ठ।

सजा स्त्री० १ पीधा-विशेष जिसकी जड़ और छाल से छाल रंग निकलता है। २ इस पीधे से बना हुआ रंग। हस्त्रिग वण। पीतवर्ण।

सजा पु० बख्श। शकट।

सजा पु० १ गीलापन। तरी। २ जीसू।

मज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ बटी की सति।

यौ०-आल-ओलाद=बाल-बच्चे।

२ कुल। वंश। खानदान।

आलकाश-सजा पु० दे० मुस्ती। "आलम्य"।

आल-आल-वि० व्यर्थ पर। ऊटपटांग।

आलखी पालखी-सजा स्त्री० १ पालखी मानकर बैठना। २ आसन-विशेष।

आल्पा-गंगा पु० १ पाक-विहार। २ अंगना।  
यवन रहित।

आल्पा-गंगा पु० पोंगला। सुता। गोता।  
आल्पा-गंगा स्त्री० [ गुं० आल्पादि]।  
पर धुंधला। यहु। छाटी मूर्द। जिन  
नामज आदि के दुनड़े जाहो या नदी  
रंगो हें।

आल्पा-गंगा पु० [ अ०] १. जग-मयूह।  
२ समार। दुनिया। ३ दगा। अवस्था।  
आल्पा-गंगा स्त्री० दे० "आल्पा"।  
आल्पा-गंगा पु० १ गृह। मेह। पर। मजान।  
२ म्यान। ३ धर्मनाम। पांश-निवाम।  
आल्पा-गंगा पु० १. अवाल। घाला।  
गियारी। २. आवला। ३ जलापार।  
४ गमला।

आल्पा-वि० ढील। ताहिनी। आल्पी।  
गुम्मी।

\*गंगा पु० दे० "आल्पा"।  
आल्पा-वि० बाहिल। आल्पायुता।  
आल्पा-गंगा पु० १ सुम्ती। ताहिनी।  
तन्दा। २ मन्दता।  
आल्पा-गंगा पु० जूम्भन। जेमादि।  
ताम्रमग।

आल्पा-गंगा पु० ताव। तासा। वि० [ अ०]  
उत्तम। श्रेष्ठ।

गंगा पु० [ अ०] हवियार।

\*वि० ओटा। गीला।

आल्पा-गंगा स्त्री० [ फा०] मल। गदी  
बन्तु। गलीज।

आल्पा-गंगा पु० १ हाथी बांधने का लूँटा,  
रस्सा या जजीर। २ वेडी। रस्सी। ३  
बधन।

आल्पा-गंगा पु० [ वि० आल्पाव, आल्पावि ]  
१ पक्षियों की चह-चह। २ प्रश्न। ३ पाठ  
(जैनदर्शन)। ४ बात-चीत। समापण।  
कगोपकथन। ५ राग व्यक्त करने के लिए  
स्वर-प्रस्तार, स्वर-विस्तार। एक मूर्च्छना-  
विशेष (संगीत)। ६ कुशल। ७ जिज्ञासा।  
आल्पा-वि० १ आल्पा या पद्मजादि स्वरों  
का विस्तारक (संगीत)। २ बात-चीत  
करनेवाला।

आल्पा-गंगा-गंगा स्त्री० पद्म आदि स्वरों  
का नियमबद्ध विस्तार (संगीत)।

आल्पा-गंगा-वि० म० स्वर संगीत। गंगा।  
पद्मजादि स्वरों का विस्तार करना।

आल्पा-गंगा-गंगा स्त्री० १ यमी। मीगुरी।  
मुम्मी। २ आल्पा करनेवाली। बातचीत  
करनेवाली।

आल्पा-वि० [ स्त्री० आल्पाविनी ] १  
गानेवाला। आल्पाकरनेवाला। २ बोलनेवाला।  
आल्पा-गंगा स्त्री० लोरी। गुम्मी। पद्म।  
आल्पा-गंगा-वि० आल्पावात। वंशित।

आल्पा-गंगा पु० [ वि० आल्पाविन ] १  
भेंटा। गले में लगाता। २ परिचरण।  
अगमिलता।

आल्पा-गंगा-वि० ग० गले लगाता। भेंटा।  
लपटना।

आल्पा-गंगा स्त्री० १ सहस्रारिणी। गन्ती।  
महेरी। मजनी। २ भ्रमरी। ३ विन्तू।  
युक्तिव। ४ अक्की। पत्ति। ५ मधु-  
मयी। ६ गार्दी। ७ यन। तुल। पत्तिव।  
८ यम्पा। ९ मेतु।

आल्पा-वि० विविध। विविध। अति।  
आल्पा-वि० [ अ०] रटित। विज्ञान।

आल्पा-गंगा स्त्री० १ महेरी। सरी।  
महनी। २ पत्ति। लोरी। ३ युक्तिव।  
+वि० भीगी हुई।

वि० [ अ०] श्रेष्ठ। उत्तम।

आल्पा-गंगा-वि० बहुत ऊँचे पदवाला।  
उच्चवदम्प। ऊँचे दर्जे का। ऊँची  
पर्यायवाच्य।

आल्पा-गंगा-वि० [ अ०] १ विज्ञान।  
मध्य। २ भडकीला। चमकीला। ३  
शानदार।

आल्पा-गंगा पु० वण छोड़ने के समय का  
आमन-विशेष। दायाँ पैर पीछे की ओर और  
दाहिना पैर सामने रख कर ठेना।  
वि०-भक्षित। खादित। अक्षित। भुक्त।  
लेहिन।

आल्पा-गंगा-वि० बन्धन-रहित। जो बाँधा  
हुआ न हो।

आल्पा-गंगा पु० कद विशेष।

आलूचा-सज्ञा पु० [ फा० ] १ पेड़-विशेष जिसका फल पत्राय इत्यादि में बहुत खाया जाता है। २ भोटिया। बदाम। गर्दालू।

आलूबुलारा-सज्ञा पु० [ फा० ] आलूचा नामक वृक्ष का सूखा फल।

आलेख-सज्ञा पु० लिपि। लिखावट।

आलेखान-सज्ञा पु० लिखना। लिखाई। चित्र अंकित करना।

आलेख्य-सज्ञा पु० चित्र। तसवीर। लिपि। यौ०—आलेख्य विद्या—चित्रकारी।

वि० जो लिखने योग्य हो। चित्रपट।

आलेप-सज्ञा पु० मलहम। लेप। लेपनीय द्रव्य।

आलेख-सज्ञा पु० [ वि० आलेख्य ] १ चांदनी। उजाला। प्रकाश। २ दीप्ति। चमक। ज्योति। ३ दर्शन। ४ प्रशंसा। प्रशंसामय भाषा। ५ परिच्छेद। ६ चापलूसी।

आलोकन-सज्ञा पु० दर्शन। देखना। प्रकाश डालना। चमकाना। दिखलाना।

आलोकित-वि० जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो। चमकता हुआ।

आलोचक-वि० [ स्त्री० आलोचिका ] १ आलोचना करनेवाला। २ देखनेवाला।

आलोचन-सज्ञा पु० १ विवेचन। गुण-दोष का विचार। २ दर्शन। जांच। ३ चर्चा। अनुशीलन। ४ आन्दोलन।

आलोचना-सज्ञा स्त्री० [ वि० आलोचित ] विवेचना। विचार। किसी वस्तु के गुण दोष का विचार।

आलोचित-वि० अनुशीलित। विवेचित। जिसके गुण-दोष का विचार किया गया हो। आलोच्य-वि० आलोचनीय। विचारणीय। विवेचनीय।

आलोडन-सज्ञा पु० [ वि० आलोडित ] १ विलोना। हिलोरना। मथना। २ विचार।

आलोडना\*-क्रि० सं० १ हिलोरना। मथना। २ ऊहापोहकरना। ३ खूब सोचना विचारना।

आलोल-वि० चंचल। अति चंचल।

आल्हा-सज्ञा पु० १ वीर छंद। ३१ मात्राओं का छंद-विशेष। २ महोने के एक वीर का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था। ३ बहुत लंबा-चौड़ा वर्णन। ४ वक्ता विशेष। ५ ग्रन्थ-विशेष।

मुहा०—आल्हा गाना—किसी बात को बहुत बढ़ाकर कहना। अपना हाल सुनाना।

आद्य\*-सज्ञा स्त्री० उग्र। आयु।

त्रि०—आता है। आवे, आता।

आवद-सज्ञा पु० १ धीमा। २ शांती सहना। ३ उत्तर-दायित्व।

आवज, आवश-सज्ञा पु० ताशा नाम का बाजा। आवन\*-सज्ञा पु० आना। आगमन।

आवना-क्रि० अ० पहुँचना। आना।

आवनी-सज्ञा स्त्री० अवाई। निकट आना। आगामी।

आवनेहारा-वि० अवैया। आवनहार।

आवनो-क्रि० अ० आना। उपस्थित होना।

आवभगत-सज्ञा स्त्री० मान। आदर-सत्कार।

आवभाव-सज्ञा स्त्री० आदर। मान्य।

आवरण-सज्ञा पु० १ ढकना। आच्छादन।

२ बंठन। वह वस्तु जो किसी वस्तु के ऊपर लपेटी हो। ३ परदा। ४ बीमार इत्यादि का घेरा। ५ ढाल। ६ चलाए हुए अस्त्र शस्त्र को निष्फल करनेवाला अस्त्र। ७ मानसिक अवता (जैन दर्शन)।

आवरणपत्र-सज्ञा पु० पुस्तक के ऊपर उसकी रक्षा के लिए लगा रहनेवाला कागज।

आवर्जन-सज्ञा पु० [ वि० आवर्जित ] १ छोड़ देना। परित्याग। २ फेंकना। ३ मना करना। रोकना।

आवर्जना-सज्ञा स्त्री० दे० आवर्जन।

आवत्त-सज्ञा पु० १ पानी का भँवर। २ पानी न बरसानेवाले बादल। ३ राजावर्त। राज विराट। लाजवद। ४ चिता। शोच विचार।

वि० मुड़ा हुआ। घूमा हुआ। चक्र। फेर। घुमाव।

आवर्तन-सज्ञा पु० [ वि० आवर्तनीय आवर्तित ] १ घुमाव। फिराव। चक्कर



आवृत्त-वि० १ ढका हुआ। आच्छादित। छिपा हुआ। २ वेष्टित। लपेटा या बिरा हुआ।

आवृत्ति-सज्ञा स्त्री० १ बार बार अम्बास करना। २ पढ़ना। ३ उद्धरण।

आवेग-सज्ञा पु० १ उमग। चित्त की प्रबल वृत्ति। मन की झाक। जोश। २ घबराहट। रम क सचारी भावा में से एक। अक स्मात् इष्ट या अनिष्ट के प्राप्त होने से चित्त की आवृत्त।

आवेदक-वि० निवेदक।

आवेदन-सज्ञा पु० [ वि० आवेदनीय, आवेदित आवेदी, आवेद्य ] १ निवेदन। प्रार्थनापत्र। २ मनोगत भाव का प्रकाश-करण। ३ ज्ञापन।

आवेदनपत्र-सज्ञा पु० प्रार्थनापत्र।

आवेद्य-वि० निवेदन करने योग्य।

आवेश-सज्ञा पु० १ चित्त की प्रेरणा। झाक। वेग। जोश। २ प्रवेश। ३ व्याप्ति। संचार। दौरा। ४ भूत प्रत की बाधा। ५ मृगी रोग। ६ उदय। ७ अहंकार विषय।

आवेशन-सज्ञा पु० १ प्रवेश। २ शिल्पशाला। कारखाना।

आवेष्टन-सज्ञा पु० [ वि० आवेष्टित ] १ छिपाव या ढकने का काम। २ छिपाने, लपटने या ढँकने की वस्तु।

आधी-त्रि० स० आओ। आग बुलाना।

आशकनीय-वि० १ आशका के योग्य। भवस्थान। २ भयावह।

आशका-सज्ञा स्त्री० [ वि० आगवित ] १ आतक। भय। डर। २ सदेह। शक। संशय। ३ अनिष्ट की भावना। ४ आग।

आशक्ति-वि० शक्ति। भयभीत।

आशता-सज्ञा स्त्री० १ आशा। इच्छा। अभिप्राय। रामना। २ सम्भावना। सदेह। मन। ३ प्रगप्ता। तारीफ। ४ प्रायना। ५ अनुमान। आदर-मत्कार।

आशसित-वि० प्रायित। अभिलषित। पयित। आराधित।

आशाना-सज्ञा उभ० [ फा ] १ प्रेमी। चाहने वाला। २ परिचित।

आशनाई-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ सबध। परिचय। जान-पहचान। २ प्रीति। प्रेम। दोस्ती। ३ अनुचित सबध।

आशय-सज्ञा पु० १ तात्पर्य। अभिप्राय। २ इच्छा। वासना। ३ उद्देश्य। नीयत। ४ आधार। आश्रय। ५ गड्ढा। छात। ६ दाय्या। ७ स्थान। सराय। ८ शरीर की शिरा। ९ उदर। हृदय। आत्मा। मन। विचार। १० अर्थ। ११ पहिले किये कर्मों का फल। १२ आनंद। १३ पुष्प। १४ पाप। १५ भाग्य। १६ कजूस। १७ जायदाद।

आशा-सज्ञा स्त्री० १ जो प्राप्त न हो उसे पाने की इच्छा और थोड़ा बहुत निश्चय। उम्मीद। २ इच्छित वस्तु की प्राप्ति के थोड़ा बहुत निश्चय से उत्पन्न सतोष। ३ दिशा। ४ दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ५ आश्रय। भरोसा। आसरा।

आशातीत-वि० आशा से अधिक। बहुत अधिक।

आशाभय-सज्ञा पु० नैराश्य। भरोसा टूटना। नाउम्मेदी।

आशिक-सज्ञा पु० [ अ० ] अनुरक्त पुरुष। आसक्त। जो प्रेम करे।

आशिकाना-वि० आशिका का-सा। प्रेम-पूर्ण।

आशिकी-सज्ञा स्त्री० प्रेम का व्यवहार। आशिक होना। आमक्ति।

आशिप-सज्ञा स्त्री० १ आशीर्वाद। आसीत। २ अलंकार विशेष जिसमें अप्राप्त वस्तु के लिए प्रार्थना होती है।

आशिपशेष-सज्ञा पु० काव्यालंकार विशेष जिसमें हमरे का हित दिखलाते हुए ऐसी बातों के बर्णन की शिक्षा दी जाती है जिनसे वास्तव में अपने ही दुःख की निवृत्ति हो। (नेशव)।

आशी-वि० [ स्त्री० आशिनी ] भक्षक। खाने-वाला।

आशीर्वचन-सज्ञा पु० शुभजन का वचन। वर-याग वचन।

आशीर्वाद-सज्ञा पु० आशीर्ष। आशीर्वचन।

व्याण या मंगलमामनामूचय वाक्य ।  
आश्विन । दुआ ।

आशीविष-सज्ञा पु० सप । अहि । भुग ।  
साप ।

आशोत-सज्ञा स्त्री० १ आशीर्वाद । २ वर ।  
३ शुभासना । मंगल प्रार्थना ।

आशु-वि० १ शीघ्र । द्रुत । तुल्य ।  
शल्पट । २ वर्षाणाल म उत्पन्न होनेवाला  
एक धान्य । ३ घोडा ।

आशु कवि-सज्ञा पु० वह कवि जो उमी  
क्षण कविता कर सके ।

आशुग-सज्ञा पु० १ जल्दी चलनेवाला ।  
शीघ्रगामी । २ मन । बाण । शर । तीर ।  
३ वायु ।

आशुतोष-वि० शीघ्र सतुष्ट या प्रसन्न  
होनेवाला ।

सज्ञा पु० शिव । महादेव ।

आश्चर्य्य-सज्ञा पु० [ वि० आश्चर्य्यित ]  
१ मनोविकार जो किसी नई, साधारण  
या अनोखी बात को देखने सुनने या ध्यान  
में आने से उत्पन्न होता है । अचमा ।  
विस्मय । २ रस के ती स्थायी भावा में से  
एक । ३ अपूर्व । ४ अद्भुत । चमत्कार ।  
विचित्र । अलौकिक ।

आश्चर्यान्वित-वि० चमत्कृत । विस्मित ।

आश्चर्य्यित-वि० चकित । विस्मित ।

आश्रम-सज्ञा पु० [ वि० आश्रमी ] १ वन ।  
तपोवन । ऋषियों और मुनियों का निवास-  
स्थान । २ मठ । साधु-सत्त के रहने की  
जगह । ३ स्मृति में कही हुई हिंदुओं के  
जीवन की चार अवस्थाएँ-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ्य,  
वानप्रस्थ और सन्यास । ४ विश्रामस्थान ।  
रहने की जगह । ५ पाठशाला । कालेन ।  
आश्रमपु-सज्ञा पु० १ कुलाचार्य । कुलपति ।  
२ ब्राह्मण ।

आश्रममर्म-सज्ञा पु० आश्रम के लिए शास्त्र-  
कवित आचार और नियम ।

आश्रमश्रष्ट-वि० आश्रम विरुद्ध चलने-  
वाला ।

आश्रमी-वि० १ आश्रम में रहनेवाला ।  
२ ब्रह्मचर्यादि चार आश्रमों में से किसी

को धारण करनेवाला । ३ आश्रम युक्त ।  
४ आश्रम-मन्त्री ।

आश्रम-सज्ञा पु० [ वि० आश्रमी, आश्रित ]  
१ सहारा । आधार । अवश्व । २ वह वस्तु  
जिससे सहारे पर कोई वस्तु हो । आधार-  
वस्तु । ३ शरण । ४ भरण । सहारा । अ-  
लम्बन । जीवन निर्वाह का हेतु । ५ घर ।  
मकान । ६ रक्षा का स्थान । ७ अश्विचार ।  
८ स्त्रीकृति । ९ वहाता । १० सपथ ।  
११ मूल ।

आश्रयण-सज्ञा पु० आश्रय । शरण ।  
अवस्थान ।

आश्रयणीय-वि० आश्रम के योग्य । आश्रयोप-  
युक्त ।

आश्रयभूत-वि० अवलम्बभूत । शरण्य ।  
भरोसागीर ।

आश्रयस्थान-सज्ञा पु० सहारे का ठौर । आश्रय  
का स्थान ।

आश्रयी-वि० आश्रय लेनेवाला । सहारा पाने-  
वाला ।

आश्रित-वि० १ भरोसे पर रहनेवाला ।  
अधीन । श्रुताश्रय । २ सहारे पर टिका  
हुआ । ३ सेवन । वश्य । बसीभूत ।  
४ शरणगत ।

आश्रित स्वत्व-सज्ञा पु० मृत्यु का अधिकार ।  
अधीन का अधिकार ।

आश्लेष-सज्ञा पु० आलिंगन । मिलन । जुटना ।  
लगाव ।

आश्लेषण-सज्ञा पु० मिलावट । मेल ।

आश्लेषा-सज्ञा पु० श्लेषा नाम का नक्षत्र ।  
आश्वस्त-वि० जिसे आश्वासन मिला  
हो । जिसे तसल्ली दी गई हो ।  
आशामुक्ता ।

आश्वास, आश्वासन-सज्ञा पु० [ वि० आश्वा-  
सनीय, आश्वासित, आश्वास्त्य ] सात्वता ।  
दिलासा । तसल्ली ।

आश्वासित-वि० अनुनीत । आश्वस्त । दिलासा  
दिया हुआ ।

आश्लिष्ट-वि० आलिंगित । सटा हुआ ।  
चिपटा हुआ । लपटा हुआ ।

आश्विन-सज्ञा पु० वह महीना जिसकी पूर्णिमा

अश्विनी नक्षत्र में पड़। तवार का महीना। असोज।

आपाड-सज्ञा पु० १ असाड। २ द्रह्यचारी का पलाश का दंड।

आपाडभू या भव-सज्ञा पु० मंगल ग्रह। उत्तरापाडा नक्षत्र।

आपाडा-सज्ञा पु० उत्तरापाडा और पूर्वापाडा नक्षत्र।

आपाडी-सज्ञा स्त्री० गुरुपूजा। आपाड मास की पूर्णिमा।

आसम-सज्ञा पु० १ सग। साथ। २ ससग। मसृष्टि। सबध। लगाव। ३ आसक्ति। अनुराग।

आसादी-सज्ञा स्त्री० खटोली। कुरसी। काठ की छोटी चौकी।

आस-सज्ञा स्त्री० १ आशा। २ कामना। लाडला। ३ आसरा। आधार। सहारा। भरोसा।

आसक्त-सज्ञा स्त्री० [वि० आसवती क्रि० आसक्ताना] आलस्य।

आसक्ती-वि० दे० 'आलसी'। सुस्त।

आसक्त-वि० १ अनुरक्त। लीन। मन। लिप्त। २ मुग्ध। मोहित। लुब्ध।

आसक्ति-सज्ञा स्त्री० १ अनुरक्ति। लिप्तता। २ चाह। प्रेम। लगन। मोह। ३ लाभ। ४ न्याय शास्त्र के मत से पदा का अत्यंत सन्निधान। ५ सगम। ६ अध्ययन। ७ पदोच्चारण। ८ समीपता। ९ यह शब्दबोध का एक हेतु है।

आसते\*-क्रि० वि० [पा० आहिस्त] धीरे धीरे।

आसत्ति-सज्ञा स्त्री० १ निकटता। समीप्य। २ अर्थ-बोध के लिए एक दूसरे से सबध रखनेवाले दो पदों या शब्दों का बिना व्यवधान के पास पास रहना।

आसन-सज्ञा पु० १ बैठक। स्थिति। बैठने की दशा। कामशास्त्र के ८४ आसन। २ पीठ। पीढा। चौकी। वह वस्तु जिस पर बैठें। ३ निवास। डेरा। ठिकाना। ४ योगिया के ८४ आसन। ५ बूत। ६ हाथी का कंधा जिस पर महावत

बैठता है। ७ सेना का शत्रु के सामने डट रहना।

महा०-आसन तले आना=अधीन होना। अनुगत होना। आसन उड़टना=अपनी जगह से हिल जाना। घोड़े की पीठ पर रान न जमना। आसन कसना=अंग को तोड़ भरोड़ कर बैठना। आसन छोड़ना=उठ जाना (आदरार्थ)। आसन जमना=जिस स्थान पर जिस रीति से बैठे उसी स्थान पर उसी रीति से स्थिर रहना। बैठने में स्थिर भाव आना। आसन ढिगना या डोलना=१ बैठने में स्थिर भाव न रहना। २ मन डोलना। चित्त चलायमान होना। आसन ढिगाना=१ जगह से विचलित करना। २ चित्त को चलायमान करना। लोभ या इच्छा उत्पन्न करना। आसन देना=सत्कारार्थ बैठन के लिए कोई वस्तु रख देना या बतला देना।

आसना\*-क्रि० अ० १ बैठना। २ होना। आसनी-सज्ञा स्त्री० छोटा बिछौना। छाटा आसन।

आसन-वि० १ पास। समीपत्व। निकट आया हुआ। २ प्राप्त। ३ उपस्थित। ४ अवसान। ५ शप।

आसन्नकाल-सज्ञा पु० अन्तिम काल। मृत्यु का समय।

आसन्नभूत-सज्ञा पु० १ भूतकाल जो वतमा से मिला हुआ हो। २ भूत-कालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्तमान से उसकी समीपता पाई जाय। जैसे-में रहा हूँ।

आसपास-क्रि० वि० अगल-बगल। इधर उधर। चारों ओर। निकट।

आसगमन-सज्ञा पु० [पा०] [वि० आस मानी] १ गगन। आकाश। २ देवयोग। रवण।

महा०-आसमान के तारे तोड़ना=कोई कठिन या असंभव कार्य करना। आसमान टूट पड़ना=वज्रपात होना। किसी विपत्ति का अचानक आ पड़ना। आसमान पर उड़ना=१ इतराना। गध करना। २

बहुत ऊँचे-ऊँचे सफ़्त्य बांधना । आगमान पर चढ़ना=गर्भ करना । आगमान पर चढ़ाना=१. अत्यंत प्रशंसा करना । २. अत्यंत प्रशंसा करने मित्राज रिगाट देना । आगमान में दिगली लगाना=घाट कार्य करना । आगमान सिर पर उठाना=१. उपद्रव मचाना । ऊधम मचाना । २. हलचल मचाना । गूंन आन्दोलन करना । दिमाग आगमान पर होना=बहुत घमंड होना ।

आसमानो-वि० [ फा० ] १ आकाशीय । आकाश-मन्त्री । आसमान वा । २ ऊपर वा । हलवा नीला । आकाश के रंग वा । ३ ईश्वरीय । देवी । सजा स्त्री० ताड़ी । ताड़ के पेंड से निराला हुआ मद्य ।

आसमद्र-त्रि० वि० समुद्र के तट तब । समुद्र-मयंत ।

आसतरा\*-त्रि० सं० आश्रय या महारा लेना । आसतरा-सजा पु० १ अलख । आवार । सहारा । २ भरण-पोषण की आशा । भरोसा । ३ किसी से सहायता पाने का निश्चय । ४ आश्रयदाता । जीवन या कार्य-निर्वाह का हेतु । महायव । ५ शरण । ६ प्रतीक्षा । प्रत्याशा । ७ आश्रम ।

आसव-सजा पु० १ मद्य । शराब । मदिरा । २ द्रव्यों का समीर छानकर बनाई हुई औषधि । ३ मद्य । मद । ४ अर्क ।

आसव वृक्ष-सजा पु० ताल वृक्ष । ताड़ । आसवी-सजा पु० शराब पीनेवाला । शराबी । मद्यप ।

वि० आसव-सम्बन्धी । आसा-मज्ञा स्त्री० दे० "आशा" ।

सजा पु० [ अ० असा ] सोने या चांदी का डंडा जिसे केवल सजावट के लिए राजा महाराजाओं अथवा वारास और जुलूस के आगे चौबदार लेकर चलते हैं ।

पौ०—आसा-मोटा । आसा-बल्लम ।

आसाइन-सजा स्त्री० [ फा० ] सुख । चैन । आराम ।

आसाइन-सजा पु० प्रापण । लाभप्राप्ति । भित्तन ।

आसादित-वि० प्राप्य । लब्ध । मिश्रित । भक्षित ।

आसात-वि० [ फा० ] सरल । गुग्म । महज । आसानी-मज्ञा स्त्री० [ फा० ] [ वि० आसान ] गुग्मना । सरलता । सुखिता ।

आसाम-सजा पु० भारत का एक प्रान्त जो बंगाल के निपट है । उसका प्राचीन नाम वामरूप है ।

आसामी-वि० आगाम प्रान्त वा निवासी । मज्ञा पु० देनदार । वास्तव्य । अभियुक्त । दे० "अमामी" ।

आसार-मज्ञा पु० [ अ० ] उक्षण । चिह्न । आसावरी-मज्ञा स्त्री० श्री गंग की रागिनी-विशेष ।

मज्ञा पु० एक प्रकार का वस्त्र । आसावतन-वि० नग्न । दिगम्बर । नगा । आसित\*-मज्ञा स्त्री० दे० "आशित" । आगी-वीर ।

आसित-वि० अवच्छिन्न । बन्दीभूत । रेंधुआ । बन्दी ।

आमिषार-सजा पु० युवा और युवती का एक स्थान में अवस्थित चित्त से अवस्थान रूप व्रत ।

आसिन-मज्ञा पु० दे० "आशिन" । आसी\*-वि० दे० "आसी" ।

आसीन-वि० आसन जमाए हुए । उपविष्ट । बैठा हुआ । विराजमान ।

आसीत-सजा स्त्री० दे० १ "आशित" । २ उसीस । ३ तविया ।

आमु\*-कि० वि० दे० "आशु" । आमुर-वि० अमुर-सम्बन्धी ।

पौ०—आमुर-विवाह=विवाह विशेष जो नन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर हो । सजा पु० दे० "अमुर" ।

आमुरी-वि० राक्षसी । अमुरो वा । पौ०—आमुरी चित्रित्वा=चौर-फाट । राक्ष-चित्रित्वा । आमुरी माया=चक्कर में डालनेवाली राक्षसी चाल ।

मज्ञा स्त्री० राक्षस की स्त्री ।

आसूदा-वि० [ फा० ] [ सज्ञा आसूदगी ] १ तृप्त। सतुष्ट। २ भरा-पूरा। संपन्न। आसेचनक-वि० प्रियदर्शन। जिसको देखने से तृप्ति नहीं होती। आसेब-सज्ञा पु० [ फा० ] [ वि० आसेबी ] भूत-प्रेत की बाधा। आसेजा-सज्ञा पु० क्वार का महीना। आश्विन मास। आसी-कि० वि० इस साल। इस वर्ष। आस्कन्दित-वि० थोड़ी की गति विशेष। तिरस्कृत। आस्कत-सज्ञा स्त्री० आलस्य। ढीलापन। शिथिलता। आस्कती-वि० आलसी। ढीला। ठंडा। सुस्त। आस्तर-सज्ञा पु० १ हाथी की झूल। २ उत्तम। आसन। ३ शय्या। आस्तरण-सज्ञा पु० १ शय्या। बिछीना। विस्तर। २ दुपट्टा। आस्तव-सज्ञा पु० १ उबलते हुए चावल का फेन। २ पनाला। ३ कण्ट। पीडा। ४ इन्द्रियद्वार। आस्तिक-वि० १ जो वेद, ईश्वर और परलोक इत्यादि पर विश्वास करे। २ ईश्वरवादी। ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला। आस्तिकता-सज्ञा स्त्री० ईश्वर, वेद और परलोक में विश्वास। आस्तीक-सज्ञा पु० ऋषि-विशेष जिन्होंने जनमेजय के सर्पसत्र में तक्षक के प्राण बचाये थे। आस्तीन-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] बाँही। पहनने के कपड का वह भाग जो बाँह को ढँकता है। अगा। मुहा०-आस्तीन का साँप=मित्र होकर शत्रुता करनेवाला। आत्मा-सज्ञा स्त्री० १ श्रद्धा। पूज्य बुद्धि। २ बैठक। सभा। ३ अपेक्षा। आलबन। अवलव। ४ आदर। ५ विश्वास। आशा। ६ स्थिति। रहन। आस्थान-सज्ञा पु० १ बैठक। बैठने की जगह।

२ सभा। दरबार। ३ आश्रम। ४ रामाज। सभा-स्थान। आस्पद-सज्ञा पु० १ स्थान। २ काम। कार्य। ३ प्रतिष्ठा। पद। ४ अल्ल। कुल। जाति। वंश। ५ निवास-स्थान। ६ गान। ७ अधिकार। प्रभुता। आस्फालन-सज्ञा पु० १ अपने आप अपनी बड़ाई। आत्मश्लाघा। गर्व। घमंड। अहंकार। २ सघर्ष। शब्द करना। आस्फालित-वि० १ ताड़ित। २ गवित। ३ कम्पित। आस्फोटन-सज्ञा पु० १ प्रफुल्ल होना। विकास। प्रकाश। २ ताल ठाकना। आस्थ-सज्ञा पु० मुखमण्डल। चेहरा। आनन। मुख। मुँह। आस्पदेश-सज्ञा पु० मुख। आस्वाद-सज्ञा पु० १ स्वाद। रस। रसानुभव। आनंद। २ रुचि। चस्का। आस्वादन-सज्ञा पु० [ वि० आस्वादनीय, आस्वादित ] रसानुभव। स्वाद ग्रहण। चखना। स्वाद लेना। आस्वादक-सज्ञा पु० स्वाद लेनेवाला। जायका लेनवाला। आस्वादु-वि० सुरस। मिष्ट। स्वादिष्ट। स्वादी। सुस्वादु। आह-अव्य० पीडा। शोक। हृदि। कष्ट। दुःख, खेद और ग्लानि-सूचक अव्यय। सज्ञा स्त्री० कराहना। दुःख या क्लेश-सूचक शब्द। उगास। ठंडी सरि। मुहा०-आह पडना=शाम पडना। किसी को दुःख पहुँचाने का फल मिलना। आह भरना= ठंडी साँस खींचना। आह लेना=दुःख देकर कल्पना। सताना। \*सज्ञा पु० १ माहस। हियाव। २ बल। आहट-सज्ञा स्त्री० १ चलने में पैर तथा दूसरे अंगों से होनेवाला शब्द। आने का शब्द। पांव की चाप। सटपा। २ वह शब्द जिससे किसी स्थान पर किसी के रहने का अनुमान हो। ३ पता। टोह। सुरंग। आहत-वि० १ घायल। चोट खाया हुआ। २ गुण्य। जिस सत्ता को गुणित करें।

३ व्यत्याज-नाप-मुक्ता (वाक्प) ८, गुग्गुला।  
५ मषि। ६ वषाधुवा। ७ पिता।  
अपवत् दवा मुआ। नष्ट। ८ पिता रूना  
(नगरा आदि)। ९ मुद (पातू आदि)।  
१० मषित। पुनरुवा।

घो०-गता-गार श्रु और जगती।  
सजा पु० १. नगरा। २. कोरा मण्डा।

आहन-गजा पु० [ फा० ] लोहा।

आहर\*-सजा पु० १. काठ। २. समय।  
लगाई। युद्ध।

आहर-आहर-गजा श्चो० आना-जाना।

आहरण-गजा पु० [ वि० आहणीय, आ-  
हृत ] १. हर लेना। छीनना। २. निमी  
पदार्थ तो स्थापनस्थि करना। ३. लेना।  
ग्रहण। ४. लूटना-गसोटना।

आहरन-गजा पु० मुनारी और जंहागो  
की निहाई।

आहर्ष्य-वि० ग्रहणीय। ले आने लायक।  
ग्रहण करने के योग्य।

आहर्ता-वि० आनेवा। आनयन वा उपाजन-  
कर्ता। ले आनेवाला।

आहव-गजा पु० १. रण। युद्ध। २. यज्ञ।  
याग।

आहवन-गजा पु० यज्ञ या होम करना।

आहवनीय-गजा पु० १. यज्ञकी अग्नि-विशेष।  
२. कर्मकाण्ड की तीन अग्नियों में से एक।

आहू-गजा स्त्री० १. घोषणा। दुहाई।  
हूँ। २. बुलावा। पुकार।

आहू-अव्य० खेद। आक्षेप। आश्चर्य्य  
और हृष-मूचक अव्यय।

आहार-गजा पु० १. खाना। भोजन। २. खाने  
की वस्तु। भक्षण।

आहारक-गजा पु० आहरणकारी। सप्राहव।

आहार-विहार-गजा पु० रहन-सहन। खाना-  
पीना, सोना आदि शारीरिक व्यवहार।

आहारी-वि० [ स्त्री० आहारिणी ] भक्षक।  
खानेवाला।

आहार्य्य-वि० १. गृहीत। ग्रहण किया हुआ।  
पकड़ा हुआ। २. खाने योग्य। ३. बनावटी।

कल्पित। ४. वेशभूषा। नैष्य। वेश-द्वारा  
जग-संस्कार।

गजा पु० बार प्रचार के अनुमति में  
चीथा। नाया और नायिका या परम्पर  
अथ दूसरे का वेश धारण करना।

आहार्य्य-शोभा-गजा श्चो० शृंगार शोभा। चित्र  
अथवा भूषण-आदि के द्वारा बनाई शोभा।

आहार्य्य-भोग्य-गजा पु० नायक में वेशभूषा या  
विशिष्ट विधान, नियम। (गायधनाम्न)।

आहार्य्य-गजा पु० १. दाद जगमग। २.  
बहुरच्चा। ३. युद्ध-आज्ञान। ४. ब्राम्हण।

आहि-वि० अ० 'आमना' का वर्तमान-  
कालिक रूप। है।

आहि-वि० १. स्थापित। रमना हुआ। २.  
परीतर या गिरो रमना हुआ। ३. गमन।

४. अपित।

गजा पु० १. पदह प्रचार के दाया में से एक,  
जो अपने स्वागी के डबट्टा धन लेकर उमकी

मेवा में रहकर उगे पटाना हो। २. बन्धक।  
गिरवी रखा हुआ माल।

आहिताग्नि-गजा पु० गान्धिव। अग्निहोत्री।

आहितुण्डि-गजा पु० व्याघ्राही। साँप  
पकड़नेवाला। मोंगेग।

आहिस्ता-वि० वि० [ फा० ] १. धीरे  
धीरे। २. धीरे से। धीमे-धीरे।

आही-वि० अ० है।

आहुत-गजा पु० राजा विशेष।

आहुत-गजा पु० १. अतिवि-सत्कार। २.  
भूतयज्ञ। ३. बलिर्वैश्वदेव।

आहुति-गजा स्त्री० १. होम। हवन। देवयज्ञ।  
मन्त्र पढ़कर देवता के लिए द्रव्य को अग्नि

में डालना। २. हवन में डालने की सामग्री।  
३. होम द्रव्य की वह मात्रा जो एक बार

यज्ञकुंड में डाली जाय। ४. शाकल्य।

आहुत-वि० निगमित। बुलाया हुआ। आमन्त्रित।

आहुत-वि० १. अजित। २. आवीन। लाया  
हुआ।

आहं-कि० अ० है। 'आसना' का वर्तमान-  
कालिक रूप।

आहो-अव्य० १. विवक्ष्य। २. प्रयत्न। ३.  
सन्देह। ४. विचार।

आहोपुष्पिका-गजा स्त्री० अहमिका, आत्म-  
इच्छा।

आहोस्वित-अव्य० वियत्प । प्रश्न । जिज्ञासा ।  
आह्लिक-वि० दैनिक । नित्य-क्रिया । दिन-  
सवधी ।

सज्ञा पु० १ भोजन-प्रकरण । २ समूह । ३  
ग्रन्थ-भाग ।

आह्ला-सज्ञा पु० जलार्णव ।

आह्लाद-सज्ञा पु० [वि० आह्लादक,  
आह्लादित] तुष्टि । आनन्द । प्रसन्नता । हर्ष ।  
आह्लादजनक-वि० हर्षजनक । तुष्टिकर ।  
आनन्दवर्धक ।

आह्लादित-वि० आनन्दित । हर्षयुक्त । प्रसन्न ।  
आह्वय-सज्ञा पु० १ सज्ञा । नाम । २  
प्राणियुत । ३ तीतर, बटेर, भेडे आदि  
जीवों की लड़ाई की वाजी ।

आह्वान-सज्ञा पु० १ पुकार । बुलाना ।  
निमन्त्रण । बुलावा । २ राजा की ओर से  
बुलावे का पत्र । सम्मन । तलब-नामा । ३-  
यज्ञ में मन्त्र-द्वारा देवताओं को बुलाना ।  
आवाहन । ललकार । अदालत-आदि में उप-  
स्थित होने का सूचना-पत्र ।

इ

इ-हिन्दी-वर्णमाला में स्वर का तीसरा वर्ण ।  
इसका स्थान तालु है । इसका दीर्घ रूप ई है ।

अव्य०-१ भेद । २ नोदित । ३ अपा-  
करण । ४ अनुकपा । ५ खेद । ६ कोप ।  
७ सवाप । दुःख । ८ भावना ।

सज्ञा पु०-१ कामदेव । २ गणेश ।

इक-सज्ञा स्त्री० [अप्र०] स्याही । रीसनाई ।

इग-सज्ञा पु० १ सकेत । इशारा । २ चरना ।  
हिलना । ३ हाथी का दाँत ।

इगन-सज्ञा पु० सवेत । इशारा ।

इगनी-सज्ञा स्त्री० [अप्र० मैगनीज] धातु  
का मोर्चा विशय जो फाँच या शीशे का  
हरापन दूर करने के काम में आता है ।

इगला-सज्ञा स्त्री० इडा नामक नाडी । यह  
शरीर के धाम भाग में होती है । (हठयोग) ।  
इंगलिश-वि० [अप्र०] इंगलैंड-सम्बन्धी ।  
अँगरेजी ।

सज्ञा स्त्री० अँगरेजी-भाषा ।

इंगलिस्तान-सज्ञा पु० इंगलैंड । अँगरेजों का  
देश ।

इंगलैंड-सज्ञा पु० यूरोप के एक द्वीप का नाम ।

इगित-सज्ञा पु० सवेत । भाव । अभिप्राय की  
किसी चेष्टा द्वारा प्रकट करना । चेष्टा ।  
वि० १ चलित । हिलता हुआ । २ सकेत  
किया हुआ ।

इगुदी-सज्ञा स्त्री० १ हिमोत का पेड़ । २  
मालकोगनी । ज्योतिष्मती वृक्ष । ३ वण-  
विरोपण ।

इगुरा\*—सज्ञा पु० दे० "ईगुर" । सिद्धर का  
एक भेद ।

इगुरौटी-सज्ञा स्त्री० सिवोरा । सौभाग्यवती  
स्त्रियों की ईगुर या सिद्धर रखने की  
ठिठिया ।

इच-सज्ञा स्त्री० [अप्र०] एक फुट का धार-  
हुवा हिस्सा । उत्सू ।

ईचना\*—क्रि० अ० द० 'विचना' ।

इचार्ज-सज्ञा पु० [अप्र०] वह जिस पर  
किसी कार्य या विभाग का सारा भार हो ।

इजिन-सज्ञा पु० [अप्र० एजिन] १ भाप  
या बिजली से चलनेवाला यन्त्र । २ पेन ।  
कल । ३ रेल में वह गाड़ी जो भाप के जोर  
से सब गाड़ियों को खींचती है ।

इजीनियर-सज्ञा पु० [अप्र० एजीनियर] १  
कलो का बनाने या चलानेवाला । यन्त्र की  
विद्या जाननेवाला । २ विश्वकर्मा । शिल्प-  
विद्या में निपुण । ३ वह अधिकारी जिससे  
निरीक्षण में सारकारी सड़के, इमारतें  
और पुल इत्यादि बनते हैं ।

इजील-सज्ञा स्त्री० [यू०] ईसाइयों की धर्म-  
पुस्तक-विशेष ।

इडहर-सज्ञा पु० उर्व की ढाल में बना हुआ  
एक प्रकार का सालन ।

इडरो\*†—सज्ञा स्त्री० दे० "इडुवा" ।

इडुवा-सज्ञा पु० जेडरी । जेडरी । बण्डे की  
चनी हुई छोटी गोल गद्दी, जिसे बीस उठाते  
समय सिर के ऊपर रख लेते हैं ।

इंतकाल-मज्ञा पु० [अ०] १. मृत्यु। मोन।  
२. किसी मर्णांत का एक के अधिकार में दूसरे के अधिकार में जाना।

इंतलाय-मज्ञा पु० [अ०] १. पटवारी के गाते की नकल। चुनाव। २. निर्वाचन। पगद।  
इंतज्ञाम-मज्ञा पु० [अ०] व्ययस्था। प्रबंध।  
इंतजार-मज्ञा पु० [अ०] प्रतीक्षा।  
इंतही-मज्ञा स्त्री० [अ० इन्तिहा] चरम-सोमा। अंत। समाप्ति। परिणाम। फल।

इंदय-मज्ञा पु० छंद-विशेष।

इंदिरा-मज्ञा स्त्री० १. कमल। रमा। लक्ष्मी।  
२. शोभा। दीप्ति।

इंदिरामन्दिर-मज्ञा पु० नीलोत्पल। नील कमल।

इंदिरालय-मज्ञा पु० पञ्च। पक्व।

इंदिरावर-मज्ञा पु० विष्णु। नारायण।

इंदीर-मज्ञा पु० १. कमल। २. नील-कमल।  
३. नीलोत्पल।

इंदु-मज्ञा पु० १. शशि। चंद्रमा। २. एक की / सख्या। ३. कपूर।

इंदुकला-मज्ञा स्त्री० इंदुलेखा। चन्द्रलेखा।  
चन्द्रकला।

इंदुकान्त-मज्ञा पु० मणि-विशेष। चन्द्रकान्त मणि।

इंदुकान्ता-मज्ञा स्त्री० राशि। निशा।  
यामिनी।

इंदुभूत्-मज्ञा पु० महादेव। शिव।

इंदुमणि-मज्ञा पु० दे० "चंद्रकान्त मणि।"  
इंदुमती-मज्ञा स्त्री० १. चन्द्रयुक्ता राशि। पूर्ण-मासी। २. अयोध्या के राजा अज की स्त्री।

इंदुर-मज्ञा पु० मूस। चूहा। मूषिक।

इंदुवदना-मज्ञा स्त्री० वर्षवृत्त-विशेष।  
वि० विधुमुखी। चंद्रमुखी।

इंदुवत-मज्ञा पु० चान्द्रायण व्रत।

इंदुर-मज्ञा पु० चूहा।

इंद्र-वि० १. प्रतापी। एश्वर्यवान्। विभूति-संपन्न। २. बड़ा। श्रेष्ठ। जेने, नरेन्द्र।  
मज्ञा पु० १. वैदिक देवता-विशेष जिसका स्थान आकाश है और जो पानी बरसाता है। २. देवताओं का राजा। ३. सूर्य। वायु आदित्यो में से एक। ४. विजली।

५. ग्यामी। ६. ज्येष्ठा नक्षत्र। ७. चौदह की संख्या। ८. छप्प छंद के भेदों में से एक। ९. प्राण। जीव। १०. दाहिनी ओर की पुतली।

यो०-इंद्र का अमाडा=१. इंद्र की मन्ना जिसमें अण्णगएँ नाचनी हैं। २. बहुत सजी हुई मन्ना जिसमें मूख नाच-रग हाता हो।  
इंद्र की परी=१. बहुत सुंदरी स्त्री। २. अण्णरा।

इंद्रकजर-मज्ञा पु० इंद्र का हाथी। ऐरावत।

इंद्रकोल-मज्ञा पु० मन्दर पर्वत। मदराचल।

इंद्रमोष-मज्ञा पु० १. बीरब्रह्मी नामक कीड़ा।  
२. सद्योन। जुगनू।

इंद्रजय-मज्ञा पु० १. कोरंदा का धौज।  
२. पुडा।

इंद्रजाल-मज्ञा पु० [वि० इंद्रजालिक] १. नटविद्या। फगफद। माया। तिलस्म। जादू-गरी। २. धोखा। छल। कपट।

इंद्रजालिक या इंद्रजाली-वि० [स्त्री० इंद्र-जालिनी] मायावी। जादूगर। बाजीगर।

इंद्रजाल करनेवाला।

इंद्रजित्-वि० इंद्र को जीतनेवाला।

मज्ञा पु० रावण का पुत्र, मेघनाद।

इंद्रजीव-मज्ञा पु० दे० "इंद्रजित्"।

इंद्रतुल्य-वि० १. इंद्र के समान। २. सर्व-श्रेष्ठ। ३. अधिपति।

इंद्रत्व-मज्ञा पु० १. स्वर्ग का अमाधारण धर्म।  
२. राजत्व-प्राधान्य।

इंद्रवसन-मज्ञा पु० १. मेघनाद का नाम-विशेष। २. बाढ़ के समय नदी के जल का किसी निश्चित देवमूर्ति, बुड, ताल अथवा बट या पीपल के वृक्ष तक पहुँचना जो एक पर्व समझा जाता है। ३. योग-विशेष।

इंद्रवधुष-मज्ञा पु० सात रंगों का अद्वैत जो वर्षा-काल में सूर्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में दिखलाई पड़ता है। शक्रधनु।

इंद्रनीच-मज्ञा पु० नीलमणि। नीलम।

इंद्रनीचक-मज्ञा पु० पद्मग। मरकत। पद्मा।

इंद्रप्रस्थ-मज्ञा पु० नगर-विशेष जिसे पांडवों ने साइब वन जलाकर बसाया था। हरि-प्रस्थ। शक्रप्रस्थ।

इन्द्रिय-सज्ञा पु० औपनि-विशेष ।  
 इन्द्रलोक-सज्ञा पु० स्वर्ग ।  
 इन्द्रवंश-सज्ञा पु० १२ वर्णों का वृत्त-विशेष ।  
 इन्द्रवज्रा-सज्ञा पु० वर्ण-वृत्त-विशेष ।  
 इन्द्रधनु-सज्ञा स्त्री० भृगुकोट । योग-बहटी ।  
 इन्द्राणी-सज्ञा स्त्री० १ शची । इन्द्र की पत्नी ।  
 २ बड़ी इलायची । ३ इन्द्रायण । ४ दुर्गा  
 देवी । ५ मातृका-विशेष । बाई आँस की  
 पुतली ।

इन्द्रानुज-सज्ञा पु० विष्णु । नारायण ।  
 इन्द्रायन या इन्द्रायण-सज्ञा पु० १ इनाक ।  
 लता विशेष जिसका लाल फल देखने  
 में सुंदर, पर खाने में बहुत कड़वा होता  
 है । २ औपनि-विशेष ।

इन्द्रायुध-सज्ञा पु० १ इन्द्रधनु । २ वज्र ।  
 इन्द्रावरज-सज्ञा पु० नारायण । विष्णु ।

इन्द्रासन-सज्ञा पु० १ राजसिंहासन । २ इन्द्र  
 का सिंहासन । ३ ऐरावत ।

इन्द्रिय-सज्ञा स्त्री० १ वह शक्ति जिससे  
 बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता  
 है । २ ज्ञान-साधन । ३ शरीर के वे अवयव,  
 जिनके द्वारा यह शक्ति विषयों का ज्ञान  
 प्राप्त करती है । पदार्थों के रूप, रस, गंध  
 आदि के अनुभव में सहायक अंग, जो पाँच  
 हैं—चक्षु, श्रोत्र, रसना, नासिका और  
 त्वचा । ज्ञानेन्द्रिय । ४ वे अंग या अवयव  
 जिनसे भिन्न-भिन्न कर्म किये जाते हैं और  
 जो पाँच हैं—धाणी हाथ, पैर गुदा, उपास्थि ।  
 कर्मेन्द्रिय । ५ लिङ्गेन्द्रिय । ६ पाँच की संख्या ।  
 ७ अन्तर्न्द्रिय-यथा मन, बुद्धि, चित्त और  
 अहंकार ।

इन्द्रियगण-सज्ञा पु० इन्द्रिय-समूह । एकादश  
 इन्द्रिय ।

इन्द्रियगोचर-वि० इन्द्रियों का विषय । ज्ञान-  
 गम्य । ज्ञानपथवर्ती ।

इन्द्रियग्राह्य-वि० ज्ञानगम्य विषय—शब्द, स्पर्श,  
 रूप, रस, गन्ध आदि ।

इन्द्रियजित्-वि० जो विषयों में न फँसे । जिसने  
 इन्द्रियों को जीत लिया हो ।

इन्द्रियदोष-सज्ञा पु० कामादि दोष ।  
 कामुकता । लपटता ।

इन्द्रियनिग्रह-सज्ञा पु० इन्द्रियों पर समय  
 रखना ।

इन्द्रियविषय-सज्ञा पु० इन्द्रियग्राह्य । इन्द्रिय-  
 गोचर ।

इन्द्रियगोचर-वि० इन्द्रियों से अगोचर । जो  
 इन्द्रियों से न जाना जाय ।

इन्द्रियार्थ-सज्ञा पु० इन्द्रियजन्य ज्ञान का  
 विषय—रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श  
 आदि ।

इन्द्रोज्ज्वल-सज्ञा पु० वे औपधियाँ, जिनसे  
 पेशाब अधिक आता है ।

इसाफ-सज्ञा पु० [अ०] [वि० मुसिफ]  
 १ न्याय । २ निर्णय ।

इकन\*-वि० दे० "एकाग" । १ एक ओर का  
 शरीर । २ आधा अंग । एक शरीर ।  
 अर्द्धांग । शरीर का अर्ध भाग । ३ एक ओर  
 का । एक तरफ का । एक पक्ष ।

इकन\*-वि० दे० "एकात" ।

इक\*-वि० दे० "एक" । एक का दूसरा रूप ।  
 इक आक-कि० वि०-निश्चय । स्थिर ।

इकद्वस-वि० सरथा-विशेष, २१ ।

इकछत्रराज-सज्ञा पु० एकछत्र राजा । चक्रवर्ती  
 राज्य । समस्त संसार का राज्य । प्रति-  
 इन्द्री रहित राज्य ।

इकजोर\*-कि० वि० एक साथ । इकट्ठा ।  
 इकटक-सज्ञा पु० एक ताक । एकटकी । निस्पन्द  
 नेत्र में देखना ।

इकटठा-वि० एकजित । जमा ।

इकठोर-सज्ञा पु० एकट्ठा । समूह ।

इक्षतार\*-वि० दे० "एकत्र" ।

इक्षतरा-सज्ञा पु० एक दिन का नामा करके  
 आनेवाला ज्वर ।

इक्षता\*-सज्ञा स्त्री० दे० "एकता" ।

इक्षताई\*-सज्ञा स्त्री० [फा० यक्षता] १  
 एकता । एक होने का भाव । २ अमंद ।

३ अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या  
 आदत । एकता-सेविता । ४ अद्वितीयता ।

इक्षतान\*-वि० १ एक साथ । एक-रस । २  
 स्थिर । ३ अनन्य ।

इक्षतार-वि० १ समान । बराबर । २ एक-रस ।  
 वि० वि० लगातार ।

द्वयनारा-मज्ञा पु० १ सातपुत्र के राज का  
याज्ञा-विशेष जिसमें सात एक ही मात्र  
रहता है। २ हाथ में युता जानेवाला  
यज्ञ-विशेष।

द्वयतीत-वि० तीस और एक।

मज्ञा पु० द्वयतीत का अर्थ। ३१। तीस और  
एक की संख्या।

द्वयत्र-वि० वि० दे० "एक"।

द्वयवा-मज्ञा पु० दे० "एकवा"।

द्वयस-मज्ञा पु० [अ०] १ पुत्रस्य।  
पार्श्वोक्ति। इनम। २ आदर।

द्वयसार-मज्ञा पु० [अ०] १ प्रतिज्ञा।  
ठहराव। २ पाई काय करने की लीमी  
भरना या वादा करना।

द्वयला-वि० दे० "ओग"।

द्वयार्द्ध-मज्ञा स्त्री० १ अर्धपातन। २ एक  
पाट का महीन दुपट्टा, चादर या धोती।

द्वयलीला-मज्ञा पु० १ मी-नाप का अंश  
रहता। २, एक ही। वैचर। ३ एक हाथ  
में अधिक प्रीति-नाथ।

द्वयल्ला-वि० १ एक पत्त का। एकहरा।  
२ अवेला।

द्वयस-वि० एक साथ।

द्वयसठ-वि० ६१। साठ और एक।

मज्ञा पु० वह एक जिसमें साठ और एक  
का बोध हो।

द्वयसर-वि० १ एक-सा। २ सदृश। बराबर।  
३ एकाकी। अवेला।

द्वयसार-वि० बराबर। समान। समान।

द्वयसूत-वि० एकत्र। एक साथ। द्वयदृष्ट।

द्वयहरा-वि० दे० एक पर का। "एकहरा।

द्वयहर्द-वि० वि० १ एक साथ। सुरत।  
२ अचानक। एकाएक।

द्वयार्द्ध-वि० दे० "एकार्द्ध"।

द्वयार्द्ध-वि० द्वयदृष्ट।

द्वयार्द्ध-मज्ञा स्त्री० वाक्-वच्य। एक मतान  
वाली स्त्री।

द्वयार्द्ध-वि० अवेला वास। एवान्त वास।

द्वयार्द्ध-वि० एवात।

द्वयार्द्ध-वि० १ अवेला। एकाकी। २ अनुपम।  
अनूठा। अद्वितीय। बेजोड़। ३ उत्तम।

मज्ञा पु० १ एक प्रकार की धान का बोली  
जिसमें एक मात्रा मात्रा है। २ लट्ठ के  
आगे लट्टोवाया जाता। ३ नुद छात्र  
अलग हो जानेवाला पत्ता। ४ एक प्रकार  
की दो पहियों की पादा-वाली जिसमें एक  
ही पादा जाता जाता है। द्वयनारादी  
द्वयार्द्ध। पट्टाहा टुकड़ा। ५ एक लुटी-  
वाया नाम का पत्ता।

द्वयार्द्ध-वि० एक या दो। ओग  
द्वयार्द्ध।

द्वयार्द्ध-मज्ञा स्त्री० सात का एक लुटीवाया  
पत्ता। एक रंग की धानी।

द्वयार्द्ध-वि० २१। बीस और एक।

मज्ञा पु० बीस और एक की संख्या।

द्वयार्द्ध-वि० ५१। पचास और एक।

मज्ञा पु० पचास और एक की संख्या।

द्वयार्द्ध-वि० अग्नी और एक।

मज्ञा पु० ८१। अग्नी और एक की संख्या।

द्वय-मज्ञा पु० १ दूध, या ऊँस। मज्ञा।  
२ रेतारी। गोता।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० दूध-वृक्ष। रास। मूँज।  
रोमधर।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० मृद-मवधी राग विशेष।  
मधुमह।

द्वयार्द्ध-मज्ञा स्त्री० बुद्धि के पास रहने-  
वाली एक नदी।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० ईश्वर का रत्न। रास।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० दूध रस का समुद्र।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० गुड़। सोडा।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० १ सूर्यवक्ष का प्रधान  
राजा विशेष। २ बड़वी लीकी। ३  
वैष्णव मनु का पुत्र। ४ वाणी का राजा।

द्वयार्द्ध-मज्ञा स्त्री० १ नरकट। नरकुल।  
सरपत। २ मूँज। काँसा।

द्वयार्द्ध-वि० दे० "ईपन्"।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० [अ०] खर्च। निवास।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० [अ०] १ मित्रता।  
मेल मिलाप। २ भक्ति। प्रेम। प्रीति।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० दे० "द्वय"।

द्वयार्द्ध-मज्ञा पु० [अ०] विरोध। विगाड़।  
अनवग।

इतिवार-सज्ञा पु० [ अ० ] १ अधिकार ।  
२ सामर्थ्य । ३ प्रभुत्व । ४ अधिकार-  
क्षेत्र ।

इच्छा\*—कि० सं० चाहना । इच्छा करना ।  
इच्छा-सज्ञा स्त्री० [ वि० इच्छित, इच्छुक ]  
मनोरथ । कामना । लालसा । अभिलाषा ।  
चाह । वाछा । आकांक्षा । स्पृहा ।

इच्छाचारी-सज्ञा पु० [ स्त्री० इच्छाचारिणी ]  
मनमोजी । अपनै मन का । स्वतंत्र । मन  
के अनुसार घूमने या करनेवाला ।

इच्छान्वित-वि० इच्छुक । सस्पृह । अभिलाषी ।  
स्वेच्छक । वासना विशिष्ट ।

इच्छाभेदी-सज्ञा स्त्री० विरेचनवटी ।

इच्छाभोजन-सज्ञा पु० १ मनमाना भोजन ।  
२ जिन जिन वस्तुओं की इच्छा हो,  
उनको खाना ।

इच्छावनी-सज्ञा स्त्री० इच्छामुक्त स्त्री ।  
अभिलाषिणी रमणी ।

इच्छित-वि० वाञ्छित । चाहा हुआ । ईप्सित ।  
मन के अनुसार ।

इच्छु\*—सज्ञा पु० दे० इक्षु" ।

वि० इच्छुक । चाहनेवाला । (योगिक में)  
इच्छुक-वि० अभिलाषी । आकांक्षी ।  
चाहनेवाला ।

इछन-सज्ञा पु० आक्ष । नेन । नयन । दृष्टि ।  
देखना ।

इजमाल-सज्ञा पु० [ अ० ] [ वि० इजमाली ]  
१ समष्टि । कुल । २ साक्षा । किसी वस्तु  
पर कुछ लोगों का समुक्त स्वत्व ।

इजमाली-वि० [ अ० ] समुक्त । साजे का ।  
इजराई\*—सज्ञा पु० प्राण लेनेवाला फरिश्ता ।  
यमराज ।

इजराय-सज्ञा पु० [ अ० ] १ व्यवहार ।  
उपपाद । २ प्रचार करना । जारी करना ।  
यी०—इजराय डिगरी=डिगरी का अमल-  
वसामद होना ।

इजलास-सज्ञा पु० [ अ० ] १ बैठक । २  
वह जगह जहाँ अधिनारी बैठकर मुकद्दमे  
का न्याय करता है । न्यायालय । अदालत ।  
कोर्ट । बचहरी ।

इजहार-सज्ञा पु० [ अ० ] १ प्रष्ट करना ।

जाहिर करना । प्रकाशन । २ साक्षी ।  
अदालत के सामने बयान । गवाही ।

इजाजत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ आज्ञा ।  
२ सम्मति । मजूरी । परवानगी ।

इजाफा-सज्ञा पु० [ अ० ] १ वृद्धि । बढ़ती ।  
२ बचत । व्यय से बचा हुआ धन ।

इजार-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] पायजामा ।

इजारयद-सज्ञा पु० [ फा० ] नारा । सूती या  
रेशमी जालीदार बंधना जो पायजामे या  
लहंगे के नोकों में उसे कमर से बांधने के लिए  
पड़ा रहता है ।

इजारदार, इजारदार-वि० [ फा० ] ठंकेदार ।  
अधिकारी । जो किसी पदार्थ को, इजारे  
या ठंके पर ले ।

इजारा-सज्ञा पु० [ अ० ] १ ठेका । २  
किसी पदार्थ को उजरत या किराये पर  
देना । ३ किराया । अधिकार । स्वत्व ।

इज्जत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] सम्मान । आदर ।  
प्रतिष्ठा । मान । मर्यादा ।

मुहा०—इज्जत उतारना=मर्यादा नष्ट  
करना । इज्जत रखना=प्रतिष्ठा की रक्षा  
करना ।

इज्जतदार-वि० [ फा० ] प्रतिष्ठावाला ।  
प्रतिष्ठित ।

इज्ज-वि० बृहस्पति । देवाचार्य । गुरु । शिक्षक ।  
पूज्य ।

इज्जा-सज्ञा स्त्री० यज्ञ । दान । योग । पूजा ।  
अर्चा । अष्टविध धर्म वा प्रथम धर्म ।

इज्जाशील-सज्ञा पु० बार-बार यज्ञ करने-  
वाला । याजक । यज्ञकारी ।

इठलाना-वि० अ० १ ठसक दिखाना ।  
इतराना । गव-सूचक चेष्टा करना । २  
मटकना । ३ नखरा करना । ४ छराने  
के लिए जान-बूझकर अनजान बनना ।

इठकहट-सज्ञा स्त्री० ठसक । इठलाने का  
भाव ।

इठाई\*—सज्ञा स्त्री० १ रुचि । प्रीति । चाह ।  
२ भिन्नता ।

इडा-सज्ञा स्त्री० शरीर के दक्षिण भाग  
यानी नाई ओर की नाडी । १ भूमि ।  
पृथ्वी । २ गाय । ३ स्तुति । ४ यात्री ।

५ ठूँधि। अन्न। ६ नभदेवता। ७ अग्नि।  
 दुर्गा। ८ पार्वती। सरस्वती। ९ कस्यप  
 ऋषि की पत्नी, जो दक्ष की एक पुत्री थी।  
 वैवस्वत मनु की पुत्री। १० स्वर्ग। ११  
 आद्यगमन। १२ हठरोग की माधना में  
 कथित बाई और की गाथी।  
 हटरी-सजा स्त्री० गेंडरी। गेंडरी। बीजा।  
 इती-वि० वि० १ इस ओर। यहाँ।  
 इधर। २ इस तरफ।  
 इत-अव्य० नियम। पचमी विभक्ति का  
 अर्थ। विभाग। यहाँ से। इस हतु।  
 इतपर-वि० इसके बाद। इसके अनन्तर।  
 इस पर।  
 इतना-वि० अवधि का बोधक। परिच्छेदक।  
 इस मात्रा का। इस तरह।  
 मुहा०—इनने में=इसी बीच में।  
 इतनी\*—वि० दे० 'इतना'।  
 इतमाम\*—सजा पु० [अ० इहतिमाम]  
 प्रपञ्च। बदीवस्त।  
 इतमीनान-सजा पु० [अ०] [वि० इतमी-  
 नानी] भरोसा। विश्वास। मतोप।  
 इतर-वि० १ भिन्न। दूसरा। अपर। ओर।  
 अन्य। २ नीच। अधम। ३ सामान्य।  
 साधारण।  
 सजा पु० दे० 'अतर'।  
 इतल्लोक-सजा पु० दूसरा लोक। परलोक।  
 इतरविशेष-सजा पु० अन्य से भिन्न।  
 विभिन्नता। प्रमद।  
 इतराजी\*—सजा स्त्री० [अ० एतराज]  
 विरोध। नाराजी। विगाड।  
 इतराना-क्रि० अ० १ एवं करना। २ इठ-  
 लाना। ठसक दिखाना। ३ मचलना।  
 इतराया-क्रि० अ० चाचला दिखाया। ठसक  
 दिखाई। मचला।  
 इतराहट\*—सजा स्त्री० गय। घमड। अट्ट  
 दिखाना। इठलाने का भाव।  
 इतरेतर-क्रि० वि० १ परस्पर। आपस में।  
 २ अन्यान्य।  
 इतरेतराभाव-सजा पु० अयोन्याभाव। न्याय-  
 शास्त्रानुसार एक के गुणों का दूसरे में न  
 होना।

इतरेतराभाव-सजा पु० एक में एक प्रकार का  
 दाग जो वहाँ होता है जहाँ दा अनुभा की  
 निधि परस्पर निर्भर होती है। (न्याय)  
 इतरेष्ट-अ० दूसरे दिन। अन्य दिन।  
 इतरोहो\*—वि० उत्तराना। सूचित करनेवाला।  
 जिसमें उत्तराने का भाव प्रकट हो।  
 इनगर-सजा पु० गवियार। शनि और सोम-  
 वार के बीच का दिन। आदिन्यवार।  
 इतस्तत-क्रि० वि० अत्र-तत्र। चारों ओर।  
 इधर-उधर।  
 इताअन-सजा स्त्री० [अ०] आतापालन।  
 इताति\*—सजा स्त्री० दे० 'इताअन'।  
 इति-अव्य० समाप्तिमूचक अव्यय।  
 सजा स्त्री० पूणता। समाप्ति। इतना।  
 यी०—इतिथी=समाप्ति। अत।  
 इतिरुत्तव्य-वि० कर्म का अंग। उचित-  
 कर्तव्य।  
 इतिरुत्तव्यता-सजा स्त्री० १ विभी काम के  
 करने की विधि। २ परिपाटी।  
 इतिकया-सजा स्त्री० अर्पण्य वाक्य। अनुप-  
 युक्त वाक्य।  
 इतिपुत्त-सजा पु० कहानी। पुरानी कथा।  
 पुरावृत्त।  
 इतिहस-सजा पु० वृत्तान्त। पुरावृत्त।  
 उपाख्यान। प्राचीन कथा। व्यतीत घटनाओं  
 और उनसे संबंधित पुराणों का बाल क्रम  
 में यणन।  
 इतेक\*—वि० इतना। इतना ही।  
 इनी\*—वि० [स्त्री० इती] इतना। उन  
 मात्रा का।  
 इती-अव्य० १ इतना नियम। २ अवधि।  
 इत्तफाक-सजा पु० [अ०] [वि० इत्त-  
 फाकिया, वि० वि० इत्तफाकन] १  
 सपाण। अवसर। मौका। २ मेल। मिलाप।  
 ३ एका। सहमति।  
 मुहा०—इत्तफाक पडना=सयोग उपस्थित  
 नाना। मौका पडना=इत्तफाक से=सयोग-  
 का।  
 इत्तफाकन-क्रि० वि० सपाण में। अक-  
 स्मात्।  
 इत्तफाकिया-क्रि० वि० आकस्मिक।

इत्तला-सज्ञा स्त्री० [ अ० इत्तलाज ] १. सूचना। खबर। २. जानकारी।  
 यौ०-इत्तलानामा=सूचनापत्र।  
 इत्तहाम-सज्ञा पु० [ अ० ] झूठा दोष। तोहमत।  
 इत्ता, इत्तो\*-वि० दे० "इतो"। इतना।  
 इत्ती-वि० इतना।  
 इत्थ-कि० वि० ऐसे। यो। इस तरह।  
 इस प्रकार। ऐसा।  
 इत्थभूत-वि० ऐसा।  
 इत्थमेव-वि० ऐसा ही।  
 कि० वि० इसी प्रकार से।  
 इत्थादि-अव्य० १ आदि। इसी प्रकार अन्य। प्रभृति। २ इससे लेकर और सब। वगैरह।  
 इत्थादि-वि० ऐसे ही और दूसरे। इसी प्रकार के अन्य और। आदि।  
 इत्त-सज्ञा पु० दे० "अत्तर"।  
 इत्तदान-सज्ञा पु० इत्तरखने का पात्र।  
 इत्तोफल-सज्ञा पु० शहद में बनाया हुआ निफला का अवलेह। औषध-विशेष।  
 इदम्-सर्व० यह। यही। पुरोवर्त्ती।  
 इधर-कि० वि० यहाँ। इस ओर। इस स्थान पर।  
 मुहा०-इधर-उधर=१ इतरत। यहाँ-वहाँ। २ आस-पास। ३ चारों ओर। सब ओर।  
 इधर-उधर करना=१ हीला-हुवाला करना। टाल-मुटल करना। २ उम भग करना। उलट-मुलट करना। ३ तितर-बितर करना।  
 ४ हुंता। भिन्न भिन्न स्थानों पर कर देना। इधर-उधर की बात=१ गुनी गुनाई बात। अफवाह। २ बेठिकाने की बात। असबद्ध बात। इधर की उधर करना या लगाना=शेगडा लगाना। चपलखोरी करना। इधर की दुनिया उधर होना=अनहोनी बात का होना। इधर-उधर में रहना=व्यर्थ समय सोना। इधर-उधर होना=१ विगडना। उलट-मुलट होना। २ तितर बितर होना। भाग जाना।  
 इत्त-सर्व० 'इस' का बहुवचन।  
 सज्ञा पु० १. सूर्य। २. समर्थ। ३. राजा।

४ पति। ५. ईश्वर। प्रभु। ६. हस्त नक्षत्र।  
 ७. १२ वीं सख्या। वि० सामर्थ्यवान। समर्थ।  
 इनकम-सज्ञा स्त्री० [ अग्रे० ] आमदनी। आय।  
 इनकम-टैक्स-सज्ञा पु० [ अग्रे० ] आमदनी पर लगनेवाला कर।  
 इनकार-सज्ञा पु० [ अ० ] अस्वीकार। 'इक्कार' का उलटा।  
 इनफ्लुएन्जा-सज्ञा पु० [ अग्रे० ] सर्दी के कारण होनेवाला एक प्रकार का बुखार।  
 इनसान-सज्ञा पु० [ अ० ] मनुष्य। आदमी।  
 इनसानियत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ मानवता। मनुष्यत्व। आदमियत। २ 'सज्जनता'। भलमनसी। ३ बुद्धि। शक्ति।  
 इनाम-सज्ञा पु० [ अ० ] इनाम। उपहार। पुरस्कार।  
 यौ०-इनाम इकराम=इनाम जो कृपापूर्वक दिया जाय।  
 इनायत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ अनुग्रह। दया। कृपा। २ एहसान।  
 सहो-इनायत करना=कृपा करके देना।  
 इनारा-सज्ञा पु० दे० "इंदारा"। कप। पक्का कुआँ।  
 इने-गिने-वि० कुछ। थोड़े से। कतिपय। नुने चुनाए।  
 इन्हे\*-सर्व० दे० "इन"।  
 इत्तु-वि० ईप्सित। इच्छुक। लोभी।  
 इफरात-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] बहुतायत। अधिवृत्ता।  
 इबरानी-वि० [ अ० ] यहूदी। जाति विशेष का आदमी।  
 सज्ञा स्त्री० फिलिस्तीन देश की प्राचीन भाषा।  
 इबादत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] पूजा।  
 इबारत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] [ वि० इवार्ती ] १ लेख। पाठ। २ लेखन-शैली।  
 इमदाद-सज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।  
 इमन-सज्ञा स्त्री १ स्वर का मिलन। २. रागिनी-विशेष।  
 इमन बल्लान-सज्ञा स्त्री० रागिनी विशेष।  
 इमरती-सज्ञा स्त्री० मिठाई विशेष।  
 इमली-सज्ञा स्त्री० एक बड़ा पेड़ और उसका

पत्र। इसकी गूददार लबी फलियाँ मटाई की तरह पाई जाती हैं।

इमाम-मज्ञा पु० [अ०] १ अगुआ। २ जा मुसलमानों के धार्मिक कृत्य करावे। ३ अली के बेटा की उपाधि।

इमामदस्ता-सज्ञा पु० लाहे या पीतल का तल और बट्टा।

इमामबाड़ा-सज्ञा पु० शीया मुसलमानों के ताजिया रखने और उसे दफनाने का हाता।

इमामस्त-सज्ञा स्त्री० [अ०] भवन। बड़ा और पक्का मकान।

इमि\*—क्रि० वि० ऐसे। या। इम प्रकार।

इम्नहाम-सज्ञा पु० [अ०] परीक्षा। जाँच।

इम्ली-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

इम्ली-सज्ञा पु० वृक्ष विनाय। फल-विशेष। तिन्तिडी। कुचिया। अमली।

इमता-सज्ञा स्त्री० रोमा। हृद।

इरशाद-सज्ञा पु० [अ०] आज्ञा। हुक्म।

इर्या\*—सज्ञा स्त्री० दे० "ईर्या"।

इरा-सज्ञा स्त्री० १ कश्यप की स्त्री जिससे बृहस्पति और उद्भिज उत्पन्न हुए थे। २ पृथ्वी। भूमि। ३ याणी। ४ भाषा। ५ जल। ६ सरस्वती। काई भी पेय।

दक्ष की एक पुत्री।

इराक-सज्ञा पु० अरब का एक देश।

इराकी-वि० [अ०] इराक देश का। इराक देश सम्बन्धी।

सज्ञा पु० घोड़ा की जाति विनाय।

इरादा-सज्ञा पु० [अ०] सकल्प। विचार। निश्चित की हुई बात।

इरावान-सज्ञा पु० १ समुद्र। २ मेघ। ३ राजा। ४ अर्जुन पुत्र।

इद-गिद-क्रि० वि० १ इधर उधर। २ चारा आग। ३ आस पास।

इयना\*—सज्ञा स्त्री० प्रबल इच्छा।

इलजाम-सज्ञा पु० [अ०] १ अभियोग। दापारोपण। बलव। अपराध। २ दोष।

इलकिना-सज्ञा स्त्री० कुबेर की माता। विश्वेश्वरवा मुनि की यन्त्री।

इलता-सज्ञा पु० हिन्दा नामक मत्स्य विधेय।

इल्लाम-सज्ञा पु० [अ०] आनाशवाणी। ईश्वर का शब्द। देवताणी।

इला-सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। २ वाणी। मरुस्वती। ३ पार्वती। ४ गा। ५ वैवस्वत मनु की यन्त्रा। ६ प्रनाह।

इलाका-सज्ञा पु० [अ०] १ रियासत। २ बई मौजा की जमींदारी। ३ समय। मवध।

इलाज-सज्ञा पु० [अ०] १ निरुद्धि। २ औषध। दवा। ३ युक्ति। उपाय।

इलाफ\*—सज्ञा पु० [अ० एलान] १ आज्ञा। २ इत्तलानामा।

इलायची-सज्ञा स्त्री० एला। तीक्ष्ण सुगंध वाले फल विशेष के बीज जो मुँह सुगन्धित करने के लिए खाए जाते हैं।

इलायचीदाना-सज्ञा पु० १ चीनी में पाया हुआ इलायची या पोस्ते का दाना। २ इलायची का बीज।

इलायत\*—सज्ञा पु० दे० जम्बूद्वीप के नव वर्णान्तर्गत उप-विशेष।

इलावृत-सज्ञा पु० जम्बूद्वीप के नौ वर्णों में से एक।

इलाही-सज्ञा पु० [अ०] ईश्वर। वि० वैवी। ईश्वरीय।

इलाही गज-सज्ञा पु० [अ०] अकबर-द्वारा प्रचलित गज जा ४१ अंगुल (३३ ३/४ इंच) का होता है और मकान आदि में नापन के काम में आता है।

इल्लाम-सज्ञा पु० [अ०] दोपारोपण। आरोप। अपराध लगाना।

इल्लिजा-सज्ञा स्त्री० [अ०] निवेदन। इल्म-सज्ञा पु० गुण। ज्ञान। विद्या।

इल्लत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बलडा। पशुद। २ रोग। बीमारी। ३ अपराध। दाप।

इल्ला-सज्ञा पु० छोटी कड़ी फुसी जो चमड़े के ऊपर निकली है। मस्सा। मांस वृद्धि।

इल्ली-सज्ञा स्त्री० चोटी के बच्चों का अप-विशेष जो अंडे से निकलते ही होता है।

इल्लल-सज्ञा पु० १ एक वैद्य विनाय का नाम। २ मछली विशेष।

इल्लला-सज्ञा पु० मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर के ५ तारों का नाम।

इव-अव्य० १ सदृश । सरीखा । जैसे । समान । नाई । तरह । २ उपमावाचक शब्द ।

इशारा-सज्ञा पु० [ अ० ] १ संकेत । सैन । २ गुप्त प्रेरणा । ३ सूक्ष्म आधार । ४ संक्षिप्त कथन ।

इस्तहार-सज्ञा पु० [ अ० ] सूचना । विज्ञापन । इतिहासक-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] उत्तेजना । बढ़ावा ।

इयण\*-सज्ञा स्त्री० दे० "एयणा" ।

इपीका-सज्ञा स्त्री० वाण । तीर ।

इपु-सज्ञा पु० १ वाण । शर । तीर । २ काण्ड । ३ पाँचवीं सख्या ।

इपुधि या धी-सज्ञा पु० तूण । वाणाधार । तरपस ।

इपुमान-वि० तीरदाज । बाण चलानेवाला ।

इपूपल-सज्ञा पु० दुर्ग के द्वार पर की तोप या कवड-मत्थर फेंकती है ।

इष्ट-वि० १ वांछित । अभिलषित । प्रिय । आरासित । २ पूजित ।

सज्ञा पु० १ अग्निहोनादि शुभ वर्म । सस्वार । २ इष्टदेव । कुलदेव । ३ अधिकार । वज । देवता की छाया या कृपा । ४ मित्र ।

इष्टका-सज्ञा स्त्री० ईंट ।

इष्टता-सज्ञा स्त्री० इष्ट का भाव ।

इष्टदेव, इष्टदेवता-सज्ञा पु० उपास्य देवता । आराध्य देव । पूज्य देवता ।

इष्टापत्ति-सज्ञा स्त्री० वादी के कथन में दिखाई हुई ऐसी आपत्ति जो वादी को अभीष्ट हो । जिससे वादी ही का कथन पुष्ट हो ।

इष्टापूर्त-सज्ञा पु० लोनापवाराय यज्ञ करना उपा लायन और कूप-आदि साधना ।

इष्टालाप-सज्ञा पु० अभिलषित या प्रिय वयोवृत्तयन ।

इष्टि-सज्ञा स्त्री० १ अभिलाषा । इच्छा । २ यज्ञ । याग ।

इत्य-सज्ञा पु० धन्य क्रतु ।

इत्यास-सज्ञा पु० धन्य । वामन । शरामन ।

का० १२

इस-सर्व० 'यह' शब्द का विभक्ति के पहले आदिष्ट रूप । जैसे, इसको ।

इसपज-सज्ञा पु० [ अग्ने० स्पज ] समुद्र में एक प्रकार के अत्यंत छोटे कीड़े के योग से बना हुआ मुलायम रूई की तरह का सजोव पिंड जो पानी खूब सोखता है । मुर्दा यादल ।

इसपात-सज्ञा पु० एक प्रकार का पक्का लोहा । फोलादी लोहा ।

इसबगोल-सज्ञा पु० [ फा० ] फारस की झाड़ी या पौधा-विशेष जिसके गोल बीज हकीमी दवा के काम आते हैं ।

इसराज-सज्ञा पु० सारंगी की तरह का एक प्रकार का बाजा ।

इसरायल-सज्ञा पु० यहूदियों का देश जो फिलिस्तीन (पैलेस्टाइन) का एक भाग है । यहूदिया ने यहाँ अपना एक पृथक् राज्य कायम कर लिया है ।

इसरार-सज्ञा पु० [ अ० ] ज़िद । बार-बार कहना या जोर देना । अनुरोध ।

इसलाम-सज्ञा पु० [ अ० ] [ वि० इसलामिया ] मुसलमानों का धर्म ।

इसलाह-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] सुधार । सरोधन ।

इसाई-वि० क्रिस्तान । ईसाई ।

इसारत\*-सज्ञा स्त्री० [ अ० इशारा ] संकेत ।

इसी-सर्व० इसको । 'यह' का कर्म कारक और सम्प्रदान कारक का रूप ।

इस्तमरारी-वि० [ अ० ] नित्य । अविच्छिन्न । अपरिवर्तनशील । सब दिन रहनेवाला ।

यी०-इस्तमरारी यदायस्त=जमीन वा वह बंदोबस्त जिसमें मालगुजारी सदा के लिए निश्चित कर दी जाती है ।

इस्तिजा-सज्ञा पु० [ अ० ] पशाव करने का पदवात् मिट्टी के ढले से इन्द्रिय की शुद्धि ।

इस्तिरो-सज्ञा स्त्री० कपड़े की वह घंटाने का घीघिया या दग्निया का औजार ।

इस्तीफा-सज्ञा पु० [ अ० इस्तीफा ] त्यागपत्र । नीति छोड़ने का प्रार्थना पत्र । किसी पद या सत्ता की तद्वत्ता आदि में अलग होने का पत्र ।

इस्तेमाल-सज्ञा पु० [ अ० ] व्यवहार। प्रयोग। उपयोग।

इस्त्रि या इस्त्री-सज्ञा स्त्री० यपडा चिपनानेका यत्र, जिससे धोनी यपड़े पर मलफ करते हैं।  
इस्त्रि-वि० स्थिर। निश्चल। अचंचल।  
इस्पात-सज्ञा पु० पक्का लोहा। 'खेड़ी'।  
परिष्कृत लोह।

इस्म-सज्ञा पु० नाम। सज्ञा।  
इस्मशरीफ-सज्ञा पु० मुम नाम।  
इस्मनवीसी-सज्ञा स्त्री० लोगो के नाम लिखना या लिखाना। अदालत में अपने गवाहा की सूची पेश करना।

इह-प्रि० वि० १ उम काउ में। यहीं। इस जगह। इस लोक में। २ यह सब। इन सब में। इन्होंने।

इहकाल-सज्ञा पु० यह काल। यह समय।  
इहलीला-सज्ञा स्त्री० इस लोक की लीला या जीवन। जिदगी।

इहलोक-सज्ञा पु० यहीं का लोक। मसार।  
इहवां-प्रि० वि० यहीं। इस स्थान पर।

इहाँ-प्रि० वि० दे० "यहीं"। इस स्थान पर। इस जगह।

इहि-प्रि० वि० यहीं। इसमें। इस जगह।

ई

ई-हिंदी-वर्णमाला का चौथा अक्षर। 'इ' का दीर्घ रूप, जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।

सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

सज्ञा पु०-कर्मण्य। कामदेव।

\*गर्व० [ ई=निकट वा स केत ] यह।

\*अव्य० जोर देने का शब्द। ही। विपाद। अनुकम्पा। प्रीति। दुःख। भावना। प्रत्यक्ष। सन्निधि।

ई गुर-सज्ञा पु० गधक और पारे में घटित खनिज पदार्थ विशेष जिसकी ललाई बहुत चटकीली और सुन्दर होती है। मिमरफ। सिद्धर का भेद।

ईचना-प्रि० सं० दे० "खीचना"।

ईट-सज्ञा स्त्री० १ ईटा। राखे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूटा लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार उठाई जाती है। २ तांग का रंग विशेष। ३ धातु का चौखूटा टला हुआ टुकड़ा।

मुहा०-ईट में ईट बजना=बिती नगर या घर का बह जाना या ध्वस्त होना। ईट से ईट बजाना=बिती नगर या घर को ध्वस्त करना। ईट चुनना=जोड़ाई करना। दीवार उठाने के लिए ईट पर ईट घंटाना। डेढ़ या ढाई ईट की मसजिद अलग बनाना=जो सब लोग कहते या करते हैं, उसक

विरोध कहना या करना। ईट पत्थर=कुछ नहीं।

ईटा-सज्ञा पु० दे० "ईट"।

ईडरी-सज्ञा स्त्री० गेंडुरी। यपड़े की कुडला-वार गद्दी जिसे घास-आदि छाते समय सिर पर रख लेते हैं।

ईधन-सज्ञा पु० जलावन। जलाने की एकड़ी या कटा। जरनी।

ईकार-सज्ञा पु० अक्षर विशेष। ई वर्ण।

ईस-सज्ञा स्त्री० दर्शन। ईक्षण। देखना।

ईसक-सज्ञा पु० अवलोकनकर्ता। दर्शक।

ईसण-सज्ञा पु० [ वि० ईक्षणीय, ईक्षित, ईक्ष्य ] १ देखना। दर्शन। २ चक्षु। आँख। ३ दृष्टि। ४. विचार। जांच। विवेचन।

ईक्षण धवा-सज्ञा पु० सप। चक्षुधवा।

ईक्षित-वि० इष्ट। अवलोकित। देखा हुआ।

ईख-सज्ञा स्त्री० गना। ऊस।

ईखना\*-क्रि० सं० देखना।

ईछन\*-सज्ञा पु० आँख।

ईछना\*-क्रि० सं० साहना। इच्छा करना।

ईछा\*-सज्ञा स्त्री० "इच्छा"।

ईजाद-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] आविष्कार। विसो

नई चीज का निर्माण।

ईठ\*-सज्ञा पु० १ इष्ट। वांछित। चाहा हुआ। २ मित्र। राया।

ईठना\*-प्रि० सं० इच्छा करना।

ठा-मज्ञा स्त्री० १ स्तुति। स्तव। प्रतिष्ठा। प्रशंसा। २ गुण-कथन। नाडी-विशेष।

ठि-राज्ञा स्त्री० १ प्रीति। २ मिनता। ३ यत्न। चंष्टा।

ठो-मज्ञा स्त्री० भाला। वरछा। इष्ट, मिन। वालित।

ठो बाढ़-गज्ञा पु० चीगान खेलने का दड़।

ठिडा-सज्ञा स्त्री० स्तुति। प्रशंसा। दड़ा नाम की एक नाडी।

ईडित-वि० १ प्रशंसित। जिसकी प्रशंसा की गई हो। २ इच्छित। ३ काम्य।

ईडू\*-सज्ञा स्त्री० १ कुडन। २. हठ।

ईतर\*-वि० १. डीठ। शोख। गुस्ताख। २ इतरानेवाला।

वि० निम्न श्रेणी का।

ईति-सज्ञा स्त्री० १ खेती की हानि पहुँचानेवाले उपाद्रव जो छ प्रकार के हैं—

(क) अतिवृष्टि। (ख) अनावृष्टि। (ग) टिड्डी पटना। (घ) बूहे लगना। (ङ) पक्षियों की अविनवा। (च) दूसरे राजा की ज़बाई। २ विघ्न। बाधा। ३ दुख। पीडा। आपदा। ४ अडा। ५. प्रवास।

ईयर-सज्ञा पु० [अग्र०] १ समस्त शून्य स्थल में व्याप्त रहनेवाला सूक्ष्म और लचीला द्रव्य-विशेष। आकाशद्रव्य। २ रासायनिक द्रव पदार्थ जो अल्कोहल और गंधक के तैजाय से बनता है।

ईव-सज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का त्योहार-विशेष जो गेजा मृतम होने पर होता है।

ईवो-ईदगाह=यह स्थान जहाँ मुसलमान ईद के दिन दण्डठे होने पर नमाज पढ़ते हैं।

ईदवा-सज्ञा पु० उदवना। देवना।

ईद्व-वि० ईद्व। एतन नद्व। दसो समान। इस प्रकार।

ईद्व-वि० दग प्रकार।

ईद्व-फि० वि० [स्त्री० ईद्वो] दग प्रकार। इस तरह। ऐसे। इस गति में। ईद्व।

वि० ऐसा। दग प्रकार का।

ईस्ता-सज्ञा स्त्री० [वि० ईष्टा, ईष्टु] साह। अभिगणा। इच्छा।

ईमित-वि० बाधित। अभीष्ट।

ईसु-वि० चाहनेवाला।

ईवी-सीवी-सज्ञा स्त्री० [अनु०] आनन्द या पीडा के समय मुँह से निकलनेवाला सिसकारी या 'सी-सी' का शब्द।

ईसान-सज्ञा पु० [अ०] १ चित्त की सद्बृत्ति। २ अच्छी नीयत। ३ सत्य। ४ धर्म। ५ धर्म-विश्वास।

ईसानदार-वि० [फा०] १ मन्चा। २ जो लेन-देन या व्यवहार में सच्चा हो। ३ विश्वासपात्र। ४ सत्य का पक्षपाती। ५ विश्वास रखनेवाला।

ईरखा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"।

ईरान-सज्ञा पु० [फा०] [वि० ईरानी] फारस देश।

ईरानी-सज्ञा पु० ईरान देश का निवासी। सज्ञा स्त्री० ईरान देश की भाषा।

वि० ईरान का। ईरान-सम्बन्धी।

ईर्षा-सज्ञा स्त्री० [वि० ईर्षालु, ईर्षित, ईर्षु] १ डाह। दूसरे का उत्कर्ष न सहन होने की वृत्ति। जलन। कुडन। द्वेष। २ परस्त्री-वात्सरता। दूसरे के गुण देखकर उनमें उससे बढ़ जाने की इच्छा।

ईर्षालु-वि० दूसरे की बढ़ती देखकर जलने-वाला। द्वेषयुक्त। ईर्षा करनेवाला।

ईर्षा-सज्ञा पु० द्वेही। द्वेपी। दूसरे की अभिवृद्धि से जलनेवाला।

ईर्ष्या-सज्ञा स्त्री० दे० "ईर्षा"। द्वेष।

ईर्ष्यान्वित-वि० १ ईर्ष्याकारी। २ हिसप।

ईर्ष्यावान्-वि० १ ईर्ष्यान्वित। २ हिसक।

ईयनिग-सज्ञा-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] मन्ध्या-समय दी जानेवागी जलपान की दावत। माध्य भोज।

ईश-सज्ञा पु० [स्त्री० ईशा, ईशी] १ प्रभु। म्यामी। ईश्वर। परमेश्वर। २ ऐश्वर्य-शाली। ३. राजा। ४ शिव। महादेव। ५ आर्द्रा नक्षत्र। ६ ग्यारह की गण्डा। ७ एक उपनिषद्। ८ पाग। ९ ईशान कोण के अधिपति। १० कुचेर। ११ पवि।

ईशता-सज्ञा स्त्री० प्रभुत्व। म्यामित्व।

ईश सखा-सज्ञा पु० कुचेर। घनपति।

ईशा-सज्ञा पु० ऐश्वर्य ।

सज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

ईशान-सज्ञा पु० [ स्त्री० ईशानी ] १ अधि-  
पति । २ महादेव । ३ स्यारह की सरया ।

४ स्यारह रत्नों में से एक । ५ पूर्य और

उत्तर के बीच का कोण । ६ शमी-वृक्ष ।

७ शिव की अष्टविध मूर्तियों के अन्तर्गत

पूर्व मूर्ति । ८ विष्णु । ९ दीप्ति ।

ईशान कोण-सज्ञा पु० उत्तर-पूर्व के मध्य का  
कोण ।

ईशानी-सज्ञा स्त्री० १ दुर्गा । भगवती ।

ईश्वरी । २ शमी-वृक्ष ।

ईशिता-सज्ञा स्त्री० सिद्धि-विक्षेप जिससे  
साधक सब पर शासन कर सकता है ।  
वि० प्रधानता । महत्त्व ।

ईशित्व-सज्ञा पु० दे० "ईशिता" । सिद्धि-  
विशेष । प्रभुत्व । आधिपत्य ।

ईश्वर-सज्ञा पु० [ स्त्री० ईश्वरी ] १ प्रभु ।  
अधिपति । स्वामी । २ भगवान् । केश,  
वर्म, विपाक और आशय से पूर्य पुरुष-  
विशेष । परमेश्वर । ३ समय । ४ शिव । ५

धनी । राजा । ६ पति । ७ स्यारहवीं मर्यादा ।

ईश्वरकृत-सज्ञा पु० ईश्वर-रचित ।

ईश्वरता-सज्ञा स्त्री० ईश्वर का गुण । धर्म या

भाव । ईश्वरपन । प्रभुता ।

ईश्वर-निषेध-सज्ञा पु० नास्तिकता ।

ईश्वर निष्ठ-वि० ईश्वरभक्त । ईश्वर परायण ।

आमित्र ।

ईश्वर प्रणिधान-सज्ञा पु० ईश्वर में अत्यंत

श्रद्धा और भक्ति । योगशास्त्र के पाँच

नियमों में से अष्टम ।

ईश्वर साधन-सज्ञा पु० १ मुक्ति-साधन । २

योग-साधन ।

ईश्वरा-सज्ञा स्त्री० दुर्गा । लक्ष्मी । सरस्वती ।

आदि-शक्ति ।

ईश्वराराधन-सज्ञा पु० परमेश्वर की उपासना ।

ईश्वर-सेवा ।

ईश्वरी-सज्ञा स्त्री० परदेवता । दुर्गा । भगवती ।

आशाशक्ति । महाराणी ।

ईश्वरीय-वि० १ ईश्वर का । २ ईश्वर-

सम्बन्धी । ३ देवी ।

ईश्वरीपासक-सज्ञा पु० परमेश्वर की आराधना  
करनेवाला । आम्त्रिय ।

ईश्वरोपासना-सज्ञा स्त्री० परमेश्वर का भजन ।

ईश्वर की आराधना ।

ईषण-सज्ञा पु० १ क्षेपण । दृष्टि । २ नेत्र ।

ईषणा-सज्ञा स्त्री० शत्रुता । वासना । चाह ।

उच्छा ।

ईषत्-वि० कुछ । थोड़ा । अल्प । किंचित् ।

ईषत्-वर-सज्ञा पु० अल्प । किंचित् । उच्छा ।

ईषत्-पाण्डु-सज्ञा पु० धूम्र वर्ण ।

ईषत्-रमत-सज्ञा पु० १ गहिरा वर्ण । २

अव्यक्त राग ।

ईषत्-शक्र-वि० थोड़ा टेढ़ा ।

ईषत्-मृष्ट-सज्ञा पु० वह वर्ण जिससे उच्चारण  
में ताल, मूर्द्धा और दंत की जिह्वा तथा

दाँत आदि की वम स्पर्श करता है । ('य',  
'र', 'ल', 'व' ईषत्-मृष्ट वर्ण हैं ।)

(व्याकरण) ।

ईषत्-हास-सज्ञा पु० किंचित् हास्य । अल्प

मुख-विकास । स्मित । मुस्कान ।

ईषत्-वि० दे० "ईषत्" । अल्प ।

ईषत्-क्रि० स० क्षेपण ।

ईषता\*-सज्ञा स्त्री० प्रबल इच्छा ।

ईषा\*-सज्ञा पु० दे० "ईषा" ।

ईषान\*-सज्ञा पु० ईशान कोण ।

ईषाबगोल-सज्ञा पु० एक प्रकार की देवी

दे० "ईषाबगोल" ।

ईषार\*-सज्ञा पु० ऐश्वर्य ।

ईषारगोल-सज्ञा पु० दे० "ईषाबगोल" ।

ईषवी-वि० [ पा० ] ईसा से मकर रहनेवाला ।

यी०—ईषवी सन् । ईसा मसीह के जन्म

काल से चला हुआ सन् । अंगरेजी वर्ष ।

ईसा-सज्ञा पु० [ अ० ] ईसा मसीह जिन्होंने

ईसाई धर्म चलाया । ये मरूदी जाति में

फिरोस्तीन के नाजरथ नामक गाँव में

पैदा हुए थे । ईसवी सन् इन्हीं के जन्म से

चलाया गया है ।

ईसाई-वि० [ फा० ] जो ईसा को माने

और उनके बताए धर्म पर चले ।

ईसवी-वि० ईसा के जन्मकाल से आरम्भ हुआ

सन् ।

हृग-सज्ञा पु० कवि (डिगल भाषा में) ।  
 हृग-सज्ञा स्त्री० [वि० ईहित] १. यत्न ।  
 चेष्टा । उपाय । उद्योग । २. बाछा । डच्छा ।  
 ३. लालच । लोभ । प्रार्थना ।  
 ईहामृग-सज्ञा पु० १. रूपक का भेद-विशेष,

जिसमें चार अंक होते हैं । २. तृष्णा-मृग ।  
 ३. कुत्तो के समान छोटा घूसर वर्ण का  
 जन्तु । मृग । ४. भेड़िया ।  
 ईहावक-सज्ञा पु० लकड़बग्घा ।  
 ईहित-वि० इच्छित । वांछित ।

## उ

उ-हिंदी वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर । इसका  
 उच्चारण-स्थान ओष्ठ है ।  
 सज्ञा पु० १. बह्मा । प्रजापति । २. शिव ।  
 ३. नर ।  
 \*अव्य० भूि० १. सर्वोपन । रोपोक्ति ।  
 नियोग । पादपूरण । प्रश्न । अशोकार ।  
 २. क्षीण स्वर से उत्तर देना ।  
 उअना\*-क्रि० अ० दे० "उगना" । उदय होना ।  
 उअहि-क्रि० अ० उगते हैं । उदय होते हैं ।  
 निकलते हैं ।  
 उआ-वि० उदय हुआ ।  
 उआना\*-क्रि० स० दे० "उगाना" ।  
 \*क्रि० स० किसी के मारने के लिए हाथ  
 या हथियार उठाना ।  
 उअण-वि० जो अण से मुक्त हो गया हो ।  
 अणमुक्त । कर्ज से फारकती पाना ।  
 उए-क्रि० अ० उगे । निकले । उदय हुए । देख  
 पड़े । प्रकाशित हुए ।  
 उ-अव्य० एक प्राय अव्यय शब्द जो प्रश्न,  
 अवज्ञा या क्रोध सूचित करने के लिए  
 व्यवहृत होता है ।  
 उंगली-सज्ञा स्त्री० अँगुली । हथेली के ऊपरी  
 सिरे से निक्कले हुए पाँच अव्यय जो मिडी  
 के आकार के होते हैं । ये वस्तुओं को पकड़ते  
 हैं और इनके सिरो पर स्पर्शज्ञान की  
 शक्ति होती है । उँगलियों के नाम वमश  
 अँगूठा, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और  
 वनिष्ठिका हैं ।  
 मुहा०-(किसी की ओर) उंगली उठाना=  
 (विमो का) लोभा की निंदा का पात्र  
 होना । बदनाम होना । (किसी की ओर)  
 उंगरी उठाना=१. दोषी बनाना । निंदा  
 का लक्ष्य बनाना । बदनामी करना । २. हानि

पहुँचाने की चेष्टा करना । टेंढी नजर  
 से देखना । उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना=  
 थोड़ा-सा बढ़ावा पाकर अधिक प्राप्ति  
 के लिए आगे बढ़ना । उँगलियों पर नचाना=  
 १. मनचाहा कराना । २. अपनी इच्छा  
 के अनुसार ले चलना । कानो में उँगली  
 देना=किसी बात से उदासीन होकर उसकी  
 चर्चा से बचना । पाँचो उँगलियाँ धी में  
 होना=लाभ ही लाभ होना ।  
 उँघाई-सज्ञा स्त्री० दे० "ऊँघ", "औँघाई" ।  
 उचन-सज्ञा स्त्री० अदवान । अदवायन । खाट  
 के बूने हुए भाग को कसकर तानने की रस्सी ।  
 उचना-क्रि० स० अदवायन करना ।  
 उँचाना\*-क्रि० स० उठाना । ऊँचा करना ।  
 उँचाव\*†-सज्ञा पु० उँचाई ।  
 उँचास\*†-सज्ञा पु० दे० "उँचाई" ।  
 उछ-सज्ञा स्त्री० सीला बीनना । खेतिहर ने  
 ले जाने के बाद खेत में पड़े हुए अन्न के  
 दानों को खाने के लिए बीनना या उठाना ।  
 उछवृत्ति-सज्ञा स्त्री० खेत में गिरे हुए दानों  
 को बीनकर जीवन-निर्वाह करने का काम ।  
 उछशिल-सज्ञा पु० खेत में त्यक्त अन्न का  
 सग्रह ।  
 उछशील-वि० १. उछजीवी उछवृत्ति से  
 जीविका निर्वाह करनेवाला । अति सामान्य  
 कर्म में जीविका निर्वाह करनेवाला । २.  
 मृनि । ऋषि ।  
 उछित-वि० त्यक्त । वंशित ।  
 उछलित-वि० छोड़ा हुआ । डाला हुआ ।  
 उछलना-क्रि० स० डालना । तरल वस्तु को  
 दूसरे बर्तन में डालना । तरल वस्तु को  
 फेंकना या गिराना ।  
 उदुर-सज्ञा पु० चूरा ।

उह-अथ० [ अनु० ] १. कराहने या शब्द ।  
धूना या लापरवाही-मूचक शब्द । २. वेदना-  
मूचक शब्द । ३. अस्वीकृति या इकार  
कारन का अर्थान् नकारात्मक शब्द ।

उरुचन-सज्ञा पु० मुचकुद का फूल ।

उकचना\*-क्रि० अ० १. उखटना । उचड़ना ।  
अलग होना । पत्तों से अलग होना । २. उठ  
भागना ।

उकटना-क्रि० स० दे० १. "उघटना" ।  
२. गटी हुई वस्तु निकालना । ३. भेद करना ।  
४. बार-बार कहना ।

उकटा-वि० [ स्त्री० उघटी ] दूसरों पर  
अपना आभार, एहसान या कृतज्ञता लादने-  
वाला । उकटनेवाला । सज्ञा पु० किसी का  
अपराध या अपना उपकार जताना ।

यौ०—उकटा पुरान=गर्द-बीती और भूली  
हुई वानों का विस्तारपूर्वक कथन ।

उकठना-क्रि० अ० सूखकर कड़ा या टेढ़ा होना  
या ऐंठ जाना । सूखना ।

उकठा-वि० सूखकर ऐंठा हुआ । शुष्क । सूखा ।

उकठि-वि० १. उटग कर । सहारा लेकर । २.  
ऊटपटांग । ३. विगड़ी हुई लफड़ी ।

उकड़-सज्ञा पु० घुटने ऊपर की ओर मोड़कर  
तलबों या पंजों के बल बैठने की एक मुद्रा ।  
पाँव भर बैठना ।

उकताना-क्रि० अ० १. आकुल होना । ऊबना ।

२. किसी वस्तु को सुनते-सुनते या देखते-  
देखते या एक ही काम को बहुत देर तक  
बराबर करते रहने से मच में उस कार्य  
या वस्तु के प्रति जो विराग की भावना  
उत्पन्न हो जाती है । ३. जल्दी मचाना ।

उकतारना-क्रि० स० १. संभालना । २. पक्ष  
लेना ।

उकनाल-सज्ञा पु० १. उकसाऊ । २. प्रवर्तक ।

उकति\*-सज्ञा स्त्री० दे० "उक्ति" ।

उकलना-क्रि० अ० १. उचड़ना । उषड़ना ।

लिपटी हुई चीज का खुलना । २. उबलना ।  
खलबलाना । ऊपर उठना ।

उकलाई-सज्ञा स्त्री० कं या उलटी करने की  
इच्छा । जी मतलाना । मचली ।

उकलाना-क्रि० अ० कं करना । उलटी करना ।

उकथ-सज्ञा पु० चर्मरोग-विशेष जिममें  
बहुत छोटे-छोटे रामदाने के आकार के  
दाने निकल आते हैं, और उनमें खुजली  
होती है और जिममें एक प्रकार का पानी  
या चंप बहता है ।

उकसाना-क्रि० अ० १. उठान । उभरना । ऊपर  
को उठाना । २. अकुण्ठित होना । निकलना ।  
३. चढ़ना । ४. उघटना ।

उकसति\*-सज्ञा स्त्री० उठान । उभाड़ । उठने  
की क्रिया या भाव ।

उकसाहि-क्रि० अ० ऊपर उठने या निकलते  
हैं । उचकते हैं ।

उकसाना-क्रि० म० १. उभाड़ना । उत्तेजित  
करना । ऊपर को उठाना । २. दम देना ।

३ दीपक की बत्ती आगे या ऊपर खसकाना,  
जिसमें उसका जलना बंद न हो । ४.  
उठा देना । ५. अलग कर देना ।

उकसाया-सज्ञा पु० उत्साह । बड़ाया ।

उकसाहट-सज्ञा स्त्री० उकसाने की क्रिया  
या भाव । उत्तेजना ।

उकसाहो-वि० [ स्त्री० उकसीहो ] उभड़ता  
हुआ । उठता हुआ ।

उकाव-सज्ञा पु० [ अ० ] बड़ी जाति का  
एक बाज । पक्षी-विशेष जो आकार में बड़ा  
और हिंसक स्वभाव का होता है । यह  
बहुत ऊँचा उड़ता है और पर्वतों की ऊँची  
चट्टानों के पार्श्व में अपना घोंसला बनाता है ।

उकालना\*-क्रि० स० दे० "उकेलना" ।  
उबालना ।

उकासना\*-क्रि० स० १ उभाड़ना । २.  
खोलना । उघारना । ३. खोदकर ऊपर  
फेंकना ।

उकासी-सज्ञा स्त्री० १. बाहर निकालना ।  
पर्दा आदि हट जाने से सामने आना । २.  
अवकाश । छुट्टी ।

उकेलना-क्रि० स० १ उचाड़ना । वह या पत्तों  
से खींचकर अलग करना । २. उषड़ना ।  
लिपटी हुई चीज को परत घुमाकर खोलना  
या अलग करना । ३. खोलना ।

उकीना-सज्ञा पु० दोहद । गर्भवती स्त्री की  
विशिष्ट खान-पान, श्रमग-आदि की इच्छा ।

वन्-वि० १ कहा हुआ। उद्रित। उल्लेपित।  
आर्यात। अनिहित। २ शब्द। वाक्य।  
उक्ति-सज्ञा स्त्री० १ वचन। कथन। २  
वाक्य। भाषण। ३ उपज।

उखडना-क्रि० अ० १ खुदना। किसी वस्तु  
का अपनी जगह से अलग हो जाना या  
हटना या गिर जाना। जड़-सहित अलग होना  
या गिरना। २ किसी पद या स्थान से  
अलग होना। ३ जोड़ से हट जाना।  
४ गति एक रस न रहना। (घोड़े के  
विषय में) चाल में भेद पड़ना। ५ संगीत  
में बेताल और वेसुर होना। ६ तितर-  
वितर हो जाना। एक न रहना। ७  
अलग होना। हटना। ८ टूट जाना।  
९ नाश होना।

मुहा०-उखड़ी उखड़ी बातें करना= उदा-  
सीन भाव से बात करना। विराम-सूचक  
बात करना। पैर या पाँव उखडना=  
ठहर न सकना। लड़ने के समय सामने  
से हट या भाग जाना। मेला उखडना=  
मेले का तितर-वितर हो जाना। बात  
उखडना=साख नष्ट हो जाना। उखड  
जाना=भाग या हट जाना। हड्डी  
उखडना=हड्डी का स्थान से हट जाना।  
उखडवाना-क्रि० स० किसी को उखाड़ने  
में लगाना।

उखडा-वि० उजडा। नष्ट हुआ। पुष्क।  
उखडाना-क्रि० स० उखडवाना। उजडवाना।  
उखम\*-सज्ञा पु० दे० "ऊष्म"। गरमी।  
ताप। उष्णता।

उखमन\*-सज्ञा पु० १ दे० "ऊष्मज"।  
२ ऊष्मज जीव। छोटे छोटे कीड़े जो  
गरमी के कारण उत्पन्न हों। खुजलाहट।  
उखर-सज्ञा पु० ईश्वर को जाने के बाद हल  
पूजने का विधान।

उखरना\*-क्रि० अ० १ दे० "उखडना"।  
२ ठहर गाना। ३ चूना।  
उखल या उखली-सज्ञा स्त्री० ओखली।  
पत्थर या लकड़ी का पात्र जिसमें भूमी-  
वाले अनाज को डालकर उसकी भूसी  
मूनग में मूटकर अलग की जाती है। काँडी।

उखा\*-सज्ञा स्त्री० "वटलोई"। डेगची।

उखाड-सज्ञा पु० १ उत्पाटन। उखाडने  
को किया। २ तोड़। वह व्यक्ति जिससे  
विपक्षी के किसी दाँव को बेकार कर  
दिया जाय। ३ उत्तर।

उखाड-पखाड-नष्ट-भ्रष्ट (क्रिया) तहस-नहस  
करना।

उखाडना-क्रि० स० १ किसी गड़ी या जमी  
हुई वस्तु को अपने स्थान से अलग कर  
देना। २ अग को जोड़ से अलग करना।  
३ भड़काना। ४ तितर-वितर कर देना।  
५ टालना। हटाना। अलग करना। ६  
ध्वस्त करना। नष्ट करना।

मुहा०-गड़े मुँह उखाडना=पुरानी भूली हुई  
बातों की चर्चा छेड़ना। पैर उखाड देना=  
स्थान से हटा देना। भगाना। हटाना।  
उखाडू-वि० उखाडनेवाला। चुगली करने  
वाला।

उखारना\*-क्रि० स० दे० "उखाडना"।  
उखारी-सज्ञा स्त्री० गने या ईश्वर का खेत।  
उखालिया-सज्ञा पु० बहुत सबेरे का भोजन।  
सराही।

उखेलना\*-क्रि० स० लिखना। खीचना  
(तस्वीर)।

उगटना\*-क्रि० अ० १ बार-बार कहना।  
उपटना। २ ताना मारना।

उगत-सज्ञा पु० उपजना। उद्भव। जन्म।  
उत्पत्ति।

मुहा०-उगते ही जलना=प्रारंभ समय में ही  
कार्य का नाश होना।

उगना-क्रि० अ० १ उदय होना। निकलना।  
ऊपर उठकर दृष्टि में आना। (सूर्य-चंद्र  
आदि ग्रह) २ अकुर निकलना। अँसुआ  
फूटना। अकुरित होना। ३ उत्पन्न होना।  
उपजना। ४ बढ़ना।

उगरना\*-क्रि० अ० १ भरे हुए वा पाली  
होना। २ भरा हुआ पानी आदि निकलना।  
उगलना-क्रि० स० १ धाई हुई वस्तु को मुँह से  
बाहर निकालना। २ मुँह में भर दई वस्तु  
को थूक देना। ३ हल्ले हुए माल का लकड़ी  
में लोटा देना। ४ गुप्त बात प्रादुर्भाव देना।

महा० १. आग उगलना—बड़े जोर से श्रोत्र प्रकट करना। २. बहुत तेज धूप और उत्पत्ता उत्ताप होना। जहर उगलना—बहुत बचन बहना। निंदा या बुराई करना। ऐसी बात मुँह से निकालना जो दूसरे को बहुत बुरी लगे या हानि पहुँचावे।

उगलवाना—क्रि० सं० दे० “उगलाना”।

उगलाना—क्रि० सं० १. दोष को स्वीकार कराना। २. हड़पे हुए माल को निकालवाना।

३. मुँह से निकलवाना।

उगसाना\*—क्रि० सं० दे० “उकसाना”।

उगसारना\*—क्रि० सं० कहना। प्रकट करना। बयान करना।

उगाना—क्रि० सं० १. अन्न या और किसी वनस्पति को उत्पन्न या पैदा करना। किसी चीज को बोकुर सिचाई आदि से उसके अकुर का निकालना। २. प्रकट करना। प्रत्यक्ष करना। सामने या ऊपर लाना।

उगार, उगाल\*—सज्ञा पु० १. धूक। खसार। पीक। २. सीढ़ी।

उगालदान—गज्ञा पु० पीकदान। धूकने का बरतन। युवना।

उगाहना—क्रि० सं० १. वसूल करना। २. नियमित कर, शुल्क या दक्षिणा आदि को निर्धारित समय या उसके बाद लोगों से लेना।

उगाही—सज्ञा स्त्री० १. वसूली। २. स्वया-पंसा अथवा अन्न आदि को वसूल करने का काम। इस प्रकार एकत्रित किया हुआ धन या अन्न।

उगलना या उगिलना—क्रि० सं० कं बरना। उलटी करना। स्वीकार करना।

उगिलवाना या उगिलाना\*—क्रि० सं० कं कराना। किसी गुप्त बात को प्रकट कराना, अपराध स्वीकार करवाना।

उगाह—सज्ञा स्त्री० आर्या-सूद का भेद-विशेष।

उग्र—वि० शक्तिशाली। भयकर। उत्पट। प्रचंड। तीक्ष्ण।

सज्ञा पु० १. महादेव। शिव की वायु-मूर्ति। २. सूर्य। ३. वत्सनाग या दच्छनाग।

जहर। ४. केरल देश। ५. क्षत्रिय पिता और मृदा माता से उत्पन्न एक सकर-जाति। ६. प्रीथी। ७. कठिन।

उग्रगन्ध—गज्ञा पु० १. लहसुन। २. हींग। ३. कायफट।

वि० उत्पट गन्ध-युक्त। तीक्ष्ण गन्ध। उग्रचण्डा—गज्ञा स्त्री० भगवती की मूर्ति-विशेष।

उग्रता—गज्ञा स्त्री० प्रचंडता। कठोरता। भयंकरता।

उग्रतारा—सज्ञा स्त्री० भगवती की मूर्ति-विशेष। मातंगिनी।

उग्रतेन—गज्ञा पु० महुवशी राजा। आहुन का पुत्र और कंस का पिता। मयुग का राजा।

उग्रस्वभाव—वि० कठोर-चित्त। कठिन-हृदय।

उग्रा—सज्ञा स्त्री० अजवायन। अजमोदा। वध। नकछिकनी।

उघटना—क्रि० अ० १. दबी या भूरी हुई बात की फिर से चर्चा चलाना। २. अपने बहुत पुराने और भूले हुए उपकार या दूसरे के पुराने अपराध को बार-बार कहना। ३. किसी की निंदा या ताने के रूप में बुराई करते-करते उसके पूर्वजों की भी बुराई करने लगना। ४. ताल देना। सम पर तान तोड़ना।

उघटवाना—क्रि० सं० एहसान जताना। ताना देना। एहसान को दूसरे के द्वारा कहलाना।

उघडा—वि० उघटनेवाला। हमारे पर किए हुए उपकार को बार-बार कहनेवाला। जो एहसान जतावे।

सज्ञा पु० उघटने का काम।

उघटा-येची—सज्ञा स्त्री० १. एहसान। २. उलाहना देना।

उघड़ना—क्रि० अ० १. पदी हटना। खुलना। आवरण का हटना। २. नंगा होना। ३. प्रकाशित होना। प्रकट होना। न्यक्त होना। ४. भटा फूटना।

उधराहि—क्रि० अ० खुलते हैं। खुल जाते हैं। स्पष्ट हो जाते हैं। नंगे हो जाते हैं।

उधरारा\*†—वि० [स्त्री० उधरारी] खुला हुआ।

उधरे-क्रि० अ० खुले। प्रकट हुए। प्रकाशित हुए। खुले हुए।

उधाड़ना\*-क्रि० स० १. खोलना। ऊपर की चादर या आवरण को हटाना। २. आवरण-रहित करना। (आवृत के संबंध में)। किसी वस्तु या बात का प्रकट करना या खोलना। ३. प्रकट करना। प्रकाशित करना। ४. तंग करना। ५. मंडा फोड़ना। गुप्त बात को खोलना।

उधाड़ा-वि० खुला हुआ। जिसके ऊपर कोई आवरण न हो।

उधाड़ू-संज्ञा पुं० प्रकाशक। उधाड़नहारा।

उधारना\*-क्रि० स० दे० "उपाड़ना"।

उधारी-वि० खुली हुई। तंगी। स्पष्ट। प्रकट।

उच-अव्य० उच्च। उन्नत। बड़ा।

उचकन-संज्ञा पुं० ईंट-पत्थर, काठ आदि का वह टुकड़ा जिसे किसी चीज को ऊँचा करने के लिए उसके नीचे रख देते हैं।

उचकना-क्रि० अ० १. ऊपर उठना। उभड़ना। कूदना। उछलना। २. पंजों के बल पंड़ी उठाकर खड़ा होना, जिससे इस मुद्रा में खड़ा होनेवाला व्यक्ति कुछ ऊँचा हो जाय। क्रि० स० लपककर छीनना। उछलकर लेना।

उचकाना-क्रि० स० ऊपर करना। उठाना। उचक्का-संज्ञा पुं० [स्त्री० उचक्की] १. ठग। गैठकटा। उचककर चीज छीन या उठाकर भागनेवाला व्यक्ति। २. बदमाश। ३. चोर। ४. छली।

उचटना-क्रि० अ० १. उचड़ना। जमी हुई वस्तु का उखड़ना। जमा या चिपका न रहना। २. छूटना। अलग होना। ३. भड़कना। विचकना। ४. विरक्त होना। उदास होना। ५. विछलना। ६. बिखरना। ७. (मन) न लगना। ध्यान न लगना। उचटाना\*-क्रि० स० १. नीचना। उचाड़ना। २. छुड़ाना। अलग करना। ३. उदासीन करना। ४. भड़काना।

उचड़ना-क्रि० अ० १. जाना। भागना। किसी स्थान से हटना या अलग होना। २. लगी हुई चीज का अलग होना।

उचना\*-क्रि० अ० १. उचकना। ऊँचा होना। २. उठना।

क्रि० स० उठाना। ऊँचा करना।

उचरंग-संज्ञा पुं० पतंग। पतिया। भुतगा। उछलने, फुदकने या उड़नेवाला।

उचरना-क्रि० स० उच्चारण करना। कहना। बोलना। (धार्मिक ग्रंथों का) पाठ करना।

क्रि० अ० मुँह से शब्द निकलना।

\*-क्रि० अ० दे० "उचड़ना"। धीरे-धीरे चलना। शकुन-विशेष।

उचलना-क्रि० स० विलगना। अलग करना।

उचा-क्रि० वि० उठाय। ऊँचा कर। उभार कर।

उचाट-संज्ञा पुं० उदासीनता। किसी काम या वस्तु से चित्त उखड़ जाना। मन का न लगना। विरक्ति।

उचाटन-संज्ञा पुं० दे० "उच्चाटन"।

उचाटना-क्रि० स० जी हटाना। विरक्त करना। अलग करना। उच्चाटन करना।

उचाटो\*-संज्ञा स्त्री० विरक्ति। उदासीनता। मन न लगने की अवस्था।

उचाद-वि० १. उखड़ा हुआ। उचरा। हटा। उचटा हुआ। २. व्यर्थ चित्त।

उचाड़ना-क्रि० स० १. उखाड़ना। २. नीचना। लगी या सटी हुई चीजों को एक दूसरे से अलग करना।

उचाना\*†-क्रि० स० १. उठाना। २. नीचे से ऊपर को उठाना। ऊँचा करना।

उचापत-संज्ञा पुं० दूकानदार के यहाँ ने चीज बराबर उधार लेते रहना।

उचार\*-संज्ञा पुं० दे० "उच्चार"।

उचारना\*-क्रि० स० मुँह से शब्द निकालना। कहना। उच्चारण करना।

क्रि० स० दे० "उचाड़ना"।

उचित-वि० (वह दी हुई रकम) जिसका हिसाब बाद में या खर्च होने पर मिलने को हो।

उचित-वि० [संज्ञा औचित्य] १. जो ठीक हो। योग्य। मुतासिब। धर्म, न्याय या नियमानुकूल। २. न्यस्त। विदित। ३. परिचित। ४. न्याय। ५. स्वीकार्य।

उचेलना—क्रि० स० दे० "उचेलना"। उधे-  
रना। अलग करना।

उचोट—सज्ञा पु० टोकर। ठेस। चोट।

उचोही\*—वि० [स्त्री० उचोही] जो ऊँचा  
उठा हो।

उच्च—वि० १ ऊँचा। २ बड़ा। श्रेष्ठ। उत्तम।  
३ ऊर्ध्व। प्राश। तुंग। उत्तुंग। उन्मिष्ट।  
ऊँचा। गभीर।

उच्चतम—वि० जो सबसे ऊँचा हो। सबसे  
श्रेष्ठ।

उच्चतर—सज्ञा पु० नारिकेल वृक्ष।

वि०—ऊँचा वृक्ष।

उच्चता—सज्ञा स्त्री० १ बढप्पन। २ उँचाई।  
३ श्रेष्ठता। उत्तमता। बढाई। ४ ऊँचा  
होने का गुण।

उच्चभाषी—वि० जोर से बोलनेवाला।  
कटुवक्ता। उग्रवक्ता।

उच्चमता—वि० महाशय। सबन्त करण। ऊँचे  
और पवित्र विचार का।

उच्चरण—सज्ञा पु० [वि० उच्चरणीय, उच्च-  
रित] कठ, ताल, जिह्वा आदि मुख के  
भागों से शब्द निकलना।

उच्चरता—क्रि० स० बोलना। उच्चारण  
करना।

उच्चरित—वि० जिसका उच्चारण हुआ हो।  
जिसका उल्लेख या कथन हुआ हो।

उच्च शिक्षा—सज्ञा स्त्री० उत्तम शिक्षा।

उच्चस्वर—सज्ञा पु० बड़ा शब्द। दूरव्यापी  
स्वर।

उच्चाकाशा—सज्ञा स्त्री० बड़ी या ऊँची  
अभिलाषा। महत्त्वाकांक्षा।

उच्चाट—सज्ञा पु० १ अनमनापन। उदात्त।  
२ अस्ति। जिसके द्वारा मन उखड़ जाय।  
उत्साहने या नोचने की क्रिया। ३ एक  
तांत्रिक प्रयोग।

उच्चाटन—सज्ञा [वि० उच्चाटनीय, उच्चाटित]  
१ विस्फेपण। एक दूसरे से सटी हुई  
चीजा को अलग करना। २ नोचना।  
उठाटना। ३ किसी के मन को वही से  
हटाना। (तन के छ प्रयोगों में से एक)।  
४ उदासीनता। अनमनापन।

उच्चार—सज्ञा पु० १ बोलना। कथन। मुँह  
से शब्द निकालना। किसी कर्मकांड में मर्मा  
या इशारे का उच्च स्वर में पाठ। यथा—  
शास्त्रीच्चार। २ विष्ठा। मल। मूत्र।  
पुरीष।

उच्चारण—सज्ञा पु० [वि० उच्चारणीय,  
उच्चारित, उच्चार्य, उच्चार्यमाण] १  
कठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि मुख के अंगों के  
द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और स्पष्ट ध्वनि  
निकालना। मुँह से सार्थक शब्द निकालना।  
शब्द-प्रयोग। २ कर्णों या शब्दों का बोलना।  
३ कथन। उल्लेख।

उच्चारणोप—वि० कथनीय। उच्चारण करने  
योग्य।

उच्चारता\*—क्रि० स० (शब्द) बोलना।  
कहना।

उच्चारित—वि० कथित। जिसका उच्चारण  
किया गया हो। उक्त। अभिहित।

उच्चार्य—वि० कहने लायक। उच्चारण के  
योग्य।

उच्चाशा—सज्ञा स्त्री० बड़ी या ऊँची आशा।  
महत्त्वाकांक्षा।

उर्ध्व—अव्य० १ उर्ध्व। ऊपर। ऊँचा। २  
बड़ा।

उर्ध्वशब्द—सज्ञा पु० उच्च स्वर। चोत्कार।  
चिल्लाहट।

उर्ध्व श्रवा—सज्ञा पु० सड़े वान और सात मुँह  
का, समुद्र-मथन के समय निकला हुआ,  
सफेद घाड़ा।

वि० बहुरा। ऊँचा सुननेवाला।

उच्छन्न—वि० लुप्त। दबा हुआ। गुप्त। छिपा  
हुआ। प्रच्छन्न।

उच्छरता—वि० अ० उच्छरता। निकलना (जैसे  
पिप्ती उच्छरी है)।

उच्छलन—सज्ञा पु० [वि० उच्छलित] ऊपर  
उठने या उछलन की क्रिया। उछाल।

उच्छलता\*—वि० अ० दे० "उछलना"।  
उछाल मारना।

उच्छव\*—सज्ञा पु० द० "उत्सव"।

उच्छाव\*—सज्ञा पु० दे० "उत्साह"। उमंग।  
धूमधाम।

उच्छास-सज्ञा पु० १ ज्वास। उाँस। २ आशा। ३ प्रवरण।

उच्छाह\*—सज्ञा पु० दे० "उछाह"। उत्साह। चित्त की उमग।

उच्छिन्न या उच्छिन्न-वि० १ छिन्न-भिन्न। २ उखाड़ा हुआ। ३ टूटा हुआ। लडित। कटा हुआ। ४ नष्ट।

उच्छिन्नता—सज्ञा स्त्री० नाश। खण्डन।

उच्छिष्ट-वि० १ जूठा। किसी के खाने से बचा हुआ। २ त्यक्त। ३ दूसरे के द्वारा व्यवहृत।

सज्ञा पु० १ जूठी वस्तु। २ सहद।

उच्छिष्ट भोजन—सज्ञा पु० जूठा भोजन। किसी के खाने से बचा हुआ खाना।

उच्छू—सज्ञा स्त्री० १ साँसो-विशेष जो, गले में पानी-आदि रुकने से होने लगती है। २ सुनसुनी।

उच्छृङ्खल-वि० १ स्वेच्छाचारी। निरकुश। मनमाना काम करनेवाला। २ क्रमबिहीन। ३ अवाध। अनियमित। ४ अनगल। अडगड। ५ श्रृंखला-हीन, छूटा, टुला (हाथी आदि)।

उच्छेद, उच्छेदन—सज्ञा पु० १ उखाड़-पछाड़। खंडन। उन्मूलन। उत्पादन। २ विनाश।

उच्छो—सज्ञा पु० उच्छव। प्रसन्नता का प्रकाश। आनन्द। उछाह। यज्ञ। पूजा। अर्चा।

उच्छ्राय—सज्ञा पु० पवत, वृक्ष-आदि की उच्चता। उच्च परिमाण।

उच्छ्रित-वि० उत्तप्त। उच्च। ऊँचा। बड़ा हुआ।

उच्छ्वसित-वि० १ सास-द्वारा निवाला हुआ। २ प्रफुल्लित। ३ विकसित। ४ फूला या उठा हुआ। ५ जीवित। ६ साँस। ७ ढीला। वयन-हीन। ग्रथि-हीन। ८ अत्यधिक। ९ विभक्त। बँटा हुआ।

उच्छ्वास—सज्ञा पु० [वि० उच्छ्वसित, उच्छ्वासित, उच्छ्वासी] १ जोर से ली या निकाली हुई स्वास या साँस। २ उसास। ऊपर की खोबी हुई साँस।

३ मनोविगा के कारण ली हुई लजी मांस। ४ प्रवरण। परिच्छेद। ५ झरोखा। हवा-दान।

उछा\*—सज्ञा पु० १ उत्तम। कनिया। गोद। २ हृदय। अक्ल।

उछकना—क्रि० अ० नशा उतरना। सचेत होना।

उछरना\*—क्रि० अ० दे० "उछलना"।

उछल-कूद—सज्ञा स्त्री० १ खेल-कूद। २, चंचलता। अधीरता। हलचल। उपद्रव।

उछलना—क्रि० अ० १ कूदना। उछाल मारना।

२ वेग से झटके के साथ जल में डुपकी मारने या डूब जाने के बाद जल के ऊपर उठ आना। ३ बहुत प्रसन्न होना। ४ चिह्न पडना। उपटना।

रोग में दावा या चकत्ता या शीतला के चिह्नों का स्पष्ट दिखाई पडना। उमडना। ५ उतरना। तरना।

मुहा०—पित्त उछलना=अभिमान करना।

उछलवाना—क्रि० स० उछलने में लगाना। किसी वस्तु को ऊपर फेंकवाना।

उछलाना—क्रि० स० किसी वस्तु को ऊपर फेंकना या फेंकवाना।

उछाटना—क्रि० स० उचाटना। उदासीन या विरक्त करना।

\*क्रि० स० चुनना, छांटना।

उछाड़—सज्ञा पु० १ वमन। २ रह।

उछारना\*—क्रि० स० दे० "उछालना"।

उछाल—सज्ञा स्त्री० १ एकाएक ऊपर उठने की क्रिया। २ कुदान। चीकड़ी। फलाँग।

३ अधिकतम उँचाई जहाँ तक कोई वस्तु उछल कर पहुँची हो या पहुँच सकती हो।

४ उलटी। कै। ५ पानी का छोटा ६ दमाव (नीचे से)।

उछालना—क्रि० स० १ ऊपर फेंक कर लोकना। ऊपर की ओर फेंकना। उचकाना।

२ प्रकट या प्रकाशित करना। नदी या तालाब में हाथ से पानी का ऊपर था आस-पास फेंकना।

मुहा०—पगड़ी उछालना=अपमान, निंदा या उपहास करना।

उछाला—सज्ञा पु० १ उवाल। २ जोस।

३. कै। उलटी। ४. 'उछालने' की भूतकालिक प्रिया।  
 उछाह\*—सज्ञा पु० [वि० उछाही] १. उत्साह। २. उमग। उताह। हर्ष। ३. इच्छा, जिममें हर्ष हो और काम करने की प्रेरणा हो। ४. जैन लोगों की रथ-यात्रा।  
 उछाही\*—वि० उत्साही। उत्साहयुक्त। उत्सव या हर्ष मनानेवाला।  
 उछोतना\*—क्रि० स० नष्ट-भ्रष्ट करना। उखाड़ना।  
 उछोर\*—सज्ञा पु० १. अवकाश। २. स्थान। ३. छेद।  
 उजट—सज्ञा पु० झोपडा। तृणों से बना गृह।  
 उजड़—वि० उतावला। अप्रवीण। उच्छृ-  
 खल। चीगान। शून्य। पटपट। जनशून्य स्थान।  
 उजडना—क्रि० अ० [वि० उजाड] १ उखडना-पुखडना। नष्ट होना। ध्वस्त होना। २. तितर-बितर होना। गिर-पड जाना।  
 मुहा०—गाँव उजडना=जिसी स्थान में आबादी का न रहना। घर उजडना=घर के प्राणियों का मर जाना या कुपूतों का बाहुल्य होना। खेत उजडना=लगी लगाई खेती का नष्ट हो जाना।  
 उजड़वाना—क्रि० स० [प्र० रूप] जिसी को उजाडने में लगाना।  
 उजड़ा—वि० उजडा हुआ। विनष्ट। निकम्मा।  
 उजड़—वि० १ गँवार। मूल। ग्राम्य। असभ्य। अशिष्ट। २ उद्द। ३. निरकुश।  
 उजड़पन—सज्ञा पु० अशिष्टता। असभ्यता। उद्दता। बेंहूदापन। गँवारपन।  
 उजबक—सज्ञा पु० [तु०] १ तातारियों की जाति-विशेष। २ घास-विशेष।  
 वि० उजड़ड। मूल। जनारी।  
 उजयोर—सज्ञा पु० उजेल। प्रकाश। चाँदनी। रोशनी।  
 उजरत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ किराया। भाडा। २. मजदूरी।  
 उजरना\*—क्रि० अ० दे० "उजडना"।  
 उजरा\*—वि० दे० "उजला"।

उजराना\*—क्रि० स० नाफ करना या मरगना। धोना। मकेद करना। स्वच्छ करना।  
 वि० अ० मकेद या नाफ होना।  
 उजरे—क्रि० वि० उजडे। बीरान होने से नष्ट हुए। वि० नाफ। मकेद। उजले।  
 उजलत—संज्ञा स्त्री० [अ०] शीघ्रता। जल्दी।  
 उजलवाना—क्रि० स० गहने, बर्तन या अस्त्र आदि को नाफ करवा के उन्हें चमकवाना।  
 उजला—वि० [स्त्री० उजली] १. ध्वेत। सफेद। २. उज्ज्वल। स्वच्छ। नाफ। ३. निर्मल। शुद्ध।  
 उजधाना—क्रि० स० ढलवाना। उजालना।  
 उजागर—वि० [स्त्री० उजागरी] १. जग-मगाता हुआ। प्रकाशित। चमकीला। २. विख्यात। प्रसिद्ध। ३. यनस्वी।  
 उजाड़—सज्ञा पु० १. वह स्थान जो उजड़ गया है। खेडहर। २. सूती जगह। निर्जन स्थान। ३. बियावान। जगल।  
 वि० १. उच्छिन्न। गिरा-पडा। २. जो आबाद न हो। निर्जन।  
 उजाड़-खंड—अत्यन्त उजडी हुई अवस्था का स्थान।  
 उजाडना—क्रि० स० १. नष्ट करना। ध्वस्त करना। २. उच्छिन्न करना। चीपट या नष्ट करना। ३. निर्जन कर देना। ४. निर्दयतापूर्वक नष्ट करना।  
 उजान—संज्ञा पु० नदी का चढाव। भाटा का उट्टा—ग्वार।  
 उजारि—क्रि० वि० उजाडकर। नाश कचे। मिटाकर।  
 उजारी—संज्ञा स्त्री० १. नए अन्न के ढेर में से देवता के निमित्त अन्न निवालेना। २. शुक्ल-पक्ष की रात।  
 उजालना—क्रि० स० १. धातु की वस्तुओं को साफ करना। चमकाना। निखारना। २. प्रकट करना। प्रकाशित करना। ३. दीपक जलाना।  
 उजाला—संज्ञा पु० [स्त्री० उजाली] १. सूर्य-चन्द्रमा आदि ग्रहों के कारण उत्पन्न नैसर्गिक प्रकाश। चमक। २. अपने वश

में श्रेष्ठ व्यक्ति। वि० [स्त्री० उजली]  
प्रकाशवान्। 'अँवेरा' का उल्टा।  
मुहा०—उजाला होना=भोर होना। घर या  
वश का उजाला=वश की कीर्ति बढ़ाने-  
वाला।

उजाली—सज्ञा स्त्री० चाँदनी।

उजास—सज्ञा पु० १ चमक। २ शक्ति। ३  
उजाला। प्रकाश।

उजासना—क्रि० अ० प्रकाशित होना। चमकना।

क्रि० स० प्रकाशित करना। चमकाना।

उजियार\*—वि० दे० "उजाला"।

उजियार\*—सज्ञा पु० दे० "उजाला"।

उजियारना—क्रि० स० १ दीपक जलाना।

२ प्रकट या प्रकाशित करना।

उजियारा\*—सज्ञा पु० दे० "उजाला"। प्रकाश।  
चाँदनी।

उजियारी—सज्ञा स्त्री० चाँदनी। सफेदी।  
श्वेतता।

उजियाला—सज्ञा पु० दे० "उजाला"।

उजोता—वि० प्रकाशमान।

सज्ञा पु० प्रकाश।

उजीर\*—सज्ञा पु० दे० "बजीर"।

उजेर\*—सज्ञा पु० दे० "उजाला"।

उजेरा (ब्रज-उजेरो)—सज्ञा पु० उजाला।

उजेला—सज्ञा पु० चाँदनी। प्रकाश।

वि० प्रकाशवान् यथा उजेला पाख।

उज्जर\*—वि० दे० "उज्ज्वल"।

उज्जल—उज्ज्वल।

उज्जयिनी—सज्ञा स्त्री० उज्जैन। अवन्ती।  
मालवा देश की पुरानी राजधानी जो सिन्धु  
नदी के तट पर है और जिसकी गिनती  
राष्ट्रपुरिया में है।

उज्जैन—सज्ञा पु० "उज्जयिनी" का सक्षिप्त  
और प्रचलित रूप।

उज्ज—सज्ञा पु० [अ०] १ आपत्ति। २  
किसी बात का नियमानुसार विरोध करना  
या विरोध न वक्तव्य देना।

उज्जदारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी ऐसे  
ग्रामले में विरोध करना, जिसके विषय  
में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त  
की हो या प्राप्त करना चाहता हो। यादी

के वयन पर या न्यायाधीश के पूछने पर  
नियमानुसार मौखिक या लिखित विरोधी  
वक्तव्य देना। २ न्यायाधीश की किसी  
आज्ञा पर नियमानुसार आपत्ति।

उज्जम्भित—वि० प्रफुल्ल। विकसित। प्रस्फु-  
टित।

सज्ञा पु० चेष्टा। अन्वेषण।

उज्ज्वल—वि० [सज्ञा उज्ज्वलता] १ स्वच्छ।

शुभ्र। निर्मल। शुद्ध। २ प्रकाशमान।

३ वेदाङ्ग। ४ सफेद। सुन्दर। दीप्त।

५ सीना। ६ प्रेम। प्रेम का आवेग।

उज्ज्वलता—सज्ञा स्त्री० १ चमक। काति।

२ निर्मलता। ३ शुद्धता। ४ सफेदी।

उज्ज्वलन—सज्ञा पु० [वि० उज्ज्वलित]

१ प्रकाश। चमक। २ जलना। ३ स्वच्छ

करने का काम। चमकना। ४ उद्दीपन।

अग्नि। सीना।

उज्ज्वला—सज्ञा स्त्री० बारह अक्षरों की वृत्ति-  
विशेष। जगती छंद का एक भेद।

उशकना\*—क्रि० अ० छिपकर ताकना या  
देखना। ताकना। झाँकना।

उशकून—सज्ञा पु० ओट। ठेगान। उचकन।

उशरना—क्रि० अ० ऊपर की ओर उठना।

नीचे गिरना। रिसना।

उशलना—क्रि० स० १ उँडेलना। किसी ब्रह्म  
पदार्थ को ऊपर से गिराना। ढालना। २

रिक्त करना।

\*क्रि० अ० १ उमड़ना। २ बढ़ना।

उशिला—भूमी हुई सरसो जो उबटन के काम  
में आती है।

वि० कम गहरा। छिछला।

उटकन—वि० सकेत। इंगित। प्रसंग। प्रस्ताव।

उदकित—वि० सकेतित। चिह्नित। उल्लेखित।

उत्पापित।

उटगन—सज्ञा पु० एक घास-विशेष जिसका  
साग खाया जाता है। खोपटिया। सुसना।

गुठुवा। एक नदी का नाम।

उट—सज्ञा पु० तृण। तिनका। ऊँच। पत्ता।

उटग—सज्ञा पु० वह कपड़ा जो पहनने में

छोटा हो।

उटकना\*—क्रि० स० १ अनुमान करना। २

छिटपना। ३ छेड़ने पर विगडना या नूढ़ होना।

उटपवरलस-वि० अविवेचन। उठावला।

उटज-मज्ञा मु० पणंवाला। शोपडी। पत्तो ने बना पर।

उट्ठी-मज्ञा स्त्री० तेल में या लाग-टाँट में बुरी तरह हाँ मानना।

मुहा०-उट्ठी बोला=हाँ की म्बीवारोक्ति।

उठेगन-सज्ञा पु० १ आधार। आशय। आड। टेक। लवटी, बाँम या बल्ली, जो किसी वस्तु को सहारा देने के लिए लगाई जाय। २ बैठने में पीठ को सहारा देने वाली वस्तु।

उठेगना-क्रि० अ० १ टेक लेना। किसी वस्तु का शरीर को सहारा देना। २ आधा लेटना।

उठेगाना-क्रि० स० १ भिडाना। २ (विवाड) मेडना। विवाड लगाना या किसी वस्तु को खड़ा रखन के लिए उसमें किसी

अन्य वस्तु का सहारा या टेक देना।

उठना-क्रि० अ० १ लेटी हुई स्थिति से बैठी हुई स्थिति में, और बैठी हुई स्थिति से खड़ा होने की स्थिति में आना। ऊँचा होना। २ जागना। जाग जाना। नींद छोडना। ३ ऊँचे की ओर बढ़ना। ४ मर जाना। ५ खच हो जाना, जैसे रपया उठना। ६ किसी विचार या वस्तु (जैसे पीडा) का उत्पन्न या पैदा होना। ७ प्रकट होना। जैसे घटा या फोडा उठना। ८ स्पष्ट होना। जैसे अक्षर उठना। ९ बढ़ या समाप्त होना। जैसे किसी प्रथा, दूकान या हाट का उठना। १० जानबरो का जोडा खाने के योग्य अवस्था में आना। ११ मँदे में समीर तैयार होना। सडना। १२ किराए पर लग जाना। १३ खड़ा होना। प्रमत्त ऊँचा होना। १४ उद्यत या तैयार होना। १५ खड़ा होना।

मुहा०-हूँ उठना=तीव्र वेदना के साथ किसी का या किसी के अभाव का सहसा स्मरण। उठना-बैठना=साथ संग। उठते बैठते=दूर समय। उठनी जवानी=आरम्भिक अवस्था या मौवनावस्था।

उठल-वि० १ आवाग। बेकार घूमनेवाला। २ अग्नियर। चपल। चंचल। ३ किसी एक जगह पर स्थिर न रहनेवाला।

मुहा०-उठल चूल्हा=निवम्मा। बेकार घूमनेवाला व्यक्ति।

उठयाना-क्रि० म० दूगरे में उठाने का काम करना।

उठा-क्रि० अ० १ उभरना। २ गड़ा हुआ। ३ निबला। ४ जमा। ५ उत्पन्न हुआ।

उठाईगीर उठाईगीरा-वि० १ उच्चवत्। चाई। २ बिना संध गंगाए या किसी अश्व का प्रयोग बिना गंगा की आँख बचाकर दूमरे के माल को लेकर चम्पत होनेवाला व्यक्ति। निम्न श्रेणी का चोर।

उठान-सज्ञा स्त्री० १ उठने की प्रिया। उन्नति। वृद्धि। उदय। २ बढने का ढग। बाड। वृद्धि-भ्रम।

उठाना-क्रि० स० १ नीचे से ऊपर ले जाना। २ बँधी स्थिति से गडी स्थिति में करना। जैसे, लेटे हुए प्राणी को बैठाना। ३ कुछ काल तक ऊपर लिये रहना। ४ धारण करना। ५ जगाना। ६ निवालना। ७ उत्पन्न करना। ८ आरम्भ करना। छेड़ना। जैसे-वात उठाना। ९ तैयार या उद्यत करना। १० मवान या दीवार आदि बनाना। ११ किसी दूकान या पारखाने को बंद करना। १२ किसी प्रथा का तोडना। १३ लगाना। खर्च करना। १४ मेलना। सहन करना। १५ किराये पर देना। १६ अनुभव करना। १७ शिरोधार्य करना। मानना। १८ किसी वस्तु का हाथ में लेकर शपथ लेना। १९ अलग करना।

मुहा०-उठा रखना=चाकी रखना। कसर छोडना। पूरा प्रयत्न न करना। उठा देना=दूर करना। भाडे पर देना। उठाव-सज्ञा पु० दे० "उठान"।

उठीआ-वि० दे० "उठीवा"। जिसका कोई स्थान निर्दिष्ट न हो। जो चर हो, हटाया या बढाया जा सके (उठीआ पैवाना)।

उठनी-सज्ञा स्त्री० १. उठाने का काम। २. उठाने की मजदूरी। ३. अगीहा। दादनी। वह रुपया जो किसी फमल की पैदावार या और किसी वस्तु के लिए पैशगी दिया जाय। ४. उधार का लेन-देन। ५. रजान-परीक्षा। छोटी जातियों में घर की ओर से कन्या के घर विवाह दंड करने के लिए भेजा जानेवाला द्रव्य। ६. वह धन या अन्न जो सफट पड़ने पर किसी देवता की पूजा के उद्देश से अलग रखा जाय। ७. रीति-विशेष जिसमें किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोग इकट्ठे होकर मृतक के परिवार के लोगों को कुछ रुपया देते हैं और पुरुषों को पगड़ी बाँधते हैं।

उठोवा-वि० १. उठाया जानेवाला। २. अनिश्चित स्थानवाला।

उड़\*—सज्ञा पु० दे० "उड"।

उड़कू-वि० १. उड़या। जो उड सके। उडने-वाला। २. डोलनेवाला। चलने-फिरनेवाला। उड़चलना-क्रि० अ० अकडना। इतराना।

उड़ती-सज्ञा पु० १. अस्थिर। अनिश्चित। अप्रामाणिक। २. अमूलक। ३. जनश्रुति। उड़न-सज्ञा स्त्री० उठान। उड़ने की क्रिया। उड़नखटोला-सज्ञा पु० विमान। उड़नेवाला खटोला।

उड़नछ-वि० चपत। गायब।

उड़नझोई-सज्ञा स्त्री० चकमा। बहाली। वृत्ता।

उड़नफल-सज्ञा पु० वह फल जिसके खाने से उड़ने की शक्ति पैदा हो।

उड़ना-क्रि० अ० १. पक्षियों आदि का आकाश में होकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। २. आकाश-गमन। आकाश-मार्ग में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। ३. हवा में ऊपर उठना। जैसे—गुड्डो उड रही है। ४. इधर-उधर हो जाना। छितराना। फैलना। ५. हवा में फैलना। जैसे—छोटा उडना। ६. फहराना। फरफराना। जैसे—पताका उडना। ७. भागना। तेज चलना। ८.

कटक दूर जा पडना। झटके के साथ अलग होना। ९. अलग होना। उघड़ना। छिनराना। १०. खर्च होना। ११. व्यपता होना। गायब होना। १२. किसी भोग्य वस्तु का भोगना। १३. आमोद-प्रमोद को वस्तु का काम में आना। १४. रग आदि का फीका होना। धोमा पडना। १५. भुलाया देना। बातों में गहलाना। चकमा देना। १६. लगना। किसी पर भार पडना। १७. घोंडे का चौफाल कूदना। १८. कूदना। फलांग मारना (कुस्ती)।

क्रि० स० कूदकर पार करना। फलांग मारकर किसी वस्तु को लाँघना।

मुहा०—उड चलना=१ तेज दौडना या भागना। २. बोभित होना। ३. स्वादिष्ट बनना। मजेदार होना। ४. कुमार्ग स्वीकार करना। ५. गर्व करना। उडती सबर= किचदन्ती। उडकर खाना=१ उड-उडकर काटना। २. बुरा या अभिय लगना।

उडनी-वि० फैलनी। जैसे चेचक या हैजे की बीमारी। छूटवाली।

उडप-सज्ञा पु० नृत्य का एक भेद। दे० 'उडप' उडव-सज्ञा पु० रागो की जाति-विशेष। वह राग जिसमें केवल पाँच स्वर लगे।

उड़वाना-क्रि० स० उठाने में लगाना।

उड़सना-क्रि० अ० १. चारपाई या बिस्तर उठाना। २. नष्ट होना। भग होना।

उड़ाऊ-वि० १. जो उड सके। उड़नेवाला। २. अपच्ययी। ३. लुटाऊ। खर्चीला।

उड़ाक, उड़ाका, उड़ाकू-वि० १. उड़नेवाला। जो उड सके। २. ले भागनेवाला। अप-हरणकर्ता।

उड़ान-सज्ञा स्त्री० १. उड़ने का काम। तुडान। २. छलांग। ३. उतनी दूरी जितनी एक दौड में तय कर सकें। \*४ गदटा। कलाई। गहुँवा। ५. पक्षियों की चाल।

उड़ाना-क्रि० स० १. किसी उड़नेवाली वस्तु या जीवो को उड़ने में लगाना। २. हवा में फैलाना, जैसे—धूल उड़ाना। ३. काटकर दूर फेंकना। झटके के साथ अलग कराना। ४.

हठाना। दूर करना। ५ चुगाना। हजम करना।  
 ६ गचें करना। लुटाना। बग्याद करना।  
 ७ नष्ट करना। मिटाना। ८ घट करना।  
 गाने-गीतों की चीज को खूब गाना-गीना।  
 ९ भोग्य वस्तु को भोगना। १० आमोद-  
 प्रमोद की वस्तु का व्यवहार करना। ११  
 चरवा या भुलावा देना। वात डालना।  
 १२ प्रहार करना। मारना। लगाना। १३  
 झूठा अपराध लगाना। १४ विभीषि विद्या को  
 उससे आचार्य से छिपाकर सीख लेना।  
 उठाना-पुठाना-१. लुटाना। २ गंवाना।  
 ३ अपव्यय करना। ४ नाश करना।  
 उड़ाक\*-वि० जो उड़ावे।  
 उड़ावहि-क्रि० स० १ उड़ाते हैं। २ भगते  
 हैं। ३ नाश करते हैं।  
 उड़ास\*-सज्ञा स्त्री० १ वास-स्थान। २ महल।  
 उड़ासना-क्रि० स० १ विस्तार उठाना। विछीने  
 को समेटना। २ उजाड़ना। किसी चीज  
 को उहस-नहस करना। ३ बैठने या सोने  
 में बाधा डालना।  
 उड़ाहो-क्रि० अ० उड़ते हैं। उड़ जात हैं।  
 उड़िया-वि० उड़ीसावासी।  
 उड़ियाना-सज्ञा पु० २२ मात्राओं का छंद-विशेष।  
 उड़िस-सज्ञा पु० सटमल। सटवीरा।  
 उड़ी-सज्ञा स्त्री० कलावाजी। एक प्रकार  
 की कसरत।  
 उड़ीसा-सज्ञा पु० भारत का एक राज्य या  
 प्रदेश। उत्तर देश।  
 उड़ेरना, उडेलना-क्रि० स० दे० 'उडेलना'  
 एक वर्तन से दूसरे वर्तन में डालना।  
 उड़नी\*-सज्ञा स्त्री० जुगनू।  
 उड़ोहां-वि० उड़नेवाला।  
 उड़वर-सज्ञा पु० ऊमर। गूलर।  
 उड़-सज्ञा स्त्री० १ पक्षी। २ नक्षत्र।  
 ३ पानी। ४ मल्लाह। केवट।  
 उड़गण-सज्ञा पु० नक्षत्रगण। तारे।  
 उड़ु-सज्ञा पु० नक्षत्र। राशि।  
 उड़ुप-सज्ञा पु० १ आधा चंद्रमा (जो नाव  
 जैसा लगता है)। २ नाव। ३ घड़ई  
 या घड़ई। ४ बड़ा गरुड। ५ भिलावा।  
 नृत्य-विशेष।

उडुराज-मज्ञा पु० चंद्रमा।  
 उडुपप-मज्ञा पु० आकाश। गगन।  
 उडुपति-मज्ञा पु० चंद्रमा।  
 उडुस-मज्ञा पु० सटवीरा। सटमल।  
 उड्डयन-मज्ञा पु० उड़ना।  
 उड्डयन विभाग-मज्ञा पु० राज्य का वह  
 विभाग जिससे जिम्मे हवाई जहाजों तथा  
 हवाई यातायात आदि की व्यवस्था हो।  
 उड्डस-मज्ञा पु० सटमल। सटवीरा। उडिम।  
 उड्डिन-सज्ञा पु० उड़ना। परवाज होना।  
 पक्षियों के उड़ने का एक प्रकार-विशेष।  
 उड्डियमान-वि० [स्त्री० उड्डियमती] १  
 आकाशगामी। उड़नेवाला। नमचर। २  
 उड़ता हुआ।  
 उडवना-क्रि० अ० १ सहारा लेना। टेक  
 लगाना। औधाना। भिडाना। २ रखना।  
 ठहरना।  
 उडवाना-क्रि० स० भिडाना। किसी के  
 सहारे खड़ा करना।  
 उड़ना-सज्ञा पु० बपड़ा-लत्ता। ओढ़नी।  
 उडरना-क्रि० अ० विवाहिता स्त्री का पर-  
 पुरूप के साथ भाग जाना।  
 उडरी-मज्ञा स्त्री० उपपत्नी। रखेली स्त्री।  
 सुरंगिन।  
 उड़ाना-क्रि० स० दे० 'ओढ़ाना'। आच्छादन  
 करना। ढँकना। पहिनाना।  
 उडारना-क्रि० स० दूसरे की स्त्री को भगा  
 ले जाना।  
 उड़ावनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'ओढ़नी'।  
 उडेलना-क्रि० स० १ डालना। २ उलझना।  
 उड़ैया-सज्ञा पु० उड़ानेवाला। ढँकनेवाला।  
 उतक-सज्ञा पु० १ ऋषि विशेष जो वेद-मुनि  
 के शिष्य थे। २ ऋषि विशेष जो गौतम  
 के शिष्य थे।  
 वि०\* ऊँचा।  
 उतग\*-वि० १ ऊँचा। २ बलद। उच्च।  
 थेंछ।  
 उतत\*-वि० पंदा। उत्पन्न।  
 उत\*-क्रि० वि० उस और। वहाँ। उधर।  
 उम तरफ।  
 उतथ-सज्ञा पु० मुनि-विशेष। अगिरा का पुत्र।

उत्तथ्यानुज-संज्ञा पुं० बृहस्पति ।  
 उत्तन\*-क्रि० वि० उस ओर ।  
 उत्तना-वि० १. उत्तना ही । उस मात्रा का ।  
 उता । परिमाण-विशेष । २. उस कदर ।  
 उत्तपल्लता\*-क्रि० सं० पैदा करना । उपजाना ।  
 क्रि० अ० उत्पन्न होना ।  
 उत्तमंग\*-संज्ञा पुं० तिर ।  
 उत्तर\*-संज्ञा पुं० दे० "उत्तर" ।  
 उत्तरन-संज्ञा स्त्री० पहने हुए पुराने कपड़े ।  
 उत्तरन-भुतरन-संज्ञा स्त्री० पहिने हुए फटे-  
 पुराने वस्त्र ।  
 उत्तरना-क्रि० अ० १. ऊँचे स्थान से नीचे  
 आना । २. अवनति पर होना । कम होना ।  
 ढलना । ३. शरीर में किसी जोड़ या हड्डी  
 का अपनी जगह से हट जाना । ४. कांति या  
 स्वर का फीका पड़ना । उदास होना । ५. वर्ष,  
 मास या नक्षत्र-विशेष का समाप्त होना ।  
 ६. उद्वेग या उग्र प्रभाव का दूर होना । ७.  
 थोड़ा-थोड़ा किया जानेवाला काम पूरा  
 होना । जैसे मोजा उतरना । ८. भाव का कम  
 होना । ९. ऐसी वस्तु का बनना या तैयार  
 होना जो खराद या साँचे पर चढ़ाकर बनाई  
 जाय । १०. भर आना । संचारित होना ।  
 जैसे—यन में दूध उतरना । ११. बच्चों का  
 मरना । १२. नकल होना । खिचना । अंकित  
 होना । १३. टिकना । ठहरना । डेरा करना ।  
 १४. भभके में खिचकर तैयार होना ।  
 १५. अवतार लेना । जन्म लेना । १६.  
 उधड़ना । १७. पहनी हुई वस्तु का अलग  
 होना । १८. तौल में पूरा होना । १९. किसी  
 बाजे की कसल का ढीला होना जिससे  
 उसका स्वर विकृत हो जाता है । २०. सफाई  
 के साथ कटना । २१. वसूल होना । आवर  
 के निमित्त किसी वस्तु का शरीर के चारों  
 ओर घुमाया जाना । २२. अधिक पक जाना ।  
 स्वाद बिगड़ जाना । जैसे—आम उतर गया है ।  
 मुह०—उतरकर=निम्न श्रेणी का । घट-  
 कर । नीचे दर्जे का । चित्त से उतरना=  
 १. भूल जाना । २. अप्रिय लगना । नीचा  
 जँचना । चेहरा उतरना=मुख मलिन होना ।  
 मुख पर उदासी छाना ।

क्रि० सं० १. नदी, नाले या पुल का पार  
 करना । २. किनारे पहुँचना ।  
 उतरवाना-क्रि० सं० उतारने का काम करना  
 और कराना ।  
 उतरहा-वि० उत्तर दिशा के देश का वासी ।  
 उतरहि-क्रि० अ० १. उतरते हैं । नीचे आते  
 हैं । २. ठहरते हैं । विश्राम करते हैं ।  
 उतराई-संज्ञा स्त्री० १. नदी के पार उतारने  
 का पार । २. ढालू जमीन । उत्तर दिशा से  
 आनेवाली हवा । ३. ऊपर से नीचे आने  
 की क्रिया ।  
 उतराना-क्रि० अ० १. पानी की सतह पर  
 तैरना । पानी के ऊपर आना । २. उबलना ।  
 ३. हर जगह दिखाई देना । प्रकट होना ।  
 क्रि० अ० "उतारना" किया प्रे० रूप ।  
 उतरावल-वि० किसी के द्वारा पहनकर उतारा  
 हुआ कपड़ा ।  
 उतराव-संज्ञा पुं० उतार । ढाल ।  
 उतराहो-क्रि० वि० उत्तर की ओर ।  
 उतला-वि० उतावला । व्यस्त । व्याकुल ।  
 व्यग्र ।  
 उतलाना\*-क्रि० अ० जल्दी करना ।  
 उतान-वि० चित । सीधा । पीठ को जमीन  
 पर लगाए हुए ।  
 उताना-वि० १. छिछला । २. उलटा । ओंघा ।  
 विपरीत ।  
 उतामल\*-वि० शीघ्रता ।  
 उतामली-संज्ञा स्त्री० दे० "उतावली" ।  
 उतार-संज्ञा पुं० १. ढाल । २. उतरने का  
 काम । ३. क्रमशः नीचे की ओर झुकना ।  
 ४. उतरने योग्य जगह । ५. किसी वस्तु की  
 मोटाई या घेरे का क्रमशः कम होना । ६.  
 कमी । घटाव । ७. हिलाना । नदी में हल-  
 कर पार करने योग्य स्थान । ८. समुद्र का  
 भाटा । ९. न्योछावर । उतारा । १०. परि-  
 हार । वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे, विष  
 आदि का दोष दूर हो । ११. निकृष्ट ।  
 उतारन ।  
 उतारन-संज्ञा स्त्री० १. पहना हुआ । पुराना ।  
 २. निछावर । ३. निकृष्ट वस्तु ।  
 उतारना-क्रि० सं० १. ऊँचे स्थान से नीचे

स्थान में लाना । २ (चित्र) मीचना ।  
 प्रतिरूप बनाना । ३ नकल करना । ४  
 लम्बी या लिपटी हुई वस्तु को अलग करना ।  
 उघटना । ५ पहनी हुई चीज को अलग  
 करना । ६ टिथाना । ठहराना । ७ उतारना  
 करना । किसी वस्तु को मनुष्य के चारों ओर  
 घुमाकर भूत-प्रेत की भेंट के रूप में चोगाह  
 आदि पर रखना । ८ निछावर करना । ९  
 चमूल करना । १० किसी उग्र प्रभाव को  
 मिटाना । ११ पीना । घूटना । १२  
 मशीन, खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर  
 बनाई जानेवाली वस्तु को तैयार करना ।  
 १३ बाजे-आदि की बसन को ढीला करना ।  
 १४ ममके से खींचकर तैयार करना या  
 खोलते पानी में किसी वस्तु का तार गिरा-  
 लना । १५ नशा दूर करना । १६ वजन में  
 पूरा करना । १७ पाटें अदा करना । १८  
 पूरिया बनाना ।

उत्तारा-सज्ञा पु० १ डेरा डालने या टिकने  
 का काम । २ पडाव । उतरने की जगह ।  
 ३ नदी पार करने की क्रिया ।

सज्ञा पु० १ उतारे की वस्तु या सामग्री ।  
 २ प्रेत-वाधा या रोग की शांति के लिए  
 किसी व्यक्ति के शरीर के चारों ओर कुछ  
 सामग्री घुमाकर चोराहे आदि पर रखना ।

उतारि-क्रि० स० उतारकर । गिराकर । नीचे  
 रखकर । पदच्युत कर ।

उताह-वि० तैयार । उद्यत ।

उताल\*-क्रि० वि० जल्दी । शीघ्र ।

सज्ञा पु० ढीठा । ऊँचा ।

सज्ञा स्त्री० शीघ्रता ।

उताली\*-सज्ञा स्त्री० १ शीघ्रता । जल्दी ।  
 २ उतावली ।

क्रि० वि० जल्दी से । शीघ्रतापूर्वक ।

उतावल\*-वि० वि० शीघ्रता से । जल्दी जल्दी ।

उतावला-वि० [ स्त्री० उतावली ] १ जल्द-  
 बाज । जल्दी मचानेवाला । २ व्यग्र ।  
 घबराया हुआ । ३ भडमडिया ।

उतावली-सज्ञा स्त्री० १ जल्दबाजी ।  
 शीघ्रता । २ चंचलता । ३ व्यग्रता । ४  
 फूर्तीलापन ।

उताहल-प्रि० वि० जल्दी में ।

उतृण-वि० १. उग्रण । ऋण में मुक्त । २

जिम्मे उपकार का बदला चुका दिया हो ।

उत\*-प्रि० वि० उधर । वहाँ ।

उत्कट-वि० जिसे उत्कटा हो । दे० "उत्क-  
 टित" ।

उत्कटा-सज्ञा स्त्री० [ वि० उत्कटित ]

१ तीव्र अभिलाषा । प्रयत्न इच्छा । २

गम में मचारी भाव-विशेष । ३ किसी काम

के करने में देर न गहरकर उसे चटपट करने

की इच्छा । ४ अन्यमनस्कता । ५ व्याकु-

लता । ओत्सुक्य । उद्वेग । विशेष चाह ।

पूर्णच्छा ।

उत्कटित-वि० १ चाव में भरा हुआ ।

उत्सुक । व्याकुल । लालायित । २ उद्विग्न ।

उत्कटिता-सज्ञा स्त्री० सवेत-स्थान में प्रिय

के न आने पर तर्क-वितर्क करनेवाली

नायिका विशेष । उद्विग्ना । उत्का । चिन्ता-

न्विता ।

उत्क-प्रि० १ उगमना । अन्यमनस्क । २

उद्विग्न । ३ इच्छुक । उत्कण्ठित ।

उत्का-नायिका जो प्रिय के सवेत स्थान पर

न आने से तर्क-वितर्क करती हो ।

उत्कट-वि० १ विकट । तीव्र । उग्र ।

विषम । कठिन । दुस्तह । कठोर । अधिक ।

दुःसाध्य । २ मत्त । नशे में चूर । पागल ।

अभिमानी । ३ हाथी का मद बहना ।

उत्कर्ण-वि० [ सज्ञा स्त्री० उत्कर्णता ] जो

मुनने के लिए कान खड़ा करे ।

उत्कर्ष-सज्ञा पु० १ प्रशंसा । २ उत्तमता ।

श्रेष्ठता । ३ समृद्धि । उन्नति । ४ उग्रता ।

जोर ।

वि० १ अत्यधिक । श्रेष्ठ । २ अतिशयोक्ति

पूर्ण । ३ आकर्षक । आत्मप्रशंसी ।

उत्कर्षता-सज्ञा स्त्री० १ उत्तमता । बड़ाई ।

२ श्रेष्ठता । ३ अधिकता । बहुतायत ।

४ समृद्धि ।

उत्कल-सज्ञा पु० उड़ीसा देश ।

उत्कलिका-सज्ञा स्त्री० १ उत्कटा । मन का

उद्वेग । व्याकुलता । तरंग । लहर । २ फूल

की कली । ३ बड़े-बड़े समासवाला गद्य ।

उत्कलित-वि० १. तरंगों से युक्त। लहराता हुआ। २. खिला हुआ। ३. उत्कठित। उद्विग्न। अनमता।

उत्कोर्ण-वि० १. लिखा हुआ। २. खुदा हुआ। ३. धत। छिदा हुआ।

उत्कुण-सज्ञा पु० १. खटकीरा। खटमल। २. जू। वालों का कौड़ा।

उत्कृति-सज्ञा स्त्री० १. २६ की संख्या। २. २६ वर्णों के वृत्तों का नाम।

उत्कृष्ट-वि० १. श्रेष्ठ। उत्तम। सर्वोत्तम। २. अतिशय। ३. प्रकृष्ट। आकृष्ट। खिचा हुआ।

उत्कृष्टता-सज्ञा स्त्री० १. उत्तमता। श्रेष्ठता। बड़प्पन। २. अच्छापन।

उत्कोच-सज्ञा पु० घूस।

उत्क्रान्त-वि० जिसका उल्लंघन या अतिक्रमण किया गया हो। ऊपर की ओर चढ़ने वाला। उत्पन्न।

उत्क्रान्ति-सज्ञा स्त्री० १. मृत्यु। मरण। २. क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर झुकाव।

उत्क्रोश-सज्ञा पु० १. पक्षी-विशेष। कुररी। टिट्टिनि। राजपक्षी। २. चिल्लाहट।

उत्खनन-सज्ञा पु० खोदने की क्रिया। खोदाई। उत्खात-वि० उन्मूलित। उत्पाटित। उखाड़ा हुआ।

सज्ञा पु० छिद्र। गड्ढर।

उत्खाता-वि० खोदनेवाला।

उत्सग\*-वि० दे० "उत्तुग"। ऊँचा। बुलन्द।

उत्सग\*-सज्ञा पु० दे० "अवतस"। १. कर्णपूर। कनफूल। कर्णभरण। २. शेखर। शिरोभूषण। आभूषण।

उत्त\*-सज्ञा पु० १. सदेह। २. भ्रम। ३. आश्चर्य।

उत्तप्त-वि० १. खूब तपा हुआ। तप्त। उष्ण। दग्ध। २. पीड़ित। दुःखी। सतप्त। ३. चिन्तित।

उत्तप्तता-सज्ञा स्त्री० उष्णता। मन्ताप।

उत्तम-वि० [ स्त्री० उत्तमा ] १. श्रेष्ठ। सबसे अच्छा। भद्र। उत्कृष्ट। २. प्रधान। मुख्य।

सज्ञा पु० १. नायक-भेद। २. राजा उत्तानपाद का पुत्र। ३. प्रथम।

उत्तमतया-क्रि० वि० भली भाँति। अच्छी तरह।

उत्तमता-सज्ञा स्त्री० १. उत्कृष्टता। श्रेष्ठता। २. उत्कर्ष। ३. सौन्दर्य। ४. भलाई।

उत्तमत्व-सज्ञा पु० अच्छापन। उत्कृष्टता।

उत्तमपद-सज्ञा पु० श्रेष्ठपद। उच्चपद।

उत्तमपुरुष-सज्ञा पु० सर्वनाम-विशेष जो बोलनेवाले पुरुष को सूचित करता है। जैसे "मे", "हम"।

उत्तमर्ण-सज्ञा पु० महाजन। जो ऋण दे।

उत्तमशोक-वि० यशस्वी। कीर्तिशाली।

सज्ञा पु० यश। कीर्ति।

उत्तमसग्रह-सज्ञा पु० सम्यक् सग्रह। एकान्त में परस्त्री का आलिंगन। बातचीत।

उत्तमसाहस-सज्ञा पु० १. अतिशय साहस। २. दुसाहस। ३. दण्ड-विशेष।

उत्तमा-सज्ञा स्त्री० उत्कृष्टा सारी। श्रेष्ठा।

उत्तमाग-सज्ञा पु० मस्तक। सिर। मुण्ड।

उत्तमा द्वीती-सज्ञा स्त्री० द्वीती-विशेष जो नायक या नायिका को किसी न किसी तरह समझा-बुझाकर मना लावे।

उत्तमा नायिका-सज्ञा स्त्री० स्वकीया नायिका-विशेष, जो पति के प्रतिरूढ़ होने पर भी अनुकूल रहे।

उत्तमोत्तम-वि० अतिश्रेष्ठ। परमोत्कृष्ट। अच्छे से अच्छा।

उत्तमोजा-वि० उत्तम तेज या बलवाला।

सज्ञा पु० १. युष्मान्यु का भाई। २. मनु के दस पुत्रों में से एक।

उत्तर-सज्ञा पु० १. उदीची। दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। २. प्रतिवचन। किसी प्रश्न या बात को सुनकर उसके समाधान के लिए कही हुई बात। जवाब। पलटा। समाधान। ३. बहुला। मिस। हीला। बनाया हुआ जवाब। ४. बदला। प्रतिकार। ५. नाव्यालकार-विशेष जिसमें उत्तर सुनकर प्रश्न का अनुमान किया जाता है। ६. एक काव्यालकार जिसमें प्रश्न ही में उत्तर होता है अथवा बहुत-से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है।

वि० १. वाद का। पिछला। २. ऊपर का।  
३. थोड़ा। उत्तम।  
क्रि० वि० १. पीछे। वाद। पश्चात्।  
अन्तर। २. थोड़ा। ३. भविष्य। ४.  
फाल। नतीजा।

उत्तरकाल-संज्ञा पु० भविष्यत् काल।  
आगामी समय।

उत्तरकाशी-संज्ञा स्त्री० हरिद्वार के उत्तर का  
स्थान-विशेष।

उत्तरकुह-संज्ञा पुं० जम्बुद्वीप के नव वर्षों  
में से एक वर्ष।

उत्तरकोशल या कोशला-संज्ञा पु० १. अवयव।  
अयोध्या के आस-पास का देश। २. अयोध्या  
नगरी।

उत्तरक्रिया-संज्ञा स्त्री० १. सावत्सरिक श्राद्ध  
आदि पितृ-कर्म। अत्येष्टि-क्रिया। २.  
प्रतिवचन-दान।

उत्तरच्छद-संज्ञा पु० आच्छादन-वस्त्र।  
पलंगपोश।

उत्तरदाता-संज्ञा पु० [ स्त्री० उत्तरदात्री ]  
१. उत्तरदायी। वह जिससे किसी कार्य  
के बनने-विगडने पर पूछ-खाछ की जाय।  
जवाबदेह। जिम्मेदार। २. अधिकारी  
जिस पर कार्य-भार हो।

उत्तरदायित्व-संज्ञा पु० १. जिम्मेदारी। २.  
जवाबदेही।

उत्तरदामी-वि० [ स्त्री० उत्तरदायिनी ] उत्तर  
देनेवाला। जवाबदेह। जिम्मेदार।

उत्तरपक्ष-संज्ञा पु० शास्त्रार्थ में सिद्धांत-  
विशेष जिससे पूर्व पक्ष अर्थात् पहले किए  
हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन या समाधान  
हो। विचार-विशेष। जवाब की दलील।

उत्तरपय-संज्ञा पु० देवयान। वह मार्ग, जिस  
पर पुण्यात्मा जीव मरने के बाद जाता है।  
उत्तरपद-संज्ञा पु० किसी योगिक शब्द का  
अंतिम शब्द।

उत्तरश्रुत्युत्तर-संज्ञा पु० वाद-विवाद। तर्क।  
उत्तर-काल्पनी-संज्ञा स्त्री० नक्षत्र-विशेष।  
बारहवां नक्षत्र।

उत्तरमाहपद-संज्ञा पु० छव्वीसवां नक्षत्र।

उत्तरमीमांसा-संज्ञा स्त्री० वेदांत-दर्शन (वेद

के द्वितीय भाग अर्थात् ज्ञान-काण्ड का  
विवेचन दर्शन)।

उत्तर-मंज्ञा स्त्री० अभिमन्यु की स्त्री।  
परीक्षित की माता। उत्तर दिना।  
उत्तरखंड-संज्ञा पु० भारतवर्ष का उत्तरी  
भाग जो हिमालय के पाग है।

उत्तराधिकार-संज्ञा पु० किसी के मरने के  
उपरान्त उसकी संपत्ति का स्वत्व। वरासत।  
उत्तराधिकारी-संज्ञा पुं० [ स्त्री० उत्तरा-  
धिकारिणी ] वह जो किसी की मृत्यु होने पर  
उसकी संपत्ति का अधिकारी हो। वारिस।  
उत्तराभास-संज्ञा पु० झूठा उत्तर। अंडवड  
जवाब (स्मृति)।

उत्तरायण-संज्ञा पु० १. वह छ. महीने  
का समय, जिसके बीच सूर्य मकर रेखा  
से चलकर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता  
रहता है। २. माघ से लेकर छ. महीना। ३.  
मकर-रेखा से उत्तर कर्क-रेखा की ओर  
सूर्य की गति। ४. देवताओं का दिन।

उत्तरार्द्ध-संज्ञा पु० पीछे का अर्द्ध भाग।  
पिछला आधा।

उत्तराषाढ़ा-संज्ञा स्त्री० इक्कीसवां नक्षत्र।  
उत्तराहा-वि० उत्तर दिशा का।

उत्तरीय-संज्ञा पु० ओढ़ना। दुपट्टा। चदर।  
वि० १ ऊपरवाला। ऊपर का। २. उत्तर  
दिशा-संबंधी। उत्तर दिशा का।

उत्तरोत्तर-क्रि० वि० १. एक के बाद एक।  
एक के पीछे दूसरा। क्रमशः। लगातार।  
बराबर। २. आगे-आगे।

उत्ता-वि० दे० "उतना"।

उत्तान-वि० चित। सीधा। पीठ को जमीन  
पर लगाये हुए। उन्मुख। ऊर्ध्वमुख।

उत्तानपात्र-संज्ञा पु० तावा। रोटी सेंकने  
का पात्र।

उत्तानपाद-संज्ञा पु० राजा-विशेष जो स्वायम्भुव  
मनु के पुत्र और ध्रुव के पिता थे।

उत्तानशय-वि० १. बहुत छोटा लड़का।  
२. चित्त सोनेवाला।

उत्ताप-संज्ञा पु० [ वि० उत्तप्त, उत्तापि ] १.  
तपन। गर्मी। उष्णता। २. कष्ट। पीडा।  
वेदना। ३. सन्ताप। शोक। दुःख। ४. शोभ।

उत्ताल-वि० १ उत्कट। २ महत्। श्रेष्ठ।  
३ भयानक। ४ स्वरित।

उत्तिष्ठमान-वि० उत्थानशील। वर्द्धनशील।  
वर्द्धमान।

उत्तीर्ण-वि० १ जो पार चला गया हो।  
२ पारगत। ३ मुक्त। ४ परीक्षा में कृत-  
कार्य। ५ उपनीत।

उत्तुंग-वि० उन्नत। उन्नत। बहुत ऊँचा।  
उर्ध्व। वृद्धिगत (जैसे लहर)।

उत्तु-सज्ञा पु० [फा०] १ बीजार-विशेष  
जिसे गरम करके कपड़े पर बेल-बूटो या चुनट  
के निशान डालते हैं। २ बेल-बूट का काम।  
३ तह जमाना। चुनना। पतल लगाना।

मुहा०-उत्तु करना=बहुत भारना। शिथिल  
करना।

वि० नशे में चूर। बदहवास।  
उत्तेजक-वि० १ प्रेरक। उभाड़ने, बढ़ाने या  
उकसानेवाला। २ वेगो को तेज करनेवाला।

उत्तेजन-सज्ञा पु० दे० "उत्तेजना"।  
उत्तेजना-सज्ञा स्त्री० [वि० उत्तेजित, उत्तेजक]

१ बढ़ावा। प्रेरणा। प्रोत्साहन। २ वेगो  
को तीव्र करने का काम।

उत्तेजित-वि० १ प्रेरित। पुन-पुन आदे-  
शित। २ उत्तेजना से भरा हुआ। तीव्र  
किया हुआ (चाकू आदि)।

उत्तोलन-सज्ञा पु० १ तानना। २ ऊँचा  
करना। ३ तोलना।

उत्पथना\*-वि० स० प्रारम्भ करना। अनुष्ठान  
करना।

उत्थान-सज्ञा पु० १ उठने का काम। २  
उठान। ३ आरम्भ। ४ समृद्धि। बढ़ती।  
उन्नति। ५ आगम। ६ सेना।

उत्थान एकादशी-सज्ञा स्त्री० देवठान  
एकादशी। यात्तिक मास के शुक्ल पक्ष की  
एकादशी।

उत्थापन-सज्ञा पु० १ तानना। २ ऊपर  
उठाना। ३ हिलाना। ४ जगाना। प्रश्न का  
उत्तर (गणित)।

उत्थित-वि० १ उपन्न। २ उठा हुआ।  
उत्थितगुणित-सज्ञा स्त्री० १ अंगुली बँगाया  
हुआ पंजा। २ घण्ट।

उत्पत्तन-सज्ञा पु० ऊर्ध्वगमन। ऊपर उड़ना।  
पक्षी का उड़ना।

उत्पत्ति-सज्ञा स्त्री० दे० "उत्पत्ति"।

उत्पत्तित-वि० ऊपर गया हुआ। ऊर्ध्व गमन  
किया हुआ।

उत्पत्ति-सज्ञा स्त्री० [वि० उत्पत्त] १ जन्म।  
उद्भव। २ उद्गम। ३ सृष्टि। ४  
प्रारम्भ।

उत्पत्तिशाली-वि० १ जन्म विशिष्ट। २  
जो उत्पन्न होता है।

उत्पथ-सज्ञा पु० १ कुमार्ग। २ कुमार्गगमन।

उत्पन्न-वि० [स्त्री० उत्पन्ना] १ पैदा।  
जन्मा हुआ। २ निकला हुआ। अकुरित।

उत्पन्ना-सज्ञा स्त्री० अगहन बदी एकादशी  
का नाम।

उत्पल-सज्ञा पु० १ कमल। नील कमल।  
२ नरक-विशेष।

वि० बिना मास का, मासहीन।

उत्पादन-सज्ञा पु० [वि० उत्पादित] १  
उत्पादना। उन्मूलन। २ ऊधम। खोटाई।  
शैतानी। बदमाशी।

उत्पात-सज्ञा १ उपद्रव। कष्ट पहुँचानेवाली  
आकस्मिक घटना। २ हलचल। अशांति।  
३ ऊधम। अन्धेर। दगा। शराबत।  
दुष्टता।

उत्पातप्रस्त-वि० उपद्रव युक्त।

उत्पाती-सज्ञा पु० [स्त्री० उत्पातिम]  
उत्पात करनेवाला। उपद्रवी। नटपट।  
शराबती।

उत्पादक-वि० [स्त्री० उत्पादिका] जनक।  
उत्पत्तिकर्ता। उत्पन्न करनेवाला।

उत्पादन-सज्ञा पु० [वि० उत्पादित]  
उपजाना। उत्पन्न करना। जनन। पैदा  
करना।

उत्पादिका-सज्ञा स्त्री० १ जननी। माता। २  
प्रत्येक पदार्थ में एक प्रकार की शक्ति  
जिस उत्पादिका शक्ति रहती है।

उत्पीडन-सज्ञा पु० [वि० उत्पीडित] १  
सतावना। क्लेश पहुँचाना। २ दवाना।

उत्प्रेक्षा-सज्ञा स्त्री० [वि० उत्प्रेक्ष्य] १  
आरोप। उद्भावना। २ अपीक्षार-

विशेष जिगमें भेद-ज्ञान-पूर्वक उपमेय में  
उपमान की प्रतीति होती है। जैसे, "मुग  
मानो चद्रमा है।" ३. मादृश्य। ४. अनुमान।  
५. उपमा। ६. डील। ७. अनवधान।

उत्प्रेक्षोपमा-संज्ञा स्त्री० अर्थालङ्कार-विशेष  
जिममें किसी एक वस्तु के गुण का बहूतां  
में पाया जाना वर्णित होता है। (विशेष)।

उत्प्लवन-संज्ञा पुं० कूटना। लूथना।

उत्फाल-संज्ञा पुं० लूथना। कूटना।

उत्फूल-वि० १. प्रकुल। विकसित।

विला हुआ। २. आनन्दित। गुला

हुआ। फूला हुआ। ३. चित्त। उत्तान।

उत्पथत-वि० १. वजित। २. परित्यक्त।

छोड़ा हुआ।

उत्तंग-संज्ञा पुं० १. अक। गोद। क्रोड। अग।

कोला। २. बीच। मध्य भाग। ३. ऊपर का

भाग। वि० विरक्त। निर्लिप्त।

उत्तम-वि० १. हव। नष्ट। २. उत्थित।

उत्पठित।

उत्तम-संज्ञा पुं० [ वि० उत्थनी, औत्सर्ग्य,

उत्सर्ग ] १. विसर्जन। त्याग। छोड़ना।

२. समाप्ति। ३. न्योछावर। दान। साधारण

नियम (व्याकरण)।

उत्तम-पत्र-संज्ञा पुं० १. दानपत्र। २. कार्य-

त्यागपत्र।

उत्सर्जन-संज्ञा पुं० [ वि० उत्सर्जित, उत्सृष्ट ]

१. उत्सर्ग। छोड़ना। त्याग। २. दान।

वितरण। ३. वैदिक कर्म-विशेष।

उत्सर्पण-संज्ञा पुं० १. चढ़ाव। ऊपर चढ़ना।

२. लूथना। उल्लूथन। ३. पास जाना।

उत्तपिणी-संज्ञा स्त्री० काल की वह अवस्था

जिसमें रूप, रस, गंध, स्पर्श इन चारों की

कम से वृद्धि होती है (जैन)।

उत्ताव-संज्ञा पुं० १. धूम-धाम। उच्छव।

उछाह। मगल-कार्य। २. मगल-समय।

पर्व। त्योहार। ३. विहार। आनंद। ४. यज्ञ।

पूजा, अर्चा आदि।

उत्ताव-जनक-वि० 'आह्लादजनक'। प्रमोद-

जनक। आनन्दकारी।

उत्तावन-संज्ञा पुं० १. उच्छेदकरण। २.

विनाश। छिन्न-भिन्न करना।

उत्सादित-वि० १. विनाशित। छिन्न-भिन्न  
कृत। २. निर्मलीकृत शरीर।

उत्सारक-संज्ञा पुं० द्वारपाल। चौबदार। हटाने-  
वाला।

उत्सारण-संज्ञा पुं० दूरीकरण। दूरे स्थान  
में भेजना। हटाना।

उत्साह-संज्ञा पुं० [ वि० उत्साहित, उत्साही ]

१. उमग। जोश। होसला। २. साहस।

(वीर-रस का स्थायी भाव) ३. अध्य-

वसाय। ४. उद्योग। उद्यम।

उत्साहवर्द्धन-संज्ञा पुं० उद्यम-वृद्धि।

उत्साहशील-वि० उद्योगी। उद्यमी।

उत्साहान्वित-वि० उत्साहयुक्त। उद्यमी।

उत्साहित-वि० उत्साहशाली। प्राप्तोत्साह।

उत्साही-वि० उत्साह में भरा हुआ।

होसलेवाला।

उत्सुक-वि० १. बहुत इच्छुक। उत्कण्ठित।

२. चाही हुई बात में देर न सहकर उसके

उद्योग में लगा हुआ।

उत्सुकता-संज्ञा स्त्री० १. किसी कार्य में

देरी न सहकर उत्तम लगना। (एक मचारी

भाव)। २. इच्छा। आकुलता।

उत्सूर-संज्ञा पुं० सन्ध्या-काल। शाम।

उत्सृष्ट-वि० छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ।

त्यक्त।

उत्सेध-१ बढनी। वृद्धि। उन्नति। २.

ऊँचाई। ३. मूजन।

वि० ऊँचा। श्रेष्ठ। उत्तम।

उयपना\*—क्रि० सं० १. उछाड़ना। उछाड़ना।

नष्ट करना। २. उछाना।

उयलना—क्रि० अ० १. डौवाडोल होना।

डगमगाना। चलायमान होना। २. उलटना।

औबना। उलट-पुलट होना। ३. पानी का

कम या उयला होना।

क्रि० सं० इधर-उधर करना। नीचे-ऊपर

करना।

उयल-पुयल-संज्ञा स्त्री० नीचे-ऊपर। उलट-

पुलट। विपर्यय। क्रम-भंग।

वि० अड का बड। उलट-पुलट। इधर का

उधर।

उयला-वि० छिछला। कम गहरा।

उदत-वि० १ पोपला। २ तुण्ड। (चौपायो के लिए) अदत। बिना दाँत के।

सज्ञा पु० वात्ता, समाचार, खबर, वृत्तात।  
उद्-उप० उपसर्ग-विशेष जो शब्दों के पहले लगकर उनमें इन अर्थों की विशेषता उत्पन्न करता है—ऊपर, जैसे—उद्गमन। अतिक्रमण, जैसे—उत्तीर्ण। उत्कर्ष, जैसे—उद्बोधन। प्रावत्य, जैसे—उद्देग। प्राधान्य, जैसे—उद्देश। अभाव, जैसे—उत्पय। प्रकाश, जैसे—उच्चारण। दोष, जैसे—उन्मार्ग।

उदक-सज्ञा पु० सलिल। जल। पानी।

उदकक्रिया-सज्ञा स्त्री० जलवर्षण-क्रिया। तिलाजलि।

उदकना\*—क्रि० अ० कूदना।

उदकपरीक्षा-सज्ञा स्त्री० प्राचीन समय की शपथ का भेद-विशेष, जिसमें शपथ लेनेवाले को अपने वचन की सच्चाई प्रमाणित करने के लिए जल में एक निर्दिष्ट समय तक डूबना पड़ता था।

उदबध-वि० अपवित्र। अशुचि।

सज्ञा पु० पानी में होनेवाला धान।

उदबधा-सज्ञा स्त्री० रजस्वला (स्त्री)।

उदगदन-सज्ञा पु० उत्तरायण।

उदगद्गि-सज्ञा स्त्री० हिमालय पहाड़।

वि० उच्च। ऊँचा।

उदगरना†—क्रि० अ० १ बाहर होना।

निकलना। २ उभडना। ३ प्रकट होना।

उदगगल-सज्ञा पु० विद्या-विशेष जिससे स्थान, विशेष में कितने हाथ की दूरी पर जल है, इसका ज्ञान प्राप्त हो।

उदगार\*—सज्ञा पु० दे० "उद्गार"।

उदगारना\*—क्रि० स० १ बाहर निकालना या फेंकना। २ उत्तेजित करना। भड़काना। उभाडना।

उदगारी\*—वि० उगलनेवाला। बाहर निकलनेवाला।

उदग्र-वि० उच्च। ऊँचा। विशाल। बड़ा।

उद्द। विवट। तीव्र। तेज।

उदग\*—वि० १ उत्तम। ऊँचा। २ उग्र। प्रचंड। ३ उदत।

उदघटना—क्रि० स० उदय होना। प्रकट होना। निकलना।

उदघाटना\*—क्रि० स० १ प्रकट या प्रकाशित करना। २ खोलना।

उदघाटी—क्रि० स० १ खोली। उधारी। २ प्रकाशित की।

सज्ञा स्त्री० उदयाचल पर्वत की घाटी।

उदय\*—सज्ञा पु० सूर्य।

उदधि-सज्ञा पु० १ जलधि। समुद्र। २ मेघ। ३ घडा।

उदधिमेषला-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी। भूमि।

उदधिसुत-सज्ञा पु० १ अमृत। २ चंद्रमा।

३ कमल। ४ शस्त्र। ५ पदार्थ जो समुद्र से उत्पन्न हो।

उदधिसुता-सज्ञा स्त्री० १ सीप। २ लक्ष्मी।

उदन्वान्-सज्ञा पु० समुद्र। पयोधि। वारिनिधि।

उदपान-सज्ञा पु० १ कूप के समीप का गड्ढा। २ कमण्डलु।

उदघस\*—वि० १ सूना। उजाड। २ जो एक स्थान पर न रहता हो। खानाबदोश।

उदवासना-क्रि० स० १ उजाडना। २ रहने में विघ्न-बाधा डालना। भगा देना। ३ तग करके स्थान से हटाना।

उदवेत-सज्ञा पु० उद्देग।

उवभव-सज्ञा पु० "उद्भव"।

वि० पागल।

उदमदना\*—क्रि० अ० पागल या उन्मत्त होना।

उदमाद-सज्ञा पु० दे० "उन्माद"।

उदमादी-वि० पागल। दे० "उन्मत्त"।

उदमानना\*—क्रि० अ० उन्मत्त होना। पागल होना।

उदय-सज्ञा पु० [वि० उदित] १ निकलना। प्रकट होना (विशेषतः ग्रहों के लिए)। २ ऊपर आना। ३ उन्नति। बढनी। वृद्धि।

४ धनलाभ। ५ उत्पत्ति। प्रादुर्भाव।

उपज। ६ उद्गम-स्थान। उदयाचल। ७ प्राची। ८ दीप्ति।

मुहा०—उदय से अस्त तक = मारी पृथ्वी में। पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक।

उदयकाल-सज्ञा पु० १ प्रभातकाळ। २ सर्प-विशेष।

उदयगिरि-सज्ञा पु० उदयाचल पर्वत।

उदयन-सज्ञा पु० १ प्रवास होना। ऊर्ध्वगमन।

२. अग्रस्थ मुनि। ३. एष राजा जिनकी राजधानी प्रयाग के नाम कोशाम्बी थी। इनकी रानी का नाम वागयदत्ता था, वागराज और उदयन दोनों नाम से ये प्रसिद्ध हैं। ४. १२वीं शताब्दी के प्रसिद्ध दार्शनिक पंडित उदयनाचार्य, जिनकी धन्या लीला-कवी उम समय विख्यात पंडिता थी।

उदयना\*-वि० अ० उदय होना।

उदयाचल-संज्ञा पु० उदयगिरि। पुराणानुसार पूर्व दिशा का पर्वत-विशेष जहाँ से सूर्य निकलता है।

उदयातिथि-संज्ञा स्त्री० वह तिथि जो सूर्योदय-काल में हो।

उदयाद्रि-संज्ञा पु० उदयाचल। पूर्वपर्वत।

उदयास्त-संज्ञा पु० १. प्रभात से सन्ध्या-पर्यन्त। २. उदय से अस्त हो। ३. पूर्व से पश्चिम तक।

उदरभर, उदरभरि-संज्ञा पु० केवल अपना पेट भरनेवाला। पेट। स्वार्थी।

उदर-संज्ञा पु० १. जठर। पेट। २. भीतर का भाग। ३. पेट। किसी वस्तु के बीच का भाग। मध्य। गर्भ।

उदर-ज्वाला-संज्ञा स्त्री० भूख। जठराग्नि।

उदरना\*-क्रि० अ० दे० "ओदरना"।

उदरभंग-वि० १. अतिसार। २. पेट की छुटाई।

उदररस-संज्ञा पु० उदरस्थित पाचक रस।

उदररोग-संज्ञा पु० जठर व्याधि-विशेष। पेट की पीड़ा।

उदरवृद्धि-संज्ञा स्त्री० जलोदर रोग। जलघर।

उदरसर्वस्व-वि० उदरपरायण। पेट। स्वार्थी।

उदराग्नि-वि० जठराग्नि। पचाने की शक्ति।

उदरामय-संज्ञा पु० उदररोग। पेट की पीड़ा। उदरभग। अतिसार।

उदरावर्त-संज्ञा पु० नाभि।

उदरिण-वि० तोदवाला।

उदरिणी-संज्ञा स्त्री० गर्मिणी। द्विजीवा। दुपस्या।

उदरिल-वि० उदरिण। तोदीला।

उदरी-वि० उदरिण। उदरिल। तोदीला। तोदवाला।

उदयत-वि० निरलता हुआ। उगना हुआ। उदयना-क्रि० अ० दे० "उगना"। प्रगट होना। निकलना।

उदधेग-संज्ञा पु० "उद्वेग"।

उदसन-क्रि० अ० १. उजड़ना। २. अंदक होना। कमजोर होना। चित्त-विद्वग् होना।

उदसना\*-वि० दे० "उदमन"।

उदात्त-वि० १. ऊँचे स्वर से उच्चरित। २. कुपालु। दयावान्। ३. उदार। दाता। ४. बड़ा। महान्। श्रेष्ठ। ५. विशद। स्पष्ट। ६. योग्य। मर्मन्।

संज्ञा पु० १. वेद के स्वर के उच्चारण का भेद-विशेष जिसमें ताल-आदि के ऊपरी भाग से उच्चारण होता है। २. उदात्त स्वर। ३. काव्यालंकार-विशेष जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन सूच बढ़ा-चढ़ाकर किया जाता है। ४. दान। ५. नायक-विशेष। ६. मनोहर। ७. उपहार। ८. बड़ा नगर। ९. आलंकारिक भाषण। १०. प्रिय, द्रष्ट, प्रेमपात्र।

उदाता-वि० १. दाता। २. उदार।

उदान-संज्ञा पु० १. प्राण-वायु का भेद-विशेष जिसका स्थान कंठ है और जिससे डकार और छीक आती है। २. उदरावर्त। ३. नाभि। ४. सर्प-विशेष।

उदायन\*-संज्ञा पु० बगीचा। वाग।

उदार-वि० [संज्ञा उदारता] १. ऊँचे दिल का। २. श्रेष्ठ। बड़ा। ३. सीधा। सरल। ४. दानशील। दाता। महात्मा। एक अलंकार-विशेष (साहित्य)।

उदारचरित-वि० शीलवान्। उदार चरित्र-वाला।

उदारचेता-वि० उदार चित्तवाला।

उदारता-संज्ञा स्त्री० १. उच्च विचार रखना। २. दानशीलता। ३. सरलता। ४. वदान्यता।

उदारत्व-संज्ञा पु० दातृत्व। दानशीलता।

उदारना-क्रि० सं० १. दे० "ओदरना"। २. चीरना। फाड़ना। तोड़ना। ३. गिराना।

उदाराशय-वि० जिसके विचार और उद्देश्य ऊँचे हों। उदार आशयवाला। महात्मा। महापुरुष।

उदावर्त—सज्ञा पु० गुदग्रह। काँच। गुदा का रोग विशेष जिसमें काँच निकल आती है और मल-मूत्र रुक जाता है।

उदास—वि० १ जिसका चित्त किसी पदार्थ से हट गया हो। विरक्त। २ सर्वस्वत्यागी। दुःखी। सुस्त। ३ वटस्थ। झगड़े से अलग। उदासना—क्रि० अ० उदास होना। चित्त न लगना।

क्रि० स० उजाड़ना। तितर-बितर करना। उदासी—सज्ञा पु० १ त्यागी पुरुष। विरक्त पुरुष। २ एकान्तवासी। सन्यासी। ३ नानकसाही साधुओं का भेद-विशेष। सज्ञा स्त्री० १ दुःख। २ खिन्नता।

उदासीन—वि० [स्त्री० उदासीना, सज्ञा उदासीनता] १ जिसका चित्त हट गया हो। २ झगड़े-बखड़े से विरक्त। ३ निसंग। ४ रूखा। उपेक्षायुक्त। प्रेमशून्य। ममत्वारहित। ५ निष्पक्ष। वटस्थ। ६ सन्यासी। समदर्शी। उदासीनता—सज्ञा स्त्री० १ त्याग। २ निर्द्वन्द्वता। निरपेक्षता। ३ उदासी। खिन्नता। ४ विरक्ति।

उदासीबाजा—सज्ञा पु० एक प्रकार का मोपा बाजा।

उदाहर—वि० धुंधला रंग। भूरा। उदाहरण—सज्ञा पु० १ निदर्शन। उपमा। दृष्टांत। मिसाल। २ न्याय में तर्क के पाँच अवयवों में से तीसरा।

उदाहृत—वि० दृष्टान्त दिया हुआ। उत्प्रेक्षित। उक्त। वक्षित।

उदियाना\*—क्रि० अ० उद्विग्न होना। घबराना। उदित—वि० [स्त्री० उदिता] १ निकला हुआ। जो उदय हुआ हो। २ प्रकाशित। प्रकट। जाहिर। ३ स्वच्छ। उज्ज्वल। ४ प्रसन्न। प्रफुल्लित। ५ वक्षित।

उदितयौवना—सज्ञा स्त्री० मुग्धा नायिका। वह न्याय जितने यौवन में पदार्पण किया हो। उदोद्यो—सज्ञा स्त्री० उत्तर दिशा।

उदीच्य—वि० १ उत्तर दिशा का। २ उत्तर का गूँनेवाला। ३ शरगवती नदी के पश्चिमोत्तर देश।

गज्ञा पु० पंछाली छंद का भेद विशेष।

उदीयमान—वि० [स्त्री० उदीयमाना] जिसका उदय हो रहा हो। उठता हुआ। उमड़ता हुआ।

उदीरण—सज्ञा पु० कथन। उच्चारण। वाक्य। उदीरित—वि० १ उच्चारित। २ उक्त। कथित।

उदुवर—सज्ञा पु० [वि० औदुवर] १ गूलर। २ नपुसक। ३ उचोड़ी। देहली। ४ कोड़-विशेष। डूबर।

उदूरखल—सज्ञा पु० उलूखल। ओखली। गूल।

उदूलहृक्मो—सज्ञा स्त्री० [का०] आज्ञा का उल्लंघन करना। आज्ञा न मानना।

उदेग\*—सज्ञा पु० दे० "उद्वेग"।

उदो\*—सज्ञा पु० दे० "उदय"।

उदोत\*—सज्ञा पु० प्रकाश। वि० १ दीप्त। प्रकाशित। २ श्रेष्ठ। उत्तम। ३ शुभ्र। उदोती\*—वि० [स्त्री० उदोतिनी] प्रकाशक। जो प्रकाश करे।

उदो\*—सज्ञा पु० दे० "उदय"।

उद्गत—वि० १. निकला हुआ। उत्पन्न। प्रकट। जाहिर। २ उचित। उत्थित। फैला हुआ। व्याप्त। वर्धित।

उद्गम—सज्ञा पु० १ आविर्भाव। उदय। २ निकास। मखरज। उत्पत्ति का स्थान। उद्भव-स्थान। ३ नदी के निकलने का स्थान।

उद्गमन—सज्ञा पु० ऊर्ध्वगमन। ऊपर जाना। प्रकट होना।

उद्गाता—सज्ञा पु० १ सामवेदज्ञ। सामवेद गायक। २ यज्ञ में चार प्रधान ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मन्त्रों का गान करता है।

उद्गाया—सज्ञा स्त्री० आर्या छंद का भेद-विशेष।

उद्गार—सज्ञा पु० [वि० उद्गारी, उद्गारित] १ किसी भी गुप्त बातों का प्रकट करना। २ बहुत दिनों से मन में रची हुई बात एकबारगी कहना। ३ उबार। उफान। ४ उगटी। ५ हवार। ६ धूल। मग। ७ आपत्कय। बाढ़। ८ घोर गर्द। गर्जन।

उद्गारी-वि० [ स्त्री० उद्गारिणी ] १. प्रकट करनेवाला । २. जो उगले । बाहर निकालनेवाला ।

उद्गीत-वि० ऊँचे स्वर से गाया हुआ ।  
उद्गीति-मज्ञा स्त्री० आर्या छंद का एक भेद ।

उद्गीथ-मज्ञा पु० सामवेद का एक अक्षर । प्रणव । ओंकार । सामगान ।

उद्ग्रीव-वि० १. जो गर्दन ऊपर उठाये हो । २. उत्तुंग ।

उद्घाट-मज्ञा पु० चौकी, जहाँ किसी राज्य की ओर से माल खोलकर उसकी जाँच की जाय । क्रि० म० छुटकारा दिलाना ।

उद्घाटन-मज्ञा पु० [ वि० उद्घाटक, उद्घाटनीय, उद्घाटित ] १. प्रकाशित करना । प्रकट करना । २. खोलना । उघाड़ना । ३. कुएं में जल निकालने के लिए रज्जु-सहित घट ।

उद्घात-मज्ञा पु० १. उपक्रम । आरम्भ । २. आघात । ठाकर । धक्का ।

उद्घातक-वि० [ स्त्री० उद्घातिका ] १. धक्का या ठोकर लगानेवाला । २. प्रारम्भ करनेवाला ।

मज्ञा पु० नाटक में प्रस्तावना का भेद-त्रिशेष जिसमें सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुनकर उसका और अर्थ लगाता हुआ कोई पात्र प्रवेश करता है या नेपथ्य से कुछ कहता है ।

उद्दंड-वि० [ सज्ञा उद्दंडा ] जिसे दंड इत्यादि का कुछ भी भय न हो । अवलड । प्रचंड । उद्धत । १. निडर । २. उजड्ड ।

उर्दत-वि० बृहदन्त । दंतुला । आगे निकला हुआ दाँत । बडदन्ता ।

उद्दश-मज्ञा पु० मसा । मशक । दाँस । मच्छर ।

उद्दाम-वि० १. स्वतंत्र । वधनरहित ।

२. उग्र । निरकुश । उद्द । बे-कहा । ३.

गभीर । महान् । ४. असाधारण । ५.

अभिमानि । ६. विरद । बडा । उन्नत ।

राज्ञा पु० १. वरुण । २. दण्ड । वृत्त-विशेष ।

उद्दालन-मज्ञा पु० १. प्राचीन आर्य क्रिया ।

२. दत्त-विशेष ।

उद्दिष्ट-वि० १. माकेतिक । दिगाया हुआ । द्रिगित किया हुआ । २. अभिप्रेत । लक्ष्य । ३. सम्मत । ४. मनस्थ ।

मज्ञा पु० पिगल में वह क्रिया जिसमें यह बतलाया जाता है कि दिया हुआ छंद मात्रा-प्रस्तार का कौन-सा भेद है ।

उद्दीपक-वि० [ स्त्री० उद्दीपिका ] १. उकसाने या उत्तेजित करनेवाला । जो उभाड़नेवाला हो । २. व्यक्तकारी । ३. प्रकाशकर्त्ता ।

उद्दीपन-मज्ञा पु० [ वि० उद्दीपनीय, उद्दीपित, उद्दीप्त, उद्दीप्य ] १. उभाड़ना । बढ़ाना । जगाना । तापन । प्रकाशन । उत्तेजित करने की क्रिया । २. काव्य में वे विभाग जो रम को उत्तेजित करते हैं । जैसे, श्रुत, पवन आदि । ३. उत्तेजित या उद्दीपन करनेवाला पदार्थ ।

उद्दीप्त-वि० जिसका उद्दीपन हुआ हो । उत्तेजित । उमड़ा, बड़ा या जागा हुआ । प्रग्ज्वलित ।

उद्देश या उद्देश्य-मज्ञा पु० [ वि० उद्दिष्ट, उद्देश्य, उद्देशित ] १. लक्ष्य । इष्ट । प्रयोजन । २. अभिलाषा । अभिप्राय । चाह । मदा । ३. हेतु । कारण । ४. अनुसंधान । अन्वेषण । ५. न्याय में प्रतिज्ञा । ६. वह वस्तु जिस पर ध्यान रखकर कोई बात कही या की जाय । अभिप्रेत अर्थ । ७. वह जिसके सबध में कुछ कहा जाय । विशेष । विशेष का उलटा । ८. विचार । वि० इष्ट । लक्ष्य ।

उद्ध\*-क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व" ।

उद्धत-वि० [ सज्ञा उद्धतय ] १. अविनीत ।

उग्र । घृष्ट । प्रचंड । अवलड । २. प्रगल्भ ।

३. कुचाली । दुरन्त । ४. अभिमानी ।

मज्ञा पु० चार मात्राओं का छंद-विशेष ।

उद्धतपन-मज्ञा पु० १. उग्रता । २. उजड्डपन ।

उद्धरण-मज्ञा पु० [ वि० उद्धरणीय, उद्धृत ]

१. ऊपर उठना । २. मुक्त होना । फँस

हुए को निकालना । ३. उद्धार । मुक्ति ।

भाग । बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था में

आना । ४. पड़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास

के लिए बार-बार पढ़ना । ५. उन्मूलन ।

६ किसी लेख के किसी अंश को दूसरे लेख में जगह का त्याग रखना।  
 उद्धरण—सज्ञा स्त्री० आवृत्ति। पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यास के लिए बार बार पढ़ना।  
 उद्धारना\*—कि० सं० उबारना। उद्धार करना।  
 कि० अ० छूटना। वचना।  
 उद्धव—सज्ञा पु० १ कृष्ण के सखा विशेष। २ आमोद-प्रमोद। उत्सव। ३ यज्ञ की अग्नि।  
 उद्धार—गज्ञा पु० १ मुक्ति। छुटकारा। २ उत्पत्ति-मुधार। दुरुस्ती। ३ कर्ज से छुटकारा या वचाव। ४ वह ऋण, जिस पर व्याज न लगे। ५. रक्षण।  
 उद्धारना\*—कि० सं० छुटकारा देना या उद्धार करना।  
 उद्ध्वस्त—वि० जो टूटा फूटा हो। ध्वस्त। नष्टप्राय।  
 उद्धत—वि० १ अन्य स्थान से जगह का त्याग लिया हुआ। उद्धारित। २ उगला हुआ। ३ ऊपर उठाया हुआ। ४ रक्षित।  
 उद्बुद्ध—वि० १ विकसित। खिला हुआ। २ चेतन्य। प्रबुद्ध। ज्ञानी। ३ जाग्रत। जाग हुआ।  
 उद्बुद्धा—सज्ञा स्त्री० परकीया नायिका जो स्वेच्छा से उपपत्ति से प्रेम करती हो।  
 वि०—जगी हुई। चेतन्य। सतर्क। गिली हुई।  
 उद्बोध—सज्ञा पु० अल्प ज्ञान।  
 उद्बोधक—वि० [स्त्री० उद्बोधिका] १ बोधक। चेतानेवाला। २ प्रकट, सूचित या प्रकाशित करनेवाला। ३ उत्तमान या उत्तेजित करनेवाला। ४ जगानेवाला।  
 उद्बोधन—गज्ञा पु० [वि० उद्बोधनीय उद्बोधित] १ ज्ञान। चेत। ज्ञापन। २ जगाना। ३ उत्तेजित करना। ४ बोध करना। चेताना।  
 उद्बोधित—गज्ञा स्त्री० परकीया नायिका विधेय जो उपपत्ति के अनुराई द्वारा प्रकट किए हुए प्रेम का गमनकर प्रेम करे।  
 वि०—जगाई हुई। गिलाई हुई। गमजाई हुई।

उद्भट—वि० [सज्ञा उद्भटता] १ प्रचंड। प्रबल। २ उच्चाशय। उदार। महात्मा। अनुपम वीर।  
 उद्भव—सज्ञा पु० [वि० उद्भूत] १ प्रादुर्भाव। उत्पत्ति। जन्म। २ बढ़ती। वृद्धि।  
 उद्भावन—सज्ञा स्त्री० १ उत्पत्ति। २ कल्पना। मन की उपज। ३ प्रकाश।  
 उद्भास—सज्ञा पु० [वि० उद्भासनीय, उद्भासित, उद्भासुर] १ दीप्ति। प्रकाश। आभा। २ प्रतीति। हृदय में किसी बात का उदय। विश्वास।  
 उद्भासित—वि० १ उत्तेजित। प्रदीप्त। २ प्रकट। प्रकाशित। ३ विवित। ज्ञान।  
 उद्भिज—सज्ञा पु० दे० 'उद्भिज'।  
 वि० भूमि का फोड़कर उगनेवाले।  
 उद्भिज्ज—सज्ञा पु० वृक्ष, लता, गुल्म आदि जो भूमि फोड़कर निकलते हैं। पेड़-पौधे। वनस्पति।  
 उद्भिद—सज्ञा पु० दे० "उद्भिज्ज"। वृक्ष लता आदि।  
 वि० अकुरित या प्रफुल्लित होना।  
 उद्भिद विद्या—सज्ञा स्त्री० वृक्ष आदि रोपने की विद्या। माली का काम।  
 उद्भिन्न—वि० १ भेदित। विद्ध। फोड़ा हुआ। २ उत्पन्न।  
 उद्भूत—वि० निकला हुआ। उत्पन्न। उदित। प्रकट।  
 सज्ञा स्त्री० उत्पत्ति। उत्पत्ति। विभूति।  
 उद्भूत रूप—सज्ञा पु० दृष्टिगोचर होने योग्य रूप।  
 उद्भेद—सज्ञा पु० १ फोड़कर निराला। (पीया के समान)। २ उद्घाटन। प्रकाशन। ३ बाव्यालवार विशेष जिसमें कोमल में छिपाई हुई किसी बात का विगी हनु से प्रकाशित या लक्षित होना कहा जग्य।  
 उद्भेदन—गज्ञा पु० १ फोड़ना। तोड़ना। २ छेदकर पार जाना। फोड़कर निराला।  
 उद्भय—गज्ञा पु० विग्रह। वृद्धि या विनाश। उदग। व्याकुलता। भयगहट। ऊपर की आर ममण करना।  
 उद्भति—वि० १ भगवत यागता हुआ।

भूमता हुआ। २ भ्रम में पड़ा हुआ। भूला या भटका हुआ। ३ चकित।

गज्ञा पु० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

उद्यत-वि० १ प्रभुता। तत्पर। उतारू।

मुस्तंदा। २ उठाया या ताना हुआ।

उद्यम-सज्ञा पु० [ वि० उद्यमी, उद्यत ] १ प्रयास। २ प्रयत्न। ३ उद्योग। ४ परिश्रम। अध्यवसाय। ५ उत्साह। ६ चेष्टा। ७ काम-धन्धा। रोजगार।

उद्यमी-वि० १ उद्योगी। प्रयत्नशील। उद्यम करनेवाला २ उत्साही। ३ सतर्क।

उद्यान-सज्ञा पु० १ उपवन। बगीचा।

श्रीडावन। २ आराम।

उद्यापन-सज्ञा पु० किसी वस्तु की समाप्ति पर किया जानवाला हवन आदि।

उद्युक्त-वि० १ यत्नवान्। उद्योग में लगा हुआ। तत्पर। २ परिश्रमी। ३ उत्साहान्वित।

उद्योग-सज्ञा पु० [ वि० उद्योगी, उद्युक्त ] १ प्रयत्न। प्रयास। अध्यवसाय। २ उपाय। मेहनत। ३ काम धन्धा। उद्यम।

उद्योगी-वि० [ स्त्री० उद्योगिनी ] १ उत्साही। २ उद्योग करनेवाला। परिश्रमी।

उद्योत-सज्ञा पु० १ प्रकाश। आलोक। उजाला २ आभा। चमक।

उद-सज्ञा पु० ऊदविलाव। जल की विलगी।

उद्विक्त-वि० १ स्फुट। २ स्पष्ट। ३ परिवृद्ध। बढ़ा हुआ।

उद्वेक-सज्ञा पु० [ वि० उद्विक्त ] १ उत्थान। बढ़ती। वृद्धि। अधिकता। ३ काव्यालंकार-विशेष जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मद् पड़ जाना वर्णन किया जाता है। ४ प्रकाश। ५ उपक्रम। आरम्भ।

उद्वेगन-सज्ञा पु० १ ऊपर बांधना। ऊपर टांगना। २ गल में रस्सी लगाना। फाँसी देना।

उद्वेगनमूल-वि० १ गले में रस्सी डालकर मरा हुआ। २ फाँसी पाया हुआ।

उद्वेगन-सज्ञा पु० शरीर में तेज, चन्दन या

उद्वेगन आदि मलना। उद्वेगन। घटना।

उद्वेह-सज्ञा पु० [ स्त्री० उद्वेहा ] १ मातृ वायुआ में से एक जो तृतीय स्वर्ग पर है। २ वेदा। पुत्र। जैसे, ग्मुद्वेह।

उद्वेहन-सज्ञा पु० १ उठना। २ ऊपर पिचता। ३ विवाह।

उद्वामन-सज्ञा पु० [ वि० उद्वामनीय, उद्वामक, उद्वामित, उद्वाम्य ] १ भगाना। मददना। स्थान छोड़ना। २ उजाड़ना। नष्ट करना। ३ वासस्थान नष्ट करना। ४ बध। मारना।

उद्वेह-सज्ञा पु० विवाह। परिणय। दारप्रिया।

उद्वेहन-सज्ञा पु० [ वि० उद्वेहनीय उद्वेही, उद्वेहित, उद्वेह्य ] १ विवाह। २ उठाना। ऊपर ले जाना। ३ हटाना। ४ जाना।

उद्वेहोपयुक्त-वि० १ विवाह के उपयुक्त। परिणय-योग्य। २ वयस्क।

उद्विग्न-वि० १ आकुल। उद्वेगयुक्त। घबड़ाया हुआ। व्यग्र। २ भीत।

उद्विग्नता-सज्ञा स्त्री० १ व्यग्रता। २ आकुलता। घबड़ाहट। ३ डर। भीति।

उद्विग्नमना-वि० उद्विग्न चित्त। घबड़ाया हुआ।

उद्वेग-सज्ञा पु० [ वि० उद्विग्न ] १ घबड़ाहट। (सचारी भावा में से एक) २ आवेश। मनोवेग। चित्त की चिन्ता। तीव्र चित्त। जोश। ३ नाक। ४ विरहजन्य दुःख। धावक। हरवारा। दूत।

उद्वेगकर-वि० चिन्ताजनक। व्याकुलतावर्द्धक।

उद्वेगी-वि० १ उद्विग्न। घबड़ाया हुआ। २ उत्कण्ठित। ३ भावनायुक्त।

उद्वेजक-सज्ञा पु० उद्विग्न करनेवाला। घबरानेवाला या परेशान करनेवाला।

उद्वेजन-सज्ञा पु० उद्विग्न करना। व्याकुल करना। घबड़ाहट पैदा करना।

उद्वेल-सज्ञा पु० किसी पात्र में चीज का बहुत भर जाने के कारण इधर-उधर विचरना। छलकना। छलछलाना। ऊपर को फेंकना।

उद्वेलित-वि० छलकता हुआ। आलोलित। डावाँडोल। उछाला हुआ। ऊपर-फेंका हुआ।

उपदना-वि० अ० १ उद्यतना। खुलना।

२ उजड़ना। ३ सिला, जमा या लगाना रहना।  
 उधर-त्रि० वि० वहाँ। उस स्थान पर। उस ओर। दूसरी तरफ।  
 उधरना\*—क्रि० अ० मुक्त होना। २ दे० 'उजड़ना'।  
 क्रि० स० उद्धार करना। मुक्त करना।  
 उधराना—क्रि० अ० १ हवा के कारण फैलना। तितर-बितर होना। २ उपद्रव करना।  
 उधरे—वि० १ प्रकाशित। २ खुले हुए। ३ फटे।  
 उधार—सज्ञा पु० ऋण।  
 मुह०—उधार खाए बैठना=१ किसी भारी आसरे पर दिन काटते रहना। २ प्रत्येक समय तैयार रहना।  
 २ मँगनी। किसी एक की वस्तु का दूसरे के पास केवल कुछ दिनों के व्यवहार के लिए जाना। \*३ उद्धार। छुटकारा। मुक्ति।  
 उधारक\*—वि० दे० "उद्धारक"।  
 उधारना—क्रि० स० १ मुक्त करना। उद्धार करना। २ चारना। पार करना। ३ बचाना।  
 उधारी\*—वि० [स्त्री० उद्धारिणी] उद्धार करनेवाला।  
 सज्ञा पु० जो उधार दिया जाय। ऋण।  
 उधेड़—सज्ञा स्त्री० उधेड़ने की क्रिया या भाव।  
 उधेड़ना—क्रि० स० १ उचाड़ना। मिली हुई पतों को अलग-अलग करना। २ सिलाई तोड़ना। टाँका खोलना। ३ सुलझाना। ४ छितराना। बिखराना।  
 उधेड़ धुन—सज्ञा स्त्री० १ मुक्ति बाँधना। २ ऊहा-मीह। सोच-विचार।  
 उनत\*—वि० जो झुना हो।  
 उनहत्त—सज्ञा स्त्री० सख्या विशेष। १९। दस और नी।  
 उनका—सज्ञा पु० [अ०] कल्पित पक्षी-विशेष जिस आज तक किसी ने नहीं देखा है।  
 उनचास—वि० एक कम पचास।  
 सज्ञा पु० ४९। पालीस और नौ की सख्या।  
 उनगीस—वि० बीस और नौ। २९।

सज्ञा पु० बीस और नौ की सख्या।  
 उनदा\*—वि० दे० "उनीदा"।  
 उनदीहां—वि० दे० "उनीदा"।  
 उनमदे—वि० उन्मत्त। मद से भरा। मदमत्त।  
 उनमना\*—वि० दे० "अनमना"।  
 उनमायना\*—क्रि० स० दे० "उन्मयन" [वि० उन्मायी] विलोडना। मथना।  
 उनमायो\*—वि० विलोडनेवाला। मथनेवाला।  
 उनमान\*—सज्ञा पु० दे० "अनुमान"। १ नाप। तौल। परिमाण। २ थाह। ३ सामर्थ्य। शक्ति।  
 वि० सदृश। तुल्य। समान। बराबर।  
 उनमानना—क्रि० स० अनुमान करना। अंदाज लगाना।  
 उनमना\*—वि० [स्त्री० उनमुनी] अनमना। चुपचाप। मीन।  
 उनमूलना\*—क्रि० स० दे० "उन्मूलन" उखाड़ना। किसी स्थान से अलग करना।  
 उनमेख\*—सज्ञा पु० १ फूल खिलना। २ आँख का खुलना। ३ प्रकाश। उजाला।  
 उनमेखना\*—क्रि० स० दे० "उन्मेप" १ उन्मीलित होना। आँख का खुलना। २ खिलना। विकसित होना (फूल आदि का)।  
 उनरना\*—क्रि० अ० १ उभड़ना। उठना। २ कुद-कुदकर चलना।  
 उनवना\*—क्रि० अ० १ लटकना। झुकना। २ छाना। ३ घिर आना। ४ ऊपर पड़ना। टूटना।  
 उनसठ\*—वि० पचास और नी। ५९। एव कम साठ।  
 सज्ञा पु० पचास और नौ की सख्या या अंक।  
 उनहत्तर—वि० साठ और नी। ६९।  
 सज्ञा पु० साठ और नौ की सख्या या अंक।  
 उनहानि—सज्ञा स्त्री० तुलना। समता। बराबरी।  
 उनहार—वि० समान। सदृश।  
 उनहारि\*—सज्ञा स्त्री० १ समानता। सादृश्य। एकरूपता। २ बराबरी।  
 उनाना\*—क्रि० स० १ झुवाना। २ लगाना। क्रि० अ० आज्ञा मानना।

उनिद्र-वि० १. प्रफुल्ल। विषगिह। प्रकानित।

२. निद्राग्रह।

उनींद-गज्ञा स्त्री० कच्ची नींद। अफुरी निद्रा।

उनींद-वि० [ स्त्री० उनींदी ] १. नींद में

भग हुआ। ऊँपठा-दुआ। आकरय-युक्त।

उन्नत\* -वि० ६० "उन्नीय"।

उन्नत-नाभि-वि० उच्च नाभियुक्त। फूरी नाभियाला।

उन्नतानत-वि० १. उच्च गीन स्थान आदि।

२. ऊँच-गाँव।

उन्नत-वि० १. ऊपर उठा हुआ। ऊँचा। २

बड़ा हुआ। ३. समृद्ध। ४. श्रेष्ठ। ५. उत्तम।

६. लंबा।

उन्नति-गज्ञा स्त्री० १. चढ़ाव। २. ऊँचाई। ३

बढ़ती। वृद्धि। समृद्धि। ४. उच्चता। ५

उदय।

उन्नतोदर-गज्ञा पु० १. वह वस्तु जिसका

वृत्तगट ऊपरको उठा हो। २. चाप या

वृत्तखंड के ऊपर का तल।

वि० बड़े पेटवाला। वृद्धि।

उन्नमन-वि० उत्तोलित। ऊपर उठाया गया।

ऊँचीरुत।

उन्नयन-वि० ऊर्ध्वप्रयाण। उत्तोलन। ऊपर

ले जाना।

उन्नाव-सज्ञा पु० [ अ० ] बेर-विशेष जो

हकीमी नुसखों में पड़ता है।

उन्नावी-वि० [ अ० उन्नाव ] १. कालापन

लिये हुए लाल। २. उन्नाव के रंग का।

उन्नायक-वि० [ स्त्री० उन्नायिका ]

१. बढ़ानेवाला। २. ऊँचा या उन्नत करने-

वाला।

उन्नासी-वि० एक कम अस्ती। ७९।

सज्ञा पु० सत्तर और नौ की संख्या या अंक।

उन्निद्र-वि० १. निद्रा हुआ। विवसित। २

निद्राग्रह। जैसे—उन्निद्र-रोग। ३. जिसे

नींद न आई हो।

उन्नीस-वि० दस और नौ।

सज्ञा पु० १९। दस और नौ की संख्या या

अंक।

मुहा०—उन्नीस विस्वे=अधिकांश। प्रायः।

अधिकतर। उन्नीस होगा=१ मात्रा में कुछ

कम होना। थोड़ा पटना। २. गुण में

पटकर होना। (दो वस्तुओं का परस्पर)

उन्नीय-नीय होना=एक का दूसरी में कुछ

अच्छा होना।

उन्नत-वि० [ गज्ञा उन्नतता ] १. मदाय।

मत्तवाग्ना। २. पागल। बावला। ३. बेमुय।

जो आपे में न हो।

उन्नतता-गज्ञा स्त्री० पागलपन। मत्तवाला-

पन।

उन्नद-वि० बावला। पागल। उन्मादयुक्त।

प्रमादी। गिरी। उन्नत।

म० उन्माद। पागलपन।

उन्नना-वि० उत्कृष्ट-चित्त। चिन्तित।

व्याकुल। चंचल।

उन्ननी-गज्ञा स्त्री० हठयोग में नाक की गोंक

पर दृष्टि गठाना।

उन्माद-गज्ञा पु० [ वि० उन्मादक, उन्मादी ]

१. पागलपन। रोग जिसमें मन और बुद्धि

का कार्यक्रम बिगड़ जाता है। विक्षिप्तता।

चित्त-विग्रम। २. सचारी भावों में से एक

जिसमें विषयों के कारण प्रलाप का वर्णन

होता है।

उन्मादक-वि० १. पागल करनेवाला। उन्नत

कर देनेवाला। २. जो नशा करता हो।

उन्मादन-सज्ञा पु० १. उन्नत या मत्तवाला

करने का काम। २. कामदेव के पाँच बाणों

में से एक।

उन्मादी-वि० [ स्त्री० उन्मादिनी ] उन्माद

रोग-युक्त। विक्षिप्त। पागल।

उन्मादी क्षेत्र-सज्ञा पु० वायुप्रस्त। पागल।

उन्मान-सज्ञा पु० परिमाण। तौल। नाप।

उन्मार्ग-सज्ञा पु० [ वि० उन्मार्गी ] १. कुमार्ग।

२. बुरा ढंग।

उन्मिश्रित-वि० प्रफुल्ल। विकसित। फूला

हुआ। खुला हुआ।

उन्मीलन-सज्ञा पु० [ वि० उन्मीलक, उन्मी-

लनीय, उन्मीलित ] १. खुलना (नेत्र का)।

उन्नेय। २. खिलना। विकसित होना।

३. प्रकाश।

उन्मीलना\*-क्रि० म० खोलना।

उन्मीलित-वि० प्रसफुटित। खुला हुआ।

सज्ञा पु० काब्यालकार-विशेष जिसमें दो वस्तुओं में इतना अधिक सादृश्य कहा जाय कि केवल एक बात के कारण उनमें भेद दिखाई पड़े।

उन्मुक्त-वि० जिसके बन्धन खुल गये ह। खुला हुआ। बन्धन-रहित। उदार।

उन्मुक्त-वि० [ स्त्री० उन्मुक्ता ] १ मुह ऊपर किये २ तत्पर। उद्यत। तैयार। ३ उत्सुक। उत्कण्ठित।

उन्मूलक-वि० जड़ से नष्ट करनेवाला। नाश करनेवाला।

उन्मूलन-सज्ञा पु० वि० उन्मूलनीय, उन्मूलित] १ समूल नष्ट करना। मटियामेट करना। २ जड़ से उखाड़ना। ३ ऊपर खींचना।

उन्मूलना-क्रि० स० जड़ से उखाड़ फेंकना।

उन्मेष-सज्ञा पु० [ वि० उन्मेषित ] १ खुलना (आँख का)। २ बिलना। विकास। ३ थोड़ा प्रकाश। ४ ज्ञान। बुद्धि। ५ पलक।

उन्मोचन-सज्ञा पु० परित्याग करना।

उन्हारा-सज्ञा पु० १ डील-डोल। २ रूप।

उप-सज्ञा पु० १ बाजा विशेष। नसतरंग नामक बाजा। २ उद्भव के पिता का नाम।

उप-उप० उपसर्ग विशेष। यह जिन शब्दा के पहले लगता है, उनमें इन अर्थों की विशेषता करता है, समीपता। जैसे—

उपकूल, उपनयन। सामर्थ्य। (वास्तव में आधिक्य), जैसे—उपकार। गौणता या न्यूनता, जैसे—उपमश्री, उपसभापति। व्याप्ति, जैसे—उपकीर्ण। पाम जाना

जैसे उपगमन। ऊपर, जैसे—उपशीप। पास वा, जैसे—उपनिष्ठिका। अधीन, जैसे—उपदास। प्राय, जैसे—उपदेश। छोटा जैसे—उपेंद्र।

उपकट-वि० निष्कट। ममीप। गले के पास।

सज्ञा पु० १ ग्राम के ममीप। २ अस्वों की गति-विशेष।

उपकथा-सज्ञा स्त्री० १ आख्यायिका। कहानी। कल्पित कथा। २ पुराण।

उपकरण-सज्ञा पु० १ मामान। मामश्री। साधन वस्तु। २ राजाभा के छत्र, चैवर

आदि राजचिह्न। ३ भोजन के लिए व्यजन-आदि। ४ अप्रधान द्रव्य। ५ परिच्छेद। उपकरना-क्रि० स० उपकार या भलाई करना।

उपकर्ता-सज्ञा पु० दे० "उपकारक"।

उपकार-सज्ञा पु० १ भलाई। नेकी। २ लाभ।

उपकारक-वि० [ स्त्री० उपकारिका ] १ उपकार या भलाई करनेवाला। २ सहायता करनेवाला।

उपकारिका-वि० उपकार करनेवाली।

सज्ञा स्त्री० १ राजभवन। २ तबू।

उपकारिता-सज्ञा स्त्री० उपकार। भलाई।

उपकारी-वि० [ स्त्री० उपकारिणी ] १

उपकार या भलाई करनेवाला। २ सहायक। ३ लाभ पहुँचानेवाला।

उपकारेच्छु-वि० १ उपकार करने का अभिलाषी। २ दाता।

उपकार्य-वि० १ उपकारोचित। २ जिसका उपकार किया जाय।

उपकार्य-सज्ञा स्त्री० १ राजसदन। राजगृह।

२ अक्ष रखनेका स्थान। ३ गोला। तबू। राजा का तबू।

उपकुर्षण-सज्ञा पु० १ कुछ दिन के लिए ब्रह्मचारी। २ ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् जो गृहस्थ होते हैं।

उपकूप-सज्ञा पु० कूप के समीप वा जलाशय, जो पशुओं के जल पीने के लिए बनाया जाता है।

उपकूल-सज्ञा पु० 'नदी, तालाब आदि का विनारा।

उपकृत-वि० १ कृतोपकार। जिसके साथ उपकार किया गया हो। २ कृतज्ञ।

उपकृति-सज्ञा स्त्री० उपकार।

उपक्रम-सज्ञा पु० १ अनुष्ठान। कार्यारम्भ की पहली अवस्था। उद्घाटन। २ किसी काम को आरम्भ करने के पहले वा आयोजन। उद्योग। तैयारी। ३ भूमिका।

उपक्रमनिका-सज्ञा स्त्री० विषय सूची वा पुस्तक के आरम्भ में दी जाती है।

उपशान्त-वि० १ आरम्भ किया हुआ। २ प्रभुतुल।

उपकोश-गङ्गा पु० निम्ना। कुम्भा। भग्ना।  
 गङ्गा।  
 उपशेव-गङ्गा पु० १ अभिनय के आरम्भ में  
 नाट्य के गार का पूर्व कथन। २ आशेर।  
 उपलान-गङ्गा पु० दे० "उत्पलान"। यथा।  
 इतिहास।  
 उपगत-वि० १ प्राप्त। २ उपस्थित।  
 जाना हुआ। गत। ३ स्वीकृत।  
 उपगति-गङ्गा स्त्री० १. ज्ञान। २ प्राप्ति।  
 स्वीकार।  
 उपगमन-सङ्गा पु० १. आगमन। निवृत्त गमन।  
 २ योग। ३ प्रीति। ४ अगीकार।  
 उपगीत-गङ्गा स्त्री० आर्या छंद का भेद-  
 विशेष।  
 उपगृह-सङ्गा पु० छोटा अप्यापन। अप्रधान  
 गृह। उपदेशक। शिक्षा-गृह।  
 उपगृह-गङ्गा पु० आलिंगन। अङ्गार।  
 उपग्रह-गङ्गा पु० १ छोटा ग्रह। अप्रधान  
 ग्रह। २ राहु और केतु। ३ वह छोटा ग्रह  
 जो अपने बड़ ग्रह के चारों ओर घूमता है।  
 जैम-पृथ्वी का उपग्रह चंद्रमा है। ४ बंदी।  
 बंधुआ। ५ जेल। बंद। ६ गिरफ्तारी।  
 उपघात-सङ्गा पु० १ नाश करने का काम।  
 २ अनाति। इद्रिया का अपने-अपने काम  
 में असमर्थ होना। ३ रोष। पीडा।  
 व्याधि। ४ पाँच पातकों का समूह-  
 उपपातक, जानिभ धीवरण, सक्तीवरण,  
 अपात्रीवरण, मलिनीवरण। (स्मृति) ५  
 आघात।  
 उपवय-गङ्गा पु० १ बढ़ती। वृद्धि। उत्पत्ति।  
 २ जमा करना। सचय।  
 उपचरित-सङ्गा पु० १ उपासित। सेवित।  
 आराधित। २ लक्षण से जाना हुआ।  
 उपचर्या-सङ्गा स्त्री० सेवा-शुभ्रपा। चिकित्सा।  
 इलाज। रोगों का उपशम, प्रतिपार।  
 उपचार-सङ्गा पु० १ चिकित्सा। दवा। २  
 व्यवहार। उपाय। विधान। प्रयोग। ३  
 सेवा। तीमारदारी। ४ धर्मानुष्ठान। ५  
 पूजन के अग या विधान जो प्रधानत  
 सोलह माने गये हैं। जैसे, षोडशोपचार।  
 ६ घूस। रिक्त्त। ७ खुशामद। ८ सधि-

विशेष त्रिमये विमर्ग के स्थान पर न या  
 न हो जाता है। जैसे, निष्ठल में निष्ठल।  
 उपचार-वि० [ स्त्री० उपचारिणी ] १  
 चिकित्सा करनेवाला। २ जो उपचार  
 या सेवा करे। ३ विधान करनेवाला।  
 उपचारक-गङ्गा पु० दवा के पड़े पावय में  
 उमड़े अभिप्रेत अर्थ में भिन्न अर्थ की  
 कथना करने वाले निवाकता।  
 उपचारना-वि० ग० काम में लाना। व्यवहार  
 में लाना। २ विधान करना।  
 उपचारात्-वि० वि० केवल व्यवहार दिवावे  
 या रसम अदा करने के रूप में।  
 उपचारी-वि० [ स्त्री० उपचारिणी ] दवा  
 करनेवाला। उपचार करनेवाला।  
 उपचिन-वि० गमूढ़। बद्धित। सचित।  
 इच्छा।  
 उपचित्र-सङ्गा पु० वर्णार्थ समवृत्त-विशेष।  
 उपचित्रा-गङ्गा स्त्री० छंद विशेष जिसमें १६  
 मात्राएँ होती हैं।  
 उपज-गङ्गा स्त्री० १ पैदावार। उत्पत्ति। जैसे,  
 खेत की उपज। २ मूल। नई उत्पत्ति। उद्भा-  
 वना। ३ मनगडत बात। ४ गाने में गाय की  
 मुरदा के लिए बंधी हुई तानों के सिवा कुछ  
 तानें अपनी प्रतिभा ने उसमें मिला देना।  
 प्रतिभा ने उपज तान जोड़ना (मगीत)।  
 उपजत-गङ्गा पु० उपजात। घटित। उत्पन्न।  
 उपजना-कि० अ० १ पैदा होना। उगना।  
 उत्पन्न होना। २ अकुर होना। ३ बढ़ना।  
 उपजहि-कि० अ० उपजते हैं। उत्पन्न होते हैं।  
 उगते हैं।  
 उपजाऊ-वि० उर्वर भूमि जिसमें अच्छी  
 उपज हो।  
 उपजाति-सङ्गा स्त्री० वृत्त-विशेष, जो इन्द्रवज्रा  
 और वज्रस्य तथा इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा  
 के मेल से बनते हैं।  
 उपजाना-कि० अ० १ पैदा करना। उत्पन्न  
 करना। २ सिरजना।  
 उपजिहवा-सङ्गा स्त्री० छोटी जीभ।  
 उपजीवन-सङ्गा पु० [ वि० उपजीवी, उप-  
 जीवक ] १ जीविका। २ निर्वाह के लिए  
 दूसरे का सहारा।

उपजीविका—सज्ञा स्त्री० जीविका। अवलम्ब।  
उपजीवी—वि० [स्त्री० उपजीविनी] १  
आथयी। दूसरे के सहारे पर निर्वाह करने-  
वाला। २ अनुगत।

उपज्ञा—सज्ञा स्त्री० १ आद्य ज्ञान। प्रथम ज्ञान।  
२ उपदेश के बिना ईश्वरदत्त प्रथम ज्ञान।  
उपटन—सज्ञा पु० दे० "उबटन"।  
सज्ञा पु० १ चिह्न। निशान। जो आघात,  
दवाने या लिखने से पड़ जाय। साँट। २  
अक।

उपटना—क्रि० अ० १ निशान पड़ना। आघात,  
दाव या लिखने का चिह्न पड़ना। २ उख-  
ड़ना। अलग होना।

उपटा—सज्ञा पु० पानी की बाढ़। ठोकर।  
उपटाना\*—क्रि० स० उबटन लगवाना।  
क्रि० स० १ उखाड़ना। २ उखड़वाना।  
उपटारना\*—क्रि० स० १ हटाना। २ उठाना।  
३ उच्चाटन करना।

उपटना—क्रि० अ० १ अकित होना। २  
उपटना। ३ उखड़ना।

उपटीकन—सज्ञा पु० पारितोषिक द्रव्य। उप-  
हार। भेंट।

उपतत्र—सज्ञा पु० १ यामलजादि तत्र-  
शास्त्र। २ सूक्ष्म सूत्र।

उपतप्त—वि० सतापित। दुःखित। खेदित।  
उपतारा—सज्ञा स्त्री० क्षुद्र नक्षत्र। नेत्रगोलक।  
उपत्यका—सज्ञा स्त्री० तराई भूमि जो पर्वत  
के पास हो।

उपदेश—सज्ञा पु० १ गरमी। सुजाव। आत-  
श। फिरंग रोग। २ रोग-विशेष जिसमें  
दाँत या नाखून लगने के कारण लिंगेन्द्रिय  
पर धाव हो जाता है। ३ पाट। गजव।  
४ मद्यपान। ५ संपदश।

उपदल—सज्ञा पु० मुकुल। पत्ता। पान।  
पुष्पदल। फूल की पत्ती।

उपदेशक—सज्ञा पु० द्वास्पात्र। प्रहरी।  
उपदा—सज्ञा स्त्री० उपदोषन। भेंट। उपायन।  
दर्शन।

उपदिशा—सज्ञा स्त्री० १ बोध। विदिगा। २  
यह दिशा जो दो दिशाओं के बीच में हो।  
उपदिष्ट—वि० १ उपदेश प्राप्त। जिने

उपदेश दिया गया हो। २ ज्ञापित।  
जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो।  
उपदेवता—सज्ञा पु० भूत। प्रेत। छोटे देवता-  
विशेष।

उपदेश—सज्ञा पु० १ शिक्षा। सीख। नसीहत।  
हित की बात का कथन। २ दीक्षा। गुरु-मन्त्र।  
उपदेशक—सज्ञा पु० [स्त्री० उपदेशिका] जो  
उपदेश करे। शिक्षा देनेवाला। गुरु, शिक्षक।  
उपदेशकारी—सज्ञा पु० १ शिक्षक। २ उपदेश  
करनेवाला।

उपदेश्य—वि० १ उपदेश के अधिकारी। उप-  
देश के योग्य। २ सिखाने योग्य (बात)।

उपदेष्टा—सज्ञा पु० [स्त्री० उपदेष्ट्री] उपदेश  
देनेवाला। शिक्षागुरु। शिक्षक। आचार्य।

उपदेसना—क्रि० स० उपदेश करना।

उपद्रव—सज्ञा पु० [वि० उपद्रवी] १ विप्लव।  
विद्रोह। ऊँधम। अन्याय। झगडा। २ किसी  
रोग के बीच में होनेवाले दूसरे विकार।  
३ कोई दुःखद घटना। ४ राष्ट्रीय व्याधि  
या फट। (अकाल, प्लेग, ग्रहण आदि)।

उपद्रवी—वि० नटखट। उपद्रव करनेवाला।  
ऊँधम मचानेवाला।

उपद्वीप—सज्ञा पु० छोटा द्वीप। जल-मध्यवर्ती  
स्थान।

उपधर्म—सज्ञा पु० पाखण्ड। पाप। नास्तिमता।  
उपधरना\*—क्रि० अ० अपनाना। स्वीकार  
करना।

उपधा—सज्ञा स्त्री० १ कपट। छल। २  
उपाधि। ३ व्याकरण में वह अक्षर जो  
किसी शब्द के अंतिम अक्षर के पहले हो।  
४ बहाना। ५ शर्त। ६ जालसाजी।

उपधातु—सज्ञा स्त्री० १ धातु जो या तो छोड़े  
तोड़े आदि धातुओं के योग से बनती है अथवा  
खाना से निकलती है। जैसे, शीखा, सोना-  
मुखी। तूतिया। २ शरीर के भीतर रस  
से बने पसीना, चर्बी आदि।

उपधान—सज्ञा पु० [वि० उपधृत] १ ठह-  
राना या ऊपर रखना। २ सहारे की वस्तु।  
३ उगीना। त्रिविधा। सिरहना। ४ लगाव।  
५ प्रेम। ६ दया। ७ विष। ८ विशेषता।  
९ डक्कन।

उपपादक-वि० जन्मदाता । स्थापनार्त्ता ।  
 उपनना-वि० अ० उपनन होना ।  
 उपपाद-गता पु० १. पाग ले जाना । २. उप-  
 नयन-गम्यार्त्ता । ३. वादा का गुण के पाग  
 ले जाना । ४. कोई उदाहरण देकर उगारे  
 धर्म की माध्य में घटाना (तर्क-शास्त्र) ।  
 उपनयन-गता पु० [ वि० उपनीत, उपनेता,  
 उपनेतव्य ] १. मन्त्रोपनिषत्-गम्यार्त्ता । जनेउ पद-  
 नने के समय का धर्म । २. पाग ले जाना ।  
 उपनागरिका-गता स्त्री० अलराग में कृति-  
 अनुप्रास का भेद-विशेष जिसमें वर्ण मधुर  
 वर्ण आते हैं ।  
 उपनाना\*-वि० म० उत्पन्न या पैदा करना ।  
 उपनाम-गता पु० १. उपाधि । पदवी ।  
 अल । २. दूसरा नाम । ३. प्रचलित नाम ।  
 उपनायक-सज्ञा पु० नाटकों में प्रधान नायक  
 का सहायक या सहयोगी ।  
 उपनिधि-सज्ञा स्त्री० चाती । धरोहर ।  
 जमानत ।  
 उपनिषिष्ट-वि० जो अन्य स्थान में आकर बस  
 गया हो ।  
 उपनिषेद-सज्ञा पु० १. दूसरे स्थान में आए  
 हुए लोगों की बस्ती । पालोनी । २. एक  
 स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना ।  
 उपनिषद्-सज्ञा स्त्री० १. पास बैठना । २. ब्रह्म-  
 विद्या की प्राप्ति के लिए गुरु के पास बैठना ।  
 ३. वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम  
 भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का  
 निरूपण है । वेद का शिरोभाग । ४. धर्म । ५.  
 निर्जन स्थान । ६. तत्त्व-ज्ञान । ब्रह्मविद्या ।  
 वेदग्रहस्थ ।  
 उपनिषद-सज्ञा स्त्री० दे० "उपनिषद्" ।  
 उपनीत-वि० १. लाया हुआ । २. जिसका  
 उपनयन-संस्कार हो गया हो । ३. निष्कट  
 प्राप्त । उपस्थित । समीपागत । उपवीनी ।  
 उपनेता-सज्ञा पु० [ स्त्री० उपनेत्री ] १. लाने  
 का पहुँचानेवाला । २. जो उपनयन-संस्कार  
 करावे । आचार्य । गुरु ।  
 उपनेत्र-गता पु० १. चक्षुः । २. नेत्र का  
 सहायक ।  
 उपन्ना-सज्ञा पु० उपरना । ओढ़ने का टुपट्टा ।

उपनयन-वि० निदिष्ट । न्यासीपुत्र । परास्पर  
 गमना हुआ ।  
 उपनयस-गता पु० [ वि० उपनयस्त्र ] १. प्रस्था-  
 वना । पहाती । गलकाव्य-विशेष । २. स्थान ।  
 वायव्य या उपग्रम । ३. वसित आगवाधिता ।  
 गथा । नायक [ अर्थ ] ।  
 उपपत्ति-गता पु० १. नाया विशेष । २. वह  
 पुरुष जिसमें किसी दूसरे की स्त्री प्रेम करे ।  
 वार । गुणवति । जार ।  
 उपपत्त-गता स्त्री० १. मिट्टि । धूल । हेतु ।  
 समाधान । घटना । प्राप्ति । २. गुरु द्वारा  
 किसी वस्तु की स्थिति का निरूपण । ३. चरि-  
 तार्थ होता । मेड मिलना । मगति ।  
 उपपत्तिमम-गता पु० एक प्रकार का लडन, जहाँ  
 किसी वस्तु में विद्वद् धर्मों का वर्णन किया  
 जाय । जंगे, मन्त्र अनित्य हैं, वनाति वह उत्पाद्य  
 है । वह नित्य भी है (तर्क-शास्त्र) ।  
 उपपत्नी-गता स्त्री० १. गुरुरतिन । २. पद-स्त्री ।  
 ३. गमनी ।  
 उपपन्न-वि० १. जो कारण में आया है । जो पाग  
 आया है । २. मिला हुआ । प्राप्त । ३. पहुँचा  
 हुआ । ४. सप्त । युक्त । ५. उपयुक्त । उचित ।  
 उपपातक-गता पु० छोटा पाप । जैसे, पर-  
 स्त्रीगमन । पक्ष महापातक का भिन्न पाप ।  
 उपपादन-गता पु० [ वि० उपपादित, उपपन्न,  
 उपपादनीय, उपपाद्य ] १. मिट्ट बनना । युक्ति  
 देकर समाधान करना । नावित करना । ठह-  
 राना । २. सपादन । कार्य को पूरा करना ।  
 उपपुराण-गता पु० १८ मुख्य पुराणा के अति-  
 रिक्त और छोटे पुगण । ये भी सख्या में  
 १८ हैं । इनके नाम हैं-१. सानतकुमार । २.  
 नारसिंह । ३. भाड । ४. निवधम । ५. दोर्वा ।  
 सिंह । ६. नारदीय । ७. कापिल । ८. वामन ।  
 ९. औशन । १०. ब्रह्माड । ११. वारुण ।  
 १२. बालिका । १३. माहेस्वर । १४. धाव ।  
 १५. सीर । १६. पारासर । १७. मारीच  
 तथा १८. भार्गव ।  
 उपयुक्त-वि० १. जो काम में लाया गया हो ।  
 २. जुड़ा । उच्छिष्ट । ३. अविकृत ।  
 उपभोक्ता-वि० [ स्त्री० उपभोक्त्री ] उपभोग  
 करनेवाला । काम में लानेवाला ।

उपभोग-सज्ञा पु० १. किसी वस्तु के व्यवहार का आनंद लेना। २. आस्वादन। ३. विलान। ४. व्यवहार में लाना। बताना। ५. सुख का सामान।

उपभोग्य-वि० उपभोग या व्यवहार करने योग्य।

उपमन्त्री-सज्ञा पु० प्रधान मन्त्री के नीचे रहनेवाला मन्त्री।

उपमर्द-सज्ञा पु० दे० "उपमर्दन"।

उपमर्दन-सज्ञा पु० (वि० उपमर्दित, उपमर्द्य) बुरी तरह से दबाना या रोंदना। अपेक्षा और तिरस्कार करना।

उपमा-सज्ञा स्त्री० १. तुलना। मिलान। जोड़। किसी वस्तु, व्यापार या गुण को दूसरी वस्तु, व्यापार या गुण के समान बतलाना। २. अर्थालंकार-विशेष जिसमें दो वस्तुओं (उपमेय और उपमान) के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें समान बतलाया जाता है।

उपमाता-सज्ञा पु० [स्त्री० उपमात्री] १ जो उपमा दे। उपमा करनेवाला। चित्रकार। सज्ञा स्त्री० १ धाम। धात्री। दूध पिलानेवाली दाई। २ माता के समान।

उपमान-सज्ञा पु० १. प्रमाण-विशेष। वह वस्तु जिसमें उपमा दी जाय। वह जिसके समान कोई दूसरी वस्तु बतलाई जाय। २ २३ मात्राओं का छंद-विशेष।

उपमाना\*—क्रि० म० उपमा देना।

उपमित-वि० उत्प्रेक्षित। सम्भावित। जिसकी उपमा दी गई हो।

सज्ञा पु० बर्मघारण के अंतर्गत समास-विशेष जो दो शब्दों के बीच के उपमावाचक शब्द का लोप करके बनता है। जैसे—पुरुष-निह।

उपमिति-सज्ञा स्त्री० ज्ञान जो उपमा या सादृश्य से होता है। समानता। सादृश्य।

उपमेय-वि० १. जिसकी उपमा दी जाय। २. समान्य। दृष्टान्त। योग्य। ३. धर्म्य। ४. धर्मीय।

उपमेयोपमा-सज्ञा स्त्री० उपमा अलंकार

विशेष, जिसमें उपमेय की उपमा उपमान हो और उपमान की उपमेय।

उपयन्ता—क्रि० अ० १. चला जाना। न रह जाना। २. उठ जाना।

उपयम-सज्ञा पु० १. दिवाह। २. समय। उपयुक्त-वि० उचित। योग्य। मुनासिब। वाजिब।

उपयुक्तता-सज्ञा स्त्री० यथार्थता। औचित्य। ठीक उतरने या होने का भाव।

उपयोग-सज्ञा पु० [वि० उपयोगी, उपयुक्त]

१ प्रयोग। व्यवहार। काम। २. योग्यता।

३ लाभ। ४. प्रयोजन। ५. आवश्यकता।

उपयोगिता-सज्ञा स्त्री० फलसाधनता। काम में आने की योग्यता। लाभ-कारिता।

उपयोगितावाद-सज्ञा पु० वह सिद्धान्त जिसमें वस्तु और बात का विचार केवल उसकी उपयोगिता की दृष्टि से किया जाता है।

उपयोगी-वि० [स्त्री० उपयोगिनी] १. प्रयोजनीय। काम में आनेवाला। २.

लाभकारी। ३ अनुकूल। उपयुक्त।

उपर-वि० ऊँचा।

उपरवत-वि० १. विपन्न। पीड़ाग्रस्त। २. रेंगा हुआ। ३ गरम किया। तपाया हुआ।

सज्ञा पु० राहुग्रस्त

उपरत-वि० १ उदासीन। विरक्त। २.

दान्त। समप्लत। ३ मृत।

उपरति-सज्ञा स्त्री० १ त्याग। विषय से

विराग। विरति। २ उदासी। ३. मोत।

मृत्यु। ४. ऐंद्रिय गुणों से विरक्ति (वेदात)।

उपरत्न-सज्ञा पु० थोड़े मूल्य के या घटिया

रत्न। जैसे, झीप, मरकत-मणि।

उपरता-सज्ञा पु० दुपट्टा। उत्तरीय। चद्दर।

क्रि० अ० उसटना।

उपरकट्ट, उपरकट्ट-वि० १ नियमित के अतिरिक्त। ऊपरी। २. व्यर्थ का। वै ठिकाने का।

उपरवार-सज्ञा पु० बांगर जमीन। नदी के किनारे के ऊपर की जमीन।

उपरस-सज्ञा पु० १. पैरों में पारि के गमान गुण करनेवाले पदार्थ। जैसे, गंधक। २. शीण भावना। ३ शीण म्याद।

उपरांत-त्रि० वि० गद्यान् । अन्तर । बाद । पछि ।

उपराग-गङ्गा पु० १. राग । २. विगी यन्तु पर उत्तम गाग वी यन्तु का आभाग । ३. यामना । विषय में अनुरक्ति । व्यसन । ४. परिवाद । निन्दा । ५. त्याग । उदासीना । विराग । विधाम । ६. बाद या मूर्ख-ग्रहण ।

उपरा-सद्मी-गङ्गा स्त्री० १. गद्दी । प्रति-द्रष्टा । २. पद्मा-ऊपरी ।

उपराज-गङ्गा पु० याज्ञतराय । गवनेर-जनरल । राजप्रतिनिधि ।

\*गङ्गा स्त्री० दे० "उपज" ।

उपराजना\*-त्रि० स० १. पैदा या उपज करना । २. बनाना । रचना । ३. यमाना । उपाजन करना ।

उपराजा-गङ्गा पु० छोटे राजा । युवराज । वि० स० १. उपाया । उपजाया । उत्पन्न किया । पैदा किया । २. बनाया । रचा । उपराना-त्रि० अ० १. उतराना । ऊपर आना । २. प्रवृत्त होना ।

\*क्रि० स० उठाना । ऊपर करना ।

उपराग-गङ्गा पु० १. निवृत्ति । विरति । २. विराम । ३. आराम ।

उपराज\*-गङ्गा पु० १. सहायता । रक्षा । पक्ष-ग्रहण । २. सहायक । साथी ।

उपरावट\*-वि० गर्व से सिर ऊँचा करने वाला । अभिमानी । गर्वयुक्त ।

उपराहना\*-क्रि० अ० प्रसरा या बड़ाई करना ।

उपराही-क्रि० वि० दे० "ऊपर" ।

वि० श्रेष्ठ । बढकर । उत्तम ।

उपरि-त्रि० वि० ऊपर ।

उपरिदृष्टि-गङ्गा स्त्री० १. तुच्छ देवता की दृष्टि । २. बापु का प्रभाव ।

उपरिष्ठात्-अ० ऊपर । ऊर्ध्व ।

उपरिस्थ-वि० ऊर्ध्वस्थित । ऊपर का ।

उपरी-वि० ऊपर का ।

सज्ञा पु० १. जोते खेत के ऊपर की मिट्टी । २. भूमि से उखाड़ी गई मिट्टी । ३. उपली । ४. बडी । ५. छाता ।

उपरी-उपरा-गङ्गा पु० १. चढा-ऊपरी । २. पवित्रद्विवा ।

उपपट्ट-वि० गतित । प्रजिह्व ।

उपपुष्प-गङ्गा पु० छोटा नाटक जिनके १८ भेद हैं ।

उपरना\*-गङ्गा पु० दे० "उपरना" ।

उपरनी-गङ्गा स्त्री० ओंसी ।

उपरोक्त-वि० जो ऊपर या पहले कहा गया है । (गुद रूप "उपर्युक्त")

उपरोप-गङ्गा पु० १. आटा । अटाव । मापा । रंग । रखावट । २. उपना । आच्छादन । ३. आदर । सम्मान ।

उपरोप-गङ्गा पु० १. वाघा टालनेवाला । रोतनेवाला । २. भीतर की कोठरी ।

उपरोहित-गङ्गा पु० कुल्हाड़ा । पुरोपा । पुरोहित ।

उपरोडा-गङ्गा पु० (विगी वस्तु के) ऊपर का परला या ढक्कन ।

उपनी-गङ्गा पु० "उपरना" । दुपट्टा । उत्तरीय ।

उपर्युक्त-वि० पहले या ऊपर कहा हुआ । उपर्युपरि-अ० ऊपर-ऊपर । ऊपर के ऊपर ।

उपल-गङ्गा पु० १. ओला । २. पत्थर । ३. बादल । मेघ । ४. रत्न । ५. चीनी । ६. बाल । ७. लोडा (यज्ञीय) ।

उपलक्ष-गङ्गा पु० १. सवेत । चिह्न । २. दृष्टि । ३. उद्देश्य ।

उपलक्षक-वि० जो अनुमान कर ले । ताडने वाला ।

सज्ञा पु० वह शब्द जो उपादान लक्षणा से अपने वाच्यार्थ द्वारा निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी कोटि की ओर वस्तुओं का भी बोध करावे (साहित्य) ।

उपलक्षण-गङ्गा पु० [ वि० उपलक्षक, उपलक्षित ] १. संकेत । चिह्न । बोध कराने वाला । २. शब्द की वह शक्ति जिससे उसने वचन से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी की कोटि की ओर-ओर वस्तुओं का भी बोध होता है । ३. दृष्टान्त । ४. अन्याय-बोधक ।

उपलक्ष्य-गङ्गा पु० १. चिह्न । संकेत । २. उद्देश्य । दृष्टि ।

यौ०—उपलक्ष्य में—विचार से। दृष्टि से।  
उपलब्ध—वि० १. प्राप्त। पाया हुआ। २.  
ज्ञात। जाना हुआ।

उपलब्धार्थी—संज्ञा स्त्री० आख्यायिका।  
उपकथा।

उपलब्धि—संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। २. मति।  
बुद्धि। ३. अनुभव। ४. ज्ञान।

उपला—संज्ञा पु० [ स्त्री० उपली ]  
उपरी। कंडा। गोहरा।

उपलेप—संज्ञा पु० १. लीपना। लेप लगाना।  
२. लेप करने की वस्तु।

उपलेपन—संज्ञा पु० [ वि० उपलेपित, उपलेप्य,  
उपलिप्त ] लेप लगाने या लेपने का काम।

उपल्ला—संज्ञा पु० [ स्त्री० उपल्ली ]  
किसी वस्तु का ऊपरवाला भाग, वह या  
पत।

उपवन—संज्ञा पु० १. बाग। फुलवारी।  
२. छोटा वन। ३. आराम।

उपवना—कि० अ० १. लुप्त होना। २.  
निकलना। उदय होना।

उपवर्ह—संज्ञा पु० तकिया। वालिश। उपधान।  
उपवर्हण—संज्ञा पु० दे० “उपवर्ह”।

उपवसथ—संज्ञा पु० १. सोम यज्ञ करने के  
पहले का दिन जिसमें व्रत आदि करने का  
विधान है। २. गाँव या बस्ती।

उपवास—संज्ञा पु० १. लघन। अनाहार।  
भोजन का छूटना। २. वह व्रत जिसमें  
भोजन नहीं किया जाता।

उपवासी—वि० [ स्त्री० उपवासिनी ] व्रती।  
उपवास करनेवाला।

उपविद्य—संज्ञा पु० नाटक—चेटक आदि। शिल्पी।  
उपविद्या—संज्ञा स्त्री० शिल्प आदि विज्ञान  
शास्त्र। ब्रह्म-विद्या के अतिरिक्त विद्या।

उपविष—संज्ञा पु० साधारण या हल्का विष।  
जैसे अफीम या धतूरा।

उपविष्ट—वि० आसीन। आसनस्थ। बैठ  
हुआ।

उपवीत—संज्ञा पु० [ वि० उपवीती ] १.  
जनेऊ। यज्ञमूत्र। २. उपनयन। ३.  
यज्ञोपवीत।

उपवेद—संज्ञा पु० धनुर्वेद, आयुर्वेद आदि

विद्याएँ जिन्हें वेदों से निकली हुई समझा  
जाता है। जैसे आयुर्वेद अथर्ववेद का  
उपवेद है।

उपवेष्टन—संज्ञा पु० १. लपेटना। बसना।  
२. बस्ता। ३. जामा।

उपवेशन—संज्ञा पु० [ वि० उपवेशित, उपवेशी,  
उपवेश्य, उपविष्ट ] १. जमना। २.  
बैठना। ३. स्थित होना।

उपशम—संज्ञा पु० १. इन्द्रिय-निग्रह। वासनाओं  
को दवाना। २. शांति। निवृत्ति। ३. बदला।  
प्रतिकार। ४. निवारण का उपाय। इलाज।

उपशमन—संज्ञा पु० [ वि० उपशमनीय,  
उपशमित, उपशाम्य ] १. दवाना। दमन  
करना। २. शांत रखना। ३. निवारण। उपाय  
से दूर करना।

उपशय—संज्ञा पु० शिकार के आस-पास या  
उसके मार्ग में शिकारी के छिपकर बैठने  
का गढ़ा या आड। २. निदान-पत्रक के  
अन्तर्गत रोगज्ञापक अनुमान।

उपशल्य—संज्ञा पु० १. ग्रामान्त। ग्राम की सीमा।  
२. भाला। ३. पर्वत के पास की भूमि।

उपशाला—संज्ञा स्त्री० मकान के पास का  
उठने-बैठने के लिए ढालान या छोटा कमरा।  
बैठक।

उपशिष्य—संज्ञा पु० शिष्य का शिष्य। चेले  
का चेला।

उपश्रुत—वि० १. प्रतिश्रुत। २. वाग्दत्त।  
३. अंगीकृत। स्वीकृत।

उपसंपादक—संज्ञा पु० [ स्त्री० उपसंपादिका ]  
काम करनेवाले प्रधान व्यक्ति का सहायक  
या उसकी अनुपस्थिति में काम करनेवाला।  
पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकीय विभाग में  
काम करनेवाला सम्पादक का सहायक।  
सहायक-सम्पादक।

उपसंहार—संज्ञा पु० १. परिहार। २. हरण।  
३. समाप्ति। शेष। ४. निराकरण। ५.  
नारा। ६. किसी पुस्तक के अंत का अध्याय  
जिसमें उसका उद्देश्य या परिणाम या निष्कर्ष  
संक्षेप में बतलाया गया हो। ७. सारांश। ८.  
भीमासा। ९. व्यनीत। १०. सवह। ११. अंत।  
मृत्यु। १२. पात लाना।

उपस-मंशा स्त्री० बदलू। दुर्गंध।  
 उपसति-मंशा स्त्री० १. उपागना। गेवा। २.  
 विनयपूर्वक गुण के समीप गमन।  
 उपसना-क्रि० अ० १. दुर्गंधित होना। २.  
 गठना। ३. पचना। ४. घड़े ने रम्मी अलग  
 करना।  
 उपसर्ग-संज्ञा पु० १. वह निपात या शब्द  
 या अक्षर जो किसी गन्ता या धातु के  
 पहले लगता है और उसमें क्रिगो अर्थ  
 की विशेषता करता है। जैसे, अनु, अव,  
 उप, उद् इत्यादि। २. अनाकुन। ३. देवी  
 उत्पात। ४. रोग, कष्ट। ५. ग्रहण (सूर्य,  
 चंद्र का)।  
 उपसर्जन-संज्ञा पु० १. डालना। २. उपद्रव।  
 ३. गोण वस्तु। ४. त्याग।  
 उपसर्पण-संज्ञा पु० १. उपास। २. अवगमन।  
 ३. अनुवृत्ति।  
 उपसागर-संज्ञा पुं० खाड़ी। छोटा समुद्र।  
 समुद्र का एक भाग।  
 उपसाना-क्रि० सं० सड़ाना। वासी करना।  
 उपसुन्द-संज्ञा पु० सु नाम के दैत्य का छोटा  
 भाई (पुराण)।  
 उपसेचन-संज्ञा पु० १. पानी छिड़कना।  
 पानी से सींचना या भिगोना। २. रसा।  
 गीली चीज।  
 उपस्त्री-संज्ञा स्त्री० रखेली। उपपत्नी।  
 उपस्थ-संज्ञा पु० १. पेड़। २. नीचे या मध्य  
 का भाग। ३. गोद। ४. पुरय-चिह्न। लिग।  
 ५. स्त्री-चिह्न। भग। ६. नितब। ७  
 गुदा।  
 वि० निकट बैठा हुआ। मुरक्षित स्थान।  
 उपस्थनिग्रह-संज्ञा पु० जितेन्द्रियत्व। काम-  
 दमन।  
 उपस्थल या उपस्थली-संज्ञा पु० चूतड़।  
 कूल्हा। पेड़।  
 उपस्थाता-संज्ञा पुं० भृत्य। सेवक।  
 उपस्थान-संज्ञा पु० [वि० उपस्थानीय,  
 उपस्थित] १. पास या सामने आना।  
 २. अभ्यर्चना या पूजा के लिए पास  
 आना। ३. पूजा का स्थान। ४. समाज।  
 सभा। ५. खड़े होकर स्तुति या वंदना करना।

उपस्थापन-संज्ञा पु० उपस्थितिकरण। निपट-  
 आनयन।  
 उपस्थित-वि० १. पास बैठा हुआ। आगत  
 सामने या पास आया हुआ। वर्तमान।  
 विद्यमान। २. बाद। ध्यान में आया हुआ।  
 ३. स्वच्छ। ४. दीवारिक, द्वारपात्र।  
 यो० उपस्थित कवि-संज्ञा पु० शीघ्र कवि।  
 आनुकवि।  
 उपस्थित, वक्ता-संज्ञा पु० मद्रक्ता। वचन-पटु।  
 उपस्थिता-संज्ञा स्त्री० वर्ण-वृत्ति-विशेष।  
 उपस्थिति-संज्ञा स्त्री० १. विद्यमानता। मौजू-  
 दगी। हाजिरी। २. निकट होना। ३. प्राप्ति।  
 स्मरण-शक्ति, स्मरण रखने की शक्ति।  
 उपस्वत्व-संज्ञा पु० भूमि या विनी संपत्ति  
 की आय का अधिकार या हक।  
 उपहत-वि० १. दत्त। नष्ट किया हुआ। बरबाद  
 किया हुआ। २. दूषित। बिगाड़ा हुआ। ३.  
 सकट में पड़ा हुआ। शक्ति-हीन। ४. छित-  
 गया हुआ। ५. ढका हुआ।  
 उपहसित (हास)-संज्ञा पु० हासके छ भेदों में  
 से चौथा, जिसमें हँसते समय मिर हिले।  
 उपहार-संज्ञा पु० १. भेंट। नजर। सीगात।  
 नजराना। २. पादापत्ती की उपासना के  
 छ. नियम—हसित, गीत, नृत्य, हठुकार,  
 नमस्कार और जप।  
 उपहास-संज्ञा पु० [वि० उपहास्य] १. हँसी-  
 मजाक। दिल्लगी। २. बुराई। निंदा। ३.  
 बेइज्जती। अस्ममान।  
 उपहासास्पद-वि० १. उपहास या हँसी उड़ाने  
 के योग्य। २. बुरा। निन्दनीय। बरावे।  
 उपहासी-संज्ञा स्त्री० १. हँसी। ठट्ठा। २.  
 निन्दा। अनादर।  
 उपहास्य-वि० दे० "उपहासास्पद"। हँसी  
 के योग्य।  
 उपहित-वि० स्थापित।  
 उपही\*-संज्ञा पु० अपरिचित, पिदेसी या बाहरी  
 मनुष्य।  
 उपहत-वि० आनीत। दत्त।  
 उपाग-संज्ञा पु० १. अवयव। किसी अंग का  
 कोई भाग। क्षुद्र भाग। २. वह वस्तु जिससे  
 किसी वस्तु की पूर्ति हो। जैसे—वेद के

उपाय । ३ टांग । तिल । ४ नगाड़े जैसा  
एक वाद्य ।

उपाय-मन्त्र पु० [ वि० उपाय ] १ छोर  
या सिरे के समीप का भाग । अन्तिम ।  
२ प्रदेश भग । आस-पास का हिस्सा ।  
३ छोटा किनारा । ४ निकट । समीप ।  
पास ।

उपाय-वि० अन्तिम से पहले का । अन्तर्वा  
के समीपवाला ।

उपाय-क्रि० स० उपजाई । गढ़ी । बनाई ।  
रची ।

उपाय-मन्त्र पु० दे० 'उपाय' ।

उपाय-मन्त्र पु० उपाय । यत्न ।

उपाय-मन्त्र पु० १ आरम्भ । २ वर्षाकाल  
के बाद उद्वारण करने का समय । विधि  
पूर्व वेदों का अध्ययन । ३ सत्कार विशेष ।  
( यज्ञोपवीत सत्कार )

उपाय-मन्त्र पु० १ प्राचीन कथा । २  
निम्नी कथा के अन्तर्गत कोई और कथा । ३  
वृत्त । ४ आख्यान । ५ इतिहास ।

उपाय-मन्त्र पु० दे० उपाय ।

उपाय-क्रि० स० उखाड़ना । नाचना ।

उपाय-वि० गृहीत । प्राप्त ।

उपाय-मन्त्र पु० दे० उत्पत्ति ।

उपाय-मन्त्र पु० १ पाना । प्राप्ति । २  
स्वीकार । ग्रहण । ३ ज्ञान । परिचय । बोध ।  
४ विषयों से इन्द्रियों की निवृत्ति । प्रत्याहार ।  
५ वह कारण जो स्वयं काय रूप में परिणत  
हो जाय । सामग्री जिससे कोई वस्तु तैयार  
हो । ६ साध्य की चार आध्यात्मिक  
वृत्तियों में से एक जिसमें मनुष्य एक ही  
बान में पूरे फल की आशा करके और प्रयत्न  
छाड़ देता है । ७ यायमत में समवायी  
करण । ८ विषय की ओर इन्द्रियों का  
जाना ।

उपाय-वि० १ लेन योग्य । ग्रहण करने  
योग्य । २ उत्कृष्ट । श्रेष्ठ । उत्तम । ३  
विधायक ।

उपाय-मन्त्र पु० १ कपट । छल । २ वह  
जिसके समीप से कोई वस्तु और की ओर  
अथवा किसी विषय रूप में दिखाई दे । ३

उपाय । अन्याय । उत्पात । ४ धर्मचिन्ता ।  
कस्तूर का विचार । ५ प्रतिष्ठासूचक पद ।

उपाय-मन्त्र पु० १ छल । २ चिह्न । ३  
उपनाम । अल्ल । पदवी ।

उपाय-मन्त्र पु० वह व्यक्ति जिसे  
उपाय या सिताय मिला हो ।

उपाय-वि० [ स्त्री० उपायिनी ] १  
अयायी । उपद्रवी । उत्पात करनेवाला ।  
२ अधर्मी ।

उपाय-मन्त्र पु० [ स्त्री० उपायिनी,  
उपायिनी उपायिनी ] १ अध्यापक ।  
शिक्षक । गुरु । २ वेद वेदांग का पढ़ाने-  
वाला । ३ एक प्रकार का ग्राहणा या भेद-  
विशेष ।

उपाय-मन्त्र पु० स्त्री० गुरुआनी । अध्यापिका ।  
उपाय-मन्त्र पु० स्त्री० गुरुपत्नी । उपाय  
की स्त्री ।

उपाय-मन्त्र पु० स्त्री० गुरुपत्नी । उपाय  
की स्त्री । २ अध्यापिका । शिक्षिका ।

उपाय-मन्त्र पु० स्त्री० उपानह । पादुका । जूती ।

उपाय-मन्त्र पु० स्त्री० उपानह । जूता । पनही ।

उपाय-मन्त्र पु० स्त्री० १ उत्पन्न करना ।

२ सोचना ।

उपाय-मन्त्र पु० [ वि० उपाय, उपय ]  
१ पास या निकट आना । २ साधन ।  
युक्ति । वह जिससे अभीष्ट तक पहुँचें ।  
३ राजनीति में शत्रु पर विजय पाने  
की चार युक्तियाँ—साम, भद्र दंड, और  
दान । ४ शृंगार के दो साधन, साम और  
दाम । ५ चेष्टा । ६ प्रतीकार ।

उपाय-मन्त्र पु० १ उपहार । भेंट । २  
व्रत की प्रतिष्ठा । ३ समीप गमन । ४ गुरु  
के पास जाना ।

उपाय-वि० स० उपराग । १ सूय-चन्द्र  
ग्रहण । २ प्रतिवाद । ३ व्यसन । ४  
यज्जना । ५ निंदा ।

उपाय-वि० १ उपाय करनेवाला । यत्नी ।  
२ उपायक । ३ खोजी । सन्धानी ।

उपाय-मन्त्र पु० दे० उखाड़ना ।

उपाय-क्रि० स० उखाड़ी । नोच ली ।

उपाय-मन्त्र पु० [ वि० उपायनीय,

उपाजित] वमाना। लाभ करना। अर्जन।  
२ एकत्रित करना।

उपाजित-वि० वमाना हुआ। प्राप्त किया हुआ। समूहीत। इकट्ठा किया हुआ।

उपालभ-सज्ञा पु० [ वि० उपालब्ध ] १ उलाहना। २. निंदा। ३. सिंहायत।

उपालभन-सज्ञा पु० [ वि० उपालभनीय, उपालभित, उपालम्भ्य, उपालब्ध ] १ निंदा करना। २ उलाहना देना।

उपाय\*†-सज्ञा पु० दे० 'उपाय'।

उपास\*†-सज्ञा पु० दे० 'उपवास'। अनाहार।

उपासक-वि०, [ स्त्री० उपासिका ] १ आराध्यक। २ भक्त। ३ पूजा या आराधना करनेवाला। ४ शूद्र।

उपासत-सज्ञा पु० १ शुश्रूषा। सेवा। २ आराधना। ३ धनुविद्या।

उपासता-सज्ञा स्त्री० १ पूजा। आराधना। २ परिचर्या। टहल। ३ पास बैठने की क्रिया।

\*क्रि० सं० भजना। उपासना या पूजा करना। सेवा करना।

क्रि० अ० १ निराहार रहना। उपवास करना। भूखा रहना।

उपासनीय क्रि० १ पूजनीय। सेवा करने योग्य। २ आराधनीय।

उपासा-वि० [ स्त्री० उपासिनी ] १ सेवक। भक्त। उपासना करनेवाला। २ जिसने भोजन न किया हो।

उपासी-वि० दे० 'उपासा'।

उपास्य-वि० सेव्य। पूजा के योग्य। आराध्य।

उपेद-सज्ञा पु० १ वामन या विष्णु भगवान्। २ इद्र के छोटे भाई।

उपेदवज्रा-सज्ञा स्त्री० प्यारह वर्णों की वृत्ति-विशेष।

उपेक्षण-सज्ञा पु० [ वि० उपेक्षणीय, उपेक्षित, उपेक्ष्य ] १ उदासीन होना। विस्मृत होना। २ किनारा सोचना। ३ पृणा या तिरस्कार करना।

उपेक्षा-सज्ञा स्त्री० १ उदासीनता। विस्मृत। २ लापरवाही। ३ पृणा। तिरस्कार। अनादर। ४ अस्वीकार। ५ त्याग।

उपेक्षित-वि० तिरस्कुत। जिसकी उपेक्षा की गई हो। निन्दित।

उपेक्ष्य-वि० आ उपेक्षा के योग्य हो।

उपेत-वि० संयुक्त। मिला हुआ। एकत्रित। २ समागत। प्राप्त। ३, आगत। ४ चीता हुआ। गत।

उर्पन\*-वि० [ स्त्री० उर्पनी ] सुला हुआ। नमन।

क्रि० अ० १ कुप्ट हो जाना। २ उठना।

उपोद्घात-सज्ञा पु० १ प्रस्तावना। भूमिका। पुस्तक के आरम्भ का वक्तव्य। २ विरुद्ध तर्क या उदाहरण (न्याय)।

उपोपग-सज्ञा पु० [ वि० उपोपणीय, उपोपित, उपोप्य ] निराहार व्रत। उपवास।

उपोसथ-सज्ञा पु० निराहार व्रत। उपवास। (जैन, बौद्ध)

उफ-अव्य० अफमोस। आह। ओह।

उफटना\*-क्रि० अ० १ उफान खाना। उबलना। २ जाश खाना।

उफटना\*-क्रि० अ० १ उबलकर उठना। (दूध आदि का)। २ उमडना। ३ जोश खाना।

उफनाना-क्रि० अ० १ उबलना। २ उमडना।

उफान-सज्ञा पु० उबाल। गरमी पावर फेन के साथ ऊपर उठना।

उफान-सज्ञा स्त्री० द० फाल। लम्बा डग। उबलना-क्रि० अ० १ उलटी करना। घमन करना। २ रद्द करना।

उबका-सज्ञा पु० घमन। कै।

क्रि०-घमन की। कै की।

उबकाई\*-[ सज्ञा स्त्री० ] १ मतली। २ उछाई। उछाल।

उबट\*-सज्ञा पु० विकट मार्ग। बुरा रास्ता। वि० ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़।

उबटन-सज्ञा पु० उपटन। शरीर पर मलने के लिए सरसा, तिल और चिरोजी आदि का लेप। बटना। २ भजन।

उबटना-क्रि० अ० उबटन लगाना।

उबटि-क्रि० अ० उबटन लगाकर।

उबना\*-क्रि० अ० १ दे० 'उगना'। २ दे० 'उबना'।

उबर-क्रि० अ० १ बचकर। शेष रहकर। २ बढ़कर।

उबेरण-सज्ञा पु० १ उद्वतन। २ बचाव।  
 ३ आड।  
 उबरना-क्रि० अ० १ उद्धार होना। मुक्ति  
 पाना। छूटना। २ रोप या बची बचना।  
 उबरा-वि० १ बचा हुआ। २ फालतू।  
 उबलना-क्रि० अ० १ उफनना। खलबलाना।  
 २ पकना। ३ वेग से निकलना। उमडना।  
 उबसना-क्रि० अ० १ सडना। २ गलना। ३  
 पचना।  
 उबहन-सज्ञा स्त्री० कुए से पानी खींचन की  
 रस्सी।  
 उबहना\*-क्रि० स० १ हृदयार म्यान से  
 बाहर निकलना। शस्त्र उठाना। २ पानी  
 फेंकना या उन्नीचना। ३ उमरना। ऊपर  
 की ओर उठना।  
 त्रि० स० जोतना।  
 वि० नग्न। बिना जूते का।  
 उबात\*-सज्ञा स्त्री० कैं। उलटी।  
 उबाना-क्रि० अ० १ बोना। रोपना। लगाना।  
 २ तग करना।  
 वि० बिना जूता का। नग पैर।  
 उबार-सज्ञा पु० १ उद्धार। छुटकारा। २  
 निस्तार। ३ ओहार।  
 उबारना-क्रि० स० १ मुक्त करना। उद्धार  
 करना। छुड़ाना। २ बचाना। ३ रखना।  
 उवाल-सज्ञा पु० १ उफान। आँच पाकर फन  
 के सहित ऊपर उठना। २ जोश। उद्वेग।  
 ३ क्षोभ।  
 उवालना-क्रि० स० १ खौलना। चुराना। जोश  
 देना। २ उसीजना। उसेवना। राँधना।  
 पानीके साथ आग पर चढ़ाकर गरम करना।  
 उबासी-सज्ञा स्त्री० जँभाई।  
 उबाहना\*-क्रि० स० दे० उबहना।  
 उबीठना-क्रि० स० अक्षि होना। जी भर  
 जानें पर अच्छा न लगना।  
 क्रि० अ० धबराना। ऊबना।  
 उबीधना\*-क्रि० अ० १ उलझना। फँसना।  
 २ गडना। धँसना।  
 उबीधा-वि० [स्त्री० उबीधी] १ धँसा या  
 गड़ा हुआ। २ शाड-मसाडवाला। माँटा  
 से भरा हुआ।

उबेना\*+वि० बिना जूते का। नग पैर।  
 उबेरना\*-क्रि० स० दे० 'उबारना'।  
 उबेहना-क्रि० स० १ धँठाना। २ पिरोना।  
 ३ जडना।  
 उम-सज्ञा पु० १ ऊध्र। ऊपर। २ द्वि। दो।  
 उमड़-वि० उभय। दोना।  
 उमक-सज्ञा पु० रीछ। भालू।  
 उमडना-क्रि० अ० १ फूलना। उमसना।  
 किसी सतह का आस-पास की सतह से कुछ  
 ऊँचा होना। २ उठना। ऊपर निकलना।  
 जैम अकुर उमडना। ३ उत्पन्न या पैदा  
 होना। ४ प्रकाशित होना। खुलना। ५  
 बढ़ना। अधिक प्रबल होना। ६ जबानी  
 पर आना। ७ चल देना या हट जाना। ८  
 गाय भंस आदि का मस्त होना।  
 उभना\*-क्रि० अ० दे० 'उमडना'। उठना।  
 उभय-वि० दोना। युगल।  
 उभयत-क्रि० वि० दोना ओर से। पार्श्वत।  
 उभयतोमुख-वि० जिसके दोना ओर मुँह हो।  
 यौ०—उभयतोमुखी गौ—व्याप्ती हुई गाय  
 जिसके गभ से बच्चे का मुँह बाहर निकल  
 आया हो। (इसके दान का घडा माहात्म्य  
 लिखा है।)  
 उभयत्र-अव्य० दोनो स्थाना में। दोनो तरफ।  
 उभयविपुला-सज्ञा स्त्री० आर्या छद का  
 मद्र विशय।  
 उभरना\*+क्रि० अ० दे० उमडना। अह  
 कार करना। शक्ती करना। उठना। बढ़ना।  
 उतरना। निकलना। निकल आना।  
 उभराई-सज्ञा पु० १ इतराई। २ फुगहट।  
 उभराना-क्रि० बहुव भराना। छकाना।  
 उभरीहा\*-वि० उभरा हुआ। उभार पर  
 आया हुआ।  
 उमाड-सज्ञा पु० १ उठान। ऊँचाई। ऊँचा  
 पन। २ वृद्धि। ३ ओज।  
 उमाडना-क्रि० स० १ उत्तजित करना।  
 बहकाना। उकसाना। २ भागी वस्तु को  
 धीरे धीरे उठाना।  
 उमाडवार-वि० १ उभरा हुआ। २ भडकीला।  
 उमाना\*-क्रि० अ० दे० 'अभुआना'। उठाना।  
 उमर-सज्ञा पु० उमर। उमर। ऊपर उठाना।

उपाजित] कमाना। लाभ करना। अर्जन।

२. एकत्रित करना।

उपाजित-वि० कमाया हुआ। प्राप्त किया हुआ। समूहीत। इयदृष्टा किया हुआ।

उपालम्भ-सज्ञा पु० [ वि० उपालम्भ ] १. उलाहना। २. निंदा। ३. शिवायत।

उपालम्भन-सज्ञा पु० [ वि० उपा-लम्भनीय, उपालम्भित, उपालम्भ्य, उपालम्भ्य ]

१. निंदा करना। २. उलाहना देना।

उपाय\*१-सज्ञा पु० दे० "उपाय"।

उपास\*१-सज्ञा पु० दे० "उपवास"। अनाहार।

उपासक-वि० [ स्त्री० उपासिका ] १ आराधक। २. भक्त। ३. पूजा या आराधना करनेवाला। ४. शूद्र।

उपासन-सज्ञा पु० १ सुश्रूषा। सेवा। २ आराधना। ३ धनुषिका।

उपासना-सज्ञा स्त्री० १ पूजा। आराधना। २ परिचर्या। दहल। ३ पास बैठने की क्रिया।

\* क्रि० स० भजना। उपासना या पूजा करना। सेवा करना।

क्रि० अ० १ निराहार रहना। उपवास करना। भूखा रहना।

उपासनीय वि० १ पूजनीय। सेवा करने योग्य। २. आराधनीय।

उपासा-वि० [ स्त्री० उपासिनी ] १ सेवक। भक्त। उपासना करनेवाला। २ जिसने भोजन न किया हो।

उपासी-वि० दे० "उपासा"।

उपास्य-वि० सेव्य। पूजा के योग्य। आराध्य।

उपेद-सज्ञा पु० १ वामन या विष्णु भगवान्। २ इद के छोटे भाई।

उपेदवज्रा-सज्ञा स्त्री० ग्यारह वर्णों की वृत्ति-विशेष।

उपेक्षण-सज्ञा पु० [ वि० उपेक्षणीय, उपेक्षित, उपेक्ष्य ] १. उदासीन होना। विरक्त होना। २. विनारा खोजना। ३ घृणा या तिरस्कार करना।

उपेक्षा-सज्ञा स्त्री० १ उदासीनता। विरक्ति। २. लापरवाही। ३. घृणा। तिरस्कार। अनादर। ४. अस्वीकार। ५. त्याग।

उपेक्षित-वि० तिरस्कृत। जिसकी उपेक्षा की गई हो। निंदित।

उपेक्ष्य-वि० जो उपेक्षा के योग्य हो।

उपेत-वि० मयुक्त। मिला हुआ। एकत्रित। २. समागत। प्राप्त। ३. आगम। ४. वीत हुआ गत।

उपेत\*-वि० [ स्त्री० उपेती ] मुला हुआ। नमन क्रि० अ० १. लुप्त हो जाना। २ उठना।

उपोद्घात-सज्ञा पु० १. प्रस्तावना। भूमिका। पुस्तक के आरम्भ का वक्तव्य। २. विरह तर्क या उदाहरण (न्याय)।

उपोषण-सज्ञा पु० [ वि० उपोषणीय, उपोषित, उपोष्य ] निराहार व्रत। उपवास।

उपोस्य-सज्ञा पु० निराहार व्रत। उपवास। (जैन, बौद्ध)

उफ-अव्य० अफमोस। आह। ओह।

उफडना\*-क्रि० अ० १. उफान खाना। उबलना। २ जोश खाना।

उफनना\*-क्रि० अ० १ उबलकर उठना। (दूध आदि का)। २ उमडना। ३. जोश खाना।

उफनाना-क्रि० अ० १ उबलना। २ उमडना। उफान-सज्ञा पु० उबाल। गरमी पाकर फेन के साथ ऊपर उठना।

उफान-सज्ञा स्त्री० दे० फाल। लम्बा डग। उबफना-क्रि० अ० १. उलटी करना। बमन करना। २. रद्द करना।

उबका-सज्ञा पु० बमन। कं।

क्रि०-बमन की। कं की।

उबकाई\*-[ सज्ञा स्त्री० ] १. मतली। २. उछाट। उछाल।

उबट\*-सज्ञा पु० विकट मार्ग। बुरा रास्ता। वि० ऊँचानीचा। ऊबड़-खाबड़।

उबटन-सज्ञा पु० उपटन। शरीर पर भलने के लिए सरसों, तिल और चिरौजी आदि का लेप। बटना। २ मजन।

उबटना-क्रि० अ० उबटन लगाना।

उबटि-क्रि० अ० उबटन लगाकर।

उबना\*-क्रि० अ०, १. दे० "उगना"। २. दे० "उबना"।

उबर-क्रि० अ० १ बचकर। शेष रहकर। २. बढ़कर।

उबरण-सज्ञा पु० १ उन्नतन। २ बचाव।  
 ३ आड।  
 उबरना-प्रि० अ० १ उद्धार होना। मुक्ति  
 पाना। छूटना। २ शप या चाली धरना।  
 उबरा-वि० १ बचा हुआ। २ फालतू।  
 उबलना-कि० अ० १ उफनना। खरबलाना।  
 २ पचना। ३ वेग से निवटना। उमडना।  
 उबसना-प्रि० अ० १ सडना। २ गलना। ३  
 पचना।  
 उबहन-सज्ञा स्त्री० कुए से पानी लीचन की  
 रस्ती।  
 उबहना\*-प्रि० स० १ हथियार म्यान से  
 बाहर निकालना। सस्त्र उठाना। २ पानी  
 फेंकना या उलीचना। ३ उबरना। ऊपर  
 की ओर उठना।  
 प्रि० स० जोतना।  
 वि० नग्न। बिना जूते का।  
 उवात\*†-सज्ञा स्त्री० कं। उठटी।  
 उवाना-प्रि० अ० १ बोना। रोपना। लगाना।  
 २ तग करना।  
 वि० बिना जूता का। नग पैर।  
 उवार-सज्ञा पु० १ उद्धार। छुटकारा। २  
 निस्तार। ३ ओहार।  
 उवारना-प्रि० स० १ मुक्त करना। उद्धार  
 करना। छुटाना। २ बचाना। ३ राखना।  
 उवाल-सज्ञा पु० १ उफान। आँच पाकर फन  
 के सहित ऊपर उठना। २ जोश। उद्वेग।  
 ३ क्षोभ।  
 उवालना-प्रि० स० १ खौलना। चुराना। जोश  
 देना। २ उसीजना। उतेजना। राधना।  
 पानीके साथ आग पर चढाकर गरम करना।  
 उवासी-राज्ञा स्त्री० जंभाई।  
 उवाहना\*-प्रि० स० दे० उबहना।  
 उबीठना-कि० स० अरुचि होना। जी भर  
 जाने पर अच्छा न लगना।  
 प्रि० अ० धवराना। ऊबना।  
 उबीघना\*-प्रि० अ० १ उलपना। फँसना।  
 २ गडना। धँसना।  
 उबीघा-वि० [स्त्री० उबीधी] १ धँसा या  
 गडा हुआ। २ धाड झलाडवाला। काटा  
 से भरा हुआ।

उबेना\*†-वि० गिना जूत का। नग पैर।  
 उबेरना\*-प्रि० स० दे० 'उबरना'।  
 उबेहना-प्रि० स० १ बँडाना। २ गिरोना।  
 ३ जठना।  
 उभ-सज्ञा पु० १ ऊर्ध्व। ऊपर। २ द्वि। दो।  
 उभ-वि० उभय। दोना।  
 उभक-सज्ञा पु० रीछ। मालू।  
 उभड़ना-प्रि० अ० १ फूलना। उपसना।  
 किसी सतह का आस-पास की सतह से कुछ  
 ऊँचा होना। २ उठना। ऊपर निकलना।  
 जैसे अकुर उभटना। ३ उत्पन्न या पैदा  
 होना। ४ प्रवाहित होना। सुटना। ५  
 बडना। अधिन प्रवृत्त होना। ६ जवानों  
 पर आना। ७ चल देना या हट जाना। ८  
 गाय भस आदि का भस्म होना।  
 उभना\*-प्रि० अ० दे० उभडना। उठना।  
 उभय-वि० दोना। युगल।  
 उभयत-प्रि० वि० दोना ओर से। पादवत।  
 उभयतोमुख-वि० जिसके दोना ओर मुँह हो।  
 यो—उभयतोमुखी गी=व्याती हुई गाय  
 जिसके गभ से वच्चे का मुँह बाहर निकल  
 आया हो। (इसके दान का बडा माहात्म्य  
 लिखा है।)  
 उभय-अव्य० दोनों स्थाना में। दोना तरफ।  
 उभयविपुला-सज्ञा स्त्री० आर्या छद का  
 भद विषय।  
 उभरना\*†-प्रि० अ० दे० उभडना। अह  
 वार करना। शखी करना। उठना। बहना।  
 उतरना। निकलना। निकल आना।  
 उभराई-सज्ञा पु० १ इतराई। २ फागहट।  
 उभराना-प्रि० बहुत भराना। छकाना।  
 उभरोहा\*-वि० उभरा हुआ। उभार पर  
 आया हुआ।  
 उभाड-सज्ञा पु० १ उठान। ऊँचाई। ऊँचा-  
 पन। २ वृद्धि। ३ ओज।  
 उभाडना-प्रि० स० १ उत्तजित करना।  
 बहकाना। उफसाना। २ भारी वस्तु को  
 धीरे धीरे उठाना।  
 उभाडवार-वि० १ उभरा हुआ। २ भडकीया।  
 उभाना\*-प्रि० अ० दे० अभुगाना। उठाना।  
 खडा करना। उत्थित करना। ऊपर उठाना।

उभार-मज्ञा पु० गुमडा। फुलावट। उठाव।  
उभारना-क्रि० फुटाना। उसवाना। उत्ते-  
जित करना।

उभिटना\*-क्रि० अ० [दे० १] भिटवना।  
ठिटवना। २ सहारा लेना। ३ हिचकना।

उभे\*-वि० दे० "उभय"।

उभो-वि० दो। दोनों। आपस में।

उभग-मज्ञा स्त्री० १. उल्लास। चित्त का  
उभाड़। मुखदायक मनोवेग। लहर। मौज।  
आनन्दाधिक्य। २. उभाड़। ३. अधिकता।  
४. पूर्णता।

उभगना-क्रि० अ० दे० "उभगना"। आनन्द  
से आगे जाना। उत्साहपूर्वक आगे बढ़ना।  
उत्साह में भरना।

उभगी-वि० उच्चपदाभिलाषी।

उभडना-क्रि० अ० दे० "उभडना"। उभरना।  
परिवृद्ध होना। बढ़कर रहना। वेग से बढ़ना।

उभग\*-सज्ञा स्त्री० दे० "उभग"।

उभगत-वि० प्रसन्न होते हुए।

उभगन\*-सज्ञा स्त्री० दे० "उभग"।

उभगना-क्रि० अ० १ उभडना। उभडना।  
२ भरकर ऊपर उठना। हुलसना। उल्लास  
में होना।

उभगना-क्रि० स० उभग पैदा करना।  
हुलसाना। प्रफुल्लित करना या प्रोत्साहित  
करना। उभाड़ना।

उभचना\*-क्रि० अ० १ हुमचना। किसी  
बस्तु पर तलवा से अधिक दाब पहुँचाने  
के लिए कूदना। २ चौकना होना। सचेत  
या सजग होना।

उभड-सज्ञा स्त्री० १ बगव। भराव। वाड।  
२ घिराव। ३ घावा।

उभडना-क्रि० अ० १ उभरना। तरल वस्तु  
का बहुतायत के कारण ऊपर उठना।  
उतराकर बह चलना। २ उठकर फैलना।  
३ छाना। ४ घेरना। जैसे—बादल उभडना  
यो—उभडना-धूमडना=धूम-धूमकर फैलना  
या छाना। (बादल)।

५ जोश में आना। आवेश में भरना।  
उभडना-क्रि० अ० दे० "उभडना"।

क्रि० स० 'उभडना' का प्रेरणार्थक रूप।

उभवना\*-क्रि० अ० १ मतवाला होना।  
उमग में भरना। २ उमटना। ३ उमगना।  
उमदा-वि० दे० "उम्दा"।

उमदाना\*-क्रि० अ० १. मन्त्र या मतवाला  
होना। २. आवेश या उमग में आना।

उमरा-मज्ञा स्त्री० [अ० उम्र] १ आयु।  
अवस्था। यय। २ जीवनकाळ।

उमरती-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का वाजा।

उमरा-मज्ञा पु० [अ०] अमीर का बहु-  
वचन। प्रतिष्ठित लोग। मन्दार।

उमराय\*-मज्ञा पु० दे० "उमरा"।

उमरी-सज्ञा स्त्री० वह पीछा जिसे जलावर  
सज्जीखार तैयार किया जाता है।

उमस-सज्ञा स्त्री० वर्षा-काल में वह गरमी  
जो हवा न चलने पर होती है। वर्षा होने  
पर हवा न चलने से होनेवाली गर्मी।

उमहना\*-क्रि० अ० दे० "उमडना"। उभ-  
डना। उठना।

उमहाना\*-क्रि० स० दे० उमाहना।

उमा-सज्ञा स्त्री० १ पार्वती। शिव की स्त्री।  
२ दुर्गा। भगवती। ३ हल्दी। हरिद्रा।

४ अलसी। अवसी। ५ आभा। प्रकाश।  
शावि। रानि। ६ कीवि।

उमावना\*-क्रि० अ० १ नष्ट करना। २  
खोदकर फेंक देना। उखाड़ना।

उमाविनी\*-वि० स्त्री० १ उमाडनेवाली।  
२ खोदकर फेंक देनेवाली।

उमाचना\*†-क्रि० स० १ उमाडना। ऊपर  
उठाना। २ निकालना।

उमाद\*-सज्ञा पु० दे० "उम्माद"।

उमाधव-सज्ञा पु० महादेव।

उमापति-सज्ञा पु० शिव। महादेव।

उमासुत-सज्ञा पु० वातिवेय। गणेश।

उमाह-सज्ञा पु० १ उमग। उत्साह। जोश।  
२ चित्त का उद्वेग।

उमाहना-क्रि० अ० दे० "उमडना"।

क्रि० स० उमगाना। उमडाना।

उमाहल-वि० उत्साहित। उमग से भरा  
हुआ।

उमेठन-सज्ञा स्त्री० १. बल। पैच। २ मरोड़।  
३ ऐंठन।

उमेठना-क्रि० स० भरोड़ना। ऐंठना।  
 उमेठवाँ-वि० १ पेचदार। ऐंठनदार। २ घुमावदार।  
 उमेठना\*-क्रि० स० दे० "उमेठना"।  
 उमेठना\*-क्रि० स० १ प्रकट करना। २ वर्णन करना। ३ खोलना।  
 उमेश-सज्ञा पु० महादेव। शिव।  
 उम्बगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ अच्छापन। २ भलापन। ३ खूबी।  
 उम्दा-वि० [अ०] उत्तम। बढ़िया। अच्छा।  
 उम्मत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ समाज। किसी मत के अनुयायियों की मंडली। २ समिति। ३ सत्तान। (परिहास) ४ अनुयायी। पैरोकार।  
 उम्मी-सज्ञा स्त्री० जी-नेहूँ की हरे दाने की बाल।  
 उम्मीद, उम्मेद-सज्ञा स्त्री० [फा०] आशा। आसरा। भरोसा।  
 उम्मेदवार-सज्ञा पु० [फा०] १ जो आशा या भरोसा रखे। २ काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से किसी दफ्तर में बिना वेतन काम करनेवाला मनुष्य। ३. किसी पद के चुनाव के लिए खड़ा होनेवाला आदमी।  
 उम्मेदवारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ आशा। भरोसा। २ आसरा। २ काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से बिना वेतन कार्य करना। ३ गर्भावस्था।  
 उम्र-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वय। अवस्था। आयु। उमर। २ जीवनकाल।  
 उयेड-क्रि० अ० १ उगा। उदय हुआ। निकला। २ देख पड़ा। ३ प्रकाशित हुआ।  
 उर-सज्ञा पु० १ हृदय। २ वक्षस्थल। छाती। ३ मन। चित्त।  
 उरकना\*-क्रि० अ० दे० "रकना"।  
 उरकन-सज्ञा पु० १ फुफ्फुस की पीड़ा। २ छाती का घाव। ३ हृदय की व्याधि। भयंकर कष्ट (लक्षणा)।  
 उरग-सज्ञा पु० साँप। अहि। नाग। भुजग।  
 उरगना\*-क्रि० स० १ स्वीकार करना। २ सहना। ३. जोगबना।

उरगाद-सज्ञा पु० सर्पभक्षक। गरुड। विष्णु का वाहन।  
 उरगारि-सज्ञा पु० गरुड। नागरिपु। वैमतेय। सर्पों को रखनेवाला। सर्प-शत्रु।  
 उरगिनी\*-सज्ञा स्त्री० साँपिन। सर्पिणी।  
 उरज, उरजात\*-सज्ञा पु० दे० "उरोज"। कुच। स्तन। पयोधर।  
 उरझना\*-क्रि० अ० दे० "उलझना"। अट-बना। लगना। आसक्त होना।  
 उरण-सज्ञा पु० १ मेढा। भेडा। २ युरेतस नाम का ग्रह।  
 उरव-सज्ञा पु० [स्त्री० अल्पा० उरवी] माप। पोषा-विशेष जिसकी फलियों के बीज या दाने की दाल होती है।  
 उरध\*-क्रि० वि० दे० "ऊर्ध्व"।  
 उरघारना-क्रि० स० दे० "उघेड़ना"।  
 उरखसी-सज्ञा स्त्री० दे० 'उरखी'। १ अति-प्रिय। हृदय में वास करनेवाली। २ एक गहना।  
 उरखा\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "उर्वी"।  
 उरमना\*†-क्रि० अ० लटकना।  
 उरमाता\*-क्रि० स० लटकाना।  
 उरमाल\*-सज्ञा पु० [फा० रुमाल] रुमाल।  
 उरमिजा\*-सज्ञा स्त्री० १. उर्मिजा। रुक्मण जी की स्त्री का नाम। २. एक छद-विशेष।  
 उरमी\*-सज्ञा स्त्री० १ दे० "ऊर्मि"। लहर। २ दुख। पीड़ा। कष्ट।  
 उरमिज\*-सज्ञा पु० गगल। भीम।  
 उरविजा-सज्ञा स्त्री० भूमिमुत्ता। पृथ्वी से उत्पन्न। जानकी। सीता।  
 उररी-अ० स्वीकार। अंगीकार।  
 उररीकार-सज्ञा पु० स्वीकार।  
 उररीकृत-वि० स्वीकृत।  
 उरला-वि० पिछला। याद का। उत्तर। वि० १ विरला। २ निराला।  
 उरस-वि० नीरस। फीका। सज्ञा पु० १ वक्षस्थल। छाती। २ चित्त। हृदय।  
 उरसना-क्रि० अ० उथल-धुथल या ऊपर-नीचे करना।

उरसिज-गङ्गा पु० रत्न।  
 उरस्त्राण-सङ्गा पु० वधस्त्राण। वक्त्र।  
 उरहना\*-गङ्गा पु० दे० "उलाहना"। शिवा-  
 यत।  
 उरा\*-गङ्गा स्त्री० पृथ्वी। भूमि।  
 उराय-गङ्गा पु० दे० "उराय"।  
 उरारा\*-वि० बहुत बड़ा। विस्तृत।  
 विशाल।  
 उराव-गङ्गा पु० १ उमग। उन्माह। चाप।  
 होमला। २ चाह।  
 उराहना-गङ्गा पु० दे० "उलाहना"।  
 उरिण, उरिन-वि० दे० "उरुण"। ऋण  
 ने मुक्त।  
 उर-वि० १ लवा-चोटा। विस्तीर्ण। २ बड़ा।  
 विशाल। ३ श्रेष्ठ।  
 \*सङ्गा पु० जाँघ। जघा।  
 उरुवा\*-गङ्गा पु० रूआ। उल्लू की जानि का  
 पक्षी-विशेष।  
 उरुज-सङ्गा पु० [अ०] १ वृद्धि।  
 बढ़नी।  
 उरु\*+त्रि० वि० १ दूर। २ आगे। परे।  
 उरुखना\*-क्रि० स० दे० "अवरेखना"।  
 उरवे-सङ्गा स्त्री० १ वचना। २ उलझावा।  
 उरहे-सङ्गा पु० चित्रकारी। नक्काशी।  
 उरहना-क्रि० म० १ रचना। लिखना।  
 खीचना। (चित्र) रंगना। २ लगाना।  
 उरोज-सङ्गा पु० पयोधर। स्तन। कुच।  
 उज्जित-वि० बद्धित। उन्नत। उत्सृष्ट।  
 उर्ण-सङ्गा स्त्री० भेड़ आदि का रोम।  
 ऊन।  
 उर्द-सङ्गा पु० दे० "उरद"। १ माप। २  
 कलाई।  
 उर्वपणी-सङ्गा स्त्री० वन-उरदी। मापापणी।  
 उर्वप्रेगनी-सङ्गा स्त्री० अन्त पुर-रक्षिका।  
 रत्नास की पहरेई।  
 उर्द-सङ्गा स्त्री० [तु०] वह हिंदी जिसमें  
 अरबी फारसी के शब्द अधिक हों और  
 जो फारसी लिपि में लिखी जाय।  
 उर्द बाजार-सङ्गा पु० १ छावनी का बाजार।  
 २ वह बाजार जहाँ सब चीजें मिलें।  
 उर्ध\*-वि० ऊर्ध्व।

उर्ध-गङ्गा पु० [अ०] उपनाम। पुवारले  
 का नाम। चणू नाम।  
 उर्मि\*-गङ्गा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।  
 उर्मिला-गङ्गा स्त्री० लक्ष्मणजी की पत्नी  
 जो सीताजी की छोटी बहिन थी।  
 उर्वर-वि० शम्भु-युक्त स्थान। उपजाऊ  
 भूमि।  
 उर्वरा-गङ्गा स्त्री० १. उपजाऊ भूमि। २  
 भूमि। पृथ्वी। ३ अप्सरा-विशेष।  
 वि० स्त्री० उपजाऊ (भूमि)  
 उर्वसी-गङ्गा स्त्री० अप्सरा-विशेष।  
 उर्विजा\*-गङ्गा स्त्री० दे० "उर्वीजा"।  
 उर्वी-गङ्गा स्त्री० पृथ्वी। धरती।  
 उर्वीजा-सङ्गा स्त्री० पृथ्वी में उपन्न, मीना।  
 उर्वीधर-गङ्गा पु० १ पर्वत। २ शेषनाग।  
 उर्स-सङ्गा पु० [अ०] १ मुसलमान गायुओं  
 की निर्वाण-व्रिथि। २ मुसलमानों में पीर  
 आदि के मरने के दिन का काम।  
 उलग\*-वि० वस्त्र-रुद्धि। नगा। दिगवर।  
 उलगधन\*-सङ्गा पु० दे० "उलगधन"।  
 उलगधना, उलगधना\*-क्रि० म० १ उलगधन  
 करना। नौधना। डोका। २ अवज्ञा  
 करना। न मानना। ३ टालना।  
 उलका\*-गङ्गा स्त्री० दे० "उल्का"।  
 उलचना-क्रि० स० दे० "उलीचना"। छानना।  
 पसाना। सुसाना।  
 उलछना\*+त्रि० स० १ हाथ से फँलाना।  
 बिखारना। २ उलीचना।  
 उलछारना\*+त्रि० स० दे० "उलछारना"।  
 उलछन-सङ्गा स्त्री० १ गाँठ। गिरह। २  
 अटकाव। फँसान। ३ विघ्न। बाधा।  
 ४ चक्कर। समस्या। पेंच। फेर। ५ चिता।  
 व्यग्रता।  
 उलझना-क्रि० अ० १ फँसना। जैसे काँटे में  
 उलझना। ('उलझना' का उलटा 'मुलझना'  
 है।) २ चक्कर या लपेट में पड़ना। फँस  
 जाना। ३ काम में लिप्त या लीन होना।  
 ४ लिपटना। ५ झगडा करना। लड़ना-  
 झगडना। ६ बठिनाई या अड़चन में पड़ना।  
 ७ रुकना। अटकना। ८ टेढ़ा होना। बल  
 खाना।

उलझाना-क्रि० सं० १. फँसाना। २. लिप्ट रखना। लगाए रखना। ३. टेढ़ा करना।

\*क्रि० अ० फँसाना। उलझाना।

उलझाव-सज्ञा पु० १ झगडा। बखेडा। २ अटकाव। फँसाना। ३ फेर। चक्कर।

उलझीहाँ-वि० उलझन पैदा करनेवाला।

१ अटकानेवाला। फँसानेवाला। २ लुभानेवाला।

उलटना-क्रि० अ० १. ओँधा होना। पलटना।

ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना। २ घूमना। पीछे मुड़ना।

पलटना। ३ टूट पडना। उमड़ना।

४. गडबड होना। अस्त-व्यस्त होना।

५. विरुद्ध होना। उलटा होना। विपरीत होना। ६ कुद्ध होना। चिड़ना। ७ नष्ट होना। ८ अचेत या बेसुध होना। ९ गिरना। १० इतराना। गर्व करना।

११ चौपायो का एक बार जोडा खाने पर गर्म धारण न करना।

क्रि० सं० १ ओँधा करना। नीचे का भाग ऊपर और ऊपर का भाग नीचे करना।

फेरना। पलटना। २ ओँधा गिराना।

३ गिरा देना। पटकना। ४ लटकती हुई वस्तु को समेटकर ऊपर चढ़ाना। ५ अस्त-व्यस्त या अडबड करना। ६ उलटा करना। और वा और करना। ७ उत्तर-प्रत्युत्तर करना। बात दोहराना। ८ उखाड़ डालना। खोदकर फेंकना। ९ बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिए खेत जोतना। १० अचेत करना। ११ कै करना। उलटी करना। १२ अच्छी तरह डालना। डँडेलना। १३ नष्ट करना। १४ बार-बार कहना। रटना।

उलट-पलट (पुलट)-गना स्त्री० अदल-बदल।

अव्यवस्था। गडबडी। नीचे-ऊपर।

उलट-फेर-सज्ञा पु० १ परिवर्तन। हेर-फेर।

अदल-बदल। २ जीवन की अच्छी-बुरी दशा।

उलटा-वि० [स्त्री० उलटी] पलटा हुआ।

मुहा०-उलटी साँस चलना=दम उखड़ना।

साँस का जल्दी-जल्दी बाहर निकलना।

(मरने का लक्षण)। उलटी साँस लेना=

मरने के निकट होना। जल्दी-जल्दी साँस खींचना। उलटे मुँह गिरना=दूसरे को

नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना।

२ डधर का उधर। क्रम-विरुद्ध। फेरा हुआ। उलटा फिरना या लौटना=तुरत

पलटना। उलटी गंगा बहना=अनहोनी बात होना। उलटी माला फेरना=अहित चाहना।

बुरा मनाना। उलटे छूरे से मूँडना=झँसना।

उल्लू बनाकर काम निकालना। उलटे पाँव

फिरना=तुरत लौटना। ३ कालक्रम में जो आगे का पीछे और पीछे का आगे हो।

जो समय से आगे-पीछे हो। ४ विपरीत।

विरुद्ध। ५ अमुक्त। अडबड। अनुचित।

उलटा जमाना=वह समय जब भली बात बुरी समझी जाय। उलटा-सीधा=

अव्यवस्थित। बिना क्रम का अडबड।

उलटी खोपड़ी का=गँवार। मूर्ख। उलटी-सीखी सुनाना=भला-बुरा कहना। खरी-खोटी सुनाना। फटकारना।

क्रि० वि० १ विरुद्ध क्रम से। अडबड।

२ अवाछित। जैसा होना चाहिए, उससे और ही प्रकार से।

सज्ञा पु० बेसन से बनेवाला पक्वान्न-विशेष।

उलटाना\*-क्रि० सं० लोटाना। पीछे फेरना।

पलटाना। २ कुछ का कुछ करना या कहना।

अन्यथा कहना या करना। ३ दूसरे पक्ष में करना। फेरना। ४ उलटा करना।

उलटा-पलटा (पुलटा)-वि० पलटना। अडबड।

अनम। वृत्तरतीय।

उलटा-पलटी-सज्ञा स्त्री० हेर-फेर। फेरफार।

अदल-बदल।

उलटाव-सज्ञा पु० चक्कर। फेर। घुमाव।

उलटी-सज्ञा स्त्री० १ कै। बमन। २ मलावाजी।

उलटी सरसों-सज्ञा स्त्री० सरसों-विशेष जिसकी बगिया यामुँह नीचे होता है।

यह जाड़, टोने के काम में आती है। टोरो।

उलटे—वि० वि० १. घेड़वाने। विरुद्ध बनना।  
 २ विरुद्ध न्याय से। विपरीत धारणा/नुसार।  
 उलटना\*—वि० अ० उलटना। उलट-नीचे होना।  
 उलट-मुलट होना। लूटना। टलना। वि०  
 स० उलट-मुलट करना। उलट-नीचे करना।  
 उलटा—मज्ञा पु० १ नाचने के समय छात्र के  
 अनुसार उलटना। २ बर्खा। पत्रवाजी।  
 ३ उलटा। उड़ी। पत्रवाजी के साथ  
 पानी में बूझना। ४ बरबट घटाना। (घोषाया  
 के लिए) ५ अनुवाद। भाषांतरकरण।  
 ६. अनुरण। ७ रागिनी-विशेष।  
 उलव\*—मज्ञा स्त्री० झड़ी। वर्षण।  
 उलवना\*—वि० स० उलटना। टालना।  
 उलटना।  
 वि० अ० आर से घूमना।  
 उलना—मज्ञा पु० पलटना। औषाणा। विपरीत  
 करना। दाहराना। मोड़ना। नीचे-ऊपर  
 करना।  
 उलमना\*—वि० अ० झुबना। लटवना।  
 उलरना\*—वि० अ० १ लटना। घमन करना।  
 २ उलटना। बूझना। ३ नीचे-ऊपर होना।  
 ४ झपटना।  
 उलटना\*—वि० अ० १ उलटना। २ टलना।  
 ढरखना। ३ इधर उधर होना।  
 उलसना\*—वि० अ० मोहना। शामिल होना।  
 उलहना—सज्ञा पु० दे० उलाहना। निन्दा।  
 दोष। उपालन। मिला।  
 वि० अ० १ निकलना। उभड़न २  
 प्रस्तुति होना। ३ उमटना। हुलसना।  
 ४ फूटना। ५ उगना।  
 मुहा०—उलहना देना—१ उपालन करना।  
 शिकायत करना। २ निन्दा करना। ३  
 पुकारना।  
 उलौंथना\*—वि० अ० १ लांघना। फाँदना।  
 डौकना। २ न मानना। अवज्ञा करना।  
 ३ पहले पहल पीछे पर चढ़ना। (बाबू-  
 सवार)  
 उलाटना\*—वि० अ० दे० "उलटना"।  
 उलार—वि० जिसका पिछला भाग भारी हो।  
 जो पीछे की ओर झुका हो। जिसके पीछे  
 की ओर घोल अधिक हो। (गाड़ी)।

उलारा\*—वि० म० नीचे-ऊपर फेंकना।  
 उलारना।  
 वि० म० दे० "ओलारना"।  
 उलाहना—मज्ञा पु० १ उलाहना। निन्दा।  
 रिती की भुज या अपराध का उल्लेखपूर्वक  
 जताता। मिला। २ रिती के दोष या अपराध  
 का उल्लेख मध्य रखनेवाले रिती और  
 आदमी में बहना। निन्दा। ३ निन्दा।  
 ४\*वि० म० १ निन्दा करना। उलाहना  
 देना। २ अपराध मगाना। दोष देना।  
 उलीचना—वि० स० १ हाथ या चरून से  
 पानी उलाहना दूरी और टालना। २  
 उलटना। फेंकना।  
 उल्ल\*—मज्ञा पु० उल्ल चिट्ठिया। धुम्कू। २  
 दूद। ३ उलाहना मूल का एक नाम। ४.  
 दुर्बोध का दूत-विशेष।  
 यो०—उल्लदधीन—वैशेषिक-दर्शन।  
 मज्ञा पु० लुट। जी।  
 उल्ल\*—मज्ञा स्त्री० १ ओपली। ओपरी।  
 २ बरल। मल। ३ गुग्गुलु।  
 उल्लो—सज्ञा स्त्री० नामवन्द्या। अर्जुन की  
 पत्नी।  
 उलेटा—मज्ञा पु० पराडा। परतदार मोटी पूरी।  
 पन्ना।  
 उलेटना\*—वि० स० १ टालना। २ उल्टे-  
 लना। ३ ढरखना।  
 उलेल\*—मज्ञा स्त्री० १ उल्ल-बूद। २  
 उमग। जाग। तेजी। ३ बाड़।  
 वि० कापरमाह। अलहड।  
 उल्का—मज्ञा स्त्री० १ प्रकाश। तेज। २  
 लूआडा। लू। ३ मसाल। दस्ती। ४  
 दाया। ५ चमकीले पिंड-विशेष जो बगी-  
 बगी रात को आकाश में एक ओर से दूसरी  
 ओर को बेग से जाते हुए अथवा पृथ्वी पर  
 गिरते हुए दिखाई पड़ते हैं। इनके गिरने को  
 'तारा टूटना' कहते हैं। अग्निपिण्ड। लूका।  
 उल्कापात—सज्ञा पु० १ तारा टूटना। लूक  
 गिरना। २ विघ्न। उत्पात। ३ आश्चर्य।  
 ४ अशुभमूचक चिह्न।  
 उत्तरापात्नी—वि० [स्त्री० उत्तरापात्नी] उप-  
 र्वच करनेवाला। उत्पत्ती।

उल्कामुल-सज्ञा पु० [स्त्री० उल्कामुली] १ गीदड़। २ अगिया-बैताल। प्रेज-विशेष जिसके मुँह से प्रकाश या आग निकलती है। ३ शिवजी का एक नाम।

उल्फन-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रेम।

उल्फा-सज्ञा पु० अनुवाद। भाषांतर।

उल्मुक-सज्ञा पु० लूका। कौयला। अगारा।

उल्लघन-सज्ञा पु० १ न मानना। पालन

न करना। अवज्ञा करना। २ फाँदना।

लांघना। डाँकना। ३ अतिनमन।

उल्लघना\*—वि० सं० दे० "उल्लघना"।

उल्लसन-सज्ञा पु० [वि० उल्लसित, उल्लासी]

१ हृष्य करना। प्रसन्न होना। खुशी मनाना।

२ रामाच।

उल्लसित-वि० [स्त्री० उल्लासिता] प्रसन्न।

खुश।

उल्लाघ्य-सज्ञा पु० १ उपरूपक का भेद-

विशेष। २ सात प्रकार के गीतों में से एक।

उल्लाल-सज्ञा पु० मायिक अर्द्धसम छंद-विशेष।

उल्लाला-सज्ञा पु० मायिक छंद विशेष।

उल्लास-सज्ञा पु० [वि० उल्लासक, उल्ल-

सित] १ चमक। झलक। प्रकाश। २ प्रस-

न्नता। हर्ष। आनंद। हुलास। ३ पर्व। अथ

का एक भाग। ४ अलंकार-विशेष। जिसमें

एक के गुण या दोष से दूसरे में गुण या

दोष का होना दिखाया जाता है।

उल्लासक-वि० [स्त्री० उल्लासिका] आनंदी।

आनंद करनेवाला। मौजी।

उल्लासन-सज्ञा पु० १ प्रकाशित या प्रकट

करना। २ प्रसन्न होना। हर्षित होना।

उल्लासना-क्रि० सं० १ प्रकट करना। २

प्रसन्न करना।

उल्लासी-वि० [स्त्री० उल्लासिनी] आनंदी।

मौजी।

उल्लिखित-वि० १ उल्लेख्य। खोदा हुआ।

२ छीला या खरादा हुआ। ३ उपर्युक्त

ऊपर लिखा हुआ। ४ चित्रित। खींचा हुआ।

५ लिखित।

उल्लू-सज्ञा पु० १ घुग्गू। ५धी-विशेष। खराट।

२ मूख। बेवक्फ। गैवार। उजड़।

मुहा०—गद्दी उल्लू बोलना=उजड़ होना।

उल्लू बनाना=मूर्ख बनाना। उल्लू उड़ाना=

मूर्खता में काम में समय बिताना।

उल्लूपन-सज्ञा पु० मूर्खता। गैवारपन।

उजड़इपन।

उल्लेख-सज्ञा पु० १ चर्चा। वर्णन। जिन।

कथन। २ लिखना। लेख। ३ प्रसंग। ४ चित्र

स्वीचना। ५ काव्यालंकार विशेष जिसमें एक

ही वस्तु का अनेक रूपा में वर्णन किया जाय।

उल्लेखन-सज्ञा पु० १ लिखना। २ चित्र

स्वीचना। ३ वमन। ४ खनन। ५ कथन।

उच्चारण।

उल्लेखित-वि० १ प्रस्तावित। २ कथित।

उक्त। कहा हुआ।

उल्लेखनीय-वि० १ जिसका उल्लेख किया

जा सके। २ लिखने योग्य।

उल्लोच-सज्ञा पु० चंदोवा। चद्रातप।

उल्लोल-सज्ञा पु० महातरंग। कल्लोल। बड़ी

भारी लहर। हिलोर।

उल्व-सज्ञा पु० सज्ञा १ गर्भशय। २

आविल। झिल्ली जिसमें बच्चा बँधा हुआ

पैदा होता है। अँवरी। ३ ढक्कन। आवरण।

उल्वण-सज्ञा पु० १ गर्भविच्छेद। जाली। २

जरायु। वशिष्ठ का एक पुत्र।

वि० १ प्रचंड। तीव्र। २ विचित्र। ३ नृत्य

म हस्तमुद्रा विशेष। ४ अतिरिक्त। अधिक।

पालतू। अतिमात्र।

उवना\*—क्रि० अ० दे० 'उगना'।

उदावा-सज्ञा पु० [अ०] पेड़-विशेष जिसकी

जड़ रक्तशोषक होती है।

उगना-सज्ञा पु० १ गुत्राचार्य। २ भार्गव। ३

देवगुरु।

उशीनर-सज्ञा पु० १ देश विशेष। २ चन्द्र-

वशीय राजा विशेष।

उशीर-सज्ञा पु० खस। गाँवर की जड़।

उषा-सज्ञा स्त्री० १ सबेरा तड़का। प्रभात।

ब्राह्मवेला। २ अरण्योदय की ललाई। ३

बाणासुर की कन्या जो अनिच्छा को व्याही

गई थी। ४ गौ। ५ रात्रि। ६ प्रज्ज्वलित।

गुलशानवाला।

उपाकाल-सज्ञा पु० प्रत्यूप। प्रभात। भोर।

तड़का।

उत्पत्ति-सज्ञा पु० अनिरुद्ध । कामदेव का पुत्र ।  
 उपित-सज्ञा पु० १. दम्प । २. त्वरित । ३.  
 स्थित । ४. आश्रित ।  
 उष्ट्र-सज्ञा पु० ऊँट ।  
 उष्ण-वि० १. गरम । तप्त । २. तासीर में  
 गरम । ३. तेज । फुरतीला ।  
 संज्ञा पु० १. ग्रीष्म ऋतु । २. प्याज । ३.  
 नरक-विशेष ।  
 उष्णक-सज्ञा पुं० १. बुखार । ज्वर । २.  
 सूर्य । वि० १. तप्त । गरम । २.  
 ज्वरयुक्त । ३. तेज । ४. फुरतीला । सुपारी ।  
 पुगीफल ।  
 उष्ण कटिबन्ध-सज्ञा पु० पृथ्वी का वह भाग  
 जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में  
 पड़ता है ।  
 उष्णता-सज्ञा स्त्री० ताप । गरमी । उमत्त ।  
 उष्णत्व-सज्ञा पु० गरमी ।  
 उष्णनदी-सज्ञा पु० वंतरणी नदी । यमराज के  
 द्वार पर तपी हुई नदी ।  
 उष्णवाष्प-सज्ञा पु० १. स्वेद । पसीना । २.  
 भाप ।  
 उष्णजीर्य-सज्ञा पु० तीक्ष्ण । तेज-युक्त द्रव्य ।  
 रुक्ष । उग्र ।  
 उष्णरश्मि-सज्ञा पु० १. दिवाकर । सूर्य । २.  
 तप्त किरणें ।  
 उष्णिक-सज्ञा पु० छद्म-विशेष ।  
 उष्णोष्-सज्ञा पु० १. पाग । पगड़ी । साफा ।  
 २. मुकुट । ताज । ३. टोपी । ४. सिरो-  
 वेष्टन वस्त्र ।  
 उष्ण-सज्ञा पु० १. उष्णता । गरमी । वाप ।  
 २. ग्रीष्म-ऋतु । ३. धूप ।  
 उष्णज-सज्ञा पु० छोटे कीड़े जो पसीने  
 और मेल आदि से पैदा होते हैं । जैसे,  
 जूँ, खटमल, मच्छर । भाप से उत्पन्न ।  
 उष्मा-सज्ञा स्त्री० १. गरमी । ताप । २.  
 शोष । ३. धूप ।  
 उत्सर्जन-सज्ञा पु० उत्सर्जन । बरतन माँजने का  
 जूना ।  
 उत्सर्जना-क्रि० अ० दे० "उत्सर्जना" ।  
 उत्सर्जना-क्रि० अ० दे० "उत्सर्जना" ।  
 उत्तेजित करना ।

उत्सर्जना-क्रि० स० १. आटा-गूँधना ।  
 मलकर मिलाना ।  
 उत्सर्जना-क्रि० स० उबलवाना । पकवाना ।  
 उत्सर्जना-सज्ञा पु० दे० "उष्णीश" ।  
 उत्सर्जना-सज्ञा पु० [ अ० वसमा ] १. उबटन ।  
 बटना । २. लेप करने की वस्तु ।  
 उत्सर्जना-क्रि० अ० १. दूर या अलग  
 होना । हटना । २. गुजरना । बीतना ।  
 ३. विस्मृत होना । भूल जाना । ४. तैयार  
 होना । पूरा होना ।  
 उत्सर्जना-क्रि० अ० दे० "उत्सर्जना" ।  
 उत्सर्जना-वि० व्याकुल । घबराया । हड़-  
 बड़ाया ।  
 उत्सर्जना-क्रि० स० रटना । विसर्जना ।  
 टलना ।  
 क्रि० स० साँस लेना ।  
 उत्सर्जना-सज्ञा पु० दे० "उत्साह" ।  
 उत्सर्जना-क्रि० स० १. उत्साहना । २.  
 टालना । हटाना । ३. तैयार करना । बनाकर  
 खड़ा करना । ४. किसी के ऊपर या  
 सामने धुमाना ।  
 उत्सर्जना-सज्ञा पु० दे० "ओसारा" । दालान ।  
 बरामदा । वरोडा ।  
 उत्सर्जना-क्रि० स० १. उत्सर्जना ।  
 २. उत्साहना । ३. हटाना । टालना । ४.  
 भगाना ।  
 उत्साह-सज्ञा स्त्री० १. लची साँस । २.  
 पवन । प्राण वायु । ३. द्वास । साँस । ४.  
 ठंडी साँस । दुख या शोकमूचक द्वास ।  
 उत्साही-सज्ञा स्त्री० अवकाश । दम लेने की  
 फुरसत । छुट्टी ।  
 उत्सर्जना-क्रि० स० दे० "उत्सर्जना" ।  
 आटा भिगीकर रोटी बनाने योग्य  
 गूँधना ।  
 उत्सर्जना-क्रि० अ० पकना । झुलसना ।  
 उत्सर्जना-सज्ञा पु० दे० "उत्सर्जना" ।  
 उत्सर्जना-सज्ञा पु० १. तकिया । २. सिरहाना ।  
 उमूल-सज्ञा पु० [ अ० ] सिद्धांत ।  
 उत्सेना-क्रि० स० १. उबालना । २. पसाना ।  
 उत्तेजना-क्रि० स० पसाना । गरना । २.  
 छानना ।

उक्ताना-क्रि० सं० उक्ताना। उभारना।  
उत्तरा-सज्ञा पु० दे० "उत्तुरा"। १ छुरा।  
२ सेंटमेंत। बिना मोल।

उस्ताद-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० उस्तानी]  
गुरु। अध्यापक। शिक्षक। उस्तादजी।  
वैद्याधी के नृत्य-गान का शिक्षक।  
वि० १ धूर्त। चालाक। छल करनेवाला।  
२ निपुण। प्रवीण। दक्ष। चतुर।

उस्तादी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ गुरुआई।  
अध्यापक की वृत्ति। २ चतुरआई। दक्षता।  
निपुणता। ३ विज्ञता। ४ धूर्तता।  
चालाकी।

उस्ताना-क्रि० सं० जलाना। सुलगाना।  
उस्तानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ गुरु की  
पत्नी। २ शिक्षिका। ३ ठगिन। चालाक  
स्त्री।

उत्तुरा-सज्ञा पु० [फा०] छुरा। अत्तुरा।  
उत्त-सज्ञा पु० १ वृष। सांड। २ किरण।  
चमक। दीप्ति। ३ गी। ४ सूर्य। ५ दिन।

उत्तभन्वा-सज्ञा पु० इन्द्र।  
उत्वास-सज्ञा पु० दे० "उसांस"।

उहदा-सज्ञा पु० दे० "ओहदा"। पद। स्थान।

उहदादार-सज्ञा पु० अधिकारी। अफसर।

उहरना-सज्ञा पु० बैठना। दवाना। धिराना।

उहवाँ-क्रि० वि० दे० "वहाँ"।

उहौ-क्रि० वि० "दे० [वहाँ]"।

उहार-सज्ञा पु० १ उधार। २ खोल।

पट। पर्दा।

उहिया-सज्ञा पु० १ कनफटा। २ योगियों के  
पहनने का धातु का कड़ा।

उहो-सर्व० दे० "वही"।

उहल-सज्ञा स्त्री० तरंग। लहर। उमग।

## ऊ

ऊ-हिंदी-वर्णमाला का छठा अक्षर जिसका  
उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

ऊ-सज्ञा पु० १ महादेव। २ चंद्रमा।  
३ ब्रह्मा। ४ वाक्यारम्भ। ५ रक्षा ६ प्रश्न-  
वाक्य। ७ दग्धन। ८ मोक्ष। ९ प्रधान।  
\*१-अव्य० भी।

\*१-सर्व० यह।

ऊँ-सज्ञा स्त्री० दे० 'ऊँघ'।

ऊँघ-सज्ञा पु० अवामागं चिबडा। अज्जाझार।

ऊँघ-सज्ञा स्त्री० झपकी। उँघाई। निदास।

अद्वं-निद्रा।

ऊँघन-सज्ञा स्त्री० झपकी।

ऊँघना-क्रि० अ० झपकी जैना। निद्राप्रस्त  
होना। नींद में झुमना।

ऊँघाई-सज्ञा स्त्री० उँघास। नींद। ऊँघ।

ऊँघ\* -वि० दे० "ऊँचा"। धेष्ट। ऊपर की  
थेपीवाला।

यौ०-ऊँच-नीच=१ छोटा-बड़ा। २ छोटी  
जाति या और बड़ी जाति का। ३ लाभ  
और हानि। अण्डा और दुरा।

ऊँचानी-सज्ञा पु० बहरापन।

ऊँचा-वि० [स्त्री० ऊँची] १ उन्नत। उच्च।

बड़ा। उठा हुआ। २ लंबा। ३ जो बहुत

नीचे तक न गया हो। जिसका लटकना कम

हो। जैसे, ऊँचा कुरता। ४ महान्। धेष्ट।

५ जोर का (शब्द)। तीव्र (स्वर)।

मुहा०-ऊँचा-नीचा=१ ऊबड़-खाबड़। जो

समयल न हो। २ हानि-लाभ। भला

बुरा।

ऊँचा-नीचा या ऊँची नीची सुनाना=भला

बुरा कहना। खोटी-सरी सुनाना।

ऊँचा सुनना=कम सुनना। केवल जोर की

आवाज सुनना।

ऊँचा बोलनेवाला-वि० घमडी। अभिमानी।

ऊँचाई-सज्ञा स्त्री० १ उच्चता। ऊपर की

ओर का विस्तार। उठान। उचान। घलदी।

२ धेष्टता। बड़ाई। गौरव।

ऊँचे\*-क्रि० वि० १ ऊपर की ओर। ऊँच

पग। २ जोर से (शब्द बोलना)।

मुहा०-ऊँचे-नीचे पर पडना=बुरे काम में

फँसना। ऊँचे बोल का बोल नीचा=अह-

वाग्यि की अन्तिम पराजय। बुरा परिणाम।

ऊँछ-सज्ञा पु० राग-विशेष ।

ऊँछना-त्रि० अ० वेष्टाधारना । कधी करना ।

ऊँट-सज्ञा पु० [ स्त्री० ऊँटनी ] उष्ट्र । गोपाया-  
विशेष, जो घोस लादने और सवारी के  
काम में आता है ।

ऊँट-बटारा-सज्ञा पु० १ जमीन पर फैलनेवाली  
बैटीली झाड़ी-विशेष । २ ऊँट का भोजन-  
विशेष । भरभाड़ । ऊँटपटाई ।

ऊँटनी-सज्ञा स्त्री० साँड़िनी ।

ऊँटवान-सज्ञा पु० जो ऊँट चलावे ।

ऊँठा\*†-सज्ञा पु० १ यह वस्तु-विशेष  
जिसमें धन रखाकर जमीन में गाड़ते हैं ।

२ वहमाना । चहवच्चा ।

वि० गभीर । गहरा ।

ऊँवरा-सज्ञा पु० चूहा । मूस ।

ऊँह-अव्य० [ अनु० ] नहीं । कभी नहीं ।  
हगिज नहीं (उत्तर में) । निषेध-सूचक  
अव्यय ।

ऊँना\*†-क्रि० अ० निकलना । उगना ।  
उदय होना ।

ऊँनावाई-वि० व्यर्थ । अटवट । निरर्थक ।

ऊँक\*-सज्ञा पु० १ टूटा हुआ चारा ।

उल्का । लुआठ । २ तपन । ताप । ३

जलन । दाह ।

सज्ञा स्त्री० भूल । गल्ती । चूक ।

ऊँकना\*†-क्रि० अ० १ चूकना । लक्ष्य पर  
न पहुँचना । खाली जाना । २ भूल या गल्ती  
करना ।

क्रि० स० १ उपेक्षा करना । २ छोड़ देना ।

३ भूल जाना । भ्रम करना । जलाना ।

ऊँल-सज्ञा पु० गन्ना । ईख ।

\*सज्ञा पु० ऊमस । गरमी । ताप ।

वि० गरमी से व्याकुल । तपा हुआ ।

ऊँलम-सज्ञा पु० दे० 'ऊँल' । गर्मी । ताप ।  
उष्णता ।

ऊँलल-सज्ञा पु० ओखली । कौड़ी । काठ  
या पत्थर का बरतन-विशेष जिसमें धान  
आदि को भूसी अलग करने के लिए भूसल  
से कूटते हैं ।

ऊँगना-क्रि० अ० दे० 'उगना' ।

ऊँगरा-सज्ञा पु० बेचल उबला हुआ ।

ऊँज\*-सज्ञा पु० १ उज्जा । उपद्रव । ऊपम ।  
२ अपेक्ष ।

ऊँजट-वि० दे० 'उज्जा' ।

ऊँजर\*-वि० दे० 'उज्जल' । साफ । उज्जाड ।

ऊँजरा\*-वि० दे० 'उज्जला' । साफ ।

ऊँजा-वि० दे० 'उज्जग' । माफ ।

ऊँज-नाटक-सज्ञा पु० व्यर्थ का काम ।

इधर-उधर का काम । अटवट काम करना ।

ऊँगा हो, बंसा काम ।

ऊँना\*-क्रि० अ० १ उज्गाह ने भरना । उम  
में आना । २ मोच-विचार या ठक्-विश्व  
करना ।

ऊँट-पटांग-वि० १ बेटगा । बेमेल । २ व्यर्थ ।

निरर्थक । चाहियात्र । ३ अटपट । टेढ़ा-मेढ़ा ।

ऊँना\*-क्रि० स० दे० 'ऊँना' ।

ऊँडा-सज्ञा पु० १ घाटा । कमी । अवाग । २

गिरानी । तेजी । ३ लोप । नाश ।

ऊँडी-सज्ञा स्त्री० डुब्बी । गोता ।

ऊँ-वि० [ स्त्री० ऊँडा ] जिमवा विवाह  
हो गया हो । विवाहित ।

ऊँना-क्रि० अ० १ सोच-विचार करना ।  
२ तक करना । ३ व्याहना । विवाह  
करना ।

ऊँडा-सज्ञा स्त्री० १ विवाहिता स्त्री । २ वह  
व्याही स्त्री जो पर-भुरप से प्रेम करे  
(साहित्य) ।

ऊँ-वि० १ जिसके पुत्र न हो । नि सतान ।

निपूता । २ मूर्ख । उजड़ ।

सज्ञा पु० वह जो मरने पर पुत्र न होने में  
पिड़-आदि न पाकर भूत होता है ।

ऊँतर\*-सज्ञा पु० दे० 'उत्तर' । २  
दे० 'वहाना' ।

ऊँल\*-वि० उतावला १ चंचल । २  
वेगवान् ।

ऊँतम\*†-वि० दे० 'उत्तम' ।

ऊँ-सज्ञा पु० [ अ० ] १ लकड़ी । अगर का  
पेड़ । २ जलजन्तु विशेष । ३ ऊँदबिलाव ।

ऊँदबिल्ली-सज्ञा स्त्री० धूपबत्ती ।

ऊँदबिलाव-सज्ञा पु० नेबले की तरह उसका  
बड़ा अनु-विशेष, जो जल और स्थल दोनों  
में रहता है ।

ऊदल-सज्ञा पु० [ उदयसिंह का संक्षिप्त रूप ]

१. महोदये के राजा परमाल के मुख्य सामंतों में से एक वीर। २. एक वृक्ष-विशेष।

ऊदा-वि० [ अ० ऊद अथवा फा० वबूद ]  
ललाई लिये हुए काले रंग का। पुरा।  
भूरा। बैंगनी।

गज्ञा पु० ऊदे रंग का घोड़ा। धुँधला रंग।  
ऊधम-सज्ञा पु० उत्पात। धूम। झगड़ा।  
हुल्लाह।

ऊधमी-वि० [ स्त्री० ऊधमिन ] उपद्रवी।  
जो ऊधम करे। उत्पात करनेवाला।

ऊधो-सज्ञा पु० दे० "उद्धव"। श्रीकृष्ण का  
मित्र और भक्त।

ऊन-सज्ञा पु० १. भेड़-बकरी आदिकी रोयाँ  
जिससे कबल और गरम कपड़े बनते हैं।  
२. स्त्रियों के व्यवहार के लिए एक  
प्रकार की छोटी तलवार।

वि० [ स्त्री० ऊनी ] १. कम। न्यून।  
थोड़ा। २. छोटा। ३. तुच्छ। हीन। नाचीज।  
४. उदास। मुस्त।

ऊनता-सज्ञा स्त्री० न्यूनता। वमी।

ऊना-वि० १. न्यून। थोड़ा। २. हीन।  
तुच्छ। नाचीज। ३. उदास। मुस्त। दुखी।  
सज्ञा पु० दुख। पेट। रज।

ऊनी-वि० थोड़ा। कम। न्यून।

गज्ञा स्त्री० उदामी। खेद।

वि० (प्रत्यय) ऊन का बना हुआ कपड़ा आदि।

\*सज्ञा स्त्री० दे० "ओष"।

ऊपर-वि० वि० [ वि० ऊपरी ] १. ऊँची  
जगह। ऊँचाई पर। २. आवाश की ओर।  
३. आधार या सहारे पर। ४. उच्च  
कोटि में। ऊँची श्रेणी में। ५. पहले (लेख में)।  
६. अधिक। बहुत। ७. प्रत्यक्ष। प्रपट में।  
देखने में। ८. तब या बिनारे पर। ९.  
मिथा। परे। १०. प्रतिकूल।

गुहा-ऊपर-ऊपर=गुप्त रीति से। चुपके से।

ऊपर की आमदनी=१. वह प्राप्ति जो निम्न  
द्वार से न हो। २. दूध-उधर से पट्टकारी  
हुई रास। ऊपर-तले=१. नीचे-ऊपर।  
२. वमन। एव के पीछे एक। आगे-नीछे।  
ऊपर तले से=ये दो भाई या बहनें जिनके

बीच में और कोई भाई या बहिन न हुई हो।  
ऊपर लेना=किसी कार्य का भार लेना।  
जिम्मे लेना। हाथ में लेना। ऊपर से=  
१. ऊँचे से। २. इसके सिवा। ३. वेतन से  
अधिक। घूस या रिश्वत के रूप में। ४.  
दिखाने के लिए। प्रत्यक्ष में।

ऊपरी-वि० १. ऊपर का। २. विदेशी। बाहरी।  
३. दिक्तावटी। ४. बँधे हुए के सिवा।

ऊब-सज्ञा स्त्री० उद्रेग। घबराहट। अधिक  
समय तक एक ही अवस्था में रहने में  
चित्त की व्याकुलता।

सज्ञा स्त्री० उमग। उत्साह। जोरा।

ऊबट-सज्ञा पु० कठिन मार्ग। टेढ़ा रास्ता।

वि० ऊबड़-साबड़। अगम्य। ऊँचा-नीचा।

ऊबड़-खाबड़-वि० [ अनु० ] जो समयल न  
हो। ऊँचा-नीचा।

ऊबन-क्रि० अ० अकुलाना। उकताना।  
घबराना।

ऊन\*-वि० १. उभरा हुआ। उठा हुआ।  
२. ऊँचा।

सज्ञा स्त्री० १. घबराहट। व्याकुलता।

२. तपन। उमस। गरमी। ३. उत्साह।  
उमग। होसला।

ऊमना\*-क्रि० अ० उठना।

ऊमक\*-सज्ञा स्त्री० १. वेग। २. उठान।  
३. शोक।

ऊमना\*-क्रि० अ० दे० "उजड़ना"।

ऊमर-सज्ञा पु० उदुम्बर। गूलर।

ऊयो-सज्ञा स्त्री० १. याँवी। २. बाल्मोक। ३.  
कीट।

ऊरज-वि० सज्ञा पु० दे० "ऊर्ज"।

ऊरध\*-वि० दे० "ऊर्ध्व"।

ऊर-सज्ञा पु० जाँघ। जानु। जघा।

ऊरस्तंभ-सज्ञा पु० यात का रोग-विशेष  
जिसमें पैर जखट जाते हैं। पैरो का गठिया।

ऊर्ज-वि० बली। शक्तिशाली।

सज्ञा पु० [ वि० ऊर्जम्बल, ऊर्जरवी ] १.  
शक्ति। बल। २. शक्ति का महीना। ३.  
बाभ्यालवार-विशेष जिममें महादया के  
पटने पर भी अहंकार न छोड़ने का वर्णन  
होता है।

ऊर्जस्वल-वि० १ अत्यन्त धली। २. उप।  
दे० "ऊर्जस्वी"।

ऊर्जस्थित-वि० ऊपर की ओर चढ़ा हुआ।  
यहुत बड़ा हुआ।

ऊर्जस्वी-वि० १ शक्तिमान्। बलवान्। २  
ऐश्वर्यवान्। ३ प्रतापी। पराक्रमी।

मज्ञा पु० काव्यालंकार-विशेष जो वहाँ माना  
जाता है, जहाँ रसाभास या भावाभास  
स्थायी भाव का अथवा भाव का अंग हो।

ऊर्जित-वि० (स्त्री० ऊर्जिता) दे० "ऊर्ज"।

ऊर्ण-सज्ञा पु० ऊन। भेड़ या बकरी के बाल।

ऊर्णनाभ-सज्ञा पु० १ मक्की। २ रेशम का  
कीड़ा।

ऊर्ण-सज्ञा पु० १ भेड़ों के रोम। २  
चित्ररथ गधर्व की स्त्री का नाम। ३ ऊनी  
डोरा। ४ मक्की का जाला।

ऊर्ध्व-वि० वि० ऊपर।

वि० १ ऊँचा। २ खड़ा। ३ उच्च। उत्तम।  
४ तुंग। लम्बा।

ऊर्ध्वगति-सज्ञा स्त्री० छुटवारा। मुक्ति।  
मोक्ष।

ऊर्ध्वगामी-वि० १ ऊपर को जानेवाला।  
२ निर्वाण-प्राप्त। ३ पुण्यात्मा।

ऊर्ध्वचरण-सज्ञा पु० सिर के बल खड़े होकर  
तप करनेवाले तपस्वी-विशेष।

ऊर्ध्वजानु-वि० ऊपरी जघा।

ऊर्ध्वतिष्ठ-सज्ञा पु० चिरायता।

ऊर्ध्वदेव-सज्ञा पु० विष्णु। नारायण।

ऊर्ध्वदार-सज्ञा पु० ब्रह्मरघ्व।

ऊर्ध्वपाद-सज्ञा पु० जीव-विशेष। शरम।

ऊर्ध्वपुङ्ख-सज्ञा पु० वैष्णवी या लडा तिलक।

ऊर्ध्वबाहु-सज्ञा पु० १ बाहु ऊपर की ओर  
उठाए रहनेवाले एक प्रकार के तपस्वी।  
२ उग्रवहस्त। ३ वृत्त-विशेष।

ऊर्ध्वरेता-सज्ञा स्त्री० १ पुराणानुसार  
राम-कृष्ण आदि विष्णु के अवतारों के  
४८ चरणचिह्नों में से एक। २ हाथ या  
पंख में रेखा विशेष। शुभमूचक रेखा  
(सामुद्रिक)।

ऊर्ध्वरेता-वि० ब्रह्मचारी। कामत्यागी।  
जो अपने वीर्य को गिरने न दे।

सज्ञा पु० १ महादेव। २ भीष्म पितामह।

३ मुनि-विशेष। ४ मनवादि। ५ हनुमान्।

६ मन्यासी।

ऊर्ध्वलोक-सज्ञा पु० १ आकाश। शून्य।

२ देवलोक। स्वर्ग। वैकुण्ठ।

ऊर्ध्वश्वास-सज्ञा पु० १ श्वास की कमी।

२ उमांत। ऊपर को चढ़ती हुई सौम। ३

दमा। ऊर्ध्ववायु। ४ मरने के समय

जोर की, एक-एक कर चलनेवाली सौम।

ऊर्ध्वस्य-वि० १ उच्चस्य। २ उपस्थित।

ऊर्ध्व-क्रि० वि०, वि० दे० "ऊर्ध्व"।

ऊर्ध्व-क्रि० वि०, वि० दे० "उर्ध्व"।

ऊर्मि [ऊर्मी]-सज्ञा स्त्री० १ लहर। तरंग।

२ वेदना। दुःख। पीड़ा। ३ छ की सर्या।

४ शिखर। बपड़े की तिकुडन। ५ गति।

६ ध्वनि। ७ तीव्रता। ८ पवित्र। रेखा।

कतार।

ऊर्मिमाला-सज्ञा स्त्री० १ तरंग। २ समूह।

ऊर्मिमाली-सज्ञा पु० समुद्र।

ऊर्मिल-वि० जिसमें लहरें उठनी हो। तरंगित।

ऊर्मी-सज्ञा स्त्री० दे० "ऊर्मि"।

ऊर्ध्वशी-सज्ञा स्त्री० "उरवसी"। अप्सरा-विशेष।

ऊल जलूल-वि० १ अडबड़। असबद्ध। जिसका

सिर-पर न हो। २ मूर्ख। अनाड़ी। नासमझ।

३ अशिष्ट। असभ्य।

ऊलना\*-क्रि० अ० दे० "उछलना"।

ऊलवा-सज्ञा पु० तृण-विशेष।

ऊलण-सज्ञा पु० काली मिर्च।

ऊपर-सज्ञा पु० क्षार भूमि। खारी भूमि।

ऊपा-सज्ञा स्त्री० १ सवेरा। २ अरुणोदय।

पो फटने की लाली। "उपा"। ३ वाष्पागुर

की बन्धा जो अनिच्छा से व्याही गई थी।

ऊपाकाल-सज्ञा पु० तड़पा। सवेरा।

ऊष-सज्ञा पु० १ गरमी। २ गरमी का

भौमिम। ३ भाप।

ऊष-वि० गरम।

ऊष घर्ण-सज्ञा पु० "श, प, स, ह" ये

अक्षर (व्याकरण)।

ऊष्मा-सज्ञा स्त्री० १ गरमी का समय।

शीष्म काल। २ गरमी। तपन। ३ भाप।

ऊतङ्ग-वि० फीका।

ऊसन-सज्ञ पु० तरगिरा । पौषा-विशेष, जिससे जलाने का तेल निकाला जाता है ।  
ऊसर-सज्ञा पु० वजर भूमि । वह पृथ्वी जिसमें रेह अधिक हो और कुछ पैदा न हो ।  
ऊह-अव्य० १ ओह । बलेश या दुःख-सूचक शब्द । २ विस्मय-सूचक शब्द ।

मना पु० १ विचार । अनुमान । २. तर्क । ३. निवदती । ४. परीक्षा । जाँच । ५. फल । निष्पत्ति । सार ।

ऊहा-सज्ञा स्त्री० दे० "ऊह" ।

ऊहापौह-सज्ञा पु० सोच-विचार । तर्क-वितर्क ।

## ऋ

ऋ-एक स्वर जो वर्णमाला का सातवाँ अक्षर है । इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है ।  
सज्ञा स्त्री० १ अविति । देवगाथा । २ बुराई । निंदा । परिहास । ३. वाक्य । ४. विकार ।

राज्ञा पु० १ सूर्य । २. गणेश ।

ऋक्-सज्ञा स्त्री० वेदमंत्र । ऋचा ।

सज्ञा पु० दे० "ऋग्वेद" ।

ऋक्ष-सज्ञा पु० १ धन । सम्पत्ति । २. सुवर्ण । ३. पितृधन । ४. हिस्सा ।

ऋक्ष-मज्ञा पु० [ स्त्री० ऋक्षी ] १. रीछ । भाल । २. नक्षत्र । तारा । ३. मेघ, वृष आदि राशियाँ । ४. भिलायाँ । ५. रक्तक पर्वत का एक अंश । ६. शौनिक वृक्ष ।  
वि० अत्यंत श्रेष्ठ ।

ऋक्षजिह्व-सज्ञा पु० एक प्रकार का कोढ़ ।

ऋक्षपति-सज्ञा पु० १ जाबवान । २. चंद्रमा ।

ऋक्षयान-सज्ञा पु० ऋक्ष पर्वत, यह नर्मदा के किनारे से गुजरता एक पंखा है ।

ऋक्षेश-सज्ञा पु० चंद्र । शशधर ।

ऋग्वेद-सज्ञा पु० चार वेदों में से एक वेद ।

ऋग्वेदी-वि० ऋग्वेद का ज्ञाता या पढ़नेवाला ।

ऋचा-सज्ञा स्त्री० १ स्तोत्र । २. वेदमंत्र । ३. कडिवा ।

ऋचीक-मज्ञा पु० जमदग्नि के पिता ।

ऋच्छ-सज्ञा पु० दे० "ऋक्ष" । रीछ ।

ऋच्छरा-सज्ञा स्त्री० वेदया ।

ऋजीव-सज्ञा पु० १ सोमरुता की मीठी या फीन । २. लोहे का तमला ।

ऋजू-वि० [ स्त्री० ऋजू ] १. गीधा । जो

टेढ़ा न हो । २. सुगम । सरल । सहज । ३. सज्जन । सरल चित्त का । ४. अनुकूल । ५. प्रसन्न ।

ऋजूकाय-सज्ञा पु० वक्ष्यप मुनि ।

वि० सीधा शरीर । सीधी रेखा व भुजा ।

ऋजुता-सज्ञा स्त्री० १ सज्जनता । सीधापन ।

२. सरलता । सुगमता ।

ऋजुभुज-क्षेत्र-सज्ञा पु० वह क्षेत्र जो कई सीधी रेखाओं से घिरा हो ।

ऋजु-स्वभाव-सज्ञा पु० सरलान्त करण । सद-त-

करण-विशिष्ट । सरल, सीधा । अकपट ।

ऋण-सज्ञा पु० [ वि० ऋणी ] उधार । कर्ज ।

मुहा०-ऋण उत्तरना=कज जदा होना ।

ऋण चढाना=रुपया उधार लेना । ऋण

पटाना=उधार लिया हुआ रुपया चुकता

करना ।

ऋण ग्रहण-सज्ञा पु० उधार लेना । कर्ज लेना ।

ऋण-दाता-वि० महाजन । ऋण देनेवाला ।

ऋणपत्र-सज्ञा पु० ऋणग्रहण-सूचक पत्र ।

ऋणमत्कृज-सज्ञा पु० जामिन । प्रतिभू ।

ऋणमुक्त-वि० उधाररहित । ऋण-परि-

शोधित ।

ऋणमुक्तिपत्र-सज्ञा पु० ऋण-परिशोध-

सूचक पत्र ।

ऋणमार-सज्ञा पु० जो कर्ज नहीं चुकाता ।

ऋणमार्गण-सज्ञा पु० प्रतिभू । जमानतदार ।

ऋणार्ण-सज्ञा पु० एक कर्ज जदा करने को जो

दूसरा कर्ज काढा जाय ।

ऋणपनपन-सज्ञा पु० ऋणशोधन । उधार

चुवाना । कर्ज दे देना ।

ऋणिक-सज्ञा पु० कर्जदार ।

ऋणिया-सज्ञा पु० ऋणी। धारता।  
 ऋणी-वि० १ देनदार। ऋण लेनेवाला।  
 वर्जदार। अग्रमणं। २ उपश्रुत। उपचार  
 माननेवाला। अनुगृहीत।  
 ऋत-सज्ञा पु० १ सत्य। यथार्थ। २ वृत्ति-  
 विशेष। उच्च वृत्ति के द्वारा निर्वाह। ३  
 जल। ४ मोक्ष।  
 वि० १ दीप्त। २ पूजित।  
 ऋतधामा-सज्ञा पु० विष्णु। नारायण।  
 ऋतपर्ण-सज्ञा पु० अयोध्या के राजा-विशेष।  
 ऋतवेध-सज्ञा पु० छोट। यज्ञ-विशेष।  
 ऋति-सज्ञा स्त्री० १ निन्दा। २ स्पर्धा। ३.  
 भार्य। ४ गति। ५ भगल।  
 ऋतु-सज्ञा स्त्री० १ मौसम। प्राकृतिक  
 अवस्थाओं के अनुसार वर्ष के दो-दो महीनों  
 के विभाग जो ६ हैं—वसत, श्रौष्म, यर्षा,  
 शरद, हेमत, शिशिर। २ रजोदर्शन के  
 उपरात वह समय जिसमें स्त्रियाँ गर्भ धारण  
 के योग्य होती हैं।  
 ऋतुकान्त-सज्ञा पु० वसत ऋतु।  
 ऋतुचर्या-सज्ञा स्त्री० ऋतुओं के अनुसार  
 आहार-विहार की व्यवस्था।  
 ऋतुमती-वि० स्त्री० १ मासिकधर्मयुक्ता।  
 रजस्वला। पुष्पवती। २ जिस (स्त्री) के  
 रजोदर्शन के उपरात के १६ दिन बीत गये  
 हों और वह गर्भाधान के योग्य हो।  
 ऋतुराज-सज्ञा पु० वसत ऋतु।  
 ऋतुवती-वि० स्त्री० दे० "ऋतुमती"।  
 ऋतुस्नाता-सज्ञा स्त्री० रजोदर्शन के अनन्तर  
 चतुर्थ दिन स्नाता स्त्री।  
 ऋतुस्नान-सज्ञा पु० [ वि० स्त्री० ऋतुस्नाता ]  
 रजोदर्शन के चौथे दिन का स्नान।  
 ऋत्विज-सज्ञा पु० यज्ञ की क्रिया सगोपाय  
 पूर्ण करानेवाला व्यक्ति। भिन्न-भिन्न यज्ञों  
 में इनकी सत्वा भिन्न-भिन्न होती हैं।  
 महत्त्व के क्रम से इनके ये नाम हैं—ब्रह्मा,  
 अध्वर्यु, होता, उद्गाता आदि।  
 ऋद्ध-वि० घनाटप। समृद्ध। संपन्न। भरा  
 हुआ।  
 ऋद्धि-सज्ञा स्त्री० १ ओषधि। रत्ना-विशेष

जिसका फल दया के फल में जाता है। २  
 वृद्धि। समृद्धि। उन्नति। ३ धन। सम्पत्ति।  
 ४ आर्या छंद का भेद-विशेष। ५ विरिजा।  
 ६ कुबेर की पत्नी। ७ अलौकिक विभूति।  
 शक्ति।  
 ऋद्धि-सिद्धि-सज्ञा स्त्री० समृद्धि और सफ-  
 लता, जो गणेशजी की दासियाँ मानी जाती हैं।  
 ऋणिया-वि० ऋणी। वर्जदार।  
 ऋनी-वि० दे० "ऋणी"।  
 ऋभु-सज्ञा पु० १ देवता। २ गणदेवता  
 विशेष। ३ बडई। गाढी बनानेवाला।  
 वि० चतुर। होशियार। दक्ष। कुशल।  
 ऋभुस-सज्ञा पु० १ इन्द्र। २ स्वर्ग। ३ बज्र।  
 ऋभुक्षा-सज्ञा स्त्री० इन्द्राणी। शची।  
 ऋषभ-सज्ञा पु० १ बल। २ श्रेष्ठतावाचक  
 शब्द। ३ राम की सेना का बदर-विशेष।  
 ४ बल के आकार का दक्षिण का पर्वत-  
 विशेष। ५ सगीत के सात स्वरों में से दूसरा।  
 ६ जड़ी-विशेष जो हिमालय पर मिलती है।  
 ऋषभदेव-सज्ञा पु० राजा नाभि के पुत्र जिनकी  
 गणना विष्णु के चौबीस अवतारों में है।  
 ऋषभध्वज-सज्ञा पु० शिव। महादेव।  
 ऋषभी-सज्ञा स्त्री० पुरुष के शररूपवाली स्त्री।  
 ऋषि-सज्ञा पु० १ मन्त्र-द्रष्टा। वेद-  
 मन्त्रों का प्रकाश करनेवाला। २ आध्या-  
 त्मिक और भौतिक तत्त्वों का साक्षात्कार  
 करनेवाला। मुनि। तपस्वी।  
 यौ०—ऋषिऋण=ऋषिया के प्रति कर्त्तव्य।  
 वेद के पठन-पाठन से इससे उद्धार होता है।  
 ऋषिक-सज्ञा पु० दक्षिण का एक देश।  
 ऋषित्व-सज्ञा पु० ऋषि होने की अवस्था  
 या आदर। ऋषित्व।  
 ऋषिराज-सज्ञा पु० प्रधान ऋषि।  
 ऋषीक-सज्ञा पु० ऋषि का पुत्र।  
 ऋषीश-सज्ञा पु० ऋषिया में प्रधान।  
 ऋष्य-सज्ञा पु० मृग-विशेष। चित्रवरा मृग।  
 ऋष्यकेतु-सज्ञा पु० अनिरुद्ध। उपासनि।  
 ऋष्यप्रोषता-सज्ञा स्त्री० सतावर।  
 ऋष्यमूरु-सज्ञा पु० दक्षिण का पर्वत विशेष।  
 ऋष्यमृग-सज्ञा पु० ऋषि-विशेष, जो  
 विष्णुदेव ऋषि के पुत्र थे।

## क

क-१. एक स्वर जो वर्णमाला का आठवाँ अक्षर है। इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है। इसका प्रयोग सस्कृत में ही होता

है। २. देवमाता। ३. शव। ४. असुर। ५. दिति। ६. भय।

## ल-लु

ल-स-हिन्दी-वर्ण माला के नवें और दशवें स्वर हैं। इनका उच्चारण-स्थान मूर्धा है। इनका

प्रयोग केवल सस्कृत में होता है, हिन्दी में नहीं।

## ए

ए-१. सस्कृत-वर्णमाला का ग्यारहवाँ और हिन्दी-वर्णमाला का आठवाँ अक्षर (स्वर वर्ण) है। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और घालु है। २. विष्णु।

अव्य० सम्बोधन-सूचक अव्यय जिसका प्रयोग पुकारकर बुलाने के लिए होता है। सर्व० यह। ऐच-वैच-सज्ञा पु० १ उलसन। अटकाव। उलझाव। २ घुमाव। ३ टेढ़ी चाल। ४ घात। गूढ़ उक्ति।

एजिन-सज्ञा पु० दे० "इजन"।

ऐड़ा-वैड़ा-वि० उलठा-सीधा। टेढ़ा-मेढ़ा। अडबड।

ऐड़ी-सज्ञा स्त्री० १ रेशम का कीड़ा जो अड़ी के पत्ते खाता है। २ इस कीड़े का रेशम। ३ मूँगा। ४ अड़ी।

सज्ञा स्त्री० दे० "एड़ी"।

ऐड़आ-सज्ञा पु० [ स्त्री० ऐड़ई ] गद्दी जिसे सिर पर रखकर बोझ उठाते हैं। बिड़आ। नेडरी।

एकंग-वि० अकेला।

एकीगा-वि० [ स्त्री० एकगी ] एक ओर का।

एकींडिया-वि० एक अंडे का।

सज्ञा पु० १. एक अण्डकोपवाला बैल या घोड़ा। २. एक-पुतिया लहसुन।

एकन\*-वि० दे० "एकात"।

एक-वि० १. एकाइयो में सबसे पहली और छोटी संख्या। २ अनोखा। अद्वितीय। अनुपम। प्रथम। मुख्य। अन्य। केवल। ३ अनिश्चित। कोई। ४ तुल्य। समान। एक ही प्रकार का।

मुहा०-एक अक या आंक=१ एक ही बात। पक्की बात। निश्चय। २ एक बार। एक-आध=कम। थोड़ा। इक्का-दुक्का। एक या आधा। एक आँख से देखना=समान भाव रखना। एक आँख न भाना=विलकुल अच्छा न लगना। एक-एक=१. हर एक। प्रत्येक। भिन्न-भिन्न। सब। २ पृथक्-पृथक् अलग-अलग। एक-एक करके=एक के पीछे दूसरा। धीरे-धीरे। एक-कलम=सब। विल-कुल। एक की दस सुनाना=थोड़े से अपराध के लिए अधिक दंड देना। अपनी ओर किसी की जान एक करना=१ मारना और मर जाना। २ किसी की ओर अपनी एन सी दशा करना। एकटक=१ स्थिर दृष्टि में। अनिमेध। तजर गडाकर। २ लगाभार देखते हुए। एकताक=समान। तुल्य। बराबर। एकतार=१ समान। बराबर। एक ही रूप-रंग का। २ समभाव में। लगातार। बराबर। एक तो=पहली बात तो यह नि। पहले तो। एक-दम=१ बिना रके। निरतन।

२. तुल्य। उसी समय। ३. एक साथ। एक बारगी। एक-दिल=१. एक ही विचार का। अभिमत-हृदय। २. मूत्र मिला-जुला। एक दूसरे का, को, पर, में, से = परस्पर। एक न एक=एक नहीं तो दूसरा, एक या दूसरा। एक न चलना=कोई उपाय सफल न होना। एक पैट के=महोदर (भाई)। एक ही माँ से उत्पन्न। एक-द-एक=अचानक। एकाएक। एक बात=१. दुष्ट प्रतिज्ञा। २. ठीक बात। सच्ची बात। एक सा=बराबर। समान। एक से एक=एक से एक बढ़कर। एक स्वर से कहना या बोलना=एक मत होकर कहना। एक होना=१. मिलना-जुलना। मेल करना। २. तद्रूप होना। उसी के समान होना।

एकक-वि० १. अकेला। २. असाहाय। ३. निराला।

एककाल-वि० समान समय। एक समय। एक-कालीन-वि० १. समकाल में उत्पन्न।

२. एक समय का। ३. एक ही वार का। एकगाछी-सज्ञा स्त्री० नाव-विशेष जो एक लकी लकड़ी को सुझाकर बनाई जाती है।

एक-चक्र-सज्ञा पु० १. सूर्य। २. सूर्य का रथ।

वि० चक्रवर्ती।

एकचक्रा-सज्ञा स्त्री० प्राचीन नगरी जो आरा के पास बतलाई जाती है (महाभारत)।

एकचर-वि० अकेला चलनेवाला। इक्का।

एकचित्त-वि० एकांती। एक मन। अनन्य-मना।

एकच्छत्र या एकछत्र-वि० पूर्ण प्रभुत्व का, बिना और किसी के आधिपत्य का (राज्य)। जिसमें वही और किसी का राज्य या अधिकार न हो। अकटक।

क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ।

सज्ञा पु० वह राज्य-प्रणाली जिसमें देश के शासन का सारा अधिकार अकेले एक पुरुष को प्राप्त होता है।

एकज-सज्ञा पु० १. शूद्र। जो द्विज न हो। २. राजा।

वि० एक ही।

एकजही-वि० [फा०] सपिट या गगोत्र। जो एक ही पूर्वज की गन्तान हो।

एकजन्मा-सज्ञा पु० १. राजा। २. शूद्र।

एकजाई-सज्ञा स्त्री० सट्टत-प्रमूता। पहि-लीठी।

वि० इक्कठा।

एकटक-सज्ञा पु० एक तार से देखना। सन्तृप्ति दृष्टि।

एकट्ठा-वि० एक स्थान में मंग्रह किया गया।

एकड़-सज्ञा पु० [अंग्रे०] पृथ्वी की एक माप-विशेष, जो १६ बीघे के बराबर होती है।

एकडाल-सज्ञा पु० वह छुरा या कटार जिगना फल और बेंट एक ही लोहे का हो।

वि० एक सा। एक समान। बराबर।

एकतंत्र-सज्ञा पु० दे० "एकच्छत्र"।

एकतंत्री-वि० १. एक प्रभु के बराबरी।

२. एकतन्त्रयुक्त। ३. एकमतवाल्मी।

एकत\*-क्रि० वि० दे० "एकत्र"। एक स्थान में। इकट्ठा।

एकतः-क्रि० वि० एक ओर से। एक तरफ से।

एकतरफा-वि० [फा०] १. एक पक्ष का।

एक ओर का। २. पक्षपातप्रस्त। जिसमें पक्षपात किया गया हो। ३. एक पार्श्व का।

एकरुखा।

मुहा०-एकतरफा डिगरी=वह डिगरी जो मुद्दालह के हाजिर न होने के कारण मुद्दी को प्राप्त हो।

एकतरा-सज्ञा पु० अंतरियाज्वर। तिजारी।

एकतहो-सज्ञा पु० एक जगह।

सज्ञा स्त्री० मिरजई।

एकता-सज्ञा स्त्री० १. मेल। ऐक्य। अनन्यता।

२. बराबरी। समानता। ३. एकाई। ४। मिलान।

वि० [फा०] अद्वितीय। बेजोड़। अनुपम।

एकतान-वि० १. लीन। तन्मय। एकाग्र-चित्त।

२. मिलकर एक। ३. बराबर दान। एव स्वर।

एकतारा-सज्ञा पु० एक तार का वाजा-विशेष।

एकताल-सज्ञा पु० समन्वित ताल। समताल।

एकतालीस-वि० गिनती में चालीस और एक।

सज्ञा पु० ४१ की सरया का सूचक अंक।

४१।

एकतीर्थी-सज्ञा पु० सतीथ । गुरुभाई ।  
 एतत्त-वि० तीग और एक ।  
 सज्ञा पु० ३१ की सरया का बोधक अव ।  
 एकतुथी-सज्ञा स्त्री० तानपूरा । तम्पूरा ।  
 एतन्न-क्रि० वि० इवट्ठा । एक स्थान में ।  
 एक जगह ।  
 एतन्ना-सज्ञा पु० कुल जोड़ । इवट्ठा ।  
 एकप्रित-वि० दे० एतन्न । इवट्ठा हुआ ।  
 सगृहीत ।  
 एतत्त-सज्ञा पु० एव होने का भाव । एवता ।  
 एव ही तरह का या बिलकुल एव सा होगा ।  
 पूरी समानता ।  
 एतदत्त-सज्ञा पु० गणेश ।  
 एकदा-क्रि० वि० एक समय । एक बार ।  
 किसी समय ।  
 एकदिक्-वि० एक देश । एव भाग । समदेश ।  
 एकदेशस्य-वि० एकदेशी । समदेशीय ।  
 एकदेशीय-वि० जो सबत्र न घटे । जो  
 एक ही अवसर या स्थल के लिए हो । एक  
 देश का ।  
 एकदेह-सज्ञा पु० १ बुधग्रह । २ एक  
 शरीर । अभिन्न गोत्र, वंश ।  
 एकधा-अव्य० केवल । एक बार । एक प्रकार ।  
 एकन या एकन्ह-एव ने । किसी ने । एक का ।  
 किसी को ।  
 एकनयन-वि० एक आँखवाला । बाना ।  
 एकाक्ष ।  
 सज्ञा पु० १ कौवा । २ कुबुर ।  
 एकनिष्ठ-वि० एक में ही निष्ठा रखन-  
 वाला । जो एक ही पर श्रद्धा रख ।  
 एकस्त्री-सज्ञा स्त्री० १ चार पैसे के मूल्य का  
 एक सिक्का । २ निकल धातु का एक आज  
 मूल्य का सिक्का ।  
 एकपक्षीय-वि० एक ओर का । एक पक्ष  
 का । एकतरफा ।  
 एकवट्टा-सज्ञा पु० ओठनी । पिछोरी ।  
 एकपत्नी-सज्ञा स्त्री० पतिव्रता । सती साध्वी ।  
 एकपत्नीय-वि० जो एक ही स्त्री से विवाह  
 या प्रेम-संबध रखे ।  
 सज्ञा पु० एक ही पत्नी रखने का नियम ।  
 एक परामर्श-सज्ञा पु० एकतन । एकमत ।

एतन्निष्ठा-सज्ञा पु० घर जिसमें बड़े  
 नरा ।  
 एकपाश-सज्ञा पु० एक पादवं । एक तरफ ।  
 एतन्मत्त्व-सज्ञा पु० एवराजत्व । एववि-  
 पत्त्व ।  
 एकवारगी-क्रि० वि० [फा०] १ एव ही  
 जग में । एक साथ । २ एक समय में । ३  
 अचानक । अचम्पान् । ४ सारा । सब ।  
 बिचकुर ।  
 एकवाल-सज्ञा पु० [अ०] १ सोभाग्य ।  
 भाग्य । २ प्रताप । एद्वय । तेज । ३  
 स्वीकारोक्ति । स्वीकार ।  
 एकभूत-वि० रात दिन में केवल एव  
 बार भोजन करनेवाला ।  
 एकमत-वि० जिनका समान मत हा ।  
 एव राय के ।  
 एकमात्रिक-वि० जिसमें एक मात्रा हो ।  
 एक मात्रा का ।  
 एकमुखी या एकमुह-वि० जिसके एक  
 मुख हा ।  
 यौ०-एकमुखी रक्षाक्ष=वह रक्षाक्ष जिसमें  
 फाँववानी लकोर एक ही हो ।  
 एकयोनि-वि० सहोदर । एक माँ के ।  
 एकरग-वि० १ एक-सा । समान ।  
 बराबर । तुल्य । २ कष्ट शून्य । शुद्ध  
 हृदयवाला । ३ जो चारो ओर समान हा ।  
 एकरदन-सज्ञा पु० गणेश ।  
 एकरस-वि० समान । बराबर । एक ढग का ।  
 एकरार-सज्ञा पु० [अ०] १ स्वीकार ।  
 स्वीकृति । २ प्रतिज्ञा । वादा । वचन ।  
 यौ०-एकरारनामा-प्रतिज्ञापन । वह पत्र  
 जिसमें दो या अधिक पुरुष परस्पर कौन  
 प्रतिज्ञा करें ।  
 एकरूप-वि० १ एक ही रूप-ढग का ।  
 समान आकृतिवाला । २ समभाव । एव  
 सा । ३ बौरा । ज्यों का त्यों । वैसा ही ।  
 एकलपना-सज्ञा स्त्री० सादृश्य । समानता ।  
 एकता ।  
 एकल\*-वि० अकेला । अनुपम । बेजोड़ ।  
 एकलक्ष्य-सज्ञा पु० निपादराज हरषन् का पुत्र  
 और द्रोणाचार्य का शिष्य ।

एकला\*+वि० दे० १ "अवेला"। एकाकी।  
 २ महायहीन। ३ निराला।  
 एकलाई-सज्ञा पु० ओढ़नी। एकपट्टा। उत्तरीय  
 वसन। चादर। एक तरह की धोती।  
 एकलिंग-सज्ञा पु० शिव का नाम-विशेष  
 जा मेवाड़ के गहलौत राजपूतों के प्रधान  
 कुलदेव हैं।  
 एकलौता या एकलौटा-वि० [स्त्री० एव-  
 लौती] अकेला। अपने माँ-बाप का एक ही  
 (लड़का)। जिसने कोई भाई-बहन न हो।  
 एववचन-सज्ञा पु० एक का बोधक। व्याकरण  
 में वह वचन जिससे एक का बोध होता हो।  
 एववाँज-सज्ञा स्त्री० वह स्त्री जिसके एक  
 ही बच्चा हुआ हो। काकवध्या।  
 एकत्रावयता-सज्ञा स्त्री० एकमत। लोग  
 के मत का एक हो जाना।  
 एकवेणी-वि० १ जिसका पति प्रवासी हो।  
 वियोगिनी। २ विधवा।  
 एकशफ-सज्ञा पु० १ घोड़ा। २ एक बुर के  
 पशु।  
 एकसग-सज्ञा पु० १ विष्णु। २ एक साथ।  
 ३ सहवास।  
 एकसगी-सज्ञा पु० साथी। सहवासी। सगी।  
 मित्र जो सुख-दुख में साथ दे।  
 एकसठ-वि० साठ और एक।  
 सज्ञा पु० एकसठ की संख्या का अंक।  
 ६१।  
 एकसर\*+वि० १ एक पल्लु का। २  
 अकेला।  
 वि० [फा०] सम्पूर्ण। विलकुल। एक गड का  
 (हार, माला आदि)।  
 एकसाँ-वि० [फा०] १ बराबर। समान।  
 २ समथल।  
 एकसार-वि० समान। एकरसा। एकसा।  
 एकहत्तर-वि० सत्तर और एक।  
 सज्ञा पु० गत्तर और एक की संख्या का  
 अंक। ७१।  
 एकहत्वा-वि० १ जो एक ही के हाथ  
 में हो (धाम या व्यवसाय)। २ जिसके  
 एक ही हाथ हो।  
 एकहरा-वि० [स्त्री० एकहरी] १ एक

पत्त का। जैसे एकहरा अगा। २ एक  
 लड़ी का। ३ पनला। शीना। महीन।  
 यौ०-एकहरा वदन=दुबला-गतरा शरीर।  
 एकहायन-वि० एक वर्ग का। जिसको उन्पन्न  
 हुए एक वर्ग हुआ हो।  
 एकाग-वि० जिस एक ही अंग हो। एक  
 अंग का।  
 सज्ञा पु० १ वृषप्रह। २ चन्दन।  
 एका-सज्ञा स्त्री० दुर्गा। भगवती।  
 सज्ञा पु० एक। एकता। ऐनय। अभिसन्धि।  
 मेल। एकादृश्य। सम्मति। गहमति।  
 एकाई-सज्ञा स्त्री० १ एक का भाव या मान।  
 एकता। २ वह मात्रा जिसके गुणन या  
 विभाग में और दूसरी मात्राओं का मान  
 ठहराया जाता है। ३ अंकों की गिनती  
 में पहले अंक का स्थान। ४ उस स्थान  
 पर लिखा जानेवाला अंक। ५ अनन्य। वही।  
 अभिन्न। तुल्य। समान।  
 एकाएक-क्रि० वि० सहसा। अचानक।  
 एकाएकी\*+क्रि० वि० दे० 'एकाएक'।  
 अचानक। सहसा।  
 वि० अकेला। निर्जन।  
 एकागी-वि० १ एक पक्ष का। एक ओर  
 का। २ जिद्दी। हठी।  
 एकात-वि० १ अत्यंत। विलकुल। नितात। २  
 अवेला। अलग। निर्जन। सूना। ३ भिन्न।  
 सज्ञा पु० १ निराला। २ निर्जन स्थान।  
 एकात कैवल्य-सज्ञा पु० मुक्ति का भेद  
 विशेष।  
 एकातर-सज्ञा स्त्री० निर्जनता। अवेक्षण।  
 तनहाई।  
 एकातरकोण-सज्ञा पु० एक ओर का कोना।  
 एकातवास-सज्ञा पु० [वि० एकातवासी]  
 सबसे न्यारा रहना। निजन स्थान में रहना।  
 एकातवासी-वि० निर्जन स्थान में रहनेवाला।  
 एकातस्वरूप-वि० निलिप्त। असंग।  
 एकातिक-वि० एकदेशीय। जो एक ही स्थान  
 का हो। जो मकर न हो।  
 एकाती-सज्ञा पु० नवन जो भगवत्प्रम को  
 वेदों अपने अंतर्करण में ही प्रकट न हो  
 प्रकट नहीं करता किन्ता।

एकाकार-सज्ञा पु० एकमय होना । मिल-मिलाकर एक होने की दशा ।  
 वि० समान । एक आकार का । एकरूप ।  
 सदृश । एकधर्म । भेद-रहित । एका-चार ।  
 एकाकिन्ह-सज्ञा पु० अकेलों को । अनहायो को ।  
 एकाकी-वि० स्त्री० एकाकिनी । १. अकेला ।  
 २. केवल एक । ३. सहाय-रहित ।  
 एकाकीपन\*-सज्ञा पु० अकेलापन ।  
 एकाक्ष-वि० काना । एक आँखवाला ।  
 यौ०—एकाक्ष द्वाक्ष=एकमुखी द्वाक्ष ।  
 सज्ञा पु० १ शुक्राचार्य । २ कौआ ।  
 एकाक्षर-सज्ञा पु० मन्त्र-विशेष ।  
 वि० एक अक्षरवाला ।  
 एकाक्षरी-वि० १ एक अक्षर । २ एक अक्षर का मन्त्र-विशेष जिसमें एक ही अक्षर हो ।  
 यौ०—एकाक्षरी कोश=वह कोश जिसमें एक-एक अक्षर के अर्थ दिए हों । जैसे, "अ" से वासुदेव, "इ" से कामदेव इत्यादि ।  
 एकाग्र-वि० [ सज्ञा एकाग्रता ] १ एकमना । मनोयोगी । एकचित्त । २. जिसका ध्यान एक ओर लगा हो ।  
 एकाग्रचित्त-वि० स्थिरचित्त । जिसका ध्यान बँधा हो ।  
 एकाग्रता-सज्ञा स्त्री० अवचलता । चित्त का स्थिर होना । विशेष सावधानी में ध्यान ।  
 एकाग्रपत्र-वि० सार्वभौम । महाराज । चक्रवर्ती । एकच्छत्र ।  
 एकात्मवाद-सज्ञा पु० यह सिद्धान्त कि ससार के समस्त प्राणिमो और वस्तुओं में एक ही आत्मा व्याप्त है ।  
 एकात्मता-सज्ञा स्त्री० १ अमेद । एवता । अभिप्रता । एकस्वरूपता । २ मिलमिलाकर एक होना ।  
 सज्ञा पु० एक प्राण । एक देह । अभिन्न ।  
 एकादश-वि० ग्यारह । ११ का अंक ।  
 एकादशाह-सज्ञा पु० मृत्यु के पश्चात् ग्यारहवें दिन का नाम (हिंदू-यमशास्त्र) ।  
 एकादशी-सज्ञा स्त्री० प्रत्येक मास के शुक्ल

और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि, जो व्रत का दिन है । हरिवार ।  
 एकादिक्रम-वि० अनुक्रम । क्रमानुरूप । क्रमिक ।  
 एकाधिकार-सज्ञा पु० दे० "एकाधिपत्य ।"  
 एकाधिपति-सज्ञा पु० चक्रवर्ती राजा । सम्राट् ।  
 एकाधिपत्य-सज्ञा पु० पूर्ण प्रभुत्व । एकमान अधिकार ।  
 एकाग्र-वि० १ एकमति । २ एकमार्ग ।  
 ३ एक विषयासक्तचित्त । ४ एक स्थान ।  
 एकार-सज्ञा पु० ए अक्षर । एकादश स्वर-वर्ण ।  
 एकारान्त-जिसके अन्त में ए हो ।  
 एकार्णव-सज्ञा पु० एकाकार । एक समुद्र ।  
 एकार्थ-वि० समानार्थ । तुल्य तात्पर्य वाला ।  
 एकार्यक-वि० समान अर्थ-बोधक । समानार्थक । पर्यायवाची ।  
 एकावली-सज्ञा स्त्री० १ अलंकार-विशेष जिसमें पूर्व के प्रति उत्तरोत्तर वस्तुओं का विशेषण-भाव से स्थापन अथवा निषेध दिखलाया जाय । २ छंद-विशेष । पंक्ति-वाटिका । ३ हार जो एक लड़ी का हो । एक पंक्ति । कतार ।  
 एकाश्रित-वि० अनन्यगतिक । एक के ही आश्रित ।  
 एकाह-वि० जो एक दिन में पूरा हो । जैसे—एकाह पाठ ।  
 सज्ञा पु० १. एक दिन । २. केवल एक ही दिन जीनेवाला कीट ।  
 एकाहिक-वि० एक दिन-साध्य । एक दिन में ही उत्पन्न होनेवाला ।  
 एकीकरण-सज्ञा पु० [ वि० एकीकृत ] १. मिलावट । २ गड़बड़ करना ।  
 एकीकृत-वि० मिलाया हुआ । मिश्रित ।  
 एकीभाव-सज्ञा पु० मिलना । मिलाना । एकट्ठा या एकत्र होना ।  
 एकीभूत-वि० मिश्रित । मिला हुआ ।  
 एकैन्द्रिय-सज्ञा पु० १ सास्य के अनुसृत उचित और अनुचित दोनों प्रकार के विषयों से इन्द्रियों को हटाकर उन्हें मन में लीन करनेवाला साधक । २ वह जीव जिससे केवल एक ही इन्द्रिय अर्थात् त्वचा-मान होनी है । जंम-जीव, केचुआ ।

एकेला-वि० एकाकी। ओला।

एक-वि० प्रत्येक। एक-एक तरी, एक के बाद एक।

एकोत्तरसी-वि० १०१। सो और एक। एक गो एक।

एकोत्तरा-वि० एक दिन छोड़कर आनेवाला। सजा पु० एक रुपया मँचड़ा व्याज।

एकोद्दिष्ट-(धाद)-सजा पु० श्राद्ध-विशेष जो एक के उद्देश्य से किया जाता है और उसमें पहले मृत पितरों को पिंड नहीं दिया जाता। एकी-वि० एक भी। कोई भी। अनिर्धारित व्यक्ति।

एकीसा\*†-वि० एकाकी। अकेला।

एकोतना-त्रि० १ धान-गोहूँ में उम पत्ते का निचलना जिसके गामा में बाल निकलती हैं। २ गरभाना।

एक्का-वि० १ अकेला। २ जो एक से संबध रखे। ३ एकवाला।

यी०-एक्का-दुक्का=अकेला-दुकेला। सजा पु० १ वह पशु या पक्षी जो झुंड छोड़कर अकेला चरता या घूमता हो। २ दो पहिए की गाड़ी जिसमें एक बैल या घोड़ा जोता जाता है। इक्का। ३ वह सिपाही जो अकेले ही बड़े-बड़े काम कर सकता हो। ४ एककी। ताश या गजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो।

एक्कावान-सजा पु० जो एकका हाँकने का काम करता हो। एक्कावाला।

एक्कावानी-सजा स्त्री० एकका हाँकने का काम।

एक्की-सजा स्त्री० १ एकका। ताश या गजीफे का वह पत्ता जिसमें एक ही बूटी हो। २ वह बेलगाड़ी जिसमें एक ही बैल जोता जाय।

एक्यानवे-वि० नव्वे और एक। ११। सजा पु० नव्वे और एक की सख्या का अंक।

एक्कायन-वि० पचास और एक। ५१। सजा पु० पचास और एक की सख्या का अंक।

एक्कासी-वि० अस्सी और एक। ८१। सजा पु० अस्सी और एक की सख्या का अंक।

एक्की-सजा स्त्री० [फा०] मास का रस या शोरबा।

एजेंट-सजा पु० [अंग्रे०] प्रतिनिधि। किसी की

ओर में काम करनेवाला प्रतिनिधि। मुहत्तार। एजेन्सी-सजा स्त्री० [अंग्रे०] आडत। किसी की ओर में व्यापार करना और उससे एज में अपना हिसा (कमीशन) लेना।

एड-सजा स्त्री० एडी।

गजा पु० १ घोड़े को चलाने का काँटा। २ चरण का पदचात भाग।

मुहा०-एड करना=१ एड लगाना। २ चल देना। खाना होना। एड देना या लगाना=१ लात मारना। २ घोड़े को आगे बढ़ाने के लिए एक एड से मारना। ३ उत्तेजित करना। उसवाना। ४ बाधा डालना।

एडक-सजा पु० भेडा। मेडा। मेप।

एडमूक-वि० गूँगा-बहुरा (दोनों)

एडिटर-सजा पु० [अंग्रे०] सम्पादक। दैनिक समाचार-पत्र, साप्ताहिक, मासिक-पत्रिका आदि का सम्पादक।

एडिशन-सजा पु० [अंग्रे०] किसी पुस्तक का किसी बार छपना। संस्करण। किसी पुस्तक या पत्र-पत्रिका का संस्करण। आवृत्ति।

एड्स-सजा पु० [अंग्रे०] १. पता। नाम। घर। निवासस्थान का पता। २ अभिनन्दन पत्र। मानपत्र।

एडक-सजा पु० समाधि।

एडी-सजा स्त्री० पैर का पिछला भाग। एड।

मुहा०-एड घिसना या रगड़ना=१ एडी को मल मक्कर घोना। २ बहुत दिनों से कष्ट में या बीमार रहना। एडी से चोटी तक=सिर से पैर तक।

एण-सजा पु० वस्तुरी-मृग।

एतकाद-सजा पु० [अ०] विश्वास।

एतकाल-सजा पु० उपस्थित काल। इस समय। सम्प्रति।

एतत्कालीन-सजा पु० इस कालवर्ती। आधुनिक।

एतत् या एतद-सर्व० यह। पुरोवर्ती। सम्मुखस्थित।

एतदय-अव्य० इसलिए। अतएव। इस कारण।

एतद्देशीय-वि० इस देश से संबंध रखनेवाला। इस स्थान का। इस देश का।

एतना-वि० इतना ।

एतवार-मशा पु० [ अ० ] प्रतीति । विस्वात ।

एतराज-सज्ञा पु० [ अ० ] आपत्ति । विरोध ।

एनवार-सज्ञा पु० दे० "इतवार" ।

एता\*१-वि० [ स्त्री० एनी ] इतना । इतनी मात्रा का ।

एतादृक्-वि० ऐसा । ऐसा ही । एतादृश ।

एतादृश-वि० ऐसा । इसके जेमा । इस प्रकार का । ऐसा ।

एतावत्-अव्य० इतना ही । यहाँ तक ।

एतावता-अव्य० इस कारण । इस हेतु । इसलिये ।

एतावन्मात्र-अ० इतना ही । यही । केवल ।

एतिक\*-वि० इतनी । इतना । इतना ही ।

एतिहास-सज्ञा स्त्री० दे० "एहतिहास" ।

एनस-सज्ञा पु० पाप । अपराध ।

एनी-मज्ञा पु० एक बहुत बड़ा वृक्ष, जो दक्षिण के पश्चिमी घाट में पाया जाता है ।

एमन-सज्ञा पु० सात स्वरो का या सपूर्ण जाति का एक राग । (संगीत)

एरड-सज्ञा पु० अरण्डी । रेही । रेड ।

एरड सरसुजा-सज्ञा पु० पपीता ।

एरड सकेर-सज्ञा पु० मोगली । वागरेडा ।

एरडी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की शाड़ी, जिसे तुगा, आमी और दर्रेगडी कहते हैं ।

एराक-सज्ञा पु० [ अ० ] [ वि० एराकी ] अरब का प्रदेश-विशेष जहाँ का घोड़ा अच्छा होता है ।

एराफी-वि० [ फा० ] एराक का ।

सज्ञा पु० नस्ल । एराक देश की नस्ल का घोड़ा ।

एराफेर या एराफेरी-सज्ञा पु० हेराफेरी । राट्टा-चट्टा ।

एरी-सज्ञा स्त्री० सम्बोधन-सूचक शब्द ।

एलक-सज्ञा पु० १. चलनी, जिसमें मैदा या

महीन आटा छाना जाता है । २. मेडा । ३. जगली बकरी ।

एन्ची-मज्ञा पु० [ तु० ] राजदूत । जो एक राज्य का मदेशा लेकर दूसरे राज्य में जाता है । दूत ।

एला-मज्ञा स्त्री० इलायची ।

एलुया या एलूया-मज्ञा पु० [ अंग्रे० एलो ]

ओपधि-विशेष । मुम्वर ।

अव्य० ऐसे ही और । इसी प्रकार और ।

एय-अव्य० १ ही । २ भी । ऐसा । इस प्रकार का । निश्चय करके ऐसा । मात्र । केवल ।

एवं-किं वि० इसी प्रकार । ऐसा ही । अमीवार ।

एयज-मज्ञा पु० [ अ० ] १. प्रतिफल ।

प्रतिवार । २ बदला । परिवर्तन । ३.

स्थानापन्न पुण्य । दूसरे की जगह पर कुछ

काल तक के लिए काम करनेवाला ।

एयजो-मज्ञा स्त्री० [ अ० एयज ] स्थानापन्न

पुण्य । दूसरे की जगह पर कुछ समय के

लिए काम करनेवाला आदमी ।

एयमस्तु-अव्य० ऐसा ही हो ।

एयन-सज्ञा स्त्री० इच्छा । अभिलाषा ।

एह\*-सर्व० यह ।

वि० यह ।

एहतिहास-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ साधना ।

होशियारी । २ चौकसी । ३ बचाव ।

परहेज ।

एहसान-सज्ञा पु० [ अ० ] उपकार । कृतज्ञता ।

एहसानमद-वि० [ अ० ] कृतज्ञ । उपकार

माननेवाला । उपकृत ।

एहि-सर्व० "एह" का वह रूप जो उसे विभक्ति

लगाने पर प्राप्त होता है । इसको ।

एह या एह-सर्व० यह भी । और भी । यही ।

एही-अव्य० संबोधन-शब्द । हे । ए । अरे । ज़ी ।

ऐ

ऐ-हिन्दी-वर्णमाला का नवाँ और सस्कृत-वर्ण-माला का बारहवाँ अक्षर (स्वरवर्ण) है । इसका उच्चारण-स्थान कण्ठ और तालु है ।

सज्ञा पु० १ शिव । महेश्वर । २. आमत्रण । आह्वान । ३ स्मरणार्थ । अव्य० संबोधन-विशेष ।

ऐ-अव्य० १ अव्यय-विशेष जिसका प्रयोग अच्छी तरह न गुनी या समझी हुई बात को फिर से गहलाने के लिए किया जाता है।

२ आश्चर्य-सूचक अव्यय।

ऐच-सज्ञा पु० १ सवोच। २ ऐच। विचाव।

ऐचना-क्रि० म० १. ईचना। तानना। सींचना। २ दूसरे का ऋण अपने रूपर लेना। ओढ़ना।

ऐचा-सज्ञा पु० १ दे० "ऐचाताना"। २ दे० 'अवुडा'।

ऐचाताना-वि० भंगा। जिसकी पुतली ठाकने में दूसरी ओर को खिचती हो।

ऐचातानी-सज्ञा स्त्री० खोचातानी। खोचा-खीची। अपने-अपने पक्ष का आग्रह।

ऐछना\*-क्रि० स० १ साफ करना। झाड़ना। २ अँछना। (वालों में) कधी करना।

ऐठ-सज्ञा स्त्री० १ अकड़। ठसक। २ घमड़। गर्व। ३ द्वेष। कुटिल भाव। दुर्भाव। विरोध। ४ मरोड़। गाँठ। ५ लपेट। पेंच। बल।

ऐठन-सज्ञा स्त्री० १ घुमाव। लपेट। पेंच। मरोड़। बल। २ खिचाव। अकड़ाव। तनाव।

ऐठना-क्रि० स० १ घुमाना। घटना। मरोड़ना। बल देना। २ सँसना। दबाव डालकर या धोखा देकर लेना।

क्रि० अ० १ बल खाना। घुमाव के साथ तनना। २ खिचना। अकड़ना। ३ मरना। ४ अकड़ दिखाना। गर्व करना। ५ उल्टी-सीधी बातें करना। टराना।

ऐठना-क्रि० स० [ऐठना का प्रे० रूप] ऐठने का काम दूसरे से कराना।

ऐठा-सज्ञा पु० रस्सी बटने का एक पेंच। वि० मरोड़ा।

ऐडबेंड-वि० टेढ़ा।

ऐडरी-सज्ञा स्त्री० गेडूरी। बीड़ा।

ऐड-सज्ञा पु० १ गव। ऐठ। ठसक। २ पानी का भँवर।

वि० १ निकम्मा। २ नष्ट।

ऐडदार-वि० १. ठसकवाला। घमडी। २ बाँका। शानदार। विरछा।

ऐठना-क्रि० अ० १ ऐठना। बल खाना। २ अँगड़ाई लेना। अँगड़ाना। ३ गर्व या घमड़ करना।

क्रि० म० १ बल देना। ऐठना। २ बदन तोड़ना।

ऐड़ा-वि० [म्यो० ऐँडी] ऐँठा हुआ। टेढ़ा।

म. हा०—अग ऐँडा करना—ऐँठ दिखाना।

ऐड़ाना-क्रि० अ० १ बदन तोड़ना। अँगड़ाना। अँगड़ाई लेना। २ अकड़ दिखाना। इठगाना।

ऐड़जालिक-वि० मायावी। इद्रजाल करनेवाला। मायावान। वाजीगर।

ऐँडी-सज्ञा स्त्री० १ शची। इद्राणी। २ इद्रवाहणी। ३ दुर्गा। ४ इलायची।

ऐक्य-सज्ञा पु० १ एकता का भाव। एकत्व। २ मेल। एका। एवता। समानता।

ऐकमत्य-सज्ञा पु० एकमत होने का भाव।

ऐगुन\*-सज्ञा पु० दे० "अवगुण"।

ऐच्छिक-वि० इच्छानुसार। स्वेच्छाधीन। इच्छापूर्वक। वैकल्पिक।

ऐजन-अव्य० [ज०] तय्यं। तथा। वही।

ऐत\*-वि० दे० "इतना"।

ऐतरेय-सज्ञा पु० १ ऋग्वेद का एक ब्राह्मण। २ आरण्यक-विशेष।

ऐतिहासिक-वि० १ इतिहास में सवध रखनेवाला। इतिहास-संघर्षी। जो इतिहास में हो। २ इतिहास का जाननेवाला। इतना प्रसिद्ध या महत्त्वपूर्ण जिसका वर्णन इतिहास में हो।

ऐतिहासिकता-सज्ञा स्त्री० ऐतिहासिक होने का भाव।

ऐतिह्य-सज्ञा पु० पौराणिक। १ इतिहास-प्रसिद्ध प्रवाद कथा। यह प्रमाण वि बहुत दिन से ऐसा मुनते आए हैं। २ परंपरा। प्रमाणत।

ऐन-सज्ञा पु०। अयन। घर। मवान। स्थान।

वि० [अ०] १ उपयुक्त। ठीक। सटीक।

ज्या का त्या। २ पूरा-पूरा। बिल्कुल।

ऐनक-सज्ञा स्त्री० [अ० ऐन=अभि] उपचक्षु। चश्मा।

ऐना-सज्ञा पु० दर्पण। आडना।  
 ऐनि-सज्ञा पु० सूर्यपुत्र।  
 ऐणिक-सज्ञा पु० काले हरिण मारनेवाला।  
 ऐपन-सज्ञा पु० हल्दी के साथ भिगोया हुआ पिसा चावल जिससे देवताओं की पूजा में थापा लगाते हैं। भिगोया चावल जो हल्दी के साथ पिसा हो (थापा या तिलक के लिए)।  
 ऐब-सज्ञा पु० [अ०] [वि० ऐबी] १ खोट। दोष। २ बुराई। अवपुण। कलत्र। वृति।  
 ऐबजोई-सज्ञा स्त्री० दूसरों के दोष देखना या ढूँढना।  
 ऐवारा-सज्ञा पु० भेड़-बकरियों का बाड़ा।  
 ऐबी-वि० [अ०] १ दुष्कर्मी। बुरा। खोटा। २ नटखट। दुष्ट। शैतान। ३ जिसका कोई अंग विकृत हो। विकलांग, विगोपत काना।  
 ऐयां-सज्ञा स्त्री० १ दादी। पिता या माता की माँ २ बड़ी-बड़ी स्त्री। ३ मास।  
 ऐयाम-सज्ञा पु० [अ०] दिन। समय। जमाना। मौसम।  
 ऐयार-सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० ऐयारा] १ धूर्त। चालाक। चलवा-पुर्जा। उस्ताद। २ छली। धोखेबाज।  
 ऐयारी-सज्ञा स्त्री० [अ०] चालाकी। धूर्तता। कपटता।  
 ऐयास-वि० [अ०] [सज्ञा ऐयासी] १ बहुत भोग-विलास या आराम करनेवाला। विपयासक्त। विपयी। २ लपट। इद्रिय लोलप।  
 ऐयासी-सज्ञा स्त्री० [अ०] भोग-विलास। विपयासक्ति।  
 ऐरा-नैरा-वि० [अ० गैर] १ पराया। बेगाना। अजनबी (आदमी)। २ साधारण। हीन। तुच्छ।  
 ऐराक-गज्ञा पु० दे० "ऐराक"।  
 ऐरापति\*-सज्ञा पु० दे० "ऐरावत"। इन्द्र का हाथी।  
 ऐरायण-गज्ञा पु० १ ऐरावत हाथी। २ गायक वगैरे पुरुष का नाम।

ऐरावत-सज्ञा पु० [स्त्री० ऐरावती] १ इन्द्र का हाथी, जो पूर्व दिशा का दिग्गज है। २ बिजली से चमकता हुआ बादल। ३ बिजली। ४ द्रव्यनुप। ५ एक नाग का नाम। ६ नारगी। ७ मूर्ग का एक रूप। ८ बडहर।  
 ऐरावती-सज्ञा स्त्री० १ ऐरावत हाथी की हथिनी। २ बिजली। ३ रावी नदी। ४ एक पीये का नाम।  
 ऐरेय-सज्ञा पु० मद्य विशेष।  
 ऐल-सज्ञा पु० इला का पुत्र पुरूरवा।  
 \*सज्ञा पु० १ बाढ़। बूढ़ा। २ खाद्य की अधिकता, बहुतायत। ३ कोलाहल। ४ मगल ग्रह।  
 ऐश-सज्ञा पु० [अ०] १ चँन। आराम। २ भोग-विलास।  
 ऐशानी-वि० ईशानकोण-सम्बन्धी।  
 ऐश-सज्ञा पु० चौपाये जानवरों का एक राग-विशेष जिसमें वे पाएँ नहीं करते।  
 ऐश्वर्य-सज्ञा पु० १ विभव। संपदा। गौरव। महिमा। महत्त्व। विभूति। धनसंपत्ति। २ अणिमादिक सिद्धियाँ। ३ आधिपत्य। प्रभुत्व। अलौकिक संपत्ति।  
 ऐश्वर्यवान्-वि० [स्त्री० ऐश्वर्यवती] प्रताप-शाली। वैभवशाली। भाग्यवान्। संपत्तिवान्। संपन्न।  
 ऐश्वर्यशाली-वि० भाग्यवान्। प्रारब्धी।  
 ऐयम-अव्य० वर्तमान सवत्सर। एसो। इस साल।  
 ऐसा-वि० दे० "ऐसा"।  
 ऐसा-वि० [स्त्री० ऐसी] इस तरह का। इससे समान। इस ढंग का।  
 मुहा०-ऐसा-नैसा या ऐसा-बैसा=साधारण। तुच्छ।  
 ऐसीक-गज्ञा पु० १ त्वष्टादेव का मय पञ्चकुर चलाया जानेवाला शस्त्र-विशेष। २ महाभारत का एक पर्व।  
 वि० वैत का बना।  
 ऐसे-वि० वि० इस ढंग में। इस प्रकार में।  
 ऐसेहि-अव्य० इसी प्रकार में। इसी तरह में।  
 ऐहिक-वि० मात्सरिक। भौतिक। दुनियावी।

## श्रो

ओ-हिदी-वर्णमाला वा दसवीं बीर मस्तुत-  
वर्णमाला वा तेरहवाँ अक्षर (स्वर-वर्ण)  
जिसका उच्चारण-स्वान ओष्ठ और वट  
है।

न। पु० १ ब्रह्मा। २ विष्णु।

अव्य० १ एक संबोधन-विस्मय या आश्चर्य-  
सूचक शब्द। ओह। आह। २ एक स्मरण-  
सूचक शब्द। कदना। स्मृति।

ओं-अव्य० १ हाँ। अच्छा। तथास्तु।  
स्वीकृतिसूचक शब्द। २ परब्रह्म-वाचक शब्द  
जो प्रणव मन्त्र बहलाता है। ३ वेद मन्त्रों  
के पहले लिखा या उच्चारित होनेवाला  
वर्ण।

ओंछना-क्रि० स० निछावर करना। वारना।

ओंकना-क्रि० अ० हट या फिर जाना  
(मन वा)। दे० 'ओकना'।

ओंकार-मज्ञा पु० १ परमात्मा का सूचक  
ओ शब्द। २ प्रणव। ३ आठ बीजमन्त्र।  
प्रारम्भ। ४ सोहन चिडिया।

ओगना-क्रि० स० गाड़ी की धुरी में चिकनाई  
लगाना जिससे पहिया आसानी से घूमे।

ओठ-सज्ञा पु० ओठ। अपर। मुँह की बाहरी  
उभरी हुई कोर जिनसे दाँत ढके रहते हैं।

मुहा०—आठ चबाना=क्रोध और दुःख  
प्रकट करना। ओठ चाटना=किसी वस्तु  
की छा चुकने पर स्वाद के लालच से ओठा  
पर जीभ फेरना। आठ फड़कना=क्रोध के  
कारण आठ कांपना। ओठ काटना=क्रोध  
के कारण दाँतों से आठ दबाना। ओठ बाट  
कर रह जाना=निष्फल क्रोध करना। जिस  
पर क्रोध हो, उस पर वश न चलना।

ओड़ा\*-वि० १ गहरा। २ गम्भीर।  
सज्ञा पु० १, गड्ढा। गड्ढा। २ सेंध जो  
घोरो ने खोदी हो।

ओधा-सज्ञा पु० ओधा। उलटा।

ओझा-सज्ञा पु० हाथी कँपाने का गड्ढा।

ओज-सज्ञा पु० १ पर। मदान। निवास  
स्थान। २ ठिकाना। आश्रय। ३ नश्वरों  
का समूह। ग्रह-समूह।

सज्ञा स्त्री० [अनु०] उगड़ी।

सज्ञा पु० अजलि।

ओकना-क्रि० अ० [अनु०] १ उलटी करना।

२ भेम की तरह चिल्लाना। रेंवना। ३

ओज अर्थात् अजलि से पीना।

ओकपति-सज्ञा पु० १ चंद्रमा। २ मूय।

ओकाई-सज्ञा स्त्री० बमन। कं। उलटी।

ओकारांत-वि० जिसके अंत में "ओ" हो।

जैसे, फोटा।

ओखदी-सज्ञा पु० दे० "ओषध"।

ओखली-सज्ञा स्त्री० उलखल। ऊबल।

मुहा०—ओखली में सिर देना=कष्ट महने  
पर उतार होना।

ओखा\*-सज्ञा पु० बहाना। हीला। मिस।

वि० १ खला-मूला। २ विकट। कठिन।

३ टेढ़ा। ४ खोटा। जो सुद्ध न हो।

'ओखा' का उलटा। ५ विरल। झीना।

ओष\*-सज्ञा पु० चंद्रा। कर।

ओगरा-सज्ञा पु० खिचड़ी। पथ्य विशेष।

ओष-सज्ञा पु० १ डेर। समूह। राशि।

२ किसी वस्तु का घनत्व। ३ धारा।

बहाव। ४ 'काल पाके सब काम आप ही

हो जायगा' इस प्रकार सवोप। काल-

गुप्ति (साक्ष्य)। ५ बाढ़। ६ द्रुत लय

(संगीत)। ७ अविच्छिन्न परस्पर।

ओछा-वि० १ तुच्छ। क्षुद्र। नीच। जो गम्भीर

नहा। छिछोरा। २ छिछला। कमगहरा।

३ हल्का। जोर का नहीं। ४ उतावला।

५ बम। छोटा।

ओछाई-सज्ञा स्त्री० दे० 'ओछापन'।

ओछापन-सज्ञा पु० क्षुद्रता। नीचता।

छिछोरापन। तुच्छता।

ओज-सज्ञा पु० १ दीप्ति। बल। प्रताप।

तेज। २ प्रकाश। उजाला। चम्क। दीप्ति।

३ नयना का गुण विशेष जिससे मुननेवाले

के चित्त में धीरता आदि का आवेश

उत्पन्न हो। ४ शरीर के भीतर के रक्त

का सार-भाग। विषम, ताक (जैसे १, ३, ५

७ आदि)। ६ जल।

ओजना-क्रि० स० अपने ऊपर लेना। सहना।  
 ओजस्विता-मज्ञा स्त्री० प्रताप। तेज। काति।  
 दीप्ति। प्रभाव।  
 ओजस्वी-वि० [स्त्री० ओजस्विनी] प्रतापी।  
 प्रभावशाली। शक्तिमान्। बली। तेजस्वी।  
 ओभ-तज्ञा पु० १ पेट। पेट की धैली।  
 २ आँठ।  
 ओशर-सज्ञा पु० पेट।  
 ओशल-सज्ञा पु० ओट। आड। छिपाव।  
 परदा। टट्टी। एकांत।  
 मुहा०-ओजल होना=दिखाई न पड़ना।  
 ओजल करना=छिपाना। परदा करना।  
 ओझा-सज्ञा पु० १ सरयूपारीण, मंथिल और  
 गुजराती ब्राह्मणों की पदवी-विशेष। २  
 जा भूत प्रेत शाडता हो। सयाना। टोनहा।  
 ३ मन्त्री। तांत्रिक। ४ उपाध्याय।  
 ओशई-तज्ञा स्त्री० शाडभूक। भूत-प्रेत  
 शाडने का काम।  
 ओट-मज्ञा स्त्री० १ व्यवधान। आड।  
 छिपाव। बचाव। रोक, जिससे सामने  
 की वस्तु दिखाई न पड़े। २ आड  
 करनेवाली चीज। ३ शरण। रक्षा।  
 मुहा०-ओट में=बहाने से। हीले से।  
 ओखा की ओट होना=छिपना, सामने  
 से हटना। तिल की ओट पहाड़ होना=  
 छोटी सी चीज का बचाव करने से बड़ी से  
 बड़ी कठिनाई से बचना। ओट करना=  
 बचाना, आड करना।  
 ओटना-क्रि० स० १ कपास की चरखी में  
 दसकर कई और विनोदों को अलग करना।  
 २ अपनी ही बात कहते जाना।  
 क्रि० स० १ अपने ऊपर सहना। २  
 आड करना। ३ रेतना।  
 ओटनी, ओटी-सज्ञा स्त्री० बेलनी। कपास  
 ओटने की चरखी।  
 ओटा-सज्ञा पु० आडा। रुकाव। परदे की  
 दीवाल।  
 ओठगाना-क्रि० अ० १ किसी वस्तु से टिककर  
 बैठना। सहारा लेकर बैठना। टेक लगाना।  
 २ कमर सीधी करना। थोड़ा आराम  
 करना।

ओठगाना-क्रि० स० १ भिडाना। सहारे  
 से टिकाना। २ विवाद या दरवाजा  
 बंद करना।  
 ओठ-सज्ञा पु० ओष्ठ। ओठ। होंठ। अघर।  
 ओठन\*—सज्ञा पु० १ ओठने की वस्तु।  
 बार बचाने की वस्तु। २ फरी। ढाल।  
 ओठन खाँडे-सज्ञा पु० पट्टेबाज। ढाल-तलवार।  
 ओठना-क्रि० स० १ ऊपर लेना। रोचना।  
 वारण करना। २ (कुछ लेने के लिए)  
 पसारना। फैलाना। ३ झरना। सहना।  
 ओडव-सज्ञा पु० रागों की जाति विशेष।  
 राग-विशेष, जिसमें पाँच ही स्वर हों।  
 ओडा-सज्ञा पु० १ दे० "ओड़ा"। २ दौरा।  
 बड़ा टोकरा। खोंचा। ३ घाटा। कमी।  
 टोटा।  
 ओड़-सज्ञा पु० १ उड़ीसा देश। २ उड़ीसा  
 देश का निवासी।  
 ओढ़ना-क्रि० स० १ पहनाना। शरीर के  
 किसी भाग को वस्त्र आदि से ढकना। २  
 अपने ऊपर या जिम्मे लेना।  
 सज्ञा पु० ओढ़ने का वस्त्र (रजाई, पट्टू,  
 लोई आदि।)  
 ओढ़नी-सज्ञा स्त्री० स्त्रियों के ओढ़ने का  
 वस्त्र। उपरैनी।  
 ओढ़र\*—सज्ञा पु० बहाना।  
 ओड़ाना-क्रि० स० कपड़े से ढँकना।  
 ओत-सज्ञा स्त्री० १ आराम। चैन। २  
 आलस्य। ३ बचत। किरफायत। ४  
 लाभ। प्राप्ति।  
 सज्ञा पु० ताने का सूत।  
 वि० बुना या गुथा हुआ।  
 ओत-प्रोत-वि० सम्मिलित। विलकुल मिला-  
 जुला। इस प्रकार मिला हुआ कि उसका  
 अलग करना असंभव सा हो।  
 सज्ञा पु० ताना-बाना। आडा-सीधा बुना  
 या सिला हुआ।  
 ओता\*—वि० दे० "उता"। उतना।  
 ओतु-सज्ञा स्त्री० विल्ली। बिलाई।  
 ओद-सज्ञा पु० तरी। नमी। सील।  
 वि० गीला। नम। तर।  
 ओदन-सज्ञा पु० पका हुआ चावल। भात।

ओबनी-मज्ञा पु० बरियारी। बीजवन्ध।  
 ओबर-मज्ञा पु० दे० "उदर"।  
 ओबरना-त्रि० अ० १ फटना। विदीर्ण  
 होना। २. नष्ट या छिन्न-भिन्न होना।  
 ओबा-वि० गीला। भीगा। भीजा। आर्द्र।  
 ओबारना-त्रि० स० १ पाडना। विदीर्ण  
 करना। २. नष्ट या छिन्न-भिन्न करना।  
 ओबे-सज्ञा पु० १ लगे हुए। २ अधिकारी।  
 ३ भीतरिया। ४ बल्लभ-संप्रदाय में ठापुर  
 जी की रगोई बनानेवाले को भी कहते हैं।  
 ओनत\*-वि० झुका हुआ। अनुनत।  
 ओनचन-मज्ञा स्त्री० अदवायन। चारपाई के  
 पायवाने की ओर बुनावट को खींचकर बड़ा  
 रखने के काम में लाई जानेवाली रस्सी।  
 ओनचना-त्रि० स० अदवायन कसना या  
 खींचना।  
 ओनमड-वि० बली।  
 ओनवना\*-त्रि० अ० दे० "उनवना"।  
 ओना-सज्ञा पु० निवास। तालाबो आदि में  
 पानी के निकलने का रास्ता।  
 ओनामासी-सज्ञा स्त्री० १ प्रारम्भ। २  
 अक्षरारम्भ।  
 ओप-सज्ञा स्त्री० १ आभा। कात्ति। शोभा।  
 दीप्ति। चमकमाहट। २ पालिश। माँज।  
 घोट। ३ सुन्दरता।  
 ओपची-सज्ञा पु० बचपवारी थोड़ा।  
 अस्त्रचारी घीर। रक्षक थोड़ा।  
 ओपना-त्रि० स० साफ करना। चमवाना।  
 पालिश करना। माँजना।  
 त्रि० अ० चमकना। झलकना। चमकमाना।  
 ओपनि\*-मज्ञा स्त्री० दे० "ओप"।  
 ओपनी\*-स० स्त्री० माँजने की वस्तु। रगड़कर  
 चमक लाने की कोई चीज। बट्टी।  
 यशव या अश्वीव पत्थर का टुकड़ा जिससे  
 रगड़कर सोना या चाँदी चमकाते हैं।  
 ओफ-अव्य० ओह। पीडा, खेद, शोक, दुःख  
 और आश्चर्यसूचक शब्द।  
 ओबरी\*-सज्ञा स्त्री० छोटा घर।  
 ओम्-सज्ञा पु० ओपार। प्रणव गण।  
 ओर-सज्ञा स्त्री० १ किसी नियत स्थान के  
 अतिरिक्त ओप विस्तार जिसे दाहिना, बाया,

ऊपर, नीचे आदि शब्दों में निश्चित करते  
 हैं। दिशा। २ पक्ष। पार्श्व।  
 राज्ञा पु० १ छोर। सिर। बिनारा। २  
 अलग। ३. पार। सीमा। ४. प्रारम्भ। आदि  
 मुहा०-ओर निभाना या निवाहना=ज  
 तब अपना वतंव्य पूरा करना।  
 ओरमना-त्रि० अ० लटकना। महारा लेना।  
 ओरमा-मज्ञा पु० एकहरी मित्राई।  
 ओरहना-सज्ञा पु० उलहना। क्षिप्त।  
 उपालभ।  
 ओरहा-सज्ञा पु० दे० "होम्हा"।  
 ओराना-त्रि० अ० ममाप्त होना। चुकना।  
 ओप न रहना।  
 ओराहन या ओरहना-सज्ञा पु० दे० "उलाहना"  
 ओर या ओरी-सज्ञा स्त्री० ओरती।  
 अव्य० स्त्रिया को सम्बोधन के लिए शब्द।  
 ओरेहा-सज्ञा पु० निर्माण। सृष्टि। रचना।  
 चित्रकारी।  
 ओलदेज, ओलदेजा-वि० [हालंड देश]  
 हालंड देश-नवधी। हालंड देश का निवासी।  
 ओलबा, ओलभ-सज्ञा पु० उलाहना। क्षिप्त।  
 ओल-सज्ञा पु० जमीकद। सूरत।  
 वि० गीला। मनोती।  
 सज्ञा स्त्री० १ ओट। आड। २ गाद।  
 ३ कारण। ४ किसी वस्तु या प्राणी का  
 किसी के पास जमानत में उस समय तक  
 रहना, जब तक उसका धर्म अदा न  
 कर दिया जाय। जमानत। ५ दूसरे के  
 पास जमानत में रहनेवाली वस्तु या  
 व्यक्ति। ६ वहाना।  
 ओलती-सज्ञा स्त्री० ओरी। डालुवा छप्पर  
 का नीचे की ओर का किनारा, जहाँ से वर्षा  
 का पानी नीचे गिरता है।  
 ओलना-त्रि० स० १ परदा करना। आड  
 या ओट में करना। २ रोकना। ३ सहना।  
 ऊपर लेना।  
 त्रि० स० घुसाना।  
 ओला-सज्ञा पु० १ पत्थर। बरफ के टुकड़े  
 जो पानी के साथ आसमान से गिरते हैं।  
 बिबली। २ मिस्री का लड्डू। ३ ओट।  
 परदा। आड। ४ गुप्त बात। भेद। रहस्य।

वि० ओले के ऐसा ठंडा। बहुत ठंडा।  
 ओलिपाना-क्रि० स० १. गोद में भरना।  
 २. घुसाना। टूँसना। डालना।  
 ओली-सज्ञा स्त्री० १. गोद। २. पल्ला। अचल।  
 ३. झोली।  
 मुहा०-ओली ओढ़ना=आँचल फैलाकर कुछ मँगाना।  
 ओलीना-सज्ञा पुं० उदाहरण। तुलना।  
 ओपरकोट-सज्ञा पुं० [ अग्रे० ] जाड़े में पहनने का एक प्रकार का बड़ा ऊनी कोट।  
 ओपधि-सज्ञा स्त्री० १. पतस्पर्ति। तृण।  
 घास। दवा के काम आनेवाली जड़ी-बूटी।  
 २. पीधे जो एक बार फलकर सूख जाते हैं।  
 ओपधिपति, ओपधीश-सज्ञा पुं० १. चद्रमा।  
 २. कपूर।  
 ओष्ठ-सज्ञा पुं० अधर। होठ। ओठ।  
 रदच्छद। दन्तच्छद।  
 ओष्ठी-सज्ञा स्त्री० विवाफल। कुदरू।  
 ओष्ठ्य-वि० १. जिसना उच्चारण ओठ से हो। २. ओठ-सम्बन्धी।  
 यौ०-ओष्ठ्यवर्ण उ, ऊ, ए, फ, ब, भ, म।  
 ओस-सज्ञा स्त्री० हवा में मिली हुई भाप जो रात की ठंड से जलबिंदु के रूप में पदार्थों पर लग जाती है। शीत। पाला। शबनम।  
 मुहा०-ओस पड़ना या पड़ जाना=१ कुम्हलाना। गुशाना। २ उमग वृक्ष जाना।  
 जोश न रहना। ३ लज्जित होना। शरमाना।  
 ओसर-सज्ञा स्त्री० बिना व्याई हुई जवान

गाय। कलोर। जवान गी।  
 ओसर-सज्ञा पुं० १. वारी। पारी। २. दाँव।  
 ओसरी-सज्ञा पुं० "ओसरा"।  
 ओसाई-सज्ञा स्त्री० १ ओसने का काम। अन्न को भूसे से अलगाने की क्रिया। २ ओसाने के काम का पारिस्थमिक या मजदूरी।  
 ओसाना-क्रि० स० धरसाना। डाली देना।  
 दाँए हुए गल्ले को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग-अलग हो जाता है।  
 ओसार-सज्ञा पुं० विस्तार। चौड़ाई। फैलाव।  
 ओसार-सज्ञा पुं० [ स्त्री० ओसारी ]  
 १. बरामदा। दालान। २. ओसारे की छाजन। सायवान।  
 ओसीसा-सज्ञा पुं० सिरहना। तकिया।  
 ओह-अव्य० दुःख, आश्चर्य या लापरवाही का सूचक शब्द।  
 ओहट-सज्ञा स्त्री० दे० "ओट"।  
 ओहदा-सज्ञा पुं० [ अ० ] स्थान। पद।  
 ओहदेदार-सज्ञा पुं० [ फा० ] अधिकारी। पदाधिकारी। अफसर।  
 ओहर-सज्ञा स्त्री० ओट। ओसल।  
 ओहरना-क्रि० अ० कम होना। घटना।  
 ओहरी-सज्ञा स्त्री० बनावट। शिथिलता।  
 ओहा-सज्ञा पुं० गाय का थन।  
 ओहार-सज्ञा पुं० परदा। रथ, गाड़ी या पालकी आदि के ऊपर पड़ा हुआ कपड़ा।  
 ओहि-सर्व० उसको। उसे।  
 ओहो-अव्य० १ आनन्द-सूचक शब्द। २. आश्चर्य-सूचक शब्द।

## औ

औ-हिंदी वर्णमाला का ग्यारहवाँ और सस्कृत वर्णमाला का चौदहवाँ अक्षर (स्वर-वर्ण)। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और ओष्ठ है। यह अ और ओ के संयोग से बना है।  
 \*अव्य० दे० "और"। १. जाहान। सम्बोधन। २. विरोध। ३. निर्णय।  
 सज्ञा पुं० अनन्त। निरन्त।  
 औ-अव्य० दूसरी या प्रणव।  
 औना-वि० मूक। गुंगा। वाक्-हीन। वाणीहीन।

औगी-सज्ञा स्त्री० मौत। चुप्पी। गुंगापन।  
 गाड़ी की धुरी में दिये जानेवाले तेल का पात्र।  
 औगना-क्रि० स० गाड़ी के पहिए की धुरी में तेल आदि लगाकर चिकना करना।  
 औघना, औघाना-क्रि० अ० झपकना। ऊँचना। निद्राप्रस्त होना।  
 औघाई-सज्ञा स्त्री० झपकी। ऊँघ। हलकी नींद।  
 औन्ति-वि० निश्चित। बेखबर।  
 औज-वि० अ० १ ऊँचना। २.

व्याकुल होना। घबडाना। अकुलाना।  
 कि० स० १ उँडेलना। डालना। डालना।  
 २ लेना।  
 औंठ-सज्ञा स्त्री० छोर। उठा या उभड़ा हुआ चिनारा। चारी।  
 औंठ\*-सज्ञा पु० मजदूर। मिट्टी खोदने या उठानेवाला। बेलदार।  
 औंड़ा-वि० [स्त्री० औंड़ी] १. अथाह। गहरा। गभीर। २ उठा या उभड़ा हुआ।  
 औंधना\*†-वि० अ० १ उन्मत्त होना। बेसुप होना। भतवाला होना। २ घबडाना। व्याकुल होना। अकुलाना।  
 औंदाना-वि० अ० घबडाना। ऊबना। व्याकुल होना।  
 औंधना-कि० अ० पलट जाना। उलट जाना। उलटा होना।  
 कि० स० उलटना।  
 औंधा-वि० (स्त्री० औंधी) १ उलटा। जिमका मुह नीचे की ओर हो। २ पट। पेट के बल लेंटा हुआ। ३ नीचा।  
 मुहा०-औंधी खोपड़ी का=जड़। मूर्ख।  
 औंधी समझ=जड़बुद्धि। उल्टी समझ।  
 औंधे मुह गिरना=बुरी तरह धोखा खाना।  
 सज्ञा पु० उलटा या चिल्ला नाम का पक्वान।  
 औंरा-सज्ञा पु० १ आँवला। आमलकी। २ मिखी का लड्डू।  
 औंला-सज्ञा पु० १ धात्रीफल। आमलकी। आँवला। २ मिखी का लड्डू।  
 औंलासार-सज्ञा पु० गन्धक विशेष।  
 औंधाना-कि० स० १ उलटा करना। उलट देना। मुँह नीचे की ओर करना (बरतन)। २ लटवाना। नीचा करना।  
 औंन-सज्ञा स्त्री० राशि। ढेर।  
 औंनत-सज्ञा पु० [अ० वत वा वहु०] समय। सज्ञा स्त्री० १ समय। वक्त। २ हस्ती। हँसियत। विगात। बिसारत। वित्त।  
 औंनारान्त-वि० ऐसे शब्द जिनके अन्त में औंकार हो।  
 औंनद या औंनद-सज्ञा पु० औंण्य। दवा।

औंसा-सज्ञा पु० गाय का चमड़ा या चर्रा।  
 औंगत\*-सज्ञा स्त्री० दुर्गति। दुर्दशा।  
 वि० दे० "अवगत"।  
 औंगाहना-वि० अ० अवगाहना।  
 औगी-सज्ञा स्त्री० १ चानूक। रस्मी बरतनाया हुआ बाड़ा। २ बेल की छड़ी। पैना। जानबरो की या गड़वा जो घास-फूस से बना रहता है।  
 औंगुष या औंगुनी\*-सज्ञा पु० दे० "अवगुण" दोष। खोट। बल्ल।  
 औंगुणी या औंगुनी-वि० गुणहीन। निर्गुणी। मूर्ख।  
 औघट\*-वि० दे० "अवघट"। अगम्य। दुर्गम। कठिन। बुरा। खराब।  
 औघड़-सज्ञा पु० [स्त्री० औघड़िन] १ अघोरी। अघोर मत का पुरुष। २ सोच-विचारकर काम न करनेवाला। मौजी।  
 वि० १. उलटा-पलटा। अडबड़। २ अप्रसक्त। ३ वह व्यक्ति जिसे खान-पान में कुछ भी विचार न हो। गलीज। गदा।  
 औघर-वि० १ अनगढ़। अटपट। अडबड़। 'गुघर' का प्रतिकूल। अमुन्दर। २ अनोखा। विलक्षण। अद्भुत।  
 औचक-कि० वि० एकाएक। सहसा। अचानक।  
 हठात। अकस्मात्।  
 औचट-सज्ञा स्त्री० सवट। कठिना। अडत।  
 कि० वि० १ अचानक। सहसा। २ अनजान में। भूल से।  
 औचित्य-सज्ञा पु० उपयुक्तता। उचित का भाव। युक्तता।  
 औछ-सज्ञा पु० दारुह्वरी की जड़।  
 औजार-सज्ञा पु० [अ०] १ कोहार, बड़ा आदि बारीगरो के काम करने के यंत्र। २ हथियार। राख।  
 औजड़, औजर-वि० वि० लगाना। निरतर। सदैव।  
 सज्ञा पु० ठर। धक्का। साच।  
 औइन-सज्ञा पु० जलाव। उवाल। वाप।  
 औइना-कि० स० १ खोलना।\* दूध या

किसी पतली चीज को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा करता। २ व्यर्थ घूमना।  
 क्रि० अ० किसी तरह वस्तु का आँच या गरमी खाकर गाढ़ा होना।  
 ओढाना-क्रि० स० दे० "ओढना"।  
 ओठपाव-सज्ञा पु० दे० "अठपाव"।  
 ओडुलोमि-सज्ञा पु० एक दार्शनिक ऋषि।  
 ओढर-वि० जिस ओर मन में आवे, उसी ओर ढल पड़नेवाला। मनमोजी।  
 अटपटी। डार। वसमझी की डरन। बिना प्यार की प्रसन्नता।  
 औतरना\*-क्रि० अ० दे० "अवतरना"।  
 औतार\*-सज्ञा पु० दे० "अवतार"।  
 औत्कर्ष-सज्ञा पु० श्रेष्ठता। उत्तमता।  
 औत्तमि-सज्ञा पु० १४ मनुष्य में तीसरे मनु।  
 औत्तानपादी-सज्ञा पु० उत्तानपाद के पुत्र।  
 प्रसिद्ध भक्त ध्रुव।  
 औत्तापिक-वि० उत्ताप-सम्बन्धी।  
 औत्पत्तिक-वि० उत्पत्ति-सम्बन्धी।  
 औत्सुक्य-सज्ञा पु० उत्सुकता। अभिलाषा।  
 भावना।  
 औवरा\*-वि० दे० "उबला"। छिछला।  
 बम गहरा।  
 औदनिक-वि० १ मूपवार। २ पाचक।  
 ३ रन्धनवर्त्ता। रमोइया।  
 औदरिक-वि० १ पेट-सम्बन्धी। २ पेट।  
 बहुत खानेवाला। पेटार्थी। लालची।  
 जलोदर का रोगी।  
 औदसा†\*-सज्ञा स्त्री० दे० "अववसा"।  
 औदात-वि० अवदात। श्वेत। गौर। शुक्ल।  
 मफेद। धोला।  
 औदान-सज्ञा पु० पलुवा। सेंत का।  
 औदार्य-सज्ञा पु० १ उदारता। २ सात्त्विक  
 नायक का गुण विशेष। ३ महत्त्व। श्रेष्ठत्व।  
 मरलता। दातृत्व।  
 औदास्प-सज्ञा पु० उदासीनता। वैराग्य।  
 अनिच्छा। मनोमालिन्य।  
 औदीच्य-सज्ञा पु० गुजराती ब्राह्मणों की  
 जाति विशेष।  
 वि० उतार दिना का।  
 औदुम्बर-वि० १ उदुवर या गूलर का

बना हुआ। २ जो ताँवे का बना हो।  
 सज्ञा पु० १ गूलर की लकड़ी का बना  
 हुआ यज्ञपात्र। २ मुनि-विशेष।  
 औद्दालिक-सज्ञा पु० १ दीमक और बिलनी  
 आदि की वाँबी के कीड़ों का बिल। चेप।  
 २ मधु। तीर्थ-विशेष।  
 औद्धत्य-सज्ञा पु० १ उग्रता। अक्खडपन।  
 उजड़ूपन। २ डिठाई। धूँटता।  
 औद्योगिक-वि० उद्योग-सम्बन्धी।  
 औद्वाहिक-वि० विवाह-सम्बन्धी धन। विवाह  
 में प्राप्त धन।  
 औध\*-सज्ञा पु० दे० "अवध"।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।  
 औधारना-क्रि० स० दे० "अवधारना"।  
 औधि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "अवधि"।  
 औनि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "अवनि"।  
 औनिप\*-सज्ञा पु० दे० "अवनिप"। राजा।  
 औना-पौना-वि० थोड़ा-बहुत। आधा-तीहा।  
 अपूर्ण। न्यूनाधिक। घटी-बड़ी।  
 कि० वि० बमती-बडती पर।  
 मुहा० औने-पौने करना=जितना दाम मिले  
 उतने पर बेच डालना।  
 औपचारिक-वि० १ उपचार-सम्बन्धी। २ जो  
 वास्तविक न हो। जो केवल बहने सुनने  
 के लिए हो। व्यावहारिक।  
 औपनिवेशिक-वि० १ उपनिवेशों की तरह।  
 २ उपनिवेश-सम्बन्धी।  
 औपनिवेशिक स्वराज्य-सज्ञा पु० (डोमिनि-  
 यन स्टेट्स) एक प्रकार का विदेशी  
 राज्य जिसमें शासित जनता को कुछ  
 खास अधिकार प्राप्त होते हैं। कुछ  
 तरह अधिकारों के मुक्त एक प्रकार का  
 स्वराज्य जो ब्रिटिश साम्राज्य में आस्ट्रे-  
 लिया और कनाडा आदि उपनिवेशों की  
 प्राप्त है।  
 औपनिषदिक-वि० १ उपनिषद्-सम्बन्धी। २.  
 उपनिषद् के गमान।  
 औपन्यासिक-वि० १ उपन्यास-सम्बन्धी। उप-  
 न्यास विषयक। २ जो उपन्यास में वर्णन  
 करने योग्य हो। ३ अनायास। अद्भुत।  
 गज्ञा पु० उपन्यास लिखनेवाला।

औपपत्तिक-वि० १. वर्तमान। प्रस्तुत। २. उप-  
युक्त। ३. तर्क या युक्ति के द्वारा सिद्ध होने-  
वाला।

औपपत्तिक शरीर-संज्ञा पुं० देवलोक और  
नरक के जीवों का संसृष्टिक या सहज  
शरीर। लिंग-शरीर।

औपयिक-वि० उपयुक्त। योग्य।

औपसर्गिक-वि० प्र, अप, सम् आदि। उप-  
सर्ग-सम्बन्धी।

औवर-वि० घुरा या कठिन, भारी। औघट।  
दुर्गम।

औम\*-संज्ञा स्त्री० अवम तिथि। सूर्योदय के  
समय की वह तिथि, जिसकी गणना नहीं  
होती, जिसका मान नहीं होता।

और-अव्य० संयोजक शब्द-विशेष। यह  
दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है। औ।  
फिर। विशेष। वाक्यान्तरच्छेदक।

वि० १. अन्य। दूसरा। २. भिन्न। ३.  
अधिक। ज्यादा।

मुहा०-और का और=कुछ का कुछ।  
विपरीत। अडबड। और एक=दूसरा कोई।  
और कोई। और ही=विलकुल दूसरा।  
अत्यन्त भिन्न। और क्या=हाँ। ऐसा ही है।  
(उत्तर में) उत्साहवर्द्धक वाक्य। और तो  
और=दूसरों का ऐसा करना तो उतने  
आश्चर्य की बात नहीं। और ही कुछ होना=  
विलक्षण होना। सबसे भिराला होना। और  
तो क्या=और बातों का तो जिक्र ही  
क्या।

औरत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. स्त्री। २.  
नारी। महिला।

औरत-संज्ञा पुं० १२ प्रकार के पुत्रों में सबसे  
श्रेष्ठ। स्वपुत्र। धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र।

वि० जो अपनी विवाहिता स्त्री से  
उत्पन्न हो।

औरतना\*-क्रि० अ० १. रूष्ट होना। २. अन-  
खाना। ३. बिरस होना।

औरस्य-संज्ञा पुं० औरस पुत्र। स्वपुत्र।

वि० हृदय-सम्बन्धी।

औरस्य-संज्ञा पुं० १. वक्र गति। तिरछी चाल।  
२. कपड़े की तिरछी काट। ३. उलझन।

पेंच। ४. चाल की बात। पेंच की बात।  
गोल-मोल बात। व्यर्थ की बात।

औप्युद्धं वैहिक-वि० प्रेत-त्रिया। अग्नि-संज्ञा।  
आदि। अन्त्येष्टि-त्रिया। आदि।

और्व-संज्ञा पुं० १. वडवानल। २. नमन। ३.  
पुराणों के मतानुसार भूगोल का दक्षिण-  
भाग जहाँ सब नरक हैं। ४. मुनि-विशेष।  
भृगुवशीय-ऋषि।

और्वश्य-संज्ञा पुं० १. वसिष्ठ। २. अगस्त्य।  
३. उर्वशी का पुत्र।

औलना-क्रि० अ० जलना। गरम होना।  
गरमी पड़ना।

औलाद-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. सतवि।  
रातान। २. वश-परम्परा।

औला-संज्ञा-वि० मनमोजी। मस्ति।

औलिया-संज्ञा पुं० [अ०, बली का बहु०]  
पहुँचे हुए फकीर। मुसलमान मत के  
सिद्ध।

औवल-वि० [अ०] १. प्रथम। पहला। २.  
प्रधान। मुख्य। ३. सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ।  
संज्ञा पुं० आरम्भ।

औशि\*-क्रि० वि० दे० "अवश्य"।

औषध-संज्ञा पुं० स्त्री० दवा। औषधि। रोग  
दूर करनेवाली वस्तु। भेषज।

औषधालय-संज्ञा पुं० वैद्यगृह। दवाखाना।  
चिकित्सालय।

औसत-संज्ञा पुं० [अ०] सामान्य। बराबर  
का परता। समष्टि का सम-विभाग।

वि० माध्यमिक। साधारण। बीच का।

औसतना-क्रि० अ० १. उमसना। गरमी  
पड़ना। २. खाने की चीजों का बासी  
होकर सड़ना। ३. गरमी से घबड़ाना।  
४. पचना।

औसर\*-संज्ञा पुं० दे० "अवसर"। अवकाश।  
छुट्टी।

औसान-संज्ञा पुं० १. समाप्ति। अंत। २.  
परिणाम। ३. सुष-वृष। चेतना। बोध।  
होश-हुवाश। २. साहस।

औसेर-संज्ञा पुं० चिन्ता। सटका।

औहत-संज्ञा स्त्री० १. अपनृत्य। २. दुर्गति।  
दुर्दशा।

## क

क-हिंदी वर्णमाला का पहला व्यंजन वर्ण । इसका उच्चारण कठ से होता है । इसे स्पर्श वर्ण भी कहते हैं । (स० पु०) ब्रह्मा । विष्णु । यम । गण्ड । सूर्य । कामदेव । अग्नि । दीप्ति । वायु । मोर । राजा । आत्मा । मन । शरीर । समय । बाल । धन । शब्द । राजा । प्रजापति । दश । अन्ध । गड ।

क-सज्ञा पु० १. जल । २. अग्नि । ३. याम । ४. सोना । ५. मस्तक । शिर । मुख । क-सज्ञा पु० [स्त्री० कका, ककी] १. सफेद मौल । काँक । २. बड़ा आम विशेष । ३. यम । ४. क्षत्रिय । ५. मुषिष्ठिर का उस समय का कल्पित नाम जब वे विराट के यहाँ अज्ञातवास में रहे थे ।

ककड-सज्ञा पु० [स्त्री० अल्पा० ककडी] [वि० कँकडीला] १. पत्थर का छोटा टुकड़ा । २. चिकनी मिट्टी और घूने से बने रोडे जो सड़क बनाने के काम में आते हैं । ३. अँकड़ा । किसी चीज का वह टुकड़ा जो आसानी से न पिस सके । ४. चिसम में रखने का मिट्टी आदि का टुकड़ा ।

ककडीला-वि० [स्त्री० ककडीली] जिसमें ककड हो । ककड मिला हुआ । ककड-युक्त ।

ककण-सज्ञा पु० १. कलाई का गहना विशेष । बलय । नङा । कगन । २. विवाह के समय हाथ में पहनाया जानेवाला धागा ।

ककपन-स० पु० बाण-विशेष । एक प्रकार का बाण जिसमें कक या गिड के पर बँध रहते हैं । गिड के आवार का तीर ।

ककर-सज्ञा पु० दे० 'ककड' । काँकर । रोटा । पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े ।

ककरोट-सज्ञा स्त्री० [अग्र० काक्रीट] १. छुरी । बजरी । चूना, ककड, बाजु इत्यादि से मिलकर बना हुआ गण बनाने का मसाला । २. छाटी छोटी ककडी जिससे सड़क बनती और सुधारी जाती है ।

ककाल-सज्ञा पु० अस्थि-यजर । ठठरी । ककालमाला-सज्ञा स्त्री० हाडों की माला ।

ककालमाली-सज्ञा पु० अस्थिमय माला पहननेवाला । महादेव । भैरव ।

ककालिनी-सज्ञा स्त्री० डाकिनी, डायन । दुर्गा । उग्र और दुष्ट स्वभाव की स्त्री । ककशा ।

ककैला-वि० पथरीला । किरकिरा । बलुवा । ककोल-सज्ञा पु० शीतलचीनी के वृक्ष का भेद विशेष, जिसके फल शीतलचीनी से बड़े और कड़े होते हैं ।

कँखवारी-सज्ञा स्त्री० कँखीरी । काल में होनेवाली फुटिया ।

कँखोरी-सज्ञा स्त्री० १. दे० "कँखवारी" । २. काल ।

कगन-सज्ञा पु० १. ककण । २. सिखो का सिर पर बाँधा जानेवाला लोहे का चक्र ।

कँगना-सज्ञा पु० [स्त्री० कँगनी] १. दे० "ककण" । २. ककण बाँधते समय गाया जानेवाला गीत ।

कँगनी-सज्ञा स्त्री० १. छोटा कगन । २. ककणी । छत के नीचे दीवार में उमड़ी हुई लकीर । कगर । कानिस । ३. गोल चक्कर जिसके बाहरी किनारे पर दाँत या नुकीले कँगुरे हो ।

सज्ञा स्त्री० अन्न-विशेष जिसके चावल खाए जाते हैं । टाँगुन । काकून ।

कगरोट-स० पु० रोट । पक्षी विशेष ।

कगार-स० पु० भार बहन करनेवाला ।

कगला-वि० दे० "कगाल" ।

कगाल-वि० १. भुक्खड । दीन । दुखी । २. दरिद्र । निर्धन ।

कगाली-सज्ञा स्त्री० निर्धनता । दरिद्रता । दीनता ।

कगुडी-सज्ञा स्त्री० कान का निचला भाग ।

कंगूरा-सज्ञा पु० (वि० कँगुरेश्वर) १. चोटी । शिखर । २. बिले की दीवार में थोड़ी थोड़ी दूर पर बने हुए ऊँचे स्थान जहाँ से सिपाही खड़े होकर लड़ते हैं । बुर्ज । ३. कँगुरे के आवार का छोटा रखा । (गहाना में) ४. उच्च प्रदेश ।

कथा-सज्ञा पु० (स्त्री० अत्पा० कधी) १  
पेशमार्जनी। लकड़ी, सीम या धातु की  
यनी हुई वस्तु विशेष जिससे मिर के घाल  
भाटे या साफ किए जाते हैं। २. जुलाहा  
का अस्त्र विशेष जिससे वे घरघे में भरनी  
के तागों को बसते हैं। धोला।  
वय।

कधी-सज्ञा स्त्री० १. छोटा कथा। २  
जुलाहा का कधी नामक अस्त्र। ३  
पौधा विशेष जिसकी जड़, पत्ती आदि दवा  
के काम में आती है। अतिवला।

मुहा०-कधी चोटी-बनाव सिंगार।  
कंधरा-सज्ञा पु० [स्त्री० कंधरिन] जो कथा  
बनाता हो।

कचन-सज्ञा पु० १ सुवर्ण। सोना। २  
तपस्वि। धन। ३ धतरा। ४ कच  
नार विशेष। रक्त काचन। ५ (स्त्री०  
कचनी) एक जाति का नाम जिसकी स्त्रियाँ  
प्रायः वेश्या का काम करती हैं।

वि० १ स्वस्थ। नीरोग। २ स्वच्छ।  
मुहा०-कचन बरसना—(किसी स्थान का)  
समुद्रि और धोभा से युक्त होना।

कचनक-सज्ञा पु० कचनार। मैनफल।  
कचनी-सज्ञा स्त्री० १ वेश्या। पतुरिया।  
२ कचन जाति की स्त्री। ३ सुवर्ण  
की पुतली।

कचु-स्त्री० चोली। ओगिया।

कचुक्-सज्ञा पु० (स्त्री० कचुकी) १  
कपकन। जामा। अकन। २  
ओगिया। चोली। ३ कच। ४ वस्त्र।  
५ कंचुल।

कचुकी-सज्ञा स्त्री० ओगिया। चोली।  
सज्ञा पु० १ अत पुर रक्षक। रनिवास के  
दास दासिया का अध्यक्ष। २ द्वारपाल।  
३ सप।

कचुरि\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'कंचुल', 'कंचली'।  
कंचरा-सज्ञा पु० (स्त्री० कंचरिन) जो वाँच  
का काम करता हो।

कज-सज्ञा पु० १ प्रह्ला। २ कमल।  
३ चरण की एक रखा। कमल। पथ।  
४ वेडा। सिर के बाल। ५ अमृत।

कजई-वि० खाकी। कजे के रंग का। घूरे  
के रंग का।

सज्ञा पु० १. कजई रंग की। २  
घोडा। २ खाकी रंग।

कजड़-सज्ञा पु० (स्त्री० कजड़िन) १  
घूमनेवाली जाति विशेष। २. रस्मी बटन,  
सिरकी बनाने का काम करनेवाली एक  
जाति।

कजा-सज्ञा पु० कजजुवा। एक बँटीली भाड़ी  
जिसकी पत्ती के दाने दवा के काम में  
आते हैं।

वि० (स्त्री० कजी) १ गहरे खारी  
रंग का। कजे के रंग का। २. कजी या  
भूरी आँखवाला।

कजाबलि-सज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त विशेष।

कजिया-सज्ञा स्त्री० आँखा की अजनी।

कजियाना-वि० अ० अगारा का ठंडा  
पडना। बाला पडना। आँखा का कजा  
हाना।

कजूस-वि० (सज्ञा कजूसी) जो घन का भोग  
न करे। लालची। सूम। कृपण।

कजूसी-सज्ञा स्त्री० कृपणता।

कटक-सज्ञा पु० [वि० कटक्ति] १ बाँटा।  
२ सूई की नोक। ३ क्षुद्र दानु।  
४ बाधा। विघ्न। बखेडा। अकट। ५  
वाचक। ६ रोमांच। ७ कवच। ८ दोष।  
९ नाखून। १० तीव्र दर्द। ११ वाँस।  
१२ कारखाना। १३ दोष, मुटि। १४  
गोव की सीमा।

कटकद्रुम-सज्ञा पु० काँटायुक्त वृक्ष। शाल्मली  
वृक्ष।

कटकल-सज्ञा पु० पनस। कटहर।  
सिंघाड़े।

कटकभुक्-सज्ञा पु० ऊँट।

कटकमय-वि० बाँटे से भरा। बहुत बाँट  
वाला।

कटकतता-सज्ञा स्त्री० खोरा। फल विशेष।

कटकारी-सज्ञा स्त्री० १ भटवटैया। २  
रोमल। ३ कटाई। कटरी।

कटक्ति-वि० १. पुलकित। २ रोमांचित।  
३ बाँटदार। जिसमें बाँटे हैं।

कंठकी-वि० कंठेदार। सज्ञा स्त्री० भटवटैया।  
कंठर-सज्ञा पु० [अग्ने० डिक्टेर] वराना।  
दीशे की बनी हुई सुंदर सुराही जिसमें शराब  
और सुगंध आदि रखे जाते हैं।

कंठाइन-सज्ञा स्त्री० १. डाइन। चुटेल। २.  
लडापी स्त्री। बर्बशा स्त्री।

कंठाप-सज्ञा स्त्री० कंठीला पेट-विशेष जिसकी  
लकड़ी के यश-पान्न बनते हैं।

कंठार-वि० १. सुरदरा। २. कंठीला।  
बटवमय।

कंठिया-सज्ञा स्त्री० १. बांटी। छोटी कील।  
२. मछली मारने की पतली नौबदार  
धेकुरी। धाँकड़ी। ३. अक्सियों का गुच्छा  
जिससे कुएं में गिरी हुई चीजें निवालेते हैं।

४. सिर का आभूषण विशेष।

कंठीला-वि० (स्त्री० कंठीली) जिसमें बांटे  
हो। कंठेदार।

कंठीप-सज्ञा पु० टोपी विशेष जिससे सिर और  
गान टके रहते हैं।

कंठ-सज्ञा पु० [वि० कंठ्य] १. गला।  
टटुआ। गडई। २. पीठी। गले की वे  
नलियाँ जिनसे भोजन पेट में उतरता है और  
आवाज निकलती है।

मुहा०—कंठ फूटना—१. वर्णों के स्पष्ट  
उच्चारण का आरम्भ होना। २. गँह से शब्द  
निकलना। ३. युवावस्था आरम्भ होने पर  
आवाज का बदलना। घाँटी फटना। कंठ  
करना या रखना—जबानी याद करना या  
रखना। कंठ लगाना—गले लगाना, आलिंगन  
करना। ४. स्वर। शब्द। आवाज। ५.  
हँसली। तोते, पड़क आदि के गल की रखा।  
६. तट। किनारा।

कंठगत-वि० जो गल में हो। गले में आया  
हुआ। गले में अटका हुआ।

मुहा०—प्राण कंठगत होना—मृत्यु का  
निकट आना। प्राण निकलने पर होना।

कंठतालव्य-वि० (वर्ण) जिनका उच्चारण  
कंठ और तालु-स्थानों से मिलकर हो। 'ए'  
और 'ऐ' वर्ण। (व्याकरण)

कंठपाशक-हाथी के गले में बाँधने की रस्सी।

कंठभूषा-सज्ञा स्त्री० कंठाभरण।

कंठमाला-सज्ञा स्त्री० १. गले का रोग-विशेष  
जिसमें रोगी के गले में लगातार छोटी छोटी  
फुडियाँ निकलती हैं।

२. गले में पहनने की माला।

कंठला-सज्ञा स्त्री० माला। कंठी। गण्डा।  
गले का आभूषण।

कंठस्य-वि० १. कंठगत। गले में अटका  
हुआ। २. मुखस्य। कंठाग्र।

कंठा-सज्ञा पु० [स्त्री० अत्पा० कंठी] १. गले  
का आभूषण-विशेष जिसमें बड़े बड़े मनके  
हाते हैं। २. वह भिन्न भिन्न रंगों की रेखा  
जो तोते आदि पक्षियों के गले के चारों ओर  
निकल आती है। हँसली। ३. कुरते या  
अगरखे का वह अर्धचंद्राकार भाग जो गले  
पर रहता है। ४. बड़े दाने की माला।  
कंठागत-वि० शरीरत्याग के उद्योगी। मरणो-  
द्यत।

कंठाग्र-वि० कंठस्य। जवानी। मुखाग्र।

कंठिधारी-सज्ञा पु० बैरागी। भगत।  
कंठी पहननेवाला।

कंठी-सज्ञा स्त्री० [हि० कंठा का अत्पा०  
रूप] १. छोटी गरिया की माला। २.  
तुलसी आदि की मनियों की कंठी जिसे वैष्णव  
गले में बाँधते हैं।

मुहा०—कंठी देना या बाँधना—चेला  
बनाना—कंठी लेना—१. वैष्णव या भक्त  
होना। २. मद्य-मांस छोड़ना। ३. हँसली।  
कंठी। ४. ताते आदि पक्षियों के गल की  
रेखा।

कंठीरव-सज्ञा पु० सिंह। व्याघ्र। शेर।

कंठीष्ठ-वि० जो एक साथ कंठ और ओठ  
के सहारे से बोला जाय। 'ओ' और 'औ'  
वर्ण। (व्याकरण)

कंठ्य-वि० १. गले से पैदा हुआ। २. जिसका  
उच्चारण कंठ से हो। ३. गले या स्वर के  
लिए लाभदायक।

सज्ञा पु० १. वह वर्ण जिनका उच्चारण कंठ  
से होता है। अ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और  
चित्तर्ग। २. गले के लिए उपकारी औषध।

कंठरा-सज्ञा स्त्री० रक्त की मोटी नाड़ी।  
(वैद्यक)

बंदा-सज्ञा पु० १. उपली। गुला गोबर जो दूधन के पाग में छाता है।

मुहा०-बंदा होना—१. दुर्बल हो जाना। गुलना। २. मर जाना। ३. सबे धापर का गुला गोबर जो जलाने के पाग में छाता है। उपला। उपरी। गोहरी। ४. गुला गत। मुहा। गोडा।

बंदात-गज्ञा पु० १. गुरही। नरतिहा। तुरी। २. पानी रगने का बड़ा गहरा बान जा लोहे या पीतल आदि का बना रहता है। बंटी-सज्ञा स्त्री० १. उपली। छोटा बंदा। २. सुगा गत। गोडा।

बंढोल-गज्ञा स्त्री० [बं० बंदोल] मिट्टी, अवरन या पाण्डु की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है।

बटु-सज्ञा स्त्री० राज। सुजली। बटुपुत्री-सज्ञा स्त्री० राजाहली। औपय-विशेष।

बटु-सज्ञा पु० रोग विशेष। सुजलाहट। गुजली। साज।

बटुपन-सज्ञा पु० पवार औपय। बटुति-सज्ञा स्त्री० बटुपन। सुजलाहट। साज होना।

बडोरा-सज्ञा पु० १. काडवार। २. बाण बनानेवाली जालि। ३. पुनिया।

बडोल-सज्ञा पु० बाँस का बना अन्न रखने का पात्र।

बडोरा-सज्ञा पु० कडा पायने या रखने की जगह।

बत\*-सज्ञा पु० दे० "कात"। १. स्वामी। प्रियतम। प्रिय। २. ईश्वर।

बबा-सज्ञा स्त्री० पुराने वस्त्र से बना ओढ़ना। बबरी। गुदडी।

बबी-सज्ञा पु० १. जोगी। २. साधु। ३. गुदडी लपेटनवाला।

बद-सज्ञा पु० १. जड विशेष जो गूदेदार और बिना रसो की हो, जैसे मूरन, शररुद इत्यादि। २. बादल। ३. मूरन। ४. तेरह अक्षरी का वर्णवृत्त-विशेष। ५. छप्पय के ७१ बेदो में से एक।

सज्ञा पु० [का०] मितारी। जमाई हुई चीनी।

६. मूरन। शीप। ७. योनिरोग-विशेष। बदमूल-गज्ञा पु० मुनि-गोजन-विशेष। जट पदार्थ।

बदन-गज्ञा पु० ध्यत। नास।

बदरा-सज्ञा स्त्री० १. माह। पर्वत की सुरग। गुफा। गुहा। २. बाढालो की बीणा।

बदरान-गज्ञा पु० पर्वटी वृक्ष। अग्ररोट वृक्ष। पावर का पेठ।

बदराल-गज्ञा पु० पावर। हिमोट। पर्वटी।

बदरपे-सज्ञा पु० रामदेव। समीतगाम्त्र में ११ दुनालों में से एक ताल।

बदल-गज्ञा पु० १. उपराग। २. नवीन अक्षर।

३. विवाद। बतह। भगडा। सटाई।

४. सोना। ५. कपाल।

बदलबंद-गज्ञा पु० डिमीबंद। मूरन। मूल-विशेष।

बदला-सज्ञा पु० १. पागा। रंती। गुल्ली। चाँदी का बह लवा छड़ या गुल्ली जिससे तार बनाया जाता है। २. सोने या चाँदी का पतला तार।

बदलित-वि० प्रस्फुटित। अकुरित। अकुर-प्राप्त।

बदसार-सज्ञा पु० १. मृग। हरिण। कुरग। २. नदन वन।

बदा-सज्ञा पु० १. दे० "बद"। २. धकर-बद। गजी। ३. अरुई। घुड्या।

बदासी-सज्ञा स्त्री० १. पुण्य और औपय विशेष। २. प्रियवासा।

बंदोल-सज्ञा स्त्री० दे० "बंडोल"।

बटु-सज्ञा पु० १. बडा तबिया। २. साँकल। ३. कडी बेडी।

बटुक-सज्ञा पु० १. गेंद। २. गोल तबिया। गेंदुआ। गल-तबिया। ३. पुगी-फल। सुपारी। ४. वर्णवृत्त विशेष।

बंदेला-वि० मैला। गेंदला।

बंदोरा-सज्ञा पु० बरखनी। कमर में पहनने का तागा-विशेष।

कप\*-सज्ञा पु० १. शाखा। डाली। २. दे० "कपा"।

बधनी-सज्ञा स्त्री० १. करधनी। २. मेसला।

कंधर-सज्ञा पु० १. गरदन । २. मेघ ।  
 बादल । ३. मोथा । मुस्ता ।  
 कंधा-सज्ञा पु० १. बाहुमूल । २. स्कंध ।  
 मनुष्य के शरीर का वह भाग जो गले और  
 मोड़ के बीच में होता है । ३. मोड़ा ।  
 कंधार-सज्ञा पु० १. अफगानिस्तान के एक  
 नगर का नाम । कंदहार । गांधार । २.  
 कटार । ३. मल्लाह । पार लगानेवाला ।  
 कणधार ।  
 कंधारी-वि० कंधार का । जो कंधार देश में  
 पैदा हुआ हो ।  
 सज्ञा पु० घोड़े की जाति-विशेष ।  
 कंधावर-सज्ञा स्त्री० १. जूए का वह भाग  
 जो बल के कंधे के ऊपर रहता है । २.  
 वह चट्टान या दुपट्टा जो कंधे पर डाला  
 जाता है ।  
 कंधि-सज्ञा पु० १. समुद्र । २. मेघ ।  
 कंधियाना-क्रि० स० १. कांध पर रखना ।  
 २. कंधे या बल देना । कंधे का सहारा  
 देना ।  
 कंधेला-सज्ञा पु० स्त्रियों की साडी का वह  
 भाग जो कंधे पर रहता है ।  
 कंधेली-सज्ञा स्त्री० जीन, खोपीर गद्दी, वह  
 वस्तु जो बैलों की पीठ पर रखी जाती है  
 और उस पर बंनिये अन्न लादते हैं ।  
 कंधैया-सज्ञा पु० कन्हैया, श्रीकृष्ण का  
 नाम ।  
 कप-सज्ञा पु० १. कपकपी । शरथराहट ।  
 कांपना (सात्त्विक अनुभावों में से एक) ।  
 २. मनोवेगों के अतिरेक से स्नायु के ऊपर  
 नियंत्रण कम या डीला होने के कारण शरीर  
 या शरीर के अंगों का हिलना । ३. रोग  
 जैसे मलेरिया या घीत के कारण शरीर का  
 हिलना ।  
 सज्ञा पु० [अग्रे० कंप्] पड़ाव । छावनी ।  
 कंफकपी-सज्ञा स्त्री० १. शर्राहट । सचलग ।  
 कांपना । २. शरीर में एक सिरे से दूसरे  
 सिरे तक सहसा हिलने का वेग ।  
 कंफज्वर-सज्ञा पु० कपसहित ज्वर । जुडी ।  
 कपन-सज्ञा पु० (वि० कपित) कंफकपी ।  
 शरथराहट । भूचाल, भूडोल ।

कौपना-क्रि० अ० १. कांपना । हिलना ।  
 डोलना । २. डर जाना । भयभीत होना ।  
 कंफमान-वि० दे० "कपायमान" । कांपता  
 हुआ ।  
 कपनायु-सज्ञा पु० -रोग-विशेष । शरीर की  
 अव्यंशता ।  
 कंफा-सज्ञा पु० चिड़ियों को फँसाने के लिए  
 बाँस की तीलियाँ जिनमें तात्ता लगाया  
 जाता है ।  
 कौपना-क्रि० स० (कौपना का प्रे०) १.  
 हिलाना । २. डर दिखाना । कप उत्पन्न  
 करना ।  
 कपायमान-वि० जो हिल रहा हो । भीत,  
 डरा हुआ ।  
 कपास-सज्ञा पु० [अग्रे०] १. परकार । २.  
 यत्र-विशेष जिससे विशाखी का बोध होता है ।  
 कपित-वि० १. सचल । कांपता हुआ ।  
 २. डरा हुआ । भीत । हिला हुआ ।  
 कंप्-सज्ञा पु० (अग्रे० कैंप्) १. छावनी ।  
 फौज के रहने या ठहरने का स्थान । जन-  
 स्थान । २. पड़ाव । डेरा । खेमा ।  
 कंवल-सज्ञा पु० [स्त्री० कमली] १. ऊन  
 का मोटा ओढ़ने का कपड़ा । २. एक  
 बरसाती कीड़ा-विशेष । कमला । एक  
 मृग-विशेष । जल । इस नाम का एक  
 नाग ।  
 कव, कंवुक-सज्ञा पु० १. शख । २. गला ।  
 ३. शख की चूड़ी । ४. घोषा । ५. हाथी ।  
 ६. गले में पड़नेवाली तीन शुभ रेखाएँ  
 (सामुद्रिक) ।  
 कंवुप्रोव-वि० शख के समान कठवाला ।  
 कबोज-सज्ञा पु० [(वि० काबोज) १ अफगा-  
 निस्तान के एक भाग का पुराना नाम जो  
 गांधार के पास था । २. कबोज का निवासी ।  
 ३. कबोज का राजा । ४. हाथी विशेष ।  
 ५. घोषा ।  
 कंवल-सज्ञा पु० दे० "कमल" ।  
 कंवलगट्टा-सज्ञा पु० कमल का बीज ।  
 कंरा-सज्ञा पु० १. मथुरा के राजा उग्रसेन  
 का पुत्र जो श्रीकृष्ण का मामा था । २.  
 चाँस । ३. कंस का बगना हुआ वर्तन आदि ।

४. बटोरा। प्यासा। ५. मुराही। ६. मेजीरा। भाँभ।

कसवार-सज्ञा पु० ग्राहण के शोरस तथा वेश्या के गर्भ से उत्पन्न जाति विशेष। कसारी। कसेरा। बर्तन धेवनवाला।

कसताल-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाजा। भाँभ।

कई-वि० अनेक। एक से अधिक। बहुत से। कएव-बुछ, थोड़ा। एकाध। अल्प।

कई-सज्ञा स्त्री० कधी। कबही।

कबडी-सज्ञा स्त्री० जमीन पर फैलनेवाली बेल-विशेष जिसमें लव-लव फल लगते हैं। ककरी। एक प्रकार का फल।

ककना-सज्ञा पु० कगन। गहना-विशेष।

ककनी-स्त्री० पहुँची। कक्कण। स्त्रियों के हाथ में पहनने का गहना।

ककनू-सज्ञा पु० दे० "कुक्कनू"।

ककराली-स्त्री० कँखरी। बगल का फोड़ा।

ककरेजा-सज्ञा पु० वैजनी रंग। वैजनी।

ककरोदा-सज्ञा पु० ओपध का छोटा पीया-विशेष।

ककवा-सज्ञा पु० क'वा।

ककहरा-सज्ञा पु० 'क' से 'ह' तक वर्णमाला। दारहूखडी। वर्णमाला।

ककही-सज्ञा स्त्री० १. कधी। २. चौबगल। ३. लाल रंग का कपास विशेष।

ककुत्स्थ-सज्ञा पु० इक्ष्वाकु राजा का पौत्र। पुरञ्जय।

ककुद्-सज्ञा पु० १. डिल्ला। बेल के बंधे का कुट्टवड। थैल। २. राज-चिह्न। ३. पर्वत विशेष। ४. शिखा। प्रधान। पर्वत की चोटी।

ककुभ-सज्ञा पु० १. अर्जुन का पेड़। २. राग विशेष। ३. छद विनय। ४. दिशा। ५. एक पर्वत। ६. वीणा का दह। पह लवी लकड़ी, जिसपर तुंगी लगती है। प्रसेयक। ७. वीणा-दंड का यह ऊपरी हिस्सा, जो पीछे की ओर कुछ मुड़ा या झुका रहता है। ८. वीणा के ऊपरी भाग में वीणा-दंड के पीछे लगाई हुई और चमड़े से मढ़ी तुंगी, जिसमें वारण ध्वनि और

भवार अधिक गूँजती है (नीचे एक एक तुंगी अवश्य रहती है)।

ककुभा-सज्ञा स्त्री० दिशा।

ककुड़ा-सज्ञा पु० दे० "खेखसा"।

ककोरना-त्रि० स० खरोचना। खोदना। उखाड़ना। मोड़ना। सिखोड़ना।

कक्कड-सज्ञा पु० १. सूखी या सँकी हुई तमाखू का चूर जिसे छोटी चिलम पर चढ़ाकर पीते हैं। २. स्त्रियों की एक अल्ल।

कक्का-सज्ञा पु० दुडुभि। नगाड़ा। दे० "काका"।

कक्क-सज्ञा पु० १. पट्टी, कमरपेटी। कमरा।

२. बाछ। लांग। कछौटा। ३. पछार।

कच्छ। ४. जगल। ५. कास। ६. घास।

सूखी घास। ७. भूमि। द्वार। ८. सूखा वन। ९. कमरा। घर। कोठरी। १०.

कखरवार। काँख का फोड़ा। ११. दोप।

पाप। १२. किनारी, जरी की किनारी।

श्रेणी। १३. पटुवा। कमरबंद। १४.

सेना के अगल बगल का भाग। १५. तराजू की रस्सी। १६. छिपने का स्थान। १७.

एक लता विशेष। १८. भैंसा।

कक्षा-सज्ञा स्त्री० १. ग्रह का भ्रमण-मार्ग।

२. परिधि। ३. समता। बराबरी।

तुलना। ४. श्रेणी। चोटि। ५. देहली।

डगोड़ी। ६. काँख, बगल। ७. काँख का

फोड़ा, कखवार। ८. कछौटा। काँछ। ९.

किसी घर की दीवार या पाख। घेरा।

१०. वह कमरा जहाँ सर्वसाधारण न जा

सके। ११. मनुहार। १२. तर्क में उत्तर,

विरोध।

कखरी-सज्ञा पु० काँख। कोत।

बगल।

कखौरी-सज्ञा स्त्री० १. दे० "काँख"।

२. कखरवार। काँख का फोड़ा।

कगर-सज्ञा पु० १. छोर। सेप। नदी का

ऊँचा किनारा। २. बाढ़। वारी। ३.

डाँड। मंड। ४. कंगनी। छत या छाजन

के नीचे दीवार में रीढ़-सी उभड़ी हुई

नक्कीर। कानिस।

धि० वि० १. छोर पर, विनारे पर ।  
२. पास, समीप, निकट । पार्श्व ।

कगार या कगारा-सज्ञा पु० १. नदी का करारा । २. जैना विनारा । ३. टीला ।  
कच-सज्ञा पु० १. बेश । बाल ।  
२. जलम के ऊपर की सूखी पपड़ी ।  
३ भुंड । ४. बादल । ५. बृहस्पति का पुत्र । ६. अंगरखे का पल्ला । ७ धाव का दाग । ८ मल्ल विद्या का एक दांव ।  
सज्ञा पु० १ पैसने या चुभने का शब्द ।  
२. कुचल जाने का शब्द ।

वि० सुगंधवाला । 'कच्चा' का अल्पा० रूप जिसे वा व्यवहार समास में होता है, जैसे, कचलहू ।

कचका-सज्ञा स्त्री० १ कुचल जाने की चोट । वह चोट जो दबने से लगे । २ कस-कस । ३ किरकिर ।

कचकच-सज्ञा स्त्री० (अनु०) भगडा । बकवाद । भकभक । किचकिच । व्यर्थ कोलाहल ।

कचकचाना-कि० प्र० १ दाँत पीसना ।  
२ कचकच शब्द करना । ३ खूब जोर लगाना ।

कचकड-सज्ञा पु० कछुआ का खोपडा ।  
कचकना-कि० प्र० १. मुकरना । फिरना ।  
२ दबना । ३ ठेस लगना ।

कचका-सज्ञा पु० कछुआ का छिलका ।  
कचकेला-सज्ञा पु० कच्चा केला । अपक्व बदली ।

कचकैया-सज्ञा पु० धक्का । ठोकर । ठस ।  
कचकोल-सज्ञा पु० [ फा० कश्कोल ] कपाल ।  
कासा । दरमाई भारियल का बना भिक्षा-पात्र ।

कचकिला-वि० १. जिसमें कष्ट, पीडा आदि सहने का या विपत्ति में पडने का साहस न हो । २. कच्चे दिल का ।

कचनार-सज्ञा पु० एक छोटा पेड़ विशेष जिसमें सुंदर फूल लगते हैं ।

कचपच-सज्ञा पु० १. शोडे से स्थान में बहुत सी चीजों या लोगों का भर जाना । गुल्म-गुल्म । गिचपिच । २. दे०

"कचकच" । ३. वृत्तिका नामक तारो का समूह ।

धि० १. सघन । घना । २. निविड ।  
कचपची-सज्ञा स्त्री० १. वृत्तिका नक्षत्र ।  
२. चमकीले बूंदे जिनमें स्त्रियाँ माये, या कपोल पर चिपकाती हैं ।

कचपेधिया-वि० १. ओझा । अस्थिर विचार वाला । जिसकी पेदी कमजोर हो ।  
२. अविश्वस्त । वात का कच्चा ।

कचमच-सज्ञा स्त्री० १ गुल्म-गुल्म । २. बकबक । ३ राघन ।

कचर-कचर-सज्ञा पु० [ अनु० ] १ कच-कच । कच्चे फल खाने का शब्द । २. बितठा । बकवाद ।

कचरकूट-सज्ञा पु० १. खूब मारना । पीटना । २. पेट भर भोजन ।

कचर-पचर-सज्ञा पु० गिचपिच ।

कचरना-कि० सं० १. रौंदना । पैर से कुचलना । २. अधिक खाना ।

कचरा-सज्ञा पु० १. कचड़ी । कच्चा खरबूजा । फूट का कच्चा फल ।  
२ रद्दी चीज । कूड़ा-करकट । ३. उरख या चने की पीठी । ४ समुद्र का सेवार ।

कचरो-सज्ञा स्त्री० १. ककड़ी की जाति की बल विशेष जिसके फल खाए जाते हैं ।  
पेहँटा । २. बचरी के फल के तले हुए टुकड़े । ३. बचरी या कच्चे पेहँटे के सुझाए हुए टुकड़े । ४. छिलकेदार दाल । ५. फाटकर सुझाए हुए फल मूल आदि जो तरकारी के लिए रखे जाते हैं । ६. फल सहित चने की टहनियाँ ।

कचला-सज्ञा स्त्री० १. गीली मिट्टी । २. चहुँला । कीचड ।

कचलोडा-सज्ञा पु० लोई । कच्चे आटे की पेड़ी ।

कचलोन-सज्ञा पु० एक प्रकार का नमक जो कान की मट्टियों में जमे धार से बनता है ।  
काला नमक ।

कचलोहिया-सज्ञा स्त्री० मटिया लोहा ।  
कच्चा लोहा ।

कचलोह—मज्ञा पु० पाव या पानी। पछा या पानी जो जल से पीछा था वह निक्कलता है।

कचयता—वि० स० स्वनप्रतापपूर्वक खाना। निश्चित भाव से भोजन करना।

कचवासी—मज्ञा स्त्री० बीचे का झट्ट हजारवा भाग। २० कचवासी की १ किलोवासी।

कचहरी—मज्ञा स्त्री० १. गोष्ठी। सभा। समाज। जमावटा। २. राजसभा। दरबार। ३. न्यायालय। अदालत। ४. दफ्तर। ५. विचार म्यान।

कचार्ह—मज्ञा स्त्री० १. कच्चापन। २. अजीर्ण। अपच। ३. अनुभवहीनता।

कचाना—वि० अ० १. साहस का न रहना। पीछे हटना। हिम्मत टारना। २. भयभीत होना। डरना।

कचापेय—सज्ञा स्त्री० कच्चेपन की मटर।

कचारना—वि० स० कपडा घोना।

कचाल—सज्ञा पु० भगडा। विवाद। बलह।

कचालू—सज्ञा पु० १. बडा। घुइयाँ। एक प्रकार की घुइयाँ। २. एक चाट विशेष। एक प्रकार से मसाला डालकर बनाए हुए आलू।

कचिया—सज्ञा पु० दे० “काचतावण”। हँसवा। दाँती।

कचिपाना—वि० हिलवना। सहमना। हतोत्साह होना।

कचियाहट—मज्ञा स्त्री० कच्चापन।

कचोचो\*—सज्ञा स्त्री० दाढ। जवडा।

मुहा०—कचोचो बंधना=दाँत बँठना। दाँती लगना (भरने का लक्षण)।

कचूमर—सज्ञा पु० १. कुचला। २. कुचल-कर बनाया हुआ अचार। ३. कुचली हुई वस्तु।

मुहा०—कचूमर करना या निवालना= १. चूरचूर करना। कुचलना। छुव बूटना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। छुव पीटना।

कचूर—सज्ञा पु० नर-कचूर। हल्दी की जाति

का पीछा विशेष जितवी जट में कपूर की सी बड़ी महक होती है।

कचाना—वि० स० पैमाना। तुमाना। कच्चा करना। साहमहीन करना, भीत करना, सहमाना। कमजोर करना।

कचैरा—मज्ञा पु० जाति-विशेष।

कचोटना—वि० अ० मन में पीछा या अनुभव करना।

कचोरा\*—मज्ञा पु० [स्त्री० कचोरी] प्याला। कटोरा।

कचौरी, कचोरी—मज्ञा स्त्री० उदद आदि की पीठी भरकर बनाई गई पुडी।

कच्चा—वि० १. अपक्व। जो पका न हो। २. जो आँच पर पका न हो। जैसे—कच्चा घडा। ३. अपरिपुष्ट। जो पुष्ट न हुआ हो। ४. जिसके तैयार होने में कसर हो। ५. अदृढ़। निर्बल। ६. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो।

मुहा०—कच्चा जो या दिल=विचलित होने-वाला या धैर्य-रहित होनेवाला चित्त। कच्चा करना=भयभीत करना। डराना।

कच्चा करना=१ भूठा साबित करना।

अप्रामाणिक ठहराना। २ लज्जित करना।

कच्चा पडना=३. अप्रामाणिक या भूठा ठहरना। ४. सिटपिटाना।

सवचित होना। कच्ची पक्की=उलटी-सीधी।

भली बुरी। गली। दुर्वचन।

कच्ची बात=असली बात। सज्जाजनक बात।

५. जो प्रामाणिक सील या माप से कम हो। जैसे, कच्चा सेर। ६. कच्ची या गीली मिट्टी का बना हुआ। ७. अपटु।

अनाडी। अपरिपक्व। मूर्ख।

सज्ञा पु० १. दूर दूर पर पडा हुआ तारे या वह डोम जिस पर दरजी बगिया करते हैं। २. डाँचा। डब्बा। ३. भस्-विदा। ४. दाढ। जवडा। ५. कच्चा पैसा। बहुत छोटा तारे का सिक्का जिसका चलन सब जगह न हो।

कच्ची बात=प्रमाणहीन कच्चा काम=अनुचित।

कच्चा चिट्ठा—सज्ञा पु० १. छिपी बात,

रहस्य। गुप्त भेद। २. वह वृत्तांत जो ज्यों का त्यों कहा जाय।

कच्चा माल-सज्ञा पु० सामग्री। वह द्रव्य जिससे चीजें बनती हैं। जैसे, रुई, तिल।

कच्चा हाथ-सज्ञा पु० अनभ्यस्त हाथ। वह हाथ जो किसी काम में बंटा न हो।

वि०-अनुभवहीन।

कच्ची-वि० "कच्चा" का स्त्रीलिंग।

सज्ञा स्त्री० दे० "कच्ची रसोई"।

कच्ची चीनी-सज्ञा स्त्री० चीनी जो खूब साफ न की गई हो। देशी चीनी।

कच्ची बही-सज्ञा स्त्री० वह बही जिसमें कच्चा हिसाब लिखा हो। कच्ची रोकट।

कच्ची रसोई-सज्ञा स्त्री० केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। सिद्धान्न। अन्न जो दूध या घी में न पकाया गया हो। जैसे, रोटी, दाल, भात। वह भोजन जो पर-जाति के व्यक्ति के छूने से अशुद्ध माना जाय।

कच्ची सड़क-सज्ञा स्त्री० वह सड़क जिसमें कंकड़ आदि न पिटा हो। मिट्टी पीटकर बनी सड़क।

कच्ची सिलाई-सज्ञा स्त्री० दूर-दूर पर पड़ा हुआ डोम या टाँवा और तगर। कोपा।

कच्चा-सज्ञा पु० अरई। घुड़याँ। बड़ा। कव-विशेष।

कच्चे पक्के दिन-सज्ञा पु० १. दो ऋतुओं की संधि के दिन। २. चार या पाँच महीने का गर्म-माल।

कच्चे बच्चे-सज्ञा पु० बहुत छोटे छोटे बाल-बच्चे।

कच्छ-सज्ञा पु० १. जलप्राय देश। अनूप देश। एक तरह की नाव। दलदली भूमि।

२. बछार। नदी आदि के किनारे की भूमि। ३. छप्पस का भेद विशेष।

[वि० कच्छी] ४. गुजरात के समीप एक प्रदेश। ५. दम देश का घोडा।

६. घोती की लीग।

\*सज्ञा पु० कछुआ।

कच्छप-सज्ञा पु० [स्त्री० कच्छपी] १. कछुआ।

२. विष्णु के २४ अवतारों में से एक।

३. कुबेर की नौ निधियों में से एक।

कुस्ती का एक दाँव। ४. दोहे का भेद-विशेष। ५. मदिरा खींचने का एक यन्त्र।

६. तुल का वृक्ष। ७. एक नाग। ८. विस्वामित्र का एक पुत्र। ९. तालू का रोग-विशेष।

कच्छपी-सज्ञा स्त्री० १. कछुई। कच्छप की स्त्री। २. सरस्वती की बीणा।

कच्छा-सज्ञा पु० १. लीग। २. कई नावों को मिलाकर बनाया हुआ बड़ा वेडा।

३. दो परिवारों की बड़ी नाव जिसके छोर चिपटे और बड़े होते हैं। (ब्रज)—धेणी, कोटि।

कच्छी-वि० १. कच्छ देशवासी। २. कच्छ देश में उत्पन्न।

सज्ञा पु० घोड़े की जाति-विशेष।

कच्छू-सज्ञा पु० कछुआ।

कच्छ-सज्ञा पु० कच्छप। नितम्ब। काँछ।

कच्छना या कच्छनी-सज्ञा स्त्री० १. धोती जो घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी जाय।

२. वह वस्तु जिससे कोई चीज काँची जाय। ३. छोटी धोती।

कच्छलम्पट-वि० १. अजितेन्द्रिय। २. लुच्चा।

कच्छवाहा-सज्ञा पु० राजपूतों की जाति-विशेष।

कछान, कछाना-सज्ञा पु० घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहनना।

कछार-सज्ञा पु० १. समुद्र या नदी के किनारे की तर और नीची भूमि। खादर। २. दियारा। तराई। नदी-नालों के किनारे की ऊँची-नीची भूमि।

कछारना-वि० स० १. छाँटना। २. धोना।

३. अवासान।

कछु\*-वि० दे० "बुद्ध"। थोडा। एकाग्र, विचित्र।

कछुआ-सज्ञा पु० [स्त्री० कछुई] जल-जंतु विशेष जिसके ऊपर बड़ी बड़ी दाल या तरह पोपड़ी होती है।

कछुक-वि० कछु। थोडा या। कछु एव।

कछुआ-सज्ञा पु० भूमि। कच्छ। समतल।

कछोटा, कछोटा-सज्ञा पु० [स्त्री० वछोटी]  
१. वछनी। २. स्त्रियों के धोती पहनने  
का ढग-विशेष जिसमें पीछे लॉग सोसी  
जाती है।

कछोटी-सज्ञा स्त्री० लेंछोटी। कौपीन। वछनी।  
यज-सज्ञा पु० [फा०] १. दोष। ऐव।  
२. टेढ़ापन। यत्रा। ३. यज। यमल।

यजप-सज्ञा पु० हाथी का अनुश।  
यजकहम-वि० [फा०] हर बात का उल्टा  
अर्थ लगानेवाला। दुबुद्धि।

यजरारु-सज्ञा पु० १. दे० "काजल"।  
२. वेल जिसकी आँखें वाली हो।

यजरारु-सज्ञा स्त्री० कालिमा, कालापन।  
यजरारा-वि० [स्त्री यजरारी] १. अजन-  
युक्त। काजलवाला। जिसमें काजल  
लगा हो। २. स्याह। काजल के समान  
काला।

यजरी-सज्ञा स्त्री० यजली। बरसाती  
गीत विशेष।  
वि० काले रंग की।

यजरीटा-सज्ञा पु० दे० "यजलीटा"।  
काजल रखने का पात्र।

यजली-वि० १. काला २. काजल लगाए।  
३. खरबूजे की एक जाति जो जौनपुर में  
उत्पन्न होती है।

यजलाना-त्रि० अ० १. काला पडना।  
२. आग वा युमना या पुर्खा देना।  
त्रि० स० योजना। काजल लगाना।

यजली-सज्ञा स्त्री० १. कालिख। २. साथ  
पिसे पारे और गंधक की चुकनी। ३.  
रस पूँवने में धातु का वह अंश जो आँच  
से उड़कर पात्र में लग जाता है। ४. गन्ने  
की जाति विशेष। ५. वह गाय जिसकी  
आँखा के चिन्नारे काला घेरा हो। ६.  
बरसाती त्योहार विशेष। ७. गीत-  
विशेष जो बरसात में गाया जाता है।  
'यजरी'।

यजलीटा-सज्ञा पु० [स्त्री० यजलीटी]  
यजरीटा, काजल रखने की टिबिया।

यज्ञा-सज्ञा स्त्री० माड। काँजी।  
सज्ञा स्त्री० [अ०] मृत्यु। मौत।

यज्ञाक-सज्ञा पु० [तु० दे० यज्ञाक]  
डाकू। लुटेरा।

यज्ञाकी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. लूट-मार।  
लुटेरापन। २. धोखेवाजी। छद्म-वपट।  
यज्ञावा-सज्ञा पु० [फा०] डेंट की काँजी।  
प्रतिष्ठा-सज्ञा पु० [अ०] साधारण बात  
पर भगडा। लडाई।

यज्ञी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. टेढ़ाई। टेढ़ा-  
पन। २. दोष। ऐव। ३. यसर। यमो।  
यज्ञल-सज्ञा पु० [वि० यज्ञलित] १.  
अजन। २. काजल। मसि, स्याही।  
३. सुरमा। ४. दीप की कालिख। ५.  
बादल। ६. छद्म-विशेष।

यज्ञाक-सज्ञा पु० [तु०] डाकू। लुटेरा।  
कट-सज्ञा पु० १. निताब २. पतला तन्ता।  
३. गडस्थल। ४. हाथी का गडस्थल। ५.  
नरकट। अतिरेक, आधिक्य। नरमल।  
६. दरमा। नरकट की चटाई। ७. टट्टी।  
८. खस, सरकाडा आदि घास। ९. गव।  
१०. तिरछी दृष्टि। ११. शर्त, करार, समय।  
१२. घास की बनी टट्टी। घास की ओटिया।  
१३. फूलों की धूल, पराग। १४. शिव,  
महादेव। १५. स्मशान। १६. पासा फेंकना।  
१७. अरखी। १८. काला रंग विशेष।  
१९. 'काट' का संक्षिप्त रूप जिसका  
व्यवहार योगिक शब्दों में होता है। जैसे,  
कटखना कृत्ता।

कटख-सज्ञा पु० १. सिपाहियों की टुकड़ी।  
दल। सेना। फौज। बलम। मेखला-चक्र।  
२. समुद्री नमक। ३. पहिया। ४. कबड।  
५. सेना के रहने का स्थान। ६. बडा।  
कवण। ७. सग्रह, संपादन। ८. राज-  
शिविर। ९. पर्वत का मध्य भाग। १०. पाटी,  
बारा। बडिया के बीच का जोड़।  
११. सपरी। गोदरी। घास-पूस की  
चटाई। १२. हाथी के दाँत पर जड़े हुए  
पीतल आदि के बंद या सामी। रस्ती, डोरी।  
१३. समूह। १४. उड़ीसा की राजधानी।  
कटकई-सज्ञा स्त्री० कटक। सेना-दल।  
लखर। फौज।  
कटकट-सज्ञा स्त्री० (अनु०) १. दाँतों के

वजने का शब्द । २. लड़ाई-भगड़ा ।  
यो०-दाँता-कटकट=वेकार वहस । तुच्छ  
बातों पर भगड़ा, वहस, तर्क ।

कटकटाना-क्रि० अ० १. किसी चीज को  
ऐसे हिलाना कि कट-कट शब्द हो । २.  
क्रुद्ध होकर दाँत पीसना ।

कटकना-सज्ञा पु० १. याँघनू । २. ढाँचा ।  
३. उपाय ।

कटकाई\*-सज्ञा स्त्री० १. सेना । फौज ।  
२. दल । भुण्ड ।

कटकी-वि० १. कटक नगर की बनी हुई  
वस्तु । २. पर्वत । शैल । पहाड़ ।

कटखना-वि० कटहा । काट खानेवाला ।  
सज्ञा पु० १. चाल । युक्ति । २. हथकड़ा ।

कटघरा-सज्ञा पु० १. कटहरा । कटरा ।  
लकड़ी का घेरा । कठघरा । काठ का वह  
घेरा जिसमें जैंगला लगा हो । २. बड़ा  
पिंजड़ा ।

कटड़ा-सज्ञा पु० पेड़वा, भेंस का वच्चा ।  
कटती-सज्ञा स्त्री० विन्त्री । खपत । कटोती ।

कटन-सज्ञा पु० काट । कतरन । कटने का ढग ।

कटना-क्रि० अ० १. कट जाना । किसी  
धारदार चीज की दाव से दोटुकड़े होना ।

२. पिसना । ३. किसी भाग का अलग  
हो जाना । ४. किसी धारदार चीज  
से घाव होना । ५. कटरा या व्योता  
जाना । ६. लड़ाई में मरना । ७. नष्ट होना ।

छीनना । ८. समय का बीतना । ९. रास्ता  
समाप्त होना । १०. खिमक जाना । धोखा  
देकर साथ छोड़ देना । ११. भेंपना ।

लज्जित होना । १२. ईर्ष्या करना, डाह  
करना, जलना । १३. मोहित या आसन्न  
होना । १४. खपना । विषना । १५.

प्राप्ति या प्राय होना । जैसे—माख बटना ।  
१६. मिटना । सारिज होना । कलम की  
सफ़ीर से किसी लिखावट का रद्द होना ।

१७. एक संख्या के साथ दूसरी संख्या का  
पूरा पूरा भाग लगना ।

मुहा०—बटती बहना=मर्मभेदी बात  
बहना । चुभनेवाली बात बटना ।

बट मरना=युद्ध में अंत तक सड़कर मरना ।

विवाद में अंत तक लड़ना, बस भर हार  
न मानना ।

कटनांस\*-सज्ञा पु० नीलकंठ । चाप पक्षी ।

कटनि\*-सज्ञा स्त्री० १. काट । २. आसक्ति ।  
प्रीति । ३. रीक ।

कटनी-सज्ञा स्त्री० १. दराती । काटने  
का अस्त्र । २. कटाई करने का काम ।

कटफल-सज्ञा पु० कायफल । कंफल ।

कटरा-सज्ञा पु० [ अ० ] १. एक प्रकार की  
बड़ी नाव-विशेष जो चरखियों के सहारे  
चलती है । २. छोटी नाव । पन-  
सुइया ।

कटरा-सज्ञा पु० १. छोटा चौकोर बाजार ।  
चौक । हाट । २. निकास । ३. शहर  
का बीच । ४. भेंस का नर वच्चा ।

पड़वा ।

कटवा-वि० कटा हुआ । जो काटकर  
बनाया गया हो ।

कटसरैया-सज्ञा स्त्री० एक काँटेदार पीधा ।

कटहरा-सज्ञा पु० दे० "कटहल" ।

कटहरा-सज्ञा पु० दे० "कटघरा" । काठ  
का बड़ा पिंजड़ा ।

कटहल-सज्ञा पु० १. इस पेड़ का फल जो  
खाया जाता है । २. एक पेड़ जिसमें हाथ  
सवा हाथ के मोटे और भारी फल  
लगते हैं ।

कटहा\*-वि० [स्त्री० कटही] कटखना ।  
काट खानेवाला ।

कटा\*-सज्ञा पु० १. वध । हत्या । कत्ल-  
घाम । २. मार-नाट ।

कटाइक\*-वि० काटनेवाला ।

कटाई-सज्ञा स्त्री० १. फसल काटने का काम ।  
२. काटने का काम । ३. फसल आदि  
काटने की मजदूरी ।

कटाकट-सज्ञा पु० १. कटकट शब्द । २.  
लड़ाई । युद्ध ।

कटापटी-सज्ञा स्त्री० शत्रुता मार-नाट ।

कटास-सज्ञा पु० १. व्यंग । आक्षेप ।  
२. भावपुक्त दृष्टि । तिरछी चिन्तन ।  
तिरछी नज़र । ३. आँस का संकेत ।

के गले और शरीर में घाम घोंपकर  
लगाई हुई घाम (घामनाम्न) ।

कटाक्षनी-सज्ञा स्त्री० दे० "कटाक्षनी" ।

कटान-सज्ञा स्त्री० १. काटने की क्रिया,  
नाप या डग । २. घट जाना । ३.  
पैना ।

कटाना-प्रि० स० [काटना का प्रे० रूप]  
कूतरों से काटने का काम करना ।

कटाक्ष-वि० काटनेवाला । जो काटे ।

कटार-सज्ञा स्त्री० १. बड़ा छुरा । चाकित्त  
भर का तिरांगा और दुपारा हथियार ।  
२. कटारी । छजर ।

कटाल-सज्ञा पु० ज्वार (भाटा) । समुद्र का  
पकना ।

काल-सज्ञा पु० १. काटछाँट । कतर-  
ध्यात । २. काट । ३. काटकर बनाए हुए  
बेल-बूटे । ४. नदी का विनार । नदी के  
वेग से बहता भू भाग ।

कटापदार-वि० कोई वस्तु जिस पर सोद  
या काटकर चित्र या बेल-बूटे बनाए गए हों ।

कटावन-सज्ञा पु० १. कटाई का काम ।  
२. कतरन । किसी वस्तु का कटा हुआ  
टुकड़ा । काटने की मजदूरी ।

कटास-सज्ञा पु० एक तरह का वनविलाव ।  
खीखर । कटार ।

सज्ञा स्त्री० काटने की तीव्र इच्छा ।

कटाह-सज्ञा पु० १. बड़ाह । बड़ी बड़ाही ।  
२. नरक । खाद, शय्या । ३. गड्ढा  
की खोपड़ी । ४. कूप, कुआँ । अनाज  
ओसाने की टोकरी । ५. भोपड़ी । ६.  
नेस जिसके सील निकल ही रहे हों ।  
७. ऊँचा टीला । इह ।

कटि-सज्ञा स्त्री० १. कमर । शरीर का वह  
भाग जो पेट और पीठ के नीचे पड़ता है ।  
नितम्ब । २. हाथी का गडस्थल । मदिर  
का प्रवेशद्वार ।

कटिजेव-सज्ञा स्त्री० वरधनी । किकिणी ।

कटितद-सज्ञा पु० कटिदेश । नितम्ब ।

कटिदेश-सज्ञा पु० शरीर का मध्यावयव ।  
कमर ।

कटिपथ-सज्ञा पु० १. गरमी-सरदी के विचार

के लिए हुए पृथ्वी के पाँच भागा में से कोई  
एक । २. कमरबंद ।

कटिबद्ध-वि० सत्पर । तयार । उद्यत ।

कटिया-सज्ञा स्त्री० १. मन या घना हुआ  
वस्त्र-विशेष । २. रत्नों के नगों को काट छाँट  
कर मुटील करनेवाला कारीगर । ३.  
मुटी । ४. माथ-बेल का कटा हुआ धारा ।  
५. लोहे की पील, मेस ।

कटिमाना-प्रि० घ० कटवित्त होना ।  
रोओ या खड़ा हो जाना ।

कटिपत्र-सज्ञा स्त्री० धोती ।

कटिसूत्र-सज्ञा पु० मेसला । सूत की  
वरधनी । कमर में पहनने का डोरा ।

कंटीला-वि० [स्त्री० कंटीली] १. तीक्ष्ण ।  
चोया । नुकीला । २. काँटेदार ।

सज्ञा पु० १. पीछाविशेष । २. काट करने-  
वाला । ३. तीव्र प्रभाव डालनेवाला ।

कटु-वि० १. मधुर, अम्ल आदि छ रसों  
में से एक । चरपरा । कड़मा । २.  
मत्सर, तीक्ष्ण । तीव्र गधवाला । ३.  
अनिष्ट । अप्रिय । बुरा लगनेवाला ।  
४. पाप्य में रस के विरुद्ध वर्णों की  
योजना ।

कटुधा-सज्ञा पु० १. मुसलमान । २. नहरो के  
बड़े । ३. काले रंग का एक बीड़ा ।

कटुव-वि० कड़मा । तिकत । तीखा ।

कटुभी-सज्ञा स्त्री० कटुवी नामक औषध ।

कटुप्रिय-सज्ञा स्त्री० पिपरामूल । औषध-  
विशेष ।

कटुता-सज्ञा स्त्री० १. कटुवापन । २.  
चर्मरुप । तीक्ष्णता । रुक्षता ।

कटुत्कट-सज्ञा स्त्री० सोड़ी ।

कटुत्व-सज्ञा पु० कटुवापन । कटुता ।

कटुभद्र-सज्ञा स्त्री० सोड़ी ।

कटुभी-सज्ञा स्त्री० मालकाम्बुनी ।

कटुरोहिणी-सज्ञा स्त्री० कटुकी । औषध ।

कटुवित-सज्ञा स्त्री० अप्रिय या बुरी लगने  
वाली बात । व्यग ।

कटुसा-सज्ञा स्त्री० फूहड़ाई । दुर्बचन ।

कटेरी-सज्ञा स्त्री० भटवटैया । कटेरी  
चपा ।

कटेहर—सज्ञा पु० १. खोपा । २. हल की लकड़ी जिसमें फाल लगा रहता है ।

कटेया—सज्ञा पु० १. भटकटेया का पेड़ । २. जो काट डाले । काटनेवाला ।

कटेला—सज्ञा पु० एक कीमती पत्थर ।

कटोरदान—सज्ञा पु० एक ढक्कनदार बरतन ।

कटोरा—सज्ञा पु० बेला । खुले मुँह, नीची दीवार और चौड़ी पेदी का एक छोटा बरतन ।

कटोरी—सज्ञा स्त्री० १. छोटा कटोरा । प्याली । बेलिया । २. तलवार की मूठ का गोल भाग । ३. अँगिया का वह भाग जिसके भीतर स्तन रहते हैं । ४. फूल के सीके का चौड़ा सिरा जिस पर दल रहते हैं ।

कटोल—सज्ञा पु० १. चाण्डाल । २. फल-विशेष ।

कटीतो—सज्ञा स्त्री० कपड़े की कोठी आदि में खरीद की रकम में से कुछ बँधा हक या धर्मार्थ द्रव्य निवाल लिया जाना । जैसे, वाशी के रेशमी वस्त्र-व्यवसायी, कारीगरो से वस्त्र खरीदकर, दाम देते समय रुपये में दो पैसा काट लेते हैं । यह कटीती 'मदिल' कही जाती है और बड़े गणेश मंदिर में भेज दी जाती है । यह ध्यान में रखने की बात है कि वाशी में उक्त कटीती देनेवाले कारीगर मुसलमान हैं ।

कट्टर—वि० १. पटहा । काट सनेवाला । २. अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सहनेवाला । अंधविश्वासी । ३. दुराग्रह करनेवाला, हठी ।

कट्टहा—सज्ञा पु० महापात्र । महाश्रावण । पट्टिया ।

कट्टा—वि० १. हट्टा-कट्टा । मोटा-ताजा । २. बली । बलवान् ।

सज्ञा पु० जवड़ा । कच्चा ।

मुहा०—बट्टे लगाना=जिसी के कारण अपनी बरतु का नष्ट होना या दूसरे के हाथ लगाना ।

कट्टा—सज्ञा पु० १. जमीन की एक नाप जो पाँच हाथ चार धगुल की होती है । २. प्रियवा । ३. मोटा या धराय गेहूँ ।

कठंवर—सज्ञा पु० काष्ठोदर । रोग विशेष । पेट का कड़ापन ।

कठ—सज्ञा पु० १. एक ऋषि । २. एक यजुर्वेदीय उपनिषद् । ३. कृष्ण यजुर्वेद की शाखा-विशेष ।

सज्ञा पु० १. (केवल समस्त पदों में) काठ । लकड़ी । जैसे, कठपुतली, कठकीली । २. (समस्त पदों में फल आदि के लिए) जंगली । निष्ठुर जाति का । जैसे, कठकेला, कठजामन ।

यौ०—कठ-बाग=सीतेला बाग । कठ-माता सीतेली माँ ।

कठकेला—सज्ञा पु० नेला-विशेष जिसका फल रुखा और फीका होता है । एक तरह का निष्ठुर केला ।

कठधरा—सज्ञा पु० कटहरा । घेरा । वेड़ा । काठ की बनी हुई चारदिवारी ।

कठताल—सज्ञा पु० दे० "करताल" ।

कठपुतली—सज्ञा स्त्री० १. काठ की गुड़िय या मूर्ति जिसको तार या रस्सी के द्वारा नचाते हैं । २. वह व्यक्ति जो केवल दूसरे के कहने पर काम करे, दूसरे के वश में हो । ३. नितात अनभिज्ञ । मूर्ख ।

कठड़ा—सज्ञा पु० १. कटहरा । कठधरा । २. काठ का बड़ा सटूक । ३. कठौता । काठ का बड़ा बर्तन ।

कठफोडवा—सज्ञा पु० खाकी रंग की चिड़िया-विशेष जो पेड़ों की छाल को छेदती रहती है ।

कठबधन—सज्ञा पु० बँटुआ । हाथी के पैर में डाली जानेवाली काठ की वेड़ी ।

कठबाप—सज्ञा पु० सीतेला बाप ।

कठबिरनी—सज्ञा स्त्री० भेक । जम्बरसाँडा ।

कठमलिया—सज्ञा पु० १. वस्त्र जो काठ की माला या कडी पहने । २. बनावटी साक्षु । भूठा सत । दिखाने के लिए कठी पहननेवाला ।

कठमस्त—वि० १. व्यभिचारी । २. सड़-मुसड़ ।

कठमस्ती—सज्ञा स्त्री० मस्ती । मुसड़ापन ।

कठरा—सज्ञा पु० (स्त्री० कठरी) १. दे०

"कठहा" या "कठघरा" । २ काठ का वडा मट्ठक । ३ कठोता । काठ का वस्तुन । ४ कठवत्ता ।

कठला-गंगा पु० "कठला" । वस्त्रों की पहनाई जानेवाली भाजा विशेष ।

कठपत-गंगा स्त्री० दे० कठोता ।

कठपता-गंगा स्त्री० कठोता । काठ का वस्त्र-विशेष ।

कठवाली-गंगा पु० शृणु यजुर्वेद की कठवाका या उपनिषद्-विशेष ।

कठशाखा-सज्ञा स्त्री० कठवेद का एक भाग ।

कठहँसी-गंगा स्त्री० शृणु हास्य । बिना कारण हास्य । बिना उमंग की हँसी ।

कठारी-सज्ञा स्त्री० काठ का बना कमंडलु ।

कठिन-वि० १ कडा । दृढ़ । सख्त । २

वर्षा । कठोर । ३ निष्ठुर, दुष्पर ।

दुसाध्य । ४ मुदिस । तीव्र (जैसे पीडा) ।

५. कडाही या पात्र का कोई भी पात्र ।

कठिनता-सज्ञा स्त्री० १ कडाई । कडापन ।

कठोरता । निष्ठुरता । २ दुरुहता । कठि-

नाई । दुसाध्यता । ३ निर्दयता । ४

दृढता ।

कठिनपुच्छ-सज्ञा पु० कूम् । कच्छप । कच्छपा ।

कठिनाई-सज्ञा स्त्री० १ कठोरता । २

दुसाध्यता । ३ क्लिष्टता ।

कठिनिका-सज्ञा स्त्री० खडिया मिट्टी ।

कठिनी ।

कठिनी-सज्ञा स्त्री० खडिया मिट्टी । छुई ।

वहंगी ।

कठिया-वि० जिसका छिलका मोटा और

कडा हो । जैसे कठिया बादाम ।

सज्ञा स्त्री० १ कठोती । काठ का छोटा

पात्र । फाँदा । २ काठ की माला । ३

जाला ।

कठिवाना-क्रि० अ० "कठुवाना" । सूखकर

कडा हो जाना ।

कठिल-सज्ञा पु० बरैला ।

कठिहार-वि० बाढ़ने या निकालनेवाला ।

उद्धार करनेवाला । "कठला" ।

कठला-गंगा पु० "कठला" । गले में पहनने

का आभूषण विशेष ।

कठुवाना-क्रि० अ० १ सूखकर काठ की तरह

कडा होना । २ बिलकुल सूख जाना ।

३ ठंड में हाथ-पैर ठिठुरना ।

कठमर-गंगा पु० जगती गुल्म ।

कठैठ, कठैठा-वि० [स्त्री० कठैठी] १ दृढ़ ।

कठार । कठिन । मज्ज । २ अभिय ।

कटु । ३ अधिक बलवाला । तगडा ।

कठोर-गंगा पु० पेट की एक बीमारी ।

कठोपनिषत्-गंगा पु० १ पुन्य-विशेष ।

२ दशोपनिषत् में एक उपनिषत् ।

कठोर-वि० १ कठिन । दृढ़ । कडा ।

२ तीक्ष्ण, तेज, बेधक । ३ निष्ठुर ।

निर्दय । निष्ठुर । ४ पूर्ण, संपूर्ण (जैसे

चंद्रमा) ।

कठोरता-सज्ञा स्त्री० १ कडाई । २ निर्द-

यता ।

कठोरताई, कठोरपन-गंगा पु० १ कठोरता ।

कडापन । २ दृढता । ३ निष्ठुरता ।

निर्दयता ।

कठोरा-वि० दे० 'कठोर' ।

कठोलिया-सज्ञा स्त्री० १ काठ का पात्र ।

२ काठ का बना हुआ ।

कठोता-सज्ञा पु० [स्त्री० कठोती] काठ का

कडा और चौडा वस्तुन विराप ।

कड-गंगा पु० कुसुम या उसका बीज ।

(दिल भाषा में कमर । बरं) ।

कडक-सज्ञा स्त्री० १ कठोर शब्द । कडाका ।

कडाका । कडकडाहट का शब्द । २ तडप ।

दपेट । ३ बज्ज । गाज । ४ घोड़े की

सरपट चाल विराप । ५ एक एककर होने

वाला दर्द । बसक । ६ एक एककर और

जलन के साथ पेशाब उतरनेवाला रोग ।

मुहा०-कडककर=१ गर्जन के साथ ।

२ साभिमान ।

कडक-सज्ञा पु० नमक । लवण । क्षार ।

कडकड-सज्ञा पु० १ दो वस्तुओं के रगड़ने

का शब्द । २ घोर शब्द । ३ बड़ी वस्तु

के टूटने या फूटने का शब्द ।

कडकडाता-वि० [स्त्री० कडकडाती] १

कडाके वा । बहुत तेज । २ घोर । प्रचंड ।

३ कडकड शब्द करता हुआ ।

कडकडाना—कि० अ० १ कडकड शब्द होना ।  
 २ 'कडकड' शब्द के साथ टूटना । ३ घी, तेल आदि का आँच पर बहुत तपकर कडकड बोलना ।  
 कि० स० १ कडकड शब्द के साथ तोड़ना ।  
 २ घी, तेल आदि को खूब तपाना ।  
 कडकडाहट—सज्ञा स्त्री० गरज । घोर नाद ।  
 कडकड शब्द ।  
 कडकना—कि० अ० १ कडकड शब्द होना ।  
 २ टूटना । ३ चिटकने का शब्द होना ।  
 ४ डाँटना । दपटना । ५ चिटकना ।  
 पटना । ६ दरकना ।  
 कडकनाल—सज्ञा स्त्री० चौड़े मुँह की तोप ।  
 कडक मिजली—सज्ञा स्त्री० १ ताटक । कान का गहना विशेष । चाँदवाला । २ तोड़े-दार बटूक ।  
 कडखा—सज्ञा पु० लड़ाई के समय गाया जाने-वाला गीत ।  
 कडखैत—सज्ञा पु० १ चारण । माट ।  
 २ कडखा गानवाला ।  
 कडबदा—वि० जिसके कुछ बाल राफेद हो गए हो ।  
 कडवी—सज्ञा स्त्री० वि० तीखी । कटु ।  
 ज्यार का पड़ जिसके भुट्टे काट लिए गए हो घोर जो चारे के लिए छोड़ा हो ।  
 कडा—सज्ञा पु० [स्त्री० कडी] १ हाथ या पाँव में पहनन का चूड़ा । २ किसी धातु का छल्ला या कूडा । ३ क्यूतर विशेष ।  
 वि० १ कठोर । कठिन । जो दवाने से जल्दी न दबे । दृढ़ । ठोस । २ रुखा । नीरस । जिसकी प्रकृति कोमल न हो ।  
 ३ उग्र । ४ कसा हुआ । चुस्त । ५ जो गोला न हो । ६ कम गोला । ७ तगड़ा ।  
 हट्ट पुट्ट । दृढ़ । प्रचंड । ८ जोर का । तेज । ९ सहने या झेलनेवाला । धीर ।  
 १० दुसाध्य । दुष्कर । कठिन । ११ तीव्र प्रभाव डालनेवाला । १२ असह्य ।  
 अप्रिय । १३ कर्मश ।  
 कडाई—सज्ञा स्त्री० कडापन । कठोरता । सख्ती ।

कडाका—सज्ञा पु० १ धडाका । किसी बड़ी वस्तु के टूटने का शब्द । २ व्रत उपवास ।  
 ३ लघन । फाका ।  
 मुहा०—कडाके का=जोर का । तेज ।  
 कडावीन—सज्ञा स्त्री० [तु० करावीन] २ छोटी बटूक । २ चौड़े मुँह की बटूक ।  
 कडाहा, कडाहा—सज्ञा पु० बड़ी कडाही ।  
 कडाही—सज्ञा स्त्री० छोटा कडाहा ।  
 कडिपल—वि० कडा ।  
 कडिहार—सज्ञा पु० १ कर्णधार । २ मल्लाह । केवट । माँझी ।  
 कडी—सज्ञा स्त्री० १ जूनीर या साँकल की लड़ी का एक छल्ला । २ लगाम । ३ छोटा छल्ला जो किसी वस्तु को अटकाने या लटकाने को हो । ४ गीत का पद-विशेष । ५ छोटी धरन ।  
 सज्ञा स्त्री० [हि० कडा—कठिन] अडस । सकट । दुःख । विपत्ति ।  
 कडीदार—वि० छल्ल या बड़ीदार ।  
 कडुआ—वि० [स्त्री० कडुई] १ स्वाद में तीव्र और बुरा । कटु । तीता जैसे—नीम या चिरायता । २ जो भला न हो । बुरा । अप्रिय । ३ अखड । तीखी प्रकृति का । क्रोधी । ४ कठिन । विपत्ति । टेढ़ा ।  
 मुहा०—कडुआ करना=१ धन लगाकर नष्ट कर देना । २ रुपए लगाना । ३ बूछ दाम खड़ा करना । कडुआ मुँह=वह मुँह जिससे अप्रिय शब्द निकलें ।  
 कडुआ होना=बुरा बनना । विगाड कर लेना । कडुआ बोलना—अप्रिय बात कहना । कडुए वसीले दिन=१ कष्ट के दिन । बुरे दिन । २ दो रसे दिन जिनमें रोग फैलता है । कडुआ घूट=कठिन कार्य । कडुआ तेल=सज्ञा पु० सरसों का तेल ।  
 कडुआना—कि० अ० १ कडुआ लगना । २ स्वाद मिगड जाना । ३ खीभना । ४ विगडना । ५ आँख में विरविरी पड़ने की तरह दर्द होना ।

कडुआहट-सज्ञा स्त्री० कडुआपन ।

कड़-वि० कडुआ ।

कड़ीर-मज्ञा पु० करोड़ । सख्या-विशेष ।  
सी लाख ।

कड़ना-क्रि० अ० १ उठना । निक्लना ।  
२ खिचना । बाहर आना । ३ उदय  
होना । बढना । ४ (प्रतिद्विष्टता में)  
अग्रे निनल जाना । ५ स्त्री का दूसरे  
पुरुष के साथ भाग जाना ।  
क्रि० अ० दूध का छोड़ने पर गाढ़ा  
होना ।

कड़लाना\*†-क्रि० स० १ घसीटना ।

२ घसीटकर बाहर करना ।

कड़ाई-मज्ञा स्त्री० १ दे० 'कड़ाही' । २  
कड़ने का काम ।

कड़ाना, कड़वाना-क्रि० स० बाहर कराना ।  
निकलवाना ।

कड़ाव-सज्ञा पु० १ निवास । २ बेलवूटो  
का उमार । ३ बलवूटे या कसीदे का  
काम ।

कड़ी-सज्ञा स्त्री० सालन विशेष जो बंसन से  
बनाया जाता है ।

मुहा०-कड़ी का सा उवाल=शीघ्र ही बम  
हो जानेवाला उल्हाह ।

कड़आ-वि० १ उधार । ऋण । २  
निकारा हुआ । जानिब्युत ।

कड़पाई-मज्ञा स्त्री० दे० 'कड़ाही' ।

†सज्ञा पु० १ निवालनेवाला । २ बचाने  
या उधार करनेवाला ।

कड़ोरना\*-क्रि० म० पसीटना । गीचग ।

कण-मज्ञा पु० १ किरण । रवा । जरा । अति  
सूक्ष्म टुकड़ा । २ बना । चावल का बारीक  
टुकड़ा । ३ भिक्षा । ४ भद्र का दाता ।  
५ बूँद । ६ चिनगारी । ७ रत्न की किरण ।  
८ अणु ।

कणभीरा-मज्ञा पु० सफेद जीरा ।

कणभक्षक या भोजी-मज्ञा पु० १. कणभोजी ।

२. कणाद मुनि । ३ परी विशेष ।

कणा-मज्ञा पु० पीपल । कण । दाता ।

कणमात्र-मज्ञा पु० एक बिन्दु । किञ्चिन्मात्र ।  
बहुत थोड़ा ।

कणाद-सज्ञा पु० उलूक मुनि । वैशेषिक शास्त्र-  
कार ।

कणिका-सज्ञा स्त्री० १ छोटा भाग । किरण ।  
टुकड़ा । २. बिन्दु । ३. चावल का टुकड़ा ।

कणिका-सज्ञा पु० गेहूँ आदि अनाज की बाल ।

कणी-सज्ञा स्त्री० १ छिटक । २. भाग ।

३. बहुत पतला टुकड़ा ।

कण्य-सज्ञा पु० १. एक मन्वार ऋषि ।

२. एक कश्यप गोत्रीय ऋषि जिन्होंने  
शत्रुतला को पाला था । ३. पाप ।

कत-सज्ञा पु० [ अ० ] लेखनी के अग्र भाग  
की बाट ।

†अव्य० क्पा । कहीं । कसोकर । कंता ।  
विसलिए । काहे को ।

कतई-अव्य० [ अ० ] एवम । बिलकुल ।

कतव-सज्ञा पु० १. रीठा । २. निमंती ।

वाल्मीकि रामायण के एक टीकाकार ।

कतनई-सज्ञा स्त्री० कतई ।

कतना-क्रि० अ० काता जाना ।

सज्ञा कातने का अस्त्र ।

कतनी-सज्ञा स्त्री० सूत कातने की टिकरी ।

कतनी-सज्ञा स्त्री० कंची । कनरनी ।

कतरन-सज्ञा स्त्री० काटन-छाँटन । कागज  
या कपड़े आदि के छोटे रद्दी टुकड़े ।

काट-छाँट के पीछे बचे हुए टुकड़े ।

कतरना-क्रि० स० कंची या किसी अस्त्र से  
काटना ।

कतरनी-सज्ञा स्त्री० १ अस्त्र विशेष जिसे  
धान, कपड़े आदि काटे जाते हैं । कंची ।

मिकराज । २. काती । धातुओं की चहुर आदि  
काटने का, सँझी के धाकारका एक धोजार ।

कतरनी-सज्ञा स्त्री० १. काट-छाँट ।

२. हेरफर, झर का उधर करना ।  
उजड़-पेर । ३. साच विचार । उषेड्युन ।

४. दूसरे के सीधे-मुखा में से कुछ स्वयं  
घपने लिए बचा लेना । ५. ढग । ठरी ।  
६. युधि । जाडनाड ।

कतरवाना-क्रि० स० दे० 'कतराना' । दूसरे  
से कतराने या काम कराना ।

कतरा-मज्ञा पु० १. टुकड़ा । कटा हुआ  
भाग । २. गड़ ।

सजा पु० [ अ० ] बिंदु। बूँद।  
कतराई—सजा स्त्री० १. कतरने की मज-  
दूरी। २. कतरने का काम।

कतराना—सजा स्त्री० १. किसी वस्तु या  
व्यक्ति की आँख बचाकर निकल जाना।  
२. आँख छिपाना।

क्रि० सं० [ हि० कतरना का प्रे० रूप ]  
१. कटवाना। कटाना। २. छँटवाना।

कतरी—सजा स्त्री० १ कतर। २ बोलू का  
पाट जिस पर बैठकर बैला को हाँका जाता  
है। ३ जमी हुई मिठाई का टुकड़ा। ४  
हाथ में पहनने का पीतल का एक  
गहना।

कतल—सजा पु० दे० 'कल्ल'। हत्या।  
वध।

कतली—सजा स्त्री० [ फा० कतरा ] मिठाई  
आदि का टुकड़ा। बर्फी।

कतपाना—क्रि० सं० [ कातना का प्रे० रूप ]  
दूसरे से कातने का काम कराना।

कतवार—सजा पु० घास-भूस। कूड़ा-करकट।  
घी०—कतवारखाना—बूड़ा फेंकन का स्थान।

\*†सजा पु० जो कातने का काम करे।

कतहू, कतहू\*†—अव्य० कही भी। कही।  
किसी स्थान पर। किसी जगह।

कता—सजा स्त्री० [ अ० कतम ] १ आकृति।  
बनावट। आकार। २ ढग। ३ कपड़े  
की कतर-ज्योत या काट-छाँट।

कताई—सजा स्त्री० १ कातने की मजदूरी।  
२ कातने का काम।

कतान—सजा पु० [ फा० ] १ अलसी की  
छाल का बना बड़िया कपड़ा। २ एक  
रेशमी कपड़ा।

कताना—क्रि० सं० [ कातना का प्रे० रूप ]  
कतपाना। किसी दूसरे से कातने का काम  
लेना।

कतार—सजा स्त्री० [ अ० ] १ श्रेणी। २  
पाँति। पक्ति। ३ मुँड। समूह।

पतारा—सजा पु० [ स्त्री० कतारी ] लाल  
रंग का मोटा गधा।

कतारी\*†—सजा स्त्री० १ दे० "कतार"।  
२ ईँख की एक जाति।

कतिक\*†—वि० १ कितना। २ अनेक। बहुत।  
कतिपर्य—वि० १ थोड़े से। २ कई एक।  
वितने ही।

कतीरा—सजा पु० गुलू नामक वृक्ष का गोद  
जो दबा के काम में आता है।

कतुवा—सजा पु० १ तकुआ। २ सूजा।

कतीना—सजा स्त्री० १ कोई काम करने के  
लिए देर तक बैठे रहना। २ बातने का  
काम या मजदूरी।

कतल—सजा पु० कटा हुआ टुकड़ा। पत्थर की  
गढ़ाई में निकले पत्थर के छोटे टुकड़े।

कता—सजा पु० १ बाँस चीरने का एक अस्त्र।  
२ छोटी टडी तलवार। बाँसा। बाँका।

कतान—सजा पु० छुरा। कटार।

कत्ती—सजा स्त्री० १ छुरी। कटारी।  
चाकू। २ छोटी तलवार। ३ सोनारों  
की कतरनी। ४ ऐसी पगड़ी जो बत्ती  
के समान बटकर बाँधी जाती है।

कत्य—सजा पु० लोहे की स्याही।

कत्यई—वि० खैर के रंग का।

सजा खैरा रंग।

कत्यक—सजा पु० १ एक जाति जिसका  
काम गाना-बजाना और नाचना है। २  
नृत्य का एक भेद।

कत्पा—सजा पु० १ खैर। खदिर। २  
खैर का पेड़।

कल—सजा पु० (अ०) वध। हत्या।  
तलवार से गर्दन काटना।

कल्लेग्राम—सजा पु० (अ०) सर्वसाधारण की  
हत्या। सर्वसंहार।

कथचन—अव्य० किसी प्रकार।

कथचित—अव्य० किसी प्रकार।

क्रि० वि० किसी प्रकार।

कथक—सजा पु० १ कथावाचक। २ पीरा-  
णिक। पुराण का पाठ करनेवाला।

३ कथक। पेशेवर कहानी कहनेवाला।

४ प्रधान अभिनेता। नाट्य-पाठक।

कथकीकर—सजा पु० कत्पा या खैर का वृक्ष।

कथकड—सजा पु० १ बहुत कथा या  
किसा कहनेवाला। २ बहानिया का  
प्रेमी।

वचन-संज्ञा पु० १. वात । २. उच्चारण ।  
३. विपरण । ४. उक्ति । वात ।

वचना\*-संज्ञा पु० १. बोला । कहना ।  
२. निंदा या बुराई करना ।

वचनी\*-संज्ञा स्त्री० १. वात । २. वचनवाद ।  
भगडा ।

वचनीय-वि० वचनव्य । कहने योग्य ।  
वर्णनीय ।

वचरी-संज्ञा स्त्री० गुदडी । पुराने चियडों का  
विद्यावन ।

वचा-संज्ञा स्त्री० १. वात । यह जो कहा  
जाय । २. इतिहास । ३. धर्म विषयक  
व्याख्यान । ४. चर्चा । प्रसंग । वर्णन ।  
समाचार । हाल । ५. भगडा । वाद-  
विवाद । कहा-सुनी ।

वचानक-संज्ञा पु० १. वचा । २. कहानी ।  
छोटी वचा । कहानी का विषय । प्रतिपाद्य  
वस्तु । ३. प्लाट ।

वचाप्रवच-संज्ञा पु० आख्यायिका । कहानी ।  
विस्सा । गल्प ।

वचाप्रसंग-संज्ञा पु० १. वचोपकथन । वात-  
चीत । २. सँपेरा । मदारी । ३. विपवेष्ट ।

वचाप्राण-वि० १. नाटक । २. वक्ता ।  
वक्थक ।

वचामुख-संज्ञा पु० आख्यान या वचा की  
प्रस्तावना ।

वचावस्तु-संज्ञा स्त्री० उपन्यास या कहानी  
का ढाँचा । प्लाट ।

वचावार्ता-संज्ञा स्त्री० सभाषण । आलाप ।  
अनेक प्रकार की बात-चीत ।

वचित-वि० जो कहा गया हो । कहा  
हुआ ।

वचितव्य-वि० वचनीय । कहने के योग्य ।  
कबीर-संज्ञा पु० रांगा ।

वचोद्घात-संज्ञा पु० १. वचा का प्रारम्भ ।  
२. (नाटक में) सूत्रधार की अंतिम बात

उहराते हुए प्रथम पात्र का रंगभूमि में  
प्रवेश ।

वचोपकथन-संज्ञा पु० वाद विवाद । वात-  
चीत ।

वध्य-वि० कहने योग्य । वचनीय । साधारण

बोलचाल की भाषा में प्रचलित । जो कहा  
जाता हो । कहलानेवाला ।

वद-संज्ञा पु० १. वदम । एक प्रसिद्ध वृक्ष  
२. गमूह । ढेर । भुंड । ३. तीर, बाण ।

४. एक सज्जित पदार्थ ।

वद-संज्ञा स्त्री० [प्र० वद] [वि० कही]  
१. धनुता । द्वेप । २. हट । ३. घुरा,

खराब जैसे वदभ, वदधर, वदस्व,  
वदावार ।

वद-संज्ञा पु० [घ०] १. ढीलटोन । २.  
ऊँचाई (प्राणिया के लिए) ।

वदो-वदो आदम=मानव शरीर के बराबर  
ऊँचा, पुरप-प्रमाण ।

वदधव\*-संज्ञा पु० घुरा मार्ग, कुपथ, खराब  
रास्ता, बुरी सड़न ।

वदन-संज्ञा पु० १. मृत्यु । नाश ।  
भरण । २. मारना । वध । हिंसा । ३.

लड़ाई । संग्राम । युद्ध । ४. दुख ।  
५. पाप ।

वदभ-संज्ञा पु० घुरा या अपवित्र भद्र ।  
जैसे, कीदा ।

वदम-संज्ञा पु० १. वदव । सदाबहार । एक  
बड़ा पेड़ जिसमें बरसात में गोल फल

लगते हैं । २. एक पास ।

वदम-संज्ञा पु० [म०] १. पाँच । पैर ।  
२. घूल या कीचड़ में बना हुआ पैर का

चिह्न ।

मुहा०-कदम उठाना=उन्नति करना । कदम  
चूमना=१. बहुत आदर करना । कदम

छूना । प्रणाम करना । २. सपथ लना ।  
कदम बढ़ाना या कदम आगे बढ़ाना=

१. तेज चलना । २. उन्नति करना ।  
कदम रखना=घाना । प्रवेश करना ।

कदम जमना=दृढ़ होना, जमना ।  
कदम उखडना=पराजय होना । उत्साह

नष्ट होना । कदम पर कदम रखना=१.  
पीछे पीछे चलना । २. अनुकरण करना ।

३. चलन में एक पैर से दूसरे पैर तक का  
अंतर । फाल । पग । ४. छोटे की वह

चाल जिसमें दोहने पर भी उसका  
शरीर नहीं हिलता । चार कदम पर=पास

ही । कदम कदम पर=लगतातर, निरंतर ।

कदमबाज-वि० [अ०] कदम की चाल चलनेवाला (घोड़ा) ।

कदर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मात्रा । मान । २ प्रतिष्ठा । बड़ाई । मान । ३. टाँकी । ४. सफेद कत्था । ५. गोखर । ६. अक्वुश । ७. आरा ।

कदरु\*-सज्ञा स्त्री० कायरता । भीरुता । कदरज-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध पापी । वि० दे० "कदर्य" ।

कदरदान-वि० [फा०] गुणग्राही । कदर करनेवाला ।

कदरदानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] गुणग्राहकता । कदरमस\*-सज्ञा स्त्री० भगडा । लड़ाई । मार-पीट ।

कदराई-सज्ञा स्त्री० भय । कायरता । भीरुता ।

कदराना\*-क्रि० अ० डरना । भीत होना । कायर होना ।

कदरो-सज्ञा स्त्री० एक पक्षी जो डील-डोल में मैना के समान होता है ।

कदर्य-सज्ञा पु० निरर्थक वस्तु । कूड़ा-करकट । वि० बुरा । कुत्सित ।

कदर्यना-सज्ञा स्त्री० [वि० कदर्यत] बुरी दशा । दुर्गति ।

कदर्यत-वि० दुर्गति प्राप्त । जिसकी दुर्दशा की गई हो । उपेक्षित । अस्वीकृत ।

कदर्य-वि० [सज्ञा कदर्यता] १ सूम । कजूस । भस्वीचूस । २ मद । ३ तुच्छ, क्षुद्र । निन्दित । अपकृष्ट ।

कदली-सज्ञा स्त्री० १. केला । २ पेड़-विशेष जिसकी लकड़ी जहाज बनाने में काम आती है । ३. हरिण विशेष ।

कदा-क्रि० वि० किस समय । कभी । कब ।

मुहा०-यदा कदा=कभी कभी । जब तब । कदाकार-वि० भद्दा । कुरूप । बुरे आकार का । बदसूरत ।

कदाकृति-वि० कुत्सित आकृति । कदाह्य-वि० बदनाम ।

कदाच\*-क्रि० वि० १. शायद । कदाचित् । २ कभी । किसी समय ।

कदाचन-क्रि० वि० किसी समय । कभी । कदाचार-सज्ञा पु० [वि० कदाचारी] कुचलन । बुरा आचरण । बदचलनी । निन्दित कर्म ।

कदाचित्-क्रि० वि० १. शायद । कभी । किसी समय । २ क्या जाने ।

कदापि-क्रि० वि० कभी भी । किसी समय भी । हर्गिज ।

कदी-वि० [अ० कद्] हठ करनेवाला । कदीम-वि० [अ०] प्राचीन । पुराना ।

कदीमा-सज्ञा पु० शाबल । तोहीनी । कदीमी-वि० [अ० कदीम] पुराना । बहुत दिनों का । आदिम ।

कदुष्ण-वि० थोड़ा गर्म । गुनगुना । शीर-गर्म ।

कदुरत-सज्ञा स्त्री० [अ०] मनमोटाव । कीना ।

कद्दावर-वि० [फा०] वड़े डील-डोल का । कद्दी-वि० दे० "कदी" ।

कद्दू-सज्ञा पु० धूम्रवर्ण । स्त्री० नागमाता का नाम । कश्यप मुनि की स्त्री ।

कद्दूज-सज्ञा पु० साँप । सर्प । कद्दूपुत्र-सज्ञा पु० सर्प । भुजग ।

कद्दुमुत-सज्ञा पु० नाग । सर्प । कद्दू-सज्ञा पु० [फा० कद्दू] लोको । चिया ।

काशीफल । कुम्हटा । कद्दूकश-सज्ञा पु० [फा०] लोहे या पीतल

आदि की छेदवार चौकी जिस पर कद्दू आदि को रगड़कर उसे रेतते हैं ।

कदबूबाना-सज्ञा पु० [फा०] मल के साथ गिरनेवाले पेट के भीतर के छोटे छोटे सफेद कीड़े ।

कदी-क्रि० वि० दे० "कभी" । किसी समय । कन-सज्ञा पु० १ अणु । वृंद । बहुत

छोटा टुकड़ा । खरी । २ अनाज का टुकड़ा । ३ अन्न का एक दाना । ४. प्रसाद ।

५ जूठन । ६ मिश्राज । भीख । ७ चायलो की धूल । कना । ८ बानू या रेत के कण ।

१. शारीरिा राधिन । १०. यह स्वर,  
जितने पहले और बाद के स्वर का  
उच्चारण कर, उर्ती पर विश्रांति हो।  
जैसे, नि सा रे सा । यहाँ 'सा' कन है  
(मगीत) ।

यो०—'वान' का राक्षस रूप जो योगिन  
राक्षों में आता है। जैसे—वनरमिया,  
कतपटी ।

कनई†—सजा स्त्री० १. नई शाखा ।  
कतसा । २. कोपल । कल्ला ।

†सजा स्त्री० गोली मिट्टी ।

कनअगुली—सजा स्त्री० छिगुनी । छिगुलिया ।  
रावरी छोटी अंगुली ।

कनउड\*—वि० दे० "कनोडा" ।

कनक\*—सजा पु० १ सुवर्ण । सोना ।  
२ धतूरा । ३ ढाक । पलाश । टेसू ।  
४. खजूर । ५ नागवेसर । ६. छप्पय  
छट का भेद । ७ आटा । ८ गेहूँ ।

कनककली—सजा पु० कनकूल, कान में  
पहनने का फूल या बली के आकार का  
एक गहना ।

कनककशिपु—सजा पु० दे० "हिरण्यकशिपु" ।

कनकक्षार—सजा पु० मुहागा ।

कनकचपय—कनकचपा—सजा पु० कनियारी ।  
मध्यम आकार का पेड़-विशेष । कणि-  
कार ।

कनकडा—वि० १ कर्णरहित । बूचा ।  
जिसका कान कटा हो । २ कान काट  
लेनेवाला ।

कन कना—वि० सहारे से टूटनेवाला । 'कीमड'  
का उलटा ।

कनकना—वि० [ स्त्री० कनकनी ] १ कन-  
कनाहट उत्पन्न करनेवाला । २ चुनचुनाने-  
वाला । ३ अप्रिय । अशुचिकर । चिड-  
चिडा । जो अच्छा न लगे ।

कनकाना—कि० अ० [ सजा कनकनाहट ]  
१ चुनचुनाना । गुरग, अरखी आदि वस्तुओं  
के छूने से अंगों में चुनचुनाहट होना ।  
२ चुनचुनाहट या कनकनाहट पैदा करना ।  
गला काटना । ३ अच्छा न लगना ।  
नागवार मालूम होना ।

वि० अ० १ सचेत होना । चोखता होना ।

२. रोमांचित होना ।

कनकनाहट—सजा स्त्री० कनकनी । कनकनाने  
का भाव ।

कनकचल—सजा पु० १. जमालगोटा । २  
धतूरे का फल ।

कनकचल—सजा पु० १ सुमेरु पर्वत ।

२ सोने का पर्वत । ३ अस्तमिरि ।

४ दान विशेष ।

कनकानी—सजा पु० [दिश०] घोड़े की जानि-  
विशेष ।

कनकी—सजा स्त्री० १. कनकी । चावल  
के टूटे हुए छोटे टुकड़े । २ छोटा कण ।

कनकूल—सजा पु० खेत में खड़ी फसल की  
उपज का अनुमान ।

कनकौचा—सजा पु० बड़ी पतंग । गुड्डी ।

कनखजुरा—सजा पु० जहरीला कीड़ा विशेष,  
जिसके बहुत से पैर होते हैं। गोजर ।  
काँतर ।

कनका†—सजा पु० कोपल ।

कनखियाना—कि० सं० १ तिरछी नजर  
या कनखी से देखना । २ आँख से सवेन  
करना ।

कनखी—सजा स्त्री० १ दूसरी की दृष्टि बचा-  
कर देखना । २ पुतली को आँख के बोलने  
पर से जाकर ताकने की मुद्रा । आँख का  
सकेत, कटाक्ष ।

मुहा०—कनखी मारना—आँख से मना करना  
या सकेत करना ।

कनखंया\*†—सजा स्त्री० दे० "कनखी" ।

कनखोदनी—सजा स्त्री० सलाई जिससे कान  
का मैल निकालते हैं ।

कनगुरिया—सजा स्त्री० छिगुनियी । छिगुनी ।  
सबसे छोटी उँगली ।

कनखेवन—सजा पु० हिंदुओं का सस्वार विशेष  
जिसमें बच्चों का कान छेदा जाता है ।

कनटोप—सजा पु० कानों को ढकनेवाली टोपी ।  
बड़ी टोपी जिससे कान भी ढके जा सकें ।

कनतुर—सजा पु० छोटी जाति का जहरीला  
भेदव ।

कनधार\*—सजा पु० दे० "कर्णधार" ।

कनपटी-सज्ञा स्त्री० आँख और कान के बीच की जगह।

कनपेड़ा-सज्ञा पु० एक रोग जिसमें कान की जड़ के पास चिपटी गिल्टी निकल आती है।

कनफटा-सज्ञा पु० योगी जो कानों में बिल्लौर की मुद्राएँ पहनते हैं; ये गोरखनाथ के अनुयायी होते हैं।

कनफुंका-सज्ञा पु० कान फूँकनेवाला, दीक्षा देनेवाला। मन्त्रगुरु (उपहास)।

कनफुंका-वि० [स्त्री० कनफुंकी] १ दीक्षा देनेवाला। २ दीक्षा लेनेवाला। ३ जो कान फूँके।

कनफुसकी-सज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूसी"।  
कनफूल-सज्ञा पु० कर्णफूल। कान का आभूषण।

कनमनाना-क्रि० अ० १ सोए हुए प्राणी का सचेष्ट होना या हिलना-डोलना। किसी बात के विरोध में कुछ कहना या चेष्टा करना। २ आनाकोनी करना। ३ ध्यान देना।

कनमेलिया-सज्ञा पु० जो कान का मेल निकालता है।

कनरस-सज्ञा पु० १ आनंद जो गाना-बजाना सुनने से प्राप्त होता है। २ गाना-बजाना या बात सुनने का व्यसन।

कनरसिया-सज्ञा पु० गाना-बजाना सुनने का व्यसनी या शौकीन। गीतज्ञ। बातचीत सुनने का इच्छुक।

कनल-सज्ञा पु० भिलाया।

कनवाई-सज्ञा स्त्री० छटाँक।

कनबा-वि० काना। एक आँखवाला।

कनवाई-सज्ञा स्त्री० कर्णवेध। कान छेदना।

कनसलाई-सज्ञा स्त्री० कनखजूरे की तरह का कीड़ा। कान खोदने की सलाई।

कनसार-सज्ञा पु० जो ताम्रपत्र पर लेख खोदता हो।

कनसाल-सज्ञा पु० चारपाई के पायों के छेद जिनमें पाटी लगती है।

कनसुई-सज्ञा स्त्री० टोह। आहट।

मुहा०-कनसुई या कनसुईया लेना=१.

भेद लेना। २. छिपकर किसी की बात सुनना।

कनस्तर-सज्ञा पु० (अग्ने०) दीन का चौखूँटा पीपा।

कनहा-सज्ञा पु० अन्न की जड़ करनेवाला।

कनहार\*-सज्ञा पु० १. कर्णधार। मत्लाह। २. पतवार।

कना-सज्ञा पु० दे० "कन"।

कनाजड़ा\*-वि० दे० "कनौड़ा"।

कनागत-सज्ञा पु० १ आढ़ के दिन। २. पितृपक्ष।

कनात-सज्ञा स्त्री० [तु०] वह मोटा कपड़ा जिससे किसी स्थान को घेरकर आड़ करते हैं। तम्बू आदि।

कनारी-सज्ञा स्त्री० १. भापा-विशेष जो मद्रास प्रांत के कनारा नामक प्रदेश में बोली जाती है। २. कनारा प्रदेश का रहनेवाला।

कनाबड़ा\*-सज्ञा पु० दे० "कनौड़ा"।

कनिधारी-सज्ञा स्त्री० कनक-चपा का पेड़।

कनिका-सज्ञा स्त्री० गेहूँ का पिसान। आटा।

कनिका\*-सज्ञा पु० दे० "कणिका"।

कनिगर\*-सज्ञा पु० १ नाम की लाज रखनेवाला। २ जो अपनी मर्यादा का ध्यान रखे।

कनिया\*-सज्ञा स्त्री० गोद। कोरा। उच्छ्रग।

कनियाना-क्रि० अ० १ बचाव करना। कतराना। आँख बचाकर निकल जाना। २ कभी खाना। पतंग का किसी ओर भुक्क जाना।

कृ० अ० गोद या कनिया लेना। गोद में उठाना।

कनिवार-सज्ञा पु० कनकचपा।

कनियाहट-सज्ञा स्त्री० १. भड़क। २. सक्कीच।

कनिष्ठ-वि० [स्त्री० कनिष्ठा] १. सबसे छोटा। बहुत छोटा। २ जो पीछे पैदा हुआ हो। ३. आमु में छोटा। अनुज। ४. निरुष्ट। होन। ५. कुटुं में छोटी हुई बालटी या डोल।

बनिष्ठा-वि० स्त्री० १ सजसे छोटी। बहुत छोटी। २ हीन। नीच। निरुष्ट।  
 गजा स्त्री० १ दो या कई स्त्रियों में सबसे छोटी स्त्री। पीछे की विवाहिता स्त्री। २ दो स्त्रियों में वह, जिस पर पति का प्रेम कम हो (नामिका भेद)। ३ छिगुनी। छोटी उँगली। कानी उँगली।  
 बनिष्ठिका-गजा स्त्री० बनिष्ठा। छिगुनी। सबसे छोटी उँगली। कानी उँगली।  
 बनिहा-सजा पु० १ घुना। २ प्रतिहिंसक।  
 बनो-सजा स्त्री० १ छोटा टुकड़ा। २ हीरे का बिलकुल छोटा टुकड़ा। ३ पिनची। चावल के छोटे छोटे टुकड़े। ४ चावल का मध्य भाग जो कभी कभी नहीं गलता। ५ बूँद। ६ कृष्ण। ७ छोर। ८ सिरा।  
 मुहा०-कनी खाना या चाटना=हीरे की कनी निगलकर मरना। कनी मरना=अभिमान एकदम नष्ट होना। कनी न मरना=अभिमान शेष रहना।  
 कनीनिका-सजा स्त्री० १ तारा। २ आँख की पुतली। ३ कुमारी, बन्या। ४ छोटी शेंगुली।  
 कनीयान-वि० १ बनिष्ठ। धनुज। छोटा। २ अति युवा। अत्यल्प।  
 कने-त्रि० वि० १ समीप। पास। निकट। २ ओर। ३ साथ। संग। ४ अधिकार में।  
 कनेकौ-त्रि० वि० तनिक भी। जरा भी।  
 कनेकान-सजा पु० (अप्रे०) लगाव। सबध।  
 कनेठा-वि० १ काना। २ एका-ताना। भेंगा।  
 कनेठी-सजा स्त्री० १ कान ऐंठना। २ कान मरोड़ने की सजा। गोसमाली।  
 कनेर-सजा पु० १ वृक्ष विशेष जिसमें लान या पीले सुंदर फूल लगते हैं। २. करवीर। ३ हरितवंश्या।  
 कनेरकनेया-सजा पु० कर्णवेधन। कनछेदनी।  
 कनेरिया-वि० कानाघन लिय लाल। कनर के फल के रंग का।  
 कनेवा-सजा पु० चारपाई का टढ़ापन।

कनूषा-गजा पु० अनाज का दाना। बन्या। कनोमी। वि० दे० बनमी। तिरछी (आँग या दृष्टि)।  
 कनोज-गजा पु० एक नगर।  
 कनोजिया-वि० १ जिससे पूर्वज कनोज के रहे ह। २ कनोज का रहनेवाला।  
 सजा पु० वाग्यबुद्ध ब्राह्मण।  
 कनोडा-वि० १ काना। २ अपग। खोडा। जिसका कोई अंग सड़ित हो। विक्लाग। ३ लज्जित। ४ बलविन। निर्दित। ५ सकुचित।  
 सजा पु० १ खरीदा हुआ गुनाग। श्रीन दास। २ वृत्तज मनुष्य। एहसानमद आदमी। ३ तुच्छ मनुष्य। नीच आदमी।  
 कनौतो-सजा स्त्री० १ पशुआ के कान या उनके कानों की नोक। २ काना के उठाने या उठाए रखने का ढग। ३ वाली जो कान में पहनी जाती है।  
 मुहा०-कनीनी उठाना=सजग होना।  
 कन्या-सजा पु० [स्त्री०/कन्री] १ पतंग में बाँधा जानवाला डोरा जिससे वह इधर उधर न भूके। २ कोर। विनारा। आठ। ३ चावल का कन। ४ वनस्पति का वह रोग जिससे उसकी लकड़ी तथा फल आदि में कीड़ लग जाते हैं।  
 कन्री-सजा स्त्री० १ पतंग या कनवीवे के दोनों धोर के किनारे। २ पतंग की कन्री में बाँधी जानवाली घञ्जी जो इसलिये बाँधी जाती है कि यह सीधी उड़। ३ कोर। विनारा। हाशिया।  
 सजा पु० राजगीरा का करली नामक धोजार।  
 मुहा०-कनी कटना=सबध टूटना, जीविका छूटना।  
 कन्यका-सजा स्त्री० १ बन्या। कवारी लडकी। २ बटी। पुत्री।  
 कन्या-सजा स्त्री० १ लडकी जो अविवाहिता हो। कवारी लडकी। कुमारी। २ बटी। पुत्री। ३ छटी राशि। ४ धीक्वार। ५ बडी इलायची। ६ एक वर्णवृत्त। ७ वाक्क बकौरी। ८ बाराही वद। ९ दुर्गा का एक नाम।

यौ०—पंचकन्या—पुराणों के अनुसार वे पंच स्त्रियाँ जो बहुत पवित्र मानी गई हैं—ग्रहत्या, प्रोषदी, कुन्ती, तारा और मंदोदरी। वास्तव में पाठ 'पंचकान्त' है। इसका अर्थ इन पाँचों स्त्रियों से है। 'पंचकन्या' शुद्ध पाठ नहीं है।

कन्याकाल—संज्ञा पुं० १. कन्या की दश वर्ष की अवस्था। २. रजोदशन की पूर्ववस्था। कन्याकुमारी—संज्ञा स्त्री० रासकुमारी अंतरीप। कन्यागत—वि० कन्यानिष्ठ। कन्याराशि—स्थित। कन्यादाता—संज्ञा पुं० विवाह में कन्यादान करने का अधिकारी। कन्याराशि या कन्याराशि। वि०—सुस्त, अकुशल, ढोलाढाला (मनुष्य)। कन्यादान—संज्ञा पुं० विवाह में वर को कन्या देने की रीति।

कन्याधन—संज्ञा पुं० वह स्त्री-धन जो उसे कन्या-अवस्था में मिले।

कन्यापति—संज्ञा पुं० १. जामाता। २. उपपति। ३. व्यक्तिचारी।

कन्याभाय—संज्ञा पुं० कुमारिकापन। कुमारीत्व।

कन्याराशि—वि० १. जिसके जन्म के समय चंद्रमा कन्याराशि में हो। २. सत्यानाशी। चौपट। ३. निकम्मी वस्तु। ४. खिन्न। सलज्ज।

कन्यावानी—संज्ञा स्त्री० वर्षा जो कन्या के सूर्य के समय हो।

कन्हरीया—संज्ञा पुं० कण्ठारी। माँझी। कर्णधार। मल्लाह।

कन्हार्द—संज्ञा स्त्री० कन्हार्द। खेत कूटना। संज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का प्यार से बुलाने का नाम।

कन्हैया—संज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण। २. अत्यंत प्रिय आदमी। प्रिय व्यक्ति। ३. बहुत सुंदर लड़का।

वि० विलासी। स्त्री-नपट।

मुहा०—कन्हैया होना—विलास-मग्न होना। अपने वक्त के कन्हैया—अपने समय के प्रसिद्ध विलासी।

कपकपी—संज्ञा स्त्री० धरधरी। फुरफुरी।

कपट—संज्ञा पुं० [ वि० कपटी ] १. छल।

दंभ। धोखा। स्वार्थ साधन के लिए हृदय की बात को छिपाने की वृत्ति। २. छिपाव। दुराव।

कपटता—संज्ञा स्त्री० धूर्तता। शठता।

कपटना—क्रि० सं० १. छांटना। काटकर अलग करना। खोटना। २. काटकर अलग निकालना। ३. किसी चीज में से बचाकर ले लेना।

कपटभू—संज्ञा स्त्री० माया की भूमि। जादू की धरती। माया से उत्पन्न भूमि। माया-जनित भूभाग।

कपटवेशधारी—संज्ञा पुं० छल वेशधारी। प्रतारक। धोखा देनेवाला। ठग।

कपटी—वि० छली। धोखेवाज। धूर्त। जो कपट रखता हो। बहुरूपिया। छद्मवेशी। संज्ञा स्त्री० अंजुली भर, एक नाप।

कपड़कोट—संज्ञा पुं० खीमा। तम्बू। डेरा।

कपड़छन, कपड़छान—संज्ञा पुं० पिसे हुए चूर्ण को कपड़े में छानने का काम।

कपड़द्वार—संज्ञा पुं० वस्त्रागार। कपड़े रखने का स्थान। तोसाखाना।

कपड़धूलि—संज्ञा स्त्री० एक महीन रेशमी कपड़ा। करेव।

कपड़मिट्टी—संज्ञा स्त्री० धातु या शीयध फूंकने के पात्र पर गीली मिट्टी और कपड़ा लपेटने की क्रिया (वैद्यक)। कपड़ौटी। गिल-हिकमत।

कपड़विण—संज्ञा पुं० दरजी। रफूगर।

कपड़ा—संज्ञा पुं० १. वस्त्र। पट। लता। रुई, रेशम, ऊन या सन के तागों से बुना हुआ धारी का आच्छादन। २. पहनावा। पोशाक।

मुहा०—कपड़ों से होना—रजस्वला होना। मासिक धर्म से होना (स्त्री का)।

यौ०—कपड़ा लता—पहनने का सामान।

कपड़ौटी—संज्ञा स्त्री० दे० "कपड़मिट्टी"।

कपरिया—संज्ञा पुं० नीच जाति-विशेष।

कपड़, कपड़क—संज्ञा पुं० [स्त्री० कपर्दिका] १. शिव का जटाजूट। २. कीड़ी।

३. बराटिका।

कपर्दिका—संज्ञा स्त्री० कीड़ी।

वपदिनी-सज्ञा स्त्री० गिदा । भयानी । दुर्गा ।

वपदी-सज्ञा पु० [स्त्री० वपदिनी] १ महादेव । शिव । २ ग्यारह स्त्री में से एक ।

वपाट-सज्ञा पु० १ द्वार । पट । विवाह । देहरी । २. आवरण ।

वपाटबद्ध-सज्ञा पु० चित्रवाच्य-विशेष, जिसने प्रक्षरो को एक निश्चित क्रम से लिखने से विवाहो वा चित्र वा जाय ।

कपाल-सज्ञा पु० दे० "वपाल" ।

कपाल-सज्ञा पु० [वि० वपाली, वपालिका] १ खोपड़ी । खोपडा । २ भाल । ललाट । मस्तक । ३ प्याला, सस्तरा । ४. पुराने समय में घड़ा बनाने के लिए उसने नीचे और ऊपर के दो भाग अलग अलग बनाकर उन्हें जोड़ और पीटकर एक कर देते थे । इन भागों को कपाल कहते थे । ५ एक प्रकार की अत्यंत छोटी चौकोर ईंट, जिन पर जोड़े भाटे का गोल पिंड रखकर पक्का जाता था और तब उसका हवन किया जाता था । (यज्ञ) । ६. ढक्कन, आवरण । ७ बहलू की खाल । ८ खाली अडा । ९ एक तरह का कुण्ड । १०. दोनो पक्षों की समान शक्तों पर सवि । ११. एक तन्त्र विशेष । १२ भाग्य । अदृष्ट । १३. खपडा । खपर । खप्पर । १४. मिट्टी का भिछा-नाश विशेष ।

वपालक्रिया-सज्ञा स्त्री० १ एक मृतक-संस्कार जिसमें आधे जले शव की खोपड़ी को बाँस या लकड़ी से फोड़ देते हैं (धर्म-शास्त्र) । २ समाप्ति, अंत (साक्षिण) जैसे, चलो, आज मित्रता की वपालक्रिया हो कर दें ।

कपाल-भोजन-सज्ञा पु० वाशी का तालाव विशेष । एक तीर्थ ।

वपालभूत-सज्ञा पु० महादेव । शिव ।

कपालिका-सज्ञा स्त्री० खोपड़ी । १ रण-वटी । काली । २ दन्तरीण विशेष । ३. कपालिक धर्म की अनुयायिनी ।

वपालिनी-सज्ञा स्त्री० वपालधारिणी । भगवती । दुर्गा ।

वपाली-सज्ञा पु० [स्त्री० वपालिनी] १ भैरव । २. महादेव । शिव । ३. जो ठीपरा लपर भीस मार्गे । ४ वर्ण-संकर जाति विशेष । वपरिया । ५ द्वार के ऊपर का काठ ।

वपास-सज्ञा स्त्री० [वि० वपासी] पोधा-विशेष जिसने ढँड से रुई निकलती है ।

वपासी-वि० जो वपास के पल के रंग का हो । बहुत हलके पीले रंग का ।

सज्ञा पु० बहुत हलका पीला रंग ।

कपिजल-सज्ञा पु० १ पपीहा । चातक । २ गौरा पक्षी । ३ मच्छी । भरदूल । ४ तीतर । ५ मुनि विशेष ।

कपि-सज्ञा पु० १ बदर । २ हाथी । ३ बजा । बरज । ४ सूर्य । ५ श्रीपथ विशेष । ६ यन्त्र विशेष । ७. विष्णु । ८ कृष्णा ।

वि०-भूरे रंग का, कपिल ।

कपिकुजर-सज्ञा पु० बानरो का राजा ।

कपिकच्छु-सज्ञा स्त्री० वृक्ष विशेष । केवाँच ।

कपिकेतु-सज्ञा पु० अर्जुन ।

कपिलेल\*—सज्ञा पु० दे० "कपिकच्छु" ।

कपिल-सज्ञा पु० कैय का वृक्ष या फल ।

कपिध्वज-सज्ञा पु० अर्जुन । जिसके भड्डे पर महावीरजी हो या उनकी मूर्ति या चित्त हो ।

कपिप्रिय-सज्ञा पु० कैया ।

कपिरथ-सज्ञा पु० १ श्रीरामचन्द्र । २ अर्जुन ।

कपिल-वि० १ सफेद । २ मटमला । भूरा । तामड़े रंग का ।

सज्ञा पु० १ आग । अग्नि । २ कुत्ता ।

३ चूहा । ४ बन्दर । ५ शिलाजीत ।

६ शिव । महादेव । ७ सूर्य । ८ विष्णु । ९ मुनि विशेष जो साध्य-शास्त्र

के आदि प्रवर्तक माने जाते हैं ।

वपि-लता-सज्ञा स्त्री० केवाँच ।

कपिलता-सज्ञा स्त्री० १ पीलापन । २ भूरापन । ३ सफदी । ४ ललाई ।

कपिलधारा-सज्ञा स्त्री० १ गंगा । २ तीर्थ विशय । ३ वाशी और गया का एक स्थान ।

कपिलवस्तु-सज्ञा पु० वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध का जन्म हुआ था ।

कपिला-वि० १ सफेद, भटमैले या भूरे रंग की । २ सफेद दाग वाली । ३ भोली भाली । सीधी सादी ।

सज्ञा स्त्री० १ सीधी गाय । २ सफेद रंग की गाय । ३ पुडरीव नामक दिग्गज की पत्नी । ४ दक्ष की एक कन्या । ५ जोक । ६ चीटी । ७ मध्यप्रदेश की एक नदी ।

कपिलागम-सज्ञा पु० साख्य शास्त्र ।

कपिश-वि० १ भटमैला । काला और पीला रंग लिये भूरे रंग का । २ पीला भूरा । ३ लाल भूरा । ४ बादामी रंग ।

सज्ञा पु० धूप । शिव । सूर्य ।

कपिश-सज्ञा स्त्री० १ मद्य विशेष । २ नदी विशय । कसाई । ३ कश्यप की एक स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए थे ।

कपीश-सज्ञा पु० बदरी का राजा । जैसे मृग्रीव, हनुमान आदि ।

कपीश्वर-सज्ञा पु० सुग्रीव । बानरों का राजा ।

कपुन-सज्ञा पु० कपूत । कुबुद्धि पुन ।

कपूत-सज्ञा पु० कपुन । बुरे आचरण का पुत्र ।

कपूती-सज्ञा स्त्री० १ नानायकी का आचरण । जो पुन के योग्य न हो । २ दुष्ट पुन्यानी माता ।

वि० अयोग्यता ।

कपूर-सज्ञा पु० कर्पूर । काफूर । एक सफेद रंग का द्रव्य ।

कपूरकचरी-सज्ञा स्त्री० बल विशय जिसकी जड़ में सुगंध रहती है । सितस्ती ।

कपूरी-वि० १ जो कपूर से बना हो । २ हनने पीन रंग का । ३ सफेद रंग का । सज्ञा पु० १ कुछ हलका पीना रंग ।

२ एक तरह की बड़ुआहट । ३ पत्र विशय ।

कपोत-सज्ञा पु० [स्त्री० कपोतिका, कपोती] १ कबूतर । २ परेवा । ३ चिड़िया । ४ भूरे रंग का कच्चा सुरमा ।

कपोतपालिका-सज्ञा स्त्री० बाठ का बना हुआ कबूतरी के रहने का स्थान । चिड़िया-स्थान ।

कपोतबका-सज्ञा स्त्री० ब्राह्मी बूटी ।

कपोतवर्णी-सज्ञा स्त्री० छोटी इलायची ।

कपोतवृत्ति-सज्ञा स्त्री० आकाश-वृत्ति । राज बमाना राज खाना ।

कपोतव्रत-सज्ञा पु० चुपचाप किसी का अत्याचार सहना । कष्ट सहकर सहन करना ।

कपोतसार-सज्ञा पु० सुरमा (धातु) ।

कपोताजन-सज्ञा पु० सुरमा (धातु) ।

कपोतारि-सज्ञा पु० बाज पक्षी ।

कपोताक्ष-सज्ञा पु० नद विशय ।

कपोतिका कपोती-सज्ञा स्त्री० १ कबूतरी । २ कुमरी । ३ पड़ुकी । ४ मूली ।

वि० धूमले रंग का । कपोत के रंग का ।

कपोल-सज्ञा पु० गाल । गडस्थल ।

कपोल कल्पना-सज्ञा स्त्री० मन से बनाई हुई बात । मनगढ़त या बनाबटी बात । गण्य ।

कपोल-कल्पित-वि० मिथ्या । भूठ । बनाबटी ।

कपोलगैबुआ-सज्ञा पु० गलसुई गल-तकिया । गाल के नीचे रखन का तकिया ।

कप्तास-सज्ञा पु० १ कमल । २ बदर का फूल ।

वि० लाल । खत वर्ण ।

कफ-सज्ञा पु० १ खलार । बलगम । वह गाढ़ी लसीली और अठदार वस्तु जो खांसन या थुकन से मुँह से निकलती है । श्लेष्मा । २ चैद्यक के अनुसार शरीर के भीतर की धातु विशय ।

कफज-वि० कफनाशक । श्लेष्मानाशक ।

कफ-सज्ञा पु० [फा०] फन । भाग । [अ०] कमीज या कर्तें की आस्तीन के आगे की दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगते हैं ।

कफन—सजा पु० [अ०] मुर्दा लपेटने का कपडा ।

मुहा०—कफन को कीटी न हाना या रहना=अत्यंत दरिद्र होना । कफन को कीटी न रखना=जो कमाना, वह सब खा लेना ।

कफनखसोट—वि० सूम । कजूस । मक्खी-चूस । अत्यंत लाली ।

कफनखसोटो—सजा स्त्री० १. श्मशान पर लिया जानेवाला वर जो मुर्दे का कफन फाड़कर लेते हैं । २. इधर उधर से अच्छे या बुरे ढंग से घन इकट्ठा करने की वृत्ति । ३. कजूसी ।

कफनाना—वि० स० गाड़ने या जलाने के लिए मुर्दे को कफन में लपटना ।

कफनी—सजा स्त्री० १. वह कपडा जो शव के गले में डालते हैं । २. साधुओं के पहनने की मेखला ।

कफस—सजा पु० [अ०] १. पक्षी पालने का पिंजरा २. पिंजरा । दरवा । काबूक । ३. बदीगूह । जल । ४. बहुत तग जगह ।

कफवट्टक—वि० १. कफ बढ़ानेवाला । २. तगर वृक्ष ।

कफारि—सजा पु० शुष्ठी । साठ ।

कफोणी—सजा पु० काहनी ।

कथथ—सजा पु० १. बडाल । पोपा । २. मेघ । बादल । ३. उदर । पट । ४. पानी । जल । ५. रुड । बिना सिर का धड़ । ६. राक्षस विराट जिस राम ने जीता ही भूमि में गाड़ दिया था । ७. राहु । उदय और अस्त के समय सूर्य को ढक लेनेवाले बादल ।

कव—वि० वि० १. किस समय ? (प्रश्न-सूचक) । २. नहीं । कभी नहीं ।

मुहा०—कव का, कव के, कव से=देर से । कितन से । कव नहीं ।=सदैव । बराबर ।

कवल्लो—वि० वि० कितनी देर तक ।

कबड्डी—सजा स्त्री० १. लडक़ों का खेल

विशेष जिसे वे दो दल बनाकर खेलते हैं । २. कपा । काँपा ।

कवर—सजा स्त्री० दे० “कव” ।

कवरा—वि० [स्त्री० कवरी] चितकवरा । सफेद रंग पर काले, लाल, पीले आदि दागवाला । चितला । अमलक । कवूर ।

कवरिस्तान—सजा पु० दे० “कव्रिस्तान” ।

कवल—अव्य० [अ०] पहले । पश्तर ।

कवहूँ—अव्य० कभी भी । किसी समय भी ।

कवा—सजा पु० [अ०] लंबा टीला पहनावा-विशेष ।

कवाड—सजा पु० [वि० कवाडी] अगड खगड । रदी चीज । जो वस्तु काम की न हो ।

कवाडा—सजा पु० १. खखेडा । व्यर्थ बात ।

भ्रमट । २. गडबड । उपद्रव ।

कवाडिया—सजा पु० १. वह आदमी जो टूटी-फूटी, सड़ी-गली चीजें बेचने का काम करे । २. जो तुच्छ व्यवसाय करे । ३. भगडा करनेवाला आदमी ।

कवाडी—सजा पु० वि० दे० “कवाडिया” । १. अगड-खगड । २. तुच्छ व्यवसाय । ३. अड-वड काम ।

कवाव—सजा पु० [अ०] मूला हुआ मांस ।

कवावचीनी—सजा स्त्री० १. काडी जो मिर्च की जाति की और लिपटनेवाली होती है । इससे गोल फल खाने में बहुत और ठंडे मानूम होते हैं । २. कवावचीनी का गोल खाना या फल ।

कवावी—वि० [अ०] १. कवाव खाने या बचनेवाला । २. मांस खानेवाला ।

कवार—सजा पु० १. व्यवसाय । व्यापार । २. दे० “कवाड” ।

कवारना—वि० स० [वि०] उलाडना । अलग करना ।

कवार—सजा पु० काम । उद्यम । गुण । भ्रमट । हुनर ।

कवाला—सजा पु० [अ०] वह वस्तुवेष्ट जिससे द्वारा कोई संपत्ति दूसरे के अधिधार में चली जाय । जैसे—बयनामा ।

कवाहत—सजा स्त्री० [अ०] १. बुराई ।

खाट । सरावी । २ अडचन । कठिनाई । परेशानी ।

कविस्त-सज्ञा पु० १. हिन्दी भाषा का एक छंद । २ कविता (निज कविस्त बेहि लाग न नीका)

कवीर-सज्ञा पु० [अ०] १. एक प्रसिद्ध भक्त जाजुलाहे थे । २ अश्लील गीत या पद-विशेष जो होली में गाया जाता है ।

वि० बड़ा । थोष्ट । महान् ।

कवीरपयी-वि० कवीर का अनुयायी । कवीर के संप्रदाय का ।

कबीला-सज्ञा स्त्री० [अ०] पत्नी । स्त्री ।

कबूलवाना, कबूलाना-क्रि० सं० [हिं० कबूलाना वा प्रे० रूप] मनवाना । कबूल कराना । स्वीकार करवाना । भेद खुलवाना ।

कबूतर-सज्ञा पु० [स्त्री० कबूतरी] कपोत । झुंड में रहनेवाला परेवा की जाति का प्रसिद्ध पक्षी ।

कबूतरखाना-सज्ञा पु० [फा०] दरवा जिसमें पोलतू कबूतर रखे जाते हैं ।

कबूतरबाज-वि० [फा०] जिसमें कबूतर पोलने और उड़ाने की लत हो ।

कबूल-सज्ञा पु० [प्र०] स्वीकार । अंगीकार ।

कबूलना-क्रि० सं० १ स्वीकार करना । संकारना । २ प्रसन्न करना । ३ गुप्त बात बताना ।

कबूलियत-मज्ञा स्त्री० [अ०] यह दस्तावेज जो पट्टा खेनेवाला पट्ट की स्वीकृति में ठेका या पट्टा देनेवाले का लिख दे ।

कबूली-सज्ञा स्त्री० [फा०] खने की दाल की लिचड़ी ।

वि० मानी हुई । स्वीकार की हुई ।

क्रि०-स्वीकार की । यत्नलाई ।

कबूल-सज्ञा पु० [अ०] १ पण्ड । ग्रहण । २ दस्त या साक़ न होना । मलावरोध ।

कबूला-मज्ञा पु० [अ०] १ दस्ता । झुंड । २ धिमाट या सतूक में जड़ने के लिए लोहे या पीतल के बने चौड़े टुकड़े । पण्ड । नर-मादगी । ३ अधिचार । धन । अस्ति-चार । दण्ड ।

मुहा०-कबूले पर हाथ डालना=तलवार खींचने के लिए झूठ पर हाथ से जाना ।

कब्जादार-सज्ञा पु० [फा०] [भाव० मज्ञा कब्जादारी] १ वह अधिकारी जिसका कब्जा हो । २ दखीलदार असामी ।

वि० जिसमें कब्जा लगा हो ।

कब्जिपत-सज्ञा स्त्री० [अ०] पाचनशक्ति का ठीक न होना । मलावरोध ।

कब्ज-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुर्दे गाड़ने का गड्ढा । २ ऐसे गड्ढे के ऊपर बनाया जानेवाला चबूतरा ।

मुहा०-कब्र में पैर या पाँव लटकाना=मृत्यु के समीप होना । मरने के करीब होना ।

कब्रिस्तान-सज्ञा पु० [फा०] मुर्दे गाड़ने का स्थान ।

कभी-क्रि० वि० किसी समय ।

मुहा०-कभी वा=बहुत देर से । कभी न कभी=आगे चलकर अवश्य किसी अवसर पर ।

कभी\*-क्रि० वि० दे० "कभी" ।

कमानगर-सज्ञा पु० [फा० कमानगर] १. बमान बनानेवाला । २ उखड़ी हुई हड्डी को बंधानेवाला । ३ चितेरा । मुसीवर । ४ वि० निपुण । दक्ष । कुशल ।

कमगरी-मज्ञा स्त्री० [फा० बमानगर] १. बमान बनाने का पेशा या हुनर । २ हड्डी बंधाने का काम । ३ मुसीबरी ।

कमडल-मज्ञा पु० दे० "कमडलु" । बरवा । बठारी ।

कमडली-वि० १ वैरागी । साधु । २. पाखंड करनेवाला ।

कमडलु-सज्ञा पु० १ सन्यासियों का करवा । बठारा । जलपात्र, जो मुख्यतः मिट्टी और काठ का हो । २ पावर का पेड़ ।

कमड\*-सज्ञा पु० दे० "कवध" ।

सज्ञा स्त्री० [फा०] १. कदा । पाश । यह पदेदार रस्मी जिसे पैंतर जगली पर बाँध बाँधे जाते हैं । २ कदेदार रस्मी जिसे पैंतर धीरे ऊँचे मवानों पर चढ़ते हैं ।

कम-वि० [फा०] १ थोड़ा। कम। न्यून।  
२ बुरा। जैसे—कमवस्त।

मुहा०—कम से कम=अधिय नहीं तो इतना अवश्य। और नहीं तो इतना अवश्य।  
वि० वि० बहुधा नहीं। प्राय नहीं। अधिकाश नहीं।

कमअसल-वि० १ वर्णसंवर। २ दोगला।  
३ जो उत्तम न हो।

कमलाव-सज्ञा पु० [फा०] ऐसा रेशमी वपड़ा जिसपर कलावत् के खेल-बूटे बने होते हैं।

कमली-सज्ञा स्त्री० १ पतली लचीली टहनी। २ लचकदार पतली छड़ी। ३ लकड़ी आदि की पतली पट्टी। ४ तीली।

कमच्छा-सज्ञा स्त्री० दे० “कामारया”।  
गोहाटी की एव देवी का नाम।

कमजोर-वि० [फा०] बलरहित। शक्तिहीन।

कमजोरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] दुर्बलता। शक्ति का अभाव।

कमठ-सज्ञा पु० [स्त्री० कमठी] १ कछुआ। २ साधुओं का तुवा। ३ बाँस।  
४ सलई का वृक्ष। ५ एक दैत्य।  
६ एक प्राचीन राजा।

कमठा-सज्ञा पु० धनुष। बमान।

कमठी-सज्ञा स्त्री० १ कछुई। बच्छपी।  
२ पट्टी। बाँस की पतली लचीली खपाची। ३ धनुही।

कमतो-सज्ञा स्त्री० बगी। न्यूनता।  
वि० थोड़ा। कम।

कमना\*—क्रि० अ० घटना, थोड़ा या कम होना।

कमनी, कमनीय-वि० १ मनोहर। रम्य। सुंदर। २ जिसके लिए कामना की जाय।

कमनत-सज्ञा पु० बमान से तीर चलाने-वाला।

कमनती-सज्ञा स्त्री० धनुविद्या। तीर-बमान चलान की विद्या।

कमबहत-वि० [फा०] अभागा। बुरे भाग्य वाला।

कमबहती-सज्ञा स्त्री० दुर्भाग्य। बदनमीची।  
कमर-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. कटि। शरीर का मध्य भाग। २ किसी लंबी वस्तु के बीच का पतला भाग। जैसे—बान्द्र की कमर। ३ लपेट। औररले या सनूके आदि का वह भाग जो कमर पर पड़ता है।

मुहा०—कमर बसना या बाँधना=१ उद्यत होना। तैयार होना। २ चलने की तैयारी करना। कमर टटना=उत्साह का न रहना। निराश होना। कमर खोलना=विरत होना। विश्राम करना।

कमरबस-सज्ञा पु० टाव का गाद। चिनिया गोद। कमरबद। कमर बसन की पेटी।

कमरकौट, कमरकोटा-सज्ञा पु० १ वह दीवार जो रक्षा के लिए बनाई गई हो। २ छोटी दीवार जो किला और चहार-दीवारियों के ऊपर होती है और जिसमें बँगूरे और छेद होते हैं।

कमरख-सज्ञा स्त्री० १ एक पेड़ जिसके फीक्वाले लंबे लंबे खट्टे फल होते हैं। कमरग। कमरग। २ इस पेड़ का फल। ३ वस्त्र-विशेष।

कमरखी-वि० जिसमें कमरख के समान उभड़ी हुई पाँके हो।

कमरटूटा-वि० कुट्टा। कुण्ड।

कमरबन्द-सज्ञा पु० [फा०] १ कमर बाँधने का लंबा वपड़ा। पटका। २ पट्टी। ३ नाडा। इजरायद।

वि० कमर बसे, तैयार। तत्पर।

कमरबल्ला-सज्ञा पु० १ खपडे की धाजन में वह लकड़ी जो तडक के ऊपर और कोरी के नीचे लगाई जाती है। २ कमरबस्ता। ३ कमरकोटा।

कमरा-सज्ञा पु० [लै० कंभेरा] १ कोठरी। २ फोटोग्राफी का एक औजार।

\*सज्ञा पु० दे० “कवल”।

कमरिया-सज्ञा पु० [फा० कमर] १ हाथी-विशेष जो डील-डोल में छोटा पर बहुत जबरदस्त होता है। घोना हाथी।

२. कमर । ३. रोग विशेष । ४. चरखी की लकड़ी विशेष ।

कमरी—सज्ञा स्त्री० दे० “कमली” ।

कमल—सज्ञा पु० १ पानी का एक पौधा जो अपने सुंदर फूलों के लिए प्रसिद्ध है । २ क्लोमा । कमल के आकार का मास-पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है । ३ कमल का फूल । पद्म । ४ तंबा । ५ पानी, जल । ६ [स्त्री० कमली] मृग विशेष । ७ डेला । आंख का कोया । ८ सारस । ९ फूल । धरन । योनि के भीतर कमलाकार एक गाँठ । १० छ माताओं का छंद विशेष । ११ छप्पय के ७१ भेदों में से एक । १२ काँच का एक प्रकार का गिलास जिसमें गोमयती जलाई जाती है । १३ पित्त राग-विशेष जिसमें आँख पीली पड़ जाती है । कमला । पीलू । काँवर । १४ मूत्राशय । मसाना ।

कमलगट्टा—सज्ञा पु० पद्मबीज । कमल का बीज ।

कमलज—सज्ञा पु० १ जो कमल से उत्पन्न हुआ हो । २ ब्रह्मा ।

कमलनयन—वि० [स्त्री० कमलनयनी] कमल के समान बड़े और सुंदर ननवाला ।

सज्ञा पु० १ राम । २ विष्णु । ३ कृष्ण ।

कमलनाभ—सज्ञा पु० विष्णु ।

कमलनाल—सज्ञा स्त्री० मृगान । कमल की डडी ।

कमलवध—सज्ञा पु० चित्रकाव्य विषय । कमलवाई—सज्ञा स्त्री० राग विशेष जिसमें शरीर, विशेषकर आँख पीली पड़ जाता है । कमल रोग ।

कमलभव—सज्ञा पु० ब्रह्मा ।

कमलयोगि—सज्ञा पु० ब्रह्मा ।

कमला—सज्ञा स्त्री० १ लक्ष्मी । २ सुंदरी, श्रेष्ठ स्त्री । ३ एस्वयं । धन । ४ सतरा । यही नारंगी । ५ तिरहुत की एक नदी ।

सज्ञा पु० १ रोएँदार कीड़ा जिसके छ जान में शरीर में गुजलाहट होती है ।

सूँडी । भाँझा । २ डोला । अनाज या सड़े फल आदि में पड़नेवाला लवा सफेद रंग का कीड़ा ।

कमलाकर—सज्ञा पु० १ छप्पय का भेद । २ तालाब ।

कमलाक्ष—सज्ञा पु० १ कमल का बीज । २ दे० “कमलनयन” । कमलगट्टा । पद्म-नय ।

कमलापति—सज्ञा पु० विष्णु ।

कमलालया—सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी ।

कमलावती—सज्ञा स्त्री० पद्मावती छंद-विशेष ।

कमलासन—सज्ञा पु० १ ब्रह्मा । २ पद्मासन । कमलासना—सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी । सरस्वती । कमलिनो—सज्ञा स्त्री० १ छोटा कमल । २ कुमुदिनी । ३ वह तालाब जिसमें कमल हो ।

कमली—सज्ञा पु० ब्रह्मा ।

सज्ञा स्त्री० छोटा कवल । छंद विशेष । कमवाना—कि० सं० [कमान का प्रे० रूप] दूसरे से कमाने का काम करवाना ।

कमसिन—वि० [फा०] [सज्ञा कमसिनी] छोटी अवस्था का । कम उम्र का ।

कमसिनी—सज्ञा स्त्री० लक्ष्मण । कम उम्र ।

कमाई—सज्ञा स्त्री० १ अर्जित द्रव्य । कमाया हुआ धन । २ कमाने का काम । ३. उद्यम । धपा । व्यवसाय ।

कमाऊ—वि० उद्यमी । परिश्रमी । कमाने-वाला ।

कमाच—सज्ञा पु० शैलमी वषट्का विशेष ।

कमाची—सज्ञा स्त्री० १. दे० “कमची” । २. तोली जा कमान की तरह भूरी हा ।

कमान—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ धनुष । बमछ । २ त्योरी चढ़ना । प्राय या गुस्सा में होना । ३ मेहराब । ४ इद्रमनुष । ५ बूढ़ । तीव्र । सज्ञा स्त्री० [अप्रे० कमाड] १ आशा । २ पीजी नाम की आजा । ३ पीजी गोबर ।

मुहा०—कमान चढ़ना=१ दोरदोर होना ।

कमान पर जाता=तटार्द पर जाना।  
कमाना यात्रा—नीररी या तटार्द पर जाने  
की यात्रा देना। कमान होना=१ बाध  
ने बैठ जाता। २ बुझावस्था के कारण  
दरीर झुट जाता।

कमानगर—सज्ञा पु० दे० "कमनगर"।

कमानघा—सज्ञा पु० [ पा० ] १ सारंगी  
बजाने की छड़ी। २ छोटी कमान।  
३ डाट। मेहराब।

कमाना—क्रि० स० १ काम-काज करने  
रपया पंदा करना। २. निर्मल करना।  
साफ करना। ३. ठीक करना। ४. मेवा  
सबधी छाटे छोटे काम करना। जैसे—  
पागाना कमाना (उठाना)। ५. कर्म सचय  
करना। जैसे—पाप कमाना।

क्री०—कमाई हुई हठी या देह=कमरत से  
बलिष्ठ किया हुआ शरीर। कमाया साँप=  
यह साँप जिसने विपले दाँत उखाड़ लिये  
गए हों।

क्रि० घ० १ मेहनत मजदूरी करना।  
२ कसब करना। खर्ची कमाना।

न०क्रि० स० घटाना। कम करना।

कमानिया—सज्ञा पु० धनुष-बाण चलानेवाला।  
वि० धन्वाकार। घुमावदार। मेहराब-  
दार।

कमानी—सज्ञा स्त्री० [ वि० कमानीदार ]  
१ लोहे की तीली, तार अथवा इसी प्रकार  
की और कोई लचीली वस्तु जो दाब पडने  
से दब जाय और फिर अपनी जगह पर आ  
जाय। २ लोह की लचीली तीली। ३ चमड़े  
की पटी विशेष जिसे आँत उतरनेवाले  
रोगी कमर में लगाते हैं।

क्री०—वाल-कमानी=घड़ी की एक बहुत  
पतली कमानी जिसके सहारे चक्कर घूमता  
है।

कमानोदार—वि० जिसमें कमानी लगी हो।  
कमानीवाला।

मुह०—कमानी ढीली होना=मुद्ग्य अवलव  
न रहना। सुस्त होना। जोर घटना।

कमाल—सज्ञा पु० [ घ० ] १ पूर्णता। २  
कुशलता। निपुणता। ३ अनोखा या

अद्भुत काम। ४ पारीगरी। ५ कवीर-  
दास के पुत्र का नाम।

वि० १ संपूर्ण। सप्त। २ सर्वश्रेष्ठ।  
गर्वात्म। ३ अत्यधिक। अत्यंत।

कमानियत—सज्ञा स्त्री० [ घ० ] १ पूर्ण  
हाने का भाव। पूर्णपन। २ चतुराई।  
निपुणता। कुशलता।

कमानुत—वि० १ जो कमाई करता हो।  
२ उद्यमी। श्रमी।

कमी—सज्ञा स्त्री० १ घटती। अल्पता।  
कोटाही। २. हानि।

कमीच—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पहने  
का कपड़ा जिसमें बली और चीमरले नहीं  
होते।

कमीना—वि० [ पा० ] [ स्त्री० कमीनी ] नीच।  
दुष्ट। ओछा। कुरी प्रकृतिवाला।

कमीनापन—सज्ञा पु० दुष्टता। नीचता।

कमीला—सज्ञा पु० छोटा पेट-विशेष जिनके  
पत्तो पर की लाल धूल रंगम रंगने के काम  
में आती है।

कमेरा—सज्ञा पु० १ परिश्रम या काम  
करनेवाला। २ मजदूर। ३ नौकर।  
४ सहायक।

कमेला—सज्ञा पु० पशु मारने का स्थान। वध-  
स्थान। कसाईघाना।

कमेहरा—सज्ञा पु० कसकट की बूडियाँ ढालने  
का साँपा।

कमोदिक—सज्ञा पु० कामाद (राग) का  
गर्बया।

कमोदिन, कमोदिनी\*†—सज्ञा स्त्री० दे०  
'कुमुदिनी'। कमल विशेष।

कमोरा—सज्ञा पु० [ स्त्री० कमारी, कमोरिया ]  
मिट्टी या बरतन विशेष। पड़ा। मटका।  
गगरा। कछरा।

कम्पुनिज्म—सज्ञा पु० (अप०) दे० 'साम्यवाद'।  
वह शासन पद्धति जिसमें सब सम्पत्ति राज्य-  
सरकार के कब्जे में होती है और व्यक्तिगत  
सम्पत्ति नहीं रहती। राज्य का प्रत्येक नागर-  
िक एक समान होता है।

कम्पुनिस्ट—वि० दे० "साम्यवादी"। साम्यवाद  
या कम्पुनिज्म के सिद्धान्त का अनुयायी।

कम्प्यूनीक-सज्ञा पु० (अप्रे०) सरकारी सूचना या विवरणपत्र ।

कम्प्यूनी-सज्ञा स्त्री० सदाबहार वृक्ष विशेष जिसकी पत्तियों से कपूर की तरह उड़नेवाला सुगंधित तेल निकाला जाता है ।

कम्परी-सज्ञा स्त्री० टिकोरा । अविद्या ।

कम्पा\*—सज्ञा स्त्री० दे० “काया” । देह । शरीर ।

क्याम-सज्ञा पु० [अ०] १ ठहरन की जगह । विश्राम-स्थान । २ पड़ाव । ठहराव । ३ निश्चय । स्थिरता । ठौर-ठिकाना ।

क्यामत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुसलमानों, ईसाइया और यहूदिया के मत से सृष्टि का वह अंतिम दिन जब सब मूर्ते उठकर खड़े होंगे और ईश्वर के सामने उनके कर्मों का लखा रखा जायगा । लखे का अंतिम दिन । २ खलवली । हलचल । ३ प्रलय ।

क्यास-सज्ञा पु० [अ०] [वि० क्यासी] १ अनुमान । भान । अटकल । २ ध्यान । ३ सोच विचार ।

करक-सज्ञा पु० १. खोपड़ी । मस्तक । २ कमंडलु । ३ नारियल की खोपड़ी । ४ ठठरी । पजर । ५ एक तरह की ईख । ६ शरीर की कोई भी हड्डी ।

करग-सज्ञा पु० पजर । पाँसुरा । हड्डी ।

करज-सज्ञा पु० १ कजा । २ छोटा जंगली वृक्ष विशेष । ३ एक तरह की आतिश-बाजी ।

सज्ञा पु० [फा० कुलग स० कलिग] मुर्गा ।

करजा-सज्ञा पु० दे० “कजा” ।

करजुवा-सज्ञा पु० दे० “करज” ।

सज्ञा पु० [दिश०] अकुर विशाप जा बाँस या ऊँच ग हाने और उनको हानि पहुँचाते हैं । घमाई ।

वि० खाकी । करज के रंग का ।

सज्ञा पु० तापी रंग । करज की तरह का रंग ।

करह-सज्ञा पु० १ एक तरह की वस्तु । २ शहद का छना । ३ तलवार । ४ गोवा । ५ टेला । बाँस की हथानदार टाकरी ।

सज्ञा पु० हथियार तेज करने का कुशल पत्थर ।

करतीना-सज्ञा पु० [अप्रे० कवारडाइन] वह स्थान विशेष जहाँ ऐसे लोग कुछ समय तक रह जाते हैं, जो किसी छूत की बीमारी की जगह से आते हैं ।

कर-सज्ञा पु० १ हाथ । २ हाथी की सूंड । ३ सूर्य या चंद्रमा की किरण । केकडे के पैर । दो की सरया । ४ पत्थर । ओला । ५ राजस्व । मालगुजारी । मह-सूल । ६ युक्ति । छल । पाखंड । हस्त नक्षत्र ।

\*†—प्रत्य० सबध कारक का चिह्न । का । कि० करके । करना ।

करई-सज्ञा स्त्री० कुल्लड । चुक्कट ।

करक-सज्ञा पु० १ करवा । कमंडलु । ठठरी, नारियल का खोपड़ा । २ अनार । दाडिम । ३ पलास । ४ कचनार । ५ भीलमिरी । बकुल । ६ करील का पट । सज्ञा स्त्री० १ कसक । ठहर-ठहरकर होनवाली पीड़ा । चिनक । २ रुक-रुककर और जलन के साथ पेशान होने का राग ।

करकच-सज्ञा पु० समुद्री नमक ।

करकचि-सज्ञा पु० १ विचविचाहट । हल्ला-गुल्ला । २ अपुष्ट । ३ कोमल ।

करकट-सज्ञा पु० कूड़ा । कतवार । भाडन । बहारन ।

यो०—नडा करकट ।

करकना-वि० अ० दे० “कहवना” । कग-कना । रह रहकर दर्द होना ।

\*वि० [स्त्री० करकरी] खुरखुरा । गठने वाला ।

करकर-सज्ञा पु० समुद्री नमक । एक प्रकार की आवाज ।

करकरा-सज्ञा पु० एक प्रकार का सारस । करवरिया पक्षी ।

वि० खुरखुरा ।

करकराहट-सज्ञा स्त्री० १ खुरखुराहट । कडापन । २ पीडा जो और में निरनिरा पड़ने की तरह हो ।

करकस\*—वि० द० “कपस” ।

करवा-सजा स्त्री० १. झोला । २. पत्थर पड़ना, झोले गिरना । उपलब्धि ।

करवाता-त्रि० सं० लचकाना । मुरवाना ।  
करल-सजा पु० १. गेब । सिचाय । २. हट ।  
३. अधिप द्रव्य । ४. माप-विशेष ।

करलता\*-त्रि० अ० जोता में आना । उत्तेजित होना ।

करला-सजा पु० १. दे० 'कहला' । २. छट विशेष । ३. लाग, डाँट । उत्तेजना ।  
कडावा । ताव । दे० 'वालिख' ।

करगत-वि० हाथ लगा हुआ । प्राप्त ।  
सजा पु० हस्तनक्षत्र स्थित चंद्रमा ।

करगला-सजा स्त्री० करघनी । कटिवधन ।  
करगल-सजा पु० [फा०] १. गिट । २. तीर ।

करगह-सजा पु० [फा० कारगाह] १. कपड़ा बुनने का यंत्र । २. वह नीची जगह जिसमें पैर लटवाने पर जुलाह बैठते और कपड़ा बुनते हैं ।

करगहना-सजा पु० भरेठा । लकड़ी या पत्थर जिसे सिडकी या दरवाजा बनाने में चौखटे के ऊपर रखकर आगे जोड़ाई करते हैं ।

करगह-सजा पु० परिणय । व्याह । हाथ पकड़ना ।

करघा-सजा पु० दे० 'करगह' । हाथ से कपड़ा बिनने का यंत्र विशेष ।

करसग-सजा पु० १. डफ । २. ताल देन का बाजा विशेष ।

करछा-सजा पु० [स्त्री० करछी] बड़ी बलछी ।  
करछाल-सजा स्त्री० १. छलाँग । उछाल ।  
२. बुदान ।

करछी-सजा स्त्री० दे० 'बलछी' । 'करछी' ।  
करछुल, करछली-दे० 'बलछी' ।

करज-सजा पु० १. वि० हाथ से उत्पन्न । नख । नाखून । २. उंगली । ३. नख नामक सुगंधित द्रव्य विशेष । ४. करज । ५. बजा ।

करजोडी-सजा स्त्री० हत्पाजोडी । औपध-विशेष ।

करट-सजा पु० १. कौआ । २. गिरगिट ।

३. हाथी की कनपटी । ४. एक तरह का नगाडा । ५. निवृष्ट पंगे का मनुष्य । ६. एक तरह का अत्येष्टि सम्बन्ध ।

करटव-सजा पु० १. कौआ । २. कुसुम का पीया ।

करटी-सजा पु० १. हाथी । २. रांगा ।  
सजा स्त्री० बाव-पत्नी ।

करण-सजा पु० १. व्याकरण में वह (तीसरा) पाठ्य जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को मिट करता है और जिसका चिह्न 'ने' है ।  
२. अस्त्र । हथियार । ३. इन्द्रिय । ४. देह ।  
५. वाय्वं । क्रिया । ६. स्थान । ७. कारण ।  
हेतु । ८. ज्यातिप में त्रिषिया का विभाग-विशेष । ९. करणीगत मन्त्रा । वह सन्ध्या जिसका पूरा पूरा वर्णमूल न निवल सके ।  
१०. निमाण । ११. साधन । १२. योगिया का आसन भेद ।

\*सजा पु० दे० "करण" ।

करणी-सजा स्त्री० १. खुरपी । रांपी । २. गणितशास्त्र में वह राशि जिसका मूल निश्चित न हो ।

करणीय-वि० कर्तव्य कर्म । करने योग्य ।

करतब-सजा पु० [वि० करतबी] १. कर्तव्य । काम । कार्य । २. गुण । बला । ३. जादू । करामात ।

करतबी-वि० १. पुरुषार्थी । काम करने-वाला । २. कुशल, दक्ष । गुणी । चतुर । ३. जादूगर । बाजीगर । करामात दिखाने-वाला ।

करतरी\*-सजा स्त्री० दे० "कर्तरी" ।

करतल-सजा पु० [स्त्री० करतली] १. हथेली । हाथ की गदारी । २. गणा का रूप विशेष (छंदशास्त्र) ।

करतली-सजा स्त्री० १. ताली बजाने की क्रिया । हथेलियों का चन्द । ताली २. हथेली ।

करता-सजा पु० दे० "कर्ता" ।

†सजा पु० १. कृत विशेष । २. वह दूरी जहाँ तक बढ़क की गोली जाती है ।

करतार-सजा पु० कर्तार । विधाता । ईश्वर ।

सजा पु० दे० "करताल"। स्वामी ।  
मालिक ।

करतारी\*—सजा स्त्री० दे० "करताली"।  
थपोड़ी । ताल ।

वि० ईश्वरीय ।

करताल—सजा पु० १ ताली बजाना । दोनों  
हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द ।  
२ लकड़ी, काँसे आदि का बाजा विशेष  
जिसका एक एक जोड़ा हाथ में लेकर बजाया  
जाता है । ३ भाँभ । कठताल ।

करताली—सजा स्त्री० ताली । थपोड़ी । हथेली  
बजाने का शब्द ।

करतूत—सजा पु० १ करनी । कर्म । २  
गुण । कला । (बुरे अर्थ में, व्यास में)

करतूति, करतूती—सजा स्त्री० दे० "करतूत"।  
करनी । काम ।

करतोया—सजा स्त्री० तदी-विशेष ।

करद—वि० १ जो कर देता हो । कर-दाता,  
अधीन । २ सहाय देनेवाला ।

करदपत्र—सजा पु० पट्टा । राजस्व-सूचक  
पत्र ।

करदा—सजा पु० १. कूड़ा-करकट जो बिक्री  
की वस्तु में मिला रहता है । २ अन्न आदि  
भोल लठे समय उसमें मिली धूल आदि का  
अनुमान द्वारा काटा हुआ दाम । ३ घडा ।  
४. कदीती । बट्टा ।

करदायी—वि० मालगुजार । कर देनेवाले ।  
करपनी—सजा स्त्री० [किविणी] कमर में  
पहनने का आभूषण-विशेष ।

करघर—सजा पु० मेघ । वादल ।

करधृत—वि० हस्तधृत । हाथ से पकड़ा हुआ ।  
हाथ में लिया हुआ ।

करन\*—सजा पु० दे० "कर्ण" । कान ।

करनधार\*—सजा पु० दे० "कर्णधार" ।  
गलाह ।

करनफूल—सजा पु० वनफूल, वान का गहना  
विशेष । काँप । तरौना ।

करनवेध—सजा पु० कर्णवेध । कनछेदन ।  
कान छेदने का संस्कार ।

करना—सजा पु० १. मुद्रांश पीया विशेष  
जिसमें सफेद फूल लगते हैं । २. विजोरे

की तरह का बड़ा नीबू-विशेष ।

\*सजा पु० काम । करतूत । करनी ।

क्रि० सं० १ किसी क्रिया को करना ।  
निवटाना । समाप्त करना । भुगतना ।

संपादित करना । २ रचना । ३.  
पकाकर तैयार करना । राधना ।

४ पहुँचाना । खे जाना । ५ पति या पत्नी  
रूप से ग्रहण करना । ६. व्यवसाय

प्रारंभ करना । ७ भाड़े पर सवारी लेना ।  
सवारी ठहराना । ८ रोशनी बुझाना ।

९ बनाना । एक रूप से दूसरे रूप में  
लाना । १० कोई पद देना । ११ किसी

वस्तु का पीतना । जैसे, रंग करना ।

करनाई—सजा स्त्री० तुरही । बाजा विशेष ।  
करनाटक—सजा पु० कर्णाटक । मद्रास प्रांत

का भाग विशेष ।

करनाटकी—सजा पु० १ करनाटक प्रदेश का  
रहनेवाला । २ कलावाज । ३ इद्रजाली ।

जादूगर ।

करनाल—सजा पु० १. सिंधा या नरसिंहा ।  
धतू । मोपा । २ बड़ा ढोल । ३ तोप-

विशेष । ४ पंजाब का एक जिला ।

करनी—सजा स्त्री० १ पूर्वकृत कर्म । कर-  
तूत । २ मृतक-संस्कार । अत्येष्टि कर्म ।

३ कच्ची । दीवार पर पक्का या गारा लगाने  
का योजा ।

करपत्र—सजा पु० करात । आरा । नरक-  
विशेष ।

करपर\*—सजा स्त्री० प्याला । खोपड़ी । बछुए  
की छोल । शस्त्र विशेष । (वि० कज्जल)।

करपरी—सजा स्त्री० पीठी की बरी ।

करपलई—सजा स्त्री० दे० "करपल्लवी" ।

करपल्लवी—सजा स्त्री० वह विद्या जिसमें  
जैलिया के सकेत से बातें की जाती

हैं ।

करपिचकी—सजा स्त्री० दोनों हथेलियों की  
मिलावट, उनकी सहायता से पिचकारी

की तरह जल किसी पर पड़ना । एक तरह  
की जल-शीटा ।

करपीडन—सजा पु० पाणिग्रहण । विवाह ।

करपुर—सजा पु० हथेलियों का संपुट । कुछ

उठी धीर मिलाई हुई हथिनियो से बना  
भावार ।

करपुष्ट-सज्ञा पु० हथेली या पुष्ट भाग ।

करवरना-प्रि० घ० १ चढ़वना । बनरव  
वरना । २ कुलबुलाना ।

करवला-सज्ञा पु० [घ०] १ शरव में  
एक उजाड़ मैदान जहाँ हुंसेन मारे गए थे ।  
२ ताजिए बफनाने की जगह । ३ निर्जल  
स्थान । ४ निर्जन स्थान ।

करवाल-सज्ञा पु० तलवार । खड्ग । असि ।  
करवालिवा-सज्ञा स्त्री० छुरी । कटारी ।  
करवी-सज्ञा स्त्री० नारी । डाँठी । जुघार  
शयवा धाजरे की डाँठी । पशुमध्य  
तृण ।

करवस-सज्ञा पु० हथियार लटकाने के लिए  
घोड़े के चारजामे या जीन में टेंगी हुई रस्सी  
या तसमा ।

करबोड़ी-सज्ञा स्त्री० एक तरह का पक्षी ।  
करभ-सज्ञा पु० १ करपुष्ट । हाथ का  
पिछला भाग । २ हाथी का बच्चा ।  
हाथी की सूंड । ३ ऊँट का बच्चा ।  
४ हाथ का कलाई से उँगलिया तक का  
भाग । ५. वह गायक जो गाते समय मावा  
सिकोड़े । ६ बीवाल । ७ नख नामक  
सुगंधित वस्तु । ८ कमर । कटि । ९  
बोह के सातवें भेद का नाम ।

करभीर-सज्ञा पु० सिंह । मगराज ।  
करभोड़-सज्ञा पु० जघा जो हाथों की मूँड  
के समान हो ।

वि० सुंदर जाँघवाली ।

करम-सज्ञा पु० १ घषा । कर्म । काम ।  
२ भाग्य । कर्म का फल ।  
यौ०-करम भोग=वह दुख जो कर्मफल  
से मिले ।

मुहा०-करम फूटना=भाग्य मद होना ।  
यौ०-करमरेख=वह बात जो भाग्य में  
लिखी हो ।

सज्ञा पु० [घ०] कृपा । अनुकंपा ।

करमकरता-सज्ञा पु० गोभी विधाप जिसमें केवल  
कामल पत्ते होते हैं । बद-गोभी । पातगाभी ।  
करमचद\*†-सज्ञा पु० १ काम । कर्म ।

२ काम में करनेवाला । काम बिगाड़नेवाला  
(ध्या) ।

करमट्टा\*-वि० वृषण । मक्खीचूम । कजूस ।

करमठ\*†-वि० १ कर्मप्रिय । कर्मनिष्ठ ।

२ कर्म करनेवाला । यज्ञादि करानेवाला ।  
कर्मकाण्डी ।

करमनाशा-सज्ञा स्त्री० नदी-विशेष ।

करमाला-सज्ञा स्त्री० उँगलियों से जप करने  
की छोटी माला । मुमिरली । वे दस पीर  
जिन पर भ्रैगुटे से गिनती करते हुए जप  
किया जाता है ।

सज्ञा पु० भ्रमलताम ।

करमाली-सज्ञा पु० भास्वर । सूर्य ।

करमो-वि० १ कर्मनिष्ठ, परिश्रमी, कर्मठ ।  
२ यज्ञादि करानेवाला कर्मकाण्डी । कर्म  
करनेवाला ।

करमुखा\*-वि० [स्त्री० करमुखी] जिसका  
मुँह वाला हो । बलवी ।

करमुँहा-वि० १ वाले मुँहवाला । २  
बलवी । ३ दोषयुक्त ।

करयेती-सज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की एक  
उपासिका ब्राह्मण-कन्या ।

करर-सज्ञा पु० [दिश०] १ विपला बीडा-  
विधाप जिसके शरीर में बहुत सी गठि  
होती हैं । २ घोड़े का भेद विशेष । ३.  
(एक प्रकार का) जंगली पुष्प ।

कररना, करराना\*-क्रि० श० [यनु०] १  
कईदा, रक्ष शब्द करना । २ चरमर करके  
दूटना ।

कररह-सज्ञा पु० नख । नाखून ।

करर\*-सज्ञा पु० कडाही ।

करवट-सज्ञा स्त्री० पार्श्व के चल या हाथ  
के सहारे लेटने की स्थिति ।

मुहा०-करवट बदलना या लेना=१  
दूसरे पार्श्व के चल लेटना । २ पलटा  
खाना । श्रीर का श्रीर हो जाना । करवट  
खाना या होना=फिर जाना । उलट जाना ।  
करवट न लेना=सनाटा खीचना । बर्तव्य  
का ध्यान न रखना । करवटें बदलना=  
तडपना । विस्तर पर बेचैन रहना । व्याकुल  
होना ।

मज्ञा पु० १ आरा । करवत । २ प्राचीन बाल के बाँझों के वे आरे या चन्द्र, जिन पर गिरकर तथा घटकर लोग स्वर्ग की इच्छा से प्राण देते थे । ३. पमवाटा । ४ पांजर । ५ पादयं । ६. परिवर्तन ।  
 करवत-सज्ञा पु० आरा ।  
 करवर\*†-मज्ञा स्त्री० सवट । विपत्ति । मुसीबत ।  
 करवरे-सज्ञा पु० विपत्ति । अदृष्ट । हानिहार ।  
 करवा-सज्ञा पु० बधना । मिट्टी या धातु का टाटादार लटा ।  
 करवा चौथ-सज्ञा स्त्री० धार्मिक कृष्ण ऋतु की । स्त्रियों के व्रत का विशेष दिन ।  
 करवानक-सज्ञा पु० गोरैया । चिड़ा ।  
 करवाना-क्रि० सं० [करना का प्रे० रूप] दूसरे को करने में लगाना ।  
 करवार\*-सज्ञा स्त्री० तलवार । खड्ग ।  
 करवाल-सज्ञा पु० १ तलवार । २ नाखून । नख ।  
 करवाली-सज्ञा स्त्री० करौली । छोटी तलवार ।  
 करवीर-सज्ञा पु० अँगूठा । १ कनर का पड । २ दमशान । ३ खड्ग । तनवार । ४ यदि देश का एक नगर ।  
 करबैया†\*-वि० करनेवाला ।  
 करशाला-सज्ञा स्त्री० चुगीघर । महसूलघर ।  
 करइमा-सज्ञा पु० [फा०] अद्भुत व्यापार । चमत्कार । आश्चर्यजनक कार्य ।  
 करव-सज्ञा पु० १ खिचाव । तनाव । २ मनमोटाप । द्राह । ३ ताव । युद्ध का उत्साह ।  
 करपना\*-क्रि० सं० १ खीचना । तानना । २ घसीटना । ३ सुखाना । रीख लना । ४ बुलाना । निमंत्रित करना । ५ समेटना । ६ आकर्षण करना ।  
 करपा-सज्ञा पु० १ ईर्ष्या । वैर । २ आघ । ३ कालिमा । ४ उत्तजना । ५ बड़ावा ।  
 करसपुट-सज्ञा पु० मिनी हुई हथलिया से बना आवार, अजलि, धौलजी ।  
 करतना\*-क्रि० सं० दे० करपना ।

करसाथर, करसाथल-सज्ञा पु० काला हिरन । काला मृग ।  
 करसी-सज्ञा स्त्री० १ उपला । कड़ा या उमवा टुपड़ा । २ जंगली गोइठा ।  
 करहस-सज्ञा पु० यम-मृत विशेष ।  
 करह\*-सज्ञा पु० ऊँट । उष्ट्र । सज्ञा पु० ( फूल की ) बली ।  
 करहार-सज्ञा पु० मैनफल ।  
 करहारक-सज्ञा पु० मैनफल । औषध विशेष ।  
 करहा-सज्ञा पु० बड़हा । कटि । कमर ।  
 करहाट, करहाटक-सज्ञा पु० कमल की जड़ । भसीड़ । कमल का छत्ता ।  
 कराबूल-सज्ञा पु० कूँज । पानी के किनारे की बड़ी चिड़िया विशेष ।  
 करात-सज्ञा पु० आरा । करपत्र । दक्क ।  
 कराती-वि० आरे से चीरनेवाला । लकड़ी काटनेवाला ।  
 करा\*-सज्ञा स्त्री० दे० कला ।  
 वि० १ कड़ा । २ कठिन । ३ सीटा । ४ झूठा ।  
 कराइत-सज्ञा पु० काला साँप जिसमें विष अधिक होता है ।  
 कराई-सज्ञा स्त्री० भूसी (दाला आदि की) ।  
 \*सज्ञा स्त्री० क्षामता । कालापन । करने या कराने का भाव ।  
 करात-सज्ञा पु० तील विशेष जो चार जी के बराबर होती है और सोना, चाँदी या दवा तीलने के काम में आती है ।  
 कराना-क्रि० सं० [करना का प्र० रूप] करने में लगाना । करवाना ।  
 करादा-सज्ञा पु० [अ०] शीशे या चीनी मिट्टी का बरतन विशेष ।  
 करामात-सज्ञा स्त्री० [‘करामत’ का बहु०] आश्चर्यजनक कार्य । चमत्कार । अद्भुत व्यापार ।  
 करामाती-वि० १ अद्भुत कर्म करनेवाला । २. सिद्ध ।  
 करार-सज्ञा पु० १ ठहराव । सत । स्मरता । २ धैर्य । सतोष । धीरज । ३ चैत । आराम । ४ प्रतिज्ञा । वादा । ५ विनारा ।

करोत-मज्ञा पु० (स्त्री० करोती) धारा  
जिगमो लकड़ी चीरो है।

मज्ञा स्त्री० रयी बूई स्त्री। मुरंति,  
उपपत्ती।

मुरंति-मज्ञा पु० दे० 'करोत'।

मज्ञा पु० कराया। बाँज का घड़ा बरतन  
या धोनी।

करोती-मज्ञा स्त्री० धारी। लकड़ी चीरने  
का अस्त्र।

सज्ञा स्त्री० १ कराया। धोने का छोटा  
पात्र। २ बाँच की भट्टी।

करोती\*-मज्ञा पु० शिखार या हँक्वा करने-  
वाला।

करोली-मज्ञा स्त्री० सीधी छुरी विशेष।

ककंध-मज्ञा पु० बर का पेड़। बदरी वृक्ष।

कक-मज्ञा पु० १. चौकी राशि। २  
बेवड़ा। ३ मर्पेद घोड़ा। ४. बावड़ा

मीनी। ५ शीसा। दपण। ६ आग।  
अग्नि। ७ घड़ा। ८ वात्स्यायन सूत्र के

एक भाष्यवार। ९ सुराही। १० चाचा।  
पितृव्य। ११ सौदम्य। १२ रत्न विशेष।

वि० श्वेत। सफेद। उत्तम। श्रेष्ठ।  
ककट-मज्ञा पु० (स्त्री० ककटी, ककंटा)

१ कक राशि। २ केकड़ा। ३ कक-  
बरा। ४ तराजू का वह हिस्सा जहाँ

रस्सी बँधती है। ५ मारस विषय।  
६ ककटिया। ७ घोघ्रा। लौकी।

८ सेंडसा। ९ कमल की मोटी जड़।  
१० वृत्त की त्रिज्या। ११ नृत्य विशेष।

१२ तुबी। १३ ज्वर विशेष। १४ हस्त-  
मुद्रा विशेष (नाट्यशास्त्र)।

ककटी-मज्ञा स्त्री० १ कछुई। २ तरई।  
३ ककड़ी। ४ सुराही। ५ सेगर का फल।

६ सर्प। साँप। ७ काकडासिंगी।  
ककर-मज्ञा पु० १ कुरज पर्यर जिसके चूर्ण

की सान बनती है। २ हड्डी। ३ हथौड़ा।  
४ ककड़। ५ चूना। ६ यजूर विषय।

वि० सुरखुरा। दपण। दुड़। कड़ा।  
करारा। कड़ा।

ककडा-मज्ञा पु० १ ईख। ऊख। २  
कमील का पेड़। ३ तलवार। लडग।

वि० १ निर्दय। २ बड़ा। कठार।  
जैम कर्कश स्वर। ३ काँटेदार। खुरगुग।

४ तीव्र। तेज। प्रचंड। ५ अधिप।  
६ दूर।

कर्कशा-मज्ञा स्त्री० १. कड़ापन। २  
कठोरता। ३ खुरगुरापन।

कर्कशा-वि० स्त्री० १ लटनेवाली। भगदा  
कर्मवाली। लटाकी। २ कनहप्रिय।

३ कटु वचन बाननेवाली।  
ककट-मज्ञा पु० १ बेल का वृक्ष। २

ककोड़ा। खेखसा। इस नाम का एक ना।  
कचूर या कचूर-मज्ञा पु० १ मुवर्ण।

साना। २ कपूर। ३ कचूर। गरकचूर।  
४ वृक्ष विशेष।

कछनी-मज्ञा स्त्री० १ करोवनी। २ कुचन।  
३ भाजन बनाने का एक बर्तन।

कछी-मज्ञा पु० कछूल।  
कछील-मज्ञा स्त्री० क्लाँच। कूद। चौकड़ी।

कछूल-मज्ञा स्त्री० कछी। कछुली।  
कज, कर्ज-मज्ञा पु० [अ०] उधार।

अण।  
मुहा०-कज उतारना=कज चुकाना। कज-

खाना=१ कज लेना। २ वश में हाना।  
उपवृत्त होना।

कजवार-वि० [फा०] अणी। उधार लने-  
वाला।

कर्ण-मज्ञा पु० १ कान। २ कुत्ती का  
प्येष्ठ पुत्र। ३ अग्राज। राघव। ४

रामकोण त्रिभुज म समकोण के सामने  
की रेखा। ५ नाव की पतवार। ६

चार मात्रावाले गण (पिगल)।  
मुहा०-कर्ण का पहरा=प्रभातकाल। दान

पुण्य का समय।  
कर्णकड-मज्ञा पु० कर्णरोग विशेष। कान

की खुरजाहट।  
कर्णकड-वि० १ जो कान को बुरा लग।

जो सुनने में कर्कश हो। २ वाक्य का दोष  
विषय।

कर्णकुगुम-मज्ञा पु० कान म पहनने का एक  
गहना। कर्णफूल। कनफूल।

कर्णकुहर-मज्ञा पु० कान का छेद। मोलव।

कर्णगोचर—सज्ञा पु० कान से सुनाई देना । किसी बात को सुन लेना । श्रवण-ज्ञान ।  
 कर्णधार—सज्ञा पु० १ नाविक । मांभी । मल्लाह । २ चढनदार ।  
 कर्णनाब—सज्ञा पु० कान में सुनाई पड़नेवाली गूँज । कान को बंद करने पर सुनाई पड़ने-वाला शब्द ।  
 कर्णपाली—सज्ञा स्त्री० कान की लींग । कान की वाली ।  
 कर्णपिशाची—सज्ञा स्त्री० यक्षिणी विशेष जो सिद्ध होने पर साधक को भूत, वत्तमान तथा भविष्य की बातें बताती है ।  
 कर्णफूल—सज्ञा पु० दे० 'वनफूल' ।  
 कर्णभूषण—सज्ञा पु० कान में पहनने का एक गहना । दे० कनफूल ।  
 कर्णमल—सज्ञा पु० कनपड़ा रोग विशेष । कान की जड़ ।  
 कर्णमूल—सज्ञा पु० कान का मूल ।  
 कर्णवेध—सज्ञा पु० वनछेदन । कान छेदने का सस्वार ।  
 कर्णवेष्टन—सज्ञा पु० कुण्डल । कान में पहनने का आभूषण ।  
 कर्णकर्णी—सज्ञा स्त्री० कानाकानी । शोहरत । प्रतिद्धि ।  
 कर्णाट—सज्ञा पु० १ दक्षिण का देश-विशेष । २ सपूर्ण जाति का एव राग (सगीत) ।  
 कर्णाटक—सज्ञा पु० दे० "कर्णाट" ।  
 कर्णाटी—सज्ञा स्त्री० १ सपूर्ण जाति की एव रागिनी । २ कर्णाट देश की भाषा । ३ कर्णाट देश की स्त्री । ४ शब्दालंकार की वृत्ति विशेष जिसमें वर्णों के ही अक्षर आते हैं ।  
 कर्णानुज—सज्ञा पु० कर्ण का छोटा भाई । राजा युधिष्ठिर ।  
 कर्णाभरण—सज्ञा पु० कर्णालंकार । 'वनफूल' ।  
 कर्णिका—सज्ञा स्त्री० १ कान का कर्णफूल । २ हार के बीच की जैंगली । ३ कमल का छत्ता । ४ हाथी की सूंड का तिरा । ५ लेखनी । ब्रह्म । ६ सफेद गुलाब ।

७ सेवती । ८ डठल । ९ कानिस (दीवाल की) । १०. मडिया । ११. छोटी कूंची । ब्रह्म । १२. कूटनी ।  
 कर्णिकाचल—सज्ञा पु० सुमेरु पर्वत ।  
 कर्णिकार—सज्ञा पु० कनकचपा या कनियारी का वृक्ष ।  
 कर्णो—सज्ञा पु० तीर । वाण ।  
 कर्णोरय—सज्ञा पु० पालकी ।  
 कर्णोसुत—सज्ञा पु० कसरान । इस नाम का घृतविद्या तथा चौरशास्त्र का एक आचार्य ।  
 कर्त्तन—सज्ञा पु० कतरन, काटन-छांटन । बि० १ काटना । कतरना । २ काटना (सूत इत्यादि) ।  
 कर्त्तनी—सज्ञा स्त्री० कत्तरी । कतरनी । कैंची ।  
 कर्त्तरिका—सज्ञा स्त्री० १ कैंची । २ काटने का अस्त्र-विशेष । छुरी ।  
 कर्त्तरी—सज्ञा स्त्री० १ कैंची । कतरनी । २ काती (मुंगारी की) । ३ ताल देने का वाजा विशेष । ४ छोटी तलवार । कटारी । ५ नृत्य-विशेष ।  
 कर्त्तव्य—वि० करणीय । उपयुक्त । उचित । करने के योग्य ।  
 सज्ञा पु० करने योग्य कार्य । धर्म ।  
 यो०—कर्त्तव्यकर्त्तव्य—करने और न करने योग्य कर्म । उचित और अनुचित कर्म ।  
 कर्त्तव्यता—सज्ञा स्त्री० १ उपयुक्तता । कर्त्तव्य का भाव ।  
 यो०—इतिकर्त्तव्यता—उद्योग या प्रयत्न की पराकाष्ठा । दौड़ की हद ।  
 कर्त्तव्यमूढ—वि० १ जो यह न समझे कि क्या करना चाहिए । २ भौचक्का ।  
 कर्त्ता—सज्ञा पु० (स्त्री० कर्त्री) १ जो करे । करनेवाला । काम करनेवाला । २ बनाने या रचनेवाला । ३ प्रभु । स्वामी । ईश्वर । ४ पहला बारक जिससे क्रिया के करनेवाले का ग्रहण होता है । ५ अधिनारी । अधिपति ।  
 कर्त्तार—सज्ञा पु० सृजनहार । करनेवाला । सृष्टिकर्ता । ईश्वर ।  
 कस्तिंत—वि० १ वादा हुआ । छिन्न । खण्डित । २ वाता हुआ सूत ।

जावे । नें गाव है—नाथ, पेट, बाली, मुदा  
झोर उगम्य ।

बर्हि-वि० १. बड़ा । बटोर । २. बटिन ।  
गता पु० ब्रताओं का यत्र-विशेष ।

बर्हिना\*†-वि० ध० १. बड़ा होना ।  
बटोर होना । २. घड़ना ।

बर्हि-गता पु० १. गोकट भाते की माप  
विशेष । २. गिचाप । धर्मदत्ता । ३.  
पुराणा विषय । ४. जोगार्ह (गंगी) । ५.  
सत्य । ज्ञान । ६. (लकीर आदि) सीचना ।  
७. विरोध ।

बर्हि-गता पु० १. सीपनेवाला । २.  
विमान ।

बर्हि-गता पु० [वि० बर्हि, बर्हि, बर्हिणीय,  
बर्हि] १. सीपना । २. जौनना । ३.  
गृहधर्म । ४. सरोवर लकीर टालना ।

बर्हिणी-सज्ञा स्त्री० गिरनी या मुस । भैरुनी ।  
बंसी । आबर्हिणी । लगाम । राम ।

बर्हिणीय-वि० १. बर्हिण करने योग्य ।  
सीपने योग्य । २. जौनने योग्य गेन ।

बर्हिना\*†-वि० स० सीपना ।  
बर्हिना-सज्ञा स्त्री० आमलकी वृक्ष ।  
बहेडा ।

बर्हि-सज्ञा स्त्री० १. ईर्ष्या । २. उत्साह ।  
३. विरोध । ४. शोध ।

बर्हिचित्-अव्य० १. किसी बाल । किसी  
समय । बर्हि । २. अनियमित बाल में,  
अनिर्दिष्ट बाल में ।

बर्हि-सज्ञा पु० १. अपयम । दुर्जीनि ।  
अपराध । २. चद्रमा पर का काला दाग ।

३. बालिल । ४. लाहल । बदनामी ।  
५. अपराध । ऐव । दोष । ६. दाग ।  
धब्बा । चिह्न ।

बर्हि-वि० दोषी । अपराधी । जिसे बलक  
लगा हो । लाहित । चिह्नित ।

बर्हि-सज्ञा स्त्री० दोषी, पापी या अपरा-  
धिनी स्त्री ।

बर्हि-वि० [स्त्री० बर्हि] पापी ।  
जिसे बलक लगा हो । अपराधी । दोषी ।

बर्हि-सज्ञा पु० बलिभुगी अवतार ।  
बर्हि-सज्ञा पु० [तु० कलगी] १. मरसे

की आनि का पोषा विशेष । २. मुर्गेव ।  
३. जटाधारी ।

बर्हि-सज्ञा पु० दे० "बर्हि" ।  
बर्हि-सज्ञा स्त्री० "मुर्गेव" ।

बर्हि-सज्ञा पु० १. तम्बाकू का पीना । २.  
हिमन । ३. एक सिद्धि । ४. पक्षी का  
मान । ५. दग पत्र का लोल ।

बर्हि-सज्ञा पु० १. मुगममान माधु-विशेष  
जो मनार में विरक्त होते हैं । २. मसुरी ।

रौद्र और बदर नचानेवाला । ३. दे०  
"बर्हि" । ४. बर्हि-बर्हि आनि-  
विशेष ।

बर्हि-सज्ञा पु० १. गुदद । २. रेगमी  
बर्हि-विशेष ।

बर्हि-सज्ञा पु० १. घर । २. बदल ।  
३. भाव का टटल ।

बर्हि-सज्ञा स्त्री० मन्वा । गले के पीछे  
की नाडी ।

बर्हि-सज्ञा पु० १. गभीर और मधुर शब्द ।  
अव्यक्त मधुर ध्वनि । जैसे—बाँस की  
कर । २. बौर्य । ३. ज्ञान । ४. अक्षर ।

वि० १. गुंथा । २. धीमा । ३. निर्बल ।  
४. अप्रयत्न । ५. प्रिय । मधुर । ६. सुंदर ।

सज्ञा स्त्री० १. आरोग्य । तदुत्तमी ।  
२. गुण । आराम । चेत । ३. तुष्टि । तर्पण ।

वि० १. आनेवाला दिन । आगामी  
दूसरा दिन । २. दिन जो बीत गया हो ।

३. भविष्य में ।  
सूत्रा—बर्हि से=१. चेत से । २. धीरे

धीरे । धीरे धीरे । बर्हि का=बाँस समान  
का । बर्हि टूटना=किसी के चित्त को

किसी और बदलना ।  
सज्ञा स्त्री० १. बर्हि । और । पहलू । २.

शेवक । अग । पुरखा । ३. दग । मुक्ति ।  
४. यत्र । मदीन ।

यो०—बर्हिदार=(यत्र से बना हुआ) रूप्य ।  
५. पंच । पुर्वा । ६. बर्हि का घोड़ा का  
चाप ।

वि० "बर्हि" शब्द का सक्षिप्त रूप  
(योगिक में) जैसे—बर्हिमुहा ।

बर्हि-सज्ञा स्त्री० [प्र०] १. रंगा । २.

मुलम्मा । रांग का पतला लप । ३ लप जा रंग चढ़ान या चमकाने के लिए किसी वस्तु पर किया जाता है । ४ तटकु-भंडव । बाहरी चमक-दमक । ५ भद । ६ सफ़दी । चूने का लप ।

मुहा०—कलई सुलना=असली भेद सुलना । वास्तविक रूप का प्रकट होना । कलई न लगना=युक्ति न चलना । कलई खालना=छिपा रहस्य या भेद प्रकट करना ।

कलईगर-सज्ञा पु० वरतना पर कलई करने-वाला ।

कलईदार-वि० [फा०] कलईयुक्त । रांग का लप चढ़ा हुआ ।

कलकठ-सज्ञा पु० [स्त्री० कलकठी] १ कायल । काकिन । २ हस । ३ कबूतर । परैया ।

वि० जो मधुर शब्द बोलता है । जिसका गला मोठा हो । मोठी ध्वनि करनेवाला । बलक-सज्ञा पु० १ बकली । बचनी । चिता । घबराहट । २ दुःख । ज़द । रज ।

सज्ञा पु० दे० 'बल्क' ।

कलकना\*-क्रि० अ० चीत्कार करना या चिल्लाना ।

कलकल-सज्ञा पु० तरंग का धीमा शब्द । १ घस्फुट शब्द । भरन आदि का जल गिरने का शब्द । २ कौलाहन ।

सज्ञा स्त्री० वाद विवाद । झगडा ।

कलकानिन्-सज्ञा स्त्री० चिता । कठिनाई । हेरानी । दुःख । परेशानी ।

कलकटर-सज्ञा पु० (अग्र०) जिल का सबसे बड़ा हजिम् । जिला-मजिस्ट्रेट ।

कलकूजिदा-वि० मीठ बोल बोलनेवाली । मधुर ध्वनि करनेवाला । बामोत्तजय स्था ।

कलगी-सज्ञा स्त्री० [तु०] १ चूडा । सुंदर चिड़िया के पक्ष जिन्हें पगड़ी या ताज पर लगाते हैं । २ मोती या सोन का सिर का गहना विशेष । ३ पक्षियों के सिर पर की चाटी । ४ भवन या इमारत

की चाटी । बँगूरा । ५ लावनी का ढग विशेष ।

कलचुरि-सज्ञा पु० दक्षिण भारत का प्राचीन राजवंत विशेष ।

कलछा-सज्ञा पु० बड़ा चम्मच । बड़ी बलछी ।

कलछी-सज्ञा स्त्री० चमचा । बड़ी डाँडी का चम्मच ।

कलजह्या-वि० बलूटा । बलछाँह ।

कलजिन-वि० द्वयी । पापी । अपराधी । स्त्री० कलजिनी ।

कलजिन्ना-वि० [स्त्री० बलजिन्नी] १ बाला जामबाला । २ जिसकी अशुभ वाणा प्रायः ठीक निकल ।

कलजीहा-वि० दे० "बलजिन्ना" ।

कलभैवा-वि० सावला । काला ।

कलत्र-सज्ञा पु० १ भार्या । स्त्री । पत्नी ।

२ नितब । ३ किला । दुग ।

कलत्रलाभ-सज्ञा पु० पत्नीलाभ । भार्या-प्राप्ति । विवाह ।

कलदार-वि० पंचदार । जिसमें कल लगी हो । सज्ञा पु० सरकारी रुपया ।

कलधूत-सज्ञा पु० चाँदी ।

कलधौत-सज्ञा पु० १ स्वर्ण । सोना ।

२ चाँदी । ३ मधुर शब्द ।

कलध्वनि-सज्ञा पु० १ कबूतर । २ कायल । ३ अव्यक्त मधुर शब्द ।

कलस-सज्ञा पु० [वि० कलित] १ बनाना । पैदा करना । २ धारण या ग्रहण करना ।

३ सवय । लगाव । ४ आचरण । ५ गणित की निया । जैसे-सकलन, व्यय कलन । ६ ग्रहण । ७ कौर । प्राप्त ।

८ गभ का प्रथम स्थिति स्त्री के गभ-धारण के बाद गभ का प्रथम रूप ।

कलसना-सज्ञा पु० धारण या ग्रहण करना । विशेष बातों का ज्ञान प्राप्त करना ।

गणना । विचार । जनदेन । व्यवहार । क्रि० कष्ट देना । दुःख या पीडा पहुँचाना ।

कष्ट सहना । दुःख या पीडा सहना ।

कलप-सज्ञा पु० १ बलक । २ खिजात्र ।

३ दे० 'कल्प' ।

कलकल-२० 'कलकल' ।  
 कलकल-१० घ० १ कलकल । कलकल  
 कलकल । \*० कलकल कलकल ।  
 ३० ग० छोटता । काटा ।  
 \*गता स्त्री० दे० "कलकल" ।  
 कलकल-३० ग० जी दुगता । दुगी  
 कलकल । कलकल ।  
 कलकल-वि० "कलकल" । मिथ्या । ब्या-  
 घटी । श्रुति ।  
 कलकल-गता पु० १ मोड़ी । कलकल सेई  
 जिसे मोड़ी कलकल पर ऊपर की तह बड़ी धीरे  
 कलकल कलकल के लिए लगाते हैं । २ भाई ।  
 दोहरे का भावा धिया ।  
 कलकल-गता पु० छन-कलकल । उपाय ।  
 दुका । दौकल ।  
 ग० पु० [ कलकल ] दौकल-गुन ।  
 वि० कलकल (स्वर) ।  
 कलकल-गता पु० १ साँचा । ढाँचा । २  
 परमा । लपटी का यह ढाँचा जिस पर  
 कलकल कलकल मिया जाता है । ३ मुकुन्दगुमा  
 ढाँचा जिस पर रसकल टोपी या फगदी आदि  
 बनाई जाती है । गोलकल । कलकल । ४  
 मेहराब के परमा होने तक उभरे सहारे  
 के लिए भरी हुई ईंट आदि, ऊँट ।  
 कलकल-सजा पु० कलकल । १ हाथी या उसका  
 बच्चा । २ ऊँट का बच्चा । ३ घतूरा ।  
 कलकल-गता पु० स्त्री० [ घ० ] कलकल । १  
 लेकनी । अथवाग में बारीक कटा हुआ लकड़ी  
 का टुकड़ा जिसे स्थाही में दुवाकर लिखत  
 हैं । २ पेड की टहनो जा दूसरी जगह बैठाने  
 या दूसरे पेड में लगाने के लिए काटी जाय ।  
 ३ साठी धान । जड़हन धान । ४ कल-  
 पटियो के पास के बाल । ५ कलकल बनाने  
 या रंग भरने की बाला की बूची । ६  
 शीशे का लया टुकड़ा जो भाड म लटकाया  
 जाता है । ७ रवा । छोरे, नौसावर आदि  
 का जमा हुआ छोटा लया टुकड़ा । ८ वह  
 अस्थ जिससे महीन चीज काटी, सादी या  
 नवासी जाय ।  
 मुहा०-कलकल कलकल=लिखाई होना ।  
 कलकल कलकल=लिखना । कलकल तोड़ना=

घाटी उधिन लिखता । भिन्न की हद कर  
 देता । कलकल कलकल=काटा-छोटा ।  
 कलकल-कलकल=गता पु० पाटा लिख-कलकल  
 भावा का हाथी कलकलकल ।  
 कलकल-गता पु० कलकल । रंग भरने-  
 वाला । कलकल की दलकलारी कलकल ।  
 कलकलारी-गता स्त्री० यह काम जो कलकल  
 में किया जावे । जैसे-कलकली ।  
 कलकल-गता पु० दे० "कलकल" ।  
 कलकल-गता पु० पादू । कलकल बालों  
 की छुरी ।  
 कलकल-गता पु० [पा०] कलकल, कलकल  
 आदि रंगने का लिखा कलकल ।  
 कलकल-वि० ग० दो टुकड़े करना ।  
 काटना ।  
 कलकल-गता या कलकल-गता-वि० ग० १.  
 कलकल । दलने के कारण गता का  
 कलकल-कलकल । छटपटाना । २. कलकल  
 प्रकट करना ।  
 कलकल-गता पु० [घ०] १. कलकल । २.  
 दान । ३. मुगलमानी घमें का मूल मत्र  
 कलकल ।  
 मुहा०-कलकल पढ़ना=१. मुगलमान होना ।  
 २. याद करना । ३. भवन होना ।  
 कलकली-वि० [पा०] १. लिखित । लिखा  
 हुआ । लिपिकल । २. जिसमें कलकल या  
 रवा हो । जैसे, कलकली शारा । ३. जो  
 कलकल लगाने से उत्पन्न हुआ है । जैसे,  
 कलकली धाम ।  
 कलकली-वि० १. कलकलित । दीपी । लाधित ।  
 २. काले मुँहवाला । ३. अभागा ।  
 (गली)  
 कलकली-गता पु० १. कलकल शब्द । २.  
 जनसमूह का शब्द । ३. कलकल । ४.  
 कलकल ।  
 कलकली-गता पु० गर्भाशय में गर्भ की अस्थि ।  
 गर्भ की आच्छादित करनेवाला चर्म ।  
 जरायु ।  
 कलकली-गता स्त्री० कलकली की दूध ।  
 कलकली की दूध ।  
 कलकली-गता पु० शराय बनाने और बेचने-

थाली एव जाति । गुण्डी । तनान ।  
पत्तार ।

कलविक-सज्ञा पु० १. चटव । गोरैया ।  
दाग, धब्बा । २. सफेद चँवर । ३.  
तरबूज ।

कलस-सज्ञा पु० १. गगरा । घडा । २. मंदिरा  
या मवाना पर का बँगूरा । ३. मंदिर  
आदि का शिखर । ४. द्राण या ऽ तेर के  
बरानर का एक नाप । ५. सिरा । चाटी ।  
६. प्रधान अंग । ७. उत्कृष्ट, जैसे—  
रघुकुल-कलस । ८. मन्वा-मात्र । मयानी ।

कलशी-सज्ञा स्त्री० १. छोटा कलगा ।  
गगरी । २. मंदिर का छोटा बँगूरा ।

कलस-सज्ञा पु० १. दे० 'कलश' । २. परि-  
माण विषय । ३. मंदिर आदि का  
कँगूरा ।

कलसा-सज्ञा पु० १. घडा । पानी रखने का  
वस्तु । गगरा । २. चूडा । मंदिर का  
शिखर ।

कलसी-सज्ञा स्त्री० १. छोटा घडा या  
गगरा । २. छोटा शिखर । छोटा बँगूरा ।

कलहतरित, \* कलहतरिता-सज्ञा स्त्री०  
दे० 'कलहातरिता' । वह नायिका जा  
पति से झगडा या उभका अनादर कर  
पछतावे ।

कलहस-सज्ञा पु० १. राजहस । २. हस ।  
३. परमात्मा । ४. श्रेष्ठ राजा । ५. ब्रह्मा ।  
६. वणवृत्त विशय । ७. क्षत्रिया की  
साखा विशय ।

कलह-सज्ञा पु० [वि० कलहकारी कलही]  
१. झगडा । विवाद । लडाई । ब्रड । २.  
विरोध । ३. तलवार की म्यान । ४.  
रास्ता । ५. घोखा, छल । ६. घातक अस्त्र  
के बिना मुद्ध । ७. मारपीट ।

कलहकारी-वि० [स्त्री० कलहकारिणी]  
विवादी । झगडा करनेवाला ।

कलहप्रिय-सज्ञा पु० देवर्षि नारद ।  
वि० [स्त्री० कलहप्रिया] विवाद प्रिय ।  
जिसे लडाई भली लग । झगडातू ।  
लडाका ।

कलहातरिता-सज्ञा स्त्री० नायक या पति

का अपमान करने पीछे पश्चात्तप करने-  
वाली स्त्री ।

कलहारा-वि० लडावा । कलहप्रिय ।  
झगडातू ।

कलहारो-वि० स्त्री० लडावी । झगडातू ।  
कलह करनेवाली । कलशा ।

कलही-वि० [स्त्री० कलहिनी] १. नखरा  
करनेवाली स्त्री । २. झगडातू । लडावा ।

कला-वि० [का०] बडा । दार्ष्टिक्य ।

कला-सज्ञा स्त्री० १. भाग । अंश ।  
सालहवा हिस्सा । २. सूर्य का वारहवाँ

भाग । ३. चंद्रमा का मालहवाँ भाग । ४.  
अग्नि मंडल के दस भागा में से एक ।

५. समय का एक विभाग जो १ मिनट  
में से पड़ का होता है । ६. वृत्त का १८००

वाँ भाग । राशि-चक्र के एक अंश का  
६०वाँ भाग । ७. राशि के तीसवें अंश का

६०वाँ भाग । ८. चिकित्सा शास्त्र के  
अनुसार शरीर की मांस, रक्त आदि सात

धातुएँ । ९. छंद शास्त्र या पिंगल में  
'मात्रा' । १०. मनुष्य के शरीर के १६

आध्यात्मिक विभाग पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ,  
पाँच कर्मेन्द्रियाँ पाँच प्राण और मन । ११.

किसी कार्य को भली भाँति करने का  
कौशल । गुण । दक्षता । हुनर । काम-

शास्त्र के अनुसार ६४ कलाएँ । १२. जीम ।  
जिह्वा । १३. व्याज, सूद । १४. मासिकधर्म,

स्त्री का रज । १५. विभूति । १६.  
प्रभा । शोभा । छात्र । १७. तेज । १८.

लज । कौतुक । लीला । १९. छल । कपट ।  
धोखा । २०. युक्ति । ढग । २१. नटा

की वह कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर  
नीच करके उलटता है । कलेया । डबनी ।

२२. यत्र । पत्र । २३. वणवृत्त विशय ।  
कोई भी ललित कला । २४. अज्ञान ।

२५. धीमी और मीठी आवाज । २६. नाव ।  
कलाई-सज्ञा स्त्री० १. मणिवध । गूँदा ।

प्रकोष्ठ । हाथ का वह भाग जहाँ हथेली  
का जोड़ रहता है । २. हाथी के गल में

बाँधन का कलावा । ३. सूत का लच्छा ।  
करछा । कुचरी ।

कलावर्ष-गंगा पु० [ १० ] मोर घोर  
मिमरी या सारंग की धरणी ।

कलावर-गंगा पु० १ चन्द्रमा । २ वृक्ष-  
विशेष ।

कलावार-गंगा पु० कलापूर्ण कार्य करने-  
वाला जैसे चित्रवार तथा शिल्पवार  
आदि ।

कलाबोशल-गंगा पु० १ किसी कला की  
निपुणता । गुण । हुार । दम्नकारी ।  
कारीमरी । २ शिप ।

कलादा\*-गंगा पु० कलावा । किलावा ।  
हाथी की गर्दन पर महावत के बैठने  
का स्थान ।

कलापर-गंगा पु० १ शशि । चन्द्रमा ।  
२ दहन छद का भेद । ३ शिव ।  
४ कलाविज्ञ ।

कलाना-त्रि० सं० भूना । अकौरना ।

कलानाय-सज्ञा पु० १ चन्द्रमा । २ गन्धर्व  
विशेष ।

कलानिधि-सज्ञा पु० शशि । चन्द्रमा । इदु ।

कलाप-सज्ञा पु० १ झुंड । समूह ।

जैसे-प्रिया-कलाप । २ मोर की पूछ ।

३ तूण । तरवार । ४ मुट्ठा । पूला ।

५ कमरबंद । पेटी । करघनी । ६ चन्द्रमा ।

७ कलाया । ८ चतुर व्यक्ति । ९ हाथी

के गले की रस्ती । १० वातय व्याकरण ।

११ व्यापार । १२ आभरण । भूषण ।

१३ ग्राम विशेष । १४ वेद-शास्त्र ।

१५ अर्द्धनन्दाकार अस्त्र । १६

रागिनी विशेष ।

कलायक-सज्ञा पु० १ समूह । मुट्ठा ।

२ पूला । ३ हाथी के गले का

रस्ती । ४ मयूर । ५ चार श्लोको

का समूह । ६ कविनामों के अर्थ करने

की रीति । ७ मोती की माला । ८

तिलक । सप्रदाय का शापक तिलक ।

कलापट्टी-सज्ञा स्त्री० जहाजों की पटरियों की

सधियों को सन आदि से बन्द करने की

क्रिया ।

कलापिन-सज्ञा स्त्री० १ मोरनी । २.

रात्रि । ३ नागरमीया ।

कलापिनी-गंगा स्त्री० १ रात्रि ।

२ मोरनी । मयूरी । ३ चन्द्रमा ।

कलापी-गंगा पु० [ स्त्री० कलापिनी ]

१ मोर, मयूर । २ कोकिल । ३ वरगद

या वृक्ष । ४ वैशम्पायन का एक निप्य ।

धि० १. तूणींग धाँधे हुए । तरवारबंद ।

२ झुंड में रहनेवाला ।

कलापूर्ण-सज्ञा पु० पूर्णिमा का चन्द्रमा । प्रसिद्ध

शिल्पी ।

कलायतू-सज्ञा पु० [ तु० कलायतू ] [ वि०

कलायतूनी ] १ साने-चौड़ी आदि का तार

जो रेशम पर चढ़ाकर बटा जाय । २

साने-चौड़ी के कलायतू का बना हुआ

पतला पीता जो बपटो पर टाँका जाता है ।

कलाबाज-वि० नट । कलावाजी करनेवाला ।

कलाबाजी-सज्ञा स्त्री० बलैया । सिर

नीच करके जगट जाना । टेकली ।

कलाभूत-सज्ञा पु० शशि । चन्द्रमा ।

कलाम-सज्ञा पु० [ झ० ] १ उज्जिन । वाक्य ।

२ कथन । बातचीत । ३ प्रतिज्ञा । वादा ।

४ आपत्ति । एतराज ।

कलामुख-सज्ञा पु० चन्द्रमा ।

कलार-सज्ञा पु० दे० "कलवार" । गुण्डी ।

कलारिन-सज्ञा स्त्री० कलवार की स्त्री । कल-

वारिन ।

कलाव-सज्ञा पु० [ स्त्री० कलावी ] कलार ।

कलवार । मद्य वपनवाता ।

कलावत-सज्ञा पु० १ नट । कलावाजी

करनेवाला । २ गवैया । संगीत में

निपुण ।

वि० कलावती को जाननेवाला । कथक ।

कलावती-वि० १ जिसमें कला हो । २

शाभायुक्त । खिवाली ।

कलावा-सज्ञा पु० [ स्त्री० कलाई ]

१ सूत का लच्छा ( जो तबल पर लिपटा

रहता है ) । २ साल पीले सूत का सागा

का लच्छा जिसे किलाट आदि धुम अबतरा

पर हाथ या घडा पर बाँधते हैं । ३

हाथी की गरदन ।

कलायान्-वि० [ स्त्री० कलावती ] भुष-

यान् । कला-बुशल । चतुर ।

कलिंग-संज्ञा पु० १. कुलंग । मटमले  
'राग का पक्षी-विशेष । २. कुटज । कुरैया ।  
३. सिरिस का पेड़ । ४. इंद्रजी । ५.  
तरबूज । ६. पाकर का पेड़ । ७. कलि-  
गड़ा राग । ८. समुद्रतटस्थ देश-विशेष  
जिसका विस्तार गोदावरी और वेंतरणी  
नदी के बीच में था ।

वि० कलिंग देश का ।

कलिंगड़ा-संज्ञा पु० १. राग-विशेष जो  
दीपक राग का पुत्र माना जाता है । २.  
कलिंग देश का वासी ।

कलिजर-संज्ञा पु० दे० "कालिजर" । एक  
प्राचीन पर्वत जो मुन्देलखंड के अन्तर्गत करवी  
के पास कालिजर नाम से प्रसिद्ध है ।

कलिद-संज्ञा पु० १. सूर्य । २. वहेड़ा ।  
३. पर्वत-विशेष जिससे यमुना नदी  
निकली है ।

कलिदजा-संज्ञा स्त्री० यमुना नदी ।

कालिदी\*—संज्ञा स्त्री० दे० "कालिदी" ।  
यमुना ।

कलि-संज्ञा पु० १. वहेड़े का बीज या फल ।  
२. विवाद । झगड़ा । कलह । ३. पाप ।  
४. कलियुग । ५. छद में टगण का भेद-  
विशेष । ६. वाण । तीर । ७. घोर । सूरमा ।  
८. कलेश । दुख । ९. युद्ध । सग्राम ।  
१०. शिव का नाम ।

वि० काला । श्याम ।

कलिका-संज्ञा स्त्री० १. कली । फूल जो खिला  
न हो । २. बीणा का मूल, नीचे का भाग ।  
३. कोपल । ४. प्राचीन बाल का बाजा ।  
छद-विशेष । ५. कलौजी । ६. मुहूर्त ।  
७. अश ।

कलिकाल-संज्ञा पु० कलियुग ।

कलित-वि० १. विभक्त । विभुक्त । पृथक्कृत ।  
२. ज्ञात । विदित । रखात । ३. अव्यक्त  
रूप से उक्त । ४. गृहीत । प्राप्त ।  
५. सजाया हुआ । रचित । बनाया हुआ ।  
सुरजित । ६. सुंदर । चंचिर । मनोहर ।  
७. मधुर ।

कलिमल-संज्ञा पु० कलिकाल के कर्म । पाप ।  
कलुष ।

कलिमल सरि-संज्ञा स्त्री० कमेनासा नदी ।  
कलिपा-संज्ञा पु० मांस जो भूनकर रसेदार  
बनाया जाय ।

कलिमाना-कि० अ० १. फूलना । कली  
सेना । कलियों से युक्त होना । २. चिड़ियों  
के नये पक्ष निकलना ।

कलिपारो-संज्ञा स्त्री० पोधा-विशेष जिसकी  
जड़ में विष रहता है ।

कलिपुग-संज्ञा पु० वर्तमान युग । कलिकाल ।

कलिपुगी-वि० १. कुप्रवृत्तिवाला । दुरा-  
चारी । बुरा । २. कलियुग का ।

कलिपुगाद्या-संज्ञा स्त्री० माघ की पूर्णिमा  
जिससे कलियुग का आरम्भ हुआ था ।

कलिल-संज्ञा पु० पक । कीचड़ । चहला ।  
दलदल ।

वि० भरा । ढका । मिला हुआ । मिश्रित ।  
दुर्गम । अभेद्य । घना । ढेर ।

कलिबर्ज्य-वि० वह कृत्य जिसे करना कलियुग  
में वर्जित हो । जैसे अश्वमेध या देवर से  
पुनोत्पत्ति कराना ।

कलिहारी-संज्ञा स्त्री० दे० "कलियारी" ।

कली-संज्ञा स्त्री० १. छोटी । घिला खिला  
फूल । कलिका । मुँह-बँधा फूल । २. वह  
कपड़ा जो कुर्ते, अंगरखे आदि में लगाकर  
कलीदार कुर्ता बनता है । ३. चिड़ियों  
का नया निकला हुआ पर । ४. हुक्के का  
नीचे का भाग ।

संज्ञा स्त्री० पत्थर या सीप आदि का फुटा  
हुआ टुकड़ा जिससे चूना बनता है ।  
जैसे—कली का चूना ।

मुहा०—दिल की कली खिलना=आनंदित  
होना । चित्त प्रसन्न होना ।

कलीदा-संज्ञा पु० तरबूज ।

कलीट-वि० काला-कलूटा ।

कलीरा-संज्ञा पु० [ देश० ] कीड़ियों और  
छुहारे की माला, जो कुछ जातियों में  
बिवाह आदि में दी जाती है ।

कलील-संज्ञा पु० [ अ० ] कम । थोड़ा ।

कलीसिया-संज्ञा पु० [ यू० इक्लिजिया ]

ईसाइयो या यहाँदियों की धर्ममंडली ।

कलुवा घोर-संज्ञा पु० एक निकृष्ट देवता—

जिसकी दुहाई सत्वर मंत्रों में दी जाती है।

कलुष-गङ्गा पु० [ वि० कलुषित, कलुषी ]

१. एक तरह का गर्प । २. पाप । दाप ।

३. मलिनता । मैल । ४. प्रोष ।

वि० [ स्त्री० कलुषा, कलुषी ] १. मलिन ।

मैला । गँदला । २. अपाय । गमताहीन ।

३. पापी । दोषी । ४. निदिन । ५. वर्षा

(जंगे सद्य) ।

कलुषार्ह-गङ्गा स्त्री० १. चित्त का विषाद ।

२. बुद्धि की मलिनता ।

कलुषित-वि० १. दूषित । २. पानकी ।

३. मलिन । मैला । ४. दुषित । ५.

पापी । ६. क्षुभित । ७. काला ।

कलुषी-वि० १. पापिनी । दोषी । २. गदी ।

मलिन । मैली ।

वि० १. मैला । मलिन । गदा । २. दोषी ।

पापी ।

कलुषा-वि० [ स्त्री० कलूटी ] १. काला ।

कोले रंग का । २. वृक्ष ।

कलेज-सज्ञा पु० दे० "कलेजा" । प्रातःकाल

का जलपान ।

कलेजा-सज्ञा पु० १. अंत-विशेष । प्राणियों

का वह अवयव जो छाती के भीतर बाई

ओर होता है और जिससे नाड़ियों के सहारे

शरीर में रक्त का संचार होता है । २.

हृदय । दिल । ३. वक्षस्थल । छाती । ४.

उत्साह । ५. हृदय की दृढ़ता । ६. साहस ।

जीवट । हिम्मत ।

मुहा०-१. कलेजा उलटना=१ उलटी करते

करते जो ध्वराना । २. होश का न रहना ।

कलेजा कांपना=धनुताप करना । दूसरे

की उन्नति न सहना । डर लगना । जी

दहलना । ३. कलेजा जलाना=दुख देना ।

४. कलेजा टूट टूट होना=शोक से हृदय

धिरीर्ण होना । ५. कलेजा ठंडा करना=

सतोष देना । तुष्ट करना । अभिलाषा

की पूर्ति करना । ६. कलेजा पामवर बैठ

या रह जाना=शोक के जेग को दबाकर रह

जाना । मन मसोखकर रह जाना ।

७. कलेजा धक धक करना=भय से धक्काना

८. कलेजा धकना=१. भय में व्याकुल

होना । डर से जी कांपना । २. चिन्त में

चिता होना । जी में खटका होना । १.

कलेजा निवाचनर रखना=मर्पेस्व दे देना ।

अत्यंत प्रिय वस्तु समर्पण करना । १०.

कलेजा पच जाना=दुख सहने सहने तप

आ जाना । ११. पत्थर का कलेजा=१.

दुख सहने में समर्थ हृदय । बड़ा जी । २.

कठार चित्त । १२. कलेजा पत्थर का करना

=भारी दुःख भोगने के लिए चित्त का

दगाना । १३. कलेजा फटना=बिस्ती के दुःख

को देखकर मन में अत्यंत खट होना ।

अधिक दुःख से व्याकुल होना । १४. कलेजा

वाँसो, बल्लिया या हाथी उछराना=१.

आनंद से चित्त प्रफुल्लित होना । २. भय

या आशंका से जी धक-धक करना ।

१५. कलेजा बैठ जाना=हतोत्साह होना ।

१६. कलेजा मुंह को या मुंह तक आना=

१ व्याकुलता होना । जी धक्काना ।

जी उकताना । २. सताप या दुख होना ।

दुख से पचाना । १७. कलेजा हिलना=

अपत भय होना । कलेजा कांपना ।

१८. कलेजे पर सांप लोटना=बिस्ती बात

के स्मरण से एकवारगी शोक छा जाना ।

अनुत्पन्न होना । १९. कलेजे से लगाना=

आलिंगन करना । छाती या गले से

लगाना । अत्यंत प्रेम करना । २०. कलेजे

पर पत्थर रखना=दुख को जैसे जैसे सह

लेना । २१. कलेज में डाल रखना=बहुत

चाहना । किसी बात को छिप्रा रखना ।

२२. कलेजा होना=साहस होना, धीरता या

साहस का आधिक्य होना । जैसे, तुम्हारा

ही कलेजा है कि सह लिया ।

कलेजी-सज्ञा स्त्री० कलेजे का मांस

(बकरे आदि का) ।

कलेवर-सज्ञा पु० १. देह । शरीर ।

भग । बाया । २. ठोका । ३. मोटा,

स्वस्थ होना । ४. भूति पर के सिद्धर

आदि के लेप का पुराना चप्पड़ उतरना ।

मुहा०-कलेवर बदलना=१ एक शरीर

छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना । २. स्व-

परिवर्तन । ३ जगन्नाथजी की पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति का स्थापित होना ।

कलेवा-सज्ञा पु० १ प्रातःकाल का जलपान । हलवा भोजन जो सबेरे वासी मुंह दिया जाता है । नहारी । २ पायेय । सबल । वह भोजन जो यानी घर से चलते समय बांध लते हैं । ३ विवाह की रीति विशेष जिसमें घर समुराल म भाजन करने जाता है । ४ खिचड़ी । ५ वासी ।

मुहा०-कलेवा करना= खा जाना । निगल जाना । मार डालना ।

कलेस\*-सज्ञा पु० द० 'कलेश' । दुख । कष्ट । आपत्ति । विवाद ।

कलेया-सज्ञा स्त्री० कलावाजी । सिर नीचे और पैर ऊपर करके उलट जाने की क्रिया ।

कलो-सज्ञा स्त्री० ओसर । जवान गाय जो बरवाई या ब्याई न हो ।

कलोल-सज्ञा पु० वल्लोल । विनोद । खल-कुद । आमोद प्रमोद । शीड़ा । केलि ।

कलोलना\*-नि० अ० विनोद करना । शीड़ा करना । आमोद प्रमोद करना ।

कलोलिनी-सज्ञा स्त्री० १ कलोलिनी । २ प्रवाह से बहनेवाली नदी । ३ तरंगिणी । ४ खलनवाली नदी ।

कलौजी-सज्ञा स्त्री० १ पौधा विशेष । २ इसकी फलियों के गहीन काल दान जो मसाल के काम में आते हैं । मँगरेला । ३ तरकारी विशेष । मरगल । ४ औषध विशेष । ५ कच्च आम की भाजी ।

कलौस-वि० क्यामता या कालापन लिय हुए । सियाही-मायल ।

सज्ञा पु० १ कालापन । २ कलव ।

कलक-सज्ञा पु० १ बुकनी । कूर्ण । २ गुदा । ३ पीठी । ४ पाखंड । दभ । ५ भूखता । शठता । ६ कीट । ७ पाप । ८ मल । बिछा । ९ अवलह । गोली या भिंगोई हुई ओषधिया को पीसकर बनाई हुई चटनी । १० बहेडा । ११ कान

का मेल ।

वि० पापी । बुरा ।

कल्पफल-सज्ञा पु० अनार ।

कल्कि या कल्की-सज्ञा पु० विष्णु का दसवाँ अवतार, जो समल (मुरादाबाद) में किसी कुमारी कन्या के गर्भ से होगा ।

वि० पापी । अपराधी ।

कल्प-सज्ञा पु० १ उपाय । विधान । विधि । २ कृत्य । जैसे, प्रथम कल्प । ३ वेद के प्रधान छ अंगों में से एक जिसमें यज्ञादि वे करने का विधान है । वर्मकांड । ४ प्रातःकाल । ५ रोग दूर करने का उपाय या युक्ति । जैसे, केश-कल्प, क्या-कल्प (वेद्यक) । ६ विभाग । प्रकरण । ७ काल या एक विभाग जिसे ब्रह्मा का एक दिन कहते हैं और जिसमें १४ मन्वन्तर या ४३२००००००० वर्ष होते हैं । ८ प्रलय । ९ अभिप्राय । १० शास्त्र विशेष । वि० समान । तुल्य । बराबर । जैसे, देवकल्प । योग्य । उचित ।

कल्पक-सज्ञा पु० १ कचूर । २ नाई । वि० १ रचनवाला । २ कल्पना करनेवाला । तर्कज्ञानी । ३ काटनवाला ।

कल्पकार-सज्ञा पु० धर्म शास्त्र का रचयिता ।

कल्पतरु-सज्ञा पु० १ कल्पवृक्ष । देवतरु । २ दाता ।

कल्पद्रुम-सज्ञा पु० १ कल्पवृक्ष । २ अभिलिखित फल देनेवाला ।

कल्पना-सज्ञा स्त्री० १ सजावट । रचना । बनावट । २ शक्ति विशेष जो मन में एसी बातें या दृश्य उपस्थित करे जिन्हें नवीं से न देखा हो । उद्भाषना । अनुमान । ३ ग्रथ्याराप । किसी वस्तु में अन्य वस्तु का आराप । ४ मान लना । ५ सोची हुई या मनगढ़त बात । ६ आकार, शकल ।

कल्पपादप-सज्ञा पु० वल्पवृक्ष ।

वल्पलता-सज्ञा स्त्री० दे० 'वल्पवृक्ष' ।

वल्पवात-सज्ञा पु० माघ मास भर गया या किसी पवित्र नदी के तट पर धर्मोपकरण के लिए रहना ।

कल्पवृक्ष-गजा पु० १ 'कल्पतरु'। देवनों का एक वृक्ष जो गन्ध कुश्र देनवाना माना जाता है। २ गौरव। इमली। मय पेड़ों में बड़ा और दीर्घजीवी एक वृक्ष।

कल्पसूत्र-गजा पु० १ वैदिक कर्मकाण्ड का ग्रन्थ। वे ग्रन्थ जिनमें यज्ञादि का विधान हो।

कल्पात-सज्ञा पु० युगात्। प्रलय। महार-काल। ब्रह्मा या दिनावसान।

कल्पात स्थायी-वि० नित्य। स्थायी। अक्षय।

कल्पित-वि० १ रचित। जिनकी कल्पना की गई हो। २ मनमाना। मिथ्या प्रशसित। मनगढ़त। ३. आरोपित। पञ्जों। ४. सुसज्जित। ५ नियमित। ६ मुद्र के लिए सज्जित हाथी। ७ बनावटी। वृत्रिम। नकली।

कल्मष-सज्ञा पु० १ अधर्म। पाप। २ मल। मल। ३ अपराध। ४ मवाद। पीव। ५ नरक विनोप।

वि० काले धब्बोंवाला।

कल्माष-वि० १ चित्तकवरा। रगधिरगा। २ चित्रवर्ण। ३ काला। ४ एक तरह का चावल। ५ मृग विषाप। ६ घन्टा, दाग।

कल्प-सज्ञा पु० १ प्रातःकाल। सवेरा। भोर। २ मधु। शराव। ३ आगवाला या व्यतीत दिन।

वि० स्वस्थ। राग-हीन। चतुर। तत्पर। तैयार। उचित। उपदेशयुक्त। बहग एक भुंगा व्यक्ति।

कल्पपाल-सज्ञा पु० कलवार। शगन वचने या धनानेवाला।

कल्पा-सज्ञा स्त्री० कलोर। वरदाने के योग्य चक्षुष्या। प्रशस्ता। शुभेच्छा। मध्य-विशेष।

कल्पाण-सज्ञा पु० स्वर्ग। १ कुशल। मंगल। शुभ। भलाई। २ स्वर्ण। मोना। ३ राग विशेष।

वि० [स्त्री० कल्पाणी] उत्तम। सुंदर। लाभकर। भला। अच्छा।

कल्पाणभार्य-सज्ञा पु० वह पुरुष जो बार-बार विवाह कर विधु उसकी स्त्री मर मर जाय।

कल्पाणवर्मन्-सज्ञा पु० बराहमिहिर के समवा-लीन एक प्रसिद्ध ज्योतिषी।

कल्पाणी-वि० १ जो कल्पाण नरे। २ सुंदरी।

मज्ञा स्त्री० १ गाय। २ मापपर्णी ३ एक रागिनी।

कल्पाण\*†-सज्ञा पु० दे० "कल्पाण"।

कल्ल-वि० बधिर। बहिर।

कल्लर-सज्ञा पु० १ रेह। २ नौनी मिट्टी। ३ ऊसर। धरर। ४ धार।

कल्लांच-वि० [तु० क-गाध] १ बदमाश। लुच्चा। गुडा। मोहका। २ बरिद। मिथन। कगल।

कल्ला-सज्ञा पु० १ किल्ला। अकुर। २ नवीन हरी दहनी। ३ लप वा सिरा जिसमें बत्ती जलती है। बरंग।

सज्ञा पु० [फा०] १ जवडा। गाल के भीतर का अंग। २ घेंटुआ। जवडे के नीचे गले तक का स्थान।

कल्लातोड-वि० १ प्रबल। मुंहनोड। २ धरावर का। जोड-तोड का।

कल्लादराज-वि० [फा०] [सज्ञा कल्ला-दगजी] जो बड़-बड़कर बात करे। मुंहजोर।

कल्ला-†-क्रि० अ० जलन पड़ना। तबका के ऊपर ही ऊपर जलन के साथ पीडा का अनुभव।

मज्ञा स्त्री० जनत। दहन।

कल्लापरवर-सज्ञा पु० एक प्रकार का भुंजा चबेना।

कल्लोत्त-सज्ञा पु० १ तरंग। पानी की बड़ी लहर। २ अतिरूप की हिलोर। ३ फ्रीडा। आमोद प्रमोद। ४ शत्रु।

वि० शत्रुभाववाला।

कल्लोलिनी-सज्ञा स्त्री० धारा के साथ बहने वाली नदी। धारा। नदी।

कल्ल†-क्रि० वि० दे० "कल"।

कलहण-सज्ञा पु० कस्मीरनिवासी एक सद्धत कवि जिन्होंने राजतरंगिणी की रचना की है। इनका समय ११४८ ई० निर्दिष्ट किया गया है।

कलहरना\*—क्रि० अ० भुनना । कड़ाही म तला जाना ।

कलहरना\*—क्रि० स० कड़ाही में तलना या भुनना । क्रि० अ० १ चिल्लाना । २ दुःख से कराहना ।

कवच-सज्ञा पु० [वि० कवची] १ लोहे की बड़ियों के जाल का निर्मित पहनावा जिसे थोड़ा लड़ाई के समय पहनते थे । जिन्हें वखतर । सनाह । सजोया । २ आवरण । ३ छाल । छिलका । ४ तनसारन का अंग विशेष जिसमें मनो द्वारा शरीर के अंगों की रक्षा की जाती है । ५ रक्षा-मन्त्र लिखा हुआ ताबीज विशेष । ६ डका । बड़ा नगाड़ा जो युद्ध में बजता है । पटह । ७ धर्म ।

कवन-अव्य० कौन ।

कवर-सज्ञा पु० कौर । आस । निवाला । सज्ञा पु० [स्त्री० कवरी] १ गुच्छा । २ केलापास ।

कवरी-सज्ञा स्त्री० स्त्रिया के सिर की चोटी । जूटा ।

कवर्ग-सज्ञा पु० [वि० कवर्गीय] क से छ तक के अक्षर ।

कवल-सज्ञा पु० १ वीर । आस । गम्मा । निवाला । जतनी वरतु जितनी एक धार में खाने या पीने के लिए मुँह में ली जाय । २ वृत्ती ।

सज्ञा पु० [स्त्री० कवली] १ पक्षी विनाय । २ पाटे की जाति विशेष ।

कवलित-वि० एक कौर में खाया या पिया हुआ । भस्त । खाया हुआ । भक्षित ।

मृहा०—नालयकवित्त=मृत । मर गया ।

कवलीकृत-वि० अधीनीकृत । भस्त । भुस्त ।

कवय-सज्ञा पु० १ रात । २ एक ऋषि का नाम ।

कवाम-गन्ता पु० [य०] १ सीरा । चासनी । २ पावर पद की तरह गाढ़ा किया हुआ रस । नियाम ।

कदापद-सज्ञा स्त्री० [य०] १ व्यवस्था । नियम । २ व्याकरण । ३ सेना के

युद्ध करने के नियम । ४ सैनिकों के युद्ध-नियमों का अभ्यास । परेड ।

कवि-सज्ञा पु० १ काव्य की रचना करनेवाला । जो कविता करे । २ ब्रह्मा । ३ शुनाचार्य । ४ सूर्य । ५ ऋषि । ६ बुद्धिमान् । प्रज्ञायुक्त । विचारक । ७ अग्नि । ८ गायक । ९ वरुण । १०. सीमा । ११. चतुर थोड़ा । १२. लगाम । १३ गडित । १४ उल्लू ।

कविक-सज्ञा स्त्री० लगाम । केवडा ।

कविका-सज्ञा स्त्री० १ लगाम । २ केवडा । ३ कवाई मछली ।

कविता-सज्ञा स्त्री० दूसरे के सुख-दुःख का पाठक को अनुभव करा देनेवाला पद्य या गद्य । काव्य । कवित । श्लोक । छंद । पद्य ।

कविताई\*—सज्ञा स्त्री० दे० "कविता" । पद्य-रचना । काव्य करने का गुण । कवित्व ।

कवित्त-सज्ञा पु० १ काव्य । कविता । २ वृत्त विशेष जिसमें ३१ अक्षर होते हैं ।

कवित्व-सज्ञा पु० १ कविता करने की शक्ति । २ काव्य का गुण ।

कविभासा\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'वर्मेनाशा' ।

कविराज-सज्ञा पु० १ भाट । २ श्रद्ध कवि । ३ बंगाली बैशा की उपाधि ।

कविराज-सज्ञा पु० दे० 'कविराज' ।

कवितास\*—सज्ञा पु० १ स्वर्ग २ कलास ।

कविशेखर-वि० महान् कवि ।

कवेला-सज्ञा पु० कोए का वृक्षा ।

कव्य-सज्ञा पु० पिंड, पितृ-यज्ञादि के योग्य अन्न या द्रव्य ।

वि० बुद्धिमान् ।

कव्यवाह-सज्ञा पु० अग्नि विशेष जिसमें पितृयज्ञ की आहुति दी जाती है ।

कन-सज्ञा पु० [स्त्री० कना] चादुर ।

सज्ञा पु० [पा०] १ आकर्षण । विचार ।

यो०—गन्त-मगना । २ पूरा । हुनरे का चित्रण का दम ।

कनरोच-गन्ता पु० दे० 'रजनीच' ।

कनमकश-गन्ता स्त्री० [पा०] १ कनम-धारा । भीड़ । २ एकाग्रता । गीता-

कल्पवृक्ष-गङ्गा पु० १ 'कल्पवृक्ष'। देवकी का एक वृक्ष जो सब बुद्ध देनेवाला माना जाता है। २ गोग्र इमली। मय पेठा मे बड़ा घोर दीर्घजीवी एक वृक्ष।

कल्पवृक्ष-गङ्गा पु० १ वैदिक कर्मकाण्ड का ग्रन्थ। वे ग्रन्थ जिनमें यज्ञादि का विधान हो।

कल्पात-सङ्गा पु० युगात्। प्रलय। सहार-पात। ब्रह्मा का दिनावसान।

कल्पात-स्यायी-वि० नित्य। स्यायी। ग्रन्थ।

कल्पित-वि० १ रचित। जिसकी कल्पना की गई हो। २ मनमाना। मिथ्या प्रकाशित। मनगढ़त। ३. आरोपित। फर्जी। ४. सुसज्जित। ५ नियमित। ६ युद्ध के लिए सज्जित हाथी। ७ बनाबंदी। कृत्रिम। नकली।

कल्मष-सङ्गा पु० १ अधर्म। पाप। २ मेल। मल। ३ अपराध। ४ भवाद। पीव। ५ नरक विशेष। वि० वाले धन्वावाला।

कल्मष-वि० १ चित्तवृत्त। रगविरगा। २ चित्रवर्ण। ३ काल। ४ एक तरह का चावल। ५ भृगु विशेष। ६ धन्वा, दाग।

कल्मष-सङ्गा पु० १ प्रातःकाल। सवेरा। भोर। २ मधु। शराब। ३ आनवाना या व्यतीत दिन।

वि० रक्त्वर्ष। रोग-हीन। चतुर। तत्पर। तैयार। उचित। उपदेशयुक्त। बहुरा एक गुंठा व्यक्ति।

कल्मषपात-सङ्गा पु० कलवार। शराब बेचने या बनानेवाला।

कल्पा-सङ्गा स्त्री० कलोर। वरदान के योग्य बद्धिया। प्रशंसा। शुभेच्छा। मद्य विशप।

कल्पाण-सङ्गा पु० स्वर्ग। १ कुशल। मंगल। शुभ। भलाई। २ स्वर्ण। माना। ३ राग विशेष।

वि० [स्त्री० कल्पाणी] उत्तम। सुंदर। लाभकर। भला। अच्छा।

२. कल्पाणभार्य-सङ्गा पु० बहू पुरुष जा बार-बार विवाह करे किन्तु उसकी स्त्री मर मर जाय।

कल्पाणवर्मन्-सङ्गा पु० वगहमिहिर के ममका-लीन एक प्रसिद्ध ज्योतिषी।

कल्पाणी-वि० १ जो कल्पाण करे। २ सुंदरी।

मङ्गा स्त्री० १ गाथ। २ मापपर्णी ३ एक रागिनी।

कल्पाण\*†-सङ्गा पु० दे० "कल्पाण"।

कल्पा-वि० वधिर। बहिर।

कल्पा-सङ्गा पु० १ रेह। २ नोनी मिट्टी। ३ ऊमर। यजर। ४ धार।

कल्पांच-वि० [तु० कल्पाच] १ वदमाश। मुच्चा। गुडा। दोहदा। २ दरिद्र। निर्धन। कगाल।

कल्पा-सङ्गा पु० १ किरना। अचुर। २ नवीन हरी दहनी। ३ लप का सिरा जिसमें बत्ती जलती है। वनर। सङ्गा पु० [फा०] १ जवड़ा। गाल के भीतर का अंग। २ घेंटुआ। जवड़ के नीचे गले तक का स्थान।

कल्पातोड-वि० १ प्रबल। भूतनाड। २ बराबर का। जोड़-तोड़ का।

कल्पादराज-वि० [फा०] [सङ्गा कल्पा-दराजी] जो बड़-बड़कर बाने करे। भुंजोर।

कल्पागा-वि० अ० जलन पड़ना। खचा के ऊपर ही ऊपर जलन के साथ पीड़ा का अनुभव।

सङ्गा स्त्री० जलग। बहन।

कल्पापरवर-सङ्गा पु० एक प्रकार का भुंजा चपेना।

कलोल-सङ्गा पु० १ तरंग। पानी की बड़ी लहर। २ अतिहृष की हिलार। ३ शीड़ा। आमोद प्रसाद। ४ दानु।

वि० दानुभाववाला।

कलोलिनी-सङ्गा स्त्री० धारा के साथ बहने वाली नदी। धारा। नदी।

कल्ह†-वि० दे० "कल्ह"।

कल्हण-सङ्गा पु० कश्मीरनिवासी एक संस्कृत कवि जिन्होंने राजतरंगिणी की रचना की है। इनका समय ११४८ ई० निश्चित किया गया है।

कलहरना\*—क्रि० अ० मुनना । कड़ाही में तला जाना ।

कलहरना†—क्रि० स० कड़ाही में तलना या भूनना । क्रि० अ० १ चिल्लाना । २ दुख से कराहना ।

कवच-सज्ञा पु० [वि० कवची] १ लोहे की कड़ियों के जाल का निर्मित पहनावा जिसे योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे । २ जिरह वस्त्र । ३ सनाह । ४ संजोया । ५ आवरण । ६ छाल । ७ छिलका । ४ तन्त्रशास्त्र का अंग-विशेष जिसमें मनो द्वारा शरीर के अंगों की रक्षा की जाती है । ५ रक्षा-मन्त्र लिखा हुआ ताबीज विशेष । ६ डवा । बड़ा मगाड़ा जो युद्ध में बजता है । पट्ट । ७ घर्म ।

कवन-अव्य० कौन ।

कवर-सज्ञा पु० कौर । आस । निवाला । सज्ञा पु० [स्त्री० कवरी] १ गुच्छा । २ केशपाश ।

कवरी-सज्ञा स्त्री० स्त्रियों के सिर की चोटी । जूड़ा ।

कवर्ग-सज्ञा पु० [वि० कवर्गीय] क मे ड तव के अक्षर ।

कवल-सज्ञा पु० १ कौर । आस । गम्भा । निवाला । उतनी वस्तु जितनी एक बार में गाने या पीने के लिए मुँह में ली जाय । २ कुली ।

सज्ञा पु० [स्त्री० कवली] १ पथी-विशेष । २ छोटे की जानि विशेष ।

कवलित-वि० एक कौर में खाया या पिया हुआ । श्रुत । खाया हुआ । नष्ट ।

मृश-यातनवलित=मृत । मर गया । कवलौह-वि० धर्षनीहृत् । श्रुत । भुन ।

कवय-सज्ञा पु० १ दात । २ एक ऋषि का नाम ।

प्रचाम-सज्ञा पु० [घ०] १ दीरा । चाकनी । २ पचाकर गहद की तरह गाढ़ा किया हुआ रस । चिचाम ।

प्रचापद-सज्ञा स्त्री० [घ०] १ व्यवस्था । नियम । २ व्याकरण । ३ सेना के

युद्ध करने के नियम । ४ सैनिकों के युद्ध-नियमों का अभ्यास । परेड ।

कवि-सज्ञा पु० १ काव्य की रचना करनेवाला । जो कविता करे । २ ब्रह्मा । ३ शुक्राचार्य । ४ सूर्य । ५ ऋषि । ६ बुद्धिमान् । प्रज्ञायुक्त । विचारक । ७. अग्नि । ८. गायक । ९. वरुण । १०. सोम । ११. चतुर योद्धा । १२. लगाम । १३ पडित । १४ उल्लू ।

कविक-सज्ञा स्त्री० लगाम । केवडा । कविका-सज्ञा स्त्री० १ लगाम । २ केवडा । ३ कवई मछली ।

कविता-सज्ञा स्त्री० दूसरे के सुख-दुख का पाठक को अनुभव करा देनेवाला पद्य या गद्य । काव्य । कवित्त । श्लोक । छंद । पद्य ।

कविताई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "कविता" । पद्य-रचना । काव्य करने का गुण । कविव । कवित्त-सज्ञा पु० १ काव्य । कविता । २ वृत्त विशेष जिसमें ३१ अक्षर होते हैं ।

कवित्व-सज्ञा पु० १ कविता करने की शक्ति । २ काव्य का गुण ।

कवितासा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "कर्मनाशा" । कविराज-सज्ञा पु० १ भाट । २ श्रेष्ठ कवि । ३ बगाली पैदा की उपाधि ।

कविराय-सज्ञा पु० दे० "कविराज" । कविलास\*-सज्ञा पु० १ स्वर्ग । २ विलास ।

कविशेखर-वि० महान् कवि । कवेली-सज्ञा पु० कौर का वच्चा ।

कव्य-सज्ञा पु० पिंड, पितृ-यज्ञादि के योग्य अन्न या द्रव्य ।

वि० बुद्धिमान् । कव्यवाह-सज्ञा पु० अग्नि विशेष जिसमें पितृयज्ञ की आहुति दी जाती है ।

कश-सज्ञा पु० [स्त्री० कशा] चाबुक । सज्ञा पु० [फा०] १ माकर्षण । खिंचाव ।

यौ०-कश मकश । २ फूंक । हुक्के या चिलम या दम ।

कशकोल-सज्ञा पु० दे० "कजकोल" । कशमकश-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ बक्कस-धक्का । भीड़ । २ ऐचावानी । खीचा-

- तानी । ३. आगा-मीछा । ४. मोच-विचार ।
- कशा-मज्ञा पु० धूस विशेष । कन्नार ।
- सज्ञा स्त्री० १. रम्पी । २. मोटा । चाबुक ।
३. नगाम । ४. मुर, चेहरा ।
- कशाघात-मज्ञा पु० चाबुक का प्रहार । मोटा मारना ।
- कशाह-वि० कशाघात के योग्य । काड़ा मारने के उपयुक्त । अपराधी । दोषी ।
- कशिपु-मज्ञा पु० १. तपिया । २. विछोना । ३. अन्न । ४. भात । ५. आसन । ६. तपिय की खाली । ७. वस्त्र ।
- कशिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] खिचाव । आकर्षण ।
- कशीदा-मज्ञा पु० [फा०] कपड़े आदि पर बेल-बूटे ।
- कशेर-सज्ञा पु० कद विशेष । तुणकद ।
- कश्चित्-वि० कोई । कोई-एक । सर्व० कोई (व्यक्ति) ।
- कस्ती-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. नाव । नौका । २. पान, मिठाई या बायना बाँटने का बर्तन विशेष । ३. शतरंज का एक मोहरा ।
- कदमल-सज्ञा पु० (स्त्री० कदमला) १. मन की कमजोरी । पाप । मोह । वि० पापी । अपवित्र । मलिन ।
- कदमीर-सज्ञा पु० 'काश्मीर' । पंजाब के उत्तर का पहाड़ी प्रदेश जो प्राकृतिक सौंदर्य और उर्वरता के लिए प्रसिद्ध है ।
- कदमीरज-सज्ञा पु० कश्मीर में उत्पन्न बेसर । कुसुम ।
- कदमीरी-वि० १. कश्मीर में उत्पन्न । २. सज्ञा स्त्री० कश्मीर की भाषा ।
- सज्ञा पु० [स्त्री० कदमीरिज] १. कश्मीर का निवासी । २. कश्मीर का घोड़ा ।
- कश्य-वि० १. कोड़ा मारने योग्य । २. धमन करने योग्य । ३. धाड़े का तग । ४. शराब ।
- कश्यप-मज्ञा पु० १. वैदिककालीन ऋषि-विशेष २. एक प्रजापति । ३. कच्छा । बछुआ । मत्स्य विशेष । ४. देवता । ५. दानव । ६. सप्तर्षि मंडल का एक तारा ।
- कश्यपमेद-मज्ञा पु०-अर्घ्य और देश विशेष । काश्मीर ।
- कथ-मज्ञा पु० १. कगीटी (पत्थर) । २. मान । ३. जाँच । परीक्षा । चाबुक ।
- कथण-मज्ञा पु० १. परम । परीक्षा । जाँच । २. मीचना । आकर्षण । ३. तर्जन ।
- कथा-मज्ञा स्त्री० दे० "कथा" । काथा । चाबुक ।
- कपाय-वि० १. कर्मला । बाकठ (दू रंगों में से एक) । २. सुगन्धित । ३. रंगा हुआ । रंगीन । ४. गेरू के रंग का । गैरक ।
- सज्ञा पु० १. कसैनी वस्तु । २. कबाध । गोद । ३. काड़ा । गाढ़ा रस । ४. कलियुग । ५. चान, ललौहा । ६. सर्प विशेष । ७. शाय । लोभ आदि विचार (जन) ।
- कष्ट-मज्ञा पु० १. विपद । क्लेश । पीडा । २. आपत्ति । सकट । मुसीबत । ३. कृच्छ्र । वि० १. बुरा । खराब । २. दूर की, महज नहीं, जैसे कष्टकल्पना ।
- कष्टकर-वि० कष्टदायक । पीडा देनेवाला ।
- कष्टकल्पना-सज्ञा स्त्री० १. निष्प्रयाजन कल्पना । २. दुख की कल्पना करना । ३. बहुत खीच खाँच की ओर कठिनाता से ठीक घटनेवाली युक्ति ।
- कष्टसाध्य-वि० कठिन । कठिनाई से होने वाला । कठिनाता से ग्रच्छा होनेवाला राग (आयुर्वेद) ।
- कष्टित-वि० दुःखित । पीडित । कष्टयुक्त ।
- कष्टी-सज्ञा स्त्री० प्रसव वेदना से दुखी स्त्री । पीडित । दुखी ।
- कस्त-सज्ञा पु० १. जाँच । परीक्षा । कसीटी । २. तलवार की लकड़ जिससे उसकी उत्तमता की परख होती है ।
- सज्ञा पु० १. बल । अधिकार । जोर । २. बड़ा । बाबू । ३. 'कसाव' का सक्षिप्त रूप । ४. निवाला हुआ अर्क । ५. तत्त्व । सार । वन में रखना । ६. अवरोध । रोक । रूकावट ।
- मुहा०-कस्त का=जिस पर अपना बल हो । वस में करना या रखना=अधीन रखना ।

\*+क्रि० चि० १. क्या। २. कैसे। ३. किसलिए।

कसरक-सज्ञा स्त्री० १ टीस। हलका या भीठा ददं। पीडा। दुख। साल। २ वर। बहुत दिन वा मन में रखा हुआ द्वेष। ३. अभिलाषा। होसला। अरमान। ४ सहानुभूति।

मुहा०-वसक निकालना=वर का बदला लेना।

कसरकना-क्रि० अ० पीडा होना। ददं करना। सालना। टीसना।

कसरकसा-वि० १ किरकिरापन। ककरीलापन। २ स्वादरहित।

कसरकुट-सज्ञा पु० मिश्रित धातु-विशेष जो ताँबे और जस्ते के बराबर भाग मिलाकर बनाई जाती है। काँसा। भरत।

कसन-सज्ञा स्त्री० १ कसने की रस्ती। २ घोंडे का तग। ३ कसने की क्रिया या ढग।

सज्ञा स्त्री० दुख। कष्ट। क्लेश।

कसना-क्रि० स० १ बाँधना। २ बधन को दृढ़ करने के लिए डोरी आदि को खींचना। ३ बधन को खींचकर बँधी हुई वस्तु को अधिक दबाना। ४ पुर्जों को दृढ़ करके बैठाना। ५ साज रखकर सवारी के लिए तैयार करना। ६ ठूसकर भरना।

मुहा०-कसरकर=१ जोर से। बलपूर्वक। २ पूरा पूरा। बहुत अधिक। कसा=पूरा पूरा। बहुत अधिक। जैसे-कसा दाम। ३ जकड़कर बाँधना। जकड़ना। कसा कसाया=चलने के लिए बिलकुल तैयार।

क्रि० अ० १ जकड़ जाना। बधन वा खींचना जिससे वह अधिक जकड़ जाय। २ किसी लपटने या पहनने की वस्तु का छोटा होना। ३ बाँधना। ४ साज रखकर सवारी वा तैयार होना। ५ अधिक भर जाना।

क्रि० स० १ परखने के लिए सोने आदि धानुओं को कसौटी पर घिसना। २ परीक्षा करना। कसौटी पर जाँचना। ३. परखना।

जाँचना। आजमाना। ४ तलवार को लचाकर उसके लोहे की परीक्षा करना। ५ दूध को गाढ़ा करके खोया बनाना। ६. कष्ट पहुँचाना। क्लेश देना।

कसनी-सज्ञा स्त्री० १ बाँधने की रस्ती। २ बैठन। ३ गिलाफ। ४ कचुकी। अँगिया। चोली ५ कसौटी। परीक्षा। जाँच। परख।

कसर-सज्ञा पु० [अ०] १ श्रम। परिश्रम। मेहनत। २ व्यवसाय। पेशा। धन्या। ३ वैश्यावृत्ति।

कसरबल-सज्ञा पु० १ बल। शक्ति। २. साहस। हिम्मत।

कसरबा-सज्ञा पु० [अ०] [चि० कसरबाती] गाँव से बड़ी और शहर से छोटी वस्ती। बड़ा गाँव।

कसरबिन, कसरबी-सज्ञा स्त्री० १ व्यभिचारिणी स्त्री। २ वैश्या। पतुरिया। रडी।

कसरम-सज्ञा स्त्री० [अ०] शपथ। सीगय।

मुहा०-कसरम उतारना=१. शपथ को हटा लेना या प्रभाव दूर करना। २ किसी काम को नाममान के लिए करना। कसरम देना, दिलाना या रखाना=किसी का किसी शपथ द्वारा बाध्य करना। कसरम लेना=प्रतिज्ञा कराना। कसरम खिलाना। कसरम खाने को=नाम मात्र के लिए।

कसरमसाना-क्रि० अ० १ दबकर हिलना-डोलना। कुलदुलाना। खलबलाना। २. उकताकर हिलना-डोलना ३ घबराना। बचन या व्याकुल होना। ४ सोचना-चिन्तना। ५ आगा-पीछा करना। ६. हिचकना।

कसरमसाहट-सज्ञा स्त्री० १ घबराहट। बेचैनी। २ कुलबुलाहट। हिलाव। डोलाव।

कसर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ कमी। घटी। न्यूनता। २ वर। द्वेष। ३ टोटा। हानि। घाटा। ४ खोट। ५ दोष। विचार। ६ किसी वस्तु में कमी, जो सूखने या उसमें से बूझा-बखट निकलने से हो जाती है।

मुहा०-कसर निवालना=बदला लेना।

कसरत-गंगा श्री० [ घ० ] [ वि० वगरी ]  
व्यामाम । दद, दंड आदि परिश्रम का  
मार्ग । मेहनत ।

गंगा श्री० [ म० ] अधिगता । बह्नायत ।  
कसरती-वि० १ व्यायाम करनेवाला ।  
२ जा मगरत में मुष्ट घोर बलवान्  
बना हो ।

कसवाना-वि० म० बगने का काम दूसरे में  
कराना । बगाना । जोर से बेषवाना ।  
कसहंदा-गंगा पु० [ स्त्री० कसहंटी ] कसि  
या एक प्रकार का बड़ा यस्तन ।  
कसा-वि० १ सन्निहित । सक्तीर्ण । २ बेंपा  
हुआ ।

कसाई-गंगा पु० [ घ० कस्मान ] [ स्त्री०  
कसाइन ] १ बूचड़ । २ घातक ।  
बधिर ।

वि० निष्ठुर । निर्दय ।  
कसाना-वि० घ० स्वाद में कसला हो  
जाना । कसि आदि धातु के माग से खट्टी  
चीज का खराब हो जाना ।

वि० स० दे० "कसवाना ।"  
कसार-सज्ञा पु० पेंजीरी । चीनी मिला  
भुना घाटा या सूजी ।

कसाला-सज्ञा पु० १ कष्ट । २ श्रम ।  
बठिन परिश्रम । मेहनत ।

कसाव-सज्ञा पु० कसलापन ।  
वि० कसे जान का भाव ।

कसावट-सज्ञा स्त्री० लिखाव । कराने का  
भाव । तनाव ।

कसी-सज्ञा स्त्री० भूमि नापने की रस्सी  
विशेष ।

कसीदना\*-वि० स० दे० "कराना" ।  
कसीदा-सज्ञा पु० दे० 'कसीदा' । कपड़े पर  
सुईकारी । बलवृद्ध काटना ।

कसीदा-सज्ञा पु० उर्दू या फारसी भाषा की  
एक प्रकार की कविता, जिसमें प्रायः स्तुति  
या निंदा की जाती है ।

कसीस-सज्ञा पु० सोह का एक प्रकार जो  
खाना में मिलता है ।

कसुभा-वि० १ लाल । २ टसू या बुसुम  
के रंग का ।

कसून-गंगा पु० कजी घोल वाला घाटा ।  
कसूर-गंगा पु० [ घ० ] दोष । अपराध  
एवम् ।

कसूरमद, कसूरवार-वि० [ पा० ] अपराधी ।  
दापी ।

कसेरा-सज्ञा पु० [ स्त्री० कसेरिन ] छट्ठा ।  
कसि, कून आदि के बरतन ढानने और  
बैचनेवाला । काम्यसार ।

कसे-गंगा पु० माथे की मीठी गेंठी की  
जड़ ।

कसैया-सज्ञा पु० १ बगनेवाला । जा  
जबड़वर बाँधे । पगनेवाला । जाँचने-  
वाला । २ परखिया ।

कसला-वि० (स्त्री० कसली) कपाय मवाद  
का । जिसमें कगाव हो । जैसे घाँवला, हड  
आदि ।

कसेली-सज्ञा स्त्री० १ चुपारी । २  
कसली वस्तु ।

कसोरा-सज्ञा पु० १ मिट्टी का प्याला ।  
२ कटारा ।

कसौदी-सज्ञा स्त्री० पीया विशेष । कमीजा ।  
कसौटी-सज्ञा स्त्री० १ बाला पत्थर जिस  
पर रगड़कर साने की परख की जाती है ।

निकप । २ जाँच । परख ।

कस्तम-सज्ञा पु० (अग्ने०) प्रथा । स्वाज ।  
आधान और नियान पर लगनवाला कर ।

कस्तुरा-सज्ञा स्त्री० शल सहित एक प्रकार  
की मद्यन्त ।

कस्तूर-सज्ञा पु० कस्तूरी-मृग ।

कस्तूरा-सज्ञा पु० १ कस्तूरी-मृग । २ लामड़ी  
की तरह का पशु विनाश ।

सज्ञा पु० [ दश० ] १ मोती की सीप ।  
२ ओषध जो पाटव्लयर की चट्टानों से  
खुरचकर एकत्र की जाती है और बहुत  
बलकारक होती है ।

कस्तूरिका-सज्ञा स्त्री० कस्तूरी ।

कस्तूरिया-सज्ञा पु० कस्तूरी मृग ।

वि० १ कस्तूरीवाला । जिसमें कस्तूरी  
मिली हो । २ जो कस्तूरी के रंग का  
हो । मुक्की ।

कस्तूरी-सज्ञा स्त्री० १ मृग की नाभि से

निकलनेवाला सुगन्धित द्रव्य । २. मृगमद ।  
 औपधि-विशेष ।  
 कस्तूरी मृग-संज्ञा पुं० अति ठड़े पहाड़ी प्रदेशों  
 में होनेवाला हिरन-विशेष जिसकी नाभि से  
 कस्तूरी निकलती है ।  
 कहूँ-प्रत्य० कर्म और संप्रदान का चिह्न,  
 'को' के लिए । (अवधौ)  
 \*क्रि० वि० दे० "कहाँ" ।  
 कहाकहा-संज्ञा पुं० ठाकर हँसना । अट्टहास ।  
 कहगिल-संज्ञा स्त्री० मिट्टी का गारा जो  
 दीवार में लगाया जाता है ।  
 कहत-संज्ञा पुं० [अ०] अकाल । दुर्भिक्ष ।  
 यौ०—कहतसाली=दुर्भिक्ष का समय ।  
 कहतूत या कहतूती-संज्ञा स्त्री० कथा ।  
 आख्यायिका । कहावत । लोकोक्ति । कहतूत ।  
 कहन-संज्ञा स्त्री० १. उक्ति । कथन । २.  
 वचन । बात । ३. कहावत । ४. कविता ।  
 कहना-क्रि० सं० १. वर्णन करना ।  
 बोलना । उच्चारण करना । २. खोलना ।  
 प्रकट करना । प्रकाशित करना । बताना ।  
 ३. सूचना देना । ४. नाम रखना । ५.  
 पुकारना । ६. समझाना-बुझाना । मनाना ।  
 ७. कविता करना ।  
 संज्ञा पुं० १. कथन । २. आज्ञा । ३.  
 अनुरोध ।  
 मुहा०—कह-बदकर=१. प्रतिज्ञा करके । २.  
 दृढ़ स्वरूप करके । ३. ललकारकर ।  
 दावे के साथ । बहना सुनना=बात-चीत  
 करना । कहने को=१. नाम-मात्र को ।  
 २. भविष्य में स्मरण के लिए । कहने  
 की बात=भूत बात । वह बात जो वास्तव  
 में न हो । बहना-सुनना=समझाना ।  
 बहनाउत\*-संज्ञा स्त्री० दे० "बहनावत" ।  
 बहनावत-संज्ञा स्त्री० १. कहावत । २.  
 बात । कथन । ३. दृष्टान्त । ४.  
 लोकोक्ति ।  
 कहनुत\*-संज्ञा स्त्री० बात । बहावत ।  
 कहर-संज्ञा पुं०, [अ०] विपत्ति । सवट  
 वि० [अ० कहाहर] १. अपार । २.  
 भयङ्कर । ३. घोर ।  
 कहरना\*-क्रि० अ० दे० "कराहना" ।

आह भरना । चीख भरना । चिल्लाना ।  
 वाँखना ।  
 कहरवा-संज्ञा पुं० १. धाँदरा गीत 'जो  
 कहरवा ताल पर गाया जाता है । २. आठ  
 मात्राओं का ताल । ३. कहरवा ताल पर  
 होनेवाला नृत्य ।  
 कहरवा-संज्ञा पुं० गीत विशेष जिसे कपड़े  
 आदि पर रगड़कर यदि घास या तिनके  
 के पास रखे, तो उसे चुपका की तरह पकड़  
 लेता है ।  
 कहल\*-संज्ञा पुं० १. औस । २. ऊँस ।  
 ३. ताप । ४. कष्ट ।  
 कहलना\*-क्रि० अ० १. आकुल होना ।  
 कसमराना । २. दहलना । ३. गरमी या  
 ऊँस से ध्याकुल होना ।  
 कहलवाना-क्रि० सं० दे० "कहलाना" ।  
 कहलाना-क्रि० सं० [कहना का प्रे० रूप]  
 १. घुलवाना । जतलाना । २. पुकारा जाना ।  
 ३. सदेश भेजना ।  
 क्रि० अ० गरमी या ऊँस से ध्याकुल  
 या शिथिल होना ।  
 कहवा-संज्ञा पुं० [अ०] वृक्ष-विशेष का बीज  
 जिसका चूरा चाय की तरह पिया जाता है ।  
 कहवैया\*-वि० बहनेवाला ।  
 कहाँ-क्रि० वि० १. किधर ? किस जगह ?  
 किस स्थान पर ? २. कब तक ।  
 ३. कितनी दूर तक । ४. कितनी देर  
 तक ।  
 मुहा०—वहाँ का=१. न जाने कहाँ का ।  
 बड़ा भारी । असाधारण । २. वही वा  
 नहीं । नहीं है । कहाँ का बट्टा=बहुत  
 दूर । कहाँ की बात=यह बात ठीक गही  
 है । कहाँ यह, कहाँ वह=दुनमें बड़ा अंतर  
 है । कहाँ से=व्यर्थ । क्यों ? ग्राह्य ।  
 कहाँ तक=अधिकरण प्रश्नवाची अव्यय ।  
 कहाँ\*-संज्ञा पुं० १. आज्ञा । २. उपदेश ।  
 ३. कथन । बात ।  
 क्रि० वि० कौंते ? किस तरह ?  
 \*सबै० क्या । (प्रश्न)  
 कहाकही-संज्ञा स्त्री० दे० १. बहावुनी । २.  
 उक्ति-प्रत्युक्ति । ३. भगड़ा ।

कस्तूर-गजा स्त्री० [ घ० ] [ वि० वगर्गी ]  
घायाग । दड, धँढा आदि परिश्रम का  
कार्य । मँहना ।

गजा ग्री [ घ० ] अधिगता । वृद्धापन ।  
कस्तूरी-वि० १. व्यापार करनेवाला ।  
२. जो गमगत से पुष्ट और बलवान्  
बना हो ।

कस्तूरी-वि० ग० वगने का काम दूसरे से  
गगना । वगाना । जोर में बँधवाना ।  
कस्तूरी-गजा पु० [ स्त्री० वगहरी ] वसि  
या एन प्रकार का वस्त्र यत्तन ।

कसा-वि० १ संचित । सकीर्ण । २ बँधा  
हुआ ।

कसाई-गजा पु० [ घ० कस्माद ] [ स्त्री०  
कसाइन ] १. वृद्ध । २. धातन ।  
वधिव ।

वि० निष्ठुर । निर्दय ।  
कसाना-वि० घ० स्वाद में कसैला हो  
जाना । कसने आदि घातु के योग में सट्टी  
बीज का खराब हो जाना ।  
वि० स० दे० "कसवाना ।"

कसार-सजा पु० पैंजीरी । चीनी मिला  
भुना घाटा या मूजी ।

कसाला-सजा पु० १ कष्ट । २ धम ।  
कठिन परिश्रम । मेहनत ।

कसाव-सजा पु० कसैलापन ।  
वि० कसे जाने का भाव ।

कसावट-सजा स्त्री० खिचाव । कसने का  
भाव । सताव ।

कसी-सजा स्त्री० भूमि नापने की रस्सी-  
विशेष ।

कसीदन्त्र\* -वि० स० दे० "कसना" ।

कसीदा-सजा पु० द० 'कसीदा' । कपड़े पर  
सुईकारी । बलवृद्धे काटना ।

कसीदा-सजा पु० उर्दू या फारसी भाषा की  
एक प्रकार की कविता, जिसमें प्रायः स्तुति  
या निंदा की जाती है ।

कसीस-सजा पु० लोहे का एक प्रकार जो  
खाने में मिलता है ।

कसुभा-वि० १ लाल । २ टेमू या वसुम  
के रंग का ।

कस्तूर-गजा पु० बजो माल याता घोड़ा  
कस्तूर-गजा पु० [ घ० ] शोष । घपराय  
एव ।

कस्तूरमद, कस्तूरवार-वि० [ वा० ] अघरापी ।  
दोषी ।

कसेरा-गजा पु० [ स्त्री० कसेरिन ] ठंडेर ।  
बाँसे, पून आदि के बरतन ढालने और  
बँचनेवाला । काम्यवार ।

कसेर-सजा पु० मोथे की मीठी मँठीरी  
जड़ ।

कसैया-सजा पु० १ वगनेवाला । जो  
जबड़वर बाँधे । पगनेवाला । जाँचने-  
वाला । २ परनेवा ।

कसैला-वि० (स्त्री० कसैली) कपाय स्वाद  
का । जिसमें कसाव हो । जैसे आंवला, हड  
आदि ।

कसैली-गजा स्त्री० १ सुपारी । २  
कसैला वस्तु ।

कसोरा-सजा पु० १ गिट्टी का प्याता ।  
२ कटारा ।

कसीदी-सजा स्त्री० पीथा विशेष । बमोजा ।  
कसीदी-सजा स्त्री० १ काला पन्थर जिम  
पर रगड़कर साने की परख की जाती है ।  
निकष । २ जाँच । परख ।

कस्टम-सजा पु० (घरे०) प्रथा । रवाज ।  
आयात और निर्यात पर लगनेवाला कर ।  
कस्तुरा-सजा स्त्री० शख सहित एक प्रकार  
की मछली ।

कस्तूर-सजा पु० कस्तूरी-मृग ।

कस्तूरी-सजा पु० १ कस्तूरी-मृग । २ लामड़ी  
की तरह का पशु विशेष ।

सजा पु० [ देश० ] १ मोती की सँघ ।  
२ शीषध जो पोर्टल्वयर की चट्टानों से  
खुरचकर एक्करी की जाती है और बहुत  
बलकारक होती है ।

कस्तूरिका-सजा स्त्री० कस्तूरी ।

कस्तूरिया-सजा पु० कस्तूरी मृग ।

वि० १ कस्तूरीवाला । जिसमें कस्तूरी  
मिली हो । २ जो कस्तूरी के रंग का  
हो । मुसकी ।

कस्तूरी-सजा स्त्री० १ मृग की नाभि से

निकलनेवाला सुगंधित द्रव्य । २. मृगमद ।  
 औपधि-विशेष ।  
 कस्तूरी मृग-संज्ञा पुं० अति ठंडे पहाड़ी प्रदेशों  
 में होनेवाला हिरन-विशेष जिसकी नाभि से  
 कस्तूरी निकलती है ।  
 कहूँ\*-प्रत्य० कर्म और संप्रदान का चिह्न,  
 'को' के लिए । (अवधी)  
 \*क्रि० वि० दे० "कहाँ" ।  
 कहाकहा-संज्ञा पुं० ठाकर हँसना । घट्टहास ।  
 कहागिल-संज्ञा स्त्री० मिट्टी का गारा जो  
 दीवार में लगाया जाता है ।  
 कहत-संज्ञा पुं० [अ०] अकाल । दुर्भिक्ष ।  
 यो०—कहतसाली=दुर्भिक्ष का समय ।  
 कहतूत या कहतूती-संज्ञा स्त्री० कथा ।  
 आस्थायिका । कहावत । लोकोक्ति । कहनूत ।  
 कहन-संज्ञा स्त्री० १. उचित । कथन । २.  
 वचन । बात । ३. कहावत । ४. कविता ।  
 कहना-क्रि० स० १. वर्णन करना ।  
 बोलना । उच्चारण करना । २. खोलना ।  
 प्रकट करना । प्रकाशित करना । बताना ।  
 ३. सूचना देना । ४. नाम रखना । ५.  
 पुकारना । ६. समझाना-बुझाना । मनाना ।  
 ७. कविता करना ।  
 संज्ञा पुं० १. कथन । २. याज्ञा । ३.  
 अनुरोध ।  
 मुहा०—कह-बदकर=१. प्रतिज्ञा करके । २.  
 दृढ़ संकल्प करके । ३. ललकारकर ।  
 दावे के साथ । कहना सुनना=बात-चीत  
 करना । कहने को=१. नाम-मात्र को ।  
 २. भविष्य में स्मरण के लिए । कहने  
 की बात=भूढ़ बात । वह बात जो वास्तव  
 में न हो । कहना-सुनना=समझाना ।  
 कहनाजत\*-संज्ञा स्त्री० दे० "कहनावत" ।  
 कहावत-संज्ञा स्त्री० १. कहावत । २.  
 यात । कथन । ३. दृष्टान्त । ४.  
 लोकोक्ति ।  
 कहनूत†-संज्ञा स्त्री० बात । कहावत ।  
 कहर-संज्ञा पुं० [अ०] विपत्ति । संकट  
 वि० [अ०] कहहार १. अपार । २.  
 भयंकर । ३. घोर ।  
 कहरना†-क्रि० घ० दे० "कराहना" ।

आह भरना । चीख मारना । चिल्लाना ।  
 काँखना ।  
 कहरवा-संज्ञा पुं० १. दाँदरा गीत जो  
 कहरवा ताल पर गाया जाता है । २. आठ  
 मात्राओं का ताल । ३. कहरवा ताल पर  
 होनेवाला नृत्य ।  
 कहरवा-संज्ञा पुं० गीत विशेष जिसे कपड़े  
 आदि पर रगड़कर यदि घास या तिनके  
 के पास रखें, तो उसे चुवक की तरह पकड़  
 लेता है ।  
 कहल\*†-संज्ञा पुं० १. ओस । २. ऊमस ।  
 ३. ताप । ४. कष्ट ।  
 कहलना\*-क्रि० अ० १. आकुल होना ।  
 फसमसाना । २. दहलना । ३. गरमी या  
 ऊमस से व्याकुल होना ।  
 कहलवाना-क्रि० स० दे० "कहलाना" ।  
 कहलाना-क्रि० स० [कहना का प्रे० रूप]  
 १. बुलवाना । जतलाना । २. पुकारा जाना ।  
 ३. संदेश भेजना ।  
 क्रि० अ० गरमी या ऊमस से व्याकुल  
 या शिथिल होना ।  
 कहवा-संज्ञा पुं० [अ०] वृक्ष-विशेष का बीज  
 जिसका बुरा चाम की तरह पिया जाता है ।  
 कहवैया\*-वि० कहनेवाला ।  
 कहाँ-क्रि० वि० १. किधर ? किस जगह ?  
 किस स्थान पर ? २. कब तक ।  
 ३. कितनी दूर तक । ४. कितनी देर  
 तक ।  
 मुहा०—कहाँ का=१. न जाने कहाँ का ।  
 बड़ा भारी । असाधारण । २. कहीं का  
 नहीं । गद्दी है । कहाँ का कहाँ=बहुत  
 दूर । कहाँ की बात=यह बात ठीक नहीं  
 है । कहाँ यह, कहाँ यह=इनमें बड़ा अंतर  
 है । कहाँ से=व्यर्थ । क्यों ? नाहक ।  
 कहाँ तक=अधिकरण प्रश्नवाची अव्यय ।  
 कहा\*†-संज्ञा पुं० १. याज्ञा । २. उपदेश ।  
 ३. कथन । बात ।  
 क्रि० वि० कैसे ? किस तरह ?  
 \*†सर्व० क्या । (प्रश्न)  
 कहाकही-संज्ञा स्त्री० दे० १. कहासुनी । २.  
 उक्ति-प्रत्युक्ति । ३. झगड़ा ।

कांठा\*—संज्ञा पु० १. उपकण्ठ । गला ।  
२. तोते आदि चिड़ियों के गले की रेखा ।  
३. नादवं । समीप । बगल । ४. तट ।  
विनारा ।

कांड—संज्ञा पु० १. पोर । गाँठ । गँडा ।  
बाग या द्विष आदि का दो गाँठों के बीच का  
अंश । २. राउ । ३. धार । सरकडा ।  
४. दाही । शाखा । डंठल । ५. गुच्छा ।  
६. किसी कार्य या विषय का विभाग ।  
जैसे—कर्मकांड । ७. किसी ग्रंथ का वह  
विभाग जिसमें एक पूरा प्रसंग हो । ग्रन्थाप ।  
प्रकरण । ८. वृद्ध । समूह । ९. व्यापार ।  
१०. दण्ड । ११. अवतार । १२. प्रस्ताव ।  
१३. वृद्ध के तने का वह भाग, जहाँ से  
शाखाएँ फूटती हैं । १४. तीर । बाण ।  
१५. हाथ या पैर की खंडी हड्डी ।

कांडकार—संज्ञा पु० बाण बनानेवाला ।

कांडग्रह—संज्ञा पु० प्रकरण-ज्ञान ।

कांडना\*—क्रि० सं० १. कुचलना । रोदना ।  
२. कूटना । चादल से भूसी या तुप  
अलग करना । ३. पीटना । अच्छी तरह  
मारना ।

कांडपट—संज्ञा पु० यवनिका । पर्दा ।

कांडपूठ—संज्ञा पु० १. शस्त्र से जीनेवाला ।  
२. व्याध ।

कांडरुहा—संज्ञा पु० कटुवी वृक्ष ।

कांडपि—संज्ञा पु० वेद के कांड [वर्म, ज्ञान,  
उपासना] पर विचार करनेवाला ऋषि;  
जैसे—जैमिनि ।

कांडी—संज्ञा स्त्री० १. लकड़ी या बड़ा डंडा ।  
२. चाँस या लवड़ी का कुछ पतला सीधा  
लट्ठा, जो छप्पर या छत के सहारे के  
लिए लगाया जाता है । ३. युनिया ।  
४. अरहर का सूखा डण्डल । ५. अवती ।  
मुहा०—कांडी बफन—मुरदे की अरबी का  
सामान ।

कांत—संज्ञा पु० १. स्वामी । प्रिय पति ।  
२. चंद्रमा । ३. श्रीकृष्णचंद्र । ४. शिव ।  
५. विष्णु । ६. कांतिकेय । ७. वसंत  
ऋतु । ८. वृकुम्भ । ९. कांतसार ।  
वहिया लोहा विशेष । १०. उपपति, जार ।

वि०—प्रिय । मुंदर ।

कांतलीह—संज्ञा पु० शुद्ध किया हुआ लोहा ।  
लोहभस्म ।

कांतसार—संज्ञा पु० लोह-विशेष । कांत  
लोहा ।

कांता—संज्ञा स्त्री० १. नारी । प्रिया ।  
मुंदरी स्त्री । २. पत्नी । भाव्या ।  
३. उपपत्नी, रक्षिता । ४. पृष्ठी ।  
५. चार मात्रा का छंद-विशेष ।

कांतार—संज्ञा पु० १. डरावना या भयानक  
स्थान । २. दुर्मेख और गहन वन ।  
३. द्विष विशेष । ४. छंद । ५. वाँस ।  
६. दुर्गम पथ ।

कांताह्वा—संज्ञा स्त्री० शीपथ-विशेष ।  
प्रियगु ।

कांतादायक—संज्ञा स्त्री० माधुर्य भाव ।  
भक्ति का भेद-विशेष जिसमें भक्त ईश्वर  
को अपना पति मानकर उसकी भक्ति  
करता है ।

कांति—संज्ञा स्त्री० १. आभा । प्रकाश ।  
दीप्ति । तेज । २. सौंदर्य । शोभा ।  
छटा । छवि । ३. चंद्रमा की एक कला ।  
४. चंद्रमा की एक स्त्री का नाम । ५  
आर्या छंद का भेद-विशेष । ६. लक्ष्मी का  
एक नाम । दुर्गा ।

कांतिदायक—वि० १. शोभादायक । २. दीप्ति-  
कारक ।

कांतिपायाण—संज्ञा पु० चुम्बक पत्थर ।

कांतिमान—वि० [स्त्री० कांतिमती] कान्ति-  
वाला । दीप्तियुक्त । चन्द्रमा । वाग्देव ।

कांतिर, कांतिरी—संज्ञा स्त्री० दे० “बचरी” ।

कांदिना\*—क्रि० अ० रोना । चिल्लाना ।

कांद्व—संज्ञा पु० पक । कीचड़ ।

कांदा—संज्ञा पु० १. गुल्म-विशेष जिसमें  
प्याज की तरह गाँठ पड़ती है । मूल-  
विशेष । पलाहु । अरबी २. प्याज । ३. दे०  
“कांदी” ।

कांदू—संज्ञा पु० जाति-विशेष । भट्ठभूजा ।  
हलवाई । चीनी का होंडा ।

कांदी\*—संज्ञा पु० चंदन । कीचड़ ।  
पक । कीच ।

कांध\*†-सज्ञा पु० दे० "कधा" ।  
कांधना\*-क्रि० वि० १ सँभालना । सिर  
पर उठाना । २ मचाना । ठानना ।  
३ स्वीकार करना । मानना । अंगी-  
कार करना । ४ भार लेना । ५ उपकृत  
करना ।

कांधा-सज्ञा पु० कन्धा । स्कन्ध ।  
मुहा०-कांधा देना=१ सहायता करना ।  
कार्य बँटा लेना । २ शव की अस्थियाँ  
उठाना ।

काँप-सज्ञा स्त्री० १ बाँस आदि की लचीली  
पतली तीली । २ पतंग या कनकौवे की  
धनुष की तरह भुकी हुई तीली ।  
३ हाथी का दाँत । \*४ सूअर का  
खाँग । ५ कान में पहनने का गहना विशेष ।  
६ दुख । ७ दयाव । ८ व्याकुलता ।

मुहा०-काँप चढाना=दुखित करना ।  
व्याकुल करना । दवाना ।

काँपना-वि० अ० हिलना । 'धरयराना ।  
धराना । डर से काँपना । कपित होना ।

काँपा-क्रि० १ डरा । २ धरया ।

काबोज-वि० १ कबोज देश का । २  
कबोज देश के घोडा । ३ म्लच्छ जाति  
विशेष ।

काँय काँय, काँय काँय-सज्ञा पु० १ व्यर्थ  
की चिल्लाहट । २ कौवे का शब्द ।

काँवर-सज्ञा स्त्री० बहैली ।

काँवरा-वि० व्याकुल । घबराया हुआ ।

काँवरिया-सज्ञा पु० कामारथी । तीर्थयात्री  
जो काँवर लेकर चले ।

काँकारथी-सज्ञा पु० कामना से काँवर लेकर  
जानेवाला तीर्थयात्री ।

काँस-सज्ञा पु० १ लंबी घास विशेष ।

२ धातु विशेष ।

काँसा-सज्ञा पु० [वि० काँसी] कसकट ।

ताँव धोर जेस्ते के संयोग से बनी धातु-  
विशेष । भरत ।

सज्ञा पु० [का० काँसा] भीख माँगने का  
पात्र, ठोकरा या खप्पर ।

काँसापर-सज्ञा पु० जो कानि का काम  
करता है । कसेरा ।

का० २०

कास्य-सज्ञा पु० कसकट । काँसा । घटा ।

वाद्य-विशेष । कटोरा ।

वि०-काँसे का बना ।

कास्यकार-सज्ञा पु० कसेरा । कँसारी ।

का-प्रत्य० सबध या पट्टी का चिह्न,  
जैसे-राम का घोडा ।

काई-सज्ञा स्त्री० १ जल या सीढ़ में होने-  
वाली महीन घास या सूक्ष्म बनस्पति-जाल ।

शँवाल । कौट । २ ताँवे इत्यादि पर  
जमनेवाला मुर्चा । ३ मँल । मल ।

मुहा०-काई छुडाना=१ मँल दूर करना ।

२ दुख-दार्दिघ दूर करना । काई सा  
फट जाना=छँट जाना । तितर बितर  
हो जाना ।

काऊ\*†-क्रि० वि० कभी । कबहुँ ।

सर्व० १ कोई । २ कुछ । ३ किसी ने ।

४ किसी से ।

काउन्सिल-स० स्त्री० (अंग्रे०) कुछ खास  
विषयो पर धिचार करनेवाली सभा या  
समिति । परिषद् ।

काक-सज्ञा पु० काग । वायस । चोखा ।

सज्ञा पु० [अंग्रे० काकी] नर्म लकड़ी विशेष  
जिसकी डाट बोतलो में लगाई जाती है ।

वाग ।

काक-मोलक-सज्ञा पु० कौवे की आँख की  
पुतली जो कहा जाता है कि एक ही होनी  
है और दोनों आँखों में घूमती है ।

काकजघा-सज्ञा स्त्री० १ भसी का पोधा ।

चकसेनी । औषध विशेष । २ गुजा ।

घुघची ३ एक प्रकार की भूसी । ४

मुग़ान या मुग़वन नाम की लता ।

काकटम्बपुष्पी-सज्ञा स्त्री० औषध विशेष ।

भहामुट्टी ।

काकडा-सज्ञा पु० एक प्रकार का चमडा ।

काकडासींगी-सज्ञा स्त्री० कर्कटशृंगी ।

कावडा नामक पेठ में लगी हुई एक प्रकार  
की लाही जो दवा के घाम आती है ।

काकतालीय-वि० संयोगवश होनेवाला ।

अगस्मात् किसी कार्य का होना ।

मी०-नाकतालीय न्याय । (कोई  
पौधा ताल के पेठ पर बैठे । बैठने ही

सात का पत्र उस पर गिरा श्रीर गोधा भर गया)

काव्यतिथत-सज्ञा स्त्री० वायजपा ।

काव्यदत्त-सज्ञा पु० १. भद्रभुत दात । २. प्रसन्नय दात ।

काव्यपक्ष-सज्ञा पु० कुल्ला । घालों के पट्टे जो दोनों ओर कानों और कनपटियों पर ऊपर रहते हैं । जुल्फ ।

काव्यपद्य\*-सज्ञा पु० दे० "काव्यपदा" ।

काव्यपद-सज्ञा पु० १ चिह्न जो छुटे हुए दाद का स्थान जताने के लिए परित के नीचे बनाया जाता है । २ रत्नों में एक प्रकार का अमूल्य लक्षण । ३. कोई चीज बनाने के लिए कल्पित पूर्वरूप । ठाँचा ।

काव्यपदी-सज्ञा स्त्री० शीपध विशेष ।

काव्यपद्या-सज्ञा स्त्री० स्त्री जिसके केवल एक सतति हुई हो ।

काकबलि-सज्ञा स्त्री० कागीर । श्राद्ध के समय कौश्री को दिये जानेवाले भोजन का भक्षण ।

काकभुशुड या काकभुशुडि-सज्ञा पु० ब्राह्मण-विशेष (कहते हैं कि उनका मुँह काक के समान था) जो कामेश के शाप से कौश्री हो गए थे और राम के वधे भक्त थे ।

काकरेजा-सज्ञा पु० वपडा जो काकरेजी रंग-का हो ।

काकरेजी-सज्ञा पु० [फा०] कोकची । रंग विशेष जो लाल और काले के मेल से बनता है ।

वि० काकरेजी रंग का ।

काकली-सज्ञा स्त्री १. मद मधुर ध्वनि । कल-नाद । २ साठी धान । ३. एक वाद्य यंत्र । ४ सेंध लगाने की सवरी ।

काका-सज्ञा पु० [स्थो० कावी] चाचा । बाप का भाई ।

सज्ञा स्त्री०-नौए का शब्द ।

काका कौश्री-सज्ञा पु० दे० "काकातूषा" । पक्षी विशेष ।

काकाक्षिणेलक न्याय-सज्ञा पु० एक शब्द

या वाक्य का बदल-बदलकर दो भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना ।

काकातूषा-सज्ञा पु० [ मला० ] बड़ा तोना-विशेष जिसके सिर पर टेढ़ी चौड़ी होती है ।

काकिणी या काकिनी-सज्ञा स्त्री० १ धुपची । गुजा । २ मांस का चौथाई भाग । ३ पण का चतुर्थ भाग जो २० कोटिया का होता है । ४ छदाम । ५ कोडी ।

काकी-सज्ञा स्त्री० १. काका या चाचा की स्त्री । २. कोए की मादा ।

सज्ञा स्त्री० चची । चाची ।

काकु-सज्ञा पु० १ टेढ़ी बोली । छिरी हुई चुटीली बात । व्यंग्य । ताना । २ वक्रावृत्ति का एक भेद (काव्य) ।

काकूक्ति-सज्ञा स्त्री० वातरावृत्ति । व्यंग्य कथन ।

काकुत्स्थ-सज्ञा पु० १ श्रीरामचन्द्र । २ ककुत्स्थ वसोद्भव एवं राजा ।

काकुल-सज्ञा पु० [फा०] कुल्ले । जुल्फों । कनपटी पर लटकते हुए सबे बाल ।

काकोदर-सज्ञा पु० १ भुजग । सर्प । फणी । साँप । २ कोए का पेट ।

काकोल-सज्ञा पु० १ नरक विशेष । २ एक प्रकार की विपरीत धातु ।

काकोली-सज्ञा स्त्री० सतावर की तरह की शीपध विशेष जो भ्रव प्राप्य नहीं है ।

काकोलूकिका-सज्ञा स्त्री० काव और उल्लू के समान शत्रुता । अधिक शत्रुता ।

काक-सज्ञा स्त्री० काँख । कक्ष । पार्श्व ।

काकभलाई-सज्ञा स्त्री० केलोरी । पार्श्व धन । काँख का धान ।

काग-सज्ञा पु० कौश्रा ।

सज्ञा पु० [अग्ने० काक] १ स्पेन, पुर्तगाल तथा अफ्रीका के उत्तरीय भागों में होने-वाला वृक्ष विशेष । २ गौतम या क्षीरी की डाट जो इस वृक्ष की छाल से बनती है । ३ गले के भीतर की पटी ।

वि०-चतुर, चट, काँइयाँ ।

कापड़-सज्ञा पु० [म०] [वि० कापड़ी]

१ पत्र । सन, रुई, पट्टे आदि को सड़ाकर बनाया हुआ पत्र । २ प्रमाणपत्र । लिखा हुआ प्रामाणिक लख । दस्तावेज । ३ प्रामित्तरी नोट । ४ समाचारपत्र । अखबार ।

यी०—कागज पत्र—१ लिख हुए कागज । २ प्रामाणिक लख । ३ दस्तावेज ।

मुहा०—कागज काला करना या रंगना—  
या ही कुछ लिखना । कागज की नाव—न टिकनवाली चीज । नाशवान या क्षणभंगुर वस्तु । कागजी घोड़ दोडाना—लिखा-पढ़ी करना ।

कागजात—सजा पु० कागज का बहुवचन । कागज-पत्र इत्यादि ।

कागजी—वि० १ जो कागज का बना हुआ हो । २ लिखित । लिखा हुआ । ३ जिसका छिलका कागज की तरह पतला हो । जैसे—कागजी बादाम ।

मुहा०—कागजी घोड़ दोडाना—केवल लिखा पढ़ी करते रहना ।

कागद—सजा पु० दे० 'कागज' ।

कागमुसड़—सजा पु० दे० 'कागमुसड़ि' ।  
कागरी—सजा पु० दे० 'कागज' । चिडिया के वे मुनायम पर जा भूट जाते हैं ।

कागरी—वि० तुच्छ ।

कागावासी—सजा स्त्री० १ प्रातःकाल छाना जगनवासी भाँग । २ माती विशप जा सविल रग का होना है ।

कागारोल—सजा पु० हल्ला-गुल्ला । झुल्लड । शार ।

कागामुर—सजा पु० दैत्य विशप ।

कागोर—सजा पु० दे० 'कागजल' ।

काचरी—सजा स्त्री० १ बेंचुली । २ सूखी गध । ३ कचरी ।

काच सवण—सजा पु० यचिया नोन । पाना नमक ।

काचा—वि० १ यच्चा । २ भीरु । कायर ।

काची—सजा स्त्री० १ दूध रखन की हाँडी । २ हनुमा जो सीसुर, सिपाड आदि स बनता है ।

काची—वि० १ प्रगार । २ मिथ्या ।

काछ—सजा पु० १ पड़ और जाँघ के जोड़ पर का तथा उसके नीचे तक का स्थान । २ लाँग । घोती का वह भाग जो इस स्थान पर से होकर पीछे खाता जाता है । ३ समीप । ४ नदी का किनारा । ५ अभिनय के लिए नटों का वेश ।

मुहा०—काछ बाछना—वेप बनाना ।

काछना—क्रि० स० १ काछ बाँधना । कमर में लपट बदन के सामने लटकते भाग को जधो पर से पीछे ल जाकर कसकर बाँधना ।

२ बटोरना । ३ अलग करना । ४ बनाना । सँवारना ।

क्रि० स० तरल पदार्थ को किनारे की ओर खींचकर उठाना ।

काछनी—सजा स्त्री० १ कछनी । कसकर ऊँची पहनी हुई घोती जिसकी दो लाँग पीछे खोसी जाती हैं । २ घामरे की तरह का चुनटदार आधी जपा तक का पहनावा-विशप ।

काछा—सजा पु० काछनी ।

काछिन—सजा स्त्री० काछी की स्त्री ।

काछी—सजा पु० १ मुराव । २ तरकारी बोल और बचनवाला आदमी । ३ जाति-विशप ।

काछे—क्रि० वि० समीप । निकट । पास ।

क्रि० पहन हुए । बनाए हुए । बनाने से ।

काज—सजा पु० १ काम । काम । वाय ।

२ व्यवसाय । धंधा । ३ अय । प्रया ।

जन । मतलब । उद्देश्य । ४ विवाह ।

सजा पु० [ अ० वायज ] बटन का घर ।

वह छद्र जिमम बटन लगाया जाता है ।

मुहा०—वे काज—व हनु । निमित्त ।

निमित्त ।

यी०—काम-काज—काम की अधियना ।

विवाह या अत्यष्टि व दिया-नशाप ।

काजर—सजा पु० दे० १ 'काज' ।

वर्जन । २ भजन । ३ गुरगा ।

काजरी—सजा स्त्री० गाय जिसकी छाँसा

पर काला घेरा हो ।

काजल—सजा पु० दीपक व धूप के

जमन से लगी हुई कानिस । भाँति

में लगाया जानेवाला वाला पदार्थ-विशेष ।  
मुहा०—वाजन घुलाना, डालना, देना या  
सारना= (घाँसों में) वाजल लगाना ।  
वाजल पारना=दीपक के धुएँ की कालिल  
को किसी बरतन में जमाना । काजल की  
कोठरी=ऐसी जगह जहाँ जाने से मनुष्य  
को बलब लगे ।

काजलि-सज्ञा पु० इक्षु-विशेष । मत्स्य-विशेष ।  
काजो-मज्ञा पु० [श्र०] १. मुसलमानों में धर्म  
और रीति-नीति के अनुसार न्याय की  
व्यवस्था करनेवाला अधिकारी । २  
उद्योगी । परिश्रमी ।

वाजू-सज्ञा पु० १ गिरी विशेष । एक  
प्रकार की सूखी मेवा । २ वृक्ष-विशेष  
के भीतर की मींगी या गिरी ।

वाजू भोजू-वि० बहुत दिनों तक काम न  
आ सकेवाली दिखावे की वस्तु ।

काट-सज्ञा स्त्री० १ घनाव । डोल ।  
काटने की क्रिया या भाव । २ आकृति ।  
३ कटाव । तराश । ४ काटने का ढग ।  
५ घाव । कटा हुआ स्थान । जस्म ।  
६ कपट । विद्वासपात । चालबाजी ।  
७ कुस्ती में पंच का तोड़ । ८ कटा हुआ ।  
मैल । ९ मलिनता । १०. चीरा ।

चौ०—काट-छाँट=१ मार-काट । लड़ाई ।  
२ कतरन । काटने से बचा-बुचा टुकड़ा ।  
३ घटाव-बढ़ाव । किसी वस्तु में कमी-  
बढ़ती । मार-काट=तलवार आदि की लड़ाई ।

काटकूटे-सज्ञा स्त्री० छाँट-छूँट । कतर-च्योत ।  
मुहा०—काटकूट करना=कतरना । लिख-  
कर उसे फिर काटना और काटकर फिर  
लिखना । घटाना-बढ़ाना ।

काटना-क्रि० स० १ शस्त्र आदि की धार  
धँसाकर किसी वस्तु के खड करना ।  
छेदन करना । २ पसीना । महीन चुर  
करना । ३ जहम करना । पाव  
करना । ४ किसी वस्तु का कुछ  
भाग कम करना । ५ बघ करना ।  
मुद्द में मारना । ६ कतरना । व्योतना ।  
७ नष्ट करना । ८ अनुचित प्राप्ति करना ।  
चुरेदग से आय करना । ९ समय बिताना ।

१० दूरी तय करना । रास्ता खतम करना ।  
११ छा जाना । १२ दाँत से काटना ।  
१३ कुल्हाड़ी या धारे से काटना । १४  
लकीर से किसी लिफाफे को रद्द करना ।  
छेंटना । मिटाना । १५ ऐसी चीजें तैयार  
करना, जो लकीर के रूप में कुछ दूर तक  
चली गई हों । जैसे, सड़क काटना, नहर  
काटना । १६ ऐसी चीजें तैयार करना,  
जिनमें लकीरों द्वारा कई विभाग किए गए  
हों, जैसे—बयारी काटना । १७ एक  
सम्पत्ति को दूसरी ऐसी सम्पत्ति से भाग देना  
विशेष न बचे । १८ बँद भोगना ।  
जेलखाने में दिन बिताना । १९ डसना ।  
विपरीत जतु का डक मारना या दाँत  
बँसाना । २० किसी तीक्ष्ण वस्तु का  
शरीर में सगकर जलन और छरछराहट  
पंदा करना । २१ एक रेखा का दूसरी  
रेखा के ऊपर से चार कोण बनाते हुए  
निकल जाना । २२ (किसी मत का)  
खंडन करना । अप्रमाणित करना । २३  
दुःखदायी लगना ।

मुहा०—काटो तो खून नहीं=बिलकुल स्तब्ध  
हो जाता । एकबारगी सन्न हो जाना ।  
काटने दीडना=चिड़चिड़ाना । खीभना ।  
काटे खाना या काटने दीडना=१ बुरा  
मालूम होना । चित्त को व्यथित करना ।  
२ सूना और उजाड़ लगना । काट  
खाना=अकस्मात् डक या दाँत से काट  
लेना ।

काटर-वि० कड़ा । कठोर । कठिन ।  
कट्टर । काटनेवाला ।

काटू-सज्ञा पु० १ कटहा । काटनेवाला ।  
२ भयानक । डरावना । ३ छेदक ।  
४ लकड़हारा ।

काठ-सज्ञा पु० १ काष्ठ । काठी । वह  
स्थूल भग जो उससे भलग हो गया हो ।  
लकड़ी । २ ईंधन । जलाने की लकड़ी ।  
३ शहतीर । सक्कड़ । ४ लकड़ी की  
बनी हुई बेड़ी । कलदरा ।

चौ०—काठ-कबाड=टूटा फूटा सामान ।

मुहा०—काठ का उल्लू=जड़ । बज्र मूल ।

नासमभ । काठ होना=१. चेतना-रहित होना । जड़ होना । सज्ञाहीन होना । स्तब्ध होना । २. सूखकर कड़ा हो जाना । काठ की हाँड़ी=दिखाऊ वस्तु जिसका धोखा एक बार से अधिक न चल सके । काठ मारना या काठ में पाँव देना=अपराधी को काठ की बेंड़ी पहनाना । स्वयं दुःख भोगने के लिए तैयार होना । काठ चलाना=दुःख से निर्वाह करना, समय वाटना ।

काठकोड़ा-सज्ञा पु० खटमल । उडीस । खट-कीरा ।

काठड़ा-सज्ञा पु० [स्त्री० काठडी] कठीता ।

काठ का बड़ा वस्त्रन-विशेष ।

काठमाडू-सज्ञा पु० नेपाल राज्य की राजधानी ।

काठिन्य-सज्ञा पु० दे० "कठिनता" । दृढता । निष्ठुरता । कठोरता ।

काठी-सज्ञा स्त्री० १. घोड़े या ऊँट पर कसने की जीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है । अँगरेजी जीन । खोल । काट । डौल । २. शरीर की गठन । अँगलेट । ३. तलवार या कटार की म्यान ।

वि० [काठियावाड़ देश] काठियावाड़ का ।

काडा-सज्ञा पु० युवा भैंसा ।

काढना-क्रि० स० १. निकालना । किसी वस्तु के भीतर से कोई वस्तु बाहर करना । २. उधेदना । किसी आवरण को हटायकर कोई वस्तु प्रत्यक्ष करना । खोलकर दिखाना । ३. किसी वस्तु को किसी वस्तु से पृथक् करना । ४. बेल-बूटे बनाना । उरोहना । चित्रित करना । ५. श्रृण लेना । उधार लेना । ६. पकाना । कड़ाह में से पकाकर निकालना । छानना । ७. बेल को गाड़ी व हल में जोतना । ८. घोड़े को चात सिखाना । काड़ा-सज्ञा पु० ग्रीष्मियों को पानी में उवाल या घोटायकर बनाया हुआ शरबंत । कवाय । जोसाँदा ।

काणा-वि० [स्त्री० काणी] जिसके एक भ्रूक्ष हो । काना ।

कातना-क्रि० स० १. चरखा चलाना । २. रुई का तागा बनाना ।

कातर-वि० १. व्याकुल । अधीर । किसी वस्तु में आसक्ति के कारण घबराहट । २. चंचल । ३. भयभीत । डरा हुआ । ४. डरपोक । ५. दुखी । आतं ।

सज्ञा स्त्री० कोल्हू में लकड़ी का वह तख्ता जिस पर हाँकिनेवाला बैठता है ।

कातरता-सज्ञा स्त्री० [वि० कातर] १. अधीरता । २. चंचलता । ३. दुःख की घबराहट । ४. डरपोकपन ।

काता-सज्ञा पु० तागा । डोरा । काता हुआ सूत ।

यौ०-बुढ़िया का काता-मिठाई-विशेष जो बहुत महीन सूत की तरह होती है ।

कातिक-सज्ञा पु० १. कात्तिक । क्वार के बाद का महीना । २. देवताओं के उठने का मास ।

कातिकी-सज्ञा स्त्री० १. कातिक की वस्तु । २. कातिक पूर्णिमा ।

कातिब-सज्ञा पु० [अ०] लेखक । लिखनेवाला । कातिल-वि० [अ०] घातक । अधिक । हत्यारा ।

कातो-सज्ञा स्त्री० १. सुनारों की कतरनी । २. कैंची । ३. छुरी । चाकू । ४. कत्ती । छोटी तलवार ।

सज्ञा पु० सूत कातनेवाला ।

कात्यायन-सज्ञा पु० [स्त्री० कात्यायनी] १. कात्यायन गोत्र में उत्पन्न ऋषि जिसमें तीन प्रसिद्ध हैं—एक विश्वामित्र के वंशज, दूसरे गोभिल के पुत्र और तीसरे सोमदत्त के पुत्र वरहचि कात्यायन । २. पाली व्याकरण के कर्त्ता वीर्य आचार्य विशेष ।

कात्यायनी-सज्ञा स्त्री० १. स्त्री जो वत गोत्र में उत्पन्न हो । २. कात्यायन ऋषि की पत्नी । ३. दुर्गा । ४. वषाम वस्तु धारण करनेवाली अथेष्ट विधवा स्त्री । ५. स्मृति-विशेष । ६. वाशवल्ग्य की स्त्री का नाम ।

कार्दव-सज्ञा पु० १. एक तरह का हरा । कलहन् । राजहंस । सुंदर हंस । २. कदव का पेड़ । ३. ईस । ४. बाण ।

५ दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश।  
 ६. मदिरा का एक भेद।  
 वि० बद्ध सबधी।  
 कादम्बरी—सज्ञा स्त्री० १ बाँयल। कोकिल।  
 २. वाणी। सरस्वती। ३. मदिरा। मद्य।  
 शराव। ४ वाणभट्ट की लिखी एक प्रसिद्ध  
 आख्यायिका। ग्रन्थ-विशेष। ५ मैना।  
 कादम्बिनी—नज्ञा स्त्री० मेघमाला। मेघश्रेणी।  
 मेघसमूह।  
 कादर—वि० १ डरपोव। भीरु। २ सुस्त।  
 ३ नामर्द। ४ अधीर। ध्वराया  
 हुआ। व्याकुल।  
 कादरता—सज्ञा स्त्री० १ भय। डर।  
 २ व्याकुलता।  
 कादरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] चोली विशेष।  
 सीतावद।  
 काल—सज्ञा पु० १ वर्ष। इन्द्रिय-विशेष जिससे  
 शब्द का ज्ञान होता है। सुनने की इन्द्रिय।  
 श्रवण। श्रुति। श्रोत्र। २ श्रवण-शक्ति।  
 सुनने की शक्ति। ३ लकड़ी का एक  
 टुकड़ा जो कूंड अधिक चौड़ी करने के लिए  
 हल के अगले भाग में बाँध दिया जाता है।  
 कसा। ४ चारपाई का टेढ़ापन। कनेव।  
 ५ सोने का एक गहना जो कान में पहना  
 जाता है। ६ तराजू का पसगा। ७ किसी  
 वस्तु का ऐसा निचला हुआ कोना जो भट्टा  
 जान पड़े। ८ पियाली। तोप या बंदूक में  
 वह स्थान जहाँ रजक रखी श्रीर बती दी  
 जाती है। रजकदानी। ९ (नाव की) पत-  
 वार। सज्ञा स्त्री० दे० "कानि"।  
 मुहा०—कान उठाना=१ आहट लेना।  
 सुनने के लिए तैयार होना। २ सचेत या  
 सजग होना। चौकन्ना होना। कान उमे-  
 ठना या पकड़ना=१ बड़ देने के हेतु किसी  
 का कान उमेठना, भर्त्सना करना। २  
 किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना।  
 कान करना=ध्यान देना। सुनना। कान  
 काटना=बढ़कर होना। मात करना। कान  
 का वचना=बिना सोचे-समझे किसी के  
 कहने पर विश्वास कर लेनेवाला। कान  
 सड़े करना=सचेत करना। होशियार

करना। कान सड़े होना=सावधान होना,  
 सजग होना। कान खाना या खा जाना=  
 बहुत शोरगुल करना। बहुत धाँवे करना।  
 कान गरम करना या गर देना=कान उमे-  
 ठना। कान-पूँछ दबाकर चला जाना=  
 चुपचाप चला जाना। कान देना या धरना  
 =ध्यान देना। ध्यान से सुनना। कान  
 खोल देना=सावधान करना, सजग करना।  
 सावधानी रखना। कान पकड़ना=१ कान  
 उमेठना। दण्ड देना। २ अपनी भूल या  
 छोटाई मानना। (किसी बात से) कान  
 पकड़ना=पछतावे के साथ किसी बात के  
 फिर न करने की प्रतिज्ञा करना। कान पर  
 जूँ न रेंगना=कुछ भी परवा न होना।  
 कुछ भी ध्यान न होना। कान पर रखना=  
 स्मरण रखना। उत्सुक रहना। कान फूँक-  
 वाना=गुरुमंत्र लेना। दीक्षा लेना। कान  
 फूँकना=चला घमाना। दीक्षा देना। कान  
 भरना=किसी के विरुद्ध किसी के मन में  
 कोई बात बैठा देना। खयाल खराब करना।  
 कान भलना=दे० "कान उमेठना"। ताड़ना  
 देना। सजा देना। कान में तेल डाले  
 बैठना=बात सुनकर भी उस ओर कुछ  
 ध्यान न देना। कान में डाल देना=सुना  
 देना। कानोकान खबर न होना=जरा  
 भी खबर न होना। किसी के सुनने न न  
 माना। कानों पर हाथ धरना या रखना=  
 किसी बात के करने से एकदमगी इनकार  
 करना। अस्वीकार करना, नहीं मानना।  
 कान झुपाना=सुनने की अभिलाषा।  
 कान दबाकर चलना=भाग जाना। किसी  
 बात का उत्तर दिए बिना या निबटारा  
 किए बिना चले जाना। कान लगाना=  
 ध्यान देना। कान में जेगली देकर रहना=  
 उदासीन होना। कान न हिलाना=कुछ  
 उत्तर न देना। उपेक्षा की दृष्टि से देखना।  
 कान फूटना=बहुर होना, किसी की न  
 सुनना, कानों को कुछ पहुँचाना। कान  
 फोड़ना=बड़ा शब्द, भयानक ध्वनि करना।  
 कानडा—वि० १ काना। एक भ्रांतिवाला।  
 २ राग-विशेष।

कानन-सज्ञा पु० १. अरण्य । जंगल\* ।  
वन । २. घर । ३. कान का बहुवचन ।  
४. ब्रह्मा का मुँह ।

काना-वि० [स्त्री० कानी] एक आँखवाला ।  
एकाक्ष ।

वि० कक्षा । वे फल आदि जिनका कुछ भाग  
कीटों ने खा डाला हो ।

संज्ञा पु० १. 'घा' की मात्रा जो किसी  
अक्षर के आगे लगाई जाती है और जिसका  
रूप ( १ ) है । २. पंक्ति पर की बिंदी या  
चिह्न । जैसे, तीन काने ।

वि० तिरछा । टेढ़ा । जिसका कोई कोना  
या भाग निकला हो ।

कानाकानी-सज्ञा स्त्री० मन्थना । काना-  
फूटी । चर्चा । अफवाह ।

कानाफूसी-सज्ञा स्त्री० कान के पास मुँह  
रखकर धीरे से कही जानेवाली बात ।

कानाबाती-सज्ञा स्त्री० दे० "कानाफूटी" ।

कानि-सज्ञा स्त्री० १. लोकप्रज्ञा । मान ।  
धर्म । २. मर्यादा का ध्यान । ३. सकीर्ण ।  
लिहाज । ४. खान ।

कानी-वि० स्त्री० १. जिसके एक आँख हो ।  
२. हेटी । जिसकी एक भाँव फूटी हो ।

मुहा०-कानी कौड़ी=फूटी या भ्रष्टी कौड़ी ।

वि० स्त्री सबसे छोटी (जँगली) । जैसे  
कानी जँगली ।

कानोन-सज्ञा पु० १. कुमारी कन्या से उत्पन्न ।  
अविवाहिता-गर्भज । २. कर्ण और व्यास ।

कानोहाउस-सज्ञा पु० [अंग्रे० काइन हाउस]  
वह स्थान जहाँ किसी की हानि करनेवाले  
या लावारिस पशुबंद किए जाते हैं ।

कानून-सज्ञा पु० [अ०, यू० केनान] [वि०  
कानूनी] राजनियम । विधि । आईन ।

मुहा०-कानून छाँटना=कानूनी बहस  
करना । झूठक करना । हुज्जत करना ।

कानूनगो-सज्ञा पु० माल महुक्मे का कर्मचारी  
विशेष, जो पटवारियों के कागजों की जाँच  
करता है ।

कानूनदा-सज्ञा पु० विधिज्ञ । जो कानून  
जानता हो ।

कानूनीया-वि० १. कानून जाननेवाला ।

२. हुज्जती । ३. प्रत्येक काम में दोष  
निकालनेवाला ।

कानूनी-वि० १. कानून जाननेवाला ।  
२. अदालती । कानून-संबंधी । ३. जो कानून  
के अनुसार हो । नियमानुकूल । ४. तर्क  
या तकरार करनेवाला । हुज्जती ।

कानोंकान-वि० गुप्त रूप से ।

मुहा०-कानोंकान कहना=छिपे तौर पर  
जताना ।

कान्यकुब्ज-सज्ञा पु० १. प्राचीन समय का  
प्रात विशेष, जो वर्तमान कन्नौज के आस-  
पास था । २. इस देश का ब्राह्मण । ३.

इस देश का निवासी । ४. कनौजिया ।

कान्हू\*-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

कान्हड़ा-सज्ञा पु० राग-विशेष ।

कापट्य-सज्ञा पु० १. कपटता । छल ।  
२. झूठता । धूर्तता । ३. प्रतारण ।

कापड़ी-सज्ञा पु० काठियावाड़ प्रांत में  
बसनेवाली जाति-विशेष ।

कापथ-सज्ञा पु० १. कुपथ । बुरा रास्ता ।  
२. दुर्गम रास्ता ।

कापर\*-सज्ञा पु० दे० "कपड़ा" ।

कापाल-सज्ञा पु० १. प्राचीन अस्त्र-विशेष ।  
२. बाणविडंग । ३. एक प्रकार की मुलह  
या सधि ।

वि० अस्थियो से बना । अस्थि-संबंधी ।

कापालिक-सज्ञा पु० १. शैव मत के वाममार्गी  
साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिये रहते  
और मद्य-मातादि खाते हैं । २. वर्णसंकर  
जाति-विशेष । ३. वाममार्गी । ४. कोढ़  
का एक भेद ।

वि० दयाहीन । निर्धुण । कठोर ।

कापाली-सज्ञा पु० [स्त्री० कापालिनी]  
१. शिव । महादेव । २. वर्णसंकर विशेष ।  
वाममार्गी साधु । दे० 'कापालिक' ।

कापिल-वि० १. कपिल-गंधी । २. कपिल  
का । ३. भूरा ।

सज्ञा पु० १. सास्य दशोन । २. कपिल  
के दशोन की माननेवाला । ३. भूरा रंग ।

कापी-सज्ञा स्त्री० (अंग्रे०) लिखने की कोड़े  
कागजों की पुस्तक । प्रति । जिल्द ।

कापीराइट-सज्ञा पु० (धर्म०) कानून के अनुसार पुस्तक के प्रकाशन या अनुवाद का यह अधिकार, जो उसके प्रकाशक या प्रकाशक को प्राप्त होता है।

कापुल्य-संज्ञा पु० १. कायर । दरपोक । भीष्ट । २. निमित्त । ३. कृत्स्न पुरुष । ४. निष्कर्मा ।

कापुल्य-संज्ञा पु० कायरता । नीचता ।

काफिया-संज्ञा पु० [अ०] अत्यन्तुप्राप्त । सुक । सज ।

यो०-काफियावंदी=तुक्वंदी । तुक जोड़ना । मुहा०-काफिया तंग करना=नाकी दम करना । बहुत हँसान करना ।

काफिर-वि० [अ०] १. मुसलमानों के मत से, उनके भिन्न धर्म को माननेवाला । २. नास्तिक । ईश्वर को न माननेवाला । ३. निर्दय । कठोर । निष्ठुर । बेदर्द । ४. दुष्ट । दुष्ट । ५. काफिर देश का रहनेवाला ।

सज्ञा पु० [अ०] [वि० काफिरी] देश विशेष का नाम जो अफिरा में है ।

काफिला-सज्ञा पु० [अ०] यात्रियों का समूह ।

काफी-संज्ञा पु० इस नाम का एक ठाट तथा राग (संगीत) ।

वि० [अ०] पूर्ण । आवश्यक । पर्याप्त । पूरा । (अर्थ०) कहुवा ।

काफीहाउस-संज्ञा पु० [अर्थ०] होटल या ऐसा स्थान जहाँ काफी, आइस्क्रिम और चाय, आदि बिक्ती हो, और लोग जमकर गप्पझाँक बिया करें ।

काफूर-संज्ञा पु० [वि० काफूरी] वपूर । मुहा०-काफूर होना=भाग, जाना । चपल होना । गायब होना । लुप्त होना ।

काफूरी-वि० १. काफूर के रंग का । २. काफूर का ।

सज्ञा पु० हलका रंग-विशेष जिसमें हरेपन की झलक रहती है ।

काब-संज्ञा स्त्री० [तु०] बड़ी रिकामी ।

काबर-वि० चित्तवक्ता । जिसमें कई रंग हो ।

काबा-संज्ञा पु० अरब के मक्का शहर का स्थान-विशेष, जहाँ मुसलमान हज या तीर्थ-यात्रा के लिए जाते हैं ।

काबिल-वि० [अ०] १. अधिकारी । अधिकार प्राप्त । २. मजबूत का अवरोधक । दस्त रोपनेवाला ।

काबिल-वि० [अ०] [संज्ञा काबिलीयत] १. योग्य । लायक । २. पंडित । विद्वान् । ३. चतुर ।

काबिलीयत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता । लायकता । २. विद्वत्ता । पांडित्य । ३. चतुराई ।

काबिल-संज्ञा पु० रंग-विशेष जिसमें मिट्टी के कच्चे बर्तन रंगकर पकाए जाते हैं ।

कादक-संज्ञा स्त्री० [फा०] कबूतरों का दरवा ।

कादल-संज्ञा पु० [वि० कादुली] १. नदी-विशेष जो अफगानिस्तान से आकर अटक के पास सिंध नदी में गिरती है । २. अफगानिस्तान की राजधानी ।

कादुली-वि० कादुल का ।

सज्ञा पु० कादल का निवासी ।

कादू-संज्ञा पु० [तु०] वश । शक्ति । अधिकार । बल । चारा ।

काम-संज्ञा पु० [वि० कामुक, कामी] १. मनोरथ । इच्छा । २. कामदेव । ३. महादेव । ४. इंद्रियों की अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति [कामशास्त्र] । ५. सहवास या मेथन की इच्छा । वामना । ६. चार पदार्थों में से एक । ७. अमिताया । ८. व्यापार । वह जो किया जाय । काम । ९. कठिन शक्ति या कौशल का कार्य । १०. अर्थ । प्रयोजन । मतलब । तात्पर्य । ११. मरोकार । गरज । वास्ता । १२. व्यवहार । उपयोग । १३. व्यवसाय । कारबार । १४. रचना । कारीगरी । वनावट । १५. बेलकूटा या नक्काशी । १६. बधावा । १७. सुंदर । १८. विषय ।

मुहा०-काम आना=१. लड़ाई में मारा जाना । २. व्यवहार में आना । काम

करना=१. प्रभाव डालना । असर डालना ।  
 २. फल उत्पन्न करना । काम चलना= काम जारी रहना । काम चलाना=१. काम निचालना । २. प्रिया का संपादन होना ।  
 काम तमाम करना=१. काम समाप्त करना । २. मार डालना । जान लेना । काम होना=१. प्राण जाना । मरना । २. अत्यंत कष्ट पहुँचना । काम रखता हूँ=बड़ा कठिन कार्य है । कठिन बात है । काम निकलना=१ उद्देश्य पूरा होना । प्रयोजन सिद्ध होना । इच्छा पूर्ण करना । मतलब गैठना । २. आवश्यकता पूरी होना । कार्य निर्याह होना । काम पड़ना= आवश्यकता होना । किसी के काम पड़ना= किसी से पाला पड़ना । किसी तरह का व्यवहार या सवध होना । काम से काम रखना= अपने प्रयोजन वा ध्यान रखना । व्यर्थ बातों में न पड़ना । काम आना= १. उपयोगी होना । व्यवहार में आना । २. सहारा देना । हाथ बढ़ाना । सहायक होना । काम वा=व्यवहार योग्य । उपयोगी (वस्तु) । काम देना=लाभकारी सिद्ध होना । व्यवहार में आना । उपयोगी होना । काम में लाना=वर्तना । व्यवहार में लाना ।

कामकला-सज्ञा स्त्री० १. मैथुन । २. रति । कामदेव की स्त्री । ३. चंद्रमा की सीलहू कला ।

कामकाज-सज्ञा पु० कामधंधा । कारोबार ।  
 कामकाजी-वि० काम में फँसा रहनेवाला । काम करनेवाला । परिश्रमी । उद्योग-धंधे में रहनेवाला ।

कामकेलि-सज्ञा स्त्री० सुख ।, रमण किया ।

कामग-सज्ञा पु० अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला । दुराचारी । लपट ।

कामगार-सज्ञा पु० दे० "कामदार" ।

कामचर-वि० इच्छानुसार घूमने फिरनेवाला ।

कामचलाऊ-वि० १. जिससे किसी प्रकार का काम चल सके । २. जो बहुत से

अशो में काम दे जाय । ३. कुछ कुछ उपयोगी ।

कामवारी-वि० १. इच्छानुसार धिचरनेवाला । स्वतंत्र । २. मनमाना काम करनेवाला । स्वेच्छाचारी । ३. उद्बुद्धल । ४. कामुक ।

कामवोर-वि० अकर्मण्य । घालसी । काम से जो घुरानेवाला ।

कामज-वि० जो वासना से उत्पन्न हो ।

कामजित्-वि० जो काम को जीते ।

सज्ञा पु० १. शिव । महादेव । २. वात्सिकेय । ३. जिन देव ।

कामज्वर-सज्ञा पु० ज्वर-विशेष जो स्त्रियो और पुरुषों को, अपना अभिलषित, प्रिय या प्रियतमा न मिलने से हो जाता है ।

कामझिपा-सज्ञा पु० चमार राघु, जो राम-देव के मत के अनुयायी है ।

कामतरु-सज्ञा पु० दे० "कल्पवृक्ष" ।

कामता\*-सज्ञा पु० चित्रकूट ।

कामद-वि० [स्त्री० कामदा] कामना वा मनोरथ पूरा करनेवाला । जो इच्छानुसार फल दे ।

कामदक-सज्ञा पु० एक भारतीय नैतिक विद्वान् का नाम ।

कामद गाई-सज्ञा स्त्री० "कामधेनु" ।

कामद मणि-सज्ञा पु० चित्तमणि ।

कामदहन-सज्ञा पु० १ शिव । २. काम-देव की जलानेवाले ।

कामदा-सज्ञा स्त्री० १ कामधेनु । २ दत्ता अक्षरों की वर्णवृत्ति-विशेष ।

कामदानी-सज्ञा स्त्री० बलावस्तु । बादल के तार या सलमे-सितारे से बनाया हुआ बेल-बूटा ।

कामदार-सज्ञा पु० कारिदा । प्रवध करनेवाला । अमला ।

वि० जिस पर बेल-बूटे कड़े हो या बने हो । जैसे, कामदार टोपी ।

कामदुषा-सज्ञा स्त्री० "कामधेनु" ।

कामदुहा-सज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु" ।

कामदुती-सज्ञा स्त्री० बसंत ऋतु । कुभी ।

कापीराइट-सज्ञा पु० (अप्र०) कानून के अनुसार पुस्तक के प्रकाशन या अनुवाद का यह अधिकार, जो उससे प्रथम बार या प्रकाशन को प्राप्त होता है।

कापुष्प-सज्ञा पु० १ कायर । डरपोक । भीर । २ निद्रित । ३ मृत्तित पुरुष । ४. निष्काम ।

कापुष्प-सज्ञा पु० कायरता । नीचता । काफिया-सज्ञा पु० [अ०] अत्यानुप्रास । तुल्य । सज ।

यो०-काफियावदी=तुल्यवदी । तुल्य जोड़ना । मुहा०-काफिया संग करना=नाको दम करना । बहुत हँसान करना ।

काफिर-वि० [अ०] १ मुसलमानों के मत से, उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला । २ नास्तिक । ईश्वर को न माननेवाला । ३ निर्दय । कठोर । निष्ठुर । वेददं । ४ बुरा । दुष्ट । ५ काफिर देश का रहनेवाला ।

सज्ञा पु० [अ०] [वि० काफिरी] देश विशेष का नाम जो अफिरा में है ।

काफिरा-सज्ञा पु० [अ०] यात्रिया का समूह ।

काफी-सज्ञा पु० इस नाम का एक ठाट तथा राग (संगीत) ।

वि० [अ०] पूर्ण । आवश्यक । पर्याप्त । पूरा । (अप्र०) कहना ।

काफीहाउस-सज्ञा पु० [अप्र०] होटल या ऐसा स्थान जहाँ काफी, आईस्कीम और चाय, आदि बिकती हो, और लोग जमकर गपराजवा किया करें ।

काफूर-सज्ञा पु० [वि० काफूरी] कपूर । मुहा०-काफूर होना=भाग जाना । चपल होना । गायब होना । लुप्त होना ।

काफूरी-वि० १ काफूर के रंग का । २ काफूर का ।

सज्ञा पु० हलका रंग विशेष जिसमें हरेपन की मलक रहती है ।

काब-सज्ञा स्त्री० [तु०] बड़ी रिकामी ।

काबर-वि० चितकबरा । जिसमें कई रंग हो ।

काबा-सज्ञा पु० अरब के मक्का शहर का स्था-विशेष, जहाँ मुसलमान हज या तीर्थ-यात्रा के लिए जाते हैं ।

काबिल-वि० [अ०] १ अधिकारी । अधिकार प्राप्त । २ मल का अवरोधक । दस्त रोक्नेवाला ।

काबिल-वि० [अ०] [सज्ञा काबिलीयत] १ योग्य । लायक । २ पंडित । विद्वान् । ३ चतुर ।

काबिलीयत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ योग्यता । लियाकत । २ विद्वत्ता । पांडित्य । ३ चतुराई ।

काबिल-सज्ञा पु० रंग विशेष जिससे मिट्टी के कच्चे बर्तन रंगवर पकाए जाते हैं ।

काबुल-सज्ञा स्त्री० [फा०] कबूतरो का दरवा ।

काबुल-सज्ञा पु० [वि० काबुली] १ नदी-विशेष जो अफगानिस्तान से आकर अरब के पास सिंध नदी में गिरती है ।

२ अफगानिस्तान की राजधानी ।

काबुली-वि० काबुल का ।

सज्ञा पु० काबुल का निवासी ।

काबू-सज्ञा पु० [तु०] वश । शक्ति । अधिकार । दस्त । चारा ।

काम-सज्ञा पु० [वि० कामुक कामी] १ मनोरथ । इच्छा । २ कामदेव । ३ महादेव । ४ इन्द्रियों की अपने अपने विषयो की ओर प्रवृत्ति [नाममात्त्व] ।

५ सहवान या मैथन की इच्छा । वासना ।

६ चार पदार्थों में से एक । ७ अभिलाषा ।

८ व्यापार । वह जो किया जाय । काम ।

वाज । ९ कठिन शक्ति या कौशल का कार्य । १० अर्थ । प्रयोजन । मतलब ।

तात्पर्य । ११ मरोकार । गरज । वास्ता ।

१२ व्यवहार । उपयोग । १३ व्यवसाय ।

कारवार । रोजगार । १४ रचना ।

कारीगरी । बनाबट । १५ बेलबूटा या

नक्काशी । १६ बघावा । १७ मुंदर ।

१८ विषय ।

मुहा०-काम आना=१. लड़ाई में भाग जाना । २ व्यवहार में आना । काम

करना=१ प्रभाव डालना । असर डालना ।  
 २. फल उत्पन्न करना । काम चलना=  
 काम जारी रहना । काम चलाना=१. काम  
 निवाला । २. प्रिया का संपादन होना ।  
 काम समाप्त करना=१. काम समाप्त  
 करना । २. मार डालना । जान लेना । काम  
 होना=१. प्राण जाना । मरना । २. अत्यंत  
 कष्ट पहुँचना । काम रखता हूँ=बड़ा  
 बठिन वाय्यं हूँ । बठिन यात हूँ । काम  
 निबलना=१ उद्देश्य पूरा होना । प्रयोजन  
 सिद्ध होना । इच्छा पूर्ण करना । मतलब  
 भँटना । २ आवश्यकता पूरी होना ।  
 वाय्यं निर्वाह होना । काम पडना=  
 आवश्यकता होना । किसी के काम पडना=  
 किसी से पाला पडना । किसी तरह का  
 व्यवहार या संबंध होना । काम से काम  
 रखना= अपने प्रयोजन का ध्यान रखना ।  
 ध्ययं बातों में न पडना । काम आना=  
 १ उपयोगी होना । व्यवहार में आना ।  
 २ सहाय देना । हाथ बटाना । सहायक  
 होना । काम का=व्यवहार योग्य । उपयोगी  
 (वस्तु) । काम देना=लाभकारी सिद्ध  
 होना । व्यवहार में आना । उपयोगी  
 होना । काम में लाना=वर्तना । व्यवहार  
 में लाना ।  
 कामकला-सज्ञा स्त्री० १ मंथन । २  
 रति । कामदेव की स्त्री । ३ चंद्रमा की  
 सोलह कला ।  
 कामकाज-सज्ञा पु० कामधंधा । कारोबार ।  
 कामकाजी-वि० काम में फँसा रहनेवाला ।  
 काम करनेवाला । परिश्रमी । उद्योग-धंदे  
 में रहनेवाला ।  
 कामकैलि-सज्ञा स्त्री० सुरत । रमण  
 प्रिया ।  
 कामग-सज्ञा पु० अपनी इच्छा के अनुसार  
 चलनेवाला । दुराचारी । लपट ।  
 कामगार-सज्ञा पु० दे० "कामदार" ।  
 कामचर-वि० इच्छानुसार घूमने फिरने-  
 वाला ।  
 काम-चलाऊ-वि० १. जिससे किसी प्रकार  
 का काम चल सके । २ जो बहुत से

भरतों में काम दे जाय । ३. कुछ कुछ  
 उपयोगी ।  
 कामचारी-वि० १ इच्छानुसार विचरने-  
 वाला । स्वप्न । २. मनमाना काम  
 करनेवाला । स्वेच्छाचारी । ३. उच्छृङ्खल ।  
 ४. कामुक ।  
 कामचोर-वि० अवमंण्य । झालसी । काम  
 से जी चुरानेवाला ।  
 कामज-वि० जो वासना से उत्पन्न हो ।  
 कामजित्-वि० जो काम को जीते ।  
 सज्ञा पु० १. शिव । महादेव । २ वासि-  
 केय । ३. जिन देव ।  
 कामचर-सज्ञा पु० ज्वर-विशेष जो  
 स्त्रियो और पुरुषों को, अपना अभिलषित,  
 प्रिय या प्रियतमा न मिलने से हो जाता  
 है ।  
 कामझिया-सज्ञा पु० चमार साधु, जो राम-  
 देव के मत के अनुयायी हैं ।  
 कामतद-सज्ञा पु० दे० "कल्पवृक्ष" ।  
 कामता\*-सज्ञा पु० चित्रवूट ।  
 कामद-वि० [स्त्री० कामदा] कामना या  
 मनोरथ पूरा करनेवाला । जो इच्छानुसार  
 फल दे ।  
 कामदक-सज्ञा पु० एक भारतीय नैतिक विद्वान्  
 का नाम ।  
 कामद गाई-सज्ञा स्त्री० "कामधेनु" ।  
 कामद मणि-सज्ञा पु० चिंतामणि ।  
 कामदहन-सज्ञा पु० १ शिव । २ काम-  
 देव को जलानेवाले ।  
 कामदा-सज्ञा स्त्री० १ कामधेनु । २ दश  
 अक्षरों की वर्णवृत्ति-विशेष ।  
 कामदानी-सज्ञा स्त्री० कलावस्तु । बादल के  
 तार या सलमे-सितारे से बनाया हुआ  
 बेल-वूट ।  
 कामदार-सज्ञा पु० वारिदा । प्रबंध करने-  
 वाला । अमला ।  
 वि० जिस पर बेल-वूट के बड़े हो या बने हो ।  
 जैसे, कामदार टोपी ।  
 कामदुधा-सज्ञा स्त्री० "कामधेनु" ।  
 कामदुहा-सज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु" ।  
 कामद्वती-सज्ञा स्त्री० वसंत ऋतु । कुम्भी ।

कापीराइट-संज्ञा पु० (अप्र०) यानुज के अनुसार पुस्तक के प्रकाशन या अनुवाद का यह अधिकार, जो उसके प्रकाशक या प्रकाशन को प्राप्त होता है।

कापुल-संज्ञा पु० १ कायर। दरिद्र। भीरु। २ विदित। ३ वृत्तित पुरुष। ४ निष्काम।

कापुल-संज्ञा पु० कायरता। नीचता। काफिया-संज्ञा पु० [अ०] अल्पानुप्रास। तुल्य। सज।

यो०-काफियावदी=तुल्यवदी। तुल्य जोड़ना। मुहा०-काफिया संग करना=नारा दम करना। बहुत हैरान करना।

काफिर-वि० [अ०] १ मुसलमानों के मत से, उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। २ नास्तिक। ईश्वर को न माननेवाला। ३ निर्दय। कठोर। निष्ठुर। बेददं। ४ बुरा। दुष्ट। ५ काफिर देश का रहनेवाला।

संज्ञा पु० [अ०] [वि० काफिरी] देश विशेष का नाम जो अफ्रीका में है।

काफिला-संज्ञा पु० [अ०] यात्रियों का समूह।

काफी-संज्ञा पु० इस नाम का एक ठाट तथा राग (संगीत)।

वि० [अ०] पूर्ण। आवश्यक। पर्याप्त। पूरा। (अप्र०) कहवा।

काफीहाउस-संज्ञा पु० [अप्र०] होटल या ऐसा स्थान जहाँ काफी, आइस्क्रिम और चाय, आदि बिकती हो, और लोग जमकर खरखर कर रहे हों।

काफूर-संज्ञा पु० [वि० काफूरी] कपूर। मुहा०-काफूर होना=भाग जाना। चपत होना। गायब होना। लुप्त होना।

काफूरी-वि० १ काफूर के रंग का। २ काफूर का।

संज्ञा पु० हलका रंग विशेष जिसमें हरेपन की झलक रहती है।

काब-संज्ञा स्त्री० [तु०] बड़ी रिकामी।

काबर-वि० चितकबरा। जिसमें कई रंग हों।

काबा-संज्ञा पु० शहर के भक्ता शहर का स्थान-विशेष, जहाँ भुगतमा हज या तीर्थ-यात्रा के लिए जाते हैं।

काबिल-वि० [अ०] १ अधिकारी। अधिकार प्राप्त। २ मूल या अवगोचर। दस्त रोक्नेवाला।

काबिल-वि० [अ०] [संज्ञा काबिलीयत] १ योग्य। लायक। २ पंडित। विद्वान्। ३ चतुर।

काबिलीयत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १ योग्यता। लियाकत। २ विद्वत्ता। पांडित्य। ३ चतुराई।

काबिल-संज्ञा पु० रंग विशेष जिससे मिट्टी के बच्चे वर्तन रंगकर पकाए जाते हैं।

काबूल-संज्ञा स्त्री० [फा०] बंदूतों का दरवा।

काबूल-संज्ञा पु० [वि० काबुली] १ नदी-विशेष जो अफगानिस्तान से आकर अटक के पास सिंध नदी में गिरती है। २ अफगानिस्तान की राजधानी।

काबुली-वि० काबूल का। संज्ञा पु० काबूल का निवासी।

काबू-संज्ञा पु० [तु०] वसा। सफित। अधिकार। बल। शक्ति।

काम-संज्ञा पु० [वि० कामुक कामी] १ मनोरथ। इच्छा। २ कामदेव। ३ महादेव। ४ इन्द्रियों की अपने अपने विषयों की ओर प्रवृत्ति [कामशास्त्र]। ५ सहवान या मैथुन की इच्छा। वासना। ६ चार पदार्थों में से एक। ७ अभिलाषा।

काव्यापार। वह जो किस्म काव्य का काम। वाज। ९ कठिन शक्ति या कौशल का कार्य। १० अर्थ। प्रयोजन। मतनव।

तात्पर्य। ११ सरोकार। गरज। वास्ता। १२ व्यवहार। उपयोग। १३ व्यवसाय।

कारवार। रोजगार। १४ रचना। कारीगरी। बनावट। १५ बेलबूटा या नक्काशी। १६ बघावा। १७ सुंदर। १८ विषय।

मुहा०-काम भाना=१ लड़ाई में मारा जाना। २ व्यवहार में आना। काम

कामायुद्ध-मज्ञा पु० १. कामदेव का आयुद्ध ।  
 २. कामदेव के वाण । ३. भ्राम ।  
 कामायनी-मज्ञा स्त्री० १. वैवस्वत मनु की पत्नी  
 श्रद्धा का नाम । २. हिन्दी का एक वाक्यप्रय ।  
 कामाक्ष्य-सज्ञा पु० मनोहर वन । उत्तम  
 वगीचा ।  
 कामारथी-सज्ञा पु० दे० "कांवारथी" ।  
 कामारि-सज्ञा पु० काम के शत्रु । शिव ।  
 महादेव ।  
 कामार्यी-सज्ञा पु० १. कामरिया । २. गंगा-  
 जलिया ।  
 कामावशयिता-सज्ञा स्त्री० सत्यमकल्पता ।  
 योगियों की आठ सिद्धियों या ऐश्वर्यों में  
 से एक ।  
 कामासक्त-वि० कामातुर । काम से पीड़ित ।  
 कामिका-मज्ञा स्त्री० भावण कृष्ण की एकादशी  
 का नाम ।  
 कामिनी-सज्ञा स्त्री० १. कामवती स्त्री ।  
 २. भीरु स्त्री । ३. सुंदरी स्त्री । युवती ।  
 ४. मदिरा । शराव ५. दाहहल्दी ।  
 ६. पेड़ों का बाँदा । ७. मालकोप, एक  
 रागिनी । ८. काष्ठ विज्ञाप ।  
 कामिनीमोहन-सज्ञा पु० समिणी छद्म का एक  
 नाम ।  
 कामिल-वि० [अ०] १. पूर्ण । पूरा ।  
 समुच्चा । कुल । २. योग्य । व्युत्पद्य ।  
 कामी-वि० [स्त्री० कामिनी] १. विपयी ।  
 कामुक । २. कामना रखनेवाला । इच्छुक ।  
 कामातुर ।  
 सज्ञा पु० १. चक्रवा । २. कबूतर । ३.  
 सारस ४. चिड़ा । ५. चद्रमा । ६.  
 काकडामिणी । ७. दिष्णु का एक नाम ।  
 ८. निव ।  
 कामुक-पि० [स्त्री० कामुका] १. चाहनेवाला ।  
 इच्छा करनेवाला । २. कामुक । कामुकी]  
 कामी । विपयी । कामामय । ३. लपट ।  
 कामातुर ।  
 सज्ञा पु० धनुष । २. वृद्ध-विशेष ।  
 कामेश्वरी-सज्ञा स्त्री० १. तत्र के अनुसार  
 भैरवी-विशेष । २. कामाख्या की एक  
 मूर्ति (पाँच मूर्तियों में से) ।

कामोद-सज्ञा पु० राग-विशेष ।  
 कामोदा-सज्ञा स्त्री० रागिणी-विशेष ।  
 कामोद्दीपक-वि० काम को बढ़ानेवाला जिससे  
 मनुष्य को सहवास की इच्छा अधिक हो ।  
 कामोद्दीपन-सज्ञा पु० सहवास की इच्छा का  
 बढ़ावा ।  
 काम्य-वि० १. इच्छित । जिसकी इच्छा  
 हो । कामनायुक्त । २. जिससे कामना की  
 सिद्धि हो । ३. कमनीय । सुन्दर ।  
 सज्ञा पु० १. किसी कामना की सिद्धि के  
 लिए किया जानेवाला यज्ञ या कर्म जैसे—  
 पुत्रेष्टि । २. अभिलाषा का विषय ।  
 काम्य कर्म-सज्ञा पु० इच्छित फलसिद्धि के  
 लिए धर्मकार्य ।  
 काम्यत्व-सज्ञा पु० आकांक्षा । अभिलाषा ।  
 काम्यदान-सज्ञा पु० १. कामना सहित दान ।  
 नैमित्तिक दान । २. किसी पर्व-विशेष में  
 दान ।  
 काम्येष्टि-सज्ञा स्त्री० कामना की सिद्धि  
 के लिए किया जानेवाला यज्ञ ।  
 काय-वि० प्रजापति-सबधी ।  
 सज्ञा पु० १. देह । शरीर । बदन ।  
 तन । वपु । २. प्रजापति तीर्थ ।  
 ३. कनिष्ठा उँगली की नीचे की पोर  
 (स्मृति) । ४. प्रजापति का हवि । ५. प्राजा-  
 पत्य विवाह । ६. पूँजी । मूलधन । ७.  
 सध । समुदाय । ८. मूर्ति ।  
 कायक-वि० १. शरीर-सबधी । शारीरिक ।  
 २. जीव ।  
 कायक्लेश-सज्ञा पु० शरीर-सबधी दुःख । देह  
 का कष्ट ।  
 कायचिकित्सा-सज्ञा स्त्री० शारीरिक रोगों  
 की चिकित्सा ।  
 कायजा-सज्ञा पु० घोड़े की लगाम की डोरी  
 जिसे पूँछ तक ले जाकर बाँधते हैं ।  
 कायदा-सज्ञा पु० १. नियम । विधान ।  
 २. रीति । ढंग । ३. बात । दस्तूर ।  
 विधि । ४. व्यवस्था । क्रम ।  
 कायफल-सज्ञा पु० वृक्ष-विशेष जिसकी छाल  
 देवा के काम में आती है । औषध-  
 विशेष ।

कामदेव-सज्ञा पु० १. प्रेम के देवता-स्त्री जो पुरुष में परस्पर आकर्षण और संयोग की प्रेरणा देते हैं। मदन । २. धीर्य । ३. सभोग की इच्छा ।

काम-धाम-सज्ञा पु० धधा । काम-बाज । व्यापार । रोजगार ।

कामधुक्\*-सज्ञा स्त्री० कामधेनु ।

कामधेनु-मज्ञा स्त्री० १ सब मनोरथों को पूरा करनेवाली गाय । पुराणानुसार स्वर्ग की एक गाय जिससे जो मूछ माँगा जाय, वही मिलता है। सुरभि । २ वशिष्ठ की शबला या नदिनी नाम की गाय जिसके कारण उनका विश्वामित्र से युद्ध हुआ था ।

कामना-सज्ञा स्त्री० १. इच्छा । वाछा । मनोरथ । २ वासना ।

कामपत्नी-सज्ञा स्त्री० रति । कामदेव की स्त्री ।

कामपाल-सज्ञा पु० १ बलदेव । बलराम । २ महादेव ।

कामपीडित-वि० १ कामासक्त । २ काम से दुखी ।

कामबाण-सज्ञा पु० कामदेव के पाँच बाण—मोहन, उन्मादन, सतपन, शोषण और निद्रावृत्तकरण । बाणों को लाल कमल, अशाक, आम की मजरी, चमेली और नील कमल का भी माना जाता है ।

कामभक्ष-वि० १ इच्छानुसार भोजन करने-वाला । २ भक्ष्याभक्ष्य विचाररहित ।

कामपात्र-वि० [पा०] १ जिसका काम निबल गया हो या सिद्ध हो गया हो । २ सफल । उत्तीर्ण । कृतकार्य ।

कामपात्री-सज्ञा स्त्री० [का०] सफलता ।

कामरिपु-सज्ञा पु० [कामदेव के शत्रु] महा-देव । शिव ।

कामरी\*-सज्ञा स्त्री० कवल । लोई । कमरी । कमली ।

कामरचि-सज्ञा स्त्री० अस्त्र-विशेष जिससे मृत्यु अस्त्रों को व्यर्थ करते थे ।

कामरू-सज्ञा पु० दे० "कामरूप" ।

कामरूप-सज्ञा पु० १ आसाम का जिला-विशेष जहाँ कामाख्या देवी का मंदिर है ।

२. प्राचीन अस्त्र-विशेष जिससे मनु के अस्त्र व्यर्थ किए जाते थे । ३. २६ मायाओं का एक छंद । ४. देवता ।

वि० १. जो मनमाना रूप बनादे । २. सुंदर । ३ स्वेच्छाचारी ।

कामरूपी-वि० विद्याधर । बहुरूपिया ।

कामल-सज्ञा पु० कमल का रोग । पीलिया । पांडुरोग ।

कामला-सज्ञा पु० दे० "कामल" । पाण्डु रोग ।

कामली\*-सज्ञा स्त्री० कमली ।

कामलोल-वि० चंचल । चलचित्त ।

कामवती-सज्ञा स्त्री० वह स्त्री जो काम या सभोग की वासना रखे । विलासिनी ।

कामवान्-वि० [स्त्री० कामवती] जो काम या सभोग की इच्छा करे ।

कामशर-सज्ञा पु० दे० "कामबाण" । मदन-बाण ।

कामशास्त्र-सज्ञा पु० विद्या-विशेष या ग्रन्थ जिसमें स्त्री-पुरुषों के परस्पर आकर्षण आदि के व्यवहारों का वर्णन हो ।

कामसखा-सज्ञा पु० वसंत ऋतु ।

कामाद्य-वि० काम के वशीभूत, कामवासना के जोश में जिसे भले-बुरे का ज्ञान न हो । विवेकभ्रष्ट ।

कामा-सज्ञा स्त्री० मूर्ति विशेष जिसमें दो गुह होते हैं ।

कामाक्षी-सज्ञा स्त्री० तंत्र के अनुसार देवी की मूर्ति-विशेष ।

कामाख्या या कामाख्या-सज्ञा स्त्री० १ देवी का एक पीठ-स्थान । देवी-विशेष । २ कामरूप ।

कामातुर-वि० काम के वेग से तन्त्र । समागम की इच्छा से उद्विग्न । कामार्त । काम से पीडित । कामुक ।

कामात्मा-वि० कामुक । लम्पट । व्यभि-चारी ।

कामाधिकार-सज्ञा पु० १ प्रेम की उत्पत्ति ।

२. स्वेच्छाधीन ३ काम का अधिकारी ।

कामाधिष्ठ-वि० कामाग्निभूत । कामवश ।

कामानुज-वि० क्रोध ।

कामायुद्ध-सज्ञा पु० १ कामदेव का आयुद्ध ।  
२ कामदेव के बाण । ३ ग्राम ।  
कामायनी-सज्ञा स्त्री० १. वैवस्वत मनु की पत्नी  
श्रद्धा का नाम । २. हिन्दी का एक वाक्यप्रथ ।  
कामारथ-सज्ञा पु० मनोहर वन । उत्तम  
धनोपा ।

कामारथी-सज्ञा पु० दे० "कामारथी" ।  
कामारि-सज्ञा पु० काम के दातृ । शिव ।  
महादेव ।

कामारथी-सज्ञा पु० १ कामरिया । २ गंगा-  
जलिया ।

कामायशायिता-सज्ञा स्त्री० सत्यसकल्पता ।  
योगियों की आठ सिद्धिया या ऐश्वर्यों में  
से एक ।

कामासक्त-वि० कामातुर । काम से पीड़ित ।  
कामिका-सज्ञा स्त्री० श्रावण कृष्ण की एकादशी  
का नाम ।

कामिनी-सज्ञा स्त्री० १ कामवती स्त्री ।  
२ भीष्ट स्त्री । ३ सुंदरी स्त्री । युवती ।  
४ मदिरा । शराब ५ दासहल्दी ।  
६ पड़ो का बांदा । ७ मालकाय, एक  
रागिनी । ८ काष्ठ विशेष ।

कामिनीमोहन-सज्ञा पु० खग्विणी छंद का एक  
नाम ।

कामिल-वि० [अ०] १ पूर्ण । पूरा ।  
समूचा । कुल । २ योग्य । व्युत्पन्न ।  
कामी-वि० [स्त्री० कामिनी] १ विषयी ।  
कामुक । २ कामना रखनेवाला । इच्छुक ।  
कामातुर ।

सज्ञा पु० १ चक्रवा । २ बबूतर । ३  
सारस ४ चिड़ा । ५ चंद्रमा । ६  
काकडामिणी । ७ विष्णु का एक नाम ।  
८ शिव ।

कामुक-वि० [स्त्री० कामुका] १ चाहनेवाला ।  
इच्छा करनेवाला । २ कामुक ।  
कामी । विषयी । कामासक्त । ३ लपट ।  
कामातुर ।

सज्ञा पु० वनस्प । कबूतर विशेष ।

कामेश्वरी-सज्ञा स्त्री० १ तंत्र ७ अनुसार  
भैरवी विशेष । २ कामाख्या की एक  
मूर्ति (पाँच मूर्तियों में से) ।

कामोद-सज्ञा पु० राग-विशेष ।

कामोदा-सज्ञा स्त्री० रागिणी-विशेष ।

कामोद्दीपक-वि० काम को बढ़ानेवाला जिससे  
मनुष्य को सहवास की इच्छा अधिक् हो ।

कामोद्दीपन-सज्ञा पु० सहवास की इच्छा का  
बढ़ावा ।

काम्य-वि० १ इच्छित । जिसकी इच्छा  
हो । कामनापुक्त । २ जिससे कामना की  
सिद्धि हो । ३ कमनीय । सुन्दर ।

सज्ञा पु० १ किसी कामना की सिद्धि के  
लिए किया जानेवाला यज्ञ या कर्म जैसे—  
पुत्रोष्टि । २ अभिलाषा का विषय ।

काम्य कर्म-सज्ञा पु० इच्छित फलसिद्धि के  
लिए धर्मकार्य ।

काम्यद-सज्ञा पु० आकांक्षा । अभिलाषा ।

काम्यदान-सज्ञा पु० १ कामना सहित दान ।  
नैमित्तिक दान । २ किसी पर्व-विशेष में  
दान ।

काम्योष्टि-सज्ञा स्त्री० कामना की सिद्धि  
के लिए किया जानेवाला यज्ञ ।

काय-वि० प्रजापति-संबन्धी ।

सज्ञा पु० १ दह । शरीर । बदन ।  
तन । वपु । २ प्रजापति तीर्थ ।  
३ कनिष्ठ्या जेङ्गी की नीच की पोर  
(स्मृति) । ४ प्रजापति का हवि । ५ प्राजा-  
पत्य विवाह । ६ पूँजी । मूलधन । ७  
सच । समुदाय । ८ मूर्ति ।

कायक-वि० १. शरीर-संबन्धी । शारीरिक ।  
२ जीव ।

कायकलेश-सज्ञा पु० शरीर-संबन्धी दुःख । देह  
का कष्ट ।

कायविक्रिस्ता-सज्ञा स्त्री० शारीरिक रोगों  
की विक्रिस्ता ।

कायजा-सज्ञा पु० घोड़ की लगाम की डोरी  
जिससे पंछ तक ल जाकर बाँधते हैं ।

कायदा-सज्ञा पु० १ नियम । विधान ।  
२ रीति । ढंग । ३ बाल । दस्तूर ।  
विधि । ४ व्यवस्था । क्रम ।

कायफल-सज्ञा पु० वृक्ष विशेष जिसकी छाल  
दवा के काम में आता है । औषध-  
विशेष ।

आयम-वि० [प०] १. स्थिर। ठहरा हुआ।  
उपरिष्ठ। २. निर्धारित। ३. स्थापित।  
निश्चित।

आयम-मुक्ताम-वि० [प०] बदने में उप-  
स्थित। स्थानापन्न। एयजी।

आयर-वि० १. भीर। डरपोक। २.  
प्राप्त।

आयरता-सज्ञा स्त्री० भीरता। डरपोकपन।  
दब्यून।

आयल-वि० [प०] माननेवाला। जो तर्क-  
वितर्क से सिद्ध बात को मान ले। यबूल  
करनेवाला।

आयली-सज्ञा स्त्री० मयानी। ग्लानि।  
लज्जा। पायल। हार माना हुआ। तर्क  
में परास्त होने की क्रिया या भाव।

यो०-आयली-भाबली=तर्क करना और  
तर्क-सिद्ध बात मान लेना।

आयव्यूह-सज्ञा पु० १. शरीर में वात,  
पित्त, कफ आदि धातुओं के स्थान  
और विभाग का शास्त्रोक्त क्रम। २.  
योगियों की अपने-कर्मों के भोग के लिए  
चित्त में एक अपने ही समान पुरुष की  
चल्पना (योगसाधन)। ३. सैनिकों का  
घेरा।

आयस्थ-वि० जो शरीर में स्थित रहे।  
सज्ञा पु० १. जीवात्मा। २. परमात्मा।  
३. जाति विशेष।

आयस्या-सज्ञा स्त्री० १. हरीतकी। धात्रीवृक्ष।  
घाब्ला। २. छोटी-बड़ी इलायची।  
३. तुलसी। ४. काकोली।

आपा-सज्ञा स्त्री० शरीर। देह। तन।  
मुहा०-काया पलट जाना=रूपांतर हो  
जाना। और से और हो जाना। नए  
रूप की प्राप्ति होना।

आपाकल्प-सज्ञा पु० औषध के प्रभाव से  
वृद्ध शरीर को पुनः सवल करने की क्रिया  
(आयुर्वेद)।

आपा-पलट-सज्ञा स्त्री० १. भारी हेर-फेर।  
बहुत घड़ा परिवर्तन। २. एक शरीर या  
रूप का दूसरे शरीर या रूप में बदलना।  
और ही स्वरूप होना।

आयिक-वि० १. शरीर-सम्बन्धी। देहिक।  
शारीरिक। २. शरीर से किया हुआ  
या उत्पन्न। जैसे, आयिक पाप।  
३. सभ सम्बन्धी (बौद्ध)।

आयोडन-सज्ञा पु० प्राजापत्य विवाह से उत्पन्न  
पुनः।

आरड, आरडव-सज्ञा पु० हस्त या वस्त्र की  
एक जाति।

आरयनी-सज्ञा पु० रमायनी। कीमिया-  
गर।

आर-सज्ञा पु० १. क्रिया। कार्य। यत्न।  
व्यापार। उपाय। कामकाज करनेवाला।  
जैसे—उपकार, स्वीकार। २. बनानेवाला।  
करनेवाला। कर्ता। रचनेवाला। जैसे,  
बुझकार, प्रयकार। ३. एक शब्द जो  
वर्णमाला के अक्षरों के बाद लगकर उनका  
स्वतंत्र बोध कराता है। जैसे—चकार,  
लकार। ४. एक शब्द जो अनुवृत्त ध्वनि  
के साथ लगकर उसका सञ्ज्ञाबन्ध बोध कराता  
है। जैसे—चौत्कार।

सज्ञा पु० [फा०] कार्य। काम [अग्ने०]  
मोटर गाड़ी।

\* वि० दे० "काला"।

आरक-वि० [स्त्री० वारिका] करनेवाला।  
जैसे हानिकारक, सुखकारक।

सज्ञा पु० सज्ञा या सर्वनाम शब्द का वह  
रूप जिसके द्वारा धान्य में उसका क्रिया के  
साथ संबन्ध प्रकट होता है (व्याकरण)।

आरकदीपक-सज्ञा पु० एक अर्थालंकार  
जिसमें अनेक नियाओं का अन्वय एक ही  
कर्ता से होता है (साहित्य)।

आरकुन-सज्ञा पु० [फा०] १. इतना  
करनेवाला। प्रबधकर्ता। २. कारिदा।

आरजाना-सज्ञा पु० [फा०] १. वह स्थान  
जहाँ व्यापार में प्रत्येक कोई वस्तु बनाई  
जाती है। कार्यालय। २. कार-  
वार। व्यवसाय। ३. घटना। दृश्य।

मामला। ४. किस्म।

आरार-वि० [फा०] १. प्रभावोत्पादक।  
असर करनेवाला। २. उपयोगी।

आरगुजार-वि० [फा०] [सज्ञा आरगुजारी]

अपना कर्तव्य भली भाँति पूरा करनेवाला ।  
कर्तव्यनिष्ठ ।

कारगुजारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ कर्तव्य-  
पालन । भली भाँति आज्ञा पर ध्यान देकर  
काम करना । २ कार्यपटुता । चतुराई ।  
कीशल । ३. कर्मण्यता ।

कारचोब-सज्ञा पु० [फा०] [वि० कार-  
चोबी] १ झड़्डा । लकड़ी का चौकठा  
जिस पर कपड़ा तानकर जरदोजी का काम  
किया जाता है । २ जरदोज । जरदोजी  
या कसीदे का काम करनेवाला ।

कारचोबी-वि० [फा०] जरदोजी का ।  
सज्ञा स्त्री० [फा०] जरदोजी । गुलकारी ।  
वस्त्र विशेष जिस पर चाँदी-सोने के तारों  
द्वारा बेल-बूटे बनाए गए हों ।

कारज-सज्ञा पु० दे० १ "कार्य्य" ।  
काम । कर्म । काज । २ कारबार ।  
धन्या ।

कारटा-सज्ञा पु० कीटा ।

कारण-सज्ञा पु० १ लिए । हेतु । वजह ।  
किसी बात की उत्पत्ति का मूल । २  
हेतु । निमित्त । प्रत्यय । प्रयोजन ।  
निदान । वह जिससे दूसरे पदार्थ की संप्राप्ति  
हो । ३. आदि । ४. कर्म । ५. साधन ।  
६. प्रमाण ।

कारण-करण-सज्ञा पु० कारण का कारण ।  
परमेश्वर । ससार की सृष्टि करने-  
वाला ।

कारणगुण-सज्ञा पु० हेतु के गुण । कारण  
के धर्म ।

कारणमाला-सज्ञा स्त्री० १. हेतुओं की  
श्रेणी । परंपरा । २ अर्थालंकार, जिसमें  
कोई कार्य्य आगे वर्णित अन्य कार्य्य का  
कारण बताया जाता है । कारण-समूह ।  
३. घटना ।

कारणवादी-सज्ञा पु० निवेदक । अभियोध उप-  
स्थित करनेवाला । फरयादी ।

कारणवारि-सज्ञा पु० सृष्टि उत्पन्न करनेवाला  
जल । सृष्टि के प्रथम का जल ।

कारणविशिष्ट-वि० युक्तिसिद्ध । उचित ।  
कारणशरीर-सज्ञा पु० सत्वप्रधान । आनन्दमय

कोष । शरीरगत वह मूल चेतन्य जो  
अविद्या या माया कहा जाता है और  
जो धुंध होकर ईश्वर सज्ञा प्राप्त करता  
है (वेदांत) ।

कारणीभूत-वि० मूल कारण । हेतुभूत ।  
कारतूस-सज्ञा पु० [पुर्त० कार्टूस] घट्टकों  
में भरकर चलानेवाली बारूद की गोली ।

कारन-सज्ञा पु० दे० "कारण" ।

सज्ञा\* स्त्री० कूक । रोने का आर्त स्वर ।  
करुण स्वर ।

कारनित-सज्ञा स्त्री० [अ०] कगर ।  
दीवार की कँगनी ।

कारनी-सज्ञा पु० १ प्रेरणा करनेवाला ।  
प्रेरक । २ भेदक । भेद करानेवाला ।  
जो बुद्धि पलटे ।

कारपरदाख-वि० [फा०] १ प्रतिनिधि ।  
काम करनेवाला । कारकुन । २ प्रबध-  
कर्ता । कारिदा ।

कारपरदाजी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ दूसरे  
की ओर से प्रबध करने का कार्य्य । २ कार्य्य  
करने की तत्परता ।

कारबार-सज्ञा पु० [फा०] [वि० कार-  
वारी] व्यवसाय । काम-धन्या । काम-  
काज । वाणिज्य । व्यापार । पेशा ।

कारबारी-वि० [फा०] व्यवसायी । काम-  
बाजी ।

सज्ञा पु० कारिदा । कारकुन ।

काररवाई-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ कृत्य ।  
काम । करतूत । २ विवरण । ३ कार्य्य-  
तत्परता । कर्मण्यता । ४ चाल । गुप्त  
प्रयत्न ।

कारवा-सज्ञा पु० [फा०] यात्रियों का  
समूह ।

कारबल्ली या कारबेल्ल-सज्ञा स्त्री० कटु-  
फल । करेला । तरकारी-विशेष ।

कारबी-सज्ञा स्त्री० १ भयूरशिखा ।  
२ रुद्र-जटा । ३ अजमोद । कलौजी ।  
श्लोष-विशेष ।

कारसाज-वि० [फा०] [सज्ञा कारसाजी]  
बिगड़े काम को बनानेवाला । जो काम  
परा करने की युक्ति निकाले ।

नियत समय । अवसर । ५. मर्हो । अनान ।  
दुर्भिक्ष । ६. शनि । ७. शत्रु । ८. भाग्य ।  
आगामी या व्यतीत दिन । शिव का  
नाम-विशेष । महाकाल । ९. साँप । सर्प ।  
१०. मृत्युकारक जन्तु या द्रव्य ।

मुहा०—काल पाकर = कुछ दिनों के  
उपरांत । काल काटना = समय नष्ट  
करना । खाली बैठे रहना । काल  
सँवाना = उचित समय पर काम न  
करना ।

वि० काले रंग का । काला ।

\*त्रि० वि० दे० "कल" ।

कालकठ—सज्ञा पु० १. नीलकठ । महादेव ।  
शिव । २. मयूर । मोर । खजन ।  
खिड़कि ।

कालक—सज्ञा पु० १. तैत्तिरीय प्रकार के केतुओं  
में से एक । २. आँस की पतली । ३. बीज  
'गणित की दूसरी अव्यक्त राशि । ४. पानी  
का साँप । ५. बेश विशेष । ६. यज्ञ ।  
७. लकड़ी में घुन का छेद । ८. किसी  
समाद-पत्र का स्तंभ ।

वि०—गहरा नीला । काला ।

कालका—सज्ञा स्त्री० दश प्रजापति की वह  
कन्या, जो कश्यप को व्याही गई थी ।  
काला धव्वा । जग (धातु पर) ।  
सोने का खोटा । लीवर । बरफ । हिम ।  
कोहरा । सर्प-विशेष । दुर्गा । चार  
वर्ष की कन्या ।

वि०—कालिमा । कालापन ।

कालकोल—सज्ञा स्त्री० १. पपडाहट । २. हड-  
बडी । ३. कोलाहल ।

कालकूट—सज्ञा पु० १. काला वज्रनाग । एक  
तैल का अत्यंत भयकर विष । हलाहल ।  
जहर । २. सींगिया की जाति के पीछे  
विशेष की जड़ जिस पर चित्तियाँ होती  
हैं ।

कालकेतु—सज्ञा पु० राक्षस-विशेष ।

कालकेय—सज्ञा पु० राक्षस-विशेष ।

कालकोठरी—सज्ञा स्त्री० १. जेलखाने की  
बहुत छोटी धीरे धीरे कोठरी । २.  
अंधे

कालकम—सज्ञा पु० समयानुसार । समय ।  
विभाग ।

कालक्षेप—सज्ञा पु० १. समय काटना । २.  
निर्वाह । गुजर-बसर ।

कालल—सज्ञा पु० लहसुन । तिल । नम ।  
कालगडेत—सज्ञा पु० काले गढे या चित्तियों-  
वाला जहरीला सर्प ।

कालचक्र—सज्ञा पु० १. समय का परिवर्तन ।  
२. अस्त्र-विशेष ।

कालत—सज्ञा पु० १. जो समय के हेरफेर को  
जानता हो । समयशाता । २. समयानुसार  
काम करनेवाला । ३. ज्योतिषी ।

कालज्ञान—सज्ञा पु० १. स्थिति और अवस्था  
का ज्ञान । २. मृत्यु का समय जान  
लेना ।

कालतुष्टि—सज्ञा स्त्री० सांख्य में एक तुष्टि ।  
यह सोचकर सतोष कर लेना कि जब  
समय आ जायगा, तब यह बात अपने  
आप हो जायगी ।

कालदंड—सज्ञा पु० यमराज का दंड, उनका  
अस्त्र ।

कालधर्म—सज्ञा पु० १. मरण । मृत्यु ।  
अवसान । विनाश । २. वह व्यापार  
जो किसी विशेष समय पर स्वतः हो ।  
समय के अनुसार धर्म ।

कालनाभ—सज्ञा पु० हिरण्यक का एक पुत्र ।  
कालनिर्यास—सज्ञा पु० सुगन्धित द्रव्य विंशय ।  
गुगुल ।

कालनिशा—सज्ञा स्त्री० १. दिवाली की  
रात । २. भैंसेरी डरावनी रात । ३.  
प्रलय की राति । ४. मरण समय की  
रात ।

कालनेमि—सज्ञा पु० १. राक्षस-विशेष जो  
रावण का भाभा था । २. दानव-विशेष  
जिसने देवताओं को हराकर स्वर्ग पर  
अधिकार कर लिया था । ३. कपटी मुनि ।  
कालपर्णी—सज्ञा स्त्री० औषध-विशेष । काला  
निसोत ।

कालप्रभात—सज्ञा पु० शरद ऋतु । शरत्काल ।  
काल-यातक—सज्ञा पु० १. समय की उपेक्षा  
करनेवाला । २. गूढ़ नीतिज्ञ ।

कालपाश, कालपास्त—संज्ञा पु० १. वह नियम जिसके कारण भूत-प्रेत कुछ समय तक के लिए कुछ अनिष्ट नहीं कर सकते ।

२. मृत्यु-पाश । यमपाश । यमराज का बधन । मरण-रज्जु ।

कालपुरुष—संज्ञा पुं० १. ईश्वर का विराट् रूप । २. काल । यमराज के अनुचर । यमराज । शुभाशुभ जानने के लिए कल्पित द्वादश राशियों का पुरुषाकार ।

कालबंजर—संज्ञा पु० वह भूमि जो बहुत दिनों से बोई न गई हो ।

कालभूत—संज्ञा पु० १. छेना । वह कच्चा भराव जिस पर महाराव बनाई जाती है ।

२. चमारों का वह काठ का साँचा जिस पर चड़ाकर जूते सिये जाते हैं ।

कालबेला—संज्ञा स्त्री० अयोग्य काल । किसी काम को करने के लिए निन्दित समय ।

कालबेलिया—संज्ञा पु० सर्प का विष उतारने-वाला । विषवेद्य ।

कालभैरव—संज्ञा पु० १. शिव के अंश से उत्पन्न । २. महादेव का एक गण । ३. ब्रह्मज्ञानदायक ।

कालम—संज्ञा पु० (अग्ने०) स्तंभ ।

कालमा—संज्ञा पु० राशय । सन्देह । दुविधा । खटका ।

कालमूल—संज्ञा पु० लाल चित्रक । ओषध-विशेष ।

कालमेयिका—संज्ञा स्त्री० मजीठ । बाकुची । ओषध-विशेष ।

कालमेयी—संज्ञा स्त्री० मजीठ । काला निसीत ।

काल-यवन—संज्ञा पु० यवनो का राजा जिसने जरासंध के साथ मथुरा पर चढ़ाई की थी (पुराण) ।

कालयापन—संज्ञा पु० समय बिताना । कालक्षेप । दिन व्यतीत करना । गुजारा करना ।

कालर—संज्ञा पु० [अग्ने०] गले में बांधने का पट्टा । कोट या कमीज की वह पट्टी, जो गले के चारों ओर रहती है । कुत्ती आदि के गले में बांधने का पट्टा ।

कालरा—संज्ञा पु० (अग्ने०) विसूचिका रोग । हेजा ।

कालरात्रि\*—संज्ञा स्त्री० दे० "कालरात्रि" ।

कालरात्रि—संज्ञा स्त्री० १. अंधेरी और डरावनी रात । २. प्रलय की रात ।

ब्रह्मा की रात्रि जिसमें सारी सृष्टि लय हो जाती है, केवल नारायण ही रहते हैं । ३. मृत्यु की रात्रि । ४. दिवाली की अभावस्था । ५. दुर्गा की मूर्ति-विशेष ।

भगवती का नाम । ६. सब प्राणियों का नाश करनेवाली यमराज की बहिन ।

७. मनुष्य की आयु में वह रात जो सत-हत्तरवें वर्ष के सातवें महीने के सातवें दिन पड़ती है ।

कालयाचक, कालयाची—वि० समय-बोधक । जिसके द्वारा समय जाना जाय ।

कालविपाक—संज्ञा पु० किसी काम के होने का समय पूरा होना ।

कालशाक—संज्ञा पु० पटुआ साग । सर-फोका ।

कालसर्प—संज्ञा पु० वह साँप जिसके काटने से आदमी मर जाय ।

कालसार—संज्ञा पु० तेंदू का पेड़ । मृग-विशेष ।

कालसूत्र—संज्ञा पु० नरक-विशेष ।

कालसूर्य—संज्ञा पु० प्रलय काल का सूर्य ।

कालस्कंध—संज्ञा पु० तमाल वृक्ष । तिन्युक वृक्ष ।

कालस्वरूप—वि० १. मृत्यु के समान भयंकर । २. घातक । हिंसक ।

कालांतक—संज्ञा पु० यमराज । धर्मराज ।

काला—वि० [स्त्री० काली] १. स्याह । काले वर्ण का । काजल या कोयले के रंग का । २. कलुषित । बुरा । ३. प्रचंड । भारी ।

मुहा०—(अपना) मुँह काला करना=१. पाप या कुकर्म करना । २. अनुचित सह-गमन करना । व्यभिचार करना । ३. किसी बुरे आदमी का दूर होना । (दूसरे का)

मुँह काला करना=१. किसी अशुचिकार या बुरे वस्तु अथवा व्यक्ति को अलग करना । व्यर्थ की झगड़ मिटाना । २. कसक या बदनामी का कारण होना । काला

मुंह होना या मुंह काला होना = बलवित होना। बदनाम होना। काले कौसी = बहुत दूर। लज्जित होना। मुंह में कालिम सगना।

संज्ञा पु० काला साँप। काला नाग।

काला-कलूटा-वि० बिलकुल काले रंग का।

बहुत काला। अत्यन्त द्याम (मनुष्य)।

कालाक्षरी-वि० १. काले अक्षर मात्र का अर्थ

वता देनेवाला। २. अत्यंत विद्वान्।

प्रसाद पण्डित। ३. जिसे काले अक्षर और

काले रंग में भेद न मालूम हो। अत्यंत

मूर्ख। लठ। ४. वह क्षिप्य जिसने पशना

आरम्भ ही किया हो।

कालाग्नि-संज्ञा पु० १. प्रलय काल की

आग। कालानल। संहारकारक अग्नि।

२. प्रलयान्नि के अधिष्ठाता रुद्र।

कालागुरु-संज्ञा पु० १. सुगन्धित द्रव्य-विशेष।

२. कृष्णवर्ण सुगन्धित काष्ठ।

काला चोर-संज्ञा पु० १. बहुत बड़ा चोर।

२. बहुत बुरा आदमी। ३. अपरिचित

मनुष्य।

काला जीरा-संज्ञा पु० १. स्याह जीरा।

२. मीठा जीरा। ३. पर्वत जीरा।

कालातीत-वि० जिसका समय व्यतीत हो

गया हो।

संज्ञा पु० १. पाँच प्रकार के हेतुवा-

नासों में से वह जिसमें अर्थ देस एव

बाल से रावद्ध बोध से मुक्त होता है और

इस कारण अस्त्युहरता है। २. बाध-

विशेष जिसमें साध्य के आधार में

साध्य का अभाव निश्चित रहता है

(ज्ञायसास्त्र)।

काला दाना-संज्ञा पु० १. सता-विशेष

जिससे काले दाने निकलते हैं। २. इस

लता का बीज या दाना जो बहुत रेचक

होता है।

काला नमक-संज्ञा पु० सोचर। सज्जी के योग

से बना हुआ एक तरह का पाचक लवण।

काला नाग-संज्ञा पु० १. काला सर्प। विषधर

सर्प। २. बहुत बुरा आदमी। कुटिल

मनुष्य।

कालाप-वि० कालाप व्यावरण जानने-  
वाला।

काला पहाड़-संज्ञा पु० १. बहुत बड़ा और

डरावना। दुस्तर (वस्तु)। २. मुर्शिदा-

बादर के नवाब दाऊद का सेनापति

जो बड़ा क्रूर और बहुत मुसलमान

था। ३. वहलोल लोदी का एक भानजा

जो सिपदर लोदी से लड़ा था।

काला पान-सं० पु० तान की वृद्धियों का वह

रंग जो 'ह्यूम' कहलाता है।

काला पानी-संज्ञा पु० १. बगाल की खाड़ी

में स्थान-विशेष जहाँ का पानी बिलकुल

काला दिखाई पड़ता है। २. अदमान और

निकोवार आदि द्वीप जहाँ देश-निवाले के

बड़ी भेजे जाते थे। ३. देशनिवाले

का दंड। ४. मदिरा। शराब।

काला भुजग-वि० बिलकुल काला। काला-

कलूटा।

कालापस-संज्ञा पु० लोह-विशेष। इस्पात

लोहा।

कालास्त्र-संज्ञा पु० बाण-विशेष जिसके

प्रहार से ऐसा समझा जाता है कि शत्रु का

नाश अवश्य ही हो जायगा।

कालिंग-वि० कलिंग देश का।

संज्ञा पु० १. कलिंग देश का रहनेवाला।

२. कलिंग देश का राजा। ३. हाथी।

४. तरबूज। ५. साँप। सर्प। ६. एक

तरह का खीरा। ७. एक तरह का घोड़ा।

कालिजर-संज्ञा पु० पर्वत-विशेष जो बाँदा से

३० मील पूर्व की ओर है।

कालिंदी-संज्ञा स्त्री० १. यमुना नदी, जो

कलिंद पर्वत से निकली है। २. कृष्ण की

एक स्त्री।

काति\*-क्रि० वि० दे० "कल"।

कालिक-वि० १. समयोचित। समय-सबधी।

सामयिक। २. जिसका कोई समय नियत हो।

संज्ञा पु० १. नाक्षत्र मास। २. काला

चन्दन। ३. शीघ्र पत्नी।

कालिका-संज्ञा स्त्री० १. चंडिका। काली।

देवी की एक मूर्ति। २. कालिया। काला-

पत। कालिख। ३. घटा। मेघ। बादल।

४. बिछुआ नामक पीधा । ५. शराव । ६. मसि । स्पाही । ७. रणचंडी । ८. आँख की काली पुतली । ९. जटा-माँसी । १०. काकोली । ११. शूगाली । १२. कौवे की मादा । १३. एक प्रकार की हर । १४. एक नदी । १५. दस की एक वेटी । १६. कुहरा । १७. हलकी भंडी । १८. बिच्छू । १९. सिर मलने की वाली मिट्टी । २०. चार वर्ष की कन्या ।  
 कालिकापुराण—सज्ञा पु० उपपुराण-विशेष जिसमें कालिका देवी के माहात्म्य आदि का वर्णन है ।  
 कालिख—सज्ञा स्त्री० १. धुएँ की जमी हुई काली राख । २. बलौछ । ३. स्पाही ।  
 मुहा०—मुँह में कालिख लगना=अपमय की 'बजह' से मुँह दिखाने योग्य न रहना ।  
 कालिस्थ्या—सज्ञा स्त्री० दृक्ष-विशेष । किन्दवाली नामक एक वृक्ष ।  
 कालिदास—सज्ञा पु० संस्कृत के प्रसिद्ध महा-कवि ।  
 कालिख—सज्ञा पु० [अ०] १. टोपियाँ ठीक करने का टीन या लकड़ी का गोल ढाँचा । २. देह । शरीर ।  
 कालिमा—सज्ञा स्त्री० १. कृष्णता । कालापन । २. कालिख । कलौछ । ३. मलिनता ।  
 ४. अँधेरा । ५. दोष । लाछन । ६. कालक । ७. मालिन्य ।  
 कालिधन—सज्ञा पु० मलय चन्दन ।  
 कालिय—सज्ञा पु० सर्प-विशेष जिसे कृष्ण ने ब्रह्मा में किया था । काली नाग ।  
 काली—सज्ञा स्त्री० १. पार्वती । षडी । कालिका । २. गिरिजा । दुर्गा । ३. दस महाविद्याओं में पहली महाविद्या । ४. धाया । ५. प्रकृति । ६. शान्तानु राजा की पत्नी । ७. हिमालय की एक नदी । ८. अग्निदेव की सप्त जिह्वाओं में से प्रथम । ९. काले रंग की । श्यामवर्ण ।  
 काली घटा—सज्ञा स्त्री० पने काले बादलो का झुंड । कादविनी ।  
 काली ज्वान—सज्ञा स्त्री० वह जीभ जिसरी कही हुई अशुभ बातें सत्य हुआ करें ।

काली जीरी—सज्ञा स्त्री० ओषध-विशेष जो एक पेड़ की बोड़ी के झालदार धीज होते हैं ।  
 कालीदह—सज्ञा पु० वृन्दावन में यमुना का एक कुंड या दह जिसमें कालिया नाग रहा करता था ।  
 कालीन—वि० कालसंबन्धी । जैसे—तत्कालीन, पूर्वकालीन, अल्पकालीन । समयागत । सामयिक । चिरकालिक । बहुत पुराना । अति वृद्ध ।  
 कालीन—सज्ञा पु० [अ०] गलीचा । मोटा और भारी बिछावन जिसमें बेलबूटे बने रहते हैं ।  
 काली मिर्च—सज्ञा स्त्री० गोल मिर्च ।  
 काली शीतला—सज्ञा स्त्री० वह शीतला या चेचक विशेष जिसमें काले दागे निकलते हैं ।  
 कालेश्वर—सज्ञा पु० १. महादेव । शिव । २. मृत्यु को जीत लेनेवाला योगी ।  
 कालौछ—सज्ञा स्त्री० १. कालापन । कालिख । २. स्पाही । ३. धुएँ की कालिख ।  
 कल्पनिक—सज्ञा पु० जो कल्पना करे । वि० १. कल्पित । मनगढ़त । कल्पना से उत्पन्न । मिथ्या । २. आरोपित । कुत्रिम । अस्वाभाविक ।  
 कल्पनिकता—सज्ञा स्त्री० कुत्रिमता । वनापटी-पन ।  
 काल्ह—वि० वि० दे० "कल" ।  
 कावा—सज्ञा पु० [फा०] १. घोड़े को घेरे में चक्कर देने की क्रिया । चक्कर देना । २. धोड़ा फिराना ।  
 मुहा०—कावा काटना—१. घृत में दीड़ना । चक्कर खाना । २. आँख बचाकर दूसरी ओर निकल जाना । कावा देना=चक्कर देना । ३. घोड़े को चाल सिखाना । ४. काठियावाड में एक लुटेरी जाति जिसने अर्जुन और श्रीकृष्ण की रानियों को लूटा था ।  
 काव्य—सज्ञा पु० १. कविता । रसयुक्त काव्य । पह गद्य या पद्य जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो जाय । २. कविता की पुस्तक । काव्य का ग्रन्थ । ३. रोला छंद का भेद ।

वाय्वचोर-सज्ञा पु० दूगरे की पविता का भाव या पद धरानेवाला ।

वाय्वत्य-सज्ञा पु० १ वाय्व या धर्म । २ वाय्व या विशेष लक्षण । ३ वाय्व का स्वरूप ।

काव्यालङ्ग-सज्ञा पु० एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी वही हुई बात का कारण वाक्य या पद के अर्थ द्वारा पुष्ट किया जाय (साहित्य) ।

वाध्या-सज्ञा स्त्री० १. पूतना । २. बुद्धि ।

वादा-सज्ञा पु० १ एक तरह की घास ।

वासा-सज्ञा पु० १ खाँसी । स्वास का रोग ।

२ एक प्रकार का चूहा । ४. मुनि विशेष ।

अव्य (तु०) ईश्वर करे, ऐसा हो जाय ।

अवर ऐसा होता ।

काशष्मी-सज्ञा स्त्री० भारती ओषध ।

काशि-सज्ञा पु० सूर्य । रवि । दिवाकर ।

काशिका-वि० १ प्रवाश करनेवाली ।

२ प्रदीप्त । प्रकाशित ।

सज्ञा स्त्री० १ वासीपुरी । बनारस । २

जयादित्य और वामन की बनाई हुई

पाणिनीय व्याकरण पर वृत्ति ।

काशिकाग्रिम्य-सज्ञा पु० विद्वनाय ।

काशिराज-सज्ञा पु० १ काशी का राजा ।

दिवोपास । २ धन्वन्तरि । ३ विद्वनाय ।

काशी-सज्ञा स्त्री० शिवपुरी । वाराणसी ।

वि० काशरोगी । दीप्तिमान । तेजोमय ।

काशी-करवट-सज्ञा पु० काशीस्थ तीर्थस्थान-

विशेष, जहाँ प्राचीन काल में लोग एक आरे

पर गिरकर तथा कटकर मर जाना बहुत

पुण्य का काम समझते थे ।

काशीफल-सज्ञा पु० कुम्हड़ा ।

काशीनाथ-सज्ञा पु० शिव । विदेवदेवर ।

काशीश-सज्ञा पु० उपभक्त विशेष । वसीश ।

हीराकस ।

कास्त-सज्ञा स्त्री० [फा] १ कृषि । खेती ।

२ जमींदार को एक नियत वार्षिक लगान

देकर उसकी जमीन पर खेती करने का

अधिकार ।

कास्तकार-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ कृषक ।

खेतिहर । किसान । २ जमींदार को लगान

देकर उसकी जमीन पर स्वाव प्राप्त करने-

वाला ।

कास्तकारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ कृषि । खेती-चारी । किसानी । २ कास्तकार का अधिकार ।

काश्मीर-सज्ञा स्त्री० गभारी का वृक्ष ।

काश्मीर-सज्ञा पु० १ देश-विशेष । देश

"कश्मीर" । २ कश्मीर का निवासी ।

३ केसर । ४. पुष्करमूल । ५. सुहागा ।

काश्मीरज-सज्ञा पु० औषध-विशेष । बूट ।

काश्मीर में उत्पन्न होनेवाला पदार्थ ।

कुसुम । बेसर ।

काश्मीरा-सज्ञा पु० १ मोटा ऊनी कपड़ा

विशेष । २. एक प्रकार का अमूर ।

काश्मीरी-वि० १ कश्मीर देश का रहने

वाला । २ कश्मीर संबंधी ।

काश्यप-वि० कश्यप प्रजापति के वंश का

गोत्र का । कश्यप-संबंधी । कणाद मुनि ।

मृग विशेष । गोत्र-विशेष ।

काश्यपमेह-सज्ञा पु० १ कश्यप मुनि का वाद

स्थान । २ पर्वत-विशेष । ३ काश्मीर देश ।

काश्यपि-सज्ञा पु० १ धरुण । २ सूर्य का

सारथी ।

काश्यपी-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी । धरित्री । प्रजा

कायाय-वि० १ गेरुआ । २ कसैले स्वादवाला

काष्ठ-सज्ञा पु० १ काठ । लकड़ी । २ ईंधन

३ दाह । ४ ललाई जानने का एक नाप ।

काष्ठा-सज्ञा स्त्री० १ सीमा । अवधि । हद

२ उत्पत्ति । उच्चतम चोटी या ऊँचाई

३ स्थिति । ४ चंद्रमा की एक कला

५ अठारह पल का समय या एक वर्ष

का ३०वाँ भाग । ६ धार । दिशा

७ दीड़ लगाने का स्थान । ८ छुट्टी का

मेदान ।

काष्ठी-सज्ञा स्त्री० फिटिचरी ।

कास-सज्ञा पु० १ खाँसी । स्वास का

रोग । २. काँस । सरपत । सरहरी । एक

प्रकार की घास ।

कासनी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ पीछा किया

जिसकी जड़, ठठल और बीज दवा के काम

में आते हैं । २ कासनी का बीज

नीला रंग विशेष जो कासनी के फूल

रंग की तरह होता है ।

कासवी-संज्ञा पु० ताँती। कपडा बिननेवाला।  
तन्तुबाय। जुलहा। कोरी।  
कासा-संज्ञा पु० [फा०] १. कटोरा। प्याला।  
२. भोजन। आहार। ३. फकीर के रखने  
का दरियाई नारियल का बरतन।  
कासार-संज्ञा पु० १. छोटा सरोवर। छोटा  
ताल। तालाव। २. २० रमण का दंडक  
युक्त-विशेष। ३. दे० "कसार"। पेंजीरी।  
कासिव-संज्ञा पु० [अ०] संदेश ले जाने-  
वाला। हरकारा। पत्रवाहक।  
कासी-(काशी) संज्ञा स्त्री० १. एक पुरी का  
नाम। २. आनन्दवन। ३. अविभक्त क्षेत्र।  
काहिल-वि० [अ०] सुस्त। आलसी।  
आलस्ययुक्त।  
काहिली-संज्ञा स्त्री० [अ०] आलस्य। सुस्ती।  
काही-वि० कालापन लिये हुए हरा। घास  
के रंग का।  
काहु-सर्व० दे० "काहू"।  
काहू-सर्व० किसी। कोई। किसी को।  
संज्ञा पु० [फा०] गोभी की तरह का पीछा  
विशेष जिसके बीज ओषधि के काम  
आते हैं।  
काहे\*-वि० वि० क्यों? किसलिए? किस  
प्रयोजन से?  
यी०-काहे को=किसलिए? क्यों?  
किकर-संज्ञा पु० [स्त्री० किकरी] १. दास।  
भूत्य। नोकर। सेवक। चाकर। २. राक्षसों  
की जाति-विशेष।  
किकरत्व-संज्ञा पु० १. दासत्व। २. अधीनता।  
किकरी-संज्ञा स्त्री० दारी।  
किक्लैव्य-विमूढ़-वि० १. हक्का-बक्का।  
भींचक्का। घबराया-हुआ। ब्यामुल।  
आकुल। २. जिसे यह न सूझे कि अब  
क्या करना चाहिए।  
किकिणी-संज्ञा स्त्री० १. क्षुद्रघटिका। २.  
कटि का आभरण। करधती। जेहर।  
कमरक्स।  
किगरी-संज्ञा स्त्री० छोटी सारंगी जिसे वजा-  
वर जोगी भील मांगते हैं। छोटा चिकारा।  
किच-अव्य० और भी। दूसरा भी। वाक्या-  
न्तर-बोतव।

किचन-संज्ञा पु० कम या थोड़ी वस्तु।  
किचित्-वि० अल्प। कुछ। थोड़ा।  
यी०-किचिन्नात्र-थोड़ा भी। थोड़ा ही।  
ईयत्। कि० वि० कुछ। थोड़ा। स्वल्प।  
वहुत थोड़ा।  
किजल्क-संज्ञा पु० १. सिफाकन्द। कमल का  
केशर। २. कमल। ३. कमल का पराग।  
४. फूल का रज। ५. नागकेशर।  
वि० कमल के केशर के रंग की तरह।  
किनु-अव्य० १. लेकिन। पर। परंतु।  
२. यत्कि। वरन्।  
किनुवादी-वि० १. दूसरों से कहाँ हुई बात को  
काटनेवाला। २. जो औरों की न सुने।  
किपच-वि० अदाता। कृपण। सूम।  
किपुरुष-संज्ञा पु० १. किन्नर। २.  
वर्णसंकर। दोगला। ३. प्राचीन काल की  
मनुष्य-जाति-विशेष। ४. विद्याधर। ५.  
स्वर्गीय गायक।  
वि० कुत्सित पुरुष। निन्दित मनुष्य।  
दुराचारी।  
किभूत-वि० किस प्रकार। कैसा।  
मुहा०-किभूत किमाकार=१. कुत्सित  
आकृति-विशिष्ट। २. अनभिज्ञता।  
किवदंतो-संज्ञा स्त्री० १. जनश्रुति। अफ-  
वाह। उडती खबर। २. जनरव।  
किवा-अव्य० अथवा। या तो।  
किशुक-संज्ञा पु० १. डाक। पलाश। टेसू।  
२. तुन का पेड़।  
कि-सर्व० १. किस प्रकार? क्या? २.  
क्यों, किसलिए।  
अव्य० १. एक संयोजक शब्द जो  
पूर्वकथित बात को पूरा करता है या  
उसमें कुछ जोड़ता है। २. लक्षण। इतने  
में। ३. या। अथवा।  
किकियाना-कि० अ० १. रोना। चिल्लाना।  
पूकारना। २. की की या के के शब्द करना।  
३. दुहाई देना। खोर से आवाज देना।  
किचकिच-संज्ञा स्त्री० १. बक्बाद। व्यर्थ  
का बाद-विवाद। जे-जे। व्यर्थ कोलाहल।  
२. कच-मच। ३. भगडा। ४. एक पक्षी  
का शब्द।

विश्वविद्याना-त्रि० प्र० १. पूरा यत्न लगाने के लिए दांत पर दाँत रखकर दबाना ।  
२. शीघ्र के शय होना । प्रघोर होना ।  
३. दाँत पर दाँत रखकर दबाना । [शोध से] दाँत पीसना ।

विश्वविद्याहट-तज्ञा स्त्री० विश्वविद्याने का भाव ।

विश्वविद्यो-सज्ञा स्त्री० विश्वविद्याहट । दाँत पीसने की अवस्था या स्थिति ।

विश्वव्याप्त-त्रि० प्र० (प्रति या) कीबड़ से भरना । आँख का रोग-विशेष ।

विश्वविद्याना-त्रि० प्र० गटवदना । मन की दुखिया में पड़ना । किसी प्रकार का चतर्ध्व स्थिर नहीं रहना ।

किष्ट\*†-वि० दे० "कुष्ठ" ।

किटकिट-सज्ञा स्त्री० १. यादविवाद । २. विश्वविद्य ।

किटकिटाना-त्रि० प्र० १. विश्वविद्याना । २. शोध से दाँत पीसना ।

किटकिना-सज्ञा पु० १. चाल । चालाकी । २. वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठीके की चीज का ठेका दूसरे असा-मियों को देता है ।

किटकिनादार-सज्ञा पु० किसी वस्तु को ठेकेदार से ठेके पर लेनेवाला पुरुष ।

किटि-सज्ञा पु० शूबर । सुश्रर । बराह ।

किटिभ-सज्ञा पु० जू । केशकीट । खटमल ।

किट्ट-सज्ञा पु० १. मेल । २. तेल आदि में नीचे बैठी हुई मेल । ३. मल । बिच्छा । बीट ।

किट्ट-वर्जित-सज्ञा पु० धीरे । शरीर की सर्व श्रृष्ट धातु ।

वि० मलरहित । शुद्ध । स्वच्छ ।

किडकिड-सज्ञा पु० दाँतों की रगड़ से उत्पन्न शब्द ।

किडविद्याना-त्रि० प्र० अतिशय शोधयुक्त होना । शोध के आवेग से दाँत पीसना ।

किडकिडो-सज्ञा स्त्री० दाँती बजना ।

मुहा०-किडविडी होना=अपमान होना ।

किण्व-सज्ञा पु० १. मदिरा । २. बीज जिससे मद्य में मादकता उत्पन्न होती है ।

उत्तमर उठाने का साधन ।

कित\*†-त्रि० वि० १. विघर । वहाँ घिस घोर । २. घोर । तरफ़ ।

कितव-†वि०, त्रि० वि० कितना । कितना हृद तप ।

कितना-वि० [स्त्री० कितनी] १. कितना परिमाण, मात्रा या संख्या का ।

(प्रदग्वाचक) । २. बहुत । अधिक ।

त्रि० वि० १. वहाँ तप ? किस परिमाण में ? २. अधिक । बहुत ज्यादा ।

मुहा०-कितना ही=बहुत अधिक । प्रचुर परिमाण ।

कितव-सज्ञा पु० १. छनी । धृत । बच ।

प्रतारक । २. जुझारी । ३. दुष्ट । ४. पागल । ५. धनुरा । ६. गोरौचन ।

कित-सज्ञा पु० [प्र०] १. व्योम । सिलार के लिए कपड़े को काट-छाँट । २. चाल ।

ढग । ३. संख्या । ४. विस्तार का एक भाग । ५. प्रागण । प्रदेस । भूभाग ।

किताब-सज्ञा स्त्री० [प्र०] [वि० किताबी] १. ग्रंथ । पुस्तक । २. वही । रजिस्टर ।

मुहा०-किताबी कीड़ा=वह व्यक्ति जो सदा पुस्तक पढ़ता रहता हो । किताबी चेहरा=

लगे आश्चर्यवाला चेहरा । किताब चाटना=बहुत अधिक पढ़ना, पुस्तक का रट डालना ।

किताबी-वि० [प्र० किताब] १. किताब के आकार का । २. किताब में लिखा हुआ ।

कितिक\*†-वि० दे० "कितव", "कितना" । किस प्रकार ।

कितव\*†-वि० १. कितना । २. असत्य । प्रचुर । बहुत । कितना ही ।

कित\*†-अव्य० दे० "कित" । कहाँ ।

विघर । किस ओर ।

कितो\*†-वि० [स्त्री० कितो] कितना ।

त्रि० वि० कितना ।

कित-सज्ञा स्त्री० यश । कीर्ति ।

विदारा-सज्ञा स्त्री० रागिनी विनाय (यह गरमी के दिनों में आधी रात का गाई जाती है) ।

विघर-त्रि० वि० वहाँ ? किस ओर ?

किस तरफ़ ?

किर्घो\*—अव्य० या । अथवा । या तो ।  
न जाने । भानो । वि ।

किन्—भर्व० 'किस' का बहुवचन ।  
क्रि० वि० चाहे । क्यो न । किसने । कौन ।  
किसको ।

सज्ञा पु० विह ।

किन्सा—सज्ञा पु० [स्त्री० किन्की] १  
चावन आदि की खुद्दी । २ अन्न का टूटा  
हुआ दाना ।

सर्व० विस्वा ।

किन्वानी—सज्ञा स्त्री० छोटी छोटी बूँदा की  
भंडी । कुहार । कुही ।

किन्बया—सज्ञा पु० ग्राहक । खरीदनेवाला ।

किन्शान्—वि० (फल) जिसमें कीड़े पड़ गए  
हो । कटा ।

किनारदार—वि० (कपडा) किनारीवाला ।  
जिसमें किनारा बना हो ।

किनारा—सज्ञा पु० [फा०] १ किरी वस्तु  
का अंतिम भाग । छोर । लवाई के बल की  
कोर । २ तीर । नदी या तालाब आदि का  
तट । ३ प्रातः । भाग । लवाई चौड़ाईवाली  
वस्तु के चारों ओर का वह भाग, जहाँ उसके  
विस्तार का अंत होता हो । ४ [स्त्री०  
किनारी] कपड आदि में किनार पर का  
वह भाग, जो भिन्न रंग या बनावट का होता  
है । हाशिया । गोटा । कोर । ५ किसी  
एमी वस्तु का सिरा या छोर जिसमें  
चौड़ाई न हो । ६ पार्श्व । वगल । ७  
समाप ।

मुहा०—किनारे लगना=[किसी कार्य का]  
समाप्ति पर पहुँचना । पूरा होना । किनारा  
करना या सीचना=दूर होना । अलग  
होना । धोखा देना । विश्वासघात करना ।  
हटना । किनारे न जाना=अलग  
रहना । बचना । किनारे बैठना रहना  
या होना=अलग होना । छोड़कर दूर  
हटना ।

यौ०—किनारे किनार=छोर या तट की  
सीध, रेखा या पंक्ति में ।

किनारी—सज्ञा स्त्री० गोटा । भगजी । सुन-  
हवा या स्पृहला पतला गोटा, जो कपडा के

किनारे पर लगाया जाता है । कोर ।  
अंत । छोर ।

किनारे—क्रि० वि० १ तट पर । २ कोर  
या वाड पर । ३ पृथक् । अलग ।

किन्नर—सज्ञा पु० [स्त्री० किन्नरी] १  
देवता-विशेष जिनका मुख घोड़े के समान  
होता है और धड मनुष्य के समान । २  
गाने-बजाने का पेशा करनेवाली एक जाति-  
विशेष । ३ जैन-विशेष ।

किन्नरी—सज्ञा स्त्री० १ किन्नर की स्त्री ।  
२ किन्नर जाति की स्त्री । विद्याधरी ।  
३ वीणा-विशेष । ४ सारंगी । किंगरी ।  
५ स्वर्गाव्य वेश्या । ६ अप्सरा ।

किन्नरेश्वर—सज्ञा पु० कुवर । यक्षपति । देव-  
ताम्रों के कोपाध्यक्ष ।

किफायत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ यथेष्ट  
होने का भाव । २ बचत । ३ मितव्यय ।  
कमखर्ची । थोड़ में काम चलाना ।

किफायती—वि० मितव्ययी । कम खर्च करने-  
वाला । हाथ रोककर खर्च करनेवाला ।

किबला—सज्ञा पु० [अ०] १ मक्का ।  
२ पश्चिम दिशा, जिस ओर मुख करके  
मुसलमान नमाज पढ़ते हैं । ३ बाप ।  
पिता । ४ पूज्य व्यक्ति ।

किबलानुमा—सज्ञा पु० [फा०] यन्त्र-विशेष  
जो पश्चिम दिशा बतलाता है । इसका  
व्यवहार जहाजों पर अरब के मल्जाह  
करते थे ।

किन्—वि० सर्व० १ क्या ? २ कौन सा ?  
क्यों ? कैसा ? क्योकर ? किस प्रकार ?  
यौ०—किन्पि=कोई भी । कुछ भी । जो  
कुछ । यत्किन् ।

किन्रिक—सज्ञा पु० एक प्रकार का चिकना  
सफ़द कपडा ।

किमर्थे—अव्य० किसलिए ? क्या ? किस  
निमित्त से ? किस प्रयोजन से ?

किमांच—सज्ञा पु० खजुर्हा । कांच का वृक्ष  
और फल विशाल । बिनांच ।

किमाम—सज्ञा पु० [अ० किमाम] शरबत जो  
सहृद के समान गाढा किया गया हो ।  
खमीर । तबाकू का सरन तथा गाढा एक रूप ।

किमाश-सज्ञा पु० [अ०] १ ढग। तर्ज।  
२ गजीफे का रंग विशेष। ताज।

किमि\*-वि० वि० किम तरह ? किमे ? किस  
प्रकार ? क्योंकर ? किम भाति ? किम  
उपाय से ?

किमुत-सज्ञा पु० प्रदर। पित्तकं। पिषल्य।  
समायना।

किम्मत-सज्ञा स्त्री० मुक्ति। उपाय।  
हासित्यारी। पराक्रम। प्रभाव।

किम्बत्-वि० कितना परिमाण। कितना।

कियासे-सज्ञा स्त्री० १. लकीर। पंचला।  
क्यारी। खेतों या बगीचा में थोड़े थोड़े  
भतर पर पतली मेड़ों के बीच की भूमि  
जिनमें पौधे लगाए जाते हैं। २ खेतों के  
के विभाग, जो सिंचाई के लिए नालिया के  
द्वारा बनाये जाते हैं। ३ बड़ा बड़ा जिसमें  
समुद्र का पानी नमक बैठने के लिए भरा  
जाता है।

कियाह-सज्ञा पु० थोड़ा जो लाल रंग का हो।

किरटा-सज्ञा पु० [अग्ने० त्रिचिचयन] केरानी  
(तुच्छ) छोट दरजे का शिस्तान।

किरका-सज्ञा पु० ककड। किरकिरी।  
छोटा टुबड़ा।

किरकिट, किरकिटी-सज्ञा स्त्री० आँख में की  
कृणिका। छोटी लकड़ी। किरकिरी।  
कृणिका।

किरकिरा-वि० कँकरीला। रेंतीला।  
ककडदार। जिसमें महीन और बड़  
रवे हो।

मुहा०-किरकिरा हो जाना=रंग में नय  
हो जाना। आनंद में बाधा पड़ना।

किरकिराना-वि० अ० १ किरकिरी पड़ने  
की सी पीड़ा करना। २ दे०  
'किटकिटाना'। ३ अखरना। खटकना।

किरकिराहट-सज्ञा स्त्री० [प्रत्य०] १ आँख  
में किरकिरी पड़ जान की तरह की पीड़ा।  
२ किटकिटापन। क्वरीलापन। ३ दाँत  
के बीच कँकरीली वस्तु आ जान का शब्द।

किरकिरी-सज्ञा स्त्री० १ धूल या तिनके आदि  
का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा उत्पन्न  
करता है। २ अपमान। बदजबती। हैरी।

मुहा०-किरकिरी हाना=अपमान हाना।  
लज्जित होने का अर्थकर, धाना।

किरकिल-सज्ञा पु० गिरगिट।

\*गशा स्त्री० दे० "कृवल"।

किरच-सज्ञा स्त्री० १. सीधी तनवार विशेष  
जा नोक के बल सीधी मोरी जाती है।

खड्ग विशेष। २ छोटा नुकीला टुबड़ा  
(जैसे पाँच आदि का)। सपाच। फाँस।

किरण-सज्ञा स्त्री० १ किरन। रश्मि। २  
सूर्य का तेज। ३ प्रकाशमान पदार्थों का

तेज। ४ धूल। धूल का महीन कण। ५.  
होरा। ६ वेतु विशेष। सूर्य। ७ मयूख।

किरणमाली-सज्ञा पु० सूर्य।

किरन-सज्ञा स्त्री० १ किरण। रश्मि।  
ज्योति की शक्ति सूक्ष्म रेखाएँ जो प्रवाह

के रूप में सूर्य, चंद्र, दीपक आदि प्रज्वलित  
पदार्थों से निकलकर फैलती हुई दिखाई

पड़ती है। २ कलावतून या वादल की  
बनी भाँवर।

मुहा०-किरन फूटना=सूर्योदय होना।

किरपान\*-सज्ञा पु० दे० "कृपाण"।

किरमाल\*-सज्ञा पु० खड्ग। तलवार।

किरमिच-सज्ञा पु० [अग्ने० कनयस] महीन  
टाट सा मोटा विलायती कपड़ा विशेष

जिससे जूते, परदे, बैग आदि बनते हैं।

किरमिज-सज्ञा पु० [वि० किरमिजी]

१ रंग विशेष। हिरमजी। दे०

'किरिमदाना'। २ मटमैलापन लिय  
करी दिया रंग का पीड़ा।

किरमिजी-वि० किरमिज के रंग का।

हिरमिजी। मटमैलापन लिय हुए करी दिया।

किरराना-कि० अ० [अनु०] १ श्रौच के कारण  
दाँत पीसना। २. किराँकर शब्द करना।

किरवारा\*-सज्ञा पु० अमलतास।

किराँची-सज्ञा स्त्री० १ माल-गाड़ी का

ढब्बा। २ बेलगाड़ी विशेष जिस पर अनाज,

भूसा आदि लादा जाता है।

किरात-सज्ञा पु० [स्त्री० किरातिनी, किरा-

तिन किराती] १ भीन। निपाद।

आर्यन जगती जाति विशेष। २ हिमाचल

के पूर्वीय भाग तथा उसके आस-पास के

देश का प्राचीन नाम । ३. चिरायता ।

४. माईस । ५. बीना ।

किरात-संज्ञा स्त्री० [प्र० केरात] चार जी के बराबर जवाहरात की लोल-विशेष ।

किरातक-संज्ञा पुं० चिरायता, औपध-विशेष ।

किरातपति-संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।

किरातार्जुनीय-संज्ञा पुं० कवि भारविद्वृत १८ सर्गों का एक काव्य ।

किरान-क्रि० वि० [प्र०] पास । निवट ।

किराना-संज्ञा पुं० दे० "किराना" । वस्तु-विशेष । भन्न प्रादि । भसाला प्रादि ।

क्रि० सं० दे० "किराना" ।

किरानी-संज्ञा पुं० दे० "किरानी" ।

किराया-संज्ञा पुं० [प्र०] भाड़ा । किसी की वस्तु के प्रयोग के बदले में उसके मालिक को दिया जानेवाला रुपया ।

किरायेदार-संज्ञा पुं० किसी मूल्य पर किसी दूसरे की वस्तु कुछ समय तक काम में लानेवाला ।

किरायल-संज्ञा पुं० [तु० करायल] १. युद्ध का मैदान ठीक करने के लिए भागे जानेवाली सेना । २. बटूक से शिमार करनेवाला ।

किरासन-संज्ञा पुं० [अग्ने० कैरोसिन] मिट्टी या कैरोसिन का तेल ।

किरिच-संज्ञा स्त्री० दे० "किरच" । टुकड़ा । खण्ड । एक प्रकार का शस्त्र-विशेष ।

किरिन्-संज्ञा स्त्री० दे० "किरण" ।

किरिम-संज्ञा पुं० दे० "कुर्मि" ।

किरिम्दाना-संज्ञा पुं० किरमिज कीड़ा जो लाख की तरह झूहर के पेड़ में लगता है और सुलाकर रंगने के बाध में आता है ।

किरिया\*†-संज्ञा स्त्री० १. शपथ । सौगंध । कसम । २. काम । कर्तव्य । ३. मृतकर्म । मृत व्यक्ति के हेतु आदादि कर्म ।

यौ०-किरिया-कर्म=मृतकर्म । क्रियाकर्म ।

किरीद-संज्ञा पुं० १. शिरोमूषण-विशेष जो माथे में बाँधा जाता था । बल्लेगी ।

गुरी । २. आठ भगण का एक वर्ण-वृत्त या तबिया विशेष । ३. मुकुट । ताज ।

४. राजाओं की पगड़ी या टोपी ।

किरीटी-संज्ञा पुं० १. किरीट या मुकुट पहनने-

वाला । राजा । २. अर्जुन का एक नाम । ३. इंद्र ।

किरोलना-क्रि० सं० सुरचना । करोदना ।

किरी-संज्ञा पुं० १. किड़हा दाँत । २. टूटा दाँत ।

किरीना-संज्ञा पुं० कीड़ा । कीट ।

किचं\*-संज्ञा स्त्री० दे० "किरच" । १. काँस ।

२. लड़ग । ३. लपाच । ४. अस्त्र-विशेष ।

५. राजाओं की पगड़ी या टोपी । ६. वर्ण-वृत्त विशेष ।

किर्मिज-संज्ञा पुं० १. किरमिजी रंग । दे० "किरिम्दाना" । २. किरमिजी रंग का घोड़ा ।

किर्मोर-संज्ञा पुं० राक्षस-विशेष ।

किल-अव्य० १. निश्चय । अवश्य । सच-मुच । २. दृढ़ । स्थिर ।

किलक-संज्ञा स्त्री० १. किलकने या हर्ष-ध्वनि करने की क्रिया । २. किलकार ।

हर्षध्वनि ३. चटक-मटक । ४. प्रभा ।

दीप्ति । ५. प्रकाश ।

संज्ञा स्त्री० [ फा० किलक ] नरकट-विशेष जिसकी कलम बनती है ।

किलकना-क्रि० प्र० हर्षध्वनि करना । चिल्लाकर हँसना । किलकारी मारना ।

किलकार-संज्ञा स्त्री० आनन्दसूचक ऊँचा शब्द ।

हर्षध्वनि । किलकारी ।

किलकारना-क्रि० प्र० खुशी से चहकना । हर्षध्वनि करना ।

किलकारी-संज्ञा स्त्री० हर्षध्वनि ।

मुहा०-किलकारी मारना=प्रसन्नता के साथ जोर से हँसना । प्रसन्नता प्रकट करते समय उछलना-कूदना । हँसी-खुशी ।

किलकिचित्-संज्ञा पुं० संयोग ऋगार के ११ हावों में से एक भाव, जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रकट करती है ।

किलकिला-संज्ञा स्त्री० १. किलकारी । हर्षध्वनि । आनन्द-सूचक शब्द । २. बानरों की एक प्रकार की बोली ।

संज्ञा पुं० मधुली खानेवाली छोटी चिहिया विशेष ।

संज्ञा पुं० [ अनु० ] समुद्र का वह भाग जहाँ लहरी से भयकर शब्द होता हो ।

किलकिलाना-वि० अ० १. हर्षध्वनि करना ।  
घात-सूचक शब्द करना । २. वाद-विवाद  
करना । ३. चिन्ता । भगडा करना ।  
हलाना गुला करना । ४. गर्जन करना ।  
गुरांग ।

किलकिलाना-सज्ञा स्त्री० १ गर्जन का शब्द ।  
२. बानरा का एक प्रकार का शब्द ।  
३. किशमिश का भाव या शब्द ।

किलना-वि० अ० १ पीला जाना । पीलन  
होना । २ अधिभार का बस म किया  
जाना । ३ गति का रचना या अवरोध  
होना ।

किलनी-सज्ञा स्त्री० पशुओं के शरीर में  
चिमटनेवाला कीड़ा । किलनी । घुत्ते का  
जुवा । किलनी ।

किलकिलाना-वि० अ० दे० "कुलनुलाना" ।  
किलकिल-सज्ञा पु० [दिश०] नाबुल देश  
का छोटा विभाग ।

किलकिलाना-वि० स० [किलना का प्रे०  
रूप] १ जादू या टोना करवाना । २  
तंत्र या मन्त्र द्वारा भूत-प्रेत के प्रभाव को  
रोकना देना । ३ कील लगवाना या  
जड़वाना ।

किलकारी-सज्ञा स्त्री० १ छाया झांझ ।  
२ कत्ता । पतवार ।

किलहंडा-सज्ञा पु० सिरोंही पक्षी विशेष ।  
किला-सज्ञा पु० [अ०] दुर्ग । गड । फोड ।  
युद्ध के अवसर पर बचाव का एक  
मुद्द स्याम ।

की०-किलेदार=दुर्गपति । गडपति ।  
मुहा०-किला बाधना=युद्ध या बचाव की  
तैयारी करना । किला फट्टा करना=  
जीतना । सफलतापूर्वक काम समाप्त  
करना । किला तोड़ना=हराना, परास्त  
करना ।

किलाना-कि० स० दे० "किलवाना" ।  
किलायदी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ ब्यूह-  
रचना । २ दुर्ग निर्माण ।

किलाया-सज्ञा पु० हाथी के गले में पड़ा  
हुआ रस्सा जिसमें अपना पैर फँसाकर  
महावत उस पर बैठता है ।

किलक-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह का  
नरपक्ष जिसकी बलम बनती है ।

किलेदार-सज्ञा पु० किले का प्रयाग अधि-  
कारी । दुर्गपति । गडपति । किले का  
रक्षक ।

किलेदारी-सज्ञा स्त्री० किले की रक्षा करने  
का कार्य । दुर्ग की पहरेदारी या रख-  
वासी ।

किलेली-सज्ञा पु० दे० "किलेल" ।  
"किलेल" ।

किल्लत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ घटनी ।  
बमी । मूनता । २ तंगी । शकाव ।  
३ भगडा । परेशानी ।

किल्ला-सज्ञा पु० रूँटा । बहुत बड़ी कील  
या मेख । डठन ।

किल्ली-सज्ञा स्त्री० १ "गुल्ली" । २ कील ।  
रूँटी । मेख । ३ सिटविनी । अंगन ।  
बग । किल्ली । ४ किसी बल या पैर  
की मुठिया जिसे घुमाने से बह चले ।  
मुहा०-किल्ली की किल्ली किसी के हाथ  
में होना=किसी का बस किसी पर होना ।  
किल्ली की चाल किसी के हाथ में होना ।  
किल्ली घुमाना या ऐँठना=युक्ति लगाना ।  
दाँव चलाना । किल्ली गाटना=१ डेरा  
डालना । रह जाना । २ अपनी स्थिति  
दृढ़ करना ।

किल्लिय-सज्ञा पु० १ दोष । पाप ।  
अपराध । २ रोग । ३ अनुम ।  
अनिष्ट ।

किल्लियी-वि० १ अपराधी । २ अधर्मी ।  
पापी । ३ रोगी ।

किल्लिब-सज्ञा पु० दे० "किल्लिब" ।  
किल्लिब-सज्ञा पु० [स्त्री० किल्लिबी] द्वार  
के पत्ते । लकड़ी का पत्ता जो द्वार बंद  
करने के लिए चौखट में जड़ा रहता है ।  
पट । कपाट ।

मुहा०-किल्लिब देना=द्वार बंद करना ।  
किल्लिब खोलना=मार्ग प्रशस्त करना,  
सुलभ करना ।

किशमिश-सज्ञा स्त्री० [वि० किशमिशी]  
सुखाया हुआ छोटा अमूर ।

किशमिशो-वि० [फा०] १. किशमिश के रंग की तरह। २. जिसमें किशमिश पड़ा हो।

सज्ञा पुं० अमोघा रंग-विशेष।

किशलय-सज्ञा पुं० कोपल। कल्ला। नया निकला हुआ पत्ता। फूलों की पखुड़ियाँ। कोमल पत्ता।

किशोर-सज्ञा पुं० [स्त्री० किशोरी] १. ग्यारह से १५ वर्ष तक की अवस्था का बालक। २. बेटा। पुत्र।

किशोरी-सज्ञा स्त्री० १. कुमारी। अविवाहिता युवती। २. युवती स्त्री।

किशत-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. शह। शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे की घात में पड़ना। २. हिस्ती में कर्ज अदा करना।

मुहा०-किशत लगना=फेर में मड़ना।

किशत देना=फेर में डालना। किशत खाना=फेर में पड़ जाना।

किस्ती-सज्ञा स्त्री० १. नौका। नाव।

२. एक तरह की छिड़ली वाली या तश्तरी।

३. हाथी। शतरंज का मोहरा-विशेष।

किस्तीनुमा-वि० नाव की तरह। नाव के आकार का। धनुष के आकार का।

किष्किष-सज्ञा पुं० प्राचीन प्रात-विशेष जो मैसूर के आसपास था।

किष्किषा-सज्ञा स्त्री० १. किष्किष पर्वत-श्रेणी। २. किष्किषा पर्वत की गुफा।

३. बालि की राजधानी का नाम।

किस-सर्व० 'कीन' और 'बया' का यह रूप, जो उन्हें विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है। कीन ? किसकी ? किसी को।

किसनई-सज्ञा स्त्री० खेती-बारी। किसान का काम।

किसय\*-सज्ञा पुं० दे० "कसय"।

किसाबत-सज्ञा स्त्री० [अ०] उस्तरे, कंचो आदि रखने का नाई का धेला।

किसमत-सज्ञा स्त्री० दे० "किस्मत"। भाग्य। घटपट। नसीब।

किसमिस-सज्ञा स्त्री० मेवा-विशेष।

किसमिसी-वि० रंग-विशेष।

किसमी\*-सज्ञा पुं० [अ० कसंबी] कुली। मजदूर। श्रमजीवी।

किसलय-सज्ञा पुं० दे० "किशलय"।

किसान-सज्ञा पुं० कृषक। कृषि या खेती करनेवाला। खेतिहर।

किसानी-सज्ञा स्त्री० कृषि। कृषिकर्म। खेती। किसान का काम।

किसी-सर्व०, वि० "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे-किसी ने। किसी को। किसको ? किसका ?

किस-सर्व० किसको।

किस्त-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. कई बार करके ऋण देने या चुकाने का ढग। भाग या हिस्सा में देना। २. ऋण का वह भाग जो निश्चित समय पर दिया जाय।

किस्तबंदी-सज्ञा स्त्री० [फा०] रुपया थोड़ा-थोड़ा करके अदा करने का ढग।

किस्तवार-कि० वि० [फा०] १. किस्त करके। किस्त के ढग से। २. किस्त पर।

किस्ती-सज्ञा स्त्री० "किस्ती"। पनसुइया। नौका।

किस्म-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. भेद। प्रकार। २. भाँति। तरह। ३. जाति। श्रेणी। ४. ढग। चाल।

किस्मत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. भाग्य। प्रारब्ध। तक्दीर। करम। २. कमिन्दरी। किसी प्रदेश का वह भाग जिसमें कई जिले हों।

मुहा०-किस्मत आबमाना=किसी कार्य को प्रारंभ कर यह देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं। किस्मत चमकना या जागना=बहुत भाग्यवान् होना। भाग्य प्रबल होना। किस्मत फूटना=भाग्य बहुत भद हो जाना।

किस्मतवर-वि० [फा०] जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्।

किस्ता-सज्ञा पुं० [अ०] १. बया। बहानी। उपाख्यान। २. समाचार। वृत्तान्त। हाल। ३. वाद। ४. भग्न। तनदार।

क्रिस्ताकोताह-क्रि० वि० [फा०] सारास  
यह कि। तात्पर्य यह कि। मतलब  
यह कि।

क्रिस्तास्वा-गज्ञा पु० [फा०] बिस्म-वहानिया  
मुनाने का काम करनेवाला।

क्रिस्तास्वानी-गज्ञा स्त्री० [फा०] कहानिया  
मुनाने का काम।

क्रिस्तास्वा-संज्ञा पुं० [फा०] दे० क्रिस्तास्वा।  
किहनी-गज्ञा स्त्री० कूहनी। टिहनी।

की-प्रत्य० हिंदी विभक्ति "का" का स्त्रीलिंग  
रूप। करी। कर दी। कर डाली।

क्रि० सं० हिं० "करना" के भूतकालिक  
रूप "किया" का स्त्री०।

कीक-संज्ञा पुं० [घनु०] चीत्कार। चीस।  
चित्ताहट।

कीकट-संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. मगध देश  
का वैदिक नाम। ३. [स्त्री० कीकटी]  
प्राचीन काल की अनाथ जाति-विशेष,  
जो कीकट देश में बसती थी।

वि० १. कुपण। २. दरिद्र। ३. पापी।

कीकड़-संज्ञा पुं० बबूल। कैंटीला पेड़।  
"कीकर"।

कीकना-क्रि० अ० [घनु०] चीत्कार करना।  
की-की करके चिल्लाना।

कीकर-संज्ञा पुं० कैंटीला पेड़। बबूल।

कीका-संज्ञा पुं० घोड़ा।

कीकान-संज्ञा पुं० १. घोड़ा। २. पश्चिमोत्तर  
का देश-विशेष जो घोड़ों के लिए प्रसिद्ध  
था। ३. इस देश का घोड़ा।

कीच-संज्ञा पुं० पक्क। नांदा। चहला।  
कीचड़।

कीचक-संज्ञा पुं० १. राजा विराट का  
साला। २. केचयराज का पुत्र।

३. गोला बांस जिमके छेद से निक्कलती  
हुई वायु शब्द करती है।

कीचड़-संज्ञा पुं० १. पक्क। पानी मिली हुई  
धूल या मिट्टी। "कीच"। २. आंस से  
निक्कलनेवाला सफेद मूत्र।

कीट-संज्ञा पुं० कीड़ा। मकोड़ा। रेंगने या  
उड़नेवाला शूद्र जंतु। बृद्धिक रासि।  
संज्ञा स्त्री० मल। जमी हुई मल।

कीटघ्न-संज्ञा पुं० गन्धक। शीपच-विशेष।  
कीटभृज-संज्ञा पुं० एक तरह का भीरा

किमी भी कीट को घेरकर, गुजन करता  
हुआ, उसके चारों ओर चक्कर लगाता  
है। यह कीट भी धीरे-धीरे बसा ही गुजन  
आरंभ करता है और सदा बसा ही शब्द  
करता है। किसी के रंग में किसी के रंग  
जाने पर "कीटभृज" न्याय कहा जाना है।

कीटमणि-संज्ञा स्त्री० जुगनु।

कीड़ा-संज्ञा पुं० १. मकोड़ा। उड़ने या  
रेंगनेवाला छोटा जंतु। २. सुदम कीट।  
कृमि। पिलुषा। ३. जूँ, लटमल आदि।

४. सांप। सर्प।

मुहा०-कीड़े काटना=चंचलता होना।  
जी उकताना। कीड़े पटना=१. (वस्तु में)  
कीड़े पैदा होना। २. ऐव होना। दोष  
होना।

कीड़ी-संज्ञा स्त्री० १. चीटी। पिपीलिका।  
२. छोटा कीड़ा।

कीतनक-संज्ञा पुं० मुलहठी। जेठो मधु।

कीटक-वि० किस प्रकार का? कैसा?

कीटक-वि० कैसा? किस प्रकार का?

कीनना-क्रि० अ० सं० मोल लेना। न्य  
करना। खरीदना।

कीना-संज्ञा पुं० [फा०] चैर। द्वेप।

वि०-किया। पूर्ण किया।

कीप-संज्ञा स्त्री० [अ० कीफ] छुन्दो।  
चांगी जिसे तंग मुँह के घरतन में लगाकर  
द्रव पदार्थ ढालते हैं कि बाहर न गिरे।

कीमत-संज्ञा स्त्री० मूल्य। दाम।

कीमती-वि० बहुमूल्य। अधिक मूल्य का  
दाम का।

कीमा-संज्ञा पुं० [अ०] गोस्त जो बहुत छोटे  
छोटे टुकड़ों में बटा हो। चूड़ी किया  
हुआ मांस।

कीमिया-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. रसायन।  
२. रासायनिक क्रिया।  
कीमियागर-संज्ञा पुं० १. जो रसायन बनावे।  
२. रासायनिक परिवर्तन में प्रवीण।  
कीमुक्त-संज्ञा पुं० [अ०] गंधे या घोड़े का  
चमड़ा जो हरे रंग का और शानदार होता है।

कीर-सज्ञा पु० १. शुक। सुग्गा। तोता।  
 २. कश्मीर देश। ३. बहेलिया। व्याघ्र।  
 ४. कश्मीर देश का रहनेवाला। ५. मास।  
 कीरति, कीरती-सज्ञा स्त्री० दे० "कीर्ति"।  
 कीरा-सज्ञा पु० "कीड़ा"। साँप। सर्प।  
 कीर्ण-वि० विखरा हुआ। फैला हुआ।  
 व्याप्त। छाया हुआ। आच्छन्न।  
 कीर्त्तन-सज्ञा पु० १. भजन और कथा  
 आदि। २. गुणगान। ३. कथन।  
 यशवर्णन।  
 कीर्त्तनिया-सज्ञा पु० १. कीर्त्तन करनेवाला।  
 २. भजन और कथा सुननेवाला। ३.  
 गाने से उपाजन कर जीनेवाला। गायक।  
 कथक।  
 कीर्त्ति-सज्ञा स्त्री० १. यश। २. ख्याति।  
 बड़ाई। नेकनामी। पुण्य। ३. सत्किया। ४.  
 सत्कार। ५. राधा की माता का नाम।  
 ६. आर्या छंद का भेद-विशेष। ७.  
 दशाक्षरी और एकादशाक्षरी वृत्त-विशेष।  
 ८. स्मरण करने योग्य काम। ९.  
 प्रसाद।  
 कीर्त्तित-वि० कथित। ख्याति। उक्त।  
 प्रसिद्ध। कहा हुआ।  
 कीर्त्तिकर-वि० ख्याति करनेवाले कर्म।  
 कीर्त्तिपताका-वि० सत्कर्म की प्रसिद्धि। यश  
 का चिह्न।  
 कीर्त्तिप्रिय-वि० यश चाहनेवाला। कीर्त्ति-  
 कामी।  
 कीर्त्तिसाम्ब या वाम्-वि० १. यशस्वी।  
 २. कीर्त्ति-विशिष्ट। ३. विख्यात।  
 प्रसिद्ध।  
 कीर्त्तिशेष-सज्ञा पु० १. मरण। २. यश की  
 समाप्ति। ३. दुष्कर्म के द्वारा सुकर्म का  
 दाय जाना।  
 कीर्त्तुस्तम्भ-सज्ञा पु० १. किसी की कीर्त्ति को  
 स्मरण कराने के लिए बनाया गया स्तम्भ।  
 २. कीर्त्ति स्थायी करनेवाला काम या  
 वस्तु।  
 कील-सज्ञा स्त्री० १. काँटा। लोहे या काष्ठ  
 की मेल। परेग। लूँटी। २. वह मूढ़  
 गर्भ जो योनि में भटक जाता है।

३. तिनका। तृण। ४. नाक का छोटा  
 आभूषण-विशेष। लोँग। ५. मुहाँसे  
 की मास-कील। ६. जाति के बीचोबीच  
 का खूँटा। ७. कुँभार के चाक घूमने  
 की खूँटी।  
 कीलक-सज्ञा पु० १. कील। खूँटी।  
 २. तंत्र के अनुसार देवता-विशेष।  
 ३. परेग। ४. मन्त्र जिससे किसी अन्य मन्त्र  
 की शक्ति या उसका प्रभाव नष्ट कर दिया  
 जाय। ५. मन्त्र का मध्य भाग। ६. ६०  
 वर्षों में से एक वर्ष का नाम। ७. केतु-  
 विशेष। ८. रोक। ९. किवाड़ की  
 किल्ली। १०. स्तोत्र-विशेष।  
 कीलन-सज्ञा पु० १. रुकावट। वधन।  
 रोक। २. मन्त्र की कीलने का काम।  
 कीलना-क्रि० स० १. कील लगाना।  
 मेल जड़ना। २. मन्त्र फूँकना। ३. कील  
 ठोककर मुँह बन्द करना (तोप आदि का)।  
 ४. किसी मन्त्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट  
 करना। सर्प को ऐसा मोहित कर देना  
 कि वह किसी की काट न सके। ५.  
 बश में करना। अधीन करना। ६.  
 रुकावट डालना।  
 कीला-सज्ञा पु० १. बड़ी कील। २. लोहे  
 की खूँटी।  
 कीलाक्षर-सज्ञा पु० बाबुल की एक अति  
 प्राचीन लिपि जिसके अक्षर कील के  
 आकार के होते थे।  
 कीलाल-सज्ञा पु० १. अमृत। २. मधु।  
 ३. जल। ४. रक्त। ५. पशु।  
 कीलालधि-सज्ञा पु० समुद्र। सागर।  
 कीलित-वि० १. कील जड़ी हुई। २. कीला  
 हुआ। मन्त्र से स्तम्भित। ३. बन्द।  
 बशीकृत।  
 कीली-सज्ञा स्त्री० १. किसी चक्र के बीचों-  
 बीच के छेद में पड़ी हुई वह कील जिस पर  
 वह चक्र घूमता है।  
 †२. दे० "कील" और "विल्ली"।  
 कीश-सज्ञा पु० १. मर्कट। बपि। लंगूर।  
 बदर। बानर। २. सूर्य। ३. चिट्ठिया।  
 की०-कीशध्वज=अर्जुन।

वि०—नगा । विवस्त्र ।  
 कीशपर्णी—सज्ञा स्त्री० प्रपामागं । चिरचिरा ।  
 कीश—सज्ञा पु० [फा०] गर्भ की धोली ।  
 धोली । सीसा । जरायुज । बन्दर ।  
 कुंभर—सज्ञा पु० [स्त्री० कुंभरि] १ पुत्र ।  
 लडवा । बालक । २. राजकुमार । राजपूत ।  
 कुंभर-विलास—सज्ञा पु० धान या चावल-विशेष ।  
 कुंभरेटा†—सज्ञा पु० [स्त्री० कुंभरेटी]  
 बालक । लडवा ।  
 कुंभ्रा—सज्ञा पु० "कूप" ।  
 कुंभ्रा—वि० [स्त्री कुंभ्रा] अविवाहित ।  
 कुंभ्र—सज्ञा स्त्री० दे० "कुम्बिनी" ।  
 कुंकड़—क्रि० वि० १. एक में एक सवृचित ।  
 २. झुट्टा ।  
 कुंगड़ा—वि० धलवान् । सण्ड-मुसण्ड ।  
 स्वास्थ्ययुक्त ।  
 कुंकुम—सज्ञा पु० १. कुंकुमा । २. रौरी ।  
 रौली जिसे स्त्रियाँ माथ में लगाती हैं ।  
 ३. बेरार । चाफरान । ४. सुगन्ध ।  
 कुंकुमा—सज्ञा पु० भिल्ली की कुप्पी या लाख  
 का पोला गोला जिसके भीतर गुलाल  
 भरकर होली के दिनों में दूसरों पर  
 मारते हैं ।  
 कुंचकी—सज्ञा स्त्री० "कचुकी" । चौली ।  
 भंगिया । काचली । भूना ।  
 कुंचन—सज्ञा पु० सिमटना । सिकुड़ने या  
 बटुरने की क्रिया ।  
 कुंघि—सज्ञा स्त्री० अजलि ।  
 कुचिका—सज्ञा स्त्री० कुजी । ताली ।  
 कुचित—वि० १. पूँपरवाले । छल्लेदार  
 [वाल] । २. टेढ़ा । घुमा हुआ ।  
 कुची—सज्ञा स्त्री० "कुजी" । ताली ।  
 कुज—सज्ञा पु० स्थान-विशेष जो वृक्ष लता  
 आदि से गडप की तरह बना हो ।  
 सज्ञा पु० [फा० कुज=कोना] दुसाले  
 के कोने पर बनाए जानेवाले बूट ।  
 सज्ञा स्त्री० १. लताच्छादित उद्यान वा  
 स्थान । २. तग जगह ।  
 कुंजक\*—सज्ञा पु० कचुकी । देवड़ी पर वा  
 वह धोवदार, जो अतपुर में आता जाता  
 हो । स्वाज सरा ।

कुजकुटीर—सज्ञा स्त्री० कुजगृह । घर जो  
 लताओं से घिरा हो ।  
 कुंजगली—सज्ञा स्त्री० १. पतली तंग गली ।  
 २. वगीचो के बीच में लताओं से ढँका  
 हुआ मार्ग ।  
 कुंजड़ा—सज्ञा पु० [स्त्री० कुंजड़ी, कुंजदिन]  
 एक मुसलमान जाति जो तरकारी, फल  
 वगैरह बेचती है ।  
 कुंजर—सज्ञा पु० [स्त्री० कुजरा, कुजरी]  
 १. हाथी । २. बेश । बाल । ३. अजना  
 के पिता और हनुमान के नाना का  
 नाम । ४. छप्पय का इक्कीसवाँ भेद ।  
 ५. पाँच मात्राओं के छंदों के प्रस्तार में  
 पहला प्रस्तार । ६. आठ की सख्या ।  
 ७. पौराणिक वृद्ध । ८. शुक्र पक्षी ।  
 ९. हस्त नक्षत्र । १०. पीपल । ११.  
 बलवान् । १२. एक नाग का नाम ।  
 १३. देश-विशेष । १४. पर्वत-विशेष ।  
 मुहा०—कुजरो वा नरो वा, कुजरो नरो=  
 हाथी या मनुष्य । श्वेत या कृष्ण । अनि-  
 दित्त या दुवेष की बात ।  
 वि० उत्तम । श्रेष्ठ । जैसे पुरुष-कुंजर ।  
 कुंजरारि—सज्ञा पु० सिंह । शेर ।  
 कुजविहारी—सज्ञा पु० कृष्ण भगवान् ।  
 वि० कुज में बिहार करनेवाला ।  
 कुजिका—सज्ञा स्त्री० काला जीरा ।  
 कुजित—वि० कुजों से युक्त । लता-मडपो  
 वाला ।  
 कुजी—सज्ञा स्त्री० १. चाबी । चानी ।  
 ताली । २. टीका । वह पुस्तक जिसमें  
 किसी दूसरी पुस्तक के अर्थ आदि  
 लिखे हों ।  
 मुहा०—(किसी की) कुजी हाथ में होना=  
 किसी का अधिकार होना ।  
 कुठ—वि० १. गुठला । कुद । जो तीक्ष्ण या खोला  
 न हो । २. मूर्ख । मन्दबुद्धि ।  
 कुंठित—वि० १. कुद । गुठला । जिसकी धार  
 तेज न हो । २. भद । ३. निवन्मा ।  
 बेवाम ।  
 कुंड—सज्ञा पु० १. कुड़ा । चौड़े मुँह का गहरा  
 बर्तन-विशेष । २. प्राचीन समय का

अनाज नापने का मान-विशेष । ३. बहुत छोटा तालाब । ४. पृथिवी में खोदा हुआ गड्ढा अथवा धातु आदि का बना हुआ पात्र जिसमें होम आदि करते हैं । ५. घटलोई । ६. ऐसी स्त्री का जारज लड़का जिसका पति जीता हो । ७. लोहे का टोप । ८. गट्ठा । पूला । ९. कुंड । शोध । १०. हीदा ।

कुंडरा-संज्ञा पु० मटका । कुड़ा ।

कुंडल-संज्ञा पु० १. सोने, चांदी आदि का कान का आभूषण-विशेष । मुरकी । बाली । २. गोरखनाथ के अनुयायी कनफटों का कान का आभूषण-विशेष । ३. कोई मड़लाकार गहना । जैसे—बड़ा, चूड़ा आदि । ४. मेखला । मंडरी । लोहे वा अन्य गोल मंडरा जो मोट या चरस के मुँह पर लगाया जाता है । ५. रस्सी आदि का गोल फटा । ६. कुहरे या बदली में चंद्रमा या सूर्य के किनारे दिखाई पड़नेवाला मंडल । ७. किसी लंबी लचीली वस्तु की बड़ी गोल फेरी में समेटने की स्थिति । मडल । फेंटी । ८. वाईस मानाओ का छंद-विशेष । ९. छंद में वह मानिक गुण जिसमें दो मात्राएँ हो, पर एक ही अक्षर हो ।

कुंडलाकार-वि० कुंडली के रूप या आकार का । गोल । मडलाकार ।

कुंडलिका-संज्ञा स्त्री० १. कुंडलिया छंद । २. मडलाकार रेखा ।

कुंडलिनी-संज्ञा स्त्री० १. जलेबी या इमरती नाम की मिठाई । २. तन और उसके अनुयायी हठयोग के अनुसार एक कल्पित वस्तु, जो मूलाधार में सुषुम्ना नाडी की जड़ के नीचे मानी गई है ।

कुंडलिया-संज्ञा स्त्री० मानिक छंद-विशेष जो एक रोला और दोहे को मिलाने से बनता है ।

कुंडली-संज्ञा स्त्री० १. जलेबी । २. कचनार । ३. कुंडलिनी । ४. गुडुचि । गिलोय । ५. जन्मकाल के ग्रहों की स्थिति बतानेवाला चक्रविशेष जिसमें बारह घर होते हैं । ६. गेंदुरी । इंडुवा । ७. साँप के 'झठने' की मुद्रा ।

संज्ञा पु० १. सर्प । साँप । २. वरुण । ३. विष्णु । ४. मोर ।

कुंडलीकृत-संज्ञा पु० १. साँप । २. वरुण । ३. मयूर । ४. चित्तल । ५. हिरन । ६. विष्णु । ७. कुंडलधारी ।

कुंडा-संज्ञा पु० बड़ा मटका । कछरा । मिट्टी का चौड़े मुँह का एक बड़ा गहरा बरतन ।

संज्ञा पु० दरवाजे की चौखट में लगा हुआ कोठा जिसमें जजीर या साँकल लगाई जाती है ।

कुंडिन-संज्ञा पु० १. एक मुनि का नाम । २. नगर-विशेष । विदर्भ नगर ।

कुंडिनपुर-संज्ञा पु० विदर्भ देश का प्राचीन नगर-विशेष ।

कुंडी-संज्ञा स्त्री० पत्थर या मिट्टी का छोटा बर्तन-विशेष जिसमें दही, चटनी आदि रखते हैं ।

संज्ञा स्त्री० १. किबाड में लगी हुई साँकल । २. जजीर की कडी ।

कुंत-संज्ञा पु० १. कुती का पिता । राजा-विशेष । २. गवेयक । कोडिल्ला । ३. बरछी । भाला । ४. जू । ५. क्रूर भाव । ६. अनल । ७. पानी । ८. प्रवर्ण ।

कुंतल-संज्ञा पु० १. केश । सिर के बाल । शिखा । २. जौ । ३. चुक्कड़ । प्याला । ४. हल । ५. देश-विशेष जो कोकण और बरार के बीच में था । ६. बहुरूपिया । वेप बदलनेवाला पुरुष । ७. सूत्रधार । ८. राग-विशेष । ९. श्रीराम की सेना का एक वातर ।

कुंतलचर्द्धन-संज्ञा पु० १. भृगराज वृक्ष । भृगरिया । २. भगरैया । भृगराज ।

कुंता-संज्ञा स्त्री० दे० "कुती" ।

कुतिभोज-संज्ञा पु० कुती या पृथा को गोद लेनेवाला राजा विशेष ।

कुंती-संज्ञा स्त्री० पृथा । युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम की माता ।

संज्ञा स्त्री० भाला । बरछी ।

कुंयना-क्रि० अ० पीटा या मारा जाना ।

कुंद-संज्ञा पु० १. जुही की तरह का पीधा-

विशप जिसमें सफेद फूल लगते हैं। २ कमल। ३ पत्तेर का पेड़। ४ कुन्द या फूल। ५ कुंदुर नाम का गोद। पर्वत-विशेष। ६ नीकी सण्या। ७ कुंदेर की ती निधियों में से एक। ८ विष्णु। ९ सराद।

वि० [का०] १ गुठला। कुठित। २ मद। स्तब्ध।

यो०—कुदजेहन=मदबुद्धि।

कुंदन—सज्ञा पु० १ शुद्ध सोने या पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िए नगीने जडते हैं। २ शुद्ध सोना।

वि० १ कुंदन के समान चोखा। शुद्ध। तालिस। स्वच्छ। उत्तम। बढ़िया। २ जिसे कोई रोग न हो। नीरोग।

कुंदर—सज्ञा पु० विवा। बेल-विशेष जिसमें चार पाँच भ्रगुल सबे फल लगते हैं, जिनकी तरपारी होती है।

कुंदलता—सज्ञा स्त्री० वर्णवृत्ति-विशेष जिसमें छब्बीस अक्षर होते हैं।

कुंदा—सज्ञा पु० १ लकड़ी का बड़ा, मोटा टुकड़ा। लकड़। २ बूक का चौड़ा पिछला भाग। ३ निहटा। लकड़ी का वह टुकड़ा, जिस पर रखकर बड़ई लकड़ी गटते, कुदीगर कपडे पर कुदी करते और किसान घास पाटते हैं। निष्ठा। ४ मूठ। दस्ता। बेंट। ५ काठ। वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोके जाते हैं। ६ कपडों की कुदी करने की लकड़ी की बड़ी मुंगरी। सज्ञा पु० १ पक्षी का पर। डैना। २ कुदती का पंच विशेष।

सज्ञा पु० खोटा। भाया। भुना हुआ दूध।

कुदी—सज्ञा स्त्री० १ कपडों की सिकुड़न और रखाई दूर करने तथा तह जमान के लिए उते मोगरी से कुटने की क्रिया। २ ठोकपीट। खूब मारना। ३ भ्रन्धी तरह मरम्मत।

कुदीगर—सज्ञा पु० जो कुदी करे।

कुंदुर—सज्ञा पु० दवा के पाम मानेवाला पीला मोद विशेष।

कुंदेरना—त्रि० स० गरादना। कुंदेदना। खुरचना।

कुंदिरा—सज्ञा पु० [स्त्री० कुंदेरी] कुनेरा। गरादनेवाला।

कुभ—सज्ञा पु० १ घट। बलश। मिट्टी का घड़ा। २ ज्योतिष में दसवी राशि। ३ हाथी के मिर के शानो और ऊपर उमड़े हुए भाग। ४. प्राणायाम के तीन भागों में से एक। कुभक। ५ दो द्रोण या ६४ सेर का प्राचीन मान या तील विशेष। ६. गुग्गुल। ७ वैश्यापति। ८ एक राजा का नाम। ९ प्रति वारहवें वर्ष पहनेवाला पर्व विशेष। १० प्रह्लाद का पुत्र एक देव।

कुभक—सज्ञा पु० प्राणायाम का अंग-विशेष जिसमें साँस लेकर वायु को शरीर के भीतर रोकते हैं।

कुभकर्ण—सज्ञा पु० रावण का भाई एक राक्षस।

कुभकार—सज्ञा पु० १ जाति विशेष।

२ मिट्टी के बरतन बनानेवाला। कंभार ३ मुर्गा।

कुभकारी—सज्ञा स्त्री० कुंमारिन। कुलयी। मंनसिल।

कुभज, कुभजात—सज्ञा पु० १ जो घड़े से उत्पन्न हुआ हो। २ वशिष्ठ। ३ अगस्त्य मुनि। ४ द्रोणाचार्य।

कुभवीर्य—सज्ञा पु० रीठा।

कुभसम्भव—सज्ञा पु० १ अगस्त्य मुनि। २ वशिष्ठ। ३ द्रोणाचार्य।

कुभा—सज्ञा पु० १ छोटा घड़ा। २ राजा-विशेष। ३ वैश्या।

कुभिका—सज्ञा स्त्री० १ कुम्भी। २ वैश्या।

३. जलकुम्भी। ४ वायफल। ५ शील की कुडिया। बिलनी। ६ परवल की लता।

७ शूक रोग। ८ एक प्रकार का वृक्ष।

कुभिनी—सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। भूमि। २ जमालगोटा।

कुभिलाना\*—त्रि० प्र० दे० “कुम्हलाना”।

कुम्भी—सज्ञा पु० १ मगर। २. हाथी।

३ जहरीला कीड़ा विशेष। ४. गुग्गुल।

५ यक्षों को क्लेश देनेवाला एक राक्षस।

सज्ञा स्त्री० १ छोटा घड़ा। २ स्त्री

का पेड़। दाँती ॥ ३ कायफल का पेड़।  
४. जलाशयो में होनेवाली एक वनस्पति।  
जलकुम्भी। ५ नरक-विशेष। कुम्भीषाण्य  
नरक। ६ मछली-विशेष।

कुम्भीषाण्य-सज्ञा पु० घड़ा भर अनाज जिसे  
कोई गृहस्थ या परिवार छ दिन खा सके।  
कुम्भीषाण्यक-सज्ञा पु० अन्न संचित करने-  
वाला व्यक्ति।

कुम्भीनस-सज्ञा पु० [स्त्री० कुम्भीनसी] १ एक  
प्रकार का विपला सर्प। २. रावण।

कुम्भीषाक-सज्ञा पु० १ नरक-विशेष जिसमें  
पापियों को उस प्रकार जलाया जाता  
है जैसे आँवा में मिट्टी के वर्तन।  
२ बटलोई में बना हुआ सामान।  
३ सन्निपात विशेष जिसमें नाक से वाला  
खून जाता है।

कुम्भीर-सज्ञा पु० एक भयंकर बड़ी मछली।  
शार्क।

कुम्भीरक-सज्ञा पु० घोर। घटियाल।

कुम्भीरुणा-सज्ञा स्त्री० ग्रीष्म-विशेष। नितोत।

कुम्भीर-सज्ञा पु० १ पुत्र। लडका। २  
राजकुमार। राजा का लडका।

कुम्भीरि-सज्ञा स्त्री० १ राजकन्या। २ लडकी।

कुम्भीरेदो-सज्ञा पु० छोटा लडका।

कुम्भीरा-वि० अविवाहित। जिसका व्याह न  
हुमा हो।

कुम्भीरौ-सज्ञा स्त्री० अविवाहिता कन्या।  
कुमारी।

कु-एक उपसर्ग जो सज्ञा के पहले लगकर  
उसके अर्थ में नीचता, न्यूनता, अल्पता  
या निम्न आदि का अर्थ उत्पन्न करता है।  
नीच, कुत्सित आदि अर्थ का बोध कराने-  
वाला उपसर्ग।

कुम्भी-सज्ञा पु० पानी निकालने के लिए  
जमीन में खोदा हुआ गहरा गड्ढा। कुप।

कुम्भी- (किसी के लिए) कुम्भी खोदना =  
हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। कुम्भी  
खोदना = जीविका का प्रबन्ध करना। कुम्भी  
में गिरना = विपत्ति में पड़ना। कुम्भी में  
वाँस पड़ना = बहुत खोज होना। कुम्भी में  
भाँग पड़ना = सबकी बुद्धि भ्रष्ट होना।

फा० २२

कुम्भीर-सज्ञा पु० आश्विन। भादों के बाद  
का महीना।

कुम्भी-सज्ञा स्त्री० छोटा कुम्भी। बठकुम्भी  
= वह छोटा कुम्भी जो काठ से बंधा  
हो।

कुम्भी-सज्ञा स्त्री० कुमुदिनी।

कुम्भी-सज्ञा स्त्री० एक विशेष प्रकार का  
वपात, जो रेशम की तरह चिकना और  
गुलाबी रंग का होता है।

कुम्भीना-क्रि० अ० सिकुड़कर कड़ा हो  
जाना।

कुम्भी-सज्ञा स्त्री० कच्चे सूत का लपेटा हुआ  
सज्जा, खुलडी।

कुम्भी-सज्ञा पु० फारसी साहित्य में हुमा  
नामक कल्पित पक्षी।

कुम्भी-स० पु० [अग्ने०] एक प्रकार का  
कटोरदान जिसमें दाल-चावल, तरकारी एक  
साथ पवाई जाती है।

कुम्भी-सज्ञा स्त्री० वन-भूमि।

कुम्भी-सज्ञा पु० एक छोटा पौधा जिससे  
कड़ी गंध निकलती है।

कुम्भी-सज्ञा पु० अधर्म। बुरा या नीच काम।  
दुराचार। पाप।

कुम्भी-वि० दुराचारी। बुरा काम करने-  
वाला पापी।

कुम्भी-सज्ञा पु० १ माविक छद्म का नाम।  
२ एक प्राचीन पर्वत। ३ दिशा।

कुम्भी-सज्ञा पु० कुत्ता। यदुवशी क्षत्रियों की  
जाति-विशेष। १ एक प्राचीन प्रदेश।  
२ सर्प-विशेष।

कुम्भी-सज्ञा स्त्री० सूखी खाँसी।

कुम्भी-सज्ञा पु० एक दाँत पर निकलनेवाला  
दूसरा टेढ़ा दाँत।

कुम्भी-वि० टेढ़े और आगे निकले हुए  
दाँतोवाला।

कुम्भी-सज्ञा पु० १ एक प्रकार की  
खुमी या छोटा पौधा जिससे बुरी गंध निक-  
लती है। २ छत्राक।

कुम्भी-सज्ञा स्त्री० कुम्भी-सज्ञा स्त्री० मक्खी-  
विशेष जो पशुओं के चिपट जाती है।

कुम्भी-सज्ञा स्त्री० कुत्तिया।

कुकुरोष्ठी-सज्ञा स्त्री० कुकुरमाष्ठी ।  
 कुकुरी\*†-सज्ञा स्त्री० १. वनमूर्गी । भुकुडी ।  
 २. काले दाग जो बाजरे की बाली पर  
 लगते हैं ।  
 कुक्कुट या कुक्कुट-सज्ञा पु० १. मूर्गी ।  
 २. लूक । ३. चिनगारी । ४. जटाधारी  
 घोड़ा । ५. ताम्रचूड़ ।  
 कुक्कुटव-सज्ञा पु० १. वर्णसकर जाति-  
 विशय । २. वनमूर्गी ।  
 कुक्कुट नाडी-सज्ञा स्त्री० नली या यन्त्र  
 जिज्ञासे भरे वर्तन वा जल खाली वर्तन  
 में जाय ।  
 कुक्कुटपाद-सज्ञा पु० पर्यंत जिसे श्रव कुबिहार  
 कहते हैं और जो गया से आठ कोस उत्तर-  
 पूर्व की ओर है ।  
 कुक्कुटघ्न-सज्ञा पु० भाद्र शुक्ला सप्तमी को  
 बिया जानेवाला घृत-विशय ।  
 कुक्कुर-सज्ञा पु० [स्त्री० कुक्कुरी] १  
 श्वान । कुत्ता । २. यदुवशियो की जाति-  
 विशेष । कुकुर । ३. मुनि-विशेष ।  
 कुकाठ-सज्ञा पु० बुरी लकड़ी । सड़ी धुनी  
 लकड़ी ।  
 कुक्षिया-सज्ञा स्त्री० दुग्धमं । बुरा काम ।  
 बुरा आचरण ।  
 कुक्ष-सज्ञा पु० उदर । पेट ।  
 कुक्षि-सज्ञा स्त्री० १. पेट । २. कोल ।  
 ३. किसी चीज के मध्य का भाग ।  
 सज्ञा पु० १. दानव विशय । २. राजा  
 बलि । ३. प्राचीन देश-विशेष ।  
 कुक्षी-सज्ञा स्त्री० १. कोल । २. गुह्यस्थान ।  
 ३. सतति । ४. तलवार की म्यान ।  
 कुक्षेत-सज्ञा पु० बुरी जगह । कुडीव ।  
 कुक्ष्यात-वि० बदमास । अपयशी । निर्दिन ।  
 कुक्ष्याति-सज्ञा स्त्री० बदनामी । अपयस ।  
 निंदा । बुराई ।  
 कुगति-सज्ञा स्त्री० बुरी गति । दुर्गति ।  
 दुर्दशा ।  
 कुग्रह-सज्ञा पु० बुरे ग्रह । दुष्टदायी ग्रह ।  
 अशुभ ग्रह ।  
 कुग्राम-सज्ञा पु० १. निर्दिष्ट गाँव । २. जिस  
 गाँव में अधिक बुरे लोग रहते हो ।

कुगहीन\*†-सज्ञा स्त्री० हठ । अनुचित  
 आग्रह । छिद ।  
 कुघाट-वि० बेडौल । कुरूप ।  
 कुघात-सज्ञा पु० १. कुसमय में मारना ।  
 २. भयस्थान में मारना । ३. छल-नपट ।  
 बुरा दाँव ।  
 कुच-सज्ञा पु० १. उरोज । २. स्तन ।  
 कुचकुचवा-सज्ञा पु० उल्लू ।  
 कुचकुम्भल-सज्ञा पु० स्तन के ऊपर का भाग ।  
 घन का मुँह । थोड़ी ।  
 कुचकुचाना-वि० स० १. कोचना । बार  
 बार काचना । तंग करना । २. कुच-  
 लना ।  
 कुचदन-सज्ञा पु० लाल चन्दन । रक्त चन्दन ।  
 बिना सुगन्धि का चन्दन ।  
 कुचन-सज्ञा पु० १. कुविश्राना । २.  
 सह करना । ३. कुच का बहुवचन ।  
 कुचना\*-वि० अ० सिमटना । सिकुटना ।  
 कुचक-सज्ञा पु० पद्मश । दूसरा का हानि  
 पहुँचानेवाला गुप्त प्रयत्न ।  
 कुचप्री-सज्ञा पु० पद्मश करनेवाला । कुटिल  
 चाल चलकर दूसरे की हानि पहुँचाने-  
 वाला ।  
 कुचर-सज्ञा पु० १. आवाय । बुरे स्थानों  
 में घूमनेवाला । २. बुरा काम करनेवाला ।  
 ३. निन्दक ।  
 कुचलना-क्रि० स० १. मसलना । २. रीदना ।  
 घूर करना । बुरी तरह दबाना । पीस देना ।  
 मुहा०-तिर कुचलना=पराजित करना ।  
 कुचला-सज्ञा पु० शोधक के लिए उपयोगी  
 वृक्ष-विशय का विपला बीज ।  
 वि० १. जिसका कपड़ा भँसा हो । भँसे  
 कपड़ेवाला । २. भँसा । गदा ।  
 कुचली-सज्ञा स्त्री० बीला । सीता दाँत ।  
 य दाँत जो डाढ़ी और राजदाँत के बीच  
 में होते हैं ।  
 कुचाप-सज्ञा पु० स्तन वा शय्य भाग ।  
 भिटनी । भेटला ।  
 कुचात-सज्ञा स्त्री० १. कुमार्ग । बुरा  
 आचरण । २. दुष्टता । बदमासी ।  
 ३. कुरीति । कुट्येव ।

कुचाली-सज्ञा पु० १ घुरे चाल-चलनवाला ।  
 २ दुष्ट । ३ उपद्रवी ।  
 कुचाह\*—सज्ञा स्त्री० १ अनिच्छा । २ असुभ  
 यात । ३ बुरी खबर । ४ प्रेम-रहित ।  
 ५ कष्ट स्नेह । ६ अमंगल ।  
 कुचि या कुचो-स्त्री० १ बूहारी । बड़नी ।  
 भाड़ । शोयनी । २ कुचो जिससे दीवार  
 पर सफेदी पोती जाती है ।  
 कुचिया-सज्ञा स्त्री० १ उड्ड की पिट्टी की  
 छोटी छोटी टिबिया । २ लोलकी । वन  
 के नीचे का कोमल भाग ।  
 कुचिलना—कि० दे० “कुचलना” ।  
 कुचोल\*†—वि० मलिन । मैले वस्त्र धारण  
 करनेवाला । मैला कुचैला ।  
 कुचैला—वि० १ मलिन । २ गुदड़ी ।  
 ३ बुरा शिष्य ।  
 कुचेष्ट—वि० बुरी चेष्टावाला । जिसकी  
 इच्छाएँ बुरी हों । बुरी भावनाओं से  
 युक्त ।  
 कुचेष्टा-सज्ञा स्त्री० [वि० कुचेष्ट] १  
 कुप्रयत्न । बुरी चेष्टा । हानि पहुँचाने का  
 प्रयत्न । बुरी चाल । २ चेहरे का बुरा  
 भाव ।  
 कुचैन\*—सज्ञा स्त्री० १ दुःख । व्याकुलता ।  
 २ परेशानी । कष्ट ।  
 वि० बेचैन । व्याकुल ।  
 कुचोद्य-सज्ञा पु० कुत्सित प्रश्न । कुनक ।  
 कुच्छित्त\*—वि० दे० “कुत्सित” ।  
 कुछ—वि० थोड़ा सा । थोड़ा माना या  
 राख्या म । जरा । अल्प ।  
 सर्व० १ कोई (वस्तु) । २ सार वस्तु ।  
 काम की वस्तु । ३ प्रसिद्ध या गण्य मान्य  
 मनुष्य ।  
 मुहा०—कुछ एक=थोड़ा सा । कुछ कुछ=  
 थाड़ा । कुछ ऐसा=असाधारण । विलक्षण ।  
 कुछ न कुछ=थोड़ा बहुत । कम या अधिक ।  
 कुछ से कुछ या कुछ का कुछ=और का  
 और । उत्तरा-मलटी । कुछ कहना=  
 विगडना । कड़ी बात कहना । कुछ नर  
 देना=जाड़-टोना नर देना । (किसी को)  
 कुछ हो जाना=कोई रोग या भूत-प्रेत

लगना । कुछ हो=जो कुछ भी हो । चाहे  
 जो हो । कुछ लगाना=(अपने को) बड़ा  
 या श्रेष्ठ समझना । गर्व करना । कुछ  
 हो जाना=नाम पैदा करना ।  
 कुजन\*—सज्ञा पु० १ अभिचार । बुरा यत्न ।  
 २ टोटका । टोना ।  
 कुज-सज्ञा पु० १ मंगल ग्रह । २ मंगलवार ।  
 ३ वृक्ष । पड । ४. नरकामुर जो पृथ्वी का  
 पुत्र माना जाता था ।  
 कुजन-सज्ञा पु० दुष्ट व्यक्ति । दुष्ट ।  
 कुजलीवन-सज्ञा पु० कुजरवन । हाथियों  
 का वन । जिस वन में अधिक हाथी  
 हों ।  
 कुजा-सज्ञा स्त्री० १ सीता, जानकी । २  
 कात्यायनी का एक नाम ।  
 कुजाति-सज्ञा स्त्री० १ अपनी जाति से  
 निकाला हुआ । २ नीच या बुरी जाति ।  
 अवम जाति ।  
 सज्ञा पु० १ नीच पुरुष । बुरी जाति का  
 आदमी । २ पतित या अवम पुरुष ।  
 वि० जातिच्युत । पतित ।  
 कुजोग\*†—सज्ञा पु० १ बुरा मेल ।  
 असुभ संयोग । कुसंग । २ बुरा अवसर ।  
 बुरा समय ।  
 कुजोगी\*—वि० जो समय से न रहे । असयमी ।  
 दुराचारी ।  
 कुट-सज्ञा पु० [स्त्री० कुटी] १ गृह ।  
 घर । २ कलश । ३ गड । कोट ।  
 ४ रामूह । ५ शिखर । ६ साकेतिक  
 शब्द । ७ पर्यंत तोड़नेवाली हथौड़ी । ८  
 छोटा टुकड़ा । बूटा हुआ टुकड़ा । जैसे,  
 तिलकुट ।  
 सज्ञा स्त्री० एक बड़ी मोटी भाड़ी, जिसकी  
 जड़ सुगंधित होती है ।  
 कुटका-सज्ञा पु० छोटा टुकड़ा ।  
 कुटकी-सज्ञा स्त्री० १. एक पहाड़ी पौधा,  
 जिसकी जड़ की गाल गाँठ की औषध  
 बनती है । २ जड़ी बिलेप । ३ मसाला ।  
 ४ उड़नवाला छोटा कीड़ा, जो कुत्ते,  
 बिल्ली आदि के रोंगों में रहता है ।  
 †सज्ञा स्त्री० चेना । कौली ।

कुटकुट-सजा पु० सिधाडा ।

कुटज-सजा पु० १ कुर्या । २ अगस्त्य मुनि । ३ इन्द्रयव । ४ शोणाचार्य । ५ पुष्प-विशेष ।

कुटत-सजा स्त्री० १ कुटाई । कुटने का भाव । २ मार ।

कुटनई-सजा स्त्री० १ कुटाई । कुटने का गुण । २ कुटने-पीसने का काम ।

कुटनपन-सजा पु० १ दूती-वर्म । कुटनी का काम । २ बंमनस्य पैदा कराना ।

कुटत-सजा पु० कुटाई । प्रहार ।

कुटनहारी-सजा स्त्री० कुटनेवाली स्त्री ।

कुटना-सजा पु० १ दूत । टाल । स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलाने-वाला । २ चुगलखोर । दो आश्रमियों में भगडा करानेवाला । ३ भड । भडुवा ।

सजा पु० कुटने का अस्त्र ।

क्रि० अ० १ कूटा जाना । २ खण्ड खण्ड करना । तोड़ना ।

कुटनाना-क्रि० स० १ फुसलाना । बह-फाना । २ किसी स्त्री को बहकाकर कुमार्य पर ले जाना ।

कुटनपन-सजा पु० दे० 'कुटनपन' ।

कुटनापा-सजा पु० दे० "कुटनपन" ।

कुटनी-सजा स्त्री० १ दूती । स्त्रियों को बहकाकर उन्हें पर-पुरुष से मिलाने का कार्य करनेवाली स्त्री । २ दो व्यक्तिना में भगडा करानेवाली । ३ सन्देश ले जानेवाली ।

कुटवाना-क्रि० स० कुटने का कार्य दूसरे से करवाना ।

कुटाई-सजा स्त्री० १ कुटने की मजदूरी । २ कुटन का काम ।

कुटास-सजा स्त्री० मार-पीट की इच्छा ।

कुटिया-सजा स्त्री० १ भापड़ी । एरान्त स्थान में मिट्टी-पूज आदि का बना हुआ छोटा घर । २ पशुपति का चारा ।

कुटिल-वि० टेढ़ा । घन । गूर । दुष्ट । धोखेबाज । शगाबाज । कपटी । छत्री । खोटा । धुंधराला । छुनदार । टेढ़ा-मड़ा । सर्पाकार ।

सजा पु० शठ । खल । चुगलखोर । पीलापन लिये सफेद रंग और लाल आँखों वाला । १४ अक्षरों का एक छन्द । एक धातु । तगर का फूल ।

कुटिलता-सजा स्त्री० १ टेढ़ापन । २ खोटाई । छल । कपट । शठता । क्रूरता ।

कुटिलात करण-वि० १ कपटी । खल । २ मन में बुरी भावना रखनेवाला ।

कुटिलपन-सजा पु० दे० "कुटिलता" ।

कुटिला-सजा स्त्री० १ प्राचीन लिपि विशेष । २ सरस्वती नदी । ३ एक प्रकार की सुगन्धि । ४ तगर पौधा विशेष ।

कुटिलाई-सजा स्त्री० दे० "कुटिलता" । छल । कपट । टेढ़ापन । चुगलखोरी । क्रूरता ।

कुटिला-वि० मजाक उड़ानेवाला । व्याम की हँसी करनेवाला ।

कुटी-सजा स्त्री० १ तृण से बना हुआ छोटा घर । पर्णाला । २ भापड़ी । कुटिया । ३ पशुमा का चारा । ४ मुरा नामक गन्ध द्रव्य । ५ स्वतः कुटज ।

कुटीचक-सजा पु० १ चार प्रकार के सन्यासियों में पहला । शिवड़ी सन्यासी । २ पुत्र के अग्र पर जीवित रहनेवाला ।

कुटीचर-सजा पु० दे० "कुटीचक" । १ कपटी । छनी । २ कुटिल । ३ चुगलखोर । ४ मति । सन्यास की प्रथस्था ।

कुटीर-सजा पु० भापड़ी । कुटिया । कुटी ।

कुटब-सजा पु० परिवार । अपने पर वाला का समुदाय । पुनर्वा । खानदान ।

कुटबो-सजा पु० [स्त्री० कुटबिनी] १ परिवारवाला । २ खानदान के लोग । नवधो । तानेदार ।

कुटब-सजा पु० दे० 'कुटब' । परिवार ।

कुटेव-सजा स्त्री० बुरा हट । किसी धान पर अनुचित रूप से धड़ जाना ।

कुटीनो-सजा स्त्री० धान कुटने की मजदूरी ।

कुटव-सजा स्त्री० बुरी धान । गुरी भादन ।

कुट्टमित-सज्ञा पु० १ प्रेमालाप करते समय स्त्रियों का नवारात्मक हावभाव । २. स्त्रियों के ललित हाव भाव का नाम, जिसमें वे संयोग के समय मिथ्या दुख प्रवृत्त करती हैं ।

कुट्टा-सज्ञा पु० १ पर कटे हुए वस्त्र । २ पक्षी फँसाने के लिए जाल में छोड़ा हुआ पक्षी ।

कुट्टी-सज्ञा स्त्री० पशुओं का चारा । चारा काटना । गँदासे से बारीक कटा हुआ चारा । कूटा और सड़ाया हुआ रद्दी कागज । लडको द्वारा आपस में मित्रता का, दाँती पर नाखून लगाकर या अन्य ढंग से, एक संकेत और उस समय उच्चारण किया जानेवाला शब्द । मंत्री-भग । परखटा वस्त्र ।

कुठला-सज्ञा पु० [स्त्री० कुठली] १ अनाज रखने के लिए मिट्टी का बड़ा बरतन । २ चूने की भट्टी ।

कुठाँड़े-सज्ञा स्त्री० दे० "कुठाँव" ।  
कुठाँव\*†-सज्ञा स्त्री० बुरा स्थान । बुरी जगह ।

मुहा०—कुठाँव मारना=शरीर के किसी एक स्थान पर चोट करना जहाँ बहुत पीड़ा हो ।

कुठाट-सज्ञा पु० १ बुरा सामान । बुरा राज । २ बुरा प्रवच । ३ बुरा आयोजन । बुरा काम करने की तैयारी या चप्टा ।

कुठार-सज्ञा पु० [स्त्री० कुठारी] १ कुल्हाड़ी । २ परशु । फरसा । ३ नाश करनेवाला । विनाशक ।

कुठाराघात-सज्ञा पु० १ कुल्हाड़ी या फरसे न आघात । २ गहरी चोट । ३ अत्यधिक हानि ।

कुठारी-सज्ञा स्त्री० १ कुल्हाड़ी । टांगी । २ नाश करनेवाला । ३ अनाज संचित करने का स्थान ।

कुठाली-सज्ञा स्त्री० सोना-चाँदी गलाने वाली मिट्टी ।

कुठार-सज्ञा पु० १ कुठार । कुठाँव । बुरा स्थान । भयं स्थान । २ असमय । बमोका ।

कुठार-सज्ञा पु० १ बुरे स्थान पर । कुठाँव । २ बे-मोका । बुरी जगह ।

कुड-सज्ञा पु० कुट्ट नामक एक श्लेष । कुडकना-दे० "कुडकुडाना" । कुडककर बोलना । डपटकर बोलना । डपटना ।

कुडकुडाना-कि० अ० १ मन ही मन कुटना । कुडकुडाना । कुडकुड करना । २ घूरना । घुरना ।

कुडकुडी-सज्ञा स्त्री० भूख या अपच से पेट में हानवाली गुडगुडी ।

मुहा०—कुडकुडी होना=किसी बात को जानने के लिए व्याकुल होना ।

कुडकुडाना-कि० अ० [अनु०] मन ही मन खीझना या कुटना । कुडकुडाना ।

कुडल-सज्ञा स्त्री० खन की कमी या ठडक लगने से शरीर में ऐंठन की पीड़ा ।

कुडव-सज्ञा पु० १ अनाज नापने का एक पुराना नाप, जो चार अंगुल चौड़ा और चार अंगुल गहरा होता था । २ एक सेर का पाँचवाँ भाग ।

कुडा-सज्ञा पु० इन्द्रजी का वृक्ष ।

कुडक-सज्ञा स्त्री० १ अडान देनेवाली मुर्गी । २ बेकार । व्यर्थ । खाली ।

कुडोल-वि० भद्दा । बेढगा । बेतरतीब । जिसका डीलडोल ठीक न हो ।

कुडग-सज्ञा पु० बुरा ढग । बुरी चाल । बुरी रीति । अशिष्ट व्यवहार ।

वि० १ बढगा । बुरे ढग का । भद्दा । २ बुरा ।

कुडगा-वि० १ असम्भव । उजड़ । गँवार । २ भद्दा । बेढगा ।

कुडगी-वि० धुरे चालचलन का । दुराचारी । विना ढगवाला ।

कुडन-सज्ञा स्त्री० १ चिड़ । २ खीझ । ३ मन में श्लेष या दुख ।

कुडना-कि० अ० १ मन ही मन खीझना । भीतर ही भीतर श्लेष करना । चिड़ना । बुरा मानना । २ डाह या ईर्ष्या करना । ३ मसोसना । भीतर ही भीतर दुखी होना । ४ दूसरे की उन्नति से दुखी होना ।

कुत्स-वि० १. घुरे ढग. या । २. बठिन ।  
दुस्तर ।

कुत्सना-वि० स० १. चिठना । मिथाना ।  
त्रोष. या सुस्ता-दिलाना । २. दुःखी  
करना । घलपाना ।

कुत्स-सज्ञा पु० १. चील । २. क्षिप्रु । बच्चा ।  
३. नाभि का मैल ।

कुत्स-सज्ञा पु० १. लाश । शव । २. रांगा ।  
३. वरछा । ४. गोदी । झुगुदी ।

वि०-लाश की तरह दुर्गन्ध । तिरस्कार  
की भावना के लिए प्रयुक्त शब्द ।

कुत्सपाशो-सज्ञा पु० १. मुर्दा खानेवाला  
जन्तु । २. मुर्दा खानेवाला एक प्रेत ।

कुत्स-सज्ञा पु० १. गतवा । २. सोटा । मोटा  
डडा । ३. भाँग घोटने का सोटा या डडा ।

कुत्सना-वि० अ० कूता जाना । कूतने का  
कार्य होना । मूल्यांकन, भन्वाज लगाना ।

कुत्स-वि० कुत्सित शरीर ।

सज्ञा पु० कुवेर । यक्षराज ।

कुत्स-सज्ञा पु० १. दिन का आठवाँ  
मुहूर्त । २. आद्य की आवश्यक वस्तुएँ,  
जैसे कुश, तिल आदि । ३. ब्राह्मण ।

४. सूर्य । ५. अग्नि । ६. अतिथि ।  
७. भोजन । ८. चमड़े की कुप्पी ।

कुत्सकाल-सज्ञा पु० गरमी का समय ।  
मध्याह्न काल ।

कुत्तरना-क्रि० स० १. दाँत से काटना ।  
२. छोटे-छोटे टुकड़े करना ।

कुत्स-सज्ञा पु० १. काटनवाला । २. पिल्ला ।  
कूत्त का बच्चा ।

कुत्स-सज्ञा पु० बुरा तर्क । असंगत पाद-  
विवाद करना । वितडा । बेदगी दर्जाल ।

कुत्स-सज्ञा पु० बकबादी । व्यर्थ बहस  
करनेवाला । वितडावादी । हुज्जती ।

कुत्स-सज्ञा पु० पृथ्वीतल । भूतल ।

कुत्सवार-सज्ञा पु० दे० 'कोनवाल' ।  
कूतनेवाला । अनुमान करनेवाला ।

कुत्सवाल-सज्ञा पु० दे० 'कोनवाल' ।

कुत्स-सज्ञा पु० १. असुविधा । २. अडस ।

कुत्सि-सज्ञा स्त्री० बूकरी । कूत्ती । कूत्ते  
की मादा ।

कुत्स-सज्ञा पु० उत्सुकता । कूतूहल ।  
आनन्द ।

कुत्स-सज्ञा पु० धुवनाग ।

(अ०) निताय का बहुवचन ।

यो०-नितायसाना=पुष्पकालय ।

कुत्स-सज्ञा पु० दिशामूचक यन्त्र ।  
एक प्रकार का यन्त्र जिसमें सुइया के घूमने  
से दिशा का ज्ञान होता है ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

४. भीडा । ५. खिलवाड़ । ६. आश्चर्य्य ।  
अचभा । ७. आमोद ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

४. भीडा । ५. खिलवाड़ । ६. आश्चर्य्य ।  
अचभा । ७. आमोद ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

४. भीडा । ५. खिलवाड़ । ६. आश्चर्य्य ।  
अचभा । ७. आमोद ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

४. भीडा । ५. खिलवाड़ । ६. आश्चर्य्य ।  
अचभा । ७. आमोद ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

४. भीडा । ५. खिलवाड़ । ६. आश्चर्य्य ।  
अचभा । ७. आमोद ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

४. भीडा । ५. खिलवाड़ । ६. आश्चर्य्य ।  
अचभा । ७. आमोद ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

४. भीडा । ५. खिलवाड़ । ६. आश्चर्य्य ।  
अचभा । ७. आमोद ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

४. भीडा । ५. खिलवाड़ । ६. आश्चर्य्य ।  
अचभा । ७. आमोद ।

कुत्स-सज्ञा पु० [वि० कूतूहली] १. जानने  
की प्रबल इच्छा । २. उत्सुकता । वह वस्तु  
जिसे देखने की इच्छा हो । ३. कौतुक ।

कृय-संज्ञा पु० १. हाथी पर का विछावन । हाथी की भूल । २. रय का पदा । ३. प्रातःकाल स्नान करनेवाला ब्राह्मण ।  
 कृयरी, कृयली-संज्ञा स्त्री० भोली । कोयली ।  
 कृदकना-क्रि० अ० दे० "कूदना" । फांदना । फुदकना । उछलना ।  
 कृदकान-संज्ञा पु० १. उछल-कूद । २. कूद-फांद । ३. अंगूठा ।  
 कृदरत-संज्ञा स्त्री० १. दैवी शक्ति । २. माया । प्रकृति । ३. ईश्वरीय लीला । ४. कारीगरी ।  
 कृदरती-वि० [अ०] १. प्राकृतिक । २. स्वाभाविक । ३. ईश्वरीय । दैवी ।  
 कृदरता-क्रि० अ० फांदना । कूदना । उछलना ।  
 कृदरा-संज्ञा पु० कृदारी । कृदाली । मिट्टी खोदने का औजार ।  
 कृदशन-वि० १. कुल्प । वदमूरत । २. बुरा दशन ।  
 कृदलाना-क्रि० अ० उछलना । कूदना । कूदते हुए चलना ।  
 कृदाव-संज्ञा पु० १. कुपात । अनुचित या बुरा दाव । २. विश्वासघात । धोखा । दगा । ३. सकट की स्थिति । बुरी स्थिति । ओचट । ४. बुरा स्वान । ५. बिकट स्वान । ६. मर्मस्वान ।  
 कृदाई-संज्ञा पु० कूदने का वाग । वि० १. छत्री । कपटी । धोखेबाज । बुरे ढंग से दाव-घात करनेवाला । २. विद्वान-पाती ।  
 कृदाम-संज्ञा पु० १. बुरा दान (लेनेवाले के लिए) जैसे-धम्पादान । २. कुपात्र को दान ।  
 संज्ञा स्त्री० १. कूदने की क्रिया या भाव । २. बहुत पहुँचकर बढ़ना । उतनी दूरी जितनी दूरी एक बार कूदने में पार की जाय ।  
 कृदानी-क्रि० स० कूदने के लिए प्रेरित करना । कृदवाना । संघपाना ।  
 कृदाम-संज्ञा पु० सोडा रस । सोडा किररा ।

कृदारी-संज्ञा स्त्री० कृदाल । मिट्टी खोदने का औजार । कृदार ।  
 कृदाल-संज्ञा स्त्री० [स्त्री० ; कृदाली] मिट्टी खोदने और खेत गोलने का औजार ।  
 कृदाव-संज्ञा स्त्री० कूदने की क्रिया ।  
 कृदिन-संज्ञा पु० १. बुरे दिन । दुर्दिन । दुख के दिन । आपत्तिकाल । २. सावन दिन । ३. वह दिन जिसमें ऋतु-विरुद्ध या कष्ट देनेवाली घटनाएँ हों ।  
 कृदिष्टि-संज्ञा स्त्री० दे० "कृदृष्टि" ।  
 कृदृश्य-वि० कुल्प । बुरा दृश्य । वद-सूरत ।  
 कृदृष्टि-संज्ञा स्त्री० पाप दृष्टि । बुरी नजर । बुरे विचार से देखना । अनभल चाहना । किसी की बुराई चाहना ।  
 कृदेव-संज्ञा पु० १. भूमिदेव । ब्राह्मण । भूदेव । भूसुर । २. असुर । राक्षस । दैत्य ।  
 कृदेश-संज्ञा पु० बुरा देश । भङ्गारीहिन देश ।  
 कृद्व-संज्ञा पु० एक प्रकार का धान, कोदो ।  
 कृधर-संज्ञा पु० १. पहाड़ । शैल । २. शेषनाग ।  
 कृधातु-संज्ञा स्त्री० १. लोहा । २. बुरी धातु ।  
 कृधारा-संज्ञा स्त्री० दुर्घ्वबहार । कुरीति । असम्य व्यवहार ।  
 कुनकुना-वि० गुनगुना । थोड़ा गरम ।  
 कुनल-संज्ञा पु० १. रोग-विशेष । २. गन्धे नाखूनवाला ।  
 कुनली-संज्ञा पु० १. बुरे नाखूनवाला । २. चिपटे नखवाला ।  
 कुनला-क्रि० स० बरतन आदि खरादना । सारोचना ।  
 कुनप-संज्ञा पु० दे० "कुणप" ।  
 कुनवा-संज्ञा पु० कुटुंब । परिवार । घराना ।  
 कुनवी-संज्ञा पु० संती करनेवाली हिन्दुओं की एक जाति । कुरमी । गृहस्थ ।  
 कुनवा-संज्ञा पु० सरादी । बर्तन आदि खरादनेवाला ।  
 कुनह-संज्ञा स्त्री० [वि० कुनही] १. वंमनस्थ । मनोमालिन्य । २. पुराना द्वेष या वैर । मनमुटाव ।

कुम्हरी-वि० द्वेष करनेवाला ।  
 कुम्हरी-सज्ञा स्त्री० १. बुरादा । २. खरादने की प्रिया, भाव या मजदूरी । ३. खरादने या खुरचने पर निबलनेवाली बुधनी ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० अपचरा । बदनामी ।  
 कुम्हरी-सज्ञा स्त्री० बदचलन स्त्री । दुराचारिणी स्त्री ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० महाराजा अशोक के पुत्र ।  
 द० "कुम्हरी" ।  
 कुम्हरी-सज्ञा स्त्री० १. अन्याय । २. अनुचित व्यवहार । ३. बुरी नीति ।  
 कुम्हरी-सज्ञा स्त्री० ओपय-विशेष । मलेरिया रोग की विशेष दवा । सिक्वोना नामक पेड़ की छाल का सत, जा अंगरेजी चिकित्सा में ज्वर के लिए अत्यन्त उपकारी माना जाता है ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० १. घाल । वेरा । शिखा । २. हैदराबाद राज्य के दक्षिण पश्चिम का भाग किसी समय कुम्हरी देश था । ३. प्याला । ४. जी । ५. सुगन्धवाला । ६. बहुरूपिया । ७. रामसेना का एक वानर ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० एक राजा का नाम । ये नि सन्तान य इसी से खुरसेन की कन्या पूषा को गोद लिया । इसी कारण पूषा का कुम्हरी नाम हुआ ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० कुम्हरी का फूल । एक प्रकार का सफेद फूल ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० सोने का पतला पत्तर जो नगीनों के जोड़ने में काम आता है ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० १. खराब रास्ता । २. बुराचाल । निषिद्ध आचरण । ३. कुत्सित सिद्धांत या संप्रदाय । बुरा मत ।  
 कुम्हरी-वि० [ हि० कुम्हरी ] दुराचारी । बुरे चाल चलनवाला । दुर्व्यवहार करनेवाला । पापी । कुम्हरी ।  
 कुम्हरी-वि० जो पढ़ा न हो । अशिक्षित । अनपढ़ । मूर्ख ।  
 कुम्हरी-वि० असयमी ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० १. कुम्हरी । विषय । २. दुराचारी । पापात्मा । पापी । ३. बुरी चाल । दुर्व्यवहार । निषिद्ध आचरण ।

कुम्हरी-वि० निषिद्ध आचरणवाला । स्वास्थ्य के लिए हानिकारक भोजन ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाला आहार-विहार । बद-चरहेजी । अपचरा ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० बुरी सलाह । कुम्हरी ।  
 खराब राय ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० बुरी सलाह । बुरा पाठ । बुरी शिक्षा ।  
 कुम्हरी-वि० १. अयोग्य । नालायक । अनुपयुक्त । २. अनधिकारी । जिसे दान देना शास्त्र से निषिद्ध हो ।  
 कुम्हरी-वि० अधोपित । श्रद्ध । नाराज । कापयुक्त ।  
 कुम्हरी-वि० स० चुटकी म फूल या साग आदि तोड़ना ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० कपूत । दुष्ट पुत्र । बुरे चाल-चलनवाला बेटा ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० निष्ठुर मनुष्य । नीच व्यक्ति । समाज से निकला गया पुरुष ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० कुम्हरी । कपूत । दुराचारी पुत्र ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० [ स्त्री० कुम्हरी ] घी, तेल आदि रखने के लिए चमड़ा या बना हुआ बर्तन । चर्मभांड ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० शोना या हो जाना=१ फूल जाना । २. मोटा होना । ३. मुँह फूलाना । रुठना । गुस्सा होना ।  
 कुम्हरी-सज्ञा स्त्री० छोटा कुम्हरी ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० खराब इन्तजाम । दोषपूर्ण व्यवस्था । बुरा प्रवन्ध ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० दे० 'कुम्हरी' ।  
 कुम्हरी-सज्ञा स्त्री० काबुल नदी का प्राचीन नाम ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० इस्लाम धर्म के विरुद्ध मत या विचार ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० कुम्हरी । कुम्हरी । पीठ पर का डील ।  
 कुम्हरी-सज्ञा स्त्री० दे० 'कुम्हरी' या कुम्हरी ।  
 कुम्हरी-सज्ञा पु० [ स्त्री० कुम्हरी ] जिसकी पीठ झुक गई हो या जिसकी पीठ पर कुम्हरी हो ।

वि० १. भुका हुआ । २. भुकी पीठ-  
वाला ।

कुवडी-सज्ञा स्त्री० १. दे० "कुवरी" ।  
भुकी पीठवाली । २. दे० "कुब्जा" । टेढ़ी  
मूठ की छड़ी ।

कुवत\*†-सज्ञा स्त्री० १. निंदा । २. बुरी  
वात । निवृष्ट वार्ता । ३. बुरी चाल ।

कुवरी-सज्ञा स्त्री० १. "कुवडी" । एक  
कुब्जा । कस की कुवडी दासी जो कृष्ण  
से प्रेम करती थी । २. टेढ़ी मूठ की छड़ी ।

कुवाक\*-सज्ञा पु० दे० "कुवाक्य" ।

कुवानि-सज्ञा स्त्री० बुरी आदत । बुरी सत ।  
कुदेव ।

कुबुद्धि-वि० मूर्ख । दुर्बुद्धि । खोटी बुद्धि  
वाला ।

सज्ञा स्त्री० १. मूर्खता । २. कुमनणा ।

कुवेर-सज्ञा पु० दे० 'कुवेर' ।

कुवेता-सज्ञा स्त्री० कुसमय । बुरा समय ।

कुवज-वि० [स्त्री० कुब्जा] १. कुवडा । जिसकी  
पीठ भुकी हो । २. अपामार्ग । ३. लट्जोरा ।  
सज्ञा पु० एक प्रकार का वायु रोग जिसमें  
छाती या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है ।

कुवजक-सज्ञा पु० मालती ।

कुब्जा-सज्ञा स्त्री० कुवडी स्त्री । श्री कृष्ण  
से प्रेम करनेवाली कस की एक कुवडी दासी ।

कुब्जिका-सज्ञा स्त्री० १. दुर्गा का नाम । २.  
प्राठ वर्ष की लड़की ।

कुब्धा-सज्ञा पु० दे० "कुवड" ।

कुभा-सज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी की छाया ।  
२. बाबुल नदी का वैदिक नाम जिस पर  
यानुल देव का नामकरण हुआ । ३. क्षीण  
क्षिति ।

कुभाष्य-सज्ञा स्त्री० भगवातू पत्नी । बलह  
करनेवाली स्त्री ।

कुभाष-सज्ञा पु० बुरा विचार । बुद्धि ।  
वृत्तिगत उद्देश्य ।

कुभूत-सज्ञा पु० १. दुष्ट नीति । २. शोषनाग ।  
३. पहाड़ । ४. मान की सत्ता ।

कुमडी\*-सज्ञा स्त्री० पनली तपोती ढाल ।

कुमडल-सज्ञा पु० १. दुष्ट मनुष्यों का  
गिराह । २. परामर्श । ३. पृथ्वीमंडल ।

कुमंत्रणा-सज्ञा स्त्री० बुरी राय । बुरा परा-  
मर्श । अधम सम्मति ।

कुमत्री-सज्ञा पु० हानिकारक राय देनेवाला ।  
बुरी सलाह देनेवाला ।

कुमक-सज्ञा स्त्री० १. पक्षपात । तरफ-  
दारी । २. सहायता । मदद । दे० कुमुक ।

कुमकी-वि० कुमक से संबंध रखनेवाला ।  
सज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में मदद  
देनेवाली सिखाई हुई हथिनी ।

कुमकुम-सज्ञा पु० १. कुमकुमा । २. केसर ।

कुमकुमा-सज्ञा पु० १. लाख का बना हुआ  
गोल या चिपटा लट्ठ जिसमें अंदर और  
गुलाब भरकर होली खेलते हैं । २. एक  
प्रकार का छोटे मुँह का लोटा । ३. नाँव के  
बने हुए छोटे गोल ।

कुमति-सज्ञा स्त्री० अल्पबुद्धि । दुर्बुद्धि ।

कुमद-सज्ञा पु० १. धमड । २. दुरभिमान ।  
३. खोटी बुद्धि । ४. दे० 'कुमुद' । एक प्रकार  
का कमल ।

कुमदिनि-सज्ञा स्त्री० दे० 'कुमुदिनी' । रात को  
खिलनेवाला कमल ।

कुमरिया-सज्ञा पु० हाथियों की जाति-विशेष ।

कुमरी-सज्ञा स्त्री० पंडुक की जाति का  
पक्षी ।

कुमला-सज्ञा पु० एक प्रकार का छोटा  
पेड़ ।

कुमाच-सज्ञा पु० एक प्रकार का रेशमी  
बपड़ा ।

सज्ञा स्त्री० दे० "कुँच" । एक  
प्रकार की रोटी । गजीफे के पत्ते के एक  
रंग को भी कुमाच कहते हैं ।

कुमार-सज्ञा पु० [स्त्री० कुमारी] १. पाँच  
वर्ष का बालक । २. युवराज । ३. पुत्र ।  
बेटा । ४. सिंधु नदी । ५. वार्षिकीय ।  
६. शरा या मद्य सोना । ७. सुगा ।  
तोता । ८. शनैः, गनदन, गनन् और  
सुजात आदि ऋषिगण जो सर्वत्र बालक  
के रूप में ही रहते हैं । ९. सुभावस्था  
या उससे पहले की अवस्थावाला पुरुष ।  
१०. प्रह-विशेष जिसका प्रभाव बालकों  
पर पड़ता है । ११. मंगल ग्रह ।

कुम्हो-वि० द्वेष करनेवाला ।

कुम्हाई-सज्ञा स्त्री० १. बुराबा । २. सरादने की क्रिया, भाव या मजदूरी । ३. सरादने या सुरुपने पर निवसनेवाली बुझनी ।

कुम्हाम-सज्ञा पु० अपयश । बदनामी ।

कुम्हारो-सज्ञा स्त्री० बदचलन स्त्री । दुराचारिणी स्त्री ।

कुम्हाल-सज्ञा पु० महाराजा अशोक के पुत्र । द० 'कुम्हाल' ।

कुम्होति-सज्ञा स्त्री० १. अन्याय । २. अनुचित व्यवहार । ३. बुरी नीति ।

कुम्हने-सज्ञा स्त्री० औषध-विशेष । मलेरिया रोग की विशेष दवा । सिक्वोना नामक पेड़ की छाल का सत, जो अंगरेजी चिकित्सा में ज्वर के लिए अत्यंत उपकारी माना जाता है ।

कुम्हल-सज्ञा पु० १. बाल । केश । शिखा । २. हैदराबाद राज्य के दक्षिण पश्चिम का भाग किसी समय कुम्हल देश था । ३. प्याला । ४. जी । ५. सुगन्धवाला । ६. बहुरूपिमा । ७. राम-सेना का एक बानर ।

कुम्होभोज-सज्ञा पु० एक राजा का नाम । य निःसन्तान य इसी से मूरसेन की कन्या पृथा को गोद लिया । इसी कारण पृथा का कुम्हो नाम हुआ ।

कुम्ह-सज्ञा पु० कुन्द का फूल । एक प्रकार का सफेद फूल ।

कुम्हल-सज्ञा पु० सोने का पतला पत्तर जो नगीनी के जाड़ने में काम आता है ।

कुम्ह-सज्ञा पु० १. खराब रास्ता । २. कुचाल । निषिद्ध आचरण । ३. कुत्सित सिद्धांत या संप्रदाय । बुरा मत ।

कुम्हो-वि० [ हि० कुम्ह ] दुराचारी । बुरे चाल चलनवाला । दुर्व्यवहार करनेवाला । पापी । कुमार्गी ।

कुम्ह-वि० जो पड़ा न हो । अशिथिल । अनपढ़ । भूल ।

कुम्हो-वि० असयमी ।

कुम्ह-सज्ञा पु० १. कुमाग । विषय । २. दुराचारी । पापात्मा । पापी । ३. बुरी चाल । दुर्व्यवहार । निषिद्ध आचरण ।

धो०-कुपयगामी=निषिद्ध आचरणवाला । स्वास्थ्य के लिए हानिवाहक भोजन ।

कुपय्य-सज्ञा पु० स्वास्थ्य को हानि पहुँचानेवाला आहार-विहार । बद-परहेजी । अपय्य ।

कुपयमश-सज्ञा पु० बुरी सलाह । कुमन्त्रणा । खराब राय ।

कुपाठ-सज्ञा पु० बुरी सलाह । बुरा पाठ । बुरी शिक्षा ।

कुपाथ-वि० १. अयाम्य । नालायक । अनुपयुक्त । २. अतधिकारी । जिसने दान देना शास्त्रा से निषिद्ध हो ।

कुपित-वि० आधित । क्रुद्ध । नाराज । कायमुक्त ।

कुपटना-प्रि० स० बूटकी में फूल या साग आदि ताड़ना ।

कुपुत्र-सज्ञा पु० कपूत । दुष्ट पुत्र । बुरे चाल चलनवाला बेटा ।

कुपुष्य-सज्ञा पु० निकृष्ट मनुष्य । नीच व्यक्ति । समाज से निकाला गया पुरुष ।

कुपूत-सज्ञा पु० कुपुत्र । कपूत । दुराचारी पुत्र ।

कुप्पा-सज्ञा पु० [स्त्री० कुप्पी] धी, तेल आदि रखने के लिए चमड़ का बना हुआ बर्तन । चमभाड़ ।

मुहा०-कुप्पा होना या हो जाना=१ फूल जाना । २. मोटा होना । ३. मुँह फुलाना । खूना । गुस्ता होना ।

कुप्पी-सज्ञा स्त्री० छाटा कुप्पा ।

कुम्हबन्ध-सज्ञा पु० खराब इन्तजाम । दोषपूर्ण व्यवस्था । बुरा प्रवन्ध ।

कुफर\*०-सज्ञा पु० दे० 'कुफ' ।

कुफन\*-सज्ञा स्त्री० काबुल नदी का प्राचीन नाम ।

कुफ-सज्ञा पु० इस्लाम धर्म के विरुद्ध मत या विचार ।

कुव-सज्ञा पु० कूबड़ । कुन्ज । पीठ पर का डील ।

कुवजा-सज्ञा स्त्री० दे० 'कुब्जा' या 'कुवरी' ।

कुवडा-सज्ञा पु० [स्त्री० कुवडी] जिसकी पीठ झुक गई हो या जिसकी पीठ पर कूबड़ हो ।

वि० १. भुका हुआ । २. भुकी पीठ-  
वाला ।

कुवड़ी-संज्ञा स्त्री० १. दे० "कुवरी" ।  
भुकी पीठवाली । २. दे० "कुब्जा" । टेढ़ी  
मूठ की छड़ी ।

कुवत\*†-संज्ञा स्त्री० १. निदा । २. बुरी  
वात । निकृष्ट वार्ता । ३. बुरी चाल ।

कुवरी-संज्ञा स्त्री० १. "कुवड़ी" । एक  
कुब्जा । कंस की कुवड़ी दासी जो कृष्ण  
से प्रेम करती थी । २. टेढ़ी मूठ की छड़ी ।

कुवाक\*-संज्ञा पु० दे० "कुवाक्य" ।

कुवानि-संज्ञा स्त्री० बुरी आदत । बुरी लत ।  
कुटेव ।

कुवुद्धि-वि० मूर्ख । दुर्बुद्धि । छोटी बुद्धि  
वाला ।

संज्ञा स्त्री० १. मूर्खता । २. कुमंत्रणा ।

कुवेर-संज्ञा पु० दे० 'कुवेर' ।

कुवेला-संज्ञा स्त्री० कुसमय । बुरा समय ।

कुवज-वि० [स्त्री० कुब्जा] १. कुवडा । जिसकी  
पीठ भुकी हो । २. अपामार्ग । ३. लट्जीरा ।  
संज्ञा पु० एक प्रकार का वामु रोग जिसमें  
छाती या पीठ टेढ़ी होकर ऊँची हो जाती है ।

कुवजक-संज्ञा पु० मालती ।

कुब्जा-संज्ञा स्त्री० कुवड़ी स्त्री । श्री कृष्ण  
से प्रेम करनेवाली कंस की एक कुवड़ी दासी ।

कुब्जिका-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा का नाम । २.  
भ्रातृ वर्ष की लडकी ।

कुब्बा-संज्ञा पु० दे० "कुवड" ।

कुभा-संज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी की छाया ।  
२. काबुल नदी का वैदिक नाम जिस पर  
काबुल देश का नामकरण हुआ । ३. क्षीण  
दीप्ति ।

कुभार्या-संज्ञा स्त्री० भगड़ालू पत्नी । कलह  
करनेवाली स्त्री ।

कुभाव-संज्ञा पु० बुरा विचार । कुदृष्टि ।  
कुलित उद्देश्य ।

कुभूत-संज्ञा पु० १. दुष्ट नीकर । २. शोषनाग ।

३. पहाड़ । ४. सान की संख्या ।

कुमंदी\*-संज्ञा स्त्री० पतली लचीली डाल ।

कुमंडल-संज्ञा पु० १. दुष्ट मनुष्यों का  
गिरोह । २. परामंडल । ३. पृथ्वीमंडल ।

कुमंत्रणा-संज्ञा स्त्री० बुरी राय । बुरा परा-  
मर्श । अधम सम्मति ।

कुमंत्री-संज्ञा पु० हानिकारक राय देनेवाला ।  
बुरी सलाह देनेवाला ।

कुमक-संज्ञा स्त्री० १. पक्षपात । तरफ-  
दारी । २. सहायता । मदद । दे० कुमुक ।

कुमकी-वि० कुमक से संबंध रखनेवाला ।  
संज्ञा स्त्री० हाथियों के पकड़ने में मदद  
देनेवाली सिलाई हुई हथिनी ।

कुमकुम-संज्ञा पु० १. कुमकुमा । २. केसर ।

कुमकुमा-संज्ञा पु० १. लाख का बना हुआ  
गोल या चिपटा लट्ट जिसमें अवीर और  
गुलाल भरकर होली खेलते हैं । २. एक  
प्रकार का छोटे मुँह का लोटा । ३. कौंच के  
बने हुए छोटे गोल ।

कुमति-संज्ञा स्त्री० अल्पबुद्धि । दुर्बुद्धि ।

कुमद-संज्ञा पु० १. घमड । २. दुरभिमान ।  
३. छोटी बुद्धि । ४. दे० 'कुमुद' । एक प्रकार  
का कमल ।

कुमदिनि-संज्ञा स्त्री० दे० 'कुमुदिनी' । रात को  
खिलनेवाला कमल ।

कुमरिया-संज्ञा पु० हाथियों की जाति-विशेष ।

कुमरी-संज्ञा स्त्री० पंडुक की जाति का  
पक्षी ।

कुमला-संज्ञा पु० एक प्रकार का छोटा  
पेड़ ।

कुमाच-संज्ञा पु० एक प्रकार का रेशमी  
कपड़ा ।

संज्ञा स्त्री० दे० "कौंच" । एक  
प्रकार की रोटी । गजीफे के पत्ते के एक  
रंग को भी कुमाच कहते हैं ।

कुमार-संज्ञा पु० [स्त्री० कुमारी] १. पाँच  
वर्ष का बालक । २. युवराज । ३. पुत्र ।  
बेटा । ४. सिंधु नदी । ५. कात्तिकेय ।  
६. खरा या शुद्ध सोना । ७. सुग्गा ।  
तोता । ८. सनक, सनंदन, सनत् और  
सुजात आदि ऋषिपुत्र जो सदैव बालक  
के रूप में ही रहते हैं । ९. युवावस्था  
या उससे पहले की अवस्थावाला पुरुष ।  
१०. ग्रह-विशेष जिसका प्रभाव बालकों  
पर पड़ता है । ११. मंगल ग्रह ।

१२. साईंग । १३. अग्निपुत्र ।  
 १४. अग्नि । १५. प्रजापति-विशेष ।  
 १६. वृक्ष-विशेष ।  
 वि० अग्निवाहित । कुंभारा ।  
 कुमारग+सज्ञा पु० दे० "कुमारग" ।  
 कुमारसत्र-सज्ञा पु० बालसत्र । पैद्यक में  
 वज्रों के रागों का निदान ।  
 कुमारपाल-सज्ञा पु० शालिवाहन राजा । दे०  
 'शालिवाहन' ।  
 कुमारबाज-सज्ञा पु० [म०] जुमारी । जुम्रा  
 खेलनेवाला ।  
 कुमारभृत्य-सज्ञा पु० १ प्रसव-विद्या ।  
 गर्भिणी या नवजात शिशुओं के रागों की  
 चिकित्सा । २ गर्भिणी स्त्री की सेवा ।  
 कुमारलसिता-सज्ञा स्त्री० सात अक्षरों का  
 वृत्त-विशेष ।  
 कुमारलसिता-सज्ञा स्त्री० आठ अक्षरों का  
 वृत्त-विशेष ।  
 कुमारिका-सज्ञा स्त्री० १ १० से १२ वर्ष  
 तक की अग्निवाहित कन्या । २ अग्निवाहित  
 कन्या । कुमारी । ३ भारत के दक्षिण का  
 अन्तिम भाग कुमारी अन्तरीप । ४ भरत  
 की कन्या ।  
 कुमारिल भट्ट-सज्ञा पु० भारतीय दर्शन के  
 प्रकांड विद्वान् तथा वेदों के भाष्यकार  
 जिन्होंने जैनो और बौद्धों को परास्त किया ।  
 प्रयाग में इन्होंने अपना शरीर अग्नि में  
 भस्म कर दिया (समय ६५० ई० से  
 ७०० ई०) ।  
 कुमारी-सज्ञा स्त्री० १ १२ वर्ष से कम  
 आयु की अग्निवाहित कन्या । २ नव-  
 मल्लिका । ३ धीकुवार । ४ सीता ।  
 ५ बड़ी इलायची । ६ दुर्गा का नाम ।  
 ७ पार्वती । ८ भारतवर्ष के दक्षिण में  
 एक अन्तरीप । ९ पृथिवी का मध्य ।  
 भूमि का मध्य भाग । १० श्यामा पक्षी ।  
 ११ चमेली । १२ सेपती । १३  
 अपराजिता ।  
 वि० अग्निवाहिता । बिना ब्याही ।  
 कुमारीपूजन या पूजा-सज्ञा पु० १. देवीपूजा  
 जिसमें कुमारी बालिबामो का पूजन किया

जाता है । २. तत्र दास्य के अनुसार  
 पूजा ।  
 कुमारग-सज्ञा पु० [वि० कुमारग] १. वृग  
 रास्ता । २. कुपय । अघर्म । ३  
 दुर्गम पथ । ४. दुराचरण ।  
 कुमारगामी या कुमारग-वि० [स्त्री० कुमा-  
 गिनी] १. दुराचारी । बदचलन । २  
 अघर्म । पापी ।  
 कुमुक, कुमय-सज्ञा पु० सहायता के लिए  
 भजी जानेवाली सेना की टुकड़ी ।  
 कुमुल-वि० पु० [स्त्री० कुमुली] जिमका  
 मुख सुन्दर या शुभ न हो । बदसूरत या  
 अशुभ ।  
 कुमुद-सज्ञा पु० १ कुई । २ सफेद कमल ।  
 कुमुदिनी । ३ लाल कमल । ४. विष्णु  
 का एक विशेषण । ५ चांदी ।  
 ६ राम-रावण के युद्ध में लड़नेवाला  
 एक यन्त्र । ७ बपूर । ८ दक्षिण-  
 पश्चिम कोण का दिग्गज । ९ एक दैत्य ।  
 १० एक द्वीप । ११ एक प्रकार का नाग ।  
 १२ केतु तारा । १३. संगीत का एक  
 ताल ।  
 वि० कजूस । सालची ।  
 कुमुदवध-सज्ञा पु० १ चंद्रमा । २. कुमुद  
 का मित्र ।  
 कुमुदिनी-सज्ञा स्त्री० १ रात में खिलने-  
 वाला फूल । कमलिनी । पद्मिनी ।  
 कुई । बौई । निलोफर । २ ऐसा तालाब  
 जिसमें कुमुद खिलते हो ।  
 कुमुदिनीपति-सज्ञा पु० शशि । चंद्रमा ।  
 रात में खिलनेवाले फूल कुमुदिनी के पति  
 अर्थात् चंद्रमा ।  
 कुमुद्वती-सज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी" ।  
 कुमोद\*-सज्ञा पु० दे० "कुमुद" ।  
 कुमोदिनी-सज्ञा स्त्री० दे० "कुमुदिनी" ।  
 कुम्भैत-सज्ञा पु० १ छोड़े वा स्पाही लिपे  
 लाल रंग । २ इस रंग का घोडा ।  
 यो-—आठो गाँठ कुम्भैत=अत्यंत चतुर ।  
 चालाक । धूर्त । छट्टा हुआ ।  
 कुम्भैद\*-सज्ञा पु० दे० "कुम्भैत" ।  
 कुम्हडा-सज्ञा पु० १ एक फलनेवाली बेल

और उसके बड़े-बड़े फल जिसकी तरकारी बनती है। २ पठा। ३ काशीफल। मुहा०—कुम्हड की बतिया=१ दुर्बल और शक्तिहीन मनुष्य। २ कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल।

कुम्हडोरी—गज्ञा स्त्री० पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई जानवाली बरी।

कुम्हलाना—क्रि० अ० १ मुरझाना। २ रंग फीका पड़ जाना। ३ वान्ति का घटना। ४ सूखना। ५ ठाजा न रहना। उदास होना।

कुम्हार—सज्ञा पु० [स्त्री० कुम्हारिन] कुम्हार। मिट्टी के बर्तन बनानेवाला। कुम्हार जाति विशेष। कुलाल।

कुम्हारिन, कुम्हारी—सज्ञा स्त्री० १ एक जन्तु। २ कुम्हार जाति की स्त्री।

कुम्भी—सज्ञा स्त्री० द० 'कुम्भी'।

कुम्भ—सज्ञा पु० १ बदनामी। २ अपयश। कुम्भ—सज्ञा पु० १ बुरा सयाग। २ दुखदायक ग्रह।

कुम्भो—सज्ञा पु० विषयभागी। विषयवासना में लिप्त।

कुम्भ—सज्ञा पु० [स्त्री० कुम्भी] १ मृग। २ हिरन। ३ बरखे छद। ४ बुरा रंग। ५ बुर लक्षण। बुरा रंग-रंग। ६ साह की तरह घोंड का एक रंग। नीला। कुम्भेत। लखौरी। ७ इस रंग का घोंडा। वि० चंदरग।

कुम्भयन्ता—सज्ञा स्त्री० मृगतन्त्री। मृग-लावनी।

कुम्भानि—सज्ञा स्त्री० मृगानि। वस्तूरी। कुम्भिन\*—सज्ञा स्त्री० मृगा। हिरन। कुम्भट\*—सज्ञा पु० पीला कन्सरैया। पियवासा। एक प्रकार की घोंपध।

कुम्भ—सज्ञा पु० हथियार तज्ञ करने के लिए एक तमिज पदार्थ जिसके चूर्ण का लाख आदि में मिलाकर प्रयोग करते हैं।

कुम्भी—सज्ञा स्त्री० द० 'कुम्भी'।

कुम्भटा—सज्ञा पु० छोटा टुकड़ा। रातों में टुकड़ा।

कुरकुर—सज्ञा पु० १. किसी वस्तु के टटने पर 'कुरकुर' का शब्द। २ भुरभुरा।

कुरकुरा—वि० [स्त्री० कुरकुरी] ऐसा सामान जिस तोड़ने पर कुरकुर का शब्द हो। कुरकुरी—सज्ञा स्त्री० १ मुलायम पतली हड्डी। २ भुरभुरी।

कुरता—सज्ञा पु० [स्त्री० कुरती] कमर के ऊपर पहनने का मर्दों का एक प्रकार का पहनावा।

कुरती—सज्ञा स्त्री० बोलो। कमर के ऊपर पहनने के लिए स्त्रियों का एक पहनावा।

कुरना\*—क्रि० अ० द० 'कुरलना'।

कुरबक—सज्ञा पु० एक शोषध। कटसरैया।

कुरबान—[अ०] वि० निछावर या बलिदान होनेवाला।

मुहा०—कुरबान जाना=१ बलिदान करना २ निछावर होना।

कुरबानी—सज्ञा स्त्री० बलिदान। निछावर। प्राणात करना।

कुरमा—सज्ञा पु० कुनवा। कुटुम्ब। घराना। परिवार।

कुरर—सज्ञा पु० एक पक्षी। कुरल पक्षी। कौच। बक। बगला।

कुररा—सज्ञा पु० [स्त्री० कुररी] १ टिटि-हरी। २ कौच।

कुररी—सज्ञा स्त्री० १ एक पक्षी। एक प्रकार का आध्या छद। २ 'कुररा' का स्त्री-लिंग। ३. जल के किनारे रहनेवाला एक पक्षी। ४ कुज। ५ भट। ६ ममी।

कुरलना\*—क्रि० अ० पक्षियों का सुरीली बोलनी यानना। कलरब शब्द करना।

कुरय—वि० १ सरान बानी योतनयाना। जिसकी आवाज सराब हो। २ प्राब।

कुरचना—क्रि० स० एक जगह एकत्र करना। ढर लगाना।

कुरवारना\*—क्रि० स० खादना। चारोचना। चरादना।

कुराबद—सज्ञा पु० द० 'कुरविद'।

कुरती—सज्ञा स्त्री० द० कुरती। १ एक प्रकार की ऊँची चीनी जिगमें पीछ की धार और

अगल बगल सहारे के लिए पट्टरी लगी रहती है। २ चमत्तरा जिसके ऊपर भवान बनाए जाते हैं। ३. पुस्त। पीढ़ी।  
 यो०—आराम-कुरसी—आदमी के लेटने लायक एक लम्बी कुर्सी।  
 कुरसीनामा—सजा पु० यथावली। लिखी हुई वस-परपरा। वसवृक्ष।  
 कुरा—सजा पु० पुराने जलम में पड़ जानेवाली गाँठ। सजा पु० कटसरैया।  
 कुराह\*—सजा स्त्री० दे० “कुराय”।  
 कुराई—सजा स्त्री० १. कुराह। विषम पय। २. कुरा राजा।  
 कुरान—सजा पु० मुसलमानों का धर्मग्रन्थ जो अरबी भाषा में है।  
 कुराय\*—सजा स्त्री० गड़वा। पानी से पोली जमीन।  
 सजा पु० १. घुरा राजा। २. बुरी सम्मति।  
 कुराह—सजा स्त्री० [वि० कुराही] १. बुरा मार्ग। कुनार्ग। २. बुरी चाल। ३. छोटा आचरण।  
 कुराही—वि० कुमार्गी। बुरी चाल चलने-वाला। दुराचारी।  
 सजा स्त्री० दुराचार। बद-चलनी।  
 कुरिया†—सजा स्त्री० दे० “कुटिया”।  
 कुरियाल—सजा स्त्री० खुश हावर चिड़ियों का पक्ष खुजलाना।  
 महा०—कुरियाल में आना=१ चिड़ियों का प्रसन्न होना। २ भोज में आना।  
 कुरिल—सजा पु० १. वस। घराना। २. चमार।  
 कुरी—सजा स्त्री० १. मिट्टी का छोटा घुस या टीला। २. अरहर की फली।  
 \*सजा स्त्री० जाति। वस। घराना। टूटडा। खड।  
 कुरीति—सजा स्त्री० १. कुप्रथा। बुरी रीति। कुचाल। २. दुर्व्यवहार।  
 कुरीर—सजा स्त्री० १. मडी। मढी। २. रतिप्रिया। मैयुन।  
 कुर—सजा पु० १. वैदिक आर्यों का एक वस। २. हिमालय के उत्तर-दक्षिण स्थित एक प्राचीन प्रदेश, जिसमें पांडु और

धृतराष्ट्र हुए थे। ३. पुरुष जो बुर के वस में उत्पन्न हुआ हो। ४. पृथ्वी के नवखण्डों में से एक खंड। ५. वना। ६. भरत।  
 कुरई—सजा स्त्री० मोनी। दौम या मूंज की बनी हुई छोटी डलिया या टोपरी।  
 कुरसेतु—सजा पु० दुर्योधन। युधिष्ठिर। परीक्षित।  
 कुरसेत्र—सजा पु० कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई का मैदान जो दिल्ली के पास है।  
 कुरस—वि० जिसका रंग अच्छा न हो। जिसका चेहरा उदास हो। झुंड।  
 कुरचि—सजा स्त्री० १. बुरी प्रवृत्ति। २. बुरी बामना। नीच कार्य की इच्छा। ३. अजीर्ण।  
 कुरजागल—सजा पु० पांचाल देश के पश्चिम या एक प्राचीन देश।  
 कुरबक—सजा पु० एक शीपघ। कुरयक।  
 कुरम\*—सजा पु० दे० “कूर्म”।  
 (कुरल—सजा पु० बालों का गुच्छा, विशेषकर ललाट पर का।  
 कुरपति, कुरराय—सजा पु० कुरराज। दुर्योधन। युधिष्ठिर।  
 कुरवश—सजा पु० राजा कुरु का वस।  
 कुरविद—सजा पु० १. काच लवण। २. मोया। ३. दर्पण। ४. उरद।  
 कुरूप—वि० [स्त्री० कुरूपा] बुरी आदृति का। बदसूरत। बेडौल। बेडगा। मुडौल।  
 कुरूपता—सजा स्त्री० बदसूरती। जो सुन्दर न हो।  
 कुरेदना—क्रि० सं० १. खरोचना। खुरचना। २. एकत्रित वस्तुओं को इधर-उधर करना।  
 कुरेर\*†—सजा स्त्री० दे० “कुलेल”।  
 कुरेलना—क्रि० सं० दे० “कुरेदना”।  
 कुरैया—सजा स्त्री० सुन्दर फूलावाला जंगली वृक्ष विशेष, जिसके बीज को “इंद्र जी” कहते हैं।  
 कुरीना\*†—क्रि० सं० एक ही म्यान पर एकत्रित करना। डेर लगाना। बूझा लगाना।  
 कुरक—वि० अदालत की भाषा से जन्म।  
 कुरक-प्रमीन—सजा पु० अदालत की भाषा से बुरी बरनेवाला सरकारी कर्मचारी।

कुर्को-सज्ञा स्त्री० सरकार द्वारा किसी ऋण, जुमाने या कर आदि की बसूली में जाय-दाद का ज्वन किया जाना।

कुर्कुट-सज्ञा पु० कूडा-करकट। भाड़न-बुहारन।

कुर्कुटी-सज्ञा पु० रोमर का पेड़।

कुर्कुल-सज्ञा स्त्री० कूद। कुर्लीच। चोकड़ी।

कुर्ती-सज्ञा पु० दे० 'कुरती'।

कुर्ती-सज्ञा स्त्री० दे० 'कुरती'।

कुर्बानी-सज्ञा स्त्री० दे० 'कुरबानी'।

कुर्बा-सज्ञा पु० कुब्ज। कुवड़।

कुर्मी-सज्ञा पु० दे० "कुनवी"। हिन्दुओं की एक जाति, जो खेती या नौकरी करती है।

कुर्मक-सज्ञा पु० सुपारी। डली।

कुर्मल-सज्ञा पु० १. सुख। आराम। २. जिसे कोई चिन्ता न हो।

मुहा०-मुर्मल में गुल्ल लगाना=निराश होना। सुख के समय दुःख।

कुर्म-सज्ञा पु० वैश्याओं का दलाल। मँडूआ।

कुर्मा कुरी-सज्ञा स्त्री० [विश०] १. पट्टा। सुहागा। हेगा। २. गोल टिकिया। ३. हड्डी। ४. चाबुक।

कुरी-सज्ञा स्त्री० १. बोलत हड्डी। २. उप-अस्थि।

कुर्सी-सज्ञा पु० दे० 'कुरसी'।

कुलग-सज्ञा पु० १. मुर्गा। २. कुक्कुट। ३. लाल सिर और मटमले रंग के शरीर-वाला एक पक्षी।

कुलजन-सज्ञा पु० १. पान की जड़। २. एक औषध।

कुल-सज्ञा पु० १. वंश। घराना। गोत्र। स्वजातीय समूह। सान्दान। २. जाति। वर्ण। ३. समूह। समुदाय। भुंड। ४. घर। मबान। ५. वापमार्ग।

वि० [प्र०] समस्त। सब। सारा। पूरा। यो०-युन जमा=१. सब मिलानर। २. बैयल। माय।

कुल-रंज-सज्ञा पु० कुपुत्र। बुरा लड़का।

कुल-बन्धा-सज्ञा स्त्री० अच्छे कुल की लड़की।

कुलवना-वि० प्र० गद्गद होना। मुन्नी से उदयना।

कुलकर्म-सज्ञा पु० परंपरा का व्यवहार। कुलाचार। कुलक्रिया। कुलधर्म।

कुलकलंक-सज्ञा पु० अपने कुल को कलंकित करनेवाला। अपने वंश की कीर्ति बिगाड़ने-वाला।

कुलकानि-सज्ञा स्त्री० वंश को मर्यादा। कुल की सज। खानदान की प्रतिष्ठा।

कुलकुला-सज्ञा पु० कुल्ला। कुलकुची।

कुलकुलाना-क्रि० प्र० कुलकुल ध्वनि उत्पन्न करना।

मुहा०-आँते कुलकुलाना=क्षुधा या भूख लगना।

कुलकुली-सज्ञा स्त्री० १. खजली। २. चुल-बुली।

कुलकेतु-सज्ञा पु० अपने वंश में ध्वजा के समान। अपने कुल की प्रतिष्ठा बढ़ाने-वाला। खानदान की इज्जत बढ़ाने-वाला।

कुलक्षण-सज्ञा पु० [स्त्री० कुलक्षणी] १. बुरा लक्षण। २. बदचलनी। बुरा आचरण। वि० [स्त्री० कुलक्षणा] बुरे लक्षण या आचारवाला। दुराचारी।

कुलज-सज्ञा पु० १. राय। भाट। २. वंश का आचार्य।

कुलघाती-वि० कुलनाश करनेवाला।

कुलचा-सज्ञा पु० [फा०] मूलघन। पूर्जा।

कुलच्छन-सज्ञा पु० दे० "कुलक्षण"। अशुभ लक्षणवाला।

कुलच्छनी-सज्ञा स्त्री० दे० "कुलक्षणी"।

कुलज-वि० कुलीन। श्रेष्ठ वंश का। उत्तम वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

कुलट-वि० पु० [स्त्री० कुलटा] १. कई स्त्रियों से प्रेम करनेवाला। व्यभिचारी। बदचलन। २. प्रीति के अनिश्चित अन्य प्रकार का पुत्र। जैसे, दत्तक। ३. अच्छी नस्ल/दा पोडा।

कुलटा-वि० स्त्री० दुराचारिणी। व्यभिचारिणी स्त्री। अनेक पुरुषों से प्रेम करने-वाली।

सज्ञा स्त्री० परंपुरषों से प्रेम करनेवाली। परसीया नायिका।

कुलतारण या कुलतारन-वि० [स्त्री० कुल-तारणी] १. सुपुत्र। २. सानदान की तारनेवाला।

कुलयी-सज्ञा स्त्री० १. एक मोटा अनाज। २. एक प्रकार की ब्लाई।

कुलदेव-सज्ञा पु० [स्त्री० कुलदेवी] कुलदेवता। कुल में परम्परा से पूजे जानेवाले देवता।

कुलदेवता-सज्ञा पु० दे० "कुलदेव"।

कुलद्रोही-वि० १. वंश-परम्परा के विरुद्ध काम करनेवाला। २. खानदान का दुश्मन। ३. कुमार्गी।

कुलधर्म-सज्ञा पु० परम्परा से चला आता हुआ कुल का वर्तव्य। कुल का व्यवहार। कुल का आचरण। कुल की परिपाटी। कुलधन्य-वि० अपने कुल को धन्य करने वाला। कुल का नाम उज्ज्वल करनेवाला या प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला।

कुलना-क्रि० अ० पीड़ा या कष्ट होना। दर्द होना। टीस होना। बसकना।

कुलनाश-सज्ञा पु० १. कुल का अन्त होना। २. जानिबहिष्कृत। ३. कुलभ्रष्ट।

कुलपति-सज्ञा पु० १. घर का स्वामी। २. परिवार का प्रधान। ३. आधुनिक विश्वविद्यालयों के चांसलर। ४. शिक्षा के साथ विद्याधियों का भरण-पोषण करनेवाला शिक्षक। ५. हजार ब्रह्मचारियों की अन्न और शिक्षा देनेवाले ऋषि।

कुलपूजक-सज्ञा पु० पुरोहित। कुलदेव।

कुलपूज्य-वि० कुल का पूज्य। जिसकी पूजा वंश-परम्परा से होती बली आई हो।

कुलफ\*†-सज्ञा पु० ताला।

कुलफत-सज्ञा स्त्री० [अ०] चिता। मानसित कष्ट।

कुलफा-सज्ञा पु० एक प्रकार का राग। बड़ी जाति की झमलोनी।

कुलफो-सज्ञा स्त्री० १. पेंच। २. धक में जमा हुआ दूध-मलाई या कोई द्रव्य। ३. छाटा ताला।

कुलबुल-सज्ञा पु० कुलबुलाहट। कुलबुलाहट। दिलने डुलने की भाहट, बिसपकर छोटे छोटे जाँवों की।

कुलबुलाना-क्रि० अ० १. छोटे छोटे जाँवों एक साथ बलमलाना, झपट-उड़र रेंगना।

२. व्याकुल होना। ३. बचल होना।

४. सुजलाना। ५. बुलबुलाना।

कुलबुलाहट-सज्ञा स्त्री० छोटे-छोटे जाँवों का चलना-फिरना।

कुलरोट-वि० कुलनाशन। परपालू।

कुलधीरन†-वि० कुल की मर्यादा नष्ट करनेवाला। खानदान में ध्वजा लगाने वाला।

कुलपत-वि० श्रेष्ठ। कुलीन। अच्छे वंश का।

कुलबधू-सज्ञा स्त्री० कुलवती स्त्री। अच्छे वंश की पतिव्रता स्त्री। मर्यादा से रहनेवाली स्त्री। पतोहू।

कुलवान्-वि० अच्छे वंश का। कुलीन।

कुलसत्कार-स० पु० अपने वंश के वे कृत्य जो जन्म से लेकर मरण तक आवश्यक हैं। कुलीना के लक्षण और गुण।

कुलह-सज्ञा स्त्री० १. कुलाह। टोपी। सिर पर पहनने का एक कपड़ा। २. धंधियारी। ३. शिपारी चिड़ियों की आँखों पर का ढक्कन।

कुलहा\*†-सज्ञा पु० दे० "कुलह"।

कुलही-सज्ञा स्त्री० बच्चों के सिर पर पहनाने की टोपी। एक प्रकार की टोपी। बनटोप।

कुलापना-सज्ञा स्त्री० कुलीन स्त्री। अच्छे वंश की स्त्री।

कुलागार-सज्ञा पु० जो वंश का नाश करे। सत्यानाश करनेवाला।

कुलाच, कुलटि\*सज्ञा स्त्री० कूदना फाँदना। छानाँ। उछाल। शीवड़ी।

कुलाचल-सज्ञा पु० दे० "कुलपवंत"।

कुलाचार-सज्ञा पु० १. वंशधर्म। परिवार की रीति। २. साम्प्रदायिक रीति। खानदान का रस्मरिवाज।

कुलाचार्य-सज्ञा पु० पुरोहित। कुलगुरु।

कुलाधि-स० स्त्री० पाप।

कुलावा-सज्ञा पु० १. पायजामा। २. मोरी। ३. लोहे का जमुरका जो बिचाह को बाध से जकड़ रहता है।

कुलाल-सज्ञा पु० [स्त्री० कुलाली] १. चनमुर्गा। कुम्हार। मिट्टी के धरतन बनाने-वाला। कुभवार। २. उल्लू। ३. जगली मुर्गा।  
कुलाह-सज्ञा पु० भूरे रंग का घाटा। एक प्रकार की टोपी (मुसलमानों)। कुलह।

कुलाहल\*-सज्ञा पु० दे० १. "कोलाहल"। शोरगुल। २. युतुहल।

कुलिग-सज्ञा पु० १. पक्षी। २. एक प्रकार का चूहा। ३. छोटी बिड़िया-गौरैया। ४. गौरा। चिड़ा।

कुलिक-सज्ञा पु० १. शिल्पकार। दस्तकार। कारीगर। २. उत्तम वश में उत्पन्न होने-वाला पुष्प। ३. कुल या प्रधान व्यक्ति।

कुलिश-सज्ञा पु० १. इन्द्र का वज्र। २. हीरा। ३. बिजली। ४. राम, कृष्णादि के चरणों का एक निहल। ५. कुठार।  
कुलिशपर-सज्ञा पु० इन्द्र। वज्र धारण करनेवाला।

कुली-सज्ञा पु० [तु०] १. मजदूर। २. बोफ देनेवाला।

यौ०-कुली कयाडी=१ छोटी जाति के लोग। २. निम्न स्तर के व्यक्ति।

कुलीन-वि० १. अच्छे कुल या वंश में उत्पन्न। अच्छे घराने का। २. शुद्ध। पवित्र। खानदानी।

कुलुफ-सज्ञा पु० ताला।

कुलू-सज्ञा पु० काँगड़े के पास का एक प्राचीन देश।

कुलूत-सज्ञा पु० कुलू देश।

कुल्ल-सज्ञा स्त्री० खेलकूद। खुशी में उछल-कूद। क्रीडा। कल्लोल। आमोद-प्रमोद।

कुल्लना\*-क्रि० अ० आमोद-प्रमोद या क्रीडा करना। हँसी-खुशी में समय बिताना।

कुल्ला-सज्ञा पु० १. नहर। छोटी नदी। २. कुलवती स्त्री।

कुल्लाय-सज्ञा पु० कुलधी। माप। उदं। धान-विशेष। वह अन्न जिसमें दो भाग हों। दो दालवाले अन्न।

कुल्ला-सज्ञा पु० [स्त्री० कुल्ली] १. मुँह साफ करने के लिए मुँह में पानी लेकर फेंकने की क्रिया। गरारा। कुल्ली। २. घोड़े का रंग-विशेष जिसमें पीठ की रीढ़ पर बराबर काली धारी होती है। ३. इस रंग का घोड़ा। ४. जुल्फ। ५. वाकुल।

कुल्ली-सज्ञा स्त्री० दे० "कुल्ला"।

कुल्हड़-सज्ञा पु० [स्त्री० कुल्हिया] पुरवा। चुपकड़। करई। भोलुभा। भरुवा।

कुल्हाड़ा-सज्ञा पु० [स्त्री० कुल्हाड़ी] कुठार। बड़ी कुल्हाड़ी। अस्त्र-विशेष। पेड़ या लकड़ी काटने का एक औजार।

कुल्हाड़ी-सज्ञा स्त्री० १. कुठारी। छोटा कुल्हाड़ा। टांगी। २. बसूला।

कुल्हिया-सज्ञा स्त्री० चुपकड़। छोटा पुरवा या कुल्हड़।

मुहा०-कुल्हिया में गुड फोड़ना=इस दम से कार्य करना जिसमें किसी को मालूम न हो।

कुल्लय-सज्ञा पु० [स्त्री० कुल्लयिनी] १. कोका। नीली कोई। २. नील कमल। नीलोत्तर। ३. सफेद कमल। ४. पृथ्वी-मडल। ५. असुर विशेष।

कुल्लयापीड़-सज्ञा पु० १. कस का एक हाथी जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २. हस्तिरूपी एक दैत्य।

कुल्लयादव-सज्ञा पु० १. ऋतुध्वज राजा। २. धूम्रार राजा। एक राजा का नाम जो महाराजा धावस्त का पीत और बृहदक्ष का पुत्र था। ३. ऋषियों का यज्ञ विध्वंस करनेवाले पातालकेतु की मारने के लिए, सूर्य द्वारा पृथ्वी पर भेजा हुआ एक घोड़ा।

कुवाच्य या कुवाच्य-वि० १. जिसे न कहा जा सके। २. बुरा। गदा। सज्ञा पु० १. दुर्वचन। गाली। २. कठोर वाक्य।

कुवादी-वि० १. गुट्ट। २. मुंहपट्ट।

कुवार-सज्ञा पु० [वि० कुवारी] असोज। कुयार। आदिवन का महीना।

कुमारी-सज्ञा स्त्री० १. पाद्विन में होनेवाला एक प्रकार का धाग। २. कुमारी।  
 कुविद-सज्ञा पु० पपडा बनानेवाला।  
 जुलहा।  
 कुयिदु-सज्ञा पु० १. अघम पुत्र। २. दुष्ट का पुत्र।  
 कुयित्रम-सज्ञा पु० १. अत्याचार। २. उपद्रव। ३. शठता।  
 कुविक्रमी-वि० १. उपद्रवी। २. दुर्जन।  
 बदमाश। शठ।  
 कुविचार-सज्ञा पु० नीच विचार। बुरा विचार।  
 कुविचारो-वि० [स्त्री० कुविचारिणी] बुरे विचार रखनेवाला। बुरी भावनाग्र-  
 वाला।  
 कुविहग-सज्ञा पु० १. अपम पक्षी। २. बाज पक्षी।  
 कुवत्ति-सज्ञा स्त्री० १. निरुष्ट व्यापार।  
 नीच कर्म। २. गहिष्ठ वासना।  
 कुवेर-सज्ञा पु० १. धन के देवता। हिन्दुओं के एक देवता, जो इन्द्र और देवताओं के खजाची माने जाते हैं। २. यक्षराज।  
 विन्धर देश के राजा।  
 कुश-सज्ञा पु० [स्त्री०, कुशा, कुशी]  
 १. बाँस की तरह की घास विशेष, जिसका उपयोग यज्ञ में होता था। २. पानी।  
 जल। ३. श्रीरामचन्द्रजी के एक पुत्र।  
 ४. दे० "कुशद्वीप"। ५. हल की फाल।  
 कुत्ती। ६. कुली। ७. बाल।  
 कुशकडिका-सज्ञा स्त्री० १. हवन करने-  
 वाला, जो दाहिने हाथ में कुश लेकर वेदी पर रेखा खींचता है। २. होम के लिए अग्नि का संस्कार करने की विधि।  
 कुशपेयु-सज्ञा पु० राजा जनक के भाई का नाम।  
 कुशद्वीप-सज्ञा पु० सात द्वीपों में से पृथ-  
 समुद्र से घिरा हुआ एक द्वीप।  
 कुशध्वज-सज्ञा पु० सीरध्वज। राजा  
 जनक के छोटे भाई। इनकी सन्ध्याएं  
 भरत और क्षत्रुघ्न की ग्याहो थीं।  
 कुशनाभ-सज्ञा पु० १. महाराज कुश का

पुत्र। २. ब्रह्मा के पराक्रमी पुत्र कुश के  
 चार पुत्रों में से एक।  
 कुशमुद्रिका-सज्ञा स्त्री० १. कुश की पंती।  
 २. कुश की अंगुठी।  
 कुशल-वि० १. निपुण। चतुर। दक्ष।  
 प्रवीण। २. उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।  
 ३. भलाई। कल्याण। ४. गुण्यशील।  
 ५. मंगल। ६. पुण्य।  
 कुशल-शौभ-सज्ञा पु० कुशल-मंगल। राखी-  
 खुशी।  
 कुशलता-सज्ञा स्त्री० १. चतुराई। चालाकी।  
 २. निपुणता। योग्यता। प्रवीणता। दक्षता।  
 कुशलाई, कुशलात\*-सज्ञा स्त्री० मंगल।  
 कल्याण। खरियत।  
 कुशस्थली-सज्ञा स्त्री० द्वारका। श्रीकृष्ण की  
 पुरी।  
 कुशा-सज्ञा स्त्री० १. कुश। २. एक प्रकार  
 की रस्सी। ३. मोठा नीबू।  
 वि०-नुकीला, तेज।  
 कुशाग्र-वि० तीव्र। तेज। कुश की नोक  
 की तरह नुकीला। जैसे-कुशाग्रबुद्धि।  
 तेज बुद्धिवाला।  
 कुशादा-वि० [फा०] १. विस्तृत। २. सबी-  
 चौड़ी खुली हुई जमीन। ३. खुला हुआ।  
 कुशावर्त-सज्ञा पु० १. हरिद्वार के एक तीर्थ  
 का नाम। २. एक ऋषि का नाम।  
 कुशादय-सज्ञा पु० इक्ष्वाकुवंशी एक राजा।  
 कुशासन-सज्ञा पु० बुरा शासन प्रवर्ण।  
 खराब हुकूमत। अन्याय तथा अत्याचार-  
 पूर्ण शासन। कुश का शासन। बैठने के  
 लिए कुश की चटाई। बुरा शासन।  
 कुशिक-सज्ञा पु० १. एक ऋषि। २. एक प्राचीन  
 आर्यवंश। ३. एक राजा जो विश्वामित्र के  
 पितामह और गांधि के पिता थे। ४. हल  
 का फाल। ५. तैल की तलछट। ६.  
 सालू।  
 कुशिक्षा-सज्ञा स्त्री० खराब पढ़ाई। हावि-  
 वारी शिक्षा।  
 कुशी-सज्ञा पु० १. कुशवाला। २. वात्सीकि  
 ऋषि। ३. पात।  
 कुशीद-सज्ञा पु० दे० "कुसीद"।

कुशीनार—संज्ञा पु० वह स्थान जहाँ गौतम बुद्ध का साल वृक्ष के नीचे निवर्ण हुआ था।

कुशील—वि० पापी। दुराचारी। दुष्ट स्वभाव। मुशील का उल्टा।

कुशीलव—संज्ञा पु० १. कवि। चारण। २. नट। नाटक खेलनेवाला। ३. कथक। श्रीरामचन्द्र के दोनों पुत्र। ४. गवैया। ५. बाल्मीकि ऋषि।

कुशलधान्यक—संज्ञा पु० ऐसा गृहस्थ जिसके पास तीन वर्ष तक के लिए खाने का अनाज संचित हो।

कुशला—संज्ञा स्त्री० १. देहरी। २. कुठिली। अनाज रखने के लिए मिट्टी का बड़ा बर्तन।

कुशेशय—संज्ञा पु० १. कमल। २. तारस पक्षी। कनकचन्दा।

कुशेशयकर—संज्ञा पु० सूर्य।

कुशोदक—संज्ञा पु० कुश के साथ जल। तर्पण।

कुशता—संज्ञा पु० एक रासायनिक भस्म।

कुशती—संज्ञा स्त्री० १. मल्ल-मुष्ट। २. दो व्यक्तियों का आपस में शारीरिक बल-प्रयोग।

मुहा०—कुशती मारना=कुशती में दूसरे को पछाड़ना। कुशती खाना=कुशती में हार जाना।

कुशतीबाज—वि० पहलवान। कुशती लड़ने-वाला।

कुपीद—संज्ञा पु० १. वृत्ति। जीविका। २. सूड पर ऋण देना।

वि०—१. जड़। इच्छाहीन। २. कठोर।

कुष्ठ—संज्ञा पु० १. जोड़। २. कुट नामक एक औषध। ३. एक प्रकार की लता।

४. कुड़ा नामक वृक्ष।

कुष्ठकुन्तल—संज्ञा पु० पेंवर।

कुष्ठनाशिनी—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बेल जिससे कुष्ठ रोग छूटता है। सोमराजी। सोमराज नामक लता।

कुष्ठसूक्ष्म—संज्ञा पु० किरवासी। एक प्रकार की औषध।

कुठ्ठी—संज्ञा पु० कोढ़ी। जिसे कोढ़ का रोग हुआ हो।

कुष्मांड—संज्ञा पु० कुम्हड़ा।

कुसंग—संज्ञा पु० दे० “कुसंगति”। बुरे व्यक्तियों का साथ।

कुसंगति—संज्ञा स्त्री० बुरे लोगों का साथ।

कुसंस्कार—संज्ञा पु० बुरी बारात। बुरे संस्कार। मन में बुरे विचार पैदा होना।

कुसगुन—संज्ञा पु० अपशकुन। अशुभ। अशुभ लक्षण।

कुसमउ—पु० १. बुरे दिनों में। २. आपत्ति का सामान।

कुसमय—संज्ञा पु० १. बुरे दिन। २. निश्चित समय से आगे या पीछे। ३. अनुपयुक्त अवसर। समय जो किसी काम के लिए ठीक न हो। ४. दुःख के दिन। संकट-काल।

कुसल\*†—वि० दे० “कुशल”।

कुसलई\*—संज्ञा स्त्री० कुशलता। कौशल। दक्षता। निपुणता। चतुराई।

कुसलाई\*—संज्ञा स्त्री० १. निपुणता। कुशलता। २. कुशल-क्षेम का समाचार। खेरियत।

कुसलात\*—संज्ञा स्त्री दे० “कुशलात”।

कुसली\*—वि० दे० “कुशली”

† संज्ञा पु० १. आम की गुठली। २. पिराक। गान्धा।

कुसवारी—संज्ञा पु० १. रेशम का कोया। २. रेशम का कीड़ा।

कुसाइत—संज्ञा स्त्री० १. बुरा समय। २. सराब साइत। ३. बुरा मुहूर्त। ४. कुसमय। ५. अनुपयुक्त समय। ६. बेमौका।

कुसी—संज्ञा पु० हल का फाल।

कुसीद—संज्ञा पु० [वि० कुसीदिक] १. व्याज। सूद। २. वृद्धि। ३. व्याज पर दिया हुआ धन।

कुसीदिक—वि० सूद पर रुपए देनेवाला। सेठ-साहूकार।

कुसीदपत्र—संज्ञा पु० व्याज पर रुपए लगाना।

कुसुंब—संज्ञा पु० एक वृक्ष जिसकी लकड़ी से गाड़ियाँ आदि बनती हैं।

कुसुम्भ—संज्ञा पु० १. एक प्रकार का फूल। वरें। २. कुसुम। ३. केसर।

कुसुमा—संज्ञा पु० १. एक प्रकार का रंग।

२ अर्पीम घोर भाग वा मितावर  
बाया हुआ एक प्रकार का गजा ।

गजा स्त्री० घोड़ा जाल छट ।

कुसुमी-वि० जाल । कुसुम के रंग का ।

कुसुम-राजा पु० [वि० कुसुमा] १ पुत्र ।

पुष्प । २ छोट छोटे बायाँ का गज ।

३ शर्म की एक बीमारी । ४ रजोदशन ।

नासिक धर्म । ५ रज । ६ छद में

ठगण का छटा भेद । ७ जाल फूल

जिससे पपड़ा रंगा जाता है ।

सजा पु० दे० "कुसुव" ।

सजा पु० पीले फूलावाला पीपा-विशेष ।

बर्त ।

कुसुमपुर-सजा पु० पाटलिपुत्र । पटना

नगर का पुराना नाम ।

कुसुमबाण-सजा पु० कामदेव । मदन ।

कुसुमविचित्रा-सजा स्त्री० एक प्रकार का

छन्द ।

कुसुमस्तवक-सजा पु० १ फूलों का गुच्छा ।

२ एक प्रकार का छंद ।

कुसुमशर-सजा पु० मदन । कामदेव ।

कुसुमाजल-सजा पु० जल्ले का भस्म ।

कुसुमांजलि-सजा स्त्री० १ पुष्पांजलि ।

हाथ की अंजलि में फूल लेकर देवता पर

चढ़ाना । २ न्याय-शास्त्र का एक

ग्रन्थ ।

कुसुमाकर-सजा पु० १ वसत । २ एक

प्रकार का छन्द ।

कुसुमायुध-सजा पु० मदन । कामदेव ।

(फूलों का अस्त्र)

कुसुमावलि-सजा स्त्री० फूलों का समूह ।

फूलों का गुच्छा ।

कुसुमास्य-सजा पु० फूलों का रस । मकरन्द ।

शहद । मधु ।

कुसुमित-वि० प्रफुल्लित । खिला हुआ ।

जिसमें फूल सग हो ।

कुसुत-सजा पु० १ खराब मूल । २ बुरा

प्रबन्ध । ३ कुव्योत ।

कुसुर-सजा पु० [अ०] अपराध । चूँ ।

गलती ।

कुसेसय-सजा पु० द० "कुसेशय" ।

कुस्वप्न-सजा पु० १ कुस्वप्न । भुग मपना ।

२ अतिष्ठ दर्शा ।

कुह-सजा पु० कुवर ।

कुह-सजा पु० १ घोषा । माया ।

२ जाल । ३ चानवाज । ४ धूर्त ।

५ इद्रजाल जाननेवाला । मायावी ।

६ मेटव । ७ मक्कार । कुटिल । ८. मुँह

की बाँग ।

कुहकना-वि० अ० पीवना । कूवना ।

पक्षियों का सुरीला स्वर ।

कुहकिनी-वि० कुहवनेवाली ।

सजा पु० कोपल ।

कुहना-वि० अ० स० बुरी तरह से मारना ।

धुव पीटना ।

कुहनो-सजा स्त्री० बाह के जोड़ की हड्डी ।

कुहप-सजा पु० रजनीचर । राक्षस ।

अमुर ।

कुहर-सजा पु० १ बिल । गुहा । छेद ।

सूराज । २ गले का छेद । ३ वान के

वाच का भाग । ४ कठ का शब्द ।

कुहरा-सजा पु० बापु में जल के सूक्ष्म

कणों का समूह जो जाड़ के दिनों में

सबरे के समय धुएँ के समान छाया रहता

है । बाहरा । कुहासा । कुहिन ।

कुहराम-सजा पु० [अ०] रोना-पीटना ।

हलचल । हाहाकार । विलाप ।

कुहवर या कोहवर-(भोजपुरी) सजा पु०

१ विवाह के पश्चात् दलहनुलहिन के

बैठने के लिए सजाया हुआ घर । २ स्थान-

विशेष ।

कुहना-वि० अ० अ० रुठना । नाराज होना ।

शूद्र होना ।

कुहासा-वि० दे० "कुहरा" ।

कुहो-सजा स्त्री० बाज पक्षी । एक शिकारी

चिड़िया । कुहर ।

सजा पु० घोड़े की एक जाति ।

दायन ।

कुह-सजा स्त्री० १ अमावस्या । २ जिस

अमावस्या को चन्द्रमा नहीं दिखलाई देता ।

३ कोकिल की बोली ।

कुहव-सजा पु० १ पीक । पक्षिया की

सुरीली आवाज । २. कोयल की मीठी बोली ।

कुहुकना—क्रि० अ० पक्षियों की मधुर बोली ।  
कुहुकवान—सज्ञा पु० बाण जिसे चलाते समय एक प्रकार का शब्द निकलता है ।

कूहू—सज्ञा स्त्री० १ मोर या कोयल की बोली ।  
२ अभावस्था, जिसमें चंद्रमा बिलबुल दिखाई न दे ।

कूच—सज्ञा स्त्री० १ मोटी नस जो ँंडी के ऊपर या टखने के नीचे होती है । २ स्त्री ।  
३ बीज विशेष । ४ जुलाहे का धुश ।  
कूचना\*—क्रि० स० दे० “कूचलना” ।

कूचा—सज्ञा पु० [स्त्री० कूची] १ भाड़ ।  
२ बुहारी । ३ कलाई आदि पोतने की कूची ।

कूची—सज्ञा स्त्री० १ बुहारी । बढनी ।  
छोटी भाड़ । २ बूटी हुई मूँज का लच्छा जिससे चीर्जे साफ़ करत या उन पर रंग फेरते हैं । ३ तूलिका । रंग भरने की कलम ।  
४. तृण की तूलका ।

कूँजडी—सज्ञा स्त्री० कूँजडा की स्त्री । तरकारी बेचनेवाली स्त्री ।

कूंड—सज्ञा पु० १ लोहे की टोपी । २ कुएं से पानी खींचने के लिए लोहे या मिट्टी का गहरा बर्तन । ३ खत में हल जोतने से बननेवाली नाली । ४ कुंड ।

कूंडा\*—सज्ञा पु० नाद के आकार का मिट्टी का बड़ा गहरा बर्तन जिसमें अनाज आदि रखा जाता है ।

कूंडी—सज्ञा स्त्री० १ पथरी । पत्थर का बर्तन । २ छोटी नाँद । ३ कोलहू का गड्ढा ।

कूँयता\*†—क्रि० अ० १ काँखना । दुख या परिश्रम में मुँह से अस्पष्ट शब्द निकलना ।  
कहरना । २ कबूतरी का गुटरगू करना ।  
क्रि० स० पीटना । मारना ।

कूई—सज्ञा स्त्री० १. कुमुदिनी । २. जल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का पीधा जिसके फूल चाँदनी रात में खिलते हैं ।

कूकू—सज्ञा स्त्री० १ पतली सुरीली आवाज ।

मीठी आवाज । २. रेल की सीटी की आवाज । ३ मोर या कोयल की बोली ।

कूकना—क्रि० अ० मोर या कोयल का बोलना । मीठी बोली बोलना । बिजकरी ।  
घड़ी, घाजे आदि कमानेदार यंत्रों में कमाने कसने के लिए चाभी भगना ।  
मारना । हर्षध्वनि करना ।

क्रि० स० चिल्लाना । बोलना । आह मारना ।

कूकर—†सज्ञा पु० श्वान । कुत्ता ।  
कूकर-कौर—सज्ञा पु० १ दुबडा । कुत्ते के आगे दिया जानेवाला जूठा भोजन ।  
२ निवृष्ट वस्तु । ३ तिरस्कार के साथ दी जानेवाली वस्तु ।

कूकरनिदिया—सज्ञा स्त्री० कुत्ते की नाँद के समान नाँद ।

कूकरलेंड—सज्ञा पु० १ कुत्ते का संयुन । २ व्यर्थ की भीड़ ।

कूकस—सज्ञा पु० अनाज की भूसी ।  
कूका—सज्ञा पु० सिक्खों का पथ-विशेष ।  
कूकू—सज्ञा स्त्री० कबूतर की बोली ।

कूच—सज्ञा पु० प्रस्थान । खानगी । याना । प्रयाण ।

मुहा०—कूच कर जाना=मर जाना ।  
(किसी के) देवता कूच कर जाना=  
होशहवास गुम हो जाना । कूच बोलना=  
प्रस्थान करना ।

कूचा—सज्ञा पु० १ गली । छोटा मार्ग । २ दे० ‘कूँचा’ ।

कूचिया—सज्ञा स्त्री० १ तूलिका । २ कूची ।  
कूचिया—सज्ञा स्त्री० १ इमली । २ कान-पट्टी ।

कूची—सज्ञा स्त्री० दे० ‘कूची’ ।  
कूज—सज्ञा स्त्री० ध्वनि । पक्षी की आवाज ।  
कूजल—सज्ञा पु० [वि० कूजित] पक्षिया की सुरीली बोली ।

कूजना—क्रि० अ० मीठी और सुरीली बोली बोलना ।

कूजा—सज्ञा पु० १ कुहड़ । मिट्टी का पुरवा ।  
२ मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई मिमरी ।

वृत्तित-वि० १ पत्नी की आयाज । २. जो बोला या कहा गया हो । ३. गुंजा हुआ ।  
 वृट-सज्ञा पु० १. पर्यंत की ऊँची चोटी या दिग्वर । जैसे-हैमवृट । २. धनाज आदि की ढेरी । ३. गीग । ४. घोला । छत्र । ५. गढा हुआ । ६. गूढ़ भेद । गुप्त रहस्य । ७. भूठ । मिथ्या । जिसका अर्थ जल्दी न प्रकट हो । जैसे, गूर के कूट पद । ८. स्नेहयुक्त । ९. समूह । १०. पागल । ११ हास्य या व्यंग्य जिसका अर्थ गूढ़ हो ।  
 वि० १ भूठा । मिथ्यावादी । २. घोला देनेवाला । ३. वृत्तिम । बनावटी । नक्ली । ४. श्रेष्ठ । प्रधान । मुख्य ।  
 सज्ञा स्त्री० १. वृट नामक एक औषध । २. कूटना या पीटना ।  
 वि० सं० कुचलवर । कूटवर ।  
 कूटवर्म-सज्ञा पु० छल । कपट । घोला ।  
 कूटकर्म-वि० कपटी । धोखेगज ।  
 कूटता-सज्ञा स्त्री० १. कठिनाता । कठिनाई । २. कठिलता । ३. कपट । छल ।  
 कूटना-वि० सं० १. कुचलना । काँटना । किसी चीज को तोड़ने के लिए उस पर चार-चार प्रहार करना । जैसे, धान कूटना । २. मारना । पीटना । ३. दाँत निकालना । सिल या खकरी आदि में दाँती से छोटे छोट्टे गड्ढे करना ।  
 मुहा०-कूट कूटकर भरना=१. ठसाठस भरना । खूब कसकर भरना ।  
 कूटनीति-सज्ञा स्त्री० १. राजनीति के दाँवपच । २. दाँव-पच की नीति या चाल । छिपी हुई चाल ।  
 कूटपाश-सज्ञा पु० चिड़िया फँसाने का फदा ।  
 कूटपुद्ग-सज्ञा पु० धोखेबाजी की लडाई । चाल चलकर लड़नेवाली लडाई । धातु को ओसा देकर लडी जानेवाली लडाई ।  
 कूटयोजना-सज्ञा स्त्री० पट्यय । भीतरी चालबाजी ।  
 कूटलेख-सज्ञा पु० १. भूठा या बनावटी लेख । २. जाली दस्तावेज ।  
 कूटलेख-सज्ञा पु० जाली दस्तावेज बनाने-वाला ।

कूटसाक्षी-सज्ञा पु० भूठा गयाह । असत्य प्रमाण देनेवाला ।  
 कूटस्थ-वि० १. जिसका नाश न हो । स्थितनाशी । २. अचल । अटल । ३. गुप्त । छिपा हुआ । ४. आत्मा । परमात्मा (सायममतानुसार) ।  
 कूटार्थ-सज्ञा पु० गूढ़ अर्थ ।  
 कूटी-सज्ञा स्त्री० व्यगवचन ।  
 वि० सं० कुचली । कुचल डाली ।  
 कूट-सज्ञा पु० एक प्रकार का पीधा जिसमें फल का घाटा घृत में पलाहार के रूप में खाया जाता है ।  
 कूडा-सज्ञा पु० १. भाडन । बूहारन । बर-कट । जमीन पर पड़ी हुई गद । २. बेचार चीज । कतवार ।  
 कूडाखाना-सज्ञा पु० कूडा फेंकने की जगह । कतवारखाना । जहाँ कूडा इकट्ठा होता है ।  
 कूडि-सज्ञा स्त्री० १. मुँह में प्रयोग की जाने वाली लोहे की टोपी । २. अयरी । ३. कूडी ।  
 कूट-सज्ञा पु० घोंने का एक ढग, जिसमें हल की गडारी में बीज डाला जाता है । छोटा का उलटा ।  
 वि० मूर्ख । अज्ञानी । बेवकूफ ।  
 कूडमग्न-वि० मदबुद्धि । कुदजेहन । बुद्धिहीन । मूर्ख ।  
 कूट-सज्ञा स्त्री० १. अटकल । परख । अन्वय । वस्तु की सरपा, मूल्य या परिमाण का अनुमान । २. दे० "कनकूट" ।  
 कूटना-वि० सं० १. अनुमान करना । अंदाज लगाना । २. परखना दे० "कनकूट" ।  
 कूट-सज्ञा स्त्री० कूटने की क्रिया ।  
 यो०-कूटफाँद=उछलकूद । कूटने या उछलने की क्रिया ।  
 कूटना-वि० अ० १. उछलना । दोना पैरो को पृथ्वी पर से वलपूर्वक उठाकर शरीर को किसी ओर फेंकना । फाँटना । २. जान-बूझकर ऊपर से नीचे की ओर गिरना । ३. हस्तक्षेप करना । बीच में दखल देना । ४. अम भग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना । ५. अत्यंत प्रसन्न होना । उत्साहित होना । दे०

“उल्ललना” ६ बड़-बड़कर बात करना ।  
दासी मारना ।  
मुहा०—किसी के बल पर बूदना=बिसी  
का सहारा पाकर बहुत बड़बड़कर बोलना ।  
दि० स० साँप जाना । उल्लघन कर  
जाना ।

कूनी—सज्ञा स्त्री० हत्या । करछी । करछुल ।  
कप—सज्ञा पु० १ कुश्मी । इनारा । २  
गहरा गड्ढा । ३ छेद । सूरख । ४  
नदी के मध्यस्थ पर्वत या वृक्ष ।

कूपमडक—सज्ञा पु० १ कुएँ की मेढक ।  
२ अल्पज्ञ । अपना स्थान छोड़कर बाहर  
न जानेवाला व्यक्ति । ३ जिसका ज्ञान  
संकुचित हो । ४ सकीर्ण विचार रखने-  
वाला व्यक्ति ।

कूपार—सज्ञा पु० समुद्र । सागर ।  
कवड—सज्ञा पु० पीठ या किसी अंग पर हड्डी  
या मांस का उठ आना । पीठ का टेढ़ापन ।  
पीठ का झुकना ।

कूबरी—सज्ञा स्त्री० दे० १ “कुबरी” ।  
बस की दासी । २ काठ या बांस की झुकी  
हुई लकड़ी ।

कूर—वि० १ कठोर । निर्दय । २ भया-  
ना । ३ मनहूस । ४ दुष्ट । ५  
अकम्प्य । नीच । निकम्मा । ६ गैवार ।  
७ कपटी । ८ टडा ।

कूरता—सज्ञा स्त्री० १ निर्दयता । कठोरता ।  
बरहमी । २ मूर्खता । जडता । ३ काय  
रता । ४ बुराई । खोटान । ५ कूरता ।

कूरन—सज्ञा पु० कूर्म । कच्छप । कछुआ ।  
कूरपन—सज्ञा पु० दे० ‘कूरता’ ।  
कूरम\*—सज्ञा पु० दे० ‘कूर्म’ ।

कूरा—सज्ञा पु० [स्त्री० कूरी] १ अश ।  
भाग । हिस्सा । २ ढर । राशि । समूह ।  
कूर्च—सज्ञा पु० १. गौहा के बीच का स्थान ।  
२. भीर का पल । ३ अँगूठे और तर्जनी के  
बीच का भाग । ४ पाखंड । ५ कूँची ६  
मस्तक ।

कूर्विका—सज्ञा स्त्री० १ कूँची । २ कुंजी ।  
३ बली । ४ सुइ ।

कूर्म—सज्ञा पु० १ कछुआ । कच्छप । २

प्रजापति का अवतार विशेष । ३ पृथिवी ।  
४ एक प्रकार की हवा । ५ ऋषि विशप ।  
६ नाभिचक्र के पास की एक नाडी ।  
७ विष्णु का दूसरा अवतार ।

कूर्मचक्र—सज्ञा पु० १ ऋषि सबधी एक प्रकार  
का चक्र । २ पूजा की एक सामग्री ।  
कूर्मपुराण—सज्ञा पु० १८ पुराणों में से एक  
पुराण ।

कूर्मपृष्ठ—सज्ञा पु० कछुवे की पीठ ।  
कूर्मराज—सज्ञा पु० भगवान् का एक अवतार  
(कच्छप अवतार) । कच्छपराज ।

कूल—सज्ञा पु० १ नदी या तालाब का  
किनारा । तीर । २ पास । समीप ।  
३ नहर । ४ सेना के पीछे का भाग ।  
५ तालाब ।

कूलक—सज्ञा पु० बनावटी पहाड़ ।  
कूलद्रुम—सज्ञा पु० नदी के किनारे के पड़ ।  
कूलिनी—सज्ञा स्त्री० नदी ।

कूलहा—सज्ञा पु० पड़ के दोनों ओर निकली  
हुई हड्डियाँ ।

कूलत—सज्ञा स्त्री० बल । शक्ति । ताकत ।  
सामर्थ्य ।

कूलर—सज्ञा पु० १ युगधर । रथ का वह  
भाग जहाँ जूया बाँधा जाता है । हरसा । २  
रथ में जहाँ रथ हाँकनेवाला बैठता है उस  
स्थान को कूलर कहते हैं । ३ कुबड़ा ।

कूमाड—सज्ञा पु० १ पठा । २ कुम्हड़ा ।  
३ वैदिक काल के ऋषि विशप । ४  
गणदेवता विशेष । ५ शिव के पिशाच-  
गण । ६ वाणासुर के मुख्य मंत्री ।

कूमाडा—सज्ञा स्त्री० एक देवी । भगवती ।  
कू\*—सज्ञा स्त्री० १ हाथी या अन्य बड़े बड़े  
पशुओं का निग्घाड । हाथी का चिचकार ।  
२ चिल्लाहट । चीख ।

कूकर या कूकल—सज्ञा पु० १ छीप लाने-  
वाली मस्तक की हवा । २ शिव । ३  
चबैना । ४ एक पक्षी । ५ कनर का  
पेड़ ।

कूकलास—सज्ञा पु० सरट । गिरगिट ।  
कूकवाक—सज्ञा पु० गयूर । मोर ।  
कूकवाकचवज—सज्ञा पु० वासिदेव । पत्तनन ।

कृकाट, कृकाटक—सज्ञा पु० १ गले को जोड़नेवाला गीठ का एक भाग । २ गले का जोड़ ।

कृच्छ्र—सज्ञा पु० १ पीड़ा । कष्ट । दुःख । २ तपस्या । ३ दुःख दूर करने और सन्तान आदि के लिए एक व्रत । ४ एक प्रकार का रोग ( मूत्रवृच्छ्र रोग ) । वि० कष्टसाध्य । कठिन ।

कृच्छ्रगत—वि० १ पीडित । दुःखी । रोगी । २ पापी ।

कृच्छ्रतिवृच्छ्र—सज्ञा पु० प्रायश्चित्त करने के लिए एक व्रत ।

कृत—वि० १ किया हुआ । २ रचित । बनाया हुआ । ३ एक प्रकार का पाँसा । ४ चयित ।

सज्ञा पु० १ सतयुग । २ कुछ निश्चित समय तक सेवा करने की प्रतिज्ञा करनेवाला नौकर । ३ चार की सख्या ।

कृतव—वि० १ काल्पनिक । २ कृत्रिम । नकली । मनगढत ।

कृतकर्मा—वि० प्रवीण । निपुण । दक्ष । कार्य-कुशल । चतुर । शिक्षित ।

कृतकार्य—वि० १ सफल मनोरथ । सफल । जिसका कार्य हो चुका हो । २ चरितार्थ । संपादित नाम । ३ जिसका मतलब हो चुका हो ।

कृतकृत्य—वि० कृतकार्य । कृतार्थ । सफल मनोरथ । जिसका काम पूरा हो चुका हो । पूर्णकाम ।

कृतघ्न—वि० [सज्ञा कृतघ्नता] अवृत्तज्ञ । नमनहरामी । उपकार न माननेवाला । अहृताप ।

कृतघ्नता—सज्ञा स्त्री० अवृत्तज्ञता । उपकार का न मानन का भाव । अहृतापता । नमनहरामी । एहसान न मानना ।

कृतघ्ननाई—सज्ञा स्त्री० भलाई करनेवाने के प्रति दुर्दृष्टि । अहृतापता । नमनहरामी ।

कृतघ्नी—वि० दे० 'कृतघ्न' ।

कृतज्ञ—वि० १ उपकार या भलाई को माननेवाला । एहसान माननेवाला । २ आभारी । नमनहरामी ।

कृतज्ञता—सज्ञा स्त्री० एहसान मानना । १

किए गए उपकार को मानना । २ नमन-हलाली । ३ आभार ।

कृतयुग—सज्ञा पु० १ सतयुग । २ उन्नति का समय ।

कृतवर्मा—सज्ञा पु० यदुवशी राजा कनक का पुत्र ।

कृतविद्य—वि० १ पंडित । किसी विद्या को जाननेवाला । जानकार । २ शास्त्रज्ञ । शास्त्रदक्ष ।

कृतवीर्य—सज्ञा पु० एव यदुवशी राजा ।

कृताजलि—वि० जिसने हाथ जोड़ लिये हों ।

कृतात—सज्ञा पु० १ अत करनेवाला । २ पूर्व जन्म के कर्मों का फल । सुभासुभ । पाप । ३ यमराज । धर्मराज । ४ बाल । मूल्य । ५ देवता । ६ पाप । ७ दोषों की सख्या । ८ सिद्धान्त । ९ शनिवार । १० भरणी नक्षत्र ।

कृताकृत—सज्ञा पु० १. अधूरा कार्य । २. कार्य तथा पारण । ३. अप्रत्यक्ष हव्य किया हुआ तथा न किया हुआ । ४. सोना चांदी ।

कृतात्मा—सज्ञा पु० १ महात्मा । ज्ञानी । २ शुद्ध आचरण करनेवाला । पुण्यात्मा ।

कृतात्म्य—सज्ञा पु० १ साध्य दर्शन में भाग द्वारा कर्मों का नाश । २ करने या न करने योग्य कार्य ।

कृतार्थ—वि० १ कृतकृत्य । जिसका काम पूरा हो चुका हो । २ सतुष्ट । ३ निहाल ।

कृति—सज्ञा स्त्री० १ कार्य बनाना । रचना करना । २ कर्तृत्व । करनी । आचरण । ३ जादू । इद्रजान । ४ भाषान । हत्या । ५ वशास्यता । दो समान प्रबो का पात । (गणित) । ६ बीस की सख्या । ७ उपकार । ८ करण । ९ छद्मविशेष । १० कटारी । ११ इद्रजान करनेवाली आदत ।

कृती—वि० १ निपुण । चतुर । २ योग्य । कुशल । पुण्यात्मा । ३ विशिष्ट । ४ दक्ष । विद्वान् । ५ माधु । सत्पुरुष ।

कृति—सज्ञा स्त्री० १ हिरन का चमड़ा ।

२ भोजपत्र । ३ खाल । चमड़ा । ४ चमड़े की रस्सी । ५ कृत्तिका नक्षत्र । कृत्तिका-सज्ञा स्त्री० १ एक नक्षत्र-विशेष । २ छकड़ा गाड़ी । कृत्तिवास-सज्ञा पु० शिवजी की एक पदवी । महादेव । चमधारी । कृत्य-सज्ञा पु० १ उचित कर्म । २ कर्तव्य । वेद विहित कार्य । जैसे—यज्ञ, सस्कार । ३ भूत, प्रेत, यक्षादि जिनका पूजन अभिचार के लिए होता है । ४ कोई भी काम । कृत्यका-सज्ञा स्त्री० डाकिनी । हत्या आदि भयानक काम करनेवाली जादूगरनी । कृत्या-सज्ञा स्त्री० १ एक देवी विशेष जिस पर किसी का नाश करने या जादू आदि सीखने के लिए बलिदान चढ़ाया जाता है । २ शत्रु का नाश कराने के लिए मनो से उत्पन्न की गई एक राक्षसी । दुष्टा या बर्कशा स्त्री । अभिचार । ३ अभिचारिणी । कृत्रिम-वि० १ बनावटी । जाली । जो असली न हो । नक्ली । २ हिन्दू शास्त्र के अनुसार १२ प्रकार के पुनो में से एक । अनाथ बालक जिसे किसी ने पाल-पोसकर अपना पुत्र बनाया हो । सज्ञा पु० कचिया नोन । रसीत । कृत-सज्ञा पु० कृत प्रत्यय से बने हुए शब्द । कृष-सज्ञा पु० कृषाचार्य, वैदिक काल के एक राजर्षि । कृषण-वि० [सज्ञा स्त्री० कृपणता] १ सूम । कजूस । २ नीच । मक्खीचूस । कृपणता-सज्ञा स्त्री० कजूसी । कृपणार्थ-सज्ञा स्त्री० दे० “कृपणता” । कृपया-वि० वि० कृपापूर्वक । अनुग्रहपूर्वक । दयापूर्वक । मेहरबानी करने । कृपा-सज्ञा स्त्री० [वि० कृपालु] १ अनुग्रह । दया । निस्वार्थ भाव से दूसरों की भलाई करना । २ क्षमा । माफी । कृपाचार्य-सज्ञा पु० द्रोणाचार्य के साल । कृपाण-सज्ञा पु० १ तलवार । २ छोटी तलवार जिसे सिक्ख लोग रखते हैं । ३ बटार । ४ छन्द विशेष ।

कृपाणिका-सज्ञा स्त्री० बटारी । छोटी तलवार । कृपापात्र-सज्ञा पु० १. वह व्यक्ति जिस पर कृपा की जावे । कृपा का अधिकारी । २. कृपा करने योग्य । कृपायतन-सज्ञा पु० बहुत दयालु । अत्यंत कृपालु । कृपालु-वि० दे० “कृपालु” । कृपालु-वि० दयालु । कृपा करनेवाला । कृपिण-वि० दे० “कृपण” । कजूस । कृमि-सज्ञा पु० [वि० कृमिल] १ छोटा कीड़ा । २ लाह । कृमिघ्न-सज्ञा पु० कीड़ों को नाश करने की एक दवा । वायविडग । कृमिज-वि० जो कीड़ों से उत्पन्न हो । सज्ञा पु० [स्त्री० कृमिजा] १ रेशम । २ किरमिजी । ३ अंगूर । कृमिजघा-सज्ञा पु० काला अंगूर । कृमिरोण-सज्ञा पु० पेट की एक तरह की बीमारी । कृमिल-वि० कीड़ों से भरा । कीटयुक्त । कृमिला-सज्ञा स्त्री० बहुत सन्तान पैदा करनेवाली स्त्री । कृश-वि० १ क्षीण । दुबला-पतला । २ अल्प । ३ दुर्बल । अस्वस्थ । ४ सूक्ष्म । कृशता-सज्ञा स्त्री० १ दुर्बलता । दुर्बलापन । २ वमी । अस्वस्थता । क्षीणता । कृशर-सज्ञा पु० [स्त्री० कृशरा] १ खिचड़ी । २ तिल या मटर और चावल की खिचड़ी । ३ केसारी । मटर । दुबिया । कृशागी-वि० दुबला-पतला स्त्री । तन्वगी । कृशाक्षि-वि० मन्ददृष्टिवाला । कृशानु-सज्ञा पु० आग । अग्नि । चीत । श्रोपथ । कृशादव-सज्ञा पु० १ एक मुनि । २ एक प्राचीन राजा । कृशित-वि० दुर्बल । दुबला-पतला । कृश । अस्वस्थ । कृशोदरी-वि० जिराकी पतली कमर हो (स्त्री) ।

कृष्ण-सज्ञा पु० १ विसान । २ वास्तवार ।  
३ हल का फाल ।

कृष्ण-गज्ञा पु० विगान । खेतिहर ।  
कृष्णि-सज्ञा स्त्री० [वि० कृष्ण] १ मेती  
का नाम । वास्त । विसानी । २  
वेदययुक्ति ।

कृष्णभ-सज्ञा पु० १ खेती का नाम ।  
२ हल चलाना ।

कृष्णिजीवी-वि० खेती करने जीविता  
पैदा करनेवाला । कृष्ण । विसान ।

कृष्णवल-सज्ञा पु० विसान । कृष्णिजीवी ।  
कृष्ण-वि० १ काला । श्याम । २ नीला  
या आसामानी ।

सज्ञा पु० [स्त्री० कृष्णा] १ वसुदेव और  
देवकी के पुत्र । विष्णु के आठवे अवतार ।  
२ एक राक्षस जिसे इंद्र ने मारा था ।  
३ मन्त्रद्रष्टा ऋषि-विशेष । ४ एक  
उपनिषद् । ५ छप्पय छंद का भेद  
विशेष । ६ वेदव्यास । ७ चार अक्षरों  
का एक वृत्त । ८ कोयल । ९ अर्जुन ।  
१० कदम का वृक्ष । ११ कौश्या ।  
१२ कलियुग । १३ अंधेरा पक्ष । १४  
चंद्रमा का धब्बा ।

कृष्णवर्मा-सज्ञा पु० १. नीच काम करनेवाला ।  
२ पापाचार्युक्त । ३ अपराधी । पापी ।

कृष्णगघा-सज्ञा स्त्री० सहिजन का वृक्ष ।  
कृष्णचद्र-सज्ञा पु० दे० "कृष्ण" ।

कृष्णचतुर्दशी-सज्ञा स्त्री० कृष्णपक्ष की  
चतुर्दशी । भूत चतुर्दशी ।

कृष्णजीरा-सज्ञा पु० काला जीरा । कलौजी ।  
कृष्णता-सज्ञा स्त्री० १ कृष्णवर्ण । काला  
पन । श्याम रंग । २ घुंघरी ।

कृष्णतुलसी-सज्ञा स्त्री० काली तुलसी ।  
कृष्णद्वैपायन-सज्ञा पु० पराशर के पुत्र  
वेदव्यास ।

कृष्णपक्ष-सज्ञा पु० महीने के वह १५ दिन  
जिनमें चंद्रमा की कलाओं का क्रमशः  
ह्रास होता है । अंधेरा पाल ।

कृष्णफला-सज्ञा स्त्री० बाकुची । करोंदा ।  
कृष्णभद्रा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की औषध ।  
कृटवी ।

कृष्णभूमि-गज्ञा स्त्री० काले रंग की मिट्टी का  
देश ।

कृष्णमय-वि० कृष्ण में लीन । कृष्ण के  
रंग में रंग जाना ।

कृष्णमित्र-सज्ञा पु० प्रयोग-चन्द्रादय नाटक  
के रचयिता ।

कृष्णलोह-सज्ञा पु० चुम्बक पत्थर । एक  
प्रकार का मणि ।

कृष्णवस्त्र-सज्ञा पु० १ काले भूँहवाला वानर ।  
२ लंगूर ।

कृष्णवर्मा-सज्ञा पु० १. अग्नि । २  
वैश्वानर । ३ चित्रक वृक्ष ।

कृष्णवानर-सज्ञा पु० काला वानर । कृष्ण  
के रंग का बन्दर ।

कृष्णवृत्तिका-सज्ञा स्त्री० कभारी नामक एक  
औषध ।

कृष्णसला-सज्ञा पु० अर्जुन । कृष्ण के सला या  
मित्र ।

कृष्णसर्प-सज्ञा पु० काला साँप ।  
कृष्णसार-सज्ञा पु० एक प्रकार का काला  
हिरन । यज्ञ में चढ़ाया जानेवाला  
मृग ।

कृष्णसारग-सज्ञा पु० कृष्ण के रंग का हिरन ।  
कृष्णसार-सज्ञा पु० १ काला हिरन ।  
करसायल । २ बृहत् । सेहूड ।

कृष्णा-सज्ञा स्त्री० १ द्रोपदी । २ पिप्पली ।  
पीपल । ३ दक्षिण भारत की एक नदी ।

४ काली दाख । ५ काली (देवी) ।  
६ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

७ काला जीरा । ८ काले पत्ते की  
तुलसी । काले रंग की स्त्री । ९ ममुना ।

१० काली सरतो ।

कृष्णाग्रज-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।  
बलदेव । बलराम ।

कृष्णामुह-सज्ञा पु० काला अग्रह ।  
कृष्णाचल-सज्ञा पु० काला पहाड़ । देवतक  
नामक पर्वत, जो जूनाड के पास  
है ।

कृष्णाजिन-सज्ञा पु० कृष्णसार मृग का चर्म ।  
काला मृगचर्म ।

कृष्णाफल-सज्ञा पु० कालीमिर्च ।

कृष्णभित्तारिका—सज्ञा स्त्री० अँधेरी रात में अपने प्रेमी से निश्चित स्थान पर मिलने के लिए जानेवाली, नायिका ।  
 कृष्णाश्रित—वि० कृष्ण के भक्त । वैष्णव ।  
 कृष्णार्पण—सज्ञा पु० निष्काम कर्म । अपने कर्मफल श्रीकृष्ण को अर्पण करना । बिना फल की इच्छा के कार्य करना ।  
 कृष्णाष्टमी—सज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण का जन्म-दिवस, जो भादो के कृष्णपक्ष की आठवी तिथि को पड़ता है । जन्माष्टमी ।  
 कृष्णापकल्या—स्त्री० श्रीपथ-विशेष । पीपरी ।  
 कृष्य—वि० खेती करने योग्य भूमि ।  
 कृसर—सज्ञा स्त्री० खिचड़ी ।  
 क्लृप्त—वि० १. रचित । २. निमित्त । ३. स्थिर किया हुआ ।  
 क्लृप्तकेश—वि० जटाधारी ।  
 कौं कौं—सज्ञा स्त्री० कष्ट में या चोट लगने पर चिड़ियों और कुत्तों आदि के चिल्लाने का शब्द । बकंश चिड़ियों का शब्द । भगडा, विरोध या असतोषसूचक शब्द ।  
 मुहा०—कौं कौं करना—व्यर्थ चिल्लाना । बकवाद करना । शोर करना ।  
 कौंडा—सज्ञा पु० दे० 'केवडा' । एक प्रकार का फूल ।  
 कौंडा—सज्ञा पु० दे० 'केवडा' ।  
 कौंली—सज्ञा स्त्री० सर्प आदि के शरीर पर का किल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है ।  
 कौंसा—सज्ञा पु० १. केसुवा । २. एक बरसाती कीड़ा ।  
 कौंली—सज्ञा स्त्री० दे० "कौंली" ।  
 केन्द्र—सज्ञा पु० १. मध्यबिन्दु । २. गोलाकार परिधि का मध्य स्थान । गोल वस्तु का मध्य स्थान । मुख्य या प्रधान स्थान । बीच का स्थान । ३. रहने का स्थान । ४. नाभि । ५. लग्न का चौथा, पाँचवाँ और दसवाँ स्थान ।  
 केन्द्रित—वि० वि० केन्द्र में किया हुआ । एवम् । एक जगह लाया हुआ । केन्द्र में इकट्ठा किया हुआ ।

केन्द्री—वि० केन्द्र में स्थित ।  
 केन्द्रीभूत—वि० एकत्रित । इकट्ठा किया हुआ । संकुचित ।  
 केन्द्रीकरण—सज्ञा पु० कुछ चीजों, शक्तियों या अधिकारों को एक केन्द्र में लाने का काम ।  
 केन्द्रीय—सज्ञा पु० केन्द्र से सम्बन्धित । केन्द्र का ।  
 केन्द्रीय सरकार—सज्ञा स्त्री० भारत सरकार ।  
 के—प्रत्य० १. सबधसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप । जैसे—राम के घोड़े । २. सम्बन्धवाचक प्रत्यय, जैसे—राम के घोड़े पर ।  
 के—सर्व० कौन ? कौन का छोटा रूप । (अवधी) प्रश्नवाचक ।  
 केज—सर्व० कोई ।  
 केकड़ा—सज्ञा पु० पानी का एक कीड़ा जिसकी आठ टांगें और दो पंजे होते हैं ।  
 केकय—सज्ञा पु० १. उत्तर भारत का एक प्राचीन देश, जो अब कश्मीर के अन्तर्गत है । २ [ स्त्री० केकयी ] केकय देश का राजा या रहनेवाला । ३ कँवेयी के पिता ।  
 केकयी—सज्ञा स्त्री० दे० "कँकेयी" ।  
 केकर—वि० १. डरा । २. भँगा । ३ बक्र । टेडा । ४. फिरका ।  
 केका—सज्ञा स्त्री० मोर की बोली ।  
 केकी—सज्ञा पु० मयूर । मोर । शिपी ।  
 केचित्—सर्व० कोई-कोई ।  
 केड़ा—सज्ञा पु० १. कोपल । नया पीछा या अकुर । २. नव-युवक ।  
 केत—सज्ञा पु० १ रहने की जगह । २. गृह । ३. आवादी । ४. धन । ५. इच्छा, काम, उद्देश्य । ६. निमग्न । ७. ध्वजा, चिह्न । ८. केतु । ९. प्रीडा । १० कीड़ा । ११. ज्ञान ।  
 केतक—सज्ञा पु० केवडा । वि०, वि० १. वितने । २. बहुत बूढ़ । बहुत । ३. किस्त मात्रा में । कितना ।  
 केतकर—सज्ञा स्त्री० दे० "केतकी" ।  
 केतकी—सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का बटिदार सुगन्धित पीछा । २. केवडे का वृक्ष । ३. बँबड़े के फूल ।

कृष्ण-सज्ञा पु० १ बिगात । २ वास्तवार ।  
३ हल का पाल ।

कृषाण-सज्ञा पु० किसान । खेतिहर ।

कृषि-सज्ञा स्त्री० [वि० कृष्य] १ खेती  
या काम । वास्त । विमानी । २  
पैशवृत्ति ।

कृषिधर्म-सज्ञा पु० १ खेती का काम ।  
२ हल चलाना ।

कृषिजीवी-वि० खेती परवे जीविका  
पैदा करनेवाला । कृषक । किसान ।

कृषीयल-सज्ञा पु० किसान । कृषिजीवी ।

कृष्ण-वि० १ काला । श्याम । २ नीला  
या आसमानी ।

सज्ञा पु० [स्त्री० कृष्णा] १ बसुदेव और  
देवकी के पुत्र । विष्णु के आठवे अवतार ।

२ एक राक्षस जिसे इंद्र ने मारा था ।

३ मन्त्रद्रष्टा ऋषि विशेष । ४ एक

उपनिषद् । ५ छप्पय छंद का भेद

विशेष । ६ वेदव्यास । ७ चार अक्षरों

का एक वृत्त । ८ कोयल । ९ अर्जुन ।

१० कदम का वृक्ष । ११ कोआ ।

१२ कलियुग । १३ अधरा पक्ष । १४

चंद्रमा का धब्बा ।

कृष्णकर्म-सज्ञा पु० १. नीच काम करनेवाला ।

२ पापाचारयुक्त । ३ अपराधी । पापी ।

कृष्णगधा-सज्ञा स्त्री० सहिजन का वृक्ष ।

कृष्णचंद्र-सज्ञा पु० दे० 'कृष्ण' ।

कृष्णचतुर्दशी-सज्ञा स्त्री० कृष्णपक्ष की

चतुर्दशी । भूल चतुर्दशी ।

कृष्णजीरा-सज्ञा पु० काला जीरा । कलौजी ।

कृष्णता-सज्ञा स्त्री० १ कृष्णवर्ण । काला

पत । दयाम रंग । २ धुंधली ।

कृष्णतुलसी-सज्ञा स्त्री० काली तुलसी ।

कृष्णद्वैपायन-सज्ञा पु० पराशर के पुत्र

वेदव्यास ।

कृष्णपक्ष-सज्ञा पु० महीने के यह १५ दिन

जिनमें चंद्रमा की कलाओं का क्रमशः

ह्रास होता है । अधेरा पाल ।

कृष्णपला-सज्ञा स्त्री० बाकुची । बरौदा ।

कृष्णभद्रा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की औषध ।

गुटवी ।

कृष्णभूमि-सज्ञा स्त्री० मान रंग की मिट्टी का

दश ।

कृष्णमय-वि० कृष्ण म लीन । कृष्ण के

रंग में रंग जाना ।

कृष्णमित्र-सज्ञा पु० प्रवाप-चन्द्रादय नाटक

के रचयिता ।

कृष्णलीह-सज्ञा पु० चुम्बक पत्थर । एक

प्रकार का मणि ।

कृष्णवक्त्र-सज्ञा पु० १ काले मुँहवाला वानर ।

२ लंगूर ।

कृष्णवर्त्मा-सज्ञा पु० १. अग्नि । २

वेदवानर । ३ पित्रव वृक्ष ।

कृष्णवानर-सज्ञा पु० काला वानर । कृष्ण

के रंग का वन्दर ।

कृष्णवृत्तिका-सज्ञा स्त्री० कभारी नामक एक

औषध ।

कृष्णसखा-सज्ञा पु० अर्जुन । कृष्ण के सखा या

मित्र ।

कृष्णसर्प-सज्ञा पु० काला साँप ।

कृष्णसार-सज्ञा पु० एक प्रकार का काला

हिरन । यज्ञ में चढाया जानवाला

मृग ।

कृष्णसार-सज्ञा पु० कृष्ण के रंग का हिरन ।

कृष्णसार-सज्ञा पु० १ काला हिरन ।

करसायल । २ बूहर । सेहुड ।

कृष्णा-सज्ञा स्त्री० १ द्रोपदी । २ पिप्पली ।

पीपल । ३ दक्षिण भारत की एक नदी ।

४ काली दाह । ५ काली (देवी) ।

६ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक ।

७ काला जीरा । ८ काल पत्त की

तुलसी । काल रंग की स्त्री । ९ यमुना ।

१० काली सरसो ।

कृष्णाग्रज-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण के बड़े भाई ।

बलदेव । बलराम ।

कृष्णामुह-सज्ञा पु० काला अग्रह ।

कृष्णाचल-सज्ञा पु० काला पहाड़ । रैवतव

नामक पर्वत, जो जूनागढ़ के पास

है ।

कृष्णाजिन-सज्ञा पु० कृष्णसार मृग का चर्म ।

काला मृगचर्म ।

कृष्णाफल-सज्ञा पु० कालीमिर्च ।

कृष्णाभिसारिका-सज्ञा स्त्री० अंधेरी रात में अपने प्रेमी से निश्चित स्थान पर मिलने के लिए जानेवाली नायिका ।  
 कृष्णाश्रित-वि० कृष्ण के भक्त । वेषणव ।  
 कृष्णापंण-सज्ञा पु० निष्काम कर्म । अपने कर्मफल श्रीकृष्ण को अर्पण करना । बिना फल की इच्छा के कार्य करना ।  
 कृष्णाष्टमी-सज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण का जन्म-दिवस, जो भादो के कृष्णपक्ष की आठवी तिथि को पड़ता है । जन्माष्टमी ।  
 कृष्णापकुल्या-स्त्री० श्रीपद्म विशेष । पीपरी ।  
 कृष्य-वि० खेती करने योग्य भूमि ।  
 कृसर-सज्ञा स्त्री० खिचड़ी ।  
 क्लृप्त-वि० १ रचित । २ निर्मित । ३ स्थिर किया हुआ ।  
 क्लृप्तकेडा-वि० जटाधारी ।  
 कैं-सज्ञा स्त्री० कष्ट में या बोट लगने पर चिड़िया और कुत्ते आदि के चिल्लाने का शब्द । कंकश चिड़ियों का शब्द । भगडा, विरोध या असतोपसूचक शब्द । मुहो-कैं करना-व्यर्थ चिल्लाना । बकवाद करना । शोर करना ।  
 कैंमोडा-सज्ञा पु० दे० 'केवडा' । एक प्रकार का फूल ।  
 केकडा-सज्ञा पु० दे० 'केवडा' ।  
 कैंचली-सज्ञा स्त्री० सर्प आदि के शरीर पर का भिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है ।  
 केंचुआ-सज्ञा पु० केंचुवा । २ एक बरसाती कीड़ा ।  
 केंचली-सज्ञा स्त्री० दे० "केंचली" ।  
 केन्द्र-सज्ञा पु० १ मध्यबिन्दु । २ गोलाकार परिधि का मध्य स्थान । गोल वस्तु का मध्य स्थान । मुख्य या प्रधान स्थान । बीच का स्थान । ३ रहने का स्थान । ४ नामि । ५ तल का चौथा, पाँचवाँ और दसवाँ स्थान ।  
 केन्द्रित-वि० वि० केन्द्र में किया हुआ । एवम् । एक जगह लाया हुआ । केन्द्र में इकट्ठा किया हुआ ।

केन्द्री-वि० केन्द्र में स्थित ।  
 केन्द्रीभूत-वि० एकनित । इकट्ठा किया हुआ । सकुचित ।  
 केन्द्रीकरण-सज्ञा पु० कुछ चीजों, शक्तियों या अधिकारों को एक केन्द्र में लाने का काम ।  
 केन्द्रीय-सज्ञा पु० केन्द्र से सम्बन्धित । केन्द्र का ।  
 केन्द्रीय सरकार-सज्ञा स्त्री० भारत सरकार ।  
 के-प्रत्य० १ सबधसूचक "का" विभक्ति का बहुवचन रूप । जैसे-राम के घोड़े । २ सम्बन्धवाचक प्रत्यय, जैसे-राम के घोड़े पर ।  
 के-सर्व० कौन ? कौन वा छोटा रूप । (अवधी) प्रश्नवाचक ।  
 के-सर्व० कोई ।  
 केकडा-सज्ञा पु० पानी का एक कीड़ा जिसकी आठ टाँगें और दो पंजे होते हैं ।  
 केकय-सज्ञा पु० १ उत्तर भारत का एक प्राचीन देश, जो अब कश्मीर के अन्तर्गत है । २ [ स्त्री० केकयी ] केकय देश का राजा या रहनेवाला । ३ कैंकेयी के पिता ।  
 केकयी-सज्ञा स्त्री० दे० "कैंकेयी" ।  
 केकर-वि० १ डरा । २ भेंगा । ३ बन । टेढ़ा । ४ किसका ।  
 केका-सज्ञा स्त्री० मोर की बोली ।  
 केकी-सज्ञा पु० मयूर । मोर । शिली ।  
 केचित्-सर्व० कोई-कोई ।  
 केडा-सज्ञा पु० १. कोपल । नया पीधा या अकुर । २ नव-युवक ।  
 केत-सज्ञा पु० १ रहने की जगह । २ गृह । ३ आवादी । ४ धन । ५ इच्छा, काम, उद्देश्य । ६ निमनन । ७ ध्वजा, चिह्न । ८ केतु । ९ खोडा । १० बौडा । ११ ज्ञान ।  
 केतक-सज्ञा पु० केवडा । कि०, वि० १. कितने । २ बहुत कुछ । बहुत । ३ किस माना में । कितना ।  
 केतकर\*-सज्ञा स्त्री० दे० "केतकी" ।  
 केतकी-सज्ञा स्त्री० १ एव प्रकार का पाँटदार मुगधित पीया । २ केवडे का वृक्ष । ३ केवडे के फूल ।

चेतन-गज्ञा पु० १ निमग्न । घुसावा ।  
२ चिह्न । ३ प्वजा । ४ दृश्य स्थान ।  
५ जगह । रहने की जगह । ६ कोई  
अनिवार्य कार्य ।

चेता\*†-त्रि० वि० चित्तना ।  
चेतिर\*†-त्रि० वि० चित्तना । चित्त तरह ।  
चेतु-गज्ञा पु० १ ज्ञा । प्रवास की चिरण ।  
२ चिह्न । निशान । ३ चमक ।  
प्रकाश । ४ राहु का क्षीर । ५ ध्वजा ।  
पताका । ६ प्रमाण नेता । अगुवा । प्रतिष्ठित  
व्यक्ति । ७ एक राक्षस का वध । ८  
एक ग्रह (पलिन ज्योतिष) । पुच्छल तारा ।  
९ पापग्रह । १० उत्पन्न चिह्न । ११ दान-  
विशेष । १२. दुश्मन, वैरी । १३. दिन का  
समय ज्ञान ।

केतुतारा-सज्ञा स्त्री० धूमकेतु । अशुभसूचक  
तारा । पुच्छल तारा ।

केतुमती-सज्ञा स्त्री० १ एक वर्णाई समवृत्त  
(छन्द) । २ रावण की नानी अयात्  
सुमाली राक्षस की पत्नी ।

केतुमान-वि० १ तेजस्वी । तेजवान् ।  
२ बुद्धिमान । ३ ध्वजावाला ।

केतुमाल-सज्ञा पु० जम्बु द्वीप के नवखण्डों  
में से एक खण्ड ।

केतुवृक्ष-सज्ञा पु० पुराणों के अनुसार मेरु  
पर्वत पर के वृक्षों का नाम । ये चार  
हैं—कदम्ब, जामुन, पीपल और वरणद ।

केते-त्रि० वि० चित्तने ? कै ?

केतो\*-त्रि० वि० [स्त्री० केती] चित्तना ?

केदली†-सज्ञा पु० दे० १ "बदली" ।  
रमा । २ एक बार फूलनवाला कैला ।

पर्वत जितने क्षिप्र पर वेदारगाथ नामक  
क्षिप्रलिंग स्थापित है । २ महादेवजी ।

केन-गज्ञा पु० एक उपनिषद् ।

सर्व० चित्तना ?

केसिन-गज्ञा पु० [अग्रे०] छोटा चमक  
या घर । जहाज में अफमरा या यात्रियों  
के रहने की कोठरी ।

केन्द्रम-सज्ञा पु० जन्मवाला वा ग्रह । एक  
प्रकार का यान । दृष्टियोग ।

केमिस्ट्री-सज्ञा पु० [अग्रे०] रसायन शास्त्र  
या रसायन विद्या ।

(इनआगनिक केमिस्ट्री=धातु इत्यादि  
सम्बन्धी रसायन शास्त्र ।

आगनिक केमिस्ट्री=जैव-सम्बन्धी रसायन  
शास्त्र ।)

केयूर-सज्ञा पु० १ भुजवद । वाज्वद । २ घग्द ।

३ बाह में पहनने का एक गहना । विजायड ।

केयूरी-वि० केयूरधारी । जा केयूर पहने हो ।

केर†-प्रत्य० [स्त्री० केरी] सबधसूचक  
विभक्ति । वा । की । व (अवधी) ।

केरल-सज्ञा पु० (स्त्री० केरली)

१ निनारा । दक्षिण भारत का एक प्रदेश  
(मलाबार) । २ केरल देश का निवासी ।

३ एक प्रकार का फलित ज्योतिष ।

केरल-सज्ञा पु० १ बेला । २ बेला का वृक्ष ।  
कदली ।

केरानी†-सज्ञा पु० नमक, मसाला, हलदी  
आदि चीजों जो पसारिया के यहाँ मिलती हैं ।

त्रि० स० सूत्र में अन्न के दाने अलग करना ।

केरानी-सज्ञा पु० १ किरटा । वह जिसके  
माता पिता में से कोई एक यारोपियन

केरोसिन-सजा पु० [प्रये०] मिट्टी का तेल ।  
किरासन का तेल ।

केसा-सजा पु० एक फल । कदली का वृक्ष ।  
इस पेड़ के पत्ते गर्ज गवा गज लम्बे श्रीर  
फल लम्बे, गूदेदार और मोठे होते हैं ।

केल-सजा स्त्री० १. खेल । फ्रीडा । २.  
मैयुन । रति । विहार । ३. हँसी । परिहास ।  
ठट्टा । दिल्लगी । ४. पृथ्वी ।

केलिक-सजा पु० अशोक वृक्ष ।

केलिकला-सजा स्त्री० १ सरस्वती की  
वीणा । २. ममागम । रति ।

केलिकिल-सजा पु० शिव का एक अनुचर ।  
नाटक का विद्वपक ।

सजा स्त्री० कामदेव की स्त्री ।

केलिंगह-सजा पु० १. नाटक खेलने का स्थान ।  
नाट्यगृह । रंगशाला । २. आमोद-प्रमोद  
करने का स्थान ।

केली-सजा स्त्री० १ मुख-शायन । २ आनंद ।  
३. सुख । ४. फ्रीडा । खेल ।

केवका-सजा पु० प्रसूता स्त्रियों को दिया  
जानेवाला भसाला ।

केवट-सजा पु० नाव चलानेवाली जाति ।  
धीमर । गछुआ । मल्लाह ।

केवटी बाल-सजा स्त्री० दो या दो से अधिक  
चीजों की मिली हुई बाल ।

केवटी मोथा-सजा पु० सुगन्धित मोथा  
विशेष ।

केवडई-वि० एक प्रकार का रंग । हलका  
पीला, हरा और सफेद मिला हुआ रंग ।  
केवडई रंग ।

केवड़ा-सजा पु० १ एक प्रकार का फूल ।  
२ एक प्रकार का इत्र । ३ इसके फूल का  
सुगन्धित जल ।

केवल-वि० १. अकेला । एकमान ।  
एकाकी । २. शुद्ध । ३. उत्तम । श्रेष्ठ ।  
४. असाहाय ।

कि वि० मात्र । सिर्फ ।

सजा पु० १. विशुद्ध ज्ञान । २. असाधारण ।  
३. पूर्ण । ४ एक तरह का ज्ञान । ५.  
पवित्र । ६. निर्णत । ७. स्वार्थी । ८.  
अनोखा ।

केवलात्मा-सजा पु० शुद्ध स्वभाव का  
व्यक्ति ।

केवली-सजा पु० १. केवल-ज्ञानी । २.  
मुक्ति पाने योग्य साधु । ३. एकाकी । ४.  
ग्रन्थ विशेष । ५. जैनियों की मुक्ति ।  
६. जन्मपत्नी ।

केवलव्यतिरेकी-सजा पु० प्रत्यक्ष कार्य को देख-  
कर कारण का अनुमान । जैसे, नदी का  
चढ़ाव देखकर वृष्टि होने का अनु-  
मान ।

केवलान्वयो-सजा पु० कारण से कार्य का  
अनुमान । जैसे, बादल देखकर पानी  
बरसने का अनुमान ।

केवांच-सजा स्त्री० दे० "कौच" ।

केवा-सजा पु० १ केवडा । केतकी ।  
२ कमल । ३. बहाना । मिस ।  
टालमटूल । आनाकानी । सकोच ।

केवाड़ा, केवाड़ा-सजा पु० दे० "किवाड़" ।  
द्वार । कपाट । दरवाजा ।

केवान-सजा पु० दे० "केवा" ।

केश-सजा पु० १ किरण । रश्मि । २.  
संसार । ३ वरुण । ४ सूर्य । ५. विष्णु ।  
६. बाल । ७ रोम । ८. लोम ।  
९ ब्रह्मा की एक शक्ति । १०. सिर के  
बाल । बालों का गुच्छा । ११. एक  
सुगन्धि ।

केशकर्म-सजा पु० १. केश-विन्यास । बाल  
सँवारने या गुँथने की कला । २. केशात  
नामक सस्कार-विशेष ।

केशकलाप-सजा पु० बालों का समूह । चोटी ।  
जूडा ।

केशप्रह-सजा पु० केशाकर्षण । केश पकड़कर  
खींचना ।

केशपाश-सजा पु० बालों की लट । कंकुल ।  
बालों का समूह ।

केशमार्जनी-सजा स्त्री० कधी । कबही ।

केशरज्जन-सजा पु० मँगरेया । एक पीघा ।  
एक प्रकार का वृक्ष ।

केशर-सजा पु० दे० "वेसर" । १. फूला  
की पल्लवियाँ । २ मिह और मोड़ी की  
गरदन पर के बाल ।

केतन-सज्ञा पु० १ निमग्न । बुनावा ।  
२ चिह्न । ३. ध्वजा । ४ दृश्य स्थान ।  
५ जगह । रहने की जगह । ६ कोई  
प्रतिवार्य कार्य ।

केता\*†-त्रि० वि० कितना ।  
केतिव\*†-त्रि० वि० कितना । किस तरह ।  
केतु-मज्ञा पु० १ ज्ञान । प्रवास की निरण ।  
२ चिह्न । निज्ञा । ३ चमक ।  
प्रवास । ४ राहु का शरीर । ५ ध्वजा ।  
पताका । ६ प्रधान नेता । अगुवा । प्रतिष्ठित  
व्यक्ति । ७ एक राक्षस का वचन । ८.  
एक ग्रह (फलित ज्योतिष) । पुच्छल तारा ।  
९ पापग्रह । १० उत्पात चिह्न । ११ दान-  
विशेष । १२. दुश्मन, बैरी । १३. दिन का  
समय ज्ञान ।

केतुतारा-सज्ञा स्त्री० धूमकेतु । अशुभसूचक  
तारा । पुच्छल तारा ।

केतुमती-सज्ञा स्त्री० १ एक वर्षादि समवृत्त  
(छन्द) । २ रावण की नानी अथात्  
सुमाली राक्षस की पत्नी ।

केतुमान-वि० १ तेजस्वी । तेजवान् ।  
२ बुद्धिमान । ३ ध्वजावाला ।

केतुमाल-मज्ञा पु० जम्बु द्वीप के नवखंडा  
म से एक खंड ।

केतुदक्ष-सज्ञा पु० पुराणों के अनुसार मेरु  
पर्वत पर के वृक्षों का नाम । ये चार  
हैं—कदंब, जामून, पीपल और बरगद ।

केले-त्रि० वि० कितने ? कै ?  
केतो\*†-त्रि० वि० [स्त्री० केतो] कितना ?  
केदली†-सज्ञा पु० दे० १ 'कदली' ।  
रभा । २ एक बार फूलनेवाला बेला ।  
पड़ ।

केदार-सज्ञा पु० १ ऐसा खेत जिसमें  
धान बाया या रोपा जाता हो । २  
सिपाई के लिए खेतों की क्यारी । ३  
'वृक्ष के नीचे का घाला' धावला । ४  
पर्वत । ५ दे० 'केदारनाथ' । शिव । ६  
मेघराज का चतुर्थ पुत्र ।

केदारखंड-सज्ञा पु० खंड विशेष । स्कन्द  
पुराण के अन्तर्गत एक भाग या खंड ।

केदारनाथ-सज्ञा पु० १ हिमालय का एक

पर्वत जिसके शिखर पर 'केदारनाथ' नामक  
शिखरलिंग स्थापित है । २ महादेवजी ।  
बेन-सज्ञा पु० एक उपनिषद् ।  
सर्व० विसर्ग ?

बेचिन-मज्ञा पु० [अग्ने०] छोटा धमर  
या घर । जहाज में अफमरों या यानियों  
के रहने की पाठरी ।

बेभद्रम-मज्ञा पु० जन्मकाल का ग्रह । एक  
प्रकार का याग । दृष्टिकोण ।

बेमिस्ट्री-सज्ञा पु० [अग्ने०] रसायन-शास्त्र  
या रसायन विद्या ।

(इनभ्राग्निक बेमिस्ट्री=घातु इत्यादि  
सम्बन्धी रसायन शास्त्र ।

भ्राग्निक बेमिस्ट्री=जीव-सम्बन्धी रसायन  
शास्त्र ।)

केयूर-मज्ञा पु० १ भुजवद । बाजूवद । २ अगद ।  
३ बांह में पहनने का एक गहना । विजायठ ।

केयूरी-वि० केयूरधारी । जो केयूर पहने हो ।  
केर†-प्रत्य० [स्त्री० केरी] सबधसूचक  
विभक्ति । का । की । के (अवधी) ।

केरल-सज्ञा पु० (स्त्री० केरली)  
१ विनार । दक्षिण भारत का एक प्रदेश  
(मलाबार) । २ केरल देश का निवासी ।

३ एक प्रकार का फलित ज्योतिष ।

केरा-मज्ञा पु० १ केला । २ केला का वृक्ष ।  
कदली ।

केराना†-मज्ञा पु० नमक, मसाला, हलदी  
आदि चीजें जो पसारिया के यहाँ मिलती हैं ।

कि० रा० सूप में अन्न के दाने अलग करना ।  
केरानो-सज्ञा पु० १ विरटा । वह जिसके  
माता पिता म से कोई एक पारोपियन  
और दूसरा हिन्दुस्तानी हो । यूरेशियन  
ईमाई । २ कलक । बपतर म लिखन-पडने  
का काम करनेवाला मुसी ।

केराव†-सज्ञा पु० मटर ।

केरि\*†-प्रत्य० दे० 'केरी' ।  
सज्ञा स्त्री० दे० 'केलि' ।

केरी†-प्रत्य० की । 'के' विभक्ति का  
स्त्रीलिंग रूप ।

सज्ञा स्त्री० अंबिया । आम का छोटा  
कच्चा फल ।

पेसिन-सज्ञा पु० [अग्ने०] मिट्टी का तेल ।  
बेरासन का तेल ।

सा-सज्ञा पु० एक फल । बदती का वृक्ष ।  
इम पेड़ के पत्ते गर्ज सवा गज लम्बे और  
फल लम्बे, गूदेदार और मोठे होते हैं ।

रति-सज्ञा स्त्री० १ खेल । शीड़ा । २  
भैयुन । रति । विहार । ३ हँसी । परिहास ।  
टट्टा । दिल्ली । ४ पृथ्वी ।

रतिफ-सज्ञा पु० अशाक वृक्ष ।  
रतिकला-सज्ञा स्त्री० १ सरस्वती की  
वीणा । २ समागम । रति ।

रतिकिल-सज्ञा पु० शिव का एक अनुचर ।  
नाटक का चिह्नपत्र ।

सज्ञा स्त्री० कामदेव की स्त्री ।  
रत्निगृह-सज्ञा पु० १ नाटक खलन का स्थान ।  
नाट्यगृह । रगशाला । २ आमाद प्रमाद  
करन का स्थान ।

रत्नी-सज्ञा स्त्री० १ सुख-शयन । २ आनंद ।  
३ सुख । ४ शीड़ा । खल ।

रत्नीका-सज्ञा पु० प्रसूता स्त्रियों को दिया  
जानवाला मसाला ।

रत्नी-सज्ञा पु० नाव चलानवाली जाति ।  
धीमर । मछुआ । मल्लाह ।

रत्नी-सज्ञा पु० दो या दो से अधिक  
बीजा की मिली हुई दाल ।

रत्नी-सज्ञा पु० सुगन्धित मोया  
विशेष ।

रत्नी-वि० एक प्रकार का रंग । हलका  
पीला, हरा और सफेद मिला हुआ रंग ।  
रत्नी रंग ।

रत्नी-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का फूल ।  
२ एक प्रकार का इन । ३ इसके फूल का  
सुगन्धित जल ।

रत्नी-वि० १ अकेला । एकमात्र ।  
एकाकी । २ शुद्ध । ३ उत्तम । श्रेष्ठ ।  
४ असाहाय ।  
कि वि० मात्र । सिर्फ ।  
सज्ञा पु० १ विशुद्ध ज्ञान । २ असाधारण ।  
३ पूर्ण । ४ एक तरह का ज्ञान । ५  
पवित्र । ६ निर्णीत । ७ स्वार्थी । ८  
अनोखा ।

केवलात्मा-सज्ञा पु० शुद्ध स्वभाव का  
व्यक्ति ।

केवली-सज्ञा पु० १ केवल ज्ञानी । २  
मुक्ति पाने योग्य साधु । ३. एकाकी । ४  
ग्रन्थ विशेष । ५ जैनियों की मुक्ति ।  
६ जन्मपत्नी ।

केवलव्यतिरेकी-सज्ञा पु० प्रत्यक्ष कार्य को देख-  
कर कारण का अनुमान । जैसे, नदी का  
चढ़ाव देखकर वृष्टि होने का अनु-  
मान ।

केवलान्वयी-सज्ञा पु० कारण से कार्य का  
अनुमान । जैसे, बादल देखकर पानी  
बरसने का अनुमान ।

केवाच-सज्ञा स्त्री० दे० 'कौच' ।  
केवा-सज्ञा पु० १ केवडा । केतकी ।  
२ कमल । ३. बहाना । मिस ।  
टालमटूल । आनाकानी । सकोच ।

केवाट, केवाडा-सज्ञा पु० दे० 'किवाड' ।  
द्वार । कपाट । दरवाजा ।

केवान-सज्ञा पु० दे० 'केवा' ।  
केश-सज्ञा पु० १ किरण । रश्मि । २  
संसार । ३ वस्त्र । ४ सूर्य । ५ विष्णु ।  
६ बाल । ७ रोम । ८ लोम ।  
९ ब्रह्मा की एक शक्ति । १० तिर के  
बाल । बालों का गुच्छ । ११ एक  
सुगन्धि ।

केशकर्म-सज्ञा पु० १ केश विन्यास । बाल  
सँवारन या गूथन की कला । २ केशात  
नामक संस्कार विशेष ।

केशकलाप-सज्ञा पु० बालों का समूह । चोटी ।  
जूड़ा ।

केशग्रह-सज्ञा पु० केशाकर्षण । केश पकड़कर  
खींचना ।

केशपाश-सज्ञा पु० बालों की लट । काकुल ।  
बालों का समूह ।

केशमार्जनी-सज्ञा स्त्री० कर्पी । ककड़ी ।  
केशरजन-सज्ञा पु० भैरव । एक पीछा ।  
एक प्रकार का वृक्ष ।

केशर-सज्ञा पु० दे० 'केसर' । १ फूलों  
की पखुडियाँ । २ मिह और पीछे की  
गरदन पर के बाल ।

वैशराज-गजा पु० १ भुजगा । पक्षा-विशेष ।  
२ भुगराज । भैरव्या ।

वैशरिया-गजा पु० १ पीला रंग विशेष । २  
वैसरिया । ३. मुड के समय या एक पहनावा  
जिसे राजपूत पहनते थे । इसे पहनकर मुड  
में लौट नहीं सारते थे, अतः ही मर जाये ।  
४ वैसर का रंग ।

वैशरी-गजा पु० दे० "वैसरी" । १ सिंह ।  
मुगराज । २ एक बानर । हनुमानजी  
के पिता ।

वैशव-गजा पु० १ श्रीकृष्ण । २ विष्णु ।  
३ विष्णु के २४ मूर्तिभेदों में से एक । ४  
परमेश्वर । ब्रह्मा ।

वैशविन्वास-गजा पु० १ चोटी बनाना ।  
२ बाल संवारना । ३ बालों को  
सजाना ।

वैशात-गजा पु० १ गुडन । २ गोदान  
कर्म्म । ३ यज्ञोपवीत के समय सिर के बाल  
भूटने का सस्वार ।

वैशापेशी-गजा पु० बाल पकड़कर लठना ।  
भौंटाफाटी ।

वैशि-गजा पु० १ एक राक्षस जिसको  
कृष्ण ने मारा था । २ दूसरा राक्षस  
जिसे इन्द्र ने मारा था । ३ बालों  
वाला व्यक्ति । ४ श्रीकृष्ण की एक  
उपाधि ।

वैशिनी-गजा स्त्री० १ सुंदर और लम्बे  
बालोंवाली स्त्री । २ अप्सरा विशेष ।  
३ पार्वती की एक सहचरी । ४ राजा  
सगर की रानी । ५ रावण की माता  
कैकसी का एक नाम । ६ एक प्राचीन  
नगरी । ७ दमयंती की एक दूती ।

वैशी-गजा पु० [स्त्री० वैशिनी] १  
पुराने युग में घर का मालिक । २ राजा  
करा की अनुचर एक राक्षस जिसने रूप  
' बदलकर वृन्दावन में गोधों को मारना  
शुरू किया तब श्रीकृष्ण ने उसकी हत्या की ।  
३ कैशांच । ४ बाढा । ५ सिंह ।

वि० १ उत्तम वैशपुत्र । २ निरण या  
प्रकाशवाला ।

वैस-गजा पु० दे० 'वैश' ।

गजा पु० (अग्र०) १ चीज गन्त की जगह  
जैसे-गूढवेस । २ दुर्घटना । ३ मुखदमा ।  
वैसर-गजा पु० १ गुग्गुलु के लिए प्रसिद्ध  
एक बीधा । २ मुकुम । ३ जाफरान ।  
४ अयाल । मोटे, मिह आदि जानवरों  
की गरदन पर के बाल । ५ नागवैसर ।  
६ स्वर्ग । ७ मौलसिरी । वस्तु ।

वैसरिया-वि० १ पीला । वैसर के रंग  
का । जर्द । २ वैसर मित्रा दृष्टा । ३  
राजपूतों का वैसरिया बाना, जो मुड के  
समय पहना जाता था ।

वैसरी-गजा पु० १ मिह । २ घोडा ।  
३ हनुमानजी के पिता का नाम । ४  
नागवैसर । ५ पुत्राग ।

वैसरी-गजा स्त्री० एक प्रकार का मटर ।  
दुबिया मटर ।

वैसू-गजा पु० दे० 'टसू' ।  
वैहार या वैहरी\*-गजा पु० १ सिंह ।  
शर । २ एक बानर का नाम । ३ घोडा ।

वैहा-गजा पु० मयूर । मोर ।  
वैहि\*†-वि० किसी । किसका । (अवधी)  
वैहै\*- वि० किसी । किसी । किसी  
तरह । किसी प्रकार ।

वैहू†-सर्व० कोई ।  
कैक्य-गजा पु० १ 'विकर' का भाव ।  
विकरता । सेवा । नीचरी । दासत्व ।  
२ नवधा भक्ति का एक अंग ।

वैचली-गजा स्त्री० कैचुल । साँप के  
शरीर का भिन्नीदार चमड़ा ।  
कैचा-वि० भेंगा । ऐंछाताना ।  
गजा पु० बड़ी वैंची ।

वैची-गजा स्त्री० कतरनी । काटने का एक  
श्रीजार ।

कैडा-गजा पु० १ मान । पैमाना । २  
नवधा ठीक करने का एक यंत्र । ३ ढग ।  
चान । तर्ज । ४ काट-छाँट । ५  
चासाकी । ६ धूर्तता ।

कै†-वि० विनता । कितने ।  
\*अव्य० या । अथवा । या ।  
गजा स्त्री० उलटी । वमन ।  
कैक्स-गजा पु० राक्षस । दैत्य । अगुर ।

कैकसी-सज्ञा स्त्री० एव राक्षसी। रावण की माता।  
 कैकयी-सज्ञा स्त्री० १ कैकय गोत्र म उत्पन्न होनेवाली स्त्री। २ राजा दशरथ की रानी, जिसने रामचन्द्रजी को वनवास दिलाया।  
 कैटभ-सज्ञा पु० एक राक्षस।  
 कैटभारि-सज्ञा पु० नारायण। विष्णु।  
 कैटभेश्वरी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा। भगवती।  
 कैत-सज्ञा पु० एक प्रकार का फल। कैया। सज्ञा स्त्री० ओर। तरफ।  
 कैतक-सज्ञा पु० केवड़े के फूल। कैतकी पुष्प।  
 कैतव-सज्ञा पु० १ कपट। छल। धोखा। २ जुआ। ३ एक भणि। ४ धतूरा। ५ लहसुनियाँ। ६ भूंगा।  
 वि० ३ धर्त। शठ। २ छली। धोखे-वाज। ३ जुआ खेलनेवाला।  
 कैतववाद-सज्ञा पु० १ छलना। ठगना। प्रवचना। २ एक औपध। चिरायता।  
 कैतवापह्नुति-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का काव्य अलंकार। २ अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें किसी वहाँ से कोई बात छिपाई जाय।  
 कैतुम-सज्ञा स्त्री० कपड़ों में सगाई जानवाली एक चारीक लेस।  
 कैथ, कैथा-सज्ञा पु० कैटीला वृक्ष विशेष। इस वृक्ष के फल।  
 कैथी-सज्ञा स्त्री० एक प्राचीन लिपि जिसमें अक्षरा के ऊपर रेखा नहीं दी जाती। मुडिया अक्षर।  
 कैद-सज्ञा स्त्री० १ रोक। अवरोध। बधन। २ कारावास। ऐसे बंद स्थान में रखा जाना जहाँ से बाहर आने की अनुमति न हो। जल में बंद रहना। ३ किसी तरह की शर्त, प्रतिवध, जिसके पूरे होने पर ही कोई बात हो।  
 मुह०-कैद काटना=कैद में दिन बिताना।  
 कैदक-सज्ञा स्त्री० कागज आदि रखने के लिए कागज की पट्टी।  
 कैदखाना-सज्ञा पु० [अ०] कारागार। बंदीगृह। जलखाना। कैदियों के रखने की जगह।

कैद-सनहार्द-सज्ञा स्त्री० कालकोठरी। छोटी कोठरी में कैदी को अकेले रखने की सजा।  
 कैदमहज-सज्ञा स्त्री० १, ऐसी सजा जिसमें कैदी को कोई काम या मेहनत न करनी पड़े। २ सादी कैद।  
 कैदसख्त-सज्ञा स्त्री० कड़ी कैद। ऐसी सजा जिसमें कैदी को कठिन परिश्रम करना पड़े।  
 कैदी-सज्ञा पु० [अ०] १ बंदी। २ बंधुवा। कैद की सजा पानेवाला व्यक्ति।  
 कैद्यो-<sup>\*</sup>अव्य० या। वा। अव्यवा। मानो कि।  
 कैफ-सज्ञा पु० [अ०] मद। नशा।  
 कैफियत-सज्ञा स्त्री० १ विवरण। व्योरा। २ समाचार। वर्णन। हाल। ३ खुशी या आश्चर्य उत्पन्न करनेवाली घटना।  
 मुह०-कैफियत तलब करना=कारण पूछना। नियमानुसार विवरण माँगना।  
 कैसी-वि० १ मतवाला। २ नशवाज। नशे में डूबा हुआ।  
 कैवर-सज्ञा स्त्री० तीर का फल या नोक।  
 कैवार-सज्ञा स्त्री० १ बहुत बार। २ कितनी बार।  
 कैमुतिक न्याय-सज्ञा पु० अनायास सिद्ध। एक प्रकार का न्यायसिद्धान्त या उक्ति जिससे यह दिखाया जाय कि जब उतना बड़ा काम हो गया तब यह क्या है?  
 कैयट-सज्ञा पु० व्याकरण महाभाष्य के टीकाकार।  
 कैर-सज्ञा पु० कटील। काँटेदार एक पौधा।  
 कैरव-सज्ञा पु० [स्त्री० कैरवी] १ सफेद कमल। २ कुमुद। ३ ज्वारी। ४ शनु।  
 कैरवाली-सज्ञा स्त्री० कैरवा का समूह।  
 कैरवि-सज्ञा पु० चन्द्रमा।  
 कैरवी-सज्ञा स्त्री० चाँदनी।  
 कैरा-सज्ञा पु० [स्त्री० कैरी] १ भूरा (रंग)। २ ललामी लिय हुआ सफेदी। ३ सोकना। सोवन। ऐसा बैल जिसके सफेद रोशों के अंदर से चमड़े की ललाई भलकती हो।  
 वि० १ कजा। जिसकी आँख भूरी हो।  
 २ कैरे रंग का।  
 कैल-सज्ञा पु० १ अमुर। २ कोपल। ३

गामा। ४ एव प्रारं का अंता का धन।  
 ५ मटमंसा रग।  
 वेशादर-गजा पु० [मपे०] दे० 'दिनसत्र'।  
 वेशन-सज्ञा पु० १. शिवनाथ। २. हिमालय  
 जिसे एक चाटी जहाँ शिवजी का निवास  
 में ला जाता है।  
 ४. ५-वंलासनाय। वंलासपति। शिव।  
 वेशासनाय-मृत्यु। मरण।  
 मुस्त-गजा पु० मल्लाह। कर्णधार। वेवट।  
 मुस्त-मस्तक-गजा पु० वेवटी मोया।  
 वंयल्य-गजा पु० १. गुदता। पवित्रता।  
 विना मोह-माया का। २. निर्लिप्तता।  
 ३. एवता। ४. मुक्ति। परित्राण। ५.  
 उपनिषद्-विरोध।  
 वंशिष-गजा स्त्री० वालो की सट।  
 वि० बडे-बडे वालोवाला।  
 वंशिको-गजा स्त्री० नाटक की मुख्य चार  
 वृत्तियों में से एक वृत्ति जिसमें नृत्य-गीत  
 तथा भोग विलास आदि होते हैं।  
 वंश-गजा पु० [लै०] सम्राट्। जर्मन सम्राट्  
 की उपाधि। शाहशाह। बादशाह।  
 वंसा-वि० [स्त्री० वंसी] १. किस तरह  
 का? किस ढंग का? २. किस रूप या गुण  
 का? ३. (निपेधार्यक प्रश्न के रूप में)  
 किसी प्रकार का नहीं। जैसे—जब हम  
 उस मकान में रहते नहीं तब विराया वंसा?  
 समान। ४. सदृश। ऐसा।  
 वंसे-क्रि० वि० १. किस ढंग से? किस तरह  
 से? २. किस हेतु? किस लिए? क्या?  
 वंसे\*+वि० दे० "वंसा"।  
 वंई\*-गजा स्त्री० दे० "कुई"।  
 वोकण-गजा पु० १. दक्षिण भारत का एक  
 प्रदेश। २. कोकण देश का रहनेवाला।  
 ३. सस्त्र-विशेष।  
 वॉचना-क्रि० स० गठाना। धंसाना।  
 वुभाना। गोदना। बीधना। लग करना।  
 वॉचा-गजा पु० दे० "वौच"।  
 गजा पु० बहेलियों की लंबी छड़ जिसके सिरे  
 पर वे चिड़ियाँ फँसाने का सास लगाते हैं।  
 वॉछना-क्रि० स० दे० "कोछियाना"।  
 वॉछियाना-क्रि० स० साड़ी का वह भाग

जो पहनने में पेट के नीचे लौगा  
 जाता है।  
 वि० स० अचल के पातों में कोई चीज भरकर  
 कमर में लौगा लेंगा।  
 वॉड़ा-गजा पु० १. पात या बटा या छला  
 जिसमें काँइ जर्जर अटकई जाय। २.  
 बूटा। ३. वृष्णाट्।  
 वि० ज़िममें वॉड़ा लगा हो। जंग, वॉटा  
 रपया।  
 वॉयना-क्रि० अ० दे० "वूयना"।  
 वॉपर-गजा पु० दे० वॉपल। अकुर।  
 वॉपल+गजा स्त्री० अकुर। बल्ला। नई  
 श्रोत्र मुलायम पत्ती। वनपा।  
 वॉवर\*+वि० १. नरम। मुलायम। २.  
 बामस।  
 वाहडा+गजा पु० दे० "कुम्हडा"।  
 कोहडीरो+गजा स्त्री० कुम्हडे या पेटे की  
 बरी।  
 वॉ\*-मवं० वौन?  
 प्रत्य० वमं शीर मप्रदान की विभक्ति।  
 जंस—साँप की मातो।  
 वॉया-गजा पु० १. रेशम के बीडे का धर।  
 वुसियारी। २. बालेदा। महुए का पया  
 फल। बालेदा। ३. बटहल के पके हुए  
 बीजकाप। ४. दे० "वौया"।  
 वॉइरी-गजा पु० बाढ़ी। हिंदुओं की एक  
 जाति जो साग, तरकारी आदि चीनी या  
 बचती है।  
 गजा स्त्री० दे० "वॉइलारी"।  
 वॉई-अध्य० अनिश्चित। कई में से एक।  
 वॉइ-अध्य० वॉई मनुष्य। अनिश्चित  
 व्यक्ति। "वॉई"।  
 वॉय-गजा पु० १. चकवा। २. बघेरा। ३.  
 जगली भडिया। ४. संगीत का एक भेद।  
 ५. मेटक। ६. 'वॉयशास्त्र' के रचयिता।  
 वॉई-वि० गुलाबी लिम हुए नीला रंग।  
 वॉकला-गजा स्त्री० वॉकशास्त्र संबंधी ज्ञान।  
 सभाग संबंधी विद्या। रति विद्या।  
 वॉइदेव-गजा पु० वॉकशास्त्र के रचयिता।  
 वॉइनद-गजा पु० १. सात वूमद। २.  
 सात कमल।

कोंकनी-सज्ञा पु० एक प्रकार का रग ।

वि० १ घटिया । रही । २ छोटा । नग्नहा ।

कोकशास्त्र-सज्ञा पु० कामशास्त्र । कोक द्वारा बनाया हुआ रतिशास्त्र ।

कोका-सज्ञा पु० दक्षिणी अमेरिका का वृक्ष-विशेष, जिसकी सुखाई हुई पत्तियाँ चाय या कहूँ की भाँति स्फूर्तिदायक समझी जाती हैं ।

सज्ञा पु० स्त्री० १. धायभाई । २ चक्रवा । चर्वई । ३ फरिया । ४ कबल । ५ एक प्रकार का वस्त्र ।

सज्ञा स्त्री० दे० "बोवाबेली" ।

कोकाबेरी, कोकाबेली-सज्ञा स्त्री० नीली कुमुदिनी ।

कोकाह-गज्ञा पु० द्रव्य रग का घोडा ।

कोकिल-सज्ञा स्त्री० १ पिक । कोयल । २ नीलम की छया । ३ एक प्रकार का छप्पय ।

कोकिला-सज्ञा स्त्री० दे० कोविल ।

कोकिलावास-सज्ञा पु० आम का पेड़ ।

कोकी-सज्ञा स्त्री० चकई । मादा चकवा ।

कोकीन, कोकेन-सज्ञा स्त्री० कोका नामक पेड़ की पत्तियाँ से तैयार की हुई औषध, जिसे लगाने से शरीर सुन्न हो जाता है ।

कोकी-सज्ञा स्त्री० १ कोआ की आवाज । २ लड़की को बहकाने का शब्द ।

कोख-सज्ञा स्त्री० १ पेट । उदर । २ गर्भशय । ३ दोनों बगल का स्थान । पार्श्व । वृक्ष ।

मुहा०-राख उजड़ जाना=१ गर्भ गिर जाना । २ सतान नष्ट होना । कोख बद होना=वर्द्ध होना । कोख, या कोरा गँग से भरी-पूरी रहना=बालक या बालक और पति का सुख देखते रहना । (आसीस) ।

कोखबद-वि० वर्द्ध । सतानहीन ।

कोयी-सज्ञा पु० झुंड में रहनेवाला वृत्तों से मिलता-जुलता एक शिकारी जानवर ।

कोच-सज्ञा पु० [अग्रे०] १. गद्देदार बढिया

पलग, बेच' या कुर्मा । २. चार पहियो-वाली घोडागाडी ।

कोकची-सज्ञा पु० एक प्रकार का रग ।

कोचवकस-सज्ञा पु० घोडा-गाडी आदि में वह स्थान, जहाँ हाँकनेवाला बैठता है ।

कोचवान-सज्ञा पु० घोडा-गाडी हाँकने-वाला ।

कोचा-सज्ञा पु० १ तलवार, बटार आदि का धाव । २ लगनेवाली बात । ताना ।

कोचीन-सज्ञा पु० दक्षिण भारत का एक प्रदेश ।

कोछा, कोछी-सज्ञा स्त्री० गोदी । ऐसी भोली या झलना जिसमें बच्ची को डुलाया जाय ।

कोजागर-सज्ञा पु० आश्विन मास की पूर्णिमा का महोत्सव ।

कोट-सज्ञा पु० १ गढ़ । दुर्ग । किला । २. प्राचीर । सहर-पनाह । ३. राजप्रासाद । महल । ४ समूह । झुंड ।

सज्ञा पु० [अग्रे०] एक अमेजी पहनावा ।

कोटपाल-सज्ञा पु० १ दुर्ग का रक्षक । २ किले की रखवाली करनेवाला । ३. किलेदार ।

कोटर-सज्ञा पु० १ खोह । पेड़ का खोखला भाग । २ दुर्गरक्षा के लिए लगाया जाने-वाला कृत्रिम बन । खोढरा ।

कोटवारण-सज्ञा पु० चारदिवारी । प्राचीर ।

कोटवो-सज्ञा स्त्री० नग्न स्त्री । बिना वस्त्र पहनी हुई स्त्री ।

कोटा-सज्ञा पु० [अग्रे०] १ किसी वस्तु की निर्धारित मात्रा । दुकानदार या लाइसेंसवालों की मिलनेवाला निर्धारित सामान । सरकार द्वारा नियंत्रित (कंट्रोल) वस्तु से कार्ड आदि पर मिलनेवाला सामान, जैसे बपड़े या चीनी वा कोटा । २ राजपूताने की एक रियासत, जो अब राजस्थान सभ में है । ३ इसी रियासत का एक नगर । कोटि-सज्ञा स्त्री० १. शस्त्रों का अगला नुकीला भाग । २ धनुष का सिरा । ३. बर्ग । श्रेणी । ४. विभाग, राज्य, जाति । ५ विवाद का पूर्वपक्ष । ६ उत्तमता ।

उष्णटप्ता । ७ समूह । जत्था । ८ पाला  
भाग । ९ पुष्पध । १० विगी ९०  
घन के साथ के दा भागों में से पर । ११  
अर्धचन्द्र का तिरा ।  
वि० परोट । ती लाग ।  
कोटिक-वि० १ बराह । २ अपार ।  
अधिक । असत्य ।  
कोटिर-मज्ञा पु० १ जटा । २ मुष्ट ।  
कोटिश-त्रि० वि० अनेक प्रकार म । कई  
हम से । हर तरह से ।  
वि० अनवानेक । अपार ।  
कोटोश-वि० परोटपती । महाघनी ।  
कोटोपाधीन-वि० "बराहपती" ।  
कोट-मज्ञा पु० दे० "कुट" ।  
कोट-वि० कुष्ठित । (दाँत) खटपन, ऐसी  
पटाई जिससे कोई वस्तु न साई जा सके ।  
कोठर-मज्ञा पु० "कोटर" ।  
कोठरी-सज्ञा स्त्री० छोटा कमरा । चारा और  
से घिरी हुई छोटी जगह ।  
कोठा-मज्ञा पु० १ चौड़ा कमरा । चड़ी  
वाठरी । २ मंडार । ३ मकान का  
ऊपरी हिस्सा । ४ पट । उदर । ५ घर ।  
खाना । ६ गर्भाशय । घरन । ७  
शरीर या मस्तिष्क का भीतरी भाग ।  
८ किसी एक अंग का पहाड़ा, जो एक  
खाने में लिखा जाता है ।  
यो०-कोठेवाली-वेद्या ।  
मुहा०-कोठा विगडना=अपच आदि रोग  
होना । कोठा साफ हाना=साफ दस्त होना ।  
कोठार-सज्ञा पु० अनाज आदि रखने का  
भंडार ।  
कोठारी-सज्ञा पु० भंडारी । भंडार का प्रबंध  
करनेवाला ।  
कोठिला-मज्ञा पु० दे० 'कुठला' ।  
कोठी-सज्ञा स्त्री० १ हवेली । बड़ा पक्का  
मकान । २ बंगला । ३ महाजनी घर,  
जहाँ खनदेन होता है । बड़ी दुकान । ४  
अनाज रखने का कुठला । ५ वृक्षेदानी ।  
गर्भाशय । ६ हट या पत्थर की वह  
जाड़ाई जो वृक्ष की दीवार या पुल के  
खम्भे में पानी के भीतर की जमीन तक

होती है । ७ वाँसो या समूह, जो एक साथ  
उगते हैं ।  
कोठीवाल-सज्ञा पु० १ गाढ़वार । महाजन ।  
२ बड़ा व्यापारी । ३ महाजनी अक्षर ।  
४ कोठीवाला । ५ मुठिया ।  
कोठीवाली-सज्ञा स्त्री० १ गाढ़वांगी ।  
२ कोठी चलाने का काम । ३ कोठीवाल  
अक्षर ।  
कोठना-त्रि० स० १ गाढा । खत की  
मिट्टी मोदना । २ मोदना ।  
कोठा-सज्ञा पु० १. चाबुत । जानवरो को  
चलाने के लिए सूत या चमड़े में बंधा हुआ  
छोटा डंडा । साँटा । दूरा । २ उत्तेजक  
वात । ३ दिल का चुभनेवाला वान । ४  
चेतावनी ।  
मुहा०-कोड़ा करना=बग म करना ।  
बानू में करना ।  
कोड़ाई-मज्ञा स्त्री० काटने की क्रिया या  
मजदूरी ।  
कोड़ो-सज्ञा स्त्री० बीसी । बीस की सख्या ।  
कोड़-मज्ञा पु० कुष्ठरोग । रक्त और त्वचा  
संबंधी एक बीमारी ।  
मुहा०-कोड़ चूना या टपकना=कोड़ के  
कारण अंग का गल-गलकर गिरना । काढ़ की  
खाज या कोड़ में खाज=दुख पर दुःख ।  
कोड़ी-सज्ञा पु० [स्त्री० कोड़िन] कुष्ठरोगी ।  
जिसे कोड़ रोग हुआ हो ।  
कोण-सज्ञा पु० १ काना । एक बिंदु पर  
मिलती या कटती हुई दो ऐसी रेखाओं के  
बीच का अंतर, जो मिलकर एक न हो  
जाती हो । घर का एक काना । २ अस्वा  
का अगला भाग । गोसा । ३ विदिशा ।  
दो दिशाओं के बीच की दिशा । कोण  
चार है—अग्नि, नैऋत्य, ईशान और  
वायव्य । ४ बीणा आदि बजाने का  
साधन । ५ कमाना । ६ गुंज । ७  
मंगलग्रह । ८ धनिग्रह ।  
कोत\*-सज्ञा स्त्री० दे० "कुवत" ।  
कोतल-सज्ञा पु० १. राजा की सवारी  
का घोड़ा । २ सजा-सजाया घोड़ा जिस पर  
कोई सवार न हो । जलूसी घोड़ा ।

कोतवाल-सज्ञा पु० १. नगरपाल । पुलिस का एक विशेष कर्मचारी । २. पुलिस का डिप्टी सुपरिण्टेण्डेंट जिसके जिम्मे शहर का प्रबन्ध हो ।

कोतवाली-सज्ञा स्त्री० १. कोतवाल का काम या उसका पद । २. पुलिस के कोतवाल का कार्यालय ।

कोता\*†-वि० [स्त्री० कोती] १. कम । अल्प । २. छोटा ।

कोताह-वि० १. छोटा । २. कम ।

कोताही-सज्ञा स्त्री० १. कमी । कृटि । २. टालमटोल ।

कोत्ति\*-सज्ञा स्त्री० दे० "कोद" ।

कोयमोर-सज्ञा पु० १. कच्ची धनियाँ । २. धनियाँ की हरी पत्ती ।

कोयला-सज्ञा पु० १. पेट । २. बड़ा थैला ।

कोयली-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लम्बी थैली, जिसमें रुपया-पैसा रखकर कमर में बाँधते हैं । हिमयानी ।

कोदड़-सज्ञा पु० १. कमान । धनुष । २. भौंह । ३. एक देश का नाम । ४. एक प्रकार की बेल ।

कोद\*†-सज्ञा स्त्री० १. ओर । बिसा । तरफ । २. पक्ष । ३. कोना ।

कोदो, कोबी-सज्ञा पु० १. अन्न-विशेष । २. एक प्रकार का धान ।

मुहा०-कोदो देकर पढ़ना या सीखना= १. मुफ्त शिक्षा पाना । २. सस्ती शिक्षा पाना । ३. अध्यापक से बेगार में पढ़ना । ४. अपूर्ण शिक्षा । छाती पर कोदो दलना= किसी को दिखलाकर कोई ऐसा काम करना, जो उसे बहुत बुरा लगे ।

कोदव्य-सज्ञा पु० "कोदो" ।

कोध\*-सज्ञा स्त्री० दे० "कोद" ।

कोन, कोना-सज्ञा पु० १. खूंट । २. कोण ।

मुहा०-कोना कुथरा= १. कोण । २. बिचारा । छोर । गोशा ।

कोनिया-सज्ञा स्त्री० पटनी । दीवार के कोने पर चीखें रखने के लिए बैठाई हुई पटरी या पटिया ।

कोप-सज्ञा पु० [वि० कुपित] १. क्रोध । गुस्सा । २. रागद्वेष ।

कोपन-वि० [स्त्री० कोपना] कोप करने-वाला । क्रोधी । गुस्तेवर ।

कोपना\*-क्रि० अ० कोप करना । क्रोध करना । क्रुद्ध होना । नाराज होना । रूठना ।

कोपभवन-सज्ञा पु० ऐसा घर जिसमें कोई मनुष्य रूठकर जा रहे ।

कोपर या कोपल-सज्ञा पु० १. बाला । वृक्ष आदि की नई मुलायम पत्ती । २. कटोरा । ३. कटोरी । ४. तर्पण करने का पात्र । ५. नवीन दल । ६. फूलों की पखुडियाँ ।

कोपाध-वि० अत्यन्त क्रुद्ध । क्रोध में अन्धा या बावला ।

कोपान्वित-वि० क्रोधित । क्रुद्ध ।

कोपि-सर्व० कोई । कोई भी ।

कोपित-वि० क्रोधित ।

कोपी-वि० क्रोधी । क्रोध करनेवाला ।

कोपीन-सज्ञा पु० दे० "कोपीन" । लँगोटी ।

कोप्ता-सज्ञा पु० कूटे हुए मांस का बना हुआ एक तरह का कबाब ।

कोविद-सज्ञा पु० देखिए 'कोविद' ।

कोबी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की तरकारी । गोभी । छत्राक ।

कोमल-वि० १. मुलायम । नरम । २. कच्चा । ३. सुकुमार । नाजुक । ४. सुंदर । मनोहर । ५. स्वर का एक भेद । मीठा, (सगीत) खूबसूरत ।

कोमलता-सज्ञा स्त्री० १. मृदुता । मृदुलता । सुकुमारता । नरमी । २. मधुरता ।

कोमलताई-सज्ञा स्त्री० मृदुलता । कोमलता ।

कोमला-सज्ञा स्त्री० कोमल और प्रसादगुण-युक्त अक्षर-योजना या वृत्ति ।

कोप-सर्व० कोई ।

कोपर-सज्ञा पु० सन्झी । सागपात । तरकारी ।

कोयल-सज्ञा स्त्री० कोकिल ।

कोयला-सज्ञा पु० १. जली हुई लकड़ी का धुआं हुआ अगारा जो जला होता है । २.

एक रानिज पदार्थ जो जलाने में काम में आता है। ३. सीरा। ४. कोला।

कोया-सज्ञा पु० १. आँस या कोना। २. आँस या वेला।

सज्ञा पु० बटहल या बीजबोस।

कोरंगी-सज्ञा स्त्री० छोटी इलायची।

कोर-सज्ञा स्त्री० बिगारा। छोरा। नगर।

कोरक-सज्ञा पु० १. मुकुल। गली। २. फूल की बटोरी। फूल या गली के आधार के रूप में हरी पत्तियाँ। ३. मृणाल। कमल की नाल या डटी। ४. अविबसित पुष्प। ५. नीतल चीनी। ६. गली के समान कोई भी वस्तु।

कोरकसर-सज्ञा स्त्री० १. दोष शीर श्रुति। एवं शीर बमी। २. बमी-बेशी।

कोरना-क्रि० स० कोटना। खोदना। खरो-कना। कुतरना।

कोरमा-सज्ञा पु० शेरवा रहित, भुना हुआ मांस।

कोरहन-सज्ञा पु० एक प्रकार का धान।

कोरा-वि० [स्त्री० कोरी] १. नवीन। नया। अछूता। जो काम में न आया हो।

२. (मिट्टी का बरतन या कपड़ा) जो धोया न गया हो। ३. सादा। जिस पर कुछ भी न लिखा हो। ४. आपत्ति या दोष से बचा हुआ। बेदाग। ५. रहित। बचित। विहीन। खाली। ६. धनहीन। ७. जड़। मूर्ख। अपठ। अधिचन। ८. केवल। सिर्फ। उल्ल' के खेत की सिंचाई।

मुहा०-कोरी धार या वाढ=हथियार की धार जिस पर अभी सान रखी गई हो। कोरा जवाब=स्पष्ट जवाबों में अस्वीकार। साफ इनकार। कोरे रहना=निरास होना। मनोरथ पूरा न होना। सज्ञा पु० १. बिना निनारे की रेशमी धोती। २. उद्यम। गोद।

कोरापन-सज्ञा पु० १. अछूतापन। २. नवीनता।

कोरि-वि० दे० "कोटि"।

अ० सुरवकर। गोदकर।

कोरी-सज्ञा पु० [स्त्री० कोरि] १. कगडा बुननेवाली एक जाति २. हिन्दू जुलाहा। वि० सादी। नवीन।

कोर्ट-सज्ञा पु० [अंग्रे०] अदालत। न्यायालय। बचहरी।

कोल-सज्ञा पु० १. मूवर। गृधर। २. गोद। ३. घेर। बदरीफल। ४. ताले भर की तीन। ५. वाली मिर्च। ६. दक्षिण भारत का एक प्राचीन राज्य। ७. एक जगली जाति। ८. गाली। ९. पाल। १०. सेंकरी गली। ११. पहाड़ियाँ। १२. चित्रव। १३. शनिग्रह। १४. कोरा।

कोलना-क्रि० स० खोदकर बीच में पोला करना।

कोला-सज्ञा पु० दे० "कोल"।

कोलाहल-सज्ञा पु० बलरव। शोरगुल। मनुष्यों या जानवरों की अस्पष्ट जोर की भावाज।

कोले-सज्ञा स्त्री० गोद।

सज्ञा पु० १. कोरी। हिन्दू जुलाहा। २. कपड़े बुननेवाली एक छोटी जाति। ३. छाडी गली। ४. तन्तुवाय।

कोलियाना-क्रि० स० गोद में लेना।

कोल्हू-सज्ञा पु० चरखी। तेल या गन्ने से रस निखालन का यंत्र।

मुहा०-कोल्हू का बेल=बहुत फठिन परिश्रम करनेवाला। कोल्हू में डालकर पेरना =बहुत अधिक कष्ट देना।

कोविद-वि० [स्त्री० कोविदा] विद्वान्। पंडित। ज्ञानी। अनुभवी। बवि। निपुण।

कोविदार-सज्ञा पु० कचनार। एक प्रकार का वृक्ष।

कोश-सज्ञा पु० १. तरल पदार्थ रखने का बरतन। बाल्टी। प्याला। बरत। खोल। २. अड। अड। गोलक। ३. फूलों की बंधी गली। ४. गाड़ी का डिब्बा। ५. पंचपात्र नामक पूजा का बरतन। ६. तलवार, कटार आदि की म्यान। ७. खोल। आवरण। ८. वेदांत में निरूपित अतमय आदि पाँच आवरण जो

प्राणियों में होते हैं। १. येली। १०. एकत्रित धन। ११. अभिधान। यह शब्द जिसमें शब्दार्थ दिये गये हों। १२. समूह। राशि। भुंड। १३. अडकोश। १४. रेशम का कोया। कुसियारी। १५. कट-हल आदि फला का कोया। १६. भण्डार। खजाना।

कोशकार-सज्ञा पु० १. शब्दकोश बनाने-वाला। अर्थ सहित शब्दों का क्रमानुसार संग्रह करनेवाला। २. जो म्यान बनाए। ३. रेशम का कीड़ा।

कोशकोट-सज्ञा पु० रेशम का कीड़ा।

कोशपाल-सज्ञा पु० १. खजाने की रक्षा करनेवाला। खजाची। कोपाध्यक्ष। २. बुबुर की एक पदवी।

कोशल या कोशला-सज्ञा पु० १. अयोध्या नगरी। २. सरयू नदी के किनारे स्थित उत्तर भारत का एक देश। ३. सूर्यवशी राजाआ की राजधानी। अयोध्या नगरी।

कोशलपुरी-सज्ञा स्त्री० अयोध्या।

कोशलाधीश-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र। कोशल के राजा।

कोशलवृद्धि-सज्ञा स्त्री० १. अडकोश-वृद्धि या रोग। २. धन की बढ़ती।

कोशवृद्धि-सज्ञा स्त्री० अडकोश बढ़ने की बीमारी।

कोशाड-सज्ञा पु० अडकोश।

कोशाची-सज्ञा स्त्री० दे० 'कोशाची'।

कोशागार-सज्ञा पु० धन रखने का स्थान। खजाना।

कोशाधिपति-सज्ञा पु० खजाची। कोपाध्यक्ष।

कोशिश-सज्ञा स्त्री० उपाय। प्रयत्न। चपटा।

कोष-सज्ञा पु० खजाना। धन एकत्रित करने का स्थान।

कोपाध्यक्ष-सज्ञा पु० १. खजाची। २. जमा धन का हिसाब विस्तार रखनेवाला अधिकारी। ३. भण्डारी।

कोष्ठ-सज्ञा पु० १. भीतरी हिस्सा। उदर का मध्य भाग। पेट का भीतरी भाग।

शरीर का कोई भीतरी भाग। जैसे—पक्वाशय, गर्भाशय आदि। २. घर का भीतरी भाग। कोठा। ३. गोला। ४. भंडार। कोश। ५. खाना। ६. चहार-दीवारी। ७. अन्न एकत्रित करने का स्थान। खजाना।

कोष्ठक-सज्ञा पु० १. खाना। कोठा। किसी वस्तु से घिरा स्थान। २. सारिणी। किसी तरह का चक्र जिसमें बहुत से खान या घर हों। ३. लिखन में एक तरह के चिह्नों का जोड़ा जिसके अंदर कुछ लिखा जाय। जैसे [], {}, (), ।

कोष्ठवद्ध-सज्ञा पु० १. मलाबरोष। बब्ज। २. पट की बीमारी।

कोष्ठागार-सज्ञा पु० भंडार। कोष। खजाना।

कोष्ठी-सज्ञा स्त्री० १. जन्मपत्नी। २. कुडली।

कोस-सज्ञा पु० दो मील की दूरी। दूरी की एक नाप।

मुहा०—कोसा या काल कोसो=बहुत दूर। कोसो दूर रहना=अलग रहना।

कोसना-त्रि० स० शाप देना। वाता से दुखी करना। गालियाँ देना।

मुहा०—पानी पी-पीकर कोसना=बहुत अधिक कोसना। कोसना काटना=शाप और गाली देना।

कोसा-सज्ञा पु० [स्त्री० कोसिया] १. एक प्रकार का रेशम। २. छींगी। पत्नी। ३. मिट्टी का बड़ा बीया। बसोरा।

कोसा-काटी-सज्ञा स्त्री० शाप। गाली। बददुआ।

कोसिला-सज्ञा स्त्री० दे० 'कोसल्या'। कोसी-सज्ञा स्त्री० एक नदी। कोशिरा। कोहूंडोरी-सज्ञा स्त्री० उदर की पीठी और कुम्हड़ के गूद से बनाई हुई बरी। कुम्हंडोरी।

कोह-सज्ञा पु० [फा०] १. शीत। पहाड़। पर्वत। २. नाप। रोप। प्राप। गुस्सा। ३. एक प्रकार का मृश।

कोहनी-सज्ञा स्त्री० द० "कुहनी" । बांह के बीच की गाँठ ।

कोहलूर-सज्ञा पु० मुगल कालीन भारत का प्रसिद्ध हीरा ।

कोहलूर-सज्ञा पु० १ देवगृह । ऐसा घर जिसमें विवाह के समय कुल-देवता स्थापित किए जाते हैं । २ कौतुकगृह । ३ विवाह के बाद नरवधू के बैठन के लिए राजा हुआ घर ।

कोहरा-सज्ञा पु० कुहासा । कुहरा ।

कोहल-सज्ञा पु० १ मुनि विशेष । २ आठमशास्त्र के प्रथम प्रणेता । ३ प्राकृत व्याकरण के एक विरचय । ४ सगीत विषय के एक लेखक । ५ एक प्रकार का मादक द्रव्य । ६ अस्पष्ट बोली ।

कोहान-सज्ञा पु० ऊँट की पीठ पर का बूझ या ढिल्ला ।

कोहाना-+वि० अ० १ रुठना । मान करना । २ नाराज होना । ३ शोध करना । गुस्सा होना । ४ खिसियाना ।

कोहाव-सज्ञा पु० १ शोध । शोध । २ रुठना । मान करना ।

कोहिस्तान-सज्ञा पु० पहाड़ी प्रदेश ।

कोही-वि० शोध । शोध करनेवाला । वि० [पा०] पहाड़ी ।

कोष-सज्ञा स्त्री० केपाच । एक प्रकार की बल विक्षप । कपिकच्छु ।

कोछ-सज्ञा स्त्री० दे० वींच ।

कोतय-सज्ञा पु० १ कुत्ती के पुत्र । २ अजुन का पड़ ।

कोती-सज्ञा स्त्री० कुन्ती । पाण्डवों की माता ।

कोती-सज्ञा पु० कुत्तधारी । भाला धारण करनेवाला ।

कोतय-सज्ञा पु० १ कुन्ती के पुत्र । २ पाण्डव । ३ अजुन ।

कोष-सज्ञा स्त्री० १ बिजली की चमक । २ प्रकाश । दीप्ति । ३ प्रताप ।

कोषना-वि० अ० बिजली का चमकना ।

कोषा-सज्ञा स्त्री० १ बिजली । विद्युत् । २ चमक ।

कोषनी-सज्ञा स्त्री० नरधनी ।

कोला-सज्ञा पु० १ मीठा नींबू । नारंगी । २ कमला ।

को-विभक्ति (कर्म कारक) को ।

कोमा-सज्ञा पु० दे० "कौमा" । काम । काव ।

कोमाना-+वि० अ० १ अचांच बटवट करना । २ सोने में बरना । ३ मोचका होना । बचपवाना ।

कोटिल्य-सज्ञा पु० १ कपट । कूटिलता । चालाकी । २ चाणक्य का एक नाम ।

कोटबिष-वि० १ कूटव-संबंधी । कूटस्वभा । २ परिवार-संबंधी ।

कोढा-सज्ञा पु० १ घाल विशेष । घड़ी कोडी । २ जाड़े के दिनों में तापने के लिए जलाई हुई आग । अलाव ।

कोडिन्य-सज्ञा पु० कुण्डिन मुनि का पुत्र । विष्णुपुत्र । चाणक्य ।

कोडिया-वि० १ कुछ स्थायी लिय हुए सफेद । २ कोडी के रंग का । सज्ञा पु० किलकिला पक्षी ।

कोडियाला-वि० हलका नीला रंग जिसमें गुलाबी की कुछ भाव हो । कोडी के रंग का । मोकई ।

सज्ञा पु० १ एक प्रकार का रंग । २ कजूस धनादक । ३ एक प्रकार का विपरीत सर्प । ४ पीषा विशेष जिसमें छोटे छोटे फूल लगते हैं । ५ कोडिल्ला पक्षी । किलकिला । ६ सरयू नदी ।

कोडियाही-सज्ञा स्त्री० मजदूरी की रीति विशेष जिसमें प्रतिदिन कुछ कोडिया दी जाती हैं ।

कोडिल्ला-सज्ञा पु० पक्षी विशेष जो मछली खाता है । किलकिला ।

कोडी-सज्ञा स्त्री० १ घोष की जाति का एक समुद्री जीव । पराटिका । कपटिका । २ धन । द्रव्य । ३ बमार्द । स्फुरा-पैसा ।

४ वह वर जो सम्राट् अपने अधीन राजाओं से लेता है । ५ आँख का डला । ६ छाती के नीचे बीचोबीच की वह छोटी हड्डी जिस पर सबसे नीचे की दोनो पसलियाँ मिलती हैं । ७ बटार की नोक । ८ जघे काँख या गले की गिल्टी ।

मुहा०—कौड़ी काम का नही=निकृष्ट ।  
 निक्कम्मा । कौड़ी का, या, दो कौड़ी का=१  
 तुच्छ । निक्कम्मा । जिसका कुछ मूल्य न हो ।  
 २ निकृष्ट । बुरा । खराब । कौड़ी के  
 तीन तीन होना=१ बहुत सस्ता होना ।  
 २ तुच्छ होना । ना-चीज होना ।  
 धेकदर होना । कौड़ी कौड़ी अवा करना,  
 धुकाना या भरना=सारा ऋण चुका  
 देना । कुल बेबाक कर देना । कौड़ी कौड़ी  
 जोड़ना=बहुत थोड़ा-थोड़ा करके धन एकत्र  
 करना । बड़े कष्ट से रुपया बटोरना । कौड़ी  
 भर=जरा सा । बहुत थोड़ा सा । कानी या  
 झुझी कौड़ी=१ टूटी या फूटी कौड़ी ।  
 २ बहुत थोड़ा धन । चित्ती कौड़ी=  
 वह कौड़ी जिसकी पीठ पर उभरी हुई  
 गाँठ हो । (इसका व्यवहार जुए में होता  
 है)

कोणप-सज्ञा पु० १ राक्षस । दैत्य ।  
 २ अधर्मी । पापी । ३ निशाचर ।  
 कौत्सिग\*—सज्ञा पु० दे० "कौतुक" ।  
 कौतुक-सज्ञा पु० [वि० कौतुकी] १ कूतू-  
 हल । २ अचमा । आश्चर्य । ३ परि-  
 हास । विनोद । दिल्लगी । ४ उत्सव । खेल  
 तमाशा । खलकूद । ५ आनन्द । प्रसन्नता ।  
 हर्ष ।

कौतुकिया-सज्ञा पु० १ बिलवाड करने  
 वाला । २ सिलाडी । नट । ३ विवाह-  
 सबध करानेवाला, नाऊ या पुरोहित ।  
 कौतुकी-वि० १ बिलवाड करनेवाला । परि-  
 हास करनेवाला । विनोदशील । २ विवाह  
 सबध करानेवाला । ३ खेल-तमाशा कराने  
 वाला । ४ हर्षाभिलाषी । ५ रसिक ।  
 कौतूहल-सज्ञा पु० दे० "कूतूहल" । १  
 आश्चर्य । २ विस्मय । ३ हर्ष । ४ कौतुक ।  
 कौय-वि० १ कौनसी तिथि ? कौन  
 तारीख ? २ कैसा सबध ? कैसा  
 प्रयोजन ?

कौया+वि० १ गिनती में किस स्थान या  
 सराया का । २ किस सख्या का ?

कौन-सर्व० प्रश्नवाचक सर्वनाम ।

मुहा०—कौन सा=कौन, कैसा ? कौन

होना=१ क्या अधिकार रखना ? २ क्या  
 मतलब रखना ? ३ सबध या रिश्ते में  
 क्या लगना ?

कोनप-सज्ञा पु० दे० "कोणप" ।

कोप-वि० कूपोदक । कूप सबधी जल ।  
 कौपीन-सज्ञा पु० १ सन्यासिया के पहनने  
 की लेंगोटी । चीर । काछा । २ शरीर  
 के वे अंग जो कौपीन से ढक जायें । ३ पाप ।  
 अनुचित कर्म ।

कौम-सज्ञा स्त्री० जाति । वर्ण ।

कोमार-सज्ञा पु० [स्त्री० कोमारी] १  
 कुमार अवस्था । पाँच वर्ष तक की  
 शैशवावस्था । २ कुमार । ३ १६ वर्ष तक  
 की अविवाहित अवस्था ।

कौमारभृत्य-सज्ञा पु० घाय का काम । बच्चे  
 के लालन-पालन और चिकित्सा आदि की  
 विद्या ।

कौमारी-सज्ञा स्त्री० १ सात मातृकाओं  
 में से एक । २ किसी पुरुष की पहली स्त्री ।  
 ३ कार्तिक की शक्ति । ४ पार्वती ।  
 ५ बाराही कन्द ।

कौमी-वि० जातीय । जाति का । जाति-  
 सबधी ।

कौमुदी-सज्ञा स्त्री० १ ज्योत्स्ना । चन्द्रिका ।  
 चादनी । जुहैया । २ कार्तिकी पूर्णिमा ।  
 ३ आश्विनी पूर्णिमा । ४ काई । कुमु-  
 दिनी । ५ संस्कृत व्याकरण का एक  
 प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

कौमोदी, कौमोदकी-सज्ञा स्त्री० विष्णु  
 की गदा का नाम । श्रीवृष्ण की गदा ।  
 कौर-सज्ञा पु० १ कबल । मुँह में भोजन  
 डालना । ग्रास । गस्सा । २ चक्की में  
 पीसन के लिए एव बार में डाला जाने  
 वाला अनाज ।

मुहा०—मुँह का कौर छीनना=देखते देखते  
 किसी दूसरे का हिस्सा ले लेना ।

कौरना+वि० स० १ संकना । २ थोड़ा  
 भूतना । ३ गरम करना ।

कौरव-सज्ञा पु० [स्त्री० कौरवी] १  
 कुक्षदेश का निवासी । २ पुर राजा की  
 सत्तान । कृद्वंशज ।

वि० [स्त्री० कौरवी] पुरु-सवधी ।  
 कौरवपति-मज्ञा पु० दुर्योधन ।  
 कौरव्य-सज्ञा पु० १ कुरुराज का वंश । २. मुनि-विशेष । ३ महाभारत में वर्णित एक नगर ।  
 कौरा-सज्ञा पु० १. टुकड़ा । २ द्वार का वह भाग जिससे दरवाजा खुला रहने पर बिना चिपटे रहते हैं ।  
 कौरी-सज्ञा स्त्री० १ श्रवणार । गोद । २ आलिंगन । ३ बोना ।  
 कौलज-मज्ञा पु० वायसूल । पसलियों के नीचे का दर्द ।  
 कौल-सज्ञा पु० १ जा अच्छे वंश में पैदा हुआ हो । कुलीन । अच्छे खानदान का । २ ब्रह्म-ज्ञानी । ३ वाममार्गी ।  
 सज्ञा पु० ग्रास । कोर । बचल ।  
 कौल-सज्ञा पु० १ कथन । उक्ति । २ वाक्य । ३ प्रण । प्रतिज्ञा । वादा ।  
 यो०—कौल करार=बुद्ध प्रतिज्ञा ।  
 कौलदेय-सज्ञा पु० कुलदा का पुत्र ।  
 कौलव-सज्ञा पु० एकादश करणों का तीसरा करण ।  
 कौलिक-वि० कुल की परंपरा के अनुसार । सज्ञा पु० १ पालदी । २ दातव्य मत्त का अनुयायी । ३ ताती । तनुवाय ।  
 कौली-सज्ञा स्त्री० गोदी ।  
 कौलेय-सज्ञा पु० कुत्ता । कूकुर ।  
 कौलेली-सज्ञा पु० गन्धक ।  
 कौवा-सज्ञा पु० (स्त्री० कौवी) १ काला पक्षी विशेष । काक । कौवा । काग । २. पाश्चात्य । बहुत धूर्त मनुष्य । ३ बंडरी के सहारे के लिए लगाई जानवाली लकड़ी । कौहा । कहुवा । ४ घांटी । गले के अंदर, तानू के बीच का लटकता हुआ मांस का टुकड़ा । ५ सगर । सलरी । ६ मछली विशेष जिसका मुँह बगले की चौच की तरह होता है ।  
 यो०—कौवा मुहार या कौवा रोर=१ बहुत अधिक व्यवह्व । २ गहरा दोरसुल ।  
 कौवाठोठी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता जिससे पूल नीले और सफेद रंग के तथा

आकार मोवे की चीच की तरह होता है ।  
 कावतुडी । कावनासा ।  
 कौवाल-सज्ञा पु० जो मोवाली गाना गाता हो ।  
 कौवाली-गज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का गाना । २ इस पुन में गाई जानेवाली गजल । ३ कौवाली का घघा ।  
 कौवेर-सज्ञा पु० १ कुंजर सवधी । २ पूट नामक श्रौपध । ३ उत्तर दिशा ।  
 कौवेरी-सज्ञा स्त्री० १ उत्तर दिशा । २. कुंजर की शक्ति ।  
 कौशल-सज्ञा पु० १ दक्षिण । हुनर । कार्य करने का गुण । निपुणता । चतुराई । २ मगल । ३ कोशल देश का रहने-वाला ।  
 कौशली-सज्ञा स्त्री० जुहार । कुशल प्रश्न ।  
 कौशलेय-सज्ञा पु० रामचंद्र ।  
 कौशल्य-सज्ञा स्त्री० १ कौशल राज्य की कन्या, दशरथ की पटरानी, रामचन्द्र की माता । २ पुरराज की पत्नी । ३ धृतराष्ट्र की पत्नी । ४ पंचमुखी आरती ।  
 कौशाबी-सज्ञा स्त्री० भारत की एक अति प्राचीन नगरी जिसे कुश के पुत्र कौशाव ने बसाया था । वत्सपट्टन ।  
 कौशिक-सज्ञा पु० १ इद्र । २ कौशिक वंश में उत्पन्न । ३ विश्वामित्र । ४ कुशिक राजा के पुत्र गांधि । ५ कौशवार । ६ कोपाध्यक्ष । ७ शृंगार रस । ८ रेशमी वस्त्र । ९ उपपुराण विशेष । १० हनुमत् के मत से ६ रागों में से एक । ११ उल्लू । १२ गेंबला । १३ गुप्त धन को जाननेवाला । १४ शिव ।  
 कौशिकी-सज्ञा स्त्री० १ चंद्रिका । २ राजा कुशिक की पोती और ऋषिक मुनि की स्त्री । ३ नाट्य या नाटक में सरल वर्णवृत्ति जिसमें वरुण, हास्य और शृंगार रस हो । ४ एक रागिनी । ५. बिहार की कुशी नदी का पुराना नाम । ६ दुर्गा का एक नाम । ७ एक प्रकार की नाट्यपंजी ।  
 कौशिल्य-सज्ञा पु० एक गोन प्रवर्तक ऋषि ।

कोशेय-वि० १. रेशमी । रेशम का ।  
२. पीतांबर । पटवस्त्र ।

कोषिकी-संज्ञा स्त्री० दे० "कौशिकी" ।  
कोषितकी-संज्ञा स्त्री० १. ऋग्वेद की शाखा-  
विशेष । २. ऋग्वेद के अंतर्गत ब्राह्मण  
और उपनिषद्-विशेष ।

कोसल\*-संज्ञा पुं० दे० "कोशल" ।

कोसिक\*-संज्ञा पुं० दे० "कौशिक" ।

कोसिला\*†-संज्ञा स्त्री० दे० "कौशल्य" ।

कोसुम्भ-संज्ञा पुं० १ वनकुसुम । २. एक प्रकार  
का कोमल शाक ।

कोस्तुम्भ-संज्ञा पुं० १. पुराण के अनुसार  
समुद्र-मंथन से निकला हुआ मणि, जिसे  
विष्णु भगवान् अपने वक्षःस्थल पर  
पहने रहते हैं । २. एक प्रकार का  
तेल । ३. अंगुलियों को जोड़ने का एक  
तरीका ।

क्या-सर्व० प्रश्नवाचक शब्द, विशेषण ।  
कोन वस्तु या बात ?

मुहा०—क्या कहना है या क्या खूब !—  
प्रशंसासूचक वाक्य । वाह-वा ! धन्य !  
बहुत अच्छा है ! क्या कुछ, क्या क्या  
कुछ=बहुत कुछ । सब कुछ । क्या चीज  
है ! = १. नाचीज है । तुच्छ है । २. बहुत  
अच्छी चीज है । क्या जाता है ! = कुछ  
हानि नहीं । क्या नुकसान होता है ? क्या  
जानें ! = कुछ नहीं जानते । ज्ञात नहीं ।  
मायूम नहीं । क्या पड़ी है ? = क्या  
आवश्यकता है ? और क्या=हाँ ऐसा ही  
है । हाँ इसी प्रकार ।

वि० १. कितना ? किस क्रबर ? २. बहुत  
अधिक । ३. अनोखा । अपूर्व । ४. कैसा  
उत्तम ! बहुत अच्छा ।

क्रि० वि० क्यों ? किस लिए ?

अव्य० केवल प्रश्नसूचक शब्द ।

क्यारी-संज्ञा स्त्री० दे० "कियारी" । मेंड़ ।  
उपवन । खेत का विभाग ।

क्यों-क्रि० वि० १. किस कारण ? किस  
लिए ? कारण की जिज्ञासा करने का  
शब्द । \*२. किस प्रकार ? किस भाँति ?

यो० क्योंकि=इसलिए कि । इस कारण कि ।

मुहा०—क्योंकर=कैसे ? किस प्रकार ? क्यों  
नहीं ! = १. हाँ ऐसा ही है । ठीक कहते हो ।  
निःसंदेह । अवश्य, वेशक । २. हाँ ।  
जरूर । ३. कभी नहीं । मैं ऐसा नहीं  
कर सकता ।

क्रंदन-संज्ञा पुं० १. रोना । विलाप ।  
२. चिल्ला-चिल्लाकर रोना । ३. आँसू  
गिराना । ४. ललकारना ।

क्रंदनकारी-वि० विलाप करनेवाला ।

क्रकच-संज्ञा पुं० १. ज्योतिष में अशुभ  
योग-विशेष । २. करील का वृक्ष । कर-  
पत्र । ३. आरा । करवत । ४. नरक-  
विशेष । ५. गणित की एक विशेष क्रिया ।

क्रतु-संज्ञा पुं० १. संकल्प । निश्चय ।  
२. अभिलाषा । इच्छा । ३. प्रज्ञा ।  
विवेक । ४. जीव । ५. इंद्रिय । ६.  
यज्ञ, विशेषतः अश्वमेध । ७. विष्णु । ८.  
ब्रह्मा के एक मानस पुत्र जो सप्तर्षियों में  
से हैं । ९. आपाढ़ मास । १०. कृष्ण के  
एक पुत्र का नाम । ११. प्लक्ष द्वीप की  
एक नदी ।

यो०—क्रतुपति=विष्णु । क्रतुफल=यज्ञ का  
फल, स्वर्ग आदि ।

क्रतुद्वेयो-संज्ञा पुं० १. असुर । दानव ।  
दैत्य । २. नास्तिक ।

क्रतुध्वंसी-संज्ञा पुं० (दक्ष प्रजापति का  
यज्ञ नष्ट करनेवाले) शिव । महादेव ।

क्रतुपशु-संज्ञा पुं० घोड़ा ।

क्रतुपुरुष-संज्ञा पुं० नारायण । विष्णु ।

क्रतुगुण-संज्ञा पुं० देवता । देव ।

क्रतुविक्रयो-संज्ञा पुं० धन लेकर यज्ञ का फल  
बेचनेवाला ।

क्रतुमाली-संज्ञा स्त्री० औषध-विशेष ।  
किरयाली ।

क्रयन-संज्ञा पुं० १. सफेद चन्दन । ऊँट ।

क्रम-संज्ञा पुं० १. पैर रखने या डग भरने  
की क्रिया । २. परिपाटी, शैली । पूर्वापर-  
संबंधी व्यवस्था । तत्तबीब । सिलसिला ।  
३. काम ठीक से धीरे-धीरे करने की  
प्रणाली ।

मुहा०—क्रम-क्रम करके=शून्य-शून्य : धीरे-

धीरे । क्रम से, क्रम-क्रम से=धीरे-धीरे ।  
 ४. वेद-पाठ की एक रीति । ५. वैदिक  
 विधान । किसी काम के पीछे कौन मार्ग  
 करना चाहिए, इसकी व्यवस्था । कल्प ।  
 ६. पाप्यालवार-विशेष । ७. अनुक्रम ।  
 ८. भाँति ९. सक्ति । १०. आश्रमण ।  
 ११. चलन । रीति ।  
 \*सज्ञा पु० दे० "वर्म" ।  
 क्रमण-सज्ञा पु० १. पैर । २. पाँव । ३. पारे  
 के जो अठारह सस्वार हैं, उनमें से एक ।  
 क्रमनासा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "वर्मनासा" ।  
 क्रमभग-सज्ञा पु० १. नियम के विरुद्ध । २.  
 विधिहीनता । ३. साहित्य या एक  
 दोष ।  
 क्रमयोग-सज्ञा पु० विधि-नियोग ।  
 क्रमज्ञ-क्रि० वि० १. क्रम से । सिलसिले-  
 वार । २. धीरे-धीरे । थोड़ा थोड़ा  
 करके । शनै-शनै ।  
 क्रमसत्यास-सज्ञा पु० वह सत्यास जो क्रम  
 से ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम  
 के बाद लिया जाता है ।  
 क्रमगत-वि० १. क्रम से किसी रूप को  
 प्राप्त । २. परंपरागत । जो सदा से  
 होता आया हो । ३. क्रमान्वय ।  
 क्रमात्-क्रि० वि० क्रम या सिलसिले से ।  
 यथाक्रम । क्रम क्रम से । धीरे धीरे ।  
 क्रमानुकूल\*-क्रमानुसार-वि०, क्रि० वि०  
 क्रम से । श्रेणी के अनुसार । नियमानु-  
 सार । सिलसिलेवार । तरतीब से ।  
 क्रमानुयायी\*-वि० १. क्रम के अनुसार ।  
 २. व्यवस्थित । एक के बाद एक । ३.  
 नियमानुकूल ।  
 क्रमान्वय-वि० "क्रमानुयायी" ।  
 क्रमिक-क्रि० वि० १. क्रम से । क्रमागत ।  
 २. परंपरागत । ३. क्रमशः ।  
 क्रमुक-सज्ञा पु० १. सुपारी । २. कसैली ।  
 ३. नागरमोया । ४. बपास का फल ।  
 ५. पठानी लोच ।  
 क्रमेल, क्रमेलक-सज्ञा पु० ऊँट ।  
 क्रय-सज्ञा पु० मोल लेना । खरीदने का  
 काम । खरीदना ।

यौ०-क्रय-विश्रय=व्यापार । खरीदना  
 और बेचना ।  
 क्रयशीत-वि० खरीदा हुआ । मोल लिया  
 हुआ ।  
 क्रयणीय-वि० खरीदने लायक । मोल  
 लेने योग्य । प्रिय ।  
 क्रयिक-सज्ञा पु० प्रेता । मोल लेनेवाला ।  
 खरीदार ।  
 क्रयी-सज्ञा पु० क्रय करनेवाला । खरीदने-  
 वाला ।  
 क्रय-वि० जो बिके । बेचने के लिए  
 रखी हुई वस्तु । जो वस्तु बेचने के  
 लिए हो ।  
 क्रय-सज्ञा पु० मास । गोस्त ।  
 क्रयाद-सज्ञा पु० १. मास-भक्षक जीव । २.  
 मासाहारी । चिता की आग । ३. मास  
 खानेवाला जीव ।  
 क्रत-वि० १. दवा या दवा हुआ । २. अस्त ।  
 जिस पर आश्रमण हुआ हो । ३. आगे बढ़ा  
 हुआ । जैसे—सीमाक्रांत । ४. दबाया  
 गया ।  
 क्रतदर्शी-सज्ञा पु० सब जाननेवाला ।  
 ईश्वर ।  
 क्रति-सज्ञा स्त्री० १. गति । आगे बढ़ना ।  
 २. लग्न के बीच में एक कल्पित रेखा ।  
 ३. फेरफार । उलटफेर । ४. भारी परि-  
 वर्तन । अश्रम । जैसे—राज्य-क्राति । ५.  
 आश्रमण । ६. उपद्रव । अत्याचार । ७. सूर्य  
 का मार्ग । ८. दीप्ति । प्रकाश ।  
 क्रतिमूल-सज्ञा पु० १. वह वृत्त जिसपर  
 सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ  
 जान पड़ता है । २. राशिचक्र ।  
 क्रतिवृत्त-सज्ञा पु० सूर्यपथ । सूर्य का मार्ग ।  
 क्राइस्ट-सज्ञा पु० ईसा मसीह ।  
 क्रिबेट-सज्ञा पु० गेद-बल्ले का एक अंग्रेजी  
 खेल ।  
 क्रिचयन\*†-सज्ञा पु० चादयण व्रत विशेष ।  
 क्रिमि-सज्ञा पु० दे० १. "कृमि" । २. पेट  
 का एक रोग । कीड़ी ।  
 क्रिमिजा-सज्ञा स्त्री० लाल । लाह ।  
 क्रिय-सज्ञा स्त्री० मेघ राति ।

क्रियमाण-वि० १. किया जानेवाला ।  
ऐसा कार्य जो किया जा रहा हो । २.  
वर्तमान कर्म जिनका फल आगे मिलेगा ।  
३. प्रारम्भ कर्म । चार प्रकार के कर्मों  
का एक भेद ।

क्रिया-संज्ञा स्त्री० १. कर्म । किसी काम का  
होना या किया जाना । २. चेष्टा ।  
प्रयत्न । ३. गति । ४. अनुष्ठान ।  
५. आरम्भ । ६. व्याकरण में शब्द का वह  
भेद जिससे किसी व्यापार का होना या  
करना पाया जाय । जैसे—आना, मारना ।  
७. व्यवहार । ८. शौच आदि कर्म ।  
नित्यकर्म । ९. आद्य-आदि कर्म । १०.  
शपथ । ११. उपाय । १२. विधि ।  
१३. उपचार । चिकित्सा ।

यो०-क्रिया-कर्म=प्रत्येष्टि-क्रिया ।

क्रियाकांड-संज्ञा पु० कर्मकांड ।

क्रियाकार-संज्ञा पु० काम करनेवाला ।

क्रियाकर्त्तृकी-कार्य करनेवाला ।

क्रियाकलाप-१. किसी प्रकार का कार्य ।  
२. किसी कार्य के सब अंग ।

क्रियाचतुर-संज्ञा पु० १. किया, काम या घात  
में चतुर नायक । २. शृंगार रस में नायक  
का एक भेद ।

क्रियातिपत्ति-संज्ञा स्त्री० काव्यालंकार-  
विशेष जिसमें प्रकृति से भिन्न, कल्पना करके,  
किसी विषय का वर्णन किया जाय ।  
अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद ।

क्रियात्मक-वि० कार्य के रूप में किया हुआ ।  
करके दिखलाया गया ।

क्रियानिष्ठ-वि० १. कर्मशील । २. सध्या,  
तर्पण-आदि नित्य कर्म करनेवाला ।

क्रियान्वित-वि० कर्मान्वित ।

क्रियापट्ट-वि० चतुर । प्राज्ञ । दक्ष । विदग्ध ।  
क्रियापथ-चिकित्सा-विधि । औषध प्रयोग  
करने का ढंग ।

क्रियापर-वि० १. वरमंड । २. सुकर्मा ।  
३. पटु ।

क्रियापाद-संज्ञा पु० १. चतुष्पाद । २. व्यय-  
हार वा तीसरा पाद । ३. मादियो पर तपय  
करना ।

क्रियायोग-संज्ञा पु० १. योग दर्शन के अनुसार  
दैनिक पूजन इत्यादि । २. कार्य-कौशल ।  
क्रियाह्वय-संज्ञा पु० घातुरूप, आख्यात ।

क्रियार्थ-संज्ञा पु० वेद में यज्ञादि कर्म का  
प्रतिपादक विधि-वाक्य ।

क्रियालोप-संज्ञा पु० कर्म में विरक्ति । कर्म-  
निवृत्ति ।

क्रियावसन्त-वि० पराजित ।

क्रियावान्-वि० १. कर्मठ । कर्म में लगा  
हुआ । कर्मनिष्ठ । कार्य करनेवाला ।  
२. कर्म में नियुक्त ।

क्रियाविदग्धा-संज्ञा स्त्री० नायक पर किसी  
क्रिया-द्वारा अपना भाव प्रकट करनेवाली  
नायिका ।

क्रिया-विशेषण-संज्ञा पु० अव्यय शब्द ।  
व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे  
क्रिया के किसी विशेष भाव का बोध हो ।  
जैसे-कैसे, धीरे, कमशः, अचानक इत्यादि ।

क्रिस्तान-संज्ञा पु० ईसाई धर्म मानने वाला ।

क्रिस्तानी-वि० १. ईसाई-मत के अनुसार ।

२. ईसाइयो का ।

श्रीट\*†-संज्ञा पु० दे० "किरीट" । मुकुट ।  
सिर पर धारण किया जाने वाला  
गहना ।

श्रीडनक-संज्ञा पु० १. खेल । २. खेलने की  
वस्तु ।

श्रीडा-संज्ञा स्त्री० १. आमोद-प्रमोद ।  
खेल-कूद । २. कोतुक । ३. एक प्रकार  
का छंद ।

श्रीडामुग-संज्ञा पु० खेल के पशु । बानर  
आदि ।

श्रीडवन-संज्ञा पु० प्रमोदवन । केलिवान ।

श्रीडित-वि० श्रीडा किया गया । श्रीडा  
के काम में आया हुआ । जिससे श्रीडा की  
जाय ।

श्रीडचक्र-संज्ञा पु० १. एक प्रकार का छंद ।  
२. अत्यन्त प्रसन्न करनेवाला ।

श्रीत-वि० १. मोल लिया हुआ । २.  
मरीदा गया ।

संज्ञा पु० १. दे० "श्रीतक" । २. मोल लिया  
हुआ दान ।

धीरे । क्रम से, क्रम-क्रम से=धीरे-धीरे ।  
 ४. वेद-गाठ की एक रीति । ५. वैदिक  
 विधान । किसी काम के पीछे कौन कार्य  
 करना चाहिए, इसकी व्यवस्था । मत्स्य ।  
 ६ वाय्यालवार विशेष । ७ अनुक्रम ।  
 ८ भाति ९ राहित । १० आक्रमण ।  
 ११ चलन । रीति ।  
 \*सज्ञा पु० दे० "क्रम" ।  
 क्रमण-सज्ञा पु० १ पैर । २ पाँव । ३ पारे  
 के जो अठारह स्वरार हैं, उनमें से एक ।  
 क्रमनासा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "क्रमनासा" ।  
 क्रमभग-सज्ञा पु० १ नियम के विरुद्ध । २  
 विधिहीनता । ३ साहित्य का एक  
 दोष ।  
 क्रमयोग-सज्ञा पु० विधि नियोग ।  
 क्रमश-क्रि० वि० १ क्रम से । सिलसिले-  
 वार । २ धीरे-धीरे । थोड़ा थोड़ा  
 करके । शनै-शनै ।  
 क्रमसन्धात-सज्ञा पु० वह सन्धात जो क्रम  
 से ब्रह्मचर्य, गृहस्थ और वानप्रस्थ आश्रम  
 के बाद लिया जाता है ।  
 क्रमागत-वि० १ क्रम से किसी रूप को  
 प्राप्त । २ परंपरागत । जो सदा से  
 होता आया हो । ३ क्रमान्वय ।  
 क्रमात्-क्रि० वि० क्रम या सिलसिले से ।  
 यथाक्रम । क्रम-क्रम से । धीरे धीरे ।  
 क्रमानुक्रम\*-क्रमानुसार-वि०, क्रि० वि०  
 क्रम से । श्रेणी के अनुसार । नियमानु-  
 सार । सिलसिलवार । तरतीब से ।  
 क्रमानुयायी\*-वि० १ क्रम के अनुसार ।  
 २ व्यवस्थित । एक के बाद एक । ३  
 नियमानुक्रम ।  
 क्रमान्वय-वि० "क्रमानुयायी" ।  
 क्रमिक-क्रि० वि० १ क्रम से । क्रमागत ।  
 २ परंपरागत । ३ क्रमशः ।  
 क्रमक-सज्ञा पु० १ सुपारी । २ बसंतली ।  
 ३ नागरमोथा । ४ कपास का फल ।  
 ५ पठानी लोच ।  
 क्रमेल, क्रमेलक-सज्ञा पु० ऊँट ।  
 क्रय-सज्ञा पु० मोल लेना । खरीदने का  
 काम । खरीदना ।

यौ०-त्रय-वित्रय=व्यापार । खरीदना  
 और बेचना ।  
 त्रयशीत-वि० खरीदा हुआ । मोल लिया  
 हुआ ।  
 त्रयशीत-वि० खरीदने लायक । मोल  
 लेने योग्य । त्रय ।  
 त्रयिष-सज्ञा पु० प्रेता । मोल लेनेवाला ।  
 खरीदार ।  
 क्रयो-सज्ञा पु० त्रय करनेवाला । खरीदने-  
 वाला ।  
 त्रय्य-वि० जो बिके । बेचने के लिए  
 रखी हुई वस्तु । जो वस्तु बेचने के  
 लिए हो ।  
 त्रय्य-सज्ञा पु० मास । गोस्त ।  
 त्रय्याद-सज्ञा पु० १. मास भद्रक जीव । २.  
 मासाहारी । चिता की आग । ३ मास  
 खानेवाला जीव ।  
 त्रात-वि० १ दवा या दवा हुआ । २ ग्रस्त ।  
 जिस पर आक्रमण हुआ हो । ३ आगे बढ़ा  
 हुआ । जैसे-सीमाक्रांत । ४ दवाया  
 गया ।  
 क्रातदर्शी-सज्ञा पु० सब जाननेवाला ।  
 ईश्वर ।  
 क्राति-सज्ञा स्त्री० १ गति । आगे बढ़ना ।  
 २ खगोल के बीच में एक कल्पित रेखा ।  
 ३ फेरफार । उलटफेर । ४ भारी परि-  
 वर्तन । अपक्रम । जैसे-राज्य क्राति । ५  
 आक्रमण । ६ उपद्रव । अत्याचार । ७ सूर्य  
 का मार्ग । ८ दीप्ति । प्रकाश ।  
 क्रातिमण्डल-सज्ञा पु० १ वह भूत जिसपर  
 सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ  
 जान पड़ता है । २ राशिचक्र ।  
 क्रातियुत्त-सज्ञा पु० सूर्यपथ । सूर्य का मार्ग ।  
 क्राइस्ट-सज्ञा पु० ईसा मसीह ।  
 क्रिकेट-सज्ञा पु० गेंद-बल्ले का एक अंग्रेजी  
 खेल ।  
 क्रिचयन\*†-सज्ञा पु० चाद्रायण व्रत विशेष ।  
 क्रिमि-सज्ञा पु० दे० १ "टुमि" । २ वेद  
 का एक रोग । बीड़ी ।  
 क्रिमिज्ञा-सज्ञा स्त्री० लाल । लाल ।  
 क्रिय-सज्ञा स्त्री० नेप राशि ।

क्रियमाण-वि० १. किया जानेवाला । ऐसा कार्य जो किया जा रहा हो । २. वर्तमान कर्म जिनका फल आगे मिलेगा । ३. प्रारब्ध कर्म । चार प्रकार के कर्मों का एक भेद ।

क्रिया-सज्ञा स्त्री० १. कर्म । किसी काम का होना या किया जाना । २. चेष्टा । प्रयत्न । ३. गति । ४. अनुष्ठान । ५. आरम्भ । ६. व्याकरण में शब्द का वह भेद जिससे किसी व्यापार का होना या करना पाया जाय । जैसे—आना, मारना । ७. व्यवहार । ८. शौच आदि कर्म । नित्यकर्म । ९. श्राद्ध-आदि कर्म । १०. शपथ । ११. उपाय । १२. विधि । १३. उपचार । चिकित्सा ।

यी०-क्रिया-कर्म=प्रत्येष्टि-क्रिया ।

क्रियाकांड-सज्ञा पु० कर्मकांड ।

क्रियाकार-सज्ञा पु० काम करनेवाला ।

क्रियाकर्त्तृकौ-कार्य करनेवाला ।

क्रियाकलाप-१ किसी प्रकार का कार्य । २. किसी कार्य के सब अंग ।

क्रियाचतुर-सज्ञा पु० १. क्रिया, काम या धातु में चतुर नायक । २. शृंगार रस में नायक का एक भेद ।

क्रियातिपत्ति-सज्ञा स्त्री० काव्यालंकार-विशेष जिसमें प्रकृति से भिन्न, कल्पना करके, किसी विषय का वर्णन किया जाय । अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद । क्रियात्मक-वि० कार्य के रूप में किया हुआ । करके दिखलाया गया ।

क्रियानिष्ठ-वि० १. कर्मशील । २. सध्या, तर्पण-आदि नित्य कर्म करनेवाला ।

क्रियान्वित-वि० कर्मान्वित ।

क्रियापटु-वि० चतुर । प्राज्ञ । दक्ष । विदग्ध । क्रियापथ-चिकित्सा-विधि । औषध प्रयोग करने का ढंग ।

क्रियापर-वि० १. कर्मठ । २. सुकर्मा । ३. पटु ।

क्रियापाद-सज्ञा पु० १. चतुष्पाद । २. व्यवहार का तीसरा पाद । ३. साक्षियों का शपथ करना ।

क्रियायोग-सज्ञा पु० १. योग दर्शन के अनुसार दैनिक पूजन इत्यादि । २. कार्य-कौशल ।

क्रियारूप-सज्ञा पु० धातुरूप, आख्यात ।

क्रियार्थ-सज्ञा पु० वेद में यज्ञादि कर्म का प्रतिपादक विधि-वाक्य ।

क्रियालोप-सज्ञा पु० कर्म में विरक्ति । कर्म-निवृत्ति ।

क्रियावसन्त-वि० पराजित ।

क्रियावान्-वि० १. कर्मठ । कर्म में लगा हुआ । कर्मनिष्ठ । कार्य करनेवाला । २. कर्म में नियुक्त ।

क्रियाविदग्धा-सज्ञा स्त्री० नायक पर किसी क्रिया-द्वारा अपना भाव प्रकट करनेवाली नायिका ।

क्रिया-विशेषण-सज्ञा पु० अव्यय शब्द । व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव का बोध हो । जैसे—कैसे, धीरे, कमश, अचानक इत्यादि । क्रिस्तान-सज्ञा पु० ईसाई धर्म मानने वाला । क्रिस्तानी-वि० १. ईसाई-मत के अनुसार । २. ईसाइयो का ।

श्रीट\*†-सज्ञा पु० दे० "किरीट" । मुकुट । तिर पर धारण किया जाने वाला गहना ।

श्रीडनक-सज्ञा पु० १. खेल । २. खेलने की वस्तु ।

श्रीडा-सज्ञा स्त्री० १. आमोद-प्रमोद । खेल-कूद । २. कौतुक । ३. एक प्रकाश का छद्म ।

श्रीडामृग-सज्ञा पु० खेल के पशु । वानर आदि ।

श्रीडावन-सज्ञा पु० प्रमोदवन । केलिकानन । श्रीङ्गित-वि० श्रीडा किया गया । श्रीडा के काम में आया हुआ । जिससे श्रीडा की जाय ।

श्रीडाचक्र-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का छद्म । २. अत्यन्त प्रसन्न करनेवाला ।

श्रीत-वि० १. मोल लिया हुआ । २. खरीदा गया ।

सज्ञा पु० १. दे० "श्रीतक" । २. मोल लिया हुआ दास ।

श्रीतक-गजा पु० माता पिता का पा दवर  
उगते मोल लिया गया पुत्र ।  
श्रीतपत्र-गजा पु० शरद प्रवार के पुत्रों में  
से एक ।  
श्रीद-वि० शोधित । शोध में भरा हुआ ।  
श्रीगु-गजा पु० गुपारी । पूर्णफल ।  
श्रीगु-गजा पु० शृगाल । सियार ।  
श्रीर-वि० (स्त्री० पूरा) १ पछाही । दूसरा  
को कष्ट पहुँचानेवाला । २ निर्दय ।  
श्रीरान, जगली, श्रुम, श्राहन, श्रुती,  
शक्तिशाली, गरम, तेज । ३ तीक्ष्ण । तेज ।  
४ कठिन ।  
श्रीरा पु० प्रथम, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम,  
श्रीर एकादश राशि, भक्ति, लाल वनर,  
वाज पक्षी, सफ़ेद चील, रवि, मंगल,  
शनि, राहु, केतु । (संस्कृत शूर के अर्थ में ।)  
श्रीरवर्मा-गजा पु० १ शूर वाम करनेवाला ।  
भयकर कार्य करनेवाला । २ सूरजमुखी ।  
३. तितलीवी की बेल ।  
वि० दुरात्मा ।  
श्रीराम-गजा पु० १ तीसा गव । २ गन्धक ।  
श्रीराम-गजा पु० १ रवि । २ मंगल । ३  
शनि । ४ राहु । ५ केतु । ६ विषम  
राशि ।  
श्रीरता-गजा स्त्री० १ कठोरता । निष्ठुरता ।  
निर्दयता । २ दुष्टता ।  
श्रीरलोचन-गजा पु० १ शनिग्रह । २  
शनिेश्वर । निर्माही आँखें ।  
श्रीरस्वर-गजा पु० १ कर्कश ध्वनियुक्त ।  
२ भयकर शब्द ।  
श्रीराकार-गजा पु० १ रावण । २ भयकर  
आकार ।  
श्रीराचार-वि० भयानक । नृशस । निष्ठुर ।  
श्रीरात्मा-वि० दुष्ट स्वभाववाला ।  
श्रीर-श्रीगद्गदा का धर्म पिता जा उत शूली  
का सूचक है जिस पर ईसा मसीह चढ़ाय  
गया था ।  
श्रीतक-वि० त्रय वस्तु । खरीदने योग्य ।  
वस्तु मोल लेने योग्य ।  
श्रीता-गजा पु० त्रय करनेवाला । मोल  
लेनेवाला । खरीददार ।

श्रीय-वि० तरीदने योग्य ।  
श्रीद-गजा पु० १ त्रिगो वस्तु के मध्य में ।  
श्रीलिंगन में । दोनों बाँही के बीच का भाग ।  
२ श्रवण । गोद । दक्ष स्थल । ३  
पेड़ का मोड़ग ।  
श्रीदपत्र-गजा पु० १ नत्थी बिया हुआ पत्र ।  
२ एक पत्र व बाद उमने माथ ही दूसरा  
पत्र । ३ अतिरिक्त पत्र । दान-पत्र का  
परिशिष्ट या उसने माथ नत्थी बिया  
हुआ पत्र । ४ जमीना । ५ परिशिष्ट,  
पूरक ।  
श्रीध-गजा पु० १ वाप । रोप । गुस्ता । अमयं ।  
चित्त का उग्र भाव, जो कष्ट या हानि  
पहुँचानेवाले अथवा अनुचित काम करनेवाले  
के प्रति होता है । महाभारत में वर्णित एक  
दानव । २ ब्रह्मा के मोह से उत्पन्न । ३  
साठ सवयरा में उनसठवाँ सवयरा । बृह-  
स्पति के साठ वर्ष के चक्र का ५९ वाँ ।  
श्रीधज-गजा पु० मोह ।  
श्रीधज-गजा पु० १ श्रीध । त्राययुक्त ।  
२ वीक्षिक के एक पुत्र का नाम । ३  
अयुत के पुत्र और देवानिय के पिता का  
नाम । ४ एक सवयरा का नाम ।  
श्रीध-मूर्च्छित-वि० अतिवापी । त्राय स  
मूर्च्छित । गुस्ता में बेहोश ।  
श्रीधध-वि० शोध से श्रद्धा ।  
श्रीधध-वि० शोध । कपिन । नाराज ।  
श्रीध-वि० [स्त्री० श्रीधनी] १ त्राय  
करनेवाला, श्रीधयुक्त । गुस्तावर । २  
रागी ।  
श्रीध-गजा पु० १ कोत । २ मील । चील ।  
चिल्लाना, शोर ।  
श्रीध-गजा पु० शृगाल । सियार । गीदड़ ।  
श्रीध-गजा पु० १ एक पक्षी । २ हिमालय  
का एक पर्वत । ३ एक राक्षस । ४  
पुराणानुसार सात द्वीपों में से एक ।  
५ अस्त्र विषय । ६ वर्णवृत्ति विषय ।  
७ एक राक्षस का नाम ।  
श्रीध-गजा पु० कूरता । निष्ठुरता ।  
श्रीध-गजा पु० (भ्रमे०) धामोद प्रमोद या

सार्वजनिक विषयो पर विचार के लिए  
 बनी सस्था या समिति ।  
 कलक-सज्ञा पु० (अग्रे०) कार्यालय का मुशी ।  
 दफ्तर का बाबू ।  
 कवण-सज्ञा पु० घुंघरू का शब्द । वीणा  
 की भकार ।  
 कलात्मना-वि० १ विपादयुक्त । २  
 उद्दिग्धचित्त । ३ निष्ठाह ।  
 कलातवदन-वि० उदास चेहरेवाला । थका  
 हुआ ।  
 कलात-थका हुआ । थाल । थका-माँदा ।  
 कलाति-सज्ञा स्त्री १ परिश्रम । २ थकावट ।  
 थम । थालि ।  
 कलातिकर-वि० श्रमजनक । थालिकर ।  
 थकावट उत्पन्न करनेवाला ।  
 कलातिच्छिद-वि० विश्राम । स्वास्थ्य ।  
 विलम्ब-वि० आर्द्र । भीगा । सजल । गीला ।  
 मैला ।  
 क्लिप्त-सज्ञा स्त्री० (अग्रे०) कागज या वाला  
 आदि को ढवाने की कमान्नी ।  
 क्लिशित-वि० दे० क्लेशित । १ क्लेशयुक्त ।  
 दुखी । पीड़ित । २ क्लिष्ट ।  
 क्लिश्यमान-वि० पीड़ित । दुखी ।  
 क्लिष्टवर्मा-सज्ञा पु० १ कठार धर्म करने-  
 वाला । २ पीड़ित ।  
 क्लिष्ट-वि० १ दुःख से पीड़ित । दुखी ।  
 क्लेशयुक्त । २ कठिन, पूर्वापर विरुद्ध  
 (वाक्य) । ३ कठिनता से सिद्ध होन  
 वाला । धायल । धुरी दसा म । पुराना ।  
 जल्दी समझ म न आनवाला ।  
 क्लिष्टता-सज्ञा स्त्री० १ क्लिष्ट का भाव ।  
 २ कठिनाई । ३ आपत्ति ।  
 क्लिष्टस्थ-सज्ञा पु० १ क्लिष्टता । क्लिष्ट  
 का भाव । २ कठिनाई । ३ काव्य का  
 यह दोष जितने भाव समझ में न  
 आवे ।  
 क्लीब-वि० १ नपुंसक । नामदं । २  
 कामर । टरपोक । ३ पुरुषार्थहीन ।  
 ४ निर्बल । हिजड़ा ।  
 क्लीवता-सज्ञा स्त्री० नपुंसक भाव । दुर्बलता ।  
 पुरुष का अभाव ।

क्लीबत्व-सज्ञा पु० नपुंसकता । नामर्दी ।  
 क्लेद-सज्ञा पु० १ आर्द्रता । गीलापन ।  
 ओदापन । २ पसीना । ३ मेल ।  
 क्रि० धाव बहना, सड़ना ।  
 क्लेदक-सज्ञा पु० १ पसीना पैदा करने  
 वाला । २ शरीर में कफ विशेष,  
 जिससे पसीना बनता है । ३ शरीर की  
 दस प्रकार की अग्नियों में से एक । ४  
 राल की अधिकता ।  
 क्लेदन-सज्ञा पु० १ पसीना लाने की  
 क्रिया । २ एक प्रकार का कफ ।  
 क्लेदित-वि० १ भीगा हुआ । आर्द्र ।  
 २ पसीने से भीगा हुआ ।  
 क्लेश-सज्ञा पु० १ यत्रणा । दुःख ।  
 कष्ट । २ वदना । व्यथा । ३ भगडा ।  
 लडाई । ४. उत्पात ५ भय ।  
 क्लेशकर-वि० दुःखदायक । कष्टदायक ।  
 दुःख देनेवाला ।  
 क्लेशद-वि० दुःखकर । दुःख देनेवाला ।  
 क्लेशवान्-वि० १ आपत्तिग्रस्त । २  
 आपन्न । ३ दुर्गंत । जिस पर दुःख पड़ ।  
 क्लेशापह-वि० क्लेश या दुःख दूर करने-  
 वाला । सान्त्वना या आश्वासन देनेवाला ।  
 क्लेशित-वि० दुःखित । पीड़ित । जिस  
 क्लेश है ।  
 क्लेश्य-सज्ञा पु० नपुंसकता । १ क्लीवता ।  
 २ दुर्बलता । ३ अनुत्साह । ४ मानसिक  
 निर्वलता ।  
 क्लोम-सज्ञा पु० कृष्णस । दाहिनी ओर का  
 फफडा ।  
 क्लोरोफार्म-सज्ञा पु० (अग्रे०) बेहोश करने  
 की एव दवा ।  
 क्लवित्-वि० वि० नायद ही काई । बहुत  
 थम । काई ही । कुछ नहीं । कभी ।  
 कवण-सज्ञा पु० १ घनि । २ वीणा आदि  
 का शब्द ।  
 कवणित-वि० १ शब्द का गुजार करता हुआ ।  
 २ यंत्रता हुआ ।  
 कवय-सज्ञा पु० काड़ा । पानी में डबाकर  
 ओषधिया का निराता हुआ गाढ़ा रस ।  
 जोगीश । नियाम ।

कवार-सज्ञा पु० आश्विन महीना ।  
 कवारपन-सज्ञा पु० अविवाहिता अवस्था ।  
 कवारापन । कवारा होने का भाव ।  
 कुमारापन ।  
 कवारा-सज्ञा पु०, वि० [स्त्री० कवारी]  
 अविवाहित । कुमारा ।  
 कवारापन-सज्ञा पु० दे० "कवारपन" ।  
 कवारेंटाइन-सज्ञा पु० (अंग्रे०) यह स्थान  
 जहाँ बाहर से घाय्य हुए लोग इमलिए कुछ  
 समय तक रोक रखे जाते हैं कि उनके द्वारा  
 कोई सन्नामक रोग देश में न फैले ।  
 यो०-कवारेंटाइन लीव-ऐसे सरकारी  
 कर्मचारियों को, जिनको या जिनके घर  
 में किसी को छूत की बीमारी हो, अवरोधस्ती  
 कुछ दिनों की छुट्टी देना ।  
 क्षतव्य-वि० क्षम । क्षमा करने के  
 योग्य ।  
 क्षई-स्त्री० क्षयरोग । कफ और खून के  
 मूँह से निकलने की बीमारी-सूखी खासी ।  
 क्षण-सज्ञा पु० [वि० क्षणिक] १ लहमा ।  
 छन । काल का समय का सबसे छोटा भाग ।  
 पल का चतुर्थांश । २ पाल । ३ अवसर ।  
 पीया । ४ समय । ५ पर्व का दिन ।  
 उत्सव ।  
 मुहा०-क्षण मात्र=थोड़ी देर ।  
 क्षणद-सज्ञा पु० १ जल । २ ज्योतिषी ।  
 ३ स्त्रीधिया । ४ जिसे रात में न दिखे ।  
 क्षणदांघ-वि० १ रात के अंधे । २ प्राणी-  
 विशेष । ३ उल्लू ।  
 क्षणदा-सज्ञा स्त्री० रात्रि । निशा ।  
 क्षणदाकार-सज्ञा पु० चन्द्रमा ।  
 क्षणद्युति-सज्ञा स्त्री० विद्युत । चपला ।  
 बिजली ।  
 क्षणध्वसी-वि० अतिशय स्थिर । क्षणमात्र  
 ही में नष्ट होनवाला ।  
 क्षणप्रभा-सज्ञा स्त्री० चपला । बिजली ।  
 क्षणभगुर-वि० अनित्य । विनाशी या  
 क्षण भर में नष्ट होनवाला ।  
 क्षणप्रति-अ० सतत । अनवरत । बराबर ।  
 क्षणरश्मि-सज्ञा स्त्री० १ बिजली । २. चमक ।  
 प्रकाश ।

क्षणिक-वि० क्षणभगुर । क्षण भर रहने-  
 वाला । अनित्य ।  
 क्षणिका-सज्ञा स्त्री० बिजली ।  
 क्षणिकपाव-सज्ञा पु० योद्धा या सिद्धांत-  
 विशेष जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु  
 उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नष्ट हो जानेवाला  
 मानी जाती है ।  
 क्षणिनी-सज्ञा स्त्री० रात । निशा ।  
 क्षणेश-त्रि० वि० क्षण भर । बहुत थोड़ी  
 देर तक ।  
 क्षत-वि० घाव लगा हुआ । जिसे चोट  
 लगी हो, आहत । घायल ।  
 सज्ञा पु० १. घाव । चोट ।  
 जखम । २ घ्रण । फोटा । ३ हानि  
 या आघात पहुँचाना । ४ काटना ।  
 मारना ।  
 क्षतघ्नी-सज्ञा स्त्री० लाव । लाह ।  
 क्षतज-वि० १ क्षत से पैदा हुआ जैसे—  
 क्षतज शोथ । २ घाव से उत्पन्न । लाल ।  
 मुख ।  
 सज्ञा पु० १ रुधिर । रक्त । खून ।  
 शोणित । लोह । २ वह प्यास जो शरीर  
 में घाव लगने पर लगती है ।  
 क्षतयोनि-वि० जिस स्त्री का पुरुष के साथ  
 समागम हो चुका हो ।  
 क्षतरानी-सज्ञा स्त्री० क्षत्रियानी ।  
 क्षत विक्षत-वि० बहुत गुटीला । जिसे  
 बहुत चोटें लगी हों । घायल लहू-  
 लुहान ।  
 क्षतव्रण-सज्ञा पु० वह स्थान जो कटने या  
 चोट लगने के बाद पक गया हो ।  
 क्षतव्रत-वि० नष्ट व्रत । जो व्रत भंग हो  
 गया हो ।  
 क्षता-सज्ञा स्त्री० विवाह से पूर्व किसी  
 पुरुष से अनुचित संबंधवाली कन्या ।  
 क्षति-सज्ञा स्त्री० १ हानि । २ अपकार  
 अनिष्ट । ३ नारा । क्षय । अपचय ।  
 नुकसान । चोट । बरबादी । भवनति ।  
 क्षता-सज्ञा पु० १ शरीर । २ दरवान ।  
 ३ मछली । ४ शूद्र के शरीर से  
 क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न । ५ जाति विशेष ।

६. दासी-पुत्र । ७. नियोग करनेवाला पुरुष ।

क्षत्र-संज्ञा पुं० १. बल । २. राष्ट्र । गण । राज्य । प्रदेश । ३. शरीर । शक्ति । ४. धन । प्रभुत्व । ५. जल । शासन-परिपद् ।

क्षत्रकर्म-संज्ञा पुं० क्षत्रिय के योग्य कर्म ।  
क्षत्रधर्म-संज्ञा पुं० क्षत्रियों का धर्म । यथा—अध्ययन, दान, यज्ञ और प्रजापालन करना आदि ।

क्षत्रधारी-संज्ञा पुं० राजा । भूपाल ।  
क्षत्रप-संज्ञा पुं० ईरान के प्राचीन माडलिक राजाओं की उपाधि-विशेष, जो भारत के दक्ष राजाओं ने ग्रहण की थी । एक प्रदेश का राज्यपाल (गवर्नर) ।

क्षत्रपति-संज्ञा पुं० नृप । राजा ।  
क्षत्रवन्धु-संज्ञा पुं० १. सैनिक श्रेणी का व्यक्ति । २. निन्दित क्षत्रिय । ३. जो जन्म से क्षत्री, पर कर्म से क्षत्रिय नहीं ।

क्षत्रयोग-संज्ञा पुं० १. ज्योतिष में राजयोग । २. राजधरानों का सम्बन्ध ।

क्षत्रवेद-संज्ञा पुं० धनुर्वेद । क्षत्रियों का विद्या हुआ सैन्य-शास्त्र ।

क्षत्रातक-संज्ञा पुं० परशुराम ।  
क्षत्रिन-स्त्री० क्षत्रिय जाति की स्त्री ।  
क्षत्रिय-संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी] १. क्षत्री । हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण । इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और धनुषों से उसकी रक्षा करना था । २. राजा ।

क्षत्रिया-संज्ञा स्त्री० क्षत्रिय जाति की स्त्री ।  
क्षत्रियाणी-संज्ञा स्त्री० क्षत्रिय-पत्नी । क्षत्रिय स्त्री जाति ।

क्षत्री-संज्ञा पुं० दे० "क्षत्रिय" ।

क्षत्रणक-वि० १. निर्लज्ज । २. उन्मत्त ।  
संज्ञा पुं० १. दिगंबर । यती । नंगा रहनेवाला जैन यती । २. बौद्ध संन्यासी । ३. बुद्ध-विशेष । ४. राजा विक्रमादित्य की सभा के नववर्तों का दूसरा रत्न ।

क्षपा-संज्ञा स्त्री० १. रजनी । रात । रात्रि । २. हल्दी ।

क्षपांत-संज्ञा पुं० प्रातःकाल । सबेरा । भोर ।

क्षपाकर-संज्ञा पुं० १. शक्ति । चंद्रमा । २. कपूर ।

क्षपाचर-संज्ञा पुं० [स्त्री० क्षपाचरी] दैत्य । निशाचर । राक्षस ।

क्षपानाय-संज्ञा पुं० शशि । चंद्रमा । कलाधर ।

क्षम-वि० १. योग्य । समर्थ । सक्षम । २. उपयुक्त । (योगिक में) जैसे-कार्यक्षम । संज्ञा पुं० बल । शक्ति ।

क्षमणीय-वि० क्षम्य । क्षमा करने योग्य ।  
क्षमता-संज्ञा स्त्री० १. योग्यता । २. शक्ति । सामर्थ्य ।

क्षमना\*-वि० सं० १. क्षमा करना । २. सहना ।

क्षमा-संज्ञा स्त्री० १. दया । कृपा । २. सहन करने की शक्ति-विशेष । सहनशीलता । सहिष्णुता । ३. एक की संख्या । ४. पृथ्वी । ५. दुर्गा । ६. दक्ष की एक कन्या । ७. तेरह वर्णों की एक वर्ण-वृत्ति । ८. रात्रि । ९. राधिका की एक सखी ।

क्षमापन-संज्ञा पुं० क्षमा करना । दोष-मुक्त करना । दयालुता । सहनशीलता ।

क्षमालु-वि० क्षमावान् । क्षमाशील । क्षमा करनेवाला ।

क्षमावान्-वि० [स्त्री० क्षमावती] १. क्षमा करनेवाला । २. सहनशील । गमछोर । ३. दयालु । ४. धैर्यशील । ५. सहिष्णु ।

क्षमाशील-वि० १. क्षमावान् । जिस व्यक्ति में क्षमा करने का गुण हो । २. शांत-प्रकृति ।

क्षमितव्य-वि० क्षमा करने योग्य । क्षम्य ।

क्षमिता-वि० क्षमाशील । सहिष्णु । क्षतव्य ।

क्षमी-वि० १. क्षमाशील । क्षमावान् । २. शांत-प्रकृति ।

वि० सक्षम । समर्थ ।

क्षम्य-वि० क्षमा करने योग्य ।

क्षय-संज्ञा पुं० १. कमटा । घटना या नष्ट होना । २. सृष्टि का अन्त । कल्पान्त ।

३. विनाश । ४. ह्रास । ५. अपचय ।

स्वार-सज्ञा पु० आदिपन महीना ।  
 स्वारपन-सज्ञा पु० प्रविवाहि अवस्था ।  
 वारापन ० । वारा होने का भाव ।  
 कुमारपन ।  
 वारा-सज्ञा पु०, वि० [स्त्री० वारी]  
 प्रविवाहित । कुमारा ।  
 वारापन-सज्ञा पु० दे० "वारापन" ।  
 वारेंटाइन-सज्ञा पु० (घरे०) वह स्थान  
 जहाँ बाहर से आये हुए लोग इसलिए कुछ  
 समय तक रोक रखे जाते हैं कि उनके द्वारा  
 कोई सनामय रोग देश में न फैले ।  
 यो०-वारेंटाइन लीव-ऐसे सरकारी  
 कर्मचारियों का, जिनको या जिनके घर  
 में किसी को छूत की बीमारी हो, जबरदस्ती  
 कुछ दिनों की छुट्टी देना ।  
 क्षतव्य-वि० क्षम । क्षमा करने के  
 योग्य ।  
 क्षत-स्त्री० क्षयरोग । कफ और खून के  
 गुँथ से निकलने की बीमारी-सूखी खासी ।  
 क्षण-सज्ञा पु० [वि० क्षणिक] १ सहमा ।  
 छन । काल या समय का सबसे छोटा भाग ।  
 पल का चतुर्थांश । २ बाल । ३ अवसर ।  
 मौका । ४ समय । ५ पर्व का दिन ।  
 उत्सव ।  
 मुहा०-क्षण मात्र=थोड़ी देर ।  
 क्षणद-सज्ञा पु० १ जल । २ ज्योतिषी ।  
 ३ रत्तीधिया । ४ जिसे रात में न दिल् ।  
 क्षणदाय-वि० १ रात के अन्ध । २ प्राणी  
 विषाप । ३ उल्लू ।  
 क्षणदा-सज्ञा स्त्री० रानि । निशा ।  
 क्षणदाकार-सज्ञा पु० चद्रमा ।  
 क्षणशुक्ति-सज्ञा स्त्री० बिशुत । चपला ।  
 बिजली ।  
 क्षणध्वनी-वि० अतिराम स्थिर । क्षणभान  
 ही में नष्ट होनेवाला ।  
 क्षणप्रभा-सज्ञा स्त्री० चपला । बिजली ।  
 क्षणभगुर-वि० अनित्य । विनाशी या  
 क्षण भर में नष्ट होनेवाला ।  
 क्षणप्रति-प्र० सतत । अनवरत । बराबर ।  
 क्षणरवि-सज्ञा स्त्री० १ बिजली । २ चमक ।  
 प्रकाश ।

क्षणिक-वि० क्षणभगुर । क्षण भर रहने-  
 वाला । अनित्य ।  
 क्षणिक-सज्ञा स्त्री० बिजली ।  
 क्षणिकवाद-सज्ञा पु० बौद्धों का सिद्धान्त-  
 विशेष जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु  
 उत्पत्ति से दूसरे क्षण में नष्ट हो जानेवाला  
 मानी जाती है ।  
 क्षणिकी-सज्ञा स्त्री० रात । निशा ।  
 क्षणिक-वि० वि० क्षण भर । बहुत थोड़ी  
 देर तक ।  
 क्षत-वि० घाव लगा हुआ । जिसे चोट  
 लगी हो, आहत । घायल ।  
 सज्ञा पु० १ घाव । चाट ।  
 जरम । २ अण । फोडा । ३ हानि  
 या आघात पहुँचाना । ४ काटना ।  
 मारना ।  
 क्षतप्ली-सज्ञा स्त्री० लाल । लाह ।  
 क्षतज-वि० १ क्षत से पैदा हुआ जैसे—  
 क्षतज शोथ । २ घाव से उत्पन्न । लाल ।  
 मुख ।  
 सज्ञा पु० १ रुधिर । रक्त । खून ।  
 शोणित । लोह । २ वह प्यास जो शरीर  
 में घाव लगने पर लगती है ।  
 क्षतयोनि-वि० जिस स्त्री का पुरुष के साथ  
 समागम हो चुका हो ।  
 क्षतरानी-सज्ञा स्त्री० क्षत्रियानी ।  
 क्षत-विशत-वि० बहुत चुटीला । जिसे  
 बहुत चोटें लगी हो । घायल लहू  
 लुहान ।  
 क्षतवण-सज्ञा पु० वह स्थान जो कटने या  
 चोट लगने के बाद पक गया हो ।  
 क्षतवत-वि० नष्ट क्षत । जो क्षत भग हो  
 गया हो ।  
 क्षता-सज्ञा स्त्री० विवाह से पूर्व किसी  
 पुरुष से अनुचित सम्बन्धवाली कन्या ।  
 क्षति-सज्ञा स्त्री० १ हानि । २ अपकार  
 अनित्य । ३ नाश । क्षय । अपचय ।  
 नुकसान । चोट । बरबादी । अवनति  
 क्षता-सज्ञा पु० १ सारथि । २ दारव  
 ३ मछली । ४ शूद्र के श्री-  
 क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न । ५ जाति ३

६ दासी पुत्र । ७ नियोग करनेवाला पुरुष ।

क्षत्र-सत्ता पु० १ बल । २ राष्ट्र । गण । राज्य । प्रदेश । ३ क्षरीर । शक्ति । ४ धन । प्रभुत्व । ५ जल । शासन-परिपद् ।

क्षत्रकर्म-सत्ता पु० क्षत्रिय के योग्य कर्म । क्षत्रधर्म-सत्ता पु० क्षत्रियो का धर्म । यथा—अध्ययन, दान, यज्ञ और प्रजा-पालन करना आदि ।

क्षत्रधारी-सत्ता पु० राजा । भूपाल ।

क्षत्रप-सत्ता पु० ईरान के प्राचीन माडलिंक राजाओं की उपाधि विशप, जो भारत के शक राजाओं से ग्रहण की थी । एक प्रदेश का राज्यपाल (गवर्नर) ।

क्षत्रपति-सत्ता पु० नृप । राजा ।

क्षत्रवन्धु-सत्ता पु० १ सैनिक श्रणी का व्यक्ति । २ निर्दिष्ट क्षत्रिय । ३ जो जन्म से क्षत्रा पर कम से क्षत्रिय नहीं ।

क्षत्रयोग-सत्ता पु० १ ज्योतिष में राजयोग । २ राजघरानों का सम्बन्ध ।

क्षत्रवेद-सत्ता पु० धनुर्वेद । क्षत्रियो का दिया हुआ सैन्य शास्त्र ।

क्षत्रातक-सत्ता पु० परशुराम ।

क्षत्रिन-स्त्री० क्षत्रिय जाति की स्त्री ।

क्षत्रिय-सत्ता पु० [स्त्री० क्षत्रिया क्षत्राणी] १ क्षत्री । हिंदुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण । इस वर्ण के लोगों का काम देश का शासन और शत्रुओं से उसकी रक्षा करना था । २ राजा ।

क्षत्रिया-सत्ता स्त्री० क्षत्रिय जाति की स्त्री । क्षत्रियाणी-सत्ता स्त्री० क्षत्रिय पत्नी । क्षत्रिय स्त्री जाति ।

क्षत्री-सत्ता पु० दे० क्षत्रिय ।

क्षपणक-वि० १ निलज्ज । २ उभक्त ।

क्षणा पु० १ दिग्वर । यती । नगा

रहनेवाला जैन यती । २ बौद्ध सन्घासी ।

३ बुद्ध विशप । ४ राजा विक्रमादित्य

की सभा के नवरत्नों का दूसरा रत्न ।

क्षपा-सत्ता स्त्री० १ रजनी । रात ।

रात्रि । २ हल्दी ।

क्षपात-सत्ता पु० प्रातःकाल । सवेरा । भोर ।

क्षपाकर-सत्ता पु० १ शशि । चद्रमा । २ कपूर ।

क्षपाचर-सत्ता पु० [स्त्री० क्षपाचरी] दैत्य । निशाचर । राक्षस ।

क्षपानाय-सत्ता पु० शशि । चद्रमा । कलाधर ।

क्षम-वि० १ याग्य । समथ । सशक्त । २ उपयुक्त । (योगिव में) जैसे काव्यक्षम । सत्ता पु० बल । शक्ति ।

क्षमणीय-वि० क्षम्य । क्षमा करने योग्य ।

क्षमता-सत्ता स्त्री० १ योग्यता । २ शक्ति । सामर्थ्य ।

क्षमता\*-क्रि० सं० १ क्षमा करना । २ सहना ।

क्षमा-सत्ता स्त्री० १ दया । कृपा । २ सहन करने की शक्ति विशप । सहनशीलता । सहिष्णुता । ३ एक की संख्या । ४ पृथ्वी । ५ दुर्गा । ६ दक्ष की एक कन्या । ७ तेरह वर्णों की एक वर्ण-वृत्ति । ८ रात्रि । ९ राधिका की एक सखी ।

क्षमापत-सत्ता पु० क्षमा करना । दाय-मुक्त करना । दयालुता । सहनशीलता ।

क्षमालु-वि० क्षमावान् । क्षमाशील । क्षमा करनेवाला ।

क्षमावान्-वि० [स्त्री० क्षमावती] १ क्षमा करनेवाला । २ सहनशील । गमखोर । ३ दयालु । ४ धैर्यशील । ५ सहिष्णु ।

क्षमाशील-वि० १ क्षमावान् । जिस व्यक्ति में क्षमा करने का गुण हो । २ शांत प्रकृति ।

क्षमितव्य-वि० क्षमा करने योग्य । क्षम्य ।

क्षमिता-वि० क्षमाशील । सहिष्णु । क्षतव्य ।

क्षमी-वि० १ क्षमाशील । क्षमावान् ।

२ शांत प्रकृति ।

वि० सशक्त । समथ ।

क्षम्य-वि० क्षमा करने योग्य ।

क्षय-सत्ता पु० १ क्रमशः घटना या नष्ट

होना । २ सृष्टि का अन्त । कल्पान्त ।

३ विनाश । ४ ह्रास । ५ अपवय ।

६ प्रलय । ७ नाश । ८ घर । रहने  
या स्थान । मषान ९ क्षयी । यक्ष्मा  
नामन रोग । १० मृत । ११ समाप्ति ।  
१२ ज्योतिष विद्या के अनुसार मास-  
विशेष । १३ बृहस्पति के ६० वर्ष के  
चक्र या श्रान्तिम सवत्सर ।

क्षयकाल-सज्ञा पु० प्रलयकाल ।

क्षयकास-सज्ञा पु० राजराग । यक्ष्मा ।

क्षयधु-सज्ञा पु० खांसी ।

क्षयपक्ष-सज्ञा पु० वृष्णपक्ष ।

क्षयमास-सज्ञा पु० मलमास ।

क्षयिष्णु-वि० जो क्षय या नष्ट हो ।

क्षयी-वि० १ क्षय या नष्ट होनेवाला ।

२ जिस क्षय या यक्ष्मा रोग हो ।

सज्ञा पु० चन्द्रमा । शशि ।

सज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें फेफड़ा सड़ा  
हो जाता है और सारा शरीर धीरे-धीरे  
गलने लगता है । यक्ष्मा । तपदिव ।

क्षय्य-वि० क्षय होन के योग्य ।

क्षर-वि० नष्ट होनेवाला । नाशवान् ।

सज्ञा पु० १ मष । २ जल । ३ शरीर ।

४ जीवात्मा । ५ अज्ञान ।

क्षरण-सज्ञा पु० १ रसना । टपकना ।

चूना । २ झडना । ३ छूटना । ४ नाश  
होना या क्षय होना ।

क्षात-वि० [स्त्री० क्षाता] १ क्षमा करने-  
वाला । २ सहनशील । ३ सतोषी ।  
४ धीर ।

क्षाति-सज्ञा स्त्री० १ सहनशीलता । २  
क्षमा । ३ शक्ति रहन पर भी किसी की  
बुराई न करना ।

क्षात्र-वि० क्षत्रियो का । क्षत्रिय-सम्बन्धी ।  
सज्ञा पु० क्षत्रियपन । क्षत्रियत्व ।

क्षाम-वि० १ क्षीण । दुबला-पतला ।  
कुस । निर्बल ।

-धी०-क्षामीदरी=पतली कमरवाली (स्त्री) ।  
२ दुबल । कमजोर । ३ अल्प । कम ।  
थोड़ा ।

क्षामकठ-वि० १ सूखा कठ । २ मन्द  
शब्द ।

क्षार-सज्ञा पु० १ सार । समुद्री लवण ।

२ नान । नमक । ३ सज्जी । ४  
गुहागा । ५ शोग । ६ बाँव । ७  
राख । मरु । ८ गुड ।

वि० १ खारा । २ क्षरणशील ।

क्षारपत्र-सज्ञा पु० वयुष्मा । शक विशेष ।

क्षारभूमि-सज्ञा स्त्री० खारी भूमि । ऊमर  
खत ।

क्षारमृत्तिका-सज्ञा स्त्री० खारी मिट्टी ।

क्षारलवण-सज्ञा पु० खारी । नमक ।

क्षारश्रेष्ठ-सज्ञा पु० दाबवृक्ष । पलास ।

क्षारसिन्धु-सज्ञा पु० तवण-समुद्र ।

क्षालन-सज्ञा पु० धोना । स्वच्छ करना ।  
प्रक्षालन ।

क्षालित-वि० धुला हुआ ।

क्षिति-सज्ञा स्त्री० १ भूमि । पृथिवी ।

घरती । २ जगह । वामस्थान । ३

क्षय । ४ गोरोचन । ५ प्रलय-  
काल ।

क्षितिज-सज्ञा पु० १ भग्न ग्रह । २

कंचुष्मा । ३ नरकासुर । ४ पेट । वृक्ष ।

५ जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिले  
दिखाई पड़ते हैं । ६ धातु उपधातु आदि  
जो पृथ्वी से निखलती हैं । ७ वृक्ष ।

क्षितिनाय-सज्ञा पु० १ राजा । २ शासक ।

३ रक्षक । पृथ्वी के स्वामी । पृथ्वी की  
रक्षा करनेवाले ।

क्षितिपाल-सज्ञा पु० राजा । नृपति । पृथ्वी  
की रक्षा करनेवाले ।

क्षितिमडन-सज्ञा पु० ब्रह्मा । आदर्श पुरुष ।

क्षितील-सज्ञा पु० राजा । नरेश । पृथ्वी  
पाल ।

क्षितीश्वर-सज्ञा पु० १ प्रभु । स्वामी । २  
पृथ्वी के मालिक । महोश ।

क्षिप्त-वि० १ फेंका हुआ । २ फैलाई  
गई । त्यक्त । ३ हटाया या निकाला  
गया । गिराई गई । ४ भेजा गया ।

५ विनीर्ण । ६ अपमानित । ७ पतित ।

८ वात रोग से ग्रस्त । ९ चंचल ।

१०. पागल । ११ चित्त की पाँच अवस्थाओं

में से एक (योग) ।

क्षिप्र-वि० वि० १ शीघ्र । जल्दी । २

तुरत । तत्काल । उसी समय । अविलम्ब ।  
वि० १. तेज । जल्द । २. चञ्चल ।  
३ उतावला ।

क्षिप्रहस्त-वि० फुर्तीला । शीघ्र या तेज  
काम करनेवाला ।

क्षीण-वि० १. निर्बल । दुर्बल । कुश ।  
दुबला-पतला । २. सूक्ष्म । ३ घटा हुआ ।  
४ जो कम हो गया हो ।

क्षीणचन्द्र-सज्ञा पु० कृष्ण पक्ष की अष्टमी  
से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक का  
चन्द्रमा ।

क्षीणता-सज्ञा स्त्री० १ निर्बलता । कम-  
जोरी । २ दुबलापन । ३. सूक्ष्मता ।  
४ कमी । ५ हानि ।

क्षीणाग-वि० दुर्बल अग ।

क्षीर-सज्ञा पु० १ दूध । २. तरल पदार्थ ।  
३. पानी । ४. पेड़ों का रस । ५. खीर ।  
यो०-क्षीरसार=मक्खन ।

क्षीरकण्ड-सज्ञा पु० बच्चा । दुधमुहूर्त बालक ।  
क्षीरकाकोली-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
जड़ी ।

क्षीरघृत-सज्ञा पु० मक्खन ।

क्षीरज-सज्ञा पु० १ शशि । चन्द्रमा । २  
कमल । ३ शख । ४ दही । ५ समुद्र-  
मयन से निकला हुआ अमृत । ६ शोपनाग ।  
७ एक मणि । ८ समुद्र का नमक ।

क्षीरजत-सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी । रमा ।

क्षीरधि-सज्ञा पु० दूध का समुद्र ।

क्षीरनिधि-सज्ञा पु० दूध का सागर ।

क्षीरनीर-सज्ञा पु० १ अम्लेद भाव । २ गाढ़  
मैत्री । पानी और दूध । दूध की तरह  
पानी । दूध-पानी का सम्मिश्रण ।

क्षीरघृत-सज्ञा पु० १ केवल दूध पीकर  
रहने का व्रत ।

क्षीरसमुद्र-सज्ञा पु० दूध का समुद्र ।  
क्षीरसागर ।

क्षीरसागर-सज्ञा पु० पुराण के मत से सात  
समुद्रों में से एक, जो दूध से भरा हुआ माना  
जाता है ।

क्षीरस्वामी-सज्ञा पु० अमरकोश की टीका  
लिखनेवाले सख्य के प्रसिद्ध ऋषि ।

क्षीरिणी-सज्ञा स्त्री० १. खिरनी । २.

क्षीरकाकोली

क्षीरी-स्त्री० १. वृक्ष और फल-विशेष ।  
२. यन ।

क्षीरीद-सज्ञा पु० दूध का समुद्र ।

यो०-क्षीरीद-तनया=लक्ष्मी ।

क्षीरीदतनया-सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी । 'रमा' ।  
कमला ।

क्षुण्ण-वि० १ पीसा हुआ । २ दलित ।  
३ दुःखित । सन्तापयुक्त । ४ टुकड़े-टुकड़े  
किया हुआ । चूर्ण किया हुआ । ५. वश  
में किया गया । हराया गया । ६ खडित ।  
७ अनुसरण किया गया । ८ उल्लंघन  
किया हुआ । ९ अभ्यस्त । कुशल ।

क्षुत्-सज्ञा स्त्री० क्षुधा । भूख । छीक ।  
क्षुत्पिपासा-सज्ञा स्त्री० भूख प्यास ।

क्षुद्र-वि० १ कृपण । कजूस । २ नीच ।  
अधम । ३ छोटा । ४ छोटा । ५  
छोटा । ६ दरिद्र ।

सज्ञा पु० चावल के छोटे टुकड़े ।

क्षुद्रघटिका-सज्ञा स्त्री० १ घुंघरू । २.  
घुंघरूदार करधनी ।

क्षुद्रता-सज्ञा स्त्री० १ अधमता । नीचता ।  
कमीनापन । २ ओछापन । ३.  
अल्पता ।

क्षुद्रप्रकृति-वि० नीच प्रकृति का । ओछे  
या छोटे स्वभाववाला ।

क्षुद्रबुद्धि-वि० १ नीच बुद्धि । दुष्ट या  
नीच बुद्धिवाला । २ मूर्ख । नासमर्थ ।

क्षुद्रा-सज्ञा स्त्री० १ वेव्या । २ नीच स्त्री ।  
३ अमलोनी । लोनी । ४. मधुमक्खी ।  
५ जटामासी । ६ बालछट । ७ कौडि-  
याला । ८ हिचकी । ९ भगडालू स्त्री ।  
१०. ऐसी स्त्री जिसका कोई अंग सराव  
हो गया हो ।

क्षुद्रायली-सज्ञा स्त्री० क्षुद्रघटिका । कन्-  
धनी ।

क्षुद्राशय-वि० कमीना । नीच-प्रकृति ।  
"महाशय" का उल्टा ।

क्षुधा-सज्ञा स्त्री० [वि० क्षुधित, क्षुधालु]  
भूख । भोजन करने की इच्छा ।

शुभाशुभ-वि० भूत या पीड़ित । भूषा ।  
 भूषा से व्यापृत ।  
 शुभाशुभ-वि० भुक्त ।  
 शुभाशुभ-वि० दे० "शुभाशुभ" । अत्यन्त  
 भूषा ।  
 शुभाशुभ-वि० [स्त्री० शुभाशुभ] भूषा ।  
 जिसे भूषण लगी है ।  
 शुभित-वि० भूषा । भूषण से पीड़ित ।  
 शुभ-गंगा पु० १. पीप । भाटी । गँटीला  
 वृक्ष । २. रतिवध । ३. श्रीकृष्ण, के एक  
 पुत्र का नाम ।  
 शुभ-वि० १. मधीर । चंचल । बेचैन ।  
 परेशान । २. भयभीत । डरा हुआ ।  
 ३. प्रुद्ध ।  
 शुभित-वि० शुभ ।  
 शुभ-गंगा पु० १. छुरा । उतरा । २.  
 पनुमा के पाँच या छुर । ३. मूँज ।  
 त्रि० स० पाटना । लकीर खीचना । खरो-  
 चना ।  
 शुभ-गंगा पु० गोखरू । एक प्रकार का  
 वृक्ष ।  
 शुभ-गंगा पु० १. नख-विशेष । २.  
 एक प्रकार का बाण । ३. उत्तरा की  
 तरह तेज धार का ।  
 शुभ-गंगा पु० १. एक प्रकार का बहुत  
 तेज बाण । २. खुरपा ।  
 शुभ-गंगा पु० स्त्री० १. चाकू । छुरी ।  
 २. पालकी का छार ।  
 शुभ-गंगा पु० [स्त्री० शुभनी] १. नाई ।  
 २. खुरवाला पशु ।  
 सज्ञा स्त्री० छुरी । चाकू ।  
 शुभ-गंगा पु० कौडी ।  
 वि० नीच । शुभ ।  
 शुभ-गंगा पु० १. खेत । २. समतल भूमि ।  
 ३. स्थान । प्रदेश । ४. पुण्य भूमि ।  
 तीर्थ-स्थान । ५. स्त्री । ६. भतकरण ।  
 ७. वदन । शरीर । ८. रेतामो से घिरा  
 हुआ स्थान । ९. राशि । १०. सिद्ध-  
 स्थान । ११. द्रव्य । १२. प्रकृति । १३.  
 गृह । १४. नगर ।  
 शुभ-गंगा पु० गणित-विशेष जितामें

क्षेत्रों के मापने और जाना क्षेत्रफल  
 जिताने की विधि बताई जावे । रेखा-  
 गणित ।  
 क्षेत्र-वि० जो खेत से पैदा हो ।  
 गंगा पु० १. हिंदुओं के १२ प्रकार के पुत्रों  
 में से एक । २. अपनी पत्नी से दूम्ते के  
 द्वारा उत्पन्न पुत्र ।  
 क्षेत्र-वि०-गंगा पु० १. खेतों के अधिष्ठाता ।  
 २. देवता ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० १. परमात्मा । २.  
 जीवात्मा । ३. संहार । विमान ।  
 वि० शाता । जानवार । शत्रु ।  
 मृगाल । दक्ष ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० १. विमान । संहार ।  
 २. परमात्मा । ३. जीवात्मा ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० १. क्षेत्ररक्षक । विमान ।  
 खेत की रखवाली करनेवाला । २. भस्व-  
 विशेष । ३. द्वारपाल । ४. किसी जगह  
 का प्रधान प्रवचनकर्ता । भूमि । ५. देवता-  
 विशेष ।  
 क्षेत्रफल-गंगा पु० किसी स्थान का वर्गात्मक  
 परिणाम । रज्जवा ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० कृषिशास्त्र के विशेषज्ञ ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० जीवात्मा ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० वि० कृषक ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० १. खेत के अधिष्ठाता  
 देवता भेष आदि । २. बारह राशियों के  
 स्वामी । ३. खेत का स्वामी । ४. जमींदार ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० १. खेत का स्वामी ।  
 २. विमान । संहार । ३. नियुक्ता स्त्री  
 का विवाहित पति । स्वामी ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० १. फेंकना । त्याग । २.  
 घात । ठोकर । ३. मझास । शर । ४.  
 निदा । बुराई । बदनामी ।  
 क्रि० स० व्यतीत करना । गुजारना ।  
 जैसे—कालक्षेप । ५. दूरी ।  
 क्षेत्र-गंगा पु० १. फेंकनेवाला । त्यागी । क्षेप-  
 कारक । २. मिथित । झिंझाया हुआ ।  
 ३. बुरा । निंदनीय ।  
 सज्ञा पु० १. मयों में मिलाए गए  
 अनुद्ध भय । २. उपकषाओं का भाग ।

३ निन्दनीय भाग ।  
 क्षेपण-सज्ञा पु० १ गिराना । २ फेंकना ।  
 ३ व्यतीत करना । ४ अपवाद ।  
 क्षेपणी-सज्ञा स्त्री० नाव का डडा और बल्ली ।  
 क्षेम-सज्ञा पु० १ सुरक्षा । २ प्राप्त वस्तु की रक्षा ।  
 यौ०-योग-क्षेम । १. भलाई । २. मंगल ।  
 कुशल । ३. आनंद । सुख । ४. अभ्युदय ।  
 ५. मुक्ति । ६. धर्मशासन के द्वारा उत्पन्न किया पुत्र ।  
 क्षेमकर-वि० शुभकर, मंगलकर ।  
 क्षेमकरी-सज्ञा स्त्री० १ एक पत्नी । २ एक देवी । ३ कुशल करनेवाली ।  
 क्षेमकर्ण-सज्ञा पु० अर्जुन का पुत्र, जनमेजय का सखा ।  
 क्षेमकुशल-सज्ञा पु० आरोग्य मंगल ।  
 क्षेमकृत-वि० कल्याणकारक । मंगलकर्ता ।  
 क्षेमेन्द्र-सज्ञा पु० काश्मीर के एक प्रतिष्ठित कवि । इनका समय ११वीं शताब्दी निश्चित हुआ है ।  
 क्षेप्य-सज्ञा पु० क्षीण भाव ।  
 क्षोणि-सज्ञा स्त्री० १ एक की राख्या । २ पृथ्वी ।  
 क्षोणिग-वि० क्षितिग ।  
 सज्ञा पु० मंगल ।  
 क्षोणिवेब-सज्ञा पु० १ ब्राह्मण । २ भूसुर ।  
 क्षोणिप-सज्ञा पु० राजा । नृप ।  
 क्षोणी-सज्ञा स्त्री० दे० 'क्षोणि' । पृथ्वी । भूमि ।  
 क्षोणीपति-सज्ञा पु० नरेश । राजा ।  
 क्षोद-सज्ञा स्त्री० बुकनी । चूण । चूर्ण करने की क्रिया ।  
 क्षोभ-सज्ञा पु० [वि० क्षुब्ध, क्षुभित] १ खलबली । २ धक्काहट । व्याकुलता । ३ डर । भय । ४ रज । शोक । ५ क्रोध । ६ पदचात । ७ मोह ।  
 क्षोभण-वि० क्षोभक । खलबली पैदा करनेवाला ।

सज्ञा पु० काम के पाँच बाणों में से एक ।  
 क्षोभित-वि० १ व्याकुल । धक्का खा हुआ । २ विचलित । ३ चलायमान । ४ भयभीत । डरा हुआ । ५ क्रुद्ध । ६ सजीदा । दुखी ।  
 क्षोभी-वि० चंचल । उद्वेगशील । व्याकुल ।  
 क्षोम-सज्ञा पु० दे० 'क्षीम' ।  
 क्षोणि, क्षोणी-सज्ञा स्त्री० १ एक की राख्या । दे० क्षोणि । २ पृथ्वी ।  
 क्षौद्र-सज्ञा पु० १ क्षुद्रता । नीच भाव । २ सहृद । छोटी मक्खी का मधु । ३ जल । ४ चपा का पेड़ । ५ एक वर्ण-सकर जाति । ६ बूल ।  
 क्षौद्रग-वि० मधु से उत्पन्न पदार्थ ।  
 क्षौम-सज्ञा पु० १ वस्त्र । पटवस्त्र । कपडा । २ सन आदि के रेशों से बना हुआ कपडा । ३ अड़ी । ४ धर या अटारी के ऊपर बना कोठा । अटा ।  
 क्षौर-सज्ञा पु० मुडन । हजामत । बाल बनाना ।  
 क्षौरक या क्षौरिक-सज्ञा पु० १ नाई । हज्जाम । २ छरा ।  
 क्षमा-सज्ञा स्त्री० १ धरती । पृथ्वी । २ एक की राख्या ।  
 क्षमातल-सज्ञा पु० धरातल । भूतल । पृथ्वीतल ।  
 क्षमाभुक्-सज्ञा पु० राजा । भूमि का भोग करनेवाला ।  
 क्षमाभूत्-सज्ञा पु० १ राजा । नरेश । २ पर्वत । पहाड़ ।  
 क्षेड-सज्ञा पु० टडा । कुटिल । भुका हुआ । कपटी । जिसके पास पहुँच न हो सके । १ अव्यक्त शब्द या ध्वनि । २ विष । जहर । ३ ध्वनि । शब्द । कान में भन-भनाहट का शब्द ।  
 वि० १ युद्ध घोष । २. एक प्रकार का पीधा ।  
 वि० शर की गुराहट ।

## ख

ख-हिंदी वर्णमाला में वयर्ग या दूसरा अक्षर ।  
 इसका उच्चारण कठ से होता है ।  
 राज्ञा पु० १. गर्दभा २. गूय या  
 खाली स्थान । ३. छेद । विल । ४.  
 निर्गम । निवास । ५. गले की नाली  
 जिससे प्राणवायु जाती-जाती है । ६.  
 इन्द्रिय । ७. तीर या घाव । ८. कुआँ ।  
 ९. आवास । १०. स्वर्ग । ११. वर्म ।  
 १२. मुँह । मुख । १३. विदु । १४.  
 शब्द । १५. ग्रहा । १६. देवलोक । १७. सुख ।  
 ख-सज्ञा पु० १. गूय स्थान । खाली जगह ।  
 २. आकाश । ३. छिद्र । विल । ४.  
 इन्द्रिय । ५. निकलने का मार्ग या रास्ता ।  
 ६. स्वर्ग । ७. गूय । विदु । ८. ग्रहा ।  
 ९. सुख । १०. निर्वाण । मोक्ष ।  
 खल-वि० १. छूछा । खाली । २. नीरान ।  
 उजाड़ ।  
 खैराना-सज्ञा पु० चावल आदि पकाने का  
 तबिये का बड़ा देग ।  
 वि० १. बहुत से छेदवाला वर्तन । २.  
 भीना । जिसकी बनावट घनी न हो ।  
 खग-सज्ञा पु० १. तलवार । बध करने  
 की लम्बी तलवार । २. गेडा । ३. चोर ।  
 ४. तात्रिक मुद्रा-विशेष ।  
 खंगाना-क्रि० अ० बम होना । घटना ।  
 सज्ञा पु० न्यूनता । अल्पता ।  
 खगर-सज्ञा पु० १. भामा । २. लोहे का  
 मेल । ३. लोहचून ।  
 खगर-सज्ञा पु० बुन्देलखण्ड की एक जाति ।  
 खंगहा-वि० जिससे खोंग या निकले हुए दाँत हो ।  
 सज्ञा पु० गेडा ।  
 खंगालना-क्रि० स० १. थोड़ा धोना । २.  
 वर्तन साफ करना । ३. खाली कर देना ।  
 सब कुछ उड़ा ले जाना । ४. अर्वास्तना ।  
 खंगी-सज्ञा स्त्री० घटी । बभी । न्यूनता ।  
 खंगल-वि० दौलता । बड़े बड़े दाँतवाला ।  
 जिसके खाँग या दाँत निकले हो ।  
 खंगारना-क्रि० स० दे० "खंगालना" ।  
 खंचाना-क्रि० अ० जोड़ना । सटाना । रेखा  
 खीचना । चिह्न करना । निशान पड़ना ।

खंचाना-क्रि० म० १. चिह्न बनाना ।  
 अंकित करना । २. जट्टी-जट्टी लिखना ।  
 ३. दे० "खीचना" ।  
 खंधिया-सज्ञा स्त्री० दे० "खीची" । टोंकरी ।  
 खज-सज्ञा पु० १. रोग-विशेष जिसमें मनुष्य  
 का पैर जखम जाता है । २. खंगडा ।  
 लूला । पगु ।  
 सज्ञा स्त्री० विपल गति ।  
 \*सज्ञा पु० खजन पक्षी ।  
 खजता-सज्ञा स्त्री० चरण या अमाव । पगुता ।  
 लूलापन ।  
 खेजड़ी-सज्ञा स्त्री० दे० "खेजरी" ।  
 खजन-सज्ञा पु० १. शस्त्र से लेकर शीनवाल  
 तक दिखाई देनेवाला प्रसिद्ध पक्षी । ममोला ।  
 खंडरिन । खजरीट । खडेचा । २. खंडरिच  
 के रंग का घोड़ा ।  
 खजर-सज्ञा पु० कटार ।  
 खेजरी-सज्ञा स्त्री० १. हफली की तरह का  
 छोटा बाजा । २. धारीदार कपड़ा । ३.  
 रंगीन कपड़ों की लहरिएदार धारी ।  
 खजरीट या खजरीर-सज्ञा पु० खजन पक्षी ।  
 खजा-सज्ञा स्त्री० एक विशेष वर्णवृत्त ।  
 खड-सज्ञा पु० १. टुकड़ा । भाग । हिस्सा ।  
 २. देश । ३. वर्ष । ४. नौ की सख्या ।  
 ५. गणित में समीकरण की एक क्रिया ।  
 ६. धोनी । खडि । ७. दिशा । दिक् ।  
 ८. कासा नमक । ९. खांडा ।  
 वि० १. खडित । अपूर्ण । २. लघु । छोटा ।  
 खडक्या-सज्ञा स्त्री० कया या उपन्यास का  
 एक भेद । कथा का एक भेद जिसमें चार  
 प्रकार के विरह का वर्णन रहता है, जिसमें  
 वरुण रस की प्रधानता रहती है और  
 कथा पूरी होने के पहले ही अथ समाप्त  
 हो जाता है ।  
 खंडकाव्य-सज्ञा पु० छोटा प्रबंधकाव्य जिसमें  
 काव्य के समस्त लक्षण न पाये जायें ।  
 जैसे—'मेघदूत' ।  
 खडखड-वि० टुकड़ा-टुकड़ा ।  
 खडन-सज्ञा पु० [वि० खडनीय, खडित] १.  
 भजन । तोड़ने-फोड़ने की क्रिया । छेदन ।

२ बात काटना । किसी बात को गलत सिद्ध करना । मडन का उलटाना । निराकरण करना । ३. दूषण ।

खडना\*—कि० सं० १ तोड़ना । टुकड़े टुकड़े करना । २ दोष देना । ३ बात काटना । खडनी—सज्ञा स्त्री० कर । मालगुजारी की किस्त ।

खडनीय—वि० खडन करने योग्य । तोड़ने योग्य ।

खडपरशु—सज्ञा पु० १ शिव । महादेव । २ परशुराम । ३ विष्णु ।

खडपाल—सज्ञा पु० हलवाई ।

खडपूरी—सज्ञा स्त्री० भरी हुई मीठी पूरी ।

खडप्रलय—सज्ञा पु० १ एक चतुर्गुणी बीत जाने पर होनेवाला प्रलय । छोटा प्रलय । २ किसी देश या खण्ड का नाश । ३ महाप्रलय ।

खंडवरा—सज्ञा पु० मीठा बड़ा (पक्वान) ।

खंडर—सज्ञा पु० १ उजाड़ । वीरान । २ गड्ढा । गड । ३ खंडहर । टूटे-पूटे मकान । ४ रक्तवारिष्ठा ।

खंडरना—वि० १ टुकड़े-टुकड़े करना । २ सडन करना । बात काटना ।

खंडरा—सज्ञा पु० बसन का चौकोर बड़ा ।

खंडरिच—सज्ञा पु० खजन पदी ।

खटला—सज्ञा पु० टुकड़ा ।

खंडयानी—सज्ञा स्त्री० १ शरयत । खांड का रस । २ कन्या पक्षवालों की ओर से बरातिया को जलपान आदि भेजने की क्रिया ।

खडश—अन्य० गट-खड । टुकड़ा-टुकड़ा । खंडसात—सज्ञा स्त्री० कारखाना जहाँ सॉड या धक्कर बनाई जाती हैं । खंडसार ।

खंडहर—सज्ञा पु० १ टूटे-पूटे मकान का बचा हुआ भाग । भग्नावशेष । २ प्राचीन भवन का अवशेष ।

खडित—वि० १ भग्न । टूटा हुआ । २ अपूर्ण । ३ पाटा गया ।

खडिता—सज्ञा स्त्री० १ नायिका या एक भेद, जिसका नायक रात या किसी दूसरी नायिका के पास रहकर खड़े खड़े पान पीये ।

त्यक्ता । २ नष्ट । दुःखित । टुकड़े-टुकड़े किया गया । निराश ।

खंडिया—सज्ञा स्त्री० छोटा टुकड़ा ।

खंडीरा—सज्ञा पु० १ ओला । २ मिसरी का लड्डू ।

खतरा—सज्ञा पु० १ दरार । २ खाडरा । ३ कोना । ४ अंतरा ।

खता—सज्ञा पु० [स्त्री० खती] १ फावड़ा । २ कुदाल । ३ वह गड्ढा जिसमें से मिट्टी निकाली गई हो ।

खदक—सज्ञा स्त्री० १ बड़ा गड्ढा । २ शहर या किले के चारों ओर की खाई ।

खदा\*—सज्ञा पु० खोदने का काम करनेवाला ।

खंधवाना—कि० सं० खाली करवाना ।

खंधार\*—सज्ञा पु० १ छावनी । स्कंधावार । २ खमा । डरा । सरदार । सामंत राजा ।

खंधिधाना—कि० सं० १ खाली करना । २ बाहर निकालना ।

खबा—सज्ञा पु० स्तंभ । खम्भा । थांभा ।

खभ—सज्ञा पु० दे० खभा ।

खभा—सज्ञा पु० [स्त्री० खंभिया] १ स्तंभ । पत्थर या काठ का लंबा खड़ा टुकड़ा जिसके आधार पर छत या छाजन रहती है । २ पत्थर आदि का लंबा खड़ा टुकड़ा ।

खंभार\*—सज्ञा पु० १ सटका । चिता । प्रवेश । २ व्याकुलता । घबराहट । ३ भय । डर । ४ दोष ।

खंभिया—सज्ञा स्त्री० छोटा पतला तम्बा ।

खई\*—सज्ञा स्त्री० १ क्षय । २ युद्ध । लड़ाई । ३ भगडा । तकरार । ४ मुर्चा । जग । ५ मेल ।

खार—सज्ञा पु० दे० खसार ।

खका—सज्ञा पु० १ भट्टहास । जोर की हंसी । २ कटक्हा । ३ बड़ा और ऊँचा हावी । ४ अनुभवो पुरुष ।

खसार—सज्ञा पु० कफ । गाढ़ा घृण जा खसारन से निकलने ।

खसारना—कि० प्र० १ घन या कफ बाहर करने के लिए गरम या ठण्डा गरम पानी पीना । २ घूँसे का

ध्यात धपनी और धावपित करने को दण्ड-  
विरोध करना ।

लघुशब्दकोश\*—वि० स० १. भगवान् । पीछा  
करना । २. दवाना । ३. पायल करना ।  
लघुशब्द—सज्ञा पु० १. छिद्र । छेद । २. शका ।  
सटका ।

लघुशब्द—क्रि० म० १. सूरचना । २.  
सोदना ३. छिपकर कोई भोजन वस्तु तलाश  
करना ।

लग—सज्ञा पु० १. पक्षी । बिडिया । २.  
आवागमन । ३. बाण । तीर । ४.  
व्यर्ष । ५. देवता । ६. ग्रह । तारा । ७.  
बादल । ८. चन्द्रमा । ९. सूर्य । १०.  
वायु ।

लगकतु—सज्ञा पु० १. गरुडध्वज । २.  
श्रीविष्णु ।

लगना\*—वि० अ० १. चुम्बना । धँसना ।  
२. मन या चित्त में बैठना । ३. लग जाना ।  
निष्ठ होना । ४. बिह्वित हो जाना ।  
उपट धाना । ५. घटक रहना । घड  
जाना ।

लगनाय, लगनायक—सज्ञा पु० १. सूर्य । २.  
चन्द्रमा । ३. गरुड ।

लगनाह—सज्ञा पु० गरुड । पक्षिराज ।

लगपति—सज्ञा पु० १. चन्द्रमा । २. सूर्य ।  
३. गरुड ।

लगमाला—सज्ञा स्त्री० पक्षिया का समूह ।

लगहा—सज्ञा पु० १. पक्षिघाती । २. गंश ।  
३. बाज । ४. व्याघ्र ।

लगारना—क्रि० स० धोना, धोना । बबल  
पानी से धोना ।

लगनेन्द्र—सज्ञा पु० पक्षिराज । गरुड ।

लगेश—सज्ञा पु० १. चन्द्रमा । २. पक्षियो का  
स्वामी ।

लगोल—सज्ञा पु० १. सगोलविद्या । २.  
आवागमन ।

लगोलविद्या—सज्ञा स्त्री० ज्योतिष । आकाश  
के नक्षत्र, ग्रह आदि का ज्ञान करनेवाली  
विद्या ।

लग\*—सज्ञा पु० तलवार । लांडा ।  
खड्ग ।

लग्न—सज्ञा पु० ऐसा ग्रहण जिसमें सूर्य  
या चंद्र का सारा मंडल ढँक जाय । पूर्ण  
ग्रहण ।

लग्न—सज्ञा पु० १. लापडी । नेपाल । २.  
गाधुघ्रा का पात्र-विरोध ।

लग्न—सज्ञा पु० [वि० गचित] १. भक्ति  
करने या होने की क्रिया । २. जड़ने या  
बोधने की क्रिया ।

लग्न\*—वि० अ० १. भक्ति होना । २.  
जडा जाना । ३. भटक जाना । फँसना ।  
४. रम जाना । ५. भड जाना ।

वि० स० १. जड़ना । २. भक्ति करना ।  
३. सम्मिलित करना । ४. जोड़ना । ५.  
सटाना । ६. रखा खींचना ।

लग्न—सज्ञा पु० १. मघ । २. मूर्य । ३.  
नक्षत्र । ४. ग्रह । ५. पक्षी । ६. वायु ।  
७. बाण । ८. तीर । ९. ताल या रूप-  
विशेष । १०. राक्षस ।

वि० आकाशगामी ।

लग्न—वि० १. दागला । वर्णसंकर । २.  
पाजी । दुष्ट । ३. व्यर्थ ।

लग्न—वि० १. खीचा हुआ । २. जडाऊ । जडा  
हुआ ।

लग्न—क्रि० वि० १. ठसाठस । बहुत भरा  
हुआ ।

लग्न—वि० १. चित्रित । खीचा हुआ ।  
२. जड़ित । जडाऊ । ३. निमित्त । जडा  
हुआ ।

लग्न—सज्ञा स्त्री० दे० खँचिया या खँची ।  
गारा । भौआ ।

लग्न—सज्ञा स्त्री० लगीर । रेखा ।

लग्न—सज्ञा पु० गध और घोड़े के झरोखे  
संलग्न पशु ।

लग्न\*—वि० भव्य । ज्ञान के योग्य ।

लग्न—वि० १. मिना हुआ । मिनावटी ।  
२. मगरा । ३. बेंडरी । छप्पर के बीच  
का उठा हुआ भाग ।

लग्न—सज्ञा पु० दे० 'लाजा' ।

लग्न—सज्ञा पु० कायाध्यक्ष । लग्नाने का  
अधिपति । राशिधिया ।

लग्न—सज्ञा पु० १. धनागार । २. राजस्व ।

धन समूह करने वा स्यान । ३ कोपागार ।  
४. कोप ।

खजुभा—सज्ञा पु० दे० "खाजा" ।

खजुरा—सज्ञा पु० स्त्रियो के सिर की चोटी  
गूँघने की डोरी ।

खजुली—सज्ञा स्त्री० १. दे० "खुजली" ।  
खाज । २. छोटा खाजा ।

खजूर—सज्ञा पु० स्त्री० १ सजूर ।  
ताड़ की जाति का पृक्ष-विशेष, जिसके फल  
खाए जाते हैं । छुहारे का एक भेद ।  
२ मिठाई विशेष ।

खजुरा—सज्ञा पु० गोजर । खनखजूर ।  
बाँतर ।

खजूरी—वि० १ खजूर का । खजूर-सवधी ।  
२ खजूर के आकार का । ३ तीन लडों  
में गुँथा हुआ ।

खज्योति—सज्ञा पु० आकाश वा प्रकाश ।  
आकाश की ज्योति ।

खट—सज्ञा स्त्री० १. खाट । २. कफ ।  
३. अधा कुआँ । ४. घुसा । ५. कुल्हाड़ी ।  
६. ठोकने-पीटने की आवाज । ७. छ ।  
८. दो चीज़ा के टकराने या निरी  
कड़ी चीज़ के टूटने से उत्पन्न शब्द ।

मुहा०—खट से=तुरन्त । तत्काल ।

खटक—सज्ञा स्त्री० सन्देह । चिंता । खटका ।  
शका । सशय ।

खटवना—क्रि० अ० १ टकराने या टूटने का  
सा शब्द होना । 'खटखट' शब्द होना ।  
२ रह-रहकर पीडा होना । ३ खलना ।  
दुरा मालूम होना । ४ उचटना । विरक्त  
होना । ५ डरना । ६. अनिष्ट की भावना  
या आशका होना । ७ परस्पर भगडा  
होना । ८ ठीक न जान पडना । ९  
मन म चिंता या शका पैदा करना ।

खटका—सज्ञा पु० १ 'खटखट' शब्द ।  
टवराने या पीटने का सा शब्द । २ भय ।  
डर । ३ आशका । सन्देह । ४ चिंता ।  
फिक । ५ पैच या कमाना, जिससे  
धुमाने, धवाने आदि से कोई वस्तु खुलती  
या बंद होती हो । ६ विल्ली । निचाड  
की सितकिनी । ७ पेड़ में बँधा बाँस

का टुकड़ा, जिसे हिलाकर चिड़िया उड़ाते  
हैं । ८ पैच । फील ।

खटकाना—क्रि० स० १ ठोकना । 'खटखट'  
शब्द करना । हिलाना या बजाना ।  
२ शका उत्पन्न करना । ३ ठुकराना ।  
४. चलना ।

खटकीडा या खटकीरा—सज्ञा पु० दे० "खट-  
मल" ।

खटखट—सज्ञा स्त्री० १ ठोकने-पीटने का  
शब्द । २ भगडा । लडाई । रार ।  
बखेडा । ३ भभट्ट । भमेला ।

खटखटाना—क्रि० स० खडखडाना । 'खटखट'  
शब्द करना । ठकठकाना ।

खटछप्पर—सज्ञा पु० १ खाट का एक भेद ।  
२ शय्या ।

खटना—क्रि० स० धन कमाना ।  
क्रि० अ० १ काम-धंधे में लगना । २.  
चलना । ३ ठहराना । टिक रहना ।

खटपट—सज्ञा स्त्री० १ विरोध । अनबन ।  
२ भगडा । लडाई । ३ ठोकने-पीटने  
आदि का शब्द ।

खटपटिया—वि० भगडा करनेवाला । भगडालू ।  
बखेडिया ।

सज्ञा स्त्री० खडाऊँ ।

खटपद—सज्ञा पु० दे० "पट्पद" ।

खटपाटी—सज्ञा स्त्री० १ खाट की पाटी ।  
खटपाटी सेना । २ हठ दिखाने को  
रिगमो का काम-धन्धा, खाना-पीना आदि  
छोड देना ।

खटबुना—सज्ञा पु० खटबुनवा । चारपाई  
धुननेवाला ।

खटमल—सज्ञा पु० खटकीडा । कीडा-विशेष  
जो मेली खाटों, कुरसियों आदि में रहता है ।  
मत्स्य ।

खटमिट्टा—वि० खट्टा और मीठा जिसमें  
दोनों स्वाद हों ।

खटमुख—सज्ञा पु० दे० "पटमुख" ।

खटराग—सज्ञा पु० १ दे० "पटराग" । २-  
बखेडा । भभट्ट । ३ भगडा । ४ व्यर्थ  
और शनावस्यय चीजें । ५ अनमेल ।  
६ विरोध ।

खटला-सज्ञा पु० १. परिवार । २ बाड़ा ।  
 ३ स्त्रियो के भागों के वे छेद जिनमें वे बालियाँ पहनती हैं ।  
 खटपाट-सज्ञा स्त्री० दे० "खटपाटी" ।  
 खटाई-सज्ञा स्त्री० १ खट्टी बीज । २ खट्टापन । तुरसी ।  
 मुहा०-खटाई में डालना=बुद्धि निर्णय न करना । दुविधा में डालना ।  
 खटाका-सज्ञा पु० जोरसे 'खट' शब्द । धटाका ।  
 खटाखट-सज्ञा पु० टोकने, पीटने, चलने आदि का लगातार शब्द ।  
 क्रि० वि० १ जल्दी जल्दी । बिना रुके ।  
 २ खटखट शब्द के साथ ।  
 खटाना-क्रि० प्र० खट्टा हुना । किसी वस्तु में खट्टापन आ जाना ।  
 क्रि० प्र० १ निभना । निर्वाह होना । गुजारा होना । २ जाँच में पूरा उतरना । ३ ठहरना ।  
 खटापटी-सज्ञा स्त्री० दे० "खटपट" । अनवन । विरोध । बैर । झगडा । लड़ाई ।  
 खटाव-सज्ञा पु० १ निर्वाह । गुजर । २ नाव बाँधने का सूँटा ।  
 खटास-सज्ञा पु० बिल्लों की जाति का जन्तु-विशेष । गन्धबिलाव ।  
 सज्ञा स्त्री० खटाई । खट्टापन । तुरसी ।  
 खटिक-सज्ञा पु० [स्त्री० खटविन] १ छोटी जाति विशेष । २ बहेलिया ।  
 खटिका-सज्ञा स्त्री० लडकी के लिखने की सड़ी । सेलखड़ी ।  
 खटिया-सज्ञा स्त्री० खटोली । चारपाई । साट । चम्पा ।  
 खटोली-वि० बिना विद्यीने की खाट ।  
 खटोला-सज्ञा पु० दे० "खटोली" ।  
 खटोली-सज्ञा पु० [स्त्री० खटोली] १ छोटी खाट । २ पालना । ३ मझा ।  
 खट्टा-वि० अम्ल । कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का । खट्टाई तैय्य हुए ।  
 मुहा०-जी खट्टा होना=चित्त अग्रसन्न होना । दिल फिर जाना ।  
 सज्ञा पु० नीबू की जाति का बहुत मट्टा फल । गलगल ।

खट्टा मोठा-वि० दे० "खटमिट्टा" ।  
 खट्टी-सज्ञा स्त्री० १ खट्टा नीबू । २ मट्टी वस्तु ।  
 खट्ट-सज्ञा पु० १ वनिहार । २ मजूर । ३. चाकर ।  
 खट्ट-सज्ञा पु० वमानेवाला ।  
 खट्टाग-सज्ञा पु० १ चारपाई का पाया या पाटी आदि । २ शिव का अस्त्र विशेष । ३ वह पात्र जिसमें प्रायश्चित्त करते समय भिक्षा माँगी जाती है । ४ मूर्त्यवशी एक राजा । ५ तांत्रिक मुद्रा-विशेष ।  
 खट्टा-सज्ञा स्त्री० साट । सटिया । पलंग ।  
 खडजा-सज्ञा पु० ईंटा की खड़ी चुनाई । (ऐसी जोड़ाई फर्श पर होती है ।)  
 खड-सज्ञा स्त्री० पयाल । तृण । खर ।  
 खडक-सज्ञा स्त्री० १ दे० "खटक" । २ गोशाला । गोष्ठ । गाँव रहने का स्थान ।  
 खडकना-क्रि० प्र० दे० "खटकना" । झूठ-भनाना । बजाना । अव्यक्त ध्वनि ।  
 खडखडा-सज्ञा पु० १ दे० "खटखटा" । २ बाठ का हाँचा-विशेष, जिसमें जोतकर गाड़ी के लिए घोड़े सधाए जाते हैं ।  
 खडखडाना-क्रि० प्र० खडखड ध्वनि करना । वस्तुमा के परस्पर टकराने से उत्पन्न ध्वनि-विशेष । ठकठकाना ।  
 क्रि० प्र० कई वस्तुओं का परस्पर टकराना ।  
 खडखडिया-सज्ञा स्त्री० डोली । पालकी । पानस । खडखड शब्द करनेवाली गाड़ी ।  
 टूटी-फूटी पुरानी गाड़ी ।  
 खडखडिया गाड़ी-पुरानी या टूटी फूटी गाड़ी ।  
 खड्ग\*-सज्ञा पु० दे० "खड्ग" ।  
 खड्ग-सज्ञा पु० १ तलवार । खाँडा । २ शेर । ३ द्यौत । ४ तांत्रिक मुद्रा-विशेष ।  
 खड्गकोश-सज्ञा पु० म्यान । तलवार, बटार आदि रखने का बाग ।  
 खड्गपत्र-सज्ञा पु० यमपुरी का एक वृक्ष जिसमें तलवार के से पत्ते होते हैं ।  
 खड्गी-सज्ञा पु० १ खड्ग रखनवाला । खड्गधारी । २ गैडा ।  
 खड्ड, खड्डा-सज्ञा पु० गड़ा । गड्ढा ।

सजा पु० गैडा ।

खडजी-सजा पु० दे० 'खडगी' ।

खडबड-सजा स्त्री० १ खटपट । खटखट शब्द । २ हलचल । ३ उलट फर ।

खडबडाना-क्रि० अ० १ घबरााना । २ चौंकना । ३ तितर बितर होना । ब-सरतीव होता ।

क्रि० स० १ किमी चीज को उलट-पुलटकर 'खडबड' शब्द उत्पन्न करना । २ घबरा देना । ३ उलट फर करना ।

खडबडाहट-सजा स्त्री० खडबडान का भाव । खडबडी-सजा स्त्री० १ हलचल । २ गड-बडी । उलट फर ।

खडवीडा-वि० ऊँचा नीचा ।

खडवीहडा-वि० दे० खडग्रिडा । ऊबड खाबड ।

खडमडल-सजा पु० गडबड ।

खडलीच-सजा पु० खँडरिच । खजन ।

खडसान-सजा पु० शान । पत्थर बिनाप । असन तेज करने का पत्थर ।

खडा-वि० [स्त्री० खडी] १ ऊपर को उठा हुआ । सीधा । जैसे—भडा खडा करना । २ स्थिर । ठहरा या टिका हुआ । ३ दंडायमान । गृध्री पर पैर रखकर टांगा को सीधा करके अपने शरीर को ऊँचा किए रहना । ४ तनद्ध । उद्यत । ५ उपस्थित । प्रस्तुत । तैयार । ६ (घर दीवार आदि) निमित्त । स्थापित । उठा हुआ । ७ आरम्भ । ८ बिना पका । कच्चा । ९ जो उल्लाडा या काढा न गया हो । जैसे—खडी फसन । १० पूरा । समूचा । सय ।

मुहा०—खड खड=तुरत । भटपट । खडा जबाब=तुरत इनकार करना । खडा होना=मदद करना । सहायना देना ।

खडाऊ-सजा स्त्री० पादुका । पैर के आकार का नाछ का टुकडा जिसमें अँगूठा और अँगूली घटकाल के लिए खुनी बनी रहती है और जो पर में पहनी जाती है ।

खडका-सजा पु० खटका ।

खडिया-सजा स्त्री० एक तरह की सफ़द मिट्टी । खरिया । दुबिया मिट्टी । दे० खडिया ।

खडी-सजा स्त्री० सफ़द मिट्टी ।

वि० दंडायमान ।

खडीबोली-सजा स्त्री० मेरठ के आसपास बोली जानवानी पश्चिमी हिन्दी बोली, जिसका उपयोग आज की साहित्यिक हिन्दी में होता है ।

खडआ-सजा पु० बलय । कडा ।

खँडचड-सजा पु० पत्नी विशप । खजरीट । खजन ।

खत-सजा पु० धाव । जरम ।

खत-सजा पु० [अ०] १ निट्ठी । पत्र । २ लकीर । रेखा । ३ लिखावट । ४ दाडी के बाल । हजामत ।

खतखोट-सजा स्त्री० खुरड । धाव के ऊपर जमी हुई पपडी ।

खतना-सजा पु० [अ०] मुसलमानी । लिंग के अंगल भाग का ऊपरी चमडा काटन की मुसलमानी रस्म । सुनत ।

खतम-वि० पूण । इति । समाप्त । अन्त । मुहा०—खतम करना—मार डालना ।

खतमी-सजा स्त्री० एक प्रकार का पीधा ।

खतर-सजा पु० १ भय । डर । २ आशका । ३ ठीक । सन्देह ।

खतरानी-सजा स्त्री० खत्री जाति की स्त्री ।

खतरेटा-सजा पु० दे० 'खत्री' ।

खता-सजा स्त्री० [अ०] १ दीप । अपराध । कसूर । २ भूल । गलती । ३ पोखा ।

खतान-सजा स्त्री० जमाखच की खतोनी । लखा । हिसाब ।

खतावार-वि० अपराधी । दोषी । भून करन वाला ।

खतिपाना-क्रि० स० आय-व्यय आदि की खाते में अलग अलग मद में लिखना । हिसाब लिखना ।

खतिपानी-सजा स्त्री० १ खाता । अलग अलग हिसाबवाली बही । २ खतियान का काम ।

खता-सजा पु० [स्त्री० खती] १ अन्न रखन की जगह । २ अन्न रखन का गड्ढा । खतम-वि० दे० खतम ।

सत्री-संज्ञा पु० [स्त्री० सतरानी] हिंदुओं की जाति-विशेष । पंजाब की रहनेवाली एक व्यापारी जाति ।

सवग-संज्ञा पु० तीर ।

सवसदाना, सवसदाना-प्रि० अ० १. उबलना ।

२. उबलने का शब्द । सवसद करना ।

सवरा-संज्ञा पु० गड़वा ।

वि० रही । निवम्मा ।

सवान-संज्ञा स्त्री० खान । किसी वस्तु के निवालने के लिए खोदा जानेवाला गड़वा ।

सविर-संज्ञा पु० १. वर्या । २. वर्ये या खैर का पेड़ । ३. इद्र । ४. चद्रमा ।

सवेष्ट-संज्ञा पु० दोड़ । पीछा करना ।

सवेष्टना, सवेष्टना-प्रि० स० १. दूर करना ।

२. दोड़ना । भगाना । पीछा करना ।

सवड, सवड-संज्ञा पु० खादी । गाढ़ा ।

हाथ से काटे हुए सूत का घुना कपड़ा ।

सद्योत-संज्ञा पु० १. जुगनू । २. सूर्य ।

३. पटबीजना ।

सन-संज्ञा पु० १. क्षण । समय ।

२. तुरन्त । ३. (मकान का) खड ।

भाग ।

सनक-संज्ञा पु० १. जमीन खोदनेवाला ।

२. भूतत्त्व-शास्त्र जाननेवाला । ३. मूसा ।

चूहा । ४. सेंध लगानेवाला ।

संज्ञा स्त्री० टकराने या बजने का शब्द ।

सनकना-प्रि० अ० १. सनसनाना । बजना ।

सनसन शब्द करना । ठनठन ध्वनि होना ।

२. टकराने का शब्द होना ।

सनकाना-प्रि० स० १. बजाना (रुपया धाली आदि) । २. सनसन शब्द करना ।

सनसनाना-प्रि० अ० १. सनकना ।

प्रि० स० सनकना । बजाना ।

सनन-संज्ञा पु० १. नष्ट करना । २. खान खोदना । ३. गढ़ा खोदना । ४. गोडना ।

सनना-संज्ञा पु० १. सनन करना ।

खोदना । २. गोडना । कोडना ।

सन्धाना, सन्धाना-प्रि० स० सनने का काम

दूसरी से करना ।

सनहन-प्रि० १. हलना । पतला । दुबला ।

२. सुन्दर ।

सना-संज्ञा स्त्री० प्रसिद्ध ज्योतिषास्त्र-विदुषी स्त्री । यह पित्रमादित्य की सना के तवरत्नो में से एक रत्न बराहमिहिर की स्त्री थी ।

सनि-संज्ञा स्त्री० आयर । खान । घातुओं का उत्पत्ति-स्थान ।

वि० खोदकर । खोद करके ।

सनिज-वि० खान का । खान से खोदकर

निवाला हुआ ।

सनिज-संज्ञा पु० खोदने का अस्त्र । दे०

'सन्ता' । गैनी ।

सनोना-संज्ञा पु० दे० "सनना" ।

सपची-संज्ञा स्त्री० १. कमाची । कमठी ।

बाँस की पतली पटरी । २. बाँस की पतली

तीली ।

सपटा-संज्ञा पु० ठीकरा । सपरा । सपरे का

टुकड़ा ।

सपड़ा-संज्ञा पु० १. सपरल । २. सप्पर ।

भीख माँगने का मिट्टी का बरतन । ३.

बछ्छा की पीठ । ४. ठीकरा । मिट्टी के

टूटे बरतन का टुकड़ा । गेहूँ का एक बीड़ा ।

५. चौड़े फलवाला तीर ।

सपड़ी-संज्ञा स्त्री० १. हंडिया । २. दे०

"सोपड़ी" ।

सपईल-संज्ञा स्त्री० दे० "सपरल" ।

सपत, सपती-संज्ञा स्त्री० १. माल की

विश्री । माल इस्तेमाल होना । २. समाई ।

गुजाइश ।

सपना-प्रि० अ० [संज्ञा सपत] १. विश्री

होना । २. काम में आना । लगना ।

३. चल जाना । ४. निभना । गुजारा

होना । ५. नष्ट होना । ६. परेशान

होना । ७. घटना । बम होना ।

सपरा-संज्ञा पु० दे० "सपड़ा" ।

सपरिया-संज्ञा स्त्री० १. एक सनिज पदार्थ ।

दक्कन । रस । २. कीट-विशेष ।

सपरी-संज्ञा स्त्री० घड़ा आदि का फूटा भाग ।

छाटा सपरा ।

सपरल-संज्ञा स्त्री० सपटे से छाई हुई

छत । सपईल ।

सपांच, सपांची-संज्ञा स्त्री० बाठ या बाँस का

टुकड़ा ।

अपाना-क्रि० स० १. किसी प्रकार काम में लाना । २. नष्ट करना । ३. निभाना । निर्वाह करना । ४. समाप्त करना । ५. तग करना ।

मुहा०-माथा या सिर खपाना=सोचते सोचते हँरान होना । सिर-पञ्ची करना । खपुर-सज्ञा पु० १. स्वर्ग । २. पुराणानुसार आकाश का एक नगर । ३. राजा हरिश्चन्द्र की पुरी जो आकाश में स्थित मानी जाती है । ४. सुपारी का पेड़ । ५. आकाश । ६. भद्रमोथा । ७. बघनछा ।

खपुष्प-सज्ञा पु० १. आकाश-कुसुम । २. अनहोनी घटना । असम्भव कार्य । वि० अप्रसिद्ध । मिथ्या ।

खप्पर-सज्ञा पु० १. तसले के आकार का पात्र । २. काली देवी के रुधिर पीने का पात्र । ३. बपाल । खोपड़ी । ४. भिक्षापात्र । मुहा०-खप्पर भरना=खप्पर में मदिरा आदि भरकर देवी पर चढ़ाना ।

खफगी-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. अप्रसन्नता । नाराजगी । २. त्रोध ।

खफा-वि० [अ०] १. अप्रसन्न । नाराज । २. रुष्ट । क्रुद्ध ।

खफीफ-वि० [अ०] १. हलका । २. छोटा । कम । थोड़ा । ३. क्षुद्र ।

खबर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. संवाद । समाचार । वृत्तांत । हाल । २. ज्ञान । सूचना । जानकारी । ३. संदेश । ४. सुधि । सज्ञा । ५. पता । खोज ।

मुहा०-खबर उठना=चर्चा फैलना । अफ-वाह फैलना । खबर लेना=१. सहायता करना । २. सजा देना ।

खबरगोरी-वि० [सज्ञा खबरगोरी] देख-भाल करनेवाला । सरक्षक । भेदिया । जासूस ।

खबरगोरी-सज्ञा स्त्री० रखवाली । देखभाल । खबरदार-वि० [फा०] सावधान । सजग । होशियार ।

खबरदारी-सज्ञा स्त्री० सावधानी । चौकसी । होशियारी ।

खबरनवीस-सज्ञा पु० खबर लिखकर भेजने-

वाला । संवाददाता । समाचार-लेखक । राजाश्री आदि के पास समाचार लिखकर भेजनेवाला ।

खयोस-सज्ञा पुं० १. कंजूस । २. निकम्मा । ३. मूर्ख । ४. भूतप्रेत । दुष्टात्मा ।

खव्त-सज्ञा पुं० (अ०) [वि० खव्ती] सनक । भक्क ।

खव्ती-वि० १. सनकी । २. पागल । भक्की । खव्वा-वि० बायाँहट्या । डेढ़हट्या ।

खंभरना-<sup>+</sup>क्रि० स० १. मिलाना । २. उथल-मुथल मचाना ।

खभाच-सज्ञा स्त्री० रागिनी-विशेष ।

खभार-सज्ञा पु० १. क्षोभ । २. मोह । ३. हलचल । ४. खडबड ।

खभार-सज्ञा पु० १. पेट की जलन । २. घबराहट । हडबडाहट ।

खम-सज्ञा पु० झुकाव । टेढ़ापन । गाने के बीच का विश्राम ।

मुहा०-खम खाना=१. मुडना । झुकना । दबना । २. हारना । खम ठोकना=१. लड़ने के लिए ताल ठोकना । २. दृढ़ता दिखलाना । खम ठोककर=दृढ़ता या निश्चयपूर्वक । जोर देकर ।

खमदम-सज्ञा पु० साहस । पुरुषार्थ । हिम्मत ।

खमसा-सज्ञा पु० गजल-विशेष ।

खमा<sup>+</sup>-सज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा" ।

खमियाजा-सज्ञा पु० [फा०] १. धुरे काम का परिणाम । फलभोग । २. अँगड़ाई ।

खमोर-सज्ञा पु० १. माया । २. गुंथकर उठाया हुआ आटा । ३. प्रकृति । स्वभाव । ४. शीरा जो तवाकू में डाला जाता है ।

खमीरा-वि० पु० [स्त्री० खमीरी] १. शीरे में पकाकर बनाई हुई ओषध । जैसे—खमीरा बनफशा । २. खमीर उठाकर बनाया या खमीर मिलाया हुआ ।

खमीलन-सज्ञा पु० यकावट । क्लान्ति । अवसाद । श्रान्ति ।

खमीश-वि० दे० "खामोश" ।

खम्माच-सज्ञा स्त्री० रागिनी-विशेष, जो रात के दूसरे पहर में गाई जाती है ।

ख्यानत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ चोरी या चैईमानी। २ धरोहर रखी हुई वस्तु न देना अथवा कम देना। गवन।  
 खयाल-सज्ञा पु० दे० "ख्याल"। ध्यान। याद। स्मरण।  
 खरजा-सज्ञा पु० १ पटाव। २ पक्का बनाया हुआ। ३ पक्की सड़क। ४ ईंटों का समूह।  
 खर-सज्ञा पु० १ गया। २ खच्चर। ३ बीबा। ४ बगला। ५ राक्षस विशेष जो शूर्पनखा का भाई था। ६ तिनका। ७ पास। ८ साठ सवत्सरो में से एक। ९ छप्पय छद का भेद विशेष। वि० १ बड़ा। सक्षत। २ उत्तम। तीक्ष्ण। तेज। ३ हानिकर। ४ अशुभ। जैसे—खर मास। ५ तेज धार का।  
 खरब-सज्ञा पु० १ बाड़ा। चौपायो को रखने के लिए लकड़ियाँ गाड़कर बनाया हुआ घेरा। डाँडा। २ गोशाला। ३ पशुओं के चरने का स्थान। ४ बाँसों की पट्टियाँ का केबाड़। टट्टर।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "खडक"।  
 खरकना-क्रि० अ० १ दे० "खडकना"। २ फाँस चुभने का सा दर्द होना। ३ सरकना। चल देना। मसकना। ४ धमकाना। भगाना। ५ गिरना।  
 खरका-सज्ञा पु० तिनका। दे० "खरब"।  
 मुहार-खरका करना=भोजन के उपरांत तिनके से खोदकर दाँत साफ करना।  
 खरखर या खरखरा-१ खुरखुरा। जो समतल न हो। गरहरा। दरदरा। २ तेज। शीघ्र।  
 खरखमा-सज्ञा पु० [फा०] १ भगडा। लड़ाई। २ डर। भय। ३ भागना। खटका। ४ बखेडा। झूठ।  
 खरखोकी\*-सज्ञा स्त्री० अग्नि।  
 खरग-सज्ञा पु० दे० "खडग"।  
 खरगोश-सज्ञा पु० [फा०] खरहा।  
 खरब-सज्ञा पु० दे० "खरब"।  
 खरबना-क्रि० म० १ व्यय करना। खर्च करना। २ प्रयोग करना। व्यवहार में लाना।

खरचा-सज्ञा पु० दे० १. "खरका"। २ दे० "खर्चा"। व्यय।  
 खरधरा-वि० लडखड। झडझड। दरदरा।  
 खरतल-वि० १ खरा २ स्पष्टवादी। ३ गुढ़ हृदयवाला। ४ स्पष्ट। साफ। ५ उग्र। प्रचंड।  
 खरता-वि० तीक्ष्ण। बहुत तेज।  
 खरतुआ-सज्ञा पु० बसुए की तरह की एक पात।  
 खरदनी-सज्ञा स्त्री० खरादने का औजार।  
 खरबुक-सज्ञा पु० एक प्रकार का प्राचीन पहनावा।  
 खरदूषण-सज्ञा पु० १ खर और दूषण नामक राक्षस, जो रावण के भाई थे। २ धतूरा।  
 खरपार-सज्ञा पु० तेज धारवाला अस्त्र।  
 खरपत्र-सज्ञा पु० सुगन्धित पौधा। मरवा।  
 खरपा-सज्ञा पु० १ मडाँड़। २ स्त्रियों के पहनने का जूता। ३ जीबगला।  
 खरब-सज्ञा पु० सौ अरब की सरपा।  
 खरबूजा-सज्ञा पु० गोल फल जो गर्मियों में होता है।  
 खरभर-सज्ञा पु० १ हलचल। गडबड। खलबली। उथलपुथल २ शोरगुल। ३ शोभ। ४ अवसाद।  
 खरभरना-क्रि० अ० शुब्ध होना। धबडाना।  
 खरभराना-क्रि० अ० १ खरभरना करना। २ हलचल मचाना। ३ शोर करना। ४ धबडाना। व्याकुल होना। ५ गडबड करना।  
 खरभरनी-सज्ञा स्त्री० पाजीपन। बुद्धि। धारत।  
 खरमास-सज्ञा पु० दे० "खरवांस"।  
 खरमिटाव-सज्ञा पु० १ जलपान। २ गुजराहट दूर करना।  
 खरपटिका-सज्ञा स्त्री० खिरहरी। शीप-विशेष।  
 खरल-सज्ञा पु० १ खल। २ शीपघ गूटने के लिए पथर का पात्र।  
 खरवांस-सज्ञा पु० पूम और धेनू का महीना।

बहु महीना जिसमें मागलिक कार्य करना वजिर्त हो, जैसे पूस और चैत का महीना ।  
खरवा-सज्ञा पु० १. जूती । २. पैर के तलवा उँगलियों के बीच की फटी हुई सफेद दरार ।

खरावा-सज्ञा पु० पकवान-विशेष ।

खरसान-सज्ञा स्त्री० एक सान जिस पर हथियार तेज किए जाते हैं ।

खरहरा-सज्ञा पु० [स्त्री० खरहरी] १ भँसरा । अरहर के डटलो से बना हुआ भाड़ । २ घोड़े के रोएँ साफ करने के लिए दाँतीदार कधी । ऊषा ।

खरहरी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मेवा ।

खरहा-सज्ञा पु० खरगोश ।

खरहारना-क्रि० स० बुराहना । भाड़ना । बटोरना ।

खरहिन्द-सज्ञा स्त्री० जली घास । दुग्ध ।

खरही-सज्ञा स्त्री० १ ढाल । ढेर । राशि । २ खरगोश की भादा ।

खरा-वि० १ चौखा । तज । तीखा । २

उत्तम । बढ़िया । अच्छा । विशुद्ध ।

घिना मिलावट का । ३ करारा ।

सेकनर कड़ा किया हुआ । ४ अष्ट ।

५ कड़ा । ६ छल-कपट से रहित ।

नकद (दाम) । ७ सच्चा । ८ स्पष्ट-

वक्ता । ९ (बात के लिए) सच्चा ।

यथातथ्य । १० अधिक । ज्यादा । ११

पैना । १२ गरम ।

खराई-सज्ञा स्त्री० १ खरापन । "खरा"

का भाव । २ सत्यता । सचाई । ३

उत्तम । ४ सवेरे अधिक देर तक जलपान

या भोजन आदि न मिलने के कारण

तबीअत खराब होना ।

खराद-सज्ञा पु० यत्र विशेष, जिस पर चढ़ा-

कर लकड़ी, धातु आदि की वस्तुएँ चिकनी

और सुडौल की जाती हैं ।

सज्ञा स्त्री० १ बनावट । गढन । २ खरादने

का भाव या क्रिया ।

खरादना-क्रि० स० १ काट-छाँटकर सुडौल

बनाना । २ खराद पर चढ़ाकर किसी

वस्तु को साफ और सुडौल करना ।

खरादी-सज्ञा पु० खरादने का काम करने-

वाला ।

खरापन-सज्ञा पु० १ खरा का भाव । २.

निर्भयता । ३ सचाई । सत्यता ।

खराब-वि० [अ०] १. बुरा । निकृष्ट ।

तुच्छ । २. नीच । हीन । ३ दुर्दशा-

ग्रस्त । ४. पतित ।

खराबो-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ अयगुण ।

दोष । बुराई । २ बुरी अवस्था । दुर्दशा ।

खराबेध-सज्ञा स्त्री० धार या मूत्र की सी

दुर्गंध ।

खराबि या खरारी-सज्ञा पु० १ विष्णु

भगवान् । २ रामचन्द्र । ३ कृष्णचन्द्र ।

४ खरदैत्य के दायु । दुष्टों के नाश करने-

वाले ।

खराशु-सज्ञा पु० सूर्य ।

खराश-सज्ञा स्त्री० [फा०] खरोच ।

खरिक-सज्ञा पु० १ गोशाला । २ सड़क ।

३ ऊँख जो खरीफ की फसल के बाद बोई

जाय ।

खरिया-सज्ञा स्त्री० १ पाँसी । घास, भूसा

बाँधने की पतली रस्ती से बनी हुई जाली ।

२ झोली । ३ दे० "खडिया" ।

खरियाना-क्रि० स० १ धँसे म भरना ।

झोली म डालना । २ ले लेना । ३

झोली में से गिराना ।

खरिहान-सज्ञा पु० दे० "खलियान" ।

खरीा-सज्ञा स्त्री० १ दे० "खडिया" । २.

गधी । ३ दे० "खली" ।

वि० उत्तम । अच्छी । चोखी । बली ।

खरीता-सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० खरीती]

धँली । जेब । खोसा । घड़ा लिफाफा ।

खरीद-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ क्रय । मोल

लेना । २ मोल ली हुई वस्तु ।

खरीदना-क्रि० स० क्रय करना । मोल

लेना ।

खरीदार-सज्ञा पु० १ ग्राहक । माल लेने-

वाला । २ चाहनेवाला । इच्छुक । क्रय

करनेवाला ।

खरीफ-सज्ञा स्त्री० फसल विशेष जो आषाढ

से अगहन तक में पाटी जाय ।

खरे-वि० उत्तम । अच्छे । शोते । खडे ।  
सज्ञा० पु० श्रीवास्तव नायको के दो भेदों में से एक ('खरे' और 'दूखरे' ये दो भेद हैं) ।  
खरोच-सज्ञा स्त्री० सरास । छिलने का चिह्न ।  
खरोचना-क्रि० सं० १. छीलना । खुरचना । खरोना । २. ससोटना । बखोटना ।

खरोट-सज्ञा स्त्री० दे० "खरोच" ।  
खरोटना-क्रि० सं० नाखून गढाकर शरीर में घाव करना । दे० "खरोचना" ।  
खरोट्टी, खरोट्टी-सज्ञा स्त्री० प्राचीन लिपि-विशेष, जो फारसी की तरह दाहिने से बाएँ की लिखी जाती थी । गाधार लिपि ।  
खरोट-सज्ञा स्त्री० दे० "खरोच" ।  
खरोहा-वि० कुछ खारापन लिये हुए । कुछ नमकीन ।

खर्च-सज्ञा पु० १ व्यय । किसी काम में किसी वस्तु का लगना । खपत । २ किसी काम में लगाया जानेवाला पन ।  
खर्चा-सज्ञा पु० दे० "खर्च" । व्यय ।  
खर्चाला-वि० आवश्यकता से अधिक व्यय करनेवाला । बहुत खर्च करनेवाला ।  
खर्ज-सज्ञा पु० पड़ज । राग उच्चारण का स्थान-विशेष ।  
खजूर, खजूर-सज्ञा पु० १ खजूर । छुहारा । २ हस्ताल । ३ चाँदी । ४ बिच्छू ।  
खर्जूरिका-सज्ञा स्त्री० पिण्डी खजूर । पिण्ड खजूर ।

खजूरी-सज्ञा स्त्री० मूसली । ग्रीष्म-विशेष ।  
खपर-सज्ञा पु० १ रुधिरपात करने का काली देवी का पात्र । २ खप्पर । खोगडी । ३ खपरिया नामक उपधातु । ४ भिक्षापात्र ।

खर्व-वि० १ जिसका घग भग्न या अपूर्ण हो । २ लघु । छोटा । नाटा । ३. क्षुद्र । ह्रस्व । ४ बीना । वामन ।  
सज्ञा पु० १ खरव । सौ भरव की सख्या । २ बुवर की नौ निधियों में से एक ।  
खर्चा-वि० दे० "खर्चाला" ।

खर्चा-सज्ञा पु० १ जया कागज जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो ।

२. पाण्डुलिपि । भगविदा । ३ टट्टर । ४. खरखरा । ५. पीठ पर छोटी-छाटी पृष्ठियाँ निकलने का रोग-विशेष । ६ खगरा ।  
खरटा-सज्ञा पु० १. सोते समय नाक से निकलनेवाला शब्द । २. शीघ्रता । ३. गाढी नीद ।

मुहा०—खरटा भरना, भरना या लेना= निश्चित होकर सोना ।

खर्वट-सज्ञा पु० चार गो गाँवों के बीच बसा हुआ गाँव ।

खलगा-सज्ञा पु० उपवन । रमणीय स्थान । मनोहर वन ।

खल-वि० १ दुष्ट । दुर्जन । २ नीच । अधम । ३ दूर ।

सज्ञा पु० १ सूर्य । २ धतूरा । ३ तमान का पेड़ । ४ पृथ्वी । ५ खलियान । ६ खरल । ७ स्थान ।

खलक-सज्ञा पु० [अ०] १ सृष्टि के प्राणी या जीव । २ ससार । दुनिया । जगत् ।

खलकत-सज्ञा स्त्री० सृष्टि । समूह । भीड़ ।  
खलक्या-सज्ञा स्त्री० १ धूर्तों की कथा । २ चापलूसी की बात ।

खलखल-सज्ञा स्त्री० १ खलबल । २ खडबड । ३ नदी के वेग में जल की ध्वनि ।

खलडी-सज्ञा स्त्री० दे० १ "खाल" । २ चमडी । ३ छाल ।

खलता-सज्ञा स्त्री० १ नीचता । दुष्टता । २ धूर्तता । ३ क्रूरता ।

खलना-क्रि० अ० १ अभ्रिय होना । २ घुरा लगना । ३ बप्टदायी होना ।

खलबल-सज्ञा स्त्री० १ हलचल । २ कुस-बुलाहट । हल्ला । ३ झोरगुल । ४ बतूहल । ५ उत्सुकता । ६ अधीरता ।

खलबलाना-क्रि० अ० १. उपनना । खोलना । २ खलबल शब्द करना । ३ ऊपर उठना । ४ हिलना डालना । ५ विचलित होना । ६ परेशान होना ।

खलबलो-सज्ञा स्त्री० १. हलचल । २ भय से घबड़ाहट । ध्यावृत्तता । परेशानी । बेचैनी ।

खलल-सज्ञा पु० [अ०] खकावट । बाधा । रोक ।

खला-सज्ञा स्त्री० दुष्ट स्त्री। वेदया।  
 खलाई-सज्ञा स्त्री० दुष्टता। कुटिलता।  
 नीचता।  
 खलाना\*†-क्रि० स० १. खाली करना। २.  
 पिचकाना। फूली हुई सतह को नीचे की  
 ओर धँसाना। ३. गड़ड़ा करना।  
 खलार-सज्ञा स्त्री० नीची भूमि।  
 खलारि-सज्ञा पु० १. नारायण। विष्णु। २.  
 सज्जन।  
 खलारु-दे० "खलार"।  
 खलास-वि० १. मुक्त। छूटा हुआ। २.  
 गिरा हुआ। च्युत। ३. समाप्त।  
 खतम।  
 खलासी-सज्ञा स्त्री० छुट्टी। छुटकारा।  
 सज्ञा पु० [दिश०] कुर्ली। पोर्टर। जहाज  
 पर का नौकर। माल ढोनेवाला।  
 खलास-सज्ञा पु० [प्र०] दाँत खोदने का  
 खरका।  
 खलित\*-वि० १. चंचल। चलायमान। २.  
 गिरा हुआ।  
 खलियान-सज्ञा पु० १. ऐसी जगह जहाँ  
 फसल काटकर रखी और साफ की जाती  
 है। २. ढेर। राशि। ३. खसा।  
 खलियाना-क्रि० स० १. चमड़ा अलग करना।  
 २. खाल उतारना। छीलना। ३. उधेड़ना।  
 †क्रि० स० रिक्त करना। खाली करना।  
 खालश-सज्ञा स्त्री० पीड़ा। कसक।  
 खलिहान-सज्ञा पु० दे० "खलियान"।  
 खली-सज्ञा स्त्री० [फा०] तेल निकाल लेने पर  
 तेलहन की बची हुई सीड़ी।  
 सज्ञा स्त्री० १. खल। नीच। अधम।  
 २. सरसो, तिल आदि का तैलरहित  
 चूर्ण।  
 खलीन-सज्ञा पु० कविका। लगाम।  
 खलीता-सज्ञा पु० १. दे० "खरीता"।  
 २. पत्र। धैली। चिट्ठी-पत्री।  
 खलीफा-सज्ञा पु० [अ०] १. अधिकारी।  
 अध्यक्ष। २. वृद्ध व्यक्ति। ३. खुराफ।  
 ४. नाई। ५. खानसामा ६. दर्जी।  
 खलु-अव्य० क्रि० वि० १. शब्दांतवार।  
 २. प्रार्थना। ३. प्रश्न। ४. निषेध।

५. नियम। ६. निश्चय। ७. निःसन्देह।  
 सशयरहित।  
 खल्ल-सज्ञा पु० १. गडा। २. फुलेल में खली  
 आदि का घचा हुआ ग्रथ।  
 खल्लड़-सज्ञा पु० १. शीघ्र कूटने का  
 खल। २. चमड़ा। ३. चमड़े की मशक  
 या थैला।  
 खल्व-सज्ञा पु० १. सिर के बाल झड़नेवाली  
 बीमारी। २. गज।  
 खल्वद-सज्ञा पु० गज रोग जिसमें सिर के  
 बाल झड़ जाते हैं।  
 वि० गजा। जिसके सिर के बाल झड़  
 गए हों।  
 खबा-सज्ञा पु० स्कंध। कथा। भुज-  
 मूल।  
 खबाना\*†-क्रि० स० दे० "खिलाना"।  
 भोजन कराना।  
 खबास-सज्ञा पु० [स्त्री० खवासिन] राजाओं  
 और रईसों का खास खिदमतगार या  
 सेवक।  
 खबासी-सज्ञा स्त्री० १. खवास का काम।  
 २. नौकरी। चाकरी। ३. हाथी के हाँदे  
 या गाड़ी आदि में पीछे की जगह, जहाँ खवास  
 बैठता है।  
 खबया-सज्ञा पु० खानेवाला।  
 खस या खश-सज्ञा पु० १. भारत के उत्तर  
 की ओर स्थित प्राचीन देश-विशेष। २. इस  
 प्रदेश में रहनेवाली प्राचीन जाति-विशेष।  
 ३. एक प्रकार का सुगन्धित तृण।  
 खसकत†-सज्ञा स्त्री० खसकने का काम।  
 चम्पत होना। गुम होना। भाग जाना।  
 खसकना-क्रि० अ० १. सरकना। धीरे-धीरे  
 एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।  
 २. नीचे आना। ३. हटना। ४. भाग  
 जाना। ५. गायब हो जाना।  
 खसकाना-क्रि० स० १. हटाना। २. गुप्त  
 रूप से, कोई चीज हटाना। ३. सरकाना।  
 बढ़ाना।  
 खसखस-सज्ञा स्त्री० पोस्ते का दाना। उसीर।  
 "खस।"  
 खसखसा-वि० भुरभुरा।

संज्ञा, वि० १ गला सुखना । २ गले की मुग्मुसहट ।

खसलाना-सज्ञा पु० [का०] घस की टट्टियों से घिरा हुआ घर या कोठरी ।

खसलाना-सज्ञा स्त्री० दे० "खसलान" ।  
खसलानी-वि० नीलापन लिये सफेद रंग ।  
पोस्ते के कूल के रंग का ।

खसटा-सज्ञा पु० १ घाटा । २ खुंटी ।  
३ खुजली ।

खसना\*-वि० घ० खसवना । गिरना । अपने स्थान से हटना । धँसना । नीचे आना ।

खसम-सज्ञा पु० [ध०] १ पति । २ स्वामी ।  
खसरा-सज्ञा पु० १ हिसाब बिताय का कच्चा चिट्ठा । २ पटवारी का कागज-विशेष जिसमें प्रत्येक खेत का नंबर, खवा आदि लिखा रहता है । ३ बरी । ४ खर्चा ।  
५ छोटी चक्क ।

सज्ञा पु० खुजली विशेष ।

खसलत-सज्ञा स्त्री० [ध०] स्वभाव । आदत ।  
खसलाना-क्रि० स० गिराना । नीचे की ओर टपेलना या फँकना ।

खसिया-वि० १ बधिया । जिसने अङ्कोष निवाल लिए गए हो । २ नपुंसक ।  
हिजडा । ३ यवरा ।

खसी-सज्ञा पु० बवरा ।

वि० सरकी । नीचे आई । गिरी ।

खसीस-वि० कृपण । कजूस । सूम ।

खसीस-सज्ञा स्त्री० १ उखाड़ने या नोचने-वाला । २ छीननवाला ।

खसीसना-क्रि० स० १ नोचना । उखाड़ना ।  
२ छीनना । बलपूर्वक लेना ।

खसीसी-सज्ञा स्त्री० दे० "खसीस" ।

खस्ता-वि० १. भुरभुरा । जल्दी टूटनेवाला ।  
"२ ताजा ।

खसफटिक-सज्ञा पु० १ काँच । २ सूर्यमणि ।  
आकाश की मणि ।

खसी-सज्ञा पु० [ध०] यवरा ।

वि० १ नपुंसक । हिजडा । २ बधिया ।

खहर-सज्ञा पु० गणित में यह राशि जिसका हर शून्य हो ।

खी-सज्ञा पु० दे० "खान" ।

खीखर+वि० १ मोखला । २ जिममें बहुत छेद हो । सूरालदार । ३ जिमकी बनावट दूर-दूर पर हो ।

खींग+सज्ञा पु० १ मोकीली वस्तु । २. बटव ।  
पाँटा । ३ तीतर, मुर्ग आदि पक्षिया के पैरों में निबलनेवाला काँटा । ४ गंडे के मुँह पर का सींग । ५ बड़ा दाँत ।

+सज्ञा स्त्री० कमी । घुटि ।

खीगड-वि० १ शम्भुधारी । २ कँटीला ।

खींगना+वि० ध० १ कम होना । घटना ।  
२ लग जाना ।

खीगड, खीगडा-वि० १ खींगवाला । जिसके खींग हो । २ बलवान् । ३ शम्भुधारी ।  
४. उद्द । अक्कड ।

खींगी+सज्ञा स्त्री० घुटि । कमी ।  
घाटा ।

खीच+सज्ञा स्त्री० १ सधि । २ जोड़ ।  
३ खीचकर बनाया हुआ निशान । ४ गठन । खचन । ५ कीचड़ । काँदा ।

खीचना+क्रि० स० [वि० खींचना] १ धिन्न बनाना । अन्नित करना । २ खीचना ।  
३ जल्दी-जल्दी लिखना ।

खीचा-सज्ञा पु० [स्त्री० खींची] भावा ।  
टोकरा ।

खीचा-सज्ञा पु० पाठ का थडा पात्र ।

खीच-सज्ञा स्त्री० कच्ची शक्कर । कच्ची चीनी ।

खीचना-क्रि० स० १ तोड़ना । २ चबाना ।  
३ कूचना । ४ छोटना । कूटना । कूट-कर अनाज साफ करना ।

खीचर-सज्ञा पु० टुकड़ा ।

खीचव-सज्ञा पु० वन विशप । इन्द्र का वन ।

खीच-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का शस्त्र ।  
खडग विशेष । २ टुकड़ा । भाग ।

खीचना+क्रि० स० खाना ।

खीभ+सज्ञा पु० खभा । खभ ।

खीय+सज्ञा पु० चौड़ी खाई ।

खीसना-क्रि० ध० १ कफ को कंठ से बाहर निकालना । २ किसी अटकी हुई वस्तु को गले से बाहर निकालना ।

खांसी-सज्ञा स्त्री० १. खोखी । २. खांसने का शब्द । ३. अधिक खांसने का रोग ।

खाई-सज्ञा स्त्री० १. महल या दुर्ग की रक्षा के लिए चारों ओर खोदी गई नहर । २. खदक । ३. नाला ।

खाऊ-वि० १. पेटू । बहुत खानेवाला । २. खा जानेवाला । ३. आलसी ।

खाक-सज्ञा स्त्री० १. मिट्टी । धूल । राख । २. अविचन । तुच्छ । कुछ नहीं जैसे-ये खाक पढ़ते-लिखते हैं ।

मुहा०—(कही पर) खाक उड़ना=उजाड़ होना । बरबादी होना । खाक उड़ाना या छानना=मारा-मारा फिरना । खाक में मिलना=बरबाद होना । बिगड़ना ।

खाकसार-वि० [फा०] धूल में मिला हुआ । तुच्छ । अविचन । अतिदीन । सेवक । सज्ञा पु० भारत में मुसलमानों का एक राजनीतिक दल, जिसका हरेक सदस्य 'फावड़ा' लेकर चलता है । अंग्रेजी शासन-काल में यह दल मुसलमानों की ओर से आन्दोलन कर रहा था ।

खाकसारी-सज्ञा पु० नम्रता । दीनता । खाकसीर-सज्ञा स्त्री० एक ग्रोपध । खूबकला । खाका-सज्ञा पु० १. नकशा । रूपरेखा । मानचित्र । २. ढाँचा ।

मुहा०—खाका उड़ाना=हँसी उड़ाना । खाकी-वि० [फा०] १. मिट्टी से बना हुआ । २. भूरा । मिट्टी के रंग का । ३. बिना सीधी हुई भूमि ।

सज्ञा पु० मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय ।

खाग-सज्ञा पु०, गेंडे के सींग ।

खाज-सज्ञा स्त्री० खजली रोग ।

मुहा०—कोठ की खाज=कष्ट को घटानेवाला दूसरा कष्ट ।

खाना-सज्ञा पु० नंदे और चीनी की बनी एक मिठाई ।

खाजी\*-सज्ञा स्त्री० खाने की वस्तु ।

मुहा०—खाजी खाना=मुँह की खाना । बुरी तरह असफल होना ।

खाट-सज्ञा स्त्री० खटिया । चारपाई । पलंगड़ी । खाड़\*-सज्ञा पु० गड्ढा ।

खाड़ी-सज्ञा स्त्री० समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से घिरा हो ।

खात-सज्ञा पु० १. खोदाई । खोदना । २. तालाब । पोखर । कुआँ । ३. गड्ढा । ४. खाद, कूड़ा और मैला जमा करने का गड्ढा । गोबर ।

खातक-सज्ञा पु० ऋणी । कर्जदार ।

खातपा-सज्ञा पु० १. मृत्यु । २. अत । समाप्ति ।

खाता-सज्ञा पु० १. बखार । २. भन्न रखने का गड्ढा । ३. वही । ध्योरेवार हिसाब ।

मुहा०—खाता खोलना=१. नया व्यवहार करना । २. विभाग । मद ।

खातिर-सज्ञा स्त्री० सम्मान । आदर ।

†अव्य० लिए । कारण । वास्ते ।

खातिरखाह-अव्य०, वि० वि० जैसा चाहिए, वैसा । इच्छानुसार ।

खातिरजमा-सज्ञा स्त्री० १. सतोष । इतमीनान । तसल्ली । २. विश्वास ।

खातिरदारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. सम्मान । सत्कार । २. आदर । आवभगत ।

खातिरी-सज्ञा स्त्री० १. आदर । सम्मान । आवभगत । २. सतोष । तसल्ली । इतमीनान ।

खातो-सज्ञा स्त्री० १. खोदी हुई भूमि । २. बड़ई । ३. खती । जमीन खोदनेवाली जाति-विशेष । खतिया ।

खाद-सज्ञा स्त्री० पौंस । गोबर-कूड़ा इत्यादि पदार्थ जो खेत में उपज बढ़ाने के लिए डाला जाता है ।

खादक-वि० १. भक्षक । खानेवाला । खबया । २. ऋणी । कर्जदार ।

खादन-सज्ञा पु० [वि० खाद्य, खादनीय] भोजन । भक्षण । खाना ।

खाबर-सज्ञा पु० कच्चार । नीची जमीन । बाँगर का उलटा ।

खादिम-सज्ञा पु० सेवक । दास । नौकर ।

खादी-वि० १. भक्षक । खानेवाला । २. शत्रु का नाश करनेवाला । ३. बँटीला ।

४. द्विद्वान्वेपी । ५. दूषित । घुस । दोष  
निपातनेवाला ।  
सजा स्त्री० १. साप । २. खर । हाथ  
से पाले हुए सूत से बना कपड़ा । कवच ।  
खाबुफ-वि० हिंसक । हिंसात्मक प्रवृत्ति-  
वाला । हिंसालु ।  
खास-वि० खाने योग्य ।  
सजा पु० खाने की वस्तु । भोजन । खाने  
योग्य वस्तु ।  
खायु\*†-सजा पु० खाने योग्य वस्तु ।  
खायुक\*-वि० खानेवाला ।  
खान-सजा पु० १. भोजन । २. खाने की  
द्रव्य । ३. भोजन की सामग्री । ४. भोजन  
करने का ढग । ५. पठानों की उपाधि-  
विशेष । ६. सरदार ।  
संज्ञा स्त्री० १. खान । वह जगह जहाँ  
से घातु पत्थर आदि खोदकर निकाले जायें ।  
२. खजाना । जहाँ किसी वस्तु का ढेर  
लगा हो ।  
खानक-सजा पु० १. खान खोदनेवाला ।  
२. खेजदार । ३. राज ।  
खानकाह-सजा स्त्री० [अ०] मुसलमान  
फकीरों के रहने का स्थान ।  
खानखर-सजा पु० सुरा । खोह ।  
खानखाना-सजा पु० १. मुगल सरदारों की एक  
उपाधि । २. सरदारों का सरदार ।  
खानगी-वि० [फा०] घरेलू । अपना । आपस  
का ।  
संज्ञा स्त्री० तुच्छ वेश्या । पतुरिया ।  
खानदान-सजा पु० [फा०] कुल । वंश ।  
खानदानी-वि० १. कुलीन । ऊँचे वंश का ।  
अच्छे कुल का । २. पंतूक । वंश-पर-  
परागत । पुस्तनी ।  
खान-मान-सजा पु० १. खाने-पीने का  
व्यवहार । २. खाना-पीना । ३. खाने-  
पीने का सवध ।  
खानबहादुर-सजा पु० अंग्रेजी शासन-काल  
में बफादारी के लिए मुसलमानों को दिया  
जानेवाला एक खिताब ।  
खानसामा-सजा पु० [फा०] अंग्रेजों या  
मुसलमानों का रसोइया ।

खाना-क्रि० सं० १. भोजन करना । २.  
आहार । ३. परेशान करना । कष्ट देना ।  
४. टसना । विपत्ति कीड़ों का मारना ।  
५. नष्ट करना या बरबाद करना । ६. हटा  
देना । उड़ा देना । ७. हड़प जाना ।  
८. बेईमानी से रुपया पैदा करना । ९.  
धूस लेना । १०. चोट सहना । सहन करना ।  
मुहा०-खाता-बमाता=खाने-पीने भर को  
कमानेवाला । खाना कमाना=खान-पान  
करके जीविका पैदा करना । खाना जाना  
या डालना=उड़ा डालना । खर्च कर  
डालना । खाना न पचना=जी न मानना ।  
चैन न पड़ना । खा जाना=भक्षण करना ।  
खा जाना या कच्चा खा जाना=प्राण ते  
लेना । मार डालना । खाने बीड़ना=  
क्रुद्ध होना । चिढ़चिड़ाना ।  
मुँह की खाना=१. नीचा देखना । २. हार  
जाना । पराजित होना ।  
खाना-सजा पु० [फा०] १. गृह । मकान । घर ।  
जैसे-ढाकखाना, दवाखाना । २. भोजन ।  
आहार । ३. किसी चीज के रखने का घर  
या वाक्य । ४. विभाग । घर । कोठा ।  
५. कोष्ठक ।  
खाना-खराब-वि० [फा०] जिसका घर-  
बार तक न रह गया हो । दुर्दशाग्रस्त ।  
चोपट । आबारा ।  
खानातलाशी-सजा स्त्री० किसी वस्तु को  
पाने के लिए घर के भीतर खान-बीन करना,  
विशेषकर पुलिस द्वारा ।  
खानापुरी-सजा स्त्री० १. ययास्थान सख्या  
या शब्द आदि लिखना । २. नक़्शा  
बनाना ।  
खानाबदोश-वि० [फा०] १. बिना घरबार का ।  
बिना घर के । २. गृहविहीन ।  
खानि-सजा स्त्री० १. दे० "खान" । आकर ।  
२. भोर । तरक़ । ३. ढग । प्रवार ।  
४. उत्पत्ति-स्थान ।  
खानिक\*†-सजा स्त्री० दे० "खानि" । खान  
संबंधी ।  
खाप-सजा स्त्री० १. तलवार की खोल ।  
स्थान । २. कोप ।

खाव\*—सज्ञा पु० दे० “ख्वाव” ।  
 खावड़—सज्ञा पु० ऊँच-नीच । अड़वड़ ।  
 खाम-वि० [फा०] कच्चा । जो पका न हो । जिसमें कमी रह गई हो । घटा हुआ । दोषपूर्ण । जिसमें कुछ गलती हो ।  
 खाम-खयाली—सज्ञा स्त्री० [फा०] व्यर्थ या बिना आधार का विचार । मनगढ़न्त ।  
 खामखाह, खामखाही—कि० वि० दे० “ख्वाहमख्वाह” ।  
 खामना—कि० सं० किसी पाद का मुँह बंद करना ।  
 खामोश-वि० [फा०] मौन । चुप ।  
 खामोशी—सज्ञा स्त्री० मौन । चुप्पी ।  
 खामो—सज्ञा स्त्री० [फा०] कच्चापन । गलती । श्रुति । दोष ।  
 खार—सज्ञा पु० १. दे० “खार” । २. लोनी । लोना । ३. सज्जी मिट्टी । ४. एक प्रकार का पीथा । ५. राख । धूल । रेह ।  
 खार—सज्ञा पु० [फा०] १ कटक । काँटा । २. फाँस । खँग । ३. जलन । डाह । ईर्ष्या ।  
 मुहा०—खार खाना=डाह करना । जलना ।  
 खारक या खारका—सज्ञा पु० छुहारा ।  
 खारा-वि० [स्त्री० खारी] नमक के स्वाद का ।  
 सज्ञा पु० १ एक तरह का कपड़ा । २. खोचा । भावा ।  
 खारिज-वि० [अ०] १. नामजूर । अस्वीकृत । बाहर निकाला हुआ । बहिष्कृत । २. भिन्न । अलग ।  
 खारिज—सज्ञा स्त्री० [फा०] सुजली । खज ।  
 वि०—जिसमें खार हो । खार-युक्त ।  
 खारमा-खाखवा—सज्ञा पु० १. रग-विशेष । २. एक प्रकार का मोटा कपड़ा, जो इस रंग में रंगा हो ।  
 खाल—सज्ञा स्त्री० १. चर्म । शरीर का ऊपरी आवरण । चमड़ी । त्वचा । २. अथोड़ी । आधा चरसा । ३. मृत शरीर । ४. धौंकनी । भायी । ५. नीची भूमि । ६. खाड़ी । ७. खाली जगह । अवकाश । ८. गहराई ।

मुहा०—खाल उधेड़ना या खीचना= कड़ा दह देना । बहुत भारना-पीटना ।  
 खालसा-वि० १. जिस पर केवल एक का अधिकार हो । २. सरकारी । राज्य का ।  
 मुहा०—खालसा करना=१. जन्त करना । २. नष्ट करना ।  
 सज्ञा पु० सिक्खों की विरादरी या पंच-मंडली-विशेष ।  
 खाला-वि० [स्त्री० खाली] १. नीचा । २. निम्न ।  
 सज्ञा स्त्री० [अ०] मौसी । माता की बहिन ।  
 मुहा०—खाला जी का घर=सरल काम । ऐसा घर जिसे अपना समझा जाय ।  
 खालिस-वि० [अ०] शुद्ध । जिसमें कोई दूसरी वस्तु न मिली हो, बेमेल ।  
 खाली-वि० [अ०] १ रिक्त । रीता । जिसके भीतर कुछ भी न हो । २. जिसके भीतर की जगह न भरी हो । जिसमें कोई वस्तु न हो । ३. जिस पर कुछ न हो । विहीन । रहित । ४. जिसे कुछ काम न हो । बेकार । ५. जिसका काम न हो । ६. निष्फल । व्यर्थ ।  
 मुहा०—हाथ खाली होना=निर्धन होना । हाथ में रुपया-पैसा न होना । खाली पेट=बिना कुछ अन्न खाए हुए ।  
 मुहा०—निशाना या बार खाली जाना=लक्ष्य पर न पहुँचना । बात खाली जाना या पडना=बहने के अनुसार कोई बात न होना ।  
 कि० वि० केवल । सिर्फ ।  
 खालू—सज्ञा पु० मौसा ।  
 खालिद—सज्ञा पु० [फा०] १ पति । २. स्वामी । मालिक ।  
 खास-वि० [अ०] १ प्रधान । मुख्य । विशेष । २. अपना । ३. प्रिय । ४. स्वयं । खुद । ५. ठीक । ६. ठेठ । विशुद्ध ।  
 मुहा०—खासकर=प्रधानतः । विशेषतः ।  
 खासकलम—सज्ञा पु० अपना मुसी । प्राइवेट सेक्रेटरी ।

आसनी-वि० [अ०] १. निज या । २. राजा या स्वामी आदि या ।

आसनी-सज्ञा पु० [पा०] राजा की सयारी के आगे-आगे चलनेवाला सिपाही ।

आसनी-सज्ञा पु० [अ०] १. राजभोग । राजा का भोजन । २. राजा की सयारी या घोड़ा या हाथी । ३. एक प्रकार का सूती कपड़ा । वि० पु० [स्त्री० सासी] १. उत्तम । अच्छा । भला । बढ़िया । २. स्वस्थ । नीरोग । सहृदय । ३. सुढोल । ४. मध्यम श्रेणी का । ५. सुंदर । ६. सर्वांग-पूर्ण । भरपूर ।

आसियत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रकृति । भाव । २. स्वभाव । ३. विशेष गुण । अच्छाई । सिफत ।

आहिश-सज्ञा स्त्री० दे० "ह्वाहिश" ।

खिचना-क्रि० अ० १. बाहर निकल जाना । २. धसीटा जाना । ३. तनना । ४. प्रवृत्त होना । ५. किसी ओर बढ़ना । आवर्षित होना । सोखा जाना । ६. सपना । ७. चुसना । ८. घराब आदि तैयार होना । ९. गुण या तत्त्व का निकाला जाना । १०. चित्रित होना । ११. रकना । १२. भाल खपना । १३. मन-मुटाव हो जाना । मुहा०-पीटा या दई खिचना=(भोषण आदि से) दई दूर होना । हाथ खिचना= न देना ।

खिचवानी-क्रि० स० खीचने का काम दूसरे से कराना ।

खिचाई-सज्ञा स्त्री० १. खीचने का काम । २. खीचने की मजदूरी ।

खिचाना-क्रि० स० दे० "खिचवानी" ।

खिचाव-सज्ञा पु० "खिचना" का भाव । तनाव ।

खिचमत\*-सज्ञा स्त्री० दे० खिचमत ।

खिचाना-क्रि० स० खिचवानी या खिच-राना ।

खिचडवार-सज्ञा पु० मकर-सक्रांति ।

खिचडी-सज्ञा स्त्री० १. एक में मिलाकर पकाया हुआ दाल और चावल । २. विवाह की रस्म-विशेष । ३. एक ही में मिले हुए

दो या अधिक प्रवार के पदार्य । ४. मकर-सक्रांति ।

मुहा०-खिचडी पवाना=गुप्त भाव में धाई सनाह करना । ढाई चावल की खिचडी पवाना=सबकी सम्मति के विरुद्ध या सबसे अलग होकर कोई काम करना ।

वि० १. गठबड । २. मिला-जुला ।

खिजड़ी-सज्ञा स्त्री० १. योगी का आसन । २. योगी की छटिया ।

खिजलाना-क्रि० अ० झुंझलाना । चिढ़ना । क्रि० स० चिढ़ाना । गुस्सा होना । खिजाना । क्रुद्ध करना ।

खिजाई-सज्ञा स्त्री० [पा०] पतभड । पेड़ों के पत्ते गड़ने के दिन । हेमंत ऋतु । धवनति या पतन के दिन ।

खिजाना-क्रि० स० "खिजलाना" । क्रुद्ध करना । चिढ़ाना ।

खिजाव-सज्ञा पु० [अ०] केश-कल्प । सफेद बालों को काला करने की दवा ।

खिभ\*-सज्ञा स्त्री० दे० "खीभ", "खीज" । शोध । खिसियाहट । गुस्सा ।

खिभना-क्रि० अ० दे० "खीजना" ।

खिभलाना या खिभाना-क्रि० स० १. चिढ़ाना । २. तग करना ।

खिडकना-क्रि० अ० दे० खिसकना ।

खिडकी-सज्ञा स्त्री० छोटा दरवाजा । झरोखा । गबास ।

खिताव-सज्ञा पु० [अ०] उपाधि । पदवी ।

खित्त-सज्ञा पु० [अ०] देश । प्रांत । भाग या हिस्सा ।

खिचमत-सज्ञा स्त्री० [पा०] सेवा । नौकरी । टहल ।

खिचमतगार-सज्ञा पु० [पा०] सेवक । नौकरी करनेवाला । टहलुवा । नौकर ।

खिचमतगारी-सज्ञा स्त्री० [पा०] "खिचमत" ।

खिचमती-वि० [पा०] १. अधिक सेवा करने-वाला । २. जो सेवा के बदले में प्राप्ता हुआ हो । ३. सेवा-सम्बन्धी ।

खिन\*-सज्ञा पु० दे० "क्षण" ।

खिभ-वि० १. चिंतित । उदास । २. दुःखित ।

दुली। दुसिया। ३ अग्रसन्न। नाराज।  
४ असहाय।

खिपना\*—क्रि० अ० १ निमग्न होना। तल्लीन होना। २ खपना। लग जाना या लगना।

खियाना†—क्रि० अ० रगड़ से धिस जाना।  
‡क्रि० स० दे० "खिलाना"।

खिरनी—सज्ञा स्त्री० खिन्नी। फल विशेष।  
खिराज—सज्ञा पु० [अ०] वर। राजस्व। माल-गुजारी।

खिररना\*—क्रि० स० अनाज छानना।  
खुरचना।

खिरटी—सज्ञा स्त्री० बीजबद। बलवान।  
बरियारी।

खितौरा—सज्ञा पु० एक प्रकार की मिठाई।  
खिल—सज्ञा पु० आगल। अगल। धत्री।  
खिलप्रत—सज्ञा स्त्री० [अ०] राजा की ओर से किसी को सम्मान-सूचनार्थ दिया जानवाला वस्त्र आदि।

खिलवत—सज्ञा स्त्री० [अ०] ससार।  
सुष्टि। दुनियाँ।

खिलकौरी†—सज्ञा स्त्री० खिलवाड़। खेल।  
खिलखिलाना—क्रि० अ० ठठाकर हँसना।  
जोर से हँसना।

खिलना—क्रि० अ० १ विकसित होना।  
कली से फूल होना। फूलना। २ सुन्दर लगना। ३ प्रसन्न होना। ४ बीच से फट जाना। ५ अलग अलग हो जाना।

खिलवत—सज्ञा स्त्री० [अ०] निर्जन स्थान।  
एकात।

खिलवतखाना—सज्ञा पु० गुप्त सलाह करने का स्थान।

खिलवाड़—सज्ञा पु० दे० "खेलवाड़"। खेल।  
तमाशा।

खिलवाना—क्रि० स० दूतरे से भोजन कराना।  
दे० "खेलवाना"।

खिलाई—सज्ञा स्त्री० १ खिलाने का काम।  
२ दाई या नीकरानी जो बच्चा को खलाती हो।

खिलाडी—सज्ञा पु० [स्त्री० खिलाडिनी]  
१ खेलनेवाला। २ जादूगर। ३ कुस्ती

लडने, पटा-धनेडी खेलनेवाला।

वि० बचल। आचारा। उच्छृंखल।

खिलाना—क्रि० स० किसी का खेल में लगाना।

क्रि० स० १ भोजन कराना। २ विकसित करना। फुलाना।

खिलाफ—वि० [अ०] विपरीत। विरुद्ध। उल्टा।

खिलैया—सज्ञा पु० खेल करनेवाला। खिलाडी।

खिलौना—सज्ञा पु० १ खेलने की वस्तु।

२ कोई वस्तु जिससे बालक खेलते हैं।

खिल्ली—सज्ञा स्त्री० हँसी। ठठोसी।

परिहास। दिल्लगी। मजाक।

यो०—खिल्लीबाज=दिल्लीबाज।

‡सज्ञा स्त्री० १ पान का बीड़ा। गिल्लीरी।

२ काँटा। कील।

खिल्लो—सज्ञा स्त्री० अधिक हँसनेवाली स्त्री।

खिसकना—क्रि० अ० दे० "खसकना"।

चम्पत होना। भाग जाना। ले भागना।

खिसकाना—क्रि० स० हटाना। भगाना। सर-  
काना।

खिसना—क्रि० अ० १ नष्ट होना। २  
भुकना। ३ शरणागत होना।

खिसलना—क्रि० अ० सरकना। फिसलना।  
गिरना।

खिसलहा—वि० चिकना।

खिसलाहट—सज्ञा स्त्री० खीझ। क्रोध।

खिसाना\*†—क्रि० अ० दे० १ 'खिसवाना'।

२ हटाना। ढालना। ३ क्रुद्ध होना।

खिसारा—सज्ञा पु० [फा०] हानि। घाटा।  
नुकसान।

खिसियाना—क्रि० अ० १ लज्जित होना।

लजाना। शरमाना। २ गुस्सा होना।

क्रुद्ध होना। ३ चिढ़चिड़ाना।

खिसियानी—सज्ञा स्त्री० १ हारी हुई। २  
लजाई हुई।

खिसियाहट—सज्ञा स्त्री० क्रोध। सीस।  
खीज।

खिसी\*†—सज्ञा स्त्री० १ लज्जा। शरम।

२ मृष्टता। ढिठाई।

खिसीही\*—वि० १ लज्जित-सा। २ नुदा या  
रिसावा-सा। क्रुद्ध-सा।

खींच-सज्ञा स्त्री० १. खींचने का भाव ।  
२. अप्रसन्नता ।

खींच-तान-सज्ञा स्त्री० १. एव दूमरे-को  
खींचना, मनमुटाव । २. गीचापीची ।  
किसी शब्द या वाक्य का अन्यथा अर्थ  
करना ।

खींचना-क्रि० स० १. बाहर निकालना ।  
२. घसीटना । ३. तानना । बलपूर्वक  
अपनी ओर बढ़ाना । ४. किसी वस्तु को  
पकड़ कर अपनी ओर लाना । ५. आपर्षित  
करना । ६. किसी ओर ले जाना । ७.  
सोखना । ८. चूसना । ९. शराब आदि  
बनाना । १०. किसी वस्तु के गुण या तत्त्व  
को निवाल लेना । ११. चित्रित करना ।  
कलम फेरकर लकीर आदि डालना ।  
लिखना । १२. रोक रखना । १३. टानना ।  
ऐंचना । बमना ।

मुहा०-चित्र खींचना=मोहित करना ।  
हाथ खींचना=न देना या काम बंद  
करना ।

खींचाखींची, खींचातानी-सज्ञा स्त्री० दे०  
“खींचतान” ।

खीज-सज्ञा स्त्री० १. भुंभलाहट । खीजने  
का भाव । २. चिढ़नेवाली बात ।  
क्रोध ।

खीजना-क्रि० अ० भुंभलाना । दुखी और  
क्रुद्ध होना ।

खीभ\*†-सज्ञा स्त्री० दे० “खीज” । भुंभ-  
लाहट ।

खीभना-\*†क्रि० अ० दे० “खीजना” ।

खीन\*†-वि० दुर्बल । क्षीण । उदास ।

खीर-सज्ञा स्त्री० १. क्षीर । दूध में पकाया  
हुआ चायल । \*२. दूध ।

मुहा०-खीर चटाना=बच्चे को पहले  
पहल भ्रष्ट खिलाना ।

खीर-मोहन-सज्ञा पु० एक प्रवार की बगाली  
मिठाई ।

खोरा-सज्ञा पु० बकड़ी की तरह का फल-  
विशेष ।

१. खोरी-सज्ञा स्त्री० १. चोपायो के थन के ऊपर  
का हिरता जिसमें दूध रहता है । बाल । भैंस

आदि का ऐन । २. मेवा-विशेष । पिस्ता ।  
३. खिरनो ।

खोल-सज्ञा स्त्री० धान का लावा । मङ्गलाय  
लावा । दे० “कील” ।

खोला-†सज्ञा पु० कील । गांटा । मंछ ।

खोली-सज्ञा स्त्री० खिल्ली । पान का बीड़ा ।

खीबन, खीबनि-सज्ञा स्त्री० मस्ती । मत-  
वालापन ।

खीस-\*†वि० नष्ट । बरबाद ।

सज्ञा स्त्री० १. अप्रसन्नता । नाराजगी ।

क्रोध । २. गुस्ता । ३. लज्जा । शर्म ।

थोठ से बाहर निकले हुए दाँत ।

खोसना-क्रि० अ० १. क्रोध करना । २. खीस  
निकालना ।

खोसा-सज्ञा पु० [ फा० ] १. थंली ।

थंला । २. जेब । पाकेट । खलीता ।

खोह-सज्ञा स्त्री० रेह । सज्जी मिट्टी ।

खुंटकड़ा-सज्ञा पु० कान का मैल निकालने-  
वाला ।

खुंदलना-वि० कुचलना । रौंदना । पैर में  
मारना ।

खुंदाना-क्रि० स० (घोड़ा) कुदाना ।

खुदी-सज्ञा स्त्री० दे० “खूँद” ।

खुआर\*-वि० दे० “खार” । खराब ।

अप्रतिष्ठित । आपद्ग्रस्त ।

खुआरो-सज्ञा स्त्री० नाश । खराब ।  
बरबादी ।

खुडता-सज्ञा पु० वृक्ष का छिद्र । खोखर ।

खुख या खुखल-वि० १. छूँछा । खाली ।

जिसके पास कुछ न हो । २. दीन ।

कमाल ।

खुखडी-सज्ञा स्त्री० १. कुकडी । तकूए पर

चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन । २.

नैपाली छुरी ।

खुगीर-सज्ञा पु० १. नमदा । घोड़ों के

चारजामे के नीचे लगाया जानेवाला एक

ऊनी बपड़ा । २. जीन । चारजामा ।

मुहा०-खुगीर की भरती=अनावश्यक और

व्यर्थ संप्रह ।

खुबर, खुबुर-सज्ञा स्त्री० भूठभूठ अवगुण

विसलाना । व्यर्थ दोष निकालना ।

खुजलाना-क्रि० स० खुजली मिटाने के लिए  
नाखून रगड़ना ।

क्रि० अ० किसी अंग में खुजली मालूम होना ।  
चुल-चुलाना ।

खुजलाहट-सज्ञा स्त्री० १. खुजली । २.  
सुरसुरी ।

खुजली-सज्ञा स्त्री० १. खुजलाहट । सुर-  
सुरी । २. खाज, रोग-विशेष जिसमें शरीर  
बहुत खुजलाता है । कड़ू ।

खुग्ग-सज्ञा पु० १. मेल । २. तलछट ।  
३. फल आदि का रेशेदार हिस्सा ।

खुटक\*†-मज्ञा स्त्री० दे० १. चिता ।  
खटका । आशका । २. सन्देह । भ्रम ।  
शका । अद्वेश ।

खुटफना-क्रि० स० १. खोटना । २ किसी  
वस्तु को ऊपर से तोड़ना । ३ बुतरना ।  
४. सन्देह करना ।

खुटका-सज्ञा पु० दे० "खटका ।"

खुटचाल\*-सज्ञा स्त्री० १. दुष्टता । नीचता ।  
२. बुरा चाल-चलन । ३ उत्पात । उप-  
द्रव ।

खुटचाली\*-वि० १. बुराचाली । बुरी चाल  
चलनेवाला । बदचलन । २ दुष्ट । पाजी ।

खुटना\*†-क्रि० अ० खुलना । समाप्त  
होना ।

खुटपन, खुटपना-सज्ञा पु० दोष । खोटापन ।  
बुराई । बदमाशी ।

खुटाई-सज्ञा स्त्री० खोटापन । १. दुष्टता ।  
बदमाशी । २. नीचता ।

खुटाना†-क्रि० अ० १ क्षीण होना । २  
खुटना । ३. समाप्त होना । नष्ट होना ।  
४. बराबर करना । समान करना ।

खुटिता-सज्ञा पु० वान वा गहना-विशेष ।  
जैसे पणपूल ।

खुट्टी†-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की  
मिठाई । २. पूंजी । ३. रोनड । मुल-  
पन । बच्चों की आपस की सझाई ।

खुट्टी-मज्ञा स्त्री० पाय पर जमी हुई पपड़ी ।

खुट्टा-मज्ञा पु० पशियों के रहने का  
स्थान । बेंद ।

खुट्टा†-मज्ञा पु० दे० "घोंघी" ।

खुट्टी, खुट्टी-सज्ञा स्त्री० १. पाखाने में  
पर रखने के पायदान । २. पाखाना फिरने  
का गड्ढा ।

खुतबा-सज्ञा पु० [अ०] १. प्रशस्त । तारीफ ।  
२. घोषणा ।

मुहा०-किसी के नाम का खुतबा पढ़ा  
जाना=नए राजा के सिंहासनासीन होने  
की घोषणा ।

खुत्थ-सज्ञा पु० पेड़ के ऊपर का भाग ।

खुत्थी, खुत्थी\*†-सज्ञा स्त्री० १. खूंथी ।  
खूंटी । पीपों का वह भाग जो फसल काट  
लेने पर पृथ्वी पर गड़ा रह जाता है ।

२. धरोहर । धाती । अमानत । ३.  
वसनी । पतली लंबी बंती जिसमें रुपया  
भरकर कमर में बांधते हैं । हिमपाणी ।  
४. धन । दौलत ।

खुद-अव्य० [फा०] आप । स्वयं ।

मुहा०-खुद व खुद=आपसे आप । बिना  
किसी दूसरे की सहायता के ।

खुदकास्त-सज्ञा स्त्री० भूमि के स्वामी द्वारा  
स्वयं जोती-बोई जानेवाली भूमि ।

खुदकसी-सज्ञा स्त्री० [फा०] आत्महत्या ।  
खुदगारज-वि० १ स्वार्थी । अपना काम  
निकालनेवाला । २ मतलबी ।

खुदगारजी-सज्ञा स्त्री० स्वार्थ । अपना मतलब ।

खुदना-क्रि० अ० खुदाई होना । खोदा जाना ।

खुदमुखतार-वि० स्वच्छद । जो स्वयं  
मालिक हो । जिस पर किसी का नियंत्रण  
न हो ।

खुदरा-सज्ञा पु० १. फुटकर चीज । २.  
छोटी धीर साधारण वस्तु ।

खुदवाई-सज्ञा स्त्री० खुदवाने का काम या  
मजदूरी ।

खुदवाना-क्रि० सं० मोदने का काम कराना ।

खुदा-सज्ञा पु० १. ईश्वर । २. भगवान् ।  
३. परमात्मा ।

खुवाई-सज्ञा स्त्री० १. सृष्टि । २. ईश्वर  
वा चमत्कार ।

खुदाई-मज्ञा स्त्री० मोदने का काम, या मज-  
दूरी ।

खुदाई-मज्ञा पु० [फा०] १. ईश्वर ।

२ स्वामी । भद्रदाता । ३. श्रीमान् ।  
 हुजूर । जमाय ।  
 खुराब-सज्ञा पु० खुदाई । खोदकर बनाए  
 हुए बेलघूटे । नक्काशों ।  
 खुरी-सज्ञा पु० १. भट्टवार । २. गर्व ।  
 ३. दोस्ती ।  
 खुर्दी-सज्ञा स्त्री० चावल आदि के छोटे-छोटे  
 टुकड़े ।  
 खुनखुना-सज्ञा पु० भुनभुना । एक प्रकार  
 का खिलौना ।  
 खुनस-सज्ञा स्त्री० [वि० खुनसी] शोध ।  
 रोप । रिस । घनय ।  
 खुनसाना-त्रि० अ० १. क्रोध करना ।  
 २. डाह रखना । खिसाना ।  
 खुनसी-वि० क्रोधी । रिसहा । जल्दी श्रुद्ध  
 होनेवाला ।  
 खुफिया-वि० छिपा हुआ । गुप्त ।  
 खुफिया पुलिस-सज्ञा स्त्री० भेदिया । गुप्त  
 पुलिस । जासूस ।  
 खुचना-क्रि० स० १ चुभना । विधना । पैठना ।  
 २ प्रभाव जमाना ।  
 खुबाह-वि० १ बिगड़ा हुआ । २ नष्ट ।  
 खुभना-क्रि० स० घुसना । चुमना । विधना ।  
 पैठना ।  
 खुभी-सज्ञा स्त्री० कान में पहनने की लौग ।  
 कान का गहना ।  
 खुमान-वि० दीर्घजीवी । अधिक उम्रवाला ।  
 (भाशीर्वाद) चिरजीव ।  
 खुमार-सज्ञा पु० दे० "खुमारी ।"  
 खुमारी-सज्ञा स्त्री० १ नशा उतरने के  
 समय की हलकी थकावट । २. रात भर  
 जागने की थकावट । ३ हलका नशा ।  
 खुमी-सज्ञा स्त्री० १. फल-फूल से रहित पृथ्वी  
 से निकलनेवाला एक पौधा, जैसे डिगरी,  
 कुबुर-मुसा आदि । २. हाथी के दाँत पर  
 चढ़ानेवाला धातु का छल्ला । ३ दाँतों में  
 लगवाने की सोने की कील ।  
 खुरड-सज्ञा स्त्री० खूँटी । सूखे घाव के ऊपर  
 की पपड़ी ।  
 खुर-सज्ञा पु० १. चौपायों के पैर की बड़ी टाप ।  
 २. चौपायों के पैर का नाखून ।

खुरक-सज्ञा स्त्री० खटवा । चिन्ता ।  
 भ्रमदेश ।  
 खुरखुर-सज्ञा स्त्री० १. किसी बड़ी चीज  
 के रगटने की आवाज । २. छोटे जानवरों  
 का शब्द जैसे विलायती चूहा । ३. घरघर  
 का शब्द । ४. गले में बर्फ आदि रुक जाने  
 से साँस लेते समय का शब्द ।  
 खुरखुरा-वि० जो समतल न हो । खुरदरा ।  
 खुरखुराना-क्रि० अ० १. गले में बर्फ के  
 कारण घरघराहट होना । २. खुरखुरा  
 मालूम होना ।  
 खुरखुराहट-सज्ञा स्त्री० १. साँस लेते समय  
 गले का शब्द । २. खुरदरापन ।  
 खुरघन-सज्ञा स्त्री० खुरचकर निकाली जाने-  
 वाली वस्तु । १. दूध की बनी हुई मयुरा  
 की विशेष मिठाई । २ बड़ाही में  
 चिपकी हुई चीज जो खुरचकर निकाली  
 जाय ।  
 खुरचना-क्रि० अ० करोचना । छीलना ।  
 उर्वेठना । खुरचकर निकालना ।  
 खुरचनी-सज्ञा स्त्री० खुरचने का औजार ।  
 खुरघाल-सज्ञा स्त्री० दे० "खुटघाल" ।  
 खुरजी-सज्ञा स्त्री० १ बड़ा बैला । २.  
 घोड़े, बैल आदि पर सामान रखने का  
 मोला ।  
 खुरतार-सज्ञा स्त्री० सुम का आघात ।  
 टाप या खुर की चोट ।  
 खुरवका-सज्ञा पु० जानवरों की एक बीमारी  
 जिसमें उनके मुँह और खुरों में दाने निकल  
 आते हैं ।  
 खुरपा-सज्ञा पु० (स्त्री० खुरपी) पास छीलने  
 का औजार । बड़ी खुरपी ।  
 खुरमा-सज्ञा स्त्री० (अ०) एक प्रकार की  
 मिठाई । १ छोहारा । २ खजूर ।  
 खुरहर-सज्ञा पु० खुर का चिह्न । खुर से  
 बना रास्ता ।  
 खुरक-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ खाना ।  
 भोजन । २ एक बार का भोजन ।  
 खुराकी-सज्ञा स्त्री० खाने के लिए दिया  
 जानेवाला धन या सामग्री ।  
 वि० अधिक खानेवाला ।

खुराफात-सज्ञा स्त्री० १ भगडा । बखेडा ।  
उपद्रव । २ गाली-गलौज ।  
खुरी-सज्ञा स्त्री० टाप का चिह्न ।  
खुरक\*-सज्ञा पुं० दे० "खुरक" ।  
खुर्द-वि० [फा०] छोटा । लघु ।  
खुर्दवीन-सज्ञा स्त्री० [फा०] सूक्ष्मदर्शक यंत्र ।  
यंत्र विशेष जिससे छोटी वस्तु बहुत बड़ी  
दिखाई देती है ।  
खुर्द-खुर्द-कि० वि० (फा०) नष्ट भ्रष्ट ।  
खुर्बा-सज्ञा पुं० (फा०) छोटी-मोटी चीज ।  
खुराद-वि० १ चालाक । धाध । २ बृद्ध ।  
बूढ़ा । अनुभवी । तजस्विकार ।  
खुलना-कि० अ० १ प्रकट होना, एकावट दूर  
होना । पर्दा हटना । बन्द न रहना । जैसे-  
विवाह खुलना । २ फटना । ३ बादलों  
का तितर बितर होना । ४ बिखरना ।  
५ बाँध या जोड़ टूटना । ६ जारी होना ।  
७ सड़क, नहर आदि तैयार होना । ८  
काय आरम्भ होना । ९ किसी सवारी का  
रवाना हो जाना । १० किसी गूढ़ बात  
का प्रकट होना । ११ भद बताना ।  
मन की बात कहना । १२ सुन्दर  
लगना । सजना ।  
मुहा०-खुलकर=विना एकावट के । खुले  
आम, खुल खजाने, खुल भँवान=राबवे  
सामन । छिपाकर नहीं । खुलता रंग=  
सोहाबना रंग ।  
खुलवाना-कि० स० १ दूसरे से खोलने  
का काम कराना । २ छुड़वाना । ३  
मुक्त कराना ।  
खुला-वि० १ बिना राखटाव का ।  
बधन रहित । २ मुक्त । ३ स्पष्ट ।  
प्रबट । जो छिपा न हो । जाहिर ।  
खुलासा-सज्ञा पुं० [फा०] सारास ।  
वि० १ स्पष्ट । साफ-भाफ (सखप म) ।  
२ बिना एकावट के । ३ खुला हुआ ।  
खुल्लमखुल्ला-वि० वि० १ सबके सामन ।  
निहद भाव से । २ खुल्लभाम ।  
खुन-वि० [फा०] १ प्रसन्न । मान । २  
प्रच्छा ।  
खुनाबिस्मन-वि० [फा०] भाग्यशाली ।

भाग्यवान् । अच्छे भाग्यवाला ।  
खुशखबर-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ शुभ सदेश ।  
२ अच्छी खबर । ३ ऐसा समाचार जिस  
सुनकर मन खुश हो जाय ।  
खुशदिल-वि० [फा०] १ सदा प्रसन्न  
रहनेवाला । २ स्वभाव का अच्छा ।  
खुशनसीब-वि० [फा०] भाग्यशाली ।  
भाग्यवान् ।  
खुश-सज्ञा स्त्री० अच्छी महक । सुगंधि ।  
खुशबुहार-वि० [फा०] जिसमें अच्छी महक  
आती हो । सुगन्धित ।  
खुशमिजाज-वि० [फा०] सदा प्रसन्न रहने-  
वाला । हँसमुख ।  
खुशमिजाजी-सज्ञा स्त्री० [फा०] मन का  
सदा प्रसन्न रहना । कुशल समाचार ।  
खेरियत ।  
खुशहाल-वि० [फा०] १ सुखी । २ सपन ।  
३ परिपूर्ण ।  
खुशामद-सज्ञा स्त्री० [फा०] चापलूसी । खुदा  
करने के लिए भूठी बधाई ।  
खुशामदी-वि० [फा०] १ खुशामद करने-  
वाला । चापलूस । २ खुशामद चाहनेवाला ।  
खुशामदी टट्ट-सज्ञा पुं० खुशामद या चाप-  
लूसी करनेवाला ।  
खुशात, खुस्ताल\*-वि० दे० प्रसन्न । खुश-  
हाल । खुश । सुखी । सम्पन्न । आनंदित ।  
खुशी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ प्रसन्नता । २  
आनंद ।  
खुशक-वि० [फा०] जा गीला या तर न हो ।  
सूखा । नीरस । जिसमें सरसता न हो ।  
खुद स्वभाव का ।  
खुशी-सज्ञा स्त्री० १ नीरसता । स्थापन ।  
पुष्पता । २ स्थल या भूमि । स्थलमार्ग ।  
सुस्तिपा-सज्ञा पुं० अडकोश ।  
खुसुर-फुसुर-वि० बानाबानी । बानाफूनी ।  
खुलार-वि० १ डरावना । भयकर ।  
२ निर्दय । दूर । ३ खून पीनवाला ।  
खुच-सज्ञा स्त्री० नाडी विण्ण । जप की नाडी ।  
खुट-सज्ञा पुं० १ बीना । धार । २  
भाग । हिस्सा । ३ धार । तरफ ।  
सज्ञा स्त्री० बान का मेल ।

खंडना-वि० सं० १. पृथ-ताप्य करना ।  
२. तोड़ना । नोचना । ३. छेद-छाद  
करना । ४. बम होना । ५. दे० "नोटना" ।

खंडता-गशा पु० शीघ्र-विशेष ।

खंडा-गशा पु० १. गम्भा । गम्भा । २.  
जमीन में गड़ी लकड़ी जिनसे पशु बांधते हैं ।

खंडी-गशा स्त्री० १. लट्टी रहनेवाली घरद्वर  
आदि दोधो की जड़ । २. जमीन में गड़ी  
हुई छोटी लकड़ी का टुकड़ा । ३. वालों  
का नए निबलने हुए बड़े भ्रमुर । ४. भंडी ।  
गुल्ली । ५. मेरु के आकार की लकड़ी  
या लोहा । ६. सीमा । हद ।

खंड-संज्ञा स्त्री० थोड़ी जगह में छोटे या  
झर-झर पर पटकते या चलते रहना ।

खंडना-वि० अ० १. कुचलना । २. खोदना ।  
३. पैरो से रौंदकर सराव करना । ४.  
उछल-बूद करना । ५. पैर उठा-उठाकर  
जल्दी-जल्दी भूमि पर पटकना ।

खुभा-संज्ञा पु० १. उलभा हुआ रेशेदार  
लच्छा । २. फल का रेशेदार भाग ।

खूटना-वि० अ० १. तोड़ना । उखाड़ना ।  
२. उधेड़ना । नोचना । ३. एक जाना ।  
बद हो जाना । ४. समाप्त होना ।  
क्रि० सं० १ छेड़ना । २. रोक-टोक करना ।

खूद, खदड़, खूदर-संज्ञा पु० मैल । किसी  
वस्तु को छान लेने या साफ कर लेने पर  
बचा हुआ रद्दी भाग । तलछट ।

खूदराना-वि० अ० दुल्ली चलना ।

खून-संज्ञा पु० १. शिथिर । रक्त । २. मार  
डालना । ३. हत्या । वध । कत्ल ।

मुहा०-खून उबलना या खौलना=शोध  
से शरीर ताल होना । गुस्सा चढ़ना । खून  
का प्यासा=वध का इच्छुक । खून सिर पर  
चढ़ना या सवार होना=किसी को मार  
डालने या अनिष्ट करने पर तैयार होना ।  
\*खून पीना=१. सताना । २. बहुत तंग  
करना ।

खूनखराबा या खूनखराबी-संज्ञा पु० मार-  
काट ।

खनी-वि० [ फा० ] १. मार डालनेवाला ।  
हत्यारा । २. अत्याचारी । भूर ।

खूबसूरत-वि० [ फा० ] स्थायान् । सुंदर ।

खूबसूरती-गंशा स्त्री० [ फा० ] सुंदरता ।

खूबानी-गंशा स्त्री० [ फा० ] एक प्रकार का  
पहाड़ी फल ।

खूबो-गंशा स्त्री० [ फा० ] १. भगवाई । २.  
भच्छाई । ३. विगपता । गुण ।

खूमना-वि० अ० १. पुराना होना । २.  
प्रजीर्ण होना ।

खूसा-गंशा पु० उल्लू ।

वि० मनहूस । आशिक ।

खूसट-संज्ञा पु० उल्लू ।

वि० १. नीरस । २. मनहूस ।

खूटीय-वि० १. ईमासवर्षी । २. ईमाई ।

खेकसा, खेखसा-संज्ञा पु० १. परवल के  
आकार का रोएदार फल या तरकारी-  
विशेष । कफोड़ा । २. चिह्न । ३. पहि-  
चान । लक्षण ।

खेचर-संज्ञा पु० १. आकाशगामी । २.  
आकाश में चलनेवाला । तारागण । ३.  
सूर्य-चंद्र आदि ग्रह । ४. देवता । ५. वायु ।  
६. पक्षी । ७. विमान । ८. मैप । बादल ।  
९. राक्षस । १०. भूत-प्रेत । ११. पारा ।  
१२. कसीस । १३. शिव । १४. विद्या-  
घर ।

खेचरी गुटिका-संज्ञा स्त्री० योगसिद्ध गोली-  
विशेष, जिसको मुँह में रखने से आकाश  
में उठने की शक्ति आ जाती है (तंत्र) ।

खेचरी मुद्रा-संज्ञा स्त्री० योगसाधन की एक  
मुद्रा-विशेष ।

संज्ञा पु० १. ग्रह । २. ग्रहेर । ३. नक्षत्र ।

४. ढाल । ५. कफ । ६. लाठी । ७.

चमड़ा = तृण । १. खोटा । १०. खेरा ।

खेटक-संज्ञा पु० १. गाँव । खेड़ा । २.

बलदेवजी की गदा । ३. सितारा ।

\*संज्ञा पु० १. मृगया । शिकार । २.

अस्थ-विशेष । ३. ढाल । तारा ।

खेटकी-संज्ञा पु० १. भंडेरिया । भडूरी ।

भडूर । २. शिकारी । बधिक । हत्यारा ।

खेड़ा-संज्ञा पु० पुरपा । छोटा गाँव । ग्राम ।

खेड़ी-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का लोहा ।  
वान्तिसार । इस्पात । २. माससड जो

वच्चो की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।

खेडी-सज्ञा स्त्री० गर्गविरण। भित्ती।

खेत-सज्ञा पु० १ पवित्र भूमि। जोतने-धोने योग्य भूमि। २ योनि। ३ उदय के समय चन्द्रमा का पहले पहल प्रकाश फैलाना। ४ खेत में खड़ी फसल। ५ पशुधो आदि के उत्पन्न होने का स्थान। ६ लड़ाई का मैदान। समर-भूमि। ७. तलवार का फल।

मुहा०-खेत करना=भूमि बराबर करना। खेत आना या रहना=युद्ध में मारा जाना। खेत छोड़ना=युद्ध से भाग जाना। खेत रखना=संग्राम जीतना।

खेतल-सज्ञा पु० आकाश-मण्डल।

खेतिहर-सज्ञा पु० कृषक। किसान। खेती करनेवाला।

खेती-सज्ञा स्त्री० १ कृषि। खेत में अनाज बोने का काम। २ खेत में बोई हुई फसल। किसानी।

खेतीबारी-सज्ञा स्त्री० कृषि-कर्म। खेती आदि का काम। किसानी।

खेद-सज्ञा पु० [वि० खिन्न] १ दुःख। अप्रसन्नता। रज। शोक। २ पश्चात्ताप। मनस्ताप।

खेदना-त्रि० स० १ खेदना। जबरदस्ती हटाना। भगाना। २ शिवार वा पीछा करना। हाँकना।

खेका-सज्ञा पु० १ किसी जगली पशु का मारने या पकड़ने के लिए धेरकर किसी उपयुक्त स्थान पर खाने का काम। २ भावट। शिवार।

खेदान्वित-वि० दुःखी। खेदयुक्त। शोकान्वित। खेदित-वि० १ पीड़ित। दुःखित। २ मताया गया।

खेना-त्रि० स० १ नाव चनाना। २ समय व्यतीत करना या काटना।

खेय-सज्ञा स्त्री० १ लदान। एक बार का घोभ। २ गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

मुहा०-नाप हारना=हारि उठाना। पं खन=पिछनी बार।

खेपना-क्रि० स० काटना। बिताना। गुजाना। ले जाना। डोना।

खेम\*-सज्ञा पु० दे० "क्षेम"। कुशल।

खेमटा-सज्ञा पु० १ बारह मात्राभा का ताल विशेष। २ इस ताल पर होनेवाला नाच या गाना।

खेमा-सज्ञा पु० [अ०] कनात। तबू। डेरा। शिविर।

खेर-सज्ञा पु० महाराष्ट्रियों की एक अल्ल। खेरा-सज्ञा पु० ऊजड़ गाँव। डीह। छोटी बस्ती।

खेरी-सज्ञा स्त्री० घगाल में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का गेहूँ। पदी विशेष।

खेल-सज्ञा पु० १ शीड़ा। कौतुक। मनोरंजन। चिन्तन। मन बहलाने या व्यायाम के लिए कोई मनोरंजक कार्य। २ मामूली काम। ३ बात। मामला। ४ विचित्र लीला। कोई अदभुत बात। अभिनय। तमाशा। स्वांग।

मुहा०-खेल खेलाना=बहुत तग करना। खेल करना या समझना=बुद्ध समझना। खेल विगड़ना=बना-बनाया काम खराब हो जाना।

खेलक\*-सज्ञा पु० खेलाडी। खेलनेवाला।

खेलन-क्रि० अ० [प्रि० खेलाना] १ शीड़ा करना। मन बहलाने या व्यायाम के लिए खेल-कूद करना। २ बिहार करना। ३ नृत्य प्रत के प्रभाव से सिर और हाथ-पैर आदि हिलाना। ४ विचरना। चलना। बहना। मुहा०-जान या जी पर खेलना=१ जान की परवाह न करना। २ नाटक या अभिनय करना। खेलना-खाना=मजे में दिन बिताना। मुसपूर्वक रहना।

खेलबाद-सज्ञा पु० १ खेल। शीड़ा। तमाशा। २ मनबहलाव। ३ दिव्यगी।

खेलयाडी-वि० १ खिल्लाडी। बहुत तलबे-याना। २ बिनादप्रिय।

खेलाडी-वि० १ खेलनेवाला। २ चिनाडी। बिनादप्रिय।

गशा पु० १ खेनेवाला व्यक्ति। २ ईश्वर। ३ तमाशा करवायाना।

शेलाभा-वि० ग० १ रत्नवाना । किसी दूगरे का खेल में लगाया । २ खेल में शामिल करना । ३ बहलाया । उलगाए रगना । रागाए रहा ।

शेलार\*†-सज्ञा पु० दे० "गोलाठी" ।

शेय\*†-सज्ञा पु० मरगाह । मेंबड । नाव लेनवाला । मीमी । मणपार ।

शेयट-सज्ञा पु० पटवारी का कागज विशेष जिसमें मालगुजारी आदि का विवरण रहता है ।

शेयटदार-सज्ञा पु० हिस्सेदार । पट्टीदार ।

शेया-सज्ञा पु० १ नाव से नदी पार करने का काम । २ नाव का बिराया । नाव की उत्तराई । ३ बाज । समय । बार । दफा । नीचा ।

शेवाई-सज्ञा स्त्री० १ नाव खेने का काम या मजदूरी । २ नाव की डाँड बांधनेवाली रस्सी ।

शेस-सज्ञा पु० मोटे सूत की लयी चादर । एक तरह का कपडा ।

शेसारी-सज्ञा स्त्री० एक तरह का मटर । लतरी । एक अनाज ।

शेह-सज्ञा स्त्री० धूल । लाव । राख ।

मुहा०-शेह खाना=१ विपत्ति में पड़ना । २ धूल फाँटना । समय बरबाद करना ।

शेचना-वि० स० दे० "खीचना" ।

शेचालानी-सज्ञा स्त्री० भगडा । विद्वेष । लड़ाई ।

शेर-सज्ञा पु० १ बय, कत्या । २ पक्षी विसप ।

सज्ञा स्त्री० भलाई । पुत्तल । खेल । अव्य० १ कुछ चिन्ता नहीं । उपेक्षा-सूचक अव्यय । कोई बात नहीं । २ अच्छा । अस्तु ।

शेरआफियत-सज्ञा स्त्री० [फा०] कुशल-शेम । कुशल-मगल ।

शेरखाह-वि० [फा० सज्ञा खैरखाही] शुभ-चितक । भलाई चाहतवाला ।

शेरभर-सज्ञा पु० होहल्ला । हलचल ।

शेरा-वि० १ कत्यई । शेर के रंग का । २ भूरा रंग ।

राजा पु० मछली-विशेष ।

शेरत-सज्ञा स्त्री० [घ०]. [वि० खैराती] दान-गुण्य । मुपर में दी हुई वस्तु ।

शेरियत-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ राजी-मुशी । पुत्तल-मगल । २ पत्थाण । भलाई ।

सेला-सज्ञा स्त्री० मषानी ।

सज्ञा पु० दोहान । बछड़ा । नया बैल ।

शोइचा-सज्ञा पु० म्त्रियो की धोनी का आंचन । पत्ता । फूँट ।

शोलना-वि० अ० १. बाँधना । २ खामना । ३ खसारना ।

शोली-सज्ञा स्त्री० खाँसी ।

शोगाह-सज्ञा पु० पीलापन लिये सफेद रंग का पोडा ।

शौच-सज्ञा स्त्री० १ खरोट । छेद होना । किसी नुकीली चीज से छिलने का आघात । २ बर्त आदि में फेंकर बपड़े का फट जाना ।

शौचा-सज्ञा पु० १ बहेलियो का चिडिया फेंसाने का लवा बाँस । २ चीरा । ३ भराद । ४ ठेस ।

शौची-सज्ञा स्त्री० भिक्षा । भीख । अन्न, फल, तरकारी आदि का वह थोडा-सा भाग जो धर्मार्थ भिक्षमणों और छाटी सेवागो के लिए इतर जना को दिया जाता है ।

शौट-सज्ञा स्त्री० १ कान का मैल । शौटने या नोचने का काम । २ खरोट । नाचने का दाग ।

शौटन-वि० स० किसी वस्तु का ऊपरी भाग ताडना ।

शौडर-सज्ञा पु० पेड का भीतरी पोला भाग । कोटर ।

शौडल-सज्ञा पु० पेड का भीतरी पोला भाग ।

वि० पोपला । बिना दाँत का ।

शौडा-वि० १ जिसके आगे के दो तीन दाँत टूटे हों । पेड का पोला भाग । २ जिसका कोई अंग भग हो ।

शौडी-वि० अंगभग । जिसका कोई अंग टूटा हो ।

शौतल-सज्ञा पु० शोता ।

खोता-सज्ञा पु० नीड । चिड़ियों का घोंसला ।

खोप-सज्ञा पु० सिलाई का टाँका । सिलाई के दूर-दूर टाँकों के गोठे ।

खोपना-क्रि० सं० गडाना ।

खोपा-सज्ञा पु० १ गाँठ । २ ताख । ३ जुड़ा । ४ अन्न रखने के लिए फूस का घर । ५ भूसा रखने का छप्पर । छाजन का कोना । हल की वह तकड़ी जिसमें फल लगा रहता है ।

खोसना-क्रि० सं० अटकाना, ठोसना, भरना धुसेटना ।

खोआ-सज्ञा पु० दे० 'खोया' । मावा-विशेष ।

खोआना-क्रि० अ० १ हार जाना । २ ठगा जाना । ३ भूल जाना । ४ भुलवाना ।

खोई-सज्ञा स्त्री० १ खोई । रस निकाले हुए गन्ने के टुकड़े । २ कवल की घोधी । ३ धान की खील । लाई ।

क्रि० सं० खो दी । नष्ट कर दी ।

खोखला-वि० पोला । जो खाली हो ।

खोखा-सज्ञा पु० यह बागज जिसपर हुडी लिखी जाती है । वह हुडी जिसका रुपया चुका दिया गया हो ।

खोगोर-सज्ञा पु० दे० "खुगीर" ।

खोज-सज्ञा स्त्री० १ यत्न । ढूँढना, अनुसन्धान, तलाश । २ चिह्न । पता । निशान । ३ पहिए की लोच अथवा पैर आदि का चिह्न ।

खोजना-क्रि० सं० ढूँढना । पता लगाना । तलाश करना ।

खोजवाना-क्रि० सं० ढूँढवाना । पता लगवाना ।

खोजा-सज्ञा पु० [फा० रवाजा] १ हिज्जा । नपुंसक व्यक्ति । जनता । गुजरात में मुसलमानों की एक जाति । २ ठेक्का । मुगलमानी हरमों के नोकर जो नपुंसक होते थे । ३ माननीय व्यक्ति । ४ सरदार । खोट-सज्ञा स्त्री० १ अवगुण । दोष । ऐव । बुराई । २ बमी । ३ हानि । ४. बट्टा । निरुप्य धातु की मिलावट ।

खोटा-वि० [स्त्री० खोटी] १. बुरा । जिसमें कोई ऐव हो । "खरा" का उलटा । दुर्गुण । २ नीच । पापी । दुराचारी । मुहा०-खोटी-खरी सुनाना=डाँटना । फट-कारना ।

खोटाई-सज्ञा स्त्री० १ अवगुण । बुराई । दुष्टता २ कपट । छल । ३ खोटापन । नीचता । ४ दोष । ऐव ।

खोटापन-सज्ञा पु० दे० खोटाई । खोटा होने का भाव ।

खोड-सज्ञा स्त्री० भूत-प्रेत आदि की बाधा ।

खोडर-सज्ञा पु० पुराने पेड़ में खोखला भाग ।

खोद-सज्ञा पु० १ कुंड । शिरस्त्राण । लाहे का टोप । २ चोच । खुदाय । ३. भोक । कटा हुआ । खोदा हुआ ।

खोदना-क्रि० सं० १ गड्ढा करना । कोडना । खनना । २ गोडना । ३ नक्काशी करना । ४ खोद कर गिराना । ५ छड़ना । छड़छाड़ करना । ६ गडाना । उँगली आदि से दबाना । ७ उभाडना । उत्तजित करना । उसकाना ।

खोदबिनोब-सज्ञा स्त्री० १ जाँच-पड़ताल । छान-बीन । पूछ-ताछ । २ छेड़ छाड़ ।

खोदर-वि० १ खडबड । ऊँचा-नीचा । अड-बड । २ दोड ।

खोदवाना-क्रि० सं० दूसरे से खोदने का काम करवाना । "खुदवाना" ।

खोदाई-सज्ञा स्त्री० खोदने का काम या मजदूरी ।

खोना-क्रि० सं० १ खो देना । गँवाना । २ नष्ट करना । बिगाडना । खराब करना । ३ भूल से किसी वस्तु का वही छाड़ देना । गँवा देना ।

क्रि० अ० पास की वस्तु का निकल जाना । भूल से वही वार्द वस्तु छूट जाना ।

खोनुचा-सज्ञा पु० १. बड़ी परात या धाल जिसमें रखकर फेंरीवाले मिठाई आदि बेचते हैं । २ जगमें रखी हुई सामग्री ।

खोप-सज्ञा पु० खोच । छेद । छिद्र । छोर ।

खोपड़ा-सज्ञा पु० १ कपास। सिर की हड्डी। २ गरी का गोला। ३ गिर। ४ नारियल।

खोपड़ी-सज्ञा स्त्री० १ कपास। गिर की हड्डी। २. गिर।

मुहा०—घपी या भोपी खोपड़ी का= नासामभ। मूर्ख। खोपड़ी घाट जाना= वषाघाट करना, बातें करने परेशान करना। खोपड़ी गजी होना=मार से सिर के बाल भड़ जाना।

खोपरा-सज्ञा पु० [स्त्री० खोपरी] नारियल की गरी। फल-विशेष। श्रीफल। गोला। बड़ा गिर।

खोपा-सज्ञा पु० १ मवान का बोना जो किसी रान्ते की धोर पड़े। २ छप्पर का बोना। ३ स्त्रियों की गुथी चोटी। ४ वेणी। जूड़ा। ५ गरी का गोला। ६ मल, मेल।

खोपार-सज्ञा पु० सुमरो के रहने का घर।

खोभार†-सज्ञा पु० कूड़ा बरखट फेंकने का गड्ढा।

खोम-सज्ञा पु० समूह। भुंड।

खोय\*-सज्ञा स्त्री० स्वभाव, टेव। आदत।

खोया†-सज्ञा पु० १ भावा। खोवा। श्रीच पर इतना गाढ़ा दूध जिसकी पिंडी बाँध सके। २ नारियल का गोला। ३ चूड़ा। त्रि० स० खो दिया।

खोर-सज्ञा स्त्री० १ सेंकरी गली। २ नाँद। जिसमें चौपायों को चारा दिया जाय। ३. गहान। स्नान।

खोरना†-त्रि० अ० नहाना।

खोरा-सज्ञा पु० [स्त्री० खोरिया] १ वेला। कटोरा। २ पानी पीने का एक बरतन विशेष। आवखोरा। †वि० लँगडा।

खोरक-सज्ञा पु० दे० "खुरक"।

खोरि\*-सज्ञा स्त्री० तग गली। सेंकरा रास्ता। सज्ञा स्त्री० १ दोप। २ दुर्गुण। बुराई।

खोरिया-सज्ञा स्त्री० १ छोटा कटोरा। २ एव उत्सव जो स्त्रियाँ लडकों के विवाहोत्सव के अवसर पर करती हैं। सिर पर लगाने की चमकीली बूंदी।

खोल-सज्ञा पु० १ गिलाफ। खोलसा।

म्यान। आवरण। २. बीड़ा का ऊपरी चमड़ा जिसे ममय-नामय पर वे बदना करते हैं। ३ मोटी चादर। दोहर, रजार्द। नरीर। ४.

खोलड़ा-सज्ञा पु० १. पाटल। खोलसा। रोंह। २. गड्ढा।

खोलना-त्रि० स० १. रोबनेवाली वस्तु को हटाना। जैसे—विवाह गोपना। २. बाँधने या जोड़नेवाली वस्तु को हटा देना। ३. बँधो हुई वस्तु को मुक्त करना। ४. छोड़ देना। ५. किसी श्रम को चराना। ६ सड़क, नहर, आदि तैयार करना। ७ कार्य प्रारम्भ करना। ८ गूँठ यात को प्रपट कर देना। ९. फैलाना। १०. उधेदना।

खोली-सज्ञा स्त्री० १. आवरण। खोल। गिलाफ। जैसे—तबिए की खोली। २. म्यान। ३. नलिका।

खोवा-सज्ञा पु० दे० "खोया"।

खोह-सज्ञा स्त्री० गुफा। गुहा। 'बदरा'।

खोही-सज्ञा स्त्री० घोषी। पत्तों की छतरी। घुघी।

खीं-सज्ञा स्त्री० १ गड्ढा। २ अन्न रखने के लिए गहरा गड्ढा।

खीज-सज्ञा पु० गड्ढा।

खीचा-सज्ञा पु० साढ़े छ' का पहाड़ा।

खीह-सज्ञा पु० तिलक, दे० "खोर"।

खोफ-सज्ञा पु० [अ०] [वि० खोफनाक] भय। डर।

खोफनाक-वि० डरावना। भयानक।

खोर-सज्ञा स्त्री० चन्दन का तिलक। १ टीका। २ स्त्रियों का सिर का गहना-विशेष।

खोरना-त्रि० स० टीका लगाना। चदन।

खोरहा†-वि० [स्त्री० खोरही] १ जिसके सिर के बाल भड़ गए हों। गजा। २ जिसे खुजली का रोग हो। (पशु)

खोरा-सज्ञा पु० बड़ी खुजली का रोग।, पशुओं का रोग विशेष।

खोलना-त्रि० अ० १ उबलना। २ बहुत गरम होना। ३ जास खाना।

मुहा०—खून खीलना । क्रोध के कारण आश्रम आना ।

खीलाना—क्रि० स० गरम करना । उबालना ।  
ख्यात—वि० १ प्रसिद्ध । प्रतिष्ठित । २ यशस्वी ।

ख्यातव्य—वि० प्रशमायोग्य ।

ख्याति—सज्ञा स्त्री० १ प्रसिद्ध । २ प्रतिष्ठा । नाम । यश । कीर्ति ।

ख्यातिज्ञ—वि० १ बदनाम करनेवाला । २ अपवादी ।

ख्यातिमत्त्व—सज्ञा पु० प्रतिष्ठा ।

ख्यात्यापन्न—वि० कीर्तिमान् । यशस्वी । प्रतिष्ठित ।

ख्यापन—सज्ञा पु० १ प्रवास । २ विज्ञापन । ३ प्रसिद्ध होना ।

ख्याल—सज्ञा पु० [अ० वि० ख्याली] १ ध्यान । २ विचार । ३ स्मृति । स्मरण । याद । ४ कौतुक, स्वाग । ५ भाव । सम्मति । ६ आदर । ७ गाना विशेष । ८ खेल । क्रीडा । ९ एक प्रकार की लावनी

मुहा०—ख्याल रखना=ध्यान रखना । देखभाल करना । किसी के ख्याल पड़ना=किसी को दिक् करने पर उतारू होना । ख्याल से उठारना=याद न रहना । भूल जाना ।

ख्याली—वि० १ कल्पित । फर्जी । २ खेल,

कौतुक करनेवाला । ३ कौतुकी । बहमी । सगकी ।

मुहा०—ख्याली पुलाव पकाना—मनमानी सोचना । असंभव बातें सोचना ।

खिग्टान—सज्ञा पु० ईसाई ।

खिग्टीय—वि० १ ईसाई धर्म-संबन्धी । २ ईसाई ।

खीग्ट—सज्ञा पु० [वि० खीग्टीय] ईसा मसीह । काइस्ट ।

ख्वाजा—सज्ञा पु० [फा०] १ स्वामी । मालिक । २ सरदार । ३ ऊँचे दर्जे का मुसलमान पकीर । ४ रनिवास का नपुसक नोकर ।

ख्वाब—सज्ञा पु० [फा०] १ स्वप्न । २ कल्पित बातें । अनहोनी बातें ।

ख्वार—वि० [फा०] [सज्ञा ख्वारी] १ सत्यानाश । नष्ट । २ दुरा । खराब । ३ अनादृत । बिना आदर भाव के । तिरस्कृत । ख्वारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] खराबी । दुदशा । सत्यानाश ।

ख्वाह—अव्य० अवया । या । या तो ।

यो०—ख्वाह-म ख्वाह=१ जबरदस्ती । चाहे कोई चाहे या न चाहे । २ जरूर । अवश्य ।

ख्वाहिश—सज्ञा स्त्री० [वि० ख्वाहिशमद] अभिलाषा । इच्छा । आकांक्षा । चाह ।

ख्वाही—स्त्री० १ नाश । बर्बादी । २ अपमान ।

## ग

ग—व्यञ्जन म वर्ण का तीसरा वर्ण । इसका उच्चारण-स्थान गूठ है । इसलिए यह गूठप कहलाता है ।

सज्ञा पु० गीत । गधर्व । गणेश । गुरु भाषा । गानवाता । जानेवाला ।

गग—गग पु० १ मात्रिक छंद विशेष । २ हिंदी के एक कवि का नाम । सज्ञा स्त्री० गगा नदी ।

गग-गरार—गज्ञा पु० वह भूमि जो किसी नदी का घाट या हट्टन में निचल आती है ।

गग-शिकस्त—सज्ञा पु० वह भूमि जिसे कोई नदी काट ले गई हो ।

गगा—सज्ञा स्त्री० भारत की एक प्रधान और प्रसिद्ध नदी जो पवित्र मानी जाती है । जाह्नवी । भागीरथी ।

गगापति—सज्ञा स्त्री० मृत्यु ।

गगा-जयन्ती—वि० १ मिला-झुला । २ दाढ़ा । ३ रोने-नर्दाई, पीतन-तारि आदि का पातुओं का बना हुमा । ४ यान-उजना । स्वाह-गपद ।

गगाजन—सज्ञा पु० १ गगा का पानी । २ गरीब कपडा ।

गंगाजली-गंगा स्त्री० १. गंगाजल भरने का पात्र । २. पात्र की सुराही ।  
 गंगाधार-गंगा पु० एरदार ।  
 गंगाधर-गंगा पु० १. शिव । महादेव ।  
 २. समुद्र । ३. ससृज के एक पवि ।  
 गंगाप्राप्ति-गंगा पु० गंगालाभ । मृत्यु ।  
 गंगापुत्र-सज्ञा पु० १. भीष्म । २. गंगा नदी के किनारे यात्रियों के स्नान का प्रवन्ध करने तथा दान लेनेवाले ब्राह्मण-विशेष ।  
 ३. वर्णसंहर ।  
 गंगा-यात्रा-सज्ञा स्त्री० १. मृत्यु । २. मरणासन्न मनुष्य का गंगा के तट पर मरने के लिए गमन ।  
 गंगाल-सज्ञा पु० कडाल । पानी रखने का बड़ा बर्तन ।  
 गंगाला-सज्ञा पु० वह भूमि जहाँ तक गंगा पहुँचती है । कछार ।  
 गंगालाभ-सज्ञा पु० मृत्यु । गंगा की प्राप्ति यानी मृत्यु ।  
 गंगासागर-सज्ञा पु० १. जहाँ गंगा सागर में गिरती है उस स्थान को गंगासागर कहते हैं । हिन्दुओं के लिए यह एक तीर्थ स्थान है । २. बड़ी टोटीदार भारी ।  
 ३. एक तरह की जनानी धोती ।  
 गंगासुत-सज्ञा पु० १. भीष्म । २. काशिकेय ।  
 गंगास्नानी-सज्ञा पु० गंगास्नान करनेवाला ।  
 गंगीभूत-वि० पवित्र । पावन ।  
 गंगेरने-सज्ञा स्त्री० नागबला । पीया-विशेष ।  
 गंगोक्ष-सज्ञा पु० दे० "गंगोदक" ।  
 गंगोदक-सज्ञा पु० १. गंगाजल । २. वर्णवृत्त विशेष ।  
 गंगोटी-सज्ञा स्त्री० गंगा के किनारे की मिट्टी ।  
 गंज-सज्ञा पु० १. सिर के बाल उठने का रोग । २. खलवाट । ३. बालखोरा ।  
 सिर में छोटी-छोटी फुनसियों का रोग ।  
 सज्ञा स्त्री० १. कोप । खजाना । २. ढेर । राशि । भटाला । ३. गोला । हाट । बाजार । गल्ले की मटो ४. भुङ् । समूह ।  
 गजज-सज्ञा पु० १. अवज्ञा । तिरस्कार । २. नाश । ३. वृष्ट । पीडा ।

गंजना-वि० स० १. तिरस्कार करना । २. निरादर करना । ३. नाश करना । चूर-चूर करना ।  
 सज्ञा स्त्री० १. वेदना । पीडा । दुःख । २. ग्लानि-मूचष वाक्य ।  
 वि० जिसको गज रोग हो ।  
 गंजाना-वि० स० दे० "गंजना" । गंजने या कामदूमरे से कराना ।  
 गंजा-सज्ञा पु० १. जिसके सिर में बाल न हो । गाजा । २. मद्यगृह ।  
 गंजित-वि० १. लाञ्छित । अपमानित । कलबित । दुःखी । २. पीडित ।  
 गजी-सज्ञा स्त्री० १. समूह । ढेर । गाँज । २. वटा । चारखद । ३. बनिपायन ।  
 सज्ञा पु० दे० "गंजेड़ी" ।  
 गंजीका-सज्ञा पु० [फा०] एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है ।  
 गंजेड़ी-वि० गाँजा पीनेवाला ।  
 गंठकटा-सज्ञा पु० १. चोर । २. गिरहकट ।  
 गंठजोडा, गंठबधन-सज्ञा पु० विवाह की रीति-विशेष जिसमें वर और वधू के वस्त्रों के छोर को परस्पर बाँध देते हैं ।  
 गड-सज्ञा पु० १. गाल । कपोल । २. कनपटी । ३. फोडा । ४. गले में पहनने का गडा । ५. गोल चिह्न या लकीर । दाग । निशान । ६. गराडी । गेंडा । ७. नाटक का एक भ्रम । ८. गाँठ । ९. जिसमें अचानक प्रश्नोत्तर हो । १०. गजकुम्भ ।  
 गडक-सज्ञा पु० १. गले में पहनने का जतर या गडा । २. गेंडा । ३. गाँठ । ४. चिह्न । ५. गडकी नदी का तटस्थ देश तथा वहाँ के रहनेवाले ।  
 गडकी-सज्ञा स्त्री० उत्तर-भारत की नदी-विशेष ।  
 गडमाला-सज्ञा स्त्री० गले में छोटी-छोटी फुडियाँ निकलने का एक रोग । बठमाला । गलगड ।  
 गंडमुख-वि० भारी बेवकूफ । बज्र मुख ।  
 गंडशैल-सज्ञा पु० पर्वत से टूटा हुआ बड़ा पत्थर । छोटा पहाड़ ।

१-सज्ञा पु० १. गाल । कपोल । २. टी ।

सज्ञा पु० ज्योतिष मतानुसार योग-  
१ ।

ज्ञा पु० १. गाँठ । २. रोग या भूत-व्रेत  
पाषा दूर करने के लिए गले में पहनने  
वस्तर । ३. गिनने में चार की संख्या ।  
आड़ी लकीरो की पक्ति । ५. कठा ।  
११। तोते आदि चिड़ियों के गले  
रंगीन धारी । सूत ।

०—गडा-तावीज=टोटका । मन्त्र-यन्त्र ।

१-सज्ञा पु० [स्त्री० गेंडासी] चौपायो  
वारा काटने का अस्त्र-विशेष ।

—सज्ञा पु० १. सेहूँड़ा वृक्ष । २. गन्ना ।

—वि० प्रफुल्ल । विकसित ।

—सज्ञा स्त्री० १. पानी का कुल्ला ।  
हाथी की सूँड की नोक । ३. हाथ  
पैगूठे का गडा ।

—सज्ञा स्त्री० गन्ने का छोटा टुकड़ा ।

—वि० जाने योग्य । सुगम । जाने का  
ल । गमनशील ।

—वि० जानेवाला ।

—सज्ञा स्त्री० १. मैलापन । २. अशु-  
१ । अपवित्रता । ३. मैला, मल । गलीज ।

—सज्ञा पु० १. एक मसाला । २. कद-  
—विशेष ।

—वि० मैला-कुचैला । गदा ।

—वि० [स्त्री० गदी] १. मैता । २. अशुद्ध ।  
गक । ३. धूणित । धिनीना ।

—सज्ञा पु० [फा०] गेहूँ ।

१—वि० गेहूँ के रंग का ।

—सज्ञा स्त्री० १. सौरभ । २. अच्छी  
[क] सुगन्ध, सुवास । ३. शरीर में  
गाने सायक सुगन्धि । ४. लेश । अणु-  
१ । ५. आमोद । ६. प्रणय । ७  
स्कार । ८. सवध ।

१—सज्ञा स्त्री० [वि० गंधकी] सनिज  
तथै-विशेष ।

गन्धर्व-सज्ञा स्त्री० सज्ञास्त्री । औषध-  
विशेष । लाजवन्ती ।

गंधकी-वि० १. हलका पीला । २. गंधक  
के रंग का ।

गंधगर्भ-सज्ञा पु० बेलवृक्ष ।

गंधद्रव्य-वि० सुगन्धित वस्तु । खुशबूदार  
चीज ।

गंधद्विप-सज्ञा पु० उत्तम हाथी ।

गंधपत्र-सज्ञा पु० १. सफेद तुलसी । २.  
नारंगी । ३. मरवा । ४. बेल ।

गंधप्रिय-वि० घ्राणलुब्ध । गंधप्राही ।

गंधबिलाव-सज्ञा पु० नेबले की तरह का  
एक जन्तु ।

गंधमार्जार-सज्ञा पु० गंधबिलाव ।

गंधमादन-सज्ञा पु० १. पुराण-प्रसिद्ध पर्वत-  
विशेष । २. भौरा । ३. बानर सेनापति ।

गंधराज-सज्ञा पु० १. चन्दन । २. सुगन्धित  
फूल ।

गंधयणिक-सज्ञा पु० १. वर्णसकर । २. जाति-  
विशेष । ३. अत्तार ।

गंधवह-सज्ञा पु० वायु । पवन । चन्दन ।

वि० गंध ले जाने या पहुँचानेवाला ।  
सुगन्धित । खुशबूदार ।

गंधबाह-सज्ञा पु० पवन । कस्तुरिया हरिण ।  
नाक ।

गंधसार-सज्ञा पु० चन्दन । श्रीखंड ।

गंधर्व-सज्ञा पु० १. एक देवता जो गान-  
विद्या में निपुण कहे जाते हैं। स्वर्ग के गायक ।  
यक्ष । गायको के देवता । विद्याधर ।

२. घोड़ा । ३. मृग । ४. प्रेत । वह  
आत्मा जिसने एक शरीर छोड़कर दूसरा  
ग्रहण किया हो । ५. जाति-विशेष

जिसकी कन्याएँ गाती और वेश्यावृत्ति  
करती हैं । ६. विधवा स्त्री का दूसरा पति ।

७. सूर्य । ८. पवित्र आत्मा । अपि ।

गंधर्वनगर-सज्ञा पु० १. गंधर्वों का निवास-  
स्थान । आकाश । २. अलका । ३. भ्रम ।

मिथ्या ज्ञान । ४. चंद्रमा के किनारे  
का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई

पड़ता है । ५. संध्या के समय पश्चिम  
दिशा में रंग-विरंगे बादलों के बीच फैली

हुई लाली । कल्पित नगर । मृग-मरी-  
चिका ।

गंधर्वविद्या—सज्ञा स्त्री० संगीत-विद्या । नाच-गान की विद्या । गीत-वाद्य-नृत्य ।

गंधर्वविवाह—सज्ञा पु० आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें वर और वधू बिना किसी को सूचना दिये, इच्छानुसार, गुप्त रूप से विवाह कर लेते हैं । जैसे दुष्यन्त और शकुन्तला का विवाह ।

गंधर्ववेद—सज्ञा पु० संगीत-शास्त्र, जो चार उपवेदों में से एक है ।

गंधर्वा—सज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

गंधर्विन—सज्ञा स्त्री० गंधर्व जाति की स्त्री ।

गंधर्वा—सज्ञा स्त्री० गंधर्व की स्त्री । गंधर्व-सवधी ।

गंधा—वि० गंधवाली [योगिक शब्दों के अंत में जैसे रजनीगंधा] ।

गंधान—सज्ञा पु० सुवर्ण । सोना ।

गंधाना—क्रि० स० गंध देना । दुर्गंध करना । बसाना । बदबू करना ।

गंधाधिराज—सज्ञा पु० चंद्रस । चीर नामक वृक्ष का गौद ।

गंधार—सज्ञा पु० दे० “गांधार” । कथार । एक रागिनी । तीसरा स्वर ।

गंधारी—सज्ञा स्त्री० १. “गांधारी” । २. पावंती की एक सरसों का नाम । ३. जवासा । ४. गाँजा । ५. बाँये नेत्र से निकलनेवाला दवास ।

गंधाशन—सज्ञा पु० घायु ।

गंधाश्मा—सज्ञा पु० गंधक, उपधातु-विशेष ।

गंधि—सज्ञा स्त्री० गंध । वास । गंधक ।

गंधिका—सज्ञा स्त्री० आहुवेर । गंधक ।

गंधिपर्ण—सज्ञा पु० वृक्ष-विशेष, जिसके पत्तों में गंध हो । छतिवन वृक्ष ।

गंधिया—सज्ञा पु० एक प्रकार का बदबूदार कीड़ा । एक तरह की घास ।

गंधिलुप्य—वि० सुगंध-लोलुप । सुगंध के इच्छुक ।

गंधी—सज्ञा पु० [स्त्री० गंधिनी, गंधिन] १. अक्षर । सुगंधित तेल और ह्व आदि बेचनेवाला । २. गंधिया घास । ३. गाँधी । ४. गंधिया कीड़ा ।

गंधीला—वि० बुरी गंधवाला । बदबूदार । मेला । गंदला ।

गंधारी—सज्ञा स्त्री० वास्मरी । वृक्ष-विशेष ।

गंधीर—वि० १. गहरा । अग्राय । गभीर । २. घना । गहन । ३. गूढ़ । जटिल ।

जिसका अर्थ समझना कठिन हो । ४. शात । सौम्य । ५. घोर । भारी ।

गंधीर-वेदी—सज्ञा पु० मत्त हाथी जो महावत की आज्ञा न माने ।

गम्मत—सज्ञा स्त्री० विनोद । मोज । बहार । हँसी-दिल्लगी ।

गर्व—सज्ञा स्त्री० १. घात । २. दाँव । ३. प्रयोजन । मतलब । ४. अवसर ।

५. उपाय । ढग । युक्ति ।

मुहा०—गर्व से=ढग से । युक्ति से ।

\*+धीरे से । चुपके से ।

गर्वई—सज्ञा स्त्री० [वि० गर्वइयाँ] १. गाँव । देहात । २. गाँव की बस्ती ।

गर्वर-भसला—सज्ञा पु० गँवारों की उक्ति या कहावत ।

गँवाऊ—वि० खोनेवाला । नाश करनेवाला ।

गँवाना—क्रि० स० १. काटना । किताना । २. खोना । ३. बेकार करना । ४. भूलना ।

गँवार—वि० [स्त्री० गँवारिन] । १. गँवार । ग्रामीण । देहाती । गाँव का रहनेवाला ।

२. असभ्य । ३. भूख । ४. अनाड़ी । ५. अशिक्षित ।

गँवारी—सज्ञा स्त्री० १. देहातीपन । गँवारपन । २. बेवकूफी । भूखता । ३. गँवार स्त्री ।

वि० १. गँवार की तरह । २. भद्दा । गँवार—वि० दे० “गँवारी” ।

गँवो—सज्ञा स्त्री० दे० ‘गँवई’ । गाँव । ग्राम । देहात ।

गँव\*—सज्ञा पु० १. गाँव । २. बर । ढेप । ३. मन में चुमनेवाली बात । ताना ।

चुटकी ।

सज्ञा स्त्री० तीर की नोक ।

गँसना\*+—क्रि० स० १. जकड़ना । अचढ़ी

तरह करना । गाँठना । २. कसकर बांधना या भरना ।  
 गंसीला-वि० [स्त्री० गंसीली] चुभनेवाला । तीर के समान नोकदार ।  
 गइया-संज्ञा स्त्री० गाय । गऊ ।  
 गई-क्रि० स० गमन किया । जाती रही । चली गई ।  
 गई करना\*-क्रि० अ० जाने देना । छोड़ देना । बचा जाना ।  
 गई-बहोर-वि० १. खोई हुई वस्तु को पुनः देने-वाला । २. बिगड़े हुए काम को बनानेवाला ।  
 गऊ-संज्ञा स्त्री० गौ । गाय ।  
 गवार-संज्ञा पु० कवर्ग का तीसरा वर्ण, ग अक्षर ।  
 गगन-संज्ञा पु० १. व्योम । आकाश । २. शून्य स्थान । ३. छप्पय छन्द का भेद-विशेष ।  
 गगन-कुसुम-संज्ञा पु० १. असंभव कार्य । २. मिथ्या । ३. आकाश का फूल ।  
 गगन-गामी-वि० आकाश में चलनेवाला । नक्षत्र आदि ।  
 गगनचर-संज्ञा पु० पक्षी । चिड़िया । वि० आकाश में चलनेवाला ।  
 गगनचारी-वि० आकाश में चलनेवाला । आकाशगामी ।  
 संज्ञा पु० पक्षी ।  
 गगनचुम्बी-वि० आकाश को छूनेवाला । बहुत ही ऊँचा । इतना ऊँचा मानो आकाश को छूता हो ।  
 गगनधूल-संज्ञा स्त्री० १. एक तरह का कुकुरमुत्ता-विशेष । २. केतकी के फूल की धूल । ३. पृथ्वी से निकलनेवाला बिना फल-फूल का एक पीछा ।  
 गगनभेड़-संज्ञा स्त्री० गिद्ध । गीघ । हड-गीला ।  
 गगनभेदी-वि० १. बहुत ऊँचा । आकाश को भेदने (छेदने) वाला । २. आकाश तक पहुँचनेवाला ।  
 गगनमंडल-संज्ञा पु० आकाशमंडल । खगोल ।  
 गगनस्पर्शी-वि० आकाश को छू लेनेवाला । बहुत ऊँचा ।

गगनानंग-संज्ञा पु० पचीस मात्राओं का मात्रिक छन्द-विशेष ।  
 गगनवाटिका-संज्ञा स्त्री० आकाश की वाटिका (असंभव वात) ।  
 गगरी-संज्ञा पु० [स्त्री० गगरी] कलता । धातु का बड़ा घड़ा ।  
 गघ-संज्ञा पु० १. घँसने का शब्द । २. चूना सुरखी का मसाला, जिससे जमीन पक्की की जाती है । ३. पक्का फर्श । वि० स्थूल । मोटा ।  
 गचकारी-संज्ञा स्त्री० १. चूने, सुरखी का काम । २. गच का काम ।  
 गचगोर-संज्ञा पु० गच बनानेवाला ।  
 गचना\*-क्रि० स० १. दे० "गाँसना" । २. कसकर भरना ।  
 गचपत्र-संज्ञा स्त्री० भीडभाड । गोलनाल । उलट-पलट ।  
 गच्छ-संज्ञा पु० १ स्थान । २. बौद्धों का स्थान । ३. मठ-विशेष ।  
 गछना\*+क्रि० अ० जाना । चलना । क्रि० स० १. निवाहना । चलाता । २. अपने ऊपर लेना ।  
 गज-संज्ञा पु० [स्त्री० गजी] १. हाथी । २. राक्षस-विशेष । ३. राम की सेना का एक वन्दर । ४. धाठ की सख्या । ५. धातु आदि फूँकने के लिए गड़ा ।  
 गज-संज्ञा पु० १. नापने का एक माप जो दो हाथ सवा होता है । इसमें ३६ इंच या तीन फुट होते हैं । २. पुराने ढर्रे की बन्दूक में बारूद भरने का छड़ । ३. तीर-विशेष ।  
 गज-इलाही-संज्ञा पु० ४१ अंगुल का अकवरी गज ।  
 गजक-संज्ञा पु० [फा०] १. एक तरह की मिठाई । २. जलपान । तिलपपड़ी ।  
 गजद\*-संज्ञा पु० दे० "गयद" ।  
 गजकुंभ-संज्ञा पु० हाथी का सिर ।  
 गजगति-संज्ञा स्त्री० १. हाथी की तरह मंद चाल । २. वर्णवृत्त-विशेष ।  
 गजगमन-संज्ञा पु० हाथी की तरह मंद चाल ।  
 गजगामिनी-वि० हाथी की तरह धीरे-धीरे चलनेवाली स्त्री ।

गजगाह—सज्ञा पु० १. हाथी की भूमि ।  
२. घटवट में पड़ जाना ।

गजगोन\*—सज्ञा पु० हाथी की-भी मद धान ।  
गजगोनी—वि० गजगामिनी ।

गजगोहर—सज्ञा पु० दे० "गज-मुक्ता" ।  
गजसमं—सज्ञा पु० हाथी का चमड़ा । रोग-  
विशेष जिसमें मनुष्य के शरीर का शर्म मोटा  
हो जाता है ।

गजचिमिटी—सज्ञा स्त्री० दृष्टवारुणी ।  
गजट—सज्ञा पु० [घघ्रे०] सरकारी विज्ञप्ति  
जिमें सामान-गवधी सूचनाएँ प्रकाशित की  
जाती हैं, जैसे सरकारी अधिकारिया की  
नियुक्ति, छुट्टी, तनारता तथा अन्य आवश्यक  
सूचनाएँ ।

गजदंत—सज्ञा पु० १ हाथी का दाँत ।  
२ दीवार में गड़ी खुँटी । ३ दाँत के ऊपर  
जो दाँत निकला हो । ४ गणेशजी का नाम ।  
गजदन्ती—वि० हाथी दाँत का बना हुआ ।  
गजवान—सज्ञा पु० हाथी के मस्तक से निकला  
जल । हाथी का मद ।

गजनवी—वि० गजनी-नगर (अफगानिस्तान)  
का रहनेवाला ।

गजना\*—वि० अ० दे० गाजना ।  
गजनाल—सज्ञा स्त्री० बड़ी ताप जो हाथियों  
से खींची जाती है ।

गजनी—सज्ञा पु० अफगानिस्तान का एक  
नगर ।

गजपति—सज्ञा पु० हाथिया के यून का स्वामी ।  
राजा । वह राजा जिसके पास बहुत से  
हाथी हो ।

गजपाटल—सज्ञा पु० कज्जल । काजल । मुरमा ।  
गजपातल—सज्ञा पु० 'गजपातल' । 'महापातल' ।  
गजपिप्पली—सज्ञा स्त्री० १ पीपल विशेष  
जिसकी मजरी घोष के काम आती है ।  
२ गजपीपल । पीपल विशेष ।

गजपीपल—सज्ञा स्त्री० दे० "गजपिप्पली" ।  
गजपुगव—सज्ञा पु० मुख्य गज । प्रधान हाथी ।  
गजपुट—सज्ञा पु० १ घोष पकाने के लिए  
एक प्रकार का गढ़ा । २ धातु फूँकने के लिए  
गढ़ा ।

गजद—सज्ञा पु० [म०] १ शोध । गुस्ता ।

ग्रापत्र । विपत्ति । २. अघेर । अग्याप ।  
जुलम । घद्भुत बात ।

मुहा०—गजव का=घद्भुत । विचित्र ।  
गजघाँस, गजघाग—सज्ञा पु० हाथी का श्मश्रु ।  
गजवृक्षा—सज्ञा पु० बदली । बेला ।

गजमुक्ता—सज्ञा स्त्री० हाथी के मस्तक से  
निकलनेवाला प्रसिद्ध मोती ।

गजमुख—सज्ञा पु० १ गणेश । गजाक्ष । २  
जिसका मुँह हाथी के मुँह की तरह हो ।  
गजमोचन—सज्ञा पु० विष्णु भगवान् । हाथी  
की ग्राह से उबारनेवाले ।

गजमोती—सज्ञा पु० दे० "गजमुक्ता" ।  
गजपूय—सज्ञा पु० हाथियों का ममूह ।

गजर—सज्ञा पु० १ मूल विशेष, गाजर ।  
२ पहर-पहर पर घटा बजने का शब्द ।  
३. पारा । ४. प्रातःकाल का घटा ।  
चार, आठ और बारह बजने पर उतनी ही  
बार जल्दी-जल्दी फिर घटा बजना ।  
मुहा०—गजरदम—सबरे । तड्डे ।

गजर-बजर—सज्ञा पु० गिचपिच । घालमल ।  
गिचपिच वस्तु ।

गजरा—सज्ञा पु० १ फूला का हार । २  
बलाई में पहना जानेवाला गहना विशेष ।  
३ एक तरह का रेशमी वस्त्र । ४ गाजर  
के पत्ते ।

गजराज—सज्ञा पु० बड़ा हाथी । हाथियों का  
राजा (ऐरावत) ।

गजल—सज्ञा स्त्री० [फा०] फारसी और उर्दू  
का एक छन्द, जिसमें शृंगार रस की  
प्रधानता हो ।

गजवदन—सज्ञा पु० गणेश । जिसका मुँह  
हाथी के मुँह की तरह हो । 'गजमुख' ।

गजवान—सज्ञा पु० हाथीवान । महावत ।  
गजा—सज्ञा पु० १ खुर्मा । २ खजूर । ३. एक  
तरह की मिठाई । ४ नगाड़ा बजाने का डडा ।

गजाघ्रणी—सज्ञा पु० बड़ा हाथी । ऐरावत ।  
गजशाला—सज्ञा स्त्री० १. हाथी घाँघने का  
घर । २ फीलखाना । ३ हथिसाल ।

गजाघर—सज्ञा पु० दे० "गदाघर" ।  
गजाध्यक्ष—सज्ञा पु० हाथी का स्वामी ।

गजाधिपति ।

गजानन-सज्ञा पु० गजवदन । गणेश ।  
 गजारि-सज्ञा पु० १ सिंह । मृगराज । २  
 वृक्ष विशेष ।  
 गजाशन-सज्ञा पु० पीपल का पेड़ ।  
 गजास्प-सज्ञा पु० लम्बोदर । गणेश ।  
 गजाह्वय-सज्ञा पु० नगर विशेष । हस्तिनापुर ।  
 गजी-सज्ञा स्त्री० मोटा देशी कपड़ा विशेष ।  
 गाढा ।  
 सज्ञा स्त्री० हथिनी ।  
 गजेन्द्र-सज्ञा पु० १ ऐरावत । गजराज ।  
 २ दिग्गज ।  
 गजकृ-सज्ञा पु० १ गज । २ तरल पदार्थ ।  
 ३ बुलबुल का समूह । ४ राशि, ढेर,  
 गाँज । ५ कोप, खजाना । ६ धन ।  
 सम्पत्ति ।  
 गम्भ-सज्ञा पु० जीता हुआ धन ।  
 गम्भिन-वि० १ सघन । निविड । २  
 मोटा, गाढा । ठस बुनावट का ।  
 गढई-सज्ञा स्त्री० गर्दन । गला । कंठ ।  
 गढवना-क्रि० स० १ निगलना । २ दबा  
 लना । हड़पना ।  
 गढकौला-वि० गढकने या निगलनेवाला ।  
 गढगढ-सज्ञा पु० खाते या पीते समय गल से  
 उत्पन्न शब्द । निगलने का शब्द ।  
 गढपट-सज्ञा स्त्री० १ उलट पुलट । २  
 प्रसंग । ३ एकनित । ४ मिलावट ।  
 ५ घनिष्ठता ।  
 गढरमाता-सज्ञा स्त्री० बड़े दानों की  
 माला ।  
 गढागढ-वि० घडाघड । बराबर । लगा-  
 तार ।  
 गढाबारचा-सज्ञा पु० एक प्रकार का गोद ।  
 गठी-सज्ञा स्त्री० समूह । राशि ।  
 गट्ट-सज्ञा पु० 'गढगढ' । निगलते समय  
 गल का शब्द ।  
 गट्टा-सज्ञा पु० १ कलाई । हथेली और  
 पहुँचे के बीच का जोड़ । २ गाँठ ।  
 ३ पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ ।  
 ४ बीज । ५ मिठाई विशेष ।  
 गट्टर-सज्ञा पु० बड़ी गठरी ।  
 गट्टा-सज्ञा पु० (स्त्री० गट्टी, गठिया)

१ भार । गट्ठर । २ बड़ी गठरी ।  
 ३ बुकचा । ४ प्याज या सहस्र  
 की गाँठ ।  
 गठकाट-वि० १ चाँई । २ गिरहकाट ।  
 गठन-सज्ञा स्त्री० रचना । बनावट ।  
 गठना-क्रि० अ० १ जुड़ना । २ मिलना ।  
 ३ मोटी सिलाई होना । परस्पर मिल  
 जाना । ४ बुनावट का बूढ़ होना ।  
 ५ किसी पङ्क्य में सहमत या सम्मिलित  
 होना । ६ परस्पर प्रेमी बनना । ७ दौब  
 पर चढ़ना । ८ अनुकूल होना । ९ भली  
 भाँति बनाया जाना । १० विषय होना ।  
 सम्भोग होना । ११ अधिक मेल  
 होना ।  
 धो०-गठा वदन=हुष्टपुष्ट शरीर ।  
 गठबधन-सज्ञा पु० गठजोड़ा । बरबधू के  
 वस्त्रों के छोर को बाँधना ।  
 गठर-सज्ञा पु० बड़ी गाँठ । गठीला ।  
 गठरी-सज्ञा स्त्री० १ गट्ठर । बीक ।  
 भार । बाँधा हुआ सामान । बड़ी पोथली ।  
 बुकची । २ सम्पत्ति ।  
 मुहा०-गठरी मारना-ठगना । अनुचित  
 रूप से किसी का धन ले लना ।  
 गठवाँसी-सज्ञा स्त्री० बिस्वासी । बिस्वे का  
 बीसवाँ अंश ।  
 गठवाना-क्रि० स० १ गठाना । गठवाना ।  
 सिलवाना । २ जुड़वाना ३ बाँधवाना ।  
 जूता सिलाना ।  
 गठाना-क्रि० स० "गठवाना" ।  
 गठाव-सज्ञा पु० दे० 'गठन' ।  
 गठित-वि० रचित । गठा हुआ ।  
 गठिवध-सज्ञा पु० दे० "गठबधन" ।  
 गठिया-सज्ञा स्त्री० १ ग्रन्थि । गाँठ । २.  
 लादने का शैला । ३ बड़ी गठरी । ४  
 रोग विशेष जिसमें जोड़ा में सूजन और  
 पीड़ा होती है ।  
 गठियाना-क्रि० स० १ गाँठ या बाँधनी ।  
 २ बाँधना । ३ गाँठ लगाना ।  
 गठिवन-सज्ञा स्त्री० वृक्ष विशेष ।  
 गठिहा-वि० गठीवाला । ग्रन्थियुक्त ।  
 गठीला-वि० अधिक गाँठवाला । १ हट्टा-

गट्टा । हट्ट-मुट्ट । गठा हूमा । गुठील ।  
 २. दुड़ । गड्गुल ।  
 गठोत, गठोती-संज्ञा स्त्री० १. गेस-जोल ।  
 २. मित्रवर पत्नी की हुई यात । ३. पत्निगधि ।  
 गड्गुन-गङ्गा पु० (वि० गटगिया) १. पमट ।  
 डोग । टोनी । २. घपनी बहाई ।  
 गड्गु-गङ्गा पु० १. गटा । टोना । २. एक  
 सेत वा नाम । टोटये के लिए गाड़ी जाने-  
 वाली वस्तु ।  
 गड्-संज्ञा पु० १. आड़ । ओट । २. चहार-  
 दीवारी । घेरा । ३. गड्ढा । ४. छाई ।  
 गड्गु-गङ्गा पु० एक प्रकार की मछली ।  
 गड्गुना-त्रि० अ० दूबना । दे० गरजना ।  
 गड्गु-संज्ञा स्त्री० १. वादल गरजने वा  
 गाड़ी आदि चलने वा शब्द । २. गड्गड़  
 शब्द करना, जैसे पेट में ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० एक तरह का हुक्का ।  
 गड्गुना-त्रि० अ० गरजना । बड्गना ।  
 (त्रि० सं० गड्गड़ शब्द करना । मेघ या  
 नगाड़े की आवाज ।  
 गड्गु-संज्ञा स्त्री० गर्जन । बड्ग ।  
 गडगड । गुडगुडाने का शब्द ।  
 गड्गु-संज्ञा स्त्री० नगाडा ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० चियड़ा । फटा-पुराना  
 वपडा ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० हाथी के साथ भाला  
 लेकर चलनेवाला नौकर ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० १. धसान । २. दलदल ।  
 ३. मृत्ति । ४. आकार ।  
 गड्गु-त्रि० अ० १. छिदना । चुभना ।  
 घेंसना । २. खुरखुरा लगना । शरीर में  
 चुभने की सी पीड़ा पहुँचना । ३. दुखना ।  
 दर्द करना । ४. आल या पेट का दर्द ।  
 ५. नीचे दब जाना । ६. घुसना । पठना ।  
 ७. डट जाना । जमना । स्थिर होना ।  
 घ. भासक होना ।  
 गड्गु-गड्गु मुँदे उखाडना=पुरानी बात  
 उठाना । गड्गु जाना=बिजित होना । भँपना ।  
 गड्गु-संज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के सहसा  
 जल में गिरने का शब्द ।

गड्गुना-त्रि० सं० १. गा सेना । निगलना ।  
 २. पचा सेना । हजम करना । ३. अनु-  
 चित अधिभार करना ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० १. घोने की जगह ।  
 २. गहरा गड्ढा ।  
 गड्गु-वि० १. गोल-मोल । अव्यवस्थित ।  
 २. ऊँचा-नीचा । गट-गट । उलट-मुलट ।  
 ३. धस्त-व्यस्त । ४. धडवट ।  
 संज्ञा पु० १. अव्यवस्था । दमनग । २.  
 वृ-प्रवध । ३. उपद्रव । खलजली । ४.  
 आपत्ति ।  
 गड्गु-घोटाला-संज्ञा पु० गोलमाल । पचले-  
 बाजी । घोंघली । भ्रष्टाचार ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० भूलभुलैया । गोल-  
 माल । अव्यवस्था ।  
 गड्गुना-त्रि० अ० १. चक्कर में पड़ना ।  
 गड्गुली में पड़ना । २. अव्यवस्थित होना ।  
 ३. विगटना ।  
 त्रि० सं० १. गड्गुली में डालना । चक्कर  
 में डालना । २. भुलवाना । ३. खराब  
 करना । बिगाड़ना ।  
 गड्गु-संज्ञा स्त्री० खतबली । भय । डर ।  
 अनिर्दिष्ट । अनिर्दिष्ट ।  
 गड्गु-वि० १. गड्गु करनेवाला ।  
 २. उपद्रवी । ३. बिगाड़नेवाला ।  
 गड्गु-संज्ञा स्त्री० दे० "गड्गु" ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० [स्त्री० गड्गु] भेड  
 पालनेवाली जाति-विशेष, भेडिहार ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० [स्त्री० गड्गु] दे०  
 "गड्गु" ।  
 गड्गु-संज्ञा पु० १. राशि । डेर । २. समूह ।  
 गड्गु-त्रि० सं० चुभाना । घेंसाना ।  
 ('गड्गु' का प्रे० रूप) गड्गु का काम  
 करना ।  
 गड्गु-वि० १. गड्गुनेवाला । २. चुभने-  
 वाला ।  
 गड्गु-संज्ञा स्त्री० १. मड्डाकार रेखा ।  
 गोले लकीर । २. घेरा । झाड़ी चारियाँ ।  
 घिरनी । गोल चरखी जिस पर रस्सी बडा-  
 कर कुएँ से पानी खींचते हैं ।  
 गङ्गारीदार-वि० १. घेरदार । २. घाटीदार ।

गडासा-सज्ञा पु० दे० "गैडासा" ।  
 गडियार-वि० १ गिलज्ज । घमण्डी । २  
 हठी । ३ आलसी ।  
 गडुआ-सज्ञा पु० टोटीदार लोटा । हयहर ।  
 वनश ।  
 गडुई-सज्ञा स्त्री० भारी । टाटीदार छोटा  
 बरतन ।  
 गडुवा-सज्ञा पु० टाटीदार लोटा । तमहा ।  
 गडुवा ।  
 गडेरिया-सज्ञा पु० दे० 'गडरिया' ।  
 गढोना-वि० स० १ दे० 'गढाना' । २  
 एक तरह का पान ।  
 गडड-सज्ञा पु० [स्त्री० गड्डी] १ बहुत  
 वस्तुभा का मेल । तह परतह । २ समूह ।  
 ३ एक ही वस्तु का ढर । ४ गड्डा ।  
 गड्डमड्ड, गड्डमड्ड-सज्ञा पु० घालमल ।  
 घपना ।  
 वि० अडबड । विना प्रम के ।  
 गडडरि-सज्ञा पु० गडरिया ।  
 वि० १ भड-सवधी । २ भड की तरह ।  
 गडडाम-वि० नीच । दुष्ट । बदमाश ।  
 नम्पट ।  
 गड्डालिका-सज्ञा स्त्री० १ देखा देखी कार्य में  
 प्रवृत्ति होना । बिना सोच समझे काम करना ।  
 २ भडिया घसान ।  
 गडडी-सज्ञा स्त्री० दे० गड्ड । रामूह ।  
 गडड-सज्ञा पु० १ गडहा । पृथ्वी में गहरा  
 स्थल । २ गहराई ।  
 मुहा०-किसी के लिए गडडा खोदना =  
 बुराई करना । किसी की हानि पहुँचाने  
 के लिए प्रयत्न करना ।  
 गडत-वि० गडी हुई । बगावटी । कल्पित  
 (वात) ।  
 गड-सज्ञा पु० [स्त्री० गडी] १ कोट ।  
 बिना । दुग । २ राजमहल ।  
 मुहा०-गड जीतना या टोडना = १ बहुत  
 कठिन काम करना । २ किला जीतना ।  
 गडन-सज्ञा स्त्री० रचना । बनावट । गठन ।  
 आकृति ।  
 गडन-क्रि० स० १ सुघटित करना ।  
 रचना । काट छाँटकर बनाना । २ सुदील

करना । ३ वात बनाना । ४ पीटना ।  
 मारना । ठोकना ।  
 गडपति-सज्ञा पु० १ किलदार । २ राजा ।  
 ३ सरदार ।  
 गडवई, गडवई\*-सज्ञा पु० दे० गडपति ।  
 गडवार-वि० मोटा । स्थूल । गाढा ।  
 गडवाल-सज्ञा पु० १ किल का रक्षक । २  
 गडवाला । ३ जिसके अधिकार में गड हो ।  
 ४ उत्तर प्रदेश का एक जिला ।  
 गडा-सज्ञा पु० गड्डा । गर्त ।  
 गडाई-सज्ञा स्त्री० १ गढन की मजदूरी ।  
 जैसे गहन की बतवाई । २ गढन का काम  
 या भाव ।  
 गढाना-क्रि० स० गडवाना । गढाने का काम  
 करना ।  
 वि० अ० खलना । दुखदायी मालूम  
 होना ।  
 गडिया-सज्ञा पु० १ गढनवाला । २  
 भाला । बरछी । बत्तम ।  
 गडी-सज्ञा स्त्री० गड । छोटा किला ।  
 गडीश-सज्ञा पु० गड का स्वामी या प्रधान  
 अधिकारी ।  
 गडला-सज्ञा पु० गडहा । खडहर ।  
 वि० गडा हुआ ।  
 गडैया-वि० १ गढनवाला । २ छोटा  
 तालाब । तलैया ।  
 गडोई\*†-सज्ञा पु० दे० गडपति ।  
 गण-सज्ञा पु० १ ऋद्ध । समूह । जल्वा ।  
 २ जाति । श्रेणी । ३ छद्म शास्त्र में तीन  
 वर्णों का समूह जिसमें लघु गुरु के क्रम  
 के अनुसार गण आठ मान गए हैं । ४  
 सेना का वह भाग जिसमें तीन गुल्म हो ।  
 ५ व्याकरण में धातुओं और शब्दों के  
 वे समूह जिनमें समान रूप भेद हो जैसे  
 भ्वादिगण । ६ दूत । सेवक । अनुचर ।  
 सेवा करनेवाले । सग-साथ रहनेवाले ।  
 धर्म या दशन में एक सम्प्रदाय । गण  
 की का एक पदवी । ७ शिव के अनुचर ।  
 ८ अनुचरों का दल ।  
 गणक-सज्ञा पु० १ गणना करनेवाला ।  
 गणिक । २ प्राचीन भारत का एक

प्रकार का प्रजापति। ऐसा राज्य जिसमें  
जनता के खुले हुए प्रतिनिधि शासन करें।  
१. दे० "गणराज्य"।

गणता-मन्त्रा स्त्री० १. पदपत्र में मिलना।  
२. समूह या वर्ग-विशेष में होना। ३.  
विगी दम में होना या दलबन्दी में पड़ना।  
४. वर्गीकरण। ५. पक्षपात। ६. टोली।  
धुरंत-मण्डली।

गणदेवता-सन्ना पु० देवताओं का समूह जो  
एक साथ प्रकट होते हैं। देवता। जैसे—  
विश्वदेवता, गन्धर्व, मित्रे, इष्ट, अनेक देवता।  
गणन-मन्त्रा पु० [वि० गणनीय, गणित,  
गण्य] १. गिनती। २. गिनना।

गणना-मन्त्रा स्त्री० १. सख्या। गिनती।  
२. लेखा। हिसाब। ३. तुलना, मान,  
प्रशंसा। एक अलंकार जिसमें एक ही  
शब्द बार-बार आवे। स्फुट, गरज।

गणनायक या गणनायक-सन्ना पु० गणेश।  
गणों के मालिक। शिवजी। गजानन।  
गणनीय-वि० गिनने योग्य।

गणप-सन्ना पु० गणेश।  
गणपति-सन्ना पु० १. शिव। इन्द्र। ब्रह्मा।  
एक प्रतिष्ठित गणितज्ञ। २. गणेश। किसी  
जाति, सस्था या सेना का नेता।

गणपाठ-सन्ना पु० ग्रन्थ-विशेष। शब्द-समूह जो  
व्याकरण के एक नियम के अन्तर्गत हों।  
गणराज-सन्ना पु० गणराज। गणनायक।

गणराज्य-मन्त्रा पु० जनता के प्रतिनिधियों-  
द्वारा शासित पूर्ण स्वतंत्र राज्य। प्रतिनिधि-  
सत्तात्मक राज्य। गणतंत्र। प्राचीन भारत  
का एक प्रकार का प्रजासत्तात्मक राज्य। कई  
लोकतंत्रों का सभ-राज्य।

गणाधिप-सन्ना पु० १. गजानन। गणेश।  
२. साधुओं का अधिपति या महत।

गणाध्यक्ष-सन्ना पु० १. गणेश। २. शिव।  
गणिका-सन्ना स्त्री० १. वेद्या। नाचने-गाने-  
वाली। २. हथिनी। ३. एक प्रकार का फूल।  
एक प्रकार की सुगन्धि।

गणित-सन्ना पु० १. शब्द-विद्या। भाषा,  
सख्या और परिमाण आदि का शास्त्र।  
२. हिसाब।

वि० गिता हुआ।

गणितज्ञ-सन्ना पु० ज्योतिर्वेत्ता। प्रववेत्ता।  
गणितज्ञ।

गणितज्ञ-वि० १. गणित-शास्त्र का ज्ञान।  
२. ज्योतिषी।

गणेश-मन्त्रा पु० हिंदुओं के प्रधान देवता  
जिनका सारा शरीर मनुष्य का-सा है, पर  
सिर हाथी का-सा है। विष्णु को नाश करने-  
वाले देवता। इगीसे प्रपेय कार्य के प्रारम्भ  
में आपसी आराधना की जाती है। पार्वती  
श्रीर शिवजी के पुत्र। सम्बोद्धर। गजानन।  
गणेश-त्रिधा-सन्ना स्त्री० योगाम्यास की एक  
त्रिधा।

गणेश-चतुर्थी-सन्ना स्त्री० भादा, माघ और  
फागुन की शुक्ला चतुर्थी।

गणेशभूषण-सन्ना पु० सिद्धर।

गण्य-वि० १. गण्यमान्य। प्रतिष्ठित।  
गणनीय। माननीय। २. गिनने योग्य।  
यो०-गण्य मान्य=प्रतिष्ठित।

गत-वि० १. बीता हुआ। गया हुआ।  
२. नष्ट। मरा हुआ। हत। ३. हीन।  
सन्ना स्त्री० १. दशा। अवस्था। २. वप।  
रूप। रग। ३. सुगति। उपयोग।  
काम में लाना। दुर्दशा। दुर्गति। नाश।  
४. संगीत की लय, ताल-सुर का मिलान।  
५. नृत्य में शरीर की विशेष मुद्रा।  
६. नाचने का ठाठ। ७. निवृत्ति। ८.  
मुक्त। ९. लीन। १०. प्राप्त।

मुहा०-गत बनाना=दुर्दशा करना।

गतकलम-वि० विश्रान्त, श्रमरहित। उत्सा-  
हित।

गतका-सन्ना पु० १. लकड़ी खेलने का उड़ा  
जिसके ऊपर चमड़े की खोल लड़ी रहती  
है। २. फरी और गतके से खला  
जानेवाला खेल।

गतजप-वि० निर्लज्ज। लज्जारहित।

गतप्रभ-वि० प्रभाहीन। निष्प्रभ।

गतचित्त-वि० १. गतविभ्रव। २. निर्धन  
दरिद्र।

गताक-वि० जिसमें सत्पुरुषोचित कोई चिह्न  
न हो। गया-बीता। निवन्मा।

सज्ञा पु० समाचार-पत्र का पिछला अंक ।  
गतागत-सज्ञा पु० १. गमनागमन । आवागमन ।  
आना-जाना । २. जन्म-मरण । ३. पक्षियों  
की गति-विशेष ।

गताधि-वि० सुखी ।

गतानुगतिक-वि० १. अनुकरण करनेवाला ।  
पुराने उदाहरण को देखकर उसका अनुसरण  
करनेवाला । अनुकारी । २. पिछलगू ।

गतायु-वि० व्यतीत-आयु । जीवन का  
अवसान-काल । मरणासन्न । मुमूर्षु ।

गति-सज्ञा स्त्री० १. गमन । जाने की  
क्रिया । यात्रा । चाल । २. स्पन्दन ।  
हिलने-डुलने की क्रिया । हलकत । ३.  
अवस्था । दशा । हालत । ४. वेप ।  
रूप-रंग । ५. प्रवेश । पहुँच । पैठ ।  
६. अंतिम उपाय । ७. दौड़ । तदवीर ।

८. अवलव । सहारा । ९. वारण । १०.  
चेष्टा । प्रयत्न । ११. माया । लीला ।  
१२. रीति । ढंग । १३. मृत्यु के उपरांत  
जीवात्मा की दशा । १४. भुक्ति । मोक्ष ।  
१५. लड़नेवालों के पैर की चाल । पैतरा ।  
१६. सितार आदि के वादन की क्रिया ।  
१७. ग्रहों की चाल । १८. विधान ।

गतिक्रिया-सज्ञा स्त्री० १. विलम्ब । २. काल-  
क्षेप । ३. गिरियलता ।

गतिविहीन-वि० १. गतिहीन । २. गमन-  
शक्ति-रहित । जिसमें चलने की शक्ति  
न हो ।

गस्ता-सज्ञा पु० वृट् । कारगज के कई परतों  
को साँटकर बनाई हुई दास्ती ।

गस्ताल-खाता-सज्ञा पु० घटाखाता । डूबे हुए  
धन का हिस्साव ।

गय\*†-सज्ञा पु० १. मूल धन । पूंजी ।  
जमा । २. माल । ३. भुंड ।

गयना\*-क्रि० स० १. आपस में गूँथना ।  
२. बात बनाना । बात गढ़ना ।

गद-सज्ञा पु० १. विष । २. रोग । व्याधि ।  
३. श्रीकृष्णचंद्र के एक छोटे भाई का नाम ।  
बिस्ती गुलगुली वस्तु पर या गुलगुली वस्तु  
के आपात का शब्द । ४. असुर-विशेष ।  
५. श्रीरामचंद्र की सेना का एक बन्दर ।

गदका†-सज्ञा पु० दे० "गतका" । पटा ।  
दण्ड-विशेष ।

गदकारी-वि० [स्त्री० गदकारी] गुल-  
गुला । गुदगुदा । मुलायम और दब जाने-  
वाला ।

गदकारी-वि० रोग उत्पन्न करनेवाला ।

गदगद\*-वि० दे० "गद्गद" ।

गदगदा-वि० मोटा । स्थूल । तोड़वाला ।

गदना\*-क्रि० स० कहना ।

गदर-सज्ञा पु० [अ०] १. हलचल । २.  
उपद्रव । ३. विद्रोह । ४. विप्लव । ५.  
बलवा । ६. बगावत ।

गदराना-क्रि० अ० १ (फल आदि का)  
पकने पर होना । २. जवानी में अगो का  
भरना । ३. आँख में कीचड़ आदि का  
आना ।

गदशत्रु-सज्ञा पु० १. वैद्य । २. औषध ।

गदहपचीती-सज्ञा स्त्री० १६ से २५ वर्ष  
तक की अवस्था जिसमें मनुष्य को अनुभव  
कम रहता है ।

गदहपन-सज्ञा पु० मूर्खता । बेवकूफी ।  
नासमझी ।

गदहपूरना-सज्ञा स्त्री० पोधा-विशेष । एक  
तरह की वृद्धी । औषध-विशेष ।

गदह-लोडना-सज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ  
गदहा लोटा हो ।

गदहहेवू-सज्ञा पु० लडकों का एक खेल ।

गदहा-सज्ञा पु० [स्त्री० गदही] १. वैद्य ।  
चिकित्सक । रोग हरनेवाला । २. यत्ना ।  
गदम । ३. मूर्ख । नासमझ । बेवकूफ ।  
मुहा०-गदहे पर चढ़ाना=बहुत बेइज्जत  
या बदनाम करना । गदहे का हल चलना=  
घरवाद हो जाना । बिलकुल उजड़ जाना ।  
गदहिला†-सज्ञा पु० वह गदहा जिस पर ईंटें  
या मिट्टी लादते हैं ।

गदहिया-सज्ञा स्त्री० गदही ।

गदा-सज्ञा स्त्री० प्राचीन अस्त्र-विशेष जिसमें  
एक छोटे डंडे के छोर पर भारी लट्ठ  
रहता था ।

सज्ञा पु० १. दरिद्र । २. फकीर । भिक्ष-  
भगा ।

गदाई-वि० १ तुच्छ । क्षुद्र । नीच ।  
 २. बेकार । गद्दी ।  
 गदाधर-सज्ञा पु० १. विष्णु । नारायण ।  
 २. श्रीकृष्ण ।  
 गदाधर-सज्ञा पु० गदा या धस्त्र । यष्टि ।  
 लाठी । गदा ।  
 गदायुद्ध-सज्ञा पु० ऐसा युद्ध जिसमें केवल  
 गदा धस्त्र का प्रयोग होता था ।  
 गदादि-सज्ञा पु० रोगदानु । रोगनाशक वैद्य ।  
 गदासा-सज्ञा पु० हाथी पर का गदा । मिट्टी  
 खोदने का धोजार-विशेष ।  
 गदापत्र-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण । विष्णु भगवान् ।  
 गदित-वि० उक्त । वधित । बहा हुआ ।  
 गद्दी-सज्ञा पु० विष्णु । नारायण ।  
 वि० १ गदा-विसिष्ट । २ रोगयुक्त ।  
 रोगी ।  
 गदेल-सज्ञा पु० १. गद्दा । २ मोटा विछोना ।  
 रुईदार विछोना । ३ शिनु । बच्चा ।  
 माँ का दूध पीनेवाला बच्चा । ४ गोद्री  
 का बच्चा ।  
 गदोरी-सज्ञा स्त्री० हथेली । हाथ के नीचे  
 का भाग ।  
 गदगद-वि० १ प्रसन्न । २ अत्यधिक हर्ष,  
 प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण । ३  
 पुलकित ।  
 गद्द-सज्ञा पु० १ मुलायम जगह पर किसी  
 चीज के गिरने का शब्द । २ अजीर्ण,  
 अपच । किसी गरिष्ठ या जल्दी न पचने-  
 वाली चीज के कारण पेट का भारी-  
 पन ।  
 गद्दर-वि० १ अधभका । जो अच्छी तरह  
 पका न हो । कुछ पका हुआ । २ गदरा ।  
 मोटा गद्दा ।  
 गद्दा-सज्ञा पु० १ तोराक । गदेल । रुई,  
 आदि का मोटा और गुदगुदा विछोना ।  
 २ मुलायम चीजों का बाल ।  
 गद्दी-सज्ञा स्त्री० १ छोटा गद्दा । २ घोड़े,  
 ऊँट आदि की पीठ पर जीन आदि रखने  
 का कपड़ा । ३ व्यवसायी आदि के बैठने  
 का स्थान । ४ सिंहासन । ५ राज्य-  
 शासक के बैठने का स्थान । ऊँचा पद ।

६ बिस्ती राजवश की पीढ़ी या आचार्य  
 की शिष्य-परंपरा । ७ हाथ या पैर की  
 हथेली । ८ सिंहासन पर बैठना ।  
 उत्तराधिकारी होना ।  
 गद्दा-गद्दी पर बैठना=राज्य पाना ।  
 गद्दीनसीनी-वि० १ गद्दी पर बैठा हुआ ।  
 सिंहासनासूय । २ जिसे राज मिला हो ।  
 उत्तराधिकारी ।  
 गद्दीनसीनी-सज्ञा स्त्री० राजगद्दी पर बैठने  
 का समारोह । राज्यारोहण ।  
 गद्य-सज्ञा पु० १ छन्दरहित वाक्य । वच-  
 निष्ठा । २ जो गायन न जा सके । ३  
 पद्य का उल्टा । ४ संगीत में एक राग ।  
 ५ बहने योग्य और बोलने योग्य ।  
 गद्यशैली-सज्ञा स्त्री० गद्य लिखने का तरीका  
 या कौशल ।  
 गद्यता-वि० १ अरसिकता । २ गद्य का  
 गुण ।  
 गद्या-सज्ञा पु० दे० "गदहा" ।  
 गन\*-सज्ञा पु० दे० "गण" ।  
 गनक-सज्ञा पु० दे० "गणक" ।  
 गनगन-सज्ञा स्त्री० कपने या रोमाच की  
 वशा ।  
 गनगनाना-क्रि० अ० शीत आदि से रोमाच  
 होना या कपना ।  
 गनगीर-सज्ञा स्त्री० चैत्र शुक्ल तृतीया ।  
 इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा  
 करती हैं ।  
 गनगन-क्रि० स० दे० "गिनना" ।  
 गनना-सज्ञा स्त्री० १ गणना । २ गिनना ।  
 ३ विवाह में बरवधू का ग्रह-योग देखना ।  
 गनना\*-क्रि० स० दे० "गिनना" ।  
 क्रि० अ० गिना जाना ।  
 गनिधारी-सज्ञा स्त्री० छोटी अरली । पौपा-  
 विशेष ।  
 शनी-वि० १ [अ०] घनवान् । २ शत्रु ।  
 शनीम-सज्ञा पु० [अ०] १ डाकू । लुटारा ।  
 २ शत्रु । वैरी ।  
 शनीमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ लूट का माल ।  
 २ भुपूत का माल । यह माल जो  
 बिना परिधम मिले । ३ सतोष की

वात । ४. घड़ी वात । ५. घन्यवाद देने योग्य वात ।

गमना-सज्ञा पु० ऊँट । ईँट ।

गन्य-वि० "गण्य" । गिनने योग्य ।

गप-सज्ञा स्त्री० [वि० गप्पी] १. ऐसी वात जिसकी सत्यता में सन्देह है । २. मन बहलाने की वात । ३. कहानी । बकवाद । ४. मिथ्या सवाद । भूठी खबर । भफवाह । ५. डींग । बड़ाई की जानेवाली भूठी वात ।

सज्ञा पु० १. भट से निकलने का शब्द ।

२. भक्षण । निगलना या खाना ।

गो०-गपागप=भटपट । जल्दी-जल्दी ।

गपशप=इधर-उधर की बातें ।

गपकना-क्रि० स० चटपट निगलना । जल्दी खाना ।

गपड़-सज्ञा पु० १. मिलावट । २. व्यर्थ । निरर्थक ।

गपड़चौथ-सज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात । व्यर्थ की गोपटी ।

वि० गड़-गड़ । लीप-मोत । अज्ञात । अनिश्चित । अव्यवस्थित ।

गपना\*-क्रि० स० बचना । गप मारना ।

गपोड, गपोड़ा, गपोड़ी-सज्ञा पु० मिथ्या वात । बपोल-कल्पना । गप ।

वि० गप्पी । डींग हाँकनेवाला ।

गप्य-सज्ञा स्त्री० दे० "गप" ।

गप्पा-सज्ञा पु० छल । धोखा । कपट ।

गप्पी-वि० आचाल । बकवादी । बातुल ।

गप हाँकनेवाला । बात बढाकर कहनेवाला ।

गफ्फा-सज्ञा पु० १. बहुत बड़ा ग्रास या कौर । २. लान ।

गफ-वि० १. ठस । घना । २. गाढ़ा । ३. घनी बुनावट का ।

गाफलत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. असावधानी । लापरवाही । बेसुध । २. भ्रम । ३. चूक । भूल ।

गबन-सज्ञा पु० [अ०] धरोहर हड़पना । किसी दूसरे के सोपे हुए माल को हड़प लेना । खयालत ।

गवर-वि० १. जवान । युवा । पट्टा ।

२. सीधा । भोला-भाला ।

गसज्ञा पु० पति । हूल्हा ।

गबरन-सज्ञा पु० एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।

गबवर-वि० १. अहंकारी । पर्मडी । २.

जल्दी काम न करनेवाला या बात का जरूरी

उत्तर न देनेवाला । मद । ३. बहुमूल्य ।

कीमती । ४. धनी । मालदार ।

गभस्ति-सज्ञा पु० १. किरण । रश्मि । २.

प्रकाश । ३. सूर्य । ४. बौह । हाथ ।

सज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री स्वाहा ।

गभस्तिमत्-सज्ञा पु० १. सूर्य । २. पाताल-

विशेष । तलातल ।

गभस्तिमान्-सज्ञा पु० १. सूर्य । २. द्वीप-

विशेष । ३. पाताल-विशेष ।

गभीर\*-वि० १. दे० "गभीर" । २. गहरा ।

अग्राह । अगाध । ३. सूक्ष्म ।

गभीरता-सज्ञा स्त्री० अगाधता । गम्भीरता ।

गहराई ।

गभीरत्व-सज्ञा पु० गभीरता, निम्नता ।

गभुभार-वि० १. बालको के जन्म के बाल ।

२. जिसके सिर के जन्म के बाल न बढे

हों । जिसका मुँह न हुआ हो । ३.

अनजान । नादान । ४. घुँघराले बाल ।

गम-सज्ञा स्त्री० १ (किसी वस्तु या विषय

में) प्रवेश । पहुँच । २. गुजर । ३. सह-

यास । ४. रास्ता ।

गम-सज्ञा पु० [अ०] १. दुःख । रज । शोक ।

अफसोस । २. चिंता । फिक्र । सोच ।

मुहा०-गम खाना=छोड़ देना । क्षमा करना ।

ध्यान न देना ।

गमक-सज्ञा पु० १. जानेवाला । २. सूचक ।

बतलानेवाला ।

सज्ञा स्त्री० १. राग का स्वर-विशेष ।

२. सुगंध, महक । ३. तबले की गभीर

आवाज ।

गमकना-क्रि० अ० महकना । सुगंध देना ।

गमकीला-वि० सुगन्धित । सुवासित । गम-

दार । महकनेवाला ।

गमजोर-वि० [फा०] सहजशील । गम खाने-

वाला । दुःख या शोक सहनेवाला ।

गदाई-वि० १ सुच्छ । शुद्ध । नीच ।  
२. बेकार । रद्दी ।

गदापर-गज्ञा पु० १. विष्णु । नारायण ।  
२. श्रीकृष्ण ।

गदायुध-गज्ञा पु० गदा का अस्त्र । यष्टि ।  
छाठी । गदा ।

गदामुद्र-गज्ञा पु० ऐसा मुद्र जिसमें बेचल  
गदा अस्त्र का प्रयोग होता था ।

गदारि-गज्ञा पु० रोगसन्तु । रोगनाशक वैद्य ।  
गवाला-गज्ञा पु० हाथी पर या गदा । मिट्टी  
खोदने का औजार-विशेष ।

गदाधन-गज्ञा पु० श्रीकृष्ण । विष्णु भगवान् ।  
गदित-वि० उक्त । कथित । कहा हुआ ।

गदी-गज्ञा पु० विष्णु । नारायण ।  
वि० १ गदा-विशिष्ट । २ रोगयुक्त ।  
रोगी ।

गदेल-गज्ञा पु० १ गदा । २ मोटा बिछौना ।  
रुईदार बिछौना । ३ शिशु । बच्चा ।  
माँ का दूध पीनेवाला बच्चा । ४ गोदी  
का बच्चा ।

गदोरी-गज्ञा स्त्री० हथेली । हाथ के नीचे  
का भाग ।

गद्गद-वि० १ प्रसन्न । २ अत्यधिक हर्ष,  
प्रेम, थक्का आदि के आवेग से पूर्ण । ३  
पुलकित ।

गद्-गज्ञा पु० १ मुलायम जगह पर किसी  
चीज के गिरने का शब्द । २ अजीर्ण,  
अप्रच । किसी गरिष्ठ या जल्दी न पचने-  
वाली चीज के कारण पेट का भारी-  
पन ।

गद्दर-वि० १. अधपका । जो अच्छी तरह  
पका न हो । कुछ पका हुआ । २ गदरा ।  
मोटा गदा ।

गद्दा-गज्ञा पु० १ तोशक । गदेल । रुई,  
आदि का मोटा और मुदगुदा बिछौना ।  
२ मुलायम चीजों का बोझ ।

गद्दी-गज्ञा स्त्री० १ छोटा गदा । २ घोड़े,  
ऊँट आदि की पीठ पर जीन आदि रखने  
का बपड़ा । ३ व्यवसायी आदि के बैठने  
का स्थान । ४ सिंहासन । ५ राज्य-  
शासक के बैठने का स्थान । ऊँचा पद ।

६ बिभी राजवंश की पीढ़ी या आचार्य  
की शिष्य-परंपरा । ७ हाथ या पैर की  
हथेली । ८. सिंहासन पर बैठना ।  
उत्तराधिकारी होना ।

गद्दी-गद्दी पर बैठना=राज्य पाना ।  
गद्दीनशीन-वि० १. गद्दी पर बैठा हुआ ।  
सिंहासनाच्छाद । २ जिसे राज मिला हो ।  
उत्तराधिकारी ।

गद्दीनशीनी-गज्ञा स्त्री० राजगद्दी पर बैठने  
का समारोह । राज्यारोहण ।

गद्य-गज्ञा पु० १. छन्दरहित वाक्य । वर्ण-  
निवा । २ जो गायन न जा सके । ३  
पद्य का उल्टा । ४ संगीत में एक राग ।  
५ बहने योग्य और बोलने योग्य ।

गद्यशैली-गज्ञा स्त्री० गद्य लिखने का तरीका  
या शैली ।

गद्यता-वि० १ अरसितता । २ गद्य का  
गुण ।

गद्या-गज्ञा पु० दे० "गदहा" ।

गन\*-गज्ञा पु० दे० "गण" ।

गनक-गज्ञा पु० दे० "गणक" ।

गनगन-गज्ञा स्त्री० कांपने या रोमाच की  
दशा ।

गनगनाना-क्रि० अ० शीत आदि से रोमाच  
होना या कांपना ।

गनगीर-गज्ञा स्त्री० चंद्र शुक्ल तृतीया ।  
इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा  
करती हैं ।

गनगन-क्रि० स० दे० "गिनना" ।

गनना-गज्ञा स्त्री० १ गणना । २ गिनना ।  
३ विवाह में वरवधू का प्रह-योग देखना ।

गनना\*-क्रि० स० दे० "गिनना" ।

क्रि० अ० गिना जाना ।

गनियारी-गज्ञा स्त्री० छोटी अरनी । पीघा-  
विशेष ।

गनी-वि० १ [ग०] घनवान् । २ शत्रु ।

गनीम-गज्ञा पु० [ग०] १ डाकू । लुटेरा ।  
२ शत्रु । वैरी ।

गनीमत-गज्ञा स्त्री० [ग०] १ लूट का माल ।  
२ मुफ्त का माल । वह माल जो  
बिना परिश्रम मिले । ३ सन्तोष की

बात । ४. वड़ी बात । ५. धन्यवाद ।  
देने योग्य बात ।

गन्ना-संज्ञा पु० ऊँट । ईख ।

गन्य-वि० "गण्य" । गिनने योग्य ।

गप-संज्ञा स्त्री० [वि० गप्पी] १. ऐसी बात जिसकी सत्यता में सन्देह है । २. मन बहलाने की बात । ३. कहानी । बकवाद । ४. मिथ्या संवाद । भूठी खबर । अफवाह । ५. डींग । बड़ाई की जानेवाली भूठी बात ।

सज्ञा पु० १. भट से निकलने का शब्द ।

२. भक्षण । निगलना या खाना ।

यौ०-गपागप=भटपट । जल्दी-जल्दी ।

गपशप=इधर-उधर की बातें ।

गपकना-क्रि० स० चटपट निगलना । जल्दी खाना ।

गपड़-संज्ञा पु० १. मिलावट । २. व्यर्थ । निरर्थक ।

गपड़बोय-संज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात । व्यर्थ की गोष्ठी ।

वि० अड़-अड़ । लीप-पीत । अज्ञात । अनिश्चित । अव्यवस्थित ।

गपना\*-क्रि० स० बकना । गप मारना ।

गपोड़, गपोड़ा, गपोड़ी-संज्ञा पु० मिथ्या बात । कपोल-कल्पना । गप ।

वि० गप्पी । डींग हँकनेवाला ।

गप्प-संज्ञा स्त्री० दे० "गप" ।

गप्पा-संज्ञा पु० छल । धोखा । कपट ।

गप्पी-वि० वाचाल । बकवादी । बातुल ।

गप हँकनेवाला । बात बड़ाकर बहनेवाला ।

गफ्फा-संज्ञा पु० १. बहुत बड़ा घास या कौर । २. लाम ।

गफ-वि० १. ठस । घना । २. गाढ़ा । ३. घनी बनावट का ।

गफलत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. असावधानी । लापरवाही । बेसुध । २. अम । ३. चूक । भूल ।

गवन-संज्ञा पु० [अ०] धरोहर हड़पना । किसी दूसरे के सौंपे हुए माल को हड़प लेना । सपानत ।

गवर-वि० १. जवान । युवा । पढ़ा ।

२. सीधा । भोला-भाला ।

गुंसा पु० पति । दूहा ।

गवरन-संज्ञा पु० एक प्रकार का मोटा कपड़ा ।

गव्दर-वि० १. ग्रहंकारी । घमटी । २. जल्दी काम न करनेवाला या बात का जल्दी उत्तर न देनेवाला । मंद । ३. बहुमूल्य ।

कीमती । ४. धनी । मालदार ।

गभस्ति-संज्ञा पु० १. किरण । रश्मि । २. प्रकाश । ३. सूर्य । ४. चाह । हाथ ।

संज्ञा स्त्री० अग्नि की स्त्री स्वाहा ।

गभस्तिमत्-संज्ञा पु० १. गूर्य । २. पाताल-विशेष । तलातल ।

गभस्तिमान्-संज्ञा पु० १. सूर्य । २. द्वीप-विशेष । ३. पाताल-विशेष ।

गभीर\*-वि० १. दे० "गंभीर" । २. गहरा ।

अवाह । अगाध । ३. गूढम ।

गभीरता-संज्ञा स्त्री० अगाधता । गम्भीरता ।

गहराई ।

गभीरत्व-संज्ञा पु० गम्भीरता, निम्नता ।

गभुआर-वि० १. बालकों के जन्म के बाल ।

२. जिसके सिर के जन्म के बाल न बटें हों । जिसका मुँह न हुआ हो । ३. अनजान । नादान । ४. घुंघराले बाल ।

गम-संज्ञा स्त्री० १. (किमी वस्तु या विषय में) प्रवेश । पहुँच । २. गुजर । ३. सहवास । ४. रास्ता ।

गम-संज्ञा पु० [अ०] १. दुःख । रंज । शोक ।

अफसोस । २. चिंता । फिक्र । शोच ।

मुहा०-गम लाना=छोड़ देना । शमा करना ।

ध्यान न देना ।

गमक-संज्ञा पु० १. जानेवाला । २. शूणक ।

बतलानेवाला ।

संज्ञा स्त्री० १. राग का स्वर-विशेष ।

२. सुगंध, महक । ३. तबल की गंभीर आवाज ।

गमकना-क्रि० ध० गढ़पना । गुंथपि देना ।

गमकीता-वि० गुणान्वित । गुणगिन । गमप-दार । महानेवाला ।

गमछोर-वि० [का०] गहनधीन । गम मानेवाला । दुल या शोक महानेवाला ।

रामछोरी-गंगा स्त्री० [पा०] सहाशीलता ।  
रामगीत-वि० [पा०] दुर्लभ । उदात्त ।  
गमत-सज्ञा पु० १. मार्ग । रास्ता । २. व्यव-  
साय ।

गमन-सज्ञा पु० [वि० गम्य] १. जाना ।  
चलना । प्रस्थान । विदाई । २. यात्रा  
करना । ३. चाल, गति, सभोग । जैसे—  
वैश्यागमा । ४. विमर्जन । ५. रास्ता ।  
राह ।

गमना\*-वि० अ० चलना । जाना । सोच  
या रज करना ।

गमला-सज्ञा पु० १. पीछे लगाने का वस्तु ।  
२. पालाना फिरने का वस्तु । 'बमोड' ।  
गमाना\*-वि० स० दे० "गैवाना" । खोना ।  
गमार-वि० गैवार । देहाती ।

गमी-सज्ञा स्त्री० [अ०] मृत्यु । शोक की  
दशा । अप्सोस करने की हालत । वह शोक  
जो किसी के मरने पर उसके सम्बन्धी  
करते हैं ।

गम्मत-सज्ञा स्त्री० विनोद । हँसी-मजाक ।  
गम्य-वि० १. गमन-योग्य । जाने योग्य ।  
२. पाने योग्य । ३. भोग्य । ४. साध्य ।  
५. शक्य । योग्य ।

गपद\*-सज्ञा पु० बड़ा हाथी । गजेन्द्र ।  
गय-सज्ञा पु० १. मकान । घर । २. आकाश ।  
३. प्राण । ४. धन । ५. पुत्र । सन्तान ।  
६. असुर विशय । ७. एक राजा का नाम ।  
८. एक वानर का नाम । ९. बिहार में  
गया नामक तीर्थ ।

गयनाल-सज्ञा स्त्री० दे० "गजनाल" ।  
गयशिर-सज्ञा पु० १. आकाश । अंतरिक्ष ।  
२. गया के पास का पर्वत विशेष ।

गया-सज्ञा पु० १. गया में होनेवाला पिंड-  
दान । २. बिहार या मगध का एक तीर्थ-  
स्थान जहाँ हिंदू पिंडदान करते हैं ।  
मि० अ० नष्ट । निवृष्ट । जाना किया  
का भूतकालिक रूप ।

मुहा०—गया-गुजरा या गया-बीता=बुरी  
दशा में ।

गयावाल-सज्ञा पु० गया तीर्थ का पड़ा ।  
गयासुर-सज्ञा पु० एक राक्षस ।

गर-सज्ञा पु० १. धीमारी । राग । २.  
बलानाग नामक विष से भेद । ३. विष ।  
जहर । ४. एकादश वरणों में का एक वरण ।  
५. बठ । गना ।

प्रस्थ० (किसी काम को) बनाने या करने-  
वाला । जैसे—बाजीगर, बलईगर ।

गरक-वि० [अ०] १. डूबा हुआ । २.  
निमग्न । ३. नष्ट । बरबाद ।

गरकाव-वि० [पा०] पानी में डूना डूबा ।

गरको-सज्ञा स्त्री० [पा०] १. डबना । २.  
बाढ़ । अत्यधिक वर्षा । ३. नीची भूमि ।  
खलार । ४. पानी के नीचे की भूमि ।

गरगज-सज्ञा पु० १. बूढ़ या टीला जहाँ से  
शत्रु की सेना का पता लगाया जाता है ।  
२. किले की दीवारों पर बना हुआ बुर्ज  
जिस पर तारें रहती हैं । ३. फाँसी की  
टिकठी । ४. तख्ती से बनी हुई नाव की  
छत ।

वि० विशाल । बहुत बड़ा ।

गरगरा-सज्ञा पु० घिरनी । गराडी । घडारी  
(भाजपुरी) ।

गरगरना-कि० अ० १. गर्जना । जोर से  
बोलना । २. दौर करना ।

गरगरी-सज्ञा स्त्री० देवदाली । देवताड । देव-  
दार वृक्ष ।

गरगाव-वि० दे० "गरगाव" ।

गरघन-वि० १. विष नाश करनेवाला ।  
२. राग-नाशक ।

गरज-सज्ञा स्त्री० १. धार नाद । बहुत  
गंभीर शब्द । गर्जन । २. बादल या  
सिंह का शब्द । ३. चिपाड़ ।

गरज-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रयाजन । मतलब ।  
माध्य । २. पार्य । ३. आवश्यकता ।  
जरूरत । ४. इच्छा । चाह ।

अव्य० निदान । अततोन्वा । आखिर-  
कार । सारास यह कि । मतलब यह कि ।

गरजना-वि० अ० घटपड़ाना ।

सज्ञा पु० १. बहुत जोर की आवाज । २.  
गम्भीर और तुमुल शब्द । जैसे—बादल का  
गरजना । ३. तड़कन । मोती का चटपटना ।  
फूटना । ४. मेघ या सिंह का नाद ।

वि० गरजनेवाला  
 गरजमद-वि० [फा० गरजमदी] १ जिसे आवश्यकता हो। जरूरतवाला। २ चाहने-वाला। इच्छुक। "गरजू"।  
 गरजू-वि० [फा०] दे० "गरजमद"।  
 गरजू-वि० दे० "गरजमद"।  
 गरजू-सज्ञा पु० भूढ़। समूह।  
 गरद-सज्ञा स्त्री० दे० "गर्द"। धूल। रज।  
 वि० विषदाता।  
 गरदन-सज्ञा स्त्री० १ ग्रीवा। गला। कंठ। घड़ और सिर को जोड़नेवाला अंग। २ वरतन आदि का ऊपरी भाग।  
 मुहा०-गरदन उठाना=विद्रोह करना। विरोध करना। गरदन काटना=१. घड़ से सिर अलग करना। मार डालना। २ बुराई करना। हानि पहुँचाना। गरदन पर=ऊपर। भार। गदन मारना=मार डालना। सिर काटना। गरदन में हाथ देना या डालना=गरदनियाँ देना। गरदन पकड़कर निकाल बाहर करना।  
 गरदना-सज्ञा पु० १ एसी चपत या थप्पड़ जो गरदन पर लगे। २ मोटी गरदन।  
 गरदनियाँ-सज्ञा स्त्री० १ गदन पर हाथ लगाकर धक्का देना। किसी को किसी स्थान से गरदन पकड़कर निकालना। रद्द। २ अर्द्धचन्द्र।  
 गरवनी-सज्ञा स्त्री० गरदनियाँ। रद्द। कुरते का गला। गले में पहनने की हँसली। घाट की गरदन और पीठ पर रखने का कपड़ा। वारनिस। बेंगनी।  
 गरदा-सज्ञा पु० धूल। धूर। मिट्टी। गर्द।  
 गरदान-वि० जो धूम फिखर ऐक ही स्थान पर भावे।  
 सज्ञा पु० १ शब्द या रूप-साधन। २ उत्तर जो धूम फिखर सदा अपने स्थान पर चला भावे।  
 गरदानना-वि० स० १ शब्दों या रूप साधना। २ उद्धरण देना। बार-बार कहना। ३ समझना। जानना। गिनना।  
 गरना-वि० स० १ दे० "गर्ना"। २ दे० "गर्ना"।

क्रि० अ० निबुडना।  
 गरनाल-सज्ञा स्त्री० घननाल। घननाद। बहुत चौड़े मुँह की तोप।  
 गरव-वि० सज्ञा पु० दे० "गर्व"। घमड़। अभिमान।  
 गरव-गृह्णता-वि० गर्वीला। जो घमड़ करता हो।  
 गरवना, गरवाना-वि०-क्रि० अ० गर्व करना। अभिमान करना।  
 गरवीला-वि० घमडी। अभिमानी। गर्व करनेवाला।  
 गरभ-सज्ञा पु० दे० "गर्भ"।  
 गरभाना-क्रि० अ० १ दे० गर्भ से होना। गर्भिणी होना। २ धान, गहूँ आदि के पौधों में बाल लगना।  
 गरम-वि० १ जलता हुआ। गर्म। उष्ण। ताजा। तप्त। २ उग्र। तीक्ष्ण। ३ खरा। ४ क्रुद्ध। ५ प्रबल। प्रचंड। तेज। ज़ोर शार का। ६ जिसके व्यवहार या सेवन से गरमी पड़े।  
 गर्म-गरम कपड़ा-शरीर को गरम रखने-वाला कपड़ा। ऊनी कपड़ा। गरम मसाला-धनियाँ, लींग, बड़ी इलायची, जीरा, मिर्च इत्यादि मसाले। ५ उत्साहपूर्ण। जोश से भरा।  
 मुहा०-मिजाज गरम होना=१ थोड़ा क्रोधा। २ पागल होना। गरम होना=३ क्रुद्ध होना। आवेश में आना।  
 गरमाई-सज्ञा स्त्री० दे० "गरमी"। ताप।  
 गरमागरम-वि० बिलबुल गरम। ताजा।  
 गरमागरमी-सज्ञा स्त्री० १ चला-मुनी। २ भगडा। ३ जाश। मुस्तेदी।  
 गरमाना-क्रि० अ० १ उष्ण होना। गरम होना। २ जाश में आना। ३ भुलाना। आवेश में आना। प्रोच करना।  
 गरमि-स० गरम करना। छोड़ना। तपाना।  
 गरमाहट-सज्ञा स्त्री० उष्णता। गरमी।  
 गरमी या गर्मी-सज्ञा स्त्री० १ उष्णता। ताप। २ जलन। ३ उग्रता। तेजी। चञ्चलता। ४ पाप। आवेश। गुस्सा।

उमग । ५. रोग-विशेष । ६. ग्रीष्म ऋतु । बड़ी धूप के दिन ।  
 मुहा०—गर्मी निरासना=१. पमटतोड़ना ।  
 २. गर्व दूर करना ।  
 गर्मीदाना—सज्ञा पु० अम्होरी । पिली ।  
 गररा\*—सज्ञा पु० दे० "गरी" ।  
 गरराना—वि० अ० गभीर गरजना । भीषण ध्वनि करना ।  
 गरल—सज्ञा पु० १. विष । जहर । २. घास वा पूला । ३. साँप वा जहर ।  
 गरलारि—वि० भयवत् गणि । पन्ना ।  
 गरप्रत—सज्ञा पु० मोर ।  
 गरवा—वि० १. भारी । बोझ । २. घोर । ३. प्रतिष्ठित ।  
 गरवापन—सज्ञा पु० १. बोझाई । २. मान्यता । भारीपन ।  
 गरहन\*†—सज्ञा पु० दे० "ग्रहण" । काली तुलसी ।  
 गरहर—सज्ञा पु० नटखट चीपायो के गले में लटकाया जानेवाला काठ ।  
 गराव—सज्ञा पु० चीपायो के गले में बाँधी जानेवाली दोहरी रस्सी ।  
 गराड़ी—सज्ञा स्त्री० १. चरखी । २. गिरी । टकुवा । रस्ती बटने वा यत्र । साँट । रगड़ आदि से पड़ी हुई गहरी लकीर । काठ या लोहे की गोलाबार वस्तु जिस पर रस्ती डालकर कुएँ से पानी खींचते हैं । घडारी । चिरनी ।  
 गराना\*—क्रि० स० दे० "गलाना" । १. गरल । २. गरले का काम करना ।  
 गरारा—वि० १. गर्वयुक्त । २. प्रचंड । प्रयत्न । अत्यन्त । ३. बहुत बड़ा पैसा । ४. पापजामे की डीली मोहरी ।  
 गज्ञा पु० १. पानी से गला साफ करने के लिए कुल्ली । २. कुल्ली धरने की क्वा ।  
 गरस\*—सज्ञा पु० दे० "ग्रास" ।  
 गरसना\*—क्रि० स० दे० "ग्रसना" ।  
 गरिमा—सज्ञा स्त्री० १. भारीपन । गुरुत्व । बोझ । २. महत्त्व । महिमा । बड़ाई । गौरव । ३. अहकार । गर्व । दम ।

४. आत्मश्लाघा । शोभी । ५. आठ सिद्धि में से एक सिद्धि ।  
 गरिमान्वित—वि० दाम्नि । अभिमानि गरिमा से भरा हुआ ।  
 गरियाना†—क्रि० स० गाली देना । अपमान करना ।  
 गरियार—वि० सुस्त । मट्टर । बोंद (चीपाया) ।  
 गरिष्ठ—वि० बहुत भारी । जल्दी न पचने वाला ।  
 गरी—सज्ञा स्त्री० १. नारियल के फल के भीतर का मूलायम खाने योग्य खोपर । गोला । २. गिरी । मीठी । बीज के अंदर की गुदी ।  
 गरीब—वि० [अ०] १. नम्र । २. हीन । ३. निर्धन । दरिद्र । दीन । कगाल ।  
 गरीबनिवाज—वि० [फा०] दयालु । दीनो पर दया करनेवाला ।  
 गरीबपरवर—वि० [फा०] निर्धनो का भरण-पोषण करनेवाला । गरीबों को पालनेवाला ।  
 गरीबाना—क्रि० वि० गरीबों का सा ।  
 गरीबामऊ—वि० १. भला बुरा । २. गरीब के योग्य ।  
 गरीबी—सज्ञा स्त्री० १. दीनता । अधीनता । २. नम्रता । ३. दरिद्रता । निर्धनता । कगाली । मोहताजी ।  
 गरीयस्—वि० [स्त्री० गरीयसी] १. बड़ा भारी । २. प्रबल । महान् ।  
 गरीयान्—वि० गरिष्ठ । बहुत भारी ।  
 गरु, गरुमा\*†—वि० [स्त्री० गरुई] भारी । वजनी ।  
 गरुआई—सज्ञा स्त्री० दे० "गरुआई" ।  
 गरुआई—सज्ञा स्त्री० १. गुरता । २. भारीपन ।  
 गरुआना†—क्रि० अ० भारी होना ।  
 गरुड—सज्ञा पु० १. बहुतों के मत से उकाव पक्षी । २. विष्णु के वाहन और पक्षियों के राजा । वैनात्य । गरुमान् । †३ पैँदा देक । सफेद रंग का बड़ा जल-पक्षी । ४. सेना की व्यूह-रचना-विशेष ।  
 ५. छप्पय छंद वा भेद-विशेष ।  
 गवड़गामी—सज्ञा पु० १. श्रीकृष्ण । २. विष्णु ।

गर्हध्वज-सज्ञा पु० नारायण । विष्णु ।  
गर्हपुराण-सज्ञा पु० अठारह पुराणों में से एक पुराण ।

गर्हमान-सज्ञा पु० विष्णु ।

गर्हस्त-सज्ञा पु० सीलह अक्षरों का वर्णवृत्त-विशेष ।

गर्हव्यूह-सज्ञा पु० रणस्थल में सेना एकत्रित करने का एक ढंग ।

गर्हाग्रज-सज्ञा पु० ग्रहण । सूर्य-सारथि ।

गर्हासन-सज्ञा पु० १ गर्ह पर का आसन ।  
२ विष्णु ।

गर्ह-सज्ञा पु० पक्ष । पाँख । पर ।

गर्हमान-सज्ञा पु० गर्ह ।

गर्हा-सज्ञा स्त्री० भारीपन । गुस्ता ।  
गौरव । बड़ाई ।

गर्हा-वि० भारी । बोझिल ।

गर्हाई\*†-सज्ञा स्त्री० दे० 'गर्हाई' ।  
भारीपन ।

गर-वि० वजनी । भारी । बोझिल ।

गरुर-सज्ञा पु० [ग्र०] गर्व । घमड़ ।  
अभिमान ।

गरुरी†-वि० [ग्र०] घमडी । अभिमानी ।  
सज्ञा स्त्री० घमड़ । अभिमान । गर्व ।

गरेवान-सज्ञा पु० [फा०] कुरते आदि कपड़े में गल पर का भाग । कालर ।

गरेरना-क्रि० स० घरेना ।

गरेया†-सज्ञा स्त्री० गरीब । बेलो या थोड़ी के गले में डाली जानवाली रस्सी ।

गरोह-सज्ञा पु० [फा०] दे० 'गिरोह' । झुड़ । समूह ।

गर्ग-सज्ञा पु० १ गर्गसहिता तथा ज्योतिष के कई ग्रन्थों के रचयिता एक वैदिक ऋषि । इनके पुत्र का गार्ग्य और बन्धा का गार्गी नाम था । २ साढ़ बैल । ३ पर्वत विशेष । ४ निच्छू । ५ कंचुमा ।

गर्गज-सज्ञा पु० शिखर ।

गर्गदा-सज्ञा स्त्री० पक्षी-विशेष । गोरैया ।

गर्गरी-सज्ञा स्त्री० १ माछा । २ दहेडी । गगरी । ३ भयानी ।

गर्ज-सज्ञा स्त्री० दे० 'गरज' । नाद । ध्वनि । आवाज ।

गर्जन-सज्ञा पु० १ गभीर नाद । भीषण ध्वनि । गरज । २ मघनाद । सिंहनाद । गभीर नाद । ३ सर्पध्वनि । ४ क्रुद्ध वीर की ध्वनि । ५ युद्ध ।

घो०-गर्जन-सर्जन=१ डाँट-डपट । २ तडप ।

गर्जना-क्रि० अ० दे० "गरजना" । दहाडना ।

गर्त-सज्ञा पु० १ गड्ढा । गड्ढा । २ दरार । ३ ख । ४ घर । ५ जलाशय । ६ एक नरक का नाम । ७ उत्तर भारत का एक देश जो इस समय पटियाला के उत्तर में है ।

गर्व-सज्ञा स्त्री० राख । धूल ।

घो०-गर्व-गुवार=धूल मिट्टी ।

गर्वखोर-वि० गर्व या मिट्टी आदि पड़ने से जल्दी मेला या खराब न हानवाला ।

सज्ञा पु० पाँव पीछने का टाट । खाकी रंग ।

गर्वन-सज्ञा स्त्री० गरदन । गला ।

गर्वभ-सज्ञा पु० गदहा । गधा ।

गर्वभी-सज्ञा स्त्री० १ गधी । २ क्षुद्र रोग-विशेष । ३ एक तरह का खल । सफेद कटकारी । ४ एक प्रकार की लता ।

गर्विश-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ घुमाव ।

परेशानी । चक्कर । २ सकट । आपत्ति ।

गर्व-सज्ञा पु० लिप्ता । स्पूहा । पाकर ।

गर्भ-सज्ञा पु० १ अणु । पट के अंदर का बच्चा । हमल । २ गर्भाणय । स्त्री के पट के अंदर का वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है । ३ मध्य । अन्तर । भीतर का हिस्सा । छद । ४ अग्नि । ५ घन ।

मुहा०-गर्भ गिरना=गर्भपात । पट का बच्चा नुकसान होना ।

गर्भकटक-सज्ञा पु० कटक ।

गर्भकाल-सज्ञा पु० गर्भधारण के लिए उपयुक्त समय । श्रुतबाल ।

गर्भवस्तर-सज्ञा पु० पुत्रा के पतले सूत जो गर्भनाल के अंदर होते हैं ।

गर्भगृह-सज्ञा पु० १ मजान के बीच की बाँडरी । २ अग्नि । घर का मध्य भाग । ३ मंदिर में वह कोठरी जिसमें प्रतिमा रखी जाती है । ४ मूर्तिकगृह । खोर ।

उमग । ५ रोग विशेष । ६ ग्रीष्म ऋतु । बडी धूप के दिन ।  
 गुरा०-गरमी गिरासना=१ घबटतोहना ।  
 २ गर्व दूर करना ।  
 गरमीराना-गज्ञा पु० ग्रम्होरी । पिती ।  
 गरदा\*-सज्ञा पु० दे० "गरी" ।  
 गरदाना-त्रि० अ० गभीर गरजना । भीषण ध्वनि करना ।  
 गरत-गज्ञा पु० १ विप । जहर । २ घास का पूला । ३ साँप का जहर ।  
 गरतारि-वि० मरुत गणि । पन्ना ।  
 गरवत-सज्ञा पु० मार ।  
 गरवा-वि० १ भारी । बोझ । २ घोर । ३ प्रतिष्ठित ।  
 गरवापन-सज्ञा पु० १ बोझाई । २ मान्यता । भारीपन ।  
 गरहन\*†-सज्ञा पु० दे० "ग्रहण" । वाली तुलसी ।  
 गरहर-सज्ञा पु० नटखट चौपायों के गले में लटकाया जानेवाला ढाठ ।  
 गरतब-सज्ञा पु० चौपायों के गने में बाँधी जानेवाली दाहरी रस्ती ।  
 गरदाडी-सज्ञा स्त्री० १ चरखो । २ गिर्री । टकुवा । रस्ती बटने का यंत्र । साँट । रगड़ आदि से पड़ी हुई गहरी सक्कीर । ढाठ या लोहे की गालावार वस्तु जिस पर रस्ती डालकर कुएँ से पानी खींचते हैं । घडारी । धिरनी ।  
 गराना\*-क्रि० स० दे० "गलाना" । १ गारना । २ गारने का काम करना ।  
 गरारा-वि० १ गर्वपुन । २ प्रचंड । प्रबल । बलवान् । ३ बहुत बड़ा पैला । ४ पायजमे की डीप्ती मोहरी ।  
 गज्ञा पु० १ पानी से गला साफ करने के लिए कुल्ली । २ कुल्ली बरने की क्वा ।  
 गरस\*-सज्ञा पु० दे० "ग्रास" ।  
 गरसना\*-त्रि० स० दे० "ग्रसना" ।  
 गरिमा-सज्ञा स्त्री० १ भारीपन । गुरुत्व । बोझ । २ महत्त्व । महिमा । बड़ाई । गौरव । ३ अह्वार । गर्व । दम ।

४ आत्मश्लाघा । सोरी । ५ आठ मिट्टियों में से एक सिद्धि ।  
 गरिमान्वित-वि० शोभित । अभिमानी । गरिमा से भरा हुआ ।  
 गरियाना†-त्रि० स० गाली देना । घपझड़ बहना ।  
 गरियार-वि० सुस्त । मंदुर । बोझ (चौपाया) ।  
 गरिष्ठ-वि० बहुत भारी । जल्दी न पचनेवाला ।  
 गरी-गज्ञा स्त्री० १ नारियल के फल के भीतर का मुलायम खाने योग्य खोपरा । गोला । २ गिरी । मीठी । बीज के अंदर की गुदी ।  
 गरीब-वि० [प्र०] १ नग्न । २ हीन । ३ निर्धन । दरिद्र । दीन । कपाल ।  
 गरीबनिवाज-वि० [फा०] दयालु । दीनों पर दया करनेवाला ।  
 गरीबपरवर-वि० [फा०] निर्धनों का भरण-पोषण करनेवाला । गरीबों को पालनेवाला ।  
 गरीबान्त-त्रि० वि० गरीबों का सा ।  
 गरीबामऊ-वि० १ भला बुरा । २ गरीब के योग्य ।  
 गरीबी-सज्ञा स्त्री० १ दीनता । अधीनता । २ नग्नता । ३ दरिद्रता । निर्धनता । कपाली । मोहताजी ।  
 गरीयस्-वि० [स्त्री० गरीयसी] १ बड़ा भारी । २ प्रबल । महान् ।  
 गरीयान्-वि० गरिष्ठ । बहुत भारी ।  
 गरु, गरुआ†-वि० [स्त्री० गरुई] भारी । बजनी ।  
 गरुई-सज्ञा स्त्री० दे० "गरुआई" ।  
 गरुआई-सज्ञा स्त्री० १. गुस्ता । २. भारीपन ।  
 गरुआना†-त्रि० अ० भारी होना ।  
 गरुड-सज्ञा पु० १ बहुता के मन से उफाय पक्षी । २ बिष्णु के बाहन और पक्षियों के राजा । वैजंतेय । गरुमान् । †३ पैठवा डेक । सफेद रंग का बड़ा जल-पक्षी । ४ सेना की व्यूह रचना विदेश ।  
 ५ छप्पय छद का भेद विराप ।  
 गरुडगामी-सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण । २ नि

गलगल-सज्ञा स्त्री० १ एग चिडिया । सिर-गोटी । गलगलिया । २ पपोर । बडा नीयू-विशेष ।

गलगल-वि० भीगा हुआ । तर ।

गलगाजना-त्रि० प्र० १ व्यर्थ की बात करना । गल बजाना । २ बड़बड़पर बाते करना ।

गलमुच्छा-सज्ञा पु० गलमुच्छा । गालों तप भाछ ।

गलगुयना-वि० मोटा । जिसका बदन सूय भरा और गाल पूले हो ।

गलग्रह-सज्ञा पु० १ मछली का पाँटा । बठिनार्द से दूर होनेवाली आपत्ति । २ द्यास का रय जाना । ३ अनध्याय त्रिथि-विशेष ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० दे० "गलफडा" ।

गलग्रह-सज्ञा पु० १. गले का हार । २ कभी पिंड न धोनेवाला । ३ चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिए गले में लटकती हुई बपड़े की पट्टी ।

गलग्रह-सज्ञा पु० हाथी के गले में पहनाने की लोहे की जंजीर ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० १ नि सन्तान व्यक्ति । २ नि सन्तान व्यक्ति की सम्पत्ति । लावारिस जायदाद ।

गलग्रह-वि० [ग्र०, मज्ञा गलती] १ अशुद्ध । २ भ्रम । ३ असत्य । भूल । भ्रुटि ।

गलग्रह-सज्ञा पु० छोटा, गोल और मुला-यम तकिया जो गालों के नीचे रखा जाता है ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० गलग्रहण । गले का बंधन ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० [ग्र०] भ्रम । कुछ का कुछ समझना ।

गलग्रह-वि० लुब्धता या लडखडाता हुआ । सज्ञा पु० एक प्रकार का कपडा ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० [ग्र०] १ भूल । अशुद्धि । भ्रुटि । २ भूल चूव ।

गलग्रह-सज्ञा पु० बकरियों की गरदन में दोनों ओर लटकनेवाली घेलियाँ ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० चंदरो के गाल के नीचे

की घेली, जिसमें वे राने की वस्तु भर लेते हैं ।

गलग्रह-सज्ञा पु० १. पमन । गिरना । २ गलना । पिघलना । घुलना । सड़ना ।

गलग्रह-वि० प्र० १ घुलना । पिघलना । २ गरम होना । शरीर का दुर्बल होना ।

३ क्षीत से ठिठुरना । ४ निष्फल होना । नष्ट होना । बेराम होना । ५ पुराना होना ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० १ बढाई । २ पमड । ३ अपन मुंह अपनी प्रसंगा । गोसी ।

गलग्रह-सज्ञा पु० १ जल-जलुषो के शरीर का वह भाग जिससे वे पानी में सांस लेते हैं । २ गाल का चमड़ा । ३ बपोल । जवड़ा । गान ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० १ गले की फाँसी । २ दुखदायी वस्तु या कार्य । जजाल । भ्रम ।

गलग्रह-सज्ञा पु० गले में पहनने का एग गहना ।

गलग्रह-सज्ञा पु० खलबली । गडबडी । बोलाहल ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० १ परस्पर कथे पर हाथ रखकर चलना । २ आलिगन करने का ढंग । परस्पर गल में बाँह डालना ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० आलिगन ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० आलिगन । गले में बाँह डालना ।

गलग्रह-वि० स्वरबद्ध । बँठा हुआ कठ ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० १ गलग्रह । शिवजी के पूजन के समय गाल बजान की मुद्रा । २ गाल बजाना ।

गलग्रह-सज्ञा पु० गलग्रह । गालों पर के बडे हुए बाल ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० दे० "गलग्रह" ।

गलग्रह-वि० स० [ 'गलग्रह' का प्रे० रूप ] दूसरे से गलाने का कार्य करना ।

गलग्रह-सज्ञा स्त्री० १ गले की जीभ । जीभ की जड़ के पास जीभ के आकार का मारा का छोटा टुकड़ा । छोटी जवान या जीभ । कौआ । जीभी । २ रोग विशेष जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है ।

गर्भधातिनी-गजा स्त्री० १ एक प्रकार का वृक्ष । २ गर्भनामा करनेवाली स्त्री ।  
 गर्भच्युत-वि० १ गर्भ में पतित । २ अपूर्ण गर्भ से उत्पन्न ।  
 गर्भज-वि० गर्भजात । क्षेत्रज्ञ पुत्र विशेष ।  
 गर्भदात-गजा पु० दागीपुत्र । जन्म से ही दात । गर्भ से ही पराधीन ।  
 गर्भधारिणी-सजा स्त्री० १ जननी । माता । २ गर्भवती ।  
 गर्भनाल-गजा स्त्री० पूरा के अंदर की पतली नाल ।  
 गर्भपात-सजा पु० पेट में से बच्चे का नुकसान होना । पट गिरना । गर्भनाश ।  
 गर्भवती-वि० स्त्री० गर्भिणी । गामिन । जिसके पेट में बच्चा हो ।  
 गर्भस्थि-सजा स्त्री० नाटक में पाँच प्रकार की स्थितियों में से एक ।  
 गर्भस्थ-वि० जो गर्भ में हो ।  
 गर्भलाव-सजा पु० चार गहीने के अंदर का गर्भपात ।  
 गर्भाक्ष-सजा पु० १ नाटक के भीतर किसी नाटक का दृश्य । २ नाटक के अक्ष का एक भाग या दृश्य ।  
 गर्भगार-सजा पु० १ गृह के मध्य का स्थान । वासगृह । २ सूतिकागृह । प्रसवगृह ।  
 गर्भधान-सजा पु० १ गर्भ में आने के समय का प्रथम सरकार । विनाश क्रिया । २ गर्भधारण । गर्भ की स्थिति ।  
 गर्भादाय-सजा पु० स्त्रियों के पेट में वह स्थान जिसमें बच्चा रहता है ।  
 गर्भाष्टम-सजा पु० गर्भ होने से आठवाँ मास या आठवाँ वष ।  
 गर्भिणी-वि० जिसे गर्भ हो । गर्भवती ।  
 गर्भित-वि० १ गर्भस्थित । गर्भयुक्त । २ पूर्ण । भरा हुआ । ३ वाय्व का एक दोष ।  
 गर्ग-वि० लाख के रंग का ।  
 सजा पु० १ लाही रंग । २ घोड़े का रंग विशेष । ३ लाही रंग का घोड़ा । ४ लाही रंग का कबूतर । ५ स्नेहलठ की एक नदी ।

गर्भ-सजा पु० धर्ममान । घटकार । घमड़ ।  
 गर्भजनक-वि० घमड़ उत्पन्न करनेवाला । अहंकारजनक ।  
 गर्भान्वित-वि० अहंकारी । घमड़ी । दमी ।  
 गर्भाना\*-वि० घ० घमड़ या गर्व करना ।  
 गर्वित-वि० गर्वयुक्त । अहंकारमय । अहंकार में भरा हुआ ।  
 गर्विता-सजा स्त्री० नायिका विशेष जिसे अपने रूप, गुण या पति के प्रेम का घमड़ हो ।  
 गर्विष्ठ-वि० अभिमानी । घमड़ी ।  
 गर्वी-वि० अहंकारी । घमड़ी ।  
 गर्वीला-वि० [स्त्री० गर्वीली] घमड़ से भरा हुआ । अभिमानी । घमड़ी । अहंकारी ।  
 गहण-सजा पु० शिवायत । निदा । दोष देना । छोड़ने योग्य । त्याज्य ।  
 गहंणीय-वि० १ निंदनीय । बुरा । २ तिरस्कार के योग्य ।  
 गर्हा-सजा स्त्री० १ तिरस्कार । बुराई । २ अपवाद । निन्दा ।  
 गहिंत-वि० निहित । दूषित । बुरा । तिरस्कृत । जिसकी निन्दा की जाय ।  
 गर्ह-वि० गहंणीय । अधम । नीच । निन्दनीय ।  
 गहाबादी-वि० निकृष्टवादी । अपभाषी । दुर्वचन-वक्ता ।  
 गहवृत्ति-सजा स्त्री० अधम जीविका ।  
 गलडा-सजा पु० पुकार । गुहार ।  
 गलदा-वि० कटुभाषी । दुर्मुल ।  
 गल-सजा पु० १ कठ । गला । २ एक मछली । ३ प्राचीन राजा विशेष ।  
 गलकवल-सजा पु० झालर । लहर । गाय के गले के नीचे लटकती खाल ।  
 गलका-सजा पु० १ पीड़ा । २ रोग विशेष । एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक । ३ गलका माता ।  
 गलगज-सजा पु० कोलाहल । हल्ला । शोर-गुल ।  
 गलगजना-क्रि० घ० शोरगुल करना । हल्ला करना ।  
 गलगड-सजा पु० घेघा । रोग विशेष, जिसमें गला सूजकर लटक आता है ।  
 गडमाला । कठमाला ।

गलगल-सज्ञा स्त्री० १ एग चिड़िया । सिर-गोटी । गलगलिया । २ चकोतरा । बडा नीबू-विशेष ।

गलगला-वि० भीगा हुआ । तर ।

गलगाजना-प्रि० अ० १ व्यर्थ की बात करना । गाल बजाना । २. बड़बड़कर बातें करना ।

गलगुच्छा-सज्ञा पु० गलमुच्छा । गालो तप मोछ ।

गलगुयना-वि० मोटा । जिसका बदन खूब भरा और गाल फूले हो ।

गलग्रह-सज्ञा पु० १ मछली का पाँटा । कठिनरई से दूर होनेवाली आपत्ति । २ द्वास का रूप जाना । ३ अनव्याय त्रिवि-विशेष ।

गलछट-सज्ञा स्त्री० दे० "गलफडा" ।

गलगजदडा-सज्ञा पु० १. गले का हार । २ कमी पिंड न छोड़नेवाला । ३ चोट लगे हुए हाथ को सहारा देने के लिए गले में लटकती हुई कपड़े की पट्टी ।

गलभय-सज्ञा पु० हाथी के गले में पहनाने की लोहे की जजीर ।

गलतस-सज्ञा स्त्री० १ नि सन्तान व्यक्ति । २ नि सन्तान व्यक्ति की सम्पत्ति । लावारिस शायदाद ।

गलत-वि० [अ०, सज्ञा गलती] १ अशुद्ध । २ भ्रम । ३ असत्य । भूल । त्रुटि ।

गलतकिया-सज्ञा पु० छोटा, गोल और मुलायम तकिया जो गालो के नीचे रखा जाता है ।

गलतनी-सज्ञा स्त्री० गलबधन । गले का बंधना ।

गलत-फहमी-सज्ञा स्त्री० [अ०] भ्रम । कुछ का कुछ समझना ।

गलतान-वि० लुब्धता या लहखड़ाता हुआ । सज्ञा पु० एक प्रकार का कपडा ।

गलती-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ भूल । अशुद्धि । त्रुटि । २ भूल चुक ।

गलयना-सज्ञा पु० ककरिया की गरदन में दोनों ओर लटकनेवाली शैलियाँ ।

गलपैली-सज्ञा स्त्री० बदरो के गाल के नीचे

की पैली, जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं ।

गलग-सज्ञा पु० १. पतन । गिरना । २ गलना । पिघलना । घुलना । सड़ना ।

गलना-क्रि० अ० १ घुलना । पिघलना । २ नरम होना । शरीर का दुर्बल होना । ३ शीत से ठिठुरना । ४. निष्फल होना । नष्ट होना । बेवाम होना । ५ पुराना होना ।

गलफटाकी-सज्ञा स्त्री० १ धडाई । २ घमड । ३ अपने मुँह अपनी प्रशंसा । शोषी ।

गलफडा-सज्ञा पु० १ जल-जलुआ के शरीर का वह भाग जिससे वे पानी में साँस लेते हैं । २ गाल का चमडा । ३ कपोल । जवडा । गाल ।

गलफांसी-सज्ञा स्त्री० १ गले की फाँसी । २ दुखदायी वस्तु या कार्य । जजाल । झूठ ।

गलबदनी-सज्ञा पु० गले में पहनने का एक गहना ।

गलबल-सज्ञा पु० खलबली । गडबडी । कोलाहल ।

गलबहियाँ-सज्ञा स्त्री० १ परस्पर कंधे पर हाथ रखकर चलना । २ आलिंगन करने का ढंग । परस्पर गले में बाँह डालना ।

गलबाँह-सज्ञा स्त्री० आलिंगन ।

गलबाँही-सज्ञा स्त्री० आलिंगन । गले में बाँह डालना ।

गलभाग-वि० स्वरबद्ध । बैठा हुआ कठ ।

गलमुंदरी-सज्ञा स्त्री० १ गलमुद्रा । शिवजी के पूजन के समय गाल बजाने की मुद्रा । २ गाल बजाना ।

गलमुच्छा-सज्ञा पु० गलगुच्छा । गालो पर के बड़े हुए बाल ।

गलमुद्रा-सज्ञा स्त्री० दे० "गलमुंदरी" ।

गलवाना-क्रि० स० [ 'गलना' का प्रे० रूप ] दूसरे से गलाने का कार्य करना ।

गलशुंठी-सज्ञा स्त्री० १ गले की जीभ । जीभ की जड़ के पास जीभ के आवार का भास का छोटा टुकडा । छोटी जवान या जीभ । कौआ । जीभी । २ रोग-विशेष जिसमें तालू की जड़ सूज जाती है ।

गलमुद्रा—सज्ञा पु० रोग-विशेष, जिसमें गाल के नीचे का भाग सूज जाता है।

गलगुई—सज्ञा स्त्री० दे० "गलतयिया"। छोटा तयिया। सिरहाना।

गलस्तन—गज्ञा पु० गलधना। वस्त्रियों के गले के नीचे की दो छोटी पतली धँलियाँ जो धन की तरह होती हैं।

गलस्तनी—सज्ञा स्त्री० बगरी।

गलहट्ट—सज्ञा पु० गलगहट्ट। गलरोग। पेया।

गलही—सज्ञा स्त्री० नाव के आगे का उठा हुआ भाग।

गला—सज्ञा पु० १ गरदन। बठ। शरीर का वह अंग, जो सिर को घड से जाड़ता है। २ गले की नाली जिससे शब्द निष्पत्ता और भोजन भीतर जाता है। ३ बठस्वर। गले का स्वर। ४ अँगरख, कुरते आदि की बाट में गल पर का भाग। गरेवान। ५ चिमनी का क्ला। ६ बरतन के मुँह के नीचे का पतला भाग।

मुहा०—गला काटना=१ घड से सिर अलग करना। जान से मार डालना। २ बहुत हानि पहुँचाना। ३ तरकारी आदि से उत्पन्न गले के अंदर एक प्रकार की जलन और चुनचुनाहट। कनयनाना। गला घुटना=दम रुकना। अच्छी तरह साँस न लिया जाना। गला घोटना=१ टेंडूआ दवाना। गले को ऐसा दवाना कि साँस रुकने से प्राणान्त हो जाय। २ जबरदस्ती करना। ३ मार डालना। गला दबाकर मार डालना। गला छूटना=छूट-कारा मिलना। पीछा छूटना। गला पडना=भारी शब्द होना। गला धनघनाना। गला फाँसना=फाँसी देना। गला बैठना=शब्द का भारी होना। एक प्रकार का रोग जिसमें गले से ठीक चाणी नहीं निष्पत्ती। गला दवाना=अनुचित दबाव डालना। गला फाड़ना=इतना धिल्लाना कि गला दुखने लगे। गला रेतना=दे० "गला बाटना"। गले का हार=१ अत्यंत प्रिय। इतना प्यारा (व्यक्ति

या वस्तु) कि पाग से बनी जुदा न किया जाय। विरसट्चर। २ पीछा न छाटने-वाला। (घात) गले के नीचे उतरना या गले उतरना=(घात) मन में बैठना। ध्यान में आना। जी मँजैचना। गले पडना=न चाहने पर भी मिलना। इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना। गले पडी=अनिच्छा-पूर्वक किसी काम को करना। (दूसरे के) गले बाँधना या मडना=दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। जबरदस्ती देना। गले लगाना=१ मिलना। भेंटना। आलि-गन करना। २ दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना।

गलाना—वि० स० १ ठोस वस्तु को पिघ-साना। द्रव करना। धुलाना। किसी वस्तु को गोला या द्रव करना। नरम या मुलायम करना। पुलपुला करना। २ (स्पष्ट) व्यय या खर्च करना। ३ धीरे-धीरे लुप्त करना।

गलानि—\*—सज्ञा स्त्री० दे० "ग्लानि"।

गलाव—सज्ञा पु० पिघलना। बहाव। द्रव।

गलासी—सज्ञा पु० पशु बाँधने की रस्ती। पगहा।

गलित—वि० १ पतित। गिरा हुआ। २ गला हुआ। द्रवीभूत। सडियल। ३ पुराना, जीर्ण-शीर्ण। खडित। ४ च्युत। चुआ हुआ। ५ अधिक पका हुआ। ६ नष्ट भ्रष्ट।

गलित कुष्ठ—सज्ञा पु० एक तरह का कोड जिसमें अंग गल-गलकर गिरने लगते हैं।

गलितपीवना—सज्ञा स्त्री० ऐसी स्त्री जिसका पोषण ढल गया हो।

गलियाना—वि० स० १ गाली देना। बुरा कहना। अभिशाप देना। २ भोजन कर चुकने पर भी और भोजन पराना। गले में ठूसना।

गलियारा—सज्ञा पु० गली की तरह छोटा तंग रास्ता। छोटी गली। पैदा सज्ञा स्त्री० गलियारी।

गली-सज्ञा स्त्री० १ छोटा मार्ग । तंग रास्ता । खोरी । कूचा । २. महल्ला । ३ महाल ।

मुहा०-गली-गली मारे-मारे फिरना= १ इधर-उधर व्यर्थ भटकना या घूमना । २ जीविका के लिए इधर से उधर भटकना । सब जगह दिखाई पड़ना ।

गलीचा-सज्ञा पु० [फा०] कालीन । मोटा बना हुआ बिछोना जिस पर रंग-विरंग के बेल-बूटे बने रहते हैं ।

गलीज-वि० [अ०] १ मैला । गंदला । २ अशुद्ध । अपवित्र । नापाव ।

सज्ञा पु० १ गंदी वस्तु । कूड़ा-बरकट । गंदगी । मैला । २ पाखाना । मल ।

गलीज\*-वि० दे० "गलीज" । मैला-कुर्बता । गलेफ-सज्ञा स्त्री० दोहर । दुहरा ओढ़ने का चदरा ।

गलेबाज-वि० अच्छा गानेवाला ।

गलेबाजी-सज्ञा स्त्री० १ अच्छा गाना । गले का कौशल यानी राग अलापन का कौशल दिखाना । २ बहुत बड़-बड़कर बातें बनाना । डींग ।

गलीआ-सज्ञा पु० १ गाल । २ बन्दरो के गालों के अन्दर की थैली ।

गल्प-सज्ञा स्त्री० १ गप्प । २ डींग । शक्ती । ३ छोटी कहानी । उप-कथा । कहानी । आख्यायिका । कल्पित कथा ।

गल्ला-सज्ञा पु० शीर । हल्ला । दल । झुंड । (बोपायों के लिए)

गल्ला-सज्ञा पु० [अ०] १ फसल । पैदावार । २ अनाज । अन्न । ३ दूकान पर मिलनेवाला अनाज । गोलक । आँटी । अन्नराशि ।

गल्लाना-सज्ञा पु० कुल्ली का फाड़ा ।

गवै-सज्ञा स्त्री० १ घात । मौका । मत-लब हल होने या काम निकलने का अवसर । दांव । २ प्रयोजन । मतलब ।

मुहा०-गवै से= १ घात । मौका देखकर । २ धीरे से । ३ चुपचाप ।

गवन-सज्ञा पु० १ गमन । प्रस्थान । प्रयाण । फा० २८

चलना । जाना । गति । २ बघू या पहले पहल पति के घर जाना । गौना ।

गवनचार-सज्ञा पु० घर के घर बघू के जाने की रीति ।

गवनना\*-क्रि० अ० जाना ।

गवना-सज्ञा पु० दे० "गौना" । द्विरागमन ।

गवप-सज्ञा पु० १ नीलगाय । २ छद-विशेष ।

गवतंमेष्ट-सज्ञा स्त्री० [अप्र०] राज्य । सरकार । राजकीय शासक-मंडली । शासन-पद्धति ।

गवतंर-सज्ञा पु० [अप्र०] किसी प्रान्त या क्षेत्र का शासक । राज्यपाल ।

गवाक्ष-सज्ञा पु० १ छोटी खिड़की । गोप्ता । झरोखा । मोखा । २ एक वानर का नाम ।

गवाक्ष\*-सज्ञा पु० दे० "गवाक्ष" ।

गंवाना-क्रि० स० खोना ।

गवामयन-सज्ञा पु० एक प्रकार का यज्ञ ।

गवारा-वि० [फा०] १ अनुकूल । पसंद । २ घरदास्त करने लायक । सह्य । अंगीकार । स्वीकार ।

गवाशन-सज्ञा पु० चर्मकार । चढाले । म्लेच्छ । कसाई ।

गवास-सज्ञा पु० कसाई । दे० "गवाशन" । सज्ञा स्त्री० गाने की इच्छा । क्रि० अ० लगना ।

गवासा-सज्ञा पु० १. गोमक्षक । २ कसाई ।

गवाह-सज्ञा पु० [फा०] १ साक्षी । साखी । वह जो किसी मामले के विषय में जानकारी रखता हो । किसी घटना को अपनी आँखों देखनेवाला । २ किसी विषय में जानकारी रखनेवाला ।

गवाही-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ गवाह का बयान । २ साक्षी का बयान । ३ विवाद-ग्रस्त विषय की जानकारी रखनेवाले व्यक्ति का बयान ।

गवीश-सज्ञा पु० गोस्वामी । विष्णु । सांड ।

गवेजा-सज्ञा पु० १ गप । २ बातचीत ।

गवेधु, गवेधुक-सज्ञा पु० १ गंगरुआ । २ तण । धातु विशेष । एक तरह की

पास किसे घोषाये खाते हैं। बगैर।  
बौद्धिवा।

गवैरक-गज्ञा पु० गेह।

गवैर-वि० १ देहाती। २ गैवार।

गवैरण-सज्ञा स्त्री० धानवी। खोज। अन्वेषण।

गवैयो-वि० [स्त्री० गवैयिणी] खोज करनेवाला। हुंनेवाला। अन्वेषण करनेवाला।

गवैहा-वि० गाय या रहनेवाला, गैवार। देहाती। ग्रामीण।

गवैया-वि० गायक। गानेवाला।

गव्य-वि० गो से उत्पन्न। जो गाय से प्राप्त हो। जैसे—दूध, दही, घी, गोबर आदि। गज्ञा पु० १ पचगव्य। गो के पाँच पदार्थ—दूध, दही, गोमूत्र, गोमय, गोघृत। २ गाय। वा भूड।

गव्यति-सज्ञा स्त्री० दो हजार धनुष की दूरी। दो कोस। चार मील।

गवा-सज्ञा पु० [अ०] मूच्छा। अचेतनता। बेहोशी।

गुहा-गुप्त खाना=बेहोश होना।

गस्त-सज्ञा पु० [का० वि० गस्ती] १ भ्रमण। घूमना। फिरना। टहलना। दौरा। चक्कर।

२ प्रहरे के लिए किसी स्थान के चारों ओर या गली-बूचा आदि में घूमना। गिरदावरी।

गस्ती-वि० घूमने-फिरनेवाला। घूमनेवाला। भ्रमणशील।

सज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी। कुलटा।

गस्ताना-वि० स० १ गाँवना। बाँधना। २ जकड़ना। ठसना।

गिला-वि० [स्त्री० गस्तीली] १ नूँथा हुआ। जकड़ा हुआ। गठा हुआ। २ गफ। (पकड़ा आदि) जिसके सूत परस्पर खूब मिले हो।

गस्तान-सज्ञा स्त्री० कुलटा स्त्री। व्यभिचारिणी नारी।

गस्ता-सज्ञा पु० कवल। घास। कौर।

गह-सज्ञा स्त्री० १ पकड़ना या पकड़ने का भाव। पकड़। २. हथियार आदि पकड़ने की जगह। मूठ। दस्ता। बँट। हत्या। हण-फडा।

गुहा-गह बँटना=मूठ पर हाथ भरमूर जमा।

गह-सज्ञा स्त्री० मस्ती। उन्मत्तता।

गहना-वि० अ० १ खानाबि होना।

सामगा से पूरा होना। सलबना। २

खपना। ३ उमग में भरना।

गहगह-वि० भारी। गहरा। घोर। (मने के लिए)।

गहगह-वि० प्रसन्नतापूर्ण। प्रफुल्लित। उमग से नरा हुआ। नयन प्रमत्तता। चारा ओर मुगी।

वि० वि० धूमधाम के साथ। घमाघम (वाने के लिए)।

गहगहा-वि० १ प्रफुल्लित। उमग और

आनंद से नरा हुआ। २ धूमधामवाला।

गहगहाना-वि० अ० १ बहुत प्रमत्त होना।

आनंद से फूलना। २ पीया का लहलहाना।

३ लहकना।

गहगहे-वि० वि० १ बड़ी प्रफुल्लता के साथ। २ बड़े हृष के साथ। ३ धूमधाम के साथ।

गहडोरना-वि० स० पानी को मैला या गंदला करना।

गहन-वि० १ अथाह। गभीर। गहरा। २ दुर्गम। दुर्भेद्य। घना। ३ दुर्लभ।

कठिन। ४ घना। निविड।

सज्ञा पु० १ घाह। गहराई। २ दुर्गम स्थान।

३ वन में गुप्त स्थान। कुज।

४ ग्रहण। ५ दोष। कलम। ६

कष्ट। विपत्ति। दुःख। ७ वधक।

रेहन। ८ जल।

सज्ञा स्त्री० १ पकड़। पकड़ने का भाव।

२ टेक। हठ। ज़िद।

गहनता-सज्ञा स्त्री० दे० "गहन"। दुर्गम या गभीर होने का भाव।

गहना-सज्ञा पु० धरोहर। १ आभूषण।

जवर। २ वधक। रेहन।

क्रि० स० १. पकड़ना। २ धरना। ३

ग्रहण करना।

सज्ञा स्त्री० १ सन। २ पलास। ३ काली

पत्ती।

गहनि\*—गजा स्त्री० १ टेक । टूठ । जिद ।  
२ पक्कड़ ।

गहवर\*—वि० १ दुर्गम । सघन । विपम ।  
० आवेग में भरा हुआ । ३ उद्विग्न ।  
व्याकुल । ४ बेचुन । ध्यानमग्न ।

गहघरना—वि० अ० १ आवेग में भरना ।  
२ व्याकुल होना । घबराना । उद्विग्न  
होना ।

गहर—गजा स्त्री० विलव । देर ।

गजा पु० गूड । दुर्गम । कठिन ।

गहरना—वि० अ० विलसत करना । देर  
लगाना । १ उलभना । भाड़ना । २  
घुटना । चिन्ता । सागराज होना ।

गहयार—सजा पु० क्षयिष्य-वश विराग ।

गहरा—वि० [ स्त्री० गहरी ] १ गभीर ।  
निम्न । जिसकी बाह बहुत नीचे हो ।  
अगारा । २ बहुत अधिक । धार । ज्यादा ।  
३ जिसका विस्मय नीचे की ओर अधिक  
हो । ४ दृढ़ । भारी कठिन । मजबूत ।  
५ गाढ़ा । जो हलका या पतला न हो ।  
मालदार आदमी ।

गुहा—गहरा पट=एसा हृदय जिसका भेद  
न मिले । एसा पट जिसमें सब बाँचे पच  
जायें । गहरा असामी=१ बड़ा आदमी ।  
२. गहर लोग=धूत । चतुर लोग । उस्ताद ।  
गहरा हाथ=३. हथियार का भरपूर वार ।  
भारी रकम प्राप्त करना । गहरी घुटना या  
छनना=१ खूब गाढ़ी भग घुटना या  
पिमना । २ गाढ़ी मित्रता होना ।

गहराई—गजा स्त्री० गहरापन । गहरा  
भाव ।

गहराना\*—वि० अ० गहरा होना । गम्भीर  
होना । दे० "गहरना" । गहरा करना ।

गहरावा\*—सजा पु० गहराई । गहरापन ।

गहर\*—सजा स्त्री० दे० 'गहर' । डील ।  
देर । विलम्ब । अरसा ।

गहलीत—सजा पु० अनिया का वश-  
विराग ।

गहवा—सजा पु० १ चिमटा । २ सेंडासी ।  
३ पक्कड़ की वस्तु ।

गहवाना—क्रि० स० [ गहना का प्रि० ] पक-

डाना । पक्कड़ने का काम करना ।  
पक्कड़वाना ।

गहवारा—सजा पु० 'भूला' । हिडोला ।  
पालना ।

गहराई\*—सजा स्त्री० पक्कड़ । गहने (पक्कड़ने)  
का भाव ।

गहागड्ड—वि० दे० "गहगड्ड" ।

गहाना—वि० स० [ गहना का प्रि० ] पक-  
डाना । धराना ।

गहोला—वि० [ स्त्री० गहोली ] १ अभि-  
मानी । गर्वीला, गर्वयुक्त । घमडी । २.  
पागल ।

गहु—गजा पु० छाटा रास्ता ।

गहुआ—सजा पु० एक तरह की सेंडासी ।

गहेजुआ\*—सजा पु० छल्लूदर ।

गहिला या गहेला—वि० [ स्त्री० गहेली ]  
१ हठी । जिद्दी । २ अभिमानी । ३.  
घमडी । पागल । ४ अनजान । गैवार । मूर्ख ।  
गहया—वि० १ ग्रहण करनेवाला । पकड़ने-  
वाला । २ स्वीकार करनेवाला । अस्वीकार  
करनेवाला ।

गहर—सजा पु० १ अथकारमय और गूढ़  
स्थान । २ खोह । गर्त । विल (जमीन  
में छद) । ३ गुहा, गुफा, कदरा । ४.  
विपम स्थान, दुर्भेद्य स्थान । ५ लतागूह ।  
निचुल । ६ भाडी । ७ जगल । वन ।  
वि० १ दुर्गम । विपम । २ भुक्त ।

गहंज—सजा पु० गाँव । ग्राम । पुर ।

गांकर—सजा स्त्री० वाटी । जिट्टी ।

गाग—वि० गगा का । गगा-संबंधी ।

सजा पु० दे० गागय । भीष्म । सोना ।  
कार्तिकेय । धतूरा । वर्षा का जल । खब  
तालाब । हेलसा मछली ।

गागट—सजा पु० केकडा ।

गागेय—सजा पु० १ भीष्म । २ कार्ति-  
केय । गगापुत्र । ३ सोना । ४ कसेरु ।  
५ धतूरा । ६ हेलसा मछली । ७ एक  
तरह की घास की जड़ ।

गांज—सजा पु० डेर । राशि ।

गांजना—क्रि० स० १ एवज करना । राशि  
लगाना । डेर करना । २ बटोरना ।

बीजा-गंगा पु० भाग की तरह एक नदीकी वस्तु और उसका बीजा ।

गाँठ-सज्ञा स्त्री० [वि० गेंठाँली] १. रंगि । गिरह । बन्धन । जोड़ । रंगि । २. घोबल या चदर के छोर में कोई वस्तु रखकर लगाई हुई गाँठ । ३. गठरी । बोरा । ४. शरीर के जोड़ । घद । जैसे—पैर की गाँठ । ५. ईस, वाँस आदि में थोड़े-थोड़े अंतर पर कुछ उभरा हुआ मडल । पोर । पर्व । ६. गट्ठा । घास का बंधा हुआ बोझ । ७. गाँठ के आकार की जड़ । गुत्थी । गिलटी । झंटीरी ।

मुसु०-मन या हृदय की गाँठ खोलना-गाँठ खोलना=खुल करना ।=१ मन की बात कहना । जी खोलकर कोई बात कहना । २. अपनी भीतरी इच्छा प्रकट करना । ३. लालसा पूरी करना । होमला निकालना । मन में गाँठ पड़ना=मनमुठाव होना । गाँठ का खोना=अपनी हानि करना । गाँठ बतरना या काटना=जब काटना, गाँठ से रुपया निकालना । गाँठ उखड़ना=जोड़ खुल जाना । हट्टा या नरा का बिचलना । गाँठ का=अपनी आमदनी का । पास का । गाँठ का पूरा=धनी । मालदार । गाँठ जोड़ना=विवाह आदि के समय स्त्री पुरुष के कपड़ों के फलने की एक में बाँधना । गेंठजोड़ा करना । (बोई बात) गाँठ में बाँधना=स्मरण रखना । अच्छी तरह याद रखना । सदा ध्यान में रखना । गाँठ से=पास से । अपने पास से ।

गाँठगोभी-सज्ञा स्त्री० एक तरह की गोभी । जिसका जड़ में बड़ी गाँठ होती है ।

गाँठदार-वि० १. गंठीला । २. जिसमें बहुत गाँठें हों ।

गाँठना-क्रि० स० १. गाँठ लगाना । बांधकर मिलाना । बाँधना । २. गंधना । फटी हुई चीजों को टाँचना या उनमें चपटी लगाना । मरम्मत करना । ३. जोड़ना । मिलाना । ४. तरतीब देना । ५. बस में करना । ६. अनुसूल करना ।

अपनी और मिलाना । पक्ष में करना । ७. बार को रोकना । ८. अपना घघिबार जमाना ।

गुहा०-मनलब गाँठना=काम निकालना । गाँठर-सज्ञा स्त्री० गड्ढूवा । मूँज की तरह की एक घास ।

वि० १. गहरा । २. गहरे का ।

गाँडा-सज्ञा पु० [स्त्री० गेंदी] १. पिली पेट, पाँधे या ठठल का छोटा बटा खंड । जैसे—रैल का गाँडा । २. गेंडरी । ईस का छोटा बटा टुकड़ा ।

गाँडीव-सज्ञा पु० अर्जुन के धनुष का नाम ।

गाँडीवी-सज्ञा पु० गाँडीव धनुष धारण करनेवाला । अर्जुन ।

गाँडीबधर-सज्ञा पु० अर्जुन ।

गाँतो-सज्ञा स्त्री० दे० "गानी" ।

गाँयना-क्रि० स० १. गूँथना । २. घनाना । गूँथना । ३. मोटी निलाई करना ।

पिराना । ४. भीत उठाना ।

गांधर्व-वि० १. गंधर्वसंघी । २. गंधर्व जाति का । ३. गंधर्व देशोत्पन्न ।

सज्ञा पु० १. गंधर्व-विद्या । गंधर्व-वेद । सामवेद का उपवेद जिसमें सामगान के स्वर आदि का वर्णन है । २. गान-विद्या । संगीत-शास्त्र । ३. आठ प्रकार के विवाही में से एक जिसमें वर और बच्चा परस्पर अपनी इच्छा से प्रेमपूर्वक मिलकर पति-पत्नीवत् रहते हैं ।

गांधर्व-विद्या-सज्ञा स्त्री० संगीत-शास्त्र ।

गांधर्व-विवाह-सज्ञा पु० केवल वर-बच्चा की इच्छा से विवाह ।

गांधर्ववेद-सज्ञा पु० १. संगीत-शास्त्र । २. सामवेद का उपवेद ।

गांधार-सज्ञा पु० [स्त्री० गांधारी] १. सिंधु नद के पश्चिम का देश । २. गांधार देश का निवासी । ३. संगीत के सात स्वरो में से तीसरा स्वर । ४. सिन्धुर ।

गांधारराज-सज्ञा पु० रावुनि । दुर्गंधन के भाग्य ।

गांधारी-सज्ञा स्त्री० १. गांधार देश की

स्त्री या राजकन्या । २ धृतराष्ट्र की स्त्री  
श्रीर दुर्योधन की माता का नाम ।  
३ जैनियों का देवता-विशेष । ४, गाजा ।  
५ मादक द्रव्य-विशेष ।

गाधिक-सज्ञा पु० सुगन्धित द्रव्य-व्यवहारी ।  
अत्तार । कीड़ा ।

गाधी-सज्ञा स्त्री० १ हरे रंग का  
छोटा कीड़ा विशेष । २. घाम विशेष ।  
३ गधी । ४. हींग । ५ गुजराती वैश्यो  
की जाति-विशेष ।

गाभीर्य-सज्ञा पु० १ गहराई । २  
गभीरता । ३ स्थिरता । अचंचलता । ४  
धीरता । शांति का भाव । ५ गूढ़ता ।  
गुप्ता ।

गावि-सज्ञा पु० छाटी बम्बी । खंडा ।  
पुरवा । ऐसी जगह जहाँ पर बहुत से  
किसानों के घर हों ।

गांस-सज्ञा स्त्री० १ बघन । रोर टोक ।  
२ द्वेष । वैर । ईर्ष्या । ३ रहस्य ।  
हृदय की गुप्त बात । भेद की बात ।  
४ गाँठ । गठन । फटा । ५ तीर या  
वर्छी का फल । ६ अधिवार । बस ।  
शासन । ७ कठिनता । सपट । अडचन ।  
८ देख-रेख । निगरानी ।

गांसना-क्रि० सं० १ गुंथना । पिरोना ।  
२ छेदना । चुभोना । सालना । ३  
छिद्र बन्द करना । तान में कमना, जिससे  
बुनावट ठस हो । ४ दबोचना । पक्कड़ में  
करना । ५ बस म रखना । शासन में  
रखना । ६ भरना । ठूँसना ।

मुहा०-बात को गांसकर रखना=हृदय में  
जमाना । मन में बैठाकर रखना ।

गांसी-सज्ञा स्त्री० १ तीर या हथियार की  
नोक । बरछी आदि का फल । २ धार ।  
३ गाँठ । गिरह । ४ सपट । छलछद्म ।  
५ तीक्ष्णता । ६ मनोमालिन्य ।

गाई-सज्ञा स्त्री० गाय । गी ।  
गाऊवष्प-वि० पुर्वाली ।  
गागर, गागरी-सज्ञा स्त्री० दे० "गगरी" ।  
कलसी । घट । घड़ा ।

गाच-सज्ञा स्त्री० बहुत महीन जालीदार सूती

बपड़ा विशेष, जिस पर रेशमी बेल-बूटे बने  
रहते हैं । कुलवर ।

गाछ-सज्ञा पु० छोटा पेड़-पौधा ।

गाछमिर्च-सज्ञा पु० सात मिर्च ।

गाज-सज्ञा स्त्री० १. गरज । गर्जन । शोर ।

२ विजली गिरने की आवाज । पाँच की  
बूढ़ी । ३ दण्ड । विजली ।

सज्ञा पु० फेन । भाग ।

मुहा०-किसी पर गाज पड़ना=आफन  
आना । नाश होना ।

गाजना-क्रि० अ० १ शब्द करना । हुकार  
करना । गरजना । चिल्लाना । २. प्रसन्न  
होना । खुश होना ।

मुहा०-गल-गाजना=हर्षित होना ।

गाजर-सज्ञा स्त्री०, पौधा विशेष । गजरा ।  
गृजन ।

मुहा०-गाजर-मूली समझना=तुच्छ सम-  
झना ।

गाजा-सज्ञा पु० मुँह पर मलने का रोगन-  
विशेष ।

गाजा-बाजा-सज्ञा पु० अनेक प्रकार के  
बाजे । सर्वांग-पूर्ण उत्सव ।

गाखी-सज्ञा पु० [अ०] १ धर्म के लिए  
विधिमिया से युद्ध करनेवाला मुसलमान  
योद्धा । २ योद्धा । बहादुर । वीर ।

गाड-सज्ञा स्त्री० १ गड्ढा । गड्ढा ।  
२ अनाज रखने के लिए गड्ढा । ३.  
भगाड । कुएँ की डाल ।

गाडतोप-सज्ञा स्त्री० मिट्टी देना । कब्र देना ।  
अश्लील या निन्दित बात की छिपाणा ।  
गाडकर छिपाणा ।

गाडना-क्रि० सं० १ तोपना । गड्ढा खोद-  
कर किसी चीज को उसमें रखकर ऊपर  
से मिट्टी डाल देना । जमीन के अंदर दफ-  
नाना । २ जमाना । किसी चीज को  
पृथ्वी में धँसाना । ३ छिपाणा । गुप्त  
रखना ।

गाडर-सज्ञा स्त्री० १ भेड़ । भेय । २.  
सरसी ।

गाड़-सज्ञा पु० १ गाड़ि । २ सपें का  
बिप भादने का मय ।

वि० रत्न का विष उगारनेवाला।

भाड़ा\*†-सज्ञा पु० गाड़ी। छद्म। १ सारि (युद्ध आदि म)। गड़ा। २ दीव। डोटवा का गड्ढा।

भाड़ी-सज्ञा स्त्री० एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल-धरावाय या आदिमियों को पहुँचाने के लिए यान। शवट। रथ। हुराडा।

भाड़ीखाना-सज्ञा पु० गाड़िया के रखने का स्थान। यह स्थान जहाँ गाड़ियाँ रखी रहती हो।

भाड़ीवान-सज्ञा पु० १ सारथी। रथवाह। २ गाड़ी हाँकनवाला। बोचवान।

भाड़-वि० १ अधिक। बहुत। २ दृढ़। मजबूत। ३ गाढ़। घना। जो पतला न हो। ४ बठिन ५ अथाह। गहरा। डुरुह। दुर्गम।

सज्ञा पु० कण्ट। जवाल। बठिनाई। आपत्ति। सवट। वेदना।

भाड़ता-सज्ञा स्त्री० गाड़ापन।

भाड़ा-वि० [स्त्री० गाड़ी] १ जा पतला न हो। २ ठस, मोटा (कपड़ आदि के लिए)। जिससे सूत परस्पर छूव मिले हो। ३ गहरा। गूढ़। घनिष्ठ। ४ बिबट। बड़ा-बड़ा। घोर। बठिन। मोटा। गाढ़। घना।

सज्ञा पु० १ गजी। एक प्रकार का भाटा सूती कपड़ा। २ भस्त्र हाथी।

भूहा-गाड़ की कमाई=बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन। गाड़ का साथी या साथी=सवट के समय का मित्र। विपत्ति के समय सहाय देनवाला। गाड़ दिन=सफट के दिन।

गाड़ी\*-क्रि० वि० १ अच्छी तरह। २ दृढ़ता से। जोर से।

भाणपत-वि० गणपति-संबंधी।

सज्ञा पु० गणेश की उपासना करनेवाला सम्प्रदाय-विशेष।

भाणपत्य-सज्ञा पु० १ गणेश का उपासक। गणेश के भक्त स्मार्त। २ उपामना का एक भेद।

गात-सज्ञा पु० श्रम। शरीर। देह। वदन।

गाता-सज्ञा पु० पूठा। पिठोवा। जिन्द।

वि० गायक। गानकर्ता। गानवाह।

गाती-सज्ञा स्त्री० गल में बाँधने का वस्त्र।

१ पट्ट। २ चदर या श्रैंगोछे की गले से बाँधने का एक ढग।

गातु-सज्ञा पु० १ गायक। गर्वया। गानेवाला।

२ काँदित। ३ भ्रमर। ४ गन्धर्व। ५

गान। ६ पथिक। ७ पृथिवी।

गात्र-सज्ञा पु० श्रम। देह। शरीर। गान।

गात्रबद्ध-सज्ञा स्त्री० शरीर की सुजलाहट।

गात्रवेदना-सज्ञा स्त्री० शरीर की व्याध। श्रगपीडा।

गात्रभंगो-सज्ञा स्त्री० शरीर की बिहृति।

बिकार। भ्रम की बनावट।

गात्रलेपनी-सज्ञा स्त्री० शरीर में लगाने का

सुगन्धित द्रव्य विशेष। उवटन।

गात्रसबाहन-सज्ञा पु० शरीर दमाना। अग्रा

की घुमावट या पीड़ा निवारण।

गाय-सज्ञा पु० प्रसादा। यश। बड़ाई।

गायक-वि० १ गायक। गर्वया। २

कवक।

गायना-वि० १ श्रवण करना। गुंथना।

२ बगाना।

गाया-सज्ञा स्त्री० १ स्तुति। गान। पद्य।

छंद। २ वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम

न हो। ३ प्राचीन काल की एक एति-

हासित रचना जिसमें बड़े लांगो के दान-

यज्ञ आदि का वर्णन होता था। ४ प्राचीन

भाषा विशेष। ५ आर्या नाम की वृत्ति।

६ पैवारा। ७ कथा। वृत्तांत। कहानी।

८ वारमिया व धर्म-ग्रंथ का भेद विशेष।

गाद-सज्ञा स्त्री० १ घाई। तरल पदार्थ

क नीचे बैठी हुई गाड़ी चीन। तलछट।

२ गाड़ी चीज। ३ तल की बीट।

गादड़, गादर-वि० दरपाव। भीर।

बायर। सुस्त।

सज्ञा पु० [स्त्री० गादड़ी] तियार। गादड़।

गादना-वि० १ दृढ़ करना। स्थिर करना।

२. दमाना। ठांसना।

गावर-सज्ञा पु० राशि। धाक। डेर। टान।

वि० १. कायर । डरपोक । भीष्ट ।  
२ सुस्त ।

गादा-सज्ञा पु० १ अधपका अन्न । गद्दर ।  
२ कच्ची फसल । ३ चना । मटर या  
होरहा । कचरी ।

गादी-सज्ञा स्त्री० १ पकवान-विशेष ।  
२ दे० "गद्दी" । राज्यासन । सिंहासन ।  
गादीपति-सज्ञा पु० १ सम्प्रदाय का एक  
बड़ा महन्त । २ सन्यासी ।

गादुर-सज्ञा पु० चमगीदड़ । चमगादुर ।

गाध-सज्ञा पु० १ जगह । स्थान । २  
जल के नीचे का स्थल । ३ गाह । ४  
नदी का बहाव । कूल । ५ लोभ ।  
अभिलाषा । स्पृहा । लिप्सा ।

वि० [स्त्री० गाया] १ जिसे पार कर  
सकें । जो बहुत गहरा न हो । छिड़ला ।  
२ थोड़ा । स्वल्प ।

गाधा-सज्ञा स्त्री० गायत्री-स्वरूपा महादेवी ।  
गाधि-सज्ञा पु० विश्वामित्र के पिता का नाम ।

गाधिज या गाधिनदन-सज्ञा पु० विश्वामित्र ।  
गाधिपुर-सज्ञा पु० कान्यकुब्ज देश ।

गाधिमुवन-सज्ञा पु० विश्वामित्र मुनि ।

गाधेय-सज्ञा पु० विश्वामित्र ।

गान-सज्ञा पु० [वि० गेय, गेतव्य] १ गाने  
की निया । २ संगीत । ध्वनि । गाना ।  
३ गीत । गाने की चीज । ४ बखान ।  
कीर्तन ।

गाना-वि० स० १ राग अलापना । ताल,  
स्वर के नियम के अनुसार शब्द उच्चा-  
रण करना । २ मधुर ध्वनि करना ।  
३ विस्तार के साथ कहना । वर्णन करना ।  
४ प्रशंसा करना । स्तुति करना ।

सज्ञा पु० १ गान । गाने की क्रिया ।  
२ गीत । गाने की चीज ।

गुहा-अपनी ही गाना=अपना ही हाल  
कहना । अपनी ही बात कहते जाना ।

गाकिल-वि० [य०] [सज्ञा गकिल] १  
वेसुध । लापरवाह । २ आलसी । बेखबर ।  
३ अभावधान ।

गाभ-सज्ञा पु० १. पशुओं का गर्भ । २  
दे० "गाभा" । ३ डंडा । ४. पैट ।

गाभा-सज्ञा पु० [वि० गाभिन] १. कोपल ।  
नया निकलता हुआ मुँहबँधा नरम पत्ता ।  
नया फल्ला । २ केल आदि के डठल के  
अंदर का भाग । ३ गुद्द । लिहाफ,  
रज्जई आदि के अंदर की निकाली हुई  
पुरानी रुई । ४ खड़ी खेनी । कच्चा  
अन्नाज । ५ हाथ या पैर की अँगुलियों  
की संधि ।

गाभिन, गाभिनी-वि० स्त्री० जिसके पेट  
में वच्चा हो । गर्भिणी (चौपायो के लिए) ।  
गाम-सज्ञा पु० गाँव । ग्राम ।

गामिनि, गामिनी-सज्ञा स्त्री० गमन करने-  
वाली । जानेवाली । चलनेवाली ।

गामो-वि० [स्त्री० गामिनी] १. गमन-  
शील । चलनेवाला । चालवाला । २ समीप  
या गमन करनेवाला ।

गामुक-वि० चलनेवाला । गमन करने-  
वाला ।

गाय-सज्ञा स्त्री० १ गौ । धेनु । २ दीन  
मनुष्य । ३ बहुत सीधा मनुष्य ।

गायक-सज्ञा पु० [स्त्री० गायकी] गवैया ।

गायकी-सज्ञा स्त्री० गानेवाली स्त्री । गान-  
विद्या का पूरा ज्ञान । गान विद्या के नियमों  
के अनुसार ठीक तरह से गाना । गान-  
विद्या ।

गायगोठ-सज्ञा स्त्री० गोशाला । गोष्ठ । गोम्री  
के रहने का स्थान ।

गाय-गोह या गोह-सज्ञा पु० गैया । चौपाया ।  
जैसे गाय, बैल, भैंस आदि । गोसमूह ।

गायताल-सज्ञा पु० निकुण्ट, बेल । रूई व  
निकम्मी चीज ।

वि० निकम्मा । रूई ।

गायत्री-सज्ञा स्त्री० १ वैदिक छन्द-विशेष ।  
२ एक वैदिक मन्त्र जो हिन्दू धर्म में सबसे

अधिक महत्त्व का माना जाता है । ३ गंगा ।  
४ खैर नामक एक वनस्पति । खैर का पेड़ ।

५ एक देवी का नाम । दुर्गा । वेद-  
माना । भगवती । ६ छ अक्षरों की  
यणवृत्ति विशेष ।

गायन-सज्ञा पु० [स्त्री० गायिनी] १.  
गायक । गानेवाला । गवैया । २. वाक्पति-

वेय । ३. गान । गीत । ४. एक महर्षि का नाम ।

पयव-वि० [ध०] घनतर्पण । लुप्त । गुम । सापता । खो जाना । छिप जाना ।

पययाना-प्रि० वि० पीठ पीछे । अनु-पस्थिति में ।

पयिनी-सज्ञा स्त्री० १ गानेवाली स्त्री । २ मानिक छद-विशेष ।

पार-सज्ञा पु० [ध०] १ गहरा गड्ढा । २ बदरा । गुफा ।

सज्ञा स्त्री० १. गाली । २ अभिशाप ।

पारत-वि० [फा०] मटियामेट । नष्ट । बरबाद ।

गारद-सज्ञा स्त्री० १ चौकी । २ सप्तस्य सिपाहियों का समूह । पहरा ।

गारना-क्रि० स० १ निचोड़ना । दबाकर पानी या रस निकालना । २ दुहना ।

३ पानी के साथ घिसना । जैसे—चदन गारना । \*४ त्यागना । निकालना ।

\*५ गलाना ।

मुहा०—तन या शरीर गारना=१ शरीर गलाना । तप करना । शरीर को कष्ट देना । २ नष्ट या बरबाद करना । मिटाना ।

गारा-सज्ञा पु० इट्टें जोड़न के लिए मिट्टी या चूने का लेप । गिलावा । पानी से सानी हुई मिट्टी । चहला ।

गारी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० “गाली” । अपशब्द ।

गारड-सज्ञा पु० १ साँप का विष उतारने का मंत्र । विषवेध । २ सोना । सुवर्ण ।

३ सेना की एक व्यूह रचना । ४ गरुडत मणि । पन्ना । ५ सेंपरा ।

वि० गरुड-सबधी ।

गारडिक-सज्ञा पु० सेंपरा । साँप का विष भाङ्गवाला ।

गारटो-सज्ञा पु० मंत्र से साँप का विष उतारनेवाला । दे० ‘गारड’ ।

गारट्य-सज्ञा पु० १ पन्ना । २ गरुड का भस्त्र ।

गारी\*-सज्ञा पु० १ भ्रूहकार । गर्व ।

पमट । २. वटपन्न । मान । ३. एक पहाड़ी जाति ।

गालियन-गशा पु० [ध्रे०] अभिमायक । गर-शक । नायातिग या अल्पवयस्क बालक-बालिकाओं की देखभाल करनेवाला । सरपरस्त ।

गार्गी-सज्ञा स्त्री० १. गार्ग्य गोत्र में उत्पन्न एक प्रसिद्ध ब्रह्मवादिनी स्त्री । २ गार्ग्य-वल्क्य ऋषि की एक स्त्री । ३ दुर्गा ।

गार्ड-सज्ञा पु० [ध्रे०] पहरेदार । रक्षक । रेलगाड़ी की देखभाल करने के लिए उसके साथ रहनेवाला अधिकारी ।

गार्हपत्याग्नि-सज्ञा स्त्री० १. छ प्रवार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि, जिसकी रक्षा शास्त्रानुसार प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिए । २ यज्ञ सम्बन्धी अग्नि विशेष ।

गार्हस्थ्य-सज्ञा पु० १ गृहस्थाश्रम । २ गृहस्थ का धर्म । गृहस्थ के कर्तव्य । पञ्च-महायज्ञ । ३ गृहस्थ-सबधी ।

गाल-सज्ञा पु० १ गड । कपोल । मुँह के दोनों ओर टुट्टी और बनपटी के बीच का कोमल भाग । २ बरबाद करने की श्रद्धत । ३ मुँहजोरी । ४ मध्य । बीच । ५ उतना धन जितना एक बार मुँह में डाला जाय । प्राप्त । ६ कपट । छल । मुहा०—गाल फूलाना=हठकर न बोलना । रुठना । रिसाना । गाल बजाना या मारना=बड़बड़कर बात करना । बीग मारना । काल के गाल में जाना=मृत्यु के मुख में पडना । गाल करना=१ मुँह से श्रद्धबड़ निकालना । मुँहजोरी करना । २ बड़बड़कर बातें करना ।

गालगूल\*†-सज्ञा पु० गपशप † व्यर्थ बात । अनाप-शानाप । बरबाद ।

गालमसूरी-सज्ञा स्त्री० पकवान या मिठाई-विशेष ।

गालव-सज्ञा पु० १. एक प्रसिद्ध ऋषि । २. प्राचीन वैद्यावरण विद्याप । ३. स्मृतिकार । ४. लोथ का पेड़ ।

गाला-सज्ञा पु० १ श्रद्धबड़ बनने का

स्वभाव । बड़बड़ान की आदत । मुंहजोरी ।  
२ कौर । भास । पूनी । धुनी हुई रुई का  
गोला जो चरखे में कासने के लिए बनाया  
जाता है । रुई की फली ।

मुहा०—रुई का गाला=बहुत उज्ज्वल ।  
शालिब-वि० [अ०] १ श्रेष्ठ । २ विजयी ।  
जीतनेवाला । ३ बड़ जानेवाला । ४  
उर्दू के एक बहुत प्रसिद्ध कवि ।

शालिबन-वि० [अ०] सम्भवतः । बहुत  
सम्भव है कि ।

शालिब\*—वि० दे० “शालिब” ।

शाली-सज्ञा स्त्री० १ दुर्वचन । निंदाजनक  
या अपशब्द । २ कलब-सूचक आरोप ।  
३ दुर्वचन सुनना ।

मुहा०—शाली खाना=अप्रमान सहना ।  
शाली सहना । शाली देना=दुर्वचन कहना ।

शाली-शालीज-सज्ञा स्त्री० दुर्वचन । आपस  
में एक दूसरे को शाली देना । तू-तू, मैं-मैं ।  
शाली गुफता-सज्ञा पु० दे० ‘शाली शालीज’ ।  
अपशब्द कहना ।

शालना, शालहना\*†—क्रि० अ० बोलना ।  
बात करना ।

शालू-वि० १ व्यर्थ डींग मारनेवाला ।  
शाल बजानेवाला । २ गप्पी । बकबादी ।  
सज्ञा पु० शाल । टट ।

शाब-सज्ञा पु० [फा०] गाय ।

शाबकुशो-सज्ञा स्त्री० [फा०] गोवध ।

शाबधूपू-सज्ञा पु० १ चापलूस । फुरलाऊ ।  
२ स्वार्थी ।

शाबजवान-सज्ञा स्त्री [फा०] फारस देश में  
होगवाली बूटी विलाय ।

शाबतकिया-सज्ञा पु० [फा०] मसनद । बड़ा  
तकिया जिसके सहारे लोग सज्ज या फरा  
पर बैठते हैं ।

शाबदो-वि० १ कुठित बुद्धि का । २  
भोला । ३ अबोध । नासमझ । जड़ ।

मूर्ख । अज्ञान । धक्कू । ४ उज्जक ।

शाबदुम-वि० [फा०] १ जो ऊपर से बैल की  
पृष्ठ की तरह पतना होता आया हो । २  
ढालुपन । चढ़ाव-उतारवाला ।

शाह-सज्ञा पु० १ ग्राहक । शाहक । २

पात । पकड़ । ३ मगर । ग्राह । घड़ि-  
याल । ४ कुम्भीर ।

वि० गहन । दुर्गम ।

शाहब-सज्ञा पु० १ चाहनेवाला । इच्छुक ।  
२ भेता । सरीदार । मोल लेनेवाला ।  
चाहनेवाला । कदर करनेवाला ।

मुहा०—जी या प्राण का शाहब=१ प्राण  
सनवाला । मार डालने की ताक म रहने-  
वाला । २ दिक करनेवाला ।

शाहकी-सज्ञा स्त्री० १ विक्री । २ शाहक ।  
गँहकी (भोजपुरी) । ३ व्यापार ।

शाहकताई\*-सज्ञा स्त्री० १ चाह । कदर-  
दानी । गुणग्राहकता । गुण या मूल्य पह-  
चानने की शक्ति । २ सरीदन की शक्ति ।  
ग्रहणशक्ति । ग्रहण करने का गुण ।

शाहन-सज्ञा पु० [वि० शाहित] १ स्नान ।  
२ गोता लगाना ।

शाहना-क्रि० स० १ चाह खना । अवगाहन  
करना । २ अनुमान लगाना । ३ मथना ।  
हलचल मचाना । विलोडना । ४ धान  
आदि के डठल को भाडना जिसमें दाना  
नीच भड़ जाय । श्रोहना । ५ ढूँढना ।  
पकड़ना ।

शाहा-सज्ञा स्त्री० १ कथा । गाथा ।  
कहानी । २ चरित्र । वृत्तांत । वर्णन ।  
३ छद्म विषय ।

शाहिगाहि-क्रि० वि० ढूँढ-ढूँढकर । खोज-  
खोजकर । टोह लगाकर ।

शाही-सज्ञा स्त्री० पाँच की सख्या गिनने का  
पाच-पाच का गान-विषय ।

शाहू-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छद्म (आर्या  
छद्म का एक भेद) ।

गिजना-क्रि० अ० गीजना । हाथ से मलकर  
खराब करना । मसलना । मीजना ।  
बिरी बिस्तु (विषय) कपड़) का उलदे-  
पुलट जान के कारण खराब हो जाना ।

गिजाई-सज्ञा स्त्री० बरसाती बौड़ा विषय ।  
गीजन का भाव ।

गिदौडा, गिदौरा-सज्ञा पु० मोटी रोटी के  
आकार में गलाकर ढाली हुई चीनी ।

गिड\*-सज्ञा पु० बूँड । गला । गरदन ।

गिचपिच-वि० १ अस्पष्ट । जो साफ या प्रम से न हो । २ भीड़भाड़ ।  
 गिचपिचिया-सज्ञा पु० १. गिचपिच करने-वाला । २ भीड़भाड़ करनेवाला ।  
 गिचिर-पिचिर-वि० दे० "गिचपिच" ।  
 गिजगिजा-वि० १ छूने में गुलगुला । २ ऐसा गीता जो खाने में अच्छा न लगे ।  
 गिजा-सज्ञा स्त्री० [अ०] साद्य वस्तु । भोजन । खुराक ।  
 गिटकारी-सज्ञा स्त्री० १ गिडगिडी । २ मिट्टी ।  
 गिटपिरी-सज्ञा स्त्री० १ आलाप लेने में विशेष प्रकार से स्वर का कांपना । २ तान लेने में स्वर को धीरे धीरे ऊँचा करना ।  
 गिटवीरी-सज्ञा स्त्री० पयरी । पत्थर की । पत्थर के टुकड़े ।  
 गिटपिट-सज्ञा स्त्री० निरर्थक शब्द ।  
 मुहा०-गिटपिट करना=टूटी-फूटी या साधारण अंगरेजी भाषा बोलना ।  
 गिटुक-सज्ञा स्त्री० चुगल । चिलम के नीचे रखने का कर ।  
 गिट्टी-सज्ञा स्त्री० १ पत्थर या बकड़ के छोटे-छोटे टुकड़े । फिरकी । २ ठीकरी ।  
 मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा । ३ चिलम की गिट्टक ।  
 गिडगिडाना-क्रि० अ० पिचियाना । विनय करना । अत्यन्त गमना से प्रार्थना करना ।  
 गिडगिडाहट-सज्ञा स्त्री० १ गिडगिडाने का भाव । २ विनय । विनती ।  
 गिद्ध-सज्ञा पु० १ गीध । बड़ा मासाहारी पक्षी-विशेष । २ छप्पय छद का एक भेद । ३ शकुनि ।  
 गिद्धराज-सज्ञा पु० गिद्धों का राजा ।  
 गिनती-सज्ञा स्त्री० १ गणना । सरया निश्चिन करना या गिनना । २ सरया । ३ गणित । हिसाब । ४ उपस्थिति की जांच । हाजिरी । ५ एक से सौ तक की क्रममाता ।  
 मुहा०-गिनती में आना या होना=बुद्ध महत्त्व का समझा जाना । गिनती गिनाने के लिए=नाममात्र के लिए । बहने-गुनने भर को । गिनती के=बहुत थोड़े ।

गिनना-क्रि० रा० गिनती करना । गणना करना । सरया निश्चिन करना ।  
 मुहा०-दिन गिनना=१. आशा में समय बिताना । २ किसी प्रकार समय काटना । ३ कुछ महत्त्व का समझना ।  
 गिनवाना-क्रि० रा० दे० "गिनाना" ।  
 गिनाना-क्रि० रा० गिनने का काम दूसरे से कराना ।  
 गिनी-सज्ञा स्त्री० दे० 'गिनी' ।  
 गिनी-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १ सोने का सिक्का विशेष । २ एक तरह की विलायती घास ।  
 गिब्बन-सज्ञा पु० बदर विशेष ।  
 गिमटी-सज्ञा स्त्री० एक तरह का बूटीदार वपड़ा ।  
 गिर-सज्ञा पु० १ पर्वत । पहाड़ । २ सन्यासियों का एक भेद ।  
 गिरई-सज्ञा स्त्री० एक तरह की मछली ।  
 गिरगिट-सज्ञा पु० छिपकली की जाति का जंतु विशेष । गिरिगान । गिर्दोना । सरट । टुकड़ा ।  
 मुहा०-गिरगिट की तरह रंग बदलना=बहुत जल्दी अपनी बात बदल देना ।  
 गिरगिरी-सज्ञा स्त्री० एक तरह का खिलौना ।  
 गिरजा-सज्ञा पु० दे० "गिरिजा" ।  
 गिरजाघर-सज्ञा पु० ईसाइयों का मन्दिर ।  
 गिरदा-सज्ञा पु० १ घेरा । २ तकिया । गड्ढा । ३ काठ की थाली । ४ ढाल ।  
 गिरदान-सज्ञा पु० गिरगिट ।  
 गिरदावर-सज्ञा पु० दे० 'गिर्दावर' ।  
 गिरवारी-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण । पहाड़ को धारण करनेवाला ।  
 गिरना-क्रि० अ० १ पतित होना । ऊँर से नीचे आना । अपने स्थान से नीचे आना । २ झडना । खड़ा न रह सरना । ३ किसी जलधारा का किसी बड़े जलाशय में जा मिलना । जैसे, गंगा समुद्र में गिरती है । ४ घुरी दशा में होना । ५ तेजी से दूट पडना । पाने के लिए लात्ताधिन होना । तेजी से आगे बढ़ना । ६ शक्ति या मूल्य आदि का भाव कम होना । ७ अपने स्थान

से हट जाना । ८ किसी रोग का शिकार होना । जैसे, फालिज गिरना । ९ सहसा उपस्थित होना । १० लड़ाई में मारा जाना ।

गिरनार-सज्ञा पु० १ काठियावाड़ में जूनागढ़ के समीप एक पर्वत । २ इस पर्वत पर जैनियों का तीर्थ-विशेष । ३ रैवतक पर्वत ।

गिर पड़ना-वि० अ० १ कूद पड़ना । २ झुक पड़ना । ३ फिसल जाना । ४ पतित होना ।

मुहा०-गिरते-पड़ते=बहुत कठिनाता से । बहुत परिश्रम से ।

गिरपत-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ पकड़ । २ पकड़ने का कार्य । ३ अपराध या अपराधी का पता लगाने की तरकीब ।

गिरपतार-वि० [फा०] १ यस्त । २ कंद किया या पकड़ा गया ।

गिरपतारी-सज्ञा स्त्री० गिरपतार होने का भाव या क्रिया ।

गिरमिट-सज्ञा पु० बड़ा बरमा । लकड़ी में छेद करने का औजार ।

गिरवर-सज्ञा पु० पहाड़ । बड़ा पहाड़ ।

गिरवान\*-सज्ञा पु० देवता ।

गिरवाना-क्रि० स० गिरान का काम दूसरे से कराना ।

गिरवी-वि० [फ०] बधक । गिरो रखा हुआ । रेहन ।

गिरवीदार-सज्ञा पु० [फा०] जिसके पास कोई वस्तु बधक रखी जाय ।

गिरह-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ ग्रथि । गाँठ । २ जेव । ३ गाँठ । ४ बलावाजी । कलैया । उलटी । ५ एक गज का सोलहवाँ भाग ।

गिरहकट-वि० [फा०] १ जब का या गाँठ में बंधा हुआ मान चुरा लनवाला । २ जेव काटनेवाला ।

गिरहबाज-सज्ञा पु० [फा०] बलावाजी करनेवाला कबूतर ।

गिरा-वि० १ महंगा । २ भारी । ३ तेज । ४ अप्रिय ।

गिरा-सज्ञा स्त्री० १ जिह्वा । जीभ । २. वाणी की शक्ति । ३ वाणी । कविता । ४. सरस्वती देवी ।

वि० गिर पड़ा । फिसल गया ।

गिराग्राम-सज्ञा पु० १ ग्राम-भाषा । गँवारू बोली । २ ऊँड़ ग्राम । नष्ट ग्राम ।

गिराना-क्रि० स० १ नीचे ढकेलना । २ पटकना । ३. छलकाना । ४ आंधाना । ५ शक्ति कम कर देना । ६ पतन करना । ७ किसी चीज को उसके स्थान से हटा या निकाल देना । ८ लड़ाई में मार डालना ।

गिरानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सहेंगी । तेजी । २ अकाल । ३ अभाव । कमी । ४ भारीपन ।

गिरापति-सज्ञा पु० ब्रह्मा ।

गिरापितु\*-सज्ञा पु० सरस्वती के पिता । ब्रह्मा ।

गिरावट-सज्ञा स्त्री० गिरने की क्रिया, भाव या टग ।

गिरिन्दा-सज्ञा पु० गिरीन्द्र । पर्वतराज । हिमालय । सुमेरु ।

गिरि-सज्ञा पु० १ अचल । पर्वत । पहाड़ । २ परिप्राजको की उपाधि विशेष । ३. एक प्रकार के सन्यासी ।

गिरिकटक-सज्ञा पु० वज्र । अग्नि ।

गिरिकद्रक-सज्ञा पु० १ महानीम । २ बहुत कड़वी ।

गिरिकदली-सज्ञा स्त्री० कदली-विशेष । पहाड़ी केला ।

गिरिज-सज्ञा पु० शिलाजीत । पर्वत से उत्पन्न धातु ।

गिरिजा-सज्ञा स्त्री० १ पार्वती । भवानी । गौरी । २ गंगा । ३ पर्वत की कन्या ।

गिरिजानन्द-सज्ञा पु० गणेश । कात्तिकेय ।

गिरिधर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण । पर्वत धारण करनेवाले ।

गिरिधारण-सज्ञा पु० दे० "गिरिधर" ।

गिरिधारी-सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण । गोवर्धन पर्वत धारण करनेवाले या उछानेवाले । २. हनुमान ।

गितकारी-मज्ञा स्त्री० [फा०] गारा लगाने या पलस्तर करने का काम ।  
 गितगितिया-सज्ञा स्त्री० मिरोही । पक्षी-विशेष ।  
 गितगिली-मज्ञा पु० घोड़े की जाति विशेष ।  
 गिलट-सज्ञा पु० [अंग्रे० गिट] १ चांदी की सफेद बहुत हल्की और कम मूल्य की धातु विशेष । २. मोना चढ़ाने का काम ।  
 गिलटी-सज्ञा स्त्री० १ ग्रन्थि । सूजन । २ फोड़ा । ३. रोग विशेष जिसमें संधि-स्थान की गाँठें सूज जाती हैं । शरीर से निकलनेवाली छोटी मोल गाँठ । शरीर के जोड़ के स्थानों में सूजन ।  
 गिलन-सज्ञा पु० [वि० गिलित] खाना । भक्षण । निगलना । लीलना ।  
 गिलना-क्रि० रा० १. निगलना । २ प्रकट न होने देना । मत ही मन में रखना ।  
 गिलबिलाना-क्रि० अ० १ अस्पष्ट उच्चारण से कुछ कहना । २ पुनफुमाना ।  
 गिलतन-सज्ञा स्त्री० १ मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना । २ नरम और चिकना ऊनी कालीन ।  
 वि० कोमल । नरम ।  
 गितमिल-सज्ञा पु० वस्त्र विशेष ।  
 गिलहरा-सज्ञा पु० १ एक तरह का धारीदार कपड़ा । दे० "वेनहरा" । २ पान का डबा ।  
 गिलहरी-सज्ञा स्त्री० गिल्ली । चूहे की तरह का मोटी रोएँदार पूँख का जंतु विशय, जो पेड़ा पर रहता है । चखुरा । चिखुरी । रूखी ।  
 गिला-मज्ञा पु० [फा०] १ निदा । गिवायत । २ उलाहना ।  
 गिलाए-सज्ञा पु० [अ०] १ रान । कपड़े की रैली जो तकिए, लिहाफ आदि के ऊपर चढ़ाई जाती है । आच्छादन । २ म्यान । ३ बड़ी रजाई । लिहाफ ।  
 गिलायाँ-सज्ञा पु० गारा । गोली मिट्टी जिससे ईंट-पत्थर जोड़ते हैं ।  
 गिलियर-वि० आचरी । क्षिपिल । ढीला ।  
 गिलास-सज्ञा पु० १ पानी पीने का बरतन-विशेष । २ शीतली का वृक्ष ।

गिलिम—सज्ञा स्त्री० दे० 'गिलम' ।  
 गिली—सज्ञा स्त्री० दे० 'गुल्ली' ।  
 गिलोय—सज्ञा स्त्री० [फा०] गुडुच । गुडूची ।  
 अमृतलता ।  
 गिलोला—सज्ञा पु० गुलेल से फका जानेवाला  
 मिट्टी का छोटा गिला ।  
 गिलोरी—सज्ञा स्त्री० १ पानो का बीड़ा ।  
 २ पानदान ।  
 गिलोरीदान—सज्ञा पु० पानदान । पान रखने  
 का डिब्बा ।  
 गिल्टी—सज्ञा स्त्री० दे० 'गिलटी' ।  
 गिल्ली—सज्ञा स्त्री० १ मक्ई की टुड्डी ।  
 २ गिलहरी । ३ गुल्ली ।  
 गोजना—क्रि० स० १ मलना । गन्दा करना ।  
 मसलना । २ किसी कामल पदार्थ, विश  
 पत कपड़ आदि को मलकर खराब करना ।  
 गीब—सज्ञा स्त्री० गर्दन ।  
 गी—सज्ञा स्त्री० १ सरस्वती देवी । २  
 चाणी । खोलने की शक्ति ।  
 गीउ—सज्ञा स्त्री० दे० 'गीव' ।  
 गीउ, गीउर—सज्ञा पु० आँख का कीचड़  
 या मैल ।  
 गीत—सज्ञा पु० १ गाने की चीज । गाना ।  
 गान । जा गाया जाय । गाने योग्य ।  
 २ यश । बड़ाई । कीर्ति ।  
 मुहा०—गीत गाना=प्रशंसा करना । बड़ाई  
 करना । अपना ही गीत गाना=अपनी  
 ही बात कहना, दूसरे की न सुनना ।  
 गीतवादन—सज्ञा पु० गान-कीर्तन । गाना  
 बजाना ।  
 गीतमोक्षी—सज्ञा पु० किन्नर । स्वर्गगायक ।  
 गीरा—सज्ञा स्त्री० १ भगवद्गीता । २ ज्ञानमय  
 उपदेश । ३ २६ माना का छंद विशाप । ४  
 वर्णन । वृत्तांत । कथा । हाल । ५ गान ।  
 गीति—सज्ञा स्त्री० १ गीत । गान । २  
 आर्या छंद का एक भेद ।  
 गीतिका—सज्ञा स्त्री० १ गाना । गीत । २  
 एक भागिन छंद ।  
 गीतिरूपक—सज्ञा पु० रूपक विधाप जिमम  
 गद्य कम और पद्य अधिक होता है ।  
 गीदड—सज्ञा पु० शृगाल । गिपार । जम्बूक ।

गी०—गीदड-भभकी=मन में डरते हुए  
 ऊपर से दिखावटी क्रोध प्रकट करना ।  
 वि० कायर । डरपोक । बुजदिल ।  
 गीदी—वि० भीर । डरपोक । कायर ।  
 गीध—सज्ञा पु० दे० 'गिद्ध' ।  
 गीधना+\*—क्रि० अ० परचना । एक बार कोई  
 लाभ उठाकर फिर उसकी लालच करना ।  
 गीर—सज्ञा स्त्री० वाणी ।  
 सज्ञा पु० सन्यासियों का एक वर्ग ।  
 गीर्द्धी—सज्ञा स्त्री० सरस्वती । शारदा ।  
 वाग्देवी ।  
 गीर्धति—सज्ञा पु० १ विद्वान् । २ बृहस्पति ।  
 गीर्धान—सज्ञा पु० गुर । अमर । देवता ।  
 गीर्धान कुसुम—सज्ञा पु० मन्दार-पुष्प । लवंग  
 पुष्प ।  
 गीर्धानी—सज्ञा स्त्री० संस्कृत भाषा ।  
 गीला—वि० [स्त्री० गीली] आर्द्र । ओढ़ा ।  
 भीगा हुआ । तर । नम ।  
 गीलापन—सज्ञा पु० नमी । तरी । गीला  
 होने का भाव ।  
 गीव—सज्ञा स्त्री० गर्दन । दे० 'गीवा' ।  
 गीष्पति—सज्ञा पु० १ देवों के गुरु । देव-गुरु ।  
 बृहस्पति । २ पंडित । विद्वान् ।  
 गुंग्राना—क्रि० अ० १ धुँगा देना । २  
 अच्छी तरह न जलना । ३ गूँ गूँ शब्द  
 करना । गूँगे की तरह खोलना ।  
 गुँचा—सज्ञा पु० [अ०] १ कली । २ आमोद-  
 प्रमोद । जहन । नाच-रग ।  
 गुज—सज्ञा स्त्री० १ गुजार । भौरो के  
 भनभनाने का शब्द । २ आनदध्वनि ।  
 कलरव । ३ धुँधची । फूलों का गुच्छा ।  
 गुजन—सज्ञा स्त्री० भनभनाहट । भौरो का  
 गूँजना । कोमल मधुर ध्वनि । गुन गुन  
 करना ।  
 गुजना—क्रि० अ० १ भीरा का भनभनाना ।  
 २ गुनगुनाना ।  
 गुजनिर्गतन—सज्ञा पु० मधुकर । भीरा ।  
 गुजरना—क्रि० अ० १ भीरा का गूँजना ।  
 गुजार करना । भनभनाना । २ शब्द  
 करना । ३ गरजना ।  
 गुजा—सज्ञा स्त्री० १ धुँधची नाम की लता-

विशेष । २. साल रस्ती । ३. परिमाण-  
विशेष । फूलों का गुच्छा ।

गुंजाइश-सज्ञा स्त्री० [पा०] १. समाने भर का  
स्थान । घँटने की जगह । २. समाई ।

३. सुविधा ।

गुंजाल-वि० १. सपन । घना । २. गाढ़ा ।  
३. मोटा ।

गुंजायमान-वि० गुंजता या गुजारता हुआ ।  
गुजरित ।

गुंजार-सज्ञा पु० १. मनभनाहट । २. भीरो  
की गुंज ।

गुंजित-वि० जिसमें गुजार हो । भीरो आदि  
के गुंजन से युक्त ।

गुंभा-सज्ञा पु० १. बटीली घास । २. गोभा ।  
गुदा ।

वि० १. गुप्त । छिपा हुआ । २. ढीला ।  
निश्चित ।

गुंठा-सज्ञा पु० टांगना । नाटे कद का घोड़ा-  
विशेष ।

†वि० [दिश०] बीना । नाटा ।

गुंई†-सज्ञा स्त्री० बदमाशी । गुडापन ।  
गुडागीरी ।

गुंइली-सज्ञा स्त्री० कुइली । गेंडुरी । पेटा ।  
गुडा-वि० १. बदचलन । लम्पट । दुष्ट ।

निलज्ज । दुराचारी । २. बदमाश ।

गुडापन-सज्ञा पु० गुडागीरी । बदमाशी ।

गुयना-वि० अ० १. उलझना । उलझकर  
पेंपना । २. बाल की लटों आदि को

लटों के रूप में बांधना । ३. नत्थी होना ।  
मोटे तौर पर सिलना ।

गुंदला-सज्ञा पु० नागरमोथा ।

गुंपना-क्रि० अ० १. माडा जाना ।  
२. सानना ।

†वि० अ० दे० "गुंघना ।"

गुंघयाना-क्रि० स० गुंघने का काम दूसरे से  
करवाना ।

गुंघाई-सज्ञा स्त्री० गुंघने की क्रिया या  
मजदूरी ।

गुंघावट-सज्ञा स्त्री० गुंघने या गुंघने का ढग ।

गुफ-सज्ञा पु० [वि० गुफित] १. गुच्छा ।  
२. दाढ़ी । ३. गलमुच्छा । ४. गुंथना ।

गांधना । माया गुंथना । ५. न्द्रियों के  
हाथ का एष प्रलवार ।

गुंफन-सज्ञा पु० [वि० गुफित] गुंथना ।  
उलभाव । फभाव । एक दूसरे में गुंथा

हुआ । गांधना । एक दूसरे को नत्थी  
करना ।

गुंज-सज्ञा पु० केंची और गोल छत ।

गुंजदार-वि० जिसके ऊपर गुंज हो ।  
गुंज-सज्ञा पु० दे० "गुंज" ।

गुवा-सज्ञा पु० मिर पर चोट लगने में गोल  
मूजन । गुलमा ।

गुंभी\*-सज्ञा स्त्री० गाभ । अकूर ।

गु-सज्ञा पु० मल । विष्टा ।

गुभ्रा-सज्ञा पु० १. मुपारी । २. चिननी  
मुपारी ।

गुभ्रातिन-सज्ञा स्त्री० ग्वातिन । ग्वाला की  
स्त्री ।

गुदयो-सज्ञा पु० साथी । सपा ।

सज्ञा स्त्री० सहचरी । सली ।

गुखरू-सज्ञा पु० गोखरू । गुरखुल ।

गुगुलिया-सज्ञा पु० मदारी ।

गुगुर या गुगुल-सज्ञा पु० १. गुगल ।

कांटेदार वृक्ष विशेष जिसका गोद सुगंध  
के लिए जलाते और दवा के काम में लाते

हैं । २. गोंद-विशेष । ३. सलई का  
वृक्ष जिससे राल या घूप निकलती है ।

गुच्चो-सज्ञा स्त्री० गोली या गुल्ली-डंडा  
खेलने के लिए बनाया गया छोटा

गड्ढा ।

वि० स्त्री० नन्ही । बहुत छोटी ।

गुच्चोपारा, गुच्चोपाला-सज्ञा पु० छोटा सा  
गड्ढा बनाकर कौड़ी या गोली आदि से

खेलने का एक खेल ।

गुच्छ, गुच्छक-सज्ञा पु० १. गुच्छा । फूलों का  
समूह । २. झाड़ । ३. मोर की पूंछ । भन्वा ।

एक तरह का हार । पतली टहनियोंवाला  
पीपा विशेष ।

गुच्छा-सज्ञा पु० १. गुच्छा । फूलों का  
समूह । २. भन्वा । फुंदना । ३. एक

में लगी या बँधी छोटी वस्तुओं का समूह ।  
जैसे कुनियों का गुच्छा ।

गुच्छी-सज्ञा स्त्री० १ वजा। वरज। २ तरकारी विशेष। ३ रीठा।

गुच्छेदार-वि० भव्येदार। गुच्छायुक्त। जिसमें गुच्छा हो।

गुजर-सज्ञा पु० [फा०] १ निवास। २ निर्वाह। जीवन व्यतीत करना। समय काटना।

गुजरना-क्रि० प्र० [फा०] १ बीतना। समय व्यतीत होना। २ किसी स्थान से होकर जाना या आना। ३ निर्वाह होना। निभना।

मुहा०-किसी पर गुजरना=किसी पर विपत्ति पडना। गुजर जाना=मर जाना।

गुजर-बसर-सज्ञा पु० [फा०] निर्वाह।

गुजरात-सज्ञा पु० [पि० गुजराती] दक्षिण-पश्चिम स्थित भारत का एक प्रदेश।

गुजराती-वि० १ गुजरात देश में उत्पन्न। गुजरात का रहनेवाला। २ गुजरात का। गुजरात-सम्बन्धी। ३ एक रोग का नाम। सज्ञा स्त्री० १ गुजरात देश की भाषा। २ छोटी इलायची।

गुजरान-सज्ञा पु० दे० "गुजर"।

गुजराना‡\* -क्रि० स० दे० "गुजारना"।

गुजरिया-सज्ञा स्त्री० गोपी। गुजर जाति की स्त्री। ग्वालिन।

गुजरी-सज्ञा स्त्री० १ बलाई में पहनने का एक गहना। २ दे० "गूजरी"।

गुजरेटी-सज्ञा स्त्री० १ गूजरी। ग्वालिन। २ गुजर जाति की कन्या।

गुजस्ता-वि० [फा०] व्यतीत। बीता हुआ। गत।

गुजारना-क्रि० स० १ व्यतीत करना। काटना। बिताना। २ पहुँचाना। ३ पेश करना।

गुजार-सज्ञा पु० [फा०] १ निर्वाह। २ निर्वाह के लिए दी जागवाली वृत्ति। ३ कर लेने की जगह।

गुजारिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. निवेदन। २ प्रार्थना।

गुजिया-सज्ञा स्त्री० कर्णपूल। कान का एक गहना।

गुजरी-सज्ञा स्त्री० १. रागिनी-विशेष। २ गुजरी।

गुमरीट\*†-सज्ञा पु० १ स्त्रियों की नाभि के आसपास का भाग। २ कपड़े की सिकुड़न। सिलवट। शिक्कन।

गुम्हिया-सज्ञा स्त्री० १ पिराक। २ एक तरह की मिठाई। एक पकवान।

गुम्हीड†\*-सज्ञा पु० दे० "गुमरीट"।

गुटकना-क्रि० प्र० कबूतर की तरह गुटरगू करना।

†क्रि० स० खा जाना। निगलना।

गुटका-सज्ञा पु० १ दे० "गुटिका"।

२ छोटी पुस्तक। ३ औषध विशेष।

४ गुप्पुप मिठाई। ५ कट्टू।

गुटरगू-सज्ञा स्त्री० कबूतरों की बोली।

गुटिका-सज्ञा स्त्री० १ छोटी गोल वस्तु। गोली। बटिका। औषध की गोली।

२ एक तरह का द्वार। ३. छोटी फुन्तियाँ।

गुट्ट-सज्ञा पु० मडली। झुंड। समूह। दल।

गुठल-वि० १ बड़ी गुठलीवाला। ‡२. मूर्ख। जड़। ३ गुठली के समान।

सज्ञा पु० १ गुलथी। २ गिलटी।

गुठ्ठी-सज्ञा स्त्री० मोटी गाँठ।

गुठलाना-क्रि० प्र० १ फलों में गुठली होना। २ दाँत का खट्टा होना।

गुठली-सज्ञा स्त्री० १ किसी फल का कड़ा बीज। २ आम का बीज (आम की गुठली)।

गुडवा-सज्ञा पु० आम और गुड से बनी हुई खाने की चीज।

गुड-सज्ञा पु० पकाकर जमाया हुआ ऊख का रस, जो बट्टी या भेली के रूप में होता है।

मुहा०-कुहिया म गुड पटना=गुप्त रीति से कोई काम या सलाह होना।

गुडगुड-सज्ञा पु० जल में नली आदि के द्वारा हवा फूँकने से उत्पन्न शब्द। जैसे हुक्के में।

गुडगुडाना-क्रि० प्र० गुडगुड शब्द होना या करना।

क्रि० स० [अनु०] हुक्का पीना।

गुडगुडाहट-सज्ञा स्त्री० गुडगुड शब्द होने का भाव।

गुणगुड़ी-गंगा स्त्री० एव तरह का गुणगुड़ी ।  
पचवाना । परसी ।

गुणध-गंगा स्त्री० गुणध ।

गुणधनिया-गंगा स्त्री० भुने हुए गेहूँ और  
गुड़ के सड़क ।

गुणधानी-गंगा स्त्री० भुने हुए गेहूँ और  
गुड़ के सड़क । दे० "गुणधनिया ।"

गुणध-गंगा पु० पक्षी-विशेष । गहरी ।

गुणधर-गंगा पु० अट्टन का पेड़ या फूल ।

गुणधर-गंगा पु० दे० "गुणधर" ।

गुणध-गंगा पु० गुड़ मिला हुआ पीने का  
सम्पाक ।

गुणधेन-गंगा पु० १ शकर । शिव । महा-  
देव । २ अश्व ।

गुणधाना-त्रि० स० सुदवाना ।

गुणधिया-गंगा स्त्री० कपड़े की बनी हुई  
पुतली या बिलोना जिससे लड़कियाँ  
खेलती हैं ।

गुण०-गुणधिया का खेन=मरल वार्य ।

गुण०-गंगा स्त्री० १ गुहरी । चग । पाग ।  
वनकौवा । २ गाँठ । देव । ३ गुणधिया ।

गुण०-गंगा पु० १ गुहवा । २ कपड़े  
का बना हुआ पुतला ।

गुण०-गुण० बाँधना=निवा करना ।  
बदनाम करना । बही पना ।

गुण०-गंगा स्त्री० १ चग । पतंग । वनकौवा ।  
२ घुटने की हड्डी । ३ छाटा हुक्का ।

गुण०-गंगा स्त्री० गिलोप । गुणव ।  
श्रीपथ विशेष ।

गुण०-त्रि० अ० छिपना । गुण अर्थ सम-  
झना । जैसे पढ़ना-गुणना ।

गुण०-गंगा पु० १ गुण स्थान । छिपने की  
जगह । २ मवास ।

गुण-गंगा पु० [वि० गुणी] १ धर्म ।  
२ प्रकृति के तीन भाव—सत्त्व, रज,

और तम । ३ प्रवीणता । निपुणता ।  
४ असर । प्रभाव । ५ काई कला या

विद्या । हुनर । ६ राजनीति के अनुसार  
दूसरे राष्ट्रा से व्यवहार की ६ रीतियाँ ।

यथा-सन्धि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध  
और आश्रय । ७ विशेषण । ८ सद्विद्या ।

६. श्रुत, शृण, रत्न, पीत आदि ।

१०. सोल, सद्बुति । अच्छा स्वभाव ।

११. पत्र । १२ तीन की सम्पा ।

१३ प्रकृति । १४ व्याकरण में 'ध',  
'ए' और 'ओ' । १५ रस्मी या तागा ।

गुण । टीका । १६. धनुष की प्रत्यक्षा ।

प्रत्य० प्रत्यय विशेष जो गन्धावाचक शब्दों  
के आगे लगकर उतनी ही बार और हुना

सूचित करना है । जैसे द्विगुण, पतुगुण ।

गुण०-गुण गाना=प्रशंसा करना । तारीफ

करना । गुण मानना=एहसान मानना ।

श्रुत होना ।

गुण०-गंगा पु० किसी अन्न से गुणा करने  
का अन्न ।

गुण०-गंगा पु० स्तुति । प्रशंसा करना ।  
यशोगान ।

गुण०-वि० लाभदायक ।

गुण०-वि० लाभ पहुँचानेवाला । लाभ-  
दायक । फायदा करनेवाला ।

गुण०-वि० लाभदायक । फायदा पहुँचाने-  
वाला ।

गुण०-गंगा पु० स्तुति । प्रशंसा ।

गुण०-गंगा स्त्री० १ सोहागिन स्त्री ।

२ पतिव्रता स्त्री । ३ स्त्रिया का व्रत-  
विशेष ।

गुण०-गंगा पु० जिसमें बहुत से गुण हों ।

गुणों का समूह । गुणागार ।

गुण०-गंगा पु० गुणी व्यक्तियों का  
आदर करनेवाला । बदरदान ।

गुण०-वि० दे० "गुणग्राहक" ।

गुण०-वि० १ गुण का पारखी । गुण  
पहचाननेवाला । २ गुणी । निपुण ।

पंडित ।

गुण०-वि० सारग्राही । गुण का पारखी ।

गुण०-वि० शिक्षक । गुरु ।

गुण०-गंगा पु० १ उत्तम पदार्थ । २ सार-  
पदार्थ ।

गुण०-गंगा पु० [वि० गुण्य, गुणीय, गुणित]

१ गुणा करना । २ अगवृद्धि करना ।

३ रटना । उद्धरणी करना । ४ मनन

करना । ५ सोचना । विचारना । ६

गिनना । तलमीना करना । ७. गुण का बहुवचन ।  
 गुणनफल—संज्ञा पुं० वह संख्या या अंक जो एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से आवे । गुणनफल ।  
 गुणना—क्रि० सं० गुणा करना ।  
 गुणनिधि—वि० गुणों का समुद्र या सजना ।  
 गुणवन्त—वि० [स्त्री० गुणवन्ती] दे० "गुणवान्" ।  
 गुणी । प्रवीण ।  
 गुणवाचक—वि० जो गुण प्रकट करे । विशेष-पण-विशेष ।  
 धी० गुणवाचक संज्ञा—व्याकरण में वह संज्ञा जिससे गुण सूचित हो ।  
 गुणवान्—वि० [स्त्री० गुणवती] १. निपुण । २. विद्वान् । गुणवाला । गुणी ।  
 गुणांक—संज्ञा पुं० गुणा करने का अंक ।  
 गुणा—संज्ञा पुं० गणित की एक क्रिया । जरब देना ।  
 गुणाकर—संज्ञा पुं० जिसमें बहुत से गुण हों । गुणों का समुद्र । गुणनिधि ।  
 गुणगुण—संज्ञा पुं० गुण-दोष । भला-बुरा ।  
 गुणाढ्य—वि० १. गुणी । गुणपूर्ण । २. सस्कृत का एक कवि ।  
 गुणातीत—वि० १. निर्गुण । २. परब्रह्म । गुणों से परे ।  
 गुणानुवाद—संज्ञा पुं० प्रशंसा । बड़ाई । गुण-कथन ।  
 गुणित—वि० १. पूरित । २. गुणा किया हुआ ।  
 गुणिता—संज्ञा स्त्री० गुणयुक्त । गुणी ।  
 गुणी—वि० गुणशील । पंडित । निपुण ।  
 गुणवाला । जिसमें कोई गुण हो ।  
 संज्ञा पुं० १. कला-कुशल पुरूप, कलानिपुण । हुनरवाला । २. भाड-फूक करनेवाला । शोभा ।  
 गुणीकृत—वि० १. गुणा किया हुआ । २. पूरित ।  
 गुणीभूत—वि० भ्रमप्रधान ।  
 गुणीभूत व्यंग्य—संज्ञा पुं० काव्य में वह व्यंग्य जो प्रधान न हो ।  
 गुणेश्वर—संज्ञा पुं० १. परमेश्वर । २. चित्रकूट पर्वत ।

गुणोत्कर्ष—संज्ञा पुं० १. गुण की प्रधानता । २. गुण की सुन्दरता । ३. गुणव्याख्या ।  
 गुणोत्कीर्तन—संज्ञा पुं० गुणगान । स्तुति । यशोगान ।  
 गुणीध—संज्ञा पुं० गुणसमूह ।  
 गुण्य—संज्ञा पुं० गुणा किया जानेवाला अंक ।  
 गुत्यमगुत्या—संज्ञा पुं० १. भिड़ंत । हाथा-पाई । २. लड़ाई । उलझाव ।  
 गुत्यो—संज्ञा स्त्री० गिरह । उलझन । गाँठ ।  
 गुथना—क्रि० अ० १. गाँया जाना । एक लड़ी या गुच्छे में गाँयना । २. एक का दूसरे के साथ लड़ने के लिए लिपट जाना । ३. भेदी सिलाई होना । टांका लगना ।  
 गुथवाना—क्रि० सं० [गुथना का प्रे०] गुथने का कार्य दूसरे से कराना ।  
 गुथवाई—वि० जो गुंथकर बनाया गया हो ।  
 गुदकार, गुदकारा—वि० १. जिसमें गुदा हो । गुदेदार । २. गुदगुदा । ३. मोटा ।  
 गुदगुदा—वि० १. मूलायम । २. गुदेदार । ३. कोमल । ४. पुष्ट । ५. मोटा ।  
 गुदगुदना—क्रि० अ० १. हँसाने के लिए सहलाना । २. किसी में उत्पत्ता उत्पन्न करना । ३. चुलबुलाना । विनोद या मन-बहलाव के लिए छेड़ना ।  
 गुदगुदी—संज्ञा स्त्री० १. चुलबुली । शरीर के किसी अंग आदि के छूने पर सुरसुराहट । २. उल्लास । उमंग । ३. उत्कठा । शीक ।  
 गुदड़ी—संज्ञा स्त्री० कथरी । फटे-पुराने कपड़े । कथा ।  
 गुहा—गुदड़ी में लाल=निम्न या तुच्छ वस्तुओं में उत्तम ।  
 गुदड़ी बाजार—संज्ञा पुं० [फा०] फटे पुराने कपड़े या टूटी-फूटी चीजें विकने का बाजार ।  
 गुदना—संज्ञा पुं० दे० "गोदना" ।  
 क्रि० अ० धंसना । चुभना ।  
 गुदधंस—संज्ञा पुं० काँच निकलने का रोग-विशेष ।  
 गुदरना—क्रि० अ० जानना । कटना । धीतना । गुजरना ।

त्रि० स० निवेदा करना। पदा करना।  
 गुदरानना\*†-त्रि० स० १ सामने रखना।  
 पदा करना। २ निवेदा करना।  
 गुदरिया-सज्ञा स्त्री० दे० 'गुदडी'।  
 राजा पु० एष तरह का नीबू।  
 गुदरी-सज्ञा स्त्री० दे० 'गुदडी'।  
 गुदरन\*†-सज्ञा स्त्री० १ पड़ा हुआ पाठ  
 सहो-सहो सुनाना। २ परीक्षा। इम्तहान।  
 गुदाकुर-सज्ञा पु० बवासीर। गुदा से खून  
 निकलने की बीमारी।  
 गुदा-सज्ञा स्त्री० मलद्वार।  
 गुदाना-त्रि० स० गुदवाना। गोदने का नाम  
 दूसरे से कराना।  
 गुदाम-सज्ञा पु० गोला। वस्तुओं का भण्डार।  
 जहाँ बहुत सी वस्तुएँ रखी जायें।  
 गुदार†-वि० जिसमें गुदा हो। गुदेदार।  
 गुदारा\*†-सज्ञा पु० १ उतारा। २ दे०  
 "गुजारा"। ३ नदी पार करनेवाली नौका।  
 खेया नाव। ४ पट्टा।  
 गुदा-सज्ञा पु० १ अन्तःसार। २ सारभाग।  
 ३ गुदा। ४ पद की मोटी छाल।  
 गुदी†-सज्ञा पु० १ फल के बीच का गुदा।  
 मज। २ सिर का पिछला भाग। ३  
 ग्रीवा। ४ हथेली का मांस। ५ नाव  
 बनाने का स्थान।  
 गुन†-सज्ञा पु० दे० १ "गुण"। २  
 स्वभाव। विशेषण। ३ फल। ४ कला।  
 ५ रस्सी।  
 गुनगुना-वि० दे० 'कुनकुना'। थोड़ा गरम।  
 गुनगाहक-वि० गुणग्राहक। गुण का आदर  
 करनेवाला।  
 गुनगुनाना-क्रि० अ० १ गुनगुन शब्द करना।  
 २ अस्पष्ट स्वर में गाना। ३ नाव में  
 बोलना।  
 गुनद-वि० गुणदायक। लाभकर।  
 गुनता-क्रि० स० १ गुणा करना। २  
 रटना। उद्धरणी करना। ३ गिनना।  
 ४ सोचना। विचारना। चिन्तन करना।  
 गुनहगार-वि० १ अपराधी। २ दोषी।  
 ३ पापी।  
 गुनही†-सज्ञा पु० दे० "गुनहगार"।

गुना-सज्ञा पु० १ दे० गुणा (गणित)।  
 २ प्रत्यय विशेष जा जिसी सन्ध्या में लगकर  
 विगी वस्तु का उतनी ही बार और होना  
 बालाता है। जैसे—पाँचगुना।  
 गुनानि-सज्ञा स्त्री० मानसिक कल्पना।  
 अभिलाषा।  
 गुनाह-सज्ञा पु० [फा०] १ अपराध। दाय।  
 २ पाप। ३ चुरा या अनुचित नाम।  
 गुनिया†-सज्ञा पु० गुणवाला। गुणवान्।  
 गुनी-वि० सज्ञा पु० दे० "गुणी"।  
 गुनाही-सज्ञा पु० दे० "गुनहगार"।  
 गुप-वि० १ दे० "गुप्त"। २ मूर्च्छावस्था।  
 ३ निविष्ट। ४ धन्यवार। ५ गुप्त।  
 छिपा हुआ। ६ रक्षा करनेवाला।  
 गुपचुप-त्रि० वि० छिपाकर। चुपचाप।  
 सज्ञा पु० भिठाई विशेष।  
 गुपाल-सज्ञा पु० दे० "गापाल"।  
 गुप्त\*-वि० दे० "गुप्त"।  
 गुप्त-वि० १ गुड़। जिसके जानने में  
 कठिनाई हो। २ छिपा हुआ, पोसीदा।  
 ३ कृतरक्षण। रक्षित।  
 सज्ञा पु० १ वैद्यों की एक पदवी। २  
 प्राचीन राजवंश।  
 गुप्तपति-सज्ञा पु० चर। दूत। नाताहारी।  
 दूत। सन्देशी।  
 गुप्तचर-सज्ञा पु० भेदिया। चुपचाप भेद  
 लेनेवाला दूत। जासूस। खुफिया।  
 गुप्तदान-सज्ञा पु० छिपाकर दिया हुआ दान।  
 बहु दान जो प्रकट न हो।  
 गुप्तवेश-सज्ञा पु० छली। कपटी।  
 गुप्ताग-सज्ञा पु० शरीर के गुप्त अंग।  
 गुप्ता-सज्ञा स्त्री० १ प्रेम छिपाने का  
 उद्योग करनेवाली नायिका। २ रखली।  
 गुप्तार-सज्ञा पु० छिपना। लुक्ना। लुकाव।  
 गुप्ति-सज्ञा स्त्री० १ छिपाने की क्रिया।  
 २ बचाव। ३ रक्षा करने की क्रिया या  
 साधन। ४ जल। कारागार। मंदिराना।  
 ५ सतह में छेद करना। ६ ग्रहिला आदि  
 याग के अंग। ७ गुफा।  
 गुप्ती-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छड़ी जिसमें  
 छोटी तलवार छिपी रहती है।

गुप्तोत्प्रेक्षा-सज्ञा स्त्री० उत्प्रेक्षा अलरार या एव भेद ।  
 गुफना-सज्ञा पु० घुमाकर पत्थर फेंकने की एक प्रकार की गुलल । गोफन ।  
 गुफा-सज्ञा स्त्री० गुहा । बदरा । खोह । विल । गह्वर । जमोन या पहाड़ के अन्दर गहरा भाड़डा ।  
 गुफ्तगू-सज्ञा स्त्री० [फा०] बातचीत ।  
 गुवरला-सज्ञा पु० छटा कीड़ा विशेष ।  
 गुवार-सज्ञा पु० [अ०] १ धूल । गर्द । २ मन म दबाया हुआ क्रोध या द्वेष आदि ।  
 गुब्बारा-सज्ञा पु० धैली जिसमें गरम हवा या हलकी गैस भरकर आकाश में उड़ाने हैं । हवा भरकर आकाश में उड़ाने का वागज का धैला ।  
 गुम-सज्ञा पु० १ छिपा हुआ । गुप्त । २ खोया हुआ ।  
 गुमटा-सज्ञा पु० १ गुलमी । सिर पर चोट लगने से गोल सृजन । गुमडा । २ बड़ा फोडा । ३ कपास को नष्ट करनेवाला एक कीड़ा ।  
 गुमटी-सज्ञा स्त्री० १ मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरा आदि की सबसे ऊपर उठी हुई छत । २ गुम्मत । ३ लाट । ४ कलस । ५ शिखर । ६ छोटी कोठरी । ७ वस्त्र विशाप ।  
 गुमडी-सज्ञा स्त्री० छोटी फुडिया ।  
 गुमना+ -कि० अ० ग यव होना । गुम होना । खो जाना ।  
 गुमनाम-वि० [फा०] १ अज्ञात । २ अप्रसिद्ध । ३ जिसमें नाम न दिया हो ।  
 गुमर-सज्ञा पु० १ गर्व । अभिमान । घमड । शैली । २ गुवार । मन म छिपाया हुआ क्रोध या द्वेष आदि । ३ कानाफूसी । धीरे धीरे की बातचीत ।  
 गुमराह-वि० [फा०] बुरे रास्ते पर चलनेवाला । कुमार्गी । दुराचारी । भूला भटकता । नास्तिक ।  
 गुमराही-सज्ञा स्त्री० [फा०] दुरा रास्ता । कुमार्ग । कुपथ । नास्तिकता । भूल । भ्रम ।  
 गुमसना-कि० अ० पानी बरसाने से पहले या

बाद में बहुत गर्मी पड़ना । ऊमस । दुर्गन्ध होना । सडना ।  
 गुमसा-वि० सडा गया ।  
 गुमान-सज्ञा पु० घमड । अह्वार । अनुमान ।  
 गुमाना+ -कि० स० दे० "गैवाना" ।  
 गुमानो-वि० घमडी । अभिमानी । संस्कृत और हिन्दी के एक कवि जो कुमार्ग प्रदेश के रहनेवाले थे । गम्हर करनेवाला ।  
 गुमास्ता-सज्ञा पु० [फा०] कारिदा । कारकुन । एजेंट । बड़े व्यापारी की ओर से शरीदने और वचने पर नियुक्त मनुष्य ।  
 गुम्मत-सज्ञा पु० गुबद । दे० "गुमटा" ।  
 गुम्मा-वि० न बोलनेवाला । चुप्पा ।  
 सज्ञा स्त्री० बड़ी ईंट ।  
 गुर-सज्ञा पु० १ मूलमन्त्र । भेद । युक्ति । वह साधन या क्रिया जिससे बरते ही कोई काम तुरत हा जाय । २ तीग की समस्या ।  
 +सज्ञा पु० दे० "गुरु" ।  
 गुरगा-सज्ञा पु० [स्त्री० गुरगी] १ चेना । शिष्य । अनुचर । २ नौकर । टहलुआ । ३ भदिया । गुप्तचर । जासूस ।  
 गुरगाबो-सज्ञा पु० मुडा जूता । बिना फीतेवाला रलापर ।  
 गुरच-सज्ञा स्त्री० गिलोय । गुडची ।  
 गुरचा+ -सज्ञा स्त्री० बट । बल । सिकुहन ।  
 गुरबो-सज्ञा स्त्री० [अनु०] कानाफूसी । परस्पर धीरे धीरे बातें करना ।  
 गुरजना-कि० अ० छुड़कना । गर्जन करना ।  
 गुरदा-सज्ञा पु० १ मूर्तपिंड । कमर और पाठ के बीच का अंग । २ साहस । हिम्मत । ३ छोटी टोपी विशाप ।  
 गुरनुल-वि० गुरु से मन्त्र लेनेवाला । दीक्षित ।  
 गुरम्मार+ -सज्ञा पु० मीठे आम का वृक्ष ।  
 गुरबी-वि० घमडी । भारी ।  
 गुराई-सज्ञा स्त्री० दे० "गोरापन" ।  
 गुराव-सज्ञा पु० गँडासा ।  
 गुरिब+ -सज्ञा पु० गदा ।  
 गुरिय-सज्ञा स्त्री० १ मनिया । २ माला के दाने । ३ चोकार या गोल बटा हुआ छाटा टुकड़ा । ४ मांस की बोटी ।  
 गुरु-वि० १ महान् । २ बडा । ३ भारी ।

४ वजनी । गठिनाई से पाने या पचने-  
वाला । गरिष्ठ (गाद्य) । ५ महत्त्वपूर्ण ।  
६ गठिन । ७ आदरणीय । ८ सर्वो-  
त्तम । ९ प्यारा । १०. घमडी यवता ।  
११ अपने से बड़ा । आदर-योग्य व्यक्ति ।  
१२ धर्मशिक्षक ।  
सज्ञा पु० [स्त्री० गुरुभ्राणी] १ बृहस्पति  
नामक ग्रह । २ देवताओं के आचार्य,  
बृहस्पति । ३ आचार्य । यज्ञोपवीत-संस्कार  
में गायत्री मंत्र का उपदेष्टा । ४ पुष्य  
नक्षत्र । ५ शिक्षक । ६ किसी मंत्र का  
उपदेष्टा । ७ दो मात्राओंवाला अक्षर  
(पिगल) । ८ विष्णु । ९ ब्रह्मा । १०  
शिव । ११ पुरोहित । १२ अन्नदाता ।  
१३ सरक्षक ।

गुरुभ्राइन, गुरुभ्राणी-सज्ञा स्त्री० १ शिक्षिका ।  
शिक्षा देनेवाली स्त्री । २ गुरु की स्त्री ।  
गुरुभ्राई-सज्ञा स्त्री० १ गुरु का कार्य ।  
२ गुरु का धर्म । ३ धूर्तता । चलाकी ।  
गुरुकार्य-सज्ञा पु० १ आवश्यक कार्य । २  
कठिन कार्य । फलदायक कार्य ।  
गुरुकुल-सज्ञा पु० गुरु आचार्य या शिक्षक  
के रहने की जगह, जहाँ वह विद्यार्थियों  
का अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो ।  
गुरुच-सज्ञा स्त्री० गिलोय । दवा के काम  
में आनवाली एक मोटी बेल विशेष ।  
ग्रीवध विशेष ।  
गुरुजन-सज्ञा पु० माननीय । बड़े लोग ।  
माता पिता, आचार्य आदि ।  
गुरुतर-वि० १ बहुत बड़ा । बहुत भारी ।  
२ माननीय ।  
गुरुतरुग-वि० १ सीतेली माँ के साथ  
सबध करनेवाला । २ गुरु की स्त्री  
हरनवाला ।  
गुरुतल्पव्रत-सज्ञा पु० गुरुपत्नीहरण का  
प्रायश्चित्त ।  
गुरुता-सज्ञा स्त्री० भारीपन । भार । गुरुत्व ।  
बड़प्पन । महत्त्व । गौरव ।  
गुरुताई\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'गुरुता' ।  
गुरुत्व-सज्ञा पु० १ भार । भारीपन । बोझ ।  
वजन । २ गौरव । महत्त्व । बड़प्पन ।

गुरुत्वचन्द्र-सज्ञा पु० विगी पदार्थ में वह बिंदु  
जिस पर गुरुत्व वस्तु का भार हो ।  
गुरुत्वार्पण-सज्ञा पु० वह आर्पण-भक्ति  
जिससे द्वारा भारी वस्तु पृथ्वी पर गिरती  
है ।  
गुरुवक्षिणा-सज्ञा स्त्री० गुरु की भेंट । विद्या  
पढ़ने पर गुरु की दी गई दक्षिणा ।  
गुरुवशा-सज्ञा स्त्री० बृहस्पति की वशा ।  
गुरुवार-सज्ञा स्त्री० गुरु की स्त्री । वेदाध्यापक  
अथवा मन्त्रदाता की स्त्री ।  
गुरुदेव-सज्ञा पु० १ अभीष्ट देव । २. पिता ।  
३ आचार्य ।  
गुरुदेवत-सज्ञा पु० पुष्य नक्षत्र ।  
गुरुद्वारा-सज्ञा पु० १ मिवस्ता का मंदिर ।  
२ आचार्य या गुरु के रहने का  
स्थान ।  
गुरुपत्नी-सज्ञा स्त्री० गुरु की स्त्री ।  
गुरुपाक-वि० दुष्पच । जो देर से पचे ।  
गुरुपाप-वि० बड़ा पाप । महापाप ।  
गुरुप्रमोद-सज्ञा पु० अतिशय आनन्द ।  
अत्यन्त हर्ष ।  
गुरुभाई-सज्ञा पु० एव ही गुरु के शिष्य ।  
गुरुमन्त्र-सज्ञा पु० इष्ट मन्त्र । दीक्षा में  
प्राप्त मन्त्र ।  
गुरुमुख-वि० दीक्षित । जिसने गुरु से मन्त्र  
लिया हो ।  
गुहा-गुरुमुख होना=मन्त्र लेना । चेला  
होना । गुरु करना ।  
गुरुमुखी-सज्ञा स्त्री० पंजाब में प्रचलित एक  
लिपि ।  
गुरुलघु-वि० १ मान्य अमान्य । २ प्रधान-  
अप्रधान । ३ ह्रस्व-दीर्घ ।  
गुरुवाहन-सज्ञा स्त्री० १ गुरुपत्नी । २  
माता ।  
गुरुवार-सज्ञा पु० बृहस्पति । बृहस्पति का  
दिन । बौध ।  
गुरुशुभ्रपा-सज्ञा स्त्री० गुरुसेवा । गुरु की  
आराधना ।  
गुरुसेवा-सज्ञा स्त्री० गुरुपूजा ।  
गुरु-सज्ञा पु० अध्यापक । गुरु । आचार्य ।  
शिक्षक ।

यो०—गुरु-घटाल=बड़ा भारी थालाक ।  
 पूर्त ।  
 गुरुपविष्ट-वि० गुरु से प्राप्त शिक्षा या  
 उपदेश ।  
 गुरुपदेश-सज्ञा पु० गुरु से प्राप्त शिक्षा ।  
 गुरेरना-†-क्रि० स० घूरना । आँखें फाड़कर  
 देखना ।  
 गुरेरा\*—सज्ञा पुं० दे० “गुलेला” ।  
 गुर्गरी-सज्ञा स्त्री० कम्पज्वर । जूड़ी ।  
 गुर्गा-सज्ञा पु० १. वासन माँजनेवाला । २.  
 भृत्य । ३. भेदिया ।  
 गुर्गबी-सज्ञा स्त्री० मुडा जूता ।  
 गुर्ज-सज्ञा पु० [फा०] १. गदा । २. सोटा ।  
 ३. दे० “वर्ज” ।  
 यो०—गुर्जन्दार—गदाधारी सैनिक ।  
 गुर्जर-सज्ञा पु० १. गुजर जाति-विशेष ।  
 २. गुजरात देश का रहनेवाला । ३. गुज-  
 रात देश ।  
 गुर्जरी-सज्ञा स्त्री० १. रागिनी-विशेष ।  
 २. गुजरात देश की स्त्री ।  
 गुर्गना-क्रि० अ० १. शोध या अभिमान  
 में बर्कश स्वर से बोलना । २. डराने के  
 लिए धुर-धुर शब्द करना ।  
 गुर्ग-सज्ञा स्त्री० भुने हुए जी ।  
 गुर्बगना-सज्ञा स्त्री० १. गुरुपत्नी । २.  
 माता । ३. सीतेली माँ । ४. माननीय  
 स्त्री ।  
 गुर्वादित्य-सज्ञा पु० योग-विशेष । सूर्य और  
 बृहस्पति के एक राशिस्थ होने पर यह योग  
 होता है जिसमें विवाह आदि मंगलकार्य  
 नहीं होते ।  
 गुर्विणी-वि० गर्भिणी । गर्भवती ।  
 गुर्वी-वि० १. गर्भवती । २. भारी । बड़ी ।  
 गौरववाली । प्रधान । मुख्य ।  
 सज्ञा स्त्री० श्रेष्ठ या बड़ी स्त्री । गुरु की  
 पत्नी ।  
 गुल-सज्ञा पु० [फा०] १. पुष्प । फूल । २.  
 गुलाब का फूल । ३. वह गहड़ा जो गालो  
 में हँसने आदि के समय पड़ता है । ४.  
 पद्मधो के शरीर में फूल के आकार का  
 भिन्न रंग वा गोल दाग । ५. दीपक में घली

का जला हुआ अश । ६. छाप । शरीर  
 पर गरम घातु से दागने से पड़ा हुआ  
 चिह्न, दाग । ७. जट्ठा । तमाकू का  
 जला हुआ अश । ८. किसी चीज पर  
 बना हुआ भिन्न रंग का कोई गोल  
 निशान । ९. जलता हुआ कीचला । कनपटी ।  
 १०. भाग । ११. आँख का डेला । १२.  
 अगारा । १३. सुन्दरी स्त्री । १४. हलवाई  
 का भट्ठा ।  
 मुहा०—गुल खिलना=१ बखेड़ा खड़ा  
 होना । २. विचित्र घटना होना । (चिराग)  
 गुल करना=बुझाना ।  
 गुल-सज्ञा पु० [फा०] हल्ला । शोर ।  
 गुलमबवास-सज्ञा पु० [फा०] गुलाबाँस । पौधा-  
 विशेष जिसमें बरसात के दिनों में लाल  
 या पीले रंग के फूल लगते हैं ।  
 गुलकंद-सज्ञा पु० [फा०] श्लोष-विशेष । मिल्की  
 या चीनी में मिली हुई गुलाब के फूलों की  
 पेंखरियाँ जिसका प्रयोग श्लोष के रूप में  
 होता है ।  
 गुलकारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बेल-बूटे का  
 काम ।  
 गुलकेश-सज्ञा पु० [फा०] जटाधारी । पौधा-  
 विशेष ।  
 गुलल्लरू-सज्ञा पु० [फा०] पौधा-विशेष जिसमें  
 नीले रंग के फूल लगते हैं ।  
 गुलगपाड़ा-सज्ञा पु० [अ०] हल्ला । शोर ।  
 गुलगुल-वि० कोमल । नरम । मुलायम ।  
 गुलगुला-सज्ञा पु० १. मीठा पकवान-विशेष ।  
 २. गडस्थल । कनपटी ।  
 वि० मुलायम । कोमल ।  
 गुलगुलाना†-क्रि० स० १. नरम करना ।  
 २. मुलायम करना । ३. गुदगुदाना ।  
 गुलगोचना-सज्ञा पु० नाटा मोटा आदमी  
 जिसके गाल आदि भ्रम खूब फूले हों ।  
 गुलचा-सज्ञा पु० प्रेमपूर्वक गालों पर लगाई  
 गई हलकी चपत ।  
 गुलचाना, गुलचियाना†-क्रि० स० गुलचा  
 मारना ।  
 गुलधर†-सज्ञा पु० मोज करना । चैन की  
 चप्पी पहनना । योग-विन्यास से अन्न ।

गुलजार-सजा पु० [फा०] बगीचा । बाग ।  
 बाटिका ।  
 वि० आनंद और शोभायुक्त । हरा भरा ।  
 गुलमट्टी-सजा स्त्री० १ मिबुटन । शिपन ।  
 २ उताभन की गाँठ ।  
 गुलपी-सजा स्त्री० पिंड या गाँठ ।  
 गुलदस्ता-सजा पु० [फा०] सुन्दर फूलों का  
 गुच्छा ।  
 गुलदाउदी-सजा स्त्री० [फा०] छोटा पीपा-  
 विशेष जा सुन्दर गुच्छदार फूलों के लिए  
 लगाया जाता है ।  
 गुलदान-सजा पु० [फा०] गुलदस्ता रखने का  
 बरतन ।  
 गुलदार-सजा पु० [फा०] १ एक प्रकार का  
 बरौदा । २ एक तरह का सफ़ेद बबूतर ।  
 ३० दे० "फूलदार ।"  
 गुलदुपहरिया-सजा पु० [फा०] पीपा विशेष  
 जिसमें गहरे लाल रंग के सुन्दर फूल  
 लगते हैं ।  
 गुलनार-सजा पु० [फा०] १ अनार का  
 फूल । २ गहरा लाल रंग ।  
 गुलबकावली-सजा स्त्री० [फा०] पीपा विशेष  
 जिसके फूल सुंदर, सफ़ेद और सुगंधित  
 होते हैं ।  
 गुलबदन-सजा पु० [फा०] एक तरह का  
 घारीदार रेशमी कपड़ा । गुलाब के फूल  
 की तरह जिसका शरीर सुन्दर हो ।  
 बौमल । नाजूक ।  
 गुलमहदी-सजा स्त्री० [फा०] एक तरह के  
 फूल का पीपा ।  
 गुलमेख-सजा स्त्री० [फा०] फुलिया । गोल  
 सिरेवाली कील ।  
 गुललाला-सजा पु० [फा०] १ पीपा  
 विशेष । २ इस पीपा का फूल ।  
 गुलशन-सजा पु० [फा०] बाग । बाटिका ।  
 बगीचा ।  
 गुलशब्बी-सजा स्त्री० [फा०] एक तरह का  
 छाटा पीपा । सुगंधिराज । रजनीगंधा ।  
 गुगधरा ।  
 गुलह्वारा-सजा पु० [फा०] एक तरह का  
 गुललाला (पीपा) ।

गुलाब-सजा पु० १ एक बँटीला पीपा  
 जिसमें बहुत सुंदर सुगंधित फूल लगते हैं ।  
 २ गुलाबजल । ३ इत्र । ४ पाटलपुष्प ।  
 गुलाबजल-सजा पु० गुलाब का सुगंधित जल ।  
 गुलाबजामुन-सजा पु० १ एक मिठाई ।  
 २ एक वृक्ष जिसका फल स्वादिष्ट  
 होता है ।  
 गुलाबपोश-सजा पु० [फा०] गुलाबजल भरकर  
 छिड़कने का पात्र विशेष ।  
 गुलाबबाड़ी-सजा स्त्री० गुलाब के फूलों से  
 सजाया जानेवाला उमर ।  
 गुलाबा-सजा पु० [फा०] एक प्रकार का  
 बरतन ।  
 गुलाबी-वि० १ गुलाब के रंग की तरह ।  
 २ गुलाबजल से सुगंधित । ३ गुलाब-  
 समीप । ४ हलका । थोड़ा या कम ।  
 सजा पु० हलका लाल रंग ।  
 गुलाम-सजा पु० [अ०] १ मोल लिया हुआ  
 दास । खरीदा हुआ नौकर । २ नौकर ।  
 गुलामी-सजा स्त्री० [अ०] १ दासत्व । २  
 परतंत्रता । पराधीनता । ३ सेवा । नौकरी ।  
 गुलाल-सजा पु० [फा०] लाल बुननी जिससे  
 हिंदू लोग होली खेलते हैं । अबीर ।  
 रंग विशेष ।  
 गुलाला-सजा पु० दे० "गुललाला" ।  
 गुलिक-सजा पु० मोती की माला के दाने ।  
 गुलिया-सजा स्त्री० सिर के पीछे का भाग ।  
 गुलियाना-कि० सं० बांस के चोग में भरकर  
 काई तरह पदार्थ पशुओं को पिलाना ।  
 गुलिस्ती-सजा पु० [फा०] बाटिका । बाग ।  
 गुल्ली-सजा स्त्री० १ गुल्ली । २ बाजरे की  
 भूँती ।  
 गुल्ल-सजा पु० एक वृक्ष ।  
 गुलबद-सजा पु० १ ऊनी या सूनी चीड़ी  
 पट्टी जिसे सिर या गले में लपेटते हैं । २  
 गल का गहना ।  
 गुल्लेवा-सजा पु० मट्टे का फल ।  
 गुलनार-सजा पु० दे० "गुलनार" ।  
 गुलेल-सजा स्त्री० एक तरह की पमान  
 जिस पर मिट्टी की गोमियाँ चलाई जाती हैं ।  
 गुलेलची-सजा पु० गुलेल चलानेवाला ।

गुलेला-सज्ञा पु० १ गुलेल । २ गुलेल से चलाई जानेवाली मिट्टी की गोलियाँ ।

गुल्लौर-सज्ञा पु० रस पकाने के भट्ठे का स्थान ।

गुल्फ-सज्ञा पु० ऐंडी के ऊपर की गाँठ । फीली ।

गुल्म-सज्ञा पु० १ ऐसा पौधा जिसकी जड़ से बड़ी डठल निकले हो । जैसे, ईख आदि । २ सेना की एक टुकड़ी । ३ एक रोग । प्लीहा । ४ वृक्षा का समूह । ५ सघन भाड़ी । ६ तिला । छोटा दुग । ७ गाँव की पुलिस चौकी ।

गुल्मशूल-सज्ञा पु० रोग-विशेष ।

गुल्लक-सज्ञा स्त्री० धन जमा करने के लिए मिट्टी या काठ का छोटा पात्र । दे० "गोलक" ।

गुल्तर-सज्ञा पु० गूलर ।

गुल्ला-सज्ञा पु० १ मिट्टी की गोली जिसे गुलेल से पकते हैं । २ हल्ला । शोर । ३ दे० "गुलेल" ।

गुल्लाला-सज्ञा पु० एक तरह का लाल फूल ।

गुल्ली-सज्ञा स्त्री० १ फल की गुठली । २ महुए की गुठली । लकड़ी का छोटा लम्बा टुकड़ा जिससे लडके गुल्ली-डंडा खेलते हैं । ३ किसी वस्तु का लम्बा छोटा टुकड़ा जिसका पेटा गोल हो । ४ छत्ते में बह जगह जहाँ मधु होना है । ५ बेवड़े का फूल ६ ऊँच की गड्ढी ७ एक झोझर ।

गुल्लो-डंडा-सज्ञा पु० लडकों का एक प्रसिद्ध खेल, जो एक गुल्ली और एक डंडे से खेला जाता है ।

गुया-सज्ञा पु० सुपारी । गुनीफल ।

गुवाय-सज्ञा पु० १ सुपारी । २ सुपारी का वृक्ष ।

गुवात-सज्ञा पु० दे० "ग्वात" ।

गुवाति-सज्ञा स्त्री० धौहरिन । गोप की स्त्री ।

गुविद\*-सज्ञा पु० दे० "गोविन्द" ।

गुवपा-सज्ञा स्त्री० सगी-सहेली ।

गुमार्दि\*-सज्ञा पु० दे० "गामार्दि" ।

गुमा\*†-सज्ञा पु० दे० "गुम्मा" ।

गुस्ताख-वि० [फा०] घृष्ट । अशिष्ट । बड़ो से सकोच या उनका आदर न करने-वाला ।

गुस्ताखी-सज्ञा स्त्री० [फा०] अशिष्टता । घृष्टता । डिठाई । बेश्रद्धी ।

गुस्ल-सज्ञा पु० [अ०] स्नान । नहाना ।

गुस्लजाना-सज्ञा पु० [अ०] स्नान करने का स्थान । स्नानागार । नहाने का घर ।

गुस्ता-सज्ञा पु० [वि० गुस्तावर, गुस्तैल] क्रोध । क्रोध ।

मुहा०-गुस्ता उतरना या निकलना=क्रोध शान्त होना । (किरी पर) गुस्ता उतारना=क्रोध में जो इच्छा हो, उसे पूर्ण करना । क्रोध शान्त करना । गुस्ता चढ़ना=क्रोध होना ।

गुस्तैल-वि० [अ०] जल्दी क्रोध करनेवाला । गुस्तावर ।

गुह-सज्ञा पु० १ कार्तिकेय । शिव । २. षोडा । अश्व । ३ निपाद जाति का राजा जो श्री रामचन्द्र का मित्र था । ४ विष्णु का एक नाम । ५ हृदय । ६ गुफा । छिपने का स्थान ७ मैला । बिछा ।

गुहक-सज्ञा पु० शृगवेरपुर का निपाद (अनाय) राजा जिसकी सहायता से श्रीराम ने गंगा पार की थी ।

गुहना†-वि० स० दे० "गूँघना" ।

गुहर-वि० गुप्त । छिपा । दंरा ।

गुहराना†-वि० स० १ पुनारना । चिल्लाकर बुलाना । २ बुलाना ।

गुहयाना-वि० स० [गुहना का प्रे०] गूँघवाना । गुहने का काम करना ।

गुहपछो-सज्ञा स्त्री० अगहन मास की दुपचा पछो ।

गुहाजनी-सज्ञा स्त्री० बिकनी । गुहेरी । अंग की पत्र पर होनेवाली फुडिया ।

गुहा-सज्ञा स्त्री० साह । गुफा । बदरा ।

गुहाई । सज्ञा स्त्री० गुहने का काम या मजदूरी ।

गुहामुह-सज्ञा पु० चन्दरा । गर्न । गुफा ।

गुहार-सज्ञा स्त्री० पुनार । रत्ता बरने या सहायता के लिए पुनार । दाहाई ।

गुहारी—वि० गुहार करनेवाला । पुहारनेवाला ।  
गुहाशय—सज्ञा पु० १ गुफा में रहनेवाला ।  
२. विष्णु । ३ व्याघ्र । ४ सिंह । जीव ।  
५ परमात्मा । ६ हृदय ।

गुहिल—सज्ञा पु० १ घन । २ वित्त । ३ विभव । ४ निधि । ५ मेवाड के प्रथम राज्य-संस्थापक का नाम ।

गुहेरा—सज्ञा पु० एक कीड़ा । गोह । विस-  
खपरा ।

गुहेरी—सज्ञा स्त्री० घाँस की पत्तक की फुत्ती ।  
विलनी ।

गुह्य—वि० १ छिपा हुआ । गुप्त । पोशीदा ।  
२ छिपाने योग्य । गोपनीय । ३ गूढ़ ।  
सज्ञा पु० १ छल । वपट । २ दम । ३  
गोपनीय अंग ४ विष्णु । ५ शिव ।  
परमात्मा । ६ सभोग । मेशुन । ७ गुदा ।  
८. गुप्त बात । ९. स्त्री या पुरुष का चिह्न,  
योनि या लिंग ।

गुह्यक—सज्ञा पु० १. कुंवर के खजाना की रक्षा  
करनेवाले यक्ष । २ देवियोनि विशेष ।  
कुंवर के अनुचर ।

गुह्यकेशवर—सज्ञा पु० १ कुंवर । २ यक्ष-  
राज ।

गुह्यपति—सज्ञा पु० कुंवर ।

गूगा—वि० [स्त्री० गूगी] गूक । जो बोल  
न सके । जिसे वाणी न हो । मौन । शब्द-  
रहित ।

गूहा—गूंगे का गूढ—एसी बात जिसका  
अनुभव हो, पर वर्णन न हो सके ।

गूज—सज्ञा स्त्री० १ गुजार । भोरा के  
गूजने का शब्द । २ लट्ट की कील ।  
३ बाल की बालियाँ में सपेटा हुआ पतला  
तार । ४ प्रतिध्वनि । कलरव । आनन्द-  
ध्वनि ।

गूजना—वि० अ० १ गुजारना । मधुर  
ध्वनि करना । भिनभिनाना । २ शब्द  
से व्याप्त होना । प्रतिध्वनित होना ।

गूयना—वि० स० दे० “गूयना” । गुहना ।  
पिरोना ।

गूदना—वि० स० १ सानना । २ माँटना ।  
एकपित करना । ३ गाला बनाना ।

गूदनी—सज्ञा स्त्री० गुदला । वृक्ष-विशेष ।  
गादा ।

गूदा—सज्ञा पु० अन्तःमार ।

गूधन—सज्ञा पु० १. लोई । २. पेडा ।

गूधना—वि० स० १. माटना । ममलना ।

गूदना । २. पिरोना । गूयना । ३. सानना ।

गू—सज्ञा पु० गुह । मल । विष्टा ।

गूगल या गूगुल—सज्ञा पु० १ गौद विशेष ।  
२ सुगन्धित द्रव्य ।

गूगला—सज्ञा स्त्री० धोधा । सीप ।

गूजर—सज्ञा पु० [स्त्री० गूजरी, गुजरिया]  
१ ग्वाला । एक जाति । २ जाट ।

गूजरी—सज्ञा स्त्री० १ ग्वालिनी । गूजर जाति  
की स्त्री । २ पैर में पहनने का एक आभू-  
षण । ३ रागिनी विशेष ।

गूभा—सज्ञा पु० [स्त्री० गुभिया] १ गोभा ।  
२ गूदा । ३ फलों के भीतर का रेशा ।  
४. एक पक्षवान ।

गूढ—वि० १ गुप्त । छिपा हुआ । २ सार-  
गमित । गभीर । जिसमें बहुत मतलब  
छिपा हो । ३ कठिन । जिसका  
आशय जल्दी समझ में न आवे । गूह्य ।  
४ अप्रकाश्य । ५ सूक्ष्म । ६ निजन  
स्थान । एकान्त ।

गूढगेह\*—सज्ञा पु० दे० “यज्ञशाला” ।

गूढचार—सज्ञा पु० १ गूढ पुरुष । २  
गोइन्दा ।

गूढज—सज्ञा पु० जारज पुत्र । पर पुरुष से  
उत्पन्न पुत्र ।

गूढज्ञा—सज्ञा स्त्री० १. छिपाव । पोशीदगी ।  
२ कठिनाई ।

गूढपत्र—सज्ञा पु० १ करवीर वृक्ष । करील ।  
२ नागफनी ।

गूढपथ—सज्ञा पु० १ अन्तःकरण । २ चित्र ।

गूढपाद—सज्ञा पु० सर्प । भुजग । साँप ।

गूढपुरुष—सज्ञा पु० जामूस । गुप्तचर । चर ।  
दूत ।

गूढभाषित—सज्ञा पु० १ गूढवाद । २ गुप्त  
विज्ञापन ।

गूढार्थ—वि० कठिन अर्थ ।

गूढोक्ति—सज्ञा स्त्री० एक अलवार जिरामे

कोई गुप्त बात, जिसके प्रति कही जानेवाली हो उसके प्रति न कहकर किसी दूसरे के प्रति कही जाय।

**गूढोत्तर-सज्ञा पु०** काव्यालंकार-विशेष जिसमें प्रश्न का उत्तर कोई गूढ अभिप्राय लिये हुए दिया जाता है।

**गूथ-सज्ञा पु०** सूत की लड़ी।

**गूथना-क्रि० सं० १** पिरोना। **गूथना**। तागना। गाथना। २ सुई-तागे से टांकना।

**गूद-सज्ञा पु०** [स्त्री० गूदड़ी] चिथड़ा। फटा पुराना कपड़ा।

**गूदड़ी-सज्ञा स्त्री० १** रजाई। २. सूजनी।

**गूदा-सज्ञा पु०** [स्त्री० गूदी] १ फल के भीतर का अंश। २ अन्त सार। सार भाग। ३ भेजा। मग्न। ४ गिरी। मीगी।

**गुदिया-वि०** लोभी। इच्छुव।

**गून-सज्ञा स्त्री०** नाव खींचने की रस्ती।

**गूमडा-सज्ञा पु०** सूजना। गिलटी। फोड़ा।

**गूमडी-सज्ञा स्त्री०** गाँठ। ग्रन्थि।

**गूमा-सज्ञा पु०** छाटा पीछा-विशेष।

**गूलर-सज्ञा पु०** एक बड़ा वृक्ष। उदुवर। ऊमर।

**मुहा०-गूलर का फूल=दुर्लभ वस्तु।**  
वह जो कभी देखन में न आवे।

**गूह-सज्ञा पु०** मस। गलीज। विष्टा। मेला।

**गूहडिया-सज्ञा पु०** घूरा। बूड़ा। बतवार। गोबर।

**गूजन-सज्ञा पु० १** गाजर। २ लहसुन। ३ प्याज।

**गूध-वि०** [सज्ञा गूधुता] लालची। लोभी। इच्छुव।

**गूध्र-सज्ञा पु०** गिद्ध। गोघ। पक्षी विशेष।

**गूध्रा-वि०** मरमुखा। लोभी। लालची।

**गूटि-सज्ञा स्त्री० १** एक बार की व्याई गो। २ सता विशेष। ३ बराही बन्द।

**गूह-सज्ञा पु०** [वि० गूही] १. भयन। घर। भवान। निवास-स्थान। २ घा। गूद्व।

**गूहय्या-सज्ञा स्त्री०** पुतलुमारी (घोषध)।

गुबारी लडकी।

**गूहकर्म-सज्ञा पु०** गूहसवधी कार्य। घर का काम।

**गूहगोथिका-सज्ञा स्त्री०** विसतुड्या। छिप-कली।

**गूहछिद्र-सज्ञा पु० १** गूहदोष। गूहकलक।

२ घर की गुप्त बातें।

**गूहजत-सज्ञा पु०** दासी से उत्पन्न दास।

**गूहतटी-सज्ञा स्त्री० १** गली। २ बीची। ३.

घर के बाहर का चबूतरा।

**गूहवास-सज्ञा पु०** नौकर। घर का नौकर।

**गूहदाहक-सज्ञा पु० १** आततायी। २ घर

में आग लगानवाला। गूहनाशक।

**गूहनिर्माता-सज्ञा पु०** घर बानेवाला।

**गूहप, गूहपति-सज्ञा पु०** [स्त्री० गूहपत्नी]

१ घर का स्वामी। घर का मालिक।

२ अग्नि।

**गूहपशु-सज्ञा पु०** कुत्ता। पालतू जानवर।

**गूहपालक-सज्ञा पु० १** कूकुर। २ गृहरक्षक।

घर की रक्षा करनेवाला।

**गूहभग-सज्ञा पु० १** गूहभदक। २ प्रवास।

**गूहभेदी-वि० १.** अपने घर की गुप्त बात

बतानेवाला। २ दूत। ३ सूचक।

**गूहमन्त्री-सज्ञा पु०** राज्य का वह मन्त्री, जो

राज्य की भीतरी बातों की व्यवस्था करता

है। (अग्रे० होम मिनिस्टर)

**गूहमणि-सज्ञा पु०** दीपक। घर का प्रकाशित

करनेवाला।

**गूहमेधी-सज्ञा पु०** गृही। गूहपति। घरवाला।

**गूहमृग-सज्ञा पु०** कुत्ता।

**गूहमन्त्रालय-सज्ञा पु०** दे० "गूढविभाग"।

**गूहयुद्ध-सज्ञा पु० १** किसी देश के भीतर

ही आपस में होनेवाली लड़ाई या युद्ध।

२ घर के भीतर का झगडा।

**गूहाटिबा-सज्ञा स्त्री०** घर के समीप का

बगीचा।

**गूहासी-वि०** घर में रहनेवाला।

**गूहविच्छेद-सज्ञा पु०** गूढम्य-लह। परिवार

के साथ विवाद।

**गूढविभाग-सज्ञा पु०** राज्य का वह विभाग

या महत्त्व जिसके द्वारा राज्य की भीतरी

बातों की व्यवस्था हो।

गृहसंविध-गंगा पु० । गङ्गा में गृहविनाश का प्रधान अधिकारी जा मन्त्रिपद पर न हो । (प्रथ० होम-मेघेष्टरी)

गृहस्थ-गङ्गा पु० १ वह व्यक्ति जो ब्राह्मण्य में उन्नत विवाह करके दूसरे आश्रम में रहे । २ मानवज्वावाला आदमी । घर-धारवाला । ३ गंगारी । ४. वह व्यक्ति जिससे मर्ता मर्ती होती है ।

गृहस्थता-गङ्गा म्नी० गृह-व्यापार । गृहस्थ का धर्म ।

गृहस्थाश्रम-गङ्गा पु० चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम, जिसमें लोग विवाह करके घर का काम-काज देखते हैं ।

गृहस्थी-गङ्गा म्नी० १ गृहस्थ का वस्तु । २ गृहस्थाश्रम । ३ गृह-व्यवस्था । घर-वार । ४ बटु, परिवार आदि । ५ घर का सामान । मान-अरावार । ६ खेती-बारी ।

गृहागत-गङ्गा पु० आगन्तुक । अतिथि । पाहुन । महमान ।

गृहाये-वि० घर के लिए । गृह के निमित्त । गृहिणी-गङ्गा स्त्री० १ भार्या । स्त्री । पत्नी । २ घर की मालकिन ।

गृही-गङ्गा पु० [म्नी० गृहिणी] १ गृह-स्वामी । घर का मालिक । २ गृहस्थ । गृहस्थाश्रमी ।

गृहीत-वि० ग्रहण किया हुआ । स्वीकृत । लिया हुआ । पकड़ा या रखा हुआ । आश्रित ।

गृह्य-वि० १ गृह-संबंधी । घरेलू । २ गृहा-सवत । ३ गृहस्था के वस्तु-नर्म । ४ कर्मोपदेशक शास्त्र विशेष । ५ ग्रहण करने योग्य । ६ जिसे प्रसन या आपणित किया जाय ।

गृह्यग्रन्थ-गङ्गा पु० धर्मसंहिता । कर्मकांड ग्रन्थ । गृह्यसूत्र-गङ्गा पु० वैदिक पद्धति जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार करते हैं । शास्त्र । स्मृति ।

गृह्मणि-गङ्गा पु० १ अग्निहोत्र की अग्नि । २ गृहसंबंधी अग्नि ।

गंगरा-गङ्गा पु० बेंबड़ा । बरफ ।

गेंड-गङ्गा पु० १. अगौरा । उग्र में उग्र का पता । २. अहता । घेग ।

गेंटना-वि० स० १ अग्र रखने के लिए गड़ बनाता । २ गाटना । घेंटना । ३ रोंते की मेंड में घेंटना ।

गेंडली-गङ्गा स्त्री० पेंटा । कुडन । घेरा । जेंते-साँप की गेंडली ।

गेंडा-गङ्गा पु० १. गंगा । ईग । २. अगौरा । ईग के ऊपर के पत्त । ३ एक जगली जानवर । ४ परपर की निहाई ।

गेंडुम्रा-गङ्गा पु० १ सिरहाना । तबिया । २ टाटीदार सोटा । ३. बड़ा गेंद ।

गेंडुरी-गङ्गा म्नी० १ गेंडुरी । बिटवा । मिर पर घड़ा आदि रखने के लिए रस्सी का बना हुमा गेंडुरा । २ बुडली । पेंटा । ३ साँपों का कुडलाकार बेंटना ।

गेंव-गङ्गा पु० १ गेंदा । खेलने के लिए एक गोल वस्तु ।

गेंद-गेंडरी-गङ्गा स्त्री० एक तरह का खेल जिसमें लठवे एक दूसरे को गेंद से मारते हैं ।

गेंदा-गङ्गा पु० १ पीले रंग का एक फूल श्रीर । उसका पीषा । २ गेंद ।

गेंदी-गङ्गा स्त्री० खेलने की गोली ।

गेंदुफ-गङ्गा पु० गेंद ।

गेंदुवा-गङ्गा पु० गेंडुमा । उतीता । (तबिया) गोल तबिया ।

गेंगली-वि० बोदली । फूहर । कुरूप स्त्री ।

गेंडना-वि० स० १ घेंटना । २ बारों और घूमना । परिग्रमा करना ।

गेंदरा-गङ्गा पु० १ भोदू । २ अवोष । ३ अज्ञान ।

गेंदा-गङ्गा पु० पखहीन बिडिया । बच्चा ।

गेंव-वि० गाने-याग्य । गाने-लायक ।

गेंवा-गङ्गा पु० खड । अन्न ।

गेंरना-गङ्गा-वि० स० १ नीचे डानना । गिराना । २ डालना । ३ डालना । उड़लना ।

गेंराव-गङ्गा पु० लोपाया के गले का बंधन ।

गेंरमा-वि० १ गडमैलापन लिये ताल रग का । गेंरू के रग का । २ गेंरिग । गेंरू में रेंगा हुआ । भगवा । जोगिया ।

गेरुई—सज्ञा स्त्री० चंत की फसल को नष्ट करनेवाला एा रोग । गेरुई के पीधो या एव रोग ।

गेरु—सज्ञा स्त्री० लाल बडी मिट्टी-विशेष जो सागो से निपलती है । गेरिख । गिरमाटी ।

गेह—सज्ञा पुं० भवन । मकान । घर ।

गेहनी\*—सज्ञा स्त्री० गृहिणी । घरवासी ।

गेहगूर—सज्ञा पुं० १ गृहप्रिय । गृहायकन । २ घर हो में बोरता दिखानेवाला ।

गेहो\*—सज्ञा पुं० गृहो । गृहस्थ ।

गेहूअन—सज्ञा पुं० एव अत्यंत विषय रसप ।

गेहूआ या गेहूआ—वि० गेहू-वर्ण । गेहू के रंग का । बादामी ।

गेहू—सज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध अनाज जिसे पीत करके रोटी बनाते हैं । गोधूम ।

गेडा—सज्ञा पुं० एक जन्तु । गडा ।

गेती—सज्ञा स्त्री० बुवाल । मिट्टी खोदने का अस्त्र-विशेष ।

गेत\* या गैत—सज्ञा पुं० १ मार्ग । गैल । २ नाटा बैल ।

\*सज्ञा पुं० दे० "गगन" ।

गैती—सज्ञा स्त्री० दे० 'खता' ।

वि० चलनवाली ।

गैब—सज्ञा पुं० [अ०] जो सामने न हो । परोक्ष ।

गैवर\*—सज्ञा पुं० १ बडा हाथी । २. एक प्रकार की चिडिया ।

गैबी—वि० [अ० गैब] १ छिपा हुआ । गुप्त । २ अज्ञात । अजनबी ।

गैपर\*—सज्ञा पुं० हाथी ।

गैषा—सज्ञा स्त्री० गो । गाय । धनु ।

गैर—वि० [अ०] १ दूसरा । अन्य । २ अपने कटुब या अपन समाज से बाहर का (व्यक्ति) । पराया । अजनबी । ३ निषध-वाचक शब्द । जैसे—गैरमुमकिन, गैरहाजिर ।

गैर—सज्ञा स्त्री० [अ०] अधेर । अत्याचार । गैरजिम्मेदार—वि० [अ०] अपनी जिम्मेदारी न समझनेवाला ।

गैरत—सज्ञा स्त्री० [अ०] हया । लज्जा ।

गैरमनकूला—वि० [अ०] स्थिर । अपल ।

गैरमामूली—वि० [अ०] असाधारण ।

गैरमिसित—वि० [अ०] अनुचित । बे सिल-सले ।

गैरमुनासिब—वि० [अ०] अनुचित ।

गैरमुमकिन—वि० [अ०] अमभव । नामुमकिन ।

गैरवाजिब—वि० [अ०] अनुचित । अयोग्य ।

गैरसरकारी—वि० [अ०] जो सरकारी न हो ।

गैरहाजिर—वि० [अ०] अनुपस्थित ।

गैरहाजिरी—सज्ञा स्त्री० [अ०] अनुपस्थिति ।

गैरा—सज्ञा पुं० १ घास का पूला । २

आंटी । ३ मुट्ठा ।

गैरिह—सज्ञा पुं० १ सोना । २ गेरु ।

गैरेय—सज्ञा पुं० शिलाजीत ।

गैत—सज्ञा स्त्री० राह । मार्ग । रास्ता । गली । पथ ।

गैहरी—सज्ञा स्त्री० दण्ड । रोक्ने का दण्ड । अर्गल । बेंटा ।

गो—सज्ञा स्त्री० १ गैया । गाय । गऊ । २ वृष राशि । ३ विरण । ४ बोलने की शक्ति । वाणी । वचन । ५ इन्द्रिय ।

६ सरस्वती । ७ विजली । ८ दृष्टि ।

आँख । ९ पृथ्वी । जमीन । १० माता ।

जननी । ११ दिशा । १२ जीभ ।

जवान । १३ ऋषभ नामक औषध विशेष ।

सज्ञा पुं० १ नदी नामक शिवगण । २

बैल । ३ सूर्य । ४ घोडा । ५ बाण ।

तीर । ६ चन्द्रमा । ७ आकाश । ८

स्वर्ग । ९ गवैया । १० जल । ११

वज्र । १२ शब्द । १३ प्रणसक । १४.

नौ का अक । १५ शरीर के रोम ।

अव्य० यद्यपि ।

यौ०—गोकि—यद्यपि । गो ।

अत्य०—गहननेवाला । (यौ० में)

गोआल—सज्ञा पुं० गोपाल । गाय । अहीर ।

गोइ—सज्ञा पुं० दे० 'गोय' ।

क्रि० वि० छिपकर ।

गोइटा—सज्ञा पुं० कडा । उपला । ईंधन के लिए सुखाया हुआ गोबर । गोहरा ।

गोइदा—सज्ञा पुं० [फा०] गुप्तचर । जासूस ।

गुप्त गेदिया ।

गोइयाँ—सज्ञा पुं०, स्त्री० सहचर । साथी ।

गोई-सज्ञा स्त्री० वि० गोइयाँ । छिपाई । छिपाई हुई ।

गोऊ\*†-वि० छिपानेवाला । चुरानेवाला । गोठ-सज्ञा स्त्री० मुरी । धोती की लपेट जो कमर पर रहती है ।

गोठना-क्रि० स० १ किसी वस्तु की गोद या कोर गुठली कर देना । २ गोभे या पुवे की कोर को मोड़-मोड़कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना । ३ चारों ओर से घेरना ।

गोटा-सज्ञा पु० उपला । उपरी । कडा । गोहरा ।

गोद-सज्ञा पु० घसभ्य जाति विशेष जो मध्यप्रदेश में पाई जाती है ।

गोडरा†-सज्ञा पु० [स्त्री० गाडरी] १ लोहे का मडरा जिस पर मोट का चरसा लटकाता है । २ गाल घेरा । ३ मंडरा । कुडल के आकार की वस्तु ।

गोडा-सज्ञा पु० १ घेरा हुआ स्थान । बाडा (विशेषकर चौपायों के लिए) । २ गाँव । लडा । पुरवा ।

गोद-सज्ञा पु० चेंप । पटो के तन से निकला हुआ चिपचिपा या लसदार पसेव । लाटा । निर्यास ।

गौ०—गोददानी—वह वरतन जिसमें गाद भिगीकर रखा रहे ।

गोदपंजीरी-सज्ञा स्त्री० प्रसूता स्त्रिया को मिलाई जानेवाली गोद मिली हुई पंजीरी ।

गोदरी-सज्ञा स्त्री० १ पानी में होनेवाली धाम विशेष । २ इस पास की बनी हुई षटाई ।

गोदा-सज्ञा पु० पक्षी के खाने की लोई जिससे पक्षी फँसाये जाते हैं । लभरा, लसोडा ।

गोदी-सज्ञा स्त्री० १ मीलसिरी की तरह का एक वृक्ष । २ टिगोट । इगुदी ।

गोहवन-सज्ञा पु० सर्प विशेष, लान रंग का सर्प ।

गोवर्ण-सज्ञा पु० १. हिन्दुआ का शीव क्षेत्र विनाय जो मलाया में है । २ इस स्थान में स्थापित शिवमूर्ति । एक तीर्थ-स्थान जहाँ के

प्रधान देवता शिव हैं । ३ परिमाण-विशेष । एक पत्तर । ४. मृग विशेष ।

५ खच्चर । ६ श्रद्धातर । ७ मर्ग विशेष । ८ गण देवता-विशेष । ९ पर्वत-विशेष ।

१० गाय का वान । ११ बालिश । वि० गऊ के से लगे वानवाला ।

गोकर्णी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता । गोकुल-सज्ञा पु० १ गोघो का भूड । गो-समूह । २ गोशाला । ३ व्रज में मथुरा के पास का एक गाँव, जहाँ श्रीकृष्ण ने अपना बाल्य-काल व्यतीत किया था ।

गोकुलेश-सज्ञा पु० गोकुल के अधिपति । श्रीकृष्णचन्द्र ।

गोकीस-सज्ञा पु० १ छोटा कौस । २ उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बालने का शब्द सुन पड़े ।

गोभुर-सज्ञा पु० दे० १ "गोखरू" । २ गाय का खुर ।

गोखरू-सज्ञा पु० १ कँटीला वृक्ष । २ धातु के गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों को पकड़ने के लिए उनके रास्ते में फँसा दिये जाते हैं । ३ एक आभूषण । ४ गोटे आदि से गुंथा हुआ एक साज । ५ श्रीपथ विशप ।

गोला-सज्ञा पु० दे० "भरोला" । गोखुर-सज्ञा पु० १ गाय का खुर । २ एक पोधा ।

गोघ्रास-सज्ञा पु० भोजन या श्राद्धादि के आरम्भ में गो के लिए निकाला गया भाग । गोचना-सज्ञा पु० गहूँ और चना का मिश्रण ।

क्रि० स० १ धरना । २ पकट लेना । ३ पानी में डुबाना ।

गोघर-सज्ञा पु० १ वह विषय जिसका ज्ञान इन्द्रिया से हो । चरी । प्रत्यक्ष । सम्मुख । सामने । जन्मराशि से लेकर वृत्तिपथ राशियों के नाम । २ चरागाह ।

गोघो के चरने का स्थान । गोचर्म-सज्ञा पु० गो का चमड़ा ।

गोचा-क्रि० स० १ दवाना । २ धोखा देना ।

मुहा०—गावा गोची—१ घोले पर धाता ।

२ दवाव पर दवाव । ३ बलात्कार से धोखा देना ।  
 गोचारण—सज्ञा पु० गोपालन । गौ को चराना ।  
 गोछ—सज्ञा पु० १ मूँछ । २ गोछ । ३ गोछा ।  
 गोख—सज्ञा पु० [फा०] पाद । अपान वायु ।  
 गोखई—सज्ञा पु० मिश्रित अन्न । गेहूँ और जौ ।  
 गोजर—सज्ञा पु० एक कीड़ा । बूड़ा धैल ।  
 गोजल—सज्ञा पु० गोमूत्र ।  
 गोमिका—सज्ञा स्त्री० वृक्ष विशप । एक प्रकार का पीधा ।  
 गोमिह्रा—सज्ञा स्त्री० गोभी । कोबी ।  
 गोमी—सज्ञा स्त्री० १ गौ हाँकने की लकड़ी ।  
 २ लट्ठ । बड़ी लाठी ।  
 गोभक्तवट—सज्ञा स्त्री० स्त्रिया की साडी का अचल । पल्ला ।  
 गोभ्रा—सज्ञा पु० [स्त्री० गोभिया गुभिया] १ पिराक । गुभिया नामक पकवान ।  
 २ गुज्जा । एक प्रकार की कँटीली घास । ३ जव । खलीता ।  
 गोड—सज्ञा स्त्री० १ मगजी । किसी कपड़े के किनारे पर लगाई जानेवाली पट्टी । २ भोज ।  
 जातीय भाजन । ३ गोष्ठी । मडली ।  
 ४ गोटी । चौपड का मोहरा । ५ किसी तरह का किनारा ।  
 गोटा—सज्ञा पु० १ चाँदी, सोन या रेशम आदि का बना हुआ फीता । २ किनारा, किनारी, कोर । ३ धनिया की सादी या भुनी हुई गिरी । छोट टुकड़ों में कतरी और एक म मिनी हुई इलायची, सुपारी खरबूज और बादाम की गिरी । ४ कडी । सुहा । ५ सूखा हुआ मल ।  
 गोटी—सज्ञा स्त्री० १ ककड-पत्थर आदि का छोटा टुकड़ा । चैचक । शीतला । छाले । २ चौपड खेलन का मोहरा । नरद । ३ गोटीया का एक खेल । ४ लाभ की संपादनी । आमदनी या लाभ ।  
 मुहा०—गोटी जमना या बैठना=१ मुक्ति सफल होना । २ आमदनी या लाभ होना ।  
 गोठ—सज्ञा स्त्री० १ गोशाला । गोस्थान । २ गोष्ठी । सभा । थाढ़ । ३ सैर

सपाटा । ४ समूह । ५ छिपी बातचीत ।  
 ६ मित्रता । दोस्ती ।  
 गोठो—सज्ञा स्त्री० चैचक । शीतला । रोग-विशेष ।  
 गोड—सज्ञा पु० पैर । पाद । पाँव । टाँग ।  
 गोडइत—सज्ञा पु० गाँव में पहरा देनेवाला चौकीदार ।  
 गोडना—क्रि० स० मिट्टी खोदना । खोदना ।  
 खुरचना । कोडना ।  
 गोडा—सज्ञा पु० पल्लेग आदि का पाया ।  
 गोडाई—सज्ञा स्त्री० गोडने की क्रिया या मजदूरी ।  
 गोडाना—क्रि० स० गोडने का काम दूसरे से कराना ।  
 गोडापाई—सज्ञा स्त्री० बार-बार आना-जाना ।  
 गोडारी—सज्ञा स्त्री० १ पल्लेग आदि का वह भाग जिधर पैर रहता है । पंताना । २ जूता ।  
 गोडिया—सज्ञा पु० छोटा पैर ।  
 सज्ञा स्त्री० जाति विशप । कहार ।  
 गोडी—सज्ञा स्त्री० १ पत्ती । स्त्री । २ संगीत की एक रागिनी । मधुरता ।  
 गोण—सज्ञा पु० आखा, अन्न रखने का थैला । बोरा ।  
 गोणी—सज्ञा स्त्री० १ टाट का दोहरा बोरा । थैला । २ एक पुरानी माप । फटे-पुराने कपड ।  
 गोत—सज्ञा पु० १ कुल । वंश । जाति । खानदान । २ समूह ।  
 गोतम—सज्ञा पु० एक ऋषि । न्याय-दर्शन के रचयिता ।  
 गोतमान्वय—सज्ञा पु० शाक्यमुनि । बुद्धदेव ।  
 गोतमी—सज्ञा स्त्री० गोतम ऋषि की स्त्री अहल्या । दुर्गा, कण्व मुनि की बहन ।  
 गोता—सज्ञा पु० [अ०] १ जल म डुबकी लगाना । डुबो । २ गोन, वश, कुल ।  
 मुहा०—गोता खाना=धोखे में आना ।  
 गोता मारना=डुबकी लगाना । डूबना ।  
 अनुपस्थित या गायब हो जाना ।  
 गोताखोर—सज्ञा पु० [अ०] डुबकी लगाने वाला । डुबकी मारनेवाला ।

गोतिषा-वि० दे० "गोती" । गृधुम्बी, सवधी, जातिभाई । एग गात्र वा ।  
 गोती-वि० ग्रपने गोन वा । गोत्रज । घदाज । भाई-बन्धु । गृधुम्बी ।  
 गोतीत-वि० इन्द्रियो स परे । इन्द्रियातीत । इन्द्रियो से न जानने याग्य ।  
 गोत्र-सज्ञा पु० १ सतति । मतान । २ नाम । ३ क्षेत्र । रास्ता । मार्ग । ४ राजा वा छत्र । ५ समूह । जल्पा । गरोह । ६ बन्धु । भाई । ७ एक प्रकार का जाति-विभाग । ८ वध । कुल । खानदान । ९ कुल या वध की सज्ञा जो उससे किसी मूल पुरुष के अनुसार होती है । १०. आदि-पुरुष । ११. पर्वत । पहाड़ ।  
 गोत्रज-वि० १. गात्र में उत्पन्न । जाति । वक्षीय । २. पर्वतीय घातु ।  
 गोत्रघन-सज्ञा पु० पतृक घन । पिता का घन ।  
 गोत्रशत्रु-सज्ञा पु० १ इन्द्र । शत्रु । २ कुलागार । खानदान वा दुश्मन ।  
 गोदत्त-सज्ञा पु० हस्ताल । पीले रंग की एक घातु ।  
 गोदती-सज्ञा स्त्री० १ कच्ची या सफेद हस्ताल । २ एक रत्न ।  
 गोद-सज्ञा स्त्री० १ श्रैवचार । ओड । उत्सव । कोरा । २ अचल । गोदी । मुहा०-गोद का=छोटा बालक । वच्चा । गोद बैठना=दत्तक बनना । गोद पसार-कर=अप्यत अधीनता से । गोद भरना= १ सोभाग्यवती स्त्री के अचल में नारियल आदि पदार्थ देना । २ सतान होना ।  
 गोदनशीन-सज्ञा पु० वह जिसे किसी न गोद लिया हो । दत्तक ।  
 गोदनशीनी-सज्ञा स्त्री० गोद लिय जाने वा समारोह । दत्तक होना ।  
 गोदनहारी-सज्ञा स्त्री० गोदना गोदनेवाली स्त्री ।  
 गोदना-वि० स० १ चुभाना, गडाना । २ किसी कार्य के लिए चार-चार जोर देना । ३ चुभती या लगती हुई बात कहना । ताना देना । शरीर पर तिल के आकार आदि का पिछ बनाना ।

गोदा-सज्ञा पु० बड़, पीपर या पावर के पत्ते फल ।  
 सज्ञा स्त्री० १. गोदावरी नदी । २ गोदा ग्राम्मा । श्री रगनाथ की पत्नी ।  
 गोदान-सज्ञा पु० १. गाय का दान देना । २ पैसात मस्कार ।  
 गोदाम-सज्ञा पु० माल-अगवाय रखने बड़ा घर ।  
 गोदावरी-सज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी ।  
 गोदी-सज्ञा स्त्री० दे० "गोद" । १. श्रैवचार । गोद, २. सूजन । पैर का माटा होना । ३. दत्तक पुत्र लेना ।  
 मुहा०-गोदी पसारना=मांगना, लेना, याचना करना । गोदी लेना=दत्तक बनाना । पालना । पोसना ।  
 गोदीहन-सज्ञा पु० गाय दुहना । गाय से दूध निकालना ।  
 गोदीहनी-सज्ञा स्त्री० गोदीहन-मात्र । दुधेडी । दोहनी । घूँचा ।  
 गोघ-सज्ञा स्त्री० गोह ।  
 गोघन-सज्ञा पु० १ गोघ्रो का समूह । गोघ्रो का झुंड । २ गी रूपी सपत्ति । ३ एक प्रकार का तीर । ४ दीवाली के दूसरे दिन की एक पूजा । ५ गावर्द्धन पर्वत ।  
 गोघा-सज्ञा स्त्री० १ गोह नामक जंतु । २ हाथ की बलाई पर बाँधने वा चमड़ा ।  
 गोघिका-सज्ञा स्त्री० गोह । जलजन्तु विशेष ।  
 गोघूम-सज्ञा पु० १ गहूँ । २ नारंगी बिसप । ३ श्रीपथ ।  
 गोघुलि, गोघुली-सज्ञा स्त्री० वह समय जब कि जंगल से चरकर लौटती हुई गोघ्रो के खुरो से धूल उड़ने के कारण धुधला छा जाय । संध्या का समय ।  
 गोघेनु-सज्ञा स्त्री० दुधार गाय । दुग्धवती गी । दूध देनेवाली गाय ।  
 गोघीरा-सज्ञा स्त्री० सायकाल । संध्या समय ।  
 गोन-सज्ञा स्त्री० १ टाट, कत्रल, चमड़ आदि का बना बोहरा बोरा, जिसमें सामान भरकर बेला की पीठ पर सादते हैं । २.

साधारण बारा। स्वास। ३ नाथ सीचन के लिए मस्तूल में बांधी जानेवाली रस्ती।  
 गोनर्द-सज्ञा पु० १ नागरमोथा।  
 २ सारस पक्षी। ३ एक प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतञ्जलि का जन्म हुआ था।  
 ४ शिवजी की एक उपाधि।  
 गोनर्दीय-सज्ञा पु० पतञ्जलि मुनि, ध्यावरण महाभाष्यवार।  
 वि० गोनर्द देश का। गोनर्द देश-सबधी।  
 गोनस्त-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का साँप।  
 २ मणि विशेष।  
 गोना\*—क्रि० स० छिपाना।  
 गोनिपा-सज्ञा स्त्री० एक औजार।  
 सज्ञा पु० स्वयं अपनी पीठ पर या बैलो पर लादकर बोरे ढोनवाला।  
 गोनी-सज्ञा स्त्री० १ टाट का धैला। बोरा।  
 २ पटुआ। सन। पाट।  
 गोप-सज्ञा पु० १ गो की रक्षा करनेवाला।  
 २ ग्वाला। अहीर। ३ गोशाला का अध्यक्ष या प्रबन्ध करनेवाला। ४ भूपति।  
 राजा। ५ गाँव का मुखिया। ६ गले में पहनन का एक आभूषण। ७ एक कीड़ा।  
 गोपक-सज्ञा पु० कर्द गावो का मालिक।  
 गोपकन्या-सज्ञा स्त्री० अहीरिन। अहीर की लड़की।  
 गोपति-सज्ञा पु० १ शिव। २ चिष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४ राजा। ५ सूर्य। ६ सडि।  
 वृष। बैल। ७ गोरक्षक। ग्वाल। गोप।  
 अहीर।  
 गोपद-सज्ञा पु० गाय के खुर का जमीन पर बना हुआ चिह्न। गोघो के रहन का स्थान। गोशाला।  
 गोपदी-वि० गाय के खुर के समान। बहुत छोटा।  
 गोपन-सज्ञा पु० १ छिपाव। डुराव।  
 २ छिपाना। ३ रक्षा। रक्षण। ४ तेज-वात।  
 गोपना\*†—क्रि० स० छिपाना।  
 गोपनाई-वि० छिपान योग्य। गोप्य। गुह्य।  
 गोपनीय-वि० छिपान के लायक। गोप्य।  
 गोपपत्नी-सज्ञा स्त्री० गोपा का वासस्थान।

गोपर-वि० गोतीत। इन्द्रियो से परे।  
 गोपागन्ता-सज्ञा स्त्री० गोप (अहीर) जाति की स्त्री।  
 गोपा-सज्ञा स्त्री० १ गाय पालनवाली, अहीरिन। ग्वातिन। २ श्यामा लता।  
 ३ महात्मा बुद्ध की स्त्री का नाम।  
 गोपाल-सज्ञा पु० १ गो का पालन-पोषण करनेवाला। २ अहीर। ग्वाला। ३-श्रीकृष्ण। ४ एक छद।  
 गोपालक-सज्ञा पु० गोप। अहीर। ग्वाला।  
 गाय को पालनवाला।  
 गोपाल-तापन, गोपालतापनीय-सज्ञा पु० एक उपनिषद्।  
 गोपालय-सज्ञा पु० गोपगृह। ग्वाला का घर। ब्रज।  
 गोपाष्टमी-सज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ला अष्टमी। इस दिन गाय की पूजा की जाती है।  
 गोपिका-सज्ञा स्त्री० १ गोप की स्त्री। गोपी। २ अहीरिन। ग्वातिन।  
 गोपित-वि० १ जिसकी रक्षा या पालन किया गया हो। पालित। २ गुप्त। अप्रकाशित।  
 गोपी-सज्ञा स्त्री० १ ग्वातिनी। गोपपत्नी।  
 २ श्रीकृष्ण की प्रेमिका ब्रज की गोप-जातीय स्त्रियाँ।  
 गोपीचवन-सज्ञा पु० एक प्रकार की पीली मिट्टी।  
 गोपीनाथ-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण। गोपिया के स्वामी।  
 गोपुच्छ-सज्ञा पु० १ गो की पूँछ। २-एक प्रकार का गावडुमा हार।  
 गोपुत्र-सज्ञा पु० बण।  
 गोपुर-सज्ञा पु० १ नगर का द्वार। शहर का फाटक। २ किंछे का फाटक। पुर-द्वार। ३ फाटक। दरवाजा। ४ स्वर्ग। ५ मन्दिर का फाटक।  
 गोपेन्द्र-सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण। २ गोपी में अष्ट। नद। गोपा के स्वामी।  
 गोप्ता-सज्ञा पु० रक्षा करनेवाला। रक्षक।  
 पालक। गिराजेन्द्र।

गोप्य-वि० गोपनीय । छिपाने या छिपाने योग्य । रक्षणीय । गुप्त रखने योग्य । गोप्रबन्ध-गज्ञा पु० उत्तम गाय । श्रेष्ठ गाय । गोप्रवेश-सज्ञा पु० गोपूती ।

गोक-सज्ञा पु० १ दासीपुत्र । दास । २. गोपियों का समूह । ३. दिताई देने में बाधा डालनेवाला । गुम्फन ।

वि० गुप्त रखने लायक ।

गोकन, गोकना-सज्ञा पु० छींके के आकार का एक जाल जिससे डेले आदि भरपूर चलाते हैं । डेलबाँस । फन्नी । भिन्दिपाल । गुफना ।

सज्ञा स्त्री० जखम की पट्टी ।

गोफा-सज्ञा पु० १. नया निकला हुआ मुँहबँधा पत्ता । २. एक हाथ की उँगलियों का दूसरे हाथ की उँगलियों के अन्तर में उठना । ३. सघन । गुम्फन ।

गोफिया-सज्ञा पु० दे० "गोफन" ।

गोवर-सज्ञा पु० गाय की बिछा । गौ का मल ।

गोवरगणेश-वि० १. मूर्ख । बेवकूफ । २. भट्टा । बदसूरत । ३. अकर्मण्य । आलसी ।

गोवरी-सज्ञा स्त्री० १. कड़ा । उपत्ता ।

२. गोबर की लिपाई । गोमय-लेपन ।

गोबरला, गोबरौदा-सज्ञा पु० दे० "गुवरला" ।

गोभिल-सज्ञा पु० सामवेदी गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि ।

गोभी-सज्ञा स्त्री० १. गोजिया । वनगोभी ।

२. एक प्रकार का शाक । ३. बली । अकुर ।

नई शाखा । कोबी । ४. गोजिह्वा ।

गोमत-सज्ञा पु० पर्वत विशेष । एक पहाड़ का नाम । २. गोआ, पोर्नगाली उपनिवेश ।

गोमका-सज्ञा पु० कुम्हड़ा । कोहड़ा ।

गोमती-सज्ञा स्त्री० १. एक नदी । वासिष्ठी ।

२. एक देवी । ३. ग्यारह मात्राओं का एक छंद । ४. वैदिक मन्त्र विषय ।

गोमय-सज्ञा पु० गोबर ।

गोमक्षिका-सज्ञा स्त्री० डस । डाँस ।

गोमायु-सज्ञा पु० शृगाल । सियार । गीदड़ ।

गोमियुन-सज्ञा पु० दो गौ । गौ की जोड़ी ।

गोमुख-सज्ञा पु० १. गौ का मुँह । २. सेंध ।

सुरंग । ३. नाक नाम का जलजन्तु । ४.

योगासन । ५. टेढ़ा-मेढ़ा घर । ६. एक यज्ञ ।

७. इन्द्रपुत्र । जयन्त के सारथी का नाम ।

८. वह राक्ष जिसका आकार गौ के मुँह के

समान होता है । ९. नर्मगिहा नाम का

बाजा । १०. दे० "गोमुखी" ।

मुहा०-गोमुख नाहर या व्याघ्र=देखने में

बहुत ही सीधा, पर वास्तव में बड़ा भूरभौर

प्रत्याचारी व्यक्ति ।

गोमुखी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की धौली जिसमें हाथ डालकर माला फेरते हैं । जप-माली । जपगुथली २. गगोत्तरी । गंगा के निकलने का स्थान जिसका आकार गाय के मुँह की तरह है ।

गोमूढ़-वि० गौ के समान मूर्ख । अतिशय अज्ञान । अवोध ।

गोमूत्र-सज्ञा पु० गोमूत । गौ का मूत ।

गोमूत्रिका-सज्ञा स्त्री० १. तुण-विशेष । २.

एक वन्य का नाम । ३. वाय्व का एक

भेद ।

गोमेद, गोमेदक-सज्ञा पु० १. एक प्रसिद्ध

मणि । राहुरल । २. गौलोचन । ३.

शीतल चीनी, कदाव चीनी । पीले रंग

का गौ के मस्तक स्थित पदार्थ विशेष ।

गोमेध-सज्ञा पु० एक यज्ञ जिसमें गाय की

बलि चढ़ाई जाती थी ।

गोप-सज्ञा पु० [फा०] गेंद ।

गोपा-कि० वि० [फा०] मानो ।

गौर-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह गड़बा जिसमें

मूत शरीर गाड़ा जाय । कन्न । समाधि-

स्थान । २. गौर । ३. फरसा ।

वि० दे० "गौर" ।

गोरक्ष-वि० गोपाल । गौ रखनेवाला ।

गोरक्षनाथ-सज्ञा पु० गोरक्षनाथ ।

गोरखइमली-सज्ञा स्त्री० एक बहुत बड़ा

पेड़ । कल्पवृक्ष ।

गोरखपथा-सज्ञा पु० १. गोरखपन्थी साधुओं

का एक प्रकार का डंडा । २. कोई ऐसा कार्य

जिसमें भगवा या उत्पन्न हो । भगडा ।

पेच ।

गोरक्षनाथ-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध हठयोगी

सिद्ध महात्मा, गोरक्षपथ के प्रवर्तक ।

गोरखपयी-वि० गोरखनाथ के अनुयायी ।  
हठयोग की साधना करनेवाले ।

गोरखमुडी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घात ।  
एक औषध ।

गोरखा-सज्ञा पु० नेपाल की एक जाति ।  
गोरज-सज्ञा पु० गौ के खुरों से उड़ी हुई  
धूल ।

गोरस्टा\*-वि० [स्त्री० गोरस्टी] गोरे रंग  
वाला । गोरा ।

गोरमबायन-सज्ञा पु० इन्द्रधनुष ।

गोरस-सज्ञा पु० १ दूध । दुग्ध । २  
दधि । बही । मठा । ३ इन्द्रियों का सुख ।  
गोरसा-सज्ञा पु० गाय के दूध से पला हुआ  
बच्चा ।

गोरसी-सज्ञा स्त्री० दूध गरम करने की  
श्रौंगीठी ।

गोरा-वि० गौर वर्ण । सफेद और स्वच्छ  
वर्णवाला । उजला । जिसके शरीर का  
चमड़ा सफेद हो ।

सज्ञा पु० योरोप का निवासी । फिरगी  
पलटन का जवान ।

गोराई\*†-सज्ञा स्त्री० १ गौर वर्ण ।  
गोरपन । २ सुंदरता ।

गोरिल्ला-सज्ञा पु० एक प्रकार का बड़ा बन्दर ।  
गोरी-सज्ञा स्त्री० सुन्दर और गौरवर्ण की  
स्त्री । रूपवती स्त्री ।

गोरुत-सज्ञा पु० दो कोस ।

गोट-सज्ञा पु० सींगवाला पशु । चोपाया ।  
मवेशी ।

गोरोचन या गोरोचना-सज्ञा पु० १ एक  
औषध । २ गाय के हृदय और मस्तिष्क पर  
स्थित पित्त । ३ पीले और नारंगी रंग से  
मिली हुई सुपारी ।

गोलदाज-सज्ञा पु० [फा०] तोप में गोला  
रखकर चलानेवाला । तोपची ।

गोलबर-सज्ञा पु० १ गुबद । २ गुबद के  
आकार का कोई गोल जैसा पदार्थ । ३  
गोलाई ।

गोल-वि० १ जिसका घेरा या परिधि वृत्ता-  
कार हो । चक्र के आकार का । वृत्ताकार ।  
२ गोलाकार । गेंद आदि के आकार का ।

सज्ञा पु० १ मडलाकार क्षेत्र ।  
वृत्त । २ गोलाकार पिंड । गोला ।  
३ मडली । मुंड । ४ वर्णसंकर । विषया का  
जारज पुत्र । ५ एक औषध । मदन-वृक्ष ।  
मैनफल । ६ एक देश । ७ अस्पष्ट । ८ एक  
सुगंधित द्रव्य । ९ एक राशि ।

गूहा-गोल-गोल=१ स्थूल रूप से । मोटे  
हिसाब से २ अस्पष्ट रूप से । गोल बात=  
ऐसी बात जिसका अर्थ स्पष्ट न हो ।

गोलक-सज्ञा पु० १ गोलोक । २ गोल  
पिंड । ३ विषया का जारज पुत्र ।  
४ मिट्टी का बड़ा कुंडा । ५ आँख का  
ढेला । ६ आँख की पुतली । ७ गुबद ।  
८ धन जमा करने का छोटा सड़क या  
थैली । ९ गुल्ला । गुल्लक । १० इन । ११.  
किसी काव्य विशेष के लिए संग्रह किया  
हुआ धन । फंड । १२ इन्द्रियों का  
स्थान ।

गोलगप्पा-सज्ञा पु० छोटी तथा फूली हुई  
फुलकी ।

गोलचला-सज्ञा पु० गोलदाज । तोपची ।

गोलमाल-सज्ञा पु० गडबडी । घपला ।  
धांधलवाजी । अव्यवस्था ।

गोल मिर्च-सज्ञा स्त्री० काली मिर्च ।

गोलयत्र-सज्ञा पु० ग्रहा नक्षत्रों की गति  
आदि जानने का यंत्र विज्ञाप ।

गोलयोग-सज्ञा पु० १ ज्योतिष में एक बुरा  
योग । २ गडबड । गोलमाल ।

गोलामूल-सज्ञा पु० एक प्रकार का बन्दर,  
जिसकी पूँछ गाय की सी होती है ।

गोला-सज्ञा पु० १ किसी पदार्थ का बड़ा  
गोल पिंड । जैसे—सोहे का गोला ।

२ तोप का बमगोला । ३ वायु-गोला ।

४ जंगली कबूतर । ५ नारियल का  
पिंड । गरी का गोला । ६ बाजार या

मंडी, जहाँ अनाज या किरान की दुकानें  
हो । ७ लकड़ी का लम्बा लट्ठा जो छाजन

आदि में काम आता है । काँडी । बल्ला ।  
८ गोल लपेटी हुई पिंडी । ९ गेंद ।

१० घरा । मडल । ११. वृक्ष ।

गोलाई-सज्ञा स्त्री० गोलापन ।

गोलाकार, गोलाकृति-वि० जो गोल हो ।  
गोल । जिसकी बनावट गोल हो ।

गोलाध्याप-संज्ञा पु० ज्योतिषविद्या । ज्योतिष  
के एक ग्रन्थ का नाम ।

गोलार-संज्ञा पु० गोलाई । हेरफेर ।

गोलादंड-संज्ञा पु० पृथ्वी का आधा भाग जो  
एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच  
काटने से बनता है ।

गोली-संज्ञा स्त्री० १. छोटी गोलाकार वस्तु ।  
बटिया । २. औषध की बटिया । बटी ।  
३. बौंच आदि का छोटा गोल पिंड जिससे  
बालक खेलते हैं । ४. गोली का खेल ।  
बन्दूक की गोली ।

मुहा०-गोली मारना=बन्दूक चलाना ।  
ध्यान न देना ।

गोलोक-संज्ञा पु० कृष्ण का निवासस्थान  
जो सब लोकों से ऊपर माना जाता है ।  
वैकुण्ठ । स्वर्ग ।

गोलोक-प्राप्ति-संज्ञा स्त्री० स्वर्गवास । मुक्ति ।

गोलोकवासी-संज्ञा पु० भगवान् । श्रीकृष्ण ।

गोलोमा-संज्ञा स्त्री० औषध-विरोध ।

गोवना\*-वि० सं० दे० "गोना" । छिपाना ।

गोवर्द्धन-संज्ञा पु० वृन्दावन का एक पवित्र  
पर्वत जिसे श्रीकृष्ण ने अपनी उंगली पर  
उठाया था ।

गोवर्द्धनधारी-संज्ञा पु० गोवर्द्धन पर्वत को  
धारण करनेवाला, श्रीकृष्ण ।

गोवशा-संज्ञा स्त्री० बन्ध्या गो । बहिला गाय ।

गोविंद-संज्ञा पु० १. परब्रह्म । श्रीकृष्ण ।

२. वेदातवेत्ता । तत्त्वज्ञ । ३. बृहस्पति ।

४. विद्वत् को जाननेवाला । ५. रामराचार्य

के गुरु का नाम । ६. सिक्खों के दस गुरुओं  
में से एक ।

गोश-संज्ञा पु० [फा०] सुनने की इन्द्रिय ।  
वान ।

गोशमाली-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. कान  
जमेठना । २. ताड़ना । बड़ी चेतावनी ।

गोशायार-संज्ञा पु० [फा०] १. गोद । २. वान  
का बाला । फुडल । ३. यड़ा मोती जो  
सीप में भरेला हो । ४. कलाबत्त से बुना  
हुआ पगड़ी का आंचल । ५. तुरी ।

कलंगी । सिर-पेच । ६. जाड़ । भीजान ।  
७. मक्षिप्त लेखा जिनमें हर एक मद का  
आय-व्यय अलग-अलग दिग्गलाया गया हो ।

गोशा-संज्ञा पु० [फा०] १. बोना । २. एकांत  
स्थान । ३. तरफ । दिशा । ओर । ४.  
वर्मान की दोनों नोकें । धनुषकोटि ।

गोशाला-संज्ञा स्त्री० गोश्रा के रहने का स्थान ।

गोश-संज्ञा पु० [फा०] मार्ग ।

गोष्ठ-संज्ञा पु० १. गोशाला । बाड़ा । २.  
परामर्श । सलाह । ३. दल । मंडली ।  
४. एक श्राद्ध ।

गोष्ठविहार-संज्ञा पु० गौ चराने के समय  
श्रीकृष्ण की केलि ।

गोष्ठी-संज्ञा स्त्री० १. थोड़े से लोगों की  
बैठकी । छोटी सभा । २. परिवार । कुटुम्ब ।  
३. मंडली । वार्तालाप । बातचीत । ४.  
परामर्श । सलाह । ५. एक ही श्रम का  
एक रूपक (नाटक) ।

गोष्पद-संज्ञा पु० गौ के रहने का स्थान । गौ  
के खुर का प्रमाण ।

गोसमायल-संज्ञा पु० दे० "गोशवार" ।

गोसाई-संज्ञा पु० १. गुरु । २. ईश्वर ।  
३. सन्यासियों का एक भेद । ४. महन्त ।  
साधु । अतीत । ५. मालिक । प्रभु ।  
स्वामी । ६. जितेन्द्रिय ।

गोसायां-संज्ञा पु० दे० "गोसाई" ।

गोस्तन-संज्ञा पु० १. गाय का घन । २.  
गुच्छ । घोंद । ३. स्तवक ।

गोस्तनी-संज्ञा पु० द्राक्षा । दाख । अंगूर ।

गोस्थान-संज्ञा पु० गोष्ठ । गोठ । गोकुल ।  
गोशाला ।

गोस्वामी-संज्ञा पु० १. जितेन्द्रिय । २.  
वेण्णव-संप्रदाय के आचार्य । गोपति । गो-  
रक्षक ।

गोह-संज्ञा स्त्री० एक जल-जन्तु ।

गोहन\*-संज्ञा पु० १. संग रहनेवाला । साथी ।  
२. संग । साथ ।

गोहरा-संज्ञा पु० सुताया हुआ गोबर । कंठा ।  
उपला ।

गोहराना-वि०-क्रि० रा० पुनारना । बुलाना ।  
आवाज देना ।

गोहरी-मञ्जा स्त्री० उपरी । कडा । छरना ।  
 गोहार-सञ्जा स्त्री० १ पुवार । दुहाई ।  
 सहायता के लिए चिल्लाना । २ हल्ला-  
 गुल्ला । शोर । गुल-गुलाडा ।  
 गोहारी†-सञ्जा स्त्री० दे० "गोहार" ।  
 गोही\*†-सञ्जा स्त्री० १ डुराव । धिपाव ।  
 २ छिपी हुई बात । गुप्त वार्ता । ३  
 गाँठ । गुठली ।  
 गौ-सञ्जा स्त्री० १ सुयोग । मौका । घात ।  
 सुभीता । दाँव । २ प्रयोगन । ३ ढग ।  
 ढय । तरीका । ४ पार्श्व । पक्ष ।  
 यौ०-गौ घात=उपयुक्त अवसर । मतलब ।  
 गरज । अर्थ ।  
 मुहा०-गौ का यार=मतलबी । स्वार्थी ।  
 गौ निकलना=बाम निकलना । स्वार्थ सिद्ध  
 होना । गौ पडना=गरज होना ।  
 गौला-मन्त्र पु० ताव । आला । गोला ।  
 गौ-सञ्जा स्त्री० गाय । गैया । धनु ।  
 गोख†-सञ्जा स्त्री० १ छोटी खिडकी ।  
 कराखा । २ गवाक्ष ।  
 गोखा†-सञ्जा पु० १ दे० "गौख" । २.  
 गाय का चमडा ।  
 गोसा-सञ्जा पु० [अ०] १ शोर । गुल  
 गपाडा । हल्ला । २ अफवाह । जनश्रुति ।  
 किंवदन्ती ।  
 गोचरी-सञ्जा स्त्री० गाय चराने का कर ।  
 गोछई-सञ्जा स्त्री० अकुर । करी । फुनगी ।  
 गौड-सञ्जा पु० १ बंगाल का एक प्राचीन  
 पूर्वीय भाग । २ गौड देश का वासी ।  
 ३ ब्राह्मणों की एक ज्योतिषि । ४ कपल्यो  
 का एक भद्र । ५ गौड मत्तार । एक  
 राग ।  
 गौडपाद-सञ्जा पु० श्वराचार्य के गुरु के गुण ।  
 गौडमल्लार-सञ्जा पु० एक राग ।  
 गौडसारण-सञ्जा पु० एक राग ।  
 गौडा-सञ्जा पु० १ उड़ीसा । २ कहार ।  
 गौडिया†-वि० १. गौड देश का । गौड  
 देश-सम्बन्धी । २ महाप्रभु चंदायके अनुयायी ।  
 गौडी-सञ्जा स्त्री० १ गुड में बनी मदिरा ।  
 २ वाय्व में एक रीति या वृत्ति । ३  
 एक रागिनी ।

गौडेश्वर-सञ्जा पु० वृष्ण चैतन्य स्वामी ।  
 गौराग प्रभु ।  
 गौण-वि० १ अप्रधान । साधारण । २  
 सहायक । सचारी । अधीन । गौणीवृत्ति-  
 द्वारा अर्थ का बोध ।  
 गौणवाल-सञ्जा पु० अप्रधान काल ।  
 गौगी-वि० अप्रधान । साधारण ।  
 सञ्जा स्त्री० एक लक्षण जिसमें किसी एक  
 वस्तु का गुण दूसरे में आरापित किया  
 जाय ।  
 गौतम-सञ्जा पु० १ गौतम ऋषि के वंशज  
 ऋषि । २ न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध आचार्य  
 ऋषि । ३ बुद्धदेव का दूसरा नाम ।  
 ४ सप्तर्षि-मण्डल में से एक । ५ अहल्या  
 के पति । ६ पर्वत का नाम जिससे गोदा-  
 वरी निकलती है ।  
 गौतमी-सञ्जा स्त्री० १ गौतम ऋषि की  
 स्त्री, अहल्या । २ कृपाचार्य की स्त्री ।  
 ३ गोदावरी नदी । ४ दुर्गा । ५ गौतम की  
 बनाई हुई स्मृति ।  
 गौडुमा-वि० दे० "गावडुम" ।  
 गौन†-सञ्जा पु० दे० "गमन" ।  
 गौनहाई†-वि० जिस स्त्री का गौना हाल में  
 हुया हो ।  
 गौनहार-सञ्जा स्त्री० १ दुल्हन के साथ  
 समुराल जानेवाली स्त्री । २ दे० "गौन-  
 हारी" । गौन के बराती ।  
 गौनहारिन, गौनहारी-सञ्जा स्त्री० गाने का  
 पेश करनेवाली स्त्री ।  
 गौना-सञ्जा पु० धिपाह के बाद की एक रत्न  
 जिसमें बर बभू को अपने साथ घर ले  
 आता है । द्विरागमन ।  
 गौर-वि० १ गोरा । २ श्वेत । उज्ज्वल ।  
 सफ़ेद । सुंदर ।  
 सञ्जा पु० १ लाल रंग । २ पीला रंग ।  
 ३ चंद्रमा । ४ सोना । ५ कैतर ।  
 ६ गौड । ७ धव वृक्ष । ८ माप-  
 विशेष । ९ पर्वत विशेष । १० कपूर ।  
 पार्वती ।  
 गौर-सञ्जा पु० [अ०] १ सोच विचार । चिंतन ।  
 २ स्याव । ध्यान ।

गौरता-गज्ञा स्त्री० १. गौराई । गौरापन ।  
२. गपेंदी ।

गौरव-गज्ञा पु० १. वटप्यन । प्रभाव ।  
महत्त्व । २. गुणा । भारीपन । ३.  
सम्मान । आदर । इज्जत । ४. उत्कर्ष ।  
५. अभ्युत्था । ६. प्रभाव । ७. मर्यादा ।  
८. भाग । ९. स्थाय । १०. प्रतिष्ठा ।  
यश । बडाई ।

गौरवजनक-वि० मर्यादाजनक । सम्मान-  
सूचक ।

गौरवान्वित-वि० गौरवयुक्त । गौरव या  
महिमा से युक्त । प्रतिष्ठित । सम्मानित ।  
मान्य । पूज्य ।

गौरवित-वि० दे० 'गौरवान्वित' ।

गौरवी-वि० [स्त्री० गौरविनी] दे० "गौर-  
वान्वित" । अभिमानिनी ।

गौराग-सज्ञा पु० १. विष्णु । २. श्रीकृष्ण ।  
३. चैतन्य महाप्रभु ।

वि० १. श्वेतवर्ण । सुन्दर । २. पीतवर्ण ।  
३. यारापियन । गोरे भगवाला ।

गौरा-गज्ञा स्त्री० १. गारे रंग की स्त्री ।  
२. पार्वती । गिरिजा । दुर्गा । ३. हन्दी ।  
४. पक्षी विराप ।

गौरिका-सज्ञा स्त्री० आठ वर्ष की कन्या ।

गौरिया-सज्ञा स्त्री० १. एक पक्षी । २.  
मिट्टी का छोटा हुक्का । ३. चटब । ४.  
गौरा । ५. एक प्रकार का कपडा ।

गौरिला-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी । धरती ।

गौरी-सज्ञा स्त्री० १. गोरे रंग की स्त्री ।

२. पार्वती । गिरिजा । उमा । ३. आठ

वर्ष की कन्या । ४. हल्दी । ५. तुलसी ।

६. गोरोचन । ७. सफेद रंग की गाय ।

८. सफेद दूध । ९. गंगा नदी । १०.

पृथिवी । ११. वरुण की स्त्री । १२. बुद्ध की

एक नावित का नाम । १३. जटामांसी ।

१४. रागिनी विराप ।

गौरीचन्दन-सज्ञा पु० लाल चन्दन ।

गौरीज-सज्ञा पु० १. कालिकेय । २. गणेश ।

३. अभ्रक । अवरक ।

गौरीवति-सज्ञा पु० शिव । महादेव ।

गौरीमुत्र-सज्ञा पु० कात्तिकेय । गणेश ।

गौरीशकर-गज्ञा पु० १. महादेव । शिव ।  
२. हिमालय पर्वत की सयन ऊँची चोटी  
का नाम ।

गौरीश-गज्ञा पु० शिव । महादेव ।

गौरिया-गज्ञा स्त्री० दे० "गौरिया" ।

गौर्मिस्-सज्ञा पु० एक गुरन या ३० सैन्तियों  
का नावक ।

गौहर-गज्ञा पु० मोती ।

गौशाला-गज्ञा स्त्री० गायों के रहने का स्थान  
या घर । गोष्ठ ।

ग्यान-सज्ञा पु० दे० "ज्ञान" ।

ग्यारस-सज्ञा स्त्री० एकादशी तिथि । व्रत  
विशेष ।

ग्यारह-वि० दस और एक ।

सज्ञा पु० दस और एक की सूचक सख्या ।  
११ ।

ग्यारहवाँ-वि० ग्यारहवीं सख्या का । ग्यारह  
स्थान का ।

ग्रय-सज्ञा पु० १. पुस्तक । विताय । २.  
गाँव देना या लगाना । ३. धन । ४. प्रवच ।

वास्तव । ५. अनुष्ठुप छद्म । श्लोक ।

ग्रयक-सज्ञा पु० १. निमाणवर्त्ता । पुस्तक के  
रचयिता । २. निवधकार । माना का  
सूत्र ।

ग्रयकर्त्ता, ग्रयकार-सज्ञा पु० ग्रय की रचना  
करनवाला ।

ग्रयचुबक-सज्ञा पु० जो ग्रय को देवन  
साधारण रूप से पढ़े हो । अल्पज्ञ ।

ग्रयचुबन-सज्ञा पु० विज्ञान को सरसरी तौर  
पर पढ़ना ।

ग्रयन-सज्ञा पु० १. गाद लगाकर जोड़ना ।

२. जोड़ना । ३. गूँथना । ४. गुम्फन । ५.

निर्माण ।

ग्रयसधि-सज्ञा स्त्री० ग्रय का विभाग । जैसे—  
सर्ग, अध्याय आदि ।

ग्रय साहब-सज्ञा पु० सिक्खों की धर्म-  
पुस्तक ।

ग्रयि-सज्ञा स्त्री० १. गाँव । २. वधन ।  
३. मायाजाल । ४. एक रोग । ५. कुटिलता ।

६. आतू । ७. भद्रमोया ।

ग्रयिव-सज्ञा पु० १. दैवज्ञ । गणक । २. सहदेव ।

नामका पाडव । ३. पीरामूल । ४. करीर ।  
 ५. गुग्गुल । गठिवन ।  
 ग्रथित-वि० १ गुंथा हुआ । ग्रथित ।  
 २ गांठ दिया हुआ । जिसमें गांठ लगी हो ।  
 ३ रचित । निमित्त ।  
 ग्रथिपर्णी-सज्ञा स्त्री० गांठर । दूब ।  
 ग्रथिवधन-सज्ञा पु० विवाह के समय वर  
 और बन्धा के वपडों के कोनों को परस्पर  
 गांठ देकर बांधना । गँठवधन ।  
 ग्रथिमान-सज्ञा पु० १ हरसिंगार । २. जड़ ।  
 ३ हड़जोड़ औषध, जिससे टूटी हड्डी जुड़  
 जाती है ।  
 ग्रथिल-वि० गांठदार । गँठीला ।  
 सज्ञा पु० १ अदरक । आदो । २ बाँकई  
 वृक्ष । ३ करील । ४ आलू ।  
 ग्रथित-वि० गांठ देकर बाँधा हुआ । एक में  
 गुथा या पिरोया हुआ ।  
 ग्रसन-सज्ञा पु० १ भोजन करना । भक्षण ।  
 निगलना । २ पकड़ । ग्रहण । ३ प्राप्त ।  
 ४ आक्रमण ।  
 ग्रसना-क्रि० सं० १ पकड़ना । २ सताना ।  
 ग्रसित-वि० दे० 'ग्रस्त' ।  
 ग्रस्त-वि० १ पकड़ा हुआ । २ पीड़ित ।  
 ३ खाया हुआ । आच्छादित । आनान्त ।  
 ग्रस्तास्त-सज्ञा पु० ग्रहण लगने पर चंद्रमा  
 या सूर्य का अस्त होना ।  
 ग्रस्तोदय-सज्ञा पु० ग्रहण लगन पर चंद्रमा  
 या सूर्य का उदय होना ।  
 ग्रह-सज्ञा पु० १ सूर्य आदि नवग्रह ।  
 २ नी की ररपा । ३ ग्रहण करना ।  
 लना । ४ अनुग्रह । दृपा । ५ चंद्रमा  
 या सूर्य का ग्रहण । ६ राहु । ७ छोट  
 घच्चा के रोग । ८ निर्वन्ध । ९ आप्रह ।  
 १० हठ । ११ अध्यवसाय ।  
 ग्रहा-ग्रच्छे ग्रह होना = ग्रच्छा समय होना ।  
 फलित के अनुसार शुभ या अनुकूल ग्रह  
 होना । बुरे ग्रह होना = ग्रहो का प्रतिकूल  
 होना ।  
 ग्रवि० दुख देनेवाला ।  
 ग्रहल्लोल-सज्ञा पु० आटवाँ ग्रह । राहु ।  
 ग्रहण-सज्ञा पु० १ जब सूर्य और पृथ्वी

के बीच चन्द्रमा के आ जाने से सूर्य का  
 कुछ या सम्पूर्ण भाग नहीं दिखलाई पड़ता,  
 तो उसे सूर्यग्रहण कहते हैं । जब चन्द्रमा और  
 सूर्य के बीच पृथ्वी के आ जाने से सूर्य की  
 किरण चन्द्रमा तक नहीं पहुँच पाती और  
 उसका कुछ या सम्पूर्ण प्रकाश हीन हो  
 जाता है तब उसे चन्द्रग्रहण कहते हैं ।  
 २ सूर्य या चन्द्रमा के कुछ या सम्पूर्ण  
 भाग का अदृश्य हो जाना । ३ स्वीकार ।  
 मजूरी । ४. लना, उपलब्धि, प्राप्ति ।

ग्रहणात-सज्ञा पु० ग्रहण की समाप्ति । मोक्ष ।  
 उग्रह ।

ग्रहणी-सज्ञा स्त्री० अतिसार रोग । सग्रहणी ।

ग्रहणीय-वि० ग्रहण करने योग्य । ग्राह्य ।

ग्रहवशा-सज्ञा स्त्री० १ ग्रहा की स्थिति ।

२ ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी  
 मनुष्य की भत्ती या बुरी अवस्था । ३  
 अभाग्य ।

ग्रहपति-सज्ञा पु० १ सूर्य । २ शनि ।  
 ३ आक का पड़ ।

ग्रहवेध-सज्ञा पु० ग्रह की स्थिति आदि का  
 जानना ।

ग्रहस्थापन-सज्ञा पु० नवग्रहों की स्थापना ।  
 पूजा विदाप ।

ग्रहीत-वि० पकड़ा हुआ ।

ग्रहीता-वि० ग्रहणकर्त्ता । ग्राहक । पकड़ा  
 हुआ ।

ग्राहील-वि० ऊँचे कद का । बहुत बड़ा या  
 ऊँचा । विशालकाय ।

ग्राम-सज्ञा पु० १ गाँव । २ मनुष्यों के  
 रहने का स्थान । बस्ती । आवादी ।  
 जनपद । ३ समूह । ढेर । ४ शिव ।  
 ५ क्रम से सात स्वरो का समूह । सप्तक  
 (संगीत) ।

ग्रामवक्त्र-सज्ञा पु० पालतू मुर्गा ।

ग्रामणी-सज्ञा पु० १ गाँव का मुखिया,  
 मालिश । २ प्रधान । अगुवा । ३  
 विष्णु । ४ मङ्गल । ५ नापित । ६ यक्ष ।  
 ७ नील का पड़ ।

सज्ञा स्त्री० बैरवा ।

ग्रामदेवता-सज्ञा पु० १ किसी एक गाँव

में पूजा जानेवाला देवता । २. गाँव की रक्षा करनेवाला देवता ।

ग्रामप्राजक-सज्ञा पु० गाँव का पुरोहित ।

ग्रामप्राप्ति-सज्ञा पु० गाँव का रहनेवाला ।

ग्रामिण-वि० ग्राम्य । देहाती । गाँव का ।

ग्रामीण-वि० देहाती । गँवार । ग्रामवासी ।

सज्ञा पु० गाँव में उत्पन्न ।

ग्रामपंच-सज्ञा पु० गाँव के भगड़े मिटानेवाले ।

गाँव के मुखिया ।

ग्रामेश-सज्ञा पु० गाँव का मालिक, जमींदार ।

ग्राम्य-वि० १. गाँव से सबंध रखनेवाला ।

ग्रामीण । २. मूल । मूढ़ । ३. प्राकृत ।

असली । ४. छल-नपट रहित ।

सज्ञा पु० १. काष्ण से भड़े या गँवारु शब्द

ग्राने का दोष । २. असली शब्द या

वाक्य । ३. मंथन । स्त्री-प्रसंग । ४. मियुन

राशि । ५. गधा, घोडा, खच्चर, बैल आदि

पशु जो गाँवों में पाले जाते हैं ।

ग्राम्यदेवता-सज्ञा पु० ग्रामरक्षक । देवता ।

ग्राम्यधर्म-सज्ञा पु० मंथन । स्त्री प्रसंग ।

प्रात-सज्ञा पु० पर्वत । पत्थर । झोला ।

विनोरी ।

प्रात-सज्ञा पु० १. मुँह में जितना भोजन

एक बार में डाला जाय । गस्सा । कौर ।

निवाला । २. पकड़ने की क्रिया । पकड़ ।

३. ग्रहण लगना ।

प्राप्तक-वि० १. पकड़नेवाला । २. भक्षण ।

निगलनेवाला । ३. छिपाने या दबानेवाला ।

रोकनेवाला ।

प्राप्तना-वि० स० दे० "प्रसना" । १. रोकना,

घेरना । २. दबाना । छिपाना ३. भक्षण

करना ।

प्रास्ताच्छादन-सज्ञा पु० अन्न-वस्त्र । रोटी-

बपडा ।

प्राह-सज्ञा पु० १. मगर । घडियाल । नक्र ।

२. ग्रहण । ३. उपराग । ४. पकड़ना ।

लाना ।

प्राह-सज्ञा पु० १. ग्रहण करनेवाला ।

२. मोल लेनेवाला । खरीदनेवाला । खरी-

दार । ३. लेने या पाने की इच्छा रखने-

वाला । चाहनेवाला । ४. एक घोष ।

५. सेंपेरा ।

प्राही-सज्ञा पु० [स्त्री० ग्राहिणी] १. बट

जा ग्रहण करे । स्त्रीरार भरनेवाला ।

२. मन रोकनेवाला पदार्थ । ३.

पंधा ।

प्राह्य-वि० १. लेने योग्य । २. स्वीकार

करने योग्य । ३. जानने योग्य ।

प्रीधा-सज्ञा स्त्री० गर्दन । कट । गले में नीचे

का भाग ।

प्रीधाभरण-सज्ञा पु० कठभूषण । कटा ।

प्रीधम\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "प्रीधम" ।

प्रीधम-सज्ञा स्त्री० १. गरमी की श्रुति ।

गरमी । जठ असाढ़ का समय । २. उष्ण ।

गरम ।

प्रीधमकाल-सज्ञा पु० निदाघ । गरमी के

दिन ।

प्रीधम-सज्ञा पु० कठभूषण । गले का गहना ।

स्तपित-वि० अवसन्न । थका हुआ । आत ।

बनावट ।

स्तह-सज्ञा पु० जुए की धाजी । पण ।

दाव ।

स्तान-वि० रोग-द्वारा दुर्बल शरीर । रोगी ।

क्षिन्न । कमजोर ।

स्तानि-सज्ञा स्त्री० १. मानसिक स्थिरता ।

अनुत्साह । खेद । २. धाति । निन्दा ।

मानसिक ध्वसा । क्षिप्रता ।

ग्वार-सज्ञा स्त्री० एक पीधा जिसकी फलियों

की तरकारी मोर बीजों की दाल होती

है । कौरी । खुरयो ।

ग्वारनट, ग्वारनट-सज्ञा स्त्री० [अप्र०]

एक प्रकार का रेसमी बपडा ।

ग्वारपाठा-सज्ञा पु० धीकूआर ।

ग्वारफली-सज्ञा स्त्री० ग्वार की फली जिसकी

तरकारी बनती है ।

ग्वारी-सज्ञा स्त्री० दे० "ग्वार" ।

ग्वाल-सज्ञा पु० १. अहीर । २. एक छद

का नाम ।

ग्वाला-सज्ञा पु० दे० "ग्वाल" । अहीर ।

गोप ।

ग्वालिन-सज्ञा स्त्री० १. ग्वाले की स्त्री ।

गवाल जाति की स्त्री । २. गोपी । ग्वार ।  
३. एक बरसाती कीड़ा । गिजाई ।  
घिनोरी ।  
खेठना†—कि० स० मरोड़ना । ऐंठना ।  
घुमाना ।

खेडा†—सज्ञा पु० दे० “गोडेड” । समीप ।  
निकट । आसपास । नगर के समीप ।  
खेडे—अव्य० पास । समीप । निकट ।  
ग्ली—सज्ञा पु० १. चन्द्रमा । २. शशि ।  
३. विष्णु । कपूर ।

## घ

घ—हिंदी वर्णमाला के व्यंजनो में से कवर्ग का चौथा व्यंजन । इसका उच्चारण जिह्वा-मूल या कण्ठ से होता है ।  
सज्ञा पु० १. घटा । घंघर शब्द । २. मेघ । ३. धूप ।  
घंघरा, घंघरी—सज्ञा स्त्री० लहंगा । साया ।  
स्त्रियो के पहनने का एक वस्त्र ।  
घंघराघोर—सज्ञा पु० भ्रष्टाचार ।  
घंघोरना या घंघोलना—कि० स० १. हिला-बर घोलना । २. पानी को हिलाकर मिला करना । क्लृप्त करना । कटारना ।  
गंदला करना ।  
घंघ—सज्ञा पु० गला । कण्ठ । ग्रीवा ।  
घट—सज्ञा पु० १. घड़ा । २. जलपात्र जो श्राद्ध-कर्म में पीपल में बाँधा जाता है ।  
दे० “घटा” ।  
घंटा—सज्ञा पु० [स्त्री० घटी] १. बाजा । घड़ियाल । २. दिन-रात का चौबीसवाँ भाग । साठ मिनट का समय । ३. समयसूचक ध्वनि ।  
घंटाघर—सज्ञा पु० ऊँचे स्तम्भ पर लगी हुई बड़ी घड़ी जो दूर से दिखाई देना सुनाई देती है । वह घड़ी जो चारों ओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घटा दूर तक सुनाई देता हो ।  
घंटापय—सज्ञा पु० गाँव का प्रधान मार्ग ।  
घंटालि—सज्ञा स्त्री० छोटा घटा । वृक्ष-विशेष ।  
घंटिया—सज्ञा स्त्री० १. एक बहुत छोटा घटा । २. घुंघुर्ना । ३. तालु के ऊपर की छोटी जीभ । घांटी । लोला ।  
घटी—सज्ञा स्त्री० १. छोटी लोटिया ।  
वहूँ छोटा घटा । २. घटी बजने का

शब्द । ३. घुंघुर्ना । चौरासी । ४. गले की हड्डी की गुरिया । ५. गले के अंदर मांस की छोटी पिंडी जो जीभ के पास लटकती रहती है । कौआ ।  
घंटू—सज्ञा पु० १. हाथी का घटा । २. प्रताप । ३. उत्ताप । ४. घटीमाला ।  
घटेश्वर—सज्ञा पु० देवता विशेष । शिव का एक अनुचर (घटोत्कर्ण) । मंगल का पुत्र ।  
घई\*—सज्ञा स्त्री० १. गभीर भँवर । पानी का चक्कर । २. झूनी । टेक ।  
वि० जिसकी थाह न लग सके । बहुत गहरा । अथाह ।  
घघरा—सज्ञा पु० दे० “पाघरा” ।  
घत्ताघघ—सज्ञा पु० १. नरम वस्तु में भारदार वस्तु के घँसने का शब्द । २. ठसाठस । अत्यन्त सलीला । लवालवा भरा हुआ ।  
घटत—सज्ञा स्त्री० ह्रास । हीनता । उतार । न्यूनता । कमी । अल्पता ।  
घट—सज्ञा पु० १. घड़ा । कुंभ । जलपात्र । बलस । २. परिमाण-विशेष । ३. घन्ट-करण । मन । ४. पिंड । शरीर ।  
वि० घटा हुआ । कम ।  
मुहा०—घट में बसना या बैठना=मन में बसना । ध्यान पर चडा रहना । घट-घट व्यापी=घन्टयाँमी ।  
घटक—सज्ञा पु० १. घड़ा । २. ग्रीव में पड़ने-वाला । दलाव । मध्यस्थ । मोजन । बुटना ।  
दूत । विवाह-समय तम बरतनेवाला ।  
३. चतुर व्यक्ति । ४. चारण ।  
घटवता—सज्ञा स्त्री० १. गप्यस्थता । २. दीप्त्य । ३. बुटनापन ।  
घटकर्ण\*—सज्ञा पु० दे० “कुंभकर्ण” ।

घटकर्पूर-राजा विभ्रमादित्य की समा के एक समारोहित ।

घटका-सज्ञा पु० मरने के पहले की वह अवस्था जिसमें साँस रुक-रुककर परंपराहट के साथ निकलती है। मफ छेकने की अवस्था। धर्रा ।

घटज-सज्ञा पु० कुमज ऋषि । भगस्य मुनि ।

घटती-सज्ञा स्त्री० १. बमी । अवनति । न्यूनता । २. घाटा । हीनता । अप्रतिष्ठा ।

घटदासी-सज्ञा स्त्री० घुटनी । दूती । मेल करानेवाली ।

घटन-सज्ञा पु० [वि० घटनीय, घटित] १. गड़ा जाना । २. प्रयत्न । उपस्थित होना । जो हो रहा हो । ३. कोई घटना होना ।

घटना-क्रि० अ० १. उपस्थित होना । होना । २. अद्भुत कार्य । विलक्षण दृश्य । योजन । मिलन । ३. ठीक उतरना । सटीक बैठना । ४. कम होना । न्यून होना । क्षीण होना ।

सज्ञा स्त्री० कोई बात जो हो जाय । वाक्या । वारदात ।

घटनीय-वि० सभाव्य । योग्य । होने योग्य । घटबड़-सज्ञा स्त्री० बमी-बेसी । न्यूनाधिकता ।

घटपोनि-सज्ञा पु० भगस्य मुनि । कुमज ।

घटवाई-सज्ञा पु० घाट का कर लेनेवाला । सज्ञा स्त्री० कम कराना ।

घटवाना-क्रि० स० घटाने या काम कराना । कम कराना ।

घटवार, घटवारिया, घटवालिया-सज्ञा पु० १. घाटवाला । घाटिया । घाट का देवता । २. घाट का महसूल लेनेवाला । ३. मल्लाह । केवट । ४. घाट पर बैठकर दान लेनेवाला ब्राह्मण ।

घटसभ्य-सज्ञा पु० भगस्य मुनि ।

घटस्थापन-सज्ञा पु० १. किसी मंगल-कार्य या पूजन आदि के पूर्व जलभरा पड़ा पूजन के स्थान पर रखना । २. नवरात्र

का पहला दिन । (इस दिन से देवी की पूजा का आरम्भ होता है ।)

घटहा-सज्ञा पु० १. घाट का ठेका लेनेवाला । २. नदी के इस पार से उस पार जानेवाली नियत नाव । ३. अपराधी । दोषी ।

घटा-सज्ञा स्त्री० १. मेघ । बादल । मेघमाला । बादलों का समूह । उमड़े हुए बादल । २. मीड़ ।

क्रि० अ० कम हुआ । घट गया ।

घटाई\*-सज्ञा स्त्री० हीनता । अप्रतिष्ठा । वेद्वृज्जती । बमी ।

घटाकाश-सज्ञा पु० घटों के अंदर की खाली जगह । सर्वत्र ।

घटाटोप-सज्ञा पु० १. आकाश में बादलों की चारों ओर से ऐसी घटा जिससे एकदम अन्धकार हो जाय । गहरी बदली । अत्यन्त अन्धकार । २. गाड़ी या घहली को ढक लेनेवाला श्रोहार । यवनिका । ३. दम्भ । अभिमान ।

घटाना-क्रि० स० १. कम करना । २. बाकी निवालना । काटना । ३. अपमान करना ।

घटाब-सज्ञा पु० १. उत्तार । न्यूनता । बमी । २. अवनति । ३. नदी की वाड़ की बमी ।

घटावना,†-क्रि० स० दे० "घटाना" ।

घटिक-सज्ञा पु० घटा पूरा होने पर घटा बजानेवाला व्यक्ति ।

घटिका-सज्ञा स्त्री० १. छोटा घटा या नाँद । २. घटी यंत्र । घड़ी । ३. मूहत्तं । दण्ड । गुल्फ । २४ मिनट का समय । ४. एंडी के ऊपर का भाग ।

घटित-वि० १. जो हो चुका हो । जो घटना हो चुकी हो । बना हुआ । रचा हुआ । रचित । २. संप्रयुक्त ।

घटिमा-वि० १. खराब । सस्ता । 'बढ़िया' का उलटा । २. तुच्छ । निम्न । ३. कम दाम की वस्तु ।

घटिमाई-सज्ञा स्त्री० नीचता ।

घटिहा-वि० १. घाट पारकर अपना स्वार्थ साधनेवाला । २. चालाक । मक्कार ।

३. धोखेवाज। बेईमान। ४. व्यभिचारी।  
लपट। ५. दुष्ट। ६. "घटिया"।  
घटी-संज्ञा स्त्री० १. २४ मिनट का समय।  
घड़ी। मुहूर्त। २. समयसूचक यंत्र, घड़ी।  
३. घाटा। कमी। न्यूनता। ४. हानि।  
क्षति। नुकसान।

घटीकार-संज्ञा पुं० घड़ी बनानेवाला। घड़ी-  
साज। कुम्हार।

घटीयंत्र-संज्ञा पुं० १. समयसूचक यंत्र।  
घड़ी। २. जल निकालने का यंत्र।

घटका\*-संज्ञा पुं० दे० "घटोत्कच"।

घटोत्कच-संज्ञा पुं० हिंडवा से उत्पन्न भीम  
का पुत्र। राक्षस-विशेष। महाभारत के  
रणक्षेत्र में इसने पाण्डवों की और से युद्ध  
किया था। कर्ण ने इन्द्रप्रदत्त शक्ति से  
इसका वध किया था।

घट्टा-संज्ञा पुं० चाम का वह भाग जो काम  
करने या रखे लगने से मोटा हो गया हो।

घड़घड़ाना-क्रि० अ० गड़गड़ या घड़घड़  
शब्द करना। गड़गड़ाना। गरजना। लड़-  
कना।

घड़घड़ाहट-संज्ञा स्त्री० घड़घड़ शब्द होना।  
घड़त-संज्ञा स्त्री० बनावट। साँचा। आकृति।  
डील।

घड़नई, घरनई या घघ्रई-संज्ञा स्त्री०  
दे० "घड़नैल"।

घड़ना-क्रि० स० दे० "गड़ना"। बनाना।  
निर्माण करना।

घड़नैल-संज्ञा स्त्री० बाँस या लकड़ियों में घड़े  
बाँधकर बनाया हुआ बड़ा जिससे छोटी-  
छोटी नदियाँ पार करते हैं।

घड़ा-संज्ञा पुं० मिट्टी का बरतन। जलपान।  
बड़ी गगरी। गगरा। बलस। घट।

मुहा०-घड़ो पानी पड़ जाना=अत्यंत  
सज्जित होना। लज्जा के मारे गड़ जाना।

घड़ाना-क्रि० स० दे० "गड़ाना"।

घड़िया-संज्ञा स्त्री० १. कुल्हिया। मिट्टी का  
बरतन जिसमें सोनार सोना-चौदी गलाते हैं।  
२. मिट्टी का छोटा प्याला। ३. सहव वा  
छत्ता। ४. गर्भाशय। ५. पानी के रहूँट की  
छोटी-छोटी ठिलियाँ।

घड़ियाल-संज्ञा पुं० १. पानी का एक खूबतर  
जानवर। मगर। ग्राह। २. पूजा के समय  
बजाया जानेवाला घटा।

मुहा०-घड़ियाली आँसू बहाना=दिखावटी  
अफसोस या सहानुभूति। केवल दिखाने के  
लिए बातें बनाना।

घड़ियाली-संज्ञा पुं० घंटा बजाने या बनाने-  
वाला।

वि० घड़ियाल से संबंधित।

घड़ी-संज्ञा स्त्री० १. दिन-रात का ३२वाँ  
भाग। २४ मिनट का समय। साठ पल।

२. समय। काल। ३. अवसर। उपयुक्त  
समय। ४. समय-सूचक यंत्र।

मुहा०-घड़ी-घड़ी=वार-वार। थोड़ी-थोड़ी  
दूर पर। घड़ी गिनना=१. उत्सुकता से  
प्रतीक्षा करना। २. मरने के निश्चय होना।  
घड़ी में तोता घड़ी में माशा=अव्यवस्थित  
चित्त। जिसकी चित्तवृत्ति क्षण-क्षण में  
बदलती रहे।

घड़ीदिआ-संज्ञा पुं० वह घड़ा और दिया जो  
किसी के मरने पर घर में रखा जाता है।

घड़ीसाज-संज्ञा पुं० घड़ी मरम्मत करने-  
वाला।

घड़ौँचा या घड़ौँची-संज्ञा स्त्री० पानी से  
भरा घड़ा रखने की तिपाई। लटकन।  
पलहेंडा।

घटिया-संज्ञा पुं० घात करनेवाला। धोखा  
देनेवाला। घातक। नृशंस। क्रूरकर्मा।  
हत्यारा।

घटियाना-क्रि० स० १. अपनी घात या  
दाँव में लाना। २. चुराना। छिपाना।

घन-संज्ञा पुं० १. मेघ। बादल।  
२. हथौड़ा। ३. समूह। झुंड। ४. कपूर।  
५. घटा। घड़ियाल। ६. वह गुण-  
फल जो किसी शक की उसी शक से  
दो बार गुणन करने से प्राप्त हो। ७.  
संघाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊँचाई या  
गहराई) तीनों का विस्तार। ८. ताल  
देने का बाजा। ९. पिंड। शरीर।

वि० १. घना। २. गड़ा हुआ। ठोस।  
३. दृढ़। मजबूत। ४. बहुत अधिक।

५. सजातीय । ६. मोटा । ७. निविड ।  
गाढ़ । अखिरल ।

घनक—गज्ञा स्त्री० गडगडाहट । गरज ।

घनपना—पि० घ० गरजना ।

घनपाल—सज्ञा पु० वर्षा-श्रुतु ।

घनपोवड—सज्ञा पु० इन्द्रधनुष ।

घनगरज—सज्ञा स्त्री० १ चादल के गरजने की ध्वनि । मेघ गर्जन । २ एक प्रकार की खुमो जो खाई जाती है । ३ डिगरी । एक तोप का नाम ।

घनगोलक—सज्ञा पु० सोना और चांदी का मिलान ।

घनघन—सज्ञा पु० १ सर्वदा । सदा । २ एक प्रकार का शब्द ।

घनघनाना—क्रि० सं० घन घन शब्द करना ।

घनघनाहट—सज्ञा स्त्री० घन-घन शब्द निकलन का भाव या ध्वनि ।

घनघेरा—सज्ञा पु० घेंघरा । सहेंगा ।

घनघोर—सज्ञा पु० १ बादल की गरज । २ घनघनाहट । लगातार बहुत जोर की आवाज । भीषण ध्वनि ।

वि० १ बहुत घना । गहरा । २ भीषण ।

घो०—घनपार घटा—बड़ी गहरी वाली घटा ।

घनचक्कर—सज्ञा पु० १ भूखें । बेवकूफ । भूढ़ । २ व्यर्थ इधर उधर घूमनेवाला । आचारा । निठल्ला ।

घनज्वाला—सज्ञा स्त्री० विजुत् । विजुली ।

घनता—सज्ञा स्त्री० ठोसपन । गाढ़ापन । सघनता ।

घनताल—सज्ञा पु० १ पपीहा । २ बरताल ।

घनतोल—सज्ञा पु० पपीहा ।

घनत्व—सज्ञा पु० १ घना होने का भाव ।

घनापन । सघनता । २ लवाई, चौड़ाई और माटाई तीनों का भाव । ठोसपन ।

घनध्वनि—सज्ञा पु० मेघगर्जन । बादलों की गडगडाहट ।

घननाद—सज्ञा पु० १ मेघ का शब्द । २ रावण का पुत्र । मेघनाद । इन्द्रजिा ।

घननिहार—सज्ञा पु० तुपार-राशि । तुपार । पाला । बर्फ ।

घनफल—सज्ञा पु० १ लवाई, चौड़ाई और

मोटाई (गहराई या ऊंचाई) तीनों का गुणनफल । २ वह गुणनफल जो किसी सरया को उम सरया से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो ।

घनवान—सज्ञा पु० एक प्रकार का वाण जिससे बादल छा जाते थे ।

घनबेल—वि० जिसमें बेलबूटे हों । बेलबूटेदार ।

घनमूल—सज्ञा पु० गणित में किसी घन (राशि) का मूल अथ । जैसे—२७ का घनमूल ३ होगा ।

घनरस—सज्ञा पु० १. कपूर । २ पानी । ३ हाथिया का एक रोग ।

घनवर्धन—सज्ञा पु० धातुआ आदि को पीटकर बढ़ाना ।

घनवर्धनीयता—सज्ञा पु० धातुआ आदि का वह गुण जिससे वे पीटने पर घटती हैं ।

घनबाह—सज्ञा पु० हवा ।

घनबाही—सज्ञा स्त्री० घनसेकटने का काम । घन चलानेवाले के खड़ा होने का गड्ढा ।

घनश्याम—सज्ञा पु० १ काला बादल । २ श्रीकृष्ण । ३ रामचन्द्र ।

घनसमय—सज्ञा पु० वर्षा श्रुतु ।

घनसार—सज्ञा पु० कपूर ।

घना—वि० [स्त्री० घनी] १ सघन । गुजान । २ घनिष्ठ । गहरा । निवट का । ३ बहुत । अधिर । प्रचुर ।

घनाक्षरी—सज्ञा पु० एक प्रकार का छंद । कवित । मनहर छन्द ।

घनात्मक—वि० १ जिसकी लवाई, चौड़ाई और मोटाई (ऊंचाई या गहराई) बराबर हो । २ जो लवाई, चौड़ाई और मोटाई को गुणा करने से निकला हो ।

घनानन्द—सज्ञा पु० हिन्दी के एक सुप्रसिद्ध कवि, जिसे आनन्दधन भी कहते हैं ।

घनाली—सज्ञा स्त्री० बादलों की पवित्र या समूह ।

घनासन—सज्ञा पु० भैंसा । गहिय ।

घनाहु—सज्ञा पु० औषध विशेष । नागरमोथा ।

घनिष्ठ—वि० १ गाढ़ । घना । २ निवटस्थ । नजदीकी ।

घने-वि० बहुत से । अनेक ।

घनेरा\*†-वि० [स्त्री० घनेरी] बहुत अधिक ।  
अतिशय ।

घघई-सज्ञा स्त्री० घड़ो को लकड़ियों में बाँधकर  
बनाया गया बेंडा जिसमें छोटी नदियाँ पार  
की जाती हैं ।

घघिआना-क्रि० अ० घबटना ।

घघी-सज्ञा स्त्री० दोनो हाथों की मजबूत  
पकड़ या गठन ।

घघता-सज्ञा पु० ऐसी मिलावट जिसमें एक  
से दूसरे को अलग करना कठिन हो ।  
गड़बड़ । गोलमाल ।

घघ्रा-वि० मूर्ख । उल्लू ।

घघराना-क्रि० अ० दे० "घबराना" ।

घघराना-क्रि० अ० १ व्याकुल होना ।  
हटबटाना । उद्विग्न होना । २ कि-कर्तव्य-  
विमूढ़ होना । ३. उतावला होना । जल्दी  
मचाना । ४ जी न लगना । उचाट होना ।  
क्रि० स० १ व्याकुल करना । अधीर  
करना । २ गड़बड़ी डालना । ३ हेरान  
करना । ४ उचाट करना ।

घघराहट या घघराहट-सज्ञा स्त्री० १  
व्याकुलता । अधीरता । उद्विग्नता । उद्वेग ।  
२ कर्तव्य-विमूढ़ता । ३ उतावली ।  
४. अशान्ति ।

घघरी-सज्ञा स्त्री० गुच्छा । स्तवक । फूलों  
का गुच्छा ।

घघड़-सज्ञा पु० १ अमिमान । अहकार ।  
२. जोर ।

घघड़ी-वि० [स्त्री० घघड़िन] अहकारी ।  
अभिमानी ।

घघफाना-क्रि० अ० घमघम शब्द होना ।  
†क्रि० म० धँसा मारना ।

घघफा-सज्ञा पु० गंदा या धूँसे का शब्द ।  
चाट लगन का शब्द ।

घघखोर-वि० पाग खानेवाला । जिसमें  
धूप सहने की शक्ति हो ।

घमघमाना-क्रि० अ० घम-घम शब्द होना ।  
क्रि० स० धँसा मारना ।

घमर-सज्ञा पु० नगाड़े, ढाल आदि का भारी  
शब्द । गमोर ध्वनि ।

घमरौल-सज्ञा स्त्री० कोलाहल । भीड़भाड़ ।  
घमस-सज्ञा स्त्री० निर्वृति । बायुरहित ।  
ऊमस ।

घमसान-सज्ञा पु० भयकर युद्ध । गहरी  
लड़ाई ।

घमाका-सज्ञा पु० १. भारी आवाज ।  
२ 'घम' की आवाज । ३ भारी आघात  
का शब्द ।

घमाघम-सज्ञा स्त्री० १ तडातड़ घमघम की  
ध्वनि । २ अधिक धूप । धूप ही धूप ।  
क्रि० वि० घम घम शब्द के साथ ।

घमाघमो-सज्ञा स्त्री० मारपीट ।

क्रि० वि० घमघम शब्द के साथ ।

घमाना†-क्रि० अ० घाम लेना । धूप में बैठना ।

घमावल-वि० घाम में पका हुआ ।

घमासान-सज्ञा पु० दे० "घमसान" ।

घमोई या घमोर-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार  
का काँटेदार पौधा । भड़भाड़ ।

घमोय-सज्ञा स्त्री० कौटिल पत्तों का एक  
पौधा । भेंड़भाड़ ।

घमीरी-सज्ञा स्त्री० अम्भीरी । अंधीरी ।

घर-सज्ञा पु० [वि० घरऊ, घर, घरेलू]

१ निवासस्थान । मकान । गृह ।

२ पति । स्वामी । ३. जन्मस्थान । जन्म-

भूमि । स्वदेश । ४ स्त्री । पत्नी । ५.

घराना । कुल । वंश । खानदान । ६.

कार्यालय । कारखाना । ७ कोठरी ।

कमरा । ८ घिरा हुआ स्थान । खाना

रखने की जगह । कोठा । ९ किसी वस्तु

के सामन का स्थान । १०. छोटा गड्ढा ।

११ छद । बिल । १२ मूल कारण ।

उत्पन्न करने वाला १३ गृहस्थी ।

मुहा०—घर करना=१ घसना । रहना ।

निवास करना । २ स्थान निवालेना ।

३ घुसना । घेंसना । चित्त, मन या शक्ति

में घर करना=अत्यंत प्रिय होना । घर

जाना=घर पर किसी आपत्ति का पड़ना,

उजड़ना, बिगड़ना । घर का=१ निज का

अपना । २ आपस का । सम्बन्धी या

प्राप्त्यीय । घर का न घाट का=१ जिसने

रहने का कोई निश्चित स्थान न हो ।

२. नियम्मा । वेवाम । घर के बाढ़े = घर ही में बढ़-बढ़कर बाँटें करनेवाला । घर के घर रहना = न हानि उठाना न लाभ । बराबर रहना । घरघाट = १. रग-भग । चाल-ढाल । २. ढग । ठग । प्रवृत्ति । घर डुबोना = घर में बलह उत्पन्न करना, दूसरे का या अपना घर नष्ट करना । ३ ठौर-ठिकाना । घर-द्वार । स्थिति । घर घालना = १. घर बिगाड़ना । परिवार में अशांति उत्पन्न करना । २. कुल में बलक लगाना । ३ मोहित करके वश में करना । उपपत्ती करना । घर में रख लेना । गृह-नाश करना । घर फोड़ना = परिवार में भगडा लगाना । घर बसना = १ घर आबाद होना । २ घर में धन-धान्य होना । ३ घर में स्त्री या बहू आना । व्याह होना । घर बैठे = बिना कुछ काम किए । बिना हाथ-पैर डुलाए । बिना परिश्रम (किसी स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना = किसी के घर पत्नीभाव से जाना । किसी को पति बनाना । घर से = पास से । पल्ले से । घर बैठ जाना = निश्चिन्त होना । घर का टूटना = नष्ट होना । घर चलाना = गृह का प्रबंध करना । घर होना = स्त्री-पुरुष में आपस का प्रणय होना ।

घरऊ-वि० घरेलू । घर-सबधी । घर का । घरघराना-क्रि० अ० घर-घर शब्द निकलना ।

घरघाल-वि० दे० "घरघालन" ।

घरघालन-वि० [स्त्री० घरघालिनी] १ घर बिगाड़नेवाला । २ कुल में बलक लगानेवाला ।

घरजाया-सज्ञा पु० घर का गुलाम ।

घरद्वार-सज्ञा पु० दे० "घरदार" । रहने की जगह । गृहस्थी । घर की सम्पत्ति । घरनई-सज्ञा स्त्री० १. एक तरह का गोल छोटा चिल्लाता जिसे लड्डके खेलते हैं । चौफडा । २ बेडा । दे० "घरनई" ।

घरना-क्रि० स० गढ़ना । बनाना । पिसना । घरनात्-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पुरानी तोप ।

घरनी-सज्ञा स्त्री० घरवाली । भाय्या । गृहिणी । स्त्री । पत्नी ।

घरफोरी-सज्ञा स्त्री० परिवार में फूट पैदा करनेवाली ।

घरबराब-सज्ञा पु० १. घर का अटाला । २. चीज । वस्तु ।

घरबसा-सज्ञा पु० [स्त्री० घरबसी] उपपत्ति जिसको घर में रख लिया जाय ।

घरबार-सज्ञा पु० १ रहने का स्थान । ठौर-ठिकाना । २. घर का जगल । गृहस्थी । बूदुव । परिवार । ३ अपनी सम्पत्ति ।

घरवारी-सज्ञा पु० १. बालवच्चोवाला । गृहस्थ । बूदुवी । २. माचुर ब्राह्मणों की एक जाति ।

घररा-सज्ञा पु० खरखराहट । दुख । पीडा ।

घरराटा-सज्ञा पु० ध्वनि-विशेष ।

घरवात\*†-सज्ञा स्त्री० घर का सामान । गृहस्थी ।

घरवाला-सज्ञा पु० [स्त्री० घरवाली] १ घर का मालिक । गृहस्वामी । २ पति । स्वामी ।

घरसा\*-सज्ञा पु० रगडा ।

घरहोई\*†-सज्ञा स्त्री० १ घर में विरोध करानेवाली स्त्री । २. अपनीति फैलानेवाली ।

घराऊ-वि० १ घरेलू । घर का । गृहस्थी-सबधी । २ आपस का ।

घराती-सज्ञा पु० विवाह में पत्न्या-पक्ष के लोग ।

घराना-सज्ञा पु० खानदान । वंश । कुल । बूदुव ।

घरामी-सज्ञा पु० छवैया । घर छानेवाला । घरिक या घरोक\*†-क्रि० वि० एक घड़ी । घड़ी भर । घाड़ी देर ।

घरिया-सज्ञा स्त्री० दे० "घडिया" । मिट्टी की बनी छोटी बटोरी जिसमें सुनार सोना-चाँदी गलाते हैं ।

घरी-सज्ञा स्त्री० १ तह । परत । लपेट । चुपट । २. एक नियत समय । घड़ी ।

घरू-वि० जिसका सबध घर-गृहस्थी से हो । घर का । घरेलू ।

घरेला-वि० घर का पोसा, घर में उत्पन्न,  
घर-सम्बन्धी । घर का ।

घरेलू-वि० १ पालतू । पालू । २. घर  
का । निज का । ३. घर का बना हुआ ।  
घरैया†-वि० घर या गुटुब का । अत्यंत  
घनिष्ठ ।

घरो\*—सज्ञा पु० दे० “घड़ा” ।

घरौंदा, घरौंघा—सज्ञा पु० १. बागज, मिट्टी  
आदि का बना हुआ छोटा घर जिससे छोटे  
बच्चे खेलते हैं । २ छोटा घर ।

घघर—सज्ञा पु० घरघर शब्द । एक बाजा ।  
चक्की आदि का शब्द ।

घर्म—सज्ञा पु० घाम । धूप । गरमी । स्वेद ।  
पसीना ।

घर्मद्युति—सज्ञा पु० दिवाकर । सूर्य ।

घर्मबिन्दु—सज्ञा पु० पसीने की बूंद ।

घर्माक्त—वि० पसीने से भीगा हुआ ।

घरौं—सज्ञा पु० १. एक प्रकार का अजन ।  
२ गले की घरघराहट ।

घरौंटा—सज्ञा पु० दे० “खरौंटा” ।

घर्षण—सज्ञा पु० रगड़ । घिस्ता । भर्दन ।

घर्षित—वि० रगड़ खाया हुआ । रगड़ा  
हुआ । घिसा हुआ ।

घलना या घालना—वि० अ० १. छूटकर  
गिर पडना । २ चढ़े हुए तीर या भरी  
हुई गोली का छूट पडना । हथियार चल  
जाना । ३ मारपीट हो जाना । ४. डालना ।  
फेंकना । ५. उजाड़ना । पटकना । बिगाड़ना ।  
६. तोष दगना ।

घलाघल, घलाघली—सज्ञा स्त्री० मार-पीट ।  
आघात-प्रतिआघात ।

घलगा† या घलुवा—सज्ञा पु० घेलौना । घाल ।  
रूँव । सेत का । बिना दाम का । वह  
अधिक वस्तु जो सरीदार को उचित तील  
के प्रतिरिक्त्त हो जाय ।

घबर†—सज्ञा स्त्री० दे० “बीद” । घोर ।  
गुब्बारा । समूह ।

घि० अ० एकत्र होकर ।

घसना—वि० स० रगड़ । घर्षण करना । घिसना ।

घसलुदा—सज्ञा पु० १. घास खोदनेवाला ।  
२ अनाड़ी । मूर्ख ।

घसिटना—कि० अ० घसीटा जाना ।

घसियारा—सज्ञा पु० [स्त्री० घसियारी या  
घसियारिन] घास बेचनेवाला । घास  
छीलनेवाला ।

घसीट—सज्ञा स्त्री० १. जल्दी-जल्दी लिखना ।  
२. जल्दी की लिखावट । ३. घसीटने  
का भाव ।

घसीटना—कि० स० १. किसी वस्तु को इस  
प्रकार खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती  
हुई जाय । २. जल्दी-जल्दी लिखना । ३.

किसी काम में जबरदस्ती शानिल करना ।

घसीला—वि० अधिक घासवाला । हरियाली ।

घस्मर—वि० पेटू । खाऊ ।

घल—सज्ञा पु० दिन । दिवस । प्रहर ।

घल्हा—सज्ञा पु० हिंसक । नृशंस । क्रूर ।

घहनाना†—कि० अ० घटे आदि की ध्वनि  
निकालना । बहराना ।

घहरना—कि० अ० गरजने का-सा शब्द  
करना । गभीर ध्वनि निकालना ।

घहराना—कि० अ० गरजने का-सा शब्द करना ।

गभीर शब्द करना । बिगाड़ना ।

घहरानि†—सज्ञा स्त्री० गभीर ध्वनि । तुमुल  
शब्द । गरज ।

घहरारा†—सज्ञा पु० घोर शब्द । गभीर  
ध्वनि । गरज ।

वि० घोर शब्द करनेवाला ।

घां†—सज्ञा स्त्री० १. दिशा । दिक् । २.

शोर । तरफ ।

घांघरा—सज्ञा पु० दे० “घांघरा” । लहंगा ।  
एक नदी का नाम ।

घांटी†—सज्ञा स्त्री० १. गले के अन्दर की  
पटी । कोवा । २. गला । ढेंढवा ।

घांटी—सज्ञा पु० एक प्रकार का चलता गाना  
जो चेत में गाया जाता है ।

घांह†—सज्ञा पु० तरफ । शोर ।

घाहल†—वि० दे० “घायल” ।

घाई†—सज्ञा स्त्री० १. शोर । तरफ । २.  
बार । दफा । ३ भँवर । ४. अगुतिथो के  
बीच की जगह । अटी । ५. घात । दाँव ।

मोवा । ६. चोट । आघात । बार । प्रहार ।

“... चालवाजी ।

धाईन-सज्ञा स्त्री० पाला । वार । वेर ।  
धोसरी ।

धाउ या धाऊ-सज्ञा पु० धाव । चोट । दस्त ।  
ग्रण । फाड़ा ।

धाऊघप-वि० १ चुपचाप माल हजम करने-  
वाला । हड़पनेवाला । खानेवाला । २ अपना  
मतलब निवालेनेवाला ।

धाघ-सज्ञा पु० १ चतुर और अनुभवी व्यक्ति ।  
२ चालाक । खुराट । ३ पक्षी विशेष ।  
४ एक कवि जिसकी महाकवें प्रसिद्ध हैं ।

धाघरा-सज्ञा पु० (स्त्री० धाघरी) चुनन  
दार और घेरदार पहनावा । लहंगा ।  
सज्ञा स्त्री० सरयू नदी ।

धाघस-सज्ञा पु० एक पक्षी विशेष ।

धाट-सज्ञा पु० १ नदी या किसी जलाशय  
का तट, जहाँ लोग पानी भरते, नहाते-  
धोत या नाव पर बढते हैं । २ नई दुलहिन  
का लहंगा । ३ बढाव-उतार का पहाड़ी  
भाग । ४ पहाड़ । ५ ओर । तरफ । दिशा ।  
६ रंग-ढंग । चाल-ढाल । डील । ढव ।  
तोर-तरीका । रूप । ७ तलवार की धार ।  
८ आकृति । बनावट । ९ जी की लरी ।  
१० अँगिया का गला ।

धासज्ञा पु० १ घोला । छन । २ घुराई ।  
३. अपराध । ४ दोष ।

वि० कम । थोड़ा । अल्प ।

मुहा०—धाट धाट का पानी पीना=१  
चारा ओर देश-देशांतर में घूमकर अनुभव  
प्राप्त करना । २ इधर-उपर मारे-मारे  
फिरना ।

धाटवाल-सज्ञा पु० १. धाटिया । गंगापुत्र ।  
नदी के तट पर स्नान करनेवालो से दान  
लनवाला । २ धाट की रखवाली करनेवाला ।  
धाटा-सज्ञा पु० घटी । हानि । नुकसान ।  
धाटारोह†\*—सज्ञा पु० धाट रोखना । धाट  
में जान न देना । घटवदी ।

धाटि†\*—वि० कम । न्यून । घटकर ।

सज्ञा स्त्री० नीच कर्म । पाप । नीचता ।  
घटियाई ।

धाटिया-सज्ञा पु० धाटवान । गंगापुत्र ।  
धाट पर दान लेनेवाला ।

धाटी-सज्ञा स्त्री० पर्वतो के बीच का सगरा  
भाग । दर्रा ।

धात-सज्ञा पु० (वि० पाती) १ प्रहार ।  
चोट । मार । चक्का । आपात २ वप ।  
हत्या । ३ अहित । घुराई ४ गुणनफल ।  
सज्ञा स्त्री० १ काई कार्य करने के लिए  
अनुकूल स्थिति । दौब । सुयोग । २  
अवसर । ३ दौब-मच । चाल । छन ।  
चालवाजी । ४ रंग-ढंग । तोर-तरीका ।  
मुहा०—धात पर चढाना या धात में आना  
=अपना काम पूरा करना । धान करना=  
प्रतिज्ञा अष्ट हाना । बड़े काम को पूरा न  
करना । अवसर पर धोखा देना । दौब  
पर चढना । धान लगाना=मीका मिलना ।  
धात लगाना=युक्ति भिडाना । धात  
में=ताव में ।

धातक-सज्ञा पु० १ हत्यारा । २ हिसक ।  
बधिक । मार डालनेवाला ।

धातकी-सज्ञा पु० दे० "धातक" ।

धातिनी-वि० मारनेवाली । बध करनेवाली ।  
हत्यारिण । घूर स्त्री ।

धातिया या धाती-वि० [स्त्री० धातिनी]  
१ धातक । संहारक । २ नाश करने-  
वाला । ३. छली । कपटी ।

धात्य-वि० हनन योग्य । मारने योग्य ।  
धान-सज्ञा पु० १ तोलू या चक्की आदि  
में पीसने के लिए एक बार में जितना  
डाला जाय या चक्की में पीसा जाय ।  
उतनी वस्तु जितनी एक बार में पकाई  
जाय । २ प्रहार । चोट ।

धाना†\*—वि० सं० मारना ।

धाने-सज्ञा स्त्री० दे० "धान" । समूह ।  
धाबरा-वि० व्याकुल । उद्विग्न । अस्थिर-  
चित्त । धबराया हुआ ।

धाम†—सज्ञा पु० धूप । गरमी । ताप ।  
पसीना ।

धामड-वि० मूर्ख । भाड़ । सीधा ।

धाम†\*—सज्ञा पु० दे० "धाव" ।

धायक-वि० धायन करनेवाला । धातक ।

धायल-वि० जिसको चोट लगी हो । जरमी ।  
भाहत ।

घाल†—सज्ञा पु० दे० “घलुआ” ।  
 सज्ञा स्त्री० घुराई । हानि । अपकार ।  
 मुहा०—घाल न गिगना=तुच्छ समझना ।  
 घालक—सज्ञा पु० (स्त्री० घालिका) मारने  
 या नाश करनेवाला । घातक ।  
 घालन—सज्ञा पु० हनन । बध करना ।  
 मारना ।  
 घालना†—क्रि० स० १ डालना । रखना ।  
 २ फबना । चलाना । छोड़ना ।  
 ३ बिगाड़ना । उजाड़ना । नाश करना ।  
 ४ मार डालना । ५. पटकना । ६.  
 तोप दागना । तोप का गोला छोड़ना ।  
 घालमेल—सज्ञा पु० मिलावट । गड़बड़ ।  
 पचमेल । खिचड़ी । विभिन्न वस्तुआ की  
 एक में मिलावट ।  
 घाव—सज्ञा पु० जरम । चोट । आघात ।  
 फोड़ा ।  
 मुहा०—घाव पर नमक छिड़कना=बुख  
 के समय और दुख देना । शोक पर शोक  
 उत्पन्न करना । घाव पूजना या भरना=  
 घाव का अच्छा होना ।  
 घाव-पत्ता—सज्ञा पु० एक लता जिसके पान  
 के से पत्ते घाव, फोड़े आदि पर लगाए जाते  
 हैं ।  
 घावरिया†\*—सज्ञा पु० घावों की चिकित्सा  
 करनेवाला ।  
 घास—सज्ञा स्त्री० तृण । चारा । खर । फूस ।  
 यौ०—घास-पात या घास-फूस=१ तृण और  
 वनस्पति । २ खर-भतवार । कूड़ा-कबूट ।  
 व्यर्थ पदार्थ ।  
 मुहा०—घास काटना, खोदना या छीलना—  
 १ तुच्छ काम करना । २ व्यर्थ काम करना ।  
 घासी, घासू—यि० घासवाला । घसियारा ।  
 घाह\*†—सज्ञा स्त्री० दे० “घाई” ।  
 घिघी—सज्ञा स्त्री० डरने पर मुँह से स्पष्ट  
 शब्द का न निकलना ।  
 मुहा०—घिघी-बैध जाना—भय से बोली  
 बध हो जाना । अस्पष्ट बोलना ।  
 घिघियाना—क्रि० अ० १ शरण स्वर से  
 प्रार्थना करना । गिड़गिड़ाना । †२.  
 चित्तवाना । अनुगम-विनय करना ।

घिचपिच—सज्ञा स्त्री० १ एक में एक मिला या  
 सटा हुआ जिससे गन्दा मालूम हो । स्थान  
 की कमी । सँकरापन । २ थोड़े स्थान में  
 बहुत-सी वस्तुओं का समूह ।  
 यि० अस्पष्ट । गन्दा । घना । पास-पास ।  
 गिचपिच ।  
 घिन—सज्ञा स्त्री० घृणा । गदी चीज देखकर  
 जी मचलाने की-सी अवस्था । अरुचि ।  
 बीभत्सता ।  
 घिनाना—क्रि० अ० घृणा करना । नफरत  
 करना ।  
 घिनावना—वि० दे० “घिनीना” ।  
 घिनीना†—वि० (स्त्री० घिनीनी) जिसे देखने  
 से घिन लगे । घृणित । बुरा । घृणाजनक ।  
 घिनोरी—सज्ञा स्त्री० बरसाती कीट ।  
 घिसी—सज्ञा स्त्री० दे० “घिरनी” ।  
 घिया—सज्ञा स्त्री० एक तरकारी । बद्ध,  
 लीकी ।  
 घियाकश—सज्ञा पु० दे० “कद्दूकश” ।  
 घियातोरी—सज्ञा स्त्री० घिया तोरी । नेनुवा ।  
 घिरत—सज्ञा पु० धी । घृत ।  
 घिरना—क्रि० अ० १ चारों ओर से घिर  
 जाना । घेरे में आना । २ रुकना । फँस  
 जाना । परवश होना । ३. मेघों का उम-  
 डना ।  
 घिरनी—सज्ञा स्त्री० १ गराही । चरखी ।  
 २ चक्कर । फेरा । ३ रस्सी बटने की  
 चरखी ।  
 मुहा०—घिरनी खाना=घूम जाना, चक्कर  
 खाना ।  
 घिराना—क्रि० स० घेरा करवाना । बेडा  
 बनाना । हृदयदी करना ।  
 घिराई—सज्ञा स्त्री० १ घेरने की क्रिया ।  
 २ पशुओं को चराने का नाम या मजदूरी ।  
 घिराव—सज्ञा पु० १. घेरने या घिर जाने  
 की क्रिया । २ घेरा ।  
 घिरोना—क्रि० स० रगड़ना । घिसना ।  
 घिरना†—क्रि० स० १. घसीटना । २.  
 गिटगिटाना ।  
 घिय—सज्ञा पु० पी ।  
 घिसघिस—सज्ञा स्त्री० १. धार्य में तिथि-

लता । घनावरण बिलब । घनतरता ।  
गडबडी । २ व्यर्थ की देर । अग्निदचय ।  
धिसना-त्रि० स० १. मेहनत करना । २.  
रगड़ना । मलना । ३. सियाना ।  
त्रि० घ० रगड़ ग्यावर बम होना ।  
धिसपिसा-मज्ञा स्त्री० १ दे० धिसपिस ।  
२ भेन-जाल ।

धिसवाना-त्रि० स० धिसने का काम  
कराना । रगड़वाना ।  
धिसाई-सज्ञा स्त्री० धिसने की क्रिया या  
मजदूरी ।  
धिसाना-त्रि० स० रगड़ाना । दे० "धिसवाना" ।  
धिसाव-मज्ञा पु० रगड़ । धर्पण । खियाव ।  
धिसावट-सज्ञा स्त्री० रगड़ । धिसान ।  
रगड़ाहट ।

धिसियाना-त्रि० स० घसीटना ।  
धिस्ता-सज्ञा पु० १ रगड़ा । २ धक्का ।  
ठोकर । ३ आघात जो पहलवान अपनी  
बहुनी और कलाई की हड्डी से देते हैं ।  
कुदा । रद्दा । ४. बालको का एक प्रकार  
का खेल । बहुकावा ।

धी-सज्ञा पु० मकखन । घृत । धीव ।  
सपि ।

मुहा०-धी के दिए जलना=१ इच्छा पूरी  
होना । मनोरथ सफल होना । २ आनन्द-  
मगल होना । उत्सव होना । (किसी की)  
पाँचा उँगलियाँ धी में होना=खूब आराम-  
चैन करना । बहुत अधिक लाभ उठाना ।

धीकुंवार-सज्ञा पु० एक पौधे का नाम ।  
धृतकुमारी । धीक्वार । औषध विशेष ।

धुँइयाँ-मज्ञा स्त्री० अरबी या अरुई ।

धुगची या धुँघची-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
बेल जिसके लाल बीज होते हैं । गुजा ।  
लाल-रस्ती ।

धुँघनी-सज्ञा स्त्री० तला हुआ चना, भटूर  
या और कोई अन्न ।

धुँघरारे+वि० दे० "धुँघराले" ।

धुँघराले-वि० (स्त्री० धुँघराली) टेढ़े और  
बल खाए हुए (बाल) । छल्लदार ।

धुँघरू-सज्ञा पु० १ किसी धातु की बनी  
हुई गोल पोली गुरिया जिसके भीतर

'धन-धन' बजने के लिए बगड़ भर देते  
हैं । २. ऐसी गुरियों की सड़ी । चोरासी ।  
मजीर । ३. पैर का गहना । ४. गले  
का 'धुर-धुर' शब्द जो मरने समय बफ  
छेदने के कारण निबलता है । घटपा ।  
घट्टपा ।

धुँघरारे-वि० दे० "धुँघराले" ।

धुड़ी-सज्ञा स्त्री० १. यदन । २. गोन गाँठ ।

धुग्घी-सज्ञा स्त्री० धूप, वर्षा और शीत से  
बचने के लिए झोड़ने का बम्बन या बोरा  
आदि । धोधी । खुदुआ ।

धुग्घ-सज्ञा पु० उल्लू पक्षी ।

धुधुआ-सज्ञा पु० दे० "धुग्घू" । स्वयं चित  
लेटकर बालकों को घुटनों पर रखकर  
खिलाने की क्रिया ।

धुधुआना-त्रि० घ० १. उल्लू पक्षी का  
बोलना । २. बिल्ली का गुराँना ।

धुटकना-त्रि० स० १. धूँट-धूँट करके पीना ।  
२. निगल जाना ।

धुटकी-मज्ञा स्त्री० घोटनेवाली नत्ती ।

धुटना-सज्ञा पु० पाँव के बीच का जोड़ ।

क्रि० घ० १ साँस का भीतर दब जाना,  
रुकना । फँसना । २ उलभकर बड़ा होना ।  
३ बचन दूढ़ होना । ४. धिसकर चिकना  
होना । ५ धनिष्ठता होना । मेल-जोल  
होना । ६ धिसकर चिकना होना । पीसा  
जाना । मेल-जोल होना ।

मुहा०-धुट-धुटकर मरना=दम तोड़ते हुए  
मरना । धुटा हुआ=बालाक । घूर्त ।

धुटभा-सज्ञा पु० घुटनों तक का पायजामा ।  
जाँधिया ।

धुटहूँ-सज्ञा पु० घुटना ।

धुटवाना-क्रि० स० १. घोटने का काम  
करना । २. बाल भुँडाना ।

धुटाई-सज्ञा स्त्री० घोटने या रगड़ने का  
कार्य । चिकनाहट । गढ़ाई ।

मुहा०-धुटाई करना=पाठ रटना । मेहनत  
करना । रगड़ना या पीसना ।

घुडाना-क्रि० स० घोटने का काम दूंसदे  
से कराना । बाल भुँडाना । चिकना कराना ।  
मुण्डन कराना ।

घुटी या घुट्टी—सज्ञा स्त्री० पाचन के लिए छोटे बच्चा की एक दवा।

घुट्टरघन—क्रि० वि० घुट्टी के बल।

घुडकना—क्रि० स० छपटना। कड़कर बोलना। डांटना। दवाना। धमकाना। रोव जमाना।

घुडकी—सज्ञा स्त्री० १. क्रोध में डराने के लिए जोर से कही गई बातें। डांट-उपट। फटपार। धमकी। भभकी। झिडकी। २. घुडकना। तिरस्कार।

घुडकी—वैदरघुडकी=भूठमूठ डर दिखाना। घुडचढा—सज्ञा पु० सवार। अश्वारोही। घोड़े पर चढ़नेवाला।

घुडचढी—सज्ञा स्त्री० १ विवाह की एक रीति जिसमें दुल्हा घोड़े पर चढ़कर दुलहिन के घर जाता है। २ एक प्रकार की तोप। घुडनाल।

घुडदौड—सज्ञा स्त्री० १ घोड़ों की दौड। २ घोड़ों की दौड में जुए का खेल। ३ घोड़े दौडाने का स्थान।

घुडनाल—सज्ञा स्त्री० घोड़ों पर ले जानेवाली एक प्रकार की तोप।

घुडबहल—सज्ञा स्त्री० घोड़ागाडी। जिस रथ में घोड़े जुते हों।

घुडमुंहा—वि० घोड़े के समान मुंहवाला। किरर-विशेष।

घुडसवार—सज्ञा पु० घोड़े पर चढ़नेवाला। घोड़े की सवारी करनेवाला। अश्वारोही।

घुडसाल—सज्ञा स्त्री० घोड़ों के बँधने का स्थान। अस्तबल।

घडिया—सज्ञा स्त्री० छोटी घोड़ी।

घुण—सज्ञा पु० दे० 'घुन'। कीट-विशेष।

घुणाक्षर—सज्ञा पु० लकड़ी या पुस्तक आदि में घुन के चलने से बने हुए अक्षर।

घुणाक्षर-न्याय—सज्ञा पु० ऐसी कृति या रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय, जिस प्रकार घुनों के खाते-खाते लकड़ी में अक्षर-से बन जाते हैं। अकस्मात् सिद्धि। विना प्रयत्न या परिश्रम के प्राप्ति।

घुन—सज्ञा पु० अनाज, लकड़ी आदि में लगनेवाला एक छोटा कीड़ा।

पा० ३१

मुहा०—घुन लगना=१. घुन का अनाज या लकड़ी को खाना। २ अदर ही अदर किसी वस्तु का क्षीण होना।

घुनघुना—सज्ञा पु० दे० "मुगमुना"।

घुनना—क्रि० अ० घुन लगना। लकड़ी या अनाज में घुन लगना।

घुना—वि० घुना हुआ। खोखला। पोला। घुन का छाया हुआ।

घुनिया—वि० दे० "घुन्ना"।

घुन्ना—वि० [स्त्री० घुन्नी] जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को मन ही मन रखे। चुप्पा।

घुप—वि० बहुत अधेरा। प्रगाढ़ अधकार।

घुमकड—वि० बहुत घूमनेवाला।

घुमघुमा—सज्ञा पु० घुमाव। टाटना। घूम-फिरकर एक ही स्थान पर पहुँचना।

घुमघुमाना—क्रि० स० घुमाना-फिराना। बात बदलना। बात उलटना।

घुमटा—सज्ञा पु० सिर का चक्कर। घुमरी। मूच्छा।

घुमड—सज्ञा स्त्री० बरसनेवाले बादलों का घिर आना।

घुमरना—क्रि० अ० १ बादलों का छाना। २ मेघों का इकट्ठा होना। छा जाना। ३ दुर्दिन होना।

घुमराना—क्रि० अ० १ घोर शब्द करना। २ दे० "घुमटना"। ३ घूमना।

घुमरना—क्रि० अ० दे० "घुमरना"।

घुमरी—सज्ञा स्त्री० १. चक्कर। घूर्णी। एक रोग। मूच्छा। २. परिक्रमा।

घुमाना—क्रि० स० १ चक्कर देना। २. इधर-उधर बहकाना। टहलाना। संर कराना। ३ किसी विषय की ओर लगाना। प्रवृत्त करना। ४. धोखा देते रहना।

घुमाव—सज्ञा पु० १ घूमने या घुमाने का भाव। २ फेर। चक्कर। ३ रास्ते का मोड़।

मुहा०—घुनाव-फिराव की बात=दाँव-वेंव की बात। हेर फेर की बात।

घुमावदार—वि० जिसमें कुछ घुमाव-फिराव हो। चक्करदार।

धूमरना\*—त्रि० प्र० दे० "धूमरना" ।  
 धूरधुरा—सज्ञा पु० भीगुर । एक प्रकार का रोग ।  
 धूरधुराना—त्रि० प्र० धूरधुर शब्द होना ।  
 ऐसा शब्द निगालना ।  
 धुरना\*—त्रि० प्र० दे० "धुरना" । धुर-धुर शब्द करना । बजना । गर्राटा मारना ।  
 धुरनी—सज्ञा स्त्री० दे० "धुरी" ।  
 धुरविनिया—सज्ञा स्त्री० कूड़े-मर्चट में से बीन-बीन कर टूटी-फूटी चीजें इकट्ठा करना ।  
 धुरका—सज्ञा पु० भीममेन का एक पुत्र ।  
 घटोत्कच ।  
 धुमित—त्रि० वि० धूमता हुआ ।  
 धुलना—त्रि० प्र० १. तरल पदार्थ में मिल जाना । दिल मिल जाना । २. पिघलना । सटना । गलना । ३. पक्कर पिलपिला होना । दुबल होना । ४. रोग आदि से शरीर क्षीण होना । दुबल होना । ५. समय व्यतीत होना ।  
 मुहा०—धुल धुलकर बातें करना=मुँह मिल-जुलकर बातें करना । धुल धुलकर काँटा होना=बहुत दुबला हो जाना । धुल-धुलकर मरना=बहुत दिनों तक कष्ट भोगकर मरना ।  
 धुलमिल—वि० मिलकर एक होना । धुल गया । पक्क गया ।  
 धुलवाना—त्रि० स० १ गलवाना । द्रवित कराना । २ आँख में सुरमा लगवाना । किसी तरल पदार्थ में मिलाना । हल कराना ।  
 धुलाड—वि० धुलने या पिघलानेवाला । गलाने योग्य । सडने योग्य ।  
 धुलाना—त्रि० स० १ गलाना । पिघलाना । २ शरीर दुबल करना । ३ मुँह भरकर धीरे धीरे रस चूसना । चुमलाना । ४ गरमी या दाब पहुँचाकर नरम करना । ५ सडाना । ६ समय व्यतीत करना ।  
 धुलावट—सज्ञा स्त्री० मिलावट । गल जात । धुलकर मिला जाना । धुलने का भाव ।  
 धुला—सज्ञा पु० तेमर की रई ।

धुलाना\*—त्रि० प्र० दे० "धुलना" ।  
 धुलाना—त्रि० प्र० १. घट्टकर पीटना । प्रवेग करना । भीतर जाना । २ धँसना । चुभना । गडना । ३ चलान् प्रवेग करना ।  
 धुलपेट—सज्ञा स्त्री० पट्टेन । गति । प्रवेग । गगार्ह । आना जाना ।  
 धुलाना—त्रि० स० १ भीतर धुनेटना । पीठाना । २. चुभाना । धँसाना । डारना । गाडना । लगाना ।  
 धुलेटना—त्रि० स० दे० "धुलाना" ।  
 धुस्की—सज्ञा स्त्री० कुसटा । दुर्गचारिणी । व्यभिचारिणी स्त्री ।  
 धुमूण—सज्ञा पु० कुकूम । गन्ध । द्रव्य-विशेष ।  
 धुंधट—सज्ञा पु० १ वस्त्र का वह भाग जिसे स्त्रियाँ अपना मुँह ढकती हैं । २ पन्ना । ओट ।  
 धुंधर—सज्ञा पु० धुंधराले वालों की मरोड़ ।  
 धुंधरवाले—वि० छल्लेदार । कुचिन । भ्रूरीले (वाल) ।  
 धूँट—सज्ञा पु० एक बार में पीने योग्य पानी आदि । चुस्की ।  
 धूँटना—त्रि० स० द्रव पदार्थ को गले के नीचे उतारना । पीना ।  
 धूँटी—सज्ञा स्त्री० १ बालकों की एक शोषण । २ बालका की शोषण देने की माया । ३ धूँट का लघु रूप ।  
 मुहा०—जन्म धूँटी=यह धूँटी जो बच्चे को उसका पेट साफ करने के लिए जन्म के दूसरे दिन दी जाती है ।  
 धूस—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा चूना ।  
 धूस्त—सज्ञा पु० १ बैची हुई मूट्टी । मुक्का । मुक्का । मुष्टिका । घमाका । २ बैची हुई मूट्टी का प्रहार ।  
 धूआ—सज्ञा पु० १ वाँस और मूँज की तरह का एक फूल । २ एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं ।  
 धूगस—सज्ञा पु० उँचा गुज्ज ।  
 धूध—सज्ञा स्त्री० तोहें या पीतल की बनी टोपी ।  
 धूम—सज्ञा स्त्री० धूमने का भाव ।  
 सज्ञा पु० धुमाव । धेर । फेर । चक्कर ।

धूमना-त्रि० अ० १ चक्कर खाना । २ गैर करना । टहलना । ३ देशांतर में भ्रमण करना । ४ उद्योग करना । भेंडराना । चक्कर काटना । ५ निमी ओर की मुहता । ६ वापस आना या जाना । लौटना । \*† ७ उन्मत्त होना । मत्तवाला होना । यो०-फिरना धूमना=मफर करना । मुहा०-धूम पड़ना=महना झुड़ हो जाना । धूरना-त्रि० अ० १ बार बार देखना । २ त्रीध से आँखें दिखाना । चारो ओर धूरना । ताकना । † ३. धूमना । धूरा-सज्ञा पु० १ कूज-बरखट का डेर । २ कतवारखाना । धरिया-सज्ञा पु० दे० "धूरा" । धूर्वन-सज्ञा पु० १ भ्रमण । जाक के समान धूमना । २ भ्रम । भ्रान्ति । ३ घेरा । ४ सिर हिलाना । धूर्णित-वि० भ्रमित । घुमाया गया । घस-सज्ञा स्त्री० अपना काम कराने के लिए किसी दूसरे को छिशाकर दिया गया द्रव्य आदि । रिस्वत । उत्तरोच । लचि । यो०-धूमखोर=धूस मानेवाला । घृणा-सज्ञा स्त्री० घिन । नफरत । जुगुप्सा । ग्लानि । अवज्ञा । अत्यन्त अवहेला । घृणाहं-वि० गर्हित । वृत्तिसत । घृणा के योग्य । घृणास्पद-वि० घृणाकर । घिनौना । घृणित-वि० १ घृणा करने योग्य । निन्दित । २ जिसे देख या सुनकर घृणा पैदा हो । कुत्सित । अवज्ञात । घृष्य-वि० तिरस्कार के योग्य । गर्ह्य । गर्हणीय । घृत-सज्ञा पु० घी । घृतपुमारी-सज्ञा स्त्री० चीकुंवार । घृतावत-वि० घृत सिंचित । घी में डुबोया हुआ । घृताक्षी-सज्ञा स्त्री० स्वर्ग की एक अप्सरा । घृष्ट-वि० पणित । पिसा हुआ । घृष्टि-सज्ञा पु० १. पिसना । मारना । २. क्षत । मुथर । मज्ञा स्त्री० एक औषध । घेंघा-सज्ञा पु० दे० "घेघा" ।

घेंढा-सज्ञा पु० गला, गर्दन । घेंढा-सज्ञा पु० शूकर का बच्चा । घेंघा-सज्ञा पु० १ गला २. गले का एक रोग जिसमें गला फूटकर बाहर लट-कने लगता है । घेंघुआ । गलाड रोग । घेतल १। घेतला-सज्ञा पु० जूनी विनोप । घेषना-त्रि० १० मिलाना । मिश्रण करना । घेर-सज्ञा पु० १ चारो ओर का फैलाव । मडल । घेरा । २. परिधि । घेरघार-सज्ञा स्त्री० १ चारो ओर से घेरना । २. चारो ओर का घेरा या फैलाव । विस्तार । ३ भरपकड़ । ४. खुशामद । विनती । घेरना-त्रि० स० १. चारों ओर से घेरना या राकना । २ घाँघना । ३ आश्रय करना । छवना । ४ चौपायी को चराना । ५ अपने अधिकार में रखना । ६ खुशामद करना । घेरा-सज्ञा पु० १ चारो ओर की सीमा । या फैलाव । परिधि । २ परिधि का मान । ३ चहारदीवारी । ४ घिरा हुआ स्थान । हाता । मडल । वृत्त । ५ सीमा का चारो ओर से घेर लेना । ६ आश्रमण । घेलवा-सज्ञा पु० घलुआ । हँक । घेलर-सज्ञा पु० एक प्रकार की मिठाई । गुपचुप । घेंघा-सज्ञा पु० १ ताजे ओर बिना मये हुए दूध के ऊपर उतराते हुए मक्खन को बाध्यकर इकट्ठा करने की क्रिया । २ धन से छूटती हुई दूध की धार जो मुह रोपकर पी जाय । मज्ञा स्त्री० ओर । तरफ । घेर, घेर, घेरो†\*-सज्ञा पु० १ बदनामी । अपयश । निन्दा । २ चुगली । गुप्त शिवाप्य । घोघा-सज्ञा पु० [स्त्री० घोघी] १. शल की तरह का एक बीड़ा । शुक । सीप । २. लोखला । वि० १ जिसमें कुछ सार न हो । २ मूर्ख । घोटना-वि० स० घूटना । जख्मी से एघार में पी जाता । हजम करना । दे० "घोटना" ।

घोंपना-क्रि० ग० घेंपाना । घुमाना । गढ़ाना ।

घोसला-गज्ञा पु० पक्षियों के रहने का स्थान । गीट । गोडा ।

घोसुसा†-गज्ञा पु० दे० "घोंगना" ।

घोसना-क्रि० ग० पाठ की बार-बार दुहराना । पठाय करने के लिए बार-बार पढ़ना । रटना । घोटना ।

घोघी†-गज्ञा स्त्री० दे० "घुघी" । जेब । धेती ।

घोट, घोटव-गज्ञा पु० घोंग । अद्व ।

घोटना-क्रि० ग० १. चिक्का या चमकीला करने या बारीक पानने के लिए बार-बार रगड़ना । २. बट्टे आदि से रगड़कर परस्पर मिलाना । हल करना । ३. अभ्यास करना । मस्व करना । पठस्य करना । ४. परिश्रम करना । ५. मरोड़ना । ६. पीटना । ७. मूँटना । ८. भग घाटना । ९. उँटना । पटारना । १०. (गला) इस प्रकार दमाना कि साँस रुक जाय । सज्ञा पु० [स्त्री० घोटनी] घोटने का औजार ।

घोटनी-गज्ञा स्त्री० तृटिया । लोडा । घोटना । घोटवाना-क्रि० स० घोटने का काम दूसरे से कराना ।

घोटा-सज्ञा पु० १. वह वस्तु जिससे घोडा जाय । २. पीसने का लोडा । कपड़े पर चुमक पैदा करने की वस्तु । ३. रगडा । -घुटाई ।

घोटाई-गज्ञा स्त्री० पाठ की पठस्य करना । लूक मेंहल से पढ़ाई करना । मोढ़ने का काम या मजदूरी ।

घोटाला-सज्ञा पु० धपला । गडबड ।

घोटू-सज्ञा पु० घोटनेवाला । घोटने का औजार । घुटना ।

वि० सीधा । नम्र ।

घोडसाल-सज्ञा स्त्री० दे० "घुडसाल" ।

घोडा-गज्ञा पु० [स्त्री० घोड़ी] १. चार पैरों का एक प्रसिद्ध पशु जो सवारी और गाड़ी आदि खींचने के काम में आता है । अरन । घोटक । तुरण । २. वह पेंच या खटका

जिसके द्वारा ने बद्ध में गोली चरती है । ३. भार मँमाने के लिए दीवार में लगाया जानेवाला टोडा । ४. धारन का एक मोहरा ।

मुहा०-घोडा उठाना=घोड़े को तंज दीडाना ।

घोडा बमना=घोड़े पर सवारी के लिए जीन या साग्नाना बमना । घोडा डानना

=गिरी और बग में घोडा बढाना ।

घोडा निरागना=घोड़े को मिंगलापर

सवारी के योग्य बनाना । घोडा फेंकना=

पेग ने घोडा दीडाना । घोडा बेच कर सोना

=गुब निर्दिष्टन होकर सोना ।

घोडाना-गज्ञा स्त्री० घोड़े के हाग चलाने जानेवाली गाड़ी ।

घोडानस-गज्ञा स्त्री० एडी के पान की मोटी नस ।

घोटिया-गज्ञा स्त्री० १. छोटी घोड़ी ।

२. दीवार में गड़ी हुई गुँटी । ३. छग्रे का भार संभालनेवाला टोटी ।

घोडी-गज्ञा स्त्री० १. घोड़े की मादा ।

२. विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा

घोड़ी पर चढकर दुल्हन के घर जाता

है । ३. विवाह के गीत । ४. एन श्रीजार ।

५. दो वाँसा के बीच बँधी हुई रस्सी जिस

पर घोड़ी कपड़े सुखाते हैं ।

घोया-सज्ञा पु० १. ओढ़ने की एन चीज ।

२. गुप्त स्थान ।

घोर-वि० १. भयंकर । भयानक । डरा-

वना । २. सधन । घना । दुर्गम । ३.

कठिन । कडा । ४. गहरा । गाडा ।

५. कुल । ६. बहुत ज्यादा ।

सज्ञा स्त्री० शब्द । गर्जन । ध्वनि ।

घोरतर-वि० अत्यन्त । भयानक । डरावना ।

घोरना†-क्रि० अ० भारी शब्द करना ।

गरजना ।

घोरिला†-सज्ञा पु० लटकों के खेलने का

घोंडा ।

घोल-सज्ञा पु० घोलकर बनाई गई वस्तु ।

घोलवहाँ-सज्ञा पु० मट्ठा ।

घोलघुमाव-सज्ञा पु० टाल-मटूल । वनावट ।

वृनिमता ।

सर्वसाधारण के सूचनायं राजाज्ञा आदि।  
 घोलना-क्रि० स० घोरना । हिलाकर  
 मिलाना । हल करना।  
 घोला-वि० गँदला । गाढ़ा घोला हुआ।  
 घोष-सज्ञा पु० १ अहीरो की बन्नी।  
 २ अहीर। ३ गोशाला। ४ तट।  
 विनारा। ५ शब्द। आवाज। नाद।  
 ताल का एक भेद। ६ गर्जने का  
 शब्द। ७ शब्दों के उच्चारण में एक  
 प्रयत्न। ८ ईशान कोण का एक देव। ९  
 बंगाली वायस्यों की एक जाति।  
 घोषणा-सज्ञा स्त्री० १ उच्च स्वर से किसी  
 बात की सूचना। बिड़ोरा। विज्ञापन।  
 राजाज्ञा आदि का प्रचार। मुनादी।  
 डुंगी। २ गर्जन। ध्वनि। शब्द। आवाज।  
 यो०-घोषणापन=विज्ञप्ति। वह पन जिममें

लिखी हो। विज्ञापन।  
 घोषणीय-वि० प्रचारित करने योग्य। प्रवा-  
 शित करने योग्य।  
 घोसी-सज्ञा पु० (मुसलमान) अहीर।  
 ग्वाल।  
 घौद-सज्ञा पु० फलों का गुच्छा। गौद।  
 श्वतव।  
 घौदा-सज्ञा पु० चुटेल।  
 घौर-सज्ञा पु० 'घौद'।  
 घ्राण-सज्ञा स्त्री० [वि० घ्रेय] १ नाक।  
 नासिका। २ सूंघने की शक्ति। ३ सुगंध।  
 घ्राण तर्पण-सज्ञा पु० सुगंध। सीरभ।  
 घ्राणेन्द्रिय-सज्ञा पु० नासिका। नाक। सुगंध  
 लेनेवाली इन्द्रिय।  
 घ्रात-वि० गंध लिया हुआ (अहीतगंध)।  
 घ्रात्यक-वि० गंध। आह्व। सूंघनवाला।

## ङ

ङ-व्यञ्जन वर्ण का पाँचवाँ और कवर्ग का अंतिम  
 अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान कंठ तथा  
 नासिका है। इससे कोई शब्द प्रारम्भ नहीं होता।

सज्ञा पु० १ सूंघने की शक्ति। २  
 गंध। सुगंध। ३ भैरव। ४ शिव।  
 ५ विषय-वासना। इच्छा। स्पृहा।

## च

च-व्यञ्जन वर्ण का छठा और चवर्ग का  
 पहला वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है।  
 सज्ञा पु० १ चट्टा। २ सूर्य। ३ चद्रमा।  
 ४ चोर। ५ चुट। ६ कपूर।  
 अन्य समुच्चय। पक्षान्तर। पादपूरण।  
 समाहार। अन्योन्यार्थ अव्यय। अवगारण।  
 हेतु। और। पुन। भी। शोक-मचक्र  
 ध्वनि।  
 चक-वि० १. समस्त। पूरा। समुचा। गाग।  
 २ एक उत्सव।  
 चक्रमण-सज्ञा पु० बहुत धूमना। टहनना।  
 बार बार भ्रमण। चक्कर लगाना।  
 चंग-सज्ञा स्त्री० १ पतंग। गुड्डा। २ मन।  
 चित्त। ३ एक तरह का बाजा। सितार का

चढ़ा हुआ सुर। ४ एक रंग। ५ एक प्रकार  
 का जौ। ६ एक तरह की सरस। ७  
 शुद्ध। पवित्र।  
 चि० १ गुशल। चतुर। दक्ष। पटु। २  
 नीरोग। स्वस्थ। ३ सुन्दर।  
 मुहूर्त-दे० चंग चढ़ना या उमहना=पड़ी-  
 चढ़ी बात होता। शखी उधारना। चंग पर  
 चढ़ाना=१ इधर-उधर की बात कहकर अपने  
 अनुकूल करना। २ मिजाज बका देना।  
 चंगना-वि०-क्रि० स० कमना। खींचना। तानना।  
 तंग करना।  
 चंगा-वि० [स्त्री० चंगी] १ स्वस्थ। नीरोग।  
 २ निर्मल। शुद्ध। पवित्र। सदाचारी।  
 ३ योग्य। ४ मूल्यवान्।

मुहा०—मन चगा तो पटीनी में गगा= जिसरा मन पवित्र है, उसके लिए घर में ही गगा है।

चगुल-गशा पु० चिटियो या पशुओं का पजा।

मुहा०—चगुल में फँसना=बन्दा या पकड़ में आना। बाबू में होना।

चगुर-वि० उत्तम। श्रेष्ठ। सरस। चोला। बढ़िया।

चंगेर, चंगेरी-सज्ञा स्त्री० १ बाँस की उलिया। २ छोटी टोपरी। ३ फूल रखन की उलिया।

चंगेली-सज्ञा स्त्री० दे० "चंगरी"।

चक्षु\*—सज्ञा पु० चाच।

चक्षनाना-नि० अ० चितलाना। चनचन करना। बनना।

चक्षनाहट-सज्ञा स्त्री० दे० "चुनचुनाहट"।

चचरी-सज्ञा स्त्री० १. भँवरा। भ्रमरी।

२. चाँचरि। हाली में गान का एक गीत।

३. एक वर्णवृत्त छंद। चचली। ४ हरि-प्रिया छंद। ५ छन्दोस मानाओं का एक छंद।

चचरीर-सज्ञा पु० [स्त्री० चचरीका] भ्रमर। भौरा। मधुकर। अलि।

चचरीभायली-सज्ञा स्त्री० तेरह मानाओं का एक वर्ण-वृत्त-विशेष।

चचल-वि० [स्त्री० चचला] १ चपल।

चलायमान। अस्थिर। हिलता-डालता।

२ अस्थिर। अव्ययस्थित। एकाग्र न रहनवाला। ३ उद्गिन। पवराया हुआ।

४ नटखट। चुलबुला। ५ हवा। ६ रसिय। कामुक।

चचलता-सज्ञा स्त्री० १ चपलता। अस्थिरता। २ झारत।

चचलताई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "चचलता"।

चचला-सज्ञा स्त्री० १ लक्ष्मी। २ विजली।

विद्युत्। चपला। ३ एक वर्णवृत्त।

चचलरई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "चचलता"। १ धृष्टता २ उद्गता।

चचलाना-वि० अ० चचल होना। अस्थिर होना।

चचलाहट-सज्ञा स्त्री० अस्थिरता। चपलता। चचा-सज्ञा स्त्री० नखट की चटाई।

चचु-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का घाव।

चच। २ रेंउ का पड। ३ 'मृग'। हिमन।

सज्ञा स्त्री० चिटियों की चाच।

चचोरना-वि० च० दे० "चचोटना"।

चट-वि० १ चालाक। २ धूर्त। छैटा हुआ।

चड-वि० [स्त्री० चडा] १. बनवान्।

२ तेज। तीक्ष्ण। उग्र। प्रचर। प्रबल।

प्रच०। तेजस्वी। ३ बठोर। कठिन।

विषट। ४ उद्धत। क्रोधी। गुस्मावर।

भयानक।

सज्ञा पु० १ ताप। गरमी। २ एक यम

दूत। ३ एक दैत्य जिसने मारने से भगवती

का चण्डिका नाम पडा है। ४ पार्तिवेय।

५ इमली का वृक्ष। ६ शिव का एक गण।

चडकर-सज्ञा पु० मूर्ख।

चडकीशिक-सज्ञा पु० विस्वामित्र का नाम।

चडता-सज्ञा स्त्री० १ उग्रता। बठारता।

प्रबलता। २ बल। प्रताप।

चड-मुड-सज्ञा पु० दा राक्षसा के नाम।

चडरसा-सज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्त छंद।

चडवृष्टिप्रपात-सज्ञा पु० एक समवृत्त छंद।

चडाशु-सज्ञा पु० १ दिनकर। विरण।

मूर्ख। २. कठिन।

चडाई\*-सज्ञा स्त्री० १ शीघ्रता। जल्दी।

२ प्रबलता। जबरदस्ती। उधम। अत्याचार।

चडा-सज्ञा स्त्री० १. नायिका विशेष। २

मृगय। द्रव्य विदीप। श्वेत ह्वी। एक नदी

का नाम।

चडातरु-सज्ञा पु० पहनने का वस्त्र।

चकुकी। चाली। लहंगा।

चडाल-सज्ञा पु० [स्त्री० चडालिन, चडा-

तिनी] चाडाल। अत्यज। शूद्र। वर्ण-

सम्बन्ध जाति। नीच। अधम। पतित।

चडालिका-सज्ञा स्त्री० १ चडा। दुर्गा।

पार्वती। २ एक प्रकार की बीणा। ३

एक धोपप।

चडालिनी-सज्ञा स्त्री० १ चडाल की स्त्री।

२ दुष्टा स्त्री। ३ पापिनी स्त्री। ३ एक

प्रकार का बोझ छंद (क्षुपित)।

चंडायल-संज्ञा पु० १. चहादुर सिपाही ।  
२. सतरी । चौकीदार ३. सेना के पीछे  
का भाग ।

चंडिका-संज्ञा स्त्री० १. कर्कशा या लडाकी  
स्त्री । २. गायत्री देवी । ३. दुर्गा देवी ।  
वि० १. कर्कशा । उग्र शक्ति । २. एक  
योगिनी । ३. सात वर्ष की कुमारी ।

चंडी-संज्ञा स्त्री० १. दुर्गा २. कर्कशा और  
उग्र स्त्री । ३. तेरह अक्षरी का एक वर्ण-  
दूत ।

चंडीकुमुभ-संज्ञा पु० लाल कनेर का फूल ।  
चंडीमण्डप-संज्ञा पु० भगवती की पूजा का  
स्थान । देवीगृह ।

चंडू-संज्ञा पु० १. छोटा चूहा । २. मकंद ।  
छोटा बन्दर ।

चंडू-संज्ञा पु० अकीम की तरह का एक  
मोदक पदार्थ ।

चंडूजाना-संज्ञा पु० चंडू पीने का घर ।  
मुहा०-चंडूजाने की गप=भूड़ी गफवाह ।  
विलकुल भूड़ी बात ।

चंडूबाज-संज्ञा पु० चंडू पीनेवाला । नशे-  
बाज ।

चंडूल-संज्ञा पु० पक्षी-विशेष ।

चंडौल-संज्ञा पु० १. एक प्रकार की पालकी ।  
२. डोला ।

चंद-संज्ञा पु० १. दे० "चन्द्रमा" । २. हिंदी  
के प्रसिद्ध प्राचीन कवि जो दिल्ली  
के अंतिम हिंदू सम्राट् पृथ्वीराज चौहान  
की सभा में थे ।

वि० थोड़ा । कुछ ।

चंद्रक-संज्ञा पु० १. चन्द्रमा । कपूर । चांदनी ।  
२. चांद नाम की मछली । ३. नथ में  
पान के आकार की बनावट । ४. माथे पर  
पहनने का एक अर्धचंद्राकार गहना ।

चंदन-संज्ञा पु० १. एक सुगन्धित पेड़ ।  
रत्नचन्दन । मलयगिरि । २. गन्धमार ।  
श्रीखंड । सदल । ३. सुगन्धित लेव । ४.  
घवत । श्वेत । ५. पवित्र । ६. राम की  
सेना का एक बानर । ७. बड़ा तोता ।  
८. तिलक या टीके का चिह्न । ९. छप्पय  
छंद का एक भेद ।

चंदनगिरि-संज्ञा पु० मलयाचल । मलय पर्वत,  
जिस पर चन्दन के वृक्ष होने हैं ।

चंदनहार-संज्ञा पु० दे० "चन्द्रहार" ।

चंदन-संज्ञा पु० तोता । सुआ ।

चंदनीता-संज्ञा पु० सहंगा-विशेष ।

चंदवान-संज्ञा पु० दे० "चंद्रवाण" ।

चंदराना-संज्ञा पु० स० जानबूझकर अन-  
जान बनना । बहकाना । बहलाना ।

चंदरा-वि० १. जिसके सिर पर बाल न  
हों । २. गजा ।

चंदवा-संज्ञा पु० १. छोटा मडप । चंदोवा ।

२. गोल चांदनी । ३. चकती । ४.

मोरपक्ष की चन्द्रिका । ५. मछली पकड़ने

की मोटी जाली । ६. छोटी मच्छरदानी ।

चंदा-संज्ञा पु० १. चद्रमा । २. दान ।

सहायता । ३. पत्र आदि का वाषिष्क मूल्य ।

४. उगाही । ५. शुल्क । कर ।

चंदिका-संज्ञा स्त्री० दे० "चांदनी" ।

चंदिमि, चंदिनी-संज्ञा स्त्री० चांदनी ।

चंदिया-संज्ञा स्त्री० १. खोपड़ी । २. सिर

का मध्य भाग । ३. छोटी रोटी ।

चंदिर-संज्ञा पु० १. चद्र । चद्रमा । २.

कपूर । ३. हाथी ।

चंदेरी-संज्ञा स्त्री० १. चेदिदेश की राज-

धानी । २. एक प्राचीन नगर ।

चंदेरीपति-संज्ञा पु० १. चन्देरी का राजा ।

२. शिशुपाल ।

चंदेल-संज्ञा पु० क्षत्रियों की एक जाति ।

चन्देल क्षत्रिय जाति का एक व्यक्ति ।

चंद्र-संज्ञा पु० १. चद्रमा । २. मृगशिरा

नक्षत्र । ३. मोर की पूँछ की चद्रिका ।

४. कपूर । ५. जल । ६. रोता । सुवर्ण ।

७. पौराणिक भूगोल के १८ उद्देश्यों में

से एक । ८. सानुनामिक वर्ग के ऊपर

लगाई जानेवाली धिड़ी । ९. विंगल में

लग्न का एक भेद । १०. हीरा । ११.

कोई आनन्ददायक वस्तु । ज्योतिष का एक

ग्रह ।

वि० १. आनन्ददायक । २. सुंदर ।

चंद्रक-संज्ञा पु० १. चन्द्रमा । २. चन्द्रमा

का-पा धेरा । ३. चांदनी । ४. मोर की

पूँछ की चंद्रिका । ५ सफेद मिर्च ।  
६. नागुन । ७. कपूर ।

चंद्रता-संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा की किरण ।  
२ चंद्रमंडल का गोलहवाँ अंश । ३ एक  
वर्णवृत्त छंद । ४ माथ का एक गहना ।  
५ एक प्रकार की मिठाई । ६ संगीत  
का एक ताल । ७ स्त्रियों के पहनने का  
वाले रंग का वस्त्र । ८ छोटा डोल ।  
चंद्रपात-संज्ञा पु० १. चन्दन । २ वृमुद ।

३ एक राग । ४. एक प्रसिद्ध मणि ।  
चंद्रकाता-संज्ञा स्त्री० १ रात्रि । रात ।  
२ चंद्रमा की स्त्री । ३ वर्णवृत्त-  
विशेष ।

चंद्रकुंड-संज्ञा पु० १ कामरूप का एक प्रसिद्ध  
तीर्थ । २ सरोवर ।

चंद्रगुप्त-संज्ञा पु० १ मगध देश का प्रथम  
मौर्यवंशी राजा । २ गुप्तवंश का एक  
प्रसिद्ध राजा ।

चंद्रग्रहण-संज्ञा पु० चंद्रमा का ग्रहण ।  
चंद्रमा के ऊपर पृथ्वी की छाया ।

चंद्रचूड-संज्ञा पु० महादेव । शिव । शंकर ।  
जिसके सिर पर चंद्रमा हो, अर्थात्  
शिव ।

चंद्रज-संज्ञा पु० चंद्रमा से उत्पन्न । बुध ।  
चंद्रजात-संज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

चंद्रद्युति-संज्ञा स्त्री० चंदन । चंद्रमा की  
किरण ।

चंद्रधनु-संज्ञा पु० चंद्रमा का प्रकाश पड़ने से  
दिखाई पड़नवाला इन्द्रधनुष ।

चंद्रधर-संज्ञा पु० शिव । शंकर । महादेव ।  
चंद्रमा को धारण करनेवाला ।

चंद्रपुष्पा-संज्ञा स्त्री० १ सफेद भटपटैया ।  
२. चाँदनी ।

चंद्रप्रभ-वि० कास्तिमान् ।

चंद्रप्रभा-संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी । चंद्रमा की  
ज्योति । चंद्रिका । ज्योत्स्ना । २ एक अक्षरा ।  
३. एक देवी । ४ एक देशी औषध । ५  
चंद्रहास नाम की मदिरा । ६. एक  
रत्न । ७. कचूर । ८ बकुची ।

चंद्रधनु-संज्ञा पु० वृमुद ।

चंद्रबाण-संज्ञा पु० एक प्रकार का बाण जिसका

पुन अर्ध-चंद्राकार होता था ।

चंद्रविभु-संज्ञा पु० अर्ध अनुत्सार की विंदी ।  
चंद्रविष्य-संज्ञा पु० चंद्रमंडल । चंद्रमा की  
परछाई । गोल, चंद्राकार ।

चंद्रभस्म-संज्ञा पु० कपूर ।

चंद्रभा-संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा का प्रकाश ।  
२ सफेद भटपटैया ।

चंद्रभागा-संज्ञा स्त्री० पञ्जाब की चनाइ नदी ।  
नदी विशेष ।

चंद्रभाल-संज्ञा पु० महादेव । शिव ।  
भस्म पर चंद्रमा धारण करनेवाले ।

चंद्रभूति-संज्ञा स्त्री० चाँदी ।

चंद्रभूषण-संज्ञा पु० शिव । महादेव ।

चंद्रमंडल-संज्ञा पु० चंद्रविष्य । चंद्रमा की  
परिधि ।

चंद्रमणि-संज्ञा पु० १ चंद्रवात मणि ।  
२ उल्लाला छंद ।

चंद्रमल्लिका-संज्ञा स्त्री० १. पुष्प-विशेष । २.  
लता विशेष । ३ इलायची ।

चंद्रमत्-संज्ञा पु० चंद्रमा ।

चंद्रमा-संज्ञा पु० १ चंद्र । चाँद । राशि ।  
२ कपूर ।

चंद्रमालताम-संज्ञा पु० शंकर । महादेव ।  
चंद्रमाला-संज्ञा स्त्री० एक छंद विशेष,  
जिसमें २८ मात्राएँ होती हैं ।

चंद्रमुखी-संज्ञा स्त्री० चंद्रमा के समान  
मुँहवाली । सुन्दरी । सुमुखी ।

चंद्रमौलि-संज्ञा पु० महादेव । शिव ।

चंद्ररेखा, चंद्रलेखा-संज्ञा स्त्री० १ चंद्रमा  
की किरण । २ चंद्रमा की कला । ३  
एक वर्णवृत्त विशेष । ४ द्वितीया का  
चंद्रमा ।

चंद्ररेणु-संज्ञा पु० नाव्यचौर, शब्दचौर ।

चंद्रलोक-संज्ञा पु० १. आकाश । चंद्रमंडल ।  
२ इस नाम का एक स्वर्ग ।

चंद्रलोह-संज्ञा पु० चाँदी । रूपा । रजत ।

चंद्रवश-संज्ञा पु० क्षत्रियों का एक वंश ।  
चंद्रवंशीय राजाशा का कुल ।

चंद्रवधूटी-संज्ञा स्त्री० वीरवहूटी ।

चंद्रवल्ली-संज्ञा स्त्री० १. पसरन । २ माघवी  
लता ।

चद्रवर्त्म-सज्ञा पु० वर्णवृत्त-विशेष ।  
 चद्रवत्-सज्ञा पु० प्रायश्चित्त विशेष । व्रत-  
 विशेष ।  
 चद्रवार-सज्ञा पु० सोमवार ।  
 चद्रवेप-सज्ञा पु० शिवजी ।  
 चद्रशाला-सज्ञा स्त्री० चांदनी । चद्रमा का  
 प्रकाश । घर के ऊपर की कोठरी । अटारी ।  
 अट्टालिका ।  
 चद्रशिखा-चद्रशृंग । चद्रमा की कला का  
 अग्रभाग ।  
 चद्रशेखर-सज्ञा पु० १. महादेव । शिव । २.  
 पर्वत-विशेष । ३. पुराण का एक प्रसिद्ध  
 नगर । ४. शम्भुराज्य का एक शिष्य । ५.  
 एक प्रकार का ध्रुपद गाना ।  
 चद्रसिता-सज्ञा स्त्री० कपूर ।  
 चद्रहार-सज्ञा पु० अलंकार विशेष । गले  
 में पहनने की माला । नीलखा हार ।  
 एक प्रकार का हार ।  
 चद्रहास-सज्ञा पु० १. रावण की तलवार ।  
 २. खड्ग । तलवार ।  
 चद्रा-वि० गजा ।  
 सज्ञा स्त्री० १. इक्ष्वाकु । २. मरने के  
 समय की अवस्था जब टपटपी बंध जाती  
 है । प्राणान्त के समय की मूर्च्छा । ३. चद्रमा  
 का प्रकाश । ४. चंद्रोवा । वितान ।  
 ५. एक वनस्पति का नाम । ६. चतुर ।  
 चद्रातप-सज्ञा पु० १. चद्रिका । चांदनी ।  
 चद्रमा का प्रकाश । २. चंद्रोवा । वितान ।  
 चद्रापीठ-सज्ञा पु० शिवजी ।  
 चद्रार्ध-सज्ञा पु० चांदी और ताँबे या सोने  
 के योग से बनवाली एक मिश्रित धातु ।  
 चद्रावर्त्ता-सज्ञा पु० एक वर्णवृत्त छंद ।  
 चद्रिषा-सज्ञा स्त्री० १. चांदनी । चनेर ।  
 २. मार की पूँछ पर का गाल चिल्ला ।  
 ३. टनायकी । ४. जूरी या पमेसी ।  
 ५. एक दूरी । ६. एक भटनी । एक  
 कण-बून । ७. माघ पर का एक भूषण ।  
 देश । वडा । ८. पाषाण । ९. घान ।  
 १०. भरी । ११. चतुर । १२. गम्भिर-  
 व्याख्यान का एक रूप ।  
 चद्रिगभिसारिका-सज्ञा स्त्री० चांदनी में

अपने प्रेमी से मिलनेवाली नायिका ।  
 शुक्लाभिसारिका ।  
 चद्रोदय-सज्ञा पु० १. वैद्यक में एक रस ।  
 २. चद्रमा का उदय । ३. चंद्रोवा ।  
 वितान ।  
 चद्रोपल-सज्ञा पु० चद्रकात मणि । एक मणि ।  
 चपई-वि० १. पीले रंग का । २. चपा  
 के फूल के रंग का ।  
 चपक-सज्ञा पु० १. चपा । २. एक गंधर्व  
 का नाम । ३. एक रंग । ४. एक छंद-  
 विशेष । ५. चपा केला । ६. संगीत का  
 एक राग ।  
 चपकमाला-सज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त विशेष ।  
 चपत-वि० ते भागना । गायब । भाग जाना ।  
 चंपना-क्रि० भ० १. उपकार से दाना ।  
 २. लज्जित होता ।  
 चपा-सज्ञा पु० १. चपा नाम का एक फूल ।  
 फूल का पेड़ । प्राचीन अगदेश की राजधानी  
 जहाँ पांडवों के समय में वर्ण राज्य करता  
 था । २. अगदेश की सीमा पर की एक  
 नदी । ३. एक प्रकार का मीठा केला ।  
 एक समवृत्त मानिक छंद । ४. छोटे की  
 जाति विशेष । ५. रेशम का कीड़ा ।  
 चपावली-सज्ञा स्त्री० गले में पहनने का एक  
 हार । स्त्रियों का एक गहना ।  
 चपारण्य-सज्ञा पु० बिहार प्रान्त का एक  
 स्थान जिसे आजकल चम्पारन कहते हैं ।  
 चम्पा नगरी के पास का वन ।  
 चम्पू-सज्ञा पु० गद्यपद्यमय काव्यग्रंथ ।  
 चवत्त-सज्ञा स्त्री० १. एक नदी । २. नाना के  
 किनारे की लवड़ी जिससे सिचाई के लिए  
 पानी ऊपर खड़ाते हैं ।  
 सज्ञा पु० १. पानी की बाड । २. सपेरा ।  
 ३. चिलम का सरपान ।  
 चवेली-सज्ञा स्त्री० [का०] एक तरह का  
 छाटा प्याला ।  
 चव-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का धान । २.  
 किसी धातु का छोटा मुँह का मुर्गीनुमा  
 बरतन । छाटा ताड़ा ।  
 चवेत्तिपा-वि० द० 'तमिता ।  
 चवेत्ती-सज्ञा स्त्री० द० 'चमेत्ती' ।

पृष्ठ की चंद्रिका । ५ उपेद भिर्ग ।  
६ नापू । ७ मपूर ।

चंद्रता-सज्ञा स्त्री० १ चंद्रमा की किरण ।  
२ चंद्रमण्डल का सतहवाँ भाग । ३ एक  
यणवृत्त छंद । ४ माय का एक गृह्य ।  
५ एक प्रकार की मिठाई । ६ रागीन  
का एक ताल । ७ स्त्रिया के पहाने का  
पाल रंग का वस्त्र । ८ छाटा डोना ।

चंद्रवर्ति-सज्ञा पु० १ चंदन । २ कुमुद ।  
३ एक राग । ४ एक प्रसिद्ध मणि ।  
चंद्रवर्ता-सज्ञा स्त्री० १ राति । रात ।  
२ चंद्रमा की स्त्री । ३ यणवृत्त  
विशेष ।

चंद्रबुड-सज्ञा पु० १ वामरूप का एक प्रसिद्ध  
तीर्थ । २ सरावर ।

चंद्रगुप्त-सज्ञा पु० १ मगध देश का प्रथम  
मौर्यवंशी राजा । २ गुप्तावस्था का एक  
प्रसिद्ध राजा ।

चंद्रग्रहण-सज्ञा पु० चंद्रमा का ग्रहण ।  
चंद्रमा के ऊपर पृथ्वी का छाया ।

चंद्रबुड-सज्ञा पु० महादेव । शिव । शंकर ।  
जिसके तिर पर चंद्रमा हा भयात्  
शिव ।

चंद्रज-सज्ञा पु० चंद्रमा से उत्पन्न । कुश ।  
चंद्रजात-सज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

चंद्रद्युति-सज्ञा स्त्री० चंदन । चंद्रमा की  
किरण ।

चंद्रधनु-सज्ञा पु० चंद्रमा का प्रकाश पडन से  
दिखाई पड़नवाला चंद्रधनुष ।

चंद्रधर-सज्ञा पु० शिव । शंकर । महादेव ।  
चंद्रमा का धारण करनेवाला ।

चंद्रपुष्पा-सज्ञा स्त्री० १ सफेद भटनट्या ।  
२ चाँदनी ।

चंद्रप्रभ-वि० कातिमान् ।

चंद्रप्रभा-सज्ञा स्त्री० १ चाँदनी । चंद्रमा की  
ज्योति । चंद्रिका । ज्योतिना । २ एक भस्मरा ।  
३ एक देवी । ४ एक देशी घोष । ५  
चंद्रहास नाम की मंदिर । ६ एक  
रत्न । ७ कबूर । ८ बकुची ।

चंद्रवधु-सज्ञा पु० कुमुद ।

-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाण जिसे वा

फाय चंद्र-चंद्राकार होता था ।

चंद्रबिजु-सज्ञा पु० चंद्र अनुस्वार की बिंदी ।

चंद्रबिज-सज्ञा पु० चंद्रमण्डल । चंद्रमा की  
परछाई । गोल, चंद्राकार ।

चंद्रभस्म-सज्ञा पु० कपूर ।

चंद्रभा-सज्ञा स्त्री० १ चंद्रमा का प्रकाश ।  
२ सफेद भटनट्या ।

चंद्रभागा-सज्ञा स्त्री० पंजाब की चनाच नदी ।  
नदा विनाय ।

चंद्रभाल-सज्ञा पु० महादेव । शिव ।  
मन्त्र पर चंद्रमा धारण करनेवाला ।

चंद्रभूति-सज्ञा स्त्री० चाँदा ।

चंद्रभूयण-सज्ञा पु० शिव । महादेव ।

चंद्रमंडन-सज्ञा पु० चंद्रबिज । चंद्रमा की  
परिधि ।

चंद्रमणि-सज्ञा पु० १ चंद्रवात मणि ।  
२ उन्नाता छंद ।

चंद्रमलिका-सज्ञा स्त्री० १ पुष्प विशेष । २  
लता विशेष । ३ इनायची ।

चंद्रमल-सज्ञा पु० चंद्रमा ।

चंद्रमा-सज्ञा पु० १ चंद्र । चाँद । शशि ।  
२ कपूर ।

चंद्रमानसाम-सज्ञा पु० शंकर । महादेव ।

चंद्रमाला-सज्ञा स्त्री० एक छंद विशेष  
जिसमें २८ मात्राएँ हाना ह ।

चंद्रमुखी-सज्ञा स्त्री० चंद्रमा के समान  
मुहवाला । सुंदरा । सुमुखा ।

चंद्रमौलि-सज्ञा पु० महादेव । शिव ।

चंद्ररेखा चंद्रलेखा-सज्ञा स्त्री० १ चंद्रमा  
की किरण । २ चंद्रमा की कला । ३  
एक यणवृत्त विभाग । ४ द्वितीया का  
चंद्रमा ।

चंद्ररेणु-सज्ञा पु० वायुवीर गव्दवीर ।

चंद्रलोक-सज्ञा पु० १ आनास । चंद्रमंडन ।  
२ इन नाम का एक स्थान ।

चंद्रलोह-सज्ञा पु० चाँदा । रूपा । रजत ।

चंद्रवश-सज्ञा पु० क्षत्रियों का एक वंश ।  
चंद्रवंशीय राजाभा का कुल ।

चंद्रवधूटी-सज्ञा स्त्री० वीरवधूटी ।

चंद्रवल्ली-सज्ञा स्त्री० १ पसरन । २ माधवी  
लता ।

चंद्रवर्तन-संज्ञा पुं० वर्णवृत्त-विशेष ।  
 चंद्रवर्त-संज्ञा पुं० प्रायश्चित्त-विशेष । अत-  
 विशेष ।  
 चंद्रवार-संज्ञा पुं० सोमवार ।  
 चंद्रवेप-संज्ञा पुं० शिवजी ।  
 चंद्रशाला-संज्ञा स्त्री० चांदनी । चंद्रमा का  
 प्रकाश । घर के ऊपर की कोठरी । अटारी ।  
 अट्टालिका ।  
 चंद्रशिखा-चंद्रशृंग । चंद्रमा की कला का  
 अग्रभाग ।  
 चंद्रशेखर-संज्ञा पुं० १. महादेव । शिव । २.  
 पर्वत-विशेष । ३. पुराण का एक प्रसिद्ध  
 नगर । ४. शंकराचार्य का एक शिष्य । ५.  
 एक प्रकार का ध्रुपद गाना ।  
 चंद्रसिता-संज्ञा स्त्री० कपूर ।  
 चंद्रहार-संज्ञा पुं० अलंकार-विशेष । गले  
 में पहनने की माला । नीलखा हार ।  
 एक प्रकार का हार ।  
 चंद्रहास-संज्ञा पुं० १. रावण की तलवार ।  
 २. खड्ग । तलवार ।  
 चंद्रा-वि० गंगा ।

अपने प्रेमी से मिलनेवाली नायिका ।  
 शकुलाभिसारिका ।  
 चंद्रोदय-संज्ञा पुं० १. वैद्यक में एक रस ।  
 २. चंद्रमा का उदय । ३. चंद्रोपा  
 वितान ।  
 चंद्रोपल-संज्ञा पुं० चंद्रकान्त मणि । एक मणि ।  
 चंपई-वि० १. पीले रंग का । २. चंपा  
 के फूल के रंग का ।  
 चंपक-संज्ञा पुं० १. चंपा । २. एक गंधर्व  
 का नाम । ३. एक रंग । ४. एक छंद-  
 विशेष । ५. चंपा केला । ६. संगीत का  
 एक राग ।  
 चंपकमाला-संज्ञा स्त्री० वर्णवृत्त-विशेष ।  
 चंपत्त-वि० ले भागता । गायब । भाग जाना ।  
 चंपत्ता-क्रि० अ० १. जगकार से दयेगा ।  
 २. लज्जित होना ।  
 चंपा-संज्ञा पुं० १. चंपा नाम का एक फूल ।  
 फूल का पेड़ । प्राचीन अंगदेश की राजधानी ।  
 जहाँ पांडवों के समय में कर्ण राज्य करता  
 था । २. अंगदेश की सीमा पर की एक

पूछ की चद्रिया । ४. सफेद मिर्च ।  
६. नाएन । ७. कपूर ।

चंद्रता-सज्ञा स्त्री० १. चद्रमा की किरण ।  
२. चद्रमण्डल का खोलहवाँ अंश । ३. एक  
वर्णयुक्त छद् । ४. माध, या एक गहना ।  
५. एक प्रकार की मिठाई । ६. संगीत  
या एक ताल । ७. स्त्रियों के पहनने का  
काले रंग का कपड़ा । ८. छोटा डोल ।  
चद्रमांति-सज्ञा पु० १. चन्दन । २. कुमुद ।  
३. एक राग । ४. एक प्रसिद्ध मणि ।  
चद्रमाता-सज्ञा स्त्री० १. रात्रि । रात ।  
२. चन्द्रमा की स्त्री । ३. वर्णयुक्त-  
विशेष ।

चद्रमुड-सज्ञा पु० १. कामरूप का एक प्रसिद्ध  
तीर्थ । २. सरोवर ।

चद्रगुप्त-सज्ञा पु० १. मगध देश का प्रथम  
भोग्यवशी राजा । २. गुप्तवंश का एक  
प्रसिद्ध राजा ।

चद्रग्रहण-सज्ञा पु० चद्रमा का ग्रहण ।  
चद्रमा के ऊपर पृथ्वी की छाया ।

चद्रकूड-सज्ञा पु० महादेव । शिव । शंकर ।  
जिसके सिर पर चन्द्रमा हो, अर्थात्  
शिव ।

चद्रज-सज्ञा पु० चद्रमा से उत्पन्न । दुग्ध ।

चद्रजात-सज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

चन्द्रद्युति-सज्ञा स्त्री० चन्दन । चद्रमा की  
किरण ।

चद्रधनु-सज्ञा पु० चद्रमा का प्रवास पडने से  
बिखार पडनेवाला इन्द्रधनुष ।

चद्रधर-सज्ञा पु० शिव । शंकर । महादेव ।  
चद्रमा का धारण करनेवाला ।

चद्रपुष्पा-सज्ञा स्त्री० १. सफेद भटकट्या ।  
२. चाँदनी ।

चद्रप्रभ-वि० कातिमान् ।

चद्रप्रभा-सज्ञा स्त्री० १. चाँदनी । चद्रमा की  
ज्योति । चद्रिया । ज्योत्स्ना । २. एक अप्सरा ।  
३. एक देवी । ४. एक देशी ओषध । ५.  
चद्रहाम नाम की मंदिर । ६. एक  
रत्न । ७. कचूर । ८. बकुची ।

चद्रमण्यु-सज्ञा पु० कुमुद ।

-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाण जिसका

पल अर्द्ध-चद्राकार होता था ।

चंद्रांबु-सज्ञा पु० अर्द्ध अनुस्वार की बिंदी ।

चंद्रांबु-सज्ञा पु० चद्रमण्डल । चद्रमा की  
परछाई । गोल, चद्राकार ।

चद्रभस्म-सज्ञा पु० कपूर ।

चद्रभा-सज्ञा स्त्री० १. चद्रमा का प्रवास ।

२. सफेद भटकट्या ।

चद्रभागा-सज्ञा स्त्री० पञ्जाब की चनाव नदी ।  
नदी-विशेष ।

चद्रभाल-सज्ञा पु० महादेव । शिव ।  
मन्त्र पर चद्रमा धारण करनेवाले ।

चद्रभूति-सज्ञा स्त्री० चाँदी ।

चद्रभूषण-सज्ञा पु० शिव । महादेव ।

चद्रमण्डल-सज्ञा पु० चद्रांबु । चद्रमा की  
परिधि ।

चद्रमणि-सज्ञा पु० १. चद्रवात मणि ।  
२. उल्लाला छद् ।

चद्रमल्लिका-सज्ञा स्त्री० १. पुष्प विशप । २.  
लता विशेष । ३. इलायची ।

चद्रमस-सज्ञा पु० चद्रमा ।

चद्रमा-सज्ञा पु० १. चद्र । चाँद । रात्रि ।  
२. कपूर ।

चद्रमाललाम-सज्ञा पु० शंकर । महादेव ।

चद्रमाला-सज्ञा स्त्री० एक छद् विशेष,  
जिसमें २८ मात्राएँ होती हैं ।

चद्रमुखी-सज्ञा स्त्री० चद्रमा के समान  
मुँहवाली । सुन्दरी । सुमुखी ।

चद्रमोति-सज्ञा पु० महादेव । शिव ।

चद्ररेखा, चद्रलेखा-सज्ञा स्त्री० १. चद्रमा  
की किरण । २. चद्रमा की बला । ३.

एक वर्णयुक्त विशप । ४. द्वितीया का  
चद्रमा ।

चद्ररेणु-सज्ञा पु० वाय्वचीर, शब्दचीर ।

चद्रलोक-सज्ञा पु० १. आकाश । चद्रमण्डल ।

२. इस नाम का एक स्वर्ग ।

चद्रलीह-सज्ञा पु० चाँदी । रुपा । रजत ।

चद्रवश-सज्ञा पु० क्षत्रियों का एक वंश ।

चद्रवशीय राजाओं का कुल ।

चद्रवधूती-सज्ञा स्त्री० वीरवधूती ।

चद्रवल्ली-सज्ञा स्त्री० १. पसरन । २. माधवी  
लता ।

पूछ की चंद्रिका । ५. सफेद मिर्च ।  
६. नागून । ७. कपूर ।

चंद्रता-संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा की चिरण ।  
२. चंद्रमण्डल का सोलहवाँ प्रश । ३. एक  
पर्णवृत्त छंद । ४. माघ का एक गृह्ण ।

५. एक प्रकार की मिठाई । ६. गगीत  
का एक ताल । ७. स्त्रियों के पहनने का  
माले रंग का वपश । ८. छोटा डोल ।

चंद्रकांत-संज्ञा-पुं० १. चन्दन । २. कुमुद ।  
३. एक राग । ४. एक प्रसिद्ध मणि ।

चंद्रकांता-संज्ञा स्त्री० १. रात्रि । रात ।  
२. चन्द्रमा की स्त्री । ३. वर्णवृत्त-  
विशेष ।

चंद्रकुंड-संज्ञा-पुं० १. कामरूप का एक प्रसिद्ध  
तीर्थ । २. सरोवर ।

चंद्रपुत-संज्ञा पुं० १. मगध देश का प्रथम  
मौर्यवंशी राजा । २. गुप्तवंश का एक  
प्रसिद्ध राजा ।

चंद्रग्रहण-संज्ञा पुं० चंद्रमा का ग्रहण ।  
चंद्रमा के ऊपर पृथ्वी की छाया ।

चंद्रचूड-संज्ञा पुं० महादेव । शिव । शंकर ।  
जिसके सिर पर चन्द्रमा हो, अर्थात्  
शिव ।

चंद्रज-संज्ञा पुं० चंद्रमा से उत्पन्न । वृध ।  
चंद्रजात-संज्ञा स्त्री० चाँदनी ।

चंद्रद्युति-संज्ञा स्त्री० चंदन । चंद्रमा की  
चिरण ।

चंद्रधनु-संज्ञा पुं० चंद्रमा का प्रकाश पड़ने से  
दिखाई पड़नेवाला इन्द्रधनुष ।

चंद्रधर-संज्ञा पुं० शिव । शंकर । महादेव ।  
चंद्रमा को धारण करनेवाला ।

चंद्रपुष्पा-संज्ञा स्त्री० १. सफेद भटकटैया ।  
२. चाँदनी ।

चंद्रप्रभ-वि० कातिमान् ।

चंद्रप्रभा-संज्ञा स्त्री० १. चाँदनी । चंद्रमा की  
ज्योति । चंद्रिका । ज्योत्स्ना । २. एक श्रृंगार ।

३. एक देवी । ४. एक देशी शीपथ । ५.  
चंद्रहास नाम की मदिरा । ६. एक  
रत्न । ७. कचूर । ८. बकुची ।

चंद्रवन्धु-संज्ञा पुं० कुमुद ।  
-संज्ञा पुं० एक प्रकार का वाण जिसका

फन घट्टे-चूड़ाकार होता था ।

चंद्रविदु-संज्ञा पुं० घट्टे धनुस्कार की विंदी ।  
चंद्रविव-संज्ञा पुं० चंद्रमंडल । चंद्रमा की  
परछाई । गोल, चंद्राकार ।

चंद्रभस्म-संज्ञा पुं० कपूर ।  
चंद्रभा-संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा का प्रकाश ।

२. सफेद भटकटैया ।  
चंद्रभागा-संज्ञा स्त्री० पंजाब की चनाव नदी ।  
गदी-विशेष ।

चंद्रभाल-संज्ञा पुं० महादेव । शिव ।  
मस्तक पर चंद्रमा धारण करनेवाले ।

चंद्रभूति-संज्ञा स्त्री० चाँदी ।  
चंद्रभूषण-संज्ञा पुं० शिव । महादेव ।

चंद्रमंडल-संज्ञा पुं० चंद्रविव । चंद्रमा की  
परिधि ।

चंद्रमणि-संज्ञा पुं० १. चंद्रमात मणि ।  
२. उल्लाला छंद ।

चंद्रमल्लिका-संज्ञा स्त्री० १. पुष्प-विशेष । २.  
लता-विशेष । ३. इलायची ।

चंद्रमस्-संज्ञा पुं० चंद्रमा ।  
चंद्रमा-संज्ञा पुं० १. चंद्र । चाँद । राशि ।

२. कपूर ।  
चंद्रमाललाम-संज्ञा पुं० शंकर । महादेव ।

चंद्रमाला-संज्ञा स्त्री० एक छंद-विशेष,  
जिसमें २८ भाग्य हैं होता है ।

चंद्रमुखी-संज्ञा स्त्री० चंद्रमा के समान  
मुँहवाली । सुन्दरी । मुमुखी ।

चंद्रमौलि-संज्ञा पुं० महादेव । शिव ।  
चंद्ररेखा, चंद्रलेखा-संज्ञा स्त्री० १. चंद्रमा  
की चिरण । २. चंद्रमा की कला । ३.

एक वर्णवृत्त-विशेष । ४. द्वितीया का  
चंद्रमा ।

चंद्ररेणु-संज्ञा पुं० काव्यचौर, शब्दचौर ।  
चंद्रलोक-संज्ञा पुं० १. आकाश । चंद्रमंडल ।

२. इम नाम का एक स्वर्ग ।  
चंद्रलोह-संज्ञा पुं० चाँदी । रूपा । रजत ।

चंद्रवश-संज्ञा पुं० क्षत्रियों का एक वंश ।  
चंद्रवशीय राजाओं का कुल ।

चंद्रवधूटी-संज्ञा स्त्री० वीरवहूटी ।  
चंद्रवल्ली-संज्ञा स्त्री० १. पसरन । २. माफनी  
लता ।

चक्रमर्द—सज्ञा पु० एक नाग का नाम ।  
चक्रपूजा—सज्ञा स्त्री० तांत्रिकों की एक पूजा-विधि ।

चक्रमुद्रा—सज्ञा स्त्री० १. गोल आकार का सिक्का । २. गोलाकार चिह्न । ३. चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जिन्हें वैष्णव भक्त अपने बाहु तथा शरीर अंगों पर छपाते हैं । ४. तांत्रिकों का पूजा करने का एक ढंग, जिससे हाथ की श्रृंगुलियों की एक मुद्रा बनाते हैं ।

चक्रलक्षण—सज्ञा स्त्री० गुदव । अमृतलता ।  
चक्रवत्—अव्य० चक्राकार अस्त्र । चक्र के समान ।

चक्रवर्ती—वि० [स्त्री० चक्रवर्तिनी] १ राजाश्री का राजा । समुद्र पर्यन्त राज्य करने-वाला । विश्व-सम्राट् । सार्वभौम सम्राट् । २. इस नाम का एक समवृत्त वर्णभेद छद् ।  
सज्ञा पु० १. दध्या का साग । २. एक वनस्पति-विशेष (जटामासी) ।

चक्रवाक—सज्ञा पु० चक्रवा-पक्षी ।

द्यौः-चक्रवाक्ययुः=सूर्य ।

चक्रवात—सज्ञा पु० १. बवंचर । भीषण श्रांघी । तूफान । २. वेग से चक्कर खाती हुई वायु ।  
चक्रवाल—सज्ञा पु० १. पुराणों में वर्णित दिन और रात को अलग करनेवाली पर्वत-माला जो पृथ्वी के चारों ओर फैली हुई मानी जाती है । परिधि । घेरा । गोलाकार । मंडलाकार । २. समूह । जन-समाज ।

चक्रवृद्धि—सज्ञा स्त्री० सूद दर सूद । व्याज पर व्याज ।

चक्रव्यूह—सज्ञा पु० युद्ध में सेना की चक्कर-दार या कुंडलाकार स्थिति-विशेष । महा-भारत में कौरवों ने चक्रव्यूह रचकर अभिमन्यु को मारा था ।

चक्राक—सज्ञा पु० चक्र का चिह्न जो वैष्णव लोग अपने शरीर पर दगवाते हैं ।

चक्राकित—वि० जिसने अपने बाहु पर चक्र का चिह्न लगवाया हो । जैष्णव-सम्प्रदाय के अनुयायी ऐसा चिह्न लगाते हैं ।

चक्राग—सज्ञा पु० १. हस । २. रस । ३. चक्रवा ।

चक्रांगी—सज्ञा स्त्री० १. हसिनी । २. कुटकी । ३. गाड़ी । ४. एक श्राक । ५. मजीठ । ६. चक्रवाक पक्षी ।

चक्रा—सज्ञा स्त्री० समूह । गिरोह । टोली ।  
चक्राकार—वि० गोलाकार । घेरा ।

चक्रायुध—सज्ञा पु० विष्णु । जिसका हथियार चक्र हो ।

चक्रित\*—वि० दे० "विस्मित" । "चकित" ।

चक्रो—सज्ञा पु० १. चक्र धारण करनेवाला । २. विष्णु । ३. गौड़ का पंडित या पुरोहित । ४. सर्प । ५. चक्रवाक पक्षी । ६. कुम्हार । ७. तैली । ८. जासूस । मुसबिर । चर । ९. चक्रवर्ती राजा । किलेदार । १०. मंत्री । ११. ब्रह्मर्षि । १२. आकाश में कल्पित गोलाकार मंडल । १३. एक वर्णसंकर जाति । १४. चक्रमर्द । चक्रवैद्य ।

चक्रेता—वि० गोलाकार । चक्राकार । गोल । वर्तुल ।

चक्षण—सज्ञा स्त्री० १. कयन । २. अनुग्रह । ३. गजक । चाट ।

चक्षम—सज्ञा पु० उपाध्याय । बृहस्पति ।  
चक्षु-श्रवा—सज्ञा पु० साँप ।

चक्षु—सज्ञा पु० १. नयन । नेत्र । आँख । २. एक नदी जिसे आजकल आक्सस कहते हैं । बक्षु नद ।

चक्षुरिन्द्रिय—सज्ञा स्त्री० नेत्र । आँख ।

चक्षुस्पति—सज्ञा पु० सूर्य ।

चक्षुष्य—वि० १. आँखों से उत्पन्न । नेत्रों के लिए लाभदायक (औषध आदि) । २. सुंदर । मनोहर । ३. नेत्र-संबंधी ।

सज्ञा पु० १. खपरिया । २. सुरसा । केतकी ।  
चक्ष\*—सज्ञा पु० नेत्र । आँख ।

[फा०] भगडा । तकरार । कलह ।  
यो०-चक्ष-चक्ष-तकरार । कहा-सुनी ।

चखन—सज्ञा पु० आँख । चक्षु ।

चखना—क्रि० स० स्वाद लेना ।

चखाचखी—सज्ञा स्त्री० भगडा । प्रतिस्पर्द्धा ।

ताग-डौट । विरोध । कहा-सुनी ।

चलाना—क्रि० स० खिलाना । स्वाद दिलाना ।

यो०-मजा चलाना=बदला लेना ।

चकोरी-गंगा स्त्री० गाढा चकोर।

चकोर†-गंगा पु० भेंवर।

चरौट-गंगा पु० १ चपौटा। एक प्रकार का पोथा जिगम दाद छूट जाती है। २. चपाचौध।

चपौध\*-गंगा स्त्री० दे० "चपाचौध"।

चक्क-गंगा पु० १. चक्कयात्र। चक्का। २. कुम्हार का चाक। ३. पहिया। चक्कर। चम। ४ दिशा।

चक्कर-गंगा पु० १. अस्त्र-विशेष। २. गोल वस्तु। मडलाकार। गोल या मडलाकार घेरा। मटन। ३. चाक। ४. चाराधोर घूमना। परित्रमण। फेरा। ५. चलने में अधिष्ठ घुमाव या दूरी। फेर। ६. हिरानी। अस्त्रमजस। ७. पैच। जटिलता। दुम्हता। ८. सिर घूमना। घूमरी। घुमटा। ९. भेंवर। जजाल। मुहा०-चक्कर काटना=परित्रमा करना। मडराना। चक्कर खाना=१ घूमना। २ घुमाव-फिराव के साथ जाना। ३ भटकना। भ्रात होना। हिरान होना। भुच्छा। किसी के चक्कर में आना या पडना=किसी के धोखे में आना।

चक्कचढ़\*-वि० दे० "चक्रवर्ती"।

चक्कचर्व-सज्ञा पु० चक्रवर्ती राजा।

चक्कचस्त-गंगा पु० चिड़िया का अड्डा।

चक्का-सज्ञा पु० १ पहिया। २ पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ३ बड़ा टुकड़ा। चक्कड़। ईंट-पत्थर या कचड़ का ढेर जो माप के लिए त्रय से लगाया गया है।

चक्कान-वि० गाढा। गोल निशानी। घडा। चक्की-सज्ञा स्त्री० १ आटा पीसने का यंत्र। जाँता। पाट। २ फेर के घुटने की गाल हड्डी। ३ बिजली।

मुहा०-चक्की पीसना=बड़ा परिश्रम करना।

चक्कीरहा-सज्ञा पु० चक्की को सुरदरी करने-वाला।

चक्कु-सज्ञा स्त्री० छुरी। चाकु।

चक्की-सज्ञा स्त्री० आने की स्वादिष्ट और चटपटी चीज। चाट। बटेरो की चुगाई।

चक्र-गंगा पु० १. कुम्हार का चाक।

२. पहिया। ३. गोलारूप। ४. तगर का पून। ५. तेज घेरे का चोढ़। ६. चक्की। ७. हम्परेखा-विशेष। ८. लोहे के एक घम्प का नाम। पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु। ९. धागा। जाल। १०. भेंवर। ११. ववहर। १२. गमूह। गमुदाय। मटनी। १३. एक प्रयत्न का व्यूह या सेना की स्थिति। १४. मटल। प्रदेश। राज्य। १५. एक गमुद्र में दूसरे गमुद्र तक फैला हुआ प्रदेश। आममुद्रात भूमि। १६. चक्रवात पत्ती। चक्का। १७. योग के अनुसार शरीरस्थ। पत्र। १८. फेरा। घुमाव। भ्रमण। चक्कर। १९. दिशा। प्रान्त। २०. एक प्रकार का छद्।

चक्रगोसा-गंगा पु० राज्यरक्षक। सेनापति।

चक्रतीर्थ-सज्ञा पु० १ दक्षिण का एक तीर्थ-स्थान। २ नैमिषारण्य का एक वृद्ध।

चक्रदत्ती-सज्ञा स्त्री० जनालगोटा। दत्ती-वृक्ष।

चक्रदण्ड-सज्ञा पु० नूपुर।

चक्रघर-वि० चक्र धारण करनेवाला।

सज्ञा पु० १ विष्णु भगवान्। २ श्रीकृष्ण।

३ बाजीगर। इद्रजाल करनेवाला। ४. कई ग्रामों या नगरों का स्वामी। ५. सगीन का एक राग। ६. मर्पे। ७. पानी का एक जन्तु। ८. वर्षोपरि राजा। चक्रवर्ती।

चक्रधारी-सज्ञा पु० दे० चक्रघर।

चक्रपाणि-सज्ञा पु० विष्णु भगवान्। चक्र धारण करनेवाला। श्रीकृष्ण।

चक्रपाद-सज्ञा पु० १. रथ। गाड़ी। २. हाथी।

चक्रपाल-सज्ञा पु० १ चक्र धारण करनेवाला। श्रीकृष्ण। २. गालाई। ३. रात का भेद। ४. चक्केदार।

चक्रपूजा-सज्ञा स्त्री० तांत्रिकों की एक पूजा।

चक्रवध-सज्ञा पु० चक्र के आकार का एक चित्र-काव्य।

चक्रवधु-सज्ञा पु० मूर्ध्न।

चक्रभेदनी-सज्ञा स्त्री० रात्रि।

चक्रमंडल-सज्ञा पु० एक प्रकार का गृथ।

चक्रमंडली-सज्ञा पु० अजगर सर्प।

चक्रमर्द-सज्ञा पु० एक नाम वा नाम ।

चक्रपूजा-सज्ञा स्त्री० तांत्रिकों की एक पूजा-विधि ।

चक्रमुद्रा-सज्ञा स्त्री० १ गोल आकार का सिक्का । २ गोलाकार चिह्न । ३ चक्र आदि विष्णु के आयुधा के चिह्न जिन्हें वैष्णव भक्त अपने बाहु तथा ओर भगो पर छपाते हैं । ४ तांत्रिकों का पूजा करने का एक ढंग, जिससे हाथ की अंगुलियों की एक मुद्रा बनाते हैं ।

चक्रवर्ण-सज्ञा स्त्री० गुच्छ । अमृतसत्ता । चक्रवर्त्तु-अर्थ० चक्राकार अस्त्र । चक्र के समान ।

चक्रवर्ती-वि० [स्त्री० चक्रवर्तिनी] १ राजाघो वा राजा । समुद्र पर्यन्त राज्य करने वाला । विश्व-नम्राट । नार्यगोम सम्राट । २ इस नाम का एक समवृत्त वर्णभेद छद्म । सज्ञा पु० १ वयुष्मा वा साग । २ एक धनम्पति विद्याप (जटामासी) ।

चक्रवार-सज्ञा पु० चक्रवा पक्षी ।

यो०-चक्रवान् वयु०=सूर्य ।

चक्रवाल-सज्ञा पु० १ बवहर । भीषण आंधी । तूफान । २ देव स चक्रवर खाती हुई वायु । चक्रवाल-सज्ञा पु० १. पुराणा म वर्णित दिन और रात को अलग करनेवाली पर्वत-माला जो पृथ्वी के चारों ओर फैली हुई मानी जाती है । परिधि । घरा । गालाकार । मडलाकार । २ समूह । जन-समाज ।

चक्रवृद्धि-सज्ञा स्त्री० सूद दर सूद । व्याज पर व्याज ।

चक्रव्यूह-सज्ञा पु० युद्ध में सेना को चक्रकार या कुंडलाकार स्थिति विशेष । महा भारत में कौरवों ने चक्रव्यूह रखकर अभिमन्यु का मारा था ।

चक्राक-सज्ञा पु० चक्र का चिह्न जो वैष्णव लोग अपने शरीर पर दगावते हैं ।

चक्राकित-वि० जिसने अपने हाथ पर चक्र का चिह्न लावाया हो । वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी ऐसा चिह्न लगाते हैं ।

चक्राग-सज्ञा पु० १ हंस । २ रथ । ३ चक्रवा ।

चक्रांगी-सज्ञा स्त्री० १. हंसिनी । २ मुटकी । ३. गाड़ी । ४. एक साक । ५ मजीठ । ६ चक्रवाक पक्षी ।

चक्रा-सज्ञा स्त्री० समूह । गिरोह । टोली । चक्रावार-वि० गोलाकार । घेरा ।

चक्रायुध-सज्ञा पु० विष्णु । जिसका हथियार चक्र हो ।

चक्रित\*-वि० दे० "चिस्मित" । "चकित" ।

चक्रो-सज्ञा पु० १. चक्र धारण करनेवाला । २ विष्णु । ३ गाय का पंडित या पुरोहित । ४ साँ । ५ चक्रवाक पक्षी ।

६ मुग्धहार । ७ तैली । ८ जासूम । मूसबिर । चर । ९ चक्रवर्ती राजा । विलेदार । १०. भत्री । ११ ग्रहपि ।

१२ आकाश में कल्पित गोलाकार मण्डल । १३ एक वर्णसंकर जाति । १४ चक्रमर्द । चक्रवैद्य ।

चक्रैला-वि० गोलाकार । चक्राकार । गोल । वर्तुल ।

चक्षु-सज्ञा स्त्री० १ वयन । २ अनुग्रह । ३ गजक । चाट ।

चक्षु-सज्ञा पु० उपाध्याय । बृहस्पति । चक्षु-सज्ञा पु० साँ ।

चक्षु-सज्ञा पु० १ नयन । नेत्र । आँख । २ एक नदी जिसे आजकल आकाश कहते हैं । वधु नद ।

चक्षुरिदिय-सज्ञा स्त्री० नेत्र । आँख । चक्षुष्पति-सज्ञा पु० सूर्य ।

चक्षुष्य-वि० १ आँखा से उत्पन्न । नेत्रों के लिए लाभदायक (श्रीपथ आदि) । २ सुंदर । मनोहर । ३ नत्र सबधी ।

सज्ञा पु० १ खपरिया । २ सुरमा । केतकी । चक्षु\*-सज्ञा पु० नेत्र । आँख ।

[फा०] भगवा । तवरार । बलह । यो०-चक्षु-चक्षु-सकरार । कहा-सुनी ।

चक्षु-सज्ञा पु० आँख । चक्षु । चक्षु-वि० स० स्वाद लेना ।

चक्षु-सज्ञा पु० सज्ञा स्त्री० भगवा । प्रतिस्पर्द्धा । साग-टाँट । विरोध । कहा सुनी ।

चक्षु-वि० स० खिलाना । स्वाद दिलाना । यो०-मजा चक्षु-वि० ददना लना ।

चकोरी—गंगा स्त्री० मादा चकोर ।  
 चकोरु—गंगा पुं० भेंवर ।  
 चकोड़—गंगा पुं० १. चकोदा । एक प्रकार का पोषा जिगत दाद छूट जाती है । २. चवाचोप ।  
 चकोप\*—गंगा स्त्री० दे० "चवाचोप" ।  
 चकर—सज्ञा पुं० १. चक्रान्न । चपचा । २. मुष्टार का चाव ३. पहिया । चकार । चक्र । ४. दिशा ।  
 चक्कर—गंगा पुं० १. अस्त्र-विशेष । २. गोल वस्तु । मड़लाकार । गोल या मड़लाकार घेरा । मडल । ३. चाव । ४. चारो ओर घूमना । परिभ्रमण । फेरा । ५. चलने में अधिक घुमाव या दूरी । फेर । ६. हेराना । असमजस । ७. पंच । जटिलता । दुम्हता । ८. मिर घूमना । घुमरी । घुमटा । ९. भेंवर । जजान ।  
 मुहा०—चकर वाटना=परिभ्रमा करना । मंडराना । चकर खाना = १. घूमना । २. घुमाव पिराव के साथ जाना । ३. मटपना । भ्रात होना । हेरान होना । मूर्च्छा । विस्ती के चकर में आना या पडना=विस्ती के धोखे में आना ।  
 चक्कचड\*—वि० दे० "चक्रवर्ती" ।  
 चक्कचर्व—सज्ञा पुं० चक्रवर्ती राजा ।  
 चक्कस—सज्ञा पुं० चिड़ियों का अड्डा ।  
 चक्का—सज्ञा पुं० १. पहिया । २. पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु । ३. बड़ा टुपडा । थपड । ईट-पत्थर या कंकड़ का ढेर जो माप के लिए क्रम से लगाया गया हो ।  
 चक्कान—वि० गाढा । गोल निधानी । घडा ।  
 चक्की—सज्ञा स्त्री० १. आटा पीसने का यंत्र । जाला । पाट । २. फेर के घुटने की गोल हड्डी । ३. बिजली ।  
 मुहा०—चक्की पीसना=बड़ा परिश्रम करना ।  
 चक्कोरहा—सज्ञा पुं० चक्की को खुरदरी करने-वाला ।  
 चक्कू—सज्ञा स्त्री० छुरी । चाकू ।  
 चक्की—सज्ञा स्त्री० खाने की खादिष्ट और चटपटी चीज । चाट । बटेरो की चुगाई ।

चक्र—गंगा पुं० १. मुष्टार का चाव । २. पहिया । गोतावार । ३. तगर का पून । ४. नेत्र घेरने का चोट । ५. चक्की । ६. इन्सिंग्या-विशेष । ७. लोहे के एक अस्त्र का नाम । पहिए के आकार की कोई गोल वस्तु । ८. धोखा । जाल । ९. भेंवर । १०. चक्रद्वार । ११. समुद्र । समुदाय । मडली । १२. एक प्रकार का व्यूह या सेना की स्थिति । १३. मडल । प्रदेश । राज्य । १४. एक समुद्र में दूसरे समुद्र तक फैला हुआ प्रदेश । आसमुद्रात भूमि । १५. चक्रान्न पक्षी । चक्का । १६. योग के अनुसार परीक्ष्य । पञ्च । १७. फेरा । घुमाव । भ्रमण । चक्कर । १८. दिशा । प्राल । १९. एक प्रकार का छद ।  
 चक्रगोसा—सज्ञा पुं० गज्यरक्षक । सेनापति ।  
 चक्रतीर्थ—सज्ञा पुं० १. दक्षिण का एक तीर्थ-स्थान । २. नैमिषारण्य का एक कुंड ।  
 चक्रदती—सज्ञा स्त्री० जमालगोटा । दती-वृक्ष ।  
 चक्रदण्ड—सज्ञा पुं० सूअर ।  
 चक्रघर—वि० चक्र धारण करनेवाला । सज्ञा पुं० १. विष्णु भगवान् । २. श्रीकृष्ण । ३. बाजीगर । इद्रजान करनेवाला । ४. कई ग्रामा या नगरा का स्वामी । ५. संगीत का एक राग । ६. सर्प । ७. पानी का एक जलु । ८. सर्वोपरि राजा । चक्रवर्ती ।  
 चक्रधारी—सज्ञा पुं० दे० चक्रधर ।  
 चक्रपाणि—सज्ञा पुं० विष्णु भगवान् । चक्र धारण करनेवाला । श्रीकृष्ण ।  
 चक्रपाद—सज्ञा पुं० १. रथ । गाडी । २. हाथी ।  
 चक्रपाल—सज्ञा पुं० १. चक्र धारण करनेवाला । श्रीकृष्ण । २. गाथाई । ३. राग का भेद । ४. चक्रदेवार ।  
 चक्रपूजा—सज्ञा स्त्री० तानिका की एक पूजा ।  
 चक्रबध—सज्ञा पुं० चक्र के आकार का एक चित्र-वाक्य ।  
 चक्रवधु—सज्ञा पुं० नृध्व ।  
 चक्रभेदनी—सज्ञा स्त्री० रात्रि ।  
 चक्रमडल—सज्ञा पुं० एक प्रकार का नृय ।  
 चक्रमडली—सज्ञा पुं० अजगर सर्प ।

चक्रमर्द—सज्ञा पु० एक नाग का नाम ।  
चक्रपूजा—सज्ञा स्त्री० तान्त्रिकों की एक पूजा-विधि ।

चक्रमुद्रा—संज्ञा स्त्री० १. गोल आकार का सिपका । २. गोलाकार चिह्न । ३. चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिह्न जिन्हें वैष्णव भक्त अपने बाहु तथा शरीर अंगों पर छपाते हैं । ४. तान्त्रिकों का पूजा करने का एक ढंग, जिससे हाथ की अंगुलियों की एक मुद्रा बनाते हैं ।

चक्रलक्षण—संज्ञा स्त्री० गुरुच । अमृतलता ।  
चक्रवत्—अव्य० चक्राकार अस्त्र । चक्र के समान ।

चक्रवर्ती—वि० [स्त्री० चक्रवर्तिनी] १ राजाओं का राजा । समुद्र पर्यन्त राज्य करने वाला । विश्व-सम्राट् । सार्वभौम सम्राट् । २. इस नाम का एक समवृत्त वर्णभेद छद्म ।  
सज्ञा पु० १. वयुष्मा का साग । २. एक वनस्पति-विशेष (जटामासी) ।

चक्रवाक—सज्ञा पु० चक्रवा पक्षी ।

घी०—चक्रवाकवधु=सूर्य्य ।

चक्रवाल—सज्ञा पु० १ बवडर । भीषण आंधी । तूफान । २. बेग से चक्कर खाती हुई वायु ।  
चक्रवाल—सज्ञा पु० १. पुराणों में वर्णित दिन और रात को अलग करनेवाली पर्वत-माला जो पृथ्वी के चारों ओर फैली हुई मानी जाती है । परिधि । घेरा । गोलाकार । मंडलाकार । २. समूह । जन-समाज ।

चक्रव्यूह—सज्ञा स्त्री० सूद दर सूद । व्याज पर व्याज ।

चक्रव्यूह—सज्ञा पु० मूढ में सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति-विशेष । महा-भारत में कौरवों ने चक्रव्यूह रचकर अभिमन्यु को मारा था ।

चक्राक—सज्ञा पु० चक्र का चिह्न जो वैष्णव लोग अपने शरीर पर दगवाते हैं ।

चक्राकित—वि० जिसने अपने बाहु पर चक्र का चिह्न लगवाया हो । वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी ऐसा चिह्न लगाते हैं ।

चक्राग—सज्ञा पु० १. हस । २ रस । ३. चक्रवा ।

चक्रांगी—सज्ञा स्त्री० १. हसिनी । २. कुटकी । ३. गाड़ी । ४. एक धाक । ५. मजीठ । ६. चक्रवाक पक्षी ।

चक्रा—संज्ञा स्त्री० समूह । गिरोह । टोली ।  
चक्राकार—वि० गोलाकार । घेरा ।

चक्रापुष्प—संज्ञा पु० विष्णु । जिसका हथियार चक्र हो ।

चक्रित\*—वि० दे० “विस्मित” । “चकित” ।

चक्रो—सज्ञा पु० १. चक्र धारण करनेवाला । २. विष्णु । ३. गाँव का पंडित या पुरोहित । ४. सर्प । ५. चक्रवाक पक्षी । ६. कुम्हार । ७. तेली । ८. जासूस । मुखयिर । चर । ९. चक्रवर्ती राजा । किलेदार । १०. मंत्री । ११. ब्रह्मापि । १२. आकाश में कल्पित गोलाकार मंडल । १३. एक वर्णसंकर जाति । १४. चक्रमर्द । चक्रवैद्य ।

चक्रेला—वि० गोलाकार । चक्राकार । गोल । वर्तुल ।

चक्षण—सज्ञा स्त्री० १. कथन । २. अनुग्रह । ३. गजक । चाट ।

चक्षम—सज्ञा पु० उपाध्याय । बृहस्पति ।

चक्षुःधरा—सज्ञा पु० साँप ।

चक्षु—सज्ञा पु० १. नयन । नेत्र । आँख । २. एक नदी जिसे आजकल आक्सस कहते हैं । वक्षु-नद ।

चङ्ग-गङ्गा पु० दृढने वा पर्वत । दुर्गप्रह । हट ।  
चङ्गचट-गङ्गा पु० पटचट । टैंट । बपवय ।  
चङ्गचटा-वि० अ० फटना । सटवना ।  
टटना-मटना ।

चङ्गपशना-वि० अ० फटना । फटना ।

चङ्गपड-गङ्गा पु० बटपड । बपवय ।

चङ्गपडिया-गङ्गा पु० बपवी । बपवादी ।  
गणी ।

चङ्गरी-गङ्गा स्त्री० एग प्रकार का खस जिसमें  
मछने एक दूसरे की पीठ पर चङ्गवर चलते हैं ।  
चङ्गस-गङ्गा स्त्री० किसी देवता को चङ्गाई हुई  
वस्तु । दयता की भेंट ।

चङ्गती-गङ्गा स्त्री० लाभ । वृद्धि ।

चङ्गना-वि० अ० १ नीचे से ऊपर को  
जाना । २ ऊपर उठना । ३ ऊँचाई पर  
जाना । उन्नति करना । आरोहण । ४ बाढ़  
आना । ५ धावा करना । चङ्गाई करना ।  
६ मेंहगा होना । भाव का बढ़ना । ७  
सुरऊँचा होना । ८ धारा या बहाव के  
विच्छेद चलना । ९ सितार आदि का  
तार बस जाना । १० तनना । ११.  
किसी देवता, आदि को भेंट दिया  
जाना । १२ सवारी पर बैठना । सवार  
होना । १३ वर्ष, मास, आदि का आरम्भ  
होना । १४ ऋण होना । बर्ज होना ।  
१५ वही आदि पर लिखा जाना ।  
टँकना । दर्ज होना । १६ किसी मादक  
वस्तु का प्रभाव होना । १७ चूल्हे पर  
रखा जाना ।

मुहा०—चङ्ग बनना=सुयोग मिलना । नस  
चङ्गना=नस का अपन स्थान से हट जाना  
के कारण तन जाना ।

चङ्गनी-सङ्गा स्त्री० लडाई की तैयारी । दानु  
पर चङ्गाई करना ।

चङ्गवाना-क्रि० स० चङ्गाने का काम दूसरे से  
कराना ।

चङ्गबया-सङ्गा पु० सवार । अश्वारोही ।  
चङ्गनवाला ।

चङ्गाई-सङ्गा स्त्री० १ चङ्गने की क्रिया या  
भाव । २ ऊँचाई की ओर ले जानेवाली  
भूमि । ३ धावा । आक्रमण ।

चङ्गा-उत्तरी-गङ्गा स्त्री० चङ्गना-उत्तरना ।  
धार-धार चङ्गने उत्तरने की क्रिया ।

चङ्गा-उपरी-गङ्गा स्त्री० होंड । लाग-डाँट ।  
एग दूसरे के आगे चङ्गने का प्रयत्न । प्रति-  
द्विष्टता ।

चङ्गाचङ्गी-गङ्गा स्त्री० दे० "चङ्गा-ऊतरी" ।  
प्रतिद्विष्टता ।

चङ्गाना-वि० स० १. "चङ्गना" का प्रेरणार्थक  
रूप । २ चङ्गने में मटायता देना । ऊपर  
उठाना । बाजा वा बसना । ३ अर्पित  
करना । ४ पी जाना ।

चङ्गाव-सङ्गा पु० १ चङ्गने का भाव ।  
२ चङ्गने का भाव । वृद्धि । बाढ़ ।  
चङ्गने की क्रिया । उठाव । ज्वर आना ।  
३ दे० "चङ्गावा" । ४ नदी के 'बहाव का'  
उसटा ।

थो०—चङ्गाव-उत्तार=ऊँचा-नीचा स्थान ।  
किसी माटी वस्तु का क्रमशः पतली होना ।  
गावदुम आकृति ।

चङ्गावा-गङ्गा पु० १ चर-पक्ष की ओर  
से दुलहिन को विवाह के अवसर पर दी गई  
मामग्री । २ किसी देवता को अर्पित की  
जानेवाली वस्तु । पूजा । ३ दम । बडावा  
मुहा०—चटावा-चङ्गावा देना=उत्थाह  
बडाना । उत्तेजित करना ।

चङ्गैत-सङ्गा पु० चङ्गबया । चङ्गनेवाला ।  
अभिमान में चूर ।

चङ्गैत-सङ्गा पु० दूसरो के घोड़े फेरने-  
वाला ।

चणक-सङ्गा पु० १ चना । २ एक ऋषि ।  
३ एक प्रकार की माप । ४ चाणक्य  
के पिता ।

चतुरंग-सङ्गा पु० १ गाने की एक पद्धति ।  
गाना विशेष । २. सेना के चार अंग (हाथी,  
घोड़े, रथ, पैदल) । ३ चतुरगिणी सेना ।  
४ शतरंज ।

चतुरगिणी-वि० जिस में चार अंग हो  
(सेना) ।

चतुरगुल-वि० चार अगुल का ।  
सङ्गा पु० अमलतास ।

चतुर-वि० १ होशियार । दक्ष । निपुण ।

चालाव । २ वक्रगामी । टेडी चाल  
चलनेवाला ।

सज्ञा पु० शृंगार रस में नायक-विशेष ।  
चतुरई-सज्ञा स्त्री० दे० "चतुराई" । चतुरता ।  
चालाकी ।

चतुरता-सज्ञा स्त्री० चालाकी । प्रवीणता ।  
चतुराई । होशियारी ।

चतुरपन-सज्ञा पु० दे० "चतुरता" । चतुराई ।  
चतुरस-वि० चौखूँटा । चौकोर । एक प्रकार  
का नाट्यगृह । चौरस आकार का ।  
चतुष्कोण ।

चतुरा-सज्ञा स्त्री० सयानी । दक्षा । प्रवीणा ।  
चतुराई-सज्ञा स्त्री० निपुणता । दक्षता ।  
चालाकी । होशियारी ।

चतुरानन-सज्ञा पु० ब्रह्मा । चार मुखवाला ।  
चतुरास-सज्ञा स्त्री० चारो ओर । चहुँओर ।  
चतुरासो-वि० ८४ सख्या ।

चतुरिन्द्रिय-सज्ञा पु० चार इन्द्रियोवाले  
जीव (स्पर्श, घ्राण, रसना, नेत्र) । जैसे—  
भक्ती, भौरे, साँप आदि ।

चतुरुपवेद-सज्ञा पु० चार उपवेद, गन्धर्व-  
वेद, आयुर्वेद, धनुर्वेद, धर्मशास्त्र ।

चतुर्गुण-वि० चौगुना । जिसमें चार गुण  
हो ।

चतुर्य-वि० चौथा ।

चतुर्याश-सज्ञा पु० चौथाई भाग ।

चतुर्यासिस्था-सज्ञा स्त्री० बुढापा ।

चतुर्याश्रम-सज्ञा पु० चौथा आश्रम । संन्यास ।

चतुर्य-सज्ञा स्त्री० १ विवाह के चौथे दिन  
होनेवाली रस्म । २ चौथ । किसी पक्ष की  
चौथी तिथि ।

चतुर्दश-वि० चार और दस की सख्या । १४ ।

चतुर्दशी-सज्ञा स्त्री० चौदस । किसी पक्ष  
की चौदहवीं तिथि ।

चतुर्दिश-सज्ञा पु० चारो दिशाएँ ।

त्रि० वि० चारो ओर ।

चतुर्भुज-वि० [स्त्री० चतुर्भुजा] सज्ञा पु०  
१ श्रीकृष्ण । विष्णु । २ वह क्षत्र  
जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हो ।  
३ चार भुजावाला । जिसके चार  
भुजाएँ हो ।

चतुर्भुजा या चतुर्भुजी-सज्ञा स्त्री० १. चार  
भुजावाली देवी । भगवती । २. गायत्री-  
रूपधारिणी महाशक्ति ।

चतुर्भोजन-सज्ञा पु० चार प्रकार का (भोज्य,  
भक्ष्य, लेह्य, चोष्य) भोजन ।

चतुर्मास-सज्ञा पु० दे० "चातुर्मास" ।  
चौमासा ।

चतुर्मुख-सज्ञा पु० चतुरानन । ब्रह्मा ।  
वि० (स्त्री० चतुर्मुखी) जिसके चार मुख  
हो ।

त्रि० वि० चारो तरफ ।

चतुर्मुखित-सज्ञा स्त्री० चार प्रकार की  
मुक्ति । सायुज्य, सांख्य, सामीप्य, साहचर्य ।

चतुर्युगी-सज्ञा स्त्री० ४३,२०,००० वर्ष का  
समय इसमें चारो युग होते हैं । चौकड़ी ।  
चौजुगी । (सत्ययुग, द्वापर युग, त्रेता युग  
और कलियुग) ।

चतुर्थी-सज्ञा स्त्री० चार प्रकार से उत्पन्न  
जीव । स्वेदज अद्वज, उद्भिज और जरायुज ।

चतुर्वर्ग-सज्ञा पु० चार वर्ग । मानव जीवन के  
चार उद्देश्य । अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ।

चतुर्वर्ण-सज्ञा पु० चार वर्ण—ब्राह्मण,  
क्षत्रिय, वैश्य और द्रूढ़ ।

चतुर्विध-वि० चार प्रकार, चार तरह ।

चतुर्वेद-सज्ञा पु० १ चारो वेद । २ भगवान् ।  
परमेश्वर । ईश्वर ।

चतुर्वेदी-सज्ञा पु० ब्राह्मण की एक उपजाति ।  
चारो वेदो का ज्ञाता या पंडित । चारो वेद  
जाननेवाला ।

चतुर्वर्ग-सज्ञा पु० १ चिकित्सा शास्त्र ।  
२ योगशास्त्र । ३ चार भनूप्यो या पदार्थों  
का समूह । ४. चार ब्यूह धारण करनेवाले-  
विष्णु ।

चतुर्होत्र-सज्ञा पु० परमेश्वर । विष्णु ।

चतुष्क-सज्ञा पु० चार खम्भा का मण्डप ।  
चौराहा जहाँ चार मार्ग मिलते हो । चार  
का समूह । चतुष्टय । चार भाग ।

चतुष्कल-वि० जिसमें चार बलाएँ हो ।  
चार मानायावाला ।

चतुष्कोण-वि० जिसमें चार कोने हो ।  
चौकोर । चौकोना । चौरस ।

चतुष्टय-गंगा पु० १. चार वस्तुओं का समूह । २. चार की संख्या ।

चतुष्टय-गंगा पु० चौथ । चौराहा ।

चतुष्टय-गंगा पु० चौपाया ।

वि० चार पदीवाला ।

चतुष्टयधर्म-गंगा पु० चार अंगों से युक्त धर्म । विद्या, सत्य, तपस्या, दान से युक्त ।

चतुष्टय-गंगा स्त्री० छंद-चिह्न ।

चतुष्टयी-गंगा स्त्री० १. चार पदों का गीत । २. चार पाँववाली । ३. चौपाई छंद जिसमें १५ मात्राएँ हों ।

चदर-गंगा पु० १. चौरास्ता । चामुहानी । २. वेदी । चयूतरा । ३. यज्ञस्थान ।

चदरा-गंगा पु० दे० "चदर" । चादर ।

चदिर-गंगा पु० १. कपूर । २. चन्द्रमा । ३. हाथी । ४. साँप ।

चदर-गंगा स्त्री० १. चादर । २. किसी धातु या चौकोर पत्तर । ३. नदी आदि की सतह जो चादर के समान दिखाई देती है ।

चनकना†-क्रि० अ० दे० "चटकना" ।

चनकना-क्रि० अ० चिढ़ना । चिटकना । नाराज होना ।

चना-गंगा पु० एक अनाज । बूँट । / मुहा०-नावें चने चववानी=बहुत तग करना । बहुत हैरान करना । लोहे का चना=अत्यंत कठिन काम । दुस्तार्थ्य कार्य ।

चपकन-गंगा स्त्री० १. एक प्रकार का वस्त्र । अंगरखा । २. सूक्ष्म आदि की लोहे या पीतल की साज । छोटी कील ।

चपकना-क्रि० अ० दे० "चिपकना" ।

चपकाना-क्रि० स० सटाना । मिलाना । जोड़ना ।

चपकलिश-गंगा स्त्री० [तु०] १. बहुत भीड़ । स्थानाभाव । २. कठिन स्थिति । फेर । कैठिनाई । अडस । झंझट ।

चपटना†-क्रि० अ० दे० "चिपटना" । चपटना । लपटना । चपटा होना ।

चपटा†-वि० दे० "चिपटा" । सपाट । त्वावर । घेंसा हुआ ।

-गंगा स्त्री० १. बँटी वस्तु । २. मिली

दूर स्थिति । ३. घुत्त का जुझा (चिन्ता) ।

४. ताली । ५. पानि । ६. चिपटी ।

चपड़चपड़-गंगा पु० दवान के खाने का लव ।

चपड़गट्ट-वि० दे० "चपरगट्ट" ।

चपड़ना-क्रि० स० टोंस या पीटकर चपटा करना ।

चपड़ा-गंगा पु० १. एक प्रकार की लाज । २. लाल रंग का एक बीज ।

चपड़ाज-वि० निर्लज्ज । ठीठ । घृष्ट ।

चपड़ाना-क्रि० अ० खोटा करना । बहवाना । चपटा करना ।

चपड़ी-गंगा स्त्री० गोवरी । बड़ी । तम्ती । पटिया ।

चपत-गंगा पु० १. चप्पड़ । तमना । २. धक्का । हानि । नुकसान ।

चपना-क्रि० अ० १. कुचलना । कुचल जाना । दब जाना । अधीन होना । मसल जाना ।

२. लज्जा से गड़ जाना । लज्जित होना ।

चपनी-गंगा स्त्री० १. कटोरी । छिछला कटोरा । २. एक प्रकार का कमडल ।

३. चक्की । ४. घुटने की हड्डी । ५. डक्कन । ६. छाप ।

चपरगट्ट-वि० चौपट करनेवाला । १. विनाशी । सत्यानाशी । चौपटा । २. अभाग । आफत का मारा । ३. गुलाम-गुलाम । उलभा हुआ ।

चपरना†-क्रि० स० दे० "चुपटना" । १. परस्पर मिलाना । २. भाग जाना ।

३. किसी गीली वस्तु को दूसरी वस्तु पर फैलाकर लगाना ।

चपरा-अव्य० दे० "चपड़ा" । शीघ्र । अचानक । झूठा ।

चपरास-गंगा स्त्री० चपरसियों का चिह्न । बेंज ।

चपरासी-गंगा पु० चपरास पहननेवाला नौकर । प्यादा । अरदली ।

चपरि-अव्य० १. शीघ्र । तुरन्त । २. दयकर । भुसकर । भूमि से मिलकर ।

चपल-वि० १. स्थिर न रहनेवाला । चल । चुलबुला । २. उनावला । जल्दबाज । ३. चालाक । ४. घृष्ट । ५. पारा । ६. चातक ।

७ मछली । ८. पत्थर विशेष । ९ सुगन्धित द्रव्य विशेष । १०. राई । ११. एक प्रकार का चूहा । १२. घोडा ।  
 चपलता-सज्ञा स्त्री० १ चंचलता । तेजी । जल्दी । २ घुटता । ढिठाई ।  
 चपला-सज्ञा स्त्री० १ विजली । २ लक्ष्मी । चंचला । ३ एक छद । ४ व्यभिचारिणी । वेद्या । ५ जीम । जिह्वा । ६ मद्य । ७ भाग । विजया । ८ पीपर । ९ प्राचीन समय की एक नाव ।  
 चि० फुरतीली । तेज । चंचला ।  
 चपलाई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "चपलता" ।  
 चपलाना\*-क्रि० अ० चलना । हिलना । डोलना ।  
 चि० स० चलाना । हिलाना ।  
 चपली†-सज्ञा स्त्री० जूती ।  
 चपाती-सज्ञा स्त्री० पतली रोटी ।  
 चपाना-क्रि० स० १ दवाना । दबवाना । २ लज्जित करना । क्षिपाना । धरमिदा करना । धोपना । रस्ती जोड़ना ।  
 चपेट-सज्ञा स्त्री० १ भोका । धक्का । आघात । २ तमाचा । ३ दबाव । ४ सकट । ५ हानि ।  
 चपेटना-क्रि० स० १ दवाना । दबोचना । २ भगाना । ३ फटकार बताना । डांटना ।  
 चपेटा-सज्ञा पु० दे० "चपेट" ।  
 चपेरना-सज्ञा पु० दवाना । चापना ।  
 चप्पड-सज्ञा पु० दे० "चिप्पड" ।  
 चप्पन-सज्ञा पु० १ छिछला बटोरा । २ ढक्कन ।  
 चप्पल-सज्ञा पु० एक प्रकार का जूता ।  
 चप्पा-सज्ञा पु० १ चतुर्थांश । चौथा भाग । २ चार अंगुल जगह । चार अंगुलियों का निशान । ४ थोड़ी जगह ।  
 चर्षा-सज्ञा स्त्री० धीरे धीरे हाथ-पैर दवाना । चरण-सेवा ।  
 चप्पू-सज्ञा पु० एक प्रकार का डाँड । बिल-बारी । नाव का डाँड रगनेवाला ।  
 चफाल-सज्ञा स्त्री० चारा आर दसदन में धिगा हुआ डीप ।

चबलाई-सज्ञा स्त्री० चबलाना । दाँतो से पीसना ।

चबलाना-क्रि० स० १. चबाना । कुचलना । पीमना । २. चबाने का काम कराना ।

चवाई-सज्ञा स्त्री० चबाने की नियाँ या भाव ।

सज्ञा पु० दे० "चवाई" ।

चवाना-क्रि० स० १ दाँतो से कुचलना ।

जुगलना । † २ दाँत से काटना । दरदराना ।

मुहा०-चवा चवाकर बातें करना—एक एक शब्द धीरे-धीरे बोलना । चबे को चवाना—किए हुए काम को फिर फिर करना । पिष्ट-पपण करना ।

चबूतरा-सज्ञा पु० १ चौरस ऊँची जगह । चौतरा ।

चबेना-सज्ञा पु० भुना हुआ अनाज । चर्वण । भुंजा ।

चबेनी-सज्ञा स्त्री० जलपात । जलखवा ।

चब्य-सज्ञा स्त्री० औषध विशेष । चाव ।

चमक-सज्ञा पु० डक । बाँटा । पानी में किसी वस्तु के गिरने की आवाज ।

चभाना-क्रि० स० खिलाना । भोजन कराना ।

चभोरना-क्रि० स० १ डुबोना । गोता देना । २ तर करना ।

चमक-सज्ञा स्त्री० १ प्रकाश । २ काति । दीप्ति । आभा । ३ कमर आदि का अचानक ददं (चिलक) । लचक ।

चमक-चमक-सज्ञा स्त्री० १ दीप्ति । आभा । २ तडक-भटक ।

चमकदार-वि० जिसमें चमक हो । चमकीला ।

चमकना-क्रि० अ० १ जगमगाना । २

कातिभुक्त होना । दमकना । ३ उन्नति करना । ४ जोर पर होना । बड़ना । ५

मटकना । उँगलियाँ आदि हिलाकर भाव

बताना । ६ कमर आदि में एकाएक

ददं होना । लचक आना ।

चमकाना-क्रि० स० १ चमकीला करना । मल-

वाना । २ उज्ज्वल करना । साफ करना ।

३ भडवाना । ४ बिटाना । खिमाना ।

५ भाव बताने के लिए उँगली आदि

मटकाना ।

चमकारी\*-गङ्गा स्त्री० दे० "चमप" ।

वि० चमकीली ।

चमकी-गङ्गा स्त्री० कारखोबी में रफ्टे या मुनहूँ तांगे के टुकड़े । चमकदार खुड़ी । भटकीली ।

चमकीला-वि० [ स्त्री० चमकीली ] १. चमकदार । चमकनेवाला । २. भटकीला । आनंदार ।

चमकीयल-सज्ञा स्त्री० १ चमकाने की क्रिया । २ मटकाने की क्रिया ।

चमकी-सज्ञा स्त्री० १ मटकनेवाली स्त्री । लकल और निलंज्ज स्त्री । २ बूलडा स्त्री । ३ भगडालू स्त्री ।

चमगादुर या चमगादड़-सज्ञा पु० १. उड़ने-वाला जंतु जिसे दिन में दिखाई नहीं देता । २. गहुर ।

चमगाडो-सज्ञा स्त्री० रात में उड़नेवाली चिड़िया ।

चमवडप-सज्ञा पु० क्षीण । दुर्बल । सँकरा ।

चमचम-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बैंगला मिठाई ।

वि० वि० दे० "चमाचम" ।

चमचमाना-वि० प्र० चमकना । प्रकाशमान होना । दमकना ।

वि० स० चमकाना । चमक लाना ।

चमचा-सज्ञा पु० [ स्त्री० चमची ] चम्मच । एक प्रकार का छोटी बलछी ।

चमजूई-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की बिल्ली (जुआँ) । २ पीछा न छोड़नेवाली वस्तु ।

चमड़ा-सज्ञा पु० १ शरीर का ऊपरी आवरण । चर्म । त्वचा । २ मृत जानवरों के शरीर पर मे स्तरा हुआ चर्म, जिससे जूते बैग आदि चीजें बनती हैं । खाल ।

चमड़ा-चमड़ा उधेजना या खीचना=१ चमड़े को शरीर से अलग करना । २ बहुत मार मारना । ३ छाल ।

चमड़ी-सज्ञा स्त्री० दे० "चमड़ा" ।

चमत्कार-सज्ञा पु० [ वि० चमत्कारी, चमत्कृत ] १ आश्चर्य । विस्मय । २ विचित्र घटना । ३ अनूठापन । विचित्रता ।

चमत्कारी-वि० [ स्त्री० चमत्कारिणी ]

१. जिसमें विलक्षणता हो । अद्भुत ।

२ चमत्कार दिमानेवाला ।

चमत्कृत-वि० आश्चर्यान्वित । विस्मित ।

चमन-गङ्गा पु० १. हरी बयारी । २.

फुलवारी । छाटा बगीचा ।

चमर-सज्ञा पु० [ स्त्री० चमरी ] १. मुरा-

गाय । २ मुरागाय की पूँछ का बना

चँवर । चामर । एक दैत्य का नाम ।

एक मृग । कृष्णसार ।

चमरख-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का

राष्ट्रा फन । २. रहटा की सामग्री । ३

चरणों में लगाने की चपती । ४ बुबरी-

पतली स्त्री ।

चमरगिछा-सज्ञा स्त्री० घोड़ों की रतगी ।

चमरी-सज्ञा स्त्री० दे० "चमर" ।

चमर-सज्ञा पु० चमड़ा । खाल ।

चमरीमा-सज्ञा पु० दे० "चमीमा" । चमड़े

का बना हुआ ।

चमला-सज्ञा पु० [ स्त्री० चमली ] नील

माँगने का पान ।

चमल-सज्ञा पु० [ स्त्री० चमली ] १ चम्मच

के आधार का यज्ञपात्र । २ कलछा ।

चम्मच ।

चमाऊ\*-सज्ञा पु० चँवर । सडाऊँ । चरण-

पादुका ।

चमाचम-वि० उज्ज्वल वाति के सहित ।

भजन के साथ । भजनते हुए । चमकते हुए ।

चमार-सज्ञा पु० [ स्त्री० चमारिन ] एक

जाति जो चमड़े का धान करती है ।

चमारी-सज्ञा स्त्री० १ चमार की स्त्री ।

२ चमार का धान ।

चम-सज्ञा स्त्री० १ सेना । फौज । २.

निम्न रास्ता की सेना जिसमें ७२९ हाथी,

७२९ रथ, २१८७ सवार और ३६४५

पैदल हथके थे ।

चमूकन-सज्ञा पु० बिल्ली । पशुओं का

जुआँ ।

चमड़ा-सज्ञा पु० चप्पड़ । चपटा ।

चमेली-सज्ञा स्त्री० १ एक सुगंधित फूल ।

२ इस फूल का पीछा ।

चमोटा-सज्ञा पु० मोटे चमड़े का टुकड़ा जिस पर रगड़कर नाई छुरे की धार तेज करते हैं ।

चमोटी-सज्ञा स्त्री० १ चाबूत । कोड़ा । २ पतली छड़ी । कमची । बत । ३ चमड़े का टुकड़ा जिस पर नाई छुरे की धार तेज करते हैं ।

चमोवा-सज्ञा पु० चमड़े का भेड़ा जूता । चमरीवा ।

चम्पच-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार की छोटी हलकी कलछी ।

चम्पक-सज्ञा पु० चम्पा का फूल । एक सुगन्धित पुष्प ।

चम्पककलिका-सज्ञा स्त्री० चम्पा की कली । चम्पत-वि० गायब होना । छे भागना । श्रद्धश्य ।

मुहा०-चम्पत होना=भाग जाना । छिप जाना । छे भागना ।

चम्पत-सज्ञा स्त्री० पीतलग । पीतवर्ण । पीले रंग से रंगा हुआ ।

चम्पा-सज्ञा स्त्री० १ अग्रे देश की राजधानी । बांगलपुर का प्रदेश । बर्णपुरी । चम्पारन । २ एक प्रकार का मीठा केला । ३ एक जाति का घोड़ा । ४ देश का कीड़ा । ५ एक फूल और उस फूल के वृक्ष का नाम ।

चम्पाकली-सज्ञा स्त्री० गले में पहनने का एक गहना ।

चम्पावती-सज्ञा स्त्री० नगरी विशय । चम्पा तम्पन लड़ाई ।

चम्पू-सज्ञा स्त्री० काव्य विशय । गद्य-पद्यमय काव्य ।

चम्बल-सज्ञा पु० चम्बला । तुम्बा । एक नदी का नाम ।

चम्बा-सज्ञा पु० जलपात्र विशय । टोंटीदार पात्र । पूजा के काम में आनेवाला पात्र-विशेष ।

चम्बेली-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुगन्धित पुष्प ।

चय-सज्ञा पु० १ समूह । ढेर । राशि । २ धुस्त । टीला । ढूह । ३ गड । किला । ४ कोट । नगरदीवारी ।

प्राचीर । ५ नीव । ६ चबूतरा । ७. चौकी । ऊँचा आसन । ८ यज्ञ की अग्नि । ९ दे० 'चयन' । सस्वार विशेष ।

चयन-सज्ञा पु० १ समूह । सचय । २. चुनने का कार्य । चुनाई । ३ यज्ञ के लिए अग्नि का सस्वार । ४ नम से लगाना या चुनना ।

\*१२० 'चैन' । आनन्द । कुशल ।

चर-सज्ञा पु० १ भेद का पना लगाने के लिए राजा द्वारा नियुक्त दूत । २ दूत । कासिद । ३ चलनेवाला । जैसे-ग्रन्थचर । ४ खजान पक्षी । ५ कौड़ी । कपड़िका । ६ मगल । भीम । ७ नदियों के बिनारे या सगम-स्थान पर बहकर आई हुई मिट्टी में बनी हुई भूमि (डेल्टा) । ८ दलदल । कीचड़ । ९ नदियों के बीच में बालू का टापू । रेता । वि० १ आपसे आप चलनेवाला । जगम । २ एक स्थान पर न ठहरनेवाला । अस्थिर । ३ जानेवाला ।

चरई-सज्ञा स्त्री० जानवरों के चारा खाने या पानी पीने का गड्ढा । २ सितार आदि की खूँटी ।

चरक-सज्ञा पु० १ कोठ । २ दूत । ३ गुप्तचर । जासूस । ४ वैद्यक के एक प्रधान आचार्य । ५ वैद्यक का चरक-महिता ग्रन्थ । ६ मुसाफिर । पथिव । ७. दे० 'चटक' । ८ एक वनस्पति । ९. मिश्र । सन्यासी । १० यजुर्वेद की एक शाखा । ११ स्वयं-कार्य । १२ गद्दीर से ऊपर चक्र या त्रिशूल धारण करने की क्रिया । १३. एक प्रकार की मछली ।

चरक-सहिता-सज्ञा स्त्री० चरक द्वारा रचित वैद्यक ग्रन्थ ।

चरपटा-सज्ञा पु० चारा काटकर लानेवाला आदमी ।

चरका-सज्ञा पु० कोठ । श्वेत बुट्ट । १- हलवा पाव । जलम । २ दागम या चिह्न । ३ हानि । ४ धोखा । छन ।

चरख-सज्ञा पु० १ चक्र । २ चरद । ३ सूत यातने का चरखा । ४ कुम्हार का चाक । ५ डेलवाँस । ६ यह गाँदी

जितपर तोप चढ़ी रहती है । चरणी ।  
७ एक शिकारी चिड़िया ।

चरखपूजा-सज्ञा स्त्री० चेत की सन्धानि की होनेवाली शिव-भक्तों की पूजा ।

चरखा-सज्ञा पु० [फा०] १ घूमनेवाला गोल चक्कर । चरख । २ सूत कातने का यन्त्र । रूट । ३ कुएँ से पानी निकालने का रूट । ४ सूत लपेटने की गराड़ी । चरखी । ५ गराड़ी । घिरनी । ६ बड़ा या बे-डोल पहिया । ७ गाड़ी या वह ढाँचा जिसमें जातपर नया घोड़ा निकालते हैं । सड़खडिया । ८ भगड़े-बागेड़े या भ्रमट का काम । बड़ापे के कारण मिथिल श्रमवाला व्यक्ति ।

चरखी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ पहिए की तरह घूमनेवाली वस्तु । २ छोटा चरखा । ३ कपास ओटने की चरखी । बेलनी । घाटनी । ४ सूत लपेटने की फिरकी । ५ कुएँ से पानी खींचने आदि की गराड़ी । घिरनी । ६ एक प्रकार की आतिशबाजी ।

चरख-सज्ञा पु० १ बाज की जाति की एक शिकारी चिड़िया । चरख । २ लकड़बग्घा नामक जंतु ।

चरचना-क्रि० सं० १ शरीर में चदन आदि का लगाना । २ लेपना । ३ भाँपना । अनुमान करना । पूजा करना ।

चरचराना-क्रि० अ० १. चरचर शब्द के साथ टूटना या जलना । चटवना । २ धाव आदि का तनना और बढ़ करना । चराना । मुड़ होना ।

चरचा-सज्ञा स्त्री० दे० "चर्चा" ।

चरचारी\*-सज्ञा पु० १ चर्चा चलातेवाला । २ निदक ।

चरजना\*-क्रि० अ० १ बहकाना । भुलावा देना । २ अनुमान करना । अंदाज लगाना ।

चरण-सज्ञा पु० १ पग । पैर । पाँव । कदम । २ बड़ों का सान्निध्य । बड़ों का संग । ३ किसी छंद या श्लोक आदि का एक पद । ४ किसी चीज का चौथाई भाग । ५ मूल । जड़ । ६ गोश्र । ७ श्रम । ८ आचार । ९ घूमने का स्थान । १०

विष्णु । ११ अनुष्ठान । १२. गमन । जाना । १३ भक्षण । चरने का काम । चरण-वमल-सज्ञा पु० वमल चरण । वमल के समान चरण ।

चरणगुप्त-सज्ञा पु० एक प्रकार का चित्र-वाक्य ।

चरणचिह्न-सज्ञा पु० १. पैरों के तलुए की रेखा । २ पैर का निशान । पत्थर या बनाया हुआ चरण के आकार का चिह्न ।

चरणतल-सज्ञा पु० पैर का तलुआ ।

चरणदासी-सज्ञा स्त्री० १ स्त्री । पत्नी । २ जूता । पनही ।

चरणपादुका-सज्ञा स्त्री० १ खडाऊँ । चरणचिह्न । २ पत्थर आदि का बना हुआ चरण के आकार का पूजनीय चिह्न ।

चरणपीठ-सज्ञा पु० चरणपादुका ।

चरणसेवा-सज्ञा स्त्री० १ पैर दवाना । २ बड़ों की सेवा ।

चरणामृत-सज्ञा पु० १ वह पानी जिन्म किसी महात्मा या बड़े के चरण धाए गए हो । चरणोदक ।

चरणारविन्द-सज्ञा पु० चरणवमल । पादपद्म ।

चरणोदक-सज्ञा पु० दे० "चरणामृत" । चरण धोया हुआ जल ।

चरणोपान्त-सज्ञा पु० चरण के समीप ।

चरता-सज्ञा स्त्री० १ चर होने या चलने का भाव । २ पृथ्वी ।

चरती-सज्ञा पु० वत के दिन उपवास न करने-वाला ।

चरन-सज्ञा पु० दे० "चरण" ।

चरना-क्रि० सं० पशुआ का घास, चारा आदि खाना । घूमना फिरना ।

सज्ञा पु० १ पैर । चरण । २ काछा । ३ सानारा का एक औजार ।

चरनी-सज्ञा स्त्री० चाल । गति ।

चरनी-सज्ञा स्त्री० १ स्थान । चबूतरा । २ चरी । पशुओं का आहार, घास, चारा आदि । चरागाह । ३ नौद जिसमें पशुआ को खाने के लिए चारा दिया जाता है ।

चरन्ती-सज्ञा स्त्री० चार आने का सिक्का । चौधपत्नी ।

चरपट-सज्ञा पु० १ चपट । तमाचा । यम्पड । २ चाई । उचक्का । ३. एक छद । चपट ।

चरपरा-वि० [स्त्री० चरपरी] स्वाद में तीक्ष्ण । तीता । स्वादिष्ट । फुर्तीला । राहूसी ।

चरपराना-सज्ञा पु० परपराना । वेदना मालूम होना । जलन ।

चरपराहट-सज्ञा स्त्री० १ स्वाद की तीक्ष्णता । २ घाव आदि की जलन । ३ परपराहट । झाल ।

चरपरिया-वि० मनचला । सुन्दर । सुघर । चरफर-सज्ञा पु० दक्षता । निपुणता । फुर्ती । चतुराई ।

चरफरा-वि० दक्ष । निपुण ।

चरफराता†\*—त्रि० अ० दे० "तडपना" ।

चरय-वि० चालाक । तेज । तीखा ।

चरबन-सज्ञा पु० दे० "चबना" ।

चरबाक, चरबाक-वि० १ चतुर । चालाक । २ धुष्ट । शोख । निडर ।

चरबा-सज्ञा पु० प्रतिभूर्ति । नकल । खाका ।

चरबाना-त्रि० स० ढोल पर चमड़ा चढ़ाना ।

चरबी-सज्ञा स्त्री० [फा०] प्राणियों के शरीर का तेल जैसा चिकना गाढ़ा पदार्थ । मेद । वसा । पीव ।

मुहा०—चरबी चढ़ना=मोटा होना । चरबी छाना=१ बहुत मोटा हो जाना । २ मदाघ होना ।

चरम-वि० अंतिम । सबसे बड़ा हुआ । छोटी का । पराकाष्ठा । सज्ञा पु० चमड़ा ।

चरमर-सज्ञा पु० चोमड़ वस्तु । किसी वस्तु के दबने या मुड़ने पर 'चरमर' का शब्द जैसे जूना या चारपाई ।

चरमराना-वि० अ० चरमर शब्द होना । त्रि० म० चरमर शब्द उत्पन्न करना ।

चरमपाती†\*—सज्ञा स्त्री० दे० "चर्मपत्नी" ।

चरवाई-सज्ञा स्त्री० १ चराने का काम । २ चराने की मजदूरी ।

चरवाना-त्रि० स० चराने का काम दूसरे से कराना ।

चरवाहा-सज्ञा पु० गाय-भैर आदि चराने-वाला ।

चरवाही-सज्ञा स्त्री० दे० "चरवाई" ।

चरबैया-सज्ञा पु० १. चरनेवाला । २. चरानेवाला ।

चरस-सज्ञा पु० १ मादक द्रव्य विशेष । गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोद, जिसका धुआँ नशे के लिए चितम पर पीते हैं । २ भैंस या बैल आदि के चमड़े का वह बहुत बड़ा डोल जिससे खेत सींचने के लिए पानी निकाला जाता है । चरगा । पुर । मोट । ३ भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है । गो-चर्म । आसाम प्रदेश में होनेवाला एक पक्षी । बन-भोर । ४ अनुराग । आसक्ति । प्रीति । ५ अहंकार । ६. व्यसन । ७. चक्का । लत ।

चरसा-सज्ञा पु० १. पशुओं की खात । चमड़ा । २ चमड़ का बना हुआ बड़ा थैला । ३ चरस । मोट ।

चरसी-सज्ञा पु० १ चरस-द्वारा खेत सींचने-वाला । २ चरस पीनेवाला ।

चराई-सज्ञा स्त्री० १ चरने का काम । २ चराने का काम या मजदूरी ।

चराक-सज्ञा पु० १ चरानेवाला । चरवाहा । २ एक प्रकार का पक्षी ।

चरागाह-सज्ञा पु० वह मैदान या भूमि जहाँ पशु चरते हैं । चरनी । चरी ।

चराचर-वि० १ चर और अचर । चल और अचल । जड़ और चैतन्य । २ जगत् । ससार । ३ आकाश । नभोमण्डल ।

चराना-वि० स० १ पशुओं को चारा खिलाने के लिए मैदान या मैदानों में ले जाना । २ बाँटी में बहलाना ।

चराय-सज्ञा पु० चराने योग्य भूमि ।

चराचर†\*—सज्ञा स्त्री० व्यर्थ की बात । वतवाद ।

चरि-सज्ञा पु० पशु । चौपाये ।

चरिदा-सज्ञा पु० [फा०] चरनेवाला जीव । पग । हैवान ।

चरित-राज्ञा पु० १. रहन-सहन । व्यवहार ।  
आचरण । २. पाम । करनी । करतूत ।  
दृश्य । ३. किसी के जीवन की विशेष  
घटनाओं या कार्यों आदि का वर्णन ।  
जीवन-चरित । जीवनी । क्या-वार्ता ।  
युत्तान्त ।

चरितनामक-सज्ञा पु० वह प्रभाव पुरुष  
जिसमें चरित्र का आधार लेकर कोई पुस्तक  
लिखी जाय ।

चरितार्थ-वि० १. सिद्ध-प्रयोजन । जिसमें  
उद्देश्य या अभिप्राय की प्राप्ति हो चुकी  
हो । कृतकृत्य । कृतार्थ । २. जो ठीक-  
ठीक पड़े ।

चरित्तर-सज्ञा पु० १. धूर्तता की चाल ।  
२. नपरेबाजी । नकल ।

चरित्र-सज्ञा पु० १. स्वभाव । २. आच-  
रण । कार्य । ३. करनी । करतूत ।  
४. चरित ।

चरित्रवन्धक-सज्ञा पु० भाट । कवि ।  
प्रयत्न । चरित्रलेखक ।

चरित्रनायक-सज्ञा पु० दे० "चरितनायक" ।  
चरित्रवान्-वि० [स्त्री० चरित्रवती] अच्छे  
चरित्रवाला । उत्तम आचरणवाला ।

चरी-सज्ञा स्त्री० १. पशुओं के चरने की  
जमीन । २. पशुओं के खाने-योग्य करवी ।  
घर-सज्ञा पु० १. हवन या यज्ञ का अन्न ।  
होम की वस्तु । २. वह पात्र जिसमें  
उक्त अन्न पकाया जाय । ३. पशुओं के  
चरने की जमीन । ४. यज्ञ । मेघ ।  
बादल ।

चरुआ-सज्ञा पु० मिट्टी का चौड़े मुँह का बर्तन ।  
चरुललाङ्ग-सज्ञा पु० सूत कातन का चरखा ।  
चरु-सज्ञा पु० चर ।

सज्ञा स्त्री० चरी ।

चरुपात्र-सज्ञा पु० वह पात्र जिसमें हविष्यान्न  
रखा या पकाया जाय ।

चरेर-वि० दे० "चरेरा" ।

चरेरा-वि० [स्त्री० चरेरी] १. बड़ा धीर  
खुरदुरा । २. कर्कश ।

सज्ञा पु० एक पेड़ ।

चरेर-सज्ञा पु० चिड़िया ।

चर्याङ्ग-सज्ञा पु० १. चरानेवाला । २.  
चलेवाला ।

चरोखर या चरीया-सज्ञा पु० चरी ।

चर्यबदा-सज्ञा पु० [फा०] गराद चराने-  
वाला ।

चर्य-सज्ञा पु० [फा०] चरणा ।

चर्य-सज्ञा पु० गिरजा । ईमादयो का  
मन्दिर ।

चर्यक-सज्ञा पु० चर्चा करनेवाला ।

चर्यन-सज्ञा पु० १. चर्चा । २. लेपन ।

चर्येरिका-सज्ञा स्त्री० नाटक में वह गान  
जा किसी एक विषय की समाप्ति और  
यत्रनिवृत्त होने पर होता है । आनन्द ।  
उत्सव ।

चर्यरी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गाना  
वस्तु में गाया जाता है । फाग ।

चर्यर । २. हंसी की धूमधाम या  
हुल्लाह । ३. एक वर्णवृत्त । ४. करनल-  
ध्वनि । ताली बजाने का मद्द । ५.

चर्येरिका । ६. आमोद-प्रमोद । मीठा ।  
उत्सव ।

चर्य-सज्ञा स्त्री० १. जि । वर्णन ।  
व्यान । २. वार्तालाप । ब. नोट । ३.

विवादनी । अफवाह । ४. लेपन । पोतना ।  
५. गायत्री-रूपा महादेवी । दुर्गा ।

चर्यक-वि० वेद आदि जाननवाला ।

चर्यका-सज्ञा स्त्री० १. चर्चा । जिज्ञा ।  
२. दुर्गा । एक प्रकार की सेम ।

चर्यित-वि० १. सुगन्धित । २. गिरुपित ।  
वर्णित । ३. लप निया हुआ । चन्दन से लप  
करना । ४. जिसकी चर्चा हो ।

चर्यट-सज्ञा पु० १. चपत । धप्पड । २.  
हाथ की खुली हुई हथेली ।

चर्यटी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी  
रोटी ।

चर्यरा-वि० चरपरा ।

चर्यण-सज्ञा पु० दे० "चर्यण" ।

चर्यी-दे० "चरवी" ।

चर्यट-सज्ञा पु० कवडी ।

चर्यटी-सज्ञा स्त्री० १. चर्चा । चर्यरी ।

२. गीत । आनन्द ।

चर्म-सज्ञा पु० १ चमड़ा २. चाम । खाल ढाल ।

चर्मकशा, चर्मकषा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य । चमरखा ।

चर्मकार-सज्ञा पु० [स्त्री० चर्मकारी] चमड़े का काम करनेवाली जाति । चमार ।

चर्मकील-सज्ञा स्त्री० १ बवासीर । २ एक प्रकार का रोग । न्यच्छ ।

चर्मचक्षु-सज्ञा पु० साधारण चक्षु । नेत्र । ज्ञान-चक्षु का उलटा ।

चर्मज-सज्ञा पु० १. रोम । केश । २ घुन । ३. पशम । ऊन ।

चर्मज्वतो-सज्ञा स्त्री० १ चबल नदी । २ बेलें का पेड़ ।

चर्मदंड-सज्ञा पु० चमड़े का बना हुआ कोड़ा या चाबुक ।

चर्मदृष्टि-सज्ञा स्त्री० साधारण दृष्टि । श्रद्धा । ज्ञानदृष्टि का उलटा ।

चर्मपात्र-सज्ञा पु० चमड़े का डोल । पानी रखने या भरने के लिए चमड़े का बरतन ।

चर्मपातुका-सज्ञा स्त्री० चमड़े का जूता ।

चर्मपुटक-सज्ञा पु० चमड़े का बना हुआ एक तरह का बरतन । कुप्पी जिसमें तेल आदि रखते हैं ।

चर्ममुंडा-सज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

चर्मवसन-सज्ञा पु० चमड़ा पहननेवाले । शिव ।

चर्मसार-सज्ञा पु० खाने के पदार्थों से बननेवाला रस ।

चर्मा-वि० ढाल रखनेवाला । चर्मपारी । ढाल-वाला ।

चर्मा या चर्म्या-सज्ञा स्त्री० १ आचरण । काम-काज । २ जो लिया जाय । ३ आचार । चालचलन । ४ कृति । जीविका । ५ सेवा । ६ चलना । ७ गमन । ८ भक्षण ।

यो०—दिनचर्म्या=दिन में किए जानेवाले कार्यों का क्रम या विवरण ।

चर्चना-वि० प्र० १. चर-चर शब्द करना । २ फीका होना । ३ भग में तनाव होना । ४ यन्त्रकी दृष्टा होना ।

चर्ची-सज्ञा स्त्री० लगती हुई व्यंगपूर्ण बात । चुटौली बात ।

चर्वण-सज्ञा पु० १ चवाना । २ चवाने-वाली वस्तु । चर्वना । ३ दाँतो से चूर किया हुआ या पीसा हुआ ।

चर्वित-वि० चबाया हुआ ।

चर्वितचर्वण-सज्ञा पु० वही हुई बात या किए हुए काम को फिर से बहना या करना ।

चर्व्य-वि० चवाने योग्य । जा चबाकर खाया जाय ।

चल-वि० चलता हुआ । चलायमान । गति । नश्वर । अस्थायी । चंचल । अस्थिर ।

सज्ञा पु० १ पारा । २ दोहा छंद का एक भेद । ३ शिव । ४ बिष्णु । ५ बोप । चूक । घोसा । ६ नृत्य की एक चेष्टा ।

चलकना-क्रि० प्र० दे० “चमकना” । निल-बना ।

चलकर्ण-सज्ञा पु० हाथी ।

चलमेतु-सज्ञा पु० पुच्छल तारा ।

चलचक्षु-सज्ञा पु० चकीर ।

चलचलाव-सज्ञा पु० १ प्रस्थान । यात्रा । चलाचली । २ मृत्यु ।

चलचित्र-सज्ञा पु० सिनेमा । वे चित्र जो पर्दे पर सजीव प्राणियों की तरह चलते-फिरते और बोलते दिखाई देते हैं ।

चलचूक-सज्ञा स्त्री० धोखा । छल । कपट ।

चलता-वि० [स्त्री० चलती] १ चलता हुआ । २ जिसका उभयभाग न हुआ हो । जो बराबर जारी हो । ३ प्रचलित । ४ काम करने योग्य, जो अशक्त न हो । ५ चालाक ।

सज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार पेड़, जिसमें बल के-ने फल लगते हैं ।

सज्ञा स्त्री० चलने का भाव । चपलता । अस्थिरता ।

मुहा०—चलता करना=१ हटाना । भगाना ।

भजना । २ किसी प्रकार निपटाना ।

चलता बनना=चल देना ।

चलता, खाता-मना पु० बेंक आदि का वह

खाना जिममें हर समय सन-देन हो सताता है। (प्रप्र०-नरेण्ट एराण्ट) ऐसा हिसाब जिममें सन-देन चलता रहे।

चलती-सजा स्त्री० मान-मर्यादा। प्रभाव। प्रधियार।

चलतु-वि० भावाद। चलता हुआ। जोती-बोई जानेवाली भूमि।

चलदल-सजा पु० पीपल का वृक्ष।

चलन-सजा पु० १ चलने का भाव। गति। चाल। २ रिवाज। प्रथा। रूम। रीति। ३ व्यवहार। उपाय। प्रचार। ४ गति। भ्रमण। दम्पन। सजा स्त्री० ज्योतिष में विपुवत् की उस समय की गति, जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।

चलन कलन-सजा पु० ज्योतिष में एक प्रकार का गणित जिससे दिन रात के घटने-बढ़ने का हिसाब लगाया जाता है।

चलनदरी-सजा पु० प्याऊ। पीसला।

चलनसार-वि० १ जिसका उपयोग या व्यवहार प्रचलित हो। २ जो अधिक दिनों तक काम में लाया जा सके। टिकाऊ।

चलना-वि० अ० १ जाना। गमन करना। प्रस्थान करना। २ निभना। ३ बहना। ४ बढ़ना। ५ अग्रसर होना। किसी युक्ति का काम में आना। ६ आरम्भ होना। छिड़ना। ७ जारी रहना। क्रम या परस्पर का निर्वाह होना। ८ बराबर काम देना। टिकना। ठहरना। ९ लेन देन के काम में आना। १० प्रयुक्त होना। काम में लाया जाना। ११ प्रचलित होना। तीर, गोली आदि का छूटना। १२ लड़ाई-झगडा होना। विराध होना। १३ पटा जाना। कारगर होना। बस चलना। १४ आचरण करना। व्यवहार करना। १५ निगला जाना। खाया जाना।

क्रि० स० क्षतरज आदि खलो में किसी मोहरे को अपने स्थान से बढ़ाना या हटाना, अथवा तारा आदि खेलों में किसी पत्त को सय खेलनवालों के सामने रखना।

सजा पु० बड़ी चलती। हनुवाइयो का एक शोजार।

मुहा०-पेट चना=१ दस्त आना। २ निर्वाह होना। गुजर होना। मन चना=दृष्टा होना। चालना आना। चल बसना=मर जाना। अपने चलते=भरनव। यथा-शक्ति।

चलनि\*-सजा स्त्री० दे० "चलन"।

चलनी†-सजा स्त्री० १. "छलनी"। आटा चालन या बत्तन। २. रूम। रिवाज। ३ स्थिरा के पहनने का परिधर। सहंगा।

चलनीस-सजा पु० चानर। चाला।

चलपत्र-सजा पु० पीपल का वृक्ष। चलदल।

चलपूजो-सजा स्त्री० चलधन। रुपया पैसा। सोना। चल-मम्पति।

चलफेर-सजा पु० घूमघाम। गति। चलना।

चलवाना-वि० म० चलाने का काम कराना।

चलविचल-वि० १ अव्यवस्थित। २ व्यतिश्रम।

सजा स्त्री० नियम या श्रम का उल्लंघन।

चलवैया†-सजा पु० चलनेवाला।

चला-सजा स्त्री० १. लक्ष्मी। २. पृथ्वी।

३ विजली। ४. पीपल।

वि० अ० चल निकला। गया। चल पडा।

प्रचलित हुआ।

चलाऊ-वि० टिकाऊ। मजबूत। बहुत घूमने-वाला। जो बहुत दिनों तक चल।

चलाक-वि० चालाक। चलाक। चतुर। होशियार।

चलाका†\*-सजा स्त्री० विजनी। विद्युत्।

चलाकी-सजा स्त्री० चालाकी। होशियारी।

चलाचल\*-सजा स्त्री० १ चलाचली। २

गति। चाल।

वि० चंचल। चपल।

चलाचली-सजा स्त्री० १ चलने के समय की धवराहट। खारवी। शीघ्रता। २ बहुत से लोगों का प्रस्थान। ३ चलने की तैयारी या समय।

वि० जो चलने के लिए तैयार हो।

मुहा०-चलाचली की पैला=मरने की घड़ी।

संगार से चलन की घड़ी।

चलान-सजा स्त्री० १ भजने या भजे जाने

की त्रिया । २. अपराधी को न्याय के लिए न्यायालय में भेजना । ३. माल का एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जाना । ४. भेजा या आया हुआ माल । ५. वह कामज जिसमें किसी की सूचना के लिए भेजी हुई चीजों की सूची आदि हो । रवन्ना ।

चलानवार-संज्ञा पुं० माल की चलान के साथ जानेवाला व्यक्ति ।

चलाना-क्रि० स० १. चलने के लिए प्रेरित करना । २. गति देना । हिलाना-डुलाना । ३. निगाना । ४. प्रवाहित करना । वहाना । ५. वृद्धि करना । उन्नति करना । ६. किसी कार्य को अग्रसर करना । ७. आरंभ करना । छेड़ना । ८. जारी रखना । ९. बराबर काम में लाना । टिकाना । १०. व्यवहार में लाना । लेन-देन के काम में लाना । ११ प्रचलित करना । प्रचार करना । १२ व्यवहृत करना । प्रयुक्त करना । १३. तीर, गोली आदि छोड़ना । १४. किसी चीज से मारना । १५. किसी व्यवसाय की वृद्धि करना । मुहा०-किसी की चलाना=किसी के बारे में कुछ कहना । मुंह चलाना=खाना । भक्षण करना । हाथ चलाना=मारने के लिए हाथ उठाना । मारना-पीटना ।

चलायमान-वि० १. चलनेवाला । २. चल । ३. गतिशील । अस्थायी ।

चलावर्त्त-संज्ञा पुं० १. चलने का भाव । चलन । चाल । रीति । व्यवहार । २. यात्रा ।

चलावा-संज्ञा पुं० १. रीति । रस्म । रवाज । २. आचरण । चालचलन । ३. द्विरागमन । गोना । मुक्लावा । ४. एक प्रकार का उत्तरा जो प्रायः गाँवों में मयकर बीमारी फैलने के समय किया जाता है ।

चलित-वि० १. अस्थिर । चलायमान । २. चलता हुआ । व्यवहारी । व्यावहारिक । संज्ञा पुं० नृत्य की एक चेष्टा ।

चलितव्य-वि० चलने योग्य । चलने लायक ।

चलित्री-संज्ञा स्त्री० रसिक । चंचल ।

चले-क्रि० अ० चल निकले । जाने लगे । प्रचलित ।

चलेन्द्रिय-संज्ञा पुं० इन्द्रियो में आसक्त । इन्द्रियाधीन ।

चलौना-संज्ञा पुं० चरखा चलाने का डण्डा । कलछा ।

चल्ली-संज्ञा स्त्री० कुकड़ी ।

चलैया-संज्ञा पुं० चलनेवाला ।

चवन्नी-संज्ञा स्त्री० चार आने का सिक्का ।

चवर-संज्ञा पुं० दे० “चवैर” ।

चवर्ग-संज्ञा पुं० [ वि० चवर्गीय ] व से ज तक के अक्षरों का समूह ।

चवल-संज्ञा पुं० लोबिया । एक प्रकार की तरकारी ।

चवाई-संज्ञा पुं० [ स्त्री० चवाईन ] बदनामी फैलानेवाला । निदक । चुगलखोर ।

चवाई-संज्ञा पुं० १. चर्चा । प्रवाद । अफवाह । २. बदनामी । निन्दा । चुगलखोरी ।

चव्य-संज्ञा पुं० एक ओषध ।

चश्म-संज्ञा स्त्री० [ फा० ] नेत्र । आँख ।

चश्मदीद-वि० आँखों से देखा हुआ ।

यो०-चश्मदीद गवाह=वह साक्षी जो अपनी आँखों से देखी घटना कहे ।

चश्मा-संज्ञा पुं० [ फा० ] १. आँखों पर पहना जानेवाला शीशा । ऐनक । २. पानी का सोता । खोत ।

चप\*-संज्ञा पुं० आँख । नेत्र ।

चपक-संज्ञा पुं० १. मद्य पीने का पात्र । मधुपात्र । जाम । २. मधु । सहृद ।

चपचोल\*-संज्ञा पुं० आँख की पलक ।

चपज-संज्ञा पुं० १. भोजन । २. वन करना । नाश करना ।

चपणि-संज्ञा स्त्री० १. मूर्खता । दुर्बलता । २. हत्या । ३. मदाव्यता ।

चपाल-संज्ञा पुं० १. यज्ञ के खने के ऊपर छाया हुआ एक प्रकार का काठ । २. मधुस्थान । मधुकोष ।

चप्त-संज्ञा स्त्री० १. अवकाश । २. पक्व । ३. भति भाव । ४. प्रेम । ५. किनारेदार

घण्टे में बिनारे पर बनी हुई बलानेछू या  
 गा की धारी ।  
 चसक-सज्ञा स्त्री० हलना ददं ।  
 \*सज्ञा पु० १ दे० "चपक" । २. टीग ।  
 थेंदना । पज्ज । ३ पतली गोट ।  
 चसकना-त्रि० अ० १ हलकी पीटा होना ।  
 टोमना । चमकना । २. टपकना ।  
 चसका या चसा-सज्ञा पु० १ शीक ।  
 पाट । २ आवन । लत ।  
 चसना-त्रि० अ० लगना । चिपकना । गठना ।  
 मनकना ।  
 चसती-सज्ञा स्त्री० अपरम, रोग विशेष ।  
 चसपी-वि० [पा०] चिपकाया हुआ ।  
 चह-सज्ञा पु० १. चाट । २ अपेक्षा । ३  
 दरवार । ४ पाट । ऊँचा स्थान ।  
 \*†-सज्ञा स्त्री० गड्ढा ।  
 चह-सज्ञा स्त्री० पक्षिया का मधुर शब्द ।  
 चिड़ियों की चहचह ।  
 चहचहना-त्रि० अ० १ पक्षिया का मधुर  
 शब्द करना । चहचहाना । चहचहाहट ।  
 २ उमग या प्रसन्नता से अधिक बालना ।  
 पहका-सज्ञा पु० १ जलन । व्यथा । २  
 वनैदी । ३ एक प्रकार की आतशबाजी ।  
 ४ ईंट या पत्थर का फाँस । ५ चहला ।  
 कीचड । ६ चसका ।  
 चहकार-सज्ञा स्त्री० दे० "चहक" ।  
 चहकारना†-क्रि० अ० दे० "चहकना" ।  
 चहरट-वि० १ चौदस्त साँड । २ बलवार ।  
 बलिष्ठ ।  
 चहचहा-सज्ञा पु० १ 'चहचहाना' का भाव ।  
 चहक । २ हँसी दिल्लगी । ठठ्ठा । खूब  
 गहरा रेंगा हुआ ।  
 वि० १ जिसमें चहचह शब्द हो । उल्लाम ।  
 २ आनंद और उमग उत्पन्न करनेवाला ।  
 मनोहर । ३ ताजा ।  
 चहचहाना-त्रि० अ० पक्षियों का 'चहचह'  
 शब्द करना । चहकना ।  
 चहदा-सज्ञा पु० कीचड ।  
 चहदी-सज्ञा स्त्री० चुटकी बाटना ।  
 चहनना†-त्रि० स० १ अच्छी तरह खाना ।  
 २ दवाना ।

चहना\*†-त्रि० ग० दे० "चाहना" ।  
 चहनि†-सज्ञा स्त्री० दे० "चाह" ।  
 चहदच्चा-सज्ञा पु० [पा०] १ पानी भरने  
 का होज । कुण्ड । २ छाटा तहलाना ।  
 चहर†-सज्ञा स्त्री० १ आतशमय ।  
 उमग की चहकपहन । रौनक । २ गार-  
 गुल । हला ।  
 वि० १ बढ़िया । उत्तम । २ चुतबुता ।  
 चहरना†-त्रि० अ० प्रमत्त होना । मूर्ख  
 होना ।  
 चहराना-त्रि० अ० चराना । फटना ।  
 चहरना ।  
 चहरम-वि० दे० "चहाम" ।  
 चहल-सज्ञा स्त्री० कीचड । कीच ।  
 सज्ञा स्त्री० आनंद उमग । रौनक ।  
 चहलखदमी-सज्ञा स्त्री० [पा०] धीरे धीरे  
 टहलना या धूमना ।  
 चहलना-क्रि० अ० आनंद होना ।  
 क्रि० अ० काटना । दवाना । कूचना ।  
 चहल-पहल-सज्ञा स्त्री० १ आनन्द । सुख ।  
 धूम । उत्सव की धूम । २ रौनक ।  
 चहला†-सज्ञा पु० कीचड ।  
 चहली-सज्ञा स्त्री० घिरनी ।  
 चहलम-दे० "चहलूम" ।  
 चहारदीवारी-सज्ञा स्त्री० किसी स्थान के  
 चारों ओर की दीवार । प्राचीर ।  
 चहारम-वि० चतुर्थांश । चौथाई भाग ।  
 चहूँ\*-वि० चार । चारों ।  
 चहूँ-सज्ञा स्त्री० चिहुँक ।  
 चहुरा-वि० चौहरा ।  
 चहवान-सज्ञा पु० दे० 'चौहान' ।  
 चहूँ-वि० दे० 'चहूँ' ।  
 चहटना†-त्रि० अ० मटना । लगना । मिलना ।  
 चहेटना-त्रि० म० १ हडपना । निचोड़ना ।  
 २ दे० पीछा करना । "चपटना" ।  
 चहेता-वि० (स्त्री० चहती) जिसे चाहा  
 जाय । प्यारा ।  
 चहेल-सज्ञा स्त्री० कीचड ।  
 चहोरना†-त्रि० अ० १ पीछे की एक जगह  
 से उखाड़कर दूसरी जगह लगाना । रापना ।  
 बँठाना । २ सहेजना । सँभालना ।

चाँई-वि० १ ठग। चोर। उचक्का। २. होशियार। चालाक।

चाँई-चूई-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की फुसियाँ। गजराग।

चाँक-सज्ञा पु० गोठ। अक्षर या चिह्न खुदी हुई काठ की वह थापी जिससे खलियान में अन्न की राशि पर चिह्न लगाते हैं।

चाँकना-क्रि० सं० १. खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी, राख या ठप्पे से छापा लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय तो मालूम हो जाय। २ सीमा घेरना। हद खींचना। हद बाँधना। ३ पहचान के लिए किसी वस्तु पर चिह्न डालना।

चाँगला†-वि० १ स्वस्थ। तद्बुद्धस्त। हृष्ट-पुष्ट। २ चतुर।

सज्ञा पु० घोड़ा का एक रंग।

चाँचर, चाँचरि-सज्ञा स्त्री० १. वसत ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का राग। चर्चरी राग। २ परती छाड़ी हुई भूमि सज्ञा पु० टट्टी या परदा।

चाँचल्य-सज्ञा पु० चंचलता। चपलता।

चाँचु\*-सज्ञा पु० दे० “चाच”।

चाँटना-क्रि० म० चापना। दाबना। चिह्न मारना।

चाँटा†-सज्ञा पु० [स्त्री० चाँटी] १ बड़ी चूँटी। चिउँटा। २ थपड़। तमाचा।

चाँटी-सज्ञा स्त्री० दे० “चाँटी”।

चाँड-वि० १ प्रबल। बलवान्। २ उग्र। ३ बड़ा-बड़ा। अष्ट। ४ तुप्त। सत्पुष्ट। सज्ञा स्त्री० १ भार उँभालन वा खभा। टेक। धूनी। २ भारी जखरत। गहरी बाह। ३ दबाव। सफट। ४ प्रबलता। अधिकता। बढती।

मुहा०—चाँड सरना—इच्छा पूरी होना। चाँडना-क्रि० सं० १ खाटना। खोद-कर गिराना। २ उखाड़ना। उजाड़ना। दाबना।

चाडाल-सज्ञा पु० [स्त्री० चाडाली, चाडालिन] १ एक अत्यंत नीच जाति। डोम। दक्कन। २ ग्रथम। नीच। पतित।

चाडिला†-वि० [स्त्री० चाडिली] १

प्रचंड। प्रबल। उग्र। २ नटखट। शोल। ३. बहुत अधिक।

चाँद-सज्ञा पु० १. चंद्रमा। २ चांद मास। महीना। ३ एक आभूषण। माथे पर का मुकुट। ४ चाँदमारी का वाला दाग जिस पर निशाना लगाया जाता है। सज्ञा स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग।

मुहा०—चाँद का टुकड़ा—अत्यंत मुन्दर मनुष्य। चाँद पर धूकना—किसी ऐसे व्यक्ति पर कलक लगाना, जिसके कारण स्वयं अपमानित होना पड़े। बिधर चाँद निकला है?—आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े?

चाँदलरा-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का बारीक मलमल जिसपर चमकीली कूटियाँ होती हैं। २ एक प्रकार की पतंग।

चाँदना-सज्ञा पु० १ प्रकाश। उजाला। २ चाँदनी।

चाँदनी-सज्ञा स्त्री० १ चंद्रमा वा प्रकाश। चंद्रमा का उजाला। चाँदिका। २ सफेद फर्श। ३ ऊपर तानने का कपड़ा।

मुहा०—चाँदनी का खेत—चंद्रमा का चारो ओर फैला हुआ प्रकाश। चार दिन की चाँदनी—थोड़े दिन का आनन्द वा सुख।

चाँदनी चौक-सज्ञा पु० चौड़ा बाजार। दिल्ली के चौक को चाँदनी चौक कहते हैं।

चाँदबाला-सज्ञा पु० कान में पहनने का एक गहना।

चाँदमारी-सज्ञा स्त्री० लक्ष्य करने वाली चलाने का अभ्यास। निशानाबाजी।

चाँदला-वि० १ बक। टेंडा। २. चाँदला।

चाँदा-सज्ञा पु० दूरबीन लगाने का लक्ष्य स्थान। छप्पर वा कोना। वैभाइश-या भूमि की नाप में बहुत स्थान-विशेष जिसकी दूरी लेकर हदबंदी की जाती है।

चाँदी-सज्ञा स्त्री० एक सफेद चमकीली मूल्यवान् धातु जिसके सिक्के, आभूषण और वस्त्रन इत्यादि बनते हैं। रजत।

मुहा०—चाँदी का धूता—धूम। रिकबन। चाँदी काटना—खूब रुपया पैदा करना। आनन्द करना।

चापकण—सजा पु० धनुष का रोदा । 'धनुष की प्रत्यया ।

चापट—वि० १ दे० "चापड" । २ चिपटा हुआ । रवाया या कुचला हुआ । ३ बराबर । ४ समतल । ५ धरिद । चौपट ।

चापड—वि० १ चिपटा । जो दबकर चिपटा हो गया हो । २ चौपट । उजाड़ । ३ बराबर । सजा स्त्री० चोकर । भूसी ।

चापना—क्रि० स० दबाना । मोड़ना । सजा पु० दबाना ।

चापलता—सजा स्त्री० दे० "चपलता" । छिटाई ।

चापलूस—वि० [फा०] खुशामदी । चाटुवार । भूडों प्रशंसा करनेवाला ।

चापलूसी—सजा स्त्री० खुशामद । चाटुकारी । चापल्य—सजा पु० चपलता । अधीरता । जल्द-ब्राजी ।

चापी—सजा पु० १ शिव । २ धन राशि (ज्यातिप) । ३ धनुष धारण करनेवाला । ४ दबाना । छिपाना ।

चाय—सजा स्त्री० १. एक पौधा जो औषध के काम में आता है । २ इस पौधे का फल । ३ चाँखूँटा डाढ़ । चौमड़ । ४ बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति ।

चाबना—क्रि० स० १ चबाना । २ खूब भोजन करना । खाना ।

चाबी—सजा स्त्री० कुंजी । ताली । चाबुक—सजा पु० १ काड़ा । हठर । २ जाँघ दिवानेवाली बान ।

चाबुकसार—सजा पु० [फा०] [सजा स्त्री० चाबुकगवारी] धोड़ का चसना सिपानवाला ।

चाभना—क्रि० म० खाना । रस चूसना । चाभी—सजा स्त्री० द० "चाबी" ।

चाम—सजा पु० चमड़ा । खाल ।

मुहा०—चाम व दाम चलाना=अपनी चलती में अयाय करना । अधर करना ।

चामर—सजा पु० १ चौर । चयर । चोरी । २ मारुखन । ३ एन वर्णवृत्त ।

चामर पाटना—क्रि० स० दाँतों से हाठ पाटना । दाँत बटखटाना ।

चामरिक—सजा पु० चैवर हुलानवाला ।

चामरी—सजा स्त्री० मुरा गाय ।

चामोकर—सजा पु० १ सोना । स्वर्ण । २ धनुरा ।

वि० स्वर्णमय । सुनहरा ।

चामुडा—सजा स्त्री० दुर्गा देवी । बाली । चड-मुड नामक दो सेनापति दैत्या का बंध

करनेवाली । योगिनी ।

चाम्पेय—सजा पु० १ चम्पा । चम्पा का फूल । २ नागधेसर ।

चाय—सजा स्त्री० एन पौधा जिसकी पत्तियों का काड़ा चीनी के साथ पीन की प्रथा अब प्रायः सर्वत्र है ।

यो०—चाय-पानी=जलपान ।

\*सजा पु० दे० १ "चाव" । २ सचय । समूह । ३. हर्ष । ४. स्वाद । ५. चाहता ।

चायक\*—सजा पु० १. चाहनेवाला । २. चुनने-वाला ।

चार—वि० १ गिनती में तीन से एक अधिक । २ कई एक । बहुत से । ३ थाड़ा-बहुत कुछ । सजा पु० चार का अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४ ।

[वि० चरित, चारी] १ गति । चाल । गमन । २ बधन । कारागार । ३ गुप्त दूत । चर । जासूस । ४ दात ।

रायक । ५ चिरोजी का पेड़ । ६ कृत्रिम विष । ७ अचार । ८ प्राचार । रीति ।

रस्म ।

मुहा०—चार आँख होना=नजर से नजर मिलना । दया-देखी होना । साक्षात्कार

हाना । चार चाँद लाना=१ चौगुनी प्रतिष्ठा हाना । २ चौगुनी शाना होना ।

साँदय बडना । (स्त्री०) चारा फूटना=

चारा गोवं (दो हृदय की, दो ऊपर की) फूटना ।

चार आइतर—सजा पु० [फा०] एक प्रकार का बबक या बटार ।

चारक—सजा पु० १ चरवाहा । चरानेवाला । २ चान । ३ राईस । ४ साथी । ५

सवार । ६ घूमनेवाला आह्वान । ७ मनुष्य । ८ कारागार । ९ जासूस । १० चिरोजी का पेड़ ।

चार काने—सज्ञा पु० चौसर या पासे का एक दाय।

चारखाना—सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का वपडा।

चारजामा—सज्ञा पु० [फा०] जिन। पलान [घोड़ की जिन]। काठी।

चारण—सज्ञा पु० १ वंश की कीर्ति गाने-वाला। भाट। बदीजन। २ राजपूताने की एक जाति। ३ भ्रमणकारी।

चारबीबारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ घेरा। हाता। २ शहर-भनाह। प्राचीर।

चारना\*†—क्रि० सं० चराना।

चार ना चार—क्रि० वि० [फा०] मजबूरन। लाचार हाकर।

चारपाई—सज्ञा स्त्री० छोटा पर्लंग। खाट। खटिया।

मुहा०—चारपाई धरना, पकड़ना या लना = इतना बीमार होना कि चारपाई से न उठ सके। अत्यंत रुग्ण होना। चारपाई से लगना = बीमारी के कारण उठ न सवना। चारपाया—सज्ञा पु० चौपाया। जानवर। पशु।

चारबाण—सज्ञा पु० १ [फा०] चीखूँटा बगीचा। २ चार बराबर खाने में से बँटा हुआ खान।

चारवा—सज्ञा पु० पशु।

चारबाण—सज्ञा स्त्री० लू।

चारवारी—सज्ञा स्त्री० १ चार भिनो की मडली। २ मुसलमानों में सुन्नी-सम्प्रदाय की एक मडली। ३ चादी का एक चौकोर सिक्का जिसपर खलीफाओं के नाम या कलमा लिखा रहता है।

चार सौ बीस—सज्ञा पु० घोड़ा देना। घोड़ा देकर किसी का माल हड़प लना। घोखबाज आदमी। धूर्त। भारतीय दण्डविधान की एक धारा जिसके अनुसार घोड़ा देना दंडनीय अपराध है।

मुहा०—बड़ा चार सौ बीस है या पक्का चार सौ बीस है = बहुत बड़ा घोखबाज आदमी है। धाखा देकर दूसरों को ठगनेवाला।

चार सौ बीसिया—वि० चार सौ बीस (दफा) का अपराध करनेवाला। दूसरा को धोखा देकर ठगनेवाला। घोखबाज। धूर्त।

चारा—सज्ञा पु० १ पशुओं के खाने की घास, पत्ती, डठल आदि। २ आटा या कोई वस्तु जिसे लगाकर मछली फँसाते हैं। ३ उपाय। तपवीर।

चाराजोई—सज्ञा स्त्री० [फा०] नालिश। फरियाद।

चारि—वि० चार।

चारिणी—वि० आचरण करनेवाली। चलनवाली।

चारित—वि० चलाया हुआ। खींचा हुआ। अर्क निवाला हुआ।

चारित्र्य—सज्ञा पु० १ आचार। २ चाल-चलन। व्यवहार। स्वभाव। ३ सन्यास (जैन)।

चारित्र्यिनय—सज्ञा पु० शिष्टाचार। नम्रता।

चारित्रा—सज्ञा स्त्री० इमली।

चारित्र्य—सज्ञा पु० चरित्र।

चारी—वि० [स्त्री० चारिणी] १ चलन वाला। २ आचरण करनेवाला।

सज्ञा पु० १ पदाति सैन्य। पैदल सिपाही। २ सचारी भाव।

राज्ञा स्त्री० नाच का एक अंग।

चार—वि० सुंदर। मनोहर।

सज्ञा पु० कैसर।

चारक—सज्ञा पु० सरपत के बीज।

चारकेशरी—सज्ञा पु० १ नागरमोया। २ सेवती का फूल।

चारुता—सज्ञा स्त्री० सुंदरता। शान।

चारुनेत्र—सज्ञा पु० हरिण। सुन्दर नथोवाला।

चारुपर्णी—सज्ञा स्त्री० एक ओषधि।

चारुफला—राज्ञा स्त्री० दाख। अमूर। किसमिस।

चारुवाहु—सज्ञा पु० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

चारुचक्रम्—वि० १ चलवान्। बली। २ मनोहर। ३ गति विशिष्ट।

चारुमती—सज्ञा स्त्री० १ श्रीकृष्णजी की एक कन्या का नाम। २ उद्विग्नता।

चाण्डोचन-वि० सुन्दर नयावाला ।

सज्ञा पु० मृग । हरिण ।

चाण्डशिला-सज्ञा स्त्री० मणि-विशेष । हीरा ।

चाण्डशूल-वि० सुन्दर स्वभाववाला । अच्छे स्वभाव का । सुरूप ।

चाण्डासिनी-वि० सुन्दर हँसनेवाली । मगोहर मुस्वानवाली ।

सज्ञा स्त्री० बंताली छद का एक भेद ।

चारोली-सज्ञा पु० गुठली ।

चारेक्षण-सज्ञा पु० राजनीतिज्ञ । राज-मन्त्री ।

चार्वङ्गी-सज्ञा स्त्री० सुन्दरी । नारी । सुरूपा ।

चार्य-सज्ञा पु० १. एक अनीश्वरवादी या नास्तिक तार्किक । २ नास्तिकवाद के प्रवर्तक ऋषि । ३. एक दार्शनिक मत जो स्वर्ग, मुक्ति, ईश्वर की नहीं मानता । इसका दूसरा नाम है लोकायत दर्शन ।

चाल-सज्ञा स्त्री० १ गति । गमन । चलने की क्रिया । २ चलने का ढंग । ३. आचरण । व्यवहार । ४ वनावट । गठन । ५ रीति । रवाज । रस्म । प्रथा । परिपाटी । ६ गमन-मुहूर्त । ७ युक्ति । तदवीर । ढब । ८ वषट । छल । धूर्तता । ९ ढग । १० शतरंज, ताश आदि के खेल में गोटी या पत्ते को दाँव पर डालने की क्रिया । ११ हलचल । घूम । आन्दोलन । १२ हिलने-डोलने का शब्द । आहत । खटका । १३ छप्पर । १४ सगीत में स्वर का आरोह अवरोह । १५ एक पक्षी ।

चालक-वि० चलानेवाला । सचालक । सज्ञा पु० १ धूर्त । छली । चाल चलनेवाला । २ नटखट हाथी । ३ नाच में भाव बताने की क्रिया । ४ होशियार कारीगर । मिस्त्री ।

चालचलन-सज्ञा पु० आचरण । व्यवहार । चरित्र ।

चालडाल-सज्ञा स्त्री० १ आचरण । व्यवहार । २ तौर-तरीका ।

चालन-सज्ञा पु० १ चलाने की क्रिया । २ चलने की क्रिया । गति । ३ भूसी या चोवर । छालन ।

चालनहार-सज्ञा पु० चलानेवाला । चलनेवाला ।

चालना\*†-त्रि० स० १. चलाना । २ एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना । ३ कार्य निर्वह करना । ४ घात उठाना । प्रसंग छेड़ना । ५ छानना । आटा चालना । फटवना ।

वि० अ० चलना ।

चालनी-सज्ञा स्त्री० चलनी । छलनी ।

चालबाज-वि० धूर्त । छली ।

चालबाजी-सज्ञा स्त्री० धूर्तता । चालाकी ।

चाला-सज्ञा पु० १ प्रस्थान । यूँच । रवानगी । २ नई बहू का पहले-पहल मायके से समुराल या मसुराल से मायके जाना । ३ यात्रा का मुहूर्त ।

चालाक-वि० १ [फा०] व्यवहार-कुशल । चतुर । दक्ष । २ धूर्त । चालबाज । चालाकी-सज्ञा स्त्री० १ चतुराई । व्यवहार-कुशलता । दक्षता । २ धूर्तता । चालबाजी । ३ युक्ति ।

चालान-सज्ञा पु० १ वीजक । रवना । भेजा हुआ माल या रुपया या उसका ब्यापार हिसाब । २ पुलिस-द्वारा अभियुक्तों या मुजरिमा का विचार के लिए अदालत में भेजा जाना ।

चालानदार-सज्ञा पु० १ चालान करनेवाला । २ जिसके पास चालान का कागज हो ।

चालानबही-सज्ञा पु० वह बही जिसमें बाहर से आनेवाले या बाहर जानेवाले माल का ब्योरा लिखा हो ।

चालिया-वि० दे० "चालबाज" ।

चाली-वि० १ चालिया । धूर्त । चालबाज । २ चंचल । नटखट ।

चालीस-वि० जा गिनती में बीस और बीस हो । ४० ।

सज्ञा पु० बीस और बीस की संख्या या धन ।

चालीसवाँ-वि० १. चालीस संख्या का । २

मुसलमानों का मृतक-उत्सव विशेष ।  
चल्लुम ।

चालीसा-सज्ञा पु० [स्त्री० चालीसी] १  
चालीस वस्तुओं का समूह । २ चालीस  
दिन का समय । चिल्ला । ३ चालीस  
वर्ष की आयुवाला । चालीस पद का काव्य,  
जैसे हनुमान-चालीसा ।

चाह-सज्ञा स्त्री० चहवा मछली ।  
चाबे-चाबे-सज्ञा पु० दे० "चाँये-चाँये" ।  
चाव-सज्ञा पु० १ प्रवल इच्छा । अभि-  
लाषा । लालसा । अरमान । २ प्रेम ।  
यनुराग । चाह । ३ शोक । उत्कठा ।  
४ लाह-प्यार । दुस्वार । ५ उमग ।  
उत्साह । ६ नीलवण्ट पक्षी ।

चावडी-सज्ञा स्त्री० चट्टी ।  
चावर-सज्ञा पु० चावल । रस्ती का आठवाँ  
भाग । छोटे-छोटे दाने ।

चावल-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध अन्न ।  
तड़ुल । २ पकाया चावल । भात ।  
३ एक रस्ती का आठवाँ भाग या उसके  
बराबर की तोल ।

चास-सज्ञा पु० खेती । कृषि । जोताई ।  
चासना-वि० अ० जोतना ।

चासनी या चाशिनी-सज्ञा स्त्री० १ चीनी  
या गुड का रंग । २ चसका । मजा ।  
३ नमूने का सोना जो सुनार को गहने  
प्रमाने के लिए सोना देनेवाला गाहक अपने  
पास रखता है ।

चाप-सज्ञा पु० १ नीलवण्ट पक्षी । २  
चाहा पक्षी । ३ आँख ।

चासा-सज्ञा पु० १ हलवाहा । हल जोतने-  
वाला । २ किसान । खेतिहर ।

चाह-सज्ञा स्त्री० १ चाब । इच्छा ।  
अभिलाषा । २ प्रेम । प्रीति । ३ पूछ ।  
आदर । ४ माँग । आवश्यकता ।

\*नसा स्त्री० खबर । गमाचार ।  
चाहर\*-सज्ञा पु० चाहनवाला । प्रेम करने-  
वाला ।

चाह-सज्ञा स्त्री० चाह । इच्छा । प्रेम ।  
चाह-वि० म० १ इच्छा करना । अभि-  
लाषा करना । २ प्रेम करना । प्यार

करना । ३ माँगना । ४ प्रयत्न करना ।  
कोशिश करना । \*५ देखना । ६ ढूँढना  
सज्ञा स्त्री० चाह । जरूरत ।

चाहा-सज्ञा पु० १ बगले की तरह का एक  
जल-पक्षी । २ ऐच्छित ।

चाहाचाही-सज्ञा स्त्री० परस्पर प्रीति ।  
अन्योन्य मैत्री ।

चाहि\*-अव्य० १ अपेक्षाकृत (अधिक) ।  
वनिस्वत । २ चाहकर । देखकर । इच्छा  
से । लालसा से । प्रेम से ।

चाहित-वि० इच्छित । अभिलषित ।  
चाहिता-सज्ञा स्त्री० चाही गई स्त्री ।

चाहिए-अव्य० उचित है । उपयुक्त है ।  
मुनासिब है ।

चाही-वि०, स्त्री० चहेती । प्यारी । जो  
चाही जाय ।

वि० [फा०] कुआँ-सम्बन्धी । वृष्टि के पानी  
से सींचे जानेवाली भूमि ।

चाहे-अव्य० १ अथवा । किंवा । वा । या ।  
इच्छा हो । २ यदि जी चाहे तो । जैसे  
जी चाहे । ३ होनेवाला हो ।

चिअरी-सज्ञा पु० चिंचा । इमली का बीज ।

चिउंटा-सज्ञा पु० एक कीड़ा जो मीठा पसन्द  
करता है ।

चिउटी-सज्ञा स्त्री० चीटी ।

मुहा०—चिउटी की चाल=बहुत सुस्ती से  
काम करना । मद गति । चिउटी के पर  
निबलना=ऐसा काम करना जिससे मृत्यु  
हो जाय । मरने पर होना ।

चिंगड-सज्ञा पु० एक प्रकार की मछली ।  
दे० 'चिंगडा' ।

चिंगडी या चिंगडी-सज्ञा पु० १ भीगा  
मछली । २ एक तरह का कीड़ा ।  
पनिगा ।

चिंगना-सज्ञा पु० किसी चिड़िया का छोटा  
बच्चा । मुर्गी का बच्चा । शिशु ।  
छोटा बच्चा ।

चिंगनी-सज्ञा स्त्री० मुर्गी का बच्चा ।

चिंगा-सज्ञा पु० मुर्गी का बच्चा ।

चिंगारी-सज्ञा स्त्री० चिंगारी ।

चिगुरना-वि० अ० नगों का मिश्रण ।

चिगुरा-मज्ञा पु० १ नगा की सिबुडन ।

२ एव प्रकार का वगुना ।

चिगुला-सज्ञा पु० १ बच्चा । बालक । २ किसी पक्षी का बच्चा ।

चिपाड-सज्ञा स्त्री० खूब जार की चिल्लाहट । चीख मारने का शब्द । हाथी का जोर से बालना ।

चिपाडना-प्रि० अ० जार से चिल्लाना । चीखना । हाथी का जोर से बोलना या चिल्लाना ।

चिप्पा-सज्ञा स्त्री० इमली । इमली का चिप्पा ।

चिचाटफ-मज्ञा पु० एक तरह का साग ।

चिचाम्ल-मज्ञा पु० एक तरह का साग ।

चिचिनी\*-मज्ञा स्त्री० इमली का पड़ या उसका फल ।

चिचो-सज्ञा स्त्री० गुजा । घुंघची ।

चिचोटक-मज्ञा पु० दे० 'चिचाटफ' ।

चिजा\*†-मज्ञा पु० लडका । बटा ।

चिजी-सज्ञा स्त्री० कन्या । बटी ।

चित-सज्ञा स्त्री० दे० चिता ।

चितक-वि० चितन करनेवाला । ध्यान रखनेवाला । सोचनेवाला ।

चितन-सज्ञा पु० ध्यान । विचार । मनन । विवेचना । बार बार याद करना ।

चितना\*-वि० स० साधना । ध्यान करना । मनन करना ।

सज्ञा स्त्री० ध्यान । स्मरण । सोच । चिता ।

चितनीय-वि० चिता करने योग्य । ध्यान करने योग्य । मनन या विचार करने योग्य । सद्विध ।

चितवन\*-सज्ञा पु० दे० चितन ।

चिता-सज्ञा स्त्री० १ ध्यान । भावना । २ सच । फिक्क । चिन्तन । चिन्ता की मुद्रा । ध्यान-मग्नता । साच की अवस्था ।

चिन्ताकुल या चिन्तातुर-वि० व्याकुल । चिन्तित । उद्विग्न या चिन्ता से व्याकुल ।

चिन्तान्वित-वि० चिन्तायुक्त । उदास ।

चिन्तातुर-वि० भावना-युक्त । चिन्तित ।

चिन्तामणि-सज्ञा पु० १ एव कल्पित रत्न जिससे विषय म प्रसिद्ध है कि उससे जो

अभिलाषा की जाय, वह पूर्ण कर देता है ।

२ ब्रह्मा । ३ परमेश्वर । ४ सरस्वती

का मन्त्र । ५ यात्रा का एव याग । कठ में

चिन्तामणि । ६ भैंसीवाला घोड़ा । ७

बैद्यक का एव रस-विशेष ।

चितावेश्म-सज्ञा पु० मन्त्रणागृह । गांड़ीगृह ।

सलाह मशविरा करने का बमरा या घर ।

चितित-वि० जिसे चिता हो । बिना युक्त । फिक्कमद । सीची ।

चितोडी-मज्ञा स्त्री० इमली ।

चित्य-वि० १ विचारणीय । विचार करने योग्य । २ सद्विध ।

चिदी-मज्ञा स्त्री० टुकड़ा । कपड़े का टुकड़ा ।

मुहा०-हिंदी की चिदी निकालना=अत्यन्त

सुख भूत निवाजना । कुतर्क करना ।

चिपा-सज्ञा पु० एक प्रकार का कीड़ा ।

चिपाजो-सज्ञा पु० एक प्रकार का वन-मानुष ।

चिउडा या चिउरा-सज्ञा पु० चूरा । चिबड़ा ।

चिउली-सज्ञा स्त्री० १. चिकना सुपारी । २

एक जंगली पड़ । ३ एव प्रकार का रेशमी

बगडा ।

चिक-सज्ञा स्त्री० बांस का बना हुआ परदा ।

चिलमन ।

मज्ञा पु० १ कसाई । २ कमर का दब

चमक । चिलक । भटका ।

चिबट-वि० १ मैला-कुचैला । २ लसीला

३ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

चिबटना-क्रि० अ० जमी हुई मैल के कारण

चिपचिपा होना ।

चिकटा-वि० १ दे० 'चिबट' । २ बदन

विशय । टसर का कपड़ा ।

चिकठा-सज्ञा पु० तेली । तेल बनानेवाला

जाति ।

चिकन-सज्ञा पु० महीन सूती कपड़ा ।

चिकनकारी-मज्ञा स्त्री० चिकन बना

काम ।

चिकनगर-सज्ञा पु० चिकन का काम करने

वाला । साफ सुथरा काम करनेवाला ।

चिकना-वि० [स्त्री० चिकनी] १ जो खु

दुरा न हो । साफ-सुथरा । २ सेवाय

हुआ । सुदर । ३. लप्पो-चप्पो करनेवाला । चाटुवार । सुसामदी । ४. स्नेही । प्रेमी ।

सज्ञा पुं० तेल, घी, चरबी आदि चिकने पदार्थ ।

मुहा०—चिकना धडा=निलेज्ज । बेहया । चिक्नी-चुपड़ी बातें=बनावटी स्नेह से भरी बातें । कृत्रिम मधुर भाषण ।

चिकनाई—सज्ञा स्त्री० १. चिक्नापन । चिक्नाहट । २. स्निग्धता । मरसता ।

चिकनाना—क्रि० सं० १. चिक्ना करना । स्निग्ध करना । २. माफ़ करना । भेंकारना ।

चि० अ० १. चिक्ना होना । २ स्निग्ध होना । ३. चरबी से युक्त होना । हृष्ट-भुष्ट होना । मोटापना । ४ स्नेह-युक्त होना ।

चिकनापन—सज्ञा पुं० चिक्ना होने का भाव । चिक्नाई । चिक्नाहट ।

चिकनावट—सज्ञा स्त्री० चिक्नापन । चिकनाहट—सज्ञा स्त्री० दे० “चिक्नापन” ।

चिकनिष्ठा—वि० छेला । मोकीन । बाँका । बनावटी ।

चिकनी—वि० स्त्री० दे० “चिक्ना” । चिक्नी गुपारी—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की जवाली हुई गुपारी ।

चिकनी मिट्टी—सज्ञा स्त्री० काली, पीली या सफेद रंग की मिट्टी ।

चिकरना—क्रि० अ० चीत्कार करना । चिघाड़ना । चीखना । चिल्लाना ।

चिकवा†—सज्ञा पुं० मांस बेचनेवाला बसाई । बूचड़ । एक प्रकार का रेसामी कपड़ा ।

चिकार—सज्ञा पुं० चीत्कार । चिल्लाहट । कोलाहल ।

चिकारा—सज्ञा पुं० [स्त्री० चिकारी] १ सारंगी की तरह का एक बाजा ।

२. हिरन की जाति का एक जानवर । ३. चीख । डरावना शब्द ।

चिकारी—सज्ञा स्त्री० १ मसा । २ फूहस्पन । चिकलना—क्रि० सं० मसलना । पीसना । चवाना । चूर करना ।

चिकवा—सज्ञा पुं० कनाई । माम बेचनेवाला । नजर गा बूचड़ ।

चिकित्सक—सज्ञा पुं० रोग दूर करनेवाला । वैद्य ।

चिकित्सा—सज्ञा स्त्री० [वि० चिकित्सक, चिकित्स्य] १. रोग दूर करना । इलाज ।

२. वैद्यकर्म । वैद्यकी । औषध करना ।

चिकित्सालय—सज्ञा पुं० अस्पताल । रोगियों की दवा करने का स्थान । औषधालय ।

दवाखाना । शफाखाना । चिकित्सा शास्त्र—चिकित्सा करने की विद्या या शास्त्र ।

चिकित्सु—सज्ञा पुं० वैद्य । आयुर्वेद-विद्या । चिकिल—सज्ञा पुं० कीचड़ ।

चिकीर्ष—सज्ञा पुं० अभिलाषी । चिकीर्षा—सज्ञा स्त्री० अभिलाषा ।

चिकीर्षित—वि० अभिलषित । चाहा हुआ । इष्ट । अभिप्रेत ।

चिकुटी\*—सज्ञा स्त्री० चिकोटी । चुटकी । चिकुर—सज्ञा पुं० १ केरा । बाल । कुन्तल ।

२ पर्वत । ३ साँप आदि रेंगनेवाले जंतु । ४ छछूंदर । ५ गिलहरी ।

६ वृक्ष-विशेष । ७ पक्षी-विशेष । वि० चंचल ।

चिकुला—सज्ञा पुं० चिड़िया का बच्चा । चिकोटी†—सज्ञा स्त्री० दे० “चुटकी” ।

चिकोर—वि० १. चंचल । चपल । तरल । २ चिपटी नाफवाला ।

चिकोरना—क्रि० सं० चींच से चिखेरना । चींच-याना । खरखोरना ।

चिक्क—सज्ञा पुं० छछूंदर । क्वरी । अज्ञा । आग ।

चिक्कट—सज्ञा पुं० कीट । तेलहा । गैल । वि० मैला-बूँचला । गदा ।

चिक्कण—वि० चिकना । सज्ञा पुं० १ गुपारी । २. हड । तेज आँच (आग) ।

चिक्कणा या चिक्कणी—सज्ञा स्त्री० १. गुपारी । २. हड ।

चिक्कन—वि० चिकना । चिक्कना—वि० चिकना । फिसलनदार ।

चिक्कनी—सज्ञा स्त्री० दक्खिनी गुपारी ।

चिक्करना-प्रि० अ० चीत्कार करना। जार से बिपाडना। चित्ताना।  
 चिक्कस-सज्ञा पु० १. पक्षियों के बैठने का वृत्तिमद्गुण। २. जो का घाटा। ३. तेल और हट्टी मिला हुआ जव का घाटा।  
 चिक्कहा-सज्ञा पु० यसाई। चिक्का।  
 चिक्का-सज्ञा पु० सुपारी। चक्का। चूहा।  
 चिक्कार-सज्ञा पु० चीत्कार। चिप्पाड। चिल्लाहट।  
 चिक्कर-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का चूरा। २. गिलहरी।  
 चिखर-सज्ञा पु० चने की भूसी। चने का छिलका।  
 चिखुरन-सज्ञा पु० निरापर खेत से निवाली गई धास।  
 चिखुरना-प्रि० स० जोते हुए खेत में से धास निकालना।  
 चिखुरा-सज्ञा पु० गिलहरी।  
 चिखुराई-सज्ञा स्त्री० चिखुरन की मजदूरी या काम।  
 चिखुरी-सज्ञा स्त्री० गिलहरी।  
 चिखौना-सज्ञा पु० स्वाद लेने की गिया। चखने की वस्तु।  
 चिचडा-सज्ञा पु० १. एक पौधा जो दवा के काम में आता है। अपामार्ग। शोभा। अभाकार। लटजीरा। २. दे० "चिचड़ी"।  
 चिचड़ी-सज्ञा स्त्री० एक कीड़ा जो चीपाया के शरीर में चिमटा रहता है और उनका खून पीता है। किलनी। किल्ली।  
 चिचान\*-सज्ञा पु० वाज पक्षी।  
 चिचिडा-सज्ञा पु० दे० "चचीडा"। तरकारी-विशेष।  
 चिचियाना-क्रि० अ० "चिल्लाना"। चीखना।  
 चिचिमाहट†-सज्ञा स्त्री० चिल्लाहट।  
 चिचिनी-सज्ञा स्त्री० इमली का पड़ या फल।  
 चिचुकना-प्रि० अ० दे० "चुचुका"।  
 चिचैडा-सज्ञा पु० तरकारी विशेष। चचीडा।  
 चिचोडना†-प्रि० स० दे० "चचोडना"।  
 चिजारा-सज्ञा पु० कारीगर। राज।

चिट-सज्ञा स्त्री० टुकड़ा। १. बागज या कपड़े का टुकड़ा। २. पुरजा। सका। छोटा पत्र।  
 चिटकना-प्रि० अ० १. फटना। २. लकड़ी का जलते समय 'चिटचिट' शब्द करना। ३. चिढ़ना। दरबाना।  
 चिटकाना-क्रि० स० १. बिमी सूखी हुई चीज का तोड़ना या तड़काना। २. खिन्नाना। चिड़ाना।  
 चिटका-सज्ञा पु० १. धिता। २. झुड़ हुआ। कुपित।  
 चिटकारा-सज्ञा पु० १. चिह्न। दाग। छीटा। २. पट्ट।  
 चिटनवीस-सज्ञा पु० लेखक। मुहरिर। पारिदा।  
 चिटकी-सज्ञा स्त्री० धूप। धाम। ताप। गर्मी।  
 चिट्टा-वि० सफेद। श्वेत।  
 सज्ञा पु० मूठा बड़ावा।  
 चिट्ठा-सज्ञा पु० १. हिमान की चही। साता। लेखा। २. वह बागज जिसपर वर्ष भर का हिसाब जांचकर नफा-नुकसान दिखाया जाता है। फर्द ३। किसी खम की सिलसिलेवार फहरिस्त। सूची। ४. मजदूरी या तनखाह के रूप में दिया जानेवाला रुपया। ५. खर्च की फहरिस्त।  
 मुहा०-कच्चा चिट्ठा=ऐसा सविस्तर वृत्तांत जिसमें कोई बात छिपाई न गई हो।  
 चिट्ठी-सज्ञा स्त्री० पत्र। खत।  
 चिट्ठी-पत्रो-सज्ञा स्त्री० १. पत्र। खत। २. पत्र-व्यवहार।  
 चिट्ठीरसी-सज्ञा पु० डाक बांटनेवाला। डाकिया।  
 चिड्डा-सज्ञा पु० गोरैया।  
 चिड-सज्ञा पु० चिड़। कुड़न। क्रोध। अरुचि।  
 चिडचिडा-सज्ञा पु० दे० "चिचडा"। एक पक्षी।  
 वि० शीघ्र चिड़नेवाला। तुनुकमिजाज।  
 चिडचिडाना-प्रि० अ० १. जलन में चिड़-चिड़ शब्द होना। २. सूखने पर जगह-जगह

से फटना । दरकना । ३. चिड़ना ।

चिड़ना-भुंभनाना ।

चिड़िया-संज्ञा पुं० चिउड़ा । चिउरा ।

चिड़ा-संज्ञा पुं० गौरा पक्षी । गौरैया का नर ।

चिड़ारा-संज्ञा पुं० डबरी ।

चिड़िया-संज्ञा स्त्री० १. पक्षी । पंछी ।

२. चिड़िया के आकार का । ३. ताश का एक रंग ।

मुहा०-चिड़िया का दूध=अप्राप्य वस्तु ।

सोने की चिड़िया=धन देनेवाला असामी ।

चिड़ियाखाना-संज्ञा पुं० वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पक्षी धीरे पशु देखाने के लिए रक्ते जाते हैं ।

चिड़िहार†\*-संज्ञा पुं० दे० "चिड़ीमार" ।

चिड़ो-संज्ञा स्त्री० दे० "चिड़िया" ।

चिड़ोमार-संज्ञा पुं० चिड़िया पकड़नेवाला ।

वहेलिया ।

चिड़-संज्ञा स्त्री० १. चिड़ने का भाव ।

अप्रसन्नता । कुड़न । खिजलाहट । २.

नफरत । घृणा ।

चिड़ना-क्रि० अ० १. अप्रसन्न होना ।

नाराज होना । भल्लाना । कुड़ना ।

२. द्वेष रखना । दुरा मानना ।

चिड़ाना-क्रि० स० १. अप्रसन्न करना ।

नाराज करना । खिझाना । कुड़ाना ।

२. किसी को कुड़ाने के लिए मुँह बनाया,

या इसी प्रकार की और कोई चेष्टा करना ।

३. उपहास करना ।

चित्-संज्ञा स्त्री० चेतना । ज्ञान ।

संज्ञा पुं० अग्नि चुननेवाला ।

चित-संज्ञा पुं० १. चित्त । मन । अन्तःकरण ।

२. सुध । स्मरण । ३. चितवन । दृष्टि ।

वि० पीठ के वल पड़ा हुआ । "पट" का

उलटा । ढका हुआ ।

मुहा०-चित करना=उलटना । उतान

गिराना । जीतना । हराना । पराजित करना ।

चित देना=ध्यान देना । मन लगाना ।

चितकबरा-वि० [ स्त्री० चितवनरी ]

किसी एक रंग पर दूसरे रंग के धागवाला ।

रंग-विरंगा । कबरा । चितला ।

चितचाय-वि० अभीष्ट । मनभावना ।

चितचेता-वि० मनमाना । जैचना । पसन्द आना ।

क्रि० अ० सावधान हुआ । चौकता हुआ ।

चितचोर-संज्ञा पुं० चित्त को चुरानेवाला ।

प्यारा । प्रिय ।

चितभंग-संज्ञा पुं० १. ध्यान न लगना ।

उबाट । उदासी । २. होश का ठिकाने

न रहना । मति-भ्रम ।

चितना-क्रि० स० रेंगा जाना । देखना ।

अवलोकन करना ।

चितरना\*-क्रि० स० चित्रित करना । चित्र

बनाना । रंगना ।

चितरोल-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिड़िया ।

चितरवा ।

चितला-वि० कबरा । चितकबरा । रंग-

विरंगा ।

संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का खरबूजा ।

२. एक प्रकार की बड़ी मछली ।

चितवन-संज्ञा स्त्री० दृष्टि । कटाक्ष ।

मजर । अवलोकन । देखना ।

चितवना†\*-क्रि० स० देखना । दर्शन करना ।

चितवाना-क्रि० स० दिखाना ।

चिता-संज्ञा स्त्री० लकड़ियों का ढेर, जिस

पर मुर्दा जलाया जाता है ।

चिताना-क्रि० स० १. सावधान करना ।

२. जताना । याद दिलाना । ३. आत्म-

बोध करना । ४. (आग) जलाना ।

सुलगाना ।

चिताभूमि-संज्ञा पुं० श्मशान । मरघट ।

चितावनी-संज्ञा स्त्री० दे० "चेतावनी" ।

१. सावधान करने की प्रिया । २. सावधान

करने के लिए कही गई बात ।

चिताशायी-वि० मुर्दा । मरा हुआ ।

चिति-संज्ञा स्त्री० १. चिता । २. समूह ।

ढेर । ३. चुनई । ४. चैतन्य । ५. दुर्गा ।

अग्नि का एक सस्कार ।

चितेरा-संज्ञा पुं० [स्त्री० चितेरिन] चित्र-

कार । चित्र बनानेवाला ।

चितौन-संज्ञा स्त्री० दे० "चितवन" ।

चितौना-क्रि० स० चितवना । देखना ।

चित्तोनि-सज्ञा स्त्री० चितयन । अवलोचन ।  
 चितोनी-सज्ञा स्त्री० चितावनी ।  
 चित्कार-सज्ञा पु० दे० "चीत्कार" ।  
 चित्त-सज्ञा पु० १. अतःकरण का एक भेद ।  
 २ अतःकरण । जी । मन ।  
 मुहा०-चित्त चढ़ना=दे० "चित्त पर चढ़ना" । चित्त चुराना=मन मोहना ।  
 मोहित करना । चित्त देना=ध्यान देना ।  
 मन लगाना । चित्त पर चढ़ना=१. मन में बसना । बार-बार ध्यान में आना ।  
 २ स्मरण होना । याद पड़ना । चित्त बैठना=चित्त एकाग्र न रहना । चित्त में धँसना, जमना या बैठना=१ हृदय में दृढ़ होना । मन में धँसना । २ समझ में आना । असर करना । चित्त से उतरना=१ ध्यान में न रहना । भूल जाना ।  
 २ दृष्टि से गिरना ।  
 चित्तगर्भ-वि० सुन्दर ।  
 चित्तज-सज्ञा पु० कामदेव ।  
 चित्तभूमि-सज्ञा स्त्री० योग में चित्त की अवस्थाएँ जो पाँच हैं—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एवाग्र और निरुद्ध ।  
 चित्तविक्षेप-सज्ञा पु० चित्त की बचल या अस्थिरता । उद्विग्नता । व्याकुलता ।  
 चित्तविभ्रम-सज्ञा पु० १ भ्रांति । भ्रम । भौंक्कापन । २ उन्माद ।  
 चित्तवृत्ति-सज्ञा स्त्री० चित्त की गति । चित्त की अवस्था ।  
 चित्तल-सज्ञा पु० एक प्रकार का मृग ।  
 चित्ता-सज्ञा पु० ओषध । पीछा-विशेष ।  
 चित्ती-सज्ञा स्त्री० १. छोटा दाग या चिह्न । धब्बा । धुँसकी । २ कौड़ी जिससे जुए के दाँव पँक्त हैं । टेंगो । ३. एक प्रकार का सोप ।  
 चित्तोद्वेग-सज्ञा पु० व्याकुलता । चित्त का उद्वेग । विरग्न । परेशानी ।  
 चित्तोन्नति-सज्ञा स्त्री० गर्व । अभिमान । प्रह्वार ।  
 चित्तोर-सज्ञा पु० मेवाड़ की प्राचीन राजधानी । राजपूताने का इतिहास प्रसिद्ध नगर और गढ़ ।

चित्र-सज्ञा पु० [वि० चित्रित] १. तिलक ।  
 २. तसवीर । ३. काव्य या एक भेद जिसमें व्यंग की प्रधानता नहीं रहती । अलंकार ।  
 ४ काव्य में एक प्रकार की रचना, जिसमें पद्यों के अक्षर इस श्रम से लिखे जाते हैं कि हाथी, घोड़े, सड़ग, रथ, कमल आदि के आकार बन जाते हैं । इसे चित्र-काव्य कहते हैं । ५ एक वर्णवृत्त । ६ आवाज । ७ एक प्रकार का कोढ़ । ८ चित्रगुप्त ।  
 ९ चीते का पेड़ । चित्रक ।  
 वि० १ अद्भुत । विचित्र । २ चित्त-ववरा । ३ रंग-विरंगा ।  
 मुहा०-चित्र उतारना=१ चित्र बनाना । तसवीर खींचना । २ वर्णन द्वारा दृश्य उपस्थित करना ।  
 चित्रक-सज्ञा पु० १ तिलक । २ चीते का पेड़ । ३ चीता । बाघ । ४ चिरायता । ५. रेंड का पेड़ । ६. मुचकुन्द का पेड़ । ७ चित्रवार ।  
 चित्रकण्ठ-सज्ञा पु० कबूतर । परेवा ।  
 चित्रकन्दक-सज्ञा पु० जिमीकन्द ।  
 चित्रकर-सज्ञा पु० १. चित्र बनानेवाला । २ तिनिश का पेड़ ।  
 चित्रकर्मी-सज्ञा पु० १. विचित्र काम करनेवाला चित्रकार । २ तिनिश वृक्ष ।  
 चित्रकला-सज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की विद्या । तसवीर बनाने का हुनर ।  
 चित्रकार-सज्ञा पु० चित्र बनानेवाला । चितेरा ।  
 चित्ररारी-सज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की कला । चित्रवार का काम ।  
 चित्रपाप-सज्ञा पु० चीता । बाघ । शेर ।  
 चित्रकाव्य-सज्ञा पु० एक प्रकार का काव्य । दे० "चित्र" ।  
 चित्रवृद्ध-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध पर्वत, जहाँ बनबाम के समय राम और सीता ने बहुत दिनों तक निवास किया था । २ चित्तोर ।  
 चित्रगध-सज्ञा पु० हस्ताक्ष ।  
 चित्रगुप्त-सज्ञा पु० चोदह सम्राजों में से एक, जो प्राणियों के पाप और पुण्य का

सेखा रखते हैं। यमराज के मन्त्री और कायस्थों के आदि-पुरुष। पुराणों में इनके विषय में लिखा है कि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अंग से हुई है। ब्रह्मा की आज्ञा से इनकी कायस्थ जाति निर्दिष्ट हुई। कार्तिक शुक्ल द्वितीया को इनकी पूजा होती है।

**चित्रजल्प**—संज्ञा पु० वह भावपूर्ण वाक्य जो नायक और नायिका रुठकर एक दूसरे से बहते हैं।

**चित्रदेवी**—संज्ञा स्त्री० इन्द्रा। वाष्णी।

**चित्रना\***—क्रि० स० चित्रित करना। तसवीर बनाना।

**चित्रपक्ष**—संज्ञा पु० तीतर नाम का पक्षी।  
**चित्रपट**—संज्ञा पु० १. जिस वस्तु पर चित्र बनाया जाय। चित्राधार। २. सिनेमा का फिल्म। ३. छीट।

**चित्रपर्णी**—संज्ञा पु० कनफोडा। मजीठ। जलपिप्पली। द्रोणपुष्पी।

**चित्रपदा**—संज्ञा स्त्री० एक छंद।

**चित्रफला**—संज्ञा स्त्री० १. ककड़ी। २. बैंगन।  
३. भटकटैया। ४. एक प्रकार की मछली।  
५. एक प्रकार की लता। महेंद्र वादणी।

**चित्रभानु**—संज्ञा पु० १. अग्नि। २. सूर्य।  
३. चीते का पेंड़। ४. अर्क। ५. भैरव।  
६. अश्विनीकुमार।

**चित्रभेषज**—संज्ञा पु० एक औषध।

**चित्रमद**—संज्ञा पु० नाटक आदि में किसी स्त्री का अपने प्रेमी का चित्र देखकर विरह-सूचक भाव दिखाना।

**चित्रमृग**—संज्ञा पु० एक प्रकार का चित्तीदार हिरन। चीतल।

**चित्रयोग**—संज्ञा पु० बूढ़े को जवान और जवान को बूढ़ा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला।

**चित्रघोषी**—वि० योद्धा।

संज्ञा पु० अर्जुन।

**चित्ररथ**—संज्ञा पु० १. सूर्य। २. एक गधर्व का नाम जिसके पास कई रंगों का रथ था।

**चित्रला**—वि० रंग-विरंगा।

**चित्रलिखित**—वि० चित्र में लिखा हुआ। निश्चेष्ट। चेष्टाहीन।

**चित्रलेखा**—संज्ञा स्त्री० १. एक वर्णवृत्त।

२. चित्र बनाने की कलम या कूची।

३. अम्बरा-विशेष।

**चित्रलेखन**—संज्ञा पु० सुन्दर लिखावट। चित्रकारी।

**चित्रलेखनी**—संज्ञा स्त्री० तसवीर बनाने की कूची।

**चित्रलेखी**—संज्ञा स्त्री० तसवीर बनाने की कूची।

**चित्रलोचना**—संज्ञा स्त्री० मैना। सारिका।

**चित्रविचित्र**—वि० १. रंग-विरंगा। बहुरंगी।  
२. बेल-बूटेदार। नक्काशीदार।

**चित्रविद्या**—संज्ञा स्त्री० चित्र बनाने की विद्या।

**चित्रवीर्य**—वि० अद्भुत बलवान्।

संज्ञा पु० लाल रेंड।

**चित्रशाला**—संज्ञा स्त्री० १. चित्र बनाने का स्थान। २. वह घर जहाँ चित्र रखे हो या रंग-विरंगी सजावट हो।

**चित्रसारी**—संज्ञा स्त्री० चित्रों से सजा हुआ कमरा। रंगमहल।

**चित्रस्थ**—वि० चित्र में अंकित किया हुआ। चित्र में अंकित व्यक्ति की तरह निर्जीव।

**चित्रहस्त**—संज्ञा पु० वार का एक हाथ। हथियार चलाने का एक हाथ।

**चित्रांग**—वि० जिसके अंग पर चित्तिर्या, धारियाँ आदि हो।

संज्ञा पु० १. चित्रक। चीता। २. एक प्रकार का सर्प। चीतल। ३. ईगुर। हस्ताल।

**चित्रांगद**—संज्ञा पु० १. महाराज शान्तनु के पुत्र और भीष्म पितामह के सोनेले भाई।  
२. गधर्व। विद्याधर।

**चित्रांगदा**—संज्ञा स्त्री० अर्जुन की स्त्री जो मणिपुर के राजा चित्रवाहन की कन्या थी।

**चित्रा**—संज्ञा स्त्री० १. एक नक्षत्र। २. पक्षी। ३. दत्ती नामक वृक्ष। ४. दूध-विशेष। ५. मजीठ। ६. वाय-विडंग। ७. अजवाइन। ८. संगीत में एक रागिनी। ९. एक वर्णवृत्ति।

एक नाड़ी । १० श्रीरूप की एक गणी  
का नाम । ब्रजागा । ११. एक नदी ।  
१२ समुद्र । ध्वज-विशेष । १३.  
चित्रकवरी गाय । १४. माया । माह ।  
अविद्या ।

चित्राक्षी—सज्ञा स्त्री० गारिका ।

चित्राष्टीर—सज्ञा पु० चन्द्रमा ।

चित्राधार—सज्ञा पु० चित्र सग्रह । वह पुस्तक  
जिममें अनेक प्रकार के चित्रों का सग्रह  
हो ।

चित्रिणी—सज्ञा स्त्री० वामनाथ के अनुगार  
स्त्रिया के चार भेदों में से एक ।

चित्रित—वि० १ चित्र में रीखा हुआ ।  
चित्र द्वारा दिखाया हुआ । २ जिस पर  
चित्र बने हा ।

चित्रेश—सज्ञा पु० चन्द्रमा ।

चित्रोत्तर—सज्ञा पु० एक धाम्यालवार  
जिममें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर या कई  
प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है ।

चित्रडा—सज्ञा पु० फटा-पुराना बपडा ।  
गूदड़ । लत्ता ।

चित्रडिया—वि० गूदड़िया । चिरकुटिया ।  
चिथड़ेवाला ।

चियाडना—क्रि० स० १ चीरना । फाडना ।  
लथाडना । २ अपमानित करना ।

चिद्—सज्ञा पु० चैतन्य । सजीव । जीवधारी ।  
चिदाकाश—सज्ञा पु० १ चैतन्य । २ आकाश ।  
३ ब्रह्म । परमात्मा ।

चिदात्मा—सज्ञा पु० ब्रह्म । ज्ञानमय आत्मा ।  
चैतन्यस्वरूप परब्रह्म ।

चिदानन्द—सज्ञा पु० ब्रह्म । चैतन्य और  
ज्ञानानन्दमय परमात्मा ।

चिदाभास—सज्ञा पु० १ चैतन्यस्वरूप पर-  
ब्रह्म का आभास या प्रतिबिम्ब जो अत-  
करण पर पड़ता है । २ जीवात्मा ।  
३ ज्ञान । ४ ज्ञान का प्रकाश ।

चिद्रूप—सज्ञा पु० ज्ञानमय या ज्ञानस्वरूप  
परमात्मा । ईश्वर ।

चिद्विलास—सज्ञा पु० चैतन्यस्वरूप ईश्वर की  
माया ।

चित्र—सज्ञा पु० एक पेड़ ।

चित्रक—सज्ञा स्त्री० जवन गहिर पद ।  
चुनुनाहट । दे० “चित्रा” ।

चित्रा—जलन । मृत्र नली की जवन धीन  
पीड़ा ।

चित्रागना—क्रि० प्र० १ टीयना । २ जलन  
होना । ३ चिन्ताना ।

चित्रागरी—सज्ञा स्त्री० दहती हुई  
भाग में से फूट-फूटकर उड़नेवाला मण ।  
धनिरण । स्फुटित ।

मृदा—श्रांया से चित्रागरी छूटना=बोध  
से धारों लाल होना ।

चित्रागो—सज्ञा स्त्री० १. धनिरण । चित्र-  
गारी । २ नटसट लडवा ।

चित्रचिनाना—क्रि० प्र० चित्ताना ।  
चीपना ।

चिनाना—क्रि० स० चुनवाना । जोडाई  
करना ।

चिनिया—वि० १. चीनी का बना हुआ ।  
चीनी के रंग का । सफेद । २ चीन देश  
का । ३. छाटा, जैसे-चिनिया केला  
आदि ।

चिनिया केला—सज्ञा पु० एक प्रकार का छोटा  
केला ।

चिनिया बदाम—सज्ञा पु० “भूंगफली” ।  
चिन्मय—वि० ज्ञानमय । चैतन्यमय ।  
सज्ञा पु० परमात्मा । परमेश्वर ।

चिह्न\*†—सज्ञा पु० दे० “चिह्न” । लक्षण ।  
पहचान । अंक । पताका ।

चिह्नवाना†—क्रि० स० दे० “चिह्नाना” ।  
पहचनवाना । लक्षण । पहचान करना ।  
यताना ।

चिह्नाना†—क्रि० स० पहचनवाना । परिचित  
कराना ।

चिह्नानी—सज्ञा स्त्री० १ निशानी । पहचान ।  
लक्षण । २ स्मारक । यादगार । ३  
रेखा । धारी । लकीर ।

चिह्नार†—वि० अपनी जान-पहचान का ।  
परिचित ।

चिह्नारी†—सज्ञा स्त्री० जान-पहचान ।  
परिचय ।

चिपकना—क्रि० प्र० दो वस्तुओं का परस्पर

जुडना । चिपक जाना । सट जाना । चिम-  
टना । लिपटना ।

चिपकाना—क्रि० स० १ दो वस्तुओं को  
सटाना । चिमटाना । चस्पा करना ।  
२ लिपटाना ।

चिपचिप—सज्ञा पु० वह शब्द जो किसी लस-  
दार चीज को छूने से होता है ।

चिपचिपा—वि० लसदार । लसीला ।  
सटनेवाला ।

चिपचिपाना—क्रि० अ० लसदार मालूम होना ।  
लसलसाना ।

चिपचिपाहट—सज्ञा स्त्री० लसीलापन ।

चिपटना—क्रि० अ० लिपटना । सटना ।  
चिपकना ।

चिपटा—वि० जिसकी सतह दबी हुई हो ।  
बंटा या धँसा हुआ । चपटा । सटा हुआ ।  
लिपटा ।

चिपटाना—क्रि० स० लिपटाना । आलिंगन  
करना ।

चिपटो—वि० दे० 'चिपटा' । १ धँसा  
हुआ । २ एक प्रकार की वाली ।

चिपडा या चिपडाहा—वि० कीचड़ भरी  
आँस । जिसकी आँख में कीचड़ हो ।

चिपडी, चिपरी—सज्ञा स्त्री० गोबर के  
पाय हुए चिपट टुकड़ा । उपली ।

चिप्क—दि० छिछला ।

सज्ञा पु० पक्षी-विशेष ।

चिप्कड़—सज्ञा पु० १ छोटा चिपटा टुकड़ा ।  
२ सूखी लकड़ी आदि के ऊपर की छाल  
पपड़ी ।

चिप्पा—सज्ञा पु० पैरन्द । जोड़ ।

चिप्पी—सज्ञा स्त्री० १ छोटा टुकड़ा । २  
उपली । गोहंठी । ३ पैरन्द । थिगरी ।  
४ सीधा तौलने का बटखरा । ५ सीधा ।

चिबावला—सज्ञा पु० लडकपन ।

चिबिला—वि० नटखट । चिलविला । चंचल ।

चिबुक—सज्ञा पु० बृश्म-विशेष । भुवकुन्द का  
वृक्ष । ठोड़ी । मोठ के नीचे का भाग ।

चिमगादड़—दे० "चमगादड़" ।

चिमचिमा—सज्ञा पु० तेल का मैल । तेलछट ।  
जमा हुआ तेल ।

चिमटना—क्रि० अ० १. चिपटना । सटना ।  
२ आलिंगन करना । लिपटना । ३  
गुथना । ४ पीछा न छोड़ना । पिंड  
न छोड़ना ।

चिमटा—सज्ञा पु० [स्त्री० चिमटी] लोहे की  
दो लंबी और लचीली पट्टियों का बना हुआ  
एक औजार । चिमटा ।

चिमटाना—क्रि० स० १ चिपकाना ।  
सटाना । २ लिपटाना ।

चिमटी—सज्ञा स्त्री० बहुत छोटा चिमटा ।

चिमडा—वि० चीमड । कड़ा ।

चिमडी—सज्ञा स्त्री० सूखी हुई । शुष्क । कड़ी ।

चिमनी—सज्ञा स्त्री० १. लम्प या लालटेन का  
शीशा । २. मकान में धुआँ बाहर निकलने  
का छेद ।

चिमोटी—सज्ञा स्त्री० छोटा चिमटा । एक  
औजार ।

चिरजीव या चिरजीवी—वि० १ चिरजीवी ।  
२ आशीर्वाद का शब्द । दीर्घायु हो ।

चिरटी—सज्ञा स्त्री० युवती ।

चिरतन—वि० पुराना । पुरातन । हमशा  
बना रहनेवाला । सदैव वर्तमान रहनेवाला ।

चिरवालीन । शाश्वत ।

चिर—वि० दीर्घकाल । बहुत दिनों तक  
रहनेवाला । सदा । सब समय ।

क्रि० वि० बहुत दिनों तक । सदैव वर्तमान ।

सज्ञा पु० एक औपष ।

चिरई—सज्ञा स्त्री० "चिडिया" ।

चिरकना—क्रि० अ० थोड़ा-थोड़ा मल निव-  
लना ।

चिरकाल—सज्ञा पु० दीर्घकाल । बहुत समय ।  
सदा । सब समय ।

चिरकालिक—वि० बहुत दिनों का । प्राचीन ।  
पुराना ।

चिरकालीन—वि० सदा बना रहनेवाला ।  
दे० "चिरन्तन" ।

चिरकीम—वि० गदा । मैला ।

चिरकूट—सज्ञा पु० फटा पुराना चपड़ा ।  
चिगड़ा । गूदड़ ।

चिरचिटा—सज्ञा पु० चिचटा । अपामार्ग ।  
एक प्रकार की धान ।

चिरचिरा-वि० चिहचिडा ।

सज्ञा पु० चिचडा ।

चिरजीवन-सज्ञा पु० १. दीर्घजीवी ।  
२. एक वृक्ष ।

चिरजीवन-सज्ञा पु० सदा बना रहनेवाला जीवन । अमर जीवन ।

चिरजीवी-वि० १. बहुत दिनों तक जीने वाला । २. अमर ।

सज्ञा पु० १ विष्णु । २ वीरा । ३ माण्डेय ऋषि । ४. अद्वैत्यामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य और परशुराम जो चिरजीवी माने गए हैं । ५ वृक्ष । सेमर ।

चिरना-क्रि० अ० १ फटना । सीध में बटना । २ लकीर के रूप में धाव होना । सज्ञा पु० चीरने का औजार । कुम्हारों का धारदार सोहा जिससे गरिया चीरते हैं ।

चिरनिद्रा-सज्ञा स्त्री० मृत्यु । मौत । हमेशा के लिए नींद यानी मृत्यु ।

चिरपृष्प-सज्ञा पु० मौलसिरी । वकुल ।

चिरवत्ती-वि० टुकड़ा । चिथड़ा ।

चिरमिटो-सज्ञा स्त्री० गुजा । घुँपची ।

चिरवाई-सज्ञा स्त्री० चिरवाने का कार्य या मजदूरी । पानी बरसने पर खेतों की पहली जोताई ।

चिरपाना-क्रि० स० चीरने का काम कराना । फड़वाना ।

चिरस्थायी-वि० बहुत दिनों तक रहनेवाला ।

चिरस्मरणीय-वि० १ बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य । २ पूजनीय ।

चिरहटा-सज्ञा पु० चिड़ीमार । वहेलिया ।

चिराई-सज्ञा स्त्री० चीरने की क्रिया या मजदूरी ।

चिराक-सज्ञा पु० दीपक । दीपा । दे० "चिराग" ।

चिराग-सज्ञा पु० [फा०] दीपक । दीआ । मुहा०-चिराग तले अंधरा=१ जहाँ जिस वस्तु की आशा न की जाय वहाँ उसका प्राप्त होना जैसे प्रकाश के साथ अंधरा । २ न्याय के साथ अन्याय—जैसे मन्दिर में अपमं ।

चिराप्रदान-सज्ञा पु० [फा०] दीपक । शमादान ।

चिराघी-सज्ञा स्त्री० [फा०] किसी पवित्र स्थान पर चिराग आदि जलाने का स्थल । मजार पर चढ़ाई जानेवाली भेंट ।

वि० जहाँ चिराग या दिया जले । जैसे चिरागी मोजा—बहु गाँव जहाँ आवादी हो ।

चिराटिका-सज्ञा स्त्री० चिरायना ।

चिरातन-वि० पुराना । पुरातन ।

चिराद-सज्ञा पु० माम भूतने की गध ।

चिराना-क्रि० म० चीरने का काम दूमरे से कराना । फड़वाना ।

वि० १ पुराना । २ जीर्ण ।

चिरायेंध-सज्ञा स्त्री० चमड़े या माम आदि के जलने से उत्पन्न दुर्गंध ।

चिरायता-सज्ञा पु० एक पीषा जो दवा के काम में आता है ।

चिरायु-वि० बहुत दिनों तक जीनेवाला । दीघायु । देवता ।

चिरारी-सज्ञा स्त्री० दे० "चिरौजी" ।

चिरिया-सज्ञा स्त्री० दे० "चिडिया" ।

चिरिहार-सज्ञा पु० दे० "चिड़ीमार" ।

चिरौ-सज्ञा स्त्री० दे० "चिडिया" ।

चिरु-सज्ञा पु० बाहु और कंधे का जोड़ । माडा ।

चिरंदा-सज्ञा स्त्री० दे० "चिडिया" । वर्षा का नक्षत्र ।

चिरौडो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सूखा फल या मवा । पियान वृक्ष के फलों के बीज की गिरी ।

चिरौरी-सज्ञा स्त्री० विनती । प्रार्थना । अनुनय । खुशामद ।

चिभटो-सज्ञा स्त्री० चन्डो ।

चिरौ-सज्ञा स्त्री० वृक्ष । बिजली ।

चिण-सज्ञा पु० पक्षी-विशेष । चील ।

चिलक-सज्ञा स्त्री० १ आभा । कानि । श्रुति । २ रह-रहकर उठनेवाला दर्द । टीस । चमक ।

चिलकना-क्रि० अ० १ चमचमाना । २ रह-रहकर दर्द उठना ।

चितका—सज्ञा पु० भारत के पूर्वी तट पर एक भौल ।

चितकाना†—क्रि० स० चमकाना । झलकाना ।

चितकी—सज्ञा पु० चमकता हुआ नया रुपया ।

चितग्रीवा—सज्ञा पु० (फा०) एक प्रकार का मेवा ।

चितचित—सज्ञा पु० अबरक । भोडल ।

चितचिलाना—क्रि० प्र० शोर मचाना ।

चितड़ा—सज्ञा पु० एक पक्षवान ।

चित्ता—सज्ञा पु० एक प्रकार का कवच ।

चित्तिल—सज्ञा पु० एक प्रकार का बड़ा जंगली पेड़ । एक तरह का बरसाती पौधा जो तालों में होता है ।

चितथिला, या चितविल्ला—वि० [स्त्री० चितविल्ली] चंचल । नटखट ।

चितम—सज्ञा स्त्री० मिट्टी का बरतन जिसमें तम्बाकू रखकर हुक्का पीते हैं ।

चितमची—सज्ञा स्त्री० हाथ आदि धोने का देग के आकार का बरतन ।

चितमबरदार—सज्ञा पु० हुक्का पिलानेवाला ।

चितम भरनेवाला नौकर ।

चितमबरदारी—सज्ञा स्त्री० चितम भरना ।

चितम पिलाना । चितम पिलानेवाले का काम ।

चितमत या चितवन—सज्ञा स्त्री० [फा०] याँस की नीलियों का परदा । चिव ।

चितमिलिहार—सज्ञा पु० १ गले में पहनने की एक प्रकार की माला । २ गुगनू । ३. विजली ।

चितबाँस—सज्ञा पु० बिड़िया पेंसाने का पदार्थ ।

चितहला—वि० पक्षित । कीचड़-युक्त । चिचड़ाहा ।

चितहोरना—क्रि० स० खानना । ठोकना ।

चितिक—सज्ञा स्त्री० मोच । ददं । चिलक ।

चित्तड—सज्ञा पु० जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफ़ेद काड़ा ।

चित्तपों—सज्ञा स्त्री० चिलना । शोर-गुल । पुकार । बुहारी ।

चित्तयाना—क्रि० म० चिन्ताने में दूसरों को प्रयत्न करना ।

चित्ला—सज्ञा पु० १ चारों दिनों का समय ।

२ चालीस दिन का मुसलमानी व्रत ।

३. एक जंगली पेड़ । ४ उड़द या मूँग आदि की रोटी । चीला । उलटा । ५. धनुष की डोरी । प्रत्यचा । ६ पगड़ी का छोर जिसमें कलावतू का काम रहता है ।

मुहा०—चित्ले का जाड़ा=बहुत कड़ी सरदी ।

चित्लाना—क्रि० प्र० जोर से बोलना ।

शोर करना । हल्ला करना ।

चित्लाहट—सज्ञा स्त्री० १ चिल्लाने का भाव । २ हल्ला । शोर । चीत्कार ।

चित्लिका—सज्ञा स्त्री० १ दोनों भोंहों के बीच का स्थान । २ बधुआ का साग ।

चित्ली—सज्ञा स्त्री० १ झिल्ली (कीड़ा) । २ विजली । ३. मूख । ४. बधुआ का साग ।

५. चील ।

चित्ली—सज्ञा स्त्री० चील ।

चिचि—सज्ञा स्त्री० दे० “चिचुक्” ।

चिचिट—सज्ञा पु० चिचड़ा ।

चिह्निका—क्रि० प्र० सनसनाना । खुशी में चिड़ियों का चहकना । बलरब करना ।

चिह्णना\*—क्रि० स० १ चुटकी वाटना । २ चिपटना । लिपटना ।

मुहा०—चित्त चिह्णना—मर्म स्पर्श करना । चित्त में चुभना ।

चिह्णनी—सज्ञा स्त्री० गुजार ।

चिह्ण्टी—सज्ञा स्त्री० चुटकी ।

चिह्णर\*—सज्ञा पु० बाल । पैरा । चिकुर ।

चिह्न—सज्ञा पु० १ निशान । २ पताका । ३ दाग । पच्चा ।

चिह्नित—वि० चिह्न दिया हुआ । जिसपर चिह्न हो ।

चौं, चौँचौं—सज्ञा स्त्री० पक्षियों अथवा छोटे-बच्चों का बहुत महीन शब्द ।

चौं-चपट—सज्ञा स्त्री० विरोध में कुछ बोलना ।

चौंदा—सज्ञा पु० दे० “चिउंदा” ।

चौंटी—सज्ञा स्त्री० चिउंटी ।

चौंयना—क्रि० स० पाटना । चिपटना ।

चौं-सज्ञा स्त्री० १ चीत्कार २ चित्लाहट ।

सज्ञा पु० पसाई । कीचट ।

चौंस्ट—सज्ञा पु० १ तेल की मीठ । तन-

छट । २. लसार मिट्टी । एक प्रकार का पपड़ा ।  
 वि० बहुत मैला ।  
 धीकड़-सजा पु० कीचड़ ।  
 धीरन-वि० चिक्का ।  
 धीरना-क्रि० प्र० १. पीड़ा या घट के कारण जोर से चिल्लाना । २. बहुत जोर से बोलना ।  
 धीरुर-सजा पु० कुएँ के ऊपर बना हुआ स्थान ।  
 धीर-सजा स्त्री० चीत्कार । चिल्लाहट ।  
 धीरना-क्रि० स० चिल्लाना । चरना । स्वाद लेना ।  
 धीरर, धीरल-सजा पु० कीचड़ ।  
 धीरुर-सजा पु० गिलहरी ।  
 धीर-सजा स्त्री० [पा०] १. पदार्थ । वस्तु । २. आभूषण । गहना । ३. गीत । ४. अद्भुत या महत्व की वस्तु ।  
 धीर-सजा स्त्री० मैला । मेल ।  
 धीर-सजा पु० दे० "चिट्ठा" ।  
 धीर-सजा स्त्री० दे० "चिट्ठी" ।  
 धीर-सजा पु० १. एक प्रकार का देशी साहा । २. एक वृक्ष । इस वृक्ष की लकड़ी ।  
 धीर-सजा पु० दे० "चीड़" ।  
 धीर-सजा पु० एक बहुत ऊँचा पेड़ जिसके गाँव से गधाविरोजा और ताड़पौन तेल निम्नलता है ।  
 धीर\*-सजा पु० १. मन । चित्त । २. चित्रा नक्षत्र । ३. सीसा धातु ।  
 धीरना-क्रि० स० (वि० चीता) १. सोचना । विचारना । २. स्मरण करना । चाहना । नसबीर या बेल-बूटे चित्रित करना ।  
 धीर-सजा पु० दे० "चीतल" ।  
 धीरल-सजा पु० १. एक प्रकार का हिरन जिसने शरीर पर सफेद रंग की चित्तियाँ होती हैं । २. एक प्रकार का चित्तीदार गोप ।  
 धीर-सजा पु० १. एक प्रसिद्ध हिंस्र पशु । २. एक पेड़ जिसकी छाल और जड़ औषध के काम में आती हैं । ३. होम । चेतना । चित्त ।

वि० विचारा हुआ ।  
 चीत्कार-सजा पु० चिल्लाहट । हल्ला । शोर ।  
 चीपड़ा-सजा पु० दे० "चियड़ा" ।  
 चीयना-क्रि० म० टुकड़े-टुकड़े करना । फाटना ।  
 चीन-सजा पु० १. भंडी । पतावा । २. सीसा । ३. तागा । सूत । ४. रेसमी कपड़ा । ५. एक प्रकार का हिरन । ६. साँवा । अन्न-विशेष । ७. भारत के उत्तर-पूर्व स्थित एक प्रसिद्ध देश । ८. चिह्न । ९. नाग ।  
 चीनना†-क्रि० स० पहचानना ।  
 चीनाशुक-सजा पु० १. रेसमी वस्त्र । २. चीन देश का बना हुआ वस्त्र-विशेष ।  
 चीना-सजा पु० १. चीन देशवासी । २. एक तरह का साँवा । चैना । ३. चीनी कपूर ।  
 वि० चीन देश का ।  
 चीनाक-सजा पु० एक तरह का कपूर (चीनी कपूर) ।  
 चीना बदाम-सजा पु० दे० "भूंगफली" ।  
 चीनिया-वि० १. चीन देश का । २. छोटा । ३. दे० "चिनिया" ।  
 चीनी-सजा स्त्री० शक्कर ।  
 वि० चीन देश का ।  
 चीनी कपूर-सजा पु० एक तरह का कपूर ।  
 चीनी मिट्टी-सजा स्त्री० एक प्रकार की सफेद मिट्टी ।  
 चीन्हा†-सजा पु० दे० "चिह्न" ।  
 चीन्हा-क्रि० स० पहचानना ।  
 चीन्हा-क्रि० स० पहचानना ।  
 सजा पु० चिह्न । निशान ।  
 चीप-सजा स्त्री० १. लकड़ी का टुकड़ा । चाप । रसदार । रस । २. एक बार पाचड़ा चलाने से निकली हुई मिट्टी ।  
 चीपड़-सजा पु० आँस का कीचड़ । आँस की मेल ।  
 चीमड़-वि० जो खींचने, मोड़ने या झुनाने आदि से न पड़े या टूटे ।  
 चीयाँ-सजा पु० दे० "चियाँ" ।

चौर-सज्ञा पु० १ कपडा (साडी) । २ पेड की छाल । ३ चिथडा । ४ गी का थन । ५ साधुओं के पहनने का कपडा । ६ धूप का पेड ।

सज्ञा स्त्री० १ चौरने की निया । २ चौरकर बनाया हुआ सिगाफ या दरार । ३ एक पत्ती । ४ चार लडियोंवाली मोतियों की माला । ५ सीसा धातु ।

चौर-चरम†\*—सज्ञा पु० बाघवर । मृगचर्म । मृगछाला । चौरचर्म ।

चौरना—क्रि० सं० फाटना । टुकड़े-टुकड़े करना ।

चौरफाड़—सज्ञा स्त्री० १ चौरने-फाटने का काम । २ शल्य-चिकित्सा ।

चौरवासा—सज्ञा पु० दिव ।

चीरा—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का लहरिए-दार रगीन कपडा जो पगडी बनाने के काम में आता है । २ गाँव की सीमा पर गाडा हुआ पत्थर । ३ चौरवर बनाया हुआ धाव ।

चीराबद—सज्ञा पु० चीरा बाँधनेवाला । वि० कुमारी ।

चीरिया—सज्ञा स्त्री० भीमुर । भिल्ली ।

चीरो†\*—सज्ञा पु० १. चिडिया । २. भीमुर । ३ एक मछली । ४. चीठ ।

चौरता—सज्ञा पु० दे० "चिरायता" । अप्रिय-विशेष ।

चीर्ण—वि० फटा हुआ । छिड़ीर्ण ।

चीर्णवर्ण—सज्ञा पु० १ पुराने पत्ते । २ निम्न वृक्ष ।

चीत—सज्ञा स्त्री० एक बड़ी चिडिया ।

चीतर—सज्ञा पु० जूँ के आकार का एक सफ़ेद पीठा, जो गंद कपड़ों में डाला है । चीलडा ।

चीतवा—सज्ञा पु० पत्रचान ।

चीता—सज्ञा पु० एक तरह का पत्रचान ।

चीह—सज्ञा स्त्री० दे० "चील" ।

चीहवा—सज्ञा पु० भिल्ली ।

चीहली—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का तंत्रोपचार जो बावरी के अत्याचार्य स्वामी पढ़ती है ।

चीजर—सज्ञा पु० १. वीरिन । सन्ध्यागिरि

वा वस्त्र । २. वीद्ध सन्ध्यासियों के पहनने का वस्त्र ।

चीवरी—सज्ञा पु० १ वीद्ध भिक्षुक । २. भिक्षुक । भिक्षमगा ।

चीस—सज्ञा स्त्री० टीस । वस्त्र ।

चीह—सज्ञा स्त्री० चीत्कार ।

चुंगना—क्रि० सं० दे० "चुंगना" ।

चुंगल—सज्ञा पु० १. चगुल । २ पजा ।

मुहा०—चगुल में फँसना=बन्ध में आना ।

चुंगना या चुंगवाना—क्रि० सं० चिडियों को दान, खिलाना ।

चुगी—सज्ञा स्त्री० १ चुटकी भर चीज । २ महसूल ।

चुगीघर—सज्ञा पु० जहाँ चुगी वसूल की जाती है ।

चुंगाना—क्रि० सं० चुसाना ।

चुच—सज्ञा पु० चोख ।

चुचक—सज्ञा पु० भेंड । मेप ।

चुचु—सज्ञा पु० छल्लूँदर ।

चुटली—सज्ञा स्त्री० धुँबची ।

चुटा—सज्ञा स्त्री० कूप ।

चुडा—सज्ञा पु० कूआ । कूप ।

चुडित\*—वि० चुटियावाला । चुडीवाला ।

चुडी—सज्ञा स्त्री० हूती ।

चुदरी—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपडा ।

चुदी—सज्ञा स्त्री० १ शिखा । चुटैया । २ कूटनी । हूती ।

चुंघलाना—क्रि० प्र० जीभना । जड़-पौधे होना ।

चुघा—वि० (स्त्री० चुघी) १ जिसे मुभाई न पड । २ छोटी आँखोवाला ।

चुंघियाना—क्रि० प्र० दे० "चुंघलाना" । आँखों का तिलमिलाना ।

चुबरु—सज्ञा पु० १ चुबन करनेवाला । २ याम्ब । वामी । ३ पूत । ४ स्यों की मेचल इधर-उधर उलटनेवाला ।

५ एक प्रकार की धातु जिसमें लोह की अपनी भीर आकर्षित करने की शक्ति होती है । ६ पाँत ।

चुबपत्थर—सज्ञा पु० चुबन पत्थर का वह गुण जिससे यह साँह की अपनी तन्म सागना है ।

चुबन-गज्ञा पु० चुम्मा। बीसा।  
 चुबना-वि० म० चुम्ना। छुना।  
 चुबित-वि० १ चुम्मा हुआ। २. स्पर्श  
 किया हुआ।  
 चुबो-वि० चुम्ननेवाला।  
 चुभना-वि० अ० टपाना। चुना।  
 चुभ्रा-गज्ञा पु० १. एा प्रकार का गेहूँ। २.  
 एक गुग्गुलि द्रव्य। ३. घाँट में स्थान पर  
 रखा जानेवाला ककड पत्थर। ४. माँ।  
 चुभ्राई-गज्ञा स्त्री० चुभाने या टपवाने की  
 क्रिया।  
 चुभ्रान-गज्ञा स्त्री० १ चुना। क्षरण।  
 २ नहर। ३ जल निकलने की भूमि।  
 ४ खाई।  
 चुभ्राना-वि० स० १ टपवाना। बूँद-बूँद  
 गिराना। \* २ चुपडना। रसमय करना।  
 भयंके से अर्क उतारना।  
 चुकदर-गज्ञा पु० [फा०] गाजर की तरह  
 ली एक तरकारी।  
 चुक-गज्ञा पु० दे० "चूक"।  
 चुकचुधाना-वि० अ० १ किसी द्रव पदार्थ  
 का छेद से होकर बाहर आना। २  
 परीक्षण।  
 चुकटा या चुकटो-गज्ञा पु० दे० "चुटकी"।  
 चुकता-वि० वेदाक। निरोप। अदा।  
 वर्ज या उधार की पूरी अदायगी।  
 चुकती-वि० दे० "चुक्ती"।  
 चुकना-वि० अ० १ समाप्त होना। २  
 बर्नाक होना। अदा होना। चुक्ता होना।  
 ३ निपटारा। \* ४ चुनना। भूल करना।  
 घुटि करना। ५ \* व्यर्थ होना।  
 चुकवाना-वि० स० वेदाक कराना। दिलाना।  
 चुक्ता कराना।  
 चुकई-गज्ञा स्त्री० चुवाने या चुक्ता होने  
 का भाव।  
 चुकाना-वि० स० १ अदा करना। वेदाक  
 करना। २ निवदाना।  
 चुकिया-गज्ञा स्त्री० कुल्हिया।  
 चुकोता-गज्ञा पु० शृण की चुकाई। निपटाना।  
 चुकड-गज्ञा पु० पुरवा।  
 चुक्क-गज्ञा पु० भूल।

चुक्कार-गज्ञा पु० गर्जन। गूब जोर में दब  
 करना।  
 चुक्की-गज्ञा स्त्री० धोपा। धूँतता।  
 चुक्ती-गज्ञा स्त्री० १. नियम। निरूपण। २.  
 परिणाम। ३. चुपनी।  
 चुत्र-गज्ञा पु० १. एक प्रकार की मंडाई।  
 चूक। सट्टा रम। २. एक साग।  
 चुक्षा-गज्ञा स्त्री० हिगा।  
 चुलाना-वि० स० कुहते समय यद्धडे की रूप  
 पिलाना। चलाना।  
 चुपद-गज्ञा पु० [फा०] १ उल्लू पक्षी। २.  
 मूर्ख। वेवकूफ।  
 चुगना-वि० स० चिड़ियों का चाव से दाना  
 उठाकर खाना। बिनना।  
 चुपल-गज्ञा पु० पीठ पीछे सिंवायत करने-  
 वाला।  
 चुपलछोर-गज्ञा पु० [फा०] पीठ पीछे  
 सिंवायत करनेवाला। सुतरा।  
 चुपलछोरी-गज्ञा स्त्री० [फा०] चुगली करने  
 का वाम।  
 चुगलाना-वि० स० मुँह में लेकर धीरे धीरे  
 आस्वादन करना। चुभलाना।  
 चुगली-गज्ञा स्त्री० [फा०] पीठ पीछे  
 सिंवायत।  
 चुगा-गज्ञा पु० चिड़ियों का चारा। चोगा।  
 चुगाई-गज्ञा स्त्री० चुगने या चुगाने की क्रिया।  
 चुगाना-वि० स० चिड़ियों को दाना या चारा  
 डालना।  
 चुगल\*†-गज्ञा पु० दे० "चुगल"।  
 चुगा-गज्ञा पु० चोगा।  
 चुग्गी-गज्ञा स्त्री० चाट।  
 चुक्कारना-वि० स० चुमवारना। चुक्का-  
 रना।  
 चुक्कारी-गज्ञा स्त्री० [अनु०] चुक्कारने की  
 क्रिया।  
 चुक्कना† या चुपक्कना-वि० अ० १ सुखना।  
 २ ऐसा सूखना जिसमें भूरियाँ पड  
 जायें।  
 चुपाना-वि० अ० चुना। टपवाना। निचो-  
 डना।  
 चुचुप्राना-वि० अ० चुना। टपवाना।

चुचुक-सज्ञा पु० कुचाग्र भाग । स्तन का अगला भाग ।

चुटकी-सज्ञा पु० कोड़ा । चाबुक ।

सज्ञा स्त्री० चुटकी ।

चुटपना-क्रि० सं० १ कोड़ा या चाबुक मारना । २ चुटकी से तोड़ना । ३ साँप काटना ।

चुटका-सज्ञा पु० १ बड़ी चुटकी । २ चुटकी भर आटा ।

चुटकी-सज्ञा स्त्री० १ अँगूठे या उँगली से किसी वस्तु को पकड़ना या दबाना ।

२ थोड़ा आटा । ३ चुटकी बजने का शब्द । ४ अँगूठे और तर्जनी के सयोग से किसी प्राणी के चमड़े को दवाने या पीड़ित करने की क्रिया । ५ एक प्रकार का गीटा । ६ पेंचकड़ा । ७ एक गहना ।

मुहा०-चुटकी बजाना=अँगूठे और बीच की उँगली से शब्द निकालना । चुटकी बजाते=चटपट । देखते-देखते । बात की बात में । चुटकी भर=बहुत थोड़ा । जरा सा । चुटकिया में=बहुत शीघ्र । चटपट । चुटकियो में उड़ाना=अत्यंत लुच्छ या सहज समझना । कुछ न समझना । चुटकी माँगना=भिक्षा माँगना । चुटकी भरना=चुमनी बात कहना । चुटकी लना=१ हँसा उड़ाना । दिल्लगी उड़ाना ।

२ चुमती या लगती हुई बात कहना ।

चुटकुला या चुटकुला-सज्ञा पु० १ मजदार बात । विनीदपूर्ण बात । २ लटका । चमत्कारपूर्ण उक्ति ।

मुहा०-चुटकुला छोड़ना=१. दिल्लगी की बात करना । २. काट्टे ऐसी बात कहना जिससे एक नया मामला खड़ा हो जाय ।

चुटला-सज्ञा पु० एक गहना । वेणी ।

वि० चुटीला ।

चुटफुट-सज्ञा स्त्री० फुटवर वस्तु । छुट-फुट ।

चुड़ाना-क्रि० अ० चोट लगाना । घायल होना ।

चुड़िया-सज्ञा स्त्री० शिखा । चुड़ी ।

चुड़ीलना-क्रि० सं० चोट करना । चोट पहुँचाना ।

चुड़िया-सज्ञा पु० २ चोट करना ।

चुड़ीला-वि० १ घायल । आहत । क्षत विक्षत । २ भडकदार । बड़िया ।

सज्ञा पु० पतली चोटी । मेंढी ।

चुटल-वि० १ जिसे चोट लगी हो । २ चोट बरनेवाला ।

चुड़िया-सज्ञा पु० चुड़ी ।

चुड़िहारा-सज्ञा पु० [स्त्री० चुड़िहारि] चुड़ी बचनेवाला या बनानेवाला ।

चुड़वा-सज्ञा पु० चीउडा । चवण ।

चुड़ल-सज्ञा स्त्री० १ डायन । प्रेतनी ।

पिशाचिनी । २ कुरूप स्त्री ३ क्रूर स्वभाव की स्त्री । दुष्टा ।

चुन-सज्ञा पु० चुरा । आटा ।

चुनचुना-वि० जिसके छूने या खाने से चुनचुनाहट हो ।

सज्ञा पु० मुहाने सफेद कीड़े ।

चुनचुनाना-क्रि० अ० १ कुछ जलन लिये हुए चुमने की-सी पीड़ा होना । २ खुजलाहट । ३ चीन्ची करना । छिनकना ।

चुनचुनाहट-सज्ञा स्त्री० शरीर पर कुछ जलन लिय चुमने की-सी पीड़ा ।

चुनचुनी-सज्ञा स्त्री० खुजलाहट । एक कीड़ा ।

चुनट या चुनत-सज्ञा स्त्री० दे० "चुनत" ।

चुनत-सज्ञा स्त्री० कपड़, कागज आदि पर की सिकुड़न । सिलवट । शिकन । चुनट । तह । परत ।

चुनता-क्रि० सं० १ छाँट-छाँटकर अलग करना । २ पसन्द करके लना । वीनना । ३ तरतीब से लगाना । सजाना । ४. जोड़ाई करना । दीवार उठाना । ५ कपड़े में चुनन या शिकन डालना ।

मुहा०-दीवार में चुनना-किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके ऊपर ईटा की जोड़ करना ।

चुनरी-सज्ञा स्त्री० बुंदकीदार रंगीन वस्त्र । साडी । चुंदरी ।

चुनया-सज्ञा पु० १ खड्वा । २ शिष्य । वि० यक्षिया ।

चुनवाना-क्रि० सं० दे० "चुनाना" ।

चुनाई-सज्ञा स्त्री० १ चुनने की क्रिया ।

२. दीवार की जोड़ाई या उसका ढग ।  
३. चुनने की मजदूरी ।

चुनाना-त्रि० स० १. चुनने का काम दूसरे से करना । २. विनयाना । ३. टूटें णुडवाना । ४. डीपना या सोपना ।

चुनाव-सज्ञा पु० १. चुनने या चुने जाने की क्रिया । २. बहुतों में से कुछ को किसी कार्य के लिए चुनना ।

चुनावट-सज्ञा स्त्री० चुनट । तह । परत ।  
चुनिदा-वि० १. चुना हुआ । छेड़ा हुआ ।  
२. यष्टिया ।

चुनी-सज्ञा स्त्री० दे० "चुप्पी" ।  
चुनैटी-सज्ञा स्त्री० दे० "चुनीटी" ।

चुनोटी-सज्ञा स्त्री० चुना रखने की ढिविया ।  
चुनोती-सज्ञा स्त्री० १. उत्तेजना । बढावा ।  
चिट्ठा । २. युद्ध के लिए आह्वान । लल-  
कार । प्रचार ।

चुनट या चुनत-सज्ञा दे० "चुनट" ।

चुप्पी-सज्ञा स्त्री० १. बहुत छोटा नग ।  
२. अनाज का चूर । ३. लकड़ी के छोटे-  
छोटे टुकड़े । कुनाई । ४. चमकी ।  
सितारा । ५. मोटनी ।

चुप-वि० १. खामोश । शब्द-रहित । अन-  
बोल । अवाक् । २. शान्तभाव से । चंचलता-  
रहित । ३. निश्चय । प्रयत्नहीन ।  
सज्ञा स्त्री० भीनावलवन । न बोलना ।

चुपका-वि० [ स्त्री० चुपकी ] मौन । खामोश ।  
मुहा०-चुपके से= १. बिना कुछ कहे सुने ।  
२. गुप्त रूप से । धीरे से ।

चुपकी-सज्ञा स्त्री० खामोशी । चुपचाप ।  
चुपचाप-क्रि० वि० १. खामोशी के साथ ।  
शान्त भाव से । २. छिपे-छिपे । गुप्त  
रीति से । ३. बिना विरोध में कुछ कह ।  
बिना ची-चपड के ।

चुपड़ना-क्रि० स० १. किसी गीली वस्तु  
का लेप करना । पोतना । जैसे—रोटी  
में धी चुपड़ना । २. दोष छिपाना ।

३. चिपनी-चुपड़ी कहना । चापलूसी करना ।  
चुपान†-वि० अ० अ० चुप हो रहना । बोलना ।

चुप्पा-वि० [ स्त्री० चुप्पी ] बहुत कम बोलने-  
वाला । मुन्ना ।

चुप्पी-सज्ञा स्त्री० मौन । खामोशी ।  
चुबलना-त्रि० स० धीरे-धीरे स्वाद लेना ।  
दे० "चुभलाना" ।

चुभयना-त्रि० अ० गोता पाना । चार-चार  
हुक्की सना ।

चुभयाना-त्रि० स० पानी में गोता देना ।

चुभवी-सज्ञा स्त्री० गोता । हुक्की ।

चुभना-त्रि० अ० १. गडना । धँसना ।  
विधना । २. हृदय में सदयना । मन  
में व्यथा उत्पन्न करना । ३. मन में  
बैठना ।

चुभलाना-त्रि० स० मुँह में किसी वस्तु को  
रखकर धीरे-धीरे आस्वादन करना ।  
चुबलाना ।

चुभाना, चुभोना-त्रि० स० धँसाना ।  
गडाना ।

चुमकार-सज्ञा स्त्री० पुचकार । चुमकार का  
शब्द । आस्वादन देना । हुलार ।

चुमकारना-त्रि० स० प्यार दिखाने के लिए  
चूमने का-सा शब्द निकालना । पुचकारना ।  
हुलारना ।

चुम्मा-त्रि० स० १. किसी दूसरे का चुम्मा  
दिलवाना । २. विवाह की एक रीति ।

चुम्बक-सज्ञा पु० दे० "चुबक" ।

चुम्बक-सज्ञा पु० दे० "चुबक" ।

चुम्बा-सज्ञा पु० दे० "चुम्मा" ।

चुम्बित-वि० चूमा हुआ ।

चुम्मा†-सज्ञा पु० चूमा । चुबन । होठ से  
होठ छूना ।

चूर-सज्ञा पु० वाघ आदि के रहन का स्थान ।  
माँद । बैठक ।

\*वि० बहुत । अधिक । प्रचुर । मुडने या  
टूटने का शब्द ।

चुरकना-क्रि० अ० १. चहकना । चह-  
चहाना । ची-ची करना (व्यग्य या तिर-  
स्कार) । †२ चटकना । टूटना । चूर  
होना ।

चुरकी†-सज्ञा स्त्री० शिखा । चुटिया ।  
चिवूर ।

चुरकट, चुरकुरा-वि० चपनाचूर । चूर-चूर ।  
मुकनी ।

चुरगना—क्रि० अ० बोलना ।  
 चुरचुरा—वि० जो खरा होने के कारण जरा-सा दवाने पर चुरचुर शब्द करके टूट जाए ।  
 चुरचुराना—क्रि० अ० चुरचुर शब्द करना ।  
 क्रि० स० चूरचूर करना । चुरचुर शब्द उत्पन्न करना ।  
 चुरट—सज्ञा पु० दे० “चुरट” ।  
 चुरना—क्रि० अ० १. आँच पर किसी वस्तु का पकना । सीकना । २. आपस में गुप्त गद्यया या बातचीत होना ।  
 चुरमुर—सज्ञा पु० खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द ।  
 चुरमुरा—वि० जो दधाने पर चुर-चुर शब्द करके टूट जाय । चुर-चुर करनेवाला । चुरचुरा ।  
 चुरमुराना—क्रि० अ० चुरमुर शब्द करके टूटना ।  
 क्रि० स० १. चुरमुर शब्द करके तोड़ना । २. खरी चीज चवाना ।  
 चुरवाना—क्रि० स० १. पकाने का काम कराना । २. दे० “चोरवाना” ।  
 चुरस—सज्ञा स्त्री० चुनट ।  
 चुरा—\*—सज्ञा पु० दे० “चूरा” । चुरादा ।  
 चुराई—सज्ञा स्त्री० १. चुराने की क्रिया । २. पकाने का कार्य ।  
 चुराना—क्रि० स० १. चोरी करना । २. लोगों की दृष्टि से बचाना । छिपाना । काम करने में कसर करना । ३. पकाना । सिक्काना ।  
 मुहा०—चित्त चुराना=मन मोहित करना ।  
 आँस चुराना=नजर बचाना । सामने मुँह न करना ।  
 चुरिहारा—सज्ञा पु० दे० “चुडिहारा” ।  
 चुरी—\*—सज्ञा स्त्री० चुडी ।  
 चुड़—\*—सज्ञा पु० दे० “चुल्लू” ।  
 चुरगना—क्रि० अ० बड़बड़ाना । बचना ।  
 चुरट—सज्ञा पु० सिगार । तम्बाकू के पत्ते जो उसके धूर की मोटी बत्ती जिसे लोग जलाकर पीते हैं ।

चुल—सज्ञा स्त्री० किसी अंग के मले या सहलाए जाने की दृष्टि । खुजलाहट ।  
 चुलकना—क्रि० अ० बिलबिलाना । चुलचुल करना । खुजाना ।  
 चुलचुल—सज्ञा पु० चंचलता । चपलता ।  
 चुलचुलाना—क्रि० अ० १. खुजलाहट होना । २. दे० “चुलचुलाना” ।  
 चुलचुलाहट—सज्ञा स्त्री० दे० “चुल” ।  
 चुलचुली—सज्ञा स्त्री० चुल । खुजलाहट ।  
 चुलबुल—सज्ञा स्त्री० चपलता । चुलबुलाहट ।  
 चुलबुला—वि० [स्त्री० चुलबुली] १. चंचल । चपल । २. नटखट ।  
 चुलबुलाना—वि० अ० १. चुलबुल करना । २. चंचल होना । चपलता करना । स्थिर न बैठना ।  
 चुलबुलापन—सज्ञा पु० चंचलता । चपलता । शीघ्री ।  
 चुलबुलाहट—सज्ञा स्त्री० चंचलता ।  
 चुलबुलिया—वि० चुलबुल । चंचल ।  
 चुलहाई—वि० कामी । लम्पट । व्यभिचारी ।  
 चुलहारा—वि० कामातुर ।  
 चुलाना—क्रि० स० दे० “चुवाना” । टपकाना । गिराना ।  
 चुलाब—सज्ञा पु० १. चुलाने का भाव । २. पुलाव (भात-रहित) ।  
 चुल्ला—सज्ञा पु० काँच का छोटा छल्ला । वि० चिलबिला ।  
 चुलियाला—सज्ञा पु० एक मानिक छद्म ।  
 चुल्लू—सज्ञा पु० भारी दलदल । कीचड़ । चुल्लू ।  
 चुल्ला, चुल्ली—वि० चुलमुला । पाजी । शरारती ।  
 सज्ञा पु० काँच का छोटा छल्ला ।  
 चुल्लू—सज्ञा पु० गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें ।  
 मुहा०—चुल्लू भर पानी में डूब मरो=मुँह न दिलाओ । लज्जा के मारे मर जाओ ।  
 चुपना—\*—क्रि० अ० दे० “चूना” ।  
 चुवाना—क्रि० स० बूंद-बूंद करके गिराना । टपकाना ।

चुसनी-मज्ञा स्त्री० १. घाँट से लगाकर थोड़ा-थोड़ा पीना। मुटय। घुँट। दम। २. मद्य पीने का पात्र।

चुसना-प्रि० अ० १. चूसा जाना। २. निषृणु जाना। ३. साग्रहीत होना। चुसनो-मज्ञा स्त्री० १. बच्ची का एक खिलौना। २. दूध पिलाने की दोशी। चुसाना-प्रि० स० चूगने का काम दूसरे से कराना।

चुसयाना-प्रि० ग० दे० "चुसाना"। चुस्त-वि० १. बसा हुआ। जो ढीला न हो। २. जिनमें धातुस्य न हो। पुरतीला। चुस्ती-मज्ञा स्त्री० १. पुरती। तंजी। २. बसावट। तगी। ३. दृढ़ता।

चुस्ती-सज्ञा स्त्री० किसी पत्र का रस। चुहंटी-सज्ञा स्त्री० चुटकी।

चुहचुहा-वि० [स्त्री० चुहचुही] १. चुह-चुहाता हुआ। मनोहर। चटकीला। गहरा रंगी हुआ। २. रसीला।

चुहचुहाता-वि० रसीला। सरस। रंगीला। मजदार।

चुहचुहाना-प्रि० अ० १. रस टपकना। चटकीला लगना। २. चिड़िया का बोलना। चहचहाना।

चुहचुही-सज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया। फुलचही।

चुहटना-प्रि० स० रौंदा। कुचलना।

चुहडा-सज्ञा पु० भगी।

चुहना-प्रि० स० चुसना।

चुहल-सज्ञा स्त्री० हंसी। ठठोली। मनोरंजन।

चुहलबाज-वि० मसखरा। दिल्लगीबाज।

चुहलबाजी-सज्ञा स्त्री० दिल्लगी। मसखरापन।

चुहला-सज्ञा पु० [स्त्री० चुहली] दे० "चुहलबाज"। हँसोड।

चुहाबती-सज्ञा स्त्री० एक गहना।

चुहिपा-सज्ञा स्त्री० चूहा की मादा। छोटा चूहा।

चुहिल-वि० रमणीक।

चुहुटना-प्रि०-कि० स० दे० "चिमटना"।

चुहुटना-मज्ञा स्त्री० दे० "चिरमिटी"। चुहुवना-प्रि० ग० चूमना।

चू-मज्ञा पु० १. छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द। २. चूँ शब्द।

मुरा-वृ० वरना=१ कुछ पहना। २. प्रान्तिवाद वरना। विरोध में कुछ कहना।

चूँकि-प्रि० वि० [फा०] क्योंकि। इसलिए।

चूचू-मज्ञा पु० चिड़ियों का चूचू शब्द।

चूदरी-सज्ञा स्त्री० दे० "चुनरी"।

चूँदा-मज्ञा स्त्री० दूती।

चूक-मज्ञा स्त्री० १. भूल। भुट्टि। अपराध। गलती। २. भ्रम। बसूर।

सज्ञा पु० १. एक प्रकार की मटराई का सत। २. एक खट्टा पदार्थ।

वि० बहुत खट्टा।

चूवना-प्रि० अ० १. भूल करना। गलती करना। २. सुम्रवमर खो देना।

चूका-मज्ञा पु० एक खट्टा साग।

वि० भूला। भ्रान्त।

चूची-सज्ञा स्त्री० स्तन। कुच।

चूचुव-मज्ञा पु० रतन का अंगला भाग। चूची।

चूजा-मज्ञा पु० [फा०] मुरगी का बच्चा। चूड या चूडक-सज्ञा पु० १. छोटा कुआँ।

२. पनंत, भवान या सम्भे का ऊपरी भाग। ३. चाटी। ४. बलगी। ५. सिखा। ६.

आभरण विशेष। ७. सोना या चाँदी की पूड़ी जिसे विधवा पहनती है। ८. हाथी के दाँत में पहनाने की चूड़ी। ९. खाट की पाटी का सिरा।

चूडात-वि० चरम सीमा।

कि० वि० अत्यन्त। बहुत अधिक।

चूडा-मज्ञा स्त्री० १. चोटी। सिखा। चुरकी। २. मार के सिर पर की चोटी।

३. कुआँ। ४. मुजा। घुँघची। ५. बाँह में पहनने का एक अलवार। ६. चूडा-करण नाम का एक सस्कार।

सज्ञा पु० १. कपड। कडा। बलप। २. हाथी दाँत की चूड़ियाँ।

चूडाकरण-मज्ञा पु० मुंडन। बच्चे के पहले

पहले सिर के बाल मुड़वाकर चोटी रखवाने का सस्कार ।

चूड़ाकर्म—सज्ञा पु० दे० “चूड़ाकरण” ।

चूड़ाभरण—सज्ञा पु० प्राचीन काल का एक तरह का बाल बनाने का तरीका । केशों की सजावट । स्त्रियों के बालों की चोटी का गहना ।

चूड़ामणि—सज्ञा पु० १ सिर में पहनने का एक गहना । शीशफूल । ‘वीज’ । २ सर्वोत्कृष्ट । श्रेष्ठ । ३. प्रधान । मुखिया । ४. घुंघरी । गुजा ।

चूड़ी—सज्ञा स्त्री० १ हाथ में पहनने का एक गहना । २ मड़लाकार पदार्थ ।

मुहा०—चूड़ियाँ ठटी करना या तोड़ना= पति के मरने पर स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना या तोड़ना । चूड़ियाँ पहनना= स्त्रियों का बेध धारण करना (व्यग्न और हास्य) ।

चूड़ीदार—वि० जिसमें चूड़ी या छल्ले पड़े हों ।

यो०—चूड़ीदार पायजामा=एक प्रकार का चूत पायजामा ।

चूड़ी—सज्ञा पु० भगी ।

चूत—सज्ञा पु० ग्राम का पेड़ ।

सज्ञा स्त्री० योनि । भग ।

चूतड़—सज्ञा पु० पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग । नितंब ।

चूतिया—सज्ञा पु० मूख । बेवकूफ ।

यो०—चूतिया-चक्कर=वि० चूतिया ।

चूतियापत्नी—सज्ञा स्त्री० मूर्खता । बेवकूफी ।

चून—सज्ञा पु० १. आटा । पिसान । साध पदार्थ । २. एक दारभस्म । चूना ।

चूनर, चूनरी—सज्ञा स्त्री० दे० ‘चूनी’ ।

चूना—सज्ञा पु० कपड़, पत्थर आदि पदार्थों को जलाकर बनाया गया चूर्ण, जो मसाने बनाने या पोतने के काम में आता है ।

त्रि० अ० १ टपकना । २ बिन्ती चीज का ऊपर से नीचे गिरना । ३ द्रव पदार्थ का बूंद-बूंद गिरना ।

यो०—चूना लगाना=हानि पहुँचाना । लज्जित करना । धोखा देना ।

चूनादानी—सज्ञा स्त्री० चूना रखने की डिबिया । चुनौटी ।

चूनी—सज्ञा स्त्री० अन्नकण । २ चुन्नी ।

चूभ—सज्ञा पु० टीस । व्यथा । दर्द । पीडा ।

चूमना—त्रि० स० चुम्मा लेना । बासा लेना ।

चूमा—सज्ञा पु० चुवन । चुम्मा ।

चूमाचाटी—सज्ञा स्त्री० चूम और चाटकर प्रेम दिखाने की क्रिया ।

चूर—सज्ञा पु० चूर्ण । किसी पदार्थ के बहुत छोटे छोटे टुकड़े । चुक्नी ।

वि० १ तन्मय । निमग्न । तल्लीन । २. मदमस्त ।

यो०—चूरचूर=टुक टुक । खण्ड-खण्ड । चूर रहना=मग्न रहना । मस्त रहना । अतिशय आसक्त । भव में चूर । चूर करना=टुकड़े टुकड़े करना । चूर होना=आसक्त होना । मग्न होना ।

चूरन—सज्ञा पु० दे० “चूर्ण” ।

चूरना+\*—त्रि० स० १ चूर करना । टुकड़े-टुकड़े करना । २ तोड़ना ।

चूरमा—सज्ञा पु० रोटी, घाटी या पूरी को चूर-चूर करके घी, चीनी मिलाया हुआ एक प्रकार का खाद्य पदार्थ । मलीदा ।

चूरमूर—सज्ञा पु० खूँटियाँ जो जी या गेहूँ बट जाने पर खेत में रह जाती हैं ।

चूरा—सज्ञा पु० चिड़ड़ा । चिड़ड़ा । चूर्ण । बुरादा । भुरभुर ।

चूरी—सज्ञा स्त्री० १. घी चुपड़ी हुई रोटी (चूरमा) । चूड़ । २. स्त्रियों का गहना-विशेष । चूर । चूरा ।

चूर्ण—सज्ञा पु० १ चूर । पीसा हुआ । रेणु । धून । रेत । चूना । चुक्नी । २ पाचक औषधों का दारिद्र्य सफ़फ़ । चूरन ।

वि० तोड़ा-फोड़ा या नष्ट-भष्ट ।

चूर्णक—सज्ञा पु० १ सत्तु । ननुमा । २ धान । ३ समापहीन शब्दमय गद्य ।

चूर्णकुतल—सज्ञा पु० सट । अन्न । जुरफ

घूर्णकार-वि० १. घुना गगानेवाला । २. वर्णसंवर जाति-विशेष ।

घूर्णा-सज्ञा स्त्री० भार्या छद्म वा एव भेद ।

घूर्णिका-सज्ञा स्त्री० १. पशु । २. सतुम्हा ।

घूरन । ३. गद्य वा एक भेद । ४. संधेय ।

५. पृथक्त्व वाते ।

घूर्णित-वि० घूर्ण किया हुआ ।

घूल-सज्ञा पु० शिगा । पीटी ।

सज्ञा स्त्री० विवाह बन्द करने की लकड़ी का जोड़ । पाटी का नुकीला भाग जो करा रहता है ।

घूलक या घुलिका-सज्ञा स्त्री० १ नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना । २. हाथी के बान का मेल । ३. हाथी की कनपटी का ऊपरी भाग ।

घूलवान-सज्ञा पु० रसोईघर ।

घूलिक-सज्ञा स्त्री० लुचुई ।

घूल्हा-सज्ञा पु० मिट्टी या लोहे की बनी हुई वस्तु जिसमें आग रखकर रसोई बनाते हैं । भोंगीटी ।

मुहा०—घूल्हा जतना=भोजन बनना ।

घूल्हा फूँवना=भोजन पकाना । घूल्हे में जाय=नष्ट-भ्रष्ट हो ।

घूल्ही-सज्ञा स्त्री० छोटा घूल्हा ।

घुषण-सज्ञा पु० घुसने की क्रिया ।

घुष्य-वि० घुसने के योग्य ।

घुसना-त्रि० स० १ स्त्रीचलीचकर पीना ।

२ किसी चीज का सार भाग ले लेना ।

३ रस खींच लेना । चचोड़ना ।

घुसनी-सज्ञा स्त्री० घुसनेवाली वस्तु या जिस वस्तु से घुसा जाय ।

घूहड़ या घूहड़ा-सज्ञा पु० [स्त्री० घूहड़ी] भगी । मेहतर । चाडाल ।

घूहना-क्रि० स० घुसना ।

घूहर-सज्ञा पु० दे० "घूहड़ा" ।

घूहा-सज्ञा पु० [स्त्री० घुहिया] मूसा । मूषिक ।

घूहादती-सज्ञा स्त्री० स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की पहुँची ।

घूहादान-सज्ञा पु० [स्त्री० घूहेदानी] घूहा को फँसाने का पित्रय ।

चे-सज्ञा स्त्री० चिह्नियों के बालने का शब्द । चें चें ।

चेच-सज्ञा पु० एक प्रकार का साग ।

चो०—चेंचच—पिचपिच । शोरगुल । चेंच-पट=स्पष्ट न पहना ।

चेगड़ा-सज्ञा पु० बच्चा ।

चेंगा-सज्ञा पु० बालक ।

सज्ञा स्त्री० मछली ।

चेचो-सज्ञा स्त्री० मुई राने का घर ।

चें चे-सज्ञा स्त्री० १. चिह्नियों या बच्चों के बालने का शब्द । ची-ची । २. व्यर्थ की बकवाद । बकबक ।

चेटी-सज्ञा स्त्री० पीटी ।

चेटुआ-सज्ञा पु० चिह्निया का बच्चा ।

चेडा-सज्ञा पु० छोटा बच्चा ।

चेथी-सज्ञा स्त्री० चक्ती ।

चेप-सज्ञा पु० गोद । लासा । बिपबनेवाली वस्तु । लसलसा ।

चे पे-सज्ञा स्त्री० १ मसतोप प्रबट करना । २ बच्चा का शोरगुल । ३. बकबक ।

चेफ-सज्ञा पु० ऊब का छिलना ।

चेक-सज्ञा पु० [ग्रमे०] १. हड्डी । बंक से रुपया निकालने का छपा हुआ कागज जिस पर रुपया जमा करनेवालों को अपना हस्ताक्षर करना पड़ता है । २. चारखाना ।

चेकितान-सज्ञा पु० १. महादेव । २. एक बहुत बड़ा जानी ।

चेचक-सज्ञा स्त्री० शीतला या माता नामक रोग ।

चेचकह-सज्ञा पु० [फा०] वह जिसके मुँह पर शीतला के दाग हों ।

चेजा-सज्ञा पु० छेद ।

चेद-सज्ञा पु० [स्त्री० चेटी या चेटिका] १ दास । सेवक । नौकर । चेता । २ पति । छाविद । ३ नायक घोर नायिका को मिलानेवाला । भैरुवा । ४ नाटक में विदूषक । ५ एक मछली ।

चेदक-सज्ञा पु० [स्त्री० चेदकी] १ सेवक । दास । नौकर । २ पटक-मटक । ३ दूत । ४ जादू या इन्द्रजाल की विद्या । ५ नायर विशेष । उपपति । ६ भांडी का

तमाशा । ७ छोकरा । ८. चेला । ९. चसका  
१० जल्दी । ११. चालाकी । १२. ।  
चिता । १३ व्याधि । १४. लत । टेव ।  
चेटकनी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "चेटक" ।

चेटका\*—सज्ञा स्त्री० चिता । मरघट ।  
स्मशान ।

चेटकी—सज्ञा पु० १. जादूगर । २. कौतुक  
करनेवाला । कौतुकी ।

सज्ञा स्त्री० उपपत्नी । दासी ।

चेटिका—सज्ञा स्त्री० दे० "चेटी" । दासी ।  
नायिका-विशेष ।

चेटिकी—सज्ञा स्त्री० दे० "चेटी" । दासी ।

चेडिया—सज्ञा पु० चेला । शिष्य ।

चेटी—सज्ञा स्त्री० दासी ।

चेडक या चेड़ा—सज्ञा पु० दास । भृत्य । चेला ।  
चेत्—अव्य० १. यदि । अगर । २. शायद ।  
कदाचित् ।

चेत—सज्ञा पु० १. चित्त की वृत्ति । चेतना ।  
होश । २. ज्ञान । बोध । ३. सावधानी ।  
४ स्मरण । सुष ।

चेतक—सज्ञा पु० १. राणा प्रताप के घोड़े का  
नाम । २. चेतन । चेतन्य । ३. सूचना  
दानेवाला ।

चेतन—वि० जिसमें चेतना हो ।

सज्ञा पु० १. आत्मा । जीव । २. मनुष्य ।  
३. प्राणी । जीवधारि । ४. परमेश्वर ।  
५. बुद्धि । ६. सजग । चतुर ।

चेतनता—सज्ञा स्त्री० चेतन का धर्म ।  
चेतन्य । सज्ञानता । ज्ञान होना ।

चेतनत्व—सज्ञा पु० चेतन्य । चेतनता ।  
चेतना—सज्ञा स्त्री० १. बुद्धि । २. ज्ञान ।  
३. स्मृति । याद । ४. चेतनता । चेतन्य ।  
सज्ञा । होश ।

क्रि० प्र० १. सज्ञा में होना । होश में  
पाना । २. सावधान होना । चौकस होना ।  
वि० स० विचारना । समझना ।

चेतन्य—वि० दे० "चेतन्य" ।

चेता—सज्ञा पु० मन । चित्त ।

वि० सावधान हुआ । चेतन्य हुआ । सजग  
चित्तपालना, जैसे दुर्गचेता (योगिव शब्दों  
के धन में प्रयुक्त) ।

चेतावनी—सज्ञा स्त्री० सतर्क होने की सूचना ।  
सावधान करने के लिए कही गई बात ।

चेतिका†\*—सज्ञा स्त्री० चिता ।

चेत्य—वि० जानने योग्य । स्तुति करने  
योग्य ।

चेदि—सज्ञा पु० १. प्राचीन भारत का एक  
देश । २. इस देश का राजा । ३. इस देश  
का निवासी ।

चेदिराज—सज्ञा पु० शिशुपाल ।

चेन—सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] जजीर ।

चेनवाँ—सज्ञा पु० एक प्रकार का अन्न ।

चेना—सज्ञा पु० १. एक प्रकार का अन्न ।  
२. एक प्रकार का साग । ३. चीनी  
कपूर ।

चेप—सज्ञा पु० १. चिपचिपा या लसदार  
रस । २. चिड़ियों को फँसाने का लासा ।  
चाप । ३. उत्साह ।

चेपदार—वि० जिसमें चेप या लस हो ।  
चिपचिपा ।

चेपता—क्रि० स० चिपकाना ।

चेप—वि० सग्रह करने योग्य । चुनने योग्य ।  
चेर, चेरा†\*—सज्ञा पु० [स्त्री० चेरी] १.  
नीकर । सेवक । २. चेला । शिष्य ।

चेराई†\*—सज्ञा स्त्री० दासत्व । मीकरी ।  
गुलामी ।

चेरी†\*—सज्ञा स्त्री० "चेरा" का स्त्री० ।  
चेत—सज्ञा पु० कपड़ा । वस्त्र ।

चेतकाई†\*—सज्ञा स्त्री० चेलहाई । शिष्यता ।  
चेलहाई†\*—सज्ञा स्त्री० चेला या समूह ।  
शिष्यवर्ग । शिष्यता ।

चेला—सज्ञा पु० [स्त्री० चेलिन, चेली]  
१. शिष्य । २. छात्रिद ।

चेल्हा—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की छोटी  
मछली ।

चेवली—सज्ञा स्त्री० रेसमी वस्त्र-विशेष ।

चेष्टा—सज्ञा स्त्री० १. तरीर के अंगों की  
गति । २. अंगों की गति या धवस्था  
जिससे मन का भाव प्रकट हो । ३. उद्योग ।  
प्रयत्न । वीक्षित । ४. धर्म । काम ।

५. अम । परिश्रम । ६. इच्छा का मनना ।  
चेष्टानाम—सज्ञा पु० प्रत्यय ।

घोटर-सज्ञा पु० [प्रये०] जाड़े में पहनने का एक तरह का बड़ा चोट ।

बेहरई-वि० हलका गुलाबी रंग ।  
सज्ञा स्त्री० चित्र या मूर्ति आदि में बेहरे की रंगत ।

बेहरा-सज्ञा पु० [ पा० ] १. मुगड़ा । बदन ।  
२. किसी चीज का अगला भाग । ३. मुँह पर पहनने की कोई मुग्गावृत्ति, जैसे लीला या स्वाँग आदि में देवता, राक्षस या पशु की आवृत्ति ।

बौ०-बेहरासाही=बहु सितपा जिस पर किसी बादशाह या बेहरा बना हो । प्रचलित मिथ्या ।

मुहा०-बेहरा उतरना=लज्जा, शोक, निला या रोग आदि के कारण बेहरे का तेज जाता रहना । बेहरा होना=फोज में नाम लिखा जाना ।

बेहलुम-सज्ञा पु० मुहरंम के चालीसवे दिन मुसलमानों द्वारा मगाई जानेवाली रस्म ।

बेंटी-सज्ञा स्त्री० चिड़टी । चींटी ।

बेंटा-सज्ञा पु० चिड़टा । चींटा ।

बै\*-सज्ञा पु० दे० "बय" । समूह ।

बैत-सज्ञा पु० पागुन के बाद का महीना ।  
चैत्र । वर्ष का प्रथम मास । चैती फसल ।

चैतन्य-सज्ञा पु० १. जीवात्मा । २. ज्ञान ।  
चैतना । ३. ब्रह्म । ४. परमेश्वर । ५. प्रवृत्ति । ६. एक प्रतिष्ठित वैष्णव महात्मा जो सन् १४८५ ई० में बंगाल में उत्पन्न हुए थे । ७. सावधान । सचेत ।

चैता-सज्ञा पु० १. एक पक्षी । २. चैत महीने में गाया जानेवाला राग विशेष ।

चैती-सज्ञा स्त्री० १. चैत में बाटी जानेवाली फसल । रबी । २. चैत में गाया जानेवाला गाना ।

वि० चैत-संबन्धी । चैत का ।

चैत्य-सज्ञा पु० १. मकान । घर । २. मंदिर । देवालय । ३. यज्ञशाला । ४. ग्रामदेवता की बेदी या चबूतरा । ५. किसी देवी-देवता का चबूतरा । ६. बुद्ध की मूर्ति । ७. अश्वय का पेट । ८. वीढ़

सग्यागी या निशुन । ९. बौद्ध सग्यागियों का मठ । विहार । १०. चिता । ११. बेल का पेट । १२. पीपल ।

चैत्यमुख-सज्ञा पु० कमण्डल ।

चैत्यविहार-सज्ञा पु० बौद्धों का मठ ।

चैत्यस्थान-सज्ञा पु० यह स्थान जहाँ बुद्धदेव की मूर्ति स्थापित हो ।

चैत्र-सज्ञा पु० १. गवत का प्रथम मास ।

चैत । २. बौद्ध भिक्षु । ३. यज्ञ-भूमि ।

४. देवालय । मंदिर । ५. चित्रगै के एक पर्वत का नाम ।

चैत्रक-सज्ञा पु० चैत्र मान ।

चैत्ररथ-सज्ञा पु० कुवेर का उद्यान ।

चैत्रसत्ता-सज्ञा पु० मदन ।

चैत्रावली-सज्ञा स्त्री० १. चैत्रशुक्ला त्रयोदशी ।  
२. चैत्र की पूर्णिमा ।

चैत्री-सज्ञा स्त्री० चैत की पूर्णिमा ।

चैदिक-वि० चैदि देश का ।

चैय-सज्ञा पु० निशुवाल । चैदि देश का राजा ।

चैन-सज्ञा पु० आराम । सुख ।

मुहा०-चैन उठाना=आराम करना । चैन पढ़ना=शांति मिलना । मुग्न मिलना ।

चैपला-सज्ञा पु० एक तरह की चिटिया ।

चैराही-वि० हलका गुलाबी रंग ।

चैल-सज्ञा पु० कपड़ा । वस्त्र ।

चैला-सज्ञा पु० [स्त्री० चैली] चीरी हुई लकड़ी । जलाने के काम में आनेवाली लकड़ी । जलावन ।

चौक-सज्ञा स्त्री० चुवन का चिह्न ।

चौचना-वि० अ० १. चौभना । गोभना ।

गठाना । २. चौंकना । अचम्भित होना ।

चौगला-सज्ञा पु० चंगेली । वान की नली जिसमें वागज आदि रखा जाता है ।

चोगा-सज्ञा पु० [स्त्री० चागी] बाँस, टीन आदि की बनी हुई नली जिसमें वागज आदि लपेटकर रखा जाता है ।

चोचना\*†-वि० स० दे० "चुगना" ।

चौच-सज्ञा स्त्री० १. पक्षियों के मुँह का अगलाभाग । २. मुँह (व्यय) ।

मुहा०-दो दो चौच होना=बहा-सुती होना । कुछ लगाई-भगडा होना ।

चोचला या चोचला-सज्ञा पु० हँसी-दिल्लगी ।  
नखरा । हावभाव ।

चोटला-सज्ञा पु० चुटीला । चँबरी । बाल  
गूँथने की डोरी, जिसमें चोटी बाँधते हैं ।

चोडा-सज्ञा पु० सिर । छोटा कच्चा  
कुरमा ।

चोड़ा†-सज्ञा पु० स्त्रियों के सिर के बाल ।  
जूड़ा ।

चोय-सज्ञा पु० उतने गोबर का ढेर जितना  
एक बार गिरे ।

चोयना†-क्रि० स० घुरी तरह नोचना ।

चोघर-वि० १. जिसकी आँखें बहुत छोटी  
हों । २. मूर्ख ।

चोघला-वि० जिसे कम दिखाई दे । तिर-  
मिरा । चुंघला । मधा ।

चोघलाना-क्रि० अ० चुंघलाना ।

चोन्धी-सज्ञा स्त्री० धुंध । धुंधलाई ।  
धुंधलापन ।

चोप-सज्ञा पु० १. उत्साह । इच्छा । २. सोने  
का एक गहना ।

चोप्रा-सज्ञा पु० १. एक सुगंधित द्रव पदार्थ ।  
२. बाँट की जगह रखा जानेवाला कवड  
या पत्थर । माठ ।

चोप्राड़-सज्ञा पु० १. पहाड़ी जाति-विशेष ।  
२. पहाड़ी डाकू ।

चोई-सज्ञा स्त्री० १. धोई हुई दाल का  
छिलका । २. पक्कर गिरा हुआ फल ।

चोक-सज्ञा पु० एक जड़ ।

चोकर-सज्ञा पु० भूमी । आटा छानने के  
बाद बचा हुआ छिलका । असार ।

चोफा-सज्ञा पु० १. चूसने की क्रिया या  
भाव । २. चूसने की वस्तु ।

चोप†-सज्ञा स्त्री० तेजी । तेज ।

चोखना†-क्रि० स० चसना । चूमनर  
पीना ।

चोखनी\*-सज्ञा पु० चूसनर पीने की  
क्रिया ।

चोखरा-सज्ञा पु० चूहा ।

चोखा-वि० (स्त्री० चोगी) १. जिसमें  
किसी प्रकार की गिलाबट आदि न हो ।  
गुड । उत्तम । २. सच्चा और ईमानदार ।

खरा । ३. तेज धारवाला । तीक्ष्ण ।  
पैना ।

सज्ञा पु० उबाले या भूने हुए बैंगन आलू  
आदि को नमक मिर्च आदि के साथ मलकर  
तैयार किया हुआ सालन । भरता ।

चोखाई-सज्ञा स्त्री० खराई । शुद्धता ।  
तीक्ष्णता । चुसाई ।

चोगा-सज्ञा पु० १. पैरो तन लटवता हुआ  
एक ढीला पहनावा । तबादा । २. चारा ।

चोच-सज्ञा पु० १. दे० "चोच" । २. छाल ।  
चबड़ा । ३. तेजपत्ता । ४. दालचीनी ।

५. नारियल । ६. केला ।

चोचला-सज्ञा पु० १. हाव-भाव । २.  
नखरा । नाज ।

चोज-सज्ञा पु० १. मगोविनोद के लिए  
चमत्कारपूर्ण उक्ति । सुभाषित । २.  
हँसी-ठट्टा । व्यंग्यपूर्ण उपहास ।

चोट-सज्ञा स्त्री० १. आघात । प्रहार ।  
धाव । जखम । २. बार । आक्रमण । ३.

किसी हिंसक पशु का आक्रमण । हमला ।  
४. मानसिक व्यथा । ५. किसी के अनिष्ट

के लिए चली हुई चाल । ६. बीछार ।  
ताना । ७. विस्वामघात । घोखा । दगा ।

८. बार । दफा । भरतवा ।

मुहा०-चोट खाना=मार खाना । आहत  
होना । हानि उठाना । चूक जाना । चोट

पर चोट=दुख पर दुख । एक विपत्ति  
पर दूसरी विपत्ति ।

यो०-चोट चपेट=धाव । जखम ।

चोटइल-वि० घायल । चोट करनेवाला ।

चोटहा-सज्ञा पु० चोट खाया हुआ । चुटेल ।  
जिस पर चोट का निशान हो ।

चोटो-सज्ञा पु० १. राव या पसेव जो छानने  
से निवृत्तता है । २. बट्टा । चोप्रा । ३.  
गुड का मैल । ४. सूद ।

चोटार†-वि० चोट खाया हुआ । चुटेल ।

चोटारना†-क्रि० अ० चोट करना ।

चोटियाना-क्रि० स० १. चोट मारना । घायल  
करना । २. चोटी पकड़ना । चरा में

करना ।

चोटी-सज्ञा स्त्री० १. गिर के मध्य में बृष्ट

बाल जिन्हें प्राय हिन्दू नहीं कटाते। शिखा।  
मुदी। २ स्त्रिया के सिर के गुंये हुए बाल।  
३ सूत या ऊन आदि का डोरा जिनसे स्त्रिया बाल बांधती है। ४ जूटे में पहनने का एक आभूषण। ५ बुद्ध पक्षियों के सिर के पर जो ऊपर उठे रहते हैं। चतुर्गी। ६ शिखर।

मुहा०—चोटी दबना=बेबस होना। लाचार होना। (किसी की) चोटी (किसी के) हाथ में होना=किसी प्रकार के दबाव में होना। चोटी का=सर्वोत्तम।

चोटी पोटी†-वि० १ खुशामद। २ चिक्की-चुपड़ी बात। बनावटी बात।

चोट्टा-सज्ञा पु० (स्त्री० चोट्टी) चोर।

चोड-सज्ञा पु० १ अँगिया। मूला। जनानी कुस्ती। उत्तरीय वस्त्र। २ चोल नामक प्राचीन देश।

चोत-सज्ञा पु० मल का ढेर। गाबर। दे० "चोय"।

चोतक-सज्ञा पु० १ छाल। २ दालचीनी।

चोथ-सज्ञा पु० गाय भेरा आदि के उत्तम गोबर का ढेर जितना एक वाग में गिरे।

चोद-सज्ञा पु० १ चाबुक। २ लम्बी लकड़ी जिसके सिर पर नुकीला और तज लाहा लगा हो। ३ घोड़ा हाँकनेवाला। ४ चालक। प्रेरक।

चोदक-वि० प्रेरणा करनेवाला। प्रेरक।

चोदना-सज्ञा स्त्री० १ वह वाक्य जिसमें कोई काम करने का विधान हो। विधि-वाक्य। २ प्रेरणा। ३ योग आदि के गन्ध का प्रयत्न।

क्रि० सं० मैयुन। सभोग करना।

चोप\*-सज्ञा पु० १ चाह। इच्छा। रवाहि। २ चाव। शोक। रुचि। ३ उत्साह। उमंग। ४ बढ़ावा।

चोपना†-वि० अ० मोहित होना। भुग्न होना।

चोपदार-सज्ञा पु० दे० "चापदार"।

चोपी\*-वि० १ इच्छुक। २ उत्साही।

चोब-सज्ञा स्त्री० १ शामियाना खड़ा करने का बड़ा सभा। २ नगाडा या ताशा बजाने

की लकड़ी। ३ साने या चाँदी से मढ़ा हुआ डबा। ४ छड़ी। सोडा।

चोबकारी-सज्ञा स्त्री० कलावतू का काम। चोबचोनी-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक काष्ठ की सता की जड़, जो ओषध के काम में आती है।

चोबदार-सज्ञा पु० [फा०] १ वह नौकर जिसके पाम चोब या आसा रहता है। आसागरदार। २। द्वारपाल। प्रतीहार।

चोवा-सज्ञा पु० दे "चोय"।

चोभा-सज्ञा पु० [स्त्री० चोभी] खोच। खोल। कीला। चोभा। एक प्रकार का मुगधित द्रव्य।

चोभाना-वि० सं० दे० "चुभाना"।

चोर-सज्ञा पु० १ चोरी करनेवाला। तस्कर। दूसरे की चीज चुरानेवाला। चोट्टा। २ धातु में का दूषित अश्व जो भीतर ही भीतर पक्ता और बड़का है।

३ खेल में वह सड़का जिससे दूसरे सड़के दाँव लते हैं। ४ चोरक गन्धद्रव्य। वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से पता न चल।

मुहा०—मन में चोर पैठना=मन में किसी प्रकार का खटका या सदेह होना।

चोरकटक-सज्ञा पु० दे० "चोरक"।

चोरक-सज्ञा पु० एक गन्धद्रव्य।

चोरकट-सज्ञा पु० चार। उचक्का।

चोरखाना या चोरगृह-सज्ञा पु० तहखाना। गुप्तगृह। सद्रूक का गुप्त खाना।

चोरगली-सज्ञा पु० पतली और तंग गली।

चोरछिद्र-सज्ञा पु० दरार। संधि।

चोरटा-सज्ञा पु० दे० "चोट्टा"। चोर।

चोर-दत्त-सज्ञा पु० वह दाँत जो बत्तीस दाँत के अतिरिक्त बहुत कष्ट के साथ निकलता है।

चोर दरवाजा-सज्ञा पु० मकान के पीछे की भार का गुप्त द्वार।

चोरपुष्पी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की वन-स्पाति।

चोर बत्ती-सज्ञा पु० टार्च (धरे०) बैटरी से जलनेवाला हाथ का छोटा लैम्प।

चोरमहल-सज्ञा पु० वह महल जहाँ राजा और रईस अपनी अविवाहिता स्त्री रखते हैं।

चोरमिहोचनी†\*—सज्ञा स्त्री० अंशमिचोनी का खेल।

चोरा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की वनस्पति।  
चोराचोरी\*†—क्रि० वि० छिपे छिपे। चुपके-चुपके।

चोरिका-सज्ञा स्त्री० १ चोरी। २ विवाह में सास दामाद को जो धन छिपाकर दे उसे चोरिका कहते हैं।

चोरी-सज्ञा स्त्री० १ छिपकर किसी दूसरे की वस्तु लेना। चुराना। चोरी करना। अपहरण। २. चुराने की क्रिया या भाव।  
चोरोला-सज्ञा पु० एक तरह का बड़िया चारा।

चोल-सज्ञा पु० १ दक्षिण के एक प्रदेश का प्राचीन नाम। २ उक्त देश का निवासी। ३ स्त्रियों के पहनने की चोली। ४ कुरते के डग का एव पहनावा। चोला। ५ कवच। जिरहबस्त्र। ६ मजीठ। ७ औषध विशेष।

चोलक-सज्ञा पु० दे० "चाल"।

चोलकी-सज्ञा स्त्री० १ नारंगी का पेड़। २ हाथ की कलाई। ३. करील का पेड़।  
चोलन-सज्ञा पु० दे० "चोलकी"। याँस का वत्स।

चोलना†—सज्ञा पु० दे० "चोला"।

चोला-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का बहुत सदा और ढोला-ढाला कुरता जिसे प्रायः साधु पहनते हैं। २ पहल पहल बच्चों को पहनानेवाला वस्त्र। ३ शरीर। यदन। तन।

मुहो०—चोला छोड़ना=मरना। प्राण त्यागना। चाना बदलना=एक शरीर पर-त्याग करके दूसरा शरीर धारण करना।

चोलो-सज्ञा स्त्री० स्त्रियों का एक पहनावा। छोटी डलिया जिसमें पान रखते हैं।

मुहा०—चाँसी दामन वा साथ=बहुत अधिक साथ या घनिष्ठता।

चोलीमार्ग-सज्ञा पु० याममार्ग वा एव नेद।

चोवा-सज्ञा पु० चोआ। अगंजा। सुगन्धित द्रव्य-विशेष।

चोप-सज्ञा पु० एक रोग।

चोपण-सज्ञा पु० चूसना।

चोप्य-वि० चूसने योग्य। रस लेने योग्य। एक प्रकार का भोजन।

चोसा-सज्ञा पु० रेतो जिससे लकड़ी रेतो जाती है।

चोहसा-सज्ञा पु० खोवा। कील।

चौअत्री-सज्ञा स्त्री० चार आना। रुपये का चौथा भाग।

चौक-सज्ञा स्त्री० चौकने की क्रिया या भाव। भिक्क। चिहुक।

चौकना-क्रि० अ० १. भट काँग या हिल उठना। भिक्कना। २ चौकना होना। ३. चकित होना। भौचक्का होना। ४ भय या आसका से ठिठकना। भडकना।

चौकाना-क्रि० स० चौकने के लिए प्रेरित करना। भडकाना। चकित करना।

चौकिल-वि० भिक्कनेवाला। भडकनेवाला। जगली। वनेला।

चौगा-वि० कपट। छस। बहकावा।

चौचा-सज्ञा पु० सिंचाई के लिए पानी इकट्ठा करने का गड्ढा।

चौटली-सज्ञा स्त्री० सफेद धुंधची।

चौडू-सज्ञा पु० मूढ। निर्वीर्य। नासमझ।

चौतरा-सज्ञा पु० चबूतरा। थाना। चौपाड़।  
चौतीस या चौतिस-सज्ञा पु० (वि० चौतीसरी)

तीस और चार की संख्या। ३४।

चौध-सज्ञा स्त्री० चकचीप। तिलमिलाहट।

चौधना\*—क्रि० अ० ऐसा चमकना कि चना-चौध उत्पन्न हो।

चौधियाना-क्रि० अ० १ अत्यंत अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि वा स्थिर न रह सकना। धवाचौध होना। २ वम दिखाई देना। घबराना। उद्भिन्न होना।

चौधो-सज्ञा स्त्री० दे० "चौध"।

चौधक-वि० धारण।

चौर-सज्ञा पु० दे० "चैवर"।

चौरा-सज्ञा पु० घन रखने के लिए जमीन में बचाया गया गड्ढा।

चौराना\*—वि० म० १. चौर हुलाना ।  
चौर करना । २ भाटू देना ।

चौरी—सज्ञा स्त्री० १. पूछे के वालों का  
मुच्छा । छोटा चौर । २. छोटी या बेणी  
वांधने की टोरी । ३. सफेद पृष्ठवाली गाय ।  
चौसर—सज्ञा पु० १. पामों से रेंता जानेवाला  
एक खेल । एक प्रकार का जम्मा । २. फूलों  
की माला ।

चौह—सज्ञा पु० गलफटा ।  
चो—वि० चार (संख्या) । (वेवल योगिक में)  
जमे, चौपहल ।

सज्ञा पु० माती तीतने का एक मान ।  
चौधन—वि० पचास से चार अधिक ।  
सज्ञा पु० ५५ की संख्या ।

चौध्रा—सज्ञा पु० १. चार अंगुल का माप ।  
२. तास का एक पत्ता जिस पर चार बूटियाँ  
हो । ३. चौपाया ।

चौध्राई—सज्ञा पु० १. चारों ओर से बहनेवाली  
हवा । २. अफवाह । धूमधाम की चर्चा ।  
चौध्राना\*—क्रि० म० १. चक्कपाना ।  
चपित होना । २. चौपन्ना होना । घबरा  
जाना ।

चौक—सज्ञा पु० १. चौकोर भूमि । २.  
आँगन । सहन । ३. चौखूँटा चबूतरा ।  
बड़ी बेदी । ४. मंगल अवसरो पर पूजन  
के लिए आटे, धीरे आदि की रेखाओं  
से बना हुआ चौखूँटा धरा । ५. नगर के  
बीच का बड़ा बाजार । ६. चौराहा ।  
चौमुहानी । ७. चौसर खतने का कपड़ा ।  
विस्तार । ८. सामने के चार दाँतों की  
पंक्ति ।

चौखट—सज्ञा पु० चौखट । द्वार पर के फाटक  
का ढाँचा । देहली ।

चौकड़ा—सज्ञा पु० चौखटा । चौकार बनी हुई  
वस्तु ।

चौकड़ा—सज्ञा पु० कान में पहनने की बालियाँ  
जिनमें दो-दो भोती हैं । एक प्रकार का  
आभूषण ।

चौकड़ी—सज्ञा स्त्री० १. उछल-बूढ़ । हिरन की  
बौड़ । उछाल । कुदान । छनाँप ।  
कुलाँच । २. चार आदमियों का गुट ।

मटली । ३. एक प्रकार का गहना ।  
४. चार युगों का समूह । चतुर्युगी ।  
५. पल्लो ।

सज्ञा स्त्री० १. चार घोंटों की गादी ।  
एक प्रकार की बुनावट ।

मुहा०—चौकड़ी भूत जाना=बुद्धि का  
'बाम न करना । मिटपिटा जाना ।  
घबरा जाना ।

चौपन्ना—वि० १. मावधान । होशियार ।  
चौपस । २. चाँना हुआ । आशयित ।

चौपल—सज्ञा पु० चार मानाओं का समूह ।  
चौपस—वि० १. मावधान । मचन । हाशि-  
यार । २. टीच । दुस्त । पूरा ।

चौपसाई\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'चौपनी' ।  
चौकसी—सज्ञा स्त्री० सावधानी । होशियारी ।  
निगरानी । सतर्कता ।

चौका—सज्ञा पु० १. पत्थर का चाँनार टुकड़ा ।  
चौपूँटी सिल । २. बाठ या पत्थर का  
पाटा जिस पर रोटी बेलते हैं । चकला ।

चौकोर भूमि । ३. सामने के चार दाँतों की  
पंक्ति । ४. सिर का एक गहना । सीस-  
फूल । ५. लिपा-मुत्ता स्थान जहाँ रसोई  
बनाते या खाते हैं । ६. मिट्टी या गोबर का  
लेप जो सफाई के लिए किसी स्थान पर रिया  
जाय । ७. एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का  
समूह । जैसे—मोतियों का चौका । ८.  
तास का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हो ।

मुहा०—चौका नगाना=१. लीप-मोतवर  
बराबर करना । २. सत्मानास करना ।  
यो०—चौक पूरना=बेदी बनाना । बेदी पर  
बल-बूटे बनाना । चौक भरना=मंगल  
कार्यों में बेदी बनाना ।

चौकी—सज्ञा स्त्री० १. चौकोनी बाठ की  
बनी हुई वस्तु । २. छाटा तलत । ३.  
मंदिर में मंडप व सभा के ऊपर का घेरा ।  
४. पड़ाव । ठहरन की जगह । झुड़ा । ५.  
वह स्थान जहाँ आसपास की रक्षा के लिए  
थोड़े से सिपाही रहते हैं । ६. पहरा ।  
सबरदारी । रखवाली । ७. भेंट या  
पूजा । ८. गले में पहनने का एक गहना ।  
पटरी । ९. रोटी बेलने का छोटा चकला ।

चौकी—सज्ञा स्त्री० १. चौकोनी बाठ की  
बनी हुई वस्तु । २. छाटा तलत । ३.  
मंदिर में मंडप व सभा के ऊपर का घेरा ।  
४. पड़ाव । ठहरन की जगह । झुड़ा । ५.  
वह स्थान जहाँ आसपास की रक्षा के लिए  
थोड़े से सिपाही रहते हैं । ६. पहरा ।  
सबरदारी । रखवाली । ७. भेंट या  
पूजा । ८. गले में पहनने का एक गहना ।  
पटरी । ९. रोटी बेलने का छोटा चकला ।

चौकीदार-सज्ञा पु० १. पहरेदार । २. गार्डेट । रखवाली करनेवाला ।

चौकीदारी-सज्ञा स्त्री० १. पहरा देने का काम । रखवाली । खबरदारी । २. चौकीदार का पद । ३. वह चढ़ा या कर जो चौकीदार रखने के लिए लिया जाय । ४. चौकीदार की मजदूरी या तनखाह ।

चौकी मारना-क्रि० स० महसूख न देना ।

चौकोन-वि० जिसके चार कोने हों ।

चौकोना-वि० दे० "चौकोर" ।

चौकोर-वि० जिसके चार कोने हों । चौखूँटा । चतुर्कोण ।

चौखंड-सज्ञा पु० १. चार मजिला मकान ।

२. वह मकान जिसमें चार खंड हों ।

३. जिसके चार भाग हों ।

चौखंड-गज्ञा स्त्री० १. लकड़ियों का वह ढाँचा, जिसमें विचाड के पल्ले लगे रहते हैं । २. देहली । डहरी । चौकठ ।

चौखंड-सज्ञा पु० चार लकड़ियों का ढाँचा । फ्रेम ।

चौतना-वि० चार खंड का । चार मजिला ।

चोखा-सज्ञा पु० जहाँ पर गाँवों की सीमा मिलती हो ।

चौपानि-सज्ञा स्त्री० छड़ज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज्ज चार प्रकार के जीव ।

चौखंड-सज्ञा पु० १. चारों दिशाएँ । २. भूमंडल ।

त्रि० वि० चारों धार । चौकोर ।

चौखंडा-वि० दे० "चौकोर" ।

चौगडा-सज्ञा पु० खरहा । १. खरगोश । २. मिट्टी का मिलीना । ३. बड़ी श्लायची । ४. चार गानों का बरतन ।

चौगडा-गज्ञा पु० चार वस्तुओं का समूह । चौहद्दा । जहाँ चार गाँवों की सीमा मिले ।

चौगान-गज्ञा पु० १. मैदान । चौगान । खेलने का मैदान । २. एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्लों में गेंद मारते हैं । ३. नगाडा बजाने की लकड़ी ।

चौगानो-सज्ञा स्त्री० दुसरे की नली । निगाहो । सटप ।

चौगिर्द-क्रि० वि० चारों ओर । चारों तरफ । चतुर्विक् ।

चौगुन-वि० चतुर्गुण । दे० "चौगुना" ।

चौगुना या चारगुना-वि० [स्त्री० चौगुनी] चार बार । चार गुना ।

चौगोड़ा-वि० चार पहरवाला ।

सज्ञा पु० खरहा ।

चौगोड़िया-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की ऊँची चौकी । २. बाँस की तीलियों का बना हुआ ढाँचा ।

चौगोशिया-वि० [फा०] चार कोनेवाला ।

सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी ।

सज्ञा पु० तुर्की घोड़ा ।

चौघड-सज्ञा पु० दाढ़ का चौड़ा और चिपटा दाँत ।

चौघड़ा-सज्ञा पु० १. बड़ी इलायची ।

२. चार खानों का बरतन । ३. पत्तों की लॉगी जिसमें चार बीड़े पान हों । ४. एक खिलौना ।

चौघडी-सज्ञा स्त्री० चार वह या परतवाली ।

चौघर†-वि० घोड़ों की एक चात । चौफाल ।

सरपट ।

चौघोटी\*†-सज्ञा स्त्री० चार घोड़ों की गाड़ी । चौकडी ।

चौचद\*†-सज्ञा पु० अपवाद । बदनामी की चर्चा । निंदा ।

चौचदहाई\*-वि० बदनामी करनेवाली ।

चौज-सज्ञा पु० हँसी दित्तगी । हँसाने-

वाली बात ।

चौजुगो-सज्ञा स्त्री० चार युगों का काल ।

चोड-सज्ञा पु० चूड़ाकरण संस्कार ।

वि० चौपट । सत्यानाश ।

चौड़ा-वि० [स्त्री० चौड़ी] फँता हुआ ।

लम्बा का उलटा ।

चौड़ाई-सज्ञा स्त्री० चौड़ापन । फैलाव ।

अर्द्ध । विस्तार ।

चौडाना-सज्ञा स्त्री० दे० "चौडाई" ।

चौडाना-क्रि० स० फेंकना । चौड़ा करना ।

चौडोल-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का यात्रा ।

दे० २. "चडोल" । विशेष प्रकार की

पालवी । ३. चौपालिया ।

घोतनियों-गशा स्त्री० दे० "घोतनी" ।  
घोली ।

घोतनी-सज्ञा स्त्री० चौगोलिया टोपी ।

घोतरवा-सज्ञा पु० तम्बू । मनात ।

घोतरा†-सज्ञा पु० दे० "गबूतरा" ।

घोतही-गशा स्त्री० १. एक मोटा कपड़ा ।

२. चार तह का बिछोना ।

घोतरा-सज्ञा पु० एक बाजा ।

वि० जिसमें तार हो ।

घोताल-सज्ञा पु० १. मृदग का एक ताल ।

२. होली में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत । ३. रागिनी विशेष ।

घोताला-वि० चार तालवाला ।

घोतुका-वि० जिसमें चार तुक हो ।

सज्ञा पु० एक प्रकार का छंद, जिसके चारो चरणों की तुक मिलती होती है ।

घोय-सज्ञा स्त्री० १. पक्ष की चौथी तिथि ।

चतुर्थी । २. चतुर्थांश । चौथाई भाग ।

३. मराठों का लगाया हुआ एक वर जिसमें भ्रामदनी या तहसील का चतुर्थांश ले लिया जाता था ।

\*वि० चौया ।

मुहा०-चौय का चौद=भाद्र शुक्ल चतुर्थी का चद्रमा जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि कोई देख ले, तो उसे भूठा कत्तक लगता है ।

चौयपन\*-सज्ञा पु० बुढ़ापा ।

चौपा-वि० भ्रम में चार के स्थान पर पढ़नेवाला ।

सज्ञा पु० मृतक के घर होनेवाली एक रीति ।

चौथाई-सज्ञा पु० चौथा भाग । चतुर्थांश । चह्रास ।

चौथिया-सज्ञा पु० १. वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे । २. चौथाई का हकदार ।

चौथी-सज्ञा स्त्री० १. विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमें वर-कन्या के हाथ के बगन खोले जाते हैं । २. फसल की वह वांट जिसमें जमींदार चौथाई लेता है । चौथा भाग ।

चौथैया-सज्ञा पु० चौथाई ।

सज्ञा स्त्री० छोटी नाप ।

चौवंत-वि० चार दोत का कच्चा । पशुओं की भवस्था-विशेष । बली । हृष्ट-मुष्ट ।

चौवता-वि० १. चार दांतोंवाला । द्याम देश का हाथी जिसमें चार दाँत होते हैं । २. उग्र । उद्द । बदमाश । ३. दे० "चौरदन" ।

चौवती-सज्ञा स्त्री० घृष्टता ।

चौवत-सज्ञा स्त्री० पक्ष का चौदहवाँ दिन ।

चतुर्दशी ।

चौवह-सज्ञा पु० दस और चार की संख्या ।

१४ । चतुर्दश ।

वि० चौदहवाँ । गिनती में चौदह (दस और चार) ।

चौदनिया या चौदानो-सज्ञा स्त्री० मान का एक गहना ।

चौधर-वि० बलवान् । बली । हृष्ट-मुष्ट ।

चौधराई-सज्ञा स्त्री० १. चौधरी का काम ।

२. चौधरी का पद । ३. नेतृत्व । अगुआपन ।

चौधरात-सज्ञा स्त्री० दे० "चौधराना" ।

चौधराना-सज्ञा पु० चौधरी का काम ।

चौधरी का पद । चौधरी की मजदूरी या वेतन ।

चौधरी-सज्ञा पु० किसी समाज का मुखिया या प्रधान । अगुआ । सरपंच ।

चौपई-सज्ञा स्त्री० १. एक छंद का नाम । २. हाली के दिन घूम घूमकर गाना गातेवाली मंडली ।

चौपला-सज्ञा स्त्री० चहारदीवारी ।

चौपग-सज्ञा पु० चौपाया ।

चौपट-वि० चारों ओर से खुला हुआ । धरक्षित ।

वि० नष्ट । बरबाद । सत्यानाश ।

मुहा०-चौपट करना=बरबाद करना । नष्ट करना । उजाड़ना ।

चौपटहा-वि० चौपट करनेवाला । सर्व-नाशी ।

चौपटा-वि० चौपट करनेवाला । सत्यानाशी चौपटानन्द-वि० मूर्ख ।

चौपटिया-वि० चार पैरवाली गाड़ी ।

चौपड-सज्ञा स्त्री० दे० "चौतर" । पासों का एक खेल ।

चौपत†-सज्ञा स्त्री० कपड़े की तह ।

चौपतिया या चौपत्ती-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की घास । २ एक साग । ३. छोटी पुस्तक । छोटी कापी । हथबही । ४. कसीदे की चार पत्तियोंवाली बूटी ।

चौपय-सज्ञा पु० चौराहा । एक पत्थर ।

चौपद\*†-सज्ञा पु० दे० "चौपाया" ।

चौपवा-सज्ञा पु० एक प्रकार का छन्द ।

चौपल-सज्ञा पु० एक प्रकार का पत्थर ।

चौपहरा-वि० चार पहर का ।

चौपहल या चौपहला-वि० चौपाला । चारो ओर से समान वस्तु । जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो । वर्गात्मक ।

चौपहला-सज्ञा पु० एक प्रकार की खुली पालकी ।

चौपहलू-वि० चौपहल ।

चौपाई-सज्ञा स्त्री० १ १६ मानाओ का एक छंद । †२ चारपाई । छाट ।

चौपाड-सज्ञा पु० दे० "चौपाल" । बैठका ।

चौपाया-सज्ञा पु० चार पैरोवाला पशु । गाय, बैल, भैंस आदि पशु ।

चौपाल-सज्ञा पु० १ बैठक । २ दालान । खुला हुआ बैठने का स्थान, जो ऊपर से छाया हो । ३ पर के सामने का छायादार चबूतरा । ४ एक प्रकार की पालकी ।

चौपाला-सज्ञा पु० पालकी । चौडोला ।

चौपुरा-सज्ञा पु० वह कुर्सी जित पर चार पुरवट या मोट एक साथ चले ।

चौपया-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का छंद । †२ चारपाई । छाट । ३ चार पहियोंवाली ऊटगाड़ी ।

चौफला-वि० जिसमें चार फल या धारदार लोहे हो ।

चौकेर-क्रि० वि० चारो ओर । चारो तरफ ।

चौकेरी-सज्ञा पु० चारो ओर घूमना ।

क्रि० वि० चारो ओर ।

चौबंदी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का चुस्त अंग । २. बगलबंदी ।

चौबस्ता-सज्ञा पु० एवं वर्णवृत्त ।

चौबगला-सज्ञा पु० कुत्ते, मिरजई या अगे आदि के बगल के नीचे और बली के ऊपर का भाग ।

वि० चारो ओर का ।

चौबगली-सज्ञा स्त्री० बगलबंदी ।

चौबच्चा-सज्ञा पु० चौकोना गढ़ा । कृत्रिम कुण्ड ।

चौबर-वि० बहादुर । मजबूत ।

चौबरसी-सज्ञा स्त्री० आढ़ जो चौबे वर्ष किया जाय ।

चौबाई† या चौबाई-सज्ञा स्त्री० १. चारो ओर से बहनेवाली हवा । २ अफवाह । किवदती । उड़ती खबर ।

चौबाइन-सज्ञा स्त्री० चौबे की स्त्री ।

चौबार या चौबारा-सज्ञा पु० १. कोठे के ऊपर की खुली कोठरी । २ खुली हुई बैठक । ३. चार दरवाजे का दालान ।

क्रि० वि० चौथी दफा । चौथी बार ।

चौबीस-वि० बीस ओर चार ।

सज्ञा पु० बीस से चार अधिक की संख्या ।

चौबे-सज्ञा पु० [स्त्री० चौबाइन] १. चारों वेदों का ज्ञाता । २. माथुर ब्राह्मण । मथुरा के पुजारियों के लिए प्रयुक्त शब्द । मथुरा का पंडा । ३. ब्राह्मणों की एक शाखा । चतुर्वेदी ।

चौडोला-सज्ञा पु० एक प्रकार का मात्रिक छंद ।

चौमड-सज्ञा स्त्री० चौघड । दाढ़ । वह दांत जिससे खाद्य पदार्थ चबाया या कुचला जाता है ।

चौमजिला-वि० चार खंडोवाला (मकान आदि) । चार मजिलवाला ।

चौमसिया-वि० चार महीने का । वर्षों के चार महीने म होनेवाले ।

सज्ञा पु० चार मासे का बाट ।

चौमहला-दे० "चौमजिला" ।

चौमार्ग-सज्ञा पु० चौराहा । चौरास्ता ।

चौमाता-सज्ञा पु० १ वर्षों वाल के चार महीने—आषाढ, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन । चातुर्मास । २ वर्षों अर्धु सम्यन्धी कविता या गीत ।

चौमासी-सज्ञा स्त्री० एवं प्रकार का गाना । दे० "चौमाता" ।

चौमुख-वि० वि० चारो ओर । चारों

सरफ। चोमुहा। चार मुंहवाला।  
ऐसा भवान जिसमें चारों ओर द्वार हो।  
चार वस्तियों का दिया।

चोमुला-वि० चारों ओर। चार मुंह-  
वाला।

चोमुली-मज्ञा स्त्री० १. चार मुंहवाली। २.  
चार मुगवाली दुर्गा।

चोमेला-वि० चार मगोंवाला।

सज्ञा पु० प्राचीन काल का एक प्रकार का  
दड़ या गजा।

चोमुहानी-मज्ञा स्त्री० चौराहा। चौराम्ना।  
चौरग-मज्ञा पु० तलवार चलाने का एक  
हथ।

वि० तलवार के चार से बटा हुआ। चार  
रगवाला। दौड़-पेच।

चौरगा-वि० [स्त्री० चौरगी] चार रंगों  
का। जिसमें चार रंग हो।

चौर-मज्ञा पु० १ चोरी करनेवाला।  
चोर। २. एक प्रकार की लता। ३. गढ़ा  
जिसमें बरमात का पानी इकट्ठा हो।  
४. एक मद्य द्रव्य।

चौरस-वि० जो ऊँचा-नीचा न हो। समतल।  
बराबर।

सज्ञा पु० १ एक वर्णवृत्त। २ ठठेरो का  
एक औजार।

चौरसाना-क्रि० स० बराबर करना।  
चोरम करना।

चौरसाई-सज्ञा स्त्री० समता। बराबरी।

चौरसो-मज्ञा स्त्री० १. एक गहना। २. चौरस  
करने का एक औजार। ३. अन्न रखने  
का कोठा।

चौरस्ता-सज्ञा पु० दे० "चौराहा"।

चौरा-सज्ञा पु० [स्त्री० चोरी] १ चवूतरा।

बेदी। २ किसी ग्रामदेवता, सती, मृत  
महात्मा, भूत, प्रेत आदि का स्थान, जहाँ  
बेदी या चवूतरा बना हो। †३ चौपाल।  
४ लोविया (एक तरकारी)। बोजा।

चौराई-सज्ञा स्त्री० चोलाई नाम का शाक।

चौरानवे-वि० नब्बे से चार अधिक।

सज्ञा पु० नब्बे से चार अधिक की सरया।  
९४।

चौराती-वि० अरुनी से चार अधिक।

सज्ञा पु० १. अरुनी से चार अधिक की  
मग्या। ८४। २ चोगरी नक्ष मंगि।  
३ पत्थर काटने की टाँगी।

चौराहा-मज्ञा पु० चोगम्या। चोमुहानी।

चोरी-सज्ञा स्त्री० १. छोटा चवूतरा। २.

चार बार धोई गई मास। एवं ओषध।

३ चमरी। घोड़ा के वालों का बना

हुआ। छौंटा चेंबर-विशेष।

चोरैठा-सज्ञा पु० पानी के साथ पीमा हुआ  
चावल।

चौर्य-मज्ञा पु० चोरी।

चौर्यभ्रम-सज्ञा पु० चोरी।

चौर्यभ्रम-सज्ञा पु० मुडन।

चौलडा-वि० चार लटवाला। चार सटकी  
माला।

चौला-सज्ञा पु० लोविया। बोजा। चोरी।  
एक प्रकार का शाक।

चौलाई-सज्ञा स्त्री० चौराई का साग।

चौलक्य-सज्ञा पु० दे० 'चालुक्य'।

चौलकी बसी एक राजपि।

चौयन-वि० पचास से चार अधिक।

सज्ञा पु० पचास से चार अधिक की सख्या।  
५४।

चौवर-वि० साहसी। बलवान्। उद्योगी।  
चार तहवाला।

चौवार-मज्ञा पु० १. हाथ की चार अंगुलियों  
का समूह। २. चार अंगुल की माप। ३.  
ताश का वह पत्ता जिसमें चार बूटियाँ हों।  
एक सुगंधित पदार्थ।

सज्ञा पु० दे० "चौपाया"।

चौवाई-सज्ञा स्त्री० चारों ओर से बहनेवाली  
हवा। आंधी। भ्रमघड।

चौवार-सज्ञा पु० सार्वजनिक स्थान जहाँ  
लोग एकत्रित होते हैं। पचायती घर।  
सर्वसाधारण की बैठक (सभा)।

चौवालिस-वि० चालीस से चार अधिक।  
सज्ञा पु० चालीस से चार अधिक की  
सख्या।

चौस-सज्ञा पु० १. आटा। मंदा। पिसात।  
चूर। २. चार बार जोता हुआ सेत।

चौसर-सज्ञा पु० १ एक खेल । चौपड ।  
२ इस खेल की विसात ।

सज्ञा पु० १. चार लडो का हार । २. एक मात्रिक छंद ।

चौसठ-वि० साठ से चार अधिक की सख्या ।  
६४ ।

चौहट्ट-सज्ञा पु० दे० "चौहट्टा" ।

चौहट्टा-सज्ञा पु० १ वह स्थान जिसके चारो ओर दुकाने हो । चौक बाजार ।

२ चौमुहानी । चौरस्ता ।

चौहड-सज्ञा पु० जवडा ।

चौहत्तर-वि० सत्तर और चार ।

सज्ञा पु० सत्तरसे चार अधिक की सख्या । ७४ ।

चौहट्टी-सज्ञा स्त्री० चारो ओर की सीमा ।

चौहरा-वि० १ चार तहवाला । चार परतवाला । २ चौगुना । ३. जिसमें पान के बीड़े लपेटे हो । ४. चौपडा ।

चौहान-सज्ञा पु० राजपूतो की एक प्रसिद्ध जाति जिनके प्रथम राजा चतुर्वाह और अन्तिम पृथ्वीराज थे ।

चौहे-क्रि० वि० चारो ओर ।

च्यवन-सज्ञा पु० १ चुना । भरना ।  
टपवना । २ एक ऋषि का नाम ।

च्यवनप्राश-सज्ञा पु० आयुर्वेद में एक प्रसिद्ध पीठिक अवलेह (चाटने की औषध) ।

च्युत-वि० १ गिरा हुआ । टपका हुआ ।

२ भ्रष्ट । ३ अपने स्थान से हटा हुआ ।

४ विमुख । पराङ्मुख ।

च्युति-सज्ञा स्त्री० १ गिरना । स्तनन ।

पतन । २ झडना । उपयुक्त स्थान से

हटना । ३ चूक । कर्तव्य-विमुखता । ४.

गुदाद्वार । ५ अभाव । कमी । ६. भग ।

योनि ।

च्यूडा-सज्ञा पु० चिजडा या चूरा ।

## छ

छ हिंदी वर्णमाला का सातवाँ वर्ण और चवगं का दूसरा व्यंजन । इसके उच्चारण का स्थान तालु है ।

सज्ञा पु० १ काटना । २ ढाँकना । ३ धर । ४ खड । टुकटा ।

वि० साफ । चंचल ।

छग-सज्ञा पु० गोद ।

छग्र-वि० छ, उँगुलियोवाला । छागुर ।

छँगुनिया-सज्ञा स्त्री० पंज की सबसे छोटी उँगली ।

छँगुलिया या छँगुली-सज्ञा स्त्री० कनिष्ठिका ।

छग-वि० छ उँगलियोवाला ।

छँदीरी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पक्वान्न ।

छछुदर या छछुदर-सज्ञा स्त्री० बूहे जैसा एक जंतु । कहते हैं कि इसे रात में ही दिखाई देता है, दिन में नहीं ।

छँटना-क्रि० अ० १ प्रलग होना । छिन्न होना । २ मिछडना । ३ समूह से अलग होना । ४ चुना जाना । ५. साफ होना ।

मेल निकालना । ६ घटना । ग्यन होना ।  
दुबला होना ।

मुहा०-छँटा हुआ=१ चुना हुआ । २.  
नालाक । चतुर । धूर्त ।

छँटा-वि० निष्कृष्ट । अलग किया हुआ ।  
निकाला हुआ ।

छँटवाना-क्रि० स० १ कटवाना । २.  
चुनवाना । ३ छिन्नकर ।

छँटाई-सज्ञा स्त्री० छाँटने का काम, या  
भजदूरी । चुनाई । चुनने की क्रिया ।

छँटाना-क्रि० स० दे० "छँटवाना" ।

छँटाव-सज्ञा पु० छाँटना । छाँटने का भाव  
या क्रिया ।

छँटना-क्रि० स० १ छोडना । त्यागना । २.  
भ्रम की ओर ली में डालकर कूटना । छाँटना ।

वि० अ० न करना ।

छँडना\*†-वि० स० छीनना । छुडावर  
से लेना ।

छँडना-वि० जो छोड दिया गया हो ।  
त्यागा हुआ । छूटा ।

छंरीती-सज्ञा स्त्री० छुट्टी । छोटना । छुट ।  
प्रवकाय । मुक्त । देवता के लिए छाटा  
हुआ ।

छद-सज्ञा पु० १ अक्षरों की गणना के अनुसार  
पदों के वाक्यों का भेद । २. पद ।  
३ पद्य । ४ पद्य बंध । ५ यह विद्या  
जिसमें छंदों का लक्षण आदि का विचार  
हो । छन्दशास्त्र । ६ अभिलाषा ।  
इच्छा । ७ स्वेच्छाचार । ८ वषण ।  
गठ । ९ जाल । सपात । समूह ।  
१० वषट । छल । ११ चाल । मुनि ।  
१२ रगदग । १३ ठक्कन । १४. अभि-  
प्राय । मतलब । १५ एकान्त । १६ हाथ  
का एक ग्रामोपण ।

छो-छल छद=वषट । घोलेबाजी ।  
छवक-वि० १. रसक । २. छली ।  
छवगति-सज्ञा स्त्री० छद बनाने की रीति ।

छदों की चाल या प्रवाह ।  
छदना-वि० छ० पैरों में रस्सी लगाकर  
बांधा जाना । उलभना । बंधना ।

छदवद-सज्ञा पु० छलबल । वषट ।  
छदानुवर्त्ती-वि० आज्ञापालक । आज्ञानु-  
सारा । आज्ञानुवर्त्ती ।

छदो-वि० वषटो ।  
छदोग-सज्ञा पु० सामवेदी । यज्ञादि के  
समय वेद पाठ करनेवाला ब्राह्मण ।  
सामग ।

छदोबद्ध-वि० श्लाकबद्ध । जो पद्य के  
रूप में हो । पद्यात्मक ।

छदोभग-सज्ञा पु० छद-रचनाका एक दाप ।  
वोपपूर्ण छद रचना ।

छ-गिनती में पाँच से एक अधिक ।  
सज्ञा पु० वह सख्या जो पाँच से एक  
अधिक हो । इस सख्या का सूचक अक्ष ६ ।

छई-सज्ञा स्त्री० १ क्षयी । राजरोग ।  
सपेदिक । २ नाव का छप्पर । ३ गद्दी ।

छतडा-सज्ञा पु० बौद्ध लादने की गाड़ी ।  
सगड । बेलगाड़ी । टूटी फूटी गाड़ी ।  
वि० टूटा फूटा ।

छकडाना-क्रि० अ० चौधियाना । चक्कराना ।  
चक्कराना ।

त्रि० ग० बकरी का गर्भसंस्कार करना ।  
छकड़ी-सज्ञा स्त्री० १ छ या समूह ।  
२ यह पालकी जिसे छ पहार उठाने हों ।

छकना-त्रि० अ० १. ला-नीकर अपाना ।  
तृप्त होना । २ भय आदि पीकर नश  
में चूर होना । ३ चक्कराना । अक्षभे में  
पाना । हैरान होना ।

छकाई-सज्ञा स्त्री० यवाई । तुनि । मन्ताप ।  
छकाछक-वि० तृप्त । सन्तुष्ट । अपाया ।  
नशी में चूर ।

छकाना-त्रि० स० १. तृप्त करना । खिला  
मिलाकर तृप्त करना । २ भय आदि से  
उन्मत्त करना । ३. अक्षभे में डालना ।  
हैरान करना ।

छकीला-वि० छका हुआ । तृप्त । मस्त ।  
मत्त ।

छकड-सज्ञा पु० १ पेटू । खानेवाला । २.  
तमाचा । थप्पड़ । ३. नुबसान । ४. चाट ।  
ठोकर ।

छक्का-सज्ञा पु० १ छ या समूह । २  
जिस समूह में छ. हा । जूए का एक दौंव  
जिसमें कौड़ी फेरन से छ कौड़ियाँ चित्त  
पड़ें । ३ जुवा । ४ यह ताप जिसमें  
छ बूटियाँ हों । ५ होश हवास । सुध ।  
सज्ञा ।

मुहा०-छक्के छूटना=१ होश हवास जाता  
रहना । बुद्धि का काम न करना । २  
हिम्मत हारना । साहस छूटना । छक्का-  
पजा=चालबाजी ।

छा-सज्ञा पु० १ बकरा । २. भैंडा ।

छगडा-सज्ञा पु० बकरा ।

छगण-सज्ञा पु० कडा ।

छगन-सज्ञा पु० १ एक छोटी मछली । २.  
छाटा बच्चा । प्रिय बालक ।  
वि० बच्चों के लिए प्यार का एक  
शब्द ।

छगुनी-सज्ञा स्त्री० १ कनिष्ठिका । बानी  
उगली । २. चसनी । छदना । ३. छ  
गुना ।

छगरी-सज्ञा स्त्री० छोटी बकरी ।

छगल-सज्ञा पु० बकरा ।

छद्मिप्रा, छद्मिप्रा-सज्ञा स्त्री० छाछ पीने या नापने का छोटा पान।

छद्मंवर-सज्ञा पु० १. चूहे जैसा एक जंतु।  
२. एक प्रकार का यंत्र या ताबीज। ३. एक आतिशबाजी।

छज-वि०। भाड़ पात। घना जंगल।

छजना-क्रि० अ० १. शोभा देना। सजना। अच्छा लगना। २. ठीक जैचना।

छज्जा-सज्ञा पु० १. छाजन या छत का वह भाग, जो दीवार के बाहर निकला रहता है। २. कोठे का वह भाग, जो दीवार के बाहर निकला रहता है। ३. बरामदा। उत्तरा। ४. खम्भों के ऊपर की पट्टी।

छटकना-क्रि० अ० १. किसी वस्तु का पकड़ से पैर के साथ बाहर निकल जाना। सटकना। २. दूर दूर रहना। ३. बहक जाना। ४. कूदना।

छटकाना-क्रि० अ० १. छुड़ाना। २. भटका देकर बघन से छुड़ाना। ३. बल-पूर्वक अलग करना।

छटना-क्रि० अ० देखो "छँटना"।

सज्ञा पु० एक प्रकार की चलनी।

छटपट-सज्ञा पु० छटपटाने की क्रिया।

छटपटाना-क्रि० अ० १. बघन या पीडा के कारण हाथ-पैर फटकारना। तडफडाना। २. वेचने होना। ३. किसी वस्तु के लिए व्याकुल होना।

छटपटी-सज्ञा स्त्री० १. घबराहट। वेचनी। २. आकुलता। उत्कठा।

छटवाई-वि० निकृष्ट। अलग किया हुआ। चुगा हुआ।

छट्टा-वि० चिड़चिड़ा। विलक्षण स्वभाव का। बदमाश।

छटाँक-सज्ञा स्त्री० एक तौल जो घेर का सोल-हवाँ भाग होती है। बनवाई। पाँच मोला।

छटा-सज्ञा स्त्री० १. शक्ति। प्रभा। प्रकाश। कलश। २. शामा। सीदर्य। ३. बिजली। ४. समूह। ५. शब्दचातुरी। चालाकी।

छटाना-क्रि० स० छटवाना। अलग करवाना। चुनवाना। बनवाना।

छटे-सज्ञा पु० १. चुने हुए। बने हुए। अलग हुए। २. चतुर। चालाक।

छटेल-वि० छँटा हुआ। चालाक। धूर्त। छट्ट या छठ-सज्ञा स्त्री० पक्ष की छड़ी तिथि। पट्टी।

छठा-वि० (स्त्री० छठी) छठवाँ। जो गिनती में ६ हो।

छठ्ठी या छठी-सज्ञा स्त्री० १. जन्म से छठे दिन का संस्कार। छठवीं। पट्टी। २. व्रत-विशेष। तिथि-विशेष।

मुहा०-छठी का दूध याद आना=सब सुख भूल जाना। बहुत हैरान होना।

छठे-वि० छठवें। पट्ट। छठवाँ।

छड-सज्ञा स्त्री० धातु या लकड़ी आदि का पतला टुकड़ा। लोहे का सीकचा।

छडना-क्रि० स० अनाज को मोलली में कूटकर साफ करना। छाँटना। चावल छाँटना।

छडा-सज्ञा पु० पैर में पहनने का एक गहना। लच्छा।

वि० अकेला।

छडाना-क्रि० स० चावल साफ करवाना। भूसी अलग करवाना। छिलका छोड़ाना।

छटिया-सज्ञा पु० १. दरवान। पहरेदार। आसाबरदार। कंचुकि। राजा का परिचायक। २. तग गली।

छडियाना-क्रि० स० छड़ी मारना। छड़ी के समान करना।

छड़ी-सज्ञा स्त्री० १. पतली लकड़ी। बत। डण्डा। हाथ में रखने का पतला डण्डा। २. छड़ी के आकार की वस्तु जो फूलों से बनाई जाती है। गुलछड़ी। फूलछड़ी। ३. भूरी जिसे मुसलमान पीरो की मजार पर चढ़ाते हैं।

वि० अकेली।

छड़ी-बरदार-सज्ञा पु० चौबदार।

छडीला या छरीला-सज्ञा पु० १. एक तरह का पीथा। जटामोनी। २. कुम्हार की गिट्टी।  
वि० अकेला।

छा-गज्ञा स्त्री० १. छाज। पाटन। गज। पटान। पर के ऊपर या गुला

स्थान । २. ऊपर का गुला हुआ बाड़ा ।  
 ३. विमान । निमान । पीढ़ी ।  
 \*मज्ञा पु० घाव । जग्म । निमान ।  
 \*नि० वि० जिगवा प्रगित्य हो । पज्ञा ।  
 छगरी, छगरी-मज्ञा स्त्री० ऊपर तारी  
 हुई चौदनी ।  
 छगना\*—मज्ञा पु० छाता । दत्ता । छत्र ।  
 छगनार†—वि० (स्त्री० छगनारी) छाने की  
 तरह पंजा हुआ । दूर तक पंजा हुआ ।  
 किन्ना । छायादार (पेड़) ।  
 छतरी—मज्ञा स्त्री० १. छाता । एक प्रकार का  
 बड़ा छाता, जिगमे गठार सेनित लोग उठते  
 हुए हवाईजहाज पर से जमीन पर उतरने  
 हैं । २. मङ्ग । समाधि के स्थान पर बना  
 हुआ छज्जदार मङ्ग । ३. गबूतरी के बैठने  
 के लिए बाँस की कट्टियों का टट्टर ।  
 खुमी । ४. कुकुरमुत्ता ।  
 यौ०—छतरी फीज=छतरियों के सहारे हुनाई  
 जहाजों से उतरनेवाली सेना ।  
 छतिपा\*†—मज्ञा स्त्री० दे० “छाती” ।  
 छतिपाना—वि० स० छाती से लगाना ।  
 छतिवन—मज्ञा पु० वृक्ष-विशेष । सप्तपर्णी ।  
 छतीसा या छत्तीस—वि० छत्तीन (स्त्री०  
 छत्तीसी) १ चतुर । सयाना । चालाक ।  
 २ धूर्त ।  
 पु० १. छत्तीस । २. नाई ।  
 छत्तीसापन—सज्ञा पु० धूर्तता । चालाकी ।  
 छत्तीना—सज्ञा पु० छाता । कुकुरमुत्ता । खुमी ।  
 छाता या छत्तर†—सज्ञा पु० १ “छत्र” ।  
 एक स्थान पर एकत्रित सभ । अतराशि ।  
 गोला । ढेर । २ सत्र । ३ छाता ।  
 छाता—सज्ञा पु० † १ छाता । छतरी ।  
 २ छत्र जिसका नीचे से रास्ता  
 चलता हो । ३ गधुमक्खी, मिड आदि के  
 रहने का घर । ४ छाते की तरह दूर तक  
 फैली हुई वस्तु । छनारी चीज । चक्का ।  
 ५ कमल का बीजकोश ।  
 छत्तीस—वि० तीस से ६ अधिक । ३६ ।  
 छत्तीसी—सज्ञा स्त्री० व्यभिचारिणी ।  
 दुराचारिणी । छिनाल ।  
 छत्र—सज्ञा पु० १ छाता । छतरी । २.

राजाघा का छाता-विशेष जो राजावालों  
 में गमना जाता है । ३ खुमी । कुकुरमुत्ता ।  
 यौ०—छत्रछात्र, छत्रच्छाया—रक्षा । धारण ।  
 छत्रव—मज्ञा पु० १. खुमी । कुकुरमुत्ता ।  
 छाता । २. गुण-विशेष । ३. मंदिर ।  
 मङ्ग । देवमंदिर । ४. शाह का छाता ।  
 छत्रवर—मज्ञा पु० १. छत्रपति । राजा । मन्त्र-  
 राजा । छत्र धारण करनेवाला । २. यह जो  
 राजाघों पर छत्र लगाता हो ।  
 छत्रवारी—वि० राजा । छत्र धारण करने-  
 वाला । जंगे, छत्रवारी राजा ।  
 छत्रपति—मज्ञा पु० राजा । तिलकधारी  
 राजा । स्वार्थीन राज्य ।  
 छत्रभय—मज्ञा पु० १ राजनाम । नृपनाम ।  
 २ राजनामक ज्योतिष का एक योग ।  
 ३. वैधव्य । ४. सराजवना ।  
 छत्रबन्धु—मज्ञा पु० नीच कुल का क्षत्रिय ।  
 क्षत्रिय के समान ।  
 छात्रा—मज्ञा स्त्री० १. धनिया । २. घरनी  
 का फूँव । ३. खुमी । ४. मजीठ । ५.  
 नावा ।  
 छात्राक—सज्ञा पु० १. एक औषध । २.  
 कुकुरमुत्ता । खुमी ।  
 छात्री—वि० छत्रमुक्त ।  
 सज्ञा पु० † दे० “क्षत्रिय” । १. वीरजानि ।  
 राजपूत । २. छोटा छाता । ३. मृतकों का  
 एक प्रकार का स्मारक जो पुरानी प्रथा के  
 अनुसार हिंदुओं में भी अभी प्रचलित है ।  
 ४. नाई । नापित ।  
 छावर—मज्ञा पु० १. घर । गृह । २. कुञ्ज ।  
 लताच्छादित गृह ।  
 छाद—सज्ञा पु० १ ढक्कन । आवरण ।  
 २ पक्ष । पत्त । ३ पत्ता । पत्र । ४.  
 गठिवन । ५. तमालवृक्ष । एवं औषध ।  
 ६. चाल । रीति ।  
 छदन—सज्ञा पु० १. आवरण । ढक्कन ।  
 २. पत्र । पत्ता । ३. तमालवृक्ष । ४. तैज-  
 पत्ता । ५. गठिवन । ६. खोल । गिलाफ ।  
 छदाम—सज्ञा पु० पैसे का चौथाई भाग ।  
 दो दमडो ।  
 छप्प—सज्ञा पु० १ छिपाव । गोपन । २

व्याज । बहाना । हीला । ३. छल ।  
 कपट । जैसे—छत्रतापस—कपटी मुनि ।  
 छप्रवेश—सज्ञा पु० (वि० छप्रवेशी) बदला  
 हुआ वेश । कृत्रिम वेश ।  
 छप्रिका—सज्ञा स्त्री० १. मजीठ । २. गुडची ।  
 छपी—वि० (स्त्री० छप्रिनी) १. बनावटी ।  
 २. छली । कपटी । बहुरूपिया ।  
 छन—सज्ञा पु० दे० "क्षण" ।  
 छनक—सज्ञा पु० १. छन छन करने का शब्द ।  
 भनभनाहट । भनकार । २. एन क्षण ।  
 सज्ञा स्त्री० किसी आशका से चौंकर  
 भागने की क्रिया । भडक ।  
 छनकना—क्रि० अ० किसी तप्त धातु या  
 खोलते हुए घी आदि में किसी वस्तु के  
 पड़ने से छनछन शब्द होना । छनछन  
 शब्द करना । चौकता होकर भागना ।  
 छनकमनक—सज्ञा स्त्री० १. गहनों की भकार ।  
 २. सजपज । ३. ठसव । ४. दे०  
 'छगन-मगन" ।  
 छनकाना—क्रि० स० १. छनछन शब्द करना ।  
 २. गरम करना । ३. चीवाना । चीपना  
 करना । भटकाना ।  
 छनछनाना—क्रि० अ० १. किसी तपी हुई  
 धातु या खोलते हुए घी, तेल आदि में किसी  
 वस्तु के पड़ने से छन छन शब्द होना ।  
 २. भनभनाना । भनकार होना । ३.  
 चोट आदि की टीस या पीडा ।  
 क्रि० स० १. छन-छन का शब्द उत्पन्न  
 करना । २. भनकार करना ।  
 छनछवि\*—सज्ञा स्त्री० बिजली ।  
 छनबा\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'क्षणदा' । रात ।  
 छनना—क्रि० अ० १. छाट छोड़ छिद्रा से  
 होकर किसी पदार्थ का जाना । निचुटना ।  
 साफ होना । २. कोई नशा पीना । ३.  
 छलनी हो जाना । ४. विध जाना । अनेक  
 स्थानों पर चाट खाना । ५. छान-बीन  
 होना । ६. बडाह में पूरी, पकवान आदि  
 बनना ।  
 सज्ञा पु० छानने का कपडा ।  
 मुहा०—गहरी छनना—१. खूब मेल जोल  
 होना । गाड़ी मंथी होना । २. लड़ाई होना ।

छनाक—सज्ञा पु० १. किसी वस्तु के टूटने  
 का शब्द । २. गरम ।  
 छनाका—सज्ञा पु० १. क्षीघ्र जल जाना ।  
 पानी या दूध आदि में क्षीघ्र जलना । २.  
 खनाना । ठनाका । रुपयो के बजने का  
 शब्द ।  
 छनाना—क्रि० स० किसी दूसरे से छानने का  
 काम करना । नया पिलाना ।  
 छनिक\*—वि० दे० "क्षणिक" ।  
 सज्ञा पु० १. क्षण भर । क्षणिक विचार-  
 वाला । २. अव्यवस्थित । उबकवा ।  
 छन्न—सज्ञा पु० १. किसी तपी हुई चीज पर  
 पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द ।  
 २. ठनकार । गुप्त स्थान । ३. छनकार ।  
 ४. नष्ट । ५. उन्मत्त । ६. गूढ । गुप्त  
 रहस्य । ७. एकात । छिपा हुआ ।  
 वि० ढका हुआ । गायब ।  
 छन्ना—सज्ञा पु० वह कपडा जिससे कोई चीज  
 छानी जाय ।  
 छन्नी—सज्ञा स्त्री० छोटा छनना । भूषण-  
 विशेष ।  
 छन्नू—वि० छाननेवाला ।  
 छप—सज्ञा स्त्री० १. पानी में गिरने का  
 शब्द । २. पानी के छोटो के जार से  
 पड़ने का शब्द ।  
 छपई—सज्ञा स्त्री० छ पद का छन्द । छ कड़ी  
 का छन्द । छपय । छ पैरवाला ।  
 छपकना—क्रि० स० तलवार से काटना ।  
 छित छित करना । काटना ।  
 छपकली—सज्ञा स्त्री० दे० "छिपकली" ।  
 विसतुड्या । जटु विषाप ।  
 छपका—सज्ञा पु० १. सिर में पहनने का एक  
 गहना । २. पानी का भरपूर छोटा । ३.  
 पानी में हाथ-पैर मारने की क्रिया ।  
 छपकी—सज्ञा स्त्री० एव जन्तु का नाम जो  
 छछिपकर प्रहार करता है ।  
 पछपाना—क्रि० अ० पानी पर कोई वस्तु  
 पटककर छपछप शब्द करना ।  
 क्रि० स० पानी में छाछप शब्द उत्पन्न  
 करना । पानी में हाथ पैर चलाना ।  
 छपटी—सज्ञा स्त्री० सक्की का छोटा टुकड़ा ।

पि० पत्तमा । छाटा टुपडा ।  
 छपद-गङ्गा पु० भौरा । पटपद ।  
 छपन-वि० गुप्त । गायब । . .  
 सज्ञा पु० नाम । सहार ।  
 छपना-वि० अ० १ मुद्रित होना । छापा  
 जाना । चिह्न या दाव पटना । २ चिह्नित  
 होना । अंकित होना । ३ शीतला का  
 टीका लगवाना ।  
 †वि० घ० दे० "छिपना" ।  
 छपरखट, छपरखाट-सज्ञा स्त्री० मसहरीदार  
 पलग ।  
 छपरा-सज्ञा पु० १. छप्पर । २. बिहार  
 राज्य का एक जिला ।  
 छपरिया-सज्ञा स्त्री० छोटा छप्पर ।  
 छपरी-†-सज्ञा स्त्री० भापडी ।  
 छपवाना-क्रि० स० दे० "छिपाना" ।  
 छपा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "क्षपा" । रात ।  
 निशा ।  
 छपाई-सज्ञा स्त्री० १ छापने का काम ।  
 मुद्रण । अंकन । २ छापने का ढग ।  
 ३ छापने की मजदूरी ।  
 छपावर-सज्ञा पु० १. चन्द्रमा । २. कपूर ।  
 छपाका-सज्ञा पु० १ पानी पर किसी वस्तु  
 के गिरने का शब्द । २ जोर से उछाला  
 हुआ पानी का छोटा ।  
 छपाना-वि० स० छापने का काम दूसरे  
 से कराना । मुद्रित कराना । अंकित  
 कराना ।  
 \*क्रि० स० दे० 'छिपाना' ।  
 छप्पन-वि० पचास और ६ । ५६ की सख्या ।  
 छप्पम-सज्ञा पु० एक मात्रिक छंद जिसमें  
 छ चरण होते हैं ।  
 छप्पर-सज्ञा पु० १ फूस आदि की छाजन,  
 जा मकान में ऊपर छाई जाती है । छाजन ।  
 -छान । २ छाया ताल या गढ़वा । पोखर ।  
 मुरा०—छप्पर पर रखना=छोड़ देना ।  
 चर्चा न करना । जिक्र न करना । छप्पर  
 फाड़कर देना=अनायास देना । अवस्मात्  
 देना ।  
 छप्परखन्ब-वि० छप्पर बनानेवाला या बांधने-  
 वाला । छप्पर या भापडा म रहनेवाला ।

छत्र-सज्ञा स्त्री० ढव । रण । शोभा । डोल ।  
 आकृति । सौन्दर्य ।  
 छवटा-सज्ञा पु० गीचा ।  
 छवतखनी\*-सज्ञा स्त्री० शरीर की सुंदर  
 बनावट ।  
 छवि-सज्ञा स्त्री० दे० "छवि" ।  
 छवीला-वि० (स्त्री० छवीली) १ सामायुक्त ।  
 सुंदर । २. रसिक । रमिया ।  
 छबुवा-सज्ञा पु० एक प्रकार का जहरीला  
 बीडा ।  
 छब्रोत-वि० बीम घोर ६ । २६ की सख्या ।  
 छम-सज्ञा स्त्री० १ धुंधलू बजने का शब्द ।  
 २ पानी बरसने का शब्द ।  
 \*सज्ञा पु० दे० "क्षम" । १ समर्थ । २  
 क्षमा करा ।  
 छमक-सज्ञा स्त्री० ठसक ।  
 छमकर-सज्ञा पु० कपटी । व्यभिचारी । दुरा-  
 चारी ।  
 छमकना-क्रि० अ० १ धुंधलू आदि बजाते  
 हुए हिलना डोलना । २ गहना की झन-  
 कार करना । ३ छमछम शब्द करना ।  
 ४ ठसक दिलाना ।  
 छमछम या छमाछम-सज्ञा स्त्री० १ नूपुर,  
 पायल, धुंधलू आदि के बजने का शब्द । २  
 पानी बरसने का शब्द । शब्द विशेष ।  
 क्रि० वि० छमछम शब्द के साथ ।  
 छमछमाना-क्रि० अ० १ छमछम शब्द  
 करना । २ चमचमाना । झमकना ।  
 शाशित होना ।  
 छमना-†-क्रि० स० क्षमा करना ।  
 छमण्ड-सज्ञा पु० निराधार । गिरबलम्ब ।  
 अनाथ ।  
 छमा†-सज्ञा स्त्री० दे० "क्षमा" ।  
 छमासी-सज्ञा स्त्री० १ दे० "छमाही" । मृत्यु  
 के ६ महीने बाद किया जानेवाला आश ।  
 २ छ मासे की तील या घटखरा ।  
 छमाही-सज्ञा स्त्री० छ महीने का । हर छ  
 महीने पर होनेवाला ।  
 छमुख-सज्ञा पु० पड़ानन । वात्तिकेय ।  
 छमिच्छत-सज्ञा स्त्री० १. इन्कार । सचेत ।  
 चिह्न । २ गमन्या ।

धय\*—संज्ञा पु० दे० “क्षय” ।  
 धयना\*—क्रि० अ० धय को प्राप्त होना ।  
 छोड़ना । नष्ट होना ।  
 धर—संज्ञा पु० दे० “छल” ।  
 संज्ञा पु० दे० “क्षर” । जटामांसी ।  
 धरकना\*—क्रि० अ० दे० “छलकना” । धर-  
 धर करना ।  
 धरधबि—संज्ञा स्त्री० १. पोखरा । २.  
 शौचस्थान । पखाना ।  
 धरधर—संज्ञा पुं० १. कणों या धरों के वेग से  
 निकलने और गिरने का शब्द । २. पतली  
 लचीली छड़ी के लगाने का शब्द । सटसट ।  
 धरधराना—क्रि० अ० शरीर के धाव या  
 कटे हुए स्थान पर क्षार-युक्त वस्तु लगाने  
 से पीड़ा होना ।  
 धरना—क्रि० अ० १. चक्काना । चुचु-  
 वाना । २. चूना । टपकना ।  
 †\*क्रि० स० १. छलना । धोखा देना ।  
 ठगना । २. मोहित करना ।  
 धरभार†\*—संज्ञा पु० १. प्रवध या कार्य का  
 बोझ । कार्यभार । २. भंगट । बखेड़ा ।  
 धरस—संज्ञा पु० छ । रस । पटरस ।  
 धरहरा—वि० (स्त्री० धरहरी) १. क्षीणग ।  
 सुबक । हलका । २. तेज । फुरतीला ।  
 चालाक ।  
 धरहरापन—संज्ञा पुं० चुस्ती । फुर्तीलापन ।  
 चालाकी । दुबलापन ।  
 धरा—संज्ञा पु० १. छड़ा । २. तर ।  
 लड़ी । ३. रस्सी । ४. नारा । इजारबंद ।  
 नीवी ।  
 धरिन्दा—वि० अकेला ।  
 धरी†\*—संज्ञा स्त्री० वि० १. दे० “छड़ी” ।  
 २. दे० “छनी” ।  
 धरीडा—वि० अवेला । ऐसा यात्री जिसके पास  
 बोझ या असवाब न हो ।  
 धरीला—संज्ञा पु० बार्द की तरह का एक  
 पोधा । पयरफूल । बुढ़ना ।  
 धरे—वि० छेंटे, चुने हुए, अलग किए हुए ।  
 धरीरा—संज्ञा पुं० लरीच ।  
 धरन—संज्ञा पुं० यमन । कै करना । छांट ।  
 उलटी ।

धर्बापन—संज्ञा पु० खीरा । ककरी ।  
 धर्दि—संज्ञा स्त्री० यमन । कै । उलटी ।  
 धर्दा—संज्ञा पुं० १. छोटी कंकड़ी । २.  
 छोटी गोती जो बंदूक से चसाई जाती है ।  
 धल—संज्ञा पुं० १. धोखा । २. घहाना ।  
 ३. धूर्तता । बंचना । ठगपन । ४. कपट ।  
 छलक, छलकन—संज्ञा स्त्री० छलकने की क्रिया  
 या भाव ।  
 छलकना—क्रि० अ० १. किसी तरल चीज  
 का बरतन से उछलकर बाहर गिरना ।  
 २ उमड़ना । बाहर होना ।  
 छलकाना—क्रि० स० किसी पात्र में भरे हुए  
 जल आदि को बाहर उछालना । डलकाना ।  
 छलकारी—वि० छल करनेवाला । धूर्त ।  
 धोखेबाज ।  
 छलछंद—संज्ञा पु० [वि० छलछंद] कपट का  
 जाल । चालबाजी ।  
 छलझना—क्रि० अ० कूदना । फाँदना । उछ-  
 लना । छलांग मारना ।  
 छलछलाना—क्रि० अ० १. छल-छल शब्द  
 होना । २. पानी आदि थोड़ा थोड़ा करके  
 गिरना । ३. जल से पूर्ण होना ।  
 छलछिद्र—संज्ञा पु० कपट-व्यवहार । धूर्तता ।  
 धोखेबाजी ।  
 छलछिद्री—संज्ञा पु० कपटी । धोखेबाज ।  
 छली ।  
 छलबल—संज्ञा पु० कपट । धोखा । साँठता ।  
 छलबिनय—संज्ञा पु० धोखा देने के लिए बड़ाई ।  
 छलना—क्रि० स० धोखा देना । मुलावे में  
 डालना ।  
 संज्ञा स्त्री० धोखा । छल ।  
 छलनी—संज्ञा स्त्री० आटा आदि चालने का  
 छेदयुक्त पात्र । चलनी ।  
 मुहा०—छलनी हो जाना=किसी वस्तु में  
 बहुत से छेद हो जाना । बलेजा छलनी  
 होना=दुःख सहते-सहते हृदय जर्जर हो  
 जाना ।  
 छलहाई\*—वि० स्त्री० छनी । कपटी ।  
 धालबाज ।  
 छलांग—संज्ञा स्त्री० मुदान । फाँद । फलांग ।  
 चौकड़ी ।

छादना-क्रि० सं० १. बांधना । जपडना ।  
कसना । रोकना । २. थोड़े या मधे के  
पिछाने पैरों को एक दूसरे से मटाकर बांध  
देना ।

छादिस-संज्ञा पुं० घेदपाठी । घेदसाम्बन्धी ।  
रुद्ध । मूर्ख ।

छादि-संज्ञा पुं० भाग । अंश । तण्ड ।  
द्वजडा । हिस्सा ।

छाद्ये-संज्ञा पुं० १. एक उपनिषद् । २. वह  
भोजन जो ज्योनार आदि से अपने घर  
लाया जाय । परोसा ।

छावै-संज्ञा स्त्री० बेली "छोह" ।

छावड़ा या छावड़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री०  
छावड़ी, छोड़ी] १. जानवर का बच्चा ।  
२. छोटा बच्चा । बालक ।

छास-संज्ञा स्त्री० कूड़ा-करवट ।

छाह-संज्ञा स्त्री० १. जहाँ धूप न हो । छाया ।  
२. ऊपर से छाया हुआ स्थान । ३. बचाव  
या निर्वाह का स्थान । शरण । सरक्षा ।  
४. परछाई । ५. प्रतिबिम्ब ।

मुहा०-छाह न छूने देना=पास न फटवने  
देना । निवट तक न आने देना । छाह  
बचना=दूर दूर रहना । पास न जाना ।

छाहगीर-संज्ञा पुं० छन । १. राजछत्र ।  
२. दर्पण । आइना ।

छाहा-संज्ञा स्त्री० छाया । परछाई ।  
प्रतिबिम्ब ।

छाही-संज्ञा स्त्री० छाह । परछाही ।

छाई-संज्ञा स्त्री० राख । खाद ।

क्रि०अ०-छा गई । फेंल गई ।

छाक-संज्ञा स्त्री० १. तृप्ति । इच्छापूर्ति ।

२. जलपान । बलेवा । ३. नशा ।

मस्ती । ४. गर्व । अहंकार । आडम्बर ।

५. छटा । ६. रीति । ७. दुर्गंध ।

छावना+क्रि० अ० १. तृप्ति होना ।

अपाना । २. नशा पीकर मस्ती होना । ३.

चकित होना । ४. साफ करना । मल दूर

करना ।

छाके-संज्ञा पुं० १. मतवाले । उन्मत्त । गिथ-

बकड । २. हैरान । ३. तन्मय । ४. तृप्ति ।

अचाना हुआ ।

छाग-संज्ञा पुं० [स्त्री० छागी] बकरा ।  
बकरी का मांस या दूध ।

छागवाहन-संज्ञा पुं० अग्नि । अग्निदेयता ।

छागभोजी-वि० १. मासाहारी । बकरा

खानेवाला । २. भेड़िया ।

छागमुल-संज्ञा पुं० कार्तिकेय का बकरे

ऐसा छठवाँ मुल । कार्तिकेय का एक

गण ।

छागरथ-संज्ञा पुं० अग्नि ।

छागन-संज्ञा पुं० उपले की आग ।

छागर-संज्ञा स्त्री० बकरी ।

छागल-संज्ञा पुं० १. बकरा । २. बकरे की

खाल की बनी हुई चीज ।

संज्ञा स्त्री० पैर का एक गहना । नाभन ।

छागल गोथी-वि० व्यभिचारी ।

छाछ या छाछी-संज्ञा स्त्री० मट्ठा । मही ।

तक ।

छाछठ-संज्ञा पुं० सत्त्या-विशेष । ६६ ।

छाज-संज्ञा पुं० १. घनाज फटवने का

वस्तुन । सूप । २. छाजन । छप्पर ।

३. छज्जा । ४. शोभा । ५. मार्ग ।

छाजन-संज्ञा पुं० आच्छादन । वस्त्र ।

कपडा ।

संज्ञा स्त्री० १. छप्पर । २. छाने का

काम या ढग । छावाई । ३. एक वर्णरोग ।

यो०-भोजन-छाजन=खाना-कपडा ।

छाजना-क्रि० अ० [वि० छाजित] शोभा

देना । आच्छा लगना । फवना । सुशोभित

होना ।

छाजा+क्रि० अ० [वि० छाजित] शोभा

देना । आच्छा लगना । फवना । सुशोभित

होना ।

छाजा+क्रि० अ० [वि० छाजित] शोभा

देना । आच्छा लगना । फवना । सुशोभित

होना ।

छाजा+क्रि० अ० [वि० छाजित] शोभा

देना । आच्छा लगना । फवना । सुशोभित

होना ।

छाजा+क्रि० अ० [वि० छाजित] शोभा

देना । आच्छा लगना । फवना । सुशोभित

होना ।

छाजा+क्रि० अ० [वि० छाजित] शोभा

देना । आच्छा लगना । फवना । सुशोभित

होना ।

छालटी—सज्ञा स्त्री० छाल या सन वा बनाव  
हुआ वस्त्र ।

छालना—क्रि० अ० १ छानना । २ छलनी  
की तरह छिद्रमय करना ।

छाला—सज्ञा पु० १ छाल या चमड़ा ।  
जिल्द । जैसे—मृगछाला । २ फफोला ।  
फोडा । फुन्सी । घाव ।

छालिया या छाली—सज्ञा स्त्री० १ मुपारी ।  
कटी हुई मुपारी के टुकड़े । २ बूँडे म स दही  
निवालने की छोटी कटोरी ।

छावना—क्रि० स० छाना । पाटना । छप्पर  
बनाता । छाया करना ।

छावनी—सज्ञा स्त्री० १ डेरा । पड़ाव ।  
२ छान या पाटने का कार्य । ३ सेना के  
ठहरने का स्थान । सैन्य शिविर ।

छावरा—सज्ञा पु० दे० "छौना" ।

छावा—सज्ञा पु० १ शावक । बच्चा । २  
पुत्र । बेटा । ३ जवान हाथी ।

वि० छाया गया । आच्छादित ।

छासठ—वि० ६६ की सख्या ।

छिड़की—सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की छोटी  
बीटी । २ एक छोटा उड़नवाला बीटा ।  
३ निवाटी ।

छिड़—सज्ञा स्त्री० छोटा । पार ।

छिड़ना—क्रि० स० जबरदस्ती ल लेना ।  
छीनना ।

छि—अव्य० घृणा या तिरस्कारमूचक शब्द ।  
छिड़ता—गना पु० डाक । पलांग ।

छिड़नी—सज्ञा स्त्री० छड़ी । बमाची ।  
बीत वा छोग टुकड़ा ।

छिड़वा—सज्ञा स्त्री० छीर ।

छिड़का—सज्ञा पु० एक पोषा जिम सूधन से  
छीक प्राण ।

छिड़नी—गना स्त्री० ताकछिड़नी प्राण  
जिमके फल संघन से छीक प्राणी है ।

छिड़रा—गना पु० हिलने की तरह का एक  
जागर ।

छिड़नी, छिड़निया या छिड़ली—गना स्त्री०  
हाथ की सबसे छोटी उँगली । कनिष्ठिका ।

छिड़ना—वि० [स्त्री० छिड़नी] (पानी की  
मतल) जो गहरी न हो । उथला ।

छिड़ना—सज्ञा पु० दे० "छिड़ल" । १  
चमड़ा । निवृष्ट मांस । २ मल की थैली ।

छिड़\*—सज्ञा स्त्री० दे० "छिड़" । बूँद ।

छिड़कारना—क्रि० स० दे० "छिड़वाना" ।

छिड़वाना या छिड़ियावाना—क्रि० ग० १ मारे  
मारे फिरना । २ निन्दा करना । घृणा  
करना ।

छिड़ोत्पन, छिड़ोरापन—सज्ञा पु० छिड़ोरा  
होने का भाव । क्षुद्रता । आछापन ।  
नीचता ।

छिड़ोरा—वि० (स्त्री० छिड़ारी) क्षुद्र ।  
भोधा । अविद्वानी । नीच ।

छिड़ना—क्रि० अ० घटना ।

छिड़ाना—क्रि० स० नष्ट होने देना । छोड़ने  
देना या छोड़ने का काम कराना ।

क्रि० अ० दे० "छीजना" ।

छिटकना—क्रि० प्र० छितराना । चारों  
ओर बिखरना । क्रि० ग० प्रवास की  
विरणों का चारों ओर फैलना ।

छिटकनी—सज्ञा स्त्री० सिटकनी । विलियाँ ।

छिटका—सज्ञा पु० परदा । आड ।

छिटकाना—क्रि० ग० चारा ओर फैलाना ।  
बिखराना ।

छिटकी—सज्ञा स्त्री० पंखी हुई । तिली हुई ।

छिटकनी—सज्ञा स्त्री० पतली छड़ी ।

छिटनी—सज्ञा स्त्री० डलिया ।

छिटकूट—वि० विराट हुआ । इधर-उधर पड़ा  
हुआ ।

छिड़वा—गना पु० बीत की पट्टिया का टावर ।

छिड़वाना—क्रि० स० पानी आदि के छोटे  
झाँका । भिगाता ।

छिड़वाना—क्रि० ग० छिड़वाने का काम  
दूसरे से कराना ।

छिड़वा—सज्ञा पु० दे० "छिड़ना" ।

छिड़वाई—गना स्त्री० १ छिड़वाने की क्रिया  
या भाव । छिड़वाव । २ छिड़वाने की  
मजदूरी ।

छिड़वाव—गना पु० पानी आदि छिड़वाने की  
क्रिया ।

छिड़ना—क्रि० प्र० धारण होना । गूढ़  
होना ।

छितनी-मज्ञा स्त्री० छोटी टोंकरी । डलिया ।  
बगेली ।

छितनिया-सज्ञा स्त्री० दे० 'छितनी' ।

छितरना-वि० अ० तितर बितर होना ।

विचर जाना । फैल जाना ।

छितर बितर-वि० बि० फैले हुए । तितर

वितर ।

छितराना-वि० अ० तितर-वितर होना ।

विचरना ।

वि० स० १. विचराना । छोटना ।

२. दूर दूर करना ।

छिति\*-सज्ञा स्त्री० दे० "क्षिति" । धरती ।

पृथ्वी । भूमि ।

छितिकित-सज्ञा पु० राजा ।

छितिपाल-सज्ञा पु० राजा ।

छितिरह-सज्ञा पु० पेट । वृक्ष ।

छितौस-सज्ञा पु० राजा ।

छित्वर-वि० घेरी । घूर्त ।

छितौश\*-सज्ञा पु० दे० "क्षितौश" । पृथ्वी

का स्वामी । राजा ।

छिवना-वि० अ० १ भिदना । छेदयुक्त होना ।

२ घायल होना । जखमी होना । ३. चुभना ।

भडना । ४. दृक्पाट डालना । रोकना ।

सज्ञा पु० फलदान । वरिच्छा । भेंगनी ।

छिवाना-वि० स० १ छेद करना । २.

चुभवाना ।

छिदनी-सज्ञा स्त्री० अरज-विशेष जिससे

छेद किया जाता है ।

छिदरा-वि० छिनराया हुआ । विरल ।

छेददार । जर्जर ।

छिववाना-वि० स० छेद करवाना ।

छिद्र-सज्ञा पु० १. छेद । विवर । बिल ।

रन्ध्र । सूरस । २. छोप । ३. ऐय । ४.

अवकाश । ५. दोष । भुटि । ६. अवसर ।

७. आवाश । ८. नाक-कान के छेद ।

९. नौ की सरया ।

छिद्रात्मा-वि० कुटिल ।

छिद्रानुसन्धान-सज्ञा पु० दोष ढूँढना ।

ऐव निकालना ।

छिद्रान्वेषण-सज्ञा पु० दोष ढूँढना । नुबस

या ऐव निकालना ।

छिद्रान्वेषी-वि० (स्त्री० छिद्रान्वेषिणी)  
दोष ढूँढनेवाला ।

छिद्र\*-सज्ञा पु० दे० "क्षण" । अल्प समय ।

पल ।

मुहा०-छिद्र छिद्र=प्रति क्षण । पल-पल ।

छिद्र भर में=एक पल में । बहुत ही

शीघ्र ।

छिद्रक\*-क्रि० वि० एक क्षण । दम भर ।

थोड़ी देर ।

छिद्रकना-क्रि० स० १. नाक का मल

निकालना । २. भड़ककर भागना । ३.

(बन्दूक का) रजक चाट जाना ।

छिद्रक्षयि\*-सज्ञा स्त्री० विजली ।

छिनाना-क्रि० अ० छीन लिया जाना ।

हरण होना ।

क्रि० स० पत्थर को छेनी से फाटना ।

छिनरा-वि० लम्पट ।

छिनवाना-क्रि० स० [छीनना का प्रे०]

छीनने का काम दूसरे से कराना ।

छिनाना-वि० स० दे० "छिनवाना" ।

छीनना । हरण करना ।

छिनाल, छिनार-वि० व्यभिचारिणी ।

कुलटा । परपुरणमित्री ।

छिनाला-सज्ञा पु० अनुचित ससर्ग ।

व्यभिचार ।

छिन्नैक-सज्ञा पु० क्षणिक, एक क्षण । एक

पल ।

छिन्न-वि० जो बटकर अलग हो गया हो ।

खण्डित ।

छिन्न-भिन्न-वि० खण्डित । टूटा-फूटा । नष्ट-

भ्रष्ट । तितर-वितर ।

छिन्नधवा-सज्ञा पु० रणस्थल में जिसका

धनुष टूट गया हो ।

छिन्ननासिका-वि० नकटा । जिसकी नाक

कटी हो ।

छिन्नमस्तक-वि० कवन्ध । मस्तकहीन ।

छिन्नमस्ता-सज्ञा स्त्री० एक देवी जो दस

महाविद्याओं में छठवीं है ।

छिप-सज्ञा पु० मछली पकड़ने का यन्त्र ।

छिपकली-सज्ञा स्त्री० गृहगोधिका ।

विस्तुड्या ।

का भाव या निया। मुक्ति। रिहाई।  
निस्तार। उदार।

छटखेलना—त्रि० अ० मनमानी करना।  
बदनामी। गुडई।

छटखेला—वि० उच्छृंखल। गुडा। लुच्चा।

छटखेली—सज्ञा स्त्री० व्यभिचार।  
लुचपन।

छटना\*—त्रि० अ० दे० "छूटना"।

छटपन†—सज्ञा पु० १ छाटाई। लघुता।  
२ चपपन। छाटापन।

छटाना†—त्रि० स० दे० "छुड़ाना"।

छटापा—सज्ञा पु० छटाई। छटपन। लघुता  
छट्टा—वि० (स्त्री० छट्टी) १ जो घेंघा न  
हो। २ एकाकी। अनेला। निहत्था।

छट्टी—सज्ञा स्त्री० १ मुक्ति। रिहाई।  
छटकारा। २ विश्राम। अवकाश। फुरसत।

३ काम बंद रहने का दिन। तात्तिल।  
४ चलने की अनुमति। जाने की आज्ञा।

छूटे—त्रि० वि० छूट गये। बाकी बचे।  
अलग हुए।

छुड़वाना—त्रि० स० [छोड़ना का प्रे०] छोड़ने  
का काम दूसरे से कराना।

छुड़ाना—त्रि० स० १ बंधन से रहित करना।  
२ दूसरे के अधिकार से अलग करना।

३ कार्य या नांकी से हटाना। बरखास्त  
करना। ४ किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को

दूर करना। (छाड़ना का प्रे०) छोड़ने  
का काम कराना।

छुड़ावा—सज्ञा पु० मुक्ति। छुटकारा।

छुड़ोती—सज्ञा स्त्री० छूट। छुड़ाने का मूल्य।  
दाम। वर। महमूल।

छूत्\*—सज्ञा स्त्री० भूख।

छूतिहर—सज्ञा पु० नीच जाति का व्यक्ति।  
कुपत्र। अशुद्ध वस्त्र या घड़ा।

छूतिहरा—वि० अशुद्ध। अपवित्र।

छूतिहा—वि० १ छूनवाला। जो छूने योग्य  
न हो। अस्पृश्य। २ कलकित। दूषित।

निवृष्ट।  
छुद्र—सज्ञा पु० दे० "क्षुद्र"। छोटा। अधम।  
नीच। अल्प। थोड़ा-सा।

छुद्रघटिका—सज्ञा स्त्री० बरघनी। मेखला।

छुद्रमेखला—सज्ञा स्त्री० बरघनी।

छुद्रा—सज्ञा स्त्री० क्षुद्रा। नीच स्त्री। बूलटा।  
बेदमा।

छुद्रायलि\*—सज्ञा स्त्री० दे० "क्षुद्रघटिका"।  
छुधा—सज्ञा स्त्री० दे० "क्षुधा"।

छुनछुनाना—त्रि० अ० 'छुनछुन' करना।  
छप—सज्ञा पु० स्पर्श। वामु।

वि० चंचल।

छुपना—त्रि० अ० दे० "छिपना"।

छुपाना—क्रि० म० दे० छिपाना।

छुपा—वि० छिपा। गुप्त। अप्रकट।

सज्ञा स्त्री० पीघा-विशेष।

छुभित\*—वि० क्षुभित १ विचलित। चंचल-  
चित्त। २ घबराया हुआ।

छुभिराना\*—क्रि० अ० क्षुब्ध होना। चंचल  
होना।

छुर—सज्ञा पु० क्षुर। छुरा। छुरी।  
उत्तरा।

छुरपार—सज्ञा स्त्री० क्षुरपार। छुरे की  
धार। पतली पंती धार।

छुरहटी—सज्ञा स्त्री० नाई की पेटो।

छुरा—सज्ञा पु० [स्त्री० छुरी] बाल मूड़ने  
का हथियार। उत्तरा।

छुरिका—सज्ञा स्त्री० छुरी। चक्कू।

छुरित—सज्ञा पु० १ नृत्य का एक भेद।  
२ बिजली की चमक।

वि० खुरा हुआ।

छुरी—सज्ञा स्त्री० १ लोहे का तेज धार  
वाला हथियार। २ चाकू। चक्कू।

छलकना—त्रि० अ० छलककर गिरना।  
बिष्ट से मूत्र का थोड़ा थोड़ा निकलना।

छलछलाना—त्रि० अ० १. रक-रककर गिरना।  
२ थोड़ा थोड़ा पेशाब करना।

छलाना—त्रि० स० छूना का प्रेरणार्थक रूप।  
स्पर्श करना।

छलाना†—त्रि० स० दे० "छुलाना"।

छहना\*—त्रि० अ० १ छू जाना। २ रंगा  
जाना। लिपना।

क्रि० स० दे० "छूना"।

छहाना—क्रि० स० साफ करना। घूना करना।  
सफाई करना।

छुहारा—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का खजूर । खजूर के समान एक पेड़ और उसका फल ।  
 खुरमा । २ पिंडखजूर ।  
 छुहावट—सज्ञा स्त्री० स्पर्श । छूत ।  
 छुही—सज्ञा स्त्री० खरिया ।  
 छुछ—वि० खाली । निर्धन ।  
 छुछा—वि० [स्त्री० छुछी] १ खाली ।  
 रीता । रिक्त । जैसे—छुछा घड़ा ।  
 २ जिसमें कुछ तत्त्व न हो । निसार ।  
 ३ निर्धन । गरीब ।  
 छू—सज्ञा पु० मंत्र पढ़कर फूँकने का शब्द ।  
 मुहा०—छू मंतर होना=चटपट दूर होना ।  
 गायब होना ।  
 छुई—सज्ञा स्त्री० दुधिया मिट्टी । खडिया मिट्टी ।  
 छूछ या छुछा—सज्ञा पु० खाली । रिक्त । शून्य ।  
 छुछी या छुछी—सज्ञा स्त्री० कुत्सित ।  
 नीच । शून्य । रिक्त ।  
 छूछ—वि० मूर्ख ।  
 सज्ञा स्त्री० दाई ।  
 छूट—सज्ञा स्त्री० १ छुटकारा । मुक्ति ।  
 २ अवकाश । छुटसब । अपवाद । ३  
 बाकी रुपया छोड़ देना । छुडीती । ४  
 किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव ।  
 ५ स्वतंत्रता । आजादी । ६ तलाक । ७  
 गाली-मालोज ।  
 छूटना—क्रि० अ० १ अलग होना । दूर  
 होना । २ बंधन से मुक्त होना । छूट-  
 नारा पाना । ३ प्रस्थान करना । रवाना  
 होना । ४ विछुटना । ५ पीछे रह जाना ।  
 ६ किसी नियम या परंपरा का भंग होना ।  
 जैसे, व्रत छूटना । ७ वेग के साथ निक-  
 लना । जैसे, तीर छूटना । ८ शोष रहना ।  
 धाँस रहना । ९ भूल से कोई कार्य न किया  
 जाना । १० बरखास्त होना । ११ रोजी  
 या जीविका का न रह जाना ।  
 मुहा०—शरीर छूटना=मृत्यु होना । नाडी  
 छूटना=नाडी का चलना बंद हो जाना ।  
 छूत—सज्ञा स्त्री० १ छूने का भाव । ससर्ग ।  
 २ रोग-संचारक वस्तु का स्पर्श । अस्पृश्य  
 का ससर्ग । ३ अपवित्र वस्तु के छूने का  
 दोष । ४ अनुदत्त ।

यी०—छूत का रोग=वह रोग जो किसी  
 रोगी से छू जाने से हो ।  
 छूना—क्रि० अ० स्पर्श होना ।  
 क्रि० स० १ स्पर्श करना । २ हाथ  
 रखना । ३ दान के लिए किसी वस्तु को  
 स्पर्श करना । ४ दीड की बाजी में किसी  
 को पकड़ना । ५ पीतना ।  
 मुहा०—आकाश छूना=बहुत ऊँचा होना ।  
 छुरा—सज्ञा पु० छुरी ।  
 छुरी—सज्ञा स्त्री० छुरी ।  
 छेकना—क्रि० स० १ स्थान घेरना । जगह  
 लेना । २ रोकना । जाने न देना ।  
 ३ लकीरो से घेरना । ४. काटना ।  
 मिटाना । टुकड़े-टुकड़े करना ।  
 छेकबंया—सज्ञा पु० रोकनेवाला ।  
 छेकाव—सज्ञा पु० रुकाव । अटकाव ।  
 छेक—सज्ञा पु० १ छेद । सुराख । २. कटाव ।  
 विभाग । ३ पालतू पशु या पक्षी ।  
 छेकानुप्रास—सज्ञा पु० (एक काव्यालंकार)  
 वह अनुप्रास जिसमें वर्णों का सादृश्य एक  
 ही बार हो ।  
 छेकापल्लति—सज्ञा स्त्री० एक काव्यालंकार  
 जिसमें वास्तविक बात का अर्थार्थ उक्ति  
 से खंडन किया जाता है ।  
 छेकोक्ति—सज्ञा स्त्री० (काव्यालंकार-विशेष)  
 अर्थान्तर-नामित उक्ति । व्यंग्य ।  
 छेदा—सज्ञा स्त्री० बाधा । रोक ।  
 छेड—सज्ञा स्त्री० १ तग करने की क्रिया ।  
 २ चुटकी । ३ चिढ़ानेवाली बात । ४.  
 रगड़ा । भगड़ा ।  
 यी०—छेडखानी=छेडछाड । छेडछाड=  
 चिढ़ानेवाली बात ।  
 छेडना—क्रि० स० १ चिढ़ाना । २. तग  
 करना । ३ चुटकी लेना । ४ कोई  
 बात या कार्य आरंभ करना । ५ बजाने  
 के लिए वाजे में हाथ लगाना ।  
 छेडवाना—क्रि० स० 'छेडना' का प्रे० । छेडने  
 वा काम दूसरे से कराना ।  
 छेड\*—सज्ञा पु० दे० "क्षेत्र" ।  
 छेद—सज्ञा पु० १ सुराख । छिद्र । छेदन ।  
 काटने का काम । २ नाश । ध्वंस ।

३. छेदन करनेवाला । ४. गणित में भाजक । ५. रक्ष । ६. विम । मोखला विवर । ७. दोष । ऐव ।  
 छेदक-वि० १. छेदने या काटनेवाला । २. नाग करनेवाला । ३. विभाजक ।  
 छेदन-गशा पु० १. छेदने या काटने का काम । पीर-काट । २. नाश । ध्वस । ३. काटने या छेदने का प्रसन्न ।  
 छेदना-त्रि० स० १. छेद करना । २. दात करना । पाय करना । †३. काटना । छिन्न करना ।  
 छेदा-सज्ञा पु० पुन ।  
 छेना-सज्ञा पु० फटे हुए दूध का खोया । पनीर ।  
 छि० स० गुरहाडी आदि से काटना ।  
 छेनी-सज्ञा स्त्री० रखानी । पत्थर या लाहा काटने का अस्त्र । टाँकी ।  
 छेम या छेमा\*†-सज्ञा पु० दे० "क्षेम" । आनन्द मंगल । कृपाल ।  
 छेमवरी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "क्षेमवरी" । मंगलदायक । एव पक्षी का नाम ।  
 छेमराड-सज्ञा पु० बिना माँ-बाप का पुत्र । अनाथ ।  
 छेरना-त्रि० प्र० पतला दस्त होना । अपच रोग होना । बारबार शीन जाना ।  
 छेरी-सज्ञा स्त्री० बवरी ।  
 छेव-सज्ञा पु० १. जखम । चोट । कुदाली आदि का एक बार का कटाव । †२. आने-वाली आपत्ति ।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "टेव" ।  
 मुहा०—छल छेव=बपट व्यवहार ।  
 छेवना-सज्ञा स्त्री० ताड़ी ।  
 छि० स० १. काटना । छिन्न करना । २. चिह्न लगाना । ३. फँसना । ४. मिलाना ।  
 मुहा०—जी पर छेवना=जी पर खेलना । जान सचट में डालना ।  
 छेवनी-सज्ञा स्त्री० टाँकी । रखानी ।  
 छेवर-सज्ञा पु० छिलका । त्वचा । चमटे की तह ।  
 छेवा-सज्ञा पु० घाव । किसी अस्त्र से चिह्न

करना । गीमा जानने के लिए तरीर बनाना ।  
 छेह-गशा पु० १. दे० "छेव" । २. गहन । नाश ।  
 \*गशा स्त्री० दे० "गेह" । राग । मिट्टी । छाया ।  
 वि० १. टुकड़े टुकड़े किया हुआ । २. न्यून । कम ।  
 छेहर-सज्ञा स्त्री० छाया । माया ।  
 छे†-वि० दे० "छ" । पट् । ६. मत्स्या ।  
 \*सज्ञा स्त्री० दे० "क्षम" ।  
 छेना-त्रि० प्र० छोड़ना । कम होना । नष्ट होना । क्षीण होना ।  
 सज्ञा पु० सरताल या जाड़ी की तरह का एक बाजा ।  
 छेपा†\*-सज्ञा पु० बच्चा । बालक । छोकरा ।  
 छेल\*-सज्ञा पु० दे० "छेला" । बाँका । बनाठना ।  
 छेल-चिकनियाँ-सज्ञा पु० शीकीन । बनाठना आदमी ।  
 छेल-छबीला-सज्ञा पु० १. रंगीला । बनाठना युवक । बाँका । २. छरीला नाम का एक पीघा ।  
 छेला-सज्ञा पु० बनाठना आदमी । सजीला । बाँका । शीकीन । सोहदा ।  
 छोक-सज्ञा पु० तरकारी या दाल आदि का छोटा जाना । बघार डालना ।  
 छोकन-सज्ञा पु० बघार के मसाले । बघार ।  
 छोकर-सज्ञा पु० शमी नामक वृक्ष ।  
 छोचला-सज्ञा पु० प्रेम । प्यार । चोचला ।  
 छोछा-सज्ञा स्त्री० बड़ी सुई । सुई की खोल ।  
 छोडा\*-सज्ञा पु० दही मथने की मथानी ।  
 छो-सज्ञा पु० क्षोभ । डूपा । प्रेम ।  
 छोभा-सज्ञा पु० चीनी बनाने के लिए गुड़ से जो मेल निकाला जाता है ।  
 छोई-सज्ञा स्त्री० दे० "खोई" । गन्ने का चूसा हुआ भाग । सीड़ी । निस्तार वस्तु ।  
 छोकरा या छोकरा-सज्ञा पु० [स्त्री० छोवडी] लड्डा । बालक । लौंडा ।  
 छोकरापन-सज्ञा पु० १. लड्डापन । २. छिछोरापन ।

छोकड़ी या छोकरा—संज्ञा स्त्री० कन्या । लड़की । पुत्री ।

छोकरा—संज्ञा पुं० दे० "छोकड़ा" ।

छोकरा—संज्ञा पुं० छिलका । छाल ।

छोछो—संज्ञा स्त्री० गोदी ।

छोट—वि० छोटा ।

छोटपन—संज्ञा पुं० छुटपन ।

छोटा—वि० (स्त्री० छोटी) १. डील-डील में कम । विस्तार में कम । २. जो अवस्था में कम हो । थोड़ी उम्र का । ३. जो पद या प्रतिष्ठा में कम हो । ४. तुच्छ । सामान्य । ५. आँखा । क्षुद्र ।

मो०—छोटा-मोटा=साधारण ।

छोटाई—संज्ञा स्त्री० १. छोटापन । लघुता । २. नीचता ।

छोटापन—संज्ञा १. छोटा होने का भाव । छोटाई । लघुता । २. वचन । लड़कपन ।

छोटी इलायची—संज्ञा स्त्री० सफेद या गुजराती इलायची ।

छोटी हाजिरी—संज्ञा स्त्री० योरोपियों का प्रातःकाल का जलपान ।

छोड़ना—क्रि० स० १. अलग करना । २. चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना । ३. बंधन आदि से मुक्त करना । छुटकारा देना । ४. अपराध क्षमा करना । ५. न लेना । ६. प्राप्य धन न लेना । ७. परित्याग करना । देना । पास न रखना । ८. पड़ा रहने देना । न उठाना या लेना । ९. प्रस्थान कराना । बसाना । १०. चलाना या फेंकना । ११. किसी वस्तु, व्यक्तित्व या स्थान से आगे बढ़ जाना । १२. हाथ में लिये हुए कार्य को त्याग देना । १३. किसी रोग या व्याधि का दूर होना । १४. वेग के साथ बाहर निकालना । १५. ऐसी वस्तु का चलाना जिसमें से कोई वस्तु वेग से बाहर निकले । १६. वचनाना । सोप रखना । १७. भूल से कोई काम न करना । १८. ऊपर से गिराना ।

मुहा०—किसी पर किसी को छोड़ना=

किसी को पकड़ने या चोट पहुँचाने के लिए उसके पीछे किसी को लगा देना ।

मुहा०—छोडकर=अतिरिक्त । सिवाय ।

छोड़वाना—क्रि० स० (छोड़ना का प्रे०)

छोड़ने का काम दूसरे से कराना ।

छोड़ा—संज्ञा पुं० छुड़ाव । छुटकारा । मुक्ति ।

छोड़ना—क्रि० स० दे० "छुड़ाना" ।

छोड़ोती—संज्ञा स्त्री० छुटकारे का दाम । उत्तराई ।

छोनिप\*—संज्ञा पुं० दे० "क्षोणिप" । मूपति । राजा ।

छोनी\*—संज्ञा स्त्री० दे० "क्षोणी" । पृथ्वी । धरती । भूमि ।

छोप—संज्ञा पुं० १. मोटा लेप । २. लेप चढ़ाने का कार्य । रंग भरना । ३. घापात । बार । प्रहार । ४. छिपाव । बचाव ।

छोपना—क्रि० स० १. गाढ़ा लेप करना । २. गीली मिट्टी आदि का लोदा ऊपर रखना या फैलाना । योपना । ३. दवाकर चढ़ बैठना । ग्रसना । ४. आच्छादित करना । ढकना । छेंकना । ५. किसी बुरी बात को छिपाना । परदा डालना । ६. बार या चोट से बचाना ।

छोप—संज्ञा पुं० दे० "क्षोभ" ।

छोपना\*—क्रि० प्र० कण्ठा, शका, लोभ आदि के कारण चित्त का चंचल होना । क्षुब्ध होना ।

छोमित\*—वि० दे० "क्षोमित" ।

छोप\*—क्रि० १ चिबना । २. कोमल ।

छोप—संज्ञा पुं० १. किनारा । सीमा । २. विस्तार की सीमा । ३. नोक ।

मो०—झोर छोड़—आदि अत ।

छोपना†—क्रि० स० १. खोलना । २. बंधन से मुक्त करना । ३. हरण करना । छीनना ।

छोपना†—संज्ञा पुं० [स्त्री० छोरी] छोकरा । लड़का ।

छोप-छोरी†—संज्ञा स्त्री० छीन-ससोट । छीना-छीनी ।

छोप—संज्ञा स्त्री० खरोंच ।

छोपदारी—संज्ञा स्त्री० खेमा । छोटा तम्बू ।

छोपना†—क्रि० स० छीलना ।

छोला—सज्ञा पु० १. चना। २. पटी धाग।  
 ३. रंग को पाटपर छाननेवाला।  
 छोलनो—सज्ञा स्त्री० गुर्गा। धाग छोलने  
 का यन्त्र।  
 छोल—सज्ञा पु० १ भगना। प्रेम। स्नेह।  
 २ दया।  
 छोलना\*—क्रि० प्र० १ विगलित, बचल या  
 धुँध होना। २ प्रेम या दया करना।  
 छोलरा†\*—सज्ञा पु० दे० “छोरा”। छोलरा।  
 छोलरी—सज्ञा स्त्री० छोलरी।  
 छोलाना\*—क्रि० प्र० १ मुहव्यन करना।  
 प्रेम दिखाना। २ दया करना।  
 छोलारा—सज्ञा पु० छुहारा।  
 छोलिनी\*—सज्ञा स्त्री० दे० “ग्रहोहिणी”।  
 छोही\*†—वि० भमता रखनेवाला। प्रेमी।  
 स्नेही। अनुरागी।  
 छोल—सज्ञा पु० प्यार। प्रीति। स्नेह।  
 छोक—सज्ञा स्त्री० बघार। तडका।  
 छोक्न—सज्ञा पु० बघार। छोक।  
 छोक्ना—क्रि० स० बघारना। हींग, जीरा,  
 मिर्चा आदि से मिले हुए गर्म पी को दाल

आदि में डालना। तडका देना। मसाले  
 मिल हुए गर्म पी या तेल में मक्खी तरकारी  
 भुनाने का लिए डालना।  
 छोट†—सज्ञा पु० [स्त्री० छोट] तडका।  
 बच्चा। कम उम्र का नौकर। तडका  
 नौकर। घनाज रखने का गहड़ा या  
 गत्ता।  
 छोक्न—सज्ञा पु० छाना-भपटी।  
 छोक्ना†—क्रि० स० जानवर का बूदना या  
 भपटना।  
 छोक्त—सज्ञा पु० छानाभपटी करना।  
 छोना—सज्ञा पु० [स्त्री० छोनी] पशु का बच्चा।  
 जैसे—मुग-छोना।  
 छोर—सज्ञा पु० दार। मुण्डन। बाल बन-  
 याना। मुण्डयाना।  
 छोर—सज्ञा पु० ज्वार, बाजरा या कपास  
 आदि के पीधो का डटन।  
 छोलदारी—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छोटा  
 लैमा। छोटा तबू।  
 छोलिया—वि० रमिक। विलासी। प्रसन्न।  
 छोलाना\*—क्रि० स० दे० “छुघाना”।

## ज

ज—हिंदी वर्णमाला का आठवाँ व्यंजन, जो  
 चवर्ग का तीसरा अक्षर है। इसका उच्चा-  
 रण तालु से होता है।  
 सज्ञा पु० १ मृत्युजय। २ जन्म।  
 ३ पिता। ४ पिप्पु। ५. पिप। ६  
 मुक्ति। ७ छंद शास्त्रानुसार एव गण जिमके  
 आदि ओर घत के वर्ण लघु ओर मध्य  
 का गुरु होता है। (।।।)।  
 वि० १ बगवान्। तेज। २ जीतनेवाला।  
 प्रय० किसी शब्द के साथ सम्युक्त होने  
 पर उत्पत्ति अर्थ का याचक होता है।  
 जैम—देसज।  
 जग—सज्ञा स्त्री० [फा०] (वि० जगी)  
 लड़ाई। युद्ध। समार।  
 सज्ञा पु० लाह का मुरचा।  
 जगजू—वि० युद्ध करनेवाला। लड़ावू।  
 योद्धा।

जगम—वि० १ चलने-फिरनेवाला। २  
 चल। जैसे—जगम सपति।  
 जगरत—वि० मेहनत।  
 जगल—सज्ञा पु० (वि० जगली) १ बन।  
 २ वह भूभाग जिसमें प्राकृतिरूप से  
 भाड़ियाँ, पेड़ आदि उत्पन्न हो गए हों।  
 जंगला—सज्ञा पु० १ बिड़की जिसमें छड़  
 लगी हो। २ दुपट्टे के किनारे पर लगा  
 हुआ बलबूटा। ३ एक राग।  
 जगली—वि० १ जगल-गवधी। २ बिना  
 लगाए उगनेवाला पीधा। ३. जगल में  
 रहनेवाला। बनेला।  
 जगार—सज्ञा पु० [फा०] (वि० जगारी) ताँबे  
 का कसाव। तृत्तिया।  
 जगारी या जगाली—वि० नीले रंग का।  
 जपाल—सज्ञा पु० दे० “जगार”।  
 जगो—वि० [फा०] १ लड़ाई से सबध

रखनेवाला । जैसे, जगी जहाज । २  
फोजी । सेना-सबधी । ३ बहुत बड़ा ।  
दीर्घकाय । ४ घोर । लडाका ।

जगुल-सज्ञा पु० जहर । विष ।

जघा-सज्ञा स्त्री० १ पिढी । २ जाँघ ।  
रान । ऊर ।

जघार-सज्ञा स्त्री० जाँघ का फोड़ा ।

जघारि-सज्ञा पु० विश्वामित्र मुनि ।

जघाल-सज्ञा पु० १. बूत । २ मृग की एक  
जाति । ३ (संस्कृत में) विश्वामित्र के एक  
पुत्र का नाम ।

जघिया-सज्ञा पु० जघा पर पहनने का वस्त्र ।  
बटिपट । कसरत करने के लिए पहनने  
का वस्त्र ।

जँचना-क्रि० अ० १ जाँचा जाना । देखा-  
भाला जाना । २ जाँच में पूरा उतरना ।  
३ जान पड़ना ।

जँचा-वि० १ जाँचा हुआ । सुपरीक्षित ।  
२ अच्छा ।

जजल†\*—वि० पुराना और कमजोर । बेकाम ।

जजाल-सज्ञा पु० १ प्रपच । झूठ ।  
वखेडा । २ बधन । फँसाव । उलझन ।  
३ पानी का भँवर । ४ एक प्रकार की  
बड़ी पलीतेदार बहूक । ५ बड़े मुँह की  
तोप । ६ बड़ा जाल ।

जजाली-वि० भगडालू । वखडिया । फसादी ।

जजीर-सज्ञा स्त्री० (वि० जजीरी) १ बेड़ी ।  
२ राँक्ल । कड़िया की लड़ी । ३  
कियाड़ की कुड़ी । सिकड़ी ।

जजीरा-सज्ञा पु० लहरिया । एक प्रकार की  
सिलाई ।

जतर-सज्ञा पु० १ कल । श्रीजार ।  
यत्र । २ तानिक यत्र । ३ चौकीर या  
लबी तावीज जिसमें यत्र या कोई टोटके  
की वस्तु रहती है । ४ बटुला ।

जतर-मतर-सज्ञा पु० १ यत्र-मत्र । टोना-  
टोटका । जादू-टोना । २ मानमंदिर  
जहाँ ज्योतिषी नक्षत्रों की गति आदि का  
निरीक्षण करते हैं । बघशाला ।

जतरा, जत्रा-सज्ञा पु० गाड़ी के ढाँचे पर  
तानी जानवाली रस्सी ।

जतरी-सज्ञा स्त्री० १ छोटा जता जिसमें  
मोनार तार बढाते हैं । २ पना । तिथि-  
पन । पञ्चांग । ३ जादूगर । भानमनी ।  
४ बाजा बजानेवाला ।

जँतसर-सज्ञा पु० वह गीत जो स्त्रियाँ  
चक्की पीसते समय गाती हैं ।

जँतसार-सज्ञा स्त्री० जाँता गाड़ने का  
स्थान ।

जता-सज्ञा पु० [स्त्री० जती, जतरी] १  
यत्र । श्रीजार । जैसे—जताघर ।  
२ तार खींचन का श्रीजार ।

वि० दड देनेवाला । शासन करनेवाला ।

जती-सज्ञा स्त्री० १. छोटा जता । जतरी ।  
२ माता । मा ।

जतु-सज्ञा पु० जन्म लनेवाला जीव ।  
प्राणी । जानवर ।

धी०—जीवजतु=प्राणी । जानवर ।

जतुध्न-वि० जतुनाशक । कुमिध्न ।  
सज्ञा पु० हींग ।

जतुध्नी-सज्ञा स्त्री० वायविडग ।

जव-सज्ञा पु० १ ताला । २ कल ।  
श्रीजार । ३ तानिक यत्र ।

जवना\*—क्रि० स० ताले के भीतर बंद करना ।  
जकटबंद करना ।

सज्ञा स्त्री० दे० 'यत्रणा' ।

अत्र-मत्र-सज्ञा पु० दे० "जतर-मतर ।

जत्रित-वि० १ दे० "यत्रित" । २ बंद ।  
बँधा हुआ ।

जत्री-सज्ञा पु० बाजा । बजानेवाला ।  
वि० बाँधनेवाला ।

सज्ञा स्त्री० पञ्चांग ।

जद-सज्ञा पु० [फा०] १ पारसिया का  
अत्यंत प्राचीन धर्मग्रंथ । २ वह भाषा  
जिसमें पारसियों का उक्त धर्मग्रंथ है ।

जदरा-सज्ञा पु० १ यत्र । कल । २.  
जाता । †३ ताला ।

जपना\*—वि० स० धोला । बहना ।

जवाल-सज्ञा पु० १ कीचड़ । २ सधार ।  
काई । ३. वेवडा ।

जबीर-सज्ञा पु० १ जैबीरी नीबू । २  
मदवा । बन-तुलसी ।

जंबोरी नीबू-सज्ञा पु० एव प्रकार का  
गन्ना नीबू ।  
जम्-सज्ञा पु० जामुन ।  
जम्ब-सज्ञा पु० १ बड़ा जामुन । वृक्ष-  
विशेष । परदा । २ केवडा । ३ शृगाल ।  
गोदह ।  
जम्बुद्वीप-सज्ञा पु० पुराणा के अनुसार  
सात द्वीपों में से एक जिसमें भारतवर्ष है ।  
जम्बुत्-सज्ञा पु० ६० "जाववान्" ।  
जम्-सज्ञा पु० जामुन ।  
वि० बहुल ऊँचा ।  
जम्ब-सज्ञा पु० [फा०] १ जम्बूरा । जम्बूरा ।  
२ तोप की चर्ख । ३ पुरानी छोटी तोप जो  
प्रायः ऊँटों पर सादी जाती थी । जम्बूरा ।  
जम्बूरा-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ छोटी तोप ।  
२ तोप की चर्ख । ३ भँवरकली ।  
जम्बूची-सज्ञा पु० १ तोपची । २. सिपाही ।  
जम्बूरा-सज्ञा पु० १ चर्ख जिस पर तोप  
चढ़ाई जाती है । २ भँवरकली । ३  
मुनारो का बारीक काम करने का एक  
मोजार ।  
जम्-सज्ञा पु० १ दाढ़ । चौभड़ । २  
जैवडा । ३ एक दैत्य । ४ जंबोरी नीबू ।  
५ जैभाई । ६ भक्षण । ७ हँसली ।  
जम्बक-सज्ञा पु० १. शिव । २ जंबोरी  
नीबू ।  
वि० १ हिंसक । २ कामुक । ३ जैभाई  
लनवाला ।  
जम्बका-सज्ञा स्त्री० जैभाई ।  
जैभाई-सज्ञा स्त्री० आलस्य या थकावट के  
कारण मुँह से दूषित वायु निकालने के लिए  
मुँह का स्पन्द खुल जाना । उवासी ।  
जम्बुहाई ।  
जैभाना-क्रि० अ० जैभाई लना ।  
जैभारि-सज्ञा पु० १ इद्र । २ अग्नि ।  
३ वज्र । ४ विष्णु ।  
जई-सज्ञा स्त्री० १ जो की जाति का  
एक अन्न । २ जी का छोटा अन्न जो  
मगल-द्रव्य के रूप में ब्राह्मण पुरोहित  
भेंट करते हैं । ३ मक्कुर । ४ फलवाला  
फलों की बतिया । जैसे—कुम्हड़ की जई ।

\*वि० दे० 'जयी' ।  
जईप-वि० [प०] बुढ़ा । वृद्ध ।  
जईपी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बुढ़ापा ।  
बुढ़ापेस्था ।  
जब-सज्ञा स्त्री० [फा०] छलांग । चौकड़ी ।  
उछाल ।  
जम्बना\*†-क्रि० अ० १ मूदना । उछलना ।  
२ टूट पड़ना ।  
जक-सज्ञा पु० १ पन रखने का यंत्र । २  
बजूस प्रादमी ।  
सज्ञा स्त्री० (वि० भक्की) १ जिद्द ।  
हठ । अड । २ धुन । रट ।  
सज्ञा स्त्री० [फा०] १ हार । पराजय ।  
२ हानि । घाटा । ३ पराभव । लज्जा ।  
जकड-सज्ञा स्त्री० जकडने का भाव ।  
कमकर बाँधना ।  
मुहा०-जकडवद करना=१ खूब बसवद  
बाँधना । २ पूरी तरह अपन अधिकार में  
करना ।  
जकडना-क्रि० स० बसवद बाँधना । बसना ।  
†क्रि० अ० तनाव आदि के कारण अंगा का  
हिलन-डुलन के योग्य न रह जाना । अकडन ।  
जकडबन्द-सज्ञा पु० १ रोग विनाश । वायु-  
जनित रोग । २ कुस्ती का पथ ।  
जकना†\*-क्रि० अ० १ भोजन करना ।  
खपवाना । २ भ्रम में डालना ।  
जकात-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दान । खैरात ।  
२ कर । महसूल (यातायात सम्बन्धी  
कर) ।  
जकाती-सज्ञा पु० दे० 'जगाती' । महसूल  
संगानवाला । कर उगाहने का काम ।  
जकित†\*-वि० चकित । स्तब्ध ।  
जकूट-सज्ञा पु० १ कुत्ता । २ बगन का फूल ।  
३ मलयाचल पर्वत ।  
जक्को-सज्ञा स्त्री० बुलबुल की एक जाति ।  
जकत-सज्ञा पु० १. जगत । ससार । दुनिया ।  
२ साम्प्र । यति ।  
जलनी-सज्ञा स्त्री० यक्षिणी ।  
जलम-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ फाड़ा । घाव ।  
२ धात ।  
मुहा०-जलम ताजा या हरा हो आना=

वीते हुए कष्ट का फिर लौट आना या उसकी याद आना ।

जखमी-वि० जिसे जखम लगा हो । घायल ।

जखीरा-सज्ञा पु० [प्र०] १ वह स्थान जहाँ

एक ही प्रकार की चीजों का सग्रह हो ।

कोप । खजाना । २ सग्रह । ढेर । समूह ।

३ पीछे, बीज आदि की वित्री का स्थान ।

जखम-सज्ञा पु० दे० "जखम" । घाव । फोड़ा ।

जखैडा-सज्ञा पु० बलैडा । समूह । जखीरा ।

जग-सज्ञा पु० १ ससार । विश्व । दुनिया ।

२ ससार के लोग । जन-समुदाय । लोक ।

जगज्जग-सज्ञा पु० सूर्य ।

जगजगा†-वि० चमकीला । प्रकाशित ।

सज्ञा पु० पत्नी । पौतरका भुलम्मा ।

जगजगाना†-क्रि० अ० चमकना । जग-

मगाना ।

जगजगाहट-सज्ञा स्त्री० चमक । प्रकाश ।

चमक-देमक ।

जगजगी-सज्ञा स्त्री० प्रख्यात । प्रसिद्ध ।

ससार में विदित ।

जगजीवन-सज्ञा पु० १ जगत् का आधार ।

जगत् का प्राण । ईश्वर । २ वायु । ३.

जल । ४. मेघ ।

जगजोनि-सज्ञा पु० दे० "जगजोनि" ।

ग्रह्या ।

जगड्याल-सज्ञा पु० ग्राहन्वर । व्यर्थ

का आयाजन ।

जगण-सज्ञा पु० गिगल में एक गण जिसमें

मध्य का अक्षर गुंफ और आदि और मत

के लघु होते हैं । [151] । जैसे-महेय ।

जगत्-सज्ञा पु० १. वायु । २ महादेव ।

३ जगम । ४. विश्व । ससार ।

जगत-सज्ञा स्त्री० बुरें के चारों ओर बना

हुआ भूतल ।

सज्ञा पु० दे० "जगत्" ।

जगत्कर्ता-सज्ञा पु० ग्रह्या । सृष्टिकर्ता ।

परमात्मा ।

जगत्प्राण-सज्ञा पु० वायु । अनिल ।

जगत्प्राप्ति-वि० सूर्य ।

जगत्प्रेत-सज्ञा पु० १. एक उपाधि जो उस

महाजन को दी जाती थी, जो राज्य को

ऋण देता था, राज्य का एक प्रकार का

खजानची होता था और कभी-कभी उसे

मुद्रा ढालने का भी अधिकार दिया

जाता था । २ इतिहास-प्रसिद्ध मुंशिदा-

बाद निवासी सेठ जिनका नाम फतेहचन्द

था । सन् १७२२ ई० में दिल्ली के बादशाह ने

इनको जगत्सेठ की उपाधि दी थी । आप

सेठ अमीचन्द के पूर्वज थे । इनके

परिवार के कई लोगों को यह उपाधि

मिली ।

जगती-सज्ञा स्त्री० १ ससार । भुवन ।

२ पृथ्वी । ३. एक वैदिक छंद ।

जगदत्तक-सज्ञा पु० मृत्यु ।

जगदबा, जगदबिका-सज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

जगदादि-सज्ञा पु० जगत् ।

जगदाधार-सज्ञा पु० १. ईश्वर । अनन्त ।

ससार का अवलम्ब । २. शेषनाग । ३. वायु ।

जगदानन्द-सज्ञा पु० ईश्वर ।

जगदायु-सज्ञा पु० वायु ।

जगदीश-सज्ञा पु० १ जगत् का स्वामी ।

परमेश्वर । २ विष्णु । ३ जगन्नाथ ।

जगदीश्वर-सज्ञा पु० परमेश्वर ।

जगदीश्वरी-सज्ञा स्त्री० भगवती । लक्ष्मी ।

जगद्वृक्ष-सज्ञा पु० १ परमेश्वर । २. शिव ।

३ नारद । ४. मत्स्य पूज्य पुरुष ।

शंकर, रामानुज आदि आचार्यों द्वारा

स्थापित गढ़िया के गढ़ीपरी की उपाधि ।

जगद्वृक्षी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा । मनसा देवी ।

जगद्धाता-सज्ञा पु० [स्त्री० जगद्वृक्षी]

१ ग्रह्या । २. विष्णु । ३ महादेव ।

जगद्धात्री-सज्ञा स्त्री० १ दुर्गा की एक

मूर्ति । २ सरस्वती ।

जगद्वृक्ष-सज्ञा पु० वायु ।

जगद्योनि-सज्ञा पु० १ शिव । २. विष्णु ।

३ ग्रह्या । ४ परमेश्वर । ५ पृथ्वी ।

जगद्धा-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

जगद्ध-वि० जगन्नी बदना सार ससार

करे । गतार में पूज्य या श्रेष्ठ ।

जगना-वि० घ० १. नींद से उठना । निद्रा

त्याग करना । २ गचेत होना । साव-

धान होता । ३ देवी-देवता या भूत-प्रेत

भादि का अधिप प्रभाष दिग्गता । ४.  
 उत्तेजित होना । ५ (भाग का) जलना ।  
 दहनना । ६ जगमगाना । चमकना ।  
 जगन्नाथ-सज्ञा पु० १ ईश्वर । २ विष्णु ।  
 ३ विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के  
 पुरी नामक स्थान में है ।  
 जगन्निवासा-सज्ञा पु० ईश्वर । विष्णु ।  
 जगन्निवृत्ता-सज्ञा पु० परमात्मा । ईश्वर ।  
 जगन्मय-सज्ञा पु० विष्णु ।  
 जगन्माता-सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी । दुर्गा ।  
 जगन्मोहिनी-सज्ञा स्त्री० १ दुर्गा । २  
 महामाया ।  
 जगबद्ध\*-वि० दे० "जगद्ध" ।  
 जगमग, जगमगा-वि० १ प्रकाशित ।  
 २ चमकीला । चमकदार ।  
 जगमगाना-क्रि० अ० खूब चमकना ।  
 मलकना । दमकना ।  
 जगमगाहट-सज्ञा स्त्री० जगमगाने का भाव ।  
 चमक ।  
 जगदमाता-सज्ञा स्त्री० जगत की माता ।  
 देवी । दुर्गा । लक्ष्मी । सरस्वती ।  
 जगर भगर-वि० दे० "जगमग" ।  
 जगरा-सज्ञा स्त्री० खजूर की खाट ।  
 जगल-सज्ञा पु० १. शराब की सीढी । २.  
 मदन वृक्ष । ३. वक्त्र । ४ गोमय ।  
 गोबर । ५ एक प्रकार की सुरा ।  
 वि० चालाक ।  
 जगवल्लभा-सज्ञा स्त्री० वेश्या । पतुरिया ।  
 जगवाना-क्रि० स० जगाने का काम दूसरे से  
 कराना ।  
 जगह-सज्ञा स्त्री० १ स्थान । स्थल ।  
 भूमि । २ मौका । अवसर । ३ पद ।  
 मोहदा । नौकरी ।  
 जगहुर-सज्ञा पु० जागरण । निद्रात्याग ।  
 जगना ।  
 जगज्योति-सज्ञा स्त्री० जगजगाहट ।  
 सदैव प्रकाशित रहनेवाला अखण्ड दीप ।  
 जगात†-सज्ञा पु० [अ०] १ दान । खैरात ।  
 २ महसूल । कर । जकात ।  
 जगाती†-सज्ञा पु० १ कर वसूल करनेवाला ।  
 २ कर उगाहन का काम ।

जगाना-क्रि० स० १ सोते में उठना ।  
 २ मचेत करना । होश दिलाना । बोध  
 कराना । ३ भाग को तेज करना ।  
 †४. यत्र-मत्र आदि का माधन करना ।  
 जैसे-मत्र जगाना ।  
 जगार†-सज्ञा स्त्री० जागरण । एक साथ  
 कई व्यक्तियों का जाग उठना ।  
 जगावट्ट-क्रि० ग० जगाधो । उठाधो । जागृत  
 करो ।  
 जगी-सज्ञा स्त्री० एक तरह का पक्षी ।  
 जगीला†-वि० जागने के कारण धनसाया  
 हुआ । उनीचा ।  
 जगरि-सज्ञा पु० जगमग । जग ।  
 जग्मि-सज्ञा पु० वायु ।  
 वि० जो चलता हो ।  
 जगैसर-सज्ञा पु० यज्ञेश्वर । यज्ञ पुरुष ।  
 यज्ञस्वामी । विष्णु ।  
 जघन-सज्ञा पु० १. कटि के नीचे का  
 भाग । पेट । २ नितंब । चूतड़ ।  
 जघनचपला-सज्ञा स्त्री० आर्या छंद का एक  
 भेद ।  
 जघन्य-वि० १ अतिम । २ गहित ।  
 त्याग्य । पुन्मि ३ नीच । निवृष्ट ।  
 सज्ञा पु० १ झूठ । २ नीच जाति ।  
 जचना-क्रि० अ० दे० "जैचना" । १ उचित  
 प्रतीत होना । पसन्द होना । २. अच्छाई  
 बुराई मालूम करना । परीक्षित हाना ।  
 जचाना-क्रि० स० परीक्षा कराना । पहचान-  
 वाना । अनुसन्धान करना ।  
 जच्चा-सज्ञा स्त्री० प्रसूता स्त्री । वह स्त्री  
 जिसे हाल में बच्चा हुआ हो ।  
 यौ०-जच्चावाना=गृतिमागृह । सोरी ।  
 जच्चा बच्चा-प्रसूता स्त्री और नवजात  
 शिशु ।  
 जच्छ†-सज्ञा पु० दे० "यक्ष" ।  
 जज-सज्ञा पु० [अ०] मुकुन्दमा का फंगला  
 करनेवाला अधिकारी । न्यायाधीश ।  
 निर्णय करनेवाला ।  
 जजी-सज्ञा स्त्री० जज का पद या काम ।  
 जज की बचहरी ।  
 जजमान-सज्ञा पु० दे० "यजमान" ।

जज्ञोपवीत-सज्ञा पु० दे० "यज्ञोपवीत" ।  
 जजाति-सज्ञा पु० दे० "ययाति" ।  
 जज्ञिया-सज्ञा पु० [अ०] मुसलमान शासको  
 द्वारा मुसलमानों के अलावा अन्य धर्मवालों  
 पर लगाया जानेवाला एक कर ।  
 जज्वीरा-[फा०] सज्ञा पु० टापू । द्वीप ।  
 जझर-सज्ञा पु० लोहे की चद्दर का तिकोना  
 टुकड़ा ।  
 जज-सज्ञा पु० एक तरह का गोदना । जडा ।  
 मिले हुए बाल ।  
 जडना-त्रि० स० घोखा देकर कुछ लेना ।  
 ठगना ।  
 \*त्रि० स० जडना ।  
 जटल-सज्ञा स्त्री० व्यर्थ श्रीर भूठ बात ।  
 गप्प । बकवास ।  
 जटला-सज्ञा पु० समूह । समुदाय । भीड़ ।  
 बैठक ।  
 जटा-सज्ञा स्त्री० १ एक में उलझे हुए सिर के  
 बहुत से बड़े बड़े बाल, जैसे साधुओं के होते  
 हैं । २ जड़ के यतले-यतले सूत । झकड़ा ।  
 ३ एक साथ बहुत से रेशे आदि । ४  
 सात्ता । ५ जटामासी नामक औषध ।  
 झतावरि । ६ जूट । पाट । ७ कौछ ।  
 बैचाँच । ८ वेदपाठ का एक भेद ।  
 जटाजूट-सज्ञा पु० १ बहुत से लंबे बालों का  
 समूह । २ शिव की जटा ।  
 जटाज्वाल-सज्ञा पु० महादेव का तीसरा  
 नेत्र । दीपक । प्रदीप्त ।  
 जटाटब-सज्ञा पु० महेय । महादेव । शत्रु ।  
 जटाधर-सज्ञा पु० १ शिव । महादेव ।  
 २ गौरी । साधु ।  
 जटाधारी-वि० जो जटा रंगे हो ।  
 सज्ञा पु० १ शिव । महादेव । २ एक  
 पोधा ।  
 जटाना-त्रि० स० जटने का काम दूसरे से  
 कराना ।  
 त्रि० प्र० ठगा जाना ।  
 जटामाली-सज्ञा पु० शिव । जटाधर ।  
 जटामासी-सज्ञा स्त्री० एक सुगन्धित पदार्थ  
 जो एक यन्त्रपति की जड़ है । घोष-  
 विलोप । बालघट्ट । बालूषर ।

जटावल्ली-सज्ञा स्त्री० १. महादेव की  
 जटा । २. एक औषध ।  
 जटायु-सज्ञा पु० १ रामायण का एक प्रसिद्ध  
 गिद्ध । २ गुगुल ।  
 जटाल-वि० जटायुक्त । जटाधारी ।  
 सज्ञा पु० १. वरगद । २. मोरवा । ३.  
 कचूर । ४. गुगुल ।  
 जटाला-सज्ञा स्त्री० जटावाली । जटामासी ।  
 छड ।  
 जटायुर-सज्ञा पु० एक राक्षस ।  
 जटित-वि० जडा हुआ । जडाऊ ।  
 जटिया-वि० जटायुक्त । जटाधारी ।  
 जटिल-वि० १ अत्यंत कठिन । दुरूह ।  
 दुर्बोध । पेचीदा । २ जटावाला । जटा-  
 धारी । ३ झूर । दुष्ट ।  
 सज्ञा पु० १. ब्रह्मचारी । २. जटामासी ।  
 ३. शिव । ४. सिंह ।  
 जटिलता-सज्ञा स्त्री० जटिल होने का भाव  
 कठिनाई । दुरूहता । पेचीदापन ।  
 जटिला-सज्ञा स्त्री० १. पीपल । २. बच ।  
 ३. जटामासी । ४. ब्रह्मचारिणी ।  
 जटो-सज्ञा पु० १. बटवृक्ष । वरगद का पेड़ ।  
 २. शिवजी । महादेव ।  
 जटुल-सज्ञा स्त्री० तिल । मसा । लहसुन ।  
 शरीर में या काला चिह्न ।  
 जठर-सज्ञा पु० १ पेट । २ एक उदर-रोग ।  
 ३ शरीर ।  
 वि० १ बूढ़ । बूढ़ा । २ कठिन ।  
 जठराग्नि-सज्ञा स्त्री० पेट की अग्नि ।  
 पेट की गरमी जिससे अन्न पचता है ।  
 शुष्मा । घुग्गुसा ।  
 जठरा-वि० लक्ष्य । दृष्ट । चटोर ।  
 जठराग्नि-सज्ञा स्त्री० पेट की आग । जठ-  
 राग्नि ।  
 जड-वि० १. मूढ़ । मूर्ख । अज्ञान ।  
 अचेतन । स्तब्ध । २. मुन्न । सीप ने छिटुगें  
 हुआ । ३. बहुरा ।  
 सज्ञा पु० १. गौगा । २. पानी । ३.  
 पर्वत । ४. वृक्ष ।  
 सज्ञा स्त्री० १. मूल । पेट या गोघों का यह  
 भाग जो जमीन से भीतर रहता है । गोम ।

आदि वा अधिव प्रभाय दिग्गता । ४.  
 उत्तोजित होता । ५ (भाग वा) जनना ।  
 दह्यना । ६ जगमगाना । चमयना ।  
 जगन्नाथ-सज्ञा पु० १ ईश्वर । २ विष्णु ।  
 ३ विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्ति जो उड़ीसा के  
 पुरी नामक स्थान में है ।  
 जगन्निवास-सज्ञा पु० ईश्वर । विष्णु ।  
 जगन्निवृत्ता-सज्ञा पु० परमात्मा । ईश्वर ।  
 जगन्मय-सज्ञा पु० विष्णु ।  
 जगन्माता-सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी । दुर्गा ।  
 जगन्मोहिनी-सज्ञा स्त्री० १. दुर्गा । २  
 महामाया ।  
 जगबद्ध-वि० दे० "जगद्ध" ।  
 जगमग, जगमगा-वि० १ प्रकाशित ।  
 २ चमकीला । चमकदार ।  
 जगमगाना-क्रि० अ० खूब चमकना ।  
 भलकना । दमकना ।  
 जगमगाहट-सज्ञा स्त्री० जगमगाने का भाव ।  
 चमक ।  
 जगद्माता-सज्ञा स्त्री० जगत की माता ।  
 देवी । दुर्गा । लक्ष्मी । सरस्वती ।  
 जगर मगर-वि० दे० "जगमग" ।  
 जगरा-सज्ञा स्त्री० खजूर की खाट ।  
 जगल-सज्ञा पु० १. शराब की सीठी । २.  
 मदन वृक्ष । ३. कवच । ४ गोमय ।  
 गोबर । ५ एक प्रकार की सुरा ।  
 वि० चालाक ।  
 जगबलुमा-सज्ञा स्त्री० वैद्या । पतुरिया ।  
 जगवाना-क्रि० स० जगाने का काम दूसरे से  
 कराना ।  
 जगह-सज्ञा स्त्री० १ स्थान । स्थल ।  
 भूमि । २ मौका । अवसर । ३ पद ।  
 ओहदा । नौकरी ।  
 जगहर-सज्ञा पु० जागरण । निद्रात्याग ।  
 जगना ।  
 जगज्योति-सज्ञा स्त्री० जगजगाहट ।  
 सदैव प्रकाशित रहनेवाला अखण्ड दीप ।  
 जगात-सज्ञा पु० [प्र०] १ दान । खैरात ।  
 २ महसूल । कर । अकात ।  
 जगाती-सज्ञा पु० १ कर बसूल करनेवाला ।  
 २ कर उगाहन का काम ।

जगात-क्रि० स० १. सोते से उठाना ।  
 २ सचेत करना । होश दिलाना । बोध  
 कराना । ३ भाग को तेज करना ।  
 ४. यत्र-यत्र आदि का माधन करना ।  
 जरा-सज्ञा जगाना ।  
 जगार-सज्ञा स्त्री० जागरण । एक माघ  
 वई व्यक्तियों का जाग उठना ।  
 जगावहु-क्रि० म० जगाओ । उठाओ । जागृत  
 करा ।  
 जगी-सज्ञा स्त्री० एक तरह का पक्षी ।  
 जगीला-वि० जागने के कारण अतमाया  
 हुआ । उनीदा ।  
 जगुरि-सज्ञा पु० जगम । जग ।  
 जग्मि-सज्ञा पु० वायु ।  
 वि० जो चलता हो ।  
 जगेसर-सज्ञा पु० यज्ञेश्वर । यज्ञ पुरुष ।  
 यज्ञस्वामी । विष्णु ।  
 जघन-सज्ञा पु० १. कटि के नीचे का  
 भाग । पेट । २ नित्य । चूतड़ ।  
 जघनचपला-सज्ञा स्त्री० आर्या छंद का एक  
 भेद ।  
 जघन्य-वि० १ अतिम । २ गहित ।  
 त्याग्य । कुम्भित । नीच । निवृष्ट ।  
 सज्ञा पु० १ शूद्र । २ नीच जाति ।  
 जचना-क्रि० अ० दे० "जैचना" । १. उचित  
 प्रतीत हाना । पसन्द होना । २. अच्छाई  
 बुराई मालूम करना । परीक्षित हाना ।  
 जचाना-क्रि० स० परीक्षा कराना । पहचन-  
 वाना । अनुसन्धान करना ।  
 जच्चा-सज्ञा स्त्री० प्रसूता स्त्री । वह स्त्री  
 जिसे हाल में बच्चा हुआ हो ।  
 यो-जच्चाखाना=मूतिबगूह । मारी ।  
 जच्चा बच्चा-प्रसूता स्त्री और नवजात  
 बाल ।  
 जच्छ-सज्ञा पु० दे० "यक्ष" ।  
 जज-सज्ञा पु० [भये०] मुकदमी का फंमला  
 करनेवाला अधिकारी । न्यायाधीश ।  
 निर्णय करनेवाला ।  
 जजी-सज्ञा स्त्री० जज का पद या नाम ।  
 जज की बचहरी ।  
 जजमान-सज्ञा पु० दे० "यजमान" ।

जज्ञोपवीत-सज्ञा पु० दे० "यज्ञोपवीत" ।  
 जज्ञाति-सज्ञा पु० दे० "यज्ञाति" ।  
 जज्ञिया-सज्ञा पु० [अ०] मुसलमान शासकों  
 द्वारा मुसलमानों के अलावा अन्य धर्मवालों  
 पर लगाया जानेवाला एक कर ।  
 जज्ञोरा-[फा०] सज्ञा पु० टापू । द्वीप ।  
 जभर-सज्ञा पु० लोह की चदर का तिवोना  
 टुकड़ा ।  
 जट-सज्ञा पु० एक तरह का गोदना । जटा ।  
 मिले हुए बाल ।  
 जटना-वि० स० घोड़ा देकर कुछ लेना ।  
 ठगना ।  
 \*वि० स० जडना ।  
 जटल-सज्ञा स्त्री० व्यर्थ और भूठ बात ।  
 गप्प । बकवास ।  
 जटला-सज्ञा पु० समूह । समुदाय । भीड़ ।  
 बैठक ।  
 जटा-सज्ञा स्त्री० १ एक में उलझ हुए सिर के  
 बहुत से बड़ बड़े बाल, जैसे साधुओं के होते  
 हैं । २ जट के पतले-वतसे सूत । झकड़ा ।  
 ३ एक साथ बहुत से रेशे आदि । ४  
 शाखा । ५ जटमासी नामक औषध ।  
 सतावरि । ६ जूट । पाट । ७ कौछ ।  
 केवाँच । ८ वेदपाठ का एक भेद ।  
 जटाजूट-सज्ञा पु० १ बहुत से लंबे बालों का  
 समूह । २ शिव की जटा ।  
 जटाज्वाल-सज्ञा पु० महादेव का तीसरा  
 नेत्र । दीपक । प्रदीप्त ।  
 जटाटव-सज्ञा पु० महेश । महादेव । रत्न ।  
 जटाधर-सज्ञा पु० १ शिव । महादेव ।  
 २ यात्री । साधु ।  
 जटाधारी-वि० जो जटा रखे हो ।  
 सज्ञा पु० १ शिव । महादेव । २ एक  
 पोषा ।  
 जटाना-क्रि० स० जटने का काम दूसरे से  
 बराना ।  
 क्रि० अ० टगा जाना ।  
 जटामाली-सज्ञा पु० शिव । जटाधर ।  
 जटामासी-सज्ञा स्त्री० एक सुगन्धित पदार्थ  
 जो एक वनस्पति की जड़ है । औषध-  
 विरोध । बालछद्म । बानुचर ।

जटावल्ली-सज्ञा स्त्री० १. महादेव की  
 जटा । २. एक औषध ।  
 जटायु-सज्ञा पु० १ रामायण का एक प्रसिद्ध  
 गिद्ध । २ गुग्गुलु ।  
 जटाल-वि० जटायुक्त । जटाधारी ।  
 सज्ञा पु० १. बरगद । २ मोरवा । ३.  
 बचूर । ४. गुग्गुलु ।  
 जटाला-सज्ञा स्त्री० जटावाली । जटामासी ।  
 छद्म ।  
 जटामुर-सज्ञा पु० एक राक्षस ।  
 जटित-वि० जडा हुआ । जडाऊ ।  
 जटिया-वि० जटायुक्त । जटाधारी ।  
 जटिल-वि० १ अत्यंत कठिन । दुरूह ।  
 दुर्बोध । पेचीदा । २ जटावाला । जटा-  
 धारी । ३ क्रूर । दुष्ट ।  
 सज्ञा पु० १. ब्रह्मचारी । २. जटामासी ।  
 ३. शिव । ४. सिंह ।  
 जटिलता-सज्ञा स्त्री० जटिल होने का भाव  
 कठिनाई । दुरूहता । पेचीदापन ।  
 जटिला-सज्ञा स्त्री० १. पीपल । २. बच ।  
 ३. जटामासी । ४. ब्रह्मचारिणी ।  
 जटो-सज्ञा पु० १ बटवृक्ष । बरगद का पत्र ।  
 २ शिवजी । महादेव ।  
 जटुल-सज्ञा स्त्री० तिल । मसा । लहसुन ।  
 शरीर में का काला चिह्न ।  
 जठर-सज्ञा पु० १ पेट । २ एक उदर-रोग ।  
 ३ शरीर ।  
 वि० १ बूढ़ । बूढ़ा । २ कठिन ।  
 जठराग्नि-सज्ञा स्त्री० पेट की अग्नि ।  
 पेट की गरमी जिससे अन्न पचता है ।  
 दुषा । दुशुषा ।  
 जठरा-वि० सहज । बूढ़ । कठोर ।  
 जठराग्नि-सज्ञा स्त्री० पेट की आग । जठ-  
 राग्नि ।  
 जठ-वि० १ मूढ़ । मूर्ख । मूक । अनजान ।  
 अचेतन । स्तब्ध । २. सुप्त । शीत से ठिठुरा  
 हुआ । ३ बहरा ।  
 सज्ञा पु० १ सीता । २ पानी । ३.  
 पर्यंत । ४. दुष्ट ।  
 सज्ञा स्त्री० १ मूल । पत्र या पौधों का वह  
 भाग जो जमीन के भीतर रहता है । सोर ।

२. आधार । नांव । युनिदाद । कारण ।  
जड़िय-वि० सुहा । आसगी । निरुहाही ।  
जड़जन्तु-वि० मूढ़ जीव । मूर्ख जीव । निर्बोध  
पशु-पक्षी आदि ।

जड़ता-सज्ञा स्त्री० १ मूर्खता । बबूफी ।  
२ अचेतनता । स्तब्धता । सुप्त होने का  
भाव । चोप्टा न करने का भाव । ३. काव्य  
म एव सचारी भाव ।

जड़ताई-सज्ञा स्त्री० दे० "जड़ता" ।

जड़त्व-सज्ञा पु० १ चेतना का विपरीत भाव ।  
अचेतन । स्वयं हिल डोल या किसी प्रकार  
की चोप्टा न कर सवने का भाव । २  
मूर्खता ।

जड़बुद्धि-वि० अज्ञान । निर्बोध । मूर्ख ।  
जड़मति-वि० मूर्ख । निर्वुद्धि ।

जड़न-सज्ञा पु० गहने जड़ने का काम ।  
गहनों में मोती पत्थर आदि जड़ना ।

जड़ना-क्रि० सं० १ एक चीज का दूसरी  
चोख में बैठाना । पच्ची करना । २  
ढाँककर बैठाना । जैसे-नाल जड़ना ।  
३ प्रहार करना । ४ चुगली खाना ।

मुहा०-जड़ से पैड उखाड़ना=समूल नष्ट  
करना । मूलमर्म उखाड़ना ।

जड़बट-सज्ञा स्त्री० १. लुत्थ । ठूठ । २.  
वरपद की जड़ ।

जड़भरत-सज्ञा पु० १ अग्रिस्त-भानी एक  
ब्राह्मण जो मल की तरह रहते थे । २.  
शालग्राम स्थान के भरत नामक राजा जो  
सन्यास लेकर विनी बन में रहत थे ।  
एक दिन उन्होंने गंगा के किनारे एक  
मृग शिशु का देखा । दयावश उसे  
अपने आश्रम ले गए । उससे बहुत प्रेम  
करने लगे । उसी का स्मरण करते करते  
उनकी मृत्यु हो गई । मृगयोनि में उनका  
जन्म हुआ । अपने पूर्व आश्रम में जाकर  
मुखी घास आदि से इन्होंने अपना जीवन  
बिताया । दूसरे जन्म में यह ब्राह्मण हुए ।  
सासारिक विषया में न फँसने के लिए यह  
उन्मत्त रहने लगे । अपनी विद्या या बुद्धि  
का परिचय यह किसी को न देते थे ।  
अन्य लोग इन्हें मूर्ख समझते थे ।

जड़वाना-क्रि० सं० जड़ने का काम दूसरे  
से कराना ।

जड़हन-सज्ञा पु० घगहनिया धान । यानि  
में बटनेवाला धान । शालि ।

जड़ाई-सज्ञा स्त्री० १ जड़ने का काम  
या मजदूरी । २ पच्चीकारी ।

जड़ाऊ-वि० जिस पर नग या रत्न आदि  
जड़े हो । जड़ा हुआ । पच्चीकारी किया  
हुआ ।

जड़ाना-वि० सं० दे० "जड़वाना" ।  
†वि० अ० शीत लगना ।

जड़ाव-सज्ञा पु० १ जड़ने का काम ।  
पच्चीकारी । २ जड़ाऊ काम ।

जड़ावट-सज्ञा स्त्री० जड़ने का काम या उसका  
भाव ।

जड़ावर-सज्ञा पु० जाड़े के कपड़े । गरम  
कपड़े ।

जड़ित-वि० १ जड़ा हुआ । २ जिसमें  
नग आदि जड़े हो ।

जड़िनी-सज्ञा स्त्री० जड़ स्त्री । दुप्टा ।

जड़िया-सज्ञा स्त्री० अचेतनता । जड़ता ।  
सुप्त या अचेतन होने का भाव ।

सज्ञा पु० नगों के जड़ने का काम  
करनेवाला । कुदनसाज । सुनार की  
एक जाति ।

जड़ी-सज्ञा स्त्री० वह वनस्पति जिसकी जड़  
शोष के काम लाई जाए । विरई ।  
बूटी । जड़ । जड़ी हुई ।

यी०-जड़ी-बूटी=जंगली शोषधि ।

जड़ीभूत-वि० स्तम्भित । चकित । सुप्त ।  
जो बिलकुल जड़ के समान हो गया  
हो ।

जड़ीला-वि० जड़दार ।

जड़ुआ-वि० दे० "जड़ाऊ" । एव तरह का  
गहना ।

जड़या†-सज्ञा स्त्री० जड़ी दुखार ।

जत†\* -वि० १ जितना । जिस मात्रा  
का । २ चाल । रीति । ३ आदृति ।  
डोल ।

जतन\*†-सज्ञा पु० दे० "यत्न" । उपाय ।  
उद्योग ।

जतनी-सज्ञा पु० १. यत्न करनेवाला ।  
 उद्योगी । २. चतुर । चालाक ।  
 सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की रस्सी ।  
 जतलाना-क्रि० स० दे० "जताना" ।  
 जताना-क्रि० स० १. ज्ञात करना ।  
 बतलाना । २. पहले से सूचना देना ।  
 जतारा-सज्ञा पु० वंश ।  
 जती-सज्ञा पु० दे० "यति" । सयासी ।  
 जतु-सज्ञा पु० १ वृक्ष से निकलनेवाला रस ।  
 गोद । २. लाख । लाह । ३. शिला-  
 जीत ।  
 जतुक-सज्ञा पु० १. हींग । २. लाख ।  
 लाह । ३. शरीर के चमड़े पर का दाग  
 जो जन्म से ही होता है (लहसुन) ।  
 जटुल ।  
 जतुका-सज्ञा स्त्री० १. पहाड़ी सता । २.  
 चमगादड़ ।  
 जतुगृह-सज्ञा पु० लाक्षागृह । लाह का घर  
 जिसमें दुर्घोचन ने पाण्डवों को बन्द कराकर  
 आग लगा दी थी ।  
 जतु-सज्ञा पु० गले के ऊपरी भाग की हड्डी ।  
 हँसली । कन्धे की जड़ ।  
 जतुरस-सज्ञा पु० महावर । अलवतक ।  
 आलता ।  
 जतु-सज्ञा स्त्री० १. एक पक्षी । २. लाख  
 का बना हुआ रंग ।  
 जतेक†\*—क्रि० वि० जितना । जिस मात्रा  
 का ।  
 जत्या-सज्ञा पु० १. समूह । भुङ्ग । गरोह ।  
 २. वर्ग । फिरका ।  
 जया\*—क्रि० वि० दे० "यया" ।  
 सज्ञा पु० दे० "जत्या" ।  
 सज्ञा स्त्री० पुंजी । धन ।  
 जयार्थ—क्रि० वि० दे० "ययार्थ" ।  
 जयोचित—क्रि० वि० दे० "ययोचित" ।  
 जद†\*—क्रि० वि० जव । जव कभी ।  
 अव्य० यदि । अगर ।  
 जदधि—†\*क्रि० वि० दे० "यद्यपि" ।  
 जदपार-सज्ञा स्त्री० निविपी । एक प्रकार  
 की पास ।  
 जदीद—वि० नया ।

जदु-सज्ञा पु० यदु । यादव । चद्रवशीय क्षत्रिय ।  
 जदुनाथ, जदुनायक-सज्ञा पु० यदुनाथ ।  
 यदुनायक । श्रीकृष्ण ।  
 जदुपति-सज्ञा पु० दे० "यदुपति" । श्रीकृष्ण ।  
 जदुपुर-सज्ञा पु० दे० "यदुपुर" । मथुरा  
 नगरी ।  
 जदुवंशी-सज्ञा पु० दे० "यदुवंशी" । यादव ।  
 यदु-कुल के ।  
 जदुराई या जदुराई-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।  
 यादवपति ।  
 जदुराज-सज्ञा पु० दे० "यदुराज" । श्रीकृष्ण ।  
 जदुराय, जदुवर, जदुवीर-सज्ञा पु० यदुराय ।  
 यदुवर । यदुवीर । श्रीकृष्ण ।  
 जदु†\*—वि० ज्यादा ।  
 वि० प्रचंड । प्रवल ।  
 जदुपि†\*—क्रि० वि० दे० "यद्यपि" ।  
 जन-सज्ञा पु० १. मनुष्य । व्यक्तित्व । लोक ।  
 दुनिया के लोग । जनता । २. प्रजा । ३.  
 गँवार । देहाती । ४. अनुयायी । अनुचर ।  
 दास । ५. समूह । समुदाय । ६. भवन । ७.  
 गजदूरी । ८. सात लोकों में से पाँचवाँ  
 लोक । ९. एक राक्षस का नाम ।  
 जनक-सज्ञा पु० १. जन्मदाता । उत्पादक ।  
 २. पिता । ३. मिथिला के प्राचीन  
 राजवंश की उपाधि । ४. सीता के पिता ।  
 जनकजा-सज्ञा स्त्री० सीता ।  
 जनकतनया-सज्ञा स्त्री० जनक की कन्या ।  
 सीता ।  
 जनकता-सज्ञा स्त्री० जनक होने का शब्द ।  
 जनकनदिनी-सज्ञा स्त्री० जनक की पुत्री  
 सीता ।  
 जनकपुर-सज्ञा पु० मिथिला की प्राचीन  
 राजधानी ।  
 जनकागजा-सज्ञा स्त्री० सीता ।  
 जनकारी-सज्ञा स्त्री० असक्तक । महावर ।  
 जनकीर-सज्ञा पु० १. जनकपुर । २. जनक  
 राजा के सम्बन्धी और कुटुम्बी ।  
 जनका-वि० [कां] १. नामदे । २. हिजड़ा ।  
 नपुंसक ।  
 जनगी-सज्ञा पु० मछली ।  
 जनघर-सज्ञा पु० मठ ।

जनज्ञम—सज्ञा पु० चाण्डाल । अथम जाति ।  
 जाचक्षु—सज्ञा पु० सूर्य ।  
 जाचर्चा—सज्ञा स्त्री० अफवाह । जनश्रुति ।  
 जाता—सज्ञा स्त्री० १ जन-सामूह । गर्व-  
 नापारण । २ जगन का भाव ।  
 जनपा—सज्ञा पु० अग्नि ।  
 जनन—सज्ञा पु० १ उत्पत्ति । उद्भव ।  
 २ जन्म । ३ आधिभवि । ४ तप के  
 अनुसार मन्त्रों के दस सत्कारों में से पहला । ५  
 यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक सत्कार ।  
 ६ वस्त्र । कुल । ७ पिता । ८ परमेश्वर ।  
 जनना—क्रि० सं० १ जन्म देना । पैदा  
 करना । २ प्रसव करना ।  
 जनन शौच—सज्ञा पु० बानव उत्पन्न होने  
 का सूतक ।  
 जननि—सज्ञा स्त्री० माँ । माता । अम्मा ।  
 जननी—सज्ञा स्त्री० १ जन्म देनेवाली ।  
 माता । २ कृपा । ३ जनी गणद्रव्य ।  
 ४ कुटुम्बी । ५ जूही । ६ मजीठ । ७  
 जटामासी । ८ पपड़ी । ९ अलता । १०  
 पपरिका । ११ चमगादड़ ।  
 जननेन्द्रिय—सज्ञा स्त्री० लिंग या योनि । स्त्री  
 या पुरुष के सन्तान उत्पन्न करनेवाले अवयव ।  
 जनपति—सज्ञा पु० राजा । नृप ।  
 जनपद—सज्ञा पु० देश । प्रान्त । प्रदेश ।  
 जनस्थान । मनुष्यों के रहने का स्थान ।  
 जनप्रवाद—सं० पु० लोकनिन्दा । अफवाह ।  
 विषदनी ।  
 जनप्रिय—सज्ञा पु० १. शिव । २ लोकप्रिय के  
 अनुकूल । लोकप्रिय । जनता को प्रिय ।  
 जनम—सज्ञा पु० दे० 'जन्म' । उत्पत्ति ।  
 जनमघटी—सज्ञा स्त्री० बच्चा को जन्म के  
 समय से ही दी जानेवाली घूँटी ।  
 जनमपत्री—सज्ञा स्त्री० जन्मकुण्डली ।  
 जनमना—क्रि० अ० उत्पन्न होना । जन्म लेना ।  
 जनमाता—क्रि० सं० प्रसव कराना । उत्पन्न  
 कराना ।  
 जनमर्षदा—सज्ञा स्त्री० लोकिव आचार ।  
 जनमेजय—सज्ञा पु० १ राजा परीक्षित के  
 पुत्र, जिन्होंने सर्पयज्ञ किया था । २ एक  
 प्रतिष्ठ नाम ।

जनपिता—सज्ञा पु० पिता । जन्मदाता ।  
 जनपित्री—सज्ञा स्त्री० माता । जननी ।  
 जनरत्न—सज्ञा पु० [अग्ने०] पीज म मन्त्र के ऊँची  
 पदवी । पीज का सेनापति ।  
 वि० गांधाण । ग्राम ।  
 यो०—जान्न मौलिल—नापारण परियद् ।  
 जनरत्न मनेजर—प्रधान व्यवस्थापक ।  
 जनरत्न—सज्ञा पु० अफवाह । जनश्रुति ।  
 लोनापवाद ।  
 जनवरी—सज्ञा पु० [अग्ने०] अग्नेर्जा वषे वा  
 पहला महीना ।  
 जनवाद—सज्ञा पु० सवाद । समाचार ।  
 अफवाह । जनश्रुति ।  
 जनवाना—क्रि० ग० प्रमथ कराना । सूचित  
 करवाना ।  
 जनवास—सज्ञा पु० सभा । मनुष्यों के रहने का  
 स्थान । नगर । ग्राम । वाराणियों के ठहरने  
 का स्थान ।  
 जनवासा—सज्ञा पु० वाराणियों के ठहरने का  
 स्थान ।  
 जनश्रुति—सज्ञा स्त्री० विषदनी । अफवाह ।  
 जनहाई—अव्य० प्रत्येक मनुष्य । प्रति  
 मनुष्य । मनुष्य सहित ।  
 जना—सज्ञा पु० जन । मनुष्य ।  
 क्रि० सं० पैदा किया ।  
 जनाई—सज्ञा स्त्री० १. जनानेवाली स्त्री ।  
 दाई । २. दाई की मजदूरी । ३ जताकर ।  
 सूचितकर ।  
 जनाचार—सज्ञा पु० लोक प्रचलित रीति  
 या रिवाज ।  
 जनाथा—सज्ञा पु० लाला । अरबी ।  
 जनातिग—सज्ञा पु० मनुष्य से अधिक ।  
 मनुष्य की शक्ति के बाहर ।  
 जनाधिनाथ—सज्ञा पु० १ राजा । २.  
 विष्णु ।  
 जनानाजाना—सज्ञा पु० स्त्रियों के रहने का  
 स्थान  
 जनाना—वि० [फा०] [स्त्री० जनानी] १  
 स्त्रियों का । स्त्री-सम्बन्धी । २ स्त्री ।  
 जनानापन—सज्ञा पु० मेहरापन । स्त्रियों  
 की तरह रहन-सहन ।

जनान्तिक—मज्ञा पु० अप्रकाशित या गुप्त  
सवाद । नाटक में श्रापस में बात करने  
की एक मुद्रा ।

जनाब—सज्ञा पु० महाशय । माननीय ।  
आदरसूचक सम्बोधन ।

जनार्दन—सज्ञा पु० विष्णु । श्रीकृष्ण ।

जनावर—सज्ञा पु० पशु । जानवर ।  
वि० मूर्ख ।

जनाश्रय—सज्ञा पु० मनुष्यों के रुकने का स्थान ।  
धर्मशाला । सराय । घर । मकान ।

जनि—सज्ञा स्त्री० १. नारी । स्त्री । २.  
माता । ३. पुत्रवधू । ४. जन्म । उत्पत्ति ।  
५. जन्मभूमि । ६. पत्नी । ७. एक गद्य  
द्रव्य ।

अव्य० न, नहीं, मत ।

जनिका—मज्ञा स्त्री० पहेली । छेकोवित ।  
दो श्रय कहनेवाले शब्द ।

जनित—वि० उत्पन्न हुआ । जन्मा हुआ ।

जनिता—सज्ञा पु० पैदा करनेवाला । पिता ।

जनित्र—सज्ञा पु० जन्मभूमि । उत्पत्तिस्थान ।

जनिर्वा—वि० प्रेयसी । प्यारी । प्राण-प्यारी ।

जनी—सज्ञा स्त्री० १. दासी । अनुचरी ।

२ स्त्री । ३. माता । ४. कन्या । पुत्री ।

५ एक गद्य-द्रव्य ।

वि० उत्पन्न या पैदा की हुई ।

जनु—प्रि० वि० मानो (उत्प्रेक्षावाचक) । जैसे  
मथा, जिस तरह, जिस भाँति ।

सज्ञा पु० उत्पत्ति । जन्म ।

जनुक—अव्य० मानो । जानो, (उपमा-  
वाचक) ।

जनुन—सज्ञा पु० उन्माद । पागलपन ।

जनुजु—सज्ञा पु० १ यज्ञोपवीत । यज्ञसूत्र ।

ग्रहसूत्र । २ यज्ञोपवीत-संस्कार ।

जनेत—सज्ञा स्त्री० बरपावा । बरात ।

जनेय—सज्ञा पु० दे० “जनेऊ” ।

जनेश—सज्ञा पु० राजा । नृपति ।

जनेयु—सज्ञा पु० मनुष्यों में । जन-समाज में ।

जनेया—वि० जाननेवाला । जानकार । जन्म

देनेवाला ।

जनेदाहरण—सज्ञा पु० दण । गौरव ।

कीर्ति । प्रतिष्ठा ।

जनी—प्रि० वि० मानो । गोया ।

जन्तर—सज्ञा पु० ताम्रिक यंत्र । कल ।  
श्रीजार ।

जन्तर-मन्तर—सज्ञा पु० १. जादू । टोना । यंत्र  
मंत्र । २. मानमन्दिर । ३. वेध-  
शाला ।

जन्ता—सज्ञा पु० १. तारखीचने का यंत्र ।  
२. बालक जनने की क्रिया ।

जन्ताघर—सज्ञा पु० वह घर जिसमें दण्डा पैदा  
हो । सीरी ।

जन्तु—सज्ञा पु० प्राणी । जीव । पशु ।

जन्त्र—सज्ञा पु० दे० “यंत्र” ।

जद्यत—सज्ञा स्त्री० [ अ० ] स्वर्ग ।  
वह्निस्त ।

जन्म—सज्ञा पु० १. गर्भ में से निकलकर  
जीवन धारण करना । उत्पत्ति । पैदाइश ।

२. अस्तित्व में आना । आविर्भाव ।

३. जीवन । जिंदगी । ४. आयु । जीवन-  
काल । जैसे—जन्मभर ।

मुह०—जन्म लेना—पैदा होना । जन्म  
हारना—१ व्यर्थ जन्म होना । २. दूसरे  
का दास होकर रहना ।

जन्मकुण्डली—सज्ञा स्त्री० लग्न पत्री । ज्यो-  
तिष के अनुसार जन्म के समय में ग्रहों  
की स्थिति बतानेवाला चक्र या पत्र  
(फलित ज्योतिष) ।

जन्मकृत—सज्ञा पु० पिता ।

जन्मतिथि—सज्ञा स्त्री० दे० “जन्मदिन” ।  
वर्षगाँठ । सालगिरह ।

जन्मदिन—सज्ञा पु० जन्म का दिन । वर्ष-  
गाँठ ।

जन्मना—प्रि० अ० १. जन्म लेना । पैदा  
होना । २ अस्तित्व में आना ।

जन्मपत्र—सज्ञा पु० दे० “जन्मपत्री” ।

जन्मपत्री—सज्ञा स्त्री० वह पत्र या खर्चा  
जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों  
की स्थिति आदि का व्योरा रहता है ।  
जन्मकुण्डली । लग्नपत्री ।

जन्मभूमि—सज्ञा स्त्री० वह स्थान या देश जहाँ  
निजी का जन्म हुआ हो । स्वदेश ।  
उत्पत्तिस्थान ।

जनज्ञम—सज्ञा पु० चाण्डाल । अयम जाति ।  
 जनचक्षु—सज्ञा पु० सूर्य ।  
 जनचर्चा—सज्ञा स्त्री० अफवाह । जनश्रुति ।  
 जनता—सज्ञा स्त्री० १ जन-समूह । सर्व-  
 साधारण । २ जनन का भाव ।  
 जनधा—सज्ञा पु० अग्नि ।  
 जनन—सज्ञा पु० १ उत्पत्ति । उद्भव ।  
 २ जन्म । ३ आविर्भाव । ४ तथ के  
 अनुसार मन्त्रों के वस सस्वारों में से पहला । ५  
 यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक संस्कार ।  
 ६ वंश । कुल । ७ पिता । ८ परमेश्वर ।  
 जनना—क्रि० सं० १ जन्म देना । पैदा  
 करना । २ प्रसव करना ।  
 जनन शौच—सज्ञा पु० बालक उत्पन्न होने  
 का सूतक ।  
 जननि—सज्ञा स्त्री० माँ । माता । अम्मा ।  
 जननी—सज्ञा स्त्री० १ जन्म देनेवाली ।  
 माता । २ वृषा । ३ जनी गन्धर्व्य ।  
 ४ वृष्टी । ५ जूही । ६ मजीठ । ७  
 जटामासी । ८ पपड़ी । ९ प्रलता । १०  
 पपरिवा । ११ भमगादड़ ।  
 जननेन्द्रिय—सज्ञा स्त्री० लिंग या योनि । स्त्री  
 या पुरुष के सन्तान उत्पन्न करनेवाले अवयव ।  
 जनपति—सज्ञा पु० राजा । नृप ।  
 जनपद—सज्ञा पु० देना । प्रान्त । प्रदेश ।  
 जनस्थान । मनुष्यों के रहने का स्थान ।  
 जनप्रवाद—म० पु० लोकनिन्दा । अफवाह ।  
 विवदनी ।  
 जनप्रिय—सज्ञा पु० १. शिष्य । २ लोचरुषि के  
 अनुकूल । लोकप्रिय । जनता को प्रिय ।  
 जनम—सज्ञा पु० दे० 'जन्म' । उत्पत्ति ।  
 जनमपूटी—सज्ञा स्त्री० बच्चा का जन्म के  
 समय से ही दी जानेवाली घूँटी ।  
 जनमपत्री—मना स्त्री० जन्मकुण्डली ।  
 जनमना—क्रि० भ० उत्पन्न होना । जन्म लेना ।  
 जनमाता—क्रि० सं० प्रगट कराना । उत्पन्न  
 कराना ।  
 जनमयादि—युक्ता स्त्री० सांघिक आचार ।  
 जनमेजय—मज्ञा पु० १ राजा परीक्षित के  
 पुत्र, जिन्होंने गर्गमज किया था । २ एक  
 प्रसिद्ध नाग ।

जनमिता—सज्ञा पु० पिता । जन्मदाता ।  
 जनयित्री—सज्ञा स्त्री० माता । जन्नी ।  
 जनरल—सज्ञा पु० [अग्रे०] फौज में सबसे ऊँची  
 पदवी । फौज का सेनापति ।  
 वि० साधारण । आम ।  
 यी०—जनरल कौंसिल=साधारण परिषद् ।  
 जनरल मनेजर=प्रधान व्यवस्थापक ।  
 जनरव—सज्ञा पु० अफवाह । जनश्रुति ।  
 लोवापवाद ।  
 जनवरी—सज्ञा पु० [अग्रे०] अग्रेजी वर्ष का  
 पहला महीना ।  
 जनवाद—सज्ञा पु० रावाद । रामाचार ।  
 अफवाह । जनश्रुति ।  
 जनवाना—क्रि० सं० प्रसव कराना । सूचित  
 करवाना ।  
 जनवास—सज्ञा पु० सभा । मनुष्यों के रहने का  
 स्थान । नगर । ग्राम । बारातियाँ के ठहरने  
 का स्थान ।  
 जनवासा—मज्ञा पु० बारातियों के ठहरने का  
 स्थान ।  
 जनश्रुति—सज्ञा स्त्री० विवदनी । अफवाह ।  
 जनहाई—अव्य० प्रत्येक मनुष्य । प्रति  
 मनुष्य । मनुष्य सहित ।  
 जना—सज्ञा पु० जन । मनुष्य ।  
 क्रि० सं० पैदा किया ।  
 जनाई—सज्ञा स्त्री० १. जनानेवाली स्त्री ।  
 दाई । २. दाई की मजदूरी । ३ जतावर ।  
 सूचितवर ।  
 जनाचार—मज्ञा पु० लोकप्रचलित रीति  
 या रिवाज ।  
 जनाडा—सज्ञा पु० तास । अरथी ।  
 जनातिग—सज्ञा पु० मनुष्य से अधिक ।  
 मनुष्य की शक्ति के बाहर ।  
 जनाधिनायक—मज्ञा पु० १. राजा । २.  
 विष्णु ।  
 जनानप्राता—सज्ञा पु० स्त्रियों के रहने का  
 स्थान ।  
 जनाना—वि० [पा०] [म्त्री० जाननी] १  
 स्त्रियाँ का । स्त्री-सम्बन्धी । २ स्त्री ।  
 जनानापन—सज्ञा पु० महाराजा । स्त्रियों  
 की तरह रहने-महान् ।

## जनान्तिक

जनान्तिक-मज्ञा पु० अप्रकाशित या गुप्त  
सवाद । नाट्य में आपस में बात करने  
की एक मुद्रा ।

जनाब-सज्ञा पु० महाशय । माननीय ।  
आदरमूचक सम्बोधन ।

जनावन-मज्ञा पु० विष्णु । श्रीकृष्ण ।

जनावर-सज्ञा पु० पशु । जानवर ।

वि० मूर्ख ।

जनाश्रय-सज्ञा पु० मनुष्यों के रुकने का स्थान ।

धर्मशास्त्रा । सराय । घर । मकान ।

जनि-सज्ञा स्त्री० १. नारी । स्त्री । २.

माता । ३. पुत्रवधू । ४. जन्म । उत्पत्ति ।

५. जन्मभूमि । ६. पत्नी । ७. एक गद्य  
द्रव्य ।

अव्य० न, नहीं, मत ।

जनिका-सज्ञा स्त्री० पहेली । छेकोवित ।

दो ग्रंथ कहनेवाले शब्द ।

जनिता-वि० उत्पन्न हुआ । जन्मा हुआ ।

जनिता-सज्ञा पु० पैदा करनेवाला । पिता ।

जनित्र-सज्ञा पु० जन्मभूमि । उत्पत्तिस्थान ।

जनिर्व-वि० प्रयत्नी । प्यारी । प्राण-प्यारी ।

जनी-सज्ञा स्त्री० १ दासी । अनुचरी ।

२ स्त्री । ३ माता । ४ कन्या । पुत्री ।

५ एक गद्य-द्रव्य ।

वि० उत्पन्न या पैदा की हुई ।

जनु-क्रि० वि० मानो (उत्प्रेक्षावाचक) । जैसे

यथा, जिस तरह, जिस भाँति ।

सज्ञा पु० उत्पत्ति । जन्म ।

जनुक-अव्य० माना । जानो, (उपमा-  
वाचक) ।

जनुन-सज्ञा पु० उन्माद । पागलपन ।

जनेऊ-सज्ञा पु० १ यज्ञोपवीत । यज्ञसूत्र ।

ब्रह्मसूत्र । २ यज्ञोपवीत-संस्कार ।

जनेत-सज्ञा स्त्री० बरयाशा । बरात ।

जनेत्र-सज्ञा पु० दे० "जनेऊ" ।

जनेश-सज्ञा पु० राजा । नृपति ।

जनेय-सज्ञा पु० मनुष्यों में । जन-भमाज में ।

जनेया-वि० जाननेवाला । जानकार । जन्म  
देनेवाला ।

जनोदाहरण-सज्ञा पु० यग । यौख ।

कीर्ति । प्रविष्टा ।

जनी-क्रि० वि० मानो । गोया ।

जन्तर-सज्ञा पु० तान्त्रिक यंत्र । कल ।

ओजार ।

जन्तर-मन्तर-सज्ञा पु० १. जादू । टोना । यंत्र

मन । २. मानमन्दिर । ३. वेध-

शाला ।

जन्ता-मज्ञा पु० १. तार खींचने का यंत्र ।

२. बालक जनने की क्रिया ।

जन्ताघर-सज्ञा पु० वह घर जिसमें बच्चा पैदा

हो । सौरी ।

जन्तु-सज्ञा पु० प्राणी । जीव । पशु ।

जन्त्र-सज्ञा पु० दे० "यंत्र" ।

जन्त-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] स्वर्ग ।

वहिस्त ।

जन्म-सज्ञा पु० १ गर्भ में से निकलकर

जीवन धारण करना । उत्पत्ति । पैदाइश ।

२ अस्तित्व में आना । आविर्भाव ।

३ जीवन । ज़िन्दगी । ४ आयु । जीवन-

काल । जैसे—जन्मभर ।

मुहा०—जन्म लेना=पैदा होना । जन्म

हारना=१ व्यर्थ जन्म खोना । २ दूसरे

का दास होकर रहना ।

जन्मकुडली-सज्ञा स्त्री० लग्न पत्री । ज्यो-

तिष के अनुसार जन्म के समय में ग्रहों

की स्थिति बतानेवाला चक्र या पत्र

(फलित ज्योतिष) ।

जन्मकृत-सज्ञा पु० पिता ।

जन्मतिथि-सज्ञा स्त्री० दे० "जन्मदिन" ।

वर्षगाँठ । सालगिरह ।

जन्मदिन-सज्ञा पु० जन्म का दिन । वर्ष-

गाँठ ।

जन्मना-क्रि० अ० १ जन्म लेना । पैदा

होना । २ अस्तित्व में आना ।

जन्मपत्र-सज्ञा पु० दे० "जन्मपत्री" ।

जन्मपत्री-सज्ञा स्त्री० वह पत्र या खर्चा

जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों

की स्थिति आदि का व्योरा रहता है ।

जन्मकृण्वती । लग्नपत्री ।

जन्मभूमि-सज्ञा स्त्री० वह स्थान या देश जहाँ

किसी का जन्म हुआ हो । म्वदेश ।

उत्पत्तिस्थान ।

जन्मसिद्ध—वि० जन्म ही से प्राप्त । जन्ममात्र से प्राप्त । जिसकी सिद्धि जन्म से ही है ।

जन्मस्यान—सज्ञा पु० जन्मभूमि । स्वदेश । जन्मांतर—सज्ञा पु० दूसरा जन्म ।

जन्मा—सज्ञा पु० वह जिसका जन्म हो (समाप्त के अन्त में) ।

वि० जो पैदा हुआ हो । उत्पन्न ।

जन्माना—प्रि० स० उत्पन्न करना । जन्म देना ।

जन्मान्ध—वि० जन्म से ही अन्धा । पैदा-यसी अन्धा ।

जन्माष्टमी—मज्ञा स्त्री० भादा की कृष्णाष्टमी, जिस दिन भगवान् श्रीकृष्णचंद्र का जन्म हुआ था ।

जन्मोत्सव—सज्ञा पु० किसी के जन्म के स्मरण का उत्सव । बर्पाठ । जन्मदिन का उत्सव ।

जन्य—सज्ञा पु० १ साधारण मनुष्य । जनसाधारण । २ विवदती । अफवाह ।

३ राष्ट्र । किसी एक देश के वासी ।

४ लड़ाई । युद्ध । ५ पुत्र । बेटा ।

६ दामाद । ७ पिता । ८ जन्म ।

वि० १ जन-संबंधी । २ किसी जाति, देश या राष्ट्र से संबंध रखनेवाला । ३ राष्ट्रीय । जातीय । ४ जो उत्पन्न हुआ है । उद्भूत ।

जन्या—सज्ञा स्त्री० यधू । प्रीति ।

जन्मु—सज्ञा पु० १ अग्नि । २ ब्रह्मा । ३ प्राणी । ४ जन्म । उत्पत्ति । ५ सत्प्रपिया में से एक ।

जप—सज्ञा पु० १ किसी मंत्र या वाक्य का बारबार पाठ करना । मन्त्रोच्चारण । २ पूजा आदि में मंत्र का पाठ । ३ नाम-स्मरण ।

जपकारो—सज्ञा पु० जप करनेवाला । जापक ।

जप-तप—सज्ञा पु० सध्या, पूजा, जप और पाठ आदि । पूजा-पाठ ।

जपन—सज्ञा पु० जप । नाम का स्मरण ।

जपना—प्रि० स० १ किसी मंत्र या शब्द

को बार-बार कहना या रटना । २ सध्या, यज्ञ या पूजा आदि के समय मन्त्रोच्चारण । ३ या जाना । ले लेना ।

जपनी—मज्ञा स्त्री० १ माला । २ गोमुखी । गुप्ती ।

जपनीय—वि० जप करने योग्य ।

जपन्ता—वि० जप करनेवाला । जापक ।

जपमाला—सज्ञा स्त्री० जप करने की माला । मुमिरनी । १०८ दाने की माला ।

जपयम—सज्ञा पु० जप की सध्या । (वाचिक, उपासु और मानसिक से जप के तीन प्रकार हैं ।)

जपा—सज्ञा स्त्री० जवा । घड़हल ।

सज्ञा पु० जपनेवाला ।

जपि या जपों—वि० जप करनेवाला ।

जपों तपों—वि० पूजक । तपस्वी । भजना-नन्दी ।

जफा—सज्ञा स्त्री० [फा०] सस्ती । जुल्म ।

जफोल—सज्ञा स्त्री० १ सीटी का शब्द । २ सीटी ।

जब—प्रि० वि० जिस समय । जिस वक्त । यदा ।

मुहा०—जब जब=कभी । जिस जिस समय । जब तब=कभी-कभी । जब देखो तब=सदा । सर्वदा । हमेशा । जब न तब=बिना समय के । जब लग=जब तब । जब लो । जिस समय तब ।

जबड़ा—सज्ञा पु० मुह में ऊपर नीचे की हड्डियाँ जिनमें डाढ़ें जड़ी रहती हैं । कत्ता ।

जबदना—प्रि० भ० भर जाना । चुन न पहना । कान का जबदना ।

जबर—वि० १ बलवान् । बली । तावत-वर । २ दृढ़ । मजबूत ।

जबरई—सज्ञा स्त्री० अन्धाय । सखी । ज्वादती । बरजोरी । जबरदस्ती ।

जबरदस्त—वि० १ बलवान् । बली । शक्ति-शाली । २ दृढ़ । मजबूत ।

जबरदस्ती—सज्ञा स्त्री० अत्याचार । सीना-जोरी । ज्वादती । अन्धाय ।

कि० वि० बलपूर्वक । दबाव डालकर ।

जवरन्-त्रि० वि० बलात् । जवरवस्ती । बलपूर्वक ।

जवरा-वि० बलवान् । बली ।

सज्ञा पु० [अग्ने० जेवरा] घोड़े और गवहे के मध्य का एक जगती जानवर जो दक्षिण अफ्रीका में पाया जाता है ।

जबह, जिबह-सज्ञा पु० [घ०] गला काटकर प्राण लेने की क्रिया । हिंसा । प्राण लेना ।

जवान-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ जीम । जिह्वा । २ बात । बोल । ३ प्रतिज्ञा । वादा । कौल । ४. भाषा । बोल-चाल ।

मुहा०-जवान खीचना=घृष्टतापूर्ण बातें करने के लिए कठोर दंड देना । जवान पकड़ना=बोलने न देना । कहने से रोकना ।

जवान पर आना=मुंह से निकलना । जवान में लगाना न होना=तोच-समझकर न बोलना । जवान हिलाना=मुंह से शब्द निकालना । दबी जवान से बोलना । अस्पष्ट रूप से बोलना । साफ़ साफ़ न कहना ।

यो०-वर-जवान=कठस्थ । उपस्थित । वेजवान=बहुत सीधा ।

जवानबराज-वि० [फा०] [सज्ञा जवानबराजी] घृष्टतापूर्वक अनुचित बातें करनेवाला ।

जवानबदी-सज्ञा स्त्री० लिखा हुआ इजहार (गवाह का बयान) । चुप्पी ।

जवानी-वि० १ जो केवल जवान से कहा जाय, किया न जाय । मौखिक । २ जो लिखित न हो । मुंह से कहा हुआ ।

जवाना-सज्ञा स्त्री० जवाल कृषि की माता । जवून-वि० [तु०] बुरा । खराब ।

जब्त-सज्ञा पु० [अ०] १ राज्य द्वारा किया हुआ कब्जा । जामिनाद छीनना या किसी वस्तु को कब्जे में करना । २ अपनाया हुआ ।

जबती-सज्ञा स्त्री० जब्त होने की क्रिया । जबर-सज्ञा पु० [अ०] ज्वावती । सक्ती ।

जबन-सज्ञा पु० मैथुन । जभा-सज्ञा पु० जबडा । चौहट ।

जभाई-सज्ञा स्त्री० जम्हाई । जभी-क्रि० वि० जिम् समग्र ही । ज्याही ।

जभीरी-सज्ञा पु० एक प्रकार का बटा नीरू ।

जम-सज्ञा पु० यम । यमराज ।

जमई-वि० जमा-सम्बन्धी ।

जमकना-क्रि० अ० जम जाना । सख्त होना ।

क्रि० अ० चमकना ।

जमकाना-क्रि० स० बैठाना । सख्त करना ।

जमकात, जमकातर†\*-सज्ञा पु० पानी का भेंवर ।

सज्ञा स्त्री० १ यम वा छुरा । २ खाँडा ।

जमघट-सज्ञा पु० दे० "यमघट" ।

जमघट-सज्ञा पु० भीड़ । जमावडा । ठट्ट ।

जमज-वि० यमज । जुड़वाँ ।

जमडाड़-सज्ञा स्त्री० कटारी की तरह का एक हथियार ।

जमजम-अव्य० सदा । निरन्तर । रह-रहकर ।

जमदग्नि-सज्ञा पु० एक प्राचीन ऋषि, जो परशुराम के पिता थे ।

जमदीया-सज्ञा पु० यमदीपक जो कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को यम के नाम पर घर के बाहर निकाल दिया जाता है ।

जमदुतिया-सज्ञा स्त्री० यमद्वितीया । भैया-दूज । कार्तिक शुक्लपक्ष की द्वितीया ।

जमदूत-सज्ञा पु० यमदूत । मृत्यु के दूत ।

जमधर-सज्ञा पु० दे० "जमडाड़" । कटार । बिछुआ । अस्व-विशेष ।

जमन\*-सज्ञा पु० दे० "यवन" ।

जमना-क्रि० अ० १ तरल पदार्थ का ठास या गाढ़ा हो जाना । जैसे-वरफ जमना । २ दृढतापूर्वक बैठना । ३ स्थिर होना । निश्चल होना । ४ एनन होना । इकट्ठा होना । ५ पूरा-पूरा अभ्यास होना । ६ कोई कार्य उत्तमता से होना । जैसे-खेल जमना । ७ किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने योग्य हो जाना । ८. उपजना । उत्पन्न होना ।

जमनीतर-सज्ञा पु० वह रकम जो जमाने के बदले दी जाय ।

जमराज-दे० "यमराज" ।

जमरूढ-सज्ञा पु० एक तरह का फल ।

जमबट-सज्ञा स्त्री० घुएँ की नींव में रखी जानेवाली पहिए के आधार की खड़ी ।

जमहार्द—सज्ञा स्त्री० दे० 'जमहार्द' ।  
 जमहाना—सज्ञा स्त्री० जमहार्द लना ।  
 जमहर—सज्ञा पु० [प्र०] लातान । प्रजा-  
 तन्त्र । जनसमूह ।  
 जमहरियत या जमहूरी—वि० लातान या  
 प्रजातन्त्र सम्बन्धी ।  
 जमा—वि० [प्र०] १ समूह किया हुआ ।  
 एतन्त्र । इष्टका । २ साथ मिलाकर । ३ जा  
 धराहर के रूप में या किसी खाते में रखा  
 गया हो ।  
 सज्ञा स्त्री० १ मूलधन । पूजी । २ धन ।  
 संपत्ति । ३ भूमि-धर । मान  
 गुजारी । लगान । ४ जोड़ (गणित) ।  
 जमाई—सज्ञा पु० दामाद । जेवाई । जामाता ।  
 सज्ञा स्त्री० जमान या जमान की प्रिया या  
 भाव ।  
 जमाखर्च—सज्ञा पु० धन्य और व्यय ।  
 जमात—सज्ञा स्त्री० १ मनुष्या का समूह ।  
 गरोह या जत्ता । २ कक्षा । श्रेणी ।  
 दरजा ।  
 जमादार—सज्ञा पु० [फा०] [सज्ञा जमादारी]  
 सिपाहिया या पहरेदार आदि का प्रधान ।  
 मुखिया । रखवाली करनेवाला । अधि-  
 कारी ।  
 जमानत—सज्ञा स्त्री० [प्र०] किसी वस्तु या  
 व्यक्ति की जिम्मेदारी या कागज लिखाकर  
 या कुछ रूपया जमा करके ली जाती है ।  
 जमानतदार—वि० जमानत लनवाना ।  
 जमानतनामा—सज्ञा पु० जमानत करने के  
 समय लिखा जानवाला कागज ।  
 जमाना—त्रि० सं० १ दे० 'जमाना' । जमाना  
 का प्ररणायक रूप, जिस किसी तरल पदार्थ  
 का गाढ़ा करना । २ किसी सस्था या व्यव-  
 साय का चलाना योग्य बनाना । ३  
 चोट मारना । ४ अभ्यास करना ।  
 जमाना—सज्ञा पु० [फा०] १ समय । काल ।  
 युग । २ वृत्त अक्षर समय । मुहूर्त । ३  
 प्रताप या सीमाय का समय । ४ दुनिया ।  
 नसार । जगत् ।  
 जमानासाज—वि० [फा०] जा लोग का  
 रग-रंग देकर व्यवहार करता हो ।

जमाबंदी—सज्ञा स्त्री० [फा०] पटवारी का  
 एक कागज जिसमें भूस्वामियों के लगान  
 की रकमें लिखी जाती हैं ।  
 जमामार—वि० दूसरा का धन ले लेनेवाला ।  
 जमालगोटा—सज्ञा पु० एक पीप का बीज जो  
 प्रत्यत रेशक होता है । एक औषध ।  
 जयपाल । दत्तीफल ।  
 जमाय—सज्ञा पु० १ इन्द्रा होना । भीड़ ।  
 समूह । समुदाय । २ जमान या जमाने  
 का भाव ।  
 जमाबट—सज्ञा स्त्री० जमाने का भाव ।  
 सज्ञा पु० जुटाई । बन्धान । सघटन ।  
 जमाबटा—सज्ञा पु० जमघट । बहुत से लोगों  
 का समूह । भीड़ ।  
 जमीकद—सज्ञा पु० एक तरह का कद ।  
 सूरत । झील ।  
 जमींदार—सज्ञा पु० [फा०] जमीन का मालिक ।  
 भूमि का स्वामी ।  
 जमींदारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ जमींदार की  
 जमीन । जमीन का लगान वसूल करने  
 की एक व्यवस्था, जिसके अनुसार जमीन का  
 मालिक सरकार का जमीन का निश्चित  
 लगान दे और दूसरा को वही जमीन खेती  
 के लिए देकर उससे ज्यादा लगान वसूल  
 करे । एक प्रकार की भूमिव्यवस्था ।  
 २ जमींदार का हक ।  
 जमींदोज—वि० तोड़ फाड़कर नष्ट किया  
 हुआ । जो तोड़ फोड़कर जमीन के धरावर  
 कर दिया गया हो । ध्वस्त । विनष्ट ।  
 जमीन—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ पृथ्वी । भूमि ।  
 धरती । स्थान । २ सम्पत्ति । ३ सतह ।  
 ४ भूमिका । आयोजन ।  
 मुहूर्त—जमीन आसमान एवं करना =  
 बहुत बड़ बड़ उपाय करना । जमीन आस-  
 मान का फरक = बहुत अधिक अंतर । बहुत  
 बड़ा परक । जमीन देखना = १ गिर पड़ना ।  
 २ नीचा देखना ।  
 जमीना—सज्ञा पु० थोड़ापत्र ।  
 जमुआ—सज्ञा पु० जामुन ।  
 जमुकना—वि० प्र० पास-पास होना ।  
 सटना ।

जमुना-मज्ञा स्त्री० यमुना नदी ।  
 जमुनिया-वि० जामुन के रंग का ।  
 जमुरी-सज्ञा स्त्री० सेंडसी ।  
 जमुरेश-सज्ञा पु० पना (रत्न) ।  
 जमुवां-सज्ञा पु० जामुनी ।  
 जमुहाना†-क्रि० अ० दे० "जैमाना" ।  
 जमूरक, जमूरा†-सज्ञा पु० एक प्रकार की छोटी तोप ।  
 जमोगन†-सज्ञा पु० तसदीक कराने की क्रिया ।  
 तेन-देन की एक रीति ।  
 जमोगना†-क्रि० स० १ हिसाब-बिताव की जाँच करना । २ दूसरे को भार सौपना ।  
 सहेजना । ३ तसदीक कराना । ४ बात की जाँच कराना । ५ जमानत देना ।  
 जमोआ-वि० जमाकर बनाया हुआ ।  
 जम्मू-मज्ञा पु० काश्मीर का एक भाग ।  
 काश्मीर की शीतकाल की राजधानी ।  
 जम्मू नगर ।  
 जम्माई-मज्ञा स्त्री० जैभाई ।  
 जम्हाना-क्रि० अ० दे० "जैमाना" ।  
 जयत-वि० [स्त्री० जयती] १ विजयी ।  
 २ बहुरूपिया ।  
 सज्ञा पु० १ छद्म । २ द्रु के पुत्र उपेंद्र का नाम । ३ स्वद । वातिवैद्य ।  
 जयती-मज्ञा स्त्री० १ विजय करनेवाली ।  
 विजयिनी । २ ध्वजा । पताका । ३ हसदी । ४ दुर्गा । ५ पार्वती ।  
 ६ विगी महान् पुरुष की जन्म-तिथि पर हलवाला उत्सव । वर्षगांठ का उत्सव । ७ एक बड़ा पेड़ । जैत या जैता । ८ बंजनी का पौधा । ९ जी के छाटे पीछे जिन्हे विजयादशमी के दिन आह्वान यजमाना को भट करते हैं ।  
 जय-मज्ञा स्त्री० १ शत्रु की हार । विपक्षियों का पराभव । जीत । विजय । २ विष्णु के द्वारपाल का नाम । ३ महाभारत का पूर्व नाम । ४ जयन्ती । जैत का पेड़ । ५ सार ।  
 मुहा०-जय मनाना=विजय की कामना करना । समृद्धि चाहना ।  
 जयशरी-सज्ञा स्त्री० घोड़ाई छद्म ।

वि० विजया ।  
 जयजयकार-सज्ञा पु० किसी की जय मनाने का शब्द । विजय प्राप्ति का आशीर्वाद ।  
 जयजीव\*-सज्ञा पु० एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है—जय हो और जियो ।  
 जयति-अव्य० जय हो ।  
 जयदेव-सज्ञा पु० भोतगोविन्द नामक गीत-काव्य के रचयिता और संस्कृत के प्रसिद्ध भक्त कवि, जो १२वीं शताब्दी में बंगाल में हुए थे ।  
 जयद्रथ-सज्ञा पु० सिंधु देश का राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था ।  
 जयध्वज-सज्ञा पु० विजय का झण्डा ।  
 जयपताका ।  
 जयना\*†-क्रि० अ० जीतना ।  
 जयपन-सज्ञा पु० वह पत्र जो पराजित पुरुष अपनी पराजय के प्रमाण में विजयी को लिख देता है । विजय-पत्र ।  
 जयपताका-सज्ञा स्त्री० विजय का झण्डा ।  
 जयपाल-सज्ञा पु० १ जमालगोटा । २. विष्णु । ३ एक प्रसिद्ध हिन्दू राजा । राजा अनंगपाल के पिता और पुत्र दोनों का नाम जयपाल था ।  
 जयमगल-सज्ञा पु० राजा की सवारी का हाथी । विजय के बाद सवार होने का हाथी ।  
 जयमाल-सज्ञा स्त्री० १ विजय के बाद विजयी को पहनाई जानेवाली माला । २ वह माला जिसे स्वयंवर के समय बन्धा अपने बरे हुए पुरुष के गले में डालती थी । बन्धा द्वारा बर के गले में डाली जानेवाली माला ।  
 जयमाला-सज्ञा स्त्री० दे० "जयमाल" ।  
 जययन्त-सज्ञा पु० जय करनेवाला । विजयी ।  
 जयवती-मज्ञा स्त्री० १. जीतनेवाली । जय करनेवाली । २. अग्नि की मत्तजिह्वाओं में से एक ।  
 जयश्री-सज्ञा स्त्री० १. विजय । २. एक रागिणी ।  
 जयस्तन-मज्ञा पु० विजय का स्मारक स्तंभ या मन्दिर ।  
 जया-मज्ञा स्त्री० १ दुर्गा । २ पार्वती ।

३ हरी द्रव । ४. अरणी वृक्ष । ५ जैत  
 मापेड । ६ हृड । हरीतकी । ७ पताया ।  
 ८ गुडहल का फूल ।  
 वि० जय दिलानेवाली । जयवारिणी ।  
 जयी-वि० विजयी । जयशील ।  
 जर\*-सज्ञा पु० नाश होने की क्रिया ।  
 जरा । वृद्धावस्था ।  
 जर-सज्ञा पु० [फा०] १. सोना । स्वर्ण ।  
 २ धन । दौलत । रपया ।  
 जरई-सज्ञा स्त्री० धान के वे बीज जिनमें  
 अक्षुर मिलल आए हो ।  
 जरबटो-सज्ञा पु० एक प्रकार का शिकारी  
 पक्षी ।  
 जरफस, जरफसी\*-वि० [फा०] जिस पर  
 सोने के तार आदि लगे हो ।  
 जरखेज-वि० [फा०] उपजाऊ । उर्वरा  
 (जमीन) ।  
 जरठ-सज्ञा पु० १ ककंश । कठिन । २  
 बूढ़ । बुढ़ा । ३ जीर्ण । पुराना ।  
 जरण-सज्ञा पु० १. हींग । २. काला नमक ।  
 ३ जीरा । ४. जीर्ण । ५. बसोजा । ६.  
 बुढ़ापा । ७. एक तरह का ग्रहण । ८.  
 बुष्ठ रोग की श्लोष ।  
 जरणा-सज्ञा स्त्री० १. वाला जीरा ।  
 २. प्रशसा । ३. भुक्ति । ४. बुढ़ापा ।  
 जरतार\*-सज्ञा पु० [फा०] सोने या चांदी  
 आदि का तार । जरी ।  
 जरती-सज्ञा स्त्री० बूढ़ा । बुढ़ी ।  
 जरतुस्त-सज्ञा पु० दे० "जरदुस्त" ।  
 जरतुम्मा-वि० द्वेषी । दूसरो से जलनेवाला ।  
 ईर्ष्या करनेवाला ।  
 जरत्-वि० [स्त्री० जरती] १ बुढ़ा ।  
 बूढ़ । २ पुराना । बहुत दिनों का ।  
 जरत्कार-सज्ञा पु० एक ऋषि ।  
 जरब-वि० जर्ब । पीता । पीत ।  
 जरबगव-सज्ञा पु० बूढ़ा बैल ।  
 जरबा-सज्ञा पु० [फा०] १ पान में खाने की  
 तबाकू । २. एक भोज्य पदार्थ । ३ पीले  
 रंग का घोड़ा ।  
 जरबालू-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का  
 मेवा । ख्याती ।

जरबी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. पीलापन ।  
 २ अडे के भीतर का पीला द्रव ।  
 जरदुस्त-सज्ञा पु० [फा०] फारस देश  
 के पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता  
 आचार्य ।  
 जरदोज-सज्ञा पु० [फा०] बपटो पर सलमा-  
 सितारे का काम करनेवाला ।  
 जरदोजी-सज्ञा स्त्री० [फा०] वह दम्तवारी  
 जो बपटो पर सलमे-सितारे आदि से की  
 जाती है ।  
 जरन\*+सज्ञा स्त्री० दे० "जलन" ।  
 जरनल-सज्ञा पु० [अग्ने०] सामयिक पत्र  
 पत्रिका ।  
 जर्नलिस्ट-सज्ञा पु० [अग्ने०] पत्रकार । पत्र-  
 पत्रिका का सम्पादन-कार्य करनेवाला ।  
 जरना\*+वि० अ० दे० "जलना" ।  
 वि० स० दे० "जडना" ।  
 जरनि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "जलना" ।  
 जरब-सज्ञा स्त्री० १. आघात । चाट । २.  
 गुणा । ३. बपडे पर छपी बेल । ४. तबले  
 की थाप ।  
 मुहा०-जरब देना=गुणा करना । चोट  
 करना । घायल करना । पीटना ।  
 जरबफत-सज्ञा पु० [फा०] रेशमी बपड़ा  
 जिसमें कलाबत् के बेल-बूटे हो ।  
 जरबाफो-वि० [फा०] जिस पर जरबाफ का  
 काम बना हो ।  
 सज्ञा स्त्री० जरदोजी ।  
 जरबीला\*+वि० भडकीला ।  
 जरमन, जर्मन-सज्ञा पु० जर्मनी देश का  
 निवासी । जर्मनी की भाषा ।  
 वि० जर्मनी का ।  
 जरमन सिलवर-सज्ञा पु० एक सफेद और  
 चमकीली धातु ।  
 जरर-सज्ञा पु० [फा०] १ हानि । नुक्सान ।  
 अति । २ आघात । चोट ।  
 जरघारा\*-वि० धनी । सम्पन्न ।  
 जराकुश-सज्ञा पु० यज्ञकुश । मूँज की तरह  
 एक सुगन्धित घास ।  
 जराश-सज्ञा पु० ज्वराश । ज्वर का भाव ।  
 साधारण ज्वर ।

जरा—सज्ञा स्त्री० वृद्धापा । वृद्धावस्था ।  
 जरा-वि० [अ०] थोड़ा । कम । किंचित् ।  
 त्रि० वि० थोड़ा । कम ।  
 जराग्रत—सज्ञा स्त्री० खेती-बारी ।  
 जराग्रस्त—वि० बुढ़ा । वृद्ध ।  
 जरात—सज्ञा स्त्री० खेती । किसानी ।  
 जरातपेशा—सज्ञा पु० खेतिहर । खेतीबारी से  
 जीविका निर्वाह करनेवाला ।  
 जरातुर—वि० १. जीर्ण । कुबल । रोगग्रस्त ।  
 २. वृद्ध ।  
 जराव—सज्ञा पु० टिंडी ।  
 जराना\*—त्रि० स० दे० “जलाना” ।  
 जरायम—सज्ञा पु० जर्म का बहुवचन ।  
 जरायम-पेशा—सज्ञा पु० चोर । डाका डालकर  
 य अपराध करके जीवन निर्वाह करने-  
 वाला । इस पेश पर जीवन निर्वाह करनेवाली  
 जाति ।  
 जरायु—सज्ञा पु० १ वह भिल्ली, जिसमें  
 बच्चा बैधा हुआ उत्पन्न होता है । भ्रूण ।  
 उत्प । २ गर्भाशय । ३. एक वृक्ष ।  
 जरायुज—सज्ञा पु० गर्भजात । गर्भ से उत्पन्न  
 प्राणी । पिंडज का एक भेद ।  
 जरायु\*—वि० दे० “जडाऊ” ।  
 जरायव्या—सज्ञा स्त्री० वृद्धापा । वृद्धावस्था ।  
 जरायव—सज्ञा पु० मगध देश का एक प्राचीन  
 प्रसिद्ध राजा ।  
 जराह या जरीह—सज्ञा पु० शल्यचिकित्सा ।  
 चौर फाड़कर घाव की दवा करनेवाला ।  
 जरिया—सज्ञा पु० १ [अ०] सबध । लगाव ।  
 द्वारा । २ हेतु । कारण । सबध । ३  
 दे० “जडिया” ।  
 जरी—वि० वृद्ध । बुढ़ा ।  
 जरी—सज्ञा पु० [फा०] १. सुनहले तारों से  
 बुना हुआ कपड़ा । कारचोवी । २ काम-  
 दानी । सोने का तारों आदि का काम ।  
 जरीब—सज्ञा स्त्री० [फा०] वह जमीर जिससे  
 भूमि नापी जाती है ।  
 जरीबाना या जरीमाना—सज्ञा पु० जमाना ।  
 अर्थदण्ड ।  
 जरह्य—सज्ञा पु० १. मास । २. वटुभाषी ।  
 जरहर—त्रि० वि० अयस्य । नि सन्देश ।

जरुरत—सज्ञा स्त्री० [अ०] आवश्यकता ।  
 प्रयोजन ।  
 जरूरी—वि० [फा०] १ जिसके बिना काम न  
 चले । २ जो अवश्य होना चाहिए ।  
 आवश्यक ।  
 जरोट†\*—वि० जडाऊ ।  
 जर्क बर्क—वि० [फा०] तडक-भडकवाला ।  
 भडकीला । चमकीला । भडकदार ।  
 जर्जर—वि० १ जीर्ण । जो पुराना होने के  
 कारण बेकाम हो गया हो । २ टूटा-  
 फूटा । खिन्न । ३ वृद्ध । बुढ़ा ।  
 जर्जरित—वि० दे० “जर्जर” ।  
 जर्जरी—सज्ञा स्त्री० लहसन । तिल ।  
 जर्जरीका—वि० १. बहुछिद्रयुक्त । भ्रूँकर ।  
 २. ऊबड़-खाबड़ । ३. जजर । जीर्ण ।  
 जर्ण—सज्ञा पु० १. चन्द्रमा । २. वृक्ष । ३. जीर्ण ।  
 जल—सज्ञा पु० १. हाथी । २. योनि ।  
 जलिल—सज्ञा पु० चर्नला तिल ।  
 जर्द—वि० [फा०] पीला । पीत ।  
 जर्दा—दे० “जरदा” । पीला रंग । खाने की  
 तम्बाकू ।  
 जर्दी—सज्ञा स्त्री० [फा०] पीलापन ।  
 जर्दी—सज्ञा स्त्री० पीतवर्ण । पीलापन ।  
 जर्दा—सज्ञा पु० [अ०] १ अणु । कण । २.  
 बहुत छोटा टुकड़ा ।  
 जर्दर—वि० [अ०] बहादुर । बलिष्ठ ।  
 जर्दर—सज्ञा पु० [अ०] [गज्ञा जर्दरी] फोड़ो  
 आदि की चौरकर चिकित्सा करनेवाला ।  
 शल्यचिकित्सक ।  
 जलधर—सज्ञा पु० १. एक पौराणिक राक्षस ।  
 २. “जलोदर” रोग । ३. योग का एक बंध ।  
 जलबल—सज्ञा पु० १. नदी । २. अजन ।  
 जल—सज्ञा पु० १ पानी । २. उशीर ।  
 खस । ३. पूर्वाषाढा नद्यम् ।  
 जल-अलि—सज्ञा पु० एक काजा कीड़ा जो  
 पानी पर तैरा करता है । पानी का भोरा ।  
 जलबटक—सज्ञा पु० कुम्भी । मिघाड़ा ।  
 जलकद—सज्ञा पु० नाँदा । वेला ।  
 जलक—सज्ञा पु० १. धरा । २. पौड़ी ।  
 जलकपि—सज्ञा पु० गूँग । जलजन्तु विशेष ।  
 जलकमल—सज्ञा पु० कमल । पद्म । उत्पल ।

जलचरकः—राज्ञा पु० १. नाग्यन् । २. राग ।  
 ३. वमन । ४. जनपदा । ५. घोषा ।  
 घोटी । ६. मेघ । तरंग । ७. घराटिया ।  
 जलचर—राज्ञा पु० जल में उत्पन्न होने-  
 वाले पदार्थ । जैम—मछली, मिषाश्वा आदि ।  
 जलत्रिया—राज्ञा स्त्री० देवता के लिए जल  
 प्रदान । सर्पण ।  
 जलत्रोड—राज्ञा स्त्री० वह पीछा जो जलाशय  
 में की जाय । जल-विहार ।  
 जलकल—राज्ञा स्त्री० पानी देनेवाली यन्त्र ।  
 प्राग धुमानेवाली दमकल ।  
 जलकल-विभाग—राज्ञा स्त्री० नगर में घरो में  
 तल या बल द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था  
 करनेवाला विभाग ।  
 जलकल्मष—राज्ञा पु० १. जल का विष । २.  
 समुद्र-मयन से उत्पन्न विष ।  
 जलकसक—राज्ञा पु० १. कीचड़ । २. सेवार ।  
 जलकाक—राज्ञा पु० पक्षी-विशेष ।  
 जलकाभा—राज्ञा पु० वृक्ष-विशेष ।  
 जलकिराट—राज्ञा पु० रैसमी वस्त्र-विशेष ।  
 जलकिराट—राज्ञा पु० एक हिंस्र जलजन्तु ।  
 जलकुक्कुट—राज्ञा पु० जलमुर्गा । जल-पक्षी ।  
 जलकूपी—राज्ञा पु० १. पोखरा । तालाब । २.  
 भँवर । गढ़ा । कूप ।  
 जलकूर्म—राज्ञा पु० जलजन्तु ।  
 जलकेतु—राज्ञा पु० पश्चिम दिशा में उदय  
 होनेवाला तारा ।  
 जलजानि—राज्ञा पु० १. मेघ । २. नदी ।  
 ३. समुद्र । जलराशि ।  
 जलखाया—राज्ञा पु० जलपान । बसेवा ।  
 जलगर्द—राज्ञा पु० पानी में रहनेवाला साँप ।  
 जलगुल्म—राज्ञा पु० १. बछुआ । २. वह देश  
 जिसमें जल की कमी हो । ३. पानी का  
 भँवर । ४. तालाब ।  
 जलघडी—राज्ञा स्त्री० समय जानने का एक  
 प्राचीन यन्त्र ।  
 जलधुमर—राज्ञा पु० जल का भँवर ।  
 जलचर—राज्ञा पु० [स्त्री० जलचरी] पानी  
 में रहनेवाले जंतु ।  
 जलचर-केतु—राज्ञा पु० वामदेव । मीनध्वज ।  
 वामदेव की ध्वजा पर मछली का निशान

है, इसीसे उनको जलचर्यन्तु, मीनध्वज  
 आदि कहते हैं ।

जलघरी—राज्ञा स्त्री० मछली । जल में चलने-  
 वाली ।

जलचारो—राज्ञा पु० दे० “जलचर” । मछली ।  
 जलध्वज—राज्ञा पु० पनसान । प्याउ । जहाँ  
 पथिकों की पानी पिनामा जाता है ।

जलजंतु—राज्ञा पु० जल में रहनेवाला जीव ।  
 जलजंतुषा—राज्ञा स्त्री० जीव ।

जलज—वि० जो जल में उत्पन्न हो ।

राज्ञा पु० १. वमन । २. राग । ३.  
 मछली । ४. जल-जंतु । ५. मीनी ।  
 नमक ।

जलजय—राज्ञा पु० वमन ।

जलजला—वि० [फा०] शीघी । पिलपिल ।

राज्ञा पु० [फा०] भूकंप ।

जलजलाना—वि० अ० भूभ्रमना । रिसाना ।  
 शोध करना ।

जलजात—वि० जलज । जो जल में उत्पन्न हो ।  
 राज्ञा पु० पक्ष । वमन ।

जलगामुन—राज्ञा पु० एक तरह का जामुन ।

जल-डमरूमध्य—राज्ञा पु० दो समुद्रों के बीच  
 या उन्हें जोड़नेवाला पतला जलमार्ग ।

जलडिम्ब—राज्ञा पु० साँप । घोषा ।

जलतरण—राज्ञा पु० १. एक ब्राजा जो जल से  
 नहीं बटारिया को एक तम से रखकर  
 बचाया जाता है । २. सहर । ऊर्म ।

जलतरण—राज्ञा पु० तीरना । नाव या जहाज  
 से पार जाना । नाव या जहाज चलाने  
 की क्रिया ।

जलतरोई—राज्ञा स्त्री० मछली ।

जलग्न—राज्ञा पु० जल से बचानेवाला ।  
 छाता ।

जलप्राप्त—राज्ञा पु० पानी से भय । वह  
 भय जो कुत्ते, शृगाल आदि जीवों के बाटने-  
 पर उत्पन्न होता है । जलातक ।

जलयभ—राज्ञा पु० दे० “जलस्तभ” ।

जलद—वि० जल देनेवाला ।

राज्ञा पु० १. मेघ । बादल । २. मोषा ।  
 ३. कपूर ।

जलदागम—राज्ञा पु० वर्षा ऋतु का आगमन

या प्रारभ । आवाश म बादलों का धिरना । वर्षाकाल । पावस ऋतु ।

जलदेव—मज्ञा पु० वरुण । जल के देवता ।

जलदेवता—सज्ञा पु० दे० “जलदेव” ।

जलदोष—सज्ञा पु० पानी की विकृति से रोग ।

अण्डकोप वृद्धि । पानी लगना । जल-विवार ।

जलधर—सज्ञा पु० १ बादल । २ समुद्र ।

जलधरी—सज्ञा स्त्री० वह अर्धा जिसमें शिवालिंग

रहता है । जलहरी ।

जलधारा—सज्ञा स्त्री० १ पानी वा प्रवाह ।

पानी की धार । २ झरना । सोता ।

जलधि—सज्ञा पु० समुद्र । सागर ।

जलधिगा—सज्ञा स्त्री० १ नदी । २ लक्ष्मी ।

जलन—सज्ञा स्त्री० १ जलने की पीड़ा या

दुख । दाह । २ ईर्ष्या । डाह ।

जलनकुल—सज्ञा पु० ऊदविलास ।

जलना—त्रि० अ० १ दग्ध होना । बलना ।

२ भस्म होना । ३ सतप्त होना । झुल-

सना । ४ ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण

बुझना ।

मुहो—जल पर नमक छिड़कना—दुखी

को धीरे दुख देना । जली-नदी या जली-

भूनी बात—लगती हुई बात । बटु बात

जो द्वेष या शोध आदि के कारण बहरी जाए ।

जलीकटी सुनाना—डाह या शोध से बढही

बात बहना ।

जलनिधि—सज्ञा पु० १ समुद्र । २ चार

की सख्या ।

जलनिर्गम—सज्ञा पु० जल गिरने वा भाग ।

जलपक—सज्ञा पु० कृष्ण । बाबाल ।

जलपक्षी—सज्ञा पु० जल के समीप रहनेवाला

पक्षी ।

जलपति—सज्ञा पु० वरुण । समुद्र । सागर ।

जलपय—सज्ञा पु० नहर ।

जलपना—त्रि० अ० लम्बी-चोटी बात करना ।

व्यववाद करना ।

जलपाटल—सज्ञा पु० बाजल ।

जलपात्र—सज्ञा पु० जल रखने वा यन्त्र ।

घड़ा । लाटा ।

जलपान—सज्ञा पु० पात्र धीरे रखवा भाजन ।

पलया । नागा ।

जलपीपल—सज्ञा स्त्री० पीपल के आकार की

एक प्रकार की शोषध ।

जलप्रदान—सज्ञा पु० तपण ।

जलप्रपात—सज्ञा पु० किसी नदी आदि वा

ऊँचे पहाड़ पर से नीचे गिरना । झरना ।

जलप्रवाह—सज्ञा पु० १ पानी का बहाव ।

२ नदी में बहा देने की क्रिया । ३ किसी

वस्तु या शय को नदी में बहा देना ।

जलप्रिय—सज्ञा पु० १ चातक । २ मछली ।

जलप्लावन—सज्ञा पु० १ पानी की बाढ़

जिससे भूमि जल में डूब जाए । २ एक

प्रकार वा प्रलय ।

जलबध या जलबधु—सज्ञा पु० मछली ।

जलबधक—सज्ञा पु० बाँध ।

जलबिंब—सज्ञा पु० पानी का बुलबुला ।

जलबिडाल—सज्ञा पु० ऊदविलास ।

जलबुद्बुद—सज्ञा पु० बुलबुला ।

जलभेरा—सज्ञा पु० एक छोटा काला कीड़ा

जो नदी तालाब म पानी पर दौड़ता रहता है ।

जलनू—सज्ञा पु० १ जल चोलाई । २ मेघ ।

३ बपूर ।

जलभूषण—सज्ञा स्त्री० जलप्राय प्रदेश ।

सज्ञा पु० हवा ।

जलमल—सज्ञा पु० फेन ।

जलमसि—सज्ञा पु० १. एक प्रकार का बपूर ।

२ बादल ।

जलमानुष—सज्ञा पु० एक कल्पित जलजन्तु

जिसकी नाभि से ऊपर वा भाग मनुष्य

वा मा धीरे नीचे वा मछली के ऐसा

होता है ।

जलमार्जार—सज्ञा पु० ऊदविलास ।

जलमूर्ति—सज्ञा पु० शिव ।

जलपत्र—सज्ञा पु० । पत्रावा । जलधरी ।

जलयात्रा—सज्ञा पु० एक उत्सव ।

जलयान—सज्ञा पु० जल की सवारी । जहाज ।

जलरज्ज—सज्ञा पु० धरा । बरतना ।

जलरट—सज्ञा पु० १. गोप । २ पानी की

बूँद । ३. भेंवर ।

जलरस—सज्ञा पु० नमक ।

जलराशि—सज्ञा पु० १. समुद्र । २. पून मार

धीरे धीरे रानिया ।

जलरह—सज्ञा पु० कमल ।  
 जलसता—सज्ञा स्त्री० तरंग । राहर ।  
 जलवर्त—सज्ञा पु० दे० “जलावर्त” ।  
 जलधाना—प्रि० म० जलाने का काम दूसरे से कराना ।  
 जलघाह—सज्ञा पु० मेघ ।  
 जलशाय, जलशयन—सज्ञा पु० विष्णु ।  
 जलशापी—सज्ञा पु० विष्णु ।  
 जलशूकर—सज्ञा पु० एक जलजन्तु । कुभीर ।  
 जलसंस्कार—सज्ञा पु० १. स्नान करना । २. पत्थारना । ३. शव को जल में धोना देना ।  
 जलसा—सज्ञा पु० [अ०] १. आनन्द या उत्साह या समारोह । २. सभा-समिति आदि का अधिवेशन । बैठक ।  
 जलसूचि—सज्ञा पु० १. जोक । २. बड़ा कछुआ । ३. कौआ । ४. कौआ नाम की मछली । ५. सिंघाडा । ६. एक प्रकार का पीछा । सिंघुमार ।  
 जलसूत—सज्ञा स्त्री० जलजन्तु विशेष । नहरवा ।  
 जलसेना—सज्ञा स्त्री० समुद्र म लडनवाली फौज ।  
 जलसेनी—सज्ञा स्त्री० जपट दुक्ल एकादशी, जिस दिन विष्णु भगवान् शयन करते हैं ।  
 जलस्तम्भ—सज्ञा पु० एक दैवी घटना जिसमें समुद्र के ऊपर एक मोटा स्तम्भ-सा बन जाता है । सूंडी ।  
 जलस्तम्भार—सज्ञा पु० मन्त्रादि से जल की गति का अध्ययन करना । पानी बांधना ।  
 जलहर—वि० पानी से भरा हुआ ।  
 जलमय या जलयुक्त ।  
 सज्ञा पु० जलाशय ।  
 जलहरण—सज्ञा पु० बत्तीस अक्षरी की एक वणवर्ति या दंडक ।  
 जलहरी—सज्ञा स्त्री० १. अर्घा जिसमें शिव लिंग स्थापित किया जाता है । २. मिट्टी का जल भरा घड़ा, जो छेद करने शिवलिंग के ऊपर गमियों में टांगा जाता है ।  
 जलहार—सज्ञा पु० पविहार । पानी भरने-वाला ।  
 जलाश—सज्ञा स्त्री० पट की ज्वाला । लू ।

जलाश्वर—सज्ञा पु० गमुद्र, मीन, नदी आदि जलाशय ।  
 जलाश्व—सज्ञा पु० जोक ।  
 जलाशु—सज्ञा पु० जलजन्तु विशेष । उद-विलाव ।  
 जलाश्वचल—सज्ञा पु० भग्ना । नावा । खोत ।  
 जलाजति—सज्ञा स्त्री० पानीभरी अजुली ।  
 पितरो या मृतक के लिए दी जानेवाली जल से भरी हुई अजुली ।  
 जलाजल—सज्ञा पु० गाटे आदि की भांति । भिन्नभल ।  
 जलातक—सज्ञा पु० दे० “जलवास” ।  
 जलातन—वि० १. आर्षी । विगटल । बद-मिजाज । २. ईर्ष्यालु ।  
 जलाद—सज्ञा पु० दे० जल्लाद । बसाई । मृत्युदंड पाए हुए अभियुक्ता की फाँसी देनेवाला ।  
 जलाधार—सज्ञा पु० जलाशय, तालाब आदि ।  
 जलाधिप—सज्ञा पु० वरण ।  
 जलाना—प्रि० सं० १. प्रज्वलित करना । भस्म करना । २. भुलसाना । ३. ईर्ष्या उत्पन्न करना ।  
 जलापा—सज्ञा पु० ईर्ष्या की जलन । द्वेष । दाह ।  
 जलार्णव—सज्ञा पु० वर्षा ऋतु ।  
 जलाल—सज्ञा पु० [अ०] १. तेज । प्रकाश । २. प्रभाव । आतश ।  
 जलालुका—सज्ञा स्त्री० जोक ।  
 जलाव—सज्ञा पु० खमीर ।  
 जलावतन—वि० [अ०] निर्वासित । अपने देश से निकाला गया ।  
 जलावतनी—सज्ञा स्त्री० देशनिकावा । देश से निर्वासित होना ।  
 जलावन—सज्ञा पु० १. ईंधन । जलाने की लकड़ी आदि । २. किसी वस्तु का जलने वाला अंश ।  
 जलावत—सज्ञा पु० १. पानी का भँवर । २. एक प्रकार का मेघ । ३. जल से भरे हुए वादल ।  
 जलाशय—सज्ञा पु० वह स्थान जहाँ पानी जमा हो । जैसे तालाब, झील आदि ।

जलाहल-वि० जलमय ।  
 जलिका-सज्ञा पु० जोक ।  
 जलिया-सज्ञा पु० धीवर । मछलीमार ।  
 जलील-वि० [अ०] १. तुच्छ । बेकदर । २. अपमानित ।  
 जलूक, जलूका-सज्ञा स्त्री० जोक । जलाका ।  
 जलूस-सज्ञा पु० [अ०] किसी अवसर पर बहुत से लोगों का परिष्कार करना । उत्सव-यात्रा ।  
 जलेबा-सज्ञा पु० बड़ी जलेबी ।  
 जलेबी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की मिठाई । २ गोल घेरा । कुडली । लपेट ।  
 ३ एक प्रकार की आतशबाजी ।  
 जलेश-सज्ञा पु० १. वरुण । २ समुद्र ।  
 ३ जलाधिपति ।  
 जलेशय-सज्ञा पु० १. विष्णु । २. मछली ।  
 जलेश्वर-सज्ञा पु० दे० "जलेश" । वरुण । समुद्र । जलपति ।  
 जलोच्छ्वास-सज्ञा पु० जल की तरंग । लहर ।  
 जलोत्सर्ग-सज्ञा पु० पुराणों के अनुसार तालाब, कुएँ आदि का विवाह ।  
 जलोदर-सज्ञा पु० पेट की एक बीमारी जिसमें पेट में पानी जमा होने से पेट फूल जाता है ।  
 जलीका-सज्ञा स्त्री० जोक ।  
 जल्द-वि० वि० [अ०] [सज्ञा जल्दी] १ शीघ्र । चटपट । २ तेजी से । अचिलम्ब ।  
 जल्दबाज-वि० [फा०] [सज्ञा जल्दबाजी] जो किसी काम में बहुत जल्दी करता है ।  
 जल्दी-सज्ञा स्त्री० [अ०] शीघ्रता । फुस्ती ।  
 †त्रि० वि० दे० "जल्द" ।  
 जल्प-सज्ञा पु० १ वचन । कहना । २ बकवाद । व्यर्थ की बात । प्रलाप । ३. न्याय के १६ पदार्थों में से एक । ४ दास्यार्थ ।  
 जल्पक-वि० बकवादी । वाचाल ।  
 जल्पन-सज्ञा पु० १ बकवाद । प्रलाप । व्यर्थ की बात । २ डोंग ।  
 जल्पना-त्रि० घ० बकवाद करना । डोंग मारना । सीटना ।  
 जल्पर-सज्ञा पु० बहुत बोलनेवाला ।

जल्पित-वि० उक्त । कथित । मिथ्या ।  
 जल्सा-सज्ञा पु० ताल । हौज ।  
 जल्साद-सज्ञा पु० [अ०] १. प्राणदण्ड पार हुए अपराधियों को फाँसी देनेवाला । घातक ।  
 २. दूर व्यक्ति । कसाई ।  
 जव-सज्ञा पु० १. वेग । २. जी । यव ।  
 जवन-वि० वेगवान ।  
 सज्ञा पु० १. वेग । २ एक सैनिक । ३. धोडा । ४. यवन ।  
 जयनिका-सज्ञा स्त्री० दे० "यवनिका" । पर्दा ।  
 जवनी-सज्ञा स्त्री० १. तेजी । २. अजवायन ।  
 जबत-सज्ञा पु० घास ।  
 जवामर्द-वि० [सज्ञा जवामर्दी] शूरवीर । बहादुर ।  
 जवा-सज्ञा स्त्री० दे० "जपा" ।  
 †सज्ञा पु० १. जोक । २. अन्न-विशेष ।  
 ३ लहसुन का दाना ।  
 जवाई-†-सज्ञा स्त्री० जाने की क्रिया । गमन ।  
 जवाहार-सज्ञा पु० यवक्षार । एक नमक, जो जी के क्षार से बनता है ।  
 जवादि-सज्ञा पु० एक सुगन्धित द्रव्य, जो गंधविलास के शरीर से निकलता है । गोरासार ।  
 जवान-वि० [फा०] १ युवा । तरुण । २. वीर । बहादुर ।  
 †सज्ञा पु० १. पुरुष । २. सिपाही ।  
 जवानी-सज्ञा स्त्री० १. यौवन । तरुण्य । २ अजवायन ।  
 मुहा०-जवानी उतरना या ढलना=उमर ढलना । युवाप्राप्त होना । जवानी चढ़ना=यौवन का आगमन होना ।  
 जवाब-सज्ञा पु० १ उत्तर । २. बदला ।  
 ३ मुवायले की चीज । जोड़ । ४. नीतरी से हटाने की आज्ञा । मोहूफी ।  
 जवायनलय-वि० जिसमें सम्यन्ध में जवाय मॉगा गया हो ।  
 जवाबदाया-सज्ञा पु० [अ०] वह उत्तर जवाबी के बाद-यत्र के उत्तर में प्रतिवादी सिपानर अमानत में देता है ।  
 जवाबदेह-वि० [फा०] उत्तरदाता । जिम्मेदार ।

जवाबदेही-सज्ञा स्त्री० जिम्मेदारी । उत्तर-  
दायित्व । अज्ञाता में प्रतिवादी द्वारा वादी  
के वादपत्र का लिखित उत्तर ।

जवाब-सवाल-सज्ञा पुं० प्रश्नोत्तर । वाद-  
विवಾದ ।

जवाबो-वि० [पा०] जवाब का । जिम्मा  
जवाब देता हो ।

जवार\*-सज्ञा पुं० १. दे० "जवाल" । घुरे  
दिन । भ्रष्ट । २. आसपास का  
प्रदेश ।

सज्ञा स्त्री० जुमार ।

जवारा-सज्ञा पुं० १. जी के हरे अक्षर ।  
जई । २. भुट्टा । अन्न विशेष ।

जवाल-सज्ञा पुं० [अ०] १ अवनति ।  
उतार । २ जवाल । आग ।

जवाला-सज्ञा पुं० गोजई । वेभड़ । मिला  
हुआ जब और गेहूं ।

जवाला, जवाला-सज्ञा पुं० एक प्रकार का  
कटीला पौधा ।

जवाहर-सज्ञा पुं० रत्न । मणि ।

जवाहरलाल नेहरू-सज्ञा पुं० सन् १९४७ के  
बाद स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री,  
जिन्होंने देश की आजादी प्राप्त करने में  
प्रमुख भाग लिया । महात्मा गांधी के बाद  
भारत के सर्वमाय नेता । जीवन में नौ  
बार जल गये और चार बार काग्रेस के  
अध्यक्ष रहे । जन्मतिथि १४ नवम्बर सन्  
१८८९ । आपके पिता पंडित मोतीलाल  
नेहरू भी देश के एक महान् नेता थे ।

जवाहरलाल-सज्ञा पुं० [अ०] रत्न-समुह ।

जवाहिर-सज्ञा पुं० दे० "जवाहर" ।

जवाहिर जाकेट-सज्ञा पुं० सदरी । एक तरह  
का पटनावा जिसे पंडित जवाहरलाल नेहरू  
अधिक पहनते हैं । इसीलिए इसका नाम  
जवाहिर-जाकेट पड़ गया ।

जवी-वि० वैवाचन ।

सज्ञा पुं० १ घोड़ा । २ ऊट ।

जवैया-वि० जानवाला । गमनशील ।

जस्त-सज्ञा पुं० [पा०] १ उत्सव । जलसा ।  
२ आनंद । हर्ष ।

जस्त\*-वि० वि० जस्ता ।

†सज्ञा पुं० दे० "जस्त" ।

जस्त-सज्ञा पुं० जस्ता ।

जसुमति-सज्ञा स्त्री० कृष्ण की माता यमोदा ।

जसोदा-सज्ञा स्त्री० दे० "यमोदा" ।

जमोय\*-सज्ञा स्त्री० दे० "यमोदा" ।

जस्तई-वि० खावी ।

जस्ता-सज्ञा पुं० एक धातु ।

जहू-वि० वि० दे० "जहाँ" ।

जहड़ना, जहड़ाना-वि० अ० १ घाटा  
उठाना । २ घाट में आना ।

जहकना-वि० म० बुढ़ना । चिढ़ना ।

जहतिपा-वि० भज्ञा पुं० कर या लगान-बमूल  
करनेवाला ।

जहत्स्वार्थ-सज्ञा स्त्री० वह लक्षणा जिसमें  
पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ का विनकुल  
छाड़े हुए हो । लक्षण-लक्षणा । अप्रमि-  
त्यर्थ । गीणार्थ ।

जहद-जहल्लक्षण-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
लक्षणा (शब्दशक्ति) जिसमें वक्ता के  
शब्दों के कई भावों में से केवल एक भाव  
ग्रहण किया जाता है ।

जहदना-वि० अ० १ कीचड़ हाना ।  
२ थक जाना ।

जहदा-सज्ञा पुं० दन्तल । पङ्क ।

जहना\*-वि० अ० १ त्यागना । छाड़ना ।  
२ नाश करना ।

जहनुम-सज्ञा पुं० [अ०] नरक । दानव ।

मुहा०-जहनुम में जाय=चूल्हे में जाय ।  
हमसे कोई सम्बन्ध नहीं ।

जहमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ आपत्ति । मुसी-  
बत । आपन । २ भ्रष्ट । बखड़ा ।

जहर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ विष । गरल ।  
२ अप्रिय बात या कार्य ।

वि० १ घातक । मार डालनेवाला ।  
२ बहुत अधिक हानि पहुँचानेवाला ।

मुहा०-जहर उगलना=गमभरी या कटु  
बात कहना । जहर का भूट पीना=विर्सी  
अनुचित बात को देखकर क्रोध को मन ही  
मन दबा रखना । जहर का बुझाया हुआ=  
बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट । जहर  
करना या कर देना=बहुत अधिक

अप्रिय या असह्य बर देना । जहर लगना=बहुत अप्रिय जान पड़ना ।

जहरवाद-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का विपैला फोडा ।

जहरमोहरा-सज्ञा पु० एक काला पत्थर जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण माना जाता है ।

जहरीला-वि० जिसमें जहर हो । विपैला ।

जहल्लक्षण-सज्ञा स्त्री० दे० "जहल्लक्षणा" ।

जहाँ-अव्य० जिस स्थान पर । जिस जगह । सज्ञा पु० ससार ।

मुहा०-जहाँ का तहाँ=जिस जगह पर हो, उसी जगह पर । जहाँ तहाँ=१ इधर-उधर । २ सब जगह । सब स्थानों पर ।

जहाँगीरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ हाथ में पहनने का एक जडाऊ गहना । २ एक प्रकार की चूड़ी ।

जहाँबीबा-वि० [फा०] जिसने ससार को देखकर उसका अनुभव किया हो । अनुभवी । तजरबेकार ।

जहाँपनाह-सज्ञा पु० [फा०] ससार का रक्षक (बादशाहों का सबोधन) ।

जैहि-सर्व० जेहि । जिसे । जिसकी । क्रि० स० छोड़ो ।

जहीं-अव्य० जहाँ भी । जिसी किसी स्थान में ।

जहाज-सज्ञा पु० [अ०] भाप से चलनेवाली बड़ी नाव । जलपोत । जलयान ।

मुहा०-जहाज का कौबा या काग=दे० "जहाजी कौबा" ।

जहाजी-वि० जहाज से सम्बन्ध रखनेवाला ।

यो०-जहाजी कौआ=१ वह कौआ जो किसी जहाज के छूटने के समय उस पर बैठ जाता है और जहाज के बहुत दूर समुद्र में निकल जाने पर और कहीं शरण न पाकर उड़-उड़कर फिर उसी जहाज पर आता है । २ ऐसा मनुष्य जिसे एक को छोड़कर दूसरा ठिकाना न हो ।

जहान-सज्ञा पु० [फा०] ससार । लोक । जगत ।

जहानक-सज्ञा पु० प्रलय ।

जहालत-सज्ञा स्त्री० [अ०] अज्ञान । भूलत ।

जहियर\*†-क्रि० वि० जिस समय । जब । जहाँ\*‡-अव्य० । जहाँ ही । जिस स्थान पर ।

\* अव्य० दे० "ज्यो ही" ।

जहीन-वि० [अ०] बुद्धिमान् । समझदार ।

जहु-सज्ञा पु० सन्तान ।

जहर-सज्ञा पु० प्रकाश ।

जहूरा-सज्ञा पु० ठाठ ।

जहूज-सज्ञा पु० [अ०] वह पत्न-संपत्ति, जो विवाह में वन्यापक्ष की ओर से वर को दी जाती है । दहेज ।

जहू-सज्ञा पु० १ विष्णु । २ एक राजपि । जब भगीरथ गंगा को लेकर आ रहे थे, तब इन्होंने गंगा को पी लिया था और फिर वान से निकाल दिया था । तभी से गंगा का नाम जहूवी पड़ा ।

जहूतनया-सज्ञा स्त्री० गंगा । भागीरथी । दे० "जहू" ।

जहू नदनी-सज्ञा स्त्री० गंगा । भागीरथी ।

जहू सप्तमी-सज्ञा स्त्री० वैशाख शुक्ल सप्तमी ।

जांगडा-सज्ञा पु० भाट । यदी ।

जांगर-सज्ञा पु० १. शरीर का बल । बूता । २. देह । हाथ-पैर । जाँघ ।

जागल-सज्ञा पु० १ तीतर । २ भान । ३ ऊसर देश । वह देश जहाँ पानी कम बरसता हो ।

वि० जगल-सबड़ी । जगली ।

जागली-सज्ञा स्त्री० कौछ ।

जांगलू-वि० गेंवार । जगली ।

जांगुल-सज्ञा पु० तरौई । जगल ।

जांगुल, जांगुलिक-सज्ञा पु० साँप पकड़नेवाला ।

जाँघ-सज्ञा स्त्री० घुटने और कमर के बीच का अंग । ऊर । जघा ।

जाँघल-सज्ञा पु० बड़ा वगुला । पक्षी-विशेष ।

जाँघा-सज्ञा पु० १. हल । २. कुएँ की गडारी रखने का सम्पा । एक प्रकार का घुरा ।

जाँघिक-सज्ञा पु० १. ऊँट । २. जिसकी जीविका बीड़ने से चलती हो । ३. एक प्रकार का मृग ।

जाँघिया-सज्ञा पु० घुटने तक का एक पहनावा । काछा ।

जवाबदेही-गशा स्त्री० जिम्मेदारी । उत्तर-  
दायित्व । अदालत में प्रतिवादी द्वारा वादी  
के वादपत्र का लिखित उत्तर ।

जवाब-सवाल-सज्ञा पु० प्रश्नात्तर । वाद-  
विवाद ।

जवाबी-वि० [पा०] जवाब का । जिम्मा  
जवाब देना हो ।

जवार\*-सज्ञा पु० १. दे० "जवाल" । बुरे  
दिन । भग्न । २. आसपास का  
प्रदेश ।

सज्ञा स्त्री० जुआर ।

जवारा-सज्ञा पु० १. जी के हरे अक्षर ।  
जई । २. मूत्र । अन्न विशेष ।

जवाल-सज्ञा पु० [अ०] १ भयनति ।  
उत्तर । २ जवाल । आपत ।

जवाला-सज्ञा पु० गोजई । बेभड । मिला  
हुआ जब और गहूँ ।

जवासी, जवासा-सज्ञा पु० एक प्रकार का  
कंटीला पीछा ।

जवाहर-सज्ञा पु० रत्न । मणि ।

जवाहरराज नेहरू-सज्ञा पु० सन् १९४७ के  
वाद स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री,  
जिन्होंने देश की आजादी प्राप्त करने में  
प्रमुख भाग लिया । महात्मा गांधी के बाद  
भारत के सर्वमान्य नेता । जीवन में नौ  
बार जल गये और बार बार काग्रेस के  
अध्यक्ष रहे । जन्मतिथि १४ नवम्बर सन्  
१८८९ । आपके पिता पंडित मातीलाल  
नेहरू भी देश के एक महान् नेता थे ।

जवाहरराज-सज्ञा पु० [अ०] रत्न-समूह ।

जवाहर-सज्ञा पु० दे० जवाहर ।

जवाहिर जाकेट-सज्ञा पु० सदरी । एवं तरह  
का पहनावा जिसे पंडित जवाहरलाल नेहरू  
अधिक पहनाते हैं । इसीलिए इसका नाम  
जवाहिर-जाकेट पड़ गया ।

जवी-वि० बेगवान ।

सज्ञा पु० १ घोड़ा । २. ऊट ।

जवेया†-वि० जानेवाला । गमनशील ।

जशन-सज्ञा पु० [फा०] १ उत्सव । जलसा ।  
२ आनंद । हूष ।

जस†-वि० वि० जैसा ।

†नज्ञा पु० दे० "यज्ञ" ।

जसद-सज्ञा पु० जन्मा ।

जसुमति-सज्ञा स्त्री० कृष्ण की माता यशोदा ।

जसोदा-सज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा" ।

जसोयै\*-सज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा" ।

जस्तई-वि० खावी ।

जस्ता-सज्ञा पु० एक धातु ।

जहूँ-वि० वि० दे० "जहो" ।

जहंडना, जहंडाना†-वि० अ० १ पाटा  
उठाना । २ धार में आना ।

जहवना-वि० म० बुढ़ना । चिढ़ना ।

जहतिमा†-सज्ञा पु० घर या लगान . बनूल  
करनेवाला ।

जहत्तवार्षा-सज्ञा स्त्री० वह लक्षणा जिसमें  
पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिलकुल  
छोटे हुए हा । लक्षण-लक्षणा । अप्रति-  
द्वार्थ । गीणार्थ ।

जहद-जहल्ललक्षणा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
लक्षणा (सन्दर्भित) जिसमें अपना के  
शब्दों के कई भावों में से केवल एक भाव  
ग्रहण किया जाता है ।

जहदना-वि० अ० १ कीचड़ हाना ।  
२ थक जाना ।

जहदा-सज्ञा पु० दलदल । पट्ट ।

जहना\*†-वि० अ० १ त्यागना । छाड़ना ।  
२ नाश करना ।

जहनुम-सज्ञा पु० [अ०] नरक । दोख ।

मुहा०-जहनुम में जाय=चूल्हे में जाय ।

हमस कोई सम्बन्ध नहीं ।

बहुमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ आपत्ति । मुनी-  
वत । आपत्ति । २ झूठ । चतुर्धा ।

जहर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ विष । गरल ।  
२ अप्रिय बात या काम ।

वि० १ घातक । मार डालनेवाला ।  
२ बहुत अधिक हानि पहुँचानेवाला ।

मुहा०-जहर उगाना=ममभवी या कटु  
वात बहना । जहर का घूंट पीना=किसी  
अनुचित बात को देखकर राग को मन ही  
मन दया रखना । जहर का दुभाया हुआ=  
बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट । जहर  
करना या कर देना=बहुत अधिक

अप्रिय या असह्य कर देना । जहर  
संगना=बहुत अप्रिय जान पड़ना ।

जहरबाद-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का  
विषला फोडा ।

जहरमोहरा-सज्ञा पु० एक काला पत्थर  
जिसमें साँप का विष दूर करने का गुण  
माना जाता है ।

जहरीला-वि० जिसमें जहर हो । विषला ।  
जहल्लक्षण-सज्ञा स्त्री० दे० "जहल्लक्षणा" ।  
जहाँ-अव्य० जिस स्थान पर । जिस जगह ।  
सज्ञा पु० ससार ।

मुहा०-जहाँ का तहाँ=जिस जगह पर हो,  
उसी जगह पर । जहाँ तहाँ=१. इधर-  
उधर । २. सब जगह । सब स्थानों पर ।  
जहाँगीरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ हाथ में पक-  
नने का एक जडाऊ गहना । २ एक प्रकार  
की चूड़ी ।

जहाँदीदा-वि० [फा०] जिसने ससार को  
देखकर उसका अनुभव किया हो । अनु-  
भवी । तजरबेकार ।

जहाँपनाह-सज्ञा पु० [फा०] ससार का  
रक्षक (वादशाहो का संबोधन) ।

जैहि-सर्व० जैहि । जिसे । जिसकी ।  
कि० स० छाड़ो ।

जहीं-अ य० जहाँ भी । जिसी जिसी स्थान में ।  
जहाज-सज्ञा पु० [प्र०] भाप से चलनेवाली  
बड़ी नाव । जलपोत । जलयान ।

मुहा०-जहाज का कौवा या काग=दे०  
"जहाजी कौआ" ।

जहाजी-वि० जहाज से संबंध रखनेवाला ।  
यौ०-जहाजी कौआ=१ वह कौआ जो  
जिसी जहाज के छूटने के समय उस पर बैठ  
जाता है और जहाज के बहुत दूर समुद्र में  
निकल जाने पर और वही शरण न पाकर  
उड़-उड़कर फिर उगी जहाज पर आता  
है । २ ऐसा मनुष्य जिसे एक बौ छोड़कर  
दूसरा ठिकाना न हो ।

जहान-सज्ञा पु० [फा०] ससार । लोक ।  
जगत ।

जहानक-सज्ञा पु० प्रलय ।  
जहालत-सज्ञा स्त्री० [घ०] अज्ञान । मूर्खता ।

जहिया\*†-कि० वि० जिस समय । जब ।  
जहाँ\*†-प्रव्य० "जहाँ" ही । जिस  
स्थान पर ।

\* अव्य० दे० "ज्यो ही" ।

जहीन-वि० [अ०] बुद्धिमान् । समझदार ।

जहू-सज्ञा पु० सन्तान ।

जहूर-सज्ञा पु० प्रकाश ।

जहूरा-सज्ञा पु० ठाठ ।

जहेज-सज्ञा पु० [अ०] वह धन-संपत्ति, जो  
विवाह में कन्यापक्ष की आर से वर का दी  
जाती है । बहेज ।

जहू-सज्ञा पु० १ विष्णु । २ एक राजपि ।  
जब भगीरथ गंगा को लेकर आ रहे  
थे, तब इन्होंने गंगा को पी लिया था और  
फिर कान से निकाल दिया था । तभी से  
गंगा का नाम जहूवी पड़ा ।

जहूतनया-सज्ञा स्त्री० गंगा । भागीरथी ।  
दे० "जहू" ।

जहू नदनी-सज्ञा स्त्री० गंगा । भागीरथी ।  
जहू सप्तमी-सज्ञा स्त्री० वैशाख शुक्ल सप्तमी ।

जौगडा-सज्ञा पु० भाट । बढी ।

जौगर-सज्ञा पु० १. शरीर का बल । बूता ।  
२. देह । हाथ-पैर । जाँघ ।

जौगल-सज्ञा पु० १ तीतर । २ माम ।  
३ ऊमर देश । वह देश जहाँ पानी कम  
बरसता हो ।

वि० जगल-संबंधी । जगली ।

जौगली-सज्ञा स्त्री० बौछ ।

जौगलू-वि० गेंवार । जगली ।

जौगल-सज्ञा पु० तराई । जगल ।

जौगलि, जौगलिक-सज्ञा पु० साँप पकड़नेवाला ।

जौघ-सज्ञा स्त्री० घुटने और घमर के बीच  
का शग । ऊर । जघा ।

जौघल-सज्ञा पु० थडा बगुला । पक्षी निक्षेप ।

जौघा-सज्ञा पु० १. हल । २. घुरे की गजारी  
रखने का सम्भार । एक प्रकार का घुरा ।

जौघिक-सज्ञा पु० १. जेट । २. जिसकी  
जीविका दोड़ने से चलती हो । ३ एक  
प्रकार का मृग ।

जौघिया-सज्ञा पु० घुटने तक का एक पहनावा ।  
बान्धा ।

१ समाज का विभाग । ३ धर्म, वश-  
परपरा या निवासस्थान आदि के अनुसार  
मनुष्य-समाज का विभाग । ४. कोटि ।  
वर्ण । ५. साधारण सत्ता । ६. वर्ण । ७.  
कुल । यश । ८. मोक्ष । ९. मायिक छद्म ।  
१०. ग्राम । ११. चमेली । १२. जायफल ।  
जातिबोध-सज्ञा पु० जाविनी ।  
जातिच्युत-वि० जाति से गिरा या निवाला  
हुआ । जाति-बहिष्कृत ।  
जाति पति-सज्ञा स्त्री० जाति या पति ।  
वर्ण और उसने उपविभाग ।  
जातिवैर-सज्ञा पु० स्वाभाविक वैर । जैसे  
नकुल और सर्प का ।  
जातिभ्रंश-सज्ञा पु० जाति-विनाश ।  
जातिभ्रष्ट-वि० दे० "जातिच्युत" ।  
जातिस्वर-सज्ञा पु० दोगला । वर्णस्वर ।  
जाति-सज्ञा स्त्री० १ चमेली की जाति का  
एक फूल । जायफल । २ छोटा आवला ।  
३ मालती ।  
जाती-वि० [अ०] १ व्यक्तिगत । २  
अपना । निज का ।  
जातीय-वि० जाति-संबंधी ।  
जातीयता-सज्ञा स्त्री० जाति की समता ।  
जातु-अव्य० कदाचित् ।  
जातुक-सज्ञा पु० हींग ।  
जातुज-सज्ञा पु० गर्भवती स्त्री की इच्छा ।  
जातुधान-सज्ञा पु० राक्षस । असुर ।  
जातु-सज्ञा पु० वज्र ।  
जातिष्टि-सज्ञा पु० पुत्र उत्पन्न होने का  
योग । जातकर्म का एक अंग ।  
जात्य-वि० कुलीन । सुंदर । ध्येष्ठ ।  
जात्रा-सज्ञा स्त्री० दे० "यात्रा" ।  
जादव\*†-सज्ञा पु० दे० "यादव" ।  
जादवपति\*†-सज्ञा पु० यादवपति । श्री-  
कृष्णचंद्र ।  
जादसपति\*†-सज्ञा पु० जल-जंतुओं का  
स्वामी, वरुण ।  
जादू-सज्ञा पु० १. आश्चर्यजनक कृत्य ।  
इंद्रजाल । तिलस्म । अद्भुत खेल या  
कृत्य । २ टोना । टोटका । ३ दूसरे  
को मोहित करने की शक्ति । मोहिनी ।

जादूगर-सज्ञा पु० [स्त्री० जादूगरनी] जादू  
करनेवाला ।  
जादूगरी-सज्ञा स्त्री० जादू करने की क्रिया ।  
जादूगर का काम ।  
जादो\*†-सज्ञा पु० दे० "यादव" । यदुवशी ।  
जादोराय\*†-सज्ञा पु० श्रीकृष्णचंद्र ।  
जान-सज्ञा स्त्री० १ ज्ञान । जानकारी ।  
२ स्यात् । अनुमान । ३. दे० "मान" ।  
गवारी । ४. प्राण । जीव । प्राणवायु ।  
दम । ५. बल । शक्ति । यूना । मामथ्य ।  
६. सार । तत्त्व । ७. अच्छा या सुंदर  
करनेवाली वस्तु । शोभा बढ़ानेवाली वस्तु ।  
वि० सुजान । जानकार । चतुर ।  
मुहा०-जान के लाले पटना=प्राण बचाना  
कठिन दिखाई देना । प्राण जाने की  
नीवत । जान पहचान=परिचय । जान  
को जान न मममाना=अत्यन्त अधिक  
कष्ट या परिश्रम सहना । जान खाना=  
तग करना । बारम्बार घेरकर दिख करना ।  
जान छुड़ाना या बचाना=१ प्राण बचाना ।  
२ किसी ममट से छुटकारा पाना ।  
सबट टालना । (किसी पर) जान जाना=  
किसी पर अत्यंत अधिक प्रेम होना ।  
जान जोरना=प्राणहानि की आशंका । प्राण  
जाने का डर । जान निबलना=१ प्राण  
निकलना । मरना । २ भय के भार प्राण  
सूखना । जान पर खेलना=प्राणों को भय  
में डालना । जान को जाना में डालना ।  
जान से जाना=प्राण खाना । मरना ।  
जाना आना=शाभा बढ़ना ।  
जानकार-वि० [सज्ञा जानकारी] १  
जाननेवाला । अभिज्ञ । २ विज्ञ । चतुर ।  
जानकी-सज्ञा स्त्री० जनक की पत्नी । सीता ।  
जानकी-जानि-सज्ञा पु० श्री रामचंद्र ।  
जानकी-जीवन-सज्ञा पु० श्री रामचंद्र ।  
जानकीनाथ-सज्ञा पु० श्रीरामचंद्र ।  
जानदार-वि० जिसमें जान हो । सर्जित ।  
जीवधारी ।  
जाननहार\*-सज्ञा पु० समझनेवाला । जान-  
कार । जाननेवाला ।  
जानना-क्रि० म० १ ज्ञान प्राप्त करना ।

पहचानना । मालूम करना । २ सूचना पाना । खबर रखना । ३ अनुमान करना । सोचना ।

जानपद-सज्ञा पु० १ जनपद-सबधी वस्तु । २ जनपद का निवासी । लोक । मनुष्य । ३ दश । ४ मालगुजारी ।

जानपना\*†-सज्ञा पु० बुद्धिमत्ता । चतुराई । जानकारी ।

जानपनी\*-सज्ञा स्त्री० बुद्धिमान्नी । चतुराई । जानमनि\*-सज्ञा पु० ज्ञानियों में श्रेष्ठ । बड़ा ज्ञानी पुरुष ।

जानराय-सज्ञा पु० जानकारी में श्रेष्ठ । बड़ा बुद्धिमान् ।

जानवर-सज्ञा पु० [फा०] १ प्राणी । जीव । २. पशु । जंतु । हंवाग ।

जानशीत-सज्ञा पु० [फा०] उत्तराधिकारी ।

जानहार-वि० जाननेवाला । जवंया । गमनशील ।

जानहु-अव्य० मानो ।

जाना-नि० अ० १ गमन करना । बढना । २ हटना । प्रस्थान करना । ३ अलग होना । दूर होना । ४ हाथ या अधिकार से निवृत्तना । ५ खो जाना । गायब होना ।

गुप्त होना । ६ बीतना । गुजरना । ७ नष्ट होना । ८ बहना । जारी होना ।

\*†नि० स० उत्पन्न करना । जन्म देना । पैदा करना ।

मुहा०—जान दो=१ क्षमा करो । २ पर्चा छाड़ा । प्रमग छोड़ो । किसी बात पर जाना=किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना । गया घर=दुर्दशाप्राप्त घराना । गया-चीता =१ दुर्दशा प्राप्त । २ निवृष्ट ।

जानि-सज्ञा स्त्री० स्त्री । भार्या ।

\*वि० जानी । जानकार ।

जानिय-सज्ञा स्त्री० (अ०) तरफ । ओर ।

यो०—जानियदार=पक्षपानी । तरफदार ।

जानो-वि० [फा०] जान से मरध रहनेवाला ।

सज्ञा स्त्री० प्राणप्यारी ।

यो०—जानी दुस्मा=जान सने को तैयार दुस्मा । जानी दोस्त=दिली दोस्त ।

जानु-सज्ञा पु० जाँघ और पिडली के मध्य का भाग । घुटना । जाँघ । रान ।

जानुपाणि-कि० वि० घुटखो । पैयाँ पैयाँ । घुटनो और हाथो के बल (जैसे बच्चे चलते हैं) ।

जानुफलक-सज्ञा पु० खुटिया । मोटा घुटना । पटरे के समान जानु ।

जानो-अव्य० मानो । जैसे ।

जाप-सज्ञा पु० १ मन्त्र की विधिपूर्वक आवृत्ति । जप । नाम आदि अपने की लिया । २ जपने की थैली या माला ।

जापक-सज्ञा पु० जप करनेवाला ।

जापा-सज्ञा पु० सौरी । प्रसूतिका-गृह ।

जापी-सज्ञा पु० दे० "जापक" ।

जाफ†-सज्ञा पु० [अ०] १ बेहोशी । २ धूमरी । ३ मूर्च्छा । यनावट ।

जाफ्त-सज्ञा स्त्री० [अ०] भोज । दावत ।

जाफरान-सज्ञा पु० [अ०] केसर ।

जावाल-सज्ञा पु० एक मुनि जिनकी माता का नाम जवाला था ।

जाबालि-सज्ञा पु० वक्ष्य-वक्षीय एवं नृपि जा राजा दशरथ के गुरु थे ।

जाबिर-वि० ज्यादाती या ज़र करनेवाला । प्रचंड । अत्याचार करनेवाला ।

जाब्त-सज्ञा पु० [अ०] नियम । पायदा । व्यवस्था । कानून ।

यो०—जाब्त दोहानी=सर्वसाधारण के परस्पर आधिक और साम्प्रतिक व्यवहार से सबध रखनेवाला कानून । जाब्त फौजदारी=दंडनीय अपराधों से सबध रखनेवाला कानून ।

जाम-सज्ञा पु० याम । पहर । प्रहर । चार पड़ी । ७½ पड़ी या तीन घट का समय । 'जामून' । [फा०] प्याला । शटारा ।

जामगी-सज्ञा पु० बहूव या तोप का फनीता । जामदग्न्य-सज्ञा पु० जमदग्नि के पुत्र (परसुराम) ।

जामदानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार का बड़ा हुआ फूलदार गफरा ।

जामन-सज्ञा पु० १ वह मोटा या दही का

जामुनी-सज्ञा स्त्री० गुण रूप मे किसी बात का पता लगाना । जामुन का नाम करना ।  
गाह-गज्ञा पु० १. पवणहट । २. आपत्ति ।  
'गममग ।

गाहि-गर्थ० जिगहो । जिग किसी को ।  
जिह ।

आहिर-वि० [प्र०] १. जो सचो सामने हो । प्रकट । स्पष्ट । प्रकाशित । खुला हुआ ।  
२. त्रिदिन । जाना हुआ ।

आहिरदारी-सज्ञा स्त्री० [प्र०] केवल दितावे के लिए दिया गया कार्य ।

आहिरा-त्रि० वि० [प्र०] देखने में । प्रकट रूप में । प्रत्यक्ष में ।

आहिल-वि० १. मूर्ख । अज्ञान । नासमर्थ ।  
२. अनपढ़ । विद्याहीन ।

आहो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुगंधित फूल ।

आह्वी-सज्ञा स्त्री० जहू ऋषि से उत्पन्न, गंगा ।

जिर-सज्ञा पु० [अग्ने०] जस्ते का खार ।  
जिगनी, जिगिनी-सज्ञा स्त्री० जिगिन का पेड़ ।

जिद-सज्ञा पु० [प्र०] भूत । प्रेत । जिन ।  
जिदगानी-सज्ञा स्त्री० जीवन । जिदगी ।  
जिदगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. जीवन । २. जीवन-काल । आयु ।

सूहा-—जिदगी के दिन पूरे करना =  
१ दिन काटना । जीवन बिताना । आसन मृत्यु होना ।

जिदा-वि० [फा०] जीवित । जीता हुआ ।  
जिदादिल-वि० [सज्ञा जिदादिली] खुश-मिजाज । विनोदप्रिय । दिल्लगीवाज ।

जिदानी-त्रि० स० दे० "जिदानी" । भोजन कराना ।

जिस-सज्ञा स्त्री० [फ०] १. प्रकार । बिस्म । भानि । २. चीज । वस्तु । द्रव्य । ३. सामग्री । सामान । ४. अनाज । गल्ला । रमद ।

जिमवार-सज्ञा पु० [फा०] पटवारियों का वह कागज जिसमें पे खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखने हे ।

जिदानी\*—त्रि० म० दे० "जिदानी" ।

जिउत-सज्ञा पु० दे० "जीव" ।

जिउका-सज्ञा स्त्री० दे० "जीविका" ।

जिउकिया-सज्ञा पु० १. जीविका करनेवाला । रोजगारी । २. पहाड़ी लोग जो जंगलों में घोंस प्रवार की चस्तुएँ लाकर नगरे में बेचते हैं ।

जिउतिया-सज्ञा स्त्री० दे० "जिनाष्टमी" । पुत्रप्राप्ति स्त्रियों का एक व्रत ।

जिउ-सज्ञा पु० [प्र०] चर्चा । प्रसंग ।

जिर्गजगिया-वि० चापलुस । खुशामदी ।

जिर्गजगो-सज्ञा स्त्री० खुशामद । अनुनय ।

जिगता-सज्ञा स्त्री० वृक्ष विशेष ।

जिगीया-सज्ञा स्त्री० जीतने की इच्छा । उद्योग । प्रयत्न । व्यवसाय ।

जिगीय-वि० जीतने की इच्छा करनेवाला । उद्योगी ।

जिगर-सज्ञा पु० [फा०] १. कलेजा । साहस । हिम्मत । २. सत्त । सार ।

जिगरा-सज्ञा पु० साहस । हिम्मत । जीवट ।

जिगरी-वि० [फा०] १. दिली । भीतरी । २. अत्यंत घनिष्ठ । अग्निप्र-हृदय ।

जिघत्सा-सज्ञा स्त्री० भोजन करने की इच्छा ।

जिघत्सु-वि० भोजन की इच्छा करनेवाला । भूखा । क्षुधित ।

जिघामु-वि० वध की इच्छा करनेवाला । घातक । नृशस । शूर ।

जिघासा-सज्ञा स्त्री० क्षुधा । भूख । भोजन करने की इच्छा ।

जिघ, जिघ्व-सज्ञा स्त्री० १. बेवसी । मजबूरी । गतिरोध । २. पारस्परिक विवाद में वह अवस्था जब दोनों पक्ष अपनी बात पर अड़े रहें और समझौते का मार्ग दिखाई न दे । ३. शतरंज में खेल की वह अवस्था जिसमें किसी एक पक्ष को कोई मोहरा चलने की जगह न हो ।

धि० विवश । मजबूर । तंग ।

जिगीधियु-वि० जीने की इच्छा करनेवाला । जिघासा-सज्ञा स्त्री० १. जानने की इच्छा । ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा । २. पूछ-ताछ । प्रश्न । तहकीकात ।

जिज्ञासु-वि० जानने की इच्छा रखनेवाला ।  
ज्ञान प्राप्त करने का इच्छुक । अन्ये-  
पक्ष ।

जिठाई-सजा स्त्री० जेठापन । बड़ापन ।

जिठानी-सजा स्त्री० जेठानी । पति के  
बड़ भाई की स्त्री ।

जित्-वि० जीतनेवाला । जेता ।

जित-वि० जीता हुआ ।

सजा पु० जीत । विजय ।

\*†-क्रि० वि० जिधर । जिस ओर ।

जितना-त्रि० वि० [स्त्री० जितनी] जिस  
माना का । जिस परिमाण का । जिस  
माना में । जिस परिमाण में ।

जितयोनि-सजा पु० हिरन । भृगु । हरिण ।  
जितरा-सजा पु० वह हलबाहा जिसे काम  
की मजदूरी न देकर खेत जोतने के लिए  
हल बैल देते हैं ।

जितवाना\*†-क्रि० स० दे० "जिताना" ।

जितवाना-त्रि० स० दे० "जिताना" ।

जितवार†-वि० जीतनेवाला ।

जितवैया†-वि० जीतनवाला ।

जितवानु-सजा पु० शत्रु पर विजय पाने-  
वाला । विजयी ।

जिता-मज्ञ पु० हूँड । वह पारस्परिक  
सहायता जो किसान एक दूसरे की जोताई  
कुमाई में विया करते हैं ।

जितात्मा-वि० जितेन्द्रिय । जिसने इन्द्रियों  
को अपने बश में कर लिया हो ।

जिताना-त्रि० स० [जीतना का प्रे०]  
जीतन में सहायता करना ।

जितामित्र-सजा पु० १ विष्णु । २  
विजयी । जिसने शत्रु जीत लिया है ।

जिताहार-सजा पु० जिसने आहार (भोजन)  
पर विजय प्राप्त कर ली हो ।

जिताष्टमी-सजा स्त्री० हिंदुओं का  
एक अन्न जिसे पुत्रवती स्त्रियों आदिबन  
कृष्णाष्टमी में दिन करते हैं । जिततिया ।

जितेन्द्रिय या जितेंद्रो-वि० १ जिसने  
अपनी इन्द्रिया को यश में कर लिया हो ।  
२ शांत ।

जिते\*-वि० जितने (गम्या-मूचक) ।

पा० ३८

जिते\*-क्रि० वि० जिधर । जिस ओर ।

जितेंया-वि० जीतनेवाला ।

जितो\*†-क्रि० वि० जितना (परिमाण-सूचक) ।

जिस माना में । जितना ।

जित्वर-वि० जीतनेवाला । विजयी ।

जित्वरी-सजा पु० काशी का एक प्राचीन  
नाम ।

जिद-सजा स्त्री० [प्र०] (वि० जिद्दी)

हुठ । अड । दुराग्रह ।

जिद्दी-वि० [फा०] १ जिद करनेवाला ।

हुठी । २ दूसरे की बात न माननेवाला ।

दुराग्रही ।

जिधर-क्रि० वि० जिस ओर । जहाँ ।

जित-सजा पु० १ विष्णु । २ सूर्य । ३

बुद्ध । ४ जैनो के तीर्थंकर । ५ भूत प्रेत ।

सर्व० "जिस" का बहु० ।

जिना-सजा पु० [अ०] व्यवचार ।

जिनाकार-वि० [फा०] [सजा जिनकारी]  
व्यवचारी ।

जिना विस्मय-सजा पु० [अ०] किसी स्त्री के  
साथ उसकी सम्मति के विरुद्ध चलाने  
सम्भोग करना । घलावार ।

जिना-अव्य० मत । नहीं ।

जितिस-सजा स्त्री० दे० "जिस" ।

जित्†\*-सर्व० दे० "जिन" ।

जिह्वा, जिभ्या-सजा स्त्री० दे० "जिह्वा" ।

जिभला-वि० चटोरा ।

जिभनारिटक-सजा पु० [अप्र०] एक प्रकार  
की अग्रजी कमरत । जेमे डई पर बसरत  
करना आदि ।

जिमाना-त्रि० स० जीमना । खाना ।

खिलाना । भोजन कराना ।

जिमि\*-क्रि० वि० जिस प्रकार से । जैसे ।  
यथा । ज्यो ।

जिमीदार-सजा पु० दे० "जमींदार" ।

जिमीनन्द-मता पु० गुरन ।

जिम्मा-सजा पु० [अ०] १ भार-ग्रहण । २.  
संपूर्णगी । देत-लेत । सरसता ।

मही०-त्रिगी के जिम्मे रुपया आना, निव-  
लना या होना=त्रिगी के ऊपर रुपया  
कण-स्वरूप होना । देना ठहरना ।

जिम्मावार-सज्ञा पु० [फा०] वह जो किसी बात के लिए जिम्मा ले। जवाबदेह। उत्तरदायी।

जिम्मावारी-सज्ञा स्त्री० १ किसी बात के करने का भार। उत्तरदायित्व। जवाबदेही।

२ सपुर्दगी। रक्षा।

जिम्मेदार-सज्ञा पु० दे० "जिम्मावार"।

जिम्मेवार-सज्ञा पु० दे० "जिम्मावार"।

जिय†-सज्ञा पु० जीव। मन। चित्त।

जियन-सज्ञा पु० जीवन।

जियबधा-सज्ञा पु० दे० "जल्लाद"।

जियरा\*†-सज्ञा पु० जीव। प्राण।

जियान-सज्ञा पु० [अ०] १ घाटा। हानि। नुकसान। २ बर्बाद। नष्ट।

जियाना†\*-क्रि० सं० १ मिलाना। जीवित रखना। २ पालना।

जियाफल-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ आतिथ्य।

मेहमानदारी। २ भोज। दावत।

जियारत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दर्शन। २ तीर्थ-दर्शन।

मुहा०-जियारत लगना=भीड़ लगना।

जियारी†\*-सज्ञा स्त्री० १ जीवन। ज़िंदगी।

२ जीविका। ३ साहस। जीवट।

जिरगा-सज्ञा पु० [फा०] १ झुंड। गरोह। २ मडली। दल।

जिरह-सज्ञा स्त्री० १ झुंजत। २ ऐसी पूछ-ताछ जो सत्यता की जाँच के लिए की जाए।

जिरह-सज्ञा स्त्री० [फा०] वचन। यर्म। बख्तर।

यो०-जिरह-मोश=जो वचन पहने हो।

जिरही-वि० जो जिरहबख्तर पहने हुए हो। वचनधारी।

जिराअत-सज्ञा स्त्री० खेती।

जिराफा-सज्ञा पु० दे० 'जुराफा'।

जिला-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ चमक-दमक। २ माँजवर या रोगन आदि चढ़ाकर चमकाने का कार्य।

सज्ञा पु० १ किसी प्रात का वह भाग जो एक नक्कलर के प्रवच में हो। २ किसी हस्तारे का विभाग या अंश।

मुहा०-जिला देना=चमकाना। सिक्ली करना।

यो०-जिलावार=सिक्लीगर।

जिलावार-सज्ञा पु० [फा०] १. वह चमकारी जिसे जमींदार अपने इलाके के किसी भाग में लगान वसूल करने के लिए नियुक्त करता है। २ जो नहर, अफीम आदि सबधी किसी हलके में काम करने के लिए नियुक्त चमकारी हो।

जिलाघोश-सज्ञा पु० इस शब्द का प्रयोग चल निकला है, पर उर्दू और हिन्दी शब्द के मिश्रण के कारण इस अशुद्ध मानते हैं। शुद्ध शब्द जिला मजिस्ट्रेट है। दे० 'जिला मजिस्ट्रेट'।

जिला मजिस्ट्रेट-सज्ञा पु० [अंग्रे०] जिले का सबसे बड़ा अधिकारी। कलक्टर। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट। डिप्टी कमिश्नर।

जिलाना-क्रि० सं० १ जीवन देना। ज़िदा करना। जीवित करना। †२ पालना। पोसना। ३ करने से बचाना। प्राण रक्षा करना।

जिलासाब-सज्ञा पु० [फा०] हथियारो आदि पर चमक चढ़ानेवाला। सिक्लीगर।

जिलाह\*-सज्ञा पु० जल्लाद। अत्याचारी। जिलेदार-सज्ञा पु० दे० 'जिलादार'।

जिल्द-सज्ञा स्त्री० [अ०] (वि० जिल्दी) १ खाल। चमड़ा। २ ऊपर का चमड़ा। त्वचा। ३ किसी वस्तु के ऊपर लगाई जानेवाली दफती। ४ पुस्तक की एक प्रति। ५ पुस्तक का वह भाग, जो पृथक् सिला हो। गड। भाग।

जिल्दगर-सज्ञा पु० जिल्द बाँधनेवाला। दफतरी।

जिल्दबद-सज्ञा पु० [फा०] वह जो किताबों की जिल्द बाँधता हो। जिल्द बाँधनेवाला।

जिल्दसाब-सज्ञा पु० दे० "जिल्दबद"।

जिल्लत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ आदर। अपमान। निरस्कार। बहज्जती। २ दुर्गति। दुर्दशा।

मुहा०-जिल्लत उठाना या पाना=१ अपमानित होना। २ तुच्छ ठहरना।

जिव†—सज्ञा पु० दे० "जीव"।

जिवनमूरी या जिवनमूरि—सज्ञा स्त्री० सजीवनी औषध। जिलानिवाली बूटी।

जिवाना—क्रि० सं० १. दे० "जिलाना"। २. दे० "जिमाना"।

जिण्णु—वि० हमेशा जीतनेवाला। विजयी। सज्ञा पु० १. इन्द्र। २. सूर्य। ३. अर्जुन। ४. विष्णु। ५. कृष्ण।

जिस—वि० विभक्तियुक्त 'जो' का एक रूप। जैसे—जिस पुरुष ने।

सर्व० 'जो' का वह रूप, जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

जिस्ता—सज्ञा पु० १. दे० "जस्ता"। २. दे० "दस्ता"।

जिस्म—सज्ञा पु० शरीर। देह।

जिह\*†—सज्ञा स्त्री० धनुष का चिल्ला। रोदा। ज्या।

जिह्न—सज्ञा पु० [म०] समझ। बुद्धि।

मुहा०—जिह्न खुलना=बुद्धि का विकास होना। जिह्न लड़ना=खूब सोचना।

जिहाद—सज्ञा पु० मजह्दी लड़ाई। मुसलमानों का धार्मिक युद्ध। वह लड़ाई जो मुसलमान लोग अन्य धर्मावलंबियों से अपने धर्म के प्रचार आदि के लिए करते थे।

जिहालत—सज्ञा स्त्री० निरक्षरता। मूर्खता।

जिहासा—सज्ञा स्त्री० त्यागने की इच्छा।

जिहोषा—सज्ञा स्त्री० हरण करने की इच्छा।

जिह्वा—वि० १. दुष्ट। बपटी। २. धक। डंढा। ३. लिङ्ग। अप्रसन्न।

सज्ञा पु० १. तगर का फूल। २. अधर्म।

जिह्वा—सज्ञा स्त्री० जीभ। जयान।

जिह्वाग्र—सज्ञा पु० जीभ की नोक।

मुहा०—जिह्वाग्र करना=बदसूर्य करना। जयानी याद करना।

जिह्वाग्रमूल—सज्ञा पु० जीभ की जड़ या पिछला स्थान।

जिह्वामूलीय—वि० १. वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वाग्र से हो। २. जिह्वा के मूलस्थान से सम्पन्न।

जीगन†—सज्ञा पु० जुगनू।

जी—सज्ञा पु० १. जीव। प्राण। २. मन।

दिल। तबीअत। चित्त। ३. हिम्मत। दम। जीबट। ४. सकल्प। विचार। इच्छा। चाह।

अव्य० एक सम्मानसूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगाया जाता है, अथवा किसी प्रश्न या सम्बोधन के उत्तर में प्रयुक्त होता है।

मुहा०—जी अच्छा होना=चित्त स्वस्थ होना। नाराज होना। किसी पर जी आना=

किसी से प्रेम होना। जी उचटना=चित्त न लगना। मन हटना। जी उठ जाना=भय,

आशंका आदि से चित्त सहसा व्यग्र हो जाना। जी करना=१ हिम्मत करना। साहस करना।

२. इच्छा होना। जी का बखार निकलना=

क्रोध, शोक, दुःख आदि के वेग को शांत करना। (किसी के) जी को जी समझना=

किसी के विषय में वह समझना कि वह भी जीव है, उसे भी कष्ट होगा। जी खट्टा होना=मन फिर जाना या विरक्त होना।

घृणा होना। जी खोलकर=१ बिना किसी सकोच के। बेधड़क। २. जितना जी

चाहे। यथेष्ट। जी चलना=जी चाहना। इच्छा होना। जी चुराना=हीला-हवाली

करना। किसी काम से भागना। जी छोटा करना=१ मन उदास करना।

२. उदारता छोड़ना। कजूसी करना। जी टंगा रहना या होना=चितित रहना।

जी डूबना=चित्त स्थिर न रहना। चित्त व्याकुल होना। जी दुखना=चित्त को

कष्ट पहुँचना। जी देना=१. प्राण देना। मरना। २. अत्यंत प्रेम करना। जी

पँसा जाना=दे० "जी बैठ जाना"। जी पडवना=भय या आशंका से चित्त स्थिर

न रहना। भलेजा भय-भय करना। जी निढाल होना=चित्त का स्थिर न

रहना। चित्त ठिकाने न रहना। जी पर आ बनना=प्राण बचाना कठिन हो

जाना। जी पर गेलना=ज्ञान को प्राप्त में डालना। जी बहलना=चित्त का

भानदुर्बल होना। मनोरंजन होना। जी बिगडना=जी मचलाना। ५

मरने की इच्छा होता। (जिमी की आराम)  
जी धन करना—जिमी के प्रति चरित्र  
भाव न करना। जिमी के प्रति भूषण या शाय  
करना। जी भरना—चित्त मगुष्ट होता।  
तृप्ति होता। दुग्ध या मदर दूध करना।  
मदवा मिटाना। जी भरण—मनमाना।  
येष्ट। जी भर घाना—भित्त म दुग्ध  
या करना या उदर होता। दुग्ध या  
दया उमरना। जी मचवाना या  
मायाया—उलटी या बं परन की इच्छा  
होता। जी म घाना—चित्त म विचार  
उत्पन्न होता। चारना। स्मरण होता।  
जी म जी घाना—आपनि में छटकारा  
गाना। (जिमी का) जी रयना—मन  
रचना। इच्छा पूरी करना। जी लगना—  
मन ता जिमी विषय म याग देना। चित्त  
प्रवृत्त होता। (जिमी में) जी लगना—  
जिमी से प्रेम होता। जी ने—जी लगाकर।  
ध्यान देकर। जी में उतर जाना—दृष्टि  
से गिर जाना। मला न जेचना। जी में  
जाना—मर जाना।

जीम, जीउ\*—मज्ञा पु० दे० "जी", 'जीव'।  
जीमन\*—मज्ञा पु० दे० 'जीवन'। जिन्दगी।  
जीमन—मज्ञा पु० दे० "जुगनू"।  
जीजा—मज्ञा पु० बड़ी बहिन का पति। बड़ा  
बहनोई।

जीजी—सज्ञा स्त्री० बड़ी बहिन।  
जीत—सज्ञा स्त्री० १ जय। विजय। पतह।  
विपक्षी के विरुद्ध सफलता। २ किसी  
ऐसे कार्य में सफलता जिसम दा या अधिक्  
प्रतिद्वन्द्वी हो। ३ साम।  
जीतना—वि० न० १ विपक्षी के विरुद्ध  
सफलता प्राप्त करना। विजय प्राप्त करना।  
२ किसी ऐसे कार्य में सफलता प्राप्त  
करना जिसमें दो या अधिक् प्रतिद्वन्द्वी ह।  
जीता—वि० प्राणधारी। चेतन। १ जीवित।  
जो मरा न हो। २ तेल या नाप में ठीक  
से कुछ बटा हुआ।

जीन\*—वि० १ जजर। बटा-पटा।  
२ बूझ। बुझा।

जीन—सज्ञा पु० [पा०] १ घोंटे की पीठ

पर रगन की गद्दी। चारमाया। गादी।  
२ पगार। बाबा। ३ एक प्रकार का  
सूरा मोटा मुसी कपड़ा।

जीवोप—मज्ञा पु० [पा०] जीन के ऊपर का  
कपड़ा।

जीनसपारी—मज्ञा स्त्री० [पा०] घोंटे पर जीन  
रगनर गवार हाने का कार्य।

जीना—वि० ध० १ जीवित रहना। जिदा  
रहना। २ प्रसन्न होता। प्रसूचित होता।  
मज्ञा पु० [पा०] गद्दी।

मृदा०—जीना-जागा—जीवित और मचन।  
मृदा पया। जीमी मरगी निगलना—जान  
बुझकर कोई घन्याय या घनूविच बर्ग करना।  
जीन जी मर जाना—जीवन म हो मुय से  
बदल कर घष्ट भोगना। जीना भारी हो  
जाना—जीवन का शानद जाना नटना।

जीम—मज्ञा स्त्री० जिह्वा। मुँह के भीतर  
रहनेवाली लय चिपट मान-पिट की वह  
द्रव्य जिसमें रनी का अनुभव और मर्दा  
का उच्चारण होता है। जवान। रमना।  
मृदा०—जीम चरना—भिन्न भिन्न वस्तुओं  
का स्वाद लने के लिए इच्छा। चटारपन  
की इच्छा हाना। जीम निवालना—जीम  
मीचना। जीम उखाड लेना। जीम पन-  
टना—बालने न देना। बोलने में रोचना।  
जीम बंद करना—बोलना बंद करना।  
जीम हिलाता—मुँह में कुछ बोलना।  
छाटी जीम—गलमुड़ी। जिमी की जीम के  
नीचे जीम हाना—पिसी का अपनी बही  
हुई बात को बदल जाना।

जीभा—सज्ञा पु० १. जीम के आगार की  
कोई वस्तु, जैसे—निब। २ पमुषी का  
एक रोग।

जीभी—सज्ञा स्त्री० १ जीम साफ करने की  
वस्तु। २ निब। जीम साफ करने की  
त्रिया। ३ छोटी जीम। गलमुड़ी।

जीनना—वि० स० भोजन करना। खाना।  
जीनार—वि० धानक। नृसम। मारनेवाला।  
जीनूत—मज्ञा पु० १ पर्वत। २ वादल।  
३ इद्र। ४ सूर्य। ५ शात्मली द्वीप के  
एक वर्ष का नाम। ६ एक प्रकार का

छन्द । ७ पोषण करनेवाला । ८. एक लता । ९ मोथा । नागरमोथा । १०. विराट की सभा का एक पहलवान ।

जीमूतवाहन—सज्ञा पु० १. ईद्र । २ प्रसिद्ध भारतीय विद्वान् जिन्होंने मनुस्मृति का भाष्य बनाया था । आप ११वीं शती के प्रथम भाग में उत्पन्न हुए थे । ३ शालि-वाहन राजा का पुत्र ।

जीमूतवाही—पज्ञा पु० धुवाँ ।

जीव—सज्ञा पु० दे० "जी" ।

जीवट—सज्ञा पु० दे० "जीवट" ।

जीवदान—सज्ञा पु० जीवनदान । प्राणदान ।

जीर—सज्ञा पु० १ जीरा । २ केसर ।

३. खड्ग । तलवार । [फा० जिरह] कयच ।

\*वि० जीर्ण । पुराना ।

जीरक—सज्ञा पु० १ जीरा । मसाला विशेष । २ वणिक ।

जीरण\*—वि० दे० "जीर्ण" । जीरा ।

जीरा—सज्ञा पु० १ दो हाथ ऊँचा एक पौधा, जिसके सुगन्धित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखाकर मसाले के काम में लाते हैं । इसके दो मुख्य भेद हैं—सफेद और काला । २ फूलों का केसर ।

जीरी—सज्ञा पु० एक प्रकार का अगहनी धान ।

जीर्ण—वि० १ बूढ़ । बुढ़ाप से जर्जर । २ टूटा फूटा और पुराना । बहुत दिनों का । ३ परिपक्व । पचा हुआ ।

यी०—जीर्ण शीर्ण=फटा पुराना ।

जीर्ण ज्वर—सज्ञा पु० पुराना बुखार ।

जीर्णता—सज्ञा स्त्री० १ बुढ़ापा । २ पुरानापन । दुर्बलता ।

जीर्णा—वि० बुढ़िया ।

सज्ञा स्त्री० कालीजीरी ।

जीर्णोद्धार—सज्ञा पु० पटी पुरानी या टूटी-फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार । मरम्मत ।

जील—सज्ञा स्त्री० १. धीमा स्वर । मध्यम स्वर । २. सारंगी आदि का तार ।

जीला\*—वि० [स्त्री० जीली] १. भीना । पतला । २. महीन ।

जीवजीव—सज्ञा पु० चकोर ।

जीवत—वि० जीता-जागता ।

सज्ञा पु० १ प्राण । २ औषध ।

जीवतिका—सज्ञा स्त्री० १. गुरच । एक लता । २ एक हड । ३. शमी ।

जीवती—सज्ञा स्त्री० १. एक लता जिसकी पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं । २. एक लता जिनके फूलों में मीठा मधु या मक्खंद होता है । ३ एक प्रकार की वटिया पीली हड । ४. घाँदा । ५. गुडूची ।

जीव—सज्ञा पु० १ प्राणियों का चेतन तत्त्व ।

जीवात्मा । आत्मा । २ प्राण । जीवन ।

जान । ३ प्राणी । जीवधारी । ४. विष्णु ।

५. बृहस्पति । ६. अश्लेषा नक्षत्र ।

यी०—जीवजतु=१ जानवर । प्राणी । २. कीड़ा-मकोड़ा ।

जीवक—सज्ञा पु० १ जीनेवाला । प्राण धारण करनेवाला । २ क्षपणक । ३ सेंपेरा । ४ सेवक । ५ द्वाज लेकर जीविका चलानेवाला । सूदखोर । ६ एक वृक्ष । ७ एक जड़ी ।

जीवट—सज्ञा पु० साहस । हिम्मत । दुढ़ता ।

जीवडा—सज्ञा पु० प्राणी । जन्तु । जानवर ।

जीवध—सज्ञा पु० १. प्राण । २. कूर्म । ३. मयूर । ४. मेघ ।

वि० १. चिरजीवी । २. धार्मिक ।

जीवद—सज्ञा पु० १. जीवनदाता । वैद्य । २. जीवती । ३. शत्रु ।

जीवदान—सज्ञा पु० शत्रु या अपराधी को प्राणदान । प्राणरक्षा । अभयदान ।

जीवधन—सज्ञा पु० दे० "जीवनधन" । जीवों या पशुओं के रूप में सम्पत्ति ।

जीवधारी—सज्ञा पु० प्राणी । जानवर ।

जीवन—सज्ञा पु० [वि० जीवित] १ जीवित रहने की अवस्था । जन्म और मृत्यु के बीच का काल । जिंदगी । २ जीवित रहने का भाव । प्राण धारण । ३ जीवित रखने-वाली वस्तु । ४ परमप्रिय । प्यारा । ५ जीविका । ६ पानी । ७. वायु । ८. ईश्वर । ९. पुत्र । १०. मज्जा । ११. मखन । १२. गंगा । १३. प्राणधार ।

जीवन-चरित-सज्ञा पु० जीवन में किए हुए कार्यों आदि का वर्णन। यह पुस्तक जिसमें किसी के जीवन का वृत्तान्त हो।

जीवनधन-सज्ञा पु० १. जीवन का सर्वस्व। मन्त्रों प्रिय। २. प्राणधार। प्राणप्रिय।

जीवनवृद्धि-सज्ञा स्त्री० एक जड़ी जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह मरे हुए आदमी को भी जिंदा सजती है। सजीवनी।

जीवनमूर्ति-सज्ञा स्त्री० १. जीवनवृद्धि। २. अत्यंत प्रिय। प्राणप्रिय।

जीवन्मृत-सज्ञा पु० जीते जी मरा। जीवित रहने पर भी मृत के समान।

जीवनयुक्त-सज्ञा पु० दे० "जीवनचरित"।

जीवनवृत्तान्त-सज्ञा पु० दे० जीवनचरित। किसी की जीवनी का वर्णन।

जीवनवृत्ति-सज्ञा स्त्री० रोजी। जीविका।

जीवना\*†-वि० अ० दे० "जीना"।

जीवनी-सज्ञा स्त्री० जीवन मर का वृत्तान्त। जीवनचरित।

जीवनीय-वि० जीवनप्रद। वरतने योग्य। सज्ञा पु० १. जल। २. जयतीवृक्ष।

जीवनीपाय-सज्ञा पु० जीविका।

जीवनीपथ-सज्ञा पु० १. वह औपध जिससे मरे हुए भी जीवित हो जायें। जीवन की रक्षा करनेवाली। २. उपजीविका। रक्षा-वृत्ति।

जीवन्त-वि० जीवित। सचेत।

जीवन्ती-सज्ञा पु० सजीवन बूटी। जीवन बचानेवाली औपध।

जीवन्मुक्त-वि० जो जीवित दशा में ही आत्मज्ञान द्वारा सांसारिक मायाबधन से छूट गया हो।

जीवन्मृत-वि० जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो।

जीवपथी-सज्ञा स्त्री० देखो "जीवन्ती"।

जीवप्रभा-सज्ञा स्त्री० आत्मा।

जीवपुत्र-सज्ञा पु० १. पुत्र। २. जीववृक्ष। इगुदी का वृक्ष।

जीवमन्दिर-सज्ञा पु० शरीर। देह। तन।

जीवधोनि-सज्ञा स्त्री० जीव-जनु।

जीवरा\*†-सज्ञा पु० जीव। प्राण।

जीवरि†-सज्ञा पु० जीवन। प्राण-धारण की शक्ति।

जीवलोक-सज्ञा पु० भूलोक। पृथ्वी।

जीवयुक्ति-सज्ञा स्त्री० पशु पालने का व्यवसाय। जीव का गुण तथा व्यापार।

जीवशाक-सज्ञा पु० एक प्रकार का शाक।

जीवसाधन-सज्ञा पु० अन्न। धान। जीवन निर्वाह करने का उपाय।

जीवस्थान-सज्ञा पु० मर्मस्थान। हृदय।

जीवहत्या, जीवहिंसा-सज्ञा स्त्री० जीवों का यध। जान से मारना। हत्या।

जीवा-सज्ञा पु० १. धनुष की डोरी।

२. भूमि। ३. जीविका। ४. ज्या। ५.

जीवतो औपध-विरूप।

जीवानून†-सज्ञा पु० पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जीव।

जीवाणु-सज्ञा पु० जीव-युक्त अणु [अत्यन्त सूक्ष्म कीड़े] जो अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

जीवात्मा-सज्ञा पु० जीव। आत्मा। प्राण।

जीवान्तक-सज्ञा पु० जीवोंकी हत्या करने वाला। प्राण लेनेवाला। घातक। क्रूर। बहेलिया।

जीवाधार-सज्ञा पु० हृदय। जीवन का आधार।

जीविका-सज्ञा स्त्री० भरण-पोषण का साधन। वह व्यापार जिससे जीवन का निर्वाह हो। रोजी। वृत्ति।

जीवित-वि० जीता हुआ। जिंदा। चेतन।

जीवितेश-सज्ञा पु० १. प्राणनाथ। स्वामी। पति। २. यम। ३. इन्द्र। ४. सूर्य।

५. इडा और पिंगला नाडी।

जीवो-वि० १. जीनेवाला। प्राणधारी।

२. जीविका करनेवाला। जैसे—अन्नजीवी।

जीवेश-सज्ञा पु० परमात्मा।

जीह या जीहा\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "जीम"। जिह्वा।

जुबिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] चाल। गति। हरकत। हिलना-डोलना।

मुहा०—जुबिश खाना=हिलना-डोलना।

जु\*—वि०, क्रि० वि० दे० "जो" ।

सज्ञा पु० "जू" ।

जुझा—मज्ञा स्त्री० दे० 'जू' । एक प्रकार का छोटा कीड़ा ।

जुझा—सज्ञा पु० १. द्युत । बाजी लगाकर खेला जानेवाला खेल । २ छलकपट । ३. चक्की की मूठ । ४. बैलों के कंधे पर रखी जानेवाली लकड़ी ।

जुझाचोर—मज्ञा पु० धोखेबाज । ठग । वचक ।

जुझाठा—सज्ञा पु० लकड़ी का वह टांचा, जो बैला के कंधों पर रखा जाता है ।

जुझार—सज्ञा पु० ज्वार ।

जुझार-भाटा—सज्ञा पु० समुद्र के जल का उतार-चढ़ाव ।

जुझारा—सज्ञा पु० एक जोड़ी बैल । उतनी जमीन जितनी कि एक जोड़ी बैल जोत सके । जुझारि—सज्ञा स्त्री० अन्न-विशेष । अगहन में हानेवाला एक प्रकार का अन्न ।

जुझारी—सज्ञा पु० जुझा खेलनेवाला ।

जुड़ना—सज्ञा पु० घास या फूस की बनी रस्सी ।

जुई—सज्ञा स्त्री० एक कीड़ा । छोटी जुझा ।

जुकाम—सज्ञा पु० सरदी से होनेवाली एक बीमारी, जिसमें नाक और मुँह से कफ निकलता है । सरदी ।

मुहा०—मेंढकी को जुकाम होना—किसी छोट मनुष्य का कोई बड़ा काम करना ।

जुग—सज्ञा पु० १ युग । २ जोड़ा । युग्म । ३ चौतर के खेल में दो गोठियों का एक ही घर में इकट्ठा होना । ४ पुस्त । पीढ़ी ।

जुगजुगाना—वि० अ० १ मद ज्योति से चमकना । टिमटिमाना । २ उभरना ।

जुगत—सज्ञा स्त्री० १ युक्ति । उपाय । तदवीर । ढग । २ व्यवहार-कुशलता । चतुराई । हथकड़ा ।

जुगती—सज्ञा पु० अनेक प्रकार की युक्तियाँ निकालने या लगानेवाला । चतुर । चालाक ।

सज्ञा स्त्री० दे० "जुगत" ।

जुगनी—सज्ञा स्त्री० दे० "जुगनू" ।

जुगनू—सज्ञा पु० १ एक बरसाती कीड़ा,

जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह चमकता है । लघोत । पटबीजना । २. पाग के आकार का गले का एक गहना । रामनामी ।

जुगल—वि० दे० "युगल" ।

जुगयना—क्रि० स० १ सचित रखना । एकत्र करना । २ हिफाजत से रखना ।

जुगाना†—क्रि० स० दे० "जुगयना" ।

जुगानुजुग—क्रि० वि० युगानुयुग । कई वर्ष ।

जुगार†—सज्ञा स्त्री० दे० जुगाली ।

जुगालना—क्रि० अ० चौपायों का पागुर करना ।

जुगाली—सज्ञा स्त्री० पागुर । रोमथ ।

चवित चवण ।

जुगुत—सज्ञा स्त्री० दे० "जुगत" । युक्ति ।

जुगुप्सक—वि० निन्दा करनेवाला । निन्दक ।

जुगुप्सा—सज्ञा स्त्री० [वि० जुगुप्सित] १.

धृणा । २ निन्दा । बुराई । ३ तिरस्कार ।

जुड़बो—वि० [फा०] १ बहुतों में से कोई एक । बहुत कम । २ बहुत छोटे अंश का ।

जुड़भ\*†—सज्ञा स्त्री० दे० "युद्ध" ।

जुड़वाना\*†—क्रि० स० लड़ा देना ।

जुभाऊ—वि० लड़ाई में काम आनेवाला । युद्ध-सवधी ।

जुभार†\*—वि० १ लड़ाका । वीर । २. युद्ध । लड़ाई ।

जुट—सज्ञा स्त्री० १ दो परस्पर मिली हुई वस्तुएँ । जोड़ी । गुट । २ जल्पा । दल ।

जुटना—क्रि० अ० १ दो या अधिक वस्तुओं का इस प्रकार मिलना कि एक का कोई अंग दूसरी के किसी अंग के साथ दृढ़तापूर्वक लगा रहे । सबद्ध होना । जुड़ना । २ लिपटना । शृंयना । ३ सम्मेलन करना । ४ एकत्र होना । इकट्ठा होना । ५ कार्य में सम्मिलित होना । ६ मिलना ।

जूड़ली—वि० जूड़ेवाला । लंबे बालों की लटवाला ।

जुटाना—क्रि० स० जुटना का सङ्मर्भक रूप । एकत्र करना । मिलाना । जोड़ना । जमा करना । सटाना ।

जुटाव-गज्ञा पु० जुटने या द्रष्टा होने की क्रिया या भाव । जमावडा ।

जुट्टी-सज्ञा स्त्री० १ पास या टहनियों का छाटा पूला । घँटिया । जूरी । २. सूखन आदि के नए बरतने जो बंधे हुए निरालते हैं । ३ तले-ऊपर रखी हुई वस्तुओं का समूह । गट्टी । ४. एक पक्वान । वि० जुटी या गिली हुई ।

जुठारना-वि० स० छान-पीने की वस्तु को कुछ खाकर छोड़ देना । जूठा करना । उच्छिष्ट करना ।

जुठिहारा-सज्ञा पु० [स्त्री० जुठिहारी] जूठा छानवाला ।

जुद्योशल-वि० [अग्रे०] न्याय सम्बन्धी । दीवानो या फौजदारी सम्बन्धी ।

जुटना-वि० अ० १ सट जाना । सवद्ध होना । संयुक्त होना । २ समोग करना । प्रसंग करना । ३ इकट्ठा होना । ४ एकत्र होना । किसी कार्य में योग देने के लिए उपस्थित होना । ५ प्राप्त होना । ६ दे० "जुतना" ।

जुडबिली-सज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें शरीर में खुजली उठती है और बड़ बड़े चक्के पड़ जाते हैं ।

जुडवाँ-वि० गर्म-वाल से ही एक में सटे हुए । जुडे हुए । ममल । जैसे—जुडवाँ बच्चे ।

सज्ञा पु० एक ही साथ उत्पन्न दो या अधिक बच्चे ।

जुडवाना†-वि० स० १ ठंडा करना । २ शांत करना । सुखी करना ।

क्रि० स० दे० "जाडवाना" ।

जुडाई-सज्ञा स्त्री० दे० "जोडाई" ।

जुडाना†-वि० अ० १ ठंडा होना । २ शांत होना । तुप्त होना ।

क्रि० स० १ ठंडा करना । २ शांत और सतुष्ट करना । तृप्त करना ।

जुडावना†-वि० स० दे० "जुडाना" ।

जुत\*-वि० दे० "युक्त" ।

जुतना-क्रि० अ० १ धूल, धोड़े आदि का गाड़ी, हल आदि में लगाना । नधाना ।

२ बिनी काम में परिश्रमपूर्वक लगना । ३ हल से जोता जाना ।

जुतवाना-वि० म० दूसरे से जोतने का काम करना ।

जुताई-गज्ञा स्त्री० दे० "जोताई" ।

जुतिवाना-वि० म० १ जुता भागना । जुते लगाना । २ श्रवण निरादर करना ।

जुतिथीघल-गज्ञा स्त्री० आपस में जुती में मारपीट ।

जुत्य\*-गज्ञा पु० दे० "युव" ।

जुदा-वि० [पा०] १ पृथक् । अलग । २ भिन्न ।

जुदाई-सज्ञा स्त्री० [पा०] जुदा होने का भाव । विछोड़ । विधोग ।

जुद\*-गज्ञा पु० दे० "युद्ध" ।

जुन\*-सज्ञा पु० दे० "जून" । नमय । कारण । अवसर ।

जुन्हरी-सज्ञा स्त्री० ज्वार (अन्न) ।

जुन्ह्राई-सज्ञा स्त्री० 'ज्यास्ता' । १ चौदनी । चद्रिका । २ चद्रमा ।

जुह्याई-सज्ञा स्त्री० दे० "जुह्राई" ।

जुचली-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] बिनी बड़ी पटना का स्मागक । महात्सव । जयन्ती ।

जुवान-सज्ञा स्त्री० दे० "जवान" । जीभ । घोनी ।

जुवानो-वि० जरानी । मौखिक ।

जुमना-सज्ञा पु० खत में खाद डालने की क्रिया विशेष ।

जुमला-वि० [फा०] सव । कुल ।

सज्ञा पु० पूरा वाक्य ।

जुमा-सज्ञा पु० [अ०] शुक्रवार ।

जुमिल-सज्ञा पु० एक प्रकार का धोडा ।

जुमुकना-क्रि० अ० पास आ जाना । इकट्ठा होना ।

जुमेरत-गज्ञा स्त्री० [अ०] बृहस्पतिवार ।

जुरअत-सज्ञा स्त्री० [फा०] साहस । हिम्मत ।

जुरभुरी-सज्ञा स्त्री० १ ज्वराग । हजरात ।

२ ज्वर के आदि की कंपकंपी ।

जुरना\*†-वि० स० दे० "जुडना" ।

जुरमाना-सज्ञा पु० [पा०] वह बड़ जिसके

अनुसार अपराधी को कुछ धन देना पड़े।  
अर्थ-दंड। धन-दंड।

जुराफा-सज्ञा पु० अफरीका का एक बहुत ऊँचा जंगली पशु जिसकी टाँगें और गदन ऊँट की सी लंबी होती है।

जुसं-सज्ञा पु० [अ०] अपराध। वह कार्य जिसके लिए दंड देने का नियम हो।

जुल-सज्ञा पु० धोखा। बड़ावा।

जुलाव-सज्ञा पु० [फा०] १ रेचन। दस्त।  
२ रेचक औषध। दस्त लानेवाली दवा।

जुलाहा-सज्ञा पु० १ कपड़ा बुननेवाला।  
तलुकार। तलुवाय। २ पानी पर तैरने-  
वाला एक कीड़ा।

जुल्फ-सज्ञा स्त्री० [फा०] सिर के लंबे बाल।  
पट्टा। कुल्ला।

जुल्फी-सज्ञा स्त्री० दे० "जुल्फ"।

जुल्म-सज्ञा पु० [अ०] अत्याचार। अन्याय।  
मुहा०-जुल्म टूटना=आफत आ पड़ना।

जुल्म ढाना=१ अत्याचार करना। २  
कोई अद्भुत काम करना।

जुलूस-सज्ञा पु० [अ०] १ किसी उत्सव का  
समारोह। २ उत्सव और समारोह की  
यात्रा। धूमधाम की सवारी।

जुल्लाव-सज्ञा पु० दे० "जुलाव"।

जुवती-सज्ञा स्त्री० दे० "युवती"।

जुवराज-सज्ञा पु० दे० "युवराज"।

जुया-सज्ञा पु० दे० "युवा"।

जुवार-सज्ञा पु० यक्ष-विशेष। जुन्हरी।

जुवारी-सज्ञा पु० जुयारी। छत्ती। नपटी।

जुस्तजू-सज्ञा स्त्री० [फा०] तलाश। खोज।

जुहानी†-वि० स० एकत्र करना। संचित  
करना।

जुहार-सज्ञा स्त्री० युद्धार्थ यात्रा की विदाई।  
युद्ध-अभिवादन। क्षत्रिया म प्रचलित एक  
प्रकार का प्रणाम। सलाम।

जुहारना-वि० स० १ सहायता माँगना।  
२ एहसान लेना।

जुही-सज्ञा स्त्री० दे० "जही"।

जुहोता-सज्ञा पु० आहुति देनेवाला।

जुहू-सज्ञा पु० एक प्रकार का मत्स्य। पूर्व  
दिशा।

जूं-सज्ञा स्त्री० एक छोटा स्वेदज कीड़ा।

मुहा०-कानों पर जूँ रेगना=स्थिति का  
ज्ञान होना। होना होना।

जू-अव्य० एक आदर-सूचक शब्द जो नाम  
के अन्त में जोड़ा जाता है। जी।

मज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. वायु।  
३. बेल या घोड़े के मस्तक पर बा टीका।

जूआ-सज्ञा पु० १ गाड़ी के आगे जड़ी  
हुई वह लकड़ी, जो बैलों के बंधों पर रहती  
है। २ जुआठा। ३ चक्की फिराने की

लकड़ी। ४. वह खेल जिसमें हारनेवाला  
जीतनेवाले को कुछ धन देता है। जुआ।

धूत।

जूआठ-सज्ञा पु० बैलों के बन्धों पर रखी जाने-  
वाली लकड़ी जिसमें हल बाँधकर खेत  
जोते हैं।

जूजू-सज्ञा पु० एक कल्पित जीव जिसके नाम  
से लड़कों को डराते हैं। हाऊ।

जूझ\*-सज्ञा स्त्री० लड़ाई।

जूझना†-वि० अ० १ लड़ना। २ लड़-  
कर मर जाना।

जूड-सज्ञा पु० १ पटसन। जूडा। २.  
लट। जटा।

जूठ-सज्ञा पु० खाए हुए भोजन का शेष।  
दे० "जूठन"।

जूठन-सज्ञा स्त्री० १ वह खाने पीने की  
वस्तु जिसे किसी ने ग्राह्य छोड़ दिया हो।  
उच्छिद्य भोजन। २ सन्त, महात्मा आदि  
मान्या का जूठा। भुक्त पदार्थ।

जूठा-वि० [स्त्री० जूठी। वि० जुठारना]  
१ किसी वस्तु से बचा हुआ। उच्छिद्य।  
२ जिसे किसी ने भोग करके अपवित्र  
कर दिया हो। भुज।

सज्ञा पु० दे० "जूठन"।

जूड-वि० धीतल।

सज्ञा पु० जूडा।

जूडा-सज्ञा पु० १ [स्त्रिया के] मिर के बँधे  
हुए बाल। मोपा। २ चाँदी। ३ मृज  
आदि का पूजा। मुजारी। ४ पड़े के  
भीचे रखने की मेढुरी। ५ बच्चों का  
एक रोग।

जूड़ी-गन्ना रत्नी० एक प्रकार का ज्वर ।  
जाड़ा देपर धुआर आना । भीतज्वर ।  
जूता-सज्ञा पु० पैर में पहनने के लिए चमड़े  
आदि का ढाँचा । पन्ही । पादत्राण ।  
उपानह ।

मुहा०—(किसी का) जूता उठाना=१ किसी  
का दासत्व करना । २. सुशामद करना ।  
चापलूसी करना । जूता उछलना या चलना=  
मारपीट होना । भगडा होना । जूता खाना=  
१ जूतों की मार खाना । २ बुरा-भला  
मुनना । तिरस्कृत होना । जूते से खबर  
लना या बात करना=जूते से मारना ।  
जूतों दाल बँटना=आपस में लड़ाई-भगडा  
होना ।

जूताओर-वि० निर्लज्ज । बेहया । जूते खाने-  
वाला । मार या गाली की परवाह न  
करनेवाला ।

जूती-सज्ञा स्त्री० स्त्रियों का जूता ।

जूती पेजार-सज्ञा स्त्री० १ जूतों की मार-  
पीट । २ लड़ाई-भगडा ।

जूय\*-सज्ञा पु० दे० "यूय" । समूह ।

जून†-सज्ञा पु० १ समय । काल । २.  
तृण । घास । ३ अंग्रेजी वर्ष का छठवाँ मास ।  
जूना-सज्ञा पु० घास या फूस की बनी रस्सी ।  
गड़ुरी ।

जूनिमर-वि० [अंग्रे०] छोटा । उम्र या पद  
में छोटा ।

जूप-सज्ञा पु० दे० "यूप" । १ जूमा ।  
घृत । २ विवाह में एक रीति जिसमें  
वर और वधू परस्पर जूमा खेलते हैं ।  
पाता ।

जूपी-वि० जुमारी ।

जूमना\*†-कि० अ० झुंझा होना । जमा  
होना । एकत्र होना ।

जूर\*-सज्ञा पु० जोड़ । सचय ।

जूरना\*-वि० स० दे० "जोड़ना" ।

जूरा-सज्ञा पु० दे० "जूड़ा" ।

जूरी-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. फौजदारी के  
मुकदमों में न्यायाधीश का राय देने के  
लिए नियुक्त पक्ष । २. पास या पत्ता का  
छोटा पूता । जूटी । ३. सूरज आदि के

नाए करने जो बंधे हुए निपलते हैं । ४.  
एक प्रकार का पगवान । ५. समूह ।  
भण्ड । ६. एक प्रकार का पोया ।

जूणि-सज्ञा स्त्री० १. वेग । २. देह । ३.  
ग्रहा । ४. शोध ।

वि० १. तेज । २. वेगवान । ३. द्रवित ।  
४. ताप देनेवाला । ५. स्तुति करने में  
बुझल ।

जूलाई-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] अंग्रेजी साल  
का सातवाँ महीना ।

जूप-सज्ञा पु० झोल । दे० "जूस" ।

जूस-सज्ञा पु० १. उवाली हुई चीज का रस ।  
निचोड़ । रोगियों के लिए पथ्य,  
जैसे पकी हुई दाल का पानी आदि । २.  
सम सख्या । युग्म सख्या ।

जूस ताक-सज्ञा पु० एक प्रकार का जूआ  
जिसमें कीड़ियाँ हाथ में लेकर पूछा जाता  
है कि ये जूस हैं या ताक ।

जूसी-सज्ञा स्त्री० खाँड़ का पसेव । चोटा ।

जूह\*-सज्ञा पु० दे० "यूय" ।

जूहर\*-सज्ञा पु० दे० "जौहर" ।

जूही-सज्ञा स्त्री० १. पुष्प-विशेष । २.  
एक प्रकार की आतशवाजी । एक  
बीडा ।

जूभ-सज्ञा पु० [स्त्री० जूभा । वि० जूभक]  
१ जैभाई । २ आलस्य ।

जूभक-वि० जैभाई लेनेवाला ।

सज्ञा पु० १ खदगणों में से एक । २.  
एक अस्थ जिसके चलाने से शत्रु जैभाई  
लने लगते थे, या सो जाते थे ।

जूभण-सज्ञा पु० जैभाई लेण ।

जूभा, जूभिका-सज्ञा स्त्री० १ जैभाई ।  
२ आलस्य या प्रमाद से उत्पन्न जड़ता ।  
३ एक दक्कन का नाम ।

जूभित-वि० १ चेष्टा किया हुआ । २.  
स्फुटित । प्रवृद्ध ।

सज्ञा पु० १ रभा । २ स्फुरण । ३.  
स्त्रियों की इच्छा ।

जैना-वि० स० दे० "जैवना" ।

जैवन-सज्ञा पु० भोजन ।

जैवना-कि० स० खाना । भोजन करना ।

जैवाना†-क्रि० स० खिलाना । भोजन कराना ।

जै\*†-सर्व० 'जो' का बहुवचन ।

जेठ, जेउ, जेऊ\*†-सर्व० दे० "जो" ।

जेठ-सज्ञा पु० राशि । ढेर । समूह । मिट्टी के बत्तनों का समूह, जिसमें वे एक दूसरे के ऊपर रखे हो ।

जेठी-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] वह स्थान जहाँ जहाजों पर मांस चढ़ाया या उतारा जाता है ।

जेठ-सज्ञा पु० [स्त्री० जेठानी] १. ग्रीष्म ऋतु का वह भाग जो बैसाख और असाढ़ के बीच में पड़ता है । ज्येष्ठ । २. पति का बड़ा भाई । भगुर ।

वि० अग्रज । बड़ा ।

जेठरा†-वि० दे० "जेठ" । प्रथम उत्पन्न पुत्र । पहलीठा । ज्येष्ठ । बड़ा । अग्रज ।

जेठा-वि० [स्त्री० जेठी] १. अग्रज । बड़ा । २. सबसे अच्छा ।

जेठाई-सज्ञा स्त्री० बड़ाई । जेठापन ।

जेठानी-सज्ञा स्त्री० जेठ (पति के बड़े भाई) की स्त्री ।

जेठी-वि० जेठ संबंधी । जेठ का । बड़ी । सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कपास ।

सज्ञा पु० एक तरह का धान ।

जेठीमधु-सज्ञा स्त्री० यष्टिमधु । मुलेठी । औषध विशेष ।

जेठीत, जेठीता†-सज्ञा पु० [स्त्री० जेठीती] जठ या पति के बड़े भाई का पुत्र ।

जेठा-सज्ञा पु० १. जीतनेवाला । विजयी । २. विष्णु ।

वि० दे० "जितना" ।

जैतिक\*†-क्रि० पि० जितना ।

जैते\*†-वि० जितने ।

जैतो\*†-क्रि० वि० जितना ।

जैम्यावसु-सज्ञा पु० अग्नि । इद्र ।

जैव-सज्ञा पु० [पा०] पहनने के कपड़े में लगी हुई धैली । खीसा । पानेट ।

जैवकट-सज्ञा पु० जैव काटनेवाला । गिरह-कट । चोर । पाकेटभार ।

जैवखचं-सज्ञा पु० [फा०] ऊपरी या निज का खर्च । निज के खर्च के लिए धन ।

जैवघड़ी-सज्ञा स्त्री० छोटी घड़ी जो जैव में रखी जाती है । जैवी घड़ी ।

जैवरा-सज्ञा पु० दक्षिण अफ्रीका का घोड़े की तरह एक जानवर, जिसके शरीर पर धारियाँ होती हैं ।

जैवी-वि० [फा०] १. जो जैव में रखा जा सके । २. बहुत छोटा ।

जैव-वि० जीतने योग्य ।

जैर-सज्ञा स्त्री० वह फिल्ली जिसमें गर्भगत बालक रहता है । आँवल ।

वि० [सज्ञा जैरवारी] १. परास्त । परा-जित । २. आपदग्रस्त ।

सज्ञा पु० एक वृक्ष ।

जैरपाई-सज्ञा स्त्री० [फा०] स्त्रियों की जूती ।

जैरवार-वि० [फा०] १. जो किसी आपत्ति के कारण बहुत दुखी हो । २. जिसकी बहुत हानि हुई हो ।

जैरवारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. आपत्ति या क्षति के कारण बहुत दुखी होना । तंगी । २. हैरानी । परेशानी ।

जैरी-सज्ञा स्त्री० १. दे० "जैर" । २. वह जाड़ी जो चरवाहे कँटीली भाड़ियाँ इत्यादि हटाने के लिए रखते हैं ।

जैल-सज्ञा पु० [अग्रे०] १. कारागार । बंदीगृह । वह स्थान जहाँ राज्य द्वारा दंडित अपराधी आदि रखे जाते हैं । २. जजाल । हैरानी या परेशानी का काम ।

जैलखान-सज्ञा पु० कारागार ।

जैलर-सज्ञा पु० [अग्रे०] जेल का अधिकारी ।

जैलाटिन या जैलाटीन-सज्ञा पु० [अग्रे०] मांस, हड्डी और खाल से निक्कलनेवाला-सरेस की तरह का एक पदार्थ ।

जैवडा-सज्ञा पु० रस्ता । डोर ।

जैवता-क्रि० स० दे० "जीमना" । भोजन करना ।

जैवनार-सज्ञा स्त्री० १. बहुत से मनुष्यों का एक साथ बैठकर भोजन करना । भाज । २. रसीद । भोजन ।

जैवर-सज्ञा पु० [फा०] गहना । आभूषण ।

जैवरी-सज्ञा स्त्री० रस्ती ।

जेट-मज्ञा पु० १. जेट । पति वा बहा भाई ।  
२ ज्येष्ठ महीना ।

जेष्ठा-मज्ञा स्त्री० ज्येष्ठा नक्षत्र-विशेष ।  
जेह-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. बमान की  
ठारी में वह स्थान, जो आँव के पास लगाया  
जाता है और जिसकी भीष में निशाना  
रहता है । चिन्ता । २. दीवार में नीचे  
की छार पत्तनर आदि का मोटा और  
उभड़ा हुआ खेप । ३. प्रतीक्षा । तलाश ।  
खोज । ४ नजर । दृष्टि ।

जेहन-मज्ञा पु० [प्र०] [वि० जहीन] बुद्धि ।  
धारणाशक्ति ।

जेहर\*-मज्ञा स्त्री० पाजेव । एक गहना ।  
जेहल-सज्ञा पु० दे० "जेल" ।

जेहलखाना\*—सज्ञा पु० दे० "जेल" ।

जेहि\*-सर्व० १. जिसको । २ जिससे ।

जै-मज्ञा स्त्री० दे० "जय" ।

†-वि० जितने । जिस तरह ।

जैत†\*-मज्ञा स्त्री० विजय ।

सज्ञा पु० १. एक पेड़ । २ रागिनी-विशेष ।

जैतपत्र\*-सज्ञा पु० जयपत्र ।

जैतवार\*†-सज्ञा पु० जीतनेवाला । विजयी ।  
विजेता ।

जैतून-मज्ञा पु० एक ऊँचा पेड़ । इसके फल  
और बीज दवा के काम में आते हैं ।

जैत्र-सज्ञा पु० १ विजयी । २ पारा । ओषधि ।

जैन-सज्ञा पु० १ भारत का एक धर्म-  
संप्रदाय, जिसमें अहिंसा परम धर्म माना  
जाता है । २ जैनी ।

जैनी-मज्ञा पु० जैन-मतावलंबी ।

जैनु†\*-सज्ञा पु० भोजन ।

जैमो†-वि० अ० दे० "जाना" ।

जैमिनि-सज्ञा पु० पूर्वमीमांसा-दर्शनशास्त्र  
के रचयिता एक ऋषि ।

जैम्प-वि० १ बड़ा भारी । बहुत बड़ा ।  
२ बहुत धनी ।

जैल-मज्ञा पु० [फा०] नीचे का हिस्सा ।  
पत्ति । इलाका ।

जैलदार-मज्ञा पु० [प्र०] वह अधिकारी जिसके  
अधिकार में कई गाँवों का प्रबंध हो ।

जैपात्रिक-सज्ञा पु० १ चन्द्रमा । २ कपूर ।

जैसा-वि० [स्त्री० जैसी] १. जिन प्रकार ।  
जिन रूप-रंग या गुण का । यथा । २.  
गमान । सदृश । तुल्य ।

जि० वि० जितना । जिन परिमाण में ।  
मुहा०-जैमे का नंगा=ज्यों का त्यों । जैसा  
पढ़ने पर, वैसा ही । जैसा चाहिए=उपयुक्त ।  
जैसे-जि० वि० जिन प्रकार में । जिस  
ढंग में ।

मुहा०-जैसे तैम=विनी प्रकार । बड़ी कठि-  
नता में ।

जैसो†-वि०, जि० वि० दे० "जैसा" ।

जो†\*-वि० वि० दे० "ज्यों" ।

जोक-मज्ञा स्त्री० १ पानी का एक बीड़ा,  
जो जीवों के शरीर में चिपटकर उनका  
रक्त चूसता है । २ वह मनुष्य जो अपना  
काम निबालने के लिए बेतम्ह पीछे पड़  
जाय ।

जोको-सज्ञा स्त्री० लोहे का वह काँटा जो  
दो तख्ता को जोड़ता है । दे० "जोक्" ।

जोधरी-सज्ञा स्त्री० १ छोटी मक्ई । २.  
बाजरा ।

जोधिया-सज्ञा स्त्री० ज्योत्स्ना । चाँदनी ।  
चंद्रिका ।

जो-सर्व० एक मवधवाचक सर्वनाम ।

\*प्रच्य० यदि । अगर ।

जोअना\*†-जि० स० दे० "जोवना" ।

जोइ\*†-सज्ञा स्त्री० जोड़ । पत्नी । स्त्री ।  
†सर्व० "जो" ।

जोइसी\*-मज्ञा पु० दे० 'ज्यानिपी' ।

जोड-सर्व० दे० "जो" ।

जोख-सज्ञा स्त्री० तील । वजन ।

जोखना-जि० म० १ तोलना । वजन  
करना । २ जाँचना ।

जोखा-सज्ञा पु० खला । हिस्सा ।

जोखाई-सज्ञा स्त्री० तोलन का काम या  
उसकी मजदूरी ।

जोखिम-सज्ञा स्त्री० १ अनिष्ट या विपत्ति  
की आशंका । २. भौकी । विपत्ति लानेवाली  
वस्तु ।

मुहा०-जोखिम उठाना या सहना=ऐसा  
काम करना जिसमें अनिष्ट की आशंका

हो। जान जातिम होना—मरने वा भय होना।

जोखो—मज्ञा स्त्री० दे० “जोखिम”।

जोगधर—सज्ञा पु० योगधर। एक युक्ति जिनके द्वारा शत्रु के चलाए हुए अस्त्र से अपना बचाव किया जाता था।

जोग—मज्ञा पु० दे० “योग”।

वि० दे० “योग्य”।

जोगटा—सज्ञा पु० बना हुआ योगी। पाखंडी।

जोगनाया—सज्ञा स्त्री० भगवान् की एक शक्ति।

जोगबना—वि० स० १ यत्न से रखना।

२ संचित करना। एखन करना। ३

लिहाज रखना। आदर करना। ४ जाने

देना। रखात न करना। ५ पूरा करना।

जोगा—सज्ञा पु० अफीम छानन के बाद बचा

हुआ मेल।

जोगानल—सज्ञा स्त्री० योगानल। योग से

उत्पन्न आग।

जोगिन—सज्ञा स्त्री० [यागिनी] १ जोगी

की स्त्री। २ साधुनी। ३ पिशाचिनी।

जोगिनी—मज्ञा स्त्री० दे० “यागिनी”।

जागिन।

जोगिया—वि० १ जागी-नबधी। जोगी वा।

२ गन्ध के रंग में रंगा हुआ। गैरिख।

मन्यामिया व कपड़ का रंग।

जोगींद्र\*†—मज्ञा पु० दे० यागींद्र। १

बड़ा यागी। २ गिय।

जोगी—मज्ञा पु० दे० यागी। १ याग करने-

वाला। २ एक प्रकार का भिक्षुव आ

मारगी पर गाव चिखत है।

जोगीडा—मज्ञा पु० १ एक प्रकार का

चपना गाना। २ गान बजान-वाला का

एक छोटा समारोह।

जोगींदर—मज्ञा पु० दे० यागेश्वर। १

श्रीगुरुदेव। २ गिय। ३ गिय यागी।

जोगी\*—मज्ञा पु० दे० “यागन”।

जोट\*—मज्ञा पु० जाटी। गांछ।

जोग\*†—मज्ञा पु० जाटा।

जोटिण—मज्ञा पु० गिय।

जोटो\*†—मज्ञा स्त्री० १ जाटी। युग्मक।

२ बगवरी का। समान।

जोड—सज्ञा पु० १ कई सख्याओं का योग।

जोड़ने की क्रिया। २ वह सख्या जो कई

सख्याओं को जोड़ने से निकले। मोजान।

३ वह स्थान जहाँ दो या अधिक पदार्थ

मिले हो। ४ वह टुकड़ा जो किसी चीज

में जोड़ा जाय। ५ संधि-स्थान। दो

वस्तुओं के मिलने के स्थान का चिह्न।

६ शरीर के दो अवयवों का संधि-स्थान।

गाँठ। ७ मेल मिलाप। ८ एक ही तरह

की अथवा साथ-साथ काम में आनेवाली

दो चीज। जोड़ा। ९ बराबरी। समा-

नता। १० वह जो बराबरी का हो।

जोडा। ११ पहनने के सब कपड़े। पूरी

पोशाक। १२ छल। दाँप।

यो०—जोड-तोड १ दाँव-पच। छल-कपट।

२ युक्ति विनाश। ढग।

जोड़ती\*—सज्ञा स्त्री० गणित में कई सख्याओं

का योग। जाड़। हिसाब। गिनती।

जोड़न—सज्ञा स्त्री० वह पदार्थ जो दही

जमाने के लिए दूध में डाला जाता है।

जाधन। जाभन।

जोड़वा—वि० स० १ मिलावा। सम्बद्ध

करना। २ सटाना। गाँठ लगाना। गामघी

को श्रम से रखना। ३. एखन करना। ४

इकट्ठा करना। ५ धन बढ़ाना। कई

सख्याओं का याग-कन निकालना।

६ वायवा या पदों आदि की याजना

करना। ७ प्रज्वलित करना। ८ मरध

स्थापित करना।

जोड़वा—वि० दे० “जाड़वा”।

जोड़वा—वि० एक ही गर्भ से गाय उत्पन्न

हुनिवाल दो बच्चे। यमज।

जोड़वाना—वि० स० [जोड़ना का प्र०]

जाधन का काम दूसरे में करना।

जोडा—मज्ञा पु० [स्त्री० जाना] १ दो

गमान पदार्थ। एक ही नी दा पीरें।

२ स्त्री और पुरुष या नर और मादा।

३ जब। उगाह। ४ पत्नी के मर

गए। पूरी यागात। ५ पर जा बग-

वरी का है। जाड़।

जोडाई—मज्ञा स्त्री० १ यग्य का

जोड़ने की प्रिया या भाव । २. जोड़ने की मजदूरी ।

जोड़ी-सज्ञा स्त्री० १. दो गमान वस्तुएँ । जांठा । २. दो पोंछो या दो बेलों की गाड़ी । ३. दोनों मुगदर जिनसे गसरत करते हैं । ४. मँजीरा ।

जोड़-सज्ञा स्त्री० जोर । पत्नी ।

जोते-सज्ञा स्त्री० १. अमाभी की जोतने के लिए दी गई भूमि । २. चमड़े का तस्मा या रस्ती जिसका सिरा जोते जाने-वाले जानवरों के गले में और दूसरा उस बीज में बँधा रहता है, जिसमें वे जोते जाते हैं । ३. तराजू के पल्लो में बँधी हुई रस्ती । दे० "ज्योति" ।

जोतना-क्रि० स० १. गाड़ी आदि को चलाने के लिए उसके आगे घोड़े, बैल आदि पशु बाँधना । २. किसी को जबरदस्ती किसी काम में लगाना । ३. हल चलाना । हल से खेत को बोने योग्य बनाना ।

जोता-सज्ञा पु० १. जुमाटे में बँधी हुई रस्ती जिसमें बैलों की गरदन फँसाई जाती है । २. बहुत बड़ी शहतीर । ३. खेत जोतनेवाला ।

जोताई-सज्ञा स्त्री० १. जोतने का काम या भाव । २. जोतने की मजदूरी ।

जोतार-सज्ञा पु० हरवाहा । हलवाहा । जोतने-वाला ।

जोतिहा-सज्ञा पु० खेत जोतनेवाला असामी ।

जोति, जोती-सज्ञा स्त्री० १. धी का दीपक जो किसी देवी-देवता के आगे जलाया जाता है । २. दे० "ज्योति" । ३. जोतने-बोने योग्य भूमि ।

जोषन-सज्ञा पु० आयोषन । सग्राम ।

सज्ञा स्त्री० जुए की रस्ती ।

जोधा\*†-सज्ञा पु० दे० "योद्धा" ।

जोनि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "योनि" ।

जोह, जोह्राई\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "जुह्राई" । चांदनी ।

जोहरी या जोनरी-सज्ञा स्त्री० ज्वार ।

जोष\*-प्रत्य० १. यदि । अगर । २. यद्यपि ।

जोफ-सज्ञा पु० [प्र०] १. युद्धपा । युद्धायस्था । २. निर्वलता । कमजोरी ।

जोवन-सज्ञा पु० यौवन । युवावस्था । १. जवानी । २. स्नान । छाती । ३. सुदन्ता । खूबसूरती । ४. रौनक । बहार ।

जोम-सज्ञा पु० [प्र०] १. उमग । उत्साह । २. जोश । आवेग । ३. अभिमान ।

जोय\*-सज्ञा स्त्री० जोर । स्त्री ।

सर्व० पु० जो । जिस ।

जोयना\*-क्रि० स० बालना । जलाना ।

क्रि० स० बूँडना ।

जोयसी\*†-सज्ञा पु० दे० "ज्योतिर्षी" ।

जोर-सज्ञा पु० [फा०] १. बल । शक्ति । २. प्रबलता । तेजी । बढती । ३. अधिकार । बाबू । ४. वेग । आवेश । ५. मरोगा । सहारा । ६. परिश्रम । मेहनत । ७. व्यायाम ।

मुहा०--(किसी बात पर) जोर देना ।

किसी बात को बहुत ही आवश्यक या महत्वपूर्ण बतलाना । [किसी बात के लिए] जोर देना=किसी बात के लिए आग्रह करना । जोर मारना या लगाना=१. बल का प्रयोग करना । २. बहुत प्रयत्न करना । जोरो पर होना=१. पूर बल पर होना । बहुत तेज होना । २. खूब उन्नत होना । जोरो पर=बड़े वेग से । तेजी से । किसी के जोर पर कूदना=किसी को अपनी सहायता पर देखकर अपना बल दिखाना ।

मौ०--जोर-बुल्लम=प्रत्याचार ।

जोरदार-वि० [फा०] जिसमें बहुत जोर हो । जोरवाला ।

जोरना\*†-क्रि० स० दे० "जोडना" ।

जोरशोर-सज्ञा पु० [फा०] बहुत अधिक जोर ।

जोरजोरी\*†-सज्ञा स्त्री० जबरदस्ती ।

क्रि० बि० जबरदस्ती से । बलपूर्वक ।

जोरावर-वि० [फा०] [सज्ञा जोरावर] बलवान् । ताकतवर ।

जोरी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "जोड़ी" । जबरदस्ती ।

जोर-सज्ञा स्त्री० स्त्री । पत्नी ।

जोलाहल†\*—सज्ञा स्त्री० ज्वाला । अग्नि । आग ।

जोली†\*—सज्ञा स्त्री० बराबरी ।

जोबना\*—क्रि० स० प्रतीक्षा करना । १

जोहना । २ ढूँढना । तलाश करना ।

३ आसरा देखना ।

जोश—सज्ञा पु० आवेश । १ चित्त की तीव्र वृत्ति । मनोवेग । २ आँच या गरमी के कारण उबलना । उफान । उबाल ।

मुहा०—जोश खाना=उबलना । आवेश में आना । जोश देना=पानी के साथ उबालना । बड़ावा देना । सूत का जोश=प्रेम का वह वेग, जो अपने वस के किसी मनुष्य के लिए हो ।

जोशन—सज्ञा पु० [फा०] १. भुजाघ्रा पर पहनने का एक गहना । २ जिरह-वस्त्र । बच ।

जोशाँदा—सज्ञा पु० [फा०] पानी में उबाली हुई जड़ या पत्तियाँ आदि । क्वाथ । काढ़ा ।

जोशीला—वि० [स्त्री० जोशीली] जिसमें खूब जास है । आवेगपूर्ण ।

जोष—सज्ञा स्त्री० स्त्री । नारी । दे० “जोख” ।

सज्ञा पु० १. प्रम । २ सुख । ३ सेवा ।

जोषक—सज्ञा स्त्री० सेवक ।

जोषा—सज्ञा० स्त्री० नारी । स्त्री ।

जोषिता—सज्ञा स्त्री० स्त्री । नारी ।

जोषी—सज्ञा पु० १ गुजराती, महाराष्ट्र और पहाड़ी ब्राह्मणों में एक जाति । २ ज्योतिषी ।

जोह†\*—सज्ञा स्त्री० १ खोज । तलाश । २ इतजार । प्रतीक्षा । ३ श्वा-दृष्टि ।

जोहन†\*—सज्ञा स्त्री० १ देखने या जोहने की क्रिया । २ तलाश । ३ प्रतीक्षा । इतजार ।

जोहना—क्रि० स० १ ढूँढना । पता लगाना । २ प्रतीक्षा करना ।

जोहार—सज्ञा स्त्री० अभिवादन । यदन । प्रणाम ।

सज्ञा पु० दे० “जोहर” ।

जोहारना—क्रि० अ० जोहार या अभिवादन करना । नमस्कार करना ।

जोही—वि० खोजनेवाला ।

जौ—अव्य० यदि । जो ।

त्रि० वि० दे० “ज्यो” ।

यो०—जौलों—जब तक ।

जौकना—त्रि० स० डाँटना । फटकारना । बडबडाना ।

जौरे—त्रि० वि० निकट । पास ।

जौराभौरा—सज्ञा पु० १ भुईंघर । भुईंहरा । किले या महलो का तहखाना । २ दो बालकों का जोड़ा ।

जौ—सज्ञा पु० (यब) १ अल विशेष । २ छ राई (खरदल) के बराबर एक तौल । †अव्य० यदि । अगर ।

\*†क्रि० वि० जब ।

जौख—सज्ञा पु० १ झुंड । समूह । जत्था ।

२ फौज । सेना । ३ पक्षियों की श्रेणी ।

जौजा—सज्ञा स्त्री० जोर ।

जौधिक—सज्ञा पु० तलवार या खड्ग के ३२ हाथा में से एक । (तलवार चलाने की एक विधि) ।

जौलुक—सज्ञा पु० दहेज ।

जौन†\*—सर्व० जो । जिस ।

वि० जो ।

जौनाल—सज्ञा पु० रबी का खेत ।

जौप†\*—अव्य० अगर । यदि ।

जौरा—सज्ञा पु० वह अन्न जो गृहस्थ लोग नाई-बारी के काम की मजदूरी में देते हैं ।

जौहर—सज्ञा पु० १ रत्न । बहुमूल्य पत्थर ।

२ सार वस्तु । सारास । तत्त्व । ३.

हथियार की ओष । ४ विशेषता । उत्त-

मता । खूबी । ५ राजपूता में युद्ध-समय की

एक प्रथा जिसके अनुसार उनकी स्त्रियाँ

चित्ता में जल जाती थी । ६ वह चित्ता

जा दुर्ग में स्त्रियों के जलने के लिए बनाई

जाती थी । ७ घातमहत्या ।

जौहीर—सज्ञा पु० [फा०] १ रत्न परखन या

वेचनवाला । रत्न-विप्रेता । २ किसी

वस्तु के गुण-दोष की पहचान करनेवाला ।

पारखी । गुणग्राह ।

ज्ञ-गज्ञा पु० १ ज श्रीर ज के गयाग से  
यना हुआ गमुक्त अधर । २ ज्ञान ।  
बाध । ३ ज्ञानी । जाननेवाला—जंगे  
शास्त्रज्ञ । ४. ब्रह्मा । ५ मगन ग्रह । ६  
पाम्त्रानुसार निधिरार पुष्प ।

ज्ञान-वि० जाना हुआ ।

ज्ञप्ति-सज्ञा स्त्री० १ जानकारी । २ बुद्धि ।

ज्ञा-गज्ञा स्त्री० जानकारी ।

ज्ञात-वि० जाना हुआ । विदित ।

ज्ञात-योक्ता-गज्ञा स्त्री० वह मुग्धा नायिका  
जिसे यौवन का ज्ञान हो ।

ज्ञातव्य-वि० जा जाना जा सके । ज्ञेय ।

‘वाधगम्य ।

ज्ञातसार-ग्रन्थ० विदित । मालूम ।

ज्ञात-सिद्धान्त-सज्ञा पु० शास्त्रतत्त्वज्ञ ।

शास्त्र का यथार्थ भ्रम जाननेवाला ।

ज्ञाता-वि० (स्त्री० ज्ञात्री) ‘ज्ञान रखने-  
वाला । जानकार । जाननेवाला ।

ज्ञाति-सज्ञा पु० १ एक ही गात्र या वंश का  
मनुष्य । गाती । २ भाई-बन्धु ।

मज्ञा स्त्री० दे० “जानि” ।

ज्ञातृत्व-सज्ञा पु० जानकारी ।

ज्ञान-सज्ञा पु० १ आत्मानुभूति । बुद्धि  
बाध । जानकारी । प्रतीति । चेतनता ।

समझ । २ यथार्थ या सम्यक् ज्ञान ।

तत्त्वज्ञान ।

सुहृ०—ज्ञान छांटना=अपने ज्ञान का  
प्रदर्शन करना । अपनी विद्या या ज्ञान-  
कारी जताने के लिए लवी चौड़ी बातें  
करना ।

ज्ञानकाण्ड-सज्ञा पु० वेद का एक काण्ड जिसमें  
ब्रह्म आदि सूक्ष्म विषया का विचार है ।

जंम—उपनिषद् ।

ज्ञानगम्य-सज्ञा पु० जो जाना जा सके ।  
ज्ञेय ।

ज्ञानगोचर-वि० दे० “ज्ञानगम्य” ।

ज्ञानद-वि० ज्ञान देनेवाला । हितैषी ।  
ज्ञानदाता ।

ज्ञानदाता-सज्ञा पु० गुरु ।

ज्ञानदीपक-सज्ञा पु० ज्ञान का प्रकाश ।  
जिससे अज्ञान दूर हो ।

ज्ञानमार्ग-सज्ञा पु० निवृत्तिमार्ग । ज्ञाना-  
भ्यास । ज्ञान द्वारा मोक्षप्राप्ति का साधन ।  
ज्ञानयोग-सज्ञा पु० ज्ञान की प्राप्ति द्वारा  
मोक्ष का साधन ।

ज्ञानवान्-वि० ज्ञानी । जिसे ज्ञान प्राप्त  
हो ।

ज्ञानवापी-सज्ञा स्त्री० काशी का एक तीर्थ  
स्थान । कहते हैं कि मुगलमानी के पहले  
आक्रमण में जब काशी के मन्दिरों को  
तोड़-फोड़कर भारत का धन लूटा जा  
रहा था, उस समय विद्वनायजी मन्दिर  
छोड़कर एक कुएँ में कूद गए थे । विद्वनाथ  
जी के मन्दिर के निकट ही इसका  
स्मारक है ।

ज्ञानबुद्ध-वि० जिसकी जानकारी अधिक्  
हो ।

ज्ञानविहीन-वि० ज्ञानरहित । अज्ञान ।  
मूढ़ । भूलूँ ।

ज्ञानी-वि० १ जिसे ज्ञान हो । ज्ञानवान्  
जानकार । २ आत्मज्ञानी । ब्रह्मज्ञानी ।

ज्ञानेन्द्रिय-सज्ञा स्त्री० वे पाँच इन्द्रियाँ जिनसे  
जीवों को विषयों का बोध होता है ।

यथा—प्राँख, कान, नाक, जीभ और  
स्पर्शेन्द्रिय ।

ज्ञापक-वि० जतानेवाला । सूचक ।

ज्ञापन-सज्ञा पु० [वि० ज्ञापित, ज्ञाप्य]  
जताने या बताने का कार्य ।

ज्ञापित-वि० जताया हुआ । सूचित ।

ज्ञेय-वि० १ जानने योग्य । २ जो जाना  
जा सके ।

ज्या-सज्ञा स्त्री० १. धनुष की डोरी । २. एक  
प्रकार की रेखा, जो किसी चाप के एक  
सिरे से दूसरे सिरे तक हो । वह रेखा जो  
किसी चाप के एक सिरे से उस व्यास पर  
लम्ब रूप से गिरी हो, जो चाप के दूसरे  
सिर से होकर गया हो । ३. माता ।

ज्याघोष-सज्ञा पु० धनुष की टबार । धनुष  
का शब्द ।

ज्यादती-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ अधिकता ।  
बहुतायत । २ अत्याचार । जबरदस्ती ।  
जुल्म ।

स्वादा-वि० [फा०] अधिक । बहुत ।  
 स्वाफत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दावत । भोज ।  
 २ मेहमानी । आतिथ्य ।  
 ज्यामिति-सज्ञा स्त्री० वह गणित-विद्या  
 जिससे भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण  
 आदि का विचार किया जाता है । क्षेत्र-  
 गणित । रेखागणित ।  
 ज्यारना†\*—क्रि० अ० दे० "जिलाना" ।  
 ज्याबना†\*—क्रि० स० दे० "जिलाना" ।  
 ज्य†—अव्य० दे० "ज्यो" । जैसे ।  
 ज्येष्ठ-वि० १ बड़ा । श्रेष्ठ । २ वृद्ध ।  
 बड़ा भाई ।  
 सज्ञा पु० १ जेठ का महीना । २ पर-  
 मेश्वर ।  
 ज्येष्ठता-सज्ञा स्त्री० १ ज्येष्ठ होने का  
 भाव । बड़ाई । २ श्रेष्ठता ।  
 ज्येष्ठा-सज्ञा स्त्री० १ एक नक्षत्र (घृष्टार-  
 हर्वा नक्षत्र) २ वह स्त्री जो श्री की  
 अवेक्षा अपन पति को अधिक प्यारी हो ।  
 ३ छिपकली । ४ मध्यमा उँगली ।  
 गंगा ।  
 वि० बड़ी ।  
 ज्येष्ठाश्रम-सज्ञा पु० गृहस्थ्य । गृहस्थ  
 आश्रम ।  
 ज्येष्ठाश्रमी-सज्ञा पु० गृहस्थ । गृहस्थाश्रमी ।  
 ज्यो\*—क्रि० वि० १ जिस प्रकार । जैसे ।  
 जिस ढंग से । २ जिस क्षण । जैसे ही ।  
 मुहा०—ज्या त्या=किसी न किसी प्रकार ।  
 ज्या ज्यो= १ जिस नम से । २ जिस  
 माना से । जितना । ज्यो का त्यो=बैसा  
 ही । अपरिर्वर्तित । यथार्थ । ठीक ।  
 ज्योति शास्त्र-सज्ञा पु० ज्योतिष ।  
 ज्योति शिखा-सज्ञा स्त्री० विषम वर्णवृत्तो  
 का एक भेद जिसके पहले दल में ३२ लघु  
 और दूसरे दल में १६ गुरु होते हैं ।  
 ज्योति-सज्ञा स्त्री० १ प्रकाश । उजाला ।  
 द्युति । २ सपट । लो । ३ अग्नि ।  
 ४ सूर्य । ५ नक्षत्र । ६ आँस की  
 पतली के मध्य का बिंदु । ७ दृष्टि ।  
 ८ विष्णु । ९ परमात्मा ।  
 ज्योतिक-सज्ञा पु० दे० "ज्योतिषी" ।  
 फा० ३९

ज्योतिष-वि० ज्योति से भरा हुआ । प्रकाश-  
 मान । उजला ।  
 ज्योतिरिगण-सज्ञा पु० जुगनू । खद्योत ।  
 ज्योतिर्गण-सज्ञा पु० आकाशस्थित सूर्य, चन्द्र,  
 नक्षत्र आदि का समुदाय ।  
 ज्योतिर्मय-वि० प्रकाशमय । जगमगाता हुआ ।  
 ज्योतिर्मान-वि० दे० "ज्योतिर्मय" ।  
 ज्योतिर्लिंग-सज्ञा पु० १. महादेव । शिव ।  
 २ भारतवर्ष में प्रतिष्ठित शिव के प्रधान  
 लिंग जो बारह है ।  
 ज्योतिर्लोक-सज्ञा पु० १ ध्रुवलोक । २. ध्रुव-  
 लोक के अधिपति । परमेश्वर ।  
 ज्योतिर्विद्-सज्ञा पु० ज्योतिषी ।  
 ज्योतिर्विद्या-सज्ञा स्त्री० ज्योतिष ।  
 ज्योतिश्चक्र-सज्ञा पु० नक्षत्रों और राशियों  
 का मंडल ।  
 ज्योतिष-सज्ञा पु० १ वह विद्या जिससे  
 ग्रहों, नक्षत्रों आदि की पारस्परिक दूरी,  
 गति, परिमाण आदि का निश्चय किया  
 जाता है । २ अस्त्रों का एक संहार या  
 रोक ।  
 ज्योतिषी-सज्ञा पु० ज्योतिष शास्त्र का जानने-  
 वाला मनुष्य । ज्योतिर्विद् । दैवज्ञ । गणक ।  
 ज्योतिष्क-सज्ञा पु० १ ग्रह, तारा, नक्षत्र  
 आदि का समूह । २ मेथी । ३ चिनक  
 पुक्ष । चीता । ४ गनियारी ।  
 ज्योतिष्दोम-सज्ञा पु० एक प्रकार का यज्ञ ।  
 ज्योतिष्पथ-सज्ञा पु० आकाश ।  
 ज्योतिष्पुत्र-सज्ञा पु० नक्षत्र-समूह ।  
 ज्योतिष्मती-सज्ञा स्त्री० १ मालकौंगनी ।  
 लता विशप । २ रात्रि । प्रकाशयुक्त रात्रि ।  
 ज्योतिष्मान्-वि० प्रकाशयुक्त । तेजस्वी ।  
 सज्ञा पु० सूर्य । लक्षद्वीप का एक पर्वत ।  
 ज्योत्स्ना-सज्ञा स्त्री० १ चंद्रमा का प्रकाश ।  
 चाँदनी । २ चाँदनी रात । ३ सौफ ।  
 ४ सफेद फूल की तरौड़ी ।  
 ज्योत्नार-सज्ञा स्त्री० १ पका हुआ भोजन ।  
 रसोई । २ भोज । दावत । ज्याफत ।  
 ज्योरा-सज्ञा पु० नाई-बारी आदि काम करने-  
 वाला को दिया जानेवाला अनाज ।  
 ज्योरी†-सज्ञा स्त्री० रस्सी ।

ज्योहत, ज्योहर\*†-सज्ञा पु० आत्महत्या ।  
जोहर ।

ज्यो-अव्य० जो । यदि ।

ज्योतिष-वि० ज्योतिष-संबंधी ।

ज्वर-सज्ञा पु० शरीर की वह गरमी जो  
अस्वस्थता प्रवट करे । ताप । बुखार ।  
ज्वराब्दा-सज्ञा पु० १. ज्वर की एक  
श्रीपथ । २. एक सुगंधित घात ।

ज्वरा-सज्ञा पु० मृत्यु ।

ज्वरात्तं-वि० ज्वरपीडित । जिसे बुखार  
लगा हो ।

ज्वरित-वि० जिसे ज्वर हो ।

ज्वल-सज्ञा पु० ज्वाला । लपट । अग्नि ।  
रोशनी ।

ज्वलंत-वि० १. प्रकाशमान । दीप्त । २. अत्यंत  
स्पष्ट । जैसे ज्वलंत उदाहरण—अत्यन्त  
स्पष्ट उदाहरण ।

ज्वलन-सज्ञा पु० १. जलने का कार्य या  
भाव । जलन । दाह । २. अग्नि । आग ।  
३. लपट । ज्वाला ।

ज्वलित-वि० १. जला हुआ । २. चमकता  
या भस्मकता हुआ । उज्ज्वल ।

ज्वान†-पि० दे० "जवान" ।

ज्वार-सज्ञा स्त्री० १. अन्न-विशेष । २.  
समुद्र के जल की तरंग का चढ़ाव । लहर  
की उठान । भाटा का उलटा ।

ज्वार-भाटा-सज्ञा पु० समुद्र के जल का  
चढ़ाव-उतार या लहर का बढ़ना और  
घटना । इससे चढ़ने को ज्वार और उतरने  
को भाटा कहते हैं ।

ज्वाल-सज्ञा पु० लो । लपट ।

ज्वाला-सज्ञा स्त्री० १. अग्निशिला । लपट ।

२. विष आदि की गरमी । ३. गरमी ।  
ताप । जलन ।

ज्वालादेवी-सज्ञा स्त्री० चारदा पीठ में स्थित  
एक देवी । इनका स्थान बांगड़ा जिले में है ।

ज्वालामुखी-सज्ञा स्त्री० १. जिन स्थान से  
ज्वाला निकलती हो । २. बांगड़ा जिला  
में एक पीठस्थान । ३. महाविद्या-विशेष ।  
४. देश-विशेष । ५. सूरजमुखी ।

ज्वालामुखी पर्वत-सज्ञा पु० वह पर्वत जिसकी  
चोटी में से धुआँ, राख तथा पिघले या  
जले हुए पदार्थ बराबर अथवा समय-समय  
पर निकलता करते हैं ।

## भ

भ-हिंदी व्यंजन वर्णमाला का नववाँ और  
चवथे का चौथा वर्ण, जिसका उच्चारण  
स्थान तालू है ।

सज्ञा पु० १. भस्मावत । वर्षा मिली  
हुई तेज आंधी । २. बृहस्पति । ३. बैरव-  
राज । ४. ध्वनि ।

भंभना-क्रि० अ० दे० "भीखना" ।

भंभार-सज्ञा स्त्री० १. मनमन शब्द ।  
भनकार । २. भीगुर आदि छोटे जानवरों  
के बोलने का शब्द ।

भंभारना-क्रि० स० "भनभन" शब्द  
उत्पन्न करना ।

क्रि० अ० "भनभन" शब्द होना ।

भंभट-वि० जिसमें भंभार हुई हो या हो रही हो ।

भंभुति-सज्ञा स्त्री० भंभार ।

भंभना-क्रि० अ० दे० "भीखना" ।

भंभडा-सज्ञा पु० १. धनी और बाँटेदार  
भाड़ी या पीछा । २. वह वृक्ष जिसके  
पत्ते भंभ गए हो । ३. व्यर्थ की और  
रही चीजों का समूह ।

भंभे-सज्ञा पु० दे० "भंगा" । पहनने का  
एक वस्त्र ।

भंभुलिपा, भंभुली या भंभुली\*†-सज्ञा स्त्री०  
पहनने का वस्त्र । बच्चों के पहनने का  
ढीला कुरता ।

भंभ-सज्ञा पु० १. "भौंभ" । एक गहना ।  
२. एक राजा ।

भंभट-सज्ञा स्त्री० व्यर्थ का भंगडा । टटा ।  
बखड़ा । प्रपञ्च । (वि० भंभटी=भंग-  
डाबू ।)

भक्ताना—क्रि० अ० भनभन शब्द होना ।  
भक्तारना ।

क्रि० स० भनभन शब्द करना ।

भभर—सज्ञा स्त्री० दे० “भभर” ।

भभरा—वि० (स्त्री० भभरी) जालीदार  
ढक्कन जिसमें बहुत से छोटे-छोटे छेद हों ।  
भभरी—सज्ञा स्त्री० १ किसी चीज में  
बहुत से छोटे छोटे छेदों का समूह । जाली ।  
२ दीवारों आदि में बनी हुई छोटी जाली-  
दार खिड़की । ३. आग उठाने या रखने का  
भरना या भभरीदार बरतन ।

भभा—सज्ञा पु० १ वह तेज आँधी जिससे  
साय वर्षा भी हो । २ तेज आँधी ।  
तेज आँधी या वर्षा की आवाज ।

भभानिल—सज्ञा पु० आँधी ।

भभावात—सज्ञा पु० दे० ‘भभा’ । बहुत  
जोर की आँधी । तूफान ।

भभी—सज्ञा स्त्री० फूटी कौड़ी ।

भभोडना—क्रि० स० १ भनभोरना । २  
भटका देना ।

भडा—सज्ञा पु० [स्त्री० भडी] पत्ताका  
निशान । ध्वजा ।

मुहा०—भडा खड़ा करना—१ सैनिक आदि  
एकत्र करन के लिए भडा स्थापित करके  
सकेत करना । २ आडंबर करना । भडा  
गाड़ना या फहराना—१ किसी स्थान,  
विशेषतः नगर या किले आदि पर अपना  
अधिकार करके उसके चिह्न-स्वरूप भडा  
स्थापित करना । २ पूर्ण रूप से अपना  
अधिकार जमाना ।

भडी—सज्ञा स्त्री० छोटा भडा ।

भडूला—वि० १ यह बालक जिसका मुँह  
संस्कार न हुआ हो । २ मुँह संस्कार  
से पहल के बाल । ३ यनी पतियावाला ।  
सपन बुद्ध ।

भप—सज्ञा पु० १. उछाल । फलंग । २ घोड़ों  
के गल का एक आभूषण ।

मुहा०—भप देना—कूदना ।

भपकना—क्रि० अ० १ भपना । भपटना ।  
डरना । भपना ।

भपना—क्रि० अ० १ डबना । छिपना ।

आड में होना । २ उछलना । कूदना ।  
लपकना । ३ टूट पडना । ४ भपना ।  
लज्जित होना ।

भपरी—सज्ञा स्त्री० पालकी की ढाँकने की  
खोली । ओटार ।

भपान—सज्ञा पु० पहड़ी सवारी के लिए एक  
प्रकार की खटोली । भपान ।

भपौला—सज्ञा पु० [ स्त्री० भपौली या  
भपौलिया ] भाँपा या भावा । छावडा ।

भव—सज्ञा पु० गुच्छ ।

भवकार\*—वि० भाँवले रंग का । काला ।

भवरना—क्रि० अ० १ कुछ काला पडना ।  
२ कुम्हलाना । फोका पडना ।

भवा—सज्ञा पु० दे० “भाँवा” ।

भवाना—क्रि० अ० १ भाँवे के रंग का  
हो जाना । कुछ काला पड जाना । भाँवर  
होना । २ अग्नि का मद हो जाना ।

३ घट जाना । ४ कुम्हलाना । मुर-  
भावा । ५ भाँवे से रगडा जाना ।

क्रि० स० १ भाँवे के रंग का कर देना ।  
कुछ काला कर देना । २ आग ठंडी करना ।

३ घटाना । ४ कुम्हला देना । मुरभा  
देना । ५ भाँवे से रगडना या रगड-  
वाना ।

भसना—क्रि० स० १ सिर या तलुए आदि  
में कोई चिकना पदार्थ लगाकर हथेली से  
उसे बारबार रगडना । ३ किसी की  
बहुताकर उसका घन आदि ल लेना ।

भई—सज्ञा स्त्री० दे० ‘भाई’ । छाया ।  
प्रतिबिम्ब ।

भडआई—सज्ञा पु० दे० “भावा” । टोकरा ।  
खाँचा ।

भक—सज्ञा स्त्री० सनक । धुन । दे० “भल” ।  
वि० चमकीला । साफ ।

भकभक—सज्ञा स्त्री० १ व्यर्थ की हुज्जत ।  
फजूल तकरार । २ बकबक ।

भकभका—वि० चमकीला ।

भकभवाहट—सज्ञा स्त्री० चमक ।

भवभेलना—क्रि० स० दे० “भवभोरना” ।

भकभोर—सज्ञा पु० भटका ।

वि० भक्तिदार । तेज ।

भक्तभोरना-प्रि० स० किसी चीज को पकड़-  
कर खूब हिलाना । भटका देना ।  
भक्तभोरना-सज्ञा पु० भटका । धक्का ।  
भक्तना†-क्रि० अ० १. बचवाद करना ।  
व्यर्थ को दाँते करना । २. क्रोध में आवकर  
अनुचित बचन बहना ।  
भक्ता\*-वि० चमकीला । साफ ।  
भक्ताभक्त-वि० साफ और चमकता हुआ ।  
भलाभल । उज्ज्वल । चमकीला ।  
भक्तुराना†-क्रि० अ० भूमना ।  
क्रि० स० भूमने में प्रवृत्त करना ।  
भक्तोर\*†-सज्ञा पु० हवा का भोका ।  
भटका । भोका ।  
भक्तोरना-प्रि० अ० भोका मारना । हिलाना ।  
कँपाना ।  
भक्तौरा-सज्ञा पु० हवा का भोका ।  
भक्तोल\*†-सज्ञा पु० दे० "भक्तोर" ।  
भक्तोलना-वि० अ० दे० भक्तोरना ।  
भक्क-वि० साफ और चमकता हुआ ।  
सज्ञा स्त्री० भक्क ।  
भक्कड-सज्ञा पु० तेज आँधी । अग्न्यड ।  
वि० दे० "भक्की" ।  
भक्की-वि० १. बहुत बकबक करनेवाला ।  
२. जो अपनी धुन के सामने किसी की  
न मुने । सक्की ।  
भक्खना\*†-प्रि० अ० दे० "भोखना" ।  
भल-सज्ञा स्त्री० भीखने का भाव या क्रिया ।  
भूरा०-भल मारना= व्यर्थ समय नष्ट  
करना ।  
भलबेतु-सज्ञा पु० धामदेव ।  
भलना\*†-प्रि० अ० दे० "भीखना" ।  
भली\*-सज्ञा स्त्री० मछली ।  
भगइना-प्रि० अ० लडना । बगह करना ।  
विवाद करना । भगडा करना ।  
भगडा-सज्ञा पु० सडाई । दुज्जत । तबराग ।  
बैर । विरोध ।  
भगडालू-वि० जो दान धान में भगडा करता  
हो । बगहप्रिय । लडाका ।  
भगई\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भगडालू" ।  
भगर-सज्ञा पु० एक प्रकार की चिड़िया ।  
भगरा\*†-सज्ञा पु० दे० "भगडा" ।

भगराऊ\*†-वि० दे० "भगडालू" ।  
भगरी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भगडालू" ।  
भगला\*†-सज्ञा पु० दे० "भगा" ।  
भगा-सज्ञा पु० छोट वच्चों का ढीला बुरना ।  
अगा । जामा । बुरता-विरोध ।  
भगला, भगुली या भगुलिया\*†-सज्ञा स्त्री०  
दे० "भगा" ।  
भग्भर-सज्ञा स्त्री० सुराही । जल ठंडा  
रखने के लिए मिट्टी का एक प्रकार का  
बरतन ।  
भग्भरी-सज्ञा स्त्री० जाली । जालीदार  
करोखा ।  
भग्भी-सज्ञा स्त्री० फूटी बोड़ी । भग्भी ।  
भग्भक-सज्ञा स्त्री० १. भिक्वने का भाव ।  
भडक । २. भुंगलाहट । ३. अप्रिय गध ।  
४. सनफ ।  
भग्भकन\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भग्भक" ।  
भग्भकना-प्रि० अ० १. ठिठकना । विद-  
कना । चमकना । भडकना । २. भुंग-  
लाना । खिजलाना । ३. चौक पडना ।  
भग्भकाना-प्रि० स० १. भडकाना । २.  
चौका देना ।  
भग्भकारना-प्रि० स० १. डपटना । डाँटना ।  
२. दुरदुराना । ३. तुच्छ समझना ।  
भट-क्रि० वि० तुरत । उसी समय । अति  
शीघ्र ।  
भटवना-प्रि० स० १. भटका देना । २.  
जोर से हिलाना । भोका देना । ३. चालाकी  
से या जबरदस्ती किसी की चीज खेना ।  
एँटना ।  
क्रि० अ० रोग या दुख से क्षीण होना ।  
मुहा०-भटवकर=भाँके से । तेजी से ।  
भटका-सज्ञा पु० १. भटवने की क्रिया ।  
हलका धक्का । भोका । २. एक प्रकार  
का पशुवध जिसमें पशु हथियार के एक  
ही आघात से काट डाला जाता है । ३.  
आघात ।  
भटकारना-प्रि० स० दे० "भटवना" ।  
भटपट-पद्वि० अति धीघ्र । तुरत । फौरन ।  
भटिति\*-क्रि० वि० १. भट । घटपट ।  
२. बिना समझे-बुझे ।

भड़-संज्ञा स्त्री० १. दे० "भड़ी"। छोटी बूंदों की वर्षा। लगातार वर्षा। २. आंच। ३. ताले के भीतर का खटका।  
 भड़कना-क्रि० स० दे० भिड़कना। तिरस्कार-पूर्वक कोई बात कहना।  
 भड़भड़ाना-क्रि० स० दे० भिड़कना।  
 भड़न-संज्ञा स्त्री० १. भड़ी हुई चीज। २. भड़ने की क्रिया या भाव।  
 भड़ना-क्रि० अ० १. गिरना। २. टपकना। टूटकर गिरना। ३. साफ किया जाना।  
 भड़प-संज्ञा स्त्री० १. मूठभेद। हाथापाई। लड़ाई। २. क्रोध। ३. आवेश।  
 भड़पना-क्रि० अ० १. डाँटना। डपटना। अचानक चोट करना या आक्रमण करना। वेग से किसी पर गिरना। २. लड़ना। भगडना। ३. जबरदस्ती किसी से कुछ छीन लेना। भटकना।  
 भड़पाभड़प(—संज्ञा स्त्री० हाथापाई। डपटा-डपटी।  
 भड़वेर या भड़वेरी-संज्ञा स्त्री० जंगली वेर।  
 भड़वाना-क्रि० स० [भोडना का प्रे०] भड़ाने का काम दूसरे से कराना। साफ कराना।  
 भडाभड़-क्रि० वि० लगातार।  
 भड़ी-संज्ञा स्त्री० १. लगातार दृष्टि। २. छोटी बूंदों की वर्षा। ३. लगातार बहुत सी बातें कहते जाना या भीजे रखते जगना। ४. भड़ने की क्रिया। ५. ताले के भीतर का खटका।  
 भन-संज्ञा स्त्री० भनकार की ध्वनि।  
 भनक-संज्ञा स्त्री० भनभन शब्द।  
 भनकना-क्रि० अ० १. भनकार का शब्द करना। २. क्रोध आदि में हाथ-पैर पटवना। ३. दे० "भीखना"।  
 भनकपात-संज्ञा स्त्री० थोड़ो की एक बीमारी।  
 भनकार-संज्ञा स्त्री० १. भनभनाहट का शब्द। २. भीगुर का शब्द।  
 भनभनाना-क्रि० अ० भनभन शब्द होना।  
 क्रि० स० भनभन शब्द उत्तरण करना।

भनस-संज्ञा पु० एक प्रकार का पुराना बाजा।  
 भनाभन-संज्ञा स्त्री० भंकार। भनभन शब्द।  
 क्रि० वि० भनभन शब्द सहित।  
 भनिया-वि० दे० "भीना"।  
 भनाहट-संज्ञा स्त्री० भनकार। भनभनाहट।  
 भप-क्रि० वि० जल्दी से। तुरत।  
 भपक-संज्ञा स्त्री० १. पलक गिरने भर का समय। बहुत थोड़ा समय। २. पलक का गिरना। ३. हलकी नींद। भपकी। ४. लज्जा। शर्म।  
 भपकना-क्रि० अ० १. पलक का गिरना। २. भपकी लेना। ऊँचना। ३. भपटना। ४. भेपना। लज्जित होना।  
 भपकाना-क्रि० स० पलकी को बारबार बद करना।  
 भपकी-संज्ञा स्त्री० १. हलकी नींद। २. आँख भपकने की क्रिया। ३. धोखा। चकमा। बहकावा।  
 भपकीहा\*†-वि० [स्त्री० भपकीही] १. नींद से भरा हुआ (नेत्र)। भपकता हुआ। २. मस्त। नशे में चूर।  
 भपट-संज्ञा स्त्री० १. भपटने की क्रिया या भाव। २. वेग से आगे बढ़ना।  
 भुहा-भपट लेना=छीन लेना। जबर-दस्ती छीनना।  
 भपटना-क्रि० अ० आगे बढ़ना। लपकना।  
 भपट करने के लिए देग से बढ़कर / टूटना। छीनना।  
 भपटान-संज्ञा स्त्री० भपटने की क्रिया या भाव। भपट।  
 भपटाना-क्रि० स० [भपटना का प्रे०] किसी को भपटने में प्रवृत्त करना।  
 भपट्टा†-संज्ञा पु० दे० "भपट"।  
 भपताल-संज्ञा पु० संगीत का एक ताल।  
 भपना-क्रि० अ० १. पलकी का गिरना या सुँवना। २. आँखें भपवना। ३. भुवना। ४. भेपना। लज्जित होना।  
 भपनी-संज्ञा स्त्री० टकना।  
 भपस-संज्ञा स्त्री० गुजान होने का भाव।

भपसना-त्रि० घ० लता या पट्ट की टाविया  
या खुब धातु होकर पटना।  
भपावा-सज्ञा पु० शीघ्रता। बहुत जल्दी।  
त्रि० वि० जल्दी में। भप से।  
भपामर्षी-सज्ञा स्त्री० हठवर्धी। शीघ्रता।  
भपाट-सज्ञा स्त्री० स्फूर्ति। शीघ्र। तुल्य।  
भपाटा-सज्ञा पु० चपेट। आक्रमण। पजे  
से हमला करना या चार करना।  
भपाता-त्रि० ग० १ मुँदा। बद करना  
(श्रीया या पलवा का)। २ भुगना।  
भपास-सज्ञा स्त्री० १ भीमी। छाटी छाटी  
बूँदें। झड़ी। २ टगाई। धूलता।  
सज्ञा पु० धूल। ठग। धोखेबाज।  
भपासिया-वि० छनी। कपटी।  
भपित-वि० १ भपा हुआ। मुँदा हुआ।  
२ जिगमें नींद भरी हो। उनीदा। ३  
लज्जित।  
भपेट-सज्ञा स्त्री० दे० "भपट"। चपेट।  
भपेटना-क्रि० स० आक्रमण करने देना लेना।  
छोप लेना। दबोचना।  
भपेटा†-सज्ञा पु० १ चपट। भपट।  
२ भूत प्रेतादिकृत बाधा। ३ आक्रमण।  
भपोला-सज्ञा पु० छावडा। एक तरह की  
बड़ी टोचरी जिससे ऊपर ढक्कन हो।  
भपोली-सज्ञा स्त्री० भावा।  
भप्पान-सज्ञा पु० दे० "भपान"।  
भबरीला या भबरा-वि० [स्त्री० भबरी]  
बहुत लंबे लंबे खिले हुए बाल वाला।  
भबरा†\*-वि० दे० "भबरीला"।  
भबा-सज्ञा पु० दे० "भबा"। गुच्छा।  
भबार, भबारी†-सज्ञा स्त्री० टटा। बखेडा।  
भबिया†-सज्ञा स्त्री० १ छोटा भबा। छोटा  
फुंदना। २ मिया का एक गहना।  
भनुआ-वि० भबरा। बड़े बड़े बाल वाला।  
भनूकना†-त्रि० अ० चमकना। चोचना।  
भब्बा-सज्ञा पु० १ फुंदना। लटकन।  
२ गुच्छा। स्तवक।  
भम-सज्ञा पु० भोक्ता। भोजनकर्ता।  
भमव-सज्ञा स्त्री० १ प्रकाश। उजाला।  
२ भमभ्रम शब्द। ३ तखर की चाल।  
भमवदार-सज्ञा पु० चटक। चमकीला।

भमवना-त्रि० घ० १. चमकना। दम-  
कना। २ भावना। ३ भमभ्रम शब्द  
होना। भनवार होता। ४ लडाई में  
हथियारा या चमकना और मनवना।  
५ घाट दिखलाना। ६ भमभ्रम शब्द  
करना। ७ भनवार करने हुए नाचना।  
भमवाना-त्रि० स० १ चमकाना। चमक  
देना करना। २ धानूषण या हथियार  
आदि बजाना या चमकाना।  
भमवारा-वि० बरगनेवाना (वादल)।  
भमवरी-सज्ञा स्त्री० भमव। भनव। चमव।  
भमवरीला-वि० चमकीला। चंचल।  
भमभ्रम-सज्ञा स्त्री० १ भ्रमभ्रमा आदि के  
बजने का भमभ्रम शब्द। छमछम। २  
पानी बरसने का शब्द।  
वि० चमकना हुआ।  
क्रि० वि० १ भमभ्रम शब्द के साथ।  
२ चमक-दमक के साथ। भमभ्रम।  
३ लगातार। एक के बाद एक।  
भमना-क्रि० अ० भुवना। दबना।  
भमाका-सज्ञा पु० वर्षा की झड़ी। १ पानी  
बरसने या गहनों के बजने का भमभ्रम  
शब्द। २ ठमक। नमरा।  
भमाभ्रम-क्रि० वि० १ दमक के साथ।  
२ भमभ्रम शब्द सहित। ३ लगातार।  
भमाट-सज्ञा पु० भुरमुट।  
भमाना-वि० अ० छाना। घेरना।  
क्रि० अ० दे० "भमाना"। एकत्र करना।  
भमरा-सज्ञा पु० बालोवाला पशु। कोई प्यारा  
बच्चा। वह बच्चा जो ढील-ढाले कपड़े  
पहने हो।  
भमेला-सज्ञा पु० १ बलडा। ककट।  
२ भीडभाड।  
भमेलिया-सज्ञा पु० भमेला करनेवाला।  
भगडालू।  
भर-सज्ञा स्त्री० १ पानी गिरने का स्थान।  
निर्भर। २ भरना। साना। लान।  
३ समूह। ४ तेजी। वेग। ५ झड़ी।  
लगातार वर्षा। ६ \* ताप।  
भरवना\*-त्रि० अ० १ दे० "भलकना"।  
२ दे० "भिडकना"।

भरभर-सज्ञा स्त्री० जल के बहने, बरसने या हवा के चलने आदि का शब्द।

सज्ञा पु० सुराही।

भरभराना-क्रि० स० भरभर शब्द के साथ गिराना। भाड़ देना।

क्रि० अ० भरभर शब्द उत्पन्न करना। भरभर शब्द के साथ जलना।

भरना-सज्ञा स्त्री० १ भरने की क्रिया।

२ वह जो कुछ भरकर निकला हो।

भरना†-क्रि० अ० १ दे० "भडना"।

२ ऊँची जगह से निर्भर का गिरना।

सज्ञा पु० १. ऊँचे स्थान से गिरनेवाला जल-प्रवाह। निर्भर। २ एक प्रकार की छलनी, जिसमें रखकर अनाज छाना जाता है। ३ लंबी डाँडी की छेददार चिपटी करछी। पीना।

वि० भरनेवाला। जो भरता हो।

भरनि†-सज्ञा स्त्री० दे० "भरना"।

भरप†-सज्ञा स्त्री० १ भोका। भूकोर।

२ बेग। तेजी। ३. टेक। ४ चिक।

चिलमन। परदा। ५ दे० "भडप"।

भरपना†-क्रि० अ० १. भोका देना।

बौछार मारना। २ दे० "भडपना"।

भरपेटा-सज्ञा पु० भूषट।

भरवेर-सज्ञा पु० जगली वेर।

भरसना-क्रि० अ० भुलसना, सूखना।

भरहर\*-वि० दे० "भरहरा"।

भरहरना-क्रि० अ० भरभर शब्द करना।

भरहराना-क्रि० अ० हवा के भोके से पत्तों का शब्द करना।

क्रि० स० भटकना। भाड़ना। पैड की डाल हिलाना।

भराभर-क्रि० वि० १ भरभर शब्द सहित। २ लगातार। ३ बेग सहित।

भरी-सज्ञा स्त्री० १ पानी का भरना।

खेत। चरमा। २ वह किराया या कर जो किसी बाजार या सट्टी में जाकर सीदा बेचनेवालों से प्रतिदिन लिया जाता है।

३ दे० "भडी"। लगातार वर्षा।

भरोसा-सज्ञा पु० भँकरी। गवाह। हवा

या रोशनी के लिए दीवारों में बनी हुई भँकरीदार छोटी खिड़की।

भर्रर-सज्ञा पु० १. कलियुग। २. भाँभ। एक बाजा।

भर्ररी-सज्ञा पु० शिव।

सज्ञा स्त्री० भाँभ। खँजरी। टफली। बाजा विशेष।

भर्ररीक-सज्ञा पु० देश। शरीर। चित्र।

भल-सज्ञा पु० १ दाह। जलन। आँच।

२ उत्कट इच्छा। उग्र कामना। ३.

क्रोध। गुस्ता। ४ समूह।

भलक-सज्ञा स्त्री० १. चमक। दमक।

आभा। २. आकृति का आभास। प्रति-

बिम्ब।

भलकदार-वि० चमकीला।

भलकना-क्रि० अ० १. चमकना। दमकना।

उज्ज्वल होना। २. कुछ कुछ प्रबल होना।

आभास होना।

भलका-सज्ञा पु० शरीर में पड़ा हुआ छाला।

फकीला।

भलकाना-क्रि० स० १. चमकाना। दम-

काना। २. दिखलाना। कुछ आभास

देना।

भलकार-सज्ञा पु० जलग। भलक। आभा।

भलकी-सज्ञा स्त्री० कटाक्ष। दुष्टि। भाँवली।

भलभल-सज्ञा स्त्री० चमक। दमक। तेज।

तीक्ष्ण।

क्रि० वि० चमकता हुआ।

भलभलाना-क्रि० अ० चमकाना।

क्रि० स० चमकाना। चमकमाना।

भलभलाहट-सज्ञा स्त्री० चमक। दमक।

भलना-क्रि० स० हिलाना-डुलाना। पला

करना या हँकना। हवा करने के लिए

कोई चीज हिलाना।

क्रि० अ० १ इधर-उधर हिलना। २ शेखी

बघारना। डींग हँकना। ३ दे० "भलना"।

भलमल-सज्ञा पु० १. हलकी रोशनी। अँधेरे

में थोड़ा प्रकाश। २ चमक-दमक।

क्रि० वि० दे० "भलमल"।

भलमला-वि० चमकीला।

भलमलाना-क्रि० अ० १. रह-रहकर

चमाना । चमचमाना । २. प्रकाश वा  
हिलना-डोलना ।

त्रि० स० बिरी ज्योति या ली को हिलाना-  
डोलना ।

भलरा†-सज्ञा पु० एक प्रकार का पक्वान ।  
भालर ।

भलराना\*†-त्रि० अ० बढ़ना । फैलवार  
छाना ।

भलवाना-त्रि० स० भलने या भालने का  
याम दूसरे से बराना ।

भला\*†-सज्ञा पु० १ हलकी वर्षा । २ भालर,  
तोरण या वदनवार आदि । ३ पखा ।  
४ समूह ।

सज्ञा स्त्री० धूप ।

भलाभल-वि० धूप चमचमाता हुआ ।  
चमाचम ।

भलाभली-वि० चमकदार । चमकीला ।  
सज्ञा स्त्री० भलाभल का भाव ।

भलाना-क्रि० अ० १. साफ करना । २.  
टाँका लगवाना । किसी वस्तु को रंगों  
आदि से जुड़वाना ।

भलाबोर-सज्ञा पु० १ बारचोबी । एक  
प्रकार की आतिशबाजी । २. काँटा ।  
भाड़ी । ३. चमक ।

वि० चमकीला । चमकदार ।

भलामल†-सज्ञा स्त्री० चमक । दमक ।  
वि० चमकीला ।

भल्ल-सज्ञा स्त्री० पागलपन । सनक ।  
सज्ञा पु० विद्रूपक । एक बाजा । लपट ।

भल्लकठ-सज्ञा पु० बबूतर । परैया ।

भल्लक-सज्ञा पु० भाँक । मजीरा ।

भल्ला-सज्ञा पु० १ बड़ा टोकरा । २  
वर्षा । ३ बोछारा । †४ पागल । मूर्ख  
५ बड़ा टोकरा ।

भल्लाना-त्रि० अ० चिढ़ना । खीजना ।

क्रि० स० चिढ़ाना । खिझाना ।

भल्लिका-सज्ञा० स्त्री० १. तीलिया । २  
शरीर का मेल । ३. तेज ।

भल्य-सज्ञा पु० १ मछली । २ मकर ।  
मगर । ३ ताप । गरमी । ४ धन ।

५ मीन राशि । ६ दे० "भल्य" ।

भल्यकेतु, भल्यकेतन-गुप्ता पु० वामदेव ।  
भल्यनिवेत्तन-सज्ञा पु० समुद्र । जलाशय ।

भपाङ्ग-सज्ञा पु० अनिष्ट । श्रीकृष्ण का  
पीत । वामदेव का दूसरा रूप ।

भपाशन-सज्ञा पु० १. मत्स्यमाजी । २.  
सूँस । जलजन्तु-विशेष ।

भहनना\*-त्रि० अ० १ भन्नाटे या मन्नाटे में  
ग्राना । २ रोएँ खड़े होना । ३ भन-  
भन शब्द होना ।

भहनना\*-त्रि० अ० १ भरभर शब्द बरना ।  
२ शिथिल पड़ना । ढीला होना ।

त्रि० स० भिड़वना । भल्लाना ।

भहनाना-त्रि० स० १ भहनना का सवर्मक  
रूप । २ भनकार करना ।

भहनाना-त्रि० अ० १ शिथिल होकर या  
भरभर शब्द के साथ गिरना । २ भल्लाना ।  
खिजलाना । ३ हिलाना ।

भाई-सज्ञा स्त्री० १ परछाई । प्रतिबिम्ब ।  
छाया । भलव । २ अधकार । अधेरा ।  
३ धोला । छल । ४ प्रतिशब्द । प्रति-  
ध्वनि । ५ एक प्रकार के हलके वाले  
धब्बे जो रक्त विकार से मनुष्या के  
शरीर पर पड़ जाते हैं ।

मुहा०-भाई बताना=धोखा देना ।

भाँक-सज्ञा स्त्री० भाँकने की क्रिया या भाव ।

भाँकड़ या भाँकर-सज्ञा पु० बटिदार  
भाड़ी । बरील के सूखे भाड़ ।

भाँकना-त्रि० अ० १ छिपकर देखना ।  
छोट से देखना । २ इधर-उधर भ्रुकवर  
देखना ।

भाँकनी†\*-सज्ञा स्त्री० दे० "भाँकी" ।

भाँका-सज्ञा पु० दे० "भरोवा" ।

भाँकी-सज्ञा स्त्री० १ भाँकने की क्रिया  
या भाव । दर्शन । अवलोकन । २ दृश्य ।  
३ भरोवा ।

भाँख-सज्ञा पु० एक प्रकार का हिरन ।  
एक वन्य पशु । बारहसिंघा ।

भाँखना\*†-त्रि० अ० दे० "भीखना" ।

भाँखर-सज्ञा पु० दे० "भखाड़" ।

भाँगला-वि० ढीला ढाला बपड़ा ।

भाँगा†-सज्ञा पु० दे० "भागा" ।

भांभ-सज्ञा स्त्री० १ मजीरा । भाल ।  
एक प्रकार का बाजा । २. शोध । गुस्ता ।  
३ पाजीपन । घरास्त । सूना पुआ या  
तालाब । ४. दे० "भांभ" ।

भांभट-सज्ञा स्त्री० भगडा । बलह ।  
विरोध । टटा ।

भांभडी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भांभग" ।  
भांभ ।

भांभन-सज्ञा स्त्री० पैर में पहनने का एक  
प्रकार का गहना । पैजनी । पायल ।

भांभर\*†-सज्ञा स्त्री० १ भांभन । पैजनी ।  
२ छलनी ।

वि० १ पुराना । जर्जर । २ छेदवाला ।

भांभरी-सज्ञा स्त्री० १ भांभ वाजा ।  
भाल । २ भांभन नामक गहना । ३ बहुत  
छेदवाली बलछी । भरना ।

भांभा-सज्ञा पु० भोगुर । बीडा विशेष ।  
भांभिया-वि० क्रोधी । रिसवा ।

सज्ञा पु० भांभ बजानेवाला ।  
भांभी-सज्ञा स्त्री० खेल-विशेष ।

मुहा०-भांभी कौडी=फूटी कौडी । कुछ  
नहीं । निरर्थक ।

भांढ-सज्ञा पु० १. गुप्ताग के ऊपर के बाल ।  
पशम । २. अत्यन्त तृच्छ वस्तु ।

भांण-सज्ञा स्त्री० १ नींद । भपकी । २  
पर्दा । चिक । ३. डफकन । टट्टर । टट्टी ।

सज्ञा पु० उच्छल-कूद ।  
भांणना-क्रि० स० १ डाँचना । आड म  
करना । २ भेचना । लजाना । शरमाना ।

भांणो-सज्ञा स्त्री० १. छिनाल स्त्री ।  
२. धोवन ।

भांणो†-सज्ञा स्त्री० १ डाँकने की टोकरी ।  
२ मूँज की पिटारी । ३ भागी ।

भांणना-क्रि० स० भाँवे से रगड़कर (हाथ  
पैर आदि) धोना ।

भांवर† या भांवरा-वि० १ कुछ काला ।  
२ मलिन । ३ मुरझाया या कुम्हलाया  
हुआ । ४ मिथिल । मद । सुस्त ।

भांवली-सज्ञा स्त्री० १ भलक । २ झींझ  
की कनखी ।

भांवा-सज्ञा पु० अधिक पकने से जली

हुई ईंट का टुकड़ा जिसमें रगड़कर मेल  
छुटाते हैं ।

भांसना-प्रि० स०. धोखा देना । ठगना ।  
भांसा-सज्ञा पु० बहकाने की क्रिया । फुस-  
लावा । धोखा-धड़ी ।

यौ०-भांसा-पट्टी=धोखा-धड़ी ।  
भांसा-वि० फुसलानेवाला । ठग । धूर्त ।

भा-सज्ञा पु० उपाध्याय । मैथिल और गुजराती  
ब्राह्मणों की एक उपाधि ।

भाऊ-सज्ञा पु० एक प्रकार का छोटा भाड ।  
भाग-सज्ञा पु० फेन । गाज ।

भागड\*†-सज्ञा पु० दे० "भगडा" ।  
भाभा-सज्ञा पु० गाँजा । भाँग ।

भाट-सज्ञा पु० निकुञ्ज । लता आदि से  
पिरा हुआ स्थान ।

भाटा-सज्ञा स्त्री० भुइयावला । जूही ।  
भाड-सज्ञा पु० १ कँटीला सघन पेड़ ।

२ एक तरह की आतिशबाजी । ३.  
भाड के आकार का रोशनी करने का  
सामान । ४ गुच्छा । ५ भटका ।

सज्ञा स्त्री० १ भाडने की क्रिया । २  
फटकार । डाँट-डपट । ३ मन से भाडने  
की क्रिया ।

यौ०-भाड-फानूस=शीशे के भाड, हड्डी,  
गिलास आदि। भाड फूँक=मन से भाडने की  
क्रिया । मनोपचार ।

भाडखड-सज्ञा पु० जंगल । निर्जन वन ।  
भाड भलाड-सज्ञा पु० १ कँटीदार भाडियों  
का समूह । २ निर्रम्भी चीजें । ३. चौहूड वन ।

वीरान जंगल ।  
भाडदार-वि० १ सघन । घना । २ कँटीला ।

कँटीदार । ३ एक प्रकार का बसीदा ।  
भाडन-सज्ञा स्त्री० १ बुहारन । कूड़ा ।

वह जो भाडने पर निकल । २ वह  
कपड़ा जिससे कोई चीज साफ की जाए ।  
साफ करने का कपड़ा ।

भाडना-क्रि० स० १ निकासना । डूर  
करना । हटाना । २ अपनी योग्यता  
दिखाने के लिए गडकर वाते करना ।

गर्व साफ करना । भाड लगाना । बुहा-  
रना । कपड़े साफ करना । भटका देना

प्रवास या वायु आने के लिए जड़ा रहता है। लटपड़िया। २. चिब। चिलमन। भिलाना-प्रि० स० दूसरे को भेजने के लिए मजदूर बनना। दूसरे को भेजना। भिल्लड-वि० पतली और भोकरा (कपडा)। जो गाड़ा न हो।

भिल्लिका-संज्ञा स्त्री० भीगुर। कीट-विशेष। भिल्ली-संज्ञा पु० भीगुर।

सज्ञा स्त्री० ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े। महीन पर्दा या जाला। पतली चमड़ी की तह।

भोकिना-प्रि० अ० दे० "भीखना"। पछताना।

भोका-सज्ञा पु० उतना अन्न जितना एक बार चक्की में ढाला जाता है।

भोख-सज्ञा पु० कुडन। भीखने का भाव।

भोखन-क्रि० अ० १ पछनाना। वृद्धता। खोजना। २ दुखड़ा रोना।

सज्ञा पु० १ भीखने की क्रिया या भाव। २ दुःख का वर्णन। दुखड़ा।

भोगट-सज्ञा पु० मल्लाह। केवट। दास। धीवर। माभी।

भोगा-सज्ञा पु० १ एक प्रकार की मछली। २ एक प्रकार का धान।

भोगुर-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अंधरे घरो, खता और मैदानों में होता है। इसकी आवाज बहुत तेज भी भी होती है। निल्ली।

भोसी-सज्ञा स्त्री० छोटी छोटी बूँदा की बर्षा। पहरा।

भीखना-क्रि० अ० दे० "भीखना"। भीन-वि० भीना। पतला।

भीना-वि० १ बहुत महीन। बारीक। पतला। २ जिसमें बहुत से छद हो। ३ दुबला। दुबल।

भीरका-सज्ञा स्त्री० भीगुर। कीट।

भील-सज्ञा स्त्री० १ बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय। २ बहुत बड़ा तालाब। ताल।

भीलर-सज्ञा पु० छोटी भील।

भीबर-सज्ञा पु० धीवर। मल्लाह।

भुंभलाना-प्रि० अ० विभनाना। बिड़-विधाना।

भुड-सज्ञा पु० समूह। वृन्द। गगह।

भुडो-सज्ञा स्त्री० १. सूँटी। २. भाड़ी।

३. गुच्छा। ४. सामुग्रो का एक दल-विशेष।

भुवना-प्रि० अ० १. नीचे की ओर लटपटना। निहुरना। गवना। २ किसी पदार्थ का किसी ओर मुड़ना। ३ लपटना।

४ प्रवृत्त होना। दत्त-चित्त होना। ५ नष्ट होना। विनीत होना। ६ लज्जा से घबरात होना। ७ अभिवादन करना।

८ मुड़ होना।

मुहा०-भुव-भुव पडना=तरो या नींद के कारण अच्छी तरह खड़ा न रह सकना।

भुकमुख-सज्ञा पु० दे० "भुटपुटा"।

भुकराना-क्रि० अ० भोका खाना।

भुकवाना-प्रि० स० भुवाने का काम दूसरे से कराना।

भुकाना-प्रि० स० १ किसी खड़ी चीज को टेढ़ा करके नीचे की ओर लाना। निहुरना। नवाना। २ किसी पदार्थ को किसी ओर घुमाना। ३ प्रवृत्त करना।

४ विनीत बनाना। ५ नीचा दिखाना।

भुकामुखी-सज्ञा स्त्री० दे० "भुटपुटा"।

भुकाव-सज्ञा पु० १ किसी ओर लटपटने, प्रवृत्त होने या भुवने की क्रिया या भाव।

२ ढाल। उतार। ३ मन का किसी ओर लगना। प्रवृत्ति।

भुकावट-सज्ञा स्त्री० दे० "भुकाव"।

भुटपुटा-सज्ञा पु० ऐसा समय जब कि कुछ अचकार और कुछ प्रवास हो। भुवभुन।

भुटग-वि० भोटेवाला। जटावाला।

भुडलाना-प्रि० स० १ भूटा ठहराना।

भूटा बनाना। २ भूट बहुर धोना देना।

मुहा०-भुंहु भुडलाना=नाम मात्र भोजन करना। कुछ खाना।

भुडाई\*†-सज्ञा स्त्री० भूड का भाव।

भूटापन। प्रमत्तता।

भुडाना-क्रि० स० भूटा ठहराना।

भुनक-सज्ञा पु० नूपुर का शब्द ।  
 भुनकना-क्रि० अ० भुनभुन शब्द करना ।  
 भुनका-सज्ञा पु० धोखा ।  
 भुनकार-वि० [स्त्री० भुनकारी] पतला ।  
 महीन । बारीक ।  
 भुनभुन-गज्ञा पु० नूपुर आदि के बजने का शब्द ।  
 भुनभुना-सज्ञा पु० बच्चों का एक प्रकार का खिलौना, जिसे हिलाने से भुन-भुन शब्द होता है । घुनघुना ।  
 भुनभुनाना-क्रि० अ० भुन-भुन शब्द होना ।  
 क्रि० स० भुन-भुन शब्द उत्पन्न करना ।  
 भुनभुनी-सज्ञा स्त्री० हाथ या पैर के बहुत दूर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें होनेवाली सनसनाहट । नूपुर । धुंधल ।  
 भुनरो-सज्ञा स्त्री० दे० "भोपड़ी" ।  
 भुप्पा-सज्ञा पु० भव्वा ।  
 भुबभुबी-सज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक गहना ।  
 भुमका-सज्ञा पु० १. कान का एक गहना ।  
 कर्णफूल । २. एक पीधा । ३. फल-विशेष ।  
 भुमाना-क्रि० स० किसी को भूमने में प्रवृत्त करना । धीरे धीरे हिलाना ।  
 भुरकुट-वि० सूखा । कृश ।  
 भुरकुटिया-गज्ञा पु० एक प्रकार का लोहा ।  
 वि० कृश । दुर्बल ।  
 भुरकुन-सज्ञा पु० घूर ।  
 भुरभुरी-सज्ञा स्त्री० कैंपकैंपी ।  
 भुरना-क्रि० स० १. सूखना । दे० "भुराना" ।  
 २. बहुत अधिक दुखी होना या शोक करना । ३. दुर्बल होना । धुलना ।  
 भुरभाना । कुम्हलाना ।  
 भुरमुट-गज्ञा पु० १. पत्तों की आड़ ।  
 भाड़ । २. समूह । मंडली ।  
 भुरवव-सज्ञा पु० किसी वस्तु के सूखने पर उसमें से निकला हुआ अंश ।  
 भुरवाना-क्रि० स० सुखाने का काम दूसरे से कराना ।  
 भुरसना\*†-क्रि० अ० दे० "भुलसना" ।  
 भुराना†-क्रि० स० सुखाना । कुम्हलाना ।

क्रि० अ० १. सूखना । २. दुख या भय से घबरा जाना । ३. दुबला होना । सूखना ।  
 भुरभाना ।  
 भुरावत†-सज्ञा पु० सूखने के कारण कम होने-  
 वाला अंश ।  
 भुरियाना-क्रि० स० बीनना । सोहना ।  
 निराना । खेत की घास निकाल देना ।  
 भोली में भरना ।  
 भुरी-सज्ञा स्त्री० शरीर की त्वचा की सिकुड़न । सिकुड़ । सिक्कन ।  
 भुलना†-गज्ञा पु० दे० "भूला" ।  
 वि० भूलनेवाला ।  
 क्रि० अ० हिलना । लटकना । हिंडोले पर लटककर हिलना ।  
 भुलनी-सज्ञा स्त्री० १. नाक में पहनने का एक प्रकार का गहना । नथुनी । २. दे० "भूमर" ।  
 भुलभुली-सज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक प्रकार का गहना ।  
 भुलमुला†-वि० दे० "भिलमिल" ।  
 भुलसन-सज्ञा स्त्री० भुलसने की क्रिया या भाव । शरीर भुलसानेवासी गरमी ।  
 भुलसना-क्रि० अ० १. पीड़ा जल जाना ।  
 भौसना । २. अधिक गरमी के कारण सूखकर काला पड़ जाना । मुरझा जाना ।  
 भुनना ।  
 क्रि० स० १. अंशतः जलाना कि रंग काला पड़ जाय । भौसना । २. अघजला कर देना ।  
 भलसवाना-क्रि० स० [भुलसना का प्रे०]  
 भुलसने का काम दूसरे से कराना ।  
 भुलसाना-क्रि० स० १. दे० "भुलसना" ।  
 २. दे० "भुलसवाना" ।  
 भुलाना-क्रि० स० १. हिंडोला डलाना ।  
 हिलाना । लटकाना । २. किसी को भूलने में प्रवृत्त करना । ३. किसी को बहुत अधिक समय तक आसरे में रखना ।  
 भुलावना\*†-क्रि० स० दे० "भुलाना" ।  
 भुल्ला-सज्ञा स्त्री० एक तरह की कुरती ।  
 दे० "भुल्ला" ।  
 भुहिरना†-वि० स० लदना । लादा जाना ।

प्रवाश या वायु श्राने के लिए जडा रहता है। सडसडिया। २. चिय। चिलमन।  
 भिलाना-त्रि० स० दूसरे को भेसने के लिए गजबूर करना। दूसरे को भेलाना।  
 भिल्लड़-वि० पतला और भेकग (कपडा)। जो गाढ़ा न हो।  
 भिल्लिका-सज्ञा स्त्री० भीगुर। कीट-विशेष।  
 भिल्ली-सज्ञा पु० भीगुर।  
 सज्ञा स्त्री० ऐसी पतली तह जिसके नीचे की चीज दिखाई पड़े। महीन पर्दा या जाला। पतली चमड़ी की तह।  
 भीकना-त्रि० अ० दे० "भीखना"। पछताना।  
 भीका-सज्ञा पु० उतना अन्न जितना एक बार चक्की में ढाला जाता है।  
 भीख-सज्ञा पु० कुठन। भीखने का भाव।  
 भीखना-क्रि० अ० १ पछताना। वृद्धना। खीजना। २ दुखड़ा रोना।  
 सज्ञा पु० १ भीखने की निया या भाव। २ दुख का वर्णन। दुखड़ा।  
 भीगट-सज्ञा पु० मल्लाह। केवट। दास। धीवर। मागी।  
 भीगा-सज्ञा पु० १ एक प्रकार की मछली। २ एक प्रकार का धान।  
 भीगुर-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अंधेरे घरो, खतो और मैदानों में होता है। इसकी आवाज बहुत तेज भी भी होती है। भिल्ली।  
 भींसी-सज्ञा स्त्री० छोटी छोटी बूंदों की बर्षा। फुहार।  
 भीखना-क्रि० अ० दे० "भीखना"।  
 भीन-वि० भीना। पतला।  
 भीना-वि० १ बहुत महीन। वारीक। पतला। २ जिसमें बहुत से छद हो। ३ दुबला। दुर्बल।  
 भीरका-सज्ञा स्त्री० भीगुर। कीट।  
 भील-सज्ञा स्त्री० १ बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय। २ बहुत बड़ा तालाब। ताल।  
 भीलर-सज्ञा पु० छोटी भील।  
 भीवर-सज्ञा पु० धीवर। मल्लाह।

भुंभलाना-त्रि० अ० खिन्नाना। चिढ़-चिड़ाना।  
 भुंड-सज्ञा पु० समूह। वृन्द। गरोह।  
 भुंडी-सज्ञा स्त्री० १. बूँटी। २. भाड़ी। ३. गुच्छा। ४. साधुओं का एक दल-विशेष।  
 भुवना-त्रि० अ० १ नीचे की ओर लटकना। निहुरना। नबना। २ किमी पदार्थ का किमी ओर मुड़ना। ३ लचना। ४ प्रवृत्त होना। दत्त-चित्त होना। ५ नम्र होना। विनीत होना। ६ लग्ना से अवनत होना। ७ अभिवादन करना। ८ झुड होना।  
 मुहा०-भुव भुक पडना=नशे या नींद के कारण अच्छी तरह खडा न रह सकना।  
 भुकमुख†-सज्ञा पु० दे० "भुटपुटा"।  
 भुकराना-त्रि० अ० भोवा खाना।  
 भुकवाना-क्रि० स० भुवाने का काम दूसरे से कराना।  
 भुकाना-क्रि० स० १ किसी खड़ी चीज को टेढ़ा करके नीचे की ओर लाना। निहुराना। नवाना। २ किसी पदार्थ को किसी ओर धुमाना। ३ प्रवृत्त करना। ४ विनीत बनाना। ५ नीचा दिखाना।  
 भुकामुखी-सज्ञा स्त्री० दे० "भुटपुटा"।  
 भुकाव-सज्ञा पु० १ किमी ओर लटकने, प्रवृत्त होने या भुकने की क्रिया या भाव। २ ढाल। उतार। ३ मन का किसी ओर लगना। प्रवृत्ति।  
 भुकावट-सज्ञा स्त्री० दे० "भुकाव"।  
 भुटपुटा-सज्ञा पु० ऐसा समय जब कि कुछ अन्धकार और कुछ प्रकाश हो। भुवमुख।  
 भुटग-वि० भोटेवाला। जटावाला।  
 भुठलाना-क्रि० स० १ भूठा ठहराना। भूठा बनाना। २ भूठ बहकर धोखा देना।  
 मुहा०-मुंह भुठलाना=नाम मात्र भोजन करना। कुछ खाना।  
 भुठाई\*†-सज्ञा स्त्री० भूठ का भाव। भूठापन। असत्यता।  
 भुठाना-त्रि० स० भूठा ठहराना।

भुनक-सज्ञा पु० नूपुर का शब्द ।  
 भुनकना-क्रि० अ० भुनभुन शब्द करना ।  
 भुनका-सज्ञा पु० धोखा ।  
 भुनकार-क्रि०-वि० [स्त्री० भुनकारी] पतला ।  
 महीन । बारीक ।  
 भुनभुन-सज्ञा पु० नूपुर आदि के बजने का शब्द ।  
 भुनभुना-सज्ञा पु० बच्चों का एक प्रकार का खिलौना, जिसे हिलाने से भुन-भुन शब्द होता है । घुनघुना ।  
 भुनभुनाना-क्रि० अ० भुन भुन शब्द होना ।  
 क्रि० स० भुन-भुन शब्द उत्पन्न करना ।  
 भुनभुनी-सज्ञा स्त्री० हाथ या पैर के बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण उसमें हानवाली सनरानाहट । नूपुर । धुंधरू ।  
 भुनरी-सज्ञा स्त्री० दे० 'भोपड़ी' ।  
 भुप्पा-सज्ञा पु० भव्वा ।  
 भुवभुवी-सज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक गहना ।  
 भुमका-सज्ञा पु० १. कान का एक गहना ।  
 कर्णफूल । २. एक पीछा । ३. फल-विशेष ।  
 भुमाना-क्रि० स० किसी को भूमन में प्रवृत्त करना । धीरे धीरे हिलाना ।  
 भुरकुट-वि० सूता । कुश ।  
 भुरकुटिया-सज्ञा पु० एक प्रकार का लोहा ।  
 वि० कुश । दुबल ।  
 भुरकुन-सज्ञा पु० चूर ।  
 भुरभुरी-सज्ञा स्त्री० केंपकेंपी ।  
 भुरना-क्रि० स० १ सूखना । दे० भुराना ।  
 २ बहुत अधिक दुखी होना या शोक करना । ३ दुर्बल होना । घुलना ।  
 भुरभाना । कुम्हलाना ।  
 भुरमुट-सज्ञा पु० १ पत्ता की आड़ ।  
 भाड़ । २ समूह । मंडली ।  
 भुरवन-सज्ञा पु० किसी वस्तु के सूखने पर उसमें से निकला हुआ अंश ।  
 भुरवाना-क्रि० स० सुखाने का काम दूसरे से कराना ।  
 भुरसना\*†-क्रि० अ० दे० "भुलसना" ।  
 भुराना†-क्रि० स० सुखाना । कुम्हलाना ।

नि० घ० १ सूखना । २ दुःख या भय से घबरा जाना । ३ दुर्बल होना । सूखना ।  
 भुरगाना ।  
 भुरावन†-सज्ञा पु० सूखने के कारण कम होने-वाला अंश ।  
 भुरियाना-क्रि० स० बीनना । सोहना ।  
 निराना । खेत की घास निकाल देना ।  
 भोली में भरना ।  
 भुरी-सज्ञा स्त्री० शरीर की त्वचा की सिकुड़न । सिलवट । शिवन ।  
 भुलना†-सज्ञा पु० दे० "भूला" ।  
 वि० भूलनेवाला ।  
 क्रि० अ० हिलना । लटकना । हिंडोले पर चढ़कर हिलना ।  
 भुलनी-सज्ञा स्त्री० १ नाक में पहनने का एक प्रकार का गहना । नथुनी । २ दे० 'भूमर' ।  
 भुलभुली-सज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक प्रकार का गहना ।  
 भुलमुला†-वि० दे० "भिलमिल" ।  
 भुलसन-सज्ञा स्त्री० भुलसने की निया या भाव । शरीर भुलसानेवाली गरमी ।  
 भुलसना-क्रि० अ० १ थोड़ा जल जाना ।  
 भोसना । २ अधिक गरमी के कारण सूखकर काला पड़ जाना । भुरभा जाना ।  
 भुनना ।  
 क्रि० स० १ अंश जलाना कि रंग काला पड़ जाय । भोसना । २ अधजला कर देना ।  
 भुलसवाना-क्रि० स० [भुलसना का प्रे०]  
 भुलसने का काम दूसरे से कराना ।  
 भुलसाना-क्रि० स० १ दे० "भुलसना" ।  
 २ दे० 'भुलसवाना' ।  
 भुलाना-क्रि० स० १ हिंडोला डुलाना ।  
 हिलाना । लटकाना । २. किसी को भूलने में प्रवृत्त करना । ३. किसी को बहुत अधिक समय तक आसरे में रखना ।  
 भुलावना\*†-क्रि० स० दे० "भुलाना" ।  
 भुल्ला-सज्ञा स्त्री० एक तरह की कुरती ।  
 दे० "भूला" ।  
 भुहिरना†-क्रि० स० लदना । लादा जाना ।

प्रयास या वायु आने के लिए जड़ा रहता है। राइसडिया । २. चिप । चिलमन ।  
 भिलाना-त्रि० स० दूसरे को भेसने के लिए गजबूर करना । दूसरे को भेलाना ।  
 भिल्लड-वि० पतला और भँकरा (कपड़ा) । जो गाढ़ न हो ।  
 भिल्लिपा-सज्ञा स्त्री० भीगुर । कीट-विशेष ।  
 भिल्लो-सज्ञा पु० भीगुर ।  
 सज्ञा स्त्री० ऐसी पतली तह जिससे नीचे की चीज दिखाई पड़े । महीन पर्दा या जाला । पतनी चमड़ी की तह ।  
 भीकना-त्रि० अ० दे० "भीखना" । पछताना ।  
 भीका-सज्ञा पु० उतना अन्न जितना एक बार चक्की में ढाला जाता है ।  
 भीख-सज्ञा पु० कुठन । भीखने का भाव ।  
 भीखन-त्रि० अ० १ पछताना । कुठना ।  
 भीखना । २ दुखड़ा रोना ।  
 सज्ञा पु० १ भीखने की क्रिया या भाव ।  
 २ दुख का वर्णन । दुखड़ा ।  
 भीगट-सज्ञा पु० मल्लाह । कैपट । दास ।  
 भीगी । माभी ।  
 भीगा-सज्ञा पु० १ एक प्रकार की मछली ।  
 २ एक प्रकार का घान ।  
 भीगुर-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध छोटा बरसाती कीड़ा जो अँधरे घरो, खता और मैदानों में होता है । इसकी आवाज बहुत तेज भी भी होती है । भिल्लो ।  
 भींसी-सज्ञा स्त्री० छोटी छाटी सूँदा की बर्षा । फुहार ।  
 भीखना-त्रि० अ० दे० "भीखना" ।  
 भीन-वि० भीना । पतला ।  
 भीना-वि० १ बहुत महीन । वारीक ।  
 पतला । २ जिसमें बहुत स छद हो ।  
 ३ दुबला । दुर्लभ ।  
 भीरवा-सज्ञा स्त्री० भीगुर । कीट ।  
 भील-सज्ञा स्त्री० १ बहुत बड़ा प्राकृतिक जलाशय । २ बहुत बड़ा तालाब ।  
 ताल ।  
 भीलर-सज्ञा पु० छोटी भील ।  
 भीवर-सज्ञा पु० भीवर । मल्लाह ।

भुंभलाना-त्रि० अ० निभाना । चिड़-चिड़ाना ।  
 भुड-सज्ञा पु० समूह । बृन्द । गरोह ।  
 भुडी-सज्ञा स्त्री० १. सूँटा । २. भाडी ।  
 ३. गुच्छा । ४. साधुओं का एक दल-विशेष ।  
 भुक्ता-त्रि० अ० १ नीचे की ओर लट-बना । निहृन्ता । नबना । २ किसी पदार्थ का किसी ओर मुड़ना । ३. मचना ।  
 ४ प्रवृत्त होना । दत्त-चित्त होना । ५ नम्र होना । विनीत होना । ६ लज्जा से अवनत होना । ७ अभिवादन करना ।  
 ८. झुड होना ।  
 मुहा०-भुक् भुक् पड़ना=नशे या नींद के कारण अर्द्धी तरह खड़ा न रह सकना ।  
 भुक्मुख†-सज्ञा पु० दे० "भुटपुटा" ।  
 भुकराना-त्रि० अ० भोका खाना ।  
 भुक्वाना-त्रि० स० भुक्वाने का काम दूसरे से कराना ।  
 भुकाना-त्रि० स० १ किसी खड़ी चीज को टेढ़ा करने नीचे की ओर लाना । निहुराना । नवाना । २ किसी पदार्थ का किसी ओर धुमाना । ३ प्रवृत्त करना ।  
 ४ विनीत बनाना । ५ नीचा दिखाना ।  
 भुकामुखी-सज्ञा स्त्री० दे० "भुटपुटा" ।  
 भुकाव-सज्ञा पु० १ किसी ओर लटकने, प्रवृत्त होने या भुक्वाने की क्रिया या भाव ।  
 २ ढाल । उतार । ३ मन का किसी ओर लगना । प्रवृत्ति ।  
 भुकावट-सज्ञा स्त्री० दे० "भुकाव" ।  
 भुटपुटा-सज्ञा पु० ऐसा समय जब बि कुछ अन्धकार और कुछ प्रकाश हो । भुक्मुख ।  
 भुटग-वि० भोटेवाला । जटावाला ।  
 भुठलाना-त्रि० स० १ भूठा ठहराना ।  
 भूठा बनाना । २ भूठ बहुर धोखा देना ।  
 मुहा०-मुँह भुठलाना=नाम मात्र भाजन करना । कुछ खाना ।  
 भूठाई\*†-सज्ञा स्त्री० भूठ का भाव ।  
 भूठापन । अमयता ।  
 भूठाना-त्रि० स० भूठा ठहराना ।

भूलरि-सज्ञा स्त्री० भूलता हुआ छोटा गुच्छा या भुमका ।

भूला-सज्ञा पु० १ रस्सी के सहारे बंधा हुआ पाट जिस पर भूलते हैं । हिंडोला । २ पलना । ३ स्निग्ध की कुस्ती । ४ भटका । भोका ।

भोपना, भोपना-क्रि० अ० शरमाना । लजाना । भेर\*†-सज्ञा स्त्री० १ विलव । देर । २ वखड़ा । भगड़ा ।

भेरना\*†-क्रि० स० भेलना । सहना । क्रि० स० शुरू करना । आरम्भ करना । भेरा-सज्ञा पु० भकट । बखेड़ा ।

भेल-सज्ञा स्त्री० १ तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया । २ हलका धक्का या हिलोरा । ३ भलने की क्रिया या भाव । ४ विलव । देर ।

भेलना-क्रि० स० १ ऊपर लना । सहना । २ तैरने में हाथ-पैर से पानी हटाना । ३ पानी में पैठना । हेलना । ४ ठलना । डकेलना । वचाना । ५ ग्रहण करना । मानना ।

भोक-सज्ञा स्त्री० १ भुकाव । प्रवृत्ति । २ बोझ । भार । ३ वेग । तेजी । ४ किसी वाम का घूमघाम से उठाना । ५ ठाट । सजावट । ६ आघात । ७ पानी की हिलोर । ८ दे० "भोका" । यो०-नोव भोक=प्रतिद्विधा । विरोध ।

भोक्ना-क्रि० स० १ किसी वस्तु को आग में फेंकना । भटके के साथ फेंकना । डकेलना । ठेलना । २ बहुत खर्च करना । ३ आपत्ति, दुःख या भय के स्थान में धर देना । ४ बहुत ज्यादा वाम ऊपर डालना । ५ बिना विचारे दोष आदि मढ़ना ।

मुहा०-भाड भोक्ना=१ मूर्खतापूर्ण या असफल तथा निरर्थक उद्योग । २ गुच्छ कार्य करना ।

भोक्वाना-क्रि० स० [ भोक्ना का प्रे० ] भोक्ने का काम दूसरे से कराना ।

भोक्वा-सज्ञा पु० भाड में पत्ते भोक्नेवाला मनुष्य ।

भोक्वा-सज्ञा पु० १ भटका । धक्का ।

रेला । भपट्टा । २ हवा का भटका । ३ हवा का बहाव । भकोरा । ४ पानी का हिलोरा । ५ इधर से उधर झुकने या हिलने की क्रिया । ६ ठाठ । सजावट । भोकाई-सज्ञा स्त्री० भोक्ने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

भोकी-सज्ञा स्त्री० १ उत्तरदायित्व । जवाबदेही । भार । बोझ । २ अनिष्ट या हानि की आशंका । जोखिम ।

भोभ-सज्ञा स्त्री० १ खोटा । घोंसला । २ कुछ पक्षियों (जैसे, डेरा, गोघ) के गले की रंगीली या लटकता हुआ मांस । ३ खजली । गुरगुराहट । ४ फलों का घोंद । केल का घोंद । एक गुच्छे में लग हुए बहुत से फल ।

भोभत-सज्ञा स्त्री० भुंभलाहट । नोव । बुडन ।

भोभा-सज्ञा पु० बड़ पेटवाला । तादवाला ।

भोट-सज्ञा पु० भाड़ी ।

भोट-सज्ञा पु० १ बड़े-बड़े वाला का समूह । लट । जटा । २ वस्तुओं का समूह जो एक बार हाथ में आ सके । जुड़ा । भोका । पैग ।

भोटवाना-क्रि० स० बाल पकड़कर खींचना । भोट खींचना । भोट पकड़कर मारना ।

भोटी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भोट" ।

भोपडा-सज्ञा पु० [ स्त्री० भोपड़ी ] कुटी । फूस से छाया हुआ मिट्टी का घर ।

मुहा०-अधा भोपडा=पेट । उदर ।

भोपड़ी-सज्ञा स्त्री० छोटा भोपडा । कुटिया ।

भोपा-सज्ञा पु० १. भोवा । गुच्छा । फना या फूली का गुच्छा । २. धरा । परिधि ।

भोटांग-सज्ञा पु० काटेवाला । जिसके सिर पर बड़ बड़े बाल हैं । भूत प्रेत या पिशाच आदि ।

क्रि० स० धक्का देकर, भाटा या बाल पकड़कर खींचना ।

भोर-सज्ञा पु० गद्दी । भोल । सज्ञा स्त्री० भोनी ।

भोरई\*†-वि० रसदार ।

भूक\*†-गज्ञा पु० दे० "भोका" ।  
 राजा स्त्री० दे० "भोज" ।  
 भूकटी-राज्ञा स्त्री० छोटी भाटी ।  
 भूकना†-वि० स० \* १. दे० "भोतना" ।  
 २. दे० "भगना" ।  
 भूकना\*†-वि० स० दे० "भोगना" ।  
 भूक-सज्ञा पु० पोंसला । झाटा । पदियों  
 का रहने का स्थान ।  
 भूकल-गज्ञा स्त्री० दे० "भुम्भनाहट" ।  
 भूकल-राज्ञा स्त्री० दोपसली भूमि । जिस  
 रात में दो फगलें मोई जाती हैं ।  
 भूकलना†-वि० अ० ओर स० दे० "भूलना" ।  
 ठगना ।  
 भूकल\*†-गज्ञा पु० दे० "भोका" ।  
 भूकल-वि० अ० दे० "भूकल" ।  
 भूकल-गज्ञा पु० मिथ्या । असत्य ।  
 मुहा०-भूकल सच कहना या लगाना=भूटी  
 निदा धरना । शिवावत धरना ।  
 भूकल-वि० वि० सरासर भूक । विलकुल  
 भूक । यो ही । व्यर्थ । बिना किसी वास्त-  
 विव आधार के । बिना किसी कारण के ।  
 भूकल-वि० १ मिथ्या । असत्य । २ भूक  
 वालनवाला । मिथ्यावादी । ३ बनावटी ।  
 नक्ली ।  
 वि० दे० "भूकल" । झाए हुए भोजन का  
 बचा हुआ अंश ।  
 भूकल-वि० वि० १ भूकल-भूक । यो ही ।  
 २ नाममात्र के लिए ।  
 भूकल-वि० १. दे० "भूकल" । २ सूखा  
 नारियल का फल । ३ महीन कपड़ा । ४  
 चूल्हे में आग जलाना ।  
 भूकल-सज्ञा स्त्री० १ भूमने की क्रिया या  
 भाव । २ ऊँच । झपकी ।  
 भूकल-राज्ञा पु० १. एक प्रकार का गीत ।  
 भूमर । २ इस गीत के साथ होनेवाला  
 नृत्य । ३ गुच्छा । ४ मोतियों का गुच्छा ।  
 ५ भूमर । वर्षाफूल ।  
 सज्ञा स्त्री० भीड़ । समूह ।  
 वि० हिलनेवाला । भूमनेवाला ।  
 भूमरसाडी-सज्ञा स्त्री० भालरवार साडी  
 जिसमें भूमर या मोती आदि के गुच्छे दिये हों ।

भूमर-गज्ञा पु० १. दे० "भूमर" । २.  
 दे० "भूमर" ।  
 भूमर-सज्ञा पु० दे० "भूमर" ।  
 भूमर भूमर-गज्ञा पु० खजोला । भूटा  
 प्रपञ्च ।  
 भूमर-वि० अ० १ हिलना । खोना ।  
 भूमर खाना । २ ठेंपना । मन्नी या मद  
 में भूमना ।  
 भूमर-गज्ञा पु० १. पहनने का एक प्रकार  
 का गहना । २. भूमर नाम का गीत ।  
 ३ इस गीत के गाय होनेवाला गाय ।  
 ४. भूमर नाम का ताल । ५. बाठ का एक  
 गिल्लीना ।  
 भूमर-वि० १ सूखा । चुरमुदा । २. खाली ।  
 ३ व्यर्थ ।  
 सज्ञा स्त्री० १. जनन । डाह । २ दुख ।  
 परिताप । ३ जूझ ।  
 भूमर-वि० स० भूमना । दुबल होना ।  
 मुरझाना ।  
 भूमर-वि० १. सूखा । सुख । मुरझाया ।  
 २ खाली ।  
 सज्ञा पु० १ जलवृष्टि का अभाव । अकाल  
 पड़ना । महेगी होना । २. मृन्मता ।  
 कमी ।  
 भूमर-वि० वि० व्यर्थ । निष्प्रयोजन ।  
 भूकल ।  
 वि० दे० "भूमर" ।  
 भूमर-सज्ञा स्त्री० ओहार । १. बेल, छाटे  
 आदि पदार्थों के ओढ़ने का वस्त्र । हाथी  
 का ओहार । चौपाया की पीठ पर डाला  
 जानेवाला वस्त्र । सवारी का पर्दा ।  
 २ डीला ढाला वस्त्र । \* ३ दे० "भूमर" ।  
 भूमर-सज्ञा पु० वर्षा ऋतु का एक उत्सव ।  
 हिडोला ।  
 भूमर-वि० अ० १. खोलना । हिलना ।  
 खटवना । २. भूमर पर बैठकर पेंग लेना ।  
 किसी कार्य के होने की आशा में अधिक  
 समय तक पड़े रहना ।  
 वि० भूमनेवाला । जो भूमता हो ।  
 सज्ञा पु० १. छन्द विशेष । २ हिडोला ।  
 भूमर ।

भूलरि-सज्ञा स्त्री० भूलता हुआ छोटा गुच्छा या भुमका ।

भूला-सज्ञा पु० १ रस्सी के सहारे बंधा हुआ पाट जिस पर भूलते हैं । हिडोला । २ पलना । ३ स्विंगी की कुरती । ४ भटका । भोका ।

भोपना, भोपना-क्रि० अ० शरमाना । लजाना । भोर\*†-सज्ञा स्त्री० १ विलव । देर । २ बखेडा । भगडा ।

भोरना\*†-क्रि० स० भेलना । सहना । क्रि० स० शुरू करना । आरम्भ करना । भोरा-सज्ञा पु० भूमट । बखेडा ।

भोल-सज्ञा स्त्री० १ तैरने आदि में हाथ-पैर से पानी हटाने की क्रिया । २ हलका धक्का या हिलोरा । ३ भेलने की क्रिया या भाव । ४ विलव । देर ।

भोलना-क्रि० स० १ ऊपर लेना । सहना । २ तैरने में हाथ-पैर से पानी हटाना । ३ पानी में पेटना । हेलना । ४ ठलना । ढकेलना । घपाना । ५ ग्रहण करना । मानना ।

भोक-सज्ञा स्त्री० १ भुक्ता । प्रवृत्ति । २ बोझ । भार । ३ वेग । तेजी । ४ किसी काम का धूमधाम से उठाना । ५ ठाट । सजावट । ६ आघात । ७ पानी की हिलार । ८ दे० "भावा" । यौ०-नोक भोक=प्रतिद्विधा । विरोध ।

भोवना-क्रि० स० १ किसी वस्तु को घ्राग में पेंकना । भटके के साथ फेंकना । ढकेलना । टेनना । २ बहुत खर्च करना । ३ आपत्ति, दुख या भय के स्थान में वर देना । ४ बहुत ज्यादा काम ऊपर डालना । ५ विना विचारे दोष आदि मदन ।

मुहा०-भाट भोवना=१ मूर्खतापूर्ण या असाफल तथा निरर्थक उद्योग । २ तुच्छ कार्य करना ।

भोकवाना-क्रि० स० [ भोवना या प्रे० ] भोवने का काम दूसरे से कराना ।

भोववा-सज्ञा पु० भा० में पस्ते भोकनेवाला मनुष्य ।

भोवरा-सज्ञा पु० १ भटका । घपवा ।

रेला । भपट्टा । २ हवा का भटका । ३ हवा का बहाव । भवोरा । ४ पानी का हिलोरा । ५ इधर से उधर भुक्ने या हिलने की क्रिया । ६ ठाठ । सजावट । भोकाई-सज्ञा स्त्री० भोवने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

भोकी-सज्ञा स्त्री० १ उत्तरदायित्व । जवाबदेही । भार । बोझ । २ अनिष्ट या हानि की आशंका । जोखिम ।

भोझ-सज्ञा स्त्री० १ खोता । घोंसला । २ कुछ पधियों (जैसे, डेक, गीघ) के गले की थैली या लटवता हुआ मांस । ३ सुजली । सुरसुराहट । ४ फलों का घोंद । केले का घोंद । एक गुच्छे में लगे हुए बहुत से फल ।

भोझल-सज्ञा स्त्री० भुंझलाहट । कोध । कुठन ।

भोझा-सज्ञा पु० बड़े पेटवाला । तोदवाला ।

भोट-सज्ञा पु० भाडी ।

भोटा-सज्ञा पु० १ बड़े-बड़े वालों का समूह । लट । जटा । २ वस्तुओं का समूह जो एक बार हाथ में आ सके । जुट्टा । भोवा । पैंग ।

भोटियाना-क्रि० स० बाल पकड़कर खींचना । भोटा खींचना । भोटा पकड़कर मारना ।

भोटी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भोटा" ।

भोपडा-सज्ञा पु० [ स्त्री० भोपडी ] कुटी । फूस से छाया हुआ मिट्टी का घर ।

मुहा०-अपा भोपडा=पेट । उदर ।

भोपडी-सज्ञा स्त्री० छोटा भोपडा । कुटिया ।

भोपा-सज्ञा पु० १. भग्ना । गुच्छा । फलों या फूलों का गुच्छा । २. पैरा । परिधि ।

भोटग-सज्ञा पु० भोटवाला । जिसने सिर पर बड़े बड़े बाल हो । भूत, प्रेत या पिशाच आदि ।

क्रि० स० पकड़ देकर, भाटा या बाल पकड़कर खींचना ।

भोर-सज्ञा पु० कड़ी । भोल ।

सज्ञा स्त्री० भानी ।

भोरई-क्रि० रोदर ।

सज्ञा पु० गेदार सगरी ।  
 भोरना†-त्रि० म० १. भटका देकर हिनाला ।  
 २ भटका देकर मोटना । ३. दबट्टा  
 करना । एगत्र करना ।  
 भोरा-गज्ञा पु० फरो या फूरो का गुच्छा ।  
 भोरी†-गज्ञा स्त्री० १. भोली । २. गेट ।  
 भोभर । घोभर । ३. रोंटी-विशेष ।  
 भोल-गज्ञा पु० १. सरसारी आदि का  
 गाथा रमा । सोरवा । २. बड़ी । बड़ी  
 आदि की तरह पवाई हुई पतली लेई ।  
 ३. मोड़ । ४. धातु पर का मुलम्मा ।  
 ढोला ढाला कपड़ा । कपड़े की सिकुटन या  
 झुन । ५. पल्ला । आंचल । ६. परदा । घोट ।  
 आड़े । ७. गलनी । भूल । ८. वह बेली जिसमें  
 गर्म से निक्कले हुए वस्त्र रहते हैं । गर्म ।  
 ९. राख । भस्म । साव । १०. दाह । जलन ।  
 वि० १. ढोला । २. निक्कमा । सराव । बुरा ।  
 भोलभाल-सज्ञा पु० १. ढोला-ढाला । २. भर-  
 परा रखा ।  
 भोलदार-वि० १. जिमम रसा हो । रसे-  
 दार । २. जिस पर मुलम्मा किया हो । ३  
 भोल-सवधी ४ ढोला-ढाला ।  
 भोलना-क्रि० स० जलाना ।  
 भोला†-सज्ञा पु० [ स्त्री० भोली ] १  
 कपड़े की बड़ी थैली । बेली । २  
 ढोला-ढाला गिलाफ । खोली । ३. साधुओं  
 का ढोला कुरता । चोला । ४. बात का  
 एक रोग । पाला या लू लगने का रोग ।  
 लकवा । ५. भटका । आघात । धक्का ।  
 ६. बाधा । आपत्ति । ७. सवेत । इशारा ।  
 ८. पाल की रस्मी । भोरा । ९. भोरा ।  
 १०. हिलोर ।  
 भोली-सज्ञा स्त्री० १ छोटा भोला ।

धोली । धोवरी । २. पाग धोने का  
 जात । ३. मोट । परमा । पुर । ४.  
 गलिहान में घनाज घोमाने का कपड़ा ।  
 ५. बुरी या एग पेव । ६. गग । भस्म ।  
 मुहा०-भोली बूझना=गव काम हो चुकने  
 पर पीछे उगे करने चलना ।  
 भौंद-सज्ञा पु० पेट । उदर ।  
 भौर\*-सज्ञा पु० १. भुड़ । समूह । २.  
 फूलों, पत्तियों या छोटे फलों का गुच्छा ।  
 ३. एक प्रकार का गहना । भव्या । ४.  
 पेड़ों या भाड़ियों का घना समूह । बूज ।  
 भौरना-त्रि० अ० १. गूँजना । गुजार करना ।  
 २. दे० "भौरना" ।  
 भौरा-वि० साँवला । भाँवर । काला ।  
 वृष्ण वर्ण । २. गुच्छा । भव्या ।  
 भौराना\*-त्रि० अ० १. इधर-उधर हिलना ।  
 भूमना । २. भाँवले रंग का हो जाना ।  
 काला पड़ जाना । ३. मुरझाना । कुम्ह-  
 लाना ।  
 भौंसना-क्रि० म० दे० "भुलसना" । जलाना ।  
 भौर-गज्ञा पु० १. भगडा । लडाई । बखेडा ।  
 हुज्जत । तकरार । ३. डाँट-फटकार ।  
 बहाना-मुनी ।  
 भौरना-क्रि० स० छोप लेना । दबा लेना ।  
 भपटवर पन्डना ।  
 भौरा-सज्ञा पु० भस्म ।  
 भोरी-सज्ञा स्त्री० खेत की धास ।  
 भोरे-क्रि० वि० १. समीप । पास ।  
 निवट । २. साथ । संग ।  
 भोवा†-सज्ञा पु० खेंचिया । टोकरी ।  
 भोहाना-त्रि० अ० १. गुराँगा । शोध  
 करना । २. चिडचिडाना । फुसकारना ।  
 ३. अनायास गिरना ।

ज

अ-हिंदी वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो  
 चवग का पाँचवाँ वर्ण है । इसका उच्चारण-

स्थान तालु घौर नासिका है । इसका प्रयोग  
 साधुनासिक के रूप में चवग के साथ होता है ।

ट

ट-हिंदी वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यंजन जो टवर्ग का पहला वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है।

सज्ञा पु० १. चन्द्रमा । २. गान । ३. खर । ४. अकुश । ५. युद्धावस्था । वृषापा । ६. नारियल का खोपड़ा । ७. वामन । ८. चौथाई भाग । ९. शब्द । नाद । ध्वनि । टक-सज्ञा पु० १. सिक्का । २. चार मासों की एक तोल । ३. २१ $\frac{1}{2}$  रत्ती की मोती की तोल । ४. टांकी । छेनी । ५. कुल्हाड़ी । ६. कुदाल । ७. तलवार । फरसा । ८. टांग । ९. औषध । १०. अभिमान । ११. सुहागा । १२. कोप । १३. म्यान । १४. पर्वत का खड्ड । १५. पत्थर का काटा हुआ टुकड़ा ।

टकक-सज्ञा पु० रुपया ।

टककशाला-सज्ञा स्त्री० टकसाल ।

टकटोक-सज्ञा पु० शिव ।

टकण-सज्ञा पु० १. सुहागा । २. टांके से जोड़ लगाने का काम । ३. पीछे की एक जाति । ४. एक प्राचीन देश ।

टैकना-क्रि० अ० १. टांका जाना । सिलना । २. लिखा जाना । दर्ज किया जाना । ३. सिल, चक्की आदि का खुरदुरा किया जाना । रता जाना ।

टैकवाना-क्रि० स० दे० 'टैकाना' ।

टकशाला-सज्ञा स्त्री० टकसाल ।

टका-सज्ञा पु० १. ताँबे का एक पुराना सिक्का । एक तोले की तोल । २. एक तरह का गन्ना ।

सज्ञा स्त्री० जघा ।

टैकाई-सज्ञा स्त्री० टांके की क्रिया, भाव या मजदूरी ।

टकानक-सज्ञा पु० दाहवृत्त ।

टैवाना-क्रि० स० १. टाँको से जोड़वाना या सिलवाना । २. सिल, जाँत, चक्की आदि को खुरदुरा करना । कुदाला ।

३. सिक्का को जाँच कराना या परखवाना । टकार-सज्ञा स्त्री० १. टन-टन शब्द ।

२. धनुष की बची हुई डोरी पर बाण रख-

कर खींचने से उत्पन्न ध्वनि । ३. धातु-खड पर आघात लगने का ठनठन शब्द । ठनाका । ४. आश्चर्य । विस्मय । ५. कीर्ति । टकारना-क्रि० स० धनुष की डोरी खींचकर शब्द करना । चिल्ला खींचकर बजाना । टकी-सज्ञा स्त्री० पानी भरने का बनाया हुआ छोटा-सा कुड या बड़ा वरतन । जीवच्चा । टांका ।

टकोर-सज्ञा पु० दे० "टकार" ।

टकोरना-क्रि० स० दे० "टकारना" ।

टकौरी-सज्ञा स्त्री० काँटा ।

टग-सज्ञा पु० टांग ।

टंगड़ी-सज्ञा स्त्री० दे० "टांग" ।

टैंगना-क्रि० अ० १. लटकना । २. फाँसी पर चढ़ना या लटकना ।

सज्ञा पु० कपड़े आदि टाँगने की रस्सी । अलगनी ।

टैगा-सज्ञा पु० भूँज ।

टैगारी-सज्ञा स्त्री० कुल्हाड़ी ।

टच-वि० १. सूँघ । कजूस । कृपण ।

२. कठोर-हृदय । निष्ठुर । तैयार ।

मुस्तैद ।

टट-घट-सज्ञा पु० १. घड़ी घटा आदि बजाकर पूजा करने का मिथ्या प्रपञ्च । २. काठ-कवाड़ ।

टटा-सज्ञा पु० १. तबी-चौड़ी प्रक्रिया । आडवर । खटराग । २. उपद्रव । दगा । फसाद । ३. भगडा ।

टई-सज्ञा स्त्री० दे० "टही" ।

टक-सज्ञा स्त्री० १. ऐसा ताकना जिसमें बड़ी बेर तक पलक न गिरे । २. स्थिर दृष्टि । ३. तराजू का पलड़ा ।

मुहा०-टय बाँधना=स्थिर दृष्टि से देखना ।

टवटक देखना=बिना पलक गिराए लगा-

तार कुछ काल तक देखते रहना । टव

लगाना=भासरा देखते रहना ।

टवटका\*†-सज्ञा पु० [स्त्री० टवटकी] स्थिर दृष्टि । टवटकी ।

†वि० स्थिर या सँधी हुई दृष्टि ।

टवटकाना†-क्रि० स० १. एवटक ताकना ।

स्थिर दृष्टि से देगना । २ टक्करी शब्द उत्पन्न करना ।

टक्करी-सज्ञा स्त्री० बिना पलक गिराए देर तक देखना । अनिद्रा या स्थिर दृष्टि । मुहा०—टक्करी बांधना=स्थिर दृष्टि से देखना ।

टक्करी, टक्करीनी—मि० स० १ टटोलना

२. ढूँढ़ना ।

टक्करी-त्रि० स० दे० "टटोलना" । ढूँढ़ना ।

टक्करी-सज्ञा पु० टटोलकर देखने की प्रिया । स्पर्श ।

टक्करी\*—त्रि० स० दे० "टटोलना" ।

टकराना—त्रि० म० १. जोर से भिड़ना । धक्का या ठोकर लेना । २. मारा-मारा फिरना ।

क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी पर जोर से मारना । जोर से भिड़ना । पटकना ।

टकवाना—क्रि० स० जुड़वाना । सिलाना ।

टकसाल—सज्ञा स्त्री० १ मुद्रालय । वह स्थान जहाँ सिक्के बनाए जाते हैं । टक्काला ।

२. असल चीज ।

मुहा०—टक्काल बाहर=१. सिक्का जिसका चलन न हो । खोटा । खराब ।

२. अधिक्षित । अनपढ़ । मूर्ख । ३ जिसका प्रयोग शिष्ट न माना जाय ।

टक्काली—वि० १ टक्काल का । टक्काली स्वामी । २ खरा । चोखा ।

३ विद्वानों द्वारा मान्य । प्रमाणित । सर्व-सम्मत । जैसे टक्काली भाषा । ४ जैचा हुआ । पक्का ।

सज्ञा पु० टक्काल का कर्मचारी ।

टक्का—सज्ञा पु० १. रुपया । २ ताँबे का एक सिक्का, जो दो पैसे के बराबर होता है । अधम्रा । दो पैसे । ३ धन । द्रव्य ।

रुपया पैसा । ४ एक तौल ।

मुहा०—टक्का सा जवाब देना=साफ़ इनकार करना । योरा जवाब देना । टक्का सा मुँह लेकर रह जाना=लज्जित हो जाना । टक्के गज की चाल=मोटी चाल । थोड़े सर्च में निर्वाह ।

टक्काली-सज्ञा स्त्री० टक्के या दो पैसे की रुपया का सुद ।

टक्की-सज्ञा स्त्री० ताज । प्रतीक्षा । टक्की । बिर्गी की ताज में छिपना । लुप्राव ।

टक्काला—सज्ञा पु० चरखे में का तबना जिम पर सूत धाना जाना है । तबला । छेद करने का यंत्र ।

टक्कली-सज्ञा स्त्री० एक ग्रीजार । चपोट सिरीस ।

टक्कत—वि० धनी । संपन्न ।

टक्करी-सज्ञा स्त्री० १. हलकी चोट । प्रहार ।

आघात । ठेस । थपड़ । २ नगाड़े पर का आघात । ३ डके या नगाड़े की आवाज । ४. धनुष की डगी खींचने का शब्द । टक्कार । ५ गरम पोटली को निमी अंग पर रह रहकर सेंकना । सेंक ।

६ भाल । परपराहट । चमक ।

टक्करीना—क्रि० स० १ हलका आघात पहुँचाना । ठोकर लगाना । २ डके आदि पर चोट लगाना । सेंकना । बजाना ।

टक्करी-सज्ञा पु० १ छाटा आम । अरिया । २ नीबूत की आवाज ।

टक्करी-सज्ञा पु० टक्का । दो पैसे ।

टक्करी-सज्ञा स्त्री० छोटा तौलने का काँटा ।

टक्करी-सज्ञा स्त्री० १ धक्का । ठोकर । २ मुकादला । मुठभेड़ । लड़ाई । ३. पाटा । हानि ।

मुहा०—टक्करी खाना = भिड़ना । १. ठोकर खाना । मुकादला करना । २ मारा मारा फिरना । टक्करी का=बराबरी का ।

समान । टक्करी लेना=बार सहना । चोट सहना । टक्करी मारना=ठोकर मारना ।

धक्का लगाना । मुकादला करना । निष्फल प्रयत्न करना । माया मारना । टक्करी लड़ना=दूसरे के सिर पर सिर मारकर लड़ना ।

टक्करी-सज्ञा पु० एही के ऊपर निक्की हुई हड्डी की गाँठ । गुल्ली ।

टक्करी-सज्ञा पु० मात्रिक गणों का एक भेद ।

टगर—सज्ञा पु० १. सुहागा । २. श्रीडा । विलास । ३. तगर का वृक्ष ।



२. रह-रहकर हानेवाला शब्द । ३. बूंद बूंद गिरने का शब्द ।

टपकना-त्रि० अ० १. बूंद-बूंद गिरना । चुना । रमना । २ फन का पेड़ से गिरना । ३ ऊपर से सहसा गिरना । ४ कोई भाव अधिव प्रकट होना । भलवना । ५ धाव आदि के कारण रह-रहकर दब करना । चिलवना । टीस मारना । ६. पिसलना । ढल पडना ।

टपका-सज्ञा पु० १ बूंद बूंद गिरने का भाव । २ टपकी हुई वस्तु । रसाव । ३ पक्कर आपसे आप गिरा हुआ फल । ४ रह-रहकर उठनेवाला दद । टीस । टपका टपकी-सज्ञा स्त्री० १. बूँदाबूँदी । वर्षा की हलकी झड़ी । फुहार । २ फलों का लगातार गिरना । वि० भूला-भटना ।

टपकाना-क्रि० स० चुभाना । थोड़ा-थोड़ा करके गिराना । रग आदि निवालना । छानना । निवालना ।

टपना-त्रि० अ० १ बिना बुद्धि लाए पीए पडा रहना । २ व्यर्थ आसरे में बैठ रहना । ३ बूदना । लीधना ।

टपरना-क्रि० स० टांकी की चोट से पत्थर की सतह खुरदरी करना । जमीन या दीवार पर नया मसाला लगाने से पहले उसे थोड़ा-थाड़ा खोदना या तोड़ना ।

टपरा-सज्ञा पु० भापडा । छप्पर ।

टपाटप-त्रि० वि० १ लगातार टपटप शब्द के साथ या बूंद-बूंद करके (गिरना) । २ शीघ्रता से । जल्दी जल्दी ।

टपाना-त्रि० स० १ बिना खिलाए पिलाए पडा रहने देना । २ व्यर्थ आसरे में रखना । ३ फँसाना । बूदवाना ।

टप्पर-सज्ञा पु० द० 'छप्पर' ।

टप्पा-सज्ञा पु० १ पडाव । २ उछाल । बूद । पतंग । ३ नियत दूरी । ४ दो स्थानों के बीच में पड़नेवाला मैदान । ५ जमीन का छाटा हिस्सा । ६ अंतर । बीच । फर्क । ७ एक प्रकार का चलता

गाना । ८. माटी मोटी सीवन । ९. हुक या पाँटा । १०. उपखाना ।

टप्पर-सज्ञा पु० परिवार । कुल । वंश । कुटुम्ब ।

टप्प-सज्ञा पु० [अप्पे०] १. पानी रगने के लिए बडा बरतन । २. एक प्रकार का लप ।

टमक-सज्ञा स्त्री० पीटा । यातना । वेदना । कष्ट । टीस । ध्वनि-विशेष । पानी में गिरने का शब्द ।

टमकना-त्रि० अ० टीस होना । धाव या दब । गिरना । टपकना ।

टमकी-सज्ञा स्त्री० डुगडुगिया ।

टमटम-सज्ञा स्त्री० [अप्पे०] एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी ।

टमटी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बरतन ।

टमाटर-सज्ञा पु० [अप्पे० टोमेटो] एक प्रकार का फल जिसे बिलासती बँगन कहते हैं । एक फल जिसे तरकारी के रूप में प्रयोग करते हैं ।

टर-सज्ञा स्त्री० १ कर्कश या अप्रिय शब्द । कड़वी बोली । २. बक्वाद । ३ मँडक की बोली । ४. एँठ । अक्कड़ । ५ हठ । जिद ।

मुहा०-टर टर करना या लगाना=डिठाई से बोलने जाना । बक्बक् करना । बक्वाद करना ।

टरकना-त्रि० अ० १ खिसकना । २ हट जाना । कर्कश स्वर से बोलना ।

टरकाना-त्रि० स० १ हटाना । खिसकाना । २ टाल देना । चलता करना । धता बताना ।

टरफी-सज्ञा पु० [तु०] एक तरह का मुर्गा ।

टरकूल-वि० बहुत मामूली और निक्म्मा ।

टरटराना-त्रि० अ० १ बक्बक् करना । २ डिठाई से बोलना ।

टरना-त्रि० स० दे० "टलना" ।

टर्ना-वि० १ बठोर स्वर से उत्तर देने-वाला । बक्वाद करनेवाला । २ घुट । बटुवादी ।

टरना—क्रि० अ० ढिठाई से बोलना । धक-  
धक करना ।

टरपित—सज्ञा पु० वातचीत में अविनीत  
भाव । कटुवादित ।

टर्न—सज्ञा पु० मेढक ।

टलना—क्रि० अ० १ हटना । दूर होना ।  
खिसकना । भाग जाना । २ मिटना ।

३ आज्ञा न मानना । उल्लिखित होना ।  
४ समय व्यतीत होना । बीतना ।

मुहा०—अपनी बात से टलना=प्रतिज्ञा  
पूरी न करना । मुकरना ।

टलप—सज्ञा स्त्री० छाँट । टुकड़ा । कतरन ।

टलमलाना—क्रि० अ० दे० अ० “डगमगाना” ।  
स्थिति का अनिश्चित होना ।

टलहा—वि० छोटा । खराब ।

टलाटली—सज्ञा स्त्री० बहाना । टालमटोल ।  
हीलाहवाला ।

टलाना—क्रि० स० दे० “हटाना” । सरका  
देना । छिपाना ।

टल्ला—सज्ञा पु० धक्का ।

टल्लेनबीसी—सज्ञा स्त्री० दे० “टिल्लेनबीसी” ।  
टालमटोल । निठलापन । बहानेबाजी ।

टवर्ग—सज्ञा पु० ट ठ ड ढ ण, टकारादि  
पाँच अक्षर ।

टवाई—सज्ञा स्त्री० व्यर्थ घूमना । आयागी ।  
टस—सज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के खिसकने या  
सरकने का शब्द ।

मुहा०—टस से मस न होना=१ किसी  
भारी चीज का कुछ भी न खिसकना ।  
२ कहने सुनने वा कुछ भी प्रभाव अनुभव  
न करना ।

टसक—सज्ञा स्त्री० रह-रहकर उठनेवाली  
पीड़ा । कसब । टीस ।

टसवना—क्रि० अ० १ जगह से हटना ।  
खिसकना । २ रह-रहकर दर्द करना ।  
टीस मारना । ३ प्रभावित होना ।  
बात मानने की उद्यत होना ।

टसकाना—क्रि० स० हटाना । हिलाना । सर-  
वाना । खिसवाना ।

टसर—सज्ञा पु० एव प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

टसुआ—सज्ञा पु० आसू ।

टहक—सज्ञा पु० चराक ।

टहकना—क्रि० अ० दे० “डुलना” । रह-रहकर  
दर्द करना । पिघलना ।

टहकाना—क्रि० स० गरम करना । अग्नि  
से पिघलाना ।

टहटहा—वि० ताजा । टटका । नवीन ।  
मनोहर ।

टहना—सज्ञा पु० वृक्ष की डाल । शाखा ।

टहनी—सज्ञा स्त्री० वृक्ष की पतली शाखा ।  
डाली ।

टहल—सज्ञा स्त्री० १ सेवा । शुश्रूषा ।  
खिदमत । २. नौकरी-चाकरी । काम धंधा ।

यौ०—टहल टई या टहल टकोर=सेवा ।

टहलना—क्रि० अ० १ धीरे-धीरे चलना ।  
मंद गति से चलना । २ जी बहलाने के

लिए धीरे धीरे चलना या घूमना । हवा  
खाना । सँर करना ।

मुहा०—टहल जाना=सरक जाना ।

टहलनी—सज्ञा स्त्री० १ दासी । मजदूरनी ।  
२ चिराग की बत्ती जकसानेवाली लकड़ी ।

टहलाना—क्रि० स० १ धीरे धीरे चलाना ।  
२ सँर कराना । घुमाना । फिराना ।

३ दूर करना ।

टहलुआ—सज्ञा पु० [स्त्री० टहलुई, टहलनी]  
सक्क । नौकर ।

टहुआदारी—सज्ञा स्त्री० चुगुलखोरी ।

टहलुई—सज्ञा स्त्री० १ दासी । नौकरानी ।  
२ चिराग की बत्ती जकसानेवाली लकड़ी ।

टहलू—सज्ञा पु० दे० “टहलुआ” ।

टही—सज्ञा स्त्री० मुक्ति । मतलब निकालने  
की घात । जोड़-तोड़ । प्रयोजन-सिद्धि  
का ढंग ।

टहका—सज्ञा पु० पहेली । घुटकुला ।

टहका—सज्ञा पु० हाथ या पैर से दिया  
हुआ प्रहार । भटका ।

मुहा०—टहका देना=भटवना । ढक्कन ।

टहोका खाना=धक्का खाना । ठोकर  
सहन ।

टाँक—सज्ञा स्त्री० १ चार मासे की एव  
तोल । बटपरा । २ बूत । आँक ।  
प्रमाज । ३ लिखावट । सेखन । ४ कलम

की नोक । ५. मिलाई । सीवन । एक प्रकार की सिलाई ।

टांकना-क्रि० स० १. सिलाई करके जोड़ना । सीना । २. सीकर अटवाना । ३. जोड़ना । ४. मिल, चक्की आदि को टाँकी से खुरदुरा करना । रेहना । ५. रेती तेज करना । ६. याद रखने के लिए लिखना । दर्ज करना । ७. दाखिल करना । ८. चट कर जाना । खाना । उड़ा जाना । ९. मार लेना । अनुचित रूप से ले लेना ।

टाँकर-सज्ञा पु० लम्पट । बदमाश । गुंडा । उच्छृंगत ।

टाँका-गज्ञा पु० १. जोड़ मिलानेवाली कील या नाँटा । २. सिलाई । सीवन । ३. टँकी हुई चकती । थिगली । चिप्पी । ४. शरीर पर के घाव की सिलाई । ५. धातुओं को जोड़ने का मसाला ।

सज्ञा स्त्री० १. पत्थर काटने की छोटी छेनी । २. पानी एकत्र रखने का छोटा-सा कुड । हीज । चहवच्चा । ३. पानी रखने का बड़ा बरतन । कडाल ।

टाँकी-सज्ञा स्त्री० १. पत्थर गड़ने का औजार । छेनी । २. काटकर बनाया हुआ छेद । छोटा टाँका ।

टाँग-सज्ञा स्त्री० पैर ।

मुहा०-टाँग अडाना=१. बिना अधिकार के किसी काम में हस्तक्षेप करना । फजूल खर्च देना । २. विघ्न डालना । टाँग तले से (या नीचे से) निकलना=हार मानना । पराजित होना । टाँग पसारकर सोना=निश्चित सोना ।

टाँगन-गज्ञा पु० छोटा घोड़ा । टट्टू ।

टाँगना-क्रि० स० १. लटवाना । २. फाँसी पर चढ़ाना ।

टाँगा-सज्ञा पु० १. एक प्रकार की घोड़ा । गाड़ी । २. बड़ी कुल्हाड़ी ।

टाँगी-सज्ञा स्त्री० कुल्हाड़ी ।

टाँच-गज्ञा स्त्री० १. दूसरे का काम बिगाड़नेवाली बात । भाँजी । २. सिलाई । टाँका । ३. टँकी हुई चकती । थिगली । ४. हठीला । हठी । टेटा । ५. पैर । दबाव ।

टाँचना-क्रि० स० १. टाँकना । सीना । २. काटना । तरागना ।

टाँट-सज्ञा पु० खोपड़ी । कपाल । मिर के बीच का भाग ।

टाँठ, टाँठा-वि० १. करारा । कठोर । कड़ा । २. बली । तगड़ा । ३. उद्योगी ।

टाँड़-सज्ञा स्त्री० १. लकड़ी के खंभों पर बनाई हुई पाटन जिम पर सामान रखते हैं । परछत्ती । २. मच्च, मचान जिम पर बैठकर खेत की रखवाली करते हैं । ३. कंकरीली मिट्टी । ४. बाहु में पहनने का स्त्रियों का एक गहना । टेंडिया ।

सज्ञा पु० टाल । समूह । चरों की पक्ति । टांडा ।

टाँडा-सज्ञा पु० १. अन्न आदि व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुंड जिसे व्यापारी लेकर चलते हैं । बरदी । २. बिक्री के माल का खेप । एक बार उठाने का बोझ । ३. बनजारी का झुंड । ४. कुटुंब । परिवार । ५. एक कीड़ा ।

टाँड़ी-सज्ञा स्त्री० दे० "टिंडी" ।

टाँयटाँय-सज्ञा स्त्री० १. कर्कश शब्द । टें टें । २. बकवाद ।

मुहा०-टाँय टाँय फिम=बकवाद बहुत, पर फल कुछ भी नहीं । बहुत जोरशोर दिखाना पर करना कुछ नहीं ।

टाँस-सज्ञा स्त्री० नसों की सिकुड़न या तनाव ।

टाँसना-क्रि० स० टाँचना ।

टाइप-सज्ञा पु० [अप्रे०] छापने के लिए बना हुआ धातु का अक्षर ।

क्रि० स० टाइप करना । छापना । टाइप-राइटर मशीन से छापना ।

टाइपराइटर-सज्ञा पु० [अप्रे०] अक्षर छापने का एक यंत्र ।

टाइपिस्ट-सज्ञा पु० [अप्रे०] टाइप करनेवाला ।

टाइम-सज्ञा पु० [अप्रे०] समय ।

टाइमटेबुल-सज्ञा पु० [अप्रे०] समय का विवरणपत्र । वह पुस्तक जिसमें रेलगाड़ियों के आने-जाने का समय तथा अन्य विवरण दिए रहते हैं ।

टाइमपीस-सज्ञा स्त्री० [अप्रे०] मेज या

आलमारी आदि पर रखने की एक प्रकार की छोटी घड़ी।

टाट-सज्ञा पु० १. सन या पट्टा का बुना हुआ मोटा कपड़ा। २. महाजनी गर्दी। ३. विरादरी।

मुहा०-टाट में पाट की बखिया=चीज तो भद्दी और सस्ती, पर उसमें लगी हुई सामग्री बखिया और बहुमूल्य। बेमेल का साज। टाट उलटना=दिवाला निकालना।

टाटर-सज्ञा पु० १ टट्टर। टट्टी। २ सिर की हड्डी। खोपड़ी। कपाल।

टाटिक, टाटी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "टट्टी"।

टाड-सज्ञा स्त्री० दे० 'टांड'।

टान-सज्ञा स्त्री० तनाव।

टानना-नि० स० दे० "तानना"। खींचना। फैलाना। षडा करना।

टाप-सज्ञा स्त्री० १. घोड़े के पैर का सबसे निचला भाग, जो जमीन पर पड़ता है। सुम। २ घोड़े के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द। ३ मछली पकड़ने का भावा। ४ मुरगियों के बंद करने का भावा।

टापना-क्रि० अ० १ घोड़े का पैर पटकना। २ किसी वस्तु के लिए हैरान होना।

बेकार इधर उधर घूमना। टक्कर मारना। ३. बिना दानापानी के समय बिताना। ४. पछताना। ५. उछलना। कूदना। क्रि० स० कूदना। फाँटना।

क्रि० अ० दे० "टपना"।

टापा-सज्ञा पु० १ उजाड़ मैदान। २ उद्यान। ३ टोकरा। भावा। बड़ा दौरा।

टापू-सज्ञा पु० १ स्थल का वह भाग जिसके चारों ओर जल हो। द्वीप। † २ टप्पा। टापा।

टावर-सज्ञा पु० १ बालक। लड़का। २ परिवार।

सज्ञा स्त्री० तालाब। ताल।

टामक-सज्ञा पु० डिमडिमी।

टामन-सज्ञा पु० दे० "टाटवा"।

टामो-सज्ञा पु० [प्रप्रे०] साधारण ब्रिटिश

सैनिक। वे अंग्रेज जिनके पिता का ठीक पता न मालूम हो।

टार-सज्ञा पु० १. घोड़ा। २. लोड़ा। ३. कुटना। भेंडुआ। ४. ढेर।

क्रि० वि० टारकर। हटारकर। उल्लंघन कर।

टारना-क्रि० स० दे० "टालना"।

टाल-सज्ञा स्त्री० १ ऊँचा ढेर। भारी राशि। अटाला। गज। २ बैलगाड़ी के पहिए का किनारा। ३. लकड़ी, भुस आदि, की बड़ी ढूकान। ४ टालने का भाव। टालमटाल।

सज्ञा पु० स्त्री और पुरुष का समागम कराने-वाला। कुटना। भेंडुआ।

टालटल-सज्ञा स्त्री० दे० "टालमटूल"।

टालना-क्रि० स० १ हटाना। खिसकाना। सरकाना। २ दूर करना। भगा देना। ३ मिटाना। न रहने देना। ४ स्पर्शित करना। मुलतबी करना। ५ समय बिताना। ६ आदेश या अनुरोध न मानना। ७ बहाना करके पीछा छुड़ाना। हीला-हवाली करना। ८ भूठा वादा करना। ९ धता बताना। टरकाना। १० पलटना। फेरना। ११ इधर-उधर हिलाना। गति देना।

टालमटूल-सज्ञा स्त्री० बहाना।

टालमटूल-सज्ञा स्त्री० बहाना। टालमटूल।

टाला-वि० आधा।

सज्ञा पु० छल। कपट। धोखा।

मुहा०-टालावाला बताना=टालना। टाल-मटाल करना।

टाली-सज्ञा स्त्री० १ गाय, बैल आदि के गले में बांधने की घटी। २ बचल जवान गाय या बखिया।

टाहली-सज्ञा पु० दे० "टहलूआ"। सेबक। टिंड-सज्ञा स्त्री० एक बैल जिसके गोल फलों की तरफारी होती है।

टिषट-सज्ञा पु० [अप्रे०] बही भाने-जाने या कोई काम करने के लिए अगिारमत्र जिकके लिए मूल्य देना पड़े।

टिकटिकी-सज्ञा स्त्री० दे० "टिक्ठी"।

टिक्ठी-सज्ञा स्त्री० १ तीन तिरछी खड़ी

की हुई लवडियों का एक ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ-पैर बाँधकर उनके शरीर पर बँत या कोड़े लगाये जाते हैं या फाँसी दी जाती है। २ तिपाईं। ३ वह रस्सी जिस पर शव ले जाते हैं।

टिकड़ा-सज्ञा पु० [स्त्री० टिक्डी] १ कोई चिपटा गोल टुकड़ा। २ अर्ध पर सँकी हुई रोटी। बाटी। अगावडी। टिकना-क्रि० अ० १ कुछ काल तब के लिए रहना। ठहरना। २ धुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल में जमना। ३ कुछ दिनों तक काम देना। ४ स्थित रहना। थड़ा रहना।

टिकरी†-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का पकवान। २ टिकिया।

टिकली-सज्ञा स्त्री० १ छोटी टिकिया। २ छोटी बिंदी। सितारा। चमकी।

टिकस-सज्ञा पु० [अग्ने० टेक्स] महगूल। टिकट।

टिकार्ई†-सज्ञा स्त्री० टिकने का भाव।

टिकाऊ-वि० टिकनेवाला। अधिक दिनों तक काम देनेवाला। ठहराऊ। मजबूत।

टिकान-सज्ञा स्त्री० १ टिकने या ठहरने का भाव। २ पड़ाव। चट्टी।

टिकाना-क्रि० स० १ रहने के लिए जगह देना। २ ठहराना। †३ शीर्ष उठाने में सहायता देना। सहारा देना।

टिकाव-सज्ञा पु० १ ठहरने का स्थान। टिकने का स्थान। ठहराव। २ स्थिति। स्थिरता। स्थायित्व। ३ पड़ाव।

टिकासर-सज्ञा पु० टिकने का स्थान। ठहरने की जगह।

टिकासा-वि० टिकनेवाला। पथिक। राही। थटोही।

टिकिया-सज्ञा स्त्री० १ गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। जैसे दवा की टिकिया। २ शोपने की बुक्की से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा जिससे चिलम पर आग सुलगाते हैं। ३ एक गोल मिठाई।

टिकुरा-सज्ञा पु० टीला। भीटा।

टिकुरी-सज्ञा स्त्री० टिकली।

टिकुली-सज्ञा स्त्री० दे० "टिक्ली"।

टिक्कत-सज्ञा पु० १. राजा का उत्तराधिकारी कुमार। युवराज। २ अधिष्ठाता। ३ सरदार।

टिकोरा†-सज्ञा पु० आम का छोटा बच्चा फल।

टिक्कड-सज्ञा पु० १. बड़ी टिकिया। २ मोटी रोटी। बाटी। लिट्टी।

टिक्का-सज्ञा पु० दे० "टीका"।

टिक्की-सज्ञा स्त्री० १ गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। टिकिया। २ बाटी। ३ माथे पर की बिंदी। ४ ताश की बूटी। ५. पर्वन्द। ६. प्रदेश।

टिघलना-क्रि० अ० दे० "पिघलना"।

टिटकारना-वि० स० [सज्ञा टिटकारी] 'टिक् टिक्' बहकर हानना।

टिटनिहा-सज्ञा स्त्री० १ जोक। २. एक प्रकार का पेड़।

टिटिह, टिटिहा-सज्ञा पु० टिटिहरी चिड़िया का नर।

टिटिहरी-सज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया। कुररी।

टिटिभ-सज्ञा पु० [स्त्री० टिटिभी] १ टिटिहरी। कुररी। २ टिट्टी।

टिट्टडा-सज्ञा पु० एक प्रकार का छाटा परवार कीड़ा। पतिंगा।

टिट्टडी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का उड़नेवाला कीड़ा, जो पेड़-पौधों तथा फसल को बड़ी हानि पहुँचाता है। यह लाखों की संख्या में बड़ा भारी दल बाँधकर चलता है।

टिट्टीदल-सज्ञा पु० टिट्टियों का दल या समूह। टिट्टिडगा-वि० टेढ़ा-भड़ा।

टिक्का\*†-सज्ञा पु० बूँद। दाग। टीका। अंगुली आदि से कोई चिह्न लगाना।

टिप टिप-सज्ञा स्त्री० टपटपने का शब्द। बूँद-बूँद बरसे गिरने का शब्द।

टिपवाना-क्रि० स० टीपने का काम दूसरे से पठाना। पिटवाना। चपवाना।

टिपारा-सज्ञा पु० मुकूट के आकार की एक टोपी।

टिप्पणी-सज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी"।

टिप्पन—सज्ञा पु० १ टीका । व्याख्या ।  
२ जन्मकुडली । जन्मपत्री ।

टिप्पनी—सज्ञा स्त्री० १ स्पष्टीकरण । अर्थ  
सूचित करनेवाला विवरण । किसी विषय  
का भावार्थ । किसी पर अपना मत प्रकाशित  
करना । २ टीका । व्याख्या ।

टिप्पस—सज्ञा स्त्री० पहुँच । युक्ति । धाम  
निकालने का तरीका । प्रयोजन साधने  
का ढंग ।

टिफिन—सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] दोपहर का भोजन  
या जलपान । कार्यालयों में कर्मचारियों  
और मजदूरों को इस समय कुछ समय के  
लिए छुट्टी दे दी जाती है ।

टिफिनकैरियर—सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] भोजन  
रखकर ले जाने का एक तरह का बरतन  
जिसमें कई कटोरे होते हैं । कटोरदान ।

टिबरी—सज्ञा स्त्री० पर्वत की छोटी चोटी ।

टिभाना—क्रि० स० लालच देना । ललचाना ।  
प्रतिदिन की थोड़ी-सी वृत्ति देना ।

टिभाव—सज्ञा पु० दिन की थोड़ी-सी जीविका ।  
लालचमान की वृत्ति ।

टिमकी—सज्ञा स्त्री० १. बच्चों का पेट । २. एक  
बरतन ।

टिमडिमाना—क्रि० अ० १ (दीपक का)  
मद-मद जलना । क्षीण प्रकाश देना ।

२ बुझने पर हो-हो कर के जलना । मिल-  
मिलाना । ३ मरने के निकट होना ।

टिमाक—सज्ञा स्त्री० ठसक । माज-नखरा ।  
हावभाव ।

टिमित्त—सज्ञा पु० लडका ।

टिम्मा—वि० नाटा । बीना ।

टिर—सज्ञा स्त्री० दे० "टर" ।

टिरफिस—सज्ञा स्त्री० बात न मानने की  
ढिठाई । चीं चपड । विरोध ।

टिरना—क्रि० अ० दे० "टरना" ।

टिलटिलाना—क्रि० स० १. चिढ़ाना । छेड़ना ।  
२ दस्त आना ।

टिलया—सज्ञा पु० चापलुत आदमी ।

टिलिया—सज्ञा पु० मुर्गी का बच्चा । छोटी  
मुर्गी ।

टिल्ला—सज्ञा पु० घक्का । चोंट । दे० "टीला" ।

टिल्लेनबीसी—सज्ञा स्त्री० १ निठल्लापन ।  
२ हीला हवाली । बहाना । ३ कुटना-  
पन ।

टिसुआ—सज्ञा पु० आँसू ।

टिहरा—सज्ञा पु० छोटा गाँव । छोटी बस्ती ।

टिहरी—सज्ञा स्त्री० छोटी बस्ती । गँवई ।

टिठ्ठकना—क्रि० अ० चौकना । ठिठकना ।

टिठ्ठनी—सज्ञा स्त्री० १ घटना । २ कोहनी ।

टिठ्ठक—सज्ञा स्त्री० चौकने की क्रिया या भाव ।  
चौक । भ्रमक ।

टीडसी—सज्ञा स्त्री० दे० "टिड" ।

टीक—सज्ञा स्त्री० १ एक गहना । २. चुटिया ।

टीकना—क्रि० स० १ टीका या तिलक  
लगाना । २ चिह्न या रेखा बनाना ।

टीका—सज्ञा पु० १ चन्दन, रोली आदि से  
मस्तक आदि पर लगाया जानेवाला चिह्न ।

तिलक । २ विवाह की एक रीति जिसमें  
कन्यापक्षवाले घर के माथे में तिलक लगा-  
कर द्रव्य आदि भेंट करते हैं । ३ दोनों

भौहों के बीच माथे का मध्य भाग । ४  
(किसी समुदाय का) शिरोमणि । छेष्ट

पुरुष । ५ राजसिंहासन या गद्दी पर बैठने  
का कृत्य । राजतिलक । ६ राज्य का

उत्तराधिकारी । युवराज । ७ आधिपत्य  
का चिह्न । ८ एक गहना जिसे स्त्रियाँ

माथे पर पहनती हैं । ९ घन्का । दाग ।  
चिह्न । १० सुइयों से शरीर में ओषध

प्रविष्ट करने का कार्य । ज्वेग या चेचक  
आदि का टीका ।

सज्ञा स्त्री० किसी पद या ग्रंथ का अर्थ  
स्पष्ट करनेवाला वाक्य या ग्रंथ । व्याख्या ।

टिप्पणी ।

टीकाकार—सज्ञा पु० किसी ग्रंथ का अर्थ  
लिखनेवाला । व्याख्याकार ।

टीनी—सज्ञा स्त्री० टिनिया । टिकुली ।

टीकैत—वि० टीका विशिष्ट । अभिषिक्त ।  
जिसे तिलक लगा हा । नाथद्वारे के गोस्वामी

जी की पदवी ।

टीटली—सज्ञा स्त्री० ओषध विनोप ।

टीडो—सज्ञा स्त्री० दे० "टिडो" । दानम ।  
पत्तन ।

की हुई लपड़ियों का एक ढाँचा जिससे अपराधियों के हाथ-पैर बाँधकर उनके शरीर पर बँस या बोड़े लगाये जाते हैं या फाँसी दी जाती है। २. तिपाई। ३. वह रस्सी जिस पर शव ले जाते हैं।

टिकड़ा-सज्ञा पु० [स्त्री० टिकड़ी] १. कोई चिपटा गोल टुकड़ा। २. आँच पर सँकी हुई रोटी। वाटी। अगावडी। टिकना-क्रि० अ० १. कुछ काल तक के लिए रहना। ठहरना। २. धुली हुई वस्तु का नीचे बैठना। तल में जमना। ३. कुछ दिनों तक काम देना। ४. स्थित रहना। अडा रहना।

टिकरी†-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का पक्वान। २. टिकिया।

टिकली-सज्ञा स्त्री० १. छोटी टिकिया। २. छोटी बिंदी। सितारा। चमकी।

टिकस-सज्ञा पु० [अग्ने० टैक्म] महसूल। टिकट।

टिकाई†-सज्ञा स्त्री० टिकने का भाव।

टिकाऊ-वि० टिकनेवाला। अधिक दिनों तक काम देनेवाला। ठहराऊ। मजबूत।

टिकान-सज्ञा स्त्री० १. टिकने या ठहरने का भाव। २. पडाव। चट्टी।

टिकाना-क्रि० स० १. रहने के लिए जगह देना। २. ठहराना। †३. बोझ उठाने में सहायता देना। सहारा देना।

टिकाव-सज्ञा पु० १. ठहरने का स्थान। टिकने का स्थान। ठहराव। २. स्थिति। स्थिरता। स्थायित्व। ३. पडाव।

टिकावर-सज्ञा पु० टिकने का स्थान। ठहरने की जगह।

टिकावा-वि० टिकनेवाला। पथिक। राही। बटोही।

टिकिया-सज्ञा स्त्री० १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। जैसे दवा की टिकिया। २. बोयले की युग्मी से बनाया हुआ चिपटा गोल टुकड़ा जिससे चिलम पर भाग सुलगाने हैं। ३. एक गोल मिठाई।

टिकुरा-सज्ञा पु० टीला। भीटा।

टिकुरी-सज्ञा स्त्री० टिकली।

टिकली-सज्ञा स्त्री० दे० "टिक्ली"।

टिब्त-सज्ञा पु० १. राजा का उत्तराधिकारी कुमार। मुवराज। २. अधिष्ठान। ३. सरदार।

टिकोरा†-सज्ञा पु० आम का छोटा कच्चा फल।

टिक्कड़-सज्ञा पु० १. बड़ी टिकिया। २. मोटी रोटी। वाटी। लिट्टी।

टिक्का-सज्ञा पु० दे० "टीका"।

टिक्की-सज्ञा स्त्री० १. गोल और चिपटा छोटा टुकड़ा। टिकिया। २. वाटी। ३. भायें पर की बिंदी। ४. ताम की बूटी। ५. पैवन्द। ६. प्रदेश।

टिघलता-क्रि० अ० दे० "पिपलना"।

टिठकारना-वि० स० [सज्ञा टिठकारी] 'टिक टिक' कहकर हाँकना।

टिटिनिका-सज्ञा स्त्री० १. जोक। २. एक प्रकार का पेड़।

टिटिह, टिटिहा-सज्ञा पु० टिटिहरी बिड़िया का नर।

टिटिहरी-सज्ञा स्त्री० एक छोटी चिटिया। कुररी।

टिट्ठिभ-सज्ञा पु० [स्त्री० टिट्ठिभी] १. टिटिहरी। कुररी। २. टिट्ठी।

टिड्डा-सज्ञा पु० एक प्रकार का छोटा परदार कौडा। पतिगा।

टिड्डी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का उड़नेवाला कौडा, जो पेड़-पौधों तथा फसल को बड़ी हानि पहुँचाता है। यह लाखों की संख्या में बड़ा भारी दल बाँधकर चलता है।

टिड्डीदल-सज्ञा पु० टिट्ठियों का दल या समूह। टिड्डीदगा-वि० टेडा-मेडा।

टिपका\*†-सज्ञा पु० बूँद। दाग। टीका। अंगूली आदि से की हुई चिह्न लगाता।

टिप टिप-सज्ञा स्त्री० टपकने का शब्द। बूँद-बूँद गरवे गिरने का शब्द।

टिपवाना-क्रि० म० टीपने का काम दूसरे से कराना। पिटवाना। थैपवाना।

टिपारा-सज्ञा पु० मुकुट के आकार की एक टोपी।

टिप्पणी-सज्ञा स्त्री० दे० "टिप्पनी"।



टील-सज्ञा पु० [अग्ने०] १ रोंगा । २. रोंग की पतई की हुई लोहे की पतली चद्दर । ३ इस चद्दर का बना टिन्ना ।

टीप-सज्ञा स्त्री० १ दवाने या ठोवने की क्रिया या भाव । दबाव । दाव । २ गव मूटने का काम । ३ टकार । पार शब्द । ४ गाने में जार की तान । ५ स्मरण के लिए किसी बात की भटपट लिख लेने की क्रिया । टीफ लेने का काम । ६ दस्तावेज । ७ जन्मपत्री । कुडली । वि० सबसे अच्छा ।

टीपटाप-सज्ञा स्त्री० सजधज । दिखावट । आडम्बर । दीवाल आदि की जहाँ-तहाँ मरम्मत ।

टीपन-सज्ञा स्त्री० १ जन्मपत्री । २ गाँठ । टीपना-क्रि० स० १ दवाना । चाँपना । मसनना । २ धीरे-धीरे ठोवना । टटोलना । हाथ से छूकर ढूँढना । ३ निचोड़ना । ४ बिन्दा लगाना । ५ ऊँच स्वर से गाना । ६ लिखना । ७ टांकना ।

टीला-सज्ञा पु० टीला । भीटा । टीमटाम-सज्ञा स्त्री० बनाव सिंगार । ठाट बाट । सजधज । तडव भडव ।

टील-सज्ञा स्त्री० १ छोटी मुर्गी । २ टिलिया । टीला-सज्ञा पु० १ ऊँची भूमि । ढूह । भीटा । २ मिट्टी का ऊँचा ढेर । ३ छार्न पहाड़ी ।

टील-सज्ञा स्त्री० रह-रहकर उठनेवाला दर्द । बसक । पीडा ।

टीलना-क्रि० अ० रह-रहकर दर्द उठना । बसक होना । पीडा होना ।

टुच-वि० तुच्छ ।

टुटा, टुडा-वि० [स्त्री० टुड़ी] १ जिसकी डाल या टहनी आदि बट गई हो । ढूँडा । २ जिसका हाथ बट गया हो । लूला । लूजा ।

टुडिमाना-क्रि० स० पीठ पर हाथ बाँधना । मुद्र बसना । मुद्र चढ़ाना ।

टुड़ी-सज्ञा स्त्री० १ नाभि । २ भुजा । वि० लूनी ।

टुडिया-सज्ञा स्त्री० तोना । गुग्गा ।

वि० नाटा । बीना ।

टुट-वि० याडा । जरा ।

टुटगदा-सज्ञा पु० भिलारी । मँगता ।

वि० १ तुच्छ । २ दरिद्र । बगाल ।

टुकडगदाई-सज्ञा पु० दे० "टुकडगदा" ।

टुकडा माँगने का काम ।

टुकडतोड-सज्ञा पु० दूसरे का दिया हुआ

टुकडा खाकर रहनवाला आदमी ।

टुकडा-सज्ञा पु० [स्त्री० टुकड़ी] १ किसी वस्तु का वह भाग, जो उसमें बट-छँटेकर अलग हो गया हो । खंड । २ विभक्त अंश । भाग । ३ रोटी का तोडा हुआ अंश ।

मुहा०-(दूसरे का) टुकडा ताडना=दूसरे के दिए हुए भोजन पर निर्वाह करना । टुकडा माँगना=भीख माँगना । टुकडा-सा जवाब देना=भट और स्पष्ट शब्दों में

अस्वीकार करना । कोरा जवाब देना । टुकड़ी-सज्ञा स्त्री० १. छोटा टुकडा । खंड । २ समुदाय । मंडली । दल । जत्था । ३ सेना का एक अंश ।

टुघलाना-क्रि० अ० चुभलाना । जुगाली करना ।

टुच्चा-वि० तुच्छ । आछा । लम्पट । लुच्चा ।

टुटका-सज्ञा पु० टाटवा । टुटपुंजिया-वि० जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो । बहुत थोड़े धनवाला ।

टुटह-सज्ञा पु० छोटी पड़की । टुटहँद-सज्ञा स्त्री० पड़की या फाटना के बोलने का शब्द ।

वि० १ शकला । २ दुबला पतला । टुनकी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बीडा ।

टुनगा-सज्ञा पु० [स्त्री० टुनगी] टहनी का अगला भाग ।

टुनाका-सज्ञा स्त्री० मुसली । टुपकना-क्रि० अ० १ धीरे से काटना या

डक मारना । २ चुगली खाना । टुरा-सज्ञा पु० डली । रत्ता । कण ।

टुसकना-क्रि० अ० टुसकना । टूंगना-क्रि० स० याडा-सा काटकर खाना ।

कतरना ।

दंड-सज्ञा पु० [स्त्री० दंडी] १ कीड़ों के मुँह के आगे निकली हुई दो पतली नलियाँ जिन्हें घेँसाकर व रक्त आदि चूसते हैं। २ जी, गेहूँ आदि की बाल म दाने के सिरे पर निकला हुआ नुकीला भाग। ३. सीग।

दंडी-मज्ञा स्त्री० १ छोटा दंड। २ डोही। नाभि। ३ किसी वस्तु की दूर तक निकली हुई नोक।

दूक†-सज्ञा पु० टुकड़ा। खड।

दूकर†-सज्ञा दे० "टुकड़ा"।

दूका-सज्ञा पु० १ टुकड़ा। खड। २ रोटी का चौथाई भाग। ३ भिक्षा। भीख।

दूट†-सज्ञा स्त्री० १ खड। टूटन। टुकड़ा। २ टूटने का भाव। ३ लिखावट में वह मूल से छटा हुआ शब्द या वाक्य, जो पीछे स किनारे पर लिखते हैं। ४ मूल। मुटि।

†सज्ञा पु० टाटा। पाटा। नुकसान। हानि।

दूटना-नि० अ० १ टुकड़-टुकड़े होना।

खडित होना। भग्न होना। २ किसी

अंग के जाड़ का उखड़ जाना। ३ लगा-

तार चलनेवाली वस्तु का रुक जाना।

सिलमिला बंद होना। ४ किसी और

एकवारगी वेग से जाना। ५ अकस्मात

प्राप्त होना। पिल पटना। ६ एक-

वारगी धाया करना। ७ अनायास गद्दी

से भा जाना। ८ पृथक् होना। ९

अलग होना। सबंध छूटना। लगाव न

रह जाना। १० डुबल होना। क्षीण

होना। ११ घनहीन होना। १२ चलता

न रहना। १३ मूढ़ म किले या ले

लिया जाना। १४ भाटा होना। १५

शरीर में ऐंठन या सनाव के साथ

पीड़ा होना।

मुहा०-दूट दूबर वरमना=भूसवधार

वरमना।

दूटा-वि० १ प्रसिद्ध। भग्न। २ दुबला।

वमजोर। ३ निर्धन।

सज्ञा पु० दे० "टोटा"।

मुहा०-टूटी पूटी बात या बोली=१

असबद्ध वाक्य। २ अस्पष्ट वाक्य।

दूटाफटा-वि० नष्टभ्रष्ट।

दूटना\*-नि० अ० सतुष्ट होना। प्रसन्न होना।

दूठनि\*-सज्ञा स्त्री० सतोष। तुष्टि।

दूना-सज्ञा स्त्री० टोना।

दूम-सज्ञा स्त्री० १. चतुर मनुष्य। २.

धक्का। ३. गहना। भाम्भूषण। ४ ताना।

घ्यम्प। ५. थोड़ी बात। चुटकिला।

६. छतरी।

मुहा०-दूमटाम=१ गहना पाता। वस्त्रा-

भूषण। २ वनाव सिंगार।

दूमटाम-सज्ञा स्त्री० थोड़ी पूर्जा। अल्प मूल-

धन। कुछ थोड़ी बात।

दूमनार्-नि० स० १ धक्का देना। भट्वा

देना। २ ताना मारना।

दूरनामंद-सज्ञा पु० [अग्ने०] खला की प्रति-

योगिता।

दूसा-सज्ञा पु० १. सूत। २. पाकर का फून।

३. टुकड़ा।

दुसी-सज्ञा स्त्री० कली।

ट-सज्ञा स्त्री० ताते की बोली।

मुहा०-टें टें=व्यर्थ की बकवाद। हुज्जत।

टें होना या बोलना=बटपट भर जाना।

टेंगना, टेंगरा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की

मछली।

टेंघना-सज्ञा पु० घुटना।

टेंचन-सज्ञा पु० खभा। सहारा। छप्पर आदि

को सहारने का बीम।

टेंट-सज्ञा स्त्री० १. थोनी की वह ऐंठन जो कमर

पर पड़ती है। मुरी। २ बधास की ढाड़।

३ दे० "टटर"। ४. पशुआ के शरीर का

धाव। ५. आँखा का डडर। वैश्मानी।

घोखेबाजी।

टेंटर-सज्ञा पु० रोग या चोट के कारण आँख

के डंके पर का उभरा हुआ भास। डेंडर।

टेंटा-सज्ञा पु० १. उच्छुसल बातें। हठमुक्त

वाँचें। बकवाद। व्यर्थ बया। २. फुन-

भरी।

टेंटी-सज्ञा स्त्री० करीन। करीन का पत्र।

रसा पु० व्यर्थ भगडा बोलोवाता। हुज्जती।

टट्टा-सज्ञा पु० १. गला । २. भंगूठा ।

टटे-सज्ञा स्त्री० १. तोते की बोली । २. ध्येय की व्यववाद ।

टेट-सज्ञा स्त्री० दे० "टिट" ।

टेटसी-सज्ञा स्त्री० दे० "टिट" ।

टेजकी-सज्ञा स्त्री० किसी वस्तु को लुढ़कने या गिरने से बचाने के लिए उसके नीचे लगाई हुई वस्तु ।

टेक-सज्ञा स्त्री० १. वह लकड़ी जो किसी भारी वस्तु को टिकाए रखने के लिए नीचे से लगाई जाती है । चाँड । धूनी । २. सहारा । आश्रय । अवलम्ब । ३. बैठने का स्थान । ४. ऊँचा टीला । ५. मन में ठानी हुई बात । हठ । जिद । ६. वान । आदत । ७. गीत का पहला पद । स्थायी ।

महा०-टेक निभना या रहना=प्रतिज्ञा पूरी होना । टेक पकड़ना या गहना=हठ करना ।

टेकडी-सज्ञा स्त्री० टीला ।

टेकन-सज्ञा पु० रोक । सहारा । आड । धूनी । गिरने से रोकने के लिए लगाई जानेवाली चीज ।

टेकना-क्रि० स० १. सहारे के लिए किसी वस्तु को शरीर के साथ भिड़ाना । सहारा लेना । २. ठहराना या रखना । ३. सहारे के लिए पकड़ना । हाथ का सहारा लेना । \*†४ हठ करना । ५. बीच में रोकना या पकड़ना ।

महा०-माया टेकना=प्रणाम करना ।

टेकनी-सज्ञा स्त्री० दे० "टेकन" । गिरने से रोकने के लिए लगाई जानेवाली चीज ।

टेकरा-सज्ञा पु० [स्त्री० टेवरी] टीला । छोटी पहाड़ी ।

टेकला†\*-सज्ञा स्त्री० धुन । रट ।

टेकान-सज्ञा स्त्री० १. गिरनेवाली छत आदि को संभालने के लिए उसके नीचे खड़ी की हुई लकड़ी । टेक । चाँड । अवलम्ब । २. भाड ।

टेकाना-क्रि० स० १. उठाकर ले जाने में सहारा देने के लिए धामना । २. उठने-बैठने में सहारा देना ।

टेकानी-सज्ञा स्त्री० किल्ली ।

टेकी-सज्ञा पु० १. दृढप्रतिज्ञ । २. हठी । जिद्दी ।

टेकुआ-सज्ञा पु० चरखे का तमला ।

टेकुरा-सज्ञा पु० पान । ताम्बूल ।

टेकुरी-सज्ञा स्त्री० १. सूत बानने या रस्सी बटने का सूआ । २. चमारों का सूआ जिससे वे तागा खींचते हैं ।

टेघरना†-क्रि० अ० दे० "पिघलना" ।

टेटका-सज्ञा पु० धान का एक गहना । †वि० दे० "टटा" ।

टेढा-सज्ञा पु० पेड़ी । एक प्रकार का चरखा ।

टेढ़-सज्ञा स्त्री० १. टेढ़ापन । वक्रता ।

तिरछापन । २. नटखटी । उजड़ूपन ।

वि० टेढ़ा ।

टेढ़विडगा-वि० टेढ़ा-मेढ़ा ।

टेढ़ा-वि० [स्त्री० टेढ़ी] १. जो बीच में इधर-उधर भुका हो । जो सीधा न हो । वक्र । कुटिल । २. तिरछा । ३. कठिन । मुश्किल । पेचीला । ४. उद्धत । उजड़ु ।

महा०-टेढ़ी खीर=मुश्किल काम । टेढ़ा पडना या होना=१. उग्र रूप धारण करना । विगडना । २. अक्डना । टेढ़ी-सीधी सुनाना=भला-बुरा कहना ।

टेढ़ाई-सज्ञा स्त्री० दे० "टेढ़ापन" ।

टेढ़ापन-सज्ञा पु० टेढ़ा होने का भाव । वक्रता । वक्रापन ।

टेढ़े-क्रि० वि० घुमाव फिराव के साथ । महा०-टेढ़े टेढ़े जाना=इतराना ।

टेना-क्रि० स० १. हथियार को तेज करने के लिए परपर आदि पर रगड़ना । हथियार पर धार रखना । हथियार तेज करना । २. मूँछ के बालों को खटा करने के लिए ऐंठना ।

टेनिस-सज्ञा पु० [फ्रे०] एक प्रकार का अमेजी खेल, जो हाथ में छोटे बल्ले लेकर गेंद से

खला जाता है। दोनों पक्ष के खिलाड़ियों के बीच में एक जाल लगा रहता है जिसे पार करके गद फाकनी पड़ती है।

देनी-सज्ञा स्त्री० छोटी अंगुली। छोटी लठिया। छिकुनी।

देबिल-सज्ञा पु० [अग्रे०] मेज।

देम-सज्ञा स्त्री० दीप शिखा। लालटेन की ली। वस्ती का जला हुआ अंश। टाइम [अग्र०] का अपभ्रंश। समय।

देर-सज्ञा स्त्री० १ गाने में ऊँचा स्वर। तान। लय। टीप। २ बुलाने का ऊँचा शब्द। पुकार। हाँक। गृहार।

देरना-क्रि० सं० १ ऊँच स्वर से गाना। तान लगाना। २ पुकारना। पूरा करना।

देरी-सज्ञा स्त्री० शाखा। टहनी। पतली डाल।

देलिप्राक-सज्ञा पु० [अग्र०] तार जिसके द्वारा खबर भजी जाती है।

देलिप्राप्त-सज्ञा पु० [अग्रे०] तार से भजी हुई खबर। तार।

देलिप्रिटर-सज्ञा पु० [अग्रे०] भजी हुई खबरें अपन आप छापकर देनवाली मशीन। इसका प्रयोग सवाद समितियाँ करती हैं और यह अखबारों के कार्यालयों में लगा रहता है।

देलिफोन-सज्ञा पु० [अग्र०] वह यंत्र जिसके द्वारा एक स्थान पर रहती हुई बात दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई देती है।

देलिविजन-सज्ञा पु० [अग्र०] दूर की चीजों (नृत्य वातालाप आदि) का चित्र पद पर देखने का बिजली का यंत्र।

देलिस्कोप-सज्ञा पु० [अग्रे०] दूरबीन। वह यंत्र जिससे दूर की वस्तु नजदीक और बड़ी दिखाई पड़े। दूरदर्शक यंत्र।

देव-सज्ञा स्त्री० १ आदत। बान। स्वभाव। चान। २ हठ। जिद्द।

देवकी-सज्ञा स्त्री० १. खम्भा। धम्भा। धूनी। सहारा। २ नाव या सबसे ऊपर का छोटा पाल।

देवना-क्रि० सं० दे० 'टना'।

देवा-सज्ञा पु० १ जन्मपत्री। जन्मकुडजी। २ लग्नपत्र जिसमें विवाह की मिति, घड़ी आदि लिखी रहती है।

देवैया-सज्ञा पु० देनेवाला। तेज करने वाला। चोखा करनेवाला।

देसुया-सज्ञा पु० दे० 'टसू'।

देसू-सज्ञा पु० १ पलाश। किशुक। ढाक। २ एक उत्सव।

देक-सज्ञा पु० [अग्रे०] १. लोहे की एक प्रकार की बड़ी गाड़ी जिस पर तोप सगी रहती है। २. तालाब। पानी का होज या खजाना।

देक्स-सज्ञा पु० [अग्रे०] कर। महसूल। यौ०-इन्कमटेक्स=आमदनी पर लगनवाला कर। आय कर। सेल्सटेक्स=बिक्री कर।

दैया-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चिपटी छोटी कोठी। चित्ती।

टोका-सज्ञा पु० १ छोर। सिरा। किनारा। २ नोक। कोना। जमीन जो नदी में कुछ दूर चली गई हो।

टोचना-क्रि० सं० चुभाना।

टोट-सज्ञा स्त्री० चौच।

टोटरी-सज्ञा स्त्री० टोटी।

टोटा-सज्ञा पु० १ कारतूस। २ बाँस के छोटे टुकड़े। ठूठा। ३ पानी आदि डालन के लिए बरतन में लगी हुई नली। तुलतुली।

टोटी-सज्ञा स्त्री० १ जलयान विशेष जिसमें टोटी लगी हो। २ नाली। पनाला। मोरी। तुलतुली। ३ पशुओं का धूषन।

टोकरा-सज्ञा स्त्री० उच्चारण किया हुआ अक्षर। छोटा वाक्य। १ टोकने की किया या भाव। २ बुरी दृष्टि का प्रभाव। नजर।

यौ०-टोक-टाक=प्रश्न आदि द्वारा वाधा। रोप-टोक=मनाही। निषेध।

टोकना-क्रि० सं० १ यात्रा के लिए जाते समय किसी से कुछ पूछना। २ किसी को कोई काम करते हुए देखकर उसे कुछ कहकर रोचना या पूछ-ताछ करना। ३ नजर लगाना। बरी दृष्टि से देखना।

सज्ञा पु० [स्त्री० टोन्नी] १ टोकरा ।  
 डला । २ एक प्रकार का हडा ।  
 टोन्नी-सज्ञा स्त्री० डलिया ।  
 टोकरा-सज्ञा पु० [स्त्री० टोक्री] छावड़ा ।  
 टला । भावा । सँचा । दोरा ।  
 टोक्री-सज्ञा स्त्री० १ छोटा टोकरा ।  
 २ भणोली । छोटी दोरी ।  
 टोपा-सज्ञा स्त्री० खावट । रोक ।  
 यो०-टोपटाप=छेड़छाड़ । टोपाटोकी=पूछताछ । छेड़छाड़ ।  
 टोकरा-सज्ञा पु० वह बात जो किसी को कुछ स्मरण दिलाने के लिए कही जाय ।  
 सबैत का शब्द ।  
 टोटका-सज्ञा पु० कोई बाधा दूर करने या मनोरथ सिद्ध करने के लिए कार्य, जो दैवी शक्ति आदि पर विश्वास करने किया जाय । टोना । मन-मन । लटका ।  
 मुहा०-टोटका करने आना=आवर तुरत चला जाना ।  
 टोटकेहार्ड-सज्ञा स्त्री० टोटका, टोना या जादू करनेवाली ।  
 टोटल-सज्ञा पु० [अंग्रे०] जोड़ । योग ।  
 टोटा-सज्ञा पु० १ बच्चा या बड़ा हुआ टुकड़ा । २ कारतूस । ३ घाटा । हानि ।  
 ४ कमी । अभाव ।  
 टोडी-सज्ञा पु० [अंग्रे०] नीच और लुब्ध प्रकृति का व्यक्ति । नीच और सुशामदी ।  
 यो०-टोडी बच्चा-सरकारी अफसर का सुशामदी ।  
 सज्ञा स्त्री० एक रागिनी ।  
 टोनहा-वि० [स्त्री० टोनही] टोना या जादू करनेवाला ।  
 टोनहाया-सज्ञा पु० [स्त्री० टोनहार्ड] टोना या जादू करनेवाला मनुष्य ।  
 टोना-सज्ञा पु० १ मन्त्र-तंत्र का प्रयोग । जादू । २ विवाह का एक प्रकार का गीत ।  
 †वि० स० हाथ से टटोलना । छूना ।  
 टोप-सज्ञा पु० १ बड़ी टोपी । २ लवाई में पहनने की लोहे की टोपी । शिरस्त्राण ।  
 ३ खाद । बूँड । ४ खोल । गिलाफ ।  
 ५. बूँड । पत्तर ।

टोपा-सज्ञा पु० १. बड़ी टोपी । †टोपग ।  
 २. टाँका । ढाम ।  
 टोपी-सज्ञा स्त्री० १. सिर पर का पहनावा ।  
 २ घातु का गोल गहरा ढक्कन जिसका प्रयोग बन्दूक चलाने में करते हैं । बन्दूक का पडावा । ३ वह धोली जो गिबारी जानवर के मुँह पर चढ़ाई रहती है ।  
 टोभ-सज्ञा पु० टाँका । तापा ।  
 टोपा-सज्ञा पु० गड्ढा ।  
 टोर†-सज्ञा पु० बटारी । बटार ।  
 टोरना†-वि० स० ताडना ।  
 मुहा०-आँख टोरना=लज्जा आदि से दृष्टि हटाना या अलग करना ।  
 टोर्न-सज्ञा पु० १ अरहर का छिलने सहित खड़ा दाना । २ रवा ।  
 टोल-सज्ञा स्त्री० १ मडली । जत्या । भुंड । दल । २. चटसार । पाठशाला ।  
 टोला-सज्ञा पु० [स्त्री० टोलिका] १ आदमियों की बड़ी बस्ती का एक भाग । मुहल्ला । २ पत्थर या ईंट का टुकड़ा । राडा ।  
 टोली-सज्ञा स्त्री० १ छोटा मुहल्ला । बस्ती का छोटा भाग । २ समूह । भुंड । जत्या । मडली । ३ पत्थर की चोखोर पटिया । सिल । ४ एक प्रकार का बाँस । नाल ।  
 टोयना†-वि० स० दे० "टोना" ।  
 टोह-सज्ञा स्त्री० १ टटोल । तलाश । खोज । बूँड । २ खबर । देख-भाल ।  
 टोहना-वि० स० खोजना । तलाश करना । छूना ।  
 टोहटाई-सज्ञा स्त्री० खोज । तलाश । देख-भाल ।  
 टोहिया-वि० जासूस । टोह खेनेवाला । पता लगानेवाला ।  
 टोही-सज्ञा स्त्री० पता लगानेवाला ।  
 टुक-सज्ञा पु० [अंग्रे०] लोहे का सड़न ।  
 टुक्कवाल-सज्ञा पु० [अंग्रे०] एक शहर से दूसरे शहर को किया गया टेलीफोन । टेलीफोन द्वारा अपने नगर से दूसरे नगर में किसी व्यक्ति से बातचीत ।

द्राम-संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक प्रकार की गाड़ी जो लोहे की पटरियों पर बिजली द्वारा सड़कों पर चलती है।  
ट्रेडमार्क-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] व्यापारी लोगों का एक प्रकार का चिह्न।  
ट्रेन-संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] रेलगाड़ी।  
ट्रेक्टर-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] खेत जोतने की

मशीन या यंत्र जिससे कई हजार बीघे खेत आसानी से धोड़े समय में ही जोते जा सकते हैं।  
टोरना-क्रि० स० जाँच करना। परखना।  
बाह लेना। पता लगाना।  
टौस-संज्ञा स्त्री० एक नदी का नाम। इसका दूसरा नाम तमसा है।

ठ

ठ-व्यंजन का बारहवाँ अक्षर जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है। इसलिए इसे मूर्धन्य कहते हैं।  
ठ-संज्ञा पुं० १. शिप। २. महाध्वनि।  
३. चंद्रमंडल। सूर्यमंडल। ४. दूध।  
५. प्रतिमा। ६. देवता। ७. इन्द्रिय से ग्रहण करने योग्य वस्तु। ८. जनसमूह। ९. गोचर।  
ठंठ-वि० ठूँठा। गुला (पेड़)।  
ठंठार-वि० खाली। रीता।  
ठंड-संज्ञा स्त्री० शीत। सरदी। ठंड।  
ठंडई-संज्ञा स्त्री० दे० "ठंडाई"।  
ठंडक-संज्ञा स्त्री० १. शीत। सरदी।  
जाड़ा। २. तरी। ३. संतोष। तृप्ति।  
प्रसन्नता। तसल्ली। शान्ति। ४. किसी उपद्रव या फँसे हुए रोग आदि की शान्ति।  
ठंडा-वि० [स्त्री० ठंडी] १. सर्द। शीतल।  
२. जो जलता या दहकता न हो। बुझा हुआ। ३. जिसमें आवेश न हो। शांत।  
४. धीर। शांत। गंभीर। ५. जिसमें उत्साह या उमंग न हो। सुस्त। उदासीन।  
६. जो कोई अनुचित बात होते देखकर कुछ न बोले। धिरोप न करनेवाला।  
७. तुष्ट। प्रसन्न। खुश। ८. निश्चेष्ट।  
जड़। ९. मृत। मरा हुआ।  
मुहा०-ठंडी साँस=दुःख से भरी साँस।  
शोकोच्छ्वास। आह। ठंडा करना=१.  
क्रोध शांत करना। २. शोक कम करना।  
तसल्ली देना। ठंडे ठंडे=१. विना विरोध  
या प्रतिवाद किए। चुपचाप। २. हँसी  
खुशी से। ठंडा रखना=आराम-मन से

रखना। ठंडा होना=मर जाना। ताजिया  
ठंडा करना=ताजिया वफत करना। (किसी  
पवित्र या प्रिय वस्तु को) ठंडा करना=  
फँकना या तोड़ना-फोड़ना।  
ठंडाई-संज्ञा स्त्री० ठंडा शब्द, जिसके  
पीने से शरीर की गरमी शांत होती और  
ठंडक आती है। सोंफ, वादाम, गुलाब की  
पत्ती, खरबूज की मीठी आदि को पीसकर  
इसे बनाते हैं।  
ठंड-संज्ञा स्त्री० ठहराई। निश्चित की हुई।  
ठक-संज्ञा स्त्री० ठोकने का शब्द। दो वस्तुओं  
के टकराने का शब्द।  
वि० सधाटे में आया हुआ। भीचका।  
ठक-ठक-संज्ञा स्त्री० बखेड़ा। टंटा। भंगट।  
शब्द-विशेष। ठोकने या लकड़ी आदि काटने  
का शब्द।  
ठकठकाना-क्रि० स० १. खटखटाना। २.  
ठोकना-पीटना। ३. विरोध करना।  
ठकठकिया-वि० तकरार करनेवाला।  
हुज्जती। भगड़ालू।  
ठकठेला-संज्ञा पुं० धक्कापक्की। भगड़ा।  
टंटा। बखेड़ा।  
ठकठोआ, ठकठोवा-संज्ञा स्त्री० १. छोटी नाव।  
झोंगी। २. करतूल। ३. करतूल वजाकर  
भिक्षा माँगना।  
ठकुरई-संज्ञा स्त्री० दे० "ठकुराई"।  
ठकुरमुहाती-संज्ञा स्त्री० बल्लोचप्पी। खुशा-  
मद। मुँहदेखी बात।  
ठकुराइट-संज्ञा स्त्री० प्रभुत्व। ठकुराई।  
ठकुराइन-संज्ञा स्त्री० १. ठाकुर की स्त्री।

स्वामिनी । २ शक्ति की स्त्री । शक्तिणी ।  
 ३. नाई की स्त्री । नाइन ।  
 ठपूराई-गजा स्त्री० १ सरदार । प्रभुत्व ।  
 २ ठपूर का अधिकार । ३ वह प्रदेश  
 जहाँ निगी ठपूर या सरदार के अधिकार  
 में हो । रियासत । ४ वयणन । महत्त्व ।  
 ठपूरानी-सजा स्त्री० १. ठपूर या जमींदार  
 की स्त्री । २ रानी । ३ मालिकिन ।  
 स्वाभिनी ।  
 ठपूरायत-सजा स्त्री० १. आधिपत्य ।  
 प्रभुत्व । २ वह प्रदेश जो निगी ठपूर  
 या सरदार के अधीन हो । रियासत ।  
 ठकौरी-सजा स्त्री० १ सहारा देने की एक  
 लकड़ी जिसे साधु या पहाड़ी मजदूर अपने  
 साथ रखते हैं । २ बैरागिन । जागिन ।  
 ठक्कर-सजा स्त्री० दे० "ठक्कर" ।  
 ठग-सजा पु० [स्त्री० ठगनी, ठगिन] १.  
 वह छुटेरा जा छल और धूर्तता से माल  
 लूटता है । २ छली । ३ धूर्त । धोखे  
 बाज ।  
 ठगई-सजा स्त्री० दे० "ठगपना" । धोखा ।  
 ठगण-सजा पु० १ मात्राओं का एक गण ।  
 ठगना-वि० स० १ धोखा देकर माल  
 लूटना । २ धोखा देना । छल करना ।  
 ३ सीधा बेचने में बेईमानी करना ।  
 ४ नि० अ० १ धोखा खाना । २ चक्कर  
 म आना । चक्कर होना ।  
 मुहा०-ठग सा=धाश्चर्य से स्तब्ध ।  
 चकित । मौचक्का ।  
 ठगनी-सजा स्त्री० १. ठग की स्त्री या  
 ठगवाली स्त्री । २ धूर्तनी ।  
 ठगपना-सजा पु० १ ठगने का भाव या  
 काम । २ धूर्तता । छल । चालाकी ।  
 ठगमूरी-सजा स्त्री० एक प्रकार की नशीली  
 जड़ी-बूटी, जिसे ठग पशुका को बेहोश  
 करने के लिये पत्त लूटने के लिए खिलाते थे ।  
 मुहा०-ठगमूरी खाना=मतवाता होना ।  
 ठगमोदक-सजा पु० दे० "ठगलाडू" ।  
 ठगलाडू-सजा पु० ठगो या लूटू जिसमें  
 नशीली या बेहोश करनेवाली चीज मिली  
 रहती थी ।

मुहा०-ठगलाडू खाना=मतवाता होना ।  
 बमुग्य होना ।  
 ठगधाना-वि० स० [ठगना का प्रे०] दूसरे  
 से धोखा दिनवाना ।  
 ठगविद्या-सजा स्त्री० धूर्तता । धोखेबाजी ।  
 ठगहारी-सजा स्त्री० ठगई ।  
 ठगई-सजा स्त्री० दे० "ठगी" ।  
 ठगाना-वि० अ० धोखे में आकर हानि  
 सहना । ठगा जाना ।  
 ठगाही-सजा स्त्री० दे० "ठगपना" ।  
 ठगी ।  
 ठगिन, ठगिनी-सजा स्त्री० १ धोखा देकर  
 लूटनेवाली स्त्री । २ ठग की स्त्री ।  
 ठगिया-सजा पु० ठग । चपटी । धोखा देने-  
 वाला । धोखबाज ।  
 ठगो-सजा स्त्री० १ धोखा देकर माल  
 लूटने का काम या भाव । २ धूर्तता ।  
 धोखेबाजी । चालबाजी ।  
 ठगोरी-सजा स्त्री० १. मुघ-बुघ भुलानेवाली  
 शक्ति । २ टीना । जादू । माहिनी ।  
 माया । ३. धोखाबड़ी । ठगपना ।  
 ठगई ।  
 ठकरा-सजा पु० मगडा । कलह । वैर-  
 विरोध । टटा । बखेडा ।  
 ठट-सजा पु० १ दल । मडली । भीड़-  
 भाड । झुंड । समूह । २ बनाव । रचना ।  
 सजावट ।  
 ठटकीला-वि० सजा हुआ । ठाठदार ।  
 ठटना-वि० स० १ ठहरना । निश्चित  
 करना । २ सजाना । सज्जित करना ।  
 आरंभ करना । (राग) छेड़ना ।  
 कि० अ० १. खड़ा रहना । अडना ।  
 डटना । २ सजना । सुसज्जित होना ।  
 ठटनि-सजा स्त्री० बनाव । रचना ।  
 ठटरी-सजा स्त्री० १ हड्डियों का ढांचा ।  
 अस्थिपंजर । २. पास भूसा आदि ढाँचने  
 का जाल । ३. सरिया । ४. किसी वस्तु  
 का ढांचा । ५. मुरदा उठाने की स्त्री ।  
 अरपी ।  
 ठट्टा-सजा पु० बनाव । रचना ।  
 ठट्ट-सजा पु० दे० "ठट" ।

ठट्टर-सज्ञा पु० दे० 'ठट्टरी'। ठट्ट। चाल।  
मचान। सपरेश से छाने के लिए बांस  
के ठट्टर। मचान पर रखने के लिए बांस  
का बना हुआ ठाठ।

ठट्टी-सज्ञा स्त्री० ठट्टरी। पंजर।

ठट्टा-सज्ञा पु० हँसी। दिल्लीगो।

थो०-ठट्टेबाज=दिल्लीगोबाज।

मुहा०-ठट्टा उड़ाना=उपहास करना।

ठट्ट-सज्ञा पु० दे० 'ठट्ट'।

ठट्टई-सज्ञा स्त्री० दे० 'ठट्टा'।

ठठक-सज्ञा स्त्री० १. अटवाव। रोक। २.

भीषक। भयभीत।

ठठकना-क्रि० प्र० १. सहसा रुक जाना।

ठठकना। २. स्तम्भित हो जाना। रुक

रह जाना। डर जाना। ठठकना।

ठठना-क्रि० प्र० दे० 'ठठना'।

ठठरा-सज्ञा पु० दे० 'ठट्टर'।

ठठरी-सज्ञा स्त्री० दे० 'ठट्टरी'।

ठठाई-क्रि० वि० १. मारपीटकर। मार

मारकर। २. भक्ति प्रसन्नता से।

ठठाना-क्रि० स० मारना। पीटना।

ठोक्ना।

क्रि० प्र० जोर में हँसना।

ठठिरिन-सज्ञा स्त्री० ठठरे की स्त्री।

ठट्टकना-क्रि० प्र० खनना।

ठठर-मजोरिका-सज्ञा स्त्री० ठठरे की बिल्ली

जो ठठक शब्द से न डरे।

ठठरा-सज्ञा पु० [स्त्री० ठठेरिन, ठठरी]

वर्तन-यनानेवाला। कसेरा।

मुहा०-ठठरे ठठरे बदलाई=जैसे के साथ

तैसा व्यवहार। ठठरे की बिल्ली=ठठरे

की बिल्ली, ऐसा मनुष्य जो कोई विकट

बात देखकर न चौंके न मचकाय।

ठठरी-सज्ञा स्त्री० १. ठठरे की स्त्री। २. ठठरे

का काम।

थो०-ठठरी, बोजार=कसेरा या बाजार।

ठठोला-सज्ञा पु० १. दिल्लीगोबाज। मस-

खरा। विनोदप्रिय। २. दे० 'ठठोली'।

ठठोली-सज्ञा स्त्री० हँसी। दिल्लीगो।

ठट्टा-क्रि० वि० खडा।

ठट्टा-सज्ञा पु० १. रीढ़। २. गुठ्ठी के बीच

की लकड़ी। मुट्टा।

ठट्टा-क्रि० वि० खडा।

ठन-सज्ञा स्त्री० धातु पर आघात पड़ने या

उसके बजने का शब्द।

ठनक-सज्ञा स्त्री० १. ध्वनि। बाजे का शब्द।

जैसे मृदंग, तबला आदि। २. टीस।

चसके।

ठनकना-क्रि० प्र० १. ठन ठन शब्द करना।

२. टीस मारना। चसकना। रह-रहकर

धदे होना। ३. सिर धदे करना। ४. किसी

कार्य को प्रपने लिए हानिकारक समझना।

मुहा०-माया ठनकना=गहरा सटका पड़ा

होना।

ठनकाना-क्रि० स० किसी धातुखंड या बाजे

पर आघात करके शब्द निकालना।

बजाना।

ठनकार-सज्ञा स्त्री० ठनठन शब्द। रुपये के

बजने का शब्द।

ठनगत-सज्ञा पु० १. मगल अवसरों पर नैम पाते

के लिए हट। २. किसी वस्तु के लिए बालकों

का मचलना।

ठनठन गोपाल-सज्ञा पु० १. छेड़ी और

निसार वस्तु। २. निर्धन, मनुष्य।

ठनठनाना-क्रि० स० ठनठन शब्द निकालना।

बजाना।

क्रि० प्र० ठनठन शब्द होना या बजना।

ठनना-क्रि० प्र० १. (किसी कार्य का)

तत्परता के साथ आरम्भ होना। अनुष्ठित

होना। छिड़ना। २. (मन में) ठहरना।

पक्का होना। ३. लगना। जमना। ४.

उग्र होना। मुस्ति होना।

ठनाठन-क्रि० वि० ठनठन शब्द के साथ।

भनकार के साथ।

ठनाका-सज्ञा पु० ठनठन शब्द। ठनकार।

ठपका-सज्ञा पु० धक्का। ठेस। ठोक।

ठप्पा-सज्ञा पु० १. मुहर। मोहर। २. लकड़ी,

धातु आदि का खंड जिस पर कोई आकृति,

नाम, या बेलबूटे आदि इस प्रकार खुदे हो

कि उस पर रंग या स्याही आदि लगाकर

दूसरी वस्तु पर दवाने से उसकी छाप उत्तर

आवे। ३. साँचे के द्वारा बनाया हुआ

बेल-बूटा आदि । छाप । नकशा । ४. एक प्रकार का मोटा ।

ठमक-संज्ञा स्त्री० १. चलते-चलते ठहर जाने का भाव । रुकावट । २. चलने की ठसक । सचक ।

ठमकना-क्रि० प्र० १. चलते-चलते ठहर जाना । ठिठकना । रुकना । ठहरना । २. मटकते हुए चलना ।

ठमकाना, ठमकारना-क्रि० स० चलते-चलते रोकना । ठहराना ।

ठमना-क्रि० स० १. दृढ़ संकल्प के साथ आरंभ करना । ठानना । २. कर चुकना । पूरी तरह से करना । ३. मन में ठहराना । निश्चित करना । ४. स्थापित करना । बैठाना । ठहराना । ५. लगाना । प्रयोग करना ।

क्रि० प्र० दे० "ठनना" । १. स्थित होना । बैठना । जमना । २. प्रयुक्त होना । लगना ।

ठरना-क्रि० प्र० १. सख्ती से थकड़ना या सुझा होना । २. बहुत अधिक ठंड पड़ना ।

ठरी-संज्ञा पुं० १. देशी शराब । महुए की शराब । २. बहुत मोटा सूत । ३. अधपक्की ईंट ।

ठवना-क्रि० स० दे० "ठगना" ।

ठवनि या ठवनी-संज्ञा स्त्री० १. बैठक । २. बैठने या खड़े होने का ढंग । आसन । मुद्रा । ३. चाल । गति ।

ठवर-संज्ञा पुं० ठीर । स्थान ।

ठस-वि० १. ठोस । कड़ा । २. जिसकी बुनावट घनी हो । गफ । ३. दृढ़ । मजबूत । ४. भारी । दजनी । ५. सुस्त । आलसी । ६. (रूपया) जिसकी मूँकनार ठीक न हो । ७. कृपण । कंजूस ।

ठसक-संज्ञा स्त्री० १. थकड़ । नलरा । २. दर्प । शान ।

ठसकवार-वि० १. घमंडी । अभिमानी । २. शानदार । तटक-मड़कवाला ।

ठसका-संज्ञा पुं० १. सूखी खाँसी जिसमें कफ न निकले । २. ठीकर । धक्का ।

ठसाठस-क्रि० प्रि० ठूँसकर या खूब फाँसकर भरा हुआ । संचाराच ।

ठस्सा-संज्ञा पुं० १. अभिमानपूर्ण हाव-भाव । ठसक । २. घमंड । धंकार । ३. ठाट-धाट । शान ।

ठहक-संज्ञा स्त्री० नगाड़े का शब्द ।

ठहना-क्रि० प्र० १. घोड़ों का हिनहिनाना । २. घनघनाना । घंटे का बजना । ३. बनाना । सँवारना ।

ठहरा-संज्ञा पुं० १. स्थान । जगह । २. रसोई का स्थान । चौका । ३. लिपाई-पोतई ।

ठहरना-क्रि० प्र० १. रुकना । थमना । २. ढेरा डालना । टिकना । विश्राम करना । ३. एक स्थान पर बना रहना । स्थिर रहना । ४. नीचे न गिरना । अड़ा रहना । ५. नष्ट न होना । बना रहना । ६. कुछ दिन काम देने लायक रहना । ७. धुली हुई वस्तु के नीचे बैठ जाने पर पानी का स्थिर और साफ होकर ऊपर रहना । धिराना । ८. धीरे धीरे रहना । ९. प्रतीक्षा करना । आसरा देखना । १०. निश्चित होना । पक्का होना ।

मुहा०—मन ठहरना=चित्त की आकूलता दूर होना । किसी बात का ठहरना=किसी बात का संकल्प होना । ठहरा=है । जैसे, वह अपने संबंधी ठहरे । ठहराई-संज्ञा स्त्री० १. ठहराने की क्रिया, भाव या मजदूरी । २. कब्जा । अधिकार ।

ठहराऊ-वि० टिकाऊ । दृढ़ । मजबूत । ठहराना-क्रि० स० १. चलने से रोकना । गति बंद करना । २. ढेरा देना । टिकाना । ३. अड़ाना । टिकाना । ४. इधर-उधर न जाने देना । ५. किसी होते हुए काम को रोकना । ६. पक्का करना । तय करना ।

ठहराव-संज्ञा पुं० १. ठहरने का भाव । स्थिरता । २. निश्चय । निर्धारण ।

ठहरीनी-संज्ञा स्त्री० विवाह में दहेज आदि के लेन-देन का करार ।

ठहाका-संज्ञा पुं० जोर की हँसी । अट्टहास

ठहिया—सज्ञा स्त्री० स्थान ।  
 ठाँ—सज्ञा स्त्री०, पु० १ दे० "ठाँव"। ठाँव ।  
 २. बटूक छूटने की आवाज ।  
 ठाँव—सज्ञा स्त्री० १. स्थान । जगह । २. तई । प्रति । ३. समीप । पास । निकट ।  
 ४. स्थायी ।  
 ठाँव—सज्ञा पु० स्थान । ठाँव । ठौर । अव-  
 सार ।  
 ठाँव—वि० १. जो सुखकर बिना रस का  
 हो गया हो । नीरस । २. (गाय या  
 भैर) जो रूप न देती हो ।  
 ठाँव—सज्ञा पु०, स्त्री० १ स्थान । जगह ।  
 २. समीप । निकट । पास । ३. बटूक छूटने  
 का शब्द ।  
 ठाँव ठाँव—सज्ञा स्त्री० १ बटूक छूटने का  
 शब्द । २. भगडा ।  
 ठाँव—सज्ञा पु०, स्त्री० स्थान । जगह ।  
 ठिकाना ।  
 ठाँसना—क्रि० स० १ जोर से धुसाना ।  
 दबादबाकर भरना । २. रोकना । मगा  
 करना ।  
 क्रि० अ० जोर से खाँसना ।  
 ठाकुर—सज्ञा पु० [स्त्री० ठकुराइन, ठकु-  
 रानी] १ देवता । देव-मूर्ति । २ ईश्वर ।  
 भगवान । ३ पूज्य व्यक्ति । ४ नायक ।  
 मुखिया । सरदार । ५ जमींदार । ६  
 क्षत्रियो की उपाधि । ७ मालिक ।  
 स्वामी । ८ नाइयो की उपाधि । मैथिल  
 ब्राह्मणों की उपाधि ।  
 ठाकुरद्वारा—सज्ञा पु० मंदिर । देवालय ।  
 देवस्थान ।  
 ठाकुरबाड़ी—सज्ञा स्त्री० देवालय । मंदिर ।  
 ठाकुरसेवा—सज्ञा स्त्री० १ देवता का  
 पूजन । २ मंदिर के नाम, उत्सर्ग की  
 हुई संपत्ति ।  
 ठाकुरी—सज्ञा स्त्री० स्वामित्व । आधिपत्य ।  
 शासन ।  
 ठाढ़—सज्ञा पु० १ लकड़ी या वाँस की  
 फट्टियों को बना हुआ परदा । २ ढाँचा ।  
 ढड्डा । पंजर । ३ वेश विन्यास । शृङ्गार  
 सजावट । ४ आढम्बर । ऊपरी तबक-भटक ।

दिखावट । ५ ढग । शैली । प्रकार । तर्ज ।  
 ६. आयोजन । तैयारी । ७. सामान ।  
 सामग्री । ८. युक्ति । ९. ढग । उपाय ।  
 १०. समूह । भुंड । ११. बहुतायत । अधि-  
 यत्ता ।

महा०—ठाट बदलना=१. वेश बदलना ।  
 २. भूठभूठ अधिकार या बढप्पन जताना ।  
 रंग बाँधना ।

ठाटना\*†—क्रि० स० १. निर्मित करना ।  
 रचना । बनाना । २. अनुष्ठान या,  
 आयोजन करना । ठानना । ३. सजाना ।  
 सँवारना ।

ठाटवाट—सज्ञा पु० १. सजावट । सजधज ।  
 २. तडक-भटक । आडवर ।

ठाटर—सज्ञा पु० १. ठाट । टट्टर । टट्टी ।  
 २. ठठरी । पंजर । ३. ढाँचा । ४. कबू-  
 तर आदि के बैठने की छतरी । ५. ठाट-  
 वाट । यनाव । सिंगार । सजावट ।

ठाटी†—सज्ञा स्त्री० ठट । समूह ।

ठाठ†—सज्ञा पु० दे० "ठाट" ।

ठाडा—वि० खंडों । सीधा । लंबायेमान ।

ठाड या ठाडा†—वि० १. खंडा । २. समूचा ।

साधित । ३. उत्पन्न । पैदा ।

वि० हट्टा-बट्टा । हूष्ट-मुष्ट ।

मुहा०—ठाडा देना=ठहराना । ठिथाना ।

ठाडा ठाडी=बहुत धीम्र । शीघ्रता से ।

सडे-खडे ।

ठादर†—सज्ञा पु० भगडा । मुठभेड ।

ठान—सज्ञा स्त्री० १ कार्य का आयोजन ।

काम का छिड़ना । अनुष्ठान । समारम्भ ।

२ छेडा हुआ काम । ३. दृढ निश्चय ।

पक्का इरादा । ४. अदा । ५. चेष्टा ।

मुद्रा ।

ठानना†—क्रि० स० १. तत्परता के साथ

कार्य आरंभ करना । छेड़ना । २. पक्का

करना । ठहराना ।

ठाना\*†—क्रि० स० १ ठानना । २ निश्चित

करना । पक्का करना । ३ स्थापित करना ।

रखना । ४. प्रारम्भ किया । ठहराया ।

निश्चय किया । विचार किया । प्रतिज्ञा की ।

ठाम†—सज्ञा पु०, स्त्री० १. ठाँव । स्थान ।

जगह । ठिबाना । २ सचालन का ढग ।  
३. मूद्रा । ४. ग्रन्दाज ।

ठार—सज्ञा पु० १ बहुत जाड़ा । अत्यधिक  
गरदी । २ पाला । हिम ।

ठाल—मज्ञा स्त्री० दे० "ठाला" ।

ठाला—सज्ञा पु० १ राजगार का न रहना ।  
बेकारी । २ ग्रामदनी का न होना ।

वि० जिसे कुछ काम-धंधा न हो । निठल्ला ।  
बवार ।

ठाली—वि० जिसे कुछ काम धंधा न हो ।  
निठल्ला । बेकाम । खाली ।

ठावना\*—क्रि० स० दे० "ठाना" ।

ठाहर या ठाहर्—सज्ञा पु० १ स्थान ।  
जगह । २ रहन या ठिकने का स्थान । डेरा ।

ठिंगना—वि० [स्त्री०, ठिंगनी] छोटे डील  
का । गाटा ।

ठिक—सज्ञा स्त्री० १. स्थान या अवसर-विशेष ।  
२ थिंगली । चवती ।

ठिकठीर—मज्ञा स्त्री० ठिकनेवाली जगह ।  
ठिकठना\*—सज्ञा पु० ठीक-ठाक । प्रबध ।

आयोजन ।

ठिकना\*—क्रि० अ० दे० "ठहरना" । खना ।  
ठिकरा—मज्ञा पु० दे० "ठीकरा" ।

ठिकान या ठिकाना—सज्ञा पु० १ स्थान ।  
जगह । ठौर । २ रहन या ठहरन की

जगह । निवास-स्थान । ३ निर्वाह या  
आश्रय का स्थान । ४ निश्चित अस्तित्व ।

स्थिरता । ठहराव । ५ प्रबध । आयोजन ।  
बदोबस्त । ६ अत । हद ।

\*क्रि० स० ठहराना ।  
सूहा—ठिकाने आना=१ अपन स्थान पर

पहुँचना । २ बहुत सोच विचार के  
उपरत यथार्थ बात बरना या समझना ।

ठिकाने की बात=१ ठीक या प्रामाणिक  
बात । २ समझदारी की बात । ठिकाने

पहुँचाना या लगाना=१ ठीक जगह  
पर पहुँचाना । २ नष्ट कर देना । न

रहना देना । ३ मार डालना ।  
ठिकानेदार—सज्ञा पु० वह व्यक्ति जिसे

गियासत की ओर से ठिकाना (जागीर)  
मिला हो ।

ठिठक—सज्ञा स्त्री० आश्चर्य में होना ।  
भयभीत होना । अचम्भित होना ।

ठिठकना—क्रि० अ० १. चलते-चलते एव-  
वारणी ख जाना । २. स्तमित होना ।

ठक रह जाना ।

ठिठरना—क्रि० अ० सरदी से ऐँठना या  
सिक्कना ।

ठिठरना\*—क्रि० अ० दे० "ठिठरना" ।

ठिठकना—क्रि० अ० बच्चों का बीच में  
ख खचकर रोना । टुनकना । सिस-  
सिसकर रोना ।

ठिया—मज्ञा पु० जगह । ठिबाना । हद ।  
सीमा । हद का पत्थर या सम्भा ।

ठारोगरा के काम करने का स्थान ।  
ठिर—मज्ञा स्त्री० पाला । कडी सर्दी ।

ठिरना—क्रि० स० जाड़े से ठिठुरना । जमना ।  
जम जाना । पाला लगना । एकत्रित

होना ।  
क्रि० अ० बहुत जाड़ा पडना ।

ठिलना—क्रि० अ० १ ठेला जाना । ढकेला  
जाना । २ बलपूर्वक बडना । धुसना ।

धँसना ।

ठिलाठिल\*—क्रि० वि० एक पर एक गिरते  
हुए । धक्कमधक्का करते हुए ।

ठिलिया—सज्ञा स्त्री० छाटा घडा । गगरी ।  
मटकी ।

ठिलुआ—वि० ठलुआ । निठल्ला । निक्म्मा ।  
ठिल्ला\*—मज्ञा पु० [स्त्री० ठिलिया, ठिल्ली]

गगरा । बडा घडा ।

ठीहारी—सज्ञा स्त्री० ठहराव । निश्चय ।  
ठीक—वि० १ जैसा हो, वैसा । यथार्थ ।

सच । प्रामाणिक । २ उपयुक्त । उचित ।  
मुनासिब । योग्य । ३ शुद्ध । सही ।

४ दुरुस्त । अच्छा । ५ जो किसी स्थान  
पर अच्छी तरह बैठ या जमे । ६ सीधा ।

सुष्टु । ७ जिसमें कुछ फर्क न पडे ।  
निदिष्ट । ८ ठहरावा हुआ । निश्चित ।

स्थिर । पक्का ।  
क्रि० वि० जैसे चाहिए वैसे । उचित रीति से ।

सज्ञा पु० १ पक्की बात । निश्चय ।  
ठिकाना । २ निश्चित प्रबध । पक्का

आयोजन । ठहराव । निश्चय । ३. जोड़ ।  
 भीमान । योग ।  
 ठोक ठाक—सज्ञा पु० १. निश्चित प्रवृत्ति ।  
 बढोबस्त । आयोजन । २. निश्चय । ठह-  
 राव । पक्की बात ।  
 ठीकरा—सज्ञा पु० [स्त्री० ठीकरी] १. मिट्टी  
 के बर्तन का फूटा टुकड़ा । ककड़ ।  
 सिलकी । २. पुराना या टूटा-फूटा  
 बरतन । ३. भिक्षापात्र ।  
 ठीकरी—सज्ञा स्त्री० १. मिट्टी के बरतन  
 का फूटा टुकड़ा । ककड़ । २. तुच्छ वस्तु ।  
 ठीका—सज्ञा पु० १. कुछ धन आदि के  
 बदले में किसी के किसी काम को पूरा  
 करने का जिम्मा । २. आमदनी की वस्तु  
 को कुछ बाल के लिए इस शर्त पर  
 दूसरे के सुपुर्द करना कि वह आमदनी  
 वसूल करके बराबर मालिक को देता  
 जाय । पट्टा । इजारा ।  
 ठीकेदार—सज्ञा पु० ठीका लेनेवाला ।  
 ठीलना—क्रि० स० दे० "ठेलना" ।  
 ठीवन—सज्ञा पु० थूक । सखार ।  
 ठीह—सज्ञा स्त्री० थोड़ी की हिंगहिनाहट ।  
 ठोहा—सज्ञा पु० १. जमीन में गड़ा हुआ  
 लकड़ी का कुदा, जिस पर वस्तुओं को  
 रखकर लोहार, यहाँ आदि उन्हें पीटते,  
 छीलते या गडते हैं । २. कुदा । ३.  
 बैठने के लिए कुछ ऊँचा किया हुआ स्थान ।  
 गद्दी । ४. हद्द । सीमा ।  
 ठुंठ—सज्ञा पु० १ सूखा हुआ पेड़ । २.  
 बटे हुए हाथवाला जीव । सूजा ।  
 ठुक्ना—क्रि० प्र० १ ठोका जाना । पिटना ।  
 २. घँसना । गडना । ३. मार खाना ।  
 मारा जाना । ४. हानि होना । नुकसान  
 होना । ५. पैर में घेंड़ी पहनना । बँद  
 होना ।  
 ठुकराना—क्रि० स० १ ठोकर लगाना ।  
 लात मारना । २. तुच्छ समझकर दूर  
 हटाना ।  
 ठुक्वाना—क्रि० स० [ठोक्ना का प्रे०]  
 ठोक्ने का धाम बराना । पिटवाना ।  
 ठुड्डी—सज्ञा स्त्री० होठ के नीचे का भाग ।

चिबुक । ठोड़ी । वह भूना हुआ दाना  
 जो फूटकर खिला न हो । बिना लावा  
 का चबेना ।  
 ठुनुक—सज्ञा स्त्री० सिसक । ठिनक । धीरे  
 धीरे रोना ।  
 ठुनुकना या ठनकना—क्रि० स० सिसकना ।  
 ठिनकना । धीरे-धीरे रोना ।  
 क्रि० प्र० धीरे से अँगुली से ठोक या मार  
 देना ।  
 ठुनठुन—सज्ञा पु० एक प्रकार के बाजे के  
 बजने का शब्द । बच्चों के रुक-रुककर  
 रोने का शब्द ।  
 ठुमक—वि० उमग के कारण थोड़ी-थोड़ी  
 दूर पर पैर पटकते हुए चलने की चाल ।  
 एँठ के साथ चलना । ठिठक लिये हुए चाल ।  
 ठुमकना—क्रि० प्र० १. ठसकभरी चाल चलना ।  
 २. बच्चों का उमग में थोड़ी-थोड़ी दूर  
 पर पैर पटकते हुए चलना । ३. नाचने  
 में पैर पटककर चलना जिसमें घुंघरू  
 बजे ।  
 ठुमका—वि० नाटा । ठिंगना ।  
 सज्ञा पु० भटका ।  
 ठुमकी—सज्ञा स्त्री० १. थपकी २. ठिठक ।  
 रुकावट । ३. छोटी खरी पूरी ।  
 वि० नाटी । छोटे डील की ।  
 ठुमरी—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत ।  
 ठुरी—सज्ञा स्त्री० वह भूना हुआ दाना जो  
 भूनने पर न खिले ।  
 ठुसकना—क्रि० प्र० १. ठुसकी मारना । धीरे  
 धीरे रोना । २. एक न एक अड़गा लगाना ।  
 दूसरों की बात में टोकना । ३. पादना ।  
 ठुसकी—सज्ञा स्त्री० धीरे धीरे रोना । शब्द-  
 रहित पाद ।  
 ठुसना—क्रि० प्र० नसकर भरा जाना ।  
 ठुसाना—क्रि० स० १. नसकर भरवाना ।  
 २. खूब पेटभर खिलाना । ठुसवाना ।  
 ठुंग—सज्ञा स्त्री० १. चोच । ठोर । २.  
 चोच से मारने की क्रिया ।  
 ठूँठ—सज्ञा पु० १. ऐसा पेड़ जिसकी डाल  
 पत्तियाँ न हों । सूखा पेड़ । २. बटा हुआ  
 हाथ । ठुठ ।

टूटा-वि० १. बिना पत्तियों और टहनियों  
का पेड़। सूता पेड़। २. बिना हाथ  
का। सूता।

टूसना-वि० रा० दे० "टूटना"।

टूसना-वि० रा० १. खूब बसकर भरना।  
२ घुसेटना। घुसाना। ३ खूब पेट भर  
कर खाना।

टेंगना-वि० [स्त्री० टेंगनी] छोटे डील का।  
नाटा। छोटा।

टेंगा-सज्ञा पु० १ अंगूठा। लाठी। २  
सोटा। डंडा।

मुहा०—टेंगा बजाना=लाठी चलाना।  
मारपीट करना।

टेंठी-सज्ञा स्त्री० १ बान की मेल।  
२ बान के छेद में उसे मूँदने के लिए

लगाई हुई रुई आदि की डाट। ३ बाग।  
टेंपी-सज्ञा स्त्री० दे० "टेंठी"। डाट। बाग।

बोतल आदि बन्द करने का ढक्कन।  
टेक-सज्ञा स्त्री० १ टेक। टेकनी। सहारा।

अवलम्ब। २. अन्न से भरा हुआ बोरा।  
३ पच्चड़। ४ पेंदा। तल। ५ घोड़ों  
की एक चाल। ६ छड़ी या लाठी की  
सामी।

टेकना-क्रि० स० १ सहारा लेना। आश्रय  
लेना। टेकना। २. टिकना। ठहरना।

टेका-सज्ञा पु० १. सहारे की वस्तु। टेक।  
२ ठहरने या रुकने की जगह।

अड्डा। ३ तबला या डोल बजाने की  
वह क्रिया जिसमें केवल ताल दिया जाय।

[कोवाली ताल] ४ तबले में बाँया।  
५ ठोकर। धक्का। ठीका।

ठेकाई-सज्ञा स्त्री० कपड़ों की छपाई में  
वाले हाशिए की छपाई।

ठेकी-सज्ञा स्त्री० टेक। सहारा।  
ठेगना-क्रि० रा० १ ठेकना। सहारा

लेना। २ रोकना। मना करना।  
ठेपा-सज्ञा पु० टेक। चौड़ा।

ठठ-वि० १ निपट। निरा। बिलकुल।  
जिसमें कुछ मेल जोल न हो। खालिस।

३ शुद्ध। निर्मल। निर्लिप्त। ४ आरम्भ।  
सज्ञा स्त्री० सीधी-सादी बोली।

ठेपी-सज्ञा स्त्री० डाट। बाग। टेंठी।

मुहा०—ठेपी मुँह में देना=चुपचाप रहना।  
कुछ भी न बोलना।

ठेलना-वि० स० धक्का देकर आगे बढ़ाना।  
रेलना। डबेलना।

ठेला-सज्ञा पु० १ धक्का। आघात।  
टक्कर। २ एक प्रकार की माल लादने

की गाड़ी जिसे आदमी खींचते हैं।  
३ भीड़भाड़। धक्कम-धक्का।

ठेलाठेल-सज्ञा स्त्री० धक्कम-धक्का। रेलपेल।  
ठेलाठेली-सज्ञा पु० धक्कम-धक्का। रेलपेल।

ठेस-सज्ञा स्त्री० ठोकर। आघात। चोट।  
ठेसना-वि० स० ठूसना।

ठेसरा-सज्ञा पु० नाक-भौं सिलोडनेवाला।  
गर्वाला। अभिमानी।

ठेहरी-सज्ञा स्त्री० दरवाजों के पल्लों के  
नीचे की लकड़ी, जिस पर बिचावों की

चूल धूमती है।  
ठेन†-सज्ञा स्त्री० जगह। स्थान।

ठेपा-सज्ञा स्त्री० जगह। स्थान।  
ठोक-सज्ञा स्त्री० ठोकने की क्रिया या भाव।

प्रहार। आघात।  
ठोकना-क्रि० स० १ मारना। प्रहार करना।

पीटना। २ मारना-पीटना। ३ चोट  
लगाकर धँसाना। गाड़ना। ४ (नालिश

आदि) दाखिल करना। दायर करना।  
५ बड़ियों से जकड़ना। ६ थपथपाना।

७ हाथ से मारकर बजाना।  
मुहा०—ठाकना बजाना=जाँचना। परखना।

ठोग-सज्ञा स्त्री० १ चोच या उसकी  
मार। २ जँगली की ठोकर।

ठोगना-वि० स० चोच मारना। जँगली से  
ठोकर मारना।

ठोगा-सज्ञा पु० कामज का बना हुआ एक  
प्रकार का दोना या पात्र।

ठोगाना-क्रि० स० दे० 'ठोगना'।  
ठोंठ-सज्ञा स्त्री० चोच। पक्षियों का श्रोत्र।

ठोंठी-सज्ञा स्त्री० चने के दाने का कोश।  
पोस्ता की ठोठी।

ठो†-अव्य० सत्यावोधक शब्द। सत्या।  
अदद। (पूरबी)

ठोकर-सज्ञा स्त्री० १ आघात जो चलने में ककड़, पत्थर आदि से पैर में लग जाय। ठस। २ वह पत्थर या ककड़ जिसमें पैर रुककर चोट खाता हो। ३ वह कड़ा आघात जो पैर या जूते के पजे से किया जाय। ४ कड़ा आघात। धक्का। ५ जूते का अगला भाग।

मुहा०—ठोकर खाना=१ किसी भूल के कारण दुःख सहना। २ धोखे में आना। चूक जाना। ३ दुर्गति सहना। कष्ट सहना। ठोकर लाना=ठोकर खाना।

ठोट-वि० मुख। गान्धी।

ठोठरी-वि० खाली। पोपला।

ठोडी-सज्ञा स्त्री० होठ के नीचे का भाग।

ठुड़ी। चिबुक। दाढ़ी।

ठोड़ी-सज्ञा स्त्री० दे० "ठोड़ी।

ठोप-सज्ञा पु० बूँद।

ठोर-सज्ञा पु० १. चोच। चचु। २. एक प्रकार का पकवान।

ठोल-सज्ञा स्त्री० १. दे० ठोर। २. चीनी में पगी मोटी सी पूरी।

ठोला-सज्ञा पु० १. कुल्हिया। २. चिड़ियों को खिलाने का बर्तन। ३. छोटे-छोटे बर्तन। ४. अँगुलियों की गाँठ।

ठोली-सज्ञा स्त्री० १. ठठोली। २. दुरा-चारिणी या रखेली स्त्री।

ठोस-वि० १ जो पोला या खोखला न हो। २ दृढ़। मजबूत।

सज्ञा पु० दृढ़न। डाढ़।

ठोसा-सज्ञा पु० अगूठा।

ठोहना\*—वि० स० पता लगाना। खोजना।

ठोहर-सज्ञा पु० अकाल। तेजी। महँगी।

ठोसि\*—सज्ञा स्त्री० दे० "ठुसि"। स्थिति। स्थान।

ठोर-सज्ञा पु० १ जगह। स्थान। ठाँव।

ठिकाना। २ मौका। अवसर।

मुहा०—ठोर कुठोर=१. बुरे ठिकाने। अनुपयुक्त स्थान पर। २ बेमौका। बिना।

अवसर। ठोर न आना=समीप न आना।

ठोर रखना=भार डालना। ठोर रहना=१ जहाँ का तहाँ पड़ रहना। २ मर जाना।

ड

ड-व्यञ्जनो में तेरहवाँ और टवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है।

सज्ञा पु० १ शिव। महादेव। २ भय। डर।

३ शब्द। ध्वनि। गान। ४ बड़बानल।

डक-सज्ञा पु० १ बिच्छू, भयुक्तली आदि कीटों का जहरीला काँटा। २ कलम की जीभ। निब।

डकना-कि० अ०. भयानक शब्द बरना। गरजना।

डका-सज्ञा पु० एक प्रकार का नगाडा।

मुहा०—डके की चोट पर पहना=खुल्लम-खुल्ला पहना। सबको सुनाकर कहना।

डकिनी-सज्ञा स्त्री० दे० "डकिनी"।

डकियाना-कि० स० डक मारना।

डकीला-वि० डकवाला।

डकीरी-सज्ञा स्त्री० उतैया।

डगर-सज्ञा पु० पीपाया। गाय, बैल, गेस आदि।

डगरा-सज्ञा पु० खरबूजा।

डंगरी-सज्ञा स्त्री० १ लबी ककड़ी। २ चुड़ैल। डाइन।

डगवारा-सज्ञा पु० किसानों में हल-बैल आदि की पारस्परिक सहायता।

डगू ज्वर-सज्ञा पु० [अग्र०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें शरीर पर चकत्ते पड़ जाते हैं।

डटैया-सज्ञा पु० डौटनेवाला। घुडकनेवाला। घमसानेवाला।

डठरी-सज्ञा स्त्री० दे० "डठल"।

डठल-सज्ञा पु० छोटे पीपों की पेड़ी और शाखा।

डठोरी-सज्ञा स्त्री० डठल।

डड-सज्ञा पु० १ डडा। साटा। २ बाहुदंड।

बाँह। ३ हाथ-पैर के पंजों के बल पट पड़कर की जानेवाली एक प्रकार की बसरत।

४ दंड। सजा। ५ अयदण्ड। जुरमाना।

६ पाटा। हानि। नुक्सान। ७ पंरी। दंड।

डंडपेल—सज्ञा पु० १ वसरती। पहलवान।  
२ बलवान् आदमी।

डंडवत्—सज्ञा पु० दे० "दंडवत्"।

डंडवारा—सज्ञा पु० [स्त्री० डंडवारी] वह कम ऊँची दीवार जो किसी स्थान को घेरने के लिए उठाई जाय। थोड़ी ऊँची चहारदीवारी।

डंडवी\*—सज्ञा पु० दंड या राजपर देनेवाला। करद।

डडा—सज्ञा पु० १ मोटी छड़ी। साटा। लाठी।  
२ चहारदीवारी। डांड। डंडवारा।

डडाकरन\*—सज्ञा पु० दे० 'दंडक वन'।

डडा-डोली—सज्ञा स्त्री० लडको का एक खेल।

डडाल—सज्ञा पु० नगाडा।

डंडिया—सज्ञा स्त्री० १ वह साड़ी जिसके बीच में मोटे टाँककर लकीरें बनी हो। छड़ीदार साड़ी। २ गेहूँ के पोथे की सीक, जिसमें बाल रहती हैं।

सज्ञा पु० कर उगाहनेवाला।

डडिमाना—क्रि० स० सीकर जोड़ना।

डडी—सज्ञा स्त्री० १ पतली छड़ी। २ किसी वस्तु का वह लंबा पतला भाग, जो मुट्ठी में पकड़ा जाता है। दस्ता। हत्था। मुठिया। ३ तराजू की लकड़ी जिसमें पलड़ बाँधे जाते हैं। डौंटी। ४ लंबा डठल जिसमें फल या फल लगा होता है। नाल। ५ आरसी नाम के गहन का वह छल्ला, जो जंगली में पड़ा रहता है। ६ अप्पान नाम की पहाड़ी सवारी। ७ दंड धारण करनेवाला सन्पासी। डडी।

\*वि० चुगलखोर।

डंडोरना—क्रि० स० डूँटना। खोजना।

डबर—सज्ञा पु० १ आडवर। डकोसला। २ बिस्तार। ३ एक प्रकार का चंदवा।

यो०—मेघडबर=बड़ा घामियाना। दल वादल। अबर-डबर=संध्या के समय आकाश में दिखाई देनेवाली लाली।

डबेल—सज्ञा पु० [अप्र०] वसरत करने का एक यंत्र।

डबदआ—सज्ञा पु० वात का एक रोग। गठिया।

डंवांडोल—वि० दे० "डंवांडोल"।

डस—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का बड़ा मच्छर। डाँस। २ वह स्थान जहाँ विपत्ते कीड़ों का दाँत या डब चुभा हो।

डसना—क्रि० स० दे० "डसना"।

डब—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का टाट जिससे जहाजा के पाल बनते हैं। २ एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

डबई—सज्ञा पु० केले की एक जाति।

डकराना—क्रि० अ० बँल या भँसे का बोलना।

डकार—सज्ञा पु० १ मुँह से निकले हुए शब्द के साथ वायु का उदगार। भोजन तृप्ति का सूचक। २ बाघ, सिंह आदि की गरज। दहाड़।

मुहा०—डकार न लेना=किसी का धन चुपचाप हजम कर जाना। डकार जाना। खा जाना। पचा जाना। किसी से कुछ लेकर देने की इच्छा न करना।

डकारना—क्रि० अ० १ पेट की वायु को मुँह से निकालना। डकार लेना। हड़प लेना। २ किसी का माल ले लेना। हजम करना। पचा जाना। ३ बाघ, सिंह आदि का गरजना। दहाड़ना।

डकंत—सज्ञा पु० १ डाका मारनेवाला। डाकू। लुटारा। किसी पर आक्रमण करके उसकी चीजें छीन लेनेवाला। २ डकैत का दल। डाकुओं का गिरोह।

डकंती—सज्ञा स्त्री० डाका। डाका मारने का काम। हमला करके माल छीन लेना।

डग—सज्ञा पु० १ एक स्थान से पैर उठाकर दूसरे स्थान पर रखना। फाल। कदम। २ उसनी दूरी जितनी पर एक जगह से दूसरी जगह कदम पड़। पैड।

मुहा०—डग देना=चलने में आगे की ओर पैर रखना। डग भरना या मारना=कदम बढ़ाना। लंबा पैर बढ़ाना।

डगडगाना—क्रि० अ० इधर से उधर हिलना। हिलना। हिलते-डुलते चलना। लडखडाना। विचित्र होना।

डगडोलना—क्रि० अ० दे० 'डगमगाना'।

डगडोर-वि० दे० "डांवांडोल" ।

डगण-सज्ञा पु० पिंगल में चार मात्राओं का एक गण ।

डगना†-क्रि० अ० १ हिलना । टसकना । खसकना । जगह छोड़ना । २ झुकना । झूल करना । डिंगना । ३ डगमगाना । लडखडाना । डगमग-वि० लडखडाता हुआ । डावांडोल । वाँपनेवाला । चंचल । अस्थिर ।

डगमगाना-क्रि० अ० १ कभी इधर, कभी उधर झुकना । लडखडाना । थरथराना । २ बिचलित होना । दृढ़ न रहना ।

डगर-सज्ञा स्त्री० मार्ग । रास्ता । पथ । पैदा । डगरना†-क्रि० अ० १ चलना । रास्ता लेना । २ फिसल जाना । छुटक जाना । ३ रास्ते रास्ते घूमना ।

डगरा†-सज्ञा पु० १ रास्ता । मार्ग । २ बाँस का बना हुआ टोकरा । डलरा । छावडा ।

डगा†-सज्ञा पु० नगाडा बजाने की लकड़ी । चौब । डागा । डगडुगी बजाने का डडा । डगाना-क्रि० स० दे० "डिंगाना" ।

डगा-सज्ञा पु० दुर्बल घोड़ा । केवल अस्थि-पजर-युक्त घोड़ा ।

डढ-सज्ञा पु० निशाना ।

डटना-क्रि० अ० १ जमकर सटा होना । अडना । ठहरा रहना । २ लग जाना । उचल रहना । डट जाना । ३ छू जाना । \*†४ देखना ।

डटाना-क्रि० स० १ एक वस्तु को दूसरी वस्तु से लगाना । सटाना । भिडाना । २ जगाना । सटा करना ।

डटाई-सज्ञा स्त्री० डटाने की मजदूरी । डटाने का काम ।

डटैया-वि० डटानेवाला । उद्यत । प्रस्तुत ।

डटटा-सज्ञा पु० १ हुक्के का नैचा । २ डाट । काग । ३ बड़ी मेख । ४ साँचा ।

डडदार\*†-वि० १ बड़ी दाढ़ीवाला । २ वीर । बहादुर । ३ साहसी ।

डड़न\*-सज्ञा स्त्री० जलन ।

डड़ना\*-क्रि० अ० जलना ।

डड़मुड़ा-वि० दाढ़ी रहित । जिसकी दाढ़ी मूढ़ दी गई हो ।

डडार, डडारा-वि० १ वह, जिसके दाढ़ें हो ।

२ वह, जिसके दाढ़ी हो ।

डडियल-वि० दाढ़ीवाला । लम्बी दाढ़ीवाला ।

डडटना\*-क्रि० स० जलाना ।

डडयोरा\*-वि० दाढ़ीवाला ।

डडूआ या डडूई-वि० १ जला हुआ । दग्ध । भस्मीभूत । २ तेल-विशेष जो जलाकर निकाला जाता है । ३ यत्र द्वारा पाताल से निकाला हुआ तेल ।

डपट-सज्ञा स्त्री० १ डाँट । सिडकी । घुडकी । २ धोड़े की तेज चाल । सरपट ।

डपटना-क्रि० स० क्रोध में जोर से बोलना । डाँटना । तेजी से जाना ।

डपोरशख, डपोरसख-सज्ञा पु० १ मुख । जो कहे बहुत, पर कर कुछ न सके । डींग मारनेवाला । २ बड़े डील-डौल का, पर मूख ।

डप्पू-वि० बहुत मोटा । बहुत बड़ा ।

डफ-सज्ञा पु० १ चमडा मड़ा हुआ एक प्रकार का बड़ा बाजा । बड़ी खजरी । डफला । २ लावनीबाजा का बाजा । चग ।

डफला-सज्ञा पु० दे० "डफ" ।

डफली-सज्ञा स्त्री० छोटा डफ । खजरी ।

मुहा०-अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग=जितने लोग, उतनी राय ।

डफार-सज्ञा स्त्री० [ अनु० ] जोर से रोने या चिल्लाने का शब्द । चिंगाड़ ।

डफारना†-क्रि० अ० [ अनु० ] जोर से राना या चिल्लाना । दहाड़ मारना ।

डफली-सज्ञा पु० १ डफला, नागा, टोल आदि बजानेवाला । खजरी पर चमडा चढ़ानेवाला । २ डफ बजाकर भीम माँगनेवाला । एष श्रेणी का मुसलमान पवीर ।

डफोरना†-वि० अ० [ अनु० ] हाँक देना । ललकारना । गरजना । चिल्लाना ।

डय-सज्ञा पु० १ जेब । घेला । कुप्पा बनाने का चमड़ा । २ दल । सामर्थ्य । शक्ति ।

डयकना-वि० अ० [ अनु० ] १ टपटना । टीस मारना । २ जगमगाना । चमकाना । शोभित होना । ३ लँगड़ाकर चमकना ।

डयका-सज्ञा पु० १ मोटा । स्थूल । २ दाजा । \*†१ का बाजा जग ।

डक्कोही-वि० [स्त्री० डक्कोही] आँसू भरा हुआ। डक्कोवाया हुआ। गीला।  
 डक्कर-सज्ञा पु० चमकार। मोची। चमड़ा साफ करनेवाला। चमड़ा कमानेवाला।  
 डक्कवाना-कि० अ० [अनु०] आँसू से (आँखें) भर आना। अध्रुपूर्ण होना।  
 डक्का-सज्ञा पु० [स्त्री० डक्की] छिछला गड़ढा जिसमें पानी जमा रहे। गन्दे जल का छोटा तालाब। गड़ढा। गैँवई का छोटा तालाब जिसमें मैस या मुजर पानी गन्दा कर देते हैं। कुड़ा। होज।  
 डक्किया-वि० लवरहृत्या। बायाँ हवा। बाएँ हाथ से काम करनेवाला।  
 डक्क-वि० [अप्रे०] दोहरा।  
 सज्ञा पु० भारतीय राज्य का पंसा।  
 डक्क रोटी-सज्ञा स्त्री० पावरोटी।  
 डक्का-सज्ञा पु० मुल्हडा।  
 डक्का-सज्ञा पु० १ रक्षण। चिन्ता। व्यवस्था।  
 २ तैयारी। ३ जलपात्र के उपयुक्त वस्तु का माण्डार। -  
 डक्का-सज्ञा पु० डक्का। पानी का गड़ढा।  
 डक्का-सज्ञा स्त्री० छोटा डक्का।  
 डक्की\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'डक्की'।  
 डक्किया-सज्ञा स्त्री० मुल्हया।  
 डक्काना-कि० स० दे० 'डक्काना'। १ गोठा बना। २ उगाटना। ३ भ्रष्ट करना।  
 ३ रिगाटना।  
 डक्का-सज्ञा पु० १ डक्कादार छोटा गहरा जख्मा। गड्ढा। २ रेलगाड़ी में की एक गाँधी।  
 डक्की-सज्ञा स्त्री० छोटा डक्का।  
 डक्का या डक्का-सज्ञा पु० व्यजन (दाढ़ या तरकारी आदि) परोशन का एक प्रकार का बटोरा।  
 डक्काना-वि० अ० [अनु०] १ पानी में डक्का उतारना। २ आँखों में जल भर आना। आँख डक्कवाना।  
 डक्का-सज्ञा पु० मुर्द का छाया पानी। भूत हुआ मरता।  
 डक्करी-सज्ञा स्त्री० उरर की दाढ़ की बटी। हुन्नी।

डक्कोही-वि० डक्कनवाला। डक्का हुआ।  
 आँसू-भरे नेत्र।  
 डक्क-सज्ञा पु० डोम।  
 डक्क-सज्ञा पु० १ भगेड। डर से भागना।  
 २ राजा को अपने समान अन्य राजा का भय। ३ सघर्ष।  
 डक्क-सज्ञा पु० १ चमड़ा मढ़ा एक बाजा।  
 २ डक्क के आकार की कोई वस्तु। ३  
 ३२ लघु वर्णों का एक दडक वृत्त।  
 डक्कमध्य-सज्ञा पु० भूमि का वह पतला भाग जो दो टापुओं को मिलाता हो।  
 यौ०-जल-डक्कमध्य=जल का वह पतला भाग, जो जल के दो घड़े-घड़े भागों को मिलाता हो।  
 डक्क-यत्र-सज्ञा पु० एक प्रकार का यत्र या पात्र-विशेष जिसमें औषध तैयार की जाती है।  
 डक्क-सज्ञा पु० खजरी के आकार का एक प्रकार का बाजा।  
 डक्क-सज्ञा पु० उडान। उडना। चिड़ियों की चाल।  
 डक्क-सज्ञा पु० हानि की आशका से उत्पन्न होनेवाला मनोवेग। भय। भीति। शोक।  
 भास। आशंका। अनिष्ट की सम्भावना।  
 डक्क-वि० अ० १ अनिष्ट या हानि की आशंका से आकुल होना। भयभीत होना। शोक करना। २ आशंका करना। अदशा करना।  
 डक्काना-वि० अ० दे० 'डक्काना'।  
 डक्काना-वि० अ० दे० 'डक्काना'।  
 डक्का-वि० अ० बहुत डरनेवाला। भीरु।  
 कायर।  
 डक्काना-वि० अ० दे० 'डक्काना'।  
 डक्करी-सज्ञा स्त्री० दे० 'डक्करी'।  
 डक्काना-वि० अ० डर दिगाना। भयभीत करना। शोक दिगाना।  
 डक्काना-वि० जिगमे डर लग। भयावह।  
 भयकर।  
 डक्का-सज्ञा पु० १ डराने का लिए बड़ी हुई बाट। २ चिड़ियों को डराने की एक विधि। यह लकड़ी जो पटों में चिड़िया

उड़ाने के लिए बंधी रहती और खटखट  
शब्द करती है। खटखटा। धडका।

डराहक-वि० डरपोक।

डरिया-सज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

डरीला-वि० डालवाला। शाखायुक्त। टहनी-  
दर।

डरैला-वि० डरावना।

डरीना-वि० डराऊ। डरावना। भयानक।

डल-सज्ञा पु० टुकड़ा। खड।

सज्ञा स्त्री० झील।

डलना-क्रि० अ० डाला जाना। पडना।

डलवाना-क्रि० स० 'डालने' का काम दूसरे  
से कराना।

डला-सज्ञा पु० [स्त्री० डली] १ टुकड़ा। खड।

२ बांस, बेंत आदि का बना हुआ बरतन।

टोकरा। दोरा।

डलिया-सज्ञा स्त्री० छोटी टोकरी। बांस की

बनी फूल रखने की छोटी टोकरी। दोरी।

डली-सज्ञा स्त्री० १ सुपारी। २ छोटा

टुकड़ा। छोटा डेला। खड। डलिया।

डस-सज्ञा स्त्री० १ तराजू की रस्सी।

२ सूत की डोरी। सूत। ३ मदिरा

विशेष। ४ छीर।

क्रि० स० डसना। डक मारना।

डसन-सज्ञा स्त्री० डसने की क्रिया, भाव या

डग।

डसना-क्रि० स० १ बिपवाले कीड़े का दाँत

से काटना। २ डक मारना।

डसाना-क्रि० स० [डसना का प्रे०] १ कट

वाना। डसवाना। २ विस्तार बिछाना।

डसौना-सज्ञा पु० डसाने की वस्तु। बिछौना।

विस्तार।

डहक-सज्ञा पु० गुफा। गन्दरा। खोह।

छिपने की जगह।

डहकना-क्रि० स० १ छल करना। धोखा

देना। ठगना। जतना। २ ललचाकर न

देना।

क्रि० अ० १ विलियना। विनाश करना।

२ दहाड़ मारना। \*३ छिडारना।

फेंकना।

डहकाना-क्रि० स० १. मष्ट देना। उतारना।

२ खोना। गंवाना। नष्ट करना। ३ धोखे

से किसी की चीज ले लेना। ठगना। ४.

कोई वस्तु दिखाकर या ललचाकर न देना।

निराश करना। निराश होना।

क्रि० अ० धोखे में आकर पास का कुछ

खोना। ठगा जाना।

डहडहा-वि० [अन्०] [स्त्री० डहडही] १

जी सूखा या मुरझाया न हो। हरा भरा।

लहलहा। ताजा। २ प्रसन्न। प्रफुल्लित।

३ तुल्य का। ताजा।

डहडहाट-वि०-सज्ञा स्त्री० १ हरापन। ताजगी।

२ प्रफुल्लता। प्रसन्नता। खुशी।

डहडहाना-क्रि० अ० १ पेड़ पीधे का हरा-

भरा या ताजा होना। २ प्रसन्न होना।

आनन्दित होना।

डहन-सज्ञा पु० १ पर। पख। डैना। २

जलन। दाह। द्वेष।

डहना-क्रि० अ० १ जलना। भस्म होना।

२ द्वेष करना। बुरा मानना।

क्रि० स० १ जलाना। भस्म करना। २

सतप्त करना। दुख पहुँचाना।

डहरा-सज्ञा स्त्री० १ डगर। रास्ता। मार्ग।

पथ। २ कुडला। बनाज रखने का मिट्टी

का बड़ा बरतन।

डहरना-क्रि० अ० चलना। दहलना।

डहराना-क्रि० स० चलाना। दीडना। दह

लाना।

डहार-सज्ञा पु० डहने या तप्त करनेवाला।

डहरिया-सज्ञा स्त्री० १ रास्ता। मार्ग।

पगडड़ी। २ दे० "डहर"।

डक-सज्ञा स्त्री० १ ताँब या चाँदी का बहुत

पतला पत्तर। २ कं। वमन। उलटी।

सज्ञा पु० १ दे० "डका"। २ दे० "डक"।

डकना-क्रि० स० १ बूदवर पार करना।

फौदना। २. वमन करना। वं करना।

डग-सज्ञा पु० जगल। पहाड़ के ऊपर की

भूमि। ऊँची चोटी। शिखर। बूद। पलंग।

खट। डगा।

डगर-वि० १ गाप, भेंस आदि पत।

पीपाया। २ एक नीच जाति।

वि० १ मृदुत दुयय-मय। २ मृग।

शब्द-गङ्गा स्त्री० १. गङ्गा। अधिवार।  
२. वस्तु। दमाय। ३. पुष्टी। उपट।  
घो०—शब्द-उपट=शब्द-गङ्गा। अपराधी  
को सावधान करने के लिए साधना।

शब्दना-वि० स० भोष-भूयन् और मे बोलना।  
पुष्टना। उपटना।

शब्द-सज्ञा पु० डल।

शब्द-सज्ञा स्त्री० डण्डी। डीठ।

शब्द-सज्ञा स्त्री० डण्डा। डाली। डीठ। डण्डी।

शब्द-सज्ञा पु० १ डडा। २ गदवा। ३

नाव खेने का बल्ला। चप्पू। ४ सीधी लकीर।

५ ऊँची मेंड। ६ छोटा भीटा या टीला।

७ सीमा। हद्द। ८ अर्थ-दंड। जुरमाना।

९ नुकसान का बदला। हरजाना। १०

रीढ़। पीठ की हड्डी। पेट के नीचे या भाग

जहाँ धोती आदि बाँधते हैं।

शब्दना-वि० अ० अर्थ-दंड देना। जुरमाना

करना। बदला लेना। दण्ड देना।

शब्द-सज्ञा पु० १ छड। उडा। २ गतवा।

३ नाव खेने का डंड। ४. हद्द। सीमा।

मेंड।

शब्द-मेडा-सज्ञा पु० १ परस्पर अत्यंत

सामीप्य। लगाव। २ अनुबन्ध। लगडा।

शब्द-सज्ञा स्त्री० १ लरी पतली लकड़ी।

२ लका हृत्था या बस्ता। ३ तराजू की

डंडी। ४. पतली शाखा। टहनो। ५ हिंडोले

में वे चार सीधी लकड़ियाँ या डोरी की

लडें, जिनमें बैठने की पटरी लटकती रहती

है। ६ डंड खेनेवाला आदमी। मौझी।

खेवया। ७ सीधी लकीर। रेखा। ८ लोक।

मर्यादा। ९ चिड़ियों के बैठने का अड्डा।

१० डंडे में बँधी हुई झुपान। पालकी। ११

सुस्त आदमी।

शब्द-सज्ञा पु० [स्त्री० शब्दरी] लडका।

बेटा। पुत्र।

शब्द-सज्ञा पु० वाप का चक्का। छोटा

चक्का।

शब्द-वि० एक स्थिति में न रहनेवाला।

चक्का। अस्थिर।

शब्द-सज्ञा पु० १ बड़ा मच्छड। दस्त। २

एक प्रकार की मक्खी।

शब्द-गङ्गा स्त्री० १. गङ्गा। चुडेल। २.  
वह स्त्री जिगम्वी दृष्टि आदि के प्रभाव में  
बच्चे मर जाते हैं। टोनहाई। ३. कुम्पा  
और टरावनी स्त्री।

शब्द-सज्ञा पु० १. घोड़े आदि के बदलने  
का विधाम-स्थान। चौकी। २. सवारी

या ऐसा प्रयत्न जिसमें एक-एक टिपान पर

बराबर घोड़े आदि बदले जाते हैं। ३

नीलाम की बोली। ४ राज्य की ओर से

चिट्ठियों के आने-जाने की व्यवस्था। ५.

डाकघराने से प्राप्त चिट्ठी आदि।

सज्ञा स्त्री० वमन। कैं।

मुहा०—डाक बँडाना या लगना=सौध

यात्रा के लिए स्थान-स्थान पर सवारी

बदलने की चौकी नियत करना।

घो०—डाक चौकी=मार्ग में वह स्थान

जहाँ यात्रा के घोड़े या हखारे बदले जायें।

डाकघराना-सज्ञा पु० वह सरकारी दफ्तर

जहाँ से चिट्ठियाँ और तार आदि भेजे

तथा बाँटे जाते हैं। डाकघर।

डाकगाड़ी-सज्ञा स्त्री० डाक ले जानेवाली

रेलगाड़ी। तेज चलनेवाली रेलगाड़ी।

डाकघर-सज्ञा पु० दे० "डाकघराना"।

डाकघर-वि० अ० कैं करना।

वि० स० फाँदना। लपटना।

डाक बंगला-सरकार की ओर से यात्रिया

और दौरा करते समय सरकारी बर्तन-चारिया

के ठहरने के लिए निश्चित मकान।

डाक महसूल-सज्ञा पु० वह व्यय जो डाक-

द्वारा किसी माल को भेजने या मँगाने में

लगे।

डाक-सज्ञा पु० तालावा की मूखी मिट्टी।

डाकघर-सज्ञा पु० दे० "डाक महसूल"। डाक

का खर्च।

डाका-सज्ञा पु० डकैती। चोरा का धावा।

जबरदस्ती किसी का माल छीन लेना।

धापा भारकर लटना।

डाकाजनी-सज्ञा स्त्री० डाका मारने का काम।

आक्रमण करने सम्पत्ति छीन लेना।

डाकिन-सज्ञा स्त्री० दे० "डाकिनरी"।

डाकिनो-सज्ञा स्त्री० डाकिन। चुडेल।

डाकिया-सज्ञा पु० डाक ले जानेवाला।  
चिट्ठीरसा। पोस्टमैन।

डाकी-वि० खाऊ। पेटू। बहुत खानेवाला।

डाकू-सज्ञा पु० डकैत। डाका डालनेवाला।  
लुटेरा।

डाक्टर-सज्ञा पु० [अग्र०] १. चिकित्सक।  
अंगरेजी ढंग से दवा करनेवाला। २. किसी  
विषय का बहुत बड़ा विद्वान् या  
पंडित।

डाक्टर-सज्ञा पु० डाक्टर का काम, पद या  
पदवी।

डाक्टरेट-सज्ञा पु० [अग्र०] विश्वविद्यालयो-  
द्वारा किसी विषय के बड़े विद्वान् को प्रदान  
की जानेवाली उपाधि।

डाकीर-सज्ञा पु० ठाकुर। विष्णु भगवान्  
(गुजरात)।

डागा-सज्ञा पु० नगाडा बजाने की लकड़ी।  
चौन।

डागुर-सज्ञा पु० जाटों की एक जाति।

डाट-सज्ञा स्त्री० १. बोझ को ठहराने या  
वस्तु को खड़ी रखने के लिए लगाई  
गई वस्तु। टेक। चौड़। २. छेद बंद करने  
की वस्तु। ३. बोतल, शीशी आदि का  
मुँह बंद करने की वस्तु। ठेंडी। दाग।  
गट्टा। ४. मेहराब को रोक रखने के लिए  
झंटा आदि की भरती।

नना पु० दे० "डेंट"।

डाटना-वि० स० १. एक वस्तु को दूसरी  
वस्तु पर बसकर दवाना। भिंसावर डेलना।  
२. टेकना। चौड़ लगाना। ३. छेद या मुँह  
बंद करना। ४. बसकर या ठूसकर भरना।  
५. पुव पेट भर साना। ६. मिलाना।  
भिडाना।

डाड़-सज्ञा स्त्री० चयाने के चौड़े दाँत।  
चौमड़। दाड़।

डाड़ना+वि० स० जलाना।

डाड़ा-सज्ञा स्त्री० १. दावानल। वन की आग।  
२. आग। ३. दाप। दाह। जलन।

डाड़ी-सज्ञा स्त्री० १. ठोड़ी। टुड्डी। २.  
टुड्डी और गाल के बाल। दाडी।

दाप-सज्ञा स्त्री० नारियल का कच्चा फल।

परतला। जिसमें तलवार लटकाई जाती  
है। डाम। कुश।

डावक-वि० ताजा।

डाबर-सज्ञा पु० १. नीची जमीन जहाँ पानी  
ठहरा रहे। २. गड्ढी। पोखरी। तलेया।  
३. हाथ धोने का पान। चिलमची। ४.  
मैला पानी।

डावा-सज्ञा पु० दे० "डब्बा"।

डाम-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का कुश।  
२. कुश। ३. आम की मजरी या मोर।  
४. कच्चा नारियल।

डामर-सज्ञा पु० १. एक तन। २. हलचल।  
धूम। ३. बाइवर। ठाटवाट। ४. चमत्कार।  
५. साल वृक्ष का गोद। राल। ६. एक  
प्रकार की मधुमक्खी जो राल बनाती है।  
डामल-सज्ञा स्त्री० १. उम्र भर के लिए बंद।  
२. 'दिनिकाला' का दंड।

डामाडोल-वि० अस्थिर। चंचल।

डायन-सज्ञा स्त्री० १. डाकिनी। पिशाचिनी।  
चूडेल। २. कुरपा स्त्री।

डायनमी-सज्ञा पु० [अग्र०] विजली पैदा  
करने का इजन।

डायरी-सज्ञा पु० [अग्र०] रोजनामचा। प्रति-  
दिन का वाक्य-विवरण या दिनचर्या लिखने  
की पुस्तक।

डायल-सज्ञा पु० [अग्र०] घड़ी का हाँचा।

डार\*+सज्ञा स्त्री० दे० "डाल"।

सज्ञा स्त्री० डलिया। चंगेली।

डारना+वि० स० दे० "डालना"।

डाल-सज्ञा स्त्री० १. झापा। डाली। २.  
फानूस जलाने के लिए दीवार में लगी हुई  
एक प्रकार की सुई। ३. तलवार का फल।  
४. डलिया। चंगेली। ५. कपड़ा और गहना  
जो डलिया में रंगार विवाह के समय  
वर की ओर से भूष को दिया जाता है।

डालना-वि० स० १. नीचे गिराना। छोड़ना।  
फेंकना। २. एक वस्तु को दूसरी वस्तु  
पर कुछ दूर से गिराना। ३. रखना  
या मिलाना। ४. प्रविष्ट करना।  
धुगाना। ५. मोड़-मचल न लेना। भुग  
देना। ६. अजिज करना। निश्चिज करना।

७. फँलाकर रखना। ८. शरीर पर धारण करना। पहनना। ९. जिम्मे करना। भार देना। १०. गर्भपात करना (चोपायो के लिए)। ११. कै करना। उलटी करना। १२. (स्त्री को) पत्नी की तरह रखना। १३. लगाना। उपयोग करना। १४. घटित करना। मचाना। १५. बिछाना। मुहा०—डाल रखना=१. रख छोड़ना। २. रोक रखना। देर लगाना। झुलाना। डालर—सज्ञा पु० [अंग्रे०] अमेरिका का एक सिक्का। डालिम—मज्ञा पु० दाडिम। अन्तार का फल। डाली—सज्ञा स्त्री० १. डलिया। चेंगेरी। २. फल, फूल, मेवे जो डलिया में सजाकर किसी के पास सम्मानार्थ भेजे जाते हैं। सज्ञा स्त्री० दे० “डाल”। डावरा—सज्ञा पु० [स्त्री० डावरी] लडवा। वेटा। दासना—मज्ञा पु० बिछावन। बिछोना। विस्तर। दासना—त्रि० स० बिछाना। डालना। फँलाना। \*डसना। डासनी—सज्ञा स्त्री० चारपाई। डाह—सज्ञा स्त्री० जलन। ईर्ष्या। डाहना—त्रि० स० जलाना। राताना। तग करना। डाही—वि० डाह या ईर्ष्या करनेवाला। डिगर—सज्ञा पु० १. मोटा आदमी। २. दुष्ट। बदमाश। ३. दात। गुलाम। ४. यह बात जो नटगट चोपायो के गले में बांध दिया जाता है। डिगल—वि० नीच। दूषित। गज्ञा स्त्री० राजपूताने की वह भाषा, जिसमें भाट और चारण काव्य और वसावरी डिगने हैं। डिडिम—गज्ञा पु० दुग्दुगी। दुग्गी। डिडोग। डिडिमपोर—गज्ञा पु० १. दुग्गी या डिडोरा में लगभग आवाज। २. चारा और दिनापटी प्रचार। पाकण्ड। दिव—मज्ञा पु० १. धाँवना। हटवना। २. दगा। लडाई। ३. अश। ४. पाकण्ड। पेंचडा।

५. प्लीहा। पिलही। ६. कीड़े का छोटा बच्चा। डिभ—गज्ञा पु० १. छोटा बच्चा। २. मूर्ख। ३. आडवर। पाखंड। ४. अभिमान। पमड ५. दे० “डिब”। डिपटेटर—सज्ञा पु० [अंग्रे०] अधिनायक। तानाशाह। पूर्ण-अधिकार-प्राप्त निरकुश शासन करनेवाला अधिकारी। डिक्शनरी—सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] शब्द-कोश। यह ग्रन्थ जिसमें शब्दों के अर्थ दिए गए हों। डिगना—क्रि० अ० हिलना। जगह छोड़ना। टलना। खसकना। किसी बात पर स्थिर न रहना। विचलित होना। डिगरी—सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. अश। जैसे, सापमान वा अश। २. विश्वविद्यालय की उपाधि। ३. अदालत का फैसला जिसके द्वारा किसी पक्ष को कोई हक या किसी सम्पत्ति का अधिकार दिया जाय। डिगरीदार—सज्ञा पु० वह जिसके पक्ष में अदालत ने डिगरी दी हो। डिगलाना—त्रि० अ० दे० “डगमगाना”। डिगाना—वि० स० १. जगह से टालना। सरवाना। ससवाना। २. बात पर स्थिर न रखना। विचलित करना। डिग्गी—सज्ञा स्त्री० १. तालाब। २. हिम्मत। गाहस। डिगाइन—सज्ञा पु० [अंग्रे०] उर्ज। दग। तरह। निरम। प्रचार। डिठार, डिठियार—वि० जिसे गुजार् दे। डिठोना—गज्ञा पु० बाजल वा टीका जे लडकों को नजर से बचाने के लिए लगाते हैं। डिठाना—त्रि० ग० मजबूत करना। पक्क करना। निश्चित करना। दिदुया—गज्ञा स्त्री० बड़ी छालगा। यामना तुण्णा। डिपार्टमेण्ट—गज्ञा पु० [अंग्रे०] विभाग। गुल्-कमा। डिपो—गज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] गोदाम। बांडार। डिप्टी—गज्ञा पु० [अंग्रे०] गहायक। सहायरी। डिप्टी कलक्टर—गज्ञा पु० [अंग्रे०] जिला मजि-स्ट्रेट के अधीन उगने गहायक अधिकारी, जो

प्रायः एक सहस्रील का शासन-प्रबन्ध तथा मुकदमों का फैसला करते हैं। हाकिम-परगना।

डिप्लोमा—सज्ञा पु० [अग्रे०] रानद। आवश्यक योग्यता प्राप्त करने पर मिलनेवाला लिखित प्रमाणपत्र।

डिबिया—सज्ञा स्त्री० छोटा ढक्कनदार बरतन। छोटा डिब्बा या सपुट।

डिब्बा—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का ढक्कनदार छोटा बरतन। सपुट। २ रेलगाड़ी की एक गाड़ी। ३ बच्चों की पसली के दर्द की बीमारी। पलई।

डिभगना—क्रि० सं० मोहित करना। छलना। डहकना।

डिभरी—सज्ञा स्त्री० दे० “डिबरी”। मिट्टी या टीन का बहुत छोटा पात्र, जिसमें तेल से बत्ती जलाकर रोशनी करते हैं।

डिम—सज्ञा पु० १ नाटक का एक भेद जिसमें माया, इद्रजाल, लड़ाई और जीव आदि का समावेश होता है। २ सप्राप्त। ३ प्रलय।

डिमडिमी—सज्ञा स्त्री० डुगडुगिया या डुग्गी नाम का बाजा।

डिल्ला—सज्ञा पु० १ एक छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ और अंत में भगण होता है। २ एक वर्णयुक्त जिसके प्रत्येक चरण में दो सगण होते हैं। तिलका। तिल्ला। तिल्लाना। ३ बेलों के कंधे पर उठा हुआ कुबड़। कुब्जा। फकुल्ल।

डित्तमित्त—वि० [अग्रे०] अस्वीकृत। नामजूर। सारिज। बरखास्त। नीकरी से हटाया हुआ।

डोंग—सज्ञा स्त्री० शेंखी। सिद्ध।

डोक—पज्ञा स्त्री० जाला।

डोहरी—सज्ञा स्त्री० बेटी।

डोठ—सज्ञा स्त्री० १ दृष्टि। नजर। निगाह।

२ देखने की शक्ति। ३ ज्ञान। समझ।

डोठना\*†—क्रि० अ० दिखाई देना। दृष्टि में आना।

त्रि० सं० १. दिखाना। २ नजर लगाना।

डोठवय—सज्ञा पु० १. नजरबंदी। इद्रजाल।

२ इद्रजाल करनेवाला। जादूगर।

डोठिमूठि\*†—सज्ञा स्त्री० नजर। टोना। जादू।

डोन—सज्ञा स्त्री० उड़ान। चिड़ियों की उड़ान। सज्ञा पु० [अग्रे०] विश्वविद्यालय में किसी विभाग का अध्यक्ष।

डोबआ†—सज्ञा पु० पैसा।

डोल—सज्ञा पु० १ शरीर की ऊँचाई। कद। २. उठान।

डौं—डोल-डोल=१. देह की लवाई-चाँडाई। २ शरीर का ढाँचा। आकार। काठी। ३ शरीर। जिस्म। देह। ४ व्यक्ति। प्राणी। मनुष्य।

डोला—सज्ञा पु० ढेला। मिट्टी का टुकड़ा।

डोह—सज्ञा पु० १ आबादी। बस्ती। २. उजड़े हुए गाँव का टीला। ३ ग्राम-देवता।

डुंग†—सज्ञा पु० १ डेर। अटाला। २ टीला। भीटा। पहाड़ी।

डुंड†—सज्ञा पु० पेड़ों की सूखी डाल। ठूँड।

डुडल—सज्ञा पु० छोटा उत्तलू।

डुक—सज्ञा पु० मुक्का। पूसा।

डुक्कियाना—क्रि० सं० पूसा लगाना।

डुगडुगी—सज्ञा स्त्री० [अनु०] चमड़ा मड़ा हुआ एक छोटा बाजा। डोडी। डुग्गी।

डुग्गी—सज्ञा स्त्री० दे० “डुगडुगी”।

डुपटना†—क्रि० सं० (कपड़ा) चुनना। चुनियाना।

डुबकनी—सज्ञा स्त्री० पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाली नाव। पनडुब्बी।

डुबकी—सज्ञा स्त्री० १ पानी में डूबना।

डुब्बी। गोता। बूडकी। २ पीठी की धनी हुई बिना तली बरी।

डुवाना—क्रि० सं० २ पानी या किसी द्रव पदार्थ के भीतर डालना। गोत्रा देना। २ चौपट या नष्ट करना।

मुहा०—नाम डुवाना=नाम को बलवित्त करना। मर्दा खाता। लुटिया डुवाना=महत्त्व या प्रविष्टा नष्ट करना।

डुवाप—सज्ञा पु० पानी की डूबने भर की गहराई।

डुवोना†—त्रि० सं० दे० “डुवाना”।

डुवा—सज्ञा पु० दे० “पनडुब्बी”।

डुब्बी-सजा स्त्री० दे० "डुबकी"।  
डुभकौरी-सजा स्त्री० पीठी की बिना सली बरी।  
डुलना\*†-कि० अ० दे० "डोलना"।

डुलाना-कि० स० १. हिलाना। चलाना।  
२. हटाना। भगाना। ३. फिराना। घुमाना।  
दहलाना।

डूंगर-सजा पु० १. टीला। भीटा। डूह।  
२. छोटी पहाड़ी।

डूंगा-सजा पु० १ चम्मच। २. डोंगा। ३. रस्से  
का गोल लच्छा।

डूबना-कि० अ० १. पानी या और किसी  
द्रव पदार्थ के नीचे समाना। गोता खाना।  
२. सूर्य, ग्रह, नक्षत्र आदि का अस्त होना।  
३. नीपट होना। बरबाद होना। ४. किसी  
व्यवसाय में लगाया हुआ या किसी को  
दिया हुआ धन नष्ट होना। ५. चित्त में  
मग्न होना। ६. लीन होना। तन्मय होना।  
मुहा०-डूब मरना=शरम के भारे मुँह न  
दिखाना। चुल्लू भर पानी में डूब मरना=  
दे० "डूब मरना"। डूबना-उत्तराना=चिता  
में पड़ जाना। जी डूबना=१. चित्त व्याकुल  
होना। २. बेहोश होना। नाम डूबना=  
प्रसिद्धा नष्ट होना।

डुब्बो-सजा स्त्री० डुबकी।

डिडसी-सजा स्त्री० बकड़ी की तरह की  
एक सरपारी। टिड। टिडसी।

डेग-सजा पु० १. दे० "देग"। २. दे० "दग"।

डेगची-सजा स्त्री० दे० "देगची"।

डेहड़ा-सजा पु० पानी में रहनेवाला साँप।

डेढ़-वि० एक पूरा और उसका आधा। जो  
गिनती में १½ हो।

मुहा०-डेढ़ डेढ़ की मसजिद बनाना=  
सरेपन या असह्यपन के कारण सबसे अलग  
धाम बनाना। डेढ़ चावल की खिचड़ी,  
पूनाना=अपनी राय सबसे अलग रखना।

डेड़ा-वि० दे० "डेवड़ा"।

सजा पु० वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक गरया  
की डेढ़गुनी राया बतलाई जाती है।

डेपुडेशन-सजा पु० [अप्रे०] प्रतिनिधि-महल,  
जो किसी की ओर से किसी के पास प्राप्ति  
करने या वार्ता करने के लिए भेजा जाय।

डेवरा-वि० बाएँ हाथ से काम करनेवाला।

डेवरी-सजा स्त्री० डिव्वी। डिमरी।

डेमरेज-सजा पु० [अप्रे०] बन्दरगाह या  
रेल के मालगोदाम में निश्चित अवधि के  
बाद पड़े रहनेवाले माल का अतिरिक्त  
किराया, जो माल छुड़ानेवाले को देना  
पड़ता है।

डेरा-सजा पु० १. थोड़े दिनों के लिए घर से  
बाहर रहना। पड़ाव। २. ठहरने या रहने  
के लिए फैलाया हुआ सामान। ३. ठहरने  
का स्थान। ४. छावनी। खेमा। तबू।  
शामियाना। ५. नाचने-गानेवाली का दल।  
मडली। ६. मकान। घर।

\*†वि० बायाँ। सव्व।

मुहा०-डेरा डालना=सामान फैलाकर  
टिकना। ठहरना। डेरा पड़ना=टिकान  
होना।

डेराना†-कि० अ० दे० "डरना"।

डेल-सजा पु० उल्लू पक्षी। रोडा। डेला।  
पक्षियों को बंद करने का डला।

डेला-सजा पु० १. आँस का सफेद उभरा  
हुआ भाग जिसमें पुतली होती है। आँस  
का गोया। २. रोडा।

डेलिगेट-सजा पु० [अप्रे०] प्रतिनिधि।

डेलिगेशन-सजा पु० [अप्रे०] प्रतिनिधि-  
मंडल। मिष्ट-मंडल।

डेली†-सजा स्त्री० डलिया। वाँस की झाँपी।

[अप्रे०] नित्य। प्रतिदिन।

डेवड़ा†-वि० डेड़गुना। डेवड़ा।

सजा स्त्री० सिलसिला। त्रम। सार।

डेवड़ा-वि० सजा पु० दे० "डघोड़ा"।

डेवड़ी-सजा स्त्री० दे० "डघोड़ी"।

डोंडी-सजा स्त्री० १ पोस्ते का फल जिसमें  
से अफीम निकलती है। २. उभरा हुआ  
मुँह। टोटी।

डेहरी-सजा स्त्री० दे० "दहलीज"।

डेना-सजा पु० चिड़ियों का पय-समूह। पधा।  
पर। बाजू।

डोगर-सजा पु० पहाड़ी। टीला।

डोंगा-सजा पु० १. बिना पाल की नाव।  
२. बड़ी नाव।

डोंगी-सज्ञा स्त्री० छोटी नाव ।

डोडा-सज्ञा पुं० १. बड़ी इलायची । २. टोटा । कारतूस ।

डोई-सज्ञा स्त्री० काठ की डाँडी की बड़ी करछी जिससे दूध, चाशनी आदि चलाते हैं ।

डोकरा-सज्ञा पुं० [स्त्री० डोकरी] १. जशवत और वृद्ध मनुष्य । २. पिता ।

डोकिया, डोकी-सज्ञा स्त्री० काठ का छोटा कटोरा जिसमें तेल, बटना आदि रखते हैं ।

डोडो-सज्ञा पुं० बत्तख के बराबर एक चिड़िया जो अब नहीं मिलती ।

डोब, डोबा-सज्ञा पुं० डुबाने का भाव । गोता । डुबकी ।

डोम-सज्ञा पुं० [स्त्री० डोमिन या डोमनी] १. एक अस्पृश्य नीच जाति । इमशान पर शव को आग देना और सूप-उले आदि बेचना इनका काम है । २. डाढ़ी । मीरासी ।

डोमकौआ-सज्ञा पुं० बड़ा और बहुत काला कौआ ।

डोमड़ा-सज्ञा पुं० दे० "डोम" ।

डोमनी-सज्ञा स्त्री० १. डोम-जाति की स्त्री । २. डाढ़ी या मीरासी की स्त्री ।

डोमिन-सज्ञा स्त्री० १. डोम-जाति की स्त्री । २. डाढ़ी या मीरासियों की स्त्री ।

डोर-सज्ञा स्त्री० रस्सी ।

मुहा०—डोर पर लगाना=प्रयोजन-सिद्धि के अनुरूप करना । तब पर लगाना ।

डोरा-सज्ञा पुं० १. धागा । धागा । २. धारी । लकीर । ३. आँखों की भीनी लाल नसों, जो नशा या उमंग की वशा में दिखाई पड़ती है ।

४. तलवार की धार । ५. तपे घी की धार । ६. एक प्रकार की करछी । ७. स्नेहसूत्र ।

प्रेम का बंधन । ८. वह वस्तु जिससे किसी वस्तु का पता लगे । मुराग । ९. काजल या सुरमे की रेखा ।

मुहा०—डोरा डालना=प्रेमसूत्र में बद्ध करना । परचाना ।

डोरिया-सज्ञा पुं० १. वह वपवा जिसमें कुछ मोटे सूत की लकीरें धारियाँ बनी हों । २. एक प्रकार का थाला ।

डोरियाना†-क्रि० सं० पशुओं को रस्सी से बाँधकर ले चलना ।

डोरिहार\*-सज्ञा पुं० [स्त्री० डोरिहारिन] पटवा ।

डोरी-सज्ञा स्त्री० १. रस्सी । रज्जु । २. पाश । बंधन । ३. डाँडीदार कटोरा या कलछा । ४. डोरा ।

मुहा०—डोरी ढीली छोड़ना=देख-रेख कम करना । चौकसी कम करना ।

डोरे\*-क्रि० वि० साथ लिये हुए । साथ-साथ । सग-सग ।

डोल-सज्ञा पुं० १. लोहे का एक गोल बरतन । २. हिंडोला । झूला । ३. डोली । पालकी । ४. हलचल ।

वि० चंचल ।

डोलचो-सज्ञा स्त्री० छोटा डोल ।

डोलडाल-सज्ञा पुं० १. चलना-फिरना । २. पाखाने जाना ।

डोलना-क्रि० सं० १. चलायमान होना । गति में होना । २. चलना-फिरना । ३. हटना । दूर होना । ४. (चित्त) विचलित होना । डिगना ।

डोला-सज्ञा पुं० [स्त्री० डोली] १. स्त्रियों के बैठने की एक बड़ सवारी जिसे कहार ढोते हैं । मियाना । २. झूले का धौका । पैग ।

मुहा०—डोला देना=१ किसी राजा या सरदार को भेंट के रूप में अपनी बेटी देना । २. अपनी बेटी को घर के घर पर ले जाकर व्याहृत ।

डोलाना-क्रि० सं० १. हिलाना । चलाना । २. दूर करना । भगाना । हटाना ।

डोली-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सवारी जिसे कहार लेकर चलते हैं । पालकी ।

डोही-सज्ञा स्त्री० दे० "डोई" ।

डोड़ी-सज्ञा स्त्री० १. डिंडोरा । डुगडुगिगा । २. घोपणा । मुनादी ।

मुहा०—डोड़ी देना=१. मुनादी करना । २. सबसे पहले फिरना । डोड़ी बनना=१. घोपणा होना । २. जयजयकार होना ।

डोरू-सज्ञा पुं० दे० "डोम" ।

डोआ-सज्ञा पुं० पाठ का चमचा ।

डोल-सज्ञा पु० १ डाँचा। डब्बा। २ बनावट का ढग। रचना-प्रकार। ढब। ३ तरह। प्रकार। ४ युक्ति। उपाय। ५ रंग-ढग। लक्षण। सामान।

मुहा०-डोल पर लाना=१ बाट-छाँटकर सुडोल या दुस्त करना। २ अभिप्राय-साधन के अनुकूल करना। डोल बाँधना या लगाना=उपाय करना। युक्ति बैठाना।

डोलियाना†-क्रि० स० १ प्रयोजन-सिद्धि के अनुकूल करना। ढग पर लाना। २ गढ़कर दुस्त करना।

डघोड़ा-वि० डेढ़गुना।

सज्ञा पु० एक प्रकार का पहाड़ा, जिसमें अका की डेढ़गुनी सहाय बतलाई जाती है।

डघोड़ी-सज्ञा स्त्री० १ फाटक। चौखट।

दरवाजा। २ वह बाहरी कोठरी, जो भूकान में घुमने के पहले पड़ती है। पौरी।

डघोड़ीदार-सज्ञा पु० दे० "डघोड़ीवान"।

डघोड़ीवान-सज्ञा पु० डघोड़ी पर रहनेवाला पहरदार। द्वारपाल। दरवान।

झाइग-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] लकीरा से चित्र अथवा आकृति आदि बनाने की विद्या।

झाइवर-सज्ञा पु० [अग्रे०] मोटर, रेल आदि गाड़ी चलानेवाला।

झाम-सज्ञा पु० [अग्रे०] द्रव पदार्थ को नापने की एक अँगरेजी तोल, जो तीन मासे के लगभग होती है।

झामा-सज्ञा पु० [अग्रे०] नाटक।

झूस-सज्ञा पु० [अग्रे०] पहनने के कपड़े। पोशाक। पहनावा। लिबास।

झिल-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] नवायद।

द

द-हिंदी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन और टवग का चौथा अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। इसलिए इसे मूर्द्धन्त्य कहते हैं।

सज्ञा पु० १ बड़ा डोल। २ कुत्ता। कुत्ते की पूँछ। ३ साँप। ४ ध्वनि। नाद।

दकन-सज्ञा पु० दक्कन।

दकना-क्रि० स० छिपाना।

सज्ञा पु० दक्कन।

डख\*†-सज्ञा पु० दे० "डाक"।

डग-सज्ञा पु० १ प्रणाली। शैली। ढब।

रीति। २ प्रकार। तरह। किस्म। ३ रचना।

घनावट। गढ़न। ४ युक्ति। उपाय।

तदवीर। ५ चाल-ढाल। आचरण। व्यवहार।

६ बहाना। हीला। पाखंड। ७ लक्षण।

आभास। आसार। ८ दशा। अवस्था।

स्थिति।

मुहा०-डग पर लाना या चढ़ना=अभिप्राय साधन के अनुकूल करना या होना।

घौं-रंग-ढग=लक्षण। आसार।

डेलाना†-क्रि० स० लुढ़काना।

डगो-वि० चाबवाज। चतुर। चालाक।

डेंडोर-सज्ञा पु० आग की लपट। ज्वाला। लौ।

डेंडोरची-सज्ञा पु० डेंडोरा या मुनादी फेरनेवाला।

डेंडोरना†-क्रि० स० दे० "डूँडना"।

डेंडोरा-सज्ञा पु० १ घोषणा करने का ढोल। डुगडुगी। डोडी। २ वह घोषणा जो ढोल बजाकर की जाय। मुनादी।

डेंडोरिया-सज्ञा पु० डेंडोरा पीटने या फेरनेवाला। मुनादी बरनेवाला।

डेंपना-क्रि० अ० दे० "डक्कना"।

डई-सज्ञा स्त्री० किसी के यहाँ किसी काम से पहुँचना और जब तक काम न हो जाय, तब तक वहाँ से न हटना। धरना देना।

डक्कना-सज्ञा पु० [स्त्री० डक्कनी] डाँकने की वस्तु। दक्कन।

क्रि० अ० किसी वस्तु के नीचे पड़कर दिखाई न देना। छिपना।

क्रि० स० दे० "डाँकना"।

दकनिया†-सज्ञा स्त्री० दे० "डक्कनी"।

दकनी-सज्ञा स्त्री० डाँकने की वस्तु। दक्कन। मिट्टी का बहुत छोटा बरतन।

ढका\*†-सज्ञा पु० १. बड़ा ढोल। २. तीन सेर का बाट। ३. धक्का। टक्कर।

ढकिल\*†-सज्ञा स्त्री० वेग के साथ धावा। चढ़ाई। आक्रमण।

ढकेलना-क्रि० सं० १. धक्के से गिरना। ठेलकर आगे की ओर गिराना। २. धक्के से हटाना। ठेलकर सरकाना।

ढकोसना-क्रि० सं० एकबारगी बहुत-सा पीना। ढकोसला-सज्ञा पु० १. कपट का व्यवहार। २. पाखंड। ढोग। आडंबर।

ढक्कन-सज्ञा पु० ढाँकने की वस्तु। ढकना।

ढक्का-सज्ञा स्त्री० बड़ा ढोल।

ढगण-सज्ञा पु० एक मानिक गण जो तीन मानाओं का होता है।

ढचर-सज्ञा पु० १. टटा। बखेड़ा। २. आडंबर। ढकोसला।

ढट्टा-सज्ञा पु० टाट। ठेपी।

ढट्टी-सज्ञा स्त्री० डाढ़ी बाँधने की पट्टी। डाट।

ढड्डा-वि० बहुत बड़ा और वेढगा।

सज्ञा पु० १. ढाँचा। २. झूठा ठाट-बाट। आडंबर।

ढप-सज्ञा पु० दे० "डफ"।

ढपढपाना-क्रि० सं० ढोल बजाना। बिना ताल के ढोलक बजाना। ढपढप की आवाज करना।

ढपना-सज्ञा पु० ढाँकने की वस्तु। ढक्कन। क्रि० अ० ढका होना।

ढप्पू-वि० बहुत बड़ा। बड़्हा।

ढफ†-सज्ञा पु० दे० "डफ"।

ढव-सज्ञा पु० १. ढग। रीति। तोर। तरीका। २. प्रकार। तरह। विस्म। ३. बनापट। गढ़न। ४. युक्ति। उपाय। तदवीर। ५. प्रवृत्ति। आवत। बान।

मुहा०—ढव पर चढ़ना=बिस्ती का ऐसी अवस्था में होना जिससे कुछ मतलब नबले। ढव पर लगाना या लाना=बिस्ती को इस प्रकार प्रवृत्त करना कि उसमें कुछ अर्थ निश्च हो।

ढरना†-क्रि० अ० १. पानी आदि तरल पदार्थ का नीचे गिरना। ढलना। २. लेटना। ३. नीचे की ओर जाना।

ढरका-सज्ञा पु० बाँस की नली जिससे चौपायी को दवा पिलाते हैं।

ढरकाना†-क्रि० सं० पानी आदि को नीचे गिराना। गिराकर बहाना।

ढरको-सज्ञा स्त्री० जुलाहों का एक औजार जिससे वे लोग बाने का सूत फेंकते हैं।

ढरना†-क्रि० अ० दे० "ढलना"।

ढरनि-सज्ञा स्त्री० १. गिरने की क्रिया। पतन। २. हिलने-डोलने की क्रिया। गति।

३. चित्त की दयालुता। प्रवृत्ति। झुकाव।

४. कृपा। कृपालुता।

ढरहरना\*†-क्रि० अ० खसकना। सरकना। ढलना। झुकना।

ढरहरा-वि० ढालू।

ढरहरी†-सज्ञा स्त्री० पकीड़ी।

ढराना-क्रि० सं० १. दे० "ढलाना"। २. दे० "ढरकाना"।

ढरारा-वि० [स्त्री० ढरारी] १. गिरकर बह जानेवाला। २. लुढ़कनेवाला। ३. शीघ्र प्रवृत्त होनेवाला।

ढर†-सज्ञा पु० १. मार्ग। रास्ता। पथ। २. शैली। ढग। तरीका। ३. युक्ति। उपाय।

तदवीर। ४. आचरण-पद्धति। चाल-चलन।

ढलकना-क्रि० अ० १. द्रव पदार्थ का नीचे गिर जाना। ढलना। २. लुढ़कना।

ढलका-सज्ञा पु० वह रोग जिसमें आँख से पानी बहा करता है।

वि० १. चौघना। २. छलका।

ढलकाना-क्रि० सं० १. द्रव पदार्थ को नीचे गिराना। २. लुढ़काना।

ढलना-क्रि० अ० १. द्रव पदार्थ का नीचे की ओर सरक जाना। ढरकना। बहना।

२. बीतना। गुजरना। ३. उँडला जाना।

४. लुढ़कना। ५. लहर सावर इधर-उधर डोलना। लहराना। ६. बिस्ती और आरुष्ट होना। प्रपूत होना। अनुरक्त होना। ७. प्रग्न होना। रीझना। ८. सचि में डालकर बनाया जाना। ढाला जाना।

मुहा०—सचि में ढला=बहुत सुन्दर। दिन ढलना=सप्पा होना। गूरज या चाँद ढलना=गूर्य या चन्द्रमा का अस्त होना।

दलमलाना-त्रि० अ० पल्ल नाता। दग-  
नगाना। नागना। अग्निर नाता।  
दलवी-वि० जा गोवे में डालकर घासा  
गया है।  
दलवाना-त्रि० ग० [ दालना वा घे० ] दालो  
का सबम दूसरे में बराना।  
दलाई-गज्ञा स्त्री० १. डालने पर भाव वा  
काम। २. डालो की मजदूरी।  
दलाना-त्रि० स० दे० "दलवाना"।  
दलवा-वि० दालवी। डालू। छुड़काव। उतार।  
नीचा। डाला हुआ।  
दलंत-गज्ञा पु० डाल गगनेवाला गिपाही  
या योद्धा। डाल-दलवार बांधनेवाला वीर  
या माहुरी योद्धा।  
दलरी\*†-सज्ञा स्त्री० धुन। दोरी। ली।  
लगन। रट।  
दलना-त्रि० अ० १. मराना आदि वा गिर  
पडना। ध्वस्त होना। २. नष्ट होना।  
मिट जाना। दलार गिर पडना।  
दहरी†-सज्ञा स्त्री० दे० "डेहरी"। मिटटी  
वा मटका।  
दहवाना-क्रि० स० दहाने वा काम बराना।  
गिरवाना।  
दहाना-त्रि० स० दीवार, मराना आदि  
गिराना। ध्वस्त करना।  
ढाँकना-क्रि० स० छिपाना। ढाँपना। ओट  
में करना।  
ढाँचा-सज्ञा पु० १. चाँचा। चौखटा। उट्टर।  
ढोल। २. पजर। ठट्टरी। ३. गडन। बनावट।  
४. प्रकार। भाँति। तरह।  
ढाँपना-क्रि० स० दे० "ढाँकना"।  
ढाँसना-त्रि० अ० सूखी खाँसी खाँसना।  
ढाँसा-सज्ञा पु० १. बाँप। कलक। अपवाद।  
२. खाँसी।  
ढाँसी-सज्ञा स्त्री० सूखी खाँसी।  
ढाई-वि० दो और आधा।  
ढाक-सज्ञा पु० पलाश का पेड़। एक प्रकार  
का बाजा जो साँप का विष उतारने के  
काम में आता है।  
मुहा०-ढाक के तीन पात=सदा बुरी  
परिस्थिति में। कभी भरा-भूरा नहीं।

ढाका-सज्ञा पु० बंगाल का एक प्रसिद्ध नगर  
जो अब पूर्वी पाकिस्तान की राजधानी है।  
ढाकापाटन-सज्ञा पु० एक प्रकार की बूटीदार  
मलमल (ढाँके की मलमल)।  
ढाटा या ढाटा-सज्ञा पु० डाढ़ी बाँधने की  
पट्टी। बटा मारना। एक प्रकार की बड़ी  
पगड़ी जिसे राजपूताने के लोग बाँधते हैं।  
ढाठी-सज्ञा स्त्री० घोंटे या मूँह बाँधने की  
रस्मी। मूँह-बैधना। घाटे के मूँह पर बाँधा  
जानेवाला पटा।  
ढाड़-सज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. निम्पाट।  
गरज। दहाड़ (बाप, मित्र आदि की)।  
२. चिल्लाहट।  
मुहा०-ढाट मारना=चिल्लाकर रोना।  
ढाड़ना†-त्रि० स० दे० "दाड़ना"।  
ढाड़त-सज्ञा पु० १. धँप। आस्वाशन।  
उत्पल्लव। २. दृढ़ता। माहुर। हिम्मत।  
ढाड़ी-सज्ञा पु० [ स्त्री० ढाड़िन ] एक प्रकार  
के मुसलमान गवैए। जाति-विशेष। गाने-  
बजाने का व्यवसाय करनेवाली एक नीच  
जाति।  
ढाड़ी लीला-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का खेल।  
भगवान् कृष्ण की चार-लीला का अभिनय।  
ढाना-त्रि० स० दीवार, मराना आदि की  
गिराना। ध्वस्त करना।  
ढापना-त्रि० स० ढवना।  
ढावर†-वि० मिट्टी मिला हुआ। भटमैला।  
गँदला (पानी)।  
ढावा-सज्ञा पु० १. ओसारा। ओरी।  
ओलनी। २. रोटी-वाल आदि की दूकान।  
ढामक-सज्ञा पु० ढोल आदि का शब्द।  
ढार\*-सज्ञा स्त्री० १. डाल। उतार। २.  
पथ। मार्ग। प्रणाली। ३. ढाँचा। रचना।  
ढारना†-क्रि० स० दे० "डालना"। नीचे  
गिराना।  
ढारस-सज्ञा पु० दे० "ढाडस"।  
डाल-सज्ञा स्त्री० १. तलवार आदि का चार  
रोखने का गोल अस्त्र। चर्म। आठ। फलक।  
२. वह स्थान जो क्रमशः बराबर नीचा  
होता गया हो। ढलाऊ। उतार। ३. ढग।  
प्रवार। तौर। तरीका। मुकाब।

ढालना-क्रि० स० १. किसी द्रव पदार्थ को नीचे बहाना। गिराना। उँडेलना। २. शराब पीना। ३. बेचना। ४. ताना छोड़ना। व्यर्थ करना। ५. साँचे में ढालकर कोई चीज बनाना।

ढालवाँ-वि० [स्त्री० ढालवी] जो बराबर नीचा होता गया हो। जिसमें ढाल हो।  
ढालुवाँ-वि० दे० "ढालवाँ"।

ढालू-वि० दे० "ढालवाँ"।

ढास+सज्ञा पु० लुटेरा। डाकू। विश्वासघातक।  
ढासना-सज्ञा पु० १. वह ऊँची वस्तु जिस पर बैठने में पीठ टिक सके। सहारा। टेक।  
२. तकिया।

क्रि० अ० खाँसना।

ढाहना+क्रि० स० दे० "ढाना"। गिराना। नष्ट करना।

ढिंढोरना-क्रि० स० १ मथना। विलोडना।  
२ हाथ ढालकर ढूँढना। खोजना।

ढिंढोरा-सज्ञा पु० १ वह ढोल जिसे बजाकर किसी बात की सूचना दी जाती है। मुनादी पीटने का ढोल। ढुगडुगिया। २ वह सूचना जो ढोल बजाकर दी जाय। घोषणा। मुनादी।

ढिंग-क्रि०, वि० पास। निकट।

सज्ञा स्त्री० १. पास। सामीप्य। २ तट। किनारा। छोर।

ढिंढाई-सज्ञा स्त्री० १ धृष्टता। गुस्ताखी।  
२ निर्लज्जता। ३ अनुचित साहस।

ढिंढोरो-सज्ञा स्त्री० मिट्टी या टीन की ढिबिया जिसमें मिट्टी के तेल से बत्ती जलाते हैं। कटे जानेवाले पेच के सिरे पर का लोहे का छल्ला। पेच की रोक। बालदू।  
ढिमका-सर्व० [स्त्री० ढिमकी] अमूक। फलौं। फलाना।

ढिमढिमी-सज्ञा पु० डमरू, सजरी आदि वाजों का शब्द।

ढिलाई-सज्ञा स्त्री० १ ढीला होने का भाव।  
२ शिथिलता। मुस्ती। ढीलने की क्रिया या भाव। छूट। ढड़ाई न करना।

ढिलाना-क्रि० स० १. ढीलने का काम कराना। २ ढीला कराना। \*ढीला करना।

ढिल्लड-वि० आलसी। सुस्त। शिथिल।  
अकर्मण्य। निकम्मा।

ढिसरना\*-क्रि० अ० १. फिसलना। सरकना।  
२. प्रवृत्त होना। झुकना।

ढींगरी-सज्ञा पु० १. हट्टा-कट्टा आदमी।  
२. पति-या उपपति।

ढींठा+सज्ञा पु० १. निकला हुआ पेट। २. गर्भ। ३. हमल।

ढीची-सज्ञा पु० कूबड।

ढीठ-सज्ञा स्त्री० रेखा। लकीर।

ढीठीना\*-सज्ञा पु० दे० "ढोटा"।

ढीठ-वि० १ बड़ो का सक्रोच या डर न रखनेवाला। धृष्ट। गुस्ताख। शोख। २. निडर। बेधडक। साहसी।

ढीठना+क्रि० स० दे० "ढिंढाई"।

ढीठा-सज्ञा पु० धृष्टी मंगरा।

ढीठपो-सज्ञा पु० दे० "ढीठ"।

ढीम+सज्ञा पु० १ पत्थर का बड़ा टुकड़ा या ढोका। २ मिट्टी की पिंडी।

ढील-सज्ञा स्त्री० १. शिथिलता। आलस्य। मुस्ती। बेरी। विलम्ब। २. बघन को ढीला करने का भाव।

सज्ञा पु० बालों का कीड़ा। जूँ।

ढीलना-क्रि० स० १ कसा या तना हुआ न रखना। ढीला करना। २. बघन-मुक्त करना। छोट देना। ३ (रस्सी आदि) इस प्रकार छोड़ना जिसमें वह आगे की ओर बढ़ती जाय।

ढीला-वि० १. जो कसा या तना हुआ न हो।  
२ जो दृढ़ता से बंधा या लगा हुआ न हो।  
३ जो खूब कराकर पकड़े हुए न हो।  
४. जो गाढ़ा न हो। बहुत मीला। ५. जो अपने सक्त्प पर बड़ा न रहे। ६. धीमा। शांत। नरम। ७. मंद। सुस्त। शिथिल। आलसी।

मुहा०—ढीली आँख=मंद-भरी चितवन।

ढीलापन-सज्ञा पु० ढीला होने का भाव। शिथिलता।

ढुंढ+सज्ञा पु० उचकना। ठग

ढुंढपाणि\*-सज्ञा पु० "दडपाणि"। दडपाणि भैरव। शिवजी के एक गण।

हुंढवाना-त्रि० स० ढँढो वा वाम कराना।  
तलाश करना।

हुंढा-सज्ञा स्त्री० एक राक्षसी जो हिरण्य-  
पशिषु की बहिन थी।

हुंढि-सज्ञा पु० गणेशजी।

हुंढिराज-सज्ञा पु० गणेश।

हुंढी-सज्ञा स्त्री० बाँह। मुँह।

मुहा०-हुंढियाँ चढ़ाना=मुँह बाँधना।

हुकना-त्रि० अ० १ घुसना। प्रवेश करना।

२ भीतर जाना। धुक्ना। छिपना। ३  
कोई बात सुनने या देखने के लिए आँख में  
छिपना।

हुक्की-सज्ञा स्त्री० पीछा करना। छिपकर  
देखना। तान में रहना।

हुच्च-सज्ञा पु० घुँसा।

हुटोना-सज्ञा पु० दे० "ढोटा।"

हुनमुनियाँ-सज्ञा स्त्री० लुङकने की क्रिया  
या भाव। वच्चे का एक खेल जिसमें  
वच्चे लुङकते हैं।

हुकना-त्रि० अ० १ फिसलकर गिरना।

लुङकना। खिसकना। २ झुकना।

हुरना-त्रि० अ० १ गिरकर बहना। हुकना।

२ कभी इधर कभी उधर होना।

ढगमगाना। डोलना। ३ नखरे से चलना।

नाचना। ४ कबूतर की गति। ५ लहराना।

६ लुङकना। फिसल पड़ना। ७ प्रवृत्त  
होना। झुकना। ८ अनुकूल होना। प्रसन्न  
होना।

हुहुरी-सज्ञा स्त्री० १ लुङकने की क्रिया  
या भाव। २ पगडंडी।

हुराना-त्रि० स० १ गिराकर बहाना।

ढरकाना। २ इधर-उधर हिलाना। लह-  
राना। ३ लुङकना। हुलकाना।

हुरी-सज्ञा स्त्री० पगडंडी।

हुलकना-त्रि० अ० ऊपर नीचे चक्कर खाते  
हुए गिरना। लुङकना। ढगलाना।

हुलकाना-त्रि० स० दे० "लुङकाना।"

हुलना-त्रि० अ० १ गिरकर बहना।  
लुङकना। २ प्रवृत्त होना। झुकना। ३  
प्रसन्न होना। कृपातु होना। ४ इधर से  
उधर हिलना। लहराना।

हुलवाई-सज्ञा स्त्री० ढाने या वाम, या  
मजदूरी। हुलाने की क्रिया, या मजदूरी।

हुलवाना-त्रि० स० ढोने या वाम दूसरे से  
कराना।

हुलाई-सज्ञा स्त्री० हुलाने की मजदूरी  
हुलवाई।

हुलाना-त्रि० स० १ गिराकर बहाना।

ढरकाना। ढालना। २ नीचे ढालना।

गिराना। ३ लुङकाना। ढगलाना। ४

प्रवृत्त करना। झुकाना। ५ अनुकूल करना।

प्रसन्न करना। कृपालु करना। ६ इधर-  
उधर हुलाना। ७ चलाना। फिराना।

८ फेरना। पावना। ढोने का काम कराना।

हुङ्क-सज्ञा स्त्री० खोज। तलाश।

हुङ्कना-त्रि० स० खोजना। तलाश करना।

हुआ-सज्ञा पु० मेड़। मिट्टी का छाटा बाँध।

बुधो की जड़ में ढाले हुए पानी को रोक्ने

के लिए घेरा।

हुसर-सज्ञा पु० जाति विशेष। वंझा की

एक जाति।

हुह, हुहा-सज्ञा पु० १ ढेर। स्तूप। अटाला।

२ टीला। भीटा।

हुँक-सज्ञा स्त्री० पानी के किनारे रहनेवाली

एक चिड़िया। सारस पक्षी।

हुँकली-सज्ञा स्त्री० १ सिचाई के लिए कुएँ

से पानी निकालने का एक यंत्र। २ धान

कटने का लकड़ी का एक यंत्र। धन-हुट्टी।

हुँकी। ३ बलात्कारी। कलैया।

हुँकी-सज्ञा स्त्री० अनाज कटने की हुँकली।

हुँडी-सज्ञा स्त्री० धान का एक प्रकार का

गहना। डेविया। फूरी। फलियाँ।

हुँडी-सज्ञा पु० १ बौवा। २ एक नीच जाति

३ मूख। मूढ़। कपास आदि का डोडा

ढाँड।

हुँवर-सज्ञा पु० आँस के डेरे का निकला हुआ

विष्ट मांस। आँस की फूरी। टेंटर।

हुँडवा-सज्ञा पु० गुर।

हुँडा, हुँड-सज्ञा पु० गम। लम्बोदर। बडा

पट। लम्बी नाभि। पट का मध्य भाग।

हुँपुनी या हुँप-सज्ञा स्त्री० १ पत्ते या फल

का वह भाग जो टहनी से लगा रहता है।

हेंप। २ दाने की तरह उमरी हुई नोक।  
 ठोठ। ३ कुचाप।  
 डेउआ†-सज्ञा पु० पैसा।  
 डेऊ-सज्ञा पु० तरंग। बीच। लहर।  
 डेडस-सज्ञा स्त्री० डेडसी।  
 डेबरी-सज्ञा स्त्री० डिवरी।  
 डेबुक†-सज्ञा पु० पैसा।  
 डेबुया†-सज्ञा पु० पैसा।  
 डेर-सज्ञा पु० नीचे-ऊपर रखी हुई बहुत-सी  
 वस्तुआ का ऊपर उठा हुआ समूह। राशि।  
 गटाला। अवार।  
 वि० बहुत। अधिक। ज्यादा।  
 मूहा०—डेर करना=भार ढालना। डेर हो  
 रहना या जाना=१ गिरकर मर जाना।  
 २ थककर चूर हो जाना।  
 डेरना-सज्ञा पु० रस्ती या सूत बटने की  
 फिरकी।  
 डेरा-सज्ञा पु० १ सुतली बटने की फिरकी।  
 २ मोट के मुँह पर बा घेरा। ३ चिह्न-  
 विशेष।  
 डेरी-सज्ञा स्त्री० डेर। राशि।  
 डेलवास-सज्ञा स्त्री० रस्ती का वह फटा  
 जिससे डेला फँकते हैं। गोफना।  
 डेला-सज्ञा पु० १ ईंट, फकड या मिट्टी  
 आदि का टुकड़ा। चक्का। २ टुकड़ा।  
 खड। ३ एक प्रकार का घान।  
 डेला चीय-सज्ञा स्त्री० भादा शुक्ल की चीय।  
 (लोग इस दिन दूसरो के घर पर डेले  
 फँकते हैं)।  
 देया-सज्ञा स्त्री० १ ढाई सेर तीलने का  
 बटखरा। २ ढाईगुने का पहाड़ा। अडेया।  
 होंकना-क्रि० सं० पीना।  
 होंका-सज्ञा पु० १ चार सौ पान। २ पत्थर  
 का अनगड टुकड़ा।  
 होग-सज्ञा पु० हकोसला। पाखड।  
 होंगबाजी-सज्ञा स्त्री० पाखड। आडवर।  
 होंगो-वि० पाखडी। हकोसलेबाज।  
 होंडा-सज्ञा पु० दे० 'ढोटा'। पुत्र।  
 होंड-सज्ञा स्त्री० डेठी। फनी। बीज-नौप।  
 होंड-सज्ञा पु० १ बपास, पोस्ते आदि का  
 बाड़ा। २ बली।

होंडी-सज्ञा स्त्री० नाभि।  
 डोटा-सज्ञा पु० [स्त्री० डोटी] १. पुत्र।  
 बेटा। २ लडका।  
 डोटी-सज्ञा स्त्री० १ लडकी। २ पुत्री।  
 डोटाना†-सज्ञा पु० दे० 'ढोटा'। पुत्र। बेटा।  
 डोना-क्रि० सं० १ बीज लादकर ले जाना।  
 भार ले चलना। २ उठा ले जाना। ३  
 निर्वाह करना।  
 डोर-सज्ञा पु० गाय, बैल, भैंस आदि पशु।  
 चौपाया। मवेशी।  
 डोरना†-क्रि० सं० १ ढरकाना। ढालना।  
 २ लुढ़काना।  
 डोरी-सज्ञा स्त्री० १ ढालने या ढरकाने की  
 क्रिया या भाव। २ रट। धुन। ली। लगन।  
 डोल-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाजा,  
 जिसके दोनों ओर चमड़ा मड़ा होता है।  
 मूहा०—डोल पीटना या बजाना=चारो  
 ओर कहते या जताते फिरना।  
 डोलक-सज्ञा स्त्री० छोटा डोल।  
 डोलकिया-सज्ञा पु० डोलक बजानेवाला।  
 डोलक बजाने में निपुण।  
 डोलकी-सज्ञा स्त्री० छोटा डोल। डोलक।  
 डोलन-सज्ञा पु० प्रियतम। रसिक। रसिया।  
 डोलना-सज्ञा पु० १ पालना। २ डोलक के  
 आकार का छोटा जतर। ३ डोलक के आकार  
 का बड़ा वेलन जिससे सडक पीटते हैं।  
 † क्रि० सं० १ ढरकाना। ढालना। २  
 ढालना।  
 डोलनी-सज्ञा स्त्री० बच्चा का झूला।  
 पालना।  
 डोला-सज्ञा पु० १ मूख। २ एक प्रकार  
 का छोटा कोड़ा जो सडी हुई वस्तुआ में  
 पड जाता है। ३ हृद का निशान। ४ पिंड।  
 शरीर। देह। ५ प्यारा। प्रियतम। पति।  
 ६ एक प्रकार का गीत।  
 डोलिन, डोलिना-सज्ञा स्त्री० डोला जीति  
 की स्त्री। इस जाति के लोग मारवाड में  
 अधिक पाए जाते हैं। इनका धन्या गाना-  
 बजाना है।  
 डोलिनी-सज्ञा स्त्री० डोल बजानेवाली स्त्री।  
 ढफालिन।

ढोलिया-संज्ञा पु० [स्त्री० ढोलिनी] ढोल बजानेवाला।

ढोली-संज्ञा स्त्री० १. २०० पानों की गड्ढी। २. हँसी। ठोली। ३. ढोल बजानेवाला। ढोलकिया। जाति-विशेष।

ढोलंत-संज्ञा पु० ढोलवाला। ढोल बजानेवाला। ढोलकिया।

ढोव-संज्ञा पु० वह वस्तु जो भंगल अवसर पर लोग सरदार या राजा को भेंट करते हैं। डाली। नजर।

ढोवा-संज्ञा पु० १. ढोने की क्रिया या मजदूरी। २. दे० "ढोव"।

ढोहना\*-क्रि० सं० १. दे० "ढोना"। २. दे० "ढूँढ़ना"।

ढौकना-क्रि० सं० पीना।

ढौकन-संज्ञा पु० घूस। उत्कोच। डाली। नजर। किसी प्रकार का लोभ दियाकर अपने मतलब का काम कराने का उपाय।

ढौचा-संज्ञा पु० साढ़े चार। साढ़े चार गुना अधिक। साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौसना-क्रि० अ० आनद-ध्वनि करना। हर्ष प्रकट करने के लिए अव्यक्त ध्वनि-विशेष।

ढोरी\*†-संज्ञा स्त्री० लगन। रट। धुन। ताप। दाह। दहक। दुरी।

## ण

ण-हिंदी वर्णमाला का पंद्रहवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है। यह सानुनासिक कहलाता है।

संज्ञा पु० १. बुद्ध। २. आभूषण। ३. निर्णय।

४. ज्ञान। ५. शिवजी का एक नाम। ६. दान। पानी का घर। ७. दे० "णगण"। वि० गुण-शून्य।

णगण-संज्ञा पु० दो मात्राओं का एक गण।

## त

त-हिंदी वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दंत है।

संज्ञा पु० १. नाव। २. पुण्य। ३. चोर।

४. झूठ। ५. दुम। ६. छ। ७. गोद। ८. म्लेच्छ। ९. गर्भ। १०. रत्न। ११. बुद्ध।

१२. अमृत। १३. शठ।

\*†-क्रि० वि० तो।

त-संज्ञा स्त्री० १. नाव। २. पुण्य।

तक-संज्ञा पु० टाकी। डर। प्रिय-वियोग का दुःख।

तग-संज्ञा पु० [फा०] घोड़े की जीन बसने का तस्मा। बसन।

वि० १. कसा। दृढ़। २. दिक। विकल।

हैरान। ३. तिकुड़ा हुआ। सकुचित। ४. चुस्त। छोटा।

महा०-तग आना या होना=धवरा जाना।

परेशान होना। दुःखी होना। तग करना=

सवाना। दुःख देना। हाथ तग होना=

घनहीन होना।

तगदस्त-वि० [फा०] १. कजूस। २. गरीब। निर्धन।

तगदस्ती-संज्ञा स्त्री० [फा०] गरीबी। निर्धनता।

तगदिल-वि० [फा०] कजूस। कृपण।

तगहाल-वि० [फा०] १. निर्धन। गरीब।

२. विपद्ग्रस्त। बीमार।

तगा-संज्ञा पु० १. एक प्रकार का पेड़।

२. अधम्रा।

तगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तग या सँकरे

होने का भाव। सकीर्णता। सकोच। २.

दुःख। तकलीफ। ३. निर्धनता। गरीबी।

४. कमी।

तगेव-संज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की

महीन और बढ़िया मलमल।

तड-संज्ञा पु० नृत्य। नाच।

तडव-संज्ञा पु० दे० "ताडव"।

तडल-संज्ञा पु० चावल।

तत\*†-संज्ञा पु० १. दे० "ततु"। २. दे० "तएव"। ३. वह यात्रा जिसमें बजाने के

लिए तार लगे हो। जैसे, सितार या सारंगी। ४. क्रिया। ५. तन-शास्त्र। ६. इच्छा। कामना। अधीनता। ७. दे० "तत्र"। ८. परिवार। ९. प्रबन्ध। व्यवस्था। १०. गुख-सिद्धि। ११. तुरन्त। शीघ्र। १२. सन्तान। १३. औषध। १४. उपाय। सज्ञा स्त्री० आतुरता।

वि० जो तौल में ठीक हो।  
ततरी\*†-सज्ञा पु० तारयुक्त बाजा बजाने-वाला।

तति-सज्ञा स्त्री० गी। गाय।  
सज्ञा पु० तन्तुवाय। कपडा बिननेवाली एक जाति।

ततु-सज्ञा पु० १ सूत। डोरा। तागा। २ ग्राह। ३ सदान। बाल-बच्चे। ४ विस्तार। फैलाव। ५ यज्ञ की परपरा। ६ बस-परपरा। ७ ताँत। ८ मकड़ी का जाला। ततुक-सज्ञा पु० सरसो।

सज्ञा स्त्री० नाडी।  
तन्तुकीट-सज्ञा पु० १ रेशम का कीटा। २ कपडे का कीटा।

तन्तुनिर्वात-सज्ञा पु० तालवृक्ष।  
तनुवादक-सज्ञा पु० बीन आदि तार के बाजे बजानेवाला। तत्री।

तनुपाय-सज्ञा पु० कपडे बुननेवाला। ताँती।  
तनुशाला-सज्ञा स्त्री० कपडा बुनने का घर। ताँतघर।

तत्र-सज्ञा पु० १ ततु। ताँत। सूत। २ जुलाहा। ३ कपडा। यस्त्र। ४ बुदबु वा भरण-पोषण। ५ निश्चित सिद्धांत। प्रमाण। ६ औषध। दवा। साङ्गने-कूकने का मंत्र। ७ वाय्यं। कारण। ८ राज-कर्मचारी। राज्य का प्रबंध। ९ सेना। फौज। १०. भवान। धन। संपत्ति। ११. अधिकार। पद। १२. अधीनता। पर-वश्यता। १३. बुल। खानदान। १४. धेनी। दल। १५. उद्देश्य। १६. क्षय। १७. हिंदुआ का उपासना-सम्बन्धी एक शास्त्र।

तत्रण-सज्ञा पु० शासन या प्रबंध आदि करने का काम।

तत्रमस्या-सज्ञा पु० शासन-संस्था।  
तत्री-सज्ञा स्त्री० १. सितार आदि बाजों में लगा हुआ तार। २. गुच्छ। ३. शरीर की मस। ४. रस्ती। ५. वह बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे हो। बीणा। ६. तत्रशास्त्री। तत्रशास्त्र का जाननेवाला। ७. शरीर की नाडियाँ। नाडी भेद। सज्ञा पु० गर्वया। बाजा बजानेवाला। वि० आलसी। अधीन।

तदरा\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "तद्रा"।  
तदुरस्त-वि० [फा०] जिसे कोई रोग या बीमारी न हो। नीरोग। स्वस्थ।  
तदुरस्ती-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ नीरोग होने की अवस्था या भाव। २ स्वास्थ्य।  
तदुल\*†-सज्ञा पु० दे० 'तडुल'।  
तदूर-सज्ञा पु० भट्ठी की तरह बना हुआ एक मिट्टी का पात्र।

तदूरी-वि० तदूर में बना हुआ।  
तदेही-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ परिश्रम। मेहनत। २ प्रयत्न। कोशिश। ३ चेतावनी। ताकीद।

तद्रा-सज्ञा स्त्री० १ वह अवस्था जिसमें नींद मालूम पड़ने के कारण मनुष्य कुछ सो जाय। उँघाई। ऊँघ। २ हलकी नींद। दापकी।

तद्रालु-वि० १ जिसे नींद आती है। निद्रातुर। श्रान्त। २ शिथिल।

तद्री-सज्ञा स्त्री० अत्यन्त परिश्रम करने से इन्द्रियो के शिथिल होने की अवस्था।

तया-सज्ञा पु० [फा०] १ गाय। २ बीड़ी माहुरी का एक प्रकार का पायजामा।

तयाकू-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध पौधा जिससे पत्त का व्यवहार लोग अनेक प्रकार से नसे के लिए करते हैं। सुरती। जैनी तमाकू। २ इन पत्ता से तैयार की हुई एक प्रकार की नीली पिंडी जिसे चिलम पर पीते हैं।

तबिका-सज्ञा स्त्री० गी।

तबिया-सज्ञा पु० ताँचे का छोटा बरतन। ताँचे का छोटा हटा या तसला।

तबियाना-वि० अ० १ ताँचे के रंग-का-

होना। २ ताँरे के बरतन में रहने के कारण किसी पदार्थ में ताँरे का स्वाद या गंध आ जाना।

तबीह-सज्ञा स्त्री० १ नसीहत। शिक्षा। २ ताकीद।

तबू-सज्ञा पु० थपड़े, टाट आदि का घना हुआ बड़ा घर। खेमा। डेरा। शिविर। शामियाना।

तबूरा-सज्ञा पु० तबूरा बजानेवाला।

तबूरा-सज्ञा पु० वीन या सितार की तरह का एक बाजा। तानपूरा।

तबूल\*†-सज्ञा पु० दे० "ताबूल"।

तबोल-सज्ञा पु० १ दे० "ताबूल"। २ दे० 'तमोल'। एक पेड़। ३ वह टीका जो बारात के समय बर को दिया जाता है।

तबोलिन-सज्ञा स्त्री० पान बेचनेवाली स्त्री।

तबोली-सज्ञा पु० पान बेचनेवाला। बरई।

तम, तमन\*-सज्ञा पु० शृंगार रस में स्तम्भ नामक भाव।

तयार-सज्ञा स्त्री० हारारत।

तअज्जुब-सज्ञा पु० [अ०] आश्चर्य। विस्मय। अचम्भा।

तअल्लुक-सज्ञा पु० [अ०] सबध। रिश्ता। लगाव।

तअल्लुका-सज्ञा पु० [अ० "तअल्लुक"] बड़ा इलाका। बहुत से गाँवों की जमींदारी।

तअल्लुकादार-सज्ञा पु० [अ०] इलाकेदार। तअल्लुके का मालिन।

तअल्लुकादारी-सज्ञा स्त्री० [अ०] तअल्लुकदार का पद या उसकी जमींदारी।

तअस्तुय-सज्ञा पु० [अ०] धर्म या जाति-सम्बन्धी पक्षपात। साम्प्रदायिक पक्षपात। कट्टरपन।

तइसा†-वि० दे० "वैसा"।

तइ\*-प्रत्य० ये। प्रति। का।

तइयु० लिए। वास्ते।

तई-अव्य० १ तक। पयन्त। अवधि। सीमा। २ लिए। वास्ते।

नना स्त्री० ताव। दृष्टि।

तई-नना स्त्री० लोहे की छिछरी बड़ाही।

तउ\*†-अव्य० १ दे० 'तव'। २ दे० 'त्यो'।

तऊ\*†-अव्य० तो भी। तथापि। तिस पर भी।

तऊ-अव्य० तथापि। तो भी। तदपि।

तख-अव्य० एवं विभक्ति जो किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करती है। पयन्त।

सज्ञा स्त्री० दे० "टक"। १ दृष्टि। तान।

२ तराजू। तराडी।

यो०-तख-तन=पशु आदि हाँकने का शब्द।

तकदना-सज्ञा पु० [अ०] किसी चीज की तैयारी का वह हिसाब जो पहले से तैयार किया जाय।

तखमीना। अदाज।

तकदीर-सज्ञा स्त्री० [अ०] भाग्य। प्रारब्ध।

तकदीरवर-वि० [अ०] जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्।

तकना\*†-वि० अ० १ देखना। निहारना। बखलोनन करना। २ शरण लेना। पनाह लेना।

तकमा†-सज्ञा पु० १ दे० "तमगा"। २ दे० "तुवमा"।

तकमोल-सज्ञा स्त्री० [अ०] होने की क्रिया या भाव। पूर्णता।

तकरार-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी बात को बार बार कहना। २ हुज्जत। विवाद। झगडा। टटा।

तकरीर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बातचीत। २ वक्तृता। भाषण।

तकला-सज्ञा पु० १ सूत कातने का यंत्र। टेकुआ। २ रस्सी बनाने की टिकुरी।

तकली-सज्ञा स्त्री० सूत कातने का एक छोटा यंत्र जिसमें काठ के एक छट्ट में छोटा-सा तक्का लगा रहता है। छोटा तक्का। चर्सी।

तकलीफ-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ कष्ट। कष्ट। दुःख। २ विपत्ति। मुसीबत।

तकल्लुफ-सज्ञा [अ०] शिष्टाचार। दिक्कत। नम्रता या आबमनस।

तक्याहा-सज्ञा पु० तावनेवाला। रक्षक। चौकीदार। पहरेवाला।

तक्याही-सज्ञा स्त्री० चौकीदारी। पहरा देना। रखवाही।

तकसीम-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बाँटने की

क्रिया। बेंटाई। बेंटवारा। २ गणित में भाग देने की क्रिया। भाग।

तकसीर—सज्ञा स्त्री० [अ०] दोष। अपराध। कसूर। भूल।

तकाई—सज्ञा स्त्री० ताकने की क्रिया या भाव। रखवाली। रखवाली करने की मजदूरी।

तकाजा—सज्ञा पु० [अ०] १ ऐसी चीज मंगना जिसके पाने का अधिकार हो। तगादा।

२ ऐसा काम करने के लिए कहना जिसके लिए वचन मिल चुका हो। ३ उत्तेजना। प्रेरणा।

तकाना—क्रि० स० दूसरे को ताकने में प्रवृत्त करना। दिखाना।

तकावी—सज्ञा स्त्री० [अ०] वह धन जो सरकार की ओर से गरीब खेतिहरा को बीज खरीदने या कुआँ आदि बनवाने के लिए कर्ज दिया जाय।

तकिया—सज्ञा पु० १ [फा०] हई आदि से भरा हुआ कपड़े का थैला, जिसे लेटने के समय सिर के नीचे रखते हैं। वालिश। २ रोक या सहारे के लिए लगाई जानेवाली पत्थर की पटिया। मुतकका। ३ विश्राम करने का स्थान। ४ आश्रय। सहारा। आसरा। ५ वह स्थान जहाँ कोई मुलमान फकीर रहता हो।

तकिया-कलाम—सज्ञा पु० दे० "सलुन-तकिया"।

तकुआ—सज्ञा पु० दे० "तकला"। सूत कातने की लाहे की सूई जो चर्म में लगाई जाती है।

तक—सज्ञा पु० मट्ठा। छाल।

तक्ष—सज्ञा पु० १ रामचन्द्र के भाई भरत का बड़ा पुत्र। २ कर्त्तन। काटना। ३ चमड़ा। चर्म। ४ चित्रा नक्षत्र। ५ रत्न का एक नाम।

तक्षक—सज्ञा पु० १ एक नाम जिनके राजा परीक्षित का बाटा था। २ आज-कल के विद्वानों के अनुसार भारत में यमनेवाली एक प्राचीन जनजाति। इनका आर्यिय चिह्न सर्प था। ३ साँप। सर्प। ४ विद्वत्कर्मा। ५ सूत्रधार। ६ एक नगर जाति। ७ बड़ई। लकड़ी फाटनेवाला। ८ बुध-विशेष।

तक्षण—सज्ञा पु० लकड़ी, पत्थर आदि गड़कर मूर्तियाँ बनाना।

तक्षशिला—सज्ञा स्त्री० प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर। यह प्राचीन नगरी भरत के पुत्र तक्ष की राजधानी थी। हाल में इसके अवशेष रावलपिंडी (पंजाब) के पास जमीन खोदकर निकाले गए हैं। जनमेजय ने यही सर्प-यज्ञ किया था।

तखड़ी या तखरी—सज्ञा स्त्री० पलटा। तराजू। अन्न आदि तौलने का तराजू।

तखफीफ—सज्ञा स्त्री० [अ०] कमी।

तखमीनन्—क्रि० वि० [अ०] अदाज से। अनुमान से।

तखमीना—सज्ञा पु० [अ०] अदाज। अनुमान।

तखन—सज्ञा पु० [फा०] १ राजा के बैठने का आसन। सिंहासन। २ तख्ती की बनी हुई बड़ी चौकी।

तख्त-ताऊस—सज्ञा पु० [फा०] गौर के आकार का एक प्रसिद्ध राजसिंहासन जिसे शाहजहाँ ने बनवाया था।

तख्तखान-बि० [फा०] जो राजसिंहासन पर बैठा हो। सिंहासनाह्व।

तख्तपोश—सज्ञा पु० [फा०] १ तख्त या चौकी पर बिछाने की चादर। २ चौकी।

तख्तबंदी—सज्ञा स्त्री० [फा०] तख्ता की बनी हुई दीवार।

तखना—सज्ञा पु० [फा०] १ लकड़ी का लंबा-चौड़ा और चौकीर टुकड़ा। बड़ा पटरा। पल्ला। २ लकड़ी की बड़ी चौकी। तख्त। ३ अरथी। टिखटी। ४ नागज वा ताव। ५ वाग की क्यारी।

मुहा०—तख्ता उलटना=बना-बनाया काम बिगाड़ना। तख्ता हो जाना=अपड जाना।

तखती—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ छोटा तख्ता। २ नाठ की पट्टी जिस पर लकड़े छिद्रों पर अम्पास करते हैं। पटिया।

तख्तलुस—सज्ञा पु० [अ०] उपनाम। बवि वा उपनाम (दुगरा नाम) जो वह अर्पा बविता में रखता है।

तगड़ा-बि० [स्त्री० तगड़ी] १ चल्वा। मजबूत। २ गूँघर-मुष्ट। मोटा-ताजा।

तगण-सज्ञा पु० तीन वर्णों का वह समूह जिसमें पहले दो गुण और तब एक लघु वर्ण होता है (पिगल)।

तगना-त्रि० अ० सीना। सिलाई करना। तागा जाना।

तगवमा-मज्ञा पु० दे० "तगवमा"। तखमीना।

तगमा-सज्ञा पु० दे० "तगमा"।

तगर-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत सुगंधित होती है और औषध के काम में जाती है। मदन। वृक्ष। गरुडा-वृक्ष। २. एक प्रकार का फूल।

तगला-सज्ञा पु० दे० "तगला"।

तगा\*†-सज्ञा पु० दे० "तागा"।

तगाई-सज्ञा स्त्री० तागने का काम या मजदूरी। सिलाई।

तगाडा-मज्ञा पु० तसला जिसमें चूना-गारा रखते हैं।

तगादा-सज्ञा पु० दे० "तकाजा"। मांग।

तगाना-त्रि० स० तागने का काम कराना। सिलवाना।

तगार, तगारी-सज्ञा स्त्री० १ उखली गाड़ने का गड्ढा। २ चूना, गारा इत्यादि डोने का तसला। ३ वह स्थान जहाँ चूना, गारा आदि बनाया जाय। ४ हलवाइया की नाँद।

तगौर\*-सज्ञा पु० [अ०] बदलने की क्रिया या भाव। परिवर्तन।

तगौरी-सज्ञा स्त्री० परिवर्तन।

तचना†-त्रि० अ० दे० "तपना"।

तचा†-सज्ञा स्त्री० तचा। चमड़ा। खाल।

तचाना-त्रि० स० १ तपाना। तप्त करना।

२ सतप्त या दुखी करना।

तच्छिन\*-त्रि० वि० तत्क्षण। उसी समय। तत्काल।

तज-सज्ञा पु० १ तेजपात का वृक्ष। २ इसपेड़ की सुगंधित छाल जो औषध के काम में जाती है। ३ छोड़। छोड़ दे। त्याग। सिबा।

तजकिरा-सज्ञा पु० [अ०] चर्चा। जिज्ञा।

तजन\*†-सज्ञा पु० १ तजन की क्रिया या भाव। त्याग। परित्याग। २ कोड़ा। चाबूक।

तजना-त्रि० स० छोड़ना। त्यागना।

तजरवा या तजरवा-गज्ञा पु० [अ०] अनुभव।

तजरवाकार या तजरवेकार-गज्ञा पु० जिनमें तजरवा किया है। अनुभवी।

तजवीज-गज्ञा स्त्री० [अ०] १ फंगला। निर्णय। २ गम्भति। राय। ३ बदीबस्त।

तज्ञ-वि० १ तत्त्व जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। २ ज्ञानी।

तटक-सज्ञा पु० दे० "ताटक"।

तट-सज्ञा पु० १ क्षेत्र। खेत। २ प्रदेश। ३ तीर। किनारा। कूल।

क्रि० वि० समीप। पास। निकट।

तटका-वि० दे० "टटका"।

तटनी\*-सज्ञा स्त्री० ‡ (तटवाली) ‡ नदी।

तटस्थ-वि० १ तट या किनारे पर रहनेवाला। २ निकट रहनेवाला। ३ अलग रहनेवाला। जो किसी का पक्ष ग्रहण न करे। उदासीन। निरपेक्ष।

तटिनी-सज्ञा स्त्री० नदी।

तटी-सज्ञा स्त्री० १ तीर। २ नदी। ३. वराई।

तड-सज्ञा पु० १ पक्ष। २ स्थल। ३ घण्ट।

४. एक ही जाति या समाज के उपभेद।

५ कोई चीज घटकने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। ६ आमदनी की सूख (दलाल)।

७ गिरीह। जत्या। टोली। ८ गिरने या टूटने आदि का अव्यक्त शब्द।

थी०-तडतड=लकड़ी आदि के टूटने का शब्द। तडबन्दी=दलबन्दी। एक जाति के कुछ लोगों का गिरीह।

तडक-सज्ञा स्त्री० १ तडकने की क्रिया या भाव। २ तडकने के कारण किसी चीज पर पड़ा हुआ चिह्न। चाट। चटक।

३ एक लकड़ी जिससे छाजन होती है।

तडकना-त्रि० अ० १ 'तड' शब्द के साथ टूटना। चटकना। बडकना। २ किसी चीज का सूखने आदि के कारण फट जाना। ३ जोर का शब्द करना। ४ बिगड़ना।

तडपना। झुंझलाना। ५ उछलना। झूटना। ६ छीनना। तडका देना। बघारना।

तड़क-भड़क-गंगा स्त्री० ठाट-ठाट। सज-धज।  
 तड़का-सज्ञा पु० १ सपेरा। मुचह। प्रातः-  
 काल। २. छीर। बपार।  
 तड़काना-क्रि० सं० १ इस तरह से तोड़ना  
 जिससे 'तड़' शब्द हो। २ जोर का शब्द  
 उत्पन्न करना। ३ प्रोध दिलाना।  
 तड़का-क्रि० वि० दे० "तड़का"।  
 तड़के-अ० सपेरे। प्रातःकाल।  
 तड़तड़ाना-क्रि० ज० तड़-तड़ शब्द हाना।  
 क्रि० सं० १ तड़-तड़ शब्द उत्पन्न करना।  
 २. शिङ्कना। क्रोधित हाना।  
 ३. तड़प-सज्ञा स्त्री० १ तड़पने की क्रिया या  
 भाव। २ चमक। भड़क।  
 तड़पना-क्रि० अ० १ अधिक बेदना के कारण  
 व्याकुल होना। छटपटाना। तलमलाना।  
 २ जोर का शब्द करना। गरजना।  
 तड़पाना-क्रि० सं० दूसरे को तड़पने में प्रवृत्त  
 करना। व्याकुल करना। दुख देना।  
 तड़फ-सज्ञा स्त्री० व्याकुलता। घबराहट।  
 उद्विग्नता। अधिक दुख से अधीरता।  
 तड़फाना-क्रि० अ० तड़पना। व्याकुल होना।  
 तड़फडाहट-सज्ञा स्त्री० छटपटाहट। व्या-  
 कुलता। धुकधुकी। बेचैनी।  
 तड़फडी-सज्ञा स्त्री० छटपटी। धुकधुकी।  
 बेचैनी। घबराहट।  
 तड़फना-क्रि० अ० दे० "तड़पना"। तड़-  
 फडाना। व्याकुल होना। छटपटाना।  
 तड़बडी-सज्ञा स्त्री० समाज या विरादरी  
 में अलग अलग तड़ या विभाग बनना।  
 तड़ा-सज्ञा पु० टापू। उपद्वीप। दोआब।  
 तड़ाक-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ तड़ाके का शब्द।  
 क्रि० वि० 'तड़' या 'तड़ाक' शब्द के सहित।  
 २ जल्दी से। शीघ्रवापूर्वक। चटपट। तुरत।  
 ३ भड़कीला। चटकीला। चमकदार।  
 यी०—तड़ाक-पड़ाक=चटपट। तुरत।  
 तड़ाका-सज्ञा पु० [अनु०] १. "तड़" शब्द। २  
 भारने या ढटने की ध्वनि।  
 क्रि० वि० चटपट।  
 तड़ाप-सज्ञा पु० तालाब। सरोवर। जलाशय।  
 पुष्कर।  
 तड़ातड़-क्रि० वि० तड़-तड़ शब्द के साथ।

तड़ाडा-सज्ञा पु० जल की तीव्र धारा।  
 तरेडा। तिरगा।  
 तड़ाना-क्रि० सं० किसी दूसरे को तड़ाने में  
 प्रवृत्त करना। भेंपाना।  
 तड़ावा-सज्ञा पु० १. अभिमान। ऊपरी दिक्तावा।  
 तड़व-भड़व। २ धोरा। छल।  
 तड़ित्-सज्ञा स्त्री० बिजली।  
 तड़िता-सज्ञा स्त्री० बिजली।  
 तड़ित्पति-सज्ञा पु० बादल। मेघ।  
 तड़ी-सज्ञा स्त्री० १. चपत। धील। २.  
 धोखा। छल (दलाल)। ३. बहाना।  
 हीला।  
 तन्-सज्ञा पु० १. ब्रह्म। परमात्मा। २.  
 वायु। हवा।  
 सर्व० उस। जैसे—तत्पाल, तत्क्षण।  
 तत-सज्ञा पु० १ वायु। २ विस्तार। ३.  
 पिता। ४ पुत्र। ५ वह राजा जिसमें  
 बजाने के लिए तार लगे हो। जैसे—  
 सारंगी, सिंघार आदि।  
 \*†-वि० तपा हुआ। गरम।  
 \*†-सज्ञा पु० दे० "तत्प"।  
 ततताथेई-सज्ञा स्त्री० नृत्य का शब्द।  
 नाच के बोल।  
 ततबाड\*†-सज्ञा पु० दे० "ततुबाय"।  
 ततसार\*†-सज्ञा स्त्री० आँच देने या तपाने  
 की जगह। तप्तशाला।  
 तताई\*†-सज्ञा स्त्री० गरमी।  
 ततारना-क्रि० सं० १ गरम जल से धोना।  
 २ धार देकर धोना।  
 तति-सज्ञा स्त्री० १ धेणी। पवित। ताँता।  
 २ समूह। ३ विस्तार।  
 ततुबाड\*†-सज्ञा पु० दे० "ततुबाय"।  
 ततेडा-सज्ञा पु० पानी आदि गरम करने का  
 स्थान। पानी गरम करने का पात्र। हड्ड।  
 ततैया-सज्ञा स्त्री० १ बरें। भिड़। २ लाल  
 मिर्चा।  
 वि० तेज। बहुत चरपरी।  
 तत्काल-क्रि० वि० तुरत। फौरन।  
 तत्कालीन-वि० उस समय का।  
 तत्क्षण-क्रि० वि० उसी समय। तुरत।  
 फौरन।

तत्त्व\*—गज्ञा पु० दे० "तत्त्व"।

तत्ता\*—वि० तत्त्व। गरम। उष्ण।

तत्तो यबो—सज्ञा पु० १. दम-दिलासा। बहलावा। २. लडते हुए आदमियों को समझाकर शान्त धरना। बीच-बचाव।

तत्त्व—सज्ञा पु० १. वास्तविक स्थिति। यथार्थता। असलियत। २. जगत् का मूल कारण। साह्य में २५ तत्त्व माने गए हैं। ३. पंचभूत। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। ४. परमात्मा। ब्रह्म। ५. सार वस्तु। साराश।

तत्त्वज्ञ—सज्ञा पु० १. तत्त्वज्ञानी। ब्रह्मज्ञानी। २. दार्शनिक।

तत्त्वज्ञान—सज्ञा पु० ब्रह्म, आत्मा और सृष्टि आदि के स्वयं का यथार्थ ज्ञान। ब्रह्म-ज्ञान।

तत्त्वज्ञानी—सज्ञा पु० दे० "तत्त्वज्ञ"।

तत्त्वज्ञा—सज्ञा स्त्री० १. तत्त्व होने का भाव या गुण। २. यथार्थता।

तत्त्वदर्शी—सज्ञा पु० दे० "तत्त्वज्ञ"। ज्ञानी। जो तत्त्व जानता हो।

तत्त्वदृष्टि—सज्ञा स्त्री० ज्ञानचक्षु। दिव्य-दृष्टि।

तत्त्ववाद—सज्ञा पु० दर्शनशास्त्र-संबंधी विचार।

तत्त्ववादी—सज्ञा पु० १. तत्त्ववाद का ज्ञाता। श्रीर-समर्थक। २. यथार्थ और स्पष्ट बात करनेवाला।

तत्त्वविद्—सज्ञा पु० तत्त्ववेत्ता। ब्रह्मज्ञानी। परमेश्वर।

तत्त्वविद्या—सज्ञा स्त्री० दर्शनशास्त्र।

तत्त्ववेत्ता—सज्ञा पु० १. तत्त्वज्ञ। ज्ञानी। २. दार्शनिक।

तत्त्वशास्त्र—सज्ञा पु० दे० "दर्शनशास्त्र"।

तत्त्वावधान—सज्ञा पु० संरक्षण। जाँच-पड़-ताल। देख-रेख। निरीक्षण।

तत्त्वा—वि० मुख्य। प्रधान।

सज्ञा पु० १. उच्च। सत्य। तत्त्व। २. शक्ति। बल।

तत्पर—वि० [सज्ञा तत्परता] १. उद्यत। मुत्तैद। तत्पद। २. निपुण। ३. चतुर। होशियार।

तत्परता—सज्ञा स्त्री० १. संप्रद्यता। मुत्तैदी।

२. दक्षता। निपुणता। ३. होशियारी।

तत्पुण्य—सज्ञा पु० १. ईश्वर। परमेश्वर।

२. एव रुद्र का नाम। ३. एव प्रकार का समास। जैसे—जलचर।

तत्प्र—वि० तत्त्व जगद्। वहाँ।

तत्सम—सज्ञा पु० सस्यूत शब्द जिसका व्यवहार भाषा में उसके शुद्ध रूप में या ज्यों या त्यों हो।

तया—अव्य० १. और। वा। २. इसी तरह। ऐसे ही।

सज्ञा पु० १. रात्म। २. निश्चय। ३. सीमा।

धी०—तथास्तु—ऐसा ही हो। एवमस्तु।

तथाकथित—वि० कहा जानेवाला। जो कहा जाय पर जिसके सम्बन्ध में कोई प्रमाण न हो।

तथागत—सज्ञा पु० गौतम बुद्ध। भगवान् बुद्ध का एक नाम।

तथापि—अव्य० तो भी। तब भी।

तथोक्त—वि० दे० "तथाकथित"।

तथैव—अव्य० वैसा ही। उसी प्रकार।

तथ्य—सज्ञा पु० सचाई। यथार्थता।

तथ्यभाषी—वि० खरा। यथार्थ कहनेवाला।

तद्—वि० वह। तो (योगिक में)।

कि० वि० उस समय। तब।

तदन्तर, तदनन्तर—कि० वि० उसके पीछे।

उसके बाद। उसके उपरान्त।

तदनु रूप—वि० उसी के रूप का। उसी के समान।

तदनुसार—वि० उसके मुताबिक। उसके अनुकूल।

तदपि—अव्य० तो भी। तथापि।

तदधीर—सज्ञा स्त्री० [अ०] अभीष्ट सिद्ध करने का साधन। उपाय। युक्ति। तरीका।

तदा—कि० वि० उस समय। तब।

तदाकार—वि० १. वैसा ही। उसी आकार का। तद्रूप। २. तन्मय।

तदाका—सज्ञा पु० [अ०] १. भागे हुए अपराधी आदि की सोज या किसी दुर्घटना के स्वयं में जाँच। २. दुर्घटना को रोकने के लिए पहले से किया हुआ प्रबंध। पेशवदी।

३. सजा। दंड।

तदीय-सर्व० उससे सबध रखनेवाला।  
उसका।

तदुपरात-क्रि० वि० उसके पीछे। उसके बाद।

तदगत-वि० १. उससे सबध रखनेवाला।  
२. उसके अतर्गत। उसमें व्याप्त।

तदगुण-सज्ञा पु० एक अर्थालंकार जिसमें किसी एक वस्तु का अपना गुण त्याग करके समीपवर्ती किसी दूसरे उत्तम पदार्थ का गुण ग्रहण कर लेना वर्णित होता है।

तद्वन-सज्ञा पु० १. वही धन। उतना ही धन।  
२. कृपण। कजूस।

तद्धित-सज्ञा पु० प्रत्यय-विशेष जिसे सज्ञा के अन्त में लगाकर शब्द बनाते हैं। जैसे—  
'शन्' से 'शन्नुता'।

तद्भव-सज्ञा पु० संस्कृत का वह शब्द जिसका रूप भाषा में कुछ परिवर्तित हो गया हो।  
संस्कृत के शब्द का अपभ्रंस रूप। जैसे—  
'अश्रु' का 'आसू'।

तद्वप-वि० समान। सदृश।

तद्रूप-सज्ञा स्त्री० सादृश्य। समानता।

तद्वन-वि० उसी के जैसा। उसके समान।  
उसी का 'त्यो'।

तन-सज्ञा पु० तनु। शरीर। देह। गात।  
क्रि० वि० तरफ। ओर।

\*तन दे० "तन्त्रिक"।

मुहा०—तन को लगना=१ हृदय पर प्रभाव पड़ना। जी में बैठना। २ (खाद्य पदार्थ का) शरीर को पुष्ट करना। तन देना=ध्यान देना। मन लगाना। तन-मन मारना=इन्द्रियो को वश में रखना।

तनक-वि० थोड़ा। तनिक। अश। टुकड़ा।  
छोटा। जरा-सा। कुछ।

तनकौह-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ जाँच। खोज।  
तहकीकाश। २ अदालत का किसी मुकदमे की उन बातों का पता लगाना जिनका फसला होना जरूरी हो। मुकदमे में विचारणीय विषय। निर्णय के विषय।

तनलाह-सज्ञा स्त्री० [फा०] वेतन।  
तलर।

तनगना\*—क्रि० अ० दे० "तिनकना"।  
झल्लाना। विगड़ना।

तनजेब-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बहुत महीन और बड़िया मलमल।

तनज्जुल-वि० पदच्युत। पद से गिराया हुआ। उन्नत का उल्टा। अवनत। उतारा या घटाया हुआ।

तनज्जुली-सज्ञा स्त्री० [फा०] अवनति।  
पद से गिरना। कमी। हास।

तनतनाना-क्रि० अ० १. शान दिखाना। २.  
क्रोध करना।

तनत्राण-सज्ञा पु० दे० "तनुत्राण"। कवच।

तनदेही-सज्ञा स्त्री० १ मुस्तेदी। सावधानी।  
चोखसी। हिफाजत। बचाव। २ परिश्रम।  
प्रयत्न।

तनधर-सज्ञा पु० दे० "तनुधारी"। शरीर-  
धारी। देहधारी।

तनना-क्रि० अ० १ फैलना। खिचना।  
गर्मी आदि के कारण किसी पदार्थ का

विस्तार बढ़ना। २ आकर्षित होना।  
३ अकड़कर सीधा खड़ा होना। ४. कुछ

अभिमानपूर्वक रुष्ट या उदारीत होना।  
एठना।

तनपात-सज्ञा पु० दे० "तनुपात"। मृत्यु।

तनमय-वि० दे० "तन्मय"।

तनय-सज्ञा पु० बेटा। पुत्र।

तनय-सज्ञा स्त्री० बेटा। पुत्री।

तनराग-सज्ञा पु० दे० "तनुराग"।

तनरूह\*—सज्ञा पु० दे० "तनूरूह"।

तनवाना-क्रि० स० वाने का काम दूसरे से  
कराना। वाना।

तनसीख-सज्ञा स्त्री० [अ०] रूढ़ करना।  
मसूजी।

तनुसुत मग पु० तजेब-जैसा एक प्रकार  
का बड़िया कपड़ा।

तनहा-वि० [फा०] जिसके संग कोई न हो।  
अकेला। एकाकी।

क्रि० वि० बिना किसी साथी के। अकेले।

तनहाई-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ तनहा  
होने की दशा या भाव। अकेलापन। २.  
एनात।

तना-सज्ञा पु० [ फा० ] पेड़ या धड़ । मदल ।  
क्रि० वि० ओर । तरफ ।

तनाई-सज्ञा स्त्री० तनाय । तानने (चारपाई  
बिचने आदि) की क्रिया या मजदूरी ।

तनाकु\*†-क्रि० वि० दे० "तनिक" ।

तनाजा-सज्ञा पु० [ अ० ] १. बखेड़ा । झगड़ा ।  
२. झगुता । बैर ।

तनाना-क्रि० स० दे० "तनवाना" ।

तनाय†-सज्ञा स्त्री० खेमे की रस्सी ।

तनाव-सज्ञा पु० १. तनने का भाव या  
क्रिया । २. रस्सी । डोरी ।

तनि, तनिक-वि० १. थोड़ा । कम । २. छोटा ।  
क्रि० वि० जरा । ठुक ।

तनिया†-सज्ञा स्त्री० १. शरीर का दुबलापन  
कृशता । २. लँगोटी । कोपीन । ३. कछनी ।  
जाँघिया । ४. चोली ।

तनी-सज्ञा स्त्री० १. डोरी को तरह घटा  
हुआ वह कपड़ा जो अँगरखे आदि में उनका  
पल्ला बाँधने के लिए लगाया जाता है ।  
बद । बधन । २. दे० "तनिया" ।

†क्रि० वि० दे० "तनिक" ।

तनु-वि० १. दुबला-मल्ला । २. थोड़ा । कम ।  
३. कोमल । नाजुक । ४. सुदूर । बड़िया ।

सज्ञा स्त्री० १. शरीर । देह । बदन । २.  
चमड़ा । खाल । जन्मकुण्डली में जन्मस्थान ।

३. स्त्री । औरत ।

तनुक\*†-क्रि० वि० दे० "तनिक" ।

सज्ञा पु० दे० "तनु" ।

तनुकूप-सज्ञा पु० रोमछिद्र ।

तनुज-सज्ञा पु० बेटा । पुत्र ।

तनुजा-सज्ञा स्त्री० लटकी । बेंटी ।

तनुता-सज्ञा स्त्री० १. लघुता । सूक्ष्मता ।  
छोटाई । २. दुर्बलता । दुबलापन ।

तनुत्व-सज्ञा पु० क्षीणत्व । सूक्ष्मत्व । छोटाई ।

तनुनाथ-सज्ञा पु० कवच । बखतर ।

तनुन्याय-सज्ञा पु० मृत्यु । देहत्याग । मरण ।

तनुधारी-वि० शरीर धारण करनेवाला ।

तनुमय्या-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का  
वर्णवृत्त । २. क्षीण कटि की स्त्री । पतली

कमरवाली स्त्री ।

तनुरस-सज्ञा पु० पसीना ।

तनुराग-सज्ञा पु० गुणधित उबटन । बैसर,  
चदन आदि मिला हुआ बटना ।

तनुबह-सज्ञा पु० रोम ।

तनुयात-सज्ञा पु० एक प्रकार के नरक का  
नाम ।

तनुयण-सज्ञा पुं० छोटा घाव । बल्मीक  
रोग ।

तनुसर-सज्ञा पु० पसीना ।

तनु-सज्ञा पु० १. पुत्र । २. शरीर । ३. नाभ ।  
४. प्रजापति ।

तनुज\*-सज्ञा पु० दे० "तनुज" । पुत्र ।

तनुजा-सज्ञा स्त्री० लटकी । बेंटी । कन्या ।

तनूनय-सज्ञा पु० घी ।

तनूनपात-सज्ञा पु० १. अग्नि । वह्नि ।

२. घी । अचल के प्रजापति के प्रपौत्र का  
नाम ।

तनुभूत-सज्ञा पु० मनुष्य । देही । देहधारी ।

तनूर-सज्ञा पु० तंदूर ।

तनूरह-सज्ञा पु० १. लोम । रोम । २. पल ।  
३. पुत्र ।

तनेना-वि० [ स्त्री० तनेनी ] १. सिंचा हुआ ।

२. टेढ़ा । तिरछा । क्रुद्ध । नाराज ।

तने\*-सज्ञा पु० दे० "तनय" ।

तनेना-सज्ञा पु० दे० तनेना ।

तनेया\*†-सज्ञा स्त्री० बेंटी ।

तनोज\*-सज्ञा पु० १. रोम । लोम । रोआँ ।

२. लडका । बेटा ।

तनोबह\*-सज्ञा पु० दे० "तनूबह" । रोगटे ।  
रोम ।

तन्नाना-क्रि० अ० जकड़ना । ऐठना ।  
जकड़ दिखाना । मिजाज गरम करना ।

तनो-सज्ञा स्त्री० १. वह रस्सी जिसमें  
तराजू के पल्ले लटकते हैं । जोती । २. एन  
अकुसी ।

सज्ञा स्त्री० दे० "तरनी" ।

तन्मय-वि० जो किसी काम में बहुत मग्न  
हो । लवलीन । लगा हुआ । दत्तचित्त

तन्मयता-सज्ञा स्त्री० एवाग्रता । लीनता  
लगन ।

तन्मात्र-सज्ञा पु० १. केवल । वही । एक ।

२. साह्य के अनुसार पचभूतों का अधिशेष

मूल। ये तत्त्वा में पाँच हैं—सन्ध, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध।

तत्त्वगी—मज्ञा स्त्री० दुबले-पतले अगोवाली।  
दुबली पतली स्त्री।

तन्वी—सज्ञा स्त्री० एक वर्णभूत।

वि० कोमल अगोवाली। दुबली-पतली।  
कुशांगी। कामिनी।

तप—मज्ञा पु० १ पूजा। आराधन। तपस्या।  
शरीर या इन्द्रिय की वश में रखने का उपाय।  
नियम। २ अग्नि। ताप। गरमी। शीघ्र  
क्रतु। ३ मास महीने का नाम। ४  
बुझार। ज्वर।

तपकता\*—क्रि० अ० १ घटकना। उछलना।  
२ दे० "तपकना"।

तपनी—सज्ञा स्त्री० सूर्य की कन्या। सूर्य-पत्नी  
छाया के गर्भ से उत्पन्न।

तपन—सज्ञा पु० तपने की क्रिया या भाव।  
१ ताप। जलन। आँच। दाह। २ एक  
नरक। ३ सूर्य। सूर्यकांत मणि। ४ सूरज-  
मुखी। ५ शीघ्र। गरमी। ६ अग्नि।  
७ धूप। ८ नायिका या नायक के वियोग  
में हाव-भाव-विशेष। ९ आक। जरनी  
का पेड़। १० मदार। ११ भेलावा का  
पेड़।

सज्ञा स्त्री० ताप। गरमी।

तपना—क्रि० अ० १ अधिक गर्मी आदि के  
कारण खूब गरम होना। तप्त होना। २  
सतप्त होना। कष्ट सहना। ३ गरमी या  
ताप फैलाना। ४ प्रभुत्व या प्रताप  
दिखलाना। तेजस्वी होना। आतक फैलाना।  
५ तपस्या करना। तप करना। ६ बुरे  
कामों में अशामुद्ध खलन करना।

तपनी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "तपन"।

तपनी—सज्ञा स्त्री० १ वह स्थान जहाँ  
बैठकर आग तापते हैं। कौडा। अलाव।

२ तपस्या। तप। ३ गोदावरी नदी।

तपनीय—सज्ञा पु० तपाने योग्य। सीना।

तपलोक—सज्ञा पु० तपोलोक। स्वर्ग-विशेष।

ऊपर के सात लोकों में से छठी लोक।

तपश्चरण—सज्ञा पु० तप। तपस्या। ३०

"तपश्चर्या"।

तपश्चर्या—सज्ञा स्त्री० तपस्या।

तपस—सज्ञा पु० १. दे० "तपस्या"। २.

चन्द्रमा। ३ सूर्य। ४. शिघ्र क्रतु।

ऊपर का लोक। ५. पत्नी।

तपसा—सज्ञा स्त्री० १. तपस्या। तप। तपस्या

से। तप के द्वारा। वष्ट से। आराधना से।

२ तपनी नदी।

तपसाली—सज्ञा पु० तपस्वी। तप करनेवाला।

तपसी—मज्ञा पु० तपस्वी। तपस्या करनेवाला।

योगी।

तपसी मछली—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की

मछली।

तपस्क—मज्ञा पु० तपस्वी। योगी।

तपस्य—सज्ञा पु० १ तप। तपस्या। २. फागुन

का महीना। ३. अर्जुन। ४. कुद पुष्प।

५. मनु के दस पुत्रों में से एक।

तपस्या—सज्ञा स्त्री० १ तप। तपश्चर्या।

साधना। योग-साधन। ईश्वर-भजन।

२ फाल्गुन मास। ३ तपसी मछली।

तपस्विता—सज्ञा स्त्री० तपस्वी होने की अवस्था

या भाव।

तपस्विनी—सज्ञा स्त्री० १ तपस्या करनेवाली

स्त्री। २ तपस्वी की स्त्री। ३. पतिव्रता

या सती स्त्री।

तपस्वी—सज्ञा पु० [स्त्री० तपस्विनी] १

तपस्या करनेवाला। ऋषि-मुनि। २ दीन।

दया करने योग्य। ३. मछली-विशेष ४

घोड़कुआर।

तपा—सज्ञा पु० तपस्वी। पूजक। आराधक।

वि० तप में मग्न।

तपाक्—सज्ञा पु० [फा०] १ आवेश। जोश।

२ वेग। तेजी।

तपाना—क्रि० स० १ गरम करना। तप्त

करना। २ दुख देना।

तपालय—सज्ञा पु० वर्षाकाल।

तपावत—सज्ञा पु० तपस्या करनेवाला।

तपस्वी।

तपास—सज्ञा पु० अन्वेष्टन। अनुसन्धान।

खोज। ढूँढ।

तपित\*—वि० तपा हुआ। गरम। तप्त।

तपिनी\*—सज्ञा पु० दे० "तपस्वी"।

तपिना-मज्ञा स्त्री० [पा०] गरमी। तपन।  
 तपो-मज्ञा पुं० १ तपस्वी। तपस्या करने-  
 वाला। आत्मगम्यमी। ऋषिमुनि। २ मूर्त।  
 तपु-मज्ञा पुं० १ आग। २ मूर्त। ३ शयु।  
 वि० तप्त। गरम। तपानेवाला।  
 तपेदित्त-मज्ञा पुं० [पा०] राजयक्ष्मा। शयी-  
 रोग। थादसित (अग्ने०)।  
 तपेश्वर या तपेयरी-मज्ञा पुं० तपस्वी।  
 तपस्या करनेवाला।  
 तपोजा-मज्ञा स्त्री० पानी। जल।  
 तपोधन-मज्ञा पुं० १. ऋषि-मुनि, जिनका  
 तपस्या ही धन है। २ तपस्वी। मग्ना  
 दीना का पीषा।  
 तपोधर्म-मज्ञा पुं० तपस्वी।  
 तपोनिधि-मज्ञा पुं० तपस्वी।  
 तपोनिष्ठ-मज्ञा पुं० तपस्वी।  
 तपोबल-मज्ञा पुं० तप का प्रभाव या शक्ति।  
 तपोभूमि-मज्ञा स्त्री० तप करने का स्थान।  
 तपोवन।  
 तपोभय-मज्ञा पुं० परमेश्वर।  
 तपोमूर्ति-मज्ञा पुं० तपस्वी। परमेश्वर।  
 तपस्या की मूर्ति। महातपस्वी।  
 तपोरति-मज्ञा पुं० तपस्वी। जिसकी रति  
 तप में हो।  
 तपोराशि-मज्ञा पुं० बहुत बड़ा तपस्वी।  
 जिसकी तपस्या अधिक काल तक की हो।  
 तपोलोक-मज्ञा पुं० पुराणों में वर्णित ऊपर  
 के सात लोकों में से छठा लोक।  
 स्वर्ग।  
 तपोवन-मज्ञा पुं० तपस्वियों का आश्रम।  
 तपस्वियों के रहने या तपस्या करने का  
 स्थान। तपाभूमि।  
 तपोवृद्ध-वि० जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।  
 तपोनी-मज्ञा स्त्री० १ ठण्ठाकी एक रसम। २  
 अलाव। ३ तप।  
 तप्त-वि० १ तपाया या तपा हुआ। गरम।  
 उष्ण। २ दुखित। पीड़ित। सतप्त।  
 तप्तकुंड-मज्ञा पुं० गरम पानी का साठा या  
 कुंड।  
 तप्तकुम्भ-मज्ञा पुं० १ गरम विष। २ तपा  
 हुआ घड़ा।

तप्तवृद्ध-मज्ञा पुं० व्रत विगम जो प्रायश्चित्त  
 स्वल्प किया जाता है।  
 तप्तबालक-मज्ञा पुं० १ नरक विशेष। २ जं  
 तपी बाटुरा में बना हा।  
 तप्तमाष-मज्ञा पुं० एक प्रकार की परीक्षा  
 जिसमें अपराध आदि के संबंध में किसी के  
 बयन की सत्यता जानी जाती थी।  
 तप्तमुद्रा-मज्ञा स्त्री० दाव, चक्रादि के छापे  
 जो तपाकर बेष्णव लोग अपने अंग पर  
 दाग लेते हैं।  
 तप\*१-मज्ञा पुं० दे० "तप"।  
 तप्य-मज्ञा पुं० तप।  
 वि० तपने या तपाने योग्य।  
 तफनीश-मज्ञा स्त्री० जांच-पट्टाल। तहसी-  
 लदार (विशेषकर पुलिस-द्वारा)।  
 तफरका-मज्ञा स्त्री० जुदाई। विभाग। अंतर।  
 फर्क। दूरी।  
 तफरीश-मज्ञा स्त्री० [अ०] अन्तर। फर्क।  
 विभाग। बटवारा। बाकी। गणित में  
 घटाने की क्रिया।  
 तफरीह-मज्ञा स्त्री० [अ०] १ गुशी।  
 प्रसन्नता। २ दिलगी। हँसी। ठट्ठा।  
 ३ हवाखोरी। संतर।  
 तफसील-मज्ञा स्त्री० [अ०] १ विस्तृत  
 वर्णन। कम से वर्णन। व्योरा। २ टीका।  
 तयारीह। ३ कैफियत।  
 तफावत-मज्ञा पुं० [अ०] १ अंतर। फर्क।  
 २ दूरी। फासिला।  
 तब-अव्य० १ उरा समय। उरा वक्त।  
 २ इस कारण। इस वजह से।  
 तबब-मज्ञा पुं० [अ०] १ लोक। तल।  
 २ परत। तह। ३ चाँदी सोने का पतला  
 परत। ४ चौड़ी और छिछली वाली।  
 तबकगर-मज्ञा पुं० [अ०] सोने-चाँदी के  
 तबब बनानेवाला। तबकिया।  
 तबका-मज्ञा पुं० [अ०] १ खड। विभाग।  
 २ तह। परत। ३ लाड़। तल। ४ आद-  
 मिया का समूह। दल।  
 तबकिया-मज्ञा पुं० दे० "तबकगर"।  
 तबदील-वि० [अ०] [मज्ञा तबदीली] जो  
 बदल गया है। परिवर्तित।

तब्दीली, तब्दीली-सज्ञा स्त्री० [अ०] बदली।  
परिवर्तन। हेर-फेर।

तबर-सज्ञा पु० [फा०] १ कुल्हाड़ी। २  
कुल्हाड़ी की तरह का एक हथियार।  
तबल-सज्ञा पु० [फा०] १ बड़ा ढोल।  
२ नगाडा। डंका।

तबलची-सज्ञा पु० [अ०] तुबला बजाने-  
वाला। तबलिया।

तबला-सज्ञा पु० [अ०] एक प्रसिद्ध बाजा।  
तबलिया-सज्ञा पु० दे० "तबलची"।

तबलीग-सज्ञा पु० [अ०] दूसरी को अपने  
धर्म में मिलाना। धर्म का प्रचार करना।

तबाक-सज्ञा पु० [अ०] बड़ा थाल। परात।  
तबादला-सज्ञा पु० बदली। बदला जाना।

परिवर्तन। किसी कर्मचारी का एक स्थान  
से दूसरे स्थान पर भेजा जाना। स्थान  
परिवर्तन।

तबाशीर-सज्ञा पु० बसलोचन।

तबाह-पि० [फा०] [सज्ञा तबाही] नष्ट।  
बरबाद।

तबाही-सज्ञा स्त्री० [फा०] नाश। बरबादी।  
तबीअत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ चित्त। मन।

जी। २ बुद्धि। समझ। ज्ञान।  
महा०—(किसी पर) तबीअत आना=

(किसी पर) प्रेम होना। आशिक होना।  
तबीअत फइक उठना=चित्त का उत्साहपूर्ण

और प्रसन्न हो जाना। तबीअत लगना=

१ मन में अनुराग उत्पन्न होना। २ ध्यान  
लगा रहना।

तबीअतबार-वि० १ समस्तद्वारे २ भावुक।  
रसिक।

तबीव-सज्ञा पु० [अ०] वैद्य। हकीम।  
तबी-अव्य० १ उसी समय। उसी वक्त।

२-दूसी कारण। दूसी वजह से।  
तमाचा-सज्ञा पु० [फा०] १ पिस्तौल। २

वह लता पत्तार जो दरवाजा की बगल में  
लगाया जाता है।

तमा-सज्ञा पु० १ अधकार। अँधेरा। २ राहु।  
३ बराह। मूअर। ४. पाप। ५ शोध।  
६ अज्ञान। ७ नाखिल। नायिमा। ८

तमाक-सज्ञा पु० १ जोश। उद्वेग। २ तेजी।  
तीव्रता। ३. शोध।

तमकना-कि० अ० [अनु०] १ शोध के कारण  
आवेश में आना। शोध में उछल पडना।  
२ दे० "तमतमाना"।

तमना-सज्ञा पु० [तु०] पदक।  
तमचर-सज्ञा पु० १ राक्षस। निश चर।

२ उल्लू।  
मचुर-सज्ञा पु० मुरगा। कुक्कुट।

तमचूर\*—सज्ञा पु० दे० "तमचुर"।  
तमतमाना-वि० अ० अधिक धूप का शोध से

चेहरा लाल होता। अधिक शोध करना।  
लाल होना। दमकना।

तमतमाहट-सज्ञा स्त्री० तमतमाने का  
भाव।

तमना-सज्ञा स्त्री० [अ०] इच्छा। चाह।  
अभिलाषा। स्वाहिस।

तमलेट-सज्ञा पु० लोहे का बरतान।  
तमस-सज्ञा पु० १ अधकार। २ अज्ञान का

अधकार। तमोगुण। नगर। कुआँ। राहु।  
नरक-विशेष। ३ पाप। ४ तमसा नदी

(टीस)।  
तमसा-सज्ञा स्त्री० एक नदी का नाम जिसे

टीस भी कहते हैं।  
तमस्पती-सज्ञा स्त्री० राहु।

तमस्विनी-सज्ञा स्त्री० १-रात। अँधेरी  
रात। २ हल्दी।

तमस्सुक-सज्ञा पु० [अ०] वह कागज जो  
ऋण लेनेवाला ऋण के प्रमाण-स्वरूप

लिखकर महाजन को देता है। दस्तावेज।  
ऋणपत्र।

तमस्तति-सज्ञा स्त्री० अन्धकार ममूह। घोर  
अन्धकार।

तमहीव-सज्ञा स्त्री० [अ०] भूमिका।  
तमा-सज्ञा पु० राहु।

सज्ञा स्त्री० रात। रजनी। \*शोभ।  
तमाई-सज्ञा स्त्री० जोराने के पूरे से नाक

गुन्ना।  
तमाकू-सज्ञा पु० दे० "तमाकू"।  
तमाकू-सज्ञा पु० दे० "तमाकू"।  
तमाचा-सज्ञा पु० मण्ड। पापड।

तमाच्छन्न-वि० अधवार से चिरा हुआ।  
 अधवारपूर्ण।  
 तमाच्छादित-वि० दे० "तमाच्छन्न"।  
 तमादी-सज्ञा स्त्री० [अ०] बादे या समय  
 व्यतीत हो जाना। अवधि समाप्त हो जाना।  
 मुदत या मियाद गुजर जाना।  
 तमाम-वि० [अ०] १. पूरा। सपूर्ण। कुल।  
 २. समाप्त। खतम।  
 तमाप्ती-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार का  
 देशी रेशमी पपडा।  
 तमारि-सज्ञा पुं० सूर्य। तम नाश करनेवाला।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "तैवार"।  
 तमाल-सज्ञा पुं० १. बहुत ऊँचा और सुन्दर  
 वृक्ष-विशेष। काली पत्तियों वाला वृक्ष।  
 मोरपक्ष। २. तेजपत्ता। ३. पाला खर।  
 तमाशवीन-सज्ञा पुं० १ [अ०] तमाशा  
 देखनेवाला। २. ऐयाश।  
 तमाशा-सज्ञा पुं० [अ०] १ मनोरञ्जक दृश्य।  
 चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। २. अगोली  
 बात।  
 तमाशाई-सज्ञा पुं० तमाशा देखनेवाला।  
 तमि-सज्ञा पुं० रात। मोह।  
 तमिचर-सज्ञा पुं० दे० "तमीचर"।  
 तमिल-सज्ञा पुं० १ अधवार। अँधेरा। २  
 क्रोध। गुस्सा। ३. एक नरक का नाम।  
 तमिन्ना-सज्ञा स्त्री० रात। अन्यकारमय  
 रात्रि। वृष्णपक्ष की अँधेरी रात।  
 तमी-सज्ञा स्त्री० रात। हल्दी।  
 तमीचर-सज्ञा पुं० रातस। निशाचर। चोर।  
 व्यभिचारी। लम्पट।  
 तमीज-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ भले और धुरे को  
 पहचानने की शक्ति। विवेक। २. पहचान।  
 ३. बुद्धि। ४. अदब। शिष्टता।  
 तमीश-सज्ञा पुं० चद्रमा।  
 तमोगुण-सज्ञा पुं० प्रकृति के तीन गुणों में  
 से एक जो निकृष्ट माना गया है। मोह,  
 श्रोध आदि उत्पन्न करनेवाला गुण-विशेष।  
 तमोगुणी-वि० तमोगुणी वृत्तिवाला। अभि-  
 मानी। अधम प्रकृतिवाला।  
 तमोघ्न-सज्ञा पुं० १ तम नाश करनेवाला।  
 २. अग्नि। ३. चद्रमा। ४. सूर्य। ५. बुद्ध।

६. विष्णु। ७. शिव। ८. ज्ञान। ९. दीपक।  
 दीक्षा।  
 वि० जिससे अँधेरा दूर हो।  
 तमीज्योति-सज्ञा पुं० राखी। जुगनू।  
 तमीनुद-सज्ञा पुं० १. ईश्वर। २. चद्रमा।  
 ३. अग्नि। ४. सूर्य। ५. अज्ञाननाशक गुण।  
 तमीमय-वि० १. तमोगुणयुक्त। २. अज्ञानी।  
 ३. श्रेणी।  
 सज्ञा पुं० राहु।  
 तमीर\*१-सज्ञा पुं० १ पान। ताम्बूल। २. एक  
 रस्म (विवाह वा तमीर बाँटना)।  
 तमीरि-सज्ञा पुं० सूर्य।  
 तमीरी\*१-सज्ञा पुं० दे० "तंबोली"।  
 तमील\*१-सज्ञा पुं० १. पान का बीड़ा।  
 २. दे० "तबोल"।  
 तमीलिन-सज्ञा स्त्री० तबोलिन। पान बँचने-  
 वाली स्त्री। तमीली की स्त्री।  
 तमीली-सज्ञा पुं० दे० "तंबोली"। पान का  
 व्यवसाय करनेवाला।  
 तमीहर-सज्ञा पुं० १ चद्रमा। २. सूर्य।  
 ३. अग्नि। आग। ४. ज्ञान।  
 वि० १ अधवार दूर करनेवाला। २  
 अज्ञान दूर करनेवाला।  
 तम-वि० [अ०] १ निश्चित। ठहराया  
 हुआ। मुखर। २. निबटाया हुआ।  
 निर्णीत।  
 तपना\*१-कि० अ० दे० "तपना"। बहुत  
 गरम होना। दुखी होना।  
 तपार\*१-वि० दे० "तैयार"।  
 तपारी-सज्ञा स्त्री० दे० "तैयारी"।  
 तरग-सज्ञा स्त्री० १ पानी की लहर।  
 हिलोर। मौज। २. समीत में स्वरो वा  
 चढ़ाव-उतार। स्वरलहरी। ३. चित्त की  
 उमग। मन की मौज।  
 तरगक-सज्ञा पुं० हिलोर।  
 तरगवती-सज्ञा स्त्री० नदी।  
 तरंगावित-वि० जिसमें तरंगें उठनी हों।  
 तरंगित। तरंगों की तरह का। लहरिया-  
 दार। लहरदार।  
 तरंगिणी-सज्ञा स्त्री० नदी।  
 वि० स्त्री० तरगवाली।

तरंगित-वि० लहराता हुआ। नीचे-ऊपर उठता हुआ।

तरंगी-वि० [स्त्री० तरंगिणी] १ तरंग-युक्त। जिसमें लहर हो। २ मनमौजी। तर-वि० [फा०] १ भीगा हुआ। आर्द्र। गोला। २ शीतल। ठंडा। ३ हरा। ४ मालवदार। †कि० वि० तले। नीचे। एक प्रत्यय जो गुणवाचक शब्दों में लगकर दूसरे की अपेक्षा आधिक्य (गुण-में) सूचित करता है। जैसे—अधिकतर, श्रेष्ठतर। विशेष। बहुत। सज्ञा पु० १ पार करने की क्रिया। २ अग्नि। ३ वृक्ष। ४ पथ। ५ गति। ६ नाव की उतराई।

तरई†-संज्ञा स्त्री० नक्षत्र।

तरक-सज्ञा स्त्री० दे० "तटक"। वह शब्द जो पृष्ठ समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर आगे के पृष्ठ के आरम्भ का शब्द सूचित करने के लिए लिखा जाता है।

सज्ञा पु० १ सोच विचार। तर्क। २ सुंदर उक्ति।

तरक करना-कि० अ० अलग करना।

तरकना†-कि० अ० दे० १ "तटकना"। २ तर्क करना। सोच-विचार करना। ३ उछलना। कूदना। झपटना।

तरकश, तरकस-सज्ञा पु० [फा०] तीर रखने का चीगा। भाथा। तूणीर।

तरकशी-सज्ञा स्त्री० [फा०] छोटा तरकस। तूणीर।

तरका-सज्ञा पु० [अ०] वह जायदाद जो किसी मृत व्यक्ति के वारिस को मिले। तरकारी-सज्ञा स्त्री० १ भाजी। सब्जी। २ खाने के लिए पकाया हुआ फल-फूल, पत्ता आदि। शाप।

तरकी-सज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक गहना।

तरकीब-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मेल। २ बनावट। रचना। ३ युक्ति। उपाय। ढंग।

तरकुल-सज्ञा पु० ताड़ का पेड़।

तरकुजी-सज्ञा स्त्री० दे० "तरकी"।

तरक्की-सज्ञा स्त्री० [अ०] वृद्धि। उन्नति।

तरखा†-सज्ञा पु० जल का तेज बहाव। तरखान-सज्ञा पु० बंदई।

तरछट-सज्ञा स्त्री० तलछट। गाद। तरल वस्तु का नीचे जमा मेल।

तरछाना†-कि० अ० तिरछी आंख से इशारा करना। इंगित करना।

तरजना-कि० अ० १ ताडन करना। डांटना। झपटना। २ भला-बुरा कहना। बिगड़ना।

तरजनी-सज्ञा स्त्री० १ दे० "तर्जनी"। २ भय। डर।

तरजीला-वि० क्रोधपूर्ण। उग्र। प्रचंड। तरजीह-सज्ञा स्त्री० [अ०] किसी वस्तु को

अन्य वस्तुओं से अच्छा समझना।

तरजूई†-सज्ञा स्त्री० छोटी तराजू।

तरजुमा-सज्ञा पु० [अ०] अनुवाद। भाषांतर। उल्था।

तरण-सज्ञा पु० १ तरना। तैरना। पार करना। २ वेड़ा। ३ उद्धार। ४ स्वर्ग।

तरणि-सज्ञा पु० १ नदी आदि पार करना। २ निस्तार। उद्धार। ३ सूर्य। ४ मंदार का वृक्ष। ५ किरण।

सज्ञा स्त्री० दे० "तरणी"। नौका। तरणिजा-सज्ञा स्त्री० १ सूर्य की कन्या,

यमुना। २ एक धर्म-वृत्त।

तरणितनूजा-सज्ञा स्त्री० सूर्य की पुत्री, यमुना।

तरणिरत्न-सज्ञा पु० मणि। सूर्यकान्त मणि।

तरणिमुत्त-सज्ञा पु० १ सूर्य का पुत्र। २ यम। ३ दानि। ४ कर्ण।

तरणी-सज्ञा स्त्री० नौका। नाव।

तरतराना†-कि० अ० तड़-तड़ शब्द करना। तड़तड़ाना।

तरतीब-सज्ञा स्त्री० [अ०] वस्तुओं का अपने-ठीक स्थान पर लगाया जाना। क्रम। सिलसिला।

तरदीब-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ रद्द करने की क्रिया। मसूखी। २ खडन। प्रत्युत्तर।

तरदुद-सज्ञा पु० [अ०] मोब। अदेश। चिवा। परेशानी।

तरन†-सज्ञा पु० दे० "तरण"।

सज्ञा पु० दे० "तराना"।

तरनतार-सज्ञा पु० निम्नार। मोक्ष। मुक्ति।  
 तरनतारन-सज्ञा पु० १. उद्धार। मोक्ष।  
 २ भवसागर से पार करनेवाला।  
 तरना-क्रि० सं० पार-करना।  
 त्रि० अ० १ मुक्त होना। सद्गति प्राप्त  
 करना। २ दे० "तलना"।  
 तरनि-मज्ञा स्त्री० दे० "तरणि"।  
 तरनी-गज्ञा स्त्री० नाव। नौका।  
 तरपत-सज्ञा पु० सुविधा। आराम।  
 तरपन-सज्ञा पु० १ दे० "तपन"। २ तृप्ति।  
 मन की प्रमत्तता।  
 तरपना-क्रि० अ० दे० "तडपना"।  
 तरपर-क्रि० वि० १ नीचे ऊपर। २ एक के  
 पीछे दूसरा।  
 तरफ-गज्ञा स्त्री० [ज०] १ ओर। दिशा।  
 २ अलग। ३ किनारा। पार्श्व। बगल।  
 ४ पक्ष।  
 तरफदार-वि० [सज्ञा तरफदारी] पक्षपाती।  
 हिमायनी। समर्थक।  
 तरफराना-क्रि० अ० दे० "तडकडाना"।  
 तर-वतर-वि० [फा०] भीगा हुआ। सरावारा।  
 तरबूज-सज्ञा पु० एक प्रकार की बेल और  
 उसका बड़ा गोल फल। हिनवाना।  
 तरमीम-मज्ञा स्त्री० [अ०] ससोयन।  
 तरराना-क्रि० अ० ऐँठना। मराडना।  
 तरल-वि० १ जो ठाम न हो। चंचल। २  
 क्षगमगुर। ३ चहनेवाला। द्रव। ४ चम  
 कीला। ५ अस्थिर। ६ तीक्ष्ण।  
 सज्ञा पु० १ हार। २ हीरा। ३ लाहा।  
 ४ तल। ५ घाटा।  
 तरलता-सज्ञा स्त्री० १ चंचलता। २ द्रवत्व।  
 तरलनयन-सज्ञा पु० एक वणवृत्त।  
 तरला-सज्ञा स्त्री० १ जी का माड। २  
 मदिरा। ३ सहृद की मक्ली।  
 सज्ञा पु० छाजन का वास।  
 तरलाई\*-सज्ञा स्त्री० १ चपलता। चप  
 लता। २ द्रवत्व।  
 तरवन-सज्ञा पु० १ कान में पहनने का एक  
 गहना। २ वणकुल।  
 तरवर-सज्ञा पु० दे० "तरवर"।  
 तरवरिया\*-वि० तलवार चलानेवाला।

तरवा-सज्ञा पु० दे० "तडवा"।  
 तरवाना-क्रि० अ० बेलों का लेंगडाना।  
 क्रि० सं० तारने की प्रेरणा करना।  
 तरवारी-सज्ञा स्त्री० दे० "तलवार"।  
 मज्ञा पु० दे० "तरवर"।  
 तरस्-सज्ञा पु० १ वेग। बड़। २ वानर।  
 ३ रोग। तड।  
 तरस-मज्ञा पु० द्रव्य। रहम।  
 मुहा०—(बिमी पर) दरख्ताना=दया  
 करना। रहम करना।  
 तरसना-क्रि० अ० १ बहुत चाहना। बिसी  
 वस्तु को न पाकर बैचैन रहना। २ दया  
 दिवाने की इच्छा रहते हुए भी दया न  
 दिया करना।  
 तरसाना-क्रि० सं० १ कोई वस्तु न देकर  
 उसके लिए बैचैन करना। २ व्यर्थ ललचाना।  
 ३ आशा उत्पन्न करके उसे पूरी न करना।  
 तरसोहा\*-वि० तरसनेवाला।  
 तरह-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रकार। भाँति।  
 विस्म। २ ढाँचा। डोल। बनावट।  
 रूप-रग। ३ तर्ज। प्रणाली। रीति। ४  
 युक्ति। उपाय। ५ हाल। दशा। अवस्था।  
 मुहा०—तरह देना=तयाल न करना।  
 बचा जाना। जाने देना।  
 तरहदार-वि० [फा०] [सज्ञा तरहदारी]  
 १ सुंदर बनावट का। २ शाकीन।  
 तरहरी-क्रि० वि० तले। नीचे।  
 वि० १ नीचे का। २ निकृष्ट। बुरा।  
 तरहुंड\*-क्रि० वि० दे० "तरहर"।  
 तरहेली-वि० १ अधीन। २ वश में आया  
 हुआ। पराजित।  
 तराई-सज्ञा स्त्री० १ पहाड या नदी आदि  
 के पास की हरी या सीडवाली भूमि।  
 पहाड के नीचे का मैदान। २ पहाड की  
 घाटी। ३ भूज। ४ तारा।  
 तराजू-सज्ञा पु० [फा०] तोलने का यंत्र।  
 तुला।  
 तराना-मज्ञा पु० [फा०] चलता गाना।  
 बडिया गीत।  
 त्रि० सं० पार कराना। उद्धार करना।  
 बचाना।

तराय\*†-सज्ञा स्त्री० [ अनु० ] बटूक, तोप आदि का तडाक शब्द।

तराय†-सज्ञा पुं० हाहावार। कुहराम। नाहि नाहि।

तरायोर-वि० खूब भीगा हुआ। तरायोर। तरामीरा-सज्ञा पुं० एक पीवा जिसके बीजा से तेल निकरता है।

तरारा-सुज्ञा पुं० १ छछाल। छलंग। कुलचि० २, प्राणी की लगातार मिरने वाली धारा।

तरायट-सज्ञा स्त्री० १ ठंडा। शीतलता। २ शरीर की गरमी शान करनेवाला आहार आदि। ३ मृग्य भाजन। शीतल पदार्थ। ४ राजपूत।

तराश-मना स्त्री० [फा०] काट। काट छाट। प्रनायन। रचना प्रकार। डग।

तराश जराश-मज्ञा स्त्री० [फा०] काट छाट। तराशना-वि० स० [फा०] काटना। कतरना।

तरि-मज्ञा स्त्री० नीला। वषट का छोर। विनारा।

तरिक-मज्ञा पुं० १ बडा। २ उग्राई रैन वाला। वेवट।

तरिका†-सज्ञा पुं० १ नाव। २ कान का एक गहना। तरिनी। तरौना।

तरिता\*-मज्ञा स्त्री० १ बिजली। २ नील। गाजा। ३ तजनी जैंगी।

तरियाना†-वि० स० १ तह में बंटा देना। २ डीपना। छियाना। उवा उमाना।

वि० अ० तजे बंटा जाता। तह म जमना।

तरियन-मज्ञा पुं० १ कान म पहनने की तराई। २ वणफूल।

तरिवर\*-मज्ञा पुं० २० वणवर।

तरिह†-वि० वि० नील। तजे।

तरी-मज्ञा स्त्री० १ नाव। गोरा। २ गायापन। आदत। ठंडा। गायजा।

३ वह नीचा भूमि जहाँ चरमाव का पानी इकट्ठा होता है। तडार। तगर। तहरी। ४ बाग का एक गहना।

तरियन। वणफूल। ५ पुत्री। ६ दानन। ७ जूना तला।

तरीरा-मज्ञा पुं० [अ०] १ कप। विधि।

रीति। २ चाल। व्यवहार। ३ उपाय।

तरीय-सज्ञा पुं० १ नीला। २ बंटा। स्वर्ग। ३ समुद्र। ४ व्यवसाय। ५ सूखा गोबर।

तह-सज्ञा पुं० वृक्ष। पेड़।

तहना-सज्ञा पुं० भुजिया चावल। तलवा।

तहण-वि० १ युवा। जवान। २ नया।

सज्ञा पुं० १ बडा जीरा। २ मोतिया। ३ रड।

तहणज्वर-मज्ञा पुं० सात दिन के भीतर का ज्वर। नवीन ज्वर।

तहणसूर्य-सज्ञा पुं० मध्याह्निक का सूर्य।

तराई\*-मज्ञा स्त्री० यौवन। युवावस्था। जवानी।

तहना\*-वि० अ० युवावस्था में प्रवेश करना। जवानी पर आना।

तहनी-सज्ञा स्त्री० १ युवती। जवान स्त्री। नयवीवना। २ मोतिया। ३ मेघराग की

एक रागिनी। ४ दती नामक वृक्ष विशेष। ५ पुष्प-विशेष। ६ सेवती का फूल।

७ चौडा नामक गंध द्रव्य। ८ जमाल-गोला।

तहना†-सज्ञा पुं० २० 'तहण'।

तराई तराई\*-सज्ञा स्त्री० तहणावस्था।

तहनापा\*-सज्ञा पुं० दे० 'तराई'।

तहनाही\*-सज्ञा स्त्री० पड़ की शाखा। डाल।

तहराग-मज्ञा पुं० नया कामल पत्ता। निमल्य।

तहराज-मज्ञा पुं० कल्पवृक्ष। पेडा का राजा।

तरंदा-सज्ञा पुं० बडा।

तरे†-क्रि० वि० नीचे। तडा।

तरेडी-मज्ञा स्त्री० तराई।

तरेरना-वि० म० दीवपुत्रक रचना। त्यागी रचना। आंग दिवाना।

तरेया†-मज्ञा स्त्री० राग। नगद।

वि० तरलमान। तारावाय।

तरावा-सज्ञा पुं० जुए के गाने की तराई।

तराडा-मज्ञा पुं० हवाट जादि मगदूरा का बने के लिए अन्न निभाया हुआ अनाज।

तराई-मज्ञा स्त्री० २० 'सुन्द'।

तरायर\*-मज्ञा पुं० २० 'तरवर'। ५१।

तरौछ-मज्ञा स्त्री० २० 'तरछ'।

तरीछी-गजा स्त्री० जुलाई के हरे में नीचे की लपटी।

तरीग\*-गजा पु० सट। तीर। विनारा।  
तरीना-गजा पु० १. मान में पहनने का एक गहना। तरपी। २. कणसुल।

तर्क-गजा पु० १. युक्ति। विवाद। विवेचना। दलील। बहस। धर्मतत्त्व-पूर्ण उक्ति। २. व्यय। ३. ठाना। त्याग। छोड़ना।

तर्क-गजा पु० १. याचक। २. तर्क करने वाला।

तर्क-गजा पु० बहस करने का कार्य।  
तर्क-गजा स्त्री० विचार। युक्ति। दलील।  
तर्कना\*†-क्रि० अ० तर्क करना।

तर्क-वितर्क-गजा पु० १. सोच-विचार। विचार-विमर्श। २. वाद-विवाद। बहस।

तर्क-गजा पु० तीर रखने का चांगा। भाया। तूणीर।

तर्कशास्त्र-गजा पु० १. सिद्धान्तों के खडन-मडन की शैली बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। २. न्यायशास्त्र।

तर्कभास-गजा पु० ऋद्धिपूर्ण प्रकं। ऐसा तर्क जो ठीक न हो। तुतर्क।

तर्की-गजा पु० [स्त्री० तर्किनी] १. तर्क करनेवाला। विवेचक। २. न्यायशास्त्र-वेत्ता।

तर्क-गजा पु० तकला। टेबुआ।  
तर्कटी-गजा स्त्री० सूत बनाने का यंत्र। टेबुआ। तकला।

तर्कल-गजा पु० ताड़ का पेड़।

तर्क-वि० जिस पर सोच-विचार करना आवश्यक हो। चिंत्य।

तर्क-गजा पु० [अ०] १. प्रकार। किस्म। तरह। २. रीति। शैली। ढंग। तरीका। ३. बनावट।

तर्क-गजा पु० [वि० उजित] १. धमकाने का कार्य। भय-प्रदर्शन। २. क्रोध। ३. फटकार। डोट-डपट।

तर्क-गजा पु० [अ०] भाषांतर। उल्था। अनुवाद।

तर्क-गजा पु० १. सिद्ध। २. तुरन्त का पंदा हुआ बछड़ा।

तर्करीक-गजा पु० नाव।

वि० पार जानवाला।

तर्पण-गजा पु० [वि० तर्पणीय, तर्पित, तर्पी]

१. तुष्ट या सतुष्ट करने की क्रिया। २. बर्माद की एक क्रिया जिसमें पित्रो को तुष्ट करने के लिए हाथ या अरपे से पानी देने हैं।

तर्पित-वि० सतुष्ट किया हुआ।

तर्पी-वि० तर्पण करनेवाला। सतुष्ट करने वाला।

तर्पणीक\*-गजा पु० दे० "तरीना"।

तर्पण-गजा स्त्री० तुषा। प्यास। तृष्णा। अभिलाषा। इच्छा।

तल-गजा पु० १. नीचे का भाग। पैदा। जल के नीचे की मृमि। वह स्थान जो किसी वस्तु के नीचे पड़ता हो। २. पैर का तलवा। ३. हथेली। ४. सतह। छत। पाटन। ५. पाताल-विशेष। ६. नरक-विशेष। ७. स्वभाव। ८. जगल। ९. गढ़ा। १०. ताड़ का पेड़। ११. आधार। १२. महादेव। १३. मुठिया। मलाई।

तलक†-अव्य० तल। पर्यंत।

गजा पु० ताल।

तलकर-गजा पु० वह कर या लगान जो जमींदार ताल की वस्तुओं पर लगाता है।

तलमुह-गजा पु० चहखाना।

तलघर-गजा पु० जमीन के नीचे बनी हुई कोठरी। भूईघरा। तहखाना।

तलछट-गजा स्त्री० तरल पदार्थ के नीचे बँठा हुआ मेल। तलीछ। गाद।

तलना-क्रि० स० कटकटाते हुए धी या तेल में डालकर पकाना।

तलप\*-गजा पु० दे० "तल्प"।

तलपट-वि० बरवाद। चोंपट।

तलक-वि० [अ०] नष्ट। बरवाद।

तलफना-क्रि० अ० दे० "तडफना"। छट-पटाना। बेचन होना।

तलफो-गजा स्त्री० [फा०] हानि। बरबादी।

तलब-गजा स्त्री० [अ०] १. खोज। तलाश।

२. चाह। ३. आवश्यकता। ४. बुलावा। बुलाहट। ५. वनखाह। वेतन।

तलबगार-वि० [ फा० ] चाहनेवाला ।

तलबाना-सज्ञा पु० [ फा० ] वह खर्च जो गवाहों को तलब करने के लिए अदालत में जमा किया जाता है ।

तलबी-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. बुलाहट । २. मांग ।

तलबेली-सज्ञा स्त्री० घोर उत्कटा । आतुरता । बेचैनी ।

तलमलाना-†-क्रि० अ० दे० "तिलमलाना" ।

तलबकार-सज्ञा पु० १. सामवेद की एक शाखा । २. एक उपनिषद् ।

तलवा-सज्ञा पु० पंर के नीचे की ओर का भाग । पादतल ।

मुहा०—तलवे चाटना=बहुत खुशामद करना । तलवे छलनी होना=चलते-चलते शिथिल हो जाना । तलवे धो-धोकर पीना=अत्यंत सेवा-शुश्रूषा करना । तलबों से आग लगना=अत्यंत क्रोध चढ़ना ।

तलवार-सज्ञा स्त्री० लोहे का एक लम्बा धारदार हथियार । अस्त्र । कृपाण । खड्ग ।

मुहा०—तलवार का खेत=खड़ाई का मैदान । युद्धक्षेत्र । तलवार का पानी=तलवार की आभा या दमक । तलवारों की छांह में=ऐसे स्थान में जहाँ अपने ऊपर चारों ओर तलवार ही तलवार दिखाई देती हों । रणक्षेत्र में । तलवार खींचना=आघात करने के लिए म्यान से तलवार बाहर करना । तलवार सीतना=वार करने के लिए तलवार खींचना ।

तलहटी-सज्ञा स्त्री० पहाड़ के नीचे की भूमि । तराई ।

तला-सज्ञा पु० १ किसी वस्तु के नीचे की सतह । पैदा । २ जूते के नीचे का चमड़ा ।

तलाक-सज्ञा पु० [ अ० ] पति-पत्नी का विधि-पूर्वक सबप-त्याग । विवाह-विच्छेद ।

तलातल-सज्ञा पु० सात पातालों में से एक ।

तलाब-†-सज्ञा पु० ताल । तालाब ।

तलाश-सज्ञा स्त्री० [ तु० ] १ खोज । ढूँढ़-ढाँढ़ । २. आवश्यकता । चाह ।

तलाशना-†-क्रि० सं० [ फा० ] ढूँढ़ना । खोजना ।

तलाशी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] खोज । छिपाई हुई वस्तु के लिए खोज ।

मुहा०—तलाशी लेना=सदृश्य मनुष्य के घर आदि की जाँच करना ।

तलिन-वि० १. विरला । २. थोड़ा । ३. शूद्र । ४. दुबला ।

संज्ञा स्त्री० सेज । पलंग ।

तली-संज्ञा स्त्री० १. नीचे की सतह ।

पैदी । २ तलछट । † ३. हथेली या तलवा ।

तले-क्रि० वि० नीचे ।

मुहा०—तले-ऊपर=१ एक के ऊपर दूसरा । २ उलट-पलट किया हुआ ।

तलेटी-सज्ञा स्त्री० १ पैदी । २. पहाड़ के नीचे की भूमि । तलहटी ।

तलेया-सज्ञा स्त्री० छोटा ताल ।

तलीछ-सज्ञा स्त्री० नीचे जमा हुआ मूल आदि । तलछट ।

तल्व-वि० कटुआ । कट ।

तल्प-सज्ञा पु० १ शय्या । पलंग । सेज । २ अट्टालिका । अंतरी ।

तल्ला-सज्ञा पु० १ तले की परत । अस्तर । २ ढिग । पास । सामीप्य ।

तल्लिका-सज्ञा स्त्री० ताली । कजी ।

तल्ली-सज्ञा स्त्री० १ तला । तलछट । २ यकनी । ३ नौका ।

तल्लीन-वि० किसी विषय में लीन । निमग्न । तन्मय ।

तल्लीमता-सज्ञा स्त्री० तन्मयता । किरी विषय में लीन होना । एकाग्रता ।

तल-सर्व० तम्हारा ।

तलयजह-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ ध्यान । क्पाल । २ कृपादृष्टि ।

तपना-क्रि० अ० १. तपना । गरम होना । २ तप या दृढ से पीड़ित होना । ३ गस्से से लाल होना । बुढ़ना ।

तवा-सज्ञा पु० १ लोहे का वह छिछला गोल बरतन जिस पर रोटी सँभते हैं ।

२ मिट्टी या खपड़े का गोल ठिकरा जिसे चिलम पर रखकर तमाकू पीते हैं ।

मुहा०—तवे की धूँद=१. क्षणस्थायी । देर

तन न टिनेवाला । २ जिगने कुछ भी  
तुष्टि न हो ।  
तयाजा-तया स्त्री० [अ०] १ आरर । मान ।  
आव-भगत । २ भेटमानदारी । दावत ।  
तयाना-वि० [फा०] बली । हूष्ट-मुष्ट ।  
त्रि० स० १ गम्य वगना । २ डसन  
निपपावर वरतन ता गुरु बन्द करना ।  
तयामफ-मज्ञा स्त्री० [अ०] रडी । बेदया ।  
तयारा-मज्ञा पु० जलन । दाह । नाप ।  
तयारीत-सज्ञा स्त्री० [अ०] इतिहास ।  
तयोलत-तज्ञा स्त्री० [अ०] झगट ।  
बसेटा ।  
तयिध-मज्ञा पु० १ समुद्र । २ स्पर्श । ३ व्यग्र-  
साय । ४ शक्ति ।  
वि० १ घन्वान् । २ महत् ।  
तवेला-सज्ञा पु० अस्वशाला । घुटसाल ।  
अम्तबल ।  
तशखीस-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. पहचान ।  
निश्चय । २ मर्ज की पहचान । राग का  
निदान ।  
तशरीफ-मज्ञा स्त्री० [अ०] वजुर्गी । इज्जत ।  
महत्त्व । बडप्पन ।  
मुहा०-तशरीफ रखना=विगजना । बैठना ।  
तशरीफ लाना-पदार्पण करना । आना  
(आदरसूचक) ।  
तश्त-सज्ञा पु० [फा०] परात । बडा थाल ।  
तश्तरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] थाली के आकार  
का छोटा बरतन । रिकायी ।  
तष्ट-वि० कटा हुआ । छीला हुआ । पीटा  
हुआ ।  
तष्टा-मज्ञा पु० १ गडनेवाला । २ विद्व-  
भर्मा । ३ ताँवे की छोटी तश्तरी ।  
तस-वि०, त्रि० वि० तैसा । बँसा ।  
तसफोन-सज्ञा स्त्री० [अ०] तसल्ली । डाडस ।  
दिलासा ।  
तसदीक-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रमाणों के द्वारा  
पुष्टि । समर्थन । साक्ष्य । गवाही ।  
तसादीह\*—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सिर का  
दर्द । २ दुःख । कष्ट । तसलीफ ।  
तसदुक्त-मज्ञा पु० [अ०] कुखानी । निछा-  
वर ।

तसनीक-मज्ञा स्त्री० ग्रथ आदि की रचना ।  
रचित ग्रथ ।  
तसबीह-मज्ञा स्त्री० [अ०] गुनिगनी ।  
माला ।  
तसमा-मज्ञा पु० [फा०] चमड़े या चाँदी पीता ।  
तसर-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का रेशम ।  
२ जुलाहों की डरसी ।  
तसला-सज्ञा पु० [स्त्री० तगली] कटोरे  
के धाकार का चटा बरतन ।  
तसलीम-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मरगम ।  
प्रणाम । २ किसी बात की स्वीकृति ।  
तसल्ली-मज्ञा स्त्री० [अ०] १ गात्वना ।  
आस्वानन । डाडग । २ धैर्य ।  
तसमीर-सज्ञा स्त्री० [अ०] चित्र ।  
वि० चित्र भा सुदृग् । मनोहर ।  
तसू-मज्ञा पु० गाप-विणोग जो १½ इंच के  
लगभग होता है ।  
तस्कर-मज्ञा पु० १ चोर । २ श्रवण ।  
बान । ३ गव द्रव्य विग्रेय ।  
तस्करता-सज्ञा स्त्री० चोरी ।  
तस्करी-सज्ञा स्त्री० १ चोरी । २ चोर  
की स्त्री । चोर स्त्री ।  
तस्स-मज्ञा पु० दे० "तसू" ।  
तस्फिया, तस्फिया-सज्ञा पु० झगडे का  
निपटारा । फैसला । निर्णय ।  
तह, तहेंवां-त्रि० वि० दे० "तही" ।  
तह-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ परत । २ किसी  
वस्तु के नीचे या बिस्तार । तल । पदा ।  
३ पानी के नीचे की जमीन । तल ।  
थाह । ४ चरक । झिल्ली ।  
मुहा०-तह करना या लगाना=किसी फैली  
हुई वस्तु के भाला की कई ओर से मोड़कर  
समतल । तह ताडना=१ जगहों को  
निबटाना । २ कुएँ का सब पानी निकाल  
देना जिससे जमीन दिखाई देने लगे ।  
(किसी चीज की) तह देना=१ हलकी  
परत चढ़ाना । २ हलका रंग चढ़ाना । तह  
की बात=छिपी हुई बात । गुप्त रहस्य ।  
(किसी बात की) तह तक पहुँचना=यथार्थ  
रहस्य जान लेना । असली बात समझ  
जाना ।

तहकीक-मज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "तहकीकात"।  
तहकीकात-सज्ञा स्त्री० [अ०] किसी घटना  
की जांच। अनुसंधान। जांच।

तहखाना-सज्ञा पु० [फा०] जमीन के नीचे  
बनी हुई कोठरी। भुईधरा। तलगृह।

तहजीब-मज्ञा स्त्री० [अ०] सम्भृता। शिष्टा-  
चार।

तहजरज-वि० [फा०] जिसकी तह तक न  
पुली हो। विलकुल नया।

तहवाजारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बाजार या  
सट्टी में सौदा बेचनेवालों से लिया जाने  
वाला कर।

तहमत-सज्ञा स्त्री० [फा०] कमर भ लपेटा  
हुआ कपड़ा या अँगोठा। लुगी।

तहरी-सज्ञा स्त्री० सटर की खिचड़ी।

तहरीर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ लिखावट। लेख।  
२ लेखन-शैली। ३ लिखी हुई बात। ४  
लिखा हुआ प्रमाण-पत्र। ५ लिखाई। लिखने  
की मजदूरी। ६ गैल की कच्ची छपाई।

तहरीरी-वि० [फा०] लिखा हुआ। लिखित।

तहलका-सज्ञा पु० [अ०] १ बरबादी।  
नाश। २ खलबली। हलचल। ३ मीत।  
भृत्य।

तहवील-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सुपुदंगी। २  
अमानत। ३ खजाना। जमा।

तहवीलदार-सज्ञा पु० कीर्वाण्यध। खजानची।

तहस-नहस-वि० बरबाद। नष्ट-भ्रष्ट।

तहसील-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बमूली। जगाही।  
लगान-बमूली की जामदानी। २ लगान-  
बमूली या शासन प्रदम्य के लिए निर्धारित  
क्षेत्र। जिले का एक भाग। ३ तहसीलदार  
का दफ्तर या कचहरी। मालगुजारी जमा  
करने का सरकारी कार्यालय।

तहसीलदार-मज्ञा पु० [अ०] १ वर बमूल  
करनेवाला। २ वह अफसर जो जमींदारों से  
गर्जारी मालगुजारी बमूल करता और  
मात्र के छौटे मुकदमा या फौजदारी करता है।

तहसीलदारी-मज्ञा स्त्री० १ तहसीलदार का  
पद। २ मालगुजारी बमूल करने का काम।

तहसीलना-क्रि० सं० उगाहना। बमूल  
करना (वर, लगान, चंदा आदि)।

तहाँ-क्रि० वि० उस स्थान पर। उस जगह।  
यहाँ।

तहाना-क्रि० सं० तह करना। लपेटना।  
चाँपरत करना।

तहियाँ-क्रि० वि० तब। उस समय। उस  
दिन।

तहियाना-क्रि० सं० दे० "तहाना"।

तही-क्रि० वि० उसी जगह। उसी स्थान  
पर। वही।

ता-प्रत्य० एक भाववाचक प्रत्यय।

अन्य० तक। पर्यंत।

सर्व०, वि० उस।

ताई-क्रि० वि० दे० "ताई"।

तांगा-मज्ञा पु० दे० "टांगा"। एक प्रकार  
की घाडागाड़ी।

ताडव-सज्ञा पु० १ शिव का नृत्य। २ गुरुषों  
का नृत्य। (गुरुषों के नृत्य को ताडव और  
स्त्रियों के नृत्य को लास्य कहते हैं)।  
३ उद्धत नृत्य।

तात-सज्ञा स्त्री० १ चमड़े की रस्ती। २  
धनुष की डोरी। ३ डोरी। मूत। ४ सारंगी  
आदि का तार।

ताँना-सज्ञा पु० श्रेणी। पक्ति। कतार।

ताँति-सज्ञा स्त्री० दे० "ताँत"।

ताँती-मज्ञा स्त्री० १ पक्ति। कतार। २  
वाल-बच्चे। सन्तान।

सज्ञा पु० जुलुहा। कपड़ा बुननेवाला।

तानिक-वि० [स्त्री० तानिकी] तन-तन्त्री।  
सज्ञा पु० तनशास्त्र का जाननेवाला। यन-  
मन आदि करनेवाला।

ताँया-मज्ञा पु० एक प्रसिद्ध पातु। ताम्र।

ताँयिया-सज्ञा स्त्री० दे० "ताँनी"।

ताँवी-मज्ञा स्त्री० १ चौड़े मुँह का ताँवे  
का एक छाटा बरतन। २. ताँवे की  
रन्धी।

तामूल-मज्ञा पु० १ पान या उसका बीटा।  
२ मुपागी।

ताम्बूलयाहक-मज्ञा पु० पान चिलानेवाला  
शेवक।

ताम्बूलिया-मज्ञा पु० समोली।

फट्टना।

ताँवर-सज्ञा स्त्री० ज्वर ।  
ताँसना-प्रि० स० १ डटना । धमकाना ।  
आँग दिवाना । २ दुखी करना ।  
राताना ।

ताई-अव्य० १ छक् । पध्मंत । २ पात ।  
समीप । निवट । ३ (किसी के) प्रति ।  
समक्ष । ४ लिए । वास्ते । निमित्त ।  
वि० दे० "तई" । ताई ।

ताई-सज्ञा स्त्री० १ बाप के बड़े भाई की  
स्त्री । बही चाची । २ एक प्रकारकी छिछली  
बड़ाही ।

ताईत-सज्ञा पु० ताबीज ।  
ताईद-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ पक्षपात ।  
तरफदारी । २ अनुमोदन । समर्थन ।  
ताऊ-सज्ञा पु० दे० "ताव" ।  
ताऊ-सज्ञा पु० बाप का बड़ा भाई । बड़ा  
चाचा ।

मुहा०-बछिया के ताऊ=मूल ।  
ताऊन-सज्ञा पु० [अ०] प्लेग ।  
ताऊस-सज्ञा पु० [अ०] १ मोर । मयूर ।  
२ सारंगी से मिलता-जुलता एक वाजा ।  
यी०-तख्त ताऊस=शाहजहाँ का बहुमूल्य  
रत्नजटित राजसिंहासन, जो मीर के आकार  
का था ।

ताक-सज्ञा स्त्री० १ ताकने की क्रिया ।  
दृष्टि । अवलोकन । २ टक्करी । ३ किसी  
अवसर की प्रतीक्षा । मौका देखते रहना ।  
पात । ४ खोज । तलाश ।

मुहा०-ताक में रहना=मौका देखते रहना ।  
ताव रखना या लगाना=घात में रहना ।  
ताऊ-सज्ञा पु० [अ०] चीज रखने के लिए  
दीवार में बना हुआ खात्री स्थान । आला ।  
ताखा ।

वि० १ ऐसी सरया जो बिना खड़ित  
हुए दो बराबर भागों में न बँट सके ।  
विषम । जैसे-तीन, पाँच । २ जिसके जोड़  
का दूसरा न हो । अद्वितीय । अनुपम ।

मुहा०-ताव पर घटना या रखना=पड़ा  
रहना देना । काम में न लाना ।

१०-ताक-सज्ञा स्त्री० १ छिपकर देखने  
की क्रिया । २ खोज । देखभाल ।

तावत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ जोर । बल ।  
शक्ति । २ सामर्थ्य ।  
तावतवर-वि० [फा०] १ बगवान् । बलिष्ठ ।  
२ शक्तिमान् ।

तावना-प्रि० ग० १ सोचना । विचारना ।  
२ देखना । जाँचना । टक्करी लगाना ।  
घूरना । ३ तावना । समझ जाना । ४ पहने  
में दाय रखना । तजवीज करना । ५ रख-  
वाली करना ।

ताकि-अव्य० जिसमें । इसलिए कि । जिसमें ।  
क्रि० म० देखकर । लखकर ।

ताकीद-सज्ञा स्त्री० [अ०] आज्ञा या अनुरोध  
के रूप में बही गई बात । सूब चेतविर  
बही हुई बात ।

ताख-सज्ञा पु० आला । ताखा ।  
ताखा-सज्ञा पु० चीज रखने के लिए दीवार  
में बना हुआ खाली स्थान । ताख ।  
ताव ।

तागड़ी-सज्ञा स्त्री० १ कमर में पहनने का  
एक गहना । करघनी । किचिणी । २ कमर  
में पहनने का रंगीन डोरा । कटिमूत्र ।  
तागना-क्रि० स० दूर-दूर पर मोटी सिलाई  
करना ।

ताग-पाट-सज्ञा पु० एक प्रकार का गहना जो  
विवाह में काय आता है ।

तागा-सज्ञा पु० १ डोरा । घागा । २ प्रति  
मनुष्य के हिसाब से लगनेवाला कर या  
भट्टमूल ।

ताज-सज्ञा पु० [अ०] १ राजमुकुट । २  
बलगी । ३ दीवार की कोंगी या छज्जा । ४  
गकान के सिरे पर शोभा के लिए बनाई  
गई चुर्ची । ५ गजोंफे के एक रंग का  
नाम । ६ आपरे का ताजमहल ।

ताजक-सज्ञा पु० १ एक ईरानी जाति ।  
२ ज्योतिष का ग्रह विशेष ।

ताजगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ ताजापन ।  
हुरापन । २ प्रकुलता । स्वस्थता । ३  
नयापन ।

ताजदार-सज्ञा पु० [फा०] बादशाह ।  
ताजन-सज्ञा पु० [फा०] कोठा । चानुक ।  
ताजपोशी-सज्ञा स्त्री० [फा०] राजमुकुट

धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने का उत्सव।

ताजमहल-सज्ञा पु० [अ०] प्रसिद्ध मकबरा जिसे शाहजहाँ बादशाह ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की स्मृति में आगरे में बनवाया था।

ताजा-वि० [फा०] [स्त्री० ताजी] १ नया। नवीन। हरा-भरा। टटका। २ (फल आदि) जिसे पेड़ से अलग हुए बहुत देर न हुई हो। ३ स्वस्थ। प्रकुल्लित। ४ तुरत का बना।

यो०-मोटा-ताजा=हूट-पुष्ट।

ताजिया-सज्ञा पु० [अ०] मकबरे के आकार का मठ जो बाँस की कमचियों पर रंगीन कागज आदि से बनाया जाता है। इसमें इमाम हुसैन की कब्र होती है। मूह्रम में शीया मुसलमान इसकी आराधना कर दो दफन करते हैं।

ताजी-वि० [फा०] अरब का।

सज्ञा पु० १ अरब का घोड़ा। २ शिकारी कुत्ता।

ताजीम-सज्ञा स्त्री० [अ०] बड़ों के सामने आदर के लिए उठकर खड़े हो जाना, झुककर सलाम करना इत्यादि। सम्मान प्रदक्षन। आदर। अदब।

ताजीमी-मज्ञा पु० प्रतिष्ठित। आदरणीय।

ताजीर-सज्ञा स्त्री० [अ०] दंड।

वि० ताजीरी।

ताजीरात-मज्ञा पु० [अ०] दंड सम्बन्धी कानून का संग्रह।

ताजीरात हिन्द-सज्ञा पु० भारतीय दण्ड विधान। इसी कानून से भारत में दंड की व्यवस्था होती है।

ताजीरी-वि० दंड के रूप में लगाया था बैठाया हुआ। जैसे ताजीरी पुलिस।

ताडक-सज्ञा पु० १ वान में पहनने या एव गहना। वणकूट। तरकी। २ एव प्रकार का छप्पय। ३ एव छंद जिसने प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ और अंत में मगण होता है।

ताडस्य-मज्ञा पु० १. उदासीनता। २. सन्निकट। सामीप्य।

ताडक-सज्ञा पु० कान की तरकी। कर्णफूल।

ताड-सज्ञा पु० १ शाखा-रहित एक ऊँचा पेड़। २ ताडन। प्रहार। ३ शब्द। ध्वनि। ४ अनाज के डठल आदि की अँटिया जो मुट्ठी में आ जाय। जुट्ठी। ५ हाथ का एक गहना। ६ जान-पहचान। परिचय। ७ समझ। बोध।

ताडका-सज्ञा स्त्री० एक राक्षसी जिसे श्री रामचंद्र ने मारा था।

ताडन-सज्ञा पु० १ मार। प्रहार। अधात। २ डाँट-डपट। घुड़की। ३ शासन। दंड।

ताडन-सज्ञा स्त्री० १ प्रहार। मार। २ डाँट-डपट। शासन। दंड। धमकी। ३ उत्पीड़न। कष्ट।

क्रि० सं० १ मारना। पीटना। २ डाँटना-डपटना। ३ किसी ऐसी बात की जान लेना, जो छिपाई गई हो। लक्षण से समझ लेना। भौंपना। ४ मार-पीटकर भगाना। हटा देना।

ताडनीय-वि० ताडने योग्य। मारने योग्य। दंड देने योग्य।

ताडपत्र-सज्ञा पु० ताड-वृक्ष का पत्ता।

ताडित-वि० १ जिस पर मार पड़ी हो। मार खाया हुआ। २ जो डाँटा गया हो। ३ दंडित। ४ मारकर भगाया हुआ।

ताडी-सज्ञा स्त्री० ताड के डठल से निकाला हुआ नशीला रस जिसका व्यवहार मद्य के रूप में होता है।

तात-सज्ञा पु० १ पिता। २ पूज्य व्यक्ति। गुरु। ३ प्यार का एक शब्द या संबोधन।

वि० तपा हुआ। गरम। उष्ण।

तातन-सज्ञा पु० खजन।

तातल-सज्ञा पु० राग। २ लोहे का नाँटा। ३ पिता के तुल्य सम्बन्धी।

वि० गरम।

ताता-वि० [स्त्री० तानी] तपा हुआ। गरम। उष्ण।

ताताथेई—मज्ञा स्त्री० नाचने में ताल देने का शब्द।

ततार—सज्ञा पु० [फा०] मध्य एशिया का एक देश जो हिन्दुस्तान और पारस के उत्तर में कैस्पियन सागर से लेकर चीन के उत्तर प्रांत तक है।

तातारी—वि० [फा०] तानार देश-सम्बन्धी। तातार देश का।

सज्ञा पु० तातार देश का निवासी। तात्कालिक—मज्ञा स्त्री० [अ०] छुट्टी का दिन। तात्कालिक—वि० तत्काल या तुरन्त का। तात्पर्य—सज्ञा पु० अर्थ। आशय। मत। लब्ध। अभिप्राय।

तात्त्विक—वि० १ तत्त्व-सम्बन्धी। २ तत्त्व ज्ञान-युक्त। ३ यथार्थ।

ताथेई—सज्ञा स्त्री० दे० 'ताताथेई'।

तादात्म्य—सज्ञा पु० एक वस्तु का मिलकर दूसरी वस्तु के रूप में हो जाना। अभेद सम्बन्ध।

तादाद—सज्ञा स्त्री० [अ०] मरया। गिनती। तादृश—वि० [स्त्री० तादृशी] उसके समान। वैसा।

ताप्ता—सज्ञा स्त्री० दे० 'ताताथेई'।

तान—सज्ञा स्त्री० १ तानने का भाव या क्रिया। खींच। फैलाव। विस्तार। २ लय का विस्तार। आलाप। ३ ज्ञान का विषय। मुहा०—तान उठाना—गीत गाना। किसी पर तान ताडना—किसी पर आक्षेप करना। तानना—प्रि० स० १ फैलाने के लिए खींचना। खींचकर फैलाना। २ परदे की सी वस्तु को ऊपर फैलाकर बांधना। ३ एक ऊँचे स्थान से दूसरे ऊँचे स्थान तक ले जाकर बांधना। ४ मारने के लिए हाथ या कोई हथियार उठाना। ५ हानि पहुँचाने के लिए कोई अडचन डालना। ६ वैदिकाने भेजना।

मुहा०—तानकर—बलपूर्वक। जोर से। तानकर सोना—१ आराम से सोना। २ निश्चिन्त रहना।

तानपूरा—मज्ञा पु० सितार के आकार का एक बाजा। तबूरा।

तानयान \*—सज्ञा पु० दे० "ताना-बाना"। तानसेन—मज्ञा पु० अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध और बहुत बड़ा गवैया। यह पहले ब्राह्मण था, पर पीछे मुसलमान हो गया था।

ताना—मज्ञा पु० १ कपड़े की बुनावट में लवाई के बल के सूत। २ दरी या वालीन बुनने का करपा। ३ आक्षेप-वाक्य। बोली-ठोड़ी। व्यंग्य।

प्रि० स० १ ताव देना। तपाना। गरम करना। २ पिघलाना। ३ तपाकर परीक्षा करना। (सोना आदि धातु)। ४ जाँचना। आजमाना। गींगी मिट्टी आदि से बरतन का मुँह बंद करना। मूँदना।

ताना-बाना—सज्ञा पु० कपड़ा बुनने में लवाई और चौड़ाई के बल फैलाए हुए सूत।

ताना रीरी—सज्ञा स्त्री० साधारण गाना। राग। शलाप।

तानाशाह—सज्ञा पु० [फा०] १ अपने अधिकारों का मनमाना प्रयोग करनेवाला। २ राज्य का प्रधान जिसके अधीन सारी राज्य-व्यवस्था हो।

तानाशाही—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ अधिकारों का मनमाना उपयोग। २ वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सारा अधिकार एक ही आदमी के हाथ में हो।

तानी—सज्ञा स्त्री० कपड़े की बुनावट में लवाई के बल के सूत।

तानूर—सज्ञा पु० भेंवर।

तान्त्रिक—सज्ञा पु० तन्त्र विद्या जाननेवाला।

तान्य—सज्ञा पु० पुत्र।

ताप—सज्ञा पु० १ उष्णता। गरमी। २ आँच। लपट। ३ ज्वर। बुलार। ४ कष्ट। दुःख। पीडा। ताप तीन प्रकार का माना गया है—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक। ५ मानसिक कष्ट। हृदय का दुःख।

तापक—सज्ञा पु० १ ताप उत्पन्न करनेवाला।

२ रजोगुण। ३ ज्वर। बुलार।

तापचालक—सज्ञा पु० वह पदार्थ, जिसमें ताप

एक सिरे से चलकर दूसरे सिरे तक पहुँच सकता हो, जैसे धातु।

तापचालकता-सज्ञा स्त्री० पदार्थों का वह गुण, जिससे गर्मी या ताप उनके एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँचता हो।

तापतिल्लो-सज्ञा स्त्री० पिलही बढ़ने का रोग। प्लीहा रोग।

तापती या ताप्ती-सज्ञा स्त्री० १. सूर्य की कन्या तापी। २ एक नदी जो सतपुड़ा पहाड़ से निकलती है।

तापत्रय-सज्ञा पु० तीन प्रकार के ताप। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधि-भौतिक।

तापन-सज्ञा पु० १ ताप देनेवाला। २ सूर्य। ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ४. सूर्यकांत मणि। ५ मदार। ६ शत्रु

को पीड़ा पहुँचाने की एक विधि (तंत्र)। तापना-क्रि० अ० आग के सामने गरमाना। देह सेंकना।

त्रि० स० १ गरम करने के लिए जलाना। फूँटना। २ नष्ट करना। तपाना। गरम करना।

तापमान यत्र-सज्ञा पु० थर्मामीटर। गरमी मापने का एक औजार।

तापस-सज्ञा पु० [स्त्री० तापसी] १ तप करनेवाला। तपस्वी। योगी। २ बगला। दमनक। ३ तेजपत्ता। तमाल।

तापसन्ध, तापसद्रुम-सज्ञा पु० इगुदी वृक्ष। हिगोट।

तापसी-सज्ञा स्त्री० १ तपस्या करनेवाली स्त्री। २ तपस्वी की स्त्री।

तापस्वेद-सज्ञा पु० गर्मी पहुँचाकर उत्पन्न किया हुआ पसीना।

तापहीन-वि० जिनमें गर्मी न हो। दुग या पीडा-रहित।

तापा-सज्ञा पु० मुर्गी का दग्धा।

तापिच्छ-सज्ञा पु० दयाम तमाल का पेड़। तापित-वि० १ जो तपाया गया हो। २ दुःखित। पीडित।

तापी-वि० १. ताप देनेवाला। २ जिनमें ताप हो।

सज्ञा पु० बुद्धदेव।

सज्ञा स्त्री० १ सूर्य की एक कन्या। २. ताप्ती नदी। ३ यमुना नदी।

तापीय या ताप्य-सज्ञा पु० ओषध-विशेष।

तापुस-सज्ञा पु० तमालपत्र। तेजपात।

तापुन्ध-सज्ञा पु० सूर्य।

तापुता-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।

ताव-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ ताप। गरमी।

२ चमक। आभा। ३ मजाल। हिम्मत। सामर्थ्य। ४ धैर्य। सहनशक्ति।

तावडतोड़-क्रि० वि० [अनु०] लगातार। बराबर।

तावा-वि० दे० "तावे"।

तावूत-सज्ञा पु० [अ०] लाश रखकर ले जाने का सन्दूक।

तावे-वि० [अ०] १ वशीभूत। अधीन। मातहत। २ आज्ञाकारी। हुक्म का पाबद।

तावेदार-वि० [सज्ञा तावेदारी] सेवक।

नीकर। आज्ञाकारी। हुक्म का पाबद।

तावेदारी-सज्ञा स्त्री० नीकरी।

ताम-सज्ञा पु० १ दोष। विकार। २. व्याकुलता। बेचैनी। ३ दुःख। चलेरा।

ग्लानि। ४ क्रोध। गुस्सा। ५ अधिकार। अँधेरा।

वि० १ भोषण। डरावना। भयकर। २ व्याकुल। हिरान।

तामजान-सज्ञा पु० एक प्रकार की छोटी पालवी।

तामड़ा-वि० ताँपे के रंग का। ललाई लिये हुए भूरा।

तामना-क्रि० स० जोतने के पूर्व गेन की घान उगाटना।

तामर-सज्ञा पु० पानी। धी।

तामरस-सज्ञा पु० १ यमरु। २ तारा। ३ ताँबा। ४ धतूरा। ५ एक वर्णवृत्त।

तामरात्री-सज्ञा पु० १ भूमिना। २ आँकड़ा। एक प्रकार का पोषा।

तामरुष या ताम्रलिप्ति-सज्ञा पु० बगल का एक प्राचीन कदम्पात्र, जो भिदनीपुत्र क्रि० में है।

तामलेट—संज्ञा पुं० टीन का गिलाग या बरतन।  
तामस—वि० तमोगुण से युक्त।

सज्ञा पुं० १. सप। माँप। २. खल। ३. उल्लू। ४. क्रोध। गुस्सा। ५. अंधकार। अंधेरा। ६. अज्ञान। मोह।

तामसी—वि० स्त्री० तमोगुणवाली।

सज्ञा स्त्री० १. अंधेरी रात। २. महाकाली।  
३. एक प्रकार की भाषा विद्या।  
तामिल—संज्ञा स्त्री० १. दक्षिण भारत की एक जाति। २. तामिल लोगों की भाषा। द्राविड भाषा।

तामिल—सज्ञा पुं० १. क्रोध। २. द्वेष। ३. अविद्या। ४. अन्धकारमय नरक-विशेष।

तामी—सज्ञा स्त्री० द्रव पदार्थों की नापने का एक बरतन।

तामीर—सज्ञा स्त्री० [अ०] (बहु० तामी-रात)। इमारत बनाने का नाम। भवन-निर्माण।

तामीरात मंत्री—सज्ञा पुं० निर्माण-मंत्री। राज्य का वह मंत्री जिसके अधीन सरकारी भवनों, सड़कों आदि का निर्माण कार्य हो।

तामीरात विभाग—सज्ञा पुं० निर्माण विभाग। राज्य का वह विभाग या दफ्तर, जिसके अधीन इमारतों, सड़कों आदि वस्तुओं के बनने का कार्य हो।

तामील—सज्ञा स्त्री० [अ०] आज्ञा-पालन।

तामिसरी—सज्ञा स्त्री० ताँबे के रंग का एक रंग।

ताम्र—सज्ञा पुं० ताँबा।

ताम्रक—सज्ञा पुं० ताँबा।

ताम्रकर—सज्ञा पुं० कसेरा। छेरा। ताँबे का व्यापार करनेवाला।

ताम्रकर्णी—सज्ञा स्त्री० ताँबे के बरतन बनाने-वाला।

ताम्रकूट—सज्ञा पुं० तम्बाकू का पीघा।

ताम्रगर्भ—सज्ञा पुं० तूतिया। नीला शोया।

ताम्रचूड़—सज्ञा पुं० सुर्मा। कुक्कुट। कुत्तरीवा।

ताम्रपत्र—सज्ञा पुं० ताँबे की चद्दर का वह टुकड़ा जिस पर प्राचीन काल में राजाज्ञा या दानपत्र आदि लिखते थे। ताँबे की चद्दर या उसका टुकड़ा।

ताम्रपर्णी—सज्ञा स्त्री० १. घायली। तालाब। २. महरास की एक छोटी नदी।

ताम्रयुग—सज्ञा पुं० किसी देश या जाति के इतिहास का वह समय जब कि वह पहले पहल ताँबे आदि धातुओं का व्यवहार करने लगी थी। पुरातत्व के अनुसार यह युग प्रस्तरयुग के बाद और लौह-युग के पहले पड़ा है।

ताम्रलिप्त—सज्ञा पुं० मेदिनीपुर (बंगाल) जिले के तमलूक नामक स्थान का प्राचीन नाम।

ताम्र\*—सज्ञा पुं० १. ताँब। गरमी। २. जलन। ३. धूप।

सर्व० दे० "ताहि"।

ताम्रदाब\*—सज्ञा स्त्री० दे० "तादाब"।

ताम्रका—सज्ञा पुं०, स्त्री० [फा०] १. बेर्याओं और समाजियों की मडली। २. बेर्या।

ताम्रना\*—क्रि० सं० तपाना। गरम करना।

ताम्रा—सज्ञा पुं० [स्त्री० ताई] पिता का बड़ा भाई। बड़ा चाचा।

क्रि० सं० तपाया हुआ। गरम किया हुआ।

तार—सज्ञा पुं० १. चाँदी। २. तपी हुई धातु को पीट और खींचकर बनाया हुआ तामा। धातु-तनु। ३. बिजली का तार। टेलिग्राफ।

तार से आई हुई खबर। ४. सूत। तामा। ५. बराबर चलता हुआ क्रम। अखंड परंपरा। सिलसिला। ६. सुधीता। व्यवस्था। ठीक माप। कार्यसिद्धि का योग। युक्ति। ढब। ७. प्रणव। अंतर। ८. शिव। ९. विष्णु। १०. नक्षत्र। ११. आँख की पुतली। १२. संगीत में एक तन्त्रक। एक वर्णवृत्त। ताल। १३. मजीरा। करताल नामक वाजा। १४. तल। सतह। १५. कान का एक गहना। तार्टक। तरौना। वि० निर्मल। स्वच्छ।

मुहा०—तार तार करना=सूत सूत अलग करना। तार बंधना=सिलसिला जारी होना।

तारक—सज्ञा पुं० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. असुर जिसे वासि-केय ने मारा था। दे० "तारकामुर"। ५.

तारक—सज्ञा पुं० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. असुर जिसे वासि-केय ने मारा था। दे० "तारकामुर"। ५.

तारक—सज्ञा पुं० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. असुर जिसे वासि-केय ने मारा था। दे० "तारकामुर"। ५.

तारक—सज्ञा पुं० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. असुर जिसे वासि-केय ने मारा था। दे० "तारकामुर"। ५.

तारक—सज्ञा पुं० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. असुर जिसे वासि-केय ने मारा था। दे० "तारकामुर"। ५.

तारक—सज्ञा पुं० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. असुर जिसे वासि-केय ने मारा था। दे० "तारकामुर"। ५.

तारक—सज्ञा पुं० १. नक्षत्र। तारा। २. आँख। ३. आँख की पुतली। ४. असुर जिसे वासि-केय ने मारा था। दे० "तारकामुर"। ५.

'ओ रामाय नमः' यह मंत्र । ६. उद्धार करने-  
वाला । ७. भवसागर से पार करनेवाला ।  
८ एक प्रकार का वर्णवृत्त ।

तार-कमानो-सज्ञा स्त्री० धनुष के आकार का  
एक औजार ।

तारकश-सज्ञा पु० धातु का तार खींचनेवाला ।

तारका-सज्ञा स्त्री० १. नक्षत्र । तारा । २.  
आँख की पुतली । ३. एक प्रकार का छद ।

४. बालि की स्त्री तारा ।

\*दे० "ताडका" ।

तारकासुर-सज्ञा पु० एक असुर जिसको  
मारने के लिए शिव को पार्वती से विवाह  
करके कात्तिकेय को उत्पन्न करना पड़ा था ।

तारकिणी-वि० तारों से भरी ।

सज्ञा स्त्री० रात ।

तारकित-वि० नक्षत्रों से भरा हुआ ।

तारकी-वि० तारायुक्त । तारा-सहित ।

तारकूट-सज्ञा पु० चाँदी और पीतल के  
योग से बनी एक धातु ।

तारकेश-सज्ञा पु० चंद्रमा (तारिकाओं के  
स्वामी) ।

तारकेश्वर-सज्ञा पु० १. शिव । महादेव ।  
२. इस नाम का तीर्थ-विशेष जो बंगाल  
में है ।

तारकोल-सज्ञा पु० दे० "अलकतरा" ।

तारघर-सज्ञा पु० वह स्थान जहाँ से तार  
की खबर भेजी या प्राप्त की जाय ।

तार-घाट-सज्ञा पु० व्यवस्था । आयोजन ।  
प्रयोजन-सिद्धि का साधन ।

तारण-सज्ञा पु० १ पार उतारने का कार्य  
२. उद्धार । ३. उद्धार करनेवाला । तारने-  
वाला । ४. विष्णु ।

तारतम्य-सज्ञा पु० [ वि० तारतम्यिक ]  
१. एक दूसरे से कमी-बढ़ी का. हिसाब ।  
न्यूनाधिक्य । २. तरतीब । ३. गुण, परि-  
माण आदि का परस्पर मिलान ।

तारतार-वि० कटा-कटा ।

तारतोड़-सज्ञा पु० कारखोयी (कसीदा)  
का काम ।

तारन-सज्ञा पु० दे० "तारण" । छत की  
ढाल ।

तारना-क्रि० स० १. पार लगाना । पार  
करना । २. संसार के क्लेश आदि से छुड़ाना ।  
शुद्धि देना ।

तारपीन-सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] चीड़ के पेड़  
से निकला हुआ तेल जो प्रायः औषध के  
का में आता है ।

तारवर्क-सज्ञा पु० विजली का शाक्त-द्वारा  
समाचार पहुँचानेवाला तार ।

तारल्य-सज्ञा पु० १ तरल या प्रवाहशील  
होने का गुण । द्रवत्व । २. चच-  
लता ।

तारा-सज्ञा पु० १. नक्षत्र । सितारा । २.  
आँख की पुतली । ३. भाग्य । किस्मत ।  
४ दे० "ताला" ।

सज्ञा स्त्री० १ दस महाविद्याओं में से एक ।  
२ बृहस्पति की स्त्री । ३. बालि की  
स्त्री और सुषेण की कन्या ।

सृष्टा-तारे गिनना=चिन्ता या प्रतीक्षा में  
बैठने से रात काटना । तारा टूटना=  
चमकते हुए पिंड का आकाश से पृथ्वी पर  
गिरते हुए दिखाई पड़ना । उल्कापात होना ।  
तारा डूबना=शुरू का अस्त होना । तारे  
तोड़ लाना=असाध्य काम करना । तारों  
की छाँह=बड़े सबेरे । तडके ।

तारामण-सज्ञा पु० नक्षत्र-समुदाय । नक्षत्रों  
का समूह ।

तारामह-सज्ञा पु० मंगल, बुध, गुरु, शुरु  
और शनि ये पाँच ग्रह ।

ताराज-सज्ञा पु० [ फा० ] १. लूट-पाट ।  
२. नाश । ध्वंस । बरबादी ।

ताराधिप-सज्ञा पु० १ चंद्रमा । २. शिव ।  
३. बृहस्पति ।

ताराधीश-सज्ञा पु० दे० "ताराधिप" ।

तारापय-सज्ञा पु० आकाश ।

तारापीड-सज्ञा पु० चंद्रमा ।

ताराभ-सज्ञा पु० नारद ।

ताराभ-सज्ञा पु० नभूर ।

तारामण्डल-सज्ञा पु० नक्षत्रों का समूह या  
घेरा ।

तारामण-सज्ञा पु० आकाश ।

तारिका\*-सज्ञा स्त्री० दे० "तारका" ।

तारिणी-वि० वारनेवाली । उद्धार करने-वाली ।

संज्ञा स्त्री० तारा देवी ।

तारो\*†-संज्ञा स्त्री० १. दे० "ताली" । २. दे० "ताड़ी" ।

तारीक-वि० [फा०] [संज्ञा तारीकी] १. स्पष्ट । काला । २. धुंधला । अंधेरा ।

तारोख-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. तिथि । दिन । दिवस । २. दिनांक । ३. निश्चित तिथि । किसी कार्य के लिए निश्चित दिन ।

मुहा०-तारोख डालना=तारीख मुकरंर करना । दिन निश्चित करना ।

तारोफ-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. परिचय । २. परिभाषा । ३. वर्णन । विवरण । ४. बखान । प्रशंसा । श्लाघा । ५. विशेषता । गुण ।

तारण्य-संज्ञा पुं० यौवन । जवान्नी ।

तारेज-संज्ञा पुं० चन्द्रमा । ताराओं के ईश या स्वामी ।

ताकि-संज्ञा पुं० १. तर्कशास्त्र का जानने-वाला । २. तर्कवेत्ता । दार्शनिक ।

ताक्य-संज्ञा पुं० १. गहँड । २. घोड़ा । ३. सपे । ४. रसाजन । ५. महादेव । ६. सोना । ७. रथ ।

ताल-संज्ञा पुं० १. हथेली । २. कर-तलध्वनि । ३. ताली बजाने का शब्द । नृत्य या संगीत में समय और गति का परिमाण । ४. भुजा या जाँघ ठोकने का शब्द । ५. मंजीरा । शक्ति । ६. चश्मे के पत्थर या काँच का एक पल्ला । ७. हरताल । ८. ताड़ का पेड़ या फल । ९. ताला । १०. तन्वार की मूठ । ११. विंगल में लगन का दूसरा भेद । १२. ताला । पौखरा । मुहा०-ताल बेवाल=१. जिसका ताल ठिकाने से न हो । २. अवसर या बिना अवसर । ताल ठोकना=लड़ने के लिए लड़कारना ।

तालक\*†-संज्ञा पुं० दे० १. "तल्लुक" । २. हरताल । ३. ताला । ४. गौरीचन्दन ।

तालकूटा-संज्ञा पुं० शक्ति बजाकर भजन करनेवाला ।

तालकेतु-संज्ञा पुं० ताड़ के चिह्न की ध्वजा वाले । १. भीष्म । २. बलराम ।

तालजंघ-संज्ञा पुं० १. एक प्राचीन देश । २. इस देश का निवासी ।

तालध्वज-संज्ञा पुं० दे० "तालकेतु" ।

तालपर्णी-संज्ञा स्त्री० १. सौंफ । २. ब्रूर कचरी । ३. तालमूली । मुसली । ४. गोमा नाम का साग ।

तालबंद-संज्ञा पुं० वह लेखा जिसमें आमदनी की हर एक मद दिखाई गई हो ।

ताल-बैताल-संज्ञा पुं० दो देवता या यक्ष ।

ताल मपाना-संज्ञा पुं० १. एक पीछा । २. दे० "मवाना" ।

तालमूली-संज्ञा स्त्री० मुसली ।

तालमेल-संज्ञा पुं० १. ताल-मुर का मिलान । २. उपयुक्त योजना । ठीक-ठीक संयोग । ३. उपयुक्त अवसर ।

तालरंग-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बाजा ।

तालरस-संज्ञा पुं० ताड़ के पेड़ का मद्य । ताड़ी ।

तालवन-संज्ञा पुं० १. ताड़ के पेड़ों का जंगल । २. व्रज का एक वन ।

तालवाही-वि० वह बाजा जिसमें ताल दिया जाय ।

तालव्य-वि० १. ताल-संबंधी । २. ताल से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण । जैसे—च, छ, य, श आदि ।

तालांक-संज्ञा पुं० १. बलराम । २. एक साग । ३. आरा । ४. पुस्तक । ५. महादेव । ६. शुभ लगनवान् पुरुष ।

ताला-संज्ञा पुं० दरवाजा या सड़क आदि बन्द रखने के लिए लोहे, पीतल आदि का बना हुआ यंत्र जो बिना कुजी के नहीं खुलता । कुल्फ ।

मुहा०-ताला तोड़ना—किसी दूसरे की वस्तु को चुराने के लिए उसके ताले को तोड़ना ।

तालाब-संज्ञा पुं० जलाशय । सरोवर । पोखरा ।

तालिक-संज्ञा पुं० १. तमाचा । चपत । फौली हुई हथेली । २. कागज का पुलिदा । नत्थी ।

तालिका-सज्ञा स्त्री० १. ताली। कुजी।  
२. नत्थी या तागा जिससे कागज बंधे हो।  
३. सूची। फेहरिस्त। ४. मजीठ। ५. मुसली।  
६. तमाचा।

तालिव-सज्ञा पुं० [अ०] १. ढूँढनेवाला।  
तल्ला करनेवाला। २. चाहनेवाला।

तालिव ह्म-सज्ञा पुं० [अ०] विद्यार्थी।

तालिम-सज्ञा स्त्री०-बिस्तर।

ताली-सज्ञा स्त्री० १. ताला खोलने या बन्द  
करने की कील। कुजी। चाबी। २. ताडी।  
ताड का मद्य। ३. तालमूली। मुसली।  
४. एक वर्णवृत्त। ५. मेहराब के बीचो-  
बीच का पत्थर या ईंट। ६. दोनों हथेलियों  
के बजाने का शब्द। करतल-ध्वनि। ९.  
छोटा ताल। तलैया। गडही।

मुहा०-ताली पीटना या बजाना=हँसी  
उड़ाना। उपहास करना। एक हाथ-से  
ताली बजाना=अनहोनी बात करना।  
असम्भव।

तालीम-सज्ञा स्त्री० [अ०] शिक्षा। पढ़ाई।  
उपदेश। अध्ययन।

तालीपत्र-सज्ञा पुं० १. एक पेड़। २. एक  
पीया। इसकी सूखी पत्तियाँ दवा के काम  
में आती हैं। पनियाँ जविला।

तालु-सज्ञा पुं० ताल।

तालुका-सज्ञा पुं० दे० "तालुका"। १. ताल  
की नाडी। २. जमींदारी की भूमि। गाँव।  
कई गाँवों का समूह। वस्ती।

तालु या तालु-सज्ञा पुं० १. मुँह के भीतर का  
ऊपरी भाग। मूँडा। तालुज। २. थोड़ा का  
एक ऐव।

मुहा०-तालु में दाँत जमना=दूरे दिन आना।  
तालु से जीम न लगना=घुपचाप न रहा  
जाना। बके जाना।

तालेवर-वि० धनी। मालदार।

ताल्लक-सज्ञा पुं० दे० "ताल्लक"। सम्बन्ध।  
ताल्लका-सज्ञा पुं० [अ०] वटा इलाना।  
कई गाँवों का समूह।

ताल्लवेदार-सज्ञा पुं० किसी ताल्लके का  
मालिक।

ताव-सज्ञा पुं० १. गरमी। ताप। किसी वस्तु

को गरम करने या पकाने के लिए पहुँचाई  
जानेवाली गरमी। २. अहंकारयुक्त क्रोध।  
आवेश। ऐठ। अकड। शोसी। ३. हडबडी।  
उतावलापन। शीघ्रता। ४. कागज का  
तस्ता। ४. परख। परीक्षा। ५. सन्ताप।

मुहा०-(किसी वस्तु में) ताव आना=  
जितना चाहिए, उतना गरम हो जाना।  
जोश आना। ताव खाना=आँच पर गरम  
होना। जोश में आना। ताव देना=आँच  
पर रखना। गरम करना। ऐँटना। मूँछों पर  
ताव देना=पराक्रम, बल आदि के घमंड में  
मूँछों पर हाथ फेरना। ताव दिखाना=  
अभिमान-युक्त क्रोध प्रकट करना। ताव  
में आना=अभिमान मिले हुए क्रोध के  
आवेग में होना। ताव चढ़ना=प्रबल इच्छा  
होना।

तावत-कि० वि० १. उतनी देर तक। तब  
तक। २. उतनी दूर तक। वहाँ तक।  
"यावत्" का सर्वप्रथम।

तावना-वि० कि० स० १. तपाना। गरम करना।  
२. जलाना। ३. दुख पहुँचाना।

ताव-भाव-सज्ञा पुं० उपयुक्त अवसर। मौका।  
परिस्थिति।

वि० थोड़ा-सा। हल्का-सा।

तावर या तावरी-सज्ञा स्त्री० १. ताप। दाह।  
जलन। २. धूप। घाम। ३. बुखार। ज्वर।  
हृत्तरत। ४. मूर्च्छा। चक्कर।

तावरी-सज्ञा पुं० दे० "तावरी"।

तावल-सज्ञा स्त्री० जल्दी।

तावा-सज्ञा पुं० तवा।

तावान-सज्ञा पुं० [फा०] वह चीज जो नुकसान  
पूरा करने के लिए दी जाय। बट। बड।  
ताबिपी-सज्ञा स्त्री० नदी। देवगम्या। पृथ्वी।

ताबीज-सज्ञा पुं० [अ०] १. यज्ञ, मंत्र या  
कवच जो किसी सपुट के भीतर रखकर  
पैहना जाय। २. घातु का चौकोर, गोल या  
अठपहला सपुट जिसे तागे में लगाकर गले या  
बाँह पर पहनते हैं। जंतर।

ताश-सज्ञा पुं० [अ०] १. एक प्रकार का वपदा।  
जरबपत। बूटेदार पट्ट। २. खेल के पत्ते।  
खेलने के लिए मोटे कागज के टुकड़े जिन पर

रंगों की बड़िया या लम्बाई रंगी जाती है।  
 गजाल। घान का खेल। २. छोटी। दवाई।  
 त्रिग पर गले का घागा लपेटा रहता है।  
 तागा-गंगा पु० [अ०] एक प्रकार का बाजा।  
 तामीर-गंगा स्त्री० [अ०] अमर। प्रभाव।  
 तामु†-गव० उगमा।  
 तामु†-गई० दे० "तागा"। उगमे।  
 तामु†-गव० उगमे।  
 तारगुय-गंगा पु० [अ०] धार्मिक पक्षपात  
 या मद्दतपन। पक्षपात।  
 ताहम-अव्य० [फा०] तो भी। दखना होने  
 पर भी। तथापि।  
 ताहि†-गव० उगमा। उमे।  
 ताही†-अव्य० दे० "ताई", "तई"।  
 तितितो, तितितोका-गंगा स्त्री० दमनी।  
 तितु-गंगा पु० तेंदू।  
 तिवुक-गंगा पु० दो तीला। तेंदू का पेड़।  
 तिशा-गंगा स्त्री० दे० "तिषा"।  
 तिआहा†-गंगा पु० १. तीसरा विवाह। २.  
 वह पुरुष जिसका तीसरा ब्याह हो रहा हो।  
 तिबडम-गंगा पु० चाल। सरकोब। युक्ति।  
 तिबडमो-गंगा पु० चाल से अपना काम  
 निबालनेवाला। चालबाज। धूर्त।  
 तिकड़ा-गंगा पु० एक साथ बुनी हुई तीन  
 धोखियाँ।  
 तिबड़ी-गंगा स्त्री० १. तीन बड़ियाँवाला।  
 २. चारपाई की वह बुनावट जिसमें तीन  
 रस्मियाँ एक साथ हों।  
 तिको†-वि० दे० "तिकोता"।  
 तिकोना-वि० त्रिकोण। जिसमें तीन कोने  
 हों। तीन कोनों का।  
 सज्ञा पु० समोसा नाम का पकवान।  
 तिकोतिषा-वि० दे० "तिकोना"।  
 तिषका†-गंगा पु० [फा०] मास की बोटी।  
 लीप।  
 तिषकी-गंगा स्त्री० तास का वह पत्ता जिस  
 पर तीन बूटियाँ हों।  
 तिषल†-वि० १. तीखा। चोखा। तेज।  
 २. तीव्रबुद्धि। चालाक।  
 तिषत-वि० तीता। कड़ा।  
 तिषतक-गंगा पु० १. चिरायता। २. काला

काला। ३. दगुदी। ४. मांग। ५. मुट्ठा।  
 तिषता-गंगा स्त्री० तिवार। बटुआपन।  
 तिषतपातु-गंगा स्त्री० शरीर की एक पातु-  
 विनोप। पित्त।  
 तिषितका-गंगा स्त्री० १. मुट्ठी। २. त्रि-  
 लोकी। बटुमुर्गी।  
 तिष†-वि० १. तीक्ष्ण। तेज। २. चोखा।  
 पेना।  
 तिषता†-गंगा स्त्री० तेजी। तीव्रपन।  
 तिषटी†-गंगा स्त्री० दे० "टिषटी"।  
 तिषाई-गंगा स्त्री० तीव्रपन।  
 तिषारना†-क्रि० अ० १. कोई बात पक्की  
 करने के लिए कई बार कहना या कहलाना।  
 तीन बार पूछना या कहना। २. परगना।  
 दो बार जिते हुए सेव को जीतना।  
 तिषूटा-वि० जिसमें तीन कोने हों। त्रिकोना।  
 तिगुन या तिगुना-वि० तीन बार अधिक।  
 तीन गुना।  
 तिग्म-वि० मरा। तीखा। तीक्ष्ण। तेज।  
 गंगा पु० १. वज्र। २. पिम्पली।  
 तिग्मता-गंगा स्त्री० तीक्ष्णता। तीव्रपन।  
 तिग्ममन्यु-गंगा पु० गिवजी। महादेव।  
 तिग्मानु-गंगा पु० सूर्य। रवि। नानु।  
 तिच्छ†-वि० दे० "तीक्ष्ण"।  
 तिच्छन†-वि० दे० "तीक्ष्ण"।  
 तिजरा-गंगा पु० दे० "तिजारी"। हर तीसरे  
 दिन आनेवाला वृत्तार।  
 तिजहरी या तिजहरिया-गंगा पु० तीसरा  
 पहर।  
 तिजारत-गंगा स्त्री० [अ०] बाणिज्य।  
 व्यापार। रोजगार। सौदागरी।  
 तिजारी-गंगा स्त्री० हर तीसरे दिन जाड़ा  
 देकर आनेवाला ज्वर।  
 तिजोरी-गंगा स्त्री० लोहे का सन्दूक या  
 छोटी अलमारी जिसमें रुपये आदि रखे  
 जाते हैं।  
 तिड़ी-गंगा स्त्री० दे० "तिकी"।  
 तिड़ी-घिड़ी†-वि० तितर-वितर। छितराया  
 हुआ।  
 तित†-क्रि० वि० १. वहाँ। वहाँ। २. उधर।  
 उस ओर।

तितना†-क्रि० वि० दे० "उतना"।  
 तितर-वितर-वि० १ छितराया हुआ। बिखरा हुआ। २ अव्यवस्थित। अस्त-व्यस्त।  
 तितली-सज्ञा स्त्री० १ एक उड़नेवाला रंग-विरंग का सुंदर कीड़ा जो प्रायः फूलों पर बैठता है। २ एक प्रकार की घास।  
 तितलीकी†-सज्ञा स्त्री० कटुतुषी। कड़ुवा कटु।

तितारा-सज्ञा पु० सितार की तरह का एक बाजा जिसमें तीन तार लगे रहते हैं।  
 वि० जिसमें तीन तार हों।

तितिबा-सज्ञा पु० १ ढकोसला। २ शेष।  
 ३ परिशिष्ट। उपसहार।

तितिक्ष-वि० सहनशील।  
 तितिक्षा-सज्ञा स्त्री० १ सरसि, गरमी आदि सहने की सामर्थ्य। सहिष्णुता। २ क्षमा। क्षाति।

तितीर्षा-सज्ञा स्त्री० तरने या तंरने की इच्छा।  
 ससार से मुक्ति पाने की इच्छा।  
 तितीर्षु-वि० तंरने या तरने की इच्छा रखने-वाला।

तितित्मा-सज्ञा पु० [अ०] १ बचा हुआ भाग। २ परिशिष्ट। उपसहार।

तिते\*†-वि० उतने।  
 तितेव\*†-वि० उतना।  
 तित†-क्रि० वि० १ वहाँ या वही। २ उपर।

तितो\*†-वि०, क्रि० वि० उतना।  
 तितरि-सज्ञा पु० १ तीतर पक्षी। २ यजुर्वेद की एक शाखा। तैत्तिरीय। ३ यास्व मुनि के शिष्य जिन्होंने तैत्तिरीय शाखा बलाई थी।  
 तिय-सज्ञा पु० १ वर्षा। २ आग। ३ कामदेव।

तिथि-सज्ञा स्त्री० १ मिति। तारीख।  
 दिनांक। (प्रत्येक पक्ष में १५ तिथियाँ होती हैं।) २ पद्धति की समस्या।

तिथिधन-सज्ञा पु० तिगो तिथि का गिनती में न आना। तिगो तिथि की हानि (ज्यो-तिष)।

तिथिपत्र-सज्ञा पु० पत्र। पत्राण। जर्नी।  
 तितरी-सज्ञा स्त्री० तीन द्वार का दान

या बैठक। वह कोठरी जिसमें तीन खिड़कियाँ या दरवाजे हों।

तिथर†-क्रि० वि० दे० "उधर"।  
 तिथारा-सज्ञा पु० १ पौधा-विशेष (सेहुड़)।  
 तीन धारे का। २ सगम। ३ तीन पारवाला।  
 तिन†-सर्व० 'तिस' का बहुवचन।  
 सज्ञा पु० तिनका। तृण।

तिनकना-क्रि० अ० चिड़चिड़ाना। चिड़ना।  
 झल्लाना। नाराज होना।

तिनका-सज्ञा पु० सूखी घास या झाँड़ी का टुकड़ा। तृण। खर।

मुहा०-तिनका दाँतो में पकड़ना या लेना= क्षमा या कृपा के लिए दीनतापूर्वक बिनय करना। गिड़गिड़ाना। तिनका तोड़ना= १ सवध तोड़ना। २ बलैया लेना। तिनके का सहारा= घोडा-सा सहारा। तिनके को पहाड़ करना= छोटी बात को बड़ी कर डालना।

तिनगना-क्रि० अ० दे० "तिनगना"।  
 तिनगरी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पक्वान्न।  
 तिनपहला-वि० जिसमें तीन पहल या पार्श्व हों।

तिनिश या तिनस-सज्ञा पु० एक पेट। तिनास।  
 तिनमुना।

तिनुका\*†-सज्ञा पु० दे० "तिनका"।  
 तिन्ना-सज्ञा पु० १ एक वर्णवृत्त। २ रोटी के साथ खाने की रसदार वस्तु। ३ एक प्रकार का धान।

तिन्नी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का धान।  
 २ नीनी। फुफुँदी।

तिन्हा†-सर्व० दे० "तिन"।  
 तिपति\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "तुप्ति"।

तिपल्ला-वि० १ जिसमें तीन पल्ले हों।  
 २ जिसमें तीन तार हों।

तिपाई-सज्ञा स्त्री० १ तीन पाया की चौकी। तिगोटिया। २ टिकटी।

तिपाट-सज्ञा पु० १ तीन पाट जोन्तर बाँधा हुआ। २ जिसमें तीन पल्ले हों।

तिबारा-वि० १ तीसरी बार का। २ त्रिगुणित।

सज्ञा पु० १. तीन बार गीता हुआ गण।  
 २. तीसरी बार का घर या मकान।

तिबासी-वि० तीन दिन का बासी (साध पदार्थ) ।

तिब्ब-सज्ञा स्त्री० यूनानी चिकित्साशास्त्र ।  
तिब्बत-गज्ञा पु० हिमालय पर्वत के उत्तर का एक देश ।

तिब्बनी-वि० तिब्बत का । तिब्बत में उत्पन्न ।  
सज्ञा स्त्री० तिब्बत की भाषा ।

गज्ञा पु० तिब्बत का रहनेवाला ।  
तिमजिला-वि० [स्त्री० तिमजिली] तीन सटी का ।

तिमाना-त्रि० स० भिगोना । तर करना ।  
तिमिगिल-सज्ञा पु० १ मछली के आकार का एक बड़ा भारी सामुद्रिक जन्तु । २ एक द्वीप का नाम ।

तिमि-सज्ञा पु० १ मछली के आकार का एक बड़ा भारी सामुद्रिक जन्तु । एक बड़ी मछली । २ समुद्र ३ रतौंधी का रोग जिसमें रात को दिखाई नहीं देता

\*अव्य० उस प्रकार । वैसे ।  
तिमित-वि० अचल

तिमिर-सज्ञा पु० अघकार । अंधेरा ।  
तिमिररिपु-सज्ञा पु० सूर्य ।

तिमिप-सज्ञा पु० १ ककड़ी । फूट । २ पेट । ३ तरबूज ।

तिमिरहर-सज्ञा पु० १ सूर्य । २ अग्नि । चन्द्रमा ।

तिमिरारि-सज्ञा पु० सूर्य ।  
तमिरारी\*-सज्ञा स्त्री० अघकार का समूह । अंधेरा ।

तिमिरावलि-सज्ञा स्त्री० अघकार का समूह ।  
तिमीर-सज्ञा पु० एक पेट ।

तिमुहानी-सज्ञा स्त्री० वह स्थान जहाँ तीन ओर के मार्ग आकर मिलते हो । तिरमुहानी ।

वह स्थान जहाँ तीन नदियाँ मिली हो ।  
तिय\*-सज्ञा स्त्री० १ स्त्री । औरत । २ फली ।

तियला-सज्ञा पु० त्रिपा का एक पहनावा ।  
तिया-सज्ञा पु० तिकी । तिडी ।

\*सज्ञा स्त्री० दे० "तिय" । स्त्री ।  
तिरकना-क्रि० अ० १ फट जाना । टडकना ।

२ बाल सफेद होना ।  
तिरकस-वि० टेढ़ा ।

तिरकुटा-गज्ञा पु० साठ, मिचं, पीपल से बनी हुई औषध ।

तिरला\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "तृपा" ।  
तिरलित\*-वि० दे० "तृपित" ।

तिरकुटा-वि० जिममें तीन सूट या काने हों ।  
विगाना ।

तिरछई†-सज्ञा स्त्री० तिरछापन ।  
तिरछा-वि० १ टेढ़ा । बाँका । वक्र । २ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा ।

यो०-—बाँका-तिरछा=छवीला ।  
मुहा०-—तिरछी चितवन या नजर=बर्न-तिया से देखना । तिरछी बात या बचन=

बटु वाक्य । अप्रिय शब्द ।  
तिरछई†-सज्ञा स्त्री० तिरछापन ।

तिरछाना-त्रि० अ० तिरछा होना ।  
तिरछापन-सज्ञा पु० तिरछा होने का भाव ।

तिरछोहँ-वि० जो कुछ तिरछापन लिये हो । कुछ टेढ़ा । कुछ-कुछ तिरछा ।

तिरछोहँ-क्रि० वि० तिरछेपन के साथ ।  
बकटा से ।

तिरतिराना-क्रि० अ० बूँद-बूँद करके टपकाना ।  
तिरना-क्रि० अ० १ पानी में न डूबकर

सतह के ऊपर रहना । छवराना । २ तरना ।  
पंरना । ३ पार होना । ४ तरना । मुक्त होना ।

तिरनी-सज्ञा स्त्री० १ घाघरी बांधने की डोरी । नीनी । विनी । २ साडी का वह भाग जो नाभि के नीचे पड़ता है ।

तिरप-सज्ञा स्त्री० १ नृत्य में एक प्रकार की गति । २ तिहाई ।

तिरपटी-वि० १ तिरछा । टेढ़ा । २ मुत्तिल ।  
गठिन ।

तिरपटा-वि० एँचाताना ।  
तिरपन-वि० पचास और तीन की सख्या ।

तिरपाई-सज्ञा स्त्री० तीन पाया की ऊँची चौकी । स्टूल ।

तिरपाल-सज्ञा पु० १ फूस या सरकडो का छाजन । मुद्दा । २ रोगन चढ़ा वनवास या टाट ।

तिरपित\*†-वि० दे० "तृप्त" ।  
तिरपौलिया-सज्ञा पु० सिंहद्वार । राजमहल

का बहद्वार, जिसमें तीन पोले ही और जो धनुष के आकार का बना हो।

तिरफला-सज्ञा पु० १ त्रिफला। आंवला, हरं और बहेडा का मिश्रण। २ तीन फल। ३ तीन फल का अस्थ।

तिरयेनी-सज्ञा स्त्री० दे० 'त्रिवेणी'।

तिरमिरा-सज्ञा पु० १ शारीरिक दुर्बलता में उत्पन्न नैन का एक रोग, जिसमें कभी अंधेरा और कभी अनेक प्रकार के रंग दिखाई पड़ते हैं। २ तेज रोशनी या चमक में नजर का न ठहरना। चकाचोड़।

तिरमिराना-क्रि० अ० तेज रोशनी या चमक के सामने आँखों का झपना। चौधना। चौधियाना।

तिरलोक-सज्ञा पु० दे० "त्रिलोक"।

तिरवाह-सज्ञा पु० नदीतट की भूमि। क्रि० वि० तट से। किनारे से।

तिरदचीन-वि० तिरछा।

तिरशूल-सज्ञा पु० दे० 'त्रिशूल'।

तिरसठ-वि० साठ और तीन की एक संख्या।

तिरस्करी-सज्ञा पु० परदा।

तिरस्कार-सज्ञा पु० [वि० तिरस्कृत] १ अनादर। अपमान। २ भर्त्सना। फटकार।

तिरस्युत-वि० १ जिसका तिरस्कार किया गया हो। अनादृत। अपमानित। २ अनादर-पूर्वक त्याग किया हुआ। ३ अवज्ञात।

तिरहुत-सज्ञा पु० मिथिला-प्रदेश (बिहार)।

तिरहुतिया-वि० तिरहुत का।

सज्ञा पु० तिरहुत का रहनेवाला।

सज्ञा स्त्री० तिरहुत की बोली।

तिरानवे-वि० नव्वे और तीन की एक संख्या।

तिराना-क्रि० स० १ लाभ होना। २ पार करना। तराना। ३ उबारना। निस्तार करना। ४ भयनीत करना।

तिरासी-वि० एक संख्या। अस्सी और तीन की एक संख्या ८३।

तिराहा-सज्ञा पु० यह स्थान जहाँ से तीन रास्ते तीन ओर गए हों। तिरमहानी।

तिरिन-सज्ञा पु० दे० "त्रिण"।

तिरिया-सज्ञा स्त्री० स्त्री। ओरत।

यो०—तिरिया चरित्रर=स्त्रियों की चालाकी या कौशल।

तिराट-सज्ञा पु० किरोट। भुकुट।

तिरेंबा-सज्ञा पु० १ तरेंदा। समुद्र में डूबली जगह या जल के भीतर चट्टान के बतलाने के लिए तैरते हुए पीपे। २ मछली मारने की बारी के कांटे के कुछ ऊपर बंधी हुई एक लकड़ी, जिसके डूबने से मछली फँसने का पता लगता है।

तिरोधान-सज्ञा पु० अतर्धान। छिपाव। लोप।

तिरोधायक-सज्ञा पु० आढ करनेवाला।

तिरोभाव-सज्ञा पु० अतर्धान। छिपाव।

तिरोभूत-वि० छिपा हुआ। गुप्त। अतर्हित। गायब। अदृष्ट।

तिरोहित-वि० दे० "तिरोभूत"।

तिरोछा-वि० दे० "तिरछा"।

तिर्यक्-वि० तिरछा। टेढ़ा। बक्र।

सज्ञा पु० प्राणी विशेष। पशु, पक्षी आदि जीव।

तिर्यक्ता-सज्ञा स्त्री० तिरछापन। बक्रता।

तिर्यंगति-सज्ञा स्त्री० १ तिरछी या टेढ़ी चाल। २ पशु-योनियों की प्राप्ति।

तिर्यंग्योनि-सज्ञा स्त्री० पशु, पक्षी आदि जीव।

तिलगा-सज्ञा पु० १ अंगरेजी फौज का देशी सिपाही। २ एक प्रकार का कनकोया।

तिलगाना-सज्ञा पु० तिलग देश।

तिलगी-वि० तिलगाने का निवासी।

सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पतंग।

तिल-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का धान्य।

इसके दो रंग होते हैं—सफ़ेद और गाला। २ बहुत थोड़ा। ३ मत्स्य विशेष। ४ बाँटे रंग का शरीर पर का छोटा दाग। ५ वाली बिंदी के आकार का गोदना। ६ जीव की पुतली के बीचोबीच की गोठ बिंदी।

मुहा०—तिल की ओट पहाड़=बिस्ती छोटी बात के भीतर बड़ी भारी बात। तिल का साठ करना=बिस्ती छोटी बात को बहुत बड़ा देना। तिल तिल=थोड़ा-थोड़ा। तिल करने

की जगह न होना=जरा सी भी जगह खाली न रहना । तिल भर=जरा मा । थाड़ा सा ।

तिलक-गञ्जा पु० १ चदन आदि से मस्त्व, बाहु आदि पर लगाया हुआ चिह्न । टीका । २ राज्याभिषेक । राजगद्दी । राजतिलक । ३ विवाह-समय स्थिर करने की एक रीति । ४ माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक गहना । टीका । ५ शिरोनिधि । श्रेष्ठ व्यक्ति । ६ पुत्राग की जाति का एक सुन्दर पेट । भरवा । ७ एक प्रकार का घोंडा । ८ कलम । तिल्ली जो पेट के भीतर होती है । ९ टीका । किसी प्रथ की अर्घ्यसूचक व्याख्या । १० एक प्रकार का जनाना कुरवा । ११ खिल-जल । १२ सोया नमक ।

तिलकना-त्रि० अ० १ गीली मिट्टी का नुलकर स्थान-स्थान पर देखना या फटना । २ फिसलना ।

तिलक-मुद्रा-सञ्ज्ञा स्त्री० चदन आदि का टीका और दाह, चक्र आदि का छापा जो वैष्णव भक्त लगाते हैं ।

तिलकहार-सञ्ज्ञा पु० वे लोग जो कल्याण-मार्ग से घर को तिलक चढ़ाने के लिए भेजे जाते हैं । तिलका-सञ्ज्ञा स्त्री० एक वणवृत्त । तिल्ला । तिल्लाना । डिल्ला ।

तिलकालक-सञ्ज्ञा पु० देह पर तिल के समान चिह्न । एक रोग ।

तिलकुट-सञ्ज्ञा पु० तिल की । एक प्रकार की मिठाई ।

तिलसा-सञ्ज्ञा पु० एक चिड़िया ।

तिलचटा-सञ्ज्ञा पु० १ एक प्रकार का शीशुर । २ चपटा ।

तिलचायला या तिलचावली-सञ्ज्ञा स्त्री० मिला हुआ तिल और चावल । तिल और चावल की खिचड़ी ।

वि० कुछ सफेद कुछ काला । काला और सफेद मिला हुआ ।

तिलचूरी-सञ्ज्ञा स्त्री० तिलकुट । कूटा हुआ तिल ।

तिलछना\*-त्रि० अ० [ अनु० ] छटपटाना । घेपेन रहना ।

तिलङ्गा-वि० तीन लठ्ठोंवाला ।

गञ्जा पु० एक छेनी ।

तिलडो-सञ्ज्ञा स्त्री० तीन लठ्ठों की एक माला ।

तिलदानो-सञ्ज्ञा स्त्री० वह घंटी जिनमें दरजी मूर्द, तागा आदि रखते हैं ।

तिलपट्टी-सञ्ज्ञा स्त्री० मोठ में पगे हुए तिलों का जमाया हुआ बरत ।

तिलपट्टी-सञ्ज्ञा स्त्री० दे० "तिलपट्टी" ।

तिलपर्ण-सञ्ज्ञा पु० १ चदन । २ सरल या गाद ।

तिलपीड-सञ्ज्ञा पु० तेली ।

तिलपुष्प-सञ्ज्ञा पु० १ तिल का फूल । २ बघनली । व्याघ्रनख ।

तिलभुग्गा-सञ्ज्ञा पु० दे० "तिलकुट" ।

तिलबद्धा-सञ्ज्ञा पु० चाँपाया का एक रोग ।

तिलमिल-सञ्ज्ञा स्त्री० चक्काचोंध । तिरमिरा-हट ।

तिलमिलाना-त्रि० अ० दे० 'तिरमिराना' ।

तिलवट-सञ्ज्ञा पु० तिलपपड़ी ।

तिलवा-सञ्ज्ञा पु० तिलों का लड्डू ।

तिलस्म-सञ्ज्ञा पु० १ जाड़ू । इद्रजाल । २ अद्भुत या अलौकिक व्यापार । चमत्कार ।

तिलस्मी-वि० तिलस्म-समधी ।

तिलहन-सञ्ज्ञा पु० सरसा आदि के पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है ।

तिलहा-वि० १ तेल के समान चिक्का । २ तेल में बना या पका हुआ । ३ चिक्का । ४ तेलिया । ५ तेली ।

तिलाजलि-सञ्ज्ञा स्त्री० मृत्क-संस्कार की एक क्रिया जिसमें अँजुली में जल और तिल लेकर मृत्क के नाम से छोड़ते हैं । परित्याग ।

मुहा०-तिलाजलि देना=जिलकुल त्याग देना । जरा भी समय न रखना ।

तिला-सञ्ज्ञा पु० १ बाजीकरण के लिए लागाई जानेवाली ओपपि । नपुंसकता दूर करने के लिए एक तेल । २ सोना । ३ पगड़ी का छोर ।

सलाई-सञ्ज्ञा स्त्री० १ छोटी बड़ाही ।

२ वर को तेल चढ़ाने की एक रस्म।

तिलाक-सज्ञा पु० [अ०] पति-पत्नी का सम्बन्ध-विच्छेद। पति-पत्नी के पारस्परिक नाते का टूटना।

तिलावा-सज्ञा पु० १ बह कुर्मी जिस पर तीन घुर नल सके। २ पहरेदार का गश्त।

तिलिया-सज्ञा पु० १ बिप विशेष। २ सरपत।

तिलिस्मी-वि० तिलस्म-सम्बन्धी। जादू का।

तिलौ-सज्ञा स्त्री० १ दे० "तिल"। २ दे० "तिल्ली"।

तिलेदानी-सज्ञा स्त्री० दे० "तिलदानी"।

तिले-सज्ञा स्त्री० दे० "तेल"।

तिलोक-सज्ञा पु० दे० "त्रिलोक"। तीन लोक।

तिलोकपति-सज्ञा पु० त्रिलोकपति। तीना लोका का स्वामी। विष्णु।

तिलोकी-सज्ञा पु० १ त्रिलोकी। २ इक्कीस मात्राओं का एक छंद।

तिलोचन-सज्ञा पु० दे० "त्रिलोचन"।

तिलोत्तमा-सज्ञा स्त्री० पुराणानुसार एक परम रूपवती अप्सरा, जिसे ब्रह्मा ने ससार भर के सब उत्तम पदार्थों में से एक एक तिल अना लेकर बनाया था। स्वर्ग की एक अप्सरा।

तिलोदक-सज्ञा पु० दे० "तिलाजलि"। तिल और जल जिससे तर्पण करते हैं।

तिलोरी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का पक्षी (तेलिया मैना)। २ दे० 'तिलोरी'।

तिलोहरा-सज्ञा पु० पटसन का रेशा।

तिलोछना-वि० स० तेल लगाकर चिक्कना करना।

तिलोछा-वि० जिसमें तेल वा-सा स्वाद या रंग हो।

तिलोदन-सज्ञा पु० मिला हुआ तिल और ओदन (भात)। तिल और चावल की खिचड़ी।

तिलोरी-सज्ञा स्त्री० उदं और मूँगे की बरी जिसमें तिल भी हा।

तिल्ला-सज्ञा पु० १ बलावत् आदि का नाम। २ बलावत् आदि का नाम बिना हुआ डुपट्टे या साड़ी आदि का अचल।

दे० "तिलका" (वर्णवृत्त)।

तिल्लार-सज्ञा पु० एक प्रकार की चिड़िया।

तिल्लाना-सज्ञा पु० दे० 'तराना'।

तिल्ली-सज्ञा स्त्री० १ पोली गुठली के आकार का एक छोटा अवयव, जो पसलियों के नीचे बाईं ओर होता है। इसका सबंध पाकाशय से होता है। प्लीहा। पिलही। २ तिल नाम का अन्न। ३ बाँस या लोहे की पतली कमान।

तिल्व-सज्ञा पु० लोथ।

तिवाडी, तिवाड़ी-सज्ञा पु० दे० "त्रिपाठी"।

तिवास-सज्ञा पु० तीन दिन।

तिवी-सज्ञा स्त्री० खेसारी।

तिशना-सज्ञा पु० [फा०] ताना। व्यर्थ बचन। सज्ञा स्त्री० दे० "तृष्णा"।

तिप्-सज्ञा स्त्री० प्यास। तृष्णा। पिपारा।

तिष्टना\*-क्रि० स० बनाना। रचना।

तिष्ठना\*-क्रि० अ० ठहरना।

तिष्ठन\*-वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तिस-सब० 'ता' का एक रूप जो उसे विभक्ति लगने के पूर्व प्राप्त होता है।

मुहा०—तिस पर=इतना होने पर। ऐसी अवस्था में।

तिसका-सब० उसका।

तिसना\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'तृष्णा'।

तिसराय-त्रि० वि० तीसरी बार।

तिसरायत-सज्ञा स्त्री० १ तीसरा या गैर होने का भाव। २ मध्यस्थ। बादी और प्रतिवादी से भिन्न। विचवर्दी।

तिसरत-सज्ञा पु० १ झगडा करनेवाला से अलग एक तीसरा मनुष्य। तटस्थ। २ तृतीय भाग का अधिकारी। तीसरे हिस्से का मालिक।

तिसाना\*-क्रि० अ० प्यासा होना।

तिहत्तर-वि० सत्तर और तीन की एक गरमा।

तिहद्दा-सज्ञा पु० जहाँ तीन हद्दें मिली हैं।

तिहरा-वि० दे० 'तहरा'। तिगुना। तीन परस मा।

तिहरास-त्रि० स० तीसरी बार करना।

तिहरी-वि० तीन परस की। तिगुनी।

तिहवार-संज्ञा पुं० दे० "त्योहार"। पर्व।  
तिहवारी-संज्ञा स्त्री० त्योहारी। त्योहार के  
दिन का नेम।

तिहार्द-संज्ञा पुं० तीसरा भाग या हिस्सा।  
तृतीयांश।

संज्ञा स्त्री० रोव की उपज। फसल।

तिहायत-संज्ञा पुं० दे० "तिसरत"।

तिहारा, तिहारो\*†-सर्व० दे० "तुम्हारा"।

तिहाव†-संज्ञा पुं० १. क्रोध। कोप। २.  
बिगाड़। झगड़ा।

तिहि-सर्व० दे० "तेहि"। उसको। उसे।

तिह्नी-वि० तीनों।

तिह्या-संज्ञा पुं० १. तीसरा भाग। तृतीयांश।

२. तबले, मृदंग आदि की वे तीन थापें  
जिनमें से अंतिम थाप ठीक सम पर पड़ती है।

ती\*-संज्ञा स्त्री० १. स्त्री। औरत। २. पत्नी।

३. मनोहरण छंद। ४. भ्रमरावली। ५.  
नलिन।

तीक्ष्ण, तीक्ष्ण\*-वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीक्ष्ण-वि० १. पैना तेज धारवाला। २. तेज।

प्रखर। तीव्र। ३. उग्र। प्रचंड। तीखा। ४.

जिसका स्वाद बहुत चरपरा हो। ५. जो

धुनने में अप्रिय हो। बटु। ६ जो सहन

न हो। असह्य। ७. जिसे आलस्य न हो।

संज्ञा पुं० १. गरमी। २. विष। ३.

लड़ाई। ४. मौत।

तीक्ष्णकण्ठक-संज्ञा पुं० १. घटूरा। २. बबूल।

३. इगुदी। ४. करीर।

तीक्ष्णकन्द-संज्ञा पुं० प्याज। पलाण्डु।

तीक्ष्णकर्मा-संज्ञा पुं० निपुण। दक्ष। चतुर।

कुशल।

तीक्ष्णता-संज्ञा स्त्री० तीक्ष्ण होने का भाव।

तीव्रता। तेजी। प्रखरता।

तीक्ष्णदंष्ट्र-संज्ञा पुं० बाघ। व्याघ्र।

वि० तेज दांतवाला।

तीक्ष्णदृष्टि-वि० जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से

सूक्ष्म बात पर पड़ती हो। सूक्ष्म-दृष्टि।

तीक्ष्णधार-संज्ञा पुं० सङ्ग।

वि० जिसकी धार बहुत तेज हो।

तीक्ष्णबुद्धि-वि० जिसकी बुद्धि बहुत तेज

हो। बुद्धिमान्।

तीक्ष्णानु-संज्ञा पुं० सूय्यं।

तीक्ष्णा-संज्ञा स्त्री० १. जोक। २. मिचं। ३.

माल कंगनी। ४. बच। ५. केवनि। ६.

७. एक वृक्ष। एक लता।

तीक्ष्णान्नि-संज्ञा स्त्री० प्रबल जठराग्नि।

बजीणं रोग।

तीक्ष्णाप-वि० तेज नोकवाला।

तीक्ष\*†-वि० दे० "तीखा"।

तीक्ष्ण\*†-वि० दे० "तीक्ष्ण"।

तीक्षा-वि० १. जिसकी धार या नोक बहुत

तेज हो। पैना। तीक्ष्ण। २. तेज। तीव्र।

प्रखर। ३. उग्र। प्रचंड। ४. उग्र स्वभाव-

वाला। ५. जिसका स्वाद बहुत चरपरा

हो। ६. जो सुनने में अप्रिय हो। ७. चोखा।

बढ़िया।

तीक्षुर-संज्ञा पुं० एक प्रकार का आटा।

फलाहार-विशेष। वृक्ष-विशेष का सत।

तीछी-संज्ञा स्त्री० तीखी।

तीज-संज्ञा स्त्री० १. पक्ष की तीसरी तिथि।

२. भादों सुदी तीज।

वि० दे० "हरतालिका"।

तीजा-वि० [स्त्री० तीजी] तीसरा। तृतीय।

संज्ञा पुं० मुसलमानों का मृत्यु के तीसरे

दिन का कृत्य-विशेष।

तीजिया-संज्ञा स्त्री० श्रावण शुक्ल तृतीया

का पर्व। त्योहार-विशेष। छोटी तीज।

तीजं-वि० तीसरा। तीसरे।

तीत\*†-वि० दे० "तीवा"।

तीतर-संज्ञा पुं० पक्षी-विशेष।

तोता-वि० १. तीखा। चरपरा। विनम्र।

जैसे-मिचं। २. कड़ुआ। कटु। ३. भोग।

गोला।

तीतुरी\*†-संज्ञा स्त्री० दे० "तितली"।

तीतुल\*-संज्ञा पुं० दे० "तीतर"।

तीन-वि० दो और एक की सहाय।

संज्ञा पुं० दो और एक का जोड़।

मुहा०-तीन-पाँच करना=धुमाव-फिराव

या हुज्जत की बात भरना। तीन-तेरह

करना=तितर-वितर करना। अलग-अलग

करना। न तीन में, न तेरह में=जो किसी

गिनती में न हो।

तीनि\*†-सज्ञा पु० और वि० दे० "तीन" ।  
तीमारदारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] रोगियों की  
सेवा श्रुद्धा का काम ।

तीय-सज्ञा स्त्री० स्त्री । औरत ।  
तोया\*-सज्ञा स्त्री० दे० "तीय" ।  
सज्ञा पु० दे० 'तिक्की' या 'तिट्टी' ।  
तीरदाज-पज्ञा पु० [फा०] तीर चलानेवाला ।  
तीरदाजी-सज्ञा स्त्री० [फा०] तीर चलाने  
की विद्या या क्रिया ।

तीर-सज्ञा पु० १ नदी का किनारा । कूट ।  
खट । २ पास । निकट । समीप । ३ बाण ।  
शर । ४ सीसा धातु । ५ रांग ।  
मुहा०-तीर चलाना या फेंकना-युक्ति  
भिडाना । रग-झग लगाना ।

तीर्य-सज्ञा पु० दे० 'तीर्य' ।  
तीरमुक्ति-सज्ञा स्त्री० तिरहुत देश ।  
तीरखर्ती-वि० १ तट या किनारे पर रहने-  
वाला । २ पास रहनेवाला । पड़ोसी ।  
तीरस्थ-सज्ञा पु० तीर पर का । तट स्थित ।  
किनारे पर का । नदी के तीर पर पहुँचाया  
हुआ । मरणासन्न व्यक्ति ।

तीरा\*†-सज्ञा पु० दे० 'तीर' ।  
तीर्ण-सज्ञा स्त्री० १ एक वणवृत्त । २  
सती । ३ तिन । ४ तरणिजा ।  
तीर्थकर-सज्ञा पु० जैनियों के उपास्य देव ।  
इनकी संख्या २४ हैं ।

तीर्थ-सज्ञा पु० १ वह पुण्य स्थान जहाँ धर्म-  
भाव में लोग यात्रा पूजा या स्नान आदि  
के लिए जाते हैं । २ कोई पवित्र स्थान ।  
३ शास्त्र । ४ यज्ञ । ५ स्थान । स्वर्ग ।  
६ उपाय । ७ अवतार । ८ अवतार ।  
९ उपाध्याय । गुरु । १० दण्ड । ११  
ब्राह्मण । १२ अग्नि । १३ स्यासिया  
की एक उपाधि । १४ वारणदाता । १५  
ईश्वर । १६ माया पिता । १७ हाथ में वे  
कुछ विशिष्ट स्थान । १८ यात्रा । १९  
अतिथि ।

तीर्थक-वि० तीर्थ का ब्राह्मण । पण ।  
तीर्थकर ।

तीर्थकर-सज्ञा पु० विष्णु ।  
तीर्थपति-सज्ञा पु० दे० "तीर्थराज" ।

तीर्थदेव-सज्ञा पु० शिव ।  
तीर्थयात्रा-सज्ञा स्त्री० पवित्र स्थानों में  
दर्शन, स्नान आदि के लिए जाना । तीर्थटन ।  
तीर्थराज-सज्ञा पु० तीर्थों में श्रेष्ठ । प्रयाग ।  
तीर्थसेवी-सज्ञा पु०, पुण्यक्षेत्र में वास करने-  
वाले । वानप्रस्थाश्रमी ।

तीर्थटन-सज्ञा पु० तीर्थयात्रा ।  
तीर्थक-सज्ञा पु० दे० 'तीर्थक' । तीर्थ का ।  
तीली-सज्ञा स्त्री० १ बड़ा तिनका । सीक ।  
२ धातु आदि का पतला, कड़ा तार ।  
तीवन†-सज्ञा पु० १ रस्तेदार तरकारी ।  
२ पकवान ।

तीवर-सज्ञा पु० १ समुद्र । २ व्याघ्र ।  
शिकारी । ३ मछुआ । ४ एक वणसकर  
अर्यज जाति ।

तीव-वि० १ अतिशय । अत्यंत । २ तीव्रता  
तेज । ३ बहुत गरम । ४ निवान्त । बहद ।  
५ कटु । कड़वा । तीखा । ६ न सहने योग्य ।  
असह्य । ७ प्रचंड । ८ वेग-युक्त । तेज ।  
९ कुछ ऊँचा स्वर ।

तीव्रता-सज्ञा स्त्री० तीव्र होने का भाव ।  
तीव्रता । तेजी । तीखापन ।  
तीस-वि० दस का तिगुना । बीस और दस ।  
सना पु० दस की तिगुनी संख्या ।  
घो०-तीसो दिन या तीस दिन=सदा ।  
हमेशा । तीसमारवा=बड़ा बहादुर  
(व्याघ्र) ।

तीसरा-वि० १ तृतीय । प्रथम में तीन के  
स्थान पर पड़नेवाला । २ जिसका प्रस्तुत  
विषय से कोई संबंध न हो । गैर ।  
तीसवाँ-सज्ञा पु० उनतीस के बाद का ।  
तीसो-सज्ञा स्त्री० दे० 'अलमी' । १ अत्र-  
विषय । २ फल आदि गिनने का तीस  
माहिया का एक मात ।  
सना पु० दे० 'तिहाई' ।  
वि० तांग मारना से परिमित ।

तीहा-सज्ञा पु० १ आध्यात्म । तस-गी । २  
विहाई ।

तुग-वि० १ उग्र । २ ऊँचा । ३ उग्र । प्रचंड । ४ प्रधान । मुख्य ।  
सना पु० १ पुत्रांग वृक्ष । २ पर्वत । पहाड़ ।

३ नारियल। ४ कमल का पैगर। ५ शिव। ६ एक पर्णवृत्त।  
 तुंगता-सज्ञा स्त्री० ऊँचाई।  
 तुंगनाथ-सज्ञा पु० हिमालय पर एक शिवलिंग और तीर्थस्थान।  
 तुंगबाहु-सज्ञा पु० तलवार के ३२ हाथों में से एक।  
 तुंगभद्र-सज्ञा पु० मतवाला हाथी।  
 तुंगभद्रा-सज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी।  
 तुंगिनी-सज्ञा स्त्री० १ रात्रि। २ वन। ३ हल्दी। ४ तुलसी।  
 तुंगी-सज्ञा स्त्री० १ हल्दी। २ रात्रि। ३ वनतुलसी। बबई।  
 तुंगीश-सज्ञा पु० १ शिवजी। २ सूर्य। ३ कुष्ण। ४ चन्द्रमा।  
 तुंगारण्य-सज्ञा पु० झाँसी के पास बेटवा के किनारे का एक जंगल।  
 तुंगारण्य\*†-सज्ञा पु० दे० "तुंगारण्य"।  
 तुज-सज्ञा पु० वज्र।  
 तुड-सज्ञा पु० १ मुख। मुँह। २ चपु। चोच। ३ निकला हुआ मुँह। धूयन। ४ तलवार का अगला हिस्सा। ५ शिव। महादेव।  
 तुडि-सज्ञा स्त्री० १ मुँह। २ चाच। ३ नाभि। ४ सिचाफल।  
 तुडिल-वि० १ तादवाला। २ बकवादी। ३ मुँहजोर।  
 तुडो-वि० मुँह, चाच, धूपन या सूँडवाला। सज्ञा पु० गणेश। सज्ञा स्त्री० नाभि। ढोडी।  
 तुद-सज्ञा पु० १ पट। २ उदर। वि० [फा०] तेज। प्रचंड। घोर।  
 तुदिका-सज्ञा स्त्री० नाभि।  
 तुदिल-वि० तादवाला। बड़े पेटवाला।  
 तुदेल-वि० तोदवाला। बड़े पेटवाला।  
 तुब-सज्ञा पु० लोकी। तुबा।  
 तुबडी-सज्ञा स्त्री० दे० "तुबडी"।  
 तुबर\*-सज्ञा पु० दे० "तुबर"।  
 तुबा-सज्ञा पु० १ दे० "तुबा"। २ एक जंगली धान। ३ कड़वा वटू।  
 तुबिका-सज्ञा स्त्री० कड़वा वटू।

तुघी-सज्ञा स्त्री० छोटा कड़वा वटू। तितलोकी।  
 तुबुद-सज्ञा पु० १ धनिया। २ एक प्रकार के पौधे का बीज जो धनिया के आवार का होता है। ३ एक गधवें।  
 तुज\*†-मव० दे० "तुव", "तव"। तुम्हारा।  
 तुजना\*†-क्रि० अ० १ चूना। टपकना। २ गिर पड़ना। ३ गर्मपात होना।  
 तुअर-सज्ञा पु० अरहर।  
 तुइ-मव० तू।  
 तुक-सज्ञा स्त्री० १ किसी पद्य या गीत की कोई पंक्ति। कड़ी। २ पद्य के चरणा के अंतिम अक्षरों का मेल। अक्षर मैत्री। अत्यानुप्रास। नाफिया।  
 मुहा०-तुक् जोड़ना=साधारण कोटि की कविता करना।  
 तुक्बदी-सज्ञा स्त्री० १ केवल तुक् जोड़ने की क्रिया। २ साधारण कोटि की कविता जिसमें काव्य के गुण न हों।  
 तुकमा-सज्ञा पु० [फा०] पुडी फेंसाने का फटा। मुट्ठी।  
 तुकात-सज्ञा पु० पद्य के दो चरणों के अंतिम अक्षरों का मेल। अत्यानुप्रास। नाफिया।  
 तुका-सज्ञा पु० दे० "तुक्का"।  
 तुकार-सज्ञा स्त्री० 'तू' का प्रयोग जो अपमानजनक समझा जाता है। अशिष्ट संबोधन।  
 तुकारना-क्रि० स० तू-तू करके या अशिष्ट संबोधन करना।  
 तुक्कड़-सज्ञा पु० तुक् जोड़नेवाला। साधारण कोटि की कविता करनेवाला।  
 तुक्कल-सज्ञा स्त्री० बड़ी पतंग।  
 तुक्का-सज्ञा पु० १ वह तीर जिसमें गाँसी की जगह धुँडी-सी बनी होती है। गाँसी-रहित तीर। २ टीला। ३ सीधी वस्तु।  
 तुल-सज्ञा पु० १ भूसी। छिलवा। २ अडे के ऊपर का छिलवा।  
 तुषार-सज्ञा पु० १ दे० "तुषार"। २ हिमालय के उत्तर-पश्चिम में स्थित एक प्राचीन देश। यहाँ के घोड़े बहुत अच्छे माने जाते थे। ३ इस देश का निवासी। ४ इस देश का घोड़ा।

तुलम-सज्ञा पुं० [ अ० ] योज।  
 तुच्छ-वि० १. हीन। क्षुद्र। नाचीज। २. ओछा। नीच। ३. अल्प। थोड़ा।  
 तुच्छता-सज्ञा स्त्री० १. हीनता। नीचता। २. ओछापन। ३. अल्पता।  
 तुच्छत्व-सज्ञा पुं० दे० "तुच्छता"।  
 तुच्छातितुच्छ-वि० छोटे से छोटा। अत्यंत हीन। अत्यंत क्षुद्र।  
 तुलु-सज्ञा पुं० [ तु० ] १. शीभा। २. शान। ३. कानून। नियम। ४. आत्म-चरित्र। ये घटनाएँ जिन्हें राज्य स्वयं लिखे।  
 तुल-सर्व० 'तू' शब्द का एक रूप जो उसे प्रथमा या पष्ठी के अतिरिक्त और विभक्तियाँ लगने के पहले प्राप्त होता है। तुम।  
 तुल-सर्व० 'तू' का कर्म और सप्रदान रूप। तुलको।  
 तुल\*-वि० लेशमान। जरा-सा।  
 तुलना\*-क्रि० स० तुल्य करना। प्रसन्न करना। राजी करना।  
 क्रि० अ० तुल्य होना। प्रसन्न होना।  
 तुलना-क्रि० स० दे० "तुलना"। तीडने का काम करना।  
 तुलनाई-सज्ञा स्त्री० १. तुलाने का काम या भाव। २. तीडने का काम या मजदूरी।  
 तुलना-क्रि० स० १ तीडने का काम करना। तुलवाना। २. अलग करना। सबब न रखना। ३. बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना। भुनाना।  
 तुलम-गज्ञा पुं० तुलही।  
 तुलरा\*†-वि० दे० "तीव्रता"।  
 तुलराणा\*†-क्रि० अ० दे० "तुलना"।  
 तुलरोही\*†-वि० दे० "तीव्रता"।  
 तुलली-वि० मोतली।  
 तुललाना-क्रि० अ० गंदों का अल्पष्ट उच्चारण करना। रन-रानर दूटे-पूटे शब्द बोलना।  
 तुल्य-गज्ञा पुं० तूजिया। नीला पोया।  
 तुलन-गज्ञा पुं० १. व्यप्य देने की क्रिया। पीटना। २. व्यप्य। पीटा।  
 तुल-गज्ञा पुं० एर, बहुत बड़ा पेड़ जिसमें

फूलों से एक प्रकार का पीला बसती रंग निकलता है।  
 तुलक-वि० [ फा० ] दुर्बल। नाजुक। कोमल।  
 तुलकमिजाज-वि० बात-बात पर विगड़ने या रुझनेवाला।  
 तुलकी-सज्ञा स्त्री० एक तरह की खस्ता रोटी।  
 तुलुनी-सज्ञा स्त्री० सारंगी।  
 तुलीर-सज्ञा पुं० दे० "तूलीर"।  
 तुल्ल-सज्ञा पुं० १. तुल वृक्ष। २. फटे कपड़ों का टुकड़ा।  
 वि० कटा हुआ।  
 तुल्लव-सज्ञा पुं० दर्जी। कपड़ा सीनेवाला।  
 तुलक-सज्ञा स्त्री० छोटी बटूक। पिस्तील।  
 तुलकिया-सज्ञा स्त्री० छोटी तुलक।  
 सज्ञा पुं० बन्दूक चलानेवाला।  
 तुलक-सज्ञा स्त्री० १. हवाई बटूक। २. वह लकीर नली जिसमें मिट्टी की गोलीयाँ आदि डालकर फूँक के जोर से चलते हैं।  
 तुलना-क्रि० अ० स्वल्प रहना। ठक रह जाना। चकित रह जाना।  
 तुल-सर्व० 'तू' शब्द का बहुवचन रूप। वह सर्वनाम, जिसका व्यवहार उस पुरुष के लिए होता है, जिससे कुछ कहा जाता है।  
 तुलही-गज्ञा स्त्री० १ छोटा तूँवा। तुवी।  
 २ सूखे पदार्थ का बना हुआ एक वाजा, जिसे सोंपेरे बजाते हैं। सोंपेरे की बशी ३ सूखे गोल पदार्थ का बनाया हुआ पात्र। साधुओं का जलपात्र। गहुवर।  
 तुलरा-सर्व० दे० "तुल्यता"।  
 तुलल\*-सज्ञा पुं०, वि० दे० "तुलल"।  
 तुलर-गज्ञा पुं० दे० "तुलल"।  
 तुलल-सज्ञा पुं० १ शोरमुल। कीलाहल। गेना का कीलाहल। लटवाई की हलल। २ गेना की गहरी मुठनेट।  
 तुलाना-वि० म० रुई धुनाना। तूमने का काम करना। धुनवाना। तुलवाना।  
 तुल्ल\*-सर्व० दे० "तुल"।  
 तुल्लरा-सर्व० 'तुल' का सवगतात् रूप।  
 तुल्ल\*-सर्व० 'तुल' का विभक्ति-भूत रूप, जो उस कर्म और सप्रदान में प्राप्त होता है।  
 तुल्लो।

तुरग-सज्ञा पु० १ घोड़ा। २ चित्त। ३ सात की सख्या।

तुरगक-सज्ञा पु० बड़ी तोरई।

तुरगम-सज्ञा पु० १ घोड़ा। २ चित्त। ३ 'एक' छद्म। तग। तुगा।

वि० जल्दी चलनेवाला।

तुरगशाला-सज्ञा स्त्री० अस्तबल।

तुरज-सज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार का नीबू। २ विजीरा नीबू। खट्टी।

तुरजबोन-सज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार का मोठा पदार्थ जो अँटवटारे के पीछे पर जमता है। २ नीबू के रस का शरबत।

तुरत-क्रि० वि० जल्दी से। अत्यंत शीघ्र। झटपट। फौरन।

तुर-क्रि० वि० शीघ्र।

वि० वेगवान्।

तुरई-सज्ञा स्त्री० एक बेल जिसके लंबे फल की तरकारी बनाई जाती है। बरोई।

तुरक-सज्ञा पु० दे० "तुर्क"।

तुरकटा-सज्ञा पु० मुसलमान (उपेक्षा-सूचक शब्द)।

तुरकाना-सज्ञा पु० [स्त्री० तुरकानी] १ तुरकी की भाँति या उनका ढग। २ तुर्कों का देश या बस्ती।

तुरकिन-सज्ञा स्त्री० १ तुर्क जाति की स्त्री।

२ मुसलमान की स्त्री।

तुरकी-वि० तुर्क देश का।

सज्ञा स्त्री० तुर्किस्तान की भाषा।

तुरग-सज्ञा पु० [स्त्री० तुरगी] १ घोड़ा। २ चित्त।

वि० तेज चलनेवाला।

तुरगी-सज्ञा स्त्री० अद्वगधा। घोड़ा।

सज्ञा पु० अद्वारोही। घुड़सवार।

तुरत-अव्य० शीघ्र। चटपट।

तुरपन-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सिलाई। बगिया या उलटा।

तुरपना-क्रि० सं० टाँकना। टाँका चलाना।

सिलाई करना। लुडियाना।

तुरम\*-सज्ञा पु० घोड़ा।

तुरही-सज्ञा स्त्री० फूँवकर बजाने का एक बाजा। रणसिपा।

तुरा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "त्वरा"। शीघ्रता। सज्ञा पु० घोड़ा।

तुराई†\*-सज्ञा स्त्री० गद्दा। तोयक।

तुराना\*-क्रि० अ० बबराना। आतुर होना। जल्दी करना।

क्रि० सं० दे० "तुडाना"।

तुरायती-वि० वेगवाली। शोक के साथ चहनेवाली।

तुरावान्-वि० वेगवाला।

तुरिया\*-सज्ञा स्त्री० दे० "तुरीय"। चतुर्थ।

तुरी-सज्ञा पु० सवार। अद्वारोही।

सज्ञा स्त्री० १ कपड़ा धुनने का उपकरण-विशेष। जुलाहा का एक औजार। २ घोड़ी।

३ लगाम। ४ फूला का गुच्छा। ५ मोठिया की लडिया का सज्जा।

वि० वेगवाली।

तुरीय-वि० चतुर्थ। चौथा।

सज्ञा स्त्री० १ वेद में वाणी या वाक् के चार भेदों में द्वितीय। वैखरी। वह अवस्था जब वाणी मूँह में आकर उच्चरित होती है।

२ प्राणियों की चार अवस्थाओं में से अंतिम। सज्ञा पु० ब्रह्म। मुक्तावस्था।

तुरीय यज्ञ-सज्ञा पु० सूर्य की गति जानने का यज्ञ।

तुरीय वर्ष-सज्ञा पु० चौथा वर्ष। शूद्र।

तुरक-सज्ञा पु० मुसलमान। तुर्किस्तान का वासी।

तुरूप-सज्ञा पु० ताश का एक खेल।

तुरष्क-सज्ञा पु० १ तुर्क जाति। तुर्किस्तान का रहनेवाला मनुष्य। २ तुर्किस्तान देश।

३ तुर्किस्तान का घोड़ा। ४ गन्धद्रव्य-विशेष। धूप-लोबान। ५ घुड़सवार।

तुरही-सज्ञा स्त्री० दे० "तुरही"।

तुरैया-सज्ञा स्त्री० तुरई।

तुर्क-सज्ञा पु० १ तुर्किस्तान का निवासी।

२ टर्की (तुर्की) का रहनेवाला।

तुर्कमान-सज्ञा पु० [फा०] १ तुर्क जाति का मनुष्य। २ तुर्की घोड़ा।

तुर्की-वि० [फा०] तुर्किस्तान का।

सज्ञा स्त्री० १ तुर्किस्तान की भाषा। २

तुकिस्तान का घोड़ा। ३ तुकों की सी  
एँठ। अकड़। गर्व।

तुयं-वि० चौथा।

तुय्या-सज्ञा स्त्री० मुक्ति-प्राप्ति का ज्ञान।

तुय्याश्रम-सज्ञा पु० चतुर्थाश्रम।

तुरा-सज्ञा पु० १. पुँघराले बालों की लूँट।  
काकुल। २. कलेंगी। ३. टोपी आदि में  
लगा हुआ फुंदना। फलों की लड़्डियों  
का गुच्छा जो दूल्हे के कान के पास लटकता  
रहता है। ४. पक्षियों के सिर पर निकले  
हुए परों का गुच्छा। चोटी। शिखा। ५.  
कोड़ा। चाबुक। ६ जटाधारी।

वि० अनोखा। अद्भुत।

मुहा०-तुरा यह कि=उस पर भी इतना

और। सबके उपरांत इतना यह भी।

तुर्यसु-सज्ञा पु० देवयानी के गर्भ से उत्पन्न  
राजा ययाति का एक पुत्र।

तुर्य-वि० [फा०] खट्टा। अम्ल।

तुर्या-सज्ञा स्त्री० [फा०] खटाई। अम्लता।

तुल\*-वि० टे० "तुल्य"।

तुलना-क्रि० अ० १ तौला जाना। मूँतना।

२ तौल या मान में बराबर उतरना। तुल्य

होना। ३ किसी आधार पर ठहरना।

४ किसी अस्त्र आदि का इस प्रकार चलाया

जाना कि वह ठीक लक्ष्य पर पहुँचे। सधना।

५ नियमित होना। बंधना। ६ गाड़ी के

पहिए का आँगा जाना। ७ उद्यत होना।

मज्ञा स्त्री० १ दो या अधिक वस्तुओं के

गुण-दोष का विचार। मिलान। २ वास्तव्य।

३ सादृश्य। समता। ४ उपमा। तौल।

गणना।

तुलनात्मक-वि० जिसमें मिलान या तुलना

की गई हो। किसी वस्तु का उसी तरह की

एक या अन्य वस्तुओं से मिलान या बराबरी।

तुलवाई-सज्ञा स्त्री० १ तौलने की मजदूरी।

२ पहिए की ओगने की मजदूरी।

तुलवाना-क्रि० स० [सज्ञा तुलवाई] १ तौल

कराना। वजन कराना। २ गाड़ी के पहिए

की धुरी में तेल आदि दिलाना। आँगवाना।

तुलसी-सज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा जिसे

हिंदू पवित्र मानते हैं।

तुलसीवल-सज्ञा पु० तुलसी के पौधे का पत्ता  
जिसे हिंदू पवित्र मानते हैं।

तुलसीदास-सज्ञा पु० भारत के प्रसिद्ध भक्त

तथा हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि जिनका 'राम-

चरितमानस' हिन्दुओं का धर्मग्रन्थ बन गया है।

तुलसीपत्र-सज्ञा पु० तुलसी की पत्ती।

तुला-सज्ञा स्त्री० १. सादृश्य। तुलना।

उपमा। २ मुख्य नापने का यंत्र। तराजू।

काँटा। ३ मान। तौल। ४ ज्योतिष की

बारह राशियों में से सातवीं राशि।

तुलाई-सज्ञा स्त्री० १. सई से भरा दोहरा कपड़ा,

जो ओढ़ने के काम में आता है। डुलाई।

२ तौलने का काम या भाव। ३. तौलने

की मजदूरी।

तुलाकूट-सज्ञा पु० १. तौल में कसर। २ डडी

मारनेवाला मनुष्य।

तुलाकीटि-सज्ञा स्त्री० १. तराजू की डडी के

दोनों किनारे। २ तौल-विशेष। ३ विच्छिन्ना।

४ नूपुर। ५ अरब की सख्या।

तुलादान-सज्ञा पु० एक प्रकार का दान,

जिसमें किसी मनुष्य की तौल के बराबर द्रव्य

या पदार्थ का दान होता है।

तुलाधार-सज्ञा पु० १ तुला राशि। २.

बनियाँ। बणिक्। ३. तराजू की रस्ती। ४.

काशी का रहनेवाला एक बणिक् जिसने

महर्षि जाजलि को मौन-धर्म का उपदेश

दिया था। ५ काशीनिवासी एक ब्याध

जो सदा माता-पिता की सेवा में तत्पर

रहता था।

तुलाना\*-क्रि० अ० १ आ पहुँचना। समीप

आना। निकट आना। २. बराबर होना।

पूरा उतरना।

क्रि० स० गाड़ी के पहियों की धुरी में तेल

आदि दिलाना।

तुला-भरीक्षा-सज्ञा स्त्री० अभियुक्तों की एक

दिव्य परीक्षा। इसमें अभियुक्त को दो

बार तौलते थे और दोनों बार तौल बराबर

होने पर निर्दोष मानते थे।

तुलामान-सज्ञा पु० तौलकर लिया जाने-

वाला मान। माँद।

तुलायंत्र-सज्ञा पु० तराजू।

तुल्य-वि० १. समान। बराबर। २. मृदु।  
तुल्यता-सज्ञा स्त्री० १. बराबरी। समता।  
२. सादृश्य।

तुल्ययोगिता-सज्ञा स्त्री० एक अलंकार जिनमें  
बहुत से उपमेयों या उपमानों का एक ही  
धर्म बतलाया जाता है।

तुल्य-सर्व० दे० "तुल्य"। तुम्हारा।  
तुल्य-सज्ञा पु० १. कसेला रस। २. अरहर।  
एक पंथा।

वि० १. कसेला। २. बिना दाढ़ी-मूँछ का।  
तुल्य-सज्ञा पु० तुल्यी।

तुल्य-सज्ञा पु० १. अन्न का छिलका। भूसी।  
चोकर। २. अंडे का छिलका।

तुल्यप्रह-सज्ञा पु० अग्नि।  
तुल्यनल-सज्ञा पु० १. घास-फूस की आग।  
२. ऐसी आग जिसमें प्रायश्चित्त करने  
के लिए भस्म हुआ जाय।

तुल्य-सज्ञा पु० १. शीत। पाला। २. हिम।  
बरफ। ३. हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन  
देस जहाँ के घोड़े प्रतिष्ठ थे। ४. तुल्य देश  
में बसनेवाली जाति जो शक जाति की  
एक शाखा थी।

वि० छूने में बरफ की तरह ठंडा।  
तुल्यकर-सज्ञा पु० चन्द्रमा।  
तुल्य-वि० १. तुल्य। २. राजी। ३. प्रसन्न।  
सुख।

तुल्य-सज्ञा स्त्री० सतीष। प्रसन्नता।  
तुल्यना\*-क्रि० अ० प्रसन्न होना।  
तुल्य-सज्ञा स्त्री० १. सुवोष। तुल्यि। २.  
प्रसन्नता। (सायब सैन्यी प्रकार की तुल्यियाँ  
मानी गई हैं, चार आध्यात्मिक और पाँच  
वाह्य।)

तुल्यीकरण-सज्ञा पु० प्रसन्न रहना। सुख  
रखना। राजी रहना।

तुल्यीकरण नीति-सज्ञा स्त्री० दूसरे को प्रसन्न  
रखने की नीति। एक राज्य द्वारा दूसरे  
राज्य को सुख रखने की नीति।

तुली-सज्ञा स्त्री० अन्न के ऊपर का छिलका।  
भूसी। चोकर।

तुल्य-सर्व० दे० "तुम्हारा"।  
तुल्य-सर्व० तुल्यी।

तुल्य-सज्ञा पु० १. पाला। मुहरा। तुल्य।  
२. हिम। बरफ। ३. चांदनी। ४. शीतलता।  
ठंडक।

तुल्यनाशु-सज्ञा पु० चंद्रमा।  
तुल्यनाचल-सज्ञा पु० हिमालय।

तुल्य-सर्व० दे० "तुल्य"।  
तुली-सज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. नाव। नौका।  
तुल्य-सज्ञा पु० तुली को खोखला करके  
बनाया हुआ बरतन।

तुल्य-सज्ञा पु० १. कड़वा गोल कदू।  
तितलीकी। २. कदू को खोखला करके  
बनाया हुआ बरतन जिसे प्रायः साधु लोग  
अपने साथ रखते हैं। कमंडल। तुल्य।

तुली-सज्ञा स्त्री० १. कड़वा गोल कदू।  
२. कदू को खोखला करके बनाया हुआ  
बरतन।

तुल्य-सर्व० मध्यम पुरुष एक वचन सर्वनाम।  
जैसे, तू यहाँ से चला जा।

मुहा०—तुल्यक, तुल्यकार, या तुल्य में में  
करना=अशिष्ट शब्दों में विवाद करना।

तुल्य-सज्ञा पु० तिनके का टुकड़ा। सीक।  
खरका।

तुल्यना\*-क्रि० अ० दे० "तुल्यना"।  
तुल्यना\*-क्रि० अ० १. सतुष्ट होना। तुल्य  
होना। २. प्रसन्न होना।

तुल्य-सज्ञा पु० १. तीर रखने का चाँपा।  
तरवश। २. निपग। ३. एक वृत्त-विशेष।

तुल्य-सज्ञा पु० तुल्य। तरवश। निपग।  
तुल्य-सज्ञा पु० एक पेड़ जिसके फल खाए  
जाते हैं। शहतूत।

तुल्य-सज्ञा स्त्री० करई। बरवा। मिट्टी  
का एक प्रकार का बरतन।

तुल्य-सज्ञा पु० कतरन। कटामुटा। रेतन।  
तुल्य-सज्ञा पु० दे० "नीला घोड़ा"।

एक प्रकार का खनिज रासायनिक पदार्थ।  
तुली-सज्ञा स्त्री० १. मिट्टी की टाँटीदार परियाँ  
दुइयाँ। २. छोटा तौला। ३. बनेरी नाम की।

छोटी सुंदर चिड़िया। ४. मटमैले रंग की  
एक छोटी चिड़िया, जो बहुत सुंदर बोलती  
है। ५. मुँह में बजाने का एक छोटा बाजा।

मुहा०—किसी की तुली बोलना=किसी की

खूब चलती होना या प्रभाव जमना ।  
नवकारखाने में तूती की आवाज कीन  
सुनता है—१ भीड़-भाड़ या शोर-गुल में कहीं  
हुई बात नहीं सुनाई पड़ती । २ बड़ लोगों के  
सामन छोटी की बात कोई नहीं सुनता ।  
तूदा-सज्ञा पु० [फा०] १ राशि। ढेर । २  
सीमा का चिह्न। हृदयदी । ३ भिंटी का  
वह टीला जिस पर निशाना लगाना सीखा  
जाता है ।

तुन-सज्ञा पु० १ तुन का पेड़ । २ तुल नाम  
का लाल कपड़ा ।

\*सज्ञा पु० दे० "तुण" ।

तुना-क्रि० अ० १ दे० "तुअना" । चूना ।  
टपकना । २ गर्भपात होना ।

तुनीर-सज्ञा पु० दे० "तूणीर" ।

तूफान-सज्ञा पु० [अ०] १ भीषण आंधी  
तथा वर्षा का एक साथ होना । २ ऐसा  
अवस्था जिसमें खूब धूल उड़े, पानी बरसे, तथा  
इसी प्रकार के और उत्पात हो । आंधी ।  
३ क्षापति । आफत । ४ हल्ला-गुल्ला ।  
५ झगडा । बगडा । दगा । ६ झूठा  
दोषारोपण । तोहमत ।

तूफानी-वि० [फा०] १ बखेडा करनेवाला ।  
उपद्रवी । फसादी । २ झूठा कलक लगाने  
वाला । ३ उग्र । प्रचण्ड ।

तूमडी-सज्ञा स्त्री० १ तूँडी । २ तूँडी का  
बना हुआ एक प्रकार का बाजा जिसे सँपेरे  
बजाया करते हैं ।

तूम-तडाक-सज्ञा स्त्री० १ बड़क-भड़क ।  
शान-शोकत । २ ठसक । बनावट ।

तूमना-क्रि० स० १ तूना । रुई धुना ।  
हाथ से रुई साफ करना । बिनीला निका-  
लना । उबडना । २ धज्जी-धज्जी  
करना । ३ हाथ से मसलना । ४ रहस्य  
खोलना ।

तूमरी-सज्ञा स्त्री० १ कुम्भीर का कपाल ।  
२ मगर की खोपड़ी ।

तूमर-सज्ञा पु० बात या व्यय विस्तार ।  
बात का बतगड ।

तूर-सज्ञा पु० १ नगाडा । २ तुरही ।  
दुन्दुभि ।

फा० ४५

तूरज\*-सज्ञा पु० दे० "तूर्य" । तुरही । दुन्दुभि ।  
तूरण, तूरन\*-क्रि० वि० दे० "तूरण" ।

तूरान-सज्ञा पु० [फा०] फारस के उत्तर पूर्व  
पड़नेवाला मध्य एशिया का सारा भू भाग जो  
तुक, तातारी, मुगल आदि जातियों का  
निवासस्थान है ।

तूरानी-वि० [फा०] तूरान देश का ।

सज्ञा पु० तूरान देश का निवासी ।

तूर्य-क्रि० वि० शीघ्र । जल्दी ।

तूर्य-सज्ञा पु० नगाडा । भेरी । दुन्दुभि ।

रणवाद्य विशेष ।

वि० तुरीय । चतुर्थ । चार की पूरक संख्या ।

तूल-सज्ञा पु० १ आवाश । २ शहतूत ।

३ कपास, मदार, रोमर आदि के डोडे  
के भीतर का धूआ । बिनीला निकाली हुई  
रुई । कपास । ४ चटकीले लाल रंग का

मूती कपड़ा । ५ गहरा लाल रंग ।

वि० तुल्य । समान ।

तूलना-क्रि० स० पहिए की घुरी में तेल या  
चिकना देना ।

तूला-सज्ञा स्त्री० कपास ।

तूलिका-सज्ञा स्त्री० चित्रकारी की कूँची ।

तसवीर बनानेवालों की कलम या कूँची ।

तूली-सज्ञा स्त्री० १ नील वृक्ष । २ रंग  
भरने की कूँची ।

तूवर-सज्ञा पु० १ बिना सींग का बंल । २  
बंदाही का मनुष्य । ३ कसौला रस । ४  
अरहर ।

तूणी-वि० मीन । चुप ।

सज्ञा स्त्री० मीन । सामोशी । चुप्पी ।

तूस-सज्ञा पु० १ भूसी । भूसा । २ एक प्रकार  
का बहुत उत्तम ऊन जिससे दुशाले बनते  
हैं । पशम । पशमीना । ३ तूस के ऊन  
का जमाया हुआ कपड़ा या नमदा ।

तूसदान-सज्ञा पु० नारतूस ।

\*तूसना\*-क्रि० स० १ सतुष्ट करना । तृप्त  
करना । २ प्रसन्न करना ।

क्रि० अ० सतुष्ट या तृप्त होना ।

तूला-सज्ञा पु० मूती ।

तूल-सज्ञा पु० जायफल ।

तूला-सज्ञा स्त्री० दे० "तूपा" ।

तृज्ज\*—वि० दे० 'तृज्यम्' । टेढ़ा ।  
 आढा ।  
 तृण—सज्ञा पु० तिनपा । सार । घास—पुंस ।  
 मुहा०—तृण गहना या पकड़ना=हीनता प्रकट करना । गिडगिहाना । तृणवत्=अत्यंत तुच्छ । तृण के समान । कुछ भी नहीं ।  
 तृण तोड़ना=बिसी सुंदर वस्तु को देखकर उसे नजर से बचाने के लिए उपाय करना । सबंध तोड़ना ।  
 तृणप्लवज—सज्ञा पु० बाँस ।  
 तृणधान्य—सज्ञा पु० १ चित्री का चावल । २ सावा ।  
 तृणमय—वि० घास का बना हुआ ।  
 तृणराज—सज्ञा पु० नारियल । नारियल का पेड़ । तालवृक्ष ।  
 तृणशय्या—सज्ञा स्त्री० घास का बिछौना । चटाई ।  
 तृणवर्त—सज्ञा पु० १ ववहर । चक्रवात । २ एक दैत्य जिसे वृष्ण ने मार डाला था ।  
 तृतीय—वि० तीसरा ।  
 तृतीयक—सज्ञा पु० तीसरे दिन आनेवाला ज्वर ।  
 तृतीय प्रकृति—सज्ञा स्त्री० नपुंसक । बलीब । हिजड़ा ।  
 तृतीयांश—सज्ञा पु० तीसरा भाग ।  
 तृतीया—सज्ञा स्त्री० १ प्रत्येक पक्ष का तीसरा दिन । तीज । २ व्याकरण में करण कारक ।  
 तृतीयाश्रम—सज्ञा पु० वानप्रस्थाश्रम ।  
 तृप्त\*—सज्ञा पु० दे० "तृण" । तिनका ।  
 तृपति\*—सज्ञा स्त्री० दे० "तृप्ति" ।  
 तृपित\*—वि० दे० "तृप्त" ।  
 तृप्त—वि० १ जिसकी इच्छा पूरी हो गई हो । सतुष्ट । अयाया हुआ । २ प्रसन्न । खुश ।  
 तृप्ति—सज्ञा स्त्री० १ इच्छा पूरी होने से प्राप्त भावि और आनंद । सतोष । २ प्रसन्नता । सुखी ।  
 तृपा—सज्ञा स्त्री० १ प्यास । २ इच्छा । अभिलाषा । ३ लोभ । लालच ।  
 तृषामू—सज्ञा स्त्री० पट में जल रहने की जगह । कलाम ।

तृषावत या तृषावान्—वि० प्यासा ।  
 तृषित—वि० १ प्यासा । २ अभिलाषी । इच्छुक ।  
 तृष्णा—सज्ञा स्त्री० १ प्यास । २ उत्कट इच्छा । लोभ । लालच ।  
 तृष्णालु—वि० प्यासा । लालची । लोभी ।  
 तृ\*†—प्रत्य० १ से । द्वारा । २ से (अधिक) । ३ (बिसी पाल या स्थान) से ।  
 तैतालोस—वि० चान्नीस और तीन की सख्या, ४३ ।  
 तैतोस—वि० तीस और तीन की सख्या, ३३ ।  
 तैदुआ—सज्ञा पु० चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु ।  
 तैदू—सज्ञा पु० १ एक वृक्ष जिसकी लकड़ी आवनुस के नाम से बिकती है । २ इस पेड़ का फल । इसकी पत्तियाँ से 'पीडी' बनाई जाती है ।  
 ते—अव्य० दे० 'तै' ।  
 तैसर्वं—वे । वे लोग ।  
 तेइस या तेईस—वि० बीस और तीन की एक सख्या, २३ ।  
 तेखना\*†—क्रि० ज० बिगड़ना । क्रुद्ध होना । नाराज होना ।  
 तेण—सज्ञा स्त्री० [अ०] तलवार । खड्ग ।  
 तेपा—सज्ञा पु० १ खाँडा । खग । तलवार । २ दरवाज को पत्थर, निट्टी इत्यादि से बंद करने की क्रिया ।  
 तेज—सज्ञा पु० १ दीप्ति । वाति । चमक । आभा । २ पराक्रम । जोर । बल । ३ वीर्य । ४ सार भाग । उत्त्व । ५ ताप । गर्मी । ६ पित्त । ७ सोना । ८ तेजी । प्रचंडता । ९ प्रताप । रोव-दाब । १० सत्त्व गुण से उत्पन्न लिंग शरीर । ११ पाँच महा भूतों में से तीसरा भूत जिसमें वायु और प्रकाश होता है । अग्नि । १२ गवखन । १३ मज्जा ।  
 तेज—वि० [फा०] १ तीक्ष्ण धार का । पैना । २. तीक्ष्णगामी । ३ जल्दी काम करनेवाला । फुरतीला । ४ तीक्ष्ण । तीखा । झालदार । ५ महंगा । ६ उग्र । प्रचंड । ७ जल्दी असर करनेवाला । ८ चतुर । बुद्धिमान् । तीक्ष्ण बुद्धिवाला ।

तेजपत्ता-सज्ञा पु० दालचीनी की जाति का एक पेड़। इसकी पत्तियाँ सुगंधित होने के कारण दाल, तरकारी आदि में मसाले की तरह डाली जाती हैं।

तेजपत्र-सज्ञा पु० दे० "तेजपत्ता"।

तेजपात-सज्ञा पु० दे० "तेजपत्ता"।

तेजवर्त-वि० दे० "तेजवान्"।

तेजवान्-वि० १ जिसमें तेज हो। तेजस्वी। २.

वीर्यवान्। ३ बली। शक्तवाला। ४. चमकीला।

तेजस्-सज्ञा पु० दे० "तेज"।

तेजसी\*-वि० तेज-युक्त।

तेजस्कर-सज्ञा पु० तेज बढ़ानेवाला।

तेजस्व-सज्ञा पु० महादेव।

तेजस्वत्-वि० तेजस्वी।

तेजस्विता-सज्ञा स्त्री० तेजस्वी होने का भाव।

तेजस्विनी-सज्ञा स्त्री० [ ] मालकौंगनी।

वि० प्रताप या तेज से युक्त स्त्री।

तेजस्वी-वि० १ काश्चिमान्। तेजयुक्त। जिस

में तेज हो। २ प्रतापी। प्रभावशाली।

तेजाव-सज्ञा पु० [ फा० ] [ वि० तेजावी ] किराी क्षार पदार्थ का अम्ल-सार।

तेजी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. तेज होने का भाव।

२ तीव्रता। प्रबलता। ३ उग्रता। ४

शीघ्रता। जल्दी। ५. मर्हणी। मदी का

उलटा।

तेजोमण्डल-सज्ञा पु० सूर्य, चंद्रमा आदि

आकाशीय पिंडों के चारों ओर का मंडल।

छटा-मंडल।

तेजोमय-वि० कांति या ज्योतिर्वाला। प्रकाश-

मय। तेज से पूर्ण। ज्योतिर्मय।

तेजोरूप-सज्ञा पु० जो अग्नि या तेज रूप हो।

ब्रह्म।

तेजोवान्-सज्ञा पु० तेजवाला।

तेजोवृत्त-वि० जिसका तेज (कांति, शोभा,

चमक या पराक्रम) नष्ट हो गया हो।

तेतनार्-वि० दे० "विवना"।

तेतार्-वि० [ स्त्री० तेती ] उटना। उसी

बदर। उसी प्रमाण का।

तेतिक\*]-वि० उटना। ;

तेतो\*]-वि० दे० "तेता"। उटना।

तेमन-सज्ञा पु० व्यजन। पका हुआ भोजन।

तेमरू-सज्ञा पु० तेंदू।

तेरस-सज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की तेरहवी

तिथि। त्रयोदशी।

तेरह-वि० दस और तीन।

सज्ञा पु० दस और तीन की संख्या। १३।

तेरही-सज्ञा स्त्री० मरने के दिन से

तेरहवी तिथि। जिस दिन पिंडदान

और ब्राह्मण-भोजन आदि कराया जाता

है।

तेरा-सर्व० [ स्त्री० तेरी ] मध्यम पुरुष एक-

वचन संबधकारक सर्वनाम। तू का संबध-

कारक रूप।

तेरस-सज्ञा पु० दे० "त्योरस"।

सज्ञा स्त्री० दे० "तेरस"।

तेरो\*-सर्व० दे० "तेरा"।

तेल-सज्ञा पु० १ तैल। वह चिकना तरल

पदार्थ जो बीजों या वनस्पतियों आदि से

निवाला जाता है। सिन्धु द्रव्य। रोगन।

२. विवाह से कुछ पहले की एक रस्म जिसमें

बर और बधू को हस्ती मिला हुआ तेल

लगाया जाता है।

मुहा०-तेल उठना या चढ़ना-विवाह से

पहले तेल की रस्म पूरी होना।

तेलगू-सज्ञा पु० दक्षिण भारत की एक भाषा।

तेलहन-सज्ञा पु० वे बीज जिनसे तेल निकलता

है। जैसे, सरसो।

तेलहार-वि० १ तेल-युक्त। जिसमें

तेल हो। २ तेल-संबध।

तेला-सज्ञा पु० तीन दिन-रात का उपवास।

तेलित-सज्ञा स्त्री० [ तेली वा स्त्री० ] १ तेली

जाति की स्त्री। २ एक बरसाती कीड़ा जिसके

छूने से शरीर में छाले पड़ जाते हैं।

तेलिया-वि० १ तेल की तरह चिकना

और चमकीला। २. तेल के-से रंगवाला।

सज्ञा पु० १. काला, चमकीला रंग। २.

इस रंग का फोंडा। ३ एक प्रकार का बमूल।

४ सीमिया नामक विष।

तेलिया कंद-सज्ञा पु० एक प्रकार का कंद।

जहाँ यह पैदा होता है, वहाँ की भूमि तेल

ते गोची दुर्द जान पड़ती है।  
 तेलिया कुमंत-गंगा पु० पोंडे या एव रग  
 जो अधिप पाला या कुमंत होता है।  
 तेलिया पत्तान-गंगा पु० एक प्रकार का  
 चिबना परवर।  
 तेलिया सुरंग-गंगा पु० दे० "तेलिया कुमंत"।  
 तेली-गंगा पु० [स्त्री० तेलिन] हिंदुओं की  
 एक जाति। इस जाति के लोग तल का  
 व्यवसाय करते हैं।  
 मुहा०—तेली का बेल=हर समय काम में  
 लगा रहनेवाला व्यक्ति।  
 तेवन†\*—गंगा पु० १ नजरवाण। २ आमोद-  
 प्रमोद का स्थान। शीड़ा-स्थल। ३ शीड़ा।  
 तेवर-गंगा पु० १ कुपित दृष्टि। शोध-भरी  
 चितवन। २ भीह। झुट्टी।  
 मुहा०—तेवर चटना=दृष्टि का ऐसा हो  
 जाना जिससे शोध प्रकट हो। तेवर बदलना  
 या विगडना=१ बेमुरीबत हो जाना। २  
 लफा हो जाना।  
 तेवरस-गंगा पु० तीसरा वर्ष। तेस्त।  
 तेवराना-वि० थ० भ्रम में पडना। सोच  
 में पडना। आश्चर्य करना। मूर्च्छित होना।  
 तेवरी-गंगा स्त्री० दृष्टि। त्पारी  
 तेवाना\*†-कि० अ० सोचना। चिन्ता करना।  
 तेह\*†-गंगा पु० १ शोध। गुस्ता। २  
 अहंकार। घमंड। ताब। ३ तेजी। प्रचंडता।  
 तेहरा-वि० १ तीन परत किया हुआ। तीन  
 लपेट का। २ जो एक साथ तीन-तीन  
 हो। ३ जो तीसरी बार किया गया हो।  
 ४ तिम्ना।  
 तेहराना-कि० स० किसी काम को तीसरी  
 बार करना। तीन परत या लपेट का करना।  
 तेहवार-गंगा पु० दे० "त्योहार"।  
 तेह-गंगा पु० १ शोध। गुस्ता। २ अहंकार।  
 तेहि\*†-सर्व० उसको। उसे।  
 तेही-गंगा पु० १. शोध। २ अभिमानी।  
 घमंडी।  
 ते†\*—कि० वि० से।  
 वि० दे० "ते"।  
 सर्व० तू।  
 तैसोत-वि० तीस और तीन की संख्या। ३३।

ते†-वि० वि० उतना। उस भाँति। उस  
 मात्रा का।  
 सज्ञा पु० [अ०] १ निबटारा। फंगला।  
 २ पूर्ति। पूरा करना।  
 वि० १ जिसका निबटारा या फंगला हो  
 चुका हो। २ जो पूरा हो चुका हो।  
 यो०—तै-समान=अतः समान्ति।  
 तैजस-गंगा पु० १ कोई घमंडीला पदार्थ।  
 २ घी। ३ पराक्रमी। ४ भगवान्। ५  
 वह शारीरिक शक्ति जो आहार को रस  
 तथा रस को घातु में परिणत करती है।  
 ६ मद। अहंकार।  
 वि० तेज से उत्पन्न। तेज-सवधी।  
 तैतिर-गंगा पु० तीवर।  
 तैतिर-गंगा पु० १ तीवर। तीवर पक्षिया  
 का झुंड। २ गंडा।  
 तैनात-वि० [अ०, सज्ञा तैनाती] किसी काम  
 पर लगाया या नियत किया हुआ। मुवरंर।  
 नियत। नियुक्त।  
 तैनाती-गंगा स्त्री० नियुक्ति। मुवरंरी।  
 तैमार-वि० १ दुस्त। ठीक। संत। २  
 उद्यत। तत्पर। मुस्तंद। ३ प्रस्तुत। उप-  
 स्थित। मौजूद। ४. हृष्ट-पुष्ट। मोटा-  
 ताजा।  
 मुहा०—हाथ तैयार होना=कला आदि में  
 हाथ का बहुत अभ्यस्त और कुशल होना।  
 तैयारी-गंगा स्त्री० १ तैयार होने की क्रिया  
 या भाव। दुस्त। २ उत्पत्ति। मुस्तंदी।  
 ३ शरीर की पुष्टता। ४ प्रवध आदि के  
 सबध की धूम धाम। ५ सजावट।  
 तैयो†-कि० वि० दे० 'तऊ'। तीभी।  
 तैरना-कि० अ० पैरना। सरना। पार  
 होना। पानी के ऊपर ठहरना। उतराना।  
 तैराई-गंगा स्त्री० तैरने की क्रिया।  
 तैराक-वि० तैरनेवाला। जो अच्छी तरह  
 तैरना जानता हो।  
 तैराना-कि० स० १ दूसरे को तैरने में प्रवृत्त  
 करना। २ घुसाना।  
 तैलंग-गंगा पु० दक्षिण भारत का एक  
 प्राचीन देश। इस देश की भाषा तैलंग  
 कहलाती है।

तैलगी-सज्ञा पु० तैलग-देशवासी।  
 सज्ञा स्त्री० तैलग देश की भाषा।  
 तैल-सज्ञा पु० दे० "तेल"।  
 तैलत्व-सज्ञा पु० तैल का भाव या गुण।  
 तैलधान्य-सज्ञा पु० धान्य का एक वर्ग जिसमें राई, सरसो, खस तथा कुसुम आदि के बीज हैं।  
 तैलयत्र-सज्ञा पु० बोलहू।  
 तैलाक्त-वि० जिसमें तैल लगा हो।  
 तैलाटी-सज्ञा स्त्री० बरें।  
 तैलाभ्यग-सज्ञा पु० शरीर में तैल मलने की क्रिया। तैल की मालिश।  
 तैलिक-सज्ञा पु० तैली।  
 वि० तैल-सम्बन्धी।  
 तैली-सज्ञा पु० तैली।  
 तैश-सज्ञा पु० [अ०] आवेश। क्रोध। गुस्सा।  
 तैष-सज्ञा पु० पूस का महीना। पाँच मास।  
 तैवीज-सज्ञा स्त्री० पीपी पूणमासी। पूस की पूर्णिमा।  
 तैसा-वि० तादृश। उस प्रकार का।  
 तैसे-क्रि० वि० दे० 'वैसे'।  
 तै\*+क्रि० वि० दे० 'त्यों'। वैसे।  
 तोअर\*+सज्ञा पु० दे० 'तोमर'।  
 तौद-सज्ञा स्त्री० पट के आगे का बड़ा हुआ भाग। पेट का फुलाव।  
 तोदल-वि० जिसका पट आगे को बड़ा हो।  
 तोदवाला।  
 तोदा-सज्ञा पु० तालाब आदि से पानी निकालने का मार्ग।  
 तोदीला-वि० तादवाला।  
 तो\*+नर्व० तोरा।  
 अव्य० तव। तदा। एव अव्यय। नि सन्देह।  
 \*वि० अ० या।  
 तोइ\*+गना पु० पानी। जल।  
 तोइ-सज्ञा स्त्री० मगजी। गोठ। बुरखे आदि में लगी हुई पट्टी। चादर आदि की गोठ।  
 तोब-सज्ञा पु० १ तिनो। २ पुन।  
 तोबम-सज्ञा पु० १ जो या नया अकुर। २ अकुर। ३ हरा रंग। ४ बादल। ५ पान का मेल।  
 तोत\*+गना पु० दे० "तोत"। गन्नीय।  
 तोतब-सज्ञा पु० एक छंद का नाम जिसमें

हरेक पद में १२ अक्षर होते हैं।  
 तोटका-सज्ञा पु० दे० "टोटका"।  
 तोड-सज्ञा पु० १ टूट-फट। खण्डन। गजन।  
 २ तोडने की क्रिया। ३ नदी आदि के जल का तेज बहाव। ४ कुश्ती में किसी दाँव से बचने के लिए किया हुआ दाँव या पेंच। ५ किसी प्रभाव आदि की नष्ट करनेवाला पदार्थ या कार्य। प्रतिकार। भारक। ६ बार। दफा। ७ झोक। ८ दही का पानी।  
 तोडक-वि० तोडनेवाला।  
 तोड-जोड-सज्ञा पु० दाँव-पेंच। चाल। युक्ति।  
 तोडना-क्रि० स० १ टुकड़े करना। २ अलग करना। ३ किसी वस्तु का कोई अंग किसी प्रकार खंडित, भंग या बराम करना। ४ हल जोड़ना। ५ सेंध लगाना। ६ दुबल या अशक्त करना। ७ किसी सघटन, या सस्था आदि को भंग करना। ८ नियम का उल्लंघन करना। प्रतिज्ञा भंग करना। ९ मिटा देना। बना न रहने देना। खपया भुनाना।  
 तोड-फोड-सज्ञा पु० तोडना-फोडना। बर्बाद करना। दूसरा को हानि पहुँचाने के लिए किसी वस्तु को नष्ट करना। जैसे तोड-फोड की चारेंवाई। जनोपयोगी वस्तुओं को तोडना या बर्बाद करना। रेलगाड़ियों को पटरियाँ से मिराने का या अन्य प्रकार के हानिकारक कार्य।  
 तोडवाई-सज्ञा स्त्री० १ तोडवाने की मजदूरी। २ खपया भुनाने का दाम। बट्टा।  
 तोडवाना-क्रि० स० १ दे० "तुडवाना"। २ खपया भुनाना। गहने आदि तोडवाना। ताडने का चाम करना।  
 तोडा-गना पु० १ तोते, चाँदी आदि की लच्छेदार और थोड़ी जमीर या गिनती। पैर का एक गहना। २ खपय रंगों की टाट आदि की धैली। ३ नदी का किनारा। पट। ४ नदी के तट पर बाड़, मिट्टी आदि का संदाग। ५ पाटा। पट्टी। टाटा। ६ पंथीजा जिंगे पुरानी बहूक या तोप छाँदी जाती या। ७ बहू खाहा जिस पर-

मग पर मारने से आग निबलती है । ८  
मिसरी की तरह साफ चीनी। रस्ती वा  
टुपडा ।

मुहा०—तोड़े उलटना या गिनना=बहुत  
सा द्रव्य देना । तोड़ेदार वदूय=बहुत वदूय  
जो तोड़ा या फलीता दागवर छोड़ी जाय ।

तोड़ाना-क्रि० स० तुड़ाना ।

तोण†-सज्ञा पु० तरकश । तूणीर ।

तोत†-सज्ञा पु० डेर । समूह ।

तोतई-वि० तोते के रंग का ।

सज्ञा पु० धानी रंग ।

तोतला-वि० १ जो तुतलाकर बोले । अस्पष्ट  
बोलनेवाला । २ जिसमें उच्चारण स्पष्ट  
न हो ।

तोता-सज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रसिद्ध पक्षी  
जिसके शरीर का रंग हरा और चोंच लाल  
होती है । ये आदमियों की बोली की बहुत  
अच्छी तरह नकल करते हैं, इसलिए लोग  
इन्हे पालते हैं । २ शुक्र । कीर । सुआ । सुग्गा ।

मुहा०—हाथों के तोते उड़ जाना=बहुत  
धवरा जाना । सितपिटा जाना । तोते की  
तरह आँखें फेरना या बदलना=बहुत बे-  
सुरीबत होना । तोता पालना=किसी दोष,  
दुर्व्यसन या रोग को जान-बूझकर बढ़ाना ।

तोताचश्म-सज्ञा पु० [फा०] तोते की तरह आँखें  
फेर लेनेवाला । बे-सुरीबत । कुवध्न ।

तोताचश्मी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बेसुरीबती ।  
बेवफाई ।

तोती-सज्ञा स्त्री० १ तोते की भादा । २  
रखेलिन ।

तोवन-सज्ञा पु० १ बाबुक, कोडा, चमोटी  
आदि । २ व्यथा । ३ पीडा । एक पद ।

तोदरी-सज्ञा पु० [फा०] फारस में होनेवाला  
एक प्रकार का बड़ा कँटीला पेड़, जिसके  
थोड़े थोड़े फल के काम में आते हैं ।

तोप-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बहुत बड़ा  
अस्त्र जो प्रायः दो या चार पहियों की  
गाड़ी पर रखा रहता है और जिसमें गोले  
रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर चलाए  
जाते हैं ।

मुहा०—तोप कीलना=तोप की नाली में

लकड़ी का कुदा धूव कमर ठोक देना जिसमें  
उसमें से गोला न चलाया जा सके । तोप की  
सलामी देना या उतारना=किसी प्रसिद्ध  
पुरुष के व्यागमन पर अथवा किसी महत्व-  
पूर्ण घटना के समय बिना गोले के बाह्य  
भरकर तोप छोड़ना या शब्द करना ।

तोपखाना-मज्ञा पु० १ वह स्थान जहाँ तोपें  
और उनका कुछ सामान रहता हो । २  
युद्ध के लिए सुसज्जित चार से आठ तोपों  
तक का समूह ।

तोपची-सज्ञा पु० तोप चलानेवाला । गोल-  
दाज ।

तोपना†-क्रि० स० ढाँकना । छिपाना ।

तोपाई-सज्ञा स्त्री० तोपने की क्रिया या  
मजदूरी ।

तोपा-सज्ञा पु० एक टाँके में की हुई सिलाई ।

तोपास्त-सज्ञा पु० झाड़ू देनेवाला । झाड़ू-  
बरदार ।

तोफा†-वि०, सज्ञा पु० दे० "तोहफा" ।

तोबडा-सज्ञा पु० [फा०] चमड़े या टाट  
आदि की थैली जिसमें दाना भरकर घोड़े  
के मुँह में लटका देते हैं ।

मुहा०—तोबडा चढ़ाना=बोलने से रोकना ।

तोबा-सज्ञा स्त्री० [अ०] किसी अनुचित कार्य  
को भविष्य में न करने की शपथपूर्वक दृढ़  
प्रतिज्ञा ।

मुहा०—तोबा तिल्ल करना या मचाना=  
रोते, चिल्लाते या दीनता दिखलाते हुए तोबा  
करना । तोबा बुलवाना=पूर्ण रूप से परास्त  
करना ।

तोम-सज्ञा पु० समूह । डेर ।

तोमडी-सज्ञा स्त्री० तूबडी ।

तोमर-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का पुराना  
अस्त्र जिसमें लकड़ी के डंडे में आगे की ओर  
लोहे का बड़ा फल लगा रहता था । बरछी ।  
साँग । २ एक प्रकार का छद्म । ३ एक  
प्राचीन देश का नाम । ४ इस देश का निवासी  
५ राजपूत क्षत्रियों की एक शाखा ।

तोप-सज्ञा पु० जल । पानी ।

तोपद-सज्ञा पु० १ बादल । २ घी । ३ नामर  
मोथा ।

तोपघर, तोपघार-सज्ञा पु० १. मेघ। बादल।  
२. मोया।

तोपधि-सज्ञा पु० समुद्र।

तोपनिधि-सज्ञा पु० समुद्र। सागर।

तोपाधार-सज्ञा पु० तालाब।

तोपेश-सज्ञा पु० वरुण।

तोर्\*†-सज्ञा पु० दे० "तोड़"। अरहर।

\*†-वि० दे० "तेरा"।

तोर्ई-सज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

तोरण-सज्ञा पु० १. घर या नगर का बाहरी फाटक। बाह्यद्वार। २. वे मालाएँ आदि जो सजावट के लिए खंभा और दीवारों में लटवाई जाती हैं। वदनवार। ३. कन्धरा। कठी। महादेव।

तोरण\*†-सज्ञा पु० दे० "तोरण"।

तोर्ना-क्रि० स० दे० "तोड़ना"।

तोरा\*†-सर्व० दे० "तेरा"।

तोराणा\*†-क्रि० स० दे० "तुड़ाना"।

तोराबानु\*†-वि० [स्त्री० तोरावती] बेग-वान्। तेज।

तोरी-सज्ञा स्त्री० दे० "तुरई"।

तोल†-सज्ञा स्त्री० दे० "तौल"।

सज्ञा पु० तौला।

तोलन-सज्ञा पु० १. तोलने की क्रिया।  
२. उठाने की क्रिया।

तोलना-क्रि० स० दे० "तौलना"।

तौला-सज्ञा पु० १. वारह मासे की तोल।  
२. इस तौल का बाट।

तोश-सज्ञा पु० हिंसा।

तोशक-सज्ञा स्त्री० [तु०] खोल में रूई आदि भरकर बनाया हुआ गुरगुदा बिछोना। पर्लंग पर बिछाने का गद्दा।

तोशदान-सज्ञा पु० [पा०] १. मार्ग के लिए जलपान या दूसरी आवश्यक चीजें रखने का पात्र आदि। २. कारखाने रखने की कमरे की थैली।

तोशा-सज्ञा पु० [पा०] १. यह साथ पदार्थ जो यात्री मार्ग के लिए अपने साथ रख लेता है। पायेस। २. साधारण खाने-पीने की चीज।

तोशाखाना-सज्ञा पु० यह बड़ा कमरा या

स्थान जहाँ राजाश्री या बमीरी के बहुमूल्य कपड़े और गहने आदि रखे रहते हैं।

तोष-सज्ञा पु० १. अपाने या मन भरने का भाव। तुष्टि। सतोष। तृप्ति। २. प्रसन्नता। आनन्द।

वि० अल्प। थोड़ा।

तोषक-वि० सतुष्ट करनेवाला।

तोषण-सज्ञा पु० १. तृप्ति। सतोष। २. सतुष्ट करने की क्रिया या भाव।

तोषना\*-क्रि० स० सतुष्ट करना। तुष्ट करना।  
क्रि० अ० सतुष्ट होना। तुष्ट होना।

तोषल-सज्ञा पु० १. कस के एक असुर मल्ल का नाम जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। २. मूसल।

तोषित-वि० १. जिसका तोप हो गया हो।  
२. सतुष्ट। तृप्त।

तोस\*-सज्ञा पु० दे० "तोष"।

तोसल\*†-सज्ञा पु० दे० "तोषल"।

तोसा-†-सज्ञा पु० दे० "तोशा"।

तोसागार\*†-सज्ञा पु० दे० "तोशाखाना"।

तोहफा-सज्ञा पु० [अ०] तोगाव। उपहार।  
वि० अच्छा। उत्तम। बढ़िया।

तोहमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] असत्य आरोप।  
झूठा कलक।

तोहि-सर्व० तुझको। तुझे।

तौकना-क्रि० अ० दे० "तौसना"। झुलस जाना। गर्मी से सतप्त होना।

तौस†-सज्ञा स्त्री० व्यास जो घूप के कारण लगे।

तौसना-क्रि० अ० गर्मी से झुलस जाना।  
गर्मी से सतप्त होना।

तौसा-सज्ञा पु० अधिक ताप। बड़ी गर्मी।

ती†\*-क्रि० वि० दे० "ती"।

वि० अ० था।

तीक-सज्ञा पु० [अ०] १. गले में पहनने का एक गहना। २. अपराधी या पागल के गले में पहनने की पटरी या मंडरा। ३. पक्षियों के गले का प्राकृतिक चिह्न। हंगुली। ४. पट्टा। चप-रास। ५. कोई गोल धरा या पदार्थ।

तीन†-सर्व० यह। जो।

तीनी-सज्ञा स्त्री० रोड़ी सँनने का छोटा टका। टट्टी। लवी।

तौफीक—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. ईश्वर की श्रृंखला। २. श्रद्धा। सामर्थ्य। ३. दानित।  
 तौवा—सज्ञा स्त्री० दे० "तौवा"।  
 तौर—सज्ञा पुं० [अ०] १. चाल-ढाल। चाल-चलन। २. हालत। दशा। अवस्था। ३. तरीका। चर्ज। ढग। ४. प्रकार। भाँति। तरह।  
 यौ०—तौर-चरीका=चाल-चलन। रीति-रवाज।  
 तौरात—सज्ञा पुं० दे० "तौरत"। यहूदियों का प्रधान धर्मग्रन्थ।  
 तौरि\*—सज्ञा स्त्री० घुमेर। घुमरी। चक्कर।  
 तौरत—सज्ञा पुं० यहूदियों का प्रधान धर्मग्रन्थ।  
 तौल—सज्ञा पुं० १. तराजू। २. तुल्यारसि।  
 सज्ञा स्त्री० १. भार। वजन। २. तौलने की क्रिया या भाव।  
 तौलना—वि० स० १. वजन करना। जोखना। २. साधना। निशाना लगाने के लिए हाथ ठीक करना। ३. मिलान करना। ४. गाड़ी के पहिए में तेल देना। आँगना।  
 तौलवाना—क्रि० स० तौलने का काम दूसरे से कराना। तौलाना।  
 तौला—सज्ञा पुं० १. अनाज तौलनेवाला मनुष्य। २. तबिया। दूध नापने का बरतन। ३. मिट्टी का कमीरा। ४. महुए की शराब।  
 तौलाई—सज्ञा स्त्री० तौलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।  
 तौलाना—क्रि० स० तौलने का काम दूसरे से कराना।  
 तौलिया—सज्ञा स्त्री० शरीर पोछने का वस्त्र। एक प्रकार का अँगोछा।  
 तौलिया—सज्ञा पुं० अनाज तौलनेवाला।  
 तौलना—क्रि० अ० गरमी से बहुत व्याकुल होना।  
 क्रि० स० गरमी पहुँचाकर व्याकुल करना।  
 तौहीन—सज्ञा स्त्री० [अ०] अपमान। अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।  
 तौहीनी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "तौहीन"।  
 त्यक्त—वि० छोड़ा हुआ। त्यागा हुआ। जिसका त्याग हो।

त्यजन—सज्ञा पुं० [वि० त्यजनीय]। छोड़ने का काम। त्याग।  
 त्यजनीय—वि० त्यागने योग्य। छोड़ने लायक।  
 त्याग—सज्ञा पुं० १. किसी पदार्थ को छोड़ देना। उत्सर्ग। दान। २. किसी बात को छोड़ने की क्रिया। ३. सबध या लगाव न रखने की क्रिया। ४. विरक्ति आदि के कारण सासारिक विषयो और पदार्थों आदि को छोड़ने की क्रिया।  
 त्यागना—क्रि० स० छोड़ना। तजना। पृथक् करना। त्याग करना।  
 त्यागपत्र—सज्ञा पुं० १. इस्तीफा। २. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार के त्याग का उल्लेख हो।  
 त्यागी—वि० स्वार्थ या सासारिक सुखों को छोड़नेवाला। विरक्त।  
 त्याग्य—वि० त्यागने योग्य।  
 त्याग—वि० दे० "तैयार"।  
 त्यौ—क्रि० वि० दे० "त्यो"।  
 त्यौ—क्रि० वि० १. उस प्रकार। उस तरह। उस भाँति। २. तत्काल। उसी समय।  
 त्योहारी—सज्ञा पुं० १. पिछला तीसरा वर्ष। वह वर्ष जिसे बीते दो बरस हो चुके हों। २. आगामी तीसरा वर्ष।  
 त्योरी—सज्ञा स्त्री० चितवन। दृष्टि। निगाह।  
 मुहा०—त्योरी चढ़ना या बदलना=ऐसी दृष्टि जिससे क्रोध प्रकट हो। अर्थात् चढ़ना।  
 त्योरी में बल पटना=त्योरी बढना।  
 त्योहार—सज्ञा पुं० पर्व-दिन। धार्मिक या जातीय उत्सव मनाने का दिन।  
 त्योहारी—सज्ञा स्त्री० किसी त्योहार के उपलक्ष में नौकरो आदि को दिया जानेवाला धन।  
 त्यौ—क्रि० वि० दे० "त्यो"।  
 त्योनार—सज्ञा पुं० ढग। तर्ज।  
 त्योर—सज्ञा पुं० दे० "त्योरी"।  
 त्योराना—क्रि० अ० सिर में चक्कर आना।  
 त्योरी—सज्ञा स्त्री० दे० "त्योरी"।  
 त्योरस—सज्ञा पुं० दे० "त्योरस"।  
 त्योहार—सज्ञा पुं० दे० "त्योहार"।  
 त्योहारी—सज्ञा स्त्री० दे० "त्योहारी"।  
 य—त और २ के योग से बना हुआ एक समुक्त अक्षर। कुछ शब्दों के अन्त में प्रत्यय

के स्थान पर इसका प्रयोग होता है, जिसका अर्थ होता है 'एक स्थान पर'। जैसे—सर्वत्र, एकत्र आदि।

त्रया-सज्ञा स्त्री० [वि० त्रयमान्] १. लज्जा। लाज। शर्म। हया। २. छिनाल स्त्री। व्यभिचारिणी। ३. कीर्ति। यश। वि० लज्जित। शरमिदा।

त्रपित-वि० लज्जित। सलज्ज।

त्रपिष्ठ-वि० अत्यन्त लज्जित। सलज्ज।

त्रयु-सज्ञा पु० सीसा। रांगा।

त्रयुल-सज्ञा पु० रांगा।

त्रयुष-सज्ञा पु० १. खीरा। २. रांगा।

त्रप्ता-सज्ञा स्त्री० कफ। जमी हुई श्लेष्मा।

त्रय-वि० १. तीन। २. तीसरा।

त्रयी-सज्ञा स्त्री० १. तीन वस्तुओं का समूह। त्रिगुड्ढ। २. दुर्गा। ३. वेदत्रय, ऋग्वेद, यजुर्वेद, और साम।

त्रयीमय-सज्ञा पु० १. परमेश्वर। २. सूर्य।

त्रयीमुख-सज्ञा पु० बाह्यण।

त्रयोदश-वि० तेरह।

त्रयोदशी-सज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि। तेरस।

त्रष्टा-सज्ञा पु० १. विश्वकर्मा। गढ़नेवाला। २. दे० "तृष्टा"। (तृस्तरी)।

त्रस-सज्ञा पु० १. तन। जगल। २. जगम। ३. त्रसरेणु। ४. जैन मतानुसार एक प्रकार का जीव।

त्रसन-सज्ञा पु० १. भय। डर। २. छद्मेण।

त्रसना\*+क्रि० अ० भय से काँप उठना। डरना।

त्रसरेणु-सज्ञा पु० सूक्ष्म कण। धूप में चमकता हुआ कण।

त्रसाना\*+क्रि० अ० डराना। घमकाना। भय दिखाना।

त्रसित\*+क्रि०-वि० १. भयभीत। डरा हुआ। २. पीडित। सदाया हुआ।

त्रस्त-वि० १. भयभीत। डरा हुआ। २. जिसे वष्ट पहुँचा हो। पीडित।

त्राटक-सज्ञा पु० योग की ६ त्रियाओं में अन्तिम त्रिया।

त्राटिका-सज्ञा स्त्री० योग की एक मुद्रा। दे० "त्राटक"।

त्राण-सज्ञा पु० १. रक्षा। वचाव। हिफाजत। २. रक्षा का साधन। ३. कवच।

त्राता, त्रातार-सज्ञा पु० रक्षक। बचानेवाला।

त्रायमाण-सज्ञा पु० १. रक्षित। २. एक लता।

वि० रक्षक। बचानेवाला।

त्रास-सज्ञा पु० १. डर। भय। शका। २. कष्ट। हीरा आदि मणियों में एक प्रकार का दोष।

त्रासक-सज्ञा पु० १. डरानेवाला। भयभीत करनेवाला। २. निवारक। दूर करनेवाला।

त्रासना\*+क्रि० अ० डराना। भय दिखाना। कष्ट देना।

त्रासित-वि० दे० "त्रस्त"।

त्राहि-अव्य० वचाओ। रक्षा करो।

त्रिश-वि० तीसरी।

त्रिशत्-वि० तीस। ३०।

त्रि-वि० तीन। जैसे, त्रिकाल।

त्रिकट त्रिकण्डक-वि० १. जिसमें तीन कांटे हों। २. त्रिशूल। ३. गोखुर (एक औषध)।

त्रिक-सज्ञा पु० १. तीन का समूह। २. रीठ के नीचे का वह भाग जहाँ कूँहे की हड्डियाँ मिलती हैं। ३. कमर। ४. त्रिकला। ५. विरमुहानी।

त्रिकुट-सज्ञा पु० १. त्रिकटु पर्वत। २. विष्णु।

वि० जिसके तीन शृंग हों।

त्रिकट-सज्ञा पु० दे० "त्रिकटु"।

त्रिकट, त्रिकटुक-सज्ञा पु० सोठ, मिर्च और पीपल इन तीन वस्तुओं का समूह।

त्रिकांड-सज्ञा पु० १. अमरकोष का दूसरा नाम। २. निरुध्व का दूसरा नाम।

वि० जिसमें तीन कांड हों।

त्रिकांडी-सज्ञा स्त्री० वह प्रथ जिसमें वर्म, उपासना और ज्ञान का वर्णन हो। जैसे वेद।

त्रिबाल-सज्ञा पु० १. मृत, वृत्तमान और भविष्य। २. प्राय, मध्यम और साय।

त्रिबाल-सज्ञा पु० संयज्ञ। तीनों बाल की

ज्ञान, ज्ञान, ज्ञान

त्रिकालदर्शन-वि० दे० "त्रिकालज्ञ"।  
 त्रिकालदर्शी-सज्ञा पु० तीनों पाठों की बात जाननेवाला व्यक्ति। त्रिकालज्ञ।  
 त्रिकुट-सज्ञा पु० दे० "त्रिकूट"।  
 त्रिकुटा-सज्ञा पु० सोठ, भिचं और पीपल।  
 तीन वस्तुओं का समूह।  
 त्रिकुटी-सज्ञा स्त्री० दोना भौटा के बीच का स्थान।  
 त्रिकूट-सज्ञा पु० १- तीन चोटियावाला पहाड़। २- यह पर्वत जिस पर लंबा बसी हुई मानी जाती है। ३- एक पर्वत। ४- योग म-मस्त्व के छ चक्रों में से पहला चक्र।  
 ५- संघा नगर।  
 त्रिकोण-सज्ञा पु० १- तीन कोने का क्षेत्र। त्रिभुज क्षेत्र। २- तीन कोनेवाली वस्तु।  
 त्रिकोणमिति-सज्ञा स्त्री० त्रिकोण वस्तुओं को मापने की विद्या। गणित का वह विभाग जिसमें त्रिभुज के कोण, बां-विस्तार आदि का मान निकालने की रीति का वर्णन है।  
 त्रिष्ठा-सज्ञा स्त्री० दे० "तृष्ठा"।  
 त्रिगण-सज्ञा पु० १- त्रिवर्ग। अर्थ, धर्म और काम। २- त्रिकला। ३- त्रिकुटा। ४- बुद्धि, स्थिति और क्षय। ५- सत्त्व, रज और तम।  
 त्रिगर्त-सज्ञा पु० उत्तर भारत के उस प्रांत का प्राचीन नाम जिसमें आज-कल जालंधर और कांगड़ा आदि नगर हैं।  
 त्रिगुण-सज्ञा पु० सत्त्व, रज और तम, इन तीनों गुणों का समूह।  
 वि० तीन गुण। त्रिगुणा।  
 त्रिगुणात्मक-वि० [स्त्री० त्रिगुणात्मिका]  
 सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त।  
 त्रिहस्त-सज्ञा पु० महादेव।  
 त्रिजग-सज्ञा पु० १- पशु तथा कीड़े-मकोड़े। २- तिर्यक्। ३- त्रिभुवन। तीनों लोक-स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल।  
 त्रिजट-सज्ञा पु० महादेव।  
 त्रिजटा-सज्ञा स्त्री० १- त्रिभीषण की बहिन जो अशोकवाटिका में जानकीजी के पास रहा करती थी। २- बेल का पेड़।  
 त्रिजातक-सज्ञा पु० इलायची। दालचीनी। तैजपत्ता।

त्रिजामा-सज्ञा स्त्री० रात्रि।  
 त्रिज्या-सज्ञा स्त्री० वृत्त के केंद्र से परिधि तक की रेखा। व्यास की आधी रेखा।  
 त्रिणता-सज्ञा स्त्री० धनुष। कामुक। यमान।  
 त्रितय-सज्ञा पु० धर्म, अर्थ और काम का समूह। तीन की सन्ध्या। ३।  
 त्रिदंड-सज्ञा पु० सन्यास आश्रम का चिह्न।  
 चांग का एक डंडा जिसमें सिरे पर दो छोटी लकड़ियाँ बंधी होती हैं।  
 त्रिदंडी-सज्ञा पु० सन्यासी। मन, बचन और कर्म को दमन करनेवाला। त्रिदंड धारण करनेवाला सन्यासी।  
 त्रिदल-सज्ञा पु० बेल का पत्ता। बिल्वपत्र।  
 त्रिदश-सज्ञा पु० १- देवता। २- जीम।  
 त्रिदशायुध-सज्ञा पु० वज्र।  
 त्रिदशालय-सज्ञा पु० १- स्वर्ग। २- सुमेरु पर्वत।  
 त्रिदशाहार-सज्ञा पु० अमृत। सुधा। पीयूष।  
 त्रिदेव-सज्ञा पु० ब्रह्मा, विष्णु और महेश, ये तीना देवता।  
 त्रिदोष-सज्ञा पु० १- वात, पित्त और कफ, ये तीना दोष। २- सन्निपात रोग।  
 त्रिदोषज-वि० तीना दोषों से उत्पन्न।  
 सज्ञा पु० सन्निपात रोग।  
 त्रिदोषना-सज्ञा पु०-क्रि० अ० १- तीनों दोषों के कोष में पड़ना। २- काम, क्रोध और लोभ के फंदों में पड़ना।  
 त्रिधा-क्रि० वि० तीन तरह से।  
 वि० तीन तरह का।  
 त्रिधाम-सज्ञा पु० १- विष्णु। २- शिव। ३- अग्नि। ४- मृत्यु। ५- स्वर्ग।  
 त्रिधारा-सज्ञा स्त्री० १- तीन धारावाला सेंदुड़। त्रिधारा। २- तीनों लोको में बहने वाली नगा।  
 त्रिन्-सज्ञा पु० दे० "तृण"।  
 त्रिनयन-सज्ञा पु० महादेव। तीन नेत्रवाले।  
 त्रिनयना-सज्ञा स्त्री० दुर्गा।  
 त्रिनाभ-सज्ञा पु० विष्णु।  
 त्रिनेत्र-सज्ञा पु० महादेव।  
 त्रिपटु-सज्ञा पु० नाच।  
 त्रिपथ-सज्ञा पु० धर्म, ज्ञान और उपासना, इन तीनों मार्गों का समूह।

त्रिपयगा, त्रिपयगामिनी—सज्ञा स्त्री० गगा।  
 त्रिपद—सज्ञा पु० १ तिपाई। २ त्रिभुज।  
 ३ तीन पद या चरणवाला।  
 त्रिपदी—सज्ञा स्त्री० १ ह्रस्वपदी। २ तिपाई।  
 ३ गायत्री।  
 त्रिपाळी—सज्ञा पु० १ तीन वेदों का जानने-  
 वाला। त्रिवेदी। त्रिवारी। २ ब्राह्मणों  
 की एक उपजाति।  
 त्रिपाह—सज्ञा पु० १ ज्वर। २ परमेश्वर।  
 त्रिपादिका—सज्ञा स्त्री० तिपाई। ह्रस्वपदी।  
 त्रिपिटक—सज्ञा पु० भगवान् बुद्ध के उप-  
 देशों का संग्रह जिसे बौद्ध लोग अपना  
 प्रधान धर्मग्रन्थ मानते हैं। यह तीन भागों  
 में है—सूत्रपिटक, विनयपिटक और अभि-  
 धम्मपिटक।  
 त्रिपित्तानां—क्रि० अ० तृप्त होना। जघा  
 जाना।  
 क्रि० स० तृप्त या सतृप्त करना।  
 त्रिपुट्ट—सज्ञा पु० भस्म की तीन आड़ी रेखाओं  
 का तिलक। इसे शैव और शाक्त लोग  
 लगाते हैं।  
 त्रिपुट्ट—सज्ञा पु० १ मटर। २ खेसारी।  
 ३ गोखरु का पेड़। ४ तीर। ५  
 ताला।  
 त्रिपुटा—सज्ञा स्त्री० १ बेल का पेड़। २  
 छोटी या बड़ी इलायची। ३ निसोय। ४  
 मनफोडा। ५ बेल। ६ मोतिया।  
 त्रिपुटी—सज्ञा स्त्री० १ निसोय। २ छोटी  
 इलायची। ३ तीन वस्तुओं का समूह।  
 त्रिपुर—सज्ञा पु० १ बाणामुर का एक नाम।  
 २ तीना लोक।  
 त्रिपुरबहन—सज्ञा पु० महादेव।  
 त्रिपुरा—सज्ञा स्त्री० एक देवी का नाम।  
 कामाख्या देवी की एक मूर्ति।  
 त्रिपुरारि—सज्ञा पु० शिव। महादेव का एक  
 नाम।  
 त्रिपुरागुरु—सज्ञा पु० दे० "त्रिपुर"।  
 त्रिपोल्या—सज्ञा पु० गिहदार। दे० "त्रि-  
 पोल्या"।  
 त्रिपला—सज्ञा स्त्री० आंवला, हट और बहेडा  
 का भेल।

त्रिबली या त्रिबलि—सज्ञा स्त्री० वे तीन बल  
 जो पेट पर पड़ते हैं। इनकी गणना स्त्री  
 के सौंदर्य में होती है।  
 त्रिवेलोक—सज्ञा पु० १ वाय। २ मलद्वार।  
 गुदा।  
 त्रिभय—वि० जिसमें तीन जगह बल पड़ते हो।  
 तीन जगह से डेढा।  
 सज्ञा पु० खडे होने की एक मुद्रा जिसमें  
 कुछ टेढ़ापन रहता है।  
 त्रिभगी—वि० त्रिभग। तीन जगह से डेढा।  
 सज्ञा पु० १ एक मानिक छंद। २ गणना-  
 त्मक ढडक का एक भेद। ३ ताल का एक  
 मुख्य भेद। एक रागिनी। ४ श्रीकृष्ण  
 की एक मूर्ति जिसमें वे टेढ़े ढग से खडे  
 रहते हैं।  
 त्रिभुज—सज्ञा पु० तीन भुजाओं या रेखाओं  
 से घिरा हुआ क्षेत्र।  
 त्रिभुवन—सज्ञा पु० तीनों लोक अर्थात् स्वर्ग,  
 पृथ्वी और पाताल। त्रिलोक्य।  
 त्रिमधु—सज्ञा पु० १ ऋग्वेद का एक भाग।  
 २ तीन ऋचाओं का वेत्ता। ३ घी, चीनी  
 और शहद।  
 त्रिमात्रिक—वि० जिसमें तीन मात्राएँ हो।  
 प्लुट।  
 त्रिमूर्ति—सज्ञा पु० १ ब्रह्मा, विष्णु और  
 शिव, ये तीना देवता। २ सूर्य।  
 त्रिपा\*†—सज्ञा स्त्री० औरत।  
 यो०—त्रिपाचरित्र=त्रिपा का छन्द-वपट।  
 त्रिपाया—सज्ञा स्त्री० रात्रि।  
 त्रिपुग—सज्ञा पु० १ विष्णु। २ सतयुग,  
 त्रापर और त्रेता, ये तीना युग।  
 त्रिलोक—सज्ञा पु० स्वर्ग, मर्त्य और पाताल,  
 ये तीना लोक।  
 त्रिलोकनाथ—सज्ञा पु० तीनों लोकों का  
 मालिक। ईश्वर।  
 त्रिलोकपति—सज्ञा पु० दे० "त्रिलोकनाथ"।  
 त्रिलोकी—सज्ञा स्त्री० दे० "त्रिलोक"।  
 त्रिलोचन—सज्ञा पु० शिव। महादेव।  
 त्रिलोचन—सज्ञा स्त्री० श्रीदुर्गा।  
 त्रिधर्म—सज्ञा पु० १ अर्थ, धर्म और काम।  
 २ त्रिपला। ३ त्रिपला। ४ त्रिपला

और शय । ५ सत्त्व, रज और तम, ये तीना गुण । ६ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, ये तीनों प्रधान जातियाँ ।

त्रिपर्यात्मक-वि० त्रैवापिन । तीन वर्ष का । तीन साल का ।

त्रिधिधि-वि० तीन प्रकार का ।

त्रि० वि० तीन प्रकार से ।

त्रिवृत्त-वि० त्रिगुणा ।

त्रिवेणी-सज्ञा स्त्री० १ तीन नदियों का संगम । २ गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम-स्थान, जो प्रयाग में है । ३ इडा पिंगला और सुषुम्ना, इन तीनों नाडियों का संगम-स्थान (हृदयोग) ।

त्रिवेद-सज्ञा पु० ऋक्, यजु और साम, ये तीना वेद ।

त्रिवेदी-सज्ञा पु० १ ऋक्, यजु और साम, इन तीनों वेदों का जाननेवाला । २ ब्राह्मणा का एक भेद । निपाटी ।

त्रिवेणी-सज्ञा स्त्री० दे० 'त्रिवेणी' ।

त्रिशकु-सज्ञा पु० १ विल्ली । २ जुगनू । ३ एक पहाड़ का नाम । ४ पसीहा । ५ एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, जिसने सशरीर स्वर्ग जाने की कामना से यज्ञ किया था, पर जो देवताओं के विरोध करने के कारण स्वर्ग न पहुँच सका, वीच आकाश में ही रुक गया । ६ एक तारा, जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह वही त्रिशकु है जो इंद्र के ढकेलने पर आकाश से गिर रहा था, किन्तु विश्वामित्र ने उसे मार्ग में ही रोक दिया था ।

त्रिशक्ति-सज्ञा स्त्री० १ इच्छा, ज्ञान और क्रिया रूपी तीनों ईश्वरीय शक्तियाँ । २ गृहसत्त्व जो त्रिगुणात्मक है । बुद्धितत्त्व । ३ गायत्री । ४ तानिका की बाली, धारा और त्रिपुरा ।

त्रिशिख-सज्ञा पु० १ त्रिरीट । २ बेल का पेड़ । ३ त्रिशूल ।

त्रिशिर-सज्ञा पु० १ रावण का एक भाई । २ कुचेर ।

वि० जिससे तीन सिर हैं ।

त्रिशूल-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिरे पर तीन फल होते हैं (महादेव

जी का अस्त्र) । २. दैहिक, दैविक और भौतिक दुःख ।

त्रिषित\*-वि० दे० "तृप्ति" ।

त्रिष्टुप्-सज्ञा पु० एक वैदिक छंद का नाम ।

त्रिसगम-सज्ञा पु० १ तीन नदियों का संगम । त्रिवेणी । २ पगुनियाँ ।

त्रिसध्य-सज्ञा पु० प्रातः, मध्याह्न और माप, ये तीनों भाल ।

त्रिसप्या-सज्ञा स्त्री० प्रातः, मध्याह्न और साय, ये तीना राध्याएँ ।

त्रिस्थलो-सज्ञा स्त्री० बासी, गया और प्रयाग, ये तीन पुण्य-स्थान ।

त्रिस्तोता-सज्ञा स्त्री०, गंगा ।

त्रिष्टुक्-सज्ञा पु० तीन बाणावाला युद्ध ।

श्रुटि-सज्ञा स्त्री० १ दोष । कमी । न्यूनता ।

२ अमाय । क्षति । हानि । ३ भूल-बूक ।

गल्ती । अपराध । ४ वचन-भग । ५ सत्य ।

६ छोटी इलायची । ७ समय का अत्यन्त सूक्ष्म विभाग ।

श्रुटी-सज्ञा स्त्री० दे० "श्रुति" ।

त्रैता-सज्ञा पु० १ चार युग में से दूसरा ।

२ यज्ञ की तीन प्रकार की अग्निर्माँ ।

त्रैतायुग-सज्ञा पु० चार युग में से दूसरा युग जो १२९६००० वर्ष का है ।

त्रै-वि० तीन ।

त्रैवालिक-सज्ञा पु० तीना वाला में या सदा होनेवाला ।

त्रैगुण्य-सज्ञा पु० सत्त्व, रज और तम, इन तीना गुणा का धर्म या भाव ।

त्रैमातुर-सज्ञा पु० लक्ष्मण ।

त्रैमासिक-वि० हर तीसरे महीने होनेवाला । जो हर तीसरे महीने हो ।

त्रैराशिक-सज्ञा पु० गणित की एक क्रिया, जिसमें तीन ज्ञात राशियाँ की सहायता से चौथी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है ।

त्रैलोक्य-सज्ञा पु० १ स्वर्ग, मत्स्य और पाताल ये तीना लोक । २ ब्रह्माण्ड ।

त्रैवर्णिक-सज्ञा पु० धर्म, अर्थ और काम, इन तीनों की साधना का धर्म ।

त्रैवर्णिक-सज्ञा पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का धर्म । तीनों वर्णों के लोग ।

प्रेमाधिक-वि० हर तीसरे वर्ष होनेवाला।  
तीन वर्ष सबधी।

श्रोतक-सज्ञा पु० १. नाटक का एक भेद। २.  
संस्कृत का एक छन्द-विशेष। ३. एक राग।  
श्रोटी-सज्ञा स्त्री० चिड़ियों की घोंच। चंचु।  
ओठ। टोटी।

श्रोण-सज्ञा पु० तरकश।

श्रवक-सज्ञा पु० शिव। महादेव। ग्यारह  
रुद्रों में से एक।

श्रवका-सज्ञा स्त्री० दुर्गा।

श्रवण-सज्ञा पु० शिव। महादेव।

त्वक्-सज्ञा पु० १. छिलका। छाल। २.  
त्वचा। चमड़ा। खाल। ३. पाँच ज्ञानेंद्रियों  
में से एक जो सारे शरीर पर है। ४. दालचीनी।  
त्वचा-रक्षा स्त्री० १. चमड़ा। २. छाल।

त्वक्कल। त्वक् इन्द्रिय। ३. सर्प की केंचुली।  
त्वदीय-सर्व० तुम्हारा।

त्वरा-सज्ञा स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।

त्वरावान्-वि० शीघ्रता करनेवाला। जल्दवाज।

त्वरित-वि० तेज।

क्रि० वि० शीघ्रता से।

त्वाष्ट्र-सज्ञा पु० १. वृत्रामुर। २. वज्र।

३. चित्रा नक्षत्र।

त्विय-सज्ञा स्त्री० १. शोभा। प्रभा। कान्ति।

दीप्ति। छवि। २. वाक्य। ३. व्यवसाय। ४.  
जिगीषा। जीतने की इच्छा।

त्विया-सज्ञा स्त्री० दीप्ति। शोभा। प्रभा।  
किरण।

त्वेष-सज्ञा पु० उत्साह। उमंग। आवेश।  
मन का आवेश।

## थ

थ-हिंदी वर्णमाला का सनहवाँ व्यंजन वर्ण  
और त्वर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चा-  
रण-स्थान दंत है।

सज्ञा पु० १. भय-रक्षक। रक्षण। २.  
मंगल। ३. भय। भयचिह्न। ४. पर्वत।  
५. भक्षण। आहार। एक व्याधि या रोग।

थडिल\*-सज्ञा पु० थडिल। यज्ञ की वेदी।  
थंब, थन-सज्ञा पु० [स्त्री० थवी] १. खमा।  
स्तंभ। २. सहारा। टेक।

थंवी-सज्ञा स्त्री० थूनी।

थंभन-सज्ञा पु० १. रक्षावट। ठहराव।  
२. दे० "स्तंभन"।

थंभना-क्रि० अ० दे० "थंभना"। ठहरना,  
रकना।

थंभित\*-वि० १. रक्षा या ठहरा हुआ। २.  
स्थिर। ३. निश्चल (भय या आश्चर्य से)।

थइ-सज्ञा स्त्री० १. जगह। २. ढेर। अटाल।  
३. राशि।

थक-सज्ञा पु० १. थोक। थक्का। थक्कान। २.  
गाँव की सरहद। ग्रामसीमा। ३. ढेर। राशि।

थकन-सज्ञा स्त्री० दे० "थकान"।

थकना-क्रि० अ० १. परिश्रम करते-करते  
हार जाना। शिथिल होना। स्तब्ध होना।  
२. ऊब जाना। हारान हो जाना। ३. युवापे

से अशक्त होना। ४. ढीला होना या रुक  
जाना। ५. मोहित होना। मुग्ध होना।

थकान-सज्ञा स्त्री० थकने का भाव। थकावट।  
शिथिलता।

थकाना-क्रि० स० थक या शिथिल करना।

थका-माँदा-वि० परिश्रम करते-करते अशक्त।  
थक। थमत।

थकावट, थकाहट-सज्ञा स्त्री० थकने का  
भाव। शिथिलता।

थकित-वि० १. थका हुआ। थक। शिथिल।  
२. मोहित। मुग्ध।

थकौही\*-वि० [स्त्री० थकौही] कुछ थका  
हुआ। थका-माँदा। शिथिल।

थक्का-सज्ञा पु० [स्त्री० थक्की, थकिया]  
गाड़ी चोख की जमी हुई मोटी तह। जमा  
हुआ पदार्थ। थोक। जमावट।

थकित-वि० १. ठहरा हुआ। रका हुआ।  
२. शिथिल। ढीला। ३. मंद।

थति\*-सज्ञा स्त्री० दे० "थाती"।

थड़ा-सज्ञा पु० बैठने की जगह। ठूकान  
की गद्दी।

थन-सज्ञा पु० गाय, भैंस, बकरी आदि का  
स्तन। चौपायों की घूँची।

थनी-सज्ञा स्त्री० स्तन के अकार की दो

धैलियाँ जो घबहियाँ के गले के नीचे लट-  
पती हैं। गल-यना।

गलेला-सज्ञा पु० स्नान का घाव। स्नान पर  
का घाव। गुदरेले जाति का फीटा।

घनंत-गज्ञा पु० १. गाँव का गुनिया। २  
यह आदमी जो जमींदार की ओर से गाँव  
का लगान वसूल करे।

घप-सज्ञा पु० दे० "घपकी"। घाप। ठोक्।  
घुमवार।

घपकना-त्रि० स० १. शरीर पर धीरे-धीरे  
हाथ से ठोक्ना। २. धीरे-धीरे ठोक्ना। ३.  
घुमवारना।

घपकी-सज्ञा स्त्री० १. शरीर पर हाथ से  
धीरे-धीरे ठोक्ने की क्रिया। २. मुँगरी।  
घोबिया का मुँगरा।

घपही-सज्ञा स्त्री० ताली।

घपघपी-सज्ञा स्त्री० दे० "घपकी"।

घपन\*-सज्ञा पु० ठहरने या जमाने का काम।  
स्थापन।

घपना\*-त्रि० स० स्थापित करना। बैठाना।  
जमाना। धीरे-धीरे ठाकना।

त्रि० अ० स्थापित होना। जमना। घापी।

घपाना\*-क्रि० अ० स्थापित करना।

घपडना-क्रि० स० घपड़ा लगाना। घप्पड़  
लगाना।

घपड़ा-सज्ञा पु० १. घप्पड़। २. आघात।  
धक्का। टक्कर।

घपोड़ी-सज्ञा स्त्री० ताली। दोनों हथेलियाँ  
को टकराकर उत्पन्न की गई ध्वनि। कर्तल-  
ध्वनि।

घप्पड़-सज्ञा पु० १. हथेली से किया हुआ  
आघात। तमाचा। झापड़। २. आघात।  
धक्का।

घमकारी\*-वि० स्तब्ध करनेवाला। रोकने-  
वाला।

घमना-क्रि० अ० १. चलना न रहना। रुकना।  
ठहरना। २. जारी न रहना। बंद हो जाना।  
३. धीरज धरना। ठहरा रहना।

घर-सज्ञा स्त्री० वह। परत।

सज्ञा पु० १. दे० "घल"। २. घाघ की माँद।

घरकना†\*-क्रि० अ० ढर से नाँपना। धरना।

घरबौह-वि० नाँपना या हिसाब हुआ।  
घरघर-गज्ञा स्त्री० भय से घम्पन। डर से  
नाँपने की मुद्रा।

त्रि० वि० नाँपने की मुद्रा से।

घरघराना-त्रि० अ० १. डर से नाँपना।  
२. नाँपना।

घरघराहट-गज्ञा स्त्री० भय से उत्पन्न घम्पन।

घरघरी-सज्ञा स्त्री० घँघँपी।

घरना-त्रि० स० हथौड़ी से किसी धातु पर  
चोट लगाना।

गज्ञा पु० सुनारों का आभूषणों पर नक्काशी  
करने का एक औजार।

घरनामोटर-गज्ञा पु० [अग्ने०] शरीर का  
ताप नापने का यंत्र। तापमापक यंत्र।

घरहराना-त्रि० अ० धरहराना।

घरहरी सज्ञा स्त्री० डर के कारण होनेवाली  
कंपकंपी।

घरी-सज्ञा स्त्री० शेर आदि जानवरों की माँद।  
गुका।

घरु\*-सज्ञा पु० दे० "स्वल"। जगह।

घरना-त्रि० अ० डर के मारे नाँपना। दहलना।

घल-सज्ञा पु० १. स्थान। जगह। २. भूमि।

वह जमीन जिस पर पानी न हो। सूखी  
धरती। ३. थल का मार्ग। ४. ऊँची धरती।

रेगिस्तान। ५. बाघ की माँद। चुर।

घलझना-क्रि० अ० १. बसान होने के कारण  
ऊपर-नीचे हिलना। २. मोटाई के कारण  
शरीर के मांस का हिलना।

घलचर-सज्ञा पु० पृथ्वी पर रहनेवाले जीव।

घलज-सज्ञा पु० गुलाब।

घलघल-वि० मोटाई के कारण झूलता या  
हिलता हुआ।

घलघलाना-क्रि० अ० मोटाई के कारण  
शरीर के मांस का हिलना।

घलहह\*-वि० धरती पर उत्पन्न होनेवाले  
जल, वृक्ष आदि।

घलिया-सज्ञा स्त्री० थाली।

घली-सज्ञा स्त्री० १. स्थान। जगह। २.  
जल के नीचे का तल। ३. ठहरने या बैठने  
की जगह। बैठक। ४. बालू का मैदान।  
परती। टीला।

थकई—सज्ञा पु० मकान' धमानेवाला कारीगर।  
राज। मेमार।

बहना\*—क्रि० स० बाहू लेना।

थहराना†—क्रि० अ० काटना।

थहाना—क्रि० स० १. गहराई का पता लगाना।  
बाहू लेना। २. पता लगाना।

थांग—सज्ञा स्त्री० १. चोरी या डाकुओं का  
गुप्त स्थान। २. खोज। पता। सुराग।

थौ—सज्ञा पु० १. चोरी का माल भोल लेने या  
अपने पास रखनेवाला। २. चोरी का भेदिया।

३. जामूस। ४. चोरी के गोल का सरदार।

थोबला—सज्ञा पु० थाला। 'बहु घेरा जिसमें  
कोई पीधा लगा हो। आलबाल।

था—क्रि० अ० 'है' शब्द का भूतकालिक रूप।  
रहा।

थाई—वि० स्थायी।

सज्ञा पु० बैठने की जगह। ध्रुवपद। स्थायी।

थाक—सज्ञा पु० १. गाँव की सीमा। २. डेर।  
समूह। राशि।

थाकना†—क्रि० अ० दे० "थकना"।

थात\*—वि० जो बैठा या ठहरा हो। स्थित।

थाति—सज्ञा स्त्री० १. स्थिरता। ठहराव।  
ठिकान। रहन। २. दे० "धाती"।

थाती—सज्ञा स्त्री० धरोहर। अमानत। १  
समय पर काम आने के लिए रखी हुई वस्तु।

२ जमा। पूँजी।

थान—सज्ञा पु० १ जगह। ठौर। ठिकाना।

२ डेरा। निवासस्थान। ३. किसी देवी  
या देवता का स्थान। ४. चौपायों के बाँधने

का स्थान। ५. कपड़े, गोटे आदि का पूरा  
टुकड़ा। कपड़े का थान। ६. सहाय। अदब।

थाना—सज्ञा पु० १. ठिकने या बैठने का स्थान।  
अड्डा। २. पुलिस की चौकी। कौतवाली।

थानेत—सज्ञा पु० १. किसी स्थान का स्वामी।  
२. ग्राम-देवता। दे० "थानेत"।

थानेदार—सज्ञा पु० पुलिस के थाने का प्रधान  
या अफसर।

थानेदारी—सज्ञा स्त्री० थानेदार का पद या कार्य।

थानेत—सज्ञा पु० १. किसी चौकी या अड्डे  
का मालिक। २. किसी स्थान का देवता।  
ग्राम-देवता।

थाप—सज्ञा स्त्री० १. तबले, मृदंग आदि पर  
पूरे पजे का आधात। थपकी। ठोक। २.

थप्पड़। तमाचा। ३. निशान। छाप।

४ स्थिति। जमाव। ५ प्रतिष्ठा। मर्यादा।

धाक। ६. मान। कदर। प्रमाण। ७ पचा-  
यत। ८. शपथ। सौगंध। कसम।

थापन—सज्ञा पु० "स्थापन"। १. स्थापित करने,  
जमाने या बैठाने की क्रिया। २. किसी

स्थान पर प्रतिष्ठित करना। रखना।

थापना—क्रि० स० १. स्थापित करना।  
जमाना। बैठाना। २. किसी गीली वस्तु

को हाथ या साँचे से पीटकर कुछ बनाना।  
गीबर पाथना। ऊपली बनाना। थपथपाना।

सज्ञा स्त्री० १. स्थापन। प्रतिष्ठा। २.  
नवरात्र में दुर्गा-पूजा के लिए घट-स्थापना।

थापड़, थापर\*—सज्ञा पु० दे० "थप्पड़"।

थापा—सज्ञा पु० १. पजे का छाप। २. खलि-  
यान में अनाज की राशि पर गीली मिट्टी

या गोबर से डाला हुआ चिह्न। चौकी।  
३. वह साँचा जिसमें रंग पीतकर या गीली

वस्तु आदि डालकर कोई चिह्न अंकित  
किया जाए। छाप। ४. डेर। राशि।

थापी—सज्ञा स्त्री०, चिपटी मुंगरी जिससे  
गन्ध पीटते हैं। काठ का चिपटे और चौड़े

सिरे का डंडा। थापने का शब्द।

थाम—सज्ञा पु० १ खंभा। स्तम्भ। २. मस्तूल।  
सज्ञा स्त्री० थामने की क्रिया या ढंग। पकड़।

थामना—क्रि० स० १ रोकना। गति अवरुद्ध  
करना। २. गिरने, न देना। ३. ग्रहण करना।

हाथ में लेना। पकड़ना। ४. सहारा देना।  
मदद देना। सँभालना। ५. अपने ऊपर

कार्य का भार लेना।

थापी\*—वि० दे० "स्थायी"।

थाल—सज्ञा पु० बड़ी थाली।

थाला—सज्ञा पु० बहु घेरा जिसके भीतर  
पीधा लगाया जाता है। बावैला। आलबाल।

थाली—सज्ञा स्त्री० छिछला बरतन जिसमें  
भोजन करते हैं। बड़ी सखरी।

थूहा—थाली का वंगन—लाभ और हानि  
देखकर कभी इस पक्ष में, कभी उस पक्ष में  
होनेवाला।

धावर\*-वि० दे० "ग्यावर।"

चाह-सज्ञा स्त्री० १. गरी आदि की नीचे की भूमि। गहराई का अर्थ या हृद। २. कम गहरा पानी ज़िगरी चाह मित्र सफे। ३. गहराई का पता। ४. अर्थ। पार। गीमा।  
चाहना-त्रि० श० चाह लेना। गहराई का पता लगाना। अंदाज लेना। पता लगाना।  
चाहना\*+वि० ज़िगमें गहरा जल न हो। छिछला।

चिप्टर-सज्ञा पु० [अप्रे०] १. नाटक करने का स्थान। रंगभूमि। रंग-मंच। २. नाटक। अभिनय।

चिगली-सज्ञा स्त्री० धवती। पेंवेंद।  
मुहा०-बादल में चिगली लगाना=अत्यंत कठिन काम करना।

चित\*-वि० स्थित। ठहरा हुआ। स्थापित। रखा हुआ।

चिति-सज्ञा स्त्री० १. ठहराव। स्थापित्व। २. ठहरने का स्थान। ३. रहन। ४. अवस्था। वसा। ५. पृथ्वी।

चिपासफी-सज्ञा स्त्री० [अप्रे०] ब्रह्मविद्या। सब धर्मों का समन्वय करनेवाला एक सम्प्रदाय जिसे एनी वेषेष्ट ने चलाया था।

चिर-वि० १. स्थिर। ठहरा हुआ। अचल। २. शांत। धीर। ३. स्थायी। दृढ़। टिकाऊ।  
चिरक-सज्ञा पु० नाच में पैरों की बचल गति।  
चिरकना-क्रि० अ० १. नाचने में पैरों को बार-बार उठाना और रखना। २. अंग मटककर नाचना।

चिरकोहां-वि० चिरफनेवाला।

चिरजीह\*-सज्ञा पु० मछली।

चिरता\*-सज्ञा स्त्री० १. स्थिरता। ठहराव। २. स्थापित्व। ३. शांति। धीरता।

चिरताई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "चिरता"।

चिर-पानी-वि० एक जगह जमकर रहनेवाला।  
चिरना-क्रि० अ० १. पानी या और किसी द्रव पदार्थ का हिलना बढ़ होना। २. जल के स्थिर होने के कारण उसमें घुली हुई वस्तु का तल में बैठना। ३. मेल आदि के नीचे बैठ जाने के कारण साफ चीज का जल के ऊपर रह जाना। नियरना।

चिरा\*-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

चिराना-क्रि० स० १. क्षुब्ध जल को स्थिर होने देना। २. जल को स्थिर पारसे उसमें घुली हुई वस्तु को नीचे बैठने देना। ३. किसी वस्तु को जल में थोलाकर और उसकी मेल आदि को नीचे बैठकर साफ करना। नियरना।

चि० अ० दे० "चिरना"।

चो-क्रि० अ० 'है' के भूतकाल 'था' का स्त्रीलिंग।

चोता\*-सज्ञा पु० १. स्थिरता। शांति। २. धन।

यूकना-क्रि० स० १. दूगरे को धूरने के लिए प्रेरित करना। २. मुंह में ली हुई वस्तु को गिरवाना। उगलवाना। ३. युड़ी-धुड़ी कराना। निंदा कराना।

यूकना-क्रि० अ० दे० "यूकना"।  
यूकना-सज्ञा स्त्री० १. निंदा और विरस्कार। युड़ी-धुड़ी। २. लड़ाई-झगड़ा।  
यूडी-सज्ञा स्त्री० धूना और विरस्कार-सूचक शब्द। धिक्कार। खानत।

मुहा०-यूडी-यूडी करना=धिक्कारना।

यूककारना-क्रि० स० यूडी-यूडी करना। बहुत घुना प्रकट करना।

यूयना-सज्ञा पु० [स्त्री० यूयनी] लम्बा निकला हुआ मुंह। दे० "यूयन"।

यूयना-क्रि० अ० मुंह फुलाना। जोड़ लटकाना। नाराज होना।

यूरना-वि० स० कूटना। पीटना।

यूरहय या यूरहया-वि० [स्त्री० यूरहयी] १. जिसके हाथ छोटे हों। जिसकी हथेली में कम चीज आवे। २. कफायत करनेवाला।

यूली-सज्ञा स्त्री० दलिया।

यूवा-सज्ञा पु० मिट्टी आदि का टीला। मिट्टी का लोदा।

यू-अव्य० १. धूकने का शब्द। २. घुना और विरस्कार-सूचक शब्द। धिक्। छिः।

मुहा०-यू धू करना=धिक्कारना।

यूक-सज्ञा पु० मुंह से निकलनेवाला लसीला और गाढ़ा रस। कफ। खसारा। लार।

यूकना-क्रि० अ० मुंह से धूक निकालना या फेंकना।

क्रि० स० १ मुंह में ली हुई वस्तु को गिराना । उगलना । २ धिक्कारना । निंदा करना ।  
मुहा०—किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न धुक्का=अत्यंत तुच्छ समझकर ध्यान तक न देना । थककर चाटना=१ कहकर मुकर जाना । २ किसी दी हुई वस्तु को लौटा लेना । थक देना=तिरस्कार कर देना ।

यूनन-सज्ञा पु० लंबा निकला हुआ मुंह । जैसे, सूखर या ऊँट का धुनना ।

यूनी-सज्ञा स्त्री० लम्बा निकला हुआ मुंह । यूयरा-वि० भद्दा ।

यून-सज्ञा स्त्री० थूनी । चाँड । खम्भा ।

यूनी-सज्ञा स्त्री० १ खभा । लकड़ी आदि का गड़ा हुआ बल्ला । स्तम्भ । यम । २ वह खभा जो किसी बोझ को रोकने के लिए नीचे से लगाया जाय । चाँड ।

यूरना-क्रि० स० १ कूटना । पीटना । २ मारना । ३ ठूसना । कसकर भरना ।

यूल\*-वि० मोटा । भारी । भद्दा ।

यूला-वि० [स्त्री० यूली] मोटा । मोटा-ताजा ।

यूह या यूहर-सज्ञा पु० एक छोटा कंटोला पत्र जिसका दूध विपरीत होता है और औषध के काम में आता है । सेंहुड ।

यूहा-सज्ञा पु० डूहा । टीला । अटाला ।

यूहा-सज्ञा स्त्री० मिट्टी का ढेर ।

यैई-यैई-वि० गिरक-गिरककर नाचने की मुद्रा और वाद । तालयूचन शब्द और मुद्रा ।

येगली-सज्ञा स्त्री० दे० 'यिगली' ।

येयर-वि० जो कहीं हुई बात न मान । डाटने-डपटने पर भी जो न मुधरे । यका हुआ । आत । हँरान । परेसान ।

येवा-सज्ञा पु० अगूठी का नगीना । अंगूठी में नगीना जड़न का स्था ।

येवा-सज्ञा पु० खेत में मचाया हुआ र ऊपर का छप्पर ।

येला-सज्ञा पु० [स्त्री० येली] १ कपड़ या टाट आदि को सीकर बनाया हुआ पात्र जिसमें कोई वस्तु भरकर यद पर रखें । यहा मट्टा । २ रुपया

से भरा हुआ पैला । तोडा ।

येली-सज्ञा स्त्री० १ छोटा पैला । कोश । बटुआ । २ रुपयो से भरी हुई पैली । तोडा ।

मुहा०—येली खोलना=येली में से निकालकर रुपया देना ।

येलीदार-सज्ञा पु० खजाने में से रुपया उठानेवाला व्यक्ति ।

थोक-सज्ञा पु० १ ढेर । राशि । २ समूह ।

३ इकट्ठा बेचने की चीज । खुदरा का उलटा । ४ इकट्ठी वस्तु । कुल ।

मुहा०—थोक करना=इकट्ठा करना । जमा करना ।

थोडा-वि० [स्त्री० थोडी] जो मात्रा या परिमाण में अधिक न हो । न्यून । अल्प । कम । जरा सा ।

क्रि० वि० अल्प परिमाण में । जरा । थनिक ।

थी०—थोडा-बहुत=कुछ-कुछ । किसी कदर ।

मुहा०—थोडा ही=नही । बिल्कुल नहीं ।

थोयरा-वि० दे० थोपा ।

थोया-वि० [स्त्री० थोयी] १ जिसके भीतर कुछ सार न हो । खोखला । छूँछा । खाली ।

पोला । २ जिसकी धार तेज न हो ।

कुठित । गुठला । ३ व्यर्थ का । निक्कमा । औषध विक्षप ।

थोयी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की घास ।

थोपना-क्रि० स० १ गीली चीज की मोटी

तह जमाना । एकत्रित करना । लेपना ।

२ मोटा लेप चढाना । ३ गत्ये मड़ना ।

लगाना । ४ आश्रमण आदि से रक्षा करना ।

यत्नाना । ५ दे० 'छापना' । दे० 'यापना' ।

थोपी-सज्ञा पु० चपेट । चपत । धक्का । मुक्का ।

थोचडा-सज्ञा पु० जानवर का यूनन ।

थोर, थोरा-वि० दे० 'थाडा' ।

सज्ञा पु० बँके का याना । यूहर ।

थोरि-वि० थोडा सा । तनित सा ।

थोरी-सज्ञा स्त्री० १. हीन । २. अनाय जाति ।

विशेष । ३ थाडा ।

व्यावह-सज्ञा पु० १ स्थिरता । ठहराव ।

२ धीरता । धम्य ।

## द

द-हिंदी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन जो त-वर्ग का तीसरा वर्ण है। इसका उच्चारण स्थान दंत है।

सज्ञा पु० १ पर्वत। पहाड़। २ दांत। ३ दाता। ४ दान।

सज्ञा स्त्री० १ पत्नी। २ रक्षा। ३ सहन। सस्वरण।

दग-वि० [फा०] चित्रित। आश्चर्यान्वित। स्वयं।

सज्ञा पु० १ पर्वराहट। भय। डर। २ दे०-दगा।

दगई-वि० १ दगा करनेवाला। उपद्रवी। झगडालू। २ उग्र।

दगल-सज्ञा पु० [फा०] १ जोड़ बद कर पहलवानों की कुस्ती जिसमें जीतनेवाले को इनाम आदि मिलता है। २ जखाड़ा। मल्ल-युद्ध का स्थान। ३ जमावड़ा। समूह। जमात। दल। ४ बहुत मोटा गद्दा या तोशक।

दगली-वि० दगल-सम्बन्धी। बहुत बड़ा।

दगा-सज्ञा पु० [फा०] १ झगडा। उपद्रव। २ गुलामगोडा। हुल्लट। शोर-गुल।

दड-सज्ञा पु० १ डडा। सोटी। लाठी। २ डडे के आकार की कोई वस्तु। जैसे, भजदड मेरुदड। ३ एक प्रकार की कसरत जो हाथ-पैर के पंजा के बल औंधे होकर की जाती है। ४ भूमि पर औंधे लेटकर किया हुआ प्रणाम। दडवत्। ५ किसी अपराध के प्रतिवार म अपराधी को पहुँचाई हुई

पीडा या होनि। सजा। ६ अयदड। जुरमाना। डांड। ७ दमन। शासन। शमन।

८ ध्वजा या पताका का बौर। ९ छत्राजू की डडी। डांडी। १० किसी वस्तु (जैसे- फरछी, चम्मच आदि) की डडी। ११ लवाई की एक माप जो चार हाथ की होती थी। १२ (दड देनेवाले) मय। १३ साठ पल का काल। चौबीस मिनट का समय। घडी। १४ मयानी।

मूह०-दड भरना = १ जुरमाना देना। २ दूसरे के नुकसान का पूरा करना। दड भोगना या भुगतना = सजा अपने ऊपर लेना। दड सहना = नुकसान उठाना। पाटा उठाना।

दडक-सज्ञा पु० १ डडा। २ दड देनेवाला पुरुष। शासक। ३ वह छद जिसमें वर्णों की संख्या २६ से अधिक हो। यह दो प्रकार का होता है। एक गणात्मक, जिसमें गणा का बंधन या नियम होता है, और दूसरा मुक्त जिसमें केवल अक्षरों की गिनती होती है। ४ दडकारण्य।

दडकला-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मांत्रिक छद।

दडकारण्य-सज्ञा पु० वह प्राचीन वन जो विध्य पर्वत से लेकर गोदावरी के चित्तारे तक फैला था।

दडदास-सज्ञा पु० जो दड का रुपया न दे सवने के कारण दास हुआ हो।

दडधर-सज्ञा पु० १ यमराज। २ शासन-कर्त्ता। ३ सयासी।

वि० डडा रखनवाला।

दडधार-सज्ञा पु० १ यमराज। २ राजा।

दडन-सज्ञा पु० [वि० दडनीय, दडित, दड्य] दड देने की क्रिया। शासन।

दडना-क्रि० सं० दड देना। सजा देना।

दडनायक-सज्ञा पु० १ सेनापति। २ दड विधान करनेवाला राजा या अधिकारी।

दडनीति-सज्ञा स्त्री० शासन में दड-व्यवस्था का सिद्धान्त। शासन में अपराधों के प्रति-

कार के लिए दड नियम।

दडनीय-वि० दड देने योग्य।

दडपाणि-सज्ञा पु० १ यमराज। २ भंरव की एक मूर्ति।

दडप्रणाम-सज्ञा पु० दडवत। सादर अभि-

वादन। भूमि पर औंधे लेटकर किया गया प्रणाम। इस प्रकार प्रणाम करने की मुद्रा।

दंडवत्-सज्ञा स्त्री० भूमि पर औंधे लेटकर किया हुआ नमस्कार। साष्टांग प्रणाम।  
दंडविधि-सज्ञा स्त्री० अपराधों के दंड से सबध रखनेवाला नियम या व्यवस्था।  
दंडायमान-वि० डंडे की तरह सीधा खड़ा।  
सड़ा।

दंडालय-सज्ञा पु० १. न्यायालय। २. वह स्थान, जहाँ दंड दिया जाय। जेलखाना।  
३. एक-छद। दंडकला।

दंडिका-सज्ञा स्त्री० बीस अक्षरों की वर्णवृत्ति।  
दंडित-वि० जिसे दंड मिला हो। सजा-यापता।

दंडी-सज्ञा पु० १. दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। सन्यासी। २. यमराज। ३. राजा।  
४. द्वारपाल। ५. शिव। महादेव। ६. संस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि जिनके द्वारा हुए दो ग्रंथ मिलते हैं—'दशकुमारचरित' और 'काव्या-दर्श'।

दंडघ-वि० दंड पाने योग्य।  
दंत-सज्ञा पु० १ दाँत। २ ३२ की संख्या।  
३. पहाड़ की चोटी। ४. कुंज।

दंतक-सज्ञा पु० १ पहाड़ की चोटी। २. दाँत।  
दंतकथा-सज्ञा स्त्री० जनश्रुति। सुनी-सुनाई परंपरागत बात।

दंतच्छद-सज्ञा पु० ओष्ठ। ओंठ।  
दंतधावन-सज्ञा पु० १. दाँत धोने या साफ करने का काम। दातुन करने की क्रिया।  
२. दंतधन। दातुन।

दंतबीज-सज्ञा पु० अलार।  
दंतमूलोद-वि० जिसका उच्चारण दाँतों के मूल से हो। जैसे तथ्या।

दंतार-वि० बड़े दाँतवाला।  
दताल-सज्ञा पु० हाथी।  
दंतिया-सज्ञा स्त्री० छोटे-छोटे दाँत।

दंती-सज्ञा स्त्री० एक पेड़। यह दो प्रकार का होता है—लघुदंती और बृहत्तदंती।  
दंतुर-सज्ञा पु० सूअर। हाथी।  
वि० जिसके दाँत आगे निकले हों।

दंतुरिया\*—सज्ञा स्त्री० ३०. "दंतिया"।  
दंतुला-वि० बड़े-बड़े दाँतवाला। जिसके दाँत आगे निकले हों।

दंतोष्ठघ-वि० दाँत और ओठ से उच्चारण किया जानेवाला वर्ण, जैसे 'ब'।

दंत्य-वि० १. दंत-संबंधी। २. जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो। जैसे तवर्ग।  
दंद-सज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ या स्थान से निकलती हुई गरमी।

सज्ञा पु० १. लड़ाई-झगड़ा। उपद्रव।  
२. शोर-गूल।

दंदा-सज्ञा पु० [फा०] दाँत।  
दंदाता-सज्ञा पु० [फा०] [वि० ददानेदार]  
दाँत के आकार की उमरी हुई वस्तुओं की पवित्र। जैसी कधी या आरंभ की।  
कि० अ० गरम लगना। गरम होना।

दंदाह-सज्ञा पु० छाला।  
दंदो-वि० झगड़ा। उपद्रवी।

दंपति, दंपती-सज्ञा पु० स्त्री-पुरुष का जोड़ा।  
पति-पत्नी का जोड़ा।

दंपा\*—सज्ञा स्त्री० विजली।  
दंभ-सज्ञा पु० [वि० दंभी] झूठा अभिमान।

धमड। पाखंड। ढकोसला। आडवर।  
दंभी-वि० १. अभिमानी। धमडी। २. पाखंडी। ढकोसलेवाज।

दंभोलि-सज्ञा पु० इद्रासन। वज्र।  
दंभरी-सज्ञा स्त्री० अनाज के सूखे डठलों में से दाने झाड़ने के लिए लसे बेली से रोदवाने का काम।

दंवारि\*—सज्ञा स्त्री० ३०. "दवाग्नि"।  
दंश-सज्ञा पु० २. वह भाव जो दाँत काटने से हुआ हो। दर्द-क्षत। ३. दाँत काटने की क्रिया। दंशन। ३. दाँत। ४. विपक्षे जंतुओं का डका डस। ५. वर्ग। ६. द्वेष। कटवित।

दंशक-सज्ञा पु० दाँत से काटनेवाला। डंस।  
दंशु-सज्ञा पु० [वि० दंशित, दंशी] १. दाँत से काटना। डसना। २. वर्ग। बल्लर।

दंशना\*—कि० १० दाँत से काटना। डसना।  
दंष्ट-सज्ञा पु० दाँत।  
दंष्ट्रा-सज्ञा स्त्री० डाढ़। बड़ा दाँत।

दण्डानलखिप-सज्ञा पु० वे जीव-जन्तु जिनके दाँत और नख में विष हो, जैसे बिल्ली, कबूतर आदि।

पञ्चाल-वि० बटे-बटे दाँतोवाला ।

सज्ञा पु० १. सुअर । २. एक राक्षस का नाम ।

पञ्चो-वि० १. बटे दाँतोवाला । २. सप । ३.

हिसक पशु । सुअर ।

वंस\*-गज्ञा पु० दे० "दस" ।

ददजा-सज्ञा पु० दहेज ।

ददत-गज्ञा पु० दे० "दैत्य" ।

दई-सज्ञा पु० १. ईश्वर । विधाता । २. देव-सयोग । अदृष्ट । प्रारब्ध ।

मुहा०-दई का घाला=ईश्वर का मारा हुआ । अभाग । कमबख्त । दई-दई=हे देव, हे देव । (रक्षा के लिए ईश्वर की पुकार ।)

दईमारा या दईमारा-वि० [ स्त्री० दई-मारी ] जिस पर ईश्वर का कोप हो । अभाग । कमबख्त ।

दक-सज्ञा पु० पानी । जल । रस ।

दकार-सज्ञा पु० 'द' अक्षर ।

दकियानूस, दकियानुसी-वि० (अ०) बहुत पुराना । प्राचीन । पुराने खाल का । पुराने विचार रखनेवाला ।

दक्कीक-सज्ञा पु० [ अ० ] १. बारीक । महीन । २. बठिन ।

दक्कीका-सज्ञा पु० [ अ० ] १. कोई बारीक बात । २. युक्ति । उपाय ।

मुहा०-कोई दक्कीका बाकी न रखना=कोई उपाय बाकी न रखना । सब उपाय कर चुकना ।

दक्खिन-सज्ञा पु० [ वि० दक्खिनी ] १. दे० दक्षिण । वह दिशा जो सूर्य की ओर मुंह करके खटे होने से दाहिने हाथ की ओर पड़ती है । दक्षिण । दिशा । २. भारत का वह भाग जो दक्षिण में है ।

दक्खिनी-वि० १. दक्खिन का । २. जो दक्षिण के देश का हो ।

सज्ञा पु० दक्षिण देश का निवासी ।

दक्ष-वि० १. निपुण । कुशल । चतुर । होशियार । २. दक्षिण । दाहिना ।

सज्ञा पु० १. अग्नि । २. वृक्ष-विशेष । ३. शिवजी । ४. बल । वीर्य । ५. एक प्रजापति का नाम, जिनसे देवता उत्पन्न हुए थे । ये सृष्टि के उत्पादक, पालक और पोषक कहे गए हैं । पुराणानुसार शिव की पत्नी सती

इन्हीं की पत्निया थी । ५. अग्नि ऋषि । ६. विष्णु ।

दक्षकन्या-सज्ञा स्त्री० सती, जो शिव की पत्नी थी ।

दक्षता-सज्ञा स्त्री० निपुणता । योग्यता । कमाल ।

दक्षिण-वि० १. बायाँ का उलटा । दाहिना ।

२. अनुकूल । ३. सूर्य की ओर मुंह करके बटे होने से दाहिने हाथ की ओर की दिशा ।

४. निपुण । दक्ष । चतुर ।

सज्ञा पु० १. उत्तर के सामने की दिशा ।

२. वह नायक जिसका अनुराग अपनी सब नायिकाओं पर समान हो । ३. प्रदक्षिणा ।

४. तन्त्रशास्त्र के अनुसार एक आचार या मार्ग ।

दक्षिणा-सज्ञा स्त्री० १. दक्षिण दिशा । २.

पूजा आदि शुभ कार्य के समय ब्राह्मणों को दिया जानेवाला दान । ३. भेंट । ४. वह

नायिका जो नायक के अन्य स्त्रियों से सबध करने पर भी उससे बराबर वैसी ही प्रीति रखती हो ।

दक्षिणाचल-सज्ञा पु० मलयाचल । मलय-पर्वत ।

दक्षिणाचार-सज्ञा पु० तान्त्रिकों का एक आचार । सदाचार ।

दक्षिणापथ-सज्ञा पु० विध्य पर्वत के दक्षिण ओर का वह प्रदेश जहाँ से दक्षिण भारत के लिए रास्ते जाते हैं ।

दक्षिणायन-वि० भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर । जैसे, दक्षिणायन सूर्य ।

सज्ञा पु० सूर्य की कर्क रेखा से दक्षिण भकर रेखा की ओर गति । २१ जून से २२ दिसंबर तक का छः महीने का समय, जिसमें सूर्य कर्क रेखा से दक्षिण की ओर बढ़ता रहता है ।

दक्षिणावर्त्त-वि० जो दाहिनी ओर को घूमा हुआ हो । दक्षिण देश का ।

सज्ञा पु० एक प्रकार का शस्त्र जिसका घुमाव दाहिनी ओर को होता है ।

दक्षिणावह-सज्ञा स्त्री० दक्षिण से आनेवाली हवा ।

दक्षिणीय-वि० १. दक्षिण का । २. जो दक्षिणा का पात्र हो ।

दखमा-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ पारसी अपने मुरदे रखते हैं।

दखल-सज्ञा पु० [अ०] १ अधिकार। कब्जा।

२ हस्तक्षेप। हाथ डालना। ३ पहुँच। प्रवेश।

दखलदिहानी-सज्ञा स्त्री० अदालत से दखल या कब्जा दिलाने की क्रिया।

दखलनामा-सज्ञा पु० वह लेखपत्र जिसमें यह

लिखा हो कि अमुक खेत या जमीन पर

दखल या अधिकार अमुक व्यक्ति को दिया

गया।

दखिन-सज्ञा पु० दे० "दक्षिण"।

दखिनहा-वि० दक्षिण का। दक्षिणी।

दखील-वि० [अ०] जिसका दखल या कब्जा

हो। अधिकार रखनेवाला।

दखीलकार-सज्ञा पु० वह असाफी, जो

किसी जमींदार के खेत या जमीन पर स्थायी

रूप से अपना दखल रखता हो।

दगइल-वि० जिसमें दाग लगा हो। दगैल।

सज्ञा पु० छली। दगाबाज।

दगड-सज्ञा पु० लडाई में बजाया जानेवाला

बड़ा ढोल।

दगडना-क्रि० अ० सच्ची बात का विश्वास

न करना।

दगदगा-सज्ञा पु० [अ०] १ डर। भय। २

सदेह। ३ एक प्रकार की कडील।

दगदगाना-क्रि० अ० चमकना।

क्रि० स० चमकाना। चमक उत्पन्न करना।

दगदगाहट-सज्ञा स्त्री० चमक-दमक।

दगदगी-सज्ञा स्त्री० दे० "दगदगा"।

दगध-सज्ञा पु० दे० "दाह"।

वि० दे० "दग्ध"।

दगधना-क्रि० अ० जलना।

क्रि० स० १ जलाना। २ दुख देना।

दगना-क्रि० अ० १ (बद्वय या तोप आदि

का) छटना। चलना। २ जलना। झुलस

जाना। ३ दागा जाना। ४ प्रसिद्ध होना।

भगदूर होना।

क्रि० स० दे० "दागना"।

दगर, दगरा-सज्ञा पु० १ देर। विलंब।

२ ठगर। रास्ता।

दगल-सज्ञा पु० दे० "दगला"।

दगला-सज्ञा पु० मोटे बरतन का बना हुआ

या रुईदार अंगरखा। भारी लवादा।

दगवाना-क्रि० स० दागने का काम दूसरे

से कराना।

दगहा-वि० १ दागवाला। २ दाह-कर्म करने-

वाला। ३ जो दागा हुआ हो। दग्ध किया

हुआ।

दगा-सज्ञा स्त्री० [अ०] छल-कपट। धोखा।

दगादार-वि० दे० "दगाबाज"।

दगाबाज-वि० [फा०] धोखा देनेवाला।

छली। धोखेबाज। कपटी।

दगाबाजी-सज्ञा स्त्री० [फा०] छल। कपट।

दागल-वि० १ दागदार। जिसमें दाग हो।

२ जिसमें कुछ खोट या दोष हो।

सज्ञा पु० दगाबाज। छली।

दाघ-वि० १ जला या जलाया हुआ। २.

दु खित। जिसे कपट पहुँचा हो।

दाघा-सज्ञा स्त्री० १ पश्चिम दिशा। २.

विशिष्ट राशिपों से युक्त कुछ तियियाँ

(अशुभ)। ३ कुरु नाम का एक वृक्ष।

दाघित-वि० दे० "दग्ध"।

दाघादार-सज्ञा पु० पिगल के अनुसार दा,

ह, र, भ और प ये पाँचा अक्षर, जिनका

छंद के आरम्भ में रखना वजित है।

दचक-सज्ञा स्त्री० धक्का। झटका। दचकने

की क्रिया।

दचकना-क्रि० अ० सज्ञा दचना] १ धक्का

या ठाकर खाना। २ दब जाना। ३ झटका

खाना।

क्रि० स० १ ठोकर या धक्का लगाना। २

दवाना। झटका देना।

दचका-सज्ञा पु० दे० "दचक"।

दचना-क्रि० अ० [अनु०] गिरना।

दच्छ-सज्ञा पु० दे० "दक्ष"।

दच्छकुमारी-सज्ञा स्त्री० दक्ष प्रजापति की

कन्या, सती।

दच्छना-सज्ञा स्त्री० दे० "दक्षिणा"।

दच्छमुता-सज्ञा स्त्री० दक्ष की कन्या, सती।

दच्छिन-वि० दे० "दक्षिण"।

दक्षिमल-वि० दाहीवाला। जो दाही रने हो।

दतवन-सज्ञा स्त्री० दे० "दतुआ"।

वर्तिया-गंगा स्त्री० १. दौलत या श्रीलिंग।  
छोटा दौल। २. एक पहाड़ी धौतर।  
वर्तुजा, वतुवन-गंगा स्त्री० १. नीम या  
बबूल आदि की छोटी दही जितनी कुरी  
में दौल गांध मरले हैं। दातुन। २. दौल  
-भाक करों और मूर्त धौनों की गिमा।  
दत्तो-गंगा स्त्री० दे० "दत्तुवन"।  
दत्त-गंगा पु० १. दत्तात्रेय। २. भगवान् का  
एक अवतार। ३. दान। ४. दत्तक। गोद  
लिया हुआ पुत्र। बगाड़ी वाक्यों की  
एक उपजाति।  
वि०-विद्या हुआ।  
धौ०-दत्तविधान = दत्तक पुत्र लेना।  
दत्तक-गंगा पु० गोद लिया हुआ लड़का।  
भुवनमा।  
दत्तचित्त-वि० जिसने - विद्यो काम में  
मन लगाया हो। भली नीति मन  
लगानेवाला।  
दत्तात्मा-सज्ञा पु० वह जो स्वयं किसी के  
पास जाकर उसका दत्तक पुत्र बने।  
दत्तात्रेय-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध प्राचीन ऋषि  
जो पुराणानुसार विष्णु के चौबीस अवतारों  
में से एक माने जाते हैं।  
दत्तोपनिषद्-सज्ञा पु० एक उपनिषद्।  
ददा-सज्ञा पु० दे० "दादा"।  
ददन-सज्ञा पु० दान।  
ददरा-सज्ञा पु० छत्रा।  
ददरी क्षेत्र-सज्ञा पु० भृगुमुनि का स्थान,  
जहाँ वास्तिक की पूजिमा की मेला लगता है।  
यह स्थान बलिया नगर के समीप है।  
ददिया सगुर-सज्ञा पु० पत्नी या पति का  
दादा। ददशुर का पिता।  
ददहाल-सज्ञा पु० १. दादा का कुल। २.  
दादा का घर।  
दधीरा-सज्ञा पु० मच्छड़, बरें आदि के काटने  
या खजलाने आदि के कारण चमड़े के ऊपर  
चकत्ती की तरह पीछी सी सूजन।  
चक्ता।  
दद या दद-सज्ञा पु० दाद रोग।  
दध\* -सज्ञा पु० दे० "दधि"।  
दधसार\* -सज्ञा पु० दे० "दधिसार"।

दधि-गंगा पु० १. जगाया हुआ दूध। दही।  
२. वस्त्र। कपड़ा। ३. समुद्र। मागग।  
दधिदाँदो-गंगा पु० जन्माष्टमी के समय  
हाथोंका एक प्रकार का उत्सव, जिनमें  
काग हड्डी भिजा हुआ देही एक दूसरे पर  
पेंचने हैं।  
दधिया-गंगा पु० १. पीछा। २. एक वैदिक  
देवता।  
दधिज-गंगा पु० १. भवभूति। २. चन्द्रमा।  
दधिजात-गंगा पु० १. भवजन। २. समुद्र ने  
उत्पन्न चन्द्रमा।  
दधिसार-सज्ञा पु० पुराणानुसार ब्रह्मा का  
समुद्र।  
दधिसार-गंगा पु० नवमन।  
दधिगुन-गंगा पु० १. वमल। २. मुक्ता।  
मानो। ३. चन्द्रमा। ४. जाडहर इत्य।  
५. विप। जहर। ६. भवजन। नवनीत।  
दधिसुता-गंगा स्त्री० गोप।  
दधीचि-गंगा पु० एक वैदिक ऋषि जो याम्य  
के मत में अथर्व के पुत्र थे और इसी लिए  
दधीचि कहलाते थे। एक बार वृषामुर  
का उपद्रव करने पर इंद्र ने अस्त्र बनाने के  
लिए दधीचि से उनकी हड्डियों मांगी।  
दधीचि ने इसके लिए अपने प्राण त्याग दिए।  
तभी से ये बड़े भारी दानी प्रसिद्ध हैं।  
दनबनाना-क्रि० अ० १. दनदन शब्द करना।  
२. आनंद करना।  
दनादन-क्रि० वि० दनदन शब्द के साथ।  
दनु-सज्ञा स्त्री० दक्ष की एक बन्धा जो बक्ष्यप  
की ब्याही थी। इसके चालीस पुत्र हुए  
थे, जो सब दानव कहलाते हैं।  
दनुज-सज्ञा पु० असुर। राक्षस।  
दनुजदली-सज्ञा स्त्री० दुर्गा।  
दनुजराय-सज्ञा पु० दानवों का राजा  
हिरण्यकशिपु।  
दनुजेंद्र-सज्ञा पु० रावण।  
दक्ष-सज्ञा पु० [अनु०] "दक्ष" शब्द जो तोप  
आदि के छूटने से होता है।  
दपटना-क्रि० अ० [सज्ञा दपट] डाँटना।  
धुङ्कना।  
दपु-सज्ञा पु० दप। शेली।

दपेट-सज्ञा स्त्री० दे० "दपट" ।  
दफतर-सज्ञा पु० दे० "दफ्तर" ।  
दफनो-सज्ञा स्त्री० कागज के कई तलों को एक में साटकर बनाया हुआ गत्ता । कुद । बस्ती ।

दफन-मज्ञा पु० [अ०] किसी चीज को बिछोपत मुरदे को जमीन में गाड़ने की क्रिया ।  
दफनाना-क्रि० रा० जमीन में दवाना या गाड़ना ।

दफा-मज्ञा स्त्री० [अ०] १ वार । वेर । २ किसी वकान की क्तिताव का वह एक अंश जिसमें किसी एक नियम की व्यवस्था हो । धारा । वि० दूर किया हुआ । हटाया हुआ । तिरस्कृत ।  
मुहा०—दफा लगाना—अभियुक्त पर किसी दफा के नियम को घटाना ।

दफादार-सज्ञा पु० [अ०] फौज का वह वर्ग-चारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों ।

दफीना-मज्ञा पु० [अ०] गड़ा हुआ धन या खजाना ।

दफ्तर-सज्ञा पु० [फा०] १ कार्यालय । आफिस । २ लरी-बोड़ी चिट्ठी । ३ सविस्तर वृत्तांत । चिन्ता ।

दफनरी-मज्ञा पु० [फा०] १ वह वर्गचारी जो दफ्तर के कागज आदि दुरुस्त करता और रजिस्टर आदि पर हल खींचता हो । २ क्तितावा की जिल्द बांधनेवाला । जिन्दसाज । जिल्द-बंद ।

दवग-वि० प्रभावशाली । दवाववाला ।

दवक-सज्ञा स्त्री० १ दबने या छिपने की क्रिया या भाव । २ सिकुड़न ।

दवगगर-मज्ञा पु० दववा (तार) बनानेवाला । दवकमा ।

दववना-क्रि० अ० १ भय के कारण छिपना । २ छिपना ।

वि० ग० धातुर्वा ह्योदी से पीटकर बढाता ।

दववा-मज्ञा पु० कामदानी या मुहाजरा तार ।

दववना-क्रि० स० छिपाना । आड में करना । छोटना ।

दवकी-मज्ञा स्त्री० मिट्टी का एक वर्ग । दवपने का भाव ।

दवकैया-सज्ञा पु० दे० "दवकगर" ।

दवगर-मज्ञा पु० १ डाल बनानेवाला ।

२ चमड़े के कुप्पे बनानेवाला ।

दवदवा-सज्ञा पु० [अ०] रोव-दाव । आतक । प्रताप ।

दवना-क्रि० अ० १ भार के नीचे आना । बोझ के नीचे पड़ना । २ किसी भारी शक्ति के सामने अपने स्थान पर न ठहर सकना । पीछे हटना । ३ दवाव में पड़कर किसी के इच्छानुसार काम करने के लिए विवश होना । ४ किसी के मुकाबले में ठीक या अच्छा न जंचना । ५ किसी वस्तु का जहाँ का तहाँ रह जाना । ६ समझ न सकना । शांत रहना । ७ अपनी चीज का अनुचित रूप से किसी दूसरे के अधिकार में चला जाना । ८ ऐसी अवस्था में आ जाना जिसमें कुछ बस न चल सके । ९ धीमा पड़ना । मंद पड़ना । १० सन्नोच करना । झेंपना ।

मुहा०—दबी जबान से कहना—गाफ-साफ न बहना, बल्कि इस प्रकार कहना जिससे केवल कुछ ध्वनि व्यक्त हो ।

दववाता-क्रि० स० दवाने या काम दूसरे से कराना ।

दवाना-क्रि० स० [सज्ञा दाव, दवाव] १ ऊपर से भार रखना । २ किसी पदार्थ पर किसी ओर से बहुत जोर पहुँचाना । ३ पीछे हटाना । ४ जमीन के नीचे पाड़ना । दफन करना । ५ किसी पर इतना आतक जमाना कि वह कुछ बह न सके । जोर डालकर विवश करना । ६ दूसरे की मदद या मान कर देना । ७ किसी बात को उठने या फैलने न देना । ८ दबन करना । घात करना । ९ किसी दूसरे की चीज पर अनुचित अधिकार करना । १० ज्ञान के साथ बड़कर किसी चीज का पकड़ देना । ११ ऐसी अवस्था में ले आना जिसमें मृत्यु अवश्य, दीन या विवश हो जाय ।

दवाव-मज्ञा पु० १ दवाने की क्रिया । चार ।

दशो ज-वि० १. [ता०] त्रिगुण दम मोटा हो।  
 गाढ़ा। २. मर्गान।  
 दशो ज-सज्ञा पु० [ता०] मुंसी।  
 दशो ज-सज्ञा पु० जहाज या बमरा। नाव,  
 का पिछला भाग।  
 दशो ज-वि० १. जग पर किसी का प्रभाव  
 या दबाव हो। २. दम्प। जो बहुत दबता  
 या दस्त हो।  
 दशो ज-वि० १. किसी को सहसा  
 फटकर दबा लेना। धर दवाना। २.  
 छिपाना।  
 दशो ज-वि० १. अपने सामने ठहरने  
 न देना। दवाना।  
 दशो ज-वि० थोड़ा। कम।  
 दम-सज्ञा पु० १. दमन करने के लिए दिया  
 जानेवाला दम। सजा। २. समय। इद्रियों  
 को बस में रखना। ३. कीचड़। ४. धर।  
 ५. पुराणानुसार भरत राजा के पौत्र जो  
 बभ्रु की पत्न्या इद्रसेना के गर्भ में उत्पन्न  
 हुए थे। ६. बुद्ध का एक नाम। ७. विष्णु।  
 ८. दबाव। ९. नशे आदि के लिए साँस  
 के साथ धुआँ सीचने की क्रिया। १०. साँस  
 सींचकर जोर से बाहर फेंकने या फूँकने  
 की क्रिया। ११. उतना समय जितना एक  
 बार साँस लेने में लगता है। लहमा। पल।  
 १२. वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ अपना  
 अस्तित्व बनाए रखता है। शीवनी-शक्ति।  
 प्राण। जान। १३. व्यक्तित्व। १४. छाव  
 पदार्थ को बरतन में रखकर और उसका  
 मुँह बंद करके जाग पर पकाने की क्रिया।  
 १५. घोड़ा। छल। फरेब। १६. तलवार  
 या छुरी आदि की धार। १७. सौदा।  
 कुबास।  
 दम-वि०—दम अटकना या उसटना=साँस  
 रुकना, विशेषतः मरने के समय साँस रुकना।  
 दम सीचना=१. चुप रह जाना। २. साँस  
 ऊपर चढ़ाना। दम घुटना=हवा की कमी के  
 कारण साँस रुकना। दम घोटकर मारना=  
 १. गला दबाकर मारना। २. बहुत कष्ट देना।  
 दम सोडना=अंतिम साँस लेना। दम फूलना  
 =१. अधिक परिश्रम के कारण साँस का

जलदी-जलदी चलना। हड़पना। २. दम के  
 रोग का दोग होना। दम भरना=१. किसी  
 की मित्रता आदि का पक्का भरोसा रखना  
 और अभिमानपूर्वक उसका वर्णन करना।  
 २. परिश्रम करना। मुस्ताना। ३. घोटना।  
 घुछ कहना। घूँ करना। दम लेना=विश्राम  
 करना। मुस्ताना। दम मापना=१. दबाव  
 की गति को रोपना। २. चुप होना। मोन  
 रहना। दम मारना या लगाना=गाँजे  
 आदि को पिल्लम पर रखकर उसका धुआँ  
 माँचना। दम के दम=क्षण भर। थोड़ी  
 देर। दम पर दम=बहुत थोड़ी-थोड़ी देर  
 पर। दम सूतक होना=दे० "दम भूगना"।  
 दम नाक में, या नाक में, दम आना=बहुत  
 तग या परेशान होना। दम निबलना=  
 मृत्यु होना। मरना। दम सूसना=बहुत  
 डर के कारण साँस रुक न लेना। प्राण  
 सूसना। (किसी का) दम गनीमत होना=  
 (किसी के) जीवित रहने के कारण कुछ न  
 कुछ अच्छी बातों का होता रहना। दम-  
 झाँसा=छल-फरेब। दमदिलासा या दम-  
 पट्टी=वह बात जो केवल फुसलाने के  
 लिए कही जाय। झूठी आशा। दम देना=  
 बहकाना। धोखा देना।  
 दमक-सज्ञा स्त्री० चमक। चमचमाहट।  
 छुति। आभा।  
 दमकना-क्रि० अ० चमकना। चमचमाना।  
 दमकल-सज्ञा स्त्री० १. वह यंत्र जिससे जल  
 आदि तरल पदार्थ हवा के दबाव से, ऊपर  
 या और किसी ओर फेंका जा सके। २. जाग  
 बुझाने का यंत्र। ३. कुएँ से पानी निकालने  
 का यंत्र। ४५।  
 दमकला-सज्ञा पु० १. एक प्रकार की पिछले  
 कारी जिससे जल या रंग आदि छिड़कते  
 हैं। २. अँगोठी जिसमें कोमला जले।  
 दमखम-सज्ञा पु० [फा०] १. दृढ़ता।  
 मजबूती। २. जीवनी-शक्ति। प्राण।  
 ३. तलवार की धार और उसका  
 झुकाव।  
 दम-बूझा-सज्ञा पु० एक प्रकार का लोहे  
 का गोल बूझा।

दमडी-सज्ञा स्त्री० पैसे का आठवां भाग ।  
एक चिड़िया ।

दमवमा-सज्ञा पु० [फा०] किलेबंदी जो लड़ाई  
के समय थैलो में बालू भरकर की जाती  
है । मोरचा । धुस ।

दमदार-वि० [फा०] १. दृढ़ । मजबूत । २.  
जिसमें दम या साँस अधिक समय तक रह  
सके । ३ जिसकी धार तेज हो । थोखा ।

दमन-सज्ञा पु० १ दबाने या रोकने की  
क्रिया । २ दंड । सजा । कुचलना । ३  
इन्द्रियो की चंचलता रोकना । नियंत्रण । दम ।

४ विष्णु । ५ महादेव । शिव । ६ एक  
गृधि का नाम । दमयती इन्हीं के यहाँ उत्पन्न  
हुई थी । ७ एक राक्षस ।

सज्ञा स्त्री० दे० "दमयती" ।

दमनक-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का छद ।  
२ दोना नामक पीया ।

दमनशील-वि० जिसकी प्रकृति दमन करने  
की हो । दमन करनेवाला ।

दमनो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पीया ।  
सफ़ोच । लज्जा ।

दमनीय-वि० १ दमन करने योग्य । जिसका  
दमन किया जाय । २ जो दबाया जा सके ।

दमबाज-वि० दम देनेवाला । फुसलानेवाला ।  
बहाना करनेवाला ।

दमवाजी-सज्ञा स्त्री० बहानेवाजी । दम देने  
का कार्य ।

दमयती-सज्ञा स्त्री० राजा नल की स्त्री जो  
विदर्भ देश के राजा भीमसेन की कन्या थी ।

दमा-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रसिद्ध रोग जिसमें  
साँस लेने में बहुत कष्ट होता है, खाँसी आती  
है और कफ बड़ी कठिनता से निवृत्त होता है ।

संज्ञा ।

दमार-सज्ञा पु० कन्या का पति । जामाता ।

दमानक-सज्ञा स्त्री० सोनी की बाढ़ ।

दमादम-क्रि० वि० [फा०] दमदम शब्द से  
साथ । लगातार ।

दमाम या दमामा-सज्ञा पु० [फा०] नगाडा ।  
डगा ।

दमारि\*†-सज्ञा पु० जंगल की आग । वन  
की आग । दावागि ।

दमावति-सज्ञा स्त्री० दे० "दमयती" ।

दमया†-वि० दमन करनेवाला ।

दयत†-सज्ञा पु० दे० "दंत्य" ।

दयनीय-वि० दया करने योग्य । ऐसी हालत,  
जिसे देखकर दया उत्पन्न हो ।

दया-सज्ञा स्त्री० १ सहानुभूति का भाव ।  
दूसरे की कष्ट में देखकर मन में उत्पन्न होने-  
वाला दुःखपूर्ण भाव और उसे दूर करने की  
इच्छा । करुणा । रहम । २ दक्ष प्रजापति  
की कन्या, जो धर्म की व्याही गई थी ।

दयादृष्टि-सज्ञा स्त्री० करुणा या अनुग्रह का  
भाव । मेहरबानी की नजर ।

दयानत-सज्ञा स्त्री० [अ०] सत्यनिष्ठा । ईमान ।

दयानतदार-वि० ईमानदार । सच्चा ।

दयानतदारी-सज्ञा स्त्री० ईमानदारी ।  
सच्चाई ।

दयाना\*†-क्रि० अ० दयालु होना । कृपालु  
होना ।

दयानिधान-सज्ञा पु० दया का सञ्चय ।  
बहुत दयालु ।

दयानिधि-सज्ञा पु० १ बहुत दयालु पुरुष ।  
२ ईश्वर ।

दयापात्र-सज्ञा पु० दया के योग्य ।

दयामय-सज्ञा पु० दयालु । १ दया से पूर्ण ।  
२ ईश्वर ।

दयार-सज्ञा पु० [अ०] प्रातः । प्रदेश ।

दयाद-वि० दयापूर्ण । दयालु ।

दयाल-वि० दे० "दयालु" ।

दयाल-वि० बहुत दया करनेवाला ।

दयालुता-सज्ञा स्त्री० दयालु होने का भाव ।

दयावत-वि० दे० "दयालु" ।

दयावना\*†-वि० [स्त्री० दयावनी] दया के  
योग्य । दीन ।

दयावान्-वि० [स्त्री० दयावती] जिसने  
चित्त में दया हो । दयालु ।

दयाशील-वि० दयालु ।

दयासागर-सज्ञा पु० अत्यन्त दयालु पुरुष ।

दयित-वि० [स्त्री० दयिता] प्यारा । प्रिय ।

सज्ञा पु० पति ।

दयिना-सज्ञा स्त्री० पत्नी ।

दर-सज्ञा पु० १ राग । २ गद्गद । दरार ।

३. गुफा। बदरा। ४ पाडने की क्रिया।  
विदारण। ५ डर। भय। समूह। दल।  
द्वार। दरवाजा।

मज्ञा स्त्री० १ भाव। २ प्रमाण। टीव-  
ठिकाना। ३ बदर। प्रतिष्ठा। ४ ईश।  
ऊँच।

महा—दर-दर मारा-मारा फिरना=  
ठोकर खाना। दुर्दशाग्रस्त हाव घूमना।  
भटपना।

दरक-वि० दम्पोक। कायर।

सज्ञा स्त्री० दरकने की क्रिया। चीर।  
दरार। दराज।

दरकना-क्रि० अ० दाव पडने से फटना।  
चिरना।

दरकन-सज्ञा स्त्री० कुचल जाने से लगने-  
वाली चोट।

दरका-सज्ञा पु० १ शिगाफ। दरार। २ वह  
चोट जिसमें कोई वस्तु दरक या फट जाय।

दरकाना-क्रि० स० फाड़ना।

त्रि० अ० फटना।

दरकार-वि० [फा०] आवश्यकता। जरूरत।  
अपेक्षा।

दरकिनार-त्रि० वि० अलग। अलहदा।

एव ओर। दूर।

दरकूच-त्रि० वि० बराबर यात्रा करता  
हुआ। मजिल दर मजिल।

दरखास्त-सज्ञा स्त्री० १ प्रार्थना। २

निवेदन। प्रार्थनापत्र। निवेदनपत्र।

दरलत-सज्ञा पु० पेड़। वृक्ष।

दरगाह-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ चौखट। दहली।

२ दरबार। कचहरी। ३ समाधिस्थान।  
मकबरा। मजार।

दर-गुजर-वि० [फा०] १ अलग। बचित।  
२ मुजाफ। क्षमाप्राप्त।

दरगुजरना-त्रि० अ० [फा०] छोड़ना। पाज  
माना। जाने देना।

दरज-सज्ञा स्त्री०। दरार। शिगाफ। दराज।

दरजा-सज्ञा पु० दे० "दर्जा"।

दरजी-सज्ञा पु० दे० "दर्जी"।

दरप-सज्ञा पु० १ दडने या पीसने की  
क्रिया। २ ध्वस। विनाश।

दरद-सज्ञा पु० [फा०] १ दर्द। पीडा। व्याघ।

२ दया। करुणा। ३ काश्मीर और हिंदुस्तान

पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम।

४ एक जाति, जिसका उल्लेख मनुस्मृति,  
हरिवंश महापुराण आदि में है। ५ इगुर।

दर-दर-त्रि० वि० [फा०] द्वार-द्वार। स्थान-  
स्थान पर। जगह-जगह।

दरदरा-वि० [स्त्री० दरदरी] दानेदार।  
मोटा पिमा हुआ। जिमके रवे महीन

न हा।

दरदराना-त्रि० स० इस प्रकार पीमना या  
गडना कि मोटे-मोटे रवे या टुकड़े हो

जायें। थाडा पीतना।

दरदरी-वि० मोटे रवे की।

सना० स्त्री० पृथ्वी। जमीन।

दरदवत, दरदवद-वि० १ महानुभूति रखने-  
वाला। कृपालु। दयालु। २ पीडित।

दुखी।

दरद-सज्ञा पु० दे० "दरद या "दर्द"।  
दर्जा-त्रि० स० १ दरदरा करना। मोटा

चूग करना। २ नष्ट करना।

दरप-सज्ञा पु० दे० "दर्प"।

दरपन-सज्ञा पु० दे० "दर्पण"।

दरपना-त्रि० अ० १ ताव में आना।  
क्रोध करना। २ घमंड करना।

दरपनी-सज्ञा स्त्री० मुंह देखने का छोटा  
शीशा।

दरपरदा-क्रि० वि० चुपचाप। पर्दे की ओट में।

दरपेश-क्रि० वि० [फा०] आगे। सामने।

दरबदी-सज्ञा स्त्री० १ अलग-अलग दर या  
विभाग बनाना। २ चीजा की दर या भाव

निश्चित करना।

दरब-सज्ञा पु० द्रव्य। घन। दोलत।

दरबराना-क्रि० स० १ दरदरा कराना। २  
घबड़ा देना। ३ दबाता। दबाव डालना।

दरबा-सज्ञा पु० [फा०] कबूतरा, मुरगियों आदि  
के रहने के लिए बाँध का खानदार सड़क।

दरवान-सज्ञा पु० [फा०] दम्पोड़ीदार।  
द्वारपाल।

दरबार-सज्ञा पु० [फा०] [वि० दरबारी] १  
वह स्थान जहाँ राजा या सरदार मुसाहबी के

साथ बैठने हैं। २ राजसभा। कचहरी।  
३. महाराज। राजा (रजवाडो में)।  
मुहा०—दरवार खुलना=दरवार में जाने की  
आना मिलना। दरवार बंद होना=दरवार  
में जाने की रोक होना।

दरवार आम-सज्ञा पु० वह राजमहा, जिसमें  
सर्वसाधारण का प्रवेश हो।

दरवार खास-सज्ञा पु० वह राजसभा जिसमें  
खास-मास व्यक्ति जा सकें।

दरवारदारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] किसी के यहाँ  
बार बार जाकर बैठना और खुशामद करना।

दरवारी-सज्ञा पु० [फा०] दरवार में बैठने-  
वाला आदमी।

वि० दरवार का। दरवार के योग्य।

बरखी-सज्ञा स्त्री० कलछी।

बरभ-सज्ञा पु० दे० "दभं"। बदर।

बरमा-सज्ञा पु० बांस की चटाई।

बरमान-सज्ञा पु० [फा०] औषध। दवा।

बरमाहा-सज्ञा पु० [फा०] मासिक वेतन।  
महीने की तनखाह।

बरमिमान-सज्ञा पु० [फा०] मध्य। बीच।

कि० वि० बीच में। मध्य में।

बरमिमानी-वि० [फा०] बीच या।

मज्ञा पु० दो आदमियों के बीच के शगडे  
का निबटारा करनेवाला मनुष्य।

दरवाजा-सज्ञा पु० [फा०] १ द्वार। २  
किनाडा। फाटक।

दरवी-सज्ञा स्त्री० १ साँप का फन। २  
वरछल। पीना।

घो०—दरवीकर=साँप।

दरवेश-सज्ञा पु० [फा०] फकीर। माधु।

बरदा-सज्ञा पु० दर्शन।

बरदान-सज्ञा पु० दे० "दर्शन"।

दरदाना-वि० ज०, म० दे० "दरदाना"।

बरस-सज्ञा पु० १. देगा-देगी। दर्शन।

दीदार। २ भंडे। मुलाकात। ३. रूप।

छवि। नुदरता।

दरसन-सज्ञा पु० दे० "दर्शन"।

दरसना\*—वि० ज० दिखाई पड़ना। दर्शने  
में आना।

वि० म० दर्शना। लगना।

दरसनिया-सज्ञा पु० शीतला आदि की शान्ति  
की पूजा करानेवाला।

दरसनी-सज्ञा स्त्री० १. दर्शन। २. दर्पण।  
शीशा।

दरसनी हुडी-सज्ञा स्त्री० वह हुडी जिसे  
देखते ही उसके रूपों का भुगतान  
हो। वह हुडी जिसका भुगतान दस  
दिन या उससे कम समय में होता  
है।

दरसाना-कि० स० १ दिखलाना। २ प्रकट-  
करना। स्पष्ट करना। समझाना।

\*†—कि० ज० दिखाई पड़ना।

दरसावना-कि० स० दे० "दरस्ताना"।

दरांती-सज्ञा स्त्री० हंसिया।

दराज-वि० [फा०] बड़ा भारी। दीर्घ।

कि० वि० बहुत अधिक।

सज्ञा स्त्री० दरज। दरार। नेज में लगा  
हुआ खाना।

दरार-सज्ञा स्त्री० वह खाली जगह जो किसी  
चीज के फटने पर पड़ जाती है। शिगाफ।

दरज।

दरारना-कि० ज० फटना। विदीर्ण होना।

दरारा-सज्ञा पु० धक्का।

दरिदा-सज्ञा पु० [फा०] फाड़ खानेवाला जंतु।  
मांस-भक्षक वन-जंतु।

दरिद्र-वि० [स्त्री० दरिद्रा] गरीब। जिसके  
पाम धन न हो। निर्धन। कनाल।

दरिद्रता-सज्ञा स्त्री० गरीबी। निर्धनता।  
कमाली।

दरिद्रनारायण-सज्ञा पु० गरीबों और दीन-  
दुस्त्रियों के रूप में रहनेवाला भगवान्।

दरिद्री-वि० दे० "दरिद्र"।

दरिया-सज्ञा पु० [फा०] १. नदी। २. समुद्र।  
३. दक्षिण।

दरियाई-वि० [फा०] १. नदी-नवगी। २.  
नदी के किनारे का। ३. समुद्र-नवधी।

सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की रेशमी माटन।

दरियाई घोड़ा-सज्ञा पु० गैंडे की तरह का  
एक जानवर जो जमीन में नदियों के  
किनारे रहता है।

दरियाई नारियल-सज्ञा पु० एक प्रकार का

यह नालिया जगिया पात्र बनाकर मन्थायी या पणीर अपने पाम रखत है।

दरियादासी-गजा पु० निर्गुण उगाण साधुओं का एक मन्त्रदाय, जिसे दरिया माह्य नाम पर एक व्यक्ति ने बनाया था।

दरिया-दिल-वि० [फा०] [स्त्री० दरिया-दित्री] उमर। दाही। पंगार।

दरियापा-वि० [फा०] जिगता पजा रणा हा। शत। भाटूम।

दरिया-बराबर-गजा पु० [फा०] यह भूमि जो तिमो नदी की धारा हट जाने से निकले।

दरियायुर्व-सजा पु० [फा०] यह भूमि जिसे कोई नदी पाठवर बहा दे।

दरियाय-गजा पु० दे० "दरिया"।

दरी-गजा स्त्री० १ गुफा। गोह। कन्दरा। २ पहाड़ के बीच का नीचा स्थान, जहाँ कोई नदी गिरती हो। माटे सूना का बुना हुआ बिछोना। शतरजी।

वि० १ दरपोत। २ विदोण करनेवाला। फाड़नेवाला।

दरीखाना-गजा पु० [फा०] वह घर जिसमें बहुत से द्वार हैं। बारदरी।

दरीचा-गजा पु० [फा०] स्त्री० दरीची] १ खिडकी। क्षरोखा। २ खिडकी के पास बैठने की जगह।

दरीया-गजा पु० बाजार। पान का बाजार।

दरेण-गजा पु० [अ०] कभी। बसर।

दरेरना-वि० स० १ रगडना। पीसना। २ रगडते हुए धक्का देना।

दरेरा-गजा पु० १ रगडा। धक्का। २ बहाव का जोर। तोड़।

दरेस-गजा स्त्री० फूलदार छपा हुआ एक प्रकार का महीन कपडा। एक प्रकार की छोट।

वि० तैयार। सजा हुआ। बना-बनाया।

दरेसी-गजा स्त्री० तैयारी। मरम्मत। दुरुस्त करना।

दरेया-गजा पु० १ दलनेवाला। जो दले। २ धातव। विनासक।

दरीय-गजा पु० अ०] झूठ। असत्य।

दरीयहल्फो-गजा स्त्री० [अ०] सच बोलने की वसम खाकर भी झूठ बोलना।

दर्ज-गजा स्त्री० दे० "दरज"।

वि० [फा०] मागज पर रखा हुआ।

दर्जन-गजा पु० बारह का समूह। दसद्वे बारह।

दर्जा-गजा पु० [अ०] १. क्रम के विचार से निर्दिष्ट स्थान। श्रेणी। कोटि। पग। २ यशा। ३ पर। ओहदा। ४ विनीयन्तु का क्रम के अनुसार विभाग।

वि० वि० गुणित। गुता। मट।

दर्जो-गजा पु० [फा०] [स्त्री० दर्जिन] १ कपडा गीने का व्यवसाय करनेवाला। २ कपडा सीनेवाला।

दर्द-गजा पु० [फा०] १ पीडा। व्याघा। २ दुःख। तक्नीफ। ३ कुरा। दया।

मुहा०—दर्द साना-दया करना।

दर्दमद-वि० [फा०] १ पीडित। दुःखी। २ दयावान्।

दर्दी-वि० दे० "दर्दमद"।

दर्दुर-गजा पु० १ मेडव। २ बादल। ३ अश्रव। अश्रव।

दर्प-गजा पु० १ गर्व। घमड। अहंकार। अभिमान। मान। २ उद्वता। ३ दगाव। आतव। ४ वस्तुरी।

दर्पक-गजा पु० दर्प करनेवाला पुरष। कामदेव।

दर्पण-गजा पु० १ गुंहु देखने का सीसा। जाइना। आरसी। २ आँव। ३ आदर्श।

४ नमूना। एक पर्वत। ५ संगीत के ताल का एक भद। उद्दीपन। ६, एक नदी।

दर्पित-वि० दर्प से भरा हुआ। घमडी। अभिमानी। उद्व। अक्खड।

दर्पी-वि० घमडी। अभिमानी। दर्प से भरा हुआ।

दर\*]-गजा पु० १ द्रव्य। धन। २ धातु (साना, चाँदी इत्यादि)।

दर्भ-गजा पु० १ एक प्रकार का कुश। डाम। २ कुश। ३ कुशासन।

दर्भट-गजा पु० गुप्त गृह।

दर्भासन-गजा पु० कुश का बना हुआ बिछावन। कुशासन।

दरमियान-गजा पु [फा०] दे० "दरमियान"।

दर्श-सज्ञा पु० पहाड़ी के बीच का संकरा मार्ग। घाटी। दरार।

दर्शना-क्रि० अ० धडधडाना। वेधडक आगे बढ़ना।

दर्श-सज्ञा पु० १. हिंसा करनेवाला। हिंसक।

२. पञ्जाब के उत्तर की एक प्राचीन जाति।

३. इस जाति का उन्नत देश।

दबिका-सज्ञा स्त्री० चमचा। तरकारी आदि चलाने का बर्तन। पात्र-विशेष।

दर्श-सज्ञा स्त्री० १. फरछी। चमचा। २. साँप का फन।

दर्शकर-सज्ञा पु० फनवाला साँप। सर्प।

दर्श-सज्ञा पु० १. दर्शन। अवलोकन। २.

अमावास्या तिथि। ३. द्वितीया तिथि। ४.

अमावास्या के दिन होनेवाला यज्ञ आदि।

दर्शक-सज्ञा पु० १. दर्शन करनेवाला।

देखनेवाला। निरीक्षक। २. दिखानेवाला।

३. प्रधान। ४. द्वारपाल।

दर्शन-सज्ञा पु० १. देखना। साक्षात्कार।

अवलोकन। २. भेंट। मुलाकात। ३.

तत्त्वज्ञान-सबधी विद्या या शास्त्र, जिसमें

प्रकृति, आत्मा, परमात्मा, जगत् के नियामक-

धर्म और जीवन के अंतिम लक्ष्य आदि

का निरूपण होता है। ४. नेत्र। अक्ष।

५. स्वप्न। ६. बुद्धि। ७. धर्म। ८. दर्पण।

दर्शनप्रतिभू-सज्ञा पु० प्रतिनिधि। जमानत-

दार। हजिर-गामिन। वह व्यक्ति जो

किसी व्यक्ति-विशेष को समय पर उपस्थित

करने का दायित्व अपने ऊपर ले।

दर्शनी हुडी-सज्ञा स्त्री० दे० "दरसनी हुडी"।

दर्शनीय-वि० १. देखने योग्य। देखने लायक।

२. सुंदर। मनोहर।

दर्शनी-क्रि० स० दे० "दरसाना"।

दर्शित-वि० दिखलाया हुआ।

दर्शी-वि० देखनेवाला।

दल-सज्ञा पु० १. किसी वस्तु के उन दो

सम खंडों में से एक जो एक दूसरे से स्वभावतः

जुड़े हुए हों, पर जरा सा दबाव पड़ने से

अलग हो जायें। जैसे, दाल के दो दल।

२. पीसी का पत्ता। पन्ना। ३. तमालपत्र।

४. फूल की पंखड़ी। ५. समूह। झुंड।

गरोह। ६. मंडली। गुट्ट। ७. सेना।

फौज। ८. स्थूलता। ९. कीचड़। १०. म्यान।

११. कीप। धन। १२. जल में उत्पन्न होने-

वाला तृण-विशेष। १३. परत की तरह फैली

हुई चीज की मोटाई।

दलक-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. गुदडी। २. घर-

थराहट। धमक। ३. रह-रहकर उठनेवाला

दर। टीस। चमक।

दलकन-सज्ञा स्त्री० १. दलकने की क्रिया या

भाव। थरना। फटना। २. निर जाना।

३. चौकना। ४. आपात।

दलकना-क्रि० अ० १. फट जाना। दरार

खाना। चिर जाना। २. थरना। कांपना।

३. चौकना। ४. उद्दिग्ध हो उठना।

क्रि० स० डराना। भयभीत कर देना।

दलकोश-सज्ञा पु० कुन्द का पेड़।

दलगजन-वि० सेना को मारनेवाला भारी वीर।

सज्ञा पु० धान-विशेष।

दलयम्भन-सज्ञा पु० कमसाव धुननेवालों का

औजार-विशेष।

दलदल-सज्ञा स्त्री० १. पक। कीचड़।

चहला। २. वह गीली जमीन, जिसमें पैर

नीचे की घँसता हो।

मुहा०—दलदल में फँसना=१. मुश्किल

या विक्कत में पड़ना। २. जल्दी खतम या

तय न होना। खटाई में पड़ना।

दलदला-वि० [स्त्री० दलदली] जिसमें दलदल

हो। दलदलवाला।

दलदार-वि० मोटे दल, परत या सहवाला।

दलन-सज्ञा पु० वि० दलित। १. मर्दन।

टुकड़े-टुकड़े करना। चूर-चूर करना। २.

संहार।

दलना-क्रि० स० १. टुकड़े-टुकड़े करना।

चूर्ण करना। २. रौदना। कुचलना। ३.

दवाना। मसलना। मोड़ना। ४. चक्की

में डालकर अनाज आदि पीसना या दाल

के दाने अलग करना। ५. नष्ट करना।

ध्वस्त करना। ६. शत्रु के से शक्ति करना।

दलनी-सज्ञा स्त्री० दलने की क्रिया या दग।

दलनीय-वि० दलन (कुचलने या नाश) करने

योग्य। दमन करने योग्य।

दलपति—सजा पु० १ मुत्तिया। अगुआ। सरदार। २ मनापति।  
 दल-दल-सजा पु० १ लाव-रदार। सेना और उसमें रहनेवाले लोग। पौज। २ साथ रहनेवाले गिरोह।  
 दल-बावल-सजा पु० १ वादों का समूह। २ भारी सेना। ३ बहुत बड़ा शामिलाना।  
 दलमलना-क्रि० सं० १ ममल डालना। २ रौंदना। कुचलना। ३ नष्ट करना।  
 दलवाना-क्रि० सं० [दलना वा प्रे०] दलने का काम दूसरे से करवाना।  
 दलवाल\*†-सजा पु० सेनापति।  
 दलबैया-वि० दलन या नाश करनेवाला। दलने या चूर्ण करनेवाला।  
 दलहन-सजा पु० वह यंत्र जिसकी दाल बनाई जाय। जैसे चना, मूँग, उर्द, अरहर।  
 दलान†-सजा पु० दे० “दालान”।  
 दलाना-क्रि० सं० दे० “दलवाना”।  
 दलाल-सजा पु० [फा०, स्त्री० दलाली] १ सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता देनेवाला व्यक्ति। इस तरह का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति। २ मध्यस्थ। मिचबई।  
 दलाली-सजा स्त्री० १ दलाल का काम। २ दलाल को मिलने का हिस्सा या द्रव्य।  
 दलित-वि० १ रौंदा या कुचला हुआ। २ मसला हुआ। ३ खडित। ४ नष्ट किया हुआ।  
 दलिया-सजा पु० दलकर पिसा हुआ या टुकड़े किया हुआ अनाज।  
 दली-वि० १ दलवाला। पतावाला। २ दलित। दली गई। दो टूक की हुई।  
 दलील-सजा स्त्री० [अ०] १ तर्क। युक्ति। २ बहस। वाद विवाद।  
 दलैल-सजा स्त्री० सिपाहिया की वह बचावद जो सजा की तरह पर हो।  
 दलैया-सजा पु० भारतवाग। पीसनेवाला।  
 दलैपरा-सजा पु० वर्षा के आरम्भ में होनेवाली झड़ी।  
 दव-सजा पु० १ वन। जंगल। २ वन में आप से आप लगनेवाली आग। दवाग्नि। ३ अग्नि। आग।

दधन\*-सजा पु० १ नाश। २ दीना पोना।  
 दधना\*-सजा पु० दे० “दीना”।  
 धि० सं० जलना।  
 दधनी-सजा स्त्री० पगल के डटलों को बँला से रौंदवाकर दाना झाड़ने का काम। देवरी। मिसाई।  
 दधिया†-सजा स्त्री० दे० “दवारि”।  
 दवा-सजा स्त्री० [फा०] १ औषध। वह वस्तु, जिससे रोग दूर हो। २ रोग दूर करने का उपाय। उपचार। चिकित्सा। ३ दूर करने की युक्ति। मिटाने का उपाय। ४ दुस्त करने की सद्दी। \*५ वन में लगनेवाली आग। दवाग्नि। ६ आग।  
 दवाखाना-सजा पु० [फा०] १ वह जगह, जहाँ दवा मिलती हो। २ औषधालय।  
 दवाग्नि\*-सजा स्त्री० दे० “दवाग्नि”।  
 दवाग्नि-सजा स्त्री० वन में लगनेवाली आग। दवानल।  
 दवात-सजा स्त्री० [अ०] लिखने की स्याही रखने का बरतन। भस्तिपा।  
 दवानल-सजा पु० दे० “दवाग्नि”।  
 दवामी-वि० [अ०] स्थायी। सदा के लिए।  
 दवामी बंदोबस्त-सजा पु० [फा०] जमीन का यह बंदोबस्त, जिसमें सरकारी मालगुजारी एव ही बार सदा के लिए निश्चित हो।  
 दवारी-सजा स्त्री० दे० “दवाग्नि”।  
 दश-वि० दस। दस की संख्या। १०।  
 दशकठ-सजा पु० रावण। दस मुखवाला। दशानन।  
 दशकठजित-सजा पु० श्री रामचन्द्र। दस मुखवाले रावण को जितनेवाले श्रीराम।  
 दशकधर-सजा पु० रावण।  
 दशक-सजा पु० दस वस्तुओं का समूह। सन्, सब्ज आदि में इकाई से दहाई तक के दस वष।  
 दशकर्म-सजा पु० १ मरण के दसवें दिन का कृत्य। २ गर्भाधान से लेकर विवाह तक के दस स्कार (गर्भाधान, पुसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह)।

दशगात्र-सज्ञा पु० १ मृतक-सत्रधी एक कर्म जो उसके मरने के पीछे दस दिनों तक होता रहता है। २ शरीर के दस मुख्य अंग।  
 दशमीव-सज्ञा पु० रावण। दस गर्दनवाला।  
 दशदिक्-सज्ञा स्त्री० दसों दिशाएँ—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ऊर्ध्व और अध।  
 दशदिक्पाल-सज्ञा पु० दसों दिशाओं के स्वामी—इन्द्र, अग्नि, यम, नैऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, ब्रह्मा और अनन्त।  
 दशधा-वि० दस प्रकार का।  
 कि० वि० दस प्रकार से।  
 दशन-सज्ञा पु० १ दाँत। २ कवच। ३ शिखर।  
 दशनच्छद-सज्ञा पु० होठ।  
 दशनाम-सज्ञा पु० सन्यासियों के दस भेद—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और मुरी।  
 दशनामी-सज्ञा पु० शंकराचार्य के अनुयायी दस प्रकार के सन्यासी—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती, पुरी। सन्यासियों का एक वर्ग।  
 दशनायली-सज्ञा स्त्री० दाँतों की पक्ति।  
 दशभुजा-सज्ञा स्त्री० दुर्गा। दस बाँहावाली।  
 दशम-वि० दसवाँ। दस सख्या को पूरा करने वाली सख्या।  
 दशमलय-सज्ञा पु० दसवाँ हिस्सा। गणित की एक क्रिया जिसमें दस या उसका कोई घात हो।  
 दशमहाविद्या-सज्ञा स्त्री० दस प्रकार की देवियाँ, यथा काली, तारा, पोटशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी और कमला।  
 दशमाश-सज्ञा पु० दसवाँ हिस्सा।  
 दशमी-सज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की दसवी तिथि।  
 दशमुख-सज्ञा पु० रावण।  
 दशमूल-सज्ञा पु० औषध विशप। दस प्रकार की जड़ों या छालों से बनी हुई औषध।  
 दशमीलि-सज्ञा पु० रावण।

दशरथ-सज्ञा पु० रामचन्द्रजी के पिता, जो इक्ष्वाकु या सूर्यवंश के राजा थे और जिनकी राजधानी अयोध्या थी।  
 दशशीश\*-सज्ञा पु० रावण।  
 दशहरा-सज्ञा पु० १ विजया दशमी। २ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी। इसे गंगा-दशहरा भी कहते हैं।  
 दशाग-सज्ञा पु० पूजन में जलाने का एक धूप, जो दस सुगंध द्रव्यों के मेल से बनता है।  
 दशागुल-सज्ञा पु० १ दस अंगुल का परिमाण। २ खरबूजा। डंगरा।  
 दशाश-सज्ञा पु० दसवाँ भाग। दसवाँ हिस्सा।  
 दशा-सज्ञा स्त्री० १ हालत। अवस्था। स्थिति। २ फलित ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक ग्रह का नियत भोग-काल। ३ साहित्य में रस के अन्तर्गत विरह की दशा।  
 दशानन-सज्ञा पु० रावण।  
 दशावतार-सज्ञा पु० चार युगों में विष्णु के दस अवतार।  
 दशाविपाक-सज्ञा पु० दुख की अन्तिम अवस्था।  
 दशार्ण-सज्ञा पु० १ विध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण की ओर स्थित एक प्रदेश का प्राचीन नाम। मालवा का पश्चिमी भाग। इसकी राजधानी विदिशा (भलसा) थी। २ उक्त देश का निवासी या राजा। ३ तन का एक दशाक्षर मंत्र।  
 दशार्ण-सज्ञा स्त्री० घसान नदी जो विध्याचल से निकलकर यमुना में मिलती है।  
 दशार्ह-सज्ञा पु० १ बुद्ध। २ देश विनाप। यदुदेश। ३ यदुदेश के निवासी।  
 दशाश्व-सज्ञा पु० चन्द्रमा।  
 दशाश्वमेध-सज्ञा पु० यह स्थान, जहाँ पर १० अश्वमेध यज्ञ हुए हैं। १ वासी के अर्वागत एक तीर्थ। वासी का एक प्रतिद्वंद्व घाट, जो तीर्थ माना जाता है। २ प्रयाग में त्रिवेणी के पास एक पवित्र घाट।  
 दशास्य-सज्ञा पु० दशमुख। रावण।  
 दशाह-सज्ञा पु० १ दस दिन। २ मुख के दूर का दसवाँ दिन।

दश-त्रि० बर्द्ध। वदुः मे।

गना पु० दश गण्या विनाय। पाँच की दूती सण्या।

यत्पत्त-गना पु० दे० "दम्पत्यन"।

दत्त-गना पु० दे० 'दश'।

दम्पा-वि० अ० विछाया जाता। विछा। फँटना।

वि० ग० विछाया। विस्तर फैलाना।

गना पु० विछाना। विस्तर।

दत्ताय-गना पु० रावण।

दशमी-गना स्त्री० दे० 'दशमी'।

दशमी-वि० गिनी में दस के स्थान पर पड़नेवाला।

सजा पु० किसी की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाला श्रृंगार।

दश-सजा स्त्री० दे० 'दश'।

दशाना-वि० स० विछाना। विस्तर फैलाना।

दशान-सजा पु० दे० 'दशान'।

दसो-सजा स्त्री० १ बपट के छोर का मूत। छोर। २ धान का आंचल।

वसोधी-सजा पु० वदियो या चारणा की एक जाति, जो अपन को ब्राह्मण कहती है। ब्रह्मभट्ट। भाट।

दस्तदाजी-सजा स्त्री० [फा०] हस्तशोप। दखल देना।

दस्त-सजा पु० [फा०] १ पतला पाखाना। विरेचन। २ हाथ।

दस्तक-सजा स्त्री० [फा०] १ हाथ से खट-खट शब्द। बरना। खटखटाना। २ बुलाने के लिए दरवाजे की कुडी खटखटाने की क्रिया। ३ माथगुजारी बसूल करने के लिए गिरफ्तारी या बसूली का परवाना। ४ माल आदि ले जान का परवाना। ५ घर। महसूल।

दस्तकारी-सजा पु० [फा०] हाथ से कारीगरी का काम करनेवाला आवामी।

दस्तकारी-सजा स्त्री० [फा०] हाथ की कारीगरी। शिल्प।

दस्तखत-सजा पु० [फा०] अपन हाथ का लिखा हुआ अपना नाम। हस्ताक्षर।

दस्तखनी-वि० जिस पर हस्ताक्षर हो।

दस्तगीर-वि० [गञ्ज दम्पती] गहायन। मदभाग।

दस्तावदस्त-वि० वि० हाथ हाथ।

दस्त-वरदार-वि० [फा०] विनी वस्तु पर स अपना अधिकार छोड़ देनेवाला।

दस्तवस्ता-मना पु० हाथ बाँधकर। तबद्ध।

दस्तपाय-वि० [फा०] हस्तगत। प्राप्त।

दस्तरखा-सजा पु० [फा०] वह चादर, जिन पर गाना रखा जाता है।

दस्ता-सजा पु० [फा०] १ वह जो हाथ में आवे या रह। २ किसी औजार आदि का वह हिस्सा, जो हाथ से पकड़ा जाता है।

मूठ। बँट। ३ फूला का गुच्छ। गुल्दस्ता।

४ सिपाहिया का छाटा ढल। गारद।

५ वागज के चौबीस तावा की गद्दी।

दस्ताना-गना पु० [फा०] पजे और हवेली में पहनने का कपड़ा। हाथ का मोजा।

दस्तावर-वि० [फा०] जिससे दस्त आवे। विरेचक।

दस्तावेज-सजा स्त्री० [फा०] लेन-दान की लिखा-पढ़ी का वागज। तमस्तुव।

दस्ती-वि० [फा०] हाथ का।

सजा स्त्री० १ हाथ में लेकर चलने की वस्ती। मशाल। २ छोटी मूठ। छाटा बँट। ३ छाटा बलमदान।

दस्तूर-सजा पु० [फा०] १ रीति। रस्म। रवाज। चाल। प्रथा। २ नियम। कायदा।

विधि। ३ पारसियों का पुरोहित।

दस्तूरी-सजा स्त्री० [फा०] वह द्रव्य, जो नीकर अपने मालिक का सौदा करने में दूकानदारों से हक के तीर पर पाते हैं।

दस्यु-सजा पु० १ डाकू। चोर। २ असुर।

३ अनाय्य। म्लेच्छ। ४ दास।

दस्युता-सजा स्त्री० १ लुटरापन। डकैती।

२ दुष्टता। क्रूर स्वभाव।

दस्युवृत्ति-सजा स्त्री० १ डकैती। लुटरापन।

२ चोरी।

दस्युहन-सजा पु० इन्द्र।

दस-सजा पु० १ शिशिर। २ अश्विनीकुमार।

३ गद्दा। ४ जोड़ा।

वि० दोहरा। हिसक।

वह-सज्ञा पु० १. नदी में वह स्थान, जहाँ पानी बहुत गहरा हो। पाल। २. कुड। होज।

सज्ञा स्त्री० ज्वाला। लपट।

वहक-सज्ञा स्त्री० १. आग वहकने की क्रिया। धधक। दाह। २. ज्वाला। लपट। ३. लज्जा।

वहकना-क्रि० अ० १. जलना। धधकना। भडकना। २. गरम होना। तपना। ३. क्रोध दिखाना। ४. पछताना। पश्चात्ताप करना।

वहकाना-क्रि० स० १. ऐसा जलाना कि ली ऊपर उठे। २. धधकाना। ३. भडकाना। क्रोध दिलाना। ४. पछताना। अनुताप करना।

वहड़-वहड़-क्रि० वि० लपट फेंकते हुए। धार्ध-धार्ध।

वहन-सज्ञा पु० [वि० दहनीय, दह्यमान] १. जलने की क्रिया या भाव। दाह। २. अग्नि। आग। ३. कृत्तिका नक्षत्र। ४. तीन की संख्या। ५. एक रत्न।

वहना-क्रि० अ० १. जलना। भस्म होना। २. क्रोध से सतप्त होना। कुडना। ३. घँसना। नीचे बँटना।

क्रि० स० १. जलाना। भस्म करना। २. सतप्त करना। दुःखी करना। कष्ट पहुँचाना। ३. क्रोध दिलाना। कुडाना।

वि० दे० "दहिना"।

दहनि-सज्ञा स्त्री० जलना। जलन। दहपट-वि० १. ढाया हुआ। ध्वस्त। चौपट। नष्ट। २. रीदा हुआ। कुचला हुआ। दलित।

दहपटना-क्रि० रा० १. ध्वस्त करना। चौपट करना। नष्ट करना। २. रीदना। कुचलना।

दहर-सज्ञा पु० १. छछूँवर। छोटी बुहिया। २. भाई। ३. बालक। ४. नरक। ५. वरुण।

१ नदी में गहरा स्थान। दह। ७ कुड।

होज। ताल। ८. छोटा। सूक्ष्म। स्वल्प।

बहर-बहर-क्रि० वि० धधकते हुए।

बहरना-क्रि० अ० दे० "दहलना"।

क्रि० स० दे० "दहलाना"।

फा० ४७

वहल-सज्ञा स्त्री० भय से सहसा काँप जाने की क्रिया।

वहलना-क्रि० अ० डर से सहसा काँप जाना। भय से स्तम्भित होना। डर से चौकना।

वहला-सज्ञा पु० १. दास का पत्ता, जिसमें दस बूटियाँ हो। २. थाँवला। थाल।

वहलाना-क्रि० स० डर से काँपाना। डराना। भयभीत करना।

वहलीज-सज्ञा स्त्री० [फा०] द्वार के चौखट के नीचेवाली लकड़ी जो जमीन पर रहती है। देहली। डेहरी।

वहशत-सज्ञा स्त्री० [फा०] डर। भय।

वहा-सज्ञा पु० [फा०] १. मुहर्रम का महीना। २. मुहर्रम की १ से १० तारीख तक का समय। ३. ताजिया।

वहाई-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. दस का मान या भाव। २. अको के स्थानों की गिनती में दूसरा स्थान, जिस पर जो अक लिखा होता है, उससे छतने ही गुने दस का बोध होता है।

वहाड़-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १. किसी भयकर जलु का घोर शब्द। गरज। २. चिल्लाकर रोने की ध्वनि। आर्तनाद।

मुहा०—वहाड़ मारना या वहाड़ मारकर रोना=चिल्ला-चिल्लाकर रोना।

वहाड़ना-क्रि० अ० [अनु०] १. घोर शब्द करना। गरजना। २. चिल्लाकर रोना।

वहाना-सज्ञा पु० [फा०] १. चौड़ा मुँह। द्वार। २. वह स्थान, जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र में गिरती है। मुहाना। ३. मोरी।

वहिन-वि० [स्त्री० दहिनी] बायाँ का उलटा। अपसव्य। दक्षिण भाग।

वहार-सज्ञा पु० प्रदेश।

वहजार-सज्ञा पु० दे० "दाहीजार"।

वहिनारवर्त्तन-वि० दे० "दक्षिणारवर्त्तन"।

दहिने-क्रि० वि० दाहिनी ओर को।

मो०—दहिने होना=अनुकूल होना। प्रसन्न होना। दहिने जाएँ=इधर-उधर। दोनों ओर।

वनी-सज्ञा पु० दधि। जमाया हुआ दूध।

मुहा०—दही-दही करना=किसी चीज को बेचने के लिए लोगों से बहते फिरना।  
 बहु\*—अव्य० १ अववा। या। विवा। २ स्यात्। वदाचिस्।  
 बहुडो—सज्ञा स्त्री० दही रखने का मिट्टी का बरतन।  
 'बहेज—सज्ञा पु० विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिया जानेवाला धन और सामग्री आदि। दायजा। यौतुक।  
 बहेला—वि० [स्त्री० दहेली] १ जला हुआ। दग्ध। २ सतप्त। दुखी। ३ भीगा हुआ। ठिठुरा हुआ।  
 दाँ—सज्ञा पु० दफा। बार। बारी।  
 सज्ञा पु० [फा०] ज्ञाता। जाननेवाला।  
 दाँकना—प्रि० अ० गरजना। दहाड़ना।  
 दांग—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ छ रत्ती की तोल। २ दिशा। तरफ। ओर।  
 सज्ञा पु० १ नगाडा। डका। २ टीला। छोटी पहाड़ी।  
 दाँज—सज्ञा स्त्री० बराबरी। समता। जोड़। तुलना।  
 दाढ़िक—सज्ञा पु० जल्लाद।  
 दाँत—सज्ञा पु० १ मुँह में चबाने के लिए निवली हुई हड्डियाँ। दण। रद। दशन। २ दाँत के आकार की निकली हुई वस्तु।  
 वि० १ दाँत फा। दाँत-सबधी। २ जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। ३ जिसने इद्रिया को बस-में कर लिया हो। समी।  
 मुहा०—दाँतो जंगली काटना=दे० "दाँत तले जंगली दबाना"। दाँत काटी रोटी=अत्यंत घनिष्ठ मित्रता। दाँत खटटे करना=१ सूख हैरान करना। २ प्रति-द्विष्टा या खेडाई में परास्त करना। दाँत चवाना=श्रेष्ठ से दाँत पीसना। बोप प्रवट करना। दाँत तले जंगली दबाना=१ ज्वरज में आना। दग रहना। २ खेद प्रवट करना। दाँत तोड़ना=परास्त करना। हैरान करना। दाँत पीसना=(श्रेष्ठ में) दाँत पर दाँत रख-

कर जोर लगाना। दाँत बिटबिटाना। दाँत चजना=सरदी से दाँत के हिलने या बाँपने के कारण दाँत पर दाँत पड़ना। दाँत बैठ जाना=दाँत की ऊपर-नीचेवाली पंक्तियों का परस्पर इस प्रकार मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके। दाँतो में तिनका लेना=दया के लिए बहुत विनती करना। (किसी वस्तु पर) दाँत रखना या लगाना=१ लेने की गहरी चाह रखना। २ बदला लेने का विचार रखना। (किसी के) तालू में दाँत जमना=बरे दिन आना।  
 दाँता—सज्ञा पु० १ दाँत के आकार का कंगूरा। २ रवा। ददाना।  
 दाँता-बिटकिट-सज्ञा स्त्री० १ बहा-मुनी। झगडा। २ गाली-गलोज।  
 दाँति—सज्ञा स्त्री० १ इद्रिय-निग्रह। इद्रियो का दमन। २ अधीनता। ३ विनय।  
 दाँती—सज्ञा स्त्री० १ हँसिया, जिससे घास या फसल काटते हैं। २ दाँतो की पंक्ति। दता-वलि। वत्तीसी। ३ दो पहाड़ों के बीच की सँकरी जगह। दर्रा। ४ काली मिट्ट।  
 दाँना—क्रि० स० पक्की फसल के ढठला को बेलों से इसलिए रौदवाना, जिसमें ढठल से दाना अलग हो जाय।  
 दापत्य—वि० पति-पत्नी-सबधी। स्त्री-मुख्य का-सा।  
 सज्ञा पु० स्त्री-मुख्य के बीच का प्रेम या व्यवहार।  
 दाँभिक—वि० १ पाखंडी। धोखेबाज। २ अहकारी। घगड़ी।  
 दाँव—सज्ञा स्त्री० दे० "दँवरी"।  
 दाँपो—सज्ञा पु० दाहिना। दे० "दायाँ"।  
 दाँव—सज्ञा पु० दे० "दायाँ"।  
 दाँवनी—सज्ञा स्त्री० दे० "दावनी"।  
 दाँवरी—सज्ञा स्त्री० दे० "दावरी"। रस्सी। डोरी।  
 दाइ\*—सज्ञा पु० दे० "दाय" और "दाँव"।  
 दाई—वि० दाहिनी।  
 सज्ञा स्त्री० बारी। दफा। बार।  
 दाई—सज्ञा स्त्री० घास। १ बच्च की देख-

रेख रखनेवाली दासी। २ प्रसूता के उपचार के लिए नियुक्त स्त्री।

\*वि० दे० "दायी"।

मुहा०—दाई से पेट छिपाना=जाननेवाले से कोई बात छिपाना।

दाडजू—सज्ञा पु० दे० "दाँव"।

दाऊ—सज्ञा पु० १ बड़ा भाई। २ कृष्ण के बड़ भाई बलदेव।

दाऊदी—सज्ञा पु० एक प्रकार का बढिया गेहूँ।

दाक्षायण—वि० १ मोहर। सोना। २ एक यज्ञ। ३ दक्ष प्रजापति के पुत्र आदि। ४ दक्ष-संवधी।

दाक्षायणी—सज्ञा स्त्री० १ दक्ष की कन्या। २ अश्विनी आदि नक्षत्र। ३ दुर्गा। ४ कश्यप की स्त्री, अदिति। ५ रोहिणी नक्षत्र। ६ जमालगोटा का वृक्ष।

दाक्षिण—सज्ञा पु० एक तरह का होम।

वि० १ दक्षिण सम्बन्धी। २ दक्षिण-सम्बन्धी।

दाक्षिणालय—वि० दक्षिणी। दक्षिण का। सज्ञा पु० १ विध्याचल के दक्षिण का भूभाग। २ दक्षिण देश का निवासी।

दाक्षिण्य—सज्ञा पु० १ अनुकूलता। प्रसन्नता। २ उदारता। सुशीलता। ३ दूसरे को प्रसन्न करने का भाव। ४ नाटक में वाक्य या चप्पटा-द्वारा दूसरे के उदासीन चित्त को प्रसन्न करना।

वि० १ दक्षिण का। दक्षिण-संबन्धी। २ दक्षिणा संबंधी।

दाक्ष्य—सज्ञा पु० चतुरता।

दाख—सज्ञा स्त्री० १ अग्र। २ मुनक्का। ३ विशमिश्र।

दाखिल—वि० [फा०] १ प्रविष्ट। घुसा हुआ। पँठा हुआ। २ शरीर। मिला हुआ। ३ पहुँचा हुआ।

मुहा०—दाखिल करना=भर देना। जमा करना।

दाखिल-खारिज—सज्ञा पु० [फा०] किसी सरकारी कागज पर स किसी जायदाद के पुराने हकदार का नाम दाखल उस

पर उसके वारिस या दूसरे हकदार का नाम लिखना।

दाखिल-दफ्तर—वि० [फा०] दफ्तर में इस प्रकार डाल रखा हुआ कागज जिस पर कुछ विचार न किया जाय।

दाखिला—सज्ञा पु० [फा०] १ प्रवेश। पैठ। २ सस्या आदि में सम्मिलित किए जाने का कार्य। वह कागज, जिस पर किसी वस्तु के जमा होने की तारीख लिखी हो।

दाग—सज्ञा पु० १ दाह। २ मुर्दा जलाने की क्रिया। ३ जलन। ४ जलने का चिह्न। मुहा०—दाग देना=मुर्दे का क्रिया-कर्म करना।

दाग—सज्ञा पु० [फा०] [वि० दागी] १ धब्बा। चित्ती। २ निशान। चिह्न। अक। ३ फल आदि पर पड़ा हुआ सड़ने का चिह्न। ४ कलक। ऐब। दोष। लाछन। ५ जलने का चिह्न।

मुहा०—सफेद दाग=एक प्रकार का फोड़, जिससे शरीर पर सफेद धब्बे पड़ जाते हैं।

दासदार—वि० [फा०] जिस पर दाग या धब्बा लगा हो।

दागना—कि० सं० १ जलाना। दग्ध करना। २ तपे लोहे से किसी के अंग को ऐसा जलाना कि चिह्न पड़ जाय। ३ फोड़े आदि पर ऐसी तेज दवा लगाना, जिससे वह जल या सुख जाय। ४ भरी हुई बटुक में बत्ती देना। तोप, बटुक आदि छोड़ना।

कि० सं० चिह्न लगाना। अंकित करना।

दागबेल—सज्ञा स्त्री० भूमि पर फावड़े या कुदाल से बनाए हुए चिह्न, जो सड़क बनाने, नौव सोदने आदि के लिए डाले जाते हैं।

दापी—वि० १ जिस पर दाग या धब्बा हो। २ जिस पर सड़ने का चिह्न हो। ३ कलकित। दोषयुक्त। लाछित। ४ जिसे सजा मिल चुकी हो।

दाप्य—सज्ञा पु० १ गरमी। ताप २ दाह। जलन।

दाज\*—सज्ञा पु० अंघेरा।

दाजन\*—सज्ञा स्त्री० दे० "दाशन"।

दाशन\*—सज्ञा स्त्री० जलन।

वाचना\*—त्रि० अ० जलना। सतप्त होना।  
 क्रि० सं० जलाना।  
 वाङ्मि—सज्ञा पु० अनार।  
 दाढ—सज्ञा स्त्री० १ जवड़े के भीतर के छोटे  
 चोटे दाँत। चौभर। २ गरज। दहाड़।  
 ३ चिल्लाहट।  
 मुहा०—दाढ मारकर रोना=सूख चिल्ला-  
 चिल्लाकर रोना।  
 दावना\*—त्रि० सं० १ जलाना। आग में  
 भस्म करना। २ सतप्त करना। दुखी  
 करना।  
 दाढ़ा—सज्ञा पु० दे० "दाढ़"। १ धन की  
 आग। दावानल। २ आग। अग्नि। ३  
 दाह। जलन।  
 दादी—सज्ञा स्त्री० १ चिबुक। २ ठुड्डी  
 और दाढ़ पर के बाल। इमश्रु।  
 दादीजार—सज्ञा पु० जली दाढ़ीवाला। स्त्रियो-  
 द्वारा पुरुषा को दी जानेवाली एक गाली।  
 दात\*—सज्ञा पु० १ दान। २ दे० "दाता"।  
 दातव्य—वि० देने योग्य।  
 सज्ञा पु० १ देने का काम। दान। २  
 दानशीलता। उदारता।  
 दाता—सज्ञा पु० १ देनेवाला। दानशील।  
 २ दानी।  
 दातार—सज्ञा पु० दाता। देनेवाला। दानी।  
 दाती\*—सज्ञा स्त्री० देनेवाली।  
 दातुन—सज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।  
 दातुत्व—सज्ञा पु० दानशीलता। दान करने  
 की शक्ति। देने की प्रवृत्ति।  
 दातीन—सज्ञा स्त्री० दे० "दतुवन"।  
 दातुह—सज्ञा पु० १ पपीहा। चावक। २  
 मेघ। बादल।  
 दात्री—सज्ञा स्त्री० १ देनेवाली। २ हँसिया।  
 दाँती।  
 दाद—सज्ञा स्त्री० १ एक चर्मरोग, जिसमें शरीर  
 पर उभरे हुए ऐसे बकते पड़ जाते हैं, जिनमें  
 बहुत खुजली होती है। दिनाई। फा०]  
 २ इसाफ। न्याय। ३ सराहना। प्रशंसा।  
 मुहा०—दाद चाहना=किसी अत्याचार के  
 प्रतीकार की प्रार्थना करना। दाद देना=  
 प्रशंसा करना। सराहना।

दादनी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ चुवानेवाली  
 रवम। २ किसी काम के लिए पेशगी दी  
 जानेवाली रवम। अगवा।  
 दादग—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का चलना  
 गाना। २ दा अर्द्ध मात्राओं का एक ताल।  
 दादा—सज्ञा पु० स्त्री० दादी] १ पितामह।  
 पिता का पिता। आज्ञा। २ बड़ा भाई।  
 ३ बड़े-बूढ़ा के लिए आदरमूचक शब्द।  
 दादि\*—सज्ञा स्त्री० [फा०] न्याय।  
 इसाफ।  
 दादी—सज्ञा स्त्री० पिता की माता। दादा  
 की स्त्री। आज्ञा।  
 सज्ञा पु० दाद चाहनेवाला। न्याय वा  
 प्रार्थी। करियादी।  
 दादु\*—सज्ञा स्त्री० दाद। दिनाई।  
 दादुर\*—सज्ञा पु० मेढक।  
 दाहू—सज्ञा पु० १ दादा के लिए सवोधन  
 या प्यार का शब्द। २ 'भाई' आदि के  
 समान एक साधारण सवोधन। ३ एक  
 सन्त महात्मा। इनका पूरा नाम दादूदयाल  
 था। इनके नाम पर एक पथ चला है। ये  
 जाति के धुनिया कहे जाते हैं। इनका जन्म-  
 स्थान अहमदाबाद था। ये अकबर के समय  
 में हुए थे।  
 दादूदयाल—सज्ञा पु० दे० "दादू"।  
 दादूपयो—सज्ञा पु० दादू नामक साधु या  
 उनके पथ का अनुयायी।  
 दाप्र\*—सज्ञा स्त्री० जलन। दाह।  
 दाघना\*—क्रि० सं० जलाना। भस्म करना।  
 दान—सज्ञा पु० १ देने का कार्य। २ वह  
 धर्मार्थ वर्म, जिसमें थड़ा या दयापूर्वक दूसरे  
 को धन आदि दिया जाता है। खेराठ।  
 ३ वह वस्तु जो दान में दी जाय। ४ कर।  
 महसूल। चुगी। ५ हाथी का मद। ६  
 छेदन। ७ शुद्धि।  
 दानधम्म—सज्ञा पु० दान देने का धम्म।  
 दान-पुण्य।  
 दानपत्र—सज्ञा पु० वह लेख या पत्र, जिसके  
 द्वारा कोई संपत्ति किसी को प्रदान की जाय।  
 दानपात्र—सज्ञा पु० वह व्यक्ति, जो दान  
 पाने के उपयुक्त हो।

दानलीला-सज्ञा स्त्री० १ कृष्ण की वह लीला, जिसमें उन्होंने ग्वालिनो से गोरस बेचने का कर वसूल किया था। २ वह ग्रथ, जिसमें इस लीला का वर्णन किया गया हो।

दानव-सज्ञा पु० [स्त्री० दानवी] असुर। राक्षस। कश्यप के वे पुत्र, जो 'दनु' नाम्नी पत्नी से उत्पन्न हुए थे।

दान-वारि-सज्ञा पु० हाथी का मद।

दानवी-सज्ञा स्त्री० १ दानव की स्त्री।

२ दानव जाति की स्त्री। राक्षसी।

वि० दानवो का। दानव-सबधी।

दानवीर-सज्ञा पु० जो दान देने में वीर हो।

जो दान देने से न हटे। कर्ण की उपाधि।

दानवीर कर्ण। अत्यंत दानी।

दानवैर-सज्ञा पु० राजा बलि। दानवो के राजा।

दानशील-वि० [सज्ञा दानशीलता] दान करनेवाला। दानी।

दाना-सज्ञा पु० १ अनाज का एक बीज।

अन्न का एक कण। २ अनाज। अन्न।

३ सूखा भुना हुआ अन्न। चवेना। ४

छोटा बीज। ५ छोटी गोल वस्तु। जैसे—

मोती का दाना। धुंधलू का दाना। ६

माला की गुरिया। मणका। ७ कण।

वि० [फा०] बुद्धिमान्। अवलमद।

मुहा०—दाने-दान को तरसना=अन्न का

कण्ट सहना। भोजन न पाना। दाने-दाने

को मुहवाज=अत्यंत दरिद्र।

दानार्द्र-सज्ञा स्त्री० [फा०] अवलमदी।

दानाप्यस्त-सज्ञा पु० राजाओं के यहाँ दान

का प्रवण करनेवाला कमचारी।

दाना-पानी-सज्ञा पु० १ पान पान। अन्न-

जल। २ जीविका। भरण-पोषण।

मुहा०—दाना पानी छोटना=अन्न-जल ग्रहण

न करना। उपवास करना।

दानिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] बुद्धि।

अवल।

दानिशमन्द-वि० बुद्धिमान्। समझदार।

दानी-वि० [स्त्री० दानिनी] उदार। दाता।

सज्ञा पु० दान करनेवाला व्यक्ति। दाता।

कर संग्रह करनेवाला। महसूल उगाहने-वाला।

दानदार-वि० [फा०] जिसमें दाने या रवे हो। स्वादार।

दानी\*—सज्ञा पु० दे० "दागव"।

दाघ-सज्ञा पु० १ अहंकार। घमड़। अभि-

मान। २ शक्ति। बल। जोर। ३ उत्साह।

उमंग। ४ रोव। दबदबा। आतक। ५ क्रोध।

६ जलन। ताग।

दापक-सज्ञा पु० दवानेवाला।

दापना\*—क्रि० स० १ दवाना। दाबना।

२ मना करना। रोकना।

दाघ-सज्ञा स्त्री० १ दबने या दवाने का

भाव। २ भार। बोझ। ३ आतक। रोव।

प्रभाव। शासन।

दावदार-वि० प्रतापी। आतक रखनेवाला।

रोवदार।

दाबना-क्रि० स० दे० "दवाना"।

दावा-सज्ञा पु० कलम लगाने के लिए पीछे

की टहनी मिट्टी में गाड़ना।

दाभ-सज्ञा पु० कुश। डाम।

दाम-सज्ञा पु० १ मूल्य। कीमत। २ रस्सी।

रज्जु। ३ माला। हार। लड़ी। ४ समूह।

राशि। ५ लोक। विश्व। ६ जाल।

फदा। पाश। ७ पैसे का चौबीसवाँ भाग।

८ धन। रुपया-पैसा। ९ सिक्का। १०

राजनीति की एक चाल, जिसमें शत्रु

को धन-द्वारा बंध में करते हैं। दाम-

नीति।

मुहा०—दाम दाम भर देना=कीड़ी-कीड़ी

चुका देना। (ऋण) बाकी न रखना।

दाम खड़ा करना=कीमत वसूल करना।

दाम चुकाना=१ मूल्य दे देना। २ कीमत

उठाना। मोल भाव तय करना। दाम

भरना=नुकसानी देना। डाँट देना। क्षाम

के दाम चलाना=अधिनार या अयसर

पावर मनमाना अघेर करना।

दामन-सज्ञा पु० [फा०] औचल। अचल।

१ कुरत आदि का निचला भाग। पतला।

कपड़ का छोर। आश्रय। शरण। अवलम्ब।

२ पहाड़ के नीचे की भूमि।

दामनगौर-वि० [फा०] पल्ले पहनेवाला।  
 साय रहनेवाला। दावेदार।  
 दामनी-सज्ञा स्त्री० रस्नी।  
 दामरि-मज्ञा स्त्री० रस्ती।  
 दामरी-सज्ञा स्त्री० रस्ती। रज्जु।  
 दामा\*-सज्ञा स्त्री० १ दावानल। २ फाले  
 रंग की एक निडिया।  
 दामाद-सज्ञा पु० बेटो का पति। जंवाई।  
 जामाता।  
 दामिनी-सज्ञा स्त्री० १ विजली। विद्युत्।  
 २ स्त्रियो का एक शिरोभूषण। बेंदी।  
 विदिया। दाँवनी।  
 दामो-सज्ञा स्त्री० कर। मालगुजारी।  
 वि० मूल्यवान्। कीमती।  
 दामोदर-सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण। २ विष्णु।  
 ३ एक जैन तीर्थंकर।  
 दाय\*-सज्ञा पु० १ देने योग्य धन। २ दान  
 या दहेज आदि में दिया जानेवाला धन।  
 ३ पतृन सम्पत्ति जिसका उत्तराधिकारियो  
 में विभाग हो। ४ दान। ५ \*दे०  
 "दाव"।  
 सज्ञा स्त्री० बराबरी। दबडी। दे० "दाँज"।  
 दायक-सज्ञा पु० [स्त्री० दायिका] देनेवाला।  
 दाता।  
 दायज, दायजा-सज्ञा पु० विवाह में दूर-  
 पक्ष को दिया जानेवाला धन और सामान  
 आदि। दहेज।  
 दायभाग-सज्ञा पु० पतृक सम्पत्ति के  
 बँटवारे की एक व्यवस्था या सिद्धान्त जो  
 मितासरा से भिन्न है।  
 दायम-क्रि० वि० [अ०] सदा। हमेशा।  
 दायमुल्हस-सज्ञा पु० [अ०] जीवन भर  
 के लिए कंद। वाले पानी की सजा।  
 आजीवन कारावास।  
 दायर-वि० [फा०] १ चलता हुआ। २  
 चलता। जारी।  
 मुहा०—दायर करना=मुकदमे दायर हो  
 पेश करना।  
 दायरा-सज्ञा पु० [अ०] १ खजड़ी। डफली।  
 २ गोल घरा। बुडल। ३ वृत्त। ४  
 नक्शा।

दायाँ-वि० दाहिना।  
 दाया\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "दाया"।  
 [फा०] दाई। धाय। धात्री।  
 दायाद-वि० स्त्री दायादा] जिसे किसी  
 की सम्पत्ति में हिस्सा मिले। दाय का  
 अधिकारी।  
 मज्ञा पु० १ हिस्सेदार। २ पुत्र। बेटा।  
 ३ सपिंड कुटुम्बी।  
 दायादा-सज्ञा स्त्री० कन्या।  
 दायित्व-सज्ञा पु० १ देनदार होने का भाव।  
 २ जिम्मेदारी। जवाबदेही।  
 दायो-वि० [स्त्री० दायिनी] देनेवाला।  
 जैसे—मुखदायी। वरदायी।  
 दायें-क्रि० वि० दाहिनी ओर को।  
 मुहा०—दायें होना=अनुकूल या प्रसन्न  
 होना।  
 दार-सज्ञा स्त्री० पत्नी।  
 \*सज्ञा पु० दे० "दारु"।  
 प्रत्य० [फा०] रखनेवाला।  
 दारक-सज्ञा पु० [स्त्री० दारिका] १ बच्चा  
 लडका। २ पुत्र। बेटा।  
 वि० फाड़नेवाला।  
 दारकर्म-सज्ञा पु० विवाह।  
 दारचीनी-सज्ञा स्त्री० दालचीनी। १ एक  
 प्रकार का तज, जो दक्षिण भारत और  
 सिंहल में होता है। २ इस पेड़ की सुगंधित  
 छाल, जो दवा और मसाले के काम में  
 आती है।  
 दारण-सज्ञा पु० [वि० दारित] १ चीरने-  
 फाड़ने का काम। चीर-फाड़। २ चीरने-  
 फाड़ने का औजार। ३ फोड़ा आदि चीरने  
 का काम।  
 दारद-सज्ञा पु० १ पारा। २ इंगुर।  
 दारना\*-क्रि० स० १ फाड़ना। विदीर्ण  
 करना। २ नष्ट करना।  
 दारपरिग्रह-सज्ञा पु० विवाह।  
 दार-मदार-सज्ञा पु० [फा०] १ आश्रय।  
 ठहराव। २ काय का भार। किसी पर  
 कार्य का निर्भर होना।  
 दारा-सज्ञा स्त्री० पत्नी। भार्या।  
 दारि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "दाल"।

बारिर्\*—सज्ञा पु० दे० "दाडिम"।

बारिका—सज्ञा स्त्री० १ बालिका। कन्या।

२ बेटा। पुत्र।

बारिर्\*—सज्ञा पु० दरिद्रता।

बारिर्\*—सज्ञा पु० दे० "दारिद्र्य"।

बारिर्ध—सज्ञा पु० दरिद्रता। निर्धनता। गरीबी।

बारी—सज्ञा स्त्री० १ घेवाई। खदवा।

२ युद्ध में जीतकर लाई हुई दासी।

बारीजार—सज्ञा पु० १ दासी का पति (गाली)। २ दासीपुत्र।

बाह—सज्ञा पु० १ काठ। लकड़ी। देवदार।

२ बटई। कारीगर। ३ पीतल।

वि० देनेवाला।

बाहक—सज्ञा पु० १ देवदार। २ श्रीकृष्ण के सारथी का नाम। ३ काठ का पुतला।

बाह्योपित\*—सज्ञा स्त्री० दे० "दाह्योपित्"।

बाहण—वि० १ भयङ्कर। भीषण। घोर।

२ कठिन। प्रचंड। विषट्।

सज्ञा पु० १ भयानक रस। २ विष्णु। ३ शिव। ४ एक नरक का नाम। ५ राक्षस।

६ एक प्रकार का वृक्ष। चीते या पेड़।

बाहण\*—वि० दे० "दाहण"।

बाह्युक्तिका—सज्ञा स्त्री० बटपुतली।

बाह्योपित्—सज्ञा स्त्री० बटपुतली।

बाह्यहृदी—सज्ञा स्त्री० एक सदाबहार झाड़।

इसकी जड़ और बटल दवा के काम में

आते हैं। दाहहरिद्रा।

बाह—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ मद्य। शराब।

२ बाह्यद।

बारो\*—सज्ञा पु० दे० "दारपा"।

बारोपा—सज्ञा पु० [फा०] १ घानेदार। घाने का पुत्रित्त अधिकारी। देव भाल रखनेवाला या निगरानी करनेवाला अधिकारी।

बारपी\*—सज्ञा पु० अवार।

बार्य—सज्ञा पु० एक प्राचीन प्रदेश, जो आधुनिक पाकिस्तान के अन्तर्गत है।

दार्य—सज्ञा स्त्री० औषध-विशेष। रंगोठ।

दार्य—सज्ञा स्त्री० दे० "दाह्यहृदी"।

दाह्यनिव—वि० १ दाह्य जाननेवाला। २ दाह्यनिवार-नवपी।

सज्ञा पु० सत्यवादी।

दाल—सज्ञा स्त्री० १ दली हुई अरहर, मूँग आदि। २ मसाले के साथ पानी में उबाला हुआ अन्न, जिसे रोटी आदि के साथ खाते हैं। ३ दाल के आकार की कोई वस्तु। ४ चंचक, फोड़े, फुसी आदि के ऊपर का चमड़ा जो सूखकर छूट जाता है।

खुरद।

मुहा०—दाल गलना=प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। दाल-दलिया=सूखा-रूखा भोजन। गरीबों का-सा खाना।

दाल में कुछ काला होना=कुछ खटके या सदेह की बात होना। किसी बुरी बात का लक्षण दिखाई पड़ना। दाल-रोटी=सादा खाना। साधारण भोजन। जूतियो दाल बाँटना=आपस में खूब लड़ाई झगडा होना।

दालचीनी—सज्ञा स्त्री० दे० "दारचीनी"।

दालमोठ—सज्ञा स्त्री० घी, तेल आदि में नमक,

मिर्च के साथ तली हुई दाल।

दालान—सज्ञा पु० [फा०] बरामदा। ओसारा।

दालिम—सज्ञा पु० दे० "दाडिम"।

दालिम—सज्ञा पु० इन्द्र।

दार्च—सज्ञा पु० १ बार। दफा। मरतवा।

२ बारी। पारी। ३ अवसर। मौका।

सयोग। ४ युक्ति। उपाय। चाल। ५

कुस्ती या लड़ाई जीतने के लिए युक्ति।

चाल। पैच। बद। ६ छल। कपट। ७

खेल में प्रत्येक खेलाडी के खेलने का समय

जो एक दूसरे के पीछे क्रम से आता है।

खेलने की बारी। चाल। ८ पामे, जूए

की कौड़ी आदि वादग्र प्रकार पड़ना, जिससे

जीत हो। ९ स्वान। ठीर। जगह।

मुहा०—दार्च करना=पात लगाना। घात

म बँठना। दार्च लगाना=अनुबूझ सयोग

मित्रता। मोका मित्रता। दार्च रैना=बदला

लेना। दार्च पर चढ़ना=दम प्रकार घनु में

होना कि दूसरा अपना महत्व निकाट के।

दार्च पर लगना या लगाना=दया-नैसा

या कोई वस्तु बानी पर लगाना। दार्च

देना=गल में शरने पर नियत दंड भोगना

या परिश्रम करना।

दार्चना—वि० ग० दाता और भूया अण

घरने के लिए घटी हुई पसल के मूले दृढली  
को बेलों से रौंदवाना।

दावनी-सज्ञा स्त्री० माथे पर पहनने का  
स्त्रियो का एक गहना। बंदी।

दावरो-सज्ञा स्त्री० रस्सी। रज्जु।

दाव-सज्ञा पु० १ वन। जंगल। २ वन की  
आग। ३ आग। ४ जलन। ताप। ५  
एक प्रकार का हथियार।

दायत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ भोज। २ खाने  
का बुलावा। निमन्त्रण।

दायन-सज्ञा पु० १ दमन। नाश। २ हँसिया।  
३ एक प्रकार का टेढ़ा छुरा। सुसडी।

दायना-क्रि० सं० दे० "दावनी"। दमन करना।

दायनी-सज्ञा स्त्री० १ बिजली। २ माथे  
पर पहनने का एक गहना।

दावा-सज्ञा स्त्री० वन में लगनेवाली आग।  
सज्ञा पु० [अ०] १ किसी वस्तु पर अधिकार  
प्रकट करने का कार्य। २ स्वत्व। हक।  
३ मुकदमा। ४ नालिश। अभियोग।  
५ अधिकार। जोर। ६ दृढ़ता। ७ दृढ़ता  
पूर्वक कथन।

दावागीर-सज्ञा पु० दावा करनेवाला। अपना  
हक जतानेवाला।

दावागि-सज्ञा स्त्री० दे० 'दावानल'।

दावात-सज्ञा स्त्री० [अ०] स्पाही रखने का  
वरतन। मसिपात्र।

दावादार-सज्ञा पु० दावा करनेवाला। अपना  
हक जतानेवाला।

दावानल-सज्ञा पु० दावा। वन में लगनेवाली  
आग।

दाशरथि-सज्ञा पु० दशरथ के पुत्र श्रीरामचन्द्र  
आदि।

दास-सज्ञा पु० [स्त्री० दासी] १ गुलाम।  
अपने को दूसरे की सेवा के लिए अर्पित  
करनेवाला व्यक्ति। सेवक। नौकर। भृत्य।  
२ शूद्र। ३ घोवर। ४ शूद्रा की एक  
उपाधि। ५ दसु। ६ वृत्रासुर। ७ आत्म-  
ज्ञानी। †\*दे० 'दासन'।

दासता-सज्ञा स्त्री० दास होने का कर्म या  
भाव। सेवावृत्ति। गुलामी। पराधीनता।  
परतन्त्रता।

दासत्व-सज्ञा पु० दे० "दासता"। दाम होने  
का भाव।

दासन-सज्ञा पु० दे० "दासन"।

दासपन-सज्ञा पु० दे० "दासता"।

दासा-सज्ञा पु० १ हँगुआ। २ ओरी की  
सूटी। दीवार से सटाकर उठाया हुआ पुस्ता,  
जो कुछ ऊँचाई तक हो और जिस पर चीज-  
वस्तु भी रख सकें। ३ आँगन के चारा  
ओर दीवार से सटाकर उठाया हुआ चबू-  
तरा। ४ वह लकड़ी या पत्थर, जो दरवाजे  
पर दीवार के नीचे रहता है।

दासानुदास-सज्ञा पु० सेवक या सेवक।  
अत्यंत तुच्छ सेवक (नम्रता)।

दासी-सज्ञा स्त्री० सेवा करनेवाली स्त्री।  
नौकरानी। लौंडी।

दासेय-वि० [स्त्री० दासेयी] दास से उत्पन्न।  
गुलामजादा।

दास्तान-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ वृत्तांत।  
हाल। २ कथा। किस्सा। ३ वणन।

दास्य-सज्ञा पु० १ दासत्व। दासपन। सेवा।  
२ भक्ति के नौ भेदों में से एक, जिसमें  
उपास्य देवता को स्वामी और अपने को  
उनका दास समझते हैं।

दाह-सज्ञा पु० १ दाव जलाने की क्रिया।  
भस्मीकरण। मुर्दा फूँकने का काम। २  
जलन। ताप। ३ शरीर में जलन होने,  
अधिक प्यास लगने तथा कठ सूखने का  
एक रोग। ४ शोक। सताप। अत्यंत दुःख।  
५ दाह। ईर्ष्या।

दाहक-सज्ञा पु० १ जलानेवाला। दाह करने-  
वाला। अग्नि। २ एक वृक्ष (चित्रक)।

दाहकता-सज्ञा स्त्री० जलने का भाव या गुण।  
दाहकर्म†-सज्ञा पु० दाव जलाने का कार्य।

मुर्दा फूँकने का काम। अन्त्येष्टि क्रिया।  
दाहक्रिया-सज्ञा स्त्री० मृतव को जलाने का  
संस्कार। दावदाह-कर्म।

दाहन-सज्ञा पु० १ जलाने का काम। २  
जलवाने या भस्म कराने की क्रिया।

दाहना-क्रि० सं० १ भस्म करना। २  
जलाना। दुःख पहुँचाना।

वि० दे० 'दाहिना'।

दाहिना-वि० [स्त्री० दाहिनी] १. बायाँ का उलटा। दक्षिण। अपसव्य। २. दाहिने हाथ की ओर। ३. अनुकूल। प्रसन्न।  
मुहा०-दाहिनी लाना=प्रदक्षिणा करना।  
दाहिना हाथ होना=बड़ा भारी सहायक होना।

दाहिने-क्रि० वि० दाहिने हाथ की ओर।  
दाहिने हाथ की दिशा में।

दाही-वि० [स्त्री० दाहिनी] जलानेवाला।  
भस्म करनेवाला।

दाह्य-वि० जलाने लायक।

दिओ-सज्ञा पु० उन्नीस मात्राओं का एक छंद जिसके अंत में दो गुरु होते हैं।

दिअली-सज्ञा स्त्री० [दीया का स्त्री०]  
१ मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कपड़ा। २ दे० "दिउली"।

दिआ-सज्ञा पु० दे० "दीया"।

दिआना-क्रि० स० दे० "दिलाना"।

दिउली-सज्ञा स्त्री० १ सूखे घाव के ऊपर की पपड़ी। खुरद। बाल। २ दे० "दिअली"।  
३ मछली के ऊपर से छूटनेवाला छिलका। सेहरा।

दिक्-सज्ञा स्त्री० दिशा। ओर।

दिक्-वि० [अ०] १ जिसे बहुत कष्ट पहुँचा हो। दुखी। हिरान। तंग। २ अस्वस्थ। बीमार।

सज्ञा पु० क्षय रोग। तपेदिक।

दिक्बाह-सज्ञा पु० दे० "दिग्बाह"।

दिक्क-वि० सज्ञा पु० दे० "दिक्"।

दिक्कत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दिक् का भाव। परेशानी। तकलीफ। तंगी। कष्ट। २ कठिनाई। मुश्किल।

दिक्कन्या-सज्ञा स्त्री० दिशा-रूपी कन्या।  
(पुराणों में दसो दिशाएँ ब्रह्मा की कन्याएँ मानी गई हैं)।

दिक्करी-सज्ञा पु० दे० "दिग्गज"।

दिक्काता-सज्ञा स्त्री० दिक्कन्या।

दिक्क-सज्ञा पु० आठो दिशाओं का समूह।

दिक्पति-सज्ञा पु० दे० "दिक्पाल"।

दिक्पाल-सज्ञा पु० १. पुराणानुसार दसो दिशाओं के पालन करनेवाले देवता। यथा—

पूर्व के इंद्र, दक्षिण के यम आदि। २. चौबीस मानाओं का एक छंद। उर्व्व कारेस्ता।  
बिक्शूल-सज्ञा पु० फलित ज्योतिष के अनुसार कुछ विशिष्ट दिनों में कुछ विशिष्ट दिशाओं की यात्रा का निषेध। दिशा-विशेष में जाने का निषिद्ध दिन-शनि और सोमवार पूर्व का, बृहस्पतिवार दक्षिण का, रवि और शुक्रवार पश्चिम का तथा मंगल और बुध उत्तर का दिक्शूल हैं।

दिक्साधन-सज्ञा पु० दिशाओं का ज्ञान प्राप्त करने की विधि या उपाय।

दिक्सुन्दरी-सज्ञा स्त्री० दे० "दिक्कन्या"।

दिखाना-क्रि० अ० दिखाई देना। देखने में आना।

दिखराना-क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखरावना-क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखरावनी-सज्ञा स्त्री० दिखाने का भाव या क्रिया।

दिखलाई-सज्ञा स्त्री० १ दिखाने के बदले में दिया जानेवाला धन। २ दे० "दिखलाई"।

दिखलवाना-क्रि० स० दिखलाने का काम दूसरे से कराना।

दिखलाई-सज्ञा स्त्री० १. दिखलवाने की क्रिया या भाव। २ देखने या दिखलाने के बदले में दिया जानेवाला धन।

दिखलाना-क्रि० स० १. दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना। दृष्टिगीचर कराना।

दिखाना। २ अनुभव कराना। मालूम कराना। जताना।

दिखलावा-सज्ञा पु० दे० "दिखावा"।

दिखहार-सज्ञा पु० देखनेवाला।

दिखाई-सज्ञा स्त्री० १. देखने या दिखाने का काम। २ देखने या दिखाने के लिए दिया जानेवाला धन।

दिखाऊ-वि० १. देखने योग्य। दर्शनीय। २ जो केवल देखने योग्य हो, पर काम में न आ सके। ३ दिखावा। बनावटी।

दिखादिशी-सज्ञा स्त्री० दे० "दिखादेवी"।

दिखाना-क्रि० स० दे० "दिखलाना"।

दिखाय-सज्ञा पु० १. देखने का भाव या क्रिया। २. दृश्य। नजारा।

दिवायटी-वि० दे० "दिगीत्रा"। यायटी।  
दिवाया-गङ्गा पु० ऊपरी सद्य-मद्य।  
जायवर।

विषया\*†-गङ्गा पु० दिग्गङ्गा या देवने-  
यात्रा।

विष्नीशा-वि० जो नेचल देवने योग्य हो,  
पर काम में न आ गये। यायटी।

विर्गता-गङ्गा स्त्री० दिशा स्त्री स्त्री।

विगत-गङ्गा पु० दिशा का छोर। दिशा का  
अन्त। आकाश का छोर। शिनित्र। गव  
दिशाएँ। आश्रय का योना।

विगतर-गङ्गा पु० दो दिशाओं के बीच का  
स्थान।

विगंबर-गङ्गा पु० १ शिव। महादेव। २  
नगा रहनेवाला। नगा रहनेवाला जैन  
सन्ध्यासी। शपणन। ३ अधिकार। सम।  
वि० नगा। नग्न।

विगबरता-गङ्गा स्त्री० नगापन।

विगन-गङ्गा पु० शित्तिज-वृत्त। या ३६०वाँ  
अक्ष।

दिग्ग-यत्र-गङ्गा पु० वह यत्र जिससे किसी  
ग्रह या नक्षत्र का दिग्ग जाना जाय।

दिग्-गङ्गा स्त्री० दे० 'दिक'।

दिग्गति\*†-गङ्गा पु० दे० 'दिग्गज'।

दिग्पाल-गङ्गा पु० दे० "दिक्पाल"।

दिग्गज-गङ्गा पु० पुराणानुसार वे आठों हाथी,  
जो आठों दिशाओं में पृथ्वी को दबाए रखने  
और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिए  
स्थापित हैं। इनके नाम ये हैं—ऐरावत,  
पुण्डरीक, वामन, कुमुद, अजन्त पुष्पदन्त,  
सार्वभौम और सुप्रतीन।

वि० बहुत बड़ा। बहुत भारी।

दिग्ध\*†-वि० १ लम्बा। २ बड़ा।

दिग्दर्शक यत्र-गङ्गा पु० दिग्गङ्गा के अक्षर  
ज्ञा एक प्रकार का यन्त्र, जिससे दिशाओं  
का ज्ञान होता है। कुतुबनुमा।

दिग्दशन-गङ्गा पु० १ जो उदाहरण-स्वरूप  
दिखाया जाय। नमूना। २ नमूना  
दिखाने का काम। ३ अभिज्ञता। जान-  
कारी।

दिग्दाह-गङ्गा पु० एक देशी घटना, जिसमें

सूर्यसिंह होने पर भी दिशाएँ लाल और  
जली हुई गी दिग्गाल पड़ती हैं (अमृत)।

दिग्देवता-गङ्गा पु० दे० "दिक्पाल"।

दिग्-गङ्गा पु० १. तैल। २ अग्नि। ३.  
प्रवन्ध। ४ जल में घुसाया हुआ बाण।  
नि०; १. विपास। २ उज्ज। ३ दीर्घ।  
लम्बा।

दिग्पट-गङ्गा पु० १ दिशास्वी यन्त्र। २  
नगा। दिग्बर।

दिग्पति-गङ्गा पु० दे० "दिक्पाल"।

दिग्भ्रम-गङ्गा पु० दिशाओं का भ्रम होना।  
दिशा मूल जाना।

दिग्मङ्गल-गङ्गा पु० दिशाओं का समूह।  
गणन दिशाएँ।

दिग्पाज-गङ्गा पु० दे० "दिक्पाज"।

दिग्पत्र-गङ्गा पु० १ नगा रहनेवाला जैन  
यति। नग्न। २ महादेव। शिव।

दिग्बान्-गङ्गा पु० पहुँचेदार। चौकीदार।

दिग्वास-गङ्गा पु० दे० "दिग्गम"।

दिग्विजय-गङ्गा स्त्री० १ राजाओं का अपनी  
वीरता तथा महत्त्व स्थापित करने के लिए  
देश-देशान्तरा में अपनी सेना के साथ जाकर  
विजय प्राप्त करना। देश-देशान्तरा को  
जीतना। २ अपन भुज, बिद्या या बुद्धि  
आदि के द्वारा देश-देशान्तरा में अपना  
महत्त्व स्थापित करना।

दिग्विजयी-वि० [स्त्री० दिग्विजयिनी] जिसने  
दिग्विजय किया हो।

दिग्बिभाव-गङ्गा पु० दिशा। ओर।

दिग्ब्यापी-वि० [स्त्री० दिग्ब्यापिनी] जो  
सब दिशाओं में व्याप्त हो।

दिग्गल-गङ्गा पु० दे० 'दिक्गल'।

दिग्नाथ-गङ्गा पु० १ दिग्गज। २ एक  
प्राचीन बौद्ध आचार्य।

दिग्नाथि-गङ्गा स्त्री० वेश्या।

दिग्मङ्गल-गङ्गा पु० दिशाओं का समूह।

दिग्छित\*†-गङ्गा पु० वि० दे० "दीक्षित"।

दिग्गज\*†-गङ्गा पु० दे० 'दिग्गज'।

दिग्गव-गङ्गा स्त्री० दे० 'देवीयान'।

देवधान एकादशी।

दिठादिठी-गङ्गा स्त्री० दे० 'देखा-देखी'।

दिठाना—क्रि० अ० बुरी दृष्टि लगाना।  
 क्रि० स० बुरी दृष्टि लगाना।  
 दिठाना\*—सज्ञा पु० काजल की बिंदी, जो  
 बालकों की गजर से बचाने के लिए  
 लगाते हैं।  
 दिठ\*—वि० दे० “दृढ़”।  
 दिठाना\*—क्रि० स० १ पक्का करना।  
 मजबूत करना। २ निश्चित करना।  
 दिठार\*—सज्ञा पु० दे० “दृढ़ता”।  
 दिति—सज्ञा स्त्री० १ कश्यप ऋषि की एक  
 स्त्री, जो दक्ष प्रजापति की एक बन्धा और  
 दैत्या की माता थी। २ दाता। ३ खडन।  
 दितिमुत्त—सज्ञा पु० दैत्य। राक्षस।  
 दिवार—सज्ञा पु० दे० “दीवार”।  
 दिन—सज्ञा पु० १ सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त  
 तक का समय। २ उतना समय, जितने में  
 पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर घूमती है।  
 आठ गहर या चौबीस घंटे का समय।  
 ३ समय। काल। ४ निश्चित या  
 उपयुक्त समय। ५ वह समय, जिसमें  
 कोई विशेष बात हो। जैसे—गर्भ के दिन,  
 बुरे दिन।  
 कि० वि० सदा। हमेशा।  
 मुहा०—दिन को तारे दिखाई देना=  
 इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना कि  
 बुद्धि ठिकाने न रहे। दिन को दिन, रात  
 को रात न जानना या समझना=अपने सुख  
 या विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न  
 रखना। दिन चढ़ना=सूर्योदय होना। दिन  
 छिपना या डूबना=संध्या होना। दिन  
 ढलना=संध्या का समय निकट आना।  
 दिन बढ़ाई या दिन दिहाड़े=बिलकुल  
 दिन के समय। दिन दूना रात चीगुना  
 होना या बढ़ना=बहुत जल्दी-जल्दी और  
 बहुत अधिक बढ़ना। सूख उन्नति पर  
 होना। दिन निकलना=सूर्योदय होना।  
 दिन दिन या दिन पर दिन=नित्यप्रति।  
 सदा। प्रतिदिन। दिन काटना या पूरे  
 करना=निर्वाह करना। समय बिताना।  
 दिन बिगडना=बुरे दिन होना। दिन  
 घरना = दिन निश्चित करना।

दिन चढ़ना=किसी स्त्री का गर्भवती  
 होना। दिन फिरना=बुरे दिनों के दोहरा  
 अच्छे दिन आना। दिन भरना=बुरे दिन  
 काटना।  
 यौ०—दिन-रात=सदा। हर पक्ष।  
 दिनभर—सज्ञा पु० दे० “दिनकर”।  
 दिनकत\*—सज्ञा पु० सूर्य।  
 दिनकर—सज्ञा पु० सूर्य।  
 दिनचर्या—सज्ञा स्त्री० दिन भर का कार्य।  
 दिनदानी\*—सज्ञा पु० प्रतिदिन दान करने-  
 वाला।  
 दिननाय—सज्ञा पु० सूर्य।  
 दिनपति—सज्ञा पु० सूर्य।  
 दिनपत्र—सज्ञा पु० वह पत्र जिसमें दिन के  
 नाम, तिथियाँ और तारीखें दी हों।  
 कैलेंडर।  
 दिनमणि—सज्ञा पु० १ आक। मदार।  
 २ सूर्य।  
 दिनमान—सज्ञा पु० सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त  
 तक के समय का मान। दिन का प्रमाण।  
 दिनराइ\*—सज्ञा पु० दे० “दिनराज”।  
 दिनराज—सज्ञा पु० सूर्य।  
 दिनाक—सज्ञा पु० गहीने का कोई भी दिन।  
 तिथि। तारीख। जैसे, दिनाक ९ चैत्र,  
 सवत २००९।  
 दिनात—सज्ञा पु० दिन का अन्त। संध्या।  
 दिनाथ—सज्ञा पु० वह, जिसे दिन को न  
 भूझें।  
 दिनाइ\*—सज्ञा पु० दाद नामक रोग।  
 दिनाई\*—सज्ञा स्त्री० कोई ऐसी विपाक  
 वस्तु, जिसके खाने से थोड़े ही समय में  
 मृत्यु हो जाय।  
 दिनार—सज्ञा पु० दे० “दीनार”।  
 दिनाश—वि० पुराना।  
 दिनियर\*—सज्ञा पु० सूर्य।  
 दिनेर—सज्ञा पु० सूर्य।  
 दिनेश—सज्ञा पु० १ सूर्य। २ दिन के अधि-  
 पति ग्रह।  
 दिनींधी—सज्ञा स्त्री० एक रोग जिसमें दिन  
 के समय कम दिखाई देता है।  
 विपत्ति\*—सज्ञा स्त्री० दे० “दीप्ति”।

दिपना\*—त्रि० अ० प्रकाशमान होना ।  
धमयना ।

दिपाना—त्रि० अ० दे० "दिपना" ।

दिब\*—सज्ञा पु० दे० "दिव्य" ।

दिमाक—सज्ञा पु० दे० "दिमाग" ।

दिमाग—सज्ञा पु० [अ०] १ सिर का गुदा ।  
मस्तिष्क । भेजा । २ मानगिय भवित ।  
बुद्धि । समझ । ३ अभिमान । घमड़ ।  
शस्त्री ।

महा०—दिमाग खाना या चाटना=व्यर्थ  
की बातें कहना । बहुत बकवाद करना ।  
दिमाग खाली करना=ऐसा काम करना,  
जिसमें मानसिक भवित का बहुत अधिक  
व्यय हो । भगजपच्ची करना । दिमाग चढ़ना  
या आसमान पर होना=बहुत अधिक  
घमड़ होना । दिमाग लड़ाना=बहुत अच्छी  
तरह विचार करना । सूख सोचना ।

दिमागदार—वि० १ बुद्धिमान् । २ अभि-  
मानी । घमडी ।

दिमानी—वि० दे० "दिमागदार" ।

वि० दिमाग-संबधी ।

दिमात\*†—सज्ञा पु०, वि० १ दो माताआ-  
वाला । जिसकी दो माताएँ हों । २ जिसमें  
दो मानाएँ हों । दो मात्राआवाला ।

दिमाना\*†—वि० दे० "दीवाना" ।

दियना†—सज्ञा पु० दे० "दीया" ।

त्रि० अ० चमकना ।

दियरा—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का पक्वान ।  
२ शिकार खेलने के लिए जलाई गई आग ।  
३ दे० "दीया" ।

दिया—सज्ञा पु० दे० "दीया" ।

दियास—सज्ञा पु० १ नदी के किनारे की  
जमीन जो नदी के हट जाने पर निकल  
आती है । नछार । खादर । दरिया-चरार ।  
२ प्रदेश । प्रात ।

दियासलाई—सज्ञा स्त्री० दे० 'दीयासलाई' ।

दिरद\*—सज्ञा पु० दे० 'द्विरद' ।

दिरम—सज्ञा पु० १ मिला देस का चांदी का  
एक सिक्का । दिरहम । २ साढ़े तीन भागों  
की एक तोल ।

दिरमाना†—सज्ञा पु० चिकित्सा । इलाज ।

दिरमाना—सज्ञा पु० वैद्य । इलाज करनेवाला ।  
चिकित्सक ।

दिरिस्त\*†—सज्ञा पु० दे० "दृश्य" ।

दिल—सज्ञा पु० १ हृदय । कलेजा । २ मन ।  
चित्त । जी । ३. साहस । दम । ४  
प्रवृत्ति । इच्छा ।

मुहा०—दिल बड़ा करना=हिम्मत बाँधना ।  
साहस करना । दिल का केवल खिन्ना=  
चित्त प्रसन्न होना । मन में आनंद  
होना । दिल का गवाही देना=मन में  
किसी बात की सभावना या ओचित्य  
का निश्चय होना । दिल का बादशाह=  
१ बहुत बड़ा उदार । २ मनमौजी । दिल के  
फणोल फोड़ना=भली-बुरी सुनाकर अपना  
जी लड़ा करना । दिल जमना=१ किसी  
काम में चित्त लगना । ध्यान या जी लगना ।  
२ संतुष्ट होना । जी भरना । दिल ठिकाने  
होना=मन में शान्ति, सतोष या चैत्य  
होना । चित्त स्थिर होना । दिल देना=  
आशिक होना । प्रेम करना । दिल बुझना=  
चित्त में किसी प्रकार का उत्साह या उमंग  
न रह जाना । दिल में फरक आना=सदभाव  
में अंतर पड़ना । मन-मोटाव होना । दिल  
से=१ जी लगाकर । अच्छी तरह । ध्यान  
देकर । २ अपने मन से । अपनी इच्छा से ।  
दिल से दूर करना=भुला देना । विस्मरण  
करना । ध्यान छोड़ देना । दिल ही दिल  
में=चुपके-चुपके । मन ही मन । दिल न  
लगना=मन न लगना ।  
(शेप मुहावरों के लिए "जी" और  
'कलेजा' के मुहावरे देखिए ।)

दिलमोरी—वि० [फा०] [सज्ञा दिलमोरी] १  
उदास । २ दुखी । खिन्न ।

दिलचला—वि० १ साहसी । हिम्मतवाला ।  
दिलेर । २ दाता । उदार । दानी । ३  
वीर । बहादुर ।

दिलचस्प—वि० [फा०] [सज्ञा दिलचस्पी]  
जिसमें जी लगे । मनोहर । चित्ताकर्षक ।

दिलजमई—सज्ञा स्त्री० इतमीनान । तसल्ली ।

दिलजता—वि० दुखी । जिसे बहुत बुरा  
पहुँचा हो । जिसे मानसिक पीड़ा पहुँची हो ।

बिलजोई—सज्ञा स्त्री० किसी का मन रखने के लिए उसे प्रसन्न करना।

दिलदार—वि० [सज्ञा दिलदारी] १ उदार।

दाता। २ रसिक। ३. प्रेमी। प्रिय।

दिलपसन्द—वि० [फा०] मन को अच्छा लगनेवाला।

दिलवर—वि० [फा०] प्यारा। प्रिय।

दिलवस्ता—वि० प्रेमी। आसन्न।

दिलवस्तागी—सज्ञा स्त्री० किसी बात में दिल लगाना। मनोरंजन। मनबहुलाव।

दिलव्दा—सज्ञा पु० [फा०] जिससे प्रेम किया जाय। प्यारा।

दिलवाना—क्रि० स० दे० “दिलाना”।

दिलहा—सज्ञा पु० दे० “दिल्ला”।

दिलाना—क्रि० स० दूसरे को देने में प्रवृत्त करना। दिलवाना।

दिलावर—वि० [फा०] [सज्ञा दिलावरी] १ शूर। बहादुर। २ उत्साही। साहसी।

दिलासा—सज्ञा पु० तसल्ली। ढाढस। आश्वासन। धैर्य। दम-बुत्ता।

पी०—दम दिलासा—तसल्ली। धैर्य।

दिल्ली—वि० १ हृदय या दिल-सम्बन्धी। हादिक। २ अत्यंत घनिष्ठ। अभिन्नहृदय। जिगरी।

दिलीप—सज्ञा पु० इक्ष्वाकुवंशी एक राजा।

दिलेर—वि० [फा०] [सज्ञा दिलेरी] १

बहादुर। शूर। वीर। २ साहसी।

दिल्लगी—सज्ञा स्त्री० १ दिल लगाने की क्रिया या भाव। २ विनोद की बात। ठट्ठा। ठट्टोली। मजाक। मसौल।  
मूहा०—किसी बात की दिल्लगी उठाना= (किसी बात को) अमान्य और मिथ्या ठहराने के लिए उसे हँसी में खड़ा देना। उपहास करना।

दिल्लगीबाज—सज्ञा पु० विनोदप्रिय। हसी-

दिल्लगी करनेवाला। मसखरा।

दिल्ला—सज्ञा पु० १. बिपाद के पल्ले में लकड़ी वा चौखटा, जो दोभा के लिए जड़ दिया जाता है। २ आईना।

दिव—सज्ञा पु० १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ वन। ४ दिन।

दिवराज—सज्ञा पु० इन्द्र।

दिवरानी—सज्ञा स्त्री० दे० “देवरानी”। देवर की पत्नी।

दिवला\*—सज्ञा पु० दे० “दीया”।

दिवस—सज्ञा पु० दिन। रोज।

दिवस-अध\*—सज्ञा पु० दे० “दिवाध”।

दिवसमुख—सज्ञा पु० प्रातःकाल। सबेरा।

दिवस्पति—सज्ञा पु० सूर्य।

दिवाध—वि० जिसे दिन में न सूझे। जिसे दिनोंधी हो।

सज्ञा पु० १ दिनोंधी का रोग। २ उल्ल।

दिवा—सज्ञा पु० १ दिन। दिवस। २ वाईस जधारी का एक वर्णवृत्त। मालिनी।

दिवाकर—सज्ञा पु० सूर्य।

दिवाचर—सज्ञा पु० पक्षी।

दिवाना†—सज्ञा पु० दे० “दीवाना”।

\*†क्रि० स० दे० “दिलाना”।

दिवानी—सज्ञा स्त्री० दीवान का पद। कचहरी। न्यायालय। जिसमें किसी अधिकार का निर्णय हो।

वि० पगली। उन्मादिनी।

दिवाभितारिका—सज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो दिन के समय अपने प्रेमी से मिलने के लिए राकेत-स्थान में जाय।

दिवामणि—सज्ञा पु० सूर्य।

दिवामध्य—सज्ञा पु० मध्याह्न। दोपहर।

दिवाल—†सज्ञा स्त्री० दे० “दीवार”। दीवाल। वि० देनेवाला।

दिवाला—सज्ञा पु० १ पूँजी न रहने के कारण ऋण चुकाने में असमर्थता। टाट उलटना।

२ किसी पदार्थ का विलकुल न रह जाना।

मूहा०—दिवाला निकलना=दिवाला होना।

दिवाला मारना=दिवालिया बन जाना।

ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाना।

दिवालिया—वि० जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ न बचा हो।

दिवाली—सज्ञा स्त्री० दे० “दीवाली”।

दिवि—सज्ञा पु० १. दे० “दिव”। २ नीलकण्ठ पक्षी।

दिविमत—सज्ञा पु० १. देवता। २ स्वर्गवासी।

दिविष्टि—सज्ञा पु० यज्ञ।

विचिष्ट-गङ्गा पु० देवता।  
 विवेश-गङ्गा पु० १. दिग्पाल। २ इन्द्र।  
 देवराज।  
 दिव्या-वि० देनेवाला। जो देता हो।  
 दिव्योक्त-गङ्गा पु० १. स्वर्ग में रहनेवाला।  
 देवता। २. चालक।  
 दिव्योदास-गङ्गा पु० चन्द्रवशी राजा भीमरथ  
 के एक पुत्र, जो पानी के राजा थे और  
 धन्यतरि के अवतार माने जाते हैं।  
 दिव्योत्पा-गङ्गा स्त्री० दिन के समय आकाश  
 से गिरनेवाला पिण्ड या उल्का।  
 दिव्य-वि० १ स्वर्गीय। स्वर्ग से सबध रखने-  
 वाला। २ आकाश से सबध रखनेवाला।  
 अलौकिक। ३ प्रकाशमान। ४ स्वच्छ  
 या सुंदर।  
 सज्ञा पु० १ यव। जी। २ तत्त्ववेत्ता।  
 ३ तीन प्रकार के केतुओं में से एक।  
 ४ आकाश में होनेवाला एक प्रकार का  
 उत्पात। ५ तीन प्रकार के नायकों में से  
 एक। स्वर्गीय या अलौकिक नायक। जैसे—  
 इन्द्र। राम। ६ व्यवहार या न्यायालय में  
 प्राचीन काल की एक प्रकार की परीक्षा,  
 जिससे किसी मनुष्य का अपराधी या निर-  
 पराध होना सिद्ध होता था। य परीक्षाएँ  
 नी प्रकार की होती थी—घट, अग्नि,  
 उदक, विष, कोष, तड्डल, तप्तमाषक, फूल  
 तथा घर्मज। ७ चापक, विशेषतः देव  
 ताओं आदि की शपथ। सीमध। कसम।  
 दिव्यचक्षु-सज्ञा पु० १ ज्ञानचक्षु। २ अधा।  
 ३ चरमा। ऐंगक। ४ बंदर।  
 दिव्यता-सज्ञा स्त्री० १ दिव्य होने का  
 भाव। २ देवभाव। ३ सुंदरता। उत्तमता।  
 दिव्यदृष्टि-सज्ञा स्त्री० १ अलौकिक दृष्टि।  
 २ ज्ञान-दृष्टि।  
 दिव्यरथ-सज्ञा पु० देवताओं का विमान।  
 दिव्यरस-सज्ञा पु० पारा।  
 दिव्यस्त्री-सज्ञा स्त्री० अप्सरा।  
 दिव्यसूरि-सज्ञा पु० रामानुज-मप्रदाय के  
 बारह आचार्य, जिनके नाम य हैं—नसार,  
 भूत, महत्, भक्तिभर, शठारि, कुलशेखर,  
 विष्णुचिरा, भक्तान्धरेण, मुनिवाह, चतु-

ध्वविद्र, रामानुज और गोदा देवा या  
 मधुवर यवि।  
 दिव्यामना-सज्ञा स्त्री० १. देवपू। २.  
 अप्सरा। अलौकिक स्त्री।  
 दिव्यांशु-सज्ञा पु० सूर्य।  
 दिव्या-सज्ञा स्त्री० स्वर्गीय या अलौकिक  
 स्त्री। जैसे—पार्वती, सीता आदि।  
 नायिका विशेष। तीन प्रकार की नायि-  
 काओं में से एक।  
 दिव्यादिव्य-सज्ञा पु० देवन्त्य मनुष्य। अलौ-  
 किक मनुष्य। नायक विशेष।  
 दिव्यादिव्या-सज्ञा स्त्री० नायिका विशेष।  
 नायिका, जिसमें स्वर्गीय स्त्रिया के भी गुण  
 हैं। जैसे—दमयती, उर्वशी आदि।  
 दिव्यास्त्र-सज्ञा पु० १ देवताओं का दिया  
 हुआ हथियार। २ मंत्रों-द्वारा चलनेवाला  
 हथियार।  
 दिग्गोचक-सज्ञा पु० वर्षा का जल। पानी।  
 दिग्-सज्ञा स्त्री० दिशा। दिक्। ओर। तरफ।  
 दिशा-सज्ञा स्त्री० १ ओर। तरफ।  
 २ क्षितिज-वृत्त के किए हुए चार कल्पित  
 विभागों में से एक। ये चार विभाग पूर्व,  
 पश्चिम, उत्तर और दक्षिण कहलाते हैं।  
 प्रत्येक दो दिशाओं के बीच में एक कोण  
 भी होता है।  
 दिशादाह\*†-सज्ञा पु० दे० "दिग्दाह"।  
 दिशाभ्रम-सज्ञा पु० दिशाओं के सबध में  
 भ्रम होना। दिक्भ्रम।  
 दिशाशूल-सज्ञा पु० दे० "दिक्शूल"।  
 दिशि-सज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।  
 दिष्ट-सज्ञा पु० १ भाग्य। २ उपदेश।  
 ३ एक प्रकार की हलदी। ४ काल।  
 दिष्टवधक-सज्ञा पु० एक प्रकार का रेहन,  
 जिसमें चीज पर रूप देनेवाले का कोई  
 बन्धा न हो, उसे सिर्फ मुँद मिला रहे।  
 दिष्टि\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'दृष्टि'। उत्सव।  
 भाग्य। उपदेश। प्रसन्नता।  
 दिसतर\*†-सज्ञा पु० देशांतर। विदेश।  
 क्रि० वि० बहुत दूर तक।  
 दिसवर-सज्ञा पु० अंगरेजी साल का १२वाँ  
 और अन्तिम महीना।

दिस\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।  
 दिसना\*†-क्रि० अ० दे० "दिखना"।  
 दिसा-सज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"। मलत्याग।  
 पेशाना। शौचक्रिया।  
 दिसावर-सज्ञा पु० दूसरा देश। परदेस।  
 विदेश।  
 दिसावरी, दिशावरी-वि० विदेश से आया  
 हुआ। बाहरी माल।।  
 दिसि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "दिशा"।  
 दिसिनायक\*†-सज्ञा पु० दे० "दिक्पाल"।  
 दिसिप\*-सज्ञा पु० दे० "दिक्पाल"।  
 दिसिराज\*-सज्ञा पु० दे० "दिक्पाल"।  
 दिसैया\*†-वि० १. देखनेवाला। २. दिखाने-  
 वाला।  
 दिस्ता-सज्ञा पु० दे० "दिस्ता"।  
 दिहंदा-वि० [फा०] दाता। देनेवाला।  
 दिहरा-सज्ञा पु० देवालय।  
 दिहली-सज्ञा स्त्री० दे० "बहलीज"।  
 दिहाड़ा-सज्ञा पु० १. दुर्गति। बुरी हालत।  
 २. दिन।  
 दिहात-सज्ञा स्त्री० दे० "दिहात"।  
 दीआ-सज्ञा पु० दे० "दीया"।  
 दीक्षक-सज्ञा पु० १. दीक्षा देनेवाला गुरु।  
 २. शिक्षक।  
 दीक्षण-सज्ञा पु० [वि० दीक्षित] दीक्षा देने  
 की क्रिया।  
 दीक्षांत-सज्ञा पु० १. शिक्षाकाल समाप्त होने  
 पर छात्रों को दिया जानेवाला उपदेश। २.  
 वह यज्ञ, जो विंसी यज्ञ की दृष्टि आदि के  
 योग की शक्ति के लिए हो।  
 दीक्षा-सज्ञा स्त्री० १. गुरुमंत्र। २. गुरु या  
 आचार्य का नियमपूर्वक मन्त्रोपदेश। मंत्र  
 की शिक्षा, जो गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे।  
 ३. उपनयन-नस्वार, जिसमें आचार्य गायत्री  
 मंत्र का उपदेश देता है। यजन। यज्ञकर्म।  
 दीक्षानुद-सज्ञा पु० मन्त्रोपदेष्टा गुरु।  
 दीक्षित-वि० जिसमें आपांप से दीक्षा या  
 गुरु से मंत्र लिया हो।  
 सज्ञा पु० ब्राह्मणों का एक भेद।  
 दीक्षना-क्रि० अ० दिखाई देना। "देखने" में  
 आना। दृष्टिगोचर होना।

दीघो-सज्ञा स्त्री० बावली। पोखरा। तालाब।  
 दीच्छा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "दीक्षा"।  
 दीठ-सज्ञा स्त्री० १. देखने की शक्ति।  
 दृष्टि। २. टक। नजर। निगाह। ३.  
 आँख की ज्योति का प्रसार। ४. ऐसी-  
 "दृष्टि", जिसका प्रभाव बुरा पड़े। नजर।  
 ५. देख-भाल। देख-रेख। निगरानी। ६.  
 परख। पहचान। तमीज। ७. कृपादृष्टि।  
 मिह्रवानी की नजर। ८. आशा की  
 दृष्टि। उम्मीद। ९. विचार। सकल्प।  
 मुहा०—दीठ उतारना या झाड़ना=मंत्र के  
 द्वारा बुरी दृष्टि का प्रभाव दूर करना। दीठ  
 खा जाना=किसी की बुरी दृष्टि के सामने  
 पड़ जाना। टोक में आना। दीठ जलाना=  
 नजर उतारने के लिए राई-नोन या कपड़ा  
 जलाना।  
 दीठवंत-वि० जिसे दिखाई दे।  
 दीठबब या दीठबदी-सज्ञा स्त्री० इद्रजाल,  
 जिससे लोगों को ओर का ओर दिखाई दे।  
 जादू।  
 दीद-सज्ञा स्त्री० [फा०] दर्शन।  
 मुहा०—दीद न शुनीद=न देखा न सुना।  
 दीदा-सज्ञा पु० [फा०] १. दृष्टि। नजर।  
 २. आँख। नेत्र। ३. अनुचित संग्रह।  
 ठिठाई।  
 मुहा०—दीदा लगना=जी लगना। ध्यान  
 जमना। दीदे का पानी ढल जाना=निरंज  
 हो जाना। दीदे निकालना=गोधे की दृष्टि  
 से देखना। दीदे फाड़कर देखना=अच्छे  
 तरह आँख खालकर देखना।  
 दीदार-सज्ञा पु० [फा०] दर्शन। देखा-देखी।  
 दीदी-सज्ञा स्त्री० बड़ी बहिन को पुकारने  
 का शब्द। बड़ी बहिन।  
 दीधिति-सज्ञा स्त्री० १. सूर्य, चंद्रमा आदि  
 की चिरण। २. उंगली।  
 दीन-वि० १. दरिद्र। गरीब। जिसकी दशा  
 हीन हो। २. दुःखित। नातर। ३. उदास।  
 विग्र। ४. नग्न। विनीत।  
 सज्ञा पु० [अ०] मठ। मठहव।  
 दीनता-सज्ञा स्त्री० १. दरिद्रता। गरीबी।  
 २. नग्नता। विनीत भाव।

धीनताई\*-गंगा स्त्री० दे० "धीनता"।  
 धीनरव-गंगा पु० धीनता।  
 धीनदयाल या धीनदयालु-वि० दुर्गी और गरीब व्यक्तियों पर दया करनेवाला।  
 गंगा पु० ईश्वर का एक नाम।  
 धीनदार-वि० [संज्ञा धीनदारी] अपने धर्म पर विश्वास रखनेवाला। धार्मिक।  
 धीन-धुनिया-संज्ञा स्त्री० लोक और परलोक।  
 धीनयधु-गंगा पु० १. दुष्टियों का सहायक।  
 २. ईश्वर का एक नाम।  
 धीनानाथ-संज्ञा पु० १. दीनों का स्वामी या रक्षक। २. ईश्वर।  
 धीनार-संज्ञा पु० १. सोने का पुराना सिक्का। स्वर्णमुद्रा। मोहर। सोने का गहना। २. एक तौल।  
 दीप-संज्ञा पु० १. दीया। चिराग। २. दस मात्राओं का एक छंद। ३. दे० "दीप"।  
 दीपक-संज्ञा पु० १. दीया। चिराग। २. एक अर्थात्कार, जहाँ उपमान और उपमेय दोनों का एक ही धर्म कहा जाता है। ३. सगीत में छ. रागी में से दूसरा राग। ४. केसर। कुकुम।  
 वि० [स्त्री० दीपिका] १. प्रकाश करनेवाला। उजाला फैलानेवाला। २. पाचन-शक्ति बढ़ानेवाला। ३. शरीर में स्फूर्ति लानेवाला। उत्तेजक।  
 धी०-कुलदीपक=बश को उजाला करनेवाला।  
 दीपकमाला-संज्ञा स्त्री० १. एक वर्णवृत्त। २. दीपक अलंकार का एक भेद, जिसमें कई दीपक एक साथ आते हैं।  
 दीपकयुक्त-संज्ञा पु० १. बड़ी दीपक। २. ज्ञाड।  
 दीपकावृत्ति-संज्ञा स्त्री० दीपक अलंकार का एक भेद।  
 दीपत\*-संज्ञा स्त्री० १. कांति। चमक। प्रभा। २. शोभा। ३. कीर्ति।  
 दीपदान-संज्ञा पु० १. किसी देवता के सामने दीपक जलाना, जो पूजन का एक अंग समझा जाता है। २. एक कृत्य, जिसमें मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से आटे के जलते हुए दीए का संकल्प कराया जाता है।

दीपव्यज-गंगा पु० काजल।  
 दीपन-गंगा पु० [वि० दीपनीय, दीपित, दीप्ति, दीप्य] १. प्रकाश के लिए जलाने का काम। प्रकाशन। २. भूष को जगाना। ३. उत्तेजन। मंत्र के उन दम मस्कारों में से एक, जिनके बिना मंत्र मिद्ध नहीं होता।  
 वि० दीपन करनेवाला। जटराग्नि-वर्द्धक।  
 दीपना\*-क्रि० अ० प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना।  
 क्रि० म० प्रकाशित करना। चमकाना।  
 दीपमाला-संज्ञा स्त्री० १. जलते हुए दीपों की पंक्ति। २. दीपदान या आरती के लिए जलाई हुई वस्तियों का समूह।  
 दीपमालिका-संज्ञा स्त्री० १. दीपदान, आरती या शोभा के लिए दीपों की पंक्ति। २. दीवाली।  
 दीपमाली-संज्ञा स्त्री० दे० "दीवाली"।  
 दीपशिखा-संज्ञा स्त्री० दीपक की लौ। चिराग की लौ। दीपज्वाला। दीपे की टेम।  
 दीपावलि-संज्ञा स्त्री० दे० "दीपमालिका"।  
 दीपिका-संज्ञा स्त्री० छोटा दीया। एक रागिनी।  
 वि० उजाला फैलानेवाली।  
 दीपित-वि० १. प्रकाशित। प्रज्वलित। २. चमकता या जगमगाता हुआ। ३. उत्तेजित।  
 दीपोत्सव-संज्ञा पु० दीवाली।  
 दीप्त-वि० १. प्रकाशित। जलता हुआ। प्रज्वलित। २. जगमगाता हुआ। चमकीला।  
 दीप्ति-संज्ञा स्त्री० १. प्रकाश। उजाला। २. कांति। शोभा। छवि। ३. ज्ञान का प्रकाश।  
 दीप्तिमान-वि० [स्त्री० दीप्तिमती] १. दीप्तियुक्त। चमकता हुआ। २. कांति-युक्त। शोभायुक्त।  
 दीप्य-वि० जलाया जानेवाला। जो जलाने योग्य हो।  
 दीप्यमान-वि० चमकता हुआ।  
 दीवो†-संज्ञा पु० दे० "दीना"।  
 दीमक-संज्ञा स्त्री० [फा०] चींटी की तरह का एक छोटा सफेद कीड़ा। यह लकड़ी, कागज

आदि में लगकर उसे खोखला और नष्ट कर देता है। बल्मीक।

दीपट-सज्ञा पु० दे० "दीपट"।

दीया-सज्ञा पु० १ चिराग। दीपक। २ बत्ती जलाने का छोटा कसोरा।

मुहा०—दीया ठंडा करना=दीया बुझाना। (किसी के घर का) दीया ठंडा होना=किसी के मरने से कुल में अधिकार छू जाना। दीया बड़ाना=दीया बुझाना। दीया-बत्ती करना=रोशनी का सामान करना। चिराग जलाना। दीया लेकर दूँटना=चारा ओर हारान होकर दूँटना। बड़ी छान-बीन से खोजना।

दीयासलाई या दियासलाई-सज्ञा स्त्री० लकड़ी की छोटी सलाई या सोक, जिसका एक सिरा, गंधक आदि लगी रहने के कारण, डिब्बी पर लगे रोगन पर रगड़ने से जल उठता है।

दीर्घ\*-वि० दे० "दीर्घ"।

दीर्घ-वि० [सज्ञा दीर्घता] बड़ा। लंबा। बड़े आकार का।

सज्ञा पु० गुरु या द्विमात्रिक वर्ण। ह्रस्व का उलटा। जैसे—आ, ई, ऊ।

दीर्घकाय-वि० बड़े डील-डोल का।

दीर्घकाल-वि० बहुत अधिक समय।

दीर्घकालीन-वि० बहुत दिन का। पुराना। प्राचीन।

दीर्घश्रीव-वि० लंबी गरदनवाला।

सज्ञा पु० ऊँट।

दीर्घजवा-वि० लम्बी जाँघवाला।

सज्ञा पु० १ सारस पक्षी। २ ऊँट। ३ बगुला।

दीर्घजिह्वा-वि० लम्बी जीभवाला।

सज्ञा पु० साँप।

दीर्घजोरी-वि० बहुत समय तक जीनेवाला।

दीर्घतमा-सज्ञा पु० एक जन्माय ऋषि जा उपन्य के पुत्र थे। इन्होंने अपनी स्त्री के अनुचित व्यवहार से अभ्रमन्न हारकर यह मर्मादा बोधी थी कि यदि स्त्री एक के बाद दूसरा पति न पर सकती।

दीर्घदर्शी-वि० [सज्ञा दीर्घदर्शिता] दूर दूर की बात सोचनेवाला। दूरदर्शी।

दीर्घनिद्रा-सज्ञा स्त्री० मृत्यु। मौत।

दीर्घपुष्पक-सज्ञा पु० मदार। आक। अकबन।

दीर्घमूलक-सज्ञा पु० ओषध-विशेष। दिवारा।

दीर्घरद-वि० बड़े दाँतोवाला।

सज्ञा पु० सूअर।

दीर्घरोमा-वि० बड़े-बड़े रोओवाला।

सज्ञा पु० भालू।

दीर्घवक्त्र-सज्ञा पु० हाथी।

दीर्घसूत्रता-सज्ञा स्त्री० प्रत्येक कार्य में विलंब करने का स्वभाव।

दीर्घसूत्री-वि० हर एक काम में जल्दत से ज्यादा देर लगानेवाला। सुस्त।

दीर्घस्वर-सज्ञा पु० दीर्घ या द्विमात्रिक स्वर। देर तक या जोर से उच्चारण होनेवाला स्वर।

दीर्घाकार-वि० विशाल। बहुत बड़ी आकृति का। बड़े डील-डोल का। बृहत् रूप का।

दीर्घाप्त-वि० बड़ी आसुवाला। बहुत दिनों तक जीनेवाला। दीर्घजीवी। चिरजीवी।

दीर्घास्य-सज्ञा पु० हाथी।

दीर्घाहन-सज्ञा पु० ग्रीष्म।

दीर्घका-सज्ञा स्त्री० बावली। छोटा जलाशय। छोटा तालाब। तीन सौ धनुष के परिमाण का तालाब।

दीर्घ-वि० फटा हुआ। टूटा हुआ। भग्न। विदीर्ण।

दीपट-सज्ञा स्त्री० दीया रखने के लिए पीतल या लकड़ी का आधार। चिरागदान। दीपसाधार।

दीपलाङ्ग-सज्ञा पु० दीया।

दीवा-सज्ञा पु० दीया।

दीवान-सज्ञा पु० १ राजमन्त्री। राजाआ के बैठने की जगह। कचहरी। २ राज्य का प्रभु करनेवाला। मुख्य मंत्री। वजीर। प्रधान। ३ गजरा के ग्रह को पुस्तक।

दीवानभाष-सज्ञा पु० [अ०] १ ऐसा दरबार, जिसमें राजा या बादशाह से सब लाग मिल सकते हैं। आम दरबार लगने का स्थान।

दीवानखाना-सज्ञा पु० [फा०] पंर का यह बाहरी हिस्सा, जहाँ बड़े आदमी

बैठते और सब लोगा में मिलते हैं। बैठक।

श्रीमानकाश-गजा पु० १ ऐसी समा, जिसमें राजा या बादशाह मंत्रियों तथा चने हुए प्रधान लोगों के साथ बैठता है। शास दरबार। २ जहाँ शास दरबार होता हो।

श्रीमान-वि० [फा०, स्त्री० दीवान] पागल। श्रीमानपन-सज्ञा पु० पागलपन। सिद्धिपन। विशिष्टता।

श्रीमान-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ दीवान का पद। २ वह न्यायालय, जो संपत्ति आदि संबंधी स्वतंत्रता का निर्णय करे।

श्रीमान श्रद्धालु या दीवान श्रद्धालु-वह न्यायालय, जो सम्पत्ति और लेन-देन आदि सम्बन्धी मुकदमों का निर्णय करे।

श्रीवार-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ पत्थर, ईंट, मिट्टी आदि का बना हुआ परदा या घेरा। दीवाल। भीत। २ किसी वस्तु का घेरा, जो ऊपर उठा हो।

श्रीवारगीर-सज्ञा पु० [फा०] दीवार आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

श्रीवाल-सज्ञा स्त्री० दे० "दीवार"।

श्रीवाल-सज्ञा स्त्री० दीपावली। नास्तिक की अमावास्या को होनेवाला उत्सव, जिसमें संध्या के समय घर में भीतर-बाहर बहुत से दीपक जलाकर पवित्रियों में रखे जाते हैं और लक्ष्मी का पूजन होता है। इस दिन लोग जुआ भी खेलते हैं।

श्रीवीर-सज्ञा स्त्री० दे० "दीव"।

श्रीमता-वि० अ० दिखाई पड़ना। दृष्टि-गोचर होना।

श्रीह-वि० लया। बड़ा।

श्रीका-सज्ञा पु० कण।

श्री-सज्ञा पु० १. दो मनुष्या के बीच में होने वाला युद्ध या झगडा। द्वन्द्व। द्वन्द्व युद्ध। मल्लयुद्ध। २ कलह। उत्पात। उपद्रव। ३ जोडा। युग्म। ४. दुदुभि। नगाडा।

श्री-सज्ञा पु० १ नगर। २ बार-बार जन्म लेने और मरने का कष्ट।

श्री-सज्ञा स्त्री० नगाडा। घोंसा।

श्री पु० १ बरण। २ विद। ३ एक राक्षस, जिसे बालि ने मारकर ऋष्यमूक पर्वत पर पेंचा था।

श्री-सज्ञा स्त्री० दे० "दुदुभि"।

श्री-सज्ञा पु० पानी का माप। डेढ़हा।

श्री-सज्ञा पु० एक प्रकार का मेढा, जिसकी दुम चमकी के पाट की तरह गोल और भारी होती है।

श्रीवाल-सज्ञा पु० १. चौड़ी पूछ। २ नाव की पतवार।

श्रीक-सज्ञा पु० दे० "दुप्यत"।

श्री, दुःख-सज्ञा पु० १ सुख का विपरीत भाव। तकलीफ। कष्ट। क्लेश। (साध्य में दुःख तीन प्रकार के माने गए हैं—आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक)।

२ सकट। आपत्ति। विपत्ति। ३ मानसिक कष्ट। खेद। रज। ४ पीडा। व्याथा। दर्द।

५ व्याधि। रोग। बीमारी।

श्री—दुःख छठाना, पाना या भोगना—कष्ट सहना। तकलीफ सहना। दुःख देना या पहुँचाना—कष्ट पहुँचाना। दुःख बँटाना—सहानुभूति करना। कष्ट या सकट के समय साथ देना। दुःख भरना—कष्ट या सकट के दिन काटना।

श्रीकर-वि० दुःख उत्पन्न करनेवाला।

श्रीकर-सज्ञा पु० तीनों प्रकार के दुःखा का समूह। दैहिक, दैविक, भौतिक तीन प्रकार के दुःख।

श्रीकर, दुःखदाता-वि० दुःख देनेवाला।

श्रीकर-वि० [स्त्री० दुःखदायिका] दुःख या कष्ट पहुँचानेवाला।

श्रीकर-वि० दे० "दुःखदायक"।

श्रीकर-सज्ञा पु० दुःखद।

श्रीकर-वि० क्लेश से भरा हुआ।

श्रीकर-सज्ञा पु० वह सिद्धान्त जिसमें सदा ससार और उसकी सब बातें दुःखमय मानी जाती हैं।

श्रीकर-सज्ञा पु० दुःखवाद में विश्वास करनेवाला।

श्रीकांत-वि० १ जिसने जंत में दुःख हो।

जिसका अन्त दुःखदायी हो। २. जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो। जैसे, दुःखांत नाटक। संज्ञा पुं० १. दुःख का अंत। क्लेश की समाप्ति। २. दुःख की पराकाष्ठा।

दुःखित-वि० जिस कष्ट या तकलीफ हो। पीड़ित। क्लेशित।

दुःखिनी-वि० जिस पर दुःख पड़ा हो। दुःखिया।

दुःखी-वि० जिसे दुःख हो। जो कष्ट में हो। दुःशला-संज्ञा स्त्री० गांधारी के गर्भ से उत्पन्न धृतराष्ट्र की कन्या, जो सिंधु देश के राजा जयद्रथ को ब्याही थी।

दुःशासन-वि० जिस पर शासन करना कठिन हो।

संज्ञा पुं० धृतराष्ट्र के सौ लड़कों में से एक, जो दुर्योधन का अत्यंत प्रेमपात्र और मंत्री था। यह अत्यंत क्रूर स्वभाव का था। पांडव लोग जब जूए में हार गए थे, तब यही द्रौपदी को पकड़कर समास्यल में लाया था।

दुःशील-वि० बुरे स्वभाव का।

दुःशीलता-संज्ञा स्त्री० दुष्टता।

दुःसह-वि० जिसका सहन करना कठिन हो। अत्यन्त दुःखदायक। असह।

दुःसाध्य-वि० १. अति कठिन। २. जिसका करना कठिन हो।

दुःसाहस-संज्ञा पुं० १. व्ययं का साहस। २. अनुचित साहस। डिठाई। घृष्टता।

दुःसाहसी-वि० अनुचित साहस करनेवाला।

दुःस्वप्न-संज्ञा पुं० बुरा सपना।

दुःस्वभाव-संज्ञा पुं० बुरा स्वभाव। दुष्ट प्रकृति का। बदमिजाजी।

वि० दुःशील। दुष्ट स्वभाव का।

दु-वि० "दो" शब्द का संक्षिप्त रूप जो समास बनाने के काम में आता है। जैसे—दुविधा, दुचिन्ता।

दुवन-संज्ञा पुं० दे० "दुवन"। दुर्जन। बुरी। राक्षस।

दुआ-संज्ञा स्त्री० दो आने का सिक्का।

दुआ-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रार्थना। दर-खास्त। विनती। याचना। २. आशीर्वाद।

मुहा०—दुआ माँगना=प्रार्थना करना। दुआ लगना=आशीर्वाद पुरा होना।

दुआबा-संज्ञा पुं० [फा०] दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दुआल-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. चमड़ा। २. चमड़े का तसमा। ३. रिकाय का तसमा।

दुआली-संज्ञा स्त्री० चमड़े का वह तसमा जिससे कतेरे और बड़ई रासद घुमाते हैं।

दुई-वि० दे० "दो"।

दुइज\*—संज्ञा स्त्री० पक्ष की दूसरी तिथि। द्वितीया। दूज।

संज्ञा पुं० दूज का चांद। द्वितीया का चंद्रमा।

दुई-संज्ञा स्त्री० अपने को दूसरे से अलग समझना। दुजायगी। द्वैत। भेद-बुद्धि।

दुऊ\*—वि० दे० "दोनों"।

दुकाड़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री० दुकड़ी] १. जोड़ा।

२. जिसमें कोई वस्तु दो-दो हो या जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो। ३. एक पैसे का चौथाई भाग। दो हमड़ी। छदाम।

दुकड़ी-वि० जिसमें कोई वस्तु दो-दो हो।

संज्ञा स्त्री० १. चारपाई की बुनावट जिसमें दो-दो बाप एक साथ बूने जाते हैं। २.

दो बुट्टियोंवाला ताश का पत्ता। दुक्की।

३. दो घोड़ों की बग्घी।

दुकना\*—क्रि० अ० छिपना। लुपना।

दुकान-संज्ञा स्त्री० [फा०] वह स्थान जहाँ

बेचने के लिए चीजें रखी हैं और जहाँ ग्राहक जाकर उन्हें खरीदते हैं।

मुहा०—दुकान बढ़ाना=दुकान बंद करना।

दुकान लगाना=१. दुकान का असबाब फैला-

कर यथास्थान बिक्री के लिए रखना।

२. बहुत सी चीजों को इधर-उधर फैलाकर

रख देना।

दुकानदार-संज्ञा पुं० [फा०] १. दुकान पर

बैठकर सोदा बेचनेवाला। दुकानवाला।

२. जीविका के लिए ढोंग रचनेवाला।

दुकानदारी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. दुकान

या बिक्री-बट्टे का काम। दुकान पर माल

बेचने का काम। २. ढोंग रचकर रुपया

पैदा करने का काम।

दुकाल-सज्ञा पु० अन्न-वष्ट या समय। अवाल।  
दुमिष।

दुक्क-सज्ञा पु० १ वस्त्र। वपडा। २ सन  
के रेशे का बना वपडा। क्षीम वस्त्र। ३  
महीन वपडा। वारीय वपडा।

दुक्कलीनी-सज्ञा स्त्री० नदी।

दुक्कला-जिसने साथ कोई दूसरा भी हो।  
जो अवेला न हो।

यो०—अवेला-दुवेला=जिसने साथ कोई  
न हो या एक ही दो आदमी हा। -

दुक्केले-वि० वि० किसी के साथ। दूसरे आदमी  
को साथ लिये हुए।

दुक्कड-सज्ञा पु० १ तबले की तरह का एक  
बाजा जो सहनाई के साथ बजाया जाता  
है। २ एक में जुड़ी हुई या साथ पटी हुई  
दो नावों का जोड़ा।

दुक्का-वि० [स्त्री० दुक्की] १ एक साथ दो।  
जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। २ जो  
जोड़े में हो। जो एक साथ दो (वस्तु) हो।  
सज्ञा पु० दे० "दुक्की"।

यो०—दुक्का-दुक्का=अवेला-दुवेला। -  
दुक्की-सज्ञा स्त्री० दास का वह पत्ता जिस  
पर दो बूटियाँ बनी रहती हैं।

दुखडा-वि० जिसमें दो खड हो। दो-तल्ला।

दुख-सज्ञा पु० दे० "दुख"।

दुखडा-सज्ञा पु० १ दुख का वर्णन। तबलीक  
का हल्ला। २ कष्ट। विपत्ति। मुसीबत।

मुहा०—दुखडा रोना=अपने दुख का वृत्तात  
बहना।

दुखद-वि० दे० "दुखद"।

दुखदाई, दुखदानि-वि० दे० "दुखदायी"।

दुखदुख-सज्ञा पु० दुख का उपद्रव। दुख  
और आपत्ति।

दुखना-क्रि० अ० ददं करना। पीडा-मुक्त  
होना।

दुखहाया-वि० दे० "दुखित"।

दुखाना-वि० स० १ पीडा देना। वष्ट  
पहुँचाना। २ किसी घाव इत्यादि को छू  
देना, जिससे उसमें पीडा हो।

मुहा०—जी दुखाना=मानसिक वष्ट पहुँ-  
चाना। मन में दुख उत्पन्न करना।

दुखारा, दुखारी-वि० दुखी। पीडित।

दुखित-वि० दे० "दुखित"।

दुखिया-वि० दुखी। रोगी। जिसे किसी  
प्रकार का दुख या वष्ट हो।

दुखियारा-वि० [स्त्री० दुखियारी] १ जिसे  
किसी बात का दुख हो। दुखिया। २  
रोगी।

दुखी-वि० १ जिसे दुख हो। जो वष्ट या  
दुख में हो। २ जिसने दिल में रज हो।  
३ रागी। बीमार।

दुखीला-वि० दुखी। दुख अनुभव करत-  
वाला। दुखपूर्ण। दुखदायी।

दुखीला-वि० [स्त्री० दुखीही] दुखदायी।  
दुख देनेवाला।

दुगई-सज्ञा स्त्री० ओसारा। वरामदा।

दुगदुगी-सज्ञा स्त्री० १ धुकधुकी। २ गले  
में पहनने का एक गहना।

दुगना-वि० [स्त्री० दुगनी] द्विगुण। दूना।  
किसी वस्तु से उतना और अधिक, जितनी  
जि वह हो।

दुगडा-सज्ञा पु० १ दुनाली बद्ध। २ दोहरी  
गोली।

दुगासरा-सज्ञा पु० किसी दुग के नीचे या  
चारा और बसा हुआ गांव।

दुगन-वि० दे० "द्विगुण"।

दुगन-वि० दे० "दुगना"।

दुग-सज्ञा पु० दे० "दुग"।

दुध-वि० १ दुहा हुआ। २ भरा हुआ।  
सज्ञा पु० दूध। पय।

दुधवती-सज्ञा स्त्री० दूध देनेवाली। गाय।

दुधो-सज्ञा स्त्री० दुधिया नाम की घास।  
दुडी।

वि० दूधवाला। जिसमें दूध हो।

दुधडिया-वि० दो घडी का। जैसे—दुधडिया  
मुहूर्त।

दुधडिया मुहूर्त-सज्ञा पु० दो घडियों के  
अनुसार निवाला हुआ मुहूर्त। त्रिघटिका  
मुहूर्त। यह मुहूर्त विशेष आवश्यकता के  
समय निवाला जाता है।

दुधरी-सज्ञा स्त्री० दुधडिया मुहूर्त।

दुधर-वि० दूना। दुगना।

दुचित\*—वि० १ जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिरचित्त। २ चितित।  
 दुचितई\*—सज्ञा स्त्री० १ चित्त की अस्थिरता।  
 दुधिवा। २ सटका। आशका। चिन्ता।  
 दुचिताई\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'दुचितई'।  
 दुचित्ता—वि० [स्त्री० दुचित्ती] १ जिसका चित्त एक बात पर स्थिर न हो। दुविधा में रहनेवाला। अस्थिरचित्त। २ सदेह में पड़ा हुआ। ३ जिसके चित्त में सटका हो। चितित।

दुज\*—सज्ञा पु० दे० "द्विज"।  
 दुजन्मा\*—सज्ञा पु० दे० "द्विजन्मा"।  
 दुजपति\*—सज्ञा पु० दे० "द्विजपति"।  
 दुजानू—क्रि० वि० दोनों घुटना के बल (बैठना)।

दुजीह\*—सज्ञा पु० दे० 'द्विजिह्व'।  
 दुजेश—सज्ञा पु० दे० "द्विजेश"।  
 दुडूब—वि० दो टुकड़ों में किया हुआ। खडिया।

मुहा०—दुडूब बात=थोड़े में कही हुई साफ बात। स्पष्ट बात। खरी बात।

दुडबडी\*—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का वाजा।  
 दुडी—सज्ञा स्त्री० दे० "दुक्की"।

दुत्—अव्य० [अनु०] १ तिरस्कार का शब्द। तिरस्कार के साथ दूर हटाने के लिए कहा जानेवाला शब्द। दूर हो। २ बच्चा से कहने का प्यार का एक शब्द।

दुत्कार—सज्ञा स्त्री० बचन-द्वारा किया हुआ अपमान। तिरस्कार। शिवकार। फटकार।  
 दुत्कारना—क्रि० सं० १ दुत्-दुत् शब्द करने किसी को अपने पास से हटाना। २ तिरस्कार के साथ दूर करना।

दुत्तरफा, दुत्तरफा—वि० [स्त्री० दुत्तरफा] दोनों ओर का। जो दोनों ओर ही।

दुतारा—सज्ञा पु० एक वाजा जिसमें दो तार होते हैं।

दुति—सज्ञा स्त्री० दे० "दुति"।  
 दुतिमान्\*—वि० दे० "दुतिमान्"।

दुतिय\*—वि० दे० 'द्वितीय'।

दुतिपा—सज्ञा स्त्री० पक्ष की दूसरी तिथि।  
 दुज। द्वितीया।

दुतिवत्\*—वि० १ आभायुक्त। चमकीला।  
 २ सुन्दर।

दुतीम\*—वि० दे० "द्वितीय"।

दुतीया\*—सज्ञा स्त्री० दे० "द्वितीया"।

दुबल—सज्ञा पु० १ ढाल। २ एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।  
 वानफूल। बरन।

दुबलाना\*—वि० सं० दे० "दुतवारना"।  
 दुदहंडी—सज्ञा स्त्री० दूध दुहने का मिट्टी का छोटा बर्तन।

दुदामो—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सूती कपड़ा जो मालवे में बनता था।

दुदिला—वि० १ दुविधा में पड़ा हुआ।  
 दुचित्ता। २ चितित। व्यग्र। चबरापा हुआ।

दुडी—सज्ञा स्त्री० १ जमीन पर फेरनेवाली एक घास। २ एक छोटा पौधा। ३ खडिया मिट्टी। ४ एक लता। एक वृक्ष।

दुधमुख\*—वि० दूधपीता। दुधमुह।  
 दुधमुह—वि० दे० "दूधमुह"।

दुधहोडी—सज्ञा स्त्री० दूध दुहने या रखने की छोटी मटकी। मिट्टी का वह छोट बरतन जिसमें दूध रखा या गरम किया जाता है।

दुधडी—सज्ञा स्त्री० दे० "दुधहोडी"।

दुधार—वि० १ दूध देनेवाली। जो दूध देती हो। २ जिसमें दूध हो।

सज्ञा पु० दे० "दुधारा"।  
 दुधारा—वि० (सलवार, छुरी आदि) जिसमें दोनों ओर धार हो।

सज्ञा पु० एक प्रकार का खाँडा।

दुधारी—वि० १ दूध देनेवाली। जो दूध देती हो। २ जिसमें दोनों ओर धार हो।  
 दो धारवादी।

दुधारु\*—वि० दे० "दुधार"।

दुधिया—वि० १ दूध मिला हुआ। जिसमें दूध पड़ा हो। २ जिसमें दूध होता हो।  
 ३ दूध की तरह सफेद। सफेद रंग का।  
 सज्ञा स्त्री० १ दुडी नाम की घास। २ एक प्रकार की ज्वार या चरी। ३, खडिया मिट्टी। ४ एक प्रकार का विप।

दुधिया पत्थर—संज्ञा पुं० १. एक प्रकार का गुलाबम सफेद पत्थर जिसके प्याले आदि बनते हैं। २. एक प्रकार का नम या रत्न।

दुधिया विप—संज्ञा पुं० एक विप जिसके पीछे हिमालय के पश्चिमी भाग में मिलते हैं। इसकी जड़ में विप होता है। तेलिया विप। मीठा जहर।

दुधल-वि० बहुत दूध देनेवाली। दुधार।  
दुनवना†\*—क्रि० अ० लचकर प्रायः दोहरा हो जाना।

क्रि० स० लचाकर दोहरा करना।  
दुनाली-वि० दो नलोवाली। जैसे दुनाली बटूक।

संज्ञा स्त्री० दुनाली बटूक। ऐसी बटूक जिसमें दो-दो गोलियाँ एक साथ भरी जायें।

दुनिया—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. ससार। जगत्। २. ससार के लोग। लोक। जनता।

३. ससार का जजाल। जगत् का प्रपंच।  
यो०—दोन-दुनिया=लोक-परलोक।

मुहा०—दुनिया के परदे पर=सारे ससार में। दुनिया की हवा लगना=सांसारिक अनुभव होना। ससारी विषयी का अनुभव होना। दुनिया भर का=बहुत या बहुत अधिक।

दुनियाई-वि० सांसारिक।

संज्ञा स्त्री० ससार।

दुनियादार-संज्ञा पुं० सांसारिक श्रद्धा में फँसा हुआ मनुष्य। गृहस्थ।

वि० १. ढग रचकर अपना काम निवाले-वाला। २. व्यवहार-कुशल।

दुनियादारी-संज्ञा स्त्री० १. दुनिया का बारबार। गृहस्थी का जजाल। २. व्यवहार-कुशलता। स्वार्थसाधन। ३. घनावटी व्यवहार।

दुनियावी-वि० सांसारिक। दुनिया या संसार से सम्बन्धित। मोहमाया में लिप्त।

दुनियासाज-वि० [संज्ञा दुनियासाजी] १. ढग रचकर अपना काम निकालनेवाला। स्वार्थसाधक। २. चापलूस।

दुनी\*—संज्ञा स्त्री० ससार।

दुपदा†\*—संज्ञा पुं० दे० "दुपट्टा"।  
दुपट्टा—संज्ञा पुं० [स्त्री० दुपट्टी] १. दो पाटों को जोड़कर बनाया हुआ ओढ़ने का कपड़ा। दो पाट की चद्दर। चादर। २. कंधे या गले पर डालने का लंबा कपड़ा।

मुहा०—दुपट्टा टानकर सोना=निश्चित होकर सोना। घेतके सोना।

दुपट्टी†\*—संज्ञा स्त्री० दे० "दुपट्टा"।  
दुपहर—संज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

दुपहरिया—संज्ञा स्त्री० १. मध्याह्न का समय। दोपहर। २. एक छोटा पीछा।

दुपहरी—संज्ञा स्त्री० दे० "दुपहरिया"।  
दुफली-वि० वह चीज जो रबी और खरीफ दोनों फसलों में हो। सदिग्ध। अनिश्चित।

दुवषा—संज्ञा स्त्री० १. दो में से किसी एक बात पर चित्त के न जमने की क्रिया या भाव। अनिश्चय। चित्त की अस्थिरता।

२. सशय। सदेह। ३. असमजस। आगा-पीछा। पसोपस। ४. खटका। चिंता।

दुवरी†—वि० दे० "दुवला"।  
दुवराना†\*—क्रि० अ० दुवला होना। शरीर से क्षीण होना।

दुवला-वि० [स्त्री० दुवली] १. कमजोर। दुर्बल। जिसका वदन हलका और पतला हो। क्षीण शरीर का। कृश। २. अशक्त।

दुवलापन—संज्ञा पुं० कृशता। क्षीणता।  
दुवारा—क्रि० वि० दे० "दोवारा"।

दुवाला-वि० दे० "दोवाला"।  
दुविध\*—संज्ञा पुं० दे० "द्विविध"।

दुविध, दुविधा\*—संज्ञा स्त्री० दे० "दुवधा"।  
दुवे—संज्ञा पुं० [स्त्री० दुवाइन] ब्राह्मणों का एक भद्र। दूवे। द्विवेदी।

दुभाषी—संज्ञा पुं० दे० "दुभाषिया"।  
दुभाषिया—संज्ञा पुं० दो भाषाओं का जानने-वाला ऐसा मनुष्य जो उन भाषाओं के बोलनेवाले दो मनुष्यों को एक दूसरे का अभिप्राय समझावे।

दुमंजिल—वि० [फा०] [स्त्री० दुमंजिली] दो भरातिव का। दोलन।

दुम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. पूछ। पुच्छ। २. पूछ की तरह पीछे लगी या बंधी हुई वस्तु।

३. पीछे-पीछे लगा रहनेवाला आदमी।  
पिछलगू। ४. किसी काम का सबसे अंतिम  
घोड़ा-सा अंग।  
मुहा०—दुम दबाकर भागना=डरपीक कुत्ते  
की तरह डरकर भागना। दुम हिलाना=  
कुत्ते का दुम हिलाकर प्रसन्नता प्रकट करना।  
दुमची—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. घोड़े के साज  
का तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है।  
२. दोनों नितम्बों के बीच की हड्डी।  
दुमदार—वि० [फा०] १. पूँछवाला। २.  
जिसके पीछे पूँछ की सी कोई वस्तु हो।  
दुमन, दुमना—वि० दुखी। चिंतित।  
दुमाता—वि० १. बुरी माता। २. सोतेली  
माँ।  
दुमुहाँ—वि० दे० "दोमुहाँ"।  
दुरगा—वि० १. दो रंगों का। जिसमें दो रंग  
हों। २. दो तरह का। ३. दोहरी चाल  
चलनेवाला।  
दुरंगी—वि० स्त्री० दे० "दुरगा"।  
सज्ञा स्त्री० दोहरी चाल। दोनों पक्षों का  
अवलंबन। द्विविधा।  
दुरंत—वि० १. अपार। बड़ा भारी। २. दुर्गम।  
दुस्तर। कठिन। ३. घोर। प्रचंड। भीषण।  
४. जिसका परिणाम बुरा हो। अशुभ।  
५. दुष्ट। खल।  
दुरधा\*—वि० १. दो छिद्रोंवाला। २. आर-  
पार छेदा हुआ।  
दुर-उप० या अव्यय जिसका प्रयोग इन  
अर्थों में होता है—१. दूषण। (बुरा अर्थ)  
जैसे—दुरात्मा। २. विपरीत अर्थ का सूचक।  
जैसे—दुर्वल। ३. दुःख।  
दुर-अव्य० विरस्कार-सूचक एक शब्द।  
दूर हो।  
सज्ञा पु० [फा०] १. मोती। मुक्ता। २.  
मोती की छटपट जिसे स्त्रियाँ नाक में  
पहनती हैं। लोलक। ३. छोटी वाली।  
मुहा०—दुर-दुर करना=विरस्कारपूर्वक  
हड़ना। कुत्ते की तरह भगाना।  
दुरजन\*—सज्ञा पु० दे० "दुर्जन"।  
दुरजोषन\*—सज्ञा पु० दे० "दुर्जोषन"।  
दुरतिक्रम—वि० १. जिसका अतिक्रम या

उत्तलघन न हो सके। २. प्रबल। ३. जिसका  
पार पाना कठिन हो। अपार।  
दुरत्यय—वि० [स्त्री० दुरत्यया] जिसे पार  
करना कठिन हो। दुस्तर। कठिन। दे०  
"दुर्दमनीय"।  
दुरथल\*—सज्ञा पु० बुरी जगह।  
दुरद\*—सज्ञा पु० दे० "द्विरद"।  
दुरदाम\*—वि० कठिन। कष्टसाध्य।  
दुरदाल\*—सज्ञा पु० हाथी।  
दुरदुराना—कि० सं० विरस्कारपूर्वक दूर  
करना। अपमान के साथ भगाना।  
दुरधिगम—वि० दुर्बोध। दुष्प्राप्य।  
दुरना\*—कि० अ० १. छिपना। आँखों के  
आगे से दूर होना। आँध में जाना। २. न  
दिखलाई पड़ना।  
दुरपदी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "द्वीपदी"।  
दुरबीन—सज्ञा स्त्री० दे० "दूरबीन"। दूर की  
चीज देखने का यंत्र जिससे वह निकट और  
बड़ी दिखाई पड़े।  
दुरभिग्रह—वि० मुश्किल से हाथ आनेवाला।  
कठिनाई से प्राप्त होनेवाला।  
दुरभित्ति—सज्ञा स्त्री० पड़थ। कुमनना।  
साजिश। बुरे अभिप्राय से गुट बाँधकर की  
हुई सलाह।  
दुरभेवा\*—सज्ञा पु० बुरा भाव। मनमोटाव।  
मनोमालिन्य।  
दुरमुट—सज्ञा पु० गदा के आकार का डडा  
जो रूकड़ कूटने के काम आता है।  
दुरमुस—सज्ञा पु० दे० "दुरमुट"।  
दुरवस्था—सज्ञा स्त्री० १. बुरी दशा। खराब  
हालत। २. दुःख, कष्ट या दरिद्रता की  
दशा। हीन दशा।  
दुरवाप—वि० दुष्प्राप्य।  
दुराउ\*—सज्ञा पु० दे० "दुराव"। छिपाव।  
पपट।  
दुरागमन—सज्ञा पु० दे० "द्विरागमन"।  
गोना।  
दुराग्रह—सज्ञा पु० [वि० दुराग्रही] १. किसी  
भाव पर बुरे ढंग से अड़ना। २. हट।  
जिद।  
दुराग्रही—वि० हठी। जिद्दी।

दुराचरण-संज्ञा पुं० दुरा चाल-चलन । मोटा ध्वजधार ।

दुराचार-संज्ञा पुं० [वि०, दुराचारी] दुष्ट आचरण । दुरा चाल-चलन । निन्दित कर्म ।

दुराचारी-वि० दुरे चाल-चलनवाला ।

दुराज-संज्ञा पुं० दुरा राज्य । दुरा शासन ।

१. एक ही स्थान पर दो राजाओं का शासन । २. यह स्थान जहाँ दो राजाओं का राज्य हो ।

दुराजी-वि० दो राजाओं का ।

दुरात्मा-वि० दुष्टात्मा । खोटा । नीचाधम ।

दुराबुरी-संज्ञा स्त्री० छिपाव । गोपन ।

महा०—दुरादुरी करके=छिपे-छिपे ।

दुराधर्म-वि० जिसका दमन करना कठिन हो । प्रचंड । प्रबल ।

संज्ञा पुं० श्री विष्णु ।

दुराना-क्रि० अ० १. दूर होना । हटना ।

टलना । भागना । २. छिपना ।

क्रि० स० १. दूर करना । हटाना । २. छोड़ना । त्यागना । ३. छिपाना । गुप्त रखना ।

दुराध-वि० दुर्लभ ।

दुरालाप-संज्ञा पुं० गाली ।

दुराव-संज्ञा पुं० १. छिपाव । भेदभाव । २. वपट । छल । अविश्वास या भय के कारण किसी से बात गुप्त रखने का भाव ।

दुराशय-संज्ञा पुं० दुष्ट आशय । बुरी नीयत ।

वि० जिसका मतलब बुरा हो । खोटा ।

दुराशा-संज्ञा स्त्री० झूठी उम्मीद । व्यर्थ की आशा । पूरी न होनेवाली आशा ।

दुरित-संज्ञा पुं० १. पाप । पातक । २. उपपातक । छोटा पाप ।

वि० पापी । पातकी ।

दुरियाना-क्रि० स० दूर करना । हटाना ।

दुरदुराना ।

दुरीयणा-संज्ञा स्त्री० शाप ।

दुस्सा-वि० दो मुँहवाला । १. जिसके दोनों ओर मुँह हो । २. जिसके दोनों ओर एक ही सा मुँह हो । ३. जिसके दोनों ओर दो रंग हो ।

दुस्प्रयोग-संज्ञा पुं० किसी वस्तु को बुरी तरह से काम में लाना । दुरा उपयोग ।

दुस्तर-वि० [फा०] १. जो अच्छी दशा में हो । ठीक । जो टूटा-फूटा न हो । २. ज़िम्मे दोष या त्रुटि न हो । ३. उचित । मुनासिब ।

४. यथार्थ ।

दुस्ती-संज्ञा स्त्री० [फा०] सुधार ।

संजोधन ।

दुस्ह-वि० जल्दी समझ में न आने योग्य ।

गूढ़ । कठिन ।

दुरेफ-संज्ञा पुं० "द्विरेफ" । भौरा ।

दुर्कल\*—संज्ञा पुं० दे० "दुष्कल" ।

दुर्गम-संज्ञा स्त्री० बुरी गंध । बदबू । कुवास ।

दुर्ग-वि० जिसमें पहुँचना कठिन हो । दुर्गम ।

संज्ञा पुं० १. गढ़ । कोट । किला । २. एक असुर का नाम जिसे मारने के कारण देवी का नाम दुर्गा पड़ा ।

—वि० १. उसकी बुरी गति हुई हो ।

दुर्दशा-अस्त । २. दरिद्र ।

संज्ञा स्त्री० दे० "दुर्गति" ।

दुर्गति-संज्ञा स्त्री० बुरी हालत । दुर्दशा ।

नरक-भोग ।

दुर्गपाल-संज्ञा पुं० गढ़ का रक्षक । किलेदार ।

दुर्गम-वि० १. जहाँ जाना कठिन हो । २. जिसे जानना कठिन हो । दुर्गम । ३. दुस्तर ।

कठिन । विकट ।

संज्ञा पुं० १. गढ़ । दुर्ग । किला । २. विष्णु ।

३. वन । ४. सकट का स्थान ।

दुर्गमता-संज्ञा स्त्री० दुर्गम होने का भाव ।

दुर्गरक्षक-संज्ञा पुं० किलेदार ।

दुर्गा-संज्ञा स्त्री० १. आदि शक्ति । देवी ।

गोरी, काली, भवानी, बडी, अन्नपूर्णा आदि

इन्हीं के नाम और रूप हैं । २. नील का

पीधा । ३. अपराजिता । कीवा-छोटी । ४.

श्यामा पक्षी । ५. नौ वर्ष की कन्या । ६.

एक रागिनी ।

दुर्गाध्यक्ष-संज्ञा पुं० गढ़ का प्रधान । किले-

दार ।

दुर्गम-संज्ञा पुं० दोष । ऐब । बुराई ।

दुर्गासप्त-संज्ञा पुं० दुर्गा-पूजा का उत्सव जो

नवरात्र में होता है ।

दुघंट-वि० जिसका होना पड़िन हो। कष्ट-साध्य।

दुघंटना-सज्ञा स्त्री० दुःख को घटना। १. ऐसी बात जिसके होने से बहुत कष्ट, पीडा या शोक हो। अशुभ घटना। बुरा संयोग। बारदात। २. विपत्ति। आफत।

दुर्जन-सज्ञा पु० दुष्ट जन। खोटा आदमी। खल। बदमाश।

दुर्जन्ता-सज्ञा स्त्री० दुष्टता।

दुर्जय-वि० दे० "दुर्जय"।

दुर्जय-वि० जिसे जीतना बहुत कठिन हो। जिस पर विजय पाना कठिन हो।

दुर्ज्ञय-वि० जो जल्दी समझ में न आ सके। दुर्बोध।

दुर्दम-वि० दे० "दुर्दमनीय"। प्रचंड। प्रबल।

दुर्दमनीय-वि० १ जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। २ प्रबल। प्रचंड।

दुर्दम्भ-वि० दे० "दुर्दमनीय"।

दुर्दर-वि० दे० "दुर्दर"।

दुर्दशा-सज्ञा स्त्री० बुरी दशा। दुर्गति। खराब हालत।

दुर्दान्त-वि० जिसे दवाना बहुत पठिन हा। दुर्दमनीय। प्रबल। भयंकर। भयानक।

दुर्दिन-सज्ञा पु० १ बुरा दिन। २ दुर्दशा। दुःख और कष्ट का समय। ३ ऐसा दिन जिसमें बादल छाए हा और पानी बरसता हो। मेघाच्छन्न दिन।

दुर्द्वेष-सज्ञा पु० १ दुर्भाग्य। बुरी किस्मत। २ बुरे दिना का फेर।

दुर्द्वर-वि० प्रबल। प्रचंड। जा कठिनार्द्ध से पक्क में आवे।

दुर्द्वय-वि० १ जिसका दमन करना पठिन हा। २ उग्र। प्रबल। प्रचंड।

दुर्गम-सज्ञा पु० १ कुर्याति। बुरा नाम। बदनामी। २ गाली। बुरा बचन। ३ बयारीर। ४ गोप।

दुर्निवार-वि० दे० "दुर्निवार्य"।

दुर्निवार्य-वि० १ जो जल्दी राका न जा सके। जिगवा निवारण करना कठिन हो। २ जो जल्दी हटाया न जा सके। ३ जिसका हाना निश्चित हा।

दुर्नीति-सज्ञा स्त्री० कुनीति। कुचाल। अन्याय। अनुचित आचरण।

दुर्बल-वि० १ बलहीन। अशक्त। कमजोर। २ दुबला पतला। वृक्ष। क्षीणकाय।

दुर्बलता-सज्ञा स्त्री० १ बल की कमी। कमजोरी। २ कुशता। दुबलापन।

दुर्बोध-वि० जो जल्दी समझ में न आवे। गूढ़। क्लिष्ट। कठिन।

दुर्भर-वि० जो लादान, ला सके। भारी। बजनी।

दुर्भाग्य-सज्ञा पु० बुरा भाग्य। खोटी किस्मत।

दुर्भाव-सज्ञा पु० १ बुरा भाव। २ मन-मोटाव। द्वेष। मनोमालिन्य।

दुर्भावना-सज्ञा स्त्री० १ बुरी भावना। २ अदेश। खटवा। चिंता।

दुर्भिक्ष-सज्ञा पु० अकाल। ऐसा समय जिसमें भिक्षा या भोजन कठिनता से मिले।

दुर्भेद-वि० १ जो जल्दी भेदा या छेदा न जा सके। २ जिसे जल्दी पार न पर सके।

दुर्भेद्य-वि० दे० "दुर्भेद"।

दुर्भेति-सज्ञा स्त्री० बुरी बुद्धि।

वि० १ दुर्बुद्धि। जिसकी समझ ठीक न हो। कमजबल। २ खल। दुष्ट।

दुर्भेद-वि० घमडी। मदमत्त।

दुर्भिस-सज्ञा पु० १ एक छंद, जिससे प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ हानी हैं। अतः में एक सगण और दो गुर होते हैं। २ एक प्रकार का सर्वथा, जिससे प्रत्येक चरण में आठ सगण होते हैं।

दुर्भुल-वि० १ जिसका मुख बुरा हो। २ अप्रियवादी। बटु भाषी।

सज्ञा पु० १ घोडा। २ शिकजी। ३ एक नाग। ४ राम की मत्ता का एक बदर।

५ रामचन्द्रजी का एक गुप्तचर, जिगने द्वारा उन्होंने सीता के विषय में लापापवाद सुना था।

दुर्भुल-सज्ञा पु० बकट या मिट्टी गूटने का गदा के आधार का एक डटा।

दुर्घोषन-सज्ञा पु० कुम्हरी राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र, जो अपने बचेरे भाई पाटन के द्वेष रखता था। द्रुप के नाथ

जुआ खेलपर युधिष्ठिर अपना मारा राज्य  
और धन, यहाँ तक कि द्रौपदी को भी, हार  
गए और उन्हें सब भाइया-सहित १२ वर्ष  
तक वनवास और एक वर्ष तक अज्ञातवास  
में रहना पड़ा। जब वे अज्ञातवास से लौटे  
तब दुर्गोनि ने उनका राज्य उन्हें नहीं  
लौटाया। इस कारण महामारुत का  
प्रमिद युद्ध हुआ।

दुर्गोनि-वि० नीच कुत्र का।

दुरा-सज्ञा पु० [फा०] घोडा। चानुव।

दुरानी-सज्ञा पु० [फा०] अज्ञाना की  
एक उपजाति।

दुलभ-वि० जिसे आसानी से लाभ न सकें।

दुलक्ष-वि० १ जो कठिनता से दिखाई पड़े।

जिसका निशाना लगाना कठिन हो। २

बुरी नीयत।

दुलभ-वि० १ दुष्प्राप्य। जिसे पाना सहज

न हो। २ अनोखा। बहुत बढ़िया।

३ प्रिय।

दुर्वच-सज्ञा पु० दे० "दुर्वचन"।

दुर्वचन-सज्ञा पु० दुर्वचन। गाली।

दुर्वह-वि० जिसका वहन करना कठिन हो।

दुर्वदि-सज्ञा पु० १ निन्दा। अपवाद। २

स्तुतिपूर्वक कहा हुआ अप्रिय वाक्य।

दुर्वदी-वि० हठी। हुज्जती।

दुर्वसना-सज्ञा स्त्री० बुरी इच्छा।

दुर्वसा-सज्ञा पु० अवि के पुत्र एक ऋषि।

ये अत्यंत क्रोधी थे।

दुर्विद-वि० जिसका जानना कठिन हो।

दुर्वोच।

दुर्विध-वि० खल। दुष्ट। दरिद्र।

दुर्विनीत-वि० अवलड। अशिष्ट। उद्वत।

दुर्विपाक-सज्ञा पु० १ बुरा परिणाम। २

दुष्फल। बुरा संयोग।

दुर्विपह-वि० दुःसह।

दुर्वृत्त-वि० दुश्चरित्र। दुराचारी।

दुर्व्यवस्था-सज्ञा स्त्री० कुप्रबंध। बड़बुतजामी।

दुर्व्यवहार-सज्ञा पु० १ बुरा व्यवहार। बुरा

बर्ताव। २ दुष्ट आचरण।

दुर्व्यसन-सज्ञा पु० बुरी लत। खराब आदत।

दुर्व्यसनी-वि० बुरी स्वभाववाला।

दुर्हद-सज्ञा पु० शत्रु।

दुलकी-सज्ञा स्त्री० घोड़े की एक चाल।

दुलखना-क्रि० ग० बार बार बहना या  
बतलाना।

दुलडा-वि० दो लडो का।

दुलडो-सज्ञा स्त्री० दो लडा की माला।

दुलसी-सज्ञा स्त्री० घोड़े आदि चीपाया का

पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलबुल-सज्ञा पु० [अ०] वह मादा खच्चर,

जो मिस्र के हाविम ने मुहम्मद नाहन को

नजर में दी थी। सावारण लोग इसे घोड़ा

समझते हैं और मुहरम के दिना में इसकी

नकल निकालते हैं।

दुलराना\*+वि० स० बच्चों को बहलाकर

प्यार करना। लाड-प्यार करना।

दुलरो-सज्ञा स्त्री० दे० "दुलडी"।

दुलहन-सज्ञा स्त्री० नई ब्याही हुई स्त्री।

नवविवाहिता वयु।

दुलहा-सज्ञा पु० दे० "दुल्हा"।

दुलहिया, दुलही+सज्ञा स्त्री० दे० "दुल्हन"।

दुलहेटा-सज्ञा पु० लाडला बेटा। दुलारा

लडका।

दुलाई-सज्ञा स्त्री० ओढ़ने का दोहरा कपडा

जिसके भीतर रुई भरी हो।

दुलाना\*+क्रि० स० दे० "दुलाना"।

दुलार-सज्ञा पु० लाड-प्यार। प्रीति। बच्चा

के साथ प्यार।

दुलारना-क्रि० स० लाड-प्यार करना।

दुलारा-वि० [स्त्री० दुलारी] लाडला।

जिसका बहुत दुलार या लाड-प्यार हो।

दुलारी-सज्ञा स्त्री० प्यारी बेंटी। दुलाई।

दुलोना, दुलेचा-सज्ञा पु० दे० "गलोचा"।

दुलोही-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की तलवार।

दुध-वि० दो।

दुधन-सज्ञा पु० १ दुर्जन। बुरा आदमी। २

बेरी। दुश्मन। शत्रु। ३ राक्षस। दैत्य।

दुवाज-सज्ञा पु० एक प्रकार का घोड़ा।

दुवावस बानी\*+वि० १ बारह बानी का। २

आभायुक्त। सूर्य के समान दमकता हुआ।

खरा (विशेषतः सोने के लिए)।

दुयार+सज्ञा पु० दे० "द्वार"।

दुबाल-सज्ञा स्त्री० [फा०] रिकाब में लगा हुआ चमड़े का छोटा फीता।

दुबाली-सज्ञा स्त्री० १. रंगे या छपे हुए कपड़ों पर चमक लाने के लिए घाटने का औजार। घोट। २. चमड़े या परतला या पेटी, जिसमें बटुक, तलवार आदि लटकाते हैं।

दुविघात-सज्ञा स्त्री० दे० "दुवधा"।

दुबो\*†-वि० दोनों।

दुशवार-वि० [फा०] [सज्ञा दुशवारी] १ मुश्किल। कठिन। दुरूह। २ दुसह।

दुशाला-सज्ञा पु० शाल का जोड़ा। ऊनी बहुमूल्य वस्त्र-विशेष, जो ओढ़ने के काम में आता है और जिसके चारों तरफ फूल-पत्ती कडी रहती है।

दुशासन\*-सज्ञा पु० दे० "दुशासन"।

दुश्चरित-वि० १ बुरे आचरण का। बद-चलन। २ कठिन।

सज्ञा पु० बुरा आचरण। कुचाल।

दुश्चरित्र-वि० [स्त्री० दुश्चरित्रा] बुरे चरित्रवाला। बदचलन।

सज्ञा पु० बुरी चाल। दुराचार।

दुश्चेष्टा-सज्ञा स्त्री० [वि० दुश्चेष्टित] बुरा काम। कुचेष्टा।

दुश्मन-सज्ञा पु० [फा०] शत्रु। वैरी।

दुश्मनी-सज्ञा स्त्री० वैर। शत्रुता।

दुश्चिता-सज्ञा स्त्री० बुरी चिंता। बुरी आशंका।

दुष्कर-वि० दुसाध्य। जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके।

दुष्कर्म-सज्ञा पु० [वि० दुष्कर्मा] बुरा काम। कुकर्म। पाप।

दुष्कर्मा-वि० दुर्कर्मी। पापी।

दुष्कर्मी-वि० बुरा काम करनेवाला। दुरा-चारी। पापी।

दुष्काल-सज्ञा पु० १ कुसमय। बुरा वक्त। २ दुर्भिक्ष। अकाल।

दुष्कोति-सज्ञा स्त्री० बदनामी। अपवाद।

दुष्ट-वि० [स्त्री० दुष्टा] १ दुर्जन। खल।

दुराचारी। पापी। २ जिसमें दोष या

ऐव हो। दूषित। दोष-ग्रस्त। ३ पित्त आदि दोष से युक्त।

दुष्टता-सज्ञा स्त्री० १ बुराई। खराबी।

२ बदमाशी। ३ नृपस। ऐव।

दुष्टपना-सज्ञा पु० दे० "दुष्टता"।

दुष्टाचार-सज्ञा पु० बुरा आचरण। कुचाल। कुकर्म।

दुष्टात्मा-वि० जिसका अतःकरण बुरा हो। खोटी प्रकृति का। कुटिल। बदमाश।

दुष्ट। नीच।

दुष्प्रवृत्ति-सज्ञा स्त्री० बुरी प्रवृत्ति। बुरे कार्य करने की इच्छा।

वि० बुरी या दुष्ट प्रवृत्तिवाला। बद।

दुष्प्राप्य-वि० जो सहज में न मिल सके। जिसका मिलना कठिन हो।

दुष्प्रत-सज्ञा पु० दे० "दुष्प्रत"।

दुष्प्रत-सज्ञा पु० एक चन्द्रवशी राजा, जिन्होंने कण्व मुनि के आश्रम में शकुतला के साथ गार्हपत्य विवाह किया था। उन्हीं के संयोग से शकुतला के गर्भ से भरव-नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था, जिसके नाम पर यह देश भारत कहलाया।

दुसराना\*-क्रि० सं० दे० "दोहराना"।

दुसरिहा\*†-वि० १ साथी। सगी। २ प्रति-द्वंद्वी।

दुसह\*-वि० असह। जो सहा न जा सके। कठिन।

दुसही†-वि० १ जो कठिनता से सह सके। २ ईर्ष्यालु।

दुसाखा-सज्ञा पु० एक प्रकार का शमादान।

दुसाथ-सज्ञा पु० हिंदुओं की एक नीच जाति।

दुसार-सज्ञा पु० आर पार किया हुआ छेद।

क्रि० वि० आर पार। एक पार से दूसरे तक।

दुसाल-सज्ञा पु० आर-पार छेद।

दुसासन†-सज्ञा पु० दे० "दुशासन"।

दुसनी-सज्ञा स्त्री० एव प्रकार की मोटी चादर।

दुरोना-सज्ञा पु० बड़ी खाट। पलंग।

दुस्तर-वि० १ जिसे पार करना कठिन हो।

२ चिन्त। कठिन।

दुस्य-वि० दुषी। दुरिद्र।

पुष्पता-मंज्ञा स्त्री० दाहिन्ध। दुर्भाग्य।  
दुसह-वि० दे० "दुःसह"।

दुहना-मंज्ञा पुं० [स्त्री० दुहनी] घेटी या  
बेटा। नाती। दाहिन्ध।

दुहत्या-वि० [स्त्री० दुहत्या] दोनों हाथों  
से लिया हुआ। दो मुठवाला।

दुहना-त्रि० स० १. दाहना। रतन में दूध  
निचोड़कर निकालना। २. धन हर लेना।  
लटना। ३. निचोड़ना। बत्तव या गार  
पीचना।

मुहा०—दुह लेना—गार पीच लेना।

दुहनी-मंज्ञा स्त्री० दूध दुहने का छोटा बरतन।  
दुहरा-वि० दे० 'दोहरा'।

दुहाई-मंज्ञा स्त्री० १. उच्च स्वर से किसी  
बात की गूचना। मुनादो। घोषणा। २.  
शपथ। वसम। सौगंध। ३. रक्षा के लिए  
किसी का नाम लेकर चिल्लाना। ४.  
गाय, भोग आदि को दुहने का काम।  
५. दुहने की मजदूरी।

मुहा०—दुहाई देना=अपने बचाव के लिए  
किसी का नाम लेकर चिल्लाना।

दुहाग-संज्ञा पु० १. दुर्भाग्य। २. रेंडगा।  
बेषव्य।

दुहागिन†-संज्ञा स्त्री० मुहागिन का उलटा।  
विपवा।

दुहागिल-वि० अभागा। अनाथ। अवेला।

दुहागी†-वि० [स्त्री० दुहागिन] अभागा।  
बदकिस्मत।

दुहाज-वि० जो पहली स्त्री के मर जाने पर  
दूसरा विवाह करे।

दुहाना-त्रि० स० दुहने का काम दूसरे से  
कराना।

दुहावनी-संज्ञा स्त्री० दूध दुहने की मजदूरी।  
दुहाई।

दुहिता-संज्ञा स्त्री० कन्या। लडकी।

दुहि†-संज्ञा पु० ब्रह्मा।

दुहला-वि० [स्त्री० दुहली] १. दुःखदायी।  
दुःमाध्य। बलिन। २. दुखी।

संज्ञा पु० विकट या दुःखदायक कार्य।

दुहोतरा†-वि० दो अधिक। दो ऊपर।

संज्ञा पु० नाती।

दुह्य-वि० [स्त्री० दुह्या] दुहने योग्य।  
दूज†-मंज्ञा स्त्री० दे० "दूज"।

दूक†-वि० दो-गक। कुछ।

दूकान-मंज्ञा पुं० दे० "दुकान"।

दूकानदार-मंज्ञा पुं० दे० "दुकानदार"।

दूकाना†-क्रि० स० दोष लगाना। ऐव  
लगाना।

दूक-मंज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की दूसरी विधि।  
दुश्ज। द्वितीया।

मुहा०—दूक का चांद होना=घट्टा दिनों  
पर दिगाई पड़ना। बम दर्शन देना।

दूजा†-वि० दूगग।

दून-मंज्ञा पुं० [स्त्री० दूनी] १. वह जो  
किसी विशेष कार्य के लिए वही भेजा  
जाय। चर। बगीठा। २. किसी ममाचार  
को पहुँचानेवाला मनुष्य। एक दूसरे तक  
संदेश पहुँचानेवाला।

दूतकर्म-मंज्ञा पुं० संदेश पहुँचाने का कार्य।  
खबर पहुँचाना। दूत का काम। दूतत्व।  
दूतत्व-संज्ञा पुं० दे० "दूतकर्म"। दूत का  
काम। दूतवा।

दूतमंडल-मंज्ञा पुं० किसी काम के लिए  
भेजे हुए दूतों (प्रतिनिधियों) का समूह।

दूतर†-वि० दे० "दुस्तर"।

दूतावास-संज्ञा पुं० दूसरे देश के राजदूत  
या प्रतिनिधि का कार्यालय तथा रहने  
का स्थान आदि।

दूतिका, दूती-संज्ञा स्त्री० प्रेमी और प्रेमिका  
का संदेश एक-दूसरे तक पहुँचानेवाली  
स्त्री। कुटनी। सारिका।

दूनी-संज्ञा स्त्री० दे० "दूतिका"।

दूत्य-संज्ञा पुं० दे० "दौत्य"।

दूध-संज्ञा पुं० १. स्तन से निकलनेवाला  
सफेद रंग का तरल पदार्थ। पय। दुग्ध।  
धीर। गोरय। २. अनाज के हरे  
बीजों का रस।

मुहा०—दूध उतरना=छातियों में दूध भर  
जाना। दूध का दूध और पानी का पानी  
करना=ऐसा न्याय करना जिसमें किसी  
पक्ष के साथ तनिक भी अन्याय न हो।  
दूध की सबखी की तरह निकालना या

निकालकर फेंक देना=विसी मनुष्य को बिलकुल तुच्छ समझकर अपने साथ से एकदम अलग कर देना। दूध के दाँव न टूटना=बभी एक बचपन रहना। दूधों नहाओ, पूतों फलो=धन और सत्ता की वृद्धि हो (आशीर्वाद)। (स्तनों में) दूध भर आना=बच्चे की समता या स्नेह के कारण माता के स्तनों में दूध उत्तर आना।

दूधपिलाई=सजा स्त्री० १. दूध पिलानेवाली दाई। २. ब्याह की एक रस्म जिसमें बारात के समय माता घर को दूध पिलाने की-सी मुद्रा करती है।

दूध-पूत=सजा पु० धन और सन्तान।

दूध-फेनी=सजा स्त्री० दे० "फेनी"।

दूधभाई=सजा पु० [सजा स्त्री० दूध-बहन] ऐसे बालक जो एक ही स्त्री का दूध पीकर पले हो, लेकिन दूसरे भाता-पिता से उत्पन्न हो।

दूधमुँहा=वि० जो माता का दूध पीता हो। छोटा बच्चा।

दूधधारी=वि० केवल दूध के आकार पर जीनेवाला। दुग्धाहारी। केवल दूध का आहार करनेवाला।

दूधभाती=सजा स्त्री० दूध और भात। विवाह की एक रीति।

दूधमुँहा=वि० छोटा बच्चा। बालक। दूध-मुँहा।

दूधिया=वि० १ दूध के रंग का। सफेद। २ जिसमें दूध मिला हो अथवा जो दूध से बना हो।

सजा पु० १. एक प्रकार का सफेद और चमकीला पत्थर या रत्न। २ एक प्रकार का सफेद पत्थर जिसकी प्यालियाँ आदि बनती हैं। ३. एक प्रकार का पीवा जिसका रस दूध के समान होता है। ४. दूध में छानी हुई भाँग।

दूधो=वि० दूध का। दुधला।

सजा पु० १. माँड़ी। २. दुधिया पीवा।

दूध=सजा स्त्री० १. दुग्धे का भाव। २ जिसका समय लगाकर गाता या बजाता आरम्भ

किया जाय, उसके आधे समय में गाता या बजाता।

सजा पु० तराई। घाटी।

मुँहा=दूध की लेना या हाँकना=बहुत बड़-बड़कर बातें करना। डींग मारना।

दूधर+\*+वि० जो लज्जर दोहरा हो गया हो।

दूध+वि० दुग्ध। दोहरा। दो बार उतना ही। द्विगुण।

दूधो+\*+वि० दे० "दोनों"।

दूध=सजा स्त्री० एक प्रसिद्ध घास। यह तीन प्रकार की होती है; हरी, सफेद और गाँडर। वि० दे० "गाँडर"।

दूधदू=वि० वि० आमने-सामने। मुकाबले में।

दूधर या दूधरा+\*+वि० दे० "दुबला"।

निबल। कमजोर। दुबला-मटला।

दूधिया=वि० एक प्रकार का हरा रंग।

दूधे=सजा पु० दुग्धे। द्विवेदी। (ब्राह्मणों की एक शाखा)

दूधर=वि० कठिन। मुश्किल।

दूधना+\*+वि० अ० हिलना।

दूरदेश=वि० [फा०][सजा दूरदेशी] दूर तक की बात विचारनेवाला। दूरदर्शी। अग्रसोची।

दूरदेशी=सजा स्त्री० दूरदर्शिता। दूर तक की बात सोचना।

दूर=वि० वि० देश, काल या स्वभाव आदि के विचार से बहुत अंतर पर। बहुत फासले पर। पास या निकट का उलटा।

वि० जो दूर या फासले पर हो।

मुँहा=दूर करना=१ जुदा करना।

अलग करना। २ न रहने देना। मिटाना।

दूर भागना या रहना=बहुत बचना। पास न जाना। दूर होना=१ हट जाना। अलग हो जाना। २ मिट जाना। नष्ट होना।

दूर की बात=१. बारीक बात। २. कठिन बात।

दूरगामी=वि० दूर तक चलनेवाला।

दूरता=सजा स्त्री० दे० "दूरत्व"।

दूरत्व=सजा पु० दूर होने का भाव। अंतर।

दूरी। फासला।

दूरदर्शन-वि० दूर तय देखनेवाला।  
 राजा पु० पंडित।  
 दूरवाराज-वि० [पा०] बहुत दूर।  
 दूरदर्शन यत्र-सज्ञा पु० दूरबीन।  
 दूरदर्शिता-सज्ञा स्त्री० दूर की बात सोचने  
 का गुण। विवेक। दूरदर्शी।  
 दूरदर्शी-वि० बहुत दूर तक देखनेवाला।  
 बहुत दूर तक की बात सोचनेवाला।  
 अग्रशीली। दूरदेश।  
 दूरवस्त-वि० [फा०] पहुँच के बाहर। हाथ  
 की पहुँच से दूर।  
 दूरदृष्टि-सज्ञा स्त्री० दूरदर्शिता। दूरदर्शी।  
 दूरबीन-सज्ञा स्त्री० [फा०] दूर की वस्तुओं  
 को देखने का एक यंत्र, जिससे वे स्पष्ट और  
 बड़ी दिखाई देती हैं। दूरबीक्षण यंत्र।  
 दूरवर्ती-वि० दूर का। जो दूर हो।  
 दूरबीक्षण-सज्ञा पु० दे० "दूरबीन"।  
 दूरबीक्षण यंत्र-सज्ञा पु० दे० "दूरबीन"।  
 दूरस्थ-वि० दूर का। दूर पर स्थित।  
 दूरागत-वि० दूर से आया हुआ।  
 दूरी-सज्ञा स्त्री० दो वस्तुओं के मध्य का  
 स्थान। दूरत्व। अंतर। फासला।  
 दूरीकृत-वि० दूर किया हुआ।  
 दूर्वा-सज्ञा स्त्री० घूँस नाम की घास।  
 दूर्वाष्टमी-सज्ञा स्त्री० भादो शुक्ल पक्ष की  
 अष्टमी।  
 दूरह-सज्ञा पु० दुलहा। वर। नौशा। पति।  
 स्वामी।  
 दूरहा-सज्ञा पु० दे० 'दूरह'।  
 दूरय-सज्ञा पु० तम्बू।  
 दूरक-सज्ञा पु० १ दीप लगानेवाला। निंदा  
 करनेवाला। २ दीप उत्पन्न करनेवाला  
 पदार्थ।  
 दूरण-सज्ञा पु० १ अवगुण। दीप। ऐब।  
 कुराई। २ दीप लगाने की प्रिया  
 या भाव। एव लगाना। ३ राखण का भाई,  
 एव राक्षस।  
 दूरणीय-वि० दीप लगाने योग्य। जिगम  
 ऐव लगाया जा सके।  
 दूरना\*†-वि० स० दीप लगाना। मउवित  
 करना।

दूषित-वि० दीपयुक्त।  
 दूष्य-वि० १ दीप लगाने योग्य। २ निंद-  
 नीय। निंदा करने योग्य। ३ तुच्छ।  
 दूरना†-वि० स० दे० "दूरना"।  
 दूरर\*†-वि० दे० "दूररा"।  
 दूररा-वि० १ पहले के बाद का। द्वितीय।  
 जो क्रम में दो के स्थान पर हो। २ जिसका  
 प्रस्तुत विषय या व्यक्ति से संबंध न हो।  
 अन्य। अपर।  
 दूरना-वि० स० दे० "दूरना"।  
 दूरना\*†-सज्ञा पु० दे० "दोहा"।  
 दूर-सज्ञा पु० छिद्र। छेद।  
 दूरक्षप-सज्ञा पु० देखना। अवलोकन। दृष्टि-  
 पात।  
 दूरक्ष-सज्ञा पु० दृष्टि का मार्ग। दृष्टि की  
 पहुँच।  
 दूरपात-सज्ञा पु० दृष्टिपात। अवलोकन।  
 दूरक्षान्ति-सज्ञा स्त्री० १ प्रकाशरूप।  
 चेतन्य। २ आत्मा।  
 दूरचल-सज्ञा पु० पलक।  
 दूरव-सज्ञा पु० आँसू। आँखों से निकलने-  
 वाला जल।  
 दूर\*-सज्ञा पु० १ आँख। २ देखने की  
 शक्ति। दृष्टि। ३ दो की सहाय।  
 मूहा-—दूर डालना या देना=देखना।  
 दूरगोचर-वि० जो आँख से दिखाई दे।  
 दूरमिवाव-सज्ञा पु० आँख मिर्चानी का खेल।  
 दूर-वि० १ पुष्ट। मजबूत। बड़ा। ठोस।  
 २ बलवान्। बलिष्ठ। हृष्ट-मुष्ट। ३  
 जो जल्दी नष्ट या विचलित न हो। स्थायी।  
 ४ निश्चित। ध्रुव। पक्का। ५ निश्चर।  
 ठीठ। बड़े दिल का।  
 दूरकर्मा-वि० अपने काम में दूर रहनेवाला।  
 दूरचेता-वि० पक्के विचारवाला।  
 दूरता-सज्ञा स्त्री० १ दूर होने का भाव।  
 दूरत्व। २ मजबूती। ३ स्थिरता।  
 दूरत्व-सज्ञा पु० दूरता।  
 दूरप्रतिज्ञ-वि० जो अपनी प्रतिज्ञा से न टले।  
 दूरवत-वि० जो अपने मकल या नादे पर  
 स्थिर हो।  
 दूरग-वि० जिससे अग दूर हो। हृष्ट-मुष्ट।

दृढ़ाई\*—सज्ञा स्त्री० दे० “दृढता”।  
मजबूती।  
दृढ़ाना—क्रि० सं० दृढ़ बनाना। पक्का या  
मजबूत करना।  
त्रि० अ० १ मजबूत होना। २ स्थिर  
या पक्का होना।  
दृढ़—वि० सम्मानित।  
दृष्टि—सज्ञा पु० खाल।  
दृष्ट—वि० १ जलता हुआ। प्रज्वलित।  
तेजयुक्त। २ अभिमानी। उग्र। घमडी।  
दृश—सज्ञा पु० [वि० दृश्य] १ देखना।  
दर्शन। २ दिखानेवाला। प्रदर्शन। ३  
देखनेवाला।  
सज्ञा स्त्री० १ दृष्टि। २ आँख। ३ दो  
की सख्या। ४ ज्ञान।  
दृशद्वती—सज्ञा स्त्री० दे० “दृपद्वती”।  
दृशा—सज्ञा स्त्री० आँख।  
दृशि—सज्ञा स्त्री० प्रकाश। शास्त्र। चतन  
पुरुष। दृष्टि।  
दृश्य—वि० १ जिसे देख सक। दृगोचर।  
२ जो देखने योग्य हो। दर्शनीय। ३  
मनोरम। सुन्दर। ४ जानने योग्य। ज्ञेय।  
सज्ञा पु० १ आँखों के सामने की वस्तु।  
देखने की वस्तु। २ उभाशा। ३ वह काव्य  
जो अभिनय-द्वारा दर्शकों को दिखाया  
जाय। नाटक। ४ गणित में ज्ञात या दी  
हुई सख्या।  
दृश्यमान—वि० १ जो दिखाई दे रहा हो।  
२ चमकीला। ३ सुन्दर।  
दृष्टद्वती—सज्ञा स्त्री० एक नदी जिसका  
नाम ऋग्वेद में आया है। इसे आजकल  
यम्बर और राखी कहते हैं।  
दृष्ट—वि० १ देखा हुआ। २ जाना हुआ।  
ज्ञात। प्रकट। ३ प्रत्यक्ष।  
सज्ञा पु० १ दर्शन। २ साक्षात्कार। ३  
प्रत्यक्ष प्रमाण।  
दृष्टकूट—सज्ञा पु० १ पहली। २ वह कविता,  
जिसका अथ शब्दा के वाच्याय से न समझा  
जा सके, बल्कि प्रसंग या रुढ़ अर्थों से  
जाना जाए।  
दृष्टमान\*—वि० व्यक्त। प्रकट।

दृष्टवाद—सज्ञा पु० वह दार्शनिक सिद्धांत,  
जो केवल प्रत्यक्ष ही को मानता है।  
दृष्टभ्य—वि० देखने योग्य।  
दृष्टात—सज्ञा पु० १ उदाहरण। उपमा।  
मिसाल। २ शास्त्र। ३ एक अर्थालंकार,  
जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके  
साधारण धर्म या वर्णन और दूसरी ओर  
बिब-प्रतिबिब-भाव से उपमान और उसके  
साधारण धर्म का वर्णन होता है।  
दृष्टार्थ—सज्ञा पु० १ वह शब्द, जिसका अर्थ  
स्पष्ट हो। २ वह शब्द, जिसके श्रवण से  
श्रोता को किसी ऐसे अर्थ का बोध हो,  
जिसका प्रत्यक्ष इस संसार में होता हो।  
दृष्टि—सज्ञा स्त्री० १ देखने की शक्ति।  
आँख की ज्योति। २ आँख की सीप में  
होने की स्थिति। नजर। निगाह। ३ देखने  
के लिए खुली हुई आँख। ४ परत। पहचान।  
५ वृषादृष्टि। हिव का ध्यान। मिहिरबानी  
की नजर। ६ ध्यान। विचार। अनुमान।  
७ उद्देश्य।  
मुहा०—(किसी से) दृष्टि जुड़ना=देखा-  
देखी होना। साक्षात्कार होना। (किसी से)  
दृष्टि जोड़ना=आँख मिलाना। साक्षात्कार  
करना। दृष्टि मिलाना=दे० “दृष्टि  
जोड़ना”। दृष्टि रखना=देख-रेख में रखना।  
दृष्टिकोण—सज्ञा पु० किसी चीज को देखने  
या सोचने का कोण या तरीका। मत।  
विचार।  
दृष्टिगत—वि० जो दिखाई पड़ता हो।  
दृष्टिगोचर—वि० जो दिखाई पड़े। जो देखने  
में आ सके।  
दृष्टिपथ—सज्ञा पु० दृष्टि का फैलाव। नजर  
की पहुँच।  
दृष्टिपात—सज्ञा पु० दृष्टि डालने की क्रिया  
या भाव। ठाकना। देखना।  
दृष्टिपथ—सज्ञा पु० १ दीठबदी। इद्रजाल।  
जाल। २ हाथ की सफाई या चालाकी।  
हठ-लाभ।  
दृष्टिरोध—सज्ञा पु० नजर की रोक। आड़।  
ओट।  
दृष्टिबत—वि० १ दृष्टिवाला। २ ज्ञानी।

दृष्टिवाद—सज्ञा पु० वह मिटाव, जिममें दृष्टि या प्रत्यक्ष प्रमाण ही की प्रधानता हो।  
देई—सज्ञा स्त्री० १. देवी। २. स्त्रियों के लिए एक आदर-गून्चक शब्द।

देख—सज्ञा स्त्री० देखने की क्रिया या भाव।  
जैसे, देख-रेख, देख-भाल।

देखन\*†—सज्ञा स्त्री० देखने की क्रिया, भाव या ढंग।

देखनहारा\*†—सज्ञा पु० [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

देखना—क्रि० स० १. किसी वस्तु के अस्तित्व या उसके रूप-रंग आदि का ज्ञान नेत्रों द्वारा प्राप्त करना। अवलोकन करना।  
२. जाँच करना। ३. ढूँढ़ना। खोजना। तलाश करना। पता लगाना। ४. परीक्षा करना। आजमाना। परखना। ५. निगरानी रखना। ताकते रहना। ६. समझना। सोचना। विचारना। ७. अनुभव करना। भोगना। ८. पठना। वाँचना। ९. गुप्त-दोष का पता लगाना। परीक्षा करना। जाँच करना। १०. ठीक करना।

मुहा०—देखना-सुनना=जानकारी प्राप्त करना। पता लगाना। देखने में=१ बाह्य लक्षणों के अनुसार। साधारण व्यवहार में। २. रूप-रंग में। देखते-देखते=१. आँखों के सामने। २. तुरन्त। फौरन। चटपट। देखते रह जाना=हक्का-बक्का रह जाना। चकित हो जाना। देखा जायगा=१ फिर विचार किया जायगा। २. जो कुछ करना होगा, पीछे निया जायगा।

देख-भाल—सज्ञा स्त्री० १. निरीक्षण। जाँच-पड़ताल। निगरानी। २. देना-देखो। साक्षात्कार।

देखराना\*†—क्रि० स० दे० “दिखलाना”।  
देखरावना\*†—क्रि० स० दे० “दिखलाना”।  
देख-रेख—सज्ञा स्त्री० देख-भाल। निरीक्षण। निगरानी।

देखाऊ—वि० १. जो केवल देखने में सुन्दर हो, काम का न हो। झूठी तडक-भडक-वाला। २. जो ऊपर से दिवाने के लिए हो। वास्तविक न हो। बनावटी।

देखा-देखी—सज्ञा स्त्री० आँखों से देखने की दशा या भाव। साक्षात्कार। दर्शन।  
क्रि० वि० दूसरों को करने देखकर। दूसरों के अनुकरण पर।

देखाना\*†—क्रि० म० दे० “दिखाना”।  
देखाभाली—सज्ञा स्त्री० दे० “देखभाल”।  
देखाव—सज्ञा पु० १. दृष्टि की मीमा। तजर की पहुँच। २. ठाट-बाट। तडक-भडक।  
देखावट—सज्ञा स्त्री० १. रूप-रंग दिवाने की क्रिया या भाव। बनाव। २. ठाट-बाट। तडक-भडक।

देखावना—क्रि० स० दे० “दिखाना”।  
देग—सज्ञा पु० [फा०] खाना पकाने का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन। ताँबिया।  
देगचा—सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० देगची] छोटा देग।

देदीप्यमान—वि० अत्यन्त प्रकाश-युक्त। चमकता दमकता हुआ।

देन—सज्ञा स्त्री० १. देने की क्रिया या भाव। दान। २. दी हुई चीज। प्रदत्त वस्तु।  
देनशर—सज्ञा पु० शृणो। कर्जदार।  
देन-लेन—सज्ञा पु० लेने और देने का व्यवहार। देना और लेना।

देनहारा\*†—वि० देनेवाला।  
देना—क्रि० स० १. अपने अधिकार से दूसरे के अधिकार में करना। प्रदान करना। २. सौंपना। हवाले करना। ३. हाथ पर या पास रखना। थमाना। ४. रखना, लगाना या डालना। ५. मारना। प्रहार करना। ६. अनुभव कराना। भोगाना। ७. उत्पन्न करना। निकालना। ८. बढ़ करना। ९. भिड़ाना। (इस क्रिया का प्रयोग बहुवचसी सकर्मक क्रियाओं के साथ मपोजक क्रिया के रूप में होता है—जैसे गिरा देना, कर देना)  
सज्ञा पु० उपहार लिया हुआ रकबा। कर्ज।

देमान\*†—सज्ञा पु० दे० “दीवान”।  
देय—वि० देने योग्य। दातव्य।  
देयासी\*†—वि० झाड़ू-फूँक करनेवाला। ओछा।  
देर—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. निष्प्रिय या

आवश्यक से अधिक समय। अतिवाला।  
 बिलब। २ समय। वस्त।  
 बेरी—सज्ञा स्त्री० दे० 'देर'।  
 देव—सज्ञा पु० [स्त्री० देवी] १ देवता। सुर।  
 २ पूज्य व्यक्ति। ३ यडा के लिए एक  
 बादर-सूचक शब्द।  
 सज्ञा पु० [फा०] दैत्य। राक्षस।  
 देवदण्ड—सज्ञा पु० देवताओं के लिए कर्तव्य,  
 यज्ञादि।  
 देवदण्डि—सज्ञा पु० देवताओं के लोक में  
 रहनेवाले नारद, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज  
 पुलस्त्य आदि ऋषि।  
 देवकन्या—सज्ञा स्त्री० देवता की पुत्री। देवी।  
 देवकार्य—सज्ञा पु० देवताओं को प्रसन्न करने  
 के लिए किया हुआ कर्म। होम, पूजा आदि।  
 देवकी—सज्ञा स्त्री० वसुदेव की स्त्री और  
 श्रीकृष्ण की माता का नाम।  
 देवकीनन्दन—सज्ञा पु० श्रीकृष्ण। देवकी के  
 पुत्र।  
 देवकुसुम—सज्ञा पु० लवगलता। लवग।  
 देवगज—सज्ञा पु० ऐरावत। इन्द्र का हाथी।  
 देवगण—सज्ञा पु० देवताओं के अलग अलग  
 समूह। देवताओं का वर्ग।  
 देवगति—सज्ञा स्त्री० मरने के उपरांत उत्तम  
 गति। स्वर्गलाभ।  
 देवगायक—सज्ञा पु० गन्धर्व। देवयोनि विशेष।  
 देवगिरा—सज्ञा स्त्री० देवघाणी। सस्कृत।  
 देवगिरि—सज्ञा पु० १ देवदत्त पर्वत जो  
 गुजरात में है। गिरनार। २ दक्षिण  
 का एक प्राचीन नगर, जो आजबल बोलता  
 बाद कहलाता है।  
 देवगुरु—सज्ञा पु० देवताओं के गुरु। बृहस्पति।  
 कश्यप।  
 देवगृह—सज्ञा पु० मन्दिर।  
 देवज—वि० देवता से उत्पन्न।  
 देवठ—सज्ञा पु० कारीगर।  
 देवठान—सज्ञा पु० देवोत्थान। नास्तिक शुकल  
 एकादशी। दस दिन विष्णु भगवान् सोकर  
 उठते हैं। दिठवन।  
 देवतर—सज्ञा पु० कल्पवृक्ष। देवताओं का  
 पेंड। मन्दार वृक्ष। पारिजात।

देवतपण—सज्ञा पु० ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं  
 के नाम ले-लेकर पानी देना।  
 देवता—सज्ञा पु० स्वर्ग में रहनेवाला अमर  
 प्राणी। सुर। अमर।  
 देवप्र—सज्ञा पु० देवत्व। देवता को अर्पित  
 धन आदि।  
 देवत्व—सज्ञा पु० देवता होने का भाव या धर्म।  
 देवदत्त—वि० १ देवता का दिया हुआ। २  
 देवता के निमित्त किया हुआ।  
 सज्ञा पु० १ देवता के निमित्त दान की हुई  
 संपत्ति। २ शरीर की नाव वायुओं में से  
 एक, जिससे जेम्माई आती है। ३ अर्जुन  
 के दास का नाम।  
 देवदार—सज्ञा पु० देवदारु। एक बहुत ऊँचा  
 और सीधा पेंड, जिससे एक प्रकार का  
 अलवतरा और तारपीन की तरह का तेल  
 भी निकलता है।  
 देवदारु—सज्ञा पु० दे० 'देवदार'।  
 देवदाली—सज्ञा स्त्री० एक लता, जो देखने  
 में तुरई की बेल से मिलती-जुलती होती  
 है। घघर बेल। बदाल।  
 देवदासी—सज्ञा स्त्री० १ मदिरो में रहनेवाली  
 दासी या नर्तकी। २ वेश्या।  
 देवदीप—सज्ञा पु० १ आँख। नेत्र। २ किसी  
 देवता के निमित्त जलाया जानेवाला दीपक।  
 देवदूत—सज्ञा पु० अग्नि। आग।  
 देवदूत—सज्ञा स्त्री० स्वर्ग की अप्सरा।  
 देवदेव—सज्ञा पु० १ देवताओं के देवता।  
 इन्द्र। २ ब्रह्मा। ३ महादेव।  
 देवद्वेष्टा—सज्ञा पु० देवशत्रु। नास्तिक।  
 पाशडी। असुर। दानव। दैत्य।  
 देवपुनि—सज्ञा स्त्री० गंगा नदी।  
 देवन—सज्ञा पु० १ चौसर। २ गति। ३  
 जुआ। ४ कमल। ५ परिवेदना। ६ कीड़ा।  
 ७ व्यवहार। ८ शोक। ९ स्तुति।  
 देवनदी—सज्ञा स्त्री० गंगा।  
 देवना—सज्ञा पु० खल।  
 देवनागरी—सज्ञा स्त्री० भारत की प्रधान  
 लिपि, जिसमें सस्कृत तथा हिंदी मराठी  
 आदि देशी भाषाएँ लिखी जाती हैं। यह  
 प्राचीन ब्राह्मी लिपि का विकसित रूप है।

देवपय—सज्ञा पु० आवाश। छायापय।  
 देवपुरी—सज्ञा स्त्री० इन्द्र की नगरी।  
 अमरावती।

देवभ्राह्मण—सज्ञा पु० पुजारी। पडा।  
 देवभाषा—सज्ञा स्त्री० संस्कृत-भाषा।  
 देवभूमि—सज्ञा स्त्री० स्वर्ग।  
 देवमंदिर—सज्ञा पु० वह घर, जिसमें किसी  
 देवता की मूर्ति स्थापित हो। देवालय।  
 देवमणि—सज्ञा पु० सूर्य।  
 देवमाता—सज्ञा स्त्री० १ अदिति। २  
 दाक्षायणी। ३ कश्यप की स्त्री।  
 देवमाया—सज्ञा स्त्री० परमेश्वर की माया,  
 जो अविद्या रूप होकर जीवों को बंधन में  
 डालती है। देवताओं की माया।  
 देवमास—सज्ञा पु० १ गर्भ का आठवाँ महीना।  
 २ देवों का महीना, जो मनुष्य के तीस  
 वर्ष के बराबर होता है।

• देवमुनि—सज्ञा पु० नारद ऋषि।  
 देवयजनी—सज्ञा पु० पृथ्वी।  
 देवयज्ञ—सज्ञा पु० होमादि कर्म, जो पचयज्ञों  
 में से एक है।  
 देवयान—सज्ञा पु० उपनिषदों के अनुसार  
 शरीर से अलग होने के उपरांत जीवात्मा  
 के जाने के लिए दो मार्गों में से वह मार्ग  
 जिससे वह ब्रह्मलोक को जाता है।  
 देवयानी—सज्ञा स्त्री० शुक्राचार्य की बन्धा,  
 जो पहले अपने पिता के शिष्य कच पर  
 आसक्त हुई और बाद में जिसने राजा  
 ययाति के साथ विवाह किया।  
 देवयुग—सज्ञा पु० सतयुग।  
 देवयोगि—सज्ञा स्त्री० देवताओं के अतर्गत  
 माने जानेवाले जीवों की सृष्टि। जैसे—  
 अम्बरा यक्ष, पिशाच आदि।  
 देवर—सज्ञा पु० [स्त्री० देवरानी] १ पति  
 का छोटा भाई। २ पति का भाई।  
 देवदय—सज्ञा पु० विमान।  
 देवरा—सज्ञा पु० [स्त्री० देवरी] छोटा-  
 मोटा देवता।  
 देवराज—सज्ञा पु० इन्द्र। देवताओं के राजा  
 या स्वामी।  
 देवराज्य—सज्ञा पु० स्वर्ग।

देवरानी—सज्ञा स्त्री० १. देवर की स्त्री।  
 पति के छोटे भाई की स्त्री। २ देवराज  
 इन्द्र की पत्नी, शची। इन्द्राणी।  
 देवराय—सज्ञा पु० दे० "देवराज"।  
 देवर्षि—सज्ञा पु० नारद, अत्रि, मरीचि, भृगु-  
 द्वाज, पुलस्त्य, भृगु इत्यादि देवताओं  
 के ऋषि माने जाते हैं।  
 देवल—सज्ञा पु० १ देवता की पूजा से जीविका  
 चलानेवाला। पुजारी। पडा। २. धार्मिक  
 पुरुष। ३ देवर। ४ नारद मुनि। ५ एक  
 प्रकार का चावल। ६ देवालय। देवमंदिर।  
 ७ एक महर्षि जो असित मुनि के पुत्र और  
 व्यासदेव के शिष्य थे। रम्भा इन पर  
 आसक्त हुई। पर इन्होंने उसका तिरस्कार  
 किया, जिससे चिढ़कर उसने इन्हें कुरूप  
 होने का शाप दे दिया। शाप से देवल  
 अष्टादक हो गये।  
 देवलोच—सज्ञा पु० स्वर्ग।  
 देववधू—सज्ञा स्त्री० १ देवता की स्त्री।  
 २ देवी। ३ अम्बरा।  
 देववाणी—सज्ञा स्त्री० १ संस्कृत-भाषा।  
 २ आपराधवाणी।  
 देववाहन—सज्ञा पु० आग।  
 देवव्रत—सज्ञा पु० १ भीष्म पितृव्रत। २ एक  
 सामगान।  
 देवशत्रु—सज्ञा पु० राक्षस।  
 देवशूत—सज्ञा पु० ईश्वर।  
 देवसरि—सज्ञा स्त्री० गंगा।  
 देवसुनी—सज्ञा स्त्री० देवलोक की कुतिया,  
 सरमा। विशेष—दे० "सरमा"।  
 देवसभा—सज्ञा स्त्री० १ देवताओं का समाज।  
 २ राजसभा। ३ मुघम्मद नामक सभा,  
 जिसे मय ने युधिष्ठिर के लिए  
 बनाया था।  
 देवसेना—सज्ञा स्त्री० १ देवताओं की सेना।  
 २ प्रजापति की बन्धा, जो सावित्री के  
 गर्भ से उत्पन्न हुई थी। पृथ्वी।  
 देवस्थान—सज्ञा पु० १ देवताओं के रहने की  
 जगह। २ देवालय। मंदिर। ३ एक ऋषि।  
 देवभूति—सज्ञा स्त्री० स्वायम्भुव मनु की  
 तीन बन्धाओं में से एक, जो कर्दम मुनि

को ब्याही थी। सायुषशास्त्र के कर्ता कपिल की माता।

देवांगना—सज्ञा स्त्री० १. देवताओं की स्त्री। स्वर्ग की स्त्री। २. अप्सरा।

देवा—वि० १. देनेवाला। जैसे—पानी-देवा। २. देनेदार। ऋणी। कर्जदार। सज्ञा स्त्री० पटसन। जूट।

देवान—सज्ञा पु० १. दरबार। बचहरी। राजसभा। २. अमात्य। मंत्री। वजीर। ३. प्रबन्ध-कर्त्ता।

देवाना-प्रिय—सज्ञा पु० १. देवताओं को प्रिय। २. बकरा। ३. मूख।

देवापि—सज्ञा पु० एक राजा, जो ऋष्टिपेण के पुन और शातनु के बड़े भाई थे।

देवामृतन—सज्ञा पु० स्वर्ग। देवताओं के रहने का स्थान।

देवार्पण—सज्ञा पु० देवता के निमित्त किसी वस्तु का दान।

देवाल—वि० देनेवाला। दाता।

देवाल्य—सज्ञा पु० १. स्वर्ग। २. वह घर, जिसमें किसी देवता की मूर्ति रखी जाय। मंदिर।

देवी—सज्ञा स्त्री० १. देवता की स्त्री। देव-पत्नी। २. आदि-शक्ति दुर्गा। ३. पटरानी। राजा की स्त्री। ४. ब्राह्मण स्त्रियों की एक उपाधि। ५. सुशीला और सदाचारिणी स्त्री। ६. महिलाओं को पुकारने का शब्द।

देवीपुराण—सज्ञा पु० एक उपपुराण जिसमें देवी का माहात्म्य आदि वर्णित है।

देवीभागवत—सज्ञा पु० एक पुराण, जिसकी गणना बहुत से लोग उपपुराणों में और कुछ लोग पुराणों में करते हैं। श्रीमद्भागवत के समान, इस पुराण में बारह स्कन्ध और १८००० श्लोक हैं। अब इसका निर्णय करना पठित है कि दोनों में कौन पुराण है और कौन उपपुराण।

देवद—सज्ञा पु० इन्द्र।

देवेश—सज्ञा पु० १. देवताओं के स्वामी। इन्द्र। २. शिव। ३. विष्णु। ४. परब्रह्म।

देवया—वि० देनेवाला।

देवोत्तर—सज्ञा पु० देवता को अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति।

देवोत्थान—सज्ञा पु० विष्णु का दोपनाग की शय्या पर से उठना, जो कार्तिक शुक्ल एकादशी को होता है।

देवोद्यान—सज्ञा पु० देवताओं के बगीचे, जो चार हैं—नन्दन, चैत्ररय, वैशाख और सर्वतोभद्र।

देश—सज्ञा पु० १. पृथ्वी का वह विभाग, जिसका कोई अलग नाम हो और जिसके अतर्गत कई प्रांत, नगर आदि हो। जनपद। २. वह भूभाग, जो एक ही राजा या शासक के अधीन अथवा एक शासन-पद्धति के अंतर्गत हो। राष्ट्र। ३. स्थान। जगह। ४. शरीर का कोई भाग। अंग।

देशज—वि० देश में उत्पन्न।

सज्ञा पु० ऐसा शब्द जो संस्कृत या उसका अपभ्रंश न हो, बल्कि किसी प्रदेश में लोगों की बोल-चाल से उत्पन्न हो गया हो।

देशनिकाल—सज्ञा पु० देश से निकाल दिए जाने का बह।

देशभाषा—सज्ञा स्त्री० किसी देश की भाषा।

देशांतर—सज्ञा पु० १. अन्य देश। विदेश। परदेश। २. भूगोल में—भूवो से—होकर उत्तर-दक्षिण गई हुई किसी सर्वमान्य मध्य रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी। कक्षा।

देशाचार—सज्ञा पु० देश की चाल का व्यवहार।

देशाटन—सज्ञा पु० भिन्न-भिन्न देशों की यात्रा। देश-भ्रमण।

देशावर—सज्ञा पु० दूसरा देश। परदेश।

देशावर—वि० १. देश का। देश-संबंधी। २. स्वदेश का। अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।

देशीय—वि० दे० “देशी”।

देश—सज्ञा पु० दे० “देश”।

देशवाल—वि० अपने देश का।

देशावर—सज्ञा पु० अन्य देश। विदेश। परदेश। देशावर।

देशी—वि० दे० “देशी”। अपने देश का।

• देह-मज्ञा स्त्री० [ वि० देही ] १ शरीर।  
 वन। वदन। २ शरीर का कोई अंग।  
 ३ जीवन। जिंदगी।  
 वि० दे० "शरीर"।  
 सज्ञा पु० [ फा० ] गाँव। खेड़ा। मौजा।  
 मुहा०-देह छूटना=जीवन समाप्त होना।  
 मृत्यु होना। देह छोड़ना=मरना। देह  
 धरना=शरीर धारण करना। जन्म लेना।  
 देहपान-सज्ञा पु० [ फा० ] किसान। दे०  
 'दहकान'।  
 देहज-वि० शरीर से उत्पन्न। देह से पैदा।  
 देहत्याग-सज्ञा पु० मृत्यु। मौत।  
 देहद-सज्ञा पु० पारा।  
 देहधारक-सज्ञा पु० १. शरीर धारण करने-  
 वाला। शरीर को रक्षा करनेवाला। २ हाड।  
 देहधारण-सज्ञा पु० १ शरीररक्षा। जीवन-  
 रक्षा। २ जन्म।  
 देहधारी-सज्ञा पु० [ स्त्री० देहधारिणी ]  
 शरीर धारण करनेवाला। शरीरी।  
 देहपात-सज्ञा पु० मृत्यु। मौत।  
 देहयाना-सज्ञा स्त्री० १ मृत्यु। २ शरीर को  
 जीवित रखने के लिए भोजन आदि  
 निर्वाह।  
 देहरा-सज्ञा पु० १ देवालय। देवघर। २.  
 मनुष्य का शरीर। ३ देहरादून नगर।  
 बोलचाल में देहरादून के लिए देहरा का  
 भी प्रयोग होता है।  
 देहरी†\*—सज्ञा स्त्री० दे० "देहली"।  
 देहला-सज्ञा स्त्री० मदिरा।  
 देहली-सज्ञा स्त्री० द्वार की चौखट की वह  
 लकड़ी जो नीचे होती है। दहलीज।  
 देहलीदीपक-सज्ञा पु० १ देहली पर रखा  
 हुआ दीपक जो भीतर बाहर दोनों ओर  
 प्रकाश फैलाता है। २ एक अर्थात्वार,  
 • जिसमें किसी एक मध्यस्थ शब्द का अर्थ  
 दोनों ओर लगाया जावा है।  
 यी०—देहलीदीपक-न्याय=देहली पर रखे  
 हुए दोनों ओर प्रकाश फैलानेवाले दीपक  
 के समान दोनों ओर लगनेवाली बात।  
 देहवत-वि० शरीरवाला। जिसके देह हो।  
 सज्ञा पु० व्यक्ति। प्राणी। शरीरी।

देहवान्-वि० शरीरधारी।  
 देहांत-सज्ञा पु० मृत्यु। मौत।  
 देहान्तर-सज्ञा पु० १. दूसरा शरीर। २  
 जन्मान्तर। ३ मृत्यु।  
 देहात-सज्ञा पु० गाँव। गँवई। ग्राम।  
 देहाती-वि० १ गाँव का। २ गाँव में रहने-  
 वाला। ग्रामीण। ३ गँवार।  
 देहात्मवाद-सज्ञा पु० शरीर को ही आत्मा  
 मानने का सिद्धान्त।  
 देही-सज्ञा पु० आत्मा।  
 देउ††—सज्ञा पु० दे० "देव"।  
 दैत्य-सज्ञा पु० १ असुर। राक्षस। दिति  
 नाम्नी स्त्री से उत्पन्न कश्यप के पुत्र। २  
 असाधारण बल का मनुष्य।  
 दैत्यगृह-सज्ञा पु० शूकाचार्य।  
 दैत्यदेव-सज्ञा पु० वरुण। दैत्यो के देवता।  
 दायु।  
 दैत्यमाता-सज्ञा स्त्री० दिति। कश्यप की  
 स्त्री।  
 दैत्यमेदज-सज्ञा पु० पृथ्वी।  
 दैत्यसेना-सज्ञा स्त्री० प्रजापति की कन्या  
 और देवसेना की भगिनी।  
 दैत्या-सज्ञा स्त्री० १. दैत्य की स्त्री। २  
 मुरी। ३ मदिरा।  
 दैत्याचार्य-सज्ञा पु० शूकाचार्य।  
 दैत्यारि-सज्ञा पु० १ विष्णु। २ इन्द्र। ३  
 दैत्यो के दुश्मन। देवता।  
 दैनदिन-वि० नित्य का। प्रतिदिन-सम्बन्धी।  
 क्रि० वि० १ प्रतिदिन। रोज-रोज।  
 २ दिनों दिन।  
 सज्ञा पु० ब्रह्मा का दैनिक प्रलय विशेष।  
 दैनिकप्रलय-सज्ञा पु० ब्रह्मा का दैनिक  
 प्रलय विशेष। प्रतिदिन का अपक्षय। प्रतिदिन  
 पदार्थों में होनेवाला परिवर्तन या विवृति।  
 दैनिकिनी-सज्ञा स्त्री० प्रतिदिन का कार्य-  
 विवरण या दिनचर्या लिखने की छोटी  
 कापी या पुस्तक। डायरी। दैनिक।  
 दैन-वि० दिन-सम्बन्धी।  
 सज्ञा पु० दीनता।  
 दैनिक-वि० १ प्रतिदिन का। रोज-रोज  
 का। २ जो प्रतिदिन हो। नित्य होनेवाला।

३ जो एक दिन में हो। ४ दिन सबधी।  
 सज्ञा पु० प्रतिदिन प्रकाशित होनेवाला  
 समाचार-पत्र। अखबार।  
 दैनिक पत्र-सज्ञा पु० प्रतिदिन प्रकाशित  
 होनेवाला समाचार पत्र। अखबार।  
 दैनिक वेतन-सज्ञा पु० एक दिन की मजदूरी  
 या तनखाह।  
 दैनिकी-सज्ञा स्त्री० एक दिन का वेतन या  
 मजदूरी। प्रतिदिन का वायविवरण या  
 दिन चर्या लिखने की पुस्तक। डायरी।  
 वि० प्रतिदिन से सम्बन्धित।  
 दैन्य-सज्ञा पु० १ दीनता। निर्धनता।  
 गरीबी। विनीत भाव। २ वाक्य का एक  
 संचारी भाव, जिसमें दुःख आदि से चित्त  
 अति नम्र हो जाता है। कातरता।  
 दैया\*†-सज्ञा पु० दर्ई। देव।  
 अव्य० आश्चर्य, भय या दुःखसूचक शब्द,  
 जिसे स्त्रियाँ बोलती हैं। हे दर्ई! हे पर-  
 मेश्वर।  
 मुहा०-दैयत कै=दर्ई दर्ई करके। किसी  
 प्रकार। कठिन्ता से।  
 दैयागति†-सज्ञा स्त्री० दैवगति।  
 दैर्घ्य-सज्ञा पु० दीर्घता। लंबाई।  
 दैव-वि० [स्त्री० दैवी] १ दैवता-सबधी।  
 २ देवता के द्वारा होनेवाला।  
 सज्ञा पु० १ प्रारब्ध। भाग्य। २ होनेवाली  
 बात। होनी। ३ विधाता। ईश्वर। ४  
 आकाश। आसमान।  
 मुहा०-दैव बरसना=पानी बरसना।  
 दैवगत-सज्ञा स्त्री० १ ईश्वरीय बात।  
 दैवी घटना। २ भाग्य। प्रारब्ध।  
 दैवज्ञ-सज्ञा पु० ज्योतिषी। गणक।  
 दैवतत्र-वि० भाग्याधीन।  
 दैवत-वि० देवता सबधी।  
 सज्ञा पु० १ देवता की प्रतिमा आदि।  
 २ देवता।  
 दैवदुष्प्रियाक-सज्ञा पु० दुर्भाग्य। भाग्य की  
 खोटाई। दैवदुष्टता।  
 दैवयोग-सज्ञा पु० संयोग। इत्तिफाक।  
 दैववश-क्रि० वि० संयोग से। दैवयोग से।  
 अकस्मात्।

दैववशात्-क्रि० वि० दे० "दैववश"।  
 दैववाणी-सज्ञा स्त्री० आकाशवाणी।  
 दैववादी-सज्ञा पु० १ भाग्य के भरोसे रहने-  
 वाला। २ आलसी। निरुद्योगी।  
 दैवविवाह-सज्ञा पु० आठ प्रकार के विवाहों  
 में से एक, जिसमें यज्ञ करनेवाला व्यक्ति  
 ऋत्विज या पुरोहित को अपनी कन्या  
 देता है।  
 दैवागत-वि० दैवी। आकस्मिक।  
 दैवात्-क्रि० वि० अकस्मात्। दैवयोग से।  
 दैविक-वि० १ देवता-सबधी। देवताओं  
 का। २ देवताओं का किया हुआ।  
 दैवी-वि० १ देवता-सम्बन्धी। २ देवताओं  
 की की हुई। देवकृत। प्रारब्ध या संयोग  
 से होनेवाली। ३ आकस्मिक। ४  
 सार्विक।  
 दैवी गति-सज्ञा स्त्री० १ ईश्वर की की हुई  
 बात। २ भावी। होनहार। अदृष्ट।  
 दैहिक-वि० १ देह-सबधी। पारीरिक।  
 २ देह से उत्पन्न।  
 दोकना†-क्रि० अ० गुरीना।  
 दोकी-सज्ञा स्त्री० धोकीनी।  
 दोचना†-क्रि० स० दबाव में डालना।  
 दो-वि० एक और एक। दो की सख्या।  
 मुहा०-दो-एक या दो-चार=कुछ। थोड़े  
 से। दो-चार होना=मेट होना। मुलाकात  
 होना। आँखें दो-चार होना=सामना होना।  
 दो दिन का=बहुत ही थोड़े समय का।  
 दो-अमली-सज्ञा स्त्री० [फा०] द्वंद्व शासन।  
 एक ही जगह दो शासकी द्वारा शासन।  
 अराजकता।  
 दो-आतश, दो-आतिश-वि० [फा०] जो दो  
 बार भभके में खींचा या बुझाया गया हो।  
 दोआब-सज्ञा पु० [फा०] दो नदियों के बीच  
 का प्रदेश या जमीन।  
 दोआबा-सज्ञा पु० दे० "दोआब"।  
 दोड़†-सज्ञा पु०, वि० दो।  
 दोड़, दोळ\*†-वि० दोनों।  
 दोक-सज्ञा पु० बछेड़ा। दो दाँतो का  
 बछड़ा।  
 दोख\*†-सज्ञा पु० दे० दोष।

दोहना\*—वि० ग० दोह लगाना। ऐसे लगाना।

दोहरी\*—मज्ञा पु० दे० "दोहरी"।

दोहना—मज्ञा पु० [स्त्री० दोहरी] १. वह व्यक्ति, जिसने शास्त्र-विद्या भिन्न-भिन्न जाति में हा। मजंगार। २. शास्त्र के उप-पति के लगाने व्यक्ति। जारज। ३. गहरा दोहरा।

दोहा—मज्ञा पु० १. एक प्रकार का लिहाफ का कपड़ा। २. गानों में घोला हुआ गुना, जिसमें मकंदी की जाती है।

दोहद—वि० दुगना। दूना।

दोह—सज्ञा स्त्री० १. दुवया। असमजस। २. कष्ट। दुःख। ३. दबाव। दबाव जाने का भाव।

दोहन—सज्ञा स्त्री० १. दुवया। असमजन। २. दबाव। ३. कष्ट। दुःख।

दोचना—वि०, स० कोई काम करने के लिए बहुत जोर देना। दबाव डालना।

दोचिता—वि० जिसका चित्त दो कामों या चानों में बँटा हो। उद्विग्न-चित्त।

दोचित्ती—सज्ञा स्त्री० "दोचिता" होने का भाव। चित्त की उद्विग्नता।

दोजन—सज्ञा स्त्री० विसी पक्ष की द्वितीया विधि। दूज।

दोजल—सज्ञा पु० [फा०] मुसलमानों के अनुसार नरक।

दोजली—वि० [फा०] १. दोजल सबधी। दोजल का। २. बहुत बड़ा अपराधी या पापी। नारकी।

दोजा—सज्ञा पु० वह पुरुष, जिसके दो विवाह हुए हों।

दोजानू—वि० वि० [फा०] घुटनों के बल। घुटने टेककर।

दोजिया—सज्ञा स्त्री० गर्भवती स्त्री।

दोजीवा—सज्ञा स्त्री० गर्भिणी। द्विजीवा। मुहा०—दोजी से होना=गर्भ रहना। गर्भवती होना।

दोतरफा—वि० [फा०] दोनों तरफ का। दोनों ओर सबधी।

वि० वि० दोनों तरफ। दोनों ओर।

दोतला, दोतला—वि० दो गट या। दो-गजिला। जैसे—दोतला मरान।

दोहरी—मज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मोटी दोहरी चादर।

दोहरा—मज्ञा पु० एक प्रकार का बाड़ा।

दोहना—वि० ग० प्रत्यक्ष बात को इनकार करना। प्रत्यक्ष बात को भी न मानना।

दोप—मज्ञा पु० छहर।

दोपह—मज्ञा पु० १. छन्द-विशेष। ० यष्ट।

दोपारा—वि० [स्त्री० दोपारी] जिसमें दोनों ओर धार हो। दोहरी बाढ़ का।

गज्ञा पु० एक प्रकार का सूहर।

दोन—मज्ञा पु० दो पहलुओं के बीच की नीची जमीन।

गज्ञा पु० १. दो नदियों के बीच की जमीन। दोआबा। २. दो नदियों का संगम-स्थान। ३. दो चन्तुआ की मछि या मेल।

दोनला—वि० जिसमें दो नारें हों। जैसे—दोनरी बटूक।

दोनली—वि० दो नलवाली।

दोना—सज्ञा पु० [स्त्री० दोनी] पत्तों का बना हुआ कटोरे के आकार का पात्र।

दोनिया, दोनी—सज्ञा स्त्री० छोटा दोना।

दोनों—वि० एक और दूसरा। उभय।

दोपलिया—वि०, मज्ञा स्त्री० दे० "दोपल्ली"।

दोपल्ली—वि० जिसमें दो पल्ले हों। दो पल्लेवाला।

सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की टोपी, जिसमें कपड़े के दो टुकड़े एक साथ मिले होते हैं।

दोपहर—सज्ञा स्त्री० वह समय जब कि सूर्य मध्य आकाश में रहता है। मध्याह्न-काल।

दोपहरिया—सज्ञा स्त्री० दे० "दोपहर"।

दोरीठा—वि० दोनों ओर समान रंग-रूप का। दोहला।

दोफली—वि० १. दोनों फसलों के संवध का। २. जो दोनों ओर लग सके। दोनों ओर काम देन योग्य।

दोबल—सज्ञा पु० दोप। अपराध।

दोबारा—वि० वि० एक बार ही चुबने के उपरांत फिर एक बार। दूसरी बार।

दोभापिया—सज्ञा पु० दे० "दुभापिया"।

दोमंजिला-वि० [ फा० ] जिसमें दो खड या मजिलें हो (मकान)।

दोमट-सज्ञा स्त्री० बालू मिली हुई भूमि।  
दूमट भूमि।

दोमहुला-वि० दे० "दोमजिला"।

दोमुंहा-वि० १. जिसे दो मुँह हो। २. दोहरी चाल चलने या बात करनेवाला। कपटो।

दोमुंहा साँव-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का साँव, जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान हो जान पड़ती है। २. कुटिल। कपटो।

दोय†-वि०, सज्ञा पु० १. दे० "दो"।  
२. दे० "दोनी"।

दोयम-वि० [ फा० ] दूसरा। द्वितीय। दूसरे नम्बर का।

दोरंगा-वि० १. दो रंग का। जिसमें दो रंग हो। २. जो दोनों ओर लगे या चल सके।  
दोरंगी-सज्ञा स्त्री० १. दो रंगे या दो मुँहे होने का भाव। २. छल। कपट।

दोरदंड†-वि० दे० "दुर्दंड"।

दोरसा-वि० दो प्रकार के स्वाद या रसवाला। जिसमें दो तरह के रस या स्वाद हो।

सज्ञा पु० एक प्रकार का पीने का तमाकू।  
यौ०—दोरसे दिन=गर्भावस्था के दिन।

दोराहा-सज्ञा पु० यह स्थान, जहाँ से आगे की ओर दो मार्ग जाते हो।

दोख्खा-वि० [ फा० ] १. जिसके दोनों ओर एक रंग या बेल-बूटे हो। २. दोनों तरफ दो रंग का।

दोल-सज्ञा पु० १. झूला। हिंडोला। २. डोली। चडोल।

दोला-सज्ञा स्त्री० १. हिंडोला। झूला।  
२. डोली या चडोल।

दोलायन-सज्ञा पु० पैरों का एक यंत्र, जिसकी सहायता से वे ओषधियों के ब्रकं चलाते हैं।

दोलायमान-वि० हिलता हुआ। झूलता हुआ।  
दोलित-वि० [ स्त्री० ] दोलित] हिलता या झूलता हुआ।

दोशाखा-सज्ञा पु० [ फा० ] शमादान या दीवारगीर, जिसमें दो बत्तियाँ हो।

दोय-यंज्ञा-पु० १. अवगुण। खराबी।  
ऐय। नुक्स। २. अभियोग। लाछन। फलक।

३. अपराध। कसूर। जुर्म। ४. पाप। पातक। ५. शरीर में के घात, पित्त और

कफ, जिनके कुपित होने से शरीर में व्याधि उत्पन्न होती है। ६. काव्य के गुण में

कमी। यह पाँच प्रकार का होता है—पद-दोष, पदांश-दोष, वाक्य-दोष, अर्थ-दोष

और रस-दोष। ७. प्रदोष।  
सज्ञा पु० द्वेष। शत्रुता।

मुहा०—दोष लगाना=किसी के सबध में यह कहना कि उसमें अमक दोष है।

यौ०—दोषारोपण=दोष देना या लगाना।  
दोषघाही-सज्ञा स्त्री० दुर्जंग।

दोषन†-सज्ञा पु० दोष। दूषण। अपराध।  
दोषना†-कि० सं० दोष लगाना। अपराध

लगाना।  
दोषारोपण-सज्ञा पु० दोष या आरोप

लगाना। अपराध या जुर्म लगाना।  
दोषावह-वि० दोषपूर्ण। जिससे दोष उत्पन्न

हो।  
दोषिन†-सज्ञा स्त्री० १. अपराधिनी। २.

पाप करनेवाली स्त्री।  
दोषी-सज्ञा पु० १. अपराधी। कसूरवार।

२. पापी। अभियुक्त। ३. मुजरिम। ४. जिसमें दोष हो।

दोस†-सज्ञा पु० दे० "दोष"।  
दोसदारी†-सज्ञा स्त्री० मित्रता। दोस्ती।

दोसाला†-वि० दो वर्ष का। दो वर्ष का पुराना।

दोसूनी-सज्ञा स्त्री० दोवही या दुसूती नाम की बिछाने की मोटी चादर।

दोस्त-सज्ञा पु० [ फा० ] मित्र। स्नेही।  
दोस्ताना-सज्ञा पु० [ फा० ] १. दोस्ती।

मित्रता। २. मित्रता का व्यवहार।  
वि० दोस्ती का। मित्रता का।

दोस्ती-सज्ञा स्त्री० मित्रता। स्नेह।  
दोह†-सज्ञा पु० दे० "दोह"।

दोहगा-सज्ञा स्त्री० उपपत्नी। रखेलिन।  
दोहता-सज्ञा पु० [ स्त्री० ] दोहती। रुड़की का लडका। नाती। नवरा।

बोहरा-वि० वि० दोनो हाथो से। दोनो हाथो पा।

वि० जो दोनो हाथो से हो।

बोहव-राज्ञा स्त्री० १ गर्भवती स्त्री की इच्छा। उवौना। २ गर्भवती स्त्री की मठली इत्यादि। ३ गर्भावस्था। ४ गर्भ या चिह्न। ५ गर्भ। ६ एक प्राचीन विद्वांस, जिसमें अनुसार सुन्दर स्त्री के स्पर्श से प्रियगु, पान की पीय धूने से मोत्रसिरी, लात मारने से अशोष, देखने से तिलक, मधुर गाने से आम और नाचने से पचनार इत्यादि वृक्ष फूलते हैं।

सज्ञा पु० लालसा। तीव्र इच्छा।

बोहववती-सज्ञा स्त्री० गर्भवती स्त्री।

बोहन-सज्ञा पु० १ दुहना। दूध निकालना।

२ दोहनी।

बोहना\*-क्रि० स० १ दोप लगाना। २

गुच्छ-ठहराना।

बोहनी-सज्ञा स्त्री० १ दूध दुहने का बरतन। २ दूध दुहने का काम।

बोहर-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चादर, जो कपड़े की दो परतों को एक में सीकर बनाई जाती है।

बोहरना-क्रि० अ० १ दो बार होना।

दूसरी आवृत्ति होना। २ दोहरा होना।

क्रि० स० दोहरा करना।

बोहरा-वि० [स्त्री० दोहरी] १ दुगना।

२ दो परत या तह का।

सज्ञा पु० १ एक ही पते में लपेटे हुए पान के दो बाड़े। बटी हुई सुपारी। २ दोहरा नाम का छद।

बोहराना-क्रि० स० १ किसी बात को दूसरी बार कहना या करना। पुनरावृत्ति करना। २ दोहरा करना। किसी कपड़े या कागज आदि को दो वहाँ करना।

बोहा-सज्ञा पु० हिन्दी का एक प्रसिद्ध छद, जिसमें चार चरण होते हैं। यह ४८ मात्राओं का होता है। प्रथम तथा तृतीय चरण में तेरह-तेरह और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं। इस क्रम को उलट देने से सौरठा बन जाता है।

बोहाई-सज्ञा स्त्री० दे० "दुहाई"।

बोहाक, बोहाग\*—सज्ञा पु० दुर्भाग्य। बद-विरमती। अभाग्य।

बोहागा\*—सज्ञा पु० [स्त्री० दोहागिन] अभाग। बदविरमत्।

बोहित\*—सज्ञा पु० बंटी का बंटा। नाती।

बोही-सज्ञा पु० दोहे की तरह का एक छद।

१ दूध दुहने वाला। २ ग्वाला।

बोहय-वि० दुहने योग्य।

बौ\*—अव्य० या। अववा। दे० "धौ"।

बौक्ता\*—क्रि० अ० दे० "दमक्ता"।

बौचना\*\*—क्रि० स० १ दबाव डालकर लेना। २ लेने के लिए अडना।

बौरी\*—सज्ञा स्त्री० १ बटी हुई फसल के डठला से दाना झाड़ने के लिए उस पर

धुमाया जानेवाले बँला का धुमाया जाना।

२ वह रस्सी, जिससे बँल बँधे होते हैं।

३ फसल के डठला से दाने अलग करने की क्रिया।

बौ\*—सज्ञा स्त्री० १ जगल की आग। २

सताप। जलन। ताप।

बौड-सज्ञा स्त्री० १ दौड़ने की क्रिया

या भाव। घावा। २ वेग से

आक्रमण। चढ़ाई। ३ किसी कर्म

के लिए परिश्रम करना। प्रयत्न। ४

द्वतगति। वेग। ५ गति की सीमा। पहुँच।

६ उद्योग या प्रयत्न की पहुँच। ७ बुद्धि

की गति। अवल की पहुँच। ८ विस्तार।

मुहा०—दौड मारना या लगाना=१ वेग

के साथ जाना। २ दूर तक पहुँचना।

लबी यात्रा करना। मन की दौड=चित्त

की गूँझ। कल्पना।

बौड-धूप-सज्ञा स्त्री० परिश्रम। प्रयत्न। उद्योग।

बौडना-क्रि० अ० १ तेज चलना। वेग से

चलना। २ सहसा प्रवृत्त होना। भुव

पडना। ३ किसी प्रयत्न में इधर-उधर

फिरना। ४ फैलना। व्याप्त होना। छा

जाना।

मुहा०—चढ दौडना=चढ़ाई करना। आक्रमण करना। दौड-दौडकर आना=जल्दी

जल्दी या बार-बार आना।

बौद्ध-क्रि० वि० [सज्ञा दीडादी] बिना कही रहे हुए। अविभ्रात। वेतहासा।  
 बौद्ध-सज्ञा स्त्री० १. दीडपूष। २. आतु-  
 रता। हडबडी।  
 बौद्ध-सज्ञा स्त्री० १. दीडने की क्रिया।  
 हुत्तगमन। २. वेग। शोक। ३. सिलसिला।  
 बौद्ध-क्रि० सं० १. दीडने की क्रिया  
 कराना। २. बार-बार आने-आने के लिए  
 कहना या विवश करना। ३. फलाना।  
 पीतना। ४. चलाना। जैसे-बलम दीडाना।  
 दीड्य\*—सज्ञा पु० दूत का काम। दूसरे देश  
 में किसी देश के राजदूत या प्रतिनिधि  
 द्वारा किए जानेवाले कर्त्तव्य। दूतवर्म।  
 दीन-सज्ञा पु० दे० "दमन"।  
 दीना\*—सज्ञा पु० १. एक प्रकार का पीघा।  
 २. दे० "दीना"।  
 \*क्रि० सं० दमन करना।  
 दीनागिरि—सज्ञा पु० दे० "द्रोणगिरि"।  
 दीर-सज्ञा पु० [अ०] १ चक्कर। भ्रमण। फेरा।  
 २ दिनों का फेरा। कालचक्र। ३ अमृतदय-  
 काल। बढती का समय। ४. प्रताप।  
 प्रभाव। हुक्मवत्। ५. बारी। बार-बार  
 होनेवाली बात। पारी। ६ बार। दफा।  
 ७ दे० "दीरा"।  
 दी०—दीरदीरा=प्रधानता। प्रबलता।  
 दीरना\*—क्रि० अ० दे० "दीडना"।  
 दीरा-सज्ञा पु० [अ०] १ चक्कर। भ्रमण।  
 २ धर-धर घूमने की क्रिया। फेरा।  
 गस्त। ३ जीन्-पडताल के लिए भ्रमण  
 करना। ४ सामयिक आगमन। ५ किसी  
 ऐसे रोग का लक्षण प्रकट होना, जो समय-  
 समय पर होता हो। आवर्तन।  
 [सज्ञा पु० [स्त्री० दीरी] बाँस की फट्टियों  
 या मूँज आदि का टोकरा।  
 मुहा०—दीरा सुपुर्द करना—फंसले के लिए  
 सेशन-जज के पास भेजना।  
 दीरात्म्य-सज्ञा पु० १. दुर्जनता। दुरात्म्य  
 का भाव। २. दुष्टता।  
 दीरान-सज्ञा पु० [फा०] १ मध्य में।  
 चालू अवस्था के बीच में। दीरा। यत्।  
 २ दिनों या फेरा। ३. फेरा। पारी।

दीराना\*—क्रि० सं० दे० "दीडना"।  
 दीरी—सज्ञा स्त्री० बाँस या मूँज की छोटी  
 टोकरी। चेंगेरी। डलिया।  
 दीर्जन्य-सज्ञा पु० दुर्जनता। दुष्टता।  
 दीर्घ-सज्ञा पु० दुर्बलता। कमजोरी।  
 दीर्घनस्य-सज्ञा पु० दुर्जनता।  
 दीर्घ-सज्ञा पु० दूरी।  
 दीलत-सज्ञा स्त्री० [अ०] धन। संपत्ति।  
 दीलतखाना-सज्ञा पु० [फा०] निवास-स्थान।  
 घर।  
 दीलतमद-वि० [फा०] धनी। संपन्न।  
 दीवारिक-सज्ञा पु० द्वारपाल।  
 दीहार्द-सज्ञा पु० दुष्ट स्वभाव। दुर्भाव।  
 बर।  
 दीहिर-सज्ञा पु० [स्त्री० दीहिनी] लडकी  
 का लडका। नाती।  
 द्यु-सज्ञा पु० १ दिन। २ आकाश। ३.  
 स्वर्ग। ४ अग्नि। ५ सूर्यलोक।  
 द्युति-सज्ञा स्त्री० १ दीप्ति। आभा। चमक।  
 २ शोभा। छवि। ३ काँति। लावण्य। ४.  
 रश्मि। किरण।  
 द्युतिमंत-वि० दे० "द्युतिमान्"।  
 द्युतिमन्-सज्ञा स्त्री० प्रकाश। तेज।  
 द्युतिमान्-वि० [स्त्री० द्युतिमती] जिसमें  
 चमक या आभा हो।  
 द्युपति-सज्ञा पु० १ इन्द्र। २ सूर्य।  
 द्युपथ-सज्ञा पु० आकाशमार्ग।  
 द्युमणि-सज्ञा पु० १ सूर्य। २ मदार। ३  
 शोभा हुआ ताँबा।  
 द्युमत्सेन-सज्ञा पु० शाहू देश के एक राजा,  
 जो सत्यवान् के पिता थे।  
 द्युमान्-वि० चमकीला।  
 द्युम्न-सज्ञा पु० १. बल। २. सूर्य। ३.  
 धान। अन्न।  
 द्युलोक-सज्ञा पु० स्वर्गलोक।  
 द्युवन्-सज्ञा पु० १ स्वर्ग। २ सूर्य।  
 द्यू-वि० जुआड़ी।  
 द्यूत-सज्ञा पु० जूया। यह खेल, जिसमें दांव  
 बदल कर हार-जीत की जाय।  
 द्यौ-सज्ञा स्त्री० १ आकाश। २ स्वर्ग। आठ  
 गणुओं में से एक।

घोतक-वि० १ प्रवास करनेवाला। प्रवास। २ घटलानेवाला।

घोतन-सज्ञा पु० [वि० घोतित] १ दर्शन।

२ प्रवाहित करने या जलाने का काम।

३ दिवाने का काम।

घोहरा\*-सज्ञा पु० दे० "दवधरा"।

घोस\*-सज्ञा पु० दिन।

द्रक्षिमा-सज्ञा पु० मजबूती। दृढ़ता।

द्रम्म-सज्ञा पु० एम मुद्रा (लोलावती)।

द्रव-सज्ञा पु० १ द्रवण। २ बहाव। ३ गलायन। दीड। ४ वेग। ५ आसव।

६ रस। ७ द्रवत्व।

वि० १ तरल। २ गीला। ३ पिघला हुआ।

द्रवण-सज्ञा पु० [वि० द्रवित] १ गमन।

गति। २ क्षरण। बहाव। ३ पिघलने या पसीजने की क्रिया या भाव। ४ चित्त के कोमल होने की भावना।

द्रवणशील-वि० पिघलने या पसीजनेवाला।

द्रवता-सज्ञा स्त्री० दे० "द्रवत्व"।

द्रवत्व-सज्ञा पु० बहने का भाव। पतला होने का भाव।

द्रवना\*-क्रि० अ० १ प्रवाहित होना। बहना। २ पिघलना। ३ पसीजना। दयाद्र होना।

द्रविड-सज्ञा पु० १ दक्षिण भारत का एक देश। २ इस देश का रहनेवाला। ३ ब्राह्मणों का एक वर्ग, जिसके अवर्गित पीछ विभाग है—आध्य, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड और महाराष्ट्र।

द्रविण-सज्ञा पु० सोना।

द्रवित-वि० १. पिघला या पसीजा हुआ। २ दया से भरा हुआ। दे० "द्रवीभूत"।

द्रवीभूत-वि० १ जो पानी की तरह पतला या द्रव हो गया हो। २ पिघला हुआ। पसीजा हुआ ३ दयाद्र। दयालु।

। पु० १ वस्तु। पदार्थ। चीज।

२ सामान। उपादान। ३ धन। दौलत। वैशेषिक में द्रव्य नौ बड़े गए हैं—पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिक्, आत्मा और मन। ४ सामग्री।

वि० द्रुम-भम्बन्धी।

द्रव्यवान्-वि० [स्त्री० द्रव्यवती] धनवान्। धनी।

द्रष्टव्य-वि० १ देखने योग्य। दर्शनीय।

२ जो दिखाया जानेवाला हो।

द्रष्टा-वि० १ देखनेवाला। २ दर्शन। प्रकाशक।

सज्ञा पु० (साम्य के अनुसार) पुष्प, (योग के अनुसार) आत्मा।

द्रह-सज्ञा पु० १ शील। २ दह। नदी के भातर का गड्ढा।

द्राक्षा-सज्ञा स्त्री० दाख। अमूर।

द्राघिमा-सज्ञा पु० १ लंबाई। दीर्घता।

२ अक्षांश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ, जो भूमध्य रेखा के समानांतर पूर्व-पश्चिम की मानी गई हैं।

द्राण-वि० १ सोया हुआ। २ भूगड़।

सज्ञा पु० १ भागना। २ स्वप्न।

द्राप-सज्ञा पु० १ कौडी। २ आकाश।

वि० १ मूर्ख। २ सुप्त।

द्राव-सज्ञा पु० १ गमन। २ क्षरण। ३

बहने या पसीजने की क्रिया।

द्रावक-वि० १ पतला करनेवाला। २ बहानेवाला। ३ गलानेवाला। ४ पिघलानेवाला। ५ हृदय पर प्रभाव डालनेवाला। हृदयग्राही।

द्रावण-सज्ञा पु० गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव।

द्राविड-वि० [स्त्री० द्राविडी] द्रविड देशवासी।

द्राविडी-वि० द्रविड-संबन्धी।

मुहा०-द्राविडी प्राणायाम=धुमाव किराव के साथ बात करना।

द्रुत-वि० १ द्रवीभूत। गला हुआ। २

शीघ्रगामी। तेज। ३ भागा हुआ।

सज्ञा पु० १ वृक्ष। २ बिल्ली। ३ विच्छू।

चाल को एक मात्रा का आधा। बिंदु। ४

व्यजन। ५ दून।

द्रुतगामी-वि० [स्त्री० द्रुतगामिनी] शीघ्रगामी। तेज चलनेवाला।

द्रुतपथ-सज्ञा पु० बारह अक्षरों का एक छंद।

द्रुतमध्या-सज्ञा स्त्री० एव अर्द्ध-समवृत्ति।  
द्रुतविलम्बित-सज्ञा पु० एव छंद, जिससे प्रत्येक  
चरण में एक नगण, दो नगण और एक  
रण होना है। सुदरी।

द्रुति-सज्ञा स्त्री० १ द्रव। २ गति।  
द्रुपद-सज्ञा पु० उत्तर पांचाल के एक राजा,  
जा महाभारत के युद्ध में मारे गये थे।  
घुण्टघुम्न और शिखंडी इनके पुत्र और  
कुण्डा (द्रौपदी) इनकी कन्या थी।

द्रुम-सज्ञा पु० वृक्ष। पेड़।  
द्रुमिला-सज्ञा स्त्री० एव छंद, जिससे प्रत्येक  
चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं।

द्रुह-सज्ञा पु० १ पेड़। २ पुत्र।

द्रुह्यु-सज्ञा पु० १ प्राचीन आर्यों का एक  
वंश या जनसमूह। २ शम्भिष्ठा के गर्भ  
से उत्पन्न ययाति राजा का ज्येष्ठ पुत्र, जिसने  
ययाति का बड़ापा लेना अस्वीकृत  
किया था।

द्रु-सज्ञा पु० सोना।

द्रोण-सज्ञा पु० १ लकड़ी का एक वस्तु, जिसमें  
वैदिक काल में सोम रखा जाता था। २  
कठवट। ३ एक प्राचीन माप। ४ पत्तो  
का दोना। ५ नाव। डोंगा। ६ अरणी  
की लकड़ी। ७ लकड़ी का रथ। ८ डोम  
कौशा। काला कौशा। बिच्छू। ९ द्रोणगिरि  
नाम का पहाड़। १० दे० 'द्रोणाचार्य'।

द्रोणकाक-सज्ञा पु० डोम कौशा। बनेला  
कौशा।

द्रोणमुख-सज्ञा पु० चार सौ गाँवों में से  
सुन्दर गाँव।

द्रोणाचार्य-सज्ञा पु० पाण्डवों और कौरवों  
की अस्त्रविद्या की शिक्षा देनेवाले गुरु,  
जो भरद्वाज ऋषि के पुत्र थे। इनके पुत्र  
का नाम अश्वत्थामा था।

द्रोणी-सज्ञा स्त्री० १ शीघ्रता। २ एक पर्वत।  
३ एक नदी। ४ डोंगी। ५ छोटा दोना।  
६ काठ का प्याला। कठवट। ७ दो पवता  
के बीच की भूमि। दुन। ८ दर्रा। ९  
द्रोणाचार्य की स्त्री, कृपी। १० तील की एक  
प्राचीन माप।

द्रोन\*-सज्ञा पु० दे० 'द्रोण'।

द्रोह-सज्ञा पु० [स्त्री० द्रोही] दूसरे का  
अहितचिंतन। बंदर। द्वेष।

द्रोही-वि० [स्त्री० द्रोहिणी] द्रोह करनेवाला।  
गुराई चाहनेवाला। बंदी। दुश्मन।

द्रौपदी-सज्ञा स्त्री० राजा द्रुपद की कन्या  
कुण्डा, जो पाँचा पाण्डवों की ब्याही गई  
थी। जूए में युधिष्ठिर का सर्वस्व जीत  
लेने पर दुर्योधन ने दुःशासन-द्वारा इसे  
भरी सभा में बलवाकर इसका वस्त्र खिच-  
वाना चाहा था, पर वह वस्त्र न खिच  
सका। इसी पर भीम ने बदला चुकाने के  
लिए दुःशासन के कलेजे का रक्त-पीने  
की प्रतिज्ञा की और वह कुरुक्षेत्र के  
युद्ध में पूरी की।

द्रव-सज्ञा पु० १ दे० "द्रव्य"। दो आदमियों  
की परस्पर लड़ाई। द्रव्ययुद्ध। २ झगडा।  
कलह। बखेडा। ३ दो परस्पर विरुद्ध  
वस्तुओं का जोडा। जैसे—राग-द्वेष, सुख-  
दुःख इत्यादि। ४ जोड। प्रतिद्वंदी।  
५ उलझन। झगडा। जजाल। ६ कण्ट।  
दुख। ७ उपद्रव। झगडा। ऊँचम। ८  
दुविधा। सशय। ९ स्त्री-पुरुष या नर-मादा  
का जोडा। १० गुप्त बात। रहस्य।

सज्ञा स्त्री० दुदुभी।

द्रवर\*-वि० झगडालू।

द्रव-सज्ञा पु० १ दो वस्तुएँ जो एक साथ हो।  
जोडा। युग्म। २ स्त्री-पुरुष या नर-मादा  
का जोडा। ३ दो परस्पर विरुद्ध वस्तुओं  
का जोडा। ४ गुप्त बात। रहस्य। ५  
दो आदमियों की लड़ाई। ६ झगडा। बखेडा।  
कलह। ७ एक प्रकार का समास, जिसमें  
मिलनेवाले सब पद प्रधान रहते हैं और  
उनका अन्वय एक ही किया के साथ  
होता है।

द्रव्यकारी-वि० झगडालू।

द्रव्यचर-सज्ञा पु० चक्काक पक्षी। चक्का।

द्रव्यज-सज्ञा पु० १ दो दोषों से उत्पन्न रोग।  
२ कलह से उत्पन्न। कलहजन्य।

द्रव्ययुद्ध-सज्ञा पु० वह लड़ाई, जो दो पुरुषों  
के बीच में हो। कुश्ती।

द्रव-वि० दो।

द्वयता—सज्ञा स्त्री० दो का भाव । द्वैत ।  
अपनेपन और परायेपन का भाव ।  
भेदभाव ।

द्वज—सज्ञा पुं० जारज ।

द्वादश—वि० १. जो सरया में दस और दो हों ।  
बारह । २. बारहवीं ।

सज्ञा पुं० बारह की संख्या या अंक । १२ ।

द्वादशाक्षर—सज्ञा पुं० विष्णु का एक मंत्र  
जिसमें बारह अक्षर हैं । यह मंत्र यह है—  
“ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” ।

द्वादशाह—सज्ञा पुं० १. बारह दिनों का समु-  
दाय । २. वह श्राद्ध, जो निमी के निमित्त  
उसके मरने से बारहवें दिन हो ।

द्वादशी—सज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की बारहवीं  
तिथि ।

द्वादशवानी\*—वि० दे० “बारहवानी” ।

द्वापर—सज्ञा पुं० चार युगों में से तीसरा युग ।  
पुराणों में यह युग ८६४००० वर्ष का माना  
गया है ।

द्वार—सज्ञा पुं० १. मुख । मुहाना । २. घर में  
आने-जाने के लिए दीवार में खुला हुआ स्थान ।  
दरवाजा । ३. इन्द्रियों के मार्ग या छेद; जैसे—  
आँख, कान, नाक आदि । ४. उपाय । साधन ।

द्वारका—सज्ञा स्त्री० वाठियावाड़-गुजरात की  
एक प्राचीन नगरी । हिन्दुओं का एक तीर्थ-  
स्थान । यह सात पुरियों में से एक है ।  
कुशस्थली । द्वारावती ।

द्वारकाघोश—सज्ञा पुं० १. श्रीकृष्ण । २.  
कृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका में है ।

द्वारकानाथ—सज्ञा पुं० दे० “द्वारकानीस” ।

द्वारचार—सज्ञा पुं० दे० “द्वारपूजा” ।

द्वारपाल—सज्ञा पुं० वह, जो दरवाजे पर रक्षा  
के लिए नियुक्त हो । दरबान ।

द्वारपूजा—सज्ञा स्त्री० विवाह में एक विशेष  
प्रकार की पूजा, जो कन्यावाले के द्वार पर  
उस समय की जाती है, जब बारात के साथ  
प्रथम बार घर आता है ।

द्वारावती—सज्ञा स्त्री० द्वारका ।

द्वारसमूह—सज्ञा पुं० दक्षिण का एक पुराना  
नगर, जहाँ कर्नाटक के राजाओं की राज-  
धानी थी ।

द्वारा—सज्ञा पुं० १. द्वार । दरवाजा । फाटक ।  
२. मार्ग । राह ।

अव्य० जरिए । साधन से ।

द्वारावती—सज्ञा स्त्री० द्वारका ।

द्वारिका—सज्ञा स्त्री० दे० “द्वारका” ।

द्वारी\*—सज्ञा स्त्री० छोटा द्वार । दरवाजा ।  
द्वि-वि० दो ।

द्विक-वि० १. जिसमें दो अवयव हों । २.  
दोहरा ।

द्विकर्मक-वि० (त्रिया) जिसके दो कर्म हों ।

द्विकल—सज्ञा पुं० छंद-शास्त्र में दो मात्राओं  
का समूह ।

द्विगु—सज्ञा पुं० एक प्रकार का समास, जो  
तत्पुरुष समास के अन्तर्गत है ।

द्विगुण-वि० दुगुना । दूना ।

द्विगुणित-वि० १. दो से गुणा किया हुआ ।  
२. दुगुना । दूना ।

द्विज—सज्ञा पुं० जिसका जन्म दो बार हुआ हो ।

१. अहज प्राणी । २. पक्षी । ३. ब्राह्मण,  
क्षत्रिय और वैश्य वर्णों के पुरुष, जिनको  
यज्ञोपवीत पहनने का अधिकार है ।  
४. ब्राह्मण । ५. चंद्रमा । ६. दांत ।

द्विजन्मा-वि० जिसका दो बार जन्म हुआ हो ।  
सज्ञा पुं० द्विज ।

द्विजपति, द्विजराज—सज्ञा पुं० १. ब्राह्मण ।  
२. चंद्र । ३. वपूरा । ४. गण्ड ।

द्विजाति—सज्ञा पुं० १. ब्राह्मण, क्षत्रिय और  
वैश्य, जिनको यज्ञोपवीत पहनने का  
अधिकार है । द्विज । २. ब्राह्मण । ३. अहज ।  
४. पक्षी । ५. दांत ।

द्विजिह्व-वि० १. जिसे दो जीभें हों । २.  
चुगलखोर । ३. खल । दुष्ट ।

सज्ञा पुं० साँप ।

द्विजेंद्र, द्विजेश—सज्ञा पुं० दे० “द्विजपति” ।

द्वितीय-वि० [स्त्री० द्वितीया] दूसरा ।

द्वितीया—सज्ञा स्त्री० प्रत्येक पक्ष की दूसरी  
तिथि । दूज ।

द्वित्व—सज्ञा पुं० १. दो का भाव । २. दोहरा  
होने का भाव ।

द्विदल-वि० १. जिसमें दो दल या पिंड हों ।  
२. जिसमें दो पटल हों ।

सज्ञा पु० वह अय, जिसमें दो दल हो। दाल।  
द्विधा-क्रि० वि० १ दो प्रकार से। दो तरह से। २ दो खंडों या टुकड़ों में।

द्विपद-वि० जिसके दो पैर हो। जिसमें दो पद या चरण हो।

सज्ञा पु० दो पैरोंवाला। मनुष्य, पक्षी आदि।  
द्विपदराशि-सज्ञा पु० मियुन, तुला, कुम्भ और धनु का पूर्व भाग।

द्विपदो-सज्ञा स्त्री० १ वह छंद या वृत्ति, जिसमें दो पद हो। २ दो पदों का गीत। ३ एक प्रकार का चित्रकाव्य, जिसमें दोहे आदि को कोष्ठों की तीन पक्तियों में लिखते हैं।

द्विपाद-वि० १ दो पैरोंवाला (पशु)। २ जिसमें दो पद या चरण हो।

सज्ञा पु० मनुष्य, पक्षी आदि दो पैरों के जीव।

द्विपायी-सज्ञा पु० हायी।

द्विपास्य-सज्ञा पु० गणेशजी।

द्विभाव-सज्ञा पु० दुराव।

द्विभाषी-सज्ञा पु० [स्त्री० द्विभाषिणी] वह पुरुष, जो दो भाषाएँ जानता हो। दुभाषिया।

द्विमात्र-सज्ञा पु० दो मात्राओं का वर्ण।

द्विमुखी-वि० दो मुँहवाली।

सज्ञा स्त्री० वह गाय, जो बच्चा दे रही हो।  
(ऐसी गाय के दान का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है।)

द्विरद-सज्ञा पु० हायी।

वि० दो दातोंवाला।

द्विरसन-क्रि० [स्त्री० द्विरसना] १ दो जीनों या जवान वाला। २ कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवाला। ३ चुगुलखोर।

सज्ञा पु० [स्त्री० द्विरसना] साँप। बुमुंहा साँप।

द्विरागमन-सज्ञा पु० वधू का अपने पति के घर दूसरी बार आना। दोगा।

द्विराप-सज्ञा पु० हायी।

द्विरक्ति-सज्ञा स्त्री० दो बार कथन।

द्विरफ-सज्ञा पु० भ्रमर। भोरा।

द्विविध-वि० दो प्रकार का।

क्रि० वि० दो प्रकार से।

द्विविधा\*-सज्ञा पु० दुवधा।

द्विवेदी-सज्ञा पु० ब्राह्मणों की एक उपजाति। दुवे।

द्विशिर-वि० दो सिरोंवाला। जिसके दो सिर हो।

महा०—कौन द्विशिर है?—कैसे फालतु सिर है? किसे अपने मरने का भय नहीं है?

द्विप, द्विपत्-सज्ञा पु० धनु। बैरी।

द्वौद्विप-सज्ञा पु० वह जटु, जिसके दो ही द्विपियाँ हो।

द्वीप-सज्ञा पु० १ चारों ओर जल से घिरा हुआ स्थल भाग। टापू। जजीरा। २ पुराणानुसार पृथ्वी के सात बड़े विभाग, जिनके नाम ये हैं—जम्बूद्वीप, लंकाद्वीप, शाल्मलिद्वीप, कुशद्वीप, क्रीचद्वीप, शाकद्वीप और पुष्करद्वीप।

द्वेष-सज्ञा पु० ईर्ष्या। शत्रुता। वैर। चिड़।

द्वेषी-वि० [स्त्री० द्वेषिणी] विरोधी। वैरी। चिड़ रखनेवाला।

द्वेष्या-वि० दे० "द्वेषी"।

द्वै\*†-वि० दो। दोनों।

द्वैज\*-सज्ञा स्त्री० द्वितीया। द्वज।

द्वैत-सज्ञा पु० १ दो का भाव। युग्म। युगल।

२ अपने और पराए का भाव। भेद। अंतर।

३ द्विविधा। भ्रम। ४ अज्ञान।

द्वैतवाद-सज्ञा पु० १ वह दार्शनिक सिद्धांत, जिसमें आत्मा और परमात्मा अर्थात् जीव और ईश्वर को दो भिन्न पदार्थ मानकर विचार किया जाता है। वैदाद्य को छोड़कर शेष पाँचों दर्शन द्वैतवादी माने जाते हैं। २ वह दार्शनिक सिद्धांत, जिसमें शरीर और आत्मा दो भिन्न पदार्थ माने जाते हैं।

द्वैतवादी-वि० [स्त्री० द्वैतवादिनी] द्वैतवाद को माननेवाला।

द्वैष-सज्ञा पु० संदेह। संशय। व्यग्रोक्ति। १ विरोध। २ राजनीति के पक्षगुणों में से एक, जिसमें मुख्य उद्देश्य गुप्त रखकर दूसरा उद्देश्य प्रकट किया जाता है। ३ आधुनिक राजनीति में वह शासन प्रणाली, जिसमें कुछ बिभाग सरकार के हाथ में और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ में है।

द्विपायन-सज्ञा पु० १ व्यासजी का एक नाम। २ वह ताल, जिसमें कुरुक्षेत्र में युद्ध से भागकर दुर्गोधन छिपा था।

द्वेमातुर-वि० जिसकी दो माताएँ हों।  
 राजा पु० १ गणेश। २ जरासंध।  
 द्वैरथ-सज्ञा पु० दो रथारोहियों का परस्पर युद्ध।  
 द्वौ\*-वि० १ दोना। २ दे० "द्व"।  
 द्वयर्थ-सज्ञा पु० ऐसा वाक्य या वाक्य

जिसके दो अर्थ निकलने हों।  
 द्विषाष्ट-सज्ञा पु० ताम्र। ताँबा।  
 द्विषत्मक-सज्ञा पु० मिथुन, वन्या, धनु, मीन राशि। द्विविध। दो प्रकार।  
 द्विषाहिक-वि० दो दिन के बाद ही उत्पन्न होनेवाला। दो दिन में जन्म।

## ध

ध-देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तबग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान दंत है। इसी से इसे दन्त्य वर्ण कहते हैं।  
 सज्ञा पु० १ धन। २ पुत्र। ३ ब्रह्मा।  
 ४ धर्म।

धर-सज्ञा पु० अहीर।

धगा-सज्ञा पु० खाँसी।

धधक-सज्ञा पु० १ काम धधा। २ आडंबर। जजाल। बखेड़ा।

वि० परिश्रमी। उद्यमी। धधावाला। व्यवसायी।

धधकधोरी-सज्ञा पु० हर घड़ी काम में लगा रहनेवाला।

धधरक-सज्ञा पु० दे० "धधक"।

धधला-सज्ञा पु० १ दगा। धोखा। चबमा। २ ढोग। छल-छद्म। बहाना।

धधलाना-क्रि० अ० धोला देना। चकमा देना। छलना।

धधा-सज्ञा पु० १ धन या जीविका के लिए उद्योग। काम-नाज। २ उद्यम। व्यवसाय। कारवाही।

धधार-सज्ञा स्त्री० ज्वाला। लपट।

वि० १ एकाकी। २ उदास। ३ निठला।

धधारी-सज्ञा स्त्री० १ गारखधधा। २ उदासी। ३ अवेलापन। एकांत।

धधोर-सज्ञा पु० १ होलिका। होली। २ आग की लपट। ज्वाला।

धधना\*-वि० स० दे० "धधना"।

धधन-सज्ञा स्त्री० १ धंसने की क्रिया या ढग। २ धुनने या पंठने का ढग। ३ गति। चाल।

धधना-क्रि० अ० १ धुसना। गडना। पंठना।

\* २ नीचे पसवना। उतरना। ३ तल के किसी अंश का दबाव आदि पावर नीचे हो जाना, जिससे गड़ड़ा-सा पड़ जाय। ३ बंठ जाना। \* नष्ट होना।

मुहा०—जी या मन में धधना=चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना। दिल में असर करना।

धधन-सज्ञा स्त्री० १ धंसने की क्रिया या ढग। २ दलदल। कीचड़। ३ ढाल।

धधना-क्रि० स० १ नरम चीज में धुसाना। गडाना। चुभाना। २ पंठाना। प्रवेश कराना। ३ तल या सतह को दबाकर नीचे की ओर करना।

धधव-सज्ञा पु० दलदल। कीचड़। धधने की क्रिया।

धध-सज्ञा स्त्री० १ हृदय के धडकने का भाव या शब्द। २ उमग। उद्वेग। चोप।

क्रि० वि० अचानक। एकादगी।

सज्ञा स्त्री० छोटी जूँ।

मुहा०—जी धधव करना=भय या उद्वेग से जी धडकना। जी धध हो जाना=१ डर से जी दहल जाना। २ चौंक उठना।

धधकाना-क्रि० अ० १ भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का जोर-जोर से या जल्दी जल्दी चलना। २ (आग का) दहकना। भभकना।

धधकाहट-सज्ञा स्त्री० धडकन। सटका। आशका।

धधकी-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ जी धध धध करने की क्रिया या भाव। जी की धडकन। २ धुकधुकी। दुगदुगी। ३ हडबडी। धवरहाट।

मुहा०—धकधकी धडवना=अकस्मात् आ-  
शका या खटका होना। छाती धडवना।  
धकपक-सज्ञा स्त्री० धकधकी। जी की धड-  
कन।

क्रि० वि० दहलते हुए। डरते हुए।

धकपकाना-क्रि० अ० जी में दहलना। दहशत  
खाना। डरना।

धकपेल\*-सज्ञा स्त्री० धक्कमधक्का। रेल-  
पेल।

धकाना†-सज्ञा पु० दे० "धक्का"।

धकाना†-क्रि० स० दहकाना। सुलगाना।

धकारा†-सज्ञा पु० आशका। खटका।

धकियाना†-क्रि० स० धक्का देना। ढकेलना।

धकेलना-क्रि० स० दे० "ढकेलना"।

धकंत-वि० धक्कमधक्का करनेवाला।

धक्कमधक्का-सज्ञा पु० १ ठेलाठेली। भीड़

में रेलपेल। धकापेल। २ ऐसी भीड़, जिसमें

लोगों के शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हूँ।

धक्का-सज्ञा पु० १ टक्कर। रेल। झोका।

२ ढकेलने की क्रिया। झोका। चपेट।

३ ऐसी भारी भीड़, जिसमें लोगों के

शरीर एक दूसरे से रगड़ खाते हों।

४ शोक या दुःख का आघात। सताप।

५ विपत्ति। आफत। ६ हानि। टोटा।

धक्कामुक्की-सज्ञा स्त्री० हाथापाई। मुठभेड़।

मारपीट। ऐसी लड़ाई, जिसमें एक दूसरे

को ढकेले और घूसों से मारे।

धगधग-वि० दुस्स्वरित।

धगडा-सज्ञा पु० यार। उपपति।

धगधगना\*†-क्रि० अ० धक्कधकाना।

धडवना।

धगधरी-वि० १ पति की दुलारी। २ कुलटा।

धगा\*†-सज्ञा पु० दे० "धागा"।

धगुला†-सज्ञा पु० हाथ में पहनने का कटा।

धक्कना†-क्रि० अ० दलदल में फँसाना।

धक्का-सज्ञा पु० धक्का। अटका।

धज-सज्ञा स्त्री० १ सजावट। बनाय।

सुन्दर रचना। २ मोहित करनेवाली चाल।

सुन्दर ढंग। ३ ठसप। गखरा। ४ रूप रंग।

शोभा।

यी०—सजधज=संगारी। सज-सामान।

धजा-सज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।

धजीला-वि० [स्त्री० धजीली] सजीला।

सुन्दर।

धज्जी-सज्ञा स्त्री० १ कपड़े, कागज, चमड़े

आदि की लबी पतली पट्टी। २ लोहे की

चद्दर या लकड़ी की लबी पट्टी।

मुहा०—धज्जियाँ उड़ाना=१ टुकड़े-टुकड़े

करना। विदीर्ण करना। २. (किसी की)

खूब दुर्गति करना।

धट-सज्ञा पु० १ तराजू। २ तुलाराशि।

३ तुलापरीक्षा। ४ धर्म।

धटिका-सज्ञा स्त्री० १ एक तौल। पसेरी।

२ चीर। वेस्त्र। ३ कोपीन।

धटा-सज्ञा स्त्री० १ कपड़े की धज्जी। २

कोपीन। ३ गोटा। ४ गर्माधान के बाद

स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र।

धडग-वि० नगा।

धड-सज्ञा पु० १ शरीर का मध्यभाग जिसके

अतर्गत छाती, पीठ और पेट होते हैं।

२ पंख का तना।

सज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के एकबारगी गिरने

आदि से होनेवाला शब्द।

धडक-सज्ञा स्त्री० १ हृदय का स्पन्दन।

२ दिल की धडकन। तडप। तपाक। ३

भय, आशका आदि के कारण दिल की

बड़ी हुई धडकन। जी धक्क-धक्क करने की

क्रिया। ४ आशका। खटका। अदेशा। भय।

यी०—वे धडक=विद्युत् किसी सञ्कोच के।

धडकन-सज्ञा स्त्री० हृदय का स्पन्दन। दिल

का धक्क-धक्क करना।

धडकना-क्रि० अ० १ दिल का स्पन्दन-धक्क

करना। हृदय का स्पन्दन २ धडधड

शब्द होना।

मुहा०—छाती, जी या दिल धडकना=

भय या आशका से हृदय का जोर-जोर से

और जल्दी-जल्दी चलना।

धडका-सज्ञा पु० १ दिल की धडकन।

२ दिल धडकने का शब्द। ३ खटका।

अदेशा। भय। ४ चिड़ियों को डराने के

लिए खोता में रखी जानेवाली वाली हाँसी

या पुतला। घोसा।

पड़काना—क्रि० म० १. जी धप-धक करना। दिल में धडक पैदा करना। २. जी दह-लाना। डराना। ३. धडधड़ शब्द उत्पन्न करना।

पड़पड़ाना—गि० अ० धड-धड शब्द करना। मारी चीज के गिरने-पड़ने की-सी आवाज करना।

मुहा०—धडधडाता हुआ=१ धड-धड शब्द और वेग के साथ। २ बिना किसी प्रकार के खटके या सकोच के। बेधडक।

पड़ल्ला-सज्ञा पु० धडाका। वेग से गिरने या जाने का शब्द। धडधड शब्द।

मुहा०—धडल्ले से या धडल्ले के साथ=१. बिना किसी रुकावट के। शोक से। २. बिना किसी प्रकार के भय या सकोच के।

पड़ा-सज्ञा पु० १ तौलने का बोझ। एक तौल। वाट। बटखरा। २ तराजू।

मुहा०—धड़ा करना=धड़ा बांधना। कोई वस्तु रखकर तौलने के पहले तराजू के दोनों पल्लों को बराबर कर लेना। दोपारोपण करना। कलक लगाना।

धड़ाक-सज्ञा पु० किसी चीज के गिरने, छूटने आदि का शब्द।

धडाका-सज्ञा पु० 'धड-धड' शब्द। धमाके या गडगडाहट का शब्द।

मुहा०—धडाके से=जल्दी से। चटपट।

धडाधड़-क्रि० वि० १ लगातार 'धड-धड' शब्द के साथ। २ बराबर। जल्दी-जल्दी।

धडा-बरी-सज्ञा स्त्री० १ तौल में 'धडा' बांधना। २ युद्ध के समय दोनों पक्षा का अपना सैनिक-बल बराबर करना।

धडाना-सज्ञा पु० ऊपर से एन-वारगी कूदने या गिरने का शब्द।

धडी-सज्ञा स्त्री० १. एक तौल। २. वह लकीर, जो मिस्सी लगाने या पान खाने से ओठों पर पड़ जाती है। ३. पाँच सौ रुपये की रकम।

धत्-अव्य० [अनु०] दुववारने का शब्द। तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

धत्-सज्ञा स्त्री० बराबर, आदत्त। कुटेव। धत्कारना-क्रि० स० १. दुववारना। डुर-दुराना। २. धिक्कारना।

धत्ता-वि० जो दूर हो गया हो या किया गया हो। चलना। हटा हुआ।

मुहा०—धत्ता करना या धत्ताना=चलता करना। हटाना। टालना। भगाना।

धत्तर-मज्ञा पु० नरसिंहा नाम का बाजा। घुरही। सिंहा।

धत्तरा-सज्ञा पु० एक पौधा, जिसके फलों के बीज बहुत विपरीत होते हैं।

मुहा०—धत्तरा खाए फिरना=उन्मत्त के समान धूमना।

धत्ता-मज्ञा पु० एक मात्रिक छंद।

धत्तावद-मज्ञा पु० एक छंद, जिसकी प्रत्येक पंक्ति में ३१ मात्राएँ और अठ में नगण होता है।

धधक-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ आग की लपट के ऊपर उठने की क्रिया या भाव। आग की मभक। २ आँच। लपट। लौ।

धधकता-क्रि० अ० आग का लपट के साथ जलना। दहकना। भडकना।

धधकाना-क्रि० स० आग दहकाना। प्रज्वलित करना।

धधाना-क्रि० अ० दे० 'धधकाना'।

धनजय-सज्ञा पु० १ अग्नि २ चित्रक वृक्ष। चीता। ३ अर्जुन का एक नाम। ४ अर्जुन वृक्ष। ५ विष्णु। ६ शरीर में वर्तमान पाँच वायुओं में से एक।

धन-सज्ञा पु० १ संपत्ति। द्रव्य। दौलत। रुपया-पैसा, जमीन-जागदाद इत्यादि।

२ चीपायो का झुण्ड, जो किसी के पास हो। गाय, भैस आदि। गोधन। ३. स्नेहपात्र। अत्यंत प्रिय व्यक्ति। जीवनसर्वस्व। ४.

गणित में जोड़ का चिह्न। ५ मूल पूँजी।

\*सज्ञा स्त्री० युवती स्त्री। बधू।

‡वि० दे० 'धन्य'।

धनव-सज्ञा पु० १ धनुष। बमान। २ एक प्रकार की जोड़ी।

धनकुबेर-सज्ञा पु० वह, जो धन में कुबेर के समान हो। अत्यंत धनी।

धनतेरस—सज्ञा स्त्री० कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी ।  
 इस रात को लक्ष्मी की पूजा होती है ।  
 धनद—वि० धन देनेवाला । दाता ।  
 संज्ञा पु० १. कुबेर । २. धनपति । ३. वायु ।  
 ४. चित्रक वृक्ष ।  
 धनधान्य—सज्ञा पु० धन और अन्न आदि ।  
 संपत्ति और सामग्री ।  
 धनधाम—सज्ञा पु० घर-बार और रुपया-  
 पैसा ।  
 धनधारी—सज्ञा पु० १. कुबेर । २. बहुत  
 बड़ा अमीर ।  
 धनपति—सज्ञा पु० कुबेर ।  
 धनवंत—वि० दे० "धनवान्" ।  
 धनवान्—वि० [स्त्री० धनवती] जिसके पास  
 धन हो । धनी । दौलतमद ।  
 धनसार—सज्ञा पु० अनाज भरने की कोठरी ।  
 धनुहर—सज्ञा पु० चौर ।  
 धनहीन—वि० गरीब । निर्धन । दरिद्र ।  
 धना\*—सज्ञा स्त्री० युवती । वधू ।  
 धनाड्य—बहुत धनी । धनवान् । अमीर ।  
 धनाधिप—सज्ञा पु० कुबेर ।  
 धनाश्री—सज्ञा स्त्री० एक रागिनी ।  
 धनि\*—सज्ञा स्त्री० युवती । वधू ।  
 वि० दे० "धन्य" ।  
 धनिक—वि० धनी ।  
 सज्ञा पु० १ धनी मनुष्य । २ पति ।  
 धनिष्ठा—सज्ञा पु० एक छोटा पौधा, जिसके  
 सुगन्धित फल मसाले के काम में आते हैं ।  
 \*सज्ञा स्त्री० युवती स्त्री ।  
 धनिष्ठ—वि० अमीर । धनी ।  
 धनिष्ठा—सज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से  
 तेरहवाँ नक्षत्र, जिसमें पाँच तारे हैं ।  
 धनी—वि० १ जिसके पास धन हो । धनवान् ।  
 २ जिसके पास कोई गुण आदि हो ।  
 राजा पु० १ धनवान् पुरुष । मालदार  
 आदमी । २ अधिपति । मालिक । स्वामी ।  
 ३ पति । शीहर ।  
 सज्ञा स्त्री० युवती स्त्री । वधू ।  
 धी०—धनी धोरी—१. धन और मर्यादा-  
 वाला । २. मालिक या रक्षक ।  
 मुहा०—बात का धनी=बात का रक्का ।

धनु—सज्ञा पु० दे० "धनुष" । चार हाथ की  
 भाप । गोल क्षेत्र में आगे से कम अंश का  
 क्षेत्र ।  
 धनुआ—सज्ञा पु० १. धनुष । कमान । २.  
 रुई धुनने की धुनकी ।  
 धनुई†—सज्ञा स्त्री० छोटा धनुष ।  
 धनुक—सज्ञा पु० १. दे० "धनुष" । २. दे०  
 "इन्द्रधनुष" ।  
 धनुकधारी—सज्ञा पु० १. धनुष धारण करने  
 या बाण चलानेवाला । २. दे० "धनु  
 धारी" ।  
 धनुकबाई—सज्ञा स्त्री० लकवे की तरह का  
 एक वायु-रोग ।  
 धनुद्वारी, धनुर्वर—सज्ञा पु० धनुष धारण  
 करनेवाला पुरुष । तीरदाज । कमानेंव ।  
 धनुर्वार, धनुर्वारी—सज्ञा पु० दे० "धनुर्वर" ।  
 धनुर्वक्ष—सज्ञा पु० एक यज्ञ, जिसमें धनुष  
 का पूजन तथा उसके चलाने आदि की  
 परीक्षा भी होती थी ।  
 धनुवर्ति—सज्ञा पु० धनुकबाई रोग ।  
 धनुविद्या—सज्ञा स्त्री० धनुष चलाने की  
 विद्या ।  
 धनुर्वेद—सज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसमें धनुष  
 चलाने की विद्या का निरूपण है । यह  
 यजुर्वेद का उपवेद माना जाता है ।  
 धनुष—सज्ञा पु० १. तीर फेंकने का वह अस्त्र,  
 जो बाँस या लोहे के लचीले डंडे को झुकाकर  
 और उसके दोनों छोरों के बीच डोरी बाँधकर  
 बनाया जाता है । चाप । कमान । २. ज्योतिष  
 में धनुराशि । ३. एक लग्न । ४. चार हाथ  
 की एक भाप ।  
 धनुस्—दे० "धनुष" ।  
 धनुहाई\*—सज्ञा स्त्री० धनुष की लड़ाई ।  
 धनुही†—सज्ञा स्त्री० छोटा धनुष । लड़की  
 के खेलने की कमान ।  
 धनेश—सज्ञा पु० १. विष्णु । २. धन का  
 स्वामी । कुबेर ।  
 धनेस—सज्ञा पु० एक चिड़िया ।  
 धन्या\*—वि० दे० "धन्य" ।  
 धनसाठ—सज्ञा पु० बहुत धनी आदमी । प्रसिद्ध  
 धनाड्य ।

धनी-सज्ञा स्त्री० १. गामा और बलों की एक जाति। २. घोड़े की एक जाति।  
 धन्य-वि० कृतार्थ। प्रशंसा या बड़ाई के योग्य। नाग्यवान्। पुण्यवान्। सुकृती। श्रेष्ठ।

धन्यवाद-सज्ञा पु० १. साधुवाद। शाबाशी। प्रशंसा। २. किसी उपकार या अनुग्रह के बदले में प्रशंसा। कृतज्ञतासूचक शब्द। श्रुतिर्या।

धन्यतः-सज्ञा पु० दयताओं के चय, जो पुराणानुसार समुद्र-मयन के समय और सब वस्तुओं के साथ समुद्र से निकले थे। ये आयुर्वेद के सद्यो प्रधान आचार्य्य और सबसे बड़े चिकित्सक माने जाते हैं।

धन्व-सज्ञा पु० धनुष। कमान।

धन्वा-सज्ञा पु० १. धनुष। कमान। २. जलहीन देश। मरुभूमि।

धन्वाकार-वि० धनुष या कमान के आकार का। गोलाई के साथ झुका हुआ। टेढ़ा।

धन्वी-वि० १. धनुर्धर। कमनेत। २. निपुण। चतुर।

धप-सज्ञा स्त्री० किसी भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द।

सज्ञा पु० धौल। थप्पड़। तमाचा।

धपना-क्रि० अ० १. जोर से चलना। दौड़ना। २. झपटना। लपकना। ३. मारना। पीटना।

धप्पा-सज्ञा पु० १. धोखा। छल। चपेट। २. थप्पड़। तमाचा। ३. घाटा। नुकसान।

धबला-सज्ञा पु० १. ढीला पायजामा। २. स्त्रिया का लहंगा।

धब्बा-सज्ञा पु० १. दाग। निशान। २. कलक।

मुहा०—ताम में धब्बा लगाना=कौटि की भिदानेवाला काम करना।

धम-सज्ञा स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका।

धमक-सज्ञा स्त्री० १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। आघात का शब्द। २. पैर रखने की आवाज या आहट। ३. आघात आदि से उत्पन्न ध्वनि। ४. आघात। चोट।

धमकना-क्रि० अ० १. 'धम' शब्द के साथ गिरना। धमाका करना। २. जोर से मारना।

मुहा०—आ धमकना=आ पहुँचना।

धमकाना-क्रि० स० १. डराना। भय दिखाना। २. डांटना। घुड़वना।

धमकी-सज्ञा स्त्री० १. हानि पहुँचाने या भय दिखाने का विचार। डर दिखाने की क्रिया। २. घुड़की। डाँट-उपट।

मुहा०—धमकी में आना=डराने से डरकर कोई काम कर बैठना।

धमक्का-सज्ञा पु० १. आघात। २. एक प्रकार की बटूक। ३. बटूक का शब्द।

धमधमाना-क्रि० अ० 'धम धम' शब्द करना।

धमघूसड़ या धमघूसर-वि० १. मोटा और भट्ठा। ताढ़ल। २. मूँच।

धमत-सज्ञा पु० १. नरबट। २. फुँवनी। धौंकनी।

धमनि-सज्ञा स्त्री० दे० "धमनी"।

धमनी-सज्ञा स्त्री० १. शरीर के भीतर की रक्त आदि का संचार करनेवाली छोटी नली। २. वह नली, जिसमें प्रवेश करके शुद्ध लाल रक्त हृदय के स्तन द्वारा सारे शरीर में फैला रहता है। नाडी। नस। ३. हल्दी।

धमाका-सज्ञा पु० [अनु०] १. भारी वस्तु के गिरने का शब्द। २. बटूक का शब्द। ३. आघात। धक्का। ४. पथरकला बटूक। ५. हाथी पर लादने की तोप।

धमाचोकड़ी-सज्ञा स्त्री० १. उछल कूद। उपद्रव। ऊपम। गुलगपाडा। २. धोगा-धीगी। मार-पीट।

धमाधम-क्रि० वि० [अनु०] १. लगातार कई द्वार 'धम', 'धम' शब्द के साथ। २. लगातार प्रहार-शब्दों के साथ।

सज्ञा स्त्री० १. लगातार गिरने से धम-धम शब्द। २. मारपीट।

धमार-सज्ञा स्त्री० १. उछल-कूद। उपद्रव। उपाव। धमार्न/डडी। २. नटा की उछल-कूद। बलावाजी।

सज्ञा पु० होली में गाने का एक गीत।

धमारिया-सज्ञा पु० १. बलावाज। नटा। २. उपद्रवी। ३. धमार गानेवाला।

घमारी—सज्ञा पु० १. उपद्रव । उत्पात । २. होली की खेड़ा ।

वि० उपद्रवी ।

घर—वि० १. धारण करनेवाला । ऊपर लेनेवाला । २. ग्रहण करनेवाला ।

सज्ञा पु० १. पर्वत । पहाड़ । २. कच्छप (जो पृथ्वी को ऊपर लिये है) ३. विष्णु । ४. श्रीकृष्ण । ५. पृथ्वी ।

सज्ञा स्त्री० घरने या पकड़ने की क्रिया ।

यो०—घर-पकड़=भागते हुए आदमियों को पकड़ने का काम । गिरफ्तारी ।

घरक\*—सज्ञा स्त्री० दे० “घड़क” ।

घरकना—क्रि० अ० दे० “घड़कना” ।

घरणि—सज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

घरणिघर—सज्ञा पु० १. पृथ्वी को धारण करनेवाला । २. कच्छप । ३. पर्वत । ४. विष्णु । ५. शिव । ६. सोपनाग ।

घरणी—सज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

घरणीमुता—सज्ञा स्त्री० सीता (पृथ्वी की कन्या) ।

घरता—सज्ञा पु० १. देनदार । ऋणी । कर्जदार । २. कोई कार्य आदि अपने ऊपर लेनेवाला । धारण करनेवाला ।

यो०—वर्ता-वर्ता=सब कुछ करनेवाला ।

घरती—सज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

घरघर\*—सज्ञा पु० दे० “घगघर” ।

सज्ञा स्त्री० दे० “घडघड” ।

घरघरा\*—सज्ञा पु० घड़पन ।

घरघराना\*—क्रि० अ० दे० “घड-घडाना” ।

घरन—सज्ञा स्त्री० १. घरने की क्रिया ।

२. वह लंबा लट्ठा, जो दीवारों या लट्ठों पर इसलिए आड़ा रखा जाता है, जिसमें उसके ऊपर पाटन (छत आदि) या कोई बोझ ठहर सके । बड़ी । घरनी । ३. वह नस, जो गर्भाशय को दुडूवा से जकड़े रहती है । गर्भाशय का आधार । ४. गर्भाशय । ५. टेप । हठ ।

मज्ञा पु० दे० “घरना” ।

घरनहार\*—वि० धारण करनेवाला ।

मज्ञा स्त्री० घरती । जमीन ।

घरना—क्रि० स० १. पकड़ना । किसी वस्तु को दृढ़ता से हाथ में लेना । ग्रहण करना । रखना ।

२. स्थापित करना । स्थित करना । ठहराना । ३. पास रखना । ४. धारण करना ।

देह पर रखना । पहनना । ५. अवलंबन करना । अंगीकार करना । ६. हाथ में लेना । ग्रहण करना । ७. पल्ला पकड़ना ।

आश्रय ग्रहण करना । ८. किसी स्त्री को रखेली की तरह रखना । ९. गिरवी रखना ।

रेहन रखना । बंधक रखना ।

सज्ञा पु० कोई काम कराने के लिए किसी के पास अडकर बैठना और जब तक काम न हो, तब तक अन्न न ग्रहण करना ।

मुहा०—घर-पकड़कर=जबरदस्ती । धरा

रह जाना=काम न आना ।

घरनी—सज्ञा स्त्री० १. दे० “घरणी” ।

२. हठ । टेक ।

घरम\*—सज्ञा पु० दे० “घर्म” ।

घरवाना—क्रि० स० घरने या पकड़ने का

काम दूसरे से कराना ।

घरपना\*—क्रि० स० दवाना । मर्दन करना ।

घरसना—क्रि० अ० १. दब जाना । २. डर

जाना । सहम जाना ।

क्रि० स० १. दवाना । २. अपमानित करना ।

घरसनी\*—सज्ञा स्त्री० दे० “धरणी” । कुल्हा ।

घरहर\*—सज्ञा स्त्री० १. गिरफ्तारी । घर-

पकड़ । २. लड़नेवालों को घर-पकड़कर

लड़ाई बंद करने का कार्य । बीच-बिचाव ।

३. बचाव । रक्षा । ४. धर्म्य । धीरज ।

घरहरना\*—क्रि० अ० घड-घड शब्द करना ।

घडघडाना ।

घरहरा—सज्ञा पु० मीनार । मदान या तम

की तरह का बहुत ऊँचा भाग, जिस पर चढ़ने

के लिए भीतर ही भीतर सीढ़ियाँ बनीं हों ।

धोरहर ।

घरहरिया \*—सज्ञा पु० बीच-बिचाव कराने-

वाला । बचानेवाला । रक्षक ।

घरा—सज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी । जमीन । गमार ।

दुनिया । २. एक वर्णवृत्त । ३. ताँक की

बराबरी । ४. बंटवारा ।

घराऊ—वि० १. जो अच्छा होने के कारण

वभी-वभी—केवल विशेष अवसरा पर—  
व्यवहार में लाया जाय। बहुमूल्य। २  
बहुत दिना वा रसा हुआ। पुराना।

परातल—सज्ञा पु० १. सतह। पृथ्वी। धरती।  
२ लवाई और चौड़ाई का गुणनफल। रक्बा।  
क्षेत्रफल।

पराधर—सज्ञा पु० १ शोपनाग। २ पवंत।  
३ विष्णु।

धराधरन \*—सज्ञा पु० दे० “धराधर”।

धराधार—सज्ञा पु० शोपनाग।

धराधीश—सज्ञा पु० राजा।

धराना—क्रि० सं० १ पकड़ना। धमाना। २  
स्थिर करना। रखना। ३ स्थिर करना।  
ठहराना। निश्चित कराना। मुकदर  
कराना।

धरापुत्र—सज्ञा पु० मंगल ग्रह।

धराशायी—वि० [स्त्री० धराशायिनी] जमीन  
पर गिरा या पड़ा हुआ।

धरामुरी—सज्ञा पु० ब्राह्मण।

धराहर—सज्ञा पु० दे० “धरहरा”।

धरित्री—सज्ञा स्त्री० धरती। पृथ्वी।

धरेल या धरेली—सज्ञा स्त्री० रखेली स्त्री।  
उपपत्नी।

धरैया—सज्ञा पु० धरनेवाला।

धरोहर—सज्ञा स्त्री० धाती। अमानत। वह  
वस्तु या द्रव्य, जो किसी के पास इस विश्वास  
पर रखा हो कि उसका स्वामी जब माँगेगा,  
तब वह दे दिया जायगा।

धर्ता—सज्ञा पु० १ धारण करनेवाला।  
२ किसी का भार अपने ऊपर लेनेवाला।

यो०—धर्ता धर्ता—जिसे सब कुछ धरने-  
धरने का अधिकार हो। सर्वधर्ता।

धर्म—सज्ञा पु० १ वस्तुत्व। फर्ज। २ प्रवृत्ति।  
स्वभाव। नित्य-नियम। ३ अलभार-शास्त्र  
में वह गुण या वृत्ति, जो उपमेय और उपमान  
में समान रूप से हो। जैसे—‘बमल के ऐसे  
कोमल और लाल चरण’। इस उदाहरण  
में कोमलता और ललामी दोनों के साधारण  
धर्म हैं। ४ बलयाणकारी धर्म। मुकुट।  
सदाचार। श्रेय। पुण्य। सत्यम्। ५ ईश्वर,  
आदि के सबध में विश्वास और आराधना

की प्रणाली-विशेष। उपासना-भेद। मत।  
संप्रदाय। पय। मजहब। ६ नीति। ७ न्याय-  
व्यवस्था। वागदा। वानून। जैसे—हिंदू-  
धर्मशास्त्र। ८ विवेक। ईमान।

मुहा०—धर्म कमाना=धर्म करके उसना  
फल सचित करना। धर्म बिगाड़ना=१  
धर्म के विरुद्ध आचरण करना। धर्म भ्रष्ट  
करना। २ स्त्री का सतीत्व नष्ट करना।  
धर्म-लगती कहना=ठीक-ठीक कहना।  
सत्य या उचित बात कहना। धर्म से कहना=  
सत्य-मत्य कहना।

धर्म-कर्म—सज्ञा पु० किसी धर्म-ग्रंथ में आवश्यक  
ठहराया हुआ कार्य। धर्म-द्वारा प्रतिपादित  
कार्य। शुभकार्य। पुण्य।

धर्मक्षेत्र—सज्ञा पु० १ कुरुक्षेत्र। २ भारतवर्ष,  
जो धर्म के सचय के लिए कर्मभूमि माना  
गया है।

धर्मग्रन्थ—सज्ञा पु० वह पुस्तक, जिसमें आचार  
व्यवहार और उपासना आदि के सबध में  
शिक्षा हो।

धर्मपडी—सज्ञा स्त्री० बड़ी घड़ी, जो ऐसे  
स्थान पर लगी हो, जिसे सब लोग  
देख सकें।

धर्मचक्र—सज्ञा पु० १ बौद्धधर्म का चिह्न।  
२ बुद्ध की धर्मशिक्षा, जिसका आरम्भ  
सारनाथ (वासी) से हुआ था।

धर्मचर्या—सज्ञा स्त्री० धर्म का आचरण।

धर्मचारी—वि० [स्त्री० धर्मचारिणी] धर्म  
का आचरण करनेवाला।

धर्मवृत्त—वि० अपने धर्म से गिरा या हटा  
हुआ।

धर्मज्ञ—वि० १ धर्म जाननेवाला। २ धर्मपुत्र  
युधिष्ठिर।

धर्मणा—त्रि० वि० धर्म के विचार से।

धर्मत—अव्य० धर्म का ध्यान रखते हुए।  
सत्य-सत्य।

धर्मध्वज—सज्ञा पु० १ धर्म का ढाग रचकर  
स्वार्थ साधनेवाला मनुष्य। पातक्य। २  
मिथिला के जनकवर्षीय एक राजा का  
नाम, जो वेद, धर्मशास्त्र आदि के बड़े  
जानी थे।

धर्मध्वजी—सज्ञा पु० पाखंडी। दे० “धर्मध्वज”।  
धर्मनिष्ठ—वि० धर्म में जिसकी आस्था हो।  
धार्मिक। धर्मपरायण।

धर्मनिष्ठा—सज्ञा स्त्री० धर्म में आस्था।  
धर्म में श्रद्धा, भक्ति और प्रवृत्ति।

धर्मपत्नी—सज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री। वह  
स्त्री, जिसके साथ धर्मशास्त्र की रीति से  
विवाह हुआ हो। धर्म की स्त्री जो दक्ष  
की कन्या थी।

धर्मपुस्तक—सज्ञा स्त्री० वह पुस्तक, जो किसी  
धर्म का मूल आधार हो। किसी धर्म का  
मुख्य ग्रंथ।

धर्मबुद्धि—सज्ञा स्त्री० धर्म-अधर्म का विवेक।  
भले बुरे का विचार।

धर्मभोह—वि० धर्म से डरनेवाला। अधर्म  
करने से बहुत डरनेवाला।

धर्मयुग—सज्ञा पु० सत्ययुग।

धर्मयुद्ध—सज्ञा पु० धर्म के कारण होनेवाला  
युद्ध। वह युद्ध, जिसमें किसी प्रकार का  
नियम भग न हो।

धर्मरक्षित—सज्ञा पु० एक बौद्ध धर्मोपदेशक,  
जिसे महाराज अशोक ने उत्तरी पश्चिमी  
सीमांत देश में उपदेश देने भेजा था।

वि० वह चीज, जिसकी रक्षा धर्म द्वारा की  
गई हो।

धर्मराज\*—सज्ञा पु० दे० “धर्मराज”।

धर्मराज—सज्ञा पु० १ धर्म का पालन करने-  
वाला राजा। २ सुधिष्ठिर। ३ यमराज।

४ न्यायाधीश। न्यायवर्त्ता।

धर्मराय\*—सज्ञा पु० दे० “धर्मराज”।

धर्मरुप्ता उपमा—सज्ञा स्त्री० वह उपमा,  
जिसमें धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय  
में समान रूप से पाई जानेवाली बात का  
नयन न हो।

धर्मवीर—सज्ञा पु० धर्म-कार्य करने में साहसी  
व्यक्ति।

धर्मव्याघ्र—सज्ञा पु० मिथिलापुरी निवासी  
एक व्याघ्र, जिसने कौशिक नामक एक  
उपस्त्री वेदाध्यायी ब्राह्मण की धर्म का उल्लंघन  
समझाया था।

धर्मसाला—सज्ञा स्त्री० १ ठहरने का स्थान,

जो धर्म या पुण्य करने के उद्देश्य से बनाया  
गया हो। २ ऐसी जगह, जहाँ पुण्य के  
लिए दान दिया जाता हो।

धर्मशास्त्र—सज्ञा पु० किसी धर्म का वह ग्रंथ,  
जिसमें समाज के लिए नीति और सदाचार-  
सवधी नियम हों। मनु आदि महर्षियों-  
द्वारा बनाए गए शास्त्र।

धर्मशास्त्री—सज्ञा पु० धर्मशास्त्र के अनुसार  
व्यवस्था देनेवाला। धर्मशास्त्र जाननेवाला  
पंडित।

धर्मशील—वि० [सज्ञा धर्मशीलता] धर्म के  
अनुसार आचरण करनेवाला। धार्मिक।  
धर्मसभा—सज्ञा स्त्री० न्यायालय। कचहरी।  
अदालत।

धर्माशु—सज्ञा पु० सूर्य।

धर्माचार्य—सज्ञा पु० धर्म की शिक्षा देनेवाला  
गुरु।

धर्मात्मा—वि० धर्म करनेवाला। धार्मिक।

धर्माध—वि० [स्त्री० धर्माधता] धर्म  
के नाम पर अंधा होनेवाला या विवेक खोने-  
वाला। अपने धर्म के नाम पर बुरे से बुरे  
काम करनेवाला।

धर्माधिकरण—सज्ञा पु० न्यायालय।

धर्माधिकारी—सज्ञा पु० १ धर्म-अधर्म की  
व्यवस्था देनेवाला। विचारक। न्यायाधीश।  
२ राजा की ओर से धर्माध्यक्ष द्रव्य बाँटने  
आदि का प्रबंध करनेवाला। दानाध्यक्ष।

धर्माध्यक्ष—सज्ञा पु० दे० “धर्माधिकारी”।

धर्माय—क्रि० वि० धर्म या पुण्य के उद्देश्य  
से। परोपकार के लिए।

धर्मरिण्य—सज्ञा पु० पुण्य स्थान-विशेष।  
उपावन। महर्षियों के आश्रम।

धर्माधार—सज्ञा पु० १ धर्म का अवधार।  
साक्षात् धर्मस्वरूप। अत्यंत धर्मात्मा  
या पुण्यात्मा। २ न्यायाधीश। ३ सुधिष्ठिर।

धर्मासन—सज्ञा पु० न्यायाधीश के बैठने का  
स्थान। विचार करने का आसन।

धर्मिणी—सज्ञा स्त्री० पत्नी।

वि० धर्म करनेवाली।

धर्मिष्ठ—वि० धार्मिक। पुण्यात्मा।

धर्मी—वि० [स्त्री० धर्मिणी] १ धार्मिक।

पुण्यात्मा। धर्म माननेवाला या उगवे अनु-  
सार कार्य करनेवाला।  
राजा पु० १ धर्म का आधार। गुण या धर्म  
का आश्रय। २ धर्मात्मा मनुष्य।  
धर्मोपदेश-सज्ञा पु० धर्म की शिक्षा।  
धर्मोपदेशक-सज्ञा पु० धर्म का उपदेश देने-  
वाला।  
धर्म-पज्ञा पु० १ दे० "धर्मण"। २ धृष्टता।  
३ अवीरता। ४ नामदं। नरुसव। ५  
दवाय। ६ अपमान। ७ सतीत्वहरण।  
धर्मक-सज्ञा पु० धर्मण करनेवाला।  
धर्मण-सज्ञा पु० [वि० धर्णीय, धर्मित] १  
अनादर। अपमान। २ दबोचना। आश्रमग।  
३ दवाने या दमन करने का कार्य।  
४ असहनशीलता। ५ स्त्री-प्रसंग। रति।  
धर्मणा-सज्ञा स्त्री० १ अवज्ञा। अपमान।  
२ दवाने या हराने का कार्य। ३ मनीष-  
हरण। ४ रति।  
धर्मणी-सज्ञा स्त्री० कुलटा। व्यभिचारिणी।  
धर्मित-वि० परामृत। पराजित। हारा हुआ।  
सज्ञा पु० मंथन।  
धर्मो-वि० [स्त्री० धर्मिणी] १ धर्मण करने  
वाला। २ आक्रमण करनेवाला। दबोचने  
वाला। ३ हरानेवाला। ४ नीचा दिवाने  
या अपमान करनेवाला।  
धर्म-सज्ञा पु० १ एक जगली पेड़, जिसके  
अगो वा ओरवि के रूप में व्यवहार होता  
है। २ पति। स्वामी। जैसे—माधव।  
३ पुत्र। मर्द।  
धर्मो-सज्ञा स्त्री० दे० "धौवनी"।  
†\*वि० सकेद। उजला।  
धर्म-गज्ञा पु० एक पक्षी।  
वि० उजला।  
धर्मो-वि० [स्त्री० धर्मो] उजला।  
सकेद।  
धर्मो-वि० सकेद।  
सज्ञा स्त्री० सकेद रंग की गाय।  
धर्म-वि० १ श्वेत। उजला। सकेद।  
२ निर्मल। सारासक। ३ सुन्दर।  
सज्ञा पु० छप्पय छद का एक भेद।  
धर्मगिरि-गज्ञा पु० दे० "धर्मगिरि"।

धर्मलता-सज्ञा स्त्री० उजलपन। उज्ज्वलता।  
सकेदी।  
धर्मलता-वि० स० उज्ज्वल करना। चमकाना।  
प्रकाशित करना।  
धर्मलता-वि० सकेद। उजली।  
मज्ञा स्त्री० सकेद गाय।  
धर्मलई†-सज्ञा स्त्री० सकेदी। उजलपन।  
धर्मलगिरि-सज्ञा पु० हिमालय पहाड़ की  
एक प्रसिद्ध चोटी।  
धर्मलो-सज्ञा स्त्री० सकेद गाय।  
धर्मलता-वि० स० दीडाना।  
धर्म-सज्ञा पु० १. प्रवेश। २ डुबकी। गता।  
धर्मक-सज्ञा स्त्री० १ सूखी खोती। डमक।  
२ डाह। ईर्ष्या। ३ धसकने की क्रिया  
या भाव।  
धर्मकना-वि० अ० १ नीचे की घेंसना या  
दब जाना। नैठ जाना। २ डाह करना।  
ईर्ष्या करना। ३ डरना।  
धर्मना\*†-वि० अ० ध्वस्त होना। नष्ट होना।  
मिटना। दब जाना।  
†\*वि० अ० दे० "धेंसना"।  
धर्मति-सज्ञा स्त्री० दे० "धेंसति"।  
धर्मसना†\*†-वि० अ० दे० "धेंसना"।  
धर्मना-सज्ञा स्त्री० १ दे० "धेंसना"। २  
बुदेलबुद की एक नदी।  
धर्मना-वि० स० दे० "धेंसना"।  
धर्मना-सज्ञा पु० एक हिन्दू जाति, जो खेती  
या मजदूरी (कुएँ, तालाब आदि खोदने  
का काम) करती है।  
धर्मना-वि० स० १ बंद करना। भेडना।  
२ बहुत अधिक खा लेना।  
धर्मल-सज्ञा स्त्री० १ धोखा। २ फरेब।  
दगा। ऊधम। उपद्रव। ३ अन्याय।  
मनमानी। ४ बहुत जल्दी।  
धर्मलपद-सज्ञा पु० १ धोखेवाजी। दगा-  
वाजी। अन्याय। २ पाजीवन। क्षारत।  
धर्मलो-सज्ञा स्त्री० १ मनमानी। अन्याय।  
२ धोखेवाजी। दगावाजी। ३ बहुत अधिक  
जल्दी। धर्मल।  
धर्म-सज्ञा स्त्री० सूखे तवाबू या मिर्च  
आदि की तेज गंध।

पांसना-क्रि० अ० लूंसना। खांसना (पशुओं का)।

पांसी-सज्ञा स्त्री० खांसी।

धा-वि० धारण करनेवाला। धारक।

प्रत्य० = तरह। नाति। जैसे-नवधा भक्ति। सज्ञा पु० १. ब्रह्मा। २. बृहस्पति। ३. तबले का एक बोल। संगीत में "धैवत" शब्द या स्वर का संकेत। ध।

धाड़, धाई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "घाय"। दाई।

धाड़-सज्ञा पु० नाव का एक भेद।

धाऊं-सज्ञा पु० वह आवामी, जो आवश्यक कामों के लिए दौड़ाया जाय। हरकार।

धाक-सज्ञा स्त्री० रोय। आतक। प्रभाव। प्रताप।

मुहा०-धाक वैधना=रोय या दवदवा होना। आतक छाना। धाक बाँधना=रोय जमाना।

धाकर-वि० वर्णस्वर जाति-विशेष। नीच जाति। दोगला।

धागां-सज्ञा पु० बटा हुआ सूत। डोरा। तागा।

धाड़ा-सज्ञा स्त्री० १. दे० "डाड"। २. दे० "दहाड"। ३. दे० "डाड"। ४. डाकुओं का आक्रमण। ५. जल्पा। झुड़। गरोह।

धाड़ना-क्रि० अ० दहाड़ना।

धात-सज्ञा स्त्री० दे० "धातु"।

धाता-सज्ञा पु० १. विधाता। विधि। ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। महादेव। ४. शेषनाग।

धि० १. पालनेवाला। पालन। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक। ३. धारण करनेवाला।

धातु-सज्ञा स्त्री० १. खनिज पदार्थ। प्रसिद्ध धातुएँ ये हैं-सोना-चाँदी, ताँबा, लोहा, सीसा और रंग। २. शरीर को बनाए रखनेवाले पदार्थ। शुक। धीर्य। वैद्यक में शरीरस्थ सात धातुएँ मानी गई हैं-रस, रक्त, मांस, मूत्र, अस्थि, मज्जा और शुक। सज्ञा पु० १. भूत। तत्त्व। २. शब्द का मूल, जिसमें दियाई गयी या बनती है। जैसे-मन्त्र में मू, ह्र, इत्यादि।

धातुशय-सज्ञा पु० रोग, जिसमें शरीर क्षीण हो जाता है।

धातुपुष्ट-वि० धीर्य को गाढ़ा करने की आपधि।

धातुप्रधान-सज्ञा पु० धीर्य। शुक।

धातुमर्म-सज्ञा पु० कच्ची धातु को साफ करना, जो ६४ कलाओं में है।

धातुवर्द्धक-वि० धीर्य को बढ़ानेवाला पदार्थ। वह वस्तु जिसका सेवन करने से धीर्य बड़े।

धातुवाद-सज्ञा पु० १. रसायन बनाने का काम। २. ताँवे से सोना बनाना। कीमियागरी। ३. चौसठ कलाओं में से एक, जिसमें कच्ची धातु को साफ करते तथा एक में मिली हुई अनेक धातुओं को अलग-अलग करते हैं।

धात्री-सज्ञा स्त्री० १. माता। माँ। २. वह स्त्री, जो किसी शिशु को दूध पिलावे और उसका लालन-पालन करे। धाय। दाई। ३. भगवती। ४. गंगा। ५. आँबला। ६. भूमि। पृथ्वी। ७. गाय। ८. आर्या छंद का एक भेद।

धात्रीविद्या-सज्ञा स्त्री० बच्चा जनाने और उसे पालने आदि की विद्या।

धात्रेयी-सज्ञा स्त्री० धाय।

धातव्यं-सज्ञा पु० धातु से निकलनेवाला अर्थ। मूल और पहला अर्थ।

धाधि-सज्ञा स्त्री० ज्वाला।

धान-सज्ञा पु० अन्न-विशेष। शालि जिसमें से चावल निकलता है।

धानक-सज्ञा पु० १. धनुष चलानेवाला। धनुर्दारी। तीरबाज। यमनेठ। २. रुई धुननेवाला। धुनिया। ३. एक पहाड़ी जाति।

धानकी-सज्ञा पु० धनुर्द्वार।

धानपान-वि० दुबला-भटला। नाजूक।

धानमाली-सज्ञा पु० किसी दूसरे के चलाए हुए अस्त्र को रोकने की एक क्रिया।

धाना\*†-वि० अ० १. तेजी से चलना। दौघना। भागना। २. कोशिश करना। प्रयत्न करना।

गज्ञा स्त्री० १. भूना हुआ जी। २. भूना चावल। ३. धनिया। ४. अन्न का बण।

५. मनु। ६. अन्नमात्र।

धानी-सज्ञा स्त्री० १. धारण करनेवाला।

जिसमें कोई वस्तु रखी जाय। २. स्थान। जगह। जंगे—राजधानी। ३. हलका हरा रंग। ४. धनिया। भूना हुआ जी-या गेहूँ। दे० "धान्य"।

वि० हलके हरे रंग का।

पानुक—संज्ञा पु० दे० "धानक"।

पानुष्क—संज्ञा पु० दे० "धानक"।

धान्य—संज्ञा पु० १. एक ताल। २. धनिया। ३. धान। ४. अन्नमात्र। ५. एक प्राचीन अस्त्र।

धाप—संज्ञा पुं० १. दूरी की एक नाप, जो प्रायः एक मील की और वही दो मील की मानी जाती है। २. लवा-चोड़ा मैदान। ३. खेत की नाप।

संज्ञा स्त्री० जी भरना। तृप्ति। सतोष।

धापना\*—क्रि० अ० १. सतुष्ट होता। तृप्त होना। अघाना। जी भरना। २. दौड़ना। भागना।

क्रि० स० सतुष्ट करना। तृप्त करना।

धाषा—संज्ञा पु० १. छत के ऊपर का कमरा। अटारी। २. कच्ची या पक्की रसोई मिलने का स्थान।

धा-भाई—संज्ञा पुं० दूधमाई।

धाम—संज्ञा पु० १. घर। मकान। २. देह। शरीर। ३. बागडोर। लगाम। ४. शोभा। ५. प्रभाव। ६. देवस्थान या पुण्यस्थान। जैसे—चारो धाम आदि। ७. जन्म। ८. विष्णु। ९. ज्योति। १०. ब्रह्म। ११. स्वर्ग।

धामक धूमक—संज्ञा स्त्री० दे० "धूमधाम"।

धामनिधि—संज्ञा पुं० सूर्य।

धामिन—संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का साँप। २. एक वृक्ष।

धार्य—संज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ के जोर से गिरने का शब्द। तोप, बंदूक आदि के छूटने का शब्द।

धाय—संज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जो किसी दूसरे के बालक को दूध पिलाने और उसका पालन-पोषण करने के लिए नियुक्त हो। धात्री। दाई।

संज्ञा पुं० घब का पेड़।

धार—संज्ञा पुं० १. जोर से पानी बरसना।

जोर की वर्षा। २. झट्ठा किया हुआ वर्षा का जल, जो बँचक और डाकटरी में बहुत उपयोगी माना जाता है। ३. ऋण। उधार। कर्ज। ४. प्रांत। प्रदेश।

संज्ञा स्त्री० १. जलधारा। पानी आदि का गिरना या बहना। प्रवाह। २. पानी का सोता। चरमा। ३. किसी हथियार का तेज सिरा। ४. विनारा। छोर। ५. सेना। फौज। ६. प्रखरता। तीक्ष्णता। ७. किसी प्रकार का आक्रमण। ८. ओर। तरफ। दिशा।

मुहा०—धार चढ़ाना=किसी देवी, देवता या पवित्र नदी आदि पर दूध, जल आदि चढ़ाना। धार देना=दूध देना। धार निकालना=दूध दुहना। धार मारना=पेक्षा करना। धार बांधना=यत्र आदि के बल से किसी हथियार की धार को निकम्मा कर देना।

धारक—वि० १. धारण करनेवाला। २. रोकनेवाला। ३. ऋण लेनेवाला।

धारण—संज्ञा पु० १. धामना। २. पहनना। ३. सेवन करना। ४. अंगीकार करना। ग्रहण करना। ५. ऋण लेना। उधार लेना।

धारणा—संज्ञा स्त्री० १. धारण करने की क्रिया या भाव। २. वह शक्ति, जिससे कोई वाद मन में धारण की जाती है। बुद्धि। अकल। समझ। ३. दृढ़ निश्चय। पक्का धिबार। ४. मय्यादा। ५. याद। स्मृति। ६. योग में मन की वह स्थिति, जिसमें कैवा प्रह्ला का ही ध्यान रहता है।

धारणीय—वि० धारण करने योग्य।

धारना\*—क्रि० स० १. धारण करना। अप ऊपर लेना। २. ऋण करना। उधार लेना। क्रि० स० दे० "धारना"।

धारंगुर—संज्ञा पु० १. ओला। घन-उपल विनारी। २. एक तरह का गोद।

धारा—संज्ञा स्त्री० १. रीति। व्यवहार। प्रणाल। २. कानून की दफा या नियम। भारतीय दण्डविधान के नियम। ३. घोड़े की चाल। घोड़े का चलना। ४. पानी आदिका बहाव। प्रवाह। धार। ५. गिरता या बहता हुआ कोई द्रव पदार्थ। ६. पानी का सरना।

सोता। चरमा। ७ हथियार का तेज सिरा।  
वाढ। ८ बहुत अधिक वर्षा। ९  
समूह। झुड। १० लकीर। रेखा। ११ मालवा  
की प्राचीन राजधानी।

धाराधर-सज्ञा पु० वादल।

धारावाहिक-वि० परम्परागत। नमागत। अ-  
विच्छिन्न। लगातार।

धारावाही-वि० धारा के समान बिना रोक-  
टोक बढ़ने या चलनेवाला।

धारासभा-सज्ञा स्त्री० दे० "व्यवस्थापिका  
सभा"।

धारासम्पात-सज्ञा पु० अधिक वृष्टि।

धारासार-सज्ञा पु० भारी वर्षा। मूसल  
धार वर्षा।

धारि\*-सज्ञा स्त्री० १ दे० "धार"। २  
समूह। झुड। ३ एक वर्णवृत्त।

धारिणी-सज्ञा स्त्री० १ धरणी। पृथ्वी।  
२ सेमर का वृक्ष। ३ देवताओं की १४  
स्त्रियाँ शची, गार्गी आदि।

वि० धारण करनेवाली।

धारी-वि० [स्त्री० धारिणी] धारण करने  
वाला। जो धारण करे।

सज्ञा पु० एक वर्णवृत्त।

सज्ञा स्त्री० १ सेना। फौज। २ समूह।  
झुड। ३ रेखा। लकीर।

धारीदार-वि० कर्षडा-विशेष, जिसमें लघी-  
लघी धारियाँ या लकीरें हों।

धारीष्ण-सज्ञा पु० धन से निबला हुआ  
राजा दूध, जो प्रायः कुछ गरम होता है और  
बहुत गुणकारी माना जाता है।

धातराष्ट्र-सज्ञा पु० १ धृतराष्ट्र राजा के पुत्र  
दुर्योधन आदि। धृतराष्ट्र के वंशज। २ बाले  
पर और चाय वाला हम। कल्हस। ३ एक  
प्रकार का सर्प।

धामिक-वि० १ धर्मशील। धर्मात्मा।  
पुण्यात्मा। २ धर्म-सम्पन्नी।

धामिकता-सज्ञा स्त्री० धामिक होने का भाव।  
धर्मशीलता।

धार्य-वि० प्राण। धारणीय। धारण करने  
के योग्य।

धावक-सज्ञा पु० हरतारा। दौड़नेवाला।

धावन-सज्ञा पु० १ दौड़कर जाना। २  
चिट्ठी या सदेश पहुँचानेवाला। दूत।  
हरकारा। ३ धोने या साफ करने का काम।  
४ वह चीज, जिससे कोई चीज धोई या  
साफ की जाय।

धावना\*†-क्रि० अ० जल्दी-जल्दी जाना।  
दौड़ना। भागना।

धावनि\*†-सज्ञा स्त्री० १ जल्दी-जल्दी चलने  
की क्रिया या भाव। २ धावा। चढ़ाई।

धावनी-सज्ञा स्त्री० दूती। परिचारिका।

धावरी\*†-सज्ञा स्त्री० १ सफेद, गुण। २  
धारी।

वि० सफेद। उज्ज्वल।

धावा-सज्ञा पु० १ आनमण। हमला।  
चढ़ाई। २ दौड़।

मुहा०—धावा मारना=चढ़ाई करना।  
आक्रमण करना। छापा मारना। जल्दी-  
जल्दी चलना।

धावित-वि० दौड़ता या भागता हुआ।

धाह\*-सज्ञा स्त्री० [अनु०] चीख। दुःख का  
शब्द। जोर से चिल्लाकर रोना। धाड़।

धाही\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "धाय"।

धिग-सज्ञा स्त्री० धीगाधीगी। ऊँधम। उप-  
द्रव।

धिगा†-सज्ञा पु० १ बदमाश। शरीर २  
वंशर्ग। मिलजुज।

धिगाई-सज्ञा स्त्री० १ शरारत। ऊँधम।  
बदमाशी। २ वंशर्गी।

धिगाना-क्रि० स० धीगाधीगी करना। उप-  
द्रव या ऊँधम मचाना।

धिआ-सज्ञा स्त्री० दे० "धिय"।

धिआन\*†-सज्ञा पु० दे० "ध्यान"।

धिआना†-क्रि० स० दे० "ध्याना"।

धिक्-अव्य० १ विरक्तार, अनादर या  
पुनामूख शब्द। लानत। फटकार। २  
निंदा। शिंसायत।

धिकना†-वि० अ० गरम होता। सज्ज हाना।

धिकाना†-क्रि० स० धूब गरम करना।  
सपाना।

धिकार-सज्ञा स्त्री० ठिगकार, अनादर  
या पुनामूख शब्द। फटकार। लानत।

धिवशरणा-वि० स० "धिव्" यहवर बहुत  
तिरस्कार करना। मानव-मलमल करना।  
फटकारना।

धिवशरी-वि० धिवशरा हुआ। धिवशरने  
याय। अपमानित। निन्दित।

धिव\*—अव्य० दे० "धिव्"।

धिव\*—सज्ञा स्त्री० १. कन्या। बेटा। २  
लडकी। बालिका।

धिवशर\*—सज्ञा स्त्री० दे० "धिवशर"।

धिवशना\*—क्रि० स० धमकाना।

धिवशना\*—क्रि० स० डराना। धमकाना।  
भय दिखाना।

क्रि० अ० १ धीमा होना। मद पड़ना।  
२ धैर्य धारण करना।

धिवशना—सज्ञा स्त्री० १ बुद्धि। २ स्तुति। ३  
पृथ्वी। ४ स्थान।

धींग—सज्ञा पु० हट्टा-कट्टा व्यक्ति। खूब  
तन्दुरुस्त।

वि० १ मजबूत। जोरावर। २ शरीर।  
बदमाश। ३ उपपति। जार। लुगना।

धींगड, धींगडा\*—वि० (स्त्री० धींगडी) १  
हट्टा-कट्टा। हट्ट-मुट्ट। २ पाजी। बद-  
माश। दुष्ट। ३ दोगला। वर्णसकर। ४  
जार। उपपति।

धींगरा—सज्ञा पु० [स्त्री० धींगरी] १ हट्टा-  
कट्टा। मुमड। मोटा-ताजा। २ शठ।  
बदमाश।

धींगरा—सज्ञा पु० बदमाश। उपद्रवी।  
पाजी।

धींगराधींगी—सज्ञा स्त्री० १ जबरदस्ती। २  
मनमानी वारंवाई। अनुचित पार्य। शरा-  
रत। बदमाशी।

धींगामुझी—सज्ञा स्त्री० दे० 'धींगधींगी'।

धींग्रिय—सज्ञा स्त्री० वह इद्रिय, जिससे किसी  
बात का ज्ञान हो। जैसे—मन, आँख, कान।  
ज्ञानन्द्रिय।

धींग्रिय—सज्ञा पु० दे० 'धीमर'।

धी—सज्ञा स्त्री० १ बुद्धि। अकल। २ मन।  
३ वम्प। ४ दुहिता। लडकी। बेटा।

धीजना—क्रि० स० १ ग्रहण करना। स्वीकार  
करना। अंगीकार करना। २ धीरज

धरना। धैर्य धारण करना। ३ प्रसन्न या  
गुप्त होना।

धीति—सज्ञा स्त्री० १ व्याग। २ तृष्णा। ३  
प्रतीति। विश्वास।

धीम\*—वि० दे० "धीमा"।

धीमर—सज्ञा पु० दे० "धीवर"।

धीमा—वि० [स्त्री० धीमी] १ जिसकी बाल  
तेज न हो। मुस्त। आलसी। गिथिल। २

धीर। जो उग्र या तीव्र न हो। ३ नीचा  
म्बर।

धीमान्—सज्ञा पु० [स्त्री० धीमनी] १  
दृढस्वति। २ बुद्धिमान् व्यक्ति।

धीय\*—सज्ञा स्त्री० दे० "धी"।

धीया—सज्ञा स्त्री० लडकी। दुहिता।

धीर—वि० १ जिसमें धैर्य हो। दृढ़ और  
शांत चित्तवाला। अचंचल। स्थिरमति।

२ बलवान्। ताकतवर। ३ गभीर।  
विनीत। नम्र। ४ मद। धीमा।

\*सज्ञा पु० १ धैर्य। धीरज। ठारत।  
२ सनीप। सत्र।

धीरज\*—सज्ञा पु० दे० "धैर्य"।

धीरता—सज्ञा स्त्री० १ चित्त की स्थिरता।  
मन की दृढ़ता। धैर्य। २ स्थिरता।  
सनीप। सत्र।

धीरललित—सज्ञा पु० अति साहसी नायक।  
इस शब्द का प्रयोग नाटक में किया जाता है।

धीरशात—सज्ञा पु० सुशील, दयावान्, गुणवान्  
और पुण्यवान् नायक।

धीरा—सज्ञा स्त्री० नायिका विशेष। मध्या  
और प्रोडा नायिकाओं का धीरा एक भेद

है। मानिनी। प्रगल्भा। वह नायिका, जो  
अपने नायक के शरीर पर पर-स्त्री इसर के

चिह्न देखकर धैर्य से कोप प्रकाशित करे।  
वि० मद। धीमा।

सज्ञा पु० धीरज। धैर्य।

धीराधीरा—सज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो अपने  
नायक के शरीर पर पर-स्त्री रमण के चिह्न

देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से  
कोप प्रकट करे।

धीरिया—सज्ञा स्त्री० कन्या। दुहिता। बेटा।

धीरे—क्रि० वि० १ आहिस्ते से। धीमी

गति मे। २ इस प्रकार, जिसमें कोई गुन या देव न सके। चुपके मे।

धीरोदात्त-सज्ञा पु० १ नायक-विशेष, जो निरभिमान, दयालु, क्षमाशील, साहसी, बलवान्, धीर, दृढ़ और योद्धा हो। २ वीररत्न-प्रदान नाटक का मुख्य नायक।

धीरोद्धत-सज्ञा पु० वह नायक जो बहुत साहसी तथा वीर हो और सदा अपने ही गुण का बखान किया करे।

\*सज्ञा पु० दे० "धीर्य"।

धीवर-सज्ञा पु० [स्त्री० धीवरी] एक जाति, जो प्राय मछली पकड़ने और बेचने का काम करती है। मछुआ। मल्लाह।

धुआँ-सज्ञा पु० १ सुलगनी या जलनी हुई चीजा से निकलनेवाला भाप।

२. भारी समूह। ३ घटाटोप। दे० "धुआँ।"

धुई-सज्ञा स्त्री० घुनी।

धुंकार-सज्ञा स्त्री० जोर का शब्द। गरज। गड़गड़ाहट।

धुंगार-सज्ञा स्त्री० बपार। उड़ना। छींटा।

धुंगारना-वि० स० बपारना। छींकना। उड़ना।

धुंजा-वि० धुंजली। मद दृष्टि।

धुद-सज्ञा स्त्री० दे० "धुध"।

धुध-सज्ञा स्त्री० १ बहुत अँधरा। हवा में उड़ती हुई धूल। २ तुहरा। ३ चापलाई। और का एरा राग, जिसमें बार्द वस्तु स्पष्ट नहीं दिगर्द देनी।

धुधकार-सज्ञा पु० १ धुआं। गरज। गड़गड़ाहट। २ अंधार।

धुधमार-सज्ञा पु० दे० धुधमार।

धुधरी-सज्ञा स्त्री० १ हवा में उड़ती हुई धूल। २ अंधरा। रागीची।

धुधराना-वि० अ० द० 'धुधराना'।

धुधला-वि० १ गुलाब-रंग अंधरा। २ कुछ रंग राधा। धुई के रंग का। ३ जा गौर रंग में न हो। अस्पष्ट।

धुधलाई-सज्ञा स्त्री० दे० "धुधलाना"।

धुधलाना-वि० अ० धुधला होना। धुधला पटना।

धुधलापन-सज्ञा पु० १ धुधले या अस्पष्ट

होने का भाव। २ कम दिखाई देने का भाव।

धुधु-सज्ञा पु० एक राक्षस। यह मधु राक्षस का पुत्र था। जब यह साँस लेता था तो उसके माथे धुआँ और अगारे निकलते थे और भूकप होता था।

धुंधकार-सज्ञा पु० १ अंधार। अंधरा। २ धुंधलापन। ३ नगाड़े का शब्द। धुवार।

धुंधमार-सज्ञा पु० १ राजा विशकु का पुत्र। २ कुबलयाश्व, जिसने धुध नामक राक्षस को मारा था।

धुंधरि\*†-सज्ञा स्त्री० गर्द-गुवार या धुई के कारण होनेवाला अंधरा।

धुंधरित-वि० १ धुंधला किया हुआ। धूमिल। २ दृष्टिहीन। धुंधली दृष्टिवाला।

धुंधराना\*†-क्रि० अ० धुआँ देना। धुआँ दे-देकर जलना।

धुंधरी-सज्ञा स्त्री० दे० "धुधरि"।

धुंधेला-वि० १ छली। कपटी। २ हठी। दुराग्रही।

धुंध\*†-सज्ञा पु० दे० "धुध"।

धुआँ-सज्ञा पु० १ सुलगनी या जलनी हुई चीजा से निकलनेवाला भाप। धूम। २ भारी समूह। घटाटाप। ३ धुआँ। धुंजी।

मुहा०—धुआँ का धौहरा=पीछे ही काठ में नष्ट होनेवाला वस्तु या आयोजन। धुआँ के बाद उड़ना=भारी गप टीटना। धुआँ निपारना या पीटना=बड़-बड़ा कर बर्तना।

धुआँकन-सज्ञा पु० दे० "धुमकन"। भाप के जाग न चरनेवाली नाव या जहाज। अगिनशय। म्दीमर।

धुआँकन-सज्ञा पु० मान में बना हुआ यह छेद का नली, जिसमें स्मॉक मगाने का धुआँ निकलता है।

धुआँपार-वि० १ बड़े जाग का। प्ररड। २ धुआँ में भर। ३ गहरा रंग का। भदरंगा। भव्य। ४ कागज। वि० वि० बड़ बधिक या बड़ जोर में।

पुञ्जाना-त्रि० अ० अधिक पुर्ण में रहने के कारण स्याद और पच विगट जाता।  
 पुञ्जोप-वि० पुर्ण की एक महत्त्ववाता।  
 गुञ्जा स्त्री० १. अन्न न पचने के कारण आने वाली दवा। २. पुष्प।  
 पुञ्जो-गुञ्जा स्त्री० दे० "पुञ्जो"।  
 पुञ्ज-पुञ्ज-गुञ्जा पु० १. भय आदि में हतोपाधी भित की अभिव्यक्ति। पचराहट। २. आगानोष्ठा। पचोपेक्ष।  
 पुञ्ज-पुञ्जो-गुञ्जा स्त्री० १. घटवना। पचराहट। गप। २. डर। भय। मोह। ३. गले में पहनने का एक गहना।  
 पुञ्जना\*†-त्रि० अ० १. नीचे की ओर दृष्टा। झुक्ना। नचना। २. गिर पडना। ३. शपटना। दृष्ट पडना।  
 पुञ्जो-गुञ्जा स्त्री० धनी। धीवनी।  
 पुञ्जाना†-गुञ्जा स्त्री० घोर शब्द। गटगटाहट का शब्द।  
 पुञ्जाना\*†-त्रि० स० १. झुक्ना। नचना। गिराना। २. डबेलना। पछाटना। पडना। ३. धनी देना।  
 पुञ्कार, पुञ्कारी-सज्ञा स्त्री० गुणादे का शब्द।  
 पुञ्जना\*†-त्रि० अ० दे० "पुञ्जना"।  
 पुञ्ज, पुञ्जा\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "ध्वजा"।  
 पुञ्जिनी\*†-सज्ञा स्त्री० सेना। फौज।  
 पुञ्जना\*†-वि० जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो, केवल धूल हो।  
 पुञ्जकार-सज्ञा स्त्री० दे० "दुवकार"।  
 पुञ्जार्थ†-सज्ञा स्त्री० दे० "धूर्तता"।  
 पुञ्जकार-सज्ञा स्त्री० १. धू धू शब्द का शोर। २. घोर शब्द। गरज।  
 पुञ्जकारी-सज्ञा स्त्री० दे० "धूधकार"।  
 पुञ्ज-सज्ञा स्त्री० १. लगन। २. मन की तरंग। मीज। मनोरथ। ३. चक्का। ४. सोच-विचार। चिन्ता। खयाल। ५. गीत गाने का ढंग। गाने का तर्ज। ६. दे० "ध्वनि"।  
 .थी०-धुन का पक्का=बहु जो आरम्भ किए हुए काम को बिना पूरा किए न छोड़े।  
 पुञ्जना-त्रि० स० दे० "धुनना"।  
 पुञ्जकी-सज्ञा स्त्री० १. धनुष के आकार का धुनियो का औजार, जिससे वे रुई धुनते हैं।

गिजा। पट्टा। २. लड़को के खेलने का छोटा धनुष।  
 पुञ्जना-त्रि० स० १. धुनकी में रुई गाढ़ करना, जिसमें उगके धिनोके निवृत्त जारें। २. सूख गाना-मीटना। ३. बार-बार पटना। पटने ही जाना। ४. लगातार कोई काम करने के लिये।  
 पुञ्जाना-त्रि० स० धुनने का काम करने में लगना।  
 पुनि\*+गुञ्जा स्त्री० दे० "ध्वनि"।  
 पुनिवा†-गुञ्जा पु० रुई धुनने का काम करने वाला। तूमोवाला। बेहना।  
 पुनिहाव-गुञ्जा पु० हड्डी की पीटा। जगीर की पीटा।  
 धुनी-गुञ्जा स्त्री० नदी।  
 धुनीनाय-गुञ्जा पु० समुद्र। सागर।  
 पुनेहा†-सज्ञा पु० दे० "धुनिया"।  
 पुञ्जुमार-सज्ञा पु० १. गोटमाल। कुहराम। बालाहल। २. बीर बहूटी ३. गृहभूम।  
 पुपना†-त्रि० अ० दे० "धुलना"।  
 पुपला†-सज्ञा पु० लंहगा। पाँपरा। मिथियों के पहनने का गिला हुआ एक वस्त्र, जिसे वे चमर पर कमबर पहनती हैं।  
 पुमला†-वि० दे० "धूमिल"।  
 सज्ञा पु० जघा।  
 पुमिला-वि० दे० "धूमिल"।  
 पुमलाई, धूमिलाई-सज्ञा स्त्री० अधिमारा। अधेरा। धुंधलापन। बाला पडना। धूमिल होना।  
 पुमिलाना\*-क्रि० अ० धुंधला पडना। धूमिल होना। बाला पडना।  
 धूमला-सज्ञा पु० धुएँ के रंग का। अस्वच्छ।  
 धूरधर-वि० १. भार उठानेवाला। २. जो सबमें बहुत बड़ा, भारी या बली हो। ३. थोड़ा। प्रधान नेता। अगुआ। प्रबाड।  
 धूर-सज्ञा पु० १. गाड़ी या हल खींचने के समय बैलों के कंधे पर रखा जानेवाला जुवा। २. गाड़ी या रथ आदि का धुरा। अक्ष। ३. शीर्ष या प्रधान स्थान। ४. भार। बोझ। ५. जमीन की एक माप, जो विस्ते का बीतरवा भाग होती है। विस्वांती आदि। ६. आरम्भ।

७ अन्त। किनारा। छोर। ८ सीमा। हृद।  
 ९ मूल। १० जड़। धुरी १ ११ ध्रुव।  
 वि० पक्का। दृढ।  
 अव्य० १ बिलकुल ठीक। सटीव। सीधे।  
 २ एकदम दूर। बिलकुल दूर।  
 मुहा०—धुर सिर से=बिलकुल शुरू से।  
 धुरजटी\*—सज्ञा पु० दे० “धूजटी”।  
 धुरना\*†—कि० स० १ पीटना। मारना।  
 २ बजाना।  
 धुरपद—सज्ञा पु० दे० “ध्रुपद”।  
 धुरघा\*—सज्ञा पु० बादल। मेघ।  
 धुरव्य—सज्ञा पु० मेघ। बादल।  
 धुरसा—सज्ञा पु० दे० “धुसा”। ऊन की  
 लोई। ऊनी कपड़ा-बिसाग।  
 धुरा—सज्ञा पु० [सज्ञा स्त्री० धुरी]  
 गाड़ी मलकड़ी या लोहे का डंडा, जिसके  
 चारों ओर पहिया घूमता है।  
 धुरियाना†—कि० स० १ किसी वस्तु पर  
 घूल डालना। २ किसी ऐव को युक्ति से  
 दबा देना।  
 कि० अ० १ किसी चीज का घूल से ढँक  
 जाना। २ ऐव का दबाया जाना।  
 धुरी—सज्ञा स्त्री० छोटा धुरा। दे० “धुरा”।  
 धुरीराष्ट्र—सज्ञा पु० द्वितीय महायुद्ध के  
 समय जर्मनी, इटली और जापान  
 का गुट।  
 धुरीण—वि० १ बोझ सँभालनेवाला। २  
 मुख्य। प्रधान। ३ धुरधर।  
 धुरेडो—सज्ञा स्त्री० दे० “धुलडी”।  
 धुर्य—सज्ञा पु० १ श्री विष्णु। २ बल।  
 वि० श्रेष्ठ।  
 धुरेटना\*†—कि० स० घूल से रपेटना। घूल  
 लगाना।  
 धुर्रा—सज्ञा पु० १ किसी चीज का अत्यंत छाटा  
 भाग। कण। जरी। धूल। २ छिन भिन  
 कर डालना। ३ बहुत अधिक् मारना।  
 मुहा०—धुर्रे उछाना=किसी वस्तु के  
 अत्यंत छोटे-छोटे टुकड़े कर डालना।  
 धूलना—वि० अ० साफ किया जाना। धोना  
 जाना।  
 धूलवाना—वि० स० दे० “धुलाना”।

धुलाई—सज्ञा स्त्री० धोने का काम या धोने  
 की मजदूरी।  
 धुलाना—कि० स० धोने का काम हमारे में  
 कराना। धुलवाना।  
 धुलेडो—सज्ञा स्त्री० हिंदुओं का एक त्योहार,  
 जो होली के दूसरे दिन होता है। इस दिन  
 लोग दूसरी पर धूल तथा अवीर-गुलाल  
 डालने हैं।  
 ध्रुव\*†—सज्ञा पु० दे० “ध्रुव”।  
 ध्रुवाँ—सज्ञा पु० दे० “ध्रुवाँ”।  
 ध्रुवाँस—सज्ञा स्त्री० उरद का आटा, जिससे  
 पापड़ या कचौड़ी बनती है।  
 ध्रुवाना\*—कि० स० दे० “धुलाना”।  
 ध्रुस—सज्ञा पु० १ मिट्टी आदि का ऊँचा  
 ढर। टीला। २ नदी का बाँध। बंद।  
 ध्रुसा—सज्ञा पु० मोटे ऊन की लोई।  
 ध्रुघ—सज्ञा स्त्री० दे० “ध्रुघ”।  
 ध्रुधर\*—वि० दे० “ध्रुधला”।  
 ध्रु\*—वि० स्थिर। अचल।  
 सज्ञा पु० १ ध्रुव तारा। २ राजा उत्तान-  
 पाद का पुत्र ध्रुव, जा भगवान् का भक्त था।  
 ३ धुरी।  
 ध्रुआँ—सज्ञा पु० दे० “ध्रुआँ”।  
 ध्रुई—सज्ञा स्त्री० धूनी।  
 ध्रुकना\*—कि० अ० दे० “ढुकना”।  
 ध्रुजद\*—सज्ञा पु० दे० “ध्रुजटि”। निव।  
 ध्रुजना—कि० अ० हिलना। कांपना।  
 ध्रुत—वि० १ हिलता या कांपता हुआ।  
 धरधराता हुआ। २ धमकाया गया। ३  
 त्यक्त। छोड़ा हुआ।  
 †\*वि० धूर्त। दगाबाज।  
 ध्रुतना\*—कि० स० ध्रुतता करना। धोखा  
 देना। ठगना।  
 ध्रुती—सज्ञा स्त्री० एव चिड़िया।  
 ध्रुधु—सज्ञा पु० आग के दहकने या जोर से  
 जलाने का शब्द।  
 ध्रुनना\*—वि० स० किसी वस्तु को जलाने  
 उसका ध्रुआँ उठाना। धूनी देना।  
 कि० अ० दे० “धुनना”।  
 ध्रुना—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का बड़ा पेड़  
 जिसका गाँव घूष की तरह जलाना जाता

हे। २. आग में जलाने की मुगधित वस्तु। धूपनी—सजा स्त्री० १. गुग्गुलु, लोवान आदि गंध-द्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। धूप। २. वह आग, जिसे साधु लोग ठंड में बचने या तपस्या के लिए जलाते हैं। \*

मुहा०—धूपी जगाना या लगाना=१. साधुओं का अपने सामने आग जलाना। २. शरीर तपाना। तप करना। ३. साधु होना। विरक्त होना। धूपी रमाना=१. सामने आग जलाकर शरीर तपाने बैठना। २. तप करना। साधु या विरक्त हो जाना। धूपी देना=गंध-मिश्रित या विशेष प्रकार का धुआँ उठाना या पहुँचाना।

धूप-सजा पु० पूजा या मुगध के लिए गंध-द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। मुगधित धूप।

सजा स्त्री० १. एक गंधद्रव्य, जिसे जलाने से मुगधित धुआँ उठता है। जेम—वस्तु, अगर की लकड़ी। २. कई द्रव्यों के योग से बनाई हुई धूप। ३. सूर्य का प्रकाश और ताप। धाम।

मुहा०—धूप खाना=ऐसी स्थिति में होना कि धूप ऊपर पड़े। धूप चढ़ना या निकलना=सूर्योदय के पीछे प्रकाश का बढ़ना। दिन चढ़ना। धूप दिखाना=धूप में रखना। धूप लगाने देना। धूप में बाल या चूड़ा सफेद करना=बिना कुछ अनुभव प्राप्त किए जीवन का बहुत-सा भाग बिता देना।

धूपघड़ी—सजा स्त्री० एक घन, जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है। इसमें एक गोल चक्कर के बीच में एक कील होती है। धूप में उसी कील की परछाई से समय जाना जाता है।

धूपछाँह—सजा स्त्री० एक प्रकार का रंगीन कपड़ा, जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है और कभी दूसरा।

मुहा०—धूप और छाँह=मुख और बुद्धि। धूपदान—सजा पु० धूप या गंधद्रव्य जलाने का पात्र। अगियारी।

धूपरानी—सजा स्त्री० छोटा धूपदान।

धूपना\*†—क्रि० अ० धूप देना। गंधद्रव्य जलाना।

क्रि० म० दाँड़ना। हंगन होना। जैते—दाँड़ना-धूपना।

धूपवस्ती—सजा स्त्री० मसाला लगी हुई मौक या बत्ती, जिसे जलाने से मुगधित धुआँ उठकर फैलता है।

धूम-सजा पु० १. धुआँ। २. अजीर्ण या अपच में उठनेवाली टकार। ३. धूमकेतु। ४. उत्कापात।

सजा स्त्री० १. कोलाहल। रेलपेल। हलचल। उपद्रव। ऊधम। २. ठाट-बाट। समारोह। भारी आयोजन। धूमधाम। ३. शोहरत। प्रसिद्धि।

धूमक घंघा—सजा स्त्री० उछलकूद और हल्ला-गुल्ला। उपद्रव। उत्पात।

धूमकेतु—सजा पु० १. अग्नि। २. पुच्छल तारा। ३. शिव। केतुग्रह।

धूम-घड़क्का—सजा पु० दे० “धूमधाम”।

धूमधर—सजा पु० आग।

धूमधाम—सजा स्त्री० भारी तैयारी। ठाट-बाट। समारोह।

धूमपान—सजा पु० १. तम्बाकू, बीड़ी, सिगरेट, हुक्का आदि पीने का कार्य। २. विशेष प्रकार का धुआँ, जो नल के द्वारा रोगी को सेवन कराया जाता है।

धूमपोत—सजा पु० भाप के जोर से चलने वाली नाव या जहाज। स्टीमर।

धूमर\*†—वि० दे० “धूमल”।

धूमल, धूमला—वि० [स्त्री० धूमली] १. धुएँ के रंग का। धुंधला। मटमला। २. मन्दवान्तिवाला।

धूमाभ—वि० धुएँ के रंग का।

धूमायत्ती—सजा स्त्री० दस महाविद्याओं में से एक देवी। पार्वती।

धूमिल\*†—वि० १. धुएँ के रंग का। २. धुंधला।

धूमर—वि० धुएँ के रंग का।

सजा पु० १. ललाई लिये वाला रंग। २. शिलारम नाम का गंधद्रव्य। ३. एक अमुर। ४. शिव। महादेव। ५. मेढा।

पूष्यवर्ण—वि० धूर्त के रंग का ।  
धूर\*†—सज्ञा स्त्री० दे० “धूल” ।  
सज्ञा पु० एक विस्वे का वीसवाँ भाग ।  
विस्वांसी ।

धूरजटी\*—सज्ञा पु० दे० “धूर्जटि” ।  
धूरधान—सज्ञा पु० धूल का ढेर । धूलराशि ।  
धूरधानी—सज्ञा स्त्री० १ धूल की ढेरी ।  
धूल-राशि । २ ध्वंस । विनाश । ३ पयर-  
कड़ा । बटूक ।

धूरा—सज्ञा पु० १ धूल । गर्द । २ चूर्ण ।  
बुकनी । चूरा ।

मुहा०—धूरा करना या देना=शीव से अग  
सुन जाने पर साठ की बुकनी आदि मलना ।

धूरि\*†—सज्ञा स्त्री० दे० “धूल” ।

धूर्जटि—सज्ञा पु० शिव । महादेव ।

धूसं—वि० धोखेबाज । चालबाज । दगाबाज ।  
छली । चक्क ।

सज्ञा पु० साहित्य में शठ नायक का एक भेद ।

धूर्तता—सज्ञा स्त्री० चालबाजी । धोखेबाजी ।  
चक्कता । चालाकी ।

धूल—सज्ञा स्त्री० १ मिट्टी का महीन  
चूर । रेणु । रज । गद । २ धूल के समान  
तुच्छ वस्तु ।

मुहा०—(कही) धूल उड़ना=१ बरबादी  
होना । तबाही आना । २ सनाटा होना ।

रोनक न रहना । (किसी की) धूल उड़ना=१  
दोषा और दुनिया का उधेड़ा जाना । बदनामी  
होना । २ उपहास होना । दिल्लीगी उड़ना ।

किसी की धूल उड़ाना=१ बुराईया को प्रकट  
करना । बदनामी करना । २ उपहास करना ।

हँसी करना । धूल की रस्सी बटना=१ अन  
होनी बात के पीछे पड़ना । २ केवल धूलता से  
काम निकालना । धूल चाटना= बहुत

बिनती करना । (किसी बात पर) धूल  
डालना=कलने न देना । दवाना । धूल

फाँटना=मारा-मारा फिरना । धूल में मिगना  
=नष्ट होना । चौपट होना । धूल की धूल=

अत्यंत तुच्छ वस्तु या व्यक्ति । सिर पर  
धूल डालना=पछताना । मिर धुनना । धूल

समथना—अत्यंत तुच्छ समथना ।

धूला—सज्ञा पु० टुकड़ा । गद ।

धूलि—सज्ञा स्त्री० धूल । गर्द ।

धूर्वा—सज्ञा पु० दे० “धुर्वा” ।

धूसर—वि० १ धूल के रंग का । सावरी ।

मटमैला । २ धूल लगा हुआ । जिसमें धूल  
लिपटी हो । धूल से भरा ।

यी०—धूलि-धूसर=धूल से भरा हुआ ।

धूसरा—वि० दे० “धूसर” ।

धूसरित—वि० १ धूल से मटमैला हुआ ।

२ धूल से भरा या सना हुआ ।

धूसला—वि० दे० “धूसर” ।

धूक, धुन\*—अव्य० दे० “धिक” ।

धूत—वि० १ धरा हुआ । पकड़ा हुआ । २

धारण किया हुआ । ग्रहण किया हुआ ।

३ स्थिर किया हुआ । निश्चित । ४ पवित्र ।

धृतराष्ट्र—सज्ञा पु० १ एक कौरव राजा, जो

दुर्योधन के पिता और विचित्रवीर्य के पुत्र

थ । २. वह, जिसका राज्य दृढ़ हो । ३ वह

देश, जो अच्छे राजा के शासन में

हो ।

धृति—सज्ञा स्त्री० १ मन की दृढ़ता । धैर्य ।

धीरता । २ धरने या पकड़ने की क्रिया ।

धारणा । ३ स्थिरता । ४ सोलह मातृ-

काजा में से एक । ५ अठारह अक्षरा के वृत्तों

की सज्ञा । ६ दक्ष की एक कन्या और धर्म

की पत्नी ।

धृतिमान्—सज्ञा पु० स्थिरचित्त । धैर्यबलम्बी ।

धीर ।

धृष्ट—वि० [स्त्री० घृष्टा] १ सकोच या

लज्जा न करनेवाला । निलज्ज । बेहया ।

२ डोढ । गुस्ताख । उद्धत । साहित्य में

चार प्रकार के नायकों में से एक ।

धृष्टता—सज्ञा स्त्री० १ अनुचित साहस ।

ढिठाई । गुम्हाली । २ निलज्जता । बेहयाई ।

धृष्टद्युम्न—सज्ञा पु० राजा द्रुपद का पुत्र और

द्रोण की भाई । मुरक्षेत्र के युद्ध में जब

द्रोणाचार्य अपने पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु

की खूबी खबर सुनकर योग में मग्न हुए,

तब इसी ने उनका सिर काटा था । युद्ध

की अन्तिम रात को अश्वत्थामा ने पाण्डवों

की छावनी में चुपके से घूमकर अपने पिता-

प्राती धृष्टद्युम्न की मार डाला था ।

पृष्ण-वि० १ \* पृष्ट । डीठ । प्रगल्भ । २ साहसी । ३ निर्दग्ग ।  
 पेंनामृष्टि-सज्ञा स्त्री० मुन्ना-मुन्नी । पुस्ता-  
 घुम्मी । पुस्तमपुस्ता ।  
 पेन-सज्ञा स्त्री० दे० "पेनु" ।  
 पेनमुख-सज्ञा पु० गोमुख नामक बाजा ।  
 नरसिंहा ।  
 पेनु-सज्ञा स्त्री० १ गाय । २ वह गाय, जिसे  
 वच्चा जने बहुत दिन न हुए ह । दुधार गाय ।  
 पेनुक-सज्ञा पु० एक राक्षस, जिस कृष्ण के  
 बड़े भाई बलराम ने मारा था ।  
 पेनुमती-सज्ञा स्त्री० एक नदी का नाम ।  
 गोमती ।  
 पेय-वि० १ धारण करने योग्य । २ पोषण  
 करने योग्य । पोष्य ।  
 घेर-सज्ञा पु० एक अनार्य जाति ।  
 घेरिया, घेरी-सज्ञा पु० लडकी । पुत्री ।  
 घेलचा, घेला-सज्ञा पु० दे० "अधरा" ।  
 घेली-सज्ञा स्त्री० अठनी । आषा रूपया ।  
 घेताली-वि० १ चपल । चंचल । २ उजड़ ।  
 उद्धत ।  
 घेना-सज्ञा स्त्री० १ टेव । आदत । स्वभाव ।  
 २ काम धया ।  
 घेर्य-सज्ञा पु० १ सक्कट, बाघा आदि  
 उपस्थित होने पर चित्त की स्थिरता ।  
 धीरता । धीरज । २ उतावला या आतुर  
 न होने का भाव ।  
 घेवर-सज्ञा पु० संगीत के सात स्वरा में से  
 छठा स्वर, जो मध्यम के बाव का है ।  
 घोषा-सज्ञा पु० १ लाटा । बेंडोल पिंड ।  
 २ भद्र ।  
 मुहा०—मिट्टी का घोषा=१ मूर्ख । ना-  
 समझ । जड़ । २ निक्कमा । आलसी ।  
 घोई-सज्ञा स्त्री० छिलका निवाली हुई उरद  
 या मूंग की दाल ।  
 \*सज्ञा पु० राजगीर । यवाई ।  
 घोकड-वि० हट्टा-कट्टा । मुस्टडा । बलवान् ।  
 घोका-सज्ञा पु० दे० "घोखा" ।  
 घोखा-सज्ञा पु० १ छल । कपट । धूर्तता ।  
 चालाकी । ठगी । दगा । झूठा व्यवहार । २  
 ३. भूल । भ्रम । मिथ्या-प्रतीति । प्रवचना । ४

भ्रम में डालने की वस्तु । माया । ५. बेमन  
 का बना हुआ माने का एक तरह का पदार्थ ।  
 मुहा०—घोखा खाना=ठगा जाना । घोखा  
 देना=१ छलना । २ भ्रम में डालना । ३  
 भ्रम में डालकर हानि पहुँचाना । घोखे की  
 टट्टी=१ दिखावट चीज । २ भ्रम में डालने-  
 वाली चीज । ३ वह पर्दा या टट्टी, जिसकी  
 ओट में शिकारी शिकार खेलते हैं । घोखा  
 राडा करना=घोखा देने के लिए आडम्बर  
 करना । घोखे में या घोखे से=जान बूझकर  
 नहीं, भूल से । घोखा उठाना=घोखे में हानि  
 या कष्ट उठाना ।  
 घोखेबाज-वि० घोखा देनेवाला । धूर्त ।  
 दगाबाज । छली । कपटी ।  
 घोखेबाजी-सज्ञा स्त्री० छल । कपट । धूर्तता ।  
 घोटा-सज्ञा पु० दे० "ढोटा" ।  
 घोती-सज्ञा स्त्री० शरीर ढकने के लिए  
 कमर में लपेटकर पहनने का वस्त्र, जो  
 नव दस हाथ लम्बा होता है ।  
 मुहा०—घोती ढीली होना=१ डर जाना ।  
 २ भयभीत होना । ३ डरकर भागना ।  
 घोना-क्रि० सं० १ मँल दूर करना । २  
 पानी से साफ करना । २ दूर करना ।  
 हटाना । मिटाना ।  
 मुहा०—(किसी वस्तु से) हाथ घोना=  
 १ छो देना । गंवा देना । २ बर्चित रहना ।  
 हाथ धोकर पीछे पड़ना=सब छोड़कर  
 लग जाना । धी बहाना=न रहने देना ।  
 घोषा\*-सज्ञा स्त्री० तलवार । खड्ग ।  
 घोव-सज्ञा पु० घोए जाने की क्रिया । धुलावट ।  
 धुले कपड़े की खेप । एक बार में जितना  
 कपड़ा धुलकर घोवी के यहाँ से लाये ।  
 घोबिन-सज्ञा स्त्री० १ धारी जाति की  
 स्त्री । २ एक जल पक्षी ।  
 घोबी-सज्ञा पु० [स्त्री० घोबिन] मँले कपड़ा  
 को धो और साफ करके अपनी जीविका  
 चलानेवाला । कपड़े धोनेवाली जाति ।  
 कपड़ा धोनेवाला । रजक ।  
 मुहा०—घोबी का कुत्ता न घर का न घाट  
 का=व्यर्थ धर-उधर फिरनेवाला ।  
 निक्कमा आदमी ।

धोम-सज्ञा-पु० धूम्र। धुआँ।  
 धोर-सज्ञा पु० १. पास। निपटता। २. किनारा। बाड़।  
 धोरण-सज्ञा पु० सवारो। दीड़। सरपट।  
 धोरी-सज्ञा पु० १. घुरे को उठानेवाला। भार उठानेवाला। २. बैल। वृषभ। ३. प्रधान। मुखिया। सरदार। ४. धेय पुरुष। बड़ा आदमी।  
 धोरे†-क्रि० वि० पास। निपट।  
 धोवनी-सज्ञा स्त्री० धोनी।  
 धोवन-सज्ञा स्त्री० १. धोने का भाव। साफ करने की क्रिया। २. वह पानी जिससे कोई वस्तु धोई गई हो।  
 धोवना\*-क्रि० स० दे० "धोना"।  
 धोवा\*-सज्ञा पु० १. धोवन। २. जल। अरु।  
 धोवाना†-वि० स० धुलाना।  
 क्रि० अ० धुलना। धोया जाना।  
 धोसा-सज्ञा पु० गुड की पण्डी। भेली।  
 धौ†-अव्य० १. जिज्ञासा और सशय प्रकट करनेवाला एवं अव्यय। न जाने। मालूम नहीं। तो। २. सदेहसूचक वाक्यों में पहले लगनेवाला शब्द। कि। या। अथवा।  
 ३. किसी वाक्य के पूरे होने पर उससे मिले हुए प्रश्न-वाक्य का आरम्भ-सूचक शब्द जो 'कि' का अर्थ देता है। ४. विधि, आदेश आदि वाक्यों के पहले केवल जोर देने के लिए आनेवाला एक शब्द।  
 धौक-सज्ञा स्त्री० १. आग बहकाने के लिए धौकनी को दबाकर निवाली हुई जोर की हवा। आग की लपट की गरमी। २. गरमी, लू या धूप से उत्पन्न ताप। ३. साँस सम्बन्धी एक बीमारी।  
 धौकना-क्रि० स० १. फूंकना। आग बहकाने के लिए भाथी से हवा पहुँचाना। २. ऊपर डालना। भार डालना या सहन कराना। ३. दड आदि लगाना।  
 धौकनी-सज्ञा स्त्री० १. भाथी। २. चमड़े का एक थन, जिससे लोहार और सोनार आदि आग-फूंकते हैं।  
 धौगा†-सज्ञा-स्त्री० लू।

धौकिया-सज्ञा पु० १. आग फूँकनेवाला। भाथी चलानेवाला। २. टूटे-फूटे बरतनों की मरम्मत करनेवाले भाथी लेकर घूमनेवाले व्यापारी।  
 धौकी-सज्ञा स्त्री० दे० "धौकनी"।  
 धौन-सज्ञा स्त्री० १. दीड़-धूप। पयराहुट। हुरानी। उद्विग्नता। २. विवेचना। परीक्षण।  
 धौज-सज्ञा स्त्री० दे० "धौज"।  
 धौजना†-क्रि० स० दीड़ना-धूपना। दीड़-धूप करना। परो से रीदना।  
 धौताल-वि० १. जिसे किसी बात की धुन लग जाय। २. फुरतीला। चुस्त। चालाक। ३. माहसी। दूढ़। ४. हट्टा-कट्टा। मजबूत। ५. हैनड। ६. निपुण। पटु।  
 धौधीमार-सज्ञा स्त्री० उतावली। जल्दबाजी। हड़बड़ी।  
 धौस-सज्ञा स्त्री० १. डाँट। उपट। धमकी। घुडकी। २. धाक। अधिकार। रोब-दाब। ३. झाँगा-पट्टी। धोखा। छल।  
 धौसना-क्रि० स० १. दवाना। दमन करना। २. धमकी या घुडकी देना। डराना। ३. झारना-पीटना।  
 धौस-पट्टी-सज्ञा स्त्री० भुलावा। झाँगा-पट्टी। दम-दिलासा।  
 धौसा-सज्ञा पु० १. डका। बड़ा नगाडा। २. सामर्थ्य। शक्ति।  
 धौसिया-सज्ञा पु० १. धौस से क्राम चलनेवाला। २. झाँसा-पट्टी देनेवाला। ३. नगारा बजानेवाला।  
 धौ-सज्ञा पु० दे० "धव"। वृक्ष-विशेष।  
 धौत-वि० १. धोया हुआ। साफ। २. उजला। सफेद। ३. नहाया हुआ।  
 सज्ञा पु० स्था। चाँदी।  
 धौति-सज्ञा स्त्री० १. बुद्धि। २. हठयोग की एक क्रिया, जो शरीर की भीतर से बुद्ध करने के लिए की जाती है। ३. आँते साफ करने की योग की एक क्रिया, जिसमें कपड़े की एक धज्जी मूँह से पेट के नीचे उबारते हैं; फिर पानी पीकर उसे धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं।

धोतिप्रिया-सज्ञा स्त्री० दे० "धोति।"  
 धोम्य-सज्ञा पु० १. एक ऋषि, जो पादबंधों के पुरोहित थे। २. महाभारत के अनुगात्र एक प्रसिद्ध शिवभक्त ऋषि। ३. एक ऋषि, जो तारा-रूप में पश्चिम दिशा में स्थित हैं।  
 धोरहर\*-सज्ञा पु० दे० "धोराहर।"  
 धोरा-वि० [स्त्री० धोरी] १. स्नेह। सफेद। उजला। २. सफेद रंग का बैल। ३. धी का पेड़। ४. एक प्रकार का पड़ुवा।  
 धोराहर-सज्ञा पु० धरहरा। भीतार। बुब। ऊँची अटारी।  
 धोरिय\*-सज्ञा पु० बैल।  
 धोरी-सज्ञा स्त्री० १. सफेद रंग की गाय। बकिया। २. एक प्रकार की चिड़िया।  
 धोरे-वि० दे० "धोरे।"  
 धोल-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १. चाँटा। धपपडे। धप्पा। २. नुक्सान। हानि। टोटा।  
 \*वि० उजला। सफेद।  
 सज्ञा पु० धरहरा। धोराहर।  
 धोल-धक्का-सज्ञा पु० आघात। चपेट।  
 धोल धपपड-सज्ञा पु० १. भारभीट। धक्का-मुक्का। २. उपद्रव।  
 धोलहर\*-सज्ञा पु० दे० "धोराहर।"  
 धोला-वि० [स्त्री० धोली] सफेद। उजला।  
 धोलाई\*-सज्ञा स्त्री०. सफेदी। उजलापन।  
 धोलागिरि-सज्ञा पु०-द० 'धवलगिरि'।  
 ध्यात-वि० विचारा हुआ। ध्यान विया हुआ। चिंतित।  
 ध्यातव्य-सज्ञा पु० ध्यान के योग्य। ध्यान देने योग्य। अत्यन्त प्रिय या उपयोगी।  
 ध्याता-वि० [स्त्री० ध्यानी] १. ध्यात करने वाला। २. विचार करनेवाला।  
 ध्यान-सज्ञा पु० १. सोच विचार। चिंतन। मनन। २. भावना। प्रत्यय। विचार। समाल। ३. चित्त की ग्रहण-वृत्ति। ४. चेतना की प्रवृत्ति। ५. समय। बुद्धि। ६. धारणा। स्मृति। याद। ७. चित्त को एकाग्र करके किसी आरंभ करने की क्रिया। या योग के आठ अंगों में से सातवाँ अंग और धारणा तथा समाधि के बीच की अवस्था है।

महा०—ध्यान में डूबना या गमन होना= पोरि वात इस घरह मन में लाना कि आर सब बातें भूल जावें। (विषी के) ध्यान में लगना=विषी का विचार, मन में लाकर गमन होना। ध्यान आना=विचार उपग्र होना। ध्यान जगना=विचार स्थिर होना। ध्यात वेंधना=लगातार समाल करना रहना। ध्यान रखना=विचार बनाए रखना। न भूलना। ध्यान लगना=बराबर समाल करना रहना। ध्यान में न लाना=१. चित्त न करना। परवाह न करना। २. न विचारना। ध्यान जमना=चित्त एकाग्र होना। ध्यान जाना=चित्त का किसी आर प्रवृत्त होना। ध्यान दिलाना=समाल करना या जगाना। चेतना। मुझाना। ध्यान रना=नीर करना। ध्यान पर चढ़ना=मन न स्थान कर लेना। चित्त से न हटना। ध्यान बैठना=चित्त एकाग्र न रहना। खयाल इधर-उधर होना। ध्यान वेंधना=विषी ओर चित्त स्थिर या एकाग्र होना। ध्यान लगना=चित्त प्रवृत्त या एकाग्र होना। ध्यान आना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान दिलाना=स्मरण करना। याद दिलाना। ध्यान पर चढ़ना=स्मरण होना। याद होना। ध्यान रखना=याद रखना। ध्यान स उतरना=भूलना। ध्यान छूटना=चित्त की एकाग्रता का नष्ट होना। चित्त इधर-उधर हो जाना। ध्यान करना=परमात्मचित्तन आदि के लिए चित्त का एकाग्र करके बैठना।  
 ध्याता\*-क्रि० स० १. ध्यान करना। २. स्मरण करना। मुमरता।  
 ध्यानी-वि० १. ध्यानयुक्त। समाधिस्थ। २. ध्यान करनेवाला।  
 ध्येय-वि० १. ध्यान करने योग्य। २. जिसका ध्यान विया जाय।  
 ध्रुपद-सज्ञा पु० एक प्रकार का गीत। एक राग।  
 ध्रुव-वि० १. सदा एक ही स्थान पर रहने वाला। स्थिर। अचल। २. सदा एक ही अवस्था में रहनेवाला। नित्य। ३. निश्चित। संज्ञा पु० १. आकाश। २. नील। ३. पर्वत।

४ सभा। पून। ५ बट। वरगद। ६ आठ  
यमुआ में से एव। ७ ध्रुपद। ८ विष्णु।  
९ ध्रुव तारा। १० पुराणा के अनुसार  
राजा उत्तानपाद के एक पुत्र, जिन्हीं माता  
का नाम सुनीति था। विष्णु भगवान् ३  
इनकी भक्ति स प्रसन्न होकर इन्हें वर दिया  
कि तुम सब लोका ग्रहा और नक्षत्रों के  
ऊपर जाके आधार-स्वरूप होने पर  
भाव से स्थित रहोगे। तब से ये आपणा  
म तारे के रूप में प्रायः एक ही स्थान पर  
स्थित हैं। ११ भूगोल विद्या में पृथ्वी के  
दो दोना सिद्धे, निम्नस हावर अधरतो गई  
हुई मानी जाती हैं। १२ छदशास्त्र के  
अनुसार रमण का अठारहवा भद्र, जिसमें  
तमश एक लघु एर गुह और तीन लघु  
हाते हैं।

ध्रुवता-सज्ञा स्त्री० १ स्थिरता। अचलता।

२ दृढ़ता। पक्कापन। ३ निश्चय।

ध्रुव तारा-सज्ञा पुं० वह तारा, जो सदा  
ध्रुव अर्थात् मेरु के ऊपर रहता है वही  
इधर उधर नहीं होता।

ध्रुवदशक-सज्ञा पुं० १ सप्तार्थ मंडल। २  
कुतुबनुमा।

ध्रुवदशन-सज्ञा पुं० विवाह संस्कार के  
अतगत एक कृत्य, जिसमें वर-वधू को ध्रुव-  
तारा दिखाया जाता है।

ध्रुवलोक-सज्ञा पुं० पुराणानुसार एक लोक  
जो सत्यलोक के अतगत है और जिसमें  
ध्रुव स्थित हैं।

ध्वस्त-सज्ञा पुं० नाश। विनाश।

ध्वस्तक-वि० नाश करनेवाला।

ध्वस्तन-सज्ञा पुं० [वि० ध्वस्तनीय ध्वस्तित  
ध्वस्त] १ नाश करने की क्रिया। २ नाश  
होने का भाव। विनाश। क्षय।

ध्वसावशेष-सज्ञा पुं० किसी चीज के टूट  
फूट जान पर उसका बचा हुआ अंश। दे०  
भग्नावशेष। खंडहर।

ध्वसो-[स्त्री० ध्वसिनी] नाश करनेवाला।  
विनाशक।

ध्वज-सज्ञा पुं० दे० 'ध्वजा'। १ चिह्न।  
निशान। २ पताका। झंडा।

ध्वजभग-सज्ञा पुं० नपुंसकता। पुण्या की एक  
बीमारी जिसमें नपुंसक हो जाते हैं।

ध्वजा-सज्ञा स्त्री० १ पताका। झंडा। निशान।  
२ छदशास्त्रानुसार ठगण का पहला भद्र,  
जिसमें पहले लघु फिर गुरु आता है।

ध्वजिन-वि० पाखंडी।

ध्वजिनी-सज्ञा स्त्री० सेना का एक भेद।

ध्वजी-वि० [स्त्री० ध्वजिनी] १ ध्वजवाण।  
पताकाधारी। जो पताका-पताना लिए हो।  
२ चिह्नवाला। चिह्नयुक्त।

सज्ञा पुं० १ पहल। २ ग्राहण। ३  
युद्ध। ४ घोड़ा। ५ साप। ६ मोर।  
७ सीपी।

ध्वनि-सज्ञा स्त्री० १ वह विषय जिसका  
ग्रहण श्रवणेंद्रिय से हो। शब्द। नाद।  
आवाज। २ शब्द का स्फोट। आवाज  
की गूंज। लय। ३ वह काव्य जिसमें  
वाक्यांश की अपेक्षा व्यंग्यांश अधिक हो।  
४ आशय। गूढ़ अर्थ। मतलब।

ध्वनित-वि० १ व्यंजित। प्रकट किया हुआ।  
२ धजाया हुआ। वादित।

ध्वय-सज्ञा पुं० व्यंग्यांश।

ध्वन्यात्मक-वि० ध्वनि-स्वरूप या ध्वनि-  
मय। जिसमें व्यंग्य प्रधान हो (वाक्य)।

ध्वयार्थ-सज्ञा पुं० वह अर्थ, जिसका बोध  
वाक्यांश से न होकर केवल ध्वनि या  
व्यंजना से हो।

ध्वस्त-वि० टूट। भंग। १ सड़ित। टूटा  
फूटा। भग्न। २ परास्त। पराजित। व्युत्।

ध्वस्त-सज्ञा पुं० अधकार। अधरा।

ध्वान्तशत्रु-सज्ञा पुं० १ सूर्य। २ चंद्रमा। ३  
अग्नि। ४ महादेव।

ध्वांतचर-सज्ञा पुं० राक्षस।

## न

न-हिंदी वर्णमाला का चौथवा और स्वयं का पाँचवा अक्षर । इसका उच्चारण-म्यान दृढ़ है, इसलिए इसे दन्त्य वर्ण माने हैं ।  
नञा पु० १ उपमा । २. ग्न । ३. सोना ।  
४. युद्ध । ५. वष ।

अप्य० १. निषेध-नाचक मृद । नही । गज ।  
२. या नही । जैसे—गुन वही जाओगे न ?  
३. वज्रगाथा में बहुवचन का चिह्न समझा जाता है ।

नंग-सज्ञा पु० १. नग्नता । नग्नान । नंगे होने का भाव । २. गुप्त अंग ।

नंग-घट्टंग-वि० मिलकुल नगा । वस्त्रहीन । दिगंबर ।

नंग-मुनंगा-वि० दे० "नंग-धुतू" ।

नंगा-वि० १.—जैलु-नपडा न पहने हो । दिगंबर । विदस्त्र । वस्त्रहीन । २. निर्लज्ज । बेहया । ३. लुच्चा । पाजी । ४. जो किसी तरह ढँका न हो । खुला हुआ ।

मो०—अलिक नगा या नगा मादरजाद= मिलकुल नगा ।

नंगाशोरी-सज्ञा स्त्री दे० "नगाशोली" ।

नंगाशोली-सज्ञा स्त्री जिसी के पहने हुए कपड़ों आदि को उतरवाकर उसनी तलाशी लेता । कपड़ों की तलाशी ।

नंगा-बुच्चा, नगा-बूचा-वि० कमाऊ । जिनके पास कुछ भी न हो । बहुत दरिद्र ।

नंगा-लुच्चा-वि० नीच और दुष्ट । बदमाश ।  
नंगियाना-क्रि० प्र० १. नगा करना । शरीर पर वस्त्र न रहने देना । २. सब कुछ छील लेना ।

नंद-सज्ञा पु० १. गोमूल के गोपी के राजा जिनके यहाँ श्रीकृष्ण ने अपना शैशव व्यतीत किया था । २. महात्मा युद्ध के सोतेले भाई । ३. मगध का राजा । इस नाम के नौ राजा पाटलिपुत्र के सिंहासन पर आरुढ़ हुए थे । ४. आनंदी हर्ष । ५. परमेश्वर । ६. पुराणानुसार नौ-निधियों में से एक । ७. विष्णु । ८. चार प्रकार की वासुदियो

में से एक । ९. पिंगल में टमल के दूधरे भेद का नाम, जिनमें एक मुर्ख और एक लघु होता है । १०. लड़का । बेटा ।

नंदक-सज्ञा पु० १. श्रीकृष्ण का मद्य । २. राजानंद, जिनके यहाँ कृष्ण बाल्यावस्था में रहते थे ।

वि० १. आनंददायक । २. मुक्त-भावा । ३. सर्वोप देनेवाला ।

नंदविशोर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

नंदकुमार-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

नंदगाव-सज्ञा पु० वृन्दावन का एक गाँव, जहाँ नंद रहते थे ।

नंदग्राम-सज्ञा पु० १. नदीग्राम । २. अपोध्या के समीप का एक गाँव, जहाँ बंठकर राम के वनवास-काल में भगव ने तपस्या की थी । नदिग्राम ।

नंदनंदन-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

नंदनदिनी-सज्ञा स्त्री० योगमाया ।

नंदन-सज्ञा पु० १. इद्र का उपवन । २. एक प्रकार का विष । ३. महादेव । शिव । ४. विष्णु । ५. पुत्र । जैसे नंदनंदन । ६. एक प्रकार का अस्त्र । ७. मेघ । बादल । ८. एक वर्णवृत्त ।

वि० आनंददायक । प्रगट करनेवाला ।

नंदन-घन-सज्ञा पु० इद्र की यादिका ।

नन्दन\*—क्रि० अ० आनंदित होना ।

राजा स्त्री० लड़की । बेटा ।

नंदनी-सज्ञा स्त्री० दे० "नदिनी" ।

नंदरानी-सज्ञा स्त्री० नंद की स्त्री यशोदा ।

नंदलाल-सज्ञा पु० नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण ।

नंदा-सज्ञा स्त्री० १. दुर्गा । २. गौरी । ३. एक प्रकार की कामधेनु । ४. एक मानव या बाल-ग्रह । ५. संपत्ति । संपदा । ६. पति की बहन । नगद । ७. बरख छद्म का एक नाम । ८. प्रसन्नता । तिथि-विशेष । चोरी पक्षों की प्रतिपदा, पच्ची और एवासी तिथि ।

वि० १. आनंद देनेवाली। २. सुभ।  
 नंदि-संज्ञा पुं० १. शिव का द्वारपाल बेल।  
 २. आनंद। ३. आनंदमय। ४. परमेश्वर।  
 ५. नंदिकेश्वर। शिव। ६. जुआ का खेल।  
 घुतश्रीड़ा।  
 नंदिकेश्वर-संज्ञा पुं० १. शिव के द्वारपाल  
 बेल का नाम। २. एक उपपुराण, जिसे  
 नंदिपुराण भी कहते हैं।  
 नंदिघोष-संज्ञा पुं० १. अर्जुन के रथ का  
 नाम। २. बंदोजनों की घोषणा। भाटों  
 की स्तुति। मंगल-घोषणा।  
 नंदित-वि० आनंदित। सुखी। वज्रता  
 हुआ।  
 नंदिन\*-संज्ञा स्त्री० पुत्री। लड़की।  
 नंदिनी-संज्ञा स्त्री० १. पुत्री। बेटी। २.  
 रेणुका नामक गध-द्रव्य। ३. उमा। ४.  
 गंगा। ५. पति की बहन। ननद। ६. पत्नी।  
 स्त्री। ७. साली। पत्नी की बहिन। ८. दुर्गा।  
 ९. तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। १०. कल-  
 हस। ११. सिंहाद। १२. बसिष्ठ की काम-  
 धेनु। राजा दिलीप ने इसी की शेर से रक्षा  
 की थी और इसी की आराधना करके उन्होंने  
 रघु नामक पुत्र प्राप्त किया था।  
 नंदिवर्द्धन-संज्ञा पुं० १. शिव। २. पुत्र।  
 ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का  
 निमान। ४. मित्र। दोस्त।  
 वि० आनंद बढ़ानेवाला।  
 नंदी-संज्ञा पुं० १. शिव के एक प्रकार  
 के गण। शिव का द्वारपाल, बेल। २.  
 शिव के नाम पर दाग कर उत्सर्ग  
 किया हुआ कोई साँड़। ३. वह बेल, जिसके  
 शरीर पर गाँठें हों। ऐसा बेल खेती के काम  
 के लिए अच्छा नहीं होता। ४. विष्णु।  
 ५. घब का पेड़। बरगद का पेड़।  
 वि० आनंदमुक्त। जो प्रसन्न हो।  
 नंदीगण-संज्ञा पुं० १. शिव के द्वारपाल, बेल।  
 २. दागकर छोड़ा हुआ बेल। साँड़।  
 नंदीमुख-संज्ञा पुं० दे० "नंदीमुख"।  
 नंदीश्वर-संज्ञा पुं० १. शिव। २. शिव का  
 एक गण।  
 नंदेज\*-संज्ञा पुं० दे० "नंदोई"।

नंदोई-संज्ञा पुं० ननद का पति। पति का  
 बहनोई।  
 नंदर-वि० [अंग्रे०] संख्या। अदद।  
 संज्ञा पुं० १. गिनती। गणना। २. समा-  
 यिक पत्र की कोई संख्या। अंक। ३. बगड़ा  
 नापने का ३६ इंच का एक गज।  
 नंदरदार-संज्ञा पुं० गाँव का वह जमींदार, जो  
 अपनी पट्टी के दूसरे हिस्सेदारों से माल-  
 गुजारी आदि वसूल करने में सहायता दे।  
 नंदरवार-क्रि० वि० सिलसिलेवार। एक-एक  
 करके। क्रमशः।  
 नंदरी-वि० १. नंदरवाला। २. नंदर  
 लगा हो। ३. प्रसिद्ध। मशहूर।  
 नंदरीगज-संज्ञा पुं० कपड़ा नापने का ३६  
 इंच का एक गज।  
 नंदरी सेर-संज्ञा पुं० तोलने का सेर, जो  
 भारतीय रुपयों से ८० भर का होता है।  
 नंस्-वि० जट्टे। बरबाद।  
 नंदहरा-संज्ञा पुं० नंदरी भाषण। विवाहिता  
 स्त्री के पिता का घर।  
 नई\*-वि० 'नया' का स्त्री० रूप।  
 नईजी-संज्ञा स्त्री० लीची नामक फल।  
 नइ\*-वि० १. दे० "नव"। २. दे० "नौ"।  
 नइआ-संज्ञा पुं० दे० "नाऊ"।  
 नइका\*-संज्ञा स्त्री० दे० "नीका"।  
 नउत\*-वि० नीचे की ओर झुका हुआ।  
 नउलि\*-वि० नया।  
 नओइ\*-संज्ञा स्त्री० दे० "नवोडा"।  
 नककटा-वि० [स्त्री० नककटी] १. जिसकी  
 नाक कटी हो। २. जिसकी बहुत दुर्दशा  
 या बदनामी हुई हो। ३. निर्लज्ज। बेहया।  
 नककटी-संज्ञा स्त्री० १. बदनामी। २. दुर्दशा।  
 ३. नाक कटने की क्रिया।  
 नककिसनी-संज्ञा स्त्री० १. जमीन पर नाक  
 रगड़ने की क्रिया। बिनती करना। चिरोरी  
 करना। २. बहुत अधिक दीनता। आजिजी।  
 नकचड़ा-संज्ञा पुं० [स्त्री० नकचड़ी] चिड़-  
 चिड़ा। बद-मिजाज।  
 नकछिकनी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रीषा,  
 जिसकी सुंधने से छींक आने लगती है।  
 नकटा-संज्ञा पुं० [स्त्री० नकटी] १. नक

जिसकी नाव बट गई हो। २. एर प्रकार का गांव, जो स्थिरी विवाह के समय गाती है।

वि० १. जिसकी नाव बटी हो। २. निरंज। नक्शोदा-सज्ञा पु० नाव-भी चढ़ाकर नगर करना अथवा बाँट बाँट करना। ईगाट-रगिर। धूत।

नक्कद-सज्ञा पु० [अ०] वह धन, जो सिक्कों के रूप में हो। रुपया-मैमा। रोकट।

वि० दे० "नगद"।

नक्की-सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "नरद"।

नकना\*†-कि० म० १ उल्लापन करना। लांपना। डाँकना। फाँटना। २ चलना। ३ त्यागना। नाव में दम करना।

कि० अ० नरिमान। नाव में दम हाना। नाका दम आना। हुरान होना।

नककूल-सज्ञा पु० नाव में पहनने की लीज या कील।

नक्कध-सज्ञा स्त्री० [अ०] चोरी करने के लिए दीवार में चिया हुआ छेद। सेंघ।

नक्कबज्जो-सज्ञा स्त्री० [अ०] सेंघ लगाने की क्रिया।

नक्कबानी\*†-सज्ञा स्त्री० नाव में दम। हुरानो।

नक्कबेसर-सज्ञा स्त्री० नाव में पहनने की छोटी नव। नयुनी।

नक्कमोती-सज्ञा पु० नाव में पहनने का माती। लटकन।

नक्कल-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ असल का प्रतिरूप। अनुकरण। अनुकृति। २ एक के अनुरूप दूसरी वस्तु बनाने का कार्य। ३ लेख आदि की अक्षरशः प्रतिलिपि। ४ किसी के बय, हाव भाव या बातचीत आदि का पूरा पूरा अनुकरण। स्वांग। ५ हास्यजनक आकृति। ६ हास्य-रस की कोई छोटी-मोटी कहानी। चूटकुला।

नक्कलबीस-सज्ञा पु० वह अदालत का मुहूरिर, जिसका काम केवल अदालती कागजात की प्रतिलिपि तैयार करना होता है।

नक्कलबही-सज्ञा स्त्री० वह बही, जिस पर चिट्ठिया और हुडियो आदि की नक्कल रखी जाती है।

नक्कली-वि० [अ०] १. नक्कल करने वाला हुआ। नक्कली। कृत्रिम। २. गोट। जाय। कृष।

नक्कश-सज्ञा पु० [अ०] १. दे० "नक्श"। २. रास से गेला जानेवाला एक जुआ।

नक्कश-सज्ञा पु० दे० "नक्शा"।

नक्कसीर-सज्ञा स्त्री० आप में आप नाव में नून बहना।

मुहा०—नक्कसीर भी न पूटना=जग भी ठक्-ठीक या नुबसान न होना।

नक्काना†-कि० अ० नाव में दम होना। बहुत परगान होना।

कि० स० नक्कियाना। नाव में दम लगना। बहुत परेशान करना।

नक्कब-सज्ञा स्त्री० मुँह छिपाने का पर्दा। यह जालीदार महीन कपड़े का बना होता है और इसका प्रयोग मुसलमान रिश्तों करती है। धूपट। चोरी का डानुओ-डानु अपना मुँह ढकने का कपड़ा।

नक्कबपोश-वि० चेहरे पर नक्कब छाले हुए। नक्कब लगाए हुए।

नक्कार-सज्ञा पु० १ न या नहीं का बोधक शब्द या वाक्य। नहीं। २ इनकार। अस्वीकृति। ३ "न" अक्षर।

नक्कारना-कि० अ० इनकार करना। अस्वीकृत करना।

नक्कारा†-वि० जो किसी काम का न हो। सराव। निकम्मा।

नक्काना†-वि० स० धातु, पत्थर आदि पर खोदकर चित्र आदि बनाना।

नक्कशी-सज्ञा स्त्री० दे० "नक्काशी"।

कि० स० बहुत परेशान या तंग करना। नक्कियाना†-कि० अ० १. नाव से उच्चारण करना। २. बहुत दुखी या परेशान होना।

नक्कीव-सज्ञा पु० [अ०] १ चारण। बदौजन। भाट। २ कडवा गानेवाला पुष्प। कडखंत।

नक्कल-सज्ञा पु० १ नेबला (एक जंतु)। २ पांडु राजा के चौथे पुत्र। ३ बटा। ४ शिवजी। ५ एक यात्रा।

वि० बिना खानदान का। बुर-रहित।

नक्कल-सज्ञा स्त्री० जेंट की नाव में बंधी हुई

रस्ती, जो लगाम का काम देती है। मुहरा।  
**मुहा०**—किसी की नकेल हाथ में होना= किसी पर सब प्रकार का अधिकार होना।  
**नक्का-सज्ञा पु०** सूई का वह छेद, जिसमें डोरा पहनाया जाता है। नाका।  
**नक्काखाना-सज्ञा पु०** [फा०] वह स्थान, जहाँ पर नक्का री बजता है। नक्काखाना।  
**मुहा०**—नक्काखाने में तूती की आवाज कोन सुनता है= बड़े-बड़े लोगों के सामने छोटे आदमियों की बात कोई नहीं सुनता।  
**नक्काखी-सज्ञा पु०** [फा०] नगाडा बजाने वाला।  
**नक्काखी-सज्ञा पु०** [फा०] नगाडा। डबा। नीरत। दधुभि।  
**नक्काल-सज्ञा पु०** [अ०] १ अनुकरण करने वाला। नकल करनेवाला। २ भाँड़।  
**नक्काश-सज्ञा [अ०] पु०** वह, जो नक्काशी करता हो।  
**नक्काशी-सज्ञा स्त्री०** [वि० नक्काशीदार] १ धातु आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। २ इस प्रकार बनाए गए बेल बूटे।  
**नक्की-वि०** १ पक्का। दृढ़। २ ठीक।  
**नक्कीपूर-सज्ञा पु०** दे० 'नक्कीमूठ'।  
**नक्कीमूठ-सज्ञा पु०** जुए का एक खेल, जो कौड़ियों से खेला जाता है।  
**नक्कू-वि०** १ जिसकी नाक बड़ी हो। बव-नाम। २ अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित समझनेवाला। ३ सबसे अलग और उलटा काम करनेवाला।  
**नक्क-सज्ञा पु०** १ बिल्कुल सध्या का समय। २ रात। ३ एक प्रकार का व्रत। इसमें रात को तारे देखकर भोजन किया जाता है। ४ शिव।  
**वि०** लज्जित।  
**नक्कचर-सज्ञा पु०** १ शिव। २ राक्षस। ३ उल्लू।  
**नक्कचारी-सज्ञा पु०** १ उल्लू। २ बिल्ली।  
**वि०** नक्क-व्रत करनेवाला।  
**नक्का-सज्ञा स्त्री०** १ एक विपैला पीथा। २ रात। ३ हल्दी।

**नक्कि-सज्ञा स्त्री०** रात।  
**नक्क-सज्ञा पु०** १ नाक नामक जल-जंतु। २ मगर। ३ पडियाल। कुभीर। ४ नाक। नासिका।  
**नक्क-सज्ञा स्त्री०** दे० "नकल"।  
**नक्का-वि०** [अ०] जो अंकित या चित्रित किया गया हो। बनाया या लिखा हुआ।  
**सज्ञा पु०** १ तसवीर। चित्र। २ खोदकर या कलम से बनाया हुआ बेल-बूटा। ३ मोहर। छाप। ४ ताबीज। यंत्र। ५ जादू। दोना। ६ दे० "नक्का"।  
**मुहा०**—मन में नक्का करना या कराना= किसी के मन में कोई बात अच्छी तरह बैठाना। नक्का बैठना= अविकार जमना।  
**नक्का-सज्ञा पु०** [अ०] १ चित्र। मानचित्र। तसवीर। २ आकृति। शकल। ढाँचा। गढ़न। ३ किसी पदार्थ का स्वरूप। आकृति। ४ चाल-ढाल। तर्ज। ढग। ५ अवस्था। दशा। ६ ऐसा चित्र, जिसमें किसी स्थान की स्थिति आदि दिखाई गई हो।  
**नक्कागवीस-सज्ञा पु०** नक्का बनानेवाला।  
**नक्काबद-सज्ञा पु०** साड़ियों आदि के बेल-बूटे के नक्को या तर्ज तैयार करनेवाला।  
**नक्की-वि०** जिस पर बेल-बूटे बने हो। नक्काशीदार।  
**नक्का-सज्ञा पु०** १-वारागण। चंद्रमा के पथ में पड़नेवाले तारों का समूह, जिनकी पहचान के लिए कोई नाम रखा गया हो। ये सब २७ नक्का में विभक्त हैं। २ जिसका नाश न हो।  
**नक्कागण-सज्ञा पु०** चंद्रमा।  
**नक्कागण-सज्ञा पु०** नक्का के चलने का मार्ग।  
**नक्कागण-सज्ञा पु०** चंद्रमा।  
**नक्कागण-सज्ञा पु०** पुराणानुसार वह लोक, जिसमें नक्का है। नक्का का ससार।  
**नक्कागण-सज्ञा स्त्री०** ज्योतिषविद्या।  
**नक्कागण-सज्ञा स्त्री०** वारा दूटना। उल्कापात होना।  
**नक्का-सज्ञा पु०** १ चंद्रमा। २ विष्णु।  
**वि०** भाग्यवान्।

नक्षत्रेश-सज्ञा पु० चन्द्रमा । नक्षत्रा के स्वामी ।  
 नक्षत्रेश्वर-सज्ञा पु० चन्द्रमा ।  
 नख-सज्ञा पु० १ हाथ या पैर का नाखून ।  
 २ नाखून के आधार का एक प्रसिद्ध गन्ध-  
 द्रव्य, जो घोंघे की जाति के एक जानवर के  
 मुँह का ऊपरी आवरण होता है । ३ गड ।  
 टुकड़ा ।  
 सज्ञा स्त्री० १ पतल उड़ाने के लिए ठागा ।  
 डोर । २ बटा हुआ महान रेगम ।  
 नखचर्चनि-सज्ञा स्त्री० नहरनी ।  
 नखक्षत-सज्ञा पु० नाखून के गडने के कारण  
 बना हुआ चिह्न । नाखून का निशान ।  
 नखच्छत\*†-सज्ञा पु० दे० "नखक्षत" ।  
 नखछोलिया\*†-सज्ञा पु० दे० "नखक्षत" ।  
 नखत नखतर\*†-सज्ञा पु० दे० "नक्षत्र" ।  
 नखतराज, नखतेस\*-सज्ञा पु० दे० "चंद्रमा" ।  
 नखना-क्रि० अ० उल्लंघन होना । डाँका जाना ।  
 क्रि० स० उल्लंघन करना । पार करना  
 नष्ट करना ।  
 नखरा-सज्ञा पु० [फा०] १ हावभाव ।  
 चोचला । नाज । २ चंचलता । बुलबुलापन ।  
 नखरा-तिल्ला-सज्ञा पु० नखरा । चोचला ।  
 नखरीला†-वि० नखरा करनेवाला ।  
 नखरेला-सज्ञा स्त्री० दे० नखक्षत ।  
 नखरेवाज-वि० [फा०] [सज्ञा नखरेबाजी]  
 नखरा करनेवाला ।  
 नखाबंद-सज्ञा पु० नाखून के ऊपर गोल या  
 चक्राकार चिह्न, जिसे स्त्रियाँ मेहेंदी या  
 महावर के बनावी हैं ।  
 नखरीट-सज्ञा स्त्री० नाखून का निशान ।  
 नखदिल-सज्ञा पु० १ नख से रेखर दिल  
 नख के सय अण । २ शरीर के सय अणों का  
 धनन ।  
 नखमूल-सज्ञा पु० नाखून का एक रोग ।  
 नखाक-सज्ञा पु० १ नख नामक गन्ध द्रव्य ।  
 २ नाखून गडने का चिह्न ।  
 नखापुध-सज्ञा पु० १ अपने नाखून को अस्थ  
 के समान इस्तेमाल करनेवाले जानवर । जैसे,  
 कुत्ता, घोरा, चीता । २ नृसिंह ।  
 १-सज्ञा पु० [अ०] यह बाजार, जहाँ पशु  
 विनोपकर घोंडे बिकते हैं । कोई बाजार ।

नखिषाना\*†-क्रि० स० नाखून गडाना ।  
 नखी-सज्ञा पु० नाखनारी । नखवाला । नाखून  
 से आघात करनेवाला जन्तु ।  
 सज्ञा स्त्री० नख-नामक गन्धद्रव्य ।  
 नखोदना\*†-क्रि० स० नाखून से खोचना  
 या खोचना ।  
 नख-सज्ञा पु० १ पहाड़ । २ पेड़ । ३ नाख  
 की सख्या । ४ साँप । ५ मूर्ख । ६ द०  
 "नगीना" । ७ अदद । सरया ।  
 नखज-सज्ञा पु० हाथी ।  
 वि० पहाड़ से उत्पन्न ।  
 नखजा-सज्ञा स्त्री० पार्वती ।  
 नखण-सज्ञा पु० पिगल म तीन लघु अक्षरों  
 का एक गण ।  
 नखण-वि० बहुत ही साधारण या गया  
 बीता । तुच्छ । इतना कम या गया बीता  
 किमकी गिनती तक न की जाय ।  
 नखदती-सज्ञा स्त्री० विभीषण की स्त्री ।  
 नखद-सज्ञा पु० दे० "नकद" ।  
 नखधर-सज्ञा पु० पर्वत धारण करनेवाले ।  
 श्रीकृष्ण । गिरधारी ।  
 नखधरन\*-सज्ञा पु० दे० 'नखधर' ।  
 नखनदिनी-सज्ञा स्त्री० पार्वती ।  
 नखन\*†-वि० नखन । जिसके शरीर पर कोई  
 बस्त्र न हो । नंगा ।  
 नखनिवा-सज्ञा स्त्री० श्रीडावृत्त । जिसमें  
 एक यगण और एक मुख होता है ।  
 नखनी-सज्ञा स्त्री० १ नखा । बेंटी । छाटी  
 बच्ची, जो नगी धूमती फिरती है । २  
 नगी स्त्री ।  
 नखपति-सज्ञा पु० १ पहाड़ के राजा ।  
 हिमालय पर्वत । २ चंद्रमा । ३ शिव ।  
 ४ गुमेरा ।  
 नखभिद्-सज्ञा पु० १ एक विशेष प्रकार की  
 लता । २ इन्द्र ।  
 नखर-सज्ञा पु० शहर । बड़ी बस्ती ।  
 नखरकीर्तन-सज्ञा पु० नखर की मल्लिका  
 और सड़को पर धूम-धूमकर होनेवाला  
 गाना-बजाना या कौत्तन ।  
 नखर नारि या नखरनारी-सज्ञा स्त्री० बेंस्या ।  
 गंडी ।

नगरनायिका-सज्ञा स्त्री० रङ्गी। वैश्या।  
 नगरपाल-सज्ञा पु० नगर की रक्षा करने-  
 वाला।  
 नगरपालिका-सज्ञा स्त्री० नगर का प्रबन्ध  
 करनेवाली संस्था, जिसके सदस्य नगर की  
 जनता-द्वारा चुने जाते हैं। म्युनिसिपलटी।  
 नगरवासी-सज्ञा पु० शहर में रहनेवाला।  
 नागरिक।  
 नगरवा-सज्ञा पु० नागरिक। शहर का  
 निवासी।  
 नगरवादी\*†-सज्ञा स्त्री० १ नागरिकता। सहरी-  
 पन। २ चतुराई। चालाकी।  
 नगराध्यक्ष-सज्ञा पु० दे० "नगरपाल"। नगर-  
 पालिका का प्रधान।  
 नगरी-सज्ञा स्त्री० छोटा शहर।  
 सज्ञा पु० शहर में रहनेवाला।  
 नगस्वस्वर्णिनी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
 छन्द। प्रभाणी। प्रमाणिका।  
 नवाडी-सज्ञा पु० दे० नगर।  
 नवाधिप-सज्ञा पु० १ हिमालय पर्वत।  
 २ सुमेरु पर्वत।  
 नगारा-सज्ञा पु० डुगडुगी की तरह का एक  
 प्रकार का बहुत बड़ा बाजा। नगीडा।  
 डवा। घीसा।  
 नगारि-सज्ञा पु० इद्र।  
 नगी-सज्ञा स्त्री० १ रत्न। मणि। नगीना।  
 नग। २ पार्वती। ३ पहाड़ी स्त्री।  
 नगीच\*†-कि० वि० नजदीक। निबट। पास।  
 नगीना-सज्ञा पु० [फा०] रत्न। मणि।  
 नगीनासाज-सज्ञा पु० [फा०] नगीना जड़ने  
 या बनानेवाला।  
 नगेन्द्र-सज्ञा पु० पहाड़ के राजा।  
 हिमालय।  
 नगेश-सज्ञा पु० दे० "नगेन्द्र"। हिमालय।  
 नगेस्वरि\*†-सज्ञा पु० दे० "नागेश्वर"।  
 नगीक-सज्ञा पु० १ तिडिया २ काँडा। ३  
 जेर।  
 नग्न-वि० १ जिसके शरीर पर कोई वस्त्र  
 न हो। नग्न। वस्त्रहीन। २. जिसके ऊपर  
 किसी प्रकार का आवरण न हो।  
 नग्नता-सज्ञा स्त्री० नग्न होने का भाव।

नग्न\*†-सज्ञा पु० दे० "नगर"।  
 नघना-कि० सं० लौघना।  
 नघाना-कि० सं० लौघाना।  
 नचना\*†-कि० अ० नाचना।  
 वि० १ नाचनेवाला। २ इधर-उधर घूमने-  
 वाला।  
 नचनि\*†-सज्ञा स्त्री० नाच।  
 नचनिया\*†-सज्ञा पु० नाचनेवाला। नृत्य करने-  
 वाला।  
 नचनी-वि० १ नाचनेवाली। २ इधर-उधर  
 घूमती रहनेवाली।  
 नचवाना-कि० सं० नाच कराना। नचाना।  
 नचवैया-सज्ञा पु० नचानेवाला। नाचने  
 वाला। नर्तक।  
 नचाना-कि० सं० १ नचवाना। दूसरे से नाच  
 कराना। नृत्य कराना। २ कोई काम  
 करने के लिए तग करना। हैरान करना।  
 परेशान करना। व्यर्थ इधर-उधर दीडाना।  
 मुहाना—नाच नचाना = कोई काम करने के  
 लिए तग करना। काँसे नचाना =  
 बचलतापूर्वक आँखों की पुतलियों को इधर-  
 उधर घुमाना।  
 नचिकेता-सज्ञा पु० १ अग्नि। २ वाजश्रवा  
 ऋषि का पुत्र, जिसने ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त  
 किया था।  
 नचीला-वि० जो नाचता या इधर-उधर  
 घूमता रहे। चंचल।  
 नचीहो\*†-वि० चंचल। हर समय नाचने-  
 वाला। सदा नाचता या इधर-उधर घूमता  
 रहनेवाला।  
 नछत्र-सज्ञा पु० दे० "नक्षत्र"।  
 नछत्री\*†-वि० भाग्यवान्। भाग्यशाली।  
 नखदीक-वि० [फा०] निबट। पास। करीब।  
 नखदीकी-सज्ञा स्त्री० [फा०] पास या निबट  
 होने का भाव।  
 सज्ञा पु० निबट-सम्बन्धी।  
 नखर्म-सज्ञा स्त्री० [फा०] कविता। छंद।  
 नखर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. दृष्टि। निगाह।  
 २. वृषादृष्टि। ३. निगरानी। देख-रेख। ४  
 ध्यान। ५. परमा। ६. पहचान।  
 निगाह। ६. भेट। उपहार। ७. एक रत्न,

जिसमें राजाओं आदि के नामने प्रजावर्ग के या अधीनस्थ लोग नकद रुपया आदि भेंट करते हैं।

मुहा०—नजर जाना=दिवाई देना। दिवाई पड़ना। नजर पर चढ़ना=पसंद आ जाना। मला मालूम होना। नजर पड़ना=दिवाई देना। नजर बांधना=जादू या मंत्र आदि के जोर से किसी को कुछ का कुछ कर दिवाना। नजर उतारना=चुरी दृष्टि के प्रभाव को किसी मंत्र या मूर्ति से हटा देना। नजर लगाना=चुरी दृष्टि का प्रभाव पड़ना। नजर अंदाज-वि० [फा०] जिस पर नजर न पड़ी हो। देखने या ध्यान देने में चूक। नजरना\*-क्रि० अ० १. देवना। २. नजर लगाना।

नजरबंद-वि० वह व्यक्ति, जो किसी ऐसे स्थान पर कड़ी निगरानी में रखा जाय, जहाँ से वह कहीं आ-जा न सके। सरकार-द्वारा इस तरह से दंडित व्यक्ति।

संज्ञा ० जादू या इन्द्रजाल आदि का खेल। नजरबंदी-संज्ञा स्त्री० १. राज्य की ओर दिया गया वह दंड, जिसमें दंडित व्यक्ति किसी सुरक्षित या नियत स्थान पर रखा जाता है। २. नजरबंद होने की दशा। ३. जादूगरी। जागीगरी।

नजरबारा-संज्ञा पु० [अ०] महलों के सामने या चारों ओर का बाग।

नजरसानी-संज्ञा स्त्री० [अ०] जीवन के विचार से किसी देखी हुई चीज को फिर से देखना।

नजरहाया-वि० [स्त्री० नजरहार्द] नजर लगानेवाला।

नजरानना\*-क्रि० स० १. भेंट देना। उपहार देना। २. नजर लगाना।

नजराना-संज्ञा पु० उपहार।  
क्रि० अ० नजर लगाना। चुरी दृष्टि के प्रभाव में आना।

क्रि० स० नजर लगाना।

नजरि\*-संज्ञा स्त्री० दे० "नजर"।

नजर-संज्ञा पु० [अ०] जुगाम। सरदी।

नजर-वि० [फा०] १. नाशुक होने

का भाव। मुकुमारता। कोमलता। २. नखरा।

नजात-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुक्ति। मोक्ष। २. छुटकारा। रिहाई।

नजारा, नजारा-संज्ञा पु० [अ०] १. दृश्य। २. दृष्टि। नजर। ३. लालसा या प्रेम की दृष्टि से देखना।

नजिकाना\*-क्रि० रा० निकट पहुँचना। नजदीक पहुँचना। पास पहुँचना। नजोक्त\*-क्रि० वि० दे० "नजदीक"।

नजीर-पज्ञा स्त्री० [अ०] उदाहरण। दृष्टान्त। मिसाल। किसी एक मुकदमे या फैसले उसी तरह के दूसरे मुकदमे में पेश करना।

नजूम-संज्ञा पु० [अ०] ज्योतिष-विद्या।

नजुमी-संज्ञा पु० [अ०] ज्योतिषी।

नजूल-पज्ञा पु० [अ०] शहर की वह जमीन, जो सरकार के अधिकार में हो। सरकारी जमीन।

नट-पज्ञा पु० १. अभिनय करनेवाला।

२. एक नीच जाति, जो प्रायः गा-बजावर और खेल-तमाशे दिखाकर निर्वाह करती है। ३. एक राग।

नटई-संज्ञा स्त्री० १. गला। गरदन। २. गले की घटी। घाँटी।

नटखटी-वि० ऊधमी। उपद्रवी। चबल। चालाक। धूर्त।

नटखटी-संज्ञा स्त्री० बदमाशी। शराबत। पाजीवन।

नटन-संज्ञा पु० नृत्य। नाचना। नाट्य करना।

नटना-क्रि० अ० १. नाट्य करना। २. नाचना। नृत्य करना। ३. कसकर बदल जाना। मुकरना।

क्रि० स० नट करना।

नटनार-संज्ञा पु० १. श्रीकृष्ण। २. नटों में सबसे चतुर। ३. जादूगर।

नटनारायण-संज्ञा पु० एक राग का नाम।

नटनि\*-संज्ञा स्त्री० १. नृत्य। २. दनकार।

नटनी-संज्ञा स्त्री० १. नट की स्त्री। २. नट जाति की स्त्री।

नटराज-संज्ञा पु० महादेव। शिव।

नटयना\*—क्रि० स० नाट्य करना। अभिनय करना।

नटवर—महा पु० १ नाट्यकला में प्रवीण मनुष्य। २ श्रीकृष्ण।

वि० बहुत चतुर। चालाक।

नटसारी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "नाट्यशाला"।

नटसारी\*—सज्ञा स्त्री० छोटी नाट्यशाला।

नटराल—सज्ञा स्त्री० १ काट का वह भाग, जो टूटकर शरीर के भीतर रह जाता है। २ कसक। पीडा।

नटिन—सज्ञा स्त्री० १ नट की स्त्री। नटी।

२ जादू-टोना करनेवाली स्त्री।

नटी—सज्ञा स्त्री० १ नट जाति की स्त्री। २ नाचनेवाली स्त्री। नत्तकी। ३ अभिनय करनेवाली स्त्री। अभिनेत्री।

नटुआ, नटुआ\*—सज्ञा पु० १ दे० 'नट'। २ दे० 'नटई'।

नटेश्वर—सज्ञा पु० महादेव। शिव।

नटना\*—क्रि० अ० नष्ट होना।

क्रि० स० नष्ट करना।

नट—सज्ञा पु० १ जाति विशेष, जो चूड़ी आदि बनाते हैं। चुड़िहार। २ नरकट। नरसल।

नटना\*—क्रि० स० १ गूँथना। पिरोना।

२ बाँधना। कसना।

नत—वि० झुका हुआ। नम्र। विनयी। विनीत।

नतइत—सज्ञा पु० कुटुम्बी।

नतकुर\*—सज्ञा पु० बटी का बटा। नवासा।

दोहिव।

नतपुल्ला—सज्ञा पु० घापा।

नतपाल—सज्ञा पु० शरणागत का पालन करनेवाला। प्रणतपाल।

नतर, नतद\*—क्रि० वि० नहीं तो। अन्यथा।

नतगो—सज्ञा स्त्री० पुयती। नारी। सुन्दरी।

नताश—सज्ञा पु० ग्रहा की स्थिति निश्चित करनेवाला सूत।

नति—सज्ञा स्त्री० १ झुकाव। उतार। २ नमस्कार। प्रणाम। ३ विनय। विनती।

४ नम्रता। खानसारी।

नतिनी\*—सज्ञा स्त्री० लडकी की लडकी।

नातिव।

नतीजा—सज्ञा पु० [ फा० ] परिणाम। फल।

नतु—क्रि० वि० नहीं तो।

नतुवा\*—अव्य० नहीं तो क्या?

नतैती\*—सज्ञा पु० सवधी। रिश्तेदार। नातेदार।

नतैती—सज्ञा स्त्री० रिश्तेदारी। नातेदारी।

सम्बन्ध।

नत्य\*—सज्ञा स्त्री० दे० "नय"।

नत्यी—सज्ञा स्त्री० १ कागज आदि के कई टुकड़ा को एक साथ मिलाकर सबका एक ही म बाँधना या फँसाना। २ इस प्रकार नाथे हुए कागज आदि। गिस्त।

नय—सज्ञा स्त्री० बड़ी नयुनी। नाक का एक गहना।

नयना—सज्ञा पु० १ नाक का अगला भाग।

२ नाक का छेद।

क्रि० अ० १ चिरी के साथ नत्यी होना।

एक सूत्र म बाँधना। २ छिदना। छेदा जाना।

मुहा०—नयना फुलाना=क्रोध करना।

नयनी—सज्ञा स्त्री० १ नाक में पहनने की छोटी नय। २ दुलाक।

नयिया, नयुनी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "नय"।

नद—सज्ञा पु० बड़ी नदी। ऐसी नदी, जिसका नाम पुल्लिङ्गवाची हो।

नदना\*—क्रि० अ० १ पशुओं का शब्द करना। रँभाना। बेबाना। २ बजना। शब्द करना।

नदराज—सज्ञा पु० समुद्र।

नदान \*—वि० दे० "नादान"।

नदारद—वि० [ फा० ] जो मौजूद न हो।

गायद। अप्रस्तुत। लुप्त।

नदिया\*—सज्ञा स्त्री० छोटी नदी।

सज्ञा पु० १ नन्दी बेल। २ पूर्वी बंगाल का एक प्रसिद्ध नगर।

नदी—सज्ञा स्त्री० किसी पर्वत या जलानय आदि से निकलकर हमेशा बहती रहन वाली जलधारा। दरिया।

नदीकान्त—सज्ञा पु० नदिया का स्वामी समुद्र।

नदीकान्ता—सज्ञा स्त्री० १ बावजया नामन

बूढ़ी। २ जामुन का पेड़।

नदीगम—सज्ञा पु० १ नदी के दो किनारों के बीच का स्थान। २ नदी का तल।

नदीज-मज्ञा पु० १ संध्या नगर। २ भीष्म  
पितामह। ३ अर्जुनवृक्ष।

वि० नदी में उत्पन्न।

नदीधर-मज्ञा पु० महादेव। शिव।

नदीश-मज्ञा पु० नदियों के स्वामी। गम्भिर।

नदेश-मज्ञा पु० दे० "नदीन"। गम्भिर।

नदीला-मज्ञा पु० मिट्टी की छोटी नदी, जिसमें  
बेट आदि को गिलामा जाता है।

नट-वि० बंधा हुआ। बद्ध।

नघना-वि० अ० १. बंध, घोड़े आदि का गाड़ी  
आदि में जुटना। जुटना। २. जुटना। सम्बन्ध  
होना। काम शुरू होना। काम ठनना।

ननकारना\*†-वि० अ० अस्वीकार करना।  
नामज़ूर करना।

ननद, ननद-सज्ञा स्त्री० पति की बहिन।

ननदिया या ननबी-मज्ञा स्त्री० ननद। पति  
की बहिन।

ननदोई-मज्ञा पु० ननद का पति। पति का  
बहूगोई।

ननसार-सज्ञा स्त्री० दे० 'ननिहा'।

ननिया ससुर-मज्ञा पु० [स्त्री० ननिया सास]  
स्त्री या पति का नाना।

ननिहाल-सज्ञा पु० नाना का घर।

ननु-अव्य० संदेह प्रकट करने तथा वाक्य के  
आरम्भ में, निश्चय, निमन्देह, अवश्य,  
अनुनय, अनुज्ञा की भावना प्रकट करने  
वाला अव्यय।

ननोई-सज्ञा पु० जलाशय में हानेवाला एक  
तरह का जगली घान। पसाही।

नन्हा-वि० [स्त्री० नन्ही] छोटा।

नन्हाई\*-मज्ञा स्त्री० १. छोटापन। छोटाई।  
२. बदनामी। हठी।

नन्हुथा\*†-वि० दे० "नन्हा"।

नपाई-सज्ञा स्त्री० नापने का काम, या  
मजदूरी।

नपाक\*†-वि० अपवित्र।

नपुसक-मज्ञा पु० नामर्द। हिजड़ा।  
पुण्यत्वहीन।

नपुसकता-मज्ञा स्त्री० १. नपुसक होने का  
भाव। २. नामर्दी। हिजड़ापन।

३. ब-सज्ञा पु० नामर्दी।

नपुत्री\*†-वि० दे० "निपुत्री"।

नप्ता-मज्ञा स्त्री० [स्त्री० नप्ती] नाती या  
पोता। तन्या का पुत्र। दोहित्र।

नफर-मज्ञा पु० [फा०] १. दास। नेकर।  
नीतरे। २. व्यक्ति।

नफरत-मज्ञा स्त्री० [अ०] घिन। घृणा।

नफरी-मज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक दिन की  
मजदूरी का काम। २. मजदूरी का दिन।

नफा-मज्ञा पु० [अ०] लाभ। फायदा।

नफासत-मज्ञा स्त्री० [अ०] नर्पास होने का  
भाव। सफाई। उम्दापन। अच्छाई। सुन्दरता।

नफोरी-मज्ञा स्त्री० [फा०] 'पुरी'। घर  
प्रसार का बाग।

नफोस-वि० [अ०] १. बड़िया। उम्दा। २  
साक। स्वच्छ। ३. सुंदर।

नर्-सज्ञा पु० [अ०] ईश्वर का दूत।  
प्रेमर। मूल।

नवेडना-वि० म० १. निपटाना। तय करना  
(झगडा आदि)। मुत्तजाना। २. चुनना।  
दे० "निरेखा"।

नबेडा-सज्ञा पु० निपटारा। निणय। फंसला।

नब्ब-सज्ञा स्त्री० [अ०] हाथ की नाडी  
जिसकी चाल से रोग की पहचान की  
जाती है। नाडी।

भुहा०-नब्ज चलना=नाडी में गति हाता।

नब्ज छूटना=नाडी की गति रुकना।  
मृत्यु होना।

नब्बे-वि० जो गिनती में सौ से १० कम हो।

सज्ञा पु० नब्बे की संख्या। ९०।

नभ-मज्ञा पु० १. पंच तत्त्व में से एक।

आनस। आमगान। गमन। व्योम। २.

सूय स्थान। ३. सूय। सिफर।

४. सापन या भांदा का महीना। ५. आश्रय।

आधार। ६. पास। निवट। नजदीक।

७. शिव। ८. जल। ९. मेघ। बादल। १०.

धर्मा। ११. बदमा। १२. पक्षी। १३. देवता।

१४. मूर्त्य। १५. वारा।

नभग-सज्ञा पु० १. पक्षी। नभचर। २. देवता।

३. नक्षत्र। ग्रह।

नभगनाथ-सज्ञा पु० १. चन्द्रमा। २. गरुड़।

नभगामी-मज्ञा पु० १. पक्षी। २. बादल। ३.

तारा। ४ सूर्य। ५ चन्द्रमा। ६ देवता।  
 वि० आकाश में चलनेवाला।  
 नभगेश-सज्ञा पु० १ चन्द्रमा। २ गरुड।  
 नभचर-सज्ञा पु० १ पक्षी। २ बादल। ३  
 हुवा। ४ देवता। गन्धर्व आदि।  
 वि० आकाश में चलनेवाला।  
 नभयुज\*-सज्ञा पु० मेघ।  
 नभश्चर-सज्ञा पु० १ पक्षी। २ बादल।  
 ३ हुवा। ४ देवता, गन्धर्व और ग्रह आदि।  
 वि० आकाश में चलनेवाला।  
 नभसेना-सज्ञा स्त्री० हुवाई जहाजा से वम आदि  
 गिराकर लड़ाई करनेवाली फौज। आकाश  
 में विमानों में बैठकर लड़नेवाली सेना।  
 नभस्थल-सज्ञा पु० आकाश।  
 नभस्थ-सज्ञा पु० भाद्रपद। भादा का महीना।  
 नभस्वान्-सज्ञा पु० वायु। हुवा। पवन।  
 नभोगति-सज्ञा स्त्री० आकाश-गमन। उड़ना।  
 नभोयुग्म-सज्ञा पु० बादल। मेघ।  
 नभोमणि-सज्ञा पु० सूर्य।  
 नभोवाणी-सज्ञा स्त्री० दे० 'रेडियो'।  
 नभ-वि० [सज्ञा नमी] [फा०] भीगा हुआ।  
 गीला। तर। आर्द्र।  
 सज्ञा पु० १ नभस्वार। प्रणाम। २ त्याग।  
 ३ अन्न। ४ वज्र। ५ यज्ञ।  
 नभ-अव्य० नभस्कार। प्रणाम। अभिवा-  
 दन।  
 नभक-सज्ञा पु० [फा०] १ लवण। खाने की  
 चीजा में स्वाद पैदा करने के लिए थोड़ी  
 मात्रा में डाला जानेवाला एक क्षार पदार्थ।  
 २ लावण्य। मनोहरता। सलोनापन (विशेष  
 प्रकार का सौन्दर्य)।  
 मुहा०-नभक अदा करना=अपने मालिक या  
 स्वामी के उपकार का बदला चुकाना।  
 (जिसी का) नभक खाना=(जिसी का)  
 दिया खाना। नभक-मित्र मिलाना या  
 लगाना=जिसी बात को बहुत बड़ा चढाकर  
 कहना। नभक फूलकर निबलना=नभक-  
 हरामी की सजा मिलना। हृत्तन्त्रता का  
 बंद मिलना। कटे पर नभक छिड़कना=  
 जिसी दुखी को और भी दुख देना।  
 नभकरवार-वि० [फा०] नभक मानेवाला।

जिसी की सहायता पर जीवन-निर्वाह करने-  
 वाला। दे० "नमकहलाल"।  
 नमकसार-सज्ञा पु० [फा०] नमक निकालने  
 या बनाने का स्थान।  
 नमकहराम-सज्ञा पु० [सज्ञा नमकहरामी]  
 वह, जो किसी का दिया हुआ अन्न खाकर  
 उसी का द्रोह करे। कुतन्त्र। उपकार के  
 बदले अपकार करनेवाला।  
 नमकहलाल-सज्ञा पु० [सज्ञा नमकहलाली]  
 स्वामी या अन्नदाता की भलाई या सेवा  
 करनेवाला। स्वामिनिष्ठ। स्वामिमन्न।  
 नमनीन-वि० १ जिसमें नमन पड़ा हो। जिसमें  
 नमक का स्वाद हो। २ सलोना। सुन्दर।  
 सज्ञा पु० नमक पड़ा हुआ एक तरह का  
 पकवान।  
 नमत्-वि० नम।  
 नमबा-सज्ञा पु० [फा०] जमाया हुआ ऊनी  
 कम्बल।  
 नमन-सज्ञा पु० [वि० नमनीय, नमित]  
 १ प्रणाम। नमस्कार। २ झुकाव। नत  
 होना।  
 नमना\*†-क्रि० अ० १ झुकना। २ प्रणाम  
 करना। नमस्कार करना।  
 नमनीय-वि० १ जिसे नमस्कार किया जाय।  
 आदरणीय। पूजनीय। माननीय। २ जो  
 झुकाया जा सके। झुकने योग्य।  
 नमस्-सज्ञा पु० झुका। नमस्कार। अभि-  
 वादन।  
 नमस्कार-सज्ञा पु० झुककर अभिवादन करना।  
 प्रणाम। मन्मान-प्रदर्शन।  
 नमस्ते-एक वाक्य, जिसका अर्थ है "आपको  
 नमस्कार है।" नमस्वार।  
 नमाज-सज्ञा स्त्री० [फा०] मुसलमानों की  
 ईश्वर-प्रायना।  
 नमाजगाह-सज्ञा स्त्री० [फा०] मसजिद में  
 वह स्थान जहाँ नमाज पढ़ी जाय।  
 नमाजी-सज्ञा पु० [फा०] १ नमाज पढ़ने-  
 वाला। २ वह वस्त्र, जिस पर खटे होकर  
 नमाज पढ़ी जाती है।  
 नमाना\*†-क्रि० स० १ झुकना। २ दवाकर  
 अपने अधीन करना।

नमिस-वि० शुभा हुआ। विनम्र। नमस्कार  
विषा हुआ।

नमिस-सज्ञा स्त्री० [फा०] विनय प्रवारन  
तैयार किया हुआ दूध का पेन।

नमी-मज्ञा स्त्री० [फा०] तगी। गीलापन।  
आर्द्रता।

नमुचि-सज्ञा पु० १ यामद्व। मरन। २ एक  
श्रुति। ३ एक दानव, जो पट्टे इद्र का  
सरा था, पर पीछे इद्र-द्वारा मारा गया  
था। एक देव, जो शुभ और निशुभ का  
छोटा भाई था।

नमुना-सज्ञा पु० [फा०] १ विनी पदार्थ  
का थोड़ा अंश, जिसमें उसका गुणदोष का  
ज्ञान हो। बानगी। २ डंती। छल। याचना।

नम्र-वि० १ विनीत। जिसमें नम्रता है।  
मिलनसार। २ युक्त हुआ।

नम्रता-सज्ञा स्त्री० नम्र होने का भाव।  
विनय।

नय-सज्ञा पु० १ नीति। रीति। भांति।  
धर्म। न्याय। २ दृष्ट विशेष। ३ नम्रता।  
\*सज्ञा स्त्री० नदी।

वि० १ औचित्य।

नयकारी\*-सज्ञा पु० १ नाचनेवाला का  
मुत्तिया। २ नाचनेवाला। नचनिया। नच  
बैया।

नयन-सज्ञा पु० १ चक्षु। नेत्र। आँख। २  
ले जाना।

नयनगोचर-वि० आँखों को दिखाई देनेवाला।  
जो आँखों के सामने है। प्रत्यक्ष।

नयनपट-सज्ञा पु० आँख की पलक।

नयनाक्ष-वि० ज० १ नम्रहाना। २ चुना।  
लटवना।

\*सज्ञा पु० तान। नेत्र।

नयनार-वि० नीति जाननेवाला। नीतिज्ञ।  
नीतिनिपुण।

नयनी-सज्ञा स्त्री० आँख की पुतली।

वि० आँखवाली स्त्री। जंमे-मृगतयनी।

नयनू-सज्ञा पु० १ मखन। २ एक प्रकार  
मलमल।

\*-सज्ञा पु० दे० 'नगर'।

-वि० १ विनीत। २ नीतिन।

नया-वि० नवीन। हाल का। नूतन।  
\*ताजा। अभिनव। आधुनिक।।

मुहा०—नया बरगा=कई नया फल या  
अनाज, मीमि में पट्टे पहनना। नया-  
पुराना करना=१ पुराना हिस्सा माफ करना  
नया हिस्सा बनाना (महाजरी)। २ पुराने  
का टुकड़ा उमरे स्थान पर नया करना या  
रचना।

नयापन-सज्ञा पु० नया होने का भाव। नवीनता।

नयाम-सज्ञा पु० [फा०] तबला की स्थापना।

नर-सज्ञा पु० १ मनुष्य। पुरुष। भद्र।

आदमी। २ विष्णु। ३ मित्र। महादेव।

४ अर्जुन। ५ एक देव-यानि। ६ छाया आदि

जानने के लिए पड़े बल गाड़ी गई सुंदी।

शत्रु। लव। ७ मेवक। ८ दोह का एक

भेद, जिसमें १५ गुरु और १८ लघु हान

हैं। ९ छप्पम का एक भेद, जिसमें १०

गुरु और १२ लघु होते हैं। ११. दे० 'नर-

नारायण'। पानी का नल।

वि० पुरुष जाति का प्राणी। मादा का उलटा।

नरकत\*-सज्ञा पु० राजा।

नरई-सज्ञा स्त्री० गैहूँ की बालका डठन।

एक तरह की पास।

नरक-सज्ञा पु० १ पुराणा और धर्मशास्त्रा

आदि के अनुसार वह स्थान, जहाँ पानी

मनुष्य की आत्मा पाप का फल भोगने के

लिए भेजी जाती है। पाप भोगस्थान।

दास्य। जहनुम। २ बहुत ही गदा स्थान।

३ बहुत अधिक पीड़ा का स्थान।

नरकगामी-वि० नरक में जानेवाला।

नरक चतुर्दशी-सज्ञा स्त्री० वार्षिक वृष्णा

चतुर्दशी, जिस दिन घर का कूड़ा-बरत

निकाश कर फेंका जाता है।

नरकचूर-सज्ञा पु० दे० 'चूर'।

नरकट-सज्ञा पु० चेत की तरह का एक पीया।

इसके डठन बरगे, निगाहियाँ, दोरियाँ

तया चटाइयाँ आदि बनाने के काम में

आते हैं।

नरकामुर-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध अमुर। विष्णु

ने मुदरान चक्र से इसका चिर काटा था।

नरकान्त\*-सज्ञा पु० विष्णु। श्रीकृष्ण।

नरकामय-सज्ञा पु० १ भ्रष्ट। पिशाच। २ नरक का रोग। कुष्ठ रोग।  
 नरकी-वि० दे० "नरकी"।  
 नरकेसरी-सज्ञा पु० नृसिंह। भगवान् का चौथा अवतार।  
 वि० नरश्रेष्ठ।  
 नरकेहरि-सज्ञा पु० दे० "नरकेसरी"।  
 नरगिप्त-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक पीया, जिसमें सफेद रंग का फूल लगता है। फारसी के बगिचे इस फूल से आलम की उपमा देते हैं।  
 नरनात्त-सज्ञा पु० १ राजा। २ जनप्रिय नेता।  
 नरनाथ-सज्ञा पु० राजा।  
 नरन्व-सज्ञा पु० नर होने का भाव। पुष्टत्व। पुष्ट के लक्षण।  
 नरव-सज्ञा स्त्री० १ ध्वनि। नाद। २ चौसर खेलने की गोटी। ३ एक पीया।  
 नरवम-सज्ञा स्त्री० गरजना। नाद करना।  
 नरवना-सज्ञा स्त्री० नाद करना। गरजना।  
 नरदमा या नरदवा-सज्ञा पु० मीले पानी का नल। ताला। मोरी। पनाला।  
 नरदा-सज्ञा पु० ताला। दे० "नरदवा"।  
 नरदारा-सज्ञा पु० १ जनखा। हिजड़ा। नपुंसक। २ डरपोक। कायर।  
 नरदेव-सज्ञा पु० १ राजा। नृपति। २ ब्राह्मण।  
 नरनाथ-सज्ञा पु० राजा।  
 नर-नारायण-सज्ञा पु० नर और नारायण नाम के दो देवि जा विष्णु के अवतार माने जाते हैं।  
 नरनारी-सज्ञा स्त्री० नर (अर्जुन) की स्त्री द्रौपदी। पाषाण्डी।  
 नरनाह-सज्ञा पु० दे० "नरनाथ"। राजा।  
 नरनाहर-सज्ञा पु० नृसिंह भगवान्।  
 नरपति-सज्ञा पु० राजा।  
 नरपाल-सज्ञा पु० नृपाल। राजा।  
 नरपिशाच-सज्ञा पु० मनुष्य होकर राक्षस के कार्य करनेवाला।  
 नरपुर-सज्ञा पु० मनुष्य-लोक। ससार।  
 नरयदा-सज्ञा स्त्री० दे० "नर्यदा"।  
 नरभशी-सज्ञा पु० मनुष्य खानेवाला। राक्षस।  
 नरम-वि० १ [फा०] मुलायम। कोमल। नम्र।

२ लचकदार। लचीला। ३ मदा। ४ धीमा। ५. दुस्त। आलसी। ६ जल्दी पचनेवाला। ७ जिसमें पीछे का अभाव हो।  
 नरमट-सज्ञा स्त्री० मुलायम जमीन। नरम मिट्टी।  
 नरमद-वि० १. मुसद। सुख देनेवाला। २ मयखरा।  
 नरमा-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की वपान। २ सेमर की रई। ३ बान के नीचे का भाग। लोल। ४ एक प्रकार का रगीन कपड़ा।  
 नरमाई-सज्ञा स्त्री० दे० "नरमी"।  
 नरमाना-क्रि० रा० १. मुलायम करना। नरम करना। २ शांत करना। धीमा करना। क्रि० अ० १ नरम होना। मुलायम होना। २ शांत होना। ठंडा होना।  
 नरमी-सज्ञा स्त्री० कोमलता। नरम होने का भाव। मुलायमियत।  
 नरमेघ-सज्ञा पु० प्राचीन काल में एक प्रकार का यज्ञ, जिसमें मनुष्य के मांस की आहुति दी जाती थी या मनुष्य की बलि चढ़ाई जाती थी।  
 नरलोक-सज्ञा पु० ससार। मनुष्य-लोक।  
 नरवा-सज्ञा पु० एक तरह की चिड़िया।  
 नरवाई-सज्ञा स्त्री० दे० "नरई"।  
 नरवाह, नरवाहन-सज्ञा पु० मनुष्य-द्वारा खींची जानेवाले या चढ़ाकर ले जानेवाली सवारी। पालकी। तामजान।  
 नरवाध-सज्ञा पु० मनुष्य में श्रेष्ठ। दे० "नरकेसरी"।  
 नरसल-सज्ञा पु० दे० "नरसल"।  
 नरसार-सज्ञा पु० नौसादर।  
 नरसिमा-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाजा। तरह। दे० "नरसिमा"।  
 नरसिंह-सज्ञा पु० दे० "नृसिंह"।  
 नरसिंघा-सज्ञा पु० तरह की तरह का सवैया का एक बड़ा बाजा, जो फूँककर बजाया जाता है।  
 नरसिंह-सज्ञा पु० दे० "नृसिंह"।  
 नरमी-सज्ञा पु० परमा के बाद का दिन। बीता हुआ या आनेवाला चौथा दिन।  
 नरहरि-सज्ञा पु० नृसिंह भगवान्, जो दस अवतारों में से चौथे अवतार हैं। नरसिंह।

नरहरी-मज्ञा पु० एक छद, जिमके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएं और उन में एक नमग और एक गुरु होता है।

नराय-मज्ञा पु० रात्रण या एक पुरुष, जिसे अगर नें मार्ग था।

नराच-मज्ञा पु० १ नीर। बाग। पर्व। २ पंचनाम नाम छद।

नराचिका-मज्ञा स्त्री० एक प्रेतात्मा या छद। शिवाय वृत्त का एक भेद।

नराज-वि० दे० "नाराज"।

नराजना-कि० म० अप्रमत्त करना। नागज करना।

वि० अ० अप्रमत्त होना। नागज होना।

नराट-†-मज्ञा पु० राजा।

नराधिप-मज्ञा पु० राजा। नरपति।

नरि-†-मज्ञा पु० राजा। नरेंद्र।

नरियर-†-मज्ञा पु० दे० 'नारियल'। दे० 'नरिया'।

नरिया-†-मज्ञा स्त्री० १ मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का लपटा। अगल-अगल के खपरो की मोरको छननेवाली। इससे मूद देने पर खपरो की राखि में पानी नहा जाता।

नरिमाना-†-कि० अ० जार से बिल्लना।

नरी-मज्ञा स्त्री० [फा०] १ नरी। नाली। २ स्त्री। नारी। ३ मिखाया हुआ चमड़ा। मुलायम चमड़ा। ४ डरको के भीतर की नली, जिस पर तार लपेटा रहता है। ५ नार (जुलाहा)। ६ एक घात।

नरही-मज्ञा स्त्री० छुन्डी।

नरेन्द्र-मज्ञा पु० १ राजा। नृप। नरेज।

२ साध-चिच्छ आदि के वाक्यों की दवा करनेवाला। मिररैय। ३ २८ मात्राओं का एक छद, जिसमें अठ्ठ म दा गुरु होते हैं।

नरेली-मज्ञा स्त्री० १ नारियल की खोपड़ी। २ नारियल की खोपड़ी से बना हुआ हुक्का।

नरेज-मज्ञा पु० राजा। नृप।

नरोत्तम-मज्ञा पु० श्रेष्ठ मनुष्य। ईश्वर। श्रीवृष्ण।

नरु-मज्ञा पु० [स्त्री० नरुकी] १. नाचनेवाला। नृत्य करनेवाला। नट। २ चारण। बदीजन। ३ महादेव। ४ एक प्रकार की सहर जाति।

नरुकी-मज्ञा स्त्री० नाचनेवाली। नटी। वेद्या।

नरुने-मज्ञा पु० नृत्य। नाच।

नरुना-†-वि० अ० नाचना।

नरु-मज्ञा स्त्री० चोमर की गंटी।

नरु-मज्ञा स्त्री० भीषण ध्वनि।

नरु-मज्ञा पु० पनाला। नारी।

नरु-मज्ञा पु० १. कीचुर। कीज। लीला।

पहिना। हुंती। उदका। दिन्गी। २

हुंती-दिन्गी करनेवाला। मुखा।

वि० दे० "नरु"।

नरु-मज्ञा पु० १ दिलगीबाज। २ उपपति।

३ ठोड़ी। ४ स्तन।

नरु-मज्ञा पु० दिलगीबाज। नमगारा। भांड।

वि० आनन्ददायक। मुग्धायक।

नरुवा-मज्ञा स्त्री० मध्यप्रदेश की एक नदी, जो अमरकंटक से निकलकर भंडौच के पास वभात की खाड़ी में गिरती है।

नरुदेवर-मज्ञा पु० शिव। महादेव। एक प्रकार के अडाकार शिवलिंग, जो नरुवा नदी से निकलते हैं।

नरुद्युति-मज्ञा स्त्री० प्रतिमुख मणि के १३ अंगों में एक (नाट्य०)।

नरुसचिव-मज्ञा पु० विद्वान्। मुसाहेब। हुंती-मज्ञा करनवाला राजा का सौधी।

नरु सुहृद-मज्ञा पु० दे० "नरुसचिव"।

नरु-मज्ञा स्त्री० ५० "नरु"।

नरु-मज्ञा स्त्री० १ एक तरह की घास। २ एक तरह का पहाड़ी वांस।

नरु-मज्ञा पु० १ नरुवट। तृण विभेद २

कमल। ३ निषध देश के चंद्रवंशी राजा वीर-सर्न के पुत्र, जिनका विवाह विदम्भ देश के राजा भीम की बन्धा दमयंती के साथ हुआ था। (नरु और दमयंती की कथा प्रसिद्ध है।) ४ राम की सेना का एक वीर, जिसने भद्र पर-पुल जीता था।

[अंग्रे०] १. पानी की कल। घरा में लगा हुआ तल या बल जिससे पानी आता है। २ पोरी लगी चीज। ३ धातु आदि का बना हुआ पोला गोल लवा सड़। ४ गदगी और मंडा आदि बहने का मार्ग। पनाला। नाली।

५ पेड़ के अन्दर की नली, जिससे पेशाब नीचे उतरता है।

नलक-सज्ञा पु० नली के आकार की हड्डी।

नलका-सज्ञा स्त्री० नली।

नलकिनी-सज्ञा स्त्री० जया।

नलनील-सज्ञा पु० घुटना।

नलकप-सज्ञा पु० ऐसा कुआँ, जिसमें से नल के जरिए पानी निकाला जाता है। [अग्ने०] टण्डुलबेल।

नलकवर-सज्ञा पु० कुँवर के एक पुत्र। कहते हैं कि ये और इनके भाई मणिग्रीव नागदेव के शाप से यमलार्जुन हुए थे। श्रीकृष्ण ने इनके स्मरण करके शापमुक्त किया था।

नलकोल-सज्ञा पु० एक तरह का बेल।

नलद-सज्ञा पु० १ फूला वा रम। मकरन्द।

२ उशीर। खस। ३ जटामासी। एक घास।

नलसेतु-सज्ञा पु० रामेश्वर के निकट समुद्र पर बँधा हुआ पुल, जिसे श्रीरामचन्द्र ग वनवाया था।

नला-सज्ञा पु० १ पेड़ के अंदर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है। नल। २ हाथ या पैर की नली के आकार की लवी हड्डी।

नलिका-सज्ञा स्त्री० १ नली। नल के आकार की कोई वस्तु। चागा। नाडी। २ एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य। ३ प्राचीन काल का एक अस्त्र। नाल। ४ तरबश जिसमें तीर रखते हैं।

नलिन-सज्ञा स्त्री० १ कमल। २ पानी। ३ पक्षी-विशेष। सारस पक्षी। ४ नीली कुमुदिनी।

नलिनी-सज्ञा स्त्री० १ कमलिनी। कमल। कुमुदिनी। २ वह देश, जहाँ कमल अधिकता से होते हैं। ३ पुराणानुसार गर्गा की एक धारा का नाम। ४ नलिका नामक गन्ध-द्रव्य। ५ नदी। ६ एक वनवृत्त। मन्हीरूप। ७ भ्रमरापली।

नलिनीशू-सज्ञा पु० १ कमल की नाल। मृणाल। २ अक्षा।

नलिनी-सज्ञा पु० १ बहेलिया। व्याध। चिडी-मार। २ निषाद।

नली-सज्ञा स्त्री० १ नल के आकार की हड्डी।

पतला नल। छोटा चागा। २ जुलाहा वा नाल। लोहे का एक यंत्र, जिसमें सुई रख कर कपड़े बिनते हैं। ३ पैर की पिडली।

४ गले की घटी या हड्डी। ५ बहक की नली, जिसमें होकर गोली गुजरती है।

नलभा-सज्ञा पु० छोटा नल या चागा। वाँस का चागा।

नल्ली-सज्ञा स्त्री० दे० "नली।"

नवबर-सज्ञा पु० अंगरेजी साल का ग्यारहवाँ महीना।

नव-वि० १ नया। नवीन। नूतन। २ नौ की सरया। आठ और एक।

नवक-सज्ञा पु० एक ही तरह की नौ चीजों का समूह।

नवकारिका-सज्ञा स्त्री० नवयौवना। नवोद्भा स्त्री।

नवकालिका-सज्ञा स्त्री० नवयौवना। पहले पहल रजस्वला होनेवाली स्त्री।

नवकुमारी-सज्ञा स्त्री० नवरत्न में पूजनीय नौ कुमारियाँ, जिनमें नौ देवियों की कल्पना की जाती है।

नवखण्ड-सज्ञा पु० पृथ्वी के नौ भाग। प्राचीन भूगोल-वेत्ताओं ने पृथ्वी को नौ भागों में बाँटा था (भारत, किपुरुष, भद्र, हरि, हिरण्य, वेनुमाल, इलावृत्त, कुश, रम्य)।

नवग्रह-सज्ञा पु० फलित ज्योतिष के नौ ग्रह—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु।

नवछावरि-सज्ञा स्त्री० दे० "न्योछावर।"

नवजात-वि० जो अभी पैदा हुआ हो।

नवतन-वि० नया।

नवदंड-सज्ञा पु० राजाओं के तीन प्रकार के छत्रों में से एक।

नवदल-सज्ञा पु० कमल का वह पत्ता, जो केसर के पास होता है।

नवदुर्गा-सज्ञा स्त्री० पुराणानुसार दुर्गा की नौ मूर्तियाँ जिनकी नवरात्र में नौ दिना तक क्रमशः पूजा होती है। गया—चैलपुत्री, ब्रह्म-चारिणी चंद्रघटा, कूमांडा, स्कंदमाता, वात्या-यनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा।

नवद्वार-सज्ञा पु० शरीर के नौ भागों (दो आँखें, दो बान, नाक के दो छेद, एक मुख, एक गुदा, एक जननेन्द्रिय) ।

नवद्वीप-सज्ञा पु० नदियाँ । पूर्वी बंगाल का एक नगर ।

नवधा भक्ति-सज्ञा स्त्री० नौ प्रकार की भक्ति ।  
यथा—श्रवण, कौन्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वदन, सरय, वास्य और आत्म-निवेदन ।

नवन\*-सज्ञा पु० "नमन" ।

नवना\*†-क्रि० अ० १ झुक्ना । २ नष्ट होना ।

नवनि†-सज्ञा स्त्री० १ झुकने की क्रिया, या भाव । २ नष्टता । दोनता ।

नवनिधि-सज्ञा पु० नुबरे का खजाना । नौ तरह की निधियाँ । दे० "निधि" ।

नवनीत-सज्ञा पु० भस्म ।

नवपदी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद ।

चौपाई छंद का एक नाम ।

नवप्राशन-सज्ञा पु० नये फल या अन्न का भाजन ।

नवबाला-सज्ञा स्त्री० नवयौवना । युवती ।

नववधू-सज्ञा स्त्री० नई बहू । दुलहिन ।

नवम-वि० जो गिनती में नौ के स्थान पर हो । नवाँ ।

नवमल्लिका-सज्ञा स्त्री० १ चमेली । २ बेवारी ।

नवमांश-सज्ञा पु० नवाँ हिरण्य । एक राशि का नवाँ भाग । नौ भागों में से एक भाग ।

नवमालिका-सज्ञा स्त्री० १ नवमालिनी । २ बेवारी का पूल । ३ वर्षवृत्त-विशेष ।

नवमालिनी-सज्ञा स्त्री० दे० "नवमल्लिका" ।

नवमी-सज्ञा स्त्री० विंसी पक्ष की नवी तिथि । चन्द्रमा की नवी कैला का समय ।

नवयज्ञ-सज्ञा पु० नये अन्न की प्राप्ति के लिए किया जानेवाला यज्ञ ।

नवयुवक-सज्ञा पु० [स्त्री० नवयुवनी] नौजवान पुरुष । तरुण ।

नवयुवा-सज्ञा पु० दे० "नवयुवक" ।

नवयौवना-सज्ञा स्त्री०, नौजवान औरत । वह स्त्री, जिसका यौवन प्रारम्भ हो गया हो । युवती । तरुणी ।

नवरग-वि० १ सुन्दर । रूपवान् । २ नए ढंग का । नवेली ।

नवरगी-वि० १. नित्य नए खाने के बर्तने वाला । २ हँसमुख । खुशमिजाज ।

सज्ञा स्त्री० दे० "नारगी" ।

नवरत्न-सज्ञा पु० १ नौ प्रकार के मणि । मोती, पन्ना, मानिक, गोमदे, हीरा, मूंगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम, ये नौ रत्न हैं । २ राजा विद्यमादित्य की सभा के नौ पंडित—धन्वतरि, क्षपणक, अमर सिंह, शकु, वैतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, बराहमिहिर और वररवि । ३ गले में पहनने का नौ रत्नों का हार ।

नवरस-सज्ञा पु० वाय्व के नौ रस—शृगार, क्रुण, हास्य, रोद, वीर, भयानक, वीरमत्त, अद्भुत और शान्त ।

नवरात्र-सज्ञा पु० चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (पहली तिथि) से नवमी तक और आश्विन शुक्ला प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिनों का एक व्रत, जिसमें दुर्गा की पूजा होती है । प्राचीन काल में नौ दिनों में होनेवाला एक यज्ञ ।

नवल-वि० १ नवीन । नया । २ सुन्दर । ३ मनोहर । ४ उज्ज्वल । साफ ।

नवल-अनगा-सज्ञा स्त्री० मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक ।

नवलकिशोर-सज्ञा पु० श्रीकृष्णचंद्र ।

नवलवधू-सज्ञा स्त्री० मुग्धा नायिका के चार भेदों में से एक ।

नवला-सज्ञा स्त्री० युवती ।

नववर्ष-सज्ञा पु० नया साल ।

नवविंश-वि० उनतीसवाँ ।

नवविंशति-वि० उनतीस ।

सज्ञा स्त्री० उनतीस की संख्या । २९ ।

नवविंशति-सज्ञा पु० १ जिसने हाल में शिक्षा प्राप्त की हो । नौसिखुआ । २ जिसे आधुनिक ढंग की शिक्षा मिली हो ।

नवसंगम-सज्ञा पु० पति पत्नी की पहली भेंट । प्रथम समागम ।

नवसत\*-सज्ञा पु० दे० "नव सप्त" । नव और सत । मोलहू शृगार ।

वि० सोलह। पौड्या।  
 नवसप्त-सज्ञा पु० नौ और सात। सोलह  
 शुमार।  
 नवसर-सज्ञा पु० नौ लंड का हार।  
 वि० नवयुवक।  
 नवसस्ति\*-सज्ञा पु० द्वितीया या दूज का  
 चाँद। नया चाँद।  
 नवां-वि० गिनती में आठ के बाद। नौवां।  
 नयाँश-सज्ञा पु० नयाँ हिस्सा।  
 नवा-वि० नया। नवीन।  
 नवाई-सज्ञा स्त्री० विनीत होने का भाव।  
 नम्रता।  
 †\*वि० नया। नवीन।  
 नवामत-वि० नया आया हुआ।  
 नवाज-वि० [फा०] कृपा करनेवाला।  
 नवाजना†\*-कि० स० कृपा करना। दया  
 दिखलाना।  
 नवाजिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] दया। कृपा।  
 अनुग्रह।  
 नवाड़ा-सज्ञा पु० एक प्रकार की नाव। डोपी।  
 नवाना-कि० स० १. झुकाना। नवा देना।  
 नम्र करना। २. विनीत करना।  
 नवान्न-सज्ञा पु० १. फसल का नया अनाज।  
 २. एक प्रकार का श्राद्ध।  
 नवाब-सज्ञा पु० [अ०] १. मुगल सम्राटों के  
 समय में बादशाह का प्रतिनिधि जो किसी बड़े  
 प्रदेश के शासन के लिए नियुक्त होता था।  
 २. छोटे-मोटे मुसलमानी राजाओं की एक  
 उपाधि।  
 वि० बहुत शान-शौकत और अमीरी ढंग  
 से रहने तथा खूब खर्च करनेवाला।  
 नवाबशादा-सज्ञा पु० [फा०] १. नवाब का  
 पुत्र। २. बहुत शौकीन व्यक्ति।  
 नवाबो-सज्ञा स्त्री० १. नवाब का पद। २.  
 नवाब का नाम। ३. नवाब की हालत।  
 ४. नवाबों का शासन-बाल। ५. नवाबों  
 की-सी हुकूमत। ६. बहुत अधिक अमीरी।  
 नवारी-सज्ञा स्त्री० गुण-विशेष। नवारी का  
 फूल।  
 नवारा-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० नवासी]  
 बेटा का बेटा। दाहिना।

नवासी-वि० एक सख्या। अस्ती और नव।  
 ८१।  
 नवाह-सज्ञा पु० नौ दिन में समाप्त होनेवाला  
 रामायण आदि का पाठ।  
 नवीन-वि० १. नया। नूतन। हाल का।  
 ताजा। २. विचित्र। अपूर्व। ३. [स्त्री०  
 नवीना] नवयुवक। जवान।  
 नवीनता-सज्ञा स्त्री० नवीन या नया होने  
 का भाव। नयापन। नूतनता।  
 नवीस-सज्ञा पु० [फा०] लिखनेवाला।  
 लेखक। काबिल।  
 नवीसी-सज्ञा स्त्री० [फा०] लिखने की किया  
 या भाव। लिखाई।  
 नवेद-सज्ञा पु० १. निमन्त्रण। न्योता। २.  
 निमन्त्रणपत्र।  
 नवेला-वि० [स्त्री० नवेली] १. नवीन।  
 नया। २. तहण। जवान।  
 नवोद्वा-सज्ञा स्त्री० १. नव विवाहिता स्त्री।  
 बधू। २. नवयौवना। युवती। ३. साहित्य  
 में मुग्धा के अर्थात् जातयौवना नायिका  
 का एक भेद। वह नायिका, जो लज्जा और  
 भय के कारण नायक के पास न जाना  
 चाहती हो।  
 नव्वे-वि० ९०। नव दहाई। सौ से दस कम की  
 सख्या।  
 नव्य-वि० नया। नूतन। नवीन।  
 नशमा\*-कि० अ० नाश। नष्ट होना।  
 नशा-सज्ञा पु० १. मादक द्रव्य खाने या पीने  
 से उत्पन्न अवस्था। नशा करनेवाली वस्तु।  
 मादक द्रव्य। २. घमड़। अभिमान। मद।  
 गर्व।  
 मुहा०—नशा किरकिरा हो जाना=किसी  
 अभिय वाद के होने के कारण नशे का मजा  
 बीच में बिगड़ जाना। (आँखों में) नशा  
 छाना=नशा चढ़ना। मरती चढ़ना। नशा  
 जमना=अच्छी तरह नशा होना। नशा  
 हिरन होना=किसी असमयित घटना आदि  
 के कारण नशे का विलगुल उतर जाना।  
 नशा-पानी=मादक द्रव्य और उसकी सब  
 सामग्री। नशे का सामान। नशा उठारना=  
 घमड़ दूर करना।

नशाखोर-सज्ञा पु० [ फा० ] नशे का सेवन करनेवाला। नशेबाज।

नशाना\*—क्रि० सं० नष्ट करना।

नशावन\*—वि० नाश करना।

नशोन-वि० [ फा० ] बैठनेवाला।

नशोनी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] बैठने की प्रिया या भाव।

नशीला-वि० १ नशा उत्पन्न करनेवाला। भादव। २ जिस पर नशे का प्रभाव हो।

मुहा०—नशीली आँखें=वे आँखें, जिनमें गस्ती छाई हो। मदमत्त आँखें।

नशेबाज-सज्ञा पु० [ फा० ] घरावर निम्नी प्रवार के नशे का सेवन करनेवाला।

नश्वर-सज्ञा पु० [ फा० ] एक प्रकार का बहुत तेज चाकू जिसका प्रयोग फोड़े आदि चीरने में होता है।

नश्वर-वि० नाशवान्। मिथ्या। जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

नश्वरता-सज्ञा स्त्री० नश्वर का भाव। नष्ट हो जाने का भाव।

नपत\*—सज्ञा पु० दे० "नक्षत्र"।

नष्ट-वि० १ जिसका नाश हो गया हो।

२ ध्वस्त। बर्बाद। अदृश्य। ३ अधम। नीच। भ्रष्ट। ४ निष्फल। व्यर्थ।

नष्टबद्धि-वि० मूर्ख। मूढ़।

नष्ट भ्रष्ट-वि० जो विलुप्त टूट-फूट या नष्ट हो गया हो। ध्वस्त।

की घटी के पास की नसी पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाते हैं।

नसना\*—क्रि० अ० १ नष्ट होना। बर्बाद होना। २ बिगड़ जाना।

त्रि० अ० भागना।

नसब-सज्ञा पु० [ अ० ] वंश। खानदान।

नसर-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] गर्द। इबारत।

नसल-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] वंश।

नसवार-सज्ञा स्त्री० सूँघने के लिए तमानू के पीसे हुए पत्ते। सुंघनी। नास।

नसाना\*—क्रि० अ० १ नाश करना। बिना उना। खराब करना। भ्रष्ट करना। २।

वितर-वितर करना। ३ नष्ट हो जाना। बिगड़ जाना।

नसावना\*—क्रि० अ० दे० "नसाना"।

नसीब-सज्ञा पु० [ अ० ] भाग्य। प्रारब्ध।

मुहा०—नसीब होना=प्राप्त होना। मिलना।

नसीबवर-वि० [ अ० ] भाग्यवान्।

नसीहत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ उपदेश। शिक्षा। सीख। २ सम्मति।

नसूडिया\*—वि० मनहूस।

नसेनी-सज्ञा स्त्री० सीढ़ी।

नस्त-सज्ञा पु० नाक।

नस्तारन-सज्ञा पु० [ फा० ] १ सफेद गुलान। शेवती। २ कपड़े की एक निस्म।

नस्ता-सज्ञा स्त्री० पताओ की नाव का छेद

नहना\*—क्रि० स० नाथना । वाम में लगाना ।  
जोतना ।

नहनी—सज्ञा स्त्री० नख घाटने का औजार-  
विशेष ।

नहनी—सज्ञा स्त्री० नहनी । नहरनी ।

नहर—सज्ञा स्त्री० [ पा० ] खेतों की सिंचाई  
आदि के लिए तैयार की गई जलधारा ।

नहरनी—सज्ञा स्त्री० नाखून घाटने का एक  
औजार ।

नहरना—सज्ञा पु० एक प्रकार का रोग ।  
एक प्रकार का घाव, जिसमें सूखे के समान  
कीड़े निचलते हैं ।

नहला—सज्ञा पु० दाँत का वह पत्ता, जिस पर  
नो बूटियाँ होती हैं ।

नहलाई—सज्ञा स्त्री० नहलाने की क्रिया,  
या मजदूरी ।

नहलाना—क्रि० स० दूसरे को स्नान कराना ।  
नहवाना ।

नहसुत—क्रि० स० नख की रेखा । नाखून का  
निशान ।

नहान—सज्ञा पु० १ स्नान । नहाने की क्रिया ।  
२ स्नान का पर्य ।

नहाना—क्रि० अ० १ शरीर को जल से धोना ।  
स्नान करना । २ किसी तरल पदार्थ से सारे

शरीर का भीग जाना । बिलकुल तर हो जाना ।

महा०—दूधो नहाना पूता फलना=धन  
और परिवार से पूरा होना (आशीर्वाद) ।

नहार—वि० जिसने सारे से कुछ खाया न  
हो । वासी मुँह ।

नहारी—सज्ञा स्त्री० चलेवा । प्रातःकाल का  
जलपान ।

नहि\*—अव्य० दे० 'नही' ।

नहीं—अव्य० न । मत । निषेध या अस्वीकृति  
प्रकट करनेवाला अव्यय ।

मुहा०—नही तो=उस दशा में जब कि  
यह बात न हो । नही राही=यदि ऐसा न  
हो तो कोई बिन्ता या हानि नहीं ।

नहपु—सज्ञा पु० १ अयोध्या के एक प्राचीन  
इक्ष्वाकुवंशी राजा जो अवरीष के पुत्र और

ययाति के पिता थे । २ एक नाग का नाम ।  
३ विष्णु ।

नहसत—सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ मनहसी ।  
उदासीनता । चिन्तता । २ अशुभ लक्षण ।

ना—अव्य० दे० 'नही' ।

नाई—सज्ञा पु० दे० 'नाम' ।

नागा—वि० दे० 'नगा' ।

सज्ञा पु० एक प्रकार के साधु, जो नगों ही  
रहते हैं । नागा ।

नांघना\*—क्रि० स० लांघना । इस पार से  
उस पार उछलकर जाना ।

नांठना\*—क्रि० अ० नष्ट होना ।

नांद—सज्ञा स्त्री० मिट्टी का बड़ा और चौड़ा  
बरतन, जिसमें पशुओं को चारा-पानी आदि  
दिया जाता है । हीदी ।

नांदना\*—क्रि० अ० १ घबड़ा करना । शोर  
करना । २ छेड़ना । ३ आमदिल होना ।  
प्रसन्न होना । ४ दीपक का बुझने के पहले  
भभकना ।

नादी—सज्ञा पु० १ समृद्धि । उत्थान ।  
अभ्युदय । २ नाटक के आरम्भ में सूत्रधार  
के द्वारा पढ़ा जानेवाला आशीर्वादात्मक पद्य  
या श्लोक । मंगलाचरण ।

नादीक—सज्ञा पु० १ शुभ लक्षण के लिए  
तैयार किया हुआ द्वार । तोरण-स्तम्भ । २  
नादीमुख (श्राद्ध) ।

नादीमुख—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का श्राद्ध, जो  
विवाह आदि मंगल के अवसरों पर किया  
जाता है । वृद्धिश्राद्ध । २ वे पूर्वज, जिनका  
श्राद्ध किया जाय या जिनके लिए वर्षण  
किया जाय ।

सज्ञा स्त्री० दो नगण, दो तगण और दो  
गुरु का एक घणवृत्त ।

नाई\*—सज्ञा पु० दे० 'नाम' ।

अव्य० दे० 'नही' ।

नाई—सज्ञा पु० दे० 'नाम' ।

नाई\*—सज्ञा पु० नाय । स्वामी ।

ना—अव्य० नही । न । निषेध या अस्वीकृति-  
सूचक अव्यय ।

नाइक\*—सज्ञा पु० दे० 'नायक' ।

नाइन—सज्ञा स्त्री० १ नाई जाति की स्त्री ।

२ नाई की स्त्री ।

नाइब\*—सज्ञा पु० दे० 'नायब' ।

नशाखोर-सज्ञा पुं० [ फा० ] नशे वा सेवन करनेवाला। नशेबाज।

नशाना\*—क्रि० त० नष्ट करना।

नशावन\*—क्रि० नाश करना।

नशीन-वि० [ फा० ] बैठनेवाला।

नशीनी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] बैठने की क्रिया या भाव।

नशीला-वि० १ नशा उत्पन्न करनेवाला। मादक। २ जिस पर नशे का प्रभाव हो।

मुहा०—नशीली आँखें=वे आँखें, जिनमें मस्ती छाई हो। मदमत्त आँखें।

नशेबाज-सज्ञा पुं० [ फा० ] बराबर किसी प्रकार के नशे का सेवन करनेवाला।

नशतर-सज्ञा पुं० [ फा० ] एक प्रकार का बहुत तेज चाकू, जिसका प्रयोग कोड़े आदि चीरने में होता है।

नश्वर-वि० नाशवान्। मिथ्या। जो नष्ट हो जाय या जो नष्ट हो जाने के योग्य हो।

नश्वरता-सज्ञा स्त्री० नश्वर का भाव। नष्ट हो जाने का भाव।

नपत\*—सज्ञा पुं० दे० "नक्षत्र"।

नष्ट-वि० १ जिसका नाश हो गया हो। २ ध्वस्त। वृद्ध। अदृश्य। ३ अधम। नीच। भ्रष्ट। ४ निष्कल। व्यर्थ।

नष्टवृद्धि-वि० मूर्ख। मूढ़।

नष्ट-भ्रष्ट-वि० जो बिलकुल टूट-फट या नष्ट हो गया हो। ध्वस्त।

नष्टा-सज्ञा स्त्री० १ बेरिया। रटी। २ व्यभिचारिणी। कुलटा।

नसक\*—वि० दे० "निशक"। निर्भय। निडर।

नस-सज्ञा स्त्री० स्नायु। नाडी। रग। शरीर-त; या रक्तवाहिनी नली।

मुहा०—नस चटना या नस पर नस चटना= शरीर में किसी स्थान की नस का अपने स्थान से इधर-उधर हो जाना या खल सा जाना। नस-नस में=सारे शरीर में। सर्वांग में। नस-नस फडक उठना=बहुत अधिक प्रसन्न होना।

नसकटा-सज्ञा पुं० नपुंसक। हिजड़ा। जनता।

नस-तरंग-सज्ञा पुं० एक बाजा जिसको गले

की घटी के पास की नसों पर रखकर गले से स्वर भरकर बजाते हैं।

नसना\*—क्रि०, अ० १ नष्ट होना। बर्बाद होना। २ बिगड़ जाना।

त्रि० अ० भागना।

नसब-सज्ञा पुं० [ अ० ] वश। सान्दान।

नसर-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] गद्द। इवारत।

नसल-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] वंश।

नसवार-सज्ञा स्त्री० सूँघने के लिए तमाकू के पोसे हुए पत्ते। सुँघनी। नास।

नसाना\*—क्रि० अ० १. नाश करना। बिगाड़ना। खराब करना। भ्रष्ट करना। २.

तितर-वितर करना। ३ नष्ट हो जाना। बिगड़ जाना।

नसाना\*—क्रि० अ० दे० "नसाना"।

नसीब-सज्ञा पुं० [ अ० ] भाग्य। प्रारब्ध।

मुहा०—नसीब होना=प्राप्त होना। मिलना।

नसीबवर-वि० [ ज० ] भाग्यवान्।

नसीहत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ उपदेश। शिक्षा। सीख। २ सम्पत्ति।

नसुडिया\*—वि० मनहूस।

नसेनी-सज्ञा स्त्री० सीड़ी।

नस्त-सज्ञा पुं० नाक।

नस्तारन-सज्ञा पुं० [ फा० ] १ सफेद गुलाब। सेबती। २ कपड़े की एक किस्म।

नस्ता-सज्ञा स्त्री० पशुओं की नाक का छेद जिसमें रस्ती डाली जाती है।

नस्य-सज्ञा पुं० १ नास। सुँघनी। २ चूर्ण आदि, जिसे सूँघते हैं। ३ वेलों की नाक में पहनाई जानेवाली रस्ती।

नस्वर\*—वि० दे० "नश्वर"।

नह\*—सज्ञा पुं० दे० "नाखून"।

नह-सज्ञा पुं० नाव। नहर। नाल।

नहक-वि० १ दुर्बल। क्षीण-बल। २. पतला।

नहछू-सज्ञा पुं० विवाह की एक रस्म, जिसमें बर के नाखून काटे जाते हैं और उसे महदी आदि लगाई जाती है।

नहट्टा-सज्ञा पुं० नखदात। तपापात। ससोट।

नहन-सज्ञा पुं० पुरखट खोचने की मोटी रस्मी। नार।

हना\*—क्रि० स० लाधना। काम में लगाना।  
जोतना।

हनी—सज्ञा स्त्री० नख काटने वा औजार-  
विशेष।

हनी—सज्ञा स्त्री० नहनी। नहरनी।

हुर—सज्ञा स्त्री० [फा०] खेतों की सिचाई  
आदि के लिए तैयार की गई जलधारा।

हरनी—सज्ञा स्त्री० नाखून काटने वा एक  
औजार।

ह्रस्वा—सज्ञा पु० एक प्रकार का रोग।  
एक प्रकार का घाव, जिसमें मूत्र के समान  
कोड़े निकलते हैं।

हला—सज्ञा पु० साध का वह पत्ता, जिस पर  
नौ बूटियाँ होती हैं।

हलाई—सज्ञा स्त्री० नहलाने की क्रिया,  
या मजबूरी।

हलाना—क्रि० स० दूसरे को स्नान कराना।  
नहवाना।

हलुत—क्रि० स० नख की रेखा। नाखून का  
निशान।

नहान—सज्ञा पु० १ स्नान। नहाने की क्रिया।  
२ स्नान का पर्व।

नहाना—क्रि० अ० १ शरीर को जल से धोना।  
स्नान करना। २ किसी तरह पदार्थ से सारे

शरीर का भोग जाना। बिल्कुल तर हो जाना।  
महा०—दूधो नहाना पूती फलना=धन

और परिवार से पूर्ण होना (आशीर्वाद)।

नहार—वि० जिसने सबेरे से कुछ खाया न  
हो। वासी मुँह।

नहारी—सज्ञा स्त्री० कलेवा। प्रातःकाल का  
जलपान।

नहि\*—अव्य० दे० “नही”।

नहीं\*—अव्य० न। मत। निषेध या अस्वीकृति  
प्रकट करनेवाला अव्यय।

मुहा०—नही तो=उस दशा में जब कि  
यह बात न हो। नही सही=यदि ऐसा न  
हो तो कोई चिन्ता वा हानि नहीं।

नह्य—सज्ञा पु० १ अयोध्या के एक प्राचीन  
इक्ष्वाकुवंशी राजा जो अवरीष के पुत्र और  
ययाति के पिता थे। २ एक नाम का नाम।  
३ निष्णु।

नहिसत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मनुष्यी।  
उदासीनता। खिन्नता। २ अशुभ लक्षण।

ना—अव्य० दे० “नही”।

नाउं—सज्ञा पु० दे० “नाम”।

नागा—वि० दे० “नगा”।

सज्ञा पु० एक प्रकार के साधु, जो नगें ही  
रहते हैं। नागा।

नायना\*—क्रि० स० लाँघना। इस पार से  
उस पार उल्लंघन करना।

नाँटना\*—क्रि० अ० नष्ट होना।

नाँद—सज्ञा स्त्री० मिट्टी का बड़ा और चौड़ा  
बरतन, जिसमें पशुओं को चारा पानी आदि  
दिया जाता है। हीदी।

नादिना\*—क्रि० अ० १ शब्द करना। शोर  
करना। २ छीकना। ३ अनिदित होना।  
प्रसन्न होना। ४ दीपक का बुझने के पहले  
भभकना।

नादी—सज्ञा पु० १ समृद्धि। उत्थान।  
अभ्युदय। २ नाट्य के आरम्भ में सूत्रधार  
के द्वारा पढ़ा जानेवाला आशीर्वादार्थक पद्य  
या श्लोक। मंगलाचरण।

नादीक—सज्ञा पु० १ शुभ लक्षण के लिए  
नैयार किया हुआ द्वार। तोरण-स्तम्भ। २  
नादीमुख (श्राद्ध)।

नादीमुख—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का श्राद्ध, जो  
विवाह आदि मंगल के अवसरों पर किया  
जाता है। वृद्धिश्राद्ध। २ वे पूज्य, जिनका  
श्राद्ध किया जाय या जिनके लिए तर्पण  
किया जाय।

सज्ञा स्त्री० दो नगण दो तगण और दो  
गुण का एक वर्णवृत्त।

नाय\*—सज्ञा पु० दे० ‘नाम’।

अव्य० दे० नही।

नायें—सज्ञा पु० दे० नाम’।

नाह\*—सज्ञा पु० नाय। स्वामी।

ना—अव्य० नही। न। निषेध या अस्वीकृति  
सूचक अव्यय।

नादक\*—सज्ञा पु० दे० ‘नायक’।

नादन—सज्ञा स्त्री० १ नाई जाति की स्त्री।  
२ नाई की स्त्री।

नादब\*—सज्ञा पु० दे० ‘नायब’।

नार्ई-गङ्गा स्त्री० समान देना।

वि० समान। तुय।

नार्ई-सज्ञा पु० नाऊ। हज्जाम। नापिन।

नार्ई\*—सज्ञा पु० दे० "नाम"।

नार्ई\*—सज्ञा स्त्री० दे० "नाव"।

नार्ई\*—सज्ञा स्त्री० दे० "नाइन"।

नार्ई-वि० [ पा० ] निराग।

नार्ई-सज्ञा स्त्री० [ पा० ] निरागा।

नार्ई-सज्ञा पु० दे० "नार्ई"।

नार्ई-वि० बिना निवाला हुआ (घोटा आदि)। अल्टर। अगिक्षित।

नार्ई-गङ्गा स्त्री० १ गस लेने की इन्द्रिय।

नायिना। २ रेंट। नेटा। ३ प्रतिष्ठा या

गोभा की वस्तु। ४ प्रतिष्ठा। इज्जत।

मान।

सज्ञा पु० १ मगर की जाति का एक प्रमिद्ध

जलजंतु। २ स्वर्ग। ३ अवरिक्ष। आकाश।

४ अस्थ का एक आघात।

मुहा०—नार्ई बटना=प्रतिष्ठा नष्ट होना।

इज्जत जाना। नार्ई-वान वाटना=बड़ा

दंड देना। (किसी की) नार्ई का बाल=

सदा साथ रहनेवाला, भनिष्ठ मित्र या

मन्त्री। नार्ई चटना=क्रोध आना। त्योंरी

चटना। नार्ई चने चवाना=पूब लग

करना। नार्ई-भौ चटना या नार्ई-

भौ सिकोडना—१ जखम और अप्रसन्नता

प्रकट करना। २ धिनाता और चिढ़ना।

३ नापसंद करना। नार्ई म दम करना या

नार्ई में दम लाना=बहुत तग करना।

बहुत सताना। नार्ई रगटना=बहुत गिड़गि-

डाना और बिनती करना। मिनत करना।

नार्ई दम आना=हैरान हो जाना। नार्ई

रग लेना=प्रतिष्ठा की रक्षा कर लेना।

यौ०—नार्ईधिमनी=चिननी और गिड़-

गिड़ाहट।

नार्ई-सज्ञा पु० एक रोग, जिसमें नार्ई

एक जाती है।

मुहा०—नार्ई बन्द कर देना=घर में

मिलना बन्द कर देना। तवाह कर देना।

नार्ई-वि० [ सज्ञा नार्ईदरी ] जिसकी बंद

या प्रतिष्ठा न हो।

नार्ईना\*—वि० म० १ लीयना। उन्मथन

करना। २ बढ़ जाना। मार कर देना।

नार्ईबुद्धि-वि० शुद्ध बुद्धिवाला। ओछी नमक

वा।

नार्ई-गङ्गा पु० १ प्रवेश-द्वार। मुराना।

२. गत्री या गस्ने का आरंभ-स्थान। ३.

नगर, दुर्ग आदि का प्रवेश-द्वार। फाटक।

४ पुलिम के निपाहिवा के तैनात रहने का

स्थान। चीनी। वह स्थान जहाँ निपाहिनी

रगने, या महमूल जादि वमूल करने के लिए

सिपाही तैनात हा। ५ गूई का छेद। ६

जुलाहा का एक औजार। ७ मगर की जाति

का एक जलजंतु।

मुहा०—नार्ई छटना या वांधना=जाने

जाने का मार्ग रोकना।

नार्ईबंदी-गङ्गा स्त्री० किसी रास्ते से बंदी

जाने या धुमने की रकावट। फाटक पर

राका जाना। दे० "नार्ईबन्दी"।

नार्ईबिल-वि० [ फा० ] अयोग्य। नालायक।

नार्ई-वि० [ फा० ] निराश। असफल।

विकल मनोरथ।

नार्ई-वि० [ फा० ] खराब। बुरा।

नार्ई-वि० [ अ० ] बुरा। खराब। मनहूस।

नार्ई-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कद,

जो सर्प के विष को दूर करता है।

नार्ईदार-सज्ञा पु० १ नार्ई या फाटक पर

रहनेवाले सिपाही। २ जाने-जाने के प्रधान

स्थानों पर किसी प्रकार का घर आदि

बमूल करने के लिए तैनात अधिकारी।

वि० जिसमें नार्ई या छेद हो।

नार्ईबंदी-सज्ञा स्त्री० एक स्थान से दूसरे

स्थान तक जाने की रकावट। फाटक का

बन्द होना। एक देश से किसी दूसरे देश को

सामान आदि भेजने पर लगाई गई रोक।

किसी देश की सामान न भेजने का आदेश।

नार्ई-सज्ञा पु० इन्द्र।

नार्ई-वि० नक्षत्र-सम्बन्धी।

नार्ईना\*—वि० स० १ नाश करना।

विगाडना। २ फेंकना। गिराना।

वि० स० उल्लंघन करना। लीयना।

नार्ई-सज्ञा पु० [ फा० ] १. और का एक

रोग, जिसमें आँख की सफेदी में लाल झिल्ली पैदा हो जाती है। घोंडे की आँख का एक रोग। २ चौरा बाँधने का अंगुष्ठताना। नासुर-सज्ञा पु० विवाह के पहले की एक रस्म। दे० "नहछू"। नाखुश-वि० [फा०] [सज्ञा नाखुशी] अप्रसन्न। नाराज। नाखुशी-सज्ञा स्त्री० [फा०] नाराजगी। अप्रसन्नता। नाखून-सज्ञा पु० १ नख। नहूँ। उँगलियाँ के छोर पर नाक की तरह निकली हुई कड़ी वस्तु। २ नौपाया की टाप या खुर का बड़ा हुआ बिनारा। नाग-सज्ञा पु० [स्त्री० नागिन] १ सर्प। साँप। २ कद्रु से उत्पन्न कश्यप की सत्तान जिनका स्थान पाताल लिखा गया है। ३ दे० 'नागा'। एक देश का नाम। ४ आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली एक जाति। ५ आसाम में वह पहाड़, जिसके आस पास नागा जाति की बस्ती है। एक पर्वत। ६ हाथी। ७ राँगा। ८ सीसा (धातु)। ९ नागकेशर। १० पुनाग। ११ पान। ताबूल। १२ नागवायु। १३ बादल। १४ आठ की संख्या। १५ दुष्ट या क्रूर मनुष्य। म्हा०—नाग खेलाना—ऐसा कार्य करना, जिसमें प्राण जाने का भय हो। नागकन्या-सज्ञा स्त्री० नाग जाति की कन्या जो बहुत सुन्दर मानी गई है। नागकेशर-सज्ञा पु० पुष्प-विशेष। एक वृक्ष, जिसके सूले फूल औषध, मसाले और रंग बनाने के काम में आते हैं। नाग-वृषा। नाग गर्भ-सज्ञा पु० सिन्दूर। नाग चाण्डेय-सज्ञा पु० नागकेशर वृक्ष। नागज-सज्ञा पु० १ सिन्दूर। २ रंग। नागझाम\*—सज्ञा पु० अफीम। नागन, नागनी-सज्ञा स्त्री० दे० "नागिन"। सपिणी। साँपिन। नागदन्त-सज्ञा पु० १ हाथी का दाँत। २ खूँटी।

नागदन्तक-सज्ञा पु० १ घर की दीवाल में लगे हुए डंडे। खूँटी। २ आला। ताख। नागदमन-सज्ञा पु० दे० 'नागदीन'। नागदीन-सज्ञा पु० १ छोटे आकार का एक पहाड़ी पेड़। कहते हैं, इसकी लकड़ी के पान साँप नहीं आते। २ दे० "नागदीना"। नागनाग-सज्ञा पु० गजमुक्ता। नागपक्ष्मी-सज्ञा स्त्री० श्रावण के शुक्ल पक्ष की पक्ष्मी। उस दिन नाग की पूजा होती है। नागपति-सज्ञा पु० १ सर्पों का राजा वामुकि। २ हाथिया का राजा ऐरावत। नागपर्णी-सज्ञा स्त्री० पान। नागपाश-सज्ञा पु० एक अस्त्र, जिससे शत्रुओं को बाँध लेते थे। फाँस। फदा। फाँसी। नागफनी-सज्ञा स्त्री० १ एक पीघा, जिसके चौड़े मोटे पत्तों पर जहरीले काँटे होते हैं। २ बान में पहनने का एक गहना। नागफाँस-सज्ञा पु० दे० "नागपाश"। नागफेन-सज्ञा पु० अफीम। नागबला-सज्ञा स्त्री० गोंगेर। नागबेल-सज्ञा स्त्री० १ नागवल्ली। पान की बेल। २ बान। नागमाता-सज्ञा स्त्री० कश्यप ऋषि की स्त्री, कद्रु। नागर-वि० [स्त्री० नागरी] १ नगरवासी। २ नगर-संबंधी। सज्ञा पु० १ नगर में रहनेवाला मनुष्य। २ चतुर। सम्य, शिष्ट और निपुण व्यक्ति। ३ देवर। ४ गृजरात में रहनेवाले ब्राह्मणों की एक उपजाति। नागरता-सज्ञा स्त्री० १ नागरिकता। शहरातीपन। २ नगर का रीति व्यवहार। सम्भ्यता। ३ चतुराई। नागरबल-सज्ञा स्त्री० नागवल्ली। पान। नागरमुस्ता-सज्ञा स्त्री० नागरमोथा। नागरमोथा-सज्ञा पु० एक प्रकार का तण, जिसकी जड़ मसाले और औषध के काम में आती है। नागराज-सज्ञा पु० १ शेषनाग। २ ऐरावत। ३ 'पंचामर' या 'नाराच' नामय छंद।

नागरि, नागरिन—सज्ञा स्त्री० चतुर स्त्री।  
नगर की स्त्री।

नागरिक—वि० १. नगर-संबन्धी। नगर का।  
२. नगर में रहनेवाला। शहवासी। ३.  
चतुर। सम्मत्।

नागरिकता—सज्ञा स्त्री० नागरिक के अधि-  
कारों से संपन्न होने की अवस्था।

नागरिपु—सज्ञा पु० १. सर्प का शत्रु-नकुल,  
न्योला, मोर, मयूर, गरुड। २. हाथी का  
बेरी। सिंह।

नागरी—सज्ञा स्त्री० १. नगर की रहनेवाली  
स्त्री। २. चतुर स्त्री। प्रवीण स्त्री। ३.  
भारतवर्ष की प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत,  
मराठी और हिंदीलिखी जाती है। देवनागरी।  
नागल—सज्ञा पु० हल, जिससे पैत जोतते हैं।  
लागल।

नागलोक—सज्ञा पु० पाताल। नागों का  
वास-स्थान।

नागवंश—सज्ञा पु० शक जाति की एक शाखा,  
जिसका राज्य भारत के कई स्थानों और  
सिंहल में भी था।

नागवल्ली—सज्ञा स्त्री० पान की लता।

नागवार—वि० [फा०] १. असह्य। २. जो  
अच्छा न लगे। अप्रिय। दुरा लगनेवाला।

नागा—सज्ञा पु० १. नग्न। २. नगा रहने-  
वाले साधु। ३. दसनामी गुसादियों की एक  
शाखा। ४. बैरागियों की एक शाखा। ५.  
आसाम के पूर्व की पहाड़ियों में बसनेवाली  
एक जंगली जाति। ६. आसाम में वह पहाड़,  
जिसके आस-पास नागा जाति की बस्ती है।  
७. नियत समय पर होनेवाली बात का  
नियत अवसर पर न होना। अंतर। बीच।  
बाकी। ८. अनुपस्थिति।

मुहा०—नागा करना=अंतर डालकर देना।  
नागादि—सज्ञा पु० १. गरुड। २. नागशत्रु।  
मयूर। ३. नेवला।

नागाजुन—सज्ञा पु० एक प्राचीन विद्वान्।  
बौद्ध महात्मा।

नागाशन—सज्ञा पु० १. गरुड। २. मयूर।  
३. सिंह।

नागिन—सज्ञा स्त्री० १. सर्पिणी। नाग की

स्त्री। सर्प की भादा। २. पीठ पर सर्पों  
की लकी भीरी (अशुभ)।

नागेंद्र—सज्ञा पु० १. सर्पों का राजा। २.  
शेष, बागुवि आदि नाग। ३. ऐरावत।  
नागेंसर\*—सज्ञा पु० दे० "नागवेंसर"।

नागीर—सज्ञा पु० छाती पर रखने का बबच।  
उरस्थाण।

नागीर—सज्ञा पु० मारवाड का एक नगर।  
नागीरी—वि० नागीर का अच्छी जाति का  
बैल, आदि।

वि० १. नागीर की। २. अच्छी जाति की  
गाय।

नाच—सज्ञा पु० १. नृत्य। ताल-स्वर के अनु-  
सार और हाव-भाव-युक्त अंगों की गति।  
२. नाट्य। खेल। ३. वृत्त्य। वर्म।

मुहा०—नाच बाछना=नाच के लिए तैयार  
होना। नाच दिखाना=१. उछलना-कूदना।  
हाव-भाव दिखाना। २. विलक्षण आचरण  
करना। नाच नचाना=१. जैसा चाहना,  
वैसा काम कराना। २. दिक करना।

नाच-कूद—सज्ञा स्त्री० १. नाच-समाशा।  
२. आयोजन। प्रयत्न। ३. गुण, योग्यता,  
बड़ाई आदि प्रकट करने का उद्योग। डींग।  
४. श्रोध से उछलना।

नाचघर—सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ नाच हो।  
नृत्यशाला।

नाचना—वि० अ० १. चित्त की उमंग से  
उछलना, कूदना आदि। २. संगीत के मेल  
में ताल-स्वर के अनुसार हाव-भावपूर्वक  
अंगों की गति। नृत्य करना। ३. चक्कर  
भारना। घूमना। ४. दोड़ना-धूपना। ५.  
धरना। शोषना। ६. श्रोध में आकर उछलना-  
कूदना। बिगड़ना।

मुहा०—सिर पर नाचना=१. धरना।  
प्रसन्ना। २. पास आना। निकट आना।  
आँख के सामने नाचना=प्रत्यक्ष प्रतीत  
होना।

नाच-महल—सज्ञा पु० दे० "नाचघर"।  
नाचरण—सज्ञा पु० आमोद-प्रमोद। जलसा।  
नाचीज—वि० [फा०] तुच्छ। निरर्थक।  
बस्तु। नगण्य।

नाज—सज्ञा पु० १. अन्न। अनाज। २. [फा]  
नखरा। ३. घमड़। गर्व।

मुहा०—नाज उठाना=चोचला सहना।

नाजनी-सज्ञा स्त्री० [फा०] सुन्दरी स्त्री।  
प्रियतमा।

नाजवरदारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] नाज-नखरे  
सहन करना। चोचलें बर्दाश्त करना।

नाजा-वि० [फा०] नाज या अभिमान करने-  
वाला। अभिमानी।

नाजायज-वि० [अ०] नियमविरुद्ध। अनुचित।

नाजिम-वि० [अ०] प्रबधकर्त्ता।

सज्ञा पु० [अ०] मुसलमानी राज्यकाल में  
वह प्रधान कर्मचारी, जिस पर किसी देश  
के प्रबध का भार रहता था।

नाज़िर-सज्ञा पु० [अ०] १ निरीक्षक। देख-  
भाल करनेवाला। २ लेखको का अफसर।  
३ ख्वाजा। महलसरा। ४ बेस्याओं का  
दलाल।

नाज़ी-सज्ञा पु० [अंग्रे०] जर्मनी का राष्ट्रीय  
साम्यवादी दल, जिसका नेता हिटलर था।  
इस दल का सदस्य।

नाजुक-वि० [फा०] १ कोमल। सुकुमार।  
२ पतला। महीन। बारीक। ३ सूक्ष्म।  
गूढ़। ४ जरा से झटके या धक्के से टूट-  
फूट जानेवाला। खतरनाक।

नाजुक दिमाग-वि० चिड़चिड़ा। दे० "नाजुक  
मिजाज"।

नाजुक मिजाज-वि० जो थोड़ा-सा वृष्ट भी  
न सह सके। चिड़चिड़ा।

नाज़ो-वि० दे० "नाजनी"। लाडली।  
बुलारी। प्रियतमा।

नाट-सज्ञा पु० १ बासस्थान। रहने की  
भूमि। २ नृत्य। नाच। ३ नवल। स्वाँग।  
४ बर्नाटक के पास का एक देश। ५ उस  
देश का निवासी।

नाटक-सज्ञा पु० १ नाट्य या अभिनय करने-  
वाला। नाट। २ रंगशाला में घटनाओं का  
प्रदर्शन। अभिनय। ३ दृश्य-काव्य। अभि-  
नय-ग्रन्थ।

नाटकशाला-सज्ञा स्त्री० रंगशाला। वह घर  
या स्थान, जहाँ नाटक होता हो।

नाटकावतार-सज्ञा पु० किसी नाटक के  
अभिनय के बीच दूसरे नाटक का अभिनय।  
नाटकियाँ, नाटकी-वि० नाटकवाला। अभि-  
नय करनेवाला। स्वाँग करनेवाला। भसतरा।  
नाटकीय-वि० नाटक-संबंधी।

नाटना-क्रि० अ० प्रतिज्ञा आदि पर दृढ़ न  
रहना। निवल जाना।

क्रि० स० अस्वीकार करना। इनकार करना।

नाटा-वि० [स्त्री० नाटी] ठिगना। घौना।  
छोटा। छोटे कद का।

नाटिका-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का दृश्य-  
काव्य, जिसमें चार अंक होते हैं। स्वाँग।  
उपलपव का एक भेद। २. नाडी।

नाट्य-सज्ञा पु० नटी का पुनः। वेद्यापुनः।

नाट्य-सज्ञा पु० १ अभिनय। नटी का काम।  
नृत्य, गीत और वाद्य। २ स्वाँग के द्वारा  
चरित्र-प्रदर्शन। ३ स्वाँग।

नाट्यकार-सज्ञा पु० १ नाटक लिखनेवाला।  
२ अभिनेता। नाटक करनेवाला।

नाट्यमंदिर-सज्ञा पु० नाट्यशाला।

नाट्यशाला-सज्ञा स्त्री० अभिनय करने का  
स्थान। नाटक-घर।

नाट्यशास्त्र-सज्ञा पु० १ नृत्य, गीत और  
अभिनय की विद्या। २ भरत मुनि-कृत  
एक प्राचीन ग्रन्थ। नाटक लिखने के नियम।

नाट्यालंकार-सज्ञा पु० वह अलंकार-विशेष,  
जिससे नाटक का सौंदर्य अधिक बढ़ जाता है।

नाट्योचित-सज्ञा स्त्री० नाटक-विषयक वाक्य-  
विशेष। व्यक्तियों के लिए नाटकों में प्रयुक्त  
होनेवाले सम्बोधन।

नाट\*—सज्ञा पु० १ नाश। ध्वंस। २ अभाव।  
अनस्तित्व।

नाटना\*—क्रि० स० नष्ट करना। ध्वस्त करना।  
क्रि० अ० नष्ट होना। ध्वस्त होना। भागना।  
हटना।

नाठा-सज्ञा पु० जिस व्यक्ति का कोई वारिस  
न हो। अनाथ। असहाय। अकेला।

नाड-सज्ञा स्त्री० ग्रीवा। गर्दन। गला।

नाडा-सज्ञा पु० १ इजरायल। नीबी। २  
लाल या पीला रंगा हुआ गड्ढेदार मृत् जो  
देवताओं को चढ़ाया जाता है। मंडी।

नाडी—सज्ञा स्त्री० १ शरीर के भीतर की रक्तवाहिनी नलियाँ। २ हठयोग के अनु-  
नार ज्ञानवाहिनी, नवितवाहिनी और द्वास-  
प्रस्वान-वाहिनी नलियाँ। ३ वृणरध्र।  
नासूर का छेद।

मुहा०—नाडी चरना=बलाई की नाडी में  
गति होना। नाडी छूट जाना=प्राण न  
रहना। मृत्यु हो जाना। मूच्छा आना।  
बेहोशी आना। नाडी देवना=बलाई की  
नाडी दवाकर रोगी की अवस्था का पता  
लगाना।

नाडीमडल—सज्ञा पु० नाडियों का समूह।  
नाडी-समुदाय।

नाडीवल्ल—सज्ञा पु० समय निश्चित करने का  
एक यंत्र।

नाडीघण—सज्ञा पु० नसा का धाव। नासूर।  
नातक\*—अव्य० और नहीं तो। अन्यथा।  
नाता—सज्ञा पु० सम्बन्ध। लगाव। रिश्ता।  
रिश्तेदारी। विवाह आदि के कारण आपस  
का सम्बन्ध।

नाताकृत—वि० जिसे ताकत या बल न हो।  
निर्बल।

नाती—सज्ञा पु० [स्त्री० नतिनी, नातिन]  
बेटे या बेटों का बेटा। पोत्र। पोता।  
नाते—क्रि० वि० १ सबध से। २ हेतु। नि-  
मित्त। वास्ते। लिए।

नातेदार—वि० [सज्ञा नातेदारी] सबधी।  
रिश्तेदार। सगा।

नाथ—सज्ञा पु० १ प्रभु। स्वामी। अधिपति।  
मालिक। २ पति। ३ बेल, भंसे आदि की  
नाब छेदकर उगड़े वध में करने के लिए  
रस्सी। ४ एक सम्प्रदाय विशेष। गारुडनाथ-  
द्वारा चलाए हुए सम्प्रदाय का नाम।  
नज्ञा स्त्री० १ नाथने की विद्या या भाव।  
२ जानबरी की नवेल।

नाथना—क्रि० म० १ बेल भंसे आदि की  
नाब छेदकर रस्सी डालना, जिसमें वे वध  
में रहें। नवेल डालना। २ किसी वस्तु  
को छेदकर उमम रस्सी या तागा डालना।  
३ नत्थी करना। ४ लकी के रूप में जाड़ना।

॥—सज्ञा पु० वल्लभ-सम्प्रदाय के वैष्णव।

या एक प्रसिद्ध स्थान, जहाँ श्रीनाथजी की  
मूर्ति स्थापित है।

नाद—सज्ञा पु० १ शब्द। ध्वनि। आवाज।  
गर्जन। २ सानुनामिक स्वर। अद्वंद्व।  
३ संगीत।

यो०—नादविद्या=संगीत शास्त्र।

नादना\*—वि० स० वजाना।

दि० प्र० १ वजना। शब्द करना। २  
चितलाना। गरजना। लह्वना। लहलहाना।  
प्रफुल्लित होना।

नादली—सज्ञा स्त्री० १ हृदय की गेग-वाधा  
दूर करने के लिए सग यशव नामक पत्थर  
की चौकोर टिनिया, जिसे यंत्र की तरह  
पहनते हैं। २ हौलदिली।

नादान—वि० [फा०] [सज्ञा नादानी] ना-  
समझ। अनजान। मूर्ख।

नादार—वि० [फा०] [सज्ञा नादारी] निधन।

नादित—वि० जिसमें नाद था शब्द उत्पन्न  
हो रहा हो। ध्वनि उत्पन्न करता हुआ।  
ध्वनित। दे० “निनादित”।

नादिम—वि० [अ०] लज्जित।

नादिया—सज्ञा पु० १ नदी। २ वह बेल, जिसे  
लेवर जोगी भीख मांगते हैं।

नादिर—वि० [फा०] अदभुत। अनोखा।

नादिरशाही—सज्ञा स्त्री० [फा०] अत्याचार।  
घोर अन्याय।

वि० बहुत बढोर। अत्यन्त उग्र।

नाविहद—वि० [फा०] न देनेवाला। जिससे  
रक्म वसूल न हो।

नादी—वि० [स्त्री० नादिनी] १ शब्द  
करनेवाला २ बजनेवाला।

नाधना—क्रि० स० १ जोड़ना। बेल, घोड़े  
आदि को जोड़ना। २ जोड़ना। सबद्ध  
करना। ३ गुंथना। गुहना। ४ आरम्भ  
करना। ठानना।

नाधा—सज्ञा पु० १ पानी निगलने का मार्ग।  
२ पाट या चमड़े की बनी रस्सी जिससे  
बेल जोले जाते हैं।

नान—सज्ञा स्त्री० [फा०] रोटी। चपाती।

नानक—सज्ञा पु० सिख-सम्प्रदाय के आदि-  
गुरु, जिनका जन्म १४६९ ई० में हुआ था।

आपके बनाए हुए ग्रथ का नाम 'ग्रथ साहब' है, जो सिखों की धर्म-पुस्तक है।

**नानकपथ**—सज्ञा पु० सिख-सम्प्रदाय। गुरु नानक द्वारा प्रचारित मत। एश्वर्यवाद।  
**नानकपथी**—सज्ञा पु० गुरु नानक का अनुयायी। सिख।

**नानकशाही**—वि० १ नानकपथी। गुरु नानक से सन्ध रखनेवाला। २ गुरु नानक के अनुयायी। सिख।

**नानकार**—सज्ञा पु० [फा०] वर-रहित भूमि। माफ़ी जमीन।

**नानकीन**—सज्ञा पु० एक प्रकार का सूती कपड़ा।  
**नानखटाई, नानखटाई**—सज्ञा स्त्री० [फा०] टिकिया के आकार की एक साड़ी खस्ता मिठाई।

**नानवाई**—सज्ञा पु० [फा०] रोटी बनाकर वचनेवाला।

**नाना**—वि० १ अनेक प्रकार के। विविध। २ अनेक। बहुत।

**सज्ञा पु०** [स्त्री० नानी] १ माता का पिता। मातामह। २ पुदीना (अ०)। ३ क्रि० स० १ झुकाना। नम्र करना। २ नीचा करना। ३ डालना। फेंकना। ४ घुसाना। प्रविष्ट, करना।

**यौ०**—अर्क नाना=सिरके के साथ भबने ग उतारा हुआ पुदीने का अंक।

**नानिहाल**—सज्ञा पु० नाना-नानी का घर।

**नानी**—सज्ञा स्त्री० माता की माता। मातागृही।  
**मुहा०**—नानी याद आना या मर जाना=आपत्ति-सी आ जाना।

**ना-नुकर**—सज्ञा पु० नाही। इनकार।

**नाह्नी**—वि० १ छोटा। लघु। २ नीच। क्षुद्र। ३ पतला। महीन।

**मुहा०**—नान्ह कातना=१ बहुत बारीक काम करना। २ कठिन काम करना।

**नाह्नुक**—सज्ञा पु० दे० 'नानक'।

**नाह्नी\***—वि० दे० 'नाह्ना'।

**नाप**—सज्ञा स्त्री० माप। परिमाण। किसी वस्तु को लवाई, चौड़ाई आदि जानने की क्रिया। नापने का काम। नापने की वस्तु।  
**नाप-जोख, नाप-तोल**—सज्ञा स्त्री० १ नापन-

जोखने या तोलने की क्रिया। २ नाप या तोलकर स्थिर की गई मात्रा या परिमाण।

**नापना**—त्रि० स० तोलना। जोखना। मापना। किसी स्थान या वस्तु की लम्बाई-चौड़ाई आदि निश्चित करना।

**मुहा०**—सिर नापना १ सिर काटना। २ कोई वस्तु कितनी है, इसका पता लगाना।

**नापसद**—वि० [फा०] १ जो पसद न हो। जो अच्छा न लगे। २ अप्रिय।

**नापाक**—वि० [फा०] [सज्ञा नापाकी] १ असुद्ध। अपवित्र। २ मैला-बुजैला।

**नापित**—सज्ञा पु० नाई। नाऊ। हज्जाम। बाल बनानेवाला।

**नाफा**—सज्ञा पु० [फा०] कस्तूरी की बेली, जो मृगा की नाभि में होती है।

**नायदाम**—सज्ञा पु० [फा०] पनाला। नरदा। नाली, जिससे मैला पानी आदि बहता है।

**नाबालिग**—वि० [सज्ञा नाबालिगी] जो पूरा जवान न हुआ हो। अप्रान्तवयस्क। १८ वर्ष से कम की आयुवाला व्यक्ति कानून के अनुसार नाबालिग माना जाता है।

**नाबूद**—वि० [फा०] नष्ट। ध्वस्त।

**नाभ**—सज्ञा स्त्री० १ नाभि। डोड़ी। घुन्नी। २ शिव का एक नाम। ३ एक सुयवशी राजा। (भागवत के अनुसार राजा भगीरथ के पुत्र।) ४ अस्त्र का एक सहार।

**नाभा**—सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध भक्त, जिनका नाम नारायणदास था। कहते हैं कि ये जाति के डोम थे और दक्षिण देश में उत्पन्न हुए थे। ये जन्माद्य कहे जाते हैं। अपने गुरु अन्नदास की आज्ञा से इन्होंने 'भक्तमाल' बनाया था।

**नाभाग**—सज्ञा पु० १ वाल्मीकि के अनुसार इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा, जो वयासि के पुत्र थे। इनके पुत्र अज और अज के दशरथ हुए। २ माकण्ड्यपुराण के अनुसार वारुण वंश के एक राजा।

**नाभि**—सज्ञा स्त्री० १ चत्रमध्य। पहिए का मध्य भाग। नाह। २ टाड़ी। घुन्नी। तुन्नी। तुड़ी। ३ कस्तूरी।

सजा पु० १ प्रधान राजा। २ प्रधान व्यक्ति या वस्तु। ३ गोत्र। ४ शत्रिय।  
भिजन्मा—सजा पु० ब्रह्मा। प्रजापति। विधाता।

मजूर—वि० [ पा० ] [ मज्ञा नामजरी ] जो मजूर न हो। अस्वीकृत। अगम्य।  
नाम—सजा पु० [ वि० नामी ] १ किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध करानेवाला शब्द। मज्ञा। आख्या। प्रसिद्धि। २ ख्याति। यश। कीर्ति।

मुहा०—नाम उछालना=बदनामी कराना। चारा ओर निवा कराना। नाम उठ जाना=चिह्न मिट जाना या चर्चा बंद हो जाना। नाम करना=१ कोई बात पूरी तरह से न करना, बहने भर के लिए थोड़ा-सा करना। २ प्रसिद्धि प्राप्त करना। नाम का=१ नाम-धारी। २ बहने-सुनने भर को, काम के लिए नहीं। नाम के लिए या नाम को=१ कहने सुनने भर के लिए। थोड़ा सा। २ काम के लिए नहीं। नाम चटना=नाम लिखा जाना। नाम चलना=लोगों में नाम का स्मरण बना रहना। किसी का इतना प्रभावशाली होना कि उसका नाम सुनकर ही काम हो जाय। नाम जपना=१ बार-बार नाम लेना। २ ईश्वर या देवता का नाम स्मरण करना। (किसी का) नाम धरना=१ बदनाम करना। २ दोष निवाटना। नाम धरना=१ नामकरण कराना। २ बदनामी कराना। नाम न लेना=दूर रहना। बचना। नाम निकल जाना=किसी बात के लिए मशहूर या बदनाम हो जाना। किसी के नाम पर=किसी को अपित करके। किसी के निमित्त। किसी के नाम पटना=किसी के नाम के आगे लिखा जाना। जिम्मेदार रखा जाना। (किसी के) नाम पर मरना या मिटना=किसी के प्रेम में लीन होना। किसी के प्रेम में जान देना। (किसी के) नाम पर बैठना=किसी के भरोसे सतोंप करके स्थिर रहना। (किसी का) नाम बद करना=बदनामी करना। बलब लगाना। नाम बाती रहना=१ मरने या बही चले जाने पर भी कीर्ति का बना

रहना। २ बलब नाम ही नाम रह जाना, और कुछ न रहना। नाम बिचना=नाम प्रसिद्ध होने में आदर होना। नाम मिटना=नाम न रहना। स्मारक या कीर्ति का लोप होना। नाम-मात्र=नाम लेने भर को। बहुत थोड़ा। अत्यंत अल्प। (कोई) नाम रगना=नाम निश्चित करना। नामकरण करना। नाम लगाना=किसी दोष या अपराध के सत्रय में नाम देना। दोष मदना। (किसी के) नाम लिखना=किसी के न के आगे लिखना। किसी के जिम्मे लिखना या ठाँवना। (किसी का) नाम लेकर=१ किसी प्रसिद्ध या बड़े आदमी के नाम से लोग का ध्यान आकर्षित करके। २ (किसी देवता या पूज्य पुरुष का) स्मरण करके नाम लेना=१ नाम का उच्चारण करना। २ नाम जपना। नाम स्मरण करना। ३ गुण माना। ४ चर्चा करना। जिश्व करना। नाम व निशान=पता। खोज। (किसी) नाम से=शब्द-द्वारा निर्दिष्ट करके। (किसी) के नाम से=१ चर्चा से। २ (किसी का) सबब बताकर। यह प्रकट करके कि कोई बात किसी की ओर से है। ३ (किसी को) हुकदार या मालिक बनाकर। (किसी के) उपयोग या उपभोग के लिए। नाम में बाँपना=नाम सुनते ही डर जाना। नाम होना=१ दोष मड़ा जाना। बलक लगना। २ नाम प्रसिद्ध होना। नाम बमाना या करना=प्रसिद्धि प्राप्त करना। नाम को मरना=सुपश के लिए प्रयत्न करना। नाम जगाना=उज्ज्वल कीर्ति फैलाना। नाम डुबाना=यश और कीर्ति का नाश करना। नाम डूबना=यश और कीर्ति का नाश होना। नाम पर धक्का लगाना=यश पर लाइन लगाना। बदनामी करना। नाम पाना=प्रसिद्धि प्राप्त करना। नाम रह जाना=कीर्ति की चर्चा रहना।

नामक—वि० नाम से प्रसिद्ध। नाम धारण करनेवाला।

नामकरण—सजा पु० १ नाम रखने का काम। २ हिंदुओं के सोलह मन्वारी में

से पाँचवाँ जिसमें बच्चे का नाम रखा जाता है।

**नामकर्म**—सज्ञा पु० नामकरण। नाम रखने का काम।

**नामकीर्तन**—सज्ञा पु० ईश्वर के नाम का जप। भगवान् का भजन।

**नामजाद**—वि० [फा०] १ जिसका नाम किसी बात के लिए निश्चित कर लिया गया हो। नाम चुना जाना या प्रस्तावित किया जाना। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

**नामजदगी**—सज्ञा स्त्री० [फा०] किसी चुनाव या कार्य आदि के लिए किसी का नाम निश्चित किया जाना।

**नामदार**—वि० दे० “नामवर”।

**नामदेव**—सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध कृष्ण भक्त।

२ महाराष्ट्र देश के एक प्रसिद्ध कवि।

**नामधराई**—सज्ञा स्त्री० बदनामी। निंदा। अपकीर्ति।

**नाम-धाम**—सज्ञा पु० नाम और पता। पता-ठिकाना।

**नामधारी**—वि० नामक।

**नामधेय**—सज्ञा पु० १ सज्ञा। नाम। २ नामकरण।

वि० नामवाला। नाम वा।

**नामनिशान**—सज्ञा पु० [फा०] चिह्न। पता। ठिकाना।

**नामपट्ट**—सज्ञा पु० वह पट्टी या पत्थर का टुकड़ा, जिस पर किसी व्यक्ति या सत्त्वा का नाम लिखा हो। नाम लिखा हुआ पत्थर छत्रड़ी आदि का टुकड़ा। अग्रजी म साइनबोर्ड या नेमप्लेट कहते हैं।

**नामघोला**—सज्ञा पु० भक्तिपूर्वक नाम स्मरण करनेवाला।

**नामवं**—वि० [फा०] [सज्ञा नामदी] १ भपुसक। पुरुषत्वहीन। बलीव। २ दरपान। बायर।

**नामलेवा**—सज्ञा पु० १ नाम लेनेवाला। नाम स्मरण करनेवाला। २ उतराधिकारी। सति। बारिस।

**नामवर**—वि० [फा०] [सज्ञा नामवरी] निना-का बड़ा नाम हो। नामी। प्रसिद्ध।

**नामशेष**—वि० १ जिसका केवल नाम बाकी रह गया हो। नष्ट। ध्वस्त। २ मृत। मरा हुआ।

**नामांकित**—वि० १ जिस पर नाम लिखा या खुदा हो। खुदा हुआ नाम। मुद्रित नाम। २ प्रसिद्ध। प्रविष्टित। विख्यात।

**नामातर**—सज्ञा पु० एक ही वस्तु या व्यक्ति का दूसरा नाम। पर्याय।

**नामाकूल**—वि० १ अयोग्य। नालायक। २ अनुचित। अनुचित।

**नामावली**—सज्ञा स्त्री० १ नामा की सूची। नामा की तालिका। २ वह कपड़ा, जिस पर चारा और भगवान् या किसी देवता का नाम छपा होता है। रामनामी। ३ विष्णु सहस्रनाम।

**नामी**—वि० १ नामधारी। नामवाला। २ प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

**नामुनासिब**—वि० [फा०] अनुचित।

**नामुमकिन**—वि० जो न हो सके। असंभव।

**नामूसी**—सज्ञा स्त्री० [अ०] बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। बदनामी।

**नाम्ना**—वि० [स्त्री० नाम्नी] नामवाला।

**नाय**—सज्ञा पु० दे० “नाम”।

अव्य० दे० ‘नही’।

**नायक**—सज्ञा पु० [स्त्री० नायिका] १ नेता।

अगुवा। सरदार। २ अविपति। स्वामी।

मालिक। ३ श्रेष्ठ पुरुष। जन-नायक।

४ साहित्य में शृंगार-साधक पुरुष।

किसी वाक्य या नाटक आदि का मुख्य पात्र। ५ संगीत-कला में निपुण पुरुष।

बलाघत। ६ एक वर्षावृत्त।

**नायका**—सज्ञा स्त्री० १ दे० “नायिका”।

२ वेदया की माँ। ३ कुटनी। दुती।

**नायन**—सज्ञा स्त्री० नाई की स्त्री।

**नायब**—सज्ञा पु० [अ०] १ किसी की ज़ोर से काम करनेवाला। मुनोम। मुन्नार।

२ सहायक। सहकारी।

**नायाब**—वि० [फा०] दुर्लभ। जो जल्दी न मिल सके। अप्राप्य। बहुत बढ़िया।

**नायिक**—सज्ञा स्त्री० १ रूप-गुण-गणन स्त्री।

२ यत स्त्री, जो शृंगार रस का आनन्द

हो। किसी वाय्व या नाटक आदि की प्रमग पात्री।

नारगी-गज्ञा स्त्री० १ नीनु की जाति का फल-विनेय। २ नारगी के छिलके का-सा रंग। पीलापन लिये हुए लाल रंग।

वि० पीलापन लिये हुए लाल रंग का।

नार-गज्ञा स्त्री० १. गरदन। घोवा। २ दे० "नारी"। ३ जुलाहा की दरवा। नाल।

† गज्ञा पु० १ आँवल नाल। दे० "नाल"। २ नाला। ३ बहुत मोटा रस्ता। ४ मूल की डोरी, जिसमें मिय्याँ घाँघरा लमसी हैं। नारा। नाला। ५ जुवा जोड़ने की रस्मी या तस्मा। ६ नर-समूह। बहुत मनुष्य।

मुहा०—नार नवाना या नीचा करना= १ गरदन झुकाना। सिर नीचे की ओर करना। २ लज्जा, चिन्ता, सकोच और मान आदि के कारण सामने न ताकना। दृष्टि नीचे करना।

नारक-वि० नरक सम्बन्धी। नरक में रहने वाले जीव।

नारकी-वि० नरकवासी। नरक भोगी। नरक में जाने योग्य कर्म करनेवाला। पापी। दुराचारी।

नारद-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध देवर्षि, जो बहुत बड़े हरिभक्त तथा कलह प्रिय भी कह गये हैं। आजकल के विद्वानों का मत है कि नारद किसी एक जादमी का नाम नहीं था, बल्कि गांधा का एक संप्रदाय था। २ विद्वामित्र के एक पुत्र। ३ एक प्रजापति। ४ जगडा करानेवाला जादमी।

नारना-वि० स० बाह लमना।

नारसिंह-गज्ञा पु० १ नरसिंह रूपवारी विष्णु। २ एक नर का नाम। ३ एक अपपुराण। नृसिंह-मन्थी।

नारा-गज्ञा पु० १ द्वाज-पद। नीमी। दे० "नामी"। २ लाज रंगा हुआ मूल, जो पूजन में दवनाश को चढ़ाया जाता है। मालो। कुम्भ-मूल। ३ हठ के जुके भ बंधी हुई रस्सी।

† दे० "नाल"।

नाराच-सज्ञा पु० १. छोट या बाग। तीन। २ दुदिन। आधी-गानी का दिन। ३ एक प्रकार का वर्णवृत्त। २४ भाषाओं का एक छंद।

नाराज-वि० [फा०] अप्रसन्न। रष्ट। नाबुल। मफा।

नाराजगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] अप्रमन्नता। नागुशी।

नाराजी-गज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "नाराजगी"।

नारायण-सज्ञा पु० १ विष्णु। भगवान्। ईश्वर। २ पूम का महीना। ३ 'अ' अक्षर का नाम। ४ कृष्ण यजुर्वेद के अवगंत एक उपनिषद्। ५ एक अस्त्र।

नारायणी-सज्ञा स्त्री० १ लक्ष्मी। २ दुर्गा। ३ गंगा। ४ श्रीकृष्ण की सेना का नाम, जिम उन्होंने कुश्क्षेत्र के युद्ध में दुर्योधन की सहायता के लिए दिया था।

नारायणीय-वि० नारायण संप्रदो।

नारि-सज्ञा स्त्री० दे० "नारी"।

नारिकेल-सज्ञा पु० नारियल।

नारियल-सज्ञा पु० १ खजूर की जाति का एक पेड़। इसमें बड़े गोल फटा के अन्दर सफेद मीठी गरी होनी है। २ नारियल का टुकड़ा।

नारियली-गज्ञा स्त्री० १ नारियल का खोपड़ा। २ नारियल का टुकड़ा।

नारी-सज्ञा स्त्री० १ स्त्री। औरत। महिला।

\*† २ दे० 'नानी'। ३ दे० 'नाडी'।

नारीत्व-गज्ञा पु० नारी या स्त्री होने का भाव। स्त्रीधर्म। स्त्रीत्व।

नारीधर्म-सज्ञा पु० १ स्त्रिया का धर्म। सतीत्व रक्षा, पतिव्रत धर्म, पति सेवा, पुत्र पालन और गृहस्थी का प्रबन्ध करना आदि। २ मानिक हाना। रजादर्शन।

नारु-सज्ञा पु० १ जू। डोल। २ नहर्आ नामक रोग।

नालद, नालदा-सज्ञा पु० १ मगध (विहार) में पटने से ६० मील दक्षिण प्रोढ़ा का एक प्राचीन स्थान। २ इस स्थान का प्रसिद्ध विद्वविद्यालय या विद्यापीठ।

नाल-सज्ञा स्त्री० १. कमल, आदि फलों की दडी। डोंडी। २. पीपे का डठल। काड। ३. गेहूँ, जौ आदि की लबी डडी, जिसमें बाल लगती है। ४. नली। नल। ५. वदक की नली। ६. सुनारों की फुकनी। ७. जुलाहों की नली। छूछा।

सज्ञा पु० १. नारा। २. लिंग। ३. हरताल। ४. जल बहने का स्थान। ५. घोड़ों की टाप। ६. जूतों की एडी के नीचे उन्हे रगड़ से बचाने के लिए जड़ी जानेवाली लोह की वस्तु। ७. तलवार आदि अस्त्रों की मूँठ पर मढ़ने की वस्तु। ८. लकड़ी का वह चक्कर, जिसे नीचे डालकर कुएँ की जोड़ाई की जाती है। ९. वह सपया या पैसा, जो जुआरी जुए का अड़्डा रखनेवाले को देता है।

नाल-कटाई-सज्ञा स्त्री० तुरत के जनमे हुए बच्चे की नाभि में लगे हुए नाल को काटने का काम।

नालकी-सज्ञा स्त्री० खुली पालकी, जिस पर एक मिहिराबदार छाजन होती है।

नालबंद-सज्ञा पु० जूते की एडी या घोड़े की टाप में नाल जड़नेवाला।

नाला-सज्ञा पु० [स्त्री० नाली] गद्दा पानी बहने का मार्ग। मोरी। पनाला।

नालायक-वि० [फा०] अयोग्य। निकम्मा। भूखं।

नालायकी-सज्ञा स्त्री० अयोग्यता। निक्कमापन। भूखंता। वेवकूफी।

नालिक-सज्ञा पु० आग्नेयस्त्र। बन्दूक। भुशुण्डी।

नालिका-सज्ञा स्त्री० १. छाटी नाल या डठल। २. नाली। ३. एव प्रकार का गव-द्रव्य।

नालिकेर-सज्ञा पु० १० "नारियल"।

नालिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] फरियाद। बिस्ती, के चिह्न प्रतिकार की मांग। अभियोग। हानि-पूर्ति के लिए हानि करनेवाले पर दावा।

नालिशी-वि० नालिश करनेवाला। दावेदार।

नाली-सज्ञा स्त्री० १. पानी बहने का पछला मार्ग। २. गलीज आदि बहने का

मार्ग। मोरी। ३. घोड़े की पीठ का गड्ढा। ४. बेल आदि चीपायों को दबा पिलाने का चोगा। ढरका। ५. नाडी। धमनी। रक्त आदि बहने की नली। ६. एव प्रकार का साग। ७. घड़ी। ८. कमल।

नाव\*†-सज्ञा पु० दे० "नाम"।

नाव-सज्ञा स्त्री० लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई पानी के ऊपर चलनेवाली सवारी। नाँका। किस्ती।

नावक-सज्ञा पु० [फा०] १. एक प्रकार का छोटा बाण। २. मधुमक्खी का डक।

३. केवट। मल्लाह।

नावना†-क्रि० सं० १. सुकाना। गवाना।

२. डालना। फेंकना। गिराना। ३. प्रविष्ट करना। घुसाना।

नावर\*†-सज्ञा स्त्री० १. नाव। नाँका। २. नाव की एक क्रीड़ा, जिसमें उसे बीच में ले जाकर चक्कर देते हैं।

नावकिक-वि० [फा०] अनजान। अपरिचित। जो न जानता हो।

नायिक-सज्ञा पु० मल्लाह। केवट।

नाश-सज्ञा पु० १. क्षय। नष्ट हो जाना। ध्वंस। दरवादी। २. नाशक होना।

नाशक-वि० १. नाश करनेवाला। ध्वंस करनेवाला। २. मारनेवाला। बध करनेवाला। ३. दूर करनेवाला।

नाशकारी-वि० नाशक।

नाशन-सज्ञा पु० नाश करना।

वि० नाश करनेवाला।

नाशना\*-क्रि० सं० दे० "नाशना"।

नाशपाती-सज्ञा स्त्री० [तु०] एव प्रसिद्ध फल।

नाशवान्-वि० नश्वर। अस्थायी।

नाशाद-वि० [फा०] अवसन्न। दुखी। बर्बाद।

नाशी-वि० [स्त्री० नाशिनी] १. नाश करनेवाला। नाशक। २. नश्वर।

नास्ता-सज्ञा पु० [फा०] जलपान।

नास-सज्ञा स्त्री० नाक से सूँघी जानेवाली अर्धध। २. सुँघनी।

नासदान-सज्ञा पु० सुँघनी रखने की छविया।

नासिना -त्रि० स० १. नाट करना। घरबाद करना। २. नार छाना। ३. भागना।  
 नासमस-वि० जिसे समझ न हो। अवाप।  
 धेपाक। मूर्ख। अज्ञान। मुड़।  
 नासमसो-सज्ञा स्त्री० मूर्खता। बेवकूफी।  
 गल्ती। अज्ञता।  
 नासा-सज्ञा स्त्री० १. नासिका। नाव। २. नाव का छेद। नयना। ३. दन्वाजे के ऊपर स्त्री लट्ठी। गेरटा।  
 नासाप-सज्ञा पु० नाव का अगला भाग।  
 नासापुट-सज्ञा पु० नाव। नयना। नाव का वह चमड़ा, जो छेदों के बिचारे पत्र पर का काम देता है।  
 नासिक-सज्ञा स्त्री० नस-राम्य का एक नगर और तीर्थ-स्थान, जहाँ गोदावरी का तट पर पचयटा है।  
 नासिका-सज्ञा स्त्री० नास। नाना।  
 नासी\*-वि० दे० "नासी।  
 नासीर-सज्ञा पु० [अ०] अग्रसर। अग्रगामी।  
 नैना का अग्र भाग।  
 नामूर-सज्ञा-पु० [अ०] नस का घाव।  
 पुराना घाव। घाव, फोड़े आदि के नीचे का छेद, जिससे बराबर मवाद निकलता है और जिसके कारण घाव जन्दी अच्छा नहीं होता।  
 नास्ति-क्रि० स० नहीं। अविद्यमानता।  
 अभाव।  
 नास्तिव-सज्ञा पु० ईश्वर या परलोक आदि में विश्वास न करनेवाला। ईश्वर को न माननेवाला।  
 नास्तिकता-सज्ञा स्त्री० नास्तिक होने का नाव। ईश्वर, परलोक आदि को न मानने की बुद्धि।  
 नास्तिकवाद या नास्तिवाद-सज्ञा पु० ईश्वर, परलोक आदि न मानने का सिद्धान्त।  
 नास्तिक्य-सज्ञा पु० दे० 'नास्तिकता'।  
 नास्य-वि० नाव का। नाव-सम्बन्धी।  
 सज्ञा पु० १. नासिका में उत्पन्न होनेवाला।  
 २. बेल की नाव में लगाई जानेवाली स्त्री।  
 नाह\*-सज्ञा पु० दे० "नाव"। स्वामी।

नाहव-त्रि० वि० व्यर्थ। फजूल। धेपायदा।  
 बे-मतलब।  
 नाहट-वि० बुरा। नटगट।  
 नाह-नूह\*-सज्ञा स्त्री० नहीं-नहीं। इनकार।  
 नाह-सज्ञा पु० १. पिह। शेर। बाघ। २. टेमू का फूल।  
 नाह-सज्ञा पु० नाम नाम का रोग। नहरवा।  
 सज्ञा पु० दे० "नाहर"।  
 नाहिनै\*-अव्य० नहीं है।  
 नाही-अव्य० दे० "नहीं"।  
 नाहुवि-सज्ञा पु० राजा नहुष का पुत्र। राजा यमावि।  
 नित\*त्रि० वि० दे० "नित्य"।  
 निद\*-वि० दे० 'निय'।  
 निदव-सज्ञा पु० निदा करनेवाला। दूसरे का दाप ढंढनेवाला। बदनाम करनेवाला।  
 निदवाई-सज्ञा स्त्री० निन्दा करने का स्वभाव।  
 निदना\*+क्रि० स० निदा करना। बदनाम करना। कलक लगाना।  
 निदनीय-वि० १. निदा करने योग्य। शिवा-यत के लायक। २. बुरा।  
 निंदरना-क्रि० स० दे० "निदना"।  
 निंदरिया\*+सज्ञा स्त्री० नीद। निद्रा।  
 निदा-सज्ञा स्त्री० बुराई। बुराई का वर्णन।  
 शिवायत। बदनामी। कुत्सा।  
 निदाई-सज्ञा पु० खूब निराने की क्रिया या मजदूरी।  
 निदासा-वि० उनीदा। जिसे नीद आ रही हो।  
 निदास्तुति-सज्ञा स्त्री० निदा के बहाने बड़ाई या स्तुति। व्याज-स्तुति।  
 निदित-वि० दूषित। बुरा। जिसकी छोग निदा करते हैं।  
 निदिपा\*+सज्ञा स्त्री० नीद।  
 निध-नि० १. निदा करने योग्य। निदनीय।  
 २. दूषित। बुरा। हेम। तुच्छ।  
 निव-सज्ञा स्त्री० नीम का पेड़।  
 निवाक या निवाकचाप्य-सज्ञा पु० एक वैष्णव-सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य। इन्होंने द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार किया।

निकालना\*—क्रि० स० नष्ट करना। नाश करना। उखाड़ना। उजाड़ना।

निकम्मा—वि० [स्त्री०-निकम्मी] १. निटल्ला। आलसी। निश्चिन्त। काम-धंधा न करने वाला। २. जो किसी काम का न हो।

वेगसुरफ। बुरा।

निकर-संज्ञा पुं० १. समूह। झुंड। २. राशि। ढेर। ३. निधि।

निकरना\*—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निकर्मा—वि० निटल्ला। काम न करने वाला। आलसी। निष्कर्मा।

निकलक—वि० निकलक १. दोषरहित।

निकलकी-संज्ञा पुं० विष्णु का दसवां अवतार। कल्कि अवतार।

निकल-संज्ञा-स्त्री० [अग्ने०] एक धातु, जो गोमले, गुंधक आदि के साथ मिली हुई खानों में मिलती है। झाफ होने पर यह पानी की तरह चमकती है।

निकलना—क्रि० अ० १. भीतर से बाहर आना। २. मिली या लगी हुई चीज का अलग होना। ३. पार होना। एक भीर से दूसरी ओर चला जाना। ४. पलीक होना। ५. गमन करना। जाना।

६. उभय होना। उत्पन्न होना। उपस्थित होना। दिखाई पड़ना। ७. किसी ओर सरा हुआ होना। ८. निश्चित होना। ठहराया जाना। ९. स्पष्ट होना। प्रकट होना।

१०. छिड़ना। आरंभ होना। ११. सिद्ध होना। हल होना। १२. फैलाव होना। प्रकट होना। १३. छटना। भूत होना। १४. शरीर के ऊपर उत्पन्न होना। १५. अपने को बचा जाना। बच जाना। १६. कहकर नहीं करना। १७. खपना। बिकना।

१८. सबके सामने होना। प्रकाशित होना। १९. हिसाब-किताब होने पर कोई खत्म जिम्मे ठहरना। २०. फटकर अलग होना। २१. जाता रहना। दूर होना। न रह जाना। २२. व्यतीत होना। गुजरना। २३. घोड़े, आदि का सवारी लेकर चलना सीखना।

मुहा०—निकल जाना=१. चला जाना।

आगे बढ़ जाना। २. नष्ट हो जाना। ३. घट जाना। कम हो जाना। ४. न पकड़ा जाना। भाग जाना। (स्त्री का) निकल जाना= किसी पुरुष के साथ अनुचित संबंध करके घर छोड़ चली जाना।

निकलवाना—क्रि० स० निकालने का काम दूसरे से कराना।

निकप-संज्ञा पुं० १. कसौटी का पत्थर। २. तलवार की म्यान।

निकसना\*—क्रि० अ० दे० "निकलना"।

निकाई\*—संज्ञा पुं० १. निकाने की मजदूरी। २. निराई।

संज्ञा स्त्री० १. भलाई। अच्छापन। २. खूबसूरती। सुंदरता।

निकाज—वि० बेकाम। निकम्मा।

निकाम—वि० १. निकम्मा। २. बुरा। सराब।

क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। फजूल।

निकाय-संज्ञा पुं० १. समूह। झुंड। २. ढेर। राशि। ३. घर। निलय। निवास। ४. परमात्मा।

निकारना\*—क्रि० स० दे० "निकालना"।

निकालना—क्रि० स० १. निकालना। भीतर से बाहर लेना। २. मिली या लगी हुई वस्तु को अलग करना। ३. पार करना। ले जाना। ४. निश्चित करना। ठहराना। ५. उपस्थित करना। ६. खोलना। स्पष्ट करना। ७. छेड़ना। ८. आरंभ करना। चलोना। ९. सबके सामने लाना। प्रकट करना। १०. अलग करना। ११. घटाना। कम करना। १२. छुड़ाना। नीकरी से छुड़ाना। बरखास्त करना। १३. बेचना। खपाना। १४. सिद्ध करना। प्राप्त करना। १५. निर्वाह करना। चलाना। १६. किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर निश्चित करना। १७. जारी करना। फैलाना। १८. आविष्कार करना। १९. बचाव करना। निस्तार करना। २०. उद्धार करना। २१. प्रचारित करना। प्रकाशित करना। २२. खत्म जिम्मे ठहराना। २३. बूढ़कर पाना। २४. घोड़े आदि की सवारी लेकर

चलना या गाड़ी आदि सीचना सिखाना।  
 शिता-देना। २५. मुई से बेल-बूटे बनाना।  
 निकाला-सज्ञा पु० १. निकालने का काम।  
 २. किसी स्थान से निकाले जाने का बंद।  
 निष्कासन। जैसे, देशनिकाला।  
 निकास-सज्ञा पु० १. निकलने या निकालने  
 की क्रिया या भाव। २. निकलने के लिए  
 खुला स्थान या छेद। ३. दरवाजा।  
 ४. बाहर का खुला स्थान। मैदान। ५.  
 उद्गम। ६. वंश का मूल। ७. रुखा का  
 उपाय। छुटकारा पाने का उपाय। ८.  
 निर्वाह का ढंग। बसीला। ९. प्राप्ति का  
 ढंग। आमदनी का रास्ता। १०. आय।  
 निकासना-क्रि० सं० निकालना। बाहर कर  
 देना।  
 निकासी-सज्ञा स्त्री० १. निकलने की क्रिया  
 या भाव। प्रस्थान। २. वह धन, जो सरकारी  
 मालगुजारी आदि देकर जमींदार को बने।  
 मुनाफा। ३. आय। आमदनी। ४. विक्री के  
 लिए माल की रवानगी। लदाई। ५. विक्री।  
 खपत। ६. चुगी। ७. खन्ना।  
 निकास-वि० निकाला हुआ। निष्कासित।  
 बहिष्कृत।  
 सज्ञा पु० द्वार, निकास।  
 काह-सज्ञा पु० [अ०] मुसलमानी रीति  
 से विवाह।  
 मुहा०—गिवाह पढ़ना=मुसलमानी ढंग  
 पर विवाह कराना।  
 काहनामा-सज्ञा पु० वह पत्र, जिस पर  
 गिवाह और मेहर का उल्लेख हो।  
 कियाना-क्रि० सं० नीचकर छिलका  
 अलग करना।  
 किरट \*†-वि० दे० "निरुष्ट"।  
 कुन-सज्ञा पु० लटा-गृह। पनी लटाओं से  
 पिरो हुआ स्थान।  
 कुम-सज्ञा पु० १. कुमरन या एक पुत्र।  
 यह रावण का मर्ता था। २. महादेव का  
 एक मण।  
 कुम्भिका-सज्ञा स्त्री० १. राक्षसी का  
 देवपर। मेघनाद का यज्ञ-स्थान। २. लवा  
 की एक देवी।

निकुच-सज्ञा पु० बड़हल।  
 निकुटी-सज्ञा स्त्री० छोटी इलायची।  
 निकुही-सज्ञा पु० एक चिड़िया।  
 निरुत-वि० १. तिरस्कृत। निकाला हुआ।  
 २. नीच। बदनाम। ३. वंचित।  
 निरुति-सज्ञा स्त्री० १. अर्थमं। बुरा कर्म।  
 पाप। नीचता। २. तिरस्कार। ३. दैन्य।  
 निरुष्ट-वि० बहुत ही खराब। अर्थमं। नीच।  
 बुरा।  
 निरुष्टता-सज्ञा स्त्री० बुराई। अर्थमता।  
 नीचता।  
 निरुष्टत्व-सज्ञा पु० नीचता। दे० "निरुष्टता"।  
 निकेत-सज्ञा पु० १. घर। मकान। गृह।  
 २. स्थान। जगह।  
 निकेतन-सज्ञा पु० दे० "निकेत"।  
 निकोचन-सज्ञा पु० "सकुचन"।  
 निकोसना-क्रि० सं० प्रायः निकालना। दाँव  
 पीसना।  
 निकोनी-सज्ञा स्त्री० १. निराई। २. निराई  
 की मजदूरी।  
 निशती-सज्ञा स्त्री० रोहे के तोलने की छोटी  
 तराजू। कांटा। लोह-तुला।  
 निक्षण-सज्ञा पु० चुबन।  
 निक्षिप्त-वि० १. फेंका हुआ। २. छोड़ा  
 हुआ। त्यक्त।  
 निक्षेप-सज्ञा पु० १. क्षेपण। फेंकना। चलाना।  
 छोड़ना। त्याग। २. समर्पित वस्तु। ३.  
 मोछना। ४. धरोहर। अमलत। बांती।  
 निक्षेपक-सज्ञा पु० १. फेंकनेवाला। २. यात्री  
 रखनेवाला। ३. गिर्दा रखनेवाला। ४. त्याग-  
 कर्ता।  
 निक्षेपण-सज्ञा पु० [वि० निक्षिप्त, निक्षेप्य]  
 १. फेंकना। डालना। २. छोड़ना। चलाना।  
 ३. त्यागना।  
 निषम\*—सज्ञा पु० दे० "निषम"।  
 निर्वड-वि० ठीक मध्य में। बीचोबीच।  
 सटीक। ठीक।  
 निषदट्ट-वि० १. निषम्या। बालगी। २.  
 इधर-उधर मारा मारा फिरनेवाला। जो  
 कुछ बमार्द न करे या बम-धाम न  
 करे।

निलरना-त्रि० अ० १ मेल छेटर साक  
हाना। २ रग साप हाना। चमकना।  
३ छिज्या उतरना।

निलरवाना-त्रि० स० साप करना। घुल  
वाना।

निलरी-सज्ञा स्त्री० १ पक्की रंगोई। २  
सलरी का उलटा।

निलवं-सज्ञा पुं० दस हजार चरोडे की  
सह्या। दस गव की सह्या।

वि० धामन। ठुमना।

निलवल्-वि० सम्पूर्ण। समस्त। विलगुल।  
सब। और बाकी कुछ नहीं।

निखात-सज्ञा पुं० गत्त। परित। गद्दा।  
साई। खता।

निखार-सज्ञा पुं० दे० "निपाद"।

निखार-सज्ञा पुं० १ धूगार। शोभा। २  
शुद्धता। निमलता। स्वच्छता। सफाई।

निखारना-क्रि० स० १ साफ करना। २  
पवित्र करना।

निखारा-सज्ञा पुं० शक्कर बनाने का कड़ाह।

निखालिस-वि० शुद्ध। बिना मिलावट का।

जिसमें और किसी चीज का मेल न हो।

निखिल-वि० संपूर्ण। सब। समस्त। अखिल।  
समग्र।

निखेय-सज्ञा पुं० दे० 'निपेय'।

निखेयना-क्रि० स० गना करना।

निखोट-वि० १ जिसमें कोई खोटाई या दोष  
न हो। निर्दोष। २ साफ। स्पष्ट या खुश  
हुआ। सरल। सीधा।

क्रि० वि० बिना सकोच के। बेवडक।

निखोटना-क्रि० स० नाखून से ताडना या  
काटना।

निखोडना-क्रि० स० छीलना। छिलका निकालना।  
उखटना।

निखोडा-वि० निर्दय। कठार दिल का।

निखोरना-क्रि० स० तापून से उचाडना।

निगद-सज्ञा पुं० एक रक्त शोधक वृद्धी।

निगदना-क्रि० स० रजाई, दुलाई आदि  
रई भरे कपडों में तागा डालना।

निगध-वि० गधहीन। निर्गंध।

निगड-सज्ञा स्त्री० १ लोहे की जजीर।

हाथी के पैर बांधने की जजीर। आड़।  
२ वेदी। पंचरी।

निगडित-वि० बेंधा हुआ। बद्ध। बेंधा पह  
नाया हुआ।

निगद-सज्ञा पुं० १ वयन। भाषण। बहना।  
२ ओषध-विशेष।

निगदित-सज्ञा पुं० वयित। भाषित। उक्त।  
वर्णित। कहा हुआ।

निगदाई-सज्ञा स्त्री० सीने का नाम।  
सीना।

निगम-सज्ञा पुं० १ मार्ग। पथ। २ बद  
शास्त्र-विशेष वेद की शाखा। ३ हाट।

बाजार। ४ मेला। ५ रोजगार। व्या-  
पार। ६ निश्चय। ७ कारपारिगत  
(अर्थ)। ८ कायस्थों की एक शाखा।

निगमागम-सज्ञा पुं० वेदशास्त्र।

निगर-सज्ञा पुं० १ दे० 'निवर'। २  
भोजन। ३ एक तौल।

वि० सत्र।

निगरण-सज्ञा पुं० १ निगलना। २ गला।  
३ होमघनु।

निगरा-वि० खालिस (ईश का रस)।

निगराना-क्रि० स० १ निगम करना। निप  
टाना। २ स्पष्ट करना। अलग करना।

निगरानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] देख रेख।  
निरीक्षण। पुलिस-द्वारा निम्नी व्यक्ति पर

देख रेख।

निगह-वि० हल्का। जो भारी या बजनी  
न हो।

निगलना-क्रि० स० १ लील जाना। गले  
के नीचे उतार लना। घूटना। खा जाना।

२ दूसरे की धन आदि मार बंटना। हड़प  
जाना।

निगह-सज्ञा स्त्री० दे० 'निगाह'।

निगहवान-सज्ञा पुं० [फा०] रक्षक।

निगहवानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] रक्षा।  
रक्षकत्व।

निगालिका-सज्ञा स्त्री० आठ अक्षर की एव  
वर्णवृत्ति। नगस्वरूपिणी।

निगाली-सज्ञा स्त्री० हुक्का पीने की नली।

निगाह-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ दृष्टि।

नजर। २. देखने की क्रिया या दृग्। चितवन।  
 ३. कृपादृष्टि। मेहरवानी। ४. ध्यान।  
 विचार। ५. परख। पहचान।  
 निगिभ\*-वि० जिसका बहुत लोभ हो।  
 बहुत प्यारा। गोपनीय। गुप्त।  
 निगुण-सज्ञा पु० गुच्छा। समूह।  
 निगुण\*-वि० दे० "निर्गुण"।  
 निगुनी\*-वि० जो गुणी न हो। गुण-रहित।  
 निगुरा-वि० बिना गुरु का। जिसने गुरु से  
 मन न लिया हो। अवदीक्षित।  
 निगूढ़-वि० अत्यंत गुप्त। बड़ी कठिनाई से  
 मालूम किया जागेवाला। बहुत छिपा  
 हुआ।  
 निगूहीत-वि० १ धरा हुआ। पकड़ा हुआ।  
 २ जिस पर आक्रमण किया गया हो।  
 आक्रांत। ३ पीड़ित। ४. दंडित।  
 निगोडा-वि० [स्त्री० निगोड़ी] १ जिसके  
 आगे-पीछे कोई न हो। बभागा। २ दुष्ट।  
 बुरा। नीच। कमीना।  
 निग्रह-सज्ञा पु० १ रोक। अवरोध। २  
 दमन। ३ चिन्तिता। रोकने का उपाय।  
 ४ दंड। ५ ताडना। सताना। ६ वधन।  
 ७ डांट। फटकार। ८ हृद। सीमा।  
 निग्रहण-सज्ञा पु० १ पराजय। २ आक्रमण।  
 ३ विरोध। कलह। युद्ध। ४ मानसडन।  
 ५ हठ। ६ बन्धन। ७ पुढकी। रोप।  
 कोप। क्रोध।  
 निग्रहना\*-क्रि० स० १ पकड़ना। २ रोकना।  
 ३ दंड देना।  
 निग्रही-वि० १ रोकनेवाला। दयानेवाला।  
 २. दंड देनेवाला।  
 निग्रह-सज्ञा पु० १. वैदिक शब्दों का बोध।  
 २ शब्द-मग्न-भाषा। नाम-मग्नह। नाम-  
 बोध।  
 निग्रहना\*-वि० अ० दे० "पटना"। कम  
 होना। न्यून होना।  
 निग्रह-पट-वि० १. जिसका बर्ही पर-पाट  
 न हो। जिसे बर्ही छिपाना न हो। २  
 निर्लज्ज। बेहया।  
 मुहा०—निग्रह-पट देना=बेहयाई में झूठी  
 सफाई देना।

निघरा-वि० जिसके घर-बार न हो। निगोडा।  
 निचय-सज्ञा पु० १. समूह। दल। यूय।  
 २. निश्चय। ३. सत्तय।  
 निचल\*-वि० दे० "निश्चल"।  
 निचला-वि० [स्त्री० निचली] नीचे का।  
 नीचेवाला।  
 सज्ञा पु० स्थिर। शांत।  
 निचाई-सज्ञा स्त्री० १. नीचा होने का भाव।  
 नीचता। कमीनापन। अधमता। "ओछापन।  
 क्षुद्रता। २. नीचे की ओर विस्तार। छोटाई।  
 निचान-सज्ञा स्त्री० १ नीचापन। २. ढाल।  
 ढालुआपन। ढुलान।  
 निचित-वि० चितारहित। बेकिरं। सुचित।  
 निचड़ना-क्रि० अ० १. रस से भरी या गीली  
 चीज का इस प्रकार दबना कि रस या  
 पानी टपककर निकल जाय। गरना।  
 २. सारहीन होना। ३. शरीर का सार  
 निकल जाने से दुबला होना।  
 निचै\*-सज्ञा पु० दे० "निचय"।  
 निचोड़-सज्ञा पु० १ निचोड़ने से निकला  
 हुआ रस आदि। २ सार। सत्व। ३.  
 सारासा। सुलासा।  
 निचोड़ना-क्रि० स० १. गीली या रस भरी  
 वस्तु को दबाकर या ँठकर उसका पानी  
 या रस टपकाना। गारना। २ किसी वस्तु  
 का सार-भाग निकाल लेना। चुस लेना।  
 निचोना\*†-क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।  
 निचोरना\*†-क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।  
 निचोल-सज्ञा पु० स्त्रियों की ओढ़नी या  
 चादर।  
 निचोयना\*†-क्रि० स० दे० "निचोड़ना"।  
 निचोही-वि० [स्त्री० निचोही] नीचे की  
 ओर किया हुआ या झुका हुआ। नमित।  
 निचोहै-क्रि० वि० नीचे की ओर।  
 निछरा-सज्ञा पु० निराला। एकांत। निर्जन्म  
 स्थान।  
 निछर-वि० १. छत्रहीन। बिना छत्र का।  
 २ बिना राजचिह्न का। शत्रियों से हीन।  
 निछल\*-वि० छलहीन।  
 निछान†-वि० गालिस। विगुद।  
 वि० वि० एनदम। मिलहुट।

निष्ठापर-मंता स्त्री० १ एक उपचार घाटलगा,  
जिममें निगी की रक्षा के लिए कोई वस्तु  
या द्रव्य लगाने गिरमा अन्य अंगों के ऊपर  
में घुमाकर दान कर देते हैं। उदाहरण। २  
चन्द्रिदान। लगन। ३. वह द्रव्य या वस्तु,  
जो निगी के गिरने के ऊपर घुमाकर दान की  
जाय या छोड़ दी जाय। ४. दान। नंग।  
सूरा०—(निगी पर) निगी पर निष्ठापर  
होना=निगी के लिए मर जाना।  
निष्ठोह, निष्ठोही-वि० १. जिसे छोह या  
प्रेम न हो। २ निर्दय। रठोर।  
निज-वि० १. अपना। स्वकीय। माम।  
मुख्य। प्रधान। २ ठीक। सही। गन्ना।  
गयाय। ३.  
अव्य० १. निश्चय। ठीक-ठीक। २ माम-  
पर। विशेष करने। मुख्यतः।  
मूला०—निज या=प्राप्त अपना। निज  
करने=निश्चय। अवश्य।  
निजनाता—वि० अ० निवट पहुँचना। गमीप  
आना।  
निजस्व-सज्ञा पु० १. अपना धन। अपने  
अधिकार का धन। २. अपनापन।  
निजाज-सज्ञा पु० [अ०] झगडा। तकरार।  
धमुदा। वैर।  
निजाई-वि० [अ०] जिसने सम्यन्ध में  
झगडा ही। झगडे की वस्तु। मुकदमे में  
विवाद-ग्रस्त भूमि आदि।  
निजाम-सज्ञा पु० [अ०] १ प्रकल्प। बंदो-  
बस्त। इतजाम। २ हँदरावाद के नवाबों की  
पदवी।  
निजी-वि० निज का। अपना। व्यक्तिगत।  
निज्जु-वि० निज का। अपना।  
निजोरी\*—वि० गिरल। कमजोर।  
निज्जरना-कि० अ० १ पूरा झड़ जाना।  
२ झड़ जाने से खाली हो जाना। ३ सार  
वस्तु से रहित हो जाना। ४ अपने को  
निर्दोष प्रमाणित करना। सफाई देना।  
निज्जरना-कि० स० खसोटना। झटपना।  
झाडना। झारना। साफ करना।  
निजोल-वि० झोल रहित। बसा हुआ।  
सुडोल।

निदितास-सज्ञा पु० निव। महरिब। पाम्नु।  
निटोल-सज्ञा पु० टोटा। मुहला। पुरी।  
यन्त्री।  
निटिठ\*—वि० वि० दे० "नीटि"।  
निटोरा-वि० १. निराम्मा। आलसी। जिसने  
पाछ कोई काम-धंधा न हो। २. बे-रोज-  
गार। बेतार।  
निटलू-वि० दे० "निट-रा"।  
निटाला-सज्ञा पु० १ ऐसा समय, जब कोई  
काम-धंधा न हो। मारी यवत। २. ऐसा  
दशा, जब कुछ आमदनी न हो।  
निटुर-वि० निटुर। बठार। निर्दय। भूर।  
जा दूसरों का फट्ट न समझे। स्नेह-भूय।  
निटुरी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "निटुरा"।  
निटुरा\*—सज्ञा स्त्री० निटुरा। निर्दयता।  
भूरता। ह्रस्व की बड़ोरता।  
निटुराई-सज्ञा स्त्री० दे० "निटुरा"।  
निठौर-सज्ञा पु० १ बुरी जगह। मुठीव।  
२ बुरा दोष। बुरी दशा।  
निठर-वि० १ जिम उर न हो। निश्चय।  
निर्भय। भयरहित। २ माहमी। हिम्मत-  
वाला। ३ ठीठ। घुट।  
निठरपन, निठरपना-सज्ञा पु० निर्भयता।  
निठ\*—वि० वि० निवट। पास।  
निटाल-वि० १ सिधिल। यका-माँदा।  
असाठ। २ सुस्त। जसाहदीन।  
निटिल\*—वि० १ बसा या तना हुआ।  
२ बडा।  
नित-कि० वि० दे० "निनात्र"।  
नितब-सज्ञा पु० कमर का पिछला भाग।  
चूतड (स्त्रिया का)।  
नितकिनी-सज्ञा स्त्री० सुन्दर नितवावाली  
स्त्री। सुदरी।  
नित-अव्य० १ प्रतिदिन। रोज। २ सदा।  
सर्वदा। हमेशा।  
यो०—नित नित=प्रतिदिन। रोज-रोज।  
नित्य नया=सब दिन नया रहनेवाला।  
नितल-सज्ञा पु० साठ पाताला में से एक।  
नितात-वि० १ बहुत अधिक। अतिशय।  
अत्यन्त। २ निकुल। सर्वथा। एकदम।  
निति\*—अव्य० दे० "नित"।

नित्य-वि० १. जो सब दिन रहे। शाश्वत। सनातन। जिसका कभी नाश न हो। अविनाशी। निकालव्यापी। २. प्रतिदिन। रोज का।

अव्य० १. प्रतिदिन। रोज-रोज। २. सदा। सर्वदा। हमेशा।

नित्यकर्म-सज्ञा पु० १. प्रतिदिन का काम। २. प्रतिदिन की आवश्यक क्रिया। नित्य की क्रिया।

नित्यगति-सज्ञा पु० चायु। हवा। पवन।

नित्यता-सज्ञा स्त्री० नित्य होने का भाव। अनवरता।

नित्यत्व-सज्ञा पु० नित्यता।

नित्यनियम-सज्ञा पु० प्रतिदिन का निश्चित व्यापार। रोज का कायदा।

नित्य नैमित्तिक कर्म-सज्ञा पु० पर्व, श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि कर्म।

नित्यप्रति-अव्य० प्रतिदिन। हर रोज।

नित्यशः-अव्य० १. प्रतिदिन। रोज। २. सदा। सर्वदा।

नियम\*-सज्ञा पु० खभा। स्तम्भ।

नियरना-क्रि० अ० १. पानी या किसी तरल पदार्थ का स्थिर होना, जिससे उसमें घुली हुई मेल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज के नीचे बैठ जाने से जल का अलग हो जाना।

नियार-सज्ञा पु० १. घुली हुई चीज के बैठ जाने से अलग हुआ साफ पानी। २. पानी के स्थिर होने से उसके तल में बैठी हुई चीज।

नियारना-क्रि० स० १. पानी या और किसी तरल पदार्थ को स्थिर करना, जिससे उसमें घुली हुई मेल आदि नीचे बैठ जाय। २. घुली हुई चीज को नीचे बैठाने पर पानी अलग करना।

निर्वर्द्ध\*-वि० दे० "निर्वर्द्ध"।

निर्वरना\*-क्रि० स० १. निरादर करना। अपमान करना। वैद्वज्जी करना। विरस्कार करना। २. त्याग करना। ३. मात करना। हराना।

निर्दशन-सज्ञा पु० १. दिखाने या प्रदर्शित करने का भाव। २. उदाहरण। दृष्टान्त।

निर्दशना-सज्ञा स्त्री० एक अर्थालंकार, जिसमें एक बात किसी दूसरी बात को ठीक-ठीक कर दिखाती हुई कही जाती है।

निर्दलन\*-सज्ञा पु० दे० "निर्दलन"।

निर्दहना\*-क्रि० स० जलाना।

निर्दाघ-सज्ञा पु० १. गर्मी। ताप। २. धूप। धाम। ३. ग्रीष्म काल। गरमी।

निदान-सज्ञा पु० १. मूल कारण। २. कारण।

३. रोग-लक्षण। रोग की पहचान। ४. अत।

अवसान। ५. तप के फल की चाह। ६.

शुद्धि। ७. वैद्यक के एक ग्रन्थ का नाम।

अव्य० अत में। आखिर।

वि० अतिम या निम्न श्रेणी का। निकुण्ट।

निदारण-वि० १. कठिन। घोर। भयानक।

२. दुःसह। ३. निर्दय।

निदिध्यासन-सज्ञा पु० बार-बार स्मरण। बार-बार ध्यान में लाना।

निदेश-सज्ञा पु० १. आज्ञा। हुक्म। अनुशासन। २. कथन। ३. पास। समीपता।

निदेश\*-सज्ञा पु० दे० "निदेश"।

निदोष\*-वि० दे० "निदोष"।

निधि-सज्ञा स्त्री० दे० "निधि"।

निद्र-सज्ञा पु० अस्न-विशेष।

निद्रा-सज्ञा स्त्री० नींद। सोना। सोने की अवस्था। शयन।

निद्रायमान-वि० जो नींद में हो। सोया हुआ।

निद्रालु-वि० निद्राशील। सोनेवाला।

निद्रित-वि० सोया हुआ।

निषङ्ग-क्रि० वि० निर्भय। निडर। १. वे-रोक। बिना किसी स्वावट के। २. बिना आगा-पीछा किए। ३. वेष्टके।

अव्य० सहसा। अचानक। एकाएक।

निषन-सज्ञा पु० १. नाश। २. मृत्यु। मरण। ३. मूल। खानदान। ४. कुल का अधिपति।

५. विष्णु।

वि० घनहीन। निर्धन। दरिद्र।

निषनी-वि० निर्धन।

निषान-सज्ञा पु० १. आधार। आश्रय। धर। २. निधि। खजाना। ३. रान। ४. लय-स्थान।

निधि-सज्ञा स्त्री० १ कोष। गजगा। २ कुवेर का कोष। कुवेर के नीं प्रकार के रत्न—मय, महापय, दास, गवर्ग, यच्छप, मुकुट, कुट, नील और चूर्ण। ३ मनुष्य। ४ आधार। घर। जैसे, गुणनिधि। ५ धिष्णु। ६ दिव्य। ७ नीं की सग्या।

निधियाप, निधिपति-सज्ञा पुं० निधिया के स्वामी, कुवेर।

निषेय-सज्ञा पुं० रखने योग्य। स्थापनीय। स्थापन करने योग्य।

निध्यान-सज्ञा पुं० दर्शन।

निध्यान-सज्ञा पुं० शब्द।

निनय-सज्ञा स्त्री० नम्रता।

निरा-वि० न्यारा। अलग। जुदा। दूर।

निनाद-सज्ञा पुं० शब्द। ध्वनि। गजन। जोर की आवाज।

निनादना\*-क्रि० अ० निनाद या जोर से शब्द करना।

निनादित-वि० जोर से शब्द करता हुआ। ध्वनित।

निनादी-वि० [स्त्री० निनादिनी] शब्द करने वाला।

नितान\*-सज्ञा पुं० १ अठ। २ लक्षण। त्रि० वि० अठ में। आखिर।

वि० १ परले सिरे का। बिलकुल। एक दम। २ दुरा। निकृष्ट।

नितार-सज्ञा पुं० समस्त। बिलकुल। सम्पूर्ण। वि० दूर हटा हुआ।

नितारा-वि० १ अलग। जुदा। भिन्न। २ दूर। हटा हुआ।

निनादी-सज्ञा पुं० मुँह के भीतरी भाग में निकलनेवाले महीन महीन लाल दाने, जिनमें छरछराहट होती है।

निनीता\*-क्रि० स० नीचे करना। झुवाना। नवाना।

निनानवे-वि० नव्य और नीं।

सज्ञा पुं० नव्य और नीं की सख्या। ९९। मुहा०—निनानवे के फेर में आना या पडना=१ धन बहान की धुन में होना। २ कजूती। ३ चक्कर में आना। किन्तव्य विमूढ़ होना।

निन्यारा\*-वि० द० 'निनाग'। अलग। निपा\*-वि० जिससे हाथ-पैर टूटे हैं। जो किसी अंग से अक्षत हो। अपाहिज। निम्मा।

निप-सज्ञा स्त्री० वृक्ष-विशेष।

निपजना\*†-त्रि० अ० १ उपजना। उपन्न होना। उगना। २ कटना। पुष्ट होना। पचना। ३ बनना।

निपजी\*-सज्ञा स्त्री० १ रत्न। मुनाषा। वृद्धि। २ उपज। अन्न की उत्पत्ति।

निपथ-वि० पथहीन। ठूँडा।

निपट-अव्य० १ निरा। विमुक्त। केवल। एकमात्र। २ सरासर। एकदम। बिल्कुल।

निपटना-क्रि० अ० दे० "निपटना"।

निपटाना-क्रि० स० १ समाप्त करना। पूरा करना। २ ठहराना।

निपटारा-सज्ञा पुं० फंसला। निर्णय। छुटकारा।

निपटारु-सज्ञा पुं० निपटानेवाला। निर्णायक।

निपतन-सज्ञा पुं० [वि० निपतित] गिरना। गिराव। नष्ट होना। अध पतन।

निपतित-सज्ञा पुं० गिरा हुआ। पतित। च्युत। भ्रष्ट।

निपात-सज्ञा पुं० १ पतन। गिराव। २ अधपतन। ३ विनाश। ४ मृत्यु। क्षय। नाश। ५ व्याकरण के नियमों के विरुद्ध बनाए गए शब्द।

वि० बिना पत्ता का।

निपातक-सज्ञा पुं० नाशक। उजाड़नेवाला। गिरानेवाला।

निपातन-सज्ञा पुं० १ गिराने का कार्य। २ नाश। ३ नाश या वध करने का कार्य।

निपातना\*-क्रि० स० १ नीचे गिराना। २ नष्ट करना। काटकर गिराना। ३ मार गिराना। वध करना।

निपातित-वि० नीचे गिराया हुआ।

निपाती-वि० १ गिरानेवाला। फवनेवाला। २ मारनेवाला। \*३ बिना पत्ते का।

सज्ञा पुं० शिव। महादेव।

निपीडन-सज्ञा पुं० [स्त्री० निपीडित] १ पीडित करना। कष्ट देना। तकलीफ देना।

२ पेरना। ३ गर्दन। मसलना।

निषोडना\*-क्रि० स० १. दवाना। मसलना।  
२ कष्ट देना। पीडित करना।

निपुण-वि० कुशल। प्रवीण। दक्ष। चतुर।  
निपुणता-सज्ञा स्त्री० दक्षता। कुशलता।  
चातुरी।

निपुणार्थ\*-सज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

निपुत्री-वि० पुत्रहीन। निर्वांश। निःसन्तान।

निपुन\*-वि० दे० "निपुण"।

निपुनार्थ\*-सज्ञा स्त्री० दे० "निपुणता"।

निपूत, निपूता\*†-सज्ञा पु० [स्त्री० निपूती]

पुत्रहीन। निःसन्तान।

निषोडना, निषोरना-क्रि० स० दाँत दिखाना।

निलज्जता की एक मुद्रा।

निफन\*-वि० पूर्ण। पूरा।

क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।

निफरना-क्रि० अ० १ चुभकर या घँसकर

आर-पार होना। २. खुलना। साफ

होना।

निफल\*-वि० विफल। निष्प्रयोजन। निरर्थक।

निष्फल।

निफाक-सज्ञा पु० [अ०] १. विरोध। द्रोह।

वैर। २ फूट। बिगाड़। अनवन।

निफोट-वि० स्पष्ट। साफ-साफ।

निबंध-सज्ञा पु० १ वधन। वधेज। बन्धान।

रोग-विशेष। २ विशद व्याख्या। लेख।

ग्रंथ। ३ सन्दर्भ।

निबंधन-सज्ञा पु० [वि० निबद्ध] १. वधन।

२. व्यवस्था। नियम। वधेज। ३. कर्तव्य।

वधन। ४. हेतु। कारण।

निबकौरी†-सज्ञा स्त्री० १. नीम का फल।

२. नीम का बीज।

निबटना-क्रि० अ० [सज्ञा निबटेरा, निब-

टाक] १. निवृत्त होना। छुट्टी पाना।

फुरसत पाना। २. समाप्त होना। पूरा

होना। ३. निर्णीत होना। तय होना। ४.

चुनना। सतय होना। ५. शोध आदि से

निवृत्त होना।

निबडाना-क्रि० स० १. पूरा करना। समाप्त

करना। सतय करना। २. चुनना। वेचान

करना। ३. तय करना।

निबटाय-सज्ञा पु० दे० "निबटेरा"।

निबटी-वि० १. छटी हुई। २. खर्च। ३. चट।

चालाक।

निबटेरा-सज्ञा पु० १. निबटने का भाव या

क्रिया। छुट्टी। २. समाप्ति। ३. फंसला।

४. निश्चय।

निबड़ना\*-क्रि० अ० दे० "निबटना"।

निबद्ध-वि० १. बँधा हुआ। २. निरुद्ध। रका

हुआ। ३ ग्रथित। गुंथा हुआ। ४. बँटाया या

जडा हुआ।

निबर्†-वि० दे० "निर्वल"।

निबरना-क्रि० अ० १. बँधी या लगी वस्तु

का अलग होना। छूटना। २. मुक्त होना।

उद्धार पाना। ३. छुट्टी पाना। फुरसत

पाना। ४. काम पूरा होना। समाप्त होना।

५. निर्णय होना। ६. एक में मिली-जुली

वस्तुओं का अलग होना। ७. उलझन दूर

होना। मुलझना। ८. दूर होना।

निबल\*-वि० निर्वल। दुर्बल। धनजोर।

बलहीन।

निबह-सज्ञा पु० समूह। झंड।

निबहना-क्रि० अ० १. पार पाना। निकलना।

छुट्टी पाना। २. निर्वाह होना। बराबर

चला चलना। ३. पूरा होना। संपरना।

४. पालन होना।

निबहुर-सज्ञा पु० जहाँ से कोई न लौटे।

यमद्वार।

निबहुरा-वि० जाकर न लौटनेवाला (माली)।

निबाह-सज्ञा पु० १. निवाहने की क्रिया

या भाव। दिन काटना। गुजारा।

२ सबध या परंपरा की रक्षा। पालन।

३ पूरा करने का कार्य। समाप्त

करना। ४. छुटकारे का ढग। बचाव

का साधन।

निबाहना-क्रि० स० १. पूरा करना। निर्वाह

करना। २. पालन करना। चरितार्थ करना।

जारी रखना। ३. बराबर करते जाना।

निबिड़-वि० दे० "निबिड"।

निबूआ\*-सज्ञा पु० दे० "नीबू"।

निबूशना†\*-वि० अ० १. कूटना। छुटकारा

पाना। २. बपन खुलना।

निबेरना-क्रि० अ० १. निबगना। परा

परना। साप परना। (बपन आदि)  
छुटाना। उन्मुक्त करना। २. छोटना।  
घुटना। ३. उलझान दूर करना। मुलझाना।  
४. निर्णय करना। संगठ करना। ५. अलग  
करना। दूर करना।

निबेड़ा-गज्ञा पु० १. निपटारा। छुटकारा।  
२. बचाव। उद्धार। ३. छोट। घुनाय।  
४. मुलझाने की क्रिया या भाव। ५.  
स्याम। ६. निपटेरा। समस्थि। ७. निर्णय।  
निबेरना-वि० म० दे० "निबेरना"।  
निबेरा-गज्ञा पु० दे० "निबेरा"।  
निबेहना\*-वि० स० दे० "निबेहना"।  
निबोरी, निबोली-गज्ञा स्त्री० निबोरी।  
नीम का फल।

निम-सज्ञा पु० प्रवाज। प्रभा।

वि० समान। तुल्य।

निमना-वि० अ० १ पार पाना। पार  
लगना। छुट्टी पाना। छुटकारा पाना। २.  
बन आना। पूरा होना। ३. जारी रहना।  
लगातार बना रहना। ४. गुजारा होना।  
सपरना। भुगतना। ५. पालन होना।  
चरितार्थ होना।

निमरम\*-वि० शवा-रहित। श्रमरहित।

क्रि० वि० बेधटके। बेधडक।

निमरोसी\*†-वि० १ जिसे कोई भरोसा न  
रह गया हो। निराश। हताश। २. जिसे  
किसी का असरा भरोसा न हो। निराश्रय।

निभागा-वि० अभागा।

निमाना-क्रि० स० [निबाहना] १ (किसी  
बात का) निर्वाह करना। बराबर चलाए  
करना। २. चरितार्थ करना। पालन  
करना। ३. लगातार चले चलना।  
चलाना। ४. भुगताना।

निमाय-गज्ञा पु० दे० 'निबाह'।

निमृत-वि० १ रखा हुआ। २. निश्चल।  
अटल। ३. छिपा हुआ। गुप्त। ४. बंद  
किया हुआ। ५. निश्चित। स्थिर। ६.  
विनीत। नम्र। ७. शांत। धीर। ८. निर्जन।  
एकांत। ९. भरा हुआ।

निमृत\*-वि० दे० 'निमृत'।

निमत्रण-गज्ञा पु० १ किसी कार्य के लिए

नियत समय पर आने का अनुरोध करना।  
बुलावा। अह्वान। २. न्योता। माने का  
बुलावा।

निमत्रणपत्र-गज्ञा पु० वह पत्र, जिसमें दान  
निमत्रण दिया जाय।

निमत्रना\*-त्रि० म० न्योता देना।

निमत्रित-वि० आमंत्रित। जिसे न्याता दिया  
गया हो। आहूत।

निम-गज्ञा पु० १. गूँठ। दाया। २.

पतुनी। ३. थोडा। न्यून। कम।

निमरु-गज्ञा पु० दे० 'नमर'।

निमरी-गज्ञा स्त्री० १. नीचू का अकार।

२. मंदे की मायनसार नमरीन टिकिया।

निमरीडी-गज्ञा स्त्री० दे० 'निबोली'।

निमान-वि० [स्त्री० निमना] १ डूबा

हुआ। मग्न। २. तन्मय। लब्धरीन।

निमज्जन-सज्ञा पु० स्नान। डूबकी लगाकर

किया हुआ स्नान। अवगाहन।

निमज्जना\*-वि० अ० डूबना। गोता लगाना।  
अवगाहन करना।

निमज्जित-वि० १. डूबा हुआ। मग्न। २.

गहाया हुआ।

निमटना-क्रि० अ० दे० 'निबटना'।

निमत्ता\*-वि० १ सावधान। २. जो उत्तम  
न हो।

निमन-वि० सुन्दर। अच्छा। मनोहर। ठोस।

निमनाई-सज्ञा स्त्री० सुन्दरता। अच्छाई।

निमय-सज्ञा पु० विनिमय। परिवर्तन।

आदान प्रदान। बदला।

निमान-सज्ञा स्त्री० दे० 'निमान'।

निमान\*-सज्ञा पु० १. नीचा स्थान। गड्ढा।

२. अलगसथ।

निमाना-वि० [स्त्री० निमानी] १ नीचा।

ढालवा। नीचे की ओर गया हुआ। २. नम्र।

विनीत। ३. दब्यु।

निमि-सज्ञा पु० १ महाभारत के अनुसार  
एक ऋषि, जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। २.  
राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र का नाम। इन्हीं  
से मिथिला का विदेह-वंश चला। राजा  
जनक के पूर्वज। ३. आँखों का भिचना।  
निमेष।

निमित्त\*—सज्ञा पु० दे० “निमेष”।  
 निमित्त—सज्ञा पु० १ हेतु। कारण। प्रयोजन। २ चिह्न। लक्षण। ३ उद्देश्य।  
 निमित्तक—वि० किसी उद्देश्य से होनेवाला।  
 उत्पन्न। जनित।  
 निमित्त कारण—सज्ञा पु० प्रयोजन। हेतु।  
 जिसकी सहायता या प्रेरणा से कोई कार्य हो।  
 निमिराज\*—सज्ञा पु० राजा जनक।  
 निमिष—सज्ञा पु० दे० “निमेष”।  
 निमीलन—सज्ञा पु० बंद करना। भूँदना।  
 सिकोड़ना। ओख भूँदना। ओख मोचना।  
 निमीलित—वि० भूँदा हुआ। बन्द किया हुआ।  
 पलका से बन्द की हुई (ओख)।  
 निमूद—वि० भूँदा हुआ। बंद।  
 निमेष\*—सज्ञा पु० दे० “निमेष”।  
 निमेट—वि० न मिटनेवाला। अमिट।  
 निमेष—सज्ञा पु० १ पलक का गिरना या  
 क्षपकना। २ पलक गिरने भर का समय।  
 क्षण। पल।  
 निमीना—सज्ञा पु० हरे चने या मटर की  
 रसदार तरकारी।  
 निम्न—वि० नीचा। नीचे की ओर। नीचे।  
 निम्नता—सज्ञा स्त्री० नदी।  
 निम्नता—सज्ञा स्त्री० नीचापन। निचाई।  
 गहराई।  
 निम्नलिखित—वि० नीचे लिखे हुए।  
 निम्नोक्त—वि० नीचे कहा हुआ।  
 निम्ब—सज्ञा पु० दे० “नीम”।  
 नियता—सज्ञा पु० [स्त्री० नियत्री] १ नियम  
 निश्चित करनेवाला। व्यवस्था करनेवाला।  
 नियामक। ईश्वर २ काय्य को चलाने  
 वाला। ३ नियम पर चलानेवाला। शासक।  
 नियत्रण—सज्ञा पु० नियम आदि में बाँधना  
 या उसके अनुसार चलाना।  
 नियत्रित—वि० १ नियमित। सयमित। नियम  
 से बाँधा हुआ। नियम से अनुशासित। २  
 प्रतिबद्ध। रोक रखा। निवारण किया हुआ।  
 नियत—वि० १ बाँधा हुआ। परिमित। २  
 ठीक किया हुआ। निश्चित। मुकर्रर।  
 निर्धारित। ३ नियोजित। स्थापित। तैनात।  
 सज्ञा स्त्री० दे० “नीयत”।

नियतात्मा—वि० जितेन्द्रिय। यती। यमी।  
 आमवशीभूत।  
 नियति—सज्ञा स्त्री० १ नियत होने का भाव।  
 २ स्थिरता। ३ भाग्य। दैव। अदृष्ट।  
 ४ निश्चित बात। अवश्य होनेवाली बात।  
 नियम। ५ पूर्ववृत्त कम का निश्चित  
 परिणाम।  
 नियम—सज्ञा पु० १ निश्चय के अनुसार प्रति-  
 बन्ध। रीत। पाठदी। २ द्वाव। शासन।  
 ३ बाँधा हुआ क्रम। परंपरा। दस्तूर। ४  
 विधि। व्यवस्था। कानून। जायदा। धारा।  
 ५ शर्त। ६ सक्त्प। प्रतिज्ञा। व्रत। ७  
 योग के आठ अंगों में से एक, जिसमें शीघ्र,  
 सतोष, तपस्या, स्वाध्याय और ईश्वर-  
 प्रणिधान किया जाता है। ८ एक अर्था-  
 लकार, जिसमें किसी बात का होना एक  
 ही स्थान पर नियमित रूप से बतलाया  
 जाय। ९ विष्णु। १० महादेव।  
 नियमत—क्रि० वि० नियमानुसार।  
 नियमन—सज्ञा पु० [वि० नियमित, नियम्न]  
 १ नियमबद्ध करने का काय्य। काय्यदा  
 बाँधना। २ शासन। ३ निवारण। रोक।  
 बन्धन। ४ दमन।  
 नियमबद्ध—वि० नियमा से बाँधा हुआ।  
 नियमित।  
 नियमित—वि० १ बाँधा हुआ। क्रमबद्ध।  
 २ बाध्य या कानून के अनुसार। नियमबद्ध।  
 नियर\*—अव्य० समीप। पास। निकट। नज-  
 दीक।  
 नियराई\*—सज्ञा स्त्री० निकटता। सामीप्य।  
 निवरता\*—क्रि० अ० निकट पहुँचना।  
 नजदीक आना।  
 नियरे—अव्य० समीप। निकट।  
 नियाई\*—वि० दे० “न्यायी”।  
 नियाज—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ बड़ा का  
 प्रसाद। दशन। बड़ा से मुलाकात। २  
 इच्छा। ३ दीनता। ४ मृतक के उद्देश्य से  
 दान। जो दिया जानबूझ भोजन।  
 नियात्री\*—सज्ञा पु० निदान। परिणाम।  
 अव्य० अतः। अतः।  
 नियामक—सज्ञा पु० [स्त्री० नियामिका]

१. नियम करनेवाला। २. व्यवस्था या विधान करनेवाला। नियन्ता। फर्णधार।

३. भारनेवाला।

नियामत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. अलम्ब्य पदार्थ। दुर्लभ पदार्थ। २. स्वादिष्ट भोजन। उन्नम व्यजन। ३. धन-दौलत।

नियार-सज्ञा पु० जोहरी या गुनारो की दूकान का कूड़ा-बनवार।

नियारा†-वि० न्यारा। पृथक्। अलग। दूर।

नियारिया-सज्ञा पु० १. गुनारो या जोहरीया की राख, कूड़ा-कचरा आदि में से माल निकालनेवाला। २. चतुर मनुष्य। चालाक आदमी।

नियारे\*†-अव्य० दे० "न्यारे"।

नियाव†-सज्ञा पु० दे० "न्याय"।

नियुक्त-वि० १. नियोजित। लगाया हुआ।

तैनात। मुकर्रर। २. तत्पर किया हुआ।

प्रेरित। ३. स्थिर किया हुआ।

नियुक्ति-सज्ञा स्त्री० नियुक्त किया जाना।

कार्य सौंपना। मुकर्ररी। तैनाती।

नियुत-वि० १. सख्या-विशेष। एक लक्ष। २.

दस लाख। ३. नियत। सुसंगत। ४. नित्य।

नियुद्ध-सज्ञा पु० बाहुयुद्ध। मल्लयुद्ध। युद्धी।

नियोक्ता-सज्ञा पु० १. नियुक्त करनेवाला।

काम में लगानेवाला। मुकर्रर करनेवाला।

२. नियोग करनेवाला।

नियोग-सज्ञा पु० १. नियोजित करने का

कार्य। नियोजन। प्रेरणा। आज्ञा। हुक्म।

तैनाती। मुकर्ररी। २. अवधारण। ३. प्राचीन

आर्यों की एक प्रथा, जिसके अनुसार यदि

किसी स्त्री का पति न होता या उसे अपने

पति से सतान न होती, तो वह अपने देवर

या पति के और किसी गोत्रज से सतान

उत्पन्न करा लेती थी।

नियोगी-वि० नियोग करनेवाला। नियोजित

किया हुआ। तैनात। मुकर्रर।

नियोजक-सज्ञा पु० काम में लगानेवाला।

मुकर्रर करनेवाला।

नियोजन-सज्ञा पु० [वि० नियोजित, नियोज्य,

नियुक्त] किसी काम में लगाना। तैनात

या मुकर्रर करना। नियुक्त करना।

नियोजित-वि० नियुक्त। संधोजित। निती

कार्य में नियुक्त किया हुआ।

निरकार\*-सज्ञा पु० दे० "निराकार"।

निरकुश-वि० जिनके लिए कोई अकुश या

प्रतिशय न हो। बिना डर का। स्वतंत्र।

निरंग-वि० १. अंग-रहित। २. बेरंग। बदरंग।

धिवर्ण। ३. उदास। बेरीनक। ४. खाली।

जिगमें और कुछ न हो।

सज्ञा पु० रूपक अलवार का एक भेद।

निरंजन-वि० १. अजन-रहित। बिना बाजण

का। जैसे, निरंजन नेत्र। २. दोष-रहित।

३. माया से निर्लिप्त (ईश्वर का एक

विशेषण)।

सज्ञा पु० परमात्मा।

निरंतर-वि० [सज्ञा स्त्री० निरन्तरता] १.

अंतर-रहित। जो लगातार चला गया हो।

अविच्छिन्न। २. निविड। घना। ३. अन-

वर्त। लगातार होनेवाला। ४. अविचल।

स्थायी।

क्रि० वि० बराबर। सदा। हमेशा।

निरंतराल-वि० अवकाश-शून्य। निरवकाश।

निरंध-वि० १. बहुत अधिक अंधेरा। २.

महामूर्ख।

निरंध-वि० १. निर्जल। २. बिना पानी लिए

रह जानेवाला।

निरंश-वि० १. जिसे भाग न मिला हो।

२. बिना अक्षास का।

निरकेवल†-वि० १. शुद्ध। खालिस। बिना

मेल का। २. स्वच्छ।

निरक्ष देश-सज्ञा पु० भूमध्य रेखा के पास के

देश, जिनमें रात और दिन बराबर होते हैं।

निरक्षन\*-सज्ञा पु० दे० "निरिक्षण"।

निरक्षर-वि० १. जिसे अक्षर पहचानने तक

का ज्ञान न हो। अक्षर-शून्य। २. अनपढ़।

अशिक्षित। मूर्ख। अज्ञान।

निरक्षरता-सज्ञा स्त्री० अक्षर-ज्ञान का

अभाव। अशिक्षा। अज्ञान।

निरक्ष-रेखा-सज्ञा स्त्री० १. नाडीमंडल।

ब्राह्मवृत्त। २. निरक्षवृत्त।

निरखना\*-क्रि० स० निहारना। देखना।

अवलोकन करना। निरीक्षण करना।

निराम—मज्ञा पु० दे० "नृम"।  
 निरामुन\*—वि० दे० "निर्गुण"।  
 निरच्छ\*—वि० अथा। नेत्रहीन। दृष्टिहीन।  
 निरजर—वि० कभी जीर्ण या पुराना न होने-  
 वाला।  
 निरजोस—सज्ञा पु० निचोड़। छार। निर्णय।  
 निरजोसी—वि० निचोड़ निबालनेवाला। सत्य  
 निबालनेवाला। निर्णायक।  
 निरक्षर\*—सज्ञा पु० दे० "निरक्षर"।  
 निरस्त—वि० किसी काम में लगा हुआ। लीन।  
 तत्पर। मशगूल। उल्लूक।  
 \*—सज्ञा पु० दे० "नृत्य"।  
 निरतना\*—क्रि० म० नाचना। नृत्य करना।  
 निरति—सज्ञा स्त्री० अप्रीति। अप्रेम।  
 निरतिशय—वि० सर्वमे बढबर। सर्वोत्तम।  
 सर्व-श्रेष्ठ।  
 सज्ञा पु० परमेश्वर।  
 निरदई\*—वि० दे० "निर्दय"।  
 निरधातु—वि० शक्तिहीन। क्षीण।  
 निरवार\*—सज्ञा पु० दे० 'निर्धार'। निश्चय।  
 निणय। सिद्धान्त।  
 निरधारता—क्रि० स० १ निर्धारण करना।  
 निश्चय करना। स्थिर करना। २ मन में  
 धारण करना। समझना।  
 निरनुनासिक—वि० जिसका उच्चारण नाक  
 से न हो। वे अक्षर, जिनका उच्चारण  
 नाक की सहायता से न हो।  
 निरन्त—वि० अन्तरहित। बिना अन्त का। जो  
 अन्त न खाए हो। निराहार। भूखा।  
 निरन्ता—वि० भूखा। निराहार। अन्तरहित।  
 निरपश्य—वि० नि सन्तान। सन्तान हीन।  
 निरपना\*—वि० जो अपना न हो। गैर।  
 बेगाना। पराया।  
 निरपराध—वि० अपराध रहित। बेकसूर।  
 निर्दोष। जिसने अपराध न किया हो।  
 क्रि० वि० बिना अपराध किए।  
 निरपराधी\*—वि० दे० 'निरपराध'।  
 निरपवाद—वि० जिसमें कोई अपवाद या  
 दोष न हो। निर्दोष।  
 निरपाय—सज्ञा पु० निर्विघ्न।  
 वि० जितका विनाश न हो।

निरपेक्ष—वि० [सज्ञा निरपेक्षा, निरपेक्षी]  
 अलग। तटस्थ। जिसे किसी बात की अपेक्षा  
 या चाह न हो। स्वाधीन। उदासीन।  
 लापरवाह।  
 निरपेक्षित—वि० १ अनचाहा। अपेक्षित।  
 २ अनावश्यक।  
 निरपेक्षी—सज्ञा पु० लगाव न रखनेवाला।  
 तटस्थ। अलग।  
 निरवसी\*—वि० निर्वश। जिसे बश या सत्ता  
 न हो। सन्तानहीन।  
 निरवल\*—वि० दे० "निर्मल"।  
 निरवहना\*—क्रि० अ० दे० "निम्नना"।  
 निरयेद\*—सज्ञा पु० दे० "निर्वेद"।  
 निरवेरा\*—सज्ञा पु० दे० "निवेरा"।  
 निरभिमान—वि० गर्वहीन। जिसे अभिमान  
 न हो। अहंकार शून्य।  
 निरभियोग—वि० अभियोग-रहित। जिस पर  
 कोई जुम या मुकदमा न हो।  
 निरभिलाष—वि० इच्छा या अभिलाषा से  
 रहित। जिसे कोई इच्छा न हो।  
 निरभ्र—वि० बिना बादल का। मेघ-रहित।  
 स्वच्छ। साफ।  
 निरमना\*—क्रि० स० निर्माण करना।  
 बनाना।  
 निरमर, निरमल\*—वि० दे० "निर्मल"।  
 निरमान\*—सज्ञा पु० दे० "निर्माण"।  
 निरमाना\*—क्रि० स० निर्माण करना।  
 बनाना। रचना। तैयार करना।  
 निरमायल\*—सज्ञा पु० दे० 'निर्माल्य'।  
 निरमूलना\*—क्रि० स० निर्मूलन। निर्मूल  
 करना। नष्ट करना। उखाड़ फेंकना।  
 निरमोल—वि० अमूल्य। अनमोल। बहुत  
 बढिया।  
 निरमोही\*—वि० दे० 'निर्माही'।  
 निरम—सज्ञा पु० नरव। दोजख। दुःख भोगने  
 का स्थान।  
 निरमण—सज्ञा पु० १ अयन रहित गणना।  
 ज्योतिष में गणना की एक रीति। २ वे-  
 धर का।  
 निरमल—वि० अबाध। अमल या जजीर-  
 रहित। वे रोक टोक।

निरयंक-वि० व्यर्थ। अर्थगून्य। बिना मतलब का। निष्फल।

निरवच्छिन्न-वि० जिसका क्रम न टूटा हो। क्रमबद्ध। मिलसिरेवार। क्रमशः।

निरवध-वि० निंदा या दोष से रहित। निर्दोष। शुद्ध। स्वच्छ।

निरवधि-वि० जिसकी कोई अवधि न हो। भीमा-रहित। निस्सीम। बेहद।

क्रि० वि० लगातार। निरन्तर।

निरवयव-वि० निरावार। अग-रहित। बिना अग या आवार का।

निरवलंब-वि० अवलंबहीन। बिना सहारे। आधार-रहित। निराश्रय। निराधार।

निरवाना-वि० निराई करना। खेत में से घास आदि निवलवाना।

निरवार-सज्ञा पु० निस्तार। छुटकारा। मुक्ति। बचाव। छुड़ाने या मुलजाने का काम। आदि निवटारा।

निरवारना\*-क्रि० स० १ निवारण करना। ढालना। हटाना। छुड़ाना। मुक्त करना। छोड़ना। त्यागना। २ गांठ आदि छुड़ाना। मुलजाना। ३ निर्णय करना। तय करना।

निरवाहू\*-सज्ञा पु० दे० "निर्वाह"।

निरवाहना\*-क्रि० अ० निर्वाह करना। निभाना।

निरशन-सज्ञा पु० भोजन न करना। उपवास। लपन।

निरसक\*+वि० दे० "निश्चक"।

निरस-वि० १ जिसमें रस न हो। रसविहीन। २ फीका। ३ निस्तत्त्व। अमार। ४ रुखा-सूखा। शुष्क।

निरसन-सज्ञा पु० [वि० निरसनीय, निरस्य] १. फेंकना। हटाना। दूर करना। विसर्जन।

२ खारिज करना। ३. परिहार। निराकरण। ४. निवालना। ५. बर्ष। ६ नाश।

निरस्त-वि० १. छोड़ा हुआ। त्यक्त। हटाया हुआ। २. हराया गया।

निरस्त-वि० बिना हथियार का। अस्त्रहीन।

निरहंकार-वि० अभिमान-रहित। निरभिमान।

निरा-वि० [स्त्री० निरी] १. विशुद्ध।

मालिम। बिना मेल का। २. जिसके साथ और कुछ न हो। बेबल। ३. निनाद। निपट। विलकुल। एवम।

-वि० अवेला। एकाकी।

निराई-नाशा स्त्री० १. फगल के पौधों के आसपास उगनेवाले तृण, घास आदि को दूर करना। २. निरान की मजदूरी।

निराकरण-सज्ञा पु० [वि० निराकरणीय, निराकृत] १. अलग करना। हटाना। दूर करना। २. मिटाना। रद्द करना। ३. शमन। परिहार। ४. निवारण। ५. खंडन। सन्देश दूर करना। सवा मिटाना।

निराकांक्षी-वि० जिसे कोई इच्छा न हो। निस्पृह। सन्तुष्ट। सान्त।

निराकार-वि० आकारहीन। शरीर-रहित। जिसका कोई आवार न हो। शून्य।

सज्ञा पु० ईश्वर। आकाश।

निराकुल-वि० १. सावधान। जो घबराया अथवा आकुल न हो। २. बहुत व्याकुल। बहुत घबराया हुआ।

निराकृत-सज्ञा पु० १. हटाया हुआ। २. अपमानित। ३. अस्वीकृत।

निराक्षर\*+वि० १ अक्षरहीन। निरक्षर। बिना अक्षर का। २. मॉन। चुप। ३. मूढ़। अपढ़।

निराचार-वि० आचार-भ्रष्ट। अनाचार।

निराट-वि० निपट। एवमात्र। विलकुल।

निरातक-वि० निश्चक। निर्भय।

निरादर-सज्ञा पु० बेइज्जती। अपमान।

निराधार-वि० १. आधार शून्य। निराश्रित। जिसे सहारा न हो। २. जो प्रमाणों से पुष्ट न हो। मिथ्या। अशुद्ध। झूठ। ३. जिसे जीविका आदि का सहारा न हो। ४. जो बिना अन्न-जल आदि के हो।

निरानन्द-वि० आनन्द-रहित। दुखी।

सज्ञा पु० आनन्द का अभाव। दुःख।

निराना-क्रि० स० फगल के पौधों के आस-पास की घास खोदकर दूर करना, जिसमें पौधा की वाड़ न रहे। निवाना। नींदना।

निरापद-वि० १. सुरक्षित। जिसे कोई बिपत्ति या डर न हो। २. जिसमें हानि या अनर्थ

की आशवा न हो। ३ जहाँ किसी बात का डर या खतरा न हो।

निरापन\*-वि० जो अपना न हो। गैर। पराया। बेगाना।

निरामय-वि० स्वस्थ। नीरोग। तदुद्धत। रोग-रहित।

निरामिद-वि० मास न खानेवाला। मास-रहित।

निरायुध-वि० बिना अस्त्र के। अस्त्रहीन। खाली हाथ।

निरालंब-वि० बिना आलंब या सहारे का। निराधार। निराश्रय।

निरालय-वि० १ आलय-रहित। बिना मकानवा बे-घर के। २ एकान्त। निर्जन। निराला।

निरालस्य-वि० आलस्यहीन। जिसमें आलस्य न हो। फुरतीला। चुस्त। उद्योगी।

निराला-सज्ञा पु० [स्त्री० निराली] एकाव स्थान। ऐसा स्थान, जहाँ कोई न हो।

वि० १ जहाँ कोई मनुष्य या वस्ती न हो। निर्जन। एकाव। २ - विलक्षण। सबसे भिन्न। अद्भुत। अजीब। ३ अपूर्व। बहुत बढ़िया। अजूठा।

निरावना-क्रि० सं० दे० "निराना"।

निराश-वि० आशाहीन। जिसे आशा न हो।

निराशा-सज्ञा स्त्री० नाउम्मेदी। आशा-रहित। आशा के विपरीत।

निराशी\*-वि० हताश। विरक्त। उदासीन।

निराश्रय-वि० आश्रयरहित। बिना सहारे का। अशरण। असहाय।

निरास\*-वि० दे० "निरास"।

निरासी\*-वि० १ दे० "निराशी"। २ उदास। वैरानक।

निराहार-वि० आहार-रहित। अनशन। जो बिना भोजन के हो। भूखा। जिसके अनु-ष्ठान में भोजन न किया जाता हो।

निरिन्द्रिय-वि० इन्द्रिय-रहित। बिना इन्द्रिय का। अघा, पगु आदि।

निरिच्छना\*-क्रि० सं० देखना। अवलोकन। निरी-सज्ञा स्त्री० केवल। निरा। निपट।

निरीक्षक-सज्ञा पु० जांच करनेवाला। देखने-वाला। देख-रेख करनेवाला। परीक्षक।

निरीक्षण-सज्ञा पु० [वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्ष्यमाण] देख-रेख। जांच। निगरानी। देखना। दर्शन। देखने की मुद्रा या ढंग।

निरीक्षा-सज्ञा स्त्री० देखना।

निरीश्वर-सज्ञा पु० नास्तिक। ईश्वर में विश्वास न करनेवाला।

निरीश्वरवाद-सज्ञा पु० ईश्वर की सत्ता में विश्वास न करने का सिद्धान्त। यह सिद्धान्त कि ईश्वर नहीं है।

निरीश्वरवादी-सज्ञा पु० नास्तिक। ईश्वर को न माननेवाला। ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास न करनेवाला।

निरीह-वि० निःस्पृह। इच्छा-रहित। निश्चेष्ट। जिसे किसी बात की चाह न हो। विरक्त। उदासीन।

निश्चार-सज्ञा पु० दे० "निश्चार"।

निश्चित-वि० निश्चयपूर्वक कहा हुआ। व्याख्या किया हुआ। नियुक्त। ठहराया हुआ।

सज्ञा पु० वेद का चौथा अंग। छ वेदांगों में से एक, जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है। यास्वमुनि-चिरचित एक ग्रंथ।

निश्चित-सज्ञा स्त्री० १ किसी पद या वाक्य की व्युत्पत्ति सहित व्याख्या। २ एक वाक्या-लकार, जिसमें किसी शब्द का मनमाना अर्थ किया जाय, परन्तु वह अर्थ असंगत न हो।

निरुज\*-वि० दे० "नीरुज"।

निरुत्तर-वि० १ जिसका कुछ उत्तर न हो। लाजवाब। २ जो उत्तर न दे सके। अवाक्। उत्तरहीन।

निरुत्साह-वि० उत्साहहीन। हतोत्साह। जिसमें उत्साह या उमंग न हो। साहसहीन।

निरुत्सुक-वि० जिसे कोई उत्सुकता न हो। उत्सुकता-रहित। निरद्वेग।

निरुद्ध-वि० रुका या रूखा हुआ।

सज्ञा पु० योग में चित्त की वह अवस्था, जिसमें योगी निश्चेष्ट हो जाता है। निरुद्धम-वि० [सज्ञा निरुद्धमता] उद्योग-

हीन। जितने पाप कोई उद्यम न हो।  
वेपथु। वेपार।

निरुपमा-सज्ञा पु० निरुपमा। जो उद्यम न  
करता हो। कोई काम न करनेवाला।  
परिथम न करनेवाला।

निरुद्देश्य-वि० जितना कोई उद्देश्य या ध्येय  
न हो।

वि० वि० विना किसी उद्देश्य के।  
निरुद्योग-वि० उद्यमहीन। उद्योग-रहित।  
वेपार। निरुपमा।

निरुद्देश्य-वि० निश्चिन्त। जिसमें कोई वेग  
या हलचल न हो।

निरुपद्रव-वि० शान्त। जिसमें कोई उपद्रव  
या अशान्ति न हो।

निरुपद्रवी-सज्ञा पु० उपद्रव न करनेवाला।  
शान्त। अचंचल।

निरुपम-वि० उपमा-रहित। जिसकी उपमा  
न हो। बेजोड़। अद्वितीय। अनुपम।

निरुपयोगी-वि० जो उपयोग में न आ सके।  
निरर्थक। व्यर्थ। बेकाम।

निरुपाधि-वि० जिसकी कोई उपाधि न  
हो। उपाधि रहित। बाधा-रहित। माया-  
रहित। निर्गोध। निर्मल। शुद्ध।

सज्ञा पु० ब्रह्म।

निरुपाय-वि० १ जो कुछ उपाय न कर सके।  
जिसका कोई उपाय न हो। २ उपाय-रहित।  
निरुपारना\*। नि० अ० सुलझना। कठिनता  
आदि का दूर होना।

निरुवार\*। सज्ञा पु० १ मोचन। छुड़ाने का  
वाम। २ छुटकारा। बचाव। मुक्ति।  
३ सुलझाने का वाम। ४ तय करना।  
निबटाना। ५ निर्णय।

निरुवारना\*। वि० स० १ मुक्त करना।  
छुड़ाना। २ सुलझाना। उलझन मिटाना।  
३ निबटाना। तय करना। ४ निणय करना।

निरुद्ध-वि० १ उत्पन्न। २ विख्यात।  
प्रसिद्ध। ३ अविवाहित। कुँआरा।

निरुद्ध-लक्षणा-सज्ञा स्त्री० वह लक्षणा, जिसमें  
शब्द का गृहीत अर्थ रूढ़ हो गया हो,  
अर्थात् वह केवल प्रसंग या प्रयोजनवश  
ही न ग्रहण किया गया हो।

निरुद्ध-सज्ञा स्त्री० दे० "निरुद्ध-लक्षणा"।  
निरुप-वि० १. जिसका कोई रूप या  
आकार न हो। रूपहीन। निरुपार। २  
गुरूप। बृद्धमूर्त।

निरुपय-वि० निरूपण करनेवाला।  
निरूपण-सज्ञा पु० १ दर्शन। २. विचार।  
विश्लेषणा-पूर्ण विचार या निर्णय करना।  
निर्दर्शन। ३ स्थिर करना।

निरूपना\*। वि० अ० निश्चित करना। निर्णय  
करना। ठहराना।

निरूपित-वि० जिसका निरूपण या विवेचन  
हो चुका हो। जिसका निर्णय हो चुका हो।

निरूप्य-वि० निरूपण या निर्णय करने योग्य।  
जिसका निरूपण होने को हो।

निरुपना\*। वि० स० दे० "निरुपना"।

निरु\*। सज्ञा पु० नरक।

निरोध, निरोधी\*। सज्ञा पु० रोग-रहित।  
वह व्यक्ति, जिसे कोई रोग न हो।

स्वस्थ। तन्दुरुस्त।

निरोध-सज्ञा पु० १ अवरोध। रोक। रूकावट।  
बंधन। २ घरा। घेर लेना। ३ योग में  
चित्त की समस्त वृत्तियों को रोकना।  
४ नाश।

निरोधक-वि० रोकनेवाला। रूकावट डालने-  
वाला। घेरा डालनेवाला।

निरोधन-सज्ञा पु० दे० "निरोध"।

निरोधी-वि० दे० "निरोधक"।

निर्ल-सज्ञा पु० [फा०] दर। भाव।

निर्लतामा-सज्ञा पु० [फा०] वह पत्र, जिस  
पर सब चीजा का भाव लिखा हो।

निर्लबन्धो-सज्ञा स्त्री० [फा०] चीजों के भाव  
या दर निश्चित करना।

निर्गंध-वि० [सज्ञा निर्गंधता] गंधहीन।  
जिसमें किसी प्रकार की गंध न हो।

निर्गन्त-वि० [स्त्री० निर्गन्ता] बाहर आया  
हुआ। निमला हुआ।

निर्गम-सज्ञा पु० उद्गम। निकास। निकलना।

निर्गमन-सज्ञा पु० निवलना। बाहर आना।  
प्रस्थान करना। पलायन।

निर्गमना-वि० अ० निवलना। बाहर आना  
या जाना। प्रस्थान करना।

निगुंडी-सज्ञा स्त्री० १. पुष्प-विशेष। २. एक औषध। ३. सिधवार। संभालू।

निर्गुण-सज्ञा पु० परमेश्वर।

वि० [सज्ञा निर्गुणता] गुणहीन। जिसमें कोई गुण न हो। नुरा। जो सर्व, रज और तम, तीनो गुणों से परे हो।

निर्गुणिया-वि० १. निर्गुण ब्रह्म की उपासना करनेवाला। २. गुण-रहित।

निर्गुणी-वि० गुणहीन। मूर्ख।

निघट-सज्ञा पु० १. शब्दकोश या ग्रंथसूची।

२. द्रव्य-गुणगुण-दर्शक ग्रंथ।

निर्गुण-वि० १. जिसे गदी बस्तुओं से या बुरे कामों से घृणा या लज्जा न हो। २.

निर्दल। अति नीच। ३. निर्दय। निष्ठुर।

४. घृणा या जुगुप्सा से हीन।

निर्घात-सज्ञा पु० १. तेज हवा चलने का शब्द। २. विजली की कड़क। ३. एक प्रकार का अस्त्र।

निर्घोष-सज्ञा पु० [वि० निर्घोषित] शब्द। आवाज।

वि० शब्दहीन।

निर्जन-वि० सुनसान। एकांत। वह स्थान, जहाँ कोई मनुष्य न हो। जलहीन। विजल।

निर्जल-वि० १. बिना जल का। जल-रहित। २. जिसमें जल पीने का विधान न हो।

निर्जला एकादशी-सज्ञा स्त्री० ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, जिस तिथि को लोग निर्जल व्रत रखते हैं।

निर्जित-वि० सूद या लाभ आदि के रूप में बढ़कर प्राप्त होनेवाला धन (एकूड-अर्थ)।

निर्जाय-वि० १. जीय-रहित। प्राणहीन। बेजान। मृतक। मरा हुआ। जड़। २. अचेतन। अशक्त या उस्ताहहीन। दुर्बल।

निर्जर-सज्ञा पु० [स्त्री० निर्जरिणी] पानी का सरला। चश्मा। सीता। पर्वत से गिरनेवाला जल-प्रवाह।

निर्जरिणी-सज्ञा स्त्री० नदी।

निर्णय-सज्ञा पु० १. अनिश्चित और अनिश्चित का निश्चय। २. बादी और प्रतिबादी की

धानों को सुनकर उनके सत्य अथवा असत्य होने के संबंध में कोई विचार स्थिर करना।

निबटारा। फंसला।

निर्णायक-सज्ञा पु० निर्णय या फंसला करनेवाला।

निर्णयोपमा-सज्ञा स्त्री० एक अर्थालंकार, जिसमें उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों की विवेचना की जाती है।

निर्णीत-वि० जिसका निर्णय या फंसला हो चुका हो। निर्णय किया हुआ।

निर्णीता-सज्ञा पु० निर्णय करनेवाला।

निर्त\*†-सज्ञा पु० दे० "नृत्य"।

निर्तक\*†-सज्ञा पु० दे० "नर्तक"।

निर्तना\*†-क्रि० अ० नाचना।

निर्दभ-वि० जिसे दभ या अभिमान न हो।

निर्दय-वि० दयाहीन। निर्मम। निष्ठुर।

देरहम।

निर्दयता-सज्ञा स्त्री० निर्दय होने का भाव।

क्रूरता। बेरहमी। कठोरता। निष्ठुरता।

निर्ममता।

निर्दोषी\*†-वि० दे० "निर्दोष"।

निर्दल-वि० जिसमें दल या पत्ता न हो।

निर्दहना\*†-क्रि० स० जलाना।

निर्दिष्ट-वि० १. जिसका निर्देश हो चुका हो। कथित। निरूपित। बतलाया हुआ।

२. निश्चित।

निर्दोषण\*†-वि० दे० "निर्दोष"।

निर्देश-सज्ञा पु० १. आज्ञा। हुक्म। आदेश।

हिदायत। २. कथन। उल्लेख। वर्णन।

३. किसी पदार्थ को बतलाना। निर्दिष्ट करना। निरूपण।

निर्दोष-वि० [सज्ञा निर्दोषता] १. जो दोषी न हो। दोष-रहित। निरपराध। निष्कलक।

२. बे-जस्तूर। बे-पैय। बे-दान।

निर्दोषी-वि० दे० "निर्दोष"।

निर्द्वंद्व, निर्द्वंद्व-वि० जिसका कोई विरोध करनेवाला न हो। जो राग, द्वेष, मान, अपमान आदि द्वंद्वों से रहित या परे हो।

स्वच्छंद। मुक्त।

निधन-वि० दरिद्र। धनहीन। गरीब।

कंगाल।

निर्धनता-सज्ञा स्त्री० दरिद्रता। गरीबी।  
कमाली।

निर्धन-वि० धर्म-रहित। धर्मगुन्य। अधा-  
मिक।

निर्धार-सज्ञा पु० दे० "निर्धारण"।

निर्धारण-सज्ञा पु० निश्चित करना। निर्णय।  
निश्चय।

निर्धारक-सज्ञा पु० [स्त्री० निर्धारिका,  
निर्धारिणी] किसी बात का निर्धारण या  
निश्चय करनेवाला।

निर्धारना-क्रि० स० दे० "निर्धारण"।  
निश्चित करना। ठहराना। निर्धारित करना।

निर्धारित-वि० निश्चित किया हुआ।

निर्निमेष-क्रि० वि० एकटक। बिना पलक  
झपकाए।

वि० १. जो पलक न गिरावे। २. जिसमें  
पलक न गिरे।

निर्बंध-सज्ञा पु० १. रुकावट। अडचन।  
२. हठ। जिद। आग्रह।

निर्बल-वि० दुर्बल। कमजोर। शक्तिहीन।

निर्बलता-सज्ञा स्त्री० कमजोरी। दुर्बलता।

निर्बहना-क्रि० अ० १. पार होना। दूर होना।

अलग होना। २. क्रम का चलना। निभना।  
पालन होना।

निर्बोज-वि० १. बीजरहित। जिसमें बीज  
न हो। २. जो कारण से रहित हो।  
कारण-रहित।

निर्बुद्धि-वि० अज्ञान। अवोध। ज्ञानहीन।  
बेबकूफ। मूर्ख।

निर्बोध-वि० जिसे अच्छे-बुरे का कुछ भी  
ज्ञान न हो। अनजान। अज्ञान।

निर्बंध-वि० बिना भय या डर के। निडर।  
बेव्यास। साहसी। हिम्मती।

निर्भयता-सज्ञा स्त्री० निडरपन। निडर होने  
का भाव या अवस्था।

निर्भर-वि० आश्रित। अवलंबित। मुनहमर।  
बिमी पर आपाश्रित या ठहरा हुआ।

निर्भक-वि० निडर।

निर्भक्ता-सज्ञा स्त्री० निर्भयता।

निर्भम-वि० भ्रम-रहित। सका-रहित।

क्रि० वि० निषङ्क। बेखटवे।

निर्भ्रात-वि० १. भ्रम-रहित। जिसको  
कोई भ्रम न हो। शक-रहित। २. जिसे  
कोई सन्देह न हो।

निर्भना\*†-क्रि० स० दे० "निर्माना"।

निर्भम-वि० १. निःपुनर। निर्दय। २.  
निर्माही। ३. ममताहीन। निःस्पृह। वासना-  
रहित।

निर्भवाद-वि० भयादा-रहित। अपमानकारी।

निर्मल-वि० १. स्वच्छ। साफ। २. पवित्र।  
शुद्ध। ३. निर्दोष। कलकहीन।

सज्ञा पु० १. अम्रक। २. निर्मली।

निर्मलता-सज्ञा स्त्री० १. सफाई। स्वच्छता।

२. निष्कल्यता। पवित्रता। शुद्धता।

निर्मला-सज्ञा पु० एक नानकपथी साधु-  
संप्रदाय।

निर्मली-सज्ञा स्त्री० १. रीठे का वृक्ष या  
फल। २. एक प्रकार का वृक्ष, जिसके पके  
बीजों का अपिष-रूप में तथा गेंदला पानी  
साफ करने के लिए व्यवहार होता है।  
चाकमू।

निर्माण-सज्ञा पु० रचना। बनावट। बनाने  
का काम। सृजन।

निर्माता-सज्ञा पु० निर्माण करनेवाला।  
बनानेवाला। रचयिता।

निर्मात्रिक-वि० भाना-रहित। अमात्रिक।

निर्मान-वि० असौम्य। बेहद। अपार।

सज्ञा पु० दे० "निर्माण"।

निर्माना\*†-क्रि० स० बनाना। रचना।

निर्मापल\*-सज्ञा पु० दे० "निर्माल्य"।

निर्मापल्य-सज्ञा पु० देवता पर अर्पित वस्तु।

निर्मित-वि० रचित। बनाया हुआ। निर्माण  
किया हुआ।

निर्मूल-वि० अड-रहित। बे-बुनियाद। बिना  
जड़ का। जड़ से उखाड़ा हुआ। जो नष्ट  
हो गया हो।

निर्मूलन-सज्ञा पु० निर्मूल होना या नटना।  
नाश करने की क्रिया। विनाश।

निर्मोक-सज्ञा पु० १. सोंप की केंचुली।  
२. धरीर की ऊपरी छाल। ३. आवाज।

निर्मोल\*†-वि० अमूल्य। जिसका मूल्य  
बहुत अधिक हो।

निर्मोह-वि० जिसने मन में मोह या ममता न हो। निर्दय। बठोर।  
 निर्मोहो-वि० [ स्त्री० निर्मोहिनी ] जिसमें मोह या ममता न हो। निर्दय। निष्कुर।  
 निर्याति-सज्ञा पु० १ बाहर जाना। देश के बाहर सामान भेजना। २ देश से बाहर भेजा जानेवाला माल।  
 निर्यातिन-सज्ञा पु० १. बदला चुवाना। प्रतीकार। २. गार डालना।  
 निर्यास-सज्ञा पु० १ वृक्षों या पौधों में से निकलनेवाला रस। वृक्षा का रस। २ वाडा। ३ वहना। झरना। ४ स्थिर। निश्चय। ५ मीमासा। ६ गाद। ७ क्षरण।  
 निर्युक्ति या निर्युक्तिक-सज्ञा स्त्री० युक्ति-रहित। अनुचित। अनुपयुक्त।  
 निर्योगक्षेम-वि० चिन्तारहित। निश्चिन्त।  
 निर्लज्ज-वि० बेहया। वेशर्मा। लज्जाहीन।  
 निर्लज्जता-सज्ञा स्त्री० बेहयाई। वेशर्मी। निर्लज्ज होने का भाव।  
 निर्लिप्त-वि० जो लिप्त न हो। अनासक्त। रागद्वेष से मुक्त। बेलाग।  
 निर्लेप-वि० दे० "निर्लिप्त"।  
 निर्लेश-वि० लेश रहित। तनिक भी नहीं। सर्वथा अभाव।  
 निर्लोभ-वि० जिसे लालच न हो। लोभहीन।  
 निर्लोभ-वि० रोम-रहित। बिना रोमों के।  
 निर्वंश-वि० [ सज्ञा निर्वंशता ] निःसन्तान। वंशहीन।  
 निर्बचन-वि० चुप। मौन। निर्वाक्।  
 सज्ञा पु० निश्चित रूप से कोई बात बहना। निरूपण।  
 निर्वसन्-वि० [ स्त्री० निर्वसना ] नग्न। नंगा।  
 निर्वहण-सज्ञा पु० १ निर्वाह। निवाह। गुजर। २ समाप्ति।  
 निर्वहना\*—क्रि० अ० परंपरा का पालन होना। निम्ना।  
 निर्वाक्-वि० मौन। चुप।  
 निर्वाचक-सज्ञा पु० निर्वाचन करनेवाला। चुननेवाला। निर्वाचन का काम करनेवाला।

निर्वाचन-सज्ञा पु० बहुतां में से एक या अधिक को चुनना। चुनाव। मतदान-द्वारा चुनाव।  
 निर्वाचन-क्षेत्र-सज्ञा पु० वह स्थान या क्षेत्र, जहाँ से प्रतिनिधि चुना जाय।  
 निर्वाचित-वि० चुना हुआ।  
 निर्वाण-वि० १ बुझा हुआ २ डूबा हुआ। अस्त। ३ शान्त। धीमा। ४. मृत।  
 सज्ञा पु० १ बुझना। ठंडा होना। २. समाप्ति। न रह जाना। ३ अस्त। डूबना। गमन। ४ शान्ति। ५ मुक्ति। मोक्ष।  
 निर्वात-वि० बामुरहित स्थान। वह स्थान, जहाँ वायु न जा सके।  
 निर्वाध-वि० बाधरहित। निष्पण्डित। सरल।  
 निर्वापण-सज्ञा पु० [ वि० निर्वापित, निर्वाप्य ] १ त्याग। दान। २ विनाश। प्राणनाश। अंत। समाप्ति। वध। ३ आग बुझाना। आग का बुझना।  
 निर्वास-सज्ञा पु० बहिष्करण। निकाल देना। बाहर कर देना।  
 निर्वासक-सज्ञा पु० देशनिकाला देनेवाला। निकालने या बाहर करनेवाला।  
 निर्वासन-सज्ञा पु० १ गाँव, शहर या देश-आदि से दंड-स्वरूप बाहर निकाल देना। देश-निकाल। २ वध। हत्या। ३ निकालना। विसर्जन।  
 निर्वासित-वि० निकाला गया। बहिष्कृत। अपने देश या निवासस्थान से निकाला गया।  
 निर्वास्य-सज्ञा पु० निकालने योग्य। बहिष्कार करने योग्य।  
 निर्याह-सज्ञा पु० १ किसी क्रम या परंपरा का चलना। निर्वाह। २ किसी बात के अनुसार आचरण। पालन। ३ समाप्ति। पूरा होना।  
 निर्याहना\*—क्रि० अ० निर्याह करना। पूरा करना।  
 निर्विकल्प-वि० १ एकाग्र। २ जिसमें कल्पना न हो। विकल्प। निरपेक्ष। विचारहीन। ३ (न्याय में) अव्यक्त ज्ञान। ४ ईश्वर का एक विशेषण। ५ निश्चित। स्थिर।  
 सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की समाधि।  
 निर्विकल्प समाधि-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार

की समाधि, जिसमें ज्ञेय, ज्ञान और ज्ञाता आदि या कोई अन्तर नहीं रह जाता।  
निर्विकार-वि० जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो। विकारहीन।

निर्विघ्न-वि० बाधा-रहित।  
वि० वि० बिना किसी विघ्न के।

निर्विरोध-वि० जिसमें विरोध या बाधा न हो। बिना किसी रूकावट के।

निर्विवाद-वि० विवाद-रहित। जिसमें कोई विवाद न हो। बिना झगड़े का।

निर्विकेक-वि० विचारहीन। बुद्धि या ज्ञान से शून्य।

निर्विशेष-वि० निर्भय। साहसी। निडर।

निर्विशेष-सज्ञा पु० परमात्मा। परब्रह्म।  
निर्विकल्प। निर्गुण।

निर्वीरा-सज्ञा स्त्री० विधवा और पुत्रहीन स्त्री।

निर्वीर्य-वि० वीर्यहीन। निस्तेज। पमजोर।

निर्वृत्ति-सज्ञा पु० १. एक चन्द्रवशी राजा (पुराण)। २. उत्पत्ति। बनावट। ३. निष्पत्ति। सिद्धि। ४. समाधि। ५. वृत्ति-रहित।

निर्वेद-सज्ञा पु० १. मोक्ष की अमिलापा। २. वैराग्य। ३. पश्चात्ताप। दुःख। अनुत्ताप। सत्ताप। खेद। ४. नम्रता। ५. अपना अपमान। अपनी अवहेलना।

निर्वैर-वि० द्वेष से रहित। शत्रु-रहित। जिसका कोई वैरी न हो।

निर्वर्णन-वि० १. निष्कपट। छलरहित। २. बाधा-रहित।

निर्व्याधि-वि० निरोग। रोगरहित।

निर्वहण-वि० शव-वह्निष्करण। मृतक या अरखी निकालना। मुर्दा निकालना।

निर्वेतु-वि० जिसमें कोई हेतु न हो। अहेतुक। अकारण। प्रयोजन-रहित।

निल-सज्ञा पु० विभीषण का मन्त्री।

निलज्ज-वि० दे० "निलज्ज"।

निलज्जता\*-सज्ञा स्त्री० दे० "निलज्जता"।

निलज्जी\*+वि० निलज्जा। वेशमं। बेहया।

निलय-सज्ञा पु० गृह-मकान। घर। निवास-स्थान। जगह।

निलहा-वि० १. नीलवाला। २. नील-सवधी।

निवर-वि० १. निर्णय करनेवाला। २. यचानेवाला।

निवरा-सज्ञा स्त्री० पुमारी। अधिवाहिनी।

निषर्तन-सज्ञा पु० छोटा ना। रोचना। वापन।

निवसन-सज्ञा पु० १. गांव। २. घर। ३. वन्य।

निवसना-क्रि० अ० निवसिषा घटना। रहना।

निवह-सज्ञा पु० १. शर्मह। सुड। यूय। २. साव पायुओं में से एक बाम।

निवाई-वि० १. नवीन। नया। २. विलक्षण।

निवाज-वि० [फा०] कृपा करनेवाला। कृपालु।

निवाजना\*+क्रि० स० अनुग्रह करना। कृपा करना। दया करना।

निवाड़ा-सज्ञा पु० १. छोटी नाव। २. नाव की एक फ्रीडा, जिसमें उसे नदी के बीच में ले जाकर धक्कर देते हैं। नावर।

निवात-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ हवा न जा सके। वातहीन प्रदेश।

निवार-सज्ञा स्त्री० बहुत मोटे भूत की युनी हुई-चोड़ी पट्टी, जिससे पलंग आदि बुने जाते हैं। निवाड। नेवार।

सज्ञा. पु०. विप्री धान।

निवारक-वि० १. अवरोधक। रोकनेवाला। २. दूर करनेवाला। मिटानेवाला।

निवारण-सज्ञा पु० १. रोकने की क्रिया। हटाने या दूर करने की क्रिया। २. छुटकारा। निवृत्ति।

निवारना\*-क्रि० स० १. रोकना। निषेध या मना करना। २. हटाना। दूर करना। बचाना।

निवारो-सज्ञा स्त्री० एक लता और उसके फूल।

निवाला-सज्ञा पु० [फा०] प्राप्त। कीर।

निवास-सज्ञा पु० रहने का स्थान। वास-स्थान। घर। मकान।

निवासस्थान-सज्ञा पु० घर। मकान। रहने का स्थान।

निवासी-सज्ञा पु० [स्त्री० निवासिनी] रहने-वाला। बसनेवाला। वासी।

निविड़-वि० सघन। घना। घोर। गहरा।

निघिष्ट-वि० १. जिसका चित्त एकाग्र हो।  
 लीन। सत्पर। २. लिपटा हुआ। बाँधा हुआ।  
 घुसा या घुसाया हुआ।  
 निवीत-सज्ञा पु० १. गले से लटका हुआ।  
 २. यज्ञोपवीत। ३. चादर।  
 निवृत्ति-वि० विरक्त। मुक्त। खाली।  
 निवृत्ति-सज्ञा स्त्री० मुक्ति। मोक्ष। छुटकारा।  
 प्रवृत्ति का उल्टा।  
 निवेद\*†-सज्ञा पु० दे० "नैवेद्य"।  
 निवेदक-सज्ञा पु० निवेदन करनेवाला। प्रार्थी।  
 निवेदन-सज्ञा पु० १. प्रार्थना। विनय।  
 विनती। २. समर्पण।  
 निवेदना\*†-कि० सं० १. विनती या प्रार्थना  
 करना। २. कुछ अर्पित करना। नैवेद्य  
 चढ़ाना।  
 निवेदित-वि० १. निवेदन किया हुआ।  
 अर्पित। समर्पित। २. दिया हुआ। ३.  
 दान किया हुआ।  
 निवेरना\*†-कि० सं० दे० "निवटाना"।  
 निवेरा\*†-वि० १. लाँटा हुआ। चुना हुआ।  
 २. अगोखा। ३. नवीन।  
 निवेश-सज्ञा पु० १. विवाह। २. पड़ाव।  
 शिविर। डेरा। खेमा। रास्ते में ठहरने  
 की जगह। ३. प्रवेश। ४. घर।  
 निशंक-वि० निर्भय। निडर। जिसे किसी  
 बात की शका या भय न हो।  
 निश-सज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।  
 निशचर-सज्ञा पु० रात में चलनेवाले।  
 राक्षस।  
 निशात-सज्ञा पु० रात्रि का अंत। प्रभात।  
 निशाथ-वि० १. जिसे रात की दिखाई  
 न दे।  
 निशा-सज्ञा स्त्री० १. रात। रजनी।  
 २. हलदी। हरिद्रा।  
 निशाकर-सज्ञा पु० १. चंद्रमा। चांद। २.  
 महादेव। ३. कुचकुट। मुरगा।  
 निशाकातिर-सज्ञा स्त्री० उसल्ली। बेकिरा।  
 प्रबोध। निदिचन्द।  
 निशागम-सज्ञा पु० रात का आगमन। सध्या।  
 निशाचर-सज्ञा पु० १. रात में चलनेवाला।  
 राक्षस। २. गीदड़। शृगाल। ३. उल्लू।

४. सर्प। ५. चरुवाक। ६. भूत।  
 ७. चोर।  
 निशाचरी-सज्ञा स्त्री० १. राक्षसी। २. कुलटा।  
 निशाटन-सज्ञा पु० उल्लू।  
 वि० दे० "निशाचर"।  
 निशात-वि० तेज किया हुआ। शान दिया  
 हुआ। शाणित।  
 सज्ञा स्त्री० [अ०] आनन्द। प्रसन्नता।  
 सुखभोग।  
 निशाधीश-सज्ञा पु० दे० "निशापति"।  
 निशान-सज्ञा पु० १. चिह्न। अंकित चिह्न।  
 दाग या घब्बा। किसी पदार्थ के पहचानने  
 का चिह्न। २. झंडा। पताका। ध्वजा।  
 ३. पता। ठिकाना। ४. अनपढ़ व्यक्ति  
 का हस्ताक्षर के बदले में बनाया हुआ  
 अँगूठे का निशान।  
 यो०-नाम-निशान=अस्तित्व का लेश,  
 बचा हुआ थोड़ा अंश।  
 मुह०-निशान देना=पहचनवाना। निशान  
 उठाना या खड़ा करना=किसी काम में  
 अंगुठा या नेता बनकर आंदोलन करना।  
 निशानची-सज्ञा पु० १. निशान लगानेवाला।  
 अच्छा शिकार खेलनेवाला। २. राजा या  
 सेना आदि के आगे झंडा लेकर चलने-  
 वाला। निशान-वरदार। ध्वजाधारी।  
 निशानवैही-सज्ञा स्त्री० पहचनवाना। पहचान  
 कराना। अतामी को सम्मन आदि देने के  
 लिए पहचनवाने की क्रिया।  
 निशापति-सज्ञा पु० १. चंद्रमा। राक्षस।  
 २. कपूर।  
 निशाना-सज्ञा पु० [फा०] १. लक्ष्य। २.  
 किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उस पर  
 वार करना। जिसे लक्ष्य करके व्यगोहित  
 की जाय।  
 मुह०-निशाना बांधना=वार करने के लिए  
 अस्त्र आदि को इस प्रकार साधना, जिसमें ठीक  
 लक्ष्य पर वार हो। निशाना मारना या  
 लगाना=वाकवर अस्त्र आदि का वार  
 करना।  
 निशानाय-सज्ञा पु० चंद्रमा।  
 निशानी-सज्ञा स्त्री० माद के लिए दी हुई

या रंगी गई वस्तु। स्मृति-चिह्न। यादनाम।  
पहचानने का चिह्न। निशान।

निशामणि-सज्ञा पु० चंद्रमा।

निशामूल-सज्ञा पु० सध्या। सध्या का समय।

निशास्ता-सज्ञा पु० [फा०] गेहूँ को भिगोकर उसका निवाला और जमाया हुआ रात या गुदा। माडी। बलक।

निशि-सज्ञा स्त्री० रात। रात्रि।

निशिकर-सज्ञा पु० चंद्रमा।

निशिचर-सज्ञा पु० दे० "निशाचर"।

निशिचारी-सज्ञा पु० दे० "निशाचर"।

निशित-वि० तेज। चोखा।

सज्ञा पु० लोहा।

निशानाथ-सज्ञा पु० दे० 'निशानाथ'।

निशिपाल-सज्ञा पु० १ चंद्रमा। २ एक प्रकार का छद।

निशिवासर\*-सज्ञा पु० रात दिन। सदा। सर्वदा। हमेशा।

निशीथ-सज्ञा पु० रात। रजनी।

निशीथिनी-सज्ञा स्त्री० रात। रजनी।

निशुभ-सज्ञा पु० १ वध। हिंसा। २ एक असुर, जो शूभ तथा नमूषि का भाई था और दुर्गा के हाथ से मारा गया था।

निशुभमौदनी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा। जगदम्बा।

निश्चय-सज्ञा पु० १ सन्देह रहित। २ विस्वास। ३ निर्णय। ४ दृढ़ सवत्स। पक्का विचार। प्रविज्ञा। ५ एक अर्थालंकार।

निश्चयात्मक-वि० असंदिग्ध। ठीक-ठीक।

निश्चल-वि० अचल। अटल। स्थिर।

निश्चलता-सज्ञा स्त्री० स्थिरता। दृढ़ता। निश्चल होने का भाव।

निश्चित-वि० चिंतारहित। जिसे कोई चिंता या फिर न हो। बे-चिन्ता।

निश्चितई\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'निश्चितता'।

निश्चितता-सज्ञा स्त्री० निश्चित या चिन्ता-रहित होने का भाव। बे-चिन्ता।

निश्चित-वि० १ निर्णीत। जिसके सबंध में निश्चय हो चुका हो। तय किया हुआ। २ जिसमें कोई हेर फेर न हो सके। पक्का।

निश्चेतन-वि० बेमुग्ध। बेहोश। जड़। जिसमें चेतन शक्ति न हो।

निश्चेष्ट-वि० १. अचेत। बेहोश। बेष्टा-रहित। २ स्थिर। निश्चल।

निश्चै\*-सज्ञा पु० दे० "निश्चय"।

निश्चल-वि० चलरहित। सीधा-सादा। निष्पट।

निश्चिद्र-वि० छिद्र या दोष से हीन।

निश्चेणी-सज्ञा स्त्री० - १ गीड़ी। जीना। २ मुक्ति।

निश्चेयस्-सज्ञा पु० १ मक्ति। मोक्ष। २ कल्याण। दुःख का अत्यंत अभाव।

निश्वास-सज्ञा पु० स्वास। सांस। प्राणवायु।

निश्शक-वि० १ निर्भय। निडर। २ सदेह-रहित।

निश्शक्त-वि० निर्बल। शक्तिहीन। कमजोर।

निश्शब्द-वि० सनाटा। शब्दहीन।

निश्शेष-वि० जिसमें से कुछ भी बाकी न बचा हो। समाप्त।

निपग-सज्ञा पु० [वि० निपगी] १ तरकश। तूण। तूणीर। २ खड्ग।

निपाद-सज्ञा पु० १ नेवट। मल्लाह। एक अनाथ जाति। २ संगीत के सात स्वरों में अंतिम।

निपादी-सज्ञा पु० महावत। हाथीवान।

निपिद्ध-वि० १ वर्जित। जिसका निषेध किया गया हो। जिसके लिए मनाही है। २ खराब। बुरा। दूषित।

निपिद्धाचरण-वि० शास्त्र-विरुद्ध आचरण। बुरा चाल-चलन।

निषेध-सज्ञा पु० यजन। न करने का आदेश। मनाही। वाधा। रकावट।

निषेधक-सज्ञा पु० रोकनेवाला। मना करने-वाला।

निषेधाक्षेप-सज्ञा पु० आक्षेपाकार का एक भेद।

निषेधित-वि० दे० 'निपिद्ध'।

निष्पटक-वि० निर्विघ्न। बाधा, आपत्ति या शंका आदि से रहित। त्रिा खटके का।

निप्प-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का सोन का सिक्का या मोहर। २ एक प्रकार का

गले का गहना । ३. शास्त्रों में वर्णित एक प्रकार की तौल । १०८ रत्ती भर सोना । टका । ४. सुवर्ण । ५. हीरा ।

निष्कम्प-वि० जिसमें कोई कम्पन न हो । जो काँपता या हिलता न हो । स्थिर । निष्कपट-वि० निश्चल । सरल । छल-रहित । सीधा ।

निष्कपटता-सज्ञा स्त्री० निश्चलता । सरलता । सीधापन ।

निष्कण्ठ-वि० निष्पुंर । बेरहम ।

निष्कर्म्म-वि० अकर्मा । जो कर्म करने में लिप्त न हो ।

निष्कर्ष-सज्ञा पुं० परिणाम । तत्त्व । सार । निश्चय । निचोड़ । खुलासा । सिद्धान्त ।

निष्कलक-वि० निर्दोष । निरपराध । बे-ऐव ।

निष्कलकी-वि० दे० "निष्कलक" ।

निष्काम-वि० १ निःस्पृह । कामना, आसक्ति या इच्छा आदि से रहित । २ बिना किसी कामना या इच्छा के किया गया कार्य ।

निष्कारण-वि० बिना कारण । अकारण । व्यर्थ । निष्प्रयोजन ।

निष्कासन-सज्ञा पुं० किसी स्थान से बाहर किया जाना । राज्य या देश से बाहर निकालना ।

निष्कासित-वि० बाहर निकाला हुआ ।

निष्कृत-वि० [सज्ञा निष्कृति] १ निकला हुआ । २ मुक्त । छुटा हुआ ।

निष्क्रमण-सज्ञा पुं० [वि० निष्प्रात] १ बाहर निकलना । एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान को जाना । २ एक सत्कार, जिसमें बाल्य अथ चार महीने का होता है, उस उमेर से बाहर निकालकर सूर्य का दर्शन कराया जाता है । निःसरण ।

निष्क्रमणार्थी-सज्ञा पुं० वही से निकलने की इच्छा रखनेवाला ।

निष्क्रम-सज्ञा पुं० १ वेतन । सनसाह । मजदूरी । भाड़ा । २. विनिमय । बदला । ३ विपरी । ४. सामर्थ्य ।

निष्क्रान्त-वि० [सज्ञा स्त्री० निष्प्रान्ति] १. निकला या निकाला हुआ । छूटा हुआ ।

मुक्त । २. निर्गद । एक स्थान को छोड़कर दूसरे स्थान में जानेवाला ।

निष्क्रिय-वि० निश्चेष्ट । क्रिया-शून्य । अकर्मा ।

निष्क्रियता-सज्ञा स्त्री० निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था ।

निष्ठ-वि० १. स्थित । ठहरा हुआ । स्थिर । २ तत्पर । लगा हुआ । ३. जिसमें किसी के प्रति श्रद्धा या भक्ति हो ।

निष्ठा-सज्ञा स्त्री० १ मन की स्थिति । अवस्था । २. निर्वाह । ३ विश्वास । निश्चय । ४ गुरुजना के प्रति श्रद्धा-भक्ति । पूज्य वृद्धि । ५ निष्पत्ति । ६. नाश । समाप्ति ।

निष्ठान-वि० श्रद्धाभक्ति रखनेवाला । निष्ठुर-वि० [स्त्री० निष्ठुरा] निर्दय । क्रूर । बे-रहम । कठिन । कडा । सख्त ।

निष्ठुरता-सज्ञा स्त्री० निर्दयता । क्रूरता । कडाई । सख्ती । कठोरता ।

निष्ठात-वि० निपुण । किसी बात का पूरा पंडित । विज्ञ । पारंगत । जानकार ।

निष्पद-वि० सम्पूरित । जिसमें किसी प्रकार का कप न हो । स्थिर । निष्पत्ति ।

निष्पक्ष-वि० [सज्ञा निष्पक्षता] तटस्थ । पक्षपात-रहित । जो किसी के पक्ष में न हो ।

निष्पत्ति-सज्ञा स्त्री० १. समाप्ति । अंत । २. सिद्धि । परिपाक । ३. निर्वाह । ४. मोमासा । निर्धारण । निश्चय ।

निष्पन्न-वि० १. सम्पन्न । २. समाप्त । सिद्ध । जो समाप्त या पूरा हो चुका हो । पूर्ण ।

निष्परिग्रह-सज्ञा पुं० योगी । तपस्वी । सन्यासी ।

निष्पादन-सज्ञा पुं० १. सम्पादन । साधन । पूरा करना । निष्पत्ति । २. निपुणत्व ।

निष्पाप-सज्ञा पुं० निर्दोष । निरपराध । पाप-रहित । जिस पर कोई पाप न हो ।

निष्पीडन-सज्ञा पुं० निचोड़ना । पैरना । निष्प्रतिभ-वि० अज्ञ । जड़ । मूर्ख । निर्बोय ।

निष्प्रवृत्त-वि० निर्विघ्न । बाधा-रहित । निरापद ।

निष्प्रभ-वि० जिसमें किसी प्रकार की प्रभा

निष्प्रयोजन-वि० व्यर्थ। जिसमें कोई मनलभ न हो। निरर्थक।

नि० वि० विना प्रयत्न या मतलब के। व्यर्थ। फजूल।

निष्प्राण-वि० प्राणहीन। निर्जीव। मृत। मुर्दा।

निष्फल-वि० असफल। विकल। जिसका कोई फल न हो। निरर्थक। व्यर्थ। फल-रहित।

निसर्ग-वि० दे० "निश्चय"।

निसर्ग-वि० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-वि० दरिद्र। गरीब। कगाल।

निसर्ग-वि० १ नृपति। शूर। २ अशक्त। पुण्यार्थ-हीन। मृतवत्।

निसर्गना-वि०-क्रि० अ० निश्वास लेना। हाँकना।

निसर्ग-सज्ञा स्त्री०, दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-वि० निश्चय। अशक्त। दुबल। कमजोर।

निसर्ग-वि०-सज्ञा पु० दे० "निसर्ग"। चन्द्रमा।

निसर्ग-वि० निश्चय। असत्य। झूठ।

निसर्गना-वि०-क्रि० अ० निस्तार पाना। छुट-कारा पाना। मुक्ति पाना।

निसर्गना-क्रि० स० मुक्त करना। निस्तार करना।

निसर्गना-वि०-क्रि० अ० दे० "निसर्गना"।

निसर्गना-सज्ञा स्त्री० दे० "निसर्गना"।

निसर्गना-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ संघ। लगाव। ताल्लुब। २ मँगनी। पिवाह-सवध की बात। ३ तुलना। ४ मुलाकात।

निसर्गना-वि०-वि० जिसके होस-हवास ठिकाने न हो। खम्बत।

निसर्गना-वि०-क्रि० अ० दे० "निसर्गना"।

निसर्गना-सज्ञा पु० ब्राह्मण को दिया जाने वाला वेपवा अन्न। रोषा।

निसर्ग-सज्ञा पु० १. स्वभाव। प्रकृति। २ दान। ३ सृष्टि। ४ रूप। आवृत्ति।

निसर्गदला-वि०-वि० स्वाद रहित। बेमजा।

निसर्गदला-सज्ञा पु० दे० "निसर्गदला"। रात-दिन।

वि० वि० नित्य। हमेशा। सदा।

निसर्ग-वि०-वि० श्वास-रहित। बेहोश। अचेत।

निसर्ग-वि० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-वि० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग, निसर्ग-सज्ञा पु० ठंडी माँस। लजी साँस।

वि० बेदम। मृतप्राय।

निसर्ग-सज्ञा स्त्री० १ दे० "निसर्ग"। २ सतोष। मुहा०—निसर्ग भर-जी भर के। जोर भर के।

निसर्ग-सज्ञा पु० चन्द्रमा। निसर्ग।

निसर्ग-सज्ञा पु० राक्षस। दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-सज्ञा पु० १ दे० "निसर्ग"। २.

नगडा। घोंसा। ३ झण्डा। ४ चिह्न।

निसर्ग-सज्ञा पु० १ सच्चा या सत्य।

प्रदोष-काल। २ चन्द्रमा।

निसर्ग-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

निसर्ग-सज्ञा पु० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-सज्ञा पु० [अ०] १ निवास। निवास।

२ निवासर। सदा।

वि० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-वि०-क्रि० स० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-वि०-क्रि० स० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-सज्ञा पु० निश्वास। लम्बी या ठंडी साँस।

वि० श्वास रहित। बे-दम।

निसर्ग-वि०-वि० श्वास रहित। बे-दम। मृत-

प्राय।

निसर्ग-सज्ञा स्त्री० १ निसर्ग। रात। २ एक

वर्णवृत्त।

निसर्ग-सज्ञा पु० दे० "निसर्ग"। चन्द्रमा।

निसर्ग-सज्ञा पु० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-सज्ञा पु० दे० "निसर्ग"।

निसर्ग-सज्ञा पु० दे० "निसर्ग"।

राक्षस।

निसर्ग-वि० तीव्र। पंता।

निसर्ग-वि०-क्रि० अ० दे० "निसर्ग"। सदा।

निसर्ग-सज्ञा स्त्री० अदराक्षि। अधी

रात। निसर्ग।

निसर्ग-सज्ञा पु० निश्चय। चन्द्रमा।

निसर्ग-वि०-वि० निश्चय। रात-

दिन। नित्य। सदा। सर्वदा।

निसीठी-वि० नि सार। थोथा। नीरस।  
 निमु\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "निशा"।  
 निमुका\*-वि० गरीब। निथोडा।  
 निमुदन-सज्ञा पु० हिंसा करना। मार डालना।  
 निमुण्ड-वि० १ छोड़ा हुआ। त्यक्त। अपित।  
 २ प्रेरित। भेजा हुआ। ३ दिया हुआ।  
 दत्त। ४ मध्यस्थ।  
 निसेनी†-सज्ञा स्त्री० निश्रेणी। सीढी। काठ  
 या बाँस की बनी सीढी। नरानी (प्रा०)।  
 निसेप\*-वि० दे० "निशेप"।  
 निसेस\*-सज्ञा पु० चद्रमा।  
 निसेनी-सज्ञा स्त्री० दे० "निसेनी"।  
 निसीम\*†-वि० १ शोक-रहित। २ जिसे  
 कोई चिन्ता न हो।  
 निसीच\*-वि० चिन्ता-रहित। निदिचन्त।  
 प्रसन्न।  
 निसीत-वि० शुद्ध। निरा। जिसमें और किसी  
 चीज का मेल न हो।  
 निसीय-सज्ञा स्त्री० एक लव्हा, जिसकी जड़  
 और डठल रेशक समझे जाते हैं।  
 निमीमु\*†-सज्ञा स्त्री० १. मुघ। खबर। २  
 नदिशा। समाचार।  
 निस्तम्भ-वि० जिसे तन्ना या नीड न आई  
 हो। अगा हुआ। जगद्व।  
 निस्तम्भ-वि० निस्तार। जिसमें कोई तरव  
 न हो।  
 निस्तम्भ-वि० जड़वत्। निश्चेष्ट। जो हिलवा  
 डोलवा न हो।  
 निस्तम्भ-सज्ञा स्त्री० सत्राटा। गामोशी।  
 निस्तर-वि० जिसमें तरग या लहर न हो।  
 निस्तरण-सज्ञा पु० दे० "निस्तार"। उद्धार।  
 पार या मुक्त होना।  
 निस्तरना\*†-वि० अ० मुक्त होना। छुट  
 जाना। निस्तार पाना। उद्धार।  
 निस्तार-सज्ञा पु० १ पार होने का भाव।  
 २ छुटकारा। उद्धार। मोक्ष।  
 निस्तारण-सज्ञा पु० निस्तार करना। छुड़ाना।  
 यथाना पार करना।  
 निस्तारन\*-वि० दे० "निस्तारण"।  
 निस्तारना†\*-वि० प० उद्धार। छुड़ाना।  
 मुक्त करना।

निस्तारा\*-सज्ञा पु० दे० "निस्तार"। निर्वाह।  
 छुटकारा।  
 निस्तीर्ण-वि० जो तय या पार कर चुका हो।  
 मुक्त। छुटा हुआ।  
 निस्तेज-वि० प्रभाहीन। तेज-रहित। मलिन।  
 निस्तोक-सज्ञा पु० निवटारा। निर्णय।  
 निस्तिक-वि० क्षति। खट्वा। सलवार।  
 निस्त्रप-वि० निर्लज्ज। अशिष्ट। लज्जा-  
 रहित।  
 निस्पृह-वि० [सज्ञा निस्पृहता] निर्लोभ।  
 कामना-रहित। लालच-रहित। जिसे कोई  
 इच्छा या लालच न हो।  
 निस्पन्द-वि० [सज्ञा स्त्री० निस्पन्दता] कान-  
 रहित। जो हिलवा-डुलवा न हो। स्पन्दन-  
 शून्य। निश्चेष्ट। स्थिर। स्थग्य।  
 निष्क-वि० [अ०] आधा। अर्द्ध।  
 निस्वत-सज्ञा पु० [फा०] सत्र में अनुपात।  
 निस्व-वि० निधन। दरिद्र। गरीब। दुखी।  
 निस्वन-सज्ञा पु० शब्द। ध्वनि।  
 निस्वांस-सज्ञा पु० निश्वास।  
 निस्सकोच-वि० सकोच-रहित। बंधक।  
 निस्सग-वि० १ किसी से कोई सम्बन्ध न  
 रखनेवाला। विषय-विचार से रहित। २.  
 निजन। एकान्त। अकेला।  
 निस्सतान-वि० रात-रहित। जिसे कोई  
 सतान न हो।  
 निस्सदेह-वि० अवरय। जरूर।  
 वि० जिसमें सदेह न हो।  
 निस्सत्व-वि० जिसमें कुछ भी मृदु न हो।  
 असत्। सत्त्वहीन या सारहीन।  
 निस्सरण-सज्ञा पु० निवास। निवृत्ति का  
 भाग। निवृत्ति का भाव या क्रिया।  
 निस्सहाय-वि० असहाय। जिसका कोई  
 सहायक न हो।  
 निस्तार-वि० ध्यय। सार-रहित। तुच्छ।  
 निस्सीम-वि० अपार। असीम। सीमा रहित।  
 बहुत्र अभिन।  
 निस्सचार्य-वि० जिसमें म्यम अपने लान  
 या हिय का कोई विचार न हो।  
 निहग-वि० १ एकान्त। अवस्था। २.

दिवाने की विधि। आरती। दीपदान।  
२ हथियारा को चमकाने या गूँफ करने  
का काम।

नीराजना\*—त्रि० अ० आरती करना।

नीरख—गजा पु० कमल। पद्म।

नीरख—वि० स्वस्थ। निरोग। मन्दुस्त।

नीरे\*—त्रि० वि० दे० "नियरे"।

नीरोग—वि० जिसे रोग न हो। स्वस्थ।  
तदुस्त। चगा।

नील—वि० नीले रंग का।

राजा पु० १ नीला रंग। महारा आरामानी  
रंग। २ एक प्रसिद्ध पाँधा, जिससे नीला  
रंग निकाला जाता है। ३ विप। गरल। ४  
कलक। लाछन। ५ राम की सेना का एक  
बदर। ६ एक पक्ष। ७ नव निधियाँ में से  
एक। ८ एक वर्णवृत्त। ९ नीलम। १०  
साँ अरब की गहवा। ११ कुवेर के एक  
खजाने का नाम।

महा०—नील का टीका लगाना=बलव  
लेना। बदनामी उठाना। नील की सलाई  
फिरवा देना=जाँले फाड़वा डालना।

नीलकठ—वि० जिसका गला नीला हो।

सजा पु० १ मोर। मयूर। २ महादेव।  
विपपान करने से इनका गला नीला पड़  
गया, इसी से इन्हें नीलकठ कहते हैं।  
३ एक प्रकार की चिड़िया, जिसका कंठ  
और डँने नीले होते हैं। चाप पक्षी। ४  
गौरा पक्षी। चटप।

नीलकात—गजा पु० १, चिड़िया। २ नीलम  
-मणि। ३ विष्णु।

नीलगाय—गजा स्त्री० नीलापन लिये भूरे  
रंग के हिरा की तरह का एक जगली  
पशु जो गाय के बराबर होता है।

नीलप्रीव—गजा पु० महादेव। शिव। दे०  
"नीलकण्ठ"।

नीलचक्र—गजा पु० १ जगप्रापजी के मंदिर  
के शिखर का चक्र। २ ३० अक्षर का  
एक दंडव-वृत्त।

नीलता—गजा स्त्री० नीलिमा। नीलापन।

नीलम—गजा पु० नीले रंग का रत्न। नील-  
मणि। इन्द्रनील।

नीलमणि—गजा पु० नीलम। रत्न वि०।  
नीलमन्त मणि।

नीलमाषध—गजा पु० जगप्राप। विष्णु।

नीलमोर—गजा पु० पुररी पक्षी।

नीललोहित—वि० बैंगनी रंग। नीलापन जिसे  
लाल।

सजा पु० १ शम्बर का एक नाम। महादेव।

२ नील और रक्त मिश्रित वर्ण। बैंगनी  
रंग। ३ नीलवण्ड।

नीलवर्ण—वि० नीला रंग। श्याम रंग। श्याम  
मानी रंग। आराध के रंग का।

नीलस्वरूप, नीलस्वरूपक—सजा पु० एक  
प्रकार का वर्णवृत्त।

नीलाजन—सजा पु० १ नील सुरमा। २  
नीला थोपा। तूतिया।

नीलाबर—सजा पु० नील रंग का एक तरह  
का रेदामी बपटा।

वि० नीले कपड़े धारण करनेवाला। बर  
देवजी।

नीलाबरा—सजा स्त्री० लक्ष्मीजी।

नीलाबुज—सजा पु० नील कमल।

नीला—वि० आकाश के रंग का। नील के  
रंग का।

महा०—नीला-नीला होना=श्रेय दिखाना।  
विगडना। चेहरा नीला पड़ जाना=आश्चर्य  
से भय, उद्विग्नता, लज्जा आदि प्रकट  
होना। जीवा के लक्षण नष्ट होना।

नीलाई—सजा स्त्री० श्यामता। नीलापन।

नीलाथोथा—सजा पु० तूतिया। ठाँगे का नीला  
क्षार या लवण।

नीलाम—सजा पु० बिजो का एक ढग, जिसमें  
भाल सबसे अधिक दाम लगानेवाले को  
दिया जाता है। बोली बोलकर बेचना।

नीलावती—गजा स्त्री० एक प्रकार का चावल।

नीलका—गजा स्त्री० १ नीलवरी। २  
नील समूहाय वृक्ष। नीली निर्गुबी। ३  
आँख तिलमिलान का रोग। ४ मुख पर

का एक रोग, जिसमें तरसो के बराबर छोटे-  
छोटे पड़े वाले दाँने निकलते हैं। इत्ता।

नीलिमा—गजा स्त्री० नीलापन। श्याही।

नीलोत्पल—सज्ञा पु० नील कमल। नीले पत्तों का कमल।

नीलोत्पल—सज्ञा पु० [ फा० ] १ नील कमल। २ कुमुद। कुई।

नीवें—सज्ञा स्त्री० १ घर बनाने में गहरी नाली के रूप में खुदा हुआ गड्ढा, जिसके भीतर से दीवार की जोड़ाई आरंभ होनी है। २ दीवार की जड़ या आधार। मूल भित्ति। ३ जड़। मूल। आधार। स्थिति। मुहा०—नीवें देना=गड्ढा खोदकर दीवार बड़ी करने के लिए स्थान बनाना। (किसी गलत की) नीवें देना=कारण या आधार बड़ा करना। उपरुम करना। नीवें जमाना, डालना या देना=दीवार उठाने के लिए नीवें के गड्ढे में ईंट, पत्थर आदि जमाकर आधार खड़ा करना। दीवार की जड़ जमाना। (किसी बात की) नीवें जमाना या डालना=आधार दृढ़ करना। स्थिर करना। (किसी वस्तु या बात की) नीवें पड़ना=१ घर की दीवार का आधार खड़ा होना। २ सुनपाव होना।

नि—सज्ञा स्त्री० दे० "नीवें"।

नियार—सज्ञा पु० १ तिरि पसही। २ एक प्रकार का अन्न, जो बालागरी में अपने-आप होता है।

नियि—सज्ञा स्त्री० १ बसर में लपेटी हुई धाती की, वह गाँठ, जिसे स्त्रियाँ पेट के नीचे मूत की डोरी से या बाही बांधती हैं। २ मूत की डोरी जिससे स्त्रियाँ धोती या लहंगे की गाँठ बांधती हैं। फुकुदी। बटि-बस्त्र-बध। इजारबद। ३ धोती। साडी। पोथी—सज्ञा स्त्री० दे० "नीवि"।

नेही—सज्ञा स्त्री० दे० "नीवें"।

नेहार—सज्ञा पु० १ कुहरा। २ पाला। तुपार। बर्फ। हिम।

नेहारिका—सज्ञा स्त्री० १ कुहरा। मुहा०। भुएँ या कुहरे की तरह आकाश में फैला हुआ क्षीण प्रकाश-भुज, जो रात में सफेद धागे की तरह दिखाई देता है। २ पदार्थों की प्रारम्भिक अवस्था। ३ एक दार्शनिक सिद्धांत, जिससे अनुसार जगत् के सम्मत्

पदार्थ ठास होने के पूर्व भाप के रूप में माने जाते हैं।

नुक्ता, नुक्ता—सज्ञा पु० [ अ० ] १ बिंदु। बिन्दी। अनुस्वार का चिह्न। २ चुटकुला। फवती। ३ सूक्ष्म या वारीक बात। लगनेवाली उक्ति। ४. ऐव। दोष।

नुक्ताचीनी—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] दोष निकालना। छिद्रान्वेषण।

नुक्ती—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई। घेसन की महीन बुंदिया।

नुकरा—सज्ञा पु० १ चाँदी। २ घोड़ा वा सफेद रंग।

वि० सफेद रंग का (घोड़ा)।

नुक्सान—सज्ञा पु० १ [ अ० ] विकार। अवगुण। दोष। २ कमी। घटी। हानि। छीज। हानि। क्षति। घाटा।

मुहा०—नुक्सान उठाना=हानि सहना। नुक्सान पहुँचाना=हानि करना। नुक्सान भरना=हानि की पूर्ति करना। (किसी का) नुक्सान करना=दोष उत्पन्न करना। स्वास्थ्य के प्रतिकूल होना या स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होना।

नुकीली—वि० [ स्त्री० नुकीली ] नोकदार। जिसमें नोक निकली हो। बाँका। तिरछा।

नुकल—सज्ञा पु० १ नोक। पतला सिरा। २ छोर। मिरा। कोना। ३ निकला हुआ कोना।

नुकस—सज्ञा पु० [ अ० ] १ दोष। ऐव। बुराई। खराबी। २ बसर। बुद्धि।

नुचना—क्रि० अ० १ नोचा जाना। छछाड़ना या छछाड़ना। २ नाखून आदि से छिलना। सरोचा जाना।

नुचवाना—क्रि० म० नोचने का काम दूसरे से कराना।

नुति—सज्ञा स्त्री० न्तुति। स्तोत्र। मुशामद। नुत्ता—सज्ञा पु० [ अ० ] १ शीर्ष्य। नुप। २ सतति। ओलाद।

नुस्काहराम—सज्ञा पु० [ अ० ] बर्णभार। योग्यता।

नुनहरा, नूनहरा—वि० नमकील। स्वाद में नमक-जैसा गारा।

नेपथ्य-सज्ञा पु० मूर्ख की पश्चिमा  
पश्चिमात्मा एक ग्रह।

नेपथ्य-सज्ञा पु० १. वेत-भूषा। यन्त्रावट।  
२. नाट्यमाला की भीखरी भाग, जहाँ प्रायः  
अपना धन गजत है। शृंगारपर।

नेपाथ-सज्ञा पु० भारत के उत्तर में एक  
प्रसिद्ध पहाड़ी देश।

नेपथी-वि० १. नेपाथ में रहनेवाला।

२. नेपाथ-सम्बन्धी। ३. नेपाथी भाषा।

नेपथ-सज्ञा पु० दे० "नेपथ"।

नेफा-सज्ञा पु० [फा०] लरंगे या प्रायजामे  
में गारा या द्वात्रापद डालने या स्थान।

नेव\*-सज्ञा पु० - [पा०] : दे० "नायव"।  
गहायक। मन्त्री। मुददगार।

नेम-सज्ञा पु० नियम। पापना। रीति।  
इन्द्र। यज्ञ। धर्म की दृष्टि से मुख्य क्रियाओं  
का पालन।

यो०-नेम-धर्म=पूजा-पाठ, व्रत-उपवास  
आदि।

नेमि-सज्ञा स्त्री० १. चन्द्र-परिधि। २. कूर्प  
की जगत। चाने, पाँ, धेरा। कूर्प की  
जमवट। ३. प्रातःभाग।

नेमा पु० १. नेमिनाय तौरकर। २.  
वज्र।

नेमी-वि० दे० "नियम"। व्रत का पालन  
करनेवाला। पूजापाठ, व्रत आदि करने  
वाला।

नेरानो-क्रि० स० निराना।

क्रि० अ० निकट पहुँचना।

नेरवा-सज्ञा पु० पयाल। डाँडी।

नेरु-क्रि० वि० निकट। पास। नियरे।

नेव\*-सज्ञा पु० दे० "नेव"।

नेवा स्त्री० दे० "नीव"।

नेवग\*-सज्ञा पु० दे० "नेग"।

नेवज-सज्ञा पु० नैवेद्य। देवता को चढ़ाई।

जानेवाली मिठाई या पकेवान भोग।

नेवतता-क्रि० स० निमित्त करना। नेवता

भोजना। भोजन करने की बुलावा।

नेवता-सज्ञा पु० दे० "न्योता"।

नेवर-सज्ञा पु० १. दे० "नेपथ"। प्रायजेव।

२. नेयला।

यज्ञा स्त्री० धोड़ा के पेरों में गड़ से उत्पन्न  
धातु।

नंदि० बुरा।

नेवला-वि० अ० निवारण या दूर होना।  
समाप्त होता।

नेपथ-सज्ञा पु० नकुल। न्याला। एक छोटा  
जुड़ा जो ताँप या ताँप है और उसे या  
जता है।

नेपाज-वि० दे० "निवाज"।

नेवाजिदा-सज्ञा स्त्री० [फा०] शृषा। दया।

निवाजो-क्रि० म० धरण में ली। शृषा  
स्त्री।

नेवाज-सज्ञा पु० शृषा। दया। मेहरवान।

नेवाला\*-क्रि० स० दे० "निवाला"। दूर  
या अलग करना।

नेवारी-सज्ञा स्त्री० सनमुल्लिखी। जूही की  
जाति का एक फोपा।

नेवु\*-क्रि० वि० तनिके। जेरा।

क्रि० वि० योडा-सा। तनिके-सा।

जेरा-सा।

नेव-वि० [फा०] जो न हो। नास्ति।

यो०-नेव-नावद=नष्ट-भूट। बर्बाद।

नेवो-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. न होना।

अनेस्तिव। नाश। २. बालस्य।

नेह-सज्ञा पु० १. प्रेम। स्नेह। प्रीति।

२. चिकनाई। तेल या घी।

नेहो\*-वि० स्नेह करनेवाला। प्रेमी। स्नेही।

मित्र। सुहृद।

ने-सज्ञा स्त्री० १. दे० "नय"। नदी। २.

बाँस की नली। वाँसुरी। ३. हुक्के की

निगाली।

नेवत\*-वि०, अज्ञा पु० दे० "नेवत"।

दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा।

इस दिशा के अधिपति नेवतति है। इस

कारण इसे नेवत कहते हैं।

नेक, नेकु-वि० दे० "नेक"। "नेकु"। रच।

तनिके।

नेकुद-सज्ञा पु० निपटता। समीपता।

सामोप्य।

नेगम-वि० निगम सम्बन्धी। जिसमें ब्रह्म आदि

का प्रतिपादन हो। उपनिषद्।

सज्ञा पु० १ उपनिषद् भाग। २. नीति।  
३ वणिक्। ४ नागर। ५ नायक ६.  
पय। मार्ग। ७ कारपोरेशन का सदस्य।  
नैचा-सज्ञा पु० [फा०] हुक्के की मली।  
नैचाबद-सज्ञा पु० [फा०] हुक्के का नैचा  
बनानेवाला।

नैज-वि० आत्मीय। निजी।  
नैजाना-क्रि० अ० 'झुक या लच जाना।  
नैतिक-वि० नीति संबंधी। आचार-व्यवहार-  
सम्बन्धी।

नैदाघ-वि० ग्रीष्म ऋतु से सम्बन्ध रखने-  
वाला।

नैन या नैना-सज्ञा पु० १ दे० 'नयन'। नैत्र।  
आँख। २ पशु बाँधने की रस्सी।

नैनमुख-सज्ञा पु० एक प्रकार का सफेद चिकना  
सूती कपड़ा।

नैनी-सज्ञा पु० नवनीत। मक्खन।

नैपाल-वि०, सज्ञा पु० दे० "नेपाल"। नेपाल-  
संबन्धी। नेपाल में होनेवाला।

नैपाली-वि० नेपाल देश का निवासी। नेपाल  
में रहने या होनेवाला।

नैपुण्य-सज्ञा पु० निपुणता। कुशलता।  
कमाल। होशियारी। चतुराई।

नैमित्तिक-वि० किसी कारण या प्रयोजन  
से होनेवाला कार्य। निमित्त-सम्बन्धी।  
स्पोटार आदि का उत्सव।

नैमिष-सज्ञा पु० एक तीर्थ।

नैमिवारण्य-सज्ञा पु० एक प्राचीन वन, जो  
नैमिष तीर्थ के निकट है और आजकल  
त्रिबुआ का तीर्थस्थान माना जाता है। नैम-  
हार।

नैया\*०-सज्ञा स्त्री० नाव। नाता।

नैयार्थिक-वि० न्यायशास्त्र का ज्ञाता। न्याय-  
वेत्ता।

नैरतय-सज्ञा पु० दे० "निरतरता"।

नैर\*०-सज्ञा पु० १ नहर। नगर। २ देश।  
जापद।

नैराश्य-सज्ञा पु० निराशा। माउमेदी।

नैर्मल्य-सज्ञा पु० निर्मल्यता। सुद्धता। स्व-  
च्छता।

नैर्ऋत-वि० नैर्ऋति-सम्बन्धी।

सज्ञा पु० १ राक्षस। २ पश्चिम दक्षिण  
कोण का स्वामी।

नैर्ऋति-सज्ञा स्त्री० दक्षिण और पश्चिम  
के बीच की दिशा।

नैवेद्य-सज्ञा पु० देवता को चढ़ाई जानेवाली  
सामग्री। देवता का भोग। अर्पण।  
प्रसाद।

नैपथ्य-वि० निपथ्व देश-सम्बन्धी। निपथ्व देशका।  
सज्ञा पु० १ निपथ्व-देश के राजा नल।  
२ श्रीहर्ष-रचित सङ्कृत का एक महा-  
काव्य।

नैष्ठिक-वि० [स्त्री० नैष्ठिकी] १ निष्ठा-  
वान्। निष्ठायुक्त। श्रद्धा-भक्ति-युक्त। २  
मरणवाल के कर्तव्य।

सज्ञा पु० १ धार्मिक। २ ब्रह्मचर्य पालन  
करनेवाला। ब्रह्मचारी।

नैश-वि० निशा-सम्बन्धी। रात को।

नैसर्गिक-वि० स्वाभाविक। प्राकृतिक। कुद-  
रती।

नैता\*०-वि० घुरा। खराब।

नैसिक, नैसुक-वि० थोड़ा। तनिक।

नैहर-सज्ञा पु० स्त्री के पिता का घर। पीहर।  
भायका।

नोभार्-सज्ञा पु० रस्सी वा टुकड़ा, जिससे  
दूध दुहते समय गाय के पीछ के पंर बाँध  
दिये जाते हैं।

नोई या नोई-सज्ञा स्त्री० दे० "नोत्रा"।

नोर-सज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० नुकीला]  
उम ओर का मिरा, जिस ओर बाई बस्तु  
बराबर पतली पड़ती गई हो। सूदन अग्र  
भाग। निवर्ण हुआ काना।

वि० नोरादार। नाकीला।

नोद शोक-सज्ञा स्त्री० १ सजावट।  
वनाय सिंगार। ठाठ-याद। २ तेज। ३.  
अनिक। सपाव। दण। ४ चुभनेवाली  
चाँद। व्यस्य। घाना। जाबाजा। छेड़-  
छाट।

नोवना-वि० स० ललचना।

नोवदार-वि० [फा०] १ जिसमें नोव हो।  
पना। चुभनेवाला। चित्त में चुभनेवाला।  
२ नागदार।

नोका-शोंकी-गजा स्त्री० दे० "नोच-शोर"।  
 नोका-वि० दे० "नोका"।  
 नोच-गजा स्त्री० नोचना। नोचने की क्रिया  
 या भाव। नोचना। बकोट। गगोट।  
 छीनना। काटना। लूट।  
 नोच-खसोट-गजा स्त्री० छीनाझपटी। लूट।  
 जवरदन्ती बीच-माँच करके लेना।  
 नोचना-त्रि० स० झटके से सीचना। उखाटना।  
 हुनी और हिरान करके माँगना या लेना।  
 'नख' आदि से विदीर्ण करना।  
 नोचू-वि० नोचने-खसोटने या छीनने-झपटने  
 वाला।  
 नोट-सज्ञा पु० [अंग्रे०] १. टाँवने या लिखने  
 का काम। २. लिखा हुआ पत्र। पत्र।  
 चिट्ठी। ३. आशय या अर्थ प्रकट करने  
 वाला लेख। टिप्पणी। ४. सरकार की  
 ओर से जारी किया हुआ बागज वा  
 सिक्का, जिस पर रुपये की सरया के  
 साथ यह भी लिखा रहता है कि सरकार  
 से उतना रुपया मिल जायगा। सरकारी  
 हुडी।  
 नोटबुक-सज्ञा पु० [अंग्रे०] याद रखने की  
 बातों को लिखने की वही या कापी।  
 नोटिस-सज्ञा पु० [अंग्रे०] सूचना-पत्र।  
 वह पत्र, जिस पर सूचना लिखी हो।  
 किसी को आवश्यक सूचना दिया जाने  
 वाला बागज। विज्ञापन। इस्तहार।  
 नोचन-सज्ञा पु० १. प्रेरणा। चलाने या  
 हाँकने का काम। २. बेलों को हाँकने  
 की छड़ी या कौड़ा। ओगी। पैना।  
 नोन-सज्ञा पु० दे० "नमक"।  
 नोनचा-सज्ञा पु० नमक मिठी हुई आम की  
 पाँके। नमकीन अचार।  
 नोनछा-सज्ञा स्त्री० लोनी मिट्टी।  
 नोन-सज्ञा पु० [स्त्री० नोनी] १. नमक  
 का वह अंग जो पुरानी बीबारी तथा सीव  
 की जमीन में लगा मिलता है। २. लोनी  
 मिट्टी। ३. सीताफल। शरीफ।  
 वि० १. नमन मिला। गारा। २.  
 लावण्यमय। मुदर। सलोना।  
 त्रि० स० बाय-भंस आदि के पर बाँधना।

नोनिया-गजा पु० नमक बनानेवाली एक जाति।  
 नोनिया-स्त्री० अमलोनी। लोनिया।  
 नोनी-गजा स्त्री० लोनी मिट्टी। अमलोनी  
 या पोधा। लोनिया।  
 नोनी-वि० दे० "नोनी"।  
 नोर, नोल-वि० दे० "नवल"।  
 नोचना-त्रि० स० दुहुने समय रग्नी से  
 गाय के पेर बाँधना।  
 नोहर-वि० बहुत सुन्दर। दुलभ। जल्दी न  
 मिलनेवाला। अद्भुत। अनोखा।  
 नौ-वि०, सज्ञा पु० १. नीचा। नाव। २.  
 एक बम दस की सरया।  
 नुहा-—नौ दो ग्यारह होना=उतावरी से  
 भाग जाना। चल देना। चम्पत हो जाना।  
 नौकर-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० नौकरानी]  
 १. दास। मेवक। चाकर। टहलडा। खिद-  
 मतगार। २. कोई काम करने के लिए  
 वेतन आदि पर नियुक्त मनुष्य। वृत्तनिक  
 बमचारी।  
 नौकरशाही-सज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य की  
 ऐसी शासन प्रणाली, जिसमें सारी राजसत्ता  
 केवल बड़े-बड़े राजवर्त्मचारियों के हाथ में  
 रहती है।  
 नौकराना-सज्ञा पु० नौकरो को मिलनेवाली  
 दस्तूरी।  
 नौकरानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] घर वा काम-  
 धारा करनेवाली स्त्री। मजदूरी। दामी।  
 नौकरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] नौकर वा  
 नौम। सेवा। टहल। खिदमत। ऐसा काम  
 जिसके लिए वेतन मिलता हो।  
 नौकर-रोश-सज्ञा पु० [फा०] जिसकी जीविका  
 नौकरी से चली हो।  
 नौका-सज्ञा स्त्री० विस्त्री। नाव।  
 नौगा-सज्ञा स्त्री० आभूषण-विशेष, पहुँची।  
 मंगन।  
 नौग्रही-सज्ञा स्त्री० हाथ में पहनने का एक  
 अंग।  
 नौछावर-सज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"  
 नोज-अध्य० ईश्वर न बरे। ऐसा न हो  
 (अनिच्छा-सूचक) न हो। न रही (वे  
 परवाही)।

नीजवान-वि० [फा०] नवयुवक। तरुण।  
नीजा-सज्ञा पु० १. बाढाम। २. चिलगोजा।  
नीजी-सज्ञा स्त्री० दे० "न्योजी"।

\*अव्य० भले ही न हो।

नीटकी-सज्ञा स्त्री० ब्रज में होनेवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध नाटक, जिसमें नगाड़े पर चौबोले गाकर अभिनय किया जाता है।

नीतन\*-वि० दे० "नूतन"।

नीनम\*-वि० अत्यंत नवीन। बिल्कुल नया। ताजा।

सज्ञा पु० विनय। नम्रता।

नीता-वि० नवीन। ताजा।

नीधा\*-वि० दे० "नवधा"।

नीनथा-सज्ञा पु० बाहु पर पहनने का नौ नगों का एक गहना।

नीना-क्रि० अ० दे० "नवना"। लचना। झुकना। नम्र होना।

नीबड-वि० जिसकी दशा हाल में ही सुधरी हो। हाल में बड़ा हुआ।

नीबत-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ बारी। पारी। २ गति। हालत। दशा। उपस्थित दशा।

३ समीप। ४ मंगलसूचक वाद्य, विशेषतः सहनाई और नगाडा।

मुहा०—नीबत झडना=नीबत बजना। नीबत बजना=आनंद-उत्सव होना। प्रताप या ऐश्वर्य की घोषणा होना।

नीबतलाना-सज्ञा पु० [फा०] १ घाघगृह। २. द्वार के ऊपर बना हुआ वह स्थान, जहाँ बैठकर नीबत बजाई जाती है। नवकारखाना।

नीबती-सज्ञा पु० १. नीबत बजानेवाला। नसारची। २. द्वार पर पहना देनेवाला। पहरेदार। ३. बिना सेवार का सजा हुआ घोडा। ४. बड़ा खेमा या तबू।

नीमासा-सज्ञा पु० गर्म के नव मास का उभाव। सत्कार-विशेष।

नीमि\*-वि० स० एव सरहजुन प्रयोग, जिसका अर्थ है "मे नमस्कार करता हूँ"।

नीमी-सज्ञा स्त्री० पक्ष की नयी विधि। नयमी।

नीरंगी\*-सज्ञा पु० १ औरंग (औरंगजेब) का स्वावर। २. पक्षी-विशेष।

नीरगी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "नारगी"।

नीरतन-सज्ञा पु० दे० "नवरतन"। नौ नगों का गहना।

सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चटनी। नीरवनी।

नीरोज-सज्ञा पु० [फा०] पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन। इस दिन बहुत आनंद-उत्सव मनाया जाता था। त्योहार का दिन। खुशी का दिन। शकबर ने इस नाम का एक मेला चलाया था।

नील\*-वि० दे० "नवल"।

नीलखा-वि० जिसका मूल्य नी लास हो। जडाऊ और बहुमूल्य हार। अनमोल।

नीशा-सज्ञा पु० [फा०] वर। दूल्हा।

नीसत-सज्ञा पु० सीलहा शृंगार। सिंगार।

नीसर-सज्ञा पु० १ धूर्तता। चालबाजी। जालसाजी। २ नी लडा का हार।

नीसरिया-वि० चालबाज। धूर्त। जालसाज।

नीसावर-सज्ञा पु० [फा०] एक तीक्ष्ण खार जो सींग, हड्डी, खुर, बाल आदि का भस्म से अर्क खींचकर निकाला जाता है।

नीसिखिया, नीसिख्या-वि० नवसिखित। नया सीखा हुआ। जिसने कोई काम हाल में सीखा हो। जो सीखे हुए काम में दक्ष या कुशल न हुआ हो।

नीसेना-सज्ञा स्त्री० जल में लडनेवाली सेना। जलसेना।

नीहड-सज्ञा पु० मिट्टी की नई हाँडी।

न्यप्रोष-सज्ञा पु० १. वट-वृक्ष। वरगद। २. समी वृक्ष। ३. बाहु। ४. महादेव। ५. विष्णु।

न्यस्त-वि० १. स्थापित। रखा हुआ। धरा हुआ। २. सजित। रक्षित। ३. वंशया या जमाया हुआ। चुनकर रखाया हुआ। ४. समर्पित। ५. फँसा हुआ। डाला हुआ। त्यक्त। छोड़ा हुआ। ६. जमानव रखा हुआ।

न्यस्त शस्त्र-सज्ञा पु० जिराने शरथ छोड़ दिया हो। परास्त। हारा हुआ।

न्याज\*-सज्ञा पु० दे० "न्याय"।

न्यात-सज्ञा पु० मीना। डील। पात।

न्याना\*-वि० अज्ञान। अनजान। नाममत्त।

न्याति\*-सज्ञा स्त्री० जाति।

न्याय-सज्ञा पु० १. उचित। गयार्थ। नियम के अनुकूल। इमाफ। नीति-गुस्त। २. विनी मामत्रे-मुक्दमे में दोषी और निर्दोष, अधिकारी और अनधिकारी आदि का निर्धारण। ३. वह शास्त्र, जिसमें किसी वस्तु के गयार्थ ज्ञान के लिए विचारों की उचित योजना का निरूपण होता है। यह छ दर्शनों में है और इसके प्रयत्न गौतम ऋषि बहे जाते हैं। तर्कशास्त्र।

न्यायके-सज्ञा पु० दे० "न्यायकर्त्ता"।

न्यायकर्त्ता-सज्ञा पु० दो पक्षों के विवाद का निर्णय करनेवाला अधिकारी।

न्यायतः-क्रि० वि० न्याय से। ईमान से। ठीक-ठीक।

न्यायपरता-सज्ञा स्त्री० न्यायशीलता। न्याय का भाव।

न्यायवान्-सज्ञा पु० [स्त्री० न्यायवती] न्याय पर चलनेवाला। न्यायी।

न्यायाधीश-सज्ञा पु० न्यायकर्त्ता। मुकदमे का फैसला करनेवाला अधिकारी। इन्साफ करनेवाला।

न्यायालय-सज्ञा पु० अदालत। कचहरी। वह स्थान, जहाँ मुकदमे का फैसला होता हो।

न्यायी-सज्ञा पु० न्याय पर चलनेवाला। उचित पक्ष ग्रहण करनेवाला। न्यायकर्त्ता।

न्याय्य-वि० उचित। न्यायसंगत।

न्याय-वि० [स्त्री० न्यायी] १ जो पात न हो। दूर। अलग। पृथक्। अन्य। भिन्न। २. निराला। विलक्षण। अनीला।

न्यायि-सज्ञा पु० सुनारों के नियार (राख

इत्यादि) को धोकर मोना-चाँदी एवम् करनेवाला।

न्याये-क्रि० वि० दूर। पृथक्। अलग।

न्याय-सज्ञा पु० १. नियम-नीति। आचरण-पद्धति। २. उचित पक्ष। विवेक। न्याय। इनाफ।

न्यास-सज्ञा पु० [वि० न्यस्त] १ धरोहर। धाती। स्थापन। रखना। अर्पण। २. त्याग। त्याग। ३. देवता के भिन्न-भिन्न अंगों का ध्यान करते हुए मन्त्र पढ़कर उन पर विशेष बर्णों का स्थापन। तांत्रिकों की क्रिया-विशेष।

न्यून-वि० १. अल्प। कम। थोड़ा। क्षीण। २. नीचा। घटकर।

न्यूनता-सज्ञा स्त्री० कमी। हीनता। अल्पता।

न्योछावर-सज्ञा स्त्री० दे० "निछावर"।

न्योजी-सज्ञा स्त्री० १ लीची नामक फल। २. नेजा। चिलगोजा।

न्योतना-क्रि० स० किसी उत्सव आदि में सम्मिलित होने के लिए किसी को बुलाना।

न्योता देना। निमन्त्रण देना।

न्योतहारी-सज्ञा पु० निमन्त्रित। न्योते में आया हुआ आदमी।

न्योता-सज्ञा पु० १ बुलावा। निमन्त्रण। २ दावत। ३ इष्ट-मित्र या सचची इत्यादि के यहाँ किसी कार्य के अवसर पर दिया जानेवाला धन या वस्तु।

न्योला-सज्ञा पु० दे० "नेवला"।

न्योली-सज्ञा स्त्री० हठरोप की एक क्रिया जिसमें पेट को पानी से धुद करने हैं।

न्याना \*†-क्रि० अ० दे० "न्याना"।

प

प-हिंदी वर्णमाला का इक्कीसवाँ और पचासवाँ पहला अक्षर। इसका उच्चारण थोठ से होता है। यह स्पर्श वर्ण कहलाता है, क्योंकि इसके उच्चारण में दोनों श्रोत्र मिलते हैं।

पंक-सज्ञा पु० १ कीचड़। कीच। २. लेप।

पंकज-वि० कीचड़ से उत्पन्न होनेवाला। सज्ञा पु० कमल। पद्म।

पौ०-पंकज-पौ०=कमल-पान्ति।

पंकजम्भा-सज्ञा पु० कमल।

वि० कीचड़ से पैदा होनेवाला।

पंकजराग-सज्ञा पु० पंचराग मणि।

पकजात-सज्ञा पु० कमल । पक्क ।  
 पकजासन-सज्ञा पु० ब्रह्मा । कमलामन ।  
 पकजित्-सज्ञा पु० गरुड के एक पुत्र का नाम  
 (महाभारत) ।  
 पकजिनी-सज्ञा स्त्री० कमलिनी ।  
 पकप्रभा-सज्ञा पु० जैनमत के अनुमार नरक  
 के सात भागों में से एक, जहाँ कीचड़ प्रकाश  
 का स्थान ग्रहण करता है ।  
 पकरुह-सज्ञा पु० कमल । पक्क । पन्न ।  
 पकार-सज्ञा पु० १. सेतु । २. बाँध । ३.  
 मापान । सीढ़ी ।  
 पकिल-वि० पक्युक्त । जिसमें कीचड़ हो ।  
 कीचड़ से सना हुआ ।  
 सज्ञा स्त्री० नौका । नाव ।  
 पकित-सज्ञा स्त्री० १ श्रेणी । कतार ।  
 पाँति । २. चात्तीस अक्षरा का एक वैदिक  
 छंद । ३ एक वर्णवृत्त । ४ दम की सदया ।  
 ५ कुलीन ब्राह्मणों की श्रेणी । ६ भोज में  
 एक साथ बैठकर खानेवालों की श्रेणी ।  
 पाँति ।  
 पकितचर-सज्ञा पु० कुरर पक्षी । कुलग ।  
 वि० पकितया म चलनेवाला ।  
 पकितच्युत-वि० किसी दाप के कारण जानि  
 से बाहर किया हुआ ।  
 पकितदूषक-वि० नीच । कुजाति ।  
 सज्ञा पु० एक पकित में बैठकर भोजन न कर  
 सवन योग्य व्यक्ति ।  
 पकितपादन-सज्ञा पु० पकित को पवित्र करने-  
 वाला । यादिय ब्राह्मण । वह ब्राह्मण,  
 जिसको यज्ञादि में बुलाना, भाजन कराना  
 और दान देना श्रेष्ठ माना गया है ।  
 पकितयद्ध-वि० उत्तम में रखा या रखा हुआ ।  
 शर्णावद्ध । प्रमगद्ध ।  
 पकितबाह्य-वि० जानिच्युत ।  
 पत्त-सज्ञा पु० डेना । पत्र ।  
 मुहा०-पत्र जमना=१ न रहने का लक्षण  
 दिखाई पड़ना । २ बहने या बुरे समुह  
 पर जाने का समझ दिखाना । घुँगा का  
 प्रारम्भ होना । ३ प्राण गीने के लक्षण दिखाई  
 पड़ना । मृत्यु के लक्षण । सामन भावा ।  
 पत्र लगना=पक्षी के समान बेगवान् होना ।

पेखडी-सज्ञा स्त्री० दे० "पख्डी" । फूलों की  
 पत्ती । पुष्पदल ।  
 पला-सज्ञा पु० (स्त्री० पत्नी) वह वस्तु,  
 जिसे हिलाकर लोग हवा का भोका किसी  
 ओर ले जाते हैं । व्यजन । विजना । वेना ।  
 पला-कुली-सज्ञा पु० पत्ता खींचनेवाला कुली  
 (मजदूर) ।  
 पलापोश-सज्ञा पु० पखे का गिलाफ ।  
 पखी-सज्ञा पु० १ पक्षी । चिटिया ।  
 २ पाँखी । पतिगा । ३ एक प्रकार का  
 ऊनी कपड़ा ।  
 सज्ञा स्त्री० छोटा पखा ।  
 पेखुडा†-सज्ञा पु० पखोरा । कधे और बाँह  
 का जोड़ ।  
 पेखुडी\*†-सज्ञा स्त्री० फूल का दल । पखड़ी ।  
 पुष्प-दल ।  
 पग-वि० १ दे० पगु । लँगडा । २ बेकाम ।  
 ३ स्तब्ध ।  
 सज्ञा पु० आसाम की ओर पाया जानेवाला  
 एक विशेष प्रकार का पड़ और लकड़ी । एक  
 तरह का नमक ।  
 पगत, पगति-सज्ञा स्त्री० १ पाँती । पकित ।  
 २ भाज के समय भाजन करनेवाला की  
 पकित । ३ भाज । ४ सभा । समाज ।  
 पगा-वि० [स्त्री० पगी] १ लँगडा । २.  
 बेकाम । ३. स्तब्ध । ४ पतना । पतिहा ।  
 पग-वि० जो पैर से चल न सक्ता हो ।  
 लँगडा ।  
 सज्ञा पु० १ शनिग्रह । २ एक प्रकार का  
 बलराग, जिससे रागी चल फिर नहीं सकता ।  
 पगुगति-सज्ञा स्त्री० घणित छंद का एक दाप,  
 जो किसी घणित छंद में लघु के स्थान में  
 गुरु या गुरु के स्थान में लघु आ जाने से  
 होता है ।  
 पगुल-वि० पगु । लँगडा ।  
 सज्ञा पु० गण्डे रंग का पात्र ।  
 पच-वि० पाँच । पाँचवाँ ।  
 सज्ञा पु० १ पाँच की गणना या धरा ।  
 २ समुदाय । समाज । ३ जनता ।  
 मान । जनसाधारण । ४ पाँच या अधिक  
 आदिमियों का समाज, जो किसी भगड़े या

मामले को निपटाने के लिए एकत्र हो ।  
ग्याम करनेवाली सभा । ५ यह जो फौज-  
दारी के मुकदमे में अदालत को गम देने  
के लिए नियुक्त हो ।

मुहा०—गम की भीर = जन्ता की कृपा ।  
गमका आशीर्वाद । पच की दुहाई =  
मय लागे से अग्याय दूर करने या सहायता  
करने की पुकार । पच परमेस्वर = दस आद-  
मियों का कहना ईश्वर-वाक्य के तुरन्त है ।  
(किसी को) पच मानना या बदना  
= भगवत् निपटाने के लिए किसी को नियत  
करना ।

पचक—सज्ञा पु० १ पाँच का समूह । पाँच का  
समूह । २ वह, जिसके पाँच अवयव या  
भाग हों । ३ धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र  
जिनमें किसी शुभ, कार्य का प्रारम्भ  
निषिद्ध है । पचम्बा । ४ शकुन्तलास्त्र ।  
५ पचायन ।

पचकन्या—सज्ञा स्त्री० पुराणानुसार अहल्या,  
द्रौपदी, कुन्ती, तारा और महादेवी ये 'पच-  
कन्या' हैं । य बहुत ही पवित्र मानी  
गई हैं ।

पचनत्पाण—सज्ञा पु० यह घोड़ा जिसका  
सिर (माथा) और चारा पैर सफेद हों और  
शेष शरीर लाल या काला हो ।

पचकबल—सज्ञा पु० पाँच ग्रास अन्न जो स्मृति  
के अनुसार भोजन के पूर्व कुत्ते, पतित,  
कीए कोढ़ी, रोगी, आदि के लिए अलग  
निकाल दिया जाता है । अग्रशान । आत्म  
नैवेद्य के पाँच ग्रास ।

पचकलेश—सज्ञा पु० यागशास्त्रानुसार पाँच  
कलश ।

पचकोण—वि० पाँच कोना या अक्षर ।

पचकोश—सज्ञा पु० उपनिषद और वेदांत के  
अनुसार शरीर बनानेवाले पाँच काश  
(स्तर), जिनके नाम हैं—अन्नमय, प्राणमय,  
मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय  
कोश ।

पचकोश—सज्ञा पु० १. पाँच वास की लम्बाई  
और चौड़ाई के बीच बसी हुई काशी की  
पवित्र भूमि । २ काशी की परिक्रमा ।

पचकोशी—गज्ञा स्त्री० पाँच बाग की परि-  
क्रमा । काशी की परिक्रमा ।

पंचप्रोश—गज्ञा पु० पचकोश । काशी ।

पचगगा—सज्ञा स्त्री० काशी में गंगाजीका  
एक घाट जहाँ, गंगा, यमुना और गङ्गवर्ती  
की समुक्त धारा के साथ अद्भुत रूप से  
भिरणा और धूसपापा नामक दो नदियाँ मिलती  
हैं । पचनद ।

पचगत—सज्ञा पु० बीजगणित के अनुसार यह  
गति, जिनमें पाँच वर्ण हों ।

पचगव्य—गज्ञा पु० गाय में प्राप्त होनेवाले  
पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोमूत्र और  
गोमूथ—का मिश्रण जो बहुत पवित्र माना  
जाता है ।

पचगीड—सज्ञा पु० ब्राह्मणा के पाँच  
भेद—सारम्बत, वाग्यकुब्ज, गौड, मैथिल  
और उत्तल ।

पचजन—सज्ञा पु० १ पाँच या पाँच प्रकार  
के जना का समूह । २ गधर्व, पितर,  
देव, अनुर और राक्षस । ३ ब्राह्मण,  
क्षत्रिय, वैश्य, वृद्ध और निषाद । ४ मनुष्य,  
जीव और शरीर से सबंध रखनेवाले प्राण  
आदि । ५ मनुष्य । जन-समुदाय । ६  
पुरण ।

पचजन्य—सज्ञा पु० श्रीकृष्णचंद्र का प्रसिद्ध शत्रु ।

पचतत्त्व—सज्ञा पु० १. पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु  
और आकाश का समुदाय । पचभूत । तत्त्वों  
के अनुसार पाँच तत्त्व । २. काममागिया का  
पाँच वर्ग ।

पचतन्मात्र—सज्ञा पु० पञ्च स्पर्श, रूप, रस  
और गंध का समूह । इन्हें अतीन्द्रिय माना  
गया है ।

पचतपा—सज्ञा पु० पचाग्नि तापनेवाला ।  
चारा और आग जलाकर धूप में बैठकर तप  
करनेवाला ।

पचता—सज्ञा स्त्री० पाँच का भाव । विनाश ।  
मृत्यु ।

पचतिथत—गज्ञा पु० आयुर्वेद में पाँच बड़ी  
शोषधियाँ का समूह—गिलाय (गुरुच),  
वटकारि (भटवटैया), माठ, कुट और  
चिरायना (चन्द्रस्त) ।

पंचतोलिया—सज्ञा पु० एक प्रकार का भीना महीन कपड़ा ।

पंचत्व—सज्ञा पु० १. पाँच का भाव । २. विनाश । मृत्यु । मीत । मरण ।

पंचदशी—सज्ञा स्त्री० पूर्णमासी । अमावस्या ।

पंचदेय—सज्ञा पु० पंच देवता । पाँच प्रधान देवता जिनकी उपासना हिंदुओं में प्रचलित है—सूर्य, महादेव, विष्णु, गणेश और देवी ।

पंचद्रविड—सज्ञा पु० दक्षिणवासी—महाराष्ट्र, तेलंग, कर्णाट, गुजरा और द्रविड—ब्राह्मणों का समुदाय ।

पंचनद—सज्ञा पु० १. पंजाब की पाँच प्रधान नदियाँ जो सिन्धु नदी में मिलती हैं—सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम । २. पंजाब प्रदेश ।

पंचनाथ—सज्ञा पु० पाँच तीर्थस्थान—वदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रंगनाथ और श्रीनाथ ।

पंचनामा—सज्ञा पु० वह कागज, जिस पर पंच खोगा ने अपना निर्णय या फैसला लिखा हो ।

पंचपति—सज्ञा पु० एक ही स्त्री के पाँच पति—पाण्डव । पंचभर्ता ।

पंचपल्लव—सज्ञा पु० पाँच वृक्षों के पत्ते । आम, जामुन, कैय, बिजौरा (बीजपुरव) और वेल, इन पाँच वृक्षों के पत्त ।

पंचपादव—सज्ञा पु० पाण्डु राजा के पाँच पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ।

पंचपात्र—सज्ञा पु० १. पूजा का पात्र-विशेष । २. पाँच पात्रों से किया जानेवाला । ३. पार्वण श्राद्ध ।

पंचपीरिया—सज्ञा पु० सुसलमानों के पाँचों पीरों की पूजा करनेवाला (सुसलमान) ।

पंचप्राण—सज्ञा पु० प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान नामक पाँच वायु ।

पंचभर्तारो—सज्ञा स्त्री० जिन स्त्री के पाँच पति हो । पाँच पतिवाली स्त्री । द्रौपदी ।

पंचभूत—सज्ञा पु० दे० "पंचतत्त्व" । आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी, ये पाँच तत्त्व हैं ।

पंचम—वि० [स्त्री० पंचमा] १. पाँचवाँ । २. रचिर । सुंदर । ३. दक्ष । निपुण । सज्ञा पु० १. सान स्वरों में से पाँचवाँ स्वर,

जो कोकिल के स्वर के अनुरूप माना गया है । २. छ. प्रधान रागों में तीसरा राग ।

पंचमवार—सज्ञा पु० वाम-मार्ग में मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मंथन ।

पंचमहापातक—सज्ञा पु० मनुस्मृति के अनुसार पाँच महापाप—ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरु की स्त्री से व्यवहार और इन पातकों के करनेवालों का सतर्ग ।

पंचमहायज्ञ—सज्ञा पु० स्मृतियों के अनुसार पाँच कृत्य, जिनका नित्य करना गृहस्था के लिए आवश्यक है । ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, नृयज्ञ और भूतयज्ञ—अर्थात् पाठ, तर्पण, हवन, अतिथिसेवा और पूजा ।

पंचमहाव्रत—सज्ञा पु० योगशास्त्र के अनुसार पाँच आचरण—अहिंसा, सूनृता, अस्तेय (चोरी का त्याग), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह । इन्हें पतञ्जलि ने 'यम' माना है ।

पंचमौ—सज्ञा स्त्री० १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की पाँचवी तिथि । २. द्रौपदी । ३. व्याकरण में अपादान कारक ।

पंचमुख—सज्ञा पु० १. श्रीमहादेव । शिव । २. सिंह । ३. एक प्रकार का रुद्राक्ष ।

पंचमुखी—वि० १. पाँच मुखवाला । शिवजी । पंचानन । २. सिंह ।

पंचमुद्रा—सज्ञा स्त्री० देव-पूजा में नित्य की जानेवाली पाँच मुद्राएँ—यथा आवाहनी, स्थापनी, सन्निधानी, सम्बोधिनी और सम्मुखीकरणी ।

पंचमूल—सज्ञा पु० पाँच औषधियों की जड़ से बनी एक पाचन-औषध ।

पंचमेल—वि० जिसमें पाँच या नई प्रकार की चीजें मिली हो ।

पंचयाम—सज्ञा पु० दिन ।

पंचरण, पंचरणा—वि० पाँच या अनेक रागों का ।

पंचरत्न—सज्ञा पु० पाँच प्रकार के रत्न—गोना, हीरा, नीलम, लाल और मोती ।

पंचराशिक—सज्ञा पु० गणित में एक प्रकार का हार्माय, जिम्मेदार बार शत राशियों के द्वारा पाँचवी शताब्दी राशि का पता लगाया जाता है ।

पंचसङ्ग—वि० पाँच सङ्गो वा । पाँच सङ्गोवाला हार ।

पचपटो—गङ्गा स्त्री० १. यमुई राज्य में नागिक के पाग गोदावरी-तट पर स्थित एक स्थान, जहाँ रामचन्द्रजी वनवास में रहे थे । गीताहरण यही हुआ था । २. पाँच प्रकार के वृक्षों का समूह ।

पंचपासा—गङ्गा पु० गर्भ रहने से पाँचवे महीने में किया जानेवाला एक मस्वार ।

पचपाण—सज्ञा पु० १ वामदेव के पाँच पाण—द्रवण, क्षीपण, तापन, मोहन और उन्माद । वामदेव के पाँच पुष्पपाणों के नाम ये हैं—वमल, अशोक, आम्र, नव-मल्लिका और नीलोत्पल । २ वामदेव ।

पंचशरद—सज्ञा पु० १ पाँच ममल-सूचक बाजे—तंत्री, ताल, भाँक, नगाडा और तुरही । २ व्याकरण के अनुसार सूत्र, वाक्य, भाष्य, कोष और महाकवियों के प्रयोग ।

पंचशर—सज्ञा पु० १. वामदेव । २ वामदेव के पाँच पाण ।

पंचशिख—सज्ञा पु० १. सिंह । बेसरी । २ सिंघा बाजा । ३ वसिष्ठ मुनि के पुत्र ।

पचसूना—सज्ञा स्त्री० स्नु के अनुसार पाँच प्रकार की हिसाएँ, जो चूल्हा जलाने, आटा आदि पीसने, भाड़ बने, कूटने और पानी का घड़ा रखने आदि गृहकार्यों से होती हैं ।

पचहजारी—सज्ञा पु० दे० “पञ्चजारी”

पचाग—सज्ञा पु० १ ज्योतिष के अनुसार वह तिथिपत्र, जिसमें किसी सवत् के बार, तिथि, नक्षत्र, राग ध्योरेवार दिए गए हों । पचा । जनी । २ प्रणाम का एक भद्र, जिसमें घुटना, हाथ और माथा पृथ्वी पर टेककर प्रणामसूचक शब्द कहा जाता है । ३ पाँच भ्रग या पाँच भ्रगो से युक्त वस्तु । ४ वृक्ष के पाँच भ्रग—जड़, छाल, पत्ती, फूल और फल (वैद्यक) ।

पचाक्षर—वि० जिसमें पाँच अक्षर हों । सज्ञा पु० शिव का एक मन्त्र जिसमें पाँच अक्षर हैं—ॐ नमः शिवाय ।

पचाग्नि—गङ्गा स्त्री० १. एक प्रकार का तप, जिसमें तप करनेवाला अपने चारों ओर अग्नि जलाकर दोपहरी में धूप में बैठा रहता है । २. अन्वाहार्थ्य, गार्हपत्य, आहवर्त्य, आपस्तस्य और तस्य नाम की पाँच अग्नियाँ । ३. छादोप्य उपनिषद् के अनुसार मृष्य, पञ्चैथ, पृथ्वी, पुरुष और यापिन् ।

वि० १ पचाग्नि की उपासना करनेवाला । २ पचाग्नि तापनेवाला । ३ पचाग्नि-विद्या जाननेवाला ।

पचांगुल—वि० पाँच अंगुलि परिमाण-युक्त । पचांगुली—सज्ञा स्त्री० पाँच अंगुलियाँ—अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, और कनिष्ठा ।

पचाध्यायी—सज्ञा स्त्री० श्रीमद्भागवत के राम-मण्डल के पाँच अध्याय । रासपचाध्यायी ।

पचानन—वि० पाँच मुखवाला । सज्ञा पु० १ शिव । २ सिंह ।

पचामृत—सज्ञा पु० दूध, दही, घी, चीनी और मधु मिलाकर देवताओं के स्नान के लिए बनाया जानेवाला द्रव्य ।

पचायत—सज्ञा स्त्री० १ पचो की सभा । पचो की बैठक । किसी विवाद या झगड़े पर विचार करने के लिए चुने गए व्यक्तियों की समिति । गाँवों की समस्याएँ हल करने तथा व्यवस्था आदि की देखभाल करने के लिए वही की जनता-द्वारा निर्वाचित समिति या सभा । २ एक साथ बहुत से लोगों की बातचीत । ३ जातीय सभा ।

पचायतन—सज्ञा पु० पाँच देवताओं की मूर्तियों का समूह । जैसे, राम-पचायतन ।

पचायती—वि० १ पचायत का किया हुआ । पचायत वा । पचायत-मन्वही । २ बहुत से लोगों का मिला-जुला । सब लोगों का ।

पचायती श्रदालत—सज्ञा पु० पचा का न्यायालय । गाँवों में वहाँ की जनता से चुनी गई श्रदालत, जो छोटे-मोटे मामलों का फैसला करती है । किसी विवाद पर निर्णय करने के लिए चुने गए अधिकारियों का न्यायालय ।

**पंचाल—सज्ञा पु०** [स्त्री० पंचाली] १ पांचाल नामक प्राचीन देश। यह देश हिमालय और चवल नदी के बीच गंगा के दोनों ओर था। २ पंचाल-देशवासी। ३ पंचाल देश का राजा। ४ शिव। ५ एक प्रकार का छंद।

**पंचालिका—सज्ञा स्त्री०** १. नदी। नर्तकी। २ पांचाल देश की राजकन्या। द्रौपदी। ३. पुतली। गुडिया। कपुनली।

**पंचाली—सज्ञा स्त्री०** १ पुतली। गुडिया। २ पंचाल देश के राजा की कन्या द्रौपदी। ३. एक गीत। ४ पीपर (ओप०)।

**पंचावस्था—सज्ञा स्त्री०** मनुष्य की पाँच अवस्थाएँ—बाल्य, कुमार, पौगण्ड, युवा और वृद्ध।

**पंचाशत्—वि०** पचास।

**पंचेन्द्रिय—सज्ञा स्त्री०** पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ।

**पद्मा—सज्ञा पु०** १ स्याव, जो प्राणिया के शरीर से या पेड़-पौधा के डठल, तने या हड्डिया से निकलता है। २ फफाले के भीतर भरा हुआ पानी।

**पद्माला—सज्ञा पु०** फफोला या फफोले का पानी।

**पद्मी—सज्ञा पु०** पक्षी। चिड़िया।

**पंजर—सज्ञा पु०** १ शरीर की हड्डिया का समूह या ढाँचा। टठरी। अस्थिसमूच्चय। कनाल। २ पाँजर। पसली। ३ नरीर। देह। ४ पिण्ड।

**पञ्चहजारी—सज्ञा पु०** [फा०] एक उपाधि, जो मुसलमान राजाभा का मगध में रक्षा और दरबारिया का मिती थी। पाँच हजार सैनिकों का सरदार।

**पञ्चा—सज्ञा पु०** १ पाँच का समूह। गहरी। २ हाथ या पैर की पाँचों उँगलिया का समूह। ३ पञ्चा लग्न की समरत या बरपरीक्षा। ४ उँगलिया के सहित हथेली का समूह। जगुल। ५ जुने का समूह भात, जिममें उँगलियाँ रहती हैं। ६ तांग का पत्ता, जिममें पाँच चिह्न या मुद्रियाँ ह।  
**पञ्चा—पञ्चे** नाटक पीछे पञ्चा या चिम-

टना—हाथ धोकर पीछे पड़ना। अपनी सारी शक्ति लगाने के लिए तत्पर होना। पञ्जे में—१ पनड में। मुटठी में। २. अधिकार में। टक्का-पञ्जा—चालवाजी। दाँव पञ्च।  
**पञ्जाब—सज्ञा पु०** [फा०] (वि० पञ्जाबी) यह प्रदेश जो सतलज, व्यास, रावी, चिनाव और भेनग पाँच नदिया से सिंचित है। प्राचीन पञ्चनद देश। अब यह पूर्वी और पश्चिमी दो भागों में बँट गया है। पूर्वी पञ्जाब भारत के अन्तर्गत है और पश्चिमी पञ्जाब पाकिस्तान में है।

**पञ्जाबी—वि०** [फा०] पञ्जाब का।

**सज्ञा पु०** पञ्जाब-निवासी।

**पञ्जारा—सज्ञा पु०** घुनिया।

**पञ्जिका—सज्ञा स्त्री०** पंचांग।

**पंजीरी—सज्ञा स्त्री०** धी में भुना हुआ धनिया, सिंघाड़े आदि का खाटा, जिम्में चीनी, मक्का आदि मिलाकर देवता को प्रसाद चढ़ाने है।  
**पंजेरा—सज्ञा पु०** बरतन में टाँगे आदि देकर जोड़ लगानेवाला।

**पड़ल—वि०** पीला। पाहु यर्ग का।

**सज्ञा पु०** पिंड। शरीर।

**पड़या—सज्ञा पु०** भैर का वच्चा। पाड़ा।

**पड़ा—सज्ञा पु०** (स्त्री० पड़ाइन) किसी तीर्थ या मंदिर का पुजारी।

**पड़ात—सज्ञा पु०** सभा के अधिवेशन के लिए बनाया हुआ मंडप।

**पड़ित—वि०** [स्त्री० पड़िता, पड़िताइन, पड़ितानी] १ पिड़ान्। शनी। शाम्भज। २ कुत। चतुर। प्रवीण। ३ अध्यापक। पत्रावधायी।

**सज्ञा पु०** १ शाम्भज। २ ब्रह्मण।

**पड़िता—सज्ञा स्त्री०** विदुषी।

**पड़िताइन—सज्ञा स्त्री०** पड़ित की स्त्री।

**पड़िताई—सज्ञा स्त्री०** पिड़िता। पान्दिय। पड़ित का नाम।

**पड़िताऊ—वि०** पड़िता के रूप का।

**पड़ितानी—सज्ञा स्त्री०** पड़ित की स्त्री। ब्राह्मणी।

**पट—वि०** १. पीतामह चित्रे हुए मटमैठा। पीता। २. दम। मफद।

पंढर-सज्ञा पु० [ग्री० पण्डरी] एक मन्त्री ।  
पण्डर । पण्डरी । पण्डरी ।

पण्डर-सज्ञा पु० पण्डर मण्ड । डेडहा ।  
पण्डरी-सज्ञा पु० म० पण्डरी । रुई छाटना ।  
पण्डरी-सज्ञा पु० म० रुई धुनी की धुनकी ।  
पण्डर-सज्ञा पु० १ पण्ड । मार्ग । रास्ता ।  
राह । धर्ममार्ग । मा । सम्प्रदाय । २  
आचार-पद्धति । चा । रीति ।

मुहा०-पण्ड गटना=मार्ग में पदार्पण करना ।  
राह लेना । आचरण ग्रहण करना ।  
पण्ड दिखाना=रास्ता बताना । उपदेश  
देना । पण्ड देखना या निहारना=प्रतीक्षा  
करना । किसी के आगमन के लिए  
उत्प्रेक्षित होना । पण्ड में या पण्ड पर  
पाँव देना=चलना । आचरण ग्रहण  
करना । पण्ड पर लगना=चाल ग्रहण  
करना । रास्ते पर होना । किसी के पण्ड  
लगना=अनुयायी होना । किसी के पीछे  
पटना । बराबर लगना । पण्ड सेना=  
आसरा देवता । बाट जोहना ।

पण्डर\*—सज्ञा पु० मार्ग । रास्ता ।  
पण्डरी\*—सज्ञा पु० पण्डर । बटोही । मुसा-  
फिर ।

पण्डर\*—सज्ञा पु० दे० "पण्डर" ।  
पण्डरी—सज्ञा पु० १. पण्डर । बटोही । राही ।  
२. किसी सम्प्रदाय या पण्ड का अनुसरण  
करनेवाला जैसे नानकपण्डरी ।

पण्डर—सज्ञा स्त्री० [फा०] सीख । शिक्षा ।  
उपदेश ।

पण्डरह, पण्डरह—वि० दम और पाव ।  
सज्ञा पु० दम और पाव की सन्ध्या । १५ ।

पण्डर—सज्ञा पु० (अग्ने०) पानी का तल ।  
हुवा भग्ने का एक औजार ।

पण्डर—सज्ञा पु० एक प्रकार का जूता ।

पण्डर—सज्ञा स्त्री० दक्षिण भारत की एक  
नदी और उसी के समीप एक सरोवर  
तथा नगर, जहाँ रामचन्द्रजी ने निवास  
किया था और जिसका रामायण में  
उल्लेख है ।

पण्डर—वि० बड़ा पापी । दुष्ट ।

पण्डर—सज्ञा पु० दे० "पण्डर" ।

पण्डर—सज्ञा पु० १. दे० "डण्डरी" । द्वार ।  
२. मामान । मामग्री ।

पण्डरना—वि० अ० १. तैरना । २. पाव  
लगाना । बाह लेना ।

पण्डरि—सज्ञा स्त्री० प्रवेशद्वार या गृह ।  
डण्डरी ।

पण्डरिया—सज्ञा पु० १. दग्धान । द्वारपान ।  
डण्डरीदार । २. पुन-जन्म या विनाश आदि  
के अवसर पर द्वार पर नाचने-गानेवाला  
याचक ।

पण्डरी—सज्ञा स्त्री० १. दे० "पण्डरि" । २.  
सडाऊ । पाण्डरी ।

पण्डर—सज्ञा पु० १. मनगढ़न्न कहानी ।  
लरी-चोड़ी कथा, जिसे सुनते-सुनते जो ऊब  
जाय । २. व्यर्थ विस्तार के साथ कही हुई  
बात । ३. एक विशेष प्रकार का गीत ।

पण्डर—सज्ञा पु० दे० "परमार" । क्षत्रियों की  
एक उपजाति ।

पण्डरना—वि० स० फँसना । हथाना । दूर  
करना ।

पण्डरी—सज्ञा पु० ममाला बेचनेवाला ।  
किंगाना, मेवा आदि बेचनेवाला ।

पण्डरार—सज्ञा पु० पाँना का खेल । चीपड ।  
पण्डरी—सज्ञा स्त्री० पाँच सेर की तोल या  
बाट । पण्डरी ।

पण्डरी—सज्ञा पु० एक छद्म, जिसे "पण्डरी"  
भी कहते हैं ।

पण्डरी—सज्ञा पु० पण्डरी, कुश की मुद्रिका ।  
पण्डरी\*—वि० अ० दे० "पण्डरी" ।

पण्डरना—वि० अ० दे० "पण्डरी" । घुसना ।  
प्रवेश करना ।

पण्डरना—सज्ञा पु० पण्डरी । प्रवेश । पण्डरी ।  
पण्डरी, पण्डरी—सज्ञा स्त्री० दे० "पण्डरी" ।

डण्डरी । द्वार ।

पण्डर—सज्ञा स्त्री० १. ग्रहण । पण्डरने का  
दग । २. लडाई में एक एक बार आकर पर-  
स्पर गृथना । भिड़त । हाथा-माई । ३.  
बाप, भूल आदि बूढ़ निराशना ।

पण्डर-पण्डर—सज्ञा स्त्री० दे० "पर-पण्डर" ।

पण्डरना—वि० स० १. घटना । घामना । ग्रहण  
करना । २. कावू में करना । गिरफ्तार

करना । ३. कुछ करने से रोक रखना ।  
ठहराना । ४. बूढ़ निकालना । पता लगाना ।  
५. रोकना । टोकना । ६. दौड़ने, चलने या  
और किसी बात में बड़े हुए के बराबर हो  
जाना । ७. आक्रांत करना । घेरना ।  
ग्रसना ।

पकड़वाना—क्रि० स० पकड़ने का काम दूसरे  
से कराना ।

पकड़ाना—क्रि० स० पकड़ना का प्रे० । किसी  
के हाथ में देना या रखना । यमाना ।  
पकड़ने का काम कराना ।

पकना—क्रि० अ० १. गलना । सीझना । २.  
मवाद से भर जाना । ३. फल आदि खाने  
के योग्य होना । ४. आँच खाकर गलना  
या तैयार होना । सिद्ध होना ।

मुहा०—बाल पकना=(बुढ़ापे के कारण)  
बाल सफेद होना । कलजा पकना=जी  
जलना । बहुत दुखी होना ।

पकरना†\*—क्रि० स० दे० “पकड़ना” ।  
धामना ।

पकवान—संज्ञा पुं० घी या तेल आदि में बनी  
खाने की सामग्री ।

पकवाना—क्रि० स० पकाने का कार्य दूसरे  
से करवाना ।

पका—वि० दे० “पक्का” । पका हुआ ।

पकाई—संज्ञा स्त्री० पकाने का काम या मज-  
दूरी ।

पकाना—क्रि० स० १. फल आदि को खाने  
के योग्य तैयार करना । २. फोटे, फुसी,  
धाव आदि को इस अवस्था में पहुँचाना  
कि उसमें पीव या मवाद आ जाय ।  
३. पकना करना । ४. आँच या गरमी  
के द्वारा गलाना या तैयार करना । रींचना ।  
सीझना । उबालना ।

पकायन—संज्ञा पुं० दे० “पकवान” ।

पकौड़ा—संज्ञा पुं० [स्त्री० पकौड़ी] घी या  
तेल में पनी हुई बैसन या पीठी की बड़ी ।

पक्का—वि० [स्त्री० पक्की] १. अनाज या  
फल, जो पुष्ट होकर खाने के योग्य हो गया  
हो । २. पक्का या गला हुआ । ३.  
पुष्ट । ४. साफ और दुरुस्त । तैयार ।

५. जो आँच पर कड़ा या मजबूत हो गया  
हो । ६. अनुभव । निपुण । होशियार ।  
७. आँच पर पका हुआ । ८.  
मजबूत । टिकाऊ । ९. स्थिर । दृढ़ ।  
निश्चित । १०. प्रामाणिक । नपा-तुला ।  
मुहा०—पक्का भोजन या पक्की रमोई=  
पूड़ी-कचौड़ी आदि घी में पका हुआ भोजन ।  
पक्का पानी=१. थोड़ा-या हुआ पानी ।  
२. स्वास्थ्यकर जल । पक्का कागज=वह  
कागज, जिस पर लिखी हुई बात कानून से  
दृढ़ समझी जाती है ।

पक्कर\*—संज्ञा स्त्री० दे० “पाखर” । पाखरी ।  
वि० पक्का । पुख्ता ।

पक्क—वि० १. पका हुआ । पक्का । २.  
दृढ़ । परिपुष्ट ।

पक्कता—संज्ञा स्त्री० पक्कापन ।

पक्कापन—संज्ञा पुं० १. घी आदि से बनी  
खाने की वस्तु । पका हुआ अन्न ।

पक्काशय—संज्ञा पुं० पेट में वह स्थान, जहाँ  
अन्न जाता है और यकृत तथा प्लीहा-  
ग्रंथियों से आए हुए रस से मिलता है ।  
मेदा । अन्नकोष ।

पक्ष—संज्ञा पुं० १. ओर । पार्श्व । तरफ ।

२. किसी विषय के दो या अधिक परस्पर  
भिन्न अंगों में से एक । पहलू । बगल ।

३. किसी दूसरे की बात के विरुद्ध अपनी  
बात ठीक बताना । ४. अनुकूल मत  
या प्रवृत्ति । ५. भगड़ा या विवाद करने-  
वालों में से किसी के अनुकूल स्थिति ।

६. निमित्त । नगाव । संबंध । ७. फीज ।  
मना । बल । ८. सहायक । सत्ता । साथी ।

९. बादियों तथा प्रतिवादियों के अलग-अलग  
समूह । १०. चिड़ियों का डेना । पंग ।

११. शरपक्ष । तौर में लगा हुआ  
पर । १२. चान्द्र मास के पन्द्रह-पन्द्रह दिनों  
के दो विभाग । पार । पक्षधारा । १३.

गृह । पर ।

मुहा०—पक्ष गिरना=मत का युक्तियों-  
द्वारा मिट न हो नटना । [गिरी का]

पक्ष या पक्षपात करना=तरफदारी  
करना । [किनी का] पक्ष लेना=१.

(भगवद् में) किमी की ओर होता । २. गताया जाता ।

पक्ष-सज्ञा पु० १. भिन्न । गृह्य । गहायक । २. विच्छेद ।

पक्षपात-सज्ञा पु० तरफदारी । बिना उचित-अनुचित के विचार के किमी के अनुग्रह प्रयत्न या स्थिति का एक ओर भुलाव । अनुचित गहायता-दान ।

पक्षपाती-सज्ञा पु० तरफदार । अन्धाय में एक पक्ष की सहायता करनेवाला । अनुचित गहायता देनेवाला ।

पक्षपात-सज्ञा पु० धाये भ्रम का लवण । पात्रिज । अघात रोग, जिममें शरीर के दाहिने या बाएँ किमी पार्श्व में सत्र भ्रम प्रियाहीन हो जाते हैं ।

पक्षान्त-सज्ञा पु० पूर्णिमा । अमावास्या । पक्षान्तर-सज्ञा पु० भिन्न-पक्ष । दूसरा पक्ष । पक्षिणी-सज्ञा स्त्री० १. चिटिया । २. पुष्पमासी ।

पक्षिराज-सज्ञा पु० १. पक्षियों का राजा । गृह्य । २. जटायु । ३. एक प्रकार का पक्ष ।

पक्षी-सज्ञा पु० १. चिटिया । २. तरफदार । पक्षवाला ।

पक्षीय-वि० पक्ष का तरफदार । समूह या दल का हिमायती । पक्षवाला ।

पक्षम-सज्ञा पु० १. श्रांत की बरीनी । पलक । २. विजल । ३. नेशर । ४. मूत्र आदि का श्लेष भाग ।

पक्षपात-सज्ञा स्त्री० बरोनिया का गिरना । पलन बन्द होना ।

पक्षडी-सज्ञा पु० १. पालडी । डोगी । वेद-निन्दक । २. छती । कपटी । ३. कट-पुतलियाँ नचानेवाला ।

पक्ष-सज्ञा पु० १. पक्ष । पक्षवारा । आधा महीना । पन्द्रह दिन । पाख । २. व्यर्थ बढ़ाई हुई बात । ३. बाधक नियम । धड़गा । ४. भगडा । बखेडा । ५. दोष । त्रुटि । ६. ऊपर से बढ़ाई हुई शर्त ।

पक्षडी-सज्ञा स्त्री० पखुडी । पखुरी । फूली की पत्ती ।

पक्षराना-वि० ग० धूम्रवाना । पक्षराने का पाम करना या पम्बाना ।

पक्षरी-सज्ञा स्त्री० १. दे० "पाखर" । २. दे० "पक्षरी" ।

पक्षरोडा-सज्ञा पु० दण्ड । गोले या बाँदी का पत्र या पत्र, जो गान के पीछे पर लगाया जाता है ।

पक्षपादा-सज्ञा पु० दे० 'पक्षवारा' । अर्द्ध-भाग ।

पक्षवारा-सज्ञा पु० पक्ष । अर्द्धमास । पन्द्रह दिन । पन्द्रह दिन का पक्ष ।

पक्षवज-सज्ञा पु० दे० "पक्षवज" ।

पक्षान्त-सज्ञा पु० दे० "पापात" । पक्षर ।

पक्षानी-सज्ञा पु० बहावन । मगल । यथा । दे० "पागाना" ।

पक्षराना-वि० अ० प्रक्षान्त । धोना । पानी में धोकर साफ करना ।

पक्षान्त-सज्ञा स्त्री० १. मक्षर, जिममें पानी भरा जाता है । २. धोवनी । ३. मूत्र धोने का बर्तन ।

पक्षाली-सज्ञा पु० पक्षर या मगल से पानी भरनेवाला । भिन्नी ।

पक्षवज-सज्ञा स्त्री० मृदग में छोटा एक प्रकार का बाजा ।

पक्षवज-सज्ञा पु० पक्षवज बजानेवाला । पक्षिपा-वि० दे० "भगडालू" । बलटिया ।

पक्षी, पक्षीरा-सज्ञा पु० दे० "पक्षी" ।

पक्षुरी-सज्ञा स्त्री० दे० "पक्षुरी" । पाँचुरी ।

पक्षुवा-सज्ञा पु० दे० 'पाखन' । बगल ।

पक्षरू-सज्ञा पु० पक्षी । चिटिया । पछी ।

पक्षेय-सज्ञा पु० गाय या भैर को बच्चा होने पर खिलाया जानेवाला खाना ।

पक्षोडा, पक्षोरा-सज्ञा पु० कंधे की हड्डी ।

पक्षोरा-सज्ञा पु० १. कंधे पर की हड्डी । २. बगल ।

पक्ष-सज्ञा पु० १. पद । पैर । पाँव । चरण । २. डग । फाल ।

पक्षडी-सज्ञा स्त्री० छोटा मार्ग । बिना बनाया मार्ग । जंगल या मैदान में वह पतला रास्ता, जो लोगों के चनते-चलते बन गया हो ।

पगड़ी-सज्ञा स्त्री० साफा । मुरेडा । पाग । चीरा । उष्णीष ।

मुहा०-पगड़ी उतारना=१. प्रतिष्ठा भग करना । अपमान करना । बेदज्जती करना । २. ठगना । लूटना । (किसी को) पगड़ी बँधना=१. उत्तराधिकार मिलना । बरागत् मिलना । २. उच्च पद या स्थान प्राप्त होना । ३. प्रतिष्ठा मिलना । (किसी के साथ) पगड़ी बदलना=भाई-चारे का नाता जोड़ना । मित्रता स्थापित करना ।

पगतरी†-सज्ञा स्त्री० १. जूता । २. खड़ाऊँ । पगदासी-सज्ञा स्त्री० १. जूता । २. सड़ाऊँ । चरणदासी ।

पगना-क्रि० अ० १. रस में डूबना । शीरा या चीनी के पाग में पकना । २. किसी के प्रेम में डूबना । ३. सनना । लीन होना । मग्न होना ।

पगनियाँ†-सज्ञा स्त्री० जूती ।

पगरा\*†-सज्ञा पु० १. पग । डग । कदम । २. बड़ो पगड़ी ।

सज्ञा पु० याना आरम्भ करने का समय । प्रभात । तड़का । सवेरा ।

पगला-वि० दे० "पागल" ।

पगहा†-सज्ञा पु० [स्त्री० पगही] १. पघा । गाय भंस आदि बाँधने की रस्मी । पशु बाँधने की रस्सी । २. गिराँव ।

पगा†-सज्ञा पु० १. डुपट्टा । पटका । पाग । पगिया । २. चीनी के रस में डूबाया गया । ३. दे० "पघा" ।

पगाना-क्रि० स० १. पागने का काम करना । ऊपर से चीनी आदि चढ़ाना । २. धनुरक्त करना । मग्न करना । मिलाना ।

पगरा\*-सज्ञा पु० १. ओट की दीवार । घेरा । चहारदीवारी । २. गीली मिट्टी । गारा । ३. पैरो से कुचलने लायक वस्तु । ४. पाँवों से पार करने योग्य नदी । पायाव । पगाह-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. याना आरम्भ करने का समय । २. प्रभात । तड़का । भोर ।

पगिग्राना\*†-क्रि० स० दे० "पगाना" ।

पगिया\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "पगड़ी" । पाग ।

पगुराना†-क्रि० अ० जुगाली करना । पागुर करना । हजम करना ।

पघा-सज्ञा पु० ढोरो को बाँधने की मोटी रस्सी । पगहा । पगही ।

पचक-सज्ञा स्त्री० १. दवा हुआ । २. पटकन । शुष्कता । सुखाई । ३. उतार ।

पचकना-क्रि० अ० दे० "पिचकना" ।

पचकल्याण-सज्ञा पु० दे० "पचकल्याण" ।

पचगुना-वि० पाँच गुना । पाँच बार अधिक ।

पचडा-सज्ञा पु० १. भ्रमट । प्रपच । बखेडा । पैवाडा । २. एक प्रकार का गीत । लावनी ।

पचन-सज्ञा पु० १. पाक । २. पचाने की क्रिया या भाव । पकने की क्रिया या भाव । ३. अग्नि । आग ।

पचना-क्रि० अ० १. हजम होना । खाई हुई वस्तु का जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणत हो जाना । २. क्षय होना । समाप्त या नष्ट होना । ३. पराया माल हाथ में आ जाना । खपना । ४. अधिक परिश्रम से शरीर का क्षीण होना । बहुत हैरान होना ।

मुहा०-पच मरना=किसी काम के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना । हैरान होना ।

पचपन-सज्ञा पु० ५५ की सरथा ।

वि० पचास और पाँच ।

पचमान-सज्ञा पु० पकानेवाला । पकाता हुआ ।

पचमेल-वि० दे० "पचमेल" । पाँच वस्तुओं को मिलावट । मिश्रण । घालमेल ।

पचरंग-सज्ञा पु० १. जिसमें पाँच रंग हो ।

२. चोक पुराने का सामान—मेहँदी का चुरा, अबीर-बुक्का, हल्दी और गुरचारी के बीज ।

पचरंगा-वि० [स्त्री० पचरंगी] १. जिसमें पाँच रंग हो । २. अनेक रंगों से रजित ।

सज्ञा पु० नवग्रह आदि की पूजा के निमित्त पूरा जानेवाला चीज ।

पचरा-सज्ञा पु० दे० "पचडा" ।

पचलड़ी-सज्ञा स्त्री० पाँच तर का हार ।

जिस हार में पाँच तर हो ।

पचहत्तर-वि० सत्तर और पाँच ।

सज्ञा पु० ७५ की गख्या ।

पचहरा-वि० १. पाँच तहों या परतोंवाला ।  
 २. पाँच बार किया हुआ (अप्रयुक्त) ।  
 पचाभा-वि० म० १. हजम करना । खपाना ।  
 २. पताना । धीरे पर गलाना । ३. समाप्त,  
 नष्ट या क्षय करना ।  
 पचावना†-वि० म० खलपारना । डौटना ।  
 पचास-वि० जो गिनती में ५० हो ।  
 सज्ञा पु० ५० की संख्या ।  
 पचासवीं-वि० जो गिनती में ५० के स्थान  
 पर हो ।  
 पचास-सज्ञा पु० एक ही तरह की पचास  
 चीजों का समूह ।  
 पचासी-वि० अस्सी और पाँच ।  
 सज्ञा पु० अस्सी और पाँच की संख्या या  
 अक्षर । ५५ ।  
 पचित-वि० पका हुआ । जडा या बेझाया  
 हुआ ।  
 पचीस-वि० पाँच और बीस ।  
 सज्ञा पु० ५ और २० की संख्या या अक्षर । २५ ।  
 पचीसी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का खेल,  
 जो चौतर की बिसात पर पाँच के बदले ७  
 बॉलियों से खेला जाता है । २. एक ही  
 तरह की २५ चीजों का समूह । ३. किसी  
 की आयु के पहले २५ वर्ष । ४. एक बिसप  
 गणना, जिसका संकेत पचीस ग्राहिया  
 अर्थात् १२५ का माना जाता है ।  
 पचुका-सज्ञा पु० पिचकारी । दमकता ।  
 पचोतर सौ-सज्ञा पु० एक सौ पाँच की संख्या ।  
 १०५ ।  
 पचोतरा-सज्ञा पु० पाँच रुपए संकेत ।  
 पचीनी-सज्ञा स्त्री० पेट के अंदर की पैली,  
 जिसमें भोजन पचता है । मेदा । आमा-  
 शय । पानाशय ।  
 पचीर पचीली†-सज्ञा पु० गांव का मुखिया ।  
 सरदार । पंच ।  
 पचीवर-वि० पाँच तह या परत किया हुआ ।  
 पचहरा । पचीहर ।  
 पचड़, पचड़-सज्ञा पु० १. नील । खूँटी ।  
 मेख । बड़ा खूँटा । २. काठ का पेंद ।  
 लकड़ी की बनी हुई चीजाँ में साल या जोड़  
 भगने के लिए लकड़ी के टुकड़े । टेप । पचड़ा ।

पच्ची-वि० लगा हुआ । गपुस ।  
 गज्ञा स्त्री० १. ऐसा जोड़, जिसमें जड़ी  
 या जमाई जानेवाली धातु उम्र बन्तु के  
 बिलगुन समतल हो जाय, जिसमें वह जड़ी  
 या जमाई जाय । २. जगन । किसी धातु-  
 निर्मित पदार्थ पर किसी अन्य धातु के पतल  
 का जडाव ।  
 मुहा०-(किसी में) पच्ची हो जाना=  
 बिलगुन मिल जाना । लीन हो जाना ।  
 तदाकार हो जाना ।  
 पच्चीकारी-सज्ञा स्त्री० जड़ने की क्रिया या  
 भाव । जुड़ाई । खुदाई ।  
 पच्छ†-सज्ञा पु० दे० "पक्ष" । तरफ । ओर ।  
 पच्छिम-सज्ञा पु० दे० "पश्चिम" ।  
 पच्छी-सज्ञा पु० दे० "पक्षी" ।  
 पछटना-वि० अ० १. पीछे होना । पछाडा  
 जाना । हार जाना । २. दे० "पिछटना" ।  
 पछताना†-वि० अ० किसी बात के लिए  
 दुखी होना । पश्चात्ताप करना । खेद  
 करना । मन्ताप करना ।  
 पछतानि†-सज्ञा स्त्री० दे० "पछतावा" ।  
 पछतावना-वि० अ० दे० "पछताना" ।  
 पश्चात्ताप या शोक करना ।  
 पछतावा-सज्ञा पु० पश्चात्ताप । अनुताप ।  
 खेद । शोक ।  
 पछना-वि० अ० पाछा जाना ।  
 सज्ञा पु० १. पाछने का यंत्र । २. फमद ।  
 छूरा । चाकू ।  
 पछनी-सज्ञा स्त्री० दे० "पत्तरी" । छूरी,  
 छाटा चाकू ।  
 पछलगा-सज्ञा पु० दे० "पिछलगा" । अनु-  
 यायी । अनुगामी । अनुचर । दाम ।  
 पछलना-सज्ञा पु० दे० "पिछलना" । पिछ-  
 टना ।  
 पछवां-वि० पश्चिम का ।  
 पछाह-सज्ञा पु० पश्चिम की ओर का देश ।  
 पछाहिवा-वि० पछाह का । पश्चिमी प्रदेश  
 का वासी ।  
 पछाड़-सज्ञा स्त्री० १. मूर्च्छित या अचेत  
 होकर गिरना । २. पटवना । हराना ।  
 गिराना ।

मुहा०—पछाड़ राना=खड़े-खड़े अचानक बैसुध होकर गिर पड़ना । सिर के बल गिरना । चित्त गिरना ।

पछाड़ना—त्रि० स० कुस्ती या लड़ाई में पटवना । गिरना । धोने के लिए बपड़े को जोर से पटवना ।

पछाड़ना\*—त्रि० स० दे० “पहुँचानना” ।

पछाड़ना\*—त्रि० स० दे० “पछाड़ना” ।

पछाड़रि\*†—सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का शरवत या सिकरन । २ छाछ का घना एक विशेष प्रकार का स्वादिष्ट पेय पदार्थ ।

पछाहीं—वि० पछाहें का । पश्चिम का ।

पछिआना†—त्रि० स० पीछे-पीछे चलना । पीछा करना ।

पछिताव—सज्ञा पु० दे० “पछतावा” ।

पछियाँ—वि० पच्छिम की हवा ।

पछोता-पछोली†—सज्ञा स्त्री० हाथ में पहनने वा स्त्रियों का एक प्रकार का कड़ा ।

पछोड़ना या पछोड़ना—त्रि० स० सूप आदि में रखकर (अन्न आदि के दाँतों को) साफ करना । पटवना ।

पछयावर†—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सिकरन या शरवत ।

पजरना\*—त्रि० अ० जलना ।

पजारना\*—त्रि० स० जलाना ।

पजावा—सज्ञा पु० ईंट पयाने का भट्टा । आर्वा ।

पजोरा†—सज्ञा पु० मासमपुरसी । किसी की मृत्यु पर उसके सम्बन्धियों से सहानुभूति प्रकट करना ।

पजोडा—वि० १. निक्कमा । २. दुष्ट । दुश्चरित्र । ३. अधम । नीच ।

पंज—सज्ञा पु० वृद्ध । नीच ।

पटधर\*†—संज्ञा पु० देशी बपड़ा । कौपेय ।

पट—सज्ञा पु० १ वस्त्र । बपड़ा । २. पर्दा । ३. पत्थनिया । बपड़े या कागज पर घना हुआ चिप । चित्रपट । ४.

गिरने या मारने का शब्द । ५. पिचाड़ ।

देव-मंदिर का पिचाड़ । ६. सिंहासन ।

७. छप्पर । छान । ८. बपास ।

वि० १. सीधा । सीधा । २. तिर्यक् ।

त्रि० वि० चट वा अनुकरण । तुरत ।

मुहा०—पट उधटना या खुलना=मंदिर का दरवाजा दर्शनार्थ खुलना । पट पड़ना=

मद पड़ना । न चलना । ऐसी स्थिति जिनमें पेट भूमि की ओर हो । चित्त का उलटना ।

पटइन—सज्ञा स्त्री० पटवा या पटहार जाति की स्त्री ।

पटकन\*—सज्ञा स्त्री० १ पछाड़ । पटकने की निया । पटक । २ चपत । तमाचा ।

३. छड़ी । छोटा डंडा ।

पटकना—क्रि० स० पछाड़ना । गिराना ।

१ भोका देकर नीचे गिराना । २ किसी को उठाकर जोर से नीचे गिराना । दे

मारना । ३ कुस्ती में प्रतिद्वंद्वी को पछाड़ना ।

†क्रि० अ० १ सृजन बैठना या पचकना । २. पट शब्द के साथ किसी चीज का फट जाना ।

मुहा०—(किसी पर) पटवना=कोई ऐसा काम किसी के मर्त्ये मढ़ना जिसे करने की उसकी इच्छा न हो ।

पटकनिया, पटकनी—सज्ञा स्त्री० पटकने या पटके जाने की निया या भाव । १ भूमि पर गिरकर पछाड़ खाने या लोटने की निया या अवस्था ।

पटका—सज्ञा पु० कमरपेच । वह लुपट्टा या रुमाल, जिससे कमर बाँधी जाय । कमरबंद ।

पटकान—सज्ञा स्त्री० दे० “पटवनी” ।

पटवार—सज्ञा पु० १ बुलाहा । २. चित्रवार । पटच्चर—सज्ञा पु० चियड़ा । फटा पुराना बपड़ा ।

पटतर\*—सज्ञा पु० बराबरी । समता । उपमा । उदाहरण । मिसाल ।

†वि० बराबर । बराबर । समतल ।

पटतरना—क्रि० अ० बराबरी करना । उपमा देना ।

पटतारना—क्रि० स० १. खींचे, भाने आदि शरभों को किसी पर चलाने के लिए पटवना या खींचना । गैभालना । २ बराबर करना ।

ठेंची-नीची जमीन को धोरम करना ।  
पड़तारना ।

पटधारी-वि० पम्पधारी । जो बपछा पट्टे  
हो ।

पटना-सज्ञा पु० दे० "पाटलिपुत्र" (प्राचीन  
नाम) बिहार-राज्य की राजधानी  
वि० स० १ निर्मा गट्टे या नीचे  
स्थान का भरकर आसपास की सतह को  
बराबर हो जाना । समतल होना । २  
परिपूर्ण होना । ३ मवान, कुएँ आदि के  
ऊपर पच्ची या पक्की छा बनना । ४  
नीसा जाना । ५ दो मनुष्यों के  
विचारों या स्वभाव में समानता होना ।  
मा मिलना । बनना । ६ लेन-देन  
आदि में समय पक्ष का मूल्य या शर्तों  
आदि पर सहमत हो जाना । तय हो  
जाना । ७ (शृण) चुकना ।

पटनि-सज्ञा स्त्री० बपछ । वस्त्र ।

पटनी-सज्ञा स्त्री० १. वह जमीन जो किसी  
को इस्तरारी (सार्वभौमिक) प्रबन्ध पर  
मिली हो । २. नाव । ३. मौमी । केवट ।  
वर्णधार ।

पटपट-सज्ञा स्त्री० (घनु०) शब्द-विशेष ।  
हलके पदार्थ के गिरने से उत्पन्न शब्द ।

वि० वि० बराबर पट ध्वनि करता हुआ ।

पटपटाना-वि० घ० १ भूल-प्यास या सरदी-  
गरमी के मारे बहुत बपट पाना । २  
किसी चीज से पटपट ध्वनि निकलना ।  
वि० स० १ 'पटपट' शब्द उत्पन्न करना ।  
२ खेद या शोक करना ।

पटपर-वि० समतल । बराबर । चौरस ।  
सज्ञा पु० १ ऊजड़ । बजर । अत्यंत  
छगाड़ स्थान । २ नदी के आस-पास की  
वह भूमि जो बरसात के दिना में प्रायः  
सदा डूबी रहती है ।

पटपधक-सज्ञा पु० एव प्रकार का रहन  
जिसमें रहनदार रहन रखी हुई संपत्ति के  
लाभ में स सूर लेने के बाद बचा हुआ धन  
मूल शृण म मिनहा करता जाता है ।  
दखली रहन ।

पटवीजना-सज्ञा पु० दे० "जुगनू" ।

पटरा-सज्ञा पु० १ तन्ना । पाटा । काठ का  
लंबा चौड़ा धोर सोयस टुकड़ा । २.  
धोबी का पाट । ३. हुगा । पांटा ।

मुहा०—पटरा बर देना=मार-भार बर  
पना देना या मिछा देना । चीपट बर देना ।

पटरानी-सज्ञा स्त्री० बड़ी रानी । महा-  
रानी । वह रानी, जो राजा के माव  
सिंहासन पर बैठने की अधिकारिणी हो ।  
राजहिणी ।

पटरी-सज्ञा स्त्री० १ काठ का पटना धोर  
लम्बा तन्ना । २ लिखने की तस्ती ।  
पटिया । ३ सड़क के दोनों किनारों का  
वह भाग, जो पैदल चलनेवालों के लिए  
होता है । ४ बगीचे में बगारियों के  
इधर-उधर के पतले-पाले रास्ते । रविश ।  
५ हाथ में पहनने की एव प्रकार की  
चूड़ी । ६ सुनहरे या रुपहले तारों से  
बना हुआ फीता, जिसे बपड़े की कोर पर  
लगाते हैं ।

मुहा०—पटरी जमना या बैठना=मन  
मिलना । मेल होना ।

पटल-सज्ञा पु० १ छप्पर । छान । छानी ।  
२ आवरण । पर्दा । ३ परत । तह ।  
४ पहल । पार्व । ५ आँस के पद ।  
पलर । ६ पुष्पदल । पेंसुडी । ७ गुलाब ।  
८ लकड़ी आदि का चौरस टुकड़ा । पटरा ।  
तस्ता । ९ पुस्तक का भाग या अध्याय ।  
परिच्छद । १० तिलक । टीका । ११  
समूह । श्रवार ।

पटलता-सज्ञा स्त्री० १ पटल का भाव या  
धर्म । २ अपिवक्ता ।

पटवा-सज्ञा पु० १ रेशम या सूत में सहने  
गूथनेवाला । पटहार । २ पटसन । पाट ।  
पट्टा ।

पटवाना-वि० स० पटने या पाटने का काम  
हमारे से कराना ।

पटवारगरी-सज्ञा स्त्री० पटवारी का काम  
या पद ।

पटवारी-सज्ञा पु० सरकारी कर्मचारी, जो  
गांव की जमीन धोर उठावे लगान का  
हिसाब किताब रखता है ।

पटवास—सज्ञा पु० १. शिविर । तंबू । २. वस्त्रों को सुगन्धित करने का गंध-द्रव्य । ३. लहंगा ।

पटसन—सज्ञा पु० १. एक पोधा, जिसके रेशों से रस्ती, बोरे, टाट और कपड़े बनाए जाते हैं । २. पटसन के रेशे । जूट । पाट ।

पटह—सज्ञा पु० नगाडा । डुडुभि ।

पटहार—सज्ञा पु० दे० "पटवा"

पटा—सज्ञा पु० १. लेन-देन । सीदा । क्रय-विश्रय २. चौड़ी लकीर । घारी । ३. दे० "पट्टा" । ४. लोहे का एक अस्त्र, जिससे तलवार चलाना सीखते हैं । पीढा । पटरा । ५. सनद । अधिकारपत्र ।

मुहा०—पटा-फेर=विवाह की एक रस्म जिसमें घर-बधू के आसन परस्पर बदल दिए जाते हैं । पटा बाँधना=पटरानी बनाना । पटाई—सज्ञा स्त्री० पाटने या पटाने की क्रिया या मजदूरी ।

पटाक—किसी पदार्थ के गिरने का शब्द । जैसे, वह पटाक से गिरा ।

पटाका—सज्ञा पु० १. पट या पटाक शब्द । २. पट या पटाक शब्द करके छूटनेवाली एक प्रकार की आतिशबाजी । ३. यम्पड । समाचा ।

पटाना—नि० स० १. पाटने का काम करना । २. छन को पीटकर बराबर कराना । ३. पाटन बनवाना । छन बनवाना । ४. कृष्ण चुका देना । ५. मूल्य तय कर लेना । †क्रि० अ० धातु होकर बैठना ।

पटापट—क्रि० वि० लगातार ध्वनि । बार-बार 'पट' ध्वनि के साथ ।

मज्ञा स्त्री० निरंतर पटपट शब्द की आवृत्ति । पटापटी—सज्ञा स्त्री० १. यह वस्तु जिसमें अनेक रंगों के फूल-पत्ते बने हों । ३. लेन-देन का चुवता हो जाना ।

पटार—सज्ञा स्त्री० १. पेटी । पिटारा । पिजड़ा । २. बनसजुरा । ३. निवार ।

पटालुगा—सज्ञा स्त्री० जोक ।

पटाव—सज्ञा पु० १. पाटने की क्रिया या भाव । २. पाटवर औरत किया हुआ स्थान ।

३. छन की पाटन । द्वार के ऊपर का तस्ता । पटासन—सज्ञा पु० बैठने के लिए कपड़े का बना आसन ।

पटिका—सज्ञा स्त्री० कपड़े का छोटा टुकड़ा । छोटा वस्त्र ।

पटिया†—सज्ञा स्त्री० १. पत्थर का प्रायः चौकोर और चौरस बड़ा हुआ टुकड़ा । सिलो । फलक । २. खाट या पलग की पट्टी । पाटी । †३. माँग । चोटी । पट्टी । ४. हुँगा । पाटा । ५. तल्ली । लिखने की पट्टी ।

पट्टी—सज्ञा स्त्री० १. पट्टी । \*कपड़े का पतला लंबा टुकड़ा । २. नाटक का पर्दा । ३. कमरबन्द ।

पट्टीर—सज्ञा पु० १. चबन । २. कत्था । ३. खैर का वृक्ष । ४. वटवृक्ष । ५. पपीता । ६. कामदेव । ७. चलनी । ८. क्यारी । ९. चारिद । मेघ । १०. उदर । ११. जठर । पट्टोलना—नि० अ० १. किसी को उलटी-सीधी बातों से समझाना । परास्त करना । डग पर लाना । २. अजित करना । कमाना । ३. ठगना । छलना । ४. सफलतापूर्वक किसी काम को समाप्त करना । ५. बलान् हटाना ।

पटु—वि० १. कुशल । दक्ष । प्रवीण । निपुण । चतुर । चालाक । होशियार । २. कठोर हृदयवाला । ३. नीरोग । तदुरुस्त । स्वस्थ । ४. तीक्ष्ण । तीव्र । तेज । ५. प्रचंड । उग्र ।

पटुआ—सज्ञा पु० दे० "पटुवा" ।

पटुका—सज्ञा पु० १. दे० "पटका" । २. चादर ।

पटुता—सज्ञा स्त्री० प्रवीणता । निपुणता । हाशियारी । दक्षता । चालाकी ।

पटुव—सज्ञा पु० पटुता । दक्षता । निपुणता । चतुराई । कुशलता ।

पटुली—सज्ञा स्त्री० १. झूले का पटला या पट्टी । २. पीछी । चोकी ।

पटुवा—सज्ञा पु० १. पटसन । जूट । २. वरेम् ।

पटूका†—सज्ञा पु० दे० "पटवा" ।

पट्टेबाज-गङ्गा पु० १. पट्टा गंगावाला ।  
पट्टे में पट्टेबाज । पट्टे २. भूत ।  
३. धर्मपारी ।

पट्टे-गङ्गा पु० पानी में होनेवाला एक घास ।  
पौड़ी ।

पट्टे-गङ्गा पु० जाति का मरुत । १.  
गोव का मुनिवा, बीपरी, नबरदार । गुजरात  
में एक पर्याय । २. जाली-विशेष ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. दे० "पट्टे" । २. हेगा ।  
३. गिल । पट्टिया । तस्ता । ४. एक प्रकार  
की नाव । बजरग । ऐगी नाव, जिनका  
मध्य भाग पट्टा है । ५. हाथों में पहनने का  
एक आभूषण जिसे वृन्देलगण्डी म्प्रिया  
पहनाई है ।

पट्टे-गङ्गा पु० दे० "पट्टेबाज" ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. विद्याट वन्द करने का  
टका । व्याडा । २. तस्ता ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. रेसमी वस्त्र । पाट के  
धने कपड़े । रेसमी डोरा । २. परवल ।  
पट्टे-गङ्गा स्त्री० रेसमी धोती या  
साडी ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. एक प्रकार का रेसमी  
कपड़ा । २. परवल ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. पट्टा हुआ स्थान । दे० 'पट्ट  
वध' ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. पीछा । पाटा । पट्टी ।  
तस्ती । लिखन की पट्टिया । २. ताँब  
आदि धातुआ की वह चिपटी पट्टी, जिस  
पर राजकीय आशा या दाग आदि की समद  
खोदी जाती थी । ३. किसी वस्तु का  
चिपटा या चौरस तल या भाग । ४.  
शिला । पट्टिया । ५. पट्टा । भूमि सम्बन्ध,  
अधिकारपत्र । ६. पगड़ी । दुपट्टा । ७.  
ढाल । ८. नगर । ९. चौराहा । १०.  
राजसिंहासन । ११. रेसम । रेसमी सन  
के कपड़े । कौंसय वस्त्र । १२. पटसन ।  
वि० १. मुख्य । प्रधान । २. दे० "पट्ट" ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. पट्टेबाज ।

पट्टे-गङ्गा पु० नगर । शहर । पत्तन ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. भूमि-सम्बन्धी अधिकारपत्र,

जो भूमि के स्वामी की धार में किसी दूसरे  
को दिया जाय । समद । कोई अधिपार-  
पत्र । २. पगड़े की पट्टी, जो कपड़ों, विनियों  
के गले में पहनाई जाती है । ३. पीछा ।  
४. पानी के पास खड़े हुए बास । ५.  
नगराल । ६. पगड़े का बमबंद । पट्टी ।  
७. एक प्रकार की सलवार ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. छाटी तराई । पट्टे  
की छाटी पट्टी । पट्टे की पट्टिया ।

पट्टे-गङ्गा पु० एक प्राचीन शब्द । गाँवा ।

पट्टे-गङ्गा पु० पट्टे बांधनेवाला ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. पाटी । पट्टिया ।

तस्ती । २. पाट । सबर । उपदेम ।

गिडा । गिलावन । ३. बहवावा ।

मुलाया । ४. लपट्टी की बत्ती । पाटी ।

५. धातु, चाकड़ या कपड़े की घञ्जी ।

६. लपट्टी की लची बत्ती, जो छत या

छाजन के ठाट में लगाई जाती है । ७. गत

की बर्ग हुई घञ्जियाँ, जिनके जोड़ने से

ठाट तैयार होते हैं । ८. कपड़े की कौर

या बिनारी । ९. एक मिठाई । १०. कपड़े

की घञ्जी, जिसे सदी और बराबत से बचने

के लिए टाँगा में बाँधते हैं । फोडा बाँधने

का कपड़ा । ११. पवित । बतार । पाँती ।

१२. माँग के दानों और के कंधों में रख

बैठाए हुए बाल, जो गट्टी से बिछाई पड़ने

हैं । पाटी । पट्टिया । १३. हिस्सा । भाग ।

विभाग । पत्ती । १४. \*बहू अधिकारिक पर,

जो जमींदार किसी विशेष प्रयाजन के लिए

असामिया पर लगाता है । नेग ।

पट्टे-गङ्गा पु० समुक्त सम्पत्ति का सामे-

दार । हिस्सेदार । बराबर का अधिकारी ।

पट्टे-गङ्गा पु० पट्टेदार होने का भाव ।

बहुत से हिस्से होना । समुक्त सम्पत्ति,

जिसके कई हिस्सेदार हों । भाई-चाचा ।

बिरादरी ।

मुहा०—पट्टेदारी करना=किसी के बरा-

बर अधिकार जताना । बराबरी करना ।

पट्टे-गङ्गा पु० १. एक प्रकार का बहुत गरम

ऊनी वस्त्र । २. तोता । मुगा । गुघा ।

पट्टमान\*-वि० पढ़ने योग्य ।

ट्टा-सज्ञा पु० [स्त्री० पठिया] १. जवान । तरुण । पाठा । २. कुस्तीबाज । लड़ाका । ३. लंबा, दलदार या मोटा पत्ता । ४. जवान हाथी । ५. मोटी नस । त्नायु । ६. चौड़ा गोटा । ७. पेड़ के नीचे कमर और जाँघ का वह जोड़, जहाँ छूने से गिल्टियाँ मालूम होती हैं ।

मुहा०—पट्टा चढना=बिसी नस का तन जाना । नस पर नस चढ़ना ।

पट्टी-सज्ञा स्त्री० दे० "पठिया" ।

पठन-सज्ञा पु० पढ़ना ।

पठनीय-वि० पढ़ने योग्य ।

पठनेवा-सज्ञा पु० पठान का पुत्र ।

पठना\*—क्रि० स० भेजना ।

पठवाना\*—प्रि० स० भेजने का काम दूसरे से कराना । भेजवाना । पठाना ।

पठान-सज्ञा पु० एक मुसलमान जाति, जो अफगानिस्तान के अधिकांश और भारत के सीमांत प्रदेश आदि में बसती है । काबुली । अफगान ।

पठाना\*—क्रि० स० भेजना ।

पठानी-सज्ञा स्त्री० १. पठान की स्त्री । २. पठान की भाषा । ३. दूरता, दूरता, रक्तपात-प्रियता आदि पठानों के गुण । पठानपन ।

वि० पठानों का ।

पठावन†—सज्ञा पु० दूत । पठोना ।

पठावनी, पठावनी-सज्ञा स्त्री० १. किसी को वही कोई वस्तु या सदेश पहुँचाने के लिए भेजने का काम । २. इस प्रकार भेजने की मजदूरी । ३. कन्या के घर से घर के यहाँ भेजी वस्तु (रीति) ।

पठित-वि० १. पढ़ा हुआ । २. पढ़ा-लिखा । शिक्षित ।

पठिया-सज्ञा स्त्री० युवती । जवान स्त्री । तरुणी ।

पठनी†—सज्ञा स्त्री० दे० "पठावनी" । पठाने की मजदूरी । भेजने या भेजवाने की मजदूरी ।

पड़छती, पड़छती-सज्ञा स्त्री० १. दीवार की रक्षा के लिए लगाया जानेवाला छप्पर

या टट्टी । २. कमरे आदि के बीच की पाटन, जिस पर चीज वस्तु रखते हैं । टाँड़ । परछती ।

पड़त\*—सज्ञा स्त्री० दे० "पड़ता" । लगान ।

पड़ता-सज्ञा पु० १. किसी वस्तु की खरीद या बिक्री का दाम । खर्च । लागत ।

२. दर । शरह । भूमिकर की दर ।

लगान की शरह । औसत । सामान्य दर ।

मुहा०—पड़ता खाना या पड़ना=लागत और लाभ मिल जाना । खर्च और मुनाफा

निबल आना । पड़ता फैलाना या बँटाना=बिसी चीज के तैयार करने, खरीदने और मँगाने आदि में जो खर्च पड़ा हो, उसे देखते हुए उसका भाव निर्दिष्ट करना ।

पड़तात-सज्ञा स्त्री० १. देखभाल । जाँच ।

छान-बीन । अन्वीक्षण । अनुसंधान । २. पटवारी-द्वारा गाँव अथवा बाहर के खेतों की एक प्रकार की जाँच ।

पड़तालना-क्रि० स० जाँच करना ।

पड़ती-सज्ञा स्त्री० विना जोती-बोई भूमि । वह भूमि, जिस पर कुछ समय से खेती न की गई हो ।

मुहा०—पड़ती उठना=पड़ती का जोता जाना । पड़ती पर खेती होना । पड़ती छोड़ना=बिसी खेत को कुछ समय तक यों ही छोड़ना, उसे जोतना नहीं, जिसमें उसकी उर्वरा-शक्ति बढे ।

पड़ना-क्रि० अ० १. गिरना । पतित होना ।

२. (दुःख घटना) घटित होना । जैसे—सुखीबल पड़ना । ३. बिछावा जाना । फैलावा जाना । ४. पहुँचना या पहुँचाया जाना । प्रविष्ट होना । ५. हस्तक्षेप करना ।

दखल देना । ६. टिक्ना । ठहरना ।

७. आराम करना । विश्राम के लिए सोना या लेटना । ८. बीमार होना । खाट पर

पड़ना । ९. मिलना । प्राप्त होना ।

१०. पड़ता खाना । ११. आय, प्राप्ति आदि की औसत होना । पड़ता होना ।

१२. मार्ग में मिलना । १३. उत्पन्न होना ।

१४. स्थित होना । १५. समीगबध होना ।

उपस्थित होना । १६. जाँच या विचार

करने पर ठहरना । १७ देशान्तर या श्रवस्थांतर होना । १८ श्रव्यत इच्छा होना । पुन होना ।

मुहा०—(विनी पण) पडना=विपत्ति या मुसीबत आना । सवट या पठिनाई होना । पडा होना=१ एक स्थान में कुछ समय तक स्थित रहना । २ रखा रहना । परा रहना । ३ बाकी रहना । दोष रहना । पडे रहना या पडा रहना=विना कुछ काम किए खंडे रहना । निरम्मे रहना । क्या पडी है=क्या मतलब है ।

पडपडाना-क्रि० अ० पडपड गइर होना । श्रव्यत कुछे पदार्थ के गाने या स्पर्श में जीन पर कुछ का अनुभव होना । चर-पराना । तडपना ।

पडपोना-सज्ञा पु० [स्त्री० पडपोती] पुत्र का पोना । पाने का पुत्र ।

पडवा-सज्ञा स्त्री० पणवारे की प्रथम तिथि ।

पडाव-सज्ञा पु० [अनु०] दे० पटाव ।

पडाना-क्रि० स० गिराना । झुनाना । रोग से शय्यागत होना ।

पडाव-सज्ञा पु० यात्रा के बीच में ठहरने का स्थान । यात्रिवा के बिश्राम करने का स्थान ।

पडिया-सज्ञा स्त्री० भ्रम की बच्ची । पाडी ।

पडिवा-सज्ञा स्त्री० ६० "पडवा" ।

पडोस-सज्ञा पु० भ्रम-पाम । समीप का वास । सश्रिकट का वास । किसी स्थान के ग्राम-पास स्थान ।

यो०-पाम-पडास=गमीपवर्ती स्थान ।

मुहा०-पडाम करना=पडोस में बसना ।

पडोसी-सज्ञा पु० [स्त्री० पडोसिन] वह मनुष्य, जिसका घर पडोस में है । पडास में रहनेवाला । समीपवासी । पास-पास रहनेवाला ।

पडत-सज्ञा स्त्री० १ पडने की क्रिया या भाव । २. अध्ययन । पाठ । सबक । ३ निरंतर पडना । मग । ४. मग्या ।

पडता-वि० पडनेवाला ।

पडत-सज्ञा स्त्री० १ पडने की क्रिया या भाव । २ मग ।

पडना-क्रि० स० १. किसी लिखित वस्तु को इस प्रकार देखना कि उसमें किसी बात मात्राम हो जाय । २ किसी विद्या बट के शब्दा या उच्चारण करना । बचिना । ३ स्मरण रखने के लिए किसी विषय का बार-बार उच्चारण करना । रटना । ४ मग पूचना । जादू करना । ५ तात, भेक आदि का मनुष्या के गिराए हुए शब्द उच्चारण करना । ६ विद्या पडना । शिक्षा प्राप्त करना । अध्ययन करना ।

यो०-पडना-सिगना=शिक्षा पाना । पटना पडाना । पडा लिखा=शिक्षित ।

पडवाई-सज्ञा स्त्री० पडवाने की क्रिया । पडवाने का पार्थिविक ।

पडवाना-क्रि० स० १ किसी को पडने में प्रवृत्त करना । बचवाना । २ किसी के द्वारा किसी को शिक्षा दिलाना । किसी दूसरे से पडने का काम लेना ।

पडवाई-वि० पडने या पडावाला ।

पडाई-सज्ञा स्त्री० १. विद्याभ्यास । अध्ययन । पठन । पढन का काम । पडने का भाव । २ अध्ययन । पाठन । पडाने का काम । पडोनी । ३ पडान का भाव । ४ पडाने का ढग । अध्ययन शैली ।

पडाना-क्रि० स० १ सिखाना । समझाना । शिक्षा देना । अध्ययन करना । कोई कला या हुनर सिखाना । २ सेता, भेका आदि पशिया का मनुष्या की जाली सिखाना ।

पडैया-सज्ञा पु० पडनेवाला ।

पण-सज्ञा पु० १ प्रतिज्ञा । शर्त । हाड । जूमा । दूत । २ सधि । किराया । ३ कीमत । मूल्य । ४ फीस । सुल्क । ५ धन । संपत्ति । जायदाद । ६ श्रय बिजय की वस्तु । सीदा । ७ व्यापार । व्यवसाय । व्यवहार । ८ स्तुति । प्रशंसा । ९ ताव का प्राचीन सिक्का । १०. एक पुरानी नाप, जो मुट्ठी भर अन्न के बराबर होती थी ।

पणप्रथि-सज्ञा स्त्री० बाजार ।

पणन-सज्ञा पु० १. खरीदने की क्रिया या भाव । बचना । २. शर्त लगाना ।

पत-सज्ञा पु० १ छाया नगाडा । डालकी ।  
 २ चौपाई की तरह का एक छद ।  
 पतार-सज्ञा पु० नगाडा ।  
 पत-सज्ञा पु० खरीदन या घन की चीज ।  
 पतुन्दरी-सज्ञा स्त्री० वेद्या ।  
 पत-वि० १ खरीदन या घन योग्य ।  
 २ प्रशस्त करने योग्य ।  
 पतना पु० १ गीदा । माल । २ व्यापार ।  
 रोजगार । ३ दूकान । ४ बाजार ।  
 पतशाली-सज्ञा स्त्री० लोड़ी । सविवा ।  
 पतफल-सज्ञा पु० मुनाफा । लाभ ।  
 पतभूमि-सज्ञा स्त्री० काठी । गोदा ।  
 गदाम । सीदा या मात्र जमा करने का स्थान ।  
 पतयिलासिनी-सज्ञा पु० घस्या ।  
 पतधीधी-सज्ञा स्त्री० बाजार ।  
 पतशाला-सज्ञा स्त्री० दूकान । बाजार ।  
 टाट । विक्रय-गृह ।  
 पतस्त्री-सज्ञा स्त्री० वेद्या ।  
 पतग-सज्ञा पु० १ पक्षी । चिड़िया ।  
 २ सूय । ३ घनम । टिड्डी । भुनगा ।  
 फर्तिगा । उड़नवाला कीड़ा । ४ एक प्रकार का घान । जड़हन । ५ जन-महुआ ।  
 ६ कदुव । गद । ७ शरार । ८ नौका ।  
 गाव । ९ एक बड़ा वृक्ष जिसकी त्वनी से बड़िया तान रंग बनता है । १०. घास का तीलिया के ढाँच पर चौथाना पतला वागज मड़कर बनाया हुआ एक खिलौना जिस हुवा में उड़ाया जाता है । गुड्डी ।  
 बनवावा ।  
 पतगज-सज्ञा पु० १ यम । २ मुग्धीय । ३ वण ।  
 पतगजा-सज्ञा स्त्री० यमुना ।  
 पतगबाज-सज्ञा पु० पतग उड़ान का शौकीन ।  
 जिस पतग उड़ान का व्यवसन हो ।  
 पतगबाजी-सज्ञा स्त्री० पतग उड़ान की कला या भाव ।  
 पतगसुत-सज्ञा पु० १ अदिनीकुमार । २ यम । ३ वण । ४ सुग्राव ।  
 पतगा-सज्ञा पु० १ पतग । उड़नवाला कीड़ा मकोडा । फर्तिगा । २ घास अथवा

वृक्ष की पत्तियाँ पर पाया जानवाला एक कीड़ा । स्फूर्तिग । दापव की बत्ती की अग्नि के छोट-छोट वण । गन । ३ चिनगारी ।  
 पतग-सज्ञा पु० गर ।  
 पतचिका-सज्ञा स्त्री० धनुष का डारी ।  
 वमान की ताँत । चिरना । प्रयवा ।  
 पतजति-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध ऋषि, जिहान याग शास्त्र का रचना की । २ एक प्रसिद्ध व्याकरणवाच्य ऋषि जिहान पाणिनीय सूत्रा श्रीर शातमायन-वृत्त धातित पर महाभाष्य की रचना का थी ।  
 पत\*+सज्ञा पु० १ पति । सनम । २ स्वामी । मानिक ।  
 सना स्त्री० १ तानि । लज्जा । आनर । २ प्रतिष्ठा । इज्जत ।  
 यी०-पत-पानी-नज्जर । आनर ।  
 मुहा०-पत उत्तारना या नना=वैज्जती करना । पत रचना=इज्जत बचाना ।  
 पतभङ-सज्ञा स्त्री० १ वह ऋतु जिसमें बरफ की पत्तियाँ भङ जाती हैं । गिशिर ऋतु । माघ और फाल्गुन के महान ।  
 वसत । २ धवनति सान ।  
 पतकर-सज्ञा स्त्री० ८० पतभङ ।  
 पतभार+सज्ञा स्त्री० ८० पतभङ ।  
 पतत्र-सज्ञा पु० १ पत्र । २ बाहन । सवारा ।  
 पतत्रि-सज्ञा पु० पक्षी ।  
 पतत्रिकेतन-सज्ञा पु० विष्णु ।  
 पतन-सज्ञा पु० १ गिरन की क्रिया या भाव । गिरना । स्वनन । २ बठना या डूबना । ३ अधागति । अधवनन ।  
 तबाही । ४ नाश । मत्स्य । ५ पाप ।  
 पातव । ६ जानिच्युनि । जाति से बहिष्कृत होना । ७ उड़ना । उड़ान ।  
 पतनशोत-वि० गिरनवाला । पतनोमुख ।  
 नाशवान ।  
 पतनीय-वि० गिरन योग्य । गिरनवाला ।  
 पतनोमुख-वि० जो गिरन की ओर प्रवृत्त हो ।  
 जिसकी अधागति या वितान निकट हो ।  
 पत पानी-सज्ञा पु० मथादा । प्रतिष्ठा ।  
 मान । इज्जत । नाज ।

पतर\*†-वि० १. दुर्लभ । पाता । वृष ।

२. पता । पत्र । ३. पतल ।

पतरा†-वि० दे० "पतला" ।

पतरी†-सज्ञा स्त्री० दे० "पतल" ।

पतला-वि० [स्त्री० पतली] १. महीन । मृक्ष ।

जिराबी चौड़ाई कम हो । जो माटा न हो ।

वृष । दुबल । २. कमजोर । अतमर्थ ।

मुहा०-पतला पडना=दुर्दशा-प्रस्त होना ।

पतला हाल=नष्ट और दुःख की दशा ।

पतलाई-सज्ञा स्त्री० दुर्लभता । दुबलापन ।

पतलापन-सज्ञा पु० पतला होने का भाव ।

पतलून-सज्ञा पु० [अप्रे० पेटलून] पायजामे

की तरह अप्रखी डग का कमर से पैर तक का पहनावा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और पायें का सीधा गिरना है ।

पतवार, पतवारी-सज्ञा स्त्री० नाव का डण्ड

जिससे नाव दाहिने-बाएँ घुमाई जाती है ।

इसी के द्वारा नाव भाड़ी या घुमाई जाती

है । कन्हर । कण । डण्ड ।

पता-सज्ञा पु० १ किसी का स्थान सूचित

करनेवाली बात, जिससे उसको पा सके ।

पत्र पर लिखा नाम । नाम, ठिकाना

परिचय । २ चिह्न । खोज । अनुसंधान ।

सुराग । टोह । ३ अभिज्ञता । जानकारी ।

खबर । ४ गूढ़ तत्त्व । रहस्य । भेद ।

यो०-पता ठिकाना=किसी वस्तु का स्थान

और उसका परिचय । पता निशान=१

वे बातें, जिनमें किसी के संबंध में कुछ जान

सके । २ नाम निशान ।

मुहा०-पते की बात=भेद प्रकट करनेवाली

बात । रहस्य खालीपन का कथन ।

पताई-सज्ञा स्त्री० भड़ी हुई पतिया का

ढेर । सूखी गिरी हुई पतियाँ ।

पताका-सज्ञा स्त्री० १ ध्वजा । झंडा ।

निशान । भंडी । फरहर । २ सौभाग्य ।

३ दस खर्च की मर्यादा । ४ नाटक का

बहु स्थल, जहाँ एक पात्र एक विषय में कोई

बात सोच रहा हो और दूसरा पात्र आवर

दूसरे के संबंध में कोई बात कहे । ५

पिगल ग छन्द प्रसार-सबधी गणित की

एक क्रिया ।

मुहा०-(किमी स्थान में अथवा किसी

स्थान पर) पताका उड़ना=१. अधिकार

होना । राज्य होना । २ सर्वप्रधान होना ।

गव मे श्रेष्ठ माना जाना । (विषी वस्तु की)

पताका उड़ना=प्रसिद्धि होना । घूम होना ।

पताका उड़ाना=अधिकार करना । विजयी

होना । पताका गिरना=पराजय होना ।

हार होना । विजय की पताका=विजय

सूचक पताका ।

पताफिनी-सज्ञा स्त्री० सेना । फौज ।

पतार\*†-सज्ञा पु० १ दे० "पानाल" । २

जंगल । घना वन ।

पताल-सज्ञा पु० दे० "पानाल" ।

पतिग-सज्ञा पु० पतग । फर्तिगा ।

पतिवरा-वि० जो अपना पति स्वयं चुने ।

स्वयंवरा (स्त्री) ।

पति-सज्ञा पु० [स्त्री० पत्नी] १ स्वामी ।

प्रभु । अधिपति । मालिक । २ स्त्री का

विवाहित पुरुष । दूल्हा । शोहर । खाविद ।

भर्ता । ३ शिव या ईश्वर । ४ मर्यादा ।

प्रतिष्ठा ।

पतिश्राना†-वि० स० विस्वारत करना । सच

मानना । एतबार करना ।

पतिश्रार\*†-सज्ञा पु० विस्वास । साख ।

एतबार । विस्वसनीय ।

पतिकामा-वि० पति पाने की इच्छा करने

वाली स्त्री ।

पतित-वि० १ गिरा हुआ । ऊपर से नीचे

आया हुआ । २ आचार, नीति या धर्म

से गिरा हुआ । अप्रष्ट । ३ महापापी ।

अधर्म । ४ जाति-व्यतिरेक । समाज-

वहिष्कृत । ५ महा अपवित्र । ६ अधम । नीच ।

पतित-उधाररत\*-वि० पतितों का उधार

करनेवाला ।

सज्ञा पु० ईश्वर या उनका अवतार ।

पतितपावन-वि० [स्त्री० पतितपावनी] पतित

को पवित्र करनेवाला ।

सज्ञा पु० ईश्वर । परमात्मा ।

पतित्व-सज्ञा पु० १ स्वामी, प्रभु या मालिक

होने का भाव । स्वामित्व । प्रभुत्व ।

२ पति होने का भाव । वरत्व ।

पतिदेवा-सज्ञा स्त्री० पतिव्रता । केवल अपने पति की ही आराधना और उपासना में रहनेवाली स्त्री ।

पतिनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "पत्नी" ।

पतिमाना†-क्रि० स० विस्वास करना । भरोसा करना । प्रतीति करना ।

पतिमारा\*-सज्ञा पु० पतिमारे का भाव । एतवार । विस्वास । भरोसा ।

पतिलोक-सज्ञा पु० पतिव्रता स्त्री को मिलने-वाला वह स्वर्ग, जिसमें उसका पति रहता है ।

पतिव्रती-वि० सचया । सीभाग्यवती ।

पतिव्रत-सज्ञा पु० पति में स्त्री की अनन्य प्रीति और भक्ति । पतिव्रत्य ।

पतिव्रता-वि० पति में अनन्य अनुराग रखने-वाली और यथाविधि पतिसेवा करनेवाली । सती । साध्वी ।

पतीजन, पतीजना\*-क्रि० प्र० पतियाना । विस्वास करना ।

पतीली-सज्ञा स्त्री० ताँवे या पीतल की बटलीई । डगची ।

पतुकी\*-सज्ञा स्त्री० गिट्टी की छोटी हाँडी ।

पतुरिया-सज्ञा स्त्री० वेदया ।

पतुही-सज्ञा स्त्री० छोटे मटर की छीमी ।

पतोला-सज्ञा पु० १ पत्ते का बना पान । दोना । २ एक प्रकार का बगला ।

पतोली-सज्ञा स्त्री० १ एक पत्ते का दोना । छाटा दाना । २ पत्ती का बना छोटा छाता । घापी । ३. बारीक बटी सुपारी ।

पतोह, पतोहू†-सज्ञा स्त्री० पुत्रवधू । बेटे की पत्नी ।

पतोआ†-सज्ञा पु० पत्ता । पर्ण ।

पत्तन-सज्ञा पु० १. शहर । नगर । २. ग्राम । पुर । ३. मृदग ।

पत्तर-सज्ञा पु० धातु की पतली चादर ।

पत्तल-सज्ञा स्त्री० १ पत्ते को जाड़कर बनाया हुआ भोजन पान । २ पत्तल में सजाई हुई भोजन-सामग्री । ३ भोजन क अन्न

सर पर किसी के यहाँ भेजी जानेवाली भोजन सामग्री ।

मुहा०-एक पत्तल में खानेवाले=परस्पर गट्टी-बेट्टी या व्यवहार करनेवाला । किसी की पत्तल में खाना=किसी के माघ खान-पान आदि या सज्ज रखना । जिस पत्तल में खाना, उमी में छेद करना=जिससे लाभ उठाना, उमी की हानि करना । वृत्तघ्नता करना ।

पत्ता-भज्ञा पु० [स्त्री० पत्ती] १ पत्तास । पात । पत्रक । पर्ण । २ खान में पहुँचने या एक गहना । ३ माटे पागज का गोल या चौकार टुकड़ा, जिससे ताश खेलते हैं । मुहा०-पत्ता खडना=बुद्ध खटका या आशरा हाना । पत्ता न हिलना=हवा का बिलबुल बंद हाना ।

पत्ति-सज्ञा पु० १ पैदल सिपाही । प्यादा । पदातिन । २ दूरबीर पुरुष । यादू । बहादुर । ३ प्राचीन काल में सेना का सबसे छोटा विभाग, जिसमें १ रथ, १ हाथी, ३ घोड़े और ५ पैदल हात थे ।

पत्तिक-सज्ञा पु० १ प्राचीन काल में सेना का एक विशेष विभाग जिसमें १० घोड़े, १० हाथी, १० रथ और १० प्यादे होते थे । २ उपर्युक्त विभाग का सेनानायक । वि० पैदल चलनेवाला ।

पत्ती-सज्ञा स्त्री० १ आटा पत्ता । २. भाग । हिस्सा । भाँके का अंश । ३ फूल की पँखड़ी । दल । ४ भाँग । ५ पत्ती के आकार की लकड़ी, धातु आदि का कटा हुआ कोई टुकड़ा । पट्टी । ६. राजपूता की एक जाति ।

पत्तीदार-सज्ञा पु० हिस्सेदार । साझीदार । पत्थ\*-सज्ञा पु० दे० "पथ्य" ।

पत्थर-सज्ञा पु० [वि० पथरीली, क्रि० पथराना] १ पृथ्वी के कड़े स्तर का पिंड या सड़ । २ मील का पत्थर । ३ ओला । बिनोला । दूद्रापल । ४ चट्टान का टुकड़ा । प्रस्तर । पाहन । उपली । ५. रत्न । जवाहिर । हीरा, लाल, पद्मा आदि । ६ पत्थर की तरह कठोर, भारी अथवा

हटने, गाने आदि के अयोग्य वस्तु । ७  
पृष्ठ नहीं । चित्तवृत्त नहीं । पाप ।  
(तिरस्कार-सूना)

मुहा०—पत्थर का कलेजा, दिन या हृदय—  
कठोर हृदय । दया-नरुणा आदि का मिल  
वृत्ति या से हीन हृदय । पत्थर की  
छाती—बलवान् शरीर दृढ़ हृदय । मजबूत  
दिम । पत्थर की लकीर—सदा सर्वदा  
वनी रहनेवाली (वस्तु) । मार्बेकालिक ।  
चिरस्थायी । पत्थर पटाना—पत्थर पर  
चिसमर धार तेज करना । पत्थर तले हाथ  
आना या दबना—ऐसे सबट में दँस जाना,  
जिससे छटने का उपाय न दिखाई पड़ता  
हो । घुरी तरह फँस जाना । पत्थर तले  
से हाथ निकालना—सबट या मुमीबत से  
छूटना । पत्थर पर दूब जमना—अनहोनी  
बात का होना । पत्थर पसीजना या पिघलना  
—अत्यंत कठोर चित्त में नरमी का वृषण  
के मन में दान की इच्छा आदि का होना ।  
पत्थर से सिर फोड़ना या मारना—असंभव  
बात के लिए प्रयत्न करना । पत्थर  
पठना—चौपट हाँ जाना । पत्थर-  
पानी—घाँधी पानी आदि का काल ।  
तूफानी समय ।

पत्थरकला—सजा पु० पुराने ढंग की बगूच,  
जिसमें बारूद गुलगाने के लिए चक्कम  
पत्थर लगा रहता था । पलीतेदार बगूच ।  
पत्थरचटा—सजा पु० १ एक घास । २  
एक प्रकार का सीप । ३ एक तरह की  
मछली । ४ कजूस । मवलीनुस ।

पत्थरफूल—सजा पु० छरीला । शैलात्म ।  
पत्थरफोड—सजा पु० पत्थरों की सीप में  
होनेवाली एक वनस्पति ।

पत्थरी—सजा स्त्री० गृहिणी । विवाहिता स्त्री ।  
भायाँ । सहर्षाभिणी । जीवन-मगिनी ।

पत्थरीवत—सजा पु० अपनी विवाहिता स्त्री  
के प्रतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न  
करने का नियम ।

पत्थ—सजा पु० पति होने का भाव ।

पत्थाना\*†—कि० सं० दे० "पतिभ्राता" ।

पत्थारा—सजा पु० दे० "पतिभ्राता" ।

पत्थारी\*—सजा स्त्री० पवित्र ।

पत्र—सजा पु० १. किसी वृक्ष का पत्ता ।  
पत्ती । दल । पर्ण । २. लिखा हुआ कागज ।  
समाचारपत्र । अखबार । ३. चिट्ठी ।  
पत्री । सत । ४. पुष्प या लेख का  
एक पन्ना । पृष्ठ । सफा । पत्रा । ५.  
वह कागज, जिस पर किसी खाम मामले  
की सनद या सबूत के लिए कुछ लिखा हो ।  
६. बसीका, पट्टा या दस्तावेज । ७. धातु  
की चद्दर । बरफ । ८. तीर या पशी के  
पल । पक्ष ।

पत्रकार—सजा पु० समाचारपत्र के सम्पादकीय  
विभाग में काम करनेवाला लख ।  
समाचारपत्री में बराबर लेख, समाचार  
आदि लिखकर भेजनेवाला । अखबार का  
सम्पादक या सहायक सम्पादक ।

पत्रकारिता—सजा स्त्री० पत्रकार का कार्य  
या पेशा ।

पत्रकुच्छु—सजा पु० पत्ती का काड़ा पीकर  
रखा जानेवाला एक व्रत ।

पत्र-पुष्प—सजा पु० १. सत्तार या पूजा की  
बहुत अल्प सामग्री ।

२. अल्प मूल्य का उपहार ।

पत्रभग—सजा पु० चित्र या रेखाएँ, जो नौदर्य-  
वृद्धि के लिए स्त्रियाँ भाल, कपोल आदि  
पर बनाती हैं ।

पत्रवाहक—सजा पु० पत्र ले जानवाला ।  
डाकिया । चिट्ठीरस । हक्कारा ।

पत्रवाह पञ्जी—सजा स्त्री० वह पञ्जी या बही,  
जिसपर पत्रवाह-द्वारा भेजे जानेवाले पत्र  
दर्ज किए जाते हैं और जिस पर पत्र  
पानेवाले के हस्ताक्षर होते हैं । ( अग्रे०  
पियन्धक )

पत्र-सम्बहार—सजा पु० चिट्ठी पाने-जाने का  
क्रम । खत-विस्तार । लिखा-गद्दी ।

पत्रशिरा—सजा स्त्री० पत्र की नस ।

पत्रप्रेष्ठ—सजा पु० वेद का पत्ता ।

पत्राक—सजा पु० १. पृष्ठनर्या । २.  
चिट्ठियों पर के शक ।

पत्राग—सजा पु० १. साल चन्दन । २. पतगा ।  
३. भोजपत्र ।

पत्रा-सज्ञा पु० १ तिथिपत्र । पत्री ।  
पत्राग । २ पत्रा । पुष्ठ । बर्क ।

पत्राचार-सज्ञा पु० चिट्ठिया वा आना-  
जाना । पत्र-व्यवहार ।

पत्रालय-सज्ञा पु० डाकखाना । पास्ट आफिस ।  
पत्रावली-सज्ञा स्त्री० दे० "पत्रभग" ।  
पत्र-रचना । पत्रों की पक्ति या समूह ।  
गेरू ।

पत्रिका-सज्ञा स्त्री० १. चिट्ठी । पत्र ।  
२ कोई छोटा लेख या लिपि । ३  
सामयिक पत्र, पुस्तक या समाचारपत्र ।  
पत्री-सज्ञा स्त्री० १ चिट्ठी । पत्र । २  
कोई छोटा लेख या पत्रिका ।

सज्ञा पु० १ तीर । वाण । २ पक्षी ।  
चिडिया । ३ ह्येन । बाज । ४ वृक्ष ।  
वि० जिसमें पत्ते हों ।

पथ-सज्ञा पु० १ मार्ग । पथ । रास्ता ।  
राह । २ व्यवहार आदि की रीति ।  
सज्ञा पु० दे० "पथ्य" ।

पथगामी-सज्ञा पु० पथ या मार्ग पर चलने-  
वाला । अनुगामी । पथिव । बटोही ।  
मुसाफिर ।

पथदर्शक, पथप्रदर्शक-सज्ञा पु० मार्गदर्शक ।  
रास्ता दिखानेवाला ।

पथना-क्रि० अ० पावना । कण्डे (उपले)  
बनाना ।

क्रि० स० पथाना । पथवाना ।

पथरक्ता-सज्ञा पु० पुरानी चाल की बटूक ।  
एक प्रकार की बटूक या नडाबीन, जो  
चक्कर पत्थर के द्वारा अग्नि उत्पन्न करके  
चलाई जाती थी ।

पथरघटा-सज्ञा पु० १ छपण । कजूस ।  
२ एक औषध । ३ एक प्रकार का शाक ।  
पथराना-क्रि० अ० १ पत्थर की तरह  
हो जाना । २ ताजगी न रहना । नीरस  
और कठोर हो जाना । ३ स्तब्ध हो  
जाना । निर्जीव हो जाना । पत्थर  
भारना ।

पथरी-सज्ञा स्त्री० १ पत्थर का बना हुआ ।  
कटारा या कटोरी । पत्थर का पान ।  
२ एक प्रकार का रोग, जिसमें मूत्राशय

म पत्थर के छोटे-बड़े टुकड़े उत्पन्न हो जाते  
हैं । ३ चक्कर पत्थर । ४ पत्थर का  
टुकड़ा, सिल्ली । पथरीटी । ५ थुरड  
पत्थर, जिससे औजार तैयार करने की सान  
बनाने हैं । ६ पत्थर की कुंडी ।

पथरीला-वि० [स्त्री० पथरीली] पत्थरयुक्त ।  
चक्करीली भूमि ।

पथरीला-सज्ञा पु० पत्थर का बटारा ।  
पथिक-सज्ञा पु० मार्ग चलनेवाला । यात्री ।  
राहगीर । मुसाफिर ।

पथिकाथम-सज्ञा स्त्री० यात्रिया के ठहरने  
का स्थान । धर्मशाला ।

पथिव-सज्ञा पु० फलित ज्योतिष में मान  
के शुभाशुभ फल बताने का चक्र ।

पथिवाहक-सज्ञा पु० बहार । मजदूर ।  
कुली ।

पथी-सज्ञा पु० यात्री । पथिव ।

पथ\*+सज्ञा पु० पथ । मार्ग । रास्ता ।

पथरा-सज्ञा पु० पाथने का काम करनेवाला ।  
कुम्हार ।

पथौरा-सज्ञा पु० कड़े पावने का स्थान ।

पथ्य-सज्ञा पु० १ रागी का आहार ।  
वह हलका और जल्दी पचनेवाला भोजन,  
जो रोगी के लिए लाभदायक है । उपयुक्त  
आहार । २ हित । मंगल । कल्याण ।  
मुहां-पथ्य से रहना=सयम से रहना ।  
पथ्या-सज्ञा स्त्री० आर्या छंद का भेद ।  
हरड हड । रोगी के अनुगूल आहार ।  
हलका लाभदायक भोजन ।

पद-सज्ञा पु० १ व्यवसाय । काम । २.  
वाण । रक्षा । ३ अधिकार-स्थान । मान ।  
प्रतिष्ठा । आदर । महिमा । दर्जा । ४  
चिह्न । निशान । ५ पैर । पाद । चरण ।  
६ वस्तु । चीज । ७ विभक्तिमुक्त  
शब्द । ८ प्रवेश । ९ पैर का निशान ।  
१० श्लोक या किसी छंद या चतुर्थांश ।  
दोक्कापद । ११ उपाधि । १२ मोक्ष ।  
निवाण । १३ भजन । १४ पुराणा-  
नुसार दान के लिए दूत, छात कपड,  
अगूठी, कमंडलु, आसन, बरतन और भोजन  
का समूह ।

पदच-गज्ञा पु० १ पुजन आदि के लिए  
चाए गए किसी देवता के पद-चिह्न । २  
साते, चौदो या किसी और धातु या वन  
दुगा गोत्र या चीन्हा दुगा, जा किसी  
धर्मका अथवा जनानुसूत का पाठ विशेष  
अथवा अद्भुत कार्य करने के उपलक्ष्य में  
दिया जाता है । तमगा ।

पदचम-सज्ञा पु० पद । डग ।

पदग-सज्ञा पु० १. पैदल चलनेवाला ।  
पैदल । २. प्यादा ।

पदचर-सज्ञा पु० पैदल । प्यादा । पदाति ।  
पैरा में चलनेवाला । पैदल चलनेवाला ।  
पीछे-पीछे चलनेवाला । अनुगामी । दाम ।

पदचारो-सज्ञा पु० (स्त्री० पदचारिणी)  
पैदल चलनेवाला ।

पदचिह्न-सज्ञा पु० चरणचिह्न । पाँव के  
चिह्न । पृथ्वी पर पाँव के निशान ।

पदच्छेद-सज्ञा पु० वाक्य विस्लेषण । व्याकरण  
के नियमों के अनुसार संधि और समास-  
युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पद को अलग  
करना ।

पदच्युत-वि० [सज्ञा पदच्युति] जो अपने  
पद या स्थान से हटा दिया गया हो ।

पदज-सज्ञा पु० १ पैर की उंगलियाँ । २.  
सूत्र ।

पदतल-सज्ञा पु० पैर का तलवा ।

पदत्याग-सज्ञा पु० पद या ओहदा छोड़ना ।  
इस्तीफा । अधिकार-त्याग । स्थान-त्याग ।

पदव्रण-सज्ञा पु० जूता । पद की रक्षा  
करनेवाला ।

पददलित-वि० १ पैरा से रोदा या कुचला  
हुआ । अपमानित । २ दबाकर निबेल  
निया गया ।

पदना-सज्ञा पु० १. पादना । दंड-स्वरूप  
में रक्त करना । २ दौड़ना । तग होना ।  
३ डरपान । ४ पादनेवाला । पदकण्ड ।  
अधिक पादनेवाला ।

पदनी-सज्ञा स्त्री० दुराचारिणी । व्यभि-  
चारिणी ।

पदन्यास-सज्ञा पु० १ 'न्यास' करने की  
एक विधि । २ पैर रखना । चलना । गमन

करना । पद-रचना । ३ चलन । डग ।

पदपटी-सज्ञा स्त्री० नृत्य-विशेष । एक  
प्रकार का नाच ।

पदपत्र-सज्ञा पु० १. पद की नियुक्ति का  
अधिकारपत्र । अधिकारपत्र । २. कमल  
या पत्र । कमलपत्र ।

पदपीठ-सज्ञा पु० राजकुं । जूता ।

यो०-पादपीठ=पैर रखने की चौकी ।

पदम-सज्ञा पु० १. दे० "पद्म" । कमल ।

२. बादाम की जाति का एक जंगली  
पेड़ । पद्मात । पद्माव ।

पदमनाभ-सज्ञा पु० १. विष्णु । २. सूर्य ।

पदमूल-सज्ञा पु० पैर का तलवा ।

पदमैत्री-सज्ञा स्त्री० अनुप्रास ।

पदयोजना-सज्ञा स्त्री० कविता के लिए  
पदा का जाड़ना । पद-व्यवस्था ।

पदरिपु-सज्ञा पु० बाँटा ।

पदार्थ-सज्ञा स्त्री० १. उपाधि । खिताब ।  
ओहदा । दरजा । २ पदति । परिपाटी ।  
तरीफा । ३ पद । रान्ना ।

पद विग्रह-सज्ञा पु० सामासिक पदा का  
पृथक्करण (व्या०) ।

पदस्थ-वि० १ पदावृद्ध । पद पर नियुक्त ।  
पद पर वर्तमान । २. जो पैरों के बल खड़ा  
हो ।

पदाक-सज्ञा पु० पैरों का चिह्न ।

पदाकान्त-वि० पैरों तले कुचला या रोदा  
हुआ ।

पदाघात-सज्ञा पु० पैर से मारना ।

पदाति, पदातिक-सज्ञा पु० १ प्यादा ।  
पैदल सिपाही । २. नीकर । सेवक ।

पदाधिकारो-सज्ञा पु० पद पर नियुक्त ।  
अफसर । ओहदेदार ।

पदाना-क्रि० स० बहुत अधिक दिन करना ।  
तग करना । दौड़ना ।

पदानुग-सज्ञा पु० अनुयायी ।

पदानुसरण-सज्ञा पु० पीछे-पीछे चलना ।  
अनुसरण करना ।

पदान्भोज-सज्ञा पु० चरण-कमल । कमल  
के समान चरण । कमल-सुख पद ।

पदार-सज्ञा पु० पैरों की धूल ।

पदारविन्द-संज्ञा पु० चरण-कमल । पद-पद्म ।  
 पदार्य-संज्ञा पु० १. वस्तु । चीज । सामग्री ।  
 सामान । तत्त्व । २. पद का अर्थ । शब्दों  
 का तात्पर्य । ३. पुराणानुसार धम्म, अर्थ,  
 काम और मोक्ष । ४. वैद्यक में रस,  
 गुण । वीर्य, विषाक और शक्ति ।  
 पदार्यवाद्-संज्ञा पु० वह मत, जिसमें आत्मा  
 को छोड़कर केवल भौतिक पदार्थों को  
 ही प्रधानता दी जाती है ।  
 पदार्यविज्ञान-संज्ञा पु० तत्त्वविद्या । भौतिक  
 पदार्थों और उनके व्यापार वा ज्ञान  
 करनेवाला शास्त्र । विज्ञान-शास्त्र ।  
 पदार्यविद्या-संज्ञा स्त्री० यह विद्या, जिसमें  
 पदार्थों का तत्त्व बताया गया हो । विज्ञान-  
 शास्त्र । तत्त्वज्ञान ।  
 पदार्पण-संज्ञा पु० किसी स्थान में पैर रखना ।  
 किसी जगह आना या जाना (प्रतिष्ठित  
 व्यक्तियों के सवध में) ।  
 पदावली-संज्ञा स्त्री० १. वाक्यों की श्रेणी ।  
 २. भजनों या पदों का संग्रह । ३. पद-  
 माला ।  
 पदासन-वि० पादपीठ । पीड़ा । बैठने  
 के लिए आसन-विशेष ।  
 पदिक-संज्ञा पु० १. पैदल सेना । २. गले में  
 पहनने का जुगनू नाम का गहना । ३.  
 रत्न । हीरा ।  
 पदिक-पदिक-हार-रत्नहार । मणिमाल ।  
 पदो-संज्ञा पु० पैदल । प्यादा ।  
 पदुमिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "पद्मिनी" ।  
 पद्वति-संज्ञा स्त्री० १. रीति । रस्म । रवाज ।  
 चाल । परिपाटी । २. पथ । सड़क । मार्ग ।  
 राह । ३. पक्ति । कतार । ४. कर्म-  
 काण्ड की पोथी । ५. ढग । तरीका ।  
 ६. विधि । विधान । कार्य-प्रणाली ।  
 पद्म-संज्ञा पु० १. कमल या कमल का फूल ।  
 पत्र । २. सामुद्रिक के अनुसार पैर में  
 का एक विशेष आकार का चिह्न, जो भाग्य-  
 सूचक माना जाता है । ३. विष्णु का एक  
 अस्त्र । ४. कुवेर की नी निर्धियो में से  
 एक । ५. शरीर पर के राफेद दाग ।  
 ६. पदम या पद्माल वृक्ष । ७. गणित

में सोलहवें स्थान की संख्या (१०० नील) ।  
 ८. पुराणानुसार एक नरक । ९. पुरा-  
 णानुसार ज्यू द्वीप के दक्षिण-पश्चिम का  
 एक देश । १०. एक पुराण । ११. एक छन्द ।  
 पद्मकन्द-संज्ञा पु० कमल की जड़ । भसीड़ा ।  
 मुरार । भिरसा ।  
 पद्मकिञ्जल्क-संज्ञा पु० कमल का केसर ।  
 पद्मकोश-संज्ञा पु० कमल के बीच का भाग ।  
 पद्मगर्भ-संज्ञा पु० १. कमल का भीतरी  
 भाग । २. ब्रह्मा । ३. सूर्य । ४. बुद्ध ।  
 पद्मज-संज्ञा पु० ब्रह्मा ।  
 पद्मजन्मा-संज्ञा पु० ब्रह्मा । प्रजापति । पद्म  
 से उत्पन्न ।  
 पद्मनाभ-संज्ञा पु० विष्णु ।  
 पद्मनेत्र-संज्ञा पु० विष्णु ।  
 पद्मपत्र-संज्ञा पु० कमलदल ।  
 पद्मपलाश-लोचन-संज्ञा पु० १. श्रीकृष्ण ।  
 विष्णु । २. कमलपत्र के समान नेत्र ।  
 पद्मपाणि-संज्ञा पु० १. ब्रह्मा । २. बुद्ध की  
 एक मूर्ति-विशेष । ३. सूर्य ।  
 पद्मपंथ-संज्ञा पु० एक प्रकार का चिन्तकाव्य,  
 जिसमें श्रद्धा को ऐसे क्रम से लिखते हैं  
 जिससे एक पद्म या कमल का आकार  
 बन जाता है ।  
 पद्मबीज-संज्ञा पु० कमलगट्टा ।  
 पद्मयोनि-संज्ञा पु० ब्रह्मा । प्रजापति ।  
 पद्मरग-संज्ञा पु० माणिक । लाल रंग का  
 एक मणि, जिसे 'लाल' कहते हैं ।  
 पद्मलोचन-संज्ञा पु० १. सूर्य । २. कुवेर ।  
 ३. राजा । ४. प्रजापति ।  
 पद्मलोचन-संज्ञा पु० कमल के समान नेत्र ।  
 पद्मव्यूह-संज्ञा पु० प्राचीन काल में युद्ध के  
 समय किसी वस्तु या व्यक्ति की रक्षा के  
 लिए सैना स्रष्ट रखने का एक ढग ।  
 पद्मा-संज्ञा स्त्री० १. लक्ष्मी । कमला ।  
 २. लवङ्ग । ३. भादो सुदी एकादशी ।  
 ४. एक नदी का नाम ।  
 पद्माकर-संज्ञा पु० १. वह तालाब या झील,  
 जिसमें कमल पैदा होते हो । २. हिन्दी के  
 एक प्रसिद्ध कवि ।  
 पद्माल-संज्ञा पु० दे० "पदम" ।

पद्यालय-गजा पु० ब्रह्मा ।

पद्यालया-सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी । यमना ।

त्रिगया रमल ही गृह हो ।

पद्यायती-गजा स्त्री० १. लक्ष्मी । २. पटना का प्राचीन नाम । ३. पन्ना नगर का प्राचीन नाम । ४. उज्जयिनी का प्राचीन नाम । ५. एक मात्रिच छंद । ६. मनसा देवी । नदी-विशेष । ७. खोवप्रचलित कथा के अनुसार सिंहल की एक राजकुमारी जिसने चित्तौर के राजा रत्नसेन का विवाह हुआ था । ८. गीतगोविन्दकर्ता जयदेव कवि की स्त्री ।

पद्यासन-गजा पु० १. योग का एक आसन, जिसमें पालथी भास्वर सीधे बैठने हैं । योगामन-विशेष । २. ब्रह्मा । प्रजापति । ३. शिव ।

पद्मिनी-सज्ञा स्त्री० १. कमलिनी । २. कमल-युक्त तालाव । ३. छोटा कमल । ४. पद्मयुक्त देश । ५. पद्मलता । नलिनी । ६. हृदयिनी । ७. लक्ष्मी । ८. सिंहल की राजकुमारी पद्मिनी, जिसके पाने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने युद्ध किया था । ९. चित्तौर की रानी । १०. कौवयास्त्र के अनुसार स्त्रियों की चार जानियां में से सर्वोत्तम जानि । सुलक्षणा स्त्री ।

पौ०—पद्मिनीवल्लभ=सूर्य ।

पद्य-वि० १. छंद । कविता । काव्य । कवि की कृति । २. जिसका सम्बन्ध पैरो से हो । ३. जिसका सम्बन्ध कविता से हो । कवितावद्ध ।

सज्ञा पु० पिंगल के नियमा के अनुसार नियमित मात्रा या वर्ण का छंद । कविता ।

पद्यरचना-गजा पु० कविता करना । कविता बनाना ।

पद्यात्मक-वि० छंदोबद्ध ।

पधरना-वि० अ० किसी बड़े, प्रतिष्ठित या पूज्य का आगमन । आना ।

पधराना-वि० स० १. आदरपूर्वक ले जाना । इज्जत से बैठाना । २. प्रतिष्ठित करना । स्थापित करना ।

पधरायनी-सज्ञा स्त्री० १. किसी देवता की

स्थापना । २. किसी की आदरपूर्वक ले जाना । बैठाने का कार्य ।

पधराना-वि० अ० १. आना । जाना । २. आ पढ़ना । ३. चलना ।

वि० म० आदरपूर्वक बैठाना । पधराना ।

पन-सज्ञा पु० १. प्रण । प्रतिज्ञा । मन्त्र ।

२. अवस्था । आयु के चार भागों में से एक ।

३. एक प्रत्यय, जिसे नामवाचक या गुणवाचक संज्ञाओं में लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाते हैं । जैसे, पागल में पागलपन ।

पनकपडा-सज्ञा पु० पानी से गीला कपड़ा, जो चोट लगने पर बाँधा जाता है ।

पनकाल-सज्ञा पु० बहुत अधिक वर्षों के कारण अकाल ।

पनग\*—सज्ञा पु० [स्त्री० पनगिन] दे० “पन्नग” । साँप ।

पनघट-सज्ञा पु० पानी भग्ने का घाट ।

पनच-सज्ञा स्त्री० धनुष की टोरी । प्रत्यक्षा ।

पनचक्की-सज्ञा स्त्री० पानी के जोर से चलनेवाली चक्की या कल ।

पनडब्बा, पनडिब्बा-सज्ञा पु० पान रखने का डिब्बा । पानदान ।

पनडब्बी-सज्ञा स्त्री० पान रखने का छाटा डिब्बा ।

पनडुब्बा-सज्ञा पु० १. पानी में गोता लगाने-वाला । गोताखोर । २. पानी में गाना लगाकर भट्ठी पकड़नेवाला पक्षी । ३. मुरादाबी ।

पनडुब्बी-सज्ञा स्त्री० १. जल के भीतर चलनेवाली एक प्रकार की नाव । सब-मेरीन (अर्थ०) । २. पानी में डुबकी लगानेवाला एक पक्षी ।

पनपना-वि० अ० १. पानी पानर फिर से हरा हो जाना । पल्लविन या अकृष्ट होना । ताजा होना । बढ़ना । २. अच्छी दशा में आना ।

पनपट्टा-सज्ञा पु० पानदान । पान रखने का डिब्बा ।

पनबसना-सज्ञा पु० पान रखने का कपड़ा ।

पनभरा-सज्ञा पु० दे० “पनहरा” । पानी भरनेवाला ।

पनच\*—सज्ञा पु० दे० “प्रणव” । श्री३म् दण्ड ।  
 पनवाडी—सज्ञा पु० १. पान बेचनेवाला ।  
 तमोली । २. पान की बाड़ी । पा का  
 बगोचा । जहाँ पान बोल जाते हैं ।  
 पनवार—सज्ञा पु० १. पीधा विशेष । २.  
 राजपूतो की एक उपजाति ।  
 पनयारी—सज्ञा पु० १ पत्तल । २ पत्तल  
 भर भोजन, जिसके द्वारा एक मनुष्य की  
 क्षुधा-निवृत्ति हो सके ।  
 पनस—सज्ञा पु० कटहल का फल या वृक्ष ।  
 पनसाखा—सज्ञा पु० एक प्रकार की मशाल,  
 जिसमें तीन या पाँच बत्तियाँ एक साथ  
 जलती हैं ।  
 पनसारी—सज्ञा पु० दे० “पसारी” ।  
 पनसाल—सज्ञा स्त्री० १. प्याऊ । पनसाला ।  
 वह स्थान, जहाँ सर्वे-साधारण को पानी  
 पिलाया जाता हो । पीसरा । २. पानी की  
 गहराई नापने का उपकरण ।  
 पनसुइया या पनसोई—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार  
 की छोटी नाव । डागी ।  
 पनसेरी—सज्ञा स्त्री० दे० “पसेरी” ।  
 पनह\*—सज्ञा स्त्री० दे० “पनाह” ।  
 पनहरा—सज्ञा पु० (स्त्री० पनहारन, पनहा  
 रिन पनहारी) पानी भरने का काम करने-  
 वाला । पनभरा । पनहार ।  
 पनहा—सज्ञा पु० १ कपड़े की चीड़ाई ।  
 २ गूढ़ आशय या तात्पर्य । मढ । मर्म ।  
 ३ चारी का पता लगानेवाला । ४. पता ।  
 चिह्न ।  
 पनहाना—कि० सं० गाय भेरा आदि का दूध  
 दुहन के लिए उनका स्तन सुहराना ।  
 पनहारा—सज्ञा पु० पानी भरनेवाला नौकर ।  
 पनहरा ।  
 पनहारिन, पनिहारिन—सज्ञा स्त्री० पानी  
 भरनेवाली मजदूरिन ।  
 पनहारी—सज्ञा पु० पानी भरनेवाली स्त्री ।  
 पनिहारिन ।  
 पनहिमाभ्र—सज्ञा पु० सिर पर इतने जूते  
 पहना कि बाल उड़ जायें ।  
 पनही†—सज्ञा स्त्री० जूता । उपानह ।  
 पना—सज्ञा पु० आम, इमली आदि के रस से

बनाया जानेवाला एक प्रकार का शरबन ।  
 पन्ना । प्रपानक ।  
 पनातो—सज्ञा पु० [स्त्री० पनातिन] नानी  
 का पुत्र । पत्नी ।  
 पनारी—सज्ञा स्त्री० नाली । मोरी ।  
 पनाला—सज्ञा पु० दे० “परनाला” ।  
 पनाली—सज्ञा स्त्री० १. प्रणाली । २. जल  
 निकलने का मार्ग । नाली । मारी ।  
 पनासना†—कि० सं० पातन-पापण करना ।  
 परवरित्त करना ।  
 पनाह—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ थाण । बचाव ।  
 रक्षा । सफट या कष्ट म बचाव या रक्षा ।  
 २ रक्षा पाने का स्थान । शरण । छाड़ ।  
 मुहा०—(मित्री से) पनाह माँगना=  
 किसी से बहुत बचन की दृष्टि करना ।  
 पनित्त\*—सज्ञा पु० दे० ‘पनच’ । प्रत्येक ।  
 पनियाना†—कि० सं० १. सीचना । पानी  
 देना । २. दिव करना ।  
 पनियाला—सज्ञा पु० पनियार । एक प्रकार  
 का फल ।  
 पनिया सोत†—वि० १ तालाब, खाई आदि,  
 जिसमें पानी का सोता निकला हो ।  
 २ बहुत गहरा ।  
 पनिहा—वि० १ पानी में रहनेवाला ।  
 २. जिसमें पानी मिला हो । पानी सम्बन्धी ।  
 ३ पानी का सौंप ।  
 सज्ञा पु० भदिया । जासूस ।  
 पनिहरा—सज्ञा पु० (स्त्री० पनिहारिन)  
 दे० ‘पनहरा’ ।  
 पनी†\*—सज्ञा पु० प्रण या प्रतिज्ञा करने  
 वाला । दृढप्रतिज्ञ ।  
 पनीर—सज्ञा पु० [फा०] १ छना । छना से  
 बना हुआ साध । फाड़ कर जमाया हुआ  
 दूध । २ दही, जिसका पानी निकाल लिया  
 गया हो ।  
 पनीरी—सज्ञा स्त्री० १ फूल-पत्तोवाल छाटे  
 पोथे, जो दूसरी जगह से जाकर रापन के  
 लिए उगाए गए हों । फूल-पत्तो के बहन  
 या बेटे । २ वह क्यारी, जिसमें पनीरी  
 जमाई गई हो । बड या बेहन की क्यारी ।  
 पनीला—वि० जलयुक्त । पानी मिला हुआ ।

पनेरी-सज्ञा पु० पानवाला । पान बेचने-वाला । तमाली ।

पनेला-गज्ञा पु० १. एक प्रकार का पपड़ा । २. बेलहटा ।

पन्नग-गज्ञा पु० [स्त्री० पन्नगी] १. साँप । गोप । \*२. पन्ना । मरवा ।

पन्नगपत्ति-गज्ञा पु० शोपनाग ।

पन्नगभूषण-सज्ञा पु० शिवजी । साँप जिनके भ्रागभूषण हो ।

पन्नगारि-सज्ञा पु० १. साँपो का दातु । गरुड । २. मोर । ३. गूढ । ४. नेचला ।

पन्नगाशन-सज्ञा पु० गरुड पक्षी । साँप खाने वाला । यह पक्षी, जिसका भोजन साँप है ।

पन्नगी-सज्ञा स्त्री० नागिन ।

पन्ना-सज्ञा पु० १. रत्न-विशेष । मरकत । हरे रंग का एक रत्न । पुष्ट । २. वरक । पत्र । ३. सुन्दरलखड़ का एक नगर जहाँ हीरो की खानें हैं ।

पन्नी-सज्ञा स्त्री० १. साने-चाँदी के पतले पत्तर, जिन्हें शोभा के लिए अन्य वस्तुओं पर चिपकाते हैं । २. सबक । ३. एक भाज्य पदार्थ । ४. दाहद की एक शैल ।

पन्नीताज-सज्ञा पु० पन्नी का काम करनेवाला ।

पन्हाना-क्रि० अ० दे० "पिन्हाना" ।

क्रि० स० १. दे० "पिन्हाना" । २. दे० "पहनाना" ।

पपड़ा-सज्ञा पु० [स्त्री० पपड़ी] १ छिलका । २. चूर्ण । ३. टुकड़ा । ४. रोटी का छिलका ।

पपडियाना-क्रि० अ० १. किसी वस्तु की परत का सूखकर सिक्का जाता । २. इतना सूख जाना कि ऊपर पपड़ी जम जाय ।

पपड़ी-सज्ञा स्त्री० १. छिलका । परत । २. उर्द या मूँग के बने पापड़ । ३. किसी वस्तु की ऊपरी परत । धाव के ऊपर मवाद के सूख जाने से बना हुआ आवरण या परत । सुरङ । ४. साहन पपड़ी नामक मिठाई । ५. पचवान ।

पपड़ीला-वि० जिस पर पपड़ी जमी हो । पपड़ीदार ।

पे-सज्ञा स्त्री० बरीली । पतल ।

पपरा-सज्ञा पु० दे० "पपड़ा" । छिलका । पपरी-सज्ञा स्त्री० दे० "पपड़ी" ।

पपी-सज्ञा पु० सूर्य । रवि ।

पपीता-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध वृक्ष जिनके पके फल खाए जाते हैं । अथ सरबुजा । पपीया ।

पपीलि\*-सज्ञा स्त्री० दे० पिपीलिका । चीटी ।

पपीहरा-सज्ञा पु० दे० "पपीहा" ।

पपीडा-सज्ञा पु० चाना । एक पक्षी, जो बसंत और वर्षा में बड़ी सुरीली ध्वनि में बोलता है । कहा जाता है कि यह पक्षी स्वाती में बरसनेवाले मेघा का ही जन पीता है ।

पपीटा-सज्ञा पु० पलक । आँस के ऊपर का चमड़े का पर्दा । दृगचल ।

पपोलना-क्रि० अ० बिना दान के मुँह चलाना । चुभलाना ।

पपारना-क्रि० स० १. फेंकना । २. चलाटना ।

पबलिक-सज्ञा पु० [ग्र०] दे० "पब्लिक" ।

पब्लिक\*-सज्ञा पु० दे० "पब्लिक" । वज्र ।

पब्लिक-सज्ञा स्त्री० (अग्र०) जनता । जन-साधारण ।

वि० सार्वजनिक । जनसाधारण का ।

पब्लिक वर्क्स-सज्ञा पु० (अग्र०) सर्वसाधारण के लिए सरकार की ओर से किए जानेवाले निर्माण-सम्बन्धी कार्य ।

पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट-(पी० डब्लू० डी०) सज्ञा पु० (अग्र०) वह सरकारी विभाग, जिसके द्वारा जनसाधारण के लिए निर्माण-सम्बन्धी कार्य हो ।

पमार-सज्ञा पु० दे० "परमार" ।

पम्पा-सज्ञा स्त्री० विष्णु के समीप एक सरोवर का नाम ।

पय-सज्ञा पु० १. दूध । २. जल । पानी । ३. अक्ष ।

पयद\*-सज्ञा पु० १. दे० "पयोद" । बादल । २. स्तन ।

पयधि\*-सज्ञा पु० दे० "पयोधि" । समुद्र ।

पयनिधि\*-सज्ञा पु० दे० "पयोनिधि" । समुद्र ।

पयस्विनी-गज्ञा स्त्री० १. दूध देनेवाली गाय ।

२. बहरी । ३. एक नदी जो चित्रवट्ट में है ।

पयस्वी-वि० [स्त्री० पयस्विनी] १. पानी वाला । जिसमें जल हो । २. दूधयुक्त । पयहारी-सज्ञा पु० केवल दूध पीकर रहने-वाला तपस्वी या साधु ।

पयान-सज्ञा पु० प्रयाण । गमन । जाना । पयार, पयाल-सज्ञा पु० धान, कोदो आदि के सूखे डठल, जिनके दाने भाड़ लिये गए हों । पुवाल ।

मुहा०-पयाल गाहना या फाड़ना=व्यर्थ परिश्रम या सेवा करना ।

पयोज-सज्ञा पु० कमल ।

पयोद-सज्ञा पु० मेघ । बादल ।

पयोधर-सज्ञा पु० १ स्तन । यन । २. मेघ । बादल । ३. नागरमीषा । ४. वसेरु । ५. तालाब । ६. पर्वत । पहाड़ । समुद्र । ७. दोहा का ११वाँ और छप्पय का २७वाँ भेद ।

पयोधि-सज्ञा पु० समुद्र । सागर ।

पयोनिधि-सज्ञा पु० समुद्र । सागर ।

पयोमुख-वि० दुधमुँहा ।

पयोव्रत-सज्ञा पु० गौ० दूध या जल के आहार पर व्रत करना । व्रत-विशेष ।

परंच-अव्य० श्रीर भी । तो भी । परतु । परंतप-वि० १. शत्रुओं को दुख देनेवाला । २. इन्द्रियजित ।

परंतु-अव्य० पर । तो भी । किन्तु । लेकिन । मगर ।

परंदा-सज्ञा पु० [फा०] परिंदा । पक्षी । चिड़िया ।

परंपरा-सज्ञा स्त्री० १. रीति । प्रथा । परिपाटी । क्रम से एक के पीछे दूसरा । सितसिता । अनुश्रम । पूर्वापर क्रम । २. वंशपरंपरा । सतति ।

परंपरागत-वि० सनातन । परंपरा से चला आता हुआ । जो सब दिन से होता चला आया हो ।

पर-वि० १. दूसरा । अन्य । श्रीर । गैर । पराया । दूसरे का । भिन्न । अति-रिक्त । २. पीछे का । बाद का । ३. दूर । तटस्थ । ४. श्रेष्ठ । सबके ऊपर । ५. प्रवृत्त । लीन । तत्पर ।

प्रत्य० सप्तमी या अधिकरण का चिह्न । जैसे, उस पर । तुम पर ।

अव्य० १. पश्चात् । पीछे । २. परतु । किन्तु । लेकिन । तो भी ।

संज्ञा पु० पंख । पक्ष । चिड़ियों का डेना ।

मुहा०-पर कट जाना=शक्ति या बल का आधार न रह जाना । अशक्त या निर्बल हो जाना । पर जमना=१. पंख निकलना । २. शरारत सूकना । पर जलना=१.

हिम्मत न होना । साहस न होना । २. गति न होना । पहुँच न होना । पर न मारना=पंख न रख सकना । न आना ।

परई-सज्ञा स्त्री० मिट्टी का एक वस्तुन ।

परकटा-वि० भी० जिसके पंख कट गए हो । पंख कटा हुआ ।

परकना\*†-कि० अ० १. चस्का लगना । अभ्यास पड़ना । आदत पड़ना । २. परचना । हिलना । ३. थडक खुलना ।

परकसना\*-कि० अ० जगमगाना । प्रकाशित होना । प्रकट होना ।

परकाज-सज्ञा पु० दूसरे का काम । परकार्य । परकाजी-वि० परीपकारी । परस्वार्थी । दूसरे का काम करनेवाला ।

परकाना†-कि० सं० चराका लगाना । अभ्यास डलवाना । परचाना ।

परकार-सज्ञा पु० [फा०] वृत्त या गोलाई खींचने का एक औजार ।

\*†-सज्ञा पु० दे० "प्रकार" ।

परकारना-कि० सं० १. परकार से वृत्त बनाना । २. चारों ओर घुमाना ।

परकाल-सज्ञा पु० दे० "प्रकार" ।

परकाला-सज्ञा पु० १. सीढ़ी । जीना । २. देहलीज । चौखट । ३. दुक्का । खड । ४. शीशे का टुकड़ा । ५. चिनगारी ।

मुहा०-आफन का परकाला=गजब करने-वाला । प्रचंड या भयानक मनुष्य ।

परकीय-वि० दूसरे का । परमा ।

परकीया-सज्ञा स्त्री० १. पति को छोड़ दूसरे पुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री । परपुरुष-गमिनी स्त्री । २. दूमरे की स्त्री । ३. नायिका-विशेष ।

परकोटा-सज्ञा पु० १. किला या मंड की

बहाम्दीवारी । त्रिणी ग्यान के चारो ओर  
छाई हुई दीवार । २ धूम । धूप ।  
परत-गंगा स्त्री० १. गुण-शेष स्थिर करने  
के लिए अच्छी तरह देना-भाना । परीक्षा ।  
जाँच । पट्टान । २. गोज । अनुगन्धान ।  
परसना-त्रि० ग० १. गुण-शेष स्थिर करने  
के लिए अच्छी तरह देना-भानना ।  
परीक्षा करना । जाँच करना । अनुगन्धान  
करना । २. भला और बुरा पहचानना ।  
सतोटी पर कमना । ३. प्रतीक्षा करना ।  
छत्तजार करना ।  
परसाना-त्रि० स० १. जाँचवाना । परीक्षा  
कराना । २. सहेजवाना । संभलवाना ।  
३. इन्तजारी कराना ।  
परसेमा-सज्ञा पु० परसनेवाला । जाँचने-  
वाला । अनुगन्धान करनेवाला ।  
परम-सज्ञा पु० पग । वंदम । डग ।  
परगटना\*-त्रि० अ० प्रवट होना । खुलना ।  
क्रि० स० प्रवट या जाहिर करना ।  
परगना-गज्ञा पु० [फा०] बहुत से गाँवों का एक  
समूह । ठहमील का वह भाग, जिसके अंतर्गत  
बहुत से ग्राम हों ।  
परगसना\*-क्रि० अ० प्रकाशित होना । प्रवट  
होना ।  
परगाछा-सज्ञा पु० एक प्रकार के पीछे, जो  
प्रायः गरम देशों में दूसरे पक्षों पर उगते हैं ।  
परगास\*-सज्ञा पु० दे० "प्रवास" ।  
परघनी या परघरी-सज्ञा स्त्री० सोना-चाँदी  
आदि के ढालन का साँचा या परधी ।  
परचड\*-वि० दे० "प्रचड" ।  
परचत\*†-सज्ञा स्त्री० जान-पहचान । जान-  
कारी । परिचय ।  
परचना-त्रि० अ० १. हिलना-मिलना ।  
चसना लगाना । २. पडन खुलना ।  
परचा-सज्ञा पु० [फा०] १. वागज का  
टुकड़ा । चिट । पत्र । २. पुरजा । खत ।  
चिट्ठी । ३. परीक्षा का प्रश्न-पत्र ।  
४. परिचय । जानकारी । ५. परस ।  
परीक्षा । जाँच । ६. प्रमाण । सबूत ।  
परचाना-त्रि० स० १. हिलाना मिलाना ।  
आकषित करना । धनिष्ठना पैदा करना ।

२. पडन गोलना । सवाच हटाना । ३.  
चसना लगाना । टेव ढालना । ४. जलाना ।  
परघारना\*-त्रि० म० दे० "प्रघारना" ।  
परचून-गज्ञा पु० फुटार सामग्री । आटा,  
दाल, मगाला आदि सामग्री ।  
परचूनिया या परचूनी-गज्ञा पु० फुटार सामान  
वेचनेवाला । आटा, दाल आदि वेचनेवाला  
बनिया । मोदी ।  
परछती-सज्ञा स्त्री० १. घर या कोठरी के  
भीतर दीवार से लगाकर कुछ दूर तक  
बनाई हुई पाटन, जिम पर सामान रखने  
हैं । टोड । पाटा । २. पूम आदि का  
छोटा छपर ।  
परछन-सज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति,  
जिममें बारात द्वार पर आने पर बन्ध्या-पक्ष  
की स्त्रियाँ वर की आरती करती तथा  
उमके ऊपरसे मूसल, बट्टा आदि धुमानी  
हैं ।  
परछना-त्रि० स० वर-बधू की आरती  
करना । दे० "परछन" ।  
परछाई-सज्ञा स्त्री० १. प्रतिबिम्ब । प्रति-  
छाया । छायाकृति । २. छाया ।  
मुहा०-परछाई से डरना या भागना=१  
बहुत डरना । अत्यंत भयभीत होना । २.  
पाम तक आने से डरना ।  
परछालना\*-त्रि० स० घीना । प्रक्षालन ।  
परछिद्र-सज्ञा पु० परदाप । दूसरे का दाप ।  
परज-सज्ञा स्त्री० एक रागिनी ।  
वि० परजात । दूसरे से उत्पन्न । दूसरी  
जाति का ।  
परजर-सज्ञा पु० जमीन में बसने के लिए  
जमीन के स्वामी को दिया जानेवाला कर ।  
परजघट-सज्ञा पु० कर । सुल्क । भाड़ा ।  
चिराया । राजा या जमींदार को भूमि  
में बसने के लिए दिया जानेवाला कर ।  
परजन\*-सज्ञा पु० दे० "परिजन" ।  
परजन्य\*-सज्ञा पु० दे० "परजन्य" ।  
परजस्ता\*-क्रि० अ० १. जलना । दहकना ।  
२. कुड़ होना । कुड़ना । डाह करना ।  
परजा-सज्ञा स्त्री० १. प्रजा । रैयत ।  
२. आश्रित जन । ३. जमींदार की जमीन

पर खेती आदि बरनेवाला ग्रामामी ।  
 परजात-सज्ञा स्त्री० दूसरी जाति । अन्य जाति का व्यक्ति । बौद्ध (भाव्य में) ।  
 वि० दूसरी जाति का । दूसरे से उत्पन्न ।  
 परजावा-सज्ञा पु० दे० "पारिजात" । एक पेड़, जिसमें गुच्छों में फूल लगने हैं ।  
 परजाय\*-सज्ञा पु० दे० "पर्याय" ।  
 परजीव-सज्ञा पु० पर बनाने के लिए सालाना किराए पर जमीन लेने-देने का नियम ।  
 परतचा-सज्ञा स्त्री दे० "पतचिका" ।  
 परतन्न-वि० परवश । पराधीन । दूसरे के शासन या नियंत्रण में ।  
 परतन्त्रता-सज्ञा स्त्री० पराधीनता । गुलामी ।  
 परतः-अव्य० १ अन्य या दूसरे से । २. पश्चात् । पीछे । ३. परे । आगे ।  
 परत-सज्ञा स्त्री० १ सतह के ऊपर का हिस्सा । स्तर । तह । छिलका । २. गुठ ।  
 परत्तर-वि० पीछे या बाद का ।  
 परतल-सज्ञा पु० लादनेवाले घोड़ों की पीठ पर रखने का बोरा । डेरा-डटा । खुरजी ।  
 परतला-सज्ञा पु० चपरास । चपरास लगाने की पट्टी । तलवार लटकाने की चमड़े की पट्टी ।  
 परता-सज्ञा पु० १. परखी । २. सूत कातने का यन्त्र । ३. व्यय और लाभ मिलाकर भाव ।  
 परतिचा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "पतचिका" ।  
 परती-सज्ञा स्त्री० बिना जोती हुई छोड़ दी गई जमीन या खेत । बजर । ऊसर भूमि ।  
 परतीत\*-सज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीति" ।  
 परतेजना\*-क्रि० सं० परित्याग करना । छोड़ना ।  
 परत्र-वि० १. अन्यत्र । २. स्वर्ग । परलोक ।  
 परत्व-सज्ञा पु० १. पर का भाव । पार्यक्य । २. श्रेष्ठता । ३. तत्परता । ४. पहले या पूर्व होने का भाव ।  
 परयन\*-सज्ञा पु० दे० "पलेथन" ।  
 परबा-सज्ञा पु० १ आड़ करनेवाली कोई वस्तु । व्यवधान । २ लोगों की दृष्टि के सामने न होने की स्थिति । आड़ । ओट ।

छिपाव । ३ ओट करने के काम में आने-वाला बपड़ा, चिब आदि । पट । ४. तह । परत । ५. तल ।  
 मुहा०-परदा उठाना या खोलना=गुप्त बात को प्रकट करना । भेद खोलना । परदा डालना या रखना=छिपाना । प्रकट न होने देना । आँख पर परदा पड़ना=मुझाई न देना । समझ में न आना । ढँका परदा= १ छिपा हुआ दोष या कलक । २. बनी हुई प्रतिष्ठा या मर्यादा । परदा रखना=१. परदे के भीतर रहना । सामने न होना । २. छिपाना । दुराव रखना । परदा होना= १ स्त्रियों को सामने न होने देने का नियम । २. छिपाव होना । दुराव होना । परदे में रखना=१ स्त्रियों को घर के भीतर रखना, बाहर लागे के सामने न होने देना । २. छिपा रखना । प्रकट न होने देना । ३ स्त्रियों को बाहर निकलकर लोगों के सामने न होने देने की चाल ।  
 परदाज-सज्ञा पु० [फा०] सजाना । चित्र आदि के चारों ओर वेलवूटे बनाना । चित्रों में रंगत लाने के लिए बहुत पास-पास महीन बिंदु लगाना ।  
 परदादा-सज्ञा पु० [स्त्री० परदादी ।] दादा का पिता । प्रपितामह ।  
 परदानशीन-वि० [फा०] परदे में रहने-वाली । अतः पुरवासिनी (स्त्री) ।  
 परबापोशी-सज्ञा स्त्री० [फा०] चिल्ली रहस्य या दोष को छिपाना ।  
 परदार-वि० [फा०] जिसके पर हो । पराधाला ।  
 परदुम्भ\*-सज्ञा पु० दे० "प्रदुम्भ" । श्रौकृष्ण के पुत्र ।  
 परदेश-सज्ञा पु० विदेश । दूसरा देश । स्वदेश से भिन्न । पराया स्थान ।  
 परदेशी-वि० विदेशी । दूसरे देश का । अन्य देशवासी ।  
 परद्वेष्टा-सज्ञा पु० दूसरे की हाँगी करनेवाला ।  
 परद्वोही-वि० परपीडक । दूसरी का अनिष्ट करवावा ।  
 परधान\*-वि० दे० "प्रधान" ।

सज्ञा पु० दे० "परिधान" ।  
 परधाम-सज्ञा पु० १. बंबूट धाम । स्वर्ग ।  
 परलोच । २. विष्णु ।  
 परन\*-सज्ञा पु० १. प्रण । हठ । टेव ।  
 प्रतिज्ञा । टेव । २. दे० "पर्ण" ।  
 राजा स्त्री० बान । आदत ।  
 परना\*†-वि० अ० दे० "पडना" ।  
 परनाना-सज्ञा पु० [स्त्री० परनानी] नाना  
 का पिता ।  
 परनाला-सज्ञा पु० [स्त्री० परनाली] पनाला ।  
 मोरी । नावदान ।  
 परनि\*-सज्ञा स्त्री० बान । स्वभाव । आदत ।  
 टेव ।  
 परनीत\*-सज्ञा स्त्री० प्रणाम ।  
 परन्तप-सज्ञा पु० बिजयी । शत्रुनाशक । वीर ।  
 परन्तु-अव्य० किन्तु । लेकिन ।  
 परपच\*†-सज्ञा पु० दे० "प्रपच" ।  
 परपचक\*-वि० दे० "परपचा" ।  
 परपची\*†-वि० १ वखडिया । फसादी ।  
 २ मामावी । धूर्त ।  
 परपक्ष-सज्ञा पु० विरुद्ध पक्ष । विपक्षी की  
 बात ।  
 परपट-सज्ञा पु० १. चौरस मैदान । समतल  
 भूमि । २ दूसरे का वस्त्र । ३ पर्पट  
 ओपध । पित्तपाणर ।  
 परपटी-सज्ञा स्त्री० १. सींगट्ट, गुजरात या  
 काठियावाड की मिट्टी । २ गापीचन्दन ।  
 ३ पावडी । पपडी । ४. म्वर्णपर्वटी  
 ओपध ।  
 परपरा-वि० परपरानेवाला । जीभ में तीक्ष्ण  
 लगनेवाला । चुनचुनानेवाला । पर पर  
 शब्द के साथ टूटनेवाला ।  
 परपराना-वि० अ० मिर्च आदि षट्ई चीजों  
 का जीभ में तीक्ष्ण लगना । परपराहट ।  
 चुनचुनाना ।  
 परपोडक\*-सज्ञा पु० १ दूसरे को पीडा  
 या दुःख पहुँचानेवाला । जालिम । २  
 पराई पीडा को समझनेवाला । ३ शत्रु  
 को दंड देनेवाला ।  
 परपुण्य-सज्ञा पु० पति को छोड़कर अन्य  
 पुण्य ।

परपूठा\*-वि० पण्डित । पन्ना ।  
 परपूर-वि० पूर्ण । भरपूर । परिपूर्ण ।  
 परपूठ-सज्ञा पु० असली हुडी की तीसरी  
 प्रति या नकल । हुडी की दूसरी प्रति का  
 नाम पठ घोर तीसरी प्रति का नाम परपूठ ।  
 परपूठा-सज्ञा पु० प्रपूत्र । पोरे का बेटा ।  
 पौत्र का पुत्र ।  
 परम्-सज्ञा पु० दे० "पर्व" ।  
 परम्ब\*-वि० दे० "प्रबल" । बलवान् ।  
 उग्र ।  
 परम्बस†-वि० दे० "परबस" । दूसरे के बरा  
 में । दूसरे के समान । परतत्र ।  
 परम्बसर्द्ध\*-सज्ञा स्त्री० परतत्र । पर-  
 धनता ।  
 परम्बा-सज्ञा स्त्री० प्रतिपदा । शुक्ल या कृष्ण  
 पक्ष की पहली तिथि ।  
 परम्बाल-सज्ञा पु० १ रोयाँ । छाँव की  
 पलक पर का बाल, जिससे पीडा होती है ।  
 २ \*दे० "प्रवाल" । मूंगा ।  
 परम्बीन\*-वि० दे० "प्रबीण" ।  
 परम्बीष\*-सज्ञा पु० दे० "प्रबीष" ।  
 परम्बह-सज्ञा पु० निर्गुण ब्रह्म । परमात्मा ।  
 परम्बाइ\*-सज्ञा पु० दे० "प्रभाव" ।  
 परम्बाप्पोपजीवी-वि० दूसरे के सहारे जीवन  
 बितानेवाला । परार्थित ।  
 परम्बात\*-सज्ञा पु० दे० "प्रभात" ।  
 परम्बाव\*-सज्ञा पु० दे० "प्रभाव" ।  
 परम्बत-सज्ञा पु० स्त्री० कोकिल । कोयल ।  
 परम्ब-वि० १ सर्वश्रेष्ठ । २ महान् ।  
 उल्लिष्ट । अग्रगण्य । सबसे बड़ा-बड़ा ।  
 ३ प्रधान । मुख्य ।  
 सज्ञा पु० १ परमात्मा । शिव । २.  
 विष्णु ।  
 परम्भगति-सज्ञा स्त्री० मोक्ष । मुक्ति । उत्तम  
 गति । परलोच-प्राप्ति । सद्गति ।  
 परम्ब तत्त्व-सज्ञा पु० मूल तत्त्व, जिससे संपूर्ण  
 विश्व का विकास है । ब्रह्म । परमात्मा ।  
 परम्ब धाम-सज्ञा पु० बंबूट । स्वर्ग । मुक्ति-  
 पद ।  
 परम्ब पद-सज्ञा पु० मुक्ति । सर्वश्रेष्ठ स्थान ।  
 मोक्ष ।

परमपिता—सज्ञा पु० परमेश्वर । परमात्मा ।

परमपुरुष—सज्ञा पु० परमात्मा ।

परमब्रह्म—सज्ञा पु० परमेश्वर । परमात्मा ।

परमभट्टारक—सज्ञा पु० [स्त्री० परमभट्टारिका]  
राजाओं की एक प्राचीन उपाधि ।

परममित्र—सज्ञा पु० उत्कृष्ट मित्र । सर्वश्रेष्ठ मित्र ।

परमल—सज्ञा पु० ज्वार या गेहूँ का भुना हुआ दाना । चव्वण । भूजा-विशेष ।

परमहंस—सज्ञा पु० १ ज्ञान की परमावस्था की पहुँचा हुआ सन्यासी । अवभूत । २ परमात्मा । परमज्ञानी । ३. सन्यासियों का एक भेद ।

परमा—सज्ञा स्त्री० शोभा । सुन्दरता ।

परमाणु—सज्ञा पु० अत्यन्त सूक्ष्म अणु । अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु, जिससे उसका और कोई छोटा भाग न हो । पृथ्वी, जल, तेज और वायु का छोटे से छोटा भाग, जिसके फिर और विभाग न हो सकें । अत्यन्त सूक्ष्म अणु । परमाणुवाद—सज्ञा पु० सृष्टि को परमाणुओं से रचित मानने का सिद्धान्त ।

परमात्मा—सज्ञा पु० ईश्वर । ब्रह्म ।

परमानन्द—सज्ञा पु० १ ब्रह्म के अनुभव का सुख । ब्रह्मानन्द । २. आनन्द-स्वरूप ब्रह्म । अत्यन्त आनन्द ।

परमानु—सज्ञा पु० १. प्रमाण । सबूत । २. यथार्थ वात । सत्य वात । ३. अवधि । हद । सीमा ।

परमानना\*—क्रि० स० १ प्रमाण मानना । ठीक समझना । २ स्वीकार करना । परमाप्त—सज्ञा पु० दूध । खीर । पक्वान्न । परमाणु—सज्ञा स्त्री० अधिक से अधिक अणु । जीवन-काल की सीमा, जो १०० अथवा १२५ वर्ष मानी जाती है । अधिक आयु । बड़ी उमर ।

परमार—सज्ञा पु० क्षत्रियों की एक शाखा । पेंवार ।

परमार्थ—सज्ञा पु० १. सबसे श्रेष्ठ वस्तु । सार वस्तु । सर्वोत्तम कार्य । धर्मकार्य । दानपुण्य का कार्य । २. वांछित । ३. ज्ञान । ४. मोक्ष । मुक्ति ।

परमार्थवादी—सज्ञा पु० ज्ञानी । तत्त्वज्ञ । वेदाती ।

परमार्थ—वि० १. धर्मकार्य करनेवाला । दान-पुण्य करनेवाला । २ यथार्थ तत्त्व को ढूँढ़नेवाला । तत्त्व-जिज्ञासु । ३ मोक्ष चाहने-वाला । मुमुक्षु ।

परमिति—सज्ञा स्त्री० चरम या अन्तिम सीमा । मर्यादा ।

परमुख\*—वि० १ बिमुख । पराङ्मुख । पीछे फिरा हुआ । २ प्रतिकूल आचरण करनेवाला ।

परमेश, परमेश्वर—सज्ञा पु० ईश्वर । परमात्मा । भगवान् । परब्रह्म ।

परमेश्वरी—सज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

परमेष्ठ—वि० परमप्रिय । जो परम इष्ट हो ।

परमेष्ठ—सज्ञा पु० प्रजापति । ब्रह्मा ।

परमेष्ठी—सज्ञा पु० १. ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता । २ विष्णु । ३. शिव । ४. गुरु-विशेष ।

परमोद\*—सज्ञा पु० दे० “प्रमोद” ।

परमोदना\*†—क्रि० स० मीठी-मीठी बातें करके अपनी तरफ मिलाना ।

परमक\*—सज्ञा पु० दे० “पर्यक” ।

परलज, परलय\*—सज्ञा पु० प्रलय । सृष्टि का नाश वा अंत ।

परला—वि० [स्त्री० परली] उत्त ओर का । उपर का । दूसरी ओर का ।

मुहा०—परलें दरलें या सिरें का=हृद दरलें का । अत्यंत । बहुत अधिक ।

परलै\*—सज्ञा स्त्री० दे० “प्रलय” ।

परलोक—सज्ञा पु० १ वह स्थान, जो स्थूल शरीर छोड़ने पर प्रात्मा को प्राप्त होता है । जैसे, स्वर्ग, वैकुण्ठ आदि । २ मृत्यु के उपरांत आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति । जन्मान्तर ।

मुहा०—परलोक सिघारना=मरना ।

घी०—परलोकावासी=मृत । मरा हुआ ।

परलोकगमन—सज्ञा पु० मृत्यु । निधन । देहापसान ।

परवर\*—सज्ञा पु० परवल । एर तरकारी ।

परवरदिगार-सज्ञा पु० [फा०] पग्मेद्वर ।  
भरण-पोषण करनेवाला ।

परवरिश-गज्ञा स्त्री० [फा०] पालन-पोषण ।  
भरण-पोषण ।

परवल-गज्ञा पु० पर्व लता, जिन्हे फलों की  
सम्पत्ती होती है ।

परवश, परवश्य-वि० पराधीन । परतत्र ।

परवदयता-गज्ञा स्त्री० पराधीनता । पर-  
तत्रगता ।

परवरति\*—गज्ञा स्त्री० दे० "परवरिश" ।

परधा-गज्ञा स्त्री० १ प्रतिपदा । पक्ष की

पहली तिथि । पञ्चमा । परिधा । २.

[फा०] दे० "पर्याप्त" । चिता । राटवा ।

आशय । ३ ध्यान । खयाल । ४ आसरा ।

परधान\*—गज्ञा पु० १ दे० "प्रमाण" । सबूत ।

२ यथार्थ या गत्य वात । ३ सीमा ।

मिति । अर्थ ।

परधानधि-सज्ञा स्त्री० [फा०] जाने की आज्ञा

या आज्ञा । अनुमति । आज्ञा । मजबूती ।

परधागता\*—वि० ग० ठीक समझना । मान

गना ।

परधाता-गज्ञा पु० [फा०] १ आज्ञापत्र ।

२ परिणाम । मत ।

परधाय-गज्ञा पु० आज्ञादान । दायन ।

परधाह-गज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "चिन्ता" ।

चिन्ता ।

गज्ञा पु० दे० "प्रवाह" ।

परधी-गज्ञा स्त्री० पर्व-वाल । त्योहार का

दिन ।

परधेय\*—गज्ञा पु० हलकी बदली के बीच

दियाई गइनेवाला चन्द्रमा के चारो ओर

का घेरा । चाँद की अर्ध । मङ्गल ।

परदा-गज्ञा पु० १. पारस पत्थर । रत्न-विशेष ।

२. स्पर्श । छूना ।

परशु-सज्ञा पु० करना । एक प्रकार का अश्व ।

मुठार । एक प्रकार की कुल्हाड़ी । तबल ।

परस-गज्ञा पु० १. स्पर्श । छूना । २. पारस  
पत्थर ।

परसन\*—सज्ञा पु० छूना । छूने का काम  
या भाव ।

वि० प्रसन्न । खुश ।

परसना\*—वि० स० १ छूना । स्पर्श करना ।

२ स्पर्श कराना ।

वि० स० परोसना ।

परस पतान-गज्ञा पु० दे० "पारस" ।

पारस पत्थर ।

परसा-सज्ञा पु० १. फरसा । दे० "परशु" ।

२. परोसी हुई पत्तल । पत्तल । ३. एक

मनुष्य के खाने भर का भोजन ।

परसाव\*—सज्ञा पु० दे० "प्रमाद" ।

परसाना\*—वि० स० १. छुलाना । २. भोजन

परोसवाना ।

परसाल-अव्य० १ गत वर्ष । २ आगामी

वर्ष ।

परसु\*—गज्ञा पु० दे० "परशु" । फरसा ।

परसूत\*—वि०, सज्ञा पु० दे० "प्रसूत" ।

परसेव\*—सज्ञा पु० दे० "प्रस्वेद" ।

परसी-अव्य० १ बीते दिन से पहले का

दिन । २ आगामी दिन के बाद का दिन ।

परसीह—वि० छूनेवाला । स्पर्श करनेवाला ।

परस्पर—वि० वि० आपस में । एक दूसरे के

साथ ।

परहरना\*—वि० स० त्यागना । छोड़ना ।

परहार\*—सज्ञा पु० १ दे० "प्रहार" । २

दे० "परितार" ।

परहित-सज्ञा पु० परोपकार । दूसरे की

भलाई ।

परहेज-सज्ञा पु० [फा०] १ स्वास्थ्य को हानि

पहुँचानेवाली बातों से बचना । खाने-पीने

आदि का समय । २ दोषों और बुराइयों

से दूर रहना ।

परहेजगार-सज्ञा पु० [फा०] समयी । परहेज

परा-सज्ञा स्त्री० १ चार प्रकार की वाणिज्यी में पहली वाणी। २ वह विद्या, जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है, जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। ब्रह्मविद्या। उपनिषद-विद्या। ३ मुक्ति। मोक्ष। ४. सर्वोपरि। सत्रो बड़ा।

सज्ञा पु० पवित्र। यत्ना।

पराई-सज्ञा स्त्री० दूसरे की। अन्य की। गैर की।

पराक-सज्ञा पु० १. व्रत-विशेष। २. प्रायश्चित्त-विशेष। ३. तलवार। ४. क्षुद्र रोग-कीटाण।

पराकाष्ठा-सज्ञा स्त्री० चरम सीमा। सीमात। अन्त।

पराक्रम-सज्ञा पु० (वि० पराक्रमी) १ पीरप। बल। २ शक्ति। पुरुषार्थ। उद्योग। पराक्रमी-वि० १ बलवान्। बलिष्ठ। २ बहादुर। दूर। ३ उद्योगी। पुरुषार्थी।

पराग-सज्ञा पु० १. पुष्परज। २. धूलि। रज। ३ एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण, जिसे लगाकर स्नान किया जाता है। ४ चदन। ५ उपराग।

पराग-केसर-सज्ञा पु० फूलों के बीच में के धारीय सूत, जिनकी नीचा पर पराग लगा रहता है।

परागना\*—क्रि० अ० अनुरक्त होना। मोहित होना।

पराङ्मुख-वि० १ विमुख। मुँह परे हुए। २ उदासीन। ३ विरुद्ध।

पराजय-सज्ञा स्त्री० हार। जीत का उल्टा।

पराजित-वि० हारा हुआ। परास्त।

पराजिता-सज्ञा स्त्री० एक लता।

वि० हारी हुई।

परात-सज्ञा स्त्री० थाल। बड़ी थाली। थाली के आकार का एक बड़ा घर्तन।

पराती-सज्ञा स्त्री० परात। थाली।

सज्ञा पु० प्रातःकाल गान योग्य भजन। प्रभाती।

परात्पर-वि० सर्वश्रेष्ठ। जिसके परे कोई न हो।

सज्ञा पु० १ परमात्मा। २ विष्णु।

परात्मा-सज्ञा पु० परमात्मा।

परादिन-सज्ञा पु० फार्मन देश का घोड़ा।

पराधीन-वि० परवश। परतब।

पराधीनता-सज्ञा स्त्री० परतबना। दूसरे की अधीनता।

पराना\*†—क्रि० अ० भागना।

पराम-सज्ञा पु० पराया अन्न। दूसरे का दिया हुआ भोजन।

पराभव-सज्ञा पु० १. पराजय। हार।

२ तिरस्कार। अपमान। ३ विनाश।

पराभिक्ष-सज्ञा पु० वानप्रस्थ-विशेष। गृहस्था के परा से खाड़ी-सी भिक्षा लेकर वन में निर्वाह करनेवाला।

पराभूत-वि० १ पराजित। हारा हुआ।

परास्त। २ नष्ट। ध्वस्त।

परामर्श-सज्ञा पु० १. मनना। सलाह।

विचार। सम्मति। २. विवेचन। ३.

युक्ति।

परामृष्ट-वि० १. पकड़कर छोड़ा हुआ। २

पीड़ित। ३. विचारा हुआ। निर्णीत।

परामोद-सज्ञा पु० फुल्लावा। भुलावा।

बहवावा। भाँसा।

परायण-वि० १ गत। गया हुआ। २. प्रवृत्त।

तत्पर। लगा हुआ।

परायत्त-वि० पराधीन।

पराया-वि० [स्त्री० पराई] १ दूसरे

का। अन्य का। २ जो आत्मीय न हो।

विराज। गैर।

परामु-सज्ञा पु० ब्रह्मा।

परार\*—वि० दे० पराया।

परार्थ-वि० दूसरे का काम। दूसरे का उप-

वार।

वि० जो दूसरे के मतलब का हो। दूसरे के

लिए।

पराई-सज्ञा पु० १ महानख। अन्तिम

सप्ला। २ ब्रह्मा की आधी आसु।

पराद्धय-वि० प्रधान। श्रेष्ठ। सर्वोत्तम।

पराज-पज्ञा पु० पलाज। घास। तृण।

परावत-सज्ञा पु० फालता।

परावन-सज्ञा पु० १. एक साथ बहने वाले लोगों

वा भागना । भगदड । पलायन । २. पर्व । पुण्यवा ।

परावर्त-सज्ञा पु० १ लोटना । पलटाव । २. लेन-देन ।

परावर्तन-सज्ञा पु० [वि० परावर्तित] लोटना । पलटना । पीछे फिरना । प्रत्यावर्तन ।

परावह-सज्ञा पु० वायु के सात भेदों में से एक । परावृत्त-वि० फेरा हुआ । बदला हुआ । पलटाया या उलटा हुआ ।

परावृत्ति-सज्ञा स्त्री० पलटाव । फेरा । पराया-सज्ञा पु० दे० "पराया" ।

पराशर-सज्ञा पु० १ एक ऋषि, जो पुराणा-नुसार वसिष्ठ के पीत्र थे । २. एक प्रसिद्ध स्मृतिकार । व्यास के पिता ।

पराश्रय-सज्ञा पु० पराधीनता । परवशता । हमारे का सहारा या अचलम्ब ।

वि० पराधीन । परवश । पराश्रित-वि० परवश । परतन । दूसरे पर निर्भर ।

परास\*†-सज्ञा पु० दे० "पलाश" । परास्त-वि० पराजित । हारा हुआ । विजित । ध्वस्त । पराभूत ।

पराह-वि० अपराह । दोपहर के बाद का समय । तीसरा पहर ।

परि-उप० एक उपसर्ग, जिसके लगने से शब्द में इन अर्थों की वृद्धि होती है—

पारा शर—जैसे, परिक्रमण । अच्छी तरह—जैसे, परिपूर्ण । अतिशय—जैसे, परिवर्द्धन । पूर्णता—जैसे, परित्याग । दोषा-व्याप्त—जैसे, परिहात । नियम, क्रम—जैसे, परिच्छेद ।

परि-सज्ञा स्त्री० खराब चाँदी । खोटी चाँदी ।

परिवर-सज्ञा पु० १ पर्यव । पलंग । २ परिवार । ३ वृन्द । समूह । ४ अनुयायियों का दल । अनुचरवर्ग । सह-काठी । ५ ममारभ । तैयारी । ६ एक अर्थालंकार, जिसमें अभिप्राय भरे हुए विशेषणों के साथ विशेष्य आता है । ७ कसरबन्द । यटिबन्धन । ८ विवेक ।

परिकरावर-सज्ञा पु० एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष्य या शब्द का प्रयोग

रामिप्राय आता है ।

परिकर्म-गज्ञा पु० स्नान, उमटन लगाना आदि । शरीर-उत्सार-मात्र ।

परिकल्पन-गज्ञा पु० छन । कपट । प्रवचना, धोखाधड़ी ।

परिकल्पना-गज्ञा स्त्री० १. उपाय । २. चिन्ता । ३. चेष्टा । उद्योग । ४. कर्म । क्रिया ।

परिकीर्ण-वि० १. व्याप्त । विस्तृत । २. रामपित ।

परिकीर्ण-सज्ञा पु० १. प्रस्ताव । २. स्तुति । बढ़ाई । प्रतिष्ठा । प्रशंसा ।

परिकूट-सज्ञा पु० नगर के फाटव की खाई । परिक्रमण-सज्ञा पु० १ टहलना । घूमना । फेरी देना । २ परिक्रमा ।

परिक्रमा-सज्ञा स्त्री० १ चागे और घूमना । फेरी । चक्कर । प्रदक्षिणा । २ किसी तीर्थ या मंदिर के चारों ओर घूमने के लिए बना हुआ मार्ग ।

परिक्षत-वि० नष्ट । भ्रष्ट ।

परिक्षव-सज्ञा पु० छीन ।

परिक्षिप्त-वि० खाई आदि से घिरा हुआ ।

परिक्षोद्रा-वि० निर्धन । कगाल ।

परिक्षन-वि० रखवाली या चौकसी करने-वाला । रक्षक ।

परिक्षना†-वि० स० दे० "परिक्षना" ।

वि० अ० आसरा देवता ।

परिक्षा-सज्ञा स्त्री० खाई । खदब ।

परिक्षयात-वि० प्रसिद्ध । विख्यात ।

परिगणन-सज्ञा पु० [वि० परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य] मली भाँति गिनना । क्षुमार करना ।

परिगणना-सज्ञा पु० गिनती ।

परिगणित-वि० ठीक-ठीक गिना हुआ ।

परिगणित जाति-सज्ञा पु० यों हिन्दुआ की वे जातियाँ, जिनकी अलग गणना हा और जातको विशेष सुविधाएँ दी जायें । पिछड़ी हुई जातियाँ ।

परिगत-वि० १ प्राप्त । लब्ध । २. बीता हुआ । गत । ३ मरा हुआ । मृत । ४. भूला हुआ । विस्मृत । ५. विदित । शाव ।

परिग्रह-सज्ञा पु० आश्रित जन । सगी-साथी ।

परिगृहित-वि० ढका हुआ । छिपा हुआ ।

परिमृहीत-वि० १ स्वीकृत । मजूर । २ मिला हुआ । शामिल ।

परिगृह्य-वि० धर्मपत्नी । विवाहिता स्त्री ।

परिग्रह-सज्ञा पु० [वि० परिग्राह्य] १ प्रतिग्रह । स्वीकार । दान लेना । पाना । धनादि का संग्रह । सम्मान-पूर्वक कोई वस्तु लेना । २ विवाह । ३. पत्नी । भार्या । ४. परिवार । ५. शाप । ६. शपथ । ७. सूर्यग्रहण ।

परिग्रहण-सज्ञा पु० १ पूर्ण रूप से ग्रहण करना । २ कपड़े पहनना ।

परिग्र-सज्ञा पु० १. अर्गला । २. भाला । बछी । ३. लोहा-जडी साठी । ४. गदा । मुगदर ५. शूल ६ कलश । घडा । ७. घोडा । ८ फाटक । ९ घर । १० तीर । ११. पर्वत । १२ वज्र । १३. चन्द्र । १४. सूर्य । १५ प्रतिघघ । वाघा । १६ गोपुर ।

परिघात-सज्ञा पु० हत्या ।

परिघाती-सज्ञा पु० हत्यारा । हत्या करनेवाला ।

परिघोष-सज्ञा पु० १ तेज या भारी आवाज । २ मेघध्वनि । बादल का गरजना ।

परिचय-सज्ञा पु० १ जान-पहचान । जानकारी । विशेष रूप से ज्ञान । अभिज्ञता । २ लक्षण । प्रमाण । ३ किसी व्यक्ति के नाम-धाम या गूण-कर्म आदि के सम्यक् की जानकारी । ४ मेल ।

परिचर-सज्ञा पु० सेवक । खिदमतगार । रोगी की सेवा करनेवाला ।

परिचरी-सज्ञा स्त्री० दासी ।

परिचर्या-सज्ञा स्त्री० १ सेवा । दहत । शुश्रूषा २ रोगी की सेवा ।

परिचायक-सज्ञा पु० १ जान-पहचान या परिचय करानेवाला । २ सूचक । सूचित करनेवाला । जतानेवाला ।

परिचार-सज्ञा पु० १ सेवा । दहत । २ दहतने या धूमने-फिरने का स्थान । परिचारक-सज्ञा पु० १. भृत्य । सेवक ।

नीकर । २ रोगी की सेवा करनेवाला ।

परिचारण-सज्ञा पु० १. शुश्रूषा या सेवा करना । २ संग-साथ करना । साथ रहना ।

परिचारना\*-क्रि० सं० सेवा या शुश्रूषा करना ।

परिचारिक-सज्ञा पु० सेवक । दास ।

परिचारिका-सज्ञा स्त्री० दासी । सेविका । लोडा ।

परिचालक-सज्ञा पु० चलानेवाला । सचालक ।

परिचालन-सज्ञा पु० [वि० परिचालित]

१. सचालन । चलाना । २. हिलाना । गति देना । चलने की प्रेरणा देना । ३. कार्यक्रम जारी रखना ।

परिचालित-वि० सचालित । १. चलाया हुआ । हिलाया हुआ । २. कार्यक्रम जारी किया हुआ ।

परिचित-वि० १ जाना हुआ । ज्ञात । जाना-समझा । २. अभिज्ञ । वाकफ । ३ जान-पहचान रखनेवाला । मुलाकाती । परिचय प्राप्त ।

परिचिति-सज्ञा स्त्री० दे० "परिचय" ।

परिचुवन-सज्ञा पु० प्रेमपूर्वक चुवन ।

परिचय-वि० परिचय के योग्य ।

परिच्छद-सज्ञा पु० १ ढकने का कपडा ।

पट । आच्छादन । २ पहनावा । पोशाक ।

३ राजचिह्न । ४ राजा का सेवक ।

५ परिवार । कुटुम्ब ।

परिच्छिन्न-वि० १ ढका हुआ । छिपा हुआ ।

२ जा कपड़े पहने हो । वस्त्रयुक्त ।

३ साफ किया हुआ ।

परिच्छिन्न-वि० १ परिमित । मर्यादित ।

सीमाबद्ध । २. विभक्त । विभाजित ।

परिच्छेद-सज्ञा पु० १ अथ वा विभाग ।

पर्व । २ खड या टुकड करना । विभा-

जन । ३ सीमा । अवधि । ४. प्रकरण ।

अध्याय ।

परिछन्न-सज्ञा पु० दे० "परछन्न" ।

परिछाही-सज्ञा स्त्री० दे० "परछाई" ।

प्रतिबिम्ब ।

परिजन-सज्ञा पु० १ आश्रित या पोष्यवर्ग ।

परिवार । कुटुम्ब । २. सदा साथ रहने-

धाने मयव । धनुष । ३. स्वजन । नायेदार ।  
 परिभा-गजा स्त्री० ज्ञान । वृद्धि ।  
 परिभात-वि० जाना हुआ । ज्ञान ।  
 परिभात-गजा पु० पूर्ण ज्ञान । मत्र प्रकार  
 से जाना हुआ । विशेष रूप से  
 ज्ञान ।  
 परिणत-वि० [गजा परिणति] १ परिणाम-  
 प्राप्त । २ भूरा हुआ । नष्ट । ३ बदला  
 हुआ । रूपांतरित । ४ पना हुआ । पक्व ।  
 ५ प्रौढ़ । ६ पचा हुआ ।  
 परिणति-मज्ञा स्त्री० १. परिणाम । निष्पत्ति ।  
 २ बदलना । रूपांतर होना । भूराप ।  
 निम्नभाव । ३ पचना या पचना ।  
 परिपाक । ४. प्रौढ़ता । पुष्टि । ५ अत ।  
 ६ फल । अवनति ।  
 परिणय-मज्ञा पु० १ विवाह । व्याह । २  
 मिलन ।  
 परिणयन-मज्ञा पु० व्याहना । विवाह  
 करना ।  
 परिणाम-सज्ञा पु० १ नतीजा । फल ।  
 समाप्त होना । २. बदलना । रूपांतर-प्राप्ति ।  
 रूप-परिवर्तन या अवस्थांतर प्राप्ति  
 (साध्य) । ३ विवृति । विकार । ४ एक  
 स्थिति से दूसरी स्थिति में प्राप्ति  
 (योग) । ५ एक अर्थालंकार, जिसमें  
 उपमान उपमेय का कार्य (उससे एकरूप  
 होकर) करता है । ६ विकास । वृद्धि ।  
 ७ परिवृष्टि ।  
 परिणामदर्शी-वि० दूरदर्शी । परिणाम या  
 फल को सोचकर कार्य करनेवाला ।  
 सूक्ष्मदर्शी ।  
 परिणामदृष्टि-सज्ञा स्त्री० किसी कार्य के  
 फल का ज्ञान करने की शक्ति ।  
 परिणामवाद-सज्ञा पु० साध्य का मत,  
 जिसके अनुसार समार की उत्पत्ति और  
 नाश प्रादि का निम्न परिणाम के रूप में  
 माना जाता है ।  
 परिणायक-सज्ञा पु० १ पति । स्वामी । २  
 पामा चलनेवाला ।  
 परिणीत-वि० १ विवाहित । जिसका व्याह  
 हो चुका हो । २ पूर्ण । समाप्त ।

परिणीता-गज्ञा स्त्री० विवाहिता । व्याही  
 हुई स्त्री ।  
 परिणीता-गज्ञा पु० पति । स्वामी ।  
 परिणय-वि० व्याहने योग्य  
 परित-प्रत्यय० चारी अंग में । सम्पूर्ण  
 रूप में ।  
 परितप्त-त्रि० तपा हुआ । अव्यय गरम ।  
 गनप्त । बहुत दुर्ग ।  
 परिताप-गज्ञा पु० १ श्राव । गरमी । २  
 वनेग । दुःख । ३ मनस्ताप । सन्ताप ।  
 रज । ४ पदचात्ताप ।  
 परितापो-वि० १ दुःखित या व्यथित ।  
 जिनको पश्चात्ताप हो । २ पीडा देने-  
 वाला । गानेवाला ।  
 परितुष्ट-त्रि० [मज्ञा परितुष्टि] १ अत्यन्त  
 मनुष्ट । २ प्रमत्त ।  
 परितुष्ट-त्रि० मनुष्ट । भली भाँति  
 तुष्ट ।  
 परितुष्टि-सज्ञा स्त्री० पूर्ण तुष्टि ।  
 परितोष-मज्ञा पु० १ तुष्टि । सतोष ।  
 २ प्रमत्तता ।  
 परित्यक्त-वि० [स्त्री० परित्यक्ता] छोड़ा,  
 फेंका या दूर किया हुआ । नय प्रकार से  
 छोड़ा हुआ । त्यक्त ।  
 परित्यजन-सज्ञा पु० छोड़ देना । त्यागना ।  
 परित्याग-सज्ञा पु० [ वि० परित्यागी ]  
 त्यागना । निकालना । अलग कर देना ।  
 छोड़ना ।  
 परित्यागना\*-त्रि० स० छोड़ देना । त्यागना ।  
 परित्याज्य-वि० छोड़ने या त्यागने  
 योग्य ।  
 परित्राण-सज्ञा पु० रक्षा । बचाव ।  
 परित्रातर-वि० रक्षक । पालन । परित्राण  
 या रक्षा करनेवाला ।  
 परित्रापक-सज्ञा पु० दे० 'परित्राता' ।  
 परिदर्शन-सज्ञा पु० घूम घूमकर देखना ।  
 निरीक्षण ।  
 परिदान-सज्ञा पु० परिवर्तन । विनिमय ।  
 लेन-देन ।  
 परिदाह-सज्ञा पु० बहुत अधिक मानसिक  
 कष्ट ।

परिदेवक—सज्ञा पु० १. दुख देनेवाला । दुखदायी । २. विलाप करनेवाला । ३. जुआरी । जुआ खेलनेवाला ।  
 परिदेवन—सज्ञा पु० १. अनुताप । पश्चात्ताप । पछतावा । २. विलाप । ३. जुआ । जुए वा खेल ।  
 परिपन\*—सज्ञा पु० नीचे पहनने वा कपडा । धोती आदि अधोवस्त्र ।  
 परिधान—सज्ञा पु० १. कपडा पहनना । २. वस्त्र । कपडा । पोशाक । परिवेश ।  
 परिधि—सज्ञा स्त्री० १. किसी स्थान या पदार्थ के चारो ओर का घेरा । मटल । मण्डला-वार घेरा । २. चन्द्र-सूर्य-मण्डल । ३. बाड़ा । चहारदीवारी । ४. वस्त्र । परिवेष्टन ।  
 परिधेय—वि० पहनने के योग्य । धारण करने योग्य ।  
 सज्ञा पु० कपडा । वस्त्र ।  
 परिध्वंस—सज्ञा पु० १. हानि । क्षति । नाश । २. वर्णसंकर । जाति-विशेष ।  
 परिनिर्वाण—सज्ञा पु० पूर्ण निर्वाण । मोक्ष । छटकारा । मुक्ति ।  
 परिनिष्ठित—वि० १. परिज्ञात । २. ज्ञानी । ३. प्रतिष्ठित ।  
 परिग्यास—सज्ञा पु० १. काव्य में यह स्थल, जहाँ कोई विशेष अर्थ पूरा हो । २. नाटक में संकेत से मुख्य कथा की मूल घटना की सूचना करना ।  
 परिपक्व—वि० [सज्ञा परिपक्वता] १. अच्छी तरह पका हुआ । पूर्ण पक्व । २. जो बिलकुल हजम हो गया हो । ३. पूर्ण विवक्षित । प्रौढ । ४. बहुदर्शी । अनुभवी । ५. निपुण । कुशल ।  
 परिपक्षी—सज्ञा पु० १. शत्रु । विपक्षी । २. चार । लुटारा । ठग ।  
 परिपाक—सज्ञा पु० १. पकना या पकाया जाना । २. पचना । ३. प्रौढता । पूर्णता । ४. फल । निष्कर्ष । ५. बहुदर्शिता । ज्ञान-कारी । ६. कुशलता । निपुणता । चतुराई ।  
 परिपाटी—सज्ञा स्त्री० रीति । प्रथा । चाल । पद्धति । क्रम । श्रेणी । शैली । प्रणाली । ढंग ।

परिपार—सज्ञा पु० मर्यादा । सीमा ।  
 परिपालक—सज्ञा पु० प्रतिपालक । रक्षा करनेवाला । पोषण करनेवाला ।  
 परिपालन—सज्ञा पु० [वि० परिपाल्य] १. रक्षा करना । रक्षाना । २. पोषण । रक्षा । ध्याव ।  
 परिपालना—सज्ञा स्त्री० दे० “परिपालन” ।  
 परिपालित—वि० रक्षित । पाला पोसा हुआ ।  
 परिपिष्टक—सज्ञा पु० सीसा । धातु-विशेष ।  
 परिपीडन—सज्ञा पु० अधिक पीडा पहुँचाना । जुलम करना ।  
 परिपुष्ट—वि० १. भली भाँति पापित । २. पूर्ण पुष्ट । प्रौढ ।  
 परिपुल—वि० अति पवित्र । शुद्ध । साफ किया हुआ ।  
 परिपूरक—वि० १. पूरा करनेवाला । भर देने-वाला । समुद्र करनेवाला । २. सम्पूर्ण ।  
 परिपूरन—वि० दे० “परिपूर्ण” ।  
 परिपूरित—वि० परिपूर्ण । पूरा किया हुआ । भरा पूरा । सम्पूर्ण ।  
 परिपूर्ण—वि० [वि० परिपूरित] १. भली भाँति भरा हुआ । २. पूर्ण तृप्त । अधाया हुआ । ३. समाप्त या पूरा । सम्पूर्ण ।  
 परिपोष—सज्ञा पु० दे० “परिपोषण” । पूर्ण पुष्टि या वृद्धि ।  
 परिपोषण—सज्ञा पु० १. पालन करना । परवरिश करना । २. पुष्ट करना ।  
 परिप्लव—सज्ञा पु० १. तैरना । २. वाट । वि० चंचल । कांपता हुआ ।  
 परिप्लावित—वि० दे० “परिप्लुत” । डूबा हुआ । भाषाविशेष से अभिभूत ।  
 परिप्लुत—वि० १. प्लावित । डूबा हुआ । २. गोला या भीगा हुआ । आद्र । ३. कम्पित ।  
 परिपुल्ल—वि० १. पूर्ण विवक्षित । २. रामांच-युक्त ।  
 परिवधन—सज्ञा पु० जकड़कर बांधना ।  
 परिवर्हण—सज्ञा पु० १. पूजा । २. बहनों । वृद्धि ।

परिवृहण—सज्ञा पु० १. उन्नति । तरयत्री ।  
गमुदि । २. परिनिष्ठ । विभी प्रथम की  
पुष्टि करनेवाला दूसरा प्रथम ।

परिवोधन—सज्ञा पु० घेतावनी । दट देने की  
पगली देवर पुनः शमभाना ।

परिभक्षण—सज्ञा पु० बिलपुल या डालना ।  
नपाचट कर जाना ।

परिभ्रम, परिभाय—सज्ञा पु० १. अपमान ।  
भ्रमादर । तिरस्कार । २. पराजय । परा-  
भव । हानि । ३. भ्रमज्ञा ।

परिभावना—सज्ञा स्त्री० १. चिता । सोच ।  
चिन्ता । २. यह वाक्य या पद, जिससे  
कुतूहल या उत्सुकता प्रयुक्त हो ।

परिभाषण—सज्ञा पु० निम्नापूर्वक वचन ।

परिभाषा—सज्ञा स्त्री० १. किसी वस्तु के  
लक्षणों का वर्णन । व्याख्या । २. लक्षण । ३.

स्पष्ट वचन । अक्षय-रहित वचन या वात ।

परिभाषित—वि० १ जो अच्छी तरह कहा  
गया हो । २ जिसकी परिभाषा की  
गई हो ।

परिभू—सज्ञा पु० परमेस्वर । ईश्वर ।

परिभूत—वि० १. हराया हुआ । पराजित ।  
२. अपमानित ।

परिभ्रमण—सज्ञा पु० १ घूमना । पर्यटन ।  
टहलना । चक्कर खाना । २. परिधि । घेरा ।

परिभ्रष्ट—वि० गिरा हुआ । पतित । प्युत ।

परिमङ्गल—सज्ञा पु० घेरा । गालानार ।  
घर्तल । गाल । चक्र ।

परिमल—सज्ञा पु० [ वि० परिमलित ] १  
सुवास । सुगंध । २. मलना । उत्पटना ।  
३. समोस । मैथुन ।

परिमाण—सज्ञा पु० [ वि० परिमित, परिमेय ]  
१. माप । तौल । वजन । २. घेरा ।

परिमाणिक—सज्ञा पु० घेले या माँजनेवाला ।  
मुड करनेवाला । परिष्कारक । परिशोधक ।

परिमाणन—सज्ञा पु० [ वि० परिमाजित ]  
१ अच्छी तरह धाने या माँजने का कार्य ।  
मुड करना २. परिशोधन । परिष्करण ।

परिमाजित—वि० १ मुड किया हुआ ।

परिष्कृत । मुड । परिष्कायित । सुपारा  
हुआ । २. साफ किया हुआ ।

परिमित—वि० १. जिनकी नाप-तौल की  
हो या माप्य हो । २. सीमित ।  
अधिक, न कम । उचित परिमाण में ।  
कम । थोड़ा ।

परिमित—सज्ञा स्त्री० १ परिमाण । गण-  
तौल, सीमा आदि । २. मर्यादा । इत्थन ।

परिमेय—वि० १. नापन या तौलने योग्य ।  
जिसे नापना या तौलना हो । २. मापन ।  
थोड़ा ।

परिमोक्ष—सज्ञा पु० १ मोक्ष । निर्वाण ।  
२. परित्याग ।

परिमोक्षण—सज्ञा पु० १ मुक्त करना या  
होना । २. परित्याग करना । छोड़ना ।

परिम्पन्न—वि० उदात्त । सुगन्धवा ।

परिया—सज्ञा पु० १. दक्षिण भारत की एक  
अस्पृश्य जाति । अछूत । २. तुच्छ । क्षुद्र ।

परिरभ, परिरभण—सज्ञा पु० [ वि० परिरम्भ,  
परिरभी ] आलिंगन । गले या छाती में  
लगाकर मिलना ।

परिरभना—क्रि० सं० आलिंगन करना ।  
गले लगाना ।

परिरोध—सज्ञा पु० लकावट । अडगा ।

परिलयन—सज्ञा पु० लापना । छानाग मारना ।

परिलय—वि० बहुल छोटा ।

परिलेख—सज्ञा पु० १ डाँचा । खाका ।

२. चित्र । तस्वीर । ३. कूची या बतम,  
जिससे चित्र खींचा जाय । ४. वर्णन ।  
उल्लेख ।

परिलेखन—सज्ञा पु० किसी वस्तु के चारों  
ओर रेखाएँ खींचना ।

परिलेखना—क्रि० सं० समझना । मानना ।  
चिन्तार करना ।

परिवर्जन—सज्ञा पु० १. मना करना । २.

परिहार करना । छोड़ना ।

परिवर्जनीय—वि० १. मना करने योग्य ।

२. परिहार करने योग्य ।

परिवर्जित—वि० त्यक्त । छोड़ा हुआ ।

परिवर्त—सज्ञा पु० १. चक्कर । फेरा ।

घुमाव । २. बदला । विनिमय । लप-  
टन । ३. जो बदले में लिया या दिया  
जाय । अथ विचय ।

परिवर्तक-संज्ञा पु० १. घूमने-फिरने या चक्कर खानेवाला । २. घुमाने, फिराने या चक्कर देनेवाला । बदलनेवाला । ३. जो बदला जा सके ।

रिवर्त्तन-संज्ञा पु० [ वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती ] १. रूपान्तर । हेर-फेर । २. चक्कर । यावर्त्तन । घुमाव । फेर । अदल-बदल । विनिमय । ३. जो किसी वस्तु के बदले में लिया या दिया जाय ।

रिवर्त्तनीय-वि० परिवर्त्तन-योग्य । बदलने के योग्य ।

रिवर्त्तित-वि० १. रूपांतरित । बदला हुआ । २. बदले में प्राप्त ।

रिवर्त्ती-वि० १. परिवर्त्तनशील । बार-बार बदलनेवाला । २. बदला करनेवाला । ३. जो बराबर घूमे ।

रिवर्द्धन-संज्ञा पु० [ वि० परिवर्द्धित ] सरथा, गुण आदि में किसी वस्तु की वृद्धि । तरक्की ।

रिवर्द्धित-वि० उन्नति या वृद्धि किया हुआ । बढ़ाया हुआ ।

रिवह-संज्ञा पु० १. सात पवनो में से छठा पवन । २. अग्नि की एक जीभ ।

रिवा-संज्ञा स्त्री० प्रतिपदा । प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि ।

रिवाद-संज्ञा पु० १. अपवाद । निंदा । २. उलाहना । ३. गाली । ४. द्वेष ।

रिवादक-संज्ञा पु० निन्दक । निंदा करनेवाला । द्वेषी ।

रिवादी-वि० निन्दक । निंदा करनेवाला ।

रिवार-संज्ञा पु० १. कुटुम्ब । कुल । कुनवा । खानदान । भाईवन्द । कुटुम्ब के व्यक्ति । घराना । २. बाँध । म्यान । आवरण । तलवार की शाली । ३. राजा या रईम की सवारी में पीछे चलनेवाले । ४. एक प्रकार की वस्तुओं का समूह ।

रिवारण-संज्ञा पु० रोजना । ररावट डालना । बाधा डालना ।

रिवासे-संज्ञा पु० १. घर । घरान । २. ठहरना । ठिकाना । ३. समूह ।

परियाह-संज्ञा पु० १. जलधारा का तीव्र बहाव । मेंड़ या दीवार के ऊपर से उछलकर बहना । २. मेघमार्ग ।

परिवृत्त-वि० १. वेष्टित । आवृत । ढका, छिपाया या घिरा हुआ । उत्पन्न-फलटा हुआ । घेरा हुआ । २. समाप्त ।

परिवृत्ति-संज्ञा स्त्री० १. घेरा । वेष्टन । २. घुमाव । ३. विनिमय । तबादला । ४. समाप्ति । अंत । ५. ऐसा शब्द-परिवर्त्तन, जिसमें अर्थ में कोई अंतर न आने पावे (व्याकरण) ।

संज्ञा पु० एक अर्थालंकार, जिसमें लेन-देन या विनिमय का कथन हो ।

परिवृद्धि-संज्ञा स्त्री० दे० "परिवर्द्धन" ।

रिवर्द्ध-संज्ञा पु० पूर्ण ज्ञान ।

रिवर्द्धन-संज्ञा पु० १. पूर्ण ज्ञान । सम्पूर्ण ज्ञान । २. विचरण । ३. लाभ । ४. विद्यमानता । ५. बहन । ६. अधिक दुःख या कष्ट । ७. बड़े भाई से पहले छोटे भाई का व्याह होता ।

परिवेश-संज्ञा पु० घेरा । परिधि । वेष्टन ।

परिवेष, परिवेषण-संज्ञा पु० [ वि० परिवेष्ट्य, परिवेष्य ] १. भाजन ढरों-सना । २. घेरा । परिधि । वेष्टन । ३. सूर्य या चन्द्र आदि के चारों ओर का मंडल । ४. कौट । शहर-मनाह । पर-कोटा ।

परिवेष्टन-संज्ञा पु० [ वि० परिवेष्टित ] १. चारों ओर से घेरना । २. आच्छादन । आवरण । ३. परिधि । दायरा । घेरा । मण्डलाकार वेष्टन ।

परिवेष्ट्या-संज्ञा स्त्री० १. इयर-उधर भ्रमन । २. तपस्या । ३. भिक्षु की गति जीवन निर्वाह करना । भिक्षुकवृत्ति ।

परिवाज, परिवाणक-संज्ञा पु० १. गम्याली । परमहम । यती । २. सदा भ्रमण करनेवाला गम्यामी ।

परिवाद-संज्ञा पु० दे० "परिवाज" ।

परिशिष्ट-वि० भ्रमरोप । यका हुआ । भ्रमरोप । छुटा हुआ ।

संज्ञा पु० किसी पुस्तक या लेख के अन्त

मे जाया हुआ भाग, जिसमें वे बातें दी गई हों, जा किसी कारण से यथास्थान न दी जा सकी हों।

परिशोत्तन—सज्ञा पु० [त्रि० परिशोत्ति]।

१. ध्यानपूर्वक पढ़ना। मननपूर्वक अध्ययन।  
२. स्पर्श करना।

परिशुद्ध—वि० परिष्कृत। साफ। पवित्र।

परिशुद्ध—त्रि० बहुत मूला हुआ।

परिशय—वि० बचा हुआ।

सज्ञा पु० १. अवशेष। २. परिशिष्ट।  
अतः। समाप्ति।

परिशोध—सज्ञा पु० १. प्रतिकार। परि-  
शोधन। २. पूर्ण शुद्धि। पूरी सफाई।  
प्रतिदान। ३. चुकता। अण की बेबाकी।

परिशोधक—सज्ञा पु० १. चुकता करनेवाला।  
२. सफाई या शुद्धि करनेवाला।

परिशोधन—सज्ञा पु० [वि० परिशुद्ध, परि-  
शोधनीय, परिशोधित] १. पूरी तरह  
साफ या शुद्ध करना। २. ऋण या बज  
की बेबाकी। चुकता।

परिश्रम—सज्ञा पु० मेहनत। उद्यम। श्रम।  
उद्योग।

परिश्रमी—वि० अधिक मेहनत करनेवाला।  
उद्यमी। मेहनती। उद्योगी।

परिश्रय—सज्ञा पु० १. आश्रय। पनाह की  
जगह। २. परिपद। सभा।

परिश्रात—वि० थका हुआ। बनावत।  
अवगत।

परिश्रुत—वि० प्रमिष्ट। चिन्म्यात।

परिपत्—सज्ञा स्त्री० दे० 'परिपद'।

परिपद—सज्ञा स्त्री० चुने गए व्यक्तियों की  
सभा या समिति। किसी विषय पर  
व्ययम्य देने के लिए मघटित समिति।

परिपद—सज्ञा पु० १. सचारी या जुतूत म  
ह्वामी का घेरकर चलनेवाला गोर। २.  
नदस्व। सभामद। ३. मुसाहूर। दरदारी।

परिषेव—सज्ञा पु० छिड़पाव। स्नान।

परिष्कार—सज्ञा पु० १. सरकार। शुद्धि।  
सफाई। २. स्वच्छता। निर्मलता। ३.  
गहना। अन्कार। ४. घोभा। ५. सजा-  
वट। सिंगार।

परिष्क्रिया—सज्ञा स्त्री० १. मंवारना।  
सजाना। २. शुद्ध करना। शोधन। ३.  
मांजना-धोना।

परिष्कृत—वि० १. शुद्ध या स्वच्छ किया  
हुआ। शुद्ध। स्वच्छ। २. मांजा या धोया  
हुआ। ३. सौभाग या सजाया हुआ।  
संगोधित।

परिस्तर—सज्ञा स्त्री० १. गिनती। गणना।  
सीमा। २. एक अर्थालकार, जिसमें किसी  
बात के सदृश दूसरी बात व्यंग्य या वाच्य  
में रोचन के अभिप्राय से कही जाय। यह दो  
प्रकार का होता है—प्रश्नमहित या बिना  
प्रश्न के। सप्रश्न और अप्रश्न।

परिस्तर—सज्ञा पु० १. ग्रामपान की जमीन।  
पडोम। मैदान। २. स्थिति। ३. मृत्यु।  
४. विधि। ५. शिर।

वि० समुपेत।

परिस्तर—सज्ञा पु० १. परिग्रमण। परिक्रिया।  
धूमना फिरना। २. चिन्मी की छाज में  
जाना। ३. नाटक में किसी का किसी की  
खोज में मार्ग के चिह्नों के सहारे भटकना।  
४. सुश्रुत के अनुसार ११ छद्र कृष्ठा में  
से एक।

परिस्तर—सज्ञा पु० रेंगना। चलना। टह-  
लना।

परिसीमा—सज्ञा स्त्री० चारों ओर की सीमा।  
हद।

परिस्तान—सज्ञा पु० [पा०] १. पत्थों का  
देम। वह कल्पित लोक या स्थान, जहाँ  
परिया रहती हों। २. स्थियों के जमघट  
का स्थान।

परिस्तोम—सज्ञा पु० हाथी की पीठ पर  
ढालने का कपड़ा। भूत।

परिस्पद—सज्ञा पु० १. कपड़े की। २. मर्दन।  
परिस्पर्द्धा—सज्ञा स्त्री० प्रतिस्पर्द्धा। होड़।

परिस्फुट—वि० १. प्रकट या खुला हुआ।  
व्यक्त। प्रकाशित। २. खूब खिला हुआ।

परिस्पद—सज्ञा पु० करना। धरण।  
परिस्ताव—सज्ञा पु० टपकने की क्रिया।

परिहंस\*—सज्ञा पु० दे० "परिहम"।  
परिहृत—वि० मृत। मरा हुआ।

परिहरण—सज्ञा पु० [वि० परिहरणीय, परिहृतव्य, परिहृत] १ जबरदस्ती लेना। छीन लेना। २ छोड़ना। परि-त्याग। ३ अनिष्ट का उपचार या उपाय करना। ४. निराकरण। निवारण। दोष दूर करना।

परिहरना\*—त्रि० स० छोड़ना। तज देना। त्यागना।

परिहस\*—सज्ञा पु० १ परिहास। हँसी। दिल्लगी। २ ईर्ष्या। डाह। रज। दुख। खेद।

परिहा—सज्ञा पु० एक प्रकार का छद। वि० पारी से आनवाला ज्वर।

परिहार—सज्ञा पु० [वि० परिहारक] १ दोष, अनिष्ट आदि का निवारण या निराकरण। दोषादि के दूर करने की युक्ति या उपाय। इलाज। उपचार। २ परि-त्याग। तजने या त्यागने का काम। ३ पशुओं के करने के लिए परती छाड़ी हुई सार्वजनिक भूमि। चरागाह। ४ लड़ाई में जीता हुआ धन आदि। ५ कर या लगान की माफी। छूट। ६ खडन। तरदीद। ७ नाटक में किसी अनुचित या अविधेय वर्म का प्रायश्चित्त करना। ८ तिरस्कार। अनादर। अपमान। उपेक्षा। राजपूता का एक वंश।

परिहारना—त्रि० स० १. परिहार करना। दूर करना। दे० “परिहरना”। २ प्रहार करना। मारना।

परिहारो—सज्ञा पु० १ निवारण। त्याग। २ दोष या कलह को छिपाने या मिटानेवाला। हरण या गोपन करनेवाला।

परिहार्य—वि० परिहार के योग्य। जिससे बचा जा सके। त्याग के योग्य। जिसका निवारण या उपचार करना उचित है। परिहास—सज्ञा पु० १ हँसी। दिल्लगी। मजाक। २ शीड़ा। खेल। ३ कुतूहल। चेतन।

परिहित—वि० १ चारों ओर से छिपा या ढंका हुआ। बेगिन। २ पहना हुआ। परो—सज्ञा स्त्री० १ पारस की प्राचीन

बधाओं के अनुसार काफ नामक पहाड़ पर घसनेवाली कल्पित सुंदरी और परो-वाली स्त्रियाँ। २ परम सुंदरी। अत्यंत रूपवती। ३ देवागता। अप्सरा। ४ तेल या घी निकालने की छोटी कलछी।

परीक्षक—सज्ञा पु० परीक्षा करने या लेने-वाला। इम्तहान करने या लेनेवाला।

परीक्षण—सज्ञा पु० दे० “परीक्षा”। परीक्षा करने की प्रिया। जाँच। देख-भाल।

परीक्षा—सज्ञा स्त्री० १ गुण, दोष आदि जानने के लिए, अच्छी तरह से देखने-भालने का कार्य। परख। समीक्षा। २ वह कार्य, जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि का ज्ञान हो सके। इम्तहान। ३ आजमा-इश। अनुभवार्थ प्रयोग। ४ निरीक्षण। जाँच-पड़ताल।

परीक्षित—वि० जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो।

राजा पु० अर्जुन के पुत्र और अभिमन्यु के पुत्र, पांडु-कुल के एक प्रसिद्ध राजा। कहते हैं कि जब तक्षक के वाटने से इनकी मृत्यु हो गई, तब कनियुग का प्रारंभ हुआ।

परीक्ष्य\*—वि० परीक्षा करने योग्य।

परीक्षना\*—त्रि० स० दे० “पर्यगना”।

परीक्ष्यत\*—सज्ञा पु० दे० “परीक्षित”।

परीक्षा\*—सज्ञा स्त्री० दे० “परीक्षा”।

परीक्षित\*—वि० वि० अवश्य ही। अवश्यमेव।

सज्ञा पु० दे० “परीक्षित”।

परीक्षाद—वि० [फा०] अत्यंत नुदर।

परी की सन्तान।

परीत\*—सज्ञा पु० १ दे० “प्रेत”। २. दे० “प्रीति”।

परीत\*—वि० [फा०] अति मुन्दर। जिसकी

आदृति परी के समान हो।

परीयह—सज्ञा पु० जैन धर्मानुसार २२ प्रवाद

के त्याग या रहन।

परप\*—वि० दे० “परप”।

परप्याई\*—सज्ञा स्त्री० परपता। बढोगना।

परप—वि० [स्त्री० परप्या] १ बढोर।

पडा। सरा। २ बुरा लगनेवाला पद,

वचन आदि। ३ निष्ठुर। बेरहम।

में जाड़ा हुआ भाग, जिसमें वे बातें दी गई हों, जो किसी कारण से यत्रास्थान में दी जा सकी हों।

परिशोषन—सज्ञा पु० [वि० परिशीलित] ]

१. ध्यानपूर्वक पढ़ना। मननपूर्वक अध्ययन।  
२. रसार्थ करना।

परिशुद्ध—वि० परिष्कृत। नाफ। पवित्र।

परिशुष्य—वि० बूढ़ा सूया हुआ।

परिश्राव—वि० बका हुआ।

सज्ञा पु० १. अवशेष। २. परिशिष्ट।  
अतः। समाप्ति।

परिशोध—सज्ञा पु० १. प्रतिकार। परि-  
क्षाघन। २. पूर्ण शुद्धि। पूरी सफाई।  
प्रतिदान। ३. चुकता। ऋण की बकायी।

परिशोधक—सज्ञा पु० १. चुकता करनेवाला।  
२. सफाई या शुद्धि करनेवाला।

परिशोधन—सज्ञा पु० [वि० परिशुद्ध, परि-  
शोधनीय, परिशोधित] १. पूरी तरह  
साफ या शुद्ध करना। २. ऋण या बका  
यी बकायी। चुकता।

परिश्रम—सज्ञा पु० मेहनत। उद्यम। श्रम।  
उद्योग।

परिश्रमी—वि० अधिक मेहनत करनेवाला।  
उद्यमी। मेहनती। उद्योगी।

परिश्रय—सज्ञा पु० १. आश्रय। पनाह की  
जगह। २. परिषद्। सभा।

परिश्रात—वि० बका हुआ। बनावत।  
अवगत।

परिश्रुत—वि० प्रसिद्ध। विख्यात।

परिषत्—सज्ञा स्त्री० द० 'परिषद्'।

परिषद्—सज्ञा स्त्री० चुने गए व्यक्तियों की  
सभा या समिति। किसी विषय पर  
व्यवस्था देन के लिए मण्डित समिति।

परिषद—सज्ञा पु० १. जवारी या जुलूम में  
स्वामी का पक्षर चानबाने नौकर। २.  
सदस्य। समामद। ३. मुसाहब। दरबारी।

परिषेव—सज्ञा पु० धिक्काव। स्नान।

परिष्कार—सज्ञा पु० १. सम्भार। शुद्धि।  
सफाई। २. स्वच्छता। निर्मलता। ३.  
गहारा। प्रलवार। ४. धागा। ५. मजा-  
बद। मिगार।

परिदित्रया—सज्ञा स्त्री० १. मैवागना।  
सजाता। २. गुद करना। शोधन। ३.  
माँजना-धोना।

परिष्कृत—वि० १. गुद या स्वच्छ किया  
हुआ। शुद्ध। स्वच्छ। २. माँजा या धोया  
हुआ। ३. सँवाग या मजाया हुआ।  
सजावित।

परिस्तरा—सज्ञा स्त्री० १. गिनती। गणना।  
सीमा। २. एक श्रयाजकार, जिसमें किसी  
बात के सदृश दूसरी बात व्यंग्य या वाच्य  
में रानने के अभिप्राय से कही जाय। यह दा  
प्रकार का होता है—प्रश्नमहित या बिना  
प्रश्न के। सप्रश्न और अप्रश्न।

परिस्तर—सज्ञा पु० १. ग्रामपान की जमीन।  
पड़ोस। मैदान। २. स्थिति। ३. मृत्यु।  
४. विधि। ५. शिरा।

वि० सयुक्त।

परिसर्प—सज्ञा पु० १. परित्रमण। परित्रिया।  
धमना फिरना। २. किसी की लाज में  
जाना। ३. नाटक में किसी का किसी की  
खोज में मार्ग के चिह्नों के सहारे भटकना।  
४. सुश्रुत के अनुसार ११ क्षुद्र कृष्ण में  
से एक।

परिसर्पण—सज्ञा पु० रेंगना। चलना। टह-  
लना।

परिसोमा—सज्ञा स्त्री० चारा और की सीमा।  
हृद।

परिस्तान—सज्ञा पु० [फा०] १. पगिया का  
देग। वह बलित लाज या स्थान, जहाँ  
परिर्मा रहती है। २. स्त्रिया के जमपट  
का स्थान।

परिस्तोम—सज्ञा पु० हाथी की पीठ पर  
ढालने का कपड़ा। भूत।

परिस्पद—सज्ञा पु० १. बँपकपी। २. मर्दन।

परिस्पर्द्धा—सज्ञा स्त्री० प्रतिस्पर्द्धा। होड़।

परिष्फुट—वि० १. प्रवट या खुला हुआ।  
व्यथित। प्रचांगित। २. खून मिला हुआ।

परिस्पद—सज्ञा पु० भरना। क्षरण।

परिस्त्राव—सज्ञा पु० टपाने की क्रिया।

परिहृत—सज्ञा पु० दे० 'परिहृत'।

परिहृत—वि० मृत। मरा हुआ।

परिहरण—सज्ञा पु० [वि० परिहरणीय, परिहृत्य, परिहृत] १ जवरदस्त्री लेना। छीन लेना। २ छोड़ना। परित्याग। ३ अनिष्ट का उपचार या उपाय करना। ४. निराकरण। निवारण। दोष दूर करना।

परिहरना\*—क्रि० स० छोड़ना। तज देना। त्यागना।

परिहस\*—सज्ञा पु० १ परिहास। हँसी। दिल्लगी। २ ईर्ष्या। डाह। रज। दुख। नैद।

परिहा—सज्ञा पु० एक प्रकार का छद। वि० पारी से आनवाला ज्वर।

परिहार—सज्ञा पु० [वि० परिहारक] १ दोष, अनिष्ट आदि का निवारण या निराकरण। दोषादि के दूर करने की युक्ति या उपाय। इलाज। उपचार। २ परित्याग। तजने या त्यागने का काम। ३ पशुओं के चरने के लिए परती छोड़ी हुई सार्वजनिक भूमि। चरागाह। ४ लड़ाई में जीता हुआ धन आदि। ५ वर या लगान की माफी। छूट। ६ खडन। तरदीद। ७ नाट्य में किसी अनुचित या अविधेय कर्म का प्रायश्चित्त करना। ८ निरस्वार। अनादर। अपमान। उपेक्षा। राजपूतों का एक वंश।

परिहारना—क्रि० स० १. परिहार करना। दूर करना। दे० “परिहरना”। २ प्रहार करना। मारना।

परिहारी—सज्ञा पु० १ निवारण। त्याग। २ दोष या कलह को छिपाने या मिटानेवाला। हरण या गोपन करनेवाला।

परिहार्य—वि० परिहार के योग्य। जिससे बचा जा सके। त्याग के योग्य। जिसका निवारण या उपचार करना उचित हो। परिहास—सज्ञा पु० १ हँसी। दिल्लगी। मजाक। २ मीठा। खेल। ३ कुतूहल। मोतुर।

परिहित—वि० १ चारों ओर से छिपा या दूँडा हुआ। बेचिष्ट। २ पहना हुआ। परो—सज्ञा स्त्री० १ फारस की प्राचीन

कथाओं के अनुसार काफ नामक पहाड़ पर बसनेवाली कल्पित सुंदरी और परोवाली स्त्रियाँ। २ परम सुन्दरी। अत्यंत रूपवती। ३ देवांगना। अम्परा। ४ तेल या घी निकालने की छोटी कलछी।

परीक्षक—सज्ञा पु० परीक्षा करने या लेनेवाला। इम्तहान करने या लेनेवाला।

परीक्षण—सज्ञा पु० दे० “परीक्षा”। परीक्षा करने की क्रिया। जाँच। देख-भाल।

परीक्षा—सज्ञा स्त्री० १ गुण, दाप आदि जानने के लिए अच्छी तरह से देखने भालने का कार्य। परख। समीक्षा। २ वह कार्य, जिससे किसी की योग्यता, सामर्थ्य आदि का ज्ञान हो सके। इम्तहान। ३ आजमा-इश। अनुभवार्थ प्रयोग। ४ निरीक्षण। जाँच-पड़ताल।

परीक्षित—वि० जिसकी परीक्षा या जाँच की गई हो।

सज्ञा पु० अर्जुन के पुत्र और अभिमन्यु के पुत्र, पांडु-कुल के एक प्रसिद्ध राजा। कहते हैं कि जब तक्षक ने वादने में इनकी मृत्यु हो गई, तब कलियुग का प्रारंभ हुआ।

परीक्ष्य\*—वि० परीक्षा करने योग्य।

परीक्षना\*—क्रि० स० दे० “परयना”।

परीक्ष्य\*—सज्ञा पु० दे० “परीक्षित”।

परीक्षा\*—सज्ञा स्त्री० दे० “परीक्षा”।

परीक्षित\*—क्रि० वि० अवश्य ही। अवश्यमेव।

सज्ञा पु० दे० “परीक्षित”।

परीताद—वि० [फा०] अत्यंत मुदर।

परी को सन्तान।

परीत\*—सज्ञा पु० १ दे० “प्रेत”। २. दे० “प्रीति”।

परीत\*—वि० [फा०] अति सुन्दर। जिगकी आवृत्ति परी के समान हो।

परीपह—सज्ञा पु० जैन धर्मानुसार २२ प्रकार के त्याग या महा।

परुष\*—वि० दे० “परुष”।

परुषाई\*—सज्ञा स्त्री० परुषता। बढोरता।

परुष—वि० [स्त्री० परुषा] १ बढोर। बडा। मरु। २ मुरा लगनेवाला शब्द। कपन आदि। ३. निष्ठुर। बेरहम।

पर्वणी-गंगा स्त्री० १. पुणिमा । २. प्योत्रा । उत्सव ।

पर्वत-गंगा पु० १. पहाड़ । शील । गिरि ।  
२. निर्मा कीज का बहुत ऊँचा टुकड़ा ।  
३. वृक्ष । ४. एक प्रकार के मन्थानी ।

पर्वतज-गंगा पु० पर्वतजात । पर्वत से उत्पन्न ।

पर्वतनदिनी-गंगा स्त्री० पर्वत की मन्था । पार्वती ।

पर्वतराज-गंगा पु० हिमालय पर्वत । पर्वतों का राजा ।

पर्वतारि-गंगा पु० पर्वत के शत्रु । दंष्ट्र । शत्रु । गुरुपति । यज्ञपाणि ।

पर्वतास्त्र-गंगा पु० प्राचीन काल का एक भस्त्र ।

पर्वतिका-वि० पहाड़ी । पर्वत-गन्धर्वी । गंगा पु० लोरी । 'वहू' ।

पर्वती-वि० दे० "पर्वतीय" ।

पर्वतीय-वि० १. पहाड़ी । पहाड़-संबंधी ।

२. पहाड़ पर बगनेवाला । पर्वत-वासी ।

३. पर्वत से उत्पन्न । पर्वतजात ।

पर्वतेश्वर-गंगा पु० हिमालय ।

पर्वरिद-गंगा स्त्री० [फा०] पालन-भोषण । पालना-भोगना ।

पर्वसंधि-गंगा स्त्री० १. पुणिमा अथवा अमावस्या और प्रतिपदा के बीच का समय । २. सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण का समय । ३. घुटने पर का जोड़ ।

पर्वह-गंगा स्त्री० दे० "परवाह" ।

पर्विणी-गंगा स्त्री० दे० "पर्व" ।

पर्वेज-गंगा पु० [फा०] १. परहेज । रोग आदि के समय अपेक्ष्य वस्तु का त्याग ।

२. अलग रहना । दूर रहना । छोड़ना । त्यागना ।

पर्वपाई-गंगा स्त्री० बहुत दूर का स्थान ।

पर्वग-गंगा पु० [स्त्री० पर्वगड़ी] पर्वक ।

अच्छी और बड़ी चारपाई ।

पर्वगपोष-गंगा पु० पर्वग पर विछाने की चादर ।

पर्वगिया-गंगा स्त्री० छोटा पलंग । छटिया । चारपाई ।

पल-गंगा पु० १. क्षण । घड़ी या दंड का ६० वाँ भाग । अल्प अल्प काल ।

प्रदा । निमेष । पलक गिरने तक का समय । २. तृण । घास । पत्त । ३. चार पर्व की सोल । ४. मार्ग । ५. धान का पयाल ।

६. धोखेवाजी । प्रतारणा । ७. तराजू ।

तुला ८. पलक । दुग्धल ।

मुहा०-पल मारने या पल भारने में=बहुत हल जल्दी । आस भजनसे । तुल । पल के

पल में=बहुत ही अल्प-काल में । क्षण भर में ।

पलक-गंगा स्त्री० १. आंग के ऊपर का चमड़े का परदा । पपीटा तथा बरोनी । २. क्षण । पल ।

मुहा०-पलक भपकने=अत्यंत अल्प समय में । आग बहने । निर्मा के रास्ते में ग

रिमी के लिए पलक विछाना=निर्मा का अत्यंत प्रेम से स्वागत करना । पलक

भाजना=पलक भपाना या गिराना ।

पलक मारना=१. आँखों से सबेस या इसारा करना । २. पलक भपकाना या

गिराना । पलक लगना=आँखें मुंदना ।

पलक भपकाना । नींद आना । भपकी लगना ।

पलक में पलक न लगना=नींद न आना ।

टक्करी बंधी रहना ।

पलक-दरिया-वि० घति उदार । बड़ा दानी ।

पलकनेवाज-वि० दे० "पलक-दरिया" ।

पलक-गंगा पु० [स्त्री० पलकी] पलंग । चारपाई ।

पलटन-गंगा स्त्री० [अग्ने० प्लूटून] १. अंगरेजी सेना का एक विभाग, जिसमें

२०० के लगभग सैनिक होते हैं । २. दल । समूदाय । झुंड ।

पलटना-क्रि० अ० १. उलट जाना ।

२. अवस्था या दशा बदलना । परिवर्तन होना । काया-पलट हो जाना । ३. अच्छी स्थिति या दशा प्राप्त होना । ४. मुड़ना ।

धूमना । पीछे फिरना । ५. लौटना । वापस होना ।

क्रि० सं० १. उलटना । ओघाना । अवनत

को उन्नत या उन्नत को अवतल करना । काया पलट देना । २. एक वस्तु को त्यागकर दूसरी को ग्रहण करना । बदले में लेना । बदला करना । ३. मुकरना । ४. बदलना । लौटाना । वापस करना । फेरना ।

**पलटनिया**-सज्ञा पु० पलटन में काम करने-वाला । सिपाही । सैनिक ।

**पलटा**-सज्ञा पु० १. पलटने की क्रिया या भाव । परिवर्तन । २. बदला-बदला । प्रतिफल । बदला । ३. प्रतिकार ।

**मुहा०**—पलटा लेना=फिरना । उलटना । स्थिति या दशा एकदम बदल जाना । पलटा लेना=लौटा लेना । बदला लेना । पलटाना-क्रि० सं० १ लौटाना । वापस करना । फेरना । २ बदलना ।

**पलटाव**-सज्ञा पु० फिराव । लौटाव ।

**पलटें**†-क्रि० वि० बदले में । प्रतिफलस्वरूप ।

**पलड़ा**†-सज्ञा पु० पल्ला । तुलापट । तराजू का पल्ला ।

**पलथी**†-सज्ञा स्त्री० एक यासन, जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाएँ और बाएँ पैर का पंजा दाहिने पट्टे के नीचे दबाकर बैठने हे । स्वस्तिकासन । पालथी ।

**पलना**-क्रि० अ० १. पनपना । बढना । पाला-पोसा जाना । परवरिश पाना । २ सा-थीकर हृष्ट-पुष्ट होना । तैयार होना ।

**†पलना** पु० दे० "पालना" ।

**पलनाना**†-क्रि० सं० धोड़े पर जीन बसकर उसे चलने के लिए तैयार करना ।

**पलभक्षी**-वि० मांस पानेवाला । मासाहारी ।

**पलवा**†-सज्ञा पु० १. घजलि । घुल्लू । २. तराजू का पलड़ा । ३. डलिया ।

**पलवाना**-क्रि० सं० किसी से पालन करना ।

**पलवार**-सज्ञा पु० जड़ी नाव । एक प्रकार की नाव ।

**पलवारी**†-सज्ञा पु० भल्लाह । वेबट । माँझी । नाव चलायवाला ।

**पलवैया**-सज्ञा पु० पालन करनेवाला । पालन । पोषण ।

**पलस्तर**-सज्ञा पु० [अथे० प्लास्टर] दीवार

आदि पर मिट्टी, चूने आदि के गारे का लेप ।

**मुहा०**—पलस्तर ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना=बहुत परेशान होना ।

**पलहना**\*-क्रि० अ० पत्ते निकलना । पल्लव फूटना । लहलहाना । पनपना ।

**पलहा**\*-सज्ञा पु० कोपल । कोमल पत्ते ।

**पलाडु**-सज्ञा पु० प्याज ।

**पला**-सज्ञा पु० १. तराजू का पलड़ा । पल्ला । \*२. आंचल । ३. किनारा । पार्श्व । ४ पल । निमेष ।

**पलाद**-सज्ञा पु० राक्षस ।

**पलान**-सज्ञा पु० चारजामा या जीन ।

**पलानना**\*-क्रि० रा० १. धोड़े आदि पर पलान बसना । २. बड़ाई की तैयारी करना । ३. बुरा-भला कहना ।

**पलाना**\*†-क्रि० अ० भागना । पलायन करना ।

क्रि० सं० पलायन करना । भागना ।

**पलानो**-सज्ञा स्त्री० १. छप्पर । २. दे० "पलान" ।

**पलायक**-सज्ञा पु० भागनेवाला । भगू । भगोड़ा ।

**पलायन**-सज्ञा पु० भागना । भागने की क्रिया । भय के कारण दूसरे स्थान में जाना ।

**पलायमान**-वि० भागता हुआ । भगोड़ा ।

**पलायित**-वि० भागा हुआ ।

**पलाल**-सज्ञा पु० पयाल । गुवाल ।

**पलाश**-सज्ञा पु० १ पलास । डाक । विंशुन वृक्ष । टेसू । २. पत्र । पत्ता । ३. राक्षस । ४. बचूर । ५. भगध देश ।

वि० १. निर्दय । २. मासाहारी । ३. हरा ।

**पलाशी**-वि० १. मासाहारी । २. पत्ते से युक्त ।

**सज्ञा पु० राक्षस ।**

**पलास**-सज्ञा पु० १. एक प्रसिद्ध वृक्ष, जो तीन गंधों में पाया जाता है—वृक्ष, क्षुप और लता । इसके फूल को प्रायः टेसू कहते हैं । पलाश । डाक ।

बेसू । २. गोप की भाँति का एक मासाहारी पक्षी ।

पलित-वि० [ स्त्री० पलिता ] १ बूढ़। बूढ़ा। २ पका हुआ या सफेद वाल। संज्ञा पु० १. मिर के वालो का सफेद होना। वाल पचना। २ ताप। गरमी। ३ पीनड। पली-मज्ञा स्त्री० तेल, घी आदि द्रव पदार्थों को बड़े बरतन से निवालने की पछी। पछी। एव प्रकार का चम्मच। मुहा०—पली-पली जोड़ना=थोड़ा-थोड़ा करके गन्ध करना।

पलीत-मज्ञा पु० भूत। प्रेत। पिशाच। भूतपानि।

वि० १. मंला-कुचंला। २. दुष्ट, पाजी, धूर्त। पलीता-मज्ञा पु० [ फा० ] [ स्त्री० पलीतो ] १ बड़का या तोप के रजक में आग लगाने की बत्ती। २ कपड़े की मोटी बत्ती।

वि० आग-बबूला। बहुत क्रुद्ध।

पलीद-वि० [ फा० ] १ अपवित्र। अशुद्ध। २ पुण्यरूपद। ३ नीच। गदा।

सज्ञा पु० १. भूत। प्रेत। २ दुष्ट।

पल्ल्या†-सज्ञा पु० पालतू। पाला हुआ। पाला हुआ। पलित।

पल्लुना\*†-क्रि० अ० हरा मरा या पल्लवित होना।

पल्लुहना\*†-क्रि० स० १ पल्लवित या हरा-भरा करना। २ दूध के लिए गाय भैंस का आधन सहलाना।

पल्लेडना\*†-क्रि० स० ढबेलना या पकवा देना।

पलेयन-सज्ञा पु० १ सूखा आटा, जिसके सहारे रोटी बली जाती है। परयन। परायन। परेयन। २ किसी हानि के बाद होनेवाला आवश्यक व्यवस्था।

मुहा०—पलेयन निवालना=१ खूब मार पड़ना या खाना। पीटकर बरस कर देना। २ परेशान या तंग होना।

पलोटना-क्रि० स० १ पाँप पवाना। २ दे० 'पलटना'।

त्रि० अ० कष्ट से लौटना-पीटना। तड़फडाना। पलोयन-सज्ञा पु० दे० 'पलेयन'।

पलोयना\*-क्रि० स० १ पैर धवाना। पैर मलना। २ सेवा करना।

पलोसना\*-क्रि० स० १. परोसना। २ धोना।

३ मीठी-मीठी बातें करके ढग पर खाना।

पल्लय-सज्ञा पु० १. नए निक्के हुए कोमल पत्ते। नवीन पत्तों का समूह। कोपल।

पल्ला। २ हाथ का कड़ा या कवच।

३ विम्बार। ४. बल। ५ दक्षिण का

एव प्राचीन राजवत्त।

पल्लयप्राप्ती-सज्ञा पु० १. अनभिज्ञ व्यक्ति।

मोटी बातें जाननेवाला। २. बेचन ऊपर-

ऊपर से ज्ञान प्राप्त करनेवाला।

पल्लयद्रु-सज्ञा पु० अशाव का पेड़।

पल्लयन-सज्ञा पु० पल्लव उद्गम करना या

निवालना। किसी बात या विषय का एव

विस्तार करना।

पल्लवना\*-क्रि० अ० नए पत्ते निकलना।

पत्ते फैलना। पनपना।

पल्लवास्त्र-सज्ञा पु० कामदेव।

पल्लवित-वि० १ नये पत्ता से युक्त।

२ हरा-भरा। ३ लवा-बोड़ा। ४ पनपा

हुआ।

पल्लवी-सज्ञा पु० पेड़।

वि० पल्लवयुक्त।

पल्ला-क्रि० वि० १. दूर। अन्तर। २ दूरी।

व्यवधान। ३ †पास। ४. अधिकार में।

५ तरफ।

सज्ञा पु० १. कपड़े का छोर। २ दामन।

आंचल। ३ दुपल्ली टोपी का आधा

भाग। ४ पटल। जिवाड़। ५ पहल।

६ तीन मन का बोझ। ७ तराजू में एक

आर का टोकरा या डलिया। पलड़ा।

मुहा०—पल्ला छूटना=पिंड छूटना। छुट-

कारा मिलना। पल्ला पसारना=किसी

से कुछ गाँगना। पल्ले पडना=प्राप्त होना।

मिलना। (किसी के) पल्ले बाँधना=

गले मड़ना। पल्ला भुक्ना या भारी

होना=पक्ष प्रबल होना।

पल्लो-सज्ञा स्त्री० १. छोटा गाँव।

पुरवा। खेडा। २ कुटी। ३ जाजम।

सतरजी। ४ छिपकली।

वि० उस आर की।

पल्लू†-सज्ञा पु० १ आंचल। दामन।

पड्डे का छोर । २. चौड़ी गोठ । पट्टा ।  
पल्ले†\*—वि० दे० १ "परलय" । २ दे०  
"पल्ला" ।

पल्लेदार—सज्ञा पु० १. अनाज ढोनेवाला  
मजदूर । २. गल्ला तोलनेवाला आदमी ।  
वया ।

पल्लेदारी—संज्ञा स्त्री० पल्लेदार का काम  
या मजदूरी ।

पल्लौ†—सज्ञा पु० पल्लव । चहूर या गोन  
जिममें अनाज बीघते हैं । पल्ला ।

पल्लल—सज्ञा पु० छोटा तालाब । छोटा  
जलाशय ।

पवगा—सज्ञा पु० एन छद ।

पय—सज्ञा पु० १. गोनर । २. वायु ।

पवई—सज्ञा, स्त्री० पक्षी-विशेष ।

पवन—सज्ञा पु० १ वायु । हवा । २.  
कुम्हार का आईरा । ३. श्वास । साँप ।  
४. प्राण-वायु ।

मुहा०—पवन का भूसा होना=सब उड़  
जाना । कुछ न रहना ।

पवन-अस्त्र—सज्ञा पु० दे० "पवनास्त्र" ।

पवन-कुमार—सज्ञा पु० १ हनुमान् । २ भीम ।

पवन-चक्की—सज्ञा स्त्री० हवा-चक्की । हवा  
के जोर से चलनेवाली चक्की या कत ।

पवन-चक्र—सज्ञा पु० बवडर । चक्कर खाती  
हुई जोर की हवा ।

पवन-तनय—सज्ञा पु० १ हनुमान् । २ भीम ।

पवन-पति—सज्ञा पु० वायु के अधिष्ठाता  
देवता ।

पवन-परीक्षा—सज्ञा स्त्री० आपाद शुक्ल  
पूर्णिमा के दिन वायु की दिशा की देखकर  
ऋतु का भविष्य बतलाया जाता है ।

पवन-पुत्र—सज्ञा पु० १ हनुमान् । २ भीम ।

पवन-बाण—सज्ञा पु० दे० "पवनास्त्र" । एक  
बाण, जिसके चलाने से हवा वेग से चलने  
लगे ।

पवनसखा—सज्ञा पु० अग्नि । आग ।

पवन-सुत—सज्ञा पु० १ पवनपुत्र । हनुमान् ।  
२ भीम ।

पवनात्मज—सज्ञा पु० १. हनुमान् । २ भीम ।  
३. अग्नि ।

पवनायन—सज्ञा पु०, भरोणा । सिङ्घी ।  
गवाक्ष । बातायन ।

पवनावती—सज्ञा स्त्री० महर्षि वस्यप की  
एक स्त्री ।

पवनाशन—सज्ञा पु० वायु-भक्षण । वायु का  
आहार करनेवाला । साँप । सर्प ।

पवनाशी—सज्ञा पु० हवा खाकर जीवित  
रहनेवाला । साँप । सर्प ।

पवनास्त्र—सज्ञा पु० एक अस्त्र, जिसके  
चलाने से तेज हवा चलने लगती थी ।

पवनी†—सज्ञा स्त्री० गाँव में रहनेवाली नाऊ,  
बारी, घोड़ी आदि छाटी जाति, जिसे उच्च  
जातियाँ नियमित रूप से कुछ देने हैं ।

पवमान—सज्ञा पु० १. पवन । वायु । २.  
अग्नि । ३. चंद्रमा ।

पवर, पवरी†—सज्ञा स्त्री० दे० "पैवरि" ।  
पवर्ग—सज्ञा पु० वर्णमाला का पाँचवाँ वर्ग,  
जिसमें प, फ, ब, भ, म, पाँच अक्षर हैं ।

पवार—सज्ञा पु० दे० "परमार" ।

पवारस्ता†—कि० सं० फँकना । गिराना ।

पवाई—सज्ञा स्त्री० १ एक पैर का जुता ।  
एक पल्ला । छोटे के पैर की साँकर ।

२ चक्की का एन पाट । ३ पाने का भाव ।

पवाज—सज्ञा पु० १ गेंबइया । आमीण ।  
गेंवार । २ नीच । अधम ।

पवाडा—सज्ञा पु० दे० "पैवाडा" ।

पवामा†—कि० सं० १ खिलाना । भोजन  
कराना । २. रोटी बनवाना ।

पवि—सज्ञा पु० १ इन्द्र का अस्त्र । वज्र ।  
विजली । गज । २ वाक्य । ३. शूहर ।  
मार्ग ।

पविताई—सज्ञा स्त्री० पवित्रता ।

पवित्र†—वि० दे० "पवित्र" ।

पवित्र—वि० १ शुद्ध । साफ । निर्मल । २.  
पाप-रहित । निष्कल ।

सज्ञा पु० १. मंड । वर्षा । २. कदा । ३.  
ताँडा । ४. जल । ५. दूध । ६. यज्ञो-  
पवीत । जनेऊ । ७. घी । ८. सहद ।

९. कुशा की बनी हुई पवित्री, जिसे आद  
आदि में जैगलियाँ म पहनते हैं । अर्घा ।

१०. विष्णु । ११. महादेव ।

पवित्रता—गंगा स्त्री० पवित्र या शुद्ध होने का भाव। शुद्धता। निर्मलता। निष्पन्नता। सफाई। स्वच्छता।

पवित्रधान्य—सज्ञा पु० जो।

पवित्रा—सज्ञा स्त्री० १ तुलसी। २ इन्दी। ३ पीपल। ४. रेशमी माता, जो कुछ धार्मिक कृत्यों के समय पहनी जाती है। ५ कुश के बने छल्ले-बिसाप, जो आदि आदि वार्यों के समय हाथ की श्रैंगुलियों में पहने जाते हैं।

पवित्रित—वि० शुद्ध या निर्मल किया हुआ। पवित्रीभूत।

पवित्री—सज्ञा स्त्री० कुश का बना छल्ला, जो धर्मकांड के समय अनामिका में पहना जाता है। कुश की श्रैंगुली।

पविघर—सज्ञा पु० वस्त्र धारण करनेवाला। इन्द्र।

पशम—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ बटिया मुलायम ऊन, जिससे दुसाले और पशमीने आदि बनते हैं। २ उपरस पर के बाल। शष्प। ३ अत्यन्त तुच्छ वस्तु।

पशमी—वि० ऊन की बनी। मुलायम ऊन के बने पशमीना, दुसाल आदि।

पशमीना—सज्ञा पु० [फा०] १ पशम। २ पशम का बना हुआ कपड़ा, दुसाला आदि।

पशु—सज्ञा पु० १ बीपाया। चतुष्पाद। चार पैरों से चलनेवाला कोई जीव। जैसे—बुत्ता, बिल्ली, घोड़ा इत्यादि। २ जीव-मात्र। प्राणी। ३ देवता।

पशुता—सज्ञा स्त्री० १. पशुभाव। पशुत्व। २. जानवरपन। मूर्खता। जड़ता।

पशुतुल्य—वि० पशु-समान। पशु-वद्भाव। मूल। मूढ़। निर्धोष।

पशुत्व—सज्ञा पु० दे० 'पशुता'।

पशुधर्म—सज्ञा पु० पशुओं का-मा आचरण। मनुष्य के लिए निष्ठ धर्म।

पशुनाथ—सज्ञा पु० १ शिव। २. सिंह। शेर।

पशुपतास्त्र—सज्ञा पु० महादेव का त्रिशूल। पशुपत।

पशुपति—सज्ञा पु० १ पशुपति का स्वामी। शिव। महादेव २ शोषधि। ३ अग्नि।

पशुपाल—सज्ञा पु० १. पशुपति का पालक या रक्षक। २. गठरिया। चरवाहा। ग्रहीर।

पशुपालक—सज्ञा पु० पशु पालनेवाला।

पशुराज—सज्ञा पु० सिंह। शेर।

पश्चात्—प्रव्य० पीछे। पीछे में। बाद। अनन्तर। फिर।

सज्ञा पु० १ पश्चिम। २. अन्त।

पश्चात्ताप—सज्ञा पु० अनुताप। अफसोस। पछतावा।

पश्चात्तापी—सज्ञा पु० पछतावा करनेवाला। अफसोस करनेवाला।

पश्चाद्वर्त्तो—वि० पीछे रहने या चलनेवाला। अनुवर्त्ती।

पश्चार्ध—वि० १ शेषार्ध। अपरार्ध। २ शरीर का अपर भाग।

पश्चानुताप—सज्ञा पु० पछतावा।

पश्चिम—सज्ञा पु० पश्चिम। प्रतीची। वह दिशा, जिसमें सूर्य का अस्त होता है।

पश्चिमवाहिनी—वि० पश्चिम की ओर बहनेवाली।

पश्चिमा—सज्ञा स्त्री० पश्चिम दिशा-सम्बन्धी। पश्चिम दिशा।

पश्चिमाचल—सज्ञा पु० अस्ताचल। सूर्यास्त का एक कल्पित पर्वत।

पश्चिमो—वि० १ पश्चिम की ओर का। २ पश्चिम-संबन्धी। पश्चिम का।

पश्चिमोत्तर—सज्ञा पु० पश्चिम और उत्तर के बीच का कोना। बायवोण।

पदतो—सज्ञा पु० [अफगाणा की भाषा] पश्चिमोत्तर भारत की एक आर्य भाषा जिसमें फारसी आदि के बहुत से शब्द मिल गए हैं।

पद्म—सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० 'पद्म'।

पद्मीना—सज्ञा पु० [फा०] दे० 'पद्मीना'। दाल-दुसाले आदि वस्त्र।

पश्यतोहर—सज्ञा पु० आँखा के सामने के चीज चुरा ले जानवाला। जैसे, सुतार आदि।

पश्वाचार—सज्ञा पु० [वि० पश्वाचारी] तादिकों के अनुसार कामना और सबल्य पूर्वक वैदिक रीति से देवी का पूजन।

पश्वाचार।

पय\*†-सज्ञा पु० १ पख । डैना । २ ओर । तरफ । पाख । पख ।

पयवार-सज्ञा पु० एव पस । पन्द्रह दिन । पाखभर ।

पया-सज्ञा पु० दाढी । श्मश्रु ।

पयान-सज्ञा पु० दे० "पापण" । पत्थर ।

पयारना\*†-क्रि० स० धोना । साफ करना । पछाटना ।

पसधा†-सज्ञा पु० वह बोझ, जिसे तराजू के पल्ला वा बोझ बराबर करने के लिए हलके पल्ले की तरफ बांध देते हैं । पासग । वि० बहुत ही थोड़ा या कम ।

मुहा०-पसधा भी न होना=नहीं के बराबर होना । अत्यन्त अल्प होना ।

पसद-वि० सचि के अनुकूल । मनचाहा । मनोनीत । जो अच्छा लग ।

सज्ञा स्त्री० अच्छा लगने की वृत्ति । अभि-सचि ।

पसानी†-सज्ञा स्त्री० अतप्राशन नामक संस्कार । लड्डे को पहले-पहल अन्न खिलाना या खीर चटाना ।

पसर-सज्ञा पु० १. गहरी की हुई हवेली । कस्तलपुट । आधी अजलि । †२ विस्तार । फैलाव । प्रसार ।

पसरना-क्रि० अ० १ आगे की ओर बढ़ना । फैलना । विस्तृत होना । बढ़ना । †२ पैर फैलाकर लटना ।

पसरवाना-क्रि० अ० दूसरे से फैलवाना ।

पसरहटा-सज्ञा पु० बाजार का वह भाग, जिसमें पसारा आदि की दूकानें हो । पसराना-क्रि० स० पसरवाना । दूसरे को पसारने में प्रवृत्त करना । फैलाना ।

पसरीहो†-वि० फैलने या पसरनेवाला । पसली-सज्ञा स्त्री० शरीर में छाती पर के पजर की हड्डियाँ ।

मुहा०-पसली पडवना या फडव उठना=मन में उत्साह होना या जोश आना । हड्डी-पसली तोड़ना=रहुत मारना-पीटना । पसली धनना=बर्बाद से बच्चा या दयास बड़ जाना ।

पसा-सज्ञा पु० मुट्ठी भर । दो मुट्ठी भर ।

पसाई-सज्ञा स्त्री० १. तालावा में अपने आप उगनेवाला धान । २ चावल पसाने की क्रिया ।

पसाउ†-सज्ञा पु० प्रसाद । प्रसन्नता । कृपा ।

पसाना-क्रि० स० १. रखे हुए चावल को माँड निवालना । भात में से माँड निवालना । २ पसेव निकालना या गिराना ।

†\*क्रि० अ० प्रसन्न होना ।

पसार-सज्ञा पु० १ पसरने या फैलने की क्रिया या भाव । प्रसार । २ फैलाव । विस्तार ।

पसारना-क्रि० स० आगे की ओर बढ़ाना । फैलाना ।

पसारी-सज्ञा पु० दे० "पसारी" ।

पसाब-सज्ञा पु० पसान पर निकलनेवाला पदार्थ । माँड । पीच । पानी ।

पसाबन-सज्ञा पु० दे० "पसाव" ।

पसिजर-सज्ञा स्त्री० [अश्रे० पसिजर] हर रूढ़ान पर खनेवाली मुसाफिरा की रेल-गाड़ी ।

पसीजना-क्रि० अ० १ पसीना निकलना । पानी छूटना । नरम होना । रसना । २ चित्त में दया उत्पन्न होना ।

पसीना-सज्ञा पु० परिश्रम करने अथवा गरमी लगने पर शरीर से निकलनेवाला जल । प्रस्वेद । श्रमवारि । स्वेद ।

पसीव-सज्ञा पु० पसीना । प्रस्वेद । पनेव ।

पसुरी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "पसली" ।

पसुज-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की सिलाई । सीवन । तुपेन ।

पसुजना-क्रि० स० सीना । सीधी सिलाई करना ।

पसउ†-सज्ञा पु० दे० "पसेव" ।

पसेरी-सज्ञा स्त्री० पाँच घेर का बाट । पसेरी ।

पसेव-सज्ञा पु० १ किसी चीज में से रस कर निकाला हुआ जल । पसाव । २ पसीना । प्रस्वेद ।

पसोपेज-सज्ञा पु० [फा०] १ आना-पीछा । सोच विचार । हिचक । दुविधा । २ ऊँच-नीच । हानि-लाभ ।

पस्त-वि० [फा०] १ हारा हुआ । पका हुआ । २ दया हुआ ।

पस्तहिम्मत-वि० [का०] वापर । जो हिम्मत  
हार चुका हो । भीर । उत्पान ।

पस्तो-सज्ञा पु० १. निचाई । २. बमी ।  
न्यूनता ।

पस्तो पथल-सज्ञा पु० एक पहाड़ी  
बगल ।

पहुँ\*-प्रव्य० १. निगट । पास । २. से ।  
पहुँगल-गज्ञा स्त्री० तरकारी बाटने का  
होगिया ।

पहु-सज्ञा स्त्री० दे० "पी" । गवेरा । भोर ।  
प्रवास की विरण ।

पहचनवाना-क्रि० स० किसी से पहचानने  
का काम करना ।

पहचान-सज्ञा स्त्री० १. जान-पहचान ।  
परिचय । मुलानात । पहचानने की  
द्रिया या भाव । २. किसी वस्तु के गुण तथा  
मूल्य आदि का ज्ञान । परत । ३. लक्षण ।  
निशानी । ४. पहचानने या भेद समझने  
की शक्ति ।

पहचानना-क्रि० स० १. देखते ही जान  
लेना । चीन्हना । २. परिचित होना ।  
३. अंतर समझना । जानना । समझना ।  
विस्तगाना । ४. योग्यता या विशेषता  
से अभिज्ञ होना ।

पहटना†-क्रि० स० १. पीछा करना । खदे-  
टना । २. धार पानी करना ।

पहन\*-सज्ञा पु० दे० "पाहन" । पत्यर ।  
पहनना-क्रि० स० शरीर पर वस्त्र धारण  
करना । पपडा पहनना ।

पहनवाना-क्रि० स० किसी और के द्वारा  
किसी को पहनाना ।

पहनवाई-सज्ञा स्त्री० १. पहनने की क्रिया  
या भाव । २. पहनाने की मजदूरी या  
इनाम ।

पहनाना-क्रि० स० दूसरे को कपड़े, आभूषण  
आदि धारण कराना ।

पहनावा-सज्ञा पु० १. परिधेय । पोशाक ।  
पहनने के मुख्य मुख्य कपड़े । परि-  
च्छद । २. विशेष अवस्था, स्थान अथवा  
समाज में ऊपर पहने जानेवाले कपड़े ।  
३. कपड़े पहनने की रीति या चाल ।

पहपट-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गीठ  
जिसे मित्रियाँ माया करती हैं । २. शोरगुल ।  
हल्ला । बोलाहल । ३. बदनामी । ४. छन ।  
घोषा ।

पहपटवाज-सज्ञा पु० धारास्ती । ऋगडालू ।  
धार करनेवाला । धीनेवाज ।

पहपटवाजी-सज्ञा स्त्री० १. बलह-प्रियता ।  
भगडालूपन । २. धोखेवाजी ।

पहपटवाई†-सज्ञा स्त्री० भगडा करनेवाली  
स्त्री ।

पहर-सज्ञा पु० १. तीन घंटे का समय ।  
२. समय । प्रहर । समय का परिमाण ।  
रात या दिन का चतुर्थांश ।

पहरना†-क्रि० स० दे० "पहनना" ।

पहरा-सज्ञा पु० १. रखवाली । रक्षा । निगरानी ।  
हिराजत । २. चौकी । रखवाली करने के  
लिए तैनाती । रखव-दल । ३. चौकीदार  
या पहरदार की धावाज । पहरदार का  
गस्त या फेरा । ४. पहरों में रहने की स्थिति ।  
वह समय, जब तक रक्षक दल की वाम करना  
पड़ता है । ५. हिरासत ।

मुहा०-पहरा देना=रखवाली करना ।  
पहरा बदलना=नया रक्षक नियुक्त  
करके पुराने को छुट्टी देना । रक्षक बद-  
लना । पहरा बंटाना=किसी व्यक्ति या  
वस्तु के आसपास रखव तैनात करना ।  
पहर में देना या रखना=हिरासत में देना ।  
हवालात भेजना । पहरों में होना=हिरासत  
में होना । नजरबन्द होना ।

पहराना†-क्रि० स० दे० "पहनाना" ।

पहरावन-सज्ञा पु० पहनावा । पोशाक ।  
दे० "पहरावनी" ।

पहरावनी-सज्ञा स्त्री० वह पोशाक, जो कोई  
बड़ा छोटे को दे । खिलमल ।

पहरी-सज्ञा पु० दे० "प्रहरी" । पहरदार ।  
चौकीदार । पहरा देनेवाला । रक्षक ।

पहरा†-सज्ञा पु० दे० "पहर" ।

पहरू-सज्ञा पु० पहरा देनेवाला । रक्षक ।  
चौकीदार ।

पहरदार-सज्ञा पु० पहरा देनेवाला । रक्षक ।  
चौकीदार ।

पहल-सज्ञा पु० १. किसी ठोस वस्तु के तीन या अधिक कोनों के बीच की समतल भूमि। वगल। पहलू। बाजू। तरफ। २. जमी हुई रुई अथवा ऊन। ३. रजाई, तोशक आदि से निकासी हुई पुरानी रुई। ४. तह। परत। ५. किसी कार्य का आरम्भ। शुरु।

पहलवार-वि० जिसमें पहल हो। पहलूदार। पहलवान-सज्ञा पु० [फा०] १. कुश्ती लड़नेवाला। कुश्तीबाज। मल्ल। २. बलवान् और मोटा-तगड़ा व्यक्ति।

पहलवानो-सज्ञा स्त्री० १. कुश्ती लड़ना। २. पहलवान का कार्य करना। मल्ल व्यवसाय। पहलवान का पेशा।

पहलवो-सज्ञा पु० दे० "पहलूवी"।

पहला-वि० [स्त्री० पहली] आरम्भ का। प्रथम। श्रौचल।

पहलू-सज्ञा पु० [फा०] [वि० पहलूदार] १. वगल और कमर के बीच का वह भाग, जहाँ पसलियाँ होती हैं। पाँजर। पार्श्व। २. दायीं अथवा बायाँ भाग। वगल। बाजू। ३. करघट। दल। दिशा। तरफ। ४. पहल। ५. गुण, दोष आदि की दृष्टि से किसी चीज के भिन्न-भिन्न अंग। पक्ष।

पहले-अव्य० १. आरम्भ में। सर्व-प्रथम। शुरु में। आदि में। २. आगे। पेशतर। ३. पूर्वकाल में। बीते समय में।

पहले-पहल-अव्य० पहली बार। सर्व-प्रथम। सबसे पहले।

पहलीठा-वि० [स्त्री० पहलीठी] प्रथम सन्तान। पहली बार उत्पन्न पुत्र।

पहलीठी-सज्ञा स्त्री० पहले पहल बच्चा जनना। प्रथम प्रसव।

पहाड़-सज्ञा पु० [स्त्री० पहाड़ी] १. चट्टानों का ऊँचा और बड़ा समूह जो प्राकृतिक रीति से बना हो। गिर। पर्वत। २. बहुत भारी ढेर। ऊँची राशि। ३. बहुत भारी वस्तु। ४. अति कठिन कार्य। दुष्कर काम।

मुहा०-पहाड़ उठाना=कष्टसाध्य कार्यकरने

को तैयार होना। पहाड़ टूटना या टूट पड़ना=प्रचानव कोई भारी आपत्ति या पड़ना। महान् संकट उपस्थित होना। पहाड़ से टक्कर लेना=जबरदस्ती से मुकाबला करना।

पहाड़ा-सज्ञा पु० किसी अंक के गुणनफलों की प्रमाणत सूची। गुणन-सूची।

पहाड़ी-वि० पहाड़ पर रहनेवाला। पहाड़ पर होनेवाला। पहाड़ से सम्बद्ध।

सज्ञा स्त्री० १. छोटा पहाड़। २. पहाड़ी गाने की एक धुन।

पहार†-सज्ञा पु० पहरेंदार।

पहिचान-सज्ञा स्त्री० दे० "पहचान"।

पहित, पहिती\*†-सज्ञा स्त्री० पकी हुई दाल।

पहिनना-क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहियाँ\*†-अव्य० दे० "पहें"।

पहिया-सज्ञा पु० १. गाड़ी में लगा हुआ चक्का, जो अपनी धुरी पर घूमता है और जिसके घूमने पर गाड़ी चलती है। चक्का। चक्र। २. चाक।

पहिरना†-क्रि० स० दे० "पहनना"।

पहिरावनी-सज्ञा स्त्री० दे० "पहनावा"।

पहिला-वि० [स्त्री० पहिली] १. दे० "पहला"। २. प्रथम प्रसूता। पहले

पहल ब्याई हुई।

पहिले-अव्य० दे० "पहले"।

पहिली\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "पहिली"।

पहुँच-सज्ञा स्त्री० १. पैठ। सामर्थ्य। प्रवेश।

२. गुजर। रसाई। ३. पहुँचने की सूचना।

४. रसीद। फैलाव। ५. ६. विस्तार। ७.

पकड़। दौड़। ८. परिचय। ९. समझने की शक्ति। जानकारी।

पहुँचना-क्रि० अ० १. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान में प्रस्तुत होना। २.

एक हालत से दूसरी हालत में जाना।

३. धुसना। पठना। प्रविष्ट होना। ४.

किसी के अभिप्राय या आशय को जान लेना। ताड़ना। समझना। ५. समझने में समर्थ होना। ६. भेजी हुई चीज

किसी को मिलना। ७. अनुभूत होना।

अनुभव में आना। प्राप्त होना। ८. समवक्ष होना। तुल्य होना।  
 मुहा०—पहुँचा हुआ=ईश्वर के निबट  
 पहुँचा हुआ। सिद्ध। पहुँचनेवाला=  
 जानकार। भेद या रहस्य जानने में  
 समर्थ। पहुँचा हुआ=१. जिसे सब कुछ  
 मालूम हो। अभिज्ञ। पता रखनेवाला।  
 २. दक्ष। उस्ताद। निपुण।  
 पहुँचा-सज्ञा पु० १. ब्लाई। २. मणिवध।  
 ३. गूढ़।  
 पहुँचाना-क्रि० स० १. किसी वस्तु या  
 व्यक्ति को एक स्थान से ले जाकर दूसरे  
 स्थान पर उपस्थित करना। ले जाना।  
 २. किसी के साथ इसलिए जाना, जिसमें  
 वह अकेला न पड़े। ३. किसी को विशेष  
 दत्ता. में उपस्थित करना। ४. प्रविष्ट  
 कराना। ५. कोई चीज ले जाकर किसी  
 को दे देना। ६. अनुभव कराना।  
 पहुँची-सज्ञा स्त्री० ब्लाई पर पहुँचने का  
 एक गहना।  
 पहुँचना-क्रि० अ० दे० “पौटना”।  
 पहुँना-सज्ञा पु० दे० “पाहुना”।  
 पहुँनाई-सज्ञा स्त्री० १. पाहुना होने का  
 भाव। अतिथि-रूप में कही जाना या  
 आना। २. अतिथिसत्कार। मेहमानदारी।  
 पहुँप-सज्ञा पु० दे० “पुष्प”।  
 पहुँमी-सज्ञा स्त्री० दे० “पुहमी”। भूमि।  
 पृथ्वी।  
 पहुँला-सज्ञा पु० कुमुदिनी।  
 पहुँली-सज्ञा स्त्री० प्रहेलिका। गूढ़ प्रश्न।  
 किसी वस्तु या विषय का ऐसा वर्णन,  
 जो स्पष्टतया प्रकट न हो। बुझावल।  
 ऐसा वर्णन, जिसमें सामान्य अर्थ प्रकाशित  
 किया जाता है, परन्तु असली अर्थ छिपा  
 रहता है।  
 पहुँव-सज्ञा पु० १. फारस या ईरान की एक  
 प्राचीन जाति। २. एक प्राचीन देश,  
 जो पल्लव जाति का निवास-स्थान था।  
 वर्तमान फारस या ईरान का अधिभू भाग।  
 पहुँवी-सज्ञा स्त्री० अति प्राचीन फारसी  
 या जैद भवस्ता की भाषा।

पाँ-सज्ञा पु० पाँव। पैर। पद। चरण।  
 पाँ, पाँइ\*-सज्ञा पु० पाँव। पैर। पद।  
 पाँइता-सज्ञा पु० दे० “पाँयता”। पैताना।  
 पाँइया-सज्ञा पु० [का०] राजमहल के चारों  
 ओर की पुष्पवाटिका। महलों के चारों ओर  
 का बना हुआ बाग।  
 पाँइ-सज्ञा पु० पाँव। पैर। पद।  
 पाँक-सज्ञा पु० कीचड़। पक्। कीच।  
 पाँत-सज्ञा पु० पत्त। पर। पक्ष।  
 पाँखडी-सज्ञा स्त्री० दे० “पैखडी”।  
 पाँखरी-सज्ञा स्त्री० दे० “पैखडी”।  
 पाँखी-सज्ञा स्त्री० १. पतिगा २. चिड़िया  
 पक्षी।  
 पाँगा, पाँगा नोन-सज्ञा पु० समुद्री नमक।  
 पाँच-वि० जो गिनती में ५ हो।  
 सज्ञा पु० १. पाँच की सख्या या अंक। ५।  
 २. कई आदमी। बहुत से लोग।  
 ३. जाति या विरादरी के मुखिया लोग।  
 पंच।  
 मुहा०—पाँचो अँगुलियाँ पी में होना=  
 सब प्रकार का लाभ या आराम होना। खूब  
 बन आना। पाँचों सवारों में नाम लिखाना=  
 अपने को भी बड़ों के साथ गिनाना।  
 पाँचजण्य-सज्ञा पु० १. श्रीवृष्ण का शख।  
 २. अग्नि।  
 पाचभीतिक-सज्ञा पु० पाँचो तत्त्वों से बना हुआ  
 शरीर।  
 पाँचर-सज्ञा स्त्री० लनडी का टुकड़ा।  
 पच्चड।  
 पाचाल-सज्ञा पु० भारत के पश्चिमोत्तर  
 भाग का एक देश। दे० “पंचाल”।  
 वि० १. पाचाल देश का रहनेवाला।  
 २. पाचाल देश-संबन्धी।  
 पाचालिका-सज्ञा स्त्री० कपड़े की बनी  
 गुड़िया।  
 पाचाली-सज्ञा स्त्री० १. पाठ्यों की स्त्री  
 दीपदी। २. गुड़िया। कपड़े की पुतली।  
 ३. एक प्रकार की वाक्य-रचना-प्रणाली,  
 जिसमें बड़े-बड़े पाँच-छः समासों से युक्त  
 धीरे-धीरे पूर्ण पञ्चवली होती है।  
 ४. नदी। ५. स्वर-साधन की रीति विशेष।

पांच—सज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की पाँचवीं तिथि । पंचमी ।

पाँजवा—क्रि० सं० घातु के टुकड़ा को टाँव लगाकर जोड़ना । टाँवा लगाना । झालना ।

पाँजर—सज्ञा पु० १. जिसमें पसलियाँ हों । २. पसली । ३. पार्श्व । बगल । पास ।

पाँजी—सज्ञा स्त्री० नदी का इतना सूख जाना कि उसे हलकर पार कर सकें ।

पाँझ—वि० दे० 'पाँजी' ।

पाडव—सज्ञा पु० १. कुटी और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पाडु के पाँचो पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव । २. एक प्राचीन प्रदेश, जो वितस्ता (भेनम) नदी के तट पर था ।

पाडवनगर—सज्ञा पु० दिल्ली ।

पाडित्य—सज्ञा पु० विद्वता । पडिताई । पडित होने का भाव ।

पाडित्यपूण—सज्ञा पु० विद्वत्ता से भरा हुआ ।

पाडु—सज्ञा पु० १. लाल मिला पीला रंग ।

२. पाडुफली । पारली । ३. परमल ।

४. सफेद हाथी । ५. सफेद रंग । ६. एक रोग का नाम जिसमें रक्त के दूषित हो जाने से शरीर के चमड़े का रंग पीला हो जाता है । पाडव-वश के आदि राजा जिनके पुत्र युधिष्ठिर भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव पाडव कहलाए ।

पाडुता—सज्ञा स्त्री० पाडु होने का भाव धम या क्रिया । पीनापन । पाडुत्व ।

पाडुर—वि० १. पीला । २. सफेद ।

सज्ञा पु० १. एक वृक्ष । २. कवूतर । ३. बगना । ४. सफेद खडिया । ५. एक प्रकार का रोग । ६. स्वतः कुष्ठ ।

सफेद फोड ।

पाडुलिपि—सज्ञा स्त्री० किसी लेख की हस्तलिखित प्रति । मसविदा । पाण्डुलिख ।

पाडुलेख—सज्ञा पु० दे० 'पाडुलिपि' ।

पाँड—सज्ञा पु० १. ब्राह्मणों की एक शाखा ।

२. कायस्था की एक शाखा । ३. विद्वान् पंडित । ग्रन्थापक ।

पाँडेय—सज्ञा पु० दे० 'पाँड' ।

पाँति—सज्ञा स्त्री० १. श्रेणी । पंक्ति । कतार ।

२. समूह । ३. एक साथ भोजन

करनेवाले जाति बिरादरी के लोग ।

पगत ।

पाय—वि० १. पथिक । बटोही । यात्री ।

२. विपोगी । विरही ।

पायनिवास—सज्ञा पु० धर्मशाला । सराय ।

चट्टी ।

पायशाला—सज्ञा स्त्री० सराय । चट्टी । धर्म-

शाला ।

पाँपोश—सज्ञा पु० पाँचडा । पाँचदाज ।

पाँप\*—सज्ञा पु० चरण । पैर । पाँव ।

पाँपेछा—सज्ञा पु० १. पाखाना आदि में

बना हुआ वह स्थान, जिस पर पैर रखकर

घीस से निवृत्त होने के लिए बैठते हैं ।

२. पायजामे की मोहरी ।

पाँपेता—सज्ञा पु० पलंग, खाट या बिस्तर का

वह भाग, जिसकी ओर पैर किए जाते हैं ।

पेताना ।

पाँव—सज्ञा पु० पैर । चरण । पद ।

मुहा०—पाँव उखड़ना (उखड़ जाना)=

हार जाना । हिम्मत छोड़कर भागना ।

पाँव उठाना=तंगी से चलना । पाँव

उतरना (उखड़ना)=पाँव का उखड़ या

टूट जाना या फूलना । पाँव कापना

(डगमगाना)=डर जाना, भयभीत

होना । पाप (किसी का) उखाड़ना

=किसी को किसी स्थान पर जमन न

देना । गल में (किसी के) पाँव डालना=

तर्क-द्वारा उसी की चाला से उसी को

दोषी ठहराना । पाँव जमीन पर न ठहरना

(रखना)=अत्यंत प्रसन्न होना । हृष के

कारण फूल जाना । पाँव-तल से जमीन

खिसकना=आश्चर्य या भय की बात से

स्तब्ध या सन्न रह जाना । होश उड़

जाना । पाँव पकड़ना=चरण म मारना ।

पाँव पर पाँव रखना=प्रतिक्रिया करना ।

पाँव पडना=दीनता से प्रायना करना ।

पाँव फूँक-फूँक कर रखना=सावधान रहना ।

निवारपूर्वक कार्य करना । पाँव भारी होना

=गर्भ रहना । पाँव रोपना=प्रतिज्ञा करना ।

पांवर\*†-वि० दे० "पामर"। अथम। नीच।  
पांवरौ-सज्ञा स्त्री० १. दे० "पांवड़ी"।  
२. सीढ़ी। सोपान। ३. पैर रखने का स्थान। ४. जूता। ५. पोरी। डघोड़ी।  
६. दानान। बैठन।

पांशु-सज्ञा स्त्री० १. धूलि। रज। रेणु।  
२. बालू। ३. गोबर की साद। स्त्री वा मासिक घर्मे।

पांशुका-सज्ञा स्त्री० धूलि। रेणु। रज।  
रजस्वला स्त्री।

पाशुन-सज्ञा पु० नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।

पाशुल-सज्ञा पु० १. धूलियुक्त। धूलि-धूसरित। २. शिव। महादेव। ३. सपट। व्यभिचारी। ४. मैला। मलिन।

पाशुला-सज्ञा स्त्री० कुलटा। वेदया। भ्रष्ट-चरित्रा स्त्री। व्यभिचारिणी।

पांस-सज्ञा स्त्री० १. खाद। सार। सबी गली चीजें जो खेतों को उपजाऊ करने के लिए उनमें डाली जाती हैं। २. किसी वस्तु को सड़ाने पर उठा हुआ खमीर।  
पांसना†-क्रि० सं० खेत में खाद देना। खाद सड़ाना।

पांसा-सज्ञा पु० हाथीदांत या हड्डी के चौपहल टुकड़े, जिनसे चौसर का खेल खेलते हैं।

मुहा०-पांसा उलटना=विषी प्रयत्न वा उल्टा फल होना।

पास-सज्ञा पु० १. पसली। पांजर की हड्डी।  
२. धूलि।

पांसरो†-सज्ञा स्त्री० दे० "पसली"।

पांही\*†-क्रि० वि० निरुद्ध। समीप। पास।

पाइ\*-सज्ञा पु० दे० "पाव"।

पाइक\*-सज्ञा पु० दे० "पायक"।

पाइलरो\*†-सज्ञा स्त्री० पैताना। पायताना।

पाइल\*-सज्ञा स्त्री० दे० "पायल"।

पाई-सज्ञा स्त्री० १. एक छोटा सिक्का, जो एक पैसे का तीसरा भाग होता है। २. एक पैसा। ३. छोटी सीधी सक्कीर, जो बिग्री सदया के प्रागे लगाने से एगार्ई वा वसुधांस प्रचट करती है। जैसे, ४।,

अर्थात् सत्ता चार। ४. दीर्घ धारा-सूचक भाषा। ५. पूर्ण विराम सूचित करने वाली गड्डी रेखा। ६. एक ही पैसे में नाचने या चलने की क्रिया। मटल। धूमना। ७. धान खराब करनेवाला छोटा लंबा कीड़ा।

पाई\*†-सज्ञा पु० दे० "पाँव"।

पाइंड-सज्ञा पु० [अंग्रे०] एक अंग्रेजी सिक्का। एक अंग्रेजी तोल।

पाड-सज्ञा पु० पाँव। पैर।

पाडवर-सज्ञा पु० [अंग्रे०] सौन्दर्य बढ़ाने के लिए चेहरे या अन्य अंगों पर लगाने की युक्तियों। चूर्ण।

पाक-सज्ञा पु० १. रीथना। २. पकने या पकाने की क्रिया। ३. पकवान। रसोई। ४. चाशनी में मिलाकर बनाई जानेवाली ओषध। ५. पाचन-क्रिया। ६. आइ में पिड़दान के लिए खीर। ७. पाकिस्तान का लघु नाम।

वि० [फा०] १. शुद्ध। पवित्र। २. पाप-रहित। निर्मल। निर्दोष। ३. समाप्त।

मुहा०-भगडा पाक करना=१. किसी भारी कार्य को समाप्त कर डालना। २. भगडा तम करना। बाधा दूर करना। ३. मार डालना।

पाककर्त्ता-वि० पाचक। रसोईया। रसोई बनानेवाला।

पाकसार-सज्ञा पु० जवासार।

पाकगृह-सज्ञा पु० रसोईघर।

पाकट-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] जेब। पकिट।

पाकठ†-वि० १. पनाहुआ। २. अनुभवही। ३. मजबूत। बली।

पाकड-सज्ञा पु० दे० "पावर"।

पाकदामन-वि० [फा०] [सज्ञा पाकदामनी] १. निष्पत्तक। २. सती। पतिप्रता।

पावना-क्रि० अ० दे० "पचना"।

पाकपत्र-सज्ञा पु० हाँडी। भोजन बनाने का पात्र।

पाकपटो-सज्ञा स्त्री० १. स्वाती। २. चूल्हा। भापा। भट्ठी। पजापा।

पाकयज्ञ—सज्ञा पु० [वि० पाकयाज्ञिक]  
१ गृहप्रतिष्ठा आदि के समय किया जानेवाला होम, जिसमें खीर की आहुति दी जाती है। २ पंच महायज्ञों में अह्नयज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ—वैश्वदेव होम, बलि-कर्म, नित्य आद्य और अतिथि भाजन।

पाकर—सज्ञा पु० पर्वट। एक प्रसिद्ध वृक्ष। पाकड। पातर। पतसन।

पाकरिपु—सज्ञा पु० इन्द्र।

पाकशाला—सज्ञा स्त्री० रसोई बनाने का घर। रसोईघर। दाबरखीखाना। पाकगृह।

पाकशासन—सज्ञा पु० इद्र। देवराज। पाव नामक दैत्य के मारनेवाले।

पाकस्थली—सज्ञा स्त्री० दे० 'पक्वास्थ'। भोजन बनाने का पात्र। हाँडी। घट्टई।

पाकाँ—वि० दे० 'पक्वा'। फोडा। धाब।

पाकिस्तान—सज्ञा पु० भारत को विभाजित करके उन क्षत्रा को, जिनमें मुसलमानों की सरया अधिक थी, मिलाकर बनाया गया नया मुसलमानी राज्य, जिसमें पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत, सिन्ध, पश्चिमी पंजाब और पूर्वी बंगाल है। १५ अगस्त १९४७ को इस राज्य की स्थापना हुई।

पाकागर—सज्ञा पु० रसोईघर।

पाकी—वि० पक्की। तैयार। परिपक्व।

पाकीजा—वि० पाक। पवित्र। निर्दोष। सुन्दर।

पाकुक—सज्ञा पु० पाचक। पाककर्त्ता।

पाकेट—सज्ञा पु० (अश्वे०) जेब। पहनने के कपड़ों में चीजें रखने के लिए बनी हुई थैली।

पाकेटभार—सज्ञा पु० गिरहकट।

पाक्य—वि० पचन योग्य।

पाक्षिक—वि० १ पक्ष या पक्षवाह से संबंध रखनेवाला। पक्षवार का। पन्द्रहवें दिन पर होनेवाला। २ पक्ष में उत्पन्न होनेवाला। पक्षवाही। तरफदार। सहायक। ३ दो मानात्रा का एक छन्द।

पाखंड—सज्ञा पु० १ शास्त्र विरुद्ध आचार।

२ ढांग। ढकोसला। आडंबर। ३. धोखा। छल। ४ नीचता। शरारत। मुहा०—पाखंड फैलाना—विषी को ठगने के लिए ढांग रचना। मकर फैलाना।

पाखंडी—वि० १ वद विरुद्ध आचार करनेवाला। २ ढांग रचनेवाला। कपटाचारी। बगला भगत। ३ धूर्त। धोखेबाज।

पाख—सज्ञा पु० १ पक्ष। पंद्रह दिन। पख-बारा। २ दीवार। भीति। बडर रखने की त्रिकोणाकार दीवार।

पाखर—सज्ञा स्त्री० लहरे की भूल जा लड़ाई में हाथी या घाड़े पर डाली जाती है। चार आईना।

सज्ञा पु० दे० 'पाकर'।

पाखा—सज्ञा पु० १ छोरा। कोना। २ उसारा। ३ एक आर की दीवाल। दे० 'पाख'।

पाखान\*—सज्ञा पु० दे० 'पापाण'।

पाखाना—सज्ञा पु० [फा०] १ मल त्याग करने का स्थान। २ मल। गू। गलीज। पुरीप। दूधो।

पाग—सज्ञा स्त्री० १ पगडी। दे० 'पाक'। २ शीरा या चाशनी, जिसमें मिठाइयाँ आदि डुबाकर रखी जाती है। ३ चीनी के शीर में पकाया हुआ फल आदि। ४ शीर में पकाकर बनाई गई दवा या पुष्टई।

पागना—क्रि० स० रस में पवाना। मीठी चाशनी में पागना, सानना या लपटना। क्रि० अ० अत्यंत अनुरक्त होना।

पागल—वि० [स्त्री० पगली] १ बाबल। उमत्त। विकृष्ट। २ जिससे होश हवास पुरुस्त न हो। आपस बाहर। ३ बबकूफ। मूर्ख। सिद्धी।

पागलखाना—सज्ञा पु० पागलों का चिकित्सालय या अस्पताल।

पागलपन—सज्ञा पु० १ उन्माद। बाबलापन। विकृष्टता। विस्र विभ्रम। २ मूर्खता।

पागुर\*—सज्ञा पु० दे० 'जुगाली'।

पाचक—वि० [स्त्री० पाचिका] पचानेवाला। पकानेवाला।

मज्ञा पु० १. पाचनशक्ति बढ़ानेवाली औषध ।  
भोजन पचाने के लिए उपयोगी वस्तु ।  
२ रसोइया । वायची । ३. पाँच पित्तों  
में से एक । ४. पाचक पित्त में रहने-  
वाली अग्नि ।

पाचन-सज्ञा पु० १ पचाना या पवाना ।  
२. भोजन का पेट में जाकर शरीर की  
धातुओं में परिवर्तन । ३ भोजन पचाने-  
वाली औषध । ४ आमश्चित्त । ५ खट्टा  
रस । ६ अग्नि ।  
वि० पचानेवाला ।

पाचनशक्ति-सज्ञा स्त्री० भोजन पचानेवाली  
शक्ति । पेट में पित्त और अग्नि की  
शक्ति । हाजमा ।

पाचना\*-क्रि० स० अच्छी तरह पवाना ।  
परिपक्व करना ।

पाचनीय-वि० पचाने या पवाने योग्य ।  
पाच्य ।

पात्रिका-सज्ञा स्त्री० रसोईदारिन । रसोई  
करनेवाली ।

पाच्छाह\*—सज्ञा पु० दे० "वादशाह" ।  
पाच्य-वि० पचनीय । पचाने या पवाने  
योग्य । पचने योग्य ।

पाद्य-सज्ञा स्त्री० १. टीका । तेज धारवाले  
अस्त्र से खराब खून निकालना । शरीर पर  
छुरी की धार से बिया हुआ हुनवा धाव ।  
२ पोस्ते की बाड़ी पर नहलनी से लगाया  
हुआ चीरा, जिससे अभीम निबलती है । ३  
किसी वृक्ष पर उत्तका रस निकालने के  
लिए लगाया हुआ चीरा ।

सज्ञा पु० पीछा । पिछा भाग ।  
क्रि० वि० पीछे ।

पाद्या-क्रि० स० छूरे या नहरनी आदि से  
'हलवा चीरा लगाना । चीरना । टीका  
लगाना । गोटी खोदना ।

पाद्यल-वि० दे० 'पिछला' ।

पाद्या\*-सज्ञा पु० दे० 'पीछा' ।

पाद्यल\*-वि० दे० 'पिछला' ।

पाद्यो, पाद्ये\*-क्रि० वि० दे० 'पीछ' ।

पाज-सज्ञा पु० दे० "पांजर" ।

पाजामा-सज्ञा पु० [फा०] पैर में पहनने का

एक प्रकार का तिला हुआ वस्त्र, जिससे  
टखने से बचकर तब का भाग ढँका रहता  
है । इसके कई भेद हैं—मूयना, इजार,  
चूड़ीदार, तमान, अरबी, पलीदार, नेपाली,  
पंजावरी आदि ।

पाजो\*-सज्ञा पु० १ पैदल सेना का सिपाही ।  
प्यादा । २ रदाव । चौकीदार ।  
वि० दुष्ट । नीच । बदमाश । दुस्नारी ।  
गुण्डा ।

पाजोपन-सज्ञा पु० दुष्टता । नीचता ।

पाडवे-सज्ञा स्त्री० [फा०] पैरों में पहनने का  
एक गहना । नूपुर । मजोर ।

पाटवर-सज्ञा पु० रेशमी वस्त्र ।

पाट-सज्ञा पु० १ रेशम । २ बटा हुआ  
रेशम । जूटी । ३ रेशम के कीड़े का  
एक भेद । ४ पटसन । ५ गजगद्दी ।  
सिंहासन । ६ चौड़ाई । फैलाव । नदी के  
दो किनारों के बीच की चौड़ाई । ७  
पीडा । पल्ला । ८ वह शिला, जिस पर  
धोबी कपड़े धोता है । ९ चक्की के  
एक छोर का भाग । १० कपडा । वस्त्र ।

पाटकृमि-सज्ञा पु० रेशम का कीड़ा ।

पाटच्चर-सज्ञा पु० चोर । तस्वर ।

पाटन-सज्ञा स्त्री० १ पटाव । पाटने की  
क्रिया या भाव । २ पाटवर बनाई गई  
वस्तु । ३ मकान की छतारी या पहली  
मजिल से ऊपर की मजिल । ४ सर्व  
का विष उठारने का एक मंत्र जो रोमी के  
बान के पास चिल्लाकर पढ़ा जाता है ।

पाटना-क्रि० स० १ किसी गढ़े का मिट्टी,  
कूड़े आदि से भर देना । २ छत बनाना ।  
३ दूध भरना । ४. सीचना । ५. ऋण  
चुवाना ।

पाटमहिषी-सज्ञा स्त्री० दे० "पटगनी" ।  
महारानी । प्रधान रानी ।

पाटल-सज्ञा पु० १ गुलाब का फूल । पाटली  
पुष्प । २ गुलाबी रंग । श्वेत और लाल रंग  
का मेल । ३. पाडर या पाडर का वृक्ष ।

पाटला-सज्ञा स्त्री० १. पाडर का वृक्ष ।  
२. लाल लोध । ३. दुर्गा । ४. पार्वती ।  
सज्ञा पु० एक प्रकार का चढ़िया सोना ।

पाटलिपुत्र, पाटलीपुत्र—सज्ञा पु० मगध का एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर, जो इस समय भी बिहार की राजधानी है। पटना।  
पाटली—सज्ञा स्त्री० १. पाउडर। २. पाड़ु-फली। ३. पटना की एक देवी।

पाटब—सज्ञा पु० १. चतुरार्द्ध। पटुता।  
विज्ञता। कुशलता। नैपुण्य। २. दृढता।  
मजबूती। ३. आरोग्य।

पाटव्यो—वि० १. पटरानी या पुन। २.  
रेसामी। कोपेय (वस्त्र)।

पाटसन—सज्ञा पु० दे० “पटसन”। एक  
प्रकार का रान।

पाटा—सज्ञा पु० १. पटरा। लकड़ी का पीछा।  
पट्टा। २. पाट। तख्ता, जिस पर धोबी  
बपड़ा धोता है।

पाटिका—सज्ञा स्त्री०, १. पीछा-विशेष। २.  
छाल। छिलपा। ३. एक दिन की मजदूरी।

पाटिमा—सज्ञा पु० १. पटिया। २. गले में  
पहनने का सोने का गहना।

पाटी—सज्ञा स्त्री० १. परिपाटी। अनुनम।  
रीति। २. जोड़, बाँधी, गुणा आदि का  
क्रम। ३. श्रेणी। पवित।

सज्ञा पु० १ लकड़ी की यह पट्टी, जिस पर  
छान लिखने का अभ्यास करते हैं। तल्ली।  
पटिया। २. पाठ। सबक। ३. माँग

के दोनो ओर कपी-द्वारा बैठाए हुए बाल।  
पट्टी। ४. चारपाई के ढाँचे में लवाई  
की ओर की पट्टी। ५. सीतलपाटी।

चटाई। ६. शिला। चट्टान। ७. खपरैल  
की नाली का अर्द्ध भाग।

मुहा०—पाटी पढ़ना=१. पाठ पढ़ना।  
शिक्षा पाना। चाल चलना। २. बात बनाना।

पाटीर—सज्ञा पु० एक प्रकार का चन्दन।

पाठ—सज्ञा पु० १. पढ़ाई। पढ़ने की निया।  
अध्ययन। २. धर्मपुस्तक का नियमपूर्वक  
पढ़ना। ३. जो पढ़ा या पढ़ाया जाय।  
४. उतना अक्ष, जो एक बार में पढ़ा जाय।  
सबक। ५. अध्याय। परिच्छेद। ६. शब्दों  
या वाक्यों का क्रम या योजना।

मुहा०—पाठ पढ़ाना=स्वार्थ साधने के  
लिए किसी को बह्वाना। पट्टी पढ़ाना।

उलटा पाठ पढ़ाना=कुछ का कुछ समझा  
देना। बहका देना।

पाठक—सज्ञा पु० १. पढ़नेवाला। वाचक।  
२. अध्यापक। पढ़ानेवाला। ३. धर्मो-  
पदेशक। ४. उपाध्याय। ५. ब्राह्मणों  
का एक वर्ग।

पाठदोष—सज्ञा पु० पढ़ने वा गिँथ और  
बजित ढग। जैसे बठोर स्वर से  
पढ़ना, या ठहर-ठहरकर उच्चारण  
करना।

पाठन—सज्ञा पु० पढ़ाने की क्रिया। अध्यापन।  
पढ़ाना। अध्ययन कराना। विद्या पढ़ाना।

पाठना—क्रि० स० दे० “पढ़ाना”।

पाठभेद—सज्ञा पु० दे० “पाठांतर”।

पाठशाला—सज्ञा स्त्री० विद्यालय। वह  
स्थान, जहाँ विद्यार्थी पढ़ाये जायें। भद्र-  
रसा। स्कूल।

पाठांतर—सज्ञा पु० एक ही पुस्तक की दो  
प्रतियों के लेख में किसी स्थल-विशेष पर  
भिन्न शब्द, वाक्य अथवा क्रम। दूसरा  
पाठ। पाठभेद।

पाठा—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता।  
सज्ञा पु० [स्त्री० पाठी] १. जवान और  
हुड़ा-कट्टा। मोटा-तगड़ा। २. जवान  
बैल, भैंसा या वकरा।

पाठालय—सज्ञा पु० पाठशाला।

पाठावली—सज्ञा पु० पाठों का समूह।  
पाठों की पुस्तक।

पाठी—सज्ञा पु० १. पाठ करनेवाला।  
पाठक। पढ़नेवाला। २. जीता। ३. चिनक  
युक्त।

सज्ञा स्त्री० पाठा का स्त्री०। दे० “पाठा”।

पाठीन—सज्ञा पु० एक प्रकार की मछली।

पाठघ—वि० १. पढ़ने योग्य। पठनीय।  
२. जो पढ़ाया जाय।

पाड़—सज्ञा पु० १. धोती आदि का किनारा।  
२. मचान। मच। ३. मकान बनाने के  
लिए मच। कुरें के मुँह पर रखी जाने  
वाली जाली। कटकर। बह। ४. पुस्ता।  
बाँध। ५. फाँसी का तख्ता। तिपट्टी।  
पाइइ—सज्ञा स्त्री० पाटल नामक पेड़।

पाडा-सज्ञा पु० १. महत्ता । २. भेंट या वज्ज्या ।

पाङ्ग-सज्ञा पु० १ पाटा । २ पगल की रखवाली के लिए भवान ।

पाङ्गुत\*-सज्ञा स्त्री० १ जा कुछ पड़ा जाय । २ मत्र । जाडू । ३ पढ़ने की प्रिया । पढाई ।

पाढर, पाढल-सज्ञा पु० दे० "पाटल" ।

पाडा-सज्ञा पु० एव प्रवार का हिरण । निम्नमृग ।

सज्ञा स्त्री० दे० "पाठा" ।

पाण-सज्ञा स्त्री० १ पीना । २ पत्ता । ३ कपडे की माडी । ४ ताम्बूल ।

पाणि-सज्ञा पु० हाथ । कर ।

पाणिग्रहण-सज्ञा पु० १ विवाह की एक रीति, जिसमें बन्ध्या वा पिता उसका हाथ कर के हाथ में देता है । २ व्याह । विवाह ।

पाणिग्राह या पाणिग्राहक-सज्ञा पु० पति ।

पाणिष-सज्ञा पु० मृदग । ढाल । हाथ का वाजा ।

पाणिज-सज्ञा पु० १ उँगली । २ नख । नाखून ।

पाणिनि-सज्ञा पु० अष्टाध्यायी नामक प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रन्थ के रचयिता, जो ईसा-पूर्व चौथी शताब्दी में हुए थे ।

पाणिनीय-वि० १. पाणिनि-वृत्त (ग्रन्थ आदि) । २ पाणिनि का कहा हुआ ।

पाणिनीय दर्शन-सज्ञा पु० पाणिनि का अष्टाध्यायी व्याकरण ।

पाणिपल्लव-सज्ञा पु० उँगलियाँ ।

पाणिपाद-सज्ञा पु० हाथ पैर । हाथ और पाँव ।

पाणिपीडन-सज्ञा पु० १ पाणिग्रहण । विवाह । २ शोच, पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मरना ।

पाणी-सज्ञा पु० दे० 'पाणि' ।

पातजल-वि० पतजलि का बनाया हुआ (यागसूत्र या व्याकरण-महाभाष्य) ।

सज्ञा पु० १ पतजनि-वृत्त योगसूत्र । २ पतजलि प्रणीत महाभाष्य ।

पातजल दर्शन-सज्ञा पु० यागदर्शन ।

पातजल भाष्य-सज्ञा पु० महाभाष्य-नामक व्याकरण-ग्रन्थ ।

पातजल सूत्र-सज्ञा पु० योगसूत्र । योगशास्त्र ।

पात-सज्ञा पु० १ गिरना या गिराना ।

पतन । २ नाश । ध्वंस । मृत्यु । ३

पडना । जा लगना । ४ नक्षत्रों की

बटाएँ । ५ पत्र । पत्ता । ६ राहु ।

पातक-सज्ञा पु० अथ । दोष । अपराध ।

गुनाह । अपम ।

पातकी-वि० पातक करनेवाला । पाप

करनेवाला । पापी । कुवर्मी । अधर्मी ।

पातन-सज्ञा पु० गिराने की क्रिया ।

गिराना ।

पातर\*†-सज्ञा स्त्री० १. पत्तल । २ वक्ष्य ।

रडी । पतुरिया ।

\*†वि० पतला । सूक्ष्म । बारीक । क्षीण ।

पातल-सज्ञा स्त्री० दे० "पातर" ।

पातव्य-वि० १ रक्षा करने योग्य । २ पीन योग्य ।

पातशाह-सज्ञा पु० दे० "बादशाह" ।

पाता\*-सज्ञा पु० दे० "पत्ता" । पत्र ।

वि० रक्षक । रक्षा करनेवाला ।

पाताया-सज्ञा पु० [फा०] १ पैरा में पहनने का भोज । २ सुखतला ।

पातार\*-सज्ञा पु० दे० 'पाताल' ।

पाताल-सज्ञा पु० १ पुराणानुसार पृथ्वी

के नीचे का लोक । सातवाँ लोक । रसा

तल । नरक । २ अधोलोक । नागलोक ।

३ विचर । बिल । गुफा । ४ वाड-

वानल । ५ छंद शास्त्र में यह चक्र, जो

मात्रिक छंद की सप्त्या लघु, गुरु कला

आदि का सूचक होता है । एक यत्र, जिससे

श्रीपथ बनाते हैं ।

पाताल-यत्र-सज्ञा पु० एक प्रकार का यत्र,

जिसके द्वारा बड़ी श्रीपथियाँ पिघलाई

जाती हैं ।

पाताखत†-सज्ञा पु० १ पत्र और अक्षत । २.

तुच्छ भट ।

पाति†-सज्ञा स्त्री० १ पत्ती । दल । २

पत्र । चिट्ठी ।

तत्तित्य-सज्ञा पु० १. पतित होने का भाव । पतन । २. पातक । पाप । दुराचार । ३. जातिभ्रष्ट होने का कारण । अथ पतन ।  
 रातिव्रत, पातिव्रत्य-सज्ञा पु० पतिव्रता होने का भाव । पतिव्रता का धर्म । सती-धर्म ।  
 रातिसाहि-सज्ञा पु० दे० "वादसाह" ।  
 राती\*-सज्ञा स्त्री० १ पत्र । चिट्ठी । २ वृक्ष के पत्ते । ३. इज्जत । प्रतिष्ठा ।  
 रातुरा-सज्ञा स्त्री० वेदमा । रण्डी ।  
 रात्र-सज्ञा पु० १ चरतन । भोजन । आधार । २ किसी विषय का अधिकारी । जैसे, दानपात्र । ३ नाटक के नायक, नायिका आदि । ४ अभिनता । नट । ५ पत्र । पत्ता ।  
 पात्रक-सज्ञा पु० १. थाली । २. चरतन । हाडी ।  
 पात्रता-सज्ञा स्त्री० १. योग्य या पात्र होना का भाव । योग्यता । क्षमता । २. अधिकार ।  
 पात्रत्व-सज्ञा पु० दे० "पात्रता" ।  
 पात्रिय-वि० बहु व्यक्ति, जिसके साथ बैठकर एक थाली में भोजन किया जा सके । सहभोजी ।  
 पात्री-सज्ञा स्त्री० छोटा बर्तन ।  
 वि० जिसके पास सुयोग्य लोग हो ।  
 पात्रीय-वि० पात्र का । पात्र-सम्बन्धी ।  
 पाय-सज्ञा पु० १. जल । २. सूर्य । ३. अग्नि । ४. अन्न । ५. आकाश । ६. वायु । ७. मार्ग । राह ।  
 पायना-त्रि० सं० १ गठना । सुडोल करना । बनाना । २ घोष-श्रीट कर बनाना । बण्ड, ईंटें या खपर बनाना । ३ पीटना । ठाकना । मारना । ४. मानस पायना ।  
 पायनाय-सज्ञा पु० समुद्र ।  
 पायनिधि-सज्ञा पु० दे० "पायोनिधि" । सागर । समुद्र ।  
 पायर\*-सज्ञा पु० पत्थर । पाषाण ।  
 पाया-सज्ञा पु० १. जल । २. अन्न । ३. आशान ।  
 पायि-सज्ञा पु० १. समुद्र । २. घास । ३. घाव की पपटी । ४. तर्पण के लिए जल-विशेष ।

पायेय-सज्ञा पु० १ रास्ते का कलेवा । मार्ग में खाने का भोजन । २. सबल । पय में व्यय करने की सामग्री ।  
 पायोज-सज्ञा पु० कमल ।  
 पायोद-सज्ञा पु० १. मेघ । बादल । २. समुद्र ।  
 पायोधर-सज्ञा पु० बादल ।  
 पायोधि-सज्ञा पु० समुद्र ।  
 पायोनिधि-सज्ञा पु० समुद्र । सागर ।  
 पाद-सज्ञा पु० १. चरण । पैर । पाँव । २. श्लोक या पद्य का तत्पुरुष । पद । चरण । छन्द का चौथा भाग । चौथाई । ३. पुस्तक का अक्ष-विशेष । ४. वृक्ष का मूल । ५. नीचे का भाग । तल । ६. बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत । ७. चलना । गमन । ८. गुदा के मार्ग से निकलनवाली वायु । अपान वायु । अधोवायु । गोज । ९. विरण । रस्मि । १०. शिव ।  
 पादक-वि० १ चलनेवाला । २ चतुर्थांश । चौथाई ।  
 पादकोलिका-सज्ञा स्त्री० नूपुर । पाजेंव ।  
 पादखण्ड-सज्ञा पु० चन । जगल ।  
 पादगडिर-सज्ञा पु० पीलपाँव रोग । श्लोषद रोग ।  
 पादग्रन्थि-सज्ञा स्त्री० १ एडी । २ एडी और छुट्टी का मध्य भाग । गुल्फ ।  
 पादचत्वर-सज्ञा पु० १ वक्ता । २ बालू का टीला । ३ झोला । ४ पीपल का पड़ । वि० निन्दक । चुगलखोर ।  
 पादचारी-सज्ञा पु० पैदल । पैर से चलनेवाला । पैदल चलनेवाला ।  
 पादजल-सज्ञा पु० १ चरणोदक । २ मट्ठा ।  
 पादटीक्ष्ण-सज्ञा स्त्री० ग्रय के पृष्ठ के नीचे किसी गई टिप्पणी । फुटनोट ।  
 पादतल-सज्ञा पु० पैर का तलवा ।  
 पादत्र, पादत्राण-सज्ञा पु० १. लढाऊँ । पाँवड़ी । २ जूता ।  
 पादना-त्रि० घ० हवा छोड़ना । अगार वायु का त्याग करना ।  
 पादप-सज्ञा पु० १ पैर । पैदा । २ बैठने का पीड़ा ।

पादपीठ—सज्ञा पु० पीठा । पाटा ।  
 पादपूरण—सज्ञा पु० श्लोक या छन्द के  
 किसी चरण को पूरा करने लिए रखा गया  
 अक्षर या शब्द ।  
 पादप्रक्षालन—सज्ञा पु० पैर धोना ।  
 पादप्रणाम—सज्ञा पु० साष्टांग दण्डवत् । पाँव  
 पड़ना ।  
 पादप्रहार—सज्ञा पु० सात मारना । ठोकर  
 मारना । पदाघात ।  
 पादरक्ष, पादरक्षक—सज्ञा पु० पैरों की रक्षा  
 करनेवाला । जैसे, जूता ।  
 पादरज—सज्ञा स्त्री० चरणों की धूल ।  
 पादरी—सज्ञा पु० ईसाई-धर्म का पुरोहित,  
 जो अन्य ईसाइयों का जातवर्म आदि  
 संस्कार और उपासना कराता है ।  
 पादबंदन—सज्ञा पु० पैर पकड़कर प्रणाम  
 करना ।  
 पादविन्यास—सज्ञा पु० गमन ।  
 पावशाह—सज्ञा पु० दे० “बादशाह” ।  
 पादशुश्रूषा—सज्ञा स्त्री० चरणसेवा ।  
 पादहीन—वि० १ जिसके तीन ही चरण  
 हों । २ जिसके चरण न हों ।  
 पादाकुलक—सज्ञा पु० चौपाई ।  
 पादाक्रांत—वि० १ पददलित । पैर से कुचला  
 हुआ । २ पामाल ।  
 पादाति, पादातिक—सज्ञा पु० पैदल सिपाही ।  
 पादारध\*—सज्ञा पु० दे० “पादार्ध” ।  
 पादी—सज्ञा पु० पैरोंवाले जल-जंतु । जैसे-  
 गोह, घड़ियाल आदि ।  
 पादीय—वि० पदवाला । भयादावाला ।  
 पादुका—सज्ञा स्त्री० १ खड़ाऊँ । २ जूता ।  
 पादोदक—सज्ञा पु० १ चरणामृत । २  
 चरणोदक । पैर धोया हुआ जल । वह  
 जल, जिससे पैर धोए गए हों ।  
 पाद्य—सज्ञा पु० वह जल, जिससे पूजनीय  
 व्यक्ति या देवता के पैर धोए जायें ।  
 पाद्यप—सज्ञा पु० पाद्य देने का एक  
 भद्र ।  
 पाद्यार्घ—सज्ञा पु० १ पैर तथा हाथ दोनों  
 या धुलाने का जल । २ पूजा की सामग्री ।  
 ३ पूजा में भेंट या नजर ।

पाधा—सज्ञा पु० १ आचार्य । उपाध्याय ।  
 पुरोहित । २. पंडित ।  
 पान—सज्ञा पु० १ किसी द्रव्य पदार्थ को पी  
 जाना । पीना । २ शराब पीना । मद्य-पान ।  
 ३ पीने का पदार्थ । पेय द्रव्य । ४ मद्य ।  
 ५ पानी पीने का पात्र । प्याला । बटारा ।  
 \*६. प्राण । ७ ताबूल । एक प्रसिद्ध खता,  
 जिसके पत्ता का बीड़ा बनाकर खाने हैं ।  
 ८ पान के आगार की कोई चीज । ९  
 ताश के पत्तों के चार भेदों में से एक ।  
 \*१० पाणि । हाथ ।  
 मुहा०—पान देना=दे० “बीड़ा देना” ।  
 पान-पत्ता=१ लगा या बना हुआ पान ।  
 २ तुच्छ पूजा या भेंट । पान ।  
 पान-मूल=१ सामान्य उपहार या भेंट ।  
 २ अत्यंत कामल वस्तु । पान बनाना=  
 १ पान में चूना, बत्था, सुपारी आदि  
 रखकर बीड़ा तैयार करना । २ पान  
 लगाना । पान लेना=दे० “बीड़ा लेना” ।  
 पानहीन—सज्ञा स्त्री० एक सुगंधित पत्ती ।  
 पानदान—सज्ञा पु० पान और उसके लगाने  
 की सामग्री रखने का डिब्बा । पानडब्बा ।  
 पानपात्र—सज्ञा पु० १ जलपान । पानी पीने  
 का बर्तन । २ मदिरा या शराब पीने का  
 प्याला । ३ पान रखने का डिब्बा ।  
 पानडब्बा ।  
 पानरानी—सज्ञा पु० दे० “पनारा” ।  
 पानशोण्ड—सज्ञा पु० अतिशय मद्यपायी ।  
 मत्तवाला ।  
 पानहीन—सज्ञा स्त्री० दे० “पनही” ।  
 पान-किं० सं० १ प्राप्त करना । अपने  
 अधिकार में करना । उपलब्ध करना ।  
 हासिल करना । बी या खोई हुई चीज  
 वापस मिलना । २ भेद पाना । पत्ता पाना ।  
 ३ समझना । कुछ सुन या जान लेना । ४  
 देखना । साक्षात् करना । ५ समर्थ होना ।  
 ६ अनुभव करना । ७ भला या बुरा परिणाम  
 भोगना । उठाना । ८ किसी बात में किसी  
 के बराबर पहुँचना । बराबर होना ।  
 ९ भोजन करना । खाना । १० समझना ।  
 जानना ।

वि० जिसे पाने का अधिकार हो । प्राप्तव्य । पावना ।

पानागार—सज्ञा पु० मधुशाला । शरादखाना ।

पानासक्त—वि० मद्यप्रिय ।

पानाहार—सज्ञा पु० खाना-पीना । अन्न-जल ।

पानिर्ज—सज्ञा पु० १. दे० "पाणि" । हाथ ।

२ \*३० "पानी" ।

पानिग्रहण\*—सज्ञा पु० दे० "पाणिग्रहण" ।

पानिप—सज्ञा पु० १. कालि । शक्ति । चमक ।

२ आब । ओप । पानी ।

पानी—सज्ञा पु० १. जल । तोय । नीर ।

२ पानी का-सा पदार्थ, जो जीभ, आँख, त्वचा, घाव आदि से रसकर निकले ।

३ मेह । वृष्टि । वर्षा । ४ पानी-जैसी पतली वस्तु । ५ किसी वस्तु का सार अंश, जो जल के रूप में हो । रस । अर्क ।

जूस । ६ चमक । कालि । आब । छवि । ७. हथियार की धार । जौहर । आब ।

८ मान । प्रतिष्ठा । इज्जत । आबू ।

९ वर्ष । साल । जेठे, पाँच पानी का सुथर । १० मुलम्मा । ११ पुरु-

पत्व । जीवट । हिम्मत । १२ पशुओ की वशगत विशेषता या कुलीनता ।

१३. पानी की तरह ठंडा पदार्थ । १४. पानी की तरह स्वादहीन पदार्थ ।

१५. ललाई या दृढपुद् । १६ बार ।

बैर । दफा । १७ जल-वायु । आब-हवा ।

मुहा०—पानी ना बटासा या बुलबुला=

क्षणभंगुर वस्तु । पानी की तरह

बहाना=प्रधाबुध रसक करना । बिना सोचे-

समझे खर्च करना । उछाना या मुटाना ।

पानी के मोल=बहुत सस्ता । पानी दूटना=

मुँह, ताल आदि में इतना कम पानी रह

जाना कि निकाला न जा सके । पानी देना=

१. सींचना । २ भ्रजति में लेकर पितरो

के नाम से पानी गिराना । तर्पण करना ।

पानी पड़ना=मन्न पड़कर पानी फूटना । पानी

परोरना=मन्न पड़कर पानी फूटना । पानी

पानी-पानी होना=तृजित होना । तज्जा

से बट जाना । पानी फूटना=मन्न पड़-

कर पानी पर फूट भागना । (पिस्ती पर)

पानी फेरना या फेर देना=चौपट कर

देना । मटियामेट कर देना । (किसी के

सामने ) पानी भरना=(किसी से तुलना

में) अत्यंत तुच्छ प्रतीत होना । फीका

पडना । पानी भरी खाल=अनित्य या

क्षणभंगुर शरीर । पानी में आग लगाना=

जहाँ भगडा होना असंभव हो, वहाँ भगडा

करा देना । पानी में फँकना या बहाना=

नष्ट करना । बरबाद करना । सूखे पानी

में डूबना=भ्रम में पडना । बोझा खाना ।

मुँह में पानी आना या छूटना=१. स्वाद

लने का लालच होना । २. गहरा लोभ

होना । पानी उतारना=अपमानित करना ।

इज्जत उतारना । पानी जाना=प्रतिष्ठा

नष्ट होना । इज्जत जाना । पानी करना

या बर देना=किसी का दोष शान्त कर

देना । पानी लगना=स्थान-विशेष के जल-

वायु के कारण स्वास्थ्य विगडना या रोग

होना ।

पानीदार—वि० १ इज्जतदार । माननीय ।

आबदार । २ चमकदार । ३. प्रतिष्ठापूर्ण ।

४ जीवटवाला । शक्तिमान् । साहसी ।

५ आत्माभिमानी ।

पानीदेवा—वि० तर्पण या पिंडदान करने-

वाला । वंशज ।

सज्ञा पु० पुत्र ।

पानीकब—सज्ञा पु० सिपाडा । पानी में

उत्पन्न होनेवाला फल-विशेष ।

पानीय—सज्ञा पु० जल ।

वि० १ पीने योग्य । २ रक्षा करने योग्य ।

रक्षा-मन्थी ।

पानूस\*—सज्ञा पु० दे० "फानूस" ।

पानीरा†—सज्ञा पु० पान के पत्ते की पवीड़ी ।

पान्य—वि० पवित्र । यात्री । राही ।

बटोही ।

पाप—सज्ञा पु० १. वह धर्म, जिसका फल

इस लोक धोर परलोक में अनुभ हो ।

अधर्म । वस्तुप । धर्म या पुण्य का उलटा

परा धर्म । गुनाह । पातक । अध । २ अप-

राध । जूम । मगूर । ३ बध । हन्ना ।

४. पापमुक्ति । बुरी निपा । बुराई ।

५ अहित । चरावी । अनिष्ट । ६ भभट । जजाल । ७ पापग्रह । अशुभ ग्रह ।

मुहा०—पाप उदय होना=संचित पाप का फल मिलना । पिछने जन्मों के पाप का दण्ड मिलना । पाप कमाना या बढ़ोरना=पाप कर्म करना । पाप लगना=पाप या दोष होना । पाप बटना=भगवा दूर होना । जजाल छूटना । पाप तान होना । पाप मोल लेना=जान-बन्धन निरसी बलेंटे के काम में फैसना । पाप गटना\*=बठिन हो जाना ।

पापकर्म—सज्ञा पु० वह काम, जिसके करने में पाप हो । अनुचित कार्य । बुरा काम । पापकर्मा—वि० दे० “पापी” ।

पापक्षय—सज्ञा पु० पापों का नष्ट होना । तीर्थ ।

पापखडन—सज्ञा पु० पापनाशक मन्त्र-विशेष । पाप दूर करने के लिए दत्त-विशेष ।

पापगण—सज्ञा पु० द्वादशस्थ के अनुसार ठगण का आठवाँ भेद ।

पापग्रह—सज्ञा पु० राहु, शनि, बुध, श्रेत आदि अनिष्टकारक ग्रह । अशुभ ग्रह । (फलित ज्योतिष ।)

पापघ्न—वि० पापनाशक । पाप दूर करने वाला ।

पापचेता—सज्ञा पु० पापात्मा । पापी ।

पापड—सज्ञा पु० मूँग या उर्द की धोई के आटे की एक प्रकार की बहुत पसली रोटी ।

मुहा०—पापड बेलना=१ घोर परिश्रम करना । २ बठिनाई या दुख से समय व्यतीत करना । बहुत स पापड बेलना=बहुत तरह के काम कर चुकना ।

पापडा—सज्ञा पु० १ एक पेड़, जिसकी लपड़ी से कपी और खराद की चीजें बनाई जाती हैं । २ दे० “मितपापडा” ।

पापदृष्टि—वि० १ जिसकी दृष्टि पाप से पूर्ण हो । २ जिसकी दृष्टि पढ़ने से हानि पहुँचे ।

पापनाशन—सज्ञा पु० १ पाप का नाश करनेवाला । पापनाशी । २ प्रायश्चित्त । ३ पिण्ड । ४ शिव ।

पापयोनि—सज्ञा स्त्री० पाप से प्राप्त होनेवाली मनुष्य के प्रतिरिक्त अन्य पशु, पक्षी, आदि की योनि ।

पापरोग—सज्ञा पु० १. पाप करने के कारण होनेवाला रोग । दुष्ट, यक्ष्मा, पीनस, श्वेतवृष्ट, भूकता, उन्माद, अपममार, बधिरता तथा अधत्व आदि रोग धर्मशास्त्रानुसार पापरोग माने गए हैं । २ छोटी भाता । वसत रोग ।

पापलोक—सज्ञा पु० नरक ।

पापाचार—सज्ञा पु० [वि० पापाचारी] दुराचार । पाप का आचरण ।

पापाचारी—वि० पापी । दुराचारी । दुष्टता के काम करनेवाला ।

पापात्मा—वि० पाप में अनुरक्त । दुष्टात्मा । पापिष्ठ—वि० बहुत बड़ा पापी ।

पापी—वि० [स्त्री० ‘पापिनी’] १ पाप करनेवाला । दुराचारी । दुष्कर्मी । अपराधी । पातकी । २ दूर । नृसस । निर्दय । पर-मोडक ।

पापश—सज्ञा स्त्री० [फा०] जूता ।

पावद—वि० [फा०] १. बंधा हुआ । बद्ध । बँद । २ नियम, प्रतिज्ञा, विधि, आदेश आदि का पालन करने के लिए विवश । ३ नियमित रूप से किसी बात का अनुसरण करनेवाला ।

पावदी—सज्ञा स्त्री० [फा०] पावद होने का भाव । बँद । अधीनता । बद्धता । विवशता । पामडा—सज्ञा पु० दे० “पावडा” ।

पामर—वि० १ दुष्ट । खल । कमीता । अपम । पापी । २. नीच कुल या वंश में उत्पन्न । ३ निर्बुद्धि । मूर्ख ।

पामरी—सज्ञा स्त्री० १ दुष्टता । उपरना । रेशमी बरख । २ दे० “पावडी” । नीच स्त्री । दुष्टा । कुलटा ।

पामा—सज्ञा स्त्री० रोग-विशेष । खुजली । खज ।

पामारि—सज्ञा पु० गन्धक । खुजली-नाशक । पामास—वि० [फा०] [सज्ञा पामासी] १ पद-क्षलित । पैर से मत्ता या रोंदा हुआ । पादानान्त । २ घरवाद । तसाह ।

पायें\*—सज्ञा पु० दे० "पावें" ।  
 पायजेहरि\*—सज्ञा स्त्री० दे० "पाजेव" ।  
 पापेता—सज्ञा पु० पलंग या चारपाई का वह भाग, जिसपर पैर रहते हैं । पैताना ।  
 पायेंती—सज्ञा स्त्री० दे० "पायेंता" ।  
 पायेंशाल—सज्ञा पु० [फा०] पैर पोछने का विद्यावन ।  
 पाय\*—सज्ञा पु० पाँव । पैर ।  
 पायक—सज्ञा पु० १ पैदल सिपाही । प्यादा । दूत । हरजारा । धावन । २ दास ।  
 पायजामा—सज्ञा पु० कमर से पैर तक पहनने का एक पहनावा जिसमें इज़ारबन्द या मियानी लगाते हैं । दे० "पाजामा" ।  
 पायजेव—सज्ञा पु० दे० "पाजेव" ।  
 पायडा\*—सज्ञा पु० पंदा ।  
 पायताबा—सज्ञा पु० [फा०] मोजा । पैर के तलवे और उँगलियों में पहनने का एक पहनावा । जुर्रान ।  
 पायदार—वि० [फा०] [सज्ञा पायदारी] टिकाऊ । मजबूत । दृढ़ ।  
 पायमाल—वि० दे० "पामाल" ।  
 पायमाली—सज्ञा स्त्री० बर्बादी । दे० "पामाली" ।  
 पायरा—सज्ञा पु० रखाव ।  
 पायल—सज्ञा स्त्री० १ पाजेव । नूपुर । २ तज चलनेवाली दूधिनी । ३ उल्टा उलान होनेवाला वच्चा । ४ सुन्दर चाल । सुन्दर गति । ५ यौन की सीढ़ी ।  
 पायस—सज्ञा स्त्री० १ मीर । २ दूध आदि के द्वारा मिष्ट किया गया भ्रम । तन्मई । ३ एक प्रकार का गोंद ।  
 पायस\*—सज्ञा पु० पडास ।  
 पाया—सज्ञा पु० १ साठ का एक पैर । गोडा । पाया । २ राधा । रुम । ३ पद । दम्ज । मोहदा । ४ जौना । सीढ़ी ।  
 पायी—वि० पीनेवाला । जैसे, स्तनपायी ।  
 पारगत—वि० १ पार गया हुआ । २ पूर्ण पक्षित । पूरा जानकार । मर्मज्ञ ।  
 पारपरीण—वि० परम्परा से चला आया हुआ । परम्परागत ।  
 पारपय्य—सज्ञा पु० १ परपय का भ्रम । २ यन्त्ररमण ।

पार—सज्ञा पु० दूसरा तट । नदी आदि जलाशयों के दूसरी ओर का किनारा । २ सामनेवाला दूसरा पार्श्व । दूसरी ओर । दूसरी तरफ । ३ छोर । अत । असीर । हृद । परिमित । ४ दो तटों में से कोई (एक की अपेक्षा दूसरा) ।  
 अव्य०—परे । दूर । आग ।  
 यौ०—आर-पार= एक किनारे से दूसरे किनारे तक ।  
 मुहा०—पार उतरना=१ विरही वाम से मुक्ति पाना । २ सफलता प्राप्त करना । ३ समाप्त करना । ठिकाने लगाना । मार डालना । पार करना=१ मार्ग तय करना । पूरा करना । २. निवाहना । विधान । पार लगना=नदी के बीच से होते हुए उसके दूसरे किनारे पर पहुँचना । किसी से पार लगना=पूरा हो सकना । पार लगाना=किसी वस्तु के बीच से ले जाना उसके दूसरे किनारे पर पहुँचाना । नष्ट या दुःख से बाहर करना । उद्धार करना । पूरा करना । समाप्त करना । पार होना=किसी दूर तक फँसी हुई वस्तु के बीच से होने हुए उपाये दूसरे किनारे पर पहुँचना । किसी वाम को पूरा कर चुकना । पार पाना=भ्रत तक पहुँचना । समाप्ति तक पहुँचना । (किसी से) पार पाना=किसी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करना । जीतना ।  
 पारस\*—सज्ञा स्त्री० १ दे० "पारस" । पारस । २ पारसी । परसनेवाला । परीक्षा । पारसद\*—सज्ञा पु० १ दे० "पापद" । सेवक । २ परसैया ।  
 पारसी—सज्ञा पु० परसनेवाला । परीक्षक । पारस—वि० १ पार जानेवाला । पार-गामी । २ वाम पूरा करनेवाला । समय । ३ पूर्ण ज्ञाता । निपुण ।  
 पारजा—सज्ञा पु० [फा०] १ खट । टुकड़ा । पन्नी (विशेषतः कपड़े, सामान आदि की) । २ कपड़ा । बरत । पट । ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा । ४ पहनावा ।  
 पारजात\*—सज्ञा पु० दे० "पारिजात" ।

पारण-सज्ञा पु० १ रा या उपवास व  
याद किया जानवाला भोजन । २ तृप्त  
करने की क्रिया या भाव । ३ मेघ ।  
यादन । ४ समाप्ति । साधना ।

पारतन्त्र्य-सज्ञा पु० परतन्त्र । पराधीनता ।  
दूसरे के अधिकार में रहने का भाव ।

पारत्रिक्-वि० परलौक सम्बन्धी । पार-  
लौकिक ।

पारय-सज्ञा पु० दे० "पार्य" ।

पारद-सज्ञा पु० १ पारा । धातु-विशेष ।  
रमधातु । २ एक प्राचीन जाति ।

पारदर्शक-वि० आर-गार दिखाई देनेवाला ।  
जैसे, शीशा ।

पारदर्शिता-सज्ञा पु० पारदर्शी होने का भाव ।

पारदर्शी-वि० १ उस पार तक देखनेवाला ।  
२ दूरदर्शी । अग्रसीची । चतुर । बुद्धिमान् ।  
३ ज्ञानी ।

पारदारिक-सज्ञा पु० कामुक । दूसरे की स्त्री  
पर आसक्त । परस्त्री-रत ।

पारधी-सज्ञा पु० बहैलिया । व्याध ।  
निकारी । हथारा । कथिक ।

पारन-सज्ञा पु० दे० "पारण" ।

पारना-प्रि० स० १ गिराना । डालना ।

२ जमीन पर लवा डालना । लटाना । ३  
कुत्ती या लडाई में पछाडना । ४ किसी  
वस्तु को दूसरी वस्तु में गिराना या रखना ।  
५ किसी व अतगत करना । शामिल  
करना । ६ शरीर पर धारण करना । पह-  
नाना । ७ घुरी वात घटित करना । उत्पात  
गचाना । ८ मौने आदि में डालकर या किसी  
वस्तु पर जमाकर कोई वस्तु तैयार करना ।

\*प्रि० अ० सवना । समर्थ होना ।

\*प्रि० स० दे० "पालना" ।

पौ०—पिडा पारना—पिडदान करना ।

पारमाधिक-वि० १ परमार्थ-साधनी । जिस  
से परमार्थ सिद्ध हो । २ भक्तिसाधक ।  
पारलौकिक । वास्तविक । ठीक-ठक । मुख्य ।  
प्रधान ।

पारलौकिक-वि० १ परलोकसाधनी । परलोक  
का विषय । आध्यात्मिक । २ परलोक में  
शुभ फल देनेवाला ।

पारदश्य-सज्ञा पु० परदशना ।

पारशय-सज्ञा पु० १ पराई स्त्री से उत्पन्न  
मन्तान । २ एक घण्टसंकर जाति । ३  
लाहा । ४ लोहे का अस्त्र । ५ एक प्राचीन  
देश, जहाँ मोती निकलते थे ।

पारपद\*-गज्ञा पु० दे० "पार्यद" ।

पारस-सज्ञा पु० १ एक पत्थर, जिनके  
स्पर्श से लोहा भी सीना हो जाता है । २  
स्पर्शमणि । अन्यत लाभदायक और उप-  
योगी वस्तु । ३ वह, जो दूसरे का अपने  
समान कर ले । ४ पत्तल, जिसमें खान के  
लिए पत्रवान, मिठाई आदि हो । ५ पराना  
हुआ भोजन । पत्तल पर का भोजन ।  
६ निवट । पास । ७ ईरान । फारस देश ।  
वि० १ पारस पत्थर के समान स्वच्छ  
और उत्तम । २ नीरोग । चगा । तदु-  
रस्त । स्वस्थ ।

पारसनाथ-सज्ञा पु० दे० "पार्वनाथ" ।

पारसब\*-सज्ञा पु० दे० "पारशव" ।

पारसा-वि० [फा०] [स्त्री० पारसाई]  
धर्मनिष्ठ । सदाचारी ।

पारसी-वि० पारस देश का । पारस देश-  
साधनी ।

सज्ञा पु० १ पारस देश का रहनेवाला ।

२ हिंदुस्तान में बर्से और गुजरात की  
आर हजारों वर्ष से बसे हुए वे फारस-  
निवासी, जिनके पूर्वज मुसलमान बनाए जाने  
के डर से फारस छोड़कर यहाँ आ बसे थे ।

३ भाषा विज्ञाप । पारस देश की भाषा ।

पारसीक-सज्ञा पु० १ पारस देश । २

पारस देश का निवासी । ३ पारस देश का  
धोडा ।

पारस्कर-सज्ञा पु० १ एक देश का प्राचीन  
नाम । २ गृह्यसूत्रकार एक मुनि ।

पारस्परिक-वि० परस्पर होनेवाला । आपस  
का । एक-दूसरे का ।

पारस्य-सज्ञा पु० पारस देश ।

पारा-सज्ञा पु० १. पारद । एक चाँदी-जैसी  
सफेद और चमकीली धातु जो साधारण  
गरमी या सखी में द्रव अवस्था में रहती  
है । २ दिए के आकार का चिन्तु उससे

बड़ा मिट्टी का बरतन । परई । २. टुकड़ा ।

३. पत्थरों से बनी छोटी दीवार ।

मूहा०—पारा पिलाना=बिसी वस्तु को इतना भारी करना, मानो उसमें पारा भरा हो ।

पारायण-संज्ञा पु० १. पूरा करने का कार्य । समाप्ति । २. नियमपूर्वक पाठ । समय निश्चित करके किसी ग्रन्थ का आद्योपात्त पाठ करना ।

पारायत-संज्ञा पु० १. कबूतर । कपोत । २. परेवा । पड़क । ३. बदर । ४. पर्वत । गिरि । ५. आबनूस की लकड़ी ।

पारावार-संज्ञा पु० १. आर-पार । दोनों ओर का तट । २. सीमा । ३. समुद्र । सागर ।

पाराशर-संज्ञा पु० १. पराशर का पुन या वंशज । व्यास । २. पाराशर-स्मृति । वि० १. पराशर-म्बवी । २. पराशर का बनाया हुआ ।

पारि\*-संज्ञा स्त्री० १. सीमा । हृद । २. ओर । तरफ । दिशा । ३. देश । ४. जलाशय का तट ।

पारिख\*†-संज्ञा स्त्री० दे० "परख" ।

पारिजात-संज्ञा पु० १. देवताओं का वृक्ष । देव वृक्ष । २. पुष्प-विशेष । हरमिगार । परजाता । ३. कचनार । पारिभद्र । फरहद ।

पारितव्या-संज्ञा स्त्री० १. राधवा मित्रों के धारण करने योग्य वस्तु । २. वेदी । टिकुली ।

पारितोषिक-संज्ञा पु० प्रसन्न होकर दी जानेवाली वस्तु । तुष्टिजनक दान । पुरस्कार । इनाम ।

पारिन्द्र या पारोन्द्र-वि० १. गिह । घेर । मृगेन्द्र । २. अजगर ।

पारिपथिक-संज्ञा पु० चोर । डाकू । लुटेरा ।

पारिपात्र-संज्ञा पु० पवित्र-विशेष । विन्ध्या चल के पश्चिमी भाग का नाम, जो मालवा प्रान्त की सीमा पर स्थित था ।

पारिपाद्व-संज्ञा पु० अनुचर । शरदली ।

पारिपादिक-संज्ञा पु० १. सेवक । पारि-

पद । शरदली । २. नाटक के अभिनय एक विशेष नट, जो सूत्रधार की सहाय करता है ।

पारिभद्र-संज्ञा पु० १. देवदार वृक्ष । २. साधू ।

पारिभाष्य-संज्ञा पु० जमानत । प्रतिभू ।

पारिभाषिक-वि० साकेतिक । विशेष अर्थ बोधक । परिभाषा-सम्बन्धी ।

पारिमाण्डल्य-संज्ञा पु० अति मूढम परमाणु वह परमाणु, जिससे छोटा दूसरा न हो पारिरक्षक-संज्ञा पु० तपस्वी । साधु ।

पारिष-संज्ञा पु० १. परात । २. पीतल ।

पारिशोल-संज्ञा पु० एक प्रकार का पुष्पा

परिष्व-संज्ञा पु० १. परिष्व में बैठनेवाला सभासद । सभ्य । २. अनुयायिवर्ग । गण पारी-संज्ञा स्त्री० बारी । पाली । अवसर क्रम ।

पारीण-वि० पारगामी ।

पारुष्य-संज्ञा पु० १. परगिन्दा । परद्रोह । २. प्रिय भागण । कठोर वचन । कठोरता, परुषत्व । ४. इद्र का वन ।

पार्क-संज्ञा पु० (अग्ने०) उद्यान । वगीचा पार्ती-संज्ञा स्त्री० (अग्ने०) १. दल । राज नीतिक या अन्य उद्देश्य से व्यक्तियों का सफटन । मंडली । २. ब्रह्म समारोह, जिसमें लोगों को बुलाकर जलपान या भोजन कराया जाय ।

पार्थ-संज्ञा पु० १. पृथ्वीपति । २. (पृथा व पुन) अर्जुन । ३. सुधिच्छिद्र और भीम । ४. अर्जुन वृक्ष ।

पार्थव्य-संज्ञा पु० १. पृथक् होने का भाव । पृथक्ता । भेद । अंतर । भिन्नता । २. वियोग । जुदाई ।

पार्थिव-वि० १. पृथ्वी-म्बधी । सासारिक पृथ्वी से उत्पन्न । २. मिट्टी आदि का ज्ञान हुआ । ३. राजा के योग्य । राजसी ।

संज्ञा पु० १. मिट्टी का शिवलिंग २. राजा ३. मंगलग्रह ।

पार्थिवी-संज्ञा स्त्री० १. सीता । २. उमा ।

पार्थी-वि० दे० "पार्थिव" ।

पार्थ-संज्ञा पु० यम ।

पालमेण्टरी बोर्ड—सजा स्त्री० [ग्रंथे०] किसी दल या पार्टी की वह समिति, जो विधान-सभाओं के चुनाव में गठे होनेवाले उम्मीदवारों को चुने और चुनाव-मयधी व्यवस्था करे।

पालमेण्टरी सेन्टेटरी—सजा स्त्री० [ग्रंथे०] सभा-सचिव। मन्त्रिमण्डल में मन्त्रियों को विधान-सभा-सम्बन्धी कार्यों में सहायता देनेवाले सचिव।

पालमेण्ट—सजा स्त्री० (ग्रंथे०) किसी देश के शासन के लिए नियम बनानेवाली सभा, जिसके सदस्य जनता-द्वारा चुने जाते हैं।

पार्वण—सजा पु० १ पितृपक्ष में किया जानेवाला श्राद्ध-विशेष। २ पर्व पर किया जानेवाला श्राद्ध। पर्वकृत्य। अमावस्या आदि के दिन किया जानेवाला श्राद्ध।

पार्वत—वि० १ पर्वत-सम्पत्ति। २ एन श्रम्य। पर्वत पर होनेवाला। जैसे, शिला-जीत, सीमा घातु आदि।

पार्वत पोलु—वि० अखरोट।

पार्वती—सजा स्त्री० १ हिमालय पर्वत की कन्या, शिव की अर्द्धांगिनी देवी, जो गौरी, दुर्गा आदि अनेक नामों से पूजी जाती है। शिवा। भवानी। उमा। गौरी। गिरिजा। २ गोपीचदन।

पार्वतीय—सजा पु० १ पर्वत-सम्बन्धी। पहाड़ का। पहाड़ी। २ पहाड़ से उत्पन्न।

पार्वतेश—वि० पहाड़ पर होनेवाला।

पार्व—सजा पु० १ कन्ये के नीचे का भाग।

पार्व, पार्वती, २ अगल-वगल की जगह। पास। समीपता। निवृत्ता।

पार्व—पार्ववर्ती—१ साथी या मुसाहिब। सहचर। पास रहनेवाला। २ समीपस्थ। समीपवर्ती।

पार्वण—सजा पु० सहचर। साथी।

पार्वनाय—सजा पु० जैनो के तीर्थसर्व तीर्थकर।

पार्वभाग—सजा पु० समीप का भाग। पगली।

पार्ववर्ती—सजा पु० [स्त्री० पार्ववर्तिनी] १ पास रहनेवाला। निवृत्तस्थ। सहचर। समीपवर्ती। २ मुसाहिब।

पार्वेशल—सजा पु० पगली का रोग-विशेष।

पार्व का शूल। शूल रोग-विशेष।

पार्वस्थ—वि० पास खड़ा रहनेवाला। निवृत्तस्थ।

सजा पु० अभिनय के नटों में से एक।

पार्यद—सजा पु० १ पास रहनेवाला मेहन।

पारिपद। विन्यास पुरुष। २ मन्त्री। मुसाहिब।

पारिल—सजा पु० [ग्रंथे०] पुलिदा। पेंकेट।

डाव में भेजने का पुलिदा।

पारलक—सजा पु० १ पालक गाव। पालकी।

२ बाज पक्षी। ३ एन रत्न, जो काला, हरा और लाल होता है।

पालक—सजा पु० १ "पतन"।

पाल—सजा पु० १ पालन करनेवाला। पालक।

२ चित्रकवृक्ष। ३ बगल का एन प्राचीन राजवंश, जिसने माडे तीन गो वर्ष तक बग और मगध में राज्य किया था।

४ लंबा-बोड़ा कपड़ा, जिसे नाव के मस्तूल से लगाकर इसलिए तानते हैं जिसमें हवा भरे और नाव चले। ५ तबू। चंदौवा। शामियाना। ६ गाड़ी या पालकी आदि डाने का कपड़ा। ओहार।

सजा स्त्री० १ फलों की गरमी पहुँचाकर पकाने के लिए पत्ते बिछाकर रखने की विधि। २ पानी को रोकनेवाला बांध या किनारा। मंड। ३ ऊँचा किनारा।

कगार।

पालक—सजा पु० १ पालावर्ती। पालन करनेवाला। पोषक। सरक्षक। २ पालक-रक्षक। सार्वभूमि। ३ पाला हुआ लड़का। दत्तक पुत्र। ४ एक प्रकार का साग। ५ पलग। पर्यक।

पालकी—सजा स्त्री० १ एन प्रकार की सवारी, जिसे आदमी कंधे पर लेकर चलते हैं। शिविना। २ डोली। पंगिस। म्याना। ३ पालक का साग।

पालकी गाड़ी—सजा स्त्री० पालकी की तरह छतवाली गाड़ी। वागी।

पालट—सजा पु० दत्तक पुत्र। गोद लिया हुआ पुत्र।

पालतू-वि० पाला या पोसा हुआ।

पालयो-सज्ञा स्त्री० दे० "पलयी"।

पालन-सज्ञा पु० [वि० पालनीय, पालित, पाल्य] १ भोजन-वस्त्र आदि देकर जीवन-रक्षा। भरण-पोषण। परवरिश। रक्षण। निर्वाह। २ अनुसूल आचरण। निमम या आदेश के अनुसार कार्य न टालना। भग न करना।

पालना-क्रि० स० १ भोजन-वस्त्र आदि देकर जीवन-रक्षा करना। भरण-पोषण करना। निर्वाह करना। परवरिश करना। २ पशु-पक्षी आदि को रपना। पोसना। ३ निवाहना। रक्षा करना। ४ भग न करना।

राज्ञा पु० एक प्रकार का भूला या हिडोला। गह्वारा। पिगूरा।

पालनीय-वि० पालन करने योग्य। पालने लायक।

पालव-सज्ञा पु० पल्लव। पत्ता। कोमल पत्ता।

पाला-सज्ञा पु० १ हवा में मिली हुई भाप के अत्यंत सूक्ष्म गणुआ की तरह, जो पृथ्वी के बहुत ऊँची हो जाने पर उस पर सफेद-सफेद जम जाती है। हिम। तुषार। नीहार। २. वर्ष। सरदी। ठंड। ३ व्यवहार करने का संयोग। साधिका। दास्ता। ४ रक्षित। पोसा हुआ। ५. पारी। वारी। ९. नप-निह-पण। ७. कालतिरुपण। ८. प्रधान स्थान। सदर मुकाम। ९ सीमासूचक मिट्टी की मेड़ या छोटा भीटा। धूस। १० अनाज भरने का बड़ा बरतन जो प्रायः कच्ची मिट्टी का गोल दीवार के रूप में होता है। ११ डेहरी। कुश्ती लड़ने या कसरत करने की जगह। अखाड़ा।

मुहा०—पाना मार जाना=पीछे या फरार का पाला गिरने से मुरझा जाना। (किसी से) पाला पड़ना=व्यवहार करने का संयोग होना। बास्ता पड़ना। काम पड़ना। (किसी के) पाले पड़ना=बश में होना। कानू में आना। पकड़ में आना।

पालागन-सज्ञा स्त्री० दंडवत्। प्रणाम। नमस्कार।

पालि-सज्ञा स्त्री० १ वान की वाली। २ कोना। ३ पक्ति। श्रेणी। ४. विनारा। सीमा। ५. मेड़। बाँध। ६ करारा। जगार। ७ भीटा। ८ अक। मोद। ९. परिधि। १०. चिह्न। ११ मूढ़वाली स्त्री। १२. एक प्राचीन भाषा, जिसमें बौद्धों के धर्मग्रंथ लिखे हुए हैं। यह भाषा संस्कृत से गिरी और मागधी आदि प्राकृत भाषाओं से उच्च समझी जाती है। बौद्धों के प्रभुत्व काल में यह भारत की जन भाषा थी। आज भी स्याम, बर्मा, लावा, चीन आदि देशों में इसका पठन-पाठन वैसा ही होता है, जैसा संस्कृत का भारत में।

पालिक-सज्ञा पु० पालक। पोषक। रक्षक। पालिका-सज्ञा स्त्री० पालन करनेवाली। भरण-पोषण करनेवाली।

पालित-वि० रक्षित। पाला हुआ। पोषित। पालिनी-वि० पालन करनेवाली।

पालिनी-सज्ञा स्त्री० (अर्थ०) १ नीति। २ किसी बीमा कंपनी की वह सनद, जिस पर बीमा का रुपया दिए जाने की अवधि और शर्तें आदि लिखी रहती हैं। पाली-सज्ञा स्त्री० वि० [स्त्री० पालिनी] १ पालन करनेवाला। २ पारी। वारी।

पाल-वि० पालतू।

पाले-अव्य० अधीन। बश में। अधिकार में। मुहा०—पाले पड़ना=अधीन होना। बश में होना।

पाल्य-वि० पालन के योग्य।

पाव-सज्ञा पु० पैर।

मुहा०—(किसी काम या बात में) पावें अड़ाना=किसी विषय में व्यर्थ हस्तक्षेप करना। फजूल दखल देना। पावें उखड़ जाना=ठहरने की शक्ति या साहस न रह जाना। युद्ध से भागना। पावें उठाना=१ चलन के लिए उद्यत होना। २ जल्दी-जल्दी पैर बढाना। पावें धिसगा=चलत-चलत थक जाना। पावें

जमना = स्थिति में स्थिरता माना । स्थिर भाव से रहना होना । दृढ़ता रहना । हटने या विचलित होने की अवस्था न माना । पाँच तले की मिट्टी निपन जाना या जमीन तिसप जाना = (किसी भयंकर बात को सुनकर) स्तब्ध हो जाना । होना उड़ जाना । पार्व तोड़ना = १ बहुत चलपर पर थपाना । २. बहुत दौड़-धूप करना । इपर-उपर बहुत हारन होना । घोर प्रयत्न करना । पार्व तोड़पर बैठना = १. बहो न जाना । अवल या स्थिर हो जाना । २ हारकर बैठना । किसी के पार्व धरना = १ पैर छूकर प्रणाम करना । २ दीनता से विनय करना । बुरे पय पर पार्व धरना = बुरे काम में प्रवृत्त होना । पार्व पडना = १ चिनती करके किसी को बहो जाने से रोचना । २ पैर छूना । बहो दीनता और विनय करना । ३ पैर छू कर नमस्कार करना । पार्व पसारना = पैर धोना । पार्व पडना = १ पैरी पर गिरना । साष्टांग बहवत् करना । २ अत्यंत दीनता से विनय करना । पार्व पर गिरना = दे० 'पार्व पडना' । पार्व पसारना = १ पैर फैलाना । २ आराम से पडना या सोना । ३ मर जाना । ४ आठपर बढ़ाना । ठाट-आट करना । पार्व-पार्व चलना = पैदल चलना । पार्व पूजना = १ बड़ा आदर-सत्कार करना । बहुत पूज्य मानना । २ विवाह म कन्या-दान के समय कन्याकुल के लोगो का घर का पूजन करना और कन्यादान में याग देना । पार्व फूँक-फूँककर रखना = बहुत बचाकर काम करना । बहुत सावधानी या होशियारी से चलना । पार्व फैलाना = १. अधिक पाने के लिए हाथ बढ़ाना । मुँह खाना । पावर भी अधिक का लोभ करना । २ धन्यो की तरह ग्रहना । ३ गव करना । मचलना । पार्व बढ़ाना = चलने में पैर आगे रखना । २ अधिक ॥ अतिक्रमण करना । पार्व भर जाना = बनावट से पैर में बोझ-सा मालूम

होना । पैर बचना । पार्व भारी होना = गर्भ रहना । हमल होना । पार्व रोपना = प्रतिज्ञा करना । प्रण करना । पार्व लगना = १ प्रणाम करना । २. चिनती करना । पार्व से पार्व बांधकर रखना = धरावर अपने पास रखना । पात से भलग न होने देना । बड़ी निगरानी करना । पार्व मो जाना = १. पैर सुन्न हो जाना । स्तब्ध हो जाना । २ पैर भन्ना उठना । (किसी के) पार्व न होना = ठहरने की शक्ति या साहम न होना । दृढ़ता न होना । धरती पर पार्व न रखना = १. बहुत घमंड करना । २ फूले श्रम न समाना ।

पार्वेडा-सज्ञा पु० पार्वेपोडा । पायदाज । किसी के आदर के लिए उससे आगमन पर मार्ग में बिछाया गया वस्त्र ।

पार्वेडी-सज्ञा स्त्री० खडाऊँ । पादत्राण । जुता ।

पार्वे\* -वि० १ तुच्छ । नीच । दुष्ट । खल । २ मूर्ख । निर्बुद्धि ।

सज्ञा पु० दे० 'पार्वेडा' ।

सज्ञा स्त्री० दे० 'पार्वेडी' ।

पाय-सज्ञा पु० १. चौथाई । चतुर्थ भाग ।

२ एक सर का चौथाई भाग । चार छटाँव । पोथा ।

पावक-सज्ञा पु० १ आग । अग्नि । ताप ।

तेज । २ सदाचार । ३ अग्निमय वृक्ष ।

अग्नेय का पेड़ । ४ वरुण । ५ सूर्य ।

वि० शुद्ध या पवित्र करनेवाला ।

परिष्कारक ।

पावकमणि-सज्ञा पु० सूर्यवान्त मणि ।

पावदान-सज्ञा पु० १ पैर रखने के लिए

बना हुआ स्थान या वस्तु । २ हक्के,

गाड़ी आदि में लोहे या काठ की वस्तु,

जिस पर पैर रखकर चढ़ने हैं ।

पावन-वि० [स्त्री० पावनी] १. पवित्र । शुद्ध ।

२. पवित्र करनेवाला ।

सज्ञा पु० १. अग्नि । २. प्रायश्चित्त । ३.

शुद्धि । ४. जल । ५. गोबर । ६. रक्षा ।

७. विष्णु । ८. व्यास का एक नाम ।

पावनता-सज्ञा स्त्री० पवित्रता ।

पाषाणा†\*—वि० स० १ पाणा। प्राप्त वरणा।  
 २ अनुभव वरणा। जानना-संग्रहना।  
 ३ भोजन वरणा। ४ दे० "पाणा"।  
 सज्ञा पु० १. दूसरे से रुपया आदि पाने का  
 हक। सहना। २. बाकी खम पाने योग्य।  
 पावस†—सज्ञा स्त्री० वर्षाकाल। वर्षा ऋतु।  
 वरसात।

पाया†—सज्ञा पु० दे० "पाया"।  
 पाश—सज्ञा पु० १. बन्धन। रस्सी, तार आदि  
 की गाँठ। फंदा। फाँस। २ पशु-पक्षियों  
 को फँसाने का जाल या फंदा। बधन। ३  
 फँसानेवाली वस्तु। ४. अस्त्र-विशेष।

पाशक—सज्ञा पु० चौपड़। पासा। जुआ।  
 पाशकैरली—सज्ञा स्त्री० ज्योतिष की एक  
 गणना, जो पारो फेंककर की जाती है।  
 पाशव—वि० १. पशु-संबंधी। पशुओं का।  
 २ पशुओं-जैसा।

पाशदिक—वि० दे० पाशव।  
 पाशा—सज्ञा पु० [फा०] तुर्की सरदारों की  
 उपाधि।

पासी—सज्ञा पु० १ व्याघ्र। बहेलिया। २  
 चाडाल, जो फाँसी पाए हुए व्यक्तियों के  
 गल में फंदा लगाता है। ३ वरुण।

पाशुपत—वि० १ पशुपति-संबंधी। शिव-  
 संबंधी। २ पशुपति का।

सज्ञा पु० १. पशुपति या शिव का उपासक।  
 शैव। २ शिव। ३ तन्त्रशास्त्र। ४ अथर्व  
 वेद का एक उपनिषद्।

पाशुपतास्त्र—सज्ञा पु० शिव का शूलास्त्र।  
 त्रिशूल।

पाश्चात्य—वि० १ पिछला। पीछे का।  
 २ पश्चिम दिशा का। पश्चिम देशीय।  
 योरोप देश-सम्बन्धी। पश्चिम का।

पाश्चात्योकरण—सज्ञा पु० किसी देश या  
 जाति आदि को पश्चिमी सभ्यता के साँचे  
 में ढालना या पाश्चात्य ढंग का बनाना।

पापड—सज्ञा पु० १ वेदविरुद्ध आचरण  
 करनेवाला। भूढ़ा मत माननेवाला। २  
 लोगो को ठगने के लिए साधुओं का-सा  
 रूप-रंग बनानेवाला। ढागो। धर्मध्वजी।

पापडी—वि० १ वेदविरुद्ध आचरण करने-

वाला। २ धर्म आदि का भूढ़ा आडंबर  
 खड़ा करनेवाला। धूर्त। ढागी। छली।  
 ठग।

पापर—सज्ञा स्त्री० दे० "पाखर"।

पापाण—सज्ञा पु० पत्थर। शिला।

वि० निर्दय। हृदयहीन।

पापाणैरिक—सज्ञा स्त्री० गेरु।

पापाणदारण या दारक—सज्ञा पु० टाँकी।

छेनी। पत्थर काटने का यंत्र।

पापाणभेद—सज्ञा पु० एक पीघा, जो अपनी  
 पत्तियों की सुन्दरता के लिए बगीचों में  
 लगाया जाता है। पथरचट। पसानभेद।

पापाणभेदी—सज्ञा पु० दे० "पापाणभेद"।

वि० पत्थर छेदनेवाला।

पापाणो—वि० पत्थर की तरह कठोर  
 हृदयवाली।

सज्ञा स्त्री० बाट। बटखरा।

पासग—सज्ञा पु० १ तराजू की डही को  
 बराबर करने के लिए पलड़ पर रखा हुआ  
 कोई बोझ। पसघा। २ तराजू की  
 डही का बराबर न होना।

मुहा०—(किसी का) पासग भी न होना=  
 किसी की तुलना में बहुत तुच्छ होना।

पास—सज्ञा पु० १ ओर। बगल। तरफ।  
 २ निकटता। सामीप्य। समीपता। ३.  
 अधिकार। कब्जा। ४. रक्षा। ५. पल्ला।

अव्य० निकट। समीप। नजदीक।

(अग्रे०) १ परीक्षा में सफल। उत्तीर्ण।

२ स्वीकृत। ३ कही जाने का आज्ञापत्र।

यौ०—आस-पास=१ अगल-बगल।

समीप। २ करीब। लगभग।

मुहा०—(किसी के) पास बैठना=सगत  
 में रहना। पास पटकना=निकट जाना।

पासनी†—सज्ञा स्त्री० वस्त्र को पहले-पहल  
 अन्न चटाने का संस्कार। अन्नप्राशन।

पासबुक—सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] वैन या डाकघराने  
 में रुपया जमा करने के हिसाब की पुस्तक।  
 पासमान\*—सज्ञा पु० पास रहनेवाला दास।

पासवर्ती।

पासवर्ती\*—वि० दे० "पासवर्ती"। निकट-

वर्ती। समीपस्थ।

पासा-मज्ञा पु० १. पीपड़ या पीपर लेवने की मोटी । २. पीपर का सेल । ठप्पा । मुहा०—(फिर्मा का) पागा पड़ना=भाग्य प्राप्त होना । पागा पलटना=१. भाग्य प्रतिकूल होना । २. मुक्ति या तदर्थों का उखाड़ा पन होना ।

पानिप\*-सज्ञा पु० पदा । घघन ।

पासो-मज्ञा पु० १. जाति-विशेष । २. जाल या पदा डाल कर गिरिया पकड़नेवाला । व्याघ ।

मज्ञा स्त्री० १. पदा । फोस । पाश । फाँसी । २. घोड़े के पैर बाँधने की रस्सी । पिछाडी ।

पासुरो\*-मज्ञा स्त्री० दे० "पगली" ।

पाहू\*-अव्य० १. समीप । निवट । पास । २. किसी के प्रति । किसी से ।

पाहू\*-सज्ञा पु० पहर । पापाण ।

पाहू\*†-सज्ञा पु० पहरेदार । पहग देनेवाला ।

पाहि\*-अव्य० १. निवट । पास । समीप । २. किसी के प्रति । किसी से ।

पाहि-क्रि० स० संहृत में मध्यम पुरुष की क्रिया जिनका अर्थ है 'रक्षा करा', 'बचाओ' ।

पाही\*-अव्य० दे० "पाहि" ।

पाहुँच†-सज्ञा स्त्री० दे० "पहुँच" ।

पाहुन-सज्ञा पु० १. दे० "पाहुना" । प्रतिथि । मेहमान । २. दामाद । जामाता ।

पाहुना†-सज्ञा पु० १. प्रतिथि । मेहमान । २. दामाद । जामाता ।

पाहुनी-सज्ञा स्त्री० १. प्रतिथि स्त्री । मेहमान औरत । २. आतिथ्य । मेहमानदारी । पाहुनी-सज्ञा पु० भेट । उपहार । नजर । मोपात । बँना ।

पिग-वि० १. पीला । पीलापन लिये भूरा । २. भूरापन लिये लाल । तामड़ा ।

पिगल-वि० पीत । पीला । भूरापन लिये लाल । सुंघनी रंग का भूरापन लिये पीला ।

मज्ञा पु० १. एक प्राचीन मुनि, जो छंद शास्त्र के आदि आचार्य माने जाते हैं । २. छंद-शास्त्र । ३. साठ सवत्सरो में से एक । ४.

एक निधि या नाम । ५. कवि । यदग । ६. उद्गू । पक्षी । ७. धनि । ८. पीतम । ९. पुराणा । म. कवि । एक देश ।

पिगला-मज्ञा स्त्री० १. गधरी । २. मोर-पन । ३. गीनम का पेड़ । ४. पठ याण धोर नत्र में नील प्रधान नादिया में से एक । नाडी-विशेष जो-दाहिनी नाक में निकलती है । ५. पक्षी-विशेष । ६. विदेह देश में रहनेवाली एक प्राचीन वंश । कणिका । ७. राजनीति ।

पिजडा-मज्ञा पु० दे० "पिजरा" ।

पिजरा-म० पु० धुलरी ।

पिजरा-वि० १. पीला । पीलवर्ण का । २. भूरापन लिये लाल रंग का ।

मज्ञा पु० १. पिजडा । २. गरीर के भीतर या हृदिमा का छट्ट । ३. भूरापन लिये लाल रंग का पाश । ४. मोता ।

पिजरा-मज्ञा पु० १. साहे या बाम आदि की तीनियों का बना हुआ भाग, जिसमें पक्षी पाने जाते हैं । २. छोटे या बड़े जानवरों-जैसे हिरन, घेर, चीता आदि का बन्द करके रखने के लिए लोहे के छड़ों का घर ।

पिजरापोल-सज्ञा पु० गोशाला । पशुशाला ।

पिड-सज्ञा पु० १. गोत-मटोत दुक्का ।

गोला । २. ठोस दुक्का । लुगदा । ३.

ढेर । राशि । ४. पके हुए चावल आदि

का गोत लोदा, जो धाद में पितरो की

अर्पित किया जाता है । ५. भोजन ।

आहार । ६. गरीर । देह ।

मुहा०—पिड छाटना=साथ छोड़ना या

संघ न रखना । तग न करना ।

पिड छुटाना=पिड छुटाना । अपना दायित्व

हटाना । उदाहरण ।

पिडलजूर-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खजूर,

जिसके फल मीठे होते हैं ।

पिडज-सज्ञा पु० सब अंगों के बनने पर गर्भ

से सजीव निकलनेवाला जन्तु । जैसे,

मनुष्य, कुत्ता, बिल्ली आदि ।

पिडवान-सज्ञा पु० पितरो की पिड देने का

वर्ग ।

पिडरी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "पिडली" ।

पिडरोग—सज्ञा पु० १. शरीर का रोग ।  
२. कोढ़ ।

पिडरोगी—वि० रण शरीर का ।

पिडली—सज्ञा स्त्री० टोंग का ऊपरी पिछला भाग, जो मांसल होता है ।

पिडवाही—मज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कपड़ा ।  
पिडा—मज्ञा पु० [स्त्री० पिडी] १. दे०

“पिड” । गाला । गोल-मटोल टुकड़ा ।  
लुगदा । २. मधु, तिलमिली हुई खीर आदि का गांठ लोढ़ा, जो आढ म पितरो को अर्पित किया जाता है । ३. देह । शरीर ।  
मुहा०—पिडा-पानी देना=आढ शरीर तर्पण करना ।

पिडाकार—वि० गोलाकार ।

पिडारी—सज्ञा पु० दक्षिण की एक जाति, जो पहल खेती करती थी । बाद की अवसर पाकर बहु लूट-मार करने लगी और मुसलमान हा गई । लुटेरा, ठग । उर्वर ।  
डाकुआ का दल ।

पिडालू—सज्ञा स्त्री० १. एक तरह का शकम्बद । सुयनी । पिडिया । २. एक प्रकार का शकनालू या रतालू ।  
ओषधि-विशेष की जड़ ।

पिडिका—सज्ञा स्त्री० १. पिडी । छोटा पिड ।  
२. पिडली । ३. वह पिडी, जिस पर देवमूर्ति स्थापित की जाती है । वेदी ।

पिडिया—सज्ञा स्त्री० १. पिडी । गोली वस्तु का हाथ से बंधा हुआ लम्बा टुकड़ा । २. गुड़ की लवी भली । मुट्ठी । ३. लपेटे हुए सूत, सुतली या रस्सी का छोटा गोला ।

पिडी—सज्ञा स्त्री० १. छोटा गोला । लोढ़ा । लुगदी । २. गोली वस्तु का टुकड़ा । ३. कटू । घोया । ४. पिड खनूर । ५. वेदी, जिस पर बलिदान किया जाता है । ६. गिव का लिंग । ७. देवता की मूर्ति । ८. सूत, रस्सी आदि का गोल लच्छा ।

पिडुरी\*†—सज्ञा स्त्री० दे० “पिडली” ।

पिड्र—वि०, सज्ञा पु० दे० “प्रिय” ।

पिड्रवाई\*†—सज्ञा स्त्री० पीनापन ।

पिड्ररी—सज्ञा स्त्री० हल्दी या पीले रंग से

रंगी हुई धोनी, जो विवाह या विदाई के समय दी जाती है ।

पि० दे० “पीली” ।

पिड\*—सज्ञा पु० पति । प्रिय । प्यारा ।

पिक—सज्ञा पु० कोयल । कोकिल ।

पिकधीनी—सज्ञा स्त्री० मिष्टभाषिणी । कोनिल के समान बोलनेवाली । मधुरभाषिणी ।

पिकप्रिया—सज्ञा स्त्री० बड़ी जामुन ।

पिकी—सज्ञा स्त्री० कोयल ।

पिचलना—वि० अ० १. गरमी से किसी चीज का गलकर पानी-सा हो जाना ।  
गलना । द्रव होना । २. चित्त में दया उत्पन्न होना । परोजना ।

पिचलाना—वि० स० १. किसी चीज को गरमी पहुँचाकर द्रव करना । गलाना ।

२. किसी के मन में दया उत्पन्न करना ।

पिचकना—वि० अ० किसी फूले हुए पदार्थ का दब जाना । दबना ।  
मिकुडना । सिमिटना ।

पिचकाना—वि० स० फूले हुए पदार्थ को दबाना । सिकुडना ।

पिचकारी—सज्ञा स्त्री० पानी या रंग आदि दूर फरने के लिए यन्त्र-विशेष ।

पिचकी\*†—सज्ञा स्त्री० दे० “पिचकारी” ।

पिचपिचा—सज्ञा पु० १. लसदार । चिप-निपा । पिलपिला । २. दवा हुआ और गुलगुला ।

पिचु—सज्ञा पु० १. रुई । कपास । २. कृष्ण-विशेष ३. एक असुर का नाम । ४. भैरव ।

५. अन्न-विशेष । ६. तेल-विशेष ।

पिचुका\*†—सज्ञा पु० १. पिचकारी । २. गोबगप्पा ।

पिचुमई—सज्ञा पु० नीम का पेड़ ।

पिचु—सज्ञा पु० १६ मासे की तौल, वर्ण ।

पिचर—सज्ञा पु० आँख का मैल ।

पिचिल-वि० पिचका हुआ । रजा हुआ ।

पिचो-वि० १. दवा या पिचका हुआ ।

२. फटे कपड़े में सीया हुआ टुकड़ा ।

पिच्छ—सज्ञा पु० १. पूँछ । लागूल । २. मयूरपुच्छ । मोर की पूँछ । ३. मार की बोटी । चूड़ा ।

पिच्छक—सज्ञा पु० पूछ ।

पिच्छवाण—सज्ञा पु० बाज पक्षी ।

पिच्छमार—सज्ञा पु० मोर की पूछ ।

पिच्छल—वि० दे० "पिछला" ।

पिच्छल—वि० [स्त्री० पिच्छला] १. गीला

और चिकना । २. फिसलनेवाला । पैर

फिसलनेवाला । ३. चूड़ायुक्त (पक्षी) ।

४. सटा और कोमल । बफनारी (पदाय) ।

पिछटना—वि० अ० पीछे रह जाना । आगे

या बराबर न रहना ।

पिछलगा—सज्ञा पु० १. पीछे-पीछे चलने-

वाला २. । अधीन । आश्रित । ३. निष्प ।

४. अनुवर्ती । अनुगामी । ५. नीच । सेवक ।

पिछलगो—सज्ञा स्त्री० पिछलगा होने का भाव ।

अनुगमन करना । अनुयायी होना ।

पिछलगूँ—सज्ञा पु० दे० "पिछलगा" ।

पिछला—वि० [स्त्री० पिछली] १. पीछे

की ओर का । २. बाद का । अनंतर का ।

३. अत की ओर का । ४. गत । पुराना ।

गुजरा हुआ । बीता हुआ ।

मूढा—पिछला पहर—दो पहर या आधी

रात के बाद का समय । पिछली रात—

आधी रात के बाद का समय ।

पिछवाई—सज्ञा स्त्री० पीछ की ओर लटकाने

का परदा ।

पिछवाड़ा—सज्ञा पु० १. किसी भूभाग के

पीछे का भाग । घर का पूछ भाग ।

२. घर के पीछे का स्थान या जमीन ।

पिछाड़ी—सज्ञा स्त्री० १. पिछला भाग

या रण्ड । पीछे का हिस्सा । २. पीछे

के पिछले पैर को बाँधने की रस्ती ।

पिछानना\*—क्रि० स० दे० "पहचानना" ।

पिछार\*—सज्ञा पु० दे० "पिछवाड़ा" ।

पिछलना—क्रि० स० धक्का देकर पीछे हटाना ।

पीछे छोड़ना ।

पिछोरा\*—सज्ञा पु० [स्त्री० पिछोरी] दुपट्टा ।

बादर । दोहर । ओढ़ने का वस्त्र ।

पिछोहे\*—वि० वि० पीछे की ओर ।

पीछे से ।

पिटत—सज्ञा स्त्री० पीटने की क्रिया या भाव ।

पिटक—सज्ञा पु० १. पिटा । २. फुटी ।

पूडिया । ३. विनी अथवा एक भाग ।

हिस्सा । लट ।

पिटना—वि० अ० १. मार मारना । ठोका

जाना । २. बजना । आघात पाकर घावाज

करना ।

पुंसज्ञा पु० धूने आदि की छत पीटने का

ओजार । चापी । मुँगरा ।

पिटवाना—वि० स० पीटने का काम दूसरे से

कराना ।

पिटवाई—सज्ञा स्त्री० १. पीटने की क्रिया या

भाव । २. मार । प्रहार । ३. पीटने की

मजदूरी ।

पिटारा—सज्ञा पु० [स्त्री० पिटारी] बेंत, मूँज

आदि का बना हुआ द्रव्यनदार पात्र ।

पिटृत—सज्ञा स्त्री० शोक के समय जोर-जोर

से छाती पीटना ।

पिटू—वि० मार खान का श्रम्यासी ।

पिटू—सज्ञा पु० १. अनुयायी । पीछे चलने-

वाला । पिछलगा । २. सहायक । हिमा-

यती । मददगार ।

पिठर—सज्ञा पु० १. मोटा । २. मयानी ।

३. शाली । ४. घर-विशेष । ५. अग्नि-

विशेष ।

पिठवन—सज्ञा स्त्री० ओषध के नाम में आने-

वाली एक प्रसिद्ध लता । पिठोनी । पृष्ठि-

पर्णी ।

पिठो—सज्ञा स्त्री० उई की भीगी हुई पित्ती वाल ।

पिठोरी—सज्ञा स्त्री० पीठी की बनी हुई बरी

या पकौड़ी ।

पितबर—सज्ञा पु० दे० "पीतावर" । पीला

वस्त्र ।

पितपापडा—सज्ञा पु० एक भाइ, जिसका

उपयोग ओषध के रूप में होता है । दवन-

पापडा ।

पितर—सज्ञा पु० पितृ । पूर्वज । पुरखा ।

मृत पिता, पितामह आदि ।

पितरायें\*—सज्ञा स्त्री० खाद्य वस्तु में पीतल

का बसाव ।

पिता—सज्ञा पु० याप । जनक । जन्म देकर

पालन-पोषण करनेवाला ।

पितामह—सज्ञा पु० [स्त्री० पितामही] १

पिता का पिता । दादा । २ भीष्म । ३ ब्रह्मा । ४ शिव ।

पित्तिया—सज्ञा पु० दे० “पितृव्य” । चचा । काका । पिता का भाई ।

यो०—पित्तिया सगुर या पित्तिया सास= चचिया सगुर या चचिया सास ।

पितृ\*—सज्ञा पु० दे० “पिता” ।

पितृ—सज्ञा पु० १ दे० “पिता” । २ पितर । मृत बाप, या दादा, परदादा आदि । ३ एक प्रकार के देवता, जो सब जीवों के आदि पूर्वज माने गए हैं ।

पितृक—वि० पितृ-सम्बन्धी । पिता का । पैतृक । पितृऋण—सज्ञा पु० पितरों का ऋण । पितरों के प्रति ऋण । पुन उत्पन्न करने से इस ऋण से मुक्ति होती है ।

पितृकर्म—सज्ञा पु० श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म । पितृकुल—सज्ञा पु० कुटुम्बी । पिता के वंश के लोग ।

पितृकृत्य—सज्ञा पु० श्राद्ध आदि कर्म ।

पितृक्रिया—सज्ञा पु० पितृकर्म । श्राद्ध ।

पितृगृह—सज्ञा पु० बाप का घर । मायका । नहर (स्त्रियों के लिए) ।

पितृतर्पण—सज्ञा पु० पितरों को पानी देना । पूर्वजों को जलदान । तर्पण ।

पितृतिथि—सज्ञा स्त्री० १. पर्व । अमावास्या । २. पिता का मरण-दिन ।

पितृतीर्थ—सज्ञा पु० १ गया तीर्थ । २ अंगूठे और तर्जनी के बीच का भाग ।

पितृत्व—सज्ञा पु० पिता होने का भाव ।

पितृदान—सज्ञा पु० पितरों के उद्देश्य से दिया जानेवाला दान ।

पितृपक्ष—सज्ञा पु० १. आदिवन मास का कृष्ण पक्ष । कवार मास की प्रतिपदा से अमावास्या तक का समय, जिनमें हिन्दू अपने पितरों का श्राद्ध, तर्पण आदि करते हैं । २ पिता के सम्बन्धी । पितृकुल ।

पितृपति—सज्ञा पु० यम । यमराज । बास । दण्डधर ।

पितृपद—सज्ञा पु० पितरों का लोह ।

पितृप्रभू—सज्ञा स्त्री० १. सम्पत्ता । सत्त्वनाल । २. पितामही ।

पितृभक्ति—सज्ञा पु० पिता की भक्ति । पुत्र का पिता के प्रति कर्त्तव्य ।

पितृमेष—सज्ञा पु० वैदिक युग के समय अन्त्येष्टि कर्म का एक भेद, जो श्राद्ध से भिन्न होता था ।

पितृयज्ञ—सज्ञा पु० तर्पण । श्राद्ध ।

पितृयाण—सज्ञा पु० मृत्यु के अनंतर जीव के जाने का मार्ग, जिससे वह चन्द्रमा को प्राप्त होता है ।

पितृलोक—सज्ञा पु० पितरों का लोक । वह स्थान, जहाँ पितृगण रहते हैं ।

पितृवन—सज्ञा पु० श्मशान । प्रेतभूमि ।

पितृ-विसर्जन—सज्ञा पु० पितृपक्ष का अन्तिम दिन । आश्विन की अमावास्या को समस्त पितरों का विसर्जन करने के लिए होनेवाला धार्मिक कृत्य ।

पितृवृत्ति—सज्ञा पु० पैतृक सम्पत्ति ।

पितृव्य—सज्ञा पु० चाचा । पिता का भाई । पिता के समान पूज्य व्यक्ति ।

पित्त—सज्ञा पु० एक तरल पदार्थ, जो शरीर के अन्तर्गत यकृत में बनता है । यह पाचन में सहायक होता है । शरीर के अन्दर की धातु-विशेष । तृक्नधातु ।

मूहा०—पित्त उमलना या खीलना=बहुत क्रोधित होना । पित्त गरम होना=शीघ्र गुड़ होने का स्वभाव होना ।

पित्तकर—वि० पित्तवर्धक । पित्त बढ़ानेवाला ।

पित्तघ्न—वि० पित्तनाशक ।

पित्तज्वर—सज्ञा पु० पित्त के प्रकोप से होनेवाला ज्वर ।

पित्तपापड़ा—सज्ञा पु० दे० “पित्तपापडा” ।

पित्तप्रकृति—वि० जिसके शरीर में यात और कफ की अपेक्षा पित्त अधिक हो ।

पित्तप्रकोपी—वि० पित्त बढ़ानेवाले पदार्थ ।

पित्तरक्त—सज्ञा पु० रोग-विशेष । पित्तरक्त-पीडा । पित्तरक्त-जनित पीडा ।

पित्तल—सज्ञा पु० १. पीनल धातु । २. भोजपत्र । ३. हस्ताल ।

वि० जिससे पित्तदोष बढ़े । पित्तकारी (द्रव्य) ।

पित्ता—सज्ञा पु० १. शरीर के अन्दर पित्त

की बेली। २ साह्य। हिममत। ह्रीतता।  
मुहा०—पित्ता उबलना या खोलना=बहुत  
अधिक शोध आना। पित्ता निवाजना=बहुत  
अधिक परिश्रम या काम करना। पित्ता पानी  
करना=बहुत परिश्रम करना। जान लठ्ठाकर  
काम करना। पित्ता भरना=गुस्ता न रह  
जाना। पित्ता मारना=१ शोध देना।  
सहना। २ कोई अरविबर या कठिना  
काम करने में न ऊटना।

पित्ताशय—सज्ञा पु० पित्त की थैली, जो ज़िगर  
में पीछे और नाचे की ओर होती है।

पित्ती—सज्ञा स्त्री० १ एक रोग, जिसमें  
शरीर भर में छोटे-छोटे दबोरे पड़ जाते  
हैं। २ लाल नहीं बनने, जो गर्मी के  
दिनों में शरीर पर निकल आते हैं। ग्रंथीरी  
या ग्रंथीरी।

पित्तसज्ञा पु० पित्तव्य। चचा। बाबा।  
पित्त-वि० दे० "पित्तक"। पित्त-सम्बन्धी।  
आइ करने योग्य।

पियरी—सज्ञा पु० दिल्ली के महाराज पृथ्वी-  
राज चौहान के नाम का एक रूप।

पिबड़ी—सज्ञा स्त्री० दे० "पिही"।

पिहू—सज्ञा पु० दे० "पिही"।

पिही—सज्ञा स्त्री० १ एक सुन्दर छाती  
चिड़िया। फुदकी। २ बहुत ही तुच्छ  
और नाण्य जीव।

पिधान—सज्ञा पु० १ गिलाफ। आवरण।  
पर्दा। २ डस्तर। ढक्कन। आच्छादन।  
३. तलवार की म्यान। ४ पिनाड।

पिनकी—सज्ञा पु० पीनकवाला। अफीमकी।

पिनकना—क्रि० प्र० १ पीनक लेना। अफीम  
के तरा में तिरका भुनक पड़ना। २ ऊँघना।  
नोद के मारे आगे का झुकना। ३ चिड़ना।  
नाराज होना। शोध करना।

पिनपिन—सज्ञा स्त्री० १ बच्चों का रोना।

२ धीमे और सागुनामिश्र स्वर में राना।

पिनपिनाना—क्रि० प्र० १. बच्चे का रोना।

२. चिड़ना। शोध करना।

पिनार—सज्ञा पु० १ धनुष। २ धिबजी  
का धनुष, जिसे रामचन्द्रजी ने जलपुर  
में तोड़ा था। ३ त्रिशूल।

पिनाकी—सज्ञा पु० धिबजी। महादेव।

पिना—सज्ञा पु० तिल की सर्वा।

पि० बहुत रोनेवाला।

पिन्नी—सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिठाई।

२ चावल के आटे के लड्डू।

पि० बहुत रोनेवाली।

पिन्हाना—क्रि० प्र० दे० "पहनाना"।

पिपरगोट—सज्ञा पु० [अत्रे०] पुर्वीने की जाति  
का अमरिका का एक पौधा। इसका सत  
दवा के काम में आता है और उसे मुँह में  
रखने से ठंडक मानूम होती है।

पिपरामूल—सज्ञा पु० पीपल की जड़।

पिपासा—सज्ञा स्त्री० १ प्यास। तृष्णा।

२ लोभ। लालच।

पिपासु—वि० १ प्यासा। तृषित। २

उलट इच्छा रखनेवाला। लालची।

पिपील—सज्ञा स्त्री० चींटी। पिपीलिका।

पिपीलक—सज्ञा पु० चींटा।

पिपीलिका—सज्ञा स्त्री० चींटी।

पिप्पल—सज्ञा पु० १ पीपल। अश्वय वृक्ष।

२ एक पर्दा। ३ नग्न व्यक्ति। ४ जल।

पिप्पलक—सज्ञा पु० स्तनमूल।

पिप्पली—सज्ञा स्त्री० पीपल। पिपरी।

आपघ-विशेष। पीपर।

पिप्पलीलण्ड—सज्ञा पु० आपघ-विशेष।

पिप्पलीमूल—सज्ञा पु० पिपरामूल।

पिय\*—सज्ञा पु० १ प्रिय। प्रियनम।

प्यारा। २ पति। स्वामी।

पियर—सज्ञा पु० पीला। हलदी का रंग।

पियराई—सज्ञा स्त्री० पीलापन। जर्दी।

पियराना\*—क्रि० प्र० पीला पड़ना। पीला

होना।

पियरी—वि० दे० "पीली"।

सज्ञा स्त्री० १ पीली रंगी हुई धोती।

२ पीलापन।

पियल्ला—सज्ञा पु० दूध पीनेवाला बच्चा।

पिल्ला। पीला।

पिया\*—सज्ञा पु० दे० 'पिय'।

पियात—सज्ञा पु० चिरीजी का पेड़।

पियाताल—सज्ञा पु० बहेड़े की जाति का एक

वृक्ष।

पियूख\*-सज्ञा पु० दे० "पीयूष" ।  
 पिरकी†-सज्ञा स्त्री० फुसी । फुडिया ।  
 पिरथी‡-सज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी" ।  
 पिराई‡-सज्ञा स्त्री० दे० "पियराई" ।  
 पिराक-सज्ञा पु० गोभ्रा । गोभिया । एव  
 प्रकार का पक्वान ।  
 पिराना†-त्रि० अ० १ ददं करना ।  
 दुखना । पीडा होगा । २ दुख समझना ।  
 पीडा अनुभव करना ।  
 पिरारा‡-सज्ञा पु० दे० "पिडारा" ।  
 पिरोतम‡-सज्ञा पु० दे० "प्रियतम" ।  
 पिरीता\*-वि० प्रिय । प्यारा ।  
 पिरोज†-सज्ञा पु० कटोरा । तस्तरी ।  
 पिरोजा-सज्ञा पु० दे० "पीराजा" ।  
 पिरोना-क्रि० स० १ सूत या तामे में  
 रूथना । पाहना । गुहना । जैसे माला  
 पिरोना । २ सूई के छद या नाके में तागा  
 डालना ।  
 पिरोहना\*-क्रि० अ० दे० "पिरोना" ।  
 पिलई†-सज्ञा स्त्री० पट की एक बीमारी ।  
 पिलहो ।  
 पिलक-सज्ञा पु० पीले रंग की एक चिडिया ।  
 पिलकना-क्रि० स० गिराना । लुढ़काना ।  
 ढबेलना ।  
 त्रि० अ० गिरना । भूलना । लटकना ।  
 पिलखन†-सज्ञा पु० पाकर का पेड ।  
 पिलना-त्रि० अ० १ एवचारी घुसना या  
 टूट पडना । ढल पडना । भुक पडना ।  
 टबेलना । धक्का देना । २ प्रवृत्त होना ।  
 लिपट जाना । भिड जाना । ३ परा  
 जाना । तेल निभासने के लिए दबाया  
 जाना ।  
 पिलपिला-वि० १ नरम । २ गीला । पिच-  
 पिचा । ढीला । ३ दुर्बल ।  
 पिलपिलाना-त्रि० स० किसी वस्तु को ढीला  
 या नरम करना ।  
 पिलपिलाहट-सज्ञा स्त्री० १. गीलापन लिये  
 हुए गरम । २ दुर्बलता ।  
 पिलवाना-त्रि० स० १. पिलाने का काम दूसरे  
 से कराना । २ पेरने का काम दूसरे से  
 परवाना ।

पिलाना-क्रि० स० १. पियाना । पान  
 कराना । पीने का काम दूसरे से  
 कराना । २ पीने को देना । ३ भीतर  
 भरना ।  
 पिल्ला-सज्ञा पु० कूरो का बच्चा ।  
 पिल्लू-सज्ञा पु० कीडा । कीट । पिलुवा ।  
 ढोला ।  
 पिव\*-सज्ञा पु० दे० "पिय" ।  
 पिवाना†-त्रि० स० दे० "पिलाना" ।  
 पिशग-सज्ञा पु० पिंगल वर्ण ।  
 त्रि० पिंगल वर्ण का । भटमैले रंग का ।  
 पिशाच-सज्ञा पु० [स्त्री० पिशाची] १ भूत-  
 प्रेत । २ विधर्मी । अन्यायी ।  
 पिशुन-सज्ञा पु० १ छिपकर दोष बतानेवाला ।  
 २ कुकुम । ३ कौआ । ४. कपास । ५.  
 नारद । ६. चुगलखोर । ७. दुष्ट । दुर्जन ।  
 ८. निन्दक ।  
 पिशुना-सज्ञा स्त्री० चुगलखोरी ।  
 पिष्ट-वि० पिसा हुआ । नूर्ण किया  
 हुआ ।  
 पिष्टक-सज्ञा पु० १ पिष्ट । पीठी ।  
 पिठठी । २ पुरी गचोरी, पूआ या पक्-  
 वान । मिठाई ।  
 पिष्टपेयण-सज्ञा पु० १ पिसे हुए को पीसना ।  
 २ वही हुई बात को फिर कहना । बार-  
 बार दोहराना ।  
 पिसनहारी-सज्ञा स्त्री० आटा पीसने से  
 जीविका चलानेवाली स्त्री ।  
 पिसना-क्रि० अ० १ पीसना । चूर्ण होना ।  
 २ पिसकर तैयार होना । ३ दब जाना ।  
 कुचला जाना । ४ घोर नष्ट, दुख या  
 हानि उठाना । पीडित होना । ५ थककर  
 थैदम होना ।  
 पिसवाना-त्रि० स० पीसने का काम दूसरे  
 से कराना ।  
 पिसाई-सज्ञा स्त्री० १ पीसने की त्रिबा ।  
 २ पीसने का काम या व्यवसाय । पीसने  
 की मजदूरी । ३ बहुत अधिक श्रम ।  
 पिसान†-सज्ञा पु० आटा । अन्न का बारीक  
 पिसा हुआ चूर्ण । चून ।  
 पिसाना-त्रि० स० दे० "पिसवाना" ।

पिसोती†-सज्ञा स्त्री० १ पींगने का काम ।  
 २ कठिन काम ।  
 पिस्ताई-वि० पिस्ते के रंग का । पीलापन  
 लिये हरा रंग ।  
 पिस्ता-सज्ञा पु० पिस्ता का वृक्ष । एक हरा  
 मेवा ।  
 पिस्तोल-सज्ञा स्त्री० (अग्ने० पिस्टल) गोली  
 चलाने का एक बहुत छोटा अस्त्र, जिसकी  
 जेब में रखा सकते हैं । तमचा ।  
 पिसू-सज्ञा पु० शरीर का खून घुसनेवाला  
 एक छोटा-सा उड़नेवाला मच्छर-जैसा  
 कीड़ा ।  
 पिहकना-क्रि० अ० [घनु०] कोयल, पपीहे  
 आदि पक्षियों की बाली । बूबना ।  
 पिहित-वि० छिपा हुआ । गुप्त ।  
 सज्ञा पु० एक अयालकार, जिसमें किसी के  
 मन का कोई भाव जानकर क्रिया द्वारा  
 अपना भाव प्रकट किया जाय ।  
 पीजना-क्रि० स० रुई धुनना ।  
 पीजर या पीजरा\*-सज्ञा पु० द० "पिजडा" ।  
 पीड†-सज्ञा पु० १ देह । पिंड । शरीर ।  
 २ तना । वृक्ष का घड । पेटी । ३  
 गीली वस्तु का गोला । पिंड । पिडी ।  
 ४ दे० "पीट" । ५ पिंडखजूर ।  
 पीटुरो\*-सज्ञा स्त्री० दे० "पिडली" ।  
 पी\*-सज्ञा पु० १ दे० "पिय" । प्रियतम ।  
 २ पपीहे की बाली ।  
 पीक-सज्ञा स्त्री० शूब । लाए हुए पान या  
 तम्बाकू आदि के रस का शूब ।  
 पीकदान-सज्ञा पु० शूबन का बरतन । एक  
 प्रकार का बरतन, जिसमें पीक शूबते हैं ।  
 पीकना-क्रि० अ० [घनु०] १ पिहकना । २  
 पपीहा या कोयल का बालना । ३ शूबना ।  
 पीका†-सज्ञा पु० नया पत्ता । कोपल ।  
 पल्लव ।  
 पीक-सज्ञा स्त्री० मांड ।  
 पीछा-सज्ञा पु० १ पिछना भाग । पीछे की  
 ओर का भाग । पुश्त । परचात् । २  
 अनन्तर ।  
 पीछा-पीछा दिताना=१ भागना । पीछ  
 दिताना । २ दे० "पीछा देना" । पीछा

देना=१. किसी काम में आरम्भ में साथ देकर  
 फिर दूर हो जाना । पीछे हट जाना । २  
 किसी के साथ पीछे-पीछे लगा रहना । पीछा  
 करना=१. किसी बात के लिए किसी को  
 तग या दिया करना । गले पड़ना । २  
 किसी को पकड़ने, मारने या भगाने आदि  
 के लिए उसके पीछे-पीछे चलना । खदेटना ।  
 पीछा छुड़ाना=१. पीछा करनेवाले से जान  
 छुड़ाना । २ अप्रिय या इच्छाविरुद्ध सबध  
 का अंत करना । पीछा छूटना=१ पीछा  
 करनेवाले से छुटकारा मिलना । पिंड  
 छूटना । २ अप्रिय कार्य या सबध से  
 छुटकारा मिलना । पीछा छोड़ना=१  
 तग न करना । परेशान न करना । २.  
 बद करना । जिस काम के लिए अधिक  
 समय से किसी का पत्ता पकड़े हो, उसे  
 स्थगित कर देना ।

पीछु\*†-क्रि० वि० दे० "पीछ" ।

पीछे-अव्य० १. पीठ की ओर । पश्चात् ।  
 परे । अनन्तर । उपरान्त । २ पीछे  
 की ओर । कुछ दूर पर । ३ अन्त में ।  
 ४ किसी की अनुपस्थिति या अभाव  
 में । पीठ पीछे । ५ भर जाने पर । ६  
 लिए । वास्ते । ७ वारण । बदौलत ।  
 निमित्त ।

पीछा-(किसी के) पीछे चलना=१ किसी  
 को नागदंशक, नेता या गुरु मानना । २  
 (किसी का) अनुकरण करना । नकल करना ।  
 (किसी के) पीछे छोड़ना या भेजना=किसी  
 का पीछा करने के लिए किसी को भेजना ।  
 (घन) पीछे डालना=भाग के लिए बटोरना ।  
 संचय करना । किसी काम को बर डालने  
 पर तुल जाना । किसी कार्य के लिए अतिराम  
 उपयोग करना । (किसी व्यक्ति के) पीछे  
 पड़ना=१ कोई काम करने के लिए किसी  
 से बार-बार कहना । घेरना । तग करना ।  
 २ अवसर ईद-ईदकर किसी की बुराई  
 करते रहना । पीछे लगना=१ पीछे-पीछे  
 घूमना । पीछा करना । २ दुखजनक वस्तु  
 का साथ हो जाना । (अपने) पीछे लगाना=  
 १. आश्रय देना । साथ कर लेना । २.

अनिष्ट वस्तु से सबध कर लेना । (किसी और के) पीछे लगाना=१. अनिष्ट या अप्रिय वस्तु से सबध करा देना । भठ देना । २. भेद लेने या निगाह रखने के लिए किसी को साथ कर देना । पीछे छूटना, पड़ना या होना=१. किसी विषय में किसी व्यक्ति की अपेक्षा घटकर होना । २. पिछड़ जाना । (किसी को) पीछे छोड़ना=किसी विषय में किसी से बढ़कर या अधिक होना ।

पीजन-सज्ञा पु० धुनकी । भेड़ों के बाल धुनने की धुनकी ।

पीटना-क्रि० सं० १. प्रहार करना । चोट पहुँचाना । मारना । कटना । ठोकना । २. भले या बुरे प्रकार से कर डालना । ३. किसी न किसी प्रकार प्राप्त कर लेना । मुहा०-छाती पीटना=दुःख या शोक प्रकट करने के लिए छाती पर हाथ से आघात करना । किसी व्यक्ति को या किसी के लिए पीटना=किसी के मरने पर छाती पीटना । मातम मगाना । २. चोट से चिपटा या चौड़ा करना ।

पीठ-सज्ञा स्त्री० १. पेट की दूसरी ओर का भाग, जो मनुष्य के शरीर में पीछे की ओर और पशुओं-पक्षियों आदि के शरीर में ऊपर की ओर होता है । २. पृष्ठ । पुरत । पृष्ठभाग ।

सज्ञा पु० १. लकड़ी, पत्थर आदि का बैठने का आसन । चौकी । पीड़ा । विद्याधियों आदि के बैठने का आसन । २. किसी मूर्ति के नीचे का आधार-पिंड । अधिष्ठान । ३. सिंहासन । तख्त । राजासन । ४. देवपीठ । वेदी । ५. प्रातः । प्रवेश । वृत्त के किसी अक्ष का पूरक ।

मुहा०-पीठ का=दे० "पीठ पर का" । पीठ चारपाई से लग जाना=बीमारी के कारण बहुत अधिक निर्वल और हिलने-डोलने में असमर्थ हो जाना । पीठ ठोपना=किसी उत्तम धर्म के लिए किसी की प्रशंसा करना । शाबाशी देना । प्रोत्साहित करना । पीठ दिखाना=मुँह या मुँहासे से भाग

जाना । पीछा दिखाना । पीठ दिखाकर जाना=स्नेह तोड़कर या समता छोड़कर जाना । पीठ देना=१. विदा होना । हलसत होना । २. मुँह मोड़ना । विमुख होना । ३. भाग जाना । पीठ दिखाना । ४. लेटना । आराम करना । पीठ पर=एक ही माता-द्वारा जन्मक्रम में पीछे । पीठ पर का=जन्मक्रम में अपने सहोदर के बाद का । पीठ मोजना या पीठ पर हाथ फेरना=दे० "पीठ ठोकना" । पीठ पर होना=मदद पर होना । सहायता के लिए तैयार रहना । पीठ पीछे=(किसी की) अनुपस्थिति में । परोक्ष में । पीठ फेरना=१. चला जाना । २. भाग जाना । पीठ दिखाना । ३. मुँह फेर लेना । ४. अरुचि या अनिच्छा प्रकट करना । (घोड़े, बैल आदि की) पीठ लगना=पीठ पर घाव हो जाना । पीठ पक जाना । (चारपाई आदि से) पीठ लगाना=लैटना । पड़ना । सोना ।

पीठना\*-क्रि० सं० दे० "पीसना" ।

पीठस्वान-सज्ञा पु० दे० "पीठ" ।

पीठा-सज्ञा पु० १. दे० "पीठा" । २. एक प्रकार का पकवान ।

पीठि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "पीठ" ।

पीठिका-सज्ञा स्त्री० १. आधार । मूर्ति आदि का आधार । आसन । पीड़ा । २. अक्ष । परिच्छेद । ग्रन्थाय ।

पीठी-सज्ञा स्त्री० पानी में भिगोकर पीसी हुई दाल ।

पीड़ा-सज्ञा स्त्री० १. पीड़ा । दर्द । व्याधि । दुःख । २. शिर या बालों पर बाँधा जानेवाला एक ग्रामभूषण ।

पीड़क-सज्ञा पु० १. पीड़ा देनेवाला । कष्ट-दायक । दुःखदायी । २. सतानेवाला ।

पीडन-सज्ञा पु० [वि० पीडन, पीडनीय, पीडित] १. दयाना । चापना । पैरना । २. पैरना । दुःख देना । यत्रणा पहुँचाना । अत्याचार करना । ३. दरोचना । भली भाँति पकड़ना । ४. नाश । उच्छेद ।

पीड़ा-सज्ञा स्त्री० १. व्याधि । वेदना । दर्द । तकलीफ । २. व्याधि । रोग ।

पीड़ित-वि० १. मलेशयुक्त । पीड़ायुक्त ।  
दुःखित । २. बीमार । रोगी । ३. दवाया  
हुआ ।

पीड़ुरी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "पिडली" ।  
पीड़ा-सज्ञा पु० बैठने के लिए लकड़ी या  
पत्थर का छोटा टुकड़ा । छोटा पट्टा ।  
पीठक । पीठ ।

पीडी-सज्ञा स्त्री० १. वक्षपरम्परा । पुस्त ।  
२. सतति-समुदाय । ३. किसी विशेष समय  
में वर्ग-विशेष के व्यक्तियों की समष्टि ।  
४. सतति । सतान । नस्त । ५. छोटा पीठा ।  
पीत-वि० १. पीला । पीले रंग का । वपिल  
दर्ण । २. पिया हुआ ।  
सज्ञा पु० १. पीला रंग । २. हस्ताल । ३.  
हरिचदन । ४. कुसुम । ५. मूंगा । ६.  
पुष्कराज ।

पीतक-सज्ञा पु० १. वेशर । २. हस्ताल ।  
३. अंगर । ४. पीतल । ५. हल्दी । ६.  
गाजर । ७. सफेद जीरा । ८. पीला  
लोप । ९. चिरामता । १०. गहद ।  
११. पीला चदन ।

वि० पीला । पीले रंग का ।  
पीतकम्ब-सज्ञा पु० गाजर ।  
पीतकदली-सज्ञा पु० १. चम्पन । २. बदली ।  
३. सोनबेला ।

पीतकदली-सज्ञा पु० पीला मनोर ।  
पीतचदन-सज्ञा पु० हरिचदन । पीले रंग का  
चदन ।

पीतक-सज्ञा पु० पीताम्बर ।  
पीतपातु\*-सज्ञा स्त्री० गोपीचदन । रामरज ।  
पीतपुष्प-सज्ञा पु० १. लता । २. मनोर ।  
३. पिया-तरोर । ४. पीले फूल की लता-  
मर्या ।

पीतम्-वि० दे० "प्रियमम्" ।  
पीतमणि-सज्ञा पु० पुष्कराज ।  
पीतल-सज्ञा पु० ताँबे और जर्मे के संयोग में  
बनी एक मिश्रित धातु ।  
पीतला-वि० पीतल का बना हुआ ।  
पीतला-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।  
पीतला-सज्ञा पु० दिग्गत्तार ।  
पीतलार-सज्ञा पु० १. पीतचदन । हरि-

चदन । २. सफेद चदन । ३. गोमद मणि ।  
४. शिलाजीत ।

पीताम्बर-सज्ञा पु० १. पीला वस्त्र । २.  
मरदाना रेशमी धोती । ३. श्रीकृष्ण ।  
४. विष्णु

वि० पीताम्बरधारी ।

पीताम्ब-वि० पीतवर्ण । पीले रंग का ।  
पीत-सज्ञा पु० १. सूर्य । २. अग्नि । ३.  
यूथपति ।

पीतुदाह-सज्ञा पु० गूलर । देवदार ।  
पीप-सज्ञा पु० १. पानी । २. अग्नि । ३.  
सूर्य । ४. बाल ।

पीपि-सज्ञा पु० घोड़ा ।  
पीदडी-सज्ञा स्त्री० दे० "पिदी" ।  
पीन-वि० १. मोटा । स्थूल । २. प्रवृद्ध ।  
पुष्ट । ३. सपन्न । भरा-पूरा ।  
पीनक-सज्ञा स्त्री० १. अफीम के नशे की भोज ।  
अफीम के नशे में ऊँचना या भुज-भुज पड़ना ।  
२. ऊँचना ।

पीनता-सज्ञा स्त्री० १. स्थूलता । मोटाई ।  
२. दृढ़ता । पुष्टता ।

पीनस-सज्ञा पु० नाक का एक रोग ।  
सज्ञा स्त्री० पाताली ।

पीना-वि० १. तरल वस्तु को छूट-छूट  
करके गले के नीचे उतारना । पान करना ।  
छूटना । २. शीघ्र या उत्तेजना न प्रकट  
करना । सह जाना । ३. किसी मनोविकार को  
दबा देना । मन मारना । ४. शिष्टाचार, सीटी  
आदि पीना । पूरपान करना । ५. सोखना ।  
छोपना । ६. शराब पीना ।

पीनी-सज्ञा स्त्री० सीरी या तिल की मली ।  
पीप-सज्ञा स्त्री० फोंटे या घाव के भीतर से  
निकलनेवाला सफेद सखदार पदार्थ । मयार ।  
पीव ।

पीपर-सज्ञा पु० दे० "पीपल" ।  
पीपरम्प\*-सज्ञा पु० १. बाल में पहाने का  
एक रहना । २. पीपल का पत्ता ।

पीपल-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़, जो  
हिन्दुओं में बहुत पवित्र माना जाता है ।  
सज्ञा स्त्री० (पिपली) छोपप के नाम से जाने-  
वाला एक लता ।

पीपलामूल—सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध औषध, जो पीपल लता की जड़ है।

पीपा—सज्ञा पु० तेल, सराब आदि तरल पदार्थ रखने का लोहा या लकड़ी का बड़ा ढोल-जैसा गोल पात्र।

पीप—सज्ञा स्त्री० दे० “पीप”।

पीप\*—सज्ञा पुं० दे० “पिय”।

पीपूरा—सज्ञा पु० दे० “पीपूरा”।

पीपूरा—सज्ञा पु० १ गुधा। अमृत। २ दूध।

पीपूराभानु—सज्ञा पु० चंद्रमा।

पीपूराचि—सज्ञा पु० चंद्रमा।

पीपूरावर्ष—सज्ञा पु० १ चंद्रमा। २ वर्ष।

३ एक प्रकार का भाविक छंद। ४. आनंद-वर्द्धक।

पीर—सज्ञा स्त्री० १ पीटा। दर्द। दुःख।

२ सहानुभूति। हृदय।

वि० [फा०] [सज्ञा पीरी] १ बूढ़ा। वृद्ध।

बुजुर्ग। २ महात्मा।

पीरजादा—सज्ञा पु० [फा०] किसी धर्मगुरु की सन्तान।

पीराई—सज्ञा स्त्री० दे० “पीरा”।

वि० दे० “पीला”।

पीरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ वृद्धावस्था।

बुढ़ापा। २ चेला मूँडन का घधा या पेशा।

गुरवाई। ३ ठेका। ४ हुकूमत। ५

चमत्कार। वरामात। अलौकिक शक्ति।

६ इजारा। ७ बालाकी।

पीरीजा—सज्ञा पु० एक प्रकार का मूल्यवान नग विदोष।

पील—सज्ञा पु० [फा०] १ गज। हाथी।

हस्ती। २ शतरंज का एक मोहरा। पील

या ऊँट।

पीलपात\*—सज्ञा पु० दे० “पीलवान”।

पीलपांव—सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध रोग। श्लेष्मिपद।

फीलपा।

पीलवान—सज्ञा पु० दे० “पीलवान”।

हाथीवान। महाबल।

पीलसाज—सज्ञा पु० विरायदान। दीपद।

पीला—वि० [स्त्री० पीली] १ पीले रंग

का। पीला रंग। हल्दी जैसा रंग।

जर्द। २. कातिहीन। निस्तेज।

मुहा०—पीला पटना या होना—१. बीमारी के कारण चेहरे या शरीर से रक्त का अभाव सूचित होना। २. भय से चेहरे पर सफेदी आना।

पीलापन—सज्ञा पु० पीले रंग का। पीला होने का भाव। जर्दी। पीतता।

पीलिया—सज्ञा पु० कमल रोग।

पीलू—सज्ञा पु० १ फनदार वृक्ष। पीलू।

२ पुष्प। फूल। ३ परमाणु। ४ हाथी।

५ हड्डी का दुग्ध।

पीलू—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का काँटेदार

वृक्ष, जिसका फल दवा के काम में आता है।

२ सड़े हुए फलों आदि में पड़नेवाले सफेद

लबे कीड़े। ३ एक राग का नाम।

पीवना\*—क्रि० सं० दे० “पीना”।

पीव—सज्ञा पु० १. पिय। पति। प्यारा।

२. दे० “पीव”।

वि० १. स्थूल। पीन। मोटा। २.

बलिष्ठ।

पीवर—वि० [सज्ञा पीवरता] १ मोटा।

२ स्थूल। ३ भारी। गुरु। ३. दृढ़।

पीवरी—सज्ञा स्त्री० १ सतावर। २ सरि-

वन। ३ युवती। ४ गाम।

पीसना—क्रि० सं० १ किसी वस्तु को चुबनी

या चूर्ण करना। रगड़कर बारीक करना।

२ दबाकर चक्काचूर कर देना। ३ कुचल

देना। ४ कड़ी मिहनत करना। जान

लडाना।

सज्ञा पु० पीसी जानेवाली वस्तु।

मुहा०—किसी आदमी को पीसन—

बहुत भारी अपकार करना या हानि।

पहुँचाना। चौपट कर देना। नष्टप्राय कर

देना।

पीहर—सज्ञा पु० मायका। गैहर। पिता

का घर।

पु—सज्ञा पु० पुरुष। पुमान्। पुरुष-वाचक

शब्द।

पुल—सज्ञा पु० १. बाण का पिछला भाग,

जिसमें पर लगे होते थे। २. मगलाचार।

३ ध्वन।

पुखित—वि० जिसमें पर लगे हों।

पुंग-सज्ञा पु० १. गति। समूह। २. श्रेणी।  
 पुंगल-सज्ञा पु० आत्मा।  
 पुंगद-सज्ञा पु० वेल। वृष। वग्द।  
 वि० उत्तम। श्रेष्ठ।  
 पुंगवक्त्र-सज्ञा पु० दिव।  
 पुधर\*†-सज्ञा पु० मोर। मयूर।  
 पुधाला-सज्ञा पु० दे० "पुधला"।  
 पुज-सज्ञा पु० ढेर। समूह। राशि।  
 पुजी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "पूजी"।  
 पुड-सज्ञा पु० तिलक। टीका। त्रिपुण्ड।  
 मस्तक पर लगाया हुआ चन्दन का  
 चिह्न।  
 पुडरी-सज्ञा पु० १ गुलाब। २ कमल।  
 पुडरीक-सज्ञा पु० १. श्वेत कमल। कमल।  
 २. रेशम का कीड़ा। ३. कमण्डलु। ४. दोर।  
 बाघ। ५. तिलक। ६. सफेद हाथी। ७.  
 श्वेत कृष्ठ। सफेद कीड़ा। ८. अग्निकोण  
 का दिग्गज। ९. आग। अग्नि। १०.  
 बाण। नर। ११. प्राकाश। १२. ओषध-  
 विशेष। १३. कायकार-विशेष। १४. एक  
 प्रकार का यज्ञ।  
 पुडरीकाक्ष-सज्ञा पु० १. रेशम के कीड़े।  
 २. विष्णु।  
 वि० जिसके नेत्र कमल के समान हों।  
 पुड-सज्ञा पु० १. गन्ना। पीड़ा। २. श्वेत  
 कमल। ३. टीका। तिलक। ४. भारत के  
 एक भाग का प्राचीन नाम। ५. दंत्य विशेष।  
 पुडक-सज्ञा पु० १. माधवी लता। २.  
 तिलक। ३. ईश। पीड़ा।  
 पुडवर्द्धन-सज्ञा पु० पुड देता की प्राचीन राज-  
 धानी।  
 पुलिग-सज्ञा पु० १. पुरुष-चिह्न। २.  
 मित्र। ३. पुरुषवाचक शब्द (व्या०)।  
 पुनवित-सज्ञा स्त्री० पुरुषत्व। पुरुषार्थ।  
 पुरुष का सामर्थ्य।  
 पुश्चली-वि० १. व्यवहारिणी। क्षिणाल।  
 कुलटा। २. वेदया।  
 पुस\*†-सज्ञा पु० पुरुष। मर्द। नर।  
 पुसवन-सज्ञा पु० १. दूध। दुग्ध। २.  
 सस्वार-विशेष। ३. स्त्रियों का एक  
 व्रत।

पुस्त्य-सज्ञा पु० १. पुरुषत्व। पुरुषार्थ।  
 २. पुरुष की शक्ति। ३. शुभ। धर्म्य।  
 पुष्पा-सज्ञा पु० छाटे की मोटी मोर मीठी  
 पूरी या टिक्किया।  
 पुष्पल-सज्ञा पु० दे० "पयाल"।  
 पुष्पार-सज्ञा स्त्री० १. बुलाने की प्रिया या  
 भाव। हानि। टेर। २. रक्षा या सहायता  
 के लिए बुलाना। दुहाई। प्रतिकार के लिए  
 चिल्लाहट। ३. परियाद। नालिघ।  
 गहरी माँग। ४. गोहार। नाम लेकर  
 बुलाना।  
 पुष्पारना-क्रि० सं० १. नाम लेकर बुलाना।  
 आवाज लगाना। टेरना। २. नाम का  
 उच्चारण करना। रटना। धुन लगाना।  
 घोषित करना। ३. चिल्लाकर माँगना।  
 ४. रक्षा के लिए चिल्लाना। गोहार  
 लगाना। ५. नालिस करना। फरियाद  
 करना।  
 पुष्कस-सज्ञा पु० १. चाडाल। २. नीच\*।  
 अप्रम। ३. डोम।  
 पुष्कसी-सज्ञा स्त्री० कालिमा। कालिख।  
 पुख†\*-सज्ञा पु० दे० "पुष्य"।  
 पुखर-सज्ञा पु० पुष्कर। तालाब। तडाग।  
 पुखराज-सज्ञा पु० एक प्रकार का पीला रत्न।  
 पीत मणि। गोमेद।  
 पुष्य-सज्ञा पु० दे० "पुष्य"।  
 पुगना-क्रि० अ० दे० "पूजना"।  
 पुगाना-क्रि० सं० पूरा करना।  
 पुचकार-सज्ञा स्त्री० दे० "पुचकारी"।  
 पुचकारना-क्रि० सं० १. चूमने का-सा शब्द  
 निवालेवर प्यार जताना। चुमकारना।  
 स्नेह दिलाना। २. डाँडस देना। ३.  
 पशुप्रा को शब्दा-द्वारा सान्त्वना देकर दश  
 में करना।  
 पुचकारी-सज्ञा स्त्री० स्नेह या प्यार जताने  
 के लिए ओठा से निवाला हुआ चूमने का-सा  
 शब्द। चुमकार।  
 पुचाटा-सज्ञा पु० १. भीगे कपड़े से पोछने  
 का काम। २. पतला लेप करने का काम।  
 ३. पोता। हलका लेप। ४. पोतने का  
 गीला कपड़ा। ५. पोतने की कूँची। ६.

प्रसन्न करनेवाले वचन । ७ भूठी प्रसन्न ।  
सुशामद । चापलूसी । ८. उत्साह बढ़ाने-  
वाला वचन । बढ़ावा ।  
पुच्छ-सज्ञा स्त्री० १ पूँछ । दुम । २  
पिछला भाग ।  
पुच्छल-वि० पूँछवाला । पुच्छयुक्त । पूँछ-  
दार । दुमदार ।  
पुच्छलतारा-सज्ञा पु० धूम्रकेतु । अशुभसूचक  
तारा ।  
पुच्छला-सज्ञा पु० १ लवी दुम । बड़ी  
पूँछ । २ पूँछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु ।  
३ बराबर पीछे लगा रहनेवाला । साथ  
न छोड़नेवाला । पिछलग्नु । ४ आश्रित ।  
५. चापलूस ।  
पुछार†\*—सज्ञा पु० १. आदर करनेवाला ।  
पूछनवाला । २. मृत व्यक्ति के घर शोक  
प्रवट करना ।  
पूजना—कि० प्र० १. पूजा जाना । आराधना  
का विषय होना । २. सम्मानित होना ।  
प्रतिष्ठा पाना । ३. पूर्ण होना । पूरा  
होना ।  
पूजवान†\*—वि० स० १. पूजाना । भरना ।  
२ पूरा करना । ३ सफल करना ।  
पूजवाना—वि० स० १ पूजन कराना ।  
पूजा करने में प्रवृत्त करना । २  
अपनी या किसी की पूजा कराना ।  
सबा या सम्मान कराना ।  
पूजाई—सज्ञा स्त्री० पूजने का भाव, कार्य  
या पुस्कार ।  
पूजाना—वि० स० १ पूजा में प्रवृत्त  
करना । २ अपनी पूजा प्रतिष्ठा कराना ।  
मंदिर चढ़वाना । ३ धन बन्तल कराना ।  
४ भरण देना या भरना । ५ पूजा करना  
या कराना । सफल करना ।  
पूजापा—सज्ञा पु० देव-पूजन की सामग्री ।  
पूजा का सामान ।  
पूजारी—सज्ञा पु० पूजा करनेवाला । पूजन ।  
मंदिर में देवमूर्ति की पूजा करने के लिए  
नियुक्त व्यक्ति ।  
पुनेरी—सज्ञा पु० दे० "पूजारी" ।  
पुणेपा†—सज्ञा पु० १. पूजा करनेवाला ।

पूजक । २. पूरा करनेवाला । भरनेवाला ।  
सज्ञा स्त्री० दे० "पूजा" ।  
पुट—सज्ञा पु० १. गुग्गुलु । गुग्गुलु । २. चूर्ण ।  
३. पोषण । ४. कमल । ५. पद्य । ६  
हलका छिड़काव । छीटा देना । ७ रंग  
का मेल करना । मिलाव । चोर देना ।  
हलका मेल । ८ आच्छादन । ढाँकनेवाली  
वस्तु । ९ गोल गहरा पात्र । डिब्बी ।  
कटोरा । दोना । १०. श्रीपथ पकाने का मुंह-  
बन्द बरतन । सपुट । ११ घोड़े की टाप ।  
१२ अत पट । अंतरीटा । १३ दो नगण,  
एक मगण और एक रगण का एक वर्णवृत्त ।  
पुटक—सज्ञा पु० १ दोना । पत्र-निर्मित पात्र ।  
२ पद्य । कमल ।  
पुटकिनी—सज्ञा स्त्री० १. पश्चिनी । पच्छता ।  
पद्म-समूह । २ आद्यत प्रणव से युक्त मन ।  
पुटकी—सज्ञा स्त्री० १. पोटीली । गठरी ।  
पोटरी । २ अचानक मृत्यु । ३. देवी प्राप्ति ।  
४. तरकारी के रस की गाढ़ा करने के लिए  
उसमें डाला गया बेसन या आटा । आलन ।  
पुटपाक—सज्ञा पु० १ पत्ते के दोनो में  
रखकर श्रीपथ पकाने की रीति । २ मुंह-  
बन्द बरतन में पकाना ।  
पुटरी, पुटली—सज्ञा पु० दे० "पोटीली" ।  
गठरी ।  
पुटो—सज्ञा स्त्री० १ दोना या कटोरा ।  
२ खाली स्थान, जिसमें कोई वस्तु रखी  
जा सके । ३ पुडिया । ४ तोंगोटी ।  
कोपीन ।  
पुटीन—सज्ञा पु० एक ममाला, जो बिचाड़ी  
में डीखे लगाने या लपड़ी के जोड़ आदि  
भरने में काम आता है ।  
पुट्टा—सज्ञा पु० १ चूतड़ का ऊपरी कुछ  
बड़ा भाग । २ चौपायी का, विशेषतः  
घाँघे का चूतड़ । ३ घाँघा की सड़्या  
के लिए चप्पड़ । ४ पुन्तर की जिल्द का  
पिछला भाग ।  
पुठवार—वि० वि० पीछे । वगल में ।  
पार्श्व में ।  
पुठवाल—सज्ञा पु० पुच्छक्षर । साहबन ।  
मदगार ।

पुत्रा-सज्ञा पु० [स्त्री० पुत्रिया] बड़ी पुत्रिया या बडल।

पुत्रिया-सज्ञा स्त्री० १ धागज में लपेटे हुई कोई छोटी वस्तु। २ पुत्रिया में लपेटे हुई दवा की एक सुरत या माग।

पुत्रो-सज्ञा स्त्री० गाल। डोल का चमड़ा। चम।

पुण्य-वि० १. पवित्र। २. अच्छा। शुभ। सज्ञा पु० १. नुहन। धर्म का वाक्य। फलदायक कार्य। २. शुभ कर्म का सचय।

पुण्यकाल-सज्ञा पु० १. दान-पुण्य करने का समय। २. पवित्र समय।

पुण्यकृत-वि० पुण्यकर्ता। पुण्यकार्य या पुण्य करनेवाला। सुष्ठुती। सुकर्म। धार्मिक।

पुण्यक्षेत्र-सज्ञा पु० तीर्थ। वह स्थान, जहाँ जाने से पुण्य हो।

पुण्यभूमि-सज्ञा स्त्री० १. आर्यावर्त। हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य का स्थान। २. तीर्थ-स्थान। पुण्य का स्थान।

पुण्यवान्-वि० [स्त्री० पुण्यवती] धर्मात्मा। पुण्य करनेवाला। बानी।

पुण्यशील-सज्ञा पु० पुण्यशाली। धार्मिक। पवित्र।

पुण्यश्लोक-वि० [स्त्री० पुण्यश्लोका] १. पवित्र चरित्र या आचरणवाला। २. यशस्वी। ३. सुन्दर शिक्षादायक। सज्ञा पु० १. विष्णु। २. युधिष्ठिर।

पुण्यस्थान-सज्ञा पु० तीर्थ-स्थान। पुण्यस्थल। पवित्रस्थान।

पुण्याई-सज्ञा स्त्री० १. पुण्य का फल या प्रभाव। २. सुष्ठु कर्म। धर्म। धार्मिकता।

पुण्यात्मा-वि० धर्मशील। जिसकी प्रवृत्ति पुण्य की ओर हो। पुण्य स्वभाववाला। धर्मात्मा। पुण्यशील। सुकर्म।

पुण्याह-सज्ञा पु० पवित्र दिन। पुण्यजनक दिवस।

पुण्याहदायक-सज्ञा पु० देवकार्य के अनुष्ठान के पून मगन के लिए 'पुण्याह' शब्द का तीन बार कथा।

पुत्रा\*†-सज्ञा पु० (स्त्री० पुत्री) दे० "पुतली"।

पुतरिका\*-सज्ञा स्त्री० दे० "पुतली"।

पुतला-सज्ञा पु० [स्त्री० पुतली] लपट्टी, तृण, मिट्टी, कपड़े आदि की बनी हुई पुरुष की आकृति या मूर्ति, जो विनाद या मंत्र के लिए हो। गुट्टा।

मुहा०-विर्मा का पुतला बाँधना=विर्मा की निंदा या बदनामी करना।

पुतली-सज्ञा स्त्री० १. लपट्टी, तृण, मिट्टी, धातु, कपड़े आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति या मूर्ति, जो विनाद या खेल के लिए हो। गुट्टिया। २. आँख के बीच का काला भाग। ३. कपड़ा बुनने की कल या मशीन।

मुहा०-पुतली फिर जाना=आँखें पयरा जाना। नेत्र स्तब्ध होना। (मरण-चिह्न) यो०-पुतलीघर=कल-कारखाना, विशासन कपड़ा बुनने का कारखाना।

पुताई-सज्ञा स्त्री० पीतन का कार्य, या मजदूरी।

पुतारा-सज्ञा पु० दे० "पुचारा"।

पुत\*†-सज्ञा पु० दे० "पुत्र"।

पुत्तरी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "पुत्री"।

पुतलिका-सज्ञा स्त्री० १. पुतली। २. गुट्टिया।

पुत्र-सज्ञा पु० [स्त्री० पुत्री] लड़का। बेटा।

पुनकामेष्टि-सज्ञा स्त्री० पुत्र प्राप्ति की इच्छा से किया जानेवाला एक यज्ञ।

पुत्रजीव-सज्ञा पु० वृक्ष विशेष। इगुदी से मिलता-जुलता एक बड़ा और सुंदर पेड़, जिसकी छाल और बीज दवा के काम में आते हैं।

पुत्रवती-सज्ञा स्त्री० पुत्रवाली स्त्री। ऐसी स्त्री, जिसे पुत्र हो।

पुत्रवधू-सज्ञा स्त्री० पुत्र की स्त्री। वह। पतङ्ग।

पुत्रवान्-वि० (स्त्री० पुत्रवती) जिसके पुत्र हो।

पुत्रार्थी-सज्ञा पु० पुत्रेच्छु। पुत्र प्राप्ति की अभिलाषा करनेवाला।

पुत्रिका-सज्ञा स्त्री० १. लड़की। बच्चा। बेटा। २. पुत्र के समान मानी हुई बच्चा।

३ गुडिया । मूर्ति । पुतली । ४. आँख की पुतली । ५ स्त्री का चिन ।

पुत्रिणी-वि० सन्तानमुक्ता । पुत्रवती । पुनवाली स्त्री ।

पुत्री-सज्ञा स्त्री० बच्चा । बेटा । लडकी ।

पुत्रेष्टि-गज्ञा स्त्री० पुत्र-प्राप्ति के लिए किया जानेवाला एक विशेष यज्ञ ।

पुदीना-सज्ञा पु० एक सुगन्धित पौधा, जिसकी पत्तियाँ मसाले के काम आती हैं और उनकी चटनी बनाई जाती है ।

पुद्गल-सज्ञा पु० १. देह । शरीर । २. आत्मा । ३. जैतियों के मत से चैतन्य-विशिष्ट पदार्थ । परमाणु । अत्यन्त सूक्ष्म पदार्थ ।

पुन-अव्य० १ फिर । दोबारा । दूसरी बार । पुनि । बहुरि । २ पीछे । उपरात अनंतर ।

पुन पुन-क्रि० वि० बार-बार ।

पुनसंस्कार-सज्ञा पु० द्वितीय बार उप-नयन आदि संस्कार का होना ।

पुन\*-सज्ञा पु० दे० "पुण्य" ।

पुनरपि-क्रि० वि० फिर भी ।

पुनरागमन-सज्ञा पु० १. फिर से आना । दोबारा आना । लौटना । २ फिर जन्म लेना । पुनर्जन्म ।

पुनरावर्त्तन-सज्ञा पु० १. फिर से लौटकर आना । २. बार-बार सप्ताह में जन्म लेना । पुनरावर्त्ती ।

पुनरावृत्ति-वि० फिर से घूमा हुआ । दोहराया हुआ ।

पुनरावृत्ति-सज्ञा स्त्री० [वि० पुनरावृत्ति] १. फिर से लौट या घूमकर आना । विप्रे हुए वाम को फिर करना । दाहराना । फिर दुबारा पढ़ना । फिर से । २. दूसरा संस्करण । आवृत्ति ।

पुनरासीन-वि० एक बार अपने स्थान से हटने या हटाये जाने पर फिर उठी स्थान पर बैठने या बैठाया जानेवाला ।

पुनरीक्षण-सज्ञा पु० फिर से देखना ।

पुनरुक्त-वि० फिर से कहा हुआ ।

पुनरुक्ति-गज्ञा स्त्री० [वि० पुनरुक्ति] १.

एक बार वही बात को फिर कहना । कहे हुए वचन को फिर कहना । २. एक अर्थ में व्यर्थ शब्द के पुनः प्रयोग का काव्य-दोष । पुनरुज्जीवन-सज्ञा पु० [वि० पुनरुज्जीवित] फिर से जीवित होना ।

पुनरुत्थान-सज्ञा पु० दूसरी बार उठना । फिर से उठना । पतन होने के बाद फिर से उठना, उत्थिति करना या समर्थ होना ।

पुनर्जन्म-सज्ञा पु० दूसरा जन्म । नरने के बाद फिर पैदा होना ।

पुनर्नय-वि० जो फिर से नया हो गया हो ।

पुनर्नवा-सज्ञा स्त्री० एक छोटा पीवा, जो फूलों के रंग के भेद से तीन प्रकार का होता है—श्वेत, रक्त और नील । गदहपूरना (श्रीप०) ।

पुनर्निर्माण-सज्ञा पु० गिरे या टूटे-फूटे को फिर से बनाना ।

पुनर्भव-सज्ञा पु० १. पुनर्जन्म । पुनः उत्पन्न । २. पुनः विवाह । ३. नख । नह ।

पुनर्भू-सज्ञा स्त्री० विधवा स्त्री, जिसका विवाह दूसरे पुरुष से हो । द्विष्टा स्त्री । दो बार ब्याही स्त्री ।

पुनर्वसु-सज्ञा पु० १ सत्ताईस नक्षत्रों में से सातवाँ नक्षत्र । गन्धर्व । २ विष्णु । ३ शिव । ४ एक लोक । ५ कात्यायन मुनि ।

पुनर्वदि-सज्ञा पु० किसी न्यायालय से विवाद का निर्णय हो जाने पर उसके विरोध में उमरे ऊँचे न्यायालय में फिर से उस विवाद पर विचार कराने के लिए की जानेवाली प्रार्थना (अग्ने० अफील) ।

पुनर्वदि-सज्ञा पु० किसी ऊँचे न्यायालय में पुनर्वदि प्रस्तुत करनेवाला (अग्ने० एपेलेष्ट) ।

पुनर्वसन-सज्ञा पु० उजड़े हुए खोपी को फिर बसाना या आबाद करना ।

पुनर्विधायन-सज्ञा पु० (वि० पुनर्विधायित) विभी बने हुए विधान को घटा या बढ़ा कर नये सिरे से विधान का रूप देना (अग्ने०-रिएनकटेमेष्ट)

पुनर्विधायित-वि० जिसका फिर से विधान

विया गया हो। पहले का बना हुआ विधान  
जो फिर से घटा बढ़ा कर बनाया गया हो।  
पुनर्विवाह—राजा पु० फिर से होनेवाला  
विवाह—विशेषकर विधवा स्त्री का।  
दूसरी बार विवाह।  
पुनर्—वि० फिर। फिर से। दोबारा।  
पुन।  
पुनर्पुन—प्रथम० बार-बार। पुनपुन। बार-  
बार।  
पुनो\*—सज्ञा पु० पुण्यात्मा। दानी।  
सज्ञा स्त्री० पूणिमा। पुनो।  
त्रि० वि० पुन। फिर।  
पुनीत—वि० पवित्र। शुद्ध। पावन।  
पुस्त—सज्ञा पु० दे० "पुण्य"।  
पुस्तान—सज्ञा पु० १ वृक्ष विशेष। पुष्प-  
विशेष। सुलताना खपा। २ श्वेत कमल।  
३ जामफल।  
पुस्तार, पुस्तार—सज्ञा पु० चक्कड़ का पेड़।  
चक्रमर्द।  
पुण्य—सज्ञा पु० दे० "पुण्य"।  
पुण्यता, पुण्यताई\*—सज्ञा स्त्री० धर्मशीलता।  
पवित्रता। पुण्याई।  
पुमान्—सज्ञा पु० नर। पुरुष।  
पुरुजन—सज्ञा पु० जीवात्मा।  
पुरुजय—वि० १. पुर को जीतनेवाला। नगर  
या ग्राम विजेता। २ एक सूर्यवंशी राजा।  
पुरदर—सज्ञा पु० १ पुर, नगर या घर का  
नाशक। २ इद्र। ३ विष्णु। ४  
शिव।  
पुरधी—सज्ञा स्त्री० १. पति, पति आदि से सुखी  
स्त्री। बालवच्चोवाली स्त्री। २ सुगृहिणी।  
पुर—अव्य० आगे। पहले। प्रथम।  
पुरवत्त—वि० पहले से दिया हुआ (शुल्क,  
परिव्यय आदि)। (अग्ने० प्रीपेड)  
पुरदान—सज्ञा पु० पहले से देना (शुल्क,  
देन आदि) [अग्ने०-प्रीपेमेण]।  
पुरसगी—वि० किसी कार्य, विषय या तथ्य  
में उससे पहले सहायक या सम्बद्ध रूप में  
होनेवाला।  
पुरस्तर—वि० १ अग्रगामी। अगुआ।  
II। सा थी। ३ मिला हुआ। युक्त।

सहित। समन्वित।

पुर—सज्ञा पु० [स्त्री० पुरी] १. नगर।  
शहर। गाँव। २. हाट। स्थान। ग्राम,  
जिनमें बाजार लगता हो। ३. पर। आगार।  
४. छटारी। गोडा। ५. लोक। भुवन। ६.  
नक्षत्र। ७. राशि। पुज। ८. बारीर। देह।  
९. दुर्ग। किला। गढ़। १०. घरसा। पूर्ण  
से पानी निकालने का बमड़े या टोल।  
मोट। पुरवट।  
वि० पूर्ण। भरा हुआ।  
पुरइन\*—सज्ञा स्त्री० कमल का पत्ता।  
कमल। मुमुदिनी। नलिनी।  
पुरखा—सज्ञा पु० १ पूर्वज। बाप, दादा,  
परदादा आदि। पूर्व-पुराण। २ घर  
का बड़ा-बूढ़ा।  
मुहा०—पुरखे तर जाना—पूर्व-पुरुषों को  
(पुर आदि के कृत्य से) परलोक में उत्तम  
गति प्राप्त होना। बड़ा भारी पुण्य या  
फल होना।  
पुर्वक—सज्ञा स्त्री० १ चुमवार। पुचवार।  
२ बड़ावा। उत्साह-दान। ३. प्रेरणा।  
उत्सावा। ४ समर्थन। हिमायत। तरफ-  
दारी। पक्षपात।  
पुरजन—सज्ञा पु० पुरवासी। नगरवासी।  
ग्रामवासी।  
पुरजा—सज्ञा पु० [फा०] १ टुकड़ा। खंड।  
कागज का टुकड़ा। २ कतरन। धज्जी।  
३ अवयव। अंग। भाग। अंश।  
मुहा०—पुरजे पुरजे करना या उड़ाना—  
खंड-खंड करना। टूट-टूक करना। चलता-  
पुरजा—वालावा आदमी।  
पुरट—सज्ञा पु० सोना। स्वर्ण।  
पुरत—अव्य० आग।  
पुरप्राण—सज्ञा पु० परकोटा। शहरपनाह।  
प्राकार। कोट।  
पुरद्वार—सज्ञा पु० नगर-द्वार।  
पुरनिया—सज्ञा पु० १ प्राचीन। बूढ़। बूढ़ा।  
२. विहार-राज्य का एक नगर।  
पुरपाल—सज्ञा पु० १ नगर रक्षक। कोनवाल।  
२. जीव।  
पुरबला, पुरबला—वि० [स्त्री० पुरवनी,

पुरवली] १. पूर्व का। पहले का। २. पूर्व जन्म का।  
 पुरविद्या-वि० [स्त्री० पुरविनी] पूर्व देश में उत्पन्न या रहनेवाला। पूर्व का।  
 पुरवट†-सज्ञा पु० चमड़े का बहुत बड़ा डोल, जिसे कुरें में डालकर बैलों की सहायता से सिचाई के लिए पानी खींचते हैं। मोट। चरसा।  
 पुरवना\*†-क्रि० स० १ भरना। पूरना। पुजाना। २ पूरा करना।  
 क्रि० अ० १. पूरा होना। २ यथेष्ट होना। ३ उपयोगी होना।  
 मुहा०-साय पुरवना=साय देना।  
 पुरवा-सज्ञा पु० १ छोटा गाँव। खेड़ा। पुरा। २ पूर्व दिशा से चलनेवाली वायु। ३ मिट्टी का कुल्हड़ या सकोरा।  
 पुरवाई, पुरबैया-सज्ञा स्त्री० पूर्व दिशा से चलनेवाली हवा। पूर्व की वायु।  
 पुरश्चरण-सज्ञा पु० १ किसी कार्य की सिद्धि के लिए पहले से ही उपाय सोचना और अनुष्ठान करना। २ किसी अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिए किसी मन्त्र, स्तोत्र आदि को नियमपूर्वक जपना। विधि-पूर्वक अनुष्ठान या पूजा।  
 पुरवा-सज्ञा पु० दे० "पुरसा"।  
 पुरसा-सज्ञा पु० पाँच हाथ की एक नाप। ऊँचाई या गहराई की एक माप।  
 पुरस्कार-सज्ञा पु० [वि० पुरस्कृत] १ पारितोषिक। इनाम। उपहार। उत्तम कार्य के प्रतिफल। २. आगे करने की श्रिया। ३. आदर। पूजा। ४. प्रधानता। ५. स्वीकार।  
 पुरस्कृत-वि० १. पारितोषिक पाया हुआ। पुरस्कार या इनाम पाया हुआ। २. आगे दिया हुआ। ३. आदृत। पूजित। ४. स्वीकृत।  
 पुरस्तात्-अव्य० आगे। पहले। पूर्व काल में। पूर्व दिशा में।  
 पुरस्तर-वि० दे० "पुरसर"।  
 पुरहूत-सज्ञा पु० दे० "पुरहूत"। इन्द्र।  
 पुरागना-सज्ञा स्त्री० नगर में रहनेवाली स्त्री। नगर-निवासिनी।

पुरा-अव्य० पुराने समय में।  
 वि० पुराना। प्राचीन।  
 सज्ञा पु० गाँव। बस्ती।  
 पुराकल्प-सज्ञा पु० १. पूर्वकल्प। पहले का युग। २ प्राचीन काल। ३. एक प्रकार का अर्थवाद, जिसमें प्राचीन इतिहास के आधार पर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाता है।  
 पुराकृत-वि० १. पूर्वकाल में किया हुआ। २ पूर्व-जन्म में किया हुआ।  
 सज्ञा पु० पूर्वजन्मकृत पुण्य। प्रारब्ध कर्म। भाग्य। अदृष्ट।  
 पुराण-वि० पुरातन। प्राचीन। पुराना। सज्ञा पु० १ सृष्टि, मनुष्य, देवी, दानवों आदि के ऐसे वृत्तान्त, जा परम्परा से चले आते हो। २. व्यास तथा अन्य मुनियों-द्वारा रचित-अथ-समूह। हिन्दुओं के धर्म-संबंधी अठारह आख्यान-ग्रन्थ, जिनमें सृष्टि, लय और प्राचीन ऋषियों आदि के वृत्तान्त हैं। ३. अठारह की संख्या। अठारह पुराण। ४. प्राचीन इतिहास। ५. शिव। ६. कार्पाण।  
 पुरातत्त्व-सज्ञा पु० वह विद्या, जिसमें प्राचीन काल की वस्तुओं के आधार पर प्राचीन अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है। प्राचीन काल-संबंधी विद्या। प्रत्नशास्त्र या प्रत्नविज्ञान। (अग्रे०--आर्कियोलोजी)  
 पुरातन-वि० पुराना। प्राचीन।  
 सज्ञा पु० विष्णु।  
 पुरातल-सज्ञा पु० तलातल। सातों सप्तर के नीचे का तल।  
 पुरान†-वि० दे० "पुराना"।  
 सज्ञा पु० दे० "पुराण"।  
 पुराना-वि० [स्त्री० पुरानी] १ बहुत दिनों का। प्राचीन। अनीन। पुरातन। पहले का। २ जो बहुत दिनों का होने के कारण अच्छी दशा में न हो। जीर्ण। ३. जिसका अनुभव बहुत दिनों का हो। अनुभवी। परिपक्व। ४. जिसका चलन अब न हो।  
 वि० स० १ पूरा करना। मराना।

पुनवाना । २. पालन करना । अनुबल करना । पूरा करना । ३. भग्ना । ४. अनुमरण करना । पालन करना ।

मुहा०—पुराना रुराटि=१. बूढ़ा । २. बहुत दिनों का अनुभव । पुराना धाघ=गहरा चामाच ।

पुरारि—मज्ञा पु० शिव । महादेव ।

पुराल†\*—सज्ञा पु० दे० 'पवाल' ।

पुरातिथि—सज्ञा स्त्री० प्राचीन काल में प्रचलित तिथि ।

पुरातिथिशास्त्र—सज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसमें हजारों वर्ष पहले की प्राचीन तिथियाँ पढ़ने का विवेचन होना है । (अग्रे०—एपिग्राफी)

पुरावृत्त—सज्ञा पु० प्राचीन काल का वृत्तान्त या हाल । प्राचीन इतिहास ।

पुरि—मज्ञा स्त्री० १. दे० 'पुरी' । २. नदी । सज्ञा पु० दशनामी सन्यासियों का एक भेद ।

पुरी—सज्ञा स्त्री० १. नगरी । छाटा सहर । २. उड़ीसा में जगन्नाथपुरी । पुरपोत्तम—धाम । पुरीष—सज्ञा पु० विष्ठा । मल । गु ।

पुरु—सज्ञा पु० १. वेबसोक । २. दैत्य । ३. पराग । ४. शरीर । ५. एक प्राचीन राजा, जो नहुष के पौत्र और ययाति के पुत्र थे । ६. पञ्जाब का एक राजा, जो सिमर से लड़ा था । ७. एक पर्वत ।

पुरुष†\*—सज्ञा पु० दे० 'पुरुष' ।

पुरुष—सज्ञा पु० १. मनुष्य । आदमी । नर । मर्द । २. साक्ष्य में प्रकृति से भिन्न एक चेतन पदार्थ । ३. आत्मा । ४. विष्णु । जीव । सूर्य । ५. शिव । ६. मनुष्य का शरीर या आत्मा । ७. पूर्वज । ८. स्वामी । पति । ९. व्याकरण में सर्वनाम । जैसे—'मे' उत्तम पुरुष हुआ, 'तुम' मध्यम पुरुष और 'वह' अन्य पुरुष ।

पुरुषैत्य—सज्ञा पु० पुस्त्व । पुरुष होने का भाव । पौरुष । साहस । मरदानगी ।

पुरुषत्वहीन—वि० पुस्त्वहीन । नपुमक । हिजड़ा ।

पुरुषपुर—सज्ञा पु० गांधार की प्राचीन राजधानी । आजकल का पेशावर ।

पुरुषमेध—सज्ञा पु० १. एक यज्ञ, जिसमें नर-वध्वि की जाती थी । २. दारुण मृतक मनुष्य की दारुद्रिया ।

पुरुषाधम—मज्ञा पु० निरुष्ट मनुष्य । नीच पुरुषातृणम—सज्ञा पु० पुरुषों की परम्परा, जो कम से कमी धार्मिक हो । वनपरम्परा ।

पुरुषार्थ—सज्ञा पु० पराक्रम । उद्यम । शक्ति । बल । सामर्थ्य । पुरुष का लक्षण । पुरुष का प्रयोजन—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ।

पुरुषार्थी—वि० पुरुषार्थ करनेवाला । उद्योगी । परिश्रमी । साहसी । बलवान् । सामर्थ्यवान् ।

पुरुषोत्तम—सज्ञा पु० १. श्रेष्ठ पुरुष । नारायण । २. विष्णु । ३. जगन्नाथ, जिसका मन्दिर उड़ीसा में है । ४. कृष्णचन्द्र । ५. ईश्वर । ६. मलमास । अधिक मास ।

पुरुषोत्तममास—सज्ञा पु० मलमास, अधिक मास ।

पुरुहूत—सज्ञा पु० इन्द्र । पुरन्दर । देवराज । पुरुरवा—सज्ञा पु० १. एक प्राचीन राजा, जिसको ऋग्वेद में इला का पुत्र कहा गया है । इसकी पत्नी उर्वशी थी । २. विद्वेदेव ।

पुरेन, पुरेन—सज्ञा स्त्री० १. कमल का पत्ता । २. कमल ।

पुरोगामी—वि० [स्त्री० पुरोगामिनी] १. अग्रगामी । आगे चलनेवाला । बराबर उन्नति करता हुआ आगे बढ़नेवाला । २. किसी विषय में उदार विचार रखने और अग्रसर रहनेवाला ।

पुरोडाश—सज्ञा पु० १. जब के आटे की बनी हुई एक प्रकार की रोटी, जो यज्ञ के समय आहुति देने के लिए पचाई जाती थी । २. हवि । ३. यज्ञभाग । यज्ञ में होम करने की बस्तु । ४. सोमरस ।

पुरोधा—सज्ञा पु० पुरोहित । यज्ञ करानेवाला । पुरोवर्ती—वि० अग्रगामी । आगे चलनेवाला ।

पुरोहित—सज्ञा पु० [स्त्री० पुरोहितानी] यजमान के यहाँ यज्ञादि गृह्यमं और संस्कार करानेवाला याजक । बर्मकांड करानेवाला ब्राह्मण । पुरोधा । उपाध्याय । ऋत्विक् ।

पुरोहिताई—सज्ञा स्त्री० पुरोहित का कार्य ।

पुरी\*—संज्ञा पु० दे० "पुरवट" ।

पुरीती\*—संज्ञा स्त्री० दे० "पूति" ।

पुर्तगाल—सज्ञा पु० योरोप महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिम कोने पर स्थित एक छोटा देश ।

पुर्तगाली—वि० १. पुर्तगाल-संबंधी । २. पुर्तगाल का रहनेवाला ।

पुर्तगाली—वि० दे० "पुर्तगाली" । पुर्तगाल देश-सम्बन्धी ।

पुल—सज्ञा पु० बाँध । बन्ध । सेतु । नदी, जलाशय आदि के शार-गार जाने का रास्ता, जो नाव पाटकर या खभों पर पटरियाँ आदि बिछाकर बनाया जाय ।

मुह्रां—किसी बात का पुल बाँधना—झूठी लगाना । बहुत अधिकता कर देना ।

पुलक—सज्ञा पु० १. प्रेम, हर्ष आदि के उद्वेग से रोमकूपो (छिद्रों) का प्रकुल होना । रोमाच । शरीर के अन्दर और बाहर हर्षजन्य विकार । २. एक प्रकार का रत्न । याकूत । महताव । ३. मणि का दोष विशेष ।

पुलकना—क्रि० अ० पुलकित होना । गद्गद होना । प्रेम, हर्ष आदि से प्रफुल्ल होना ।

पुलकाई\*—सज्ञा स्त्री० पुलकित होने का भाव । गद्गद होना ।

पुलकालि, पुलकावलि—सज्ञा स्त्री० प्रेम या हर्ष से प्रफुल्लित रोम ।

पुलकित—वि० रोमांचित । प्रेम या हर्ष से जिसके रोम खड़े हों ।

पुलकी—वि० रोमाचयुक्त ।

पुलट\*—सज्ञा स्त्री० दे० "पलट" ।

पुलटिस—सज्ञा स्त्री० फोड़े, घाव आदि को पवाने के लिए उस पर चढ़ाया हुआ दवाओं का गाढ़ा लेप ।

पुलपुता—वि० १. ढीली और मुलायम वस्तु, जो दवाने से धँसे । पिथपिता । गत्ता हुआ । सड़ा हुआ । २. ऋषि । ब्रह्मा के मानस पुत्र ।

पुलपुलाना—क्रि० स० १. किसी मुलायम चीज को दवाना । मुँह में लेकर दवाना । चूसना ।

२. भयभीत होना । कंपन । ३. ढीला पड़ना । गुलगुला होना । शिथिल पड़ना ।

पुलस्त्य—संज्ञा पु० १. सप्तविषों और प्रजापतियों में से एक ऋषि । ये ब्रह्मा के मानस पुत्रों में थे । २. दिव । ३. रायण के दादा ।

पुलह—संज्ञा पु० १. सप्तविषों में एक ऋषि, जो ब्रह्मा के मानस पुत्र और प्रजापति थे । २. दिव ।

पुलहता\*—क्रि० अ० दे० "पलुहना" ।

पुलाक—सज्ञा पु० १. एक तुच्छ धान्य । अँकुर । २. उबाला हुआ चावल । भात । ३. भात का माँड़ । पीच । ४. पुलाव ।

पुलाव—सज्ञा पु० [फा०] मास और चावल की खिचड़ी । मासोदन ।

पुलिंद—संज्ञा पु० १. भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति । भील । शबर । २. वह देश, जिसमें पुलिंद जाति बसती थी ।

पुलिंदा—संज्ञा पु० लपेटे हुए कपड़े, कागज आदि का बण्डल । गठरी । गड्डी । पोतरी ।

पुलिन—सज्ञा पु० १. जल से निकली हुई भूमि । नदी के बीच की रेत । २. किनारा । तीर । तट ।

पुलित—सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] सरकार-द्वारा प्रजा की जान और माल की रक्षा के लिए नियुक्त सिपाही या अधिकारी ।

पुलिसमैन—सज्ञा पु० [अग्रे०] पुलिस का सिपाही । पुलिस का कार्य करनेवाला व्यक्ति ।

पुलिहोरा\*—सज्ञा पु० एक पक्वान ।

पुलोम—सज्ञा पु० एक दैत्य, जिसकी कन्या का नाम शची था ।

पुलोम्जर—सज्ञा स्त्री०, शची । इंद्राणी । इंद्र की स्त्री जो पुलोम नामक दैत्य की कन्या थी ।

पुलोमा—सज्ञा स्त्री० गुरु ऋषि की पत्नी । पुवा\*—संज्ञा पु० दे० "मालपुवा" ।

पुयार या पुवाल—सज्ञा पु० पुवाल । धान के डठल ।

पुस्त—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. पीठ । पृष्ठ । पीछा । २. वस्त्र-परम्परा । पीछी ।

यी०—पुस्त दर पुस्त—वस्त्रपरम्परा में ।

पीड़ी दर पीड़ी । पुस्तता पुस्त = कई पीड़ियों  
तय ।

पुस्तक—गज्ञा स्त्री० होलती । घोड़े, गधे आदि  
का पीछे के दोनों पैरों से मारना ।

पुस्तनामा—गज्ञा पुं० [ पा० ] पीड़ीनामा ।  
बगावली । घुरसीनामा ।

पुस्त—सज्ञा पुं० [ पा० ] १. पानी रोने या  
मजबूती के लिए मिट्टी या ईंट पत्थर का  
टापुवा टीना । ऊँची भेड़ । बाँध । पुट्टा ।

२. बिनाब की जिल्द के पीछे का चमड़ा ।  
पुस्तान्दो—सज्ञा पुं० पुस्त के बंधाई । पुस्ते  
का कार्य ।

पुस्तो—सज्ञा स्त्री० [ का० ] १ सहारा । टेक ।  
थाम । आश्रय । २ सहायता । मदद ।

३. पक्ष । सरफदारी । ४ गाव-तबिया ।  
बड़ा तबिया ।

पुस्तनी—वि० १. कई पीड़ियों से चला आने-  
वाला । दादा, परदादा के समय का पुराना ।

२ आगे की पीढ़िया तब जानेवाला ।  
बशापत्तरा सम्बन्धी । सानदानी ।

पुष्कर—सज्ञा पुं० १. जलाशय । ताल । २.  
जल । ३. कमल । ४. हाथी की सूंड का अग्र  
भाग । ५. बाण । तीर । ६. आकाश ।

७ सर्प । ८. मुद्ग । ९. अना । भाग ।  
पुष्करमूल । १०. सूर्य । ११. एक दिग्गज ।

१२. सारस पक्षी । १३. विष्णु । १४.  
शवर । शिव । १५. बुद्ध । पुराणों में वर्णित  
सात द्वीपों में से एक । १६. अजमेर के

पास एक तीर्थ । १७. मद । १८. कूट ।  
१९. एक राजा का नाम । २०. मृदग,

२१. नृत्यकला ।  
पुष्करिणी—सज्ञा स्त्री० छोटा तालाब । छोटा  
जलाशय ।

पुष्करमूल—सज्ञा पुं० एक औषध की जड़ ।  
पुष्कर—सज्ञा पुं० हाथी ।

पुष्कर—सज्ञा पुं० १ भरतजी के दो पुत्रों  
में से एक । २ चार आस की भिक्षा ।

अनाज नापन के लिए ६४ मुट्ठिया का एक  
प्राचीन मान । ३. एक तरह का डोल ।

४. शिव ।  
वि० १. बहुत । अधिक । अति प्रचुर ।

२. परिपूर्ण । भर-भूग । ३. श्रेष्ठ ।  
४. उपस्थित । ५. पवित्र ।

पुष्ट—वि० १. मोटा-माड़ा । तैयार । भाग्य ।  
सूचन । २. वनिष्ठ । हृष्ट-मुष्ट । बलवर्द्धक ।

३. दुष्ट । पक्का । मजबूत । ४. पालन-पोषण  
विद्या दृष्टा । प्रणिर्वातन ।

पुष्टई—सज्ञा स्त्री० बलवीर्य बढ़ानेवाली  
औषधि । पुष्टिकर औषध ।

पुष्टता—सज्ञा स्त्री० दृढ़ता । मजबूती ।  
पुष्टि—सज्ञा स्त्री० १. पक्कापन । बात का  
समर्थन । २. पोषण । मुटाई । बलिष्ठता ।

३. वृद्धि । मतति की वृद्धि ।  
पुष्टिकर, पुष्टिकारक—वि० पुष्टि करनेवाला ।

बलवीर्य बढ़ानेवाला ।  
पुष्टिमार्ग—सज्ञा पुं० क्लृप्तम संप्रदाय । क्लृप्तमा-  
चार्य के मतानुसार वैष्णव भक्ति-मार्ग ।

पुष्प—सज्ञा पुं० १ फूल । कुसुम । गुल ।  
२ स्त्री का रज । ३ नेत्र का एक रोग ।

फूली । ४ कुबेर का विमान । पुष्पक ।  
५ मास (वामार्गी) ।

पुष्पक—सज्ञा पुं० १ फूल । २ कुबेर का  
विमान, जिससे रावण ने छीना था और राम

ने रावण से छीनकर फिर कुबेर को दे दिया  
था । ३ आँख की फूली । आँख का एक रोग ।

पुष्पकोट—सज्ञा पुं० फूल का कीड़ा । भौरा ।  
पुष्पवाप—सज्ञा पुं० कामदेव ।

पुष्पवत—सज्ञा पुं० १ वायुकोण का दिग्गज ।  
२ शिव का शनुचर । एक गधवें ।

पुष्पधन्वा—सज्ञा पुं० मदन । मनाज । कामदेव ।  
पुष्पध्वज—सज्ञा पुं० कामदेव ।

पुष्पपुर—सज्ञा पुं० प्राचीन पाटलिपुत्र (पटना) ।  
पुष्पबान—सज्ञा पुं० कामदेव ।

पुष्पमित्र—सज्ञा पुं० दे० "पुष्पमित्र" ।  
पुष्परज—सज्ञा पुं० फूलों की धूल । पराग ।

पुष्परस—सज्ञा पुं० पूना का रस । मकरन्द ।  
पुष्पराग—सज्ञा पुं० पुलराग मणि ।

पुष्परेणु—सज्ञा पुं० पराग ।  
पुष्पवती—वि० स्त्री० १ फलवाली । फूली

हुई । २ रजस्वला । रजावती ।  
पुष्पवाटिका—सज्ञा स्त्री० उद्यान । फुटवारी ।  
फूलों का बगीचा ।

**पुष्पवृष्टि**—सज्ञा स्त्री० फूलों की वर्षा । ऊपर से फूल गिरना या गिराना ।

**पुष्पशर**—सज्ञा पु० कामदेव ।

**पुष्पसार**—सज्ञा पु० १. फूलों का मूल तत्त्व । इन । २. फूलों का रस । मधु ।

**सज्ञा स्त्री० गूलर ।**

**पुष्पाजलि**—सज्ञा स्त्री० फूलों से गरी अजलि, जो किसी देवता या पूज्य पुरुष पर चढ़ाई जाय ।

**पुष्पागम**—सज्ञा पु० वसत ऋतु ।

**पुष्पिका**—सज्ञा स्त्री० अध्याय के अंत में वह वाक्य, जिसमें वही हुए प्रसंग की समाप्ति सूचित की जाती है और जो प्रायः “इति श्री” से आरम्भ होता है ।

**पुष्पित**—वि० विवर्धित । फूला हुआ । प्रफुल्ल ।

**पुष्पिता**—सज्ञा स्त्री० रजस्वला स्त्री ।

**पुष्पिताग्रा**—सज्ञा स्त्री० एक अर्द्धसम छन्द ।

**पुष्पोद्यान**—सज्ञा पु० पुष्पवाटिका । फूलचारी ।

**पुष्प**—सज्ञा पु० १. पुष्टि । पोषण । २. मूल या सार वस्तु । ३. बाण की आकृतिवाला आठवाँ नक्षत्र तिथ्य । ४. पूस का महीना । पीप मास । ५. एक नक्षत्र का नाम ।

**पुष्पमित्र**—सज्ञा पु० मीलों के पश्चात् भगवत् में शुगन्ध का राज्य प्रतिष्ठित करनेवाला एक प्रतापी राजा ।

**पुष्कर\***—सज्ञा पु० दे० “पुष्कर” ।

**पुस्ताना\***—क्रि० अ० १. यन् पढ़ना । पूरा पढ़ना । २. शोभा देना । उचित जान पड़ना ।

**पुस्त\***—सज्ञा स्त्री० दे० “पुस्त” ।

**पुस्तक**—सज्ञा स्त्री० ग्रन्थ । पित्तव । पोषी ।

**पुस्तकाकार**—वि० ग्रन्थ का रूप । पुस्तक का आकार या बनावट ।

**पुस्तकालय**—सज्ञा पु० वह भवन या घर, जिसमें पुस्तकों का संग्रह हो ।

**पुस्त-ढाक**—सज्ञा स्त्री० यह ढाक या ढाक से भेजने की वह विधि जिससे अनुसार तामाचार-पत्र, छपी हुई पुस्तकें, आदि कुछ रियासती दरसे भेजी जाती हैं । (अग्ने०—युक्त पोस्ट)

**पुस्तिका**—सज्ञा स्त्री० छोटी पुस्तक ।

**पुष्कर\***—सज्ञा पु० दे० “पुष्कर” ।

**पुहना**—क्रि० अ० (पोंहना बिया का स०) पोंहा जाना । पिराया या गँथा जाना ।

**पुहप**, **पुहुप**—सज्ञा पु० पुष्प । फूल ।

**पुहुपदेनु\***—सज्ञा पु० दे० पुष्टराज ।

**पुहुमी\***—सज्ञा पु० दे० पुष्परेणु । पराग ।

**पुहुबो\***—सज्ञा स्त्री० पृथ्वी । भूमि ।

**पूगा**—सज्ञा पु० सीप का कीड़ा ।

**सज्ञा स्त्री०** महुवर । सेंपेरी का बाजा ।

**पुगी**—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की वासुरी ।

**पुच्छ**—सज्ञा स्त्री० १. जानबरो, पक्षियों, कीड़ों आदि के शरीर का पिछला लम्बा भाग । लागूल । पुच्छ । दुम । २. किसी पदार्थ के पीछे का भाग । ३. पुछरला । पिछ-लगू ।

**पुच्छताछ**—सज्ञा स्त्री० दे० “पुच्छताछ” ।

**पुछना**—क्रि० अ० १. दे० “पुछना” । २. दे० “पाछना” ।

**पूँजी**—सज्ञा स्त्री० १. मूलधन । संचितधन । संपत्ति । जमा । २. वह धन, जो किसी व्यापार में लगाया गया हो । धन । रुपया-पैसा । ३. किसी विशेष विषय में किसी की योग्यता । ४. समूह । डेर ।

**पूँजीदार**—सज्ञा पु० दे० “पूँजीपति” । वह व्यक्ति जिसके पास पूँजी हो या जो किसी काम में पूँजी लगावे । रुपयेवाला ।

**पूँजीदारी**—सज्ञा स्त्री० ऐसी आर्थिक व्यवस्था, जिसमें पूँजीदारी या पूँजीपतियों का स्थान प्रधान हो और उनके हाथ में पूरा अधिकार हो ।

**पूँजीपति**—सज्ञा पु० वह व्यक्ति, जिसके पास काफी पूँजी हो या जो किसी कारबार में पूँजी लगावे । पूँजीदार ।

**पूँजीवाद**—सज्ञा पु० राज्यशासन प्रणाली का वह सिद्धान्त, जिसमें पूँजीपतियों का स्थान आवश्यक रूप से प्रमुख माना जाता है । (अग्ने०—कैपिटलिज्म)

**पूँठ\***—सज्ञा स्त्री० पीठ ।

**पूछा**—सज्ञा पु० मीठी पूड़ी । मालपुष्पा ।

**पूग**—सज्ञा पु० १. सुपारी का पेड़ या फल ।

२. डेर । ३. छद । ४. समूह । वृन्द ।

५. राशि । डेर । ६. किसी विदोष कार्य  
के लिए बना हुआ सष । कपरी ।  
पूगना-वि० अ० १. पूरा होना । २. प्राप्त  
होना । ३. पूजना । मिलना । पास जाना ।  
पहुँचना ।  
पूगी-सज्ञा स्त्री० सुपारी ।  
पूगीफल-सज्ञा पु० सुपारी । कसैली ।  
पूछ-सज्ञा स्त्री० १. पूछने का भाव ।  
जखरत । २. आदर । जिज्ञासा । ३.  
सोज । चाह । तलब । सम्मान । इज्जत ।  
पूछ-ताछ-सज्ञा स्त्री० कुछ जानने के लिए बार  
बार पूछना । जिज्ञासा । सोज-खबर ।  
तहकीकात । जांच । दर्याफन ।  
पूछना-वि० स० १. जानने के लिए किसी से  
प्रश्न करना । दरियाफन करना । जिज्ञासा  
करना । खोज-खबर लेना । २. किसी के  
प्रति सम्मान का भाव प्रकट करना ।  
आदर करना । ३. गुण या मूल्य जानना ।  
४. टोचना । ५. ध्यान देना ।  
मुहा०-बात न पूछना=१ तुच्छ जानकर  
ध्यान न देना । २. आदर न करना ।  
पूछ-पाछ-सज्ञा स्त्री० "पूछ-ताछ" ।  
पूछरी\*†-सज्ञा स्त्री० १ दुम। पूँछ ।  
२ पीछ का भाग ।  
पूछावाछी, पूछावाछी-सज्ञा स्त्री दे० "पूछ-  
ताछ" ।  
पूजक-सज्ञा पु० पूजा करनेवाला । उपासक ।  
पुजारी ।  
पूजन-सज्ञा पु० [ वि० पूजक, पूजनीय,  
पूजितव्य, पूज्य ] १ पूजा । देवता की  
सत्ता और बंदना । अचना । आराधना ।  
२ आदर । सम्मान ।  
पूजना-वि० स० १ पूजा करना । देवी-  
देवता को प्रसन्न करने के लिए आराधना  
करना । अर्चना करना । बंदना करना ।  
सम्मान करना । २ सिर झुकाना । ३  
रिस्पत देना । पूस देना ।  
वि० अ० १. पूरा होना । भरना । गहराई  
का भरना या बराबर हो जाना । पटना ।  
२ चुबता होना । चुवाना । ३ समाप्त  
होना । बीतना ।

पूजनीय-वि० पूजने योग्य । १ पूज्य ।  
२. सम्मान-योग्य । आदरणीय ।  
पूजबंद-सज्ञा पु० [पा०] जानवरों के मुँह  
पर बांधने की जाली ।  
पूजयिता-सज्ञा पु० पूजक । पुजारी ।  
पूजा-सज्ञा स्त्री० १. ईश्वर या देवी-देवता  
के प्रति श्रद्धा और भक्ति प्रकट करनेवाला  
कार्य । अर्चना । आराधन । किसी देवी-  
देवता पर जल-फूल आदि चढ़ाना । २.  
ध्यान धरना । ३. आदर-सत्कार । ४.  
किसी को प्रसन्न करने के लिए कुछ देना ।  
५. ताड़ना । दड ।  
पूजाहँ-वि० पूजा के योग्य । पूज्य ।  
पूजित-वि० [स्त्री० पूजिता] जिसकी पूजा  
की गई हो । आराधित । अर्चित ।  
पूज्य-वि० [स्त्री० पूज्या] १ पूजा के  
योग्य । पूजने-योग्य । पूजनीय । २  
आदरणीय ।  
पूज्यपाद-वि० जिसके पैर पूजनीय हो ।  
अत्यन्त मान्य । अत्यन्त पूज्य ।  
पूज्यमान-वि० पूज्य । पूजनीय ।  
पूठि\*†-सज्ञा स्त्री० पीठ ।  
पूडा-सज्ञा पु० दे० "पूसा" ।  
पूडी-सज्ञा स्त्री० दे० "पूरी" ।  
पूत-वि० पवित्र । शुद्ध ।  
सज्ञा पु० १. सत्य । २. शास्त्र । ३. श्वेत  
वृक्ष । ४. पलास । ५. निल का वृक्ष ।  
६. बेटा । पुत्र । लडका ।  
पूतना-सज्ञा स्त्री० १. एक राक्षसी, जो कस  
के भेजने से बालक श्रीकृष्ण को मारने के लिए  
गोकुल गई थी और जिस कृष्ण ने मार डाला  
था । २. एक प्रकार का बालग्रह या  
बालरोग ।  
पूतनारि-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण । (पूतना राक्षसी  
को बध करनेवाले)  
पूतना-भूदन-सज्ञा पु० पूतना को मारनेवाले ।  
कृष्ण ।  
पूतरा†-सज्ञा पु० १. दे० "पुतला" । २.  
वेटा । पुत्र ।  
पूतारमा-सज्ञा पु० १. दुष्टात्मा । जिसकी  
आत्मा पवित्र या शुद्ध हो । २. विष्णु ।

पूति-सज्ञा स्त्री० १. पवित्रता । शुद्धता ।  
शुचिता । २. बदबू । दुर्गन्ध ।

पूती-सज्ञा स्त्री० १. पवित्र किया हुआ । पवि-  
त्रीकृत । शोधित । शुद्ध किया हुआ । २.  
राक्षित । रक्षित । ३. गौंड के रूप में जड़ । ४.  
लहसुन की गौंड ।

पून-सज्ञा पु० १. दे० "पुण्य" । २. \*दे०  
"पूर्ण",

पूनिर्ज-सज्ञा स्त्री० दे० "पूनो" ।

पूनिर्वा-सज्ञा स्त्री० पूर्णिमा । पूर्णमासी ।

पूनी-सज्ञा स्त्री० घुनी हुई रुई की बत्ती, जो  
चरखे पर सूत कातने के लिए तैयार की  
जाती है ।

पूनो†-सज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णिमा" ।

पूप-सज्ञा पु० पूषा । मालपुष्पा । पक्वान-  
विशेष ।

पूप-सज्ञा पु० मवाद । पीप ।

पूर-वि० १. दे० "पूर्ण" । २. पक्वान के  
भीतर भरे जानेवाले मसाले या अन्य  
पदार्थ ।

पूरक-वि० पूरा करनेवाला । किसी के साथ  
मिलकर उसे पूर्ण रूप देनेवाला ।

सज्ञा पु० १. प्राणायाम की एक विधि,  
जिसमें स्वास की नाक से खींचते हुए भीतर  
ल जाते हैं । २. विजोरा नीय ।  
३. हिंदुओं में किसी के मरने की तिथि  
से दसवें दिन तक नित्य दिए जानेवाले दस  
पिंड । ४. गुणा करने का श्रक । गुणक श्रक ।

पूरक प्रश्न-सज्ञा पु० किसी प्रश्न के साथ पूछा  
जानेवाला दूसरा प्रश्न । विधान-सम्प्रदायों  
में सरकार-द्वारा प्रश्नों का उत्तर दिए जाने  
पर उन प्रश्नों से सम्बन्धित पूछे जानेवाले  
अन्य प्रश्न ।

पूरण-सज्ञा पु० [वि० पूरणीय] १. भरने की  
श्रिया । समाप्त या पूरा करना । समाप्ति ।  
पूर्ति । २. श्रवा की गुणा करना । श्रक-  
गुणन । ३. पूरक पिंड । दशाह पिंड । ४.  
गैह । दृष्टि । ५. समुद्र । ६. सेतु ।

वि० पूरा करनेवाला । पूरक ।

पूरणीय-वि० पूर्ण करने के उपयुक्त । पूरा  
करने के योग्य ।

पूरन\*-वि० दे० "पूर्ण" ।

पूरनपरब\*†-सज्ञा पु० दे० "पूर्णमासी" ।

पूरनपूरी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मीठी  
कचौरी ।

पूरनमासी-सज्ञा स्त्री० दे० "पूर्णमासी" ।

पूरना†-वि० स० १. कमी या त्रुटि को पूरा  
करना । पूर्ति करना । २. ढाँकना ।  
३. (मनोरथ) सफल करना । सिद्ध करना ।  
बनाना । ४. मंगल अवसरों पर घाटे,  
शरीर आदि से देव-भूजन आदि के लिए  
वर्गादि बनाना । चौक बनाना । ५. बटना  
जैसे, तागा पूरना । ६. बजाना । फूँकना ।  
क्रि० श्र० पूर्ण होना । भर जाना ।

पूरब-सज्ञा पु० पूर्व । प्राची । सूर्योदय की  
दिशा ।

\*†वि०, क्रि० वि० दे० "पूर्व" ।

पूरबल\*†-सज्ञा पु० १. प्राचीन काल ।  
पुराना जमाना । २. पूर्वजन्म ।

पूरबला\*-वि० [स्त्री० पूरबली] १. प्राचीन  
काल का । पुराना । २. पहले जन्म  
का ।

पूरबी-वि० दे० "पूर्वी" ।

सज्ञा पु० एक प्रकार का दादरा । (विहार)

पूरा-वि० [स्त्री० पूरी] १. पूर्ण । परिपूर्ण ।

भरा हुआ । जो खाली न हो । २. समूचा ।

समस्त । समग्र । ३. जिसमें कोई कमी

या बसरन हो । भरपूर । काफी । यथेच्छ ।

वहूत । ५. तुष्ट । ६. सपन । पूर्ण संपादित ।

७. पक्का । मजबूत । दृढ़ ।

मुहा०-किसी का पूरा पड़ना=कार्य पूर्ण

हो जाना । सामग्री न घटना । (कोई

वाम) पूरा उतरना=श्रच्छी तरह हाना ।

जैसा चाहिए, वैसा ही होना । वाम

पूरी उतरना=ठीक निकलना । सत्य

उद्हरना । दिन पूरे करना=किसी प्रकार

कालक्षेप करना । (दिन) पूरे होना=

अंतिम समय निकट आना ।

पूरित-वि० १. परिपूर्ण । भरा हुआ । तुल्य ।

२. गुणा किया हुआ । गुणित ।

पूरी-सज्ञा स्त्री० "पूरी" । १. एक प्रसिद्ध  
पक्वान, जिसे रोटी की तरह बेलकर पी में

छात सते हैं। २ मृदग, ढोल आदि के मुँह पर भड़ा हुआ गोम गमटा।

पूर्ण-वि० १ भरा हुआ। पूरा। परिपूर्ण। २ अभावशून्य। जिगरी इच्छा पूर्ण हो गई हो। परिपूर्ण। ३. भरपूर। काफी। यथेष्ट। ४. अग्रहित। समूचा। समस्त। सारा। ५. सिद्ध। सफल। जो पूरा हो चुका हो। समाप्त।

सना पु० १. जन्म। २. विष्णु।

पूर्णचाम-वि० जिसकी सारी इच्छाएँ तृप्त हो चुकी हो। कामनार्हित। निष्काम। सजा पु० परमेश्वर।

पूर्णचन्द्र-सजा पु० पूर्णिमा का चन्द्रमा।

पूर्णतया, पूर्णतः-त्रि० वि० पूर्ण रूप से। पूरी तरह से।

पूर्णता-सजा स्त्री० १. पूर्ण होने का भाव।

पूर्ण होता। २. पूर्ति। पूरण। भरण।

पूर्णपात्र-सजा पु० वस्तु से भरा हुआ बर्तन। हुबन के समय चावल आदि से भरकर दान किया जानेवाला पात्र। पात्र विशेष जिसमें २५६ भुट्टों चावल भरा जाता है।

पूर्णप्रज्ञ-वि० पूर्ण ज्ञानी।

सजा पु० पूर्णप्रज्ञ दर्शनशास्त्र के रचयिता महावाच्य।

पूर्णमासी-सजा स्त्री० पूर्णिमा। शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि। पूनी। पन्द्रह।

पूर्ण विराम-सजा पु० वाक्य के पूर्ण हो जान पर लगाया जानेवाला चिह्न।

पूर्णानन्द-सजा पु० परमेश्वर।

पूर्णभिषेक-सजा पु० वाममार्गी अभिषेक। (मन्त्रपूर्वक स्नान) महाभिषेक।

पूर्णवितार-सजा पु० भगवान् का पौंडरा कलायुक्त अवतार। श्रीकृष्ण।

पूर्णवृत्ति-सजा स्त्री० १ यज्ञ की अन्तिम आहुति। २ किसी कार्य की समाप्ति की क्रिया।

पूर्णमा-सजा स्त्री० पूर्णमासी। शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं या अन्तिम तिथि, जिस दिन चन्द्रमा की कला पूर्ण होती है।

पूर्णचन्द्र-सजा पु० पूर्ण चन्द्रमा।

पूर्णपमा-सजा स्त्री० उपमा अलंकार का

एक भेद, जिसमें उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म—चारों ध्य प्रवृत्त हैं।

पूर्त-सजा पु० १ पाता। २ चावली, देव-मन्दिर, बाग, गढ़न आदि बनाने का काम।

वि० १. पूर्ति। २. ढका हुआ।

पूर्तविभाग-सजा पु० गडब, पुल आदि बनानेवाला सरकारी विभाग। निर्माण-विभाग। तामीर का महकमा।

पूर्ति-सजा स्त्री० १. किसी आरम्भ किए हुए कार्य की समाप्ति। २ पूर्णता। पूरापन। ३ पालन। कमी को पूरा करने की क्रिया। ४ बाफी, रूप या तडाग आदि का उत्थान। ५ मरने का भाव। पूरण। ६ गुणा करने का भाव। गुणन।

पूर्व-सजा पु० सूर्योदय की दिशा। पूरव दिशा। प्राची दिशा।

वि० १ पहले का। २ आग का। अगला। ३ पुराना। ४ पिछला।

त्रि० वि० पहल। पेशतर।

पूर्व-क्रि० वि० सहित। साथ।

पूर्वकालिक-वि० १ जिसकी उत्पत्ति पूर्व-काल में हुई हो। २ पूर्ववालीन। प्राचीन। पूर्वकाल-सम्यन्वी। पहले का।

पूर्वकालिक क्रिया-सजा स्त्री० वह अपूर्ण क्रिया, जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले पड़ता हो।

पूर्वज-सजा पु० १ अग्रज। बड़ा भाई। २ बाप, दादा, परदादा आदि। पूर्व पुरुष। पुरखा।

पूर्वजन्म-सजा पु० पिछला जन्म। वर्तमान से पहल का जन्म।

पूर्वजा-सजा स्त्री० बड़ी बहन।

पूर्वदिन-सजा पु० पिछला दिन। गत दिवस। बीता हुआ कल का दिन।

पूर्वदेश-सजा पु० प्राची दिशा के देश। मध्य-देश।

पूर्वपक्ष-सजा पु० १ शास्त्रीय विचार के लिए उठाई हुई बात, प्रश्न या शका। २ कृष्ण-पक्ष ३ मुहूर्त का दावा।

पूर्वपक्षी-संज्ञा पु० १. पूर्वपक्ष उपस्थित करने-  
वाला । २. दावा दायर करनेवाला ।

पूर्वपितामह-संज्ञा पुं० प्रपितामह ।

पूर्वपुरुष-संज्ञा पु० पिता, पितामह आदि ।

पूर्वफाल्गुनी-संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से  
ग्यारहवाँ नक्षत्र ।

पूर्वभाद्रपद-संज्ञा पुं० २७ नक्षत्रों में से  
पचीसवाँ नक्षत्र ।

पूर्वमीमांसा-संज्ञा स्त्री० महर्षि जैमिनि-कृत  
एक हिन्दू दर्शन, जिसमें कर्मकांड का वर्णन है ।

पूर्वयाम-संज्ञा पुं० प्रथम प्रहर । पहला पहर ।

पूर्वरंग-संज्ञा पुं० नाटक प्रारम्भ होने के पहले  
विष्णों की शान्ति या दर्शकों की सजग

करने के लिए रागीत या स्तुति ।

पूर्वरंग-संज्ञा पुं० साहित्य में नायक  
अथवा नायिका का वह प्रेम, जो दोनों का

संयोग होने से पहले गुण सुनकर , चित्र  
देखकर या स्वयं एक दूसरे को देखकर उत्पन्न

होता है । प्रथमानुराग । पूर्वानुराग ।

पूर्वरूप-संज्ञा पुं० १. पहले का रूप । किसी  
वस्तु का पूर्व आकार या रूप । २. किसी

वस्तु का वह चिह्न या लक्षण, जो उस वस्तु  
के उपस्थित होने के पहले ही प्रकट हो ।

आगमसूचक चिह्न या लक्षण । आसार ।

पूर्ववत्-क्रि० वि० पहले की तरह । जैसा  
पहले था, वैसा ही ।

संज्ञा पुं० वह अनुमान, जो कारण को  
देखकर कार्य के विषय में उससे पहले ही

किया जाय ।

पूर्ववर्ती-वि० पहले का । पूर्व का । जो पहले  
हो या रह चुका हो ।

पूर्ववृत्त-संज्ञा पुं० इतिहास । पहले का हाल ।

पूर्वसाहचर्य-वि० पहले का साथ ।

पूर्वा-संज्ञा स्त्री० १. पूर्व दिशा । २. एक  
नक्षत्र । ३. प्रथम ।

वि० पूर्वज । पूर्वपुरुष । पहले पैदा हुआ ।

पूर्वाधिकारी-संज्ञा पुं० सम्पत्ति का वह स्वामी  
या अधिकारी, जो उसके वर्तमान अधिकारी

से पहले रहा हो । वह अधिकारी, जो किसी  
पद पर उसके वर्तमान अधिकारी से पहले

रहा हो । (अप्रे०-प्रेडिसेसर)

पूर्वानुराग-संज्ञा पुं० किसी के गुण सुनकर  
अथवा उसका चित्र देखकर उत्पन्न होने-

वाला प्रेम । दे० "पूर्वरंग" ।

पूर्वापर-क्रि० वि० आगे-पीछे ।

वि० आगे और पीछे का । अगला और  
पिछला ।

संज्ञा पुं० पूर्व और पश्चिम ।

पूर्वापर्य-संज्ञा पुं० पूर्वापर का भाव । आगा-  
पीछा ।

पूर्वफाल्गुनी-संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से  
ग्यारहवाँ नक्षत्र ।

पूर्वभाद्रपद-संज्ञा पुं० २७ नक्षत्रों में से  
पचीसवाँ नक्षत्र ।

पूर्वाभिमुख-संज्ञा पुं० पूर्व की ओर मुख ।  
पूर्व के सामने ।

पूर्वाभ्यास-संज्ञा पुं० पहले का अभ्यास ।

पूर्वार्द्ध-संज्ञा पुं० आरम्भ का आधा भाग ।  
शुरू का आधा हिस्सा ।

पूर्वावधि-वि०, यी० चिरकाल पर्यन्त । पूर्व-  
कालावधि ।

पूर्वावस्था-संज्ञा स्त्री० पहले की दशा या  
अवस्था । प्रथम अवस्था ।

पूर्वावाढा-संज्ञा स्त्री० २७ नक्षत्रों में से  
बीसवाँ नक्षत्र ।

पूर्वाह्न-संज्ञा पुं० सबेरे से दोपहर तक का  
समय । दिन का पहला भाग ।

पूर्वी-वि० पूर्व दिशा से सम्बन्ध रखनेवाला ।  
पूर्व का ।

संज्ञा पुं० १. पूरव में होनेवाला एक प्रकार का  
चावल । २. एक प्रकार का दादरा । जिसकी

भापा विहारी होती है । ३. एक राग ।

पूर्वावृत्त-वि० पहले कहा हुआ । जिसका चिह्न  
पहले था चुका हो । पूर्वकथित ।

पूला-संज्ञा पुं० [स्त्री० पूली] मूँज आदि का  
बेधा हुआ मुट्ठा । धास की गूही ।

पूय-संज्ञा पुं० दे० "पूष" या "पौष मास" ।

पूयण-संज्ञा पुं० १. सूर्य । २. पुराणानुसार  
बारह आदित्यों में से एक । ३. एक वैदिक

देवता ।

पूयणा-संज्ञा स्त्री० कार्तिकेय की अनुचरी ।  
एक मातृका का नाम ।

पूषा-गङ्गा पु० ३० "पूषण" ।  
 पूसा-सङ्गा पु० अगहन के बाद आनेवाला  
 चांद्र मास । पीप मास ।  
 पूषा-सङ्गा स्त्री० असावरण । गन्धद्रव्य ।  
 पूष-सङ्गा पु० धन । धनाज ।  
 पूषध्व-वि० जिज्ञासु । पृष्ठनेवाला । प्रश्न  
 करनेवाला ।  
 पूषधा-सङ्गा स्त्री० जिज्ञासा । प्रश्न । पूष  
 पक्ष ।  
 पूतना-सङ्गा स्त्री० १ सेना का एक विभाग,  
 जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२९ घुड़-  
 सवार और १२१५ पैदल सिपाही होते थे ।  
 २ सेना । पीज । युद्ध ।  
 पूषक-वि० [सङ्गा पूषवता] भिन्न । जुदा ।  
 अलग । अन्य । ग्यारा ।  
 पूषककरण-सङ्गा पु० अलग करने का काम ।  
 भिन्न करना । विभक्त करना ।  
 पूषवता-सङ्गा स्त्री० अलग होने का भाव ।  
 अलगाव । पार्थक्य ।  
 पूषगात्मता-सङ्गा स्त्री० १. विरक्ति ।  
 वैराग्य । २. भेद ।  
 पूषग्यास-सङ्गा पु० (वि० पूषग्यस्त) १. अलग  
 करना, लगाना या रखना । आसपास की  
 परिस्थिति से अलग करना । २. दो वस्तुओं के  
 बीच में कोई ऐसी वस्तु लगाना, जिससे एक  
 के ताप या विद्युत् का दूसरी में संचार न  
 होने पावे ।  
 पूषा-सङ्गा स्त्री० वृन्ती । पाण्डवों की माता ।  
 पूषिवी-सङ्गा स्त्री० दे० "पूष्वी" ।  
 पूष-वि० १. विस्तृत । चौड़ा । २. बड़ा ।  
 महान् । ३. अगणित । असंख्य । ४.  
 प्रवीण । चतुर । निपुण । ५. कीर्तिशाली ।  
 सङ्गा पु० १ अग्नि । २ विष्णु । ३  
 शिव । ४ राजा वेणु के पुत्र का नाम,  
 जो सूर्यवंश के पाँचवें राजा थे । इन्होंने  
 पूष्वी की बराबर समतल कर दिया था,  
 इस कारण इनका नाम पूष पड़ा था ।  
 एक हाथ का मान ।  
 पूषक-सङ्गा पु० १. बालक, शिशु, बच्चा ।  
 २. चिड़ड़ा ।  
 पूषता-सङ्गा स्त्री० १ पूष होने का भाव ।

२. पंखाव । विस्तार ।  
 पूषुत-वि० [गङ्गा स्त्री० पूषुता] स्थूल ।  
 भारी । भारी । बड़ा । विस्तृत । विशाल ।  
 पूषुह्व-सङ्गा पु० तीर्थ-विशेष ।  
 पूषुवर-सङ्गा पु० मेघ । भेट ।  
 वि० बड़े पेटवाला ।  
 पूष्वी-गङ्गा स्त्री० भूमि । जमीन । धरती ।  
 धरणी । पूषिवी । मिट्टी । पचत्तरवाँ में  
 से एक, जिनका प्रधान गुण गंध है ।  
 पूष्वीक्षप-सङ्गा पु० भूकम्प ।  
 पूष्वीतल-सङ्गा पु० १ धरातल, जिस पर  
 हम लोग चलते-फिरते हैं । पूष्वी का ऊपरी  
 तल । २ दुनिया । सत्तार ।  
 पूष्वीपर-सङ्गा पु० पर्वत ।  
 पूष्वीनाय-सङ्गा पु० राजा ।  
 पूष्वीपति-सङ्गा पु० राजा ।  
 पूष्वीपाल-सङ्गा पु० राजा ।  
 पूष्वीराज-सङ्गा पु० भारत का प्रसिद्ध हिन्दू  
 राजा, जिसे मुहम्मद गोरी ने सन् ११९३ ई०  
 में जीत लिया ।  
 पूष्वीश-सङ्गा पु० राजा ।  
 पूषा-सङ्गा पु० १ साँप । २. बिच्छू । ३.  
 बाघ । चीता । ४. हाथी । ५. वृद्ध ।  
 पेंड ।  
 पूदिन-सङ्गा स्त्री० १. सुपत-नामक राजा की  
 रानी । २. चित्तबंदी गाय । ३. पिठवन ।  
 ४. किरण । रश्मि ।  
 पूयत्-सङ्गा पु० १. बिन्दु । कण । २. श्वेत  
 बिन्दुयुक्त मृग । ३. पुराणों में वर्णित एक  
 राजा ।  
 पूयत्क-सङ्गा पु० बाण । दार ।  
 पूयदश्व-सङ्गा पु० १. बाघ । पवन । वतास ।  
 २. राजा विषय ।  
 पूयोदर-सङ्गा पु० छोटे पेटवाला । अल्पोदर ।  
 पूष्ट-वि० पूछा हुआ ।  
 पूष्ट-सङ्गा पु० १ पीठ । २ पीछे का  
 भाग । ३ पुस्तक का पन्ना ।  
 पूष्टपोषक-सङ्गा पु० १ पीठ ठोकनेवाला ।  
 २ सहायक । मददगार ।  
 पूष्टभाग-सङ्गा पु० १ पीठ । पुस्त । २  
 पिछला भाग ।

**पृष्ठभूमि**—सज्ञा स्त्री० पिछला भाग । पीछे का आधार । मूर्ति या चित्र का सब से पीछे का वह भाग, जो अवित दृश्य या घटना का आश्रय होता है । वस्तुस्थिति की पिछली बातें ।

**पृष्ठवश**—सज्ञा पु० रीढ़ । मेरुदण्ड । पीठ की हड्डी ।

**पृष्ठवग**—सज्ञा पु० पीठ फोड़ा । (अग्नें—बारवक्त ।)

**पृष्ठवास्तु**—सज्ञा पु० मकान के ऊपर का बना हुआ मकान ।

**पृष्ठास्थि**—सज्ञा पु० रीढ़ ।

**पग**—सज्ञा स्त्री० १. भूले का भूलते समय एक ओर से दूसरी ओर को जाना । २. एक पक्षी । **मुहा०**—पग मारना=भूलने पर भूलते समय उस पर इस प्रकार जार पहुँचाना, जिसमें उसका बेग बढ़ जाय और दोनों ओर वह दूर तक भूले ।

**पेच**—सज्ञा पु० १. उल्लू पक्षी । २. जूँ । ३. बादल ४. पर्तंग ।

**सज्ञा स्त्री०** बटे हुए ताने की गोली ।

**पेट**—सज्ञा स्त्री० हाट । बाजार । मण्डी ।

**पेंडुकी**—सज्ञा स्त्री० १ पडुका पक्षी । फालता ।

२ सुनारों की फुँकनी ।

**सज्ञा स्त्री०** दे० "गुमिया" ।

**पेदा**—सज्ञा पु० [स्त्री० पेदी] किसी वस्तु का निचला भाग । पदी । तला ।

**पेची**—सज्ञा स्त्री० दे० "पदा" । अधोभाग ।

**पे**—सज्ञा पु० १. उदर । जठर । २. गर्भ ।

हमल । ३. पचीनी । ४. अन्त करण । ५.

यन्त्र में गोली भरने का स्थान । ६.

समाई । रोजी । जीविका ।

**पेउसी†**—सज्ञा स्त्री० १ दे० "पेवस" ।

२ एक प्रकार का पकवान ।\* इदर ।

**पेखक\***—सज्ञा पु० देखनेवाला । दर्शक । स्वांग

धनानेवाला । खेल-समाशा करनेवाला ।

**पेखना\*†**—वि० स० १. देखना । निरखना ।

२. स्वांग बनाना । खेल-समाशा करना ।

पीडा करना ।

**पेच**—सज्ञा पु० [फा०] १. चक्कर । घुमाव ।

फिराव । मरोड़ । २. भ्रमट । उलभन ।

बखेडा । ३. चालाकी । धूर्तता । चाल-

वाजी । ४. पगड़ी की सपेट । ५. बल ।

यत्र । मशीन । ६. मशीन का पुरजा ।

७. चक्करदार कील या काँटा । स्क्रू ।

८. पतंग लड़ने के समय दो या अधिक

पतंगों की डोरों का एक दूसरी में फँस

जाना । ९. कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने

की युक्ति । १०. युक्ति । तरकीब । ११.

टोपी या पगड़ी में सामने की ओर सोमने

या लगाने का सिरपेच । १२. कानों में

पहनने का एक आभूषण । गोशपेच ।

**मुहा०**—पेच घुमाना=किसी के विचार

बदल देने की युक्ति करना ।

**पेचक**—सज्ञा स्त्री० [फा०] बटे हुए ताने की

लच्छी या गोली ।

**सज्ञा पु०** [स्त्री० पेचिका] १. उल्लू पक्षी ।

२. जूँ । ३. बादल । ४. पतंग ।

**पेचकस**—सज्ञा पु० [फा०] पेच बसने या

निकालने का औजार । बोलन का काग

निकालने का घुमावदार पेच ।

**पेचताव**—सज्ञा पु० [फा०] कोष, जो प्रवट न

किया जाय । गुस्ता, जो मन ही मन में रहे

और निकाला न जा सके ।

**पेचदार**—वि० [फा०] १ जिसमें कोई पेच या

कल हो । २ दे० "पेचीला" ।

**पेचवान**—सज्ञा पु० [फा०] १ हुक्के की बड़ी

सटक जो लम्बी और लचीली होती

है । २ बड़ा हुक्का । फर्नी ।

**पेचा†**—सज्ञा पु० [स्त्री० पेची] उल्लू पक्षी ।

**पेचिश**—सज्ञा स्त्री० [फा०] पेट का रोग ।

मरोड़ । आमातिसार । आंव गिरना ।

अतिसार ।

**पेचीदा**—वि० [फा०] [मज्ञा पेचीदगी] १.

चक्करदार । जिसमें पेच हो । पेचदार ।

२. उलझा हुआ । मुश्किल । जटिल ।

**पेचीला**—वि० दे० "पेचीदा" ।

**पेज**—सज्ञा स्त्री० रबड़ी । दसीही ।

**सज्ञा पु०** [अग्ने०] पुस्तक का पृष्ठ । पन्ना ।

**पेट**—सज्ञा पु० उदर । १. शरीर में धूल के

आकार का वह भाग, जिसमें भोजन पचना

है । २. गर्भ । हमल ।

मुहा०—पेट फाटना=वसाने के लिए जान-बूझकर बम राना। पेट का पधा=जीविका का उपाय। पेट का पानी न पचना=रहा न जाना। रह न सचना। गुप्त बात प्रकट कर देना। पेट का हल्ला=शुद्ध प्रकृति का। ओखे स्वभाव का। पेट की आग=भूख। पेट की बात=गुप्त भेद की बात। पेट गलाना=१. अत्यंत दीनता दिखलाना। २. भस्ते होने का शक्ते करना। पेट चलना=दस्त होने। बार-बार पाखाना होना। पेट जलना=अत्यन्त भूख लगना। पेट देना=मन का भेद खोलना। पेट पालना=जीवन निर्वाह करना। पेट फूलना=१. किसी बात के लिए बहुत अधिक उत्सुक होना। २. बहुत अधिक हेसने के कारण पेट में हवा भर जाना। ३. पेट में वायु का प्रकोप होना। पेट भार कर भर जाना=आत्मघात करना। पेट में दाढ़ी होना=बचपन ही में बहुत चतुर होना। पेट में बालना=जा जाना। पेट में पांव होना=अत्यंत छली या कपटी होना। चालबाज होना। कोई वस्तु पेट में होना=गुप्त रूप से पास में होना। पेट से पांव निकालना=१. कुमार्ग में लगना। २. बहुत इतराना। पेट मिरना=गर्भपात होना। पेट रहना=गर्भ रहना। पेटवाली=गर्भवती। पेट से होना=गर्भवती होना। पेट में घुसना या पठना=गुप्त भेद जानने के लिए भेल बढ़ाना। पेट में होना=मन में या ज्ञान में होना। पेटक-सज्ञा पु० १. मजूपा। पिटारा। २. समूह। डेर। राशि। पेटा-सज्ञा पु० १. बीच का हिस्सा। किसी वस्तु का मध्य भाग। २. तफसील। पूरा विवरण। व्योरा। भेद। ३. सीमा। हृदयुक्त। घेरा। ४. दोहरा। पिटारी। पिटारा। ५. नदी का पाट। पेटागि\*-सज्ञा स्त्री० भूख। जठराग्नि। पेटायी, पेटाय-वि० भुक्खंड। पेटू। पेटिका-सज्ञा स्त्री० राहूक। पटी। छोटी पिटारी।

पेटो-सज्ञा स्त्री० १. गहूकची। छोटा गहूक। २. छानी और पेटू के बीच का स्थान। तोंद। ३. बगद में बांधने का चोड़ा तसमा। बमरखद। बमरखस। ४. चपराग। ५. हज्जामी की बिसयत जिसमें वे लंबी, छूरा आदि रखते हैं। मुहा०—पेटो पड़ना=तोंद निकलना। पेट-वि० बहुत अधिक खानेवाला। भुक्खंड। पेटेष्ट-वि० (अग्ने०) किसी आधिष्ठातृ के अधिकार के सम्बन्ध में सरतार-द्वारा की गई रजिस्ट्री। पेटोल-सज्ञा पु० (अग्ने०) मिट्टी के तेल की तरह का एक प्रसिद्ध सनिज तरल पदार्थ, जिसके ताप से मोटर आदि चलती हैं। पेटोला-सज्ञा पु० १. रोग-विशेष। अतिसार। आंव गिरना। २. उद्वेग। व्याकुलता। उद्विग्नता। पेटा-सज्ञा पु० सफेद कुम्हड़ा। सफेद कुम्हड़े से बनी एक प्रकार की मिठाई। पेड-सज्ञा पु० वृक्ष। तह। दररत। पेडा-सज्ञा पु० १. खोबा की एक प्रसिद्ध गोल और चिपटी मिठाई। २. मूँधे हुए आटे की लोई। पेडी-सज्ञा स्त्री० १. पेड का तना। धड। कांड। २. मनुष्य का धड। ३. पान का पुराना पीघा या उसका पान। ४. प्रतिवृक्ष पर लगाया जानेवाला बर। ५. सुपारी। पेडू-सज्ञा पु० १. नामि और मूत्रेन्द्रिय के बीच का स्थान। उपस्थ। २. गर्भाशय। पेनी-सज्ञा स्त्री० (अग्ने०) अग्नेयी शिवका-विशेष। पेम्नाल-सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] बहुत दिना की या पिछली सेबाओं के बदले में दी गई मात्तिक या वायिक क्षुत्ति। पेम्नाल-सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] बिना स्थाही के लिखने का एक साधन। एक तरह की कलम, जिससे बिना स्थाही के लिखा जाता है। पेहनाना-वि० स० दे० "पहनाना"। वि० अ० दुहते समय गाय, भैंस आदि के थन में दूध उतरना।

पेपर—संज्ञा पु० (अंग्रे०) कागज। दैनिक समाचारपत्र।

पेम\*—संज्ञा पुं० दे० "प्रेम"।

पेमचा—संज्ञा पुं० एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

पेय—वि० पीने योग्य।

संज्ञा पुं० १. पीने की वस्तु। २. जल। पानी। ३. दूध।

पेरना—क्रि० सं० १. विसी वस्तु को इस प्रकार दवाना कि उसका रस निकल आवे। तेल निवालना। २. कष्ट या दुःख देना। रताना। ३. किसी काम में बहुत देर लगाना। ४. प्रेरणा करना। चलाना। ५. भेजना। पठाना।

पेरोल—संज्ञा पु० (अंग्रे०) कैदी आदि का कुछ समय के लिए इस धर्त पर छोड़ा जाना कि अवधि पूरी होने पर या बीच में आज्ञा मिलते ही वह तुरन्त लौटकर जेल में आ जायगा।

पेलना—क्रि० सं० १. दबाकर भीतर घुसाना। धँसाना। २. धक्का देना। ढकेलना। ३. ढाल देना। अवज्ञा करना। ४. त्यागना। हटाना। फेंकना। ५. खबरदस्ती करना। बल प्रयोग करना। ६. प्रविष्ट करना। घुसेड़ना। ढँसना। ७. दे० "पेरना"।

पेला—संज्ञा पु० १. भगड़ा। तकरार। २. अपराध। कसूर। ३. आक्रमण। चढ़ाई। घावा। ४. पेलने की क्रिया या भाव।

पेव\*—संज्ञा पु० प्रेम। स्नेह।

पेवस—संज्ञा पु० हाल की व्याई गाय या भैंस का दूध, जो रंग में कुछ पीला और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

पेवशी—संज्ञा स्त्री० १. दे० "पेवस"। २. पीपूष। अमृत। सुधा। ३. फटे दूध का बना खाद्य-विशेष।

पेश—क्रि० वि० [फा०] आगे। सामने। सम्मुख।

मुहा०—पेश आना=१. बर्ताव करना। व्यवहार करना। २. पटित होना। सामने आना। पेश करना=१. दिखलाना। सामने रखना। २. भेंट करना। नजर

करना। पेश जाना या चलना=जोर चलना। बश चलना।

पेशकज—संज्ञा स्त्री० [फा०] कटारी।

पेशकश—संज्ञा पु० [फा०] भेंट। उपहार।

पेशकार—संज्ञा पु० [फा०] अधिकारी या हाकिम के सामने कागज-पत्र पेश करने-वाला कर्मचारी।

पेशखेमा—संज्ञा पु० [फा०] १. फौज का वह सामान, जो पहले से ही आगे भेज दिया जाय। २. किसी बात या पटना का पूर्व लक्षण। ३. फौज का अलग हिस्सा। हराबल।

पेशगी—संज्ञा स्त्री० [फा०] वह धन, जो किसी को कोई काम करने के लिए पहले ही दे दिया जाय। अगोड़ी। अगाऊ। अग्रदत्त। अग्रिम।

पेशाबंद—संज्ञा पु० [फा०] चारजामे का बधन।

पेशाबंदी—संज्ञा स्त्री० [फा०] पहले से की हुई बचाव की युक्ति या प्रवन्ध।

पेशारज—संज्ञा पु० पत्थर-ईंट ढोनेवाला भजदूर।

पेशावा—संज्ञा पु० १. [फा०] नेता। सरदार। अग्रगण्य। २. महाराष्ट्र-साम्राज्य के प्रधान-मन्त्रियों की उपाधि।

पेशवाई—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी माननीय पुरुष के आने पर आगे बढ़कर उसका स्वागत करना। अग्रदानी। २. पेशवाओं की शासन-प्रणाली। ३. पेशवा का पद या कार्य।

पेशवाज—संज्ञा स्त्री० [फा०] वेश्याओं या नर्तकियों का धाँधरा, जिते वें नाचते समय पहनती है। नाचने के समय का पहनावा।

पेशा—संज्ञा पु० [फा०] व्यवसाय। जीविका। उपार्जन करने का कार्य। उद्यम।

पेशान्ती—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. माया। ललाट। २. भाग्य। निस्मृत।

पेशाब—संज्ञा पु० [फा०] मूत। मूत्र।

मुहा०—पेशाब करना=१. मूतनी। २. अप्रिय (किसी वस्तु की) तुच्छ समझना।

पेशाबखाना—संज्ञा पु० [फा०] मूत्रालय। पेशाब करने का स्थान।

पेशावर-संज्ञा पु० [पा०] १. किंगी प्रकार का पेशा करनेवाला। व्यवसायी। व्यापारी।  
 २. पश्चिमोत्तर-प्रदेश का एक नगर।  
 पेशी-संज्ञा स्त्री० [पा०] १. मुक्दमे की सुनवाई। २. सामने होने की त्रिया या भाव।  
 ३. पथ। ४. तलवार की म्यान। ५. अण्ड।  
 ६. गर्भाशय। ७. मागपेशी। शरीर के भीतर माग की गुत्थी।  
 पेशीनगोई-संज्ञा स्त्री० [पा०] भविष्य-वचन। आगे की बात कहना।  
 पेश्तर-त्रि० वि० [पा०] पूर्व। पहले।  
 पेयण-संज्ञा पु० पीतना। चूर्ण करना।  
 माटना।  
 पेयणीय-वि० पीमने योग्य।  
 पेयता-त्रि० सं० दे० "पेयता"।  
 पै\*-अव्य० (पहें) पास।  
 पैग\*-संज्ञा स्त्री० दे० "पैग"।  
 पैजनिमा-संज्ञा स्त्री० १. दे० "पैजनी"।  
 स्त्रिया या वस्त्रों के पैरो में पहनने का भूत-भूत बजनेवाला एक गहना। पायजैव। २. भौंक। भौंकर। ३. बैलगाड़ी में धुरे की लकड़ी।  
 पैजनी-संज्ञा स्त्री० दे० "पैजनिमा"।  
 पैठ-संज्ञा स्त्री० १. हाट। बाजार।  
 २. दुकान। ३. बाजार लगने का दिन।  
 पैठरी-संज्ञा पु० दुकान। बाजार या दुकान का स्थान।  
 पैठ-संज्ञा पु० १. डग। पग। कदम। २. पगडंडी। मार्ग। पथ। रास्ता।  
 पैठा-संज्ञा पु० १. रास्ता। पथ। मार्ग।  
 २. धुडाल। अस्तबल। ३. प्रणाली।  
 मुहा०-पैठे परना=पीछे पडना। बार-बार लग करना।  
 पैत\*†-संज्ञा स्त्री० दांव। बाजी।  
 पैती-संज्ञा स्त्री० भूरा का छल्ला, जो आठ आदि बर्म करते समय उँगली में पहनते हैं। पवित्री।  
 पै\*†-अव्य० १. परतु। पर। लेकिन।  
 २. निश्चय। अवश्य। जरूर। ३. वाद। अनंतर। ४. निवट। पास। समीप। ५. प्रति। प्रोर। तरफ।

प्रत्य० १. अधिवरण-मूत्र एर विभक्ति।  
 पर। ऊपर। २. वरणमूत्र विभक्ति।  
 ने। डाग।  
 गशा स्त्री० ऐर। दांप। मुक्क।  
 गजा पु० दे० "गय"। पेय पदार्थ।  
 यो०-जो पै=यदि। अगर। तो पै=तो।  
 फिर। उम अवस्था में।  
 पैकरमा\*†-संज्ञा स्त्री० दे० "परिग्रमा"।  
 पैकार-संज्ञा पु० छोटा व्यापारी। फेरी-वाला। फुटकर मोटा बेचनेवाला।  
 पैकेट-संज्ञा पु० [अंग्रे०] छोटा पुलिन्दा।  
 पैलाना-संज्ञा पु० दे० "पागाना"।  
 पैणवर-संज्ञा पु० [पा०] ईश्वर का दूत। धर्म-प्रवर्तक। मनुष्यों के पाम ईश्वर का सदेश पहुँचानेवाला। ईसा, मुहम्मद।  
 पैग्राम-संज्ञा पु० [पा०] सदन। खबर।  
 पैज\*-संज्ञा स्त्री० १. प्रतिज्ञा। प्रण।  
 टेक। हठ। २. प्रतिद्विष्टता। होड़।  
 लागडाँट।  
 पैजामा-संज्ञा पु० दे० "पायजामा"।  
 पैजार-संज्ञा स्त्री० [पा०] जूता। जोडा।  
 यो०-जूती पैजार=१ जूते से मार-पीट।  
 जूता चलना। २. लड़ाई-भगडा।  
 पैडोल-संज्ञा पु० (अंग्रे०) १. सैनिक का रक्षा के लिए घूम घूमकर पहरा देना। २. घूम-घूमकर पहरा देनेवाला सिपाही।  
 पैठ-संज्ञा स्त्री० घुसने का भाव। दखल।  
 प्रवेश। पहुँच। गति।  
 पैठना-क्रि० अ० प्रविष्ट होना। घुसना।  
 प्रवेश करना।  
 पैठाना-क्रि० सं० प्रवेश कराना। भीतर ले जाना। घुसाना।  
 पैठार\*†-संज्ञा पु० १. पैठ। प्रवेश। २. द्वार। दरवाजा। फाटक।  
 पैठारी†-संज्ञा स्त्री० १. पैठ। प्रवेश। २. पहुँच। गति।  
 पैडो-संज्ञा स्त्री० सीढ़ी।  
 पैतरा-संज्ञा पु० १. चलने की रीति। २. तलवार चलाने या कुश्ती लड़ने में घूम-फिरकर पैर रखने की मुद्रा। बार करने का ढग।

पंताना-सज्ञा पु० पार्यंता ।  
 पंतुक-वि० पितृ-सवधी । पिता का घन ।  
 वपीनी । पृश्नीनी । पूर्वजो का ।  
 पंदत्त-वि० पैरो से चलनेवाला ।  
 सज्ञा पु० १. पदाति । पैदल सिपाही ।  
 २. पार्व-पार्व चलना । पादचारण ।  
 त्रि० वि० पार्व-पार्व । पैरो से ।  
 पैदा-वि० [फा०] १. प्रसूत । उत्पन्न । जन्मा  
 हुआ । २. प्राप्त । आविर्भूत । ३. घटित ।  
 ४. प्राप्त । वमाया हुआ । अजित ।  
 पुंमज्ञा स्त्री० भ्रामदनी । लाभ । प्राय ।  
 पैदाइश-सज्ञा स्त्री० [फा०] जन्म । उत्पत्ति ।  
 पैदाइशी-वि० [फा०] १. जन्म का । जन्म  
 से ही । २. पुराना । ३. प्राकृतिक ।  
 स्वाभाविक ।  
 पैदावार-सज्ञा स्त्री० [फा०] अन्न आदि जो  
 सत में बोने से प्राप्त हो । फसल । उपज ।  
 पैना-सज्ञा पु० छोटी नहर । नाली । खेतों  
 में पानी ले जाने के लिए छोटी नहर ।  
 पैना-वि० [स्त्री० पैनी] धारदार । तेज ।  
 तीक्ष्ण ।  
 सज्ञा पु० १. हलचाहो की चैल हाँवने की  
 छोटी छड़ी । २. कोट्टे का नुकीला छड़ ।  
 पैनाना-त्रि० स० तेज कराना । धार  
 दिलवाना । तीक्ष्ण कराना ।  
 पैमाइश-सज्ञा स्त्री० [फा०] मापने की  
 क्रिया । माप ।  
 पैमाना-सज्ञा पु० मानदंड । मापने का  
 औजार या साधन । मापने का परिमाण ।  
 पैमात्त\*पुं-वि० दे० "पामात्त" । नष्ट ।  
 पैयी\*सज्ञा स्त्री० पार्व । पैर ।  
 पैया-सज्ञा पु० १. बिना सत का अनाज का  
 दाना । खोखला दाना । खुकल । निस्सार ।  
 २. दीन-हीन । निर्धन ।  
 पैर-सज्ञा पु० पाँव । पद । चरण । यह  
 द्रव्य, जिससे प्राणी चलते हैं ।  
 पैरगाडी-सज्ञा स्त्री० पैरो से चलाई जाने-  
 वाली गाड़ी । जैसे, बाइसिकिल ।  
 पैरना-त्रि० अ० तैरना ।  
 पैरवी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. पक्ष लेना ।  
 पक्ष का मण्डन । २. ढीठ धूप । कोशिश ।

उद्योग । ३. अनुगमन । अनुसरण । ४.  
 विनती ।  
 पैरयोकार-सज्ञा पु० [फा०] पैरवी करने-  
 वाला । पैरोवार ।  
 पैरा-सज्ञा पु० १. पड़े हुए चरण । पौरा ।  
 २. किसी ऊँची जगह चढ़ने के लिए लक-  
 डियों के बल्ले आदि रखकर बनाया हुआ  
 रास्ता ।  
 पैराई-सज्ञा स्त्री० तैरने की क्रिया या भाव ।  
 तैरना । तैरने की रीति ।  
 पैराक-सज्ञा पु० तैराक । तैरनेवाला ।  
 अच्युती तरह तैरना जाननेवाला ।  
 पैराप्राक-सज्ञा पु० (अप्रे०) वायव्यो  
 का समूह ।  
 पैराय-सज्ञा पु० इतना पानी जिसे केवल  
 तैरकर ही पार कर सकें । गहरा जल ।  
 डुबाव ।  
 पैरागूद-सज्ञा पु० (अप्रे०) दे० "छतरी" । एक  
 प्रकार का छाता, जो हवाई जहाज से धीरे  
 धीरे जमीन पर उतरने में काम आता है ।  
 पैरी\*सज्ञा स्त्री० दे० "पीडी" । दे०  
 "पैडी" ।  
 पैरोकार-सज्ञा पु० दे० "पैरवीवार" ।  
 पैरान-सज्ञा पु० [स्त्री० पैली] मिट्टी या  
 काठ का एक बड़ा बरतन । अन्न नापने का  
 एक पात्र । बड़ी पैली ।  
 पैवद-सज्ञा पु० [फा०] १. चकती । थिंगली ।  
 जोड़ । २. किसी पेड़ की टहनी को  
 उरी जाति के दूसरे पेड़ की टहनी में जोड़-  
 कर बाँधना, जिससे फल बढ़ जायें या उनमें  
 नया स्वाद आ जाय । कलम बाँधना ।  
 पैवदी-वि० [फा०] पैवद लगाकर पैदा किया  
 हुआ (फल आदि) ।  
 पैवस्त-वि० (द्रव पदार्थ) जो भीतर घुसकर  
 सब भागों में फैल गया हो । सोखा हुआ ।  
 समाया या पैठा हुआ ।  
 पैशाच-वि० पिशाच-सवधी ।  
 पैशाच विवाह-सज्ञा पु० आठ प्रकार के  
 विवाहों में से एक, जो सोई हुई बच्चा या  
 हरण करके या भदोन्मत्त बच्चा को फुसला-  
 कर छल से किया गया हो ।

पेशाबिष-वि० पेशाबो का। घोर घोर  
बीमरस। राक्षसी।

पेशाबी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की प्रारुत  
भाषा।

पेशुन्य-सज्ञा पु० घुगुसखोरी। छल। दुष्टता।  
परनिन्दा।

पैसना†\*—वि० ध० प्रवेश करना। घुसना।  
पेंठना।

पैसरा-सज्ञा पु० १. भभट। बरेंडा।  
२ व्यापार। ३. प्रयत्न।

पैसा-सज्ञा पु० १. ताँबे का सिक्का, जो एक  
आने का चौथा भाग होता है। २. धन।  
द्रव्य। रोक्ड।

वि० पैसेवाला। धनी। मालदार।

मुहा०—पैसा उठाना=१. बहुत खर्च करना।  
२. ठगना। चुराना। पैसा खाना=विश्वास-  
घात करने का लेना या दवा बैठना।

पैसे का मुँह देखना=रुपए का विचार पर  
खर्च न करना। पैसा डुबोना=धन नष्ट  
करना। पाटा उठाना। पैसा टुबना=

धन मारा जाना। घाटा होना। पैसा  
लगाना=खर्च करना। पैसे से दरवार  
बाँधना=रिस्सत या धूस देकर मकामता  
शाम कराना। पैसे को धूल समझना=  
अधाधुन्य खर्च करना।

पैसार†—सज्ञा पु० प्रवेश। पेंठ।

पैसिजर-सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] मुसाफिरो को  
ले जानेवाली रेलगाड़ी।

पैहारी-वि० केवल दूध पीकर रहनेवाला  
(साधु)।

पौकना—वि० ध० १. पतला पाखाना फिरना।  
२. बहुत डर जाना।

पोका-सज्ञा पु० फतिगा। पीघो पर उड़ने-  
वाला फतिगा। बोका।

पोगली-सज्ञा स्त्री० चाक पर से दुबारा  
उतारी गई गरिया। पोगी।

पोगा-सज्ञा पु० [स्त्री० पोगी] बांस की  
नली। चागा। पाँच की नली।

वि० १ पोला। २ मुँह।

पोछ†—सज्ञा स्त्री० दे० 'पूछ'।

पोछन-सज्ञा स्त्री० भाडन। किसी वस्तु का

बचा हुआ धन, जो पाछने में निपत्रे।  
पोंछना-वि० ग० भाटना। माफ करना।  
सज्ञा पु० [स्त्री० पोंछनी] पोंछने का  
कपड़ा।

पोंटा†—सज्ञा पु० नासिका का मल। छिनक।

पोंटी-सज्ञा स्त्री० एक छोटी मछली।

पोछा-सज्ञा पु० १. साँप का बच्चा। २. दूध  
पीनेवाला शिशु। दुधमुह। बालक।

पोछाना-वि० स० १. पाने या शाम दूसरे  
से कराना। २. रोट्टी हाथ से बनाकर  
सैकने के लिए देना।

पोछा-सज्ञा स्त्री० दो पैर फँकते हुए घोंटे  
की दौड़। गरपट चाल।

पोइस-सज्ञा स्त्री० गरपट दौड़।

अव्य० १. देखो। २. हटो। बचो।

पोई-सज्ञा स्त्री० १. एक लता, जिमकी  
पत्तियों से साग घीर पकीडियाँ बनती  
हैं। २. गन्ने का बल्ला। भ्रूर।

पोल-सज्ञा पु० दे० "पोल"। पालने-पोसने  
का सम्बन्ध।

पोलना\*—वि० स० दे० "पोसना"। पालना।  
पोषण करना।

पोखर या पोखरा-सज्ञा पु० [स्त्री० पोखरी]  
खोदकर बनाया गया तालाब। ताल।

पोखरी-सज्ञा स्त्री० छोटा तालाब। तलेया।

पोगड-सज्ञा पु० १ पाँच से दस वर्ष तक की  
श्रवस्था का बालक। २. बटु, जिसका  
कोई धम छोटा, बड़ा या अधिब हो।

पोच-वि० १ क्षुद्र। लुच्छ। निवृष्ट।  
धुरा। २. अशक्त। होन। शीण।

पोचो\*—सज्ञा स्त्री० नीचता। हेटी। बुराई।

पोछना—क्रि० स० पोंछना। साफ करना।

पोट-सज्ञा स्त्री० १ गठरी। पोटली।  
मोटरी। २. डेर। अटाला। ३. कफन के  
ऊपर का वस्त्र।

सज्ञा पु० १. मकान की नींव। २. मेल।

पोटना\*—क्रि० स० १ समेटना। बटारना।  
हथियाना। २. बात में लाना। फुसलाना।

पोटरी†—सज्ञा स्त्री० दे० "पाटली"।  
गठरी।

पोटला-सज्ञा पु० गट्ठर। गठी गठरी।

पोटली-सज्ञा स्त्री० छोटी गठरी। छोटा बकुचा।

पोटा-सज्ञा पु० १ पेट की धेली। उदराशय। २ साहस। सामर्थ्य। ३. समाई। श्रोकत। विसात। ४. आँख की पलक। ५. उँगली का छोर। ६. चिड़िया का बच्चा।

पोटास-सज्ञा पु० (अग्ने०—पोटेशियम) जलाए हुए पीघो की राख से निकाला गया एक क्षार, जिससे कुयो आदि का पानी साफ करते हैं।

पोढ-वि० पुष्ट। बलवान्।

पोढा-वि० [स्त्री० पोढी] १ दृढ़। पुष्ट। मजबूत। २ बठिन। बड़ा। कठोर।

पोड़ाई-सज्ञा स्त्री० १. कड़ाई। पुष्टता। २. साहस।

पोढाना-वि० अ० दृढ़ होना। मजबूत होना। पक्का पडना।

फि० स० पक्का करना। दृढ़ करना।

पोत-सज्ञा पु० १. पशु, पक्षी आदि का छोटा बच्चा। २. शिशु। बच्चा। ३. छोटा पोधा। ४. भिल्लू-रहित गर्भस्थ पिंड। ५. कपड की बुनावट। ६. नौका। बड़ी नाव। ७. जहाज। समुद्रयान। ८. ढग। ढब। ९. प्रवृत्ति। १०. बारी। दाँव। ११. जमीन का लगान। कर। मालगुजारी। १२. मवान की नीव।

सज्ञा स्त्री० १. माला की गुरिया या छोटा दाना। २. काँच की गुरिया।

पोतदार-सज्ञा पु० १. खजानगी। २. तहसीलदार। ३. पारखी। खजानो म रप्या परखनेवाला। व्यक्ति-विशेष जिसके पास लगान का रूपया जमा विशा जाय।

पोतना-वि० स० लेप करना। किसी पदार्थ को किसी वस्तु पर ऐसा लगाना कि वह उस पर जम जाय। मिट्टी, गोबर, चूने आदि से लोपना। दीवाल पर चूना लगाना।

सज्ञा पु० वह कपडा, जिसमे कोई चीज पोती जाय। पोता।

पोतला-सज्ञा पु० पराँठा।

पोता-सज्ञा पु० १. पौत्र। बेटे का बेटा। पुत्र का पुत्र। २. पोत। लगान। भूमिकर। ३. अडकोप। ४. यज्ञ के ऋत्विजों में से एक। ५. वायु। ६. विष्णु। दे० "पोटा"। ७. पोतने का कपडा। ८. पोतने की घुली हुई मिट्टी।

पोताच्छादन-सज्ञा पु० तम्बू।

पोती-सज्ञा स्त्री० १. पौनी। पुत्र की पुत्री। २. पुतारा देने की क्रिया। ३. मिट्टी का लेप।

पोत्र-सज्ञा पु० १. सूअर का साँग। २. यज्ञ। ३. नाव। ४. एक यज्ञपात्र।

पोत्रायुध-सज्ञा पु० सूअर।

पोत्री-सज्ञा पु० सूअर।

पोथा-सज्ञा पु० १. कागजों का गड्ढा। २. बड़ी पोथी। बड़ी पुस्तक।

पोथी-सज्ञा स्त्री० पुस्तक।

पोदना-सज्ञा पु० १. एक छोटी चिड़िया। २. नाटा आदमी।

पोबीना-सज्ञा पु० दे० "पूदीना"।

पोहार-सज्ञा पु० दे० "पोतवार"।

पोना-वि० स० १. रोटी बनाना (हाथ से)। २. पिरोना। गूथना।

पोप-सज्ञा पु० [अग्ने०] ईसाई धर्म के कैथोलिक सम्प्रदाय का सबसे बड़ा गुरु।

पोपला-वि० १. पचवा और सिकुड़ा हुआ। खोखला। २. बिना दाँत का। जिसके मुँह में दाँत न हों।

पोपलाना-वि० अ० पोपला होना।

पोपलीला-सज्ञा स्त्री० पोपो और धर्म-पुरोहितों के आडम्बर और सीधे-सादे धर्मनिष्ठ लोगों को अपने जाल में फँसाने-वाली बातें या कार्य।

पोपा-सज्ञा पु० १. नरम पोधा। २. साँव का बच्चा। सँपोला।

पोर-सज्ञा स्त्री० १. गाँठ। ग्रन्थि। २. उँगली की दो गाँठों के बीच का भाग। ३. ईख, राँस आदि की गाँठ। ४. पीठ। रोठ।

पोरा-सज्ञा स्त्री० १. पोर। २. तारडी का मोटा बुन्दा। ३. माटा आदमी।

पोरिया—सज्ञा स्त्री० एर गहना ।  
 पोल—सज्ञा पु० १. शयन स्थान । अश्वशाला ।  
 माली जगह । २. रोगनिवारण । मार-हीनाता ।  
 ३. फाटक । प्रवेशद्वार । ४. महल । शौच ।  
 मुहा०—(वित्री की) पोल गुलना=छिपा  
 हुआ दोष या घुसई प्रकट हो जाता ।  
 भडा पटना ।  
 पोला-वि० (स्त्री० पोली) १. छूँछा । सूख ।  
 रीता । माली । २. नि सार । तत्त्वहीन ।  
 गुम्फ । खोखला । ३. जो भीतर से बड़ा  
 न हो । पुसपुला । नरम । धोमल ।  
 पोस्तिटिकल-वि० (अप्रे०) राजनैतिक ।  
 राजनीति-गम्यन्धी ।  
 पोतिया—सज्ञा पु० दे० “पोरिया” । दरवान ।  
 पोलो—सज्ञा पु० (अप्रे०) घोड़े पर चढ़कर  
 खेला जानेवाला गेद का एक खेल । चीगान ।  
 पोशाक—सज्ञा स्त्री० [फा०] पहनने के  
 वस्त्र । पहनावा ।  
 पोशोदा-वि० [फा०] गुप्त । छिपा हुआ ।  
 पोष—सज्ञा पु० १. पोषण । पुष्टि । २.  
 उन्नति । अभ्युदय । बढ़ती । वृद्धि । ३.  
 धन । ४. सुताप । तुष्टि ।  
 पोषक-वि० १. पालक । पालनेवाला । २.  
 बढ़ानेवाला । वर्द्धक । सहायक ।  
 पोषण—सज्ञा पु० (वि० पोषित, पुष्ट,  
 पोषणीय, पोष्य) १. पालन । रक्षण । २.  
 वर्द्धन । बढ़ती । ३. पुष्टि । ४. सहायता ।  
 पोषना—नि० स० पालना । रक्षा करना ।  
 पोषित-वि० पाला हुआ ।  
 पोष्य-वि० पालने योग्य । पालनीय ।  
 सज्ञा पु० भृत्य । नौकर ।  
 पोष्यपुत्र—सज्ञा पु० १. पुत्र के समान पाला  
 हुआ लड़का । २. दत्तक पुत्र ।  
 पोस—सज्ञा पु० पालनेवाले के साथ प्रेम या  
 हेल-मेल । पालने की इतगत ।  
 पोसना—नि० स० १. पालन पोषण करना ।  
 २. कारण देकर अपनी रक्षा में रखना ।  
 पोस्त—सज्ञा स्त्री० [अप्रे०] जगह । पद ।  
 नौकरी । २. छाकवाना ।  
 पोस्त आफिस्त—सज्ञा पु० [अप्रे०] डाकघर ।  
 डाकखाना ।

पोस्त काई—सज्ञा पु० [अप्रे०] पत्र आदि  
 लिखने का काई, जिस पर डाकखाने का  
 टिकट लगाया है ।  
 पोस्तमार्टम—सज्ञा पु० [अप्रे०] सारा को  
 चीरफाड़ कर की जानेवाली परीक्षा ।  
 पोस्तपास्टर—सज्ञा पु० [अप्रे०] डाकघर का  
 गश्तमे बड़ा पत्रवाही ।  
 पोस्तमन—सज्ञा पु० [अप्रे०] डारिया ।  
 बिट्ठीरस्ता ।  
 पोस्टर—सज्ञा पु० [अप्रे०] बहुत मोटे अक्षरों  
 में छपा हुआ बड़ा विज्ञापन । दे०  
 प्रज्ञापक ।  
 पोस्टर गार्ड—सज्ञा पु० [अप्रे०] वह पुस्तक,  
 जिसमें डाकखाने की मच वाता का वर्णन  
 और नियम आदि रहते हैं ।  
 पोस्टेज—सज्ञा स्त्री० [अप्रे०] डाकगर्ब । डाक  
 का महसूल ।  
 पोस्त—सज्ञा पु० १. [फा०] छिन्का । २.  
 खाल । चमड़ा । ३. अफीम का पीवा ।  
 पान्ता ।  
 पोस्ता—सज्ञा पु० [फा०] एक पीवा, जिसमें से  
 अफीम निकलती है ।  
 पोस्ती—सज्ञा पु० १. [फा०] पोस्ते की डांडी  
 पीमकर पीनेवाला नशेवाज । २. आलसी ।  
 सुस्त । ३. कागज का लिखाना ।  
 पोस्तीन—सज्ञा पु० १ [फा०] पशुओं के गरम  
 और मुलायम रोएँवाली खाल का बना हुआ  
 पहनावा । २. खाल का बना हुआ कौट ।  
 पोहना—कि० स० १. परोना । सूँघना ।  
 २. छद्मना । ३. लगाना । पोतना । ४.  
 जड़ना । घँसाना । घुसाना । ५. पीसना ।  
 घिसना । ६. रोटी बनाना । दे० “पोता” ।  
 वि० १. भेदनेवाला । २. घुमनेवाला ।  
 पोहमी\*—सज्ञा स्त्री० दे० “पुहमी” । पूखी ।  
 भूमि ।  
 पोहरा—सज्ञा पु० चरहा । पशुओं का चारा ।  
 पोहरा—सज्ञा पु० पशु ।  
 पोहिमा—सज्ञा पु० नरवाहा ।  
 पौधा—सज्ञा पु० साढ़े पाँच का पहाड़ा ।  
 पौडा—सज्ञा पु० एक प्रकार का माटा  
 गन्ना ।

पौडाई-वि० पौडे के रंग का । पीलापन लिये हुए ।  
 पौडी-सज्ञा स्त्री० ड्योढी ।  
 पौड़-सज्ञा पु० एक प्रकार की ईख । पौडा ।  
 पौड़क-सज्ञा पु० १. मोटा गन्ना । पौडा ।  
 २. एक पतित जाति । ३. पुड़ू जो जरासन्ध का सवधी पुड़ू देश का एक राजा था और जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था ।  
 पौड़ना-त्रि० स० दे० "पौडना" ।  
 पौरना-त्रि० अ० तैरना ।  
 पौरि-सज्ञा स्त्री० दे० "पौरि", "पौरी" ।  
 द्वार । ड्योढी ।  
 पौरिया-सज्ञा पु० द्वारपाल ।  
 पौ-सज्ञा स्त्री० १. पोसला । पोसाला ।  
 प्याऊ । २. प्रकाश की रेखा । विरण ।  
 ज्योति । ३. पेर । ४. जड़ ।  
 सज्ञा स्त्री० पोस की एक चाल या दाव ।  
 मुहा०-पौ पटना=सबरे का उजाला दिखाई पड़ना । सबरा होना । पौ बारह होना =जीत का दांव पड़ना । वन आना ।  
 लाम का अक्सर मिलना ।  
 पौआ-सज्ञा पु० दे० 'पौवा' ।  
 पौगड-सज्ञा पु० बालक की पाँच वर्ष से दस वर्ष तक की अवस्था ।  
 पौडना-त्रि० अ० दे० 'तैरना' ।  
 पौडना-त्रि० अ० १ भूना । आगे-पीछे हिलना । २ लटना । साना ।  
 पौडाना-त्रि० स० १ दुलाना । झुलाना । झुधर से उधर हिलाना । २ लटाना । सुलाना ।  
 पौत्तलिक-सज्ञा पु० मूर्तिपूजक ।  
 वि० पुतली का ।  
 पौत्र-सज्ञा पु० [स्त्री० पोत्री] पुत्र का पुत्र ।  
 पाना ।  
 पोत्री-सज्ञा स्त्री० पुत्र की बन्धा । पोनी ।  
 पौद-सज्ञा स्त्री० १ छोटा पीया । २ एक स्थान से उगाइकर दूसरे स्थान पर लगाया जानवाला छोटा पीया । ३. सतान ।  
 ४. दे० "पौवग" ।  
 पौदर-सज्ञा स्त्री० १ पदचिह्न । २ पग-टर्दी । ३ बट मार्ग जिस पर माट सींचने-मान चैल चन ।

पौदा-सज्ञा पु० पीया । नया पेड़ । छोटा पेड़ ।  
 पौध-सज्ञा स्त्री० दे० "पौद" ।  
 पौधा-सज्ञा पु० १ नया निकलता हुआ पेड़ । वृक्ष का अंकुर । २ क्षुप । छाटा पेड़ ।  
 पौन पुनिक-वि० फिर-फिर होनेवाला । पुन-पुन या बार-बार होनेवाला ।  
 पौन-सज्ञा पु०, स्त्री० १. हवा । पवन । २. प्राण । जीव । जीवात्मा । ३. भूत । प्रेत ।  
 वि० तीन चौथाई अंश ।  
 पौना-सज्ञा पु०, १. पौन का पहाडा । तीन चौथाई । २. काठ या लोहे की एक प्रकार की बड़ी बरछी । भरना । लोहे का एक बरतन, जिससे सेव तथा पकौड़ी आदि छानी जाती है । ३. हाथ से रोटी बनाना ।  
 पौनार-सज्ञा स्त्री० पप्पनाल । पमल के फूल की नाल या डठल ।  
 पौनी-सज्ञा स्त्री० १. नाई, बारी, धोबी आदि, जो विवाह आदि उत्सवों पर इनाम पाते हैं । २. छोटा पीना ।  
 पौने-वि० एक चौथाई कम । किसी सरया का तीन चौथाई । जैसे, पौने चार ।  
 पौसान-सज्ञा पु० १ दे० 'पवमान' । २ जलाशय ।  
 पौर-वि० १ पुर-सवधी । नगर का । २ पूर्व दिशा में उत्पन्न ।  
 सज्ञा स्त्री० दे० 'पौरि', 'पौरी' ।  
 पौरक-सज्ञा पु० घर के बाहर का वाग ।  
 पौरजन-सज्ञा पु० नगरनिवासी । नागरिक ।  
 पौरजनपद-सज्ञा पु० प्राचीन भारतीय राज्य-तन्त्र में पुर या नगर प्रौर जनपद या वाकी देश के प्रतिनिधियाँ की समाज का सम्मिलित रूप ।  
 पौरलेख-सज्ञा पु० प्राचीन भारतीय राजतन्त्र में वह अधिकारी, जिसके पास पुर या नगर के लेख्या या दस्तावेजों की नग्न और नियमन रहता था ।  
 पौरय-सज्ञा पु० १ पुर का बगज । पुर की सन्तान । २ उत्तर-पूर्व का एक देश ।  
 (मरानास्त)

पौरपुत्र-गजा पु० निर्वा पुर या नगर क प  
यद् मोन प्रधात प्रतिनिधि, जा प्राणि  
भारतीय राज्यात्र म नगर की व्यवस्था से  
गम्यन्ध गमनवात विनिष्ट भाये बरने से।  
पोस्तस्य-गजा पु० एष नगर या एष र्यान  
पर रत्न स उत्तम मित्रता।

पोस्तश्री-गजा स्त्री० धन्त पुरवाति। नगर  
की स्त्री।

पोरा-गजा पु० पड़े हुए वरण। पैरा।

पोराण-वि० पुराण-सम्बन्धी।

पोराणिक-वि० [स्त्री० पोराणिकी] १  
पुराणयत्ता। २ पुराण-सम्बन्धी। ३  
प्राचीन काल का। पूर्वकापीन।

गजा पु० १ प्राण की कथा सुनायेवाला।  
२ व्यास।

पोरि-गजा स्त्री० द्वार। टपाड़ी।

पोरिया-गजा पु० द्वारपाल। दरवान।

पोरो-गजा स्त्री० १ द्वार। टपोड़ी। २  
सीड़ी। ३ पैड़ी। लडाऊँ।

पोरवित्त-गजा पु० पुनयचन।

पोरख\*-गजा पु० दे० "पोरख"।

पोरूप-गजा पु० १ पुरुषत्व। पुरुष की  
शक्ति। पुरुषार्थ। बल। २ साहस।  
पराक्रम। ३. उद्यम। उत्थोष।

वि० पुरुष-सवधी।

पोरवेय-वि० १ पुरुष-सवधी। २. पुरुष-  
निमित्त। आदमी का किया हुआ।

गजा पु० १ पुरुष का कर्म। २. आध्या-  
त्मिक।

पोरव्य-गजा पु० १. साहस। २ पराक्रम।

पोरवूत-गजा पु० बख्त।

पोरोगव-गजा पु० पावसाला के अध्यक्ष।

पोरोहित्य-गजा पु० पुरोहिताई। पुरोहित  
का कर्म।

पोरेव-गजा पु० १. नगर-सवधी। २ नगर  
की समीपी देश, गाँव आदि।

पोरुणक-गजा पु० एक प्रकार का वैदिक  
कृत्य।

पोरुमास-गजा पु० पूर्णमासी को किया जान-  
वाला एक यज्ञ।

। स्त्री० पूर्णमासी। पूर्णिमा।

पोरुपर्व-गजा पु० १. पूर्वापर या भाग।  
भाग-शील होने की क्रिया। २. अनुक्रम।  
सिलसिला।

पोरुपुत्र-वि० पूर्वापुत्र की क्रिया या पूर्वापुत्र-  
गम्यन्धी।

पोरुव-वि० पूर्व में होनेवाला।

पोरु-गजा स्त्री० यज्ञ दरवाजा। नगर या  
दुर्ग का वश पाटण।

पोरुता\*-वि० ग० पाटना।

पोरुस्य-गजा पु० [स्त्री० पोरुस्यी] १  
पुनस्त्य ऋषि के वंशज। २ कुँवर। ३  
रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण। ४ पद।

पोरुस्यो-गजा स्त्री० पूर्णगता।

पोरुता-गजा पु० मिना मूँटी की खडाऊँ।

पोरुया-गजा पु० २० "पोरिया"। छाटी  
लडाऊँ।

पोली-गजा स्त्री० पीरी। टपाढो।

पोलोमी-गजा स्त्री० १. इद्राणी। २ भृगु  
ऋषि की पत्नी। पुलाम की कथा।

पोरु-गजा पु० १ एक मेर का चौथाई  
भाग। पाव भर। २ बल बरतन, जिगमो  
पाव भर पानी, दूध आदि ममा जाए।

पोर-गजा पु० १२ महीना के धनर्गन दसवाँ  
महीना। पूस।

पोरु-वि० पुष्टिवाक्य। बलवीर्यदायक।

पोरु-वि० पुष्प-गम्यन्धी।

गजा पु० फूलों से बनाया गया। मय।  
पराग।

पोरु-गजा पु० अनुमाजन।

पोरुता, पोसता-गजा पु० पिवाऊ। प्यासे  
व्यक्तियों का पानी पिाने का स्थान।

पोरुहारी-गजा पु० वरर दूध ही पीवर रहने-  
वाला व्यक्ति (साधु)। दुग्धाहारी।

प्याऊ-गजा पु० पोसता। सोसल। पोसरा।

प्याव-गजा पु० [फा०] गोन गठिवाला एक  
कद। इसकी गंध बहुत उग्र और अभ्रिय  
होती है।

प्यासी-वि० [फा०] हलवा गुलाबी रंग।

प्यादा-गजा पु० [फा०] १ पैदल। २ दूत।  
हरणार। सेवर। ३ शतरंज के खेल में  
एक गोदी।

प्यार-सज्ञा पु० प्रेम । प्रीति । स्नेह ।  
 मुहूर्त्त ।  
 प्यारा-वि० [स्त्री० प्यारी] १. प्रेमपात्र । प्रिय ।  
 स्नेही । २. सुन्दर या भला लगनेवाला ।  
 प्याला-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० प्याली]  
 कटोरा । चीनीमिट्टी का कटोरा । जाम ।  
 प्यायना†-क्रि० सं० दे० "पिलाना" । पान  
 कराना ।  
 प्यास-सज्ञा स्त्री० १. जल पीने की इच्छा ।  
 तृषा । तृष्णा । पिपासा । २. प्रबल  
 कामना । इच्छा ।  
 प्यासा-वि० पिपासित । तृषित । जिसे प्यास  
 लगी हो ।  
 प्यून-सज्ञा पु० [अग्ने०] प्यादा । चपरासी ।  
 सिपाही ।  
 प्यो†-सज्ञा पु० पति । स्वामी ।  
 प्योत्तर-सज्ञा पु० हाल की ध्याई हुई गाय या  
 भैंस का दूध ।  
 प्योत्तर†-सज्ञा पु० स्त्री के पिता का घर ।  
 मायका । पीहर ।  
 प्यौर\*-सज्ञा पु० पति । स्वामी । प्रियतम ।  
 प्रकप-सज्ञा पु० कँपकँपी ।  
 प्रकम्पन-सज्ञा पु० थरथराहट । कँपकँपी ।  
 प्रकम्पमान-वि० हिलनेवाला । थरथराने-  
 वाला । थरथराता हुआ ।  
 प्रकट-वि० १. विदित । २ उत्पन्न ।  
 आविर्भूत । ३ व्यक्त । स्पष्ट ।  
 प्रकटना\*-क्रि० अ० दे० "प्रगटना" ।  
 प्रकटित-वि० प्रकट किया हुआ । प्रकाशित ।  
 व्यपत ।  
 प्रकर-सज्ञा पु० १ फूले हुए कुसुम आदि ।  
 २ समूह । दल । ३ सहारा । सहायता ।  
 ४ अधिकार ।  
 प्रकरण-सज्ञा पु० १. उत्पन्न करना । २ जिक्र  
 करना । ३ धृतान्त । ४. प्रसंग ।  
 बिषय । ५. अध्याय । किसी ग्रन्थ के  
 छोटे-छोटे भागों में से कोई भाग । वाण्ट ।  
 ६ दृश्य काव्य के अन्तर्गत रूपक का एक  
 भेद ।  
 प्रकरणी-सज्ञा स्त्री० नाटिका ।  
 प्रचरी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का गीत ।

२ नाटक वा एक अंग । नाटक में  
 प्रयोजनसिद्धि के पाँच साधनों में से एक ।  
 ३ वह कथा-वस्तु जो थोड़े बाल तक  
 चलकर रुक जाय । ४. नाटक खेलने की  
 वेदी । चत्वरभूमि ।  
 प्रकर्ष-सज्ञा पु० १. उत्तमता । २ उत्कर्ष ।  
 ३. अधिकता । बहुतायत । बाहुल्य ।  
 प्रकर्षणी-वि० उत्कर्ष करने के योग्य ।  
 प्रकला-सज्ञा स्त्री० एक कला (समय) वा  
 साठवाँ भाग ।  
 प्रकल्पना-सज्ञा स्त्री० स्थिर करना । निश्चित  
 करना ।  
 प्रकल्पित-वि० निश्चित ।  
 प्रकाड-वि० बहुत बड़ा । विस्तृत । विशाल ।  
 सज्ञा पु० १. वृक्ष का वह स्थान जहाँ से  
 डाल निकलती हो । २. शाखा । ३ वृक्ष ।  
 प्रकाम-वि० १. मनमाना । यथेष्ट । २.  
 अति । प्रचुर ।  
 सज्ञा पु० कामना । इच्छा ।  
 प्रकाम्य-वि० दे० "प्राकाम्य" ।  
 प्रकार-सज्ञा पु० १. भेद । तरह । किस्म ।  
 भाँति । २. त्रम । ३. सदृशता । ४. पर-  
 कोटा । घेरा । शहर-पनाह ।  
 प्रकारान्तर-वि० दूसरी तरह । अन्य विधि  
 या भाँति । अन्य रीति ।  
 प्रकाश-सज्ञा पु० १. दीप्ति । आलोक ।  
 ज्योति । उजाला । २. तेज । चमक । ३.  
 विकास । अभिव्यक्ति । स्फुटन । प्रकट  
 होना । ४. विस्तार । ५. उदय । ६.  
 प्रसिद्धि । ख्याति । ७. ग्रन्थ या पुस्तक का  
 विभाग । ८. घाम । धूप ।  
 प्रकाशक-सज्ञा पु० १. प्रकाश करनेवाला ।  
 २. प्रकट या प्रसिद्ध करनेवाला । ३. किसी  
 पुस्तक को प्रकाशित करनेवाला ।  
 प्रकाशगृह-सज्ञा पु० वह ऊँची इमारत, विशेषतः  
 समुद्र में बनी हुई इमारत, जहाँ से बहुत प्रबल  
 प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलता हो ।  
 (अग्ने०—सादहाजस )  
 प्रकाशघुष्ट-सज्ञा पु० १. प्रकट रूप से घुष्टता  
 करनेवाला । २. घुष्टनायक । ३. घुष्टनायक  
 के दो भेदों में से एक ।

प्रकाशन-सज्ञा पु० १. प्रकाशित करने का काम । प्रकाशित करना । प्रकट करना ।  
२. फैलाना । प्रसिद्ध करना ।

प्रकाशमान-वि० १ चमकता हुआ । चमकीला । आलोकित । २ प्रसिद्ध । विख्यात ।

प्रकाशवान-वि० दे० "प्रकाशमान" ।

प्रकाश-वियोग-सज्ञा पु० वैद्य के मतानुसार वह वियोग, जो सब पर प्रवृत्त हो जाय । पूर्णरूप से व्यक्त वियोग ।

प्रकाश-सयोग-सज्ञा पु० वैद्य के मतानुसार वह सयोग, जो सब पर प्रवृत्त हो जाय ।

प्रकाशित-वि० १ प्रकाशयुक्त । चमकता हुआ । २ प्रकट । प्रसिद्ध । व्यक्त ।

प्रकाशो-सज्ञा पु० प्रकाशयुक्त ।

प्रकाश्य-वि० प्रकाशनीय । प्रवृत्त या प्रकाश करने योग्य ।

त्रि० वि० प्रवृत्त रूप से । स्पष्टतया । "स्वगत" का उलटा । (नाट्य)

प्रकाश\*-सज्ञा पु० दे० "प्रकाश" ।

प्रकाशना\*-त्रि० ग० १. प्रकाशित करना । उजला करना । २. प्रकट करना । व्यक्त करना ।

प्रकीर्ण-वि० १. बिखरा हुआ । २. अनेक प्रकार से मिश्रित । ३. विस्तृत ।

राज्ञा पु० १. अध्याय । प्रवरण । २. चँवर । ३. पागल । ४. उहड़ । ५. फूटकर बहना ।

प्रकीर्णक-सज्ञा पु० १. अध्याय । प्रवरण । २. चँवर । ३. विस्तार । ४. फूटकर या खुट । ५. मिश्रित । वह वस्तु, जिसमें भिन्न प्रकार की वस्तुओं की मिश्रण हो ।

प्रकीर्तन-सज्ञा पु० १. जाह से कीर्ति । घोषणा करना । २. वर्णन । बयान । प्रशंसा ।

प्रकीर्ति-वि० १. भाषित । बयान । उक्त । वर्णित । २. निरूपित ।

प्रकृष-सज्ञा पु० भाठ ताना या एक पल का मान ।

प्रकृषि-वि० वर्णित । भाष्य ।

प्रकृषो-सज्ञा स्त्री० श्री दुर्गा ।

प्रकृष-वि० [सज्ञा प्रकृषा, प्रकृष] १.

स्वाभाविक । यथार्थ । २. सच्चा । अमली । विकाररहित ।

सज्ञा पु० श्लेष अलंकार का एक भेद ।

प्रकृतता-सज्ञा पु० स्वाभाविक । यथार्थता । असंशयित ।

प्रकृति-सज्ञा स्त्री० १ स्वभाव । प्रवृत्ति । २ प्रधान गुण । तारीर । प्रधान प्रवृत्ति ।

३ कुदरत । ४ माया । ५ ईश्वर की शक्ति । ६ उत्पत्ति-स्थान । ७ अक्ष । ८.

स्वामी । ९ अमात्य । १० सुहृद् ।

११ कोष । १२ राष्ट्र । १३ दुर्ग ।

१४ पुरयात्ती । १५ समूह । १६ शक्ति ।

१७ परमात्मा । १८ पंचभूत । १९

प्रत्यय के पहले का भाग । २० सत्त्व, रज

और तम, इन तीन गुणों की साम्यावस्था ।

प्रकृति भाव-सज्ञा पु० १ स्वभाव । २. विचाररहित दो पदों की सन्धि का नियम ।

प्रकृतिविज्ञानशास्त्र-सज्ञा पु० वह विज्ञान, जिसमें प्राकृतिक बातों का विवेचन हो । जैसे वनस्पति, जीवजन्तु भूगर्भ आदि विषय ।

दे० "प्रकृति शास्त्र" ।

प्रकृति-शास्त्र-सज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसमें प्राकृतिक बातों (जैसे, पशु, वनस्पति, भूगर्भ आदि) का विचार किया जाय । प्रकृति-सम्बन्धी विद्या ।

प्रकृतिविद-वि० स्वाभाविक । नैसर्गिक । प्राकृतिक ।

प्रकृतिस्थ-वि० १ जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में हो । २ स्वाभाविक ।

प्रकृतिस्थ शय-सज्ञा पु० उत्तरायण से धारा हुआ नदी ।

प्रकृत्यजीर्ण-सज्ञा पु० स्वाभाविक अजीर्ण । प्रकृत्य-सज्ञा पु० १ श्रेष्ठ । उत्तम ।

उत्कृष्ट । मुख्य । २ प्राकृत्य । निचा हुआ ।

प्रकृत्यता-सज्ञा स्त्री० उत्तमता । प्रकृत्य-सज्ञा पु० परपाटा । पगिया ।

प्रकृत्यनाह ।

प्रकोप-सज्ञा पु० १ बहुत अधिक कोप । २ क्षाम । ३ चपलता । चंचलता ।

४ उत्तमता । ५ बीमारी बढ़ना । रोग की प्रवृत्ति । ६ शरीर के शूल, निष्ठ

का बिगड़ जाना, जिससे रोग उत्पन्न होता है।  
 प्रकोपन-सज्ञा पु० १. उत्तेजित करना। २. यत्प्रसन्न होना। बिगड़ना। ३. क्षोभ।  
 प्रकोष्ठ-सज्ञा पु० १. सदर फाटक के पास की कोठरी। कोठे के नीचे का घर। २. बड़ा अंगन। ३. हाथ की कलाई और कोहनी के बीच का भाग।  
 प्रक्रम-सज्ञा पु० १. उपक्रम। २. क्रम। मिलसिला। ३. अतिक्रम। उल्लंघन। ४. अनुष्ठान। आरम्भ। ५. उद्योग। ६. अवसर।  
 प्रक्रमण-सज्ञा पु० १. भली भाँति। घूमना। २. पार करना। ३. आरम्भ करना। आगे बढ़ना।  
 प्रक्रमभाग-सज्ञा पु० १. वाक्य में यथेष्ट क्रम न होने का एक दोष। २. व्यतिरिक्त। मिलसिला भग्न होना।  
 प्रफात-वि० १. शुरू किया हुआ। आरम्भ किया गया। २. अनुचित।  
 प्रक्रिया-सज्ञा स्त्री० १. प्रवर्णन। २. युक्ति। क्रिया। तरीका। ३. रीति। ४. प्रणाली। राजाघोष का चँवर छत्र आदि का धारण।  
 प्रक्लेद-सज्ञा पु० आर्द्रता। गीलापन।  
 प्रक्लेदत-सज्ञा पु० तर करना।  
 प्रक्ष-वि० पूछनेवाला।  
 प्रक्षरण-सज्ञा पु० भरना। बहना।  
 प्रक्षाल-सज्ञा पु० प्रामादित।  
 प्रक्षालन-सज्ञा पु० [वि० प्रक्षालित] जल से नुद्ध या साफ करना। धोना। पतारना।  
 प्रक्षाल्य-वि० धोने के योग्य।  
 प्रक्षिप्त-सज्ञा पु० १. फेंका हुआ। २. वाद में बढ़ाया अथवा मिलाया हुआ भाग।  
 प्रक्षेप, प्रक्षेपण-सज्ञा पु० १. फेंकना। डालना। त्यागना। छाड़ना। २. विसरना। छितारना। ३. ऊपर से मिलाना। बढ़ाना।  
 प्रक्षोभण-सज्ञा पु० बेचैनी। परवाह।  
 प्रक्षर-वि० [सज्ञा प्रक्षरणा] १. तीक्ष्ण। प्रचट। २. धारदार। पैना। ३. तरा। उग्र। ४. घोंटे की जाल या धारजाया।

प्रखरता-सज्ञा स्त्री० प्रखर होने का भाव। तेजी। उग्रता। तीक्ष्णता।  
 प्रखल-वि० बहुत बड़ा घुष्ट।  
 प्रख्या-सज्ञा स्त्री० १. प्रसिद्धि। २. बराबरी। उपमा।  
 प्रख्यात-वि० १. प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर। २. यशस्वी।  
 प्रख्याति-सज्ञा स्त्री० प्रसिद्धि।  
 प्रगड-सज्ञा पु० कंधे से कोहनी तक का भाग।  
 प्रगडी-सज्ञा स्त्री० प्राकार। बाहरी दीवार।  
 प्रगट-वि० दे० "प्रवट"।  
 प्रगटनार्थ-कि० अ० प्रवट होना। सामने आना। प्रत्यक्ष होना। प्रसिद्ध होना। १. प्रगटनार्थ-कि० स० प्रकट करना। प्रत्यक्ष करना।  
 प्रगति-सज्ञा स्त्री० आगे की ओर बढ़ना। अग्रसर होना। उन्नति।  
 प्रगतिवाद-सज्ञा पु० वह सिद्धान्त, जिसके अनुसार समाज, साहित्य आदि को बराबर आगे की ओर बढ़ाते रहना हितकर माना जाता है। आजकल साधारणतः इसका यही मतलब समझा जाता है कि प्राचीन या वर्तमान बातें दूधित अथवा गलत हैं और नई बात ग्रहण करना आगे बढ़ना है।  
 प्रगतिशील-सज्ञा पु० बराबर आगे की ओर बढ़ता रहनेवाला।  
 प्रगमन-सज्ञा पु० १. आगे बढ़ना। उन्नति। २. भगडा। ३. उचित उत्तर।  
 प्रगल्भ-वि० [सज्ञा प्रगल्भता] १. चतुर। होशियार। प्रवीण। प्रतिभाशाली। २. उत्साही। ३. साहसी। ४. हाजिर-जवाब। ५. निर्भय। निडर। ६. प्रत्युत्पन्न बुद्धिवाला। ७. घुष्ट। उद्वत। उद्द। बयबादी। ८. गम्भीर। ९. प्रधान। १०. पुष्ट। ११. दम्भी।  
 प्रगल्भता-सज्ञा स्त्री० १. बुद्धिमत्ता। प्रतिभा। २. उत्साह। ३. वात्चानुर्ध्व। ४. निर्भयता। ५. गम्भीरता। ६. प्रधानता। ७. घुष्टता।  
 प्रगल्भवचना-सज्ञा स्त्री० वह मध्या नायिका

जो बातें ही बातें में अपना दुःख और शोध प्रयत्न करे। प्रगल्भा।

प्रगल्भा-सज्ञा स्त्री० प्रौढ़ा । दे० "प्रगल्भ-वचना" ।

प्रगसना\*†-वि० अ० दे० "प्रगटना" । प्रवट होना ।

प्रगाढ़-वि० १. बहुत अधिक । २. गंभीर । बड़ा । ३. बहुत गाढ़ा या गहरा । घना ।

प्रगाता-सज्ञा पु० गानेवाला ।

प्रगामी-सज्ञा पु० गमन करनेवाला । जानेवाला ।

प्रगुण-वि० १. चतुर । २. गुणवान् । ३. अनुकूल ।

प्रगृहीत-वि० भली भाँति ग्रहण किया गया ।

प्रग्रह-सज्ञा पु० १. कृन्दी । २. आदर ।

३. उद्धतता । ४. विरण । ५. नेता । ६. उपग्रह । ७. बाँह । हाथ । ८. इन्द्रियदमन ।

९. सीता । १०. विष्णु । ११. चन्द्र सूर्य के ग्रहण का आरम्भ । १२. ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढग । धारण । १३. बन्धन । लगाम ।

प्रगृह्य-वि० १. ग्रहण करने योग्य । २. संधि के नियम के बिना उच्चारण-योग्य ।

सज्ञा पु० स्मृति-वाक्य ।

प्रग्रहण-सज्ञा पु० १. ग्रहण करने की क्रिया । धारण । २. तराजू आदि की डोरी ।

३. लगाम ।

प्रगोच-सज्ञा पु० १. मकान के चारों ओर का घेरा । २. झरोखा । छोटी खिडकी ।

३. अस्तबल । ४. वृक्ष का ऊपरी भाग । ५. रगभवन ।

प्रघट\*-वि० दे० "प्रवट" ।

प्रघटक-सज्ञा पु० सिद्धान्त ।

प्रघटना\*-वि० अ० दे० "प्रगटना" ।

प्रघट्टक\*†-वि० प्रकट या प्रकाश करनेवाला ।

सालनेवाला ।

सज्ञा पु० १. सिद्धान्त । (अग्ने-पराप्राप ।)

प्रघोर-वि० अति कठिन ।

प्रचड-वि० [सज्ञा प्रचडता] १. बहुत अधिक ।

२. तीव्र । बहुत तेज । प्रखर । ३. उग्र ।

भयकर । भयानक । ४. कठिन । पठोर ।

५. दुःसह । असह्य । ६. बड़ा । भारी ।

प्रचडता-सज्ञा स्त्री० १. उग्रता । २. प्रखरता । तीव्रता । ३. असह्यता । ४. भयकरता ।

प्रचड्य-सज्ञा पु० दे० "प्रचडता" ।

प्रचडा-सज्ञा स्त्री० दुर्गा । चट्टी ।

प्रचय-सज्ञा पु० १. वेदपाठ वा एक स्वर-विशेष । २. समूह । भुड । ३. राशि ।

४. वृद्धि ।

प्रचरना\*†-वि० अ० चलना । फैलना । प्रचारित होना ।

प्रचलन-सज्ञा पु० १. प्रचार । २. रीति ।

रिवाज । ३. प्रसार । प्रसिद्धि । व्यापकता ।

प्रचलित-वि० जिसका प्रचलन या प्रचार हो ।

जारी । चालू । चलनेवाला । व्यवहृत ।

प्रचाय-सज्ञा पु० १. हाथ से कोई वस्तु

झटका करना । २. राशि । ढेर । वृद्धि ।

प्रचायक-सज्ञा पु० सग्रहकर्ता ।

प्रचार-सज्ञा पु० १. किसी वस्तु या बात का

बराबर व्यवहार में आना । चलन । रवाज ।

प्रचलन । २. बहुत से लोगों के सामने कोई

विषय, मत या बात रखना । (अग्ने-प्रोवर्गहा)

प्रचारक-वि० [स्त्री० प्रचारिणी] फैलाने-

वाला । प्रचार करनेवाला ।

प्रचारण-सज्ञा पु० १. प्रचार करना । फैलाना । प्रचार करने की क्रिया या भाव ।

२. सूचना, या विधान आदि का वह प्रकाशन,

जो उसके प्रचलित होने का ज्ञान करावे ।

(अग्ने-प्रोमलोशन )

प्रचारना\*†-वि० स० दे० "प्रचारण ।"

प्रचारित-वि० १. प्रचार किया हुआ । २.

फैलाया हुआ । विस्तृत ।

प्रचालित-वि० जो चलाया गया हो ।

प्रचित-वि० सगृहीत ।

प्रचुर-वि० १. अधिक । बहुत । २. भयेष्ट ।

प्रचुरता-सज्ञा स्त्री० अधिकता । बहुतायत ।

उपादत्ती । बाहुल्य ।

प्रच्छद-सज्ञा पु० ढाने की वस्तु । आन्ध्रादन ।

मोड़ने की चादर ।

प्रच्छन्न-वि० दवा या लपेटा हुआ। छिपा हुआ। गुप्त।  
 प्रच्छन्न-सज्ञा पु० वमन। वै। रेचन (योग)।  
 प्रच्छदिका-सज्ञा स्त्री० १ कै। उल्टी।  
 २ वमन करानेवाली एक औषध।  
 प्रच्छादन-सज्ञा पु० [वि० प्रच्छादित] १ दावना। २ छिपाना। ३ उत्तरीय वस्त्र।  
 प्रच्छाय-सज्ञा पु० घनी छाया।  
 प्रच्छालन-सज्ञा पु० धोना।  
 प्रच्छालन\*—सज्ञा पु० धोना। दे० “प्रच्छालन”।  
 प्रच्छेदन-सज्ञा पु० छेदने या काटने की क्रिया।  
 प्रच्यवन-सज्ञा पु० १. क्षरण। भरना। बहना। रसना। २ गिरना (विशेषकर स्वर्ण से यानी फिर से जन्म लेना)।  
 प्रच्युत-वि० १ गिरा हुआ। २ निकाला हुआ। अलग किया हुआ।  
 प्रच्युति-अपन स्थान से हटने या गिरने का भाव।  
 प्रजत\*—अव्य० दे० “पर्यन्त”।  
 प्रजन-सज्ञा पु० १ सन्तान उत्पन्न करना। २ सन्तान उत्पन्न करने की क्रिया। पैदा होना। फिर से पैदा होना।  
 प्रजनन-सज्ञा पु० १ सन्तान उत्पन्न करने का काम। २ जन्म। ३ यच्चा जनाने का काम। धानी-कर्म।  
 प्रजरना\*—क्रि० अ० अच्छी तरह जलना।  
 प्रजरप-सज्ञा पु० व्यर्थ बात। गप।  
 प्रजल्पन-सज्ञा पु० बातचीत।  
 प्रजब-सज्ञा पु० अतिशय वेग।  
 प्रजहित-सज्ञा पु० १ पुराण। २ गार्हपत्य अग्नि।  
 प्रजान्तक या प्रजातक-सज्ञा पु० यम।  
 प्रजा-सज्ञा स्त्री० १ सत्तान। सन्तति। श्रीलाद। २ राजा के राज्य का जन-समूह। वक्ष में रहनेवाला व्यक्ति। रैयत। रियाया। राज्य के निवासी। सर्वसाधारण जनता।  
 प्रजाकार-सज्ञा पु० ब्रह्मा। सृष्टि के रचयिता।  
 प्रजातत्र-सज्ञा पु० वह धारण-प्रणाली, जिसमें प्रजा-द्वारा चुना हुआ प्रतिनिधि शासन करता है। लोकतंत्र। प्रजाधिकार।

प्रजातत्रो-वि० १. प्रजातत्र-सम्बन्धी। जो प्रजातत्र के सिद्धान्त के अनुसार हो।  
 २. प्रजातत्र का पक्षपाती।  
 प्रजाप्यव-सज्ञा पु० दे० “प्रजापति”।  
 प्रजानाय-सज्ञा पु० दे० “प्रजापति”।  
 प्रजापति-सज्ञा पु० १. सृष्टिवर्त्ता। ब्रह्मा। २. मनु। ३. राजा। प्रजा का स्वामी। ४. सूर्य। ५. भाग। ६. पिता। घर का मुखिया। ७. दस प्रजापति। ८. एक प्रकार का विवाह।  
 प्रजापाल-सज्ञा पु० राजा। प्रजा का पालन-पोषण करनेवाला।  
 प्रजारना\*—क्रि० सं० अच्छी तरह जलाना।  
 प्रजावती-सज्ञा स्त्री० १. गर्भवती स्त्री। २. सन्तानवाली स्त्री। पुत्रवती। ३. भाई की स्त्री (बड़े भाई की स्त्री)।  
 प्रजासत्ता-सज्ञा स्त्री० दे० “प्रजातत्र”।  
 प्रजासत्तात्मक-वि० राज्य की वह शासन-प्रणाली, जिसमें प्रजा (जनता) या उसके प्रतिनिधियों की सत्ता (अधिकार और शक्ति) प्रधान हो। ‘राजसत्तात्मक’ का उल्टा।  
 प्रजित-सज्ञा पु० विजय करनेवाला। विजेता।  
 प्रजीवन-सज्ञा पु० जीविका। रोखी।  
 प्रजुलित\*—वि० दे० “प्रज्वलित”।  
 प्रजश-सज्ञा पु० राजा। नृप। प्रजापति। प्रजा का स्वामी।  
 प्रजोग-सज्ञा पु० दे० “प्रयोग”।  
 प्रज्ञ-सज्ञा पु० ज्ञानी। पंडित। विद्वान्।  
 प्रज्ञता-सज्ञा स्त्री० पांडित्य।  
 प्रज्ञप्ति-सज्ञा स्त्री० १ निवेदन। जताने का भाव। २ सूचना। ३ संकेत। ज्ञान।  
 प्रज्ञा-सज्ञा स्त्री० १. ज्ञान। बुद्धि। २. एकाग्रता। सरस्वती।  
 प्रज्ञाचक्षु-सज्ञा पु० १. घृतराष्ट्र। २. ज्ञानी। बुद्धिमान्। ३. अथा (व्यग्य)।  
 प्रज्ञापक-सज्ञा पु० १. प्रज्ञापन करनेवाला। २. यड़े या मोटे अक्षरों में लिखा हुआ या छपा हुआ विज्ञापन (अग्रे—पोस्टर)।  
 प्रज्ञापन-सज्ञा पु० विशेष रूप से ज्ञात करने की क्रिया या भाव। विशेष रूप से ज्ञात

कराने के लिए लेता या विज्ञापन आदि ।  
 प्रज्वलन-सज्ञा पु० [वि० प्रज्वलनीय, प्रज्व-  
 लित] जलने की श्रिया । जलन । जलना ।  
 प्रज्वलित-वि० १. जलता हुआ । दहनता  
 या धधकता हुआ । २. बहुत स्पष्ट ।  
 प्रकाशित ।

प्रज्वलित्या-सज्ञा पु० दे० "प्रज्वलित्या" ।  
 प्रण-सज्ञा पु० अटल निश्चय । प्रतिज्ञा । दृढ़ ।  
 प्रणख-सज्ञा पु० नख का अग्रभाग ।  
 प्रणत-वि० १. मुका हुआ । चरणों में  
 गिरा हुआ । २. दीन । नम्र ।  
 सज्ञा पु० दास । सेवक । भक्त ।

प्रणतपाल-सज्ञा पु० शरणागत-रक्षक ।  
 दीनो, दासो या भक्तजनो का पालन करने-  
 वाला । दीनरक्षक ।

प्रणति-सज्ञा स्त्री० १. प्रणाम । दंडवत् ।  
 २. नम्रता । ३. विनती ।

प्रणमन-सज्ञा पु० १. झुकना । नम्र होना ।  
 २. प्रणाम करना ।

प्रणम्य-वि० प्रणाम करने के योग्य । वद-  
 नीय ।

प्रणय-सज्ञा पु० १. प्रेम-प्रार्थना । २. प्रेम । ३.  
 विश्वास । भरोसा । ४. मोक्ष । निर्वाण । ५.  
 श्रद्धा । ६. प्रसव ।

प्रणयन-सज्ञा पु० बगाना । रचना । निर्माण  
 करना । ग्रन्थन ।

प्रणयिनी-सज्ञा स्त्री० १. प्रियतमा ।  
 प्रेमिका । २. स्त्री । पत्नी ।

प्रणयी-सज्ञा पु० [स्त्री० प्रणयिनी] १.  
 प्रेम करनेवाला । प्रमी । स्नेही । २.  
 पति । स्वामी ।

प्रणव-सज्ञा पु० १. ओंकार । ओंकार मन्त्र ।  
 २. परमेश्वर ।

प्रणवना\*-वि० स० प्रणाम या नमस्कार  
 करना ।

प्रणम-सज्ञा पु० नमस्कार । झुककर अभि-  
 वादन । दंडवत् ।

प्रणायक-सज्ञा पु० १. नेता । २. मार्गदर्शक ।  
 ३. सेनानायक ।

प्रणालिका-सज्ञा स्त्री० १. परगाली । २.  
 बंदूक की नली ।

प्रणाली-सज्ञा स्त्री० १. नाली निरालने का  
 मार्ग । २. रीति । चाल । विधि ।  
 प्रया । पद्धति । परिपाटी । ढंग । ३. जल के  
 दो बड़े भागों को मिलानेवाला छोटा जल-  
 मार्ग ।

प्रणाश-सज्ञा पु० १. नाश । २. मृत्यु । ३.  
 भागना ।

प्रणाशो-सज्ञा पु० नाश करनेवाला ।

प्रणिपान-सज्ञा पु० १. विमो वर्म के फल का  
 त्याग । २. अर्पण । ३. प्रयत्न । ४. समाधि  
 (योग) । ५. अत्यंत भक्ति, श्रद्धा या  
 प्रेम । ६. ध्यान । मन की एकाग्रता ।  
 मनोयोग ।

प्रणिधि-सज्ञा पु० १. राज्य के किसी विशेष  
 कार्य से भेजा जानेवाला दूत । (धर्म) एमि-  
 सिरी २. गुप्त रूप से काम करनेवाला दूत ।  
 भेदिया । गुप्तचर । ३. प्रार्थना । माँगना ।  
 निवेदन । ४. मन की एकाग्रता । तत्परता ।

प्रणिपतन, प्रणिपात-सज्ञा पु० प्रणाम ।  
 पैरों पर गिरकर प्रणाम करना ।

प्रणिहित-वि० १. रखा हुआ । स्थापित ।  
 २. मनोयोगपूर्वक । ३. निश्चित । ४. प्राप्त ।  
 ५. सौंपा हुआ ।

प्रणी-वि० अटल प्रण या दृढ़ प्रतिज्ञावाला ।  
 सज्ञा पु० ईश्वर ।

प्रणीत-सज्ञा पु० १. रचित । बनाया हुआ । २.  
 सुधारा हुआ । ३. प्रेरित । ४. भेजा या  
 लाया हुआ ।

प्रणेता-सज्ञा पु० [स्त्री० प्रणेनी] रचयिता ।  
 बनानेवाला । निर्माणकर्त्ता ।

प्रतचा\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "प्रत्यचा" ।

प्रतच्छ-वि० दे० "प्रत्यक्ष" ।

प्रतन-वि० पुराना । प्राचीन ।

प्रतनु-वि० १. दुबला-पतला । क्षीण । दुर्बल ।  
 २. महीन । ३. बहुत छोटा ।

प्रतपन-सज्ञा पु० तपाना । उत्ताप ।

प्रतप्त-वि० तपा हुआ । उष्ण । तपाया  
 हुआ । गरम किया हुआ ।

प्रतर्क-सज्ञा पु० तर्क । वादविवाद ।

प्रतल-सज्ञा पु० १. हवेली । २. सातवीं  
 पाताल ।

प्रतान—सज्ञा पु० मूर्च्छा या एक रोग ।  
 वि० १. विस्तृत । २. रेखेदार ।  
 प्रताप—सज्ञा पु० १ पीरप । मरदानगी ।  
 वीरता । बल, पराक्रम । २. ऐश्वर्य । तेज ।  
 इकबाल । ३. गरमी । ताप ।  
 प्रतापन—सज्ञा पु० १ पीडन । २. विष्णु ।  
 प्रतापवान्—वि० प्रताप-युक्त ।  
 प्रतापी—वि० १ तेजस्वी । जिसका प्रताप  
 हो । ऐश्वर्यमान । २. सतानेवाला ।  
 प्रतारक—सज्ञा पु० १ बचक । ठग । छली ।  
 २. धूर्त । चालाक ।  
 प्रतारणी—सज्ञा स्त्री० (सज्ञा पु० प्रतारण)  
 ठगी । धूर्तता । वचना ।  
 प्रतारित—वि० जो ठगा या छला गया हो ।  
 जिसे धोखा दिया गया हो ।  
 प्रतिचा—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रत्यचा" । धनुष  
 की डोरी । चिल्ला ।  
 प्रति—अव्य० एक उपसर्ग, जो शब्दों के  
 आरम्भ में लगवर नीचे लिखे अर्थ देता  
 है—विपरीत, जैसे, प्रतिकूल । सामने  
 जैसे, प्रत्यक्ष । बदले में, जैसे, प्रत्युपकार ।  
 हर एक, जैसे प्रत्येक । समान, जैसे, प्रति-  
 निधि । मुकाबल में, जैसे, प्रतिवादी ।  
 अव्य० १ एक एक । सब । समस्त । २  
 पास । सामन । मुकाबिले में । ३. ओर ।  
 तरफ । वैसे ही । ज्यों का त्यों ।  
 सज्ञा स्त्री० सख्या, जैसे पुस्तक की दो  
 प्रतियाँ । नकल । कापी (अग्रे०) ।  
 प्रतिकर्म—सज्ञा पु० १ वेश । २. प्रतीकार ।  
 ३. अग-नर्म ।  
 प्रतिकामिनी—सज्ञा स्त्री० सीत । दूसरी स्त्री ।  
 प्रतिकार—सज्ञा पु० १ जयान । २. बदला ।  
 ३. उपाय । ४. तरीका । ५. चिबित्सा ।  
 प्रतिकार्य—वि० प्रतिवार के योग्य ।  
 प्रतिकूप—सज्ञा पु० परिखा ।  
 प्रतिकूल—वि० [सज्ञा प्रतिकूलता] खिलाफ ।  
 उल्टा । विपरीत । विरुद्ध ।  
 प्रतिकूलता—सज्ञा स्त्री० उल्टा या विपरीत  
 होने का भाव । विपक्षता । विरोध ।  
 प्रतिकूलत्व—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिकूलता" ।  
 प्रतिशुत—वि० जिसका बदला जै जग

हो । जिसके विरुद्ध कोई कार्य किया  
 गया हो ।

प्रतिकृति—सज्ञा स्त्री० १ बिम्बी की नकल पर  
 बनाई हुई मूर्ति या रूप । प्रतिमा ।  
 प्रतिमूर्ति । २. प्रतिविम्ब । छाया । ३.  
 बदला । प्रतिकार ।

प्रतिक्रिया—सज्ञा स्त्री० १ प्रतिकार । बदला ।  
 २. कोई क्रिया होने पर उससे विरोध में  
 या फलस्वरूप दूसरी ओर होनेवाली  
 क्रिया । ३. विरुद्ध या विपरीत दिशा में  
 होनेवाली क्रिया या गति ।

प्रतिक्रियावादी—सज्ञा पु० उन्नति, सुधार  
 आदि के विरुद्ध या विपरीत चलनेवाला ।  
 (अग्रे०—रि एक्शनरी)

प्रतिग्या\*—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिज्ञा" ।  
 प्रतिग्रह—सज्ञा पु० १ स्वीकार । ग्रहण । २. उस  
 दान का लेना, जो ब्राह्मण को विधिपूर्वक  
 दिया जाय । दान पकड़ना । ३. अधिकार में  
 लाना । ४. पाणिग्रहण । विवाह । ५. विरोध  
 करना । ६. प्रत्युत्तर । सेना का पिछला  
 भाग ।

प्रतिग्राहक—सज्ञा पु० १. लेने या ग्रहण करने-  
 वाला । दान लेनेवाला । २. किसी सम्पत्ति  
 को रक्षापूर्वक रखने के लिए उसे अपने  
 अधिकार में लेनेवाला (अग्रे०—रस्टो-  
 डियन) । ३. किसी की दी हुई वस्तु, सम्पत्ति  
 आदि को किसी विशय कार्य के लिए ग्रहण  
 करनेवाला (अग्रे०—रिसेवर) ।

प्रतिग्राही—सज्ञा पु० दान लेनेवाला ।  
 प्रतिग्राह्य—वि० लेने लायक । ग्रहण करने  
 योग्य ।

प्रतिघ—सज्ञा पु० १ त्रीष । २. मारना । ३.  
 मूर्च्छा । ४. विरोध । ५. बाधा । रुकावट ।  
 अटकन ।

प्रतिघात—सज्ञा पु० १ वह आघात, जो किसी  
 दूसरे के आघात करने पर विषा जाय ।  
 २. टक्कर । ३. बाधा । रुकावट ।

प्रतिघातक—सज्ञा पु० प्रतिघात करने  
 वाला ।

प्रतिघातन—सज्ञा पु० १ हत्या । २. बाधा ।  
 प्रतिघाती—सज्ञा पु० प्रतिघात करनेवाला ।

१ शत्रु । वैरी । दुश्मन । २. प्रतिद्वन्द्वी ।  
मुकाबला करनेवाला ।

प्रतिचिंतन—सज्ञा पु० पुनर्विचार ।

प्रतिच्छवि—सज्ञा स्त्री० १. प्रतिबिम्ब ।  
परछाई । छाया । २. चित्र ।

प्रतिच्छा\*†—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीक्षा" ।

प्रतिच्छापा—सज्ञा स्त्री० १. चित्र । तस्वीर ।  
२. परछाई । प्रतिबिम्ब । प्रतिमूर्ति ।

प्रतिच्छापित—वि० १. जिसकी परछाई वही  
पटी हो । २. जिस पर किसी की परछाई  
पड़ी हो ।

प्रतिच्छाई, प्रतिच्छाहि—सज्ञा स्त्री० दे०  
"परछाई" ।

प्रतिच्छाया—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया" ।

प्रतिजिह्वा—सज्ञा पु० कौवा । गले के अन्दर  
की घटी ।

प्रतिज्ञाकर—सज्ञा पु० १. तर्क में एक निग्रह-  
स्थान । २. पराजय ।

प्रतिज्ञा—सज्ञा स्त्री० १. दृढ़ निश्चय । प्रण ।  
२. शपथ । सौगद । वसम । ३. दावा ।  
अभियोग । ४. न्याय में उस बात का  
व्ययन, जिसे निष्ठ करना हो ।

प्रतिज्ञात—सज्ञा, पु० १. जिनने, विषय में  
प्रतिज्ञा की गई हो । प्रतिज्ञा या वादा  
किया हुआ । २. स्वीकृत । अंगीकृत ।

प्रतिज्ञापत्र—सज्ञा पु० वह पत्र, जिस पर कोई  
प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो । इतरार-  
नामा ।

प्रतिज्ञाहानि—सज्ञा स्त्री० १. तर्क में एव प्रकार  
का निग्रह-स्थान । २. पराजय ।

प्रतिज्ञत्र—सज्ञा पु० अपने मत के विरुद्ध मत  
का शस्त्र ।

प्रतिदत्त—वि० लौटाया हुआ । बदले में  
दिया हुआ ।

प्रतिदान—सज्ञा पु० १. दान के बदले दान ।  
२. लौटाना । वापस करना । धरोहर या  
अमानत का लौटाना । ३. परिवर्तन ।  
दिनिमय । बदला ।

प्रतिदेश—सज्ञा पु० सीमा पर का देश ।

प्रतिद्वन्द्व—सज्ञा पु० बराबरवालों का विरोध  
या भगडा । दे० "प्रतिद्वन्द्विता" ।

प्रतिद्वन्द्विता—सज्ञा स्त्री० बराबरवालों का  
विरोध या लड़ाई । आपसी घेरा । प्रति  
योगिता ।

प्रतिद्वन्द्वी—सज्ञा पु० १. शत्रु । वैरी । लड़ने  
या विरोध करनेवाला । २. सामने  
मुकाबला करनेवाला । विरोधी ।

प्रतिध्वनि—सज्ञा स्त्री० (वि० प्रतिध्वनित ।)

१ वह ध्वनि या शब्द, जो अपनी उत्पत्ति के  
स्थान से चलकर वही से टकराकर लौटें  
और फिर वही सुनाई पड़े । प्रतिशब्द ।  
गूँज । २ गूँजना । ३. दूसरे के विचारों  
आदि का दोहराया जाना ।

प्रतिध्वनित—वि० प्रतिध्वनि से व्याप्त ।  
गूँजा हुआ ।

प्रतिनंदन—सज्ञा पु० बघाई । आशीर्वादयुक्त  
अभिनंदन । (अग्ने०—काप्रचुलेक्षण)

प्रतिना—सज्ञा स्त्री० दे० "पूतना" । सेना ।  
फौज ।

प्रतिनाद—सज्ञा पु० प्रतिध्वनि ।

प्रतिनायक—सज्ञा पु० नाट्य या नाव्य आदि  
में नायक का प्रतिद्वंद्वी पात्र ।

प्रतिनिब्रयन—सज्ञा पु० (वि० प्रतिनिवृत्त)  
किसी का दिया हुआ धन या मुल्क  
आदि अधिक या अनुचित होने पर उसे  
लौटाना या उसके दावे में जमा करना  
(अग्ने०—रिफंड)

प्रतिनिधान—सज्ञा पु० प्रतिनिधि बनाकर  
वही भेजा जानेवाला व्यक्ति या व्यक्तियों  
का दल ।

प्रतिनिधायन—सज्ञा पु० प्रतिनिधियों का  
वह दल जो कहीं किसी काम के लिए जाय ।

प्रतिनिधियों को वही भेजना ।

प्रतिनिधि—सज्ञा पु० १. प्रतिमूर्ति । प्रतिमा ।  
२. किसी दूसरे की ओर से कोई काम  
करने के लिए नियुक्त व्यक्ति ।

प्रतिनिधित्व—सज्ञा पु० प्रतिनिधि होने की  
नियम या भाव ।

प्रतिनिधिमण्डल—सज्ञा पु० प्रतिनिधियों का  
समूह, दल या समिति । मण्डल ।

प्रतिनिधि-सत्तात्मक—वि० राज्य की वह  
पामन-प्रणाली, जिसमें प्रजा (जनता)

के चुने हुए प्रतिनिधियों की सत्ता प्रधान हो।

**प्रतिनियुक्त**—वि० प्रतिनिधि या अधीनस्थ अधिकारी के रूप में बनाकर वही भेजा गया व्यक्ति। (अंग्रे०—डेप्युटेट)

**प्रतिनियोजन**—सज्ञा पु० किसी को वही भेजने के लिए अधीनस्थ कर्मचारी के रूप में नियुक्त करना।

**प्रतिनिदिष्ट**—वि० प्रसंगवश जिसका उल्लेख या चर्चा की गई हो या जिसकी ओर संकेत किया गया हो। जिसका प्रतिनिर्देश किया गया हो (अंग्रे०—रेफर्ड)।

**प्रतिनिर्देश**—सज्ञा पु० (वि० प्रतिनिदिष्ट) संकेत, प्रमाण या साक्षी रूप में किया गया उल्लेख या चर्चा (अंग्रे०—रेफरेन्स)

**प्रतिपक्ष**—सज्ञा पु० १. प्रतिवादी। विरोधपक्ष। शत्रु। २. सादृश्य। समानता।

**प्रतिपक्षता**—सज्ञा स्त्री० विरोध।

**प्रतिपक्षी**—सज्ञा पु० विपक्षी। प्रतिवादी। विरोधी। शत्रु।

**प्रतिपत्ति**—सज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। पाना। २. ज्ञान। अनुमान। ३. देना। दान। ४. प्रतिपादन। निरूपण। ५. मानना। स्वीकृत। ६. कार्यरूप में लाना।

**प्रतिपत्तिकर्म**—सज्ञा पु० श्राद्ध आदि में सबसे अन्त में किया जानेवाला कर्म।

**प्रतिपदा**—सज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की पहली तिथि। परिवा। प्रतिपद्।

**प्रतिपद्**—वि० १ अवगत। ज्ञात। जाना हुआ। २ अंगीकृत। ३ प्रमाणित। निश्चित। ४ भरापूरा। ५ शरणागत। ६ प्राप्त।

**प्रतिपरीक्षण**—सज्ञा पु० (वि० प्रतिपरीक्षित) किसी के कुछ वह चुकने पर दबी-दमाई धाता का पता लगाने के लिए उसने कुछ प्रश्न करना [अंग्रे०—क्वास-इन्क्वायिनेशन]

**प्रतिपण**—सज्ञा पु० दो टुकड़ोवाली रसीद या प्रमाणपत्र आदि का वह टुकड़ा जो देनेवाले के पास रह जाता है और जिस पर किसी को दिए हुए दूसरे टुकड़े की प्रति-लिपि रहती है। [अंग्रे०—कॉन्ट्र-पार्सल]

**प्रतिपादक**—सज्ञा पु० १. प्रतिपादन करने-वाला। २. संस्थापक। ३. प्रकाशक। ४. उत्पादक।

**प्रतिपादन**—सज्ञा पु० (वि० प्रतिपादित) १ भली भाँति समझना। प्रतिपत्ति। २ सम्प्रमाण कथन। सिद्धि। ३ प्रमाण। सबूत। ४. सम्पादन। ५. बोधन। ज्ञापन। ६. दान। ७. पुरस्कार।

**प्रतिपादित**—वि० १. जो भली भाँति समझा दिया गया हो। २ निर्धारित। ३. प्रमाणित।

**प्रतिपाद्य**—वि० १ कथनीय। बोधनीय। वर्णन-योग्य। २. देने योग्य।

**प्रतिपार**—सज्ञा पु० दे० “प्रतिपाल”।

**प्रतिपाल**, **प्रतिपालक**—सज्ञा पु० १ पालन-पोषण करनेवाला। पोषक। रक्षक। २ राजा।

**प्रतिपालन**—सज्ञा पु० [वि० प्रतिपालित] १ पालन-पोषण। २ रक्षण। निर्वह। ३ तामील।

**प्रतिपालना**—सज्ञा पु० १ पालन करना। २ वचाना। रक्षा करना। पालना-पोसना।

**प्रतिपालित**—वि० १ रक्षित। २ पोषित।

**प्रतिपाल्य**—वि० १ प्रतिपालनीय। २. रक्षणीय।

**प्रतिपुद्ग**—सज्ञा पु० सहकारी। किसी के अधीन रहकर या किसी के स्थान पर उसकी ओर से काम करनेवाला (डेप्टी)।

**प्रतिप्राप्ति**—सज्ञा स्त्री० कोई या किसी के हाथ में गई हुई चीज फिर से प्राप्त करना।

**प्रतिफल**—सज्ञा पु० १ परिणाम। नतीजा। फल। २ बदला। ३ बदले में मिली हुई चीज।

**प्रतिफलक**—सज्ञा पु० [वि० प्रतिफलित] वह यंत्र, जो कोई प्रतिबिम्ब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पद पर डालता हो (अंग्रे०—स्क्रिप्लर)।

**प्रतिबंध**—सज्ञा पु० १. विघ्न। बाधा। रूपावट। रोक। २ सत्त।

**प्रतिबंधक**—सज्ञा पु० १ रोकनेवाला। विघ्न-बाधा डालनेवाला। बाधक। २. वृक्ष।

**प्रतिबन्धकता**—सज्ञा स्त्री० रूपावट। अडचन।

१ शत्रु। बैरी। दुश्मन। २. प्रतिद्वन्दी। मुकाबला करनेवाला।  
 प्रतिचिंतन—सज्ञा पु० पुनर्विचार।  
 प्रतिच्छादि—सज्ञा स्त्री० १. प्रतिविम्ब। परछाई। छाया। २. चित्र।  
 प्रतिच्छा†—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रतीक्षा"।  
 प्रतिच्छाया—सज्ञा स्त्री० १. चित्र। तस्वीर। २. परछाई। प्रतिविम्ब। प्रतिमूर्ति।  
 प्रतिच्छापित—वि० १. जिसकी परछाईं वही पड़ी हो। २. जिस पर किसी की परछाईं पड़ी हो।  
 प्रतिच्छाई, प्रतिच्छाह—सज्ञा स्त्री० दे० "परछाई"।  
 प्रतिच्छाया—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रतिच्छाया"।  
 प्रतिजिह्वा—सज्ञा पु० कौवा। गले के अन्दर की घटी।  
 प्रतिज्ञाकर—सज्ञा पु० १. तर्क में एक निग्रह-स्थान। २. पराजय।  
 प्रतिज्ञा—सज्ञा स्त्री० १. दृढ़ निश्चय। प्रण। २. शपथ। सौगद। कसम। ३. दावा। अभियोग। ४. न्याय में उस बात का कथन, जिसे सिद्ध करना हो।  
 प्रतिज्ञात—सज्ञा, पु० १. जिसके विषय में प्रतिज्ञा की गई हो। प्रतिज्ञा या शपथ किया हुआ। २. स्वीकृत। अंगीकृत।  
 प्रतिज्ञापत्र—सज्ञा पु० वह पत्र, जिस पर कोई प्रतिज्ञा या बात लिखी हो। इकरार-नामा।  
 प्रतिज्ञाहानि—सज्ञा स्त्री० १. तर्क में एक प्रकार का निग्रह-स्थान। २. पराजय।  
 प्रतिज्ञात्र—सज्ञा पु० अपने मत के विरुद्ध मत का शास्त्र।  
 प्रतिवस्त—वि० सोटाया हुआ। बदल में दिया हुआ।  
 प्रतिदान—सज्ञा पु० १. दान के बदले दान। २. सोटाता। वापस करना। गरीब या अमानत का सोटाता। ३. परिवर्तन। विनिमय। बदला।  
 प्रतिशे—सज्ञा पु० सीमा पर का देश।  
 प्रतिशुद्ध—सज्ञा पु० बराबरवाला या विरोध का भंगशा। दे० "प्रतिद्वन्दिता"।

प्रतिद्वन्दिता—सज्ञा स्त्री० बराबरवाला का विरोध या लड़ाई। आपसी बैर। प्रति योगिता।  
 प्रतिद्वन्दी—सज्ञा पु० १. शत्रु। बैरी। सवर्ण या विरोध करनेवाला। २. सामने मुकाबला करनेवाला। विरोधी।  
 प्रतिध्वनि—सज्ञा स्त्री० (वि० प्रतिध्वनित)। १. वह ध्वनि या शब्द, जो अपनी उत्पत्ति के स्थान से चलकर वही से टकराकर लौटें और फिर वही सुनाई पड़े। प्रतिशब्द। गूँज। २. गूँजना। ३. दूसरे के विचारों आदि का दोहराया जाना।  
 प्रतिध्वनित—वि० प्रतिध्वनि से व्याप्त। गूँजा हुआ।  
 प्रतिनदन—सज्ञा पु० बघाई। आशीर्वादयुक्त अभिनदन। (अग्रं०—कार्यचलेशन)  
 प्रतिना—सज्ञा स्त्री० दे० "पूतना"। सेना। फौज।  
 प्रतिनाद—सज्ञा पु० प्रतिध्वनि।  
 प्रतिनामक—सज्ञा पु० नाटक या नाट्य आदि में नायक का प्रतिद्वन्दी पात्र।  
 प्रतिनिचयन—सज्ञा पु० (वि० प्रतिनिचिन) किसी का दिया हुआ धन या दुरुक्त आदि अधिक या अनुचित होने पर उसे लौटाना या उसके खाते में जमा करना (अग्रं०—रिफ्ट)  
 प्रतिनिधान—सज्ञा पु० प्रतिनिधि बनाकर वही भेजा जानेवाला व्यक्ति या व्यक्तियों का दल।  
 प्रतिनिधायन—सज्ञा पु० प्रतिनिधियों का वह दल जो वही निम्न काम के लिए जाय।  
 प्रतिनिधियों को वही भेजना।  
 प्रतिनिधि—सज्ञा पु० १. प्रतिमूर्ति। प्रतिमा। २. किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिए नियुक्त व्यक्ति।  
 प्रतिनिधित्व—सज्ञा पु० प्रतिनिधि होने की क्रिया या भाव।  
 प्रतिनिधिमंडल—सज्ञा पु० प्रतिनिधियों का समूह, दल या सभिति। डिप्टमण्डल।  
 प्रतिनिधि-सत्तात्मक—वि० राज्य की वह शासन-प्रणाली, जिसमें प्रजा (जनता)

के चुने हुए प्रतिनिधियों की सत्ता प्रमाण हो।

प्रतिनिधुषत—वि० प्रतिनिधि या अधीनस्थ अधिकारी के रूप में बनाकर कही भेजा गया व्यक्ति। (अंग्रे०—डेप्यूटेंट)

प्रतिनियोजन—संज्ञा पु० किसी को वही भेजने के लिए अधीनस्थ वर्मचारी के रूप में नियुक्त करना।

प्रतिनिदिष्ट—वि० प्रसंगवश जिसका उल्लेख या चर्चा की गई हो या जिसकी ओर संकेत किया गया हो। जिसका प्रतिनिर्देश किया गया हो (अंग्रे०—रेफर्ड)।

प्रतिनिर्देश—संज्ञा पु० (वि० प्रतिनिदिष्ट) संकेत, प्रमाण या साक्षी रूप में किया गया उल्लेख या चर्चा (अंग्रे०—रेफरेन्स)

प्रतिपक्ष—संज्ञा पु० १. प्रतिवादी। विरोधपक्ष। यत्र। २. सादृश्य। समानता।

प्रतिपक्षता—संज्ञा स्त्री० विरोध।

प्रतिपक्षी—संज्ञा पु० विपक्षी। प्रतिवादी। विरोधी। सनु।

प्रतिपत्ति—संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। पाना। २. ज्ञान। अनुमान। ३. देना। दान। ४. प्रतिपादन। निरूपण। ५. मानना। स्वीकृत। ६. कार्यरूप में जाना।

प्रतिपत्तिकर्म—संज्ञा पु० आद्य आदि में सबसे अन्त में किया जानेवाला कर्म।

प्रतिपदा—संज्ञा स्त्री० किसी पक्ष की पहली तिथि। परिवा। प्रतिपद्।

प्रतिपत्र—वि० १. अवगत। ज्ञात। जाना हुआ। २. अंगीकृत। ३. प्रमाणित। निश्चित। ४. भरापूर। ५. दारणागत। ६. प्राप्त।

प्रतिपरीक्षण—संज्ञा पु० (वि० प्रतिपरीक्षित) किसी के कुछ कह चुकने पर दबी-दवाई बातों का पता लगाने के लिए उससे कुछ प्रश्न करना [अंग्रे०—क्रॉस-इक्जामिनेशन]

प्रतिपर्ण—संज्ञा पु० दो टुकड़ोंवाली रसीद या प्रमाणपत्र आदि का वह टुकड़ा जो देनेवाले के पास रह जाता है और जिस पर किसी को दिए हुए दूसरे टुकड़े की प्रति-लिपि रहती है। [अंग्रे०—वाउचर-फायल]

प्रतिपादक—संज्ञा पु० १. प्रतिपादन करने-वाला। २. संस्थापक। ३. प्रगटक। ४. उत्पादक।

प्रतिपादन—संज्ञा पु० (वि० प्रतिपादित)

१. भली भाँति समझना। प्रतिपत्ति।

२. सप्रमाण कथन। सिद्धि। ३. प्रमाण।

सबूत। ४. सम्पादन। ५. बोधन। ज्ञापन।

६. दान। ७. पुरस्कार।

प्रतिपादित—वि० १. जो भली भाँति समझा दिया गया हो। २. निर्धारित। ३. प्रमाणित।

प्रतिपाद्य—वि० १. कथनीय। बोधनीय।

वर्णन-योग्य। २. देने योग्य।

प्रतिपार\*†—संज्ञा पु० दे० "प्रतिपाय"।

प्रतिपाल, प्रतिपालक—संज्ञा पु० १. पालन-पोषण करनेवाला। पोषक। रक्षक। २. राजा।

प्रतिपालन—संज्ञा पु० [वि० प्रतिपालित]

१. पालन-पोषण। २. रक्षण। निर्वाह।

३. तामील।

प्रतिपालना\*†—क्रि० सं० १. पालन करना।

२. धनाना। रक्षा करना। पालना-पोसना।

प्रतिपालित—वि० १. रक्षित। २. पोषित।

प्रतिपाल्य\*†—वि० १. प्रतिपालनीय। २. रक्ष-नीय।

प्रतिपुग्ग—संज्ञा पु० सहकारी। किसी के अधीन रहकर या किसी के स्थान पर उसकी ओर से काम करनेवाला (डेप्टी)।

प्रतिप्राप्ति—संज्ञा स्त्री० कोई या किसी के हाथ में गई हुई चीज फिर से प्राप्त करना।

प्रतिफल—संज्ञा पु० १. परिणाम। नतीजा। फल। २. बदला। ३. बदले में मिली हुई चीज।

प्रतिफलक—संज्ञा पु० [वि० प्रतिफलित]

वह यन्त्र, जो कोई प्रतिविम्ब उत्पन्न करके उसे दूसरी वस्तु या पट पर डालता हो (अंग्रे०—रिफ्लेक्टर)।

प्रतिबंध—संज्ञा पु० १. विघ्न। बाधा।

रुकावट। रोक। २. दस्त।

प्रतिबंधक—संज्ञा पु० १. रोकनेवाला। विघ्न-बाधा डालनेवाला। बाधक। २. बृक्ष।

प्रतिबन्धकता—संज्ञा स्त्री० रुकावट। अड़चना।

प्रतिबद्ध-वि० १. बंधा हुआ । निषिद्ध । २. जिसमें कोई प्रतिबन्ध हो । शक्ति से बंधा हुआ ।

प्रतिवाचक-वि० १. वाचा डालनेवाला । २. पीडा देनेवाला ।

प्रतिवाधन-सज्ञा पु० १. विघ्न । २. पीडा ।

प्रतिबिम्ब-सज्ञा पु० [वि० प्रतिबिम्बित] १. परछाई । छाया । २. प्रतिमा । मूर्ति । चित्र । तस्वीर । ३. भक्तव । ४. दर्पण । शोभा ।

प्रतिबिम्बवाद-सज्ञा पु० वेदात्त वा यह सिद्धांत कि जीव चाम्पन में, ईश्वर वा प्रतिबिम्ब है ।

प्रतिबीज-वि० नष्ट बीज ।

प्रतिबुद्ध-वि० १. जाग हुआ । सजग । २. प्रसिद्ध । ३. उत्तम ।

प्रतिबुद्धि-सज्ञा स्त्री० विपरीत बुद्धि । उलटी समझ ।

प्रतिबोध-सज्ञा पु० १. जागरण । २. ज्ञान ।

प्रतिबोधक-सज्ञा पु० १. ज्ञान उत्पन्न करनेवाला । २. जगानवाला ।

प्रतिबोधन-सज्ञा पु० १. जगाना । २. ज्ञान उत्पन्न करना ।

प्रतिभट-सज्ञा पु० १. समान धीर । २. शत्रु ।

प्रतिभा-सज्ञा स्त्री० असाधारण बुद्धिबल । असाधारण मानसिक शक्ति, जिससे कोई व्यक्ति अधिप याग्यता वा कर्म कर दिखाना है । असाधारण योग्यता ।

प्रतिभाग-सज्ञा पु० (वि० प्रतिभागिक) प्राचीन काल का एक घर । आजकल का

प्रतिभाषा-सज्ञा स्त्री० प्रत्युत्तर । जवाब । वादी का बयान । मुद्दे का बयान ।

प्रतिभासम्पन्न-वि० दे० "प्रतिभावान्" ।

प्रतिभास-सज्ञा पु० १. आह्वान । २. धोखा । ३. प्रकाश ।

प्रतिभू-सज्ञा पु० जमानत करनेवाला । जमिन । जमानतदार ।

प्रतिभूति-सज्ञा स्त्री० जमानत की रकम । वह धन जो जमानत के लिए जमा हो ।

यो०—प्रतिभूतिन्याय=जमानत के रूप में धन जमा करना ।

प्रतिभेद-सज्ञा पु० १. प्रभेद । अन्तर । २. आविष्कार ।

प्रतिमडल-सज्ञा पु० सूर्य आदि ग्रहों का मडल । परिवेश ।

प्रतिम-अव्य० समान । सदृश । तुल्य ।

प्रतिमा-सज्ञा स्त्री० १. अनुवृत्ति । २. मिट्टी, पत्थर आदि की देवताओं की मूर्ति । ३. प्रतिनिध । छाया । ४. एक शलकाएँ, जिनमें किसी मुख्य पदार्थ का व्यक्ति के अभाव में उमा के सदृश किसी अन्य पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन होता है ।

प्रतिमान-सज्ञा पु० १. प्रतिबिम्ब । परछाई । २. समानता । बराबरी । ३. उदाहरण नमूना ४. आदर्श के अनुस्यू या नमूने की तरह बनाई गई वस्तु ।

प्रतिमुख-सज्ञा पु० १. नाटक की पाँच अंग-संघिका में से एक । २. किसी वस्तु का पुष्ट भाग ।

प्रतिभूति-सज्ञा स्त्री० प्रतिमा । अनुवृत्ति ।

वरी । ४ मददगार । सहायक ।  
 प्रतिषोद्धा-सज्ञा पु० शत्रु । बराबर का  
 लड़नेवाला ।  
 प्रतिरक्षण-सज्ञा पु० रक्षा ।  
 प्रतिरथ-सज्ञा पु० बराबर या लड़नेवाला ।  
 प्रतिरुद्ध-वि० अवरुद्ध ।  
 प्रतिरूप-सज्ञा पु० १ प्रतिमा । मूर्ति । २  
 तसबीर । चित्र । ३ प्रतिलिपि । नमूना ।  
 वि० नक्ली या जाली । दृष्टिम ।  
 बनावटी ।  
 प्रतिरूपक-सज्ञा पु० नक्ली या बनावटी  
 चीज (विशेषतः सिक्के, नोट आदि)  
 बनानेवाला ।  
 प्रतिरोध-सज्ञा पु० [वि० प्रतिरोधक] १  
 विरोध । २ रूकावट । रोक । बाधा ।  
 विघ्न । ३ तिरस्कार ।  
 प्रतिरोधक या प्रतिरोधी-सज्ञा पु० १. रोकने  
 वाला । रूकावट या बाधा डालनेवाला ।  
 २ चार । ३ तस्वर । डाकू ।  
 प्रतिरोधन-सज्ञा पु० प्रतिरोध करने की  
 क्रिया या भाव ।  
 प्रतिलम्भ-सज्ञा पु० १ कुरीति । २. दोष ।  
 बलक ३ प्राप्ति । लाभ । ४ निन्द्य ।  
 प्रतिलिपि-सज्ञा स्त्री० किसी लिखी हुई  
 चीज की ज्या की त्या नकल । (कॉपी)  
 प्रतिलोम-वि० १ प्रतिलब्ध । विपरीत । २  
 जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो ।  
 उलटा । ३ बायाँ । ४ नीच ।  
 प्रतिलोम विवाह-सज्ञा पु० वह विवाह, जिसमें  
 पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण  
 का हो ।  
 प्रतिवचन-सज्ञा पु० उत्तर । प्रतिध्वनि ।  
 प्रतिवर्त्तन-सज्ञा पु० (वि० प्रतिवर्त्तित)  
 लौटना । चक्कर काटना । फरा लगाना ।  
 घूमना ।  
 प्रतिवह्न-सज्ञा पु० उलटी ओर बहाना या  
 ल जाना ।  
 प्रतिवस्तूपमा-सज्ञा स्त्री० वह काव्यालंकार,  
 जिसमें उपमय और उपमान के साधारण  
 धर्म का वर्णन अलग अलग हो ।  
 प्रतिवाक्य-सज्ञा पु० उत्तर । प्रत्युत्तर ।

प्रतिवाची-सज्ञा स्त्री० प्रत्युत्तर ।  
 प्रतिवाद-सज्ञा पु० वह वाचन, जो किसी मत  
 को निर्या ठहराने के लिए हो । खडा ।  
 विरोध । आपत्ति । विवाद । बहस ।  
 प्रतिवादक-सज्ञा पु० प्रतिवाद करनेवाला ।  
 प्रतिवादी ।  
 प्रतिवादिता-सज्ञा स्त्री० प्रतिवाद करने का  
 भाव । प्रतिवादी का कार्य ।  
 प्रतिवादी-सज्ञा पु० १ प्रतिवाद या खडा  
 करनेवाला । २ वादी या विरोधी ।  
 प्रतिपक्षी । विपक्षी ।  
 प्रतिपारण-सज्ञा पु० रोचना । मना करना ।  
 प्रतिवास-सज्ञा पु० १ पड़ोस । समीप का  
 निवास । २ सुगमि ।  
 प्रतिवासर-सज्ञा पु० प्रतिदिन ।  
 प्रतिवासी-सज्ञा पु० पड़ोस में रहनेवाला ।  
 पड़ोसी ।  
 प्रतिविधान-सज्ञा पु० किसी विधान के  
 मुकाबल में दिया जानेवाला विधान ।  
 प्रतिहार ।  
 प्रतिवीर्य-सज्ञा पु० प्रतिरोध करने के लिए  
 बलवत् शक्ति रखनेवाला ।  
 प्रतिवेश-सज्ञा पु० पड़ोस । घर के सामने  
 का घर । पड़ोस का मकान ।  
 प्रतिवेशी-सज्ञा पु० पड़ोसी । पड़ोस में  
 रहनेवाला ।  
 प्रतिशका-सज्ञा पु० वह शका, जो बराबर  
 बनी रहे ।  
 प्रतिशब्द-सज्ञा पु० प्रतिध्वनि । गूँज ।  
 प्रतिशम-सज्ञा पु० १ नाश । २ मुक्ति ।  
 प्रतिशयन-सज्ञा पु० किसी इच्छा की पूर्ति  
 के निमित्त किसी देव-स्थान पर घेरना  
 देना ।  
 प्रतिशिष्य-सज्ञा पु० शिष्य का शिष्य ।  
 प्रतिशोध-सज्ञा पु० बदला । बदला चुकाने के  
 लिए किया गया काम ।  
 प्रतिश्रुत-वि० १ स्वीकृत । मजूर । २  
 प्रतिज्ञा किया हुआ ।  
 प्रतिश्रुति-सज्ञा स्त्री० १. प्रतिध्वनि । २  
 प्रतिरूप । ३ प्रतिज्ञा । ४ स्वीकृति ।  
 मजुरी ।

प्रतिबद्ध-वि० १. बंधा हुआ । नियंत्रित । २. जिसमें कोई प्रतिबन्ध हो । शर्त से बंधा हुआ ।

प्रतिबध्पक-वि० १. बाधा डालनेवाला । २. पीडा देनेवाला ।

प्रतिबध्पन-सज्ञा पु० १. विघ्न । २. पीडा ।

प्रतिबिम्ब-सज्ञा पु० [वि० प्रतिबिम्बित]

१ परछाईं । छाया । २. प्रतिमा । मूर्ति ।

चित्र । तमचीर । ३. क्लव । ४. दर्पण ।

शीशा ।

प्रतिबिम्बवाद-सज्ञा पु० वेदात वा यह सिद्धात कि जीव बालव में, ईश्वर का प्रति-  
बिम्ब है ।

प्रतिबीज-वि० नष्ट बीज ।

प्रतिबुद्ध-वि० १ जागा हुआ । सजग । २.

प्रसिद्ध । ३. उत्तत ।

प्रतिबुद्धि-सज्ञा स्त्री० विपरीत बुद्धि । उलटी समझ ।

प्रतिबोध-सज्ञा पु० १. जागरण । २. ज्ञान ।

प्रतिबोधक-सज्ञा पु० १. ज्ञान उत्पन्न करने-  
वाला । २. जगानेवाला ।

प्रतिबोधन-सज्ञा पु० १ जगाना । २ ज्ञान  
उत्पन्न करना ।

प्रतिभट्ट-सज्ञा पु० १. समान वीर । २.  
शत्रु ।

प्रतिभा-सज्ञा स्त्री० भसाधारण बुद्धि बल ।

भसाधारण मानसिक शक्ति, जिससे कोई  
व्यक्ति अधिक गायता वा कार्य कर दिखाता  
है । भसाधारण योग्यता ।

प्रतिभाग-सज्ञा पु० (वि० प्रतिभाषित)

प्राचीन काल का एक घर । भाजवल वा  
यह शुल्क या कर जो राज्य में धननेवाले  
बुद्ध विनोद पदार्थों (नमक, मादकद्रव्य,  
दिगमलाई, पगडे आदि) पर उन्ने वनने  
ही घोर बाजार में बिची होने से पहले  
लिया जाता है । (भग्ने०—एकमाइन ड्यूटी)

प्रतिभाग्य-वि० जिन पर प्रतिभाग लगता  
या लग सकती है । प्रतिभाग (शुल्क)  
गानेवाली वस्तु ।

प्रतिभाषानु, प्रतिभाषास्त्री-वि० जिनमें प्रतिभा  
है । प्रतिभाषाज्ञा ।

प्रतिभाषा-सज्ञा स्त्री० प्रत्युत्तर । जवाब ।

वादी का बयन । मुद्दे का बयान ।

प्रतिभाषाम्पन्न-वि० दे० "प्रतिभाषानु" ।

प्रतिभाष-सज्ञा पु० १ आकृति । २ धोखा ।

३ प्रवाद ।

प्रतिभू-सज्ञा पु० जमानत करनेवाला ।

जामिन । जमानतदार ।

प्रतिभूति-सज्ञा स्त्री० जमानत की रकम । वह  
धन जो जमानत के लिए जमा हो ।

धो०—प्रतिभूतिव्याप्त=जमानत के रूप में  
धन जमा करना ।

प्रतिभेद-सज्ञा पु० १ प्रभेद । अन्तर । २.  
भाविव्यार ।

प्रतिमडल-सज्ञा पु० सूर्य आदि ग्रहों का मडल ।  
परिवेस ।

प्रतिम-अर्थ० समान । मनुष्य । तुल्य ।

प्रतिमा-सज्ञा स्त्री० १ अनुकृति । २ मिट्टी,  
पत्थर आदि की देवताओं की मूर्ति ।

३ प्रतिबिम्ब । छाया । ४ एक अलंकार,  
जिसमें किसी मूल्य पदार्थ या व्यक्ति के  
प्रमाण में उर्मी के सदृश किसी अन्य  
पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्णन  
होता है ।

प्रतिमान-सज्ञा पु० १. प्रतिबिम्ब । परछाही ।

२. समानता । बराबरी । ३ उदाहरण  
नमूना ४. आदर्श के अनुरूप या नमूने की  
तरह बनाई गई वस्तु ।

प्रतिमुख-सज्ञा पु० १. नाटक की पाँच  
अंग-अधियों में से एक । २. विपत्ति वस्तु  
का पृष्ठ भाग ।

प्रतिभूति-सज्ञा स्त्री० प्रतिमा । अनुकृति ।

प्रतिबुद्ध-सज्ञा पु० बराबरी का युद्ध ।

प्रतियोग-सज्ञा पु० विरोध । फिर से किया  
हुआ प्रयत्न ।

प्रतियोगिता-सज्ञा स्त्री० किसी काम में

घोरा से भागे बढ़ने का प्रयत्न । प्रतिद्वन्द्विता ।

पट्टा-ऊपर । हाट । ऐसा कार्य, जिसमें  
उत्तम या पद पाने के लिए बहुत से लोग  
मग्न होने का प्रयत्न करें ।

प्रतियोगी-सज्ञा पु० १. प्रतिवर्तिता करने-  
वाला । २. हिंस्रदार । ३ शत्रु । विरोधी ।

खेरी । ४. मददगार । सहायक ।  
 प्रतियोद्धा—संज्ञा पुं० शत्रु । बराबर का  
 लड़नेवाला ।  
 प्रतिरक्षण—संज्ञा पुं० रक्षा ।  
 प्रतिरथ—संज्ञा पुं० बराबर का लड़नेवाला ।  
 प्रतिरुद्ध—वि० धरुद्ध ।  
 प्रतिरूप—संज्ञा पुं० १. प्रतिमा । मूर्ति । २.  
 तस्वीर । चित्र । ३. प्रतिलिपि । नमूना ।  
 वि० नकली या जाली । कृत्रिम ।  
 बनावटी ।  
 प्रतिरूपक—संज्ञा पुं० नकली या बनावटी  
 चीज (विशेषतः सिक्के, नोट आदि)  
 बनावेवाला ।  
 प्रतिरोध—संज्ञा पुं० [वि० प्रतिरोधक] १.  
 विरोध । २. रुकावट । रोक । बाधा ।  
 विघ्न । ३. तिरस्कार ।  
 प्रतिरोधक या प्रतिरोधी—संज्ञा पुं० १. रोकने  
 वाला । रुकावट या बाधा डालनेवाला ।  
 २. चोर । ३. तस्कर । डाकू ।  
 प्रतिरोधन—संज्ञा पुं० प्रतिरोध करने की  
 निया या भाव ।  
 प्रतिलम्भ—संज्ञा पुं० १. कुरीति । २. दोष ।  
 फलक ३. प्राप्ति । लाभ । ४. निन्दा ।  
 प्रतिलिपि—संज्ञा स्त्री० किसी लिखी हुई  
 चीज की ज्यों की त्यों नकल । (कॉपी)  
 प्रतिलोम—वि० १. प्रतिकूल । विपरीत । २.  
 जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो ।  
 उलटा । ३. काया । ४. नीच ।  
 प्रतिलोम विवाह—संज्ञा पुं० वह विवाह, जिसमें  
 पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण  
 की हो ।  
 प्रतिवचन—संज्ञा पुं० उत्तर । प्रतिध्वनि ।  
 प्रतिवर्तन—संज्ञा पुं० (वि० प्रतिवर्तित)  
 लौटना । चक्कर काटना । फेर खगाना ।  
 घूमना ।  
 प्रतिबहन—संज्ञा पुं० उलटी ओर बहना या  
 ले जाना ।  
 प्रतिवस्तुपमा—संज्ञा स्त्री० वह काव्यालंकार,  
 जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण  
 धर्म का वर्णन अलग-अलग हो ।  
 प्रतिवाच्य—संज्ञा पुं० उत्तर । प्रत्युत्तर ।

प्रतिवाणी—संज्ञा स्त्री० प्रत्युत्तर ।  
 प्रतिवाद—संज्ञा पुं० वह कथन, जो किसी मत  
 को मिथ्या ठहराने के लिए हो । खंडन ।  
 विरोध । आपत्ति । विवाद । बहस ।  
 प्रतिवादक—संज्ञा पुं० प्रतिवाद करनेवाला ।  
 प्रतिवादी ।  
 प्रतिवादित—संज्ञा स्त्री० प्रतिवाद करने का  
 भाव । प्रतिवादी या कार्य ।  
 प्रतिवादी—संज्ञा पुं० १. प्रतिवाद या खंडन  
 करनेवाला । २. वादी का विरोधी ।  
 प्रतिपक्षी । विपक्षी ।  
 प्रतिवारण—संज्ञा पुं० रोकना । मना करना ।  
 प्रतिवास—संज्ञा पुं० १. पड़ोस । समीप का  
 निवास । २. सुगन्धि ।  
 प्रतिवासर—संज्ञा पुं० प्रतिदिन ।  
 प्रतिवासी—संज्ञा पुं० पड़ोस में रहनेवाला ।  
 पड़ोसी ।  
 प्रतिविधान—संज्ञा पुं० किसी विधान के  
 मुकाबले में रिया जानेवाला विधान ।  
 प्रतिकार ।  
 प्रतिवीर्य—संज्ञा पुं० प्रतिरोध करने के लिए  
 व्यष्ट शक्ति रखनेवाला ।  
 प्रतिवेश—संज्ञा पुं० पड़ोस । घर के सामने  
 का घर । पड़ोस का मकान ।  
 प्रतिवेशी—संज्ञा पुं० पड़ोसी । पड़ोस में  
 रहनेवाला ।  
 प्रतिशंका—संज्ञा पुं० वह शंका, जो बराबर  
 बनी रहे ।  
 प्रतिशब्द—संज्ञा पुं० प्रतिध्वनि । गुंज ।  
 प्रतिशम—संज्ञा पुं० १. नाश । २. मुक्ति ।  
 प्रतिशयन—संज्ञा पुं० किसी इच्छा की पूर्ति  
 के निमित्त किसी देव-स्थान पर धरना  
 देना ।  
 प्रतिशिष्य—संज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य ।  
 प्रतिशोध—संज्ञा पुं० बदला । बदला चुकाने के  
 लिए किया गया काम ।  
 प्रतिभ्रुत—वि० १. स्वीकृत । मजूर । २.  
 प्रशंसा किया हुआ ।  
 प्रतिभ्रुति—संज्ञा स्त्री० १. प्रतिध्वनि । २.  
 प्रतिरूप । ३. प्रतिज्ञा । ४. स्वीकृति ।  
 मजुरी ।

प्रत्यपकार-सज्ञा पु० अपकार के बदले में अपनार। बुराई के बदले में बुराई।  
प्रत्यभिज्ञा-सज्ञा स्त्री० स्मृति से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान। अभेद ज्ञान, जिसके अनुसार ब्रह्म और जीव अद्वैत माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन-सज्ञा पु० माहेश्वर-संप्रदाय का एक दर्शन, जिसके अनुसार महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञान-सज्ञा पु० १. किसी वस्तु या व्यक्ति को देखकर यह बतलाना कि यह अमुक ही है। पहचान। (अप्रे०-प्राइडेंटिफिकेशन)

२. स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।  
प्रत्यभिज्ञापत्र-सज्ञा पु० यह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहचान का सूचक है और उसके पास इसी काम के लिए रहता हो। (अप्रे०-प्राइडेंटिटी-कार्ड)

प्रत्यभियोग-सज्ञा पु० प्रत्यपराध। अपराध पर अपराध। अपराधी होकर पुन अपराध करना। अभियुक्त होकर पुन अभिमाण करना।

प्रत्यभिवाद या प्रत्यभिवादन-सज्ञा पु० किसी पूज्य का प्रणाम करने पर मिलनेवाला भासीवाद।

प्रत्यय-सज्ञा पु० १ विरहात्। एतवार। २ प्रमाण। सवृत। ३ विचार। खयाल। ४ बुद्धि। समर्थ। ५ व्याख्या। शरह। ६ वारण हेतु। ७ आवश्यकता। ८ प्रसिद्धि। प्रत्याति ९ लक्षण। चिह्न। १०. निर्णय। केंद्रता। ११ सम्मति। राय। १२ छद्म के भेद और उनकी सत्यता जानने की नी रीतियाँ। १३ व्याख्यान में वह अक्षर या अक्षरसमूह, जो किसी पद या मूल शब्द के अंत में, उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के लिए लगाया जाय। जैसे, मुखता का 'ता' प्रत्यय है।

प्रत्ययपत्र-सज्ञा पु० वह पत्र, जिसमें यह लिखा रहता है कि यह पत्र ले जानवाने का इतना धन हमारे पास में से या ऋण दे दिया जाय। (अप्रे०-लेटर आफ़ नॉटिड)

प्रत्यर्पण-सज्ञा पु० लौटाना। फेर देना। प्रतिदान।

प्रत्यवमर्श, प्रत्यवमर्शन-सज्ञा पु० १. अनु-सन्धान। पता लगाना। भले-बुरे का विचार।

प्रत्यवरोह-सज्ञा पु० अवरोहण। सीढ़ी।

प्रत्यवसान-सज्ञा पु० भोजन।

प्रत्यवस्कन्दन-सज्ञा पु० जवाब-दावा। मुकदमे में किसी तथ्य को स्वीकार करने यह तर्क करना कि उससे कोई धाराप नहीं लगता।

प्रत्यवहार-सज्ञा पु० सहार। मार डालना।

प्रत्यवाय-सज्ञा पु० १ पाप। दोष। २. अनिष्ट। विघ्न।

प्रत्यवेषण-सज्ञा पु० भली भाँति जानना।

प्रत्यश्म-सज्ञा पु० गेरु।

प्रत्याख्यान-सज्ञा पु० १. खडन। २. निरा-करण। अस्वीकार।

प्रत्यागत-वि० लौटकर आया हुआ।

प्रत्यागमन-सज्ञा पु० १ लौट आना। वापसी। २ दोबारा आना।

प्रत्याघात-सज्ञा पु० चोट के बदले चोट। टक्कर।

प्रत्यादेश-सज्ञा पु० १ खण्डन। निराकरण। २ देवता की आज्ञा। उपदेश। ३. परामर्श।

प्रत्यानयन-सज्ञा पु० गई हुई चीज लौटाकर ला देना या उसके स्थान पर दूसरी ही दूसरी वस्तु देना। टूटी-भूटी वस्तु फिर पूर्ण रूप में लाना। (अप्रे०-रिस्टोरेशन)

प्रत्यापत्तन-सज्ञा पु० उत्तराधिकारी के न रहने पर किसी सम्पत्ति का राज्य के अधिकार में आना।

प्रत्यारोप-सज्ञा पु० किसी आरोप के उत्तर में दिया जानेवाला आरोप। (अप्रे०-काउंटरचार्ज)

प्रत्यालोचन-सज्ञा पु० किसी के लिए हुए निर्णय या निर्णय व्यवहार को फिर से देखना कि वह ठीक है या नहीं। दे० 'प्रयालोचना'। (अप्रे०-रिव्यू)

प्रत्यालोचना-सज्ञा स्त्री० आलोचना में कहीं गई बातों की समीक्षा। किसी शय या विषय की आलोचना का उत्तर

प्रत्यावर्त्तन—सज्ञा पु० वापसी । लौटकर अपने स्थान पर आना ।  
 प्रत्याशा—सज्ञा स्त्री० १. आशा । उम्मीद । २. विश्वास । ३. प्रतीक्षा ।  
 प्रत्यासी—वि० अभिलाषी । आकांक्षी । भरोमेवाला ।  
 प्रत्याश्रय—सज्ञा पु० पनाह लेने की जगह ।  
 प्रत्यासन्न—वि० समीपवर्ती । निकटस्थ । पास रहनेवाला ।  
 प्रत्याहार—सज्ञा पु० इन्द्रियनिग्रह । योग के आठ अंगों में से एक अंग, जिसमें इन्द्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है ।  
 प्रत्युक्ति—सज्ञा स्त्री० जवाब । उत्तर ।  
 प्रत्युज्जीवन—सज्ञा पु० पुनर्जीवन । मृत प्राणी का पुन जी उठना ।  
 प्रत्युत—अव्य० बल्कि । बरन् । इसके विपरीत ।  
 प्रत्युत्तर—सज्ञा पु० उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर । जवाब का जवाब ।  
 प्रत्युत्थान—सज्ञा पु० अभ्युत्थान । पुन उन्नति । किसी वड़े के आन पर आसन छाड़ कर खड़ा हो जाना ।  
 प्रत्युत्पन्न—वि० १ जो फिर से या ठीक समय पर उत्पन्न हो । प्रस्तुत । २. प्रतिभावान् ।  
 यी०—प्रत्युत्पन्नमति—जो तुरन्त ही कोई उपयुक्त बात या काम सोच ले । तत्पर बुद्धिवाला । तत्परज्ञानी ।  
 प्रत्युद्गमन—सज्ञा पु० अभ्युत्थान ।  
 प्रत्युद्गमनीय—वि० पूज्य ।  
 प्रत्युपकार—सज्ञा पु० वह उपकार, जो किसी उपकार के बदल में दिया जाय ।  
 प्रत्युपकारी—सज्ञा पु० उपकार का बदला देनेवाला ।  
 प्रत्युष—सज्ञा पु० १ प्रभात । प्रातःकाल । २. सूर्य ।  
 प्रत्युह—सज्ञा पु० विघ्न । बाधा । रूकावट ।  
 प्रत्येक—वि० एक-एक । हर एक । समस्त ।  
 प्रयन—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का गुरन । विस्तार । २. प्रवास में लाने की क्रिया या भाव ।

प्रयम—वि० पहला । श्रव्वल । सर्वथेष्ठ । सर्वोत्तम ।  
 क्रि० वि० पहले । आगे । पेशतर ।  
 प्रयम कारक—सज्ञा पु० व्याकरण में "कर्त्ता" कारक ।  
 प्रयमतः—क्रि० वि० पहले से । सबसे पहले ।  
 प्रयम मुख्य—सज्ञा पु० दे० "उत्तम मुख्य" (व्याकरण) ।  
 प्रयमा—सज्ञा स्त्री० व्याकरण का कर्त्ता कारक । पहली विभक्ति । मदिरा । शराब (ताश्निक) ।  
 प्रयमाद्ध—सज्ञा पु० पूर्वार्द्ध ।  
 प्रयमी—सज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी" ।  
 प्रया—सज्ञा स्त्री० १ रीति । रियाज । प्रणाली । नियम । २. तन्वा-चौड़ा । विस्तृत । ३. प्रतिदि ।  
 प्रद—वि० देनेवाला । दाता । (योगिक में) जैसे, आगन्दप्रद ।  
 प्रदक्षिण—सज्ञा पु० देवमूर्ति आदि के चारों ओर घूमना । परिभ्रम । चाराचार भ्रमण ।  
 प्रदक्षिणा—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिण" । परिभ्रमा ।  
 प्रदत्त—वि० दिया हुआ ।  
 प्रवर—सज्ञा पु० १ स्निग्धों का एक रोग । २. तीर । ३. तोड़ने-फोड़ने का भाव ।  
 प्रदर्शक—सज्ञा पु० १. दिखलानेवाला । दर्शक । प्रकाशक । २. गुरु ।  
 प्रदर्शन—सज्ञा पु० दिखलाने का काम । असन्तोष प्रकट करने या अपने विचार प्रकट करने के लिए जुलूस निकालने या नारे लगाने आदि का कार्य । दे० "प्रदर्शनी" ।  
 प्रदर्शनी—सज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ तरह-तरह की चीजें लोगों को दिखलाने के लिए रखी जायें । नुमाइश ।  
 प्रदर्शित—वि० जो दिखलाया गया हो । क्लित-लाया हुआ ।  
 प्रदाता—वि० दाता । देनेवाला ।  
 प्रदान—सज्ञा पु० १ देने की क्रिया । २. दान । यज्ञशिक्ष । ३. विवाह । ४. भक्त्या ।  
 प्रदायक—सज्ञा पु० [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला । दाता । दानी ।

प्रतिबद्ध-वि० १. बंधा हुआ । नियमित । २. जिसमें कोई प्रतिबन्ध हो । शर्त से बंधा हुआ ।  
 प्रतिबाधक-वि० १. बाधा डालनेवाला । २. पीडा देनेवाला ।  
 प्रतिबाधन-सज्ञा पु० १. विघ्न । २. पीडा ।  
 प्रतिबिम्ब-सज्ञा पु० [वि० प्रतिबिम्बित]  
 १ परछाई । छाया । २. प्रतिमा । मूर्ति ।  
 चित्र । तस्वीर । ३. भक्तव । ४. दर्पण ।  
 शोभा ।  
 प्रतिबिम्बवाद-सज्ञा पु० वेदात का यह सिद्धांत कि जीव वास्तव में ईश्वर का प्रतिबिम्ब है ।  
 प्रतिबोज-वि० गूट बोज ।  
 प्रतिबुद्ध-वि० १ जाणा हुआ । सजग । २. प्रसिद्ध । ३. उन्नत ।  
 प्रतिबुद्धि-सज्ञा स्त्री० विपरीत बुद्धि । उलटी समझ ।  
 प्रतिबोध-सज्ञा पु० १. जागरण । २. ज्ञान ।  
 प्रतिबोधक-सज्ञा पु० १. ज्ञान उत्पन्न करनेवाला । २. जगानेवाला ।  
 प्रतिबोधन-सज्ञा पु० १ जगाना । २ ज्ञान उत्पन्न करना ।  
 प्रतिभट-सज्ञा पु० १. समान वीर । २. धनु ।  
 प्रतिभा-सज्ञा स्त्री० प्रमाधारण बुद्धि-बल । प्रमाधारण मानसिक शक्ति, जिसमें कोई व्यक्ति अधिक योग्यता का कार्य कर दिखाता है । प्रमाधारण योग्यता ।  
 प्रतिभाग-सज्ञा पु० (वि० प्रतिभागिन)  
 प्राचीन काल का एक ऋतु । भाग्यल का यह शुक्ल या कृष्ण जो रात्रि में बनेवाले कुछ विशेष पदार्थों (नमक, मादकद्रव्य, दिपामलाई, बपड़े आदि) पर उनके बने होने की ओर वाजार में बित्री होने से पहचाने जाया जाता है । (प्रमे०—एस्कादज ड्यूदी)  
 प्रतिभाग्य-वि० जिस पर प्रतिभाग लगता या लग सकता है । प्रतिभाग (शुक्ल) लगनेवाली शय्य ।  
 प्रतिभावान्, प्रतिभावाली-वि० जिसमें प्रतिभा हो । प्रतिभावाना ।

प्रतिभाषा-सज्ञा स्त्री० प्रत्युत्तर । जवाब वार्दा का बयान । मुद्दे का बयान ।  
 प्रतिभासम्पन्न-वि० दे० "प्रतिभावान्" ।  
 प्रतिभास-सज्ञा पु० १ आकृति । २ धोला । ३ प्रवास ।  
 प्रतिभू-सज्ञा पु० जमानत करनेवाला । जामिन । जमानतदार ।  
 प्रतिभूति-सज्ञा स्त्री० जमानत की रक्कम । वह धन जो जमानत के लिए जमा हो ।  
 यौ०—प्रतिभूतिन्याय=जमानत के रूप में धन जमा करना ।  
 प्रतिभेद-सज्ञा पु० १ प्रभेद । अन्तर । २. भ्राविष्कार ।  
 प्रतिमडल-सज्ञा पु० सूर्य आदि ग्रहों का गडल परिवेश ।  
 प्रतिम-अश्द० समान । सदृश । तुल्य ।  
 प्रतिमा-सज्ञा स्त्री० १ अनुकृति । २ छिड़ी पत्थर आदि की देवनाम्नों की मूर्ति । ३ प्रतिमय । छाया । ४ एक चलकार जिन्म निमी मुख्य पदार्थ का व्यक्ति के अभाव में उसी के सदृश किसी अन्य पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का वर्ण होता है ।  
 प्रतिमान-सज्ञा पु० १. प्रतिबिम्ब । परछाही । २. समानता । बराबरी । ३ उदाहरण नमूना । ४. आदर्श के अनुरूप या नमूने के तरह बनाई गई वस्तु ।  
 प्रतिमुख-सज्ञा पु० १. नाटक की पात्र भग्न-संधियों में से एक । २. किसी वस्तु का पुष्ट भाग ।  
 प्रतिभूति-सज्ञा स्त्री० प्रतिमा । अनुकृति ।  
 प्रतिमुद्र-सज्ञा पु० बराबरी का मुद्र ।  
 प्रतिघोष-सज्ञा पु० विरोध । फिर से विद्रुहा प्रयत्न ।  
 प्रतियोगिता-सज्ञा स्त्री० किसी काम में श्रीरा ने भागे बढ़ने का प्रयत्न । प्रतिद्विष्टता बढ़ा-ऊारी । हाड । ऐसा कार्य, जिसमें प्रनाम या पद पान के लिए बहुत से लोग मक्कन जाने का प्रयत्न करें ।  
 प्रतियोगी-सज्ञा पु० १. प्रतियोगिता करनेवाला । २ हिम्मतदार । ३ शत्रु । विरोधी ।

वेरी । ४. मददगार । सहायक ।  
 प्रतियोद्धा—सज्ञा पुं० दानु । बराबर का लड़नेवाला ।  
 प्रतिरक्षण—सज्ञा पुं० रक्षा ।  
 प्रतिरूप—सज्ञा पुं० बराबर का लड़नेवाला ।  
 प्रतिरुद्ध—वि० भवरुद्ध ।  
 प्रतिरूप—सज्ञा पुं० १. प्रतिमा । मूर्ति । २. तसवीर । चित्र । ३. प्रतिलिपि । नमूना ।  
 वि० नकली या जाली । कृत्रिम । बनावटी ।  
 प्रतिरूपक—सज्ञा पुं० नकली या बनावटी चीजे (विशेषतः सिक्के, मोट आदि) बनानेवाला ।  
 प्रतिरोध—सज्ञा पुं० [वि० प्रतिरोधक] १. विरोध । २. रुकावट । रोक । बाधा । विघ्न । ३. तिरस्कार ।  
 प्रतिरोधक या प्रतिरोधी—सज्ञा पुं० १. रोकने वाला । रुकावट या बाधा डालनेवाला । २. चोर । ३. तस्कर । डाकू ।  
 प्रतिरोधन—सज्ञा पुं० प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव ।  
 प्रतिलम्भ—सज्ञा पुं० १. कुरीति । २. दोष । बलक ३. प्राप्ति । लाभ । ४. निन्दा ।  
 प्रतिलिपि—सज्ञा स्त्री० किसी लिखी हुई चीज की ज्यो की त्यो नकल । (कापी)  
 प्रतिलोम—वि० १. प्रतिकूल । विपरीत । २. जो नीचे से ऊपर की ओर गया हो । उलटा । ३. बायाँ । ४. नीच ।  
 प्रतिलोम विवाह—सज्ञा पुं० वह विवाह, जिसमें पुरुष नीच वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो ।  
 प्रतिवचन—सज्ञा पुं० उत्तर । प्रतिध्वनि ।  
 प्रतिवर्तन—सज्ञा पुं० (वि० प्रतिवर्तित) लौटना । चक्कर काटना । फेरा लगाना । घूमना ।  
 प्रतिवहन—सज्ञा पुं० उलटी ओर बहाना या ले जाना ।  
 प्रतिवस्तूपमा—सज्ञा स्त्री० वह वाक्यालंकार, जिसमें उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का वर्णन अलग-अलग हो ।  
 प्रतिवाक्य—सज्ञा पुं० उत्तर । प्रत्युत्तर ।

प्रतिवाणी—सज्ञा स्त्री० प्रत्युत्तर ।  
 प्रतिवाद—सज्ञा पुं० वह कथन, जो किसी मत को निर्या ठहराने के लिए हो । खंडन । विरोध । आपत्ति । विवाद । बहस ।  
 प्रतिवादक—सज्ञा पुं० प्रतिवाद करनेवाला । प्रतिवादी ।  
 प्रतिवादिता—सज्ञा स्त्री० प्रतिवाद करने का भाव । प्रतिवादी का कार्य ।  
 प्रतिवादी—सज्ञा पुं० १. प्रतिवाद या खंडन करनेवाला । २. वादी का विरोधी । प्रतिपक्षी । विपक्षी ।  
 प्रतिवारण—सज्ञा पुं० रोकना । मना करना ।  
 प्रतिवास्त—सज्ञा पुं० १. पड़ोस । समीप का निवास । २. सुगन्धि ।  
 प्रतिवासर—सज्ञा पुं० प्रतिदिन ।  
 प्रतिवासी—सज्ञा पुं० पड़ोस में रहनेवाला । पड़ोसी ।  
 प्रतिविधान—सज्ञा पुं० किसी विधान के मुकाबले में किया जानेवाला विधान ।  
 प्रतिकार ।  
 प्रतिबोध—सज्ञा पुं० प्रतिरोध करने के लिए यथेष्ट शक्ति रखनेवाला ।  
 प्रतिवेश—सज्ञा पुं० पड़ोस । घर के सामने का घर । पड़ोस का मकान ।  
 प्रतिवेशी—सज्ञा पुं० पड़ोसी । पड़ोस में रहनेवाला ।  
 प्रतिशंका—सज्ञा पुं० वह शंका, जो बराबर बनी रहे ।  
 प्रतिशब्द—सज्ञा पुं० प्रतिध्वनि । गुंज ।  
 प्रतिशम—सज्ञा पुं० १. नाश । २. मुक्ति ।  
 प्रतिशयन—सज्ञा पुं० किसी इच्छा की पूर्ति के निमित्त किसी देव-स्थान पर धरना देना ।  
 प्रतिशिष्य—सज्ञा पुं० शिष्य का शिष्य ।  
 प्रतिशोध—सज्ञा पुं० बदला । बदला चुकाने के लिए किया गया काम ।  
 प्रतिश्रुत—वि० १. स्वीकृत । मजूर । २. प्रतिज्ञा किया हुआ ।  
 प्रतिश्रुति—सज्ञा स्त्री० १. प्रतिध्वनि । २. प्रतिरूप । ३. प्रतिज्ञा । ४. स्वीकृति । मजूरी ।

प्रतिभृतिपत्र-मज्ञा पु० राज्य-द्वारा चलाई हुई वह हुंई, जिसका रपया निश्चित समय पर मिलता हो (भ्रंशे०-प्राप्तिमरी नोट)।

प्रतिभ्य या प्रतिदयाय-सज्ञा पु० जुगम। सर्व। दनेष्मा।

प्रतिषेध-सज्ञा पु० [वि० प्रतिषिद्ध, प्रतिषेध] १ निषेध। मनाही। रोक। यत्न। २ एक प्रकार का अर्थात्पार, जिसमें किसी प्रसिद्ध निषेध या अन्तर का इस प्रकार उल्लेख किया जाय, जिससे उसका कुछ विशेष अर्थ निकले।

प्रतिष्ठा-सज्ञा पु० दूत।

प्रतिष्ठ-वि० प्रसिद्ध।

प्रतिष्ठा-मज्ञा स्त्री० १. मान-भर्यादा। शौरव। सम्मान। इज्जत। २ स्थापना। रखा जाना। जैसे, देवता की प्रतिमा की स्थापना। ३ यश।

प्रतिष्ठान-मज्ञा पु० १ स्थापित या प्रतिष्ठित करने की क्रिया। बैठाना। रखना। २ जमाना। देवमूर्ति की स्थापना। ३ स्थान। ४ सत्था।

प्रतिष्ठापत्र-सज्ञा पु० सम्मानपत्र। प्रतिष्ठा करने के लिए दिया जानवाला पत्र। सनद।

प्रतिष्ठावान्-वि० मान-भर्यादावाला। सम्मानित। इज्जतदार।

प्रतिष्ठित-वि० १ जिसकी प्रतिष्ठा हुई हो। सम्मानित। इज्जतदार। २ स्थापित किया हुआ।

प्रतिस्थापन-सज्ञा पु० (वि० प्रतिस्थापित) अपने स्थान से हटी हुई वस्तु या व्यक्ति का फिर से उसी स्थान पर रखना या बैठाना।

प्रतिस्पर्धा-सज्ञा स्त्री० १ लागडाँट। होड़। बड़ा-ऊपरी। किसी काम में स्पर्धा। दूसरे से बढ़ने का प्रयत्न। २ द्वेष।

प्रतिस्पर्द्धी-सज्ञा पु० प्रतिस्पर्द्धा करनेवाला। मुराबला या बरबरी करनेवाला।

प्रतिस्फलन-सज्ञा पु० फँलाव।

प्रतिहता-सज्ञा पु० बाधक। रोकनेवाला।

प्रतिहत-वि० १ जिसे कोई टोकर या आघात लगा हो। अवरद्ध। २ निराश। ३. कँटा हुआ।

प्रतिहति-सज्ञा स्त्री० १. आघात। राखने की चेष्टा। टक्कर। २ शोध।

प्रतिहरण-सज्ञा पु० विनाश।

प्रतिहर्त्ता-सज्ञा पु० विनाश करनेवाला।

प्रतिहस्त-सज्ञा पु० प्रतिनिधि।

प्रतिहार-मज्ञा पु० १. द्वारपाल। ड्योड़ीदार। दरवान। २ द्वार। दरवाजा।

३ एक प्राचीन राजकर्मचारी, जो राजाओं को समाचार आदि सुनाया करता था।

४ नवीब। चीनदार। ५ मामवेदगान का एक भग। ६ गाथावी। ७ एक प्रजा की सन्धि।

प्रतिहारक-सज्ञा पु० बाजीगर। प्रतिहार। सामगान करनेवाला।

प्रतिहारण-सज्ञा पु० द्वार। द्वार आदि में प्रवेश करने की आज्ञा।

प्रतिहारो-सज्ञा पु० (स्त्री० प्रतिहारिणी) ड्योड़ीदार। द्वारपाल।

प्रतिहिता-सज्ञा स्त्री० बदला लना। हिंसा का प्रनिशोध।

प्रतीक-सज्ञा पु० चिह्न। निधान। लक्षण। किसी के स्थान या बदले में रखी हुई या काम में आनेवाली वस्तु। प्रतिमा।

प्रतीकार-सज्ञा पु० दे० "प्रतिवार"।

प्रतीकार्य-वि० प्रतीकार के योग्य। जिससे बदला लिया जा सके।

प्रतीकाश-सज्ञा पु० १ समान। तुल्य। सदृश। २ उपमा।

प्रतीकोपासना-मज्ञा स्त्री० किसी विशेष वस्तु में ईश्वर की भावना करके उसे पूजना।

प्रतीक्षक-सज्ञा पु० प्रतीक्षा करनेवाला।

प्रतीक्षण-मज्ञा पु० १. प्रतीक्षा करना। २. इपा-दृष्टि।

प्रतीक्षा-सज्ञा स्त्री० कोई काम होना या किसी के आने की आशा में रहना। वाट देखना। आसरा। इंतजार। प्रत्याशा।

प्रतीक्षी-सज्ञा पु० प्रतीक्षा करनेवाला।

प्रतीक्ष्य-वि० प्रतीक्षा करने योग्य। जिसका प्रतीक्षा की जाय।

प्रतीची-सज्ञा स्त्री० पश्चिम दिशा।

प्रतीच्य-वि० पश्चिमी।

प्रतीत-वि० १ विदित । ज्ञात । अवगत । जाना हुआ । २. ऐसा जान पड़नेवाला ।  
 प्रतीति-सज्ञा स्त्री० १. ज्ञान । जानकारी । २ विश्वास । ३. प्रसन्नता । ४. साक्ष । ५. प्रतिज्ञा या लेन-देन आदि विश्वास किए जाने का भाव या प्रामाणिकता ।  
 प्रतीप-सज्ञा पु० १. प्रतिकूल घटना । आशा से विरुद्ध फल । २. एवं अर्थात्तवार, जिसमें उपमान को ही उपमेय के समान प्रयथा उपमेय-द्वारा उपमान को तिरस्कृत-सा दिखाते हैं ।  
 प्रतीपदर्शनी-सज्ञा स्त्री० देखते ही मुंह फेर लेनेवाली नववधू ।  
 प्रतीपोषित-सज्ञा स्त्री० खण्डन ।  
 प्रतीयमान-वि० १ प्रतीत या ज्ञात होता हुआ । जान पड़ता हुआ । बोधगम्य । २ अनुभूत ।  
 प्रतीर-सज्ञा पु० किनारा । तट ।  
 प्रतीवाप-सज्ञा पु० १. काढे में मिलाने की ओपधि । २. दैवी उपद्रव । ३. फेटना ।  
 प्रतीहार-सज्ञा पु० दे० "प्रतिहार" ।  
 प्रतीहारी-सज्ञा पु० दे० "प्रतिहारी" ।  
 प्रतुद-सज्ञा पु० पक्षी, जो अपना भक्ष्य चोंच से तोड़कर खाते हैं ।  
 प्रतोद-सज्ञा पु० १. चाबुक । २ अकुश । ३ किसी की कोई काम करने के लिए उत्तेजित या विवश करना । ४ दे० "चेतक" ।  
 प्रतोली-सज्ञा स्त्री० १ चीड़ी सडक । गली । कूचा । २ दुर्ग का द्वार । ३. फोडो पर पट्टी बाँधन का ढग ।  
 प्रतोप-सज्ञा पु० सन्तोष ।  
 प्रत-वि० पुराना । प्राचीन ।  
 प्रतजीव-विज्ञान-सज्ञा पु० वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमें प्राचीन काल के ऐसे जीव जन्मुआ का विवचन होता है, जो अब कहीं नहीं मिलते । (ग्रैग्रे-पेलियनटालाजी)  
 प्रततत्त्व, प्रततत्त्वविज्ञान-सज्ञा पु० दे० "पुरातत्त्व" ।  
 प्रत्यकन-सज्ञा पु० (वि० प्रत्यक्ति) किसी व्यक्ति वस्तु या आदृति का ठीक-ठीक

प्रतिरूप तैयार करना । हु-यह नवल उतारना । किसी चित्र आदि के ऊपर पतला वागज रखकर उसकी नवल उतारना ।

प्रत्यंचा†-सज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी । चित्ला ।

प्रत्यजन-सज्ञा पु० अजन लगाने या अच्यी करना ।

प्रत्यन्त-वि० बिलकुल सीमा पर का । अन्तिम सिरे का ।

प्रत्यन्तपर्वत-सज्ञा पु० बड़े पहाड के समीप का छोटा पहाड ।

प्रत्यक-कि० वि० १ पीछे । २. पच्छिम ।

प्रत्यक्षेत्तन-सज्ञा पु० १ वह पुरुष, जो योग-द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त कर चुका हो और जिसकी चितवृत्ति निर्मल हो चुकी हो । २ परमेश्वर । ३ अन्तरात्मा ।

प्रत्यक्ष-वि० [सज्ञा प्रत्यक्षता] १ जो देखा जा सके । जो आँखों के सामने हो । साक्षात् । प्रकट । प्रसिद्ध । २ जिसका ज्ञान इन्द्रियो से हो सके । ३ निश्चयात्मक ज्ञान ।

सज्ञा पु० चार प्रकार के प्रमाणों में से एक ।

कि० वि० आँखों के आगे । सामने ।

प्रत्यक्षता-सज्ञा स्त्री० प्रत्यक्ष होने का भाव ।

प्रत्यक्षदर्शी-सज्ञा पु० साक्षी । वह गवाह, जिसने घटना को आँखा देखा हो । चक्षुदीद गवाह ।

प्रत्यक्षवाद-सज्ञा पु० वह सिद्धांत, जिसमें केवल प्रत्यक्ष को ही प्रमाण माना जाय ।

प्रत्यक्षवादी-सज्ञा पु० [स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी] केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को माननेवाला व्यक्ति ।  
 प्रत्यक्षीकरण-सज्ञा पु० आँखों के सामने दिखा देना । किसी वस्तु या विषय का प्रत्यक्ष ज्ञान या साक्षात्कार करना ।

प्रत्यक्षीभूत-वि० प्रत्यक्षगति । इन्द्रिया-द्वारा ज्ञात ।

प्रत्यगात्मा-सज्ञा पु० व्यापक प्रज्ञा ।

प्रत्यप्र-वि० १. नवीन । अगिनव । २. शुद्ध । ३ बोधित ।

प्रत्ययकार-सज्ञा पु० अपकार के बदले में अपकार। बुराई के बदले में बुराई।  
प्रत्यभिज्ञा-सज्ञा स्त्री० स्मृति से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान। अग्नेद ज्ञान, जिसके अनुसार ब्रह्म और जीव अद्वैत माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन-सज्ञा पु० माहेश्वर-संप्रदाय का एक दर्शन, जिसके अनुसार महेश्वर ही परमेश्वर माने जाते हैं।

प्रत्यभिज्ञान-सज्ञा पु० १. किसी वस्तु या व्यक्ति को देखकर यह बनलाना कि यह अमुक ही है। पहचान। (अग्ने०-ब्राह्मेण्टिफिकेशन)

२. स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।  
प्रत्यभिज्ञापत्र-सज्ञा पु० यह पत्र जो किसी व्यक्ति की पहचान का सूचक हो और उसके पास इसी नाम के लिए रहता हो। (अग्ने०-ब्राह्मेण्टिफिकेशन-नार्ड)

प्रत्यभिधाय-सज्ञा पु० प्रत्यपराध। अपराध पर अपराध। अपराधी होकर पुनः अपराध करना। अभियुक्त होकर पुनः अभियोग करना।

प्रत्यभिषाद या प्रत्यभिषादन-सज्ञा पु० किसी पूज्य का प्रणाम करने पर मिलनेवाला आशीर्वाद।

प्रत्यय-सज्ञा पु० १. विद्वान्। एतवार। २. प्रमाण। सन्तु। ३. विचार। रायात्। ४. बुद्धि। समभ। ५. व्याख्या। गारह। ६. कारण हेतु। ७. भावस्वत्ता। ८. प्रसिद्धि। प्रख्याति ९. सक्षण। चिह्न। १०. निर्णय। कंतला। ११. मम्मति। राय। १२. छद्म के भेद और उनकी सत्या जानने की नीतिनियाँ। १३. व्याकरण में वह प्रश्न या अक्षरसमूह, जो किसी धातु या मूल शब्द के अक्षरों में, उनके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करने के लिए लगाया जाय। जैसे, भूर्वातात् 'ता' प्रत्यय है।

प्रत्ययपत्र-सज्ञा पु० वह पत्र, जिसमें यह लिखा रहता है कि यह पत्र ले जानेवाले को इतना धन हमारे यहाँ में न या अक्षर दे दिया जाय। (अग्ने०-नैटर ग्राम पैडिट)

प्रत्यर्पण-सज्ञा पु० लौटाना। फेर देना। प्रतिदान।

प्रत्यवमर्श, प्रत्यवमर्शन-सज्ञा पु० १. अनुसन्धान। पता लगाना। भले-बुरे का विचार।

प्रत्यवरोह-सज्ञा पु० अवरोहण। सीढ़ी।

प्रत्यवसान-सज्ञा पु० भोजन।

प्रत्यवस्कन्दन-सज्ञा पु० जवाब-दावा।

मुद्दमे में किसी तथ्य को स्वीकार करके यह तर्क करना कि उससे कोई आरोप नहीं लगता।

प्रत्यवहार-सज्ञा पु० सहार। मार डालना।

प्रत्यवाय-सज्ञा पु० १. पाप। दोष। २.

अनिष्ट। विघ्न।

प्रत्यवेक्षण-सज्ञा पु० भली भाँति जानना।

प्रत्यदम-सज्ञा पु० गेरु।

प्रत्याख्यान-सज्ञा पु० १. खंडन। २. निराकरण। अस्वीकार।

प्रत्यागत-वि० लौटकर आया हुआ।

प्रत्यागमन-सज्ञा पु० १. लौट आना।

वापसी। २. दोबारा आना।

प्रत्याघात-सज्ञा पु० चोट के बदले चोट।

टक्कर।

प्रत्यादेश-सज्ञा पु० १. लण्डन। निराकरण।

२. देवता की आज्ञा। उपदेश। ३.

परामर्श।

प्रत्यानयन-सज्ञा पु० गई हुई चीज लौटाकर ला देना या जगह स्थान पर वेंसी ही दूसरी वस्तु देना। टूटी-फूटी वस्तु फिर पूर्व रूप में लाना। (अग्ने०-रिप्टोरेशन)

प्रत्यापत्तन-सज्ञा पु० उत्तरापिनासी के न रहने पर किसी सम्पत्ति या राज्य के अधिकार में आना।

प्रत्यारोप-सज्ञा पु० किसी आरोप के उत्तर में किया जानेवाला आरोप। (अग्ने०-काउण्टरचार्ज)

प्रत्यालोचना-सज्ञा पु० किसी के किए हुए निर्णय या निर्णयों व्यवहार को फिर से देना कि वह ठीक है या नहीं। दे० 'प्रत्यालोचना'। (अग्ने०-रिप्यू)

प्रत्यालोचन-सज्ञा स्त्री० आलोचना में बड़ी गई बातों की समीक्षा। किसी ग्रन्थ या विषय की आलोचना का उत्तर या समीक्षा।

प्रत्यावर्त्तन-सज्ञा पु० वापसी । लौटकर अपने स्थान पर आना ।  
 प्रत्याज्ञा-सज्ञा स्त्री० १ आज्ञा । उम्मीद । २ विश्वास । ३ प्रतीक्षा ।  
 प्रत्याज्ञी-वि० अभिलाषी । आकांक्षी । भराबेवाला ।  
 प्रत्याभय-सज्ञा पु० पनाह लेने की जगह ।  
 प्रत्यासन्न-वि० समीपवर्ती । निकटस्थ । पास रहनेवाला ।  
 प्रत्याहार-सज्ञा पु० इन्द्रियग्रह । योग के आठ अंगों में से एक अंग, जिसमें इन्द्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण किया जाता है ।  
 प्रत्युक्ति-सज्ञा स्त्री० जवाब । उत्तर ।  
 प्रत्युज्जीवन-सज्ञा पु० पुनर्जीवन । मृत प्राणी का पुन जी उठना ।  
 प्रत्युन-अव्य० बल्कि । धरन् । इसके विपरीत ।  
 प्रत्युत्तर-सज्ञा पु० उत्तर मिलने पर दिया हुआ उत्तर । जवाब या जवाब ।  
 प्रत्युत्थान-सज्ञा पु० अम्युत्थान । पुन उन्नति । किसी बड़े के आने पर आमन छोड़ कर खड़ा हो जाना ।  
 प्रत्युत्पन्न-वि० १ जों फिर से या ठीक समय पर उत्पन्न हो । प्रस्तुत । २. प्रतिभावान् ।  
 यो०-प्रत्युत्पन्नमति=जो तुरन्त ही कोई अभ्युपन बात या काम सांच ले । तत्पर बुद्धिवाला । तत्परज्ञानी ।  
 प्रत्युद्गमन-सज्ञा पु० अम्युत्थान ।  
 प्रत्युद्गमनीय-वि० पूज्य ।  
 प्रत्युपकार-सज्ञा पु० वह उपकार, जो किसी उपकार के बदल में किया जाय ।  
 प्रत्युपकारी-सज्ञा पु० उपकार का बदला देनेवाला ।  
 प्रत्युथ-सज्ञा पु० १ प्रभाव । प्राण काल । २ सूर्य ।  
 प्रत्युह-सज्ञा पु० विघ्न । बाधा । रुकावट ।  
 प्रत्युथ-वि० ए-ए-ए । हर एक । समस्त ।  
 प्रयन-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का मूल । विघ्नार । २ प्रशास में लाने की क्रिया या भाव ।

प्रयन-वि० पहला । अज्वल । सर्वश्रेष्ठ । सर्वोत्तम ।  
 क्रि० वि० पहले । आगे । पेशतर ।  
 प्रयम कारक-सज्ञा पु० व्याकरण में "वर्त्ता" कारक ।  
 प्रयमत-क्रि० वि० पहले से । सबसे पहले ।  
 प्रयम पुष्प-सज्ञा पु० दे० "उत्तम पुष्प" (व्याकरण) ।  
 प्रयमा-सज्ञा स्त्री० व्याकरण का वर्त्ता कारक । पहली विभक्ति । मविरा । शराब (तात्रिक) ।  
 प्रयमार्द्ध-सज्ञा पु० पूर्वार्द्ध ।  
 प्रयमोक्त-सज्ञा स्त्री० दे० "पृथ्वी" ।  
 प्रया-सज्ञा स्त्री० १ रीति । रिवाज । प्रणाली । नियम । २ सम्बा-चौड़ा । विस्तृत । ३. प्रसिद्धि ।  
 प्रव-वि० देनेवाला । दाता । (योगिक में) जैसे, आनन्दप्रद ।  
 प्रवक्षिण-सज्ञा पु० देवमूर्ति आदि के चारों ओर घूमना । परिक्रमा । चारों ओर भ्रमण ।  
 प्रवक्षिणी-सज्ञा स्त्री० दे० "प्रदक्षिण" । परिक्रमा ।  
 प्रवत्त-वि० दिया हुआ ।  
 प्रवर-सज्ञा पु० १ स्त्रियों का एक रोग । २. तीर । ३. तीडने-फोड़ने का भाव ।  
 प्रवर्शक-सज्ञा पु० १. दिखलानेवाला । दर्शक । प्रवाशक । २ गुरु ।  
 प्रवर्शन-सज्ञा पु० दिखलाने का काम । असन्तोष प्रकट करने या अपने विचार प्रकट करने के लिए जुलूस निकालने या नारे लगाने आदि का कार्य । दे० "प्रदर्शनी" ।  
 प्रवर्शनी-सज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ तरह-तरह की चीजें लोगों को दिखलाने के लिए रखी जायें । नूमाइश ।  
 प्रवर्शित-वि० जो दिखलाया गया हो । स्वि-साया हुआ ।  
 प्रवाता-वि० दाता । देनेवाला ।  
 प्रदान-सज्ञा पु० १ देने की क्रिया । २ दान । योगिनी । ३ विवाह । ४ समुद्र ।  
 प्रदायक-सज्ञा पु० [स्त्री० प्रदायिका] देनेवाला । दाता । दानी ।

प्रदायी-मज्ञा पु० दे० "प्रदायक" ।  
 प्रदाह-मज्ञा पु० ज्वर या घोर विकार से  
 शरीर में होनेवाली जलन । दाह ।  
 प्रदिता-सज्ञा स्त्री० दो दिताओं के बीच की  
 दिता । कोण ।  
 प्रदिष्ट-वि० जिराने सम्बन्ध में आज्ञा, नियम  
 आदि देकर, यह बताया गया हो कि यह  
 इस प्रकार से होना चाहिए । निर्देशित ।  
 (अग्ने०—प्रेमनाइ-३)  
 प्रदीप-सज्ञा पु० १. दीपक । दीप्ता ।  
 चिराग । २. प्रकाश । रोशनी ।  
 प्रदीपक-सज्ञा पु० [स्त्री० प्रदीपिका] प्रकाश  
 में लानेवाला । प्रकाशक ।  
 प्रदीपित\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "प्रदीपिनी" ।  
 प्रदीपन-सज्ञा पु० १. प्रकाश या उजाला  
 करना । २. उज्ज्वल करना । चमकाना ।  
 प्रदीपिका-सज्ञा स्त्री० छोटी लालटेन ।  
 प्रदीप्त-वि० जगमगाता हुआ । प्रकाशवान् ।  
 चमकीला । उज्ज्वल ।  
 प्रदीप्ति-मज्ञा स्त्री० १. प्रकाश । रोशनी ।  
 २. आभा । चमक । कान्ति । प्रभा ।  
 प्रद्युम्न\*-सज्ञा पु० दे० "प्रद्युम्न" ।  
 प्रदेय-वि० देने योग्य ।  
 प्रदेश-सज्ञा पु० शासन या भाषा आदि की  
 दृष्टि से किसी देश का विभाग । अंग ।  
 अवयव । प्रान्त । सूबा । स्थान । क्षेत्र ।  
 प्रदेशी, प्रदेशीय, प्रादेशिक-वि० प्रदेशसम्बन्धी ।  
 प्रदीप-सज्ञा पु० १. सध्या-आल । सूर्य  
 के अस्त होने का समय । सूर्यास्त के पश्चात्  
 दो मूहूर्तकाल । गोपूत विला । दिन और  
 रात के बीच की सन्धि । २. त्रयोदशी का  
 अन्न, जिसमें सध्या-समय शिव का पूजन करके  
 भोजन करते हैं । ३. वन दीप । भारी  
 प्रपणध । ४. हुष्ट ।  
 प्रद्युम्न-मज्ञा पु० १. कामदेव । वरुण । २.  
 श्रीकृष्ण के बड़े पुत्र ।  
 प्रद्योत-सज्ञा पु० १. रश्मि । किरण । २.  
 दीप्ति । आभा । चमक ।  
 प्रद्वेय-सज्ञा पु० १. शत्रुता । २. पूणा ।  
 प्रघर्षण-सज्ञा पु० १. प्रपमान । २. आक्रमण ।  
 ३. बलात्कार ।

प्रघवित-वि० जिसका अनादर किया गया  
 हो । जिस पर आक्रमण किया गया हो ।  
 प्रधान-वि० [सज्ञा स्त्री० प्रधानता] सबसे  
 बड़ा और मुख्य । सबसे ऊँचे पदवाला  
 व्यक्ति ।  
 सज्ञा पु० १. सबसे बड़ा नेता या सरदार ।  
 २. मंत्री । ३. मुख्य अधिकारी । ४. किसी  
 संस्था का चुना हुआ अध्यक्ष ।  
 प्रधानता-मज्ञा स्त्री० प्रधान होने का भाव ।  
 प्रध्वस्त-सज्ञा पु० १. नाश । विनाश । नष्ट-  
 भ्रष्ट । २. किसी वस्तु की अतीत अवस्था ।  
 प्रध्वस्तक-वि० विनाशक ।  
 प्रध्वसी-मज्ञा पु० नाश करनेवाला ।  
 प्रध्वस्त-वि० नष्ट-भ्रष्ट ।  
 प्रन\*†-सज्ञा पु० दे० "प्रण" ।  
 प्रनति\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "प्रणति" । प्रणि-  
 पात । नम्रता ।  
 प्रणाम\*†-सज्ञा पु० दे० "प्रणाम" ।  
 प्रणामी\*†-सज्ञा पु० प्रणाम करनेवाला ।  
 सज्ञा स्त्री० वह दक्षिणा, जो गुरु, ब्राह्मण  
 आदि को भक्त लोग प्रणाम करने के समय  
 देते हैं ।  
 प्रपच-सज्ञा पु० १. आदर । डोंग । २.  
 ससार । सृष्टि । ३. विस्तार । फैलाव ।  
 भव-जाल । ४. दुनिया का जाल । भगडा ।  
 कमेला । ५. छल । धावा ।  
 प्रपची-वि० १. छली । कपटी । ढोंगी ।  
 २. प्रपच करनेवाला ।  
 प्रपत्ति-सज्ञा स्त्री० अनन्य भक्ति या शरणा-  
 गत होने की भावना ।  
 प्रपन्न-वि० प्राप्त । आया हुआ । आश्रित ।  
 शरणार्थी ।  
 प्रपात-सज्ञा पु० १. पहाड़ या ऊँचे स्थान से  
 गिरनेवाली जलधारा । झरना । २. बहुत  
 ऊँचा स्थान (चट्टान आदि), जहाँ से कोई  
 वस्तु सीधे गिरे । ३. ऊँचाई से सहसा नीचे  
 गिरना ।  
 प्रपितामह-सज्ञा पु० [स्त्री० प्रपितामही]  
 १. परदादा । दादा का बाप । २. पर-  
 दादा । परमेस्वर ।  
 प्रपीडक-सज्ञा पु० बहुत कष्ट देनेवाला ।

प्रपीडन—संज्ञा पु० [वि० प्रपीडित] बहुत कष्ट देना ।

प्रपुंज—संज्ञा पु० भुंड । समूह ।

प्रपुत्र—संज्ञा पु० [स्त्री० प्रपुत्री] पुत्र का पुत्र । पोता ।

प्रपौत्र—संज्ञा पु० परपोता । पुत्र का पोता । पोते का पुत्र ।

प्रफुल्लना\*—क्रि० अ० १. फूलना । खिलना । २. प्रसन्न होना ।

प्रफुल्ला\*—संज्ञा स्त्री० कुमुदिनी । कुई । कमलिनी । कमल ।

प्रफुल्लित\*—वि० १. खिला हुआ । कुसुमित । २. आनंदित । प्रफुल्ल ।

प्रफुल्ल—वि० १. विकसित । खिला हुआ । २. आनंदित । प्रसन्न ।

प्रबंध—संज्ञा पु० १. कोई काम ठीक तरह से पूरा करने की व्यवस्था । उपाय । आयोजन । व्यवस्था । इतजाम । बंदोबस्त । २. लेख या अनेक संबद्ध पद्यों में पूरा होनेवाला काव्य । ३. निबन्ध ।

प्रबंधकर्त्ता—संज्ञा पु० प्रबंध या इन्तजाम करनेवाला । व्यवस्थापक ।

प्रबंधकारिणी—संज्ञा पु० प्रबंध या इन्तजाम करनेवाली समिति । किसी सभा या समारोह का आयोजन करनेवाली समिति ।

प्रबल—वि० [स्त्री० प्रबला] प्रचंड । बलवान् । तेज । धीर । मरान् ।

प्रबला—संज्ञा स्त्री० बहुत बलवती ।

प्रबुद्ध—वि० १. सचेत । जागृत । सावधान । जागा हुआ । २. विकसित । खिला हुआ । संज्ञा पु० पंडित । ज्ञानी ।

प्रबोध—संज्ञा पु० [वि० प्रबोधक] १. जागना । २. सावधानी । ३. यथार्थ ज्ञान । पूर्णबोध । ४. डाढस । तसल्ली । दिलासा । सान्त्वना । ५. चेतावनी ।

प्रबोधक—वि० जगानेवाला । चेतानेवाला । ज्ञान देनेवाला । सान्त्वना देनेवाला ।

प्रबोधन—संज्ञा पुं० [वि० प्रबोधित, प्रबुद्ध] १. जागरण । जागना । २. जगाना । सावधान करना । ३. यथार्थ ज्ञान । बोध । चेत । ४. ज्ञान देना । जताना । ५. सान्त्वना ।

प्रबोधना\*—क्रि० स० १. जगाना । सचेत करना । सावधान करना । २. समझाना-बुझाना । पाठ पढ़ाना । सिखाना । पढ़ी पढ़ाना । ३. डाढस देना । तसल्ली देना । प्रबोधनी—वि० प्रबोध या ज्ञान करानेवाली । संज्ञा स्त्री० देवोत्थान या कार्तिक शुक्ला एकादशी ।

प्रबंजन—संज्ञा पु० १. आंधी । प्रचंड वायु । २. तोड़-फोड़ । नाश ।

प्रभव—संज्ञा पु० १. उत्पत्ति-कारण । २. जन्म-स्थान । ३. जन्म । उत्पत्ति । ४. सृष्टि । ससार । ५. पराक्रम ।

प्रभवन—संज्ञा पु० १. उत्पत्ति । २. मूल । ३. अधिष्ठान ।

प्रभविष्णु—वि० [संज्ञा स्त्री० प्रभविष्णुता] प्रभावशाली ।

प्रभा—संज्ञा स्त्री० प्रकाश । आभा । चमक ।

प्रभाङ्ग\*—संज्ञा पु० दे० "प्रभाव" ।

प्रभाकर—संज्ञा पु० १. सूर्य । २. चंद्रमा । ३. अग्नि । ४. समुद्र ।

प्रभाकीट—संज्ञा पु० जुगुन ।

प्रभात—संज्ञा पु० प्रातःकाल । सुबेरा ।

प्रभातफेरी—संज्ञा स्त्री० प्रचार आदि के लिए बहुत सुबेरे दल बांधकर गाते और नारे लगाते हुए नगर में चक्कर लगाना ।

प्रभाती—संज्ञा स्त्री० प्रातःकाल गाया जानेवाला गीत । सुबेरे गाई जानेवाली एक रागिनी ।

प्रभामंडल—संज्ञा पु० देवताओं या दिव्य पुरषों आदि के मुख के चारों ओर का वह आलोक, जो बिजो या मूर्तियों में दिया जाता है ।

प्रभाव—संज्ञा पु० सामर्थ्य । शक्ति । अस्तर । दबाव । जोर । पहुँच ।

प्रभावक—वि० प्रभाव करने या डालनेवाला । प्रभावती—संज्ञा स्त्री० सूर्य की पत्नी ।

\*वि० प्रभावशाली ।

प्रभावित—वि० जिस पर प्रभाव या अस्तर पड़ा हो ।

प्रभावी—वि० प्रभाव या अस्तर डालनेवाला । जोरदार । शक्तिशाली ।

प्रभाषी—वि० अच्छी तरह से बोलनेवाला ।

प्रभास-गज्ञा पु० १. दीप्ति । ज्योति ।  
वान्ति । २. एक प्राचीन तीर्थ । प्रभास-मृद्वन  
(सोमनाथ) ।

प्रभासना\*—वि० प्र० भासित हुआ ।  
प्रवाशित होना । दिखाई या समझ  
पड़ना ।

प्रभु-सज्ञा पु० १. स्वामी । मालिक ।  
नायक । अधिपति । २. ईश्वर । भगवान् ।

प्रभुता-सज्ञा स्त्री० १. महत्त्व । वैभव । बड़ाई ।  
२. हुक्म । शासनाधिकार । ३. ऐश्वर्य ।  
४. स्वाभित्व । मालिकपन ।

प्रभुताई†—सज्ञा स्त्री० दे० "प्रभुता" ।

प्रभुत्व-सज्ञा पु० प्रभुता ।

प्रभुभक्त-वि० नमकहलाल । स्वामी का  
हितैषी ।

प्रभु\*—सज्ञा पु० दे० "प्रभु" ।

प्रभूत-वि० १. प्रचुर । बहुत । २. उन्नत ।  
३. उत्पन्न । उद्भूत ।

सज्ञा पु० पञ्चभूत । तत्त्व ।

प्रभूति-सज्ञा १ स्त्री० उत्पत्ति । २ शक्ति ।  
३ अधिपता ।

प्रभूति-अव्य० इत्यादि । आदि । वर्गारह ।

प्रभेद-सज्ञा पु० १ भेद । भिन्नता । अन्तर ।  
पृथक्ता । २ गुप्त बात ।

प्रभेष्ट-वि० १. गिरा हुआ । २. टूटा हुआ ।

प्रमत्त-वि० [सज्ञा प्रमत्तता] उन्मत्त । मत्त ।  
नशे में चूर । मत्तवाला । बाचला । पागल ।  
जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो ।

प्रमत्तता-सज्ञा स्त्री० पागलपन । मस्ती ।

प्रमथ-सज्ञा पु० १ मथन करनेवाला । पीड़ा  
पहुँचानेवाला । २ शिव के एक प्रकार के  
गण या सेवक । ३ घोड़ा ।

प्रमथन-सज्ञा पु० १ मथना । २ दुख  
पहुँचाना । ३ मथ करना । नाथ करना ।

प्रमथनाथ-सज्ञा पु० शिव ।

प्रमथालय-सज्ञा पु० यत्रणा का स्थान । नरक ।

प्रमथित-वि० मूव मथा हुआ ।

प्रमथ-मज्ञा पु० १ मत्तवालापन । मस्ती ।

२. हर्ष । आनन्द । प्रसन्नता ।

वि० मत्त । मत्तवाला ।

प्रमदा-सज्ञा स्त्री० युवती । सुन्दर स्त्री ।

प्रमर्दन-गज्ञा पु० १. भरी भाँति मलना ।  
दमन करना । २. रौंदना । कुचलना ।  
वि० मूव मर्दन करनेवाला ।

प्रमा-सज्ञा स्त्री० १. यथार्थ ज्ञान । भ्रमरहित  
ज्ञान । २ प्रमाण । ३. अनुभव । ४. नींव ।  
५ माप । नाप ।

प्रमाण-सज्ञा पु० १. किसी बात की निश्चय  
करनेवाली बात । मयूत । साक्षी । प्रति-  
पत्ति । २. मत्तता । सचाई । ३. प्रतीति ।  
निश्चय । ४ मान । आदर । ५ प्रामाणिक  
बात या वस्तु । मानने की बात । ६ इयत्ता ।  
हृद । सीमा । ७. निदर्शन । दृष्टान्त । ८  
प्रमाण-पत्र । ९ एक धलवार जिसमें आठ  
प्रमाणों में से किसी एक का बयान होता है ।  
वि० १ चरितार्थ । प्रमाणित । ठीक  
घटता हुआ । २ माना जानेवाला । ठीक ।  
३. बड़ाई आदि में बराबर ।  
अव्य० पर्यन्त । तक ।

प्रमाणक-सज्ञा पु० वह पत्र, जिस पर प्रमाण  
के रूप में कोई लेख हो । प्रमाणपत्र ।

प्रमाणकर्त्ता-वि० किसी बात को प्रमाणित  
करनेवाला ।

प्रमाणकुशल-सज्ञा पु० अच्छा तर्क करनेवाला ।

प्रमाणपत्र-सज्ञा पु० वह कागज, जिस पर  
का लेख किसी बात का प्रमाण हो । (अर्थ—  
संक्षिप्तेष्ट) । सन्द ।

प्रमाणीकरण-सज्ञा पु० यह लिखना कि अनुक्त  
बात या लेख ठीक और प्रामाणिक है ।

प्रमाणित-वि० प्रमाणों-द्वारा सिद्ध । निश्चित ।  
साधित ।

प्रमाता-सज्ञा पु० १ प्रमाणों-द्वारा सिद्ध करने-  
वाला । २. आत्मा या चेतन पुरुष । ३  
साक्षी । द्रष्टा ।

सज्ञा स्त्री० दादी । पिता की माता ।

प्रमाद-सज्ञा पु० भ्रम । भ्रान्ति । अभिमान  
आदि के कारण कुछ का कुछ समझना या  
करना ।

प्रमादी-वि० प्रमादयुक्त । घमडी । भूल-  
चूक करनेवाला ।

प्रमान\*—सज्ञा पु० दे० "प्रमाण" ।

प्रमानना\*—क्रि० सं० १. प्रमाण मानना ।

ठीक समझना । २. प्रमाणित करना । साधित करना ।

प्रमानी\*-वि० दे० "प्रामाणिक" ।

प्रमायु, प्रमायुक-वि० नाशवान । नश्वर ।

प्रमाजक-वि० हटानेवाला । साफ करनेवाला । पोछनेवाला ।

प्रमाजन-सज्ञा पु० १. घोना । पोछना । २. हटाना ।

प्रमित-वि० १. शांत । श्रवणत । २. प्रमाणित । ३. परिमित । निश्चित । ४. थोड़ा । छल्प ।

प्रमोति-सज्ञा पु० १. नाश । बर्बादी । २. मनुष्य का स्वाभाविक रूप से मरना । साधारण मृत्यु ।

प्रमोलन-सज्ञा पु० निमीलन । मूंदना ।

प्रमोला-सज्ञा स्त्री० १. तट्टा । २. थकावट । शिथिलता ।

प्रमुख-वि० १. प्रथम । पहला । श्रेष्ठ । प्रधान । २. प्रतिष्ठित । मान्य ।

अव्य० इत्यादि । बखरू ।

सज्ञा पु० १. आदि । आरम्भ । २. समूह ।

प्रमुद-वि० दे० "प्रमुदित" । प्रसन्न ।

सज्ञा पु० दे० "प्रमोद" ।

प्रमुदित-वि० प्रसन्न । हर्षयुक्त ।

प्रमेय-वि० १. प्रमाण का विषय या साध्य ।

२. जिसका नाम बताया जा सके । प्रतिपादन करने योग्य । ३. निर्धारणीय ।

सज्ञा पु० १. प्रमाण-द्वारा बोधनीय । २. यथार्थ ज्ञान का विषय । ३. परिच्छेद ।

प्रमेह-सज्ञा पु० एक रोग, जिसमें मूत्र-मार्ग से शूल तथा शरीर की ओर धातुएँ निक्कल करती हैं ।

प्रमोक्ष-सज्ञा पु० मुक्ति । त्याग ।

प्रमोचन-सज्ञा पु० १. उद्धार करने का कार्य । २. त्याग ।

प्रमोद-सज्ञा पु० आनंद । हर्ष । प्रसन्नता ।

प्रमोदा-सज्ञा स्त्री० साक्ष्य में आठ सिद्धियों में से एक ।

प्रमोदी-वि० हर्षजनक । हर्षयुक्त ।

प्रमोह-सज्ञा पु० मोह ।

प्रमोहन-सज्ञा पु० मोहित करना ।

प्रमोही-सज्ञा पु० मोहजनक ।

प्रयक\*-सज्ञा पु० दे० "पर्यक" ।

प्रयंत\*-अव्य० दे० "पर्यंत" ।

प्रयत-वि० १. पवित्र । २. नियमित । ३. तत्पर । ४. नम्र । ५. प्रयत्नशील ।

प्रयतात्मा-वि० जितेन्द्रिय ।

प्रयति-सज्ञा स्त्री० समय ।

प्रयत्न-सज्ञा पु० १. प्रयास । चेष्टा । यत्न । कोशिश । उद्योग । उद्देश्यपूर्ति के लिए की जानेवाली क्रिया । २. प्राणियों की क्रिया । जीवों का व्यापार (न्याय) । ३. दणों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया (व्याकरण) ।

प्रयत्नवान्-वि० [स्त्री० प्रयत्नवती] प्रयत्न में लगा हुआ । प्रयत्नशील ।

प्रयाग-सज्ञा पु० गंगा-यमुना के संगम पर स्थित प्रसिद्ध तीर्थ । इलाहाबाद । उत्तराखण्ड में देवप्रयाग, वर्ण प्रयाग, विष्णु-प्रयाग और नन्द प्रयाग हैं ।

प्रयागवाल-सज्ञा पु० प्रयाग का पड़ा । संगम के तट पर दान लेनेवाला ब्राह्मण ।

प्रयाण-सज्ञा पु० १. प्रस्थान । गमन । यात्रा । २. युद्धयात्रा । चढ़ाई । हमला । ३. यह लोक छोड़ (मरकर) स्वर्ग या परलोक जाना ।

प्रयाणकाल-सज्ञा पु० १. गमन-काल । २. यात्रा का समय । ३. मरण काल ।

प्रयात-वि० १. गत । २. मृत । ३. सोचा हुआ ।

प्रयापण-सज्ञा पु० १. प्रस्थान करना । भगाना । २. आगे जाना ।

प्रयास-सज्ञा पु० १. प्रयत्न । उद्योग । कोशिश । २. चेष्टा । ३. श्रम । मेहनत ।

प्रयुक्त-वि० १. प्रयोग किया गया । २. अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ । सम्मिलित । ३. व्यवहृत ।

प्रयुत-सज्ञा पु० दस लाख की सख्या ।

वि० मिला-जुला । सहित । अस्पष्ट ।

प्रयुक्तु-सज्ञा पु० १. थोड़ा । २. सन्यासी । ३. इन्द्र । ४. वायु ।

प्रयोक्ता-सज्ञा पु० १. प्रयोग या व्यवहार करनेवाला । २. ऋण देनेवाला । महाजन । सूत्रधार ।

प्रयोग-सज्ञा पु० १. व्यवहार । २. किसी काम

में लगता । ३ माधन । ४ आयोजन ।  
५. वरता जाना । प्रिया का विधान । घमल ।  
६. मारण, मोहन आदि वारह तांत्रिक  
उपचार या साधन । ७ अभिनय । नाट्य  
का खेल । ८ यज्ञादि कर्मा के अनुष्ठान का  
बोध करानेवाली विधि । ९. पद्धति ।  
१०. निदर्शन । दृष्टांत ।

प्रयोगातिशय—सज्ञा पु० नाट्य में प्रस्तावना  
का एक भेद ।

प्रयोगी—सज्ञा पु० प्रयोग करनेवाला ।

प्रयोजक—सज्ञा पु० १. प्रयोगकर्ता । अनुष्ठान  
करनेवाला । काम में लगानेवाला ।

२. प्रेरक । ३. प्रदर्शक ।

प्रयोजन—सज्ञा पु० १. कार्य । काम । २. अर्थ ।  
आभिराम्य । उद्देश्य । मतलब । आशय ।

३. व्यवहार । उपयोग ।

प्रयोजनवती लक्षणा—सज्ञा स्त्री० प्रयोजन-द्वारा  
वाच्यार्थ से निम्न अर्थ प्रकट करनेवाली  
लक्षणा ।

प्रयोजनीय—वि० काम का । मतलब का ।  
काम में लगाने योग्य ।

प्रयोज्य—वि० प्रयोग के योग्य । काम में लाने  
लायक ।

सज्ञा पु० १. नीकर । २. किसी काम में  
लगाने का घन ।

प्ररोचन—सज्ञा पु० १. रुचि उत्पन्न करना ।  
२. मोहित करना । ३. उत्तेजित करना ।

प्ररोधन—सज्ञा पु० चढ़ाना । ऊपर उठाना ।

प्ररोह—सज्ञा पु० १. आरोह । चढ़ाव ।  
२. उगना । उत्पत्ति । ३. झेलुवा ।  
अक्रूर ।

प्ररोहण—सज्ञा पु० १. दे० “प्ररोह” । आरोह ।  
चढ़ाव । २. जमना । उगना ।

प्रलब्ध—वि० १ लटवता या टेंगा हुआ । २  
लया । ३. निक्ला या टिवा हुआ ।

सज्ञा पु० १. लटकाव । झुगाव । २.  
शाखा । डाल । ३. पयोधर ।

प्रलबन—सज्ञा पु० सहारा । थक्कलन ।

प्रलबी—वि० [स्त्री० प्रलबिनी] १ दूर  
तक लटवनेवाला । लम्बा । २. महारा  
लेनेवाला ।

प्रलपन—सज्ञा पु० १. बचन । बचना । २.  
परचाताप ।

प्रलयकर—वि० [स्त्री० प्रलयकरी] प्रलय  
कारी । मर्त्यनाशकारी । विनाशक ।

प्रलय—सज्ञा पु० १. सृष्टि का नाश । समा  
या प्रवृत्ति में लीन होकर मिट जाना, जिसमें  
बाद फिर नयी सृष्टि होती है ।

कल्पान्त  
२ लय को प्राप्त होना । मिट जाना ।

३ साहित्य में एक मात्स्विक भाव, जिसमें  
किसी वस्तु में तन्मय होने से पूर्ण स्मृति का

“लोप हो जाता है । ४. बेहोशी । मूर्च्छा ।

प्रलयकर—वि० दे० “प्रलयकर” ।

प्रलाप—सज्ञा पु० [वि० प्रलापी] १. बहना  
बचना । २. व्यर्थ बचवाद । निरर्थक बचन

पागलों की-सी बहबड ।

प्रलापी—वि० प्रलाप करनेवाला ।

प्रलीन—वि० समाया हुआ ।

प्रलीनता—सज्ञा स्त्री० प्रलय । नाश । तिरों  
भाव । चेटानाश ।

प्रलेखक—सज्ञा पु० लेख, दस्तावेज या प्रार्थना  
पत्र लिखनेवाला । अर्जुनवीर या वासिष्ठ

प्रलेखन—सज्ञा पु० लेख, दस्तावेज या प्रार्थना  
पत्र आदि लिखने का काम ।

प्रलेप—सज्ञा पु० भ्रम पर लगाने की गीली दब  
आदि । लेप (पुष्टि) ।

प्रलेपन—सज्ञा पु० [वि० प्रलेपक, प्रलेप्य]  
लेप करने की क्रिया ।

प्रलेह—सज्ञा पु० चाटने योग्य वस्तु । एक तरा  
का सोरवा (मांस का) (अग्ने—सूप)

प्रलोभ, प्रलोभन—सज्ञा पु० [वि० प्रलोभक]  
१. लाभ । लालच । २. लोभ की वस्तु

३. लालच देना ।

प्रलोभित—वि० मुग्ध । ललचाया हुआ

प्रलोभी—वि० लालची ।

प्रवचक—सज्ञा पु० धार्वेवाज । ठग ।

प्रवचन—सज्ञा पु० दे० “प्रवचना” ।

प्रवचना—सज्ञा स्त्री० [वि० प्रवचक] दल  
धूर्तता । ठगी ।

प्रवचित—वि० [स्त्री० प्रवचिता] जो ठग  
गया हो ।

प्रवक्ता—सज्ञा पु० १. भली भाँति बोलने का

बहनेवाला । किसी की ओर से बहनेवाला ।  
२. वेद आदि का उपदेशक ।

प्रवचन—सज्ञा पु० [वि० प्रवचनीय] अच्छी तरह समझाकर बहना । उपदेश । धार्मिक या नैतिक बातों की जवानी ब्याख्या ।

प्रवण—सज्ञा पु० १. नीची भूमि । ढाल । उतार । २. चौराहा । ३. पेट । उदर । ४. क्षण । ५. आहुति ।

वि० १. ढालुवा । जो क्रमशः नीचा होता गया हो । भुका हुआ । नत । २. अनुकूल । ३. प्रवृत्त । रत । ४. नम्र । विनीत । ५. उदार ।

प्रवणता—सज्ञा स्त्री० प्रवण होने का भाव । प्रवत्स्यत्पत्तिका—सज्ञा स्त्री० वह नायिका, जिसका पति विदेश जानेवाला हो ।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका—सज्ञा स्त्री० दे० “प्रवत्स्यत्पत्तिका” ।

प्रवर—वि० श्रेष्ठ । मुख्य । बड़ा ।  
सज्ञा पु० १. किसी गोन के अतर्गत विशेष-विशेष प्रवर्तक मुनि । २. सतति । वश ।  
प्रवर्त—सज्ञा पु० १. कार्यारम्भ । ठानना । निमुक्त । तत्पर । २. एक प्रकार के वाद्य ।

प्रवर्तक—सज्ञा पु० १. आरम्भ करनेवाला । कार्य चला देनेवाला । सञ्चालक । २. प्रेरक । प्रवृत्त करनेवाला । ३. उभारनेवाला । उत्तेजक । ४. निकालने या ईजाद करनेवाला । ५. न्याय करनेवाला । पंच । ६. नाटक में प्रस्तावना का वह भेद, जिसमें सूत्रपात वर्तमान समय का वर्णन करता हो और उसी से सम्यक् पात्र का प्रवेश हो ।

प्रवर्तन—सज्ञा पु० [वि० प्रवर्तित, प्रवर्तनीय, प्रवर्त्य] कार्य आरम्भ करना । ठानना । काम को चलााना । प्रचार करना । किसी को अनुचित कार्य करने के लिए उबसाना या प्रेरित करना ।

प्रवर्तना—सज्ञा स्त्री० प्रवृत्त करने की क्रिया । उत्तेजना । नियोजन ।

प्रवर्तित—वि० १. आरम्भ । चलाया हुआ । २. उत्पन्न । ३. उत्तेजित । ४. प्रेरित ।

प्रवर्तन—सज्ञा पु० वृद्धि ।

प्रवसन—सज्ञा पु० विदेश जाना । बाहर रहना ।  
प्रवहण—सज्ञा पु० १. कन्या को विवाह में देना । कन्यादान । २. बहली । डोली । ३. गाव ।

प्रवहमान—वि० जोरो से बहता या चलता हुआ ।

प्रवाक्—सज्ञा पु० घोषणा करनेवाला ।

प्रवाच्य—वि० १. निन्दनीय । २. अच्छी तरह कहने योग्य ।

प्रवाद—सज्ञा पु० १. बात चीत । २. जनश्रुति । अफवाह । ३. अपवाद । झूठी बदनामी ।

प्रवारण—सज्ञा पु० मनाही । निषेध ।

प्रवाल—सज्ञा पु० १. विट्म । मूंगा । २. किसलय । कोपल ।

प्रवास—सज्ञा पु० १. स्वदेश छोड़कर दूसरे देश में रहना । २. विदेश में रहना ।

प्रवासन—सज्ञा पु० देशान्तर भेजना । देश-निकाला ।

प्रवासित—वि० देश से निकाला हुआ । निष्का-सित ।

प्रवासी—वि० १. परदेश में रहनेवाला । परदेशी । २. यात्री ।

प्रवाह—सज्ञा पु० १. धारा । जलस्रोत । वहाव । २. पानी की गति । ३. झुकाव । प्रवृत्ति । ४. काम का जारी रहना । ५. क्रम । सिलसिला । तार ।

प्रवाहक—सज्ञा स्त्री० १. जोर से चलाने या बहानेवाला । अच्छी तरह से बहान करनेवाला । २. हाँकनेवाला । गाडीवान ।

प्रवाहित—वि० बहता हुआ ।

प्रवाही—वि० [स्त्री० प्रवाहिनी] १. बहानेवाला । २. बहनेवाला । द्रव । तरल ।

प्रविधान—सज्ञा पु० विधान-सभाके द्वारा बनाया गया विधान ।

प्रविष्ट—वि० घुसा हुआ । प्रवेश किया, हुआ ।

प्रविष्टाना—\*क्रि० अ० घुसना । पैठना । अन्दर जाना ।

प्रवीण—वि० [सज्ञा प्रवीणता] निपुण । चतुर । दक्ष । होशियार । कुशल ।

प्रवीणता—सज्ञा स्त्री० निपुणता । चतुराई ।

प्रवीर-वि० यादव । बहादुर । शूरवीर ।  
 प्रवृत्त-वि० उद्यत । तत्पर । तैयार ।  
 प्रवृत्ति-सज्ञा स्त्री० १ मन की लगन ।  
 लगाव । २ काम में लगने की इच्छा ।  
 अभिरुचि । भुराव । ३ प्रवाह । बहाव ।  
 ४ न्याय में एक यत्न-विशेष । ५ प्रवर्तन ।  
 कार्य चलना । ६ सासारिक विषयो का  
 ग्रहण । निवृत्ति का उलटा ।  
 प्रवृद्ध-वि० १ खूब बड़ा हुआ । विस्तृत ।  
 २ प्रौढ । पक्का । मजबूत ।  
 सज्ञा पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक ।  
 प्रवेश-सज्ञा पुं० १. भीतर जाना । घुसना ।  
 पठना । २. पहुँच । गति । जानना ।  
 प्रवेशक-सज्ञा पुं० १ प्रवेश करने या कराने-  
 वाला । २. नाटकों में वह अंश, जिसमें  
 बीच की किसी घटना का परिचय केवल  
 बातचीत से कराया जाता है ।  
 प्रवेशन-सज्ञा पुं० १. पठना । प्रवेश  
 करना । २. सिद्धार । मुरग ढार ।  
 प्रवेशपन-सज्ञा पुं० वह पन, जिसे दिखलाने  
 पर किसी स्थान में प्रवेश करने का अधिकार  
 हो (पास या टिकट) ।  
 प्रवेशशुल्क-सज्ञा पुं० वह शुल्क (फीस), जो  
 वही पर (संस्था आदि) सम्मिलित होने  
 के लिए देना पड़ता है । किसी स्थान में  
 प्रवेश करने के लिए दिया जानेवाला शुल्क  
 (फीस) ।  
 प्रवेशिका-सज्ञा स्त्री० १ प्रवेशपन या चिह्न ।  
 २ प्रवेश के लिए दिया जानेवाला धन ।  
 ३. दासिला ।  
 प्रव्रजन्त-सज्ञा पुं० संन्यास लेगा ।  
 प्रव्रजित-वि० संन्यासी ।  
 प्रव्रज्या-सज्ञा स्त्री० संन्यास ।  
 प्रव्रज्यावसित-सज्ञा पुं० जो संन्यास लेने के  
 बाद पुन उससे च्युत हो गया हो ।  
 पि० प्रसारा के योग्य ।  
 प्रशसक-वि० १. प्रशंसा करनेवाला । २  
 सुशामदी । चापलूस ।  
 प्रशसन-सज्ञा पुं० [वि० प्रशमनीय, प्रशमिन,  
 प्रशस्य] गुण-गान । सराहना । तारीफ  
 करना ।

प्रशसना-वि०-प्रि० स० सराहना । गुणगान  
 करना । तारीफ करना ।  
 प्रशसनीय-वि० प्रशंसा के योग्य । श्रेष्ठ ।  
 प्रशसा-सज्ञा स्त्री० [वि० प्रशसित, प्रशमनीय]  
 बड़ाई । तारीफ । गुणगान ।  
 प्रशसित-वि० [स्त्री० प्रशमिता] जिसकी  
 प्रशंसा की गई हो । सराहा हुआ ।  
 प्रशस्य-वि० प्रशसनीय ।  
 प्रशम-सज्ञा पुं० १. शमन । उपशम । शान्ति ।  
 २. निवृत्ति । ३. नाग ।  
 प्रशमन-सज्ञा पुं० १. शमन । शान्ति । २.  
 चिनाग । निवारण । प्यस । ३. यथ ।  
 मारण । ४. प्रतिपादन ।  
 प्रशस्त-वि० १. प्रशसनीय । २. सुन्दर ।  
 उत्तम । श्रेष्ठ । ३. भव्य । ४. विस्तृत ।  
 प्रशस्तपाद-सज्ञा पुं० वैशेषिक-दर्शन पर पदार्थ-  
 धर्म-मग्नह नामक ग्रन्थ के लेखक, एक प्राचीन  
 प्राचार्य ।  
 प्रशस्ति-सज्ञा स्त्री० १ स्तुति । प्रशंसा ।  
 २ अभिनन्दन । चट्टानों या ताम्रपत्र आदि  
 पर खोदी जानेवाली राजगाथा । ३ प्राचीन,  
 पुस्तकों के आदि अथवा अत की कुछ पंक्तियाँ  
 जिनसे पुस्तक के रचयिता, विषय, रचना-  
 काल आदि का परिचय मिलता हो ।  
 प्रशस्य-वि० प्रशंसा के योग्य । उत्तम ।  
 प्रशात-वि० १. स्थिर । निश्चल । २. शांत ।  
 अत्यन्त धीर ।  
 सज्ञा पुं० एक महासागर, जो एशिया और  
 अफ्रीका के बीच में है । (अंग्रे०—पैसि-  
 फिक ओशन)  
 प्रशान्ति-सज्ञा स्त्री० १. पूर्ण शान्ति । २.  
 स्थिरता । प्रशान्त या निश्चल होने का भाव ।  
 प्रशाखा-सज्ञा स्त्री० टहनी । पत्ती ढाली ।  
 शाखा की शाखा ।  
 प्रशाखिका-सज्ञा स्त्री० छोटी टहनी ।  
 प्रशासन-सज्ञा पुं० [वि० प्रशासनिक] । राज्य-  
 शासन का प्रबंध या व्यवस्था ।  
 प्रशासनिक-वि० राज्य-प्रबन्ध से सम्बन्ध  
 रखनेवाला ।  
 प्रशिष्ट-वि० अनुशामन । आज्ञा । उप-  
 देस ।

प्रशिय्य-सज्ञा पु० शिष्य का शिष्य ।  
 प्रशोषण-सज्ञा पु० सोखना । सुखाना । चूसना ।  
 प्रश्न-सज्ञा पु० १ जिज्ञासा । पूछ-नाछ ।  
 सवाल । २ पूछने की बात । ३ विचार-  
 णीय विषय ।  
 प्रश्नद्वती-पज्ञा स्त्री० पहली ।  
 प्रश्नोत्तर-सज्ञा पु० १ सवाल-जवाब । प्रश्न  
 और उत्तर । सवाद । २ एक बाव्यालकार,  
 जिसमें प्रश्न और उत्तर रहते हैं ।  
 प्रश्नोत्तरी-सज्ञा स्त्री० किसी विषय में प्रश्ना  
 और उनके उत्तरों का संग्रह ।  
 प्रथम-सज्ञा पु० आथय । १ आथय-प्यान ।  
 २ टक । आधार । सहारा । ३ विनय ।  
 नम्रता ।  
 प्रथयी-वि० शिष्ट । सुजन । शान्त ।  
 प्रथाव-सज्ञा पु० पथाव । मून ।  
 प्रथास-सज्ञा पु० १ नाक से बाहर निकलन-  
 वाली हवा । स्वास (भीतर जानवाली  
 हवा) का उल्टा । २ नासिका से निक-  
 लनवाली वायु । दीर्घ निश्वास ।  
 प्रष्टव्य-वि० पूछन योग्य । पूछन का । जो  
 पूछना हो ।  
 प्रष्टा-सज्ञा पु० प्रस्तकर्त्ता । पूछनवाला ।  
 प्रष्ट-वि० प्रधान । अग्रगामी । श्रेष्ठ ।  
 प्रसह्या-सज्ञा स्त्री० १ जोड़ । मीजान । २  
 चिता ।  
 प्रसह्यान-सज्ञा पु० सत्यज्ञान । ध्यान ।  
 प्रसाग-सज्ञा पु० १ सबध । लगाव । रागति ।  
 अय का मेल । विषय का जगाव । २.  
 प्रस्ताव । विषयानुक्रम । प्रकरण । ३  
 विस्तार । ४ स्त्री-मुरूप का संयोग । ५  
 बात । विषय । वार्ता । ६ उपयुक्त  
 सयाग । अवसर । मौका । ७ हेतु ।  
 कारण ।  
 प्रसधान-सज्ञा पु० सधि ।  
 प्रससना\*-दि० स० प्रशसा करना ।  
 प्रसक्त-वि० १ सखिष्ट । २ प्रसग विशिष्ट ।  
 ३. अतिशय अनुरक्त । ४ प्राप्त । ५  
 उपस्थित ।  
 प्रसक्ति-सज्ञा स्त्री० १. अनुरक्ति । २  
 आपत्ति । ३ व्याप्ति । ४ सम्पर्क ।

प्रसन्न-वि० १ सतुष्ट । तुष्ट । २ खुश ।  
 प्रफुल्ल । हर्षित । ३ अनुकूल ।  
 प्रसन्नता-सज्ञा स्त्री० १. हर्ष । आनन्द ।  
 प्रफुल्लता । खुशी । २ सन्तोष । तुष्टि । ३  
 वृत्ता । अनुग्रह ।  
 प्रसन्नमुख-वि० जिम्मे चेहरे से प्रसन्नता  
 प्रवट हो ।  
 प्रसन्नित\*+वि० दे० "प्रसन्न" । आनन्दित ।  
 खुश ।  
 प्रसर-सज्ञा पु० १ विस्तार । २. तेजी ।  
 वेग । ३ समूह । ४ व्याप्ति । ५. प्रवर्ष ।  
 ६ प्रपातता । ७ प्रभाव । ८ मुद्र ।  
 ९. वीरता ।  
 प्रसरण-सज्ञा पु० [वि० प्रसरणीय, प्रसरित]  
 १ आग बढ़ना । सिसक्ना । सरक्ना ।  
 २ विस्तार । फैलाव । व्याप्ति । ३. काम  
 में प्रवृत्त होना ।  
 प्रसर्पण-सज्ञा पु० १ प्रसरण । गमन । घुसना ।  
 २ सेना का चारा और फैलना । ३ रक्षा-  
 स्थान । ४. गति ।  
 प्रसर्पी-वि० गतिशील ।  
 प्रसव-सज्ञा पु० १ वच्चा जनने की क्रिया ।  
 जनन । प्रसूति । २ जन्म । उत्पत्ति ।  
 ३ वच्चा । सतान ।  
 प्रसवन-सज्ञा पु० वच्चा जनना ।  
 प्रसवना\*-क्रि० स० सन्तान को जन्म देना ।  
 वच्चा जनना ।  
 प्रसविनी-वि० प्रसव करनेवाली । जनन-  
 वाली । जन्म देनेवाली ।  
 प्रसाद-सज्ञा पु० १ प्रसन्नता । २ अनुग्रह ।  
 कृपा । ३ देवता पर चढ़ाई गई वस्तु ।  
 बड़ो द्वारा प्रसन्नतापूर्वक दी गई वस्तु ।  
 ४ भोजन । ५ वाच्य का एक गुण, जिसमें  
 भाषा स्पष्ट और सरल हो । जिसका भाव  
 सुनते ही समझ में आ जाय । शब्दालंकार  
 के अंतर्गत कोमला वृत्ति ।  
 मुहा०-प्रसाद पाना=भोजन करना ।  
 प्रसादक-वि० दयावान् । अनुग्रह करनेवाला ।  
 प्रसाधना\*-सज्ञा स्त्री० सेवा ।  
 दि० स० प्रसन्न करना । सुख करना ।  
 राजी करना ।

प्रसादनीय\*—वि० प्रसन्न करने योग्य ।  
 प्रसादी—सज्ञा स्त्री० दे० “प्रसाद” । देवताओं  
 पर चढ़ाया हुआ पदार्थ ।  
 प्रसाधक—सज्ञा पु० [स्त्री० प्रसाधिका] १. कार्य  
 का निर्वाह करनेवाला या पूरा करनेवाला ।  
 सम्पादन करनेवाला । २. सजावट का कार्य  
 करनेवाला । दूसरे का शृंगार करनेवाला ।  
 ३. प्राचीन समय में राजाओं को दत्त पह-  
 नाने वाला ।  
 प्रसाधन—सज्ञा पु० १. शृंगार करना ।  
 सजाना । २. कार्य का सम्पादन । ३.  
 शृंगार की सामग्री । सजावट का सामान ।  
 ४. वेष्टा रचना । ५. बाल सँभारना ।  
 प्रसाधिका—सज्ञा स्त्री० शृंगार करनेवाली  
 दासी । रानिया को गहने-कपड़े पहनाने तथा  
 शृंगार करनेवाली दासी ।  
 प्रसार—सज्ञा पु० १. विस्तार । फैलाव । २.  
 संचार । गमन । ३. निवास । निर्गम ।  
 प्रसारण—सज्ञा पु० [वि० प्रसारित, प्रसार्य]  
 १. फैलाना । २. बढाना ।  
 प्रसारिणी—सज्ञा स्त्री० १. गधप्रसारिणी लता ।  
 २. लाजवती । लजालू ।  
 प्रसारित—वि० फैलाया हुआ । विस्तृत ।  
 प्रसारो—वि० फैलनेवाला ।  
 प्रसिति—सज्ञा स्त्री० १. रस्ती । २. रस्मि ।  
 ३. ज्वाला ।  
 प्रसिद्ध—वि० विख्यात । मशहूर । प्रतिष्ठित ।  
 प्रसिद्धि—सज्ञा स्त्री० ख्याति । नाम होना ।  
 शोहस्त ।  
 प्रसीद—अध्य० प्रसन्न हो । कृपा करा ।  
 प्रसूज—वि० १. गाड़ी नींद में सोया हुआ ।  
 २. दबा या रखा हुआ ।  
 प्रसूति—सज्ञा स्त्री० गाड़ी नींद । निद्रा ।  
 प्रसू—सज्ञा स्त्री० माता । जननेवाली या पैदा  
 करनेवाली ।  
 प्रसूत—वि० [स्त्री० प्रसूता] उत्पन्न । पैदा ।  
 सज्ञा पु० एक प्रकार का राग, जो श्रिया को  
 प्रसव के बाद होता है ।  
 प्रसूता—सज्ञा स्त्री० यह स्त्री, जिसे बच्चा हुआ  
 है । जच्चा ।  
 प्रसूति—सज्ञा स्त्री० १. प्रसव । जनन ।

उद्भव । उत्पत्ति । जन्म । २. कारण ।  
 ३. प्रकृति । दस की स्त्री ।  
 प्रसूतिका—सज्ञा स्त्री० दे० “प्रसूता” ।  
 प्रसूतिकागृह—सज्ञा पु० प्रसव करने का  
 स्थान ।  
 प्रसून—सज्ञा पु० १. फूल । पुष्प । २. फल ।  
 प्रसूत—वि० विस्तृत । फैला हुआ । बड़ा  
 हुआ । विनीत । प्रेरित । नियुक्त । प्रव-  
 लित । लम्पट ।  
 प्रसूति—सज्ञा स्त्री० [वि० प्रसूत] १. फैलाव ।  
 विस्तार । २. सतति । सतान ।  
 प्रसूष्ट—वि० १. उत्पन्न । २. व्यक्त । ३.  
 परित्यक्त ।  
 प्रसूक—सज्ञा पु० १. सींचना । २. छिड़-  
 काव । ३. निचोड़ । ४. एक असाध्य  
 रोग । जिरिया (सुश्रुत) ।  
 प्रसेद\*—सज्ञा पु० दे० “प्रस्वेद” । पसीना ।  
 प्रसेच—सज्ञा पु० १. बीन की धेली । २.  
 लुबी ।  
 प्रस्तर—सज्ञा पु० १. पत्थर । पाषाण ।  
 २. पत्थर आदि की शय्या । ३. चमड़े की  
 धेली । ४. बिछोना ।  
 प्रस्तरयत्ता—सज्ञा स्त्री० पत्थर को खोदने,  
 गढ़ने और उस पर चित्र आदि बनाने की  
 विद्या या कला ।  
 प्रस्तरण—सज्ञा पु० बिछाना । बिछोना ।  
 प्रस्तर-मुद्रण—सज्ञा पु० छापने की वह प्रक्रिया,  
 जिसमें छापे जानवाले लेख आदि एक  
 विशेष प्रकार के कागज पर लिखकर पहले  
 एक प्रकार के पत्थर पर उतारे जाते हैं,  
 और तब उस पत्थर पर से छापे जाते हैं ।  
 (अग्ने०—लिथोग्राफ)  
 प्रस्तरयुग—सज्ञा पु० किसी देश या जाति के  
 इतिहास का वह समय, जब कि अस्त्र-शस्त्र  
 और शीजार आदि केवल पत्थर के बनने थे ।  
 पुरातत्त्व के अनुसार यह सभ्यता का आदि  
 काल था । (अग्ने०—स्टोन-एज)  
 प्रस्तार—सज्ञा पु० १. फैलाव । विस्तार ।  
 २. आधिक्य । वृद्धि । ३. तह । परत ।  
 ४. सीढ़ी । ५. चौड़ी सतह । समतल ।  
 ६. छंद शास्त्र के अनुसार नौ प्रत्ययों में से

प्रथम, जो छंदों के भेद की सत्याओ और  
भ्यों को सूचित करता है।

प्रस्ताव-सज्ञा पु० १. विषय-परिचय।  
नूमिमा। २. किसी कार्य के सम्बन्ध में  
पत्र की गई योजना। सभा या समिति में  
स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किया गया विषय।  
सुझाव। प्रस्तुत प्रसंग।

प्रस्तावक-सज्ञा पु० प्रस्ताव पेश करनेवाला।  
किसी कार्य में सहायता, धन या राय आदि  
देने का सुझाव रखनेवाला।

प्रस्तावना-सज्ञा स्त्री० १ आरम्भ। प्राक्-  
थन। भूमिका। २ नाटक में अभिनय  
के पूर्व विषय का परिचय देन का प्रसंग।  
प्रस्तावित-वि० जिसके सम्बन्ध में प्रस्ताव  
दिया गया हो। कथित। उल्लेखित।  
प्रस्तुत-वि० १. उपस्थित। सामने आया  
हुआ। पेश किया गया। २ उद्यत। तैयार।  
३. उक्त। ४ प्रासंगिक।

प्रस्था-सज्ञा पु० १ पहाड़ के ऊपर की चौरस  
भूमि। २ प्राचीन काल का एक मान।

प्रस्थान-सज्ञा पु० १. प्रयाण। यात्रा। गमन।  
२ कपड़े आदि, जो यात्रा के मुहूर्त पर घर  
से निवाकर यात्रा की दिशा में कहीं पर  
रखवा दिए जाते हैं।

प्रस्थानी-वि० जानेवाला।

प्रस्थापन-सज्ञा पु० [वि० प्रस्थापित, प्रस्थाप्य]  
१ भोजना। प्रस्थान कराना। २. स्थापन।  
स्थापित करना।

प्रस्थापित-वि० १ अच्छी तरह स्थापित।  
२ प्रेषित। ३ प्रेरित।

प्रस्थित-वि० १ ठहराया हुआ। ठिका  
हुआ। २ दृढ़। ३ गया हुआ। गत।

प्रस्फुट-वि० १ खिला हुआ। विकसित।  
२ प्रकट। स्पष्ट।

प्रस्फुटित-वि० फूटकर निकला हुआ। खिला  
हुआ। विकसित।

प्रस्फुरण-सज्ञा पु० निखलना। खिलना।  
विकसित होना। प्रकाशित होना।

प्रस्फोटन-सज्ञा पु० १. सहसा खुलना या  
फूटना। फूटकर निकलना। स्फोट।  
२. खिलना। ३ ठोपना।

प्रसस-सज्ञा पु० पसन।

प्रसवण-सज्ञा पु० १. टपन या गिरकर बहना।  
२ प्रपात। निर्भर। भरना। सोना।

प्रस्ताव-सज्ञा पु० १. बहाव। २. कारण।  
टपचना। ३. पेशाव।

प्रस्वेद-सज्ञा पु० पसीना।

प्रहत-वि० १. हट। प्रताडित। २ प्रसारित।  
सज्ञा पु० १ पैसे का फेंकना। २ प्रहार।

प्रहर-सज्ञा पु० दिन-रात के आठ भागों में  
से एक भाग। चार घड़ी। पहर।

प्रहरक-सज्ञा पु० पहरे पर घटा बजानेवाला  
व्यक्ति।

प्रहरलना\*—क्रि० अ० हर्षित होना। आनंदित  
होना। प्रसन होना।

प्रहरण-सज्ञा पु० १ हरण करना। २  
अस्त्र। ३. युद्ध। ४ प्रहार। मारना।  
५. फेंकना।

प्रहरणकलिका-सज्ञा स्त्री० चौदह वर्षों का  
एक छन्द।

प्रहरी-वि० पहरेदार। पहरा देनेवाला।  
चौकीदार। समय-समय पर घटा बजाने  
वाला।

प्रहर्ष-सज्ञा पु० अत्यन्त हर्ष। आनंद।  
प्रसन्नता।

प्रहर्षण-सज्ञा पु० १ आनंद। २ एक  
अलंकार जिसमें विना उद्योग के किसी के  
वाञ्छित पदार्थ की प्राप्ति का वर्णन होता है।

प्रहर्षणी-सज्ञा स्त्री० १३ अक्षरों का एक छंद।

प्रहसन-सज्ञा पु० १ परिहास। हँसी।  
दिल्लीगी। २ चूल्हा। खिल्ली। ३ हास्य-  
रस प्रधान एक प्रकार का वाच्यमिश्रित  
नाट्य, जो रूपक के दस भेदों में से है।

प्रहार-सज्ञा पु० चोट। मार। आपात। चार।  
प्रहारक-वि० प्रहार करनेवाला। मारनेवाला।

प्रहारना\*—क्रि० अ० १ मारना। आपात  
करना। २ मारने के लिए फेंकना।

प्रहारित\*—वि० जिस पर आपात या चोट  
की जाय। प्रताडित।

प्रहारी-वि० [स्त्री० प्रहारिणी] १ मारने-  
वाला। प्रहार करनेवाला। २ चलाते-  
वाला। छोड़नेवाला। ३ नाचक।

ग्रहास-सज्ञा पु० १ अट्टहास । ठहाका ।  
 २. नट । शिव ।  
 ग्रहत-वि० १ चलाया हुआ । फेंका हुआ ।  
 मारा हुआ । २ फेंकाया या उठाया  
 हुआ ।  
 ग्रहष्ट-वि० १ मनुष्ट । २. आनन्दित ।  
 ग्रहष्टमना-वि० १. सन्तुष्ट चित्त । २  
 प्रमत्तचित्त ।  
 ग्रहेलिका-सज्ञा स्त्री० पहेली । बुझौल ।  
 ग्रह्लाद-सज्ञा पु० १ आमाद प्रमोद । आनन्द ।  
 २ हिण्यवर्तिषु का पुत्र, जो ईश्वर भक्त  
 था ।  
 ग्रह्लादन-सज्ञा पु० प्रमत्त करना । आह्लादित  
 करना ।  
 ग्रगण-सज्ञा पु० मवान के बीच का खुला  
 हुआ भाग । सहन । अग्न ।  
 ग्रजन-सज्ञा पु० १ अजन या रग । २  
 प्राचीन काल में याण पर लगाया जानवाला  
 एक लप ।  
 ग्रजल-वि० १ सीधा । सरल । २ सच्चा ।  
 ३. वगदर । समान ।  
 ग्रजलि-सज्ञा स्त्री० अजलि ।  
 ग्रात-सज्ञा पु० [वि० प्रातिक या प्रातीय]  
 १ खड । प्रदेश । २ अत । शप । ३.  
 सीमा । छोर किनारा । तिरा । ४ आर ।  
 दिशा । तरफ ।  
 ग्रातर-सज्ञा पु० १ दो प्रदेशों के बीच का  
 बृक्षहीन निर्जन स्थान । २. उजाड । जंगल ।  
 ३. पड का खाखला अश । कोटर ।  
 ग्रातिक, ग्रातीय-वि० ग्रात से संबंध रखन  
 वाला । ग्रात का ।  
 ग्रातीयता-सज्ञा पु० ग्रातीय होने का भाव ।  
 घपन ग्रात का पक्षपात या माह ।  
 ग्रातवृत्ति-सज्ञा स्त्री० क्षितिज ।  
 ग्रातु-वि० ऊँचा ।  
 ग्राइमर-सज्ञा पु० [अग्र०] किसी भाषा की  
 प्रारम्भिक पुस्तक । प्रारम्भिक पाठ्य  
 पुस्तक ।  
 ग्राइवेट-वि० [अग्र०] निजी । व्यक्तिगत ।  
 गुप्त ।  
 ग्राइवेट सेक्रेटरी-[अग्र०] किसी बड आदमी या

बडे अधिकारी के साथ रहकर उगवे गन-  
 व्यवहार आदि कार्य करनेवाला ।  
 प्राकाम्य-सज्ञा पु० १. आठ प्रकार के  
 ऐश्वर्यों या सिद्धिओं में से एक । २  
 प्रचुरता । अधिकता ।  
 प्राकार-सज्ञा पु० दे० "प्राचीर" । परकाटा ।  
 चहार दीवारी । गहरपनाह ।  
 प्राकृत-वि० १ प्रकृति से उत्पन्न या प्रकृति-  
 सवधी । २. स्वाभाविक । नैसर्गिक । ३  
 भौतिक । लौकिक । ४ सहज ।  
 सज्ञा स्त्री० एक प्राचीन भारतीय भाषा ।  
 प्राकृतिक-वि० १ प्रकृति से उत्पन्न । २  
 प्रकृति-सवधी । प्रकृति का । ३ सहज ।  
 स्वाभाविक ।  
 प्राक्-वि० पहल का । अगला ।  
 सज्ञा पु० पूर्व । पूरव ।  
 प्राक्कयन-सज्ञा पु० भूमिका । आरम्भ में  
 केवल परिचय के लिए बही हुई संक्षिप्त  
 बात ।  
 प्राक्कर्म-सज्ञा पु० पूर्वकर्म । भाग्य ।  
 प्रागैतिहासिक-वि० जिस समय का इतिहास  
 मिलता हो, उससे पहल का । इतिहास से  
 पूर्वकाल का ।  
 प्रागल्भ्य-सज्ञा पु० १ प्रगल्भता । घृष्टता ।  
 २ प्रबलता । ३ चातुर्य । ४. साहस । ५  
 दर्प । गर्व । घमड ।  
 प्रागार-सज्ञा पु० प्रासाद ।  
 प्राग्वचन-सज्ञा पु० मनु आदि महर्षियों के  
 वचन ।  
 प्राघात-सज्ञा पु० भारी आघात ।  
 प्राधूनिक-सज्ञा पु० अनिधि । पाहुन । अभ्या  
 गत ।  
 प्राङ्मुख-वि० जिसका मुंह पूर्व दिशा की  
 ओर हो । पूर्वाभिमुख ।  
 प्राची-सज्ञा स्त्री० पूर्व दिशा । पूरव ।  
 प्राचीन-वि० पुराना । पुरातन ।  
 प्राचीनता-सज्ञा स्त्री० पुरानापन ।  
 प्राचीर-सज्ञा पु० परकोटा । चहारदीवारी ।  
 गहरपनाह ।  
 प्राचुर्य-सज्ञा पु० बहुता । अधिकता ।  
 प्रचुरता । बहुतायत ।

प्राचेतस्—सज्ञा पु० १. प्राचीन । २. राजा बहि के पुत्र । प्रचेतागण । ३. बाल्मीकि मुनि । ४. दक्ष । ५. वरुण का पुत्र । ६. विष्णु । ७. प्रचेत के वंशज ।  
 प्राच्य—वि० १. पूर्व का । पूर्वीय । २. पूर्व देग या दिशा में उत्पन्न । पूर्व-पम्बन्वी । ३. पुराना । प्राचीन ।  
 प्राजापत्य—वि० १. प्रजापति-पवर्ध । २. प्रजापति से उत्पन्न एक यज्ञ । ३. आठ प्रकार के विवाहों में से एक, जिसमें कन्या का पिता वर-कन्या से गार्हस्थ्य-धर्म के पालन का सक्ल्य कराता है ।  
 प्राज्ञ—वि० चतुर । विद्वान् । पंडित ।  
 प्राज्ञत्व—सज्ञा पु० चतुराई । बुद्धिमत्ता । पांडित्य ।  
 प्राङ्मियाक—सज्ञा पु० १. न्यायाधीश । २. वर्काल ।  
 प्राण—सज्ञा पु० १. जीव । प्राण । जान । २. वायु । ३. परम प्रिय । ४. दस दीर्घ गानाश्रा का उच्चारणकाल । ५. शरीर में जीव धारण करनेवाला वायु । श्वास । ६. बल । शक्ति । ७. अग्नि । ८. विष्णु ।  
 यौ०—प्राण-पलरु ।  
 मुहूर्त०—प्राण उड़ जाना=१ भयभीत होना । २ हटना वक्का होना । ३ बहुत अधिक कष्ट होना । प्राण जाना, छूटना या निवृत्तना=जीवन का अंत होना । मरना । प्राण डालना=जीवन प्रदान करना । प्राण त्यागना, तजना या छोड़ना=मरना । प्राण देना=मरना । किसी पर या किसी के ऊपर प्राण देना=१ किसी के किसी काम से बहुत दुखी या रुष्ट होकर मरना । २ किसी को प्राणा से भी अधिक चाहना । प्राण निवृत्तना=१ मर जाना । मरना । २ बहुत व्यग्र हो जाना । भयभीत होना । प्राण पमान होना=प्राण निवृत्तना । प्राण या प्राणा पर धीतना=१ जीवन सक्ल में पडना । २ मर जाना । प्राण रसना=१ जीवन देना । जिवाना । २ जान बचाना । जीवन की रक्षा करना । प्राण लेना या हरना=मार डालना । प्राण हारना=१ मर जाना । २ सहस्र दूट जाना ।

प्राणधधार\*†—सज्ञा पु० दे० "प्राणाधार" । प्राणकान्त—सज्ञा पु० १. प्रिय व्यक्ति । २. पति ।  
 प्राणघात—सज्ञा पु० बध । हत्या । मार डालना ।  
 प्राणघ्न—वि० प्राण लेनेवाला ।  
 प्राणच्छेद—सज्ञा पु० हत्या ।  
 प्राणजीवन—सज्ञा पु० १ प्राणाधार । २. परम प्रिय ।  
 प्राणत्याग—सज्ञा पु० मर जाना ।  
 प्राणदंड—सज्ञा पु० मृत्युदंड । फांसी । हत्या आदि अपराध के बदले में मौत की सजा ।  
 प्राणद—वि० १ प्राण देनेवाला । २ जीवन की रक्षा करनेवाला । प्राणदाता ।  
 सज्ञा पु० १. जल । २. रत्न । ३. जीवक वृक्ष । ४. विष्णु ।  
 प्राणदाता—सज्ञा पु० १. प्राण देनेवाला । २. प्राणरक्षक ।  
 प्राणदान—सज्ञा पु० १. किसी को मरने या मारे जाने से बचाना । प्राण-रक्षा करना । २. जीवन-दान । प्राण देना ।  
 प्राणद्यूत—सज्ञा पु० जान पर खेलना ।  
 प्राणधन—वि० १. अत्यंत प्रिय । जीवनधन । २ पति ।  
 प्राणधारी—वि० १ जीवधारी । २ सांस लेनेवाला । चेतन । प्राणयुक्त ।  
 सज्ञा पु० प्राणी । जंतु । जीव ।  
 प्राणनाथ—सज्ञा पु० १ प्रियतम । प्यारा । २ पति । स्वामी ।  
 प्राणनाश—सज्ञा पु० मृत्यु । प्राणान्त ।  
 प्राणनिग्रह—सज्ञा पु० प्राणायाम ।  
 प्राणपण—सज्ञा पु० १. प्राणों की बाजी । २. जी-जान से उद्योग करना । पूर्ण शक्ति लगाकर किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए उद्योग करना ।  
 प्राणपति—सज्ञा पु० १ पति । स्वामी । २ प्रियतम । प्यारा ।  
 प्राणप्यारा—सज्ञा पु० [स्त्री० प्राणप्यारी] १. प्रियतम । अत्यन्त प्रिय व्यक्ति । २. पति । स्वामी ।  
 प्राणपरिग्रह—सज्ञा पु० जन्म लेना ।

प्राणप्रतिष्ठा, संज्ञा स्त्री० मूर्ति को मंदिर  
आदि में स्थापित करते समय मंत्रों-द्वारा  
उत्तम प्राण का आरोप करना ।

प्राणप्रद-वि० १. जीवनदाता । प्राणदाता ।  
२. स्वास्थ्य-वर्द्धक ।

प्राणप्रिय-वि० [स्त्री० प्राणप्रिया] प्राणों के  
समान प्रिय । प्रियतम । अत्यन्त प्रिय ।  
संज्ञा पुं० पति ।

प्राणप्रीता-वि० प्रियतमा । प्राणों-सी प्रिय ।  
प्राणमय-वि० जिसमें प्राण हो । प्राणयुक्त ।  
प्राणमय कोश-संज्ञा पुं० वेदात् के अनुसार  
पाँच कोशों में से दूसरा, जो पाँच प्राणों से  
बना हुआ माना जाता है ।

प्राणरंभ-संज्ञा पुं० नाक । मुँह ।

प्राणरोध या प्राणरोधन-संज्ञा पुं० प्राणायाम ।  
प्राणवृत्तभ-संज्ञा पुं० १. अत्यन्त प्रिय ।  
२. पति । स्वामी ।

प्राणवायु-संज्ञा स्त्री० १. प्राण । जीव ।  
२. स्वास्थ्यप्रद हवा ।

प्राणशरीर-संज्ञा पुं० १. मनोमय सूक्ष्म शरीर ।  
२. परमेश्वर ।

प्राणसंकट-संज्ञा पुं० जान-ओखिम । जान का  
खतरा ।

प्राणहर-वि० घातक ।

संज्ञा पुं० विष ।

प्राणहारी-वि० प्राणनाशक ।

प्राणांत-संज्ञा पुं० मरण । मृत्यु ।

प्राणांतक-वि० प्राण लेनेवाला । जान लेने-  
वाला । घातक ।

प्राणाधार-वि० जिसपर प्राण निर्भर हो ।  
अत्यन्त प्रिय । बहुत प्यारा ।

संज्ञा पुं० पति ।

प्राणार्थक-वि० प्राणों से अधिक प्रिय ।  
प्राणाधार ।

संज्ञा पुं० पति ।

प्राणायाम-संज्ञा पुं० योग-शास्त्र के अनुसार  
योग के आठ भगों में से चौथा । स्वास और  
प्रश्वास की गतिधौ को प्रमत्त कर देना ।  
स्वास को ब्रह्माण्ड में ले जाने की  
क्रिया ।

प्राणमात्र-संज्ञा पुं० समस्त जीवधारी ।

प्राणी-वि० जिसमें प्राण हो । जीवधारी ।  
संज्ञा पुं० १. जीव । जंतु २. मनुष्य ।  
व्यक्ति ।

प्राणेश, प्राणेश्वर-संज्ञा पुं० [स्त्री० प्राणेश्वरी]  
१. पति । स्वामी । २. प्रियतम ।

प्रात-अव्य० सबेरे । तड़के ।

संज्ञा पुं० सबेरा । प्रातःकाल ।

प्रातः-संज्ञा पुं० सबेरा । प्रभात ।

प्रातःकर्न-संज्ञा पुं० प्रातःकाल किया जाने-  
वाला कार्य । जैसे—स्नान-गन्ध्या आदि ।

प्रातःकाल-संज्ञा पुं० [वि० प्रातःकालीन]  
सबेरे का समय ।

प्रातःकालीन-वि० प्रातःकाल-सम्बन्धी । सबेरे  
के समय का ।

प्रातःसन्ध्या-संज्ञा स्त्री० सबेरे की जाने-  
वाली सन्ध्या, उपासना आदि । सबेरे के  
समय प्रहृष्यान ।

प्रातःस्मरण-संज्ञा पुं० सबेरे के समय ईश्वर का  
भजन करना ।

प्रातःस्मरणीय-वि० प्रातःकाल स्मरण करने  
योग्य । श्रेष्ठ । पूज्य ।

प्रातनाय-संज्ञा पुं० मूर्ध ।

प्रातर-अव्य० सबेरे ।

प्रातरह्न-संज्ञा पुं० पूर्वाह्न ।

प्रातराश-संज्ञा पुं० प्रातःकालीन भोजन ।  
जलपान । कलेवा । नाश्ता ।

प्रातिभाषिक-वि० प्रतिभाग नामक मुल्क  
से सम्बन्ध रखनेवाला । (ग्रन्थ-एन्साइड)

प्रातिभाज्य-वि० जिसपर प्रतिभाग मुल्क  
लगता हो या लग सकता हो ।

प्रातिलोमिक-वि० १. प्रतिलोम से उत्पन्न ।  
२. प्रतिलोम-सम्बन्धी ।

प्रात्यहिक-वि० दैनिक ।

प्रायमिक-वि० [संज्ञा स्त्री० प्रायमिकता]  
पहले का । प्रारम्भिक । आदिम ।

प्रायम्य-संज्ञा पुं० प्रथमता ।

प्रादुर्भाव-संज्ञा पुं० १. प्राविर्भाव । प्रवृत्त होना ।  
उदय । विकास । २. महिमा । ३. उत्पत्ति ।

प्रादुर्भूत-वि० प्रवृत्त । प्राविर्भूत । जिसका  
प्रादुर्भाव हुआ हो । उदय । उत्पन्न ।

प्रादेश-संज्ञा पुं० १. प्रदेश । २. स्थान ।

३. चालिश्त । तर्जनी और अँगूठे के बीच का भाग ।

प्रदेशिक-वि० प्रदेश-संबंधी । किसी एक प्रदेश का । प्रांतीय ।

सत्ता पु० सामंत । स्वदेव ।

प्रदोष-वि० प्रदोष-सम्बन्धी ।

प्राधानिक-वि० लड़ाना ।

सत्ता पु० मुद्दे की सामग्री ।

प्राप्ता-सत्ता स्त्री० वक्ष्य की पत्नी ।

गन्धर्वी और अम्बरामो की जननी ।

प्राधान्य-सत्ता पुं० प्रधानता । मुख्यता ।

श्रेष्ठता ।

प्राध्य-सत्ता पु० १. सम्बन्ध मार्ग । बड़ा

राम्ता । २. सवारी । ३. पहल । ४. विनय ।

५. वय ।

प्राध्वन-सत्ता पु० १. सड़क । २. नदी का

गर्भ ।

प्राप्तर-सत्ता पु० वृक्ष की छाया ।

प्राप्त-सत्ता पु० दे० "प्राण" ।

प्रापण-सत्ता पु० [वि० प्रापक, प्राप्य,

प्राप्त] १. मिलना । प्राप्ति । पावना ।

२. पहुँचाना । ३. खाना । ४. प्रेरण ।

प्रापणिक-सत्ता पु० सौदा बेचनेवाला ।

प्रापति\*†-सत्ता स्त्री० दे० "प्राप्ति" ।

प्रापना\*†-कि० सं० प्राप्त होना । मिलना ।

प्राप्त-वि० १. पाया हुआ । जो मिला हो ।

२. समुपस्थित ।

प्राप्तकाल-सत्ता पु० १. उपयुक्त अवसर ।

उचित समय । २. मरण-योग्य काल ।

वि० जिसका काल आ गया हो । समयप्राप्त ।

प्राप्तव्य-वि० दे० "प्राप्य" । मिलनेवाला ।

प्राप्ति-सत्ता स्त्री० १. उपलब्धि । मिलना ।

२. पहुँच । ३. उपार्जन । आय । लाभ ।

४. नाटक का सुखद उपसंहार ।

प्राप्य-वि० पाने योग्य । प्राप्त करने योग्य ।

प्राप्तव्य । जो मिल सके । मिलनेवाला ।

मिलने योग्य ।

प्रावलय-सत्ता पु० प्रवृत्तता ।

प्राभातिक-वि० प्रभात-सम्बन्धी ।

प्राभूत-सत्ता पु० उपहार । नजर ।

प्रामाणिक-वि० १. प्रमाणों-द्वारा सिद्ध ।

२. प्रमाणयुक्त । मानने योग्य । ३. यथार्थ । सत्य ।

प्रामाण्य-सत्ता पु० १. प्रमाण का भाव ।

प्रमाणता । २. मान-मर्यादा ।

प्रामादिक-वि० प्रमादजनित ।

प्रामीसरी नोट-सत्ता पु० (अंग्रे०) हुडी ।

सरकारी ऋणपत्र । यह लेख या पत्र, जिसपर

लिखनेवाला अपना हस्ताक्षर करके यह

प्रतिज्ञा करे कि मैं अमुक व्यक्ति को जब

यह माँगें तब इतना रुपया दूँगा ।

प्रामोत्य-सत्ता पु० ऋण ।

प्राय-सत्ता पु० १. तुल्य । समान । जैसे,

मृतप्राय । २. लगभग । जैसे प्रायद्वीप ।

प्रायः-वि० १. विशेषकर । बहुधा ।

कभी-कभी । अवसर । २. लगभग ।

करीब-करीब ।

प्रायद्वीप-सत्ता पु० स्थल का वह भाग, जो

तीन ओर जल से घिरा हो और एक

ओर स्थल से मिला हो ।

प्रायवृत्त-वि० अंडाकार ।

प्रायशः-कि० वि० अवसर । प्रायः ।

प्रायश्चित्त-सत्ता पु० पाप दूर करने का कर्म ।

पापनाशक कर्म । शास्त्रानुसार वह कृत्य

जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट

जाते हैं ।

प्रायश्चित्तिक-वि० १. प्रायश्चित्त के योग्य ।

२. प्रायश्चित्त-संबन्धी ।

प्रायश्चित्ती-वि० १. प्रायश्चित्त के योग्य ।

२. प्रायश्चित्त करनेवाला ।

प्रायिक-वि० १. प्रायः होनेवाला । साधारणतः

सभी अवसरों पर सामान्य नियमों के

अनुसार होता रहनेवाला । २. अनुमान से

बहुत कुछ ठीक । लगभग ।

प्रायोग्य-वि० प्रयोग में आनेवाला ।

प्रायोगिक-वि० १. प्रयोग-सम्बन्धी ।

२. प्रयोग के रूप में किया जानेवाला ।

प्रारंभ-सत्ता पु० आरम्भ । शुरु । आदि ।

प्रारम्भिक-वि० प्राथमिक । प्रारम्भ का ।

शुरू का । आरम्भ का ।

प्रारब्ध-सत्ता पु० भाग्य । किस्मत । पूर्व-

कृत कर्म ।

प्रारब्धी-वि० भाव्यवान् ।  
 प्रार्थना-सज्ञा स्त्री० १ निमी से कुछ गीतना ।  
 याचना । २. निवेदन । विनय । चिन्ता ।  
 \* ३० म० प्रार्थना या चिन्ता करना ।  
 प्रार्थनापत्र-सज्ञा पु० निवेदनपत्र । अर्जी ।  
 वह पत्र, जिसमें किसी प्रकार की प्रार्थना  
 लिखी हो ।  
 प्रार्थित-वि० जिसके लिए प्रार्थना की गई  
 हो । निवेदित । माँगा गया ।  
 प्रार्थनीय-वि० प्रार्थना करने योग्य ।  
 प्रार्थी-वि० प्रार्थना या निवेदन करनेवाला ।  
 प्रालम्ब्य-सज्ञा पु० दे० "प्रारब्ध" ।  
 प्रालेय-सज्ञा पु० वर्षा । हिम । तुषार ।  
 प्रालेयरश्मि-सज्ञा पु० चन्द्रमा ।  
 प्रालेयाश्र-सज्ञा पु० १. चन्द्रमा । २. कपूर ।  
 प्रालेयाश्रि-सज्ञा पु० हिमालय ।  
 प्राविधानिक-वि० १. प्रविधान-सम्बन्धी ।  
 दे० "प्रविधान" । २. प्रविधान में जो हो ।  
 प्रावृट्-सज्ञा पु० वर्षा-ऋतु । बरसात ।  
 प्राशन-सज्ञा पु० भोजन । खाना । चखना ।  
 जैसे, अन्नप्राशन ।  
 प्राशनीय-वि० खाने योग्य ।  
 प्राशी-वि० [स्त्री० प्राशनी] प्राशन करने-  
 वाला । भक्षण ।  
 प्रासंगिक-वि० १. प्रसंग-सम्बन्धी । प्रसंग  
 का । २. प्रसंग-द्वारा प्राप्त ।  
 प्रास-सज्ञा पु० प्राचीन काल का एक प्रकार  
 का भाला ।  
 प्रासन-सज्ञा पु० फेरना ।  
 प्रासाद-सज्ञा पु० विशाल भवन । महल ।  
 देवताओं या राजाओं के रहने का भवन ।  
 मन्दिर ।  
 प्रातेव-सज्ञा पु० घोड़े के साज की रस्सी ।  
 प्रासु-सज्ञा पु० दीर्घ निद्रावास ।  
 प्राप्त्वपत्र-सज्ञा पु० [अप्रे०] विवरण-पत्र,  
 जिसमें किसी कार्य की प्रणाली आदि का  
 पूरा विवरण हो ।  
 प्राहारिक-सज्ञा पु० खीरीदार । पहरेदार ।  
 प्राहुण-सज्ञा पु० अतिथि । पाहुन ।  
 प्रिटर्-सज्ञा पु० [अप्रे०] छापनेवाला ।  
 मुद्रक ।

प्रिटिंग-सज्ञा स्त्री० [अप्रे०] छपाई का काम ।  
 मुद्रण ।  
 प्रिटिंग प्रेस-सज्ञा स्त्री० [अप्रे०] छापाना ।  
 मुद्रणालय ।  
 प्रियवद-वि० [स्त्री० प्रियवदा] प्रिय वचन  
 बोलनेवाला । प्रियभाषी ।  
 प्रितिपल-सज्ञा पु० [अप्रे०] बिचालय या  
 कालेज का प्रधान अध्यापन ।  
 प्रियवदा-सज्ञा स्त्री० प्रिय वचन बोलनेवाली ।  
 प्रिय-भाषिणी । एन वर्णवृत्त ।  
 प्रिय-वि० १. प्यारा । प्रेमी । २. सुन्दर ।  
 मनाहर ।  
 सज्ञा पु० [स्त्री० प्रिया] पति । स्वामी ।  
 प्रियतम-वि० [स्त्री० प्रियतमा] प्यारा ।  
 अत्यन्त प्रिय । सबसे अधिक प्रिय ।  
 सज्ञा पु० पति । स्वामी ।  
 प्रियदर्शन-वि० [स्त्री० प्रियदर्शना] सुन्दर ।  
 मनाहर । देखने में प्रिय लगनेवाला ।  
 प्रियदर्शी-वि० १. मनोहर । सज को प्रिय  
 लगनेवाला । २. सबसे स्नेह करनेवाला ।  
 ३. चरित्रशील अशोक ।  
 प्रियधर-वि० अत्यन्त प्रिय । सबसे प्यारा ।  
 (पत्नी आदि में सवाधन)  
 प्रियवादे-सज्ञा पु० दे० "प्रियभाषी" ।  
 प्रियानु-सज्ञा पु० आम का वृक्ष । आम का फल ।  
 प्रिया-सज्ञा स्त्री० १. प्रियतमा । प्यारी ।  
 प्रेयसी । भार्या । पत्नी । २. मृगी । ३.  
 सालह मानाओ का एन छद्म । ४. मदिरा ।  
 प्रीत-सज्ञा पु० दे० "प्रीति" ।  
 वि० प्रीतियुक्त । प्रिय ।  
 प्रीतम-सज्ञा पु० पति । स्वामी । अत्यन्त  
 प्यारा । प्रियतम ।  
 प्रीति-सज्ञा स्त्री० प्रेम । प्यार । स्नेह ।  
 सत्पाप । हर्ष । दानन्द ।  
 प्रीतिवर, प्रीतिकारक-वि० १. प्रिय लगने-  
 वाला । २. प्रेम उत्पन्न करनेवाला ।  
 प्रीतिपान-सज्ञा पु० १. जिसके साथ प्रेम  
 किया जाय । प्रेमी । २. प्रेम करने योग्य ।  
 प्रीतिभोज-सज्ञा पु० वह भोजन, जिसमें मित्र,  
 वधु आदि मगध सम्मिलित हो ।  
 प्रीतियम-सज्ञा पु० [अप्रे०] बीमे की विस्त ।

श्रीमियर-सज्ञा पु० [प्रप्रे०] मुख्य मनी । प्रधान मनी ।  
 प्रूफ-सज्ञा पु० [अप्रे०] १. प्रमाण । सबूत ।  
 २. अशुद्धियाँ दूर करने के लिए छपने-वाली चीजों का नमूना ।  
 प्रेक्षक-सज्ञा पु० दर्शक । देखनेवाला ।  
 प्रेक्षण-गज्ञा पु० १ नेत्र । आँख । २ देखने का कार्य ।  
 प्रेक्षणीय-वि० देखने योग्य ।  
 प्रेक्षा-सज्ञा स्त्री० १ देखना । २ दृष्टि । निगाह । ३ नाच-तमाशा देखना । ४ प्रज्ञा । बुद्धि । ५ शोभा । ६ वृक्ष की शाखा ।  
 प्रेक्षावार, प्रेक्षागृह-सज्ञा पु० १ राजाओं आदि के मंत्रणा करने का स्थान । मंत्रणा गृह । २ नाट्यशाला । रंगशाला ।  
 प्रेक्षित-वि० देखा हुआ ।  
 प्रेक्षी-सज्ञा पु० बुद्धिमान् ।  
 प्रेत-सज्ञा पु० १ मरा हुआ प्राणी । मृतक । २ भूत । पिशाच । ३ तरपनिवासी । ४. कल्पित देवयोनि-विशेष ।  
 प्रेतवर्म या प्रेतकृत्य-सज्ञा पु० श्राद्ध । अन्त्येष्टि-क्रिया ।  
 प्रेतकार्य-गज्ञा पु० दे० 'प्रेतकर्म' ।  
 प्रेतगृह-सज्ञा पु० १ श्मशान । मरघट । २ क्यग्निस्तान ।  
 प्रेतत्व-गज्ञा पु० प्रेत का भाव या धर्म । प्रवृत्ता ।  
 प्रेतदाह-गज्ञा पु० मृतक-नाश । अन्त्येष्टि-क्रिया ।  
 प्रेतवेह-गज्ञा पु० मृतक का वह कल्पित शरीर, जो उसके मरने के समय से सफिड़ी लग उमरी आत्मा को प्राप्त रहता है ।  
 प्रेतनदी-गज्ञा स्त्री० पतर्ण ।  
 प्रेतयज्ञ-सज्ञा पु० वह यज्ञ, जिसने करने में प्रत-यानि प्राप्त होती है ।  
 प्रेतलोह-गज्ञा पु० यमपुर । यमलोह ।  
 प्रेतविधि-गज्ञा स्त्री० दाहक्रिया । मृतक का दाहादि मन्त्रार ।  
 प्रेता-गज्ञा स्त्री० १ पिशाची । २ भग-वती ।

प्रेताधिप-सज्ञा पु० यमराज ।  
 प्रेताक्ष-सज्ञा पु० वह अन्न, जो प्रेत के उद्देश्य से दिया जाय ।  
 प्रेताशिनी-सज्ञा स्त्री० भगवती । देवी ।  
 प्रेताशीच-सज्ञा पु० सूतक । चूत । वह अशीच, जो हिन्दुओं में किसी के मरने पर उराके सबधियों आदि को होता है ।  
 प्रेतिक-सज्ञा पु० मृतक । प्रेत ।  
 प्रेतिकी-सज्ञा स्त्री० पिशाचीनी । भूतनी । चूटल ।  
 प्रेती-सज्ञा पु० प्रेतोपासक । प्रेतपूजक ।  
 प्रेतेश-सज्ञा पु० यमराज ।  
 प्रेतोन्माद-सज्ञा पु० एक प्रकार का पागलपन । मनोन्माद ।  
 प्रेत्य-सज्ञा पु० परलोक । लोकान्तर ।  
 प्रेम-सज्ञा पु० प्यार । स्नेह । मुहब्बत । प्रीति । अनुराग ।  
 प्रेमकलह-सज्ञा पु० प्रेम के कारण झगडा ।  
 प्रेमगविता-सज्ञा स्त्री० वह नायिका, जिसे अपने पति के अनुराग का अहंसार हो ।  
 प्रेमजल-सज्ञा पु० प्रेम के आँसू । प्रेमाश्रु ।  
 प्रेमगीर-गज्ञा पु० प्रेमाश्रु । प्रेम के आँसू ।  
 प्रेमपात्र-सज्ञा पु० वह, जिससे प्रेम किया जाय । प्रमी ।  
 प्रेमपाज-सज्ञा स्त्री० प्रेम का फटा । प्रेम का बन्धन ।  
 प्रेमपुत्रलिङ्ग-सज्ञा स्त्री० १. प्रमिका । २. पत्नी ।  
 प्रेमपुलक-सज्ञा स्त्री० प्रेमजनित रामाच ।  
 प्रेमवत-वि० १. प्रेम से भरता हुआ । २. प्रमी ।  
 प्रेमवारि-सज्ञा पु० दे० "प्रेमाश्रु" ।  
 प्रेमा-सज्ञा स्त्री० १ स्नेहशीला । २ इद्र । ३. वायु ।  
 प्रेमालाप-सज्ञा पु० प्रेमपूर्वक या प्रेम के बारे में बातचीत । मुहवत की बातचीत ।  
 प्रेमालिङ्गन-गज्ञा पु० प्रेम से गले लगाना । प्रेम में आलिङ्गन करना ।  
 प्रेमाश्रु-सज्ञा पु० प्रेम के आँसू । प्रेम या स्नेह के कारण आँसू से निकलनेवाले आँसू ।  
 प्रेमास्पद-वि०, यो० प्रमराज । मन्हाजने । स्नेही ।

प्रेमिक-सज्ञा पु० प्रेमी । प्रेम करनेवाला ।  
प्रेमिका-सज्ञा स्त्री० १. वह स्त्री, जिससे प्रेम  
किया जाय । प्रेयसी । २. प्रेम करनेवाली  
स्त्री ।

प्रेमी-सज्ञा पु० १. प्रेम करनेवाला । २.  
स्नेही । आशिक ।

प्रेय-सज्ञा पु० १. प्यार । २. एक अलंकार,  
जिसमें कोई भाव किसी दूसरे भाव अथवा  
स्वायी का अंग होता है ।

प्रेयसी-सज्ञा स्त्री० प्यारी । प्रेमिका ।  
प्रियतमा ।

प्रेरक-सज्ञा पु० १. प्रेरणा करनेवाला । प्रेषक ।  
२. भेजनेवाला । ३. किसी काम में प्रवृत्त  
करनेवाला ।

प्रेषण-सज्ञा पु० १. प्रेरणा करना । २.  
प्रेषण । भेजना ।

प्रेरण-सज्ञा पु० दे० "प्रेरणा" ।

प्रेरणा-सज्ञा स्त्री० १. कार्य में प्रवृत्त करना ।  
उत्तेजना देना । २. दबाव । जोर ।

प्रेरणार्थक क्रिया-सज्ञा स्त्री० क्रिया का वह  
रूप, जिसमें यह सूचित होता है कि वह  
क्रिया किसी की प्रेरणा से कर्त्ता के द्वारा  
हुई है । जैसे, लिखना का प्रेरणार्थक लिख-  
वाना ।

प्रेरना\*-क्रि० सं० प्रेरणा करना । प्रेरित  
करना ।

प्रेरणीय-वि० प्रेरणा करने के योग्य ।

प्रेरयिता-सज्ञा पु० १. प्रेरणा करनेवाला । २.  
प्रेषक । ३. आज्ञा देनेवाला ।

प्रेरित-वि० १. प्रपित । भजा हुआ । २.  
नियोजित । ३. उत्तेजित ।

प्रेषक-सज्ञा पु० भेजनेवाला ।

प्रेषण-सज्ञा पु० [वि० प्रपित] प्रेरणा करना ।  
भेजना ।

प्रेषणीय-वि० भेजने योग्य ।

प्रेषितक-सज्ञा पु० भेजी जानेवाली वस्तु ।  
(अग्ने०—गन्माहमेष्ट)

प्रेषितो-सज्ञा पु० जिसके नाम कोई चीज भेजी  
जाय । (अग्ने०—गन्माहमेष्ट)

प्रेषित-वि० १. प्रेषित । २. भेजा हुआ ।  
३. नियोजित ।

प्रेष्ट-वि० १. अत्यन्त प्रिय । प्रियतम ।  
२. प्रेषणीय । भेजने योग्य ।

प्रेष्ठा-सज्ञा स्त्री० १. अत्यन्त प्रिय म्त्री ।  
२. जाय ।

प्रेष्य-वि० प्रेषणीय । भेजने योग्य ।  
सज्ञा पु० दास । सेवक । गृह्य । दूत ।

प्रेस-सज्ञा पु० [अग्ने०] १. छापाग्वाना ।  
मुद्रणालय । २. छापने की धल । ३.  
समाचारपत्र का वर्ग ।

प्रेसिडेण्ट-सज्ञा पु० [अग्ने०] १. राष्ट्रपति ।  
२. सभापति । अध्यक्ष ।

प्रोक्त-वि० कथित । कहा हुआ ।

प्रोक्ति-सज्ञा स्त्री० दूसरे से कही हुई वह बात  
या उक्ति, जो कही उद्धृत की जाय या की  
गई हो । (अग्ने०—कोटसन)

प्रोक्षण-सज्ञा पु० १. पानी छिड़कना । २.  
पानी का छीटा । ३. पोंछना । ४. यत्न  
में बंध के पूर्व यज्ञपशु पर जल छिड़कना ।

प्रोक्षित-वि० १. सींचा हुआ । २. बंध  
किया हुआ ।

प्रोक्षितव्य-वि० प्रोक्षण के योग्य ।

प्रोषाम-सज्ञा पु० [अग्ने०] वार्यक्रम ।

प्रोत-वि० १. भली भाँति मिला हुआ । २.  
छिपा हुआ ।

सज्ञा पु० बन्द ।

प्रोतेजित-वि० अत्यन्त उत्तेजित ।

प्रोत्थित-वि० उठाया हुआ ।

प्रोत्फुल-वि० विषमिति । प्रसन्न ।

प्रोत्साह-सज्ञा पु० अत्यन्त उत्साह । अत्यधिक  
उमंग ।

प्रोत्साहक-सज्ञा पु० उत्साह बढ़ानेवाला ।  
हिम्मत बढ़ानेवाला ।

प्रोत्साहन-सज्ञा पु० [वि० प्रोत्साहित] स्व  
उत्साह बढ़ाना । हिम्मत बढ़ाना । साहम  
देना ।

प्रोत्साहित-वि० जिसका उत्साह या साहम  
बढ़ाया गया हो । अत्यन्त उत्साहित या  
उत्साहपूर्ण ।

प्रोपोडल-सज्ञा पु० [अग्ने०] प्रस्ताव ।

प्रोप्राइटर-सज्ञा पु० [अग्ने०] मान्य ।  
स्वामी ।

प्रोक्तेसर-सज्ञा पु० [अप्रे०] किसी विषय का बड़ा विद्वान् । किसी विश्वविद्यालय या कालेज का बड़ा अध्यापक, जो प्रायः अपने विषय का प्रधान अध्यापक होता है ।

प्रोमोशन-सज्ञा पु० [अप्रे०] तरक्की ।

प्रोपित-वि० प्रवासी । जो विदेश गया हो ।

प्रोपित नायक या पति-सज्ञा पु० वह नायक, जो विदेश में अपनी पत्नी के वियोग से विफल हो । विरही नायक ।

प्रोपितपतिता-सज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो अपने पति के विदेश जाने के कारण दुखी हो । प्रवन्त्यत्प्रेयसी ।

प्रोपितभर्तृका-सज्ञा स्त्री० दे० "प्रोपित-पतिता" ।

प्रोपितभार्य्य-सज्ञा पु० वह नायक, जो अपनी नायाँ (पत्नी) के विदेश जाने के कारण दुखी हो ।

प्रोढ-वि० [स्त्री० प्रोढा] १. अच्छी तरह बड़ा हुआ । युवावस्था के बाद की अवस्था का । २. मुष्ट । पक्का । ३. दृढ़ । ४. गभीर । गूढ़ । ५. चतुर । प्रगल्भ । निपुण ।

प्रोढत्व-सज्ञा पु० दे० "प्रोढता" ।

प्रोढता-सज्ञा स्त्री० प्रोढ होने का भाव । प्रोढत्व । जवानी ।

प्रोढा-सज्ञा स्त्री० १ अधिक वयसवाली स्त्री । २ साहित्य में वह नायिका, जो काम-कला आदि अच्छी तरह जानती हो । ३० वर्ष से ५० वर्ष तक की अवस्थावाली ।

प्रोढा अधीरा-सज्ञा स्त्री० वह प्रोढा, जिसमें अधीरा नायिका के लक्षण हो ।

प्रोढा घोर-सज्ञा स्त्री० ताना देकर कोप प्रकट करनेवाली प्रोढा ।

प्रोढा घीराधीरा-सज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका, जो अपने पति के परस्त्रीगमन के चित्त देखने पर कुछ प्रत्यक्ष और कुछ व्यंग्य-पूर्वक कोप करे ।

प्रोढ-सज्ञा स्त्री० १. समर्थ । २. उद्यम । उद्योग । अध्यवसाय । ३. प्रगल्भता । घुष्टता । ४. बाद-विवाद ।

प्लक-सज्ञा पु० स्त्री की कटि का अधोभाग ।

प्लक-सज्ञा पु० १. पावर वृक्ष । २. पिलसा । अद्वयत्व । पीपल । ३. पुराणानुसार सात कल्पित द्वीपों में से एक ।

प्लवग-सज्ञा पु० १. बदर । यानर । २. हिरण । मृग । ३. पक्ष । पावर ।

प्लव-सज्ञा पु० १. पंतीमर्दा सयत्सर । २. मुर्गी । ३. मेघ । ४. चन्द्र । ५. चाण्डाल । ६. बाढ़ । ७. भूमि । ८. पानी । ९. कौटी । १०. नीचा । ११. शत्रु । १२. मन्द । १३. अन्न । १४. नहाना । १५. तैरना ।

प्लवक-वि० तैराक । तैरनेवाला ।

सज्ञा पु० १. मँदक । २. पावर वृक्ष ।

प्लाट-सज्ञा पु० [अप्रे०] १. कथानक । २. षडयंत्र । ३. जमीन का टुकड़ा ।

प्लावन-सज्ञा पु० १ बाढ़ । जलमग्न होना । २. अच्छी तरह धोना । ३. किसी वस्तु को ऊपर फेंकना । तैरना ।

प्लावित-वि० पानी में डूबा हुआ । जलमग्न ।

प्लोडर-सज्ञा पु० [अप्रे०] क्लील ।

प्लोहा-सज्ञा स्त्री० दे० "तिल्ली" । रोग-विशेष । पिलही ।

प्लुत-सज्ञा पु० १ वक्र गति । टेढ़ी चाल । २ उछाल । ३ स्वर वा एक भेद, जो दोष से भी बड़ा और तीन मात्राओं का होता है । अति दीर्घस्वर ।

प्लुति-सज्ञा स्त्री० १. उछल-कूद की चाल । उछलना । कूदना । फीदना । २. पोई ।

प्लेग-सज्ञा पु० [अप्रे०] १. एक भयकर सक्रामक रोग । महागारी । ताऊन ।

प्लेट-सज्ञा पु० [अप्रे०] चीनी मिट्टी की तश्तरी ।

प्लेटफार्म-सज्ञा पु० [अप्रे०] १ रेलवे स्टेशनो पर बना हुआ लम्बा चबूतरा जिससे लगकर रेलगाड़ी खड़ी होती है । २ मंच ।

प्लेटिनम-सज्ञा पु० [अप्रे०] एक बहुमूल्य धातु ।

प्लोत-सज्ञा स्त्री० मुँह से गिरा पित्त ।

प्लोप-सज्ञा पु० जलन । दाह ।

## फ

फ-हिंदी वर्णमाला में चार्लिंगवा व्यंजन और पञ्चम वा दूसरा वर्ण। इसके उच्चारण का स्थान आण्ट है।

सजा पु० १ रमा बचा। घट्ट धाम्य। २ पुनार। पुनार। ३, निष्कट भाषण।

फवा\*-गजा पु० [स्त्री० फवी] १ मुँह में एक बार फाँवी जा सकने की मात्रा। २ बतरा। टुक्का।

फवी-गजा स्त्री० १ फाँवने की दवा। २ एक बार फाँवने की औषध। ३ चूँच। बुक्की। ४ छोटी फाँव।

फग\*-सजा पु० १ वधन। पदा। २ अनुराग। प्रेम। स्नेह।

फड-सजा पु० [अधे०] कोप। एवत्रित धन।

फद-सजा पु० १ वधन। फदा। जाल। फाँस। २ छल। धागा। ३ मर्म।

रहस्य। ४ दुख। बट्ट। ५ नथ की नाँटी फँसाने का फदा। ६ गुँज।

फँदना\*-क्रि० अ० फदे में पडना। फँसना। क्रि० स० फाँदना। लाँपना।

फँदवार-वि० फदा या जाल लगानेवाला।

फदा-सजा पु० १ रस्सी, धागे आदि का वह घेरा, जो किसी को फँसाने के लिए बनाया गया हो। फाँद। पाश। जाल। फाँस। वधन। २. नष्ट। डुरा।

मुहा०-फदा लगाना=१ किसी को फँसाने के लिए जाल बिछाना। २ धोखा देना। फदे में पडना=१ धोखे में पडना। २ किसी के बश में होना।

फँदाना-क्रि० म० जाल में फँसाना। फदे में लाना। फाँदने का काम दूसरे से कराना। फुदना। लँघवाना।

फँकाना\*-क्रि० अ० [अनु०] हवलाना। बोलने में जीम का बिपना।

फँसना-वि० स० १ फदे में फँसना। वधन में पडना। २ उलटना। अटवना।

मुहा०-गुरा फँसना=सगट में पडना।

फँसाना-क्रि० स० १ फँदे में लाना। २

बश में करना। अपने जाल या पाश में लाना। ३ अटवाना। उलटाना।

फँसाव-गजा पु० उल्लाव। अटवाव। फदा। फँसहार-वि० [स्त्री० फँसहारिनी] फँसाने वाला।

फज-वि० १ मरच्छ। सफेद। २ बदरग। मुहा०-गज फज हो जाना या फज पड जाना=बहरा जाना। बेहरे का आभाहीन हो जाना।

फजडी-गजा स्त्री० दुर्गति। दुर्दशा।

फजत-वि० [अ०] मिर्क। बवट। वम।

फकीर-सजा पु० [अ०] [स्त्री० फकीरन, फकीरनी] १ भिखारी। भिक्षुक। २ साधु। मसाह-त्यागी। यागी। ३ निधन। दग्ध।

फकीरी-सजा स्त्री० १ भिखमगापन। २ साधुता। ३ निपनता।

फक्कड़-वि० १ मदा निधन, लेकिन मस्त रहनेवाला व्यक्ति। लापरवाह। २ उद्व।

फक्कड़वाजी-सजा स्त्री० लापरवाही के साथ बाहियात वार्ने बचना।

फग\*-सजा पु० दे० फग'। फदा।

फगुआ-सजा पु० १ होली। होलिकोत्सव। होली का त्योहार। २ होली पर गाए जानेवाले गीत। फाग।

मुहा०-फगुआ खेलना या मनाना=होली के उत्सव में रंग, गुलाल आदि एक दूसरे पर डालना।

फगुनहुट या फगुनाहुट-सजा स्त्री० फागुन में चलनेवाली तज हवा। फगुन-सम्बधी।

फगुहारा-सजा पु० [स्त्री० फगुहारी, फगुहारिनी] फाग खलनेवाला। दूसरे के यहाँ होली खेलने के लिए जानेवाला व्यक्ति। होली के गीत या फगुआ गानेवाला व्यक्ति।

फजर या फजिर-सजा स्त्री० [अ०] सबेरा। प्रातःकाल।

फजल-सजा पु० अनुग्रह। कृपा। दया। फजोहत-सजा स्त्री० [अ०] दुर्दशा। दुर्गति।

यद्वजती।

फजूल-वि० व्यर्थ। निरर्थक। बकाम।

फजूलखर्च—वि० [ फा० ] [ सज्ञा फजूलखर्ची ]  
अपव्ययी। अधिक या बेकार खर्च करने-  
वाला।

फजूलखर्ची—सज्ञा स्त्री० अपव्यय।

फट—सज्ञा स्त्री० १. चीज के हिलने या गिरने  
का शब्द। २. दुतकार। फटकार। ३. एक  
तानिक मंत्र। अस्त्र-मंत्र।

वि० फूला हुआ। विकसित। प्रफुल्लित।

फटका—सज्ञा पु० बिल्लौर पत्थर। स्फटिक।  
सगमर्मर।

फि० वि० तत्क्षण। झट।

फटकन—सज्ञा स्त्री० अन्न के फटकने पर निकली  
टूई वस्तु (भूखी)।

फटकना—फि० स० १. फटफटाना। पटकना।  
झटनना। २. फेंकना। मारना। चलाना।

३. हिलाकर सूप से अन्न को साफ करना।  
ईई आदि को फटके से धुनना। ४. पहुँचना।

जाना। ५. दूर होना। अलग होना। ६  
तडकडाना। हाथ-पैर पटकना। हाथ-पैर  
हिलाना। ७. श्रम करना।

मुहा०—फटकना-पछोरना = १. सूप या छाज  
पर हिलाकर साफ करना। २. परखना।

अच्छी तरह जानना।

फटका—सज्ञा पु० [ अनु० ] १. गई धुनने  
की धुनवी। २. कोरी तुकवदी। रस और

गुण से हीन कविता।

सज्ञा पु० दे० “फाटक”।

फटकाना—फि० स० १. फेंकना। अलग  
करना। २. फटकने का काम दूसरे से

कराना।

फटकार—सज्ञा स्त्री० १. फटकारने की क्रिया  
या भाव। विस्फार। दुतवार। डाँट-झपट।

शिष्टी। २. दे० “फिटकार”।

फटकारना—फि० स० १. धस्त्र आदि चलाना।

२. झटका मारना। ३. लाभ उठाना। ४.

लेना। हथियाना। ५. अच्छी तरह पटक-  
पटक कर धोना। ६. शट्टा देकर दूर फेंकना।

दूर हटाना। अलग करना। ७. खरी-खोटी

मुनाना। डाँटना-झपटना। दुतवारना।

फटना—फि० अ० १. तडकना। टूटना। निमी

वस्तु का कोई भाग अलग या छिन्न-भिन्न

हो जाना। अलग हो जाना। २. द्रव पदार्थ में  
ऐसा विकार होना, जिससे उसका पानी और

सार भाग दोनो अलग-अलग हो जायें।  
३. किसी बात का बहुत अधिक होना। बहुत

अधिक पीड़ा होना।

मुहा०—छाती फटना—असह्य क्लेश या  
पीड़ा का अनुभव होना। बहुत अधिक दुःख

पहुँचना। (किसी से) मन या चित्त फटना—  
विरक्त होना। सवध रखने की रुचि न

रहना। फट पटना—अकस्मात् आ पहुँचना।

फटफट—सज्ञा स्त्री० शब्द-विशेष। बकबाद।

फटफटाना—फि० स० [ अनु० ] १. व्यर्थ

बकबाद करना। २. फडफडाना। हाथ-पैर

मारना। ३. व्यर्थ प्रयास करना। ४. झपट-  
उधर टक्कर मारना।

फि० अ० फट-फट शब्द होना।

फटा—सज्ञा पु० १ छिद्र। छेद। २. साँप का

फन। ३. घमड़। ४. छल।

मुहा०—किसी के फटे गे पाँव देना—दूसरे  
की विपत्ति अपने ऊपर लेना।

फटिक—सज्ञा पु० १ बिल्लौर। स्फटिक।

२. सगमर्मर।

फट्ठा—सज्ञा पु० [ स्त्री० फट्ठी ] १ बाँस

को चीरकर बनाया हुआ लट्ठा। २. कपड़े

का टुकड़ा।

फड़—सज्ञा पु० १ जुए का दांव, जिस पर

जुआरी बाजी लगाते हैं। दांव। २. जुआ-

साना। जुए का अड्डा। ३. वह स्थान, जहाँ

माल खरीदा या बेचा जाय। ४. पक्ष।

दल। ५. लकड़ी का मोटा चिरा हुआ

बल्ला। ६. वह गाड़ी, जिस पर तोप चढ़ाई

जाती है। चरख।

फड़क, फड़कन—सज्ञा स्त्री० फड़कने की क्रिया

या भाव। धडपन। स्फुरण। फड़कडाहट।

फड़कना—फि० अ० [ अनु० ] १. अगो में हलना

घम्पन होना। फुरफुरना। उछलना। फड़-

फड़ाना। २. चिन्ती अग में अचानक स्फुरण

होना। ३. हिलना-डोलना। ४. चंचल होना।

चिन्ती कार्य के लिए उद्यत होना। विरोध

या बदला लेने के लिए तैयार होना।

मुहा०—फड़न उठना या जाना—अनन्वि

होना । प्रसन्न या मुग्ध होना । उमग में आना ।  
 थोटी फड़बना=अत्यंत चंचलता होना ।  
 फड़काना-त्रि० स० दूसरे को फड़काने में  
 प्रयुक्त करना ।  
 फड़नबीस-सज्ञा पु० मराठा के राज्यपाल  
 में एक ऊँचा पदाधिकारी ।  
 फड़फड़ाना-क्रि० स०, अ० दे० "फटफटाना" ।  
 फड़फड़िया-वि० १. बबबादी । भड़भड़िया ।  
 २. अरदबाज ।  
 फड़बाज-सज्ञा पु० लोगों को अपने यहाँ  
 जुआ खेलाने और उसके बदले में कुछ धन  
 लेनवाला । जुआड़ी ।  
 फण-सज्ञा पु० १. साँप का फैला हुआ चौड़ा  
 मस्तक । २. फन्दा ।  
 फणधर-सज्ञा पु० साँप ।  
 फणिमणि-सज्ञा स्त्री० साँप के फन में पाई  
 जानेवाली मणि ।  
 फणींद्र-सज्ञा पु० १. शेष नाग । २. साँपो  
 का राजा, अर्थात् सब से बड़ा साँप ।  
 फणो-सज्ञा पु० १. साँप । २. केतु ग्रह । ३.  
 नागफनी नामक वृक्ष । ४. मरुआ ।  
 फणीश-सज्ञा पु० दे० "फणींद्र" ।  
 फतवा-सज्ञा पु० [अ०] मुसलमानों के धर्म-  
 शास्त्रानुसार मौलवी आदि-द्वारा किसी  
 मामले में उचित या अनुचित होने के विषय  
 में दी जानेवाली व्यवस्था ।  
 फतह-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. विजय । जीत ।  
 २. सफलता ।  
 फतिमा-सज्ञा पु० [स्त्री० फतिमी] १. एक  
 उड़नेवाला कीड़ा । २. पतिगा । पतंग ।  
 फतोला-सज्ञा पु० [अ०] दे० "फलीता" ।  
 फट्टर-सज्ञा पु० [अ०] १. दोष । विकार ।  
 २. हानि । नुकसान । ३. विघ्न । बाधा ।  
 ४. घुराफात । उपद्रव ।  
 फट्टरिया-वि० घुराफाती । झगडालू ।  
 फतूह-सज्ञा स्त्री० १. फतह का बहुवचन ।  
 विजय । जय । जीत । २. लड़ाई या लूट में  
 मिला हुआ धन ।  
 फतूही-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. बिना बाँहा  
 की कुरती । तलूवा । सदरी । २. लड़ाई  
 या लूट में मिला हुआ माल ।

फतेह\*-सज्ञा स्त्री० दे० "फतह" ।  
 फदकना-त्रि० अ० फद-फद शब्द करना ।  
 फुदबना ।  
 फदफदाना-त्रि० अ० फद-फद करना ।  
 उबलना । बल्ललाना ।  
 फनी-सज्ञा पु० दे० "फण" । फैला हुआ साँप  
 या सिर ।  
 फन-सज्ञा पु० [फा०] १. गुण । लूनी ।  
 हुनर । कौशल । २. छल-बपट । चाल-  
 बाजी ।  
 फनकार-सज्ञा स्त्री० [अनु०] फनफन होने  
 का शब्द । फूसकार । फूकार ।  
 फनगना-त्रि० अ० बल्ला फूटना । फनपना ।  
 फनफनाना-क्रि० अ० [अनु०] १. फन फन शब्द  
 उत्पन्न करना । फुफकारना । २. हिलना ।  
 फना-सज्ञा स्त्री० [अ०] नाग । बरबादी ।  
 फनिद\*-सज्ञा पु० दे० "फणींद्र" ।  
 फनि\*-सज्ञा पु० १. दे० "फणी" । २. दे०  
 "फण" ।  
 फनिधर-सज्ञा पु० दे० "फणिधर" ।  
 फनियाला-सज्ञा पु० साँप ।  
 फनिराज-सज्ञा पु० दे० "फणींद्र" ।  
 फनी\*-सज्ञा पु० दे० "फणी" ।  
 फनुस\*-सज्ञा पु० दे० "फानुस" ।  
 फणो-सज्ञा स्त्री० लकड़ी आदि का टुकड़ा,  
 जो किसी ढीली चीज की जड़ में उसे बसने  
 के लिए ठोका जाता है । पचचर ।  
 फफवना-क्रि० अ० फैलना ।  
 फफसा-वि० फूला हुआ, पर अन्दर से  
 खाली । फोफसा । पोला ।  
 सज्ञा पु० फेफड़ा ।  
 फफूदी\*-सज्ञा स्त्री० १. स्त्रियों की साड़ी का  
 बंधा । नीची । २. भुवडी । पाई की तरह  
 सफेद वह, जो बरसात में फल, लकड़ी आदि  
 पर रग जाती है ।  
 फफोला-सज्ञा पु० सल्का । छाला । चमड़े  
 पर या पोला उमार, जिसके भीतर पानी  
 भरा रहता है ।  
 मुहा०—दिल के फफोले फोड़ना=अपने  
 हृदय की ईर्ष्या या शोध प्रकट करना ।  
 फब-सज्ञा स्त्री० शोभा । रमणीयता ।

फक्कना-क्रि० अ० १ मोटा होना। फक्कना।  
२ पनपना। घासा फूटना।

फक्को-सज्ञा स्त्री० १ समयानुकूल घात।  
२ हँसी की चुभती बात। व्यंग्य।  
मुटकी।

मुहा०—फक्की उड़ाना=हँसी उड़ाना।  
फक्की कहना=चुभती हुई हँसी की बात  
बहना।

फक्कन-सज्ञा स्त्री० १ छवि। शोभा। सुन्दरता।  
२ सजावट।

फक्कना-क्रि० अ० शोभा देना। सुंदर या भला  
जान पड़ना। खिलना।

फक्काना-क्रि० स० ऐसी जगह लगाना, जहाँ  
भला जान पड़े। सजाना।

फक्की-सज्ञा स्त्री० फक्कन। छवि। शोभा।  
फक्कीला-वि० [स्त्री० फक्कीली] जो फक्का हो।

शोभा देनेवाला। शोभायमान। सुन्दर।  
फक्की-सज्ञा पु० १ दे० 'फल'। २ भाले  
की नोक। फलक। ३ सामना। मुवाबला।

४, विछोना। विछावन।

फक्क-सज्ञा स्त्री० १ फक्कने की क्रिया या  
भाव। २ फडक। चंचलता।

फक्क-सज्ञा पु० १ पार्यंक्य। अलगाव।  
२ दूरी। बीच का अंतर। ३ अंतर।  
भेद। ४ दुराव। परायापन। अन्यता।

५ वसर। कमी।

फक्कन-सज्ञा स्त्री० फडकने की क्रिया या  
भाव। दे० 'फडकी'।

फक्कना-क्रि० अ० दे० 'फडकना'।

फक्का-सज्ञा पु० १ वह छप्पर, जो अलग  
छाकुरे बेंडेर पर चढ़ाया जाता है। २  
छाजुन। पल्ला। ३ दरवाजे का टट्टर।

फक्काना-क्रि० स० फडफडाना। अलग  
करना।

फक्की-सज्ञा पु० [फा०] शवरज का एक  
मोहरा, जिसे 'क्कीर' भी कहते हैं।

वि० नकली। कल्पित। बनावटी।

फक्क-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सूची। स्मरण  
के लिए लिखी गई वस्तुओं की सूची अथवा

रस्ता। २ एक साथ काम में आनेवाले  
कपडा के जोड़े में से एक कपडा। पल्ला।  
फा० ६४

३ रजाई या दुलाई का ऊपरी पल्ला।  
४ दो पदों की कविता।

वि० अनुपम। वैजोड। अनोखा।

फरना-क्रि० अ० फलना।

फरफव-सज्ञा पु० १ छल-बपट। दाँव-पेंच।

धोखा। २ बखेडा। माया। ३ नैलरा।

फरफर-सज्ञा पु० उड़ने या फडकने से उत्पन्न  
शब्द।

फरफराना-क्रि० स०, अ० दे० 'फडफडाना'।

फरफुदा-क्रि०-सज्ञा पु० दे० 'फटिगा'।

फरमावरदार-वि० [फा०] आज्ञाकारी।

आज्ञा-पालन करनेवाला।

फरमा-सज्ञा पु० [अंग्रे० 'फैम'] १ लकड़ी

आदि का ढाँचा या साँचा। कालमूत।

२ वह साँचा, जिसमें कोई चीज ढाली

जाय। ३ बागज का पूरा तस्ता, जो एक  
बार प्रेस में छापा जाता है।

फरमाइश-सज्ञा स्त्री० [फा०] किसी चीज

के लिए खास तौर से माँग करना।

फरमाइशी-वि० [फा०] विशेष रूप से

आज्ञा देकर मँगाई या तैयार कराई गई

वस्तु। बहुत उम्दा और बढ़िया।

फरमान-सज्ञा पु० [फा०] राज्य या राजा

की आज्ञा। वह पत्र, जिस पर यह आज्ञा

लिखी हो।

फरमाना-क्रि० स० [फा०] आज्ञा देना।

किसी बड़े का कुछ कहना (आदर-सूचक)।

फरराना-क्रि० अ० दे० 'फहराना'।

फरलांग-सज्ञा पु० दे० 'फर्रांग'।

फरवरी-सज्ञा पु० अंग्रेजी वष का दूसरा  
महीना।

फरवार-सज्ञा पु० खलिहान।

फरवारी-सज्ञा स्त्री० बड़ई धोवी आदि को

खलिहान से अनाज की राशि उठाने के

समय दिया जानेवाला अन्न।

फरपी-सज्ञा स्त्री० भूना हुआ चावल। मुर-  
मुदा। लाई।

फरशी-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक विशेष  
प्रकार का हुक्का।

वि० १ फश का। २ एक प्रकार का सलाम,  
जिसमें हाथ जमीन (फर्श) तक छू जाय।

फरसा\*—सज्ञा पु० १. दे० "फर्ज" । २. दे०  
\* "फरमा" ।

फरसा—सज्ञा पु० १. अर्धों और चौड़ी धार  
की कुल्हाड़ी। कुठार। परन्तु । २. फावड़ा ।  
फरह—सज्ञा पु० एक वृक्ष, जिसकी छाल  
और फुंगे से रंग निर्यता है ।

फरहर—वि० १. प्रसन्न। हरा-भरा । २. तेज ।  
फुर्लिया । ३. विलसता हुआ । ४. शुद्ध । साफ ।  
स्पष्ट ।

फरहरना—क्रि० अ० फरखना। फरफराना ।  
फहराना ।

फरहरा—सज्ञा पु० झडा। पताका। ध्वजा ।  
फरहरी\*—सज्ञा स्त्री० दे० "फलहरी" ।

फराक\*—सज्ञा पु० [ फा० फराख ] मैदान ।  
वि० लबा-चोंडा। विस्तृत ।

(अग्ने० फाँव) लड़कियाँ और स्त्रियाँ का  
पुटने तक का एक पहनावा ।

फराकत—वि० लबा-चोंडा और समतल ।  
विस्तृत ।

—वि० सज्ञा पु० दे० "फरागत" ।

फराख—वि० [ फा० ] लबा चोंडा ।

फराखी—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ चौड़ाई ।  
विस्तार । २. सपन्नता ।

फरागत—सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ छुटकारा ।  
छुट्टी । २. निश्चितता। वैकिकी । ३. मज-  
तयाग । पावाना करना ।

फरामोश—वि० [ फा० ] भूला हुआ। विमुक्त ।

फरार—वि० [ अ० ] भागा हुआ व्यभिच ।

फरालताना—क्रि० स० फैलाना। पसारना ।

फरासा—सज्ञा पु० दे० "फरसि" ।

फरिया—सज्ञा स्त्री० छोटा लहंगा। पेंधरिया ।

फरियाद—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ शिवायत ।

छलाहना। नालिश । २. प्रार्थना। विनती ।

फरियादी—वि० [ फा० ] फरियाद या शिवायत  
करनेवाला। प्रार्थी ।

फरिमाना—क्रि० स० १ तय करना। निपटाना ।  
२. छाँटकर अलग करना । ३. साफ या  
शुद्ध करना ।

फि० अ० १ छँटकर अलग होना । २  
साफ होना । ३. निपटना। तय होना ।  
४. समझ पटना ।

फरिदा—सज्ञा पु० [ फा० ] देवदूत । मुमल-  
मानों के धर्मानुसार ईश्वर का दूत ।

फरीश—सज्ञा स्त्री० १ कुनी। फाल ।  
२ गाड़ी का हरना। फड। ३ चमड़े की  
गोल छड़ी डाल, जिससे गधे की चोट  
रोकने है ।

फरीक—सज्ञा पु० [ फा० ] १. मुनाबला या  
विरोध करनेवाला। प्रतिवादी । २. प्रतियुद्धी ।  
विपक्षी ।

फौ—फरीकसानी=प्रतिवादी ।

फरजा—सज्ञा पु० दे० "फरहा" ।

फरहा—सज्ञा पु० फावड़ा। मिट्टी खोदने  
या बटोरने का एक औजार ।

फरही—सज्ञा स्त्री० १ छोटा फावड़ा ।  
२ मिट्टी हटाने के लिए लकड़ी का  
एक छोटा औजार। छोटा पावड़ा ।  
मथानी ।

फरेंद, फरेंदा—सज्ञा पु० जामुन का फल ।  
जामुन ।

फरेब—सज्ञा पु० [ फा० ] छल। वपेट। धोखा ।

फरेबी—वि० [ फा० ] बपटी। धोखेबाज ।  
ढागी। मक्कार। चालबाज ।

फरेरा—सज्ञा पु० फरहर ।

फरेरी—सज्ञा स्त्री० जंगली फल ।

फरोहत—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] विश्वी। विरक्त ।

फरोश—वि० [ फा० ] बेचनेवाला, जैसे भवा-  
फरोश ।

फरु—सज्ञा पु० भेद। अन्तर। फरक ।

फरु—सज्ञा पु० [ अ० ] १ वर्तव्य। उत्तर-  
दायित्व । २. कल्पना। मान लेना ।

फरु—वि० [ फा० ] १ कल्पित। माना हुआ ।  
२ अस्तित्वहीन। मान मात्र का ।

सभा पु० दे० "फरजी" ।

फरु—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. वागज या  
बैपडे आदि का अलग टुकड़ा । २. विवरण  
या सूचीपत्र । ३. रजई, चाल आदि का  
ऊपरी पल्ला, जो अलग बनता है ।  
बैपहर ।

फरजुम—सज्ञा पु० फाँजदारी के मुकदमे में  
अभियुक्त पर लगाए गए आरोपों का  
विवरण पत्र, जिसे मजिस्ट्रेट लिखता है ।

फर्लाटा-संज्ञा पुं० [अनु०] १. वेप। तेजी। शब्द-विशेष। २. दे० "फर्लाटा"।

फर्ला-संज्ञा पुं० [अ०] १. नाँकर। विदमते-गार। २. उम्बू गाड़ने, फर्न बिछाने, सफाई आदि का काम करनेवाला।

फर्लाशी-वि० [फा०] फर्न या फर्लाश के कार्य से संबंध रखनेवाला।

संज्ञा स्त्री० फर्लाश का काम या पद।

फौं—फर्लाशी पंखा=बड़ा पंखा, जिससे फर्न भर पर हवा की जा सके।

फलांग-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ८८० गज की लम्बाई की एक नाप। एक मील का आठवाँ भाग।

फर्श-संज्ञा पुं० [अ०] १. कमरे, चबूतरे आदि पर बिछाने की बड़ी सूती दरी। २. कमरे, दालान आदि की धरती या जमीन।

फर्शा-संज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार का बड़ा हुक्का।

वि० फर्शी का। फर्श-संबंधी।

मुहा०—फर्शी सलाम=जमीन पर झुकाकर किया जानेवाला सलाम।

फलक\*-संज्ञा पुं० दे० "फलांग"। आकाश।

फलंगना\*-क्रि० अ० दे० "फलांगना"।

फलंत-संज्ञा स्त्री० फलने की क्रिया या भाव (वृक्ष आदि)।

फल-संज्ञा पुं० १. किसी भी वनस्पति में उत्पन्न होनेवाली बीज या गूदे से परिपूर्ण वस्तु, जो वातु-विशेष में पैदा हो। २. लाभ।

३. परिणाम। नतीजा। ४. कर्म का परिणाम। कुमुभोग। ५. प्रभाव। गुण। ६. शुभ कर्मों के परिणाम, जो बार माने जाते हैं—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। ७. प्रतिफल। शतीकाद। बदला। ८. भाले, बाण, छुरी आदि का वह पैना अगला भाग, जिससे आघात किया जाता है। ९. हल की फाले।

१०. फलक। ११. डाल। १२. उद्देश्य की सिद्धि। अभिप्राय। १३. न्यायशास्त्र के अनुसार प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न अर्थ।

१४. गणित की किसी क्रिया का परिणाम। १५. फलित ज्योतिष में ग्रहों के योग का परिणाम।

फलक-संज्ञा पुं० पटल। पट्टी। तख्ता। चादर। पत्र। पृष्ठ। बरफ। हुयेली। फल।

फलक-संज्ञा पुं० [अ०] स्वर्ण। आकाश। फलकना-क्रि० अ० १. उमगना। छलकना।

२. दे० "फलफना"।

फल-कर-संज्ञा पुं० वृक्षों के फल-पर लगाया जानेवाला महमूल।

फलका-संज्ञा पुं० फकीला। झलका। छाला।

फलतः-अव्य० फलस्वरूप। परिणामतः।

फलद-वि० फल देनेवाला।

फलदाता-संज्ञा पुं० फल देनेवाला। फलप्रद।

फलदान-संज्ञा पुं० हिंदुओं में विवाह-पंचका करने की एक रीति। बरेच्छा।

फलदार-वि० १. फलवाला। जिसमें फल लगे हों। २. फल देनेवाला। जिसमें फल लगे।

फलना-क्रि० अ० १. फल से युक्त होना। फल लगना। फल देना। २. लाभदायक होना।

३. सफल होना। ४. शरीर में छोटे-छोटे दानों का निकल आना, जिनके कारण पीड़ा होती है।

मुहा०—फलना-फूलना=मुख और संपन्न होना।

फलभूमि-संज्ञा स्त्री० कर्मों का फल भोगने का स्थान।

फलवान्-वि० फलयुक्त (वृक्ष)। सफल।

फलश्रुति-संज्ञा स्त्री० अर्थवाद।

फलश्रेष्ठ-संज्ञा पुं० आम।

फलहरी-संज्ञा स्त्री० मेवा। वनफल।

वि० बिना अन्न की मिठाई।

फलहार-संज्ञा पुं० दे० "फलाहार"। व्रत आदि में फलों का आहार।

फलहारी-वि० १. जिसमें अन्न न पड़ा हो अथवा जो अन्न से न बना हो। केवल फलों से बना हुआ। २. केवल फल लेकर रहनेवाला।

फल-वि० [फा०] अमुक। फलाना।

फलांग-संज्ञा स्त्री० १. एक स्थान से उछलकर दूसरे स्थान पर जाना। चीकड़ी। कुद्यान।

२. वह द्वारी, जो फलांग या उछाल में तब की जाय।

फलांगना-क्रि० अ० एक स्थान से उछलकर

दूसरे स्थान पर जाना। कृदना। फाँदा।  
उछलना।

फलांश-सज्ञा पु० सात्त्विक। सारांश।

फलागम-सज्ञा पु० १. फल लगने की श्रुति।

२. शरद श्रुति। ३. नाट्य में नायक के  
उद्देश्य की जहाँ सिद्धि हो।

फलादेश-सज्ञा पु० जन्मवृण्टली आदि देवकर  
ग्रहों आदि का फल कहना (ज्योतिष)।

फलाना-सज्ञा पु० [स्त्री० फलानी] अमुक।  
कोई।

फलवि० सं० किसी की फलने में प्रवृत्त  
करना। फलने का काम कराना।

फलार्थी-सज्ञा पु० फल की कामना करने  
वाला। फलकामी।

फलालेन-सज्ञा पु० एक प्रकार का ऊनी  
वस्त्र।

फलासव-सज्ञा पु० दास, खजूर आदि  
फलों की मदिरा (आसव)।

फलाहार-सज्ञा पु० केवल फल खाना। फल  
भोजन। बिना अन्न का भोजन।

फलाहारी-सज्ञा पु० [स्त्री० फलाहारिणी]  
केवल फल खाकर निर्वाह करनेवाला।

वि० फलाहार-सवधी। जो केवल फलों  
से बना हो।

फलित-वि० १. फला हुआ। फल-प्राप्त।  
फल विशिष्ट। २. सफल। पूर्ण। संपन्न।

यो०—फलित ज्योतिष=ज्योतिष का वह  
अंग, जिसमें ग्रहों के योग से शुभाशुभ फल

का निरूपण किया जाता है।

फलितध-वि० फलने योग्य।

फलितार्थ-सज्ञा पु० १. अर्थ। तात्पर्य। २.  
सिद्धान्त। सिद्ध अर्थ।

वि० पूर्ण मनोरथ।

फलो-सज्ञा पु० फल युक्त। सफल।

सज्ञा स्त्री० छोटी। फलियाँ।

फलोत्ता-सज्ञा पु० १. पलीटा। २. बड़ आदि  
के रेशों से बटी हुई रस्सी, जिसमें तोड़ेदार

फलेँदा-सज्ञा पु० बड़ा जामुन। फरेँद।

फलोत्तमा-सज्ञा स्त्री० दाग। मुगवरा  
द्राक्षा।

फलोदय-सज्ञा पु० १. लाभ। प्राप्ति। मनोरथ  
की सिद्धि। २. आनन्द। हर्ष। ३. देवगण।

फलोद्भव-वि० जो फल से उत्पन्न हुआ हो।  
फल से उत्पन्न होनेवाला।

फलु-वि० १. निम्मार। २. तुच्छ। छोटा।  
शुद्ध। ३. सामान्य।

सज्ञा स्त्री० बिहार प्रान्त की एक नदी।

फलुन-सज्ञा पु० १. अर्जुन। २. फागुन मास।

फलकाना-वि० अ० [अनु०] बँटना। मग-  
चना। फलना। फूटना। दरपना। डीला  
होना।

वि० जा जल्दी मसक या घँस जाय।

फलकाना-वि० अ० फाड़ना। फँसाना।  
डीला करना।

फलझड़ी-वि० [अनु०] हेय। निरुष्ट।  
पिछड़ा हुआ।

फलना-वि० अ० उलझना। फँसना। रचना।  
बसाना। सं० रूप फसाना। प्रे० रूप फस-  
वाना।

फलफसा-वि० दे० 'निर्वल'। पिलपिला।

फलल-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. श्रुति। मांसम।  
२. बाल। समय। ३. दास्य। खेद की  
उपज। अन। ४. खरीक और रबी की  
फसल।

फलली-वि० श्रुति का। श्रुति-सम्बन्धी।

सज्ञा पु० १. अक्बर का चलाया हुआ एक  
संवत्, जिसका प्रचार उत्तरीय भारत में

खेती-बारी आदि के कामों में होता है।  
२. हैजा।

फसाद-सज्ञा पु० [अ०] [वि० फसादी]  
विकार। बिगाड़। विद्रोह। बलवा। ऊधम।  
उपद्रव। झगडा। लड़ाई।

फसादी-वि० [फा०] १. उपद्रवी। फसाद  
बढ़ा करनेवाला। २. झगडालू।

फसाना-वि० अ० उलझाना। बसाना। बस  
में करना।

फस्व-सज्ञा स्त्री० [अ०] नस की छेदकर  
शरीर का दूषित रक्त निवालने की क्रिया।

मुहा०—कसद तुलवाना या लेना=१. शरीर का दूषित स्वतः निकलवाना । २. होना की दवा कराना ।

कहम्-सज्ञा स्त्री० [अ०] ज्ञान । बुद्धि । समझ ।

फहरना-क्रि० अ० फहराना का अकर्मक रूप । फड़फड़ाना । उड़ना ।

फहरान-सज्ञा स्त्री० फहराने का भाव या क्रिया ।

फहराना-क्रि० स० कोई चीज इस प्रकार गुली छोड़ देना, जिसमें वह हवा में हिले और उड़े । उड़ाना । फड़फड़ाना ।

क्रि० अ० हवा में हिलना या उड़ना । फहरना ।

फहरानि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "फहरान" ।

फहृश-वि० अश्लील । फूहड़ ।

फाक-सज्ञा स्त्री० किसी वस्तु का काटा या चीरा हुआ टुकड़ा । खंड (फल आदि का) ।

फांकड़ा-वि० १. बांका । खिरछा । २. हट्ट-मुट्ट ।

फांकना-क्रि० स० दाने या बुकनी को दूर से मुँह में डालना । फाँग मारना । खाना ।

मुहा०—धूल फांकना=दुर्दशा भोगना । फाँका-सज्ञा पु० फका । एक बार खाने की मात्रा ।

फाँकी-सज्ञा स्त्री० फाँक ।

फाँग, फाँगो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का साग ।

फाँट-सज्ञा स्त्री० काँटा । क्रम से बँटा भाग । भाग बाँटने का अनुपात या दर ।

फाँटना-क्रि० स० काँटा बनाना । विभाग करना ।

फाँटबंदी-सज्ञा स्त्री० वह कागज, जिसमें किसी ग्राम के पट्टीदारों के हिस्सों के अनुसार उस गाँव की आमदनी आदि की बाँट लिखी रहती है ।

फाँड़-सज्ञा पु० दे० "फाँडा" ।

फाँड़ा-सज्ञा पु०, दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ भाग । फेंदा ।

फाँव-सज्ञा स्त्री० फडा । पाश । उछलने या फाँटने का भाव । उछाल ।

फाँटना-क्रि० अ० एक स्थान से दूसरे स्थान पर फूटना । उछलना ।

क्रि० स० १. फूटकर लाँघना । २. फदे में फँसाना ।

फाँदा-सज्ञा पु० फंदा ।

फाँफी-सज्ञा स्त्री० १. अल्पवृत्त महीन शिल्पी । २. माँड़ा । जाला (रोग) ।

फाँस-सज्ञा स्त्री० १. पाश । फंदा । बधन । पशु-पक्षी को फँसाने का फंदा । २. सूक्ष्म फाँटा । चाँस, सुग्गी लकड़ी आदि का कड़ा टुकड़ा, जो शरीर में घुस जाता है । ३. पतली तीली या कमाची ।

फाँसना-क्रि० स० १. बंध में करना । पाश में बाँधना । जाल में फँसाना । २. धोखे में डालना ।

फाँसी-सज्ञा स्त्री० १. फँसाने का फंदा । पाश । २. रस्ती का वह फंदा, जिसमें गला फँसने से दम घुट जाता है । पाश द्वारा प्राण-दण्ड । वह दंड, जिसमें अपराधी के गले में फंदा लगाकर उसे मार डाला जाता है ।

मुहा०—फाँसी चढ़ना=पाश द्वारा प्राण-दण्ड पाना । फाँसी देना=गले में फंदा डालकर मार डालना ।

फाँडल-सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] कागजों की गन्धी । कागज-पत्रों को बाँधकर रखने की चीज ।

फाँका-सज्ञा पु० [अ०] उपवास ।

फाँकमस्त-वि० [फा०] जो खाने-पीने का कष्ट उठाकर भी निश्चिन्त रहता हो ।

फाँलता-सज्ञा स्त्री० [अ०] पड़क पक्षी ।

फाँग-सज्ञा पु० १. होली का खेल । फागुन में होनेवाला होली का उत्सव, जिसमें एक-दूसरे पर रंग या गुलाल डालते हैं । २. होली के गीत ।

फागुन-सज्ञा पु० माघ के बाद का महीना । फाल्गुन ।

फागुनी-वि० फागुन-सम्बन्धी ।

फाजिल-वि० [अ०] आवश्यकता से अधिक । 'यों—आलिम-फाजिल=विद्वान् ।

फाटक-सज्ञा पु० १. बड़ा द्वार या बड़ा दरवाजा । मुख्य द्वार । तोरण । २. मवेशी

घाना। मंत्रिणीय। ३. भूमि, आ अनाज  
 पटवों में बनी हुई। पटवन। पटोदन।  
 पाटवा-मज्ञा पु० किसी वस्तु के भाग के  
 अनुमा पर एक प्रकार का जुड़ा।  
 पौ०—गद्दा-काटवा।  
 पाटवा-वि० अ० दे० "फटना"। टटना।  
 पिंगटना।  
 फाटन-मज्ञा स्त्री० पागज, बपटे आदि का  
 टूटना, जो फाटों में निकले।  
 फाटना-वि० स० १ खोलना। विदीर्ण करना।  
 २ भङ्गिणी उड़ाना। फाटना। सोचना।  
 सट करना। टाटने करना। ३ जुड़ी  
 हुई वस्तु को चीर कर अलग करना।  
 ४ किसी भाँड़े द्रव पदार्थ को इस प्रकार  
 करना कि पानी और सात पदार्थ अलग-  
 अलग हो जायें।  
 फागिन-सज्ञा पु० १ रात। २ मीरा।  
 फातिहा-मज्ञा पु० [अ०] १ प्रायना।  
 २ कुरान की एक आयत, जो किसी की  
 मृत्यु पर पढ़ी जाती है।  
 फानूस-सज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार की  
 बड़ी बदील। २ एक छड़ में लगे हुए शीश  
 के नमूने या गिलास आदि जिनमें वस्तिपाँ  
 जलाई जाती हैं।  
 फाव\*—सज्ञा स्त्री० दे० "फावन"। छवि।  
 फावना\*—वि० अ० दे० "फावना"।  
 फावना-सज्ञा पु० [अ०] लाभ। नफा।  
 प्राप्ति। प्रयोजन-सिद्धि। मत्फल प्राप्त  
 होना। अच्छा फल। भला परिणाम। उत्तम  
 प्रभाव।  
 फावदेमद-वि० [फा०] लाभदायक। गुण-  
 वारी।  
 फार\*—सज्ञा पु० वि० दे० "फाल"।  
 फारलकी-सज्ञा स्त्री० चुबती। धेबाकी।  
 चबहु-लेख, जो इस बात का सूचक हो कि  
 किसी के जिम्मे जो कुछ था, वह अदा हो  
 गया।  
 फारम-सज्ञा पु० १ दरखास्त या प्रार्थनापत्र,  
 रसीद आदि का नमूना। २ छापने के लिए  
 बैठाए हुए, उतने अक्षर, जितने एक सख्या  
 छापने के लिए पूरे हैं। फर्मा। (अर्थ०

फार्म)। ३. वडे पैमाने पर व्यवस्थित रूप  
 में मनीषा-द्वारा खेती करने की जमीन।  
 फारम-सज्ञा पु० ईमारतें।  
 फारसी-सज्ञा स्त्री० [फा०] फार्म देव की  
 भाषा।  
 फारा\*—सज्ञा पु० दे० १ "फोर"। पत्र।  
 २ दे० "फाल"।  
 फारिग-वि० जा साथ करने छुट्टी पा  
 चुका हो।  
 फाल-सज्ञा स्त्री० १ छोटे की चौरांर लकी  
 छड़, जो हट के नीचे लगी रहती है और  
 जिनमें जमीन गंभीरी जाती है। २ बाटा हुआ  
 पत्र टूटना। ३ बदल का काम। टग।  
 मज्ञा पु० टग। पत्र।  
 मुहा०—फाल बोधना=उल्लंघन लोचना।  
 फालतू-वि० जटिल। आवश्यकता में  
 अधि। व्यय। निराम्मा। फजल।  
 फालमई-वि० फाल्गुन में रग का। ललाई  
 त्रिये हुए हल्का ऊस रंग।  
 फालमा-सज्ञा पु० [फा०] एक छटा पेड़,  
 जिसमें मटर के बराबर छोटे-छोटे बंगनी  
 रंग के खटमिंदे फल लगते हैं।  
 फालिज-सज्ञा पु० [अ०] एक राग, जिसमें  
 आया अग मुन्न हो जाता। अर्थात्।  
 पद्याधान।  
 फाल्दा-सज्ञा पु० [फा०] सेबई की तरह  
 का एक प्रकार का पेय।  
 फाल्गुन-सज्ञा पु० १ माघ के बाद का महीना।  
 वर्ष का बारहवाँ महीना। दे० "फाल्गुन"।  
 २ अर्जुन का एक नाम।  
 फाल्गुनी-सज्ञा स्त्री० पूर्वा फाल्गुनी और  
 उत्तरा फाल्गुनी नामक नक्षत्र।  
 फाय-सज्ञा पु० फेला। वस्तु खरीदने के  
 बाद उसके साथ मिली हुई चिना दाम  
 की वस्तु।  
 फावडा-सज्ञा पु० [स्त्री० फावडी] मिट्टी  
 खोदने का एक औजार। फग्मा।  
 फाव-वि० [फा०] प्रकट। फुला। अस्कील।  
 फूहड़। भड़ा।  
 फासला-सज्ञा पु० [अ०] अंतर। दूरी।  
 काहा-सज्ञा पु० इन आदि में तर उई का

टुकड़ा। दबा या भरहम लगाने के लिए बपड़े या रुई का टुकड़ा।

काहिशा-वि० [अ०] छिनाल। व्यभिचारिणी।

किगक, किगा-सज्ञा पु० किगा नामक पक्षी।

किगई-सज्ञा स्त्री० एक मोटा अन्न।

किकर-सना स्त्री० दे० 'किक्'।

किकरा-सज्ञा पु० [अ०] १ धाक्य। २ झांसा पन्टी। ३ व्यग्य। ताना।

मुहा०—किकरा कसना=ताना मारना। व्यग्य करना।

किफेत-सज्ञा पु० दे० 'फेकत'।

किफ-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ चिता। सोच। परवाह। आशवा। २ तदरीर। यत्न।

किफमद-वि० चिंताग्रस्त।

किचकुर-सज्ञा पु० मूर्च्छा या बेहोशी आन पर मुँह से निकलनेवाला फन।

फिट-अव्य० [अनु०] धिक्। थुड़ी। छि (धिवकारन का शब्द)।

सज्ञा पु० फटकार। दुतवार।

फिटकार-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'फटवार'। लानत। धिवकार। २ शाप। कोसना।

फिटकिरी-सज्ञा स्त्री० क्षारविशेष। एक श्वेत खनिज पदार्थ।

फिटन-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] चार पहियावाली एक प्रकार की खुली घोड़ागाड़ी।

फिट्ट या फिट्टा-वि० अपमानित। फटकार खाया हुआ।

फितना-सज्ञा पु० [अ०] १ बगडा। दगा फसाद। २ एक प्रकार का इत्र।

फितरत-सज्ञा पु० [अ०] १ मत्त। २ बखेडा।

फितरती-वि० १ चालाक। २ फितूरी। ३ भाग्यवी।

फितूर-सज्ञा पु० [वि० फितूरी] १ बगडा। उपद्रव। बखेडा। २ विचार। खराबी। ३ विषय्यंय।

फिदवी-वि० आनाकारी। स्वामिभक्त।

सज्ञा पु० [स्त्री० फिदवी] दास।

फिनिया-सज्ञा स्त्री० कान में पहनने का एक आभूषण।

फिरग-सज्ञा पु० १ गोरा का देश। फिरगि

स्तान। योरप। २ रोग विशेष। (मरमी) आतश्व।

फिरगो-वि० १ फिरग देश में उत्पन्न। २ फिरग देशवासी। गोरा। ३ फिरग देग का।

सज्ञा स्त्री० चिलायती तलवार।

फिरट-वि० १ बिरड। खिलाफ। फिरा हुआ।

२ विरोध करने या लड़ने पर तैयार।

फिर-कि० वि० १ दोबारा। पुन। एक बार और। २ भविष्य में निमी समय। और बचत। अनंतर। उपरांत। ३ पीछे। तब।

उस अवस्था में। ४ और चलकर। आगे और दूरी पर। ५ इसके अतिरिक्त।

यो०—फिर फिर=बार-बार। कई दफा।

फिरकना-कि० अ० फिरकना। नाचना। गीत वस्तु का एक स्थान पर घूमना।

फिरना-सज्ञा पु० [अ०] जाति। जमात। कौम। जत्या। सप्रदाय। पथ।

फिरकी-सज्ञा स्त्री० १ एक गोल खिड़ीना, जो बीच की कोली पर घूमता है। फिरहरी। चकई खिलौना। २ चरख के तक्के में लगाने का चमड़े का गोल टुकड़ा।

फिरना-कि० अ० १ घूमना। भ्रमण करना। इधर उधर चलना। टहटना।-धिवरना।

संर करना। चक्कर लगाना। २ बार-बार करे खाना। ३ ँँठ जाना। मरोड़ा जाना।

४ वापस होना। लौटना। ५ सामना दूसरी तरफ हो जाना। ६ मुड़ना।

पलटना। लड़ने या मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाना। ७ स्थिति बदलना।

बदल जाना। उलटा होना। विपरीत होना। बिरुद्ध होना। खिलाफ होना। ८ वात पर दूढ़ न रहना। ९ चुकना। टडा होना।

१० चारा ओर प्रचारित होना। घोषित होना। जारी होना। ११ किसी वस्तु के ऊपर पीटा जाना। चढ़ाया जाना। १२ लेप होना।

मुहा०—किसी ओर फिरना=विपरीत ढंग के कार्य में प्रवृत्त होना। अपना ढंग बदल देना। जो फिरना=चित्त उच्च

जाना। बिरुद्ध हो जाना। सिर फिरना= बुद्धि भ्रष्ट या नष्ट होना।

फिरवाना—क्रि० रा० फेरने या फिराने का  
 वाम करना। घुमाना। लौटाना। पलटाना।  
 फिराक—मंज्ञा पुं० [अ०] १. विछोह। वियोग।  
 २. चिंता। सोच। गटका। ३. श्लोच।  
 फिराना—क्रि० स० १. टटोलना। बार-बार  
 फेरे मिलाना। चक्कर देना। २. घुंठना।  
 मरोड़ना। घुमाना। ३. लौटाना। पलटाना।  
 ४. दे० "फेरना"। विचलित करना।  
 फिरार—सज्ञा पुं० [अ०] [वि० फिरारी]  
 भाग जाना। भागना। दे० "फरार"।  
 फिरि\*—क्रि० वि० दे० "फिर"।  
 फिरियाद\*—सज्ञा स्त्री० दे० "फरियाद"।  
 फिरिस्ता—सज्ञा पुं० देवदूत।  
 फिरिहरा—सज्ञा पुं० एक पक्षी।  
 फिरिहरी—संज्ञा स्त्री० बच्चों का एक खेलौना।  
 फिरकी।  
 फिरलो—सज्ञा स्त्री० पिडली।  
 फित्त—वि० [अनु०] कुछ नहीं।  
 मुहा०—टॉप-टॉप फिता=पी तो बड़ी घूम-  
 घाम, पर हुआ कुछ नहीं।  
 फिसड्डी—वि० जो कुछ भी न कर सके।  
 जो काम में सबसे पीछे रहे। निवम्मा।  
 फिसफिसाना—क्रि० रा० १. डरना। भीत  
 होना। २. आगा-पीछा करना। ३. शिथिल  
 होना। फित्त होना।  
 फिसलन—सज्ञा स्त्री० १. फिसलने की क्रिया  
 या भाव। रपटन। २. चिकनी जगह, जहाँ  
 पैर फिसले।  
 फिसलना—क्रि० अ० १. खसकना। गिरना।  
 रपटना। चिकनाहट और गिलेपन के कारण  
 पैर आदि का न जमना। २. झुकना।  
 प्रवृत्त होना।  
 फिरिस्त—सज्ञा स्त्री० [फा०] सूची।  
 फौचना—क्रि० स० पछाड़ना। धोना।  
 फौ—अव्य० [अ०] प्रत्येक। हर एक।  
 फोका—वि० १. स्वादहीन। नीरस। वै-जायका।  
 सीटा। २. जो चटकीला न हो। धमल।  
 मलिन। तेजहीन। वान्तिहीन। वै-रीनक।  
 ३. प्रभावहीन। निष्फल। व्यर्थ।  
 फोता—सज्ञा पुं० [फा०] पतली धज्जी,  
 सूत आदि, जो किसी वस्तु को लपेटने या

बाँधने के काम में आता है। कपड़े की  
 कोर या पट्टी। २. भूमि नापने की एक  
 प्रकार की पट्टी।  
 फीरोनी—संज्ञा स्त्री० दे० "फिरनी"।  
 फीरोजा—संज्ञा पुं० [फा०] नीलमणि। हरापन  
 लिये नीले रंग का एक नम या बहुमूल्य  
 पत्थर।  
 फीरोजी—वि० [फा०] हरापन लिये नीले  
 रंग का।  
 फील—सज्ञा पुं० [फा०] १. हाथी। २. दादरंज  
 का एक मोहरा।  
 फीलवाना—सज्ञा पुं० [फा०] वह घर, जहाँ  
 हाथी बाँधा जाता हो। हस्तिशाला।  
 फीलपा—सज्ञा पुं० [फा०] एक रोग, जिसमें  
 पैर फूलकर हाथी के पैर की तरह हो  
 जाता है।  
 फीलवान—सज्ञा पुं० [फा०] हाथीवान।  
 महावत।  
 फीली—सज्ञा स्त्री० पिडली।  
 फील्ड—सज्ञा पुं० [अंग्रे०] खेत। मैदान।  
 खेलने का मैदान।  
 फीस—सज्ञा पुं० [अंग्रे०] शुल्क। भेदनदान।  
 फुंकना—क्रि० अ० जलना। भस्म होना।  
 बरबाद होना। नष्ट होना।  
 सज्ञा पुं० १. दे० "फुंक्नी"। वास की नली।  
 २. मूत्राशय।  
 फुंकनी—संज्ञा स्त्री० १. वह नली, जिसे मुँह  
 से फूँककर आग सुलगाने हैं। २. भायी।  
 धौकनी।  
 फुंकरना—क्रि० अ० फूँकार या फुफ्फुकार  
 छोड़ना। फूँ-फूँ शब्द करना।  
 फुंकवाना, फुंकाना—क्रि० स० फूँकने का काम  
 दूसरे से कराना। जलवाना। भस्म करवाना।  
 फुंकार—सज्ञा पुं० दे० "फूँकार"। फुफ्फुकार।  
 फुंदना—सज्ञा पुं० फूल के आकार की गाँठ,  
 जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर  
 दोभा के लिए बनाते हैं। तराजू के बीच  
 की रस्सी की गाँठ। कोड़े के छोर की गाँठ।  
 शम्बा। फूलरा।  
 फुंदिया—सज्ञा स्त्री० दे० "फुंदना"।  
 फुंदी—सज्ञा स्त्री० गाँठ। फटा। बिंदी। टीका।

कुंसी-सज्ञा स्त्री० छोटी कौड़िया ।  
 कुआरा\*—सज्ञा पु० दे० "कुहारा" ।  
 कुकना—क्रि० अ० दे० "कुकना" ।  
 कुकाना—क्रि० स० कुकने का काम करना ।  
 कुचड़ा—सज्ञा पु० घुने हुए कपड़े से बाहर  
 निकला हुआ सूत या रेशा ।  
 कुट—वि० १. जिसका जोड़ा न हो। अकेला ।  
 एकाकी । २. जो लगाव में न हो। पृथक् ।  
 अलग ।  
 सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] लवाई, चौड़ाई मापने  
 की एक माप, जो १२ इंच की होती है ।  
 कुटकार, कुटकल—वि० १. विषम। एकाकी ।  
 कुट। अकेला। अलग । पृथक् । २. कई  
 प्रकार का। कई मेल का। थोड़ा-थोड़ा ।  
 कुटका—सज्ञा पु० १. फकोला । २. लावा । ३.  
 कड़ाहा, जिसमें गन्ने का रस पकता है ।  
 कुटकी—सज्ञा स्त्री० १ किसी वस्तु के छोटे  
 वुलवुले, जो पानी, दूध आदि में अलग-  
 अलग दिखाई पड़ते हैं । २. खून, पीव आदि  
 का छोटा, जो किसी वस्तु में दिखाई दे ।  
 कुटनोट—सज्ञा स्त्री० [ अंग्रे० ] टिप्पणी, जो  
 लेख के नीचे दी जाती है ।  
 कुटपाय—सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] सड़क की पटरी ।  
 पगडडी ।  
 कुटवाल—सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] पैर से खेलने  
 का बड़ा गेंद ।  
 कुटहरा—सज्ञा पु० मटर या चने का दाना, जो  
 भुनने से खिल गया हो ।  
 कुटल—वि० १ फुटकर। अकेला। अयुग्म ।  
 २. अभाग ।  
 कुटल—वि० अलग । भिन्न । अकेला ।  
 कुटल या कुटल—वि० जोड़, झुंड या समूह  
 से अलग ।  
 कुबकना—क्रि० अ० उछलना। कूदना। उगम  
 में आना। फूले न समाना ।  
 कुदकी—सज्ञा स्त्री० एक छोटी चिलिया ।  
 कुनग—सज्ञा स्त्री० दे० "कुनगी" । पेड़ का  
 शिखर । अकुर ।  
 कुनगी—सज्ञा स्त्री० वृक्ष या पौधे की शाखाओं  
 का अग्रभाग । अकुर । बली । कोपल ।  
 मजरी । फुनग ।

कुनना—सज्ञा पु० शब्दा । झालर । गुच्छा ।  
 कुफूस—सज्ञा पु० फेफड़ा ।  
 कुफुसी—सज्ञा स्त्री० लहंगे का इजारबंद या  
 स्त्रियों की घोंती कमरे की गैठ । नीची ।  
 कुफकाना—क्रि० अ० दे० "कुफकारना" ।  
 कुफकार—सज्ञा पु० साँप के मुँह से निकली  
 हुई हवा का शब्द । फुकार ।  
 कुफकारना—क्रि० अ० साँप का मुँह से फूँक  
 निकालना । फूँकार करना ।  
 कुफेरा—वि० स्त्री० फुफेरी। फूफा में उत्पन्न ।  
 फूफा का पुत्र । जैसे, फुफेरा भाई । फुआ के  
 सम्बन्धी ।  
 फुर—वि० सत्य । सच्चा । यथार्थ । ठीक ।  
 प्रमाणित ।  
 सज्ञा स्त्री० उड़ने में पखों का शब्द ।  
 फुरती—सज्ञा स्त्री० शीघ्रता । तेजी । जल्दी ।  
 दे० "फुर्ती" ।  
 फुरतीला—वि० [ स्त्री० फुरतीली ] जिसमें  
 फुरती हो । तेज ।  
 फुरना\*—क्रि० अ० १ उद्भूत होना । प्रकट  
 होना । निकलना । २. प्रकाशित होना ।  
 चमक उठना । ३. फड़कना । फड़फड़ाना ।  
 ४. उच्चरित होना । मुँह से शब्द निकलना ।  
 ५. पूरा उतरना । सत्य ठहरना । ६. प्रभाव  
 उत्पन्न करना । ७. सफल होना ।  
 फुरफुर—सज्ञा स्त्री० [ अनु० ] उड़ते समय  
 उँतों का शब्द-विशेष ।  
 फुरफुराना—क्रि० स० १. शरीर के रोगों  
 सहसा खड़े होने से शरीर का एक बार  
 काँप उठना । "फुर-फुर" करना । उड़कर  
 पखों का शब्द करना । २. हवा में लहराना ।  
 क्रि० अ० किसी हलकी वस्तु का फुर-फुर  
 शब्द कर हिलना ।  
 फुरफुराहट—सज्ञा स्त्री० पक्ष फड़फड़ाने का  
 भाव ।  
 फुरफुरी—सज्ञा स्त्री० 'फुर-फुर' शब्द होने  
 या पक्ष फड़फड़ाने का भाव । फुरफुरा-  
 हट ।  
 फुरसत—सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. अवसर ।  
 समय । निवृत्ति । अवकाश । छुट्टी । २.  
 नैतिक आदि में आनन्द । आनन्द ।

फिरवाना-क्रि० स० फेरने या फिराने का काम कराना। घुमाना। लौटाना। पलटाना।  
 फिराक-सज्ञा पु० [अ०] १ बिछोह। वियोग।  
 २ चिंता। सोच। खटका। ३ खोज।  
 फिराना-क्रि० स० १ टहलाना। बार-बार फेरें सिलाना। चक्कर देना। २ एठना।  
 मरोडना। घुमाना। ३ लौटाना। पलटाना।  
 ४ दे० "फेरना"। विचलित करना।  
 फिरार-सज्ञा पु० [अ०] [वि० फिरारी]  
 भाग जाना। भागना। दे० "फरार"।  
 फिरि†-क्रि० वि० दे० "फिर"।  
 फिरियाद\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "करियाद"।  
 फिरिस्ता-सज्ञा पु० देवदूत।  
 फिरिहूरा-सज्ञा पु० एक पक्षी।  
 फिरिहूरी-सज्ञा स्त्री० बच्चों का एक खेलौना।  
 फिरकी।  
 फिल्ली-सज्ञा स्त्री० पिडली।  
 फिस-वि० [अनु०] कुछ नहीं।  
 मुहा०—टाँय-टाँय फिस-थी तो बड़ी घूम-  
 धाम, पर हुआ कुछ नहीं।  
 फिसझड़ी-वि० जो कुछ भी न कर सके।  
 जो काम में सबसे पीछे रहे। निबम्मा।  
 फिसफिसाना-क्रि० स० १ डरना। भीत  
 होना। २. आगा-पीछा करना। ३ शिथिल  
 होना। फिस होना।  
 फिसलन-सज्ञा स्त्री० १ फिसलने की क्रिया  
 या भाव। रपटन। २ निकनी जगह, जहाँ  
 पैर फिसले।  
 फिसलना-क्रि० अ० १ खसकना। गिरना।  
 रपटना। चिबनाहट और गीलेपन के कारण  
 पैर आदि का न जमना। २ झुटना।  
 प्रवृत्त होना।  
 फिह्रिस्त-सज्ञा स्त्री० [फा०] सूची।  
 फौवना-क्रि० स० पछाड़ना। धाना।  
 फौ-अव्य० [अ०] प्रत्येक। हर एक।  
 फौवा-वि० १ स्वावहीन। नीरस। बे-आयना।  
 सीधा। २ जो बटकीला न हो। धुल।  
 मलिन। तेजहीन। कान्तिहीन। बे रौनक।  
 ३. प्रभावहीन। निष्फल। व्यर्थ।  
 फौता-सज्ञा पु० [फा०] पतली घञ्जी,  
 सूत आदि, जो किसी वस्तु को लपेटने या

बाँधने के काम में आता है। बपडे व  
 कोर या पट्टी। २ भूमि नापने की एक  
 प्रकार की पट्टी।  
 फीरनी-सज्ञा स्त्री० दे० "फिरनी"।  
 फीरोज़ा-सज्ञा पु० [फा०] नीलमणि। हरापन  
 लिये नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य  
 पत्थर।  
 फीरोजी-वि० [फा०] हरापन लिये नीले  
 रंग का।  
 फील-सज्ञा पु० [फा०] १ हाथी। २ शतरंज  
 का एक मोहरा।  
 फीलवाना-सज्ञा पु० [फा०] वह घर, जहाँ  
 हाथी बाँधा जाता हो। हस्तिशाला।  
 फीलपा-सज्ञा पु० [फा०] एक रोग, जिसमें  
 पैर फूलकर हाथी के पैर की तरह हो  
 जाता है।  
 फीलवान-सज्ञा पु० [फा०] हाथीवान।  
 महावत।  
 फीली-सज्ञा स्त्री० पिडली।  
 फील्ड-सज्ञा पु० [अंग्रे०] खेत। मैदान।  
 खेलने का मैदान।  
 फीस-सज्ञा पु० [अंग्रे०] शुल्क। मेहनताना।  
 फुंकना-क्रि० अ० जलना। भस्म होना।  
 बरबाद होना। नष्ट होना।  
 सज्ञा पु० १ दे० "फुंकनी"। बाँस की नली।  
 २ मृदासाप।  
 फुंकनी-सज्ञा स्त्री० १ वह नली, जिसे मुँह  
 से फूँककर आग सुलगाते हैं। २ भाँधी।  
 धौकनी।  
 फुंकरना-क्रि० अ० फूँकार या फुककार  
 छोड़ना। फूँ-फूँ शब्द करना।  
 फुंकवाना, फुंकाना-क्रि० स० फूँकने का काम  
 दूसरे से कराना। जलवाना। भस्म करवाना।  
 फुंकार-सज्ञा पु० दे० "फूँकार"। फुंकार।  
 फुंदना-सज्ञा पु० फूल के आकार की गाँठ,  
 जो बंद, डोरी, झालर आदि के छोर पर  
 सोभा के लिए बनाते हैं। तराज के बीच  
 की रस्सी की गाँठ। कोड़े के छोर की गाँठ।  
 झन्ना। फुलरा।  
 फुंदिया-सज्ञा स्त्री० दे० "फुंदना"।  
 फुंदी-सज्ञा स्त्री० गाँठ। फदा। बिंदी। टीका।

फिरवाना-क्रि० स० फेरने या फिराने का काम कराना। घुमाना। लौटाना। पलटाना। फिराऊ-सज्ञा पु० [अ०] १. बिछोह। वियोग। २. चिंता। सोच। खटवा। ३. खोज।

फिराना-क्रि० स० १. टहलाना। बार-बार फेरे खिलाना। चक्कर देना। २. ऐंठना। मरोड़ना। घुमाना। ३. लौटाना। पलटाना। ४. दे० "फेरना"। विचलित कराना।

फिरार-सज्ञा पु० [अ०] [वि० फिरारी] भाग जाना। भागना। दे० "फरार"।

फिरि\*—क्रि० वि० दे० "फिर"।

फिरियाद\*—सज्ञा स्त्री० दे० "फरियाद"।

फिरिस्ता-सज्ञा पु० देवदूत।

फिरिहुरा-सज्ञा पु० एक पक्षी।

फिरिहुरी-सज्ञा स्त्री० बच्चों का एक खेलौना। फिरकी।

फिल्ली-सज्ञा स्त्री० पिडली।

फिस-वि० [अनु०] कुछ नहीं।

मुहा०—टाँप-टाँप फिस=थी तो बड़ी घुम-घाम, पर हुआ कुछ नहीं।

फिसझूँ-वि० जो कुछ भी न कर सके। जो काम में सबसे पीछे रहे। निबम्मा।

फिसफिसाना-क्रि० स० १. डरना। भीत होना। २. आगामीछा करना। ३. सिधिल होना। फिस होना।

फिसलन-सज्ञा स्त्री० १. फिसलने की क्रिया या भाव। रपटना। २. चिवनी जगह, जहाँ पैर फिसले।

फिसलना-क्रि० अ० १. खसबना। गिरना। रपटना। चिवनाहट और गीलेपन के कारण पैर आदि का न जमना। २. झुक्ना। प्रवृत्त होना।

फिहुरिस्त-सज्ञा स्त्री० [फा०] सुबी।

फौचना-क्रि० स० पछाड़ना। धोना।

फौ-अव्य० [अ०] प्रत्येक। हर एक।

फौबा-वि० १. स्वादहीन। नीरस। बे-जायका। सीटा। २. जो चटकोला न हो। धूमल। मलिन। तेजहीन। कान्तिहीन। बे-रीनक।

३. प्रभावहीन। निष्फल। व्यर्थ।

फौता-सज्ञा पु० [फा०] पतली धाँजी, सूत आदि, जो विनी वस्तु को लपेटने या

बांधने के काम में आता है। बपड़े की बोर या पट्टी। २. भूमि नापने की एक प्रकार की पट्टी।

फौरनी-सज्ञा स्त्री० दे० "फिरनी"।

फौरोजा-सज्ञा पु० [फा०] नीरमणि। हरापन जिये नीले रंग का एक नग या बहुमूल्य पत्थर।

फौरोजी-वि० [फा०] हरापन जिये नीले रंग का।

फौल-सज्ञा पु० [फा०] १. हाथी। २. शतरंज का एक मोहरा।

फौलखाना-सज्ञा पु० [फा०] वह घर, जहाँ हाथी बाँधा जाता हो। हस्तिशाला।

फौलपा-सज्ञा पु० [फा०] एक रोग, जिसमें पैर फूलकर हाथी के पैर की तरह हो जाता है।

फौलवान-सज्ञा पु० [फा०] हाथीवान। महाबत।

फौली-सज्ञा स्त्री० पिडली।

फौलड-सज्ञा पु० [अग्ने०] खेत। मैदान। खेलेने का मैदान।

फौस-सज्ञा पु० [अग्ने०] शुल्क। मेहनताना।

फुंकना-क्रि० अ० जलना। भस्म होना। बरबाद होना। नष्ट होना।

सज्ञा पु० १. दे० "फुंननी"। वाँस की नली। २. मूत्राशय।

फुंकनी-सज्ञा स्त्री० १. वह नली, जिसे मुँह से फूँककर आग सुलगाते हैं। २. भाथी। धौकनी।

फुंकरना-क्रि० अ० फूँकार या फुफकार छोड़ना। फूँ-फूँ शब्द करना।

फुंकवाना, फुंकाना-क्रि० स० फूँकने का काम दूसरे से कराना। जलवाना। भस्म करवाना।

फुंकार-सज्ञा पु० दे० "फूँकार"। फुफकार।

फुंका-सज्ञा पु० फूल के आकार की गाँठ, जो बंद, डोरी, झालर आदि के छार पर घोभा के लिए बनाते हैं। तराज के बीच की रस्सी की गाँठ। कोड़े के छोर की गाँठ। शबा। फुलरा।

फुंकाया-सज्ञा स्त्री० दे० "फुंका"।

फुंदी-सज्ञा स्त्री० गाँठ। पड़ा। बिंदी। टीका।

फुंसी-सज्ञा स्त्री० छोटी फोडिया ।  
 फुहारा\*-सज्ञा पु० दे० "फुहारा" ।  
 फुकना-क्रि० अ० दे० "फुकना" ।  
 फुकाना-क्रि० स० फूकने का काम कराना ।  
 फुचड़ा-सज्ञा पु० बुने हुए कपड़े से बाहर  
 निकला हुआ सूत या रेशा ।  
 फुट-वि० १ जिसका जोड़ा न हो । अकेला ।  
 एकाकी । २ जो लगाव में न हो । पृथक् ।  
 अलग ।  
 सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] लवाई, चौड़ाई मापने  
 की एक माप, जो १२ इंच की होती है ।  
 फुटकर, फुटकल-वि० १. विषम । एकाकी ।  
 फुट । अकेला । अलग । पृथक् । २ कई  
 प्रकार का । कई मेल का । थोड़ा-थोड़ा ।  
 फुटका-सज्ञा पु० १ फफोला । २ लावा । ३  
 कड़ाहा, जिसमें गन्ने का रस पकता है ।  
 फुटकी-सज्ञा स्त्री० १ किसी वस्तु के छोटे  
 बुलबुले, जो पानी, दूध आदि में अलग-  
 अलग दिखाई पड़ते हैं । २ खून, पीव आदि  
 का छोटा, जो किसी वस्तु में दिखाई दे ।  
 फुटनोट-सज्ञा स्त्री० [ अंग्रे० ] टिप्पणी, जो  
 लेख के नीचे दी जाती है ।  
 फुटपाथ-सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] सड़क की पटरी ।  
 पगडंडी ।  
 फुटबाल-सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] पैर से खेलने  
 का बड़ा गेंद ।  
 फुटहरा-सज्ञा पु० मटर या चने का दाना, जो  
 गुनने से खिल गया हो ।  
 फुटल-वि० १ फुटकर । अकेला । अयुग्म ।  
 २ अभागा ।  
 फुटल-वि० अलग । भिन्न । अकेला ।  
 फुटल या फुटल-वि० जोड़, झुड़ या समूह  
 से अलग ।  
 फुटकना-क्रि० अ० उछलना । बूदना । उमग  
 में आना । फूटने न समाना ।  
 फुटकी-सज्ञा स्त्री० एक छोटी चिडिया ।  
 फुग-सज्ञा स्त्री० दे० "फुगी" । पेड़ का  
 निम्बर । अकुर ।  
 फुगी-सज्ञा स्त्री० वृक्ष या पौधे की शाखाओं  
 का अप्रमाण । अकुर । वाली । कोपल ।  
 मजरी । फुग ।

फुगना-सज्ञा पु० झन्डा । झालर । गुच्छा ।  
 फुफ्फुस-सज्ञा पु० फेफड़ा ।  
 फुफ्फुं-सज्ञा स्त्री० लहंगे का इजारबंद या  
 स्त्रियों की धोनी कसने की गाँठ । नीची ।  
 फुककाना-क्रि० अ० दे० "फुककारना" ।  
 फुककार-सज्ञा पु० साँप के मुँह से निकली  
 हुई हवा का शब्द । फुकार ।  
 फुककारना-क्रि० अ० साँप का मुँह से फूँक  
 निकालना । फूँकार करना ।  
 फुकेरा-वि० [ स्त्री० फुकेरी ] फूँका से उत्पन्न ।  
 फूँका का पुत्र । जैसे, फुकेरा भाई । फुथा के  
 सम्बन्धी ।  
 फुरा-वि० सत्य । तच्चा । यथार्थ । ठीक ।  
 प्रमाणित ।  
 सज्ञा स्त्री० उड़ने में पक्षों का शब्द ।  
 फुरती-सज्ञा स्त्री० शीघ्रता । तेजी । जल्दी ।  
 दे० "फुर्ती" ।  
 फुरतीला-वि० [ स्त्री० फुरतीली ] जिसमें  
 फुरती हो । तेज ।  
 फुरना\*-क्रि० अ० १ उद्भूत होना । प्रकट  
 होना । निकलना । २. प्रकाशित होना ।  
 चमक उठना । ३. फड़कना । फड़फड़ाना ।  
 ४ उच्चरित होना । मुँह से शब्द निकलना ।  
 ५ पुरा उतरना । सत्य उहरना । ६. प्रभाव  
 उत्पन्न करना । ७ सकल होना ।  
 फुरफुर-सज्ञा स्त्री० [ अनु० ] उड़ते समय  
 उड़ना का शब्द-विशेष ।  
 फुरफुराना-क्रि० स० १ शरीर के रोगटों  
 सहसा खड़े होने से शरीर का एक धार  
 काँप उठना । "फुर-फुर" करना । उडक्कर  
 पक्षों का शब्द करना । २ हवा में लहराना ।  
 क्रि० अ० किसी हलकी वस्तु का फुर-फुर  
 शब्द कर हिलना ।  
 फुरफुराहट-सज्ञा स्त्री० पक्ष फड़फड़ाने का  
 भाव ।  
 फुरफुरी-सज्ञा स्त्री० 'फुर-फुर' शब्द होने  
 या पक्ष फड़फड़ाने का भाव । फुरफुरा-  
 हट ।  
 फुरसत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ अवकाश ।  
 समय । निवृत्ति । अवकाश । छुट्टी । २  
 रीति आदि में छुटकारा । आगम ।

फुहना—वि० अ० स्फुरित होना। निव-  
लाना। प्रस्फुरित होना। विस्फुरित होना।  
फुहरी—सज्ञा स्त्री० १ पयो को फुटाकर  
फड़फड़ाना। २ फड़फड़ाहट। पड़ना।  
३ फड़फड़ाहट। ४ फँसने की। रोमांच।  
५ गीक के छोर पर दब में दूरी रई का  
पाहा। फुरेरी।  
फुरेरी—गज्ञा स्त्री० १. यह गीक, जिसके  
सिरे पर हलकी रई लपेटो हा और जो  
इध, दबा आदि में डुबाकर बाग में लाई  
जाय। २ रोमान्-भुक्त वप।  
मुहा०—फुरेरी लेना—१ शीत, भय आदि  
के कारण कांपना। बरबराना। २ चिड़ियों  
का पर फड़फड़ाना।  
फुती—गज्ञा स्त्री० दे० "फुती"।  
फुतीला—वि० दे० "फुतीला"।  
फुलवा—सज्ञा पु० हलकी, पतली और फूली  
हुई छोटी रोंटी।  
सज्ञा स्त्री० १ फुलवी। २ फलोला।  
छाल।  
वि० फूला हुआ। हल्का।  
फुलवाडी—सज्ञा स्त्री० १ एक तरह की आतम-  
बाजी। २ उपद्रव पैदा करनेवाली  
वात।  
फुलवाई—सज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"।  
फुलवाडी—सज्ञा स्त्री० दे० "फुलवारी"।  
फूलो का बगीचा।  
फुलवार—वि० प्रसन्न। प्रकुल्ल। हर्षित।  
फुलवारी—सज्ञा स्त्री० १ बगीचा। उद्यान।  
पुष्पवाटिका। २ बाग के बने हुए फूल  
और वृक्ष आदि, जो बारात के साथ  
निकाले जाते हैं।  
फुलहारा—सज्ञा पु० [ स्त्री० फुलहारी ] माली।  
फूलवाला।  
फुलाना—वि० स० १ किसी वस्तु के विस्तार  
को उसके भीतर वायु आदि भरकर  
बढ़ाना। २ पुलकित या हर्षित करना। गर्व  
उत्पन्न करना। ३ फूटो से युक्त करना।  
फि० अ० दे० "फूलना"।  
मुहा०—मुँह फुलाना—मान करना। ठठना।  
फुलाम—सज्ञा पु० दे० "फुल्ल"।

फुलाव—सज्ञा पु० फुटने की क्रिया या  
भाव। उभार या गुजन।  
फुलिंग\*—गज्ञा पु० दे० "स्फुरिंग"।  
फुलिया—गज्ञा स्त्री० फुट के आकार का पीटा  
या पीटा। नार में पहाने की लँग  
(गह्वा)।  
फुलेरा—गज्ञा पु० देवताओं के ऊपर लगाई  
जानेवाली फूलों की छतरी। पुष्पो और  
विन्वपत्रों की बनी हुई माला, जो निव-  
पात्रों की मूर्ति का हस्तालिता-व्रत के  
दिन पहनाई जाती है।  
फुलेन—गज्ञा पु० फूलों की महल से बाग़  
हुआ तेल। गुणधित तेल।  
फुलेली—सज्ञा स्त्री० फुलेल रखने का वान  
या पात्र-विशेष।  
फुलेहारा—सज्ञा पु० उत्तमों में द्वार पर लगाए  
जानेवाले सून या रेशम के वदनवार।  
फुलौरा—गज्ञा पु० मूँग की बड़ी पत्ती।  
फुलौरी—सज्ञा स्त्री० पत्ती। चना, मटर,  
या मूँग आदि की पत्ती।  
फुल्ल—वि० फूला हुआ। विस्फुरित।  
फुल्लदाम—सज्ञा पु० उन्नीस वर्षों की एक वृत्ति।  
फुलारा—सज्ञा पु० फुहार।  
फुस—सज्ञा स्त्री० धीमी आवाज।  
फुसकारना\*—फि० अ० फूँक मारना।  
फुलवार छोड़ना। फुलवारना।  
फुसफुसा—वि० १ दबाने से बहुत जल्दी चूर-चूर  
होनेवाला। नरम। कमजोर। २ ढीला।  
फुसफुमाना—फि० स० बहुत ही धीमे स्वर  
से बोलना। कानाफूसी करना।  
फुसफुसाहट—सज्ञा स्त्री० फुसफुस करने का  
भाव।  
फुसलाऊ—वि० बहकानेवाला।  
फुसलाना—फि० स० भुलावा देना।  
बहकाना। चमका देना। झाँसा देना।  
सन्तुष्ट करने के लिए मीठी मीठी बातें  
करना।  
फुहार—गज्ञा स्त्री० १ पानी के बारीक छिटे।  
जलकण। २ महीन बूँदों की झड़ी। झीसी।  
फुहारा—गज्ञा पु० जल के छोटे-छोटे महीन  
छिटे। सूक्ष्म जलकण। फव्वारा। २

जल की वह टोटी, जिसमें से दवाव के कारण जल की महीन धार या छोटे वेग से ऊपर की ओर निकलते हैं। जलयत्र।

फूही-सज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

फू-सज्ञा स्त्री० फुकवार।

फूक-सज्ञा स्त्री० [ अनु० ] १. मुँह से वेग के साथ छोड़ी हुई हवा। २. साँस। श्वास।

३. मत्र पड़कर मुँह से छोड़ी हुई वायु।

मुहा०—फूक निकल जाना=प्राण निकल जाना।

घो०—झाड़-फूक=मन-नय का उपहार।

फूकवर-क्रि० सं० १. मुँह से वेग के साथ हवा छोड़ना। २. मत्र आदि पड़कर किसी पर फूँव मारना। ३. शल, बाँसुरी आदि मुँह से बजाए जानेवाले वाजा को फूँककर बजाना।

४. फूँककर आग जलाना। आग सुलगाना। ५. भस्म करना। जलाना। ६.

फूल खर्च कर देना। उड़ाना।

मुहा०—फूँक-फूँककर पैर रखना या चलना

=बहुत सावधानी से कोई काम करना।

घो०—फूँकना-तापना=व्यय खर्च कर देना।

फूका-सज्ञा पु० १. फूँव मारने की क्रिया।

वाँस की नली में जलन पैदा करनेवाली

ओषधियाँ भरकर और उन्हें स्वन में लगाकर

फूँकना, जिससे शायो का सारा दूध बाहर

निकल आये। २. बाँस आदि की वह नली,

जिससे फूँवा मारा जाता है। ३. फफोला।

फोटा।

फूँद-सज्ञा स्त्री० दे० "फुंदना"।

फूँवा-सज्ञा पु० १. दे० "फुंदना"।

२. फुकुंदी।

घो०—फूँद-फुंदना=फुंदनेवाला।

फूँवा-सज्ञा स्त्री० बूझा। पिता की बहिन।

फूँद-सज्ञा स्त्री० १. फूँदने की क्रिया या भाव।

२. वंश। विरोध। डेरा। अनवन। विगाह।

अलगवा। मिश्रता। ३. एक प्रजाति की बड़ी

काटी।

फूँद-सज्ञा स्त्री० १. फूँदने का होनेवाला

अवस्था। २. शरीर के जोरों का दब।

फूँदना-क्रि० अ० १. दृढ़ता। बग़ावत। दबाना।

दटना। नष्ट होना। मिटना। २. भीतर में

शोक के साथ बाहर आना। भेदकर निकलना।

३. शरीर पर दाने या घाव के रूप में प्रकट

होना। ४. कली का खिलना। प्रस्फुटित

होना। अकुर, साखा आदि का निकलना। ५.

खिलरना। फैलना। व्याप्त होना। ६. एक

पक्ष छोड़कर दूसरे में हो जाना। ७. शब्द का

मुँह से निकलना। प्रकट होना। व्यक्त होना।

८. प्रकाशित होना। गुप्त बात का प्रकट हो

जाना। ९. धौध, मेड आदि का टूट जाना।

१०. जोड़ो में पीड़ा होना।

मुहा०—फूटी आँखों न भाना=तनिक भी

न सुहाना। बहुत बुरा लगना। फूटी आँखों

न देख सकना=बुरा मानना। कुढ़ना।

जलना। फूट-फूटकर रोना=विलाप करना।

फूँकार-सज्ञा पु० फूँक। मुँह से फूँक करते

हुए हवा छोड़ने का शब्द। फुकवार।

फूका-सज्ञा पु० बूझा का पति। पिता का

बहनोई।

फूकी-सज्ञा स्त्री० पिता की बहिन। बूझा।

फूल-सज्ञा पु० १. पुष्प। सुमन। कुसुम।

पौधों की फलोत्पादन शक्तिवाली ग्रन्थि।

२. फूल के आकार के बेल-बूटे या नक्काशी।

फूल के आकार का कोई गहना, जैसे बरत-

फूल, शीशफूल, हथफूल। ३. गीतले आदि

की गोल गाँठ या घुड़ी। फूलना। ४. गुच्छ

रोग के कारण शरीर पर सफेद या लाल

धब्बा। श्वेत गुच्छ। ५. स्त्रियों का मासिक

रज। ६. शमदाह के बाद बची हुई हड्डियाँ।

७. एक मिश्रपदार्थ, जो ताँपे और रौंके के

मेल से बनती है।

सज्ञा स्त्री० १. फूलने की क्रिया या भाव।

२. उमर। उमराह। प्रमत्तता। आनंद। हर्ष।

मुहा०—फूल झड़ना=मुँह में प्रिय और

मधुर बातें निकलना। फूल-सा=स्वयं

मुकुमार या मुदर। फूल सूँघकर रहना=

बहुत कम माला (स्त्री० व्यय)। गीत-

फूल-सा स्वयं मुकुमार।

फूलकारी-सज्ञा स्त्री० बेलबूटे बनाने का काम।

फूलगोभी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की गोभी,

जिसमें पत्तों का रंग हल्का रंग भिन्न होता

है। गाँठगोभी।

फूलडोल-मज्ञा पु० सैत्र शुक्ल एकादशी को मनाया जाने वाला भगवान् श्रीकृष्ण का उत्सव।

फूलदान-सज्ञा पु० गुलदस्ता रखने का बाँध, पीतल आदि का गिलास के आकार का पात्र।  
फूलदार-वि० वह वस्तु, जिस पर फूल-पत्ते और बेल-बूटे धरे हों।

फूलना-क्रि० अ० १. फूलों से युक्त होना। पुष्पित होना। २. फूल का सपुट खुलना, जिससे उसकी पंखड़ियाँ फैल जायें। ३. भीतर किसी वस्तु के भर जाने के कारण अधिक फूल या बढ़ जाना। ४. शरीर के किसी भाग का सूजना। स्थूल होना। ५. गर्व करना। इतराना। घमंड करना। ६. बहुत आनंदित होना। ७. मुँह फुलाना। मान करना। रुठना।

मुहा०—फूला-फूला फिरना=प्रसन्न घूमना। आनंद में रहना। फूले अंग न समाना=अत्यंत आनंदित होना। फूलना-फलना=सुखी और संपन्न होना। उन्नति करना। फूलना-फालना=उल्लास में रहना। प्रसन्न होना।

फूलमती-सज्ञा स्त्री० एक देवी।  
फूला-सज्ञा पु० १. आँख की पुतली का सफेद दाग। २. खोला। ३. छावा।  
फूली-सज्ञा स्त्री० आँख की पुतली का सफेद दाग। आँख का रोग।

फूल-सज्ञा पु० १. छप्पर छानेवाली सूखी लम्बी घास। २. सूखा वृण। घास। तिगका। खर।

फूहड़-वि० बेशऊर। भद्दा। अशिक्षित। मूर्ख। बेढगा।

फूही-सज्ञा स्त्री० दे० "फुहार"।

फूक-सज्ञा स्त्री० फेंकने की क्रिया या भाव।

फेंकना-क्रि० ग० १ शोक के साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर डालना। असावधानी या मूल में इधर-उधर छोड़ना, गिराना या रखना। २. अनादर से त्यागना। छोड़ना। खीना। ३. अपभ्यस करना। फजूल खर्च करना।

फेंट-सज्ञा स्त्री० १. बमर का घेरा। बटि-

मडल। २. धोनी या बरतन का वह भाग जो बमर में लपेटकर बाँधा गया हो पड़ेगा। बमरबंद। ३. फेंग। घुमाव लपेट। ४. फेंटने की क्रिया या भाव।

मुहा०—फेंट धरना या पकड़ना=इस प्रकार पकड़ना कि भागने न पाये। फेंट बसना या बाँधना=बमर बसकर तैयार होना। फेंटना-क्रि० म० मिलाना। गाढ़े द्रव पदार्थ को घुमाकर भले प्रकार मिलाना। गड़्डी के साँधों को उलट-पुलटकर अच्छी तरह मिलाव।

फेंटा-सज्ञा पु० १ छोटी पगड़ी। मुरेठा। साका। बमर का घेरा आदि। २. दे० "फेंट"। भूत की बड़ी आँटी।

फेंटी-सज्ञा स्त्री० आँटी। लच्छी।

फेंकरना-क्रि० अ० (तिर ना) खुलना। नगा होना।

क्रि० अ० दे० "फेंकना"।

फेन-सज्ञा पु० [ वि० फेनिल ] नन्हें-नन्हें बुलबुली का समूह। झाग।

फेनाप्र-सज्ञा पु० बुदबुद।

फेनिका-सज्ञा स्त्री० फेनी नाम की मिठाई।

फेनिल-वि० फेन-युक्त। झाग से भरा हुआ।

फेनो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

फेफड़ा-सज्ञा पु० शरीर के भीतर का वह अवयव, जिसकी क्रिया से जीव साँस लेते हैं। फुफुस।

फेफड़ो-सज्ञा स्त्री० सूखे हुए हॉर्ट पर की चमड़ी। पपड़ी।

फेरंड-सज्ञा पु० गोदड़।

फेर-सज्ञा पु० १. चक्कर। घुमाव। घूमने की क्रिया, दशा या भाव। शुकाव। मोड़। २ परिवर्तन। उलट-पलट। ३. अंतर। भेद।

४. असमजस। उलझन। दुवधा। ससय।

भ्रम। ५. धोखा। छल। पट्टचक्र। पट्टयत्र।

चालवाजी। ६. बगैडा। शज्ञाट। ७. युक्ति।

उपाय। ८. अदला-बदला। आदान-प्रदान।

९. एवज। हानि। घाटा। १०. भूत-प्रेत का प्रभाव। ११ दिशा।

\*अव्य० फिर। एक बार और। पुनः।

मुहा०—फेर खाना=सीधा न जानकर इधर-

उधर घूमकर अधिक चलना। दिनों का फेर=एक दशा से दूसरी दशा की प्राप्ति (विशेषतः अच्छी से बुरी दशा की)। कुफेर=बुरे दिन। सुफेर=अच्छी दशा। फेर में पड़ना=असमजस में होना। निम्नानवे का फेर=निम्नानवे रूप पाकर सौ रूप पूरे करने की धुन। रूपया बढाने का चसका। हेर-फेर=लेन-देन। व्यवसाय।

फेरना-क्रि० स० १. एक ओर से दूसरी ओर ले जाना। मोड़ना। घुमाना। २. पीछे चलाना। लौटाना। वापस करना। वापस लेना। लौटा लेना। ३. घुमाना। चक्कर देना। ऐंठना। मरोड़ना। ४. तह चढाना। पीतना। ५. उलट-पलट या इधर-उधर करना। चारों ओर सबके सामने ले जाना। ६. घोषित या प्रचारित करना। ७. छोड़े आदि पशुओं की ठीक तरह से चलने की शिक्षा देना। निकालना। मुहा०—पानी फेरना=नष्ट करना।

फेरफार=सज्ञा पु० १. उलट-फेर। परिवर्तन। २. अन्तर। फर्क। ३. टाल-मटोल। ४. घुमाव-फिराव। चक्कर। पेच।

फेरवट=सज्ञा स्त्री० फिरने का भाव। फेरफार। अन्तर। फेरा। घुमाव। चक्कर। पेच। टाल-मटोल। बहाना।

फेरा=सज्ञा पु० घूमना। घुमाव। चारों ओर चक्कर। प्रदक्षिणा। लेटने में एक-एक बार वा घुमाव। लपेट। बल। मोड़। बार-बार आना-जाना, घूमते-फिरते पहुँचना। लौटकर फिर आना। घेरा। आवर्त। मडल। भाँवर। फेरि=अव्य० फिर। पुनः।

फेरी=सज्ञा स्त्री० १. दे० "फेरा"। २. दे० "फेर"। ३. परिश्रमा। प्रदक्षिणा। ४. शिक्षा के लिए चक्कर लगाना। चक्कर। बई बार आना-जाना। ५. सीधा लादकर गली-गली येचना।

फेरीवाला=सज्ञा पु० घूम-घूमनेवाला। सीधा येचनेवाला व्यापारी।

फेद=सज्ञा पु० गीदड़। गियार। शृगाल। फेल=सज्ञा पु० [अ०] चर्म। चाम। क्रि० वि० [अ०] अगकल। अनुत्तीर्ण।

फेहरिस्त=सज्ञा स्त्री० दे० "फिहरिस्त"। फेरी=वि० [अ०] सुन्दर। मनोहर। दिखाना। तडक भडकवाला।

फेवटरी=सज्ञा स्त्री० [अ०] कारखाना। फेज=सज्ञा पु० [अ०] १. वृद्धि। लाभ। २. फल। ३. उपकार।

फैयाज=वि० [अ०] (सज्ञा स्त्री० फैयाजी) बहुत अधिक उदार और दानी।

फेचना=क्रि० अ० १. पसरना। विस्तृत होना। २. अधिक बडा या लवा-चौडा होना। स्थूल होना। मोटा होना। वृद्धि होना। ३. छितराना। बिखरना। ४. तनकुर किसी ओर बढना। ५. अधिकता से मिलना। प्रसिद्ध होना। ६. आग्रह करना। हठ करना। ७. भाग का ठीक-ठीक लग जाना।

फेजसूफ=वि० [अ०] फजूल खर्च करनेवाला। फेजसूफी=सज्ञा स्त्री० [अ०] फजूलखर्ची। अपव्यय।

फेजाना=क्रि० स० विस्तृत करना। पतारना। विस्तार बढाना। बढाना। वृद्धि करना। भर देना। छा देना। बिखेरना। अलग-अलग दूर तक कर देना। तानकर किसी ओर बढाना। प्रचलित करना। जारी करना। दूर तक पहुँचाना। प्रसिद्ध करना। चारों ओर प्रवट करना। हिमाव-विद्राव करना। लेला लगाना। गुणा-भाग ठीक या सही होने की जाँच करना।

फेजाव=सज्ञा पु० विस्तार। प्रसार। प्रचार। बढनी। लम्बाई-चौडाई।

फेजान=सज्ञा पु० [अ०] वनाव-सिगार वा नया या अच्छा तरीका। डग। रीति। प्रथा। चलन।

फेसल=सज्ञा पु० [अ०] निर्णय। विवाद वा निपटारा। किसी मुकदमे में अदालत की अन्तिम राय वा आज्ञा।

फेसिज्म=सज्ञा पु० [अ०] फेसिस्ट दल वा सिद्धान्त। अपने दल वा दल के नेता के हाथ में सारा अधिकार सोंपने वा सिद्धान्त (डिक्टेटरशिप—प्रजातन्त्र वा विरोधी)।

फेसिस्ट या फासिस्ट=सज्ञा पु० [अ०] जर्मनी और इटली का एक राष्ट्रवादी दल, जो प्रथम

महापुद्गे के बाद सघटित हुआ था। सारा अधिकार अपने दल या दल के नेता के हाथ में सौंपने के सिद्धान्त में विश्वास करनेवाला।

फोक-मज्ञा पु० तीर के पीछे की नोक।

वि० खोखला। पोला। थोथा।

फोका-सज्ञा पु० चंगा। फाँकी।

फोका गोला-सज्ञा पु० तोप का लम्बा गोला।

फोकर-फोकरे-वि० पोला। जिसके भीतर खाली जगह हो।

फोफी-सज्ञा स्त्री० नली। छोटा चोगा। वि० खोखली।

फोक-सज्ञा पु० १ सार निकल जाने पर बचा हुआ अंश। सीटी। भूसी। तुप। छिलका। २. एक तृण। फोफी या नीरस चीज।

फोकट-वि० बिना दाम का। सेंट का। जिसका कुछ मूल्य न हो। व्यर्थ। नि सार। तुच्छ।

सज्ञा पु० छूछा। दट्टि। कगाल।

मुहा०-फोकट में=मुफ्त में। याही।

फोकला-सज्ञा पु० छिलका। बकला।

फोकस-सज्ञा पु० [अग्र०] वह बिन्दु, जहाँ प्रकाश की किरणें एकत्र हो।

फोटो-सज्ञा पु० [अग्र०] छाया चित्र। प्रतिबिम्ब। फोटोग्राफ के यंत्र से लिया गया चित्र।

फोटोग्राफर-सज्ञा पु० [अग्र०] फोटो खींचने वाला या इसका व्यवसाय करनेवाला।

फोडना-क्रि० सं० १ टुकड़े-टुकड़े करना। भंग करना। विदीर्ण करना। तोड़ना।

२ नष्ट करना। भेदन करना। ३ फाटना। चीरना। ४ अंगुर, काखे, शाखा आदि निखालना। ५ दूरतर पक्ष में अलग करके अपने पक्ष में बरलना। ६ भेद भाव उत्पन्न करना। ७ फूट डालकर अलग करना।

८ भेद या रहस्य सहसा प्रकट करना।

फोना-सज्ञा पु० [स्त्री० पाडिया] प्रणः प्रायः बड़ी फुगी। स्फोटक।

फोता-सज्ञा पु० [फा०] १ अङ्कोष। २ भूमिगत पाय। ३ घेला। थैला। कोप। ४ पटुका। तमखन्द।

फोतेदार-सज्ञा पु० [फा०] १ कोपाध्यक्ष। सभापति। २ राक्षस। पोतदार।

फोती-सज्ञा पु० [अग्र०] एक यंत्र, जिसमें वही हुई धातु या गाए हुए गाने बाद में उसी के तुरा मुनाई देने हैं।

फोरना-क्रि० सं० दे० "फोना"।

फोरमन-सज्ञा पु० [अग्र०] किसी नगरस्थान के कारीगरों का सरदार।

फोहा-सज्ञा पु० टुकड़ा। फाहा।

फोहरा-सज्ञा पु० दे० 'फुहार'।

फोज-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सेना। लश्कर। २ झुड। जत्था।

फोजदार-सज्ञा पु० [फा०] सेनापति। सेना-नायक। सेना का प्रबान।

फोजदारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ लड़ाई-झगडा। मार-पीट। २ मार-पीट के मुकदमा का निर्णय करनेवाली अदालत। मारपीट या लड़ाई झगडा-सम्बन्धी मुकदमा।

वि० १ मारपीट या लड़ाई-झगडा सम्बन्धी। २ सगीन। खतरनाक।

फोजी-वि० [फा०] फोज-संबन्धी। सैनिक।

फोजी कानून-सज्ञा पु० सैनिक शासन से सम्बन्ध रखनेवाले कानून, जो साधारण कानूनों से बहुत बढोर होते हैं और किसी बडे उपद्रव या सैनिक आक्रमण आदि के समय साधारण नागरिकों पर लागू किए जाते हैं (मार्शल ला)।

फोन-वि० [अ०] मूढ। मूढन।

फोती-सज्ञा स्त्री० मरने की वह सूचना, जो सरकारी कागजात में लिखाई जाती है।

फोत-क्रि० वि० [अ०] गुरत। उत्पन्न। सीध।

फोलाद-सज्ञा पु० [फा०] पक्का लोहा। इस्पात। खेडी।

फोलादी-वि० फोलाद का बना हुआ। दृढ। मजबूत।

फोयारा-सज्ञा पु० फव्वारा।

फासीसी-वि० १ फास दश का। २ फास-निवासी।

फाक-सज्ञा पु० [अग्र०] लडकिया या म्त्रिया के घुटने तक पहनने का पहनावा।

फ्री-वि० [अग्र०] १ स्वतन्त्र। मुक्त। २ मुफ्त। बिना दाम का।

फ्रेम-सज्ञा पु० [अग्र०] चौकटा।

व

व-हिंदी वर्गमाला का तेईसवाँ व्यंजन और पर्वण का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है। अतः यह ओष्ठ्य वर्ण है। सज्ञा पु० १ वरुण। २ सिन्धु। ३ जल। ४ सुगन्ध। ५ कुम्भ।

वक-वि० १ टंडा। तिरछा। वक्र। २ पुरपार्थी। पराक्रमी। ३ दुर्गम। अगम। जिस तक पहुँच न हो सके।

सज्ञा पु० (अग्रे०-वक्र) वह सस्था, जो लोगों का रूपमा अपने यहाँ जमा करती अथवा लोगों को ऋण देती है।

वकट-वि० दे० 'टंडा'। तिरछा। वक्र।

सज्ञा पु० हनुमान।

वकनाल-सज्ञा स्त्री० एक नली, जिससे सुनार लोग चिराग की लौ फैवते हैं। बगनहा।

वकराज-सज्ञा पु० एक प्रकार का सर्प।

वकसाल-सज्ञा पु० मस्तूलो पर चढ़ानेवाली रस्सिया या जँजीरा को रखन के लिए जहाज का बड़ा बमरा।

वकारु-वि० १ टंडा। तिरछा। २ बाँका। ३ पराक्रमी।

वकाई-सज्ञा स्त्री० टंडापन। तिरछापन। वनदा।

वकुता-सज्ञा स्त्री० वक्रदा। टंडापन।

वग-सज्ञा पु० १ दे० वग। २ बगाल। ३ एक पीठिय औषध। रोग की मस्म का रस विराम।

वि० दे० वग। १ टंडा। २ उड़ड़।

वंगला-वि० बगाल देश का। बगाल समी।

सज्ञा पु० १ अग्रजी दग का मान। चांग आर से गुला हुआ एक मजिल का मयान, जिससे चारा और बरामदे हा। २ वह छोटा हवादार बमरा, जो प्राय ऊपरवाली छत पर बाँधया जाता है। ३ बगाल देश का पान।

सज्ञा स्त्री० बगाल देश की भाषा।

बेगलो-सज्ञा स्त्री० चूल्हिया के साथ पहना जानेवाला मियरा या एक गहना।

बगमार-सज्ञा पु० समुद्र के पार बना ऊँचा

चबूतरा, जिस पर से लोग जहाज पर चढ़ते-उतरते हैं।

बगार्-वि० टंडा। मूर्ख। झगडालू।

बगाल-सज्ञा पु० १ भारतवर्ष का पूर्वीय प्रान्त-विशेष, जिसके अब दो भाग हो गए हैं।

पूर्वीय बगाल पाकिस्तान के अन्तर्गत है और पश्चिमी बगाल भारत के। २ एक राग।

बगाला-सज्ञा पु० बगाल प्रांत।

सज्ञा स्त्री० बगालिका नाम की एक रागिनी।

बगालिन-सज्ञा स्त्री० बगाली स्त्री। बगाल की रहनेवाली स्त्री।

बगाली-सज्ञा पु० बगाल का निवासी।

सज्ञा स्त्री० बग-देश की भाषा।

बगरी-सज्ञा स्त्री० स्त्रिया का एक अभूषण, जो पहुँच पर पहना जाता है।

बचक-सज्ञा पु० बचक। ठग। धूर्त। पाखण्डी। छली।

बचकता, बचकताई-सज्ञा स्त्री० छल। चालबाजी। धूर्तता। पाखण्ड।

बचना-सज्ञा स्त्री० बचना। ठगी। धूर्तता। छल।

\*-वि० स० ठगना। छलना।

बेंचवाना-वि० स० पहवाना।

बछना-वि० स० अभिलाषा करना। चाहना। दुच्छा करना।

बछिन-वि० दे० 'वाछिन्'।

बज-सज्ञा पु० दे० बनिज, बलूत का पेड़।

बजर-सज्ञा पु० ऊपर भूमि। उजाड़। वीरान।

बजारा-सज्ञा पु० दे० 'बनजारा'। व्यापारी, जो बेल आदि पर माल लादकर घूमा करता है। राजगारी।

बसा-वि० सज्ञा स्त्री० द० 'बाँस'।

बसाई-सज्ञा स्त्री० गन नाम करने की एक औषध।

बेटना-वि० अ० विभाग होना। हिस्सा होना। अलग अलग दिया जाना या बाँटा जाना।

घंटवाई-सज्ञा स्त्री० घांटने या पिसवाने की क्रिया या मजदूरी।

घंटवाना-वि० स० घांटने वा वाम दूसरे से कराना।

घंटवारा-सज्ञा पु० घांटने की क्रिया। बिना-जग। तपसीम।

घंटवैया-सज्ञा पु० घांटनेवाला। विभाजक।

घटा-सज्ञा पु० [स्त्री० घटी] छोटा डब्बा।

घटाई-सज्ञा स्त्री० १ घांटने की क्रिया या भाव। २ एक प्रकार की खेती, जिसमें खत जोतनेवाले से मालिक को लगान के रूप में फसल का कुछ अंश मिलता है।

घटाढार-वि० नष्ट। बर्बाद।

घटाना-क्रि० स० १ घंटवाना। २ हिस्सा कराना। सहयोग देना। भाग लेना।

घटावन\*-वि० घांटनेवाला। घंटानेवाला। भाग करनेवाला।

घटी-सज्ञा स्त्री० पशुआ को पँसाने का जाल। फन्दा।

घडल-सज्ञा पु० [अग्ने०] छोटी गठरी। पुलिन्दा।

घडा-सज्ञा पु० घड़ी अर्थात् एक प्रकार का बट्टा।

घड़ी-सज्ञा स्त्री० १ छोटी भिरजई। फतुही। कोट की तरह आधे बाँह का एक पहनावा। २ घण्टापदी।

घँडेरा या वडेरी-सज्ञा स्त्री० सपरेल में मोंगरे पर लगनेवाली एकड़ी।

बडोहा-सज्ञा पु० बवडर। अधड। चत्रवात।

बद-सज्ञा पु० १ बाँधने की वस्तु। २ मेड़। बाँध। पुस्ता। ३ बधन। कंद। ४ शरीर के अंगों का कोई जोड़। ५ तनी। पीठा।

कागज पालवा और बहुत कम चौड़ा टुकड़ा।

वि० हवा हुआ। स्थगित। अवरुद्ध। बंधा हुआ। जो खुला न हो।

बदगो-सज्ञा स्त्री० [फा०] आदाब। सलाम। प्रणाम। ईश्वर की बदना। सेवा। खिदमत।

बदगोभी-सज्ञा स्त्री० बरमकल्ला। पातगाभी।

बदन-सज्ञा पु० दे० "बदन"। रोचन। रोली।

सँडुर। ईश्वर।

बदनवार-सज्ञा पु० उत्सव के अवसर पर द्वार या दीवारों पर बाँधी गई फूलों या पत्ता की झालर। तोरण।

बदना-सज्ञा स्त्री० दे० "बदना"।

क्रि० स० प्रणाम करना। स्तुति करना।

बदनी\*-वि० दे० "बदनीय"।

बदनीमाल-सज्ञा स्त्री० गले से पैंरो तक लटकनेवाली लम्बी माला।

बदर-सज्ञा पु० वानर। मर्कट। कपि।

मुहा०-बदर-घुडकी या बदर-भवकी=ऐसी धमकी या डाँट-डपट, जो केवल डराने या धमकाने के लिए ही हो।

सज्ञा पु० दे० "बदरगाह"।

बदरगाह-सज्ञा पु० [फा०] समुद्र-तट का वह स्थान, जहाँ जहाज ठहरते हैं।

बदरघुडकी-सज्ञा स्त्री० ऐसी धमकी, जो दिखाने भर को हो, पर पूरी न की जाय। ऐसी धमकी, जो किसी प्रकार प्रभावोत्पादक न हो सके।

बदरबाँट-सज्ञा स्त्री० न्याय के नाम पर ऐसा बटवारा करना, जिसमें न तो बाँटी का कुछ मिले और न प्रतिवादी को ही, सब बटवारा करनेवाले के पास पहुँच जाय।

बदरभवकी-सज्ञा स्त्री० दे० "बदरघुडकी"।

बदवान-सज्ञा पु० बदोगूह का रखक।

कंदखाने का अधिकारी। जेलर।

बदसाली-सज्ञा पु० कंदखाना। जेल।

बन्दीगूह।

बदा-सज्ञा पु० [फा०] दास। सेवक। विनीत भाषा में 'मे' का एक रूप।

बदानी-सज्ञा पु० १ गोरुदाज। २ एक तरह का मूल्यो रग।

बदार्-वि० १ बदनीय। २ आदरणीय। पूजनीय।

बदिया-सज्ञा स्त्री० बँदी। मस्तक पर बाँधने का एक आभूषण। दासी। बंदी।

बदना-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ बाँधने की क्रिया या भाव। २ रचना। प्रबंध। योजना। ३ पठयत्र।

बंदी-सज्ञा पु० १ बँदी। २ चारण। भाट।

गजाओं या कीर्तियान करनेवाला। ३ एक

प्रकार का गहना, जिसे स्त्रियाँ सिर पर पहनाती हैं।

बंदीखाना-सज्ञा पु० [फा०] कैदखाना। कारागार।

बंदीगृह-सज्ञा पु० बन्दियों या कैदियों के रखने का स्थान। कैदखाना। कारागार। जेल (अंग्रे०)।

बंदीघर-सज्ञा पु० दे० "बन्दीगृह"।

बंदीछोर\*†-सज्ञा पु० कैद या बंधन से छुड़ानेवाला।

बंदीजन-सज्ञा पु० चारण। भाट।

बंदीवान\*-सज्ञा पु० कारागार का रक्षक।

बदूक-सज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रसिद्ध अस्त्र, जिसमें गोली चलाई जाती है।

बदूकची-सज्ञा पु० [फा०] बदूक चलानेवाला सिपाही।

बदेरा\*-सज्ञा पु० [स्त्री० बदेरी] १. बंदी। कैदी। २. दास। सेवक।

बंदोबस्त-सज्ञा पु० [फा०] १. प्रबंध। व्यवस्था। इतजाम। २. खेती के लिए भूमि को नापकर उसका राज्यकर निर्धारित करने का काम। ३. बच् सरकारी विभाग, जिसके सिपुर्द खेतों आदि को नापकर उनका कर निश्चित करने का काम हो।

बंध-सज्ञा पु० १. बधन। गाँठ। गिरह। कैद। पानी रोकने का धुस्स। बाँध। २. कौकशास्त्र के अनुसार रति का आसन। ३. योगशास्त्र के अनुसार योग-साधन की कोई मुद्रा या आसन। ४. गद्य या पद्य में निबन्ध-रचना। ५. छंद की ऐसी रचना, जिससे कोई विशेष प्रकार की आकृति या चित्र बन जाय। बाँधने की वस्तु। ६. बंद। बन्दनेवाले घर की लम्बाई और चौड़ाई का योग। ७. फैसाव। लगाव। ८. शरीर।

बंधक-सज्ञा पु० किसी से ऋण लेने के बदले में उसके पास रखी जानेवाली वस्तु। गिरो। रेहन। बाँधनेवाला।

बंधन-सज्ञा पु० १. बाँधने की क्रिया। बाँधने की वस्तु। स्वतंत्रता में बाधक। प्रतिबंध। २. हत्या। बध। हिंसा। ३. रस्सी। ४.

कारागार। बन्दीगृह। ५. शरीर का संधि-स्थान। जोड़।

बंधनप्रबंधि-सज्ञा स्त्री० शरीर में वह हड्डी, जो किसी जोड़ पर हो।

बंधनपालक-सज्ञा पु० कारागार का रक्षक।

बंधना-क्रि० अ० १. बधन में आना। बद्ध होना। बाँधा जाना। गंठ पड़ना। कैद होना। बंदी होना। प्रतिबंध में रहना। फँसना। अटकना। प्रतिज्ञा या वचन आदि से बद्ध होना। २. ठीक या सही होना। क्रम निर्धारित होना। ३. स्थिर होना। ४. प्रेमपाश में बंधना या मुग्ध होना।

सज्ञा पु० बाँधने की वस्तु। बाँधने का साधन।

बंधवाना-क्रि० स० बाँधने का काम दूसरे से कराना।

बंधन-सज्ञा पु० १. लेन-देन या व्यवहार आदि की बँधी हुई परिपाटी। २. वह पदार्थ या धन, जो इस परिपाटी के अनुसार दिया या लिया जाय। ३. किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या बुक्ति। बन्वैज।

बंधाना-क्रि० स० १. धारण कराना। २. दे० "बंधवाना"।

बंधानी-सज्ञा स्त्री० कुली। मजदूर।

बंधाल-सज्ञा पु० नाव का वह स्थान, जिसमें भीतर आया हुआ पानी जमा होता है।

बंधी-सज्ञा पु० बंधा हुआ। बन्धन-युक्त। सज्ञा स्त्री० बधेज। बंधा हुआ त्रम।

बधु-सज्ञा पु० १. भावा। भाई। २. सहायक। मददगार। ३. मित्र। दोस्त। ४. दोषक। एक वर्णवृत्त। ५. बधूक फूल।

बधुआ-सज्ञा पु० बंदी। कैदी।

बधूक-सज्ञा पु० गुलदुपहरिया का पीधा और फूल।

बधुता-सज्ञा स्त्री० दे० "बधुत्व"।

बधुत्व-सज्ञा पु० बधु होने का भाव। बधुता। भाई-भार। मित्रता। दोस्ती।

बधुवत्त-सज्ञा पु० विवाह के समय नन्या को मिला हुआ धन। स्त्री-धन।

बधुदा-सज्ञा स्त्री० दुराचारीणी स्त्री। घेस्या।

बधुर-सज्ञा पु० १. मुकुट। २. दुपहरिया का फूल। ३. हंस। बगुला।

वि० रम्य। मनीहर। नम्र।  
 बधुल-सज्ञा पु० व्यभिचारिणी स्त्री से उत्पन्न पुत्र। वेदपा-पुत्र।  
 वि० १. सुन्दर। २. नम्र।  
 बधुक-सज्ञा पु० दे० "बधुक"।  
 बधेज-सज्ञा पु० १. नियत समय पर और नियत रूप से मिलने या दिया जानेवाला पदार्थ या धन। २. किसी वस्तु को रोक्ने या बाँधने की क्रिया या युक्ति। बधान।  
 बध्या-वि० बाँस। सजान न पैदा कर सकने वाली स्त्री।  
 बध्यापन-सज्ञा पु० दे० "बाँसपन"।  
 बध्यापुत्र-सज्ञा पु० ठीक वंसा ही असभ्य काय आश्रय, जैसे बध्या का पुत्र। कभी न होनेवाली चीज। असम्भव बात।  
 बधुलिस-सज्ञा स्त्री० सर्वसाधारण के लिए म्युनिसिपैलिटी आदि के द्वारा बनवाया हुआ पाखाना।  
 बघ-सज्ञा स्त्री० [अनु०] एक तरह की आवाज। युद्ध में धीरे वा उत्साहवर्धक नाद। रणनाद। डकार। नगाडा।  
 बघा-सज्ञा पु० १. जल-कल। गप। पानी का नल। २. सोटा। सोता।  
 बघाना-क्रि० अ० गी आदि पशुआ का घाँवाँ शब्द करना। रँभाना।  
 बघू-सज्ञा पु० १. चडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली। २. बाँस।  
 बघूकाट-सज्ञा पु० तारि-जैसी एक विशेष प्रकार की मचारी। (पश्चिम)  
 बघनाई-सज्ञा स्त्री० १. आहणत्व। २. हठ।  
 बस-सज्ञा पु० दे० "बस"।  
 बसकार-सज्ञा पु० बाँसुरी।  
 बसलोचन-सज्ञा पु० बसलोचन। बाँस का सार भाग, जो सफेद और नीले रंग के छोटे टुकड़ों के रूप में पाया जाता है। बसपत्तूर।  
 बसवाडी-सज्ञा स्त्री० बाँसों का झुरमुट। एक जगह उगे हुए बाँसों का समूह।  
 बसो-सज्ञा स्त्री० बसो १ बाँस की नली का बना हुआ एक प्रकार का बाजा। बाँसुरी। भुरली। २. मछली पँसाने का

एक औजार। ३. विष्णु, कृष्ण और राम के चरणों का रेखा-चिह्न।  
 बसोघर-सज्ञा पु० दे० "बसोघर"। श्रीकृष्ण।  
 बहंगो-सज्ञा स्त्री० बोझा दोनों वा उपकरण, जिसमें एक लंबे बाँस के दोनों सिरो पर रस्सियों के बड़े-बड़े छीके लटका दिए जाते हैं।  
 बहूटा-सज्ञा पु० बाँह पर पहनने का एक गहना।  
 बजरा\* -वि० दे० "बावला"।  
 बजराना\* -क्रि० अ० पागल हो जाना। बावला हो जाना।  
 बक-सज्ञा पु० १. बगला। पक्षी विशेष। २. अगस्त्य नामक पुष्प अथवा वृक्ष। ३. कुंवर। ४. बकामुर।  
 सज्ञा स्त्री० बकवाद। निरर्थक बात। बड़-बड़ाहट। प्रलाप।  
 बकठाना\* -क्रि० स० कसली चीज के राने से मुँह के स्वाद का बिगड़ जाना।  
 बकतर-सज्ञा पु० [फा०] लड़ाई के समय पहनने का एक प्रकार का कवच। सन्नाह।  
 बकता\* -वि० दे० "बक्ता"।  
 बकघ्यान-सज्ञा पु० बनावटी साधु-भाव। बगले की तरह शान्त भाव से ऐसी चेट्टा जो देखने में निष्कपट जान पड़े, पर जिसका वास्तविक उद्देश्य दुष्ट हो।  
 बकघ्यानी-वि० कपटी। दुष्ट। डोगी। पाखण्डी।  
 बकना-क्रि० स० बकवाद करना। व्यर्थ बोलना। प्रलाप करना। "बड़बडाना"।  
 बकवा-सज्ञा स्त्री० दे० "बकवाद"।  
 बकवाहा-सज्ञा पु० बड़बडिया। धरली। बाचाल। बकवादी।  
 बकमीन-सज्ञा पु० दुष्ट उद्देश्य सिद्ध करने के लिए बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहना।  
 वि० चुपचाप अपना काम साधनेवाला।  
 बकर-कसाब-सज्ञा पु० बकर का मांस बेचनेवाला। बसाई।  
 बकरना-क्रि० स० १. आपसे आप बचना। बड़बडाना। २. अपना दोष या अपराध आप बह देना।

बकरा-सज्ञा पु० [स्त्री० बकरी] एव प्रसिद्ध चौपाया, जिसके सींग छोट और पीछे झुके हुए, लम्बे बाल, पूँछ छोटी और खुर फटे होते हैं। अज। छग।

बकलस-सज्ञा पु० [अप्र०] एव प्रकार की विलायती अंकुसी, जो किसी बघन के दो छोटे का मिलाए रखने या बसने के काम में आती है। बकमुवा। लोहे का चौकोर छल्ला विशेष।

बकला-सज्ञा पु० [वल्बल] छिलका।

बकवाद-सज्ञा स्त्री० व्यय की बात या बकवक।

बकवादी-वि० बहुत बकबक करनेवाला। बक्की।

बकवाना-क्रि० स० किसी से बकवाद करना।

बकवास-सज्ञा स्त्री० बकवाद करने की इच्छा। दे० 'बकवाद'।

बकवृत्ति-सज्ञा स्त्री० बनाबटो साधुता का व्यवहार। पाखण्ड। छल। कपट।

बकवृत्ती-वि० कपटी। दे० "बकध्यानी"। पाखण्डी।

बकस-सज्ञा पु० [अप्र० बाकस] १ सडूक। २ डिट्वा। खाना।

बकसना\*-क्रि० स० प्रसन्नतापूर्वक या कृपा-पूर्वक देना। प्रदान करना। छोड़ देना। क्षमा करना। माफ करना।

बकसाना\*-क्रि० स० क्षमा कराना। माफ कराना।

बकसीस\*-सज्ञा स्त्री० [फा० बखशिश] १ दान। २ इनाम। पुरस्कार।

बकमुआ-सज्ञा पु० दे० 'बकलस'।

बकाना-क्रि० स० बहलाना। स्वीकार कराना। रटाना।

बकायत-सज्ञा स्त्री० नीम की तरह का एक पत्र।

बकाया-सज्ञा पु० [अ०] दे० 'बाकी'।

बकारि-सज्ञा पु० बकामुर की मारनेवाले श्रीकृष्ण।

बकारी-सज्ञा स्त्री० मुँह से निकलनेवाला शब्द।

बकायर-सज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"।

बकावली-सज्ञा स्त्री० दे० "गुलबकावली"। एक पोधा, जिसके फूल सफेद और सुगंधित होते हैं।

बकासुर-सज्ञा पु० एक दैत्य का नाम, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

बकुचना\*-क्रि० अ० सिमटना। सिकुटना। सकुचित होना।

बकुचा-सज्ञा पु० [स्त्री० बकुची] छोटी गठरी। बकचा।

बकुचाना-क्रि० स० बकुचे में बाँधकर पीठ या कंधे पर लटकाना।

बकुची-सज्ञा स्त्री० एक पोधा, जो ओषध के काम में आता है। छोटी गठरी।

बकुल-सज्ञा पु० मीलसिरी।

बकुला†-सज्ञा पु० दे० 'बगुला'।

बकेन, बकेना-सज्ञा स्त्री० वह गाय या भैंस, जिसे बच्चा दिए साल भर से अधिक हो गया हो और जो दूध देती हो।

बकौर्मा-सज्ञा पु० बच्चों का घुटनों के बल चलना।

बकोट-सज्ञा स्त्री० बकोटने की मुद्रा, निया या भाव। किसी वस्तु को ग्रहण करने में हाथ के पंज की स्थिति। उसनी चीज जितना एव बार चंगुल में आ सके।

बकोटना-क्रि० स० नाखून से तोचना। पंजा मारना। निकोटना। खराबना।

बकौरी\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'गुलबकावली'।

बबकल-सज्ञा पु० छिलका। बबका। छाल। वल्बल।

बबकाल-सज्ञा पु० [अ०] बनिया।

बबकी-वि० बहुत बोलने या बकबक करनेवाला। बडबाडिया। बकवादी। गप्पी।

सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का धान।

बबखर-सज्ञा पु० १ खत जीवन का एव यंत्र। २ चीनी का सिरा।

बबस-सज्ञा पु० सडूक। [अप्र० बावस]

बबतर-सज्ञा पु० दे० 'बकतर'।

बबतरा-सज्ञा पु० [फा०] १ भाग। हिस्सा। बंट। २ दे० 'बाबतर'।

बबरी†-सज्ञा स्त्री० भवान। बापरी। गूह। धर। मूटो।

अक्षरत-वि० हिस्सेदार।  
 बलसोस\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "बलशीश"।  
 इनाम।  
 बलान-सज्ञा पु० वर्णन। कथन। प्रशंसा।  
 स्तुति। बडाई।  
 बलानना-क्रि० स० वर्णन करना। प्रशंसा  
 करना। व्यंग्य में शिकायत करने के बहाने  
 बडाई करना।  
 बलार†-सज्ञा पु० [स्त्री० बलारी] गोल  
 घेरा, जिसमें गाँवों में अन्न रखा जाता  
 है। खत्ता।  
 बलिया-सज्ञा पु० [फा०] महीन और मजबूत  
 सिलाई का एक भेद।  
 बलियाना-क्रि० स० बलिया की मिलाई  
 करना।  
 बलोल-वि० [अ०] कजूस।  
 बलूबी-क्रि० वि० [फा०] अच्छी तरह।  
 भली भाँति।  
 बलेडा-सज्ञा पु० शसट। झगडा। विवाद।  
 बटिनाई। मुश्किल।  
 बलेडिया-वि० बलेडा करनेवाला। झगडालू।  
 पगडी।  
 बलेरना-क्रि० स० फेंकना। छितराना।  
 घोडा को इधर-उधर या दूर-दूर  
 फेंकना।  
 बलेरना†-क्रि० स० छेड़ना। टोड़ना।  
 पूछना।  
 बलर-सज्ञा पु० दे० "बकुर"।  
 बलरास-क्रि० स० १. दे० 'देना'। २.  
 छोड़ना। ३. क्षमा करना। माफ करना।  
 बलरावाना, बलरावाना-क्रि० स० बिनी को  
 बलरा में प्रवृत्त करना।  
 बलिगान, बलीगान-सज्ञा स्त्री० [फा०]  
 उदारता। दान। क्षमा। हुपा।  
 बलीगी-सज्ञा पु० मूनिमिर्गिन्टी आदि में  
 वेउन बाँटनेवाला वस्त्रकारी।  
 बग†-सज्ञा पु० दे० "बक"। बगना।  
 बगड बगड-क्रि० वि० सगड। बेठहाना।  
 चढ़े देग में।  
 बगरना†-क्रि० अ० १. बिगडना। पराब  
 होना। २. भ्रम में पड़ना। अह्वाना।

भूलना। ३. गिरना। लुडकना। ठीक  
 मार्ग से हट जाना।  
 बगदहा\*†-वि० [स्त्री० बगदही] बिगडैल।  
 चौकने या बिगडनेवाला।  
 बगदाना†-क्रि० स० १. बिगडना। सराब  
 करना। २. ठीक रास्ते से हटाना। भुलाना।  
 भटकाना।  
 बगमेल-सज्ञा पु० १. बराबर-बराबर चलना।  
 २. मुलना। बराबरी। समानता।  
 क्रि० वि० वाग मिलाए हुए। साथ-साथ।  
 बगर†-सज्ञा पु० १. महल। प्रासाद। बडा  
 मकान। घर। कोठरी। २. आँगन। सहन।  
 ३. गीजा को बाँधने का स्थान। बगर।  
 घाटी।  
 गज्ञा स्त्री० दे० "बगल"।  
 बगरना\*†-क्रि० अ० छितरना। बिखरना।  
 बगराना†-क्रि० स० छितराना। फैलाना।  
 छिटकाना।  
 वि० अ० बगरना। फैलना। बितरना।  
 बगरना\*-सज्ञा पु० दे० "बगुला"।  
 बगल-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. बाँध। पारव।  
 २. समीप का स्थान। बिनारा। ३. बुरते  
 आदि में कंधे के जोड़ के नीचे लगाया  
 जानेवाला कपडा।  
 मुहा०-बगल में दबाना या घरना=  
 अधिकार करना। ले लेना। बगलें  
 बजाना=अव्यविक प्रमत्तता का भाव व्यक्त  
 करना। बहुत मुग्धी मनाना। बगलें झाँकना=  
 इधर-उधर भागने का चल करना।  
 बगलप-सज्ञा पु० १. बगल का फोडा।  
 बगलदार। २. एक प्रकार का रोग, जिसमें  
 बगल से बहुत बदनूदर पसीना निकलता है।  
 बगडा-सज्ञा पु० [स्त्री० बगडी] सफेद रंग  
 का एक पक्षी, जिसकी टोंगें, पाँच और गला  
 लाल होता है।  
 मुहा०-बगला भगड=१ घबरेला। बगटी।  
 २. धर्मपत्नी।  
 बगलियाना-क्रि० अ० बगड में होकर जाना।  
 अलग हटकर चलना या निकलना।  
 वि० स० अलग करना। बगल में लाना  
 या करना।

बगली-सज्ञा स्त्री० १. जेब। कुरता आदि में बगल के नीचे लगाया जानेवाला कपड़ा। २. बगुला पक्षी की भांदा। ३. धैली। तिलादानी। ४. बगल। वि० बगल-सबधी। बगल का। मुहा०—बगली घूसा=बहु बार, जो आड में छिपकर या धोखे से किया जाय। बगलोही—वि० [स्त्री० बगलीही] बगल की ओर झुका हुआ। तिरछा। बगसना\*—क्रि० स० दे० "बखसना"। बगा\*—सज्ञा पु० १. बागा। जामा। २. बगला। यगना\*—क्रि० स० सँभलकराना। ठहलाना। घुमाना-फिराना। क्रि० अ० भागना। जल्दी-जल्दी जाना। बगार-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ गाएँ बाँधी या चराई जाती हैं। घाटी। बगारना-क्रि० स० १. बिखेरना। छितराना। २. दे० "बगराना"। बगावत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. बलवा। २. विद्रोह। बगिया\*—सज्ञा स्त्री० फुलवाड़ी। उपवन। छोटा बगीचा। बाटिका। बगीचा-सज्ञा पु० [स्त्री० बगीची] उद्यान। छोटा बाग। बाटिका। उपवन। बगुर-सज्ञा पु० फन्दा। जाल। बगुला-सज्ञा पु० दे० "बगला"। बगुला-सज्ञा पु० बबहर। एक ही स्थान पर चबकर काटती हुई दिखाई देनेवाली हवा या आंधी। घोबना\*—क्रि० स० १. हटाना। भगाना। २. दे० "बगदना"। घोरो-सज्ञा स्त्री० एक छोटी बिड़िया। बपेरी। टिटिहरी। बरीर-अव्य० [अ०] बिना। बागी, बाघी-सज्ञा स्त्री० चार पहियों की छायादार घोटा-भाड़ी। बाघबर-सज्ञा पु० बाघ की राल। बाघछाला-सज्ञा स्त्री० दे० "बाघबर"। बाघनही\*—सज्ञा पु० [स्त्री० बाघनही] १. एक प्रकार का हथियार, जिसमें बाघ

के नाखून जैसे चिपटे टेढ़े कांटे निकले रहते हैं। शेरपजा। २. बच्चों के गले का एक आभूषण, जिसमें बाघ के नाखून चाँदी या सोने में भड़े होते हैं। बाघनहिया\*—सज्ञा स्त्री० दे० "बाघनही"। बाघना\*—सज्ञा पु० १. बाघ के नख या दाँत। २. दे० "बाघनही"। बाघरूपा\*—सज्ञा पु० दे० "बगुला"। बाघार-सज्ञा पु० छोकने का मसाला। छौंक। तड़का। बाघारना-क्रि० स० १. छौंकना। तड़का देना। दागना। २. अपनी योग्यता से अधिक बोलना। मुहा०—शेखो बाघारना=बड़-बड़कर बातें करना। बाघरा\*—सज्ञा पु० दे० "बगुला"। बाघल-सज्ञा पु० राजपूतों की एक उपजाति। बाघेला-सज्ञा १. पु० बाघल क्षत्रिय। २. बाघ का बच्चा। बाघ\*—सज्ञा पु० बघन। बाघ्य। संज्ञा स्त्री० एक पीधा, जिसकी जड़ और पत्तियाँ दवा के काम में आती हैं। बाघका-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का पकवान। २. गठरी। पुटकी। बाघकाना\*—वि० [स्त्री० बाघकानी] १. बच्चों के योग्य। बच्चों के लिए। २. बच्चों का-सा। बच्चों की तरह। थोड़ी श्वस्य, ४६। बाघत-सज्ञा स्त्री० १. बाकी। बाचा हुआ अन्न। शेष। लाभ। मुनाफा। २. रक्षा। बचाव। बाघन\*—सज्ञा पु० १. दे० "बाघन" २. बाणी। मुहा०—बाघन डालना=भाँगना। बाघना करना। बाघन तोड़ना या छोड़ना=प्रतिज्ञा भंग करना। नष्ट करना। बाघन बाँधना=प्रतिज्ञा करना। बाघनबद्ध करना। बाघन हारना=प्रतिज्ञा में बाँध जाना। बाघ हारना। बाघना-क्रि० अ० १. नष्ट या विपत्ति आदि से बचाना रहना। रक्षा करना। २. किसी बरी बात से बचाना रहना। ३. रह जाना।

४. छूट जाना। घोप रह जाना। वाणी रहना। दूर या अलग रहना।

क्रि० सं० नहना।

वचपन—सज्ञा पु० १. लड़कपन। बाल्यावस्था।

२. वच्चा होने का भाव।

वचवैया\*—सज्ञा पु० वचानेवाला। रक्षक।

वचा†\*—सज्ञा पु० [स्त्री० वच्ची] लड़का। बालक।

वचाना—क्रि० सं० १. आपत्ति या वण्ट आदि में न पड़ने देना। रक्षा करना। अलग रखना। २. खर्च न होने देना। ३. छिपाना। चुराना। दूर रखना। अलग रखना।

वचाव—सज्ञा पु० वचने या वचाने की क्रिया या भाव। त्राण। रक्षा।

वचिया—सज्ञा स्त्री० १. कसीदे के काम में छोटी बूटियाँ। २. छोटी लड़की।

वचन—सज्ञा पु० भालू का वच्चा।

वच्चा—सज्ञा पु० [स्त्री० वच्ची] छोटा लड़का। बालक। नवजात शिशु।

वि० अज्ञान। अनजान।

मुहा०—वच्चो का खेल=सहज काम।

वच्चावान या वच्चेदानी—सज्ञा पु० गर्भस्थ।

वच्छ—सज्ञा पु० १. वच्चा। बेटा। २. गाय का बछड़ा।

वच्छनाम—सज्ञा पु० औषध-विशेष। एव तरह का विष। वत्सनाभ।

वच्छल\*†—वि० माता-पिता के समान प्यार करनेवाला। वत्सल। कृपालु।

वच्छस\*†—सज्ञा पु० छाती। वत्सल्य।

वच्छा†—सज्ञा पु० [स्त्री० वछिया] गाय का बछड़ा।

वछ†—सज्ञा पु० दे० "वछड़ा"। गाय का वच्चा।

वछड़ा—सज्ञा पु० [स्त्री० वछड़ी, वछिया] गाय का वच्चा।

वछनाम—सज्ञा पु० वत्सनाभ। एव स्थावर विष। यह नेपाल में होनेवाले एक पीपे की जड़ है। सीगिया। तेलिया। मीठा विष।

वछरा\*—सज्ञा पु० दे० "वछड़ा"।

वछली—सज्ञा पु० दे० "वछड़ा"।

वछल\*†—वि० दे० "वत्सल"।

वछया†—सज्ञा पु० दे० "वछड़ा"।

वछेड़ा—सज्ञा पु० [स्त्री० वछेड़ी] घोड़े का वच्चा।

वछेह\*—सज्ञा पु० दे० "वछड़ा"।

वजंत्री—सज्ञा पु० बाजा बजानेवाला। वजनिर्वा।

वजट—सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] भविष्य में होने-वाले आय और व्यय का लेखा।

दे० "व्याकल्प"।

वजड़ा—सज्ञा पु० दे० "बजरा"।

वजना—क्रि० अ० १. शब्द होना। बोलना।

किसी वस्तु का दूसरी वस्तु पर इस प्रकार पड़ना कि शब्द उत्पन्न हो। बाज से शब्द निकलना। २. आघात पड़ना। प्रहार होना।

हथियारों का चलना। ३. अड़ना। हठ या आप्रह करना। जिद करना। ४. रक्षा पाना। प्रसिद्ध होना। ५. लड़ाई होना।

सज्ञा पु० १. बजनेवाला बाजा। २. शगड़ा। टटा।

घी०—वजना-वजना (भोजपुरी)=हाथा-

पाई। लड़ाई-सगड़ा। टटा।

वजनिर्वा†—सज्ञा पु० बाजा बजानेवाला।

वजनी—वि० बजनेवाला। जो वजता या

बजाता हो।

सज्ञा पु० बाजा। बजाने की चीज। जिससे

संस्वर शब्द निकले।

यजवजाना—क्रि० अ० उदलना। उफानना।

सड़ना। गलना।

वजमारा\*†—वि० [स्त्री० वजमारी] वज्र

से मारा हुआ (गाली)। जिस पर वज्र

गिरा हो।

वजरम\*—वि० वज्र के समान दृढ़ शरीरवाला।

सज्ञा पु० हनुमानजी।

वजरंगवली—सज्ञा पु० हनुमान्। महावीर।

वजर\*†—सज्ञा पु० दे० "वज्र"।

वजरवट्ट—सज्ञा पु० एक प्रकार के वृक्ष का

चीज। कहते हैं इसे वच्चो को नजर से

बचाने के लिए पहनाते हैं।

वजरा—सज्ञा पु० एक प्रकार की छायादार

बड़ी नाव।

सज्ञा पु० दे० "बाजरा"।

वजरागि\*—सज्ञा स्त्री० दे० "विजली"।  
 वजरी\*—सज्ञा स्त्री० १. ककड के छोटे-छोटे टुकड़े। ककड़ी। २ ओला। ३ किले आदि की दीवारा के ऊपर छोटा नुमायशी कंगूरा। ४ दे० "वाजरा"।  
 बजवाई—सज्ञा स्त्री० बजाने या बजवाने की मजदूरी।  
 बजवाना—क्रि० स० किसी से बजाने का काम कराना।  
 बजवैया\*—वि० बजानेवाला। बजैया।  
 बजा—वि० [फा०] उचित। ठीक। सही।  
 मुहा०—बजा लाना=पूरा करना। पालन करना। निभाना।  
 बजागि\*—सज्ञा स्त्री० बज्र की आग। विद्युत्। विजली।  
 बजाज—सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० बजाजिन] कपड का व्यापारी। कपडा बेचनेवाला।  
 बजाजा—सज्ञा पु० [फा०] वह बाजार, जिसमें बपड़े की दुकानें हों।  
 बजाजी—सज्ञा स्त्री० [फ०] १ कपडा बेचने का रोजगार। बजाज का काम। २ बजाज के दूकान की सामग्री।  
 बजाना—क्रि० स० १ आवाज पैदा करना। बाजे आदि से स्वर-लय के साथ आवाज निकालना। किसी चीज से मारकर शब्द निकालना। अध्यात पहुँचाना। २ पालन करना। ३ पूजा करना।  
 मुहा०—बजाकर = खुल्लमखुल्ला। ठका पीटकर। ठोकना-बजाना=जाँचने के लिए अच्छी तरह देखना-भालना। हुकम बजाना=आज्ञा पालन करना।  
 बजाय—अव्य० [फा०] स्थान पर। बदले में। एवज में।  
 बजार\*—सज्ञा पु० दे० "बाजार"।  
 बजारू—वि० दे० "बाजारू"।  
 बज्जरा—सज्ञा पु० दे० "विजला"।  
 बज्जर\*—सज्ञा पु० दे० "बज्र"।  
 बज्जात—वि० दुष्ट। बदमाश।  
 बज्जाती—सज्ञा स्त्री० दुष्टता।  
 बज्र—सज्ञा पु० दे० "बज्र"।  
 बसना\*—क्रि० अ० १ बधन में पड़ना।

बैधना। २. पेंमना। उलझना। ३. अटकना। हठ करना। ४ भिड़ना।  
 बसना\*—क्रि० स० बधन में लाना। फँसाना। उलझाना। पनडना। अधीन करना।  
 बसाव—सज्ञा पु० फँसने की क्रिया या भाव। उलझन। फँसाव। अटकाव।  
 बसावट—सज्ञा स्त्री० दे० "बसाव"।  
 बसावना\*—क्रि० स० दे० "बसाना"।  
 बट—सज्ञा पु० १ दे० "बट"। वरगद का पेड़। २ बड़ा या बरा नाम का पकवान। ३ गोला। गोल वस्तु। ४ बट्टा। लोढा। ५ बाट। बटखरा। ६ रस्सी की एँठन। बटाई। बल। ७ रास्ता। मार्ग।  
 बटई—सज्ञा स्त्री० १ बटेर पक्षी। २ जरी बादल का काम बनाने की विद्या।  
 बटखरा—सज्ञा पु० तीलने का बाँट।  
 बटन—सज्ञा स्त्री० एँठन। बल।  
 सज्ञा पु० [अंग्रे०] १ पहनने के कपडों में चिपटे आकार की कड़ी गोल घुडी। २ एक प्रकार का बादल का तार।  
 बटना—क्रि० स० कई टांगा या सारी को एक साथ मिलाकर एँठना, जिसमें वे मिलकर एक हो जायें। एँठना। बल देना। रस्सी बनाना। क्रि० अ० सिल पर रखकर पीसा जाना। पिसना।  
 सज्ञा पु० सरसो आदि का लेप, जो शरीर पर मला जाता है। उबटन।  
 बटपारा\*—सज्ञा पु० दे० "बटमार"। डाकू। लुटेरा।  
 बटपार—सज्ञा पु० दे० "बटमार"।  
 बटमार—सज्ञा पु० रास्ते में मारकर लूट लेनेवाला। डाकू। ठग। लुटेरा।  
 बटमारी—सज्ञा स्त्री० राहजनी। रास्ते में लूट लेगा। ठगी।  
 बटला—सज्ञा पु० बड़ी बटलोई। देग। देगुचा। हुडा।  
 बटली, बटलोई—सज्ञा स्त्री० दाल चावल आदि पकाने का चौड़े मुँह का बरतन। देयची। पत्तीली।  
 बटवार—सज्ञा पु० पहरेदार। मार्ग का बर वसूल करनेवाला।

बटवारा-सज्ञा पु० १. दे० "बैटवारा"।  
२. बाँटने की क्रिया। विभाजन। वितरण।  
३ भाग। अंश। बाँट।

बटा\*-सज्ञा पु० [स्त्री० बटिया]  
१. गोला। वस्तुलाकार वस्तु। गेंदा। ढाका।  
ढेला। रोड़ा। २. पथिक। बटोही।

घटाई-सज्ञा स्त्री० १. बाँटने का काम।  
रस्सी बनाना। रस्सी बटना। २ बटने  
की मजदूरी।

बटाऊ-सज्ञा पु० पथिक। बटोही। मुसाफिर।  
मुहा०—बटाऊ होना=चलता होना। चल  
देना।

घटाकू\*-वि० बड़ा। ऊँचा। उत्तुंग।  
घटाना-क्रि० अ० बट हो जाना। जारी न  
रहना।

बटाली-सज्ञा स्त्री० खानी।

बटिया-सज्ञा स्त्री० १ छोटा गोल। २

बटखरा। बाँट। ३ छोटा बट्टा। लोडिया।

बटो-सज्ञा स्त्री० १ गोली। २ बड़ी नाम

का एक पक्वान। \*३ उपवन। वाटिका।

बट्ठा-सज्ञा पु० १. दे० "बट्टा"। २ कई  
खानोंवाली एक प्रकार की कपड़े की  
थेली। सिल आदि पर पोसा हुआ।

बटुक-सज्ञा पु० १ बालक। विद्या अध्ययन  
करनेवाला ब्रह्मचारी। २ एक भैरव  
(देवता)।

बटुरना-क्रि० अ० १ सिमटना। सिबुटना।  
२. इक्का होना। एकत्र होना।

बटुरी-सज्ञा स्त्री० एक मोटा बनाज। खेसारी।

बट्टा-सज्ञा पु० बड़ी बटलोई।

बट्टा-सज्ञा पु० १ कई खानों वाली कपड़े  
की छोटी थेली। २ बटलोई या देग।

बट्टे-सज्ञा स्त्री० एक छोटी चिड़िया।

बट्टेबाज-सज्ञा पु० बट्टे पालने या लहाने-  
वाला।

बट्टेबाजी-सज्ञा स्त्री० बट्टे पालने या लहाने  
का कार्य।

बट्टे-सज्ञा पु० समूह। जमाव। ढेर।  
जमघट।

बट्टे-सज्ञा स्त्री० बूढ़ा। बहारन। रदी  
वस्तु का ढेर।

बट्टे-सज्ञा पु० १. बिसरी हुई वस्तुओं  
को समेटना। २. एकत्र करना। इक्का  
करना। जुटाना।

बट्टोही-सज्ञा पु० रास्ता चलनेवाला। पथिक।  
मुसाफिर।

बट्टा-सज्ञा पु० १ ऐन-देन में पूरे मूल्य में

बची या भाज। दलाली। दस्तूरी। सिक्का

भुनाने में लगने वाली भाज। २ टोटा।

घाटा। हानि। क्षति। ३ कूटने या पीसने

का पत्थर। लोड़ा। पत्थर आदि का गोल

टुकड़ा। ४ छोटा गोल टिब्बा। ५.

उवाली हुई मुपारी।

मुहा०—बट्टा लगना=दाग या कलक लगना।

बट्टाखाता-सज्ञा पु० बूढ़ी हुई या न बसूल

होनेवाली रकम का लेखा या मद।

बट्टाहाल-वि० चौरस और चिकना।

बट्टो-सज्ञा स्त्री० १ छोटा बट्टा। गोल

छोटा टुकड़ा। २ कूटने-पीसने का पत्थर।

लोडिया। ३ बड़ी टिकिया, जंसे सावुन

की बट्टी।

बट्टू-सज्ञा पु० १ दे० "बजरबट्टू"। २

चारखाना। ३. बोड़ा। लोडिया।

बट्टेबाज-वि० १ घूर्त। २. जातगर।

बट्टिया-सज्ञा स्त्री० सूखे कड़ा का ढेर।

बड-सज्ञा स्त्री० बकवाद। बकबक। प्रलाप।

सज्ञा पु० बरगद का वृक्ष।

वि० दे० "बड़ा"।

बडक-सज्ञा स्त्री० डींग। शोखी। बकवाद।

बडका-वि० बड़ा। महान्।

बडकुइया-सज्ञा पु० बच्चा कुर्जा।

बडप्पन-सज्ञा पु० बड़ाई। श्रेष्ठता। श्रेष्ठ-

या बड़ा होने का भाव। महत्त्व। गुणता।

बडबट्टा-सज्ञा पु० बरगद का फल।

बडबड-सज्ञा स्त्री० [अनु०] बकवाद।

बडबडाना-क्रि० अ० १ बक-बक करना।

बकवाद करना। २ कोई बात बुरी लगने

पर मुँह में ही कुछ बोलना। बुझनुडाना।

बडबडिया-वि० बकवादी। बडबड करने-

वाला।

बडबेरी-सज्ञा स्त्री० दे० "बडबेरी"।

बडबोल, बडबोला-वि० सीटनेवाला। बड-

बढ़वर बातें करनेवाला। बहुत बोलने-  
वाला। व्यय की बातें करनेवाला।

बड़भाग, बड़भागी-वि० भाग्यवान्। बड़े  
भाग्यवाला।

बड़रा\*-वि० विशाल। बड़ा।

बड़वा-सज्ञा स्त्री० १ बड़वाग्नि। २ \*धोड़ी।  
३ दासी।

सज्ञा पु० एक प्रकार का धान।

बड़वाग्नि-सज्ञा पु० समुद्राग्नि। समुद्र के  
भीतर की आग या ताप।

बड़वानल-सज्ञा पु० दे० "बड़वाग्नि"।

बड़वामूल-सज्ञा पु० १ बड़वाग्नि। २ सिवजी  
का मूल।

बड़बारा-वि० दे० "बड़ा"।

बड़बारी-सज्ञा स्त्री० बड़प्पन। महत्त्व।  
प्रशंसा।

बड़हन-सज्ञा पु० बड़ा। एक प्रकार  
का धान।

बड़हर, बड़हल-सज्ञा पु० एक प्रकार का  
पड़ और उसका फल जो शरीर के बराबर  
पर वेडोल होता है।

बड़हार-सज्ञा पु० विवाह होने के बाद बारा  
तियों की ज्योनार।

बड़ा-वि० १ खूब लंबा चौड़ा। बृहत्। महान्।  
विशाल। २ जिसकी उम्र ज्यादा हो। अधिक  
आयु का। अधिक परिमाण, विस्तार या  
अवस्था का। श्रेष्ठ। गुरु। बुजुर्ग। ३ महत्त्व  
पूर्ण। ४ भारी। ज्यादा।

सज्ञा पु० [स्त्री० बड़ी] एक पक्वान  
जो मसाला मिली हुई उड़द की पीठी  
की गोल टिकियों को तलकर बनाया  
जाता है।

मुहा०—बड़ा पर=कंदखाना। कारागार।

बड़ाई-सज्ञा स्त्री० १ बड़ा होने का भाव।  
बड़प्पन। बुजुर्गी। २ प्रशंसा। तारीफ। ३  
परिमाण या विस्तार।

मुहा०—बड़ाई देना=आदर करना। सम्मान  
करना। बड़ाई मारना=शेखी बघारना।

बड़ा दिन-सज्ञा पु० २५ दिसंबर या दिन जो  
ईसाइया का त्यौहार है।

बड़ापा-सज्ञा पु० बड़प्पन।

बड़ी-वि० दे० "बड़ा"।

सज्ञा स्त्री० उड़द या मूँग की पिट्टी की  
बनाई हुई छोटी-छोटी टिकियाँ। बरी।  
कुम्हड़ीरी।

बड़ी माता-सज्ञा स्त्री० शीतला। चैचक।

बड़ेर-सज्ञा पु० घण्डर।

बड़ेरा-वि० बड़ा। महान्। बृहत्। प्रधान।  
मुख्य।

सज्ञा पु० [स्त्री० बड़ेरी] छाजन में बीच  
की लकड़ी। कुएँ पर फिरकी लगाने की  
लकड़ी।

बड़ई-सज्ञा पु० लकड़ी का काम करनेवाला।  
लकड़ी का काम करनेवाली एक जाति।

बड़ती-सज्ञा स्त्री० १ वृद्धि। अधिकता।  
तौल या गिनती में अधिक होना। २

उन्नति। धन-सम्पत्ति का बढ़ना। ३ लाभ।

बड़ना-क्रि० अ० १ विस्तार या परिमाण में  
अधिक होना। वृद्धि को प्राप्त होना। गिनती

या नाप-तौल में ज्यादा होना। मर्यादा,  
अधिकार, विद्या-बुद्धि सुख-संपत्ति आदि

में अधिक होना। उन्नति करना। २ किसी  
स्थान से आगे जाना। अग्रसर होना। चलना।

३. किसी से किसी बात में अधिक हो  
जाना। ४ लाभ होना। मुनाफे में

मिलना। ५ दूकान आदि का बढ़ होना।

६ चिराग का बुझना।

मुहा०—बड़कर चलना=इतराना। धमक  
करना।

बड़ती-सज्ञा स्त्री० धाड़।

बड़ाना-क्रि० स० १ वृद्धि करना। विस्तार या  
परिमाण में अधिक करना। विस्तृत करना।

गिनती या नाप-तौल आदि में ज्यादा करना।  
फैलाना। लड़ा करना। २ तेज करना।

उन्नत करना। आगे चलाना। ३ सस्ता  
बेचना। फैलाना। ४ दूकान आदि बन्द

करना। ५ दीपक बुझाना।

क्रि० अ० चुकना। समाप्त होना।

बड़ाली-सज्ञा स्त्री० बटारी।

बड़ाव-सज्ञा पु० १ फैलाव। विस्तार।

२ वृद्धि। आधिक्य। बढ़ाव। ३ उन्नति।

बढ़ने का भाव।

यदाया-मज्ञा पु० १ प्रोत्साहन। उत्तेजना।  
 विमी वाम की ओर मन बढ़ानेवाली बात।  
 २ साहस या हिम्मत दिलानेवाली बात।  
 यदिया-वि० उत्तम। अच्छा। कीमती।  
 महंगा। चाखा।  
 यद्विषा-वि० बढ़ानेवाला। बढ़नेवाला।  
 मज्ञा पु० दे० "बढ़ई"।  
 यद्वीतर-सज्ञा पु० बढ़ती। सूद। लाभ।  
 यद्वीनरी-सज्ञा स्त्री० १ क्रमशः वृद्धि।  
 बढ़ती। उन्नति। २ सूद। लाभ।  
 यद्वन्त या यद्वन्तो-सज्ञा स्त्री० वृद्धि। उन्नति।  
 लाभ।  
 यद्विन्-सज्ञा पु० बनिया। सौदागर। व्यापार,  
 व्यवसाय करनेवाला। बेचनेवाला। विक्रेता।  
 यद्विज-सज्ञा पु० दे० 'वणिक्'।  
 यत-मज्ञा स्त्री० बात। कील। करार।  
 यतक-सज्ञा स्त्री० दे० "वतख"।  
 यतकहाव-सज्ञा पु० दे० "वतकही"। कहा-  
 मुनी।  
 यतकहो-सज्ञा स्त्री० बातचीत। कहामुनी।  
 वाद विवाद।  
 यतख-सज्ञा स्त्री० [अ०] सफेद रंग का एक  
 जलपक्षी।  
 यतबदाय-सज्ञा पु० व्यर्थ बात बढ़ाना। बात  
 का विस्तार करना। झगड़ा-बहोड़ा बढ़ाना।  
 यतरस-सज्ञा पु० [वि० यतरसिया] बात-  
 चीत का आनंद। बातों का मजा।  
 यतरान\*-सज्ञा स्त्री० बातचीत। बोली।  
 यतराना-वि०-क्रि० अ० बातचीत करना।  
 यतरीही\*+वि० [स्त्री० यतरीही] बातचीत  
 करने का इच्छुक।  
 यतलाना-वि० स० यताना। कहना। सम-  
 क्षाना। ठीक करना। मारपीट कर ठीक  
 करना।  
 यताना-क्रि० स० १ कहना। जताना। सूचित  
 करना। समझाना-बुझाना। सिखाना। निर्देश  
 करना। २ प्रदर्शित करना। नाचने-गाने में  
 हाथ उठाकर भाव प्रकट करना। भाव  
 बताना। ठीक करना। ३ मार-पीटकर  
 दुरुस्त करना। दइ देना।  
 यतासा-सज्ञा पु० दे० 'यतासा'।

यतास-सज्ञा स्त्री० हवा। बात का रोग।  
 गठिया।  
 यतासा-सज्ञा पु० १ एक प्रकार की मिठाई,  
 जो चीनी की चादनी को टपकाकर बनाई  
 जाती है। २ एक प्रकार की आतशबाजी।  
 ३ बुदबुद। बलबुला।  
 यतिपा-सज्ञा स्त्री० १ छोटा, कोमल और  
 नन्हा, फल। २ बात।  
 यतिपाना-वि० अ० बातचीत करना।  
 यतिपार-सज्ञा स्त्री० बातचीत।  
 यत-सज्ञा पु० दे० "कलावतू"।  
 यतून-वि० वातून। वाचाल। बहुत बालने-  
 वाला।  
 यतीर-क्रि० वि० [अ०] १ तरह पर। रीति  
 से। तरीके पर। २ सदृश। समान।  
 यतक-सज्ञा स्त्री० दे० "वतख"।  
 यत्तिस-वि० गिनती में तीस से दो अधिक।  
 तीस और दो।  
 सज्ञा पु० तीस से दो अधिक की संख्या।  
 ३२।  
 यत्ती-सज्ञा स्त्री० १ चिराग में जलनेवाला  
 रुई या सूत का बड़ा हुआ लच्छा। बाती।  
 पत्तीता। २ मोमबत्ती। दीपक। चिराग।  
 प्रकाश। रोशनी। ३ पतली छड़ या सलाई  
 के आकार की कोई वस्तु। ४ छाजन में  
 लगाने का फूस या पूला। मूठा। ५ घाव में  
 मवाद साफ करने के लिए भरने की बपड़े  
 की पंजी।  
 यत्तीस-वि० दे० "यत्तिस"।  
 यत्तीसा-सज्ञा पु० पुच्छ के यत्तीस मसाला  
 का बना एक प्रकार का सड्डू।  
 यत्तीसी-सज्ञा स्त्री० यत्तीस का समूह।  
 यत्तीस दाता का समूह।  
 यद्यभा-सज्ञा पु० एक छोटा पीपा, जिसके  
 पत्तों का साग बनाते हैं।  
 यद-वि० [फा०] बुरा। खराब। दुष्ट। नीच।  
 सज्ञा स्त्री० १ गौहिया। बाघी रोग। पेड़,  
 और जीव के जोड़ में फोड़े के रूप में होने-  
 वाला एक रोग। जाम की गिल्डी।  
 २ पन्दा। बदला।  
 मुहा०-यद में=एवज में। बदले में।

बद-अमली-सज्ञा स्त्री० राज्य का पुप्रवय  
अशांति ।

बदइतजामी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] अव्यवस्था ।  
बुरा प्रवन्ध ।

बदकार-वि० सज्ञा [ स्त्री० बदकारी ] [ फा० ]  
कुकर्मी । व्यवभारो ।

बदकिस्मत-वि० अभाग । भाग्यहीन ।

बदकिस्मती-सज्ञा स्त्री० दुभाग्य ।

बदगोई-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] निंदा । चुगली ।

बदचलन-वि० [ फा० ] बुरे चाल चलन-  
वाला । चरित्रहीन । दुराचारी । व्यवभारो ।

बदचलनो-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] बुरा आचरण ।  
दुराचार ।

बदजबान-वि० [ फा० ] गद्दी बातें कहन  
वाला । गाली गलोज बकनवाला ।

बदजात-वि० [ फा० ] खोटा । नीच । लुच्छ ।

बदतमीज-वि० [ फा० ] अशिष्ट । बहूदा ।

बदतर-वि० [ फा० ] और भी बुरा । किसी  
की अपक्षा बुरा ।

बददुआ-सज्ञा स्त्री० दे० 'शाप' । अशुभ  
कामना ।

बदन-सज्ञा पु० [ फा० ] शरीर । देह ।

बदनसीब-वि० अभाग ।

बदनसीबी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] दुभाग्य ।

बदना\*—क्रि० स० १ कहना । बगन । बखान  
करना । २ मान लेना । स्वीकार करना ।

३ नियत करना । ठहराना । निश्चित  
करना । ४ बाजी लगाना । शत लगाना ।

दावे लगाना । ५ कुछ समझना । बड़ा या  
महत्त्व मानना । ६ बचन देना । ७ गिनती  
में लाना । ध्यान देना । कुछ खयाल करना ।

मुहा०—नदा होना=भाग्य में लिखा होना ।  
बदकर (कोई काम करना)=१ जान

वृत्तबदल । पूरे हठ के साथ । २ ललकारकर ।

बदनाम-वि० [ फा० ] निन्दित । कलकित ।  
जिसकी निंदा हो ।

बदनामी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] अपयम । ब  
दृज्जती ।

बदनामा-वि० कुप्य । भद्दा ।

बदपरहेज-वि० [ फा० ] कुप्य करने  
वाला ।

बदपरहेजी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] खान-मीन में  
असयम । कुप्य ।

बदबख्त-वि० [ फा० ] बदकिस्मत । अभाग ।

बदबू-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] दुर्गन्ध । बुरी गंध ।

बदबूझार-वि० [ फा० ] दुर्गन्धयुक्त ।

बदमजा-वि० [ फा० ] बुरे स्वाद का । फीका ।  
नीरस । आनन्दरहित ।

बदमस्त-वि० [ फा० ] नशे में चूर । मस्त ।  
कामोन्मत्त ।

बदमस्ती-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] मत्तवालापन ।  
उन्मत्तता । कामोन्मत्तता ।

बदमाश-वि० [ फा० ] दुष्ट । लुच्चा । पाजी ।  
दुराचारी । बदचलन ।

बदमाशी-सज्ञा स्त्री० दुष्कर्म । खोटाई ।  
दुष्टता । पाजीपन । शरारत । व्यवभारो ।

बदमिजाज-वि० [ फा० ] [ सज्ञा स्त्री० बद-  
मिजाजी ] दुस्वभाव । विडविडा । बुरे स्व-  
भाव का ।

बदरग-वि० [ फा० ] भद्दे रंग का । जिसका  
रंग बिगड़ गया हो । फीका । विचर्ण ।

बदरगी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] रंग का फीकापन ।  
भद्दापन ।

बदराई-सज्ञा पु० बादल ।

बदराह-वि० [ फा० ] बदचलन । बुरी राह  
पर चलनवाला । दुष्ट । बुरा ।

बदरियाई-सज्ञा स्त्री० दे० "बदली" ।

बदरी-सज्ञा स्त्री० १ बदली । बादल । २  
बर का पड और उसका फल ।

बदरीही-वि० दुराचारी । बदचलन ।  
सज्ञा पु० बदली का आभास ।

बदल-सज्ञा पु० [ अ० ] १ परिवर्तन । हेर  
फेर । २ पलटा । एवज । प्रतिकार । ३  
बादल ।

बदलगाय-वि० [ फा० ] मुँहजोर ।

बदलना-क्रि० अ० १ जैसा रहा हो उससे  
भिन्न हो जाना । परिवर्तित होना । २ एक

के स्थान पर दूसरा हो जाना । ३ एक जगह  
से दूसरी जगह नियुक्त होना ।

क्रि० स० १ जैसा रहा हो उससे भिन्न  
करना । परिवर्तित करना । पलटना । २

एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु पाना । उलटाना ।

करना। हेर-फेर करना। ३. विनिमय करना।

मुहा०—जात बदलना=पहले एक बात कह-  
कर फिर उससे विरुद्ध दूसरी बात कहना।  
बदलवाना-क्रि० सं० बदलने का काम  
दूसरे से कराना।

बदला-सज्ञा पु० १. लेने और देने का व्यवहार।  
विनिमय। २. किसी वस्तु की हानि या स्थान  
की पूर्ति के लिए दूसरी वस्तु। किसी प्रकार  
के व्यवहार के उत्तर में वैसा ही व्यवहार।  
पलटा। प्रतीकार। एवज। परिणाम। नतीजा।  
मुहा०—बदला लेना=हानि की पूर्ति करना।  
किसी के बुराई करने पर उसके साथ बुराई  
करना।

बदलाना-क्रि० सं० दे० "बदलवाना"।

बदली-सज्ञा स्त्री० १. बदल। २. एक के  
स्थान पर दूसरी वस्तु रखना। एक स्थान  
से दूसरे स्थान पर नियुक्ति। तबादला।  
बदलीबल-सज्ञा स्त्री० बदल-बदल। हेर-  
फेर। बदलने का कार्य।

बदशकल-वि० [फा०] कुक्ष्य। बदसूरत।  
भद्दा।

बदसूरत-वि० कुरूप। भद्दी सूरत का।

बदस्तूर-क्रि० वि० [फा०] जैसा या वैसा  
हो। जैसे ना तैसा। ज्यों का त्यों। नियमा-  
नुकूल।

बदहज्मी-सज्ञा स्त्री० [फा०] अपच। अजीर्ण।

बदहवास-वि० [फा०] बेहोश। अचेत। व्या-  
कुल। उद्विग्न। विबल। हक्का-बक्का।  
थान्त। पस्त।

बदा-वि० होनहार। भाग्य में तिसा हुआ।

बवान-सज्ञा स्त्री० बदे जाने की क्रिया या भाव।

बदाबदी-सज्ञा स्त्री० १. स्पर्द्धा। होडाहोडी।  
लाग-डौट। २. दो पक्षों या एक दूसरे के  
विरुद्ध प्रतिज्ञा या हठ।

बदामे-सज्ञा पु० दे० "बादाम"।

बदामी-वि० बादामी रंग का।

संज्ञा पु० एक पक्षी।

बदि\*ज-सज्ञा स्त्री० पलटा। बदला। एवज।  
अव्य० १ बदले में। एवज में। २. लिए।  
वास्ते। सातिर।

बदी-सज्ञा स्त्री० १. कुण्ठ पक्ष। अंधेरा  
पाय। २. अपकार। बुराई। अहित।

बदे\*ज-अव्य० १. वास्ते। लिए। २. दलासी  
समेत (दाम)।

बदौलत-क्रि० वि० [फा०] १. द्वारा। अवलंब  
से। २. कृपा से। कारण से।

बदर\*-सज्ञा पु० बादल। मेघ।

बदल-सज्ञा पु० बादल। मेघ।

बदल-सज्ञा पु० अरब की एक असभ्य जाति।

बद्ध-वि० १. बंधा हुआ। २. बंधन में पड़ा  
हुआ। ३. जिसके लिए कोई रोक हो  
४. निर्धारित। ठहराया हुआ। स्थिर।  
सटा हुआ। जुड़ा हुआ।

बद्धकोठ-सज्ञा पु० मल अच्छी तरह न  
निकलने का रोग। कब्ज।

बद्धपरिकर-वि० कमर बांधे हुए। तैयार।  
कटिबद्ध।

बद्धमुटि-सज्ञा स्त्री० बंधी हुई मुट्ठी।  
वि० कजूस।

बद्धमूल-वि० दृढ़। स्थिर।

बद्धशिल-वि० बंधी शिखावाला।

सज्ञा पु० शिशु।

बद्धाजलि-वि० जो हाथ जोड़े हुए हो।

बद्धी-सज्ञा स्त्री० १ बांधने या बसने की  
वस्तु। डोरी। रस्सी। तसमा। २ चार  
लडों का गले में पहनने का एक गहना।

बध-सज्ञा पु० हत्या। जान से मारना।

बधक-सज्ञा पु० बध करनेवाला।

बधत्र-सज्ञा पु० अस्थ।

बधना-क्रि० सं० मार डालना। हत्या करना।  
बध करना।

सज्ञा पु० गड़ुआ। टोटीदार लोटा। मुसल-  
मानों का जल-पात्र।

बघाई-सज्ञा स्त्री० १. किसी शम अवसर पर  
आनन्द प्रकट करनेवाला वचन या संदेश।

शुभकामना। साधुवाद। भुवारकवाद।

२ बृद्धि। ३. वदती। मंगलाचार। मंगल  
अवसर का गाना-बजाना। ४. आनंद।

मंगल। उत्सव।

बघाना-क्रि० सं० बध कराना।

बघावना, बघवार-सज्ञा पु० दे० "बघावा"।

बधावा-संज्ञा पु० १. बधाई। मंगलाचार। शुभ-अवसर पर गाना-बजाना। २. संवधियाँ या इष्ट-मित्रों के यहाँ से मंगल-अवसरो पर मिलनेवाला उपहार।  
 बधिक-संज्ञा पु० १. बध करनेवाला। हत्योरा। २. जल्दोद। गहेलिया।  
 बधिया-संज्ञा पु० वह पशु (बैल आदि), जिसका अंडकोश निकाल दिया गया हो। आसता। नपुंसक चीपाया।  
 बधियाना-क्रि० स० बधिया करना।  
 बधिर-संज्ञा पु० जो कान से न सुन सकता हो या बहुत कम सुनता हो। बहरा।  
 बधिरता-संज्ञा पु० बहरापन।  
 बधू-संज्ञा स्त्री० वह। पुत्र की स्त्री। पतोहू।  
 बधूटी-संज्ञा स्त्री० १ पुत्र की स्त्री। पतोहू। २. नई आई हुई बहू। सुहागिन स्त्री।  
 बध्या-संज्ञा स्त्री० दे० "बधाई"।  
 संज्ञा पु० दे० "बधावा"। दे० "बधिक"।  
 बध्य-वि० मार डालने के योग्य।  
 बन-संज्ञा पु० १. जंगल। २. समूह। ३. पानी। ४. बगीचा। वाग।  
 संज्ञा स्त्री० सजधज। बाना। वेप।  
 मुहा०—वन ठन के=सजधजकर। शृंगार कर। वन पडना=१. सुघरना। २. निभना। निपटना।  
 बनकटा-संज्ञा पु० बाहर सूखा हुआ गोबर।  
 बनक\*—संज्ञा स्त्री० १. सजधज। सजावट। बनावट। वेप। बाना। २. वन की उपज।  
 बनकटा-वि० जंगली।  
 बनकर-संज्ञा पु० जंगल में होनेवाले पदार्थों अर्थात् लकड़ी या घास आदि पर लगने-वाला कर।  
 बनखंड-संज्ञा पु० जंगली प्रदेश।  
 बनखंडी-संज्ञा स्त्री० १. वन का कोई भाग। २. छोटा-सा वन।  
 संज्ञा पु० वन में रहनेवाला। बनवासी।  
 बनघर-संज्ञा पु० १. जंगल में रहनेवाला आदमी। २. जंगली पशु।  
 बनघारी-वि० वन में घूमने या रहने-वाला। जंगली जानवर।

बनज-संज्ञा पु० जल से उत्पन्न वस्तु। कमल आदि। वन में उत्पन्न फल-फूल आदि।  
 बनजात-संज्ञा पु० कमल। जल या वन में उत्पन्न।  
 बनजारा-संज्ञा पु० १. बैलों पर माल लादकर बेचने के लिए एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश को ले जानेवाला व्यापारी। टेंडिया। बजारा। २. व्यापारी। सोदागर। पहले समय में इस प्रकार का व्यापार करनेवाली एक जाति।  
 बनजी\*—संज्ञा पु० १ व्यापार। रोजगार। २. व्यापारी।  
 बनज्योत्सना-संज्ञा स्त्री० माधवी लता।  
 बनत-संज्ञा स्त्री० १. रचना। बनावट। २. मेल। सामंजस्य।  
 बनद\*—संज्ञा पु० बादल।  
 बनदाम-संज्ञा स्त्री० दे० "बनमाता"।  
 बनदेयी-संज्ञा स्त्री० किसी वन की अधिष्ठात्री देवी।  
 बनना-क्रि० अ० १ रचा जाना। तैयार होना। काम में आने के योग्य होना। २. जैसा चाहिए, वैसा होना। ३. रूपान्तरित हो जाना। ४ भाव या संबंध में अन्तर हो जाना। कोई विशेष पद, मर्यादा या अधिकार प्राप्त करना। अच्छी या उन्नत दशा में पहुँचना। ५ वसूल होना। प्राप्त होना। ६. मरम्मत होना। दुरुस्त होना। ७ सम्भव होना। हो सकना। पूरा होना। निभना। समाप्त होना। ८ पटना। भिन्नता या मेल होना। ९. अच्छा, सुंदर या स्वादिष्ट होना। १०. सुयोग मिलना। अवसर मिलना। ११. रूप धारण करना। १२. हँसी करना। १३. बेवकूफ बन जाना। १४. अपने को योग्य या गम्भीर दिखाना। १५. सजना। शृंगार करना।  
 मुहा०—बना रहना=जीता रहना। संसार में जीवित रहना। उपस्थित रहना।  
 बननि\*—संज्ञा स्त्री० १. बनावट। २. बनाव-सिगार।  
 बनपति-संज्ञा पु० सिंह।  
 बनपय-संज्ञा पु० १. समुद्र। २. जंगल का

प्यौर का सबाधन। ३ जमीन्दार, रईस  
या उँगो पेटे को पुनारने का शब्द।  
ययुई-सज्ञा स्त्री० बेटा। छोटी नतद।  
ययुर या ययूल-गज्ञा पु० पाँडेदार पेट।  
ययूला-गज्ञा पु० १ दे० "ययूना"। ययण्डर।  
२ चुनवुना। ३ एक प्रकार का फोडा।  
यवेसिया-सज्ञा पु० गप्पी।  
यवेसी-गज्ञा स्त्री० दे० "बवामीर"।  
ययू-सज्ञा पु० दे० "वावू"।  
यभूत-सज्ञा स्त्री० १ दे० "भभूत"। २  
दे० "विभूति"।  
यम-गज्ञा पु० [अथे० याम्य] १ विस्फोटक  
पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना गोला।  
२ शिव के उपासका का "यम", "यम"  
शब्द। ३ यमी, एवमा आदि में आगे की  
ओर लगा हुआ सवा वाम, जिसके साथ  
घोड़े जोत जाते हैं।  
मुहा०-यम बजना=लड़ाई में लाठी या अस्त्र  
चलना। यम बोलना या बोल जाना=  
सन्निध, धन आदि की समाप्ति हो जाना।  
तुट न रह जाना।  
यमवन्ता-क्रि० अ० १ बहुत देखी हुई।  
योग हुई। २ क्रोध में जोर से बोलना।  
यमवल्-सज्ञा स्त्री० शोरगुल लड़ाई।  
यमना+क्रि० अ० स० यमन करना। कें करना।  
यमपुलिस-सज्ञा पु० दे० "यपुलिस"।  
यमवाज-सज्ञा पु० शत्रुता पर यम के गोले  
फेंकनेवाला व्यक्ति।  
यमवाजी-सज्ञा स्त्री० गोलाबारी करना।  
बाग फेंकना।  
यममार-वि० यम मारनेवाला।  
सज्ञा पु० शत्रुओं पर यम गोले फेंकनेवाला  
हवाई जहाज।  
यमवाबला-क्रि० वि० [फा०] मुँवाबले में।  
सुमध। विरुद्ध।  
यमजिय-क्रि० वि० [फा०] अनुसार। मुता-  
विक। अनुकूल।  
यमहूनी-सज्ञा स्त्री० १ एक लाल, पतला-  
कीड़ा। २ बिलनी। आँख की पलक पर  
की फुसी।  
ययड-सज्ञा पु० हाथी।

ययन+क्रि०-गज्ञा पु० यचन।  
ययना+क्रि०-वि० म० १ दे०  
ययन करना। पहना।  
सज्ञा पु० दे० "यना"।  
ययनी+क्रि०-वि० बोलनेवाली।  
यमा-गज्ञा पु० १ गीतों के आरार और  
का एक पक्षी। २ अनाज, तीनों का नाम  
करनेवाला।  
ययाई-सज्ञा स्त्री० तीलाई।  
ययान-सज्ञा पु० [फा०] १ ययन। वर्णन।  
जिज्ञासा। विवरण। वृत्तांत। २ अशक्त में  
दी जानेवाली श्रवाही।  
ययाना-सज्ञा पु० पेशगी। खरीदी हुई वस्तु  
के मूल्य या किसी कार्य की मजदूरी का  
पुछ अतः अग्रिम देना।  
ययार, ययारि+क्रि०-सज्ञा स्त्री० वायु। हवा।  
पवन।  
ययारा+क्रि०-सज्ञा पु० हवा का शान। तूफान।  
ययारी-सज्ञा स्त्री० दे० "व्यालू", "ययारि"।  
ययाला+क्रि०-सज्ञा पु० धरोखा। दीवार में का  
छद, जिससे शीकर बाहर की ओर की  
वस्तु देखी जा सके। बाला। ताख के गड में  
तोपी की लुगाने का स्थान। पटाव के नीचे  
का खाली स्थान।  
ययालिस-सज्ञा पु० ४२ की सख्या।  
४२ का आन्दोलन-सन् १९४२ के अगस्त  
महीने में भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद  
के विरुद्ध किया गया विद्रोह, जो ९ अगस्त  
'४२ की महात्मा गांधी तथा अन्य  
नेताओं की गिरफ्तारी के बाद शुरू  
हुआ था।  
ययासी-सज्ञा पु० अस्ती और दो। ८२।  
ययय-सज्ञा पु० १ बख्तर। कवच। २ एक  
वृक्ष।  
ययरा-सज्ञा पु० छत पाटने की लकड़ी या  
पटिया।  
यय-सज्ञा पु० १ वह, जिसका विवाह होता  
हो। ब्रूहा। पति। दे० "वर"। २ आशीर्वाद-  
सूचक वचन। वरदान। आशिष। ३ मनो-  
रथ। ४ सिद्धि।  
वि० १ श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २ शक्ति।

बल। ३ घट-युक्त। बरगद। ४ रेखा।  
लकीर। ५. पूरा। पूर्ण (आशा)।  
\*अव्य० वरन्। बलिक। ऊपर।  
मुहा०—वर आना या पाना=बढ़कर  
निकलना। तुलना में अच्छा ठहरना।  
वर स्वीचना=१ किसी विषय में बहुत  
दृढ़ता सूचित करना। २ हठ करना।  
वरई—सज्ञा पु० [स्त्री० वरइम] तमोली।  
पान पैदा करने या बेचनेवाला।  
वरकत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वृद्धि। बढ़ती।  
याहुष्य। २ लाभ। फायदा। धन-दीलत।  
३ कृपा। प्रसाद।  
वरकती—वि० वरकतवाला। वृद्धि करने-  
वाला। वृद्धि-सम्बन्धी।  
वरकना—क्रि० अ० १ बुरा कार्य न होने  
पाना। निवारण होना। २ अलग रहना।  
दूर रहना। हटना। बचना।  
वरकरार—वि० [फा०] ज्या का त्यागना  
रहना। कायम। मौजूद।  
वरकनार्—क्रि० अ० १ कोई बुरी बात न  
होने देना। २ निवारण करना। बचाना।  
३ बहलाना। फुसलाना। ४ बहलाना।  
पीछा छुड़ाना।  
वरप्ता—सज्ञा स्त्री० दे० 'वर्षा'।  
वरखाना—क्रि० स० वरसाना।  
वरखास्त—वि० [फा०] जो नीचरी से हटा  
दिया गया हो। पदच्युत। जिसकी समाप्ति  
कर दी गई हो। विसर्जित।  
वरखिनाफ—क्रि० वि० विरुद्ध।  
वरगद—सज्ञा पु० पीपल की तरह का एक  
यहूत वृक्ष पड़। घट-युक्त।  
वरछा—सज्ञा पु० [स्त्री० वरछी] भाला।  
नागदार हथियार।  
वरछेन—सज्ञा पु० भाला बर्दार। बरछा चलाने-  
वाला।  
वरजन—क्रि० अ० पजन। मना करना।  
रोना। निषेध करना।  
वरजनि—सज्ञा स्त्री० वर्जन। मनाही।  
निषेध। रोक।  
वरजवान—वि० [फा०] जो जवानों याद  
हो। वृद्ध।

वरजो—वि० [फा०] प्रबल। बलवान्। जवर-  
दस्त। अत्याचारी। बल प्रयोग करनेवाला।  
क्रि० वि० बलपूर्वक। जवरदस्ती।  
वरजोरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] बलप्रयोग।  
जवरदस्ती।  
क्रि० वि० जवरदस्ती से। बलपूर्वक।  
वरत—सज्ञा पु० दे० 'व्रत'।  
वरतन—सज्ञा पु० पान। भाँडा। वासन।  
मिट्टी या धातु आदि की बनी वस्तु,  
जिसमें खाने-पीने की वस्तु रख सकें।  
वरतना—क्रि० अ० व्यवहार करना। बरताव  
करना।  
क्रि० स० काम में लाना। इस्तेमाल करना।  
वरतरफ—वि० किनारे। एक ओर। अलग।  
नौकरी से छुड़ाया हुआ। बरखास्त।  
वरताना—क्रि० स० बाँटना। भाग लगाना।  
वरताव—सज्ञा पु० व्यवहार। आचरण।  
वरद—सज्ञा पु० १ दे० 'वद'। बँल। २ दे०  
'वरद'। वरदान देनेवाला।  
वरदान—सज्ञा पु० दे० 'वरदान'। आशीर्वाद।  
वरदानार्—क्रि० स० गाय, बकरी, घोड़ी आदि  
पशुआ या उनकी जाति के नर-पशुआ  
से संयोग करना। जोड़ा खिलाना।  
क्रि० अ० गाय, बकरी, घोड़ी आदि पशुआ  
या अपनी जाति के नर पशुआ से जोड़ा  
खाना।  
वरवार—वि० [फा०] १ डोलनेवाला। ले  
जानेवाला। बहुत करनेवाला। धारण करने-  
वाला। २ माननेवाला। मानन करेवाला।  
वरदाश—सज्ञा स्त्री० [फा०] सहन करने  
की क्रिया या भाव। सहन।  
वरघ या वरघा—सज्ञा पु० बँल। बर्द।  
वरघाना—क्रि० स०, अ० दे० 'वरदाना'।  
वरन—सज्ञा पु० दे० 'वर्ण'।  
वरनन—सज्ञा पु० दे० 'वर्णन'।  
वरनना—क्रि० स० वर्णन करना। बयान  
करना। बताना करना।  
वरना—क्रि० स० १ बर या बरू के रूप में  
ग्रहण करना। स्वीकृति। २ चुनना या  
निर्वाचन करना। ३ दाग देना।  
क्रि० अ० दे० 'जवना'।

प्यार का संवोधन । ३ जमादार, रईस  
का उगले घंटे को पुकारने का शब्द ।

बर्ह-गंगा स्त्री० घंटी । छोटी गजद । १.

बर्ह या बर्हल-गंगा पु० घंटीदार पेड़ ।

बर्हल-गंगा पु० १ दे० "बर्हल" ४ बर्हल ।

२ चुलमुला । ३ एक प्रकार का फाँड़ा ।

बर्हलिया-गंगा पु० गणी ।

बर्हसी\*-गंगा स्त्री० दे० "बर्हसीर" ।

बर्ह-सज्ञा पु० दे० "बर्ह" ।

बर्ह-गंगा स्त्री० १ दे० "बर्ह" । २

दे० "बर्हति" ।

बर्ह-सज्ञा पु० [अग्ने० वाम्ब] १ विस्फोटक

पदार्थों में भरा हुआ लोहे का बना गोला ।

२ शिव के उपासकों का "बर्ह", "बर्ह"

शब्द । ३ बायीं, एक्का आदि में जागे की

ओर तथा हुआ सदा बाँध, जिसके साथ

घोड़े जोते जाते हैं ।

मुहा०-बर्ह बजना=लड़ाई में लाठी या अस्त्र

चलना । बर्ह बोलना या बोल जाना=

शक्ति, धन आदि की समाप्ति हो जाना ।

बुछ न रह जाना ।

बर्हना-वि० अ० १ बहुत सेसी होना ।

झींग होना । २ शीघ्र में जोर में बोलना ।

बर्हल-सज्ञा स्त्री० शीघ्रमुखा लड़ाई ।

बर्हना\*†-वि० स० बर्हना करना । कैं करना ।

बर्हलिस-सज्ञा पु० दे० "बर्हलिस" ।

बर्हवाज-सज्ञा पु० शत्रुओं पर बर्ह के गोले

फेंकनेवाला व्यक्ति ।

बर्हवाजी-सज्ञा स्त्री० गोलाबारी करना ।

बर्ह पेंचना ।

बर्हमार-वि० बर्ह मारनेवाला ।

गंगा पु० शत्रुओं पर बर्ह गोले फेंकनेवाला

हवाई जहाज ।

बर्हकाबला-क्रि० वि० [फा०] मुँहाबले में ।

गुमश । विरुद्ध ।

बर्हजिव-वि० वि० [फा०] अनुसार । मुता-

बिब । अनुकूल ।

बर्हनी-सज्ञा स्त्री० १ एक लाल, पतला

बोड़ा । २ बिलनी की आँख की पलक पर

की फुसी ।

बर्ह-सज्ञा पु० हाथी ।

बनाव-सज्ञा पु० १. बनावट। गठन। २. सजावट। ऊपरी दिखावा। शृंगार। ३. मेल-मिलाप। मित्रता। ४. युक्ति। उपाय। तरकीब।

बनावट-सज्ञा स्त्री० १. गढ़न। २. बनाने या बनाने का ढंग या भाव। ऊपरी दिखावा। आडम्बर। कृत्रिमता।

बनावटी-वि० नकली। कृत्रिम।  
बनावतुहार-सज्ञा पु० बनानेवाला। निर्माता।  
बिगड़े हुए को बनानेवाला।

बनावरि-सज्ञा स्त्री० दे० "वाणावली"।  
बनि\*†-वि० समस्त। सब। बिलकुल। पूर्ण।  
बनिक-सज्ञा पु० दे० "बणिक"। बनिपा।  
बनिक-सज्ञा पु० दे० "वाणिज्य"। व्यापार।  
लेन-देन। रोजगार। व्यापार की वस्तु।  
सीदा।

बनिजना\*†-क्रि० अ० व्यापार करना। लेन-देन करना।

क्रि० स० बखर्च करना। अपने अधीन करना।  
बनित\*†-सज्ञा स्त्री० बानक। वेप। ठाट-बाट।

बनिता-सज्ञा स्त्री० दे० "बनिता"। स्त्री।  
ओरत। पत्नी।

बनिया-सज्ञा पु० [स्त्री० बनियाइन]  
बणिक। व्यापारी। वैश्य। सीदागर।

बनियाइन-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] गजी। बुते या कमीज आदि के नीचे पहनने का एक छोटा कपड़ा।

बनिस्वन-अव्य० [फा०] अपेक्षा। मुकाबले में।

बनी-सज्ञा स्त्री० १. घाटिका। वाग। २. वन का कोई भाग। वनस्पती। ३. बुलहिन। ४. नायिका।

बनीनी-सज्ञा स्त्री० दे० "बनीनी"। वैश्य जाति की स्त्री। बनिए की स्त्री।

बनीर\*†-सज्ञा पु० बँत।

बनीठी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लाठी, जिसके दोनों सिरों पर मोल लट्ठ लगे रहते हैं (पटेबाजी या डडा)।

बनेता-सज्ञा पु० एक प्रकार का रेशम का बीड़ा।

बनीनी-सज्ञा स्त्री० बनिए की स्त्री। वैश्य जाति की स्त्री।

बनीला-वि० जंगली (पशु)।

बनीरी\*†-सज्ञा स्त्री० बर्षा के साथ गिरनेवाला - ओला।

बनीवा-वि० बनावटी।

बनात-सज्ञा स्त्री० दे० "बनात"।

बनी-सज्ञा स्त्री० वन का वह भाग, जो खेत में काम करनेवालों को दिया जाता है।

बपश या बपस-सज्ञा पु० बाप का अंश। बपौती। पंतुक धन।

बप\*†-सज्ञा पु० दे० "बाप"।

बपमार-वि० १. अपने पिता की हत्या करने-वाला। २. सबके साथ धोखा करनेवाला। ३. अन्यायी।

बपतिस्मा-सज्ञा पु० [अंग्रे० बेप्टिज्म] ईसाई धर्म का एक मुख्य संस्कार, जो नवजात बालक को नामकरण या किसी व्यक्ति को ईसाई बनने के समय किया जाता है।

बपना\*†-क्रि० स० बीज बोना।

बपु\*-सज्ञा पु० दे० "बपु"। शरीर। अवतार। रूप।

बपुख\*-सज्ञा पु० दे० "बपुस्"। शरीर। देह।

बपुरा\*†-वि० बेचारा। गरीब। कगाल। दुखिया। अनाथ।

बपौती-सज्ञा स्त्री० बाप से पाई हुई जायदाद। पंतुक सम्पत्ति।

बपा\*†-सज्ञा पु० बाप।

बफारा-सज्ञा पु० १. बाष्प। भाप। २. गरम जल या किसी औषध की भाप से रोगों के किसी अंग को सँकना।

बफीरी-सज्ञा स्त्री० माँप में पवाई हुई बरतें।

बकना-क्रि० अ० [अनु०] बमकना। उल्टे-जित होकर उच्च स्वर से बोलना।

बवर-सज्ञा पु० [फा०] १. बड़ा शेर। सिंह। २. एक तरह का मोटा कम्बल।

बबा-सज्ञा पु० दे० "बाबा"।

बधजा\*†-सज्ञा पु० [स्त्री० बधुई] १. लडका। दुन्दारा बेटा। २. नेटे या दामाद के लिए

मार्ग। दुर्गम मार्ग। मार्ग-विनोप, जिसमें जल या जगल अधिक पड़ना हो।

वनपाट-मज्ञा पु० जगली सन।

वनपाती\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "वनस्पति"।

वनपाल-सज्ञा पु० वन-रक्षक। जगल की रक्षु-वाली करनेवाला भाली।

वनप्रिय-सज्ञा स्त्री० कोयल।

वनफल-सज्ञा पु० जगली मेवा।

वनफला या वनफला-सज्ञा पु० [ फा० ] एक प्रकार की वनस्पति, जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषध के काम में आती हैं।

वनवास, वनवास-सज्ञा पु० [ वि० वनवासी ]

वन में जाकर रहना या बसना। प्राचीन काल का देश निकाल का दंड।

वनबिलाव-सज्ञा पु० बिल्ली की जाति का, पर उससे कुछ बड़ा, एक जगली जंतु। ऊदबिलाव।

वनमानुष या वनमानुस-सज्ञा पु० मनुष्य से मिलता-जुलता कोई जगली जंतु। जैसे—गोरिल्ला, चिंपंजी आदि।

वनमाला-सज्ञा स्त्री० तुलसी, कुद मदार, पारिजात और कमल, इन पाँच चीजों की बनी हुई माला। गले से पैर तक लटकने-वाली माला।

वनमालो-सज्ञा पु० १ वनमाला धारण करने-वाला। कृष्ण। विष्णु। नारायण। २ बादल।

मेघ। ३ वह प्रदेश, जिसमें घने वन हों।

वनमूर्ति-सज्ञा पु० जगली मूर्ति।

वनमूर्ति-सज्ञा स्त्री० जगली मूर्ति।

वनरक्षा-सज्ञा पु० १ जगल की रक्षुवाली करनेवाला। वन-रक्षक। २ वहलियों की एक जाति।

वनरा\*†-सज्ञा पु० दे० "वदर"। १ वर। दूल्हा। २ विवाह के समय गाय जानेवाले एक तरह के गीत।

वनराज, वनराय\*†-सज्ञा पु० १ वन का राजा। सिंह। नर। २ बहुत बड़ा पेड़।

वनरी-सज्ञा स्त्री० [ वनरा का स्त्री० ] १ दे० "वदरी"। २ दुलहिन। नववधू।

वनरह-सज्ञा पु० जगल में अपन आप हाने वाले पेड़। नमल।

वनवाई-सज्ञा स्त्री० बनाने का काम या सजदूरी।

वनवाना-त्रि० स० दूसरे से बनाने का काम करवाना।

वनवारी-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।

वनवेधा-सज्ञा पु० बनानेवाला।

वनसी-सज्ञा स्त्री० दे० "वसी"।

वनस्पली-सज्ञा स्त्री० जगल का कोई भाग। वन-खड।

वनस्पति-सज्ञा पु० दे० "वनस्पति"।

वना-सज्ञा पु० [ स्त्री० वनी ] दूल्हा। वर।

वनाइ, वनाय-क्रि० वि० विलुप्त। नितात।

अत्यन्त। भली भाँति। अच्छी तरह।

वनाउरि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "वाणावली"।

वनाग्नि-सज्ञा स्त्री० जगल में लगनेवाली आग। दावाग्नि।

वनात-सज्ञा स्त्री० [ वि० वनाती ] एक तरह का ऊनी कपड़ा।

वनाना-त्रि० स० १ रचना। तैयार करना।

२ ठीक करना। सुधारना। भरमस्त करना।

सजाना। सँवारना। ३ आधिपत्य करना।

४ किसी चीज का रूप बदलकर या ठीक

पर उसे काम में लाने लायक करना। ५

कोई पद या प्रतिष्ठा प्रदान करना या

उसका अधिकारी करना। ६ अच्छी या

उत्तम दशा में पहुँचाना। ७ किसी का

उपहास करना। किसी को इस तरह मे

मूर्खें ठहराना कि वह जल्दी समय न सके।

८ उपाजित करना, जैसे माल बेचकर

रूपये बनाता।

मुहा०—वनाकर=खूब अच्छी तरह। भली

भाँति।

वनायनत\*—सज्ञा स्त्री० विवाह-सम्बन्ध के लिए

लड़के और लड़की की जन्मपत्रियाँ का मिलान।

वनाम-अव्य० [ फा० ] नाम से। नाम पर।

नाम के विरुद्ध। जैसे मुकदमे में बादी

और प्रतिवादी के बीच में लिखा जाता

है—सरकार बनाम रामप्रसाद अर्थात्

रामप्रसाद पर सरकार का मुकदमा।

वनाय\*†-त्रि० वि० दे० "वनाकर"। अच्छी

तरह से। भली भाँति। पूरी तरह।

बनाव-सज्ञा पु० १. बनावट। गठन। २. सजावट। ऊपरी दिखावा। शृंगार। ३. मेल-मिलाप। मित्रता। ४. युक्ति। उपाय। तरकीब।

बनावट-सज्ञा स्त्री० १ गठन। २ बनने या बनाने का ढंग या भाव। ऊपरी दिखावा। आडम्बर। कृत्रिमता।

बनावटी-वि० नकली। कृत्रिम।

बनावनहार-सज्ञा पु० बनानेवाला। निर्माता। विगड़े हुए को बनानेवाला।

बनावरि-सज्ञा स्त्री० दे० "वाणावली"।

बनि\*†-वि० समस्त। सब। बिलकुल। पूर्ण।

बनिक-सज्ञा पु० दे० "वणिक्"। वनिया।

बनिज-सज्ञा पु० दे० "वाणिज्य"। व्यापार। लेन-देन। रोजगार। व्यापार की वस्तु। सीदा।

बनिजना\*†-त्रि० अ० व्यापार करना। लेन-देन करना।

फि० स० वश में करना। अपने अधीन करना।

बनित\*†-सज्ञा स्त्री० बानक। बेप। ठाठ-बाट।

बनिता-सज्ञा स्त्री० दे० "बनिता"। स्त्री। ओरत। पत्नी।

बनिया-सज्ञा पु० [स्त्री० बनियाइन]

वणिक्। व्यापारी। वैश्य। सौदागर।

बनियाइन-सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] गजी। कुत्ते या बभीज आदि के नीचे पहनने का एक छोटा कपड़ा।

बनित्यन-अव्य० [पा०] अपेक्षा। मुवाबल में।

बनी-सज्ञा स्त्री० १ बाटिया। बाग। २ वन का कोई भाग। वास्त्यली। †३ दुलहिन। ४ नायिका।

बनीनी-सज्ञा स्त्री० दे० "बननी"। वैश्य जाति की स्त्री। बनिए की स्त्री।

बनीर\*†-सज्ञा पु० बैत।

बनेछो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लाठी, जिसमें दोनों छिरा पर गान लट्ठ लगे रहते हैं (पट्टेवाजा का डंडा)।

बनेला-सज्ञा पु० एक प्रकार का रेशम का कपड़ा।

बननी-सज्ञा स्त्री० बनिए की स्त्री। वैश्य जाति की स्त्री।

बनला-वि० जगली (पशु)।

बनीरी†-सज्ञा स्त्री० बपों के साथ गिरनेवाला ओला।

बनीवा-वि० बनावटी।

बनात-सज्ञा स्त्री० दे० "बनात"।

बन्नी-सज्ञा स्त्री० अन्न का वह भाग, जो खेत में काम करनेवालों को दिया जाता है।

बपश या बपस-सज्ञा पु० बाप का अंश। बपीली। पैतृक धन।

बप\*†-सज्ञा पु० दे० "बाप"।

बपमार-वि० १ अपने पिता की हत्या करनेवाला। २ सबके साथ धोखा करनेवाला। ३ अन्यायी।

बपतिस्मा-सज्ञा पु० [अग्ने० वेष्टिज्म] ईसाई धर्म का एक मुख्य सस्वार, जो नवजात बालक को नामकरण या किसी व्यक्ति को ईसाई बनने के समय किया जाता है।

बपना\*†-फि० स० बीज बोना।

बपु\*-सज्ञा पु० दे० "बपु"। शरीर। अवतार। रूप।

बपुल\*-सज्ञा पु० दे० "बपुत्"। शरीर। देह।

बपुरा†-वि० बेचारा। गरीब। कगल। दुखिया। अनाथ।

बपीतो-सज्ञा स्त्री० बाप से पाई हुई जामदाद। पैतृक सम्पत्ति।

बप्पा†-सज्ञा पु० बाप।

बफारा-सज्ञा पु० १. बाष्प। भाप। २ गरम जल या किसी ओषध की भाप से रोगी के किसी अंग को गैपना।

बफौरी-सज्ञा स्त्री० भाप से पवाई हुई वरी।

बबचना-त्रि० अ० [अनु०] घमचना। उत्तेजित होकर उच्च स्तर से खेलना।

बबर-सज्ञा पु० [पा०] १. बड़ा मीर। मिह। २ एक तरह का मोटा कम्बत।

बबा-सज्ञा पु० दे० "बाबा"।

बबुआ†-सज्ञा पु० [स्त्री० बबुई] १ लट्ठा। दमारा बेटा। २ बेटे या दामाद के लिए

प्योर का नवोधन। ३. जमींदार, रईस या उसके बेटे को पुकारने का शब्द।  
 बयई-मज्ञा स्त्री० बेटा। छोटी नतद।  
 बयूर या बवल-सज्ञा पुं० काटदार पेड़।  
 बमूला-मज्ञा पुं० १. दे० "बमूला"। बवण्डर।  
 २. बलवत्ता। ३. एक प्रकार का फोड़ा।  
 बबेसिया-सज्ञा पुं० गन्गी।  
 बबेसी-मज्ञा स्त्री० दे० "बबासीर"।  
 बब्र-सज्ञा पुं० दे० "बाबू"।  
 बभूत-सज्ञा स्त्री० १. दे० "भभूत"। २. दे० "विभूति"।  
 बम-सज्ञा पुं० [अंग्रे० बाम्ब] १. विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना गोला।  
 २. शिव के उपासकों का "बम", "बम" शब्द। ३. बगी, एकका आदि में आगे की ओर लगा हुआ लंबा बाँस, जिसके साथ घोड़े जोते जाते हैं।  
 मुहा०-बम बजना=लड़ाई में लाठी या अस्त्र चलना। बम बोलना या बोल जाना=शक्ति, धन आदि की समाप्ति हो जाना।  
 बुछ न रह जाना।  
 बमकना-क्रि० अ० १. बहुत रोखी हाँकना।  
 डींग हविना। २. क्रोध में जोर से बोलना।  
 बमचख-सज्ञा स्त्री० दोरगुला लड़ाई।  
 बमना-क्रि० स० बमन करना। कौ. करना।  
 बमपुलिस-सज्ञा पुं० दे० "बपुलिस"।  
 बमबाज-सज्ञा पुं० शत्रुओं पर बम बँ गोले फेंकनेवाला व्यक्ति।  
 बमबाजी-सज्ञा स्त्री० गोलाबारी करना।  
 बम फेंकना।  
 बममार-वि० बम मारनेवाला।  
 सज्ञा पुं० शत्रुओं पर बम गोले फेंकनेवाला हवाई जहाज।  
 बमकाबल-क्रि० वि० [फा०] मुँहाबले में।  
 मुँहा। विरुद्ध।  
 बमोजब-क्रि० वि० [फा०] अनुसार। मुता-  
 विव। अनुकूल।  
 बभूनी-सज्ञा स्त्री० १. एक लाल, गेंतला-  
 कीड़ा। २. बिलनी। आँख की पलक पर  
 की फुटी।  
 बयड-सज्ञा पुं० हाथी।

बयन-क्रि०-मज्ञा पुं० बचन।  
 बयना-क्रि०-स० १. दे० "बोना"। २.  
 घणन करना। पहना।  
 सज्ञा पुं० दे० "बना"।  
 बयनी-क्रि०-वि० बोलनेवाली।  
 बया-सज्ञा पुं० १. गोरैया के आकार और रंग  
 का एक पक्षी। २. अनाज तोलने का काम  
 करनेवाला।  
 बयाई-सज्ञा स्त्री० तोलाई।  
 बयान-सज्ञा पुं० [फा०] १. बयन। घणन।  
 जिक। विवरण। वृत्तांत। २. बदलत में  
 दी जानेवाली शवाही।  
 बयाना-सज्ञा पुं० पेशगी। सरुदी हुई वस्तु  
 के मूल्य या किसी कार्य की मजदूरी का  
 कुछ अंश अग्रिम देना।  
 बयार, बयारि-क्रि०-सज्ञा स्त्री० वायु। हवा।  
 पवन।  
 बयारा-सज्ञा पुं० हवा का सोका। तूफान।  
 बयारी-सज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू", "बयारि"।  
 बयाला-सज्ञा पुं० झरोखा। दीवार में का  
 छेद, जिससे झाँककर बाहर की ओर की  
 वस्तु देखी जा सके। आला। ताख के गडें में  
 तीपा की लगाने का स्थान। पटाव के नीचे  
 का खाली स्थान।  
 बयालिस-सज्ञा पुं० ४२ की संख्या।  
 ४२ का आम्बोलन-सन् १९४२ के अगस्त  
 महीने में भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद  
 के विरुद्ध किया गया विद्रोह, जो ९ अगस्त  
 ४२ को महात्मा गांधी तथा अन्य  
 नेताओं की गिरफ्तारी के बाद शुरू  
 हुआ था।  
 बयासी-सज्ञा पुं० अस्ती और दो। ८२।  
 बरग-सज्ञा पुं० १. बस्तर। बबच। २. एक  
 पुद्ग।  
 बरगा-सज्ञा पुं० छत पाटने की लकड़ी या  
 पट्टिया।  
 बर-सज्ञा पुं० १. वह, जिसका विवाह होता  
 हो। ब्रूहा। पति। दे० "बर"। २. आशीर्वाद-  
 सूचक वचन। वरदान। आशिष। ३. मनो-  
 रथ। ४. सिद्धि।  
 वि० १. श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा। २. शक्ति।

वल। ३ वट-वृक्ष। वरगद। ४ रेखा।  
 लकीर। ५. पूरा। पूर्ण (आशा)।  
 \*अव्य० वरन्। वल्कि। ऊपर।  
 मुहा०—वर आना या पाना=बढ़कर  
 निकलना। तुलना में अच्छा ठहरना।  
 वर स्वीचना=१ \* किसी विषय में बहुत-  
 दृढ़ता सूचित करना। २ हठ करना।  
 वरदी—सज्ञा पु० [स्त्री० वरद्वन] तमोली।  
 पान पैदा करने या बेचनेवाला।  
 वरकत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वृद्धि। बढ़ती।  
 वाहुल्य। २ लाभ। फायदा। धन-दीलत।  
 ३ कुपा। प्रसाद।  
 वरकती—वि० वरकतवाला। वृद्धि करने-  
 वाला। वृद्धि-सम्बन्धी।  
 वरकना—क्रि० अ० १ बुरा कार्य न होने  
 पाना। निवारण होना। २ अलग रहना।  
 दूर रहना। हटना। बचना।  
 वरकरार—वि० [फा०] ज्यों का त्यों बना  
 रहना। कायम। मौजूद।  
 वरकाना—क्रि० अ० १ कोई बुरी बात न  
 होने देना। २ निवारण करना। बचाना।  
 ३ बहलाना। फुसलाना। ४ बहवाना।  
 पीछा छुड़ाना।  
 वरला—सज्ञा स्त्री० दे० "वर्षा"।  
 वरलाना—क्रि० स० वरमाना।  
 वरलास्त—वि० [फा०] जो नीकरी से हटा  
 दिया गया हो। पदच्युत। जिसकी समाप्ति  
 कर दी गई हो। विरजित।  
 वरलिकाफ—क्रि० वि० विरुद्ध।  
 वरगद—सज्ञा पु० पीपल की तरह का एक  
 बहुत बड़ा पत्र। वट-वृक्ष।  
 वरछा—सज्ञा पु० [स्त्री० वरछी] भाला।  
 नौजदार हथियार।  
 वरज्ज्वल—सज्ञा पु० भाला बर्दार। वरछा चलाते-  
 वाला।  
 वरजन—क्रि० अ० वजन। मना करना।  
 रोचना। निषेध करना।  
 वरजनि—क्रि० अ० वजन। मनाही।  
 निषेध। रोक।  
 वरजान—वि० [फा०] जा जयानी याद  
 हो। वटवृक्ष।

वरजोद—वि० [फा०] प्रबल। बलवान्। जबर-  
 दस्त। अत्याचारी। बल प्रयोग करनेवाला।  
 क्रि० वि० बलपूर्वक। जबरदस्ती।  
 वरजोरी—क्रि० अ० सज्ञा स्त्री० [फा०] बलप्रयोग।  
 \* जबरदस्ती।  
 क्रि० वि० जबरदस्ती से। बलपूर्वक।  
 वरत—सज्ञा पु० दे० "व्रत"।  
 वरतन—सज्ञा पु० पात्र। भाँडा। बासन।  
 मिट्टी या धातु आदि की बनी वस्तु,  
 जिसमें खाने-पीने की वस्तु रख सकें।  
 वरतना—क्रि० अ० व्यवहार करना। वरताव  
 करना।  
 क्रि० स० काम में लाना। इस्तेमाल करना।  
 वरतरफ—वि० किनारे। एक ओर। अलग।  
 नौकरी से छुड़ाया हुआ। वरतास्त।  
 वरताना—क्रि० स० बाँटना। भाग लगाना।  
 वरताव—सज्ञा पु० व्यवहार। आचरण।  
 वरद—सज्ञा पु० १ दे० "वर्द"। बँल। २ दे०  
 "वरद"। वरदान देनेवाला।  
 वरदान—सज्ञा पु० दे० "वरदान"। आशीर्वाद।  
 वरदाना—क्रि० स० गाय, बकरी, घोड़ी आदि  
 पशुओं का उनकी जाति के नर-पशुओं  
 से संयोग करना। जोड़ा मिलाना।  
 क्रि० अ० गाय, बकरी, घोड़ी आदि पशुओं  
 का अपनी जाति के नर पशुओं से जोड़ा  
 खाना।  
 वरदार—वि० [फा०] १ डोनेवाला। ले  
 जानेवाला। वहन करनेवाला। धारण करने-  
 वाला। २ माननेवाला। पालन करनेवाला।  
 वरदान—सज्ञा स्त्री० [फा०] सहन करने  
 की क्रिया या भाव। सहन।  
 वरध या वरधा—सज्ञा पु० बँल। वर्द।  
 वरधाना—क्रि० स०, अ० दे० "वरदाना"।  
 वरन—सज्ञा पु० दे० "वर्ण"।  
 वरनन—क्रि० अ० सज्ञा पु० दे० "वर्णन"।  
 वरनना—क्रि० अ० स० वर्णन करना। बयां  
 करना। बरतान करना।  
 वरना—वि० ग० १ ब० या वष० व रूप में  
 प्रत्यक्ष करना। स्पष्टान। २ धुना या  
 निगूँव करना। ३ दार देना।  
 ४ क्रि० अ० दे० "जन्मा"।

बरनाल-सज्ञा पु० जहाज में से पानी निकलने का मार्ग ।

बरनाला-सज्ञा पु० दे० "परनाला" ।

बरनी-सज्ञा स्त्री० दे० "बरनी" । पलकों के अग्रभाग पर के बाल ।

बरनेत-सज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति ।

बरफ-संज्ञा स्त्री० दे० "बर्फ" ।

बरफानी-वि० [फा०] जिसमें अथवा जिस पर बरफ हो (देश, पर्वत, मैदान आदि) ।

बरफी-सज्ञा स्त्री० खोआ और चीनी से बनाई जानेवाली एक प्रसिद्ध मिठाई ।

बरवट\*†-वि० १ बलवान् । शक्तिशाली ।

२ उड़्ड । ३ प्रचंड । प्रतापी ।

बरवट\*-क्रि० वि० दे० "बरवस" ।

बरवस-क्रि० वि० १ बलपूर्वक । हठात् ।

जबरदस्ती । अपने आप । जैसे बरवस आँसू निकल आए । २ व्यर्थ ।

बरबाद-वि० [फा०] नष्ट । चोपट । नाश । तबाह ।

बरबादी-सज्ञा स्त्री० [फा०] नाश । तबाही । खराबी ।

बरम\*-सज्ञा पु० जिरह बक्तर । कवच ।

बरमा-सज्ञा पु० [स्त्री० बरमी] लकड़ी आदि में छेद करने का लोह का एक औजार । दे० "बर्मा" ।

बरमी-सज्ञा पु० बर्मा देश का निवासी ।

सज्ञा स्त्री० बर्मा देश की भाषा ।

वि० बर्मा-संबंधी । बर्मा देश का ।

बरम्हा-सज्ञा पु० दे० "ब्रह्मा" ।

बरम्हाना\*†-क्रि० स० (ब्राह्मण का) किसी को आशीर्वाद देना ।

बरम्हाव\*†-सज्ञा पु० १ ब्राह्मणत्व । २ ब्राह्मण का आशीर्वाद ।

बरवट-सज्ञा स्त्री० दे० 'तिल्ली' । पिन्ही । प्लीहा (रोग) ।

बरव-सज्ञा पु० १९ मात्राभा का एक छंद ।

बरपना\*†-क्रि० अ० दे० "बरसना" ।

बरपा\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "बर्पा" ।

बरपासन\*†-सज्ञा पु० एक वष की भोजन-सामग्री ।

बरस-सज्ञा पु० दे० "वर्ष" । साल ।

बरसाण्ड-सज्ञा स्त्री० वर्षाण्ड । जन्म-दिवस । सालगिरह । जन्मदिवस के उपलक्ष का उत्सव ।

बरसना-क्रि० स० १ वर्षा होना । पानी गिरना । २ वर्षा के जल की तरह ऊपर से गिरना । ३ अधिक मात्रा में चारा ओर से आना । शलकना । प्रवट होना । ४. दाएँ हुए गल्ले का इस प्रकार हवा में उड़ाया जाना, जिसमें दाना अलग और भूसा अलग हो जाय । ओसाया जाना ।

मुहा०—बरस पड़ना=अति क्रुद्ध होकर डाँटने-डपटने लगना ।

बरसाइत†-सज्ञा स्त्री० जेठ बंदी अमावस । (इस दिन स्त्रियाँ बट-सावित्री का पूजन करती हैं) ।

बरसाऊ-वि० बरसनेवाला ।

बरसात-सज्ञा स्त्री० वर्षा ऋतु । वर्षा-नाल ।

बरसाती-वि० बरसात का । वर्षा ऋतु-संबंधी ।

सज्ञा पु० एक प्रकार का बपड़ा, जिस वर्षा के समय पहन लेने से शरीर नहीं भीगता ।

बरसाना-क्रि० स० १ वर्षा करना । २ वर्षा के जल की तरह गिराना । ३ अधिक सख्या या मात्रा में चारा ओर से प्राप्त करना । ४ दाएँ हुए अनाज को इस प्रकार हवा में गिराना, जिससे दान अन्य ओर भूसा अलग हो जाय । डाली देना । ओसाना ।

बरसी-सज्ञा स्त्री० मृतक का वापिक श्राद्ध ।

बरसीही†-वि० बरसनेवाला ।

बरसीडो, बरसीडो-सज्ञा स्त्री० १ वापिक घर । सालाना महसूल । २ वापिक वृत्ति ।

बरहा-सज्ञा पु० [स्त्री० बरही] १ खेतों में सिंचाई के लिए बनी हुई छोटी नाली ।

२ पम्पों के चलने की भूमि । ३ माटा रस्ता । पुरवट का रस्ता । ४ मोर ।

मयूर । ५ मयूर तिला ।

बरहापीड\*†-सज्ञा पु० मोर-मुकुट । मोर के परों से बना हुआ मुकुट ।

बरेली-सज्ञा पु० १. मयूर। मोर। २. साही नाम का जतु। ३. मुर्गी।

सज्ञा स्त्री० १. सतान उत्पन्न होने के बारहवें दिन होनेवाली क्रियाएँ। २. मोटा रस्ता। ३. जलाने की लकड़ी आदि का भारी बोझ।  
बरेलीमुख\*†-सज्ञा पु० १. देवता। २. अग्निमुख।

बराडा-सज्ञा पु० दे० "बराभदा"।

बराडी-सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] बाण्डी। एक प्रकार की शराब।

बरा-सज्ञा पु० १ उजड़ की पीसी हुई दाल का बना हुआ एक पकवान। २ बड़ा। बाँह पर पहनने का एक आभूषण। ३ बरगद। बट-बूझ।

बराक-सज्ञा पु० १ शिव। २ युद्ध।  
वि० १ शौचनीय। २ अधम। नीच। ३ बेचारा। दुखिया।

बराह-सज्ञा स्त्री० बौडी।

बरात-सज्ञा स्त्री० बरपाशा। विवाह की यात्रा। बर-पक्ष के लोग, जो विवाह के समय बर के साथ आते हैं।

बराती-सज्ञा पु० बरात में बर के साथ जानेवाले।

बरात-वि० अ० प्रसंग पर भी कोई बात न कहना। अलग करना। बचाना। परहेज करना। रक्षा करना। हिफाजत करना।  
क्रि० स० चुनना। छोटाना। खेत में पानी देना।  
बराबर-वि० समान। तुल्य। समतल।

क्रि० वि० १ लगातार। निरंतर। २ एक ही पक्ष में। एक माय। ३ साथ-साथ।  
मुहा०-बराबर करना=समान या समाप्त कर देना।

बराबरी-सज्ञा स्त्री० १ बराबर होने की दिया या भाव। समानता। २ तादृश्य। साम्य। मुराबला।

बराबर-वि० [पा०] १ निरंतर वातर या सामने आया हुआ। २ बोरी गई या टिपाई हुई बरफ, जो गहो में मौजवर पिघाली जाए।

बराभदा-सज्ञा पु० [पा०] दास्ता। ओछाग। दास्ता। टण्डरी। बरपडा।

बरायत-सज्ञा पु० सोहे का छस्ला, जो व्याह के समय बर के हाथ में पहनाया जाता है।

बराव-सज्ञा पु० 'सयम'। रोक। बचाव। परहेज।

बराह-सज्ञा पु० १. दे० "बराह"। सूवर। २ विष्णु का तीसरा अवतार।

बरिया\*-वि० बलवान्। बली।

बरियाई†-क्रि० वि० बलपूर्वक। बलात्। सज्ञा स्त्री० बलवान् होने का भाव।

बरियार-वि० बली। बलवान्। प्रभावशाली।

बरिस†-सज्ञा पु० दे० "बरे"। साल।

बरी-सज्ञा स्त्री० १. बटी। गोल टिकिया। २ बड़ी। उर्द, मूँग या बेसन की पिट्टी की छोटी-छोटी टिकियाँ। ३ एक प्रकार का पकवान, जो बर के यहाँ से हुलहिन के घर जाता है। ४ एक घास।

वि० छटा हुआ। मुक्त। बचा हुआ। दे० "बली"।

बरीस†-सज्ञा पु० दे० "बरे"।

बरीसना-क्रि० अ० दे० "बरसना"।

बर†-अव्य० भले ही। चाहे। बल्कि। बरन्।

बरआ†-सज्ञा पु० १ ब्रह्मचारी। २ ब्राह्मण-कुमार। ३ उपनयन-मरनार। जनेऊ। ४. मूँज, जिससे डलिया आदि बनाई जाती है।

बर†-अव्य० दे० "बर"।

बरनी-सज्ञा स्त्री० पलकों के आगे के बाल। चरनी।

बरह-सज्ञा पु० दे० "बरह"।

बरडा-सज्ञा पु० १ लकड़ी का मोटा गोल लट्ठा, जो तपरेल या छाजन की लबाई के बल रहता है। २ छाजन या तपरेल के मध्य या सवने ऊँचा भाग। धरन। यँरी।  
बरडी-सज्ञा स्त्री० दे० "बरडा"। बँरी। धरन।

बरे†-वि० वि० १ जोर से। बलपूर्वक। २ जबरदस्ती। ३ ऊँचे स्वर से।

अव्य० १ बरले में। २ दान्ते। वि०। हेतु।  
बरेली-सज्ञा स्त्री० १ यह पर पानी का एक गहा। २ विनाह-अवध के लिए बर या बला देना। विवाह का निश्चय।

धरेज-सज्ञा पु० पान वा खेत या बगीचा ।  
 पनवाडी । पानु वा भीटा या धरेजा ।  
 धरेठा-सज्ञा पु० [ स्त्री० धरेठिन ] धोरी ।  
 धरेत या धरेठा-सज्ञा पु० मोटा रस्सा ।  
 धरेथो-सज्ञा पु० चरवाहा ।  
 धरेथो-सज्ञा स्त्री० दे० "धरेथी" ।  
 धरोक-सज्ञा पु० १ कन्यापक्ष स वरपक्ष को  
 विवाह-सवध पक्का करने के लिए दिया  
 जानेवाला द्रव्य । धरेच्छा । फलदान ।  
 \*२ सेना ।  
 धि० वि० बलपूर्वक । जबरदस्ती ।  
 धरोठा-सज्ञा पु० १ डोहोड़ी । धोरी । २ बैठक ।  
 ३ ज्वार आदि का ढठल ।  
 मुहा०-धरोठे का चार=द्वारपूजा । द्वारा-  
 चार ।  
 धरोह\*-वि० दे० "धरोह" ।  
 धरोह-सज्ञा स्त्री० वरगद के पेड़ के ऊपर की  
 डालियों से नीचे की ओर लटकनेवाली  
 शाखा, जो जमीन पर जाकर जम जाती है ।  
 वरगद की जटा ।  
 धरोठा-सज्ञा पु० दे० "धरोठा" ।  
 धरीनी-सज्ञा स्त्री० दे० "धरनी" ।  
 धरीरो-सज्ञा स्त्री० बडी या धरी नाम का  
 पकवान ।  
 धर्छा, धर्छो-सज्ञा पु० दे० "धरछा" । भाला ।  
 धस्त्र-विशेष ।  
 धर्जना-क्रि० सं० दे० "धर्जना" । मना करना ।  
 धर्णना-क्रि० सं० धर्जन करना । ध्यान  
 करना ।  
 धर्तना-क्रि० सं० दे० "धरतना" । व्यवहार  
 करना ।  
 धर्तवि-सज्ञा पु० व्यवहार । आचरण ।  
 धशस्त-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] सहन ।  
 धर्ता धर्दे-सज्ञा पु० बेल ।  
 धर्न\*-सज्ञा पु० दे० "धर्ण" ।  
 धर्क-सज्ञा स्त्री० १ पाला । हिम । तुपार ।  
 ठंडक के कारण हवा में मिली हुई भाप का  
 जमा हुआ रूप । २ कृत्रिम उपाया (मशीनी)  
 से जमाया हुआ पानी । कृत्रिम उपायो  
 से जमाया हुआ दूध या फल आदि का रस ।  
 ३ दे० "ओला" ।

धकिस्तान-सज्ञा पु० बर्फ वा मंदान या  
 पहाड़ । वह स्थान, जहाँ बर्फ ही बर्फ हो ।  
 हिमस्थल ।  
 धर्को-सज्ञा स्त्री० दे० "धरफी" ।  
 धर्वर-सज्ञा पु० अनार्य । असभ्य मनुष्य ।  
 जगली आदमी । अत्याचारी और निर्दय ।  
 वि० जगली । असभ्य । उद्द ।  
 धर्वरता-सज्ञा स्त्री० जगलीपन । असभ्यता ।  
 अत्याचार और क्रूरता ।  
 धर्वर-वि० [ अ० ] १. चमकीला । २ तीव्र ।  
 तेज । ३. चालाक । ४. बहुत उजला ।  
 सफेद । ५ पूर्ण अभ्यस्त । रटा हुआ । जबानी  
 याद ।  
 धर्वना-त्रि० अ० १. व्यर्थ बोलना अथवा  
 बकना । २ नींद या बेहोशी में बकना ।  
 ३ बहबहाना । ४ एँठ जाना ।  
 धर्वहट-सज्ञा पु० ध्ववाद ।  
 धर्व-सज्ञा पु० भिड़ नाम का कीड़ा । धर्व्या ।  
 धलद धलद-वि० [ फा० ] [ सज्ञा धलदी ]  
 ऊँचा ।  
 धल-सज्ञा पु० १ शक्ति । सामर्थ्य । ताकत ।  
 बूत्ता । जोर । बोल उठाने की शक्ति । २  
 सभार । आश्रय । सहारा । आसरा । बित्त ।  
 भरोसा । ३ सेना । फौज । ४. पादर्व ।  
 पहलू । ५ मरोड़ । एँठन । लपेट । फेर ।  
 सहृदय धुमाप । ६ टेढ़ापन । खम । ७  
 सिक्कन । शिकन । ८ लचक । झुकाव ।  
 मुहा०-धल घाना=१ धुमाव के साथ  
 टेढ़ा होना । कुचित होना । २ धाटा  
 सहना । हानि सहना । धल पडना = अतर  
 होना । भूल-चूक होना । सिक्कन पडना ।  
 धलकना-त्रि० अ० १ उबलना । खोलना ।  
 जोश में आना । उत्तेजित होना । उमडना ।  
 २ अपनी बड़ाई आप करना ।  
 धलकल\*-सज्ञा पु० दे० 'धलल' ।  
 धलकाना-त्रि० सं० उबालना । खोलना ।  
 उभारना । उत्तेजित करना ।  
 धलकारक-वि० धल या ताकत बढ़ानेवाला ।  
 धलवर्द्धक ।  
 धलग्राम-सज्ञा पु० [ अ० ] [ वि० धलगामी ]  
 धफ । दलेष्मा ।

बलचक्र-सज्ञा पु० राज्य। साम्राज्य। राज्य-शासन।  
 बलज-सज्ञा पु० १. शस्य। पसल। २. खेत।  
 ३. मुद्र। ४. द्वार।  
 बलजा-सज्ञा स्त्री० १. पुष्पी। २. रस्सी।  
 बलतंत्र-सज्ञा पु० शक्ति या सेना का प्रबन्ध।  
 सैनिक व्यवस्था।  
 बलदंड-सज्ञा पु० कसरत करने के लिए लकड़ी का बना हुआ एक ढाँचा।  
 बलद-सज्ञा पु० बल।  
 वि० बल देनेवाला।  
 बलदा-वि० बल देनेवाला। बलदायक।  
 बलदाज, बलदेव-सज्ञा पु० दे० "बलराम"।  
 बलदायक-वि० बल देने या बढ़ानेवाला।  
 बलप्रद।  
 बलना-क्रि० व० जलना। दहकना। लपट फैककर जलना।  
 बलप्रद-वि० बल प्रदान करनेवाला। बल देने या बढ़ानेवाला।  
 बलबलाना-सज्ञा पु० [ अनु० ] ऊँट की बोली।  
 क्रि० अ० १. उबलना। ध्वर्य बकना। २. जोश में आकर अभिमानपूर्वक बड़ी-बड़ी बातें करना।  
 बलभद्र-सज्ञा पु० बलदेवजी। बलराम।  
 बलभी-सज्ञा स्त्री० १. मकान में सबसे ऊपर वाली कोठरी। २. ऊपर का खंड। चौबारा।  
 बलभ\* या बलमा-सज्ञा पु० पति। प्रियतम।  
 दे० "बालम"।  
 बलमीक-सज्ञा स्त्री० बाँबी (दीमको की)।  
 बलघ\*—सज्ञा पु० दे० "बलय"। ककण।  
 बलराम-सज्ञा पु० कृष्णचन्द्र के बड़े भाई।  
 बलवड\*—वि० बली। बलवान्। प्रतापी।  
 बलवंत-वि० बलवान्। बली।  
 बलवत्ता-सज्ञा स्त्री० बलवान् होने का भाव। शक्तिसम्पन्नता।  
 बलवा-सज्ञा पु० [ फा० ] विद्रोह। बगावत। उपद्रव।  
 बलवाई-सज्ञा पु० विद्रोही। उपद्रवी। बलवा करनेवाला।  
 बलवान्-वि० [ स्त्री० बलवती ] १. बलिष्ठ।

बली। शक्तिशाली। मजबूत। ताकतवर।  
 २. सामर्थ्यवान्।  
 बलवीर-सज्ञा पु० बलराम के भाई श्रीकृष्ण।  
 बलशाली-वि० दे० "बलवान्"।  
 बलशोल-वि० बली। शक्तिशाली।  
 बलसूदन-सज्ञा पु० १. इन्द्र। २. विष्णु।  
 बला-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. आपत्ति। विपत्ति।  
 आफत। २. कष्ट। दुःख। ३. भूत-प्रेत या उसकी बाधा। ४. रोग। व्याधि।  
 ५. बरियारा नामक पीधा। वैद्यक के अनुसार पीधों की एक जाति। ६. पृथिवी।  
 ७. लक्ष्मी।  
 मुहा०—बला वा=अत्यंत। घोर।  
 बलाइ\*—सज्ञा स्त्री० दे० "बला"। आपत्ति।  
 दुःख। रोग।  
 बलाक-सज्ञा पु० बक। बगला। बगुला।  
 बलाका-सज्ञा स्त्री० १. बगली। २. बगलों की पवित।  
 बलाघ्न-सज्ञा पु० १. सेनापति। २. रोना का अगला भाग।  
 वि० घ्नशाली। बली।  
 बलाद्य-वि० बलवान्। बली।  
 बलात्-क्रि० वि० बलपूर्वक। जबरदस्ती।  
 बलात्कार-सज्ञा पु० किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध जबरदस्ती संभोग।  
 बलात्कृत-वि० जिसके साथ बलात्कार किया गया हो।  
 बलाधिकृत-सज्ञा पु० प्राचीन भारत में किसी राज्य के सेना विभाग का प्रधान अधिकारी और राजमंत्री।  
 बलाध्यक्ष-सज्ञा पु० सेनापति।  
 बलाय-सज्ञा स्त्री० दे० "बला"। आपत्ति। सकट।  
 बलाराति-सज्ञा पु० १. इन्द्र। २. विष्णु।  
 बलावलेप-सज्ञा पु० गर्व।  
 बलासम्-सज्ञा पु० बुद्ध।  
 बलासी-सज्ञा पु० बसना नामक पीधा।  
 बलाह-सज्ञा पु० वह घोड़ा, जिसकी गरदन और दुम पीली हो।  
 बलाहक-सज्ञा पु० बादल। मेघ।  
 बलिदम-सज्ञा पु० विष्णु।

बलि-राज्ञा पु० १. मालगुजारी। कर। राज-  
धर। २. भेंट। उपहार। पूजा की सामग्री  
या उपकरण। ३. पंच-महायज्ञों में चौथा।  
भूतयज्ञ। ४. किसी देवता के नैवेद्य का  
पदार्थ। भक्ष्य। अन्न। चढ़ावा। भोग।  
नैवेद्य। ५. देवता की चढ़ाने के लिए मारा  
जानेवाला पशु। ६. प्रह्लाद का पीत्र, जो  
देव्यों का राजा था।

सज्ञा स्त्री० सखी।

मुहा०-बलि चढ़ना=मारा जाना। बलि  
चढ़ाना=देवता के निमित्त बलिदान करना।  
बलि जाना=निछावर होना। बलिहारी  
जाना। बलि-बलि जाऊँ=मैं तुम पर निछा-  
वर हूँ।

बलिकर्म-सज्ञा पु० बलिदान।

बलित\*-वि० १ बलिदान चढ़ाया हुआ।  
मारा हुआ। हत। २ बल या सिकुड़न पडा  
हुआ।

बलिदान-सज्ञा पु० १ निछावर। प्राण-त्याग।  
२ देवता की चढ़ाने के लिए बकरा या  
किसी जीव की हिंसा।

बलिपशु-सज्ञा पु० किसी देवता की चढ़ाने  
के लिए मारा जानेवाला पशु।

बलिपुष्ट-सज्ञा पु० कौवा। काग।

बलिवर्द-सज्ञा पु० सांड।

बलिपदवदेव-सज्ञा पु० पाँच महायज्ञों में से  
चौथा महायज्ञ। इसमें गृहस्थ पवे हुए अन्न  
से एक एक ग्रास लेकर भिन्न भिन्न स्थानों  
पर रखता है। भूतयज्ञ।

बलिष्ठ-वि० बहुत बलवान्। शक्ति-  
शाली।

बलिहारना\*-क्रि० स० निछावर कर देना।  
बुर्जान कर देना। आत्मोत्सर्ग।

बलिहारी-सज्ञा स्त्री० बधाई। निछावर।  
गुर्जान।

मुहा०-बलिहारी जाना=निछावर होना।  
गुरजान जाना। बलैया लेना। बलिहारी  
लेना=बलैया लेना। प्रेम दिखाना।

बली-वि० बलवान्। शक्तिशाली। समर्थ।  
पराक्रमी।

बलीमुख\*-सज्ञा पु० बंदर।

बलीयस्-वि० [ स्त्री० बलीयसी ] बहुत अधिक  
बलवान्।

बलीयान्-वि० बली। बलशाली।

बलु\*-अव्य० "बल"।

सज्ञा पु० बल। तावत।

बलुआ, बलुवा-वि० [ स्त्री० बलुई ] जिसमें  
बालू मिला हो। रेतीला।

बलूच-सज्ञा पु० बलूचिस्तान में रहनेवाले  
मुसलमानों की एक जाति।

बलूचिस्तान-सज्ञा पु० [ फा० ] एक देश-  
विशेष जो पश्चिमो पाकिस्तान और  
अफगानिस्तान से मिला हुआ है।

बलूची-सज्ञा पु० बलूचिस्तान का निवासी।  
दे० "बलोच"।

बलूरना-क्रि० स० नोचना। खसोटना।  
सुरचना।

बलैया-सज्ञा स्त्री० बला। बलाय।

मुहा०-(किसी की) बलैया लेना=अर्थात्  
किसी का रोग या दुःख अपने ऊपर लेना।  
मंगल-कामना करते हुए प्यार करना।  
निछावर करना। बलिहारी होना।

बलबल-सज्ञा पु० दे० "बल्लल"।

बलबस-सज्ञा पु० तलछट।

बल्ल-वि० बलकारक।

बल्लि-अव्य० [ फा० ] १ अन्यथा। प्रत्युत।

इसके विरुद्ध। २ और अच्छा है। बेहतर है।

बल्लम-सज्ञा पु० १ दे० "बल्लभ"। प्रिय।

२ वति। स्वामी।

स्त्री० बल्लमी।

बल्लम-सज्ञा पु० १ भाला। बरछा। २  
सोटा। डडा। मुगहला या रघहला डडा जिसे  
लेकर चौबदार राजाजा ने आगे चलते हैं।

बल्लमट्टर-सज्ञा पु० १ स्वेच्छापूर्वक सेना  
में भरती होनेवाला। २ दे० "स्वयसेवक"।  
[ अग्ने०-चावटियर ]

बल्लमबहार-सज्ञा पु० राजा की सवारी या  
बरात के आगे बल्लम लेकर चलनेवाला।

बल्लरी-सज्ञा स्त्री० एव प्रकार की सता।

बल्लव-सज्ञा पु० १ घरवाहा। २ रतोइया।

बल्ला-सज्ञा पु० [ स्त्री० बल्ली ] १ दाह-  
तीर या डडा। २ मोटा डडा। छड।

दड। ३. नाव खेने का डंडा। ४. गेंद खेलने का डंडा। बेंट।

धल्ली-सजा स्त्री० १. छोटा बल्ला। २. लम्बा कुन्दा। लम्मा। ३. छत में लगाने की गोल मोटी लकड़ी। ४. नाव खेने का बड़ा लम्बा बाँस।

धवेंडना†-क्रि० अ० झधर-झधर घूमना। व्यर्थ घूमना फिरना।

धवडर-सजा पु० १. चक्कर वाटती हुई तेज हवा। बगूला। २. आँधी। तूफान।

धवडा\*-दे० “ववडर”।

धवधूरा\*-सजा पु० दे० “ववडर”।

धवन\*-सजा पु० दे० “धमन”।

धवना\*-क्रि० स० १. दे० “बोना”। २. बिखराना। छितराना।

क्रि० अ० छिटकना। छितरना। बिखरना। सजा पु० दे० “वामन”।

धवरना-क्रि० अ० दे० “बोरना”। आम के बृक्ष में मजरी निकलना।

धवाई-सजा स्त्री० बिवाई। पैर के तलवे का फटना। विपादिका।

धवासीर-सजा स्त्री० [अ०] एक रोग, जिसमें गुर्देन्द्रिय में मल्ले उत्पन्न हो जाते हैं और मल-त्याग के समय खून निकलता है या बहुत दर्द होता है। अर्श।

वसत-सजा पु० दे० “वसत”।

यो०-घोघा वसत=भारी मूख।

वसैना-सजा पु० एक बिड़िया।

वसनी-वि० १. वसत का। वसत-ऋतु-सबधी। २. पीले रंग का।

वसवर-सजा पु० आग। वैश्वानर।

वस-वि० [फा०] भरपूर। काफी। बहुत। यथेष्ट।

अव्य० पर्याप्त। काफी। सिर्फ। केवल।

सजा पु० १. दे० “वश”। २. [अग्ने०] लम्बो और जँघो मोटरगाड़ी।

वसन-सजा पु० दे० “वसन”

वसना-क्रि० अ० १. स्थायी रूप से रहना।

निवास करना। आबाद होना। २. निपा-

सियों से भरा पूरा होना। आनाद होना। ३. ठहरना। ठिकना। डेरा करना। बँठना।

४. सुगंधित होना। महक से भर जाना।

सजा पु० वह कपड़ा, जिसमें कोई वस्तु सपेटकर रखी जाय। वेष्टन। वेठन। धैली। मुहा०—घर बगाना=कुदुब-सहित मुख-पूर्वक रहना। गृहस्थी का बनना। घर में बसना=मुखपूर्वक गृहस्थी में रहना। मन में बसना=ध्यान में बना रहना। स्मृति में रहना।

वसनि\*†-सजा स्त्री० दे० “वसना”। निवास। रहना।

वसनी†-सजा स्त्री० सपए रखने की पतली धैली, जो कमर में बाँध ली जाती है।

वसवार-सजा पु० छोक। बंधार।

वसवास-सजा पु० १. निवास। रहना। ठिकाना। २. रहने का ढग। स्थिति। रहने की सुविधा।

वसर-सजा पु० [फा०] निर्वाह। गुजर। जीवन व्यतीत करना।

यो०-गुजर-वसर=किसी तरह से निर्वाह करना।

वसह†-सजा पु० दे० “वृषभ”।

वसाँवा-वि० बसाया हुआ। सुगंधित किया हुआ।

वसात, विसात-सजा पु० हैसियत। सामर्थ्य। ओकात।

वसाना-क्रि० स० १. वसने या रहने के लिए जगह देना। आबाद करना। बँठाना। २. रखना। ठिकाना। ठहराना।

\*क्रि० अ० १. वसना। रहना। २. महकना। दुर्गंध देना। बदबू करना। ३. वश या जोर चलना।

मुहा०-घर बसाना=गृहस्थी जमाना। मुख-पूर्वक सुकुदुब रहने का ठिकाना करना।

वसिऔरा-सजा पु० १. वर्ष की कुछ तिथियाँ, जिसमें स्त्रियाँ वासी भोजन खाती हैं। २. वासी भोजन।

वसिया†-वि० वासी। जो ताजा न हो।

वसियाना-वि० अ० वासी हो जाना। वसीकत, वसीगत-सजा स्त्री० १. धस्ती।

आयादी। २ बसने या भाव या त्रिया।

३ स्थिति। रहना।

यसीवर-वि० यसीवर। यश में बरनेवाला।

यसीकरन\*-सज्ञा पु० दे० "यसीवरण"।

यसीठ-सज्ञा पु० दूत। संदिता ले जानेवाला।

धावन।

यसीठो-सज्ञा स्त्री० दूत का काम। संदिता पहुँचाने का काम। दूतत्व।

यसीता\*†-सज्ञा पु० बसना। बरने या रहने की क्रिया या भाव। निवास।

यसीला-सज्ञा पु० [स्त्री० बसूली] लकड़ी छीलने और गडने के लिए बढई का एक औजार।

यसीथा-वि० सदा। दुर्यन्धयुक्त।

यसीरा-वि० रहने या बसनेवाला।

सज्ञा पु० १. बह स्थान, जहाँ रहकर यात्री रात बिताते हैं। टिकने की जगह। २

रात में पक्षियों के रहने का स्थान। घोसला।

३ टिकने या बसने का भाव। रहना।

मुहा०—बसेरा करना=१ डेरा करना।

ठहरना। निवास करना। २ घर बनाना।

बस जाना। बसेरा लेना=निवास करना।

रहना। बसेरा देना=आश्रय देना।

बसेरी\*-वि० निवासी। रहने या बसनेवाला।

बसैया\*†-वि० बसनेवाला।

बसोवास-सज्ञा पु० निवासस्थान। रहने का

स्थान।

यसीयो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की खड़ी।

बस्ता-सज्ञा पु० [फा०] कागज, वही या पुस्तक

आदि बाँधकर रखने का कपड़ा। बंधन।

कपड़े में बंधी हुई पुस्तकें या कागज का

छोटा गठ्ठर।

मुहा०—बस्ता बाँधना=कागज आदि समेट

कर उठाने की तैयारी करना।

बस्ती-सज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ कुछ

लोग घर बना घर रहते हैं। आबादी।

निवास।

बहूँगा-सज्ञा पु० यही बहूँगी।

बहूँगी-सज्ञा स्त्री० बोल डोलने के लिए तराजू

के आकार का एक ढाँचा। काँवर।

काँवरि।

बहूना-वि० अ० १. ठीक रास्ता छोड़कर

भूल से दूसरी ओर जा पड़ना। मार्ग-भ्रष्ट

होना। भटकना। २ ठीक लक्ष्य या स्थान

पर न जाकर दूसरी ओर जा पड़ना। धुंवना।

३ किसी की बात या भुलाने में आ जाना।

धोखा खाना। ४ किसी बात में लग जाने

के कारण धात होना। बहलना (बच्चों

के लिए)। ५ आप में न रहना। रस या मद

में खूर होना।

मुहा०—बहूकी-बहूकी बातें करना=१.

मदोन्मत्त की-सी बातें करना। २ बहुत

बड़ी-बड़ी बातें करना।

बहूकाना-क्रि० स० १ ठीक रास्ते से दूसरी

ओर ले जाना या फेरना। भुलवाना। धोखा

देना। २ लक्ष्यभ्रष्ट करना। भुलावा देना।

भ्रमाना। बातों से फुसलाना। ३ बातों

से धात करना। बहलाना।

बहूकावट-सज्ञा स्त्री० बहूकाने की क्रिया

या भाव।

बहूतोल\*†-सज्ञा स्त्री० पानी बहने की नाली।

बहन-सज्ञा स्त्री० भगिनी (भाई के लिए)।

माता की पुत्री। अपने चाचा, मामा और

बुआ की लड़की।

बहना-वि० अ० १ पानी आदि तरल वस्तुओं

का किसी ओर प्रवाहित होना। २ पानी

की धारा के साथ जाना। ३ लगातार बूँद

या धार के रूप में निचलना। ४ हवा

का चलना। ५ हट जाना। दूर होना।

६ पिघलकर निकल जाना। ७ मारा-

मारा फिरना। कुमारी होना। बिगड़ना।

आवारा होना। ८ गर्भपात होना।

अडाना (बोपायो के लिए)। ९ अधिक

मिलना। सस्ता मिलना। १० (रूपया

आदि) डूब जाना। नष्ट हो जाना।

११ लादकर ले चलना। बहून करना।

खींचकर ले चलना (गाड़ी आदि)। १२.

धारण करना। १३ उठना। चलना।

१४ निर्वाह करना।

मुहा०—बहूली गंगा में हाथ धोना=

किसी ऐसी बात से साब उठाना, जिससे सब

सोच साब उठा रहे हो।

बहनापा-सज्ञा पु० बहन का संबंध या गाता।

बहनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "बह्नि"। आग।  
[दे० "भगिनी"]।

बहनु\*-सज्ञा पु० दे० "बाहन"। सवारी।

बहनुऊ-सज्ञा पु० दे० "बहनोई"।

बहनेली-सज्ञा स्त्री० वह जिससे साथ बहन का जाता जोड़ा जाय।

बहनोई-सज्ञा पु० बहन का पति। अपने से बड़ी बहन के पति को जीजा कहते हैं।

बहरी-वि० [स्त्री० बहरी] कान से न सुननेवाला या कम सुननेवाला। बधिर।

बहराना-क्रि० स० १. ऐसी बातें करना, जिससे दुख भूल जाय और चित्त प्रसन्न हो जाय। २. बहकाना। बहलाना। फसलाना। भुलाना।

बहरिया-सज्ञा पु० अतिथि।

वि० बाहर का। अशुद्ध।

बहरियाना†-वि० स० बाहर करना। निकासना। अलग करना।

क्रि० अ० बाहर की ओर होना। अलग होना।

बहरी-सज्ञा स्त्री० [अ०] बाज की तरह का एक शिकारी पक्षी।

वि० बाहरी। बाहर का।

बहल-सज्ञा स्त्री० दे० "बहली"।

बहलाना-क्रि० अ० चित्त प्रसन्न होना या मन खुश होना। मनोरंजन होना। चिन्ता या दुख भूलकर दूसरी दिशा में मन लगाना। बहकना। भुलावे में आना।

बहलाना-क्रि० स० १. चित्त प्रसन्न करना। चिन्ता या दुख की बात भुलवाकर चित्त को दूसरी ओर लगाना। मनोरंजन करना। मनबहलाय करना। २. भुलावा देना। भुलाना। बहकाना।

बहलाव-सज्ञा पु० बहलाने की क्रिया या भाव। मनोरंजन। प्रसन्नता।

बहलिया†-सज्ञा पु० बहली हाँवनेवाला।

बहली-सज्ञा स्त्री० रथ जैसी एक छोटी बैलगाड़ी। खडखडिया।

बहल्ला†\*-सज्ञा पु० आनंद। प्रसन्नता।

बहस-सज्ञा स्त्री० [अ०] किसी विषय का

खंडन-मंडन। यादविवाद। तर्क-वितर्क। उत्तर-प्रत्युत्तर। जवाब-सवाल।

बहसना\*-क्रि० अ० बहस करना। विवाद करना। तर्क-वितर्क करना। शर्त लगाना। होड़ लगाना।

बहादुर-वि० [फा०] [सज्ञा बहादुरी] १. साहसी। २. पराक्रमी। धूरवीर।

बहादुरी-सज्ञा स्त्री० वीरता। धूरता।

बहादुराना-वि० [फा०] बहादुरी की तरह। वीरता-पूर्ण।

बहाना-क्रि० स० १. ऐसा ढालना या गिराना, जिससे चीज बह जाय। प्रचाहित करना। २. पानी की धारा में ढालना। धार के रूप में छोड़ना। ३. धाया सुचालित करना। हवा चलाना। ४. व्यर्थ व्यय करना। ५. गँवाना। खोना। फेंकना। ६. सस्ता बेचना।

सज्ञा पु० १. मतलब निकालने के लिए कही गई झूठी बात। २. किसी काम के होने या न होने का ऐसा कारण बताना, जो केवल कल्पित हो। ३. झाँसा पट्टी। हीला। मिस। नाम-मात्र का कारण। केवल कहने भर के लिए।

बहार-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. वसंत ऋतु। २. आनंद। मोज। ३. जीवन का विकास। जवानी का रंग। ४. शोभा। सौन्दर्य। सुहावनापन। रमणीयता। रौनक। ५. विकास। ६. प्रफुल्लता। ७. कोतुक। मजा। तमाशा।

बहारना†-क्रि० स० साफ करना।

बहारी†-सज्ञा स्त्री० झाड़ू।

बहाल-वि० [फा०] पूर्ववत् स्थित। ज्या का ल्यो। भला-बेगा। स्वस्थ।

बहाली-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. फिर उसी जगह या पद पर नियुक्ति। पुनर्नियुक्ति। २. बहाना। झाँसापट्टी।

बहाव-सज्ञा पु० १. बहने का भाव या क्रिया। प्रवाह। धारा। २. बहता हुआ जल आदि। वेग या प्रवृत्ति।

बहिवर-सज्ञा स्त्री० स्त्री।

बहिक्रम\*-सज्ञा पु० वयक्रम। उम्र। आयु।

बहिन-सज्ञा पु० दे० "बहिन"।

बहिन-संज्ञा स्त्री० दे० "बहन"। भगिनी।  
 बहिनापा-संज्ञा पु० बहिन का सम्बन्ध।  
 बहियाँ†\*-संज्ञा स्त्री० दे० "बाह"।  
 बाहिरण-वि० बाहरवाला। बाहरी। 'अंत-  
 रंग' का उलटा।  
 बाहिर†\*-वि० दे० "बहरा"।  
 बाहिरत†\*-अव्य० बाहर।  
 बाहिरा-वि० जो मुन न सके। बाधिर। न  
 सुनने या कम सुननेवाला।  
 बाहिराना-क्रि० सं० निकाल देना।  
 क्रि० अ० बाहर होना।  
 बाहिरांत-वि० बाहर आया या निकला हुआ।  
 अलग।  
 बाहिरांग-संज्ञा पु० दृश्य जगत्। बाहरी  
 दुनिया।  
 बाहिरेश-संज्ञा पु० बाहर का स्थान या भूमि।  
 बाहर का देश।  
 बाहिरुत-वि० जो बाहर हो। अलग। ज़दा।  
 बाहिरुमि-संज्ञा स्त्री० बस्ती या आबादी से  
 बाहरवाली जमीन।  
 बाहिरुख-वि० १. विरुद्ध। विमुख। प्रतिकूल।  
 २. उदासीन।  
 बाहिरापिका-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पहेली,  
 जिसमें उसके उत्तर का शब्द पहेली के शब्दों  
 के बाहर रहता है, भीतर नहीं। अतर्लपिका  
 का उलटा।  
 बाहिरापिण्य-संज्ञा पु० दूसरे देशों के साथ  
 होनेवाला व्यापार। (अग्ने० एकमटर्नल ट्रेड)  
 बाहिला-वि० वध्या। बाँझ (चोपायों के लिए)।  
 बाहिरत-संज्ञा पु० मुसलमानों के अनुसार  
 स्वर्ग।  
 बाहिरकार-संज्ञा पुं० [वि० बाहिरकृत]  
 निकालना। बाहर करना। हटाना।  
 बाहिरकृत-वि० बाहर या अलग किया हुआ।  
 निवाला हुआ।  
 बाहो-संज्ञा स्त्री० हिसाब-किताब लिखने की  
 पुस्तक।  
 बाहोलाता-संज्ञा स्त्री० हिसाब-किताब की  
 पुस्तक। महाजनी या हिसाब लिखने की  
 पुस्तक।  
 बाहोर-संज्ञा स्त्री० १. भीड़। जन-समूह।

२. सेना के साथ-साथ चलनेवाले, जिसमें  
 साइंस, सेवक, दूकानदार आदि रहते हैं।  
 ३. सेना की सामग्री। सैनिकों का सामान।  
 \*अव्य० बाहर।  
 बाहुता-संज्ञा पु० बांह पर पहनने का एक  
 गहना।  
 बाहु-वि० अनेक। बहुत। अधिक।  
 बाहुश-वि० बहुत बातें जाननेवाला। बड़ा  
 जानकार।  
 बाहुन-वि० १. अनेक। अधिक। २. घबेरा।  
 काफी। बस।  
 क्रि० वि० अधिक परिमाण में। ज्यादा।  
 मुहा०-बहुत अच्छा=स्वीकृति-सूचक वाक्य।  
 बहुत करके=अधिकतर। प्रायः। बहुधा।  
 अधिक संभव है। बहुत कुछ=कम नहीं।  
 गिनती करने योग्य। बहुत खूब=बाह!  
 क्या कहना है! बहुत अच्छा।  
 बाहुतका\*-वि० दे० "बहुतेरा"। बहुत से।  
 बहुतेरे।  
 बाहुतापत-संज्ञा स्त्री० अधिकता। ज्यादाती।  
 बाहुल्य। बहुलता।  
 बाहुतेरा-वि० अधिक। बहुत-सा।  
 क्रि० वि० अनेक प्रकार से। बहुत परिमाण में।  
 बाहुतेरे-वि० सख्या में अधिक। अनेक। बहुत से।  
 बाहुत्व-संज्ञा पु० अधिकता। आधिक्य।  
 बाहुर्वाशिना-संज्ञा स्त्री० बहुलता। बहुत-सी  
 बातों की समष्टि।  
 बाहुदर्शी-संज्ञा पु० अनुभवी। जिसने ससार  
 या व्यवहार की बहुत-सी बातें देखी हो।  
 बहूज। जानकार।  
 बाहुधवी-वि० एक साथ बहुत से काम अपने  
 हाथ में ले लेनेवाला।  
 बाहुधा-क्रि० वि० प्रायः। अक्सर।  
 बाहुनाद-वि० बहुत आवाज करनेवाला।  
 संज्ञा पु० शाय।  
 बाहुवल-वि० बहुत बलवान्।  
 संज्ञा पु० सिंह।  
 बाहुभाषी-वि० बहुत बोलनेवाला।  
 बाहुभुज-संज्ञा पु० वह क्षेत्र, जिसमें बहुत-सी  
 भुजाएँ या निनारे हो।  
 बाहुभुजा-संज्ञा स्त्री० दुर्गा।

बहुमत—सज्ञा पु० १ बहुत से लोगों की मिलकर एक राय । (अग्ने० मेजरिटी) २ बहुत से लोगों की अलग-अलग राय ।

बहुमृत्र—सज्ञा पु० बहुत अधिक बीर धार-  
वार पेशाव होने का रोग ।

बहुमूल्य—वि० बहुत अधिक दाम का । कीमती ।  
बड़िया ।

बहुरंगा—वि० १ चित्र-विचित्र । कई रंगों का ।  
२ मनमौजी । ३ बहुरूपधारी ।

बहुरंगी—वि० १ अनेक रंगवाला । २ बहु-  
रूपिया । ३ अनेक प्रकार के वस्त्र या चाल  
दिखानेवाला । कौतुकी ।

बहुराज—वि० अ० लीटना । वापस आना ।  
फिर मिलना ।

बहुरि\*†—कि० वि० फिर । पुन । उपरान्त ।

बहुरिया†—सज्ञा स्त्री० दुलहिन । नवबधू ।

बहुरूपिया—सज्ञा पु० तरह-तरह के रूप  
बनावर अपनी जीविका चलानेवाला ।  
अनेक रूप धारण करनेवाला । नकल करने  
वाला । स्वाँग करनेवाला ।

बहुरूपी—वि० अनेक रूप धारण करनेवाला ।  
सज्ञा पु० बहुरूपिया ।

बहुल—वि० अधिक । बहुत । प्रचुर ।

बहुलग्ना—सज्ञा स्त्री० इलायची ।

बहुलता—सज्ञा स्त्री० बहुतायत । अधिकता ।

बहुवचन—सज्ञा पु० व्याकरण की एक परि-  
भाषा, जिससे एक से अधिक वस्तुओं के  
होन का बोध होता है ।

बहुविध—वि० बहुज्ञ । अनेक विद्याएँ जानने  
वाला ।

बहुव्रीहि—सज्ञा पु० व्याकरण में छ प्रकार  
के समासा में से एक, जिसमें दो या अधिक  
पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है, वह  
किसी अन्य पद का विशेषण होता है ।

बहुभुत—वि० जिसमें अनेक विभागों से भिन्न-  
भिन्न शास्त्रों की बातें सुनी हों । अनेक  
विषयों का जानकार ।

बहुसंस्कृत—वि० गिनती में बहुत । अधिक ।  
अपणित ।

बहुंटा—सज्ञा पु० [स्त्री० बहुंटी] बाँह पर  
पहनने का एक गहना । बहुंटा ।

बहु—सज्ञा स्त्री० १ लडके की स्त्री । पतोह ।  
२ पत्नी । ३ दुलहिन ।

बहुगवा—सज्ञा पु० एक पक्षी ।

वि० आवारा । घुमकण्ड ।

बहुडा—सज्ञा पु० एक बड़ा और ऊँचा जंगली  
पेड़, जिसके फल औषध के काम में आते हैं ।

बहुरी\*†—सज्ञा स्त्री० दे० 'बहाना' । हीला-  
हवाला ।

बहुरिया—सज्ञा पु० पशु-पक्षियों को पकड़ने  
या मारने का व्यवसाय करनेवाला । चिडी-  
मार । व्याध ।

बहुरि\*†—सज्ञा पु० फेरा । चक्कर । वापसी ।  
अव्य० दे० 'बहुरि' । फिर । पुन ।

बहुरिना†—कि० स० लीटाना । फेरना । वापस  
करना । शोषाओं का हाँकना ।

बहुरि†—अव्य० पुन फिर ।

बाँ—सज्ञा पु० [अनु०] गाय अथवा बैल के  
बोलने का शब्द ।

बाँह—सज्ञा स्त्री० १ बाँह पर पहनने का  
एक गहना । २ एक प्रकार का चौड़ी का  
गहना, जो पैरों में पहना जाता है । ३ हाथ में  
पहनने की एक प्रकार की पटरी या चौड़ी  
झुडी । ४ नदी का मोड़ । ५ कमान ।  
धनुष । ६ एक प्रकार का चाकू ।

सज्ञा पु० वस्त्रता । टेढ़ापन ।

वि० टेढ़ा । तिरछा । बाँका ।

बाँकडा†—वि० बीर । साहसी ।

बाँकडी—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सुनहला  
या रपहला गोटा ।

बाँकना†—कि० स० टेढ़ा करना ।

†कि० अ० टेढ़ा होना ।

बाँकपन—सज्ञा पु० १ टेढ़ापन । २ तिरछापन ।  
छेलापन । अवबेलापन । ३ बनावट । ४  
शोभा । छवि ।

बाँका—वि० १ टेढ़ा । तिरछा । २ बहादुर ।  
३ बना-ठना । छेला ।

बाँकुर, बाँकुरा\*†—वि० १ बाँका । टेढ़ा । २  
पैना । तेज धार का । ३ चतुर । कुशल । ४  
बहादुर ।

बाँकुरी†—सज्ञा स्त्री० गोटेदार पीता ।

बाँप—सज्ञा स्त्री० [पा०] १ पुकार । चिल्लाहट

२ वह उँचा शब्द, जो गमाज का समय सूचित करने के लिए मुल्ला मसजिद में करता है। अजान। ३. प्रातःकाल का मुर्ग का शब्द।

बाँगड-सज्ञा पु० पञ्जाब में हिमाचल, रोहतक और करनाल जिला का भूभाग। हरियाना। दे० बाँगर।

बाँगड-वि० १ मुरे। उजड़ू। २ जगली। सज्ञा स्त्री० बाँगड के जाटों की बोली। हरियानी।

बाँगर-सज्ञा पु० १ अवध में एक प्रकार के बेल। २ नदी के किनारे की उँची भूमि। ३ छकड़ा गाड़ी के फड के ऊपर का भाग।

बाँगुर-सज्ञा पु० जाल। फदा।

बाँचना-वि० स० १ पढ़ना। २ वचना। ३ वचाना। छुड़ाना।

क्रि० अ० १ रोष रहना। २ छोड़ देना।

बाँछना-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'बाछा'। इच्छा करना। २ छोटना। चुनना।

बाँछा-सज्ञा स्त्री० दे० 'बाछा'।

बाँछित-वि० दे० 'बाछित'।

बाँजर-सज्ञा पु० दे० 'बजर'।

बाँश-सज्ञा स्त्री० वध्या। वह स्त्री या भादा पशु, जिसे सतान होती ही न हो।

बाँशपन-सज्ञा पु० बाँश होने का भाव। वध्यात्व।

बाँट-सज्ञा स्त्री० १ बाँटने की क्रिया या भाव। २ भाग। अंश। हिस्सा। ३ तोलने का बट-खरा। ४ पयाल का बना रस्सा। ५ दूध दुहने के बाद गाय-भैरा को दिया जानेवाला भोजन। मुहा०-बाँट पड़ना=हिस्से में आना।

बाँटचूट-सज्ञा स्त्री० [अनु०] भाग। लेन-देन।

बाँटना-वि० स० १ किसी चीज के कई भाग करके अलग-अलग रखना। २ हिस्सा लगाना या देना। विभाग करना। ३ छोटा छोटा नक्को देना। वितरण करना।

बाँटा-सज्ञा पु० १ बाँटने की क्रिया या भाव। २ हिस्सा। भाग।

बाँड-सज्ञा पु० दो नदियों के संगम के बीच की भूमि।

बाँगा-वि० १ बिना पूँछ का पशु। दुमकटा २ असहाय। दीन। अकेला।

बाँड़ी-सज्ञा स्त्री० १ छोटा खाटी। २ गिना पूँछ की गाय। ३ पूँछनटी।

बाँदी-सज्ञा पु० [स्त्री० बाँदी] सेवक। दाम।

बाँदर-सज्ञा पु० घेदर।

बाँहा-सज्ञा पु० एक प्रकार की वनस्पति, जो पेड़ों की शाखाओं पर फैलती है। बदाव।

बाँही-सज्ञा स्त्री० दासी। लोड़ी। मुमलमान बादशाहों और नवाबों के जनाम रखने में काम करनेवाली लोड़ी।

बाँध-सज्ञा पु० १ नदी या जलानय आदि के किनारे मिट्टी, पत्थर आदि का बना धुस्स। पानी आदि रोकने के लिए बनाया हुआ बन्द। २ नदी आदि पार करने के लिए उससे ऊपर बनाई गई वस्तु। पुल। ३ आगे बढ़ने से रोकने के लिए लगाया गया बन्धन।

बाँधना-वि० स० १ बन्धन में करना। जकड़ना। गाँठ लगाना। २ पकड़कर बन्द करना। बंद करना। ३ नियम, प्रतिज्ञा, अधिकार या शपथ आदि की सहायता से मर्यादित रखना।

पाबंद करना। ४ मन्त्र, तन्त्र आदि की सहायता से शक्ति या गति को रोकना। ५. प्रेम-भाव में जकड़ना। ६. नियत या स्थिर करना।

७. पानी का बहाव रोकने के लिए बाँध आदि बनाना। ८. चूर्ण आदि को हाथों से दबाकर पिंड के रूप में लाना। ९. घर आदि बनाना।

१० योजना अथवा उपक्रम करना। ११. द्रम या विधान ठीक करना। मन में बँटाना। १२ किसी प्रकार का अस्त्र-शस्त्र साध रखना।

बाँधनीगौरि-सज्ञा स्त्री० पशुओं के बाँधने का स्थान। पशुशाला।

बाँधन-सज्ञा पु० १ पहले से ठीक की हुई युक्ति या विचार। उपक्रम। मसूवा। २ समालोचिताव। मतगढन्त बात। ३ झूठा दोष।

बलक। तोहमत। ४. चुनरी की रंगाई में बपड़े की एक प्रकार की बंधाई। इस प्रकार बाँध कर रंगा गया नोई दूसरा वस्त्र।

बाँधव-सज्ञा पु० १ भाई। वधु। २ नातेदार। ३ मित्र।

बाँधी-सज्ञा स्त्री० १ दीमको का बनाया

हुआ मिट्टी का भीटा या दूह । बेबीठा ।  
 २ साँप का विल ।  
 बाँयां-वि० दाहिने का उल्टा ।  
 बाँयना\*†-क्रि० सं० रखना ।  
 सज्ञा पु० बामन । बीना ।  
 बाँस-सज्ञा पु० १ अनेक पोले काडो  
 और गाँठोवाला एक पेड़, जो छाजन  
 और टोकरी आदि बनाने के काम आता  
 है । २ सवा तीन गज की एक नाप । ३  
 लाठी । ४ नाव खेने की लग्गी । ५ भूमि  
 नापने की लकड़ी । ६ रोड । ७ भाला ।  
 मुहा०-बाँस पर चढ़ना=बदनाम होना ।  
 बाँस पर चढ़ाना=१ बदनाम करना ।  
 २ बहुत बड़ा देना । मिजाज बड़ा देना ।  
 अधिक आदर देकर धुष्ट या घमडी बना  
 देना । बाँसो उछलना=बहुत अधिक प्रसन्न  
 होना ।  
 बाँसली-सज्ञा स्त्री० दे० 'बाँसुरी' । घसी ।  
 बाँसा†-सज्ञा पु० १ नाक के ऊपर की हड्डी,  
 जो दोनों नथनों के ऊपर बीचोबीच रहती है ।  
 २ पीठ की हड्डी । रीढ़ ।  
 बाँसुरी-सज्ञा स्त्री० बाँस का बना हुआ  
 प्रसिद्ध वाजा, जो मुँह से फूँककर बजाया  
 जाता है । बाँसुरी । घसी ।  
 बाँह-सज्ञा स्त्री० १ हाथ । बाहु । भुजा । २  
 बल । शक्ति । ३ सहायक । भरोसा । आसरा ।  
 सहारा । शरण । ४ एक प्रकार की कसरत,  
 जो दो आदमी मिलकर करते हैं । ५ कुरते,  
 कोट आदि में वह मोहरीदार टुकड़ा  
 जिसमें बाँह डाली जाती है । आस्तीन ।  
 मुहा०-बाँह गहना या पकड़ना=१ किसी  
 की सहायता करने के लिए हाथ बढ़ाना ।  
 सहारा देना । मदद करना । अपनाना ।  
 २ विवाह करना । बाँह देना=सहारा या  
 सहायता देना । बाँह टूटना=सहायक  
 या रक्षक आदि का न रह जाना ।  
 घी०-बाँह-थील=रक्षा करने या सहायता  
 देने का वचन ।  
 बाँही-सज्ञा स्त्री० दे० "बाँह" ।  
 बा-सज्ञा पु० १ जल । पानी । २ वार । मर-  
 तवा । दफा ।

बाइबिल-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] ईसाइयों की  
 मुख्य धर्म-पुस्तक ।  
 बाइसिकिल-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] पैरों से  
 चलाई जानेवाली दो पहियों की एक  
 गाड़ी ।  
 बाई-सज्ञा स्त्री० १ वात-रोग । शरीर में  
 वायु बढ़ जाने की बीमारी । दे० "वात" ।  
 २ स्त्रियों के लिए एक आदर-सूचक शब्द ।  
 ३ वेदप्राया के नाम के साथ लगनेवाला  
 एक शब्द ।  
 मुहा०-बाई की झोक=१ वायु का प्रकोप ।  
 २ आवेश । बाई चढ़ना=१ वायु का प्रकोप  
 होना । २ घमंड में आकर ध्येय की बातें  
 करना । बाई पचना=१ वायु-दोष शान्त  
 होना । २ घमंड टूटना ।  
 बाईस-सज्ञा पु० बीस और दो की सख्या  
 या अंक । २२ ।  
 बि० जो बीस और दो हो ।  
 बाड†-सज्ञा पु० दे० 'वायु' ।  
 बाउरी†-वि० [स्त्री बाउरी] दे० "बाबला ।"  
 पागल । मूर्ख । गुँगा । घुरा । खराब ।  
 बाऊ†-सज्ञा पु० दे० 'वायु' ।  
 बाएँ-कि० बाई ओर । बाई तरफ़ ।  
 बाक\*-सज्ञा पु० दे० 'वाक्' । बात । वचन ।  
 बोली ।  
 बाकयाल†-वि० दे० 'बाचाल' ।  
 बाकना\*†-क्रि० अ० बकना ।  
 बाकल†-सज्ञा पु० दे० "बल्कल" ।  
 बाका\*†-सज्ञा स्त्री० दे० 'बाचा' ।  
 नाकी-वि० [अ०] वचत । बचा हुआ ।  
 अवशिष्ट । शेष ।  
 सज्ञा स्त्री० गणित में दो सरयाओं या  
 मानों का अंतर निबालने की रीति ।  
 घटाने पर बची हुई सख्या या मान । एक  
 प्रकार का धान ।  
 अग्न्य० लेकिन । मगर । परन्तु । किन्तु ।  
 बाकुल\*-सज्ञा पु० दे० 'बल्कल' ।  
 बाखर-सज्ञा पु० १ चीक । आँगन । २ बड़ा  
 गकान ।  
 बाखरि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "बखरी" ।  
 बड़ा मदान । घर ।

बाणी-राज्ञा स्त्री० दे० "बाणी।" सरस्वती।  
 नापा। गिरा। बोली।  
 बात-गज्ञा स्त्री० १ सार्यन् शब्द या वाक्य।  
 वचन। बाणी। वचन। वार्ता। २ चर्चा।  
 जिय। ३ प्रसंग। खबर। ४ अफवाह।  
 विवादन्ती। प्रवाद। व्यवस्था। माजरा।  
 हाल। ५ घटित होनेवाली अवस्था।  
 प्राप्त संयोग। परिस्थिति ६ सदेश।  
 पैगाम। ७ वार्तालाप। वाग्विलास।  
 नप-शप। ८ झूठ वचन। मिस। बहाना।  
 ९ वचन। प्रतिज्ञा। वादा। १० विश्वास।  
 प्रतीति। ११ मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा। १२  
 अपनी योग्यता, गुण इत्यादि के सबध में  
 वचन या वाक्य। १३ आदेश। १४ उपदेश।  
 सीख। १५ रहस्य। भेद। १६ तारीफ  
 की बात। \* प्रशंसा का विषय। १७  
 चमत्कारपूर्ण कथन। उक्ति। गूढ अर्थ।  
 १८ अभिप्राय। मानी। १९ गुण या  
 विशेषता। खूबी। २० ढग। ढब। २१  
 प्रश्न। समस्या। २२ अभिप्राय। तात्पर्य।  
 २३ इच्छा। वामना। कथन का सार।  
 मर्म। २४ काम। व्यवहार। आचरण।  
 २५ सबध। लगाव। २६ स्वभाव। गुण।  
 लक्षण। प्रकृति। २७ वस्तु। पदार्थ। विषय।  
 २८ मूल्य। मोल। २९ उचित पथ या  
 उपाय। कर्तव्य।  
 राजा पु० दे० "बात"।  
 मुहा०-बातो में आना या पटना=  
 बहकावे या भुलावे में आना। बात उछाड़ना=  
 भूली बातों की याद दिलाना। बुरी बातें  
 छडना। बात कहने=सुरत। फौरन।  
 झट। बात काटना=किसी के बोलते समय  
 बीच में बोल उठना। कथन का खंडन  
 करना। बात की बात में=झट। तुरत।  
 फौरन। बात खाली जाना=प्रार्थना या  
 वचन का निष्फल होना। बात टलना=  
 वचन का अन्यथा होना। बात टालना=  
 मुनी-अनुमोदी करना। कहीं हुई बात पर न  
 चलना। बात न पूछना=कुछ भी आदर न  
 करना। (किसी की) बात पर जाना=  
 बात का खयाल करना। बात पर ध्यान

देना। कहने पर भरोसा करना। वा  
 पूछना=संजोख रखना। खबर लेना। क  
 करना। बात बढ़ना=बात या विवाद।  
 रूप में हो जाना। झगडा होना। बात बढ़ाना=  
 विवाद करना। झगडा करना। वा  
 बनाना=झूठ बोलना। बहाना करना।  
 बातें बनाना=झूठमूठ झूठ-उधर की बातें  
 कहना। बहाना करना। खुशामद करना।  
 बाता में उठाना=(किसी विषय को)  
 हँसी में टालना। टालमटोल करना।  
 बाता में लगाना=बातें कहकर उनमें लीन  
 रखना। बात उठाना=चर्चा चलाना।  
 बात चलना या छिडना=प्रसंग आना।  
 चर्चा छिडना। बात निगलना=  
 बात चलाना। बात पटना=चर्चा छिडना।  
 बात उठना=चारा और चर्चा फैलना।  
 बात गहना=चारा और चर्चा फैलना।  
 बात का बतगड करना=साधारण विषय  
 या छोटे-से मामले को ब्यर्थ तूल देना या  
 पेचीदा बना देना। बात न पूछना=दशा  
 पर ध्यान न देना। परवा न रखना। बात  
 बढ़ना=किसी प्रसंग या घटना का भयकर  
 रूप धारण करना। बात बनना=काम  
 बनना। प्रयोजन सिद्ध होना। अच्छी  
 परिस्थिति होना। बोल-बात होना। बात  
 बनाना या सँवारना=काम बनाना। बात  
 बात पर या बात-बात में=प्रत्येक प्रसंग  
 पर। हर काम में। बात बिगडना=काम  
 चौपट होना। विफलता होना। बातें  
 बातों में=बातचीत करते हुए। कथोप  
 कथन के बीच में। बात ठहरना=  
 विबाह-संघ संस्थिर होना। किसी प्रकार  
 का निश्चय होना। बात का धनी, पक्का  
 या पूरा=प्रतिज्ञा का पालन करनेवाला।  
 बात पक्की करना=१ पक्का निश्चय  
 करना। २ प्रतिज्ञा या सवत्प पट्ट करना।  
 (अपनी) बात रखना=वचन पूरा करना।  
 बात हारना=वचन देना। (किसी की)  
 बात जाना=बात का प्रमाण न रहना।  
 (लोगों को) एतवार न रह जाना। बात  
 खोना=१ विश्वास खोना। २ नष्ट करना।

इज्जत गैवाना। बात जाना=इज्जत न रह जाना। बात बनना= १. प्रतिष्ठा मिलना। २. विश्वास रहना। साख रहता। बात पाना=छिपा हुआ अर्थ समझ जाना। बात-चीत-संज्ञा स्त्री० वार्त्तालाप। दो या कई मनुष्यों के बीच कथोपकथन। बाती-संज्ञा स्त्री० दे० "वत्ती"। बातुल-वि० दे० "वातुल"। पागल। सनकी। सिड़ी। बहिर्निपा, बातूनी-वि० बहुत बातें करनेवाला। चक्कादी। बाचाल। पाथ-संज्ञा पु० अंक। गोद। पाथ-संज्ञा पु० एक प्रकार का साग। वयुआ। राव-संज्ञा पु० दे० "बाद"। १. तर्क। बहस। संगड़ा। विवाद। हुज्जत। शकलक। २. शक्त। बाजी ३. हुवा। बात। वि० १. अलग किया हुआ। २. दस्तूरी या कमीशन, जो दाम में से काटा जाय। ३. अतिरिक्त। सिवाय। अव्य० १. व्यर्थ। निष्प्रयोजन। २. पीछे। मुहा०—बाद मेलना=वार्ज लगाना। बादना-क्रि० अ० १. चक्काद करना। तर्क-वितर्क करना। २. बोलना। ललकारना। बादवान-संज्ञा पु० [फा०] पाल। वादर\*—संज्ञा पु० मेघ। बादल। वि० १. हृषित। प्रसन्न। २. मोटा खदर। वादरा-संज्ञा स्त्री० १. घेर का पेंड़। २. कपास का पीछा। ३. जल। ४. बादल। ५. रेशम। बादरायण-संज्ञा पु० वेदव्यास। वादरिया-संज्ञा स्त्री० दे० "बदली" (मेघ)। वादरी-संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"। बादल। वादल-संज्ञा पु० पृथ्वी पर के जल से निकली हुई वह भाप, जो घनी होकर आकाश में फैल जाती है और फिर पानी की बूंदों के रूप में गिरती है। घन। मेघ। मुहा०—बादल उठना या चढ़ना=बादलों का किसी ओर से समूह के रूप में बढ़ते हुए दिखाई पड़ना। बादल गरजना=मेघों के संघर्ष का घोर शब्द। बादल धिरना=

मेघों का चारों ओर छा जाना। बादल छटना=मेघों का खंड-खंड होकर हट जाना। आकाश साफ हो जाना। बादला-संज्ञा पु० एक प्रकार का सुनहला या रुपहला चमकीला तार। जरी का तार। बादली-संज्ञा स्त्री० दे० "बदली"। बादल। बादशाह-संज्ञा पु० [फा०] १. बड़ा राजा। स्वतंत्र शासक। सम्राट् २. सबसे श्रेष्ठ पुरुष। सरदार। मनमानी करनेवाला। ३. शतरंज का एक मुहर। ४. ताश का एक पत्ता। बादशाहत-संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य। शासन। हुकूमत। बादशाही-संज्ञा स्त्री० [फा०] राज्य। राज्याधिकार। हुकूमत। शासन। मनमाना व्यवहार। वि० १. बादशाह-संबंधी। बादशाह का। २. राजाओं के योग्य। बादहवाई-क्रि० वि० बें सिर-पैर की। ऊट-प-टांग (वात)। व्यर्थ। फजूल। निरर्थक। बादाम-संज्ञा पु० [फा०] मझोले आकार का एक वृक्ष, जिसके छोटे किन्तु कड़े छिलके वाले फल मेवों में गिने जाते हैं। बादामी-वि० बादाम के छिलके के रंग का। कुछ पीलापन लिये लाल। बादाम के आकार का। वादि-अव्य० व्यर्थ। फजूल। वादिनि-संज्ञा स्त्री० दे० "वादिनि"। झगड़ालू। बर्कबक करनेवाली। बोलनेवाली। वादी-वि० [फा०] वायु-संबंधी। २. वात-विकार-संबंधी। वायु या वात का विकार उत्पन्न करनेवाला। संज्ञा स्त्री० वातरोग। वायु का दोष। संज्ञा पु० मुद्ई। प्रतिवादी। प्रतिद्वन्दी। वादुर-संज्ञा पु० चमगादड़। वाध-संज्ञा पु० १. रोक। रुकावट। बाधा। निवारण। अट्ठचन। २. पीडा। कष्ट। कठिनाई। मुश्किल। ३. अर्थ की असंगति। व्यापात। ४. वह पक्ष, जो साध्य-रहित-सा प्रतीत हो (न्याय)। ५. मूज की रस्ती। वाधक-संज्ञा पु० [स्त्री० वाधिका] बाधा

बाघ-सज्ञा पु० [अ०] बगीचा। उद्यान।  
वाटिका। उपवन।

सज्ञा स्त्री० लगाम।

मुहा०—बाघ मोड़ना=किसी और प्रवृत्त करना या घुमाना।

बाघड़ी-सज्ञा स्त्री० लगाम। घोड़े की लगाम में बाँधी जानेवाली डोरी।

बाघना†-क्रि० अ० चलना। फिरना। टहलना। घूमना।

बाघवान-सज्ञा पु० [फा०] माली।

बाघवानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] माली का काम।

बाघर-सज्ञा पु० नदी-तट की ऊँची भूमि, जहाँ तक नदी की बाढ़ का भी पानी कभी नहीं पहुँचता।

बागल\*†-सज्ञा पु० दे "बगल"।

बागा-सज्ञा पु० अगे की तरह का एक पुराना पहनावा। जोड़ा। जामा। खिलजत। पारितोषिक दिया जानेवाला कपड़ा।

बाघी-सज्ञा पु० [अ०] बिड़ोही। राजब्रोही।

बाघीचा-सज्ञा पु० छोटा बाग। वाटिका। उपवन।

बाघुर\*-सज्ञा पु० जाल। पदा।

बागैसरी†-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'बागीसरी'। सरस्वती। २ एक रागिनी।

बाघयर-सज्ञा पु० १ बाघ की घाल, जो बिछाने के काम आती है। २ एक प्रकार का रोएँदार कवच।

बाघ-सज्ञा पु० शेर।

बाघिन-सज्ञा स्त्री० बाघ की मादा।

बाघी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की गिलटी जो अधिकतर गरमी के रोगियों के पेट और जाँघ के जोड़ में होती है।

बाचन-क्रि० अ० बचना। मुरसित रहना।

क्रि० स० १ रक्षा करना। बचाता। २ पाठ करना। पढ़ना।

बाचा-सज्ञा स्त्री० दे० "बाचा"। बोलने की शक्ति। शक्तिकृत। प्रतिज्ञा।

बाचाबच\*-क्रि० अ० दे० "बचनबच"। प्रतिज्ञा-बद्ध। प्रण करनेवाला।

बाछा-सज्ञा पु० १ गाय का बच्चा। बछड़ा। २ लडका।

बाज-सज्ञा पु० [अ०] १ एक प्रसिद्ध शिकार पक्षी। २ तीर में लगा हुआ पर। ३ धोखा। ४ बाजा। वाद्य। ५ बजने या बाजे का शब्द। ६ प्रत्यय जो शब्दों के अंत में लगाकर रखने, खेलने, करने या शौक रखनेवाले आदि का अर्थ देता है। जैसे—दगाबाज, नशेबाज। कबूतरबाज।

वि० १ वचित। रहित। २ कोई-कोई। कुछ। थोड़े।

क्रि० वि० बाँर। बिना।

मुहा०—बाज आना=१ खोना। छोड़ना। रहित होना। २ दूर होना। पास न जाना। बाज करना=रोकना। बाज रखना=मना करना।

बाजदावा-सज्ञा पु० [फा०] अपने अधिकार का त्याग। अपने दावे से बाज आना।

बाजन\*†-सज्ञा पु० दे० "बाजा"। वाद्ययंत्र।

बाजना-क्रि० अ० १ बाजे आदि का बजना। २ शगटना। लटना। ३ प्रसिद्ध होना।

पुकारा जाना। ४ चोट पहुँचना। लगना।

बाजरा-सज्ञा पु० एक प्रकार का मोटा अन्न।

बाजा-सज्ञा पु० बजान का यंत्र। वाद्य।

यी०—बाजा-बाजा=अनेक प्रकार के बजत हुए बाजों का समूह। बाजे-बाजे से=धूम-धाम से।

बाजास्ता-क्रि० वि० [फा०] जाते वे साथ। नियमानुसृत। फायदे में मुताबिक।

वि० जो नियमानुसार हो।

बाजार-सज्ञा पु० [पा०] १ वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थों की बिक्री होती हो।

२ वह स्थान, जहाँ किसी निश्चित समय पर सब तरह की दूकानें खोलती हो। पैठ। हाट।

मुहा०—बाजार करना=चीजें खरीदने के लिए बाजार जाना। बाजार गर्म होना=

१ बाजार में चीजाँ या ग्राहकों आदि की अधिकता होना। २ रौनक बढ़ना। श्रृंगार बनना। बाजार तेज होना=बाजार में

बिक्री चीज की मात्रा बहुत अधिक होना। किसी चीज का मूल्य वृद्धि पर होना।

काम जोरो पर चलना । बाजार  
उतरना या मंदा होना=बाजार में  
किसी चीज की माँग कम होना । दाम  
पटना । कारबार कम चलना ।  
बाजारी-वि० [फा०] १. बाजार-संबंधी ।  
बाजार का । २. मामूली । साधारण । ३.  
अशिष्ट । मर्यादाहीन ।  
बाजार-वि० दे० "बाजारी" ।  
बाजि\*†-सज्ञा पु० १. घोड़ा । २. वाण ।  
३. पक्षी ।  
वि० चलनेवाला ।  
बाजी-सज्ञा स्त्री० [फा०] शर्त । दाँव ।  
दान । ऐसी शर्त, जिसमें हार-जीत के अनुसार  
 कुछ लेन-देन भी हो । दाँववाला खेल ।  
मुहा०—बाजी मारना=बाजी जीतना ।  
गर्व जीतना । बाजी ले जाना=किसी बात  
में आगे बढ़ जाना । धैर्य ठहरना ।  
खीर-सज्ञा पु० [फा०] जादूगर ।  
खू-अव्य० १. बिना । बगैर । २. सिवा ।  
अतिरिक्त ।  
खू-सज्ञा पु० [फा०] १. भुजा । बांह । बाहु ।  
२. बाजुबंद नाम का आभूषण । भुजबंद । ३.  
सेना का एक पक्ष । ४. सदा सहायक ।  
५. पक्षी का पक्ष ।  
बाजुबंद-सज्ञा पु० [फा०] बांह पर पहनने  
का एक गहना । बाजू । बिजायठ । भुजबंद ।  
बाजुबंद-सज्ञा पु० दे० "बाजुबंद" ।  
बाध\*—अव्य० बगैर । बिना ।  
बाधन\*†-सज्ञा स्त्री० पैस या वस्तु जाना ।  
उत्पन्न । पैस । बखेडा । अशुभ ।  
बाधना-वि० अ० दे० "बधना" । बध जाना ।  
बधन में पड़ना । बधना ।  
बाट-सज्ञा पु० १. मार्ग । रास्ता । २. बटखरा ।  
३. बट्टा । पत्थर का टुकड़ा, जिससे सिल पर  
कोई चीज पीसते हैं ।  
मुहा०—बाट पारना=रास्ता सोलना । मार्ग  
योजना । बाट जोड़ना या देरना=प्रतीक्षा  
करना । आसरा देना । बाट पड़ना=लग  
करना । पीछे पड़ना । डाका पड़ना । बाट  
पारना=डाका मारना ।  
बाटना-वि० स० पीसना । चूर्ण करना ।

क्रि० स० दे० "बटना" ।  
बाटिका-सज्ञा स्त्री० दे० "बाटिका" । छोटा  
वाग । बगीचा । फूलवारी ।  
बाटी-सज्ञा स्त्री० १. गोली । पिंड । २. उपलो  
आदि पर सेंकी हुई एक प्रकार की  
गोल रोटी । अंगा-कडी । लिट्टी । दे०  
"कटोरी" ।  
बाड़प-सज्ञा पु० दे० "बड़वानल" । समुद्र की  
आग ।  
वि० बड़वा-संबंधी ।  
बाड़वानल-सज्ञा पु० दे० "बड़वानल" ।  
बाड़ा-सज्ञा पु० १. चारो ओर से घिरा  
हुआ बड़ा मैदान । हाता । २. पशुशाला ।  
बाड़ी-सज्ञा स्त्री० बाटिका । फूलवारी ।  
बाड़-सज्ञा स्त्री० १. बड़ाव । अधिकता ।  
वृद्धि । २. नदी आदि का बहुत अधिक  
बढ़ना । जलप्लावन । सैलाव । ३. व्यापार  
आदि से होनेवाला लाभ । ४. एक प्रकार  
का गहना । ५. बटूक या तोप का लगातार  
छूटना । ६. तलवार, छुरी आदि शस्त्रों की  
घार । सान ।  
मुहा०—बाड़ दगना=बटूक या तोप का  
लगातार छूटना । बाड़ (पर) रखना=  
उत्साहित करना । धार तेज करना ।  
बाड़ना\*†-क्रि० अ० दे० "बड़ना" ।  
बाड़ि बाड़ी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "बाड़" ।  
बाड़ीयान-वि० हथियारों पर बाड़ या सान  
चढ़ानेवाला ।  
बाण-सज्ञा पु० १. तीर । शर । २. गाय का  
धन । ३. आग । ४. लक्ष्य । निशाना ।  
५. पाँच की सख्या । ६. शर का अगला भाग ।  
बाणक-सज्ञा पु० महाजन ।  
बाणभट्ट-सज्ञा पु० संस्कृत के एक कवि  
तथा सर्वश्रेष्ठ गद्यकाव्यकार । कादम्बरी  
और हर्षचरित गद्यकाव्यों के रचयिता ।  
बाणालिंग-सज्ञा पु० नर्मदा नदी से प्राप्त  
शिव-लिंग ।  
बाणविद्या-सज्ञा स्त्री० बाण चलाने की  
विद्या । तीरंदाजी ।  
बाणिज्य-सज्ञा पु० व्यापार । रोज़वार ।  
व्यवसाय ।

या रुकावट डालनेवाला। भण्टदायक। दुःखायी। विघ्नकारी।

बाधन-सज्ञा पु० [वि० बाधित, बाध्य]  
१. रुकावट या विघ्न डालना। २. कष्ट या दुःख देना।

बाधना-वि० स० १ बाधा या विघ्न डालना। रुकावट डालना। २ दुःख देना।

बाधा-सज्ञा स्त्री० १ विघ्न। रुकावट। अट्‌बन्। रोक। २ सकट। शारीरिक कष्ट। बाधित-वि० १ रोका हुआ। प्रतिबन्धित। बाधायुक्त। जिसके साधन में विघ्न या रुकावट पड़ी हो। २ तर्क-विरुद्ध। असंगत। ३ गृहीत। प्रस्त।

बाधी-सज्ञा पु०, वि० बाधा डालनेवाला। बाध्य-वि० [सज्ञा स्त्री० बाध्यता] रोकने योग्य। रोका या दबाया जानवाला। मजबूर होनेवाला या मजबूर किया जानेवाला। विवश।

बाध-सज्ञा पु० १ बाण। तीर। शर। २, अभ्यास। ३ एक प्रकार की आतशबाजी। ४ मूँज की रस्ती। ५ ऊँची लहर। ६ एक प्रकार का वृक्ष। ७ आब। काति। ८. बाना। (हथियार) गोला।

सज्ञा स्त्री० १ बनावट। सजघज। वेश-विन्यास। २ आदत। अभ्यास।

बाधित-वि० दे० "बान्त"।

बाधक-सज्ञा स्त्री० १ वेश। बनाव सिंगार का रूप। सज घज। २ एक प्रकार का रेशम। ३ परिस्थिति। संयोग।

बाधनी-सज्ञा स्त्री० नमूना। किसी तरह के काम का नमूना।

बाधन-सज्ञा पु० दे० "बधर"।

बाधने-सज्ञा पु० १२ सत्या-विशेष।

वि० नब्बे और दो।

बाधा-सज्ञा पु० १ पहनावा। पोशाक। वेश-विन्यास। रूप। २ रीति। चाल। ३ स्वभाव। प्रवृत्ति। ४ व्यवहार। ५ तलवार के आकार का सीधा और दुधारा एक हथियार। साँग या भाल के आकार का एक हथियार। ६ बुनावट। बुना। बुनाई। कपड़े की आड़ी बुनावट, जो ताने में बँधी जाती है। भरनी।

ताने के आड़े तागे। ७ बारीक महीन डोरी, जिससे पतंग उड़ाई जाती है।

वि० स० १ सिकुड़नेवाली वस्तु का मुँह या छेद फैलाना। जैसे मुँह बाना। २ बालों में कधी करना।

बानात-सज्ञा स्त्री० एक तरह का मोटा ऊनी कपड़ा। बनात।

बानावरी-सज्ञा स्त्री० बाण चलाने की विद्या या कला। तीरदाजी।

बानि-सज्ञा स्त्री० १ सजघज। बनावट। २. आदत। अभ्यास। ३ टेप। चमक। आभा। ४ दे० 'बाणी'।

बानिक-सज्ञा स्त्री० दे० "बानक"। सज-घज। वेश। बनाव। सिंगार।

बानिया-सज्ञा पु० दे० "बनिया"।

बानी-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'बाणी'। वचन। मुँह से निकला हुआ शब्द। २ मनोती। प्रतिज्ञा। ३ सरस्वती। ४ साधु-महात्मा का उपदेश। जैसे, कबीर की बानी। ५ आभा। दमक। ६ दे० "बाणिज्य"। ७ कपड़े बुनने का सूत। ८ बाना-नामक हथियार। ९ गोला।

सज्ञा पु० १ बनिया। २ प्रारम्भ करने वाला। प्रवर्तक।

बानेत-सज्ञा पु० १ बाना, बनेटी या पटा फेरनेवाला। २ बाण चलानेवाला। तीरदाज। ३ सैनिक। घोड़ा। ४ वीर। ५ बाना धारण करनेवाला।

वि० बनानेवाला। निर्माता। रचयिता। धुरधर।

बाप-सज्ञा पु० जनक। पिता।

मुहा०—बाप-बादा=पूर्वज। पूर्व पुरुष। बाप-मा=रक्षक। पालन पोषण करनेवाला। बाप रे बाप=आश्चर्य-या भय-भूचक वाक्य। बाप मारे का बर=बड़ा भारी विरोध। बहुत अधिक बर। बाप न भारी पीदड़ी बेटा तीरदाज=अयोग्य पिता के पुत्र का पमण्डी होना। अयोग्य पिता का अयोग्य पुत्र जय अपना बखान करने लगता है, तब इस मुहावरे का प्रयोग होता है।

बापडा, बापरा-वि० दे० "बापुरो"।

बापी-सज्ञा पु० दे० "बापी" ।

बापुरा-वि० [स्त्री० बापुरी] तुच्छ । दी० ।

बेचारा । असहाय । अकिंचन । नगण्य ।

बापू-सज्ञा पु० १. दे० "बाप" । महात्मा गांधी

को 'बापू' कहा जाता है । २. दे० "बाबू" ।

बाफू-सज्ञा स्त्री दे० "भाप" । दे० "बफारा" ।

बाफता-सज्ञा पु० [फा०] एक तरह का बूटीदार रेशमी कपड़ा ।

बावत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. संबंध । २. विषय ।

अव्य० सम्बन्ध में । विषय में ।

बाबरबो-सज्ञा पु० [फा०] रसोइया ।

बाबरी, बाबडी-सज्ञा स्त्री० जुल्फ । सिर के बड़े-बड़े बाल ।

बाबा-सज्ञा पु० १ पिता का पिता । दादा ।

२ बूढ़ा । ३ साधु-सन्यासी । ४. बूढ़ बाप

को भी बाबा कहते हैं । ५. बड़ा । आदरणीय ।

६ लड़कों के लिए प्यार का सम्बोधन । ७

साधु सन्यासी या बूढ़े व्यक्ति के लिए आदर-सूचक शब्द ।

यो०—बाबाजी=१ योनी । २ संन्यासी । ३ ब्राह्मण ।

बाबो\*—सज्ञा स्त्री० १ सन्यासिनी । २. लड़कियों के लिए प्यार का सम्बोधन ।

बाबूल-सज्ञा पु० १ बाबू । २ पिता । प्यारा ।

बाबू-सज्ञा पु० १ मले आदमियों, बड़े,

शिक्षितों तथा बड़े आदमियों के लिए प्रयोग

किया जानेवाला आदर-सूचक शब्द । २.

दफ्तर के क्लर्क या कार्यालय के कर्मचारियों के

लिए प्रयुक्त शब्द । (पहले बंगाली किरानों के

लिए इस शब्द का प्रयोग शुरू हुआ ।) ३ जमी-

दार, ठापुर आदि बड़े लोगों के लिए प्रयुक्त

शब्द । ४ पिता के लिए सम्बोधन । ५ पुत्र

या बालक को पुकारने का शब्द ।

बि०—नाम के जागे या पीछे आदर दिवाने

के लिए प्रयुक्त शब्द ।

बाभन-सज्ञा पु० ब्राह्मण ।

बाभ-वि० दे० "बाभ" । उलटा । विपरीत ।

सज्ञा स्त्री० दे० "बाभा" ।

बाभा-सज्ञा स्त्री० दे० "बाभा" । स्त्री । पत्नी ।

बाभी-सज्ञा स्त्री० दे० "बाबी" ।

बाभून-सज्ञा पु० दे० "ब्राह्मण" ।

बाभूनी-सज्ञा स्त्री० १. दे० "ब्राह्मणी" । २

देहाती में छिपकली जैसे लाल रंग के एव

कीड़े को बाभूनी कहते हैं ।

बायें-वि० १. बायाँ । २ खाली । चूका हुआ

दावें या लक्ष्य पर न बैठा हुआ ।

मुहा०—बायें देना=१. बचा जाना । छो-

ड़ना । २. तरह देना । कुछ ध्यान न देना

३. फेरा देना । चक्कर देना ।

बापू\*—सज्ञा स्त्री० १ वायु । हवा । २. वाई

वात का कोप । ३. बावली । बेहर

बापिका ।

क्रि० सं० फैलाकर ।

बायक\*—सज्ञा पु० १ बतलानेवाला । २

कहनेवाला या पढ़नेवाला । ३. दूत ।

बायकाट-सज्ञा पु० [अग्ने०] वहिष्कार

सम्बन्ध आदि का त्याग । किसी तरह का

सम्पर्क न रखने का निश्चय ।

बायन\*—सज्ञा पु० १. उपहार । बेना । डाली

मगल अवसरों पर दृष्ट मित्रों के यहाँ भेजा

जानेवाला उपहार, मिठाई आदि । २. बयाना ।

पेशगी ।

बायना-सज्ञा पु० दे० "बायन" ।

बायबिडग-सज्ञा पु० एक लता, जिसमें काली

मिर्च से कुछ छोटे गोल फल लगते हैं, जो

औषध के काम आते हैं ।

बायबी-वि० १ बाहरी । अपरिचित । अज-

नबी । २. बाहर से नया आया हुआ ।

बायबारी-वि० बात या वायु का प्रकोप उत्पन्न

करनेवाला । जिसे वायु का प्रकोप हुआ हो ।

सज्ञा पु० १ बाहरी । २. दे० "बायबी" ।

बायस-सज्ञा पु० १ दे० "बायस" । २. [फा०]

कारण । संवध ।

बायस्कोप-सज्ञा पु० [अग्ने०] यंत्र-विशेष,

जिससे परदे पर चलते-फिरते चित्र दिखाई

देते हैं ।

बायाँ-वि० १. पूरव की ओर मुंह

करके खड़े होने से उत्तर की तरफ पढ़ने

वाला शरीर का भाग । 'बाहिना' का उल्टा ।

बाईं ओर । बाएँ हाथ की ओर । बाएँ हाथ

की ओर पढ़नेवाली कोई चीज । २. उल्टा ।

विद्वद् । विरोधी । ३ हानिपारण या दधु ।  
मुहा०—बापा देना=पिता से निकल जाना ।  
बना जाना । जाबूतकर छोट देना । बापा  
पाव पूजा—पागड़ियों के धोते में आना ।  
पागड़ियों पर विदवास करना या उनका  
आदर-सत्कार करना ।

बापे—वि० वि० बाई आर । बापे हाथ की  
आर । विपरीत । विद्वद् । प्रतिकूल ।

मुहा०—बापे हाना=१ विद्वद् होना । २  
विमुक्त होना । नागज या अग्रमन्न हाना ।

बारबार—वि० वि० बार-बार । पुन पुन ।  
लगातार । निरंतर ।

बार—सज्ञा पु० १ द्वार । दरवाजा । २  
आश्रय । ठिकाना । ३ दरवार । ४ घेरा ।  
सज्ञा स्त्री० १ पात्र । समय । २ बेर ।  
विलंब । देर । ३ मरतवा । दफा । अवसर ।  
बेला । ४ छोर । किनारा । तट । ५ पार ।  
वाड़ । ६ दे० “वाल” ७ बोज़ ।

\*वि० दे० “वाल” और “वाला” ।

मुहा०—बार बार=फिर-फिर । बार  
लगाना=विलम्ब करना । देरी लगाना ।

बारगाह—सज्ञा स्त्री० १ द्वार । उघोड़ी । २  
खेमा । तम्बू ।

बारजा—सज्ञा पु० १ मकान के सामने द्वार के  
ऊपर पाटकर बड़ाया हुआ बरामदा । कोठा ।  
अटारी । २ बरामदा । कमरे के सामने का  
दालान ।

वारण—सज्ञा पु० दे० “वारण” ।

वारदाना—सज्ञा पु० [फा०] १ व्यापार की  
चीजा के रखने का घरतन । २ सेना के  
धाने-पीने की सामग्री । रसद ।

वारन\*—सज्ञा पु० दे० “वारण” ।

वारता—क्रि० अ० निपारण करना । निषेध  
करना । रोचना ।

वि० स० वालना । जलाना । दे० “वारना” ।

वारनारी—सज्ञा स्त्री० वेश्या । गणिका । पतु-  
रिया ।

वारबदू\*—सज्ञा स्त्री० वेश्या ।

वारबघुटी—सज्ञा स्त्री० वेश्या ।

बारबरबार—सज्ञा पु० [फा०] बोज़ डोनेवाला ।

बारबार—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सामान

डोने या याम या मजदूरी । २. बीजा डोने  
की मजदूरी ।

बारमुली—सज्ञा स्त्री० वेश्या । पतुरिया ।

बारह—वि० बारहवा । दस और दो  
की सह्या । द्वादश ।

सज्ञा पु० बारह की सत्या या अथ । १२ ।

मुहा०—बारह बाट करना या धालना=  
नष्ट-भ्रष्ट या छिन्न-भिन्न करना । इधर-उधर  
कर देना । बारह बाट जाना या हाना=  
तिर-तिर होना । नष्ट-भ्रष्ट होना ।

बारहबूझी—सज्ञा स्त्री० देवनागरी वर्णमाला  
के प्रत्येक व्यंजन के वे बारह रूप, जो बारह  
स्वरो की मात्राओं के योग से बनते हैं ।

द्वादश मात्राओं का व्यंजन के साथ मिलान ।  
प्रत्येक व्यंजन के १२ स्वरो की मात्रा  
के रूप में मिलाकर लिखने की विधि ।

बारहदरी—सज्ञा स्त्री० बारह दरवाजों का  
मकान । चारा ओर से खुली हवादार बेंटक,  
जिसमें १२ द्वार हों । हवादार मकान ।

बंगला ।

बारह पत्थर—सज्ञा पु० १ सीमा पर गाड़ा  
गया पत्थर । २ छावनी ।

बारहबाँट—सज्ञा पु० नाश । सर्वनाश । चोपट ।

मुहा०—बारह बाँट होना=उजड़ना । खराब  
होना । सत्यानाश होना ।

बारहबान—सज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत  
अच्छा सोना ।

बारहबानी—वि० दे० “बारहबानी” ।

बारहबानी—वि० १ सूर्य के समान चमकवाला ।  
चोखा । खरा (सोने के लिए) । २ निर्दोष ।

सच्चा । ३ पूरा । पक्का । पूर्ण ।

सज्ञा स्त्री० सूर्य की-सी चमक ।

बारहमासा—सज्ञा पु० वह पद्य या गीत, जिसमें  
बारह महीना की प्राकृतिक विशेषताओं का  
वर्णन विरही द्वारा कराया गया हो ।

बारहमासी—वि० सब ऋतुओं में फलने या  
फूलनेवाला । बारहों महीने होनेवाला ।  
सदावहार पेड़, जिसमें बारहों महीने  
फल फूल लगते हों । हमेशा फल देनेवाला ।

बारहवफात या बारहवफान—सज्ञा स्त्री०  
[फा०] मुसलमानों के पैगम्बर मुहम्मद

साहब के जीवन के वे अंतिम बारह दिन, जिनमें वे बीमार थे।  
 बारहसिंगा—सज्ञा पु० हिरन की जाति का एक प्रसिद्ध पशु।  
 बारहा—क्रि० वि० कई बार। बारम्बार।  
 बारहों—सज्ञा स्त्री० बच्चे के जन्म से बारहवाँ दिन, जिसमें उत्सव किया जाता है। बरही।  
 बारा—वि० [स्त्री० बारी] बाराक। कम उम्रवाला।  
 सज्ञा पु० बालक। लडका।  
 बारात—सज्ञा स्त्री० विवाह में दूल्हे के साथ उसके घर के लोग और झण्ट-मिनो का मिलकर बंधु के घर जाना। बरात। बरमात्रा।  
 बारादरी—सज्ञा स्त्री० बारह दरवाजे का बड़ा कमरा या भूकान। खूब हवादार भूकान।  
 बारानी—वि० [फा०] बरसाती।  
 सज्ञा स्त्री० १ वह भूमि, जिसमें केवल बरसात के पानी से फसल उत्पन्न होती हो। २ बरसात में पानी से बचानेवाला कपड़ा।  
 बाराह—सज्ञा, पु० दे० 'बराह'। सूअर।  
 बारि—सज्ञा पु० दे० 'बारि'।  
 बारिगर\*—सज्ञा पु० हथियारा पर घाट या धार चढ़ानेवाला। सिकलीगर।  
 बारिज—सज्ञा पु० दे० 'बारिज'।  
 बारिद—सज्ञा पु० दे० 'बारिद'।  
 बारिपर—सज्ञा पु० दे० 'बारिपर'। बादल।  
 बारिद।  
 बारिधि—सज्ञा पु० दे० 'बारिधि'।  
 बारिधाह—सज्ञा पु० बादल।  
 बारिश—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ वर्षा। २ वर्षा ऋतु। बरमात।  
 बारी—सज्ञा स्त्री० १ किनारा। तट। छोर पर का भाग। हाशिया। २ बगीचे, खेत आदि के चारों ओर की मंड। घेरा। बाड़। ३ यस्तन के मुंह का घेरा। ओंठ। पैनी वस्तु का किनारा। धार। बाड़। ४ फूलबारी।  
 बगीचा। ५ मंड आदि में घिरा स्थान। मगरी। ६ घर। मकान (बंगला-बाड़ी)।  
 हरोणा। गिडगी। ७ बंदरगाह। ८ एक जाति, जो पत्तल-बोना बनाती है। ९

क्रमानुगत अवसर। अवसर। पारी। मौका।  
 १० लडकी। कन्या। थोड़े बयस की स्त्री। नवयौवना। ११ कान की बाली।  
 मुहा०—बारी-बारी से=क्रम में एक के पीछे एक। बारी बंधना=आगे-पीछे समय नियत होना।  
 बारोक—वि० [फा०] [सज्ञा बारीकी] १. महान। ज़ोना। पतला। सूक्ष्म। २ बहुत ही छोटा। ३ गूढ़। कठिनाई से समझ में आने-वाला।  
 बारोकी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ महीनपन। पतलापन। २ विशेषता। गुण। खूबी।  
 मुहा०—बारीकी निकालना=खूबी या विशेषता प्रकट करना। जल्दी समझ में न आने वाली चीज निकालना।  
 बारणी या बारुनी—सज्ञा स्त्री० दे० 'बारुणी'।  
 बारू—सज्ञा पु० दे० 'बारू'।  
 बारुद—सज्ञा स्त्री० १ तोप-बन्दूक आदि चत्ताने का मसाला। गन्धक और कौयले से बनी हुई वस्तु, जो गरमी पाते ही भक से उड़ जाती है। २ बारू। ३ एक प्रकार का पान।  
 मुहा०—गोली-बारुद=लडाई का सामान।  
 बारुदखाना—सज्ञा पु० गोली-बारुद या लडाई का सामान रखने का स्थान।  
 बारै—क्रि० वि० [फा०] अत की। अन्त में। सज्ञा पु० बच्चे। लडके।  
 अव्य०—बारै में। सबध में। बिपय में।  
 बारोठा—सज्ञा पु० व्याह की एक रस्म, जो घर के द्वार पर आने के समय होती है।  
 बाल—सज्ञा पु० [स्त्री० बाला] १. बेश। २ बालक। लडका। बच्चा। ३ नासमस आदमी। मूर्ख। अज्ञान। ४ अनाज के पीछे या अंश, जिसमें धानो के मुच्छे लगे रहते हैं। दे० 'बाला'।  
 वि० जो समान न हो। जो पूरी बाड़ की न पहुँचा हो। नासमस।  
 मुहा०—बाल बाँका न होना=बच्चा या हानि कुछ भी न पहुँचना। पूर्ण रूप से सुरक्षित रहना। बाल न बाँकना=बाल बाँका न होना। नहाने बांध न लिखना=कुछ

भी पष्ट या हानि न पहुँचना। (बिस्ती पाम में) बाल पयाना=(फोई पाम भरते-करते) चुद्धा हो जाना। बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना। बाल-बाल बचना=फोई आपत्ति पडने या हानि पहुँचने में बहुत थोड़ी बचकर रह जाना।

बालक-सज्ञा पु० [स्त्री० बालिका] १ मनुष्य का बच्चा। कम उम्र का लड़का। बेटा। २ नादान। अवोध व्यक्ति।

बालकपन-सज्ञा पु० लडकपन। दे० 'बाल-पन'। नासमझी। बालका की सी मूर्खता।

बालकाल-सज्ञा पु० बचपन।

बालकी-सज्ञा स्त्री० कन्या।

बालकृष्ण-सज्ञा पु० बाल्यावस्था के कृष्ण।

बालकांडा-सज्ञा स्त्री० बच्चों का खेल।

बालकेलि-सज्ञा स्त्री० खिलवाड़। बाल-श्रीडा।

बालबोरा-सज्ञा पु० रोग विशेष, जिसमें सिर के बाल झड़ जाते हैं। गज।

बालगोपाल-सज्ञा पु० १ बाल्यावस्था के कृष्ण। २ बालवच्चे।

बालगोविन्द-सज्ञा पु० दे० "बालकृष्ण"।

बालग्रह-सज्ञा पु० बालको के प्राणघातक की ग्रह।

बालचर-सज्ञा पु० वह बालक, जिसे सामाजिक सेवा करने की शिक्षा मिली हो। (अर्थ० बायस्काउट)।

बालटी-सज्ञा स्त्री० लोहे या पीतल का एक बरतन, जो गिलास के आकार का होता है और जिसे उठाने के लिए एक दस्ता लगा रहता है।

बालतंत्र-सज्ञा पु० शिशु को पालन की विद्या। बालको के पालन-पोषण की विद्या।

बालनोड-सज्ञा पु० शरीर पर के बाल टूट जाने से होनेवाला पीडा।

बालड-सज्ञा पु० बेल।

बालधि-सज्ञा पु० पूँछ।

बालना-क्रि० सं० जलाना।

बालपन-सज्ञा पु० १ बालक होने का भाव। लडकपन। २ नासमझी। बालको की तरह की मूर्खता।

बाल-बच्चे-सज्ञा पु० लठके-बाले। सतान। बालबुद्धि-सज्ञा स्त्री० छोटी बुद्धि।

वि०-नासमझ।

बालबोध-वि० बहुत सुगम या आसान। सज्ञा स्त्री० देवनागरी लिपि (जिसका ज्ञा बच्चों को कराया जाता है)।

बालब्रह्मचारी-सज्ञा पु० बाल्यावस्था से ब्रह्मचर्य व्रत धारण करनेवाला व्यक्ति।

बालभोग-सज्ञा पु० देवताओं, विशेषत बाल-कृष्ण आदि की मूर्तियों के सामने प्रातःकाल चढ़ाया जानेवाला प्रसाद। जलपान।

बालम-सज्ञा पुं० १ प्रियतम। पति। स्वामी। २ प्रेमी।

बालमुकुट-सज्ञा पु० बाल्यावस्था के कृष्ण। बालकृष्ण।

बाललीला-सज्ञा स्त्री० १ बचपन के खेल-कूद। बालको की श्रौडा। २ श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की श्रौडाएँ।

बालवत्स-सज्ञा पु० बच्चों से अधिक स्नेह करनेवाला या उन पर दयालु।

बालविधु-सज्ञा पु० शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चन्मा।

बाल-विधवा-सज्ञा स्त्री० बाल्यावस्था में विधवा होनेवाली स्त्री। कम उम्रवाली विधवा।

बालविवाह-सज्ञा पुं० बाल्यावस्था में होने-वाला विवाह।

बालसूर्य-सज्ञा पु० सबेरे उदय होनेवाला सूर्य।

बाला-सज्ञा स्त्री० १ छोटी बबस्या की लडकी। पुत्री। कन्या। २ १२ १३ वर्ष से १६-१७ वर्ष तक की अवस्था की स्त्री। सुवती। ३ पत्नी। ४ हाथ में पहनने का कड़ा। ५ कानों में पहनने का गहना। ६ एव वर्णवृत्त।

सज्ञा पु० १ बालको के समान। अज्ञान। २ सरल। ३ निश्छल।

यौ०-बालाभोला=भोला-भाला। बहुत ही सीधा।

मुहा०-बोलवाला रहना=सम्मान और आदर बढ़ा रहना।

बालाई-सज्ञा स्त्री० दे० "मलाई"।

वि० [ फा० ] ऊपरी । अतिरिक्त । अलाया ।  
 बालाशाना—सज्ञा पु० [ फा० ] कोठे पर की  
 बैठक । मरान के ऊपर का [ कमरा ] ।  
 बालादस्तो—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] जवरदस्तो ।  
 बालानशीन—सज्ञा पु० [ फा० ] १ बैठने का  
 सबसे ऊँचा स्थान । २ सबसे श्रेष्ठ पद ।  
 ३ ऊँचे स्थान पर आसीन ।  
 वि० बहुत बढ़िया । सबसे अच्छा ।  
 बालापन—सज्ञा पु० लहवपन ।  
 बालाफं—सज्ञा पु० सबेरे उदय होनेवाला  
 सूर्य । बालसूर्य ।  
 बालि—मज्ञा पु० पपा, विष्णिका का चानर  
 राजा जो अगद का पिता और सुग्रीव का  
 बड़ा भाई था ।  
 बालिका—सज्ञा स्त्री० छोटी लड़की । बग्या ।  
 बेटी ।  
 बालिग—सज्ञा पु० [ अ० ] १८ वर्ष से अधिक  
 आयु का व्यक्ति । प्राप्त-वयस्क । युवा ।  
 जवान ।  
 बालिश—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] लकिया ।  
 वि० अवोध । अज्ञान । नासमझ ।  
 बालिशत—सज्ञा पु० दे० “बिता” ।  
 बालिश्य—सज्ञा पु० मूर्खता । अज्ञता ।  
 बाली—सज्ञा स्त्री० १ कान में पहनने का एक  
 आभूषण । कुण्डल । २ जी, गेहूँ आदि पौधों  
 की बाल । ३ एक ओजार ।  
 सज्ञा पु० दे० “बालि” ।  
 बालुका—सज्ञा स्त्री० बालू ।  
 बालू—सज्ञा पु० चट्टानों आदि का बारीक  
 चूर्ण, जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ों पर से  
 आता है और नदियों के किनारे या रेगिस्तानों  
 में बहुत पाया जाता है । रेत ।  
 मुहा०—बालू की भीत—शीघ्र नष्ट हो  
 जानेवाली वस्तु । अस्थायी कार्य या  
 वस्तु ।  
 बालूदानी—सज्ञा स्त्री० बालू रखने की शौशरी-  
 दार डिबिया, जिसके बालू से सुखाने का काम  
 लेते हैं ।  
 बालूसाही—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई ।  
 बालैय—सज्ञा पु० १ गबहा । २ चावल ।  
 वि० १ मृदु । कोमल । २ बलिदान के योग्य ।

वाल्टी—सज्ञा पु० दे० “वालटी” ।  
 वात्प—सज्ञा पु० बालक होने की अवस्था या  
 भाव । लटकपन । बचपन ।  
 वि० बालक गा । बचपन का । बाल्यावस्था-  
 सम्बन्धी ।  
 वात्पावस्था—सज्ञा स्त्री० लटकपन । बचपन ।  
 छोटी आयु । कम उम्र ।  
 वाय\*—सज्ञा पु० हवा । वाई (वायु या प्रकोप) ।  
 पाद (अपानवायु) ।  
 वायजूव—क्रि० वि० [ पा० ] इतना होने पर  
 भी । इस पर भी ।  
 वायडी—सज्ञा स्त्री० दे० “बावली” ।  
 वायन—सज्ञा पु० पचास और दो की सरया ।  
 ५२ । दे० “वामन” ।  
 वि० पचास और दो ।  
 मुहा०—वायन तोला पाव रत्ती—जो हर  
 तरह से बिलकुल ठीक हो ।  
 वायनयोर—सज्ञा पु० बड़ा बहादुर और  
 चालाक ।  
 वावना—वि० दे० “वीना” ठिगना । नाटा ।  
 वावभक—सज्ञा स्त्री० पागलपन । सिडीपन ।  
 बाबर\*†—वि० दे० “बावला” ।  
 बाबरची—सज्ञा पु० [ फा० ] रसोइया । खाना  
 पकाने की नौकरी करनेवाला (मुसल०) ।  
 बाबरचीखाना—सज्ञा पु० [ फा० ] भोजन पकने  
 का स्थान । रसोईघर (मुसल०) ।  
 बाबरा—वि० दे० “बावला” ।  
 बाबरी†—वि० पगली ।  
 सज्ञा स्त्री० दे० “बावली” तालाब ।  
 बाबल—सज्ञा पु० अन्ध ।  
 बाबला—वि० [ स्त्री० बावली ] उन्मत्त ।  
 पागल । सनकी । मूर्ख ।  
 बाबलापन—सज्ञा पु० पागलपन । झक । सिडी-  
 पन ।  
 बावली—सज्ञा स्त्री० छोटा गहरा तालाब,  
 जिसमें पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ  
 बनी हो । दे० “बापिका” ।  
 वि० पगली । उन्मत्त स्त्री ।  
 बाबा†—वि० दे० “बाबा” ।  
 बाशिदा—सज्ञा पु० [ फा० ] निवासी । वास  
 करने या रहनेवाला ।

वाप्य-संज्ञा पु० दे० "वाप्य"।

वासंतिन-वि० दे० "वासंतिन"। वसंत-वस्तु का। वसंती।

वास-संज्ञा पु० १. दे० "वास"। २. रहने की क्रिया या भाव। निवास। निवास-स्थान। ३. वृ। गंध। महक। ४. एक छंद। ५. कपड़ा। वस्त्र। पोशाक।

संज्ञा स्त्री० १. वासना। इच्छा। २. अग्नि। ३. एक हथियार। तेज धारवाले छोटे अस्त्र।

वासकसंज्ञा-संज्ञा स्त्री० अपने पति या प्रियतम के आने पर उससे मिलने के लिए विशेष सामग्री सज्जित करनेवाली नायिका।

वासक-वि० साठ और दो।

संज्ञा पु० ६२ की संख्या।

वासन-संज्ञा पु० १. वस्त्र। २. कपड़ा।

वासना-संज्ञा स्त्री० दे० "वासना"। गंध।

क्रि० स० सुगंधित करना। महकाना।

वासमती-संज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत बढ़िया चावल। पकने पर इसमें से हलकी सुगंध आती है।

वासर-संज्ञा पु० १. दे० "वासर"। दिन। २. सबेरा।

वासव-संज्ञा पु० दे० "वासव"।

वासा-संज्ञा पु० १. रहने का स्थान, जहाँ खाना भी मिले। डेरा। २. एक पक्षी।

वासी-वि० १. दे० "वासी"। रहनेवाला। २.

देर का बना हुआ। जो ताजा न हो (भोजन)। कुछ समय तक का रखा हुआ (भोजन)। सूखा हुआ (फूल)।

मुहा०-वासी बड़ी में जवाल आना=बुढ़ापे में जवानी की उमंग उठना। किसी बात का समय बीत जाने पर उसकी चर्चा होना।

बाहक-संज्ञा पु० दे० "बाहक"।

बाहकी-संज्ञा स्त्री० बहारिनी। पालकी डोने का काम करनेवाली स्त्री।

बाहना-क्रि० स० १. डोना, चलाना या पेंवना (अस्त्र)। २. गाड़ी आदि हाँकना। ३. पाँटना। धारण करना। ४. बहाना। ५. खेत जोतना।

बाहनी-संज्ञा स्त्री० दे० "बाहनी"।

बाहर-क्रि० वि० सीमा से पार। 'अन्दर' का उल्टा।

मुहा०-बाहर आना या होना=सामने आना। प्रकट होना। बाहर करना=दूर करना। हटाना। बाहर-बाहर=अलग या दूर से। बिना किसी की जताए। किसी दूसरी जगह। अन्य नगर में। बाहर की=बेगाना। पराया। अधिकार या संबंध आदि से अलग।

बाहरी-वि० १. बाहर का। जो आपस का न हो। पराया। अपरिचित। बेगाना। २. केवल बाहर से दिखाई देनेवाला।

बाह्य-संज्ञा पु० ऊपर १।

बाह्यो-क्रि० वि० हाथ से हाथ मिलाकर।

बाह्य-संज्ञा पु० नाव का डौड़ बांधने की रस्सी।

बाह्य-संज्ञा पु० दे० "बाह्य"। बाहरी। ऊपर से देखने में। बाह्य रूप में।

बाहिनी-संज्ञा स्त्री० दे० "बाहिनी"।

बाहिर-क्रि० वि० दे० "बाहिर"।

बाह्य-संज्ञा स्त्री० बाह्य। हाथ।

बाह्य-संज्ञा पु० १. राजा नल का उस समय का नाम, जब वे अयोध्या के राजा के सारथी रहे थे। २. नकुल।

बाह्य-संज्ञा पु० जो बाह्य से उत्पन्न हुआ हो। धर्मिय।

बाह्यग-संज्ञा पु० मुँह में हाथों की रक्षा के लिए पहना जानेवाला दस्ताना।

बाह्य-संज्ञा पु० हाथों की तावत। शक्ति। और। सामर्थ्य। पौरुष। पराक्रम।

बाह्य-संज्ञा पु० हाथों की मिलाकर घनाया गया फन्दा। आलिंगन में हाथों में बाँध रस्सना।

बाह्य-संज्ञा पु० गंध और बाह्य के बीच का जोड़।

बाह्य-संज्ञा पु० पुत्ती। मल्लयुद्ध।

बाह्य-संज्ञा पु० बहुत या अधिक होने का भाव। अधिकता। बहुतायत।

बाह्य-संज्ञा स्त्री० दे० "बाह्य"।

बाह्य-संज्ञा पु० दे० "बाह्य"।

बाह्य-वि० दे० "बाह्य"। बाहरी। बाहर का।

वाप्य-सज्ञा पु० दे० "वाप्य"।  
 वासतिर-वि० दे० "वासतिक"। वसत-शब्द  
 का। वसती।  
 वास-सज्ञा पु० १ दे० "वास"। २ रहने की  
 क्रिया या भाव। निवास। निवास-स्थान।  
 ३. वृ०। गघ०। महक। ४ एक छद। ५.  
 कपडा। वस्त्र। पोशाक।  
 सज्ञा स्त्री० १. वासना। इच्छा। २. अग्नि।  
 ३. एक हथियार। तेज धारवाले छोटे अस्त्र।  
 वासकसञ्ज्ञा-सज्ञा स्त्री० अपने पति या  
 प्रियतम के आने पर उससे मिलने के लिए  
 विशेष सामग्री सज्जित करनेवाली नायिका।  
 बाग-वि० बाग और दो।  
 सज्ञा पु० ६२ की सख्या।  
 वासन-सज्ञा पु० १. वस्त्र। २. कपडा।  
 वासना-सज्ञा स्त्री० दे० "वासना"। गघ०।  
 कि० स० सुगंधित करना। महकाना।  
 वासमती-सज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत  
 बढ़िया चावल। पकने पर इसमें से हलकी  
 सुगंध आती है।  
 वासर-सज्ञा पु० १ दे० "वासर"। दिन। २.  
 सबेरा।  
 वासव-सज्ञा पु० दे० "वासव"।  
 वासा-सज्ञा पु० १ रहने का स्थान, जहाँ  
 खाना भी मिले। डेरा। २ एक पक्षी।  
 वासी-वि० १. दे० "वासी"। रहनेवाला। २  
 बैर का बना हुआ। जो राजा न हो  
 (भोजन)। कुछ समय तक का रत्ता हुआ  
 (भोजन)। सूखा हुआ (फूल)।  
 मुहा०—वासी कडी में डवाला आना=बुढ़ापे  
 में जपानी की उमर उठना। किसी बात  
 का समय बीत जाने पर उसकी चर्चा  
 होना।  
 बाहक-सज्ञा पु० दे० "बाहक"।  
 बाहको\*-सज्ञा स्त्री० कहालिन। पालकी  
 होने का काम करनेवाली स्त्री।  
 बाहना-क्रि० स० १ डोना, चलाना या फेंकना  
 (अस्त्र)। २ गादी आदि हाँकना। ३.  
 पकड़ना। पारण करना। ४ बहाना। ५ खेत  
 जोतना।  
 बाहनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "बाहिनी"।

बाहुर-क्रि० वि० सीमा से पार। 'अन्दर' का  
 का उल्टा।  
 मुहा०—बाहुर आना या होना=गमने  
 आना। प्रकट होना। बाहुर करना=दूर  
 करना। हटाना। बाहुर-बाहुर=जलम या  
 दूर से। बिना किमी की जताए। किसी  
 दूरी जगह। अन्य नगर में। बाहुर  
 का=वेगाना। पराया। अधिकार या सबब  
 आदि से अलग।  
 बाहुरी-वि० १. बाहुरका। जो आपस का न  
 हो। पराया। अपरिचित। वेगाना। २. केवल  
 बाहुर से दिखाई देनेवाला।  
 बाहुर-सज्ञा पु० अजगर।  
 बाहुरी-क्रि० वि० हाथ से हाथ मिलाकर।  
 बाहुर-सज्ञा पु० नाव का डीठ बाँपने की  
 रस्सी।  
 बाहुर\*-सज्ञा पु० दे० 'बाह्य'। बाहुरी।  
 ऊपर से देखने में। बाह्य रूप में।  
 बाहिनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "बाहिनी"।  
 बाहुर-क्रि० वि० दे० "बाहुर"।  
 बाहुर-सज्ञा स्त्री० बाँह। हाथ।  
 बाहुर-सज्ञा पु० १ राजा नल का उस समय  
 का नाम, जब वे अयोध्या के राजा के सारथी  
 बने थे। २ नकुल।  
 बाहुर-सज्ञा पु० जो बाहुर से उत्पन्न हुआ हो।  
 धातिय।  
 बाहुराग\*-सज्ञा पु० युद्ध में हाथों की रक्षा के  
 लिए पहना जानेवाला दस्ताना।  
 बाहुरबल-सज्ञा पु० हाथों की शक्ति। शक्ति।  
 जोर। सामर्थ्य। पोषण। पराक्रम।  
 बाहुराश-सज्ञा, पु० हाथों को मिलाकर बनाया  
 गया फन्दा। आलिंगन में हाथों में बाँध  
 रखना।  
 बाहुरमूल-सज्ञा पु० कंधे और बाँह के बीच का  
 जोड़।  
 बाहुरयुद्ध-सज्ञा पु० युद्ध। मल्लयुद्ध।  
 बाहुरत्य-सज्ञा पु० बहुत या अधिक होने का  
 भाव। अधिकता। बहुतायत।  
 बाहुर-सज्ञा स्त्री० दे० "बाहि"।  
 बाहुरन-सज्ञा पु० दे० "बाहुरण"।  
 बाहुर-वि० दे० "बाह्य"। बाहुरी। बाहुरका।

बाह्यलोक-सज्ञा पु० कावोज के उत्तर प्रदेश का प्राचीन नाम। बलख।

विग\*†-सज्ञा पु० दे० "व्यय"।

विजन\*†-सज्ञा पु० दे० "व्यंजन"। पंखा।

विद\*†-सज्ञा पु० दे० "वृद्ध" या "विदी"।

विदा-सज्ञा पु० मस्तक का गोल और बड़ा टीका। बेंदा। वुदा।

विदी-सज्ञा स्त्री० १. शून्य-सूचक चिह्न०।

विदु। २. माथे पर का गोल छोटा टीका।

बेंदी। टिकुली। ३. विदु के आकार का कोई चिह्न।

विदुरी†-सज्ञा स्त्री० दे० "विदी"। टिकुली।

विदुली-सज्ञा स्त्री० दे० "विदी"। टिकुली।

विधा†-सज्ञा पु० दे० "विन्ध्याचल"।

विधना-क्रि० अ० धोना या छेदा जाना। फेंसना। उलझना।

विध-सज्ञा पु० १. प्रतिविम्ब। छाया। २.

कमंडलु। ३. प्रतिमूर्ति। ४. कुंदरु नामक फल। ५. सूर्य या चंद्रमा का मंडल। ६.

आभास। झलक। ७. गिरगिट। ८. सूर्य।

९ एक छद। १०. दे० "वांवी"।

विधक-सज्ञा पु० सूर्य या चंद्रमा का मण्डल।

कुंदरु। साँचा। प्राचीन काल का एक वाजा।

विधक-सज्ञा पु० कुंदरु नामक फल।

विधा-सज्ञा पु० कुंदरु। विध। प्रतिविम्ब।

परछाईं। चंद्रमा या सूर्य का मंडल।

विधिसार-सज्ञा पु० एक प्राचीन राजा, जो अजातशत्रु के पिता और गाँतम बुद्ध के समकालीन थे।

विनोट-सज्ञा स्त्री० दीमक।

वि\*†-वि० दो। एक ओर एक।

विग्रहता†-वि० दे० "विवाहित"। जिसका विवाह हुआ हो। २. विवाह-सम्बन्धी।

विवाहना।

विज्यापि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "व्यापि"।

विज्यापु†-सज्ञा पु० दे० "व्याप"।

विजाना-क्रि० स० दे० "व्याना"। बन्धना देना। जनना (पशुओं से लिए प्रयुक्त)।

विज्राहना\*†-क्रि० म० दे० "व्याहना"।

विवाह करना।

विकट-वि० दे० "विकट"।

विकना-क्रि० अ० मूल्य लेकर दिया जाना।

वेचा जाना।

मुझा-किसी के हाथ विकना=किसी का

गुलाम बनना।

विकरम†-सज्ञा पु० १ दे० "विक्रम"। २. दे०

"विक्रमादित्य"।

विकरा†-वि० दे० "विकराल"।

विकराल-वि० दे० "विकराल"।

विकला†-वि० दे० "विकल"। व्याकुल।

विकलाई†-सज्ञा स्त्री० दे० "वेचैनी"। व्या-

कुलता।

विकलाना†-क्रि० अ० व्याकुल होना। घब-

राना। वेचैनी होना।

क्रि० स० वेचैनी करना। व्याकुल करना।

विकसना-क्रि० अ० १. खिलना। विकसित

होना। फूलना। २. बहुत खुश होना।

विकसाना-क्रि० अ० दे० "विकसना"।

क्रि० स० १. खिलाना। विकसित करना।

२. प्रसन्न करना।

विकाऊ-वि० विकनेवाला। वेचा जानेवाला।

विकाना†-क्रि० अ० दे० "विकना"। वेचा

जाना। सप जाना।

विकार\*†-सज्ञा पु० दे० "विकार"।

विकारी†-वि० १. रूपान्तरित। २. बुरा।

हानिकारक।

सज्ञा स्त्री० [ विकृत या वक ] एक टेढ़ी पाई,

जिस अंको आदि के आगे सख्या या मान

सूचित करने के लिए लगाते हैं।

विकास-सज्ञा पु० दे० "विकास"।

विक्रो-सज्ञा स्त्री० बेचे जाने की प्रिया।

बेचने से मिलनेवाला धन।

विक्षा\*†-सज्ञा पु० दे० "विष"।

विषम-वि० दे० "विषम"।

बिसरना-क्रि० अ० छितराना। तितर-बितर

हो जाना। फेंक जाना।

बिसराना-क्रि० स० दे० "बिसरना"।

वितेरना-क्रि० स० छितराना।

विगड़ना-क्रि० अ० १. सराय होना। नष्ट

होना। किसी वस्तु का टुक न बनना। बुरी

दशा का प्राप्ति होना। सराय दशा में जाना।

२ वद-नलन होना। ३. मृद्ध होना। विरोधी होना। अप्रसन्न होना। ४. विद्रोह करना। (पगुआ आदि का) अपने स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना। ५ परस्पर विरोध या वैमनस्य होना। ६ व्यर्थ खर्च होना।

विगडेविल-सज्ञा पु० विगडनेवाला। हर बात में लड़ने-झगड़नेवाला। श्रोधी। कुमार्गी। विगडेल-वि० १ झगड़ालू। हर बात में विगडने या शोध करनेवाला। श्रोधी। २ कुमार्गी। हठी। जिद्दा।

विगर्-वि० वि० दे० "वगैर"।

विगर्ना-क्रि० अ० दे० "विगडना"।

विगराइल-वि० दे० "विगडेल"।

विगसना\*-क्रि० अ० दे० "विकसना"।

विगहा-सज्ञा पु० दे० "वीघा"।

विगाड़-सज्ञा पु० खराबी। दोष। वैमनस्य। झगडा। मनोमांसिन्य।

विगाडना-क्रि० स० १. खराव करना। हानि पहुँचाना। २ नष्ट करना। तोडना। बुरी दशा में लाना। ३ कुमार्ग में लगाना। ४ स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ५ बुरी आदत लगाना। बहकाना। व्यर्थ खर्च करना।

विगाना-वि० [फा०] वेगाना। दे० "पराया"। गैर। अनजान।

विगार\*-सज्ञा पु० दे० १ "विगाड"। २ दे० "वेगार"।

विगारि-सज्ञा स्त्री० दे० "वेगार"।

विगारी-सज्ञा स्त्री० दे० "वेगारी"। वेगार में काम करनेवाला आदमी।

विगस्त\*-सज्ञा पु० दे० "विकास"।

विगिर\*-क्रि० वि० दे० "वगैर"।

विगुन\*-वि० विना गुण के। गुणहीन। मूख।

विगुर-वि० जिसने किसी गुरु से शिक्षा न ली हो। निगुरा।

विगुरचन\*-सज्ञा स्त्री० दे० "विगूचन"। दुविधा।

विगुरवा\*-सज्ञा पु० प्राचीन काल का एक हथियार।

विगुल\*-सज्ञा पु० [अंग्रे०] एक प्रशासकी अथवा कुरही, जो प्रायः सैनिकों को आज्ञा देने के लिए बजाई जाती है।

विगूचन\*-सज्ञा स्त्री० १. असमजस। द्विविधा। विकृतव्यविमूढ़ होने की अवस्था। जडचन। २ लठिनाई। परशानी।

विगूचना-क्रि० अ० १ द्विविधा या जतमजस में पडना। २ दबाया जाना। पक्का जाना। क्रि० स० दबोचना। घर दवाना।

विगोई-सज्ञा स्त्री० १. भुलावा। २ छिपाव।

विगोला-क्रि० स० १ नष्ट-भ्रष्ट करना।

विगाडना। २ छिपाना। दुराना। ३ तग करना। दिक करना। ४ बहकाना। भ्रम में डालना। विताना। व्यतीत करना।

विगाहा-सज्ञा पु० आर्या छंद का एक भेद। उद्गीति।

विघटना-क्रि० स० विनाश करना। विगाडना। तोडना। नष्ट-भ्रष्ट करना।

विघन-सज्ञा पु० दे० "विघ्न"।

विघनहरन\*-वि० दे० "विघ्नहरण"। विघ्न या बाधा दूर करनेवाला।

सज्ञा पु० गणेशजी।

विच\*-क्रि० वि० दे० "विच"।

विचकना-क्रि० अ० १ भडकना। चौंकना।

२ सतक होना। ३ मुँह बनाना या टेढ़ा करना। ४ चिड़ना।

विचकाना-क्रि० अ० १ भडकाना। मुँह चिड़ाना। २ मुँह को (स्वाद विगडने के कारण) टेढ़ा करना। ३ मुँह बनाना। ४ सतक करना।

विचच्छन\*-वि० दे० "विचक्षण"।

विचरना-क्रि० अ० दे० विचरण।" इधर-उधर घूमना। भ्रमण करना।

विचलना-क्रि० अ० १ विचलित होना। २ फिसलना। ३ हिम्मत हारना। कहकर मुकटना।

विचला-वि० [स्त्री० विचली] बीच का। जो बीच में हो।

विचलाना\*-क्रि० स० १ विचलित करना। डिगाना। ३ हिला देना। ४ तितर-बितर करना।

विचित्र-सज्ञा पु० १ मध्यस्थ। झगड़े में बीच-  
बचाव करनेवाला। विचयान। २ दलाल।  
विचवाई-सज्ञा स्त्री० १ जगड़े का बीच  
बचाव। मध्यस्थता। २ दलाली।  
विचयानो-सज्ञा पु० दे० विचयवर्द। मध्यस्थ।  
बीच-बचाव करनेवाला।  
विचयुत-सज्ञा पु० अतर। सदेह। दुविधा।  
विचार-सज्ञा पु० दे० "विचार"।  
विचारना\*†-क्रि० अ० दे० "विचारना"।  
१ विचार करना। सोचना। समझना। २  
पूछना (शुभ मुहूर्त आदि)।  
विचारा-वि० दे० "वेचारा"।  
विचारी\*†-सज्ञा पु० १ विचार करनेवाला।  
विचारक। २ छूतछात माननेवाला।  
विचाली\*†-सज्ञा पु० १. अलग करना। अतर।  
२ अलगाव। फर्क।  
विचाली-सज्ञा स्त्री० १. पुआल। सूखी घास।  
२ चटाई।  
विचेत\*†-वि० १ भूच्छित। अचेत। बेहोश।  
२ धवराया हुआ। बदहवास।  
विच्छो-सज्ञा स्त्री० दे० "विच्छू"।  
विच्छू-सज्ञा पु० [स्त्री० विच्छी] विपले  
डकवाला एक छोटा कीड़ा।  
विच्छेप\*†-सज्ञा पु० दे० "विक्षेप"।  
विछना-क्रि० अ० विछाना का अकर्मक रूप।  
विछाया जाना।  
विछलन-सज्ञा स्त्री० १ फिसलन। २ फिसलने  
की जगह।  
विछलना†-क्रि० अ० फिसलना।  
विछलाना-क्रि० अ० फिसल जाना।  
विछवाना-क्रि० स० किसी दूसरे से 'विछाने'  
का काम कराना।  
विछान-सज्ञा पु० दे० 'विछावन'।  
विछाना-क्रि० स० १ फँसाना। पसारना।  
विस्तार या विछावन करना। २ बिखेरना।  
बिखराना। जमीन पर गिरा या लेटा देना।  
विछावन†-सज्ञा पु० दे० "विछौना"।  
विछिआ†-सज्ञा स्त्री० दे० 'विछुआ'। स्त्रियों  
के पैर की अँगुलियों में पहनने का एक छोटा  
गहना। छल्ला।  
विछिप्त\*†-वि० दे० "विक्षिप्त"।

विछुआ-सज्ञा पु० १. स्त्रियों के पैर की अँगुलियों  
में पहनने का एक गहना। २. एक प्रकार  
की छुरी।  
विछुडना†-सज्ञा स्त्री० १ विछुडने का भाव।  
अलग होने का भाव। २. वियोग। विच्छेद।  
विछुडना-क्रि० अ० १ अलग होना। एक दूसरे  
से अलग होना। २. वियोग होना।  
विछुरता\*†-सज्ञा पु० १ विछुडनेवाला। २.  
जिसका साथ छूट चुका हो। वियोगी।  
विछुरना\*-क्रि० अ० दे० "विछुडना"।  
विछुया-सज्ञा पु० दे० 'विछिया'। अस्व-  
विशेष।  
विछुना\*†-सज्ञा पु० वियोगी। जो बिछड़  
गया हो।  
बिछोई†-सज्ञा पु० विरही।  
बिछोड़ा-सज्ञा पु० विछुडने की क्रिया, भाव  
या दुख। बिछोह। वियोग।  
बिछोह-सज्ञा पु० विछुडने का दुख। जुदाई  
का सदमा। वियोग। जुदाई।  
बिछौना-सज्ञा पु० विछाने का कपड़ा या  
सामान। विस्तर। विछावन।  
बिजड़-सज्ञा स्त्री० तलवार।  
बिजन\*†-सज्ञा पु० पत्ता। घेना। बिजना।  
वि० बिजन। एकांत स्थान। जिससे साथ  
कोई न हो। अकेला।  
बिजयपट-सज्ञा पु० मन्दिरों में धजाया  
जानेवाला एक प्रकार का धड़ा।  
बिजयसार-सज्ञा पु० एक बहुत बड़ा जंगली  
पेड़।  
बिजया-सज्ञा स्त्री० दे० 'विजया'। भाँग।  
बिजली-सज्ञा पु० १ बादलों की टक्कर से  
उत्पन्न अग्नि। २ वस्तुओं में आकर्षण और  
अपकर्षण र करनेवाली शक्ति, जो कुछ खास  
क्रिय ओ-द्वारा उत्पन्न की जाती है। इस  
शक्ति से प्रकाश और गर्मी पैदा होती तथा  
वस्तुओं का संचालन होता है। ३ कान  
और गले का एक गहना। ४ विद्युत्।  
वि० १ चंचल। २ चमकीली। प्रकाश-युक्त।  
मुहा.—बिजली गिरना या पडना=विपत्ति  
आना। बिजली का आकाश से पृथ्वी की  
ओर बड़े वेग से आना, जिससे मार्ग में पडने-

पाली चीजें जलान नष्ट हो जाती हैं।  
विजली मडाना=विजली के कारण आवास  
में बहुत जार का पद होना।

विजलीघर-सज्ञा पु० यह स्थान जहाँ से सारे  
नगर या आस-पास के स्थानों में विजली  
पहुँचाई जाती है।

विजलन-वि० जिसका बीज नष्ट हो गया हो।

विजाली-वि० दे० 'विजालीय'। दूसरी जाति  
का। जाति से निकाला हुआ।

विजान+ज्ञ-सज्ञा पु० अज्ञान। अनजान। मूर्ख।  
अज्ञान।

विजायठ-सज्ञा पु० बाहू पर पहनने का वाजू-  
वद। अगद। भुजवद।

विजान-सज्ञा पु० बेल। साँड़।

विजुरी+ज्ञ-सज्ञा स्त्री० दे० 'विजली'।

विजाला-वि० बीजयुक्त। बीज के साथ।

विजुका, विजुला+ज्ञ-सज्ञा पु० खेता में पक्षिया  
आदि को भगाने के लिए लकड़ी के ऊपर  
उलटी रखी हुई कासी हाड़ी या इसके  
लिए इसी तरह की रखी गई कोई दूसरी  
चीज। दे० "घोछा"।

विजोग+ज्ञ-सज्ञा पु० दे० 'वियोग'।

विजोना+ज्ञ-वि० स० अच्छी तरह देखना।

विजोरा-वि० विना जोर का। कमजोर।  
सज्ञा पु० दे० 'विजोरा'।

विजोरा-सज्ञा पु० नीबू की जाति का एक  
वृक्ष, जिसके फल बड़ी नारंगी के बरानर  
होते हैं।

विजोरी-सज्ञा स्त्री० दे० 'कुम्हरी'।

विजु+ज्ञ-सज्ञा स्त्री० दे० 'विजली'।

विजुपात+ज्ञ-सज्ञा पु० दे० 'वज्रपात'।  
विजली गिरना।

विजुल+ज्ञ-सज्ञा पु० छात। साल। त्वचा।  
छिलका।

सज्ञा स्त्री० दे० 'विजुल'। विजली।

विजु-सज्ञा पु० विल्ली के आकार प्रकार  
का एक जंगली जानवर।

विजरा+ज्ञ-सज्ञा पु० बेझड़। चता, गेहूँ, मटर  
और जव आदि मिला हुआ अन्न।

विजुकना+ज्ञ-वि० अ० १ भड़कना। बिचकना।  
२ डरना। ३ देड़ा होना। ४ उगना।

विजुकना+ज्ञ-वि० स० १. भड़कना। बिच-  
कना। २ डरना। ३ देड़ा करना।

विजुजन-सज्ञा पु० दे० "व्यजन"।

विट-सज्ञा पु० दे० 'विट'। नीबू। मटर।

विटचर-सज्ञा पु० गूजर। विष्टा खानेवाला।

विटना-वि० अ० १ छिटकना। २ अलग  
होना। ३ विचुरना।

विटरना-वि० अ० १ घँघोला जाना। २  
गदा हाना।

विटारना-वि० स० १. घँघोलना। २ गदा  
करना।

विटिया+ज्ञ-सज्ञा स्त्री० दे० "वेटी"।

विटल-सज्ञा पु० १ विष्णु भगवान् का  
एक नाम। २ जबई प्रांत में शालापुर के  
अंतर्गत पठरपुर की एक देवमूर्ति।

विटलाना-वि० स० घँघाना।

विटाना-वि० स० घँघाना। ठहराना।

विडब-सज्ञा पु० दे० "विडब"। ढाग।

विडबना+ज्ञ-सज्ञा स्त्री० दे० "विडबना"।

विडर-वि० १ छितराया हुआ। तितर-  
वितर। अलग-अलग। २ दे० "विडर"।

विना डर के।

विडरना-वि० अ० १ तितर-वितर होना। २  
भागना। बिचकना। ३ तपस्या का भयभीत  
होकर बिचकना। ४ बरबाद होना। नष्ट  
होना।

विडराना-वि० स० १ तितर वितर करना।  
२ भगाना। ३ डरवाना।

विडबना+ज्ञ-वि० स० तोड़ना।

विडारना-वि० स० १ डराकर भगाना।  
२ नष्ट करना।

विडाल-सज्ञा पु० वन मिलाव।

विडालक-सज्ञा पु० आँख की पुतली।

विडालवृत्ति+वि० १ लोभी। २ बपटी।  
३ हिंसक।

विडालाक्ष-वि० विल्ली के समान आँखवाला।

विडालिका-सज्ञा स्त्री० विल्ली।

विडाली-सज्ञा स्त्री० विल्ली।

विडुतो+ज्ञ-सज्ञा पु० १ बड़ती। २ नमाई।  
३ लाभ।

विडयना+ज्ञ-वि० स० १ बढ़ाना। २

कमाना। पेंसा पैदा करना। उपात्रन करना।  
 ३ जमा करना।  
 विद्याना\*†-क्रि० स० दे० "विद्वाना"।  
 वित†-सज्ञा पु० दे० "वित्त"।  
 वितताना-क्रि० अ० विलखना। व्याकुल  
 होना।  
 क्रि० स० १ वित्तखाना। दुख देना। २  
 व्याकुल करना।  
 वितना†-सज्ञा पु० दे० "वित्त"।  
 वितरना\*†-क्रि० स० दे० "वितरण"।  
 बाँटना।  
 वितवना\*†-क्रि० स० दे० "वित्ताना"।  
 विताना-क्रि० स० व्यतीत करना। काटना।  
 गुजारना।  
 विताना\*†-क्रि० स० दे० "वित्ताना"।  
 व्यतीत-वि० दे० "व्यतीत"।  
 व्यतीतना-क्रि० अ० व्यतीत होना। गुजरना।  
 क्रि० स० गुजारना। विताना।  
 वितु-सज्ञा पु० दे० "वित्त"।  
 वित्त-सज्ञा पु० १ दे० "वित्त"। धन। दौलत।  
 २ ओकात। हैसियत। सामर्थ्य।  
 वित्त-सज्ञा पु० हाथ की सब उँगलियों को  
 फैलाकर अँगूठे के सिरे तक की दूरी।  
 मालिश।  
 वित्तिया-वि० ढिगना। बचना। नाटा।  
 बिकना-क्रि० अ० १ यकना। २ चकित  
 होना। ३ हैरान या परेशान होना। ४  
 मोहित होना।  
 बियरना, बियुरना†-क्रि० अ० १ छितराना।  
 बिखरना। फैल जाना। अलग-अलग होना।  
 २ खिल जाना।  
 बिया\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "व्यथा"।  
 बियारना-क्रि० स० छितराना। छिटकाना।  
 बिखेरना। फैलाना।  
 बियित\*†-वि० दे० "व्यथित"।  
 बियोरना\*†-क्रि० स० दे० "बियारना"।  
 बिदकना-क्रि० अ० दे० "भडकना"। १ बिच-  
 रना। २ धायल होना।  
 बिदराना-क्रि० स० १ भडकाना। २ फाड़ना।  
 विदीर्ण करना। ३ धायल करना। ज़रमी  
 करना।

बिदर-सज्ञा पु० १ विदभं देश या वरार। २  
 ताँवे और जस्ते के मेल से बनी एक  
 उपधातु।  
 बिदरन\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "विदीर्ण"।  
 दरार। फटने का चिह्न। छेद।  
 बि० फाड़नेवाला। चीरनेवाला।  
 बिदरना\*†-क्रि० अ० १ फटना। २ नष्ट  
 होना।  
 बिदरी-सज्ञा स्त्री० जस्ते और ताँवे के मेल से  
 बना चाँदी-सोने के तारों का नक्काशीदार  
 सामान। बिदर की धातु का बना हुआ  
 सामान।  
 बिदा-सज्ञा स्त्री० दे० "विदा"। विदाई।  
 जाने की आज्ञा। प्रस्थान। रुखसत।  
 बिदाई-सज्ञा स्त्री० १ दे० "विदाई"। विदा  
 होने की क्रिया या भाव। जाने की आज्ञा।  
 २ विदा होने के समय दिया जानेवाला धन  
 आदि।  
 बिदारना†-क्रि० स० १ फाड़ना। चीरना।  
 २ नष्ट करना।  
 बिदारी-सज्ञा पु० १ भुईं कुम्हड़ा। एय प्रकार  
 का कुम्हड़ा जो जमीन के अन्दर फलता  
 है। २ शास्त्रपणी।  
 बिदारीकद-सज्ञा पु० एक प्रकार का लाल  
 कद। बिलाईकद।  
 बिदाहना-क्रि० अ० जोते हुए खेत में हल  
 चलाना।  
 विदीरना\*†-क्रि० स० विदीर्ण करना। फाड़ना।  
 बिदुराना\*†-क्रि० अ० धीरे-धीरे हँसना।  
 मुस्कराना।  
 बिदुरानो\*†-सज्ञा स्त्री० मुस्कराहट।  
 बिद्वपना\*†-क्रि० अ० १ दे० "विद्वपण"।  
 कलक लगाना। २ दोष लगाना या  
 करना। ३ रिगाड़ना। खराब करना।  
 बिदेश-सज्ञा पु० दे० "विदेश"।  
 बिदोल\*†-सज्ञा पु० दे० "विद्वप"। दैर।  
 बिहूत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ खराबी। चुराई।  
 दोष। २ कष्ट। विपत्ति। ३ अत्माचार।  
 जुलूम। ४ दुदशा।  
 बिधेरना\*†-क्रि० स० नाश करना। बिध्वस  
 करना।

विध-सज्ञा स्त्री० १. विधि। प्रकार। भाति। तरह। रीति। व्यवहार। २. ब्रह्मा। ३. जमा-सर्ष का हिसाब। आय-व्यय का लेखा। मुहा०—विध मिलाना=यह देखना कि आय जोर व्यय की सब मदें ठीक लगी गई हैं या नहीं।

विधना-सज्ञा पु० ब्रह्मा। विधि। विधाता। क्रि० अ० दे० "विधना"।

विधासना\*†-क्रि० स० नाश करना। विध्वंस करना। बर्बाद करना।

विधायक\*-सज्ञा पु० दे० "विधायक"। विधान करने या बनानेवाला।

विधाना-क्रि० अ० दे० "विधाना"।

विधिना-सज्ञा स्त्री० दे० "विधना"। ब्रह्मा।

विधुर-सज्ञा पु० दे० "विधुर"।

विन\*†-अव्य० दे० "विना"।

विनई\*†-सज्ञा पु० दे० "विनयी"।

विनड\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।

विनकार-वि०, सज्ञा पु० दे० "विनकारी"। कपटा बुननेवाला। जुलाहा।

विनकारी-सज्ञा पु० जुलाहे का काम।

विनति, विनती-सज्ञा स्त्री० निवेदन। प्रार्थना।

विनन-सज्ञा स्त्री० बुनने या चुनने की क्रिया।

किरी चीज में से चुनकर निकाला जानेवाला कूड़ा-कर्कट।

विनना-क्रि० स० १ छोटी-छोटी बस्तुओं को एक-एक करके उठाना। बटोरना। चुनना।

२ छोट-छोटकर अलग करना। ३ दे० "बुनना"।

विनयना\*†-क्रि० अ० विनय करना। प्रार्थना करना।

विनयाना-क्रि० स० १ बुनने का काम कराना। कपड़े यदि बुनवाना। चारपाई बुनवाना।

२ बटोरवाना। दकदूहा कराना।

विनवाई-सज्ञा स्त्री० विनने का काम या मजदूरी।

विनसना\*†-क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना।

क्रि० स० विनाश करना। नष्ट करना। विनसाना\*†-क्रि० स० विनाश करना। नष्ट कर देना। बिगाड़ डालना।

वि० अ० विनष्ट होना।

विना-अव्य० छोड़कर। रहित। वगैर।

विनाई-सज्ञा स्त्री० १. चीनने या चुनने की क्रिया या मजदूरी। २. बुनने की क्रिया या मजदूरी। बुनावट।

विनाती†-सज्ञा स्त्री० दे० "विनती"।

विनानी-वि० १. अज्ञानी। अनादी। अनजान। २. विनानी।

सज्ञा स्त्री० विशेष रूप से विचार। विवेचन।

विनायद-सज्ञा स्त्री० दे० "बुनावट"।

विनासना-वि० स० नष्ट करना। नाश करना। बरबाद करना।

विनि, विनु\*-अव्य० दे० "विना"।

विनूठा\*†-वि० १ अनूठा। अनोखा। २. जो झूठा न हो। ३ शुद्ध। पवित्र।

विने\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "विनय"।

विनीता-क्रि० अ० और स० १. विनय करना। २ छोटना।

विनीरी-सज्ञा स्त्री० जोर से पानी बरसने के समय गिरनेवाले ओले या उनके छोटे टुकड़े।

विनीला-सज्ञा पु० कपास का बीज।

विपच्छ\*†-सज्ञा पु० दे० "विपक्ष"।

विपत, विपद, विपदा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "विपत्ति"।

विपर\*†-सज्ञा पु० दे० "विप्र"।

विपादिका-सज्ञा स्त्री० दे० "विवाई"।

पैरो के तल्लों के फटने का रोग। विवाई।

विफर\*†-वि० दे० "विफल"।

विफरना\*†-क्रि० अ० १. वागी होना। विद्रोही होना। २. विगड उठना। नाराज होना।

पिडना। ३ घृष्ट होना।

विघटना\*†-क्रि० अ० १ विरोधी होना। २. फँसना। उलझना।

विवरन\*-वि० जिसका रंग विगड गया हो। बदरंग। जिसके मुख की कात्ति नष्ट हो गई हो। विवर्ण।

सज्ञा पु० दे० "विवरण"।

विवस\*†-वि० मजबूर। लाचार। विवश। परतंत्र। पराधीन।

क्रि० वि० विवश होकर। लाचार हो।

बिबहार\*†-सज्ञा पु० दे० "व्यवहार" ।  
 बिबाई-सज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें पेट के  
 तलुए का चमड़ा फट जाता है ।  
 बिबाफ\*-वि० दे० "बिबाक" ।  
 बिबाको-सज्ञा स्त्री० दे० "बिबाकी" ।  
 बिबि-वि० दो ।  
 बिभाना\*-क्रि० अ० चमकना ।  
 बिभिचारी\*-दे० "व्यभिचारी" ।  
 बिमानो\*-वि० जिसे अभिमान या घमड  
 न हो । मानरहित ।  
 बिमोहना-क्रि० स० मोहित करना । मोहना ।  
 लुभाना ।  
 क्रि० अ० मोहित होना । लुभाना ।  
 बिमौग†-सज्ञा पु० बाँबी ।  
 बिय\*†-वि० दो । दूसरा । अन्य ।  
 \*†-सज्ञा पु० दे० "बीज" ।  
 बियत\*-सज्ञा पु० दे० "वियत" ।  
 बिया†-सज्ञा पु० दे० "बीज" ।  
 वि० दूसरा । अन्य । अपर ।  
 बिपाधा\*†-सज्ञा पु० दे० "व्याधा" ।  
 बिपाधि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "व्याधि" ।  
 बियान†-सज्ञा पु० दे० "व्यान" । प्रसव  
 (पशुओं के लिए प्रयुक्त) ।  
 बियाना-क्रि० अ० वन्ना देना । व्याना  
 (पशु) ।  
 बियापना\*†-क्रि० स० दे० "व्यापना" ।  
 बियावान-सज्ञा पु० [फा०] बहुत उजाड  
 स्थान । ऐसा जंगल, जिसमें बहुत दूर तक  
 पानी न मिले ।  
 बिपारी, बियालू\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "व्यालू" ।  
 रात्रि का भोजन ।  
 बिपाह\*†-सज्ञा पु० दे० "विवाह" ।  
 बियाहता†-वि० स्त्री० विवाहित । जिसके  
 साथ विवाह हुआ हो ।  
 बिरग-वि० विना रंग का । कई रंगों का ।  
 बिरजी-सज्ञा स्त्री० छोटी कील ।  
 बिरडी†-सज्ञा स्त्री० छोटा बिरवा । जड़ी-  
 बूटी ।  
 बिरचन-सज्ञा पु० बर का चुर्ण ।  
 बिरछ†-सज्ञा पु० दे० "वृक्ष" ।  
 बिरछक\*†-सज्ञा पु० दे० "वृक्षिक" ।

बिरजना†-क्रि० अ० उलजना । झगडना ।  
 बिरतत\*†-सज्ञा पु० दे० "वृत्तत" ।  
 बिरत-वि० दे० बिरत । उदासीन । रहिन ।  
 बिरता-सज्ञा पु० सामर्थ्य । शक्ति । बूता ।  
 बिरथा†-वि० दे० "व्यर्थ" ।  
 बिरदा†-सज्ञा पु० दे० "विरद" ।  
 बिरदंत-सज्ञा पु० बहुत प्रसिद्ध वीर या  
 योद्धा ।  
 वि० नामी । प्रसिद्ध ।  
 बिरध-वि० दे० "वृद्ध" ।  
 बिरधाई-सज्ञा स्त्री० वृद्धापन । बुढ़ापा ।  
 बिरमना†-क्रि० अ० १ दे० "विलमना" ।  
 विश्राम करना । २ ठहरना । रुकना । ३-  
 मोहित होकर कही रुक जाना ।  
 बिरमाना†-क्रि० स० १. ठहराना । रोक  
 रखना । २ मोहित करके फँसा रखना । ३  
 बिताना । गुजारना ।  
 बिरल-वि० १ छितराया हुआ । २. जुदा ।  
 अलग अलग ।  
 बिरला-वि० १ एकाग्र । कोई एक । २ कोई  
 कोई । ३ अनुत्ता । अद्वितीय । ४ अलग ।  
 बिरवा-सज्ञा पु० पेड़ ।  
 बिरहा-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का श्रम्य गीत  
 (पूर्वी जिलों में भोजपुरी में) जिसमें बिरह  
 का विशेष रूप से वर्णन है । अहीरो का गीत-  
 विशेष, जिसे वे गाय चराते समय प्रायः  
 गाते हैं । २ बिरह या मियोग ।  
 बिरही-सज्ञा पु० दे० "विरही" । [स्त्री०  
 बिरहिन, बिरहिनी]  
 बिराजना-क्रि० अ० १ बैठना । २ शोभा  
 देना ।  
 बिरादर-सज्ञा पु० [फा०] भाई । बन्धु-  
 बान्धव ।  
 बिरादराना-वि० भाइयों का-सा । भाई-  
 चारे का (व्यवहार) ।  
 बिरादरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक ही जाति  
 के लोगों का समूह या वर्ग । भाई-चारा ।  
 बन्धुत्व ।  
 बिरान, बिराना\*-वि० दे० "वेगाना" ।  
 बिराना, बिरावन†-क्रि० स० चिढ़ाना ।  
 किसी को चिढ़ाने के लिए मुँह बनाना ।

विराम-सज्ञा पु० दे० "विराम"।  
 विरलि\*†-सज्ञा पु० १. दे० "वृष"। २. दे० "वृक्ष"।  
 विरिछ\*†-सज्ञा पु० दे० "वृक्ष"।  
 विरिया-सज्ञा स्त्री० समय। वेला। बार।  
 विरो\*†-सज्ञा स्त्री० १ दे० "वीडी"। २ दे० "वीडा"।  
 विरदना\*†-क्रि० अ० उलटना। झगड़ना। मचलना।  
 विरदंत-सज्ञा पु० दे० "विरदंत"।  
 विरोज-सज्ञा पु० दे० "गधाविरोज"। चीड़ के पेड़ का गाद।  
 विरोधना\*†-क्रि० अ० विरोध करना। बर करना।  
 बिलद-वि० १ बुलन्द। ऊँचा। बड़ा। २ जो विफल हो गया हो (व्यग)।  
 बिलय-सज्ञा पु० दे० "विलम्ब"।  
 बिलवना\*†-क्रि० अ० १ बिलव करना। देर करना। २ रकना। ठहरना।  
 बिल-सज्ञा पु० छेद। गौद। विवर। जमीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ जगली या घरेलू जीवों के रहने का स्थान। जैसे, बूढ़े या साँप आदि का। [अग्ने०] १ पुरजा। परजा। दाम माँगने का पर्चा। २ विधेयक। कानून की पाण्डुलिपि।  
 बिलकुल-क्रि० वि० दे० "बिल्कुल"। पूरा। सब। एकदम।  
 बिलखना-क्रि० अ० १ विलाप करना। फूट-फूटकर रोना। दुःखी होना। २ देखना। निरखना।  
 बिलखाना-क्रि० स० रुलाना।  
 वि० अ० दे० "बिलखना"।  
 बिलग-वि० पृथक्। जुदा। अलग। भिन्न। सज्ञा पु० १ पार्श्वभय। अलग होने का भाव। २ द्वेष या और कोई बुरा भाव। ३ रज। दुःख।  
 बिलगता-क्रि० अ० अलग होना। पृथक् या भिन्न होना। फटना। छटना।  
 बिलगाना-क्रि० अ० दूर होना। अलग होना। क्रि० स० १ अलग करना। दूर करना। २ चुनना। छीटना।

बिलछन-वि० दे० "विलक्षण"।  
 बिलछना\*†-क्रि० अ० लाटना। देखकर समझ जाना।  
 बिलटना-क्रि० अ० बिगड़ना। बर्बाद हो जाना। नष्ट होना।  
 मुहा०—बिलट जाना=बर्बाद हो जाना। नष्ट होना। बहुत अधिक हागि होना।  
 बिलटो-सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] रेल से भेजे जानेवाले माल की रसीद, जिसे दिखलाने पर पानेवाले को माल मिलता है।  
 बिलवो-सज्ञा स्त्री० १ आँख की पलक पर होनेवाली एक छोटी फुंसो। २. गुहाजनी। ३ एक छोटा कीड़ा।  
 बिलपना\*†-क्रि० अ० रोना-भीटना। विलाप करना।  
 बिलबिलाना-क्रि० अ० १ व्याकुल होकर वकना या रोना-बिल्लाना। धवराना। विलाप करना। २ छोटे-छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना।  
 बिलम\*†-सज्ञा पु० दे० "विलव"।  
 बिलमना\*†-क्रि० अ० १ बिलव या देर करना। ठहर जाना। रकना। २ किसी के प्रेम में फँसकर कहीं रुक जाना।  
 बिलमाना-क्रि० स० १ ठहराना। रोक रखना। २ प्रेम में फँसकर रोक रखना। ३ देर करना।  
 बिललाना-क्रि० अ० दे० "बिलखना"।  
 बिलल्ला-सज्ञा पु० १ जिराका कोई पूछने-वाला न हो। जिसके आगे-पीछे कोई न हो। असहाय। २ आवारा। घुमक्कड़। ३ भौढ़। मूर्ख।  
 बिलयाना\*†-क्रि० स० १ खो देना। बरबाद करना। नष्ट करना। २ दूसरे के द्वारा नष्ट या बरबाद कराना। ३ छिपाना। ४ छिपवाना।  
 बिलसना\*†-क्रि० अ० सोना देना। आनन्द करना। भला या सुन्दर जान पड़ना। क्रि० स० उपभोग करना। सुख भोगना।  
 बिलसाना\*†-क्रि० स० १ भोग करना या कराना। २ काम में लाना।  
 बिलहरा-सज्ञा पु० पान रखने के लिए बाँध

की तीलियों का एक प्रकार का छोटा डिब्बा। मचला।

बिल्हरी-सज्ञा स्त्री० पान रखने के लिए एक प्रकार की छोटी डियिया। दे० "बिल्हरी"।

बिला-अव्य० [अ०] बिना। योगर।

बिलाई-सज्ञा स्त्री० दे० "बिल्ली"।

बिलाना-क्रि० अ० गायब या लुप्त हो जाना।

अदृश्य होना। नष्ट होना। मिट जाना।

बिलापना\*-क्रि० अ० दे० "बिलापना"।

बिलाप करना या रोना।

बिलारी-सज्ञा पु० बिलाव। बिल्ली का नर।

बिलारी-सज्ञा स्त्री० दे० "बिल्ली"।

बिलाव-सज्ञा पु० बिल्ली का नर।

बिलावल-सज्ञा पु० एक राग।

बिलासना-क्रि० स० भोगना। उपभोग करना।

बिलठना\*-क्रि० अ० जमीन पर लेटना।

(कण्ट आदि के कारण बच्चों का रूठकर जमीन पर लेटना)।

बिल्लूर\*-सज्ञा पु० दे० "बिल्लौर"।

बिल्लूरी-सज्ञा स्त्री० बिल्ली।

बिलोकना\*-क्रि० स० देखना। निरखना।

बिलोकन\*-सज्ञा स्त्री० १ देखने की क्रिया।

चितवन। २ कटाक्ष।

बिलोचन-सज्ञा पु० दे० "लोचन"। आँख।

बिलोचना-क्रि० स० देखना।

बिलोडना\*-क्रि० स० १ दूध, बही आदि मथना।

२ विगाडना। गडबड कर देना।

बिलोन-वि० १ बिना नमक का। अलोना।

२ नीरस। ३ बदसूरत। कुरूप।

बिलोना-क्रि० स० १ दूध-बही आदि मथना।

२ ढालना। गिराना। ३ विगाडना।

बिलोरना\*-क्रि० स० दे० "बिलोडना"।

छिन भिन-करना।

बिलोलना-क्रि० स० दे० "बिलोल"। हिलना।

डोलना।

वि० बिलोल। चंचल।

बिलोचना\*-क्रि० स० दे० "बिलोना"।

बिलकुल-क्रि० वि० [अ०] पूरा-पूरा। सब।

आदि से अन्त तक। एकदम।

बिलमुक्ता-वि० [अ०] १ ओ घट-बढ़ न सके। निश्चित। २ चुकता।

बिल्ला-सज्ञा पु० [स्त्री० बिल्ली] १. बिल्ली का नर। कपड़े की पट्टी आदि जिसे किसी

समारोह के समय समारोह का प्रबन्ध करनेवाले या उससे सम्बद्ध व्यक्ति पहचान

के लिए लगाते हैं। पहचान का चिह्न, जिसे स्वयंसेवक आदि लगाते हैं। २. पीतल की

पतली पट्टी, जिसे चपरासी लगाते हैं (चपरास) ३ तगामा। (अग्ने० बंज)

बिल्लाना-क्रि० अ० दे० "बिल्लाना"।

बिल्लाकर रोना। बिल्लाना।

बिल्ली-सज्ञा स्त्री० शेर की जाति का एक छोटा घरेलू जानवर।

बिल्लौर-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का स्वच्छ सफेद पत्थर। स्फटिक। २ एक तरह का बहुत साफ, मोटा और बढ़िया शीशा।

बिल्लोरी-वि० १ बिल्लौर का बना हुआ।

२ बिल्लौर के समान स्वच्छ।

बिवरना\*-क्रि० अ० सुलझना। साफ करना।

बिवाई-सज्ञा स्त्री० पंर के तलवे फटने का

प्राव या रोग।

बिषखपरा या बिषखोपरा-सज्ञा पु० गोह

की जाति का एक जन्तु।

बिसच\*-सज्ञा पु० १ सच्य का नाश। वस्तुआ

की सँभालकर न रखना। बेपरवाही।

२ काय-हानि। बाधा। ३ भय।

बिसभर\*-सज्ञा पु० दे० "बिस्भर"।

वि० दे० "बिसंभर"।

बिसंभार-वि० बेसुध। अचेत। वैश्वर।

असावधान।

बिस-सज्ञा पु० दे० "विष"।

बिसखपरा-सज्ञा पु० दे० "बिषखपरा"।

बिसतरना\*-क्रि० अ० बिस्तार करना।

फँलाना। बढ़ाना।

बिसद\*-वि० दे० "विषद"।

बिसन\*-सज्ञा पु० दे० "व्यसन"।

चितनी-वि० दे० "व्यसनी"।

बिसमउ\*-सज्ञा पु० दे० "विस्मय"।

बिसरना\*-क्रि० स० भूल जाना।

बिसमिल्लाह-क्रि० अ० दे० "बिस्मिल्लाह"।

बिसरना-क्रि० स० भूल जाना।

बिसराम\*—सज्ञा पु० दे० 'विश्राम'।  
 बिसरावना†—क्रि० सं० दे० "बिसराना"।  
 बिसयास\*—सज्ञा पु० दे० 'विश्वास'।  
 बिसवासी—वि० [ स्त्री० बिसवासिनी ]  
 १ विश्वास करनेवाला। विश्वासी। २  
 विश्वास करने योग्य। विश्रुवसनीय।  
 ३ अविश्वासी। अविश्वास के योग्य।  
 बिससना\*—क्रि० सं० १ विश्वास करना।  
 २ बच करना। ३ शरीर के अंग काटना।  
 चीरना-फाड़ना।  
 बिसहना\*†—वि० सं० १ दे० "बिसाहना"।  
 १ खरीदना। २ जान-बूझकर अपन ऊपर  
 झण्ट या विपत्ति मोल लेना।  
 बिसहूर\*—सज्ञा पु० दे० 'विपधर'। साँप।  
 बिसार्येव—वि० जिसमें सड़ी मछली की-सी  
 दुगंध हो।  
 सज्ञा स्त्री० सड़े मांस की-सी दुगंध।  
 बिसाख\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'विशाखा'।  
 बिसात—सज्ञा स्त्री० [ ज० ] १ सामर्थ्य।  
 शक्ति। हसियत। ओकात। २ जमा। पूँजी।  
 ३ सारज या चोपड़ आदि खलन का बस्त्र  
 या दफती, जिस पर खाने बने होते हैं।  
 बिसातबाना—सज्ञा पु० बिसाती की दूकान  
 पर मिलनवाली बीजें।  
 बिसाती—सज्ञा पु० [ ज० ] गृहस्थी के काम  
 की विविध प्रकार की वस्तुएँ बचनवाला।  
 बिसाना—क्रि० अ० १ बसा चलना। कायू में  
 होना। २ बिप का प्रभाव करना। जहूर  
 का असर करना।  
 बिसारद\*—सज्ञा पु० दे० 'विशारद'।  
 बिसारना—क्रि० सं० भुला देना। याद न  
 रखना। ध्यान में न रखना।  
 बिसारा\*—वि० [ स्त्री बिसारी ] दे०  
 "बिपला"। बिप-नरा।  
 बिसाप\*—सज्ञा पु० दे० 'विश्वास'।  
 बिसासिन—गज्ञा स्त्री० अविश्वासिनी।  
 बिश्वासपातिनी। बिश्वास न करने योग्य  
 स्त्री।  
 बिसासी\*—वि० दे० 'बिसवासी'। अविश्वासी।  
 [ स्त्री० बिसासिन ] बिश्वासपाती। दगा-  
 बाज। कपटी। बिश्वास न करने योग्य। गृह्य।

बिसाह—सज्ञा स्त्री० खरीदी हुई वस्तु।  
 सज्ञा पु० खरीद।  
 बिसाहना†—क्रि० सं० १ जानबूझकर अपने  
 ऊपर विपत्ति या झण्ट माल लेना।  
 २ खरीदना। मोल लेना। ३ जान-बूझकर  
 अपने पीछे लगाना।  
 बिसाहनी—सज्ञा स्त्री० सोदा। मोल की  
 वस्तु।  
 बिसाहा—सज्ञा पु० दे० "बिसाहनी"।  
 बिसिख\*—सज्ञा पु० दे० 'विशख'।  
 बिसियर\*—वि० दे० 'बिपधर'। बिपला।  
 जहुरीला।  
 बिसुरना—क्रि० अ० १ सोच करना। २ खद  
 करना। ३ मन में दुःख मानना।  
 सज्ञा स्त्री० चिंता। सोच।  
 बिसैस\*—वि० दे० 'विशप'।  
 बिसैखना\*—क्रि० अ० १ विशेष रूप से वर्णन  
 करना आदिवार या सिलसिलेवार बयान  
 करना। २ निणय या निश्चय करना। ३  
 विशप रूप से जान पड़ना। बिपपता से युक्त  
 होना।  
 बिसैल—सज्ञा पु० लिनियों की एक शाला।  
 बिसैसर\*†—सज्ञा पु० दे० 'विश्वेश्वर'।  
 बिस्कुट—सज्ञा पु० [ अ० ] आरारोट या  
 समोरी नंदे की बनी हुई मीठी या नमकीन  
 टिनिया।  
 बिस्तर—सज्ञा पु० बिछोना। बिछावन।  
 बिस्तरबद—सज्ञा पु० बिस्तर या बिछोना  
 बाँधने के लिए वपड़े या चमड़ आदि का  
 लम्बा धाँजा।  
 बिस्तरना\*—क्रि० अ० फैलाना। इपर-उधर  
 पड़ना।  
 क्रि० सं० १ फैलाना। बढ़ाना। २ बिस्तर  
 से वर्णन करना। बढ़ाकर कहना।  
 बिस्तरा—सज्ञा पु० दे० 'बिस्तर'। बिछोना।  
 बिस्तराना—क्रि० सं० फैलाना। बिस्तर  
 करना।  
 बिस्तुइया†—सज्ञा स्त्री० छिपवली।  
 बिस्तुई—सज्ञा स्त्री० दे० 'बिस्तुइया'। छिप-  
 कत्री।  
 बिस्मिल—वि० धायल। जल्मी। जवह करते

समय जिसका अभी आधा ही गला कटा हो और जो तकलीफ से छटपटा रहा हो।

विस्मिल्लाह-[अ०] ईश्वर के नाम से कोई काम शुरू करना। श्रीगणेश करना। किसी काम को शुरू करते समय, विशेषकर जानबूझ करके करते समय, मुसलमान इस अरबी पद को कहते हैं। जैसे हिन्दू लोग किसी गन्ध नाम के आरम्भ करने को श्रीगणेश करना कहते हैं।

विस्वा-सज्ञा पु० [जमीन की एक नाप] एक बीघे का बीसवाँ भाग।

मूहा०-बीस विस्वा=निश्चय। निस्सदेह। ठीक-ठीक।

विस्वास-सज्ञा पु० दे० "विश्वास"।

विहण-सज्ञा पु० दे० "विहग"।

विहडना-क्रि० स० टुकड़े-टुकड़े कर डालना। तोड़ना। नष्ट कर देना। मार डालना।

विहँसना-क्रि० अ० मुसकराना। प्रसन्न होकर धीरे से हँसना। प्रफुल्लित होना। खिलना (फूल का)।

विहँसाना-क्रि० अ० दे० "विहँसना"।

क्रि० स० हँसाना। हँपित या प्रफुल्लित करना।

विहँसीहं-वि० हँसता हुआ।

विहग\*-सज्ञा पु० दे० "विहग"।

विहद\*-वि० दे० "वेहद"।

विहल\*-वि० दे० "विहल"।

विहरना-क्रि० अ० श्दे० "विहरण"। घूमना फिरना। विहार करना। आनन्द करना। मस्त होकर घूमना। सँर करना।

†\*-क्रि० स० विदीर्ण होना। फटना। टूटना-फटना।

विहरना†\*-क्रि० अ० फटना।

विहरी†-सज्ञा स्त्री० १ रुन्दा। सहायता। २ सहायता के लिए दिया हुआ धन।

विहाग-सज्ञा पु० रात में गाया जानेवाला एक राग।

विहान-सज्ञा पु० सवेरा। प्रातःकाल। मोर। आनेवाले दिन का सवेरा। कल।

विहाना\*-वि० स० त्यागना। छोड़ देना।

क्रि० अ० व्यतीत होना। निवर्हि होना। बीतना।

विहारना-क्रि० अ० दे० "विहरना"। विहार करना। श्रौडा करना।

विहाल-वि० दे० "वेहाल" [फा०] बिना हाल का। जिसे अपनी हालत का ठीक पता न हो। व्याकुल। बेचैन। बेसुध।

विहि-सज्ञा पु० दे० "विधि"। ब्रह्मा।

विहिस्त-सज्ञा पु० [फा०] दे० "वहिस्त" स्वर्ग।

विही-सज्ञा स्त्री० १. अनारकापेड़ या अनार।

२. अमरुद।

विहीयाना-सज्ञा पु० [फा०] अनार। बडिया काबुली अनार। विही नामक फल के बीज या दाने, जिसे बीमारी में साने के लिए देते हैं।

विहीन-वि० दे० "विहीन"।

विहोरना-क्रि० अ० बिछुड़ना। अलग होना। लौटाना। फेरना। बहोरना।

बौंडा-सज्ञा पु० १ बीड़। पिंडी। २ टहनियो या पतली लकड़ियो से बनाया हुआ लवा नाल, जो कच्चे कुएँ में उसका भगाड़ रोकने के लिए दिया जाता है। ३. मूँज या घास की बनी हुई गेंडुरी, जिस पर घड़ा आदि रखा जाता है। ४ बाँस आदि का बौड़। बौंडी-सज्ञा स्त्री० मोटी रस्ती, जो गाड़ी खींचनेवाले बेलों के गले में बाँधी जाती है। सूत की पिंडी।

बौंदना\*-सज्ञा पु० दे० "बीधना"।

बौंधना\*-क्रि० अ० बिछना। फँसना। उलझना।

क्रि० स० बेधना। छेदना। चुभाना।

बी-सज्ञा स्त्री० दे० "बीरी"।

बीका†-वि० टेडा। बाँका।

बीसा†\*-सज्ञा पु० डग। कदम।

बीगना†-क्रि० स० फेंकना।

बीघा†-सज्ञा पु० खेत नापने की बीस बिस्वे की एक नाप (३०२५ वर्गज)।

बीचा†-सज्ञा पु० १ मध्य। २ विरोध।

विध्य। ३. बीच वा अंतर। ४. अवसर।

बीचा।

वि० वि० में। अदर।

मुहा०—बीच में बैठना=१ खूले मैदान। सयते समीरे। २ अवसर। जरूर। बीच-बीच में=धोड़ी-धाड़ी देर में। धोड़े-धाड़े अंतर पर। बीच करना=१ लड़नेवाला को लड़ने से रोकने के लिए अलग-अलग करना। २ प्रगल्भा निपटना। बीच में पड़ना=१ प्रगल्भा निपटाने के लिए पच बनना। २ मध्यस्थ होना। बीच डालना। भेद या फूट पैदा करना। अलग करना। बदलना। बीच में पड़ना—१ मध्यस्थ होना। २ उत्तरदायी या जिम्मेदार बनना। प्रतिभू बनना। बीच रखना=दुराव रखना। पराया समझना। बीच में कूदना=अनावश्यक हस्तक्षेप करना। व्यर्थ टाँग बड़ाना। (ईश्वर आदि को) बीच में रखकर कहना= (ईश्वर आदि को) शपथ खाना। कसम खाना।

बीच-सत्ता स्त्री० दे० "बीच"।

बीच\*†-सत्ता पु० १ बीच। अवसर। मोका। २ अंतर। भेद। दूरी।

बीचोंबीच-कि० वि० बिलकुल बीच में। ठीक मध्य में।

बीछना\*†-कि० सं० छाँटकर पसन्द करना। चुनना। छाँटना।

बीछी\*†-सत्ता स्त्री० बिच्छू।

बीछू\*†-सत्ता पु० १ दे० "बिच्छू"। २ दे० "बिछुआ" (गहना और हथियार)।

बीज-सत्ता पु० १ पेंड पीपे या अनाज आदि के वे दाने जिनसे नए पेंड-पीपे या अनाज निकलते हैं। बीया। दाना। २ मुख्य कारण। ३ सस्या-सूचक चिह्न या संकेत। ४ दे० "बीजगणित"। गणित का एक भेद। ५ मंत्र का प्रधान भाग। ६ दे० "बीर्य"।

बी. क-सत्ता पु० १ सूची। तालिका। २ बालन। ३ बेची और खाना की हुई वस्तुओं की सस्या और उनका मूल्य बतानेवाली सूची। ४ बीज। ५ कबीरदास के पदों का एक संग्रह।

बीजगणित-सत्ता पु० वह गणित-विद्या, जिसके अक्षरों को सस्याओं का शीतक मानकर

निश्चित पद्धति या रे द्वारा अज्ञात सस्याएँ ज्ञाति जाती जाती हैं। (अपे० अलजबरा)

बीजन-सत्ता पु० दे० "अपजन"। पत्ता।

बीजना\*†-सत्ता पु० १ दे० "बीजा"। २ दे० "अपजन"। ३ पत्ता।

बीजपूर, बीजपूरक-सत्ता पु० बिजोरा नीबू। चकोतरा।

बीजमंत्र-सत्ता पु० १ किसी देवता को प्रसन्न करनेवाला मंत्र। मूलमंत्र। २ तत्त्व।

बीजरा\*†-सत्ता स्त्री० दे० "विजली"।

बीजल-वि० बीज-युक्त।

सत्ता स्त्री० तलवार।

बीजा-वि० दे० "दिनीय"। दूसरा।

बीजाक्षर-सत्ता पु० किसी बीजमंत्र या पहला अक्षर।

बीजाध्यक्ष-सत्ता पु० शिव।

बीजी-वि० बीजवाला।

सत्ता स्त्री० १ मीमी। गिरी। २ गुठली।

बीजू, बीजूरी-सत्ता स्त्री० दे० "विजली"।

बीजू-वि० बीज बोने से उत्पन्न होनेवाला पेंड आदि। कलमी का उल्टा।

सत्ता पु० दे० "बिज्जू"। एक प्रकार का धाम, जो छोटा होता है और जिसे चूषकर खाते हैं।

बीजोवक-सत्ता पु० ओला।

बीज्य-सत्ता पु० कुलीन।

बीडना\*†-कि० अ० १ लिप्त होना। फँसना। २ खादना। ३ रेलना। डेलना।

बीमा\*†-वि० दे० "बीजन"। एकात। निजन। धन्य।

बीट-सत्ता स्त्री० चिड़िया का मल या पाखाना।

बीड़-सत्ता स्त्री० एक के ऊपर एक रखे हुए रूप, जो गुल्ली के समान दीखते हैं।

बीड़ा-सत्ता पु० १ पान की गिलोरी। लगा या लपेटा हुआ पान। २ काम करने का भार। ३ एक प्रकार का सूत, जो तलवार की मूठ में बुंधा जाता है।

मुहा०—बीड़ा उठाना=कोई काम करने का संकल्प करना या भार लेना। तैयार होना।

बीड़ी-सत्ता स्त्री० १ दे० "बीडा"। गड्डी। २ दे० "बीड"। ३ दाँता पर रगड़ने की

निस्ती। ४. पत्ते में लपेटी हुई तम्बाकू, जिसे लोग सुलगाकर पीते हैं।

बीतना-क्रि० अ० १ व्यतीत होना। समय चला जाना। वक्त कटना। गुजरना। पूरा होना। २ दूर होना। चला जाना। छूट जाना। ३ सफटित होना। पडना। घटना।

बीत-सज्ञा पु० दे० "वित्त"। वालिस्त।

बीथित\*+क्रि० दे० "व्यथित"। दुखित।

बीथना\*+क्रि० अ० क्रि० स० दे० "बीथना"।

बीन-सज्ञा स्त्री० बीणा। सितार की तरह का एक प्रसिद्ध वाजा। संपेरो के वजान की तुल्य।

बीनना+क्रि० स० १ छोटी-छोटी चीजा को उठाना। २. नीचे फेंकी हुई चीजा को उठाना। छोटकर अलग करना या पसन्द चुनना।

क्रि० स० १ दे० "बुनना"। दे० २ "बीथना"।

बीर-सज्ञा पु० बृहस्पतिवार। गुरुवार।

बीवी-सज्ञा स्त्री० [फा०] पत्नी। स्त्री। बहू। अच्छे घर की महिला।

बीभत्त-वि० १ जिसे देखकर घृणा उत्पन्न हो। घृणित। २ क्रूर। पापी।

सज्ञा पु० काव्य के नौ रसों में से सातवाँ रस। इसमें रक्त-मांस आदि का ऐसा वर्णन होता है, जिससे अरुचि और घृणा उत्पन्न होती है।

बीम-सज्ञा पु० १ जहाज का मस्तूल। २ सहृतीर।

बीमा-सज्ञा पु० [फा०] १ सतरे की जिम्मेदारी। किसी सतरे के, जैसे मृत्यु या दुष्टता आदि होने पर आर्थिक हानि पूरी करने की जिम्मेदारी, जो कुछ निश्चित धन लेकर उसके बदले में की जाती है। २ डाक के द्वारा भेजी जानेवाली वस्तु के टूटने-फूटने या हानि की जिम्मेदारी के लिए डाक विभाग-द्वारा द्रव्य समूल करने की व्यवस्था। वह पत्र या पामल आदि, जिसकी सन्तिभूति करने का जिम्मेदारी डाकविभाग ने ली हो।

बीमार-वि० [फा०] रोगी। अस्वस्थ। मरीज।

बीमारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. रोगीर का

किसी प्रकार का विकार या सराबी। रोग। मर्ज। २. जलट ३ घुरी आदत (बोलचाल)।

बीय\*+सज्ञा पु० दे० "बीज"।

वि० दे० "बीजा"। दूसरा।

बीया\*+वि० दे० "द्वितीय"। दूसरा।

सज्ञा पु० दे० "बीज"। दाना।

बीर-वि० दे० "वीर"।

सज्ञा पु० १ भाई। २ बहादुर। शूर (वीर)।

सज्ञा स्त्री० १ सखी। २ कान का एक गहना। ३ कलाई में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४ पशुओं के चरने का स्थान। चरागाह।

बीरड\*+सज्ञा पु० दे० "विरवा"।

बीरक-सज्ञा पु० दे० "वृक्ष"।

बीरज\*+सज्ञा पु० दे० "बीर्य"।

बीरता-सज्ञा स्त्री० दे० "वीरता"।

बीरन-सज्ञा पु० भाई।

बीरबहूटी-सज्ञा स्त्री० दे० "वीरबहूटी"। गहरे लाल रंग का एक छोटा बरसाती कौडा।

बीरा\*+सज्ञा पु० पान का बीडा।

वि० १ दे० "बीडा"। २ भाई। भैया। ३

देवता का प्रसाद, फल-फूल आदि।

बीरी+सज्ञा स्त्री० १ पान का बीडा। २ कान का एक गहना। तरना।

बीरी+सज्ञा पु० दे० "विरवा"। पेडा।

बील-सज्ञा पु० दे० "विल"। जमीन के अन्दर सोखकर बनाया हुआ घरेलू या जंगली जीवा के रहने का स्थान (जैसे चूहा या साँप आदि)। वि० पोला। सोखला।

बीवी-सज्ञा स्त्री० दे० "बीवी"।

बीस-वि० १ जो सख्या में २० हो। दस

का दुगुना। २ श्रेष्ठ। उत्तम। अच्छा।

सज्ञा पु० बीस ती सख्या या अव-२४।

मुहा०-बीम बिस्वे=निश्चय। ठीक।

बीसा-सज्ञा स्त्री० १ बीस बीजा का नमूना।

काडी। २ बीस गादिया का संवडा। ३.

उपाधि-शास्त्र के अनुसार साठ सवत्तरा

के बीस विभाग म से ठाई विभाग।

सज्ञा पु० बराजू।

बीह\*—वि० बीम। विशति।  
 बीहड—वि० १ ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड़।  
 २ विषम। विकट।  
 बुँद—सज्ञा स्त्री० दे० 'बूँद'।  
 बुँदकी—सज्ञा स्त्री० छाटी गाल बिंदी।  
 बुँदा—सज्ञा पु० १ बिन्दु। बिन्दी। कान में पहनने का एक गहना २ माथे पर लगाने की टिकली।  
 बुँदिया—सज्ञा स्त्री० दे० 'बूँदी'। एक प्रकार की मिठाई, जिसमें छोटी-छोटी गोल बुँदिया बनती हैं।  
 बुँदीदार—वि० जिस पर छोटी-छोटी बिंदियाँ हों।  
 बुँदेल—सज्ञा पु० दे० 'बुंदेल'।  
 बुँदेलखंड—सज्ञा पु० उत्तर प्रदेश का वह अंश, जिसमें जालौन, झाँसी हमीरपुर और बाँदा जिले पड़ते हैं।  
 बुँदेलखंडी—वि० बुँदेलखंड-संबंधी। बुँदेलखंड का।  
 सज्ञा पु० बुँदेलखंड का निवासी।  
 सज्ञा स्त्री० बुँदेलखंड की भाषा।  
 बुँदेल—सज्ञा पु० क्षत्रियों का एक वंश।  
 बुँदेलखंड का राजपूत।  
 बुँदोरी या बुँदोरी\*—सज्ञा स्त्री० बुँदिया या बूँदी नाम की एक मिठाई।  
 बुँदा—सज्ञा स्त्री० दे० 'बूँदा'। फूँटा या फूँकी।  
 बुँक—सज्ञा स्त्री० कलफ किया हुआ एक प्रकार का महीन कपड़ा।  
 बुँकजा—सज्ञा पु० [गुं०] गठरी। गटठा।  
 बुँकची—सज्ञा स्त्री० १ छोटी गठरी। २ दजिया की वह धेली, जिसमें वे सूई-डोरा रखत हैं।  
 बुँकनी—सज्ञा स्त्री० भारीक पिसी हुई चीज। घूँघ। चूरा। सफूफ।  
 बुँकपा—सज्ञा पु० दे० बुँकपा। उबटन।  
 बुँका—सज्ञा पु० दे० बुँकपा।  
 बुँकुन—सज्ञा पु० बुँकनी। किसी प्रकार का पाचन घूँघ।  
 बुँकपा—सज्ञा पु० १ सरसो आदि पोसकर बनाया गया उबटन, जिसे स्त्रियाँ शरीर साफ करने

के लिए लगाती हैं। २ अवरक या अमरक का चूर्ण। ३ एक प्रकार का लाल रंग।  
 बुँकार—सज्ञा पु० [अ०] १ तार। ज्वर। २ धाक, प्रोष, दुस आदि का आवेश।  
 बुँग या बुँगवर—सज्ञा पु० मच्छर।  
 बुँगचा—सज्ञा पु० गठरी।  
 बुँगदा—सज्ञा पु० [फा०] कसाइयों का छुरा।  
 बुँगल—सज्ञा स्त्री० [फा०] द्वय। बर।  
 बुँकना—सज्ञा पु० गठनी।  
 बुँददिल—वि० [फा०] [सज्ञा स्त्री० बुँददिली] डरपोक। कायर। जिसे हिम्मत न हो।  
 बुँजुग—वि० [फा०] [सज्ञा बुँजुगी] बूढ़। बूढ़ा। बड़ा। सयाना।  
 सज्ञा पु० बाप-दादा। पूर्वज।  
 बुँझना—क्रि० अ० आग का जलना बन्द होना। चिराग या दीपक का जलना बन्द हो जाना या गुल होना। रोशनी बन्द होना। जोश या उत्साह आदि कम होना।  
 बुँझाना—क्रि० स० १ आग जलना बन्द कर देना। चिराग आदि की रोशनी बन्द करना। २ पानी डालकर ठंडा करना। ३ जोश या उत्साह आदि कम करना। ४ समझाना। सतोष देना।  
 बूँहा—जहर में बुँझाना=छुरी, बरछी, तलवार आदि धस्त्रों की धार को तपाकर किसी जहरीले तरल पदार्थ में बुँझाना, जिसमें वह भी जहरीला हो जाय।  
 बुँझावल—सज्ञा स्त्री० पहली।  
 बुँड\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'बूँदी'।  
 बुँटना\*—क्रि० अ० दे० 'भागना'।  
 बुँडकी—सज्ञा स्त्री० दुबकी।  
 बुँडना—क्रि० अ० दे० 'बूँटना'। बूँटना।  
 बुँडबुँडाना—क्रि० अ० बुँडकर धीरे धीरे अस्पष्ट रूप से कुछ बोलना। यडबडाना।  
 बुँडाना\*—क्रि० स० दे० 'बूँडाना'।  
 बुँडडा—वि० बूँड। जिसकी आयु बहुत अधिक हो चुकी हो। (मनुष्या के लिए प्रायः ५०-६० वर्ष की जाय और जीवा के लिए उम्र का आधे से अधिक या तीन चौथाई भाग।)

बुद्धभक्त-संज्ञा पुं० अपने को युवा समझने-  
वाला बुढ़ा। बुढ़ापे में जवान की चाल  
चलना।

बुढ़वा-वि० दे० "बुढ़वा"।

बुढ़ाई-संज्ञा स्त्री० दे० "बुढ़ापा"।

बुढ़ाना-क्रि० अ० बुढ़ा होना। बुढ़ावस्था  
को प्राप्त होना।

बुढ़ापा-संज्ञा पुं० बुढ़ाई। बुढ़ावस्था। बुढ़े  
होने की अवस्था। बुढ़ता।

मुहा०—बुढ़ापा बिगड़ना=बुढ़ाई में कलंक  
लगना। बुढ़ावस्था में कष्ट सहना।

बुढ़िया-संज्ञा स्त्री० बुढ़ा स्त्री। बुढ़ी।  
५०-६० वर्ष या इससे अधिक की आयु-  
वाली स्त्री।

बुढ़ीली-संज्ञा स्त्री० बुढ़ापा।

बुत-संज्ञा पुं० [फा०] १ मूर्ति। प्रतिमा।  
जिसकी पूजा की जाय या जिसके साम  
प्रेम किया जाय। २. प्रियतम।

वि० मूर्ति की तरह चुपचाप बैठा रहने-  
वाला।

बुतछाना-संज्ञा पुं० [फा०] १. मूर्ति रखने का  
स्थान। मन्दिर आदि। २. प्रेमिका के रहने का  
स्थान।

बुतना-क्रि० अ० दे० "बुताना"।

बुतपरस्त-संज्ञा पुं० [फा०] मूर्तिपूजक।

बुतशिकन-वि० [फा०] [संज्ञा बुतशिकनी]  
मूर्तियों को तोड़नेवाला। मूर्ति-भूजा का  
विरोधी।

बुताना-क्रि० स० दे० "बुताना"।

बुताम-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] बटन का देहाती  
रूप। घुड़ी।

बुता-संज्ञा पुं० १. घोड़ा। झांसापट्टी। २.  
बहाना। हीला।

बुबुद-संज्ञा पुं० बुल्ला। पानी का बुलबुला।

बुबुदा-संज्ञा पुं० बुल्ला। बुलबुला।

बुद्ध-वि० १. संपन्न। जागा हुआ। २.  
ज्ञानवान्। ज्ञानी। विद्वान्। पंडित।

संज्ञा पुं० बौद्धधर्म के प्रवर्तक गौतम बुद्ध,  
जिनका जन्म ईसा से ५५० वर्ष पूर्व हुआ  
था। इनके पिता कपिलवस्तु के राजा  
शुद्धोदन थे और इनकी माता का नाम

महामाया था। ये संसार के दुःख-दैन्य को  
देखकर ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपनी  
पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को छोड़कर  
चले गए थे।

बुद्धगया-संज्ञा पुं० बिहार-प्रदेश में गया  
के समीप एक स्थान, जहाँ गौतम बुद्ध को  
ज्ञान प्राप्त हुआ था।

बुद्धि-संज्ञा स्त्री० सोचने-समझने और निश्चय  
करनेवाली शक्ति। मानसिक शक्ति।  
विवेक-शक्ति। ज्ञान। अवल। समझ।  
दिमाग। मस्तिष्क।

बुद्धिचक्षु-संज्ञा पुं० ज्ञान की आँखें। प्रज्ञाचक्षु।  
सोच समझ करके काम करनेवाला।

बुद्धिजीवी-वि० अपने मस्तिष्क से काम करके  
या बुद्धि के बल से जीविका चलानेवाला।  
जैसे पत्रकार या दफ्तरी में काम करने-  
वाले।

बुद्धिभ्रंश-संज्ञा पुं० एक तरह की मानसिक  
बीमारी, जिसमें बुद्धि ठीक तरह से पूरा  
काम नहीं करती।

बुद्धिमत्ता-संज्ञा स्त्री० बुद्धिमान्। समझ-  
दारी। अवलमदी।

बुद्धिमान्-वि० बहुत समझदार। ज्ञानी। अवल-  
मद। होशियार। चतुर। तेज दिमागवाला।

बुद्धिमान्-संज्ञा स्त्री० समझदारी। अवल-  
मदी। होशियारी।

बुद्धिचंत-वि० बुद्धिमान्।

बुद्धिवाद-संज्ञा पुं० एक तरह का सिद्धान्त,  
जिसके अनुसार समझ में आनेवाली बातें  
ही सही मानी जाती हैं। खैल। बोधगम्य  
बातों को ही मानने का सिद्धान्त। (अंग्रे०  
रेशनलिज्म)।

बुद्धिशील-वि० दे० "बुद्धिमान्"। विद्वान्।  
तेज दिमागवाला।

बुद्धिशील-वि० दे० "बुद्धिमान्"।

बुद्धिशहाय-संज्ञा पुं० परामर्श या राय देने-  
वाला। मंत्री।

बुद्धिहल-वि० दे० "बुद्धिहीन"।

बुद्धिहा-संज्ञा स्त्री० बुद्धि को हलनेवाली।  
मदिरा।

बुद्धिहीन-वि० मूर्ख। बेवकूफ। अज्ञान।

बुध-सज्ञा पु० १ सप्ताह का तीसरा दिन  
बुधवार। २ एक ग्रह, जो सूर्य के सबसे अधिक  
निकट रहता है। (ज्यातिष) नी ग्रहों  
में से चौथा ग्रह। ३ देवता। ४ बुद्धिमान्  
या विद्वान् व्यक्ति।

वि० बुद्धिमान्। विद्वान्। चतुर।  
बुधवान्\*—वि० दे० 'बुद्धिमान्'।  
बुधवार-सज्ञा पु० बुध का दिन। सप्ताह  
का तीसरा दिन, जो मंगलवार के बाद  
और बृहस्पतिवार के पहले पड़ता है।

बुधि\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'बुद्धि'।  
बुनकर-सज्ञा पु० कपड़ा बुननेवाला या कपड़ा  
बुनने का व्यवसाय करनेवाला। जुलाहा।  
बुनत-सज्ञा स्त्री० दे० 'बुनाइ'।  
बुनना-क्रि० स० १ करघ पर सूत से कपड़ा  
तैयार करना। बिनना। २ कपड़े में बेल-बूटे  
निकालना। जाली निकालना।

बुनाई-सज्ञा स्त्री० १. बुनावट। बुनने की  
क्रिया। २ बुनने की मजदूरी।  
बुनावट-सज्ञा स्त्री० बुनाई। बुनने में सूतों  
को मिलाने का ढंग।

बुनिया-सज्ञा पु० दे० 'बुनकर'।  
सज्ञा स्त्री० दे० 'बुद्धिया'। एक प्रकार की  
मिठाई (मोजपुरी में)।

बुनियाव-सज्ञा स्त्री० [फा०] जड़। नीच।  
आधार।

वि० १ बुनियादी। २ वास्तविकता। अस-  
लियत।

बुनुकना-क्रि० अ० [अनु०] १ चिल्ला चिल्ला-  
कर रोना। बुनका फाड़ना। काँड मारना। २  
मुलग-मुलगकर जलना।

बुनुकारी-सज्ञा स्त्री० जोर-जोर से रोना।  
ऐसे रोने का शब्द। फूट-फूटकर रोना।

बुभुषा-सज्ञा स्त्री० भूख। खाने की इच्छा।  
बुभुक्षित-वि० भूखा। जिसे बहुत भूख लगी  
है।

बुभूषा-सज्ञा स्त्री० यक्ष की इच्छा।  
बुरकना-क्रि० स० [अनु०] भुरभुराना।  
छिड़कना। किसी वस्तु पर चूण आदि  
छिड़कना।

बुरका-सज्ञा पु० [अ०] मुँह ढाने का पर्दा।

मुसलमान स्त्रिया का एक पहनावा, जो  
सिर से पैर तक सब अंगों को ढक लेता है।  
बुरकाना-क्रि० स० भुरभुराना। छिड़प-  
वाना।

बुरा-वि० खराब। निहृष्ट। नीच। भदा।  
भूहा०—बुरा मानना=द्वेष रखना। खार  
खाना। जलना।

मी०—बुरा-भला=१ हानि-लाभ। अच्छा  
और खराब। २ लाभ-मलामत। गाली-  
गलीज।

बुराई-सज्ञा स्त्री० १ बुरा होने का नाव।  
खराबी। बाप। अवगुण। २ शिकायत। निंदा।

बुरावा-सज्ञा पु० [फा०] एकड़ी चीरने से  
निकला हुआ चूण। चूण। कुनाई।

बुरापन-सज्ञा पु० बुराई। खराबी। नीचता।  
बुराश-सज्ञा पु० साफ करने या रंगने आदि  
के लिए एक प्रकार की जानबरी के बालों से  
बनाई हुई कूँची। (अंग्रे० ब्रुश) (दाँत  
या कपड़ा-जुता साफ करने की चीज)।

बुर्ज-सज्ञा पु० [अ०] १ मीनार का भीतरी  
भाग। २ गुब्बद। किले आदि की दीवारों  
में बाग की ओर निकला हुआ या ऊपर  
छटा हुआ गोल हिस्सा। गरमज।

बुर्ज-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ ऊपरी आमदनी।  
लाभ। नफा। २ होड़। बाजी। ३ शतरंज के  
खेल में सब मुहरों के मात खा जाने पर  
शिफ बाबसाह के रह जाने की दशा।

बुलब-वि० [सज्ञा स्त्री० बुलदी]। सही।  
ऊँचे पद पर वर्तमान या प्रभावशाली।  
अहुत ऊँचा।

बुलबुल-सज्ञा स्त्री० एक गानेवाली काली  
छोटी चिड़िया।

बुलबुला-सज्ञा पु० पानी का बुल्ला।  
बुलबुलाना-क्रि० स० दूसरे से बुलाने का काम  
कराना। बुलाना। किसी को भजकर  
या चिट्ठी तार आदि भेजकर किसी  
को बुलाना।

बुलक-सज्ञा पु०, स्त्री० नाक के बीच में  
पहनने का एक गहना।

बुलाकी-सज्ञा स्त्री० नाक के बीच में पहनने  
का एक गहना।

बुलाना-कि० स० १ पुकारना। आवाज देना।  
 अपने पास आने के लिए कहना। २ किसी  
 को बोलने के लिए प्रेरित करना।  
 बुलावा-सज्ञा पु० निमन्त्रण। बुलाने की  
 क्रिया या भाव। न्योता देना।  
 बुलाहट-सज्ञा स्त्री० दे० "बुलावा"। पुकार।  
 निमन्त्रण।  
 बुल्ला-सज्ञा पु० दे० "बुलबुल"।  
 बुलौआ-सज्ञा पु० दे० "बुलावा"। निमन्त्रण।  
 बुस-सज्ञा पु० भूसी।  
 बुहारन-सज्ञा स्त्री० झाड़न। कूड़ा-ककंट।  
 बुहारना-कि० स० झाड़ लगाना। झाड़ से  
 कोई जगह साफ करना। झाड़ना।  
 बुहारा-सज्ञा पु० बड़ी झाड़ू (विशेषकर  
 ताड़ की बनी हुई)।  
 बुहारी-सज्ञा स्त्री० झाड़ू। बढनी।  
 बुँद-सज्ञा स्त्री० जल आदि तरल पदार्थों  
 का वह थोड़ा अंश जो गिरते समय छोटी  
 गोली की तरह हो जाता है। बिन्दु।  
 जलकण। छोटा। कतरा।  
 मुहा०—बुँदें गिरना या पड़ना=हलकी या  
 पीमी बर्षा होना।  
 बुँदाबादी-सज्ञा स्त्री० हलकी या थोड़ी  
 बर्षा।  
 बुँदो-सज्ञा स्त्री० १ बर्षा की बुँद। २ एक  
 प्रकार की मिठाई। ३ बुँदिया।  
 बु-सज्ञा स्त्री० पप। महक। दुर्गंध। बदबू।  
 बुआ-सज्ञा स्त्री० १ पिता की बहन। फूआ  
 या फूकी। २ बड़ी बहन।  
 सज्ञा पु० बकोटा। चगुल।  
 बूक-सज्ञा पु० १ चगुल। बकोटा (देहाती  
 प्रयोग)। २. माजूफल की तरह का एक पेड़।  
 बूकना-कि० स० घोंसना। घुँग करना। गड़बड़  
 बात करना। जैसे, अंगरेजी बूकना—गान  
 दिखाने के लिए अंगरेजी बोलना।  
 बूका-सज्ञा पु० घुँग। बूकनी। दे० "बुरना"।  
 सफूक।  
 बुचड़-सज्ञा पु० [अर्थ० बूचर] बसाई।  
 बुचड़प्राना-सज्ञा पु० यह स्थान, जहाँ पशुओं  
 की हत्या होती है। बसाई-बाड़ा।  
 बुधा-वि० ब्रिक्के मान गटे हुए हैं। कगटा।

कोई अंग कट जाने या न होने से  
 कुलूप व्यक्ति।  
 बूजना-कि० स० छिपाना। धोखा देना।  
 बूस-सज्ञा स्त्री० १ समझ। बुद्धि। अवल। २  
 पहेंली।  
 बूझना-कि० स० १. समझना। जानना। २.  
 पूछना। ३. ताड़ना।  
 बूट-सज्ञा पु० १ चने का हरा पौधा या  
 दाना। २ पेड़। पौधा। ३ एक प्रकार का  
 फीतेदार जूता (अंग्रे०)।  
 बूटना\*-कि० अ० भागना।  
 बूटनि\*—सज्ञा स्त्री० वीर-बूटो नाम का  
 एक बरसाती कीड़ा, जो लाल रंग का और  
 बहुत मुलायम होता है।  
 बूटा-सज्ञा पु० १ बेलबूटा। कपड़े में सूत या  
 तार का बना काम। बड़ी बूटी। २ छोटा  
 पेड़ या पौधा।  
 बूटी-सज्ञा स्त्री० [बूटा की स्त्री०] १. बपड़े  
 आदि पर बनाए गए फूलों के छोटे चिह्न।  
 छोटा बूटा। २. जड़ों। बनीमुषि।  
 ३ भांग। ४. ताश के पत्तों पर बने हुए  
 चिह्न।  
 बूडना-कि० अ० डूबना। किसी विषय में  
 लीन होना, निमग्न होना।  
 बूडा-सज्ञा पु० बाढ़। आदमी के डूब जाने  
 लायक गहरा पानी। डुबाव।  
 बडी-सज्ञा स्त्री० भाले की नोक। बछी का  
 धार।  
 बूड़ा-वि० दे० "बूड्डा"।  
 बूडा-सज्ञा पु० वि० दे० "बूड्डा"। प्राचीन।  
 मुहा०—बूडा पाप=बहुत अनुभवी। चालाक।  
 पूत। बहुत बूडा।  
 बूकी-सज्ञा स्त्री० बुझिया।  
 बूता-सज्ञा पु० बल। शक्ति। सामर्थ्य।  
 बुदोबास-सज्ञा स्त्री० [फा०] रहना-सहना।  
 निवास।  
 बूर-सज्ञा स्त्री० १ भूसी। छिलका। २ अन्न  
 का कण।  
 मुहा०—बूर के लड्डू=एक प्रकार की मिठाई  
 का नाम। बूर के लड्डू जो साब या भी  
 पण्डित, या न साब सा भी पण्डित—

जिस काम के करने से विशेष फल नहीं।  
बैसे काम, जो देखने में अच्छे मालूम पड़ें,  
पर उनका फल कुछ नहीं।

चूरना\*†-क्रि० अ० डबना। बड़ना।

चूरा-सज्ञा पु० १. भूरे रंग की साफ की  
हुई खाड़। २. चूर्ण। ३. लकड़ी का चूरा।

चूछ\*†-सज्ञा पु० दे० "वृक्ष"।

चूटिया-वि० [अवे०] दे० "मिट्टिया"।

चूहत-वि० बहुत बड़ा। विशाल।

चूहमल-सज्ञा पु० १. दे० अर्जुन का एक  
नाम, जब वे अज्ञातवास में बिराट  
के यहाँ स्त्रीवेष में रहकर उनकी  
कन्या उत्तरा को नाचगान सिखाते थे।  
२. वाहु।

चूहमला-सज्ञा स्त्री० दे० "चूहमल"।

चूहस्पति-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध वैदिक  
देवता, जो अग्निरस के पुत्र और देवताओं  
के गुरु माने जाते हैं। सौर जगत् का  
पाँचवाँ ग्रह।

चूंग-सज्ञा पु० भेंड़क।

चूँच-सज्ञा स्त्री० [अवे०] १. लकड़ी या लोहे  
की एक तरह की लम्बी चौकी। २. वह  
सरकारी न्यायालय, जिसमें एक से अधिक  
न्यायाधीश किसी मुकद्दमे पर विचार करें।

चूँचना-क्रि० स० दे० "चूँचना"।

चूँट, चूँट-सज्ञा स्त्री० हथियारों में लगा काठ  
आदि का दस्ता। मूठ।

चूँड़-†सज्ञा स्त्री० टोक। पाँड़।

चूँड़ना-क्रि० स० दे० "चूँड़ना"। चारों ओर  
पड़ आदि बनाकर घेरना। पसुओं को  
पकड़कर बन्द करना या हँकित।

चूँड़ा†-वि० १. टेंड़ा। आभा। तिरछा। २.  
काठिन। मुश्किल।

सज्ञा पु० कियाड़ बन्द करने की लकड़ी।  
अंगल।

चूँड़ी-सज्ञा स्त्री० डलिया। बाँस की टोकरी।

चूँड़-सज्ञा पु० फरहुर।

चूँत-सज्ञा पु० १. एक प्रसिद्ध छता, जिसके  
ठठल से टोकरी, छड़ी या कुर्मी आदि  
बनती हैं। २. चूँत के ठठल की बनी  
हुई छड़ी।

मूहा०-चूँत की तरह कांपना=डर से धर-  
पर कांपना। बहुत अधिक डरना।

बेंबा-सज्ञा पु० १. माथे पर लगाने की गोल  
बड़ी बिंदी। बेंदी। बड़ी गोल टिकली।

२. माथे पर का एक गहना।

बेंबी-सज्ञा स्त्री० १. बिंदी। टिकली। २.  
माथे पर का एक तरह का गहना (दावनी या  
यदी)।

बेंबड़ा-सज्ञा पु० बंद कियाड़ों के पीछे लगाने  
की लकड़ी। गज। व्याड़ा। अंगल।

बेंबत-सज्ञा स्त्री० दे० "व्यांत"। उपाय।  
तरकीब।

बे-अव्य० बिना। बगैर। रहित। तिरस्कार  
के साथ पुकारने या छोड़े आदिमियों की  
बुलाने का सम्बोधन (अवे)।

बेअत\*†-क्रि० वि० बिना अन्त का। अन्त।  
बहुत अधिक। बेहद।

बेअकल, बेअकल-वि० बिना अकल का। मूर्ख।

बेअदब-वि० [सज्ञा बेअदबी] बड़ों का आदर  
न करनेवाला। धूँट। उद्दड़। अशिष्ट।

बेअदबी-सज्ञा स्त्री० अशिष्टता। धोखी।

बेअसर-वि० जिसका कोई असर या प्रभाव  
न हो। प्रभावहीन।

बेआब-वि० बिना पानी का, अर्थात् बिना  
चमक या बिना दृग्गत का। श्रुतिहीन।  
बिना मान-मर्यादा का।

बेआबरू-वि० बेदृग्गत। प्रतिष्ठाहीन।

बेइंतजामी-सज्ञा स्त्री० दन्तजाम या व्यवस्था  
न होना या इसकी कमी। अव्यवस्था।

बेइन्तिहा-वि० बेहद। बहुत ज्यादा। जिसकी  
कोई हद न हो।

बेइज्जत-वि० [सज्ञा बेइज्जती] १. अप-  
तिष्ठित। २. अपमानित।

बेइज्जती-सज्ञा स्त्री० [क्र०] अपमान।  
अप्रतिष्ठा।

बेइन्ताफी-सज्ञा स्त्री० [क्र०] बन्याय।

बेइलि†-सज्ञा पु० दे० "बेला"।

बेइल्म-वि० बिना ज्ञान का। अज्ञ। अधि-  
क्षित। मूर्ख।

बेईमान-वि० [क्र०] [सज्ञा बेईमानी] १.  
अपिश्वासी २. अवर्मी। अनाचारी।

३. झूठा और धोखाधड़ी करनेवाला।  
 ४. अन्यायी।  
 बेईमानी-सज्ञा स्त्री० १. बेईमान होने का भाव। अविश्वास। २. अधर्म।  
 बेएतबार-वि० १. जिसका कोई विश्वास न करे। २. अविश्वासी। शक्की।  
 बेक्रदर-वि० [फा०] अप्रतिष्ठित। बेइज्जत। अपमानित।  
 बेकदरी-सज्ञा [फा०] स्त्री० बेइज्जती। अपमान।  
 बेकरार-वि० बेचैन। व्याकुल। विकल।  
 बेकरारी-सज्ञा स्त्री० बेचैनी। व्याकुलता।  
 बेकल\*†-वि० दे० 'विकल।' बेचैन। परेशान।  
 बेकली-सज्ञा स्त्री० बेचैनी। व्याकुलता।  
 बेकस-वि० [फा०] १. विवश। नि सहाय। २. गरीब। ३. अनाथ।  
 बेकुसूर-वि० दे० "बेकुसूर।" निरपराध। निर्दोष।  
 बेकहा-वि० कहना न माननेवाला।  
 बेकाबू-वि० १. काबू के बाहर। जो किसी के वश या अधिकार में न हो। २. विवश। लाचार।  
 बेकाम-वि० निकम्मा। निठल्ला। व्यर्थ।  
 बेकायदा-वि० नियमविरुद्ध। नियम के प्रतिकूल। कायदे के खिलाफ।  
 बेकार-वि० [फा०] [सज्ञा बेकारी] १. निकम्मा। निठल्ला। २. व्यर्थ। निरर्थक।  
 बेकारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बेकार होने का भाव। बिना व्यवसाय के। निठल्लापन।  
 बेकार्यो\*†-सज्ञा पु० बुलाने का शब्द। जैसे, रे, अरे, हो आदि। मुंह से निकलने वाला कोई शब्द।  
 बेकुसूर-वि० निरपराध। निर्दोष। बिना कुसूर या अपराध का। जिसका कोई कुसूर न हो।  
 बेग\*†-सज्ञा पु० दे० "बेग"। स्वरूप। नवन। स्थान।  
 सज्ञा स्त्री० जड़।  
 बेगदर-वि० [फा०] निस्मरान। बेगदक।  
 बेघर-वि० [फा०] १. दिन भर या अन-  
 वारी ही न हो। अनजान। २. बेहान।

बेखबरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] अज्ञता। बेहोशी।  
 बेखुर-वि० बेसुध। बेहोश। जो आपे में न हो।  
 बेखोफ-वि० [फा०] निडर। निर्भय।  
 बेग-सज्ञा पु० दे० "बेग"।  
 बेगन-सज्ञा स्त्री० [तु० बेग का स्त्री०] मुसलमान बादशाह या नवाब की पत्नी। (रानी) बड़े घर की मुसलमान महि-  
 ला के लिए प्रयोग किया जानेवाला शब्द।  
 बेघरज-वि० जिसे कोई जरूरत या मतलब न हो।  
 बेघरजू-वि० बेघरज।  
 बेगाना-सज्ञा स्त्री० [फा०] जो अपना न हो। पराया। दूसरा। अनजान।  
 बेगार-सज्ञा स्त्री० १. बिना मजदूरी का काम। जबरदस्ती किसी से काम लेना और मजदूरी न देना। २. धमन से किया गया काम। मुहा०—बेगार टालना=बिना मन लगाए कोई काम करना।  
 बेगारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बेगार में काम करनेवाला आदमी।  
 बेगि\*†-क्रि० वि० जल्दी से। शीघ्रता से। चटपट। तुरत।  
 बेगनाह-वि० [फा०] १. निरपराध। बेकसूर। २. निर्दोष।  
 बेचना-क्रि० स० दाम लेकर देना। बिक्री करना।  
 मुहा०—बेच खाना=बेचकर दाम खा जाना। गँवा देना। खो देना।  
 बेचाना\*†-क्रि० स० दे० "बिकवाना"। बेचवाना।  
 बेचारा-वि० [सं०] [स्त्री० बेचारी] दीन और असहाय। गरीब। जिसे कोई सहाय न हो।  
 बेचिराग-वि० जहाँ चिराग या दीर्घा भी न जलता हो। उजड़ा हुआ।  
 बेचिरापी मोठा-सज्ञा पु० वह जल्दी या गीरा, जहाँ वह ३ आवाही रहो हा, पर अब बड़ा कोई आवाही न हो (चिराग भी न जलता है)।

वेच्-वि० वेचनेवाला।  
 वेचन-वि० [सज्ञा वेचनी] जिसे बेचन न हो।  
 व्याकुल। परेशान।  
 बेजड-वि० निमूल। जिसकी कोई जड़ या  
 बुनियाद न हो। सारहीन।  
 बेजवान-वि० [फा०] १ गुंगा। मूक। गरीब।  
 २ दीन। ३ निर्बल।  
 बेजा-वि० [फा०] अनुचित। खराब। बुरा।  
 बेजान-वि० [फा०] १ बिना ज्ञान का।  
 प्राणहीन। निर्जीव। मृतक। मुरदा। जिसमें  
 कुछ भी बल न हो। २ पस्त। शक्तिहीन।  
 ३ बहुत कमजोर। मुरझाया हुआ।  
 बेजास्ता-वि० नियम विरुद्ध। नियम या  
 कानून के प्रतिकूल या खिलाफ। अनिय-  
 मित। बेकायदा।  
 बेजार-वि० [फा०] जो किसी बात से तग  
 आ गया हो। दुखी।  
 बेजोड-वि० १ जिसमें जोड़ न हो। अखंड।  
 २ जिसकी समता न हो सके। अनुपम।  
 अद्वितीय।  
 बेझना-क्रि० स० दे० 'बेचना'।  
 बेमरा-सज्ञा पु० गेहूँ, जौ, चना आदि एक  
 में मिल हुए अन्न।  
 बेमा\*†-सज्ञा पु० लक्ष्य। निशाना।  
 बेटकी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० 'पटो'।  
 बेटवा या बेटला\*—सज्ञा पु० दे० 'बटा'।  
 बेटा-सज्ञा पु० [स्त्री० बंटी] पुत्र। लड़का।  
 बेटो†-सज्ञा स्त्री० पुत्री। लड़की।  
 बेटोना†-सज्ञा पु० बेटा।  
 बेटन-सज्ञा पु० दे० 'बेटन'। किसी चीज को  
 लपटन या बाँधने के काम में आनवाला  
 कपड़ा।  
 बेटिकाने-वि० १ जो अपने ठीक स्थान पर न  
 हो। बेमौकी। २ जल-जबूल। ३ अनुपयुक्त।  
 क्रि० वि० व्यर्थ। निष्प्रयोजन। बमतलब।  
 बेड़-सज्ञा पु० पैरा। बाड़ा। आड़। मंड।  
 पैड़ के चारो ओर लगाई हुई बाड़।  
 बेड़ना-क्रि० स० परा बनाना। 'बड़ना'।  
 आड़ करना। पाला बाँधना। मंड  
 बाँधना।  
 बेड़ा-सज्ञा पु० १ ताया या जहाजों का

समूह। २ नदी आदि का पार करने के लिए  
 बड़े-बड़े लट्ठा या तख्ता आदि से बनाया  
 हुआ ढाँचा। तिरना।  
 वि० १ आड़ा। तिरछा। २ कठिन।  
 विकट। भ्रुकल।  
 मुहा०—बेड़ा पार करना या लगाना=  
 सफट या दुख दूर करना। सहायता करना।  
 बेड़ा पार होना-सफट या दुख दूर होना।  
 मनोरथ सफल होना।  
 बेड़िन, बेड़नी-सज्ञा स्त्री० नाचने-गानेवाली  
 नट जाति की स्त्री।  
 बेड़िया-सज्ञा पु० नटा की एक जाति।  
 बेड़ी-सज्ञा स्त्री० १ तोहों के कड़े या जजोर,  
 जो कंदियों के पैरों में पहनाई जाती है।  
 २ वाँस की एक प्रकार की टोकरी।  
 बेड़ोल-वि० जिसका डोल या रूप अच्छा  
 न हो। भद्दा। कुरूप। बदशकल।  
 बेढगा-वि० जिसका ढग या तरीका ठीक  
 न हो। बुरे ढगवाला। भद्दा। कुरूप। जो  
 ठीक तरह से रखा या सजाया न गया  
 हो। बेतरतीब।  
 बेड़गापन-सज्ञा पु० बेढगा होने का भाव।  
 कुरूपता। बुरा या अनुचित तरीका।  
 बेड़-सज्ञा पु० १ विनाश। बरबादी। २ बोया  
 हुआ अकुरित बीज।  
 बेड़ई-सज्ञा स्त्री० कचोड़ी।  
 बेड़ना-क्रि० स० १ परना। बाड़ा बाँधना।  
 वृक्षो या खता आदि को, उनकी रक्षा  
 के लिए, चारो ओर से चिन्ती कीटदार  
 काज या तार आदि से घेरना। २ पशुओं  
 को धरकर हाँक ले जाना।  
 बेड़व-वि० बड़गा। भद्दा। बदरीका।  
 बेड़ा-सज्ञा पु० १ हाथ में पहनने का एक  
 प्रकार का कड़ा (गहना)। २ बाड़ा। ३  
 कठपरा। ४ घर के आस-पास छोटा-सा  
 घरा हुआ स्थान, जिसमें तरकारियाँ आदि  
 बौड़ी जाती हैं।  
 बेणोपूल-सज्ञा पु० फूल के आकार का सिर  
 पर पहनने का एक गहना। सीसफल।  
 बेतकल्लुफ-वि० [सज्ञा बतकल्लुफी] दिखावे  
 के सिंटाचार पर विराध ध्यान न देनेवाला।

जो तकल्लुफ या बनावट की परवाह न करे। अपने मन की बात साफ-साफ कहनेवाला।

क्रि० वि० बिना किसी तकल्लुफ के। नि सकोच। बेधडक।

बेतकल्लुफी-सज्ञा स्त्री० सरलता। सादगी।  
बेतकसोर-वि० निर्दोष। निरपराध। बेगुनाह।  
बेतना-क्रि० अ० जान पड़ना। प्रतीत होना।

बेतमीज-वि० अशिष्ट। असभ्य। उजड्ड।  
बेतरह-क्रि० वि० बुरी तरह से। अनुचित रूप से। असाधारण रूप से।

वि० बहुत अधिक। बहुत ज्यादा।  
बेतरतीब-वि० क्रि० वि० [फा०] क्रम-विरुद्ध। जो सिलसिलेवार न हो।

बेतरकी-वि०, क्रि० वि० नियम-विरुद्ध। बेकायदा। अनुचित।

बेतहाशा-क्रि० वि० १. बहुत तेजी से। बड़े वेग से। २. बहुत घबराकर। बिना सोचे-विचारे।

बेताब-वि० [फा०] [सज्ञा बेताबी]। १. बेचैन। व्याकुल। विकल। २. दुर्बल। अशक्त। शिथिल। कमजोर।

बेताबी-सज्ञा स्त्री० बेचैनी। व्याकुलता। कमजोरी। दुर्बलता।

बेतार-वि० बिना तार का।

घो०—बेतार का तार=विजली के द्वारा बिना तार की सहायता से भेजा हुआ समाचार। इस तरह समाचार भेजने की प्रणाली।

बेताल-सज्ञा पुं० १. दे० "बैताल"। २. दे० "बैतालिक"। ३. भाट। बदी। ४. एक भूतयोनि। शिव के गणपति।

वि० ऐसा गाना-बजाना, जिसमें ताल ठीक न हो।

बेताला-वि० दे० "बैताल"। संगीत में ताल या ध्यान न रखनेवाला।

बेतुका-वि० १. बिना तुक या सामञ्जस्य के। बेमेल। २. बेबंद। बढगा। असंगत।

बेतीर-वि० बेडगा।

क्रि० वि० बेडगेपन से।

बेदखल-वि० [फा०] जिसका कब्जा या अधिकार छीन लिया गया हो। खेत या भूकान आदि स्थान पर से जिसके अधिकार छीन लिये गये हो या जो वहाँ से निकाल दिया गया हो। अधिकारहीन।

बेदखली-सज्ञा स्त्री० [फ०] संपत्ति पर से अधिकार या कब्जा हटाया जाना अथवा न होना।

बेदम-वि० [फा०] १. बिना दम का। प्राणहीन। मृतक। मुरदा। २. मृतप्राय। थका हुआ। अधमरा। ३. जर्जर। बोदा।  
बेदमल, बेदमाल-सज्ञा पुं० लकड़ी की तल्टी विशेष, जिस पर तेल लगाकर सिकलींगर लोग औजार तेज करते हैं।

बेदमूक-सज्ञा पुं० [फा०] एक प्रकार का वृक्ष, जिसके फूल कोमल और सुगन्धित होते हैं।

बेदर्व-वि० [फा०] [सज्ञा बेदर्वी] कठोर। निष्ठुर। किसी के दुख को न समझने-वाला। क्रूर। निर्दय।

बेदर्वी-सज्ञा स्त्री० निर्दयता। निष्ठुरता।

बेदाप-वि० [फा०] १. जिसमें कोई दाग या घब्बा न हो। साफ। शुद्ध। २. निष्कलक। निर्दोष। निरपराध। बेकसूर।

बेदाना-सज्ञा पुं० दे० काबुली अनार।  
बेदाम-क्रि० वि० बिना दाय का। मुफ्त। सज्ञा पुं० दे० "बादाम"।

बेदिका, बेदी-सज्ञा स्त्री० दे० "बेदी"।

बेधडक-क्रि० वि० बिना धडकन या सकोच के। निडर होकर। बे-खोफ।

वि० जिसने किसी प्रकार का सकोच, खटका या भय न हो। निडर। निर्भीक।

बेपना-क्रि० स० छेदना। भेदना। चूनाना।

बेधर्म-वि० धर्म के विरुद्ध काम करनेवाला। अपना धर्म छोड़ देनवाला। अधर्मी। धर्मच्युत।

बेधीर-वि० दे० "अधीर"। व्याकुल। बिना धर्म का।

बेनी-सज्ञा पुं० दे० "बेणु" १. घनी। घामुरी। २. सेंपेरा की तूमड़ी। ३. महुवर। रास।

बेनजीर-वि० अतिथीय। जिसकी कोई मज्जीर

न हो अर्थात् मिसाल या उदाहरण न हो ।  
 बेनभूना-वि० अद्वितीय । अनुपम ।  
 बेनवर-सज्ञा पु० बिनीला ।  
 बेनखोय-वि० अभावा । बदकिस्मत । भाग्य-  
 हीन ।  
 बेना-सज्ञा पु० १ बाँस का बना हुआ छोटा  
 पक्षी । २ लस । उधिर । ३ बाँस । ४ एक  
 प्रकार का गहना (बेना बँदिया) ।  
 बेनी-सज्ञा स्त्री० १ दे० "बैणी" । स्त्रिया की  
 चोटी । जूड़ा । २ दे० "त्रिवेणी" (गंगा, यमुना  
 तथा सरस्वती, का प्रयाग में संगम) ।  
 बेनु-सज्ञा पु० दे० "बेणु" । १ वसी २ बाँस ।  
 बेपरवा, बेपरवाह-वि० [फा०] [सज्ञा बेपर-  
 वाही] १ जिसे कोई परवा या चिन्ता  
 न हो । बेफिक्र । निश्चिन्त । २ मनमौजी ।  
 लापरवाह । ३ उदार ।  
 बेपरवाही-सज्ञा पु० [फा०] निश्चिन्तता ।  
 वैफिकी । चिन्ता-रहित होने की अवस्था ।  
 लापरवाही ।  
 बेपर्दे-वि० जिसके आगे को ओट न हो ।  
 खुला । बिना ढँका हुआ । नग्न ।  
 बेपर्देगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] पर्दा न होना ।  
 नग्नता । अश्लीलता ।  
 बेपाइ-वि० जिस कोई उपाय न सूझे ।  
 भीषणका । हक्का-बक्का । क्लिप्तव्य विमूढ़ ।  
 बेपीर-वि० तुरसरा के कष्ट को कुछ न  
 समझनेवाला । निर्दय । ज़ेहरम । क्रूर ।  
 बेपैदी-वि० जिसमें पैदा न हो ।  
 सुहा-बेपैदी या लौटा-किस्ती के जरा  
 से कहने पर अपना विचार बदलनेवाला  
 आदमी । यह व्यक्ति, जिसका कोई निश्चित  
 मत या सिद्धान्त न हो ।  
 बेफायदा-वि०, क्रि० वि० [फा०] जिससे कोई  
 लाभ न हो । व्यर्थ । फजूल । नाहक ।  
 बेफिक्र-वि० [फा०] जिसे कोई फिक्र या  
 चिन्ता न हो । निश्चिन्त । बेपरवाह ।  
 बेफिक्री-सज्ञा स्त्री० निश्चिन्तता । चिन्ता-  
 रहित या बेफिक्र होने की अवस्था या  
 भाव ।  
 बेबस-वि० १ विवश । लाचार । मजबूर ।  
 २ परवश ।

बेबसी-सज्ञा स्त्री० लाचारी । विवशता ।  
 मजबूरी । परवशता ।  
 बेबाक-वि० [फा०] [सज्ञा स्त्री० बेबाकी]  
 चुकता । चुकाया हुआ ऋण या वाकी दाम  
 आदि । साफ किया गया हिसाब किताब ।  
 बेबनियाब-वि० [फा०] निर्मूल । निराधार ।  
 अस्तित्व-हीन ।  
 बेब्याहा-वि० [स्त्री० बेब्याही] अविवाहित ।  
 कुँआरा ।  
 बेभाव-क्रि० वि० बिना दर के । बेहिसाब ।  
 बेहद ।  
 बेमत-क्रि० वि० बिना मन लगाए ।  
 वि० जिसका मन न लगता हो ।  
 बेमरम्मत्त-वि० [फा०] [सज्ञा बेमरम्मती]  
 टूटा फूटा । बिगड़ा हुआ ।  
 बेमुरब्बत-वि० [फा०] [सज्ञा बेमुरब्बती]  
 शील-पकोच से रहित । किसी का लेहाज  
 या स्थाल न करनेवाला ।  
 बेमोक्ता-वि० [फा०] जा अवचित समय पर न  
 हो ।  
 सज्ञा पु० मोके या अवसर का न होना ।  
 बेमोसिम-वि० [फा०] मौसम (ऋतु या उप-  
 युक्त समय) न होने पर भी होनेवाली चोज ।  
 असमय पर होनेवाली बात । जिसका मौसम  
 न हो ।  
 बेर-सज्ञा पु० एक वृक्ष और उसके फल का नाम ।  
 सज्ञा स्त्री० वार । दफा । देर । विलम्ब ।  
 यो०—बेर-बेर=बार-बार । अनेक बार ।  
 बारम्बार ।  
 बेरहम-वि० [फा०] [सज्ञा बेरहमी] निर्दय ।  
 निष्ठुर । दयाहीन ।  
 बेरा-सज्ञा पु० समय । वक्त । प्रातःकाल ।  
 बेरामी-वि० दे० "बीमार" ।  
 बेरामी-सज्ञा स्त्री० दे० "बीमारी" ।  
 बेरिआ या बेरिया-सज्ञा स्त्री० बला ।  
 समय ।  
 बेरी-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'वर' । बेर की  
 शाड़ी । २ दे० 'बेदी' ।  
 बेरख-वि० [फा०] [सज्ञा बेरखी] १ समय  
 पड़ने पर रुख (मुह) फेर लेनेवाला ।  
 बेमुरब्बत । उदासीन । २ नाराज । अप्रसन्न ।

बेखली—सज्ञा स्त्री० १. नाराजगी। अप्रसन्नता। मनमुटाव। २. उदासीनता। ३. बेमुरब्बती।  
बेल—सज्ञा पुं० १. एक काँटेदार वृक्ष और उसके फल का नाम। शीफल। २. एक प्रकार की कुदाली। ३. सीमा निर्धारित करने के लिए चूने आदि से जमीन पर डाली हुई लकीर। ४. बेल का फूल।

संज्ञा स्त्री० १. बल्ली। लता। लतर। २. रतान। बश। ३. कपड़े, फीते या डीवार आदि पर बनी हुई फूल-भित्तियाँ। बूटा। ४. नाव खेने का डाँड़।

मुहा०—बेल मेंढ़े चढ़ना=कोई काम अत तक ठीक-ठीक पूरा उतरना।

बेलचा—सज्ञा पुं० [फा०] फावड़ा। कुदाल।  
बेलज्जत—वि० [फा०] [सज्ञा बेलज्जती]  
१. बिना स्वाद का। २. नीरस। ३. आनन्द-रहित। बेमजा।

बेलदार—सज्ञा पुं० [फा०] जमीन खोदने आदि का काम करनेवाला मजदूर।

बेलवारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] बेलदार का काम।

बेलन—सज्ञा पुं० १. दे० “बेलना”। गोल और दंड के आकार की वस्तु, जिसे लुढ़काकर किसी स्थान को समतल करते अथवा कंकड़-पत्थर आदि कुटकर सड़कें बनाते हैं (रोलर)। २. किसी यंत्र आदि में लगा हुआ इम आकार का कोई बड़ा पुरजा। ३. कॉलर का जाठ। ४. रुई धनकने की मुठिया या हत्था।

बेलनदार—वि० जिसमें बेलन लगा हो।

बेलना—सज्ञा पुं० काठ का एक प्रकार का लंबा दस्ता, जो रोटी, पूरी आदि की लोई बेलने के काम आता है।

फि० स० १. रोटी, पूरी आदि की चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बड़ा-कर बड़ा और पतला करना। फलाना। बड़ना। २. घोंपट करना। नष्ट करना।  
मुहा०—पापड़ बेलना=बेकार का काम करना।

बेलपत्ती—सज्ञा स्त्री० बेल वृक्ष की पत्ती।  
बेलपत्र—सज्ञा पुं० दे० “बेलपत्र”। बेल के वृक्ष के छोटे-छोटे पत्ते, जो शिवजी पर पड़ाए जाते हैं।

बेलपात—सज्ञा पुं० दे० “बेलपत्र”।

बेलबूटा—संज्ञा पुं० कपड़े आदि पर काढ़ी गई फूल-पत्ती या बिन्दी आदि। फूलपत्ती आदि बनाने का काम।

बेलबूटदार—वि० बेलबूटवाला।

बेलसना\*†—फि० अ० बिलसना। बिलास करना। भोग करना। सुख लूटना।

बेलहारा†—सज्ञा पुं० [स्त्री० बलहरी] बांस की बनी एक छोटी पिटारी, जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।

बेला—सज्ञा पुं० १. सफेद रंग का एक सुगंधित फूल जो गर्मी के दिनों में संध्या के समय फूलता है। इसका और इसके छोटे पीपे का नाम। २ [अंग० वायलिन] एक प्रकार का वाजा जिसमें तार होते हैं और जो बालों की छड़ी से बजाया जाता है। ३. चमड़े की एक प्रकार की छोटी कुल्हिया, जिससे तेल दूसरे पात्र में भरते हैं। ४. लहर। ५. समुद्र का किनारा। ६. समय। वनत। ७. एक गहना।

बेलाग—वि० १. बिलकुल अलग। जो किसी चीज पर टिका हुआ न हो। जिसका किसी से लाग या सम्बन्ध न हो, या जो किसी से सम्बन्ध न रखना चाहता हो। २. परा।

बेलि—सज्ञा स्त्री० [बेला का स्त्री०] लता।

बेली—सज्ञा पुं० सगो। साथी।

बेलीस—वि० १. स्पष्टवक्ता। सच्चा। परा। २. बेमुरब्बत। ३. लाबलपट न रखनेवाला। किसी का पक्षपात न करनेवाला।

बेवकूफ—वि० [फा०] [सज्ञा बेवकूफी] मूर्ख। नािमग्न। अज्ञान। अनाड़ी।

बेवकूफी—सज्ञा स्त्री० मूर्खता। अज्ञान।

बेवकूफ—फि० वि० [फा०] अनुपपुन्य समय पर। कुसमय में।

बेवतन—वि० [फा०] बिना घर-द्वार का।

बेवफा—वि० [सज्ञा बेवफाई] १. कुतम्न। २. बेमुरब्बत।

बेबरा\*†—सज्ञा पुं० दे० “ब्योरा”। विवरण।

बेबरेबाजी—सज्ञा स्त्री० गालाजी।

बेबरेवार—वि० वफाकीलवार। विवरण-सहित।

बेवहरना\*†-क्रि० अ० व्यवहार करना ।  
 बरताय बरना या बरतना ।  
 बेवहरिया\*†-सज्ञा पु० लेन-दन करनेवाला ।  
 महाजन ।  
 पेवा-ज्ञा स्त्री० [फा०] विषया । रीड ।  
 जिसका पति मर गया हो ।  
 पेवाई-सज्ञा स्त्री० दे० "पेवाई" ।  
 पेवान\*†-सज्ञा पु० दे० "पिमान" ।  
 पेशाऊर-वि० नासमझ । उजड़ । फूहड़ ।  
 पेशाऊरी-सज्ञा स्त्री० १ मूर्खता । उजड़ता ।  
 २ फूहड़पन ।  
 पेशाक-क्रि० वि० बिना शक या शक्य के ।  
 अवश्य । निमदेह । जरूर ।  
 पेशाकीमत, पेशाकीमती-वि० बहुमूल्य । बहुत  
 दाम का ।  
 पेशरम-वि० [फा०] निर्लज्ज । बेहया ।  
 पेशरमी-सज्ञा स्त्री० निर्लज्जता । बेहयाई ।  
 पेशी-सज्ञा स्त्री० [फा०] अधिकता ।  
 क्रि० वि० अधिक ।  
 पेशुमार-वि० [फा०] असह्य । जिनकी गिनती  
 न हो सके । अगणित ।  
 पेसन-सज्ञा पु० चने की दाल का आटा ।  
 पेसनी-सज्ञा स्त्री० पेसन की बनी या भरी  
 हुई पूरी आदि ।  
 पेसनीटो-सज्ञा स्त्री० पेसन की रोटी ।  
 पेसवर†-वि० जिसे सत्र या सतोष न हो ।  
 अधीर ।  
 पेसमझ-वि० [सज्ञा पेसमझी] नासमझ ।  
 मूख । बेवक्फ ।  
 पेसमझी-सज्ञा स्त्री० नासमझी । मूर्खता ।  
 बेवक्फी ।  
 पेसर-सज्ञा पु० १ नाक में पहनने की नथ ।  
 २ खच्चर ।  
 पेसवा-सज्ञा स्त्री० दे० "पेशवा" ।  
 पेसारा\*†-वि० १ वेठानेवाला । २ रखने  
 या जमानेवाला ।  
 पेसाहना†-क्रि० अ० १. मोल लेना । २  
 जानबूझकर झूठ, झगडा, विरोध या  
 आपात मोल लेना ।  
 पेसाहनी-सज्ञा स्त्री० मोल लेने की निया ।  
 पेसाहाना-सज्ञा पु० खरीदी हुई चीज । सोदा ।

बेसिक-वि० [अप्रे०] आधार । आधारभूत ।  
 बेसिक प्राइमर, बेसिक रीडर-सज्ञा पु०  
 [अप्रे०] बच्चा की शिक्षा के लिये प्रारम्भिक  
 पुस्तकें ।  
 बेसिक शिक्षा-सज्ञा पु० बच्चा को, शिक्षा  
 देने की एक तरह की प्रणाली, जिसमें  
 चित्र आदि की सहायता से उन्हे व्यावहारिक  
 विषयों का ज्ञान कराया जाता है ।  
 बेसिलसिले-वि० जो सिलसिलेवार या क्रम  
 के अनुसार न हो । जिसमें कोई क्रम  
 न हो ।  
 बेसुध-वि० बिना सुध या होश के । अचेत ।  
 बेहोश । बेखबर ।  
 बेसुधो-सज्ञा स्त्री० बेहोशी ।  
 बेसुर, बेसुरा-वि० बेमेल । १ राग के स्वर से  
 भिन्न । भट्टो आवाजवाला । बिना ताल-  
 स्वर का (संगीत) । २ बेमौका ।  
 बेहगम-वि० [सज्ञा पु० बेहगमपन]  
 १ धूमवकड । आवारा । २ बेसाऊर ।  
 उजड़ । ३ बेवगा ।  
 बेह\*†-सज्ञा पु० दे० "बेह" छेद ।  
 बेहड़-वि० सज्ञा पु० दे० "बीहड़" ।  
 बेहतर-वि० [फा०] अधिक अच्छा । किस  
 की तुलना या मुकाबले में अधिक अच्छा  
 बढ़कर ।  
 अव्य० स्वीकृति-सूचक शब्द । बहुत अच्छा  
 जरूर ।  
 बेहतरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बेहतर का भाव  
 अच्छापन । भलाई ।  
 बेहद-वि० [फा०] बिना हद या सीमा के  
 अपार । असीम । बहुत अधिक ।  
 बेहना†-सज्ञा पु० बीज । बीया ।  
 बेहना†-सज्ञा पु० जुलाहा की एक जाति  
 धनिया ।  
 बेहया-वि० [फा०] [सज्ञा बेहयाई] निर्लज्ज  
 बेहयाई । जिसे हुया या लज्जा न हो ।  
 बेहयाई-सज्ञा स्त्री० निर्लज्जता । बेशर्मी ।  
 बेहुरना†-क्रि० अ० फटना ।  
 बेहरा-वि० अलग । पृथक् । जुदा ।  
 सज्ञा पु० [अप्रे० ययगर] दे० "बेरा" ।  
 होटलो में काम करनेवाला नौकर । बडे

अधिकारी या बड़े आदमी का निजी चपरासी।

बेहरी-सज्ञा स्त्री० विषय काम के लिए लोगों से माँगकर इकट्ठा किया गया चन्दा। चंदा माँगने की क्रिया। वह किस्त, जो असाही शिकमीदार को देता है।

बेहाल-वि० जिसका हाल या दशा ठीक न हो। [सज्ञा बेहाली] व्याकुल। बेसुध। बेचैन। परेशान।

बेहिाब-क्रि० वि० इतना अधिक कि जिसका हिसाब न हो सके। बहुत अधिक। बेहद।

बेहतर-वि० कोई हुनर न जाननेवाला।

बेहदगी-सज्ञा स्त्री० असम्यता। दे० 'बेहदापन'। अशिष्टता। मूर्खता। बेवकूफी।

बेहदा-वि० [फा०] अशिष्ट। असम्य। बदतमीज।

बेहदापन-सज्ञा पु० बेहदगी। अशिष्टता। असम्यता।

बेहून-क्रि० वि० दे० 'विहीन'। बिना। बगैर।

बेहफ-वि० [फा०] जिसे कोई डर, चिन्ता या परवाह न हो। बेफिक। चित्ता-रहित।

बेहोश-वि० [फा०] जिसे होश या सुष न हो। मूर्च्छित। बेसुध। अचेत।

बेहोशी-सज्ञा स्त्री० [फा०] भ्रूच्छ। अचेत-नता।

बैक-सज्ञा पु० [अंग्रे०] यक। वह सव्या या कम्पनी जो रुपए का लेन-देन करती है और जहाँ लोग रुपया जमा करते हैं, तो उसका उन्हें मूद मिलता है।

बैगन-सज्ञा पु० एक पौधा, जिसके फल की तरकारी बनाई जाती है। भँटा।

बैगनी, बैगनी-वि० जा बलाई लिये नीले रंग का हो। बैगन के रंग का।

बैठ-सज्ञा पु० [अंग्रे०] अंग्रेजी बाजा का समूह या उनके बजानेवाला की टोली।

बैठा-वि० दे० "बैठा"।

बै-सज्ञा स्त्री० १. बैसर। कपड़ी (जूताहों की)। २. दे० "बैय"। बैचना। बिनी।

बैठ-सज्ञा पु० दे० "बैठ"।

बैग-सज्ञा पु० [अंग्रे०] थैला। झोला। बैजती-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का पौधा, जिसके फल लंबे होते हैं और गुच्छों में लगते हैं। २ विष्णु भगवान् की माला। श्रीकृष्ण की माला।

बैजतीमाला-सज्ञा स्त्री० १. पंचरंगी माला। पाँच रंगों की घुटनों तक लटकती हुई माला, जिसे श्रीकृष्ण पहनते थे। २. हीरा आदि मणियों की माला।

बैज-सज्ञा पु० [अंग्रे०] अधिकार-सूचक चिह्न। चपरास।

बैजनाथ-सज्ञा पु० दे० "बैद्यनाथ"।

बैजपती-सज्ञा स्त्री० दे० "बैजपती"। बैजती माला।

बैजा-सज्ञा पु० [अ०] अङ्कोश। पलियो आदि का अडा।

बैटरी-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १. रासायनिक क्रिय-द्वारा बिजली पैदा करने के काम में लाया जानेवाला लोहे आदि का बना हुआ पात्र। इसका प्रयोग टार्च से रोशनी करने के लिए करते हैं या मोटर आदि में इजन चलाने के लिए करते हैं। २. गोला-बारूद रखने का स्थान।

बैठक-सज्ञा स्त्री० १ बैठने का स्थान या कमरा। वह स्थान, जहाँ बहुत से लोग आकर बैठ कर रहे हैं। चौपान। २ किसी मूर्ति या खम्बे आदि के नीचे का आधार। ३ जमाव। जमा-वडा। किसी सभ, सव्या या समिति आदि के सदस्यों का कहीं पर किसी कार्य के लिए एक बार जमा होना। अधिवेशन। ४ बैठने की रीति या ढंग। बार-बार बैठने और उठने की कसरत। दे० "बैठकी"।

बैठकबाज-वि० [सज्ञा बैठकबाजी] १. बड़ी देर तक दिलचस्पी की बातें करनेवाला। २ बातें बनानेवाला या बातें बनाकर अपना काम निकालनेवाला। चालाक।

बैठक-सज्ञा पु० बहुत कमरा, जिसमें लोग बैठते हैं। बैठक।

बैठकी-सज्ञा स्त्री० १. बार-बार बैठने और उठने की कसरत। बैठक। २. आसन। ३. पातु आदि की दीपक।

बैठना-क्रि० अ० १. पैरों को समेटकर रोड़ के आसपास की हड्डियों के सहारे देकना या ऐसी स्थिति में होना कि घूतड़, किसी आधार पर रहे। आसोन होना। आसन जमाना। किसी स्थान पर जमना। २. अभ्यस्त होना। ३. जल आदि में घुसी हुई वस्तु का नीचे जमना। डबना या डूबना। ४. पचक जाना। घंसना। ५. कारबार चलता न रहना। ६. बिगड़ना। ७. तीस में ठहरना या परता पड़ना। ८. लागत लगना। खर्च होना। ९. सक्षय पर पड़ना। निशाने पर लगना। १०. पीछे का जमीन में गाड़ा जाना। ११. लगना। खर्च होना। १२. किसी स्त्री का किसी पुरुष के यहाँ पत्नी के समान रहना। घर में पड़ना। १३. पक्षियों का अडे सेना। १४. काम से खाली रहना। बेकार होना। बेरोजगार रहना। १५. अस्त होना।  
मुहा०—बैठे-बैठाए=१. अकारण बिना कुछ किए ही। २. अचानक। एकाएक। बैठे-बैठे=१. निष्प्रयोजन। २. अचानक। ३. अकारण। बैठते-उठते=सदा। सब अवस्था में। ४. हरदम।

बैठवाना-क्रि० स० बैठाने का काम दूसरे से कराना।

बैठाना-क्रि० स० १. किसी को बैठने में प्रवृत्त करना। दे० "बैठना"। बैठने को कहना। २. स्थापन करना। पद पर स्थापित करना। ३. नियत करना। ठीक जमाना। अबाना या टिपाना। ४. पानी आदि में घुली हुई वस्तु को तल में जमाना। ५. घंसाना या डूबाना। पचकाना। ६. कारबार चलता न रहने देना। ७. बेकाम कर देना। ८. बिगाड़ना। ९. कोई चीज ठीक जगह पर पहुँचाना। जैसे मोच लगने पर बैठाना। (हड्डी आदि बैठाना) सक्षय पर जमाना। १०. पीछे को जमीन में गाड़ना। जमाना। ११. किसी स्त्री को पत्नी के रूप में रख लेना। घर में डालना।

मुहा०—हाथ बैठाना=किसी काम को बार-बार करके हाथ को अभ्यस्त करना।

बैठारना-क्रि० स० दे० "बैठाना"।

बैठालना-क्रि० स० दे० "बैठाना"।

बैठना-क्रि० स० बंद करना। 'बैठना (पशुओं को)।

बैत-सज्ञा स्त्री० [अ०] पद्य। श्लोक।

बैतरनी-सज्ञा स्त्री० दे० "बैतरणी"।

बैताल-सज्ञा पु० दे० "बैताल"।

बैद्य-सज्ञा पु० १. दे० "वैद्य"। आयुर्वेदिक दवा करनेवाला। २. गाँवों में घूम-घूमकर कान साफ करनेवाला जो अपने को बंद कहता है।

बैद्यगी-सज्ञा स्त्री० दे० "वैद्यक"। वैद्य की विद्या या व्यवसाय। वैद्य का काम।

बैदेही-सज्ञा स्त्री० दे० "वैदेही"।

बैत-सज्ञा पु० वचन। कथन। बात।

बैना-सज्ञा पु० १. उत्सवों पर विरादरी तथा इष्ट-मित्रों के यहाँ भेजा जानेवाला उपहार। २. बाणी। बोली। ३. माथे पर पहनने का एक गहना।

बैंपा-क्रि० वि० घुटनों के बल।

बैंपा-सज्ञा पु० पक्षी-विशेष।

बैंपान या बियान-सज्ञा पु० प्रसव। जन्म (पशुओं के लिए प्रयुक्त)।

बैर-वि० बिना टिकट की या कम टिकट लगी हुई डाक से भेजी गई चिट्ठी या पार्सल, जिसका महसूल पानेवाले को देना पड़े।

बैर-सज्ञा पु० १. शत्रुता। विरोध। २. बैर का पेड़ और फल। ३. अदायत। दुस्मनी।

मुहा०—बैर बाढ़ना या निकालना=बदला लेना। बैर ठालना=दुस्मनी मान लेना।

शत्रुता रखना। बैर पड़ना=शत्रु होकर ऊट पड़ना। बैर बिसाहना या मोल लेना=किसी से दुस्मनी पैदा करना। बैर लेना=बदला लेना। बैर निकालना।

बैर-सज्ञा पु० १. विरागी का वेष। २. सेना का झंडा।

बैरखो-सज्ञा स्त्री० स्त्री का बाँहों में बिगाह में पहनने का एक गहना।

बैरा-सज्ञा पु० १. हल के पीछे लगा हुआ शीगा, जिसमें बोन के लिए चीज डाला जाता है। (अंग्रे०) २. होटल में काम करनेवाला नौकर। खिदमतगार।

बेराखी-सज्ञा स्त्री० दे० "बैरखी" ।  
 बेराग-सज्ञा पु० दे० "बैराग्य" ।  
 बेरागी-सज्ञा पु० [स्त्री० बेरागिन] वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद ।  
 दे० "बैरागी" । सन्यासी । साधु । जिसने वैराग्य या सन्यास ले लिया हो । ससार की मोहमाया से अलग ।  
 बैरिस्टर-सज्ञा पु० [अग्र०] इंग्लैंड में कानून की उपाधि 'बार एट-ला' प्राप्त व्यक्ति, जिसकी मर्यादा या प्रतिष्ठा साधारण वकील (प्लीडर या एडवोकेट) से अधिक मानी जाती है ।  
 बैरी-वि० दे० "वैरी" [स्त्री० बैरिन] बैर रखनेवाला । शत्रु । दुश्मन । विरोधी ।  
 बैल-सज्ञा पु० [स्त्री० गाय] १ गोवश का बधिया किया हुआ नर । यह हल में जोता जाता है । इस पर बोझ डोते हैं और यह गाड़ियों को खींचता है । २ मूख ।  
 बैलून-सज्ञा पु० [अग्र०] गुब्बारा ।  
 बैसबर\*-सज्ञा पु० दे० "बैसबानर" । अग्नि ।  
 बैस-सज्ञा स्त्री० १ आयु । उम्र । २ यौवन । जवानी ।  
 सज्ञा पु० १ सत्रिया की एक प्रसिद्ध शाखा । २ वैश्य । वनिया ।  
 बैसना\*†-क्रि० स० बैठना ।  
 बैसर-सज्ञा स्त्री० जुलाहा का एक योजार, जिससे वे कपड़ा बुनते समय बाने की बैठते हैं ।  
 बैसबारी-सज्ञा पु० [वि० बैसबारी] अवघ का पश्चिमी प्रांत ।  
 बैसाख-सज्ञा पु० दे० "बैशाख" ।  
 बैसाखी-सज्ञा स्त्री० १ बैसाख महीना-सम्बन्धी । २ बहु डडा, जिसके सिरे को कंधे के नीचे बगल में रखकर लंगटे लोग टेकते हुए चलते हैं ।  
 बैसाना\*-क्रि० स० बैठाना ।  
 बैसारना\*†-क्रि० स० दे० "बैठाना" ।  
 बैहर\*†-वि० १ भयानक । २ प्रीधी ।  
 \*सज्ञा स्त्री० बायु ।  
 बाझ-सज्ञा पु० बारूद में आग लगाने का पत्तीता ।  
 बाँझो-सज्ञा स्त्री० दे० "बाँड़ी" ।

बोआई-सज्ञा स्त्री० बोनो का काम या उसकी मजदूरी ।  
 बोका-सज्ञा पु० बकरा ।  
 बोच-सज्ञा पु० मगर की जाति का एक जलजन्तु ।  
 बोज-सज्ञा पु० घोड़ों का एक भेद ।  
 बोझ-सज्ञा पु० १ भार । भारीपन । गुरुत्व । वजन । भारी वस्तु । गट्ठर । २ मुश्किल काम । कठिन बात । ३ किसी कार्य को करने में होनेवाला श्रम, कष्ट या व्यय । ४ गट्ठा । उतना भार, जितना एक आदमी या पशु लादकर ले जा सके ।  
 बोझना-क्रि० स० बोझ लादना । भार डालना ।  
 बोझल, बोझिल-वि० वजनी । भारी । वजन-दार ।  
 बोझा-सज्ञा पु० दे० "बोझ" ।  
 बोट-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] नाव ।  
 बोटा-सज्ञा पु० कुड़ा । कड़ा हुआ टुकड़ा ।  
 बोटी-सज्ञा स्त्री० मांस का छोटा टुकड़ा ।  
 मुहा०-बोटी-बोटी काटना=शरीर को काटकर टुकड़े-टुकड़े करना ।  
 बोड़ा-सज्ञा पु० फल की ढठी ।  
 बोड़ना-क्रि० स० दे० "बोरना" । डुबाना ।  
 बोड़ा-सज्ञा पु० एक प्रकार की पतली लवी फली, जिसकी तरकारी होती है । सोबिया ।  
 बोटी-सज्ञा स्त्री० दे० "बोड़ी" । एक प्रकार के पीधे की कली, जिसको तरकारी आदि बनती है ।  
 बोटल-सज्ञा स्त्री० कान का लवी गरदन का एक गहुरा बरतन ।  
 बोताम-सज्ञा पु० बटन का देहाती रूप ।  
 बोवरी-सज्ञा स्त्री० खसरा नाम का रोग ।  
 बोवा-वि० [भाव० बोदापन] १ मूर्ख । गावदी । जिसकी समझ में जल्दी कोई बात न आवे । २ सुस्त । मट्ठर । ३ कमजोर । ४ जो कडा न हो । फुसफुसा ।  
 बोदापन-सज्ञा पु० मूर्खता । नासमझी ।  
 बोध-सज्ञा पु० ज्ञान । ज्ञानकारी । तयत्ती । धीरज । सन्तवना ।  
 बोधक-सज्ञा पु० १ ज्ञान करानेवाला । प्रदाने

वाला। जतानेवाला। २. शृंगार रस के हाथों में से एक हाथ, जिसमें किसी सकेत या प्रिया-द्वारा एक दूसरे को अपने मन के भाव बताए जाते हैं।

बोधगम्य-वि० समझ में आने योग्य। जो समझ में आ सके।

बोधन-सज्ञा पु० [वि० बोधनीय, बोध्य, बोधित] समझाना। सूचित करना। जगाना।

बोधना\*†-क्रि० स० बोध देना। समझाना। ज्ञान देना। बतलाना। जताना।

बोधनीय-वि० समझने योग्य। बोध न करने योग्य।

बोधितरु, बोधिद्रुम-सज्ञा पु० दे० "बोधिवृक्ष"।

बोधिवृक्ष-सज्ञा पु० गया में स्थित पीपल का वह पेड़, जिसके नीचे गौतम बुद्ध ने बोध (ज्ञान) या बुद्धत्व प्राप्त किया था।

बोधिसत्त्व-सज्ञा पु० जिसे पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होनेवाली हो। बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी। जो बुद्ध बनने का अधिकारी हो गया हो। महात्मा गौतम बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम।

बोना-क्रि० स० बीज की जमने के लिए जमीन में डालना। खेत में बीज डालना। बिखराना।

बोपड़-सज्ञा स्त्री० गध। वास।

बोर-सज्ञा पु० १ डुबाने की क्रिया। जैसे, दावात में कलम डालना या कपड़े को रंग में डालना। २ गड्ढा। बिल।

बोरना†-क्रि० स० १ डुबाना। २. कल-कित करना। बदनाम करना। ३ मुक्त करना। बोध देना या मिलाना। ४ रंग में डुबाकर रंगना।

बोरसी†-सज्ञा स्त्री० अंगीठी।

बोरा-सज्ञा पु० [स्त्री० बोरी] टाट का बड़ा थैला, जो अनाज आदि सामान रखने के काम आता है।

बोरिया-सज्ञा स्त्री० छोटा थैला। सज्ञा पु० [फा०] १. चटाई। २ बिस्तर।

भुहा-बोरिया-बंधना उठाना=सब सामान लेकर चलने की तैयारी करना। प्रस्थान करना।

बोरो-सज्ञा स्त्री० टाट की छोटी थैली। छोटा बोरा।

बोरो-सज्ञा पु० एक प्रकार का मोटा धान। एक प्रकार की पतली लम्बी फली, जिसकी तरकारी होती है।

बोर्ड-सज्ञा पु० [अंग्रे०] समिति। मण्डल। किसी विशेष या स्थायी कार्य के लिए नियुक्त या निर्वाचित समिति।

बोर्ड-बार्ड आफ रेवेन्यू=भारत के मुकदमा का फसला करनेवाली सब से बड़ी बदायत। फार्ड बोर्ड=कागज की मोटी दस्तो। जिला बार्ड या डिस्ट्रिक्ट बार्ड=पूरे जिले की व्यवस्था करनेवाली, गैर सरकारी, निर्वाचित सदस्या की समिति। म्यु-निसिपल बार्ड=नगरपालिका या नगर की व्यवस्था करने के लिए गैर सरकारी निर्वा-चित सदस्या की समिति।

बोडिंगहाउस-सज्ञा पु० [अंग्रे०] छात्रावास। विद्यार्थियों के रहने और खाने का स्थान।

बोल-सज्ञा पु० १ कही हुई बात। बोली। वचन। वाणी। २ ताना। व्यंग्य। लगती हुई बात। ३ प्रतिज्ञा। ४ बाजे का शब्द। मुहा०—(किसी का) बोल-वाला रहना या होना=बात की साख बनी रहना। मान मर्यादा बनी रहना।

बोल-चाल-सज्ञा स्त्री० १ बातचीत। कथनो-पकथन। सवाद। २ भेल-मिलाप। परस्पर सद्भाव। ३ छेड़छाड़। ४ चलती भाषा। नित्य के व्यवहार की बोली।

बोलता-सज्ञा पु० बोलने की शक्ति। आत्मा। जीव। प्राण।

वि० बोलनेवाला। खूब बोलनेवाला। बाबाल।

बोलती-सज्ञा स्त्री० बोली। बोलने की शक्ति।

बोलनहारा-सज्ञा पु० बोलनेवाला। बोलता। बोलना-क्रि० अ० मुख से शब्द उच्चारण करना। कहना। बात करना।

बो-बोलना-बालना=१ बातचीत करना। २. आवाज निकालना।

क्रि० स० १. कहना। कथन करना। २

बदना। ठहराना। रोक-टोक करना। ३. छेड़-छाड़ करना। ४ \*† आवाज देना। बुलाना। पुकारना। पास आने के लिए। ५. कहना या कहलाना।

मुहा०—बोल जाना=१. मर जाना (अशिष्ट)। दम हार जाना। शक्ति समाप्त हो जाना। २. बाकी न रह जाना। चुक जाना। ३. व्यवहार के योग्य न रह जाना।

\*बोली पठाना=बुला भोजना।

बोलवाला—सज्ञा पु० प्रताप। आतंक।

बोलवाना—क्रि० सं० दे० "बुलवाना"।

बोलचाली—सज्ञा स्त्री० दे० "बोलचात"।

बोलो—सज्ञा स्त्री० १. मुँह से निकली हुई आवाज। वाणी। २. अर्थयुक्त शब्द या वाक्य। वचन। वात। ३. नीलाम करनेवाले और लेनेवाले का जोर से दाम कहना। ४. वह शब्द-समूह, जिसका व्यवहार किसी प्रदेश के निवासी आपस में अपने विचार प्रकट करन के लिए करते हैं। भाषा। ५. ताना। व्यंग्य। ६. हँसी-दिल्लीगी। ठठोली। मुहा०—बोली छोड़ना, बोलना या मारना= किसी को लक्ष्य करके उपहास या व्यंग्य के शब्द कहना।

बोल्लाह—सज्ञा पु० घोड़ों की एक जाति।

बोलशेविक—सज्ञा पु० [अग्रे०] रूस के साम्यवादी दल का अनुयायी या सदस्य (कम्युनिस्ट)।

बोलशेविज्म—सज्ञा पु० [अग्रे०] रूस के साम्यवादी दल का सिद्धान्त। कम्युनिज्म।

बोवना†—क्रि० सं० दे० "बोना"।

बोवाई—सज्ञा स्त्री० बोने की क्रिया।

बोवाना—क्रि० सं० [बोना का प्रे०] बोने का काम दूसरे से कराना।

बोह—सज्ञा स्त्री० डुबकी। गोता।

बोहनी—सज्ञा स्त्री० किसी सोदे की पहली चिन्ती।

बोहारना—क्रि० सं० दे० "बुहारना"।

बोहित\*—सज्ञा पु० बड़ी नाव। जहाज।

बोड़ी†—सज्ञा स्त्री० लता। बेल। मजरी।

बोड़ना†—क्रि० अ० १ लता की तरह बढ़ना।

२ टहनी फेंकना।

बोड़र†—सज्ञा पु० दे० "बवडर"।

बोड़ियाना—क्रि० अ० चक्कर खाना। घूमना।

बोड़ी—सज्ञा स्त्री० १ पीघो या लताजो के कच्चे फल। ढेंडी। ढोढ। २ छोमी। फली।

३ छदाम। दमडी।

बोआना†—क्रि० अ० १ स्वप्न में कुछ कहना। स्वप्नावस्था का प्रलाप। वराना। २ पागल की भाँति अट्ट-सट्ट बकना।

बोखल—वि० सनकी। पागल।

बोखलाना—क्रि० अ० बहुत क्रोध करना। बहक जाना।

बोछार—सज्ञा स्त्री० १ हवा के झोको से बाने-वाली तिरछी बूँदें। झुलकी वर्षा। झड़ी। २ ताना। कटाक्ष। ३ किसी चीज का बहुत अधिक सझा या मात्रा में गिरना या पड़ना। जैसे प्रदनों की बोछार, फूलों की बोछार आदि।

बोड़ाना—क्रि० अ० दे० "बीराना"।

बोडम—वि० सनकी। मतिभ्रम। पागल। उन्मत्त। बावला।

बोडहा—वि० उन्मत्त। पागल। सनकी।

बोद—वि० बुद्ध-द्वारा प्रचारित।

सज्ञा पु० गौतम बुद्ध का अनुयायी। बौद्ध धर्म को माननेवाला।

बौद्ध-धर्म—सज्ञा पु० गौतम बुद्ध का चलाया हुआ धर्म। इसकी दो प्रधान शाखाएँ हैं—हीनयान और महायान।

बोना—सज्ञा पु० [स्त्री० बोनी] यामन। ठिगना। नाटा। बहुत ही छोटे कद का आदमी।

बोर†—सज्ञा पु० आम की मजरी। मोर। बीरना—क्रि० अ० आम के पेड़ में मजरी निकलना। आम का फूलना।

बोरहा†—वि० दे० "बावला"।

बोरा—वि० [स्त्री० बोरी] १ बावला। पागल। २ नादान। मूर्ख।

बोराई\*†—सज्ञा स्त्री० बावलापन। पागलपन।

बोराना†—क्रि० अ० १. पागल हो जाना। सनक जाना। उन्मत्त हो जाना। २ विवेक या बुद्धि खो देना।

क्रि० सं० किसी को ऐसा कर देना कि वह

भला-बुरा न विचार सके। पागल बना देना।

बीराह\* या बीराहा—वि० वाक्ता। पागल।

बीरी-संज्ञा स्त्री० वाक्ता स्त्री।

बीलसिरी-संज्ञा स्त्री० दे० "बीलसिरी"।

बीला-संज्ञा पु० पोपला। दन्तहीन।

बीहर-संज्ञा स्त्री० बहू। बहू।

बीहा-वि० पथरीला। ककरीला।

बीतीतना\*—क्रि० सं० १. दे० "बिताना"।

ब्यतीत करना। २. दे० बीतना।

ब्यया-संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यया"।

ब्यवहारी-संज्ञा पु० उधार। दे० "ब्यवहार"।

ब्यवहरिया-संज्ञा पु० दे० ब्यवहरिया।

रूप का लेन-देन करनेवाला। महाजन।

ब्यवहारी-संज्ञा पु० १. कार्य-कुशल। अनु-

भवी।

२. मामला करनेवाला। ३. लेन-देन करने-

वाला। ४. व्यापारी।

ब्याज-संज्ञा पु० दे० "व्याज"। सूद।

ब्याज-वि० व्याज या सूद पर दिया जाने-

वाला धन।

ब्यान-संज्ञा पु० पशुओं का प्रसव। बियान।

ब्याना-क्रि० सं० जनना। गर्भ से पैदा करना

(पशुओं के लिए प्रयुक्त)।

ब्यारी-संज्ञा स्त्री० दे० "ब्यालू"।

ब्यालू-संज्ञा स्त्री० दे० रात का भोजन।

ब्याह-संज्ञा पु० दे० "विवाह"।

ब्याहता-वि० दे० "विवाहित"। जिसके साथ

विवाह हुआ हो।

संज्ञा स्त्री० विवाहिता स्त्री।

ब्याहता-क्रि० सं० [वि० ब्याहता] विवाह

करना। पुरुष का किसी स्त्री को अपनी

पत्नी या स्त्री का किसी पुरुष को अपना पति

बनाना। विवाह करना।

ब्याहा-वि० विवाहित। जिसका विवाह हो

गया हो।

ब्याहता-वि० विवाह का।

ब्योचना-क्रि० अ० अचानक मुड़ जाने या

देखी हो जाने से नसी का स्थान से हट जाना,

जिससे पीड़ा और सूजन होती है। मुरकना।

ब्योड़ा-संज्ञा पु० दरवाजा बंद करने के लिए

अन्दर से लगाने की लम्बी लकड़ी। अरगत।

ब्योत-संज्ञा स्त्री० १. उपाय। काम पूरा करने

या करने का तरीका। युक्ति।

ढंग। २. संयोग। अवसर। नीबत। ३.

व्यवस्था। इन्तजाम। ४. सामर्थ्य।

समाई। ५. पहनने के कपड़े बनाने के लिए

कपड़ों की काट-छांट। कतरना। तराश।

ब्योतना-क्रि० सं० पोशाक बनाने के लिए

कपड़े को नापकर काटना-छांटना। कतरना।

ब्योताना-क्रि० सं० नाप के अनुसार कपड़ा

कटाना।

ब्योरना-क्रि० सं० १. उलझी हुई चीज को

सुलझाना। २. गुंथे या उलझे हुए बालों या

सूतों को सुलझाना।

ब्योरा-संज्ञा पु० १. पिस्तार से या सिलसिले-

वार वर्णन। किसी घटना को एक-एक बात

का उल्लेख। विवरण। तफसील। २. किसी

एक विषय की सारी बात। वृत्त। हाल।

समाचार। ३. अन्तर। भेद।

यो—ब्योरेवार=विस्तार के साथ। सिल-

सिलेवार।

ब्योहर-संज्ञा पु० लेन-देन का व्यापार।

रूपमा कृण देना।

ब्योहरा-संज्ञा पु० लेन-देन करनेवाला।

ब्योहरिया-संज्ञा पु० सूद पर रूप के लेन-देन

का व्यापार करनेवाला। महाजन।

ब्योहार-संज्ञा पु० दे० "ब्यवहार"।

बज-संज्ञा पु० दे० "व्रज"। मथुरा और वृन्दा-

वन के आस-पास का प्रदेश। श्रीकृष्ण का

लीलाक्षेत्र।

बजबाला-संज्ञा स्त्री० दे० "व्रजबाला"।

गोपी। व्रज की स्त्री।

बजभाषा-संज्ञा स्त्री० दे० "व्रजभाषा"।

मथुरा, आगरा और उसके आस-पास के

प्रदेशों में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध

भाषा।

बजमण्डल-संज्ञा पु० दे० "व्रजमण्डल"।

मथुरा और वृन्दावन के आस-पास का

प्रदेश। व्रज और उसके आस-पास की

भूमि।

बहाड-संज्ञा पु० दे० "ब्रह्माड"।

ब्रह्म-संज्ञा पु० १. ईश्वर । परमात्मा । जगत्कर्त्ता । २. ब्रह्मा । ३. सत्, चित्, आनन्द-स्वरूप । तत्त्व । ४. आत्मा । चैतन्य । ५. ब्राह्मण । समास में ब्राह्मण या ब्रह्मा के लिए 'ब्रह्म' का प्रयोग होता है । ६. एक की संख्या । ७. ब्रह्मराक्षस । वह ब्राह्मण, जो मरने के बाद प्रेत हुआ हो ।  
 ब्रह्मकर्म-संज्ञा पु० ब्राह्मण का कर्म । वेद-विहित कार्य ।  
 ब्रह्ममति-संज्ञा स्त्री० मुक्ति । निर्वाण । मोक्ष । जन्ममरण से छुटकारा ।  
 ब्रह्मगाँठ-संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मप्रंथि" ।  
 ब्रह्मप्रंथि-संज्ञा स्त्री० यज्ञोपवीत या जनेऊ की मुख्य गाँठ ।  
 ब्रह्मघातो-संज्ञा पु० ब्राह्मण की हत्या करने-वाला ।  
 ब्रह्मदोष-संज्ञा पु० पूजा या प्रार्थना करते समय उत्पन्न ध्वनि । वेदों के पवित्र शब्द या उनका पाठ ।  
 ब्रह्मचक्र-संज्ञा पु० संसार का आचामन । संसार-चक्र ।  
 ब्रह्मचर्य्य-संज्ञा पु० १ इन्द्रियों का दमन । वीर्य की रक्षा के लिए संयम । २. योग में एक प्रकार का यम । ३. चार आश्रमों में पहला आश्रम, जिसमें अविवाहित व्यक्ति को सनोप आदि व्यक्तियों से दूर रहकर केवल अध्ययन में लगा रहना चाहिए ।  
 ब्रह्मचारिणी-संज्ञा स्त्री० १. ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाली स्त्री । २. दुर्गा । पार्वती । सरस्वती ।  
 ब्रह्मचारी-संज्ञा पु० [ स्त्री० ब्रह्मचारिणी ]  
 १. ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाला ।  
 २. ब्रह्मचर्य्य आश्रम के अंतर्गत व्यक्ति । गुरुकुल-श्रद्धिकुल में वेदाध्ययन करनेवाला अविवाहित विद्यार्थी ।  
 ब्रह्मज-संज्ञा पु० १. ब्रह्मा । २. ब्रह्म से उत्पन्न जगत् ।  
 ब्रह्मज्ञ-वि० ज्ञानी । ब्रह्मज्ञानी ।  
 ब्रह्मज्ञान-संज्ञा पु० परमात्मा-सम्बन्धी ज्ञान । ब्रह्म का बोध ।  
 ब्रह्मज्ञानी-वि० ब्रह्म को जाननेवाला ।

परमात्मा-विषयक ज्ञान का पंडित । अद्वैत-वादी ।  
 ब्रह्मण्य-वि० १. ब्राह्मणों पर श्रद्धा रखनेवाला । २. ब्रह्म या ब्रह्मा-संबंधी । ३. वेदविहित कर्म ।  
 ब्रह्मसत्त्व-संज्ञा पु० ब्रह्म के विषय में सच्चा ज्ञान । ब्रह्मज्ञान । ब्रह्मस्वरूप ।  
 ब्रह्मत्व-संज्ञा पु० १. ब्रह्म का भाव । २. ब्राह्मणत्व । ३. ब्रह्म की स्थिति प्राप्त करने का भाव । ४. ब्रह्मपद । मोक्ष ।  
 ब्रह्मदिन-संज्ञा पु० ब्रह्मा का एक दिन, जो १०० चतुर्गुणियों का माना जाता है (पुराण में) ।  
 ब्रह्मदोष-संज्ञा पु० [ वि० ब्रह्मदोषी ] ब्राह्मण की हत्या करने का दोष या पाप ।  
 ब्रह्मबोही-वि० ब्राह्मणों से डेर रखनेवाला ।  
 ब्रह्मद्वार-संज्ञा पु० दे० "ब्रह्मरंध्र" । मस्तक का मध्य स्थान ।  
 ब्रह्मनाभ-संज्ञा पु० विष्णु ।  
 ब्रह्मनिष्ठ-वि० १. ब्राह्मण-भक्त । २. ब्रह्म-ज्ञानी ।  
 ब्रह्मपद-संज्ञा पु० १. ब्रह्मत्व । २. ब्राह्मणत्व । ३. मोक्ष । मुक्ति ।  
 ब्रह्मपुत्र-संज्ञा पु० १. एक नद, जो हिमालय पर्वत से निकलकर बंगाल की खाड़ी में गिरता है । २. ब्रह्मा के पुत्र (नारद, वशिष्ठ, सगक आदि) ।  
 ब्रह्मपुर-संज्ञा पु० १. ब्रह्मलोक । स्वर्ग । २. कलाश । ३. वह नगर या गाँव, जहाँ ब्राह्मणों की संख्या अधिक हो ।  
 ब्रह्मपुराण-संज्ञा पु० अठारह पुराणों में से एक । पुराणों में इसका नाम पहले जाने से कुछ लोग इसे आदिपुराण भी कहते हैं ।  
 ब्रह्मपुरी-संज्ञा स्त्री० १. वह गाँव या बस्ती जहाँ ब्राह्मणों की आवादी अधिक हो । २. राजा-महाराजाओं-द्वारा ब्राह्मणों को दान किया गया मकानों का समूह । ३. ब्रह्मलोक ।  
 ब्रह्मभट्ट-संज्ञा पु० एक प्रकार के ब्राह्मण । नाट ।  
 ब्रह्मभोज-संज्ञा पु० बहुत से ब्राह्मणों को भोजन कराना ।

ब्रह्मसूत्र-संज्ञा पु० सूर्यादय से पहले दो  
पक्षों का समय । ब्राह्मसूत्र । प्रभात । सङ्कटा ।

ब्रह्मयज्ञ-संज्ञा पु० १. विषिपूर्वक वेद-पाठ ।  
२. वेदाभ्यापन । वेद पढ़ाना ।

ब्रह्मयोग-संज्ञा पु० संगीत का एक ताल-  
विधि ।

ब्रह्मरन्ध्र-संज्ञा पु० मस्तक के मध्य में माना  
हुआ गुप्त छेद, जिससे होकर प्राण निकलने  
से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है । ब्रह्माङ्क-  
द्वार ।

ब्रह्मराक्षस-संज्ञा पु० यह ब्राह्मण, जो मरकर  
भूत हुआ हो ।

ब्रह्मरात्रि-संज्ञा पु० दे० "ब्रह्मसूत्र" ।

ब्रह्मरात्रि-संज्ञा स्त्री० ब्रह्मा की एक रात, जो  
एक कल्प की मानी जाती है ।

ब्रह्मरेख-संज्ञा स्त्री० दे० "ब्रह्मरेख" ।

ब्रह्मरि-संज्ञा पु० ब्राह्मण-ऋषि ।

ब्रह्मरेख-संज्ञा पु० भाग्य का कल्पित रेख,  
जो ब्रह्मा किसी जीव के गर्भ में आते ही  
उसके मस्तक में लिख देते हैं और जो  
अमिट माना जाता है ।

ब्रह्मलोक-संज्ञा पु० १. यह लोक, जहाँ ब्रह्मा  
रहते हैं । २. स्वर्ग में पुण्य-आत्मा का कल्पित  
निवास-स्थान । मोक्ष का एक भेद ।

ब्रह्मवाद-संज्ञा पु० अद्वैतवाद । आत्मा और  
परमात्मा में कोई भेद न मानने का सिद्धांत ।

ब्रह्मवादिनी-संज्ञा स्त्री० गायत्री भक्त ।

ब्रह्मवादी-वि० [ स्त्री० ब्रह्मवादिनी ] वेदाती ।  
अद्वैतवादी । आत्मा और परमात्मा में कोई  
भेद न मानने के सिद्धान्त का अनुयायी ।

ब्रह्मविद्-वि० ब्रह्म को जानने या समझने-  
वाला । ब्रह्मज्ञानी ।

ब्रह्मविद्या-संज्ञा स्त्री० ब्रह्म को जानने की  
विद्या । उपनिषद् (उपनिषदी में ब्रह्म  
को जानने की विद्या का उल्लेख है) ।

ब्रह्मवेत्ता-संज्ञा पु० ब्रह्मज्ञानी । ब्रह्म को  
जाननेवाला ।

१. पु० १. ब्रह्म के कारण  
प्रतीत होनेवाला जगत् । २. श्रीकृष्ण ।  
जकारह महापुराणों में से एक महापुराण जो  
कृष्ण-भक्ति-सर्वधी है ।

ब्रह्मसमाज-संज्ञा पु० दे० "ब्राह्म-समाज" ।  
एक नवीन सम्प्रदाय, जिसके प्रवर्तक राजा  
राममोहन राय थे । इसमें एकमात्र ब्रह्म की  
उपासना की जाती है ।

ब्रह्मसूत्र-संज्ञा पु० १. जनेक । यज्ञोपवीत ।  
२. वेदान्त-सूत्र । मादरायण या व्यास-  
द्वारा रचित ब्रह्मज्ञान-सम्बन्धी सूत्रग्रन्थ ।

ब्रह्मस्तेय-संज्ञा पु० वेद का अनधिकृत अध्य-  
यन । गुरु की बिना अनुमति के, अन्य को  
पढ़ाया हुआ पाठ सुनकर अध्ययन करना ।

ब्रह्मस्व-संज्ञा पु० ब्राह्मण का भाग । ब्राह्मण  
का धन या उसकी सम्पत्ति ।

ब्रह्महत्या-संज्ञा स्त्री० ब्राह्मणों को मार डालना ।  
ब्राह्मण-वध । इसे महापाप माना जाता है ।

ब्रह्माङ्क-संज्ञा पु० १. सपूर्ण विश्व । चौदहों  
भुवन । २. खोपड़ी । कपाल ।

ब्रह्मा-संज्ञा पु० ईश्वर । परमात्मा । विधाता ।  
ब्रह्म के तीन सगुण रूपों में से सृष्टि की रचना  
करनेवाला रूप ।

ब्रह्माणी-संज्ञा स्त्री० १. ब्रह्मा की स्त्री या  
शक्ति । २. सरस्वती ।

ब्रह्मानन्द-संज्ञा पु० ब्रह्म के ज्ञान की प्राप्ति  
से उत्पन्न आनन्द या आत्म-नृप्ति ।

ब्रह्मायत्त-संज्ञा पु० उत्तरी भारत के एक  
प्रदेश का प्राचीन नाम । आपुनिक बिदूर  
का प्राचीन नाम ।

ब्रह्मात्य-संज्ञा पु० १. एक प्रकार का अस्त्र,  
जो मन्त्र से चलाया जाता था । २. ऐसी  
युक्ति, जो कभी असफल न हो । अपनी  
पूरी शक्ति से किया जानेवाला यह प्रयत्न  
या प्रहार, जिससे सफलता निश्चित हो ।

ब्रह्मिष्ठ-संज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

ब्राडो-संज्ञा स्त्री० [ अग्ने ] एक प्रकार की  
अग्नेयी शराब ।

ब्राह्म-वि० ब्रह्म-सर्वधी ।

संज्ञा पु० १. विवाह का एक भेद, जिसमें वर-  
पक्ष से बिना कुछ लिये हुए कन्या दी जाती  
है । २. अज्ञ समाज के नियमों का अनुयायी ।

ब्राह्मण-संज्ञा पु० [ स्त्री० ब्राह्मणी ] १. चार  
वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण या जाति, जिसके  
प्रधान कर्म पठन-पाठन, यज्ञ, शानोपदेश

आदि हैं। २. उक्त वर्ण या जाति का व्यक्ति।  
३. वेद का वह भाग, जो मंत्र नहीं कहलाता।  
४. विष्णु। ५. शिव। ६. अग्नि।  
ब्राह्मणत्व-सज्ञा पु० ब्राह्मण का भाव,  
अधिकार या धर्म। ब्राह्मणपन।  
ब्राह्मण-भोजन-सज्ञा पु० १ ब्राह्मणों को  
खिलाना। २ ब्राह्मणों को खिलाया जाने-  
वाला भोजन।  
ब्राह्मणी-सज्ञा स्त्री० ब्राह्मण जाति की स्त्री।  
ब्राह्मण्य-सज्ञा पु० दे० "ब्राह्मणत्व"।  
ब्राह्मणहर्त्त-सज्ञा पु० सूर्यादय से पहल दो  
घड़ों तक का समय। प्रभात।  
ब्राह्मसमाज-सज्ञा पु० एक नया संप्रदाय,  
जिसमें एकमात्र ब्रह्म की ही उपासना की  
जाती है। बंगाल में इसे राजा राममोहन  
राय ने चलाया था।

ब्राह्मो-सज्ञा स्त्री० १ भारतवर्ष की एक  
प्राचीन लिपि, जिससे नागरी, बँगला आदि  
आधुनिक लिपियाँ निकली हैं। २ एक प्रसिद्ध  
बूटी, जो स्मरण-शक्ति और बुद्धि बढ़ाने-  
वाली है। ३ दुर्गा।  
ब्रिगेड-सज्ञा पु० [अंग्रे०] सेना का एक भाग  
जिसमें ८ बेटेलियन होती है। प्रायः एक  
बेटेलियन में बारह सौ सैनिक होते हैं।  
ब्रिटिश-वि० [अंग्रे०] ब्रिटेन या इंग्लैंड का।  
ब्रिटेन सम्बन्धी। अंग्रेजी।  
सज्ञा पु० अंग्रेज।  
ब्रुश-सज्ञा पु० [अंग्रे०] पशुओं के बालों की  
वनी एक प्रकार की अंग्रेजी कूची।  
ब्लाक-सज्ञा पु० [अंग्रे०] छापने के काम में  
आनेवाला चित्र आदि का ठप्पा, जो ताँबे,  
काठ आदि का बना होता है।

## भ

भ-हिंदी वर्णमाला का चौबीसवाँ और पर्व  
का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान  
षोष्ठ है।  
सज्ञा पु० १ नक्षत्र। २ राशि। ३ ग्रह ४  
शुभाचार्य। ५ भ्रमर। भौरा। ६ भूधर।  
पहाड़। ७ भ्रान्ति। ८ दे० "भगण"।  
भकार\*-सज्ञा पु० जोर की डरावनी आवाज।  
भग-सज्ञा पु० १ खड। टुकड़ा। २ भेद।  
कुटिलता। टेढ़ापन। ३ भय। ४ टूटने का  
भाव। विनाश। विध्वंस। ५ बाधा।  
अडचन। रोक। ६ टेढ़े होने या झुकने का  
भाव। ७ तरंग। लहर। ८. पराजय। हार।  
सज्ञा स्त्री० दे० "भगि"।  
भगड-वि० बहुत भाग पीनेवाला। भंगेड़ी।  
भगना-वि० कि० अ० १ टूटना। २ दबना।  
हार मानना।  
क्रि० स० १ तोड़ना। २ दबाना।  
भंगरा-सज्ञा पु० १ एक प्रकार की वनस्पति,  
जो औषध के काम में आती है। भंगरंया।  
भगराज। २ भगि के रस से बना हुआ एक  
कपड़ा।

भगराज-सज्ञा पु० १ काले रंग की एक  
चिड़िया। २ दे० "भंगरा"।  
भंगरंया-सज्ञा स्त्री० दे० "भंगरा"  
भगसार्य-वि० कुटिल।  
भंगार-सज्ञा पु० १ वर्षाकाल में अपने आप  
बन जानेवाला गड्ढा। २ वह गड्ढा जहाँ  
कूड़ा वनाते समय खोदते हैं। ३ घास-  
फूस। कूड़ा।  
भगारी-सज्ञा पु० मज्जुड।  
भगि-सज्ञा स्त्री० दे० "भगिमा"।  
भगिन-सज्ञा स्त्री० भगी की स्त्री। मेहतरानी।  
भगिमा-सज्ञा स्त्री० १ तिरछापन। टेढ़ापन।  
कुटिलता (विशेषकर आँखों के कटाक्ष  
के लिए प्रयुक्त)। २ स्त्रिया का हावभाव।  
नाज-नखरा। ३ लहर। ४ आकृति।  
५ प्रतिकृति।  
भगी-सज्ञा पु० [स्त्री० भगिन] एक जाति,  
जिसका काम मल-मूत्र आदि उठाना है।  
वि० १ भग या नष्ट होनेवाला। २ भग  
करने, तोड़ने या नाश करनेवाला। ३  
भाग पीनेवाला। भंगेड़ी।

भगुर-वि० १ भग होनेवाला। जल्दी नष्ट होनेवाला। नाशवान्। दे० "क्षण-भगुर"।

२ टेडा। कुटिल।

भंगेडी-वि० बहुत भांग पानेवाला।

भंगेला-सज्ञा पु० १ भांग के रेशों से बना हुआ एक तरह का कपडा। २ दे० "भगरा"।

भजक-वि० [स्त्री० भजिका] तोड़नेवाला।

भंग या नाश करनेवाला।

भजन-सज्ञा पु० तोड़ना। भग करना। ध्वंस।

नाश।

वि० भजक। तोड़नेवाला।

भंजना-क्रि० स० तोड़ना। टुकड़े-टुकड़े करना।

नाश करना।

क्रि० अ० १ टुकड़े-टुकड़े होना। टटना।

२ किसी बड़े सिक्के का छोटे-छोटे सिक्का

से बदला जाना। भुनना। ३ बटा जाना।

४ कागज के सत्तों का कई परतों में मोडा

जाना। भाँजा जाना।

भंजाई-सज्ञा स्त्री० १ भंजाने या भुनाने की

क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'भुनाई'।

बड़े सिक्के भुनाने के लिए दिया जानवाला

बट्टा। ३ भाँजने (हाथ चताने आदि)

की क्रिया, भाव या मजदूरी।

भंजाना \*-क्रि० स० १ भंजने का सकर्मक

रूप। भाँजने, तोड़ने या भुनाने आदि का

काम किसी दूसरे से कराना। तुडवाना। २

बड़ा सिक्का देकर उसके मूल्य के छोटे

सिक्के लाना। भुनाना।

भटार्-सज्ञा पु० रंगत।

भड-सज्ञा पु० दे० "भौंड"।

वि० अश्लील या गद्दी जाते बकनेवाला।

बहुधा। धूत। पाखंडी।

भंडताल-सज्ञा पु० एक प्रकार का गाना

और नाच, जिसमें शक्तिर्पा पीठते हैं।

भाँडो का नाच। भंडतिला।

भंडतिला-सज्ञा पु० दे० "भंडताल"।

भडना-क्रि० स० १ बिगाड़ना। तोड़ना। नष्ट-

नष्ट करना। हानि पहुँचाना। २ घटनाम

करना।

भंडकोड़ी-सज्ञा पु० १ रहस्योद्घाटन।

भंडाफोड। २ मिट्टी के बतनों को गिराना

या ताड़ना-फोड़ना। ३. मिट्टी के बतना का टटना-फूटना।

भंडभांड-सज्ञा पु० एक कंटीला पीघा, जिसकी

पत्तियाँ और जड़ दवा के काम में आती

हैं। भंडभाड। सत्यानासी।

भंडर-सज्ञा पु० दे० "भड्डर"।

भंडरिया-वि० १ पाखंडी। २ धूस।

मक्कार।

सज्ञा स्त्री० दीवारा में बना हुआ पल्लेदार

साख।

सज्ञा पु० ब्राह्मणों की एक शाखा। इस

जाति के लोग सामुद्रिक आदि की सहायता

से लोगों को भविष्य बताकर या देवदर्शन,

कराकर निर्वाह करते हैं। द० "भड्डर"।

भंडसार, भंडसाल-सज्ञा स्त्री० यह गोदाम,

जहाँ अन्न इकट्ठा किया जाता है। खत्ती।

खत्ता।

भडा-सज्ञा पु० १ बर्तन। पात्र। माँडा।

२ भडारा। ३ भेद। रहस्य।

मुहा०—भडा फोड़ना=पोल खोलना।

सच्ची बात या रहस्य प्रकट करना। भडा

फूटना=भेद खुलना।

भंडाना-क्रि० स० उछल-कूद मचाना। उपद्रव

करना। तोड़ना-फोड़ना। नष्ट करना।

द० "भडना"।

भडाफोड-सज्ञा पु० भेद या रहस्य प्रकट

होना। पोल खुल जाना। रहस्योद्घाटन।

असलियत मालूम हो जाना।

भडार-सज्ञा पु० १ कोप। खजाना।

२ पाकघाला। भडारा। ३ अन्न आदि रखने

का स्थान। कोठार। ४ पेट। ५ दे०

"भडारा"।

भडारा-सज्ञा पु० १ दे० "भडार"। २

सापुओं का बीज। ३ समूह। झुंड। ४ पेट।

भडारी-सज्ञा स्त्री० १. छोटी कोठरी। २.

कोष। खजाना।

सज्ञा पु० १ रसोइया। रसोईदार। २

खजानगी। कोषाध्यक्ष। ३ तोशालाने का

दारोगा। ४ भडार-गृह का प्रधान अध्यक्ष।

भंडेरिया-सज्ञा पु० दे० "भड्डर"। भंडरिया।

भंडेरियावन-सज्ञा पु० दोग। पाखंड।

भड़ोआ-सज्ञा पु० १. भाँड़ो का भीत।  
२. हास्य-रस की कविता। निम्नकोटि की कविता।

भंभरना-क्रि० अ० भयभीत होना।

भंभा-सज्ञा पु० विल। जमीन के अन्दर का छेद।

भंभाना-क्रि० अ० दे० "रंभाना"। गाय आदि पशुओं का चिल्लाना।

भंभेरि\*†-सज्ञा स्त्री० भय।।

भंभोरना-क्रि० स० १. फाड़ खाना। २ दाँत से जोरो से काटना। काट खाना।  
३ नोचना। कुत्ते का काटना।

भँवन\*-सज्ञा स्त्री० धूमना। चक्कर या फेरा लगाना।

भँवना-क्रि० अ० धूमना-फिरना। चक्कर लगाना।

भँवर-सज्ञा पु० १ भोरा। २ चक्कर। पानी के बहाव में वह स्थान, जहाँ लहरे चक्कर काटती हुई घूमती हैं।

भँवरकडी-सज्ञा स्त्री० घूमनेवाली कुडी या कडी। लोहे या पीतल की वह कडी, जो कील में इस प्रकार जडी रहती है कि आसानी से चारों तरफ घूम सकती है।

भँवरगीत-सज्ञा पु० दे० "भ्रमर-गीत"।

भँवरजाल-सज्ञा पु० सांसारिक झगड़े-बखेड़े। सत्तार का जजाल। भ्रमजाल। माया जाल।

भँवरभीख-सज्ञा स्त्री० वह भीख, जो भोरे के समान चारों ओर घूम-फिरकर माँगी जाय।

भँवरी-सज्ञा स्त्री० १ पानी का चक्कर। भँवर। २. शरीर के ऊपर वह स्थान, जहाँ के रोएँ या बाल घूमे हुए हों। ३. दे० "भाँवर"। परिक्रमा। ४ बर्नियाँ का सोदा लेकर घूम-घूमकर बेचना। फेरी। गश्त।

भँवना\*-क्रि० स० घुमाना। चक्कर देना। भ्रम में डालना।

भँवारा†-वि० घूमने फिरनेवाला। चक्कर लगानेवाला। भ्रमणशील।

भँसना-क्रि० अ० १. पानी में फेंका जाना। २. पानी के ऊपर तैरना। ३. गिरना (दीवाल का भँसना)।

भँसार-सज्ञा पु० दे० "भाड़"। मड़भूँजो की अनाज भूँजने की भट्ठी।

भड़या-सज्ञा पु० १. बड़ा भाई। भैया। २. बड़े भाई के लिए सम्बोधन। ३. बराबरवाली के लिए आदरसूचक शब्द। ४. प्यार से पुकारने का सम्बोधन, जैसे घर में छोटे लड़को को पुकारने का शब्द। ;

भड़-क्रि० स० हो गई।

सज्ञा पु० भाई। भैया।

भक-सज्ञा स्त्री० सहसा या रह-रहकर आग के जल उठने का शब्द। एकाएक इस तरह 'भक' की आवाज होना।

भकडना-क्रि० अ० अनाज का सड़ना। भगरना।

भकभकाना-क्रि० अ० [अनु०] भकभक आवाज करके जलना। चमकना।

भकरा†-सज्ञा स्त्री० सड़े हुए अनाज की गंध।

भकसा†-वि० सड़ा हुआ अन्न।

भकसाना†-क्रि० अ० अधिक समय तक रहने के कारण अन्न का सड़ जाना।

भकाऊ-सज्ञा पु० [अनु०] हँवा। बालको को डराने के लिए कहा जानेवाला एक शब्द।

भकुआ†-वि० मूर्ख। बेवकूफ।

भकुआना-क्रि० अ० चकपका जाना। भोचक्का होना। घबरा जाना।

क्रि० स० १. चकपका देना। घबरा देना। २. मूर्ख बनाना।

भकुवा-वि० दे० "भकुआ"। मूर्ख। बेवकूफ।

भकोतना-क्रि० स० बड़े-बड़े कौर मुँह में डालकर जल्दी-जल्दी खाना या भट्टेपन से खाना। निगलना। हड़पना। ठूस-ठूसकर, खाना।

भक्त-वि० १. भक्ति करनेवाला। ईश्वर या किसी विशेष देवी-देवता की उपासना, भजन या पूजा-पाठ आदि करनेवाला। २. किसी पर श्रद्धा रखनेवाला। ३. सेवा करने वाला। ४ अनुयायी। ५. भागा में बाँटा हुआ। बिभक्त। ६. बाँट कर दिया हुआ। प्रदत्त। ७. अलग किया हुआ।

भक्तकार-सज्ञा पु० १ रसोइया । रसाई बनानेवाला । २. भक्तकर नामक सुगंधित द्रव्य ।

भक्तजा-सज्ञा स्त्री० अमृत ।

भक्तवास-सज्ञा पु० १ भक्ति करनेवाला दास या सेवक । २ केवल भोजन पर काम करनेवाला दास या नोकर ।

भक्तबच्छल-वि० दे० "भक्तवत्सल" ।

भक्तवत्सल-वि० [सज्ञा भक्तवत्सलता] भक्तों पर कृपा या स्नेह करनेवाला । ब्यालु ।

भक्ताई\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति" ।

भक्ति-सज्ञा स्त्री० १ परमात्मा में अनुराग । ईश्वर या देवी-देवताओं में श्रद्धा, विश्वास और प्रेम । श्रद्धा । सेवा । [भक्ति नौ प्रकार की है—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वदन, दास्य, सख्य और आत्म-निवेदन ।] २ अनेक भागों में बाँटना । भाग । विभाग । ३ विभाग करनेवाली देखा ।

भक्तिमूत्र-सज्ञा पु० शाब्दिक्य मुनि-कृत वैष्णव-संप्रदाय का एक सूत्र-ग्रन्थ ।

भक्ष-सज्ञा पु० १ दे० "भक्षण" । २ दे० "भक्षण" । खाने-योग्य वस्तु । आहार । भोजन ।

भक्षक-वि० [स्त्री० भक्षिका] १ खानेवाला । भोजन करनेवाला । २ खाकर खत्म करने वाला, यानी नाश करनेवाला ।

भक्षण-सज्ञा पु० [वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय] १ भोजन करना । खाना । निगलना । २. भोजन । खाने की वस्तु ।

भक्षणिय-वि० भोजन करने योग्य । खाने लायक ।

भक्षना\*-कि० स० खाना । भोजन करना ।

भक्षित-वि० खाया हुआ ।

भक्षी-वि० [स्त्री० भक्षिणी] खानवाला ।

भक्ष्य-वि० खाने योग्य ।

सज्ञा पु० खाद्य । अन्न । आहार ।

भक्ष\*-सज्ञा पु० दे० "भक्ष" आहार । भोजन ।

भक्षना\*-कि० स० दे० 'भक्षण' । खाना । निगलना ।

भगवर-सज्ञा पु० एक प्रकार का फीडा, जो गुदा के किनारे होता है ।

भग-सज्ञा पु० १. मोनि । २. सूर्य । ३. बारह आदित्या में से एक । कीर्ति । ४ प्रतिष्ठा । ५ ऐश्वर्य । समृद्धि । धन । ६ सौभाग्य । ७. यश । ८ कामसक्ति । ९. धर्म । १०. मोक्ष । १. कान्ति । सौन्दर्य ।

भगई-सज्ञा स्त्री० लेंगोटी ।

भगण-सज्ञा पु० १. छंद शास्त्रानुसार एक गण, जिसमें आदि का एक वर्ष गुह और अंत के दो वर्ष लघु होते हैं । २ खगोल में ग्रहा का पूरा चक्कर । ३ नक्षत्र-मंडल ।

भगत-वि० [स्त्री० भगतिन] १ दे० "भक्त" । भक्ति करनेवाला । सेवक । उपासक । २ साधु । ३ भास आदि न खानेवाला । ४ धूर्त । पाखण्डी । चालाक (व्यग्य) । ५ दे० "भगति" । ६. भूत-प्रेत उतारनेवाला पुरुष । ओझा । ७ स्वांग करनेवाला ।

भगतबच्छल\*-वि० दे० "भक्तवत्सल" ।

भगताई-सज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति" । भक्ति का कर्म ।

भगति\*-सज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति" ।

भगतिन या भगतन-सज्ञा स्त्री० १ भक्त स्त्री । भक्ति करनेवाली स्त्री । २. वेश्या । नर्तकी ।

भगतिना-सज्ञा पु० [स्त्री० भगतिन] गाने-बजाने का काम करनेवाली एक जाति । (राजपूताने में) गवैया । कव्यक ।

भगती-सज्ञा स्त्री० दे० "भक्ति" ।

भगदड़-सज्ञा स्त्री० पबराकर भागने की क्रिया या भाव । पबराकर बहुत से लोगों का एक साथ किसी एक ओर या इधर-उधर भागना ।

भगदर-सज्ञा स्त्री० दे० "भगदड़" ।

भगन\*-वि० दे० "भग्न" ।

भगना†-कि० अ० दे० "भागना" ।

सज्ञा पु० दे० "भागना" ।

भगनी-सज्ञा स्त्री० दे० "भगिनी" ।

भगरे\*†-सज्ञा पु० १. छल । फरेब । २ सडा हुआ अन्न ।

भगरना-कि० ज० भकडना । जनाज का

सड़ना। इकट्ठा किए हुए अन्न का गर्मी के कारण सड़ना।

भगल-सज्ञा पु० १. छल। कपट। ढोंग। २. जादू। इन्द्रजाल।

भगली-सज्ञा पु० १. ढोंगी। कपटी। २. बाजीगर।

भगवत्\*†-सज्ञा पु० दे० "भगवत्"।

भगवत्-सज्ञा पु० १. भगवान्। ईश्वर। परमेश्वर। विष्णु। २. शिव। ३. पूजनीय। ४. ऐश्वर्ययुक्त।

भगवती-सज्ञा स्त्री० १. देवी। २. गौरी। ३. सरस्वती। ४. दुर्गा।

भगवत्पदी-सज्ञा स्त्री० गंगा।

भगवद्गीता-सज्ञा स्त्री० महाभारत में अठारह अध्यायों का सर्वश्रेष्ठ प्रकरण, जिसमें उन उपदेशों का वर्णन है, जो भगवान् कृष्णचन्द्र ने अर्जुन का मोह छुड़ाने के लिए उन्हें युद्धस्थल में दिए थे। यह हिन्दू-धर्म का सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य ग्रन्थ है।

भगवदीय-वि० भगवत्-सम्बन्धी। भगवान् का। भगवान् का भक्त।

भगवद्भक्त-सज्ञा पु० ईश्वर-भक्त। भगवान् की पूजा करनेवाला।

भगवा-सज्ञा पु० गेरुआ वस्त्र।

भगवान्, भगवान-सज्ञा पु० १. ईश्वर। परमेश्वर। २. विष्णु। ३. पूज्य और आदरणीय व्यक्ति।

वि० ऐश्वर्ययुक्त। पूज्य।

भगाना-क्रि० सं० १. हटाना। दूर करना। खदेड़ना। २. दौड़ाना। ३. स्त्री-वस्त्रों आदि को उनके घर के लोगों से किसी तरीके से छुड़ाकर अपने साथ कहीं ले जाना। अपहरण। (अग्रे०-एवडक्शन)।

भगाल-सज्ञा पु० आदमी की खोपड़ी।

भगाल-सज्ञा पु० प्राचीन काल का एक अस्त्र।

भगिनी-सज्ञा स्त्री० बहन।

भगीरथ-सज्ञा पु० अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, जो पीर तपस्या करके गंगा को पृथ्वी पर लाए थे।

वि० १. भगीरथ की तपस्या के समान कठिन

या बहुत बड़ा। महान्। २. वयक परिश्रम। ३. धीर प्रयत्न।

भगेड़ू, भगेलू-वि० भागा हुआ। कायर। डरपोक।

भगेल-सज्ञा स्त्री० १. हार। २. भगदड़।

सज्ञा पु० भगोड़ा। भागा हुआ।

भगोड़ा-वि० १. भागा हुआ या भागनेवाला। २. कायर। डरपोक। भग्गू। ३. अपना काम या कर्त्तव्य छोड़कर भागनेवाला। ४. अपराध करके भागनेवाला। फरार। (अग्रे०-एव्स-काण्डर)।

भगोल-सज्ञा पु० दे० "खगोल"। नक्षत्रचक्र।

भगोती\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भगवती"।

भगोहां-वि० १. भागनेवाला। भागने के लिए तैयार। २. कायर। ३. भगवा। ४. गेरुआ।

भगुल\*†-वि० युद्ध से भागा हुआ। भगोड़ा।

भग्गू-वि० भगोड़ा। भागनेवाला। कायर।

भग्न-वि० १. टूटा हुआ। नष्ट-भङ्ग। २. जो हारा या हराया गया हो। पराजित।

भगनाश-सज्ञा पु० टूटा हुआ हिस्सा। खण्डित भाग। विभाग।

भग्नावशेष-सज्ञा पु० १. खँडहर। किसी टूटे-फूटे मकान, इमारत या उजड़ी हुई बस्ती का बचा हुआ अंश। २. किसी टूटे हुए पदार्थ के बचे हुए टुकड़े।

भगनाश-वि० निराश। हताश। जिसकी आशा भग हो गई हो।

भक्क-सज्ञा स्त्री० भक्ककर चलने का भाव। लँगडान।

वि० भौचक। आश्चर्यचकित। अचम्भे में। भक्कना-क्रि० अ० अचम्भे में पड़ जाना।

आश्चर्यचकित होना। लँगडाकर चलना।

भक्क-सज्ञा पु० १. राशियों या ग्रहों के चलने का मार्ग। कक्षा। २. नक्षत्रों का समूह।

भक्क\*†-सज्ञा पु० दे० "भक्ष्य"।

भक्कन\*†-सज्ञा पु० दे० "भक्षण"।

भक्कना\*†-क्रि० सं० दे० "भक्षना"। खाना

भजन-सज्ञा पु० १. ईश्वर का गुणगान। स्मरण। जप। सेवा। २. वह गीत, जिसमें ईश्वर, देवता या अवतारों के गुणगान हो।

३. भाग। खण्ड।

भजना-क्रि० स० १ ईश्वर या देवता आदि का नाम स्मरण करना। सेवा करना। २ आश्रय लेना। आश्रित होना। ३. जपना। ४ ध्यान करना। ५ पूजा करना।

क्रि० अ० १ भागना। भाग जाना। २. पहुँचना। प्राप्त होना।

भजनानन्द-सज्ञा पु० भजन से मिलनेवाला आनन्द।

भजनानवी-सज्ञा पु० भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला। भजन में सर्वदा मग्न रहनेवाला।

भजनी-सज्ञा पु० भजन करनेवाला। भजन गानेवाला।

भजनीक-सज्ञा पु० भजन करनेवाला।

भजनीय-वि० भजने योग्य। सेवा या पूजा करने योग्य।

भजाना-क्रि० अ० १ बीडना। भागना। २ भागना। दूर कर देना।

भट-सज्ञा पु० १ युद्ध करनेवाला। योद्धा। शूरवीर। सैनिक। २ दे० "भट्ट"।

भट्टे-सज्ञा स्त्री० १ गुणगान। वद्वान। स्तुति। २ भाटा का काम। भाटा का व्यवहार।

भटकटाई, भटकट्या-सज्ञा स्त्री० एक छोटा और कौटदार पोषा।

भटकना-क्रि० अ० १ रास्ता भूल जाना। बहकना। व्यर्थ इधर-उधर घूमना। २ भ्रम में पडना।

भटकाना-क्रि० स० १ भ्रम में डालना। २ गलत रास्ता बताना।

भटकैया\*†-सज्ञा पु० १ भटकनेवाला। २ भटकानेवाला।

भटकीही\*†-वि० भटकानेवाला।

भटतीतर-सज्ञा पु० एक विशेष प्रकार का पत्थर।

भटनाई-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता। इसमें एक प्रकार की पत्तियाँ लगती हैं, जिनके दांतों की दाल बनती है।

भटभेरा\*†-सज्ञा पु० १ दो घोंरा का मुकाबला। भिड़त। २ टक्कर। ठोकर। धक्का। ३. अनायास भेंट।

भटियारा-सज्ञा पु० १ खाना पकाने और

सराय में मुसाफिरो को ठहरानेवाला। २. सराय में घोड़ा की देखभाल करनेवाला।

भट्टा-सज्ञा स्त्री० स्त्रियों के सर्वोपन के लिए एक आदर-मूचक शब्द। सखी। प्रिया। प्रणयिनी।

भट्ट-सज्ञा पु० १ ब्राह्मणों की एक उपाधि। २ नाट्यी जाति-विशेष। ३ याथा। शूर।

भट्टार-सज्ञा पु० सूर्य।

वि० पूजनीय। मान्य। आदरणीय।

भट्टारक-सज्ञा पु० [स्त्री० भट्टारिका] १ राजा। २ ऋषि। ३. पंडित। ४ दबता।

५ सूर्य। ६ प्राचीन समय में हिन्दू राजाओं या मंत्रियों की उपाधि।

वि० परम आदरणीय। पूजनीय।

भट्टी-सज्ञा स्त्री० दे० "भट्टी"।

भट्ठा-सज्ञा पु० १ ईंट या खपड़े आदि पकाने का पजावा। २ वही भट्ठी। ईंटों का बना बड़ा चूल्हा।

भट्ठी-सज्ञा स्त्री० १ ईंट आदि का बना हुआ बड़ा चूल्हा। २ देशी शराब बनाने का स्थान। ३ ईंट पकाने का पजावा।

भठाना-क्रि० स० १. गाड़ना। २ छिपाना। ३ गिराना। ४ गड़बड़े को भरना। कुर्सी भरवा देना।

भठियाना†-क्रि० अ० १ दे० "भठाना"। २ नदी की घाट पर बहना।

भठियारपन-सज्ञा पु० १ भठियारे का काम। २ भठियारी की तरह लडना और गालियाँ बकना।

भठियारा-सज्ञा पु० [स्त्री० भठियारी या भठियारिन] सराय का प्रबन्ध करनेवाला या रक्षक।

भठियारिन-सज्ञा स्त्री० भठियारे की स्त्री।

भडवा-सज्ञा पु० आडंबर।

भड-सज्ञा स्त्री० बड़ी नाव।

सज्ञा पु० १ दे० "भट्ट"। २ गिरने की आवाज।

भडक-सज्ञा स्त्री० १. चमक-दमक। २ चट-कीलापन। चमकीलापन। ३ भडकीला होने का भाव। ४ भडवने का भाव। चौक। पवराहट। ५ शिक्षक।

भड़कदार-वि० १. चमकीला। भड़कीला।

चटकीला। २. रोयदार।

भड़कना-क्रि० अ० १. तेजी से जल उठना।

२. शिझकना। चौंकना। डरकर पीछे हटना।

३. क्रुद्ध होना।

भड़काना-क्रि० स० १. चौंकाना। २. प्रज्वलित

करना। जलाना। ३. उत्तेजित करना।

उभारना। ४. डरवाना। भयभीत कर

देना। चमकाना।

भड़की-सज्ञा स्त्री० घुड़की। भभकी।

डरावना।

भड़कीला-वि० दे० १. "भड़कदार"। चम-

कीला। २. भड़कने या चौंकना होनेवाला।

भड़कीलापन-सज्ञा पु० चमक-बमक।

भड़भड़-सज्ञा स्त्री० १. भड़भड़ शब्द, जो

प्रायः आघातो से होता है। २. भीड़।

भबड़। ३. व्यर्थ की बहुत अधिक बातचीत।

भड़भड़ाना-क्रि० स० [अनु०] भड़भड़ शब्द

करना।

भड़भड़िया-वि० १. जल्दबाज। उतावला।

२. बढ़-बढ़कर व्यर्थ की बहुत बातें

करनेवाला। डींग हाँकनेवाला। फड़फड़िया।

भड़भाड़-सज्ञा पु० एक कटौली पौधा। सत्या-

नासी। धमोय।

भड़भूजा-सज्ञा पु० १. भाड़ में अन्न भूनने का

काम करनेवाला। २. यह काम करनेवाली

जाति।

भड़साई-सज्ञा स्त्री० दे० "भाड़"। भड़भूजों

की अनाज भूनने की भट्ठी।

भड़ार+सज्ञा पु० दे० "भड़ार"।

भड़ाल-सज्ञा स्त्री० १. मन में छिपा हुआ

असन्तोष या वैर। क्रोध। २. दिल की जलन

या द्वेष।

भड़हा+सज्ञा पु० चटोर। चोरी करके

खानेवाला।

भड़हाई+सज्ञा पु० चोरी की तरह

लुकछिप या दबकर।

भड़ो-सज्ञा स्त्री० झूठा बढ़ावा।

भड़आ या भड़वा-सज्ञा पु० १. वेश्यापुत्र।

२. वेश्याओं की दलाली करनेवाला या

उनके साथ रहनेवाला।

भड़त-सज्ञा पु० १. भाड़ा देनेवाला। भाड़े या

किराए के मकान में रहनेवाला। किराए-

दार। २. दे० "भाड़"।

भड़ोआ-सज्ञा पु० १. भांडों की तरह किसी

की दिल्लगी उड़ाने के लिए की गई हास्यरस

की कविता। २. किसी कविता के अनुकरण

पर बनी हुई, लेकिन उसका उपहास

करनेवाली कविता या हास्यरसपूर्ण कविता

(अप्रे०-पैरोडी)।

भड़डर-सज्ञा पु० १. एक प्रकार के ब्राह्मण,

जो लोगों को देवदर्शन करा कर या सामुद्रिक-

द्वारा भविष्य बताकर जीविका चलाते

हैं। २. ब्राह्मणों में निम्न श्रेणी की एक

शाखा। इस उपजाति के लोग शनि का

दान लेते हैं। भडर।

भगना+सज्ञा पु० दे० कहना।

भगित-वि० कहा हुआ।

भतार+सज्ञा पु० दे० "भतार"। पति।

भतीजा-सज्ञा पु० [स्त्री० भतीजी] भाई का

पुत्र।

भत्ता-सज्ञा पु० १. किसी कर्मचारी को यात्रा

के समय वेतन के अलावा दिया जानेवाला

दैनिक व्यय। २. महुँगी या विशेष कार्य

आदि के लिए वेतन के अतिरिक्त दिया जाने

वाला दैनिक या मासिक धन।

भवत-वि० पूज्य। मान्य। आदरणीय।

सज्ञा पु० बौद्ध भिक्षुक या साधु।

भद-सज्ञा स्त्री० किसी वस्तु के गिरने का

शब्द। घेड़ से फल गिरने या पैर का शब्द।

घप्पा।

भदई-सज्ञा स्त्री० भादों के महीने में तैयार

होनेवाली फसल।

भदभद-वि० बहुत मोटा। भद्दा।

सज्ञा स्त्री० भद-भद की आवाज।

भदभदाना-वि० भदभद शब्द करना।

भदभदाहट-सज्ञा स्त्री० भदभद शब्द।

भदावर-सज्ञा पु० चम्बल और यमुना नदियों के

बीच का भाग, जिसका अधिकांश आगरा

जिले में है और कुछ बश ग्वातियर राज्य में है।

भवाक-सज्ञा पु० घडाक। पड़ाक। 'भदभद'

शब्द के साथ गिरना।

भवेदं, भवेत्-वि० भद्। कुरूप।  
 भवेत्-सज्ञा पु० मँडक।  
 भवोद्-वि० भादो के मास में होनेवाला।  
 भद्-वि० [स्त्री० भद्] जो देखने में  
 अच्छा न लगे। खराब। बुरा। कुरूप।  
 बेढगा। अश्लील।  
 भद्गापन-सज्ञा पु० भद् होने का भाव।  
 भद्-वि० शिष्ट। भला। सम्म। सुशिक्षित।  
 २ भलाई करनेवाला। कल्याणकारी। ३  
 श्रेष्ठ। ४. साधु।  
 सज्ञा पु० १ मंगल। कल्याण। २ धिर,  
 दावी, मूछ आदि सब का मुडन।  
 भद्कार-वि० कल्याण करनेवाला।  
 भद्काली-सज्ञा स्त्री० दुर्गदिवी। काली।  
 महाभाया।  
 भद्ता-सज्ञा स्त्री० भद् होने का भाव।  
 शिष्टता। सम्मता। शराफत। भलमनसी।  
 भद्थी-सज्ञा स्त्री० १ मंगल। २ शोभा।  
 श्री। ३ चन्दन। ४ केसर। ५ कुकुम।  
 भद्-सज्ञा स्त्री० १. फलित ज्योतिष के अनुसार  
 एक आरम्भ योग। २ द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी  
 आदि तिथियों की सज्ञा। ३ ज्योतिष के  
 अनुसार ऐसा समय, जिसमें यात्रा या शुभ  
 कार्य करने का निषेध हो। वाधा। ४  
 जाकाशगगा। ५ नाय। ६ दुर्गा। ७ पुष्पी।  
 ८ सुभद्रा का एक नाम।  
 भद्दश्य-सज्ञा पु० जम्बूद्वीप के नौ सण्डो और  
 वर्षों में से एक।  
 भद्दसन-सज्ञा पु० मणियों से जटित राज-  
 सिंहासन।  
 भद्दिका-सज्ञा स्त्री० १ दशा-विशेष।  
 कल्याणी। २ कल्याण करनेवाली। ३ एक  
 वर्णवृत्त।  
 भद्दी-वि० १ भाग्यवान्। २ सामुद्रिक विद्या  
 जाननेवाला।  
 भनक-सज्ञा स्त्री० १. धीमा शब्द। आहट।  
 ध्वनि। २. उड़ती हुई खबर।  
 भनकना-वि०-क्रि० स० कहना। बोलना।  
 भनना-वि०-क्रि० स० कहना।  
 भनभनाना-क्रि० अ० भनभन शब्द करना।  
 गुजारना।

भनभनाहट-सज्ञा स्त्री० भनभनाने का शब्द  
 गुजार।  
 भनित-वि० दे० "भणित"। कहा हुआ।  
 कथित। वणित। रचित।  
 भयका-सज्ञा पु० एक प्रकार का वन्द मुँह  
 का घड़ा, जो शराब या अर्क उतारने में  
 काम आता है।  
 क्रि० वि० उबला हुआ या उबलता हुआ।  
 भयकी-सज्ञा स्त्री० दे० "भयकी"। झूठ  
 धमकी। धुडकी।  
 भनक-सज्ञा स्त्री० १ भनकने की क्रिया या  
 भाव। उबाल। २ जोर से जलना। प्रज्व  
 लन। ३ रह-रहकर आनेवाली दुर्गंध।  
 भनकना-क्रि० अ० [अनु०] १. उबलना। २. जो  
 से जलना। ३ खलबलाना। मडकना। ४  
 बहुत क्रोध करना। ५ उबाल आने पर  
 गिरना।  
 भनकाना-क्रि० स० १ जलाना। प्रज्वलित  
 करना। २ गिराना।  
 भनकी-सज्ञा स्त्री० धुडकी। झूठी धमकी।  
 भनभड-सज्ञा स्त्री० १ भीडभाड। होहल्ला  
 भीड और शोर-गुल। २ अव्यवस्था।  
 भनर-सज्ञा पु० १. डर। खटका। २ भीड  
 भाड। ३ धक्काहट। उद्रेक। व्याकुलता।  
 भनरना-वि०-क्रि० अ० १. भयभीत होना  
 डरना। २. धक्का जाना। भ्रम में  
 पड़ना।  
 भनका-सज्ञा पु० जवाला।  
 वि० सुन्दर। स्वच्छ। साफ।  
 भन-सज्ञा स्त्री० दे० "भस्म"। यज्ञ या पूज  
 में हवन करने पर बची हुई राख, जिसे  
 साधु या पुजापाठ करनेवाले अपने मस्तक  
 या बाह में लगाते हैं।  
 भयकर-वि० डरावना। भय या डर पैदा  
 करनेवाला। भयानक। उग्र। विकट।  
 भयकरता-सज्ञा स्त्री० भय पैदा करने या  
 भयकर होने का भाव। डरावनापन।  
 भीषणता। उग्रता।  
 भय-सज्ञा पु० डर। लोफ। घास। आघात।  
 मुहा०—भय खाना=डरना।  
 भयकर-वि० [स्त्री० भयकरी] दे०

भयनस्त-वि० भयभीत। डरा हुआ। डर के कारण दुखी।

भयव या भयवा-वि० डरावना। भयानक।

भयप्रद-वि० डरावना। भय उत्पन्न करने वाला। भयानक।

भयनाशन-सज्ञा पु० १ डर दूर करनेवाला। २ विष्णु। ३ दुष्ट दूर करनेवाला।

भयभीत-वि० डरा हुआ।

भयभोचन-वि० डर दूर करनेवाला। निर्भय करनेवाला। दुखों को दूर करनेवाला (ईश्वर के लिए)।

भयवाद-सज्ञा पु० एक ही गोन या वश के लोग। भाई-जन्पु। भाईचारा।

भयहारी-वि० डर दूर करनेवाला।

भया\*†-वि० दे० "हुआ"।

भयाकुल-वि० भयभीत। डरा हुआ।

भयावुर-वि० भय से व्याकुल। डर से घबराया हुआ। डरा हुआ। डरोक। भयभीत।

भयान\*†-वि० डरावना। भयानक।

भयानक-वि० डरावना। जिससे डर लगता हो। डर उत्पन्न करनेवाला। भीषण। भयकर।

सज्ञा पु० साहित्य में नौ रसों में छठा रस, जिसमें भयप्रद दृश्यों का वर्णन होता है।

भयाना\*†-क्रि० अ० डरना।

क्रि० स० डराना। भयभीत करना।

भयावन†-वि० डरावना।

भयावह-वि० डरावना। भयकर।

भय्या-सज्ञा पु० भाई। भ्राता।

भरत\*†-सज्ञा स्त्री० भ्राति। संदेह।

भर-वि० पूरा। सब। कुल।

\*†क्रि० वि० चल से। द्वारा।

सज्ञा पु० १ दे० "भार"। बोझ। वजन।

२ दे० "भराव"। पुष्टि। ३. हिन्दुओं की एक छोटी जाति।

भरकना\*†-क्रि० अ० दे० "भड़कना"।

भरका-सज्ञा पु० पहाड़ी अथवा जंगली भू वह गहुरा गड्ढा जिसमें चोर डाकू छिप जाते हैं।

भरकूटी-सज्ञा पु० मस्तक।

भरट-सज्ञा पु० १. कुम्हार। २. नौकर।

भरण-सज्ञा पु० १ पालन। पोषण। निर्वाह। २ पूर्ति। पूरा करने का कार्य। ३ भर्त्ता।

४ वेतन।

भरणो-सज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में दूसरा नक्षत्र। तीन तारों के कारण इसकी आकृति त्रिकोण-सी है।

वि० भरण या पालन करनेवाला।

भरणोप-वि० भरण करने योग्य। पालन-पोषण करने लायक। पूरा करने योग्य।

भरण्य-सज्ञा पु० १ मूल्य। २ वेतन।

भरण्य-सज्ञा पु० १ ईश्वर। २ चंद्रमा।

३ अग्नि। ४. मित्र।

भरत-सज्ञा पु० १. कंकेयी के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र और रामचंद्र के छोटे भाई, जिनका विवाह माडवी के साथ हुआ था। २ शकुन्तला के गर्भ से उत्पन्न दुष्यंत के पुत्र, जिनका जन्म कण्व ऋषि के आश्रम में हुआ था। इस देश का "भारतवर्ष" नाम इन्हीं के नाम से पड़ा है। ३. दे० "जड-भरत"। ४. एक प्रसिद्ध मुनि, जो नाट्यशास्त्र के प्रधान आचार्य माने जाते हैं। ५. संगीत-शास्त्र के एक आचार्य का नाम। ६. नाटकों में अभिनय करनेवाला। नट। ७. प्राचीन काल का उत्तर भारत का एक देश, जिसका उल्लेख वाल्मीकि-रामायण में है। ८ कांसा नामक धातु। कसकुट।

भरतलड-सज्ञा पु० भारतवर्ष। हिन्दुस्तान।

भरता-सज्ञा पु० चोखा। एक प्रकार का नमकीन सालन, जो दूध, आलू आदि को मूँदकर बनाया जाता है।

सूहा-भरता होना=दब जाने आदि से एकदम पिसा या पिचक जाना, नष्ट या विकृत हो जाना। भरता कर देना=मार कर बीपट कर देना।

भरतार-सज्ञा पु० दे० "भर्त्तार" या "भर्त्ता"। पति। स्वामि।

भरती-सज्ञा स्त्री० १ भरे जाने का भाव। भरा जाना। २ प्रवेश होना। दाखिल होना। ३ सेना में सैनिका का लिया जाना। ४. शामिल करने का कार्य। ५। सात, लादने की लाव।

मुहा०—भरती का=बहुत ही साधारण या रही।

भरत्यू\*†—संज्ञा पुं० दे० “भरत”।

भरत्यूरी—संज्ञा पुं० दे० “भरतूहरि”।

भरद्वाज—संज्ञा पुं० १. एक वैदिक ऋषि, जो मोक्ष-प्रवर्तक और मंत्रकार थे। ये राजा दिवोदास के पुरोहित और सप्तर्षियों में से भी एक माने जाते हैं। २. इन ऋषि के वंशज या गोत्रवाले। ३. एक पक्षी।

भरन—संज्ञा पुं० १. भरण। पूर्ति। पालन। २. घोषणा।

भरना—क्रि० सं० १. पूरा करना। २. उडेलना। उलटना। डालना। ३. ऋण चुकाना या हानि की पूर्ति करना। चुकाना। देना। ४. तोप या बंदूक आदि में गोली-बारूद आदि डालना। ५. पद पर नियुक्त करना। खाली स्थान को पूरा करना। ६. गुप्त रूप से किसी की निंदा करना। ७. निर्वाह करना। निवाहना। ८. काटना। डसना। ९. सहना। झेलना। १०. सारे शरीर में लगाना। पीतना। क्रि० अ० १. पूरा होना। उडैला या डाला जाना। २. तोप या बंदूक आदि में गोली-बारूद आदि का होना। ३. ऋण चुकाना। ४. मन में श्रेष्ठ होना। असंतुष्ट या अप्रसन्न रहना। ५. घाव में पीय आना। ६. किसी अंग का बहुत काम करने के कारण दर्द करना। ७. शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना।

संज्ञा पुं० १. भरने की क्रिया या भाव। २. रिसवत। घूस।

भरनि\*†—संज्ञा स्त्री० पहनावा। पोशाक।

भरनी—संज्ञा स्त्री० १. भरनेवाली। पूरा करने वाली। २. एक नक्षत्र। ३. करपे में की दरकी। नार।

भरपाई—क्रि० वि० पूर्ण रूप से। भली भाँति। संज्ञा स्त्री० १. जो कुछ बाकी हो, उसे पूरा-पूरा पाना या चुकता करना। २. चुकाने का भाव। ३. कुल बाकी चुकाने पर दी जानेवाली रसीद।

भरपूर—क्रि० पूरी तरह से भरा हुआ। पूरा-पूरा। जिसमें कोई कमी न हो। परिपूर्ण। क्रि० वि० पूर्ण रूप से। अच्छी तरह।

भरनराना—क्रि० अ० १. छिड़कना। भुर-भुराना। छोटाना। २. फूटना। सूजना। ३. रोएँ खड़े होना। ४. पबराना।

भरभटा\*†—संज्ञा पुं० सामना। मुकाबला। मुठभेड़।

भरम\*†—संज्ञा पुं० १. दे० “भ्रम”। सदेह। भूल। धोखा। २. भेद। रहस्य।

भरमना\*†—क्रि० अ० १. भ्रम में पड़ना। भटकना। २. घूमना। चलना। फिरना।

भारा-भारा फिरना।

संज्ञा स्त्री० भ्रम। भूल। गलती। धोखा।

भरमाना—क्रि० सं० १. भ्रम में डालना।

बहकाना। ठगना। २. भटकाना। ध्वर्ष

इधर-उधर घुमाना।

क्रि० अ० चकित होना। हैरान होना।

भरमार—संज्ञा स्त्री० अत्यंत अधिकता। बहुत अधिक। ज्यादाती।

भरमोला—वि० १. भरमानेवाला। बहकाने-

वाला। भ्रमोत्पादक। २. सन्देह करनेवाला।

संशयी। ३. सन्देह उत्पन्न करनेवाला।

भरराना—क्रि० अ० [अनु०] १. भरर शब्द

करना या होना। भरर शब्द के साथ

गिरना। २. दे० “नहराना”। बरराना।

टट पड़ना।

भरवाई—संज्ञा स्त्री० दे० “भराई”। भरवाने

की क्रिया, भाव या मजदूरी। जैसे पानी

भराने की मजदूरी।

भरवाना—क्रि० सं० भरने का काम दूसरे से

कराना। पूरा कराना।

भरसक—क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। यथा-

शक्ति।

भरसन\*†—संज्ञा स्त्री० दे० “भरतना”। निंदा।

भरसाई—संज्ञा पुं० दे० “साई”।

भरहरना—क्रि० अ० दे० “भरभराना”।

भरहराना—क्रि० अ० भरहराना। एकाएक

ऊपर से गिरना।

भराति\*—संज्ञा स्त्री० दे० “भ्राति”।

भराई—संज्ञा स्त्री० भरने की क्रिया, भाव या

मजदूरी।

भराना—क्रि० सं० दे० “भरवाना”। पूरा

कराना। खाली चीज को पूरा कराना।

भरापूरा-वि० १. परिपूर्ण। सम्पन्न। २. स्वस्थ। हृष्टपुष्ट।

भराव-सज्ञा पु० १. भरने का काम या भाव।

२. भरा हुआ अंश या भाग। ३. भरती।

भरा या भरपूर होने का भाव।

भरावट-सज्ञा स्त्री० पूर्णता। भरती।

भरित-वि० भरा हुआ।

भरी-सज्ञा स्त्री० दस माशे या एक रुपए के बराबर एक तौल।

भरु-सज्ञा पु० भार। बोझ। वजन।

भरुका-सज्ञा पु० चुनकड़। पुरवा।

भरुहाना-क्रि० अ० प्रमद करना। अभिमान करना।

क्रि० स० १. बहकाना। धोखा देना। २.

उत्तेजित करना। बढ़ावा देना।

भरेठ-सज्ञा पु० दरवाजे के ऊपर की लकड़ी।

भरेंथा-वि० भरनेवाला। पालन-पोषण करने-वाला। पालक। रक्षक।

भरोठा-सज्ञा पु० बोझ।

भरोसा-सज्ञा पु० १. आश्रय। सहारा।

अवलंब। आश्रय। २. आशा। उम्मीद। ३.

विश्वास।

भरोना-वि० वजनी। भारी। बोझिल।

भरंग-सज्ञा पु० १. शिव। महादेव। २. सूर्य का तेज। ज्योति। दीप्ति।

भर्त्ता-सज्ञा पु० १. स्वामी। २. पति। मालिक।

खाविन्द। ३. विष्णु। ४. भरण-पोषण या

पालन करनेवाला। रक्षक। प्रतिपालक।

भर्त्तरि-सज्ञा पु० पति। स्वामी।

भर्त्ती-सज्ञा स्त्री० प्रति। शामिल करने का कार्य।

भर्त्तृहरि-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध वैयाकरण और कवि। इनके बनाए शृंगार, वैराग्य और

नीति, ये तीन शतक प्रसिद्ध हैं।

भर्त्तक-सज्ञा पु० निन्दा या तिरस्कार करने-वाला। निन्दक।

भर्त्सना-सज्ञा स्त्री० १. निन्दा। शिकायत।

२. तिरस्कार। डाँट-डपट।

भर्म-सज्ञा पु० दे० "भ्रम"।

भर्मन-सज्ञा पु० दे० "भ्रमण"।

भर-सज्ञा पु० झाँसापट्टी। अपना काम

निकालने के लिए डराना-धमकाना या बहकाना।

भरना-क्रि० अ० भर-भर शब्द होना।

भर्सन-सज्ञा पु० दे० "भर्त्सना"।

भल-सज्ञा पु० १. दे० "भला"। अच्छा।

२. अवश्य। जरूर। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।

यौ०—भला आदमी=सज्जन। शरीफ।

भलका-सज्ञा पु० तीर का फल। गोली।

भलपति-सज्ञा पु० १. भाला रखनेवाला। २.

भाला चलानेवाला सैनिक।

भलमनसत, भलमनसी-सज्ञा स्त्री० सज्जनता।

शराफत। भलेमानस होने का भाव।

भलमनसाहत-सज्ञा स्त्री० सज्जनता। शराफत।

भला-वि० १. अच्छा। उत्तम। श्रेष्ठ। बढ़िया।

२. सज्जन। शरीफ।

सज्ञा पु० १. कल्याण। कुशल। भलाई।

२. लाभ।

अव्य० १. अच्छा। खैर। अस्तु। २. "नही"

का सूचक अव्यय जो प्रायः वाक्यों के आरंभ अथवा मध्य में रखा जाता है।

यौ०—भला-बुरा=उलटी-सीधी बात। अनुचित बात। डाँट-फटकार। हानि और लाभ।

मुहा०—भले ही=ऐसा हुआ करे। इससे कोई हानि नहीं। अच्छा ही है।

भलाई-सज्ञा स्त्री० उपकार। नेकी। भले

होने का भाव। भलापन। अच्छाई।

भलापन-सज्ञा पु० १. सज्जनता। २. अच्छाई।

भलाई।

भले-क्रि० वि० भली भाँति। अच्छी तरह।

पूर्ण रूप से।

अव्य० खूब। बाहु।

भलेरा-सज्ञा पु० दे० "भला"।

भल्ल-सज्ञा पु० १. भाला। बछी। २. भालू।

भल्लक-सज्ञा पु० १. भालू। २. ईगुदी। ३.

भिलावा। ४. एक चिड़िया।

भल्लाक्ष-वि० मददृष्टि।

भल्लुक-सज्ञा पु० भालू या भल्लुक।

भवं-सज्ञा स्त्री० भौंह। गाल के ऊपर के

बाल।

भवग या भयगा-सज्ञा पु० सोंप।

भय-संज्ञा पु० १ सत्तार। जगत्। २. उत्ता। ३. उत्पत्ति। जन्म। ४. शिव। ५. मेघ। बादल।  
 ६ कुसल। ७ उर। भय। ८ कामदेव।  
 ९ जन्म-मरण का घुस।  
 वि० १ शुभ। कल्याणकारक। २ जन्मा हुआ। उत्पन्न।  
 भयघाप-संज्ञा पु० शिवजी के। धनुष का नाम। पिताका।  
 भयजाल-संज्ञा पु० संसार का जाल या सत्तार-रूपी जाल, अर्थात् सत्तार की मोहमाया।  
 पुनिया की झलद या बखेडा। सांसारिक कष्ट और दुख। आवागमन का चक्कर।  
 भयवीर्य-सर्व० आपका। तुम्हारा।  
 भयवर्ण-संज्ञा पु० परमेश्वर। सत्तार का भरण पोषण करनेवाले।  
 भयन-संज्ञा पु० १ महल। प्रासाद। २. बड़ा मकान। ३ जगत्। सत्तार। ४ जन्म। उत्पत्ति। ५ घर। रहने का स्थान।  
 भयना\*†-क्रि० अ० घुमना। भ्रमण करना।  
 भयनी-संज्ञा स्त्री० स्त्री। गृहिणी।  
 भयवधन-संज्ञा पु० सांसारिक दुख और कष्ट। सत्तार की मोहमाया। आवागमन का चक्कर।  
 भय-भजन-संज्ञा पु० १ परमेश्वर। सांसारिक बन्धनों को तोड़नेवाला, अर्थात् सांसारिक दुख और कष्ट दूर करनेवाला। २ काल। भयभय-संज्ञा पु० सत्तार में बार-बार जन्म लेने और मरने का भय।  
 भयभामिनी-संज्ञा स्त्री० पार्वती।  
 भयभक्ति-संज्ञा पु० संस्कृत के प्रसिद्ध कवि, जो ईसा की ८वीं शताब्दी में हुए थे। इनके तीन नाटक (मालती माधव, उत्तररामचरित और महावीरचरित) बहुत प्रसिद्ध हैं।  
 भयभोग-संज्ञा पु० सत्तार के मुखा का आनन्द।  
 भयतोषम-वि० सत्तार के बधनों से छुड़ाने या मुक्त करनेवाला। भगवान्। ईश्वर।  
 भयस्त-संज्ञा पु० मुक्त की अवस्था के समय राजा या जागेवाला प्राचीन काल का एक राजा।  
 भयबाना-संज्ञा स्त्री० पार्वती।  
 भयविलास-संज्ञा पु० १. सांसारिक सुखों का

उपभोग। २. माया। ३. सत्तार के मुख, जो अज्ञान के कारण उत्पन्न होते हैं।  
 नवसूच-संज्ञा पु० सांसारिक दुख।  
 भयसंभव-वि० सांसारिक।  
 भयसागर-संज्ञा पु० १ सत्तार-रूपी सागर। २ सत्तार को समुद्र की तरह विस्तृत और सकटपूर्ण समझने का भाव।  
 भयाना-संज्ञा स्त्री० फेरी। भौरी। चक्कर।  
 भयाना-क्रि० सं० घुमाना। फिराना।  
 नया-संज्ञा स्त्री० पार्वती। दुर्गा।  
 भयाचल-संज्ञा पु० कंसादा पर्वत।  
 भयानी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा। काली। शिव की स्त्री। पार्वती।  
 भयानिध-संज्ञा पु० सत्तार-रूपी सागर।  
 भयानिध-संज्ञा पु० सत्तार-रूपी समुद्र। सत्तार-सागर।  
 भवित-वि० बीता हुआ।  
 भवितव्य-संज्ञा पु० होनहार। भावी। होनेवाला।  
 भवितव्यता-संज्ञा स्त्री० १ होनी। भावी। होनहार। २ भाग्य। किस्मत।  
 भविष्य-संज्ञा पु० होनेवाला। होनहार। भावी।  
 भविष्य-वि० जानेवाला समय। होनेवाला। होनहार। भवितव्यता।  
 भविष्यत्-संज्ञा पु० भविष्य। जानेवाला समय।  
 भविष्यवृत्ता-संज्ञा पु० ज्योतिषी। भविष्य में होनेवाली बात को बतानेवाला। भविष्यवाणी करनेवाला। होनहार जाननेवाला।  
 भविष्यद्वानि-संज्ञा स्त्री० भविष्य में होनेवाली बात, जो पहले से ही कहे दी गई हो।  
 भवित\*†-वि० १ भावयुक्त। भावपूर्ण। २ विरहा। वाँका।  
 भवेश-संज्ञा पु० महादेव। शिव।  
 भय-वि० (संज्ञा स्त्री० भय्यता) १ धानदार। सुन्दर। २ शुभ। नगल-सूचक। ३. श्रेष्ठ। बड़ा। ४ भविष्य में होनेवाला।  
 भय-संज्ञा स्त्री० उमा। पार्वती।  
 भय-संज्ञा पु० १ भय। २. राख। ३. किसी वस्तु की

भसकना-क्रि० स० गिरना। पडना। फाँकना।  
 भसना-क्रि० अ० १. पानी के ऊपर तैरना।  
 २. पानी में डूबना। ३. डहना।  
 भसम-सज्ञा पु० दे० "भस्म"।  
 भसमा-सज्ञा पु० एक प्रकार का खिजाव।  
 भसाना-सज्ञा पु० १. काली आदि की मूर्ति को नदी में प्रवाहित करना। २. धंसने या डहने का भाव।  
 भसाना-क्रि० स० १. किसी चीज को पानी में गिराना। २. डहाना।  
 भसिडया भसोड-सज्ञा स्त्री० कमल की जड़।  
 कमलनाल। गुणाल।  
 भसुंड-सज्ञा पु० हाथी। गज।  
 बि० मोटा-सज्ञा  
 भसुर-सज्ञा पु० पति का बड़ा भाई। जेठ।  
 भस्म-सज्ञा पु० राख। यज्ञ या पूजा में हवन करने पर बची हुई राख। भभूत।  
 बि० जो जलकर राख हो गया हो।  
 भस्मक-सज्ञा पु० एक रोग, जिसमें अधिक खाने पर भी कमजोरी बढ़ती जाती है।  
 भस्मता-सज्ञा स्त्री० भस्म होने का गुण या भाव।  
 भस्मप्रिय-सज्ञा पु० शिप।  
 भस्मस्नान-सज्ञा पु० हवन की राख से नहाना, अर्थात् शरीर में राख पोतना।  
 भस्मासुर-सज्ञा पु० पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दैत्य, जिसने तप करके शिवजी से मह वर माँगा था कि वह जिसके ऊपर हाथ रखे, वह जलकर मर जाय।  
 भस्मित-वि० जला हुआ।  
 भस्मीभूत-वि० जो जलकर राख हो गया हो।  
 विलकुल जला हुआ।  
 भहराना-क्रि० अ० १. टूट पडना। २. एका-एक गिर पडना।  
 भाँड़-सज्ञा पु० १ दे० "भाव"। विचार या अभिप्राय। २. भाँवरी। घुमाव।  
 भाँडर-सज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।  
 भाँडरि-सज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।  
 भाँग-सज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध बूटी, जिसकी पत्तियाँ पीसकर पीने से नशा होता है।  
 भूहा-भाँग खा जाना या पी जाना=

नशे की-सी या पागलपन की बातें करना।  
 घर में भूँजी भाँग न होना=घर में फूटी कोड़ी न होना। बहुत गरीब होना।  
 भाँन-सज्ञा स्त्री० १. भाँजने या घुमाने की क्रिया। २. वह धनु, जो रुपया, नोट आदि भुनाने के बदले में दिया जाय। भुनाई।  
 ३. ऐँठना। बल। मोड़। ४. ताने का मूत।  
 भाँनना-क्रि० स० १. तह करना। मोड़ना।  
 ऐँठना। घल देना। २. मुगदर आदि घुमाना (व्यायाम)।  
 भाँना-सज्ञा पु० बहन का बेटा।  
 भाजी-सज्ञा स्त्री० १. बहन की बेटो।  
 २. शिकायत। चुगली। ३. किसी के काम में स्कापट डालनेवाली बात।  
 भाँटा-सज्ञा पु० दे० "वैगन"।  
 भाँड-सज्ञा पु० १. माने-नाचने और हास्यपूर्ण नकलें उतारने का पेशा करनेवाले व्यक्ति (विशेषकर बारात की महफिलो आदि में गिरोह के रूप में गाते-बजाते हैं)। मसखरा। २. बेहया। नागा। ३. दे० "भाँडा"। ४. दे० "भाँडाफोड"। ५. उपद्रव।  
 ६. नाश। बर्बादी।  
 भाँडना-क्रि० अ० व्यर्थ धर-उधर घूमना।  
 मारा-मारा फिरना।  
 क्रि० स० १. किसी को बहुत बदनाम करते फिरना। गाली देना। २. नष्ट-भ्रष्ट करना। बिगाडना।  
 भाँडा-सज्ञा पु० बरतन। पात्र। मिट्टी का बड़ा बरतन। मटका।  
 मुहा०-भाँडे भरना=पदचात्ताप करना। पछताना।  
 भाडागार-सज्ञा पु० भडार। कोप। खजाना।  
 भाडागारिक-सज्ञा पु० भडारी। भडार की देखभाल करनेवाला।  
 भाडार-सज्ञा पु० बहुत अधिक मात्रा में किसी चीज के रखने का स्थान। भँडार।  
 खजाना। कोप। वह कोठरी या कमरा, जिसमें अनाज इकट्ठा करके रखा जाता हो। गोदाम। (अग्रे-स्टाक या स्टोर)।  
 भाडारपंजी-सज्ञा स्त्री० भाडार में रहने-वाली चीजों की सूची और उनके आने

तथा भेजे जाने का हिसाब लिखने की पुस्तक, वही या पंजी। (अग्ने०-स्टाक बुक)।  
भांडारपाल-संज्ञा पु० भांडार की देख-रेख करनेवाला। भांडार का प्रधान अधिकारी। (अग्ने०-स्टोरकीपर)।

भांडारिक-संज्ञा पु० दे० "भंडारी"। वेचने के लिए अपने पास वस्तुओं का भंडार रखने-वाला। (अग्ने०-स्टाकिस्ट)।

भांडिक-संज्ञा पु० तुफही आदि वजाकर राजाओं को जगानेवाला व्यक्ति।

भांडिल-संज्ञा पु० हज्जाम। नाऊ।

भांडिलशाला-संज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ पर हजामत बनवाई जाती है।

भांडूँरी-संज्ञा स्त्री० स्वाँग।

भाँति-संज्ञा स्त्री० तरह। प्रकार। रीति। किस्म।

भाँपना-क्रि० स० १. देखते ही समझ जाना। ताड़ना। २. जानना। पहचान जाना। ३. अटकल लगाना।

भाँय-भाँय-संज्ञा पु० सुनसान स्थान या सन्नाट में होनेवाला शब्द।

भाँरी-संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

भाँवना-क्रि० स० सुन्दर बनाना। खरादना। कुनना।

भाँवर-संज्ञा स्त्री० चारों ओर घूमना। परि-प्रमा। अग्नि की वह परिक्रमा जो विवाह के समय बर और बप्प करते हैं। भाँवरी। संज्ञा पु० दे० "नौर"।

भाँ-संज्ञा स्त्री० दे० "भाँवर"।

भाँस-संज्ञा स्त्री० आवाज। शब्द।

दे० "भास"।

भा-संज्ञा स्त्री० १. बमक। २. सोभा। छटा। ३. किरण। ४. विजली।

\*अव्य० चाहे। यदि इच्छा हो। या।

भाइ-संज्ञा पु० १. प्रेम। प्रीति। मुहुर्भवत। २. स्वभाव। विचार।

संज्ञा स्त्री० १. भाँति। २. पाल-डाल।

रन-डंग।

भाइय-संज्ञा पु० दे० "भाईचारा"।

भाई-संज्ञा पु० १. एक ही माता पिता से उत्पन्न व्यक्तियों में एक के लिए दूसरा व्यक्ति।

भाता। सहोदर। बंधु। २. माता या पिता के कुल की उसी पीढ़ी का दूसरा व्यक्ति। जैसे चचेरा या फुफेरा भाई। ३. बराबरवान के लिए एक प्रकार का संबोधन।

भाईचारा-संज्ञा पु० भाई के समान होने का भाव और व्यवहार। भाई का सम्बन्ध। बन्धुत्व। भ्रातृत्व।

भाई दूज-संज्ञा स्त्री० यमद्वितीया। कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भैया दूज।

भाईवंद-संज्ञा पु० एक ही वंश के व्यक्ति।

भाईबिरादरी। भाई और भिन्न-बंधु आदि।

भाईबिरादरी-संज्ञा स्त्री० एक ही जाति या समाज के लोग।

भाउ-संज्ञा पु० १. दे० "भाव"। विचार।

२. प्रेम। ३. प्रवृत्ति। ४. उत्पत्ति। जन्म।

भाऊ-संज्ञा पु० १. दे० "भाव"। प्रेम। स्नेह।

२. भावना। वृत्ति। विचार। स्वभाव।

३. हास्य। अवस्था। ४. महत्त्व।

महिमा। ५. रूप। आकृति। शक्ति।

स्वरूप। ६. सत्ता।

भाए-संज्ञा पु० १. वि० समझ में। समझ के मुताबिक। बुद्धि के अनुसार।

भाकुर-वि० भूत और डरावना। हीरा।

भाखना-संज्ञा पु० कहना।

भाखरी-संज्ञा पु० पहाड़।

भाखरी-संज्ञा स्त्री० दे० "भापा"। बोली।

भाग-संज्ञा पु० १. हिस्सा। खंड। अंश। २.

तरफ। ओर। ३. भाग्य। किस्मत।

सोभाग्य। खुशखीबी। ४. भाग्य का कल्पित

स्थान, माया। खलाट। ५. प्रातःकाल।

भोर। ६. गणित में किसी राशि को अनेक

अंशों या भागों में बाँटने की क्रिया।

भागड़-संज्ञा स्त्री० १. दे० "भगदड़"।

पलायन। बहुत से लोगों का एक साथ

घबराकर भागना। २. ऐसा स्थान, जहाँ

नदी की बाढ़ का पानी बाढ़ के बाद इकट्ठा

रह जाता हो।

भागदड़-संज्ञा स्त्री० १. भगदड़। लोगों

का घबराकर भागना। २. कोशिश।

सिफारिश।

भागवेय-संज्ञा पु० १. भाग्य। २. शुभकर्म। ३.

राजकर। राजस्व। दायद। ४ सपिंड।  
भागना-क्रि० अ० किसी स्थान से दौड़कर  
निकल जाना। पलायन करना। हट जाना।  
पीछा छुड़ाना। कोई काम करने से वचना।  
मुह०—सिर पर पर रस्तकर भागना=  
बहुत तेजी से भागना।

भागफल-सज्ञा पु० वह सस्या, जो भाज्य  
को भाजक से भाग देने पर प्राप्त हो।  
लब्धि।

भागवत-वि० दे० "भाग्यवान्"।

भागवत-सज्ञा पु० १ अठारह पुराणों में से एक  
पुराण। श्रीमद्भागवत। २ ईश्वर का भक्त।  
३ १३ मात्राओं का एक छंद।

वि० भगवत्सन्धो। ईश्वर-सन्धो।

भागवान्-वि० दे० "भाग्यवान्"।

भागहर-वि० हिस्तेदार।

भागहार-सज्ञा पु० (गणित में) भाग।  
तकसीम।

भागहर्-वि० विभक्त करने योग्य।

भागिनेय-सज्ञा पु० [स्त्री० भागिनेयी]  
वहन का तडका। भानजा।

भागो-सज्ञा पु० अधिकारी। हिस्तेदार।  
साझेदार। हकदार।

\*वि० भाग्यवाला। भाग्यशाली।

यो०—जैसे, बडभागी।

भागीरथ-सज्ञा पु० दे० "मगीरथ"।

भागीरथी-सज्ञा स्त्री० गंगा नदी।

भाग-सज्ञा पु० भगोडा। भागनेवाला।

भाग्य-सज्ञा पु० वह अवश्यभावी देवी विद्यान,  
जिसे अनुसार मनुष्य के सब कार्य पढ़ते  
हो से निश्चित रहते हैं। भविष्यता।  
प्रारब्ध। अदृष्ट। तकदीर। किन्मत। नसीब।

वि० हिस्ता करने के लायक।

भाग्यवन्त-वि० भाग्यवान्।

भाग्यवान्-वि० जिसका भाग्य अच्छा हो।  
मुलों और सम्पत्ति। भाग्यशाली या सौभाग्य-  
शाली। सुसंकिन्मत। सुशुनसीव।

भाग्यशाली-वि० अच्छे भाग्यवाला। भाग्यवान्।

भाग्यहीन-वि० अभाग। दुखी।

भाजक-वि० विभाग करनेवाला। बाँटने-  
वाला।

सज्ञा पु० वह अंक, जिससे किसी राशि को  
भाग दिया जाय। विभाजक (गणित)।  
भाजकाश-सज्ञा पु० वह सख्या, जिससे किसी  
राशि को भाग देने पर शेष कुछ न बचे।

भाजन-सज्ञा पु० १ भाग देने की क्रिया।

२ वरतन। व्यापार। ३ योग्य। पात्र।

भाजना-क्रि० अ० १ दे० भागना। २.

भूजना। भूतना।

भाजित-वि० "विभक्त"।

भाजी-सज्ञा स्त्री० १ तरकारी, राग आदि।

२ माँड। ३ पीछ। ४ बापना। बापन।

भाज्य-सज्ञा पु० वह अंक, जिसमें भाग दिया  
जाता है।

वि० विभाग करने के योग्य।

भाट-सज्ञा पु० [स्त्री० भाटिन] १ राजाओं  
का यशगान करनेवाला व्यक्ति। २ यह पेशा  
करनेवाली जाति। चारण। बदी। ३ बुधा-  
मदी।

सज्ञा स्त्री० १ नदी का पैदा। नदी का  
किनारा। २ उतार। बहाव।

भाटक-सज्ञा पु० भाड़ा। किराया।

भाटा-सज्ञा पु० समुद्र के पानी के चढ़ाव का  
उतार। ज्वार का उल्टा। पानी का उतार  
की ओर जाना।

भाट्यो\*+सज्ञा पु० भाट का काम। भट्टेरी।  
बशकीर्तन।

भाठ-सज्ञा स्त्री० १ नदी के प्रवाह के साथ  
बहकर आई हुई मिट्टी। २ धारा।

भाठा-सज्ञा पु० १ दे० "भट्ठा"। ईंट पकाने  
का भट्ठा। २ दे० "भाटा"। समुद्र के  
चढ़ाव का उतराव। ३ गड्ढा।

भाठी\*+सज्ञा स्त्री० दे० "भट्ठी"।

भाड़-सज्ञा पु० भट्टभूजे की भट्ठी।

मुह०—भाड़ शोकना=बुच्छ या नग्न  
काम करना। भाड़ में जाकर या उलटना=  
१. फेंकना। नष्ट करना। २. जाने देना।

भाड़ा-सज्ञा पु० किराया। कहीं रहने या  
किसी सवारी पर चढ़ने के लिए दिया  
जानेवाला धन।

मुह०—भाड़े का टट्ट=१ किराए पर  
या मजदूरी पर काम करनेवाला। २. उ

धन के तात्पर्य में दूसरे का काम करने वाला ।)

भाष-सज्ञा पु० १ नाटक के दस रूपों में से हास्य-रस का एक प्रकार का रूपक, जो एक ही अंक का होता है। २ वहाना।

भात-सज्ञा पु० १ पानी में पकाया हुआ चावल। २ विवाह की एक रसम, जिसमें कन्या पक्ष पर-पक्षवाला को दाल-भात खिलाता है।

भाता-सज्ञा पु० उपज का वह भाग, जो हल-वाले की खलियान में अन्न की राशि में से मिलता है।

वि० सुहावना। सुन्दर। मनभावन।

भाति-सज्ञा स्त्री० शोभा। काति। चमक।

भाया-सज्ञा पु० १ तरकस। तूणीर। २ बड़ो भायी।

भायो-सज्ञा स्त्री० आग सुलगाने के लिए चमड़े की धौकनी।

भायी-सज्ञा पु० सावन के बाद और नवरा के पहले का महीना। भाद्र। भाद्रपद।  
मुत्ता०—भादा की भरन=अधिक वर्षा। तेज झड़ी।

भाद्र, भाद्रपद-सज्ञा पु० दे० "भादा"।

भाद्रपदा-सज्ञा स्त्री० एक गक्षत्रपूज, जिसके दो भाग हैं—पूर्वा भाद्रपदा और उत्तरा भाद्रपदा।

भान-सज्ञा पु० १ प्रकाश। चमक। २ जान पड़ना। ज्ञान। प्रतीति। आभास। चिन्ता, पुण्ड आचार का ज्ञान या अनुभव।

भानज\*†-सज्ञा पु० [स्त्री० भानजी] बहन का लड़का।

भानना\*†-क्रि० स० १ तोड़ना। भग करना। नष्ट करना। मिटाना। दूर करना। काटना। २ समझना।

भानमती-सज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जादूगरनी। इन्द्रजाल करनेवाली स्त्री। गढनी।

मुह०—भानमती का पिढारा=बहुत-सी बेल लीजो का सप्रह। छोटे बक्स या धोले आदि में बहुत-सी धीजें, या छिपी हुई कुछ जाय धीजें।

भा०-सज्ञा स्त्री० यमुना।

भानवीया-सज्ञा स्त्री० यमुना।

नाना\*†-क्रि० अ० १ जान पड़ना। मालूम

होना। २ अच्छा लगना। पसंद आना।

३ शोभा देना।

त्रि० स० चमकाना।

भानु-सज्ञा पु० १. सूर्य। २ किरण। ३ राजा।

भानुज-सज्ञा पु० [स्त्री० भानुजा] १ यम।

२ शनिश्चर।

भानुजा-सज्ञा स्त्री० यमुना। सूर्य की पुत्री।

भानुतनया-सज्ञा स्त्री० यमुना (सूर्य की पुत्री)।

भानुतनूजा-सज्ञा स्त्री० यमुना।

भानुमत्-वि० प्रकाशमान। दीप्तियुक्त।

सज्ञा पु० सूर्य।

भानुमुता-सज्ञा स्त्री० यमुना।

नानेमि-सज्ञा पु० सूर्य।

भाप-सज्ञा स्त्री० १ पानी का धँपे का रूप।

२ पानी खोलन पर उबमें से निकलनेवाला धुँवाँ। वाष्प। ३ भौतिक शास्त्रानुसार ठोस या तरल पदार्थों की वह अवस्था, जो उनके बहुत ताप पान पर मिलती होने पर होती है।

भाभर-सज्ञा पु० पहाड़ों के नीचे तराई का जंगल।

भाभरा\*†-वि० लाल।

भाभरी-सज्ञा स्त्री० [अनु०] गरम राख।

नाभी-सज्ञा स्त्री० बड़ भाई की स्त्री। भोजाई।

भाम\*—सज्ञा स्त्री० दे० "भाया"। स्त्री।

भाया-सज्ञा स्त्री० स्त्री। ओरत।

भामिनि भामिनी-सज्ञा स्त्री० स्त्री। नाराज या कुपित स्त्री। स्त्री के लिए प्यार का सम्बोधन।

भायो-वि० क्रुद्ध।

सज्ञा स्त्री० क्रुद्ध स्त्री।

भाय\*—सज्ञा पु० दे० "भाव"। भाई।

भायप-सज्ञा पु० नाई दण्डु होने का नाय या व्यवहार। दे० "नाईचारा"।

भाया-वि० प्रिय। प्यारा।

भा०-सज्ञा पु० १ दे० "बील"। डोने का बील। २ उत्तरदायित्व। किसी का धन

चुनाने, कोई काम करने या किसी चीज की रक्षा की जिम्मेदारी। ३. आश्रय। सहारा।  
 मुहा०—भार उठाना=उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना। भार उतारना=कर्तव्य के ऋण से मुक्त होना।

भारत—सज्ञा पु० १. भरत नामक एक प्राचीन राजा के नाम पर एक देश जो उत्तर-दक्षिण हिमालय से कन्याकुमारी तक और पूर्व-पश्चिम पाकिस्तान के बीच स्थित है। भारतवर्ष (इंडिया)। २. भरत के गोत्र में उत्पन्न पुरुष। ३. 'महाभारत' का 'पूर्व' रूप, जो २४ सौ श्लोकों का था। लंबी कथा। ४. बड़ी भारी लड़ाई।

भारतखंड—सज्ञा पु० दे० "भारतवर्ष"।  
 भारतवर्ष—सज्ञा पु० वह देश, जो हिमालय के दक्षिण से लेकर कन्याकुमारी तक और सिंधु नदी से ब्रह्मपुत्र तक फैला हुआ है। अब इसके कुछ पूर्वी और पश्चिमी भाग अलग करके पाकिस्तान बनाया गया है। इसका नाम केवल भारत हो गया है।

भारतवासी—सज्ञा पु० भारत का रहनेवाला। भारत का नागरिक।

भारती—सज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. वचन। वाणी। ३. नाटक में एक वृत्ति, जिसके द्वारा रोद्र और भीमत्वं रस का वर्णन किया जाता है। ४. ग्राह्या वृत्ती। ५. दशनामो सन्यासियों का एक भेद।

भारतीय—वि० भारत-संबंधी। भारत का। सज्ञा पु० भारत का निवासी।

भारती—सज्ञा पु० १. दे० "भारत"। २. युद्ध। संग्राम।

भारती—सज्ञा पु० बोद्धा।

भारद्वाज—सज्ञा पु० १. भरद्वाज के कुल में उत्पन्न पुरुष। २. द्रोणाचार्य। ३. भरद्वाज पदी। ४. एक ऋषि, जिनका रचा हुआ धीत मूत्र और गुह्य मूत्र है।

भारधारण—सज्ञा पु० भार धारण करनेवाला। वह व्यक्ति, जिस पर कोई काम करने या किसी चीज की रक्षा करने का भार हो।

भार-प्रमाणक—सज्ञा पु० वह प्रमाण-पत्र, जिससे यह पता चले कि किसी ने दूसरे को कार्य,

पद आदि का भार सौंप दिया या ले लिया है।

भारना\*†—क्रि० सं० बोझ लादना। भार डालना। दवाना।

भारभूत—वि० भार धारण करनेवाला। भारयाष्टि—सज्ञा पु० बहंगी।

भारव—सज्ञा पु० घनुष की रस्ती। ज्या।

भारवाह, भारवाहक—वि० १. भार या बोझ ढोनेवाला। २. कार्यभार सँभालनेवाला।

सज्ञा पु० भोटिया। कहार।

भारवाहन—सज्ञा पु० बोझ ढोने की क्रिया।

भारवाहिक—वि० भार ढोनेवाला।

भारवाही—सज्ञा पु० [स्त्री० भारवाहिनी]

१. भार या बोझ ढोनेवाला। २. कार्य-भार सँभालनेवाला।

भारवि—सज्ञा पु० संस्कृत के एक प्राचीन कवि, जो किराताजुनीय महाकाव्य के रचयिता थे।

भारशिव—सज्ञा पु० १. एक प्राचीन शैव-सम्प्रदाय जिसके अनुयायी पाप दूर करने के लिए शिव की मूर्ति अपने सिर पर रखते थे। २. एक प्राचीन राजवंश।

भारार्ज—वि० दे० "भारी"।

सज्ञा पु० १. भाड़ा। किराया। २. बोझ।

भाराक्रांता—सज्ञा स्त्री० एक वर्णिक छंद।

भारावलम्बकत्व—सज्ञा पु० पदार्थों के पर-माणुओं का पारस्परिक आकर्षण।

भारी—वि० १. जिसमें बोझ हो। गुरु। योजित।

२. कठिन। ३. विशाल। बड़ा। अधिक। अत्यंत। बहुत। ४. मूला हुआ। फूला हुआ। ५. प्रबल। ६. गर्भीर। शात।

मुहा०—भारी भरपूर—बड़ा और भारी।

भारीपन—सज्ञा पु० भारी होने का भाव।

गुह्य।

भारीपण—वि० भारत और योरोप दोनों में समान रूप से पाया जानेवाला, एक मूल से उत्पन्न जाति-समूह या भाषावर्ग (विशेषकर भारतीय, पारसी, यूनानी, इटालियन आदि जातियों और भाषाओं के सम्बन्ध में प्रयुक्त)।

भाग्य—सज्ञा पु० १. मनु के वंश में उत्पन्न पुरुष। परमूराम। २. हिसार और गुडगाँव स्थान में रहनेवाला एक जाति।

वि० भृगु-सवधी। भृगु का।  
 भागवी-सज्ञा स्त्री० १. पावती। २. लक्ष्मी।  
 भागवेश-सज्ञा पु० परशुराम।  
 भार्या-सज्ञा स्त्री० पत्नी। स्त्री।  
 भार्याट-सज्ञा पु० बहु पुरुष, जो अपनी स्त्री  
 किसी अन्य को भोग के लिए दे।  
 भार्यातिक्रम-सज्ञा पु० १. स्त्री त्याग। २. स्त्री-  
 नाश। ३. परस्त्री-गमन।  
 भाल-सज्ञा पु० १. कपाल। ललाट। २.  
 भाला। वरछा। ३. तीरकाफल। गंसी।  
 ४. भालू। रीछ।  
 भालचन्द्र-सज्ञा पु० शिवजी।  
 भालना-क्रि० स० १. अच्छी तरह देखना।  
 †२. बूढ़ना। तलाश करना।  
 भालनेत्र या भाललोचन-सज्ञा पु० शिव।  
 भालबी-सज्ञा पु० रीछ।  
 भालाक-सज्ञा पु० १. शिव। २. एक अस्त्र।  
 भाला-सज्ञा पु० वरछा। तेजा।  
 भालाघरदार-सज्ञा पु० घरछ चलावेवाला।  
 घरछेत।  
 भालि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "भाली"।  
 भाली-सज्ञा स्त्री० १. भाले की नोक। २.  
 घरछी। सर्ग। ३. घूल। काँटा।  
 भालुनाथ-सज्ञा पु० दे० "नामवत"।  
 भालू-सज्ञा पु० रीछ। एक जंगली जानवर,  
 जिसे पकड़कर मवारी नाचना और खेल  
 करना सिखाते हैं।  
 भालंत-सज्ञा पु० भाला या वरछा चलाने-  
 वाला।  
 भावता\*†-सज्ञा पु० दे० "भावता"।  
 भाव-सज्ञा पु० १. होना या होनेकी क्रिया। सत्ता  
 या अस्तित्व। २. मन में उत्पन्न होनेवाली  
 प्रवृत्ति। विचार। खयाल। कल्पना। अभि-  
 प्राय। मतलब। ३. मुख या अंगों की आकृति  
 या धेष्टा। ४. चित्त। ५. पदार्थ। चीज। ६.  
 प्रेम। ७. प्रकृति। स्वभाव। ८. उग।  
 तरीका। ९. प्रकार। तरह। १०. अवस्था।  
 दशा। ११. भावना। विस्वास। भरोसा।  
 १२. आदर। प्रतिष्ठा। १३. विधि आदि  
 का हिसाब। दर। निर्णय। १४. ईश्वर, देवता  
 आदि के प्रति होनेवाली श्रद्धा या भक्ति।

१५. देखने से या और किसी प्रकार मन में  
 उत्पन्न होनेवाला विकार। १६. नाच-  
 गाने के विषय के अनुसार अंगों का  
 संचालन। नाज। चोचला। नखरा।  
 मुहा०—भाव उतरना या गिरना=किसी  
 चीज का मूल्य घट जाना। भाव चढ़ना=  
 मूल्य बढ़ जाना। भाव बताना=अंगों या  
 आकृति से मन के भाव प्रकट करना।  
 भावद्\*†-अव्य० अगर मन भावे तो। जी  
 चाहे तो। इच्छा हो तो।  
 भावक\*-वि० भाव से भरा। भावपूर्ण।  
 सज्ञा पु० १. भावना करनेवाला। भाव-  
 युक्त। २. भक्त। प्रेमी।  
 क्रि० वि० थोड़ा-सा। जरा-सा।  
 भावशाय्य-वि० समझ में आने लायक। जानने  
 योग्य।  
 भावप्राप्त्य-वि० समझ में आने योग्य।  
 भावज्ञ-सज्ञा स्त्री० भाई की स्त्री।  
 भाभी।  
 भावज्ञ-वि० मन के भाव या विचार जानने-  
 वाला। रहस्य जाननेवाला। मर्मज्ञ।  
 भावता-वि० [स्त्री० भावती] मन को अच्छा  
 लगनेवाला। प्रिय। मनोहर। प्रियतम।  
 भाव-तत्त्व-सज्ञा पु० १. किसी चीज का मूल्य  
 या दर आदि। २. मोल-सोल। दाम ठीक  
 करना। ३. रग-दग।  
 भावन\*†-वि० अच्छा लगनेवाला। मन को  
 मनेवाला। प्रिय। मनोहर। सुन्दर।  
 भावना-सज्ञा स्त्री० १. विचार। खयाल।  
 कल्पना। चित्त का एक भाव। इच्छा।  
 चाह। २. वैद्यक के अनुसार औषध को किसी  
 तरल पदार्थ में घोटना। घुट।  
 \*क्रि० अ० अच्छा लगना। मन को भाना।  
 वि० प्रिय। प्यारा।  
 भावनि\*†-सज्ञा स्त्री० जो कुछ जी में आवे।  
 इच्छानुसार कार्य।  
 भावनीय-वि० विचार करने योग्य।  
 भावप्रधान-वि० जिसमें भाव की प्रधानता  
 हो या जिसमें भाव ही प्रधान हो।  
 भावप्रवण-वि० दे० "भावुक"।  
 भावभक्ति-सज्ञा स्त्री० १. आदर। सत्कार।

१. ईश्वर-भक्ति का भाव या भावना।  
उपासना।

भावली-सज्ञा स्त्री० जमींदार और असामी  
के बीच उपज की बँटाई।

भाववाचक-सज्ञा पु० व्याकरण के अनुसार  
वह सज्ञा, जिससे किसी पदार्थ का गुण, दशा  
और व्यापार का बोध हो, जैसे भयकरता।

भाववाच्य-सज्ञा पु० व्याकरण के अनुसार  
क्रिया का वह रूप, जिससे यह जाना जाय  
कि वाक्य का उद्देश्य केवल कोई भाव है।  
भावप्रधान क्रिया। इसमें तृतीया की विभक्ति  
रहती है। जैसे—मुझसे बोला नहीं जाता।

भावविकार-सज्ञा पु० भाव के दोष। जन्म,  
अस्तित्व, परिणाम, वर्धन क्षय और नाश—  
ये ६ प्रकार के विकार हैं।

भावव्यजक-वि० भाव प्रकट करनेवाला।

भावसधि-सज्ञा स्त्री० दो विरुद्ध भावों का  
एक साथ वर्णन।

भावसत्य-वि० ऐसा सत्य, जो ध्रुव न होने  
पर भी भाव की दृष्टि से सत्य हो।

भावशबलता-सज्ञा स्त्री० कई एक भावों का  
एक साथ वर्णन।

भावाभाव-सज्ञा पु० १. भाव और अभाव।  
२. उत्पत्ति और लय।

भावार्थ-सज्ञा पु० १ मूल भाव। २ आशय।  
तात्पर्य। गूढ़ अर्थ।

भावित-वि० १ सोचा या विचारा हुआ।  
२ चिन्ताग्रस्त। चिन्तित। ३ सुगन्धित या  
शुद्ध किया हुआ। ४ मिलाया हुआ। ५  
समर्पित।

भाविता-सज्ञा स्त्री० होनहार।

भावित-सज्ञा पु० त्रैलोक्य। तीनों लोक।

भाविभ्या-सज्ञा स्त्री० होनहार।

भावी-सज्ञा स्त्री० १ भविष्यत् काल। आने-  
वाला समय। आगामी। २ भविष्य में  
होनेवाली बात। होनहार। भवितव्यता।  
भाग्य। तकदीर। भविष्य।

भायुक-वि० १ सोचनेवाला। २ सहृदय।  
जिस पर कोमल भावों का जल्दी प्रभाव  
पड़ता हो। ३ अच्छी बातें सोचनेवाला।

भावे-अव्य० चाहे।

भाष्य-वि० १. सोचने योग्य। चिन्तनीय। २  
भावी। होनहार। भवितव्य।

भाषण-सज्ञा पु० व्याख्यान। वक्तृता। कथन।  
वातचीत।

भाषना-वि० १. बोलना। कहना।  
वात करना। २. भोजन करना।

भाषातर-सज्ञा पु० अनुवाद। किसी एक भाषा  
में लिखी गई चीज का दूसरी भाषा में  
किया गया रूप या अनुवाद।

भाषा-सज्ञा स्त्री० १. मन के विचार दूसरी  
पर प्रकट करने के लिए मुख से उच्चरित  
शब्दों और वाक्यों आदि का समूह। बोली।  
जवान। २ किसी विशेष जन-समुदाय में  
प्रचलित बातचीत करने का ढंग। ३  
आधुनिक हिंदी। ४ वाणी।

भाषाबद्ध-वि० भाषा के रूप में आया या  
लाया हुआ। साधारण बोल-चाल की भाषा  
में बना हुआ।

भाषी-सज्ञा पु० बोलनेवाला।

भाषित-वि० कथित। कहा हुआ।

भाष्य-सज्ञा पु० १. टीका। टिप्पणी। सूत्रों  
या ग्रंथों की व्याख्या या टीका। २. किसी  
गूढ़ बात या वाक्य की विस्तृत व्याख्या।

भाष्यकार-सज्ञा पु० सूत्रों की व्याख्या करने-  
वाला। भाष्य बनानेवाला।

भास-सज्ञा पु० १. प्रतीत। झलक। आभास।  
२ दीप्ति। प्रकाश। चमक। ३. इच्छा। ४.  
किरण। ५. संस्कृत का प्राचीन नाटककार।  
भासना-वि० अ० १. मालूम होना। प्रतीत  
होना। देख पड़ना। २. प्रकाशित होना।  
चमकना। ३. फैसना। लिप्त होना।

भासमान-वि० जान पड़ता हुआ। भासता  
हुआ। दिखाई देता हुआ।

भासित-वि० १ जान पड़ता हुआ। २  
चमकीला। ३. प्रकाशित।

भास्कर-सज्ञा पु० १. सूर्य। २. सुवर्ण।  
सोना। ३. आग। ४. वीर। ५ महादेव।  
६. पत्थर पर नक्काशी करने की कला।  
वि० प्रकाश करनेवाला। चमकनेवाला।  
प्रदीप्त।

भास्वर-सज्ञा पु० १. दिन। २. भूम्यं।

वि० क्षीप्तिमुक्त। चमकदार।  
 भिग-सज्ञा पु० १ दे० "भृगु"। भौंरा। २  
 बिलनी (कोड़ा)।  
 भिगाना-क्रि० स० दे० "भिगोना"।  
 भिगोरा-सज्ञा पु० भृगराज।  
 भिजाना-क्रि० स० दे० "भिगोना"।  
 भिडा-सज्ञा पु० बड़ी सटक।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "भिडी"।  
 भिडिपाल, भिदिपाल-सज्ञा पु० छोटा डडा।  
 (प्राचीन काल में इसे फककर मारते थे।)  
 भिडी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की फली,  
 जिसकी तरकारी बनती है।  
 भितार-सज्ञा पु० प्रातःकाल। सवेरा।  
 भित्ता-सज्ञा स्त्री० १ माँगना। भीख।  
 २ दीनता दिखलाते हुए पट के लिए  
 याचना करना। ३ इस प्रकार माँगने से  
 मिली हुई वस्तु। भीख।  
 भिक्षाक-सज्ञा पु० निधुक।  
 भिक्षाटन-सज्ञा पु० भीख माँगन को फेर।  
 भिक्षापत्र-सज्ञा पु० वह पत्र, जिसमें भिक्षा-  
 मंगे भीख माँगते हैं। भिक्षा माँगने का बरतन।  
 भिक्षु-सज्ञा पु० [ स्त्री० भिक्षुणी ] १  
 संन्यासी। २ बौद्ध-मन्यासी। ३ भीख  
 माँगनेवाला। भित्तारी।  
 भिक्षुक-सज्ञा पु० भित्तारी। भिखमगा।  
 याचन। भीख माँगनेवाला।  
 भिखमगा-सज्ञा पु० भीख माँगनवाला।  
 भित्तारी। भिक्षुक।  
 भित्तर-सज्ञा पु० भिखमगा। भिक्षुक।  
 भित्तिारिणी-सज्ञा स्त्री० भीख माँगनेवाली  
 स्त्री। भिखमगिन।  
 भित्तिारिन-सज्ञा स्त्री० ये 'भित्तिारिणी'।  
 भित्तारी-सज्ञा पु० [ स्त्री० भित्तिारिन, भित्ता-  
 रिणी ] भिखमगा। भिक्षुक। भीख माँगने-  
 वाला।  
 भिगाना या भिगोना-क्रि० स० किसी चीज  
 को पानी से तर करना। गीली करना।  
 भिच्छा-सज्ञा स्त्री० दे० "भिक्षा"।  
 भिच्छु-सज्ञा पु० दे० "भिक्षु"।  
 भिन्नवना\*†-क्रि० स० पानी से तर करना।  
 भिजवाना-क्रि० स० किसी का नमने में

प्रवृत्त करना। दूसरे से भेजने का काम  
 कराना। दूसरे से कोई चीज पहुँचवाना।  
 भिजाना-क्रि० स० १ भिगोना। २-दे०  
 "भिजवाना"।  
 भिजोना\*†-क्रि० स० दे० "भिगोना"।  
 भिज-वि० जानकार। वाकिफ।  
 भिटनी-सज्ञा स्त्री० भेंटी। स्तन के आगे का  
 भाग।  
 भिड़त-सज्ञा स्त्री० १ टक्कर। २ मुठनेडा।  
 ३ सघर्ष। लड़ने अर्थात् टकराने की क्रिया  
 या भाव।  
 भिड़-सज्ञा स्त्री० बरं। तर्तया।  
 भिड़ज-सज्ञा पु० भिड़नवाला। दूरधीर।  
 भिड़ना-क्रि० अ० १-टक्कर खाना। टकराना।  
 २ लड़ना-लड़ना। लड़ाई करना। ३-  
 सटना। मिलना।  
 भिड़ाना-क्रि० स० १ टकराना। लड़ाना। २-  
 झगडा करना।  
 भितल्ल-सज्ञा पु० दोहरे कपडे में भीतरी  
 ओर का पल्ला। अस्तर।  
 वि० भीतर का। अंदर का।  
 भिताना\*†-क्रि० स० डरना या डराना।  
 भित्ति-सज्ञा स्त्री० १ दीवार। भीत। २  
 वह पदार्थ, जिस पर चित्र बनाया जाय।  
 चित्र खींचने का आधार। ३। भीति।  
 डर। भय।  
 भित्तिचित्र-सज्ञा पु० दीवार पर बनाया  
 गया चित्र।  
 भित्ति-चित्रकला-सज्ञा स्त्री० दीवारों पर  
 चित्र बनाने का कौशल।  
 भिद-सज्ञा पु० दे० "भेद"। अंतर।  
 भिदना-क्रि० अ० १ छदा जाना। २ अन्दर  
 पेश जाना। घुस जाना। ३ पायल होना।  
 भिनकना-क्रि० अ० [अनु०] १ भिन-भिन शब्द  
 करना। मनिसमा का बैठना। २ घृणा  
 उत्पन्न होना।  
 भिनभिनाना-क्रि० अ० भिन-भिन शब्द  
 करना। नितबना।  
 भिनसार†-सज्ञा पु० सघर्ष।  
 भिन्न-वि० अलग। पृथक्। जुदा। इतर।  
 दूसरा। अन्य।

सज्ञा पु० यह सत्यता, जो एकाई से कुछ कम हो (गणित) ।  
 निष्पत्ता-सज्ञा स्त्री० निष्पत्ति होने का भाव ।  
 अलगव । भेद । अंतर ।  
 निष्पत्त-सज्ञा पु० निष्पत्ति । जुदाई ।  
 निष्पत्ता-क्रि० अ० १ सिर में चमकार  
 जाना । सिर घूमना या ठनकना । २  
 दुर्गंध या बदबू जाना । ३ नाराज हो जाना ।  
 निष्पत्ता-क्रि० अ० डरना । भयभीत होना ।  
 निष्पत्ता\*†-क्रि० स० दे० "भिडना" ।  
 निष्पत्ता\*†-सज्ञा पु० दे० "भूय" ।  
 निष्पत्ती-सज्ञा स्त्री० भील जाति की स्त्री ।  
 निष्पत्ता-सज्ञा पु० एक जंगली पेड़, जिसका  
 जहरीला फल औषध के काम आता है ।  
 निष्पत्त-सज्ञा पु० दे० "भील" ।  
 निष्पत्ती-सज्ञा पु० मशक-द्वारा पानी छिड़कन-  
 वाला व्यक्ति ।  
 निष्पत्त-सज्ञा पु० वैद्य । चिकित्सक ।  
 निष्पत्त-सज्ञा पु० वैद्य ।  
 भीष्मा-क्रि० अ० गीला होना ।  
 भीष्मा-वि० गीला । ओढ़ा । तर ।  
 भीष्मो-सज्ञा पु० भैंस ।  
 भीष्मता†-क्रि० स० १ खींचना । कसना । २  
 दवाना । दे० "भीचना" ।  
 भीष्मता\*†-क्रि० अ० १ गीला होना । तर  
 होना । भीगना । २ पुलकित या गद्गद हो  
 जाना । ३ मेल मिलाप पैदा करना ।  
 ४ नहाना । ५ राग जाना ।  
 भीष्म-अव्य० १ तथा । और । अपितु । २  
 अवश्य । ३ अधिक । ज्यादा । ४ तक । लो ।  
 सज्ञा स्त्री० भय । डर ।  
 भीष्म-सज्ञा स्त्री० दे० "मिक्ता" ।  
 भीष्म\*-वि० दे० "भीषण" ।  
 भीष्म\*-सज्ञा पु० दे० "भीष्म" ।  
 भीष्मा-क्रि० अ० पानी या शीर किसी तरल  
 पदार्थ से तर होना । गीला होना ।  
 भीष्मा†-क्रि० अ० दे० "भीष्मा" ।  
 भीष्मा-सज्ञा पु० १ ऊँची जमीन । टीला ।  
 २ खँडहर । गिरा हुआ पुराना घर या  
 भीत । ३ ऊँची जमीन, जिस पर पान की  
 खेती होती है ।

भीड-सज्ञा स्त्री० १ आदमिया का जमाव ।  
 जन-समूह । ठठ । समुदाय । २ सकट ।  
 आपत्ति । मुसीबत ।  
 मुहा०—भीड छटना=भीड के लोग का  
 इधर-उधर हो जाना । भीड न रह जाना ।  
 भीडना\*†-क्रि० स० मिलाना । लगाना ।  
 मलना ।  
 भीडमडका-सज्ञा पु० दे० "भीड-भाड" ।  
 भीडनाड-सज्ञा स्त्री० भीड । जन-समूह ।  
 आदमिया का जमघट ।  
 भीडा†-वि० सकुचित । तग ।  
 भीत-सज्ञा स्त्री० भित्ति । दीवार ।  
 वि० [स्त्री० भीता] डरा हुआ ।  
 मुहा०—भीत में डोडना=अपनी सामर्थ्य  
 से बाहर अथवा असमर्थ कार्य करना । भीत  
 के बिना चित्र बनाना=ये सिर-पैर की बात  
 करना ।  
 भीतर-क्रि० वि० अंदर । बीच । मध्य में ।  
 घर में ।  
 सज्ञा पु० घर के अन्दर का भाग । जनान-  
 खाना । अन्तपुर ।  
 भीतरी-वि० भीतरवाला । अंदर का । छिपा  
 हुआ । गुप्त ।  
 भीति-सज्ञा स्त्री० १ भित्ति । दीवार ।  
 २ डर । भय । काफ । ३ कप ।  
 भीती\*†-सज्ञा स्त्री० १ दे० "भीति" । २  
 दे० "भित्ति" ।  
 भीत\*†-सज्ञा पु० सवरा ।  
 भीनता-क्रि० अ० पूरी तरह भीग जाना ।  
 भर जाना । समा जाना । जैसे सुगंध से  
 भर जाना ।  
 भीम-सज्ञा पु० १ पाँचों पाण्डवा में एक, जो  
 युधिष्ठिर से छोट और अर्जुन से बड़ थे ।  
 ये बहुत अधिक बलवान् थे । भीमसेन । २-  
 भयानक रत्न । ३ शिव । ४ विष्णु । ५  
 महादेव की आठ मूर्तियों में से एक ।  
 वि० भयानक । बहुत बड़ा और बलवान् ।  
 भीमता-सज्ञा स्त्री० भयकरता ।  
 भीमपलासी-सज्ञा स्त्री० एक राक्षसी ।  
 भीमर-सज्ञा पु० युद्ध ।  
 भीमराज-सज्ञा पु० काले रंग की एक चिड़िया ।

भीमसेन-सज्ञा पु० पाँच पाठवों में से एक, जो युधिष्ठिर से छोटे और बहुत अधिक बलवान् थे। भीम।

भीमसेनी एकादशी-सज्ञा स्त्री० १. ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी। २. माघ शुक्ला एकादशी।

भीमसेनी कपूर-सज्ञा पु० एक प्रकार का बड़िया कपूर। बरास।

भीर\*-सज्ञा स्त्री० १. दे० "भीह"। २. कष्ट। दुःख। तकलीफ। विपत्ति। आफत। \*वि० १. डरा हुआ। भयभीत। २. डरपोक। कायर।

भीरना\*-क्रि० अ० डरना।

भीर-वि० कायर। डरपोक।

भीरक-सज्ञा पु० १. जगल। २. उल्लू। वि० भीर। डरपोक।

भीरता-सज्ञा स्त्री० डर। भय। कायरता। भुजदिली।

भीरनाई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "भीरता"।

भीरे\*†-क्रि० वि० समीप। नजदीक। पास।

भील-सज्ञा पु० [स्त्री० भीलनी] एक प्रसिद्ध जंगली जाति।

भीषण-वि० भयकर। भयानक। डरावना। अत्यन्त उग्र या विकट।

भीषणता-सज्ञा स्त्री० डर उत्पन्न होने का भाव। भयकरता। डरावनापन।

भीषण\*-वि० दे० "भीषण"।

भीषम\*-सज्ञा पु० दे० "भीष्म"।

भीष्म-सज्ञा पु० राजा द्रान्तनु के पुत्र, जो गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। भीष्म पितामह। गामेय।

वि० भीषण। भयकर।

भीष्मक-सज्ञा पु० विदर्भ देश के एक राजा, जो रुक्मिणी के पिता थे।

भीष्मपञ्चक-सज्ञा पु० कानिच पुक्ता एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन।

भीष्म पितामह-सज्ञा पु० दे० "भीष्म"।

भीस्त\*-सज्ञा पु० दे० "भीष्म"।

भूईं-सज्ञा स्त्री० दे० "भूमि"। पृथिवी।

भूईंकोर-सज्ञा पु० एक प्रकार का बरगटी कीड़ा।

भूईंहरा-सज्ञा पु० भूमि के नीचे खोदकर

बनाया गया रहने का स्थान, घर या कमरा आदि। तहखाना।

भूंकना-क्रि० स० किसी को भूंकने के लिए प्रेरित करना।

भूँजना†-क्रि० अ० दे० "भुजना"।

भूँजया-सज्ञा पु० भड़भूजा।

भूँडा-वि० १. मोड़ा। बिना सींग का (पशु)।

२. दुष्ट। बदमाश।

भूअंग\*†-सज्ञा पु० दे० "साँप"। भुजग।

भूअगम\*-सज्ञा पु० साँप। भुजगम।

भूअन\*-सज्ञा पु० दे० "भुवन"।

भूआल\*-सज्ञा पु० दे० "भूपाल"। राजा।

भूईंचाल-सज्ञा पु० दे० "भूचाल"।

भूईंदोल-सज्ञा पु० दे० "भूडोल"।

भूईंहार-सज्ञा पु० दे० "भूमिहार"।

भूक\*-सज्ञा पु० १ भोजन। खाद्य। आहार।

२ अग्नि। आग।

भूकडी-सज्ञा स्त्री० सड़ी हुई खाने की चीजों में निकलनेवाली एक तरह की सफेद और कुछ कालापन लिये हुए वनस्पति।

भूकराय, भूकरायंध-सज्ञा स्त्री० सनायंध। सड़ने की बदवू। किसी चीज के सड़ने पर उसमें से आनेवाली दुर्गंध, विशेषकर वनस्पति आदि सड़ने पर।

भूखड़-वि० १. भूखा। जिसे बहुत भूख लगी हो। २. पैटू। बहुत खानेवाला। ३. दंष्ट्रि। कपाल।

भूक्त-वि० १. खाया हुआ। भक्षित। २. भोगा हुआ। उपभुक्त।

भूक्तभोगी-वि० १. अनुभवी। जिसे पूरा अनुभव हो चुका हो। २. जो भुगत चुका हो। पूर्ण भोग करनेवाला।

भूक्ति-सज्ञा स्त्री० १. भोजन। आहार। २.

लौकिक मुक्त। विषय-भोग।

भूक्तिप्रद-वि० भोग देनेवाला। भोगदाता।

भूखमरा-वि० जो भूख से मर रहा हो।

भूखड़। पैटू।

भूखमरी-सज्ञा स्त्री० १. भूख से होनेवाली मृत्यु। २. अकाल। अन्न की कमी से या खाना न मिलने से लोगों की मृत्यु होने की परिस्थिति।

भुजाना—क्रि० अ० भूख से पीड़ित होना।  
भुजा होना।

भुगत\*—सज्ञा स्त्री० दे० “भुक्ति”।

भुगतना—क्रि० स० भोगना। सहना। झेलना।  
क्रि० अ० १. पूरा होना। निबटना। २.  
बीतना। चुकना।

भुगतान—सज्ञा पु० १ देना। अदा करना।  
२ निपटारा। फैसला। ३. मूल्य या  
देन आदि चुकाना। वेवाकी।

भुगताना—क्रि० स० १ चुकाना। वेवाक  
करना। पूरा करना। २ बिताना। लगाना।  
३ झेलना। ४. भोग कराना। ५ दुःख  
देना।

भुगाना—क्रि० स० दे० “भोगवाना”।

भुज—वि० टेढ़ा। रोगी।

भुज्जड—वि० मूर्ख। बेवकूफ।

भुजग—सज्ञा पु० [स्त्री० भुजगिनी] साँप।

भुजगम—सज्ञा पु० साँप।

भुजगा—सज्ञा पु० १ दे० “भुजग”। साँप।  
२ काले रंग का एक पक्षी। भुजंटा।

भुजगिनी—सज्ञा स्त्री० साँपिन। नागिन।

भुजगी—सज्ञा स्त्री० साँपिन। नागिन।

भुजगेन्द्र, भुजगेश—सज्ञा पु० साँपा का राजा।  
शेषनाग।

भुज—सज्ञा पु० १ हाथ। बांह। २ हाथी की  
सूंड। ३ पंख की शाखा या डाली। ४.  
किनारा। ज्यामिति में किसी क्षेत्र का किनारा  
या किनारे की रेखा। त्रिभुज का आधार।  
५ समकोण का पूरक कोण। ६ दो की  
संख्या का बोधक शब्द या संकेत।

मुहा०—भुज में भरना=आलिगन करना।

भुजकोटर—सज्ञा पु० काँख।

भुजप—सज्ञा पु० साँप।

भुजगपति—सज्ञा पु० वायुकि नाग। शेषनाग।

भुजगेन्द्र, भुजगेश—सज्ञा पु० शेषनाग।

भुजदंड—सज्ञा पु० बांह-रूपी दंड या हथियार।

भुजपात\*—सज्ञा पु० दे० “भोजपात्र”।

भुजपाश—सज्ञा पु० गलबाँही। गले में हाथ

\*डालना। आलिगन। बाहुओं का बन्धन।

भुजप्रतिभुज—सज्ञा पु० सरल क्षेत्र की आन्ते-  
सानने की भुजाएँ।

भुजबद—सज्ञा पु० बाजबद। विजायउ। बांह  
का एक गहना।

भुजबाय\*—सज्ञा पु० गलबाँही। अँकवार।

भुजमूल—सज्ञा पु० १ कथा। २ काँख।

भुजवा—सज्ञा पु० भडभुजा।

भुजातर—सज्ञा पु० १ गोद। कोडू। २ छाती।

वक्ष। ३ दो भुजाओं का अन्तर।

भुजा—सज्ञा स्त्री० बांह। हाथ।

मुहा०—भुजा उठाना=प्रतिज्ञा करना।

भुजाना—क्रि० स० दे० “भुजाना”।

भुजाली—सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की बड़ी  
टेढ़ी छुरी। कुकरी। सुखरी। २. छोटी  
घरछी।

भुजाप्र—सज्ञा पु० हाथ के आगे का हिस्सा।  
हाथ।

भुजामूल—सज्ञा पु० दे० “भुजमूल”।

भुजिया\*—सज्ञा पु० १ सूखी भुनी हुई तर-  
कारी। २ उबाले हुए धान का चावल।

भुजिष्या—सज्ञा स्त्री० १ दासी। २. गणिका।  
वेर्या।

भुजेना\*—सज्ञा पु० भुजना। चबेना।

भुजेल—सज्ञा पु० भुजगा पक्षी।

भुजौना\*—सज्ञा पु० १ भुना हुआ अन्न।

भुजना। २ भूनने या भुनाने की मजदूरी।

भुट्टा—सज्ञा पु० १ भक्के की हरी बाल।

२ ज्वार-याजरे की बाल। ३ गुच्छा। यौद।

भुठौर—सज्ञा पु० घोड़ों की एक जाति-विशेष।

भुतहा—वि० १ भयावना। डरावना। २ भूत

के समान। ३. भूत के रहने का स्थान।

भुयरा—वि० दे० “भोषरा”।

भुनगा—सज्ञा पु० [स्त्री० भुनगी] एक छोटा  
उड़नेवाला कीड़ा।

भुनना—वि० अ० भुनना का अकर्मक  
रूप। भुना जाना। ‘भुनाना’ का अकर्मक  
रूप। भुन जाना। बड़े सिकके का छोटे-सिकके  
में बदल जाना।

भुनभुनाता—क्रि० अ० १. भुन-भुन शब्द  
करना। २. मन ही मन बुढ़कर अस्पष्ट  
स्वर में कुछ बहना। बड़बड़ाना।

भुनाना—क्रि० स० बड़े सिकके को छोटे सिकके  
से बदलना। भंजाना। तुड़पाना।

भुवि\*—सज्ञा स्त्री० भूमि। पृथ्वी।  
 भुरकना—क्रि० अ० १ सूखकर भुरभुरा हो जाना। २ भूलना।  
 क्रि० स० भुरभुराना। बुरबुराना।  
 भुरका—सज्ञा पु० १ बुकनी। चूर्ण। २ कुज्जा।  
 भुरकाना—क्रि० स० १ भुरभुरा करना। २ छिड़कना। भुरभुराना। ३ भुलवाना।  
 बहकाना।  
 भुरकौ—सज्ञा स्त्री० १ अन्न रखने के लिए छोटा कोठिला। २ पानी का छोटा गड्ढा।  
 होज। ३ छोटा कुल्हड़।  
 भुरकुटा—सज्ञा पु० छोटा कीड़ा।  
 भुरकुन—सज्ञा पु० १ चूर्ण। बुकनी। २ नष्ट-  
 भ्रष्ट।  
 भुरकुस—सज्ञा पु० १ चूर्ण। २ नष्ट-भ्रष्ट।  
 महा०—भुरकुस निकलना=१ चुर-चुर  
 होना। इतनी मार खाना कि हड्डी-पसलौ  
 चुर चुर हो जाय। २ नष्ट होना।  
 भुरता—सज्ञा पु० १ दयकर या कुचलकर नष्ट  
 हुई वस्तु। चकनाचूर हो जाना। २ जोखा  
 या मरता नाम का सालन।  
 भुरभुरा—वि० [स्त्री० भुरभुरी] कुरकुरा।  
 जरा-नी चोट लगते ही चुर होनवाला।  
 भुरभुराना—क्रि० अ० १ भुरभुरा करना।  
 २ छिड़कना। फँसाना।  
 भुरबना, भुरबाना\*†—क्रि० स० भुलवाना।  
 भ्रम में डालना। फुसलाना।  
 भुराई\*†—सज्ञा स्त्री० भोलापन।  
 भ्रष्टा पु० भुरापन।  
 भुराना\*†—क्रि० स० १ भूलना। भुलाना। २  
 भुलवाना।  
 भुलवसड—वि० जो बराबर भूल जाता  
 हो। भुलनेवाला। जिसका स्वभाव भूलने  
 का हो।  
 भुलभुल—सज्ञा पु० गरम रात।  
 भुलवाना—क्रि० स० १ भ्रम में डालना।  
 बहकाना। २ दे० "भुलाना"। खो देना।  
 भुलाना—क्रि० स० भ्रम में डालना।  
 भुलवाना। बहकाना। भूलना। याद न  
 भूलना। खो देना।  
 \*†—क्रि० अ० १ भ्रम में पड़ना। २

भटपना। भ्रमना। राह भूलना। ३ भूल  
 जाना। विस्मरण होना।  
 भुलावा—सज्ञा पु० बहकाना। छल। चक्कर  
 घोखा।  
 भुहा०—भुलावा देना=बहकाना। फुल-  
 लाना। भुलवाना।  
 भुवग—सज्ञा पु० दे० "भुजग"। सर्प।  
 भुवगम—सज्ञा पु० दे० "भुजगम"। सर्प।  
 भुव—सज्ञा पु० वह आकाश या लोक जो,  
 भूमि और सूर्य के बीच में है। अतरिक्ष-लोक।  
 भुव—सज्ञा पु० १ अग्नि। २ स्वर्ग। आकाश।  
 सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। भूमण्डल। २ माँह।  
 भुवन—सज्ञा पु० १ ससार। जगत्। २ प्राणी।  
 जीव। जन। लोग। ३ जल। ४ सृष्टि। लोक।  
 पुराणानुसार लोक चौदह हैं। भू, भुव,  
 स्व, मह, जन, तप और सत्य ये सात।  
 स्वर्गलोक है और अतल, सुतल, वितल,  
 गभस्तिमत, महातल, रसातल और पाताल,  
 ये सात पाताल हैं। ५ चौदह की संख्या  
 का चौतक दण्ड-संकेत।  
 भुवनकोश—सज्ञा पु० भूमंडल। पृथिवी।  
 ब्रह्मांड।  
 भुवनपति—सज्ञा पु० भूपति। राजा।  
 भुवनयापन—सज्ञा स्त्री० गंगा।  
 भुवनेश—सज्ञा पु० ईश्वर। शिव।  
 भुवनेश्वर—सज्ञा पु० १ ईश्वर। २ उड़ीसा में  
 पुरी क पास एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान। ३  
 भुवनेश्वर में स्थापित शिवजी की प्रधान मूर्ति।  
 भुवन्मु—सज्ञा पु० १ सूर्य। २ अग्नि। ३  
 चन्द्रमा। ४ प्रभु।  
 भुवपाल\*—सज्ञा पु० दे० "भूपाल"। राजा।  
 भुवलोक—सज्ञा पु० सात लोकों में दूसरा  
 लोक। अतरिक्ष लोक।  
 भुवा—सज्ञा पु० प्रजा। रई।  
 भुवार\*—सज्ञा पु० दे० "भुवाल"।  
 भुवाल\*—सज्ञा पु० राजा। भूपाल।  
 भुवि—सज्ञा स्त्री० भूमि। पृथिवी।  
 भुगुडी—सज्ञा पु० दे० "काक भुगुडी"।  
 सज्ञा स्त्री० एक प्राचीन अस्त्र।  
 भुत—सज्ञा पु० दे० "भूत"। अनाज के उठल  
 का पूरा चोकर।

भूमी\*—सज्ञा स्त्री० भूमी।  
 भूकना—क्रि० अ० [अनु०] १ भू-भू या भौ-भौ  
 शब्द करना (कुत्ता का)। कुत्ता की  
 बोली। २ व्यय बकना।  
 भूचाल—सज्ञा पु० दे० 'भूचाल'। भूकम्प।  
 भूजना\*—क्रि० स० १ भूतना। तलना।  
 २ दुख देना। सताना। ३ भोगना। भोग  
 करना।  
 भूजाना—सज्ञा पु० १ भुना हुआ चबेना। २  
 भड़-भूजा।  
 भूडोल—सज्ञा पु० भूडोल। भूकम्प।  
 भू-सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। स्थान। भूमि। २  
 सत्ता। प्राप्ति। ३ यज्ञ की अग्नि।  
 सज्ञा पु० रसातल।  
 भूकप—सज्ञा पु० कुछ प्राकृतिक कारणों से  
 पृथ्वी के ऊपरी भाग का सहसा हिल  
 उठना। भूचाल। भूडोल। जलजला।  
 भूल—सज्ञा स्त्री० १ खाने की इच्छा। क्षुधा।  
 २ आवश्यकता। जरूरत। ३ कामना।  
 भूलन\*—सज्ञा पु० दे० 'भूषण'।  
 भूलना\*—क्रि० स० १ सजाना। भूषित  
 करना। २ कोई चीज न खाना। ब्रत रहना।  
 भूलहडताल—सज्ञा स्त्री० दे० 'अनशन'।  
 अपनी माँगी पूरी कराने के लिए नोजन  
 छोड़ देने का हठ।  
 भूला—वि० [स्त्री० भूली] १ जिसे भूल  
 लगी हो। क्षुधित। २ चाहनवाला। इच्छुक।  
 ३ दरिद्र। गरीब।  
 भूतर—सज्ञा पु० विप।  
 भूगर्भ—सज्ञा पु० पृथ्वी का भीतरी भाग।  
 भूगर्भगृह—सज्ञा पु० जमीन के नीचे बना हुआ  
 भवन, कमरा आदि। तहखाना।  
 भूगर्भशास्त्र—सज्ञा पु० पृथ्वी के ऊपरी और  
 नीचरी भाग के तत्त्वा का ज्ञान करानेवाला  
 शास्त्र (अ० जिमालोजी)।  
 भूगोल—सज्ञा पु० १ पृथ्वी। २ यह शास्त्र,  
 जिसके द्वारा पृथ्वी की आकृति और उसके  
 प्राकृतिक विभाग आदि का ज्ञान होता है।  
 ३ यह ग्रन्थ, जिसमें पृथ्वी के प्राकृतिक  
 विभाग आदि का वर्णन हो।  
 भूपङ्क—सज्ञा पु० विपुल रेखा। भूमध्य रेखा।  
 पृ० ७१

भूचर—सज्ञा पु० १ भूमि पर रहनेवाला प्राणी।  
 २ तत्र के अनुसार एक प्रकार की सिद्धि।  
 भूचरी—सज्ञा स्त्री० योग में समाधि अग की  
 एक मुद्रा।  
 भूचाल—सज्ञा पु० दे० 'भूकप'।  
 भूचुगी—सज्ञा स्त्री० भूमि-सम्पत्ति पर लगने-  
 वाला राज्य-वार या चुगी (अग्रे-  
 एस्टेट-ड्यूटी)।  
 भूदान—सज्ञा पु० नेपाल के पूर्व का एक  
 प्रदेश, जो सिक्किम-राज्य के पड़ोस में है।  
 भूतानी—वि० भूदान देश का। भूदान-सबधी।  
 सज्ञा पु० १ भूदान देश का निवासी। २.  
 भूदान देश का घोड़ा।  
 सज्ञा स्त्री० भूदान देश की भाषा। ३  
 भूडोल—सज्ञा पु० दे० 'भूकप'।  
 भूत—सज्ञा पु० १ वे मूल पदार्थ, जिनकी  
 सहायता से सारी सृष्टि की रचना हुई है।  
 मूलतत्त्व। द्रव्य। २ सृष्टि के सभी प्राणी  
 और जड़ पदार्थ। ३ बीता हुआ समय।  
 व्याकरण के अनुसार क्रिया का वह  
 रूप, जिससे यह सूचित होता हो कि क्रिया  
 का व्यापार समाप्त हो चुका। ४ पुराणा-  
 नुसार एक प्रकार के पिशाच या देव, जो रुद्र  
 के अनुचर हैं। ५ मृत-शरीर। शव। ६  
 मृत-प्राणी की आत्मा। प्रेत। दैतान।  
 वि० १ गत। बीता हुआ। गुजरा हुआ।  
 भूत काल। २ युक्त। मिला हुआ। ३.  
 समान। सदृश। ४ जो हो चुका हो।  
 यौ०—भूतदया=जड़ और चतन, सबके  
 साथ की जानवाली दया।  
 मुहा०—भूत चढ़ना=या सवार होना=  
 बहुत अधिक आप्रह या हठ होना।  
 बहुत अधिक क्रोध होना। भूत की मिठाई  
 या पकवान=वह पदार्थ, जो ग्रम से दिखाई  
 दे, पर वास्तव में जिसका अस्तित्व न हो।  
 सहज में मिला हुआ धन, जो शीघ्र ही नष्ट  
 हो जाय।  
 भूतकला—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की दमिती,  
 जो पंचभूत की उत्पत्ति करती है।  
 भूतकाल—सज्ञा पु० बीता हुआ समय। अतीत  
 काल।

भूतचारी-सज्ञा पु० महादेव । भूता में विचरण करनेवाले ।

भूतरचयिष्ठा-सज्ञा स्त्री० दे० "भूतभंशास्त्र" ।  
भूतघात्री-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी । समस्त जीवा का नरण-पोषण करनेवाली परता माता ।

भूतनाथ-सज्ञा पु० शिव । भूत प्रेता के स्वामी ।  
भूतनायिका-सज्ञा स्त्री० दुर्गा ।  
भूतनी-सज्ञा स्त्री० प्रतिनी ।  
भूतपाल-सज्ञा पु० विष्णु । समस्त जीवा के रक्षक ।

भूतपूय-वि० वर्तमान से पहले का ।  
भूतभावन-सज्ञा पु० ब्रह्मा । विष्णु । महेश ।  
समस्त जीवा की सृष्टि और उनका पालन-पोषण करनेवाले ।

भूतभाषा-सज्ञा स्त्री० १ पेशाची भाषा ।  
भूत प्रेता की कल्पित भाषा । २ प्राकृत भाषा की एक बोली ।

भूतभूत-सज्ञा पु० समस्त जीवा का नरण-पोषण करनेवाले । विष्णु ।

भूतयज्ञ-सज्ञा पु० पचयज्ञा य से एक यज्ञ ।  
भूतयज्ञि । यज्ञिदेवदेव ।

भूतराज-सज्ञा पु० शिव ।  
भूतल-सज्ञा पु० १ पृथ्वी का ऊपरी तल ।  
धरती । भूमि । २ भूमण्डल । ससार ।  
दुनिया ।

भूतवाद-सज्ञा पु० दे० 'पदायवाद' ।  
भूतवाहन-सज्ञा पु० महादेव ।  
भूतविनायक-सज्ञा पु० शिव ।  
भूतातक-सज्ञा पु० १ यम । २ खड्ग ।  
भूतात्मा-सज्ञा पु० १ जीवात्मा । २ शरीर ।  
३ परमेश्वर । शिव ।

भूताधिपति-सज्ञा पु० शिव ।  
भूताधि-सज्ञा पु० १ परमेश्वर । २ अहंकार तत्त्व ।

भूतायन-सज्ञा पु० नारायण । परमेश्वर ।  
भूतावास-सज्ञा पु० १ ससार । २ देह । ३ बहेड़े का वृक्ष । ४ विष्णु ।

भूताविष्ट-वि० जिसे भूत लगा हो ।  
भूति-सज्ञा स्त्री० १ वसन । धन-संपत्ति ।  
राज्य-श्री । २ भस्म । राख । ३ सत्ता । ४

विष्णु । ५ उत्पत्ति । ६ अधिकता । वृद्धि ।  
७ आठ प्रकार की मिट्टियाँ ।

भूतिकाम-वि० एदवय की कामना करने-वाला ।

सज्ञा पु० १ राजा का मंत्री । २ बृहस्पति ।

भूतिकृत्-सज्ञा पु० शिव ।  
भूतिद-सज्ञा पु० शिव ।  
भूतिवा-सज्ञा स्त्री० गया ।  
भूतिनी-सज्ञा स्त्री० १ भूत-योनि में प्राप्त स्त्री । २ डाकिनी । शार्किनी ।

भूतिवाहन-सज्ञा पु० शिव ।  
भूतृण-सज्ञा पु० रसा भाव ।  
भूतेश-सज्ञा पु० १ भूतप्रेता के स्वामी । शिव ।  
२ समस्त जीवों के स्वामी । परमेश्वर ।

भूतेश्वर-सज्ञा पु० महादेव ।  
भूतोन्माद-सज्ञा पु० वह उन्माद, जो पिशाचा के जन्मण के कारण हो ।

भूतम-सज्ञा पु० सोना ।  
भूदार-सज्ञा पु० मूजर ।

भूदारक-सज्ञा पु० मूर । योद्धा । बहादुर ।  
भूदेव या भूदेवता-सज्ञा पु० ब्राह्मण ।

भूधर-सज्ञा पु० १ पहाड़ । पर्वत । २ क्षपनाग । ३ विष्णु । ४ राजा ।

भूधरेश्वर-सज्ञा पु० पहाड़ा के राजा या स्वामी । हिमालय ।

भूधृति-सज्ञा स्त्री० जोतने-बोन के लिए किसान का जमीन पर अधिकार ।

भूतना-कि० सं० १ जाग में डालकर पकाना ।  
गरम घी या तेल आदि में डालकर कुछ देर तक बलाना । तलना । २ बहुत अधिक कष्ट देना ।

भूनेता-सज्ञा पु० राजा ।  
भूप-सज्ञा पु० राजा ।  
भूपय-सज्ञा पु० राजा ।  
भूपति-सज्ञा पु० राजा । भूमि का स्वामी ।

भूपर-सज्ञा पु० भूत ।  
भूपरा-सज्ञा पु० भूय ।

भूपाल-सज्ञा पु० राजा । पृथ्वी का पालन-पोषण करनेवाला ।

भूपाली-सज्ञा स्त्री० एक रागिनी ।  
भूपुत्र-सज्ञा पु० मंगल-ग्रह ।

भूपुत्री-सज्ञा स्त्री० सीता ।  
 भूप्रकम्प-सज्ञा पु० भूकम्प ।  
 भूमल-सज्ञा स्त्री० गरम बालू । गरम राख ।  
 सूर्य की किरणों से तपी हुई धूल ।  
 भूमज-सज्ञा पु० राजा ।  
 भूमरी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "भूमल" । गरम  
 राख या धूल ।  
 भूमृत-सज्ञा पु० १ राजा । २ पहाड़ ।  
 भूमडल-सज्ञा पु० पृथ्वी । ससार ।  
 भूमध्यसागर-सज्ञा पु० योरोप और अफ्रीका के  
 बीच का समुद्र (अग्रे०-मेडिटरेनियन सी) ।  
 भूमाप-सज्ञा पु० भूमि नापने की कोई नाप ।  
 दे० "भूमापन" ।  
 भूमापक-सज्ञा पु० जमीन की नाप-जोख  
 या जाँच-मडताल करनेवाला । (अग्रे०-  
 सर्वे) ।  
 भूमापन-सज्ञा पु० खेतीवारी के लिए जमीन  
 की नाप-जोख या जाँच-मडताल । (अग्रे०-  
 सर्वे) ।  
 भूमि-सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी । जमीन । खेत ।  
 खेती करने या मकान आदि बनाने के काम  
 में जानेवाली जगह । २ स्थान । आधार ।  
 भूमिकम्प-सज्ञा पु० दे० "भूकम्प" ।  
 भूमिका-सज्ञा स्त्री० १ कोई चीज करने या  
 कहने के पहले उसका आधार बताने के  
 लिए कही गई बात । प्रस्तावना ।  
 किसी ग्रन्थ के आरम्भ की वह सूचना या  
 वक्तव्य, जिससे उस ग्रन्थ के सबष की  
 आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले ।  
 २ पृष्ठभूमि । आधार । ३ वेदात् के अनुसार  
 चित्त की पाँच अवस्थाएँ-क्षिप्त, मूढ,  
 विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध । ४ उपक्रम ।  
 कोई काम करने की तैयारी । ५ पृथ्वी ।  
 जमीन ।  
 भूमिचल-सज्ञा पु० दे० "भूकम्प" ।  
 भूमिज-वि० भूमि से उत्पन्न ।  
 सज्ञा पु० १ सोना । २ मंगल-ग्रह ।  
 भूमिजा-सज्ञा स्त्री० सीताजी । पृथ्वी से  
 पैदा हुई ।  
 भूमिजोषी-सज्ञा पु० १ किसान । २ बंद्य ।  
 भूमिदेव-सज्ञा पु० १ ब्राह्मण । २. राजा ।

भूमिधर-सज्ञा पु० १. पर्वत । २ शोपनाग ।  
 ३. उत्तर प्रदेश के जमींदारी उन्मूलन  
 और भूमि-सुधार कानून के अनुसार एक  
 विशेष प्रकार का किसान ।  
 भूमिपति-सज्ञा पु० राजा ।  
 भूमिपाल-सज्ञा पु० राजा ।  
 भूमिपुत्र-सज्ञा पु० मंगल-ग्रह ।  
 भूमिपुत्री-सज्ञा स्त्री० सीता ।  
 भूमिया-सज्ञा पु० १ जमींदार । २. ग्राम-  
 देवता ।  
 भूमिसुत-सज्ञा पु० मंगल ग्रह ।  
 भूमिसुता-सज्ञा स्त्री० जानकीजी ।  
 भूमिसुर-सज्ञा पु० ब्राह्मण ।  
 भूमिहार-सज्ञा पु० एक जाति, जो बिहार  
 और उत्तर प्रदेश में पाई जाती है ।  
 भूमोन्द्र-सज्ञा पु० राजा ।  
 भूय-अव्य० १ पुन । फिर । २ बहुत ।  
 भूयण-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।  
 भूयसी-वि० बहुत अधिक  
 क्रि० वि० बार-बार ।  
 भूपत्नी दक्षिणा-सज्ञा स्त्री० मंगल-कार्य  
 समाप्त होने पर ब्राह्मणों को दी जानेवाली  
 दक्षिणा या दान ।  
 भूर-वि० बहुत । अधिक ।  
 सज्ञा पु० बालू ।  
 सज्ञा स्त्री० मंगल-उत्सव के समय की  
 दक्षिणा । दान ।  
 भूरज-सज्ञा पु० १ धूल । गर्द । मिट्टी । २.  
 भोजपत्र ।  
 भूरजपत्र-सज्ञा पु० दे० "भोजपत्र" ।  
 भूरपूर-वि०, क्रि० वि० दे० "भरपूर" ।  
 भूरसी दक्षिणा-सज्ञा स्त्री० किसी उत्सव या  
 धर्मकार्य के अन्त में उपस्थित ब्राह्मणों को  
 दी जानेवाली दक्षिणा ।  
 भूरा-सज्ञा पु० १ ताल और पीला मिला हुआ  
 रंग । छाकी रंग । २ कच्ची चीनी । चीनी ।  
 वि० मटमले रंग का । छाकी ।  
 भूरि-सज्ञा पु० १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३.  
 शिव । ४ इंद्र । ५ स्वर्ण । सोना ।  
 वि० अधिक । बहुत । प्रचुर । भारी ।  
 भूरिज्-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी ।

भूरिता-सज्ञा स्त्री० अधिवृत्ता।  
 भूरितेज-सज्ञा पु० १. दे० "भूरितेजस्"।  
 अग्नि। २ सोना।  
 भूरितेजस्-सज्ञा पु० १. अग्नि। २ सोना।  
 भूरिबक्षिण-सज्ञा पु० विष्णु।  
 भूरुह-सज्ञा पु० वृक्ष।  
 भूर्जपत्र-सज्ञा पु० भोजपत्र।  
 भूर्जि-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी। मृत्युलोक।  
 भूर्लोक-सज्ञा पु० मृत्युलोक। सत्तार।  
 भूल-सज्ञा स्त्री० १ भूलने का भाव। याद न  
 आने का भाव। विस्मृति। गलती। चूक।  
 २ कसूर। दोष। अपराध। अशुद्धि।  
 भूलक\*†-सज्ञा पु० भूल करनेवाला। भूलने-  
 वाला। जिससे भूल होती हो। दोषी।  
 भूलना-क्रि० सं० १ विस्मरण करना। याद  
 न रहना। गलती करना। २ खो देना।  
 क्रि० अ० १ विस्मृत होना। याद न रहना।  
 गलती होना। २ आसक्त होना।  
 लभाना। ३ घमड़ में होना। इतराना। ४  
 खो जाना।  
 भूलभूलैयाँ-सज्ञा स्त्री० १ वह घुमावदार  
 और घबकड़ में डालनेवाली इमारत, जिसमें  
 जाकर आदमी इस प्रकार भूल जाता है  
 कि फिर बाहर नहीं निकल सकता। २  
 चकावू। ३ बहुत घुमाव-फिराव की बात  
 या घटना। पेचीदी बात।  
 भूलोक-सज्ञा पु० सत्तार। जगत। मृत्युलोक।  
 भूलोदन-वि० पृथ्वी पर लोटनेवाला।  
 भूवल्लभ-सज्ञा पु० राजा।  
 भूवा-सज्ञा पु० रुई।  
 वि० उजला। श्वेत। सफेद।  
 भूशक-सज्ञा पु० राजा।  
 भूशय्या-सज्ञा स्त्री० भूमि की सेज।  
 भूशयो-वि० १ पृथ्वी पर सोनेवाला। २  
 पृथ्वी पर गिरा हुआ। ३ मृतक। मरा  
 हुआ।  
 भूयक-वि० शृंगार करनेवाला। अलंकार  
 करनेवाला।  
 भूयण-सज्ञा पु० १ गहना। अलंकार। जेवर।  
 मोभा या गुन्दरता पहननेवाली वस्तु। २  
 हिन्दी में चौरस के सबसे बड़े कवि, जिन्होंने

शिवजी तथा छत्रसाल महाराज आदि की  
 प्रशंसा में ओजपूर्ण कविताएँ की थी।  
 भूयन\*-सज्ञा पु० दे० "भूयण"।  
 भूयना\*†-क्रि० सं० सजाना। भूयित करना।  
 अलङ्कृत करना।  
 भूया-सज्ञा स्त्री० १. नूपण। गहना। जेवर।  
 २ सजाने की त्रिया।  
 भूयित-वि० १. गहना पहने हुए। अलङ्कृत।  
 २ सजाया हुआ। सज्जित। सँवारा हुआ।  
 भू-सम्पत्ति-सज्ञा स्त्री० जायदाद। अचल  
 सम्पत्ति। खेत, मकान, जंगल आदि के  
 रूप में सम्पत्ति।  
 भूसना\*†-क्रि० अ० दे० "भूकना"।  
 भूसा-सज्ञा पु० भूख। भूसी। गेहूँ, जी आदि  
 के ढठला का चूरा।  
 भूसी-सज्ञा स्त्री० १. भूसा। २. किसी अन्न  
 या दाने के ऊपर का छिलका।  
 भूसुत-सज्ञा पु० १. वृक्ष। पेड़। पीछा। २.  
 भगलग्रह।  
 भूमुता-सज्ञा स्त्री० सीता।  
 भूसुर-सज्ञा पु० ब्राह्मण।  
 भूस्वामी-सज्ञा पु० जमीन का मालिक।  
 वह व्यक्ति, जिसे किसी जमीन पर पूरा  
 अधिकार हो।  
 भूहरा\*-सज्ञा पु० दे० "भूइहरा"।  
 भूग-सज्ञा पु० १ भौरा। २ एक प्रकार  
 का कीड़ा। ३ विजली।  
 भूगराज-सज्ञा पु० १ भूगरा नामक वनस्पति।  
 भूगैया। २ काले रंग का एक पक्षी।  
 भीमराज।  
 भूगरीट-सज्ञा पु० लोहा।  
 भूगाभीष्ट-सज्ञा पु० अन्न का वृक्ष।  
 भूगर-सज्ञा पु० १ लीग। २ सोना।  
 भूगारि-सज्ञा स्त्री० केवडा।  
 भूगी-सज्ञा पु० शिवजी का एक गण।  
 सज्ञा स्त्री० १ भौरी। २. विलम्बी।  
 भूगीश-सज्ञा पु० शिव।  
 भूकुटी-सज्ञा स्त्री० भीह।  
 भूग-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध मुनि जिनके  
 बारे में पुराणा में कहा गया है कि इन्होंने  
 विष्णु की छाती में सात भारी थी।

२. शिव। ३. परशुराम। ४. शुक्राचार्य।  
५. शुक्रवार। ६. पर्वत का किनारा।

भृगुनाथ—सज्ञा पु० परशुराम।

भृगुपति—सज्ञा पु० परशुराम।

भृगुरेखा—सज्ञा स्त्री० विष्णु की छाती पर का वह चिह्न, जो भृगु मुनि के लात मारने से हुआ था।

भृत—सज्ञा पु० [स्त्री० भृता] भृत्य। दास।

वि० १. भरा हुआ। पूरित। २. पाला हुआ। पोषण किया हुआ। पोषित।

भृतक—सज्ञा पु० नौकर।

भृति—सज्ञा स्त्री० १. नौकरी। २. मजदूरी।  
वेतन। तनखाह। मूल्य। दाम। ३. भरना।  
पालन करना।

भृत्य—सज्ञा पु० [स्त्री० भृत्या] नौकर।  
सेवक। दास।

भृत्या—सज्ञा स्त्री० दासी। वेतन।

भूमि—सज्ञा पु० घूमनेवाली वायु। बवडर।  
वि० घूमनेवाला।

भूश—क्रि० वि० बहुत। अधिक।

भेड—सज्ञा स्त्री० १. मिलना। मुलाकात।  
२. उपहार। ३. नजर या नजराना।

भेडना\*—क्रि० सं० १. भेड करना।  
मुलाकात करना। २. गले लगाना।

भेड—सज्ञा स्त्री० दे० "भेड"। मेप।

भेवना\*—क्रि० सं० भिगोना।

भेड\*—सज्ञा पु० भेद। रहस्य।

भेक—सज्ञा पु० दे० "भेडक"।

भेख—सज्ञा पु० दे० "वेप"।

भेखज\*—सज्ञा पु० दे० "भेपज"।

भेजना—क्रि० सं० किसी वस्तु या व्यक्ति  
को एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए रवाना  
करना। पठाना। पहुँचाना।

भेजवाना—क्रि० सं० भेजने का काम दूसरे से  
कराना।

भेजा—सज्ञा पु० सिर का गूदा। खोपड़ी के  
भीतर की वस्तु। मज्ज।

भेड—सज्ञा स्त्री० दे० "भेड"।

भेडना—क्रि० सं० दे० "भेडना"।

भेड—सज्ञा स्त्री० [पु० भेडा] बकरी को  
जाति का एक चोपाया, जिसके बाला

के ऊन से कम्बल बादि बनाए जाते हैं।  
गाडर।

मूहा०—भेडिया घसान=विना परिणाम  
सौचे समझे दूसरों का अनुसरण करना।

भेडा—सज्ञा पु० भेड़ जाति का नर। मेडा। मेप।

भेडिया—सज्ञा पु० कुत्ते की तरह का एक  
जंगली हिसक पशु। हुँडार।

भेडी—सज्ञा स्त्री० दे० "भेड"।

भेद—सज्ञा पु० १. भीतरी छिपा हुआ हाल।

रहस्य। मर्म। तात्पर्य। २. अन्तर। फर्क।

३. प्रकार। किस्म। ४. भेदने या छेदने की  
क्रिया। ५. शत्रु-मित्र के लोगो को बहुकाकर

अपनी ओर मिलाना अथवा उनमें द्वेष  
उत्पन्न करना।

भेदक—वि० १. छेदनेवाला। २. रेषक।

दस्तावर (वेधक)।

भेवडी—सज्ञा स्त्री० खडी। बत्तीधी।

भेदत—सज्ञा पु० [वि० भेदनीय, भेध]

भेदने की क्रिया। छेदना। वेधना।

भेदना—सज्ञा पु० छेदना। वेधना।

भेदभाव—सज्ञा पु० अंतर। पक्षपात। मतभेद।  
फरक।

भेदिया—सज्ञा पु० १. जागृत। गुप्तचर। भेद  
लेनेवाला। २. गुप्त रहस्य जाननेवाला।

भेदो—सज्ञा पु० भेदिया। गुप्तचर।

वि० भेदक। वेधक। भेदने या छेदने वाला।

भेदू—सज्ञा पु० दे० "भेदिया"।

भेध—वि० जो भेदा या छेदा जा सके। छेदने  
या भेदने योग्य।

भेन\*—सज्ञा स्त्री० बहिन।

भेना\*—क्रि० सं० दे० "भेवना"। भिगोना।

भेरा\*—सज्ञा पु० दे० "वेडा"।

भेरी—सज्ञा स्त्री० दुधुभि। बड़ा ढोल या  
नगाडा। ढक्का।

भेरीकार—सज्ञा पु० [स्त्री० भेरीकारी]

भेरी बजानेवाला।

भेला\*—सज्ञा पु० [सज्ञा स्त्री० भेली]

१. बड़ा गोला। पिंड। २. मिड़त।

भेट। ३. दे० "मिलावा" (पेड)।

भेली\*—सज्ञा स्त्री० गुड या ओर किसी चीज  
की गोल पट्टी या पिंडी। गुड का लड्डू।

भेव\*—सज्ञा पु० १. दे० "भेद"। रहस्य।

२. स्वभाव। ३. फूट। ४. बारी। पारी।

भेवना\*—क्रि० सं० भिगोना।

भेव—सज्ञा पु० दे० "वेव"।

भेवज—सज्ञा पु० औषध। दवा।

भेवना\*—क्रि० सं० भेव बनाना। स्वांग बनाना। पहनना।

भेस—सज्ञा पु० दे० "वेव"। १. बाहरी रूप और पहनावा आदि। २. दूसरी को दिखाने के लिए पहनावा। वनावटी रूप।

भेसज\*—सज्ञा पु० दे० "भेवज"।

भेसना\*—क्रि० सं० भेस धारण करना। धरन आदि पहनना।

भेस—सज्ञा स्त्री० गाय की जाति और आकार-प्रकार का, पर उससे बड़ा काला मादा गोमाया, जिसका दूध लोग पीते हैं।

भेसा—सज्ञा पु० भेस का नर।

भेसासुर—सज्ञा पु० दे० "महिषासुर"।

भे\*—सज्ञा पु० दे० "भय"।

भेचक, भेचकर\*—वि० दे० "भोचक्का"। चरुपकाया हुआ। चकित।

भेजना\*—वि० डरावना। भयप्रद।

भेडा\*—वि० दे० "भयदा"। डरावना। भयप्रद।

भेग, भेना या भेनी—सज्ञा स्त्री० दे० "मणिनी"। वहित।

भेया—सज्ञा पु० भाई। बड़ा भाई। बराबर-पालो या छोटी के लिए (स्नेह का) सखो-धन शब्द।

भेयाचारी—सज्ञा स्त्री० दे० "भाईचारा"।

भेयादूज—सज्ञा स्त्री० कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भाईदूज। इस दिन वहिर्न भाइयों को टीका लगाती है।

भेयापा—सज्ञा पु० भाईचारा।

भेरव—वि० भयकर। भीषण। डरावनी शक्ति या आकृति का। भयानक शब्दवाला। सज्ञा पु० शिव के गणों के प्रधान या अधिपति। सगीत के ६ रागों में एक मुख्य राग। भयानक शब्द।

भेरवी—सज्ञा स्त्री० १. एक रागिनी, जो बहुत सवेरे गाई जाती है। प्रातःकाल का सगीत। २. एक प्रकार की देवी, जो महाविद्या की

एक मूर्ति मानी जाती है। ३. तांत्रिकों की एक देवी। पार्वती। चामुंडा।

भेरवी-चक्र—सज्ञा पु० तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह चक्र, जो किसी विशिष्ट स्थिति, नक्षत्र या समय में देवी का पूजन करने के लिए एकत्र होता है।

भेरवी-पातना—सज्ञा स्त्री० पुराणानुसार वह पातना जो प्राणियों को मरते समय भेरवी देते हैं।

भेवा\*—सज्ञा पु० दे० "भया"।

भेवावा\*—सज्ञा पु० दे० "भयवाद"। भाई-चारा। विरादरी। कुटुम्ब।

भेवज या भेवज्य—सज्ञा पु० औषध। दवा।

भेहा\*—सज्ञा पु० १. डरा हुआ। २. जिस पर भूत या किसी देव का आवेश आता हो।

भोकना—क्रि० सं० १. चुभाना। बरछी, तलवार आदि नुकीली चीज जोर से घसाना। घुसे-डना। २. भौं-भौ करना।

भोडा—वि० [स्त्री० भोड़ी] भड़ा। भड़ी शक्ति या आकृति का। कुडोल। यदमूर्त। कुरूप।

भोडापन—सज्ञा पु० भदापन। बेंहदगी।

भोडू—वि० वृद्ध। बेचकूफ। मूर्ख।

भोपा या भोपू—सज्ञा पु० फूँककर बजाने का एक वाजा, जिससे जोर की आवाज निकलती है।

भोससे—सज्ञा पु० महाराष्ट्रों के एक राजकुल की उपगोत्रि। (महाराज शिवाजी और नागपुर के रघुनाथराव आदि इसी कुल के थे।)

भो\*—सज्ञा पु० हे। बहो।

क्रि० अ० भया। हुआ।

भोकस\*—वि० भुत्खड।

सज्ञा पु० १. डरावना। २. जोडा।

भोकर—सज्ञा स्त्री० जोर-जोर से रोना।

भोचता—वि० १. भोजन करनेवाला। २. भोग करनेवाला। भोगनेवाला। ३. ऐसाध।

भोग—सज्ञा पु० १. सुख या दुःख का अनुभव करना। सुख। पिलास। २. दुःख। कष्ट। ३. स्त्री-सभोग। विषय। ४. पन। ५. पालन। ६. भोजन करना। भक्षण। ७. देह। ८. पाप या पुण्य का फल, जो सहन किया या

भोगा जाता है। १. प्रारब्ध। १०. फल।  
११. अर्थ। १२. देवता आदि को  
बढ़ाए जानेवाले खाद्य पदार्थ। नैवेद्य।  
१३. सूर्य आदि ग्रहों के राशियों में रहने  
का समय।

भोगना-क्रि० अ० १. भुगतना। सहन करना।  
सहना। २. सुख-दुःख अनुभव करना। अच्छे-  
बुरे कार्यों का फल पाना।

भोगवधक-सज्ञा पु० एक प्रकार का रेहन या  
वधक, जिसमें व्याज के बदले में रेहन रखी  
हुई भूमि या मकान आदि का उपयोग करने  
का अधिकार होता है। दृष्टवधक का उल्टा।

भोगवाना-क्रि० स० दूसरे से भोग कराना।

भोग-विलास-सज्ञा पु० आनन्द-प्रमोद। ऐश्वर्य-  
व्याराम। सुख-चैन से जीवन व्यतीत करना।

भोगाना-क्रि० स० दे० "भोगवाना"।

भोगी-सज्ञा पु० भोगनेवाला।

वि० १ सुखी। २ इन्द्रियों का सुख चाहने-  
वाला। भुगतनेवाला। ३ विषयासक्त।

विलासी। दुराचारी। आनन्द करनेवाला।

भोग्य-वि० भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।

भोग्यमान-वि० जिसका भोग होने को हो।

जो अभी भोगा न गया हो।

भोग्या-सज्ञा स्त्री० भोगी जानेवाली। वेश्या।

भोज-सज्ञा पु० १ बहुत से लोगों का एक

खाद्य बैठकर खाना-पीना। दावत। जेवतार।

२. खाने की चीज। ३. भोजक प्रदेश, जिसे

आजकल भोजपुर कहते हैं। ४. मालवा के

परमार-वंशी एक प्रसिद्ध राजा, जो संस्कृत के

बहुत बड़े विद्वान् और कवि थे। भोजदेव।

भोजक-सज्ञा पु० भोग करनेवाला। भोगी।

ऐयाश। विलासी।

भोजकट-सज्ञा पु० एक प्राचीन नगर तथा

प्रदेश, जिसे आजकल भोजपुर कहते हैं।

भोजदेव-सज्ञा पु० मालवा के परमार-वंशी

प्रसिद्ध राजा भोज, जो संस्कृत के बड़े विद्वान्

और कवि थे।

भोजन-सज्ञा पु० खाना। खाने की सामग्री।

भोजनभट्ट-सज्ञा पु० बहुत अधिक खाने

वाला। पेंडू।

भोजनालय-सज्ञा पु० खोईपर। होटल।

ऐसा स्थान, जहाँ दाम लेकर भोजन दिया  
जाता हो।

भोजपत्र-सज्ञा पु० एक प्रकार का छोटा पेड़,  
जिसकी छाल प्राचीन काल में ग्रथ और

लेख आदि लिखने के काम आती थी।

भोजपुरी-सज्ञा स्त्री० भोजपुर की भाषा।

सज्ञा पु० भोजपुर का निवासी।

वि० भोजपुर का। भोजपुर-सबधी।

भोजराज-सज्ञा पु० दे० "भोजदेव"।

भोजविद्या-सज्ञा स्त्री० इद्रजाल। बाजीगरी।

भोजी-सज्ञा पु० खानेवाला।

भोज\* -सज्ञा पु० भोजन।

भोज्य-सज्ञा पु० खाने की वस्तु। खाद्य पदार्थ।

वि० खाने योग्य। जो खाया जा सके।

भोट-सज्ञा पु० १. भूटान देश। २ एक प्रकार

का बड़ा पत्थर।

भोटिया-सज्ञा पु० भूटान देश का निवासी।

सज्ञा स्त्री० भूटान देश की भाषा।

वि० भूटान देश-सबधी। भूटान का।

भोटिया बावाम-सज्ञा पु० अलबुखारा। २.

मूंगफली।

भोहरा\* -सज्ञा पु० अभ्रक। अवरक। अभ्रक का

चूर। बुक्का।

भोडल-सज्ञा पु० दे० "अवरक"।

भोतर, भोतरा या भोतल-वि० जिसकी धार

तेज न हो (अस्त्र या ओजार)। कुद। कुठित।

भोता-वि० दे० "भोतर"।

भोथरा-वि० दे० "भोतर"। जिसकी धार तेज

न हो (अस्त्र या ओजार आदि)। कुद।

भोता\* -क्रि० अ० १ भीनना। सचरित

होना। २. लिप्त या लीन होना। आसक्त

होना।

भोर-सज्ञा पु० प्रातःकाल। तड़का। बहुत

सबरे।

वि० चकित। भौचका।

\*वि० दे० "भोला"। सीधा।

भोरा\* -सज्ञा पु० दे० "भोर"।

\*वि० दे० "भोला"। सीधा।

भोराई\* -सज्ञा स्त्री० दे० "भोलापन"।

भोराना\* -क्रि० स० ग्राम में डालना। बह-

काना।

क्रि० अ० धोले में जाता।

भोला-वि० सीधा-सादा। सरल। निष्पट।  
जल्दी से किसी के बहकावे में आ जाने वाला।  
नासमझ।

भोलानाय-सज्ञा पु० शिव।

भोलापन-सज्ञा पु० १ सिधाई। सरलता। २.  
सादगी। निष्पटता। ३ नादागी।  
नासमझी।

भोलाबाबा या भोलेबाबा-वि० १. शिवजी  
का विशेषण। दे० "भोलानाय"। २. सामु-  
सन्पासी।

भोला-भाला-वि० सीधा-सादा। सरल स्वभाव  
का। निष्पट।

भोसर-वि० मूर्ख।

भौ-सज्ञा स्त्री० दे० "भौह"।

भौकना-क्रि० अ० १. भौ-भौ शब्द करना।  
कुत्ते का बोलना। भूकना। २ बहुत  
बकबाद करना।

भौवाल-सज्ञा पु० दे० "भूकप"।

भौरी-सज्ञा स्त्री० पहाड़ी टीला।

भौतुआ-सज्ञा पु० १ जल-भौरा। २ काँत  
में निकलनेवाली एक प्रकार की गिल्टी।  
३ तेली का बेल, जो सवेरे से ही कोलू में  
जीता जाता है और दिन भर घूमा  
करता है।

भौर-सज्ञा पु० १. भौरा। २. तेज बहते हुए  
पानी में पड़नेवाला चक्कर। भँवर। ३.  
मुक्की घोड़ा।

भौरा-सज्ञा पु० [स्त्री० भैरवी] १. बाले  
रंग का उड़नेवाला एक पक्षी, जो फूलों का  
रस चूसता है। २. एक प्रकार का खिलौना।  
३. हिंडोले की वह लकड़ी, जिसमें डोरी बँधी  
रहती है। ४. मकान के नीचे का घर। तह-  
खाना। ५. अंदर रखने का गड्ढा। खता।

भौराना-क्रि० सं० १. चारों ओर घूमना।  
परिक्रमा कराना। २. विवाह की भाँवर  
दिलाना। ३. विवाह करना।

क्रि० अ० घूमना। चक्कर काटना।

भौरी-सज्ञा स्त्री० १. भौरा की मादा। २.  
पशुओं के शरीर में बाला के घुमाव से बना  
॥ वह पशु जिसके श्वात आदि के विचार

से उनके गुण-दोष का निर्णय होता है। ३.  
विवाह के समय बर-बपू भा अग्नि की परिक्रमा  
करना। भाँवर। ४. तेज बहते हुए जल में  
पड़नेवाला चक्कर। भँवर। ५. अगावड़ी।  
वाटी। कडे में पकाई जानेवाली सत्तू आदि  
भरी हुई आटे की गोल-गोल टिकिया।

भौह-सज्ञा स्त्री० आँख के ऊपर की हड्डी  
पर के रोएँ या बाल। भुट्टी। भौ।

भूहा-भौ चढ़ाना या तानना=बूढ़  
होना। नाराज होना। खोरी चढ़ाना।  
बिगड़ना। भौह जोहना=खुशामद करना।

भौहरा-सज्ञा पु० दे० "भूँहरा"।

भौ-सज्ञा पु० १. दे० "भय"। सत्तार। २.  
दे० "भय"। डर।

भोगिया-सज्ञा पु० सत्तार के सुत्ता को  
भोगनेवाला।

भोगोलिक-वि० भूगोल का। भूगोल-सम्बन्धी।

भौचक-वि० भौचक्का। हकका-बकका। सक-  
पकाया हुआ।

भोज-सज्ञा स्त्री० दे० "भोजाई"।

भोजाई-सज्ञा स्त्री० भ्रातृजाया। बड़े भाई  
की स्त्री। भाभी। भाबज।

भौतिक-वि० १ पार्थिव। सासारिक। पञ्च-  
भूत-संबन्धी। २ पञ्चा भूता से बना हुआ।  
३ शरीर-संबन्धी। शारीरिक।

भौतिकवाद-सज्ञा पु० वह सिद्धान्त, जिसमें  
भौतिक पदार्थों को ही सब कुछ माना जाता  
है और जिसमें आत्मा या ईश्वर आदि नहीं  
माने जाते। पदार्थवाद।

भौतिक विज्ञान-सज्ञा पु० वह विज्ञान, जिसमें  
पृथ्वी, जल, वायु, प्रकाश आदि भौतिक  
तत्त्वा का विवेचन होता है। पदार्थ-विज्ञान  
(अप्रे०-फिजिक्स)।

भौतिक विद्या-सज्ञा स्त्री० १. दे० "भौतिक-  
विज्ञान"। २. भूता प्रेता को धुलाने और  
उन्हें दूर करने की विद्या।

भौतिक सृष्टि-सज्ञा स्त्री० सासारिक रचना।  
आठ प्रकार की देव-योनि, पाँच प्रकार की  
तिर्यग्-योनि और मनुष्य-योनि, इन सबकी  
समष्टि।

भोन-सज्ञा पु० घर। मकान। भवग।

भोना\*†-क्रि० अ० घूमना। भ्रमण करना।  
 भोम-वि० १. भूमि-संबंधी। भूमिका। २.  
 भूमि से उत्पन्न।  
 सज्ञा पु० मंगल-ग्रह।  
 भोमवार-सज्ञा पु० मंगलवार।  
 भौमिक-सज्ञा पु० भूमि का मालिक। भूमि  
 पर जिसका असली अधिकार हो।  
 वि० भूमि-संबंधी। भूमि का।  
 भोर\*-सज्ञा पु० १. दे० "भोरा"। २. दे०  
 "भेवर"।  
 भोसा-सज्ञा पु० १. भौंड-भांड। २. हो-हुल्लड।  
 गडबड। उपद्रव।  
 भंश-सज्ञा पु० १. नाश। २. ध्वंस। ३. अध-  
 पतन। नीचे गिरना। भागना।  
 वि० भ्रष्ट। खराब।  
 भुक्रुटि-सज्ञा स्त्री० मोह।  
 भ्रम-सज्ञा पु० १. संशय। सदेह। शक। २.  
 किसी चीज या बात को कुछ का कुछ सम-  
 क्षता। मिथ्या ज्ञान। भ्रांति। माया। धोखा।  
 ३. एक प्रकार का रोग, जिसमें चक्कर  
 आता है। मूर्च्छा। बेहोशी। ४. भ्रमण। ५.  
 मान। प्रतिष्ठा। इज्जत।  
 भ्रमण-सज्ञा पु० १. घूमना-फिरना। विचरण।  
 २. जाना-जाना। यात्रा। सफर। ३. मंडल।  
 चक्कर। फेरी।  
 भ्रमना-क्रि० अ० १. घूमना। २. धोखा खाना।  
 ३. भूल करना। भटकना। भूलना।  
 भ्रममूलक-वि० जो भ्रम के कारण उत्पन्न  
 हुआ हो।  
 भ्रमर-सज्ञा पु० १. भौरा। २. कृष्ण के  
 सखा। उद्धव के लिए प्रयुक्त उपनाम।  
 यौ०—भ्रमर-गुफा=योगशास्त्र के अनुसार  
 हृदय के अंदर का एक स्थान। भ्रमरगीत=  
 वह गीत या काव्य, जिसमें उद्धव के प्रति  
 व्रज की गोपियों का उपालभ हो।  
 भ्रमरावली-सज्ञा स्त्री० भैरवी की पंक्ति या  
 झुंड।  
 भ्रमवात-सज्ञा पु० आकाश का वायुमंडल,  
 जो सर्वदा घूमा करता है।  
 भ्रमात्मक-वि० भ्रम उत्पन्न करनेवाला।  
 सदिग्ध।

भ्रमाना\*†-क्रि० स० १. भ्रम में डालना।  
 बहकाना। २. घुमाना। फिराना।  
 भ्रमित-वि० १. भ्रांत। जो भ्रम में पड़ा हो।  
 २. घूमता या चक्कर काटता हुआ।  
 भ्रमितनय-वि० ऐंछाताना। तिरछा देखने-  
 वाला।  
 भ्रमी-वि० १. जिसे भ्रम हुआ हो। चकित।  
 मोचक। २. उन्मत्त।  
 भ्रष्ट-वि० १. गिरा हुआ। पतित। नीच।  
 २. दुराचारी। दूषित। बदचलन।  
 भ्रष्टा-सज्ञा स्त्री० छिनाल। दुराचारिणी।  
 भ्रांत-वि० १. जिसे भ्रम हो गया हो।  
 भ्रमित। जो भ्रम या धोखे में पड़ा हो। २.  
 व्याकुल। उन्मत्त।  
 भ्रांति-सज्ञा स्त्री० १. भ्रम। सदेह। धोखा।  
 शक। भूलचूक। २. मोह। प्रमाद। ३. एक  
 अलंकार, जिसमें समानता के कारण एक  
 वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का भ्रम होने  
 का वर्णन होता है।  
 भ्राजना-क्रि० अ० शोभा पाना। शोभित  
 होना। सुन्दर लगना। शोभायमान होना।  
 भ्राजमान\*-वि० शोभायमान।  
 भ्रात\*-सज्ञा पु० दे० "भ्राता"। भाई।  
 भ्राता-सज्ञा पु० सगा भाई।  
 भ्रातृज-सज्ञा पु० भतीजा।  
 भ्रातृजाया-सज्ञा स्त्री० भावज।  
 भ्रातृत्व-सज्ञा पु० भाई होने का भाव या  
 धर्म। वन्धुत्व। भाई-चारा।  
 भ्रातृद्वितीया-सज्ञा स्त्री० वार्तिक शुक्ल  
 द्वितीया। यमद्वितीया। भैया दुज।  
 भ्रातृपुत्र-सज्ञा पु० भतीजा।  
 भ्रातृभाव-सज्ञा पु० भाई का-सा प्रेम या  
 संबंध। भाई-चारा। भाईपन।  
 भ्रातृवधू-सज्ञा स्त्री० भावज। नाभी।  
 भ्रातृव्य-सज्ञा पु० भतीजा।  
 भ्रामक-वि० १. भ्रम में डालनेवाला। बहकाने-  
 वाला। सदेह उत्पन्न करनेवाला। २. घुमाने  
 या घूमनेवाला।  
 भ्रामर-सज्ञा पु० १. मधु। शहद। २. दाहे का  
 दूसरा भेद। ३. चुबक पत्थर।  
 वि० भ्रमर-संबंधी। भ्रमर का।

भाष्य-सज्ञा पु० १. आकाश। २. भाद, जिसमें भद्रभूजे अनाज भूतते हैं।

भू-सज्ञा स्त्री० मोह।

भूष-सज्ञा पु० १ स्त्री का गर्भ। २ गर्भ में बालक के रहने की अवस्था।

भूषहत्या-सज्ञा स्त्री० गर्भ में बालक को मार डालना।

भूषहा-सज्ञा पु० भूषहत्या करनेवाला व्यक्ति।

भूभन-सज्ञा पु० त्योरी चडाना। मोह चडाना।

भूविशेष-सज्ञा पु० मोह टेंकी करक देखना। त्योरी चडाना।

भूष-सज्ञा पु० १. नाच। २ चलना। गमन। ३ भय।

भूहरना\*†-क्रि० अ० डरना। नयभीत होना।

भूासर्ग-वि० मूलं।

## म

म-हिन्दी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अन्तिम वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान हाठ और नासिका है।

सज्ञा पु० १. शिव। २. चद्रमा। ३ ब्रह्मा।

४ यम। ५ मधुसूदन।

मकुर\*-सज्ञा पु० दे० 'मुकुर'।

मगता-सज्ञा पु० भिखमगा। माँगनेवाला।

मगन-सज्ञा पु० भिखमगा।

मँगनी-सज्ञा स्त्री० १ उधार। वह पदार्थ जो किसी से इस शर्त पर माँगकर लिया जाय कि कुछ समय के उपरांत उसे लौटा दिया जायगा। २ इस प्रकार माँगने की क्रिया या भाव। ३ विवाह के पहले की वह रस्म, जिसमें वर और कन्या का सबंध निश्चित होता है। सगाई।

मँगरा-सज्ञा पु० १ छान्द या भिरा। २ सपडा।

मगल-सज्ञा पु० १ कल्याण। कुशल। भलाई।

२ मनोकामना या इच्छा पूरी होना। अभीष्ट की सिद्धि। ३ सौरजगत् का एक प्रसिद्ध ग्रह। ४ मीम। मंगलवार।

मगलकलश(घट)-सज्ञा पु० शुभ अवसर पर पूजा के लिए या या हो रखा जानवाला जल से भरा हुआ घडा।

मगलपाठ-सज्ञा पु० दे० 'मगलाकरण'।

मगलपाठक-सज्ञा पु० बदीजन। मगल पाठ करनेवाले।

मगल पाँडे-सज्ञा पु० सन् १८५७ में भारतीय

स्वातन्त्र्य-संग्राम को गरठ में शुरू करनेवाले व्यक्ति का नाम।

मगलप्रद-वि० कल्याणकारी।

मगलवाद-सज्ञा पु० आशीर्वाद।

मगलवार-सज्ञा पु० सोमवार के उपरांत और बुधवार के पहले पड़नेवाला दिन। भागवार।

मगलसूत्र-सज्ञा पु० वह तागा, जो किसी देवता के प्रसाद-रूप में शुभ अवसरों पर पूजा के बाद कलाई में बाँधा जाता है।

मगलस्नान-सज्ञा पु० वह स्नान, जो मगल की कामना से किया जाता है।

मगला-सज्ञा स्त्री० १ पावती। २ पवित्रता स्त्री। ३ हल्दी।

मगलाचरण-सज्ञा पु० शुभ कार्य के आरम्भ में मगल की कामना के लिए पड़ा जानेवाला श्लोक या पद। किसी प्रथ के आरम्भ का स्तुति-सूचक पद।

मगलामुखी-सज्ञा स्त्री० वेद्या। रडी।

मगलालप-सज्ञा पु० परमेस्वर।

मगलाव्रत-सज्ञा पु० १ स्त्रियाँ का एक व्रत।

२ शिव।

मगली-वि० जिसकी जन्मकुडली के घोष, आठवें या बारहवें स्थान में मगल ग्रह पडा हो (अशुभ)।

मँगवाना-क्रि० स० मँगाना। दूसरे से माँगने का काम कराना। कोई चीज मोन सरीदकर या किसी से माँगकर लाने के लिए गहना। पास लाने के लिए कहना।

मंगाना-क्रि० स० "मंगवाना"।  
 मंगतर-वि० जिसकी किसी के साथ मंगनी (विवाह की बातचीत) हो चुकी हो।  
 मंगोल-सज्ञा पु० मध्य एशिया और उसके पूव की ओर बसनेवाली एक जाति।  
 मच, मचक-सज्ञा पु० १ छोटी पीड़ी। मंचिया।  
 २ खाट। छटिया। ३ ऊँचा बना हुआ मडप, जिस पर बैठकर सर्वज्ञाधारण के सामने किसी प्रकार का कार्य या भाषण किया जाय।  
 मछर\*-सज्ञा पु० १ मत्सर। २ मच्छर।  
 मजन-सज्ञा पु० १ दाँत साफ करने की बुकनी या नुण। २ दे० "मज्जन" (स्नान)।  
 मैजना-क्रि० अ० १ माँजा जाना। २ अभ्यास होना। मस्क होना।  
 मजरिका-सज्ञा स्त्री० दे० "मजरी"।  
 मजरित-वि० जिसमें मजरी लगी हो। मज-रियो से युक्त या भरा हुआ।  
 मजरी-सज्ञा स्त्री० १ नया निकला हुआ कल्ला। कोपल। २ कुछ पीघो में फूलो या फलो के स्थान पर एक सीके में खग हुए बहुत से दानो का समूह। (आम का चार)। ३ लता।  
 मैजाई-सज्ञा स्त्री० मैजान या माँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।  
 मैजाना-क्रि० स० माजन का काम दूसरे से कराना। दे० "माँजना"।  
 मजिका-सज्ञा स्त्री० वैश्या।  
 मजिल-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ यात्रा म ठहरने का स्थान। पड़ाव। २ यात्रा का अन्तिम स्थान। ३ मकान का खड या तल्ला। ४ अन्तिम उद्देश्य या लक्ष्य।  
 मजी-सज्ञा स्त्री० दे० 'मजरी'।  
 मजोर-सज्ञा पु० नूपुर। धुंधरू।  
 मज-वि० सुंदर। मनोहर।  
 मजुकेसी-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण। जिसके बाल बहुत सुन्दर हो।  
 मजुल-वि० सुंदर। मनोहर।  
 मजुलता-सज्ञा स्त्री० मनोहरता। सुदस्ता।  
 मजर-वि० [अ०] जो मान लिया गया हो। स्वीकृत।

मजरी-सज्ञा स्त्री० मजूर होने का भाव। स्वीकृति।  
 मज्जा-सज्ञा स्त्री० १ बहुत छोटी-सी सन्दूक। पिटारी। छोटा डिब्बा। २ शोली। धैली।  
 मंशपार-सज्ञा स्त्री० दे० "मशपार"।  
 मंशला-वि० दे० "मशला"। बीच का।  
 मसा\*+वि० मध्य का। बीच का।  
 सज्ञा पु० १ पलग। खाट। २ दे० "माँसा"।  
 मंसार+क्रि० वि० बीच में।  
 मंशिपार+वि० दे० 'मशपार'। बीच में। मध्य में।  
 मंशोला+वि० दे० 'मशोला'।  
 मंडई-सज्ञा स्त्री० शोपडी। कुटी।  
 मड-सज्ञा पु० भात का पानी। मांड।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "मडा"।  
 मडन-सज्ञा पु० १ शृंगार करना। सजाना। सँवारना। २ प्रमाण आदि-द्वारा कोई बात सिद्ध करना। 'खडन' का उलटा। ३ एक प्रसिद्ध मीमांसक मडन मिश्र।  
 मडना\*-क्रि० स० १ शृंगार करना। सजाना। मडित करना। २ युक्ति आदि देकर सिद्ध या प्रतिपादित करना। ३ भरना। ४ मर्दन करना। मसलना। दतना। कुचलना।  
 मडप-सज्ञा पु० १ उत्सव या समारोह आदि के लिए अस्थायी रूप से छाकर बनाया हुआ स्थान। चदोवा। मच। २ मगल-कार्य के लिए बाँस फूस से छाकर बनाया हुआ स्थान (विवाह म)। ३ मंदिर के ऊपर की गोल बनावट और उसके नीचे का स्थान।  
 मडपी-सज्ञा पु० छोटा मडप।  
 मंडरना-क्रि० अ० मडल बाँधकर छा जाना (जैसे बादल का)। चारों ओर से धर लेना। ऊपर फहराना।  
 मंडराना-क्रि० अ० १ किसी वस्तु के चारों ओर घूमते हुए उडना। २ किसी के चारों ओर घूमना। परिक्रमण करना। किसी के आस पास हो घूम फिरकर रहना। ३ ऊपर फहराना।  
 मडरी-सज्ञा स्त्री० प्याल की जनी चटाई।  
 मडल-सज्ञा पु० १ परिधि। चक्कर। गोलाई। वृत्त। गोल फैलाव। गोला। २ चदमा या सूर्य के चारों ओर पटनवाला धरा।

३ चारो दिशाओ का घेरा। परिवेश। ४ क्षितिज। ५ समाज। समूह। ६ भूमिखड। क्षेत्र। प्रदेश का वह विभाग, जो एक विशेष अधिकारी के अधीन हो। ७ ग्रह के घूमने की कक्षा। ८ ऋग्वेद का एक खंड। ९ बारह राज्या का समूह। १० गाँवों का समूह।

मडलनृत्य-सज्ञा पु० नाच का एक भेद।  
मडलपरिषद्-सज्ञा स्त्री० किसी मडल के निवासियों-द्वारा चुने प्रतिनिधियों की वह समिति, जो इस मण्डल की व्यवस्था करे।  
मडलाकार-वि० गोल।

मंडलाना-क्रि० अ० दे० "मंडराना"।

मडलायित-वि० गोल।

मडली-सज्ञा स्त्री० समूह। समाज। गोष्ठी।

मडलीक-सज्ञा पु० १ एक मडल या १२ राजाओं का अधिपति। २ दस लाख की आमदनीवाला।

मडलेश्वर-सज्ञा पु० दे० 'मडलीक'। एक मडल का अधिपति।

मंड्या-सज्ञा पु० मंडप।

मडा-सज्ञा पु० १ यो वस्तु के बराबर की एक नाप। २ धराव। मल। ३ माँड।

मंडारु-सज्ञा पु० १ तड़ा। २ छाया। दलिया।

मडित-वि० १ संजाया हुआ। विभूषित। २ छाया हुआ। आच्छादित। ३ भरा हुआ।

मंडो-सज्ञा स्त्री० बहुत भारी बाजार, जहाँ व्यापार की चीजें बहुत जाती हो। बड़ा हाट।

मंडू-सज्ञा पु० एक प्रकार का खराब अंस।

मडूक-सज्ञा पु० १ दोहा छंद का पाँचवाँ भेद।

२ प्राचीन काल का एक बाजा। ३ एक प्रकार का नृत्य। ४ मंडक। ५ एक ऋषि।

मडर-सज्ञा पु० गताए हुए लोहे की नैन। सोह-कीड़। सिपाही।

मडना-क्रि० स० १ ढकना। किसी वस्तु के ऊपर कोई चीज चढ़ाना। २ लाना। छिपाना।

मट-सज्ञा पु० १ सनाह। २ मय।

यी-उत्तम-मय-उपोग। प्रयत्न।

मत्तम-सज्ञा पु० विचार। मत।

मत्र-सज्ञा पु० १ गुप्त रखने योग्य रहस्य की बात। २ सलाह। परामर्श। ३ वैदिक वाक्य, जिनके द्वारा यज्ञ आदि कर्म-काण्ड करने का विधान हो, जैसे गायत्री। ४ वेदों का वह भाग, जिसमें मन्त्रों का संग्रह है। सहिता। ५ अलौकिक शक्तिसम्पन्न शब्द। ६ जादू का शब्द। ७ तंत्र में ये शब्द या वान्य, जिनका अप देवताओं की प्रसन्नता या कामनाओं की सिद्धि के लिए किया जाता है।

यी-मन्त्रयन या यन्त्रमन्त्र=जादू-टोना।

मन्त्रकार-सज्ञा पु० मन्त्र रचनवाला ऋषि।

मन्त्रगृह-सज्ञा पु० मन्त्रणा या परामर्श करने का निश्चित स्थान।

मन्त्रजल-सज्ञा पु० मन्त्र से प्रभावित किया हुआ जल।

मन्त्र-सज्ञा पु० १ नद या रहस्य जाननेवाला।

२ गुप्तचर। जासूस।

मन्त्र-सज्ञा पु० परामर्श। सलाह।

मन्त्रणा-सज्ञा स्त्री० १ परामर्श। सम्मति।

सलाह। मन्त्रिणा। २ सलाह करने के बाद निश्चित मत।

मन्त्रद-वि० परामर्श देनवाला।

मन्त्रधर-सज्ञा पु० मन्त्री।

मन्त्रपूत-वि० मन्त्र से पवित्र या शुद्ध किया गया। मन्त्र पढ़कर पूजा हुआ।

मन्त्रबीज-सज्ञा पु० मूल मन्त्र।

मन्त्रवादी या मन्त्रविद्-वि० दे० मन्त्र।

मन्त्रविद्या-सज्ञा स्त्री० तन्त्रविद्या। मन्त्रशास्त्र।

मन्त्र का ज्ञान प्राप्त करने की शिक्षा। तन्त्र।

मन्त्रसहिता-सज्ञा स्त्री० वेदों का वह भाग, जिसमें मन्त्रों का संग्रह हो।

मन्त्रसिद्धि-वि० जिसको मन्त्र सिद्ध हो।

मन्त्रसिद्धि-सज्ञा स्त्री० मन्त्र का सिद्ध होना।

मन्त्र का एना ज्ञान, जिससे उद्देश्य पूरा हो।

मन्त्रित-वि० मन्त्र से जिसका रस्कार किया गया हो। मन्त्र से शुद्ध। अभिमन्त्रित। जिस पर मन्त्र का प्रभाव पड़ा हो।

मन्त्रित्य-सज्ञा पु० मन्त्री का नाम या पद।

मन्त्रिमन्त्र-सज्ञा पु० किसी देश, राज्य, संस्था या सभ आदि के मन्त्रियों का समूह, जो उसका शासन संचालन करता है।

मन्त्री-सज्ञा पु० १. परामर्श देनेवाला। सलाह देनेवाला। २. वह प्रधान अधिकारी, जिसके परामर्श या आदेश से राज्य के, या राज्य के किसी विभाग के सब काम होते हैं। सचिव। वजीर। (अंग्रे०-मिनिस्टर)। ३. किसी सत्ता या सत्त का अवैतनिक अधिकारी, या सरकारी विभाग का वह अधिकारी, जो नियमित रूप से उसके सब काम चलाता हो।

मन्थ-सज्ञा पु० १. दे० "मथन"। मथना। विलोना। २. कम्पन। ३. मथानी।

मन्थज-सज्ञा पु० मन्थन।

मन्थन-सज्ञा पु० १. मथना। विलोना। २. अवगाहन। ३. खूब डूबकर पता लगाना। गहरी छान-बीन। ४. मथानी।

मन्थर-वि० [सज्ञा मन्थरता] १. मंद। धीमी चालवाला। धीमा। सुस्त। २. मंदबुद्धि। मूर्ख। नीच। ३. झुका हुआ। टेढ़ा। कुबड़ा। मन्थरा-सज्ञा स्त्री० कैंकेयी की एक दासी का नाम। इसी के बहकाने पर कैंकेयी ने रामचन्द्र को वनवास और भरत को राज्य देने की माँग दसरथ से की थी।

मन्थान-सज्ञा पु० १. मथानी। २. मंदर पर्वत। ३. महादेव। ४. एक वर्णिक छंद।

मन्थिता-वि० मथनेवाला।

मन्थिनो-सज्ञा स्त्री० माठ। मटका।

मन्थी-वि० १. मथनेवाला। २. कष्ट देनेवाला।

मन्ध-वि० १. धीमा। सुस्त। ढीला। सिधिल। आलसी। २. मूर्ख। कुबुद्धि। ३. खल। दुष्ट।

मन्दक-वि० मूर्ख। सुस्त।

मन्ध-वि० धीमा चलनेवाला।

मन्धति-सज्ञा स्त्री० १. धीमी चाल। २. ग्रहों की गति की अवस्था, जब वे अपनी मत्सा में घूमते हुए सूर्य से दूर निकल जाते हैं।

मन्ध-सज्ञा पु० देयदार।

मन्धता-सज्ञा स्त्री० धीमापन।

मन्धभाषी-वि० अभाषा।

मन्धभाष्य-वि० दुर्भाष्य। अभाष्य।

मन्ध-सज्ञा पु० १. पुराणानुसार एक पर्वत, त्रिशय देवताओं ने समुद्र की मत्सा या।

२. मन्दार। ३. स्वर्ग। ४. दर्पण। आर्द्रता। ५ एक वर्ण-वृत्त।

वि० मंद। धीमा।

मन्धरगिरि-सज्ञा पु० मन्दराचल।

मन्धरा-वि० नाटा। ठिंगना।

मन्धराचल-सज्ञा पु० मन्दर नामक पहाड़।

मन्धसान-सज्ञा पु० १. अग्नि। २. प्राण। ३. निद्रा।

मन्धसान-सज्ञा पु० १. स्वप्न। २. जीव।

मन्ध-वि० [स्त्री० मन्धी] १. धीमा। मंद। ढीला। सिधिल। २. कम दाम का। सस्ता। ३. खराब। निकृष्ट।

मन्धकिनी-सज्ञा स्त्री० १. पुराणानुसार गंगा की वह धारा, जो स्वर्ग में है। २. आकाश-गंगा। ३. एक नदी, जो चित्रकूट के पास है। ४. बारह अक्षरों की एक, वर्ण-वृत्ति। मन्धक्रांता-सज्ञा स्त्री० सत्रह-अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

मन्धानि-सज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें अन्न नहीं पचता। पाचन-शक्ति मन्द पड़ जाने की बीमारी। बदहजमी। अपच।

मन्धानल-सज्ञा पु० दे० "मन्धानि"।

मन्धार-सज्ञा पु० १. स्वर्ग का एक वृक्ष। देव-वृक्ष। २. मन्दार। आक। ३. स्वर्ग। ४. मन्दराचल पर्वत। ५. हाथी।

मन्धारमाला-सज्ञा स्त्री० बाईस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति।

मन्धिर-सज्ञा पु० १. देवता का निवास-स्थान। देवालय। २. घर। मकान। वासस्थान।

मन्धिरा-सज्ञा स्त्री० १. अश्वशाला। घुड़शाल। २. मन्जीरा।

मन्धिर-सज्ञा पु० दे० "मन्धिर"।

मन्धी-सज्ञा स्त्री० भाव का उतरना या गिरना। सस्ती। महँगे का उलटा।

मन्धीर-सज्ञा पु० मन्जीर।

मन्धुरा-सज्ञा पु० अश्वशाला। घुड़शाल।

मन्धुरिक-सज्ञा पु० साईल।

मन्धुरी-सज्ञा स्त्री० रावण की पटराही का नाम।

वि० छोटे पेटवाला।

मन्ध-सज्ञा पु० १. मन्जीर ध्वनि। २. हाथी

की एक जाति । ३. मुदग । ४. सगीत ।  
 में स्वरा के तीन भेदा म से एक ।  
 वि० १ सुदर । मनोहर । २ प्रसन्न । ३.  
 गभीर । ४ धीमा (शब्द आदि) ।  
 मंशा-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ इच्छा । २.  
 मतलब । अभिप्राय ।  
 मसना-नि० स० १ दे० "मनसना" । इच्छा  
 करना । २ सकल्य करना ।  
 मसव-सज्ञा पु० [अ०] १ पद । पदवी । २  
 काम । कर्तव्य । ३ अधिकार ।  
 मसवदार-सज्ञा पु० [का०] जो किसी मसव  
 पर हो । अधिकारी । मुसलमानी राज्य-काल  
 में एक प्रकार के अधिकारी, जिन्हें कुछ  
 सेना रखने का अधिकार होता था ।  
 मसा-सज्ञा स्त्री० दे० "मसा" ।  
 मसूख-वि० [अ०] खारिज किया हुआ । रद्द ।  
 काटा हुआ ।  
 मसूबा-सज्ञा पु० दे० "मनसूबा" । इरादा ।  
 सकल्य ।  
 मई-सर्व० दे० "म" ।  
 मइका\*-सज्ञा पु० मायका ।  
 मइमत\*-वि० दे० "मैमत" । मद से जन्मत ।  
 मइया-सज्ञा स्त्री० दे० "मैया" ।  
 मई-सज्ञा स्त्री० [अप्र०] अग्रजो वर्ष का  
 पाँचवाँ महिना ।  
 मकई-सज्ञा स्त्री० दे० "ज्वार" । एक अन्न ।  
 मकड़ा-सज्ञा पु० बड़ी मकड़ी ।  
 मकड़ी-सज्ञा स्त्री० एक कीड़ा, जो आने  
 शरीर से निकले हुए एक प्रकार के तन्तुओं  
 से जाला धुनकर मक्खियाँ आदि फँसाता है ।  
 मकतब-सज्ञा पु० [अ०] छोटे बालकों के  
 पढ़ने का स्थान । पाठशाला । मदरसा ।  
 मकतल-सज्ञा पु० [अ०] चप-स्थान । कल  
 करने की जगह ।  
 मकबूर-सज्ञा पु० [अ०] सामर्थ्य । शक्ति ।  
 मकनसित-सज्ञा पु० [अ०] चुपक पत्थर ।  
 मकफूल-वि० [अ०] [सज्ञा स्त्री० मक-  
 फूलियत] रेहन किया हुआ या बंधक  
 रखा हुआ ।  
 मकबर-सज्ञा पु० [अ०] लाल गाड़ी गई  
 जगह पर बनी हुई इमारत । मजार । समाधि ।

मकबूल-वि० १ कबूल किया हुआ । स्वीकृत ।  
 २ चुना हुआ । ३ अच्छा । प्रिय ।  
 मकरद-सज्ञा पु० १. पराग । फूल का रस,  
 जिसे मधुमक्खियाँ और भोरें आदि चूसती  
 हैं । फूल का केसर । २. कुद । ३ माधवी ।  
 ४. मजरी ।  
 मकर-सज्ञा पु० १. दे० "मक" । मगर या घड़ि-  
 याल । २. मछली । ३. बारह राशियाँ में  
 से दसवीं राशि । ४. कलित ज्योतिष क  
 अनुसार एक लग्न । ५. सेना का एक  
 प्रकार का व्यूह । ६ माघ मास । ७ छत ।  
 कपट । धोखा । ८. नखरा ।  
 मकरकेतु-सज्ञा पु० कामदेव (जिसके सड़े  
 पर मछली का निशान हो) ।  
 मकरकुडल-सज्ञा पु० मकर या मछली के  
 आकार का काना म पहनने का एक पहना ।  
 कुदल ।  
 मकरतार-सज्ञा पु० बादले का तार ।  
 मकरध्वज-सज्ञा पु० १ कामदेव । वदर्प ।  
 २. सिंघुर । ३. चन्द्रोदय रस ।  
 मकरपति-सज्ञा पु० १. कामदेव । २. ग्राह ।  
 मकरव्यूह-सज्ञा पु० एक प्रकार का व्यूह  
 (सेना का घरा) ।  
 मकर सक्राति-सज्ञा स्त्री० सूर्य का मकर  
 राशि में प्रवेश करने का समय । एक  
 पर्व, जिस दिन प्रयाग में स्नान करने और  
 बिचड़ी का दान करने का माहात्म्य है ।  
 मकराक-सज्ञा पु० १. नागदेव । २. समुद्र ।  
 मकरा-सज्ञा पु० १. मडवा नामक अन्न ।  
 २. एक प्रकार का कीड़ा । मकड़ा ।  
 मकराकर-सज्ञा स्त्री० समुद्र । मछलियाँ का  
 आगार ।  
 मकराकार-वि० मकर या मछली के आकार  
 का ।  
 मकराकृत-वि० मकर या मछली के आकार-  
 वाला ।  
 मकरालय-सज्ञा पु० समुद्र ।  
 मकरिकापत्र-सज्ञा पु० मछली के आकार  
 का बना हुआ चन्दन का चित्र, जिसे  
 प्राचीन काल में स्त्रियाँ अपने कानों में  
 पहनती थी ।

मकरी-सज्ञा स्त्री० १. मकड़ी। २. मगर की मार। ३. एक वैदिक गीत। ४. जहाज के पंखों में लगा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।

मकरह-वि० १ अपवित्र। २. घृणित।

मकरसद-सज्ञा पु० [अ०] १. मनोरथ। २. अभिप्राय।

मकसद-वि० [अ०] चाहा हुआ। अभीष्ट। अभिलषित। अभिप्रेत।

सज्ञा पु० अभिप्राय। मतलब।

मका-सज्ञा पु० [फा०] घर।

मकान-सज्ञा पु० घर। गृह। रहने की जगह।

मकुद-सज्ञा पु० दे० "मुकुद"।

मकु-अव्य० चाहे। वरिष्ठ। फदाचित्। क्या जाने। शायद।

मकुना-सज्ञा पु० बिना दाँत का छोटा हाथी।

वि० १ मोटा। थलचल। २. बिना मूँछ का पुरुष।

मकुनी, मकूनी-सज्ञा स्त्री० आँटे के भीतर बसत नरकर बनाई हुई कचौड़ी। बेसनी रोटी।

मकुला-सज्ञा पु० कहावत। उक्ति। कोल।

मकोई-सज्ञा स्त्री० जगली मकोय। दे० "मकोय"।

मकोडा-सज्ञा पु० कोई छोटा कीड़ा। जैसे, कीड़ा-मकोडा।

मकोय-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा और उसका फल। यह दो प्रकार का होता है। एक में लाल रंग के और दूसरे में काले रंग के बहुत छोटे छोटे फल लगते हैं। रसमरी।

मकोरना\*†-क्रि०, रा० दे० "मरोटना"।

मक्कर\*-सज्ञा पु० छल। कपट।

मक्का-सज्ञा पु० [अ०] १ अरब का एक प्रसिद्ध नगर, जो मुसलमानों का सबसे बड़ा तीर्थ-स्थान है। २ ज्वार। मकई।

मक्कार-वि० [अ०] [सज्ञा मक्कारी] कपटी। धोखेबाज। धूर्त।

मक्कारी-सज्ञा स्त्री० [अ०] छल। कपट। धोखा।

मक्कान-सज्ञा पु० दूध में का सार भाग, जो दही या मठे को मचने पर निकलता है और जिसको तपाने से पी बनता है। नवनीत। माखन। नैनू।

मूहा०—कलेजे पर मक्कान मला जाना= राग की हानि देखकर प्रसन्नता होना।

मक्खी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा, जो साधारणतः सब जगह उड़ता फिरता है और जिससे बीमारी फैलती है। २ मधु-मक्खी। मक्षिका।

मूहा०—जीती मक्खी निगलना= जान-बूझकर कोई ऐसा अनुचित काम करना, जिसके कारण पीछे से हानि हो। मक्खी की तरह निकाल या फेंक देना= किसी को किसी काम से बिल्कुल अलग कर देना। मक्खी मारना या उड़ाना= बिल्कुल निकम्मा रहना।

मक्खीचूस-सज्ञा पु० बहुत अधिक कजूर। अतिकृपण।

मक्खीमार-सज्ञा पु० पृणित व्यक्ति।

मकदूर-सज्ञा पु० [अ०] सामर्थ्य। शक्ति। बल। कावू। समर्प। गुज़ाइश।

मक्ष-सज्ञा पु० १ अग्ने दोष को छिपाना। २ क्रोध। ३ समूह।

मक्षिका-सज्ञा स्त्री० १- मक्खी। २ मधु-मक्खी।

मूहा०—मक्षिकास्थाने मक्षिका=मक्खी के स्थान पर मक्खी। ज्याँ की त्यो नकल।

हुबहु नकल। अक्षरशः।

मक्षिकामल-सज्ञा पु० मोम। शब्द के छत्ते में से शब्द निकालने के बाद बचा हुआ अंश, जिसमें मोम बनता है।

मक्षिकास्तन-सज्ञा पु० शब्द की मक्खी का छत्ता।

मक्ष-सज्ञा पु० यज्ञ जिसमें बलि चढ़ाई जाती थी।

वि० १ हेतुमुख। २ फुर्तीला। ३ बुद्धिमान या बलवान्।

मखजन-सज्ञा पु० भंडार। खजाना।

मखतूल-सज्ञा पु० काला रेशम।

मखतूली-वि० काले रेशम से बना हुआ। काले रेशम का।

मण्डूक-सज्ञा पु० [अ०] स्वामी ।

वि० पूज्य ।

मखन\*-सज्ञा पु० दे० "मकरा" ।

मखनिया-सज्ञा पु० मखन बनाने या  
बेचनेवाला ।

वि० जिसमें रें मखन बिनाल लिया  
गया हो ।

मखमल-सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मखमली]  
एक प्रकार का बहुत-पुड़िया रेशमी  
मुलायम पड़दा ।

मखमली-वि० १ मखमल का बना हुआ ।

२ मखमल की तरह ।

मखराज-सज्ञा पु० राजसूय यज्ञ । यज्ञ में  
सबसे बड़ा ।

मखशाल-सज्ञा स्त्री० यज्ञशाला ।

मखसूत-वि० जो किसी विशेष कार्य के लिए  
अलग कर दिया गया हो ।

मखाना-सज्ञा पु० दे० "तालमखाना" ।

मखालय-सज्ञा पु० यज्ञशाला ।

मखी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मुक्खी" ।

मखेश-सज्ञा पु० राजसूय यज्ञ । यज्ञ में सबसे  
बड़ा ।

मखोना-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
कपड़ा ।

मखोल-सज्ञा पु० हँसी-उड़ता । उपहास ।  
मजाक । दिल्लीगी ।

मखोलिया-वि० हँसोल । दिल्लीगीवाज ।

मग-सज्ञा पु० १ माग । रास्ता । २ मगध  
देश । मगह ।

मगज-सज्ञा पु० [अ०] १ दे० "मग्ज" ।  
दिमाग । मस्तिष्क । २ गूदा । गिरी । मीमी ।

महा-—मगज खाना में चाटना=  
बकवाद करने लग करना । मगज खाली  
करना या पचाना=बहुत अधिक दिमाग  
खराना । सिर खपाना ।

मगधचक्र-वि० बकवादी । दिमाग चाट  
जानेवाला ।

मगजपच्ची-सज्ञा स्त्री० किसी काम के लिए  
बहुत दिमाग खराना । सिर खपाना ।

मगजी-सज्ञा स्त्री० कपड़े के किनारे पर लगी  
हुई पतली गोटा ।

मगज-सज्ञा पु० कथिता के आठ गुणों में से  
एक, जिसमें ३ गुण वर्षों हाव हैं ।

मगद-सज्ञा पु० दे० "मगदल" । एक प्रकार की  
मिठाई ।

मगदर-सज्ञा पु० दे० "मगदल" ।

मगदल-सज्ञा पु० मूँत या उहद का एक  
प्रकार का लड्डू ।

मगदा-वि० मार्ग-प्रदर्शक । रास्ता दिखलाने-  
वाला ।

मगदूर\*-सज्ञा पु० दे० "मक्रदूर" ।

मगध-सज्ञा पु० १ दक्षिणी बिहार का प्राचीन  
नाम । २ मागध । बदीजन ।

मगत-वि० १ दे० "मग्न" । लीन । २ प्रसन्न ।

मगना-वि० कि० अ० लीन । हाना । तन्मय  
होना । डूबना ।

मगर-सज्ञा पु० १ घड़ियाल । बाह । २  
मछली ।

जव्य० लेकिन । परतु । पर ।

मगरमच्छ-सज्ञा पु० १ मगर या घड़ियाल ।  
२ बड़ी मछली ।

मगरब-सज्ञा पु० [अ०] [वि० मगरबी]  
पश्चिम दिशा ।

मगरूर-वि० [अ०] घमडी । अभिमानी ।

मगलरी-सज्ञा स्त्री० घमडी । अभिमान ।

मगतिर-सज्ञा पु० अगहन का महीना ।

मगही-सज्ञा पु० मगध देश ।

मगहपति\*-सज्ञा पु० मगधपति । मगध देश  
का राजा, जरासय ।

मगहय\*-सज्ञा पु० मगध देश ।

मगहर\*-सज्ञा पु० मगध देश ।

मगही-वि० १ मगध-सम्बन्धी । मगध देश  
का । २ मगध में उत्पन्न (पान) ।

मग, मग्ग\*-सज्ञा पु० दे० "माग" । रास्ता ।

मग्ज-सज्ञा पु० १ मस्तिष्क । दिमाग । २  
गूदा । गिरी । मीमी ।

मग्न-वि० १ लीन । तन्मय । लिप्त । २  
डूबा हुआ । निमग्नित । ३ प्रवृत्त । सुत ।

४ नशे आदि में चूर । मदमस्त ।

मध-सज्ञा पु० १. पुरस्कार । २ धन ।

मघई-वि० दे० "मगही" ।

मघन-सज्ञा पु० महान । सुबाध । सुगन्ध ।

मधवा-सज्ञा पु० इन्द्र।  
 मधवाजित्-सज्ञा पु० मधनाद।  
 मधवान-सज्ञा पु० इन्द्र।  
 मधवाप्रस्थ-सज्ञा पु० इन्द्रप्रस्थ। इन्द्र के रहने का स्थान।  
 मधवारिपु-सज्ञा पु० रघुनाद।  
 मधा-सज्ञा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से दसवाँ नक्षत्र, जिसमें पाँच तारे हैं।  
 मधोनी, मधोनी\*-सज्ञा स्त्री० इद्राणी। राक्षी।  
 मधोना-सज्ञा पु० नीले रंग का फण्डा।  
 मचक-सज्ञा स्त्री० १ दवाव। दाव। २ धीरे-धीरे ददं। गाँठ को पीडा।  
 मचकना-क्रि० अ० १. ददं होना। चरना। गाँठ में पीडा होना। २. जोर से ऐसा दवाना कि मच-मच शब्द निकले। ३. ऐसा दवाना, जिसमें मच-मच शब्द हो। ४. झटके से हिलना। ५. हावभाव करना। मटकना।  
 मचका-सज्ञा पु० १ मचक या झटका। झाका। धक्का। २ झूले की पेंग।  
 मचकाना-क्रि० स० मटकाना। झपकाना। आँख चलाना। हावभाव करना।  
 मचना-क्रि० अ० [अनु०] १. किसी ऐसे कार्य का होना, जिसमें शोर-मुल हो। २. होना। ३. छा जाना। फलना। ४. शुरू करना। ५. उठाना। ६. दे० "मचकना"।  
 मचमच-अव्य० छवि विशेष। चरचर। मरमर।  
 मचमचाना-क्रि० अ० जोर से हिलाना। मचमच करना।  
 कि० स० ऐसा दवाना या हिलाना जिससे मचमच शब्द हो।  
 मचल-सज्ञा स्त्री० मचलने की क्रिया या भाव।  
 मचलना-क्रि० अ० किसी चीज के लिए हूठ करना। जिद करना। अडना।  
 मचला-वि० मचलनेवाला। झूलने के अवसर पर जान-बूझकर चुप रहनेवाला। अनजान बननेवाला।  
 सज्ञा पु० पान के बीड़े रखने का बाँस का बुना हुआ एक प्रकार का छोटा पान।  
 मचलाई\*-सज्ञा स्त्री० मचलने का भाव या क्रिया। दे० "मचल"।

मचलाना-क्रि० अ० [अनु०] दे० "मिचलाना"।  
 मतली आना। कं करने की इच्छा होना।  
 कं मालूम होना। दे० "मचलना"। हूठ करना।  
 वि० स० किसी चीज का लाजब देकर उसे न देना। तरसना। किसी को मचलने में प्रेरित करना।  
 मचलाहा-वि० हठीला। मचलने या रुठने-वाला।  
 मचवा-सज्ञा पु० साट।  
 मचान-सज्ञा पु० १ बाँस का टट्टर बांधकर बनाया हुआ स्थान, जिस पर बैठकर शिकार खेलते या सोत की रखवाली करते हैं।  
 २ मच। कोई ऊँची बैठक।  
 मचाना-क्रि० स० १. करना। होने देना। प्रारम्भ करना। उठाना। ठानना। २. कोई ऐसा कार्य आरम्भ करना, जिसमें हुल्लड हो।  
 मचिया-सज्ञा स्त्री० १. छोटी चारपाई। पलंगड़ी। २. पीठी।  
 मचिलई\*-सज्ञा स्त्री० मचलने का भाव।  
 मचोडना-क्रि० अ० निचोडना। ऐंठना। गारना।  
 मच्छ-सज्ञा पु० बड़ी मछली।  
 मच्छड़, मच्छर-सज्ञा पु० एक छोटा पतंगा, जिसके काटने से बीमारी फैलती है। मसा।  
 मच्छरता\*-सज्ञा स्त्री० १. दे० "मत्सर"। ईर्ष्या। द्वेष। २. क्रोध।  
 मच्छरवानी-सज्ञा स्त्री० दे० "मसहरी"।  
 मच्छी-सज्ञा स्त्री० दे० "मछली"।  
 मच्छीमार-सज्ञा पु० १. मछली मारनेवाला। २. धोतर। मछुआ।  
 मच्छीबरी\*-सज्ञा स्त्री० व्यासजी की माता और शातनु की भार्या सत्यवती। मत्स्योदरी।  
 मच्छन्द-सज्ञा पु० १. मत्स्येन्द्रनाथ। गोरख-पथिया के गुरु। २. बूहा।  
 वि० १. बड़ी मछलवाला। २. भूख। अनभिज्ञ।  
 मछरगा-सज्ञा पु० एक प्रकार का जलपक्षी। रामचिडिया।  
 मछली-सज्ञा स्त्री० १ जल में रहनेवाली

२ मछली के आकार का कोई पदार्थ ।  
 मछुआ, मछुआ-सज्ञा पु० मछली मारनेवाला ।  
 मत्ताह । धीवर ।  
 मजकूर-वि० [फा०] बड़ा हुआ । उक्त । उपर्युक्त ।  
 सज्ञा पु० लिखित विवरण ।  
 मजकूरी-सज्ञा पु० [फा०] नोटिस और सम्मन  
 आदि तामील करनेवाला चपरासी ।  
 मजदूर-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० मजदूरनी,  
 मजदूरिन] १ बोल डोलनेवाला । मजूर ।  
 कुली । मोटिया । २. कस-बारखाना में  
 छोटा-मोटा काम करनेवाला आदमी ।  
 शारीरिक मेहनत से अपनी जीविका प्राप्त  
 करनेवाला व्यक्ति । घने लेकर दूसरे के  
 लिए काम करनेवाला व्यक्ति । श्रमिक ।  
 मजदूरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] मजदूर का  
 काम । परिश्रम के बदले में मिला हुआ  
 धन । पारिश्रमिक । उजरत ।  
 मजना\*†-कि० अ० १. डूबना । २. अनुरक्त  
 होना । ३. मजाना । ४. अभ्यस्त होना ।  
 मजनु-सज्ञा पु० [अ०] १. अरब के एक प्रसिद्ध  
 सरदार का लडका, जिसका वास्तविक नाम  
 कंस या खीर जो लैला नाम की एक सुन्दरी  
 पर आसक्त होकर उसके लिए पागल हो  
 गया था । २. आशिक । प्रेमी । आसक्त ।  
 दीवाना । प्रेम में पागल या बावला ।  
 मजबूत-वि० [अ०] [सज्ञा मजबूती] १  
 बलवान् । सबल । २. दृढ़ । पुष्ट । पक्का ।  
 मजबूर-वि० [अ०] लाचार । विवश ।  
 मजबूर-कि० वि० [अ०] विवश होकर ।  
 लाचारी से ।  
 मजदूरी-सज्ञा स्त्री० [अ०] विवशता । अस-  
 मथता । लाचारी । बेचसी ।  
 मजमा-सज्ञा पु० [अ०] बहुत से लोगों का  
 जमाव । भीड़नाड । जमघट ।  
 मजमुआ-वि० [अ०] इकट्ठा किया हुआ । एकत्र ।  
 सज्ञा पु० बहुत-सी चीजों का  
 समूह । सग्रह । खजाना । खसीरा ।  
 मजमून-सज्ञा पु० [अ०] १. विषय, जिस पर  
 कुछ कहा या लिखा जाय । २. लेख ।  
 मजरा-सज्ञा पु० खेज । छोटा गाँव ।  
 मजहब-वि० पोसी-मोई हुई । जमीन । खेत ।

मजहह-वि० [अ०] पायल ।  
 मजल†-सज्ञा स्त्री० दे० "मजिल" ।  
 मजलिस-सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मजलिसी]  
 १ सभा । समाज । जलसा । २. महफिज ।  
 नाच-रंग का स्थान ।  
 मजलूम-वि० [अ०] जिस पर जुल्म हो ।  
 पीड़ित । सताया हुआ ।  
 मजहब-सज्ञा पु० [अ०] [वि० मजहबी]  
 धर्म । पथ । मत । धार्मिक सम्प्रदाय ।  
 मजहबी-वि० [अ०] धार्मिक । धर्म या  
 मजहब-सम्बन्धी ।  
 मजा-सज्ञा पु० [फा०] १. मन की अच्छा  
 लगने का भाव । स्वाद । लज्जत । २.  
 आनन्द । मुख । ३. दिल्लगी । हँसी ।  
 महा०—मजा आ जाना=आनन्द आना ।  
 अच्छा लगना । दिल्लगी का सामान होना ।  
 मजा चखाना=बदला लना । उचित दण्ड  
 देना । मजा लटना=खुद आनन्द लेना ।  
 मजाक-सज्ञा पु० [अ०] हँसी । ठट्ठा ।  
 परिहास ।  
 मजाकन-कि० वि० हँसी या मजाक में ।  
 मजाकिया-कि० वि० हँसी या मजाक में ।  
 सज्ञा पु० बहुत हँसी करनेवाला । दिल्लगी-  
 बाज । हँसीड ।  
 मजार-सज्ञा पु० [अ०] कब्र ।  
 मजारी-सज्ञा स्त्री० दे० "माजिर" ।  
 मजाल-सज्ञा स्त्री० [अ०] सामर्थ्य । शक्ति ।  
 हिम्मत ।  
 मजिल\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "मजिल" ।  
 मजिस्ट्रेट-सज्ञा पु० [अप्र०] जिले के किरती  
 भाग का शासन प्रबन्ध करनेवाला तथा  
 फौजदारी अदालत का सरकारी अधिकारी ।  
 अधिकार के विचार से तीन श्रेणी के  
 मजिस्ट्रेट होते हैं—प्रथम श्रेणी, द्वितीय  
 श्रेणी और तृतीय श्रेणी । कार्यों के अनुसार  
 कई प्रकार के मजिस्ट्रेट होते हैं, जैसे जिला  
 मजिस्ट्रेट, जूडिशियल मजिस्ट्रेट, रेलवे  
 मजिस्ट्रेट आदि ।  
 मजीठ-सज्ञा स्त्री० १. सात रंग । २. औषध-  
 विषय । ३. एक प्रकार की लता, जिसकी  
 जड़ और डठलों से सात रंग निकलता है ।

मजीठी-सज्ञा पु० मजीठ के रंग का। ताल।  
सुख।

मजीर\*-सज्ञा स्त्री० घोंद। गुच्छा।

मजीरा-सज्ञा पु० वजाने के लिए कंसे की  
छोटी कटोरियों की जाड़ी। जोड़ी। ताल।  
छोटी झांझ।

मजूर\*-सज्ञा पु० १ दे० "मजदूर"। २ दे०  
'मयूर'। मौर।

मजरी-सज्ञा स्त्री० दे० "मजदूरी"।

मजेज\*†-वि० [फा०] मिजाज। अहंकार।

मजेदार-वि० [फा०] १ मजा या आनन्द  
देनवाला। स्वादिष्ट। आपकेदार। २  
बच्छा। बढ़िया।

मज्ज-सज्ञा स्त्री० दे० 'मज्जा'।

मज्जन-सज्ञा पु० स्नान। नहाना।

मज्जना\*-क्रि० अ० नहाना। स्नान करना।

निमन होना। गोता लगाना। डूबना।

मज्जा-सज्ञा स्त्री० हड्डी के भीतर का गूदा।  
चर्बी।

मज्जित-वि० नहाया हुआ। डूबा हुआ।

मज्ज, मज्ज\*-क्रि० वि० दे० "मध्य"। बीच।

मज्जार-सज्ञा स्त्री० नदी के बीचोबीच का  
भाग या नदी के मध्य की धारा। किसी  
काम का मध्य।

मुहा०-मज्जार में=बीचोबीच में।

मज्जला-वि० बीच का। मध्य का।

मज्जाना\*†-क्रि० स० प्रविष्ट करना। पैठना।  
बीच में धँसाना।

क्रि० अ० प्रविष्ट होना। पैठना।

मज्जार\*†-क्रि० वि० मध्य में। बीच में।

मज्जारि या मज्जारी-सज्ञा पु० बीच। मध्य।

मज्जाबना\*†-क्रि० अ०, क्रि० स० दे० 'मज्जाना'।

मज्जियाना\*†-क्रि० अ० १ नाव खेना। मल्लाही  
करना। २ बीच से होकर निकलना।

मज्जियार\*†-वि० बीच का। मध्य।

मज्जोला-वि० १ मज्जोली। मज्जला।

बीच का। मध्य का। २ जो न बहुत बड़ा  
हो और न बहुत छोटा। मध्यम आकार का।

मज्जोलो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बेल-  
गाड़ी।

वि० दे० "मज्जोला"।

मट-सज्ञा पु० मटका। मटकी।

मटक-सज्ञा स्त्री० १ गति। चाल। आँखो

या अंगो को हाव-भाव के साथ हिलाना।

२ मटकने की क्रिया या भाव। हाव-भाव।

नखरा। चौचला।

मटकना-क्रि० अ० १ अंग हिलाते हुए चलना।

लचक कर नखरे से चलना। २ आँख

धुमाना। विचलित होना। ३ हिलना।

मटकनि\*-सज्ञा स्त्री० १ दे० "मटक"।

लचक कर नखरे से चलना। २ नाचना।

नृत्य। ३ नखरा।

मटका-सज्ञा पु० मिट्टी का बड़ा पड़ा।

बड़ी गंगरी।

मटकाना-क्रि० स० १ नखरे के साथ अंग को

हिलाना-डुलाना। २ चमेकाना। ३. आँख

धुमाना। कटाक्ष करना।

मटकी-सज्ञा स्त्री० १ मिट्टी का छोटा पड़ा।

छोटा मटका। २ आँख का इशारा। आँखा

या अंग का हावभाव के साथ हिलाना।

मटकने या मटकाने का भाव। मटक।

मटकीला-वि० मटकनेवाला। नखरा

करनेवाला।

मटकील-सज्ञा स्त्री० आँखो या अंगो को

हाव-भाव के साथ हिलाना। मटकाने की

क्रिया या भाव। मटक।

मटमैला-वि० मिट्टी के रंग का। साफ़ी।

धूसर। गदा।

मटर-सज्ञा पु० एक प्रकार का मोड़ा अन्न।

इसकी सबी फलियों को छोमी कहते हैं।

जिनमें गोल दाने रहते हैं।

मटरगइत-सज्ञा पु० १ टहलना। धीरे-धीरे

धुमना। २ संर-सपाटा।

मटलनी-सज्ञा स्त्री० मिट्टी का कच्चा बर्तन।

मटिआना-क्रि० स० १ मिट्टी लगाकर

मजिना। २ मिट्टी लगाना। मिट्टी से

ढांकना।

मटिया-सज्ञा स्त्री० १ मिट्टी। २ शव।

निर्जीव शरीर।

वि० मटमैला।

मटियामसान-वि० मिट्टी की तरह नखर।

गया-बीता। नष्टप्राय।

मटियामेट-वि० मिट्टी में मिला दिया गया।  
 दे० 'मलियामेट'। नष्ट-मष्ट। तहस-नहस।  
 नस्त-नावूद।  
 मटियार-सज्ञा पु० ऐसी भूमि, जिसमें अधिक चिपत्ती मिट्टा हो।  
 मटियाला-वि० दे० "मटमैला"।  
 मटुका-सज्ञा पु० दे० 'मुकुट'।  
 मटुका-सज्ञा पु० दे० "मटका"।  
 मटुकी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "मटकी"।  
 मट्टी-सज्ञा स्त्री०, दे० 'मिट्टी'।  
 मट्ठरु†-वि० सुस्त। आलसी। काहिल।  
 मट्ठा-सज्ञा पु० मथा हुआ दही, जिसमें ने मथखन निकाल लिया गया हो। मही। छाछ। तक्र।  
 मट्ठी-सज्ञा स्त्री० मैदा का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।  
 मठ-सज्ञा पु० १ निवास-स्थान। २ साधुआ या सन्यासियों के रहने का स्थान। आश्रम। ३ मंदिर।  
 मठधारी-सज्ञा पु० किसी मठ का भक्तिक या स्वामी। वह साधु या महंत, जिसके अधिकार में कोई मठ हो। मठाधीश।  
 मठपति-सज्ञा पु० मठ का मालिक।  
 मठाधीश।  
 मठरी-सज्ञा स्त्री० दे० 'मट्ठी'। एक प्रकार का नमकीन पकवान।  
 मठा-सज्ञा पु० दे० 'मट्ठा'।  
 मठाधीश-सज्ञा पु० किसी मठ का महन्त या स्वामी। मठ का प्रधान।  
 मठिया-सज्ञा स्त्री० १ छोटा मठ या कुटी। २ फूल (धातु) की बनी हुई चूड़ियाँ। ३ दे० 'मठि'।  
 मठी-सज्ञा स्त्री० १ छोटा मठ। २ मठ का महंत। मठधारी।  
 मठौर-सज्ञा स्त्री० वही मथने या मटठा रखने की मटकी।  
 मठौरना-क्रि० सं० खरादना। मुडोल करना।  
 मडई†-सज्ञा स्त्री० फूल से छाया हुआ बहुत छोटा घर। सोपड़ी। मडैया। कुटी या कुटिया।  
 मडक-सज्ञा स्त्री० [अनु०] किसी बात का भीतरी रहस्य।

मडराना-क्रि० अ० दे० 'मंडराना'।  
 मडपा-सज्ञा पु० दे० 'मडप'। विवाह-मंडप।  
 मड़ाई†-सज्ञा पु० छोटा कच्चा तालाव या गड्ढा।  
 मडियाना-त्रि० सं० १ चिपकाना। मिशाना। २ जमाना।  
 मडआ-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का माटा अन्न। २ एक पत्ती।  
 मडैया†-सज्ञा स्त्री० दे० "मडइ"।  
 मड-वि० अडकर बैठनवाला।  
 मड़ना-त्रि० सं० १ चारा आर स लपट लना। आवण्टित करना। कपड़ा या चमड़ा चढ़ाना। छिपाना। आवरण चढ़ाना। २ किसी के गले लगाना। बोधना।  
 मडवाना-क्रि० सं० मड़न का काम दूसरे से कराना।  
 मडाई-सज्ञा स्त्री० मड़ने का काम या मजदूरी।  
 मड़ाना-क्रि० सं० दे० 'मडवाना'।  
 मड़ी-सज्ञा स्त्री० १ छोटा मठ। २ कुटी। शापड़ी। छोटा घर।  
 मणगवण-सज्ञा पु० सूय।  
 मणि-सज्ञा स्त्री० १ कीमती पत्थर विनाप। बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। २ सवधष्ठ व्यक्तित्व। ३ पुरुषन्द्रिय का अग्रभाग।  
 मणिक-सज्ञा पु० छोटी मणि।  
 मणिकणिका-सज्ञा स्त्री० १ बनारस में एक पवित्र कुंड तथा उसके निकट का घाट, जो हिंदुओं के तीर्थस्थान है। २ मोतिया या जवाहरात से युक्त कान का एक गहना।  
 मणिकार-सज्ञा पु० मोतियों या जवाहरात से युक्त गहना बनानेवाला। जोहरी। जडिया।  
 मणिगुण-सज्ञा पु० १ एक वैदिक छंद। २ राक्षिकला। शरभ (चन्द्रमा का मूत्र)।  
 मणिधर-सज्ञा पु० मणि धारण करनेवाला।  
 एसी किवदस्ती है कि सप के मस्तक में मणि रहती है। सप। माँप।  
 मणिपुर-सज्ञा पु० तन के अनुसार नाच के पास का चक्र।  
 मणिवाप-सज्ञा पु० कलाई। गटटा।  
 मणिमाला-सज्ञा स्त्री० मणियों की माला।

मणिषा, मणिषा-सज्ञा पु० माता, या  
दाना।

मणिदार-सज्ञा पु० मणिहार। चूड़ीहार।

मणिश्याम-सज्ञा पु० नीलम।

मतग-सज्ञा पु० १. हाथी। २. वादल।

मतगौ-सज्ञा पु० हाथी का सवार।

मत-प्रि० वि० न। नहीं। निषेध-सूचक  
शब्द। जैसे मत करो=न करो।

सज्ञा पु० १ सम्मति। राय। २ धर्म।  
मजहब। सम्प्रदाय। पथ। ३ निर्वाचन  
या चुनाव में खड़े हुए उम्मीदवार को  
दी जानेवाली अपनी सम्मति (वोट)।  
सभा, समिति, सस्या या विधान-मंडलों  
आदि में जिन व्यक्तियों या सदस्यों को  
अपनी सम्मति प्रकट करने का अधिकार  
हो, उनके द्वारा दी गई सम्मति। ४ निश्चित  
सिद्धान्त।

मतदाता-सज्ञा पु० वह व्यक्ति, जिसे किसी  
चुनाव में या किसी विवादग्रस्त विषय  
पर अपना मत देने का अधिकार प्राप्त  
हो (अग्रे-वोटर)। मतदान करनेवाला या  
मत देनेवाला।

मतदान-सज्ञा पु० चुनाव आदि में मत देने  
की क्रिया या भाव (अग्रे-वोटिंग)।

मतदान-क्षेत्र-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ से  
मत (वोट) लिया जाय।

मतना\*-क्रि० अ० १ सम्मति निश्चित  
करना। रायकायम करना। २ उन्मत्त  
होना। पागल होना।

मतपत्र-सज्ञा पु० वह पत्र, जिस पर चुनाव  
में खड़े होनेवाले व्यक्तियों के नाम या  
विशिष्ट चिह्न रहते हैं और जिस पर अपनी  
ओर से कोई चिह्न लगाकर मतदाता उनमें  
से किसी के पक्ष में अपना मत (वोट) देता  
है (अग्रे-बैलेट पेपर)।

मतपेटिका-सज्ञा स्त्री० वह पेट्टी या थैली,  
जिसमें मतदाता अपना मतपत्र डालता  
है (अग्रे-बैलेट बॉक्स)।

मतभिन्नता-सज्ञा स्त्री० अलग-अलग राय  
होना। दे० "मतभेद"।

मतभेद-सज्ञा पु० आपस में राय या मत

न मिलना। एक दूसरे में विभिन्न विचार  
होना। परस्पर भेदभाव।

मतरियाऊ-सज्ञा स्त्री० दे० "महतारी"।  
माता।

मतलब-सज्ञा पु० १ तात्पर्य। अभिप्राय।  
आशय। अर्थ। मानो। २. अपना हित।

स्वार्थ। ३. उद्देश्य। ४. स्वयं। लगाव।

मतलबी-वि० स्वार्थी। अपना मतलब

निकालनेवाला। सुदुरज।

मतलो-सज्ञा स्त्री० के करने की इच्छा।

मतपार, मतपारा\*-वि० दे० "मतवाला"।

मतवाला-वि० [स्त्री० मतवाली] १ मस्त।

उन्मत्त। पागल। २ नशे में देहोश। मद-

मस्त। शराबी। ३ पमड़ी।

सज्ञा पु० १ वह भारी पत्थर, जो किले या  
पहाड़ पर से, नीचे के शत्रुओं को मारने के  
लिए, लुडकाया जाता है। २ एक प्रकार  
का खिलोना।

मता-सज्ञा पु० दे० "मत"।

सज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

मताधिकार-सज्ञा पु० मत (वोट) देने का  
अधिकार।

मतानुयायी-सज्ञा पु० मत या सिद्धान्त को  
माननेवाला। मतावलंबी।

मतारी-सज्ञा स्त्री० दे० "महतारी"। माता।

मतावलंबी-सज्ञा पु० किसी मत या संप्रदाय  
को माननेवाला या अनुयायी।

मति-सज्ञा स्त्री० १ बुद्धि। समझ। अन्तः।  
२ राय। सलाह। सम्मति।

\*क्रि० वि० दे० "मत"। नहीं।

वि० बुद्धिमान्। चतुर।

मतिमत-वि० बुद्धिमान्। चतुर।

मतिगर्भ-वि० बुद्धिमान्। चतुर।

मतिमान-वि० बुद्धिमान्।

मतिमाह\*-वि० दे० "मतिमान"।

मतिवत-वि० दे० "मतिमान"। बुद्धिमान्।

मती-सज्ञा स्त्री० दे० "मति"।

मतौरा-सज्ञा पु० तरबूज। कलदा।

मतौस-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाजा।

मतेई\*पु-सज्ञा स्त्री० विमाता। सौतेली माँ।

मत्कुण-सज्ञा पु० खटमल।

मत्त-वि० १ मत्त। मतवाला। नश में चूर या मत्त। २ बहुत सुखी या प्रसन्नता से मत्त। उन्मत्त।

मत्तकाशिनो-सज्ञा स्त्री० नश में मत्त की तरह दिखाई देनेवाली स्त्री। मोहित करनेवाली स्त्री। वामासक्त स्त्री (सम्बोधन)।

मत्तगयद-सज्ञा पु० सर्वथा छद या एष भेद। मत्तता\*-सज्ञा स्त्री० मतवालापन। मस्ती। मत्तमयूर-सज्ञा पु० पत्रह अक्षरा का एक छन्द।

मत्ता-प्रत्य० मान् मे वननवाला नाववाचक प्रत्यय। जैसे, बुद्धिमान् से बुद्धिमत्ता। मत्ता-सज्ञा पु० दे० माया।

मत्तर-सज्ञा पु० डाह। द्वय। प्रतिस्पर्धा। हसद। जलन।

मत्तरता-सज्ञा स्त्री० डाह। द्वय। हसद। मत्तरी-वि० द्वय या डाह करनेवाला। हसद करनेवाला।

मत्स्य-सज्ञा पु० १ मछली। २ प्राचीन विराट देश का नाम। विष्णु के दस अवतारों में से पहला अवतार।

मत्स्यगन्धा-सज्ञा स्त्री० व्यास की माता सत्यवती का एक नाम।

वि० मछली की तरह महकनवाली। मत्स्यपुराण-सज्ञा पु० अठारह पुराणों में से एक पुराण।

मत्स्यावतार-सज्ञा पु० विष्णु या भगवान् के दस अवतारों में से पहला अवतार, जब उन्होंने एक बड़ी मछली का रूप धारण किया था।

मत्स्यासन-सज्ञा पु० तानिको के योग का एक आसन।

मत्स्येन्द्रनाथ-सज्ञा पु० गोरक्षपथ के प्रवक्तक मोरखनाथ के गुरु।

मत्स्योपजीवी-सज्ञा पु० मछुआ। मछलियां से अपनी जीविका चलानेवाला।

मयना-क्रि० सं० १ मथना। विखोना। दही में से मक्खन निकालना। २ फेंटना। तरल पदार्थ को लकड़ी आदि से हिलाना। ३ मूट करना। ध्वस्त करना। ४ धूम धूमकर पता

लगाना। ५ किसी कार्य का बहुत अधिक बार करना।

सज्ञा पु० मथानी। रई।

मयनियों\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मयनी"।

मयनी-सज्ञा स्त्री० गटका, जिसमें दही मथा जाता है। दे० 'मथानी'। मयने की क्रिया।

मयवाह\*-सज्ञा पु० महावत।

मथानी-सज्ञा स्त्री० काठ का एक प्रकार का दंड, जिससे दही मथकर मक्खन निकाला जाता है। दही मयन की हड्डियां।

मुहा०-मथानी पटना या वहना=खल-बली मचना।

मथित-वि० मथा हुआ। बिलोया हुआ। आलोडित।

मयी-सज्ञा पु० मथानी।

वि० मथनवाला।

मथुरा-सज्ञा स्त्री० उत्तर प्रदेश में आगरा के निकट यमुना के किनारे बसा हुआ एक नगर, जहाँ श्रीकृष्ण का जन्म-स्थान था। यह हिंदुओं का एक प्रसिद्ध तीर्थ है।

मथुरिया-वि० मथुरा का। मथुरा-सम्बन्धी। मथुरा का रहनेवाला।

मथुल\*-सज्ञा पु० दे० मत्तूल।

मथौरा-सज्ञा पु० एक प्रकार का भद्दा रवा (बीजार)।

सज्ञा स्त्री० तिर में पहनने का एक आभूषण।

मथ्या-सज्ञा पु० दे० माया।

मदध\*-वि० दे० मदाध।

मद-सज्ञा पु० १ अत्यधिक हृष या प्रसन्नता। आनन्द। २ अहंकार। घमंड। मत्तता। मोह।

३ मद्य। मादक वस्तु। नशा। सराब। ४ मस्ती। मतवालापन। उन्मत्तता। ५ मत्ताजे हाथियों की कनपट्टियों से बहनेवाला घीय्य। ६ कस्तूरी।

सज्ञा स्त्री० विभाग। खाता। कोई एक विषय या रकम। जैसे, इस मद में।

मदक-सज्ञा स्त्री० अफीम से बनी एक प्रकार की नशीली वस्तु। इसे बिलम पर रखकर पीते हैं।

मदकचो-वि० मदक पीनेवाला।

मदकट-सज्ञा पु० साँड़।  
 मदकटुम-सज्ञा पु० ताड़ का पेड़।  
 मदकल-वि० मस्त। मत्त। मतवाला।  
 सज्ञा पु० मत्त हाथी।  
 मदकृत-वि० मादक। नशीली।  
 मदकोहल-सज्ञा पु० साँड़।  
 मदगल-वि० मस्त। मत्त।  
 मदजल-सज्ञा पु० हाथी का मूत्र। मत्तवाले हाथियों की कनपटियों से निकलनेवाला द्रव (दान)।  
 मदद-सज्ञा स्त्री० [अ०] सहायता। सहारा।  
 मददगार-वि० [फा०] मदद या सहायता देनेवाला। सहायक।  
 मदन-सज्ञा पु० १ कामदेव। २ काम-क्रीड़ा। ३ भ्रमर। ४ मैना पक्षी। सारिका। ५ प्रेम।  
 मदनकटक-सज्ञा पु० प्रेम के कारण उत्पन्न होनेवाला रोमांच। सात्विक रोमांच।  
 मदनकलह-सज्ञा पु० प्रेम-कलह। प्रेम का झगडा।  
 मदनकइन-सज्ञा पु० शिव। कामदेव का नाश करनेवाले।  
 मदनगोपाल-सज्ञा पु० श्रीकृष्णचंद्र का एक नाम।  
 मदनचतुर्दशी-सज्ञा पु० दे० "मदनमहोत्सव"।  
 मदनइमन-सज्ञा पु० शिव।  
 मदनपति-सज्ञा पु० १ इन्द्र। २ विष्णु।  
 मदनपाठक-सज्ञा पु० १ बदीजन। २ कोयल। वसन्त के आगमन की सूचना देनेवाला।  
 मदनवान, मदनवाण-सज्ञा पु० १ कामदेव का वाण। २ एक प्रकार का पेला (फूल)।  
 मदनमनोरमा-सज्ञा स्त्री० आचार्य केशव के अनुसार सवेया का एक भेद। दुमिल।  
 मदनमस्त-सज्ञा पु० चपे की जाति का एक प्रकार का फूल।  
 मदनमहोत्सव-सज्ञा पु० वसन्तोत्सव। प्राचीन समय में चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी तक होनेवाला एक उत्सव।  
 मदनमोहन-सज्ञा पु० कृष्णचंद्र। नामदेव को मोहित करनेवाला।  
 मदनलतिका-सज्ञा स्त्री० एक वर्णिक छंद।

मदनलेख-सज्ञा पु० प्रेमी और प्रेमिका के पारस्परिक प्रेमपत्र।  
 मदननातक-सज्ञा पु० शिव।  
 मदननाथ-वि० कामवासना से अन्धा। कामाध।  
 मवना-सज्ञा स्त्री० मैना।  
 मदननायक-सज्ञा पु० कामदेव का अस्त्र।  
 मदननारि-सज्ञा पु० शिव। कामदेव का शत्रु।  
 मदननास्त्र-सज्ञा पु० कामदेव का अस्त्र।  
 मदननी-सज्ञा स्त्री० गुरा। वारुणी। शराव।  
 मदनोत्सव-सज्ञा पु० दे० 'वसन्तोत्सव'।  
 मद्रमत्त-वि० १ मस्त। मतवाला। नशे में चूर। २ अहंकार या घमंड से चूर।  
 मद्रर\*-सज्ञा पु० दे० "मंदराना"।  
 मद्ररसा-सज्ञा पु० [अ०] पाठशाळा। छोटे बालको के पढ़ने का स्थान।  
 मद्रविक्षिप्त-वि० मदमत्त। मस्त। मतवाला।  
 मद्राध-वि० जो मद (नशा या घमंड) के कारण अन्धा हो रहा हो अर्थात् मनमाना कर रहा हो। मदमत्त। मतवाला।  
 मद्राजिलत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दखल देना। हस्तक्षेप। २ दखल जमाना। कब्जा करना।  
 मद्राचलित बेना-सज्ञा स्त्री० [अ०] अनधिकार प्रवेश। अंगुचित हस्तक्षेप।  
 मद्राडच-सज्ञा पु० ताड़ का पेड़।  
 मद्रार-सज्ञा पु० १ आंक। मदार। अकवन। २ एक गन्ध द्रव्य।  
 मद्रारी-सज्ञा पु० १ बदर, भालू आदि नचाकर लोगो को तमाशे दिखानेवाला। २ इन्द्रजाल या जादू का खेल दिखानेवाला। मदारिया। बाजीगर।  
 मद्रालसा-सज्ञा स्त्री० पुराणानुसार विश्वावसु गंधर्व की कन्या, जिस पातालकेतु दानव ने उठा ले जाकर पाताल में रखा था।  
 मद्राह्न-सज्ञा पु० कस्तूरी।  
 मद्रिक-सज्ञा पु० घमंडी। अभिमानी।  
 मद्रिर-वि० [सज्ञा स्त्री० मद्रिरा] मत्त या मस्त करनेवाला। नशीला।  
 मद्रिरा-सज्ञा स्त्री० मद्य। शराव।  
 मद्रीय-वि० मेरा।  
 मद्रीमून-सज्ञा पु० [अ०] कर्जदार। मुहाबलेह।  
 मद्रोला-वि० नशीला। नशा पैदा करनेवाला।

मधोवृक्ष-वि० मध में धूर। मधगवित।  
मधोदध-वि० मत्त।

मधोमत्त-वि० मध में पागल। मदाध। मध-  
माता।

मधोत्तापी-गङ्गा पु० कोकिल।

मदिक-गङ्गा पु० द्राक्ष। अमूर में जनाई  
जानेवाली मदिरा।

मद्विम\*†-वि० १. मध्यम। अपेक्षाकृत तम  
अच्छा। २. मदा।

मदे-अव्य० १. पीव म। में। २. विषय में।  
वाक्य। वचन में। ३. लगे या हिसाब में।

मद्य-सज्ञा पु० मदिरा। शराब।

मद्य-वि० मद्यवी। मदिरा पीनेवाला।

मद्र-सज्ञा पु० १ एक प्राचीन देश। उत्तर  
हुए। पुराणानुसार रावी और घेलेम नदियों  
के बीच का देश। २ हूपें। आनन्द।

मद्रक-वि० मद्रदेश-सम्बन्धी।

मद्रकार-वि० मगलकारक। शुभ।

मध, मधि\*-सज्ञा पु० दे० "मध्य"।

अव्य० में।

मधिम\*-वि० दे० "मध्यम"।

मधु-सज्ञा पु० १ शहद। २ पानी। जल।

३ मदिरा। शराब। ४ अमृत। ५ फूल  
का रस। मकरद। ६ वसत अर्जु। ७  
चैन मास।

वि० १ मीठा। २. स्वादिष्ट।

मधुकूठ-सज्ञा पु० कोयल।

मधुक-सज्ञा पु० महुआ का पेड़ और उसका  
फूल।

मधुकर-सज्ञा पुं० भौरा। अमर।

मधुकर-सज्ञा स्त्री० १ मधुकर (भौरा) की  
मादा। भौरी। २ वह शिक्षा, जिसमें केवल  
पका हुआ अन्न कई स्थानों से लिया जाता  
है। ३. बाटी। गकरिया।

मधुर्दम-सज्ञा पु० पुराणानुसार मधु और  
वैदम नाम के दो दैत्य, जिन्हें विष्णु ने मारा  
था।

मधुकीय-सज्ञा पु० शहद की मक्खी का छत्ता।

मधुमध-सज्ञा पु० अर्जुनवृक्ष। अकुल।

मधुघोष-सज्ञा पु० कोकिल।

मधुक्ष-सज्ञा पु० शहद की मक्खी का छत्ता।

मधुत्र-सज्ञा पु० भोम।

मधुत्रा-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

मधुग्वाल-सज्ञा पु० मधु (नगव) की  
ज्वाला। नगव की गरपी। नगा।

मधुमय-सज्ञा पु० महद, भी जोर चीनी, इन  
तीनों का मिश्रण या मंत्र।

मधुस्य-सज्ञा पु० मिठाई।

मधुघोष-सज्ञा पु० वामदेव।

मधुत्र-सज्ञा पु० भौरा।

मधुपुलि-सज्ञा स्त्री० पत्तकर। चीनी।

मधुनेत्र-सज्ञा पु० भौरा।

मधुप-सज्ञा पु० भौरा।

वि० मधु पीनेवाला।

मधुपति-सज्ञा पु० श्रीरूप।

मधुपक्व-सज्ञा पु० दही, पी, जल, शहद और  
चीनी का मिश्रण, जो देवताओं को चढ़ाया  
जाता है।

मधुपर्ण-सज्ञा पु० रसयुक्त फल।

मधुपाथी-सज्ञा पु० भौरा।

मधुपुर-सज्ञा पु० मयुरा नगर का प्राचीन  
नाम।

मधुपुरी-सज्ञा स्त्री० मयुरा नगरी।

मधुपुष्प-सज्ञा पु० १ महुआ। २ सिरिन का  
पेड़। ३ अमोघ वृक्ष। ४ मौलमिरी।

मधुप्रमेह-सज्ञा पु० एक तरह की बीमारी,  
जिसमें पेशाब से चीनी निकलती है। इस  
रोग के प्रधान लक्षण कमर और जोड़ों में दर्द  
होना, पेशाब का बार-बार आना और  
पेशाब में अधिक चीनी आना, प्यास  
और भूख लगना आदि हैं। प्रमेह।  
मधुमेह।

मधुवन-सज्ञा पु० दे० "मधुवन"।

मधुबीज-सज्ञा पु० अन्तार।

मधुमक्खी-सज्ञा स्त्री० शहद की मक्खी।  
एक प्रकार की मक्खी, जो फूलों का रस  
चूसकर शहद एकत्र करती है।

मधुमक्षिका-सज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।

मधुमती-सज्ञा स्त्री० दो नगण और एक  
गुरु का एक छद।

मधुमाखी-सज्ञा स्त्री० दे० "मधुमक्खी"।

मधुमारक-सज्ञा पु० भौरा।

मधुमालती-सज्ञा स्त्री० मालती लता।  
 मधुमेह-सज्ञा पु० प्रमेह रोग का बड़ा हुआ रूप, जिसमें पेशाब बहुत अधिक और गाढ़ा आता है। दे० "मधुप्रमेह"।  
 मधुपण्डित-सज्ञा स्त्री० मुलेठी।  
 मधुर-वि० १ जिसका स्वाद मधु के समान हो। मीठा। २ जो सुनने में भला जान पड़े। सुंदर। मनोरंजक। ३ सुकुमार। कोमल।  
 मधुरई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।  
 मधुरता-सज्ञा स्त्री० १ मधुर होने का भाव। मिठास। २ सौंदर्य। सुंदरता। ३ कोमलता। सुकुमारता।  
 मधुरत्व-सज्ञा पु० दे० "मधुरता"।  
 मधुरस-सज्ञा पु० ईश।  
 मधुरसिक-सज्ञा पु० भौरा।  
 मधुरा-सज्ञा स्त्री० साहित्य में वह शब्द-योजना, जिससे रचना में माधुर्य या सरसता आती है।  
 मधुराई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मधुरता"।  
 मधुराज-सज्ञा पु० भौरा।  
 मधुराज-सज्ञा पु० मिठाई।  
 मधुराना\*†-क्रि० अ० १ मीठा होना। २ सुंदर होना।  
 मधुरिका-सज्ञा स्त्री० सौंफ।  
 मधुरिपु-सज्ञा पु० कृष्ण।  
 मधुरिमा-सज्ञा स्त्री० १ मिठास। मीठापन। २ सुंदरता। सौंदर्य।  
 मधुरी\*-वि० मीठी। रसीली। सुंदर।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "माधुर्य"।  
 मधुवन-सज्ञा पु० १ मधुरा के पास यमुना के किनारे का एक वन। २ किष्किंधा के पास का सुग्रीव का वन।  
 मधुवामन-सज्ञा पु० भौरा।  
 मधुशर्करा-सज्ञा स्त्री० शहद से बनाई हुई चीनी।  
 मधुसल-सज्ञा पु० कामदेव।  
 मधुसूदन-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।  
 मधूक-सज्ञा पु० महुआ (पेड़ और फल)।  
 मधूकरी-सज्ञा स्त्री० दे० "मधुकरी"।  
 मध्य-सज्ञा पु० १. बीच। किसी पदार्थ के बीच का भाग। दरमियानी हिस्सा। २.

कमर। कटि। ३. अंतर। भेद। फरक। ४. सुश्रुत के अनुसार १६ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था।

मध्यक-सज्ञा पु० औसत। बराबर का पड़ता। सामान्य अनुपात। कई सव्थाओं, मूल्यों या तोल-नाप आदि को एक में मिलाकर उनके जोड़ का किया हुआ सम विभाग, जो उनका मध्यम मान प्रकट करता है।

मध्यगत-वि० बीच का। मध्य का।

मध्यता-सज्ञा स्त्री० मध्य होने का भाव।

मध्यदेश-सज्ञा पु० भारतवर्ष का वह प्रदेश, जो हिमालय के दक्षिण, विंध्य-पर्वत के उत्तर, कुक्षेत्र के पूर्व और प्रयाग के पश्चिम में है।

मध्यम-वि० १. मध्य का। बीच का। २. न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा।

सज्ञा पु० १ संगीत के सात स्वरों में से चौथा स्वर। २ नायिका के रोध करने पर अनुराग न प्रकट करनेवाला उपनि नायक। मध्यम पुरुष-सज्ञा पु० वह पुरुष, जिससे बात की जाय (व्याकरण)।

मध्यमवर्ग-सज्ञा पु० समाज की वह श्रेणी या समाज में उन व्यक्तियों का समूह, जो न तो बहुत ही गरीब हैं और न बहुत धनी, या जो न तो मजदूर हैं और न पूँजीपति। (अंग्रे-मिडिल क्लास)।

मध्यमा-सज्ञा स्त्री० १ बीच की उँगली। २ वह नायिका, जो अपने प्रियतम के प्रेम या दोष के अनुसार उसका आदर-मान या अपमान करे।

मध्यमान-सज्ञा पु० [वि० मध्यमानिक] औसत। सामान्य अनुपात। बराबर का पड़ता। दे० "मध्यक"।

मध्ययुग-सज्ञा पु० प्राचीन और आधुनिक युगों के बीच का समय। प्रायः इसका देगा के इतिहास में ईसवी छठी से पन्द्रहवीं शताब्दी तक का समय।

मध्ययुगीन-वि० १ मध्ययुग का। २ मध्ययुग-सम्बन्धी।

मध्यवर्ती-वि० बीच का। मध्य भाग। सज्ञा पु० विनवर्दी। दो दला या पश्चा के

बीच म रहकर उनके पारस्परिक व्यवहार या लेनदेन में कुछ सुभीते पैदा करके अपना लाभ करनेवाला। जैसे—उत्पादको तथा उप-भोक्ताओं के बीच में व्यापारी या सरकार और किसान के बीच में जमींदार। (अग्रे०—इंष्टर-मिडियेटरी या मिडिल मैन।)

मध्यस्थ—वि० जो बीच में हो।

नशा पु० [स्त्री० मध्यस्थता] बीच में पड़कर विवाद या झगडा निपटानेवाला। आपस म समझौता करानेवाला। विचरवाई।

मध्या—सज्ञा स्त्री० १ वह नायिका, जिसमें लज्जा और काम समाज हो। २ नाप-तौल या समय आदि के विचार से बीच में पड़नेवाली नाप आदि।

मध्यावकाश—सज्ञा पु० काम करने के घटों में थोड़ा समय के लिए मिलनेवाला वह अवकाश, जो लोगों को आराम या जलपान आदि के लिए दिया जाता है। (अग्रे०—१ रिसेस। २ लच। ३ इंष्टरवल।)

मध्याह्न—सज्ञा पु० दोपहर। दिन के बीच का समय।

मध्य—क्रि० वि० बीच में। मध्य में।

मध्याचार्य्य—सज्ञा पु० माध्व सम्प्रदाय के प्रवर्तक प्रसिद्ध वेण्णव आचार्य्य, जो बारहवीं शताब्दी में हुए थे।

मन—सज्ञा पु० १ अंतःकरण। चित्त। २ अंतःकरण को चार वृत्तियों में से एक, जिससे सकल्प-विकल्प होता है। ३ इच्छा। विचार। इरादा। ४ चालीस सेर की एक तोल। ५ मणि।

मूहा०—किसी से मन अटकना या उलझना—प्रीति होना। प्रेम होना। मन हरा होना—चित्त प्रसन्न रहना। मन टूटना—साहस छूटना। हवांस होना। मन बढ़ना—साहस बढ़ना। उत्साह बढ़ना। मन बढ़ाना—साहस देना। उत्साह बढ़ाना। मन बहलाना—दुखी मन को किसी तरह खुद कराना। किसी का मन बसना—किसी के मन की याह लेना। मन के लड़खलाना—व्ययं की आशा पर प्रसन्न होना। मन चलना—इच्छा होना। चाहना। लालच होना। किसी का मन टटो-

लना—किसी के मन की याह लेना। मन डोलना—मन का चंचल होना। मन में लालच उत्पन्न होना। मन देना—१. जी लगाना। २ ध्यान देना। मन तोड़ना या हारना—साहस छोड़ना। मन फेरना—मन को किसी ओर से हटाना। मन में बसना—पसंद आना। मन भरना—१ निश्चय या विदबास होना। २ सतोष होना। मन भर जाना—अभा जाना। तृप्त होना। मन भाना—भला लगना। मन मानना—सतोष होना। निश्चय होना। अच्छा लगना। अनुराग होना। मन में रखना—गुप्त रखना। प्रकट न करना। मन में लाना—विचार करना। सोचना। मन मिलना—दो मनुष्यों का स्वभाव अनुकूल होना। मन मारना—चित्त छिन्न होना। उदास होना। इच्छा को दवाना। मन मैला करना—वप्रसन्न या असंतुष्ट होना। मन मोटा होना—विराग होना। उदासीन होना। मन मोड़ना—प्रवृत्ति या विचार को दूसरी ओर लगाना। किसी का मन रखना—किसी की इच्छा पूर्ण करना। मन लगना—जी लगना। तबीअत लगना। मन से उतरना—मन में आदर-भाव न रह जाना। विस्मृत होना। मन ही मन—हृदय में। चुपचाप। मनमाना—अपने मन के अनुसार। इच्छानुसार। अपनी तबीअत के मुताबिक।

मनईनु—सज्ञा पु० मनुष्य।

मनकना—क्रि० अ० हिलना-डोलना।

मनकरा\*—वि० चमकदार।

मनका—सज्ञा पु० १ पत्थर, लकड़ी आदि का बेधा हुआ दाना, जिसे पिरोकर माला बनाई जाती है। गुरियां। २ गरदन के पीछे की हड्डी, जो रीढ़ के बिलकुल ऊपर होती है।

मूहा०—मनका ढलना या ढलकना—मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मनकाभना—सज्ञा स्त्री० इच्छा। मनोरथ।

मनकूला—वि० [अ०] अस्थिर। चलायमान। अस्थायी। चर।

मौ०—जायदाद मन हूना—चल संपत्ति।

गैर मनकूला—स्थिर। स्थायी।

गैर मनकूला जायदाद=चल सम्पत्ति।  
मन-गड़ंत-वि० जिसकी वास्तविक सत्ता न हो,  
केवल कल्पना कर ली गई हो। कपोल-  
कल्पित।

सज्ञा स्त्री० कोरी कल्पना। कपोल-कल्पना।  
मनचला-वि० १. रसिक। २. साहसी। निडर।  
मनचाहा-वि० इच्छित। मन से चाहा हुआ।  
मनचीता-वि० [स्त्री० मनचीती] मनचाहा।  
मन में सोचा हुआ।

मनजात-सज्ञा पु० कामदेव।  
मनन-सज्ञा पु० १. चिंतन। २. भली भाँति  
अध्ययन। सोचना, विचार करना।

मननशील-वि० विचारशील। विचारवान।  
मननाना-कि० अ० [अनु०] गुजारना।  
मनवाछित-वि० दे० "मनोवाछित"।

मनभाषा-वि० [स्त्री० मनभाई] मन को  
भाने या अच्छा लगनेवाला। मनोकूल।  
मनभावता-वि० [स्त्री० मनभावती] १. भला  
लगनेवाला। मन को अच्छा लगनेवाला।  
२. प्रिय। प्यारा।

मनभावन-वि० मन को अच्छा लगनेवाला।  
मनमत\*†-वि० दे० "मदमत"।  
मनमति-वि० अपने मन का काम करनेवाला।  
स्वेच्छाचारी।

मनमानता-वि० दे० "मनमाना"।  
मनमाना-वि० [स्त्री० मनमानी] इच्छा-  
नुसार। बिना रोक-टोक के। अपने मन को  
अच्छा लगनेवाला।

मनमूली†-वि० मनमाना काम करनेवाला।  
स्वेच्छाचारी।

मनमुटाय या मनमोटाव-सज्ञा पु० अनवन।  
वैमनस्य। आपस में फर्क पड़ना।  
मनमोदक-सज्ञा पु० अपनी प्रसन्नता के लिए  
मन में सोची हुई असभय बात। मन का  
लड्डू।

मनमोहिन-वि० [स्त्री० मनमोहिनी] मन को  
मोहनेवाला। चित्तकर्षक। प्रिय। प्यारा।  
सज्ञा पु० १. श्रीकृष्ण। २. एक मासिक छंद।  
मनमोजी-वि० मन को मोज के अनुसार काम  
करनेवाला। स्वेच्छाचारी। अपने मन को  
जो अच्छा लगे, वही करनेवाला। किसी बात

को परवाह या चिन्तान करनेवाला। मस्त।  
मनरंज\*-वि० दे० "मनोरंजक"।

मनरंजन-वि० सज्ञा पु० दे० "मनोरंजन"।  
मनरोचन-वि० सुंदर।

मनवाना-कि० स० मनाना। दूसरे को मनाने  
में प्रवृत्त करना।

मनशा-सज्ञा स्त्री० [अ०] इच्छा। विचार।  
इरादा। तात्पर्य। मतलब।

मनसना\*-कि० स० १. इच्छा करना। इरादा  
करना। मन लगाना। २. सकल करना। दृढ़  
निश्चय या विचार करना। ३. हाथ में कुश-  
जल लेकर किसी वस्तु के दान का सकल  
करना।

मनसब-सज्ञा पु० [अ०] पद। ओहदा।  
काम। अधिकार।

मनसबदार-सज्ञा पु० [फा०] जो किसी मनसब  
पर हो। मुसलमानों राज्य-काल में एक प्रकार  
के अधिकारी, जिन्हें कुछ सेना रखने का  
अधिकार होता था। ओहदेदार। अधिकारी।

मनसा-सज्ञा स्त्री० १. कामना। इच्छा।  
२. सकल। इरादा। ३. अभिलाषा।  
मनोरथ। ४. मन। ५. बुद्धि। ६. अभिप्राय।  
तात्पर्य। ७. एक देवी का नाम।

वि० १. मन से उत्पन्न। २. मन का।  
कि० वि० मन से। मन के द्वारा।

मनसाकर-वि० मनोरथ पूरा करनेवाला।  
मनसाना-कि० अ० उमग में जाना।

कि० स० १. दूसरे का मन बहलाना। २.  
दूसरे का मन लगाना। मनसने का काम  
दूसरे से कराना।

मनसायन†-वि० १. मन बहलाने का कार्य।  
२. मनबहलाव का स्थान। मनोरम  
स्थान। गुलजार।

मनसिज-सज्ञा पु० कामदेव।

मनसूख-वि० [अ०] [सज्ञा मनसूखी] १. रद्द  
किया हुआ। जो अप्राप्तार्थिक ठहरा दिया  
गया हो। २. परित्यक्त। त्यागा हुआ।

मनसूबा-सज्ञा पु० [अ०] इरादा। विचार।  
युक्ति। दम।

मुहा०—मनसूबा घषिना=१. इरादा  
करना। २. युक्ति सोचना।

मनस्क-सज्ञा पु० मन का अल्पायक रूप (समस्त पदार्थ में) ।

मनस्ताप-सज्ञा पु० १ मानसिक कष्ट ।

मन का दुःख । २ पदस्ताप । पछतावा ।

मनस्विता-सज्ञा स्त्री० बुद्धिमत्ता । बुद्धिमान् ।

मनस्वी-वि० [स्त्री० मनस्विनी] बुद्धिमान् ।

मनहस-सज्ञा पु० पग्रह अधरा का एक वर्णिक छंद । मानस हस ।

मनहर-वि० दे० "मनोहर" ।

सज्ञा पु० पनाधारी छंद का एक नाम ।

मनहरण-वि० मनोहर । सुंदर ।

सज्ञा पु० १ मन हरन की शिष्टा या भाव ।

२ अग्रहधरो का एक वर्णिक छंद । नलिनी ।

भ्रमरावली ।

मनहार-वि० दे० "मनोहारी" ।

मनहारि-वि० दे० "मनाहर" ।

मनहूँ\*-अव्य० जैत । यवा ।

मनहस-वि० [अ०] अनुम । बुरा । अप्रिय-

दर्शन ।

मना-वि० [अ०] १ जिसके संबंध में नियेष

हो । निषिद्ध । बजित । २ अनुचित ।

ना-मुनासिब ।

मनाक, मनाग-वि० थोडा ।

मनादी-सज्ञा स्त्री० दे० "मुनादी" ।

मनाना-कि० सं० १ स्वीकार करना । २

ठुंटे हुए को प्रसन्न करने की कोशिश

करना । राजी करना । ३ ईश्वर या देवता

आदि से किसी काम के पूरा होने के लिए

प्रार्थना करना । स्तुति करना ।

मनावन-सज्ञा पु० ठुंटे हुए को प्रसन्न करने

का काम ।

मनाही-सज्ञा स्त्री० न करने की आज्ञा ।

रोक । अवरोध । निषेध ।

मनिघर\*-सज्ञा पु० दे० "मणिघर" ।

मनिया-सज्ञा स्त्री० गुरिया । मनिवा ।

माला में पिरोया हुआ दाना । बड़ी ।

माला ।

मनिघर-वि० उज्ज्वल । चमकीला । दर्श-

नीय । शोभायुक्त । गुहावना ।

मनिहार-सज्ञा पु० [स्त्री० मनिहारिनी]

बुड़ी बनाने या बेचनेवाला । बुद्धिहाद ।

मनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मणि" । वीर्य्य ।

अह्वार ।

मनीषा-सज्ञा स्त्री० बुद्धि । ज्ञान । जल ।

मनीषि या, मनीषी-वि० पंडित । ज्ञानी ।

बुद्धिमान् । मेधावी । अवलमद ।

मनु-सज्ञा पु० १ ब्रह्मा के पुत्र, जो मनुष्या के

आदि पुरुष माने जाते हैं । इन्हीं के समय में

मानवी मूर्ति प्रारम्भ होती है । एक

कल्प में चौदह मनु होते हैं । यथा—

स्वाम्य, स्वाराचिप, उत्तम, तामस, रेवत,

चाक्षुष, वंश्वत, सावणि, दक्ष सावणि,

ग्रह सावणि, धर्म सावणि, रुद्र सावणि,

देव सावणि और इन्द्र सावणि । २ विष्णु ।

३ अत वरण । मन । ४ १४ की संख्या ।

\*अव्य० माना । जैम ।

मनुभ्रा-सज्ञा पु० १ मन । २. मानव ।

मनुष्य ।

मनुज-सज्ञा पु० मनुष्य । आदमी ।

मनुजता-सज्ञा स्त्री० दे० "मनुजत्व" ।

मनुजत्व-सज्ञा पु० मनुष्य होने का भाव या

गुण । मनुष्यत्व । आदमीप्राप्त ।

मनुजोचित-वि० मनुष्य के लिए जो उचित

हो । मनुष्य के उपयुक्त ।

मनुष\*-सज्ञा पु० १ दे० "मनुष्य" । आदमी ।

२ पति । खादिद ।

मनुष्य-सज्ञा पु० बुद्धि-बल के कारण प्राणिया

में सर्वश्रेष्ठ प्राणी । मनु से उत्पन्न प्राणी ।

आदमी । मर ।

मनुष्यता-सज्ञा स्त्री० १ मनुष्य होने का

भाव या गुण । आदमीप्राप्त । २ दया-भाव ।

शील । ३ शिष्टता । तमोज ।

मनुष्यत्व-सज्ञा पु० दे० "मनुष्यता" ।

मनुष्यलोक-सज्ञा पु० ससार । मर्यादालोक ।

मनुसाई\*-सज्ञा स्त्री० १ मनुष्यता । २

आदमीप्राप्त । ३ पुरुषार्थ । पराक्रम । बहादुरी ।

मनुस्मृति-सज्ञा स्त्री० मनुप्रणीत हिन्दू-धर्म-

शास्त्र का प्रसिद्ध ग्रन्थ । मानव-धर्म-

शास्त्र ।

मनुहार-सज्ञा स्त्री० १ किसी का मान छुड़ाने

या उस प्रसन्न करने के लिए की जानेवाली

विनती । मनोभा । सुखामद । विनय ।

प्रार्थना । २. सत्कार । आदर । ३. शांति ।  
तृप्ति ।

मनुहारना\*†-क्ति० स० १. मनाना । विनय  
करना । प्रार्थना करना । खुशामद करना ।

२. सत्कार करना । आदर करना ।

मनो†-अव्य० मानो ।

मनोकामना-सज्ञा स्त्री० इच्छा । अभि-  
लाषा ।

मनोगत-वि० जो मन में हो । मन की बात ।  
सज्ञा पु० कामदेव ।

मनोगति-सज्ञा स्त्री० मन की गति । चित्त-  
वृत्ति । इच्छा । चाहिष ।

मनोज-संज्ञा पु० कामदेव ।

मनोजव-वि० भावों या विचारों की तरह  
तेज चालवाला । जितनी तेजी से मन में  
विचार होते हैं, उतनी तेजी से चलनेवाला ।  
बहुत तेज । अत्यंत वेगवान् ।

सज्ञा पु० १. विष्णु । २. वायु के एक पुत्र  
का नाम (महाभारत, हरिवंशपुराण) ।

मनोज-वि० मनोहर । सुंदर ।

मनोदेयता-सज्ञा पु० विवेक । बुद्धि ।

मनोनिग्रह-सज्ञा पु० मन का निग्रह । मन  
को बश में रखना ।

मनोनियोग-सज्ञा पु० किसी काम में मन को  
एकाग्र करके लगाना । अच्छी तरह मन  
लगाना ।

मनोनीत-वि० १. मन के अनुकूल । पसंद ।  
चुना हुआ । २. किसी पद के लिए नियुक्त  
हानेवाला या निर्वाचित व्यक्ति ।

मनोभाव-सज्ञा पु० मन में उत्पन्न होनेवाला  
भाव या विचार ।

मनोभिराम-वि० मन को सुन्दर लगनेवाला ।  
मनोहर । सुंदर ।

मनोभिलाष-सज्ञा पु० मन की प्रबल इच्छा ।  
हृदय की कामना ।

मनोभू-सज्ञा पु० १. मन से उत्पन्न । २.  
प्रेम । ३. कामदेव ।

मनोमय-वि० मन से मुक्त या पूर्ण । मानसिक ।  
मन-सम्बन्धी । आध्यात्मिक ।

मनोमय कोश-सज्ञा पु० मनुष्य के शरीर के  
अन्दर पाँच कोशों में से तीसरा । मन, अह-

कार और कमेन्द्रियाँ इसके अंतर्भूत मानी  
जाती हैं (वेदात) ।

मनोमालिन्य-सज्ञा पु० मनमुद्गल । रंजित ।  
अनवन ।

मनोयोग-संज्ञा पु० ध्यान । ध्यानपूर्वक ।  
मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर  
लगाना ।

मनोरञ्जक-वि० चित्त को प्रसन्न करनेवाला ।  
दिलचस्प ।

मनोरंजन-सज्ञा पु० [ वि० मनोरञ्जक ] मन  
को प्रसन्न करने की क्रिया । मनोविनोद ।  
दिल-बहलाव ।

मनोरथ-सज्ञा पु० अभिलाषा । इच्छा ।  
मनोकामना ।

मनोरम-वि० [ स्त्री० मनोरमा ] मनोहर ।  
सुंदर ।

मनोरमा-सज्ञा स्त्री० १. सुंदरी । सुंदर स्त्री ।

२. गोरोचन । ३. सात सरस्वतियों में से  
चौथी का नाम । ४. एक प्रकार का छंद ।

५. चंद्रशेखर के अनुसार आर्या के ५७  
भेदों में से एक वर्णिक वृत्त । ६. दस अक्षरों

का एक वर्णिक वृत्त । ७. केशव के अनुसार  
चौदह अक्षरों का एक 'वर्णिक वृत्त' । ८.

केशव के मतानुसार दोधक छंद का एक  
नाम । ९. मूदन के अनुसार दस अक्षरों का  
एक वर्णिक वृत्त ।

मनोरा-सज्ञा पु० गोबर के बने हुए वे चित्र  
या मूर्तियाँ, जो दीपावली होने के बाद दीवार  
पर बनाकर पूजी जाती हैं । तिथियाँ ।

मनोराभूमक-सज्ञा पु० एक प्रकार का गीत ।  
मनोराज-सज्ञा पु० मनोराज्य । मानसिक  
कल्पना । मन की कल्पना ।

मनोलोला-सज्ञा स्त्री० मन में उठनेवाले  
विचार या कल्पित बात, जिसका कोई वास्त-  
विक आधार न हो (अंधे०-इण्टम) ।

मनोवाछा-सज्ञा स्त्री० इच्छा । कामना ।

मनोवाचित-वि० जिस चीज की इच्छा की  
गई हो, वह चीज । 'इच्छित' । मन-माँगा ।

मनोविकार-सज्ञा पु० मन की वह अवस्था,  
जिसमें कोई भाव, विचार या विकार उत्पन्न  
होता है । जैसे श्रोध, दया ।

**मनोविज्ञान-सज्ञा पु०** [ वि० मनोवैज्ञानिक ] वह शास्त्र, जिसमें चित्त की वृत्तियाँ, मन के विचारा या स्वभाव आदि का विवेचन होता है।

**मनोविश्लेषण-सज्ञा पु०** मनुष्य का मन बिना अवस्थाओं में किस प्रकार कार्य करता है, इसका विश्लेषण या जाँच। (अग्र०-साद्वका-अनैलिसिस)

**मनोवृत्ति-सज्ञा स्त्री० १** दे० 'मनोविकार'।  
२ प्रवृत्ति। अभिरुचि। ३ मम्मान।

**मनोवैज्ञानिक-वि०** मनोविज्ञान-सम्बन्धी।  
दे० 'मनोविज्ञान'।

**मनोवैज्ञानिक-वि०** मनोविज्ञान-सम्बन्धी।  
दे० 'मनोविज्ञान'।

**मनोव्यापार-सज्ञा पु०** विचार। मानसिक क्रिया।

**मनोवृत्ति-सज्ञा पु०** दे० "मनोविकार"।

**मनोहर-वि०** [ सज्ञा मनाहस्ता ] मन को आकर्षित करनेवाला। सुंदर।

**सज्ञा पु०** छप्पन छंद का एक भद्र।

**मनोहरता-सज्ञा स्त्री०** सुंदरता।

**मनोहरताई-सज्ञा स्त्री०** दे० 'मनोहरता'।

**मनोहारी-वि०** दे० 'मनोहर'।

**मनोनी-सज्ञा स्त्री०** दे० 'मन्त्र'।

**मन्त्र-सज्ञा स्त्री०** कामना की पूर्ति के लिए किसी देवता की पूजा करने की प्रतिज्ञा। मानता। मनोनी।

**मूह०**—मन्त्र उतारना या चढ़ाना=पूजा की प्रतिज्ञा पूरी करना। मन्त्र मानना= यह प्रतिज्ञा करना कि अमुक काम के हो जाने पर अमुक पूजा की जायगी।

**मन्त्र-सज्ञा पु० १** एक मनु या राज्य काल। एक मनु का समय। २ ग्रहा के एक दिन का चौदहवाँ भाग जो ७१ क्षणमित्रों का समय माना गया है।

**मन्त्र-वि०** [ अ० ] भागा हुआ। फरार।

**मन्त्र-सव०** मेरा या मेरी।

**मन्त्र-सज्ञा स्त्री० १** अपनापन। 'वह मेरा है' इस प्रकार का भाव। मन्त्रत्व। २ स्नह। प्रेम। ३ वह स्नह, जो माता का पुत्र पर होता है। ४ मोह। लोभ।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** "मन्त्र"।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** दे० "मन्त्र"।

**मन्त्र-वि०** नात या रिश्ते में मामा के प्यार का—जैसे मन्त्रियाँ समुद्र।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** एक पीछे की जड़, जो आँख व रोगों की जायगी है।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** चंद्रमा।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** सिंह। सर।

**मन्त्र-प्रत्यय०** [ स्त्री० मन्त्री ] एक प्रत्यय, जो तद्रूप, विकार और प्राच्य के अर्थ में शब्दों के साथ लगाया जाता है।

**सज्ञा स्त्री०** दे० 'म'।

**अव्यय** [ फा० ] सहित। साथ।

**सज्ञा पु० १** एक दान का नाम। २ पुराणानुसार एक प्रसिद्ध दानव, जो एक उत्कृष्ट शिल्पी था।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** दे० 'मन्त्र'। मन्त्र हाथी।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** कामदेव।

**मन्त्र, मन्त्र-वि०** मन्त्र। मन्त्रमन्त्र।

**मन्त्र-सज्ञा स्त्री०** दे० "मन्त्र"।

**मन्त्र-वि०** [ अ० ] मित्रा हुआ। प्राप्त।

**उपलब्ध**। सुलभ। मिलनवाला।

**मन्त्र-सज्ञा स्त्री०** दे० 'माया'।

**मन्त्र-वि०** [ स्त्री० मन्त्री ] दयालु। कृपालु।

**मन्त्री-सज्ञा स्त्री०** वह ढाँडा या धरन, जिस पर हिंडोले की रस्सी सटकती है।

**मन्त्र-सज्ञा पु० १** किरण। रश्मि। २ दीप्ति। प्रकाश। ३ ज्वाला।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** [ स्त्री० मन्त्री ] मोर।

**मन्त्र-सज्ञा स्त्री०** चौबीस अक्षरों का एक छन्द।

**मन्त्र-सज्ञा स्त्री०** तरह अक्षरों के एक छंद का नाम।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** मन्त्रदेव।

**मन्त्र-सज्ञा स्त्री० १** मन्त्रता। दबाकर इशारा करना। सकेत। २ मृत्पु। ३ किसी बात का गुप्त रहस्य। दे० 'मन्त्र'।

**मन्त्र-सज्ञा पु०** दे० 'मन्त्र'।

**मन्त्र-वि०** [ अ० ] केन्द्र।

मरकत-सज्ञा पु० पत्रा (रत्न) ।  
 मरकता-क्रि० अ० १. दवाव के नीचे पड़कर  
 दूना । २. दे० "मूडकना" ।  
 मरकाना-क्रि० स० १ चूर करना । तोड़ना ।  
 २ दे० "मूडकाना" ।  
 मरणज\*+वि० मसला हुआ । गीजा हुआ ।  
 मरघट-सज्ञा पु० मुर्दे फूँकने का घाट या  
 स्थान । श्मशान ।  
 मरज या मर्ज-सज्ञा पु० [अ०] १. रोग ।  
 बीमारी । २. बुरी लत । सराव आदत ।  
 कुदेवा ।  
 मरजाद, मरजादा\*-सज्ञा स्त्री० १ दे०  
 "मर्यादा" । २ सीमा । हद्द । ३ प्रतिष्ठा ।  
 आदर । महत्त्व । ४ रीति । परिपाटी । नियम ।  
 मरजिया-वि० १ मरकर जीनेवाला । जो मरने  
 से बचा हो । २ जो मरने के समीप हो । मरणा-  
 सज्ञा ३ जो प्राण देने पर उतरा हुआ । अधमरा ।  
 सज्ञा पु० समुद्र में डूबकर उसके भीतर से  
 मोती आदि निकालनेवाला । जिवकिया ।  
 मरखी-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ इच्छा । कामना ।  
 चाह । २ आज्ञा । ३ स्वीकृति । ४ प्रसन्नता ।  
 खुशी ।  
 मरजीया-सज्ञा पु० दे० "मरजिया" ।  
 मरण-सज्ञा पु० मृत्यु । मौत ।  
 मरतवा-सज्ञा पु० [अ०] १ वार । दफा ।  
 २ पद । पदवी ।  
 मरबई-सज्ञा स्त्री० १. मरदानगी । पुरुषार्थ ।  
 २. साहस । ३. धीरता ।  
 मरवना\*-क्रि० स० १ मर्दन करना । मस-  
 लना । २ कुचलना । मलना । धस करना ।  
 ३. मोड़ना । गुंथना ।  
 मरवनिघा-सज्ञा पु० शरीर में तेल मलने-  
 वाला तैलक ।  
 मरवानगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] धीरता ।  
 दूरता । मोर्म् । साहस ।  
 मरवाना-वि० [फा०] १ बहादुरी का ।  
 साहस का । धीरता-नम्पन्गी । २ पुरुष-  
 सवधी । पुरुषा कान्ता ।  
 मरबूद-वि० [अ०] नीच । विरह्यत ।  
 मरना-क्रि० अ० १. शरीर में प्राण का  
 निवृत्तता । शरीर का अन्त होना । मृत्यु होना ।

२ मरने के समान बहुत अधिक कष्ट उठाना ।  
 ३. सूखना । मुरझाना । मृतक के समान हो  
 जाना । ४. लज्जा या सकोच आदि के कारण  
 सिर न उठा सकना । ५ न्योछावर या कुर्बान  
 होना । जान देना ।  
 मुहा०—मरना-जीना=शादी-गमी । शुभा-  
 शुभ अवसर । सुख-दुःख । किसी पर मरना=  
 किसी से इतना अधिक प्रेम करना कि उसे  
 प्राप्त करने के लिए अपनी जान की भी  
 परवाह न करना । आसक्त होना । किसी  
 पर जान देना । मर मिटना=जान दे देना ।  
 प्रयत्न करते-करते अपना सब कुछ गवाँ देना ।  
 मरा जाना=व्याकुल होना । पानी मरना=  
 १ पानी का दीवार की नींव में धँसना ।  
 २ किसी के सिर कोई कलक आना ।  
 मरनी-सज्ञा स्त्री० १ मृत्यु । मौत । २ किसी  
 के मरने पर उसके सवधियों-द्वारा किया  
 जाने वाला कृत्य । ३ कष्ट । हैरानी ।  
 मरभुखला-वि० १ भुवखड । २ कंगाल ।  
 दरिद्र ।  
 मरम-सज्ञा पु० दे० "मर्म" ।  
 मरमर-सज्ञा पु० [पू०] १. एक प्रकार का  
 चिकना और ज़मकीला पत्थर (जैसे  
 सगमरमर) । २. 'मरमर' की आवाज-जैसे,  
 हुआ से पत्तों आदि के हिलने पर होती है ।  
 मरमराना-क्रि० अ० [अनु०] मरमर शब्द  
 करना । अधिक दवाव पाकर लकड़ी आदि  
 का मरमर शब्द करके दबना ।  
 मरमी-वि० दे० "मर्मज्ञ" ।  
 मरम्मत-सज्ञा स्त्री० [अ०] बिगड़ी हुई या  
 टूटी-फूटी वस्तु को ठीक करना । दुरुस्ती ।  
 जोर्णीद्वार ।  
 मरवाना-क्रि० स० दूतरे से मारने या काम  
 कराना । किसी को मारने के लिए प्रेरित  
 करना ।  
 मरसा-सज्ञा पु० एक प्रकार का मांस ।  
 मरसिया-सज्ञा पु० [अ०] १. उर्दू भाषा में  
 शोक-मूलक कविता, जो किसी की मृत्यु के  
 सरप में बनाई जाती है । २. मरण-याक ।  
 राना-मीटना ।  
 मरहट\*+सज्ञा पु० मरघट । मसान ।

\*सज्ञा स्त्री० मोठी।

मरहटा-सज्ञा पु० १ दे० 'मरहटा'। २.

ऊनतीस मात्रावा का एक मात्रिक छंद।

मरहटा-सज्ञा पु० महाराष्ट्र दश का रहन-  
वाला। महाराष्ट्र।

मरहटी-वि० महाराष्ट्र या मरहटा से संबंधित  
रतनवाला। मरहटा का।

सज्ञा स्त्री० मरहटा की धोती। दे० 'मराठी'।

मरहम-सज्ञा पु० [अ०] शरीर व धाव या कटे  
हुए स्थान पर लगाने का लेप या औषध।  
मलहम।

मरहला-सज्ञा पु० [अ०] १ टिकान। मजिल।  
पडाव। २ दे० मरातिव।

मुहा०—मरहला तय करना=अमला निब-  
टाना। कठिन काम पूरा करना।

मरहूम-वि० [अ०] स्वर्गीय। मृत।

मराठा-सज्ञा पु० दे० 'मरहटा'।

मरातिव-सज्ञा पु० [अ०] १ दरजा। पद।  
२ उत्तरोत्तर आनवाली अवस्थाएँ। ३

मकान का खंड। तरला। ४ ध्वजा। सडा।

मराना-क्रि० स० मारन के लिए प्रेरणा  
दना। मरवाना। दूसरे से मारन का काम  
कराना।

मरायल\*—वि० १ मार खाया या पीटा  
हुआ। २ नि सत्त्व। सत्त्वहीन। निर्बल।  
निर्जीव। मरियल।

गज्ञा पु० पादा। टोटा।

मराल-सज्ञा पु० [स्त्री० मराली] १ हंस। एक  
प्रकार का बत्तख। २ घोडा। ३ हाथी।

मरिद\*-सज्ञा पु० १ दे० 'मलिद'। २ दे०  
'मरद'।

मरिच-सज्ञा पु० मिर्च। मिरिच।

मरियम्-सज्ञा स्त्री० [अ०] ईसा मसीह की  
माता का नाम।

मरियन-वि० बहुत दुबल। मरे हुए के समान।

मरी-सज्ञा स्त्री० महामारी। प्लग, हुंजा आदि  
काई मशामक 'राग, एक साथ जिसमें  
बहुत से लोग मरते हैं।

मरीचि-सज्ञा पु० १-एक ऋषि जिन्हें पुराणों  
में ब्रह्मा का मानसिक पुत्र, एक प्रजापति और  
सप्तपिपों में माना गया है। २ एक मस्त का

नाम। ३ एक ऋषि, जो भृगु कपुत्र और  
कश्यप के पिता थे।

सज्ञा स्त्री० १ किरण। २. प्रज्ञा। काति।

३. मरीचिका। मृगतृष्णा।

मरीचिका-सज्ञा स्त्री० १ झूठी बात। रंगि-  
स्तान में जल की मिथ्या क्रांति। मृगतृष्णा।

२ किरण।

मरीची-सज्ञा पु० १ मूख्यं। २ चद्रमा।

मरीच-वि० [अ०] रागी। बीमार।

मरु-सज्ञा पु० १ मरुस्थल। रेगिस्तान। निजल  
स्थान। २ मारवाड और उसके वात-पास  
के देश का नाम।

मरुधा-सज्ञा पु० १ वन-तुलसी या बबरी की  
जाति का एक पौधा। २ मकान का छानन  
में सयम ऊपर की बल्ली। बंडर। हिंडाला  
लटकान को लकड़ी।

मरुत्-सज्ञा पु० १ वायुदेवता। वायु। हवा।  
२ प्राण। दे० 'मरु'।

मरुतवान\*-सज्ञा पु० दे० 'मरुतवान्'।

मरुतवान्-सज्ञा पु० १ इन्द्र। २ देवताओं का  
एक गण, जो धर्म के पुनर्मान जात हैं। ३.  
हनुमान।

मरुथल-सज्ञा पु० दे० 'मरुस्थल'।

मरुथीप-सज्ञा पु० मरुस्थल में उपजाऊ और  
सजल हरा-भरा स्थान।

मरुधर-सज्ञा पु० मारवाड देश।

मरुभूमि-सज्ञा स्त्री० बालू का निर्जल मैदान।  
रेगिस्तान।

मरुना\*-क्रि० अ० 'मरोरना' का अकर्मक  
रूप।-एटना।

मरुस्थल-सज्ञा पु० दे० 'मरुभूमि'। रेगि-  
स्तान।

मरु\*-वि० कठिन। दुरुह।

मुहा०—मरु करिके या मरु करि\*=  
ज्या-स्वा करके। बड़ी कठिनाई से।

मरुडा\*—सज्ञा पु० दे० 'मरोड'।

मरोड-सज्ञा पु० १ मरोडने की क्रिया या  
भाव। पैठ में ऎंठन और पीडा होना। २

ऐंठन। धुमाव। बल। ३ व्यथा। क्षोभ।

४ घमंड। गर्व। ५ क्रोध। गुस्सा।

मुहा०—मरोड खाना=बबरखाना। उल-

शन में पड़ना। मन में मरोड करना=कपट करना। मरोड की बात=घुमाव-फिराव की बात। मरोड गहना=नोध करना।

मरोडना-क्रि० स० १ ऐंठना। बल डालना।

२ पीडा देना। दुख देना। मसलना। ३

ऐंठ करना। ४ नष्ट करना।

मुहा०—अग मरोडना=शरीर का कोई भाग ऐंठना। अँगड़ाई लेना। भौह मरोडना या आँख मरोडना=१ आँख से इशारा करना या कनखी मारना। २ नाक-भौह बँडाना। भौह सिकोडना। हाथ मरोडना\*=पछताना। हाथ ऐंठना।

मरोडा-सज्ञा पु० १ ऐंठन। मरोड। २ पट की वह पीडा, जिसमें कुछ ऐंठन मालूम हो।

३ उमेठ। बल।

मरोडी-सज्ञा स्त्री० ऐंठन। मरोड।

मुहा०—मरोडी करना=खीचातानी करना।

मरोरि\*—सज्ञा पु० दे० “मरोड”।

मरकट-सज्ञा पु० १ बदर। २ मकडा।

मकटो-सज्ञा स्त्री० १ बँदरी। बानरी। २ मकडी। ३ छद के ९ प्रत्यया म से अंतिम प्रत्यय। इसके द्वारा माना के प्रस्तार में छद के लघु, गुरु कला और वर्णों की सख्या का ज्ञान होता है।

मरकत\*-सज्ञा पु० दे० “मरकत”।

मत्तयान-सज्ञा पु० रोगन लगा हुआ वर्तन, जिसमें अचार, धो और मुख्चे आदि रखे जाते हैं। अमृतवान।

मत्प-वि० मरनवाला। नश्वर।

सज्ञा पु० १ मनुष्य। २ पृथिवी। ३ शरीर।

मत्पलोक-सज्ञा पु० पृथ्वी। ससार।

मद-सज्ञा पु० १ पुरुष। नर। २ ताहसी या धीर पुरुष। ३ पुरुषार्थी। ४ योद्धा। ५ पति।

मदना\*-क्रि० स० १ मालिश करना।

मलना। २ कुचलना। मसलना। तोड-फोड डालना। ३ नाश करना। रोदना।

मदुम-सज्ञा पु० [फा०] मनुष्य।

मदुमनुमारो-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी स्थान या दस्त में रहनेवाला मनुष्या की

गणना। जन-सख्या की गिनती। जन-गणना।

२ जन-सख्या। आवादी।

मदुमी-सज्ञा स्त्री० [फा०] मरदानगी। पोख।

मदुन-सज्ञा पु० [वि० मद्धित] १ कुचलना।

रोदना। मलना। मसलना। २ तेल, उबटन,

आदि शरीर में लगाना या मलना। ३

कुस्ती में एक पहलवान का दूसरे पहलवान

की गर्दन पर धक्का लगाना। धक्का। ४

ध्वंस। ५ पीसना। घोटना। रगडना।

वि० नाशक। सहारकर्ता।

मदुल-सज्ञा पु० मृदग की तरह का एक वाजा

इसका प्रचार बंगाल में है।

मद्धित-वि० जिसका मर्दन किया गया हो।

मसला हुआ।

मम-सज्ञा पु० १ रहस्य। भेद। २ सार।

तत्त्व। ३ सधिस्यान। प्राणियों के शरीर में वह स्थान, जहाँ आघात पहुँचने से अधिक वेदना होती है। दे० “मर्मस्थल”।

मर्मज्ञ-वि० किसी बात का मर्म या गूढ़ रहस्य जाननवाला। तत्त्वज्ञ। रहस्य जाननवाला। किसी विषय का पूर्ण ज्ञान रखनवाला।

मर्मभेदक-वि० दे० “मर्मभेदी”।

मर्मभेदी-वि० हृदय पर आघात पहुँचानेवाला। आंतरिक कष्ट देनवाला।

मर्मर-सज्ञा पु० दे० “मर्मर”। ‘मर्मर’

की ध्वनि या आवाज—जैसे, हवा से पत्ता आदि के हिलने पर होती है।

मर्मवचन-सज्ञा पु० १ ऐसी बात, जिससे सुननेवाले के मन में तत्कालीक हो या उस आन्तरिक कष्ट हो। २ गूढ़ अथवाली या रहस्यपूर्ण बात।

मर्मवास्य-सज्ञा पु० भेद या रहस्य की बात। गुड़ बात।

मर्मविद्-वि० दे० ‘मर्मज्ञ’।

मर्मस्थल-सज्ञा पु० १ शरीर के वे कोमल अंग, जिन पर घाट लगने से बड़ी पीडा होती है और मनुष्य मर सकता है। जैसे हृदय, कंठ, अण्डकोश आदि। २ वह स्थल, जिस पर घाट या आघात होने से आन्तरिक कष्ट हो।

मर्मस्पर्शा-वि० [ स्त्री० मर्मस्पर्शिनी, सज्ञा स्त्री० मर्मस्पर्शिता ] मर्मस्पर्श पर प्रभाव डालनेवाला। हृदयस्पर्शी। मन में चुभनेवाला।

मर्मो-वि० मर्म या रहस्य जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। मर्मज्ञ।

मर्म्यादि-सज्ञा स्त्री० १ द० "मर्म्यादा"। सीमा। हृद। २ राति। रस्म। प्रथा। ३ धियाह में बड़हार। बहार।

मर्म्यादा-सज्ञा स्त्री० १ सीमा। हृद। किनारा। २ सदाचार। नीतिधर्म। ३ प्रतिष्ठा। ४ प्रतिज्ञा। मुआहिदा। करार। ५ नियम।

मर्म्यादित-वि० १ जिसके सदाचार आदि का मान या स्तरनिधारित हो। सदाचार आदि के नियम से नियंत्रित। २ जिसकी सीमा निश्चित हो। ३ जो अपनी मर्म्यादा या सीमा के अन्दर हो।

मृषण-सज्ञा पु० [ वि० मृषणीय, मृषित ] धमा। माफी। रगड़। घपण। वि० नाश करनेवाला। नाशक। दूर करनेवाला।

मृलग-सज्ञा पु० [ फा० ] एक प्रकार के मुसलमान साधु।

मृल-सज्ञा पु० १ मूल। कीट। शरीर के अंग से निकलनेवाला विकार। २ विष्ठा। ३ दूषण। विकार। पाप। एव।

मृलका-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] आदशाह की पटरानी। महारानी।

मृलखम-सज्ञा पु० दे० "मलखम"।

मृलखम-सज्ञा पु० व्यायाम करने के लिए लकड़ी का एक प्रकार का चिकना, गाल खमा। मालखम। मलखम पर की जानेवाली कसरत या व्यायाम।

मृलभावा\*†-सज्ञा पु० उत्तर प्रदेश में बसने वाली एक जाति, जो अब मुसलमान स हिन्दू बन गई है।

मृलगजा\*-वि० दे० "मरगजा"। मला-दला हुआ। मीजा हुआ।

सज्ञा पु० बैसन में लपटकर सेल या पी में छाने हुए बैसन के पतले टुकड़े।

मलद्वार-सज्ञा पु० गुदा। शरीर की वह द्रव्य, जिससे मल निवृत्तता है।

मलना-क्रि० म० हाथ या किसी और चीज से दबाकर घिसना। मर्दन। मीजना। मसलना। मालिश करना। मराडना। ऐंठना। हाथ से बार-बार रगड़ना या दबाना।

मुहा०—दलना-मलना=पीसकर टुकड़-टुकड़े करना। पूर्ण करना। मसलना। घिसना। हाथ मलना=पठाना। पश्चात्ताप करना।

मलबा-सज्ञा पु० दे० "मलवा"।

मलमल-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध पतला वपडा।

मलमलाना-क्रि० स० १ बार-बार स्पर्श कराना। २ बार-बार खालना और ढकना। ३ बार-बार आलिंगन करना। ४ पश्चात्ताप करना।

मलमास-सज्ञा पु० अधिक मास। वह मास, जिसमें सकातिन पड़ती हो। वष म जब एक महीना दो बार पड़े, तो उसे मलमास कहते हैं। पुरुषोत्तम मास।

मलय-सज्ञा पु० १ मलाया देश। मलाया देश का रहनेवाला। २ दक्षिण भारत का मलाबार देश। ३ मलाबार देश के रहनेवाले मनुष्य। ४ सफेद चदन। ५ नदन वन। ६ छप्पय का एक भद्र।

मलयगिरि-सज्ञा पु० मलय-नामक पर्वत, जो दक्षिण में है और जिसमें चन्दन के पड़ होते हैं। मलयगिरि में उत्पन्न चन्दन।

मलयज-सज्ञा पु० चदन।

मल्यागिरि-सज्ञा पु० दे० "मलयगिरि"।

मल्याचल-सज्ञा पु० मलय-पर्वत।

मल्यानिल-सज्ञा पु० १ मलय-पर्वत की आर से आनेवाली वायु। २. गुणधित वायु। ३ वसंत ऋतु की वायु।

मलपाती-वि० मलाबार देश का। मलाबार देश-संबन्धी।

सज्ञा स्त्री० मलाबार देश की भाषा।

मलयुग-सज्ञा पु० दे० "कतिगुग"।

मलराना\*-क्रि० स० दे० "मलाना"।

मलरुचि-वि० नीच विचार का। दूषित रुचि का। पापी।

मलया-सज्ञा पु० कूडा-कंकट। गिरी हुई इमारत की ईंट, पत्थर आदि या उनका ढेर। रेल आदि की दुर्घटना होने पर टूटी-फूटी चीजों का जमा हुआ ढेर।

मलपाना-क्रि०/सं० मलने का काम दूसरे से कराना।

मलहम-सज्ञा पु० दे० "मरहम"।

मलाई-सज्ञा स्त्री० १ बहुत गरम किए हुए दूध के ऊपर जमनेवाला सार भाग। दूध की साड़ी। २ सार। तत्त्व। रस। ३ मलने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मलाट-सज्ञा पु० एक प्रकार का मोटा घटिया कागज।

मलान\*-वि० दे० 'म्लान'।

मलानि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "म्लानि"।

मलामत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ खानत। फटकार। दुतकार। २ गदगी। मेल।

यौ०-खानत मलामत=डॉट फटकार।

मलार-सज्ञा पु० वर्षा ऋतु में या पानी बरसने के साथ गाया जानेवाला एक राग।

मुहा०-मलार गाना बहुत प्रसन्न होकर कुछ कहना, विशेषतः गाना।

मलाल-सज्ञा पु० [अ०] १ दुःख। रज।

मानसिक व्यथा। २ उदासीनता। उदासी।

मलाह\*-सज्ञा पु० दे० "मल्लाह"।

मलिब-सज्ञा पु० दे० "मल्लिब"। भौंरा।

मलिक-सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० मलिका] राजा। अधीश्वर।

मलिक, मलिच्छ\*-सज्ञा पु० दे० "म्लेच्छ"।

मलिन-वि० [स्त्री० मलिना, मलिनी] १.

म्लान। उदासीन। २ मलयुक्त। मंला।

गंदता। दूषित। खराब। मटमला। धूमिल।

धुंधला। बदरंग। ३ पापात्मा। पापी। ४ धोमा। फीका।

मलिनता-सज्ञा स्त्री० मंलापन। उदासीनता।

फीकापन। धुंधलापन।

मलिनाई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।

मलिबाना\*-क्रि० अ० १ मंला होना। २ मुर-झाना। ३ उदासीन होना। ४ फीका पड़ना।

मलिया]-सज्ञा स्त्री० १ छोटी प्याली। तग मुंह का मिट्टी का एक छोटा बर्तन। २ घंरा। चक्कर।

मलियामेट-सज्ञा पु० सत्यानाश। बर्बादी। तहस-नहस। मटियामेट।

मलीदा-सज्ञा पु० [फा०] १ एक प्रकार का बहुत मुलायम ऊनी वस्त्र। २ चूरमा। दाजरे की रोटी या आटे आदि से बनाई हुई खाने की एक चीज।

मलीन-वि० १ उदास। २ मंला। गदा। ३ फीका।

मलीनता-सज्ञा स्त्री० दे० "मलिनता"।

मलूक-वि० सुंदर। मनोहर।

सज्ञा पु० १ एक प्रकार का कीड़ा। २ एक प्रकार का पक्षी।

मलेच्छ-सज्ञा पु० दे० "म्लेच्छ"।

मलेरिया-सज्ञा पु० [अंग्रे०] जाड़ा देकर और रुक-रुककर आनेवाला बुखार। जूड़ी।

मलोला-क्रि० अ० १ मन में दुखी होना। २ पछताना। अफसोस करना।

मलोला-सज्ञा पु० १ मानसिक व्यथा। दुःख। रज। २ अरमान। प्रबल इच्छा।

मुहा०-मलोला या मलोले आना=दुःख होना। पछतावा होना। मलोले खाना=मानसिक व्यथा सहना।

मल्ल-सज्ञा पु० १ पहलवान। २ भारत की एक प्राचीन जाति। इस जाति के लोग द्रव्य युद्ध में बड़े निपुण होते थे, इसी लिए कुस्ती लड़नेवाले का नाम मल्ल पड़ गया है। ३ एक प्राचीन देश, जो विराट देश के पास था। ४ दीप शिखा।

मल्लभूमि-सज्ञा स्त्री० कुस्ती लड़ने की जगह। अखाड़ा।

मल्लयुद्ध-सज्ञा पु० कुस्ती। परस्पर द्रव्य-युद्ध, जो बिना शस्त्र के केवल हाथों से किया जाय। बाहुयुद्ध।

मल्लविद्या-सज्ञा स्त्री० कुस्ती की विद्या। पहलवानी।

मल्लशाला-सज्ञा स्त्री० दे० "मल्लभूमि"।

मल्लार-सज्ञा पु० दे० "मलार"।

मल्लाह-सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० मल्लाहिन]

नाथ चलाकर और मछलियाँ मारकर अपना निर्वाह करनेवाला। यह कार्य करवाती एव जाति। बैचट। भीवर। माझी।  
 मल्लिका-सज्ञा स्त्री० १ एव प्रकार का बेला। मोतिया। २ आठ अक्षर का एव वर्णित छंद। गुमुरी वृत्ति।  
 मल्लिकाय-सज्ञा पु० १ जंनिवा ५ उन्नीसवें तीर्थंकर का नाम। २ सहृदय वाग्म्य व एर दीनार।  
 मल्लो-सज्ञा स्त्री० १ द० 'मल्लिका'। २ सुन्दरी वृत्ति का एव नाम।  
 मल्लू-सज्ञा पु० बदर।  
 मल्लूना, मल्लारना-क्रि० स० चुमकारना। चुचकारना।  
 मयविकल-सज्ञा पु० दे० "मुवविकल।" मुकदमे में अपनी ओर स अदालत में वाम करन के लिए बकील नियत करनेवाला पुरुष। 'अदालत में मुकदमा सटनवाला। बकील को अपना मुकदमा सुपुर्द करनेवाला।  
 मवाजिव-सज्ञा पु० [अ०] नियमित समय पर मिलनवाली वस्तु, जैसे, वेतन।  
 मवाव-सज्ञा पु० [अ०] पीव। फोड़े आदि में से सफेद या पीलापन लिये हुए निकलने वाली सीज।  
 मवास-सज्ञा पु० १ रक्षा का स्थान। आश्रय। घरण। २ किला। दुग। गढ़। ३ वे पेड़ जो दुर्ग की चहारदीवारी पर होते हैं।  
 मुहा०-मवास करना=निवास करना।  
 मवासी-सज्ञा स्त्री० छोटा गढ़।  
 सज्ञा पु० १ गढ़पति। किलेदार। २ प्रधान। मुखिया। अधिनायक।  
 मवेशी-सज्ञा पु० [अ०] पशु। डोर।  
 मवेशीखाना-सज्ञा पु० [फा०] मवेशिपा के रखन का बाड़ा।  
 मघाक-सज्ञा पु० १ मच्छड। २ मसा नामक चमरीम।  
 सज्ञा स्त्री० [फा०] चमड़े की बना हुआ थैला, जिसमें पानी भरकर ले जाते हैं।  
 मशकत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मेहनत। परिश्रम। श्रम। २ वह परिश्रम, जो जेतखाने में कैदियों को करना पड़ता है।

मशगूल-वि० [अ०] वाम में लगा हुआ। तन्वीन। व्यस्त।  
 मशक-सज्ञा पु० [अ०] एव प्रकार का धारीदार कपड़ा।  
 मशबिरा-सज्ञा पु० [अ०] सलाह। परामर्श।  
 मशहूर-वि० [अ०] प्रसिद्ध। नामी। विख्यात।  
 मशाल-सज्ञा स्त्री० [अ०] डंड में लगी हुई एव प्रकार की बहुत माटी बत्ती।  
 मुहा०-मशाल लेकर या जलाकर दूँडना= जल्दी तरह दूँडना। बहुत दूँडना।  
 मशालची-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री०] मशाल-चिन। मशाल हाथ में लेकर दिखलाने-वाला।  
 मशीन-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] यंत्र। चल। पैचा और पुरजा से बनी हुई वह वस्तु या यंत्र, जिससे काम जल्दी होता है।  
 मशीनपन-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] बहुत जल्दी-जल्दी बमगोले या गोलियाँ चलानेवाला यंत्र या शस्त्र।  
 मशक-सज्ञा पु० [अ०] अभ्यास।  
 मय-सज्ञा पु० दे० 'मस'।  
 मष्ट-वि० १ संस्कार शून्य। जो भूल गया हो। २ उदासीन। मोन। चुप।  
 मुहा०-मष्ट करना, धारना या मारना= चुप रहना। न बोलना।  
 मस\*†-सज्ञा स्त्री० १ रोशनाई। २ मूछ निकलन से गहल उत्तक स्थान पर की रोमावली।  
 मुहा०-मस भोजना=मूछों का निकलना आरम्भ होना।  
 मसक-सज्ञा पु० मसा। मच्छड।  
 सज्ञा स्त्री० मसकन की क्रिया।  
 मसकत\*†-सज्ञा स्त्री० दे० मशकत।  
 मसकना-क्रि० स० [अनु०] १ कपड़ का इस प्रकार दवाना कि घुनावट टूट जाय। २ इस प्रकार दवाना कि बीच में से फट जाय। ३ जोर से दवाना या मलना।  
 क्रि० अ० किसी पदार्थ का दबाव या लिचाव आदि से कारण बीच से फट जाना। चितित होना।

मसकरा—सज्ञा पु० दे० “मसकरा”।  
 मसकला—सज्ञा पु० [अ०] १ सिकलीगरो का एक औजार। इससे रगड़ने से धातुओं पर चमक आ जाती है। २ सैकल या सिकली करने की क्रिया।  
 मसकली—सज्ञा स्त्री० दे० “मसकला”।  
 मसका—सज्ञा पु० [फा०] १ नवनीत। २ मक्खन। नैन। साजा निकला हुआ घी। ३ दही का पानी। चूने की बरी का वह चूर्ण, जो उस पर पानी छिड़कने से बने।  
 मसकीन\*†—वि० १ गरीब। दरिद्र। दीन। बेचारा। २ भोला। सुशील।  
 मसखरा—सज्ञा पु० [अ०] बहुत हँसी-मजाक करनेवाला। हँसोड। दिल्लीगीवाज।  
 मसखरापन—सज्ञा पु० मजाक। दिल्लीगी। हँसी। ठट्ठा। ठठोली।  
 मसखरी—सज्ञा स्त्री० [फा०] दिल्लीगी। हँसी। मजाक।  
 मसखरा†—सज्ञा पु० मास खानेवाला। मासा-हारी।  
 मसजिद—सज्ञा स्त्री० [फा०] मुसलमानों के एकत्र होकर नमाज पढ़ने तथा ईश्वर-वन्दना करने का भवन।  
 मसनव—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बड़ा तकिया। गाव तकिया। २ अमीरा के बैठने की गद्दी।  
 मसनवी—सज्ञा स्त्री० [अ०] उर्दू और फारसी की एक प्रकार की कविता।  
 मसना†—क्रि० सं० दे० “मसलना”।  
 मसमुद\*†—वि० ठेलमठेल। धक्कमधक्का।  
 मसयारा\*†—सज्ञा पु० १ मशाल। २ मशालची।  
 मसरफ—सज्ञा पु० [अ०] काम में आना। उपयोग।  
 मसल—सज्ञा स्त्री० [अ०] कहावत। लोकोक्ति।  
 मसलन—वि० [अ०] उदाहरण के लिए। उदाहरणार्थ। यथा, जैसे।  
 मसलना—क्रि० सं० १ हाथ से दबाते हुए रगड़ना। मलना। २ जोर से दबाना। ३. गूँपना।

मसलहत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ छिपा हुआ उद्देश्य या मतलब। रहस्य। २ ऐसी छिपी हुई भलाई या युक्ति, जो जल्दी प्रकट न हो या समझ में न आए।  
 मसला—सज्ञा पु० [अ०] १ कहावत। लोकोक्ति। २ विचारणीय विषय। समस्या।  
 मसवासी—सज्ञा पु० वह साधु आदि, जो एक मास से अधिक किसी स्थान में न रहे।  
 सज्ञा स्त्री० गणिका। वेश्या।  
 मसविदा—सज्ञा पु० [अ०] १ सशोधन करके निश्चित रूप से ठीक लिखे जाने के लिए पहली बार लिखा गया कोई लेख। किसी लेख का वह पूर्व रूप, जिसमें कोट-छांट या सुधार किया जाने को हो। प्रालेख। मसौदा। [अप्रे० डाफ्ट] २ उपाय। युक्ति।  
 मसहरी—सज्ञा स्त्री० १ मच्छड़ा से बचने के लिए पतंग के ऊपर और चारों ओर लटकाया जानेवाला जालीदार कपड़ा। २ ऐसा पतंग, जिसमें मसहरी लग सके।  
 मसहार\*—सज्ञा पु० दे० “मासाहारी”।  
 मसा—सज्ञा पु० १ शरीर पर काले रंग का उभरा हुआ मास का छोटा दाना। २ बवा-सीर रोग में मास का दाना। ३ मच्छड़।  
 मसान—सज्ञा पु० १ दे० “श्मशान”। मरघट। २ भूत पिशाच आदि। ३ रणभूमि।  
 मुहा०—मसान जगाना—तत्रशास्त्र के अनुसार श्मशान पर बैठकर दाव की सिद्धि करना।  
 मसाना—सज्ञा पु० [अ०] शरीर में पेशाब की पैली। मूत्राशय। दे० “मसान”।  
 मसानिया—सज्ञा पु० मसान या मरघट पर रहनेवाला। डोग।  
 वि० मसान-सम्बन्धी।  
 मसानी—सज्ञा स्त्री० श्मशान में रहनेवाली पिशाचिनी, डाकिनो इत्यादि।  
 मसाला—सज्ञा पु० [फा०] १ तरकारी आदि बनाने में सहायक वस्तुएँ। जैसे मिर्च, हल्दी आदि। २ वे चीजें, जिनकी सहायता से कोई चीज तैयार होती हो। ३ औषधियाँ या रासायनिक द्रव्यों का समूह। ४ साधन। ५ तेल। आतिशबाजी।

मसालेदार-वि० जिसमें मसाला पड़ा हो।  
 मसि-सज्ञा स्त्री० १ लिमन की म्याही।  
 रोखनाई। २ काजल। ३ कासित।  
 मसिदानो-सज्ञा स्त्री० दावात। मसिपात्र।  
 मसिपात्र-सज्ञा पु० दायात।  
 मसिविदु-सज्ञा पु० काजल का बुदा जो नजर  
 से वचन व लिए वच्चा या लगाया जाता  
 है। दिठना।  
 मसिवुदा-सज्ञा पु० द० "मसिविदु"।  
 मसिमुख-वि० १ चुरा या बदनामी का काम  
 करनेवाला। २ अपना मुंह काला करने-  
 वाला। जिसके मुंह में स्वाही लगी हो।  
 मसिपर\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'मशान'।  
 मसिपाना-वि० अ० भली भाँति भर जाना।  
 पूरा हो जाना।  
 मसिपारा\*-सज्ञा पु० दे० 'मशालची'।  
 मसी-सज्ञा स्त्री० दे० 'मसि'।  
 मसीत\*†-सज्ञा स्त्री० दे० 'मसजिद'।  
 मसीना†-सज्ञा पु० मोटा या घटिया  
 अन्न। जैसे-कौंदा, सोंधा आदि।  
 मसीह, मसीहा-सज्ञा पु० [अ०] [वि०  
 मसीही] १ ईसाइया के धर्मगुरु या पंगवर  
 हजरत ईसा। २ उद्धार करनेवाला।  
 मसू\*†-सज्ञा स्त्री० कठिनाई से। मुश्किल  
 से। जैसे-तैसे।  
 मुहा०-मसू करके=बड़ी कठिनाई या  
 मुश्किल से।  
 मसूदा-सज्ञा पु० मुंह के अंदर का वह मांस,  
 जिस पर दाँत जम होते हैं।  
 मसूर-सज्ञा पु० एक प्रकार का अन्न और  
 उसकी दाल। मसुरी।  
 मसूरिका-सज्ञा स्त्री० १ शीतला। माता।  
 बेचक। २ छोटी माता।  
 मसूस, मसूसन-सज्ञा स्त्री० मन मसोसने या  
 बदामे का भाव। आंतरिक व्यथा।  
 मसूसना-क्रि० अ० दे० 'मसोसना'।  
 मसुण-वि० चिकना और मुलायम। कोमल।  
 मसुणत्व-सज्ञा पु० चिकनापन और  
 कोमलता।  
 मसेपरा-†सज्ञा पु० मांस की बनी हुई खाने  
 की चीज।

मसोसना-क्रि० अ० १ मन ही मन रज या  
 अपसोस करना। कुटना। अधिक खद या  
 दुःख की दवा रखना। मन क भाव या  
 आवेग का रोकना। जख्म भरना। २ ऐंठना।  
 मरोडना। निचाटना।  
 मसोसा-सज्ञा पु० मानसिक दुःख। आन्तरिक  
 व्यथा।  
 मसोसा-सज्ञा पु० द० "मसविदा"।  
 मस्त-वि० [फा०] १ मतवाला। नश आदि  
 के कारण मत्त। मदोन्मत्त। २ सदा प्रसन्न  
 और निश्चित रहनेवाला। ३ यौवन मद  
 या जवानी के जोश से भेरा हुआ। ४  
 जिसमें मद हो। मदपूण। ५ बहुत प्रसन्न।  
 आनंदित।  
 मस्तक-सज्ञा पु० सिर। १ माथा। कपाल।  
 मस्ताना-वि० १ मस्त। मतवाला। २.  
 मस्ती की तरह।  
 नि० अ० मस्त होना।  
 क्रि० अ० मस्ती पर लाना। मस्त करना।  
 मस्तिष्क-सज्ञा पु० १ बुद्धि। दिमाग। २  
 मस्तिष्क के अंदर का गुदा। बुद्धि के रहन  
 का स्थान। भ्रजा। भ्रंज।  
 मस्ती-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ मतवालापन  
 मस्त होने की क्रिया या भाव। मस्तता  
 २ वह स्त्राव, जो कुछ विशिष्ट पदार्थों से  
 मस्तक, कान, आँख आदि के पास उनके  
 मस्त होने के समय होता है। मद। ३  
 वह स्त्राव, जो कुछ विशिष्ट वृक्षों अथवा  
 पत्तियों आदि से निकलता है।  
 मस्तूल-सज्ञा पु० बड़ी नावों के बोव का  
 लम्बा लट्ठा, जिसमें पाल बाँधते हैं।  
 मस्तो-सज्ञा पु० दे० 'मसा'।  
 महें\*†-अव्य० में।  
 महें\*†-वि० महान्। भारी।  
 अव्य० दे० 'महें'  
 महेंगा-वि० उचित मूल्य से अधिक। जिसका  
 मूल्य साधारण या उचित से अधिक  
 हो।  
 महेंगाई†-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'महेंगी'।  
 २ महेंगी के कारण मित्तवाला भत्ता।  
 महेंगी-सज्ञा स्त्री० १ महेंगा होने का भाव।

महंगापन । २ महंगा होने की परिस्थिति ।  
 दुर्भिक्ष । अकाल ।  
 महत्-सज्ञा पु० साधु-मडली या मठ का  
 जघिष्ठाता ।  
 वि० श्रेष्ठ । प्रधान । मुखिया ।  
 महती-सज्ञा स्त्री० महत् का पद । महत्त्व  
 होने का भाव ।  
 मह-अव्य० दे० "मह" ।  
 वि० महा । अति । बहुत । महत् । श्रेष्ठ ।  
 बड़ा ।  
 महक-सज्ञा स्त्री० गंध । वास ।  
 महकना-क्रि० अ० गंध देना । वास देना ।  
 महकमा-सज्ञा पु० [अ०] कार्य-विशेष के  
 लिए अलग किया हुआ विभाग । सीमा ।  
 सरिता ।  
 महकान\*-सज्ञा स्त्री० दे० "महक" ।  
 महकीला-वि० महकनेवाला ।  
 महज-वि० [अ०] केवल । सिर्फ ।  
 महजिब\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मसजिब" ।  
 महज्जन-सज्ञा पु० महापुरुष ।  
 महन्-वि० महान् । बृहत् । बड़ा । सबसे  
 बड़कर । सर्वश्रेष्ठ ।  
 सज्ञा पु० प्रकृति का पहला विकार,  
 महत्त्व । ब्रह्म ।  
 महता-सज्ञा पु० १ गाँव का मुखिया ।  
 महतो । २ मुहुरिर । मुशी ।  
 महताब-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ चाँदनी ।  
 चद्रिका । २ दे० "महताबी" ।  
 सज्ञा पु० चाँद । चद्रमा ।  
 महताबी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार  
 की अतिशुद्धाजी । २ दाग आदि के बीच  
 में बना हुआ गोत या चौकोर ऊँचा चबूतरा ।  
 महतासी\*-सज्ञा स्त्री० माँ । माता ।  
 महती-सज्ञा स्त्री० महिमा । महत्त्व । बड़ाई ।  
 वि० बहुत बड़ी । महान् । जैसे महती सभा ।  
 महत्\*+-सज्ञा पु० दे० "महत्त्व" ।  
 महतो-सज्ञा पु० १ दे० "महता" । २ कहार ।  
 ३ प्रधान । मुखिया । सरदार ।  
 महत्त्व-सज्ञा पु० १. साख में प्रकृति का पहला  
 कार्य या विकार, जिससे अहकार की उत्पत्ति  
 होती है । बुद्धितत्त्व । २ जीवात्मा ।

महत्तम-वि० सबसे अधिक श्रेष्ठ ।  
 महत्त-वि० दो पदार्थों में से श्रेष्ठ या बड़ा ।  
 महत्ता-सज्ञा स्त्री० दे० "महत्त्व" ।  
 महत्त्व-सज्ञा पु० महान् होने का भाव ।  
 श्रेष्ठता । बड़प्पन । गौरव । गुरुता ।  
 उत्तमता । प्रधानता ।  
 महद्द-वि० [अ०] जो सीमा या हद के  
 अन्दर हो । सीमित । परिमित ।  
 महन्\*+-सज्ञा पु० दे० "मघन" ।  
 महना\*+-क्रि० स० दे० "घना" ।  
 महनीय-वि० [सज्ञा महनीयता]  
 मान्य । पूज्य । आदरणीय । महान् ।  
 महफिल-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मजलिस ।  
 सभा । जलसा । २ नाच-गाने का स्थान ।  
 महफूज-वि० [अ०] सुरक्षित । जिसे अच्छी  
 तरह बचाकर रखा गया हो या जिसकी  
 खूब हिफाजत की गई हो ।  
 महबूब-सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० महबूबा]  
 प्रिय । प्यारा ।  
 महमत\*-वि० मस्त । मदमत्त ।  
 महमह-क्रि० वि० सुगंध के साथ । खुशबू  
 के साथ ।  
 महमहा-वि० सुगंधित ।  
 महमहाना-क्रि० अ० महकना । सुगंध देना ।  
 गमकना ।  
 महमेज-सज्ञा स्त्री० [फा०] जूते की एडी के  
 पास लगाई जानेवाली एक तरह की लोहे  
 की नाल, जिसकी सहायता से घुडसवार  
 घोड़े को एड लगाते हैं ।  
 महम्मद-सज्ञा पु० दे० "मुहम्मद" ।  
 मह-सज्ञा पु० [स्त्री० महिरि] १ एक  
 आदरसूचक शब्द, जिसका व्यवहार विशेषतः  
 जनीदारों आदि के संबंध में होता है  
 (ब्रजभाषा) । २ एक प्रकार का पक्षी ।  
 ३ दे० "महरा" ।  
 वि० महमहा । सुगंधित ।  
 महर्म-सज्ञा पु० [अ०] १ मुसलमानों में  
 किसी कन्या या स्त्री के लिए उसका कोई  
 ऐसा बहुत पास का संबंधी, जिसके साथ  
 उसका विवाह न हो सकता हो । जैसे—  
 पिता, चाचा, नाना, भाई, मामा आदि ।

२. भेद जाननेवाला।

सजा स्त्री० १ जंगिया की कटोरी। २. जंगिया।

महरा-सजा पु० [स्त्री० महरा] १ कहार। २ सरदार। नायक।

महराई\*†-सजा स्त्री० प्रधानता। श्रेष्ठता।

महराज-सजा पु० दे० "महाराज"।

महराता-सजा पु० महरा के रहने का स्थान।

महराब-सजा स्त्री० दे० "मेहराब"।

महरि-सजा स्त्री० १ एक प्रकार का आदर-सूचक शब्द, जिसका व्यवहार ब्रज में प्रतिष्ठित स्त्रिया के सबप में होता है। २ मालकिन। परवाली। ३ ग्वालिन नामक पक्षी। दहिंगल।

महलूम-वि० [ज०] जिसे चाही हुई चीज न मिले। वंचित।

महरेडा-सजा पु० श्रीकृष्ण।

महरेटी-सजा स्त्री० श्री राधिका।

महर्ष-वि० दे० "महर्ष"।

महर्लोक-सजा पु० पुराणानुसार चौदह लोकों में से ऊपर का चौथा लोक।

महर्षि-सजा पु० बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि। ऋषीश्वर।

महल-सजा पु० [ज०] १ बहुत बड़ा और बड़िया मकान। प्रासाद। २ रनिवास। अंतपुर। ३ बड़ा कमरा। ४ अवसर।

महलसरा-सजा स्त्री० [ज०] महल का भीतरी भाग। अंतपुर।

महल्ला-सजा पु० [ज०] दे० "मुहल्ला"। शहर का कोई विभाग, जिसमें आबादी हो।

महसूल-सजा पु० [ज०] महसूल आदि वसूल करनेवाला। उगाहनवाला।

महसूल-सजा पु० [ज०] १ सरकार या नगर-पालिका (म्युनिसिपैलिटी) आदि-द्वारा किसी विशय कार्य या पन्थु के लिए वसूल किया जानवाला धन। चुगी। २ कर। टैक्स। ३ भाड़ा। किराया (जैसे—रत्न के टिकट का)। ४ मालगुजारी। लगान।

महसूखी-वि० जिस पर महसूल लाता हा। महसूल लगनवाली चीज।

महसूस-वि० [ज०] जिसका अनुभव या ज्ञान हा। अनुभूत। जो जान पड़े या समझ में आये।

महू\*—अव्य० दे० "महू"।

महा-वि० अत्यंत। बहुत अधिक। सर्वश्रेष्ठ। सबसे बड़ेकर। बहुत बड़ा। भारी।

सजा पु० मट्टा। छछ।

महावरन-वि० बहुत शोर।

महाई†-सजा स्त्री०, मयने का काम या मजदूरी।

महाउत\*—सजा पु० दे० "महावत"।

महाउर-सजा पु० दे० "महावर"।

महाकल्प-सजा पु० पुराणानुसार उतना समय, जितने में एक ब्रह्मा की आयु पूरी होती है। ब्रह्मकल्प।

महाकाय-वि० बहुत बड़े शरीरवाला। बड़े झीलझोल का। विशालकाय।

महाकाल-सजा पु० १ महादेव। २ सहार करनेवाले शिव का रूप। ३ शिव के एक गण का नाम। ४ अखण्ड समय।

महाकाली-सजा स्त्री० दुर्गा देवी।

महाकाव्य-सजा पु० वह बहुत बड़ा संगंबड काव्य, जिसमें प्राय सभी रसा, ऋतुओं और प्राकृतिक दृश्यों तथा सामाजिक क्रियाओं आदि का वर्णन हो। बहुत बड़ा और श्रेष्ठ काव्यग्रंथ।

महास्त्रवं-सजा पु० सौ सर्व की सत्त्वा या अक।

महागौरी-सजा स्त्री० दुर्गा।

महाजन-सजा पु० १ श्रेष्ठ पुरुष। २ सज्जन पुरुष। ३ धनवान्। दौलतमंद। ४ १५९-१६० का जेन-देन करनेवाला। कोठीवाल। ५ वनिया। ६ भत्तामानस।

महाजन-सजा स्त्री० १ १५९ के जेन-देने का व्यवसाय। २ एक तिथि, जो महाजन के यहाँ यही खाता लिखने में काम आती है। मुद्रिया।

महाजल-सजा पु० समुद्र।

महातम\*†-सजा पु० "माहात्म्य"।

महातल-सजा पु० चौदह भुवनों में स पृथ्वी के नीचे का पाँचवां भवन या तल।

महात्मा-सजा पु० १ वह व्यक्ति, जिसकी

आत्मा बहुत उच्च हो। महान् पुरुष।  
महानुभाव। अलौकिक शक्ति-सम्पन्न पुरुष।  
२. बहुत बड़ा साधु या सन्वासी।

महात्मा गांधी-संज्ञा पु० भारत के एक महान् नेता। इन्हें भारत के राष्ट्रपिता कहा जाता है। गौतम बुद्ध के बाद इनके समान प्रसिद्ध कोई भी भारतीय नहीं हो सका। आपने सत्य, अहिंसा, अछूतोद्धार और चरखा आदि (गांधीवाद) का प्रतिपादन किया। इनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। दो अक्टूबर सन् १९६९ को पोरबन्दर (काठियावाड़) में इनका जन्म हुआ था। लन्दन में वेस्टिस्टरी की शिक्षा प्राप्त की थी। १८९३ में दक्षिण अफ्रीका गए, वहाँ भारतीय प्रवासियों के अधिकारों के लिए आन्दोलन छेड़ा। भारत वापस आने पर असहयोग-आन्दोलन छेड़ा। १५ अगस्त १९४७ को भारत के स्वतंत्र होने पर आपके जीवन का लक्ष्य पूरा हो गया, पर ३० जनवरी सन् १९४८ को जवाहरलाल नेहरू से आपकी हत्या कर दी।  
महादान-संज्ञा पु० १. स्वर्ग-प्राप्ति के लिए दिए जानेवाले बड़े दान। २. वह दान, जो ग्रहण आदि के समय छोटी जातियों को दिया जाता है।

महादेव-संज्ञा पु० शंकर। शिव।

महादेवी-संज्ञा स्त्री० दुर्गा। राजा की प्रधान पत्नी या पटरानी।

महाद्वीप-संज्ञा पु० चारों ओर जल से घिरा हुआ पृथ्वी का बहुत बड़ा भाग, जिसमें अनेक देश हो।

महाधन-वि० १. बहुमूल्य। अधिक मूल्य का।  
२. बहुत धनी।

महान्-वि० बहुत बड़ा। श्रेष्ठ।

महानवमी-संज्ञा स्त्री० आश्विन महीने के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि।

महानस-संज्ञा पु० रसोईघर।

महानाटक-संज्ञा पु० दस अंकोवाला बड़ा नाटक।

महानाम-संज्ञा पु० एक प्रकार का मंत्र, जिससे शत्रु के शस्त्र व्यर्थ जाते हैं।

महानिद्रा-संज्ञा स्त्री० मृत्यु। मोत।

महानिर्वाण-संज्ञा पु० मोक्ष। बौद्ध धर्म के अनुसार वह मोक्ष या परिनिर्वाण, जिसके अधिकारी केवल अर्हत् या बुद्ध माने गए हैं।

महानिशा-संज्ञा स्त्री० १. प्रलय की रात्रि।

२. आधी रात।

महानुभाव-संज्ञा पु० आदरणीय व्यक्ति।

महाशय। महापुरुष।

महानुभावता-संज्ञा स्त्री० बड़प्पन।

महापथ-संज्ञा पु० १. लंबा और चौड़ा रास्ता।

राजपथ। २. मृत्यु।

महापथ-संज्ञा पु० १. नौ तिथियों में से एक।

२. सफेद कमल। ३. सौ पथ की संख्या।

महापातक-संज्ञा पु० पाँच बहुत बड़े पाप—ग्रहहत्या, मत्तपान, चोरी, गुरु की पत्नी के साथ व्यभिचार और इन सब पाप करनेवालों का साथ करना।

महापातकी-संज्ञा पु० महापातक या महापाप करनेवाले।

महापात्र-संज्ञा पु० मृतक कर्म का दान लेनेवाला। महाब्राह्मण। कट्टहा ब्राह्मण।

महापुरुष-संज्ञा पु० १. नारायण। २. श्रेष्ठ पुरुष। महात्मा। महानुभाव।

महाप्रभु-संज्ञा पु० १. ईश्वर। वल्लभाचार्य जी का एक आदरसूचक पदवी। २. बंगाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य चैतन्य की एक आदरसूचक पदवी।

महाप्रलय-संज्ञा पु० संपूर्ण सृष्टि के विनाश का समय, जब अनंत जल के अतिरिक्त कुछ भी नहीं रहता।

महाप्रसाद-संज्ञा पु० १. ईश्वर या देवताओं का प्रसाद। २. जगन्नाथजी का चढ़ा हुआ भात।

महाप्रस्थान-संज्ञा पु० १. मृत्यु। देहान्त। २. शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना।

महाप्राज्ञ-संज्ञा पु० बड़ा भारी विद्वान्।

महाप्राण-संज्ञा पु० व्याकरण के अनुसार ये वर्ण, जिनके उच्चारण में प्राण वायु का व्यवहार विशेष करना पड़ता है। हिदा-वर्णमाला में प्रत्येक वर्ण का दूसरा तथा चौथा अक्षर महाप्राण है।

महाबल-वि० अत्यंत बलवान्। बहुत अधिक शक्तिशाली।

महाबलाधिकृत-सज्ञा पु० भारत म गुप्त-शासनकाल में राज्य की समस्त सेवाएँ प्रधान अधिकारी और सेना-विभाग के मंत्री को 'महाबलाधिकृत' कहते थे।

महाबाहु-वि० लंबी बाहुवाला। बलवान्।

महाबाहूण-सज्ञा पु० दे० "महापान"।

महाभाग-वि० जिसका भाग्य बहुत ही अच्छा हो। सौभाग्यशाली। किस्मतवर।

महाभागवत-सज्ञा पु० १ दे० "भागवत"।  
२ २६ मात्रावा के छंदा की मज्ञा। ३ परम वैष्णव।

महाभारत-सज्ञा पु० अठारह पर्वों का एक प्रसिद्ध प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक महाकाव्य, जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है। कोई बहुत बड़ा ग्रंथ। कौरवों और पांडवों का प्रसिद्ध युद्ध। बहुत बड़ा युद्ध।

महाभाष्य-सज्ञा पु० पाणिनि के व्याकरण पर पतञ्जलि का लिखा भाष्य।

महाभूत-सज्ञा पु० पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, ये पंचतत्त्व।

महामन-सज्ञा पु० १ बहुत बड़ा और प्रभावशाली मन्त्र। २ अच्छी सलाह।

महामन्त्री-सज्ञा पु० प्रधान मन्त्री। किसी राज्य या संस्था का सबसे बड़ा मन्त्री।  
[अग्ने-जनरल सेक्रेटरी या सेक्रेटरी जनरल]।

महामति-वि० बहुत बड़ा बुद्धिमान्।

महामना-वि० जिसका मन बहुत उच्च और उदार हो। महापुरुष। महापुत्र।

महामहिम-वि० बहुत अधिक महिमावाला।  
हिज एक्सेलन्सी, का हिन्दी रूपान्तर। आजकल इस शब्द को राज्यपाल (गवर्नर) या राजदूत के नाम के आगे जोड़ते हैं।

महामहोपाध्याय-सज्ञा पु० १ गुरुओं का गुरु।  
२ एक उपाधि, जो भारत में अंग्रेजी शासनकाल में सरकार की ओर से संस्कृत के विद्वानों को दी जाती थी।

महामास-सज्ञा पु० गोमास। गाय या मनुष्य का मास।

महामाई-सज्ञा स्त्री० १ दुर्गा। २ काली।  
महामान्य-सज्ञा पु० महामन्त्री। प्रधान मन्त्री।

महामाया-सज्ञा स्त्री० १ प्रकृति। २ दुर्गा।  
३ गंगा। ४ आर्या छंद का तरहवाँ नंद।

महामारी-सज्ञा स्त्री० एक भीषण सन्तान-रोग, जिसमें एक साथ ही बहुत से लोग मरें। प्लेग। मरी। ताउन।

महामास्तिनी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद।

महापुत्रजय-सज्ञा पु० शिव।

महामेवा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कद।

महाय-वि० महान्। बहुर।

महायज्ञ-सज्ञा पु० धम्मसास्त्र के अनुसार नित्य किए जानेवाले कर्म। ब्रह्मयज्ञ, दैवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।

महायान-सज्ञा स्त्री० मूल्य। मूल्य।

महायान-सज्ञा पु० बौद्धों के तीन मुख्य संप्रदायों में से एक संप्रदाय।

महायुग-सज्ञा पु० सत्य, त्रता, क्षय और कलि, इन चारों युगों का समूह।

महायुद्ध-सज्ञा पु० बहुत बड़ा युद्ध, जिसमें कई बड़े राष्ट्र सम्मिलित हों। (अंग्रे-प्रद-वार) अभी तक इस शताब्दी में दो महायुद्ध हो चुके हैं—प्रथम महायुद्ध सन् १९१४ से १९१९ तक और द्वितीय महायुद्ध सन् १९३९-१९४५ तक हुआ था।

महारथी-सज्ञा पु० बहुत बड़ा योद्धा।

महाराज-सज्ञा पु० [स्त्री० महारानी] १ बहुत बड़ा राजा। २ ब्राह्मण, गुरु आदि के लिए एक संबोधन।

महाराजाविराज-सज्ञा पु० १ बहुत बड़ा राजा। राजाओं का राजा। २ अधिक प्रतापी और अधिकार-सम्पन्न राजाओं की एक उपाधि।

महारानी-सज्ञा स्त्री० महारानी। राजा की सत्यमे बड़ी रानी।

महाराणा-सज्ञा पु० मेवाड़ के राजाओं की उपाधि।

महारात्रि-सज्ञा स्त्री० महाप्रलय की वह रात, जब सृष्टि लय हो जाती है और दूसरा महाकल्प होता है।

महाराणी-सज्ञा स्त्री० महाराज की रानी। राजा की सबसे बड़ी पत्नी या रानी।  
 महाराज-सज्ञा पु० पुराणानुसार वह राजा, जिसके हजार मुख और दो हजार भुजाएँ थीं।  
 महाराज-सज्ञा पु० जैसलमेर, डूंगरपुर आदि राज्या के राजाओं की उपाधि।  
 महाराष्ट्र-सज्ञा पु० १ दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश। २ इस देश के निवासी। ३ बहुत बड़ा राष्ट्र।  
 महाराष्ट्री-सज्ञा स्त्री० दे० "मराठी"। एक प्रकार की प्राकृत भाषा।  
 महारुद्र-सज्ञा पु० शिव।  
 महारोग-सज्ञा पु० कठिन रोग। बहुत बड़ा रोग। जैसे-दमा, भगदर आदि।  
 महारीज-सज्ञा पु० एक नरक। सबसे निकृष्ट नरक।  
 महार्घ-वि० १ महंगा। २ बहुमूल्य।  
 महाल-सज्ञा पु० १ महुल्ला। टोला। पाठा। २ बन्दोवस्त में जमीन का एक भाग, जिसमें कई गाँव होते हैं। ३ भाग। पट्टी। हिस्सा।  
 महालक्ष्मी-सज्ञा स्त्री० १ लक्ष्मी देवी। २ एक वर्णिक छन्द।  
 महालय-सज्ञा पु० १ परमेश्वर। २ आश्रम। ३ पितृपक्ष। ४ श्राद्धविशेष। ५ अमावस्या।  
 महालया-सज्ञा स्त्री० आश्विन मास की अमावस्या। पितृविसर्जन की तिथि।  
 महावट-सज्ञा स्त्री० पुत-माच की बर्फी। जाड़े की झाड़ी।  
 महावन-सज्ञा पु० हाथी हाँकनेवाला। फील-वान। हाथीवान।  
 महावर-सज्ञा पु० एक प्रकार का लाल रंग, जिसे सोभाग्यवती स्त्रियाँ पैरा में लगती हैं। याचक।  
 महावरो-सज्ञा पु० महावर की बनी हुई गोली या टिकिया।  
 महावायणी-सज्ञा स्त्री० गंगा-स्नान का एक योग।  
 महाविद्या-सज्ञा स्त्री० १ तब में मानी हुई देस देविमाँ-काली, तारा, पोटशी, भुवनेश्वरी,

भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, दगलामुखी मातंगी और कमलात्मिका। २ दुर्गा देवी।  
 महावीर-सज्ञा पु० १ हनुमानजी। २ गौतम बुद्ध। ३ जैनियों के चौबीसवें और अंतिम तीर्थंकर।

वि० बहुत बड़ा बहादुर।  
 महाव्याहृति-सज्ञा स्त्री० भू, भुव और स्व ये तीन उपर के लोक।  
 महाव्रत-सज्ञा पु० बहुत कठिन या बड़े महत्त्व का व्रत। वि० (स्त्री० महाव्रता) बहुत कठिन या बहुत बड़ा व्रत करनेवाला।  
 महाशय-सज्ञा पु० सबसे बड़ी महत्या का नाम। सो शय।  
 महाशक्ति-सज्ञा पु० शिव।  
 महाशय-सज्ञा पु० १ सज्जन। उच्च आशयवाला व्यक्ति। महानुभाव। महोदय। २ भद्र पुरुषों को सम्बोधित करने के लिए एक आदर-सूचक शब्द। ३ समुद्र।  
 महासम्मान-सज्ञा पु० काशी नगरी। हिन्दुओं का ऐसा विश्वास है कि काशी में मरने से स्वर्ग मिलता है।  
 महायज्ञेता-सज्ञा स्त्री० सरस्वती।  
 महासंस्कार-सज्ञा पु० अत्येष्टि क्रिया।  
 महि\*-अव्य० दे० "मह" में।  
 सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।  
 महिजा-सज्ञा स्त्री० सीताजी।  
 महिदेव-सज्ञा पु० ब्राह्मण।  
 महिधर-सज्ञा पु० १ पहाड़। २ शेषनाग। दे० "महीधर"।  
 महिनदिनी-सज्ञा स्त्री० सीताजी।  
 महिपाल\*-सज्ञा पु० दे० "महीपाल"।  
 महिमा-सज्ञा स्त्री० १ महत्त्व। माहात्म्य। बड़ाई। गौरव। २ प्रभाव। प्रताप। ३ आठ प्रकार की सिद्धियाँ में से पाँचवी, जिससे सिद्ध योगी अपने आपको बहुत बड़ा, बना लेता है।  
 महिमावान्-वि० गौरवशाली। महिमा या गौरव से युक्त।  
 महिम्न-सज्ञा पु० शिवजी की स्तुति करने का प्रधान स्तोत्र।  
 महियाँ\*-अव्य० में।

महियाउर†-सज्ञा पु० मठे में पका हुआ चावल ।

महिरायण-सज्ञा पु० रावण के लडके का नाम । १

महिला-सज्ञा स्त्री० १ भले घर की स्त्री । २ किसी स्त्री के लिए प्रयोग लिया जाने वाला सिष्ट शब्द ।

महिय-सज्ञा पु० [ स्त्री० महिणी ] १ भैंसा । २ वह राजा, जिसका अभिषेक शास्त्रानुसार किया गया हो । ३ एक राक्षस का नाम, जिस दुर्गाजी ने मारा था ।

महियमहिनी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा ।

महियामुर-सज्ञा पु० रभ नामक दैत्य का पुत्र, जिसकी आकृति भैंस की-सी थी । इसे दुर्गाजी ने मारा था ।

महियी-सज्ञा स्त्री० १ भैंस । २ पटरानी । ३ सैरिणी ।

मोहियेण-सज्ञा पु० १ महिषामुर । २ यमराज । महिसुता-सज्ञा स्त्री० सीताजी ।

महिसुर-सज्ञा पु० ब्राह्मण । दे० "महीसुर" ।

मही-सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी । २ मिट्टी । ३ देश । ४ स्थान । ५ नदी । ६ एक की सह्या । ७ छाँछ । मट्टा । ८ एक लघु और एक

गुरु मात्रा का एक छन्द ।

महोत्तल-सज्ञा पु० पृथ्वी । ससार ।

महोत्तर-सज्ञा पु० १ पर्वत । २ सपनाय ।

महीन-वि० १ बहुत पतला । २ बारीक । "नोटा", का उल्टा । शीता । कोमल । ३ धीमा । मंद ।

महीना-सज्ञा पु० १ काल का एक परिमाण, जो पान साधारणतया तीस दिन का होता है । २ मासिक चेतन । दरमाहा । ३ हिन्दु का मासिक धन ।

महीण, महोपति-सज्ञा पु० राजा ।

महोर-सज्ञा स्त्री० १. मठे में पकाया हुआ चावल । २ गरम किए गए भक्खन की तलछट ।

महीसुर-सज्ञा पु० ब्राह्मण ।

महु\*-अव्य० दे० "महँ" ।

महुअर-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का बाजा । तुम्डी । तूवी । २. एक प्रकार का इन्द्रजाल

का खेल, जो महुअर या तूम्डी बाजाक किया जाता है ।

महुआ-सज्ञा पु० एक प्रकार का वृक्ष जिसमें छोटे, मीठे, गोल फलों से घाराब बनती है

महुयारि-सज्ञा स्त्री० दे० "महुअर" ।

महुअ\*-सज्ञा पु० १. महुआ । २. ऊँट मधु । मुलटी ।

महेद्र-सज्ञा पु० १ इद्र । २ विष्णु ।

महेर†-सज्ञा पु० १ दे० "महुरा" । २ झगडा । बहंदा ।

महेरा-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का व्यजन या खाद्य पदार्थ । २ मट्ठे में पका जल ।

महेरी-सज्ञा स्त्री० उबाली हुई ज्वार, जिस लोग नमक-मिर्च के साथ खाते हैं ।

वि० अन्नचन डालनेवाला ।

महेश-सज्ञा पु० शिव ।

महेश्वर-सज्ञा पु० [ स्त्री० महेश्वरी ] ईश्वर ।

महेश\*-सज्ञा पु० दे० "महेश" ।

महोत्था-सज्ञा पु० एक पक्षी, जो तेज दोड़ता है, पर उड़ नहीं सकता ।

महोगनी-सज्ञा पु० [ अ० ] बहुत बड़ा वृक्ष, जिसकी लकड़ी बहुत अच्छी, मजबूत और टिकाऊ होती है ।

महोच्छय, महोछा\*†-सज्ञा पु० दे० "महोत्सव" ।

महोत्सव-सज्ञा पु० बड़ा उत्सव ।

महोपधि-सज्ञा पु० समुद्र ।

महोपय-सज्ञा पु० [ स्त्री० महोदया ] महोदय । महानुभाव । जिसका भाग्य उदय हो या जो समृद्धताही हो ।

महोन्मा\*†-सज्ञा पु० होला । बहाना । धोखा । चकमा ।

महोप-सज्ञा पु० समुद्री तूफान ।

महो\*-सज्ञा पु० मडा । छाँछ ।

मो-सज्ञा स्त्री० जन्म देनेवाली । माता ।

†अव्य० में ।

मांजना\*†-वि० अ० दे० "माजना" ।

मांजी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "मक्की" ।

मांग-सज्ञा स्त्री० १ मांगने की क्रिया या भाव । २ किसी चीज को पाने की इच्छा । चाह । आवश्यकता । ३ वह वस्तु, जिसे पान की

इच्छा प्रकट की जाय। ४ तिर के वाली को कधी से विभक्त करके उनके बीच कवाई गई रेखा।

मृश-भांग-कोख से सुखी रहना या जुड़ना = स्त्रियों का सीमागवती और सतानवती रहना। भांग-मट्टी करना = कधी करना। भांग-टीका-सज्ञा पु० स्त्रियों की भांग पर का एक गहना।

भांगल\*†-सज्ञा पु० १. भांगने की क्रिया या भाव। २. भिक्षुक।

भांगना-क्रि० स० किसी से कोई चीज पाने की इच्छा प्रकट करना। पाचना करना। प्रार्थना करना। चाहना।

भांगफल-सज्ञा पु० दे० 'भांग-टीका'।

भांगलिक-वि० भगल करनेवाला।

सज्ञा पु० नाटक का वह पात्र, जो भगल-पाठ करता है।

भांगल्य-वि० शुभ। भगल-कारक।

सज्ञा पु० भगल का भाव।

भांगना\*†-क्रि० अ० १ आरम्भ होना। जारी होना। २ प्रसिद्ध होना।

भांगना†-सज्ञा पु० [स्त्री० भांगी] १ पलंग। लाट। २ मञ्चा। ३ छोटी पीढ़ी। ४ भवान।

भांग†-सज्ञा पु० मछली।

भांगना-क्रि० स० १ किसी वस्तु से रगड़कर मैल छुड़ाना। २ सरस और सीसे की बुकनी आदि लगाकर पतंग की डोर को मजबूत करना। भांगना देना।

क्रि० अ० अभ्यास करना।

भांगर\*†-सज्ञा स्त्री० दे० 'पजर'।

भांग-सज्ञा पु० पहली वर्षा का फेन।

भांग\*†-अध्य० म० भीतर।

\*†सज्ञा पु० अतर।

भांग-सज्ञा पु० १ तदी में का टापू। २ एक प्रकार का आभूषण, जो पगड़ी पर पहना जाता है। ३ बूझ का तना। ४ वे पीले कपड़े, जो घर और कन्या को हलदी चढ़ने पर पहनाए जाते हैं। ५ पतंग या गुड़ड़ी के डोरे पर चढ़ाया जानेवाला कलफ। ६. दे० 'मञ्चा'।

भांगल\*†-क्रि० वि० बीच का।

भांगी-सज्ञा पु० नाव खेनेवाला। केवट।

मल्लाह। झगडा या मामला तय करानेवाला।

भांग\*†-सज्ञा पु० १ मटका। कुड़ा। २.

घर का ऊपरी भाग। अटारी।

भांग-सज्ञा पु० मटका। कुड़ा।

भांगी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की चूड़ी। २ मट्ठी या मठरी नाम की बनी हुई खाने की चीज।

भांग-सज्ञा पु० पकाए हुए चाबलो में से निकला हुआ लसदार पानी। पीच।

भांगना\*†-क्रि० स० १ मलना। जोर से दबाना। २ सानना। गंधना। ३ पोतना।

लेपन करना। ४ बनाना। सजाना। ५ अट की बाल में से बाल झाड़ना। ६ मचाना।

भांगनी-सज्ञा स्त्री० मञ्जी। गोटी।

भांगनी\*†-सज्ञा पु० १ विवाह का मंडप।

मंडवा। २ अतिथिशाला।

भांगलिक-सज्ञा पु० १ किसी मंडल या प्रांत की रक्षा अथवा शासन करनेवाला। २ किसी बड़े राजा को कर देनेवाला छोटा राजा।

भांगल-सज्ञा पु० विवाह आदि शुभ कार्य के लिए छाया हुआ मंडप।

भांगवी-सज्ञा स्त्री० राजा जनक के 'भाई' कुशावज की कन्या, जो भरत को व्याही थी।

भांगल्य-सज्ञा पु० एक प्राचीन ऋषि, जिन्होंने यमराज को शूद्र होने का शाप दिया था।

भांग-सज्ञा पु० १ आँख का एक रोग, जिसमें उसके अन्दर महीन झिल्ली-सी पड़ जाती है। २ मंडप। मंडवा। ३ मँदे की

एक प्रकार की बहुत पतली रोटी। लुचई। ४ एक प्रकार की रोटी। परांठा। उलटा।

भांगी-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'भांग'। भात का पसावन। पीच। २ कपड़े या सूत के

ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ।

भांगल्य-सज्ञा पु० एक उपनिषद्।

भांगी\*†-सज्ञा पु० दे० 'भांगल'।

भांग-मञ्चा पु० दे० 'भांगल'।

भांग-वि० १ उन्नत। मतवाला। २. नशे में चूर। मस्त।

मातना\*†-क्रि० अ० १. उन्मत्त होता। २. नशे में चूर होना। मतवाला होना।  
 मातल\*†-वि० उन्मत्त। पागल। मदमत्त। मतवाला।  
 माँता\*†-वि० मतवाला। उन्मत्त।  
 मात्रिक-सज्ञा पु० तन्त्र-मन्त्र वा काम करने-वाला।  
 माँद-वि० १ बेरीनयक। उदास। आभारहित। २. किसी के मुकाबले में खराब या हलका। ३. पराजित। हारा हुआ। मात।  
 सज्ञा स्त्री० हिसक जतुओं के रहने का निवर। लोढ़। विल। गुफा। चुर।  
 माँदगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बीमारी। रोग।  
 माँदर-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाजा। मंदल (बाजा)।  
 माँदा-वि० १ धका हुआ। २ बचा हुआ। बाकी। ३ रोगी।  
 माद्य-सज्ञा पु० मद होने का भाव।  
 माधता-सज्ञा पु० एक प्राचीन सूर्यवंशी राजा।  
 माँपना\*†-क्रि० अ० नशे में चूर होना। उन्मत्त होना।  
 माँये-अव्य० में। बीच। मध्य।  
 मास-सज्ञा पु० १ शरीर का रेशेदार तथा चरबी मिला हुआ ताल अन्न। २ कुछ पशुओं के शरीर का उत अन्न, जो प्रायः खाया जाता है। मास्त।  
 मासपेसी-सज्ञा स्त्री० शरीर के अंदर का मास-पिंड जिससे अंग-संचालन होता है।  
 मासभक्षी-सज्ञा पु० मास खानेवाला। दे० "मासाहारी"।  
 मासल-वि० [सज्ञा मासलता] मास से भरा हुआ। मासपूर्ण। मोटा-ताजा। घुष्ट।  
 सज्ञा पु० काव्य में गोडी रीति का एक गुण।  
 मांसाह-वि० मास खानेवाला। मासाहारी। मासभक्षी।  
 मासाहारी-सज्ञा पु० मास खानेवाला। मास-भक्षी।  
 मांसु\*—सज्ञा पु० दे० "मास"।  
 माँह\*†-अव्य० में। बीच। अंदर।  
 माँहा\*†-अव्य० दे० "माँह"।

माँहि. माँहो\*†-अव्य० दे० "माँह"।  
 मा-सज्ञा स्त्री० १ माता। २. लक्ष्मी। ३. दीप्ति। प्रकाश।  
 माई, माई-सज्ञा स्त्री० १ माँ। माता। २. पुत्री। लक्ष्मी। ३. ठोठा पूजा, जिसमें विवाह में मातृपूजन किया जाता है।  
 मुहा०—माईन में यापना = पितरा के समान आदर करना।  
 माई\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "माई"।  
 माइका-सज्ञा पु० दे० "मायका"।  
 माई-सज्ञा स्त्री० १. माता। माँ। २. माँका सम्बोधन। बूढ़ी या बड़ी स्त्री के लिए सम्बोधन।  
 यो०—माई का ताल=समर्थ, बहुत उदार या साहसी व्यक्ति। ऐसी हिम्मतवाला व्यक्ति, जो असुख कार्य कर सके। बीर।  
 माकूल-वि० [अ०] १-उचित। ठीक। वाजिब। सही। २. लायक। योग्य। ३. अच्छा। बढ़िया। ४. जिसने वाद-विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ली हो।  
 माक\*—सज्ञा पु० १. अप्रसन्नता। नाराजगी रित्। २. अनिमान। पमड। ३. पछतावा ४. अपने दोष को ढकना।  
 माखन-सज्ञा पु० दे० "मखन"।  
 यो०—माखनचोर=श्रीकृष्ण।  
 माखना\*†-क्रि० अ० अप्रसन्न होना। नाराज होना। नोच करना।  
 माखी\*†-सज्ञा स्त्री० मक्खी।  
 मागध-सज्ञा पु० १ विशदावली गानेवाली एक प्राचीन जाति। भाट। २. जरामध। वि० मगध देश का।  
 मागधी-सज्ञा स्त्री० मगध देश की प्राचीन प्राकृत भाषा।  
 माघ-सज्ञा पु० १. वर्ष का ११वाँ महीना, जो पूस के बाद और फागुन से पहले पड़ता है। २. सस्कृत के एक प्रसिद्ध कवि। ३. इनका बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ। ४. बुद्ध का फूल।  
 माघी-सज्ञा स्त्री० माघ मास की पूर्णिमा। वि० माघ का। जंघे-माघी मिचं।  
 माव\*†-सज्ञा पु० दे० "मवान"।

माचना\*†-क्रि० सं० द० "मचना"।  
 माचल\*†-वि० १. मचलनेवाला। जिद्दी।  
 हठी। २. मनचला।  
 माचा†-सज्ञा पु० घाट की तरह की बंठन  
 की पीढ़ी। बड़ी मचिया।  
 माची-सज्ञा स्त्री० मचिया। छोटा माचा।  
 माछ†-सज्ञा पु० मछली।  
 माछर\*†-सज्ञा पु० १. दे० "मच्छर"। २.  
 दे० "मछली"।  
 माछी†-सज्ञा स्त्री० मछली।  
 माजरा-सज्ञा पु० [अ०] १. हाल। वृत्तात।  
 २. घटना।  
 माजून-सज्ञा स्त्री० [अ०] औषध के रूप  
 में काम आनेवाला, कोई मोठा अवलेह।  
 चाटनेवाली औषध।  
 माजूफल-सज्ञा पु० माजू नामक झाड़ी का  
 गोटा या गाद, जो औषधि तथा रंगाई के  
 काम में आता है।  
 माट-सज्ञा पु० १ मिट्टी का बस्तन, जिसमें  
 रंगरेज रंग बनाते हैं। मटोर। २. बड़ी  
 मटवी।  
 माटा†-सज्ञा पु० एक प्रकार का लाल चून्टा।  
 माटी\*†-सज्ञा स्त्री० १. दे० "मिट्टी"।  
 २. घूल। रज। ३. शव। लाश। ४. शरीर।  
 ५. वह पदार्थ, जिससे पृथ्वी बनी है।  
 माठ-सज्ञा पु० एक प्रकार की मिठाई।  
 माइना\*†-क्रि० अ० ठानना। मचाना।  
 करना।  
 मि० सं० १ पैर या हाथ से मसलना।  
 मलना। २. पूसना। फिरना। ३. सजाना।  
 मडित करना। भूषित करना। ४. धारण  
 करना। पहनना। ५. आदर करना। पूजना।  
 माड़ा\*†-सज्ञा पु० कोठे पर का वरामदा, जो  
 छत से बाहर हाता है। जटारी पर का  
 चौबारा। मडप।  
 माणवक-सज्ञा पु० १ सोतह वर्ष की अवस्था-  
 वाला युवक। २. विद्यार्थी। ३. निदित या  
 नीच आदमी।  
 माणिक, माणिक्य-सज्ञा पु० लाल रंग का  
 एक रत्न। बाल। मानिक।  
 वि० सर्वथेष्ठ।

मातग-सज्ञा पु० १. हाथी। २. चाडाल। ३.  
 एक ऋषि, जो शवरी के गुरु थे। ४. अश्वत्थ।  
 मातगी-सज्ञा स्त्री० दे० "महाविद्या"। इस  
 महाविद्याओं में से, नवी महाविद्या (तत्र)।  
 मात-सज्ञा स्त्री० १. दे० "माता"।  
 २. पराजय।  
 वि० १. पराजित। २. मदमस्त। मतवाला।  
 मातदिल-वि० [अ०] जो गुण के विचार से  
 न बहुत ठंडा हो, न बहुत गर्म।  
 मातना\*†-क्रि० अ० मस्त होना। मदमस्त  
 होना। नशे में हो जाना।  
 मातवर-वि० [अ०] विश्वसनीय।  
 सज्ञा स्त्री० मातवरी।  
 मातम-सज्ञा पु० [अ०] मृत्यु-शोक। किसी  
 के मरने पर रोना-पीटना।  
 मातमपुर्सी-सज्ञा स्त्री० [फा०] मृतक के सब-  
 धियों को सात्वना देना और उनसे सहानुभूति  
 प्रकट करना।  
 मातमी-वि० [फा०] शोक-सूचक।  
 मातलि-सज्ञा पु० इद्र का सारथी।  
 मातलिसूत-सज्ञा पु० इद्र।  
 मातहूत-वि० [अ०] [सज्ञा मातहूती]  
 अधीन। किसी की अधीनता या नियंत्रण  
 में काम करनेवाला।  
 माता-सज्ञा स्त्री० १. जन्म देनेवाली। माँ।  
 जननी। २. कोई पूज्य या आदरणीय  
 स्त्री। बड़ी स्त्री। ३. गो। ४. पृथ्वी।  
 भूमि। ५. लक्ष्मी। ६. शीतला। चंचक।  
 वि० [स्त्री० माती] मतवाला।  
 मातामह-सज्ञा पु० [स्त्री० मातामही] नाजा।  
 माता का पिता।  
 मातामही-सज्ञा स्त्री० माँ की माँ। नानी।  
 मातु\*-सज्ञा स्त्री० माता। माँ।  
 मातुल-सज्ञा पु० १. मामा। माता का भाई।  
 २. धतूरा।  
 मातुली-सज्ञा स्त्री० १. मामी। मामा की स्त्री।  
 २. भाँग।  
 मातु-सज्ञा स्त्री० दे० "माता"।  
 मातुक-वि० माता-सम्बन्धी।  
 मातुका-सज्ञा स्त्री० १. माता। २. दाई।  
 धाय। ३. तानिका की ये सात देवियाँ—

ब्राह्मी, माहेश्वरी, वीमारी, वीजवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुडा ।

मातृकुल-सज्ञा पु० माता या नाना का यश ।

मातृत्व-सज्ञा पु० माता, हान का भाव ।

माता होन के गुण ।

मातृपूजा-सज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति,

जिसमें पितरा का पूजन किया जाता है ।

मातृपूजन ।

मातृ भ्राता-सज्ञा स्त्री० यह भापा, जो बालक

अपनी माता से सीखता है ।

मातृव्यसा-सज्ञा स्त्री० माँ की बहन । मीमी ।

मातृ-अर्थ० कवन । सिफ ।

मात्रा-सज्ञा स्त्री० १ परिमाण । तौल का

परिमाण । मिकदार । २ एक बार खान योग्य

औषध । ३ उतना काल, जितना एक ह्रस्व

अक्षर का उच्चारण करने में लगता है ।

उत्त । कला । ४ स्वरचूचक रेखा, जो अक्षर

के ऊपर या आगे-पीछे लगाई जाता है ।

मात्रिक-वि० १ मात्रा-सम्बन्धी । २ जिसमें

मात्राओं की गणना की जाय ।

मातृस्य-सज्ञा पु० इप्या । उह ।

माय\*—सज्ञा पु० दे० माया । मस्तक ।

मायना\*—सज्ञा पु० दे० मयना ।

माया-सज्ञा पु० १ मस्तक । ललाट । २ किसी

पदार्थ का अथवा या ऊपरी भाग ।

मुहा०—माया टकना—प्रणाम करना । माया

ठनकना—पहलू से ही किसी दुष्टता या

अनिष्ट की आशंका होना । माय चढाना या

पल्ला—शिरोधाय करना । सादर स्वीकार

करना । माय पर बल पडना—आकृति से

त्रोष दुःख या असंतोष आदि प्रकट होना ।

माय मानना—सादर स्वीकार करना ।

माया-पन्थी-सज्ञा स्त्री० १ ऐसा काम, जिसमें

दिमाग पर बहुत जोर पड़ । सिरपन्ची ।

२ बहुत अधिक बकना या समझाना । सिर

खपाना ।

मायुर-सज्ञा पु० १ मयूर का निवासी ।

२ ब्राह्मणों की एक शाखा । चतुर्वेदी या

चौब । ३ कायस्था की एक शाखा ।

माये-क्रि० वि० १ मस्तक पर । सिर पर ।

२ भरोसे । सहारे पर ।

माव\*—सज्ञा पु० दे० "मद" ।

मावक-वि० [ सज्ञा स्त्री० मावकता ] नशा

लानवाला । मस्त करनेवाला । जिससे

नशा हो । नशीरा ।

मावकता-सज्ञा स्त्री० मावक या नशा होने

का भाव । नशावापन । मतवालापन ।

मावन-वि० मस्त करनेवाला । मावक ।

नज्ञा पु० वामदेय ४ पाँच वाणा में

न एक ।

मावर-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] माँ । माता ।

मावरजाद-वि० [ फा० ] १ जन्म का । पैदा-

इशी । २ सहोदर (भाई) । ३ विलकुल

नगा ।

मादरी-वि० [ फा० ] मादर-या माता-सम्बन्धी ।

माता का । जैसे मादरी जवान । मातृनाया ।

माता-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] स्त्री जाति का

प्राणी । मर का उलटा (जीवजंतु) ।

मादुर-सज्ञा पु० [ अ० ] १ मूल तत्त्व । २

योग्यता । ३ मन्नाड़ । पीब ।

मादुर-सज्ञा स्त्री० पाँच राजा की दूसरी पत्नी

और नकुल तथा सहदेव की माता ।

मायव-सज्ञा पु० १ विष्णु । २ श्रीकृष्ण । ३

वसत ऋतु । ४ एक छंद । मुत्तहृष्ट ।

वि० [ मायवी, मायविका ] ५१ मयु

सम्बन्धी । २ मस्त करनेवाला ।

मायविका-सज्ञा स्त्री० दे० 'मायवी' ।

मायवी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रसिद्ध सत्ता

जिसमें सुगंधित फूल लगते हैं । २ सर्वथा छंद

का एक भद्र । ३ एक प्रकार की शराब । ४

सुखसी । ५ दुगा ।

मापुरी-सज्ञा स्त्री० १ मिठाई । मीठापन ।

मापुय । २ घोडा । सुदरता । ३ मय ।

मापुय-सज्ञा पु० १ मयुरता । २ सुदरता ।

३ मिठाई । मीठापन । ४ काव्य का एक गुण

जिसके द्वारा पित बहुत प्रसन्न होता है ।

माग्या\*—सज्ञा पु० दे० 'मायव' ।

मायो-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण । मायव ।

मायविनी-सज्ञा स्त्री० शुक्ल यजुर्वेद की एक

शाखा ।

माय्यम-वि० मय्य का । बीचवाना ।

सज्ञा पु० १ साधन । काव्यसिद्धि का उपाय ।

जरिया। २ वह मापा, जिसके द्वारा शिक्षा दी जाय (अग्र०—मीडियम)।

माध्याकषण—सज्ञा पु० पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकषण जो सब पदार्थों को अपनी ओर खींचता है और जिसके कारण सब वस्तुएँ ऊपर से नीचे या पृथ्वी पर गिरती हैं (अग्र० ग्रेविटेशन)।

माध्व—सज्ञा, पु० वंष्णवा के चार मुख्य संप्रदायों में से एक, जो मध्वाचार्य का चलाया हुआ है।

माध्वी—सज्ञा स्त्री० मदिरा। शराब।

मान—सज्ञा पु० १ तौल या नाप आदि। परिमाण। २ पैमाना। वह साधन, जिसके द्वारा कोई चीज़ नापी या तौली जाय।

३ अभिमान। धर्मद। ४ प्रतिष्ठा। इज्जत।

५ साहित्य में मन का एक विकार, जो अपन प्रिय व्यक्ति को कोई दाप या अपराध करते देखकर होता है। छठना। ६ सामर्थ्य।

मुहा०—मान मथना=धर्मद दूर करना। गव चूण करना। मान रखना=प्रतिष्ठा बचाना। इज्जत रखना।

यो०—मान महत्=आदर-सत्कार। प्रतिष्ठा।

मान मनाना=रूठ हुए को मनाना।

मानकद—सज्ञा पु० १ एक प्रकार का माठा कद। २ सालिव मिठा।

मानक—सज्ञा पु० दे० 'मानद'। किसी प्रकार की योग्यता या गुण आदि का अनुमान ज्ञान या आकन के लिए निर्धारित मान या माप।

मानकज्ञ—सज्ञा पु० दे० 'मानकद'।

मानकीकरण—सज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत-सी वस्तुओं का मानदंड या मानक निश्चित करना, जैसे तौल के घटारा या नाप के गज्रा आदि का मानकीकरण।

मानगृह—सज्ञा पु० काप नवन।

मानचिह्न—सज्ञा पु० विज्ञा स्थान का बना हुआ चिह्न।

मानता—सज्ञा स्त्री० दे० 'मनत'।

मानदंड—सज्ञा पु० निश्चित या स्थिर किया हुआ वह मान या माप, जिसके अनुसार किसी प्रकार की साम्यता या गुण आदि जाँचा

जाय या अनुमान लगाया जाय। (अग्र०—स्टैंडर्ड)।

मानना—कि० अ० १ मजूर करना। स्वीकार करना। २ कल्पना या अनुमान करना। समझना। ध्यान में लाना। ठीक मार्ग पर लाना।

कि० सं० १ स्वीकृत करना। मजूर करना।

२ किसी को पूज्य, आदरणीय या योग्य समझना। आदर करना। गुरु या उस्ताद समझना। ३ धार्मिक दृष्टि से श्रद्धा या विश्वास करना। ४ देवता आदि की नेंट चढ़ाना का प्रण करना। मन्त्रत करना। ५ ध्यान में लाना। समझना।

मननीय—वि० [स्त्री० माननाया] मान (आदर या इज्जत) करने योग्य। मान्य। आदरणीय। पूजनीय।

मान परेस्ता—सज्ञा पु० आशा। भरोसा।

मानमंदिर—सज्ञा पु० १ वेधशाळा। वह स्थान जिसमें ग्रहा आदि का बंध करने के यज्ञ तथा सामग्री हो। २ कोषमवन।

मान-मनोती—सज्ञा स्त्री० १ मनत। मनोती।

२ रूठन और मनान की क्रिया।

मानमरोर—सज्ञा स्त्री० दे० 'मनमुटाव'।

मानमोचन—सज्ञा पु० रूठे हुए प्रिय को मनाना।

मानव—सज्ञा पु० १ मनुष्य। आदमी। २ १४ मात्राओं के छंदा की सज्ञा।

मानवता—सज्ञा पु० १ मानव या आदमी होने का भाव और गुण। मनुष्यत्व। आदमीयत।

२ सत्कार भर के समस्त मनुष्यों का समूह या समाज। समस्त मानव-समाज।

मानवशास्त्र—सज्ञा पु० मानव जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन करनेवाला शास्त्र।

मानयो—सज्ञा स्त्री० स्त्रा। नारी।

वि० मानव-संबंधी। मानवाय।

मानवोप—वि०० मानव या मनुष्य सम्बन्धी।

मानवेंद्र—सज्ञा पु० १ राजा। २ अत्यन्त धेड़ व्यक्ति।

मानस—सज्ञा पु० १ मन। हृदय। २ मान-सरोवर। ३ रामदय। ४ सत्त्व विकल्प। ५ मनुष्य।

वि० १. मन से उत्पन्न। मनोभव। २. मन में विचार हुआ।

क्रि० वि० मन के द्वारा।

मानस पुत्र-संज्ञा पु० पुराणानुसार वह पुत्र, जिसकी उत्पत्ति इच्छा-मात्र से हो।

मानसर-संज्ञा पु० दे० "मानसरोवर"।

मानसरोवर-संज्ञा पु० हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध बड़ी झील, जो पवित्र मानी जाती है।

मानसशास्त्र-संज्ञा पु० मनोविज्ञान।

मानसिक-वि० १. मन-संबंधी। मन का।

२. मन की कल्पना से उत्पन्न।

मानसी-संज्ञा स्त्री० वह पूजा, जो मन ही मन की जाय। एक विद्या देवी।

वि० मन का। मन से उत्पन्न।

मानहानि-संज्ञा स्त्री० [ वि० मानहानिकर ] अपमान। बेइज्जती। [ अयो०-डिकेमेन्शन ] कोई ऐसा काम या बात करना, जिससे किसी का मान या प्रतिष्ठा घटे। इसके लिए कानून में दंड देने की व्यवस्था है। इसे मानहानि का कानून कहते हैं। भारतीय दंड-विज्ञान की धारा ५००।

मान-+क्रि० सं० १. नापना। तोलना। २. जाँचना।

वि० अ० दे० "समाना" या "अमाना"।

मानंद-वि० [ फा० ] समान। तुल्य।

मानिक-संज्ञा पु० जाल रंग की एक मणि। पुष्कराय।

मानिकचंदी-संज्ञा स्त्री० साधारण छोटी गुपारी।

मानिक देत-संज्ञा स्त्री० मानिक का बूरा, जिससे गहने साफ करते हैं।

मानित-वि० सम्मानित। प्रतिष्ठित।

मानित-संज्ञा स्त्री० १. सम्मान। २. प्रतिष्ठा। इज्जत। २. अभिमान। श्रमंड।

मानिनी-वि० गर्वीली। मान करनेवाली। मानवती।

सज्ञा स्त्री० साहित्य में बहुनायिका, जो नायक या दोष देखकर उससे रूठ गई हो।

मानी-वि० [ स्त्री० मानिनी ] १. सम्मानित। प्रतिष्ठित। २. श्रमंडी। अभिमानी।

संज्ञा पु० वह नायक, जो नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो।

संज्ञा स्त्री० अर्थ। मतलब। तात्पर्य।

मानुष-संज्ञा पु० दे० "मनुष्य"।

मानुष-संज्ञा पु० [ स्त्री० मानुषी ] मनुष्य। आदमी।

वि० मनुष्य का।

मानुषिक-वि० मनुष्य का। मनुष्य-संबंधी।

मानुषी-वि० मनुष्य-संबंधी। मानुषीय।

मानुष्य-संज्ञा पु० १. मनुष्य होने का भाव या धर्म। मनुष्यत्व। २. मनुष्य का शरीर।

मानुष-संज्ञा पु० मनुष्य। मानुष।

माने-संज्ञा पु० [ अ० मानी ] अर्थ। मतलब।

मानो-अव्य० जैसे। गोया।

मान्य-वि० [ स्त्री० मान्या ] मानने योग्य। माननीय। पूजनीय। पूज्य।

माप-संज्ञा स्त्री० १. तोल। मापने का परिमाण। २. मापने की क्रिया। ३. मान।

मापक-संज्ञा पु० १. मान। माप। पैमाना।

जिससे कुछ तोला या माप किया जाय।

२. माप करनेवाला।

मापना-क्रि० सं० नापना। तोलना।

माफ़-संज्ञा पु० [ अ० ] १. क्षमा। २. दोष से मुक्त।

वि० जो क्षमा कर दिया गया हो। क्षमा किया हुआ। क्षमिक।

माफ़िक-वि० [ अ० ] अनुकूल। योग्य।

माफ़ी-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. क्षमा। २. वह भूमि, जिसका कर सरकार से माफ हो।

यो०-माफ़ीदार=सरकार-द्वारा मालगुजारी माफ की हुई भूमि का मालिक।

माफ़-+संज्ञा पु० १. क्षमा। २. बहुकार।

३. क्षति। ४. अधिकार।

माफ़ता-संज्ञा स्त्री० दे० "भक्तता"। अपना-पन। आत्मीयता। प्रेम। स्नेह। मुहृन्वत।

मामलत, मामलति-+संज्ञा स्त्री० मामला।

व्यवहार की बात। बिनादास्पद विषय।

मामला-संज्ञा पु० [ अ० ] १. बिनादपुर्ण विषय।

सगड़। बिबाद। मुकदमा। २. व्यापार।

३. काम। बर्बा। उद्योग। ४. गारस्पष्टिक

व्यवहार।

मामा-सज्ञा पु० [स्त्री० मामी] माता का भाई।

मामो-सज्ञा स्त्री० १ मामा की पत्नी।  
२ अपने दोष पर ध्यान न देना।

मुहा०—मामी पीना=मुकर जाना।

मामूल-सज्ञा पु० [अ०] रीति। रवाज।

मामूलो-वि० [अ०] १ सामान्य। साधारण।  
२ नियमित। नियत। जो रीति-रवाजा के अनुकूल हो।

माय\*†-सज्ञा स्त्री० १ माता। माँ। जननी।  
२ बड़ी या आदरणीय स्त्री। ३ दे० 'माया'।

अव्य० दे० 'माहि'।

मायक-सज्ञा पु० दे० 'मायावी'।

मायका-सज्ञा पु० स्त्री के माता पिता का घर। नहर। पीहर।

मायन\*†-सज्ञा पु० १ विवाह में मातृवा-  
पूजन और पितृ निमन्त्रण की तिथि या दिन।  
२ उपर्युक्त दिन का कृत्य।

मायनी†-सज्ञा स्त्री० दे० मायाविनी'।

मायल-वि० [फा०] १ प्रवृत्त। रुजू।

झुका हुआ। २ मिथित। निला हुआ (रंग)।

माया-सज्ञा स्त्री० १. भ्रम। अविद्या। अज्ञान।

छल। कपट। धोखा। लीला। २ दैवी शक्ति।

सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण। प्रकृति।

३ ईश्वर की वह कल्पित शक्ति, जिससे

सब कार्य होते हैं। ४ लक्ष्मी। द्रव्य। धन।

संपत्ति। वीर्य। ५ इन्द्रजाल। जादू।

६ नय दानव की कन्या, जिससे खर दूषण,

निशिरा और शूर्पनखा पैदा हुए थे। ७

दुर्गा। ८ मोह। मगत्व। ९ रुपा। दया।

अनुग्रह।

मायादेवी-सज्ञा स्त्री० गौतम बुद्ध की माता

का नाम।

मायापति-सज्ञा पु० विष्णु। ईश्वर। पर-

मात्मा।

मायामोह-सज्ञा पु० सांसारिक शश्ट। माया

का भ्रम।

मायावाद-सज्ञा पु० ईश्वर के अतिरिक्त

सृष्टि की समस्त वस्तुओं को अनित्य और

असत्य मानन का सिद्धांत।

मायावादी-सज्ञा पु० सारी सृष्टि को माया

या भ्रम समझनेवाला।

मायाविनी-सज्ञा स्त्री० छल-कपट करनेवाली

स्त्री। ठगिनी।

मायावी-सज्ञा पु० [स्त्री० 'मायाविनी']

१. छल-कपट करनेवाला। धूर्त। धासबाज।

२ जादूगर।

मायिक-वि० १ माया से बना हुआ। कला

वदी। जाली। २ मायावी।

मायूत-वि० [अ०] [सज्ञा स्त्री० मायूती]

निराश। नाउम्मेद।

मार-सज्ञा स्त्री० १ मारने की क्रिया या

भाव। मार-पीट। २ साधात। चोट।

निशाना।

सज्ञा पु० १ कामदेव। २ बिप। जहर।

३ धतूरा।

अव्य० अत्यत। बहुत।

मारक-वि० १ मार डालनेवाला। मारने-

वाला। नाश करनेवाला। सहारक। २

किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करने-

वाला।

मारका-सज्ञा पु० [अप्र०-माक'] १ चिह्न।

निशान। २ विषपता सूचक चिह्न।

सज्ञा पु० १ युद्ध। लड़ाई। २ बहुत बड़ी या

महत्त्वपूर्ण घटना।

मार-काट-सज्ञा स्त्री० युद्ध। लड़ाई। मारने-

काटन का काम।

मारपीत-सज्ञा पु० एक प्रकार का भोट

कोरा कपडा।

मारकेश-सज्ञा पु० ग्रहों का वह योग, जो

किसी व्यक्ति के लिए प्राणघातक होता

है।

मारण\*†-सज्ञा पु० दे० 'माय'। रास्ता।

मुहा०—मारण मारना=रास्ते में पथिक को

लूट लेना। मारण लगना=रास्ता लेना।

मारणन\*-सज्ञा पु० दे० १ मागण। २

बाण। तीर। ३ भिसमगा।

मारण-सज्ञा पु० १ मार डालना। हत्या

करना। २ एक तानिक प्रयोग। जिस

मनुष्य के मारने के लिए इसका प्रयोग किया

जाता है, वह मर जाता है।

मारतोल—सज्ञा पु० [ पुतं० मार्टली ] एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा ।

मारना—क्रि० सं० १ वध या हत्या करना । प्राण लेना । २ पीटना । चोट पहुँचाना । जैसे—मार बैठना । ३ दुःख देना । सताना । ४ कुस्ती में विपक्षी का पछाड़ देना । ५ वध कर देना । ६ शस्त्र आदि चलाना । फवना । ७ आवेग या मनोविकार आदि को रोकना । जैसे, मन मारना । ८ नष्ट कर देना । न रहने देना । ९ शिकार करना । १० चलाना । संचालित करना । ११ कोई चीज अपने कब्जे में कर लेना । हडप लेना । १२ धातु आदि को जलाकर उसकी भस्म तैयार करना । १३ विजय प्राप्त करना । जीतना । १४ अनुचित रूप से रख लेना । लूटना । बिना परिश्रम के प्राप्त करना । १५ बल या प्रभाव कम करना । निर्जीव-सा कर देना । १६ लगाना । देना ।

सुहा०—गोली मारना=१ किसी पर बरूक या पिस्तौल की गोली चलाना । जाने देना । छोड़ देना । २ कुछ पड़कर मारना=मग्न हो फूँककर कोई चीज किसी पर फेंकना । जाड़ मारना=जाड़ का प्रयोग करना । मग्न मारना=जाड़ करना ।

मार-पीट—सज्ञा स्त्री० सड़ाई । ऐसी लड़ाई, जिसमें लोग मारे और पीटे जायें ।

मारपेच—सज्ञा पु० धूर्तता । चालबाजी ।

मारफत—अव्य० [अ०] द्वारा । जलिये ।

मारवाड—सज्ञा पु० १ राजपूताने में मेवाड़ के आस-पास का प्रदेश । २ मेवाड़-राज्य ।

मारवाडी—सज्ञा पु० [ स्त्री० मारवाडिन ] मारवाड़ प्रदेश का निवासी ।

सज्ञा स्त्री० मारवाड़ प्रदेश की भाषा ।

वि० मारवाड़ का । मारवाड़-सम्बन्धी ।

मारा\*—वि० जो मार डाला गया हो । मारा हुआ ।

मुहा०—मारा फिरना, मारा-मारा फिरना=चुरी दशा में झपट-झपट भटकना ।

मारामार—वि० वि० बहुत जल्दी । ताबड़-तोड़ ।

मारो—सज्ञा स्त्री० महामारी । भीषण सक्षमक रोग—प्लेग, हैजा आदि ।

मारोच—सज्ञा पु० एक राक्षस, जिसने सोने के हिरन का रूप धारण करके रामचन्द्र को धोखा दिया था ।

माएत—सज्ञा पु० वायु । हवा ।

माएति—सज्ञा पु० १ माएत (वायु) के पुत्र हनुमान । २ भीम ।

माए—सज्ञा पु० १ लड़ाई का बाजा । युद्धवाद्य । बहुत बड़ा डका या धौंसा । २ लड़ाई में गाया जानेवाला एक गाना । ३ मरुदेश-निवासी । वि० १ मारनेवाला । २ हृदयवेषक । कटीला ।

मारे—अव्य० इस कारण । वजह से ।

मार्कंडेय—सज्ञा पु० मूकड ऋषि के पुत्र । कहते हैं कि ये अपने तपोबल के प्रभाव से अमर हो गए हैं ।

मार्का\*—सज्ञा पु० दे० "मारका" ।

मार्ग—सज्ञा पु० १ रास्ता । पथ । २ अगहन का महीना । ३ मार्गशिरा नक्षत्र ।

मार्गकर—सज्ञा पु० किसी विशेष मार्ग पर चलने के बदले में लिया जानेवाला कर (अपे०-टालदेवस) ।

मार्गण—सज्ञा पु० १ इच्छा करना । पूछना ।

माग करना । २ जाँच । खोज । ढूँढ़ना ।

अन्वेषण । ३ माण । तीर । ४ भिक्षमगा ।

५ सल्याजो का प्रतीक । (कामदेव के पाँच बाण ।)

मागेन\*—सज्ञा पु० १ दे० "मार्गण" । बाण ।

तीर । २ भिक्षमगा ।

मार्गशीर्ष—सज्ञा पु० अगहन मास । कार्तिक के बाद का महीना ।

मार्गी—सज्ञा पु० मार्ग पर चलनेवाला व्यक्ति । यात्री । वटोही ।

मार्जेन—सज्ञा पु० दे० "मार्जेना" ।

मार्जेना—सज्ञा स्त्री० [ वि० मार्जनीय ] सफाई । धामा । माफी ।

मार्जनी—सज्ञा स्त्री० झाड़ ।

मार्जोर—सज्ञा पु० [ स्त्री० मार्जोरी ] बिल्ली ।

मार्जित—वि० साफ किया हुआ ।

मातण्ड—सज्ञा पु० सूर्य ।

मादंव-सज्ञा पु० १ अहंकार का त्याग । नम्रता । २ दूसरे को दुखी देखकर दुखी होना । ३ सरलता ।

मार्फत-अव्य० [अ०] द्वारा । जरिए ।

मार्मिक-वि० [सज्ञा मार्मिकता] १ दिल पर असर करनेवाला । मर्म स्थल पर प्रभाव डालनेवाला । २ विशेष प्रभावशाली । ३ मर्मज्ञ ।

मासल ला-सज्ञा पु० [अप्रे०] फौजी कानून । सैनिक विधान । साधारण नागरिकों पर लागू किए जानेवाले कानूनों की अपेक्षा सैनिकों पर लागू किए जानेवाले कानून कठोर होते हैं । असाधारण परिस्थिति में या संकट के समय इस कानून को साधारण नागरिकों पर भी लागू किया जाता है ।

माल\*-सज्ञा पु० १. संपत्ति । धन । २ सामग्री । सामान । असबाब । ३ बेचने-खरीदने की चीज । ४. कर के रूप में मिलनेवाला धन । ५ फसल की उपज । ६ उत्तम और सुस्वादु भोजन । ७ पहलवान । कुश्ती लड़नेवाला । वह द्रव्य, जिससे कोई चीज बनी हो । सामग्री ।

माला-सज्ञा स्त्री० १ माला । हार । २ वह रस्सी या सूत की डोरी, जो चरखे में टेकिए को घुमाती है । ३ पवित्र । पांती ।

मुहा०—माल मारना या माल चोरना= पराया धन हड़पना । दूसरे की संपत्ति दबा बैठना ।

यौ०—माल-टाल=धन-संपत्ति । माल-मत्ता=माल-असबाब ।

मालकंगनी-सज्ञा स्त्री० एक लता, जिसके बीजों से तेल निकलता है ।

मालकोश-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध राग ।

मालखाना-सज्ञा पु० [फा०] १ भंडार । माल-असबाब रखने का स्थान । २ कलकटरी कचहरी का सरकारी गोदाम, जिसमें दस्तानादि (बन्दूकें) रखी जाती हैं ।

मालगाड़ी-सज्ञा स्त्री० माल ढोनेवाली रेल-गाड़ी ।

मालगुजारी-सज्ञा पु० [फा०] मालगुजारी देनेवाला पुरुष ।

मालगुजारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. वह भूमि-कर, जो जमींदार से सरकार लेती है । २ लगान ।

मालगोदाम-सज्ञा पु० स्टेशन पर वह स्थान, जहाँ पर रेल से आया हुआ माल रखा जाता है ।

मालती-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रसिद्ध लता ।

२. चांदनी । ज्योत्स्ना । ३ रात्रि । रात ।

४ छ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति । ५

सर्वया का गयद नामक भेद ।

मालदार-वि० [फा०] धनी । संपन्न ।

मालपूआ-सज्ञा पु० पूरी की तरह का एक प्रसिद्ध मीठा पकवान ।

मालव-सज्ञा पु० १ मालवा देश । २ एक राग, जिसे भैरव भी कहते हैं । ३ मालव देश-वासी या मालवा का पुरुष ।

वि० मालव देश सम्बन्धी । मालवे का ।

मालवा-सज्ञा पु० एक प्राचीन प्रदेश, जो अब मध्य भारत में है ।

मालदोय-वि० १ मालवे का । मालव देश का निवासी । २ ब्राह्मणों की एक उपजाति ।

माला-सज्ञा स्त्री० १ फूलों का हार । गजर ।

२ समूह । झुंड । ३ दूब । ४ छंद का

एक भेद । ५. पवित्र । अवली ।

मुहा०—माला फेरना=जपना । भजना ।

मालामाल-वि० [फा०] बहुत संपन्न । धनी ।

मालिक-सज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० मालिका] १ स्वामी । अधिपति । २ ईश्वर । ३. पति । शोहर ।

मालिका-सज्ञा स्त्री० १. पवित्र । २ माला । ३. मालिन ।

मालिकाना-सज्ञा पु० [फा०] स्वामी का अधिकार । मिलकियत । स्वामित्व ।

क्रि० वि० मालिक की तरह ।

मालिकी-सज्ञा स्त्री० मालिक होने का भाव । मालिक का स्वत्व ।

मालिनी-सज्ञा स्त्री० मालिन । एक वर्षाकाल छन्द ।

मालिन्य-सज्ञा पु० मलिनता । उदासीनता ।

भालियत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. कीमती।  
मूल्य। २. संपत्ति। ३. कीमती चीज।

भालिग-संज्ञा स्त्री० [फा०] मलने की क्रिया  
या भाव। शरीर में तेल या कोई छेप मल-  
भलकर लगाना। मईत।

भाली-संज्ञा पु० [स्त्री० भालिन, भालन,  
भालिनी] बाग को सींचने और पौधों की  
देखभाल करनेवाला व्यक्ति।

वि० आर्थिक। घन-संबंधी।

भालीदा-संज्ञा पुं० [फा०] १. मलीदा।  
चूरमा। २. एक प्रकार का बहुत कोमल  
और गरम ऊनी कपड़ा।

भालूम-वि० [अ०] जाना हुआ। ज्ञात।

भाल्य-संज्ञा पुं० १. माला। २. फूल।

भाल्यवंत-संज्ञा पुं० दे० "भाल्यवान्"।

भाल्यवान्-संज्ञा पुं० १. पुराणानुसार एक  
पवंत का नाम। २. एक राक्षस, जो सुकेश का  
पुत्र था।

भावत\*†-संज्ञा पुं० दे० "महावत"।

भावली-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत की एक  
चौर पहाड़ी जाति का नाम।

भावस\*—संज्ञा स्त्री० दे० "अभावस"।

भावा-संज्ञा पुं० १. खोआ। दूध का जला हुआ  
गाढ़ा सार। २. मोड़। सत। ३. प्रकृति।

भाविजा-संज्ञा पुं० दे० "मुआवजा"।

भासकी-संज्ञा पुं० मशक में पानी भरकर  
उसे छिड़कने वाला। मिस्ती।

भासा-संज्ञा पुं० ८ रत्ती का एक बाट या  
मान।

भासा अलपल-वि० अरबी का एक फल, जिसका  
अर्थ है :—१. ईश्वर उसे बुरी नजर से  
बचाए। २. बहुत अच्छा। अगर ऐसा हो  
गया, तो बहुत ही अच्छा।

भाशो-संज्ञा पुं० कालापन लिये हुए हथ रंग।  
वि० कालापन लिये हरे रंग का।

भाशूक-संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० भाशूका]  
प्रिय। प्यारा।

भाष-संज्ञा पुं० १. उड़द। २. भाषा। ३.  
शरीर के ऊपर का काळे रंग का मटा।

\*संज्ञा स्त्री० दे० "भाष"।

भाषपर्णी-संज्ञा स्त्री० जंगली उड़द।

भास-संज्ञा पुं० १. महीना। ३० दिन की  
अवधि।\* २. भास।

भासना\*†-कि० अ० मिलना।

कि० स० मिलाना।

भासात-संज्ञा पुं० १. महीने का अंत। अमा-  
वस्या। २. संपाति।

भासा-संज्ञा पुं० दे० "भासा"।

भासिक-वि० १. भास-संबंधी। महीने का। २.  
महीने में एक बार होनेवाला।

भासी-संज्ञा स्त्री० भीसी। माँ की बहिन।

भासूम-वि० [अ०] [संज्ञा स्त्री० भासू-  
नियत] १. अवोच। बच्चे की तरह नात-  
मश। २. निर्दोष। निरपराध। बेकसूर।

माह\*—अव्य० वीच में।

माह\*†-संज्ञा पुं० १. भास। महीना। २. भाष-  
भास। ३. भाष। उड़द।

अव्य० वीच में।

माहूत\*—संज्ञा स्त्री० महत्त्व।

माहूताय-संज्ञा पुं० [फा०] चद्रमा।

माहूतायो-संज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "मह-  
तायो"। एक प्रकार का कपड़ा।

माहूना\*—कि० अ० भयकर निकालना। दे०  
"उमाहूना"।

माहूली-संज्ञा पुं० १. अंतपुर में जानेवाला  
सेवक। महली खोज। २. सेवक। दास।

माहवार-कि० वि० [फा०] प्रतिमास।  
वि० हर महीने का। मासिक।

माहवारी-वि० [फा०] हर महीने का।

माहौ†-अव्य० दे० "महौ"।

माहूलाय-संज्ञा पुं० पहिना। गौरव। अफ़ाई।  
महत्त्व। विशेषतः धार्मिक।

माहू\*—अव्य० भीतर। अंदर। अधिकरण  
कारक का चिह्न। 'में' या 'पर'।

माहूर-वि० [अ०] निपुण। कुशल। सिद्ध-  
हस्त। वह व्यक्ति, जो कोई काम करने में  
खूब मेजा हो या जिसे किसी विषय की  
अच्छी जानकारी हो। विशेषज्ञ।

माहूता\*†-संज्ञा पुं० माहि।

माहूमली-संज्ञा स्त्री० दक्षिण देश का एक  
प्रसिद्ध प्राचीन नगर।

माहौ\*—अव्य० दे० "माहि"।

माही-सज्ञा स्त्री० [फा०] मछली ।

माही मरातिष-सज्ञा पु० [फा०] राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले शङ्ख, जिन पर मछली आदि की आकृतियाँ बनी होती हैं ।

माहुर-सज्ञा पु० विप । जहर ।

माहेन्द्र-वि० महेन्द्र (इन्द्र)-सम्बन्धी । महेन्द्र का ।

माहेश्वर-वि० महेश्वर (शिव)-सम्बन्धी । महेश्वर का ।

सज्ञा पु० १. एक यज्ञ का नाम । २. एक उपपुराण का नाम । ३. पाणिनि के वे चौदह मूल, जिनमें स्वर और व्यंजन वर्णों का समग्र प्रत्याहारार्थ किया गया है । ४. शैव संप्रदाय का एक भेद । ५. एक प्राचीन अस्त्र ।

माहेश्वरी-सज्ञा स्त्री० १. दुर्गा माता । तान्त्रिकों की एक देवी । २. वैष्णवों की एक उपजाति ।

मिडार्ड-सज्ञा स्त्री० १. मीडने या मीजने का कार्य । २. मीडने की मजदूरी । ३. देशी छोट की छपाई, जिसमें छोट का रंग पक्का और चमकदार हो जाता है ।

मिक्दार-सज्ञा स्त्री० [अ०] परिमाण । मात्रा । मिचकाना-क्रि० अ० आँखों का बार-बार खुलना और बंद होना ।

मिचकाना-क्रि० स० बार-बार आँखें खोलना और बंद करना ।

मिचकी-सज्ञा स्त्री० १. आँख मिचकाने की क्रिया या भाव । २. आँख का इशारा ।

मिचना-क्रि० अ० आँखा का बंद होना ।

मिचलाना-क्रि० अ० मिचली या मतली आना । कै करने को जी चाहना ।

मिचलो-सज्ञा स्त्री० कै करने की इच्छा । मतली ।

मिचीनी-सज्ञा स्त्री० आँख बन्द करना और खोलना । दे० "मिचीनी" ।

मिछा-वि० दे० "मिथ्या" ।

मिजराब-सज्ञा स्त्री० [अ०] तारवा एक प्रकार का छल्ला, जिससे सितार आदि बजाते हैं । ढंका । नाखुना ।

मिजाज-सज्ञा पु० [अ०] १. स्वभाव । प्रकृति । २. शरीर या मन की दशा । तबीअत । दिल ।

३. प्रवृत्ति । ४. किसी वस्तु का मूल गुण । तासीर । ५. अभिमान । घमंड । होसी ।

मुहा०—मिजाज खराब होना=अस्वस्थ होना । तबीअत खराब होना । मिजाज बिगाड़ना=किसी के मन में क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न करना । मिजाज पाना=किसी के स्वभाव से परिचित होना । किसी को अनुकूल या प्रसन्न देखना । मिजाज पूछना=किसी के स्वास्थ्य या तबीअत के बारे में पूछना । मिजाज न मिलना=घमंड के कारण किसी से बात न करना ।

मिजाजपुरसी-सज्ञा स्त्री० किसी का मिजाज या कुशल-समाचार पूछना ।

मिजाज शरीफ-[अ०] किसी से उसकी कुशलता का समाचार पूछने के लिए प्रयोग किया जानेवाला वाक्यांश, जिसका अर्थ है—आपकी तबीअत तो ठीक है । आप सकुशल तो हैं ।

मिटना-क्रि० अ० १. न रह जाना । नष्ट हो जाना । बर्बाद होना । खराब होना । २. किसी अकित चिह्न का न रहना ।

मिटाना-क्रि० स० १. खराब करना । नष्ट करना । २. रेखा, दाग, चिह्न आदि दूर करना ।

मिट्टी-सज्ञा स्त्री० १. भूमि । जमीन । २. वह पदार्थ, जिससे पृथ्वी बनती है । ३. वह भुरभुरा पदार्थ, जो पृथ्वी के ऊपरी तल की प्रधान वस्तु है । खाक । धूल । राख । भस्म । ४. शव । लाश । ५. शरीर । बदन ।

मुहा०—मिट्टी करना=नष्ट करना । खराब करना । मिट्टी के मोल=बहुत सस्ता । मिट्टी डालना=१. किसी बात को जाने देना । २. किसी के दोष को छिपाना । मिट्टी देना=मुसलमानों में किसी के मरने पर सब लोगों का उसकी कब्र में तीन-तीन मिट्टी मिट्टी डालना । कब्र म गाड़ना । मिट्टी में मिलना=नष्ट होना । चोपट होना । मरना । मिट्टी पत्तीद या बरबाद करना=दुर्दशा करना । खराबी करना ।

यी०—मिट्टी का पुतला=मानव शरीर ।

मिट्टी खरादी= १. दुर्दशा। २. वरवादी। नाश।  
 मिट्टी का तेल—संज्ञा पु० फिरासन तेल। एक प्रसिद्ध खनिज द्रव्य, जिससे लालटेन और गैस लेम्प आदि जलाते हैं।  
 मिट्ठी—संज्ञा स्त्री० चुबन।  
 मिट्ठू—संज्ञा पु० १. प्रिय या मोठा बोलने-वाला। मधुरभाषी। २. तोता।  
 मि० १. चुप रहनेवाला। न बोलनेवाला। २. प्रिय बोलनेवाला।  
 मिठ—वि० मोठा का संक्षिप्त रूप (योगिक में) जैसे—मिठबोला।  
 मिठबोला—संज्ञा पु० मधुर-भाषी। मन में कष्ट रखकर ऊपर से मोठी बातें करनेवाला।  
 मिठलोना—संज्ञा पु० थोड़े नमकवाला।  
 मिठाई—संज्ञा स्त्री० १. मिठास। माधुरी। २. कोई मोठी खाने की चीज। अच्छा पदार्थ।  
 मिठाना=कि० अ० मोठा होना।  
 मिठास—संज्ञा स्त्री० मोठे होने का भाव। मोठापन। माधुर्य।  
 मितंग\*—संज्ञा पु० हाथी।  
 मित—वि० १. सीमा के अन्दर। सीमित। २. थोड़ा। कम।  
 मितभाषी—संज्ञा पु० नम या थोड़ा बोलने-वाला।  
 मितव्यय—संज्ञा पु० कम खर्च करना। किरायत।  
 मितव्ययिता—संज्ञा स्त्री० कम खर्च करने का भाव।  
 मितव्ययी—संज्ञा पु० कम खर्च करनेवाला। किरायतदार।  
 मिताई\*†—संज्ञा स्त्री० दे० “मिन्ता”।  
 मिताक्षर—संज्ञा स्त्री० भागवत-स्मृति की वित्तानेश्वर-कृत टीका।  
 मितायें—संज्ञा पु० थोड़ी बातें कहकर अपना काम पूरा करनेवाला।  
 मिति—संज्ञा स्त्री० १. मान। परिमाण। २. सीमा। हद।  
 मितो—संज्ञा स्त्री० तिथि। तारीख। चान्द्र-मास की तिथि, जो प्रत्येक पक्ष में १ से १५ तक होती है। (चन्द्रमा के घटने-बढ़ने

के अनुसार महीने में दो बार १ से १४ तक की तिथियाँ गिनी जाती हैं।) शुक्ल पक्ष की पन्द्रहवीं तिथि अर्थात् पूर्णिमा के लिए १५ का धक लिखा जाता है और कृष्ण पक्ष की १५वीं तिथि अर्थात् अमावस्या के लिए ३० का।  
 मुहा०—मिती पूजना=दूदी का नियत समय पूरा होना।  
 मितीकाटा—संज्ञा पु० मूद जोड़ने, या एक बहुत आसान महाजनी तरीका, जिसमें एक-एक दिन और एक-एक रुकन का मूद जोड़ते हैं।  
 मित्र—संज्ञा पु० १. अपना साथी, सहायक और शुभचिन्तक। बंधु। सखा। दोस्त। २. सूर्य का एक नाम। बारह आदित्यों में से पहला। ३. पुराणानुसार मरुद्गण में से पहला। ४. आर्यों के एक प्राचीन देवता। ५. भारतवर्ष का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश।  
 मित्रता—संज्ञा स्त्री० १. मित्र होने का भाव। दोस्ती। २. मित्र का धर्म।  
 मित्रत्व—संज्ञा पु० दे० “मिन्ता”।  
 मित्राई\*†—संज्ञा स्त्री० दे० “मिन्ता”।  
 मित्राक्षर—संज्ञा पु० छद के रूप में बना हुआ पद।  
 मित्रावरुण—संज्ञा पु० मित्र और वरुण नामक देवता।  
 मिथिला—वर्तमान तिरहुत (बिहार के उत्तरी और पूर्वी भाग) का प्राचीन नाम।  
 मिथुन—संज्ञा पु० १. स्त्री और पुरुष का जोड़ा। २. संयोग। समागम। ३. मेघ आदि राशियों में से तीसरी राशि।  
 मिथ्या—वि० असत्य। झूठ।  
 मिथ्याचार—संज्ञा पु० चालबाजी या छल-कपट का व्यवहार। झूठा या दिखावटी बरताव।  
 मिथ्यात्व—संज्ञा पु० १. मिथ्या होने का भाव। २. माया।  
 मिथ्यावादी—संज्ञा पु० [स्त्री० मिथ्या-वादिनी] झूठा।  
 मिथ्याहार—संज्ञा पु० अनुचित या प्रवृत्ति के विरुद्ध भोजन करना।  
 मिथुराना\*—कि० अ० मृदु या मधुर होना। कोमल होना।

मिनकना-क्रि० अ० (अनु०) बहुत ही दबकर या धीरे से कुछ बोलना।  
 मिन्जानिज-क्रि० वि० [अ०] किसी की ओर से।  
 मिन्जालिक-सज्ञा पु० [अ०] खर्च की मद। खर्च किया जानेवाला धन या उसका धाता।  
 मिन्जुमला-क्रि० वि० [अ०] इन सयमे से।  
 मिनट-सज्ञा पु० [अग्रे०] एक घटे का साठवाँ भाग। साठ सेकंड का समय।  
 मिनती-सज्ञा स्त्री० दे० 'मिन्नत'। विनती।  
 मिनमिन-क्रि० वि० बहुत धीमे या अस्पष्ट स्वर में।  
 मिनमिनाना-क्रि० अ० धीमे स्वर में या नाक से बोलना।  
 मिनहा-वि० [अ०] किसी रकम में से काटा या घटाया हुआ। मुजरा किया हुआ।  
 मिनिस्टर-सज्ञा पु० [अग्रे०] राज्य के शासन में किसी विभाग का मंत्री।  
 यौ०—प्राइम मिनिस्टर=प्रधान मंत्री।  
 मिनिस्टरी-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] राज्य के मंत्रियों का कार्य या पद।  
 मिन्नत-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रार्थना। विनती। निवेदन।  
 मिमियाना-क्रि० अ० [अनु०] बकरी या भेड़ का बोलना। में-में करना।  
 मियाँ-सज्ञा पु० [फा०] १ स्वामी। मालिक। २ पति। खसम। ३ महाशय। ४. मुसलमान।  
 मियाँमिटठू-सज्ञा पु० १ मीठी बोली बोलनेवाला। मधुर-भाषी। २ तोता। ३ मूर्ख।  
 मुहा०—अपने मुँह मियाँ-मिटठू बनना=अपने मुँह अपनी प्रशंसा या बड़ाई करना।  
 मियाणा-वि० [फा०] मध्यम आकार का।  
 सज्ञा पु० एक प्रकार की पालकी।  
 मियानी-सज्ञा स्त्री० पाजामा के बीच का भाग।  
 मिरग\*—सज्ञा पु० दे० "मृग"।  
 मिरगी-सज्ञा स्त्री० मानसिक रोग, जिसमें रोगी मूर्छित होकर गिर पड़ता है। अपस्मार रोग।

मिरचा-सज्ञा पु० ताल मिर्च।  
 मिरजई-सज्ञा स्त्री० कमर तक का एक प्रकार का बदनार अंगा।  
 मिरगो-सज्ञा स्त्री० १ छोटा मृदग। २ मृदग के आकार को एक प्रकार की आतिशबाजी। ३ मोमवत्ती जलाकर रखने के लिए शीशे का आधार।  
 मिरियास\*—सज्ञा स्त्री० दे० "मीरास"।  
 मिरजा-सज्ञा पु० १ [फा०] मुगलों की एक उपाधि। २ मीर या अमीर का लड़का। अमीरजादा। ३ राजकुमार। कुँवर।  
 मिर्च-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का मसाला। २ एक प्रसिद्ध तिन्त, काला, छोटा दाना, जिसका व्यवहार मसाले के रूप में होता है। गोल मिर्च। ३ मिरचा।  
 मिलक\*—सज्ञा स्त्री० [अ० मिलक] १ जमीन-जायदाद। जमींदारी। २. जागीर।  
 मिलकना\*—क्रि० स० जलना।  
 मिलन-सज्ञा पु० १ मिलने की क्रिया या भाव। २ मिलाप। भेंट। ३ मिश्रण। मिलावट।  
 मिलनसार-वि० [सज्ञा मिलनसारी] सबसे मेल-जोल रखनेवाला। सद् व्यवहार रखनेवाला। सुशील।  
 मिलना-क्रि० स० १ दो पदार्थों का एक होना। सम्मिलित होना। २ मिश्रित होना। समूह या समुदाय के भीतर होना। सटना। जुड़ना। बिपकना। ३ विलकुल या बहुत कुछ बराबर होना। ४ आलिंगन करना। गले लगाना। ५ भेंट होना। मेल-मिलाप होना। ६ लाभ होना। प्राप्त होना।  
 यौ०—मिला-जुला=१ सम्मिलित। २. मिश्रित।  
 मिलनी-सज्ञा स्त्री० विवाह की एक रस्म। इसमें कन्या-पक्ष के लोग वर-पक्ष के लोगों से गले मिलते और उन्हें कुछ नकद देते हैं।  
 मिलवाई-सज्ञा स्त्री० दे० "मिलाई"।  
 मिलवाना-क्रि० स० मिलने का काम दूसरे से कराना।  
 मिलाई-सज्ञा स्त्री० १ मिलने या मिलाने की क्रिया या भाव। २. भेंट। मुलाकात। (जेल में

कंदियों से मुलाकात करने को मिलाई कहते हैं । )

मिलान-सज्ञा पु० तुलना । मुकाबला । ठीक होने की जाँच । मिलाने की क्रिया ।

मिलाना-क्रि० सं० १ मिथन करना । दो पदार्थों को एक करना । सम्मिलित करना । एक करना । २ सटाना । जाड़ना । चिपकाना । ३ तुलना करना । मुकाबला करना । ठीक होने की जाँच करना । ४ भेंट या परिचय कराना । ५ मुलह या सधि कराना । ६ अपना भेदिया या साथी बनाना । ७ सटाना । ८ बजाने से पहले बाजा का सुर ठीक करना ।

मिलाप-सज्ञा पु० १ मिलने की क्रिया या भाव । मित्रता । २ भेंट । मुलाकात ।

मिलापद-सज्ञा स्त्री० १ मिलाए जाने का भाव । २ बढ़िया चीज में घटिया चीज का मेल । खोट ।

मिलिद-सज्ञा पु० भोरा ।

मिलिक\*†-सज्ञा स्त्री० दे० 'मिलिकयत' ।

मिलित-वि० मिला हुआ । युक्त ।

मिलोना\*†-क्रि० सं० १. दे० 'मिलाना' । २. गाय बुलना ।

मिलोनी-सज्ञा स्त्री० दे० 'मिलाई' ।

मिलिकयत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मालिक होने का अधिकार या भाव । २ वह धन-संपत्ति जिस पर मालिका का-सा हक हो । ३ जमींदारी । जागीर । जायदाद । माफी ।

मिल्लत-सज्ञा स्त्री० १ मेल-जोल । घमिष्ठता । मिलाप । २ मिलनसारी । [अ०] ३ मजहब । ४ संप्रदाय । पंथ ।

मिशन-सज्ञा पु० [अंग्रे०] १. लक्ष्य । ध्येय । किसी विशेष कार्य का लक्ष्य पूरा करने का पत ठान लना । २ किसी विशेष कार्य के लिए स्वयं बाहर जाना या भेजा जाना । ३ किसी विशेष कार्य के लिए भेजी जानेवाली दूत-मंडली । ४ ईसाई-धर्म-प्रचारका का धर्म-प्रचार के लिए कहा जाता । ५ ईसाई-धर्म-प्रचारका का निवास-स्थान ।

मिशनरी-सज्ञा पु० [अंग्रे०] ईसाई धर्म-प्रचारक ।

वि० मिशन-संबंधी । मिशन का ।

मिथ-वि० १ मिला या मिलाया हुआ । मिश्रित । संयुक्त । २. श्रेष्ठ । बड़ा । ३. बहु । सख्या, जिसमें भिन्न भिन्न प्रकार की कई सख्याएँ हैं (गणित) ।

सज्ञा पु० बालूणा के एक वर्ग की उपाधि ।

मिथन-सज्ञा पु० [वि० मिथनीय] १.

दो या अधिक पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया । मेल । मिलावट । २ जाड़ लगाने की क्रिया । जाड़ना (गणित) ।

मिथित-वि० एक में मिलाया हुआ ।

मिप-सज्ञा पु० १ छल । कपट । २ बहाना ।

हीला । मित्र । ३ ईर्ष्या । डाह ।

मिष्ट-वि० मीठा । मयूर ।

मिष्टभाषी-सज्ञा पु० प्रिय या मीठा बोलने-वाला । मधुरभाषी ।

मिष्टान्न-सज्ञा पु० मिठाई ।

मिस्त-सज्ञा पु० १ बहाना । हीला । २ बदल ।

पाखंड ।

मिस्तकीन-वि० [अ०] १ बेचारा । २ दीन ।

गरीब । निर्धन ।

मिस्तकीनता\*†-सज्ञा स्त्री० गरीबी । दीनता ।

निसना\*†-क्रि० अ० १. भोजा या मला जाना ।

भोजा जाना । २ मिश्रित होना । मिलना ।

मिस्तरी-सज्ञा पु० [अ०] उर्दू या फारसी की

कविता का एक चरण । पद ।

मिस्तरी-सज्ञा स्त्री० दोबारा बहुत साफ करके

जमाई हुई दानेदार या खरबार चीनी ।

मिस्तहरी-वि० १ बहानेबाज । २ डागी । ३.

बालबाज ।

मिस्तल-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ नमूना । नजीर ।

उदाहरण । २ उपमा । ३ कहावत ।

मिस्तिल-वि० दे० 'मिस्त' ।

सज्ञा स्त्री० किसी एक मुकदमे या विषय से

सबध रखनेवाला कुल कामज-पत्र ।

मिस्तूर-सज्ञा पु० १. फाट का एक बीजार,

जिससे राज लोग छत पीटते हैं । पिटना ।

२ दे० 'मेहतर' । ३ डोरे में लपेटा हुआ

दफ्ती का वह टुकड़ा, जो लिखने के समय

लवोंर सोधी रखने के लिए लिख जानेवाले

बागज के नीचे रख लिया जाता है ।

मिस्तरी-सज्ञा पु० बहुत अच्छा कारीगर ।

मकान आदि बनाने या यंत्रों आदि की मरम्मत करनेवाला। कुशल कारीगर।  
मिस्तरीखाना—सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ लोहार, बढई आदि काम करते हैं।

मिस्र—सज्ञा पु० एक देश, जो अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी भाग में समुद्र के तट पर है।

मिस्री—सज्ञा पु० १. मिस्र देश का। मिस्र देश-सम्बन्धी। २. मिस्र देश का रहनेवाला।

मिस्त-वि० [अ०] तुल्य। समान।

मिस्ता—सज्ञा पु० कई तरह की दालों आदि को पीसकर तैयार किया हुआ आटा।

मिस्सी—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का मजेन, जिसे सधवा स्त्रियाँ दाँतों में लगाती हैं।

मिहचना\*—क्रि० सं० दे० “मीचना”।

मिहानो\*—सज्ञा स्त्री० दे० “मयानी”।

मिहिर—सज्ञा पु० १. सूर्य। २. बादल। ३. चंद्रमा। ४. आक का पीधा। ५. दे० “बराह-मिहिर”।

मिही—वि० दे० “महीन”।

मींगो—सज्ञा स्त्री० बीज के अंदर का गूदा। गिरी।

मीजना\*—क्रि० सं० १. हाथों से मलना। मसलना। २. मर्दन करना।

मीड़—सज्ञा स्त्री० संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अक्ष, जिससे दोनों स्वरों का संबंध स्पष्ट हो जाता है। गमक।

मीड़क\*—सज्ञा पु० दे० “मिड़क”।

मीड़ना\*—क्रि० सं० हाथ से मलना। मसलना।

मीआद—सज्ञा स्त्री० [अ०] अवधि।

मीआदी—वि० जिसकी अवधि निश्चित हो।

मीच—सज्ञा स्त्री० दे० “मृत्तु”। मीत।

मीचना—क्रि० सं० (आँखें) बन्द करना। मूँदना।

मीचु\*—सज्ञा स्त्री० मृत्तु।

मीझान—सज्ञा स्त्री० [अ०] कुछ सत्याआ का योग। जोड़ (गणित)।

मीटर—सज्ञा पु० [अंग्रे०] नापने का यंत्र। बिजली संच होने, नल का पानी संच होने या किसी चलनेवाली चीज की गति आदि नापने का यंत्र।

मीठा\*—वि० [स्त्री० मीठी] १. चीनी या शहद आदि के स्वादवाला। मधुर। २. स्वादिष्ट। जायकेदार। ३. धीमा। सुस्त। हलका। मद्धिम। मदा। ४. बहुत अधिक सीधा। ५. प्रिय। रुचिकर।

सज्ञा पु० १. मिठाई। २. गुड़।

मुहा०—मीठा होना—किसी प्रकार के लाभ या आनंद आदि की प्राप्ति होना।

मीठा तेल—सज्ञा पु० तिल का तेल।

मीठा नीबू—सज्ञा पु० बड़ा नीबू, जो खाने में मीठा होता है। जमीरी नीबू। नकोतरा।

मीठा पानी—सज्ञा पु० लेंमनेड। नीबू का सत मिला हुआ पानी।

मीठी छुरी—सज्ञा स्त्री० दिखाने के लिए मित्र बनकर भीतर ही भीतर घात करनेवाला। विश्वासघातक। कपटी।

मीत—सज्ञा पु० दे० “मित्र”। दोस्त।

मीन—सज्ञा पु० १. मछली। २. १२ राशियों में से अंतिम राशि।

मीनकेतन—सज्ञा पु० कामदेव।

मीनमेख—सज्ञा पु० १. मीन मेप (राशियाँ)। २. सोच-विचार। अगा-पीछा। दुविधा। असमजस। ३. दूसरे के कामों में दोष ढूँढना। नुक्ताचीनी करना।

मीना—सज्ञा पु० [फा०] १. एक प्रकार का नीले रंग का कीमती पत्थर। २. सोने, चाँदी आदि पर किया जानेवाला रंग-विरंग का काम। ३. शराब रखने का पात्र।

मीनाकारी—सज्ञा स्त्री० [फा०] सोने या चाँदी पर का रंगीन काम।

मीनाबाजार—सज्ञा पु० [फा०] बहुत सुन्दर और सजा हुआ बड़िया बाजार। (मुगल बादशाहों-अकबर और जहाँगीर के जमाने में ऐसे बाजार लगते थे, जिनमें महिलाओं को भाग लेना पड़ता था।)

मीनार—सज्ञा स्त्री० गोलाकार \* कमी हुई बहुत ऊँची इमारत। लाट। स्तम्भ।

मीमांसक—सज्ञा पु० किसी विषय की मीमांसा या अच्छी तरह विवेचन करनेवाला।

मीमांसा-शास्त्र का, शास्त्र।

मीमांसा—सज्ञा स्त्री० १. तर्क-द्वारा यह निदचय

करता कि कोई बात वास्तव में सही है।  
 तर्क-द्वारा किसी विषय या प्रतिपादन।  
 पूर्ण रूप से या बहुत अच्छी तरह किसी  
 विषय का विवेचन। २ हिंदुआ के छ  
 दर्शन में स दो दर्शन, जो पूर्व-मीमांसा और  
 उत्तर-मीमांसा कहलाते हैं। ३ जैमिनि-  
 कृत दर्शन, जिसे पूर्व-मीमांसा कहते हैं।  
 मीमांसा-वि० मीमांसा करने के योग्य।

मीर-सज्ञा पु० [फा०] १ सरदार। प्रधान।  
 नेता। २ धार्मिक आचार्य। ३ सैयद जाति  
 की उपाधि। ४ सत्रसे पहले कोई काम,  
 विशेषतः प्रतियोगिता का काम, करनेवाला।  
 मीर फर्श-सज्ञा पु० [फा०] वे बड़े बड़े पत्थर  
 आदि, जो फर्श आदि के कोना पर उन्हे  
 उठने से रोकने के लिए रखे जाते हैं।

मीर मजलिस-सज्ञा पु० सभापति। अध्यक्ष।  
 सभा, समारोह या जलसे का अध्यक्ष।  
 मीरस-सज्ञा स्त्री० [अ०] बपोती। तरका।  
 उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति।  
 मीरासी-सज्ञा पु० [स्त्री०] मीरासिन। एक  
 प्रकार के मुसलमान, जो प्रायः गाना-बजाना  
 या मसखरापन करते हैं।

मील-सज्ञा पु० दूरी की एक नाप, जो १७६०  
 गज की होती है (अंग्रे०-माइल)।  
 मीलन-सज्ञा पु० [वि०] मीलनीय, मीलित।  
 १ बंद करना। २ संकुचित करना।  
 मीलित-वि० १ बंद किया हुआ। २ सिकोटा  
 हुआ।

सज्ञा पु० एक अलंकार, जिसमें यह कहा  
 जाता है कि एक होने के कारण उपमेय  
 और उपमान में कोई भेद नहीं जान पड़ता।  
 मुंगरी-सज्ञा पु० [स्त्री०] मुंगरी। हथोड़े के  
 आकार का काठ का एक औजार।

मुंगरी-सज्ञा स्त्री० मूँ की बनी हुई बरी।  
 मुंचना-वि० स० [सज्ञा मोचन] छुटकारा  
 पाना। मुक्त होना।

मुंड-सज्ञा पु० १ गरदन के ऊपर का अंग।  
 सिर। २ कटा हुआ सिर। ३ एक  
 उपनिषद्, 'मुंडक'। ४ शुभ का सेनापति  
 एक दैत्य, जिसे दुराजी ने मारा था। ५ राहु  
 ग्रह। ६ वृक्ष का रूँठ।

वि० मुंडा हुआ। मुंडा।

मुंडचिरा-सज्ञा पु० १ ऐसा भित्तारी, जो प्रायः  
 अपने सिर, आँख या नाक आदि को मुकीले  
 हुमियार से घायल करके भिक्षा माँगता  
 है। अयोरी। २ लेन-देन में बहुत दृज्जत और  
 हठ करनेवाला।

मुंडन-सज्ञा पु० १ सिर को मूँदने की क्रिया।  
 २. एक संस्कार, जिसमें बालों का सिर  
 मूँदा जाता है।

मुंडना-क्रि० अ० १ मूँदा जाना। एवं दम  
 सिर के बालों को सफाई होना। २ लुटना।  
 ठगा जाना।

मुंडमाला-सज्ञा स्त्री० कटे हुए सिरा या  
 शोषणिया की माला।

मुंडमालिनी-सज्ञा स्त्री० बाली देवी।

मुंडमाली-सज्ञा पु० शिव।

मुंडा-सज्ञा पु० [स्त्री०] मुंडी। १ जिसके सिर  
 के बाल मुंड हुए हों। २ किसी सामु या  
 जोगी का शिष्य। ३ वह पशु, जिसके सोत  
 होना चाहिए, पर न हो। जिसके ऊपरी अथवा  
 दूधर-उधर फैतनवाले अंग न हों। ४ एक  
 प्रकार की लिपि, जिसमें मानाएँ आदि  
 नहीं होती। ५ कोठीवाली। ६ एक प्रकार  
 का जूता। ७ छोटा नागपुर में रहनेवाली  
 एक असभ्य जाति।

मुंडाई-सज्ञा स्त्री० मूँदने या मुँदाने की  
 क्रिया या मजदूरी।

मुंडासा-सज्ञा पु० सिर पर बाँधने का साफा।

मुंडिया-सज्ञा पु० सन्यासी। साधु या योगी  
 आदि का शिष्य।

मुंडी-सज्ञा स्त्री० १ वह स्त्री, जिसका सिर  
 मुंडा हो। २ पिधवा। रांड (गाली)।  
 ३ गौरखमुंडी।

मुंडेर-सज्ञा स्त्री० दे० "मुंडेरा"।

मुंडेरा-सज्ञा पु० बीवार का ऊपरी भाग,  
 जो सबसे ऊपर की छत पर होता है।

मुतजिम-वि० [अ०] इन्तजाम या प्रबन्ध  
 करनेवाला। प्रबन्धकर्ता।

मुतजिर-वि० [अ०] इन्तजार या प्रतीक्षा  
 करनेवाला।

मुंदना-क्रि० अ० १. बंद होना। खुली हुई

वस्तु का ढेंक जाना। २. लुप्त होना। छिपना। ३. छेद, बिल आदि का बंद होना।  
 मुंदरा-संज्ञा पु० १. कान का एक गहना।  
 २. एक प्रकार का कुंडल, जो योगी लोग कान में पहनते हैं।  
 मुंदरी-संज्ञा स्त्री० अंगूठी। छल्ला।  
 मुशियाना-वि० मुशियों का-सा। मुशियों के ढग का।  
 मुंशी-संज्ञा पु० [अ०] १. लिखने का पेशा करनेवाला। मुहूरर। वकीलों के क्लर्क। २. कायस्थों की एक उपाधि। ३. गुजरातियों की एक शाखा।  
 मुंसरिम-संज्ञा पु० [अ०] इतजाम करनेवाला। कचहरी का कर्मचारी, जो दफ्तर का प्रधान होता है और जिसके सुपुदे भित्तों आदि ठिकाने से रखता रहता है।  
 मुसिक-संज्ञा पु० [अ०] न्याय या इसाफ करनेवाला। दीवानी विभाग का एक न्यायाधीश।  
 मुसिकी-संज्ञा स्त्री० १. न्याय करने का काम। २. मुसिक का काम या पद। ३. मुसिक की कचहरी।  
 मुंह-संज्ञा पु० १. प्राणी का वह अंग जिससे वह बोलता और भोजन करता है। मुख-विवर। २. मनुष्य का मुख। चेहरा। ३. किसी वस्तु के ऊपरी भाग का विवर। सूरख। छेद। छिद्र। ४. मुखवत। लिहाज। शील। सकोच। ५. साहस। शक्ति। ६. योग्यता। सामर्थ्य। ७. ऊपर की सतह या किनारा।  
 मुहां-मुंह खराब करना=गदी बातें कहना। मुंह छुलना=बड़-बड़कर बोलने की आदत पड़ना। पृष्ठतापूर्वक बोलना। मुंह चलना=१ भोजन होना। खाया जाना। २. मुंह से व्यर्थ की बातें या दुर्वचन निकलना। मुंह चिढ़ाना=किसी की आकृति, हाव-भाव या कथन को बिगाड़कर उसकी नकल करना। मुंह छूना (संज्ञा मुंह छुवाई)=नामनाथ के लिए मंत्र से नहीं, बल्कि ऊपर से, कहना। मुंह पर लाना=मुंह से कहना। वर्णन करना। मुंह-पेट चलना=कै-दस्त

होना। हैजा होना। मुंह फाड़कर कहना=बेहया बनकर कहना। मुंह बांधकर बैठना=चुपचाप बैठना। कुछ न बोलना। मुंह भरना=रिश्त देना। घूस देना। मुंह मीठा करना=मिठाई खिलाना। कुछ देकर प्रसन्न करना। मुंह में खून या लहू लगना=चसका पड़ना। चाट, पड़ना। मुंह में जवान होना=कहने की सामर्थ्य होना। मुंह में पानी भर आना=कोई पदार्थ प्राप्त करने के लिए ललचना। मुंह में लगाम न होना=जो मुंह में आवे, सो कह देता। (अपना) मुंह सीना=बोलने से रुकना। मुंह से बात न निकालना। बिलकुल चुप रहना। मुंह गूखना=प्यास या रोग आदि के कारण गला सूख होना। मुंह से दूध टपकना=बहुत ही अनजान या बालक होना। (परिहास) मुंह से निकालना=कहना। उच्चारण करना। मुंह से फूल सड़ना=बहुत ही सुन्दर और प्रिय बातें कहना। अपना-सा मुंह लेकर रह जाना=लज्जित होना। (अपना) मुंह काला करना=१. व्यभिचार करना। २. अपनी बदनामी करना। (दूसरे का) मुंह काला करना=उपेक्षा से हटाना। त्यागना। मुंह की खाना=वेइज्जत होना। अपमानित होना। दुर्दशा करना। मुंह के बल गिरना=ठोकर खाना। पोखा खाना। मुंह छिपाना=लज्जा के भारे सामने न होना। (किसी का) मुंह ताकना=किसी के मुंह की ओर कुछ पाने आदि की आशा से देखना। विवश या चकित होकर देखना। मुंह ताकना=अकर्मण्य होकर चुपचाप बैठे रहना। मुंह दिखाना=सामने आना। मुंह देकर बात कहना=खुशामद करना। (किसी का) मुंह देखना=सामना करना। चकित होकर देखना। मुंह धो रखना=किसी पदार्थ की प्राप्ति की ओर से निराश हो जाना। मुंह पर=सामने। प्रत्यक्ष। मुंह पर या मुंह से बरसना=आकृति से प्रकट होना। मुंह फुलाना या फुलाकर बैठना=आकृति या

चेहरे मे असतोप या अप्रसन्नता प्रकट करना ।  
मुंह मे आग लगाना = १ मुंह झूलतना ।  
(स्त्री० गाली) २ दाह-नमं करना । (किसी के)  
मुंह लगना=किसी के सामने बड़-बड़कर बातें करना । उड़ड़ बनना । जवाब-सवाल करना । मुंह लगाना=सिर बढ़ाना । उड़ड़ बनाना । मुंह सूखना=उदास होना । भय या लज्जा आदि से/विह्वल हो तेज जाता रहना । मुंह देखे का=जो हादिस न हो, केवल ऊपरी या दिखीमा हो । मुंह मुलाहजे का=ज्ञान, पहचान का । परिचित । मुंह रखना=किसी का सिहाज रखना । मुंह पडना=साहस होना । मुंह तक आना या भरना=पूरी तरह से भर जाना । लबातब होना ।

मुंहअखरी\*+वि० मोक्षिक । जवानी । प्राग्दिक ।

मुंहकाल-सज्ञा पु० १ वेदज्जती । बदनामी । २ बलात्कार आदि के कारण हानेवाली बदनामी ।

मुंहचग-सज्ञा पु० दे० "मुरचग" ।

मुंहचौर-वि० मुंह छिपानवाला । सामने जाने में हिचकनेवाला ।

मुंहछूट-वि० दे० "मुंहफट" ।

मुंहजोर-वि० १ बचवादी । २ दे० "मुंहफट" । ३, उड़ड़ ।

मुंहबिलाई-सज्ञा स्त्री० १ नई दुल्हन का मुंह देखने की रस्म । २ मुंह देखने पर वधू को दिया जानेवाला धन ।

मुंहदेखा-वि० [स्त्री० मुंहदेखी] केवल दिसाने के लिए । केवल सामना होने पर होनेवाला (काम या व्यवहार) ।

मुंहनाल-सज्ञा स्त्री० वह नली, जिसे हुनके की सटक या नैचे आदि में लगा देते हैं और जिसे मुंह में लगाकर धुआँ सोचते हैं ।

मुंहफर-वि० खरी-खोटी या गन्दी बात कहने में सकीन न करनेवाला ।

मुंहबोला-वि० जो वास्तविक न हो, केवल मुंह से कहकर बनाया गया हो ।

मुंहभरई-सज्ञा स्त्री० १ मुंह भरने की क्रिया या भाव । २ रिदवत । पूस ।

मुंहमांगा-वि० जैसी माँग की जाय, वंसा ही । मनमुताबिक ।

मुंहामुह-क्रि० वि० मुंह तक । सवालव । भरपूर ।

मुंहसा-सज्ञा पु० मुंह पर के वे दाँते या फुंसियाँ जो युवावस्था में निकलती हैं ।

मुअत्तल-वि० [अ०] [सज्ञा मुअत्तली] यह व्यक्तित्व, जिस अपने पद या नीकरी से कुछ समय के लिए किसी आराप की जाँच या निर्णय होने तक दबस्वरूप अलग कर दिया गया हो । [अग्र०=सप्तपंड] ।

मुआफिक-वि० [अ०] [सज्ञा मुआफिकत] अनुकूल । सद्दश । समान । मन के अनुकूल या मुताबिक ।

मुआयना-सज्ञा पु० [अ०] जाँच । निरीक्षण ।

मुआवजा-सज्ञा पु० [अ०] १ बदला । २ किसी को उसकी कुछ हानि होन के बदल में दिया जानेवाला धन । राज्य द्वारा सम्पत्ति आदि हस्तगत करने पर मिलनेवाला धन । ३ प्रति-कर (अग्र०=कम्पेन्सेशन) ।

मुकटा-सज्ञा पु० एक प्रकार की रेसमी धोती ।

मुकत\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मुक्ति" ।

मुकदमा-सज्ञा पु० [अ०] अदालत में किसी के विरुद्ध चलनवाला मामला । अनियोग । दावा । नालिश ।

मुकदमेबाज-सज्ञा पु० [भाव० मुकदमेबाजी] बहुत अधिक मुकदमे लड़नेवाला । जो प्रायः मुकदमा लड़ा करता हो ।

मुकद्दर-सज्ञा पु० [अ०] भाग्य । किस्मत ।

मुकद्दस-सज्ञा पु० [अ०] पवित्र ।

मुकना\*+क्रि० अ० १ मुक्त होना । छूटना । २ चुकना । खतम हो जाना ।

मुकम्मल-वि० [अ०] १ पूरा । २ पूरा किया हुआ (काम) ।

मुकरना-क्रि० अ० कोई बात कहकर उसे फिर बदल देना या इनकार करना । मटाना । वादे के खिलाफ बात करना ।

मुकरनी-सज्ञा स्त्री० दे० "मुकरी" ।

मुकरी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कविता, जिसमें कही हुई बात से मुकुरते हुए कुछ और ही अभिप्राय प्रकट किया जाता है।  
कहु-मुकरी।

मुकरर-क्रि० वि० [अ०] दूसरी बार। फिर से।

वि० [सज्ञा मुकररी] १. निश्चित। २. तनात। नियुक्त।

मुकबला-सज्ञा पु० [अ०] १. सामना। मुठभेड़। २. बराबरी। तुलना। मिलान। ३. विरोध।

मुकाबिल-क्रि० वि० [अ०] सम्मुख। सामने। सज्ञा पु० १. प्रतिद्वंद्वी। २. दानु। दुश्मन।

मुकाम-सज्ञा पु० [अ०] १. ठहरने का स्थान। टिकान। पड़ाव। २. ठहरने की क्रिया। विराज। ३. रहने का स्थान। घर। ४. अपसर।

मुकियाना-क्रि० सं० १. मुकियों से बार-बार आघात करना। २. धुंसे लगाना।

मुकुद-सज्ञा पु० विष्णु।

मुकुट-सज्ञा पु० सिर पर टोपी की तरह पहनने का एक आभूषण, जिसे राजा आदि पहनते हैं। राजाओं के सिर पर पहनने का राजचिह्न। ताज।

मुकुर-सज्ञा पु० आईना। शीशा। दर्पण।

मुकुल-सज्ञा पु० १. कली। २. शरीर। ३. आत्मा। ४. एक प्रकार का छद।

मुकुलित-वि० १. जिसमें कलियाँ खग गई हों। २. कुछ खिली हुई। अशखली (कच्ची)। ३. आधा खुला, आधा बंद (फूल, आँस आदि)।

मुकुल-सज्ञा पु० [स्त्री० मुकली] नेंदी या तनी हुई मुट्ठी। पूंसा।

मुकली-सज्ञा पु० १. मुक्का। पूंसा। २. मुट्ठी बांधकर उससे किसी के शरीर पर धीरे-धीरे आघात मारना, जिससे शरीर की बकानट और पीड़ा दूर होती है।

मुकलाजी-सज्ञा स्त्री० पूंसेबाजी। मुक्को की लड़ाई।

मुकदमा-सज्ञा पु० [अ०] बदला, कलाबत्त आदि का काम किया हुआ या जरी का बना हुआ एक तरह का कपड़ा।

मुक्त-वि० १. जिसे बंधन से छुटकारा मिल गया हो। बन्धनरहित। स्वतंत्र। आजाद। २. दोष से छुटकारा पाया हुआ। निर्दोष। मुक्ति या मोक्ष-प्राप्त। ३. चलाने के लिए फेंका हुआ। खुला हुआ।

मुक्तकठ-वि० खुल कठ से अर्थात् बिलकुल स्पष्ट रूप से। निःसंकोच। बेधड़क। खुले आम।

मुक्तक-सज्ञा पु० १. वह कविता, जिसमें कोई एक कथा या प्रसंग दूर तक न चले। कई विषयों की कविताओं का संग्रह। "प्रबन्ध काव्य" का उल्टा। २. एक प्राचीन अस्त्र जिसे फेंककर मारा जाता था।

मुक्त-व्यापार-सज्ञा पु० खुला हुआ व्यापार जिसमें किसी के लिए कोई रुकावट न हो। दूसरे देशों से ऐसा व्यापार, जिसमें आयात-निर्यात की विशेष बाधाएँ न हों (अग्रे-फ्रीट्रेड)।

मुक्तहस्त-वि० [सज्ञा मुक्तहस्ता] खुले हाथों दान करनेवाला। बहुत उदारता से दान देनेवाला।

मुक्ता-सज्ञा स्त्री० मोती।

मुक्तावली-सज्ञा स्त्री० मोतियों की माला या सड़ी।

मुक्ताफल-सज्ञा पु० मोती।

मुक्ति-सज्ञा स्त्री० १. बन्धन से छुटकारा। मोक्ष। बार-बार ससार में जन्म लेने से छुटकारा पाकर आत्मा का ईश्वर में मिल जाना या स्वर्ग में पहुँच जाना। २. अभियोग या दोष आदि से छुटकारा। निर्दोष। निर-पराध।

मुख-सज्ञा पु० १. मुँह। चेहरा। आनन। २. घर का द्वार। दरवाजा। ३. नाटक में एक प्रकार की सधि, जहाँ से बर्खा और रसों का सूत्रपात होता है। ४. किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी सूना भाग। ५. आदि। आरम्भ। किसी वस्तु से पहले पडनेवाली वस्तु। वि० प्रधान। मुख्य।

मुखड़ा-सज्ञा पु० मुख। चेहरा। आनन।  
मुखतार-सज्ञा पु० [अ०] १. अदालत में मुकदमे की पैरवी करनेवाला कानूनी

सनाहार। २ वह व्यक्ति, जिग किसी ने अपना प्रतिनिधि बनाकर कोई काम करने का अधिकार दिया है।

मुलतारनामा-सज्ञा पु० वह अधिकार-पत्र, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की आर स अदालती बारावाई करने का अधिकारी होता है।

मुलतारी-सज्ञा स्त्री० १ मुखतार का पद्या या काम। २ प्रतिनिधित्व।

मुलपात्र-सज्ञा पु० वह जिसकी आठ में रहकर कोई काम किया जाय।

मुलपूठ-सज्ञा पु० किसी पुस्तक, पत्र या पत्रिका में सबसे ऊपर का पन्ना। पहला आवरण-पूठ।

मुलबध-सज्ञा पु० प्रय की प्रस्तापना या भूमिका।

मुलबिर-सज्ञा पु० [ज०] जासूस। नदिया।

मुलबिरो-सज्ञा स्त्री० खबर देने का काम।

मुलबिर का काम। भदियागिरी।

मुलर-वि० १ बहुत बोलनवाला। २ अप्रिय बोलनवाला। ३ कटुभाषी। ४ दे० 'मुलरित'।

मुलरित-वि० बोलता हुआ। ध्वनित। शब्दा या ध्वनियो से युक्त।

मुलशुद्धि-सज्ञा स्त्री० मुह साफ करना। भोजन के उपरान्त पान, मुपारी आदि खाकर मुह शुद्ध करना।

मुलाप्र-वि० जो जबानी याद हो। कटस्थ। बर-जबान।

मुलापक्षा-सज्ञा स्त्री० दूसरी का मुह ठाकना। दूसरी के आधित रहना।

मुलापक्षी-सज्ञा पु० दूसरा का मुह ठाकन-वाला। आधित।

मुलालिफ-वि० [अ०] [सज्ञा मुलालिफत] १ हिरोपी। २ शत्रु। दुश्मन। ३ प्रतिद्वंद्वी।

मुलिया-सज्ञा पु० नता। प्रधान। अगुआ। किसी काम में सबसे आगे रहनवाला। अगुआ।

मुलतलिफ-वि० [अ०] भिन्न। अलग। दूसरा। भिन्न भिन्न। अलग-अलग।

मुलतसर-वि० [अ०] जो थोड़ में हो। सधिष्ठा। छोटा। अल्प। थोडा।

मुल्य-वि० [सज्ञा मुल्यता] १ प्रधान। सबसे बड़ा या आगे रहनवाला। २ सबसे अधिक महत्वपूर्ण। खास। ३ अपन वग या विभाग में सबसे बड़ा या प्रधान, जैसे, मुख्य मंत्री।

मुख्य-क्रि० वि० मुख्य रूप से। खासतौर पर। प्रधान रूप से।

मुखर-सज्ञा पु० एक प्रकार की नारी मुखरी जो व्यापार करने के काम आती है। जोड़ी।

मुखल-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० मुखली] मगोल देश का निवासी। तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग, जो तातर देश का निवासी था।

मुखलाई-वि० मुगला का-सा। मुला का तरह का।

मुखलाई-वि० दे० 'मुखल'।

सज्ञा स्त्री० मुगल होने का भाव। मुगलपन।

मुखलानी-सज्ञा स्त्री० १ मुगल की स्त्री या मुगल-वंश की स्त्री। २ कपड़ तीनवाली मुखलमान स्त्री।

मुखन-सज्ञा पु० माठ।

मुगलता-सज्ञा पु० [अ०] भ्रम। धोखा।

मुगध-वि० बहुत खोलकर या स्पष्ट करके व कही जानवाली बात।

मुगध-वि० [सज्ञा मुगधता] १ आसक्त। मोहित। मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। २ मूढ़।

३ सुदूर। दूरसूत। ४ प्रसन्न।

मुगधकर-वि० [स्त्री० मुगधकरी] १ मुगध या मोहित करनेवाला। मोहक। २ अत्यंत आकर्षक।

मुग्धा-सज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका, जो जीवन की तो प्राप्त हो चुकी हो, पर जिसमें काम-चेष्टा न हो।

मुक्कुय-सज्ञा पु० १ एक बड़ा पड़। २ पुराण में वर्णित एक राजा।

मुचलका-सज्ञा पु० [तु०] वह प्रतिज्ञापत्र, जिसके द्वारा भविष्य में कोई अनुचित काम न करने अथवा किसी नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने की प्रतिज्ञा हो। (अप्र०-मसनत बांड) अदालत-द्वारा निरस्तार व्यक्तियों को उनसे विरह अभियोग पर विचार होने के समय तक रिहा करने

के लिए ली जानेवाली जमानत के साथ मुचलका (प्रतिज्ञापत्र) भी लिया जाता है।  
मुञ्चर-सज्ञा पु० १. जिसकी मूर्छें बड़ी-बड़ी हों। २. कुसुग और मूर्छा।

मुजरा-सज्ञा पु० [अ०] १. किसी रकम में से काटी जानेवाली रकम। २. किसी बड़े या धनवान् के सामने जाकर उसे सलाम करना। अभिवादन। ३. वेश्या का बैठकर गाना।  
मुजरिम-सज्ञा पु० [अ०] १. अपराधी। दोषी। २. अभियुक्त। जिस पर जुर्म या अपराध लगा हो। जिस पर अभियोग (फौजदारी का मुकदमा) चल रहा हो।

मुजस्सिम-वि० [अ०] पूरे जिस्म या शरीर-वाला। शरीरभारी। साकार।

मुजायका-सज्ञा पु० [अ०] हानि। हर्ज।  
मुजाविर-सज्ञा पु० [अ०] किसी पोर की क़द्व, रोजे आदि पर रहकर उन्हें पुजाने और चढ़ावा लेनेवाला।

मुस-सर्व० "म" सर्वनाम का वह रूप, जो उसे कर्ता ओड़ सबंध कारक को छोड़कर शेष कारको में, विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है। जैसे—मुसको, मुससे।

मुसे-सर्व० "मे" सर्वनाम का वह रूप जो उसे कर्म और सप्रदान कारक में प्राप्त होता है।

मुदकना†-वि० आकार में छोटा, पर सुन्दर।  
मुदका-सज्ञा पु० एक प्रकार की रेशमी धोती। मुकटा।

मुटाई-सज्ञा स्त्री० १. मोटापन। स्थूलता। २. पुष्टि। ३. अहंकार। घमंड। शेखी।

मुटाना-कि० अ० १. मोटा होना। २. घमंडी होना।

मुटासा-वि० जो धन कमा लेने से बेपरवा और घमंडी हो गया हो।

मुटिया-सज्ञा पु० बोल डोलनेवाला। मजदूर।

मुट्ठा-सज्ञा पु० १. घास, फूस, तुण या ऊठल का उतना पूला, जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके। २. चगुल भर वस्तु। ३. पुलिदा। ४. घस्त्र या यंत्र आदि की बेंट। दस्ता।

मुट्ठी-सज्ञा स्त्री० १. हाथ की वह मुद्रा, जो जंगलियों को मोड़कर हथेली पर दबा लेने

से बनती है। बेंधी हुई हथेली। उतनी वस्तु, जितनी बेंधी हुई हथेली में आ सके। २. बेंधी हथेली के बराबर का विस्तार। ३. हाथों से किसी के अंगों को पकड़-पकड़कर दवाने की क्रिया, जिससे शरीर की थकावट दूर होती है। चपी।

मुहा०—मुट्ठी में=फन्ने में। मुट्ठी गरम करना=रुपया देना। धन देना।

मुठभेड़-सज्ञा स्त्री० १. टक्कर। भिड़त। तड़ाई। २. भेंट। सामना।

मुठिका\*-सज्ञा स्त्री० १. मुट्ठी। २. घूसा। मुक्का।

मुठिया-सज्ञा स्त्री० ओजारी का दस्ता। बेंट।

सज्ञा स्त्री० भिखमगो को मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न बाँटने की क्रिया।

मुठो\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

मुड़कना-क्रि० अ० दे० "मुरकना"।

मुड़ना-क्रि० अ० १. सीधी वस्तु का कहीं से बल खाकर दूसरी ओर फिरना। घुमाव लेना। २. किसी धारदार किनारे या नोक का झुक जाना। झुकना। ३. दाएँ अथवा बाएँ घूम जाना। पलटना। लौटना। -कि० अ० दे० "मुँडना"।

मुड़ला\*†-वि० जिसके सिर पर बाल न हों। मुड़ा।

मुड़वाना-क्रि० स० सिर के बाल एकदम साफ कराना। किसी को मूँडने में प्रवृत्त करना।

मुड़वारी†-सज्ञा स्त्री० १. अटारी की दीवार का सिरा। मुँडरा। २. सिरहाना।

मुड़हर†-सज्ञा पु० स्त्री की साड़ी या चादर का वह भाग, जो ठीक सिर पर रहता है।

मुड़ाना-क्रि० स० दे० "मुँडाना"।

मुड़िया†-सज्ञा पु० वह व्यक्ति, जिसका सिर मुड़ा हुआ हो।

सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लिपि। महाजनी लिपि, जिसमें मायाएँ और अक्षरों के ऊपर रेखाएँ नहीं होती।

मुत्तअल्लिक-वि० [अ०] १. सबध रखने-वाला। सबद्ध। २. सम्मिलित।

क्रि० वि० सबध में। विषय में।

मृतक-संज्ञा पु० १. कोठे के छज्जे या चौक के ऊपर पाटन के तिनारे पड़ी की हुई पटिया या नोची दीवार। २. संज्ञा। मीनार। साट।

मृतकमो-वि० [अ०] पूर्व। चालाक।  
मृतकरि-वि० [अ०] [यू० मृतकरि] तरह-तरह के। विभिन्न प्रकार के।

मृतबन्ध-संज्ञा पु० [अ०] दत्तक पुत्र।  
मृतलङ्घ-वि० वि० [अ०] - जरा भी। तनिक भी।

वि० बिलकुल। निरा। निपट।  
मृतयन्त्र-वि० [अ०] तबन्त्र या प्यान देनेवाला।

मृतवस्त्री-वि० [अ०] स्वर्गीय। मृत।  
मृतवस्त्री-संज्ञा पु० [अ०] धार्मिक संस्था की सम्पत्ति का रक्षक या प्रबन्धकर्ता।  
मृतसहो-संज्ञा पु० [अ०] १. लेखक। मृषी। २. पंसाकार। ३. दीवान। ४. ईतजाम करने वाला। प्रबंधकर्ता। ५. मुनीम।

मृतसिद्धि-संज्ञा पु० [अ०] कठ में पहनने की मोतियों की कंठी।

मृताधिक-वि० वि० [अ०] अनुसार।  
वि० अनुकूल।

मृतालबा-संज्ञा पु० १. उतना धन जितना पाना बाजिब हो। २. बाकी रुपया।  
मृताह-संज्ञा पु० मुखलमानों में एक प्रकार का अस्वामी विवाह।

मृतालबा-संज्ञा पु० मोतीचूर का लहू।  
मृतालबा-संज्ञा पु० कलाई पर पहनने का एक आभूषण।

मुद्र-संज्ञा पु० हर्ष। आनंद।  
मुद्रगर-संज्ञा पु० २० "मुद्रदर"।  
मुद्रारि-संज्ञा पु० [अ०] अध्यापक।

मुद्रा-संज्ञा पु० १. मगर। लेकिन। २. मतलब यह कि। तात्पर्य यह कि। ३. हर्ष। आनंद।

मुद्राम-वि० वि० [फा०] १. सदा। हमेशा। २. निरंतर। लगातार। ३. ठीक ठीक। ह-य-ह।

मुद्रामी-वि० [फा०] जो सदा होता रहे।  
मुद्रित-वि० प्रसन्न। खुदा।

मुद्रिता-संज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की परकीया नायिका। २. हर्ष।

मुद्रिर-संज्ञा पु० १. बादल। मेघ। २. नामक व्यक्ति। ३. मेढक।

मुद्रग-संज्ञा पु० भृंग।  
मुद्रगर-संज्ञा पु० दे० "मुद्रदर"। प्राचीन काल का एक अस्त्र (गदा)।

मुद्रगल-संज्ञा पु० एक उपनिषद्।  
मुद्रई-संज्ञा पु० [अ०] १. बादी। नाजिद या दावा करनेवाला। दावादार। २. दुश्मन।

वैरी। मनु।  
मुद्रत-संज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० मुद्रती] बहुत दिन। अवधि। जरासा।

मुद्राभलेह, मुद्रालेह-संज्ञा पु० जिस पर कोई दावा या नातिश की गई हो। प्रतिवादी।  
मुद्रा-संज्ञा पु० पिंढी के नीचे का गांठवाला भाग। टखना।

मुद्रो-संज्ञा पु० रस्सी आदि की ऐसी गांठ, जिसके अन्दर से उसका कोई तिरा दूसरे-उपर बिसक सके।

मुद्ररु-संज्ञा पु० छापनेवाला। किसी छापेखाने का वह अधिकारी, जिस पर उस प्रेस में छपने वाले पत्र, पत्रिका आदि के छापने का उत्तर-दायित्व रहता है और उसका नाम वहाँ की छपी हुई हर पत्र-पत्रिका तथा पुस्तकों आदि पर छापना पड़ता है।

मुद्रण-संज्ञा पु० छपाई। छापना। किसी चीज पर अक्षर आदि अंकित करना।

मुद्रणयंत्र-संज्ञा पु० छापने का यंत्र या कल (अंग्रे०-प्रिंटिंग मशीन)।

मुद्रणालय-संज्ञा पु० छापेखाना। वह स्थान, जहाँ मुद्रण यंत्र से चीजें छपी जाय (अंग्रे०-प्रिंटिंग प्रेस)।

मुद्राकित-वि० मोहर किया हुआ।

मुद्रा-संज्ञा स्त्री० १. मोहर। रुपया पंसा आदि। सिक्का। २. अँगूठी। ३. टाढ़ से छपे हुए अक्षर। ४. गोरसपथी साधुओं के कान में पहनने की एक गोस कंकण की तरह वस्तु।

५. हाथ, पाँव, आँख, गर्दन आदि शरीर के अंगों की कोई स्थिति। बैठने, लेटने या खड़े होने का कोई ढंग। ६. मुस की बाहुति।

या चेष्टा । ७ विष्णु के आयुधो के चिह्न, जो प्रायः भक्त लोग अपने शरीर पर अंकित करते हैं । छाप । ८ हठयोग में विशेष अगविन्यास । ये मृदाएँ पाँच होती हैं—खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी । ९ काव्य का एक अलंकार, जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त पद्य में कुछ और भी साभिप्राय अर्थ हो ।

मृदातत्त्व-सज्ञा पु० दे० "मृदाशास्त्र" ।  
मृदा-बाहुल्य-सज्ञा पु० दे० "मृदास्फीति" ।  
मृदायन्त्र-सज्ञा पु० छापने का यन्त्र या कल ।  
मृदाविज्ञान-सज्ञा पु० दे० "मृदाशास्त्र" ।  
मृदाविस्फीति-सज्ञा स्त्री० कृत्रिम रूप से मृदा के बहुत अधिक प्रचलन या स्फीति को कम करना या उसे साधारण स्थिति में लाना । 'मृदास्फीति' का उल्टा (अग्रो-डिप्लेशन) ।

मृदाशास्त्र-सज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसके अनुसार किसी देश के पुराने सिक्कों आदि की सहायता से ऐतिहासिक बातें जानी जाती हैं और उनका विवेचन होता है ।

मृदास्फीति-सज्ञा स्त्री० किसी देश में कामजी मृदा या नोटो आदि का बहुत अधिक प्रचलन या अन्य कृत्रिम कारणों से मृदा के बहुत बढ़ जाने की स्थिति, जिसमें मृदा का मूल्य बहुत घट और चीजों के दाम बहुत बढ़ जाते हैं । (अग्रो-इन्फ्लेशन,)

मृद्रिक-सज्ञा स्त्री० दे० "मृद्रिका" ।  
मृद्रिका-सज्ञा स्त्री० १ अंगूठी । २. कुश की बनी हुई अंगूठी, जो पित्त-काम्य में अनामिका में पहनी जाती है । पवित्री । पंती । ३ मृदा । सिक्का । रुपया ।

मृद्रित-वि० १ मृद्वण या अंकित किया हुआ । छपा हुआ । २. मृदा हुआ । बढ ।

मृदा-क्रि० वि० व्यर्थ । मृदा ।  
वि० १. व्यर्थ का । निष्प्रयोजन । २ मिथ्या । गूठ ।

मृदा पु० असत्य । मिथ्या ।

मृदा-सज्ञा पु० एक प्रकार की यही विश-मिस ।

मृदास्त्र-वि० [अ०] निर्भर । आश्रित ।

मुनादी-सज्ञा स्त्री० [अ०] डुग्गी या बोल आदि पीटकर की हुई घोषणा । ढिंढोरा ।

मुनाफा-सज्ञा पु० [अ०] लाभ । नफा ।

मुनारा-सज्ञा पु० दे० "मीनार" ।

मुनासिब-वि० [अ०] [सज्ञा स्त्री० मुनासिबत] ।

उचित । वाजिव ।

मुनि-सज्ञा पु० १ ईश्वर, धर्म, सच, मूठ का सूक्ष्म विचार करनेवाला महात्मा । २. त्यागी । ऋषि । तपस्वी । ३ सान की मख्या ।

मुनियाँ-सज्ञा स्त्री० दे० "मुनी" । छोटों वच्ची ।

मुनीव, मुनीम-सज्ञा पु० १ मददगार । सहायक । २ महाजनो का हिसाब-किताब लिखनेवाला ।

मुनीश, मुनीश्वर-सज्ञा पु० १. मुनियों में श्रेष्ठ । २. बुद्धदेव । ३. विष्णु ।

मुना-सज्ञा पु० छोटी के लिए गेम सूचक शब्द । प्रिय । प्यारा ।

मुकलित-वि० [अ०] गरीब । निर्धन ।

मुकलित-सज्ञा स्त्री० [अ०] गरीबी । निर्धनता ।

मुकसल-वि० [अ०] व्योरेवार । विस्तृत । सज्ञा पु० बड़े नगर या शहर के आसपास के स्थान । देहात ।

मुफीद-वि० [अ०] फायदेमंद । लाभप्रद ।

मुफ्त-वि० [अ०] १. बिना दाम का । सेंट का । जिसमें कुछ मूल्य न लगे । २. व्यर्थ ।

मुहा०-मुफ्त में-बिना मूल्य दिये या लिये ।

मुक्तशोर-वि० [सज्ञा स्त्री० मुक्तशोरी] बिना मेहनत किए मुफ्त का माल लानेवाला ।

मुफती-वि० [अ०] मुफ्त का । सज्ञा पु० १ मुमलमानों का 'धर्म' नाम्नी पतवा देनेवाला । २ मनीको के सादे और साधारण कपड़े, जो उनकी वर्दी के अतिरिक्त होते हैं ।

मुकलित-सज्ञा पु० [अ०] १ धन की मख्या । २. रक्म ।

मुबारक-वि० [अ०] सम्पन्न या समृद्ध करनेवाला । शुभ । मंगलप्रद ।

मुबारकवाद-सज्ञा पु० वषाई । कोई मंगल

अथवा उन्नति-मूचक घटना हान पर यह कहना कि "मुयारक हा"।

मुयारकी-सज्ञा स्त्री० दे० "मुयारवादा"।

मुयलिषा-सज्ञा पु० [ ज० ] बहुत बड़ा-चढ़ा-फार कही गई बात।

मुयलिषा-वि० [ ज० ] व्यस्त। मशगूल।

सकट आदि म फंसा हुआ।

मुयकिन-वि० [ ज० ] संभव। शायद। जो हो सके।

मुयनिअन-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] मनाही। निषेध।

मुयमु-वि० मुक्ति पाने का इच्छुक। मुक्ति का कामना करनेवाला।

मुयूर्या-सज्ञा स्त्री० मरने की इच्छा।

मुयूर्यु-वि० जो मरने के समीप हो।

मुयडा-सज्ञा पु० मूत्रे हुए गरमागरम गेहूँ का गुड मिलाकर बनाया हुआ लड्डू। गुड-धानी।

वि० सूखा हुआ। शुष्क।

मुर-सज्ञा पु० १ वण्टन। बैठन। २ एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।

जब्य० फिर। दोबारा।

मुरक-सज्ञा स्त्री० मुरकन की क्रिया का भाव।

मुरकना-वि० अ० १ मोच खाना। किसी अथवा किसी ओर इस प्रकार मुड़ जाना कि जल्दी सीपान हो। २ लचकना। लचक-कर किसी ओर मुकना। ३ मुड़ना।

फिरना। घूमना। लौटना। वापस होना।

४ हिचकना। रुकना। ५ चौपट होना।

नष्ट होना।

मुरकाना-वि० त० १ लचकाना। टेढ़ा करना। २ फेरना। घुमाना। लौटाना।

वापस करना। ३ किसी जगह म मोच खाना। ४ नष्ट करना। चौपट करना।

मुरकी-सज्ञा स्त्री० १ सगीत में बिनी स्वर को कोमलता और सुन्दरता के साथ दूसरे स्वर पर ले जाने की क्रिया। २ काल में पहनने की एक प्रकार की वाली।

मुरगा-सज्ञा पु० [ फा० ] [ स्त्री० मुरगी ] दे० "मुर्गे, मुर्गी"।

मुरगायी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] मुर्गे की जाति का एक जल-पक्षी।

मुरचग-सज्ञा पु० मुँह से वजान का एक प्रकार का बाजा। मुँहचग।

मुरछना, मुरछाना-वि० अ० १ मूर्च्छित होना। २ शिथिल होना। ३ अचल होना।

मुरज-सज्ञा पु० १ मृदग। २ पखावज।

मुरझाना-वि० अ० दे० "कुम्हलाना"।

शिथिल या उदास होना।

मुरदार-वि० [ फा० ] १ मरा हुआ। मृत।

२ बेदम। बेजान। ३ अपवित्र। अशुद्ध।

मुरदासज-सज्ञा पु० [ फा० ] मुरदार सग। एक प्रकार का औषध जो फूँके हुए संवे और सिद्ध से बनता है।

मुरना-वि० अ० दे० "मुड़ना"।

मुर-परनाफ़-सज्ञा पु० फेरी करके सोदा बेचने-वालों की गठरी।

मुरग्या-सज्ञा पु० [ अ० ] चीनी या निसरी आदि की चाशनी में रखा हुआ पत्ता या भेवा आदि का पाक।

मुरमुराना-वि० अ० चूर-चूर हो जाना। चुरमुर होना।

मुरखु-सज्ञा पु० दे० "मुरखि"।

मुरखिया-सज्ञा स्त्री० दे० "मुरी"।

मुरलिका-सज्ञा स्त्री० मुरली। बघी।

मुरलिया-सज्ञा स्त्री० दे० "मुरली"।

मुरली-सज्ञा स्त्री० बाँसुरी। बघी।

मुरलीधर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

मुरलीमनोहर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

मुरवा-सज्ञा पु० एडी का ऊपर की हड्डी के चारों ओर का घरा।

सज्ञा पु० दे० 'मौर'।

मुखी-सज्ञा स्त्री० अनुप की छोटी। भिल्ला

मुखवत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] दाँत। सकोच।

लेहाज। मलमनसाहब।

मुखा-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

मुँव [ स्त्री० मुँह ] १ मूल नद्य में उत्पन्न (बालक)। अनाथ। यतीम। २

नटखट। उपद्रवी।

मुखाही-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

मुखा-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रतिज्ञा गपद्रव्य।

एरागो। मुरमासो। २. 'कवासरित्नागर' के अनुसार उग नाइन का नाम, जिसके गर्भ में महागद का पुत्र चद्रगुप्त उत्पन्न हुआ था।  
 मुरादा-सज्ञा पु० जलती लकड़ी।  
 मुराव-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. मनोरथ। अभिलाषा। इच्छा। २. अभिप्राय। मतलब।  
 मुराद-सज्ञा पु० मनोरथ पूर्ण होना। मुराद मंगना=मनोरथ पूरा होने की प्रार्थना करना।  
 मुराना\*†-क्रि० स० मुँह में कोई चीज डालकर उसे मुलायम करना। चुभलाना। \*†क्रि० स० दे० "मोड़ना"।  
 मुरार-सज्ञा पु० कमल की जड़। कमलनाल। दे० "मुरारि"।  
 मुरारि-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण। मुर नामक द्रव्य की मारनेवाले।  
 मुरासा†-सज्ञा पु० कान का एक गहना। कर्णफूल।  
 मुरोद-सज्ञा पु० [अ०] १ शिष्य। चेला। २. अनुयायी। अनुयायी।  
 मुराया†-सज्ञा पु० ऐड़ी के ऊपर का घेरा। पंर का गूँठा।  
 मुरछना\*-क्रि० अ० दे० "मुरझाना"। सज्ञा स्त्री० दे० "मुरछना"।  
 मुरझना\*†-क्रि० अ० दे० "मुरझाना"।  
 मुरेठा-सज्ञा पु० पगड़ी। साफा।  
 मुरेरना†-क्रि० स० दे० "मरोड़ना"।  
 मुरी, मुरी-सज्ञा पु० [स्त्री० मुरी] एक प्रसिद्ध पक्षी, जिसके सर पर कल्लो होती हैं और जो बहुत सवेरे बोलता है।  
 मुरीनी-सज्ञा स्त्री० १ निर्जीव की-सी अवस्था। बहुत अधिक उदासी। बिना जान या हिम्मत के। मुख पर प्रकट होनेवाले मृत्यु के चिह्न। २ शव के साथ उसकी अत्यन्ति-त्रिया के लिए जाना।  
 मुरी-सज्ञा पु० मरा हुआ शरीर। शव। लाश। मुरदा।  
 वि० १. मरा हुआ। मृत। निर्जीव। बिना दम का। २ मुरझाया हुआ।

मुरी-सज्ञा पु० १. मरोड़फली। २. गेट में ऐँटन होकर बार-बार दस्त होना। मरोड़।  
 मुरी-सज्ञा स्त्री० १. दो डोंगे के सिरो को आपस में जोड़ने की एक त्रिया, जिसमें दोनों सिरो को मिलाकर मरोड़ या बट देते हैं। २. कपड़े आदि में लपेटकर डाली हुई ऐँटन या बल। ३. कपड़े आदि को मरोड़कर उड़ी हुई बर्ती।  
 मुरीदार-वि० जिसमें मुरी पड़ी हो। ऐँटन-दार।  
 मुरीद-सज्ञा पु० [अ०] १ मार्गदर्शक। २. गुन। ३. श्रेष्ठ। बड़ा। ४. चतुर।  
 मुरकना†-क्रि० अ० १ पुलकित होना। मुस्कराना। २ आँख से हँसी प्रकट करना। मचकना।  
 मुरकाना-क्रि० स० मुरकना का स्वर्भक्त रूप।  
 मुरकित-वि० पुलकित। प्रसन्न। खुश।  
 मुरकी-वि० [अ०] १ शासन या व्यवस्था-संबंधी। २ देशी। विलायती का उलटा।  
 मुरजिम-वि० [अ०] अभियुक्त। जिस पर कोई अभियोग हो। दोषी।  
 मुरतानी-वि० मुरतान का। मुरतान-संबंधी। सज्ञा स्त्री० १ एक रागिनी। २ एक प्रकार की बहुत बोलम और चिकनी मिट्टी।  
 मुरतबी-वि० [अ०] जिसका समय टाल दिया गया हो। स्वर्गित।  
 मुरमची-सज्ञा पु० गिल्ट करवाला। मुरम्मा-साज।  
 मुरम्मा-सज्ञा पु० [अ०] १ किसी चीज पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की पतली तह। गिल्ट। कलई। २. ऊपरी तहक-मडक।  
 यी०-मुरम्मासाज=मुरम्मा नकानेवाला। मुरमची।  
 मुरहा†-वि० १ जिसका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ हो। २ उपद्रवी। घरायसी।  
 मुरी†-सज्ञा पु० [अ० मुरी] मीलबी।  
 मुलाकात-सज्ञा स्त्री० [अ०] आपस में मिलना। भेंट। मिलन। मेल-मिलाप।

मुलकातो-सज्ञा पु० [अ०] परिचित। वह, जिससे जान-पहचान हो।

मुलजिम-सज्ञा पु० [अ०] नोकर। सेवक।

मुलजिघत्स-सज्ञा स्त्री० [अ०] नोकर। सेवक।

मुलायम-वि० [अ०] १ गोमल। नरम।

'सस्त' का उलटा। जो कड़ा न हो। २

हलना। मदा। धीमा। ३ नाजुक।

सुकुमार। जिसमें किसी प्रकार की

ठोसता या सिचाव न हो।

यो०—मुलायम चारा=१ जो सहज में

दूतरा की वाता में जा जाय। २ जो सहज में

प्राप्त किया जा सक।

मुलायमियत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मुलायम

हान का भाव। कामलता। २ नजाकत।

मुलायमी-सज्ञा स्त्री० दे० "मुलायमियत"।

मुलाहवा-सज्ञा पु० [अ०] १ निरीक्षण।

देखना। २ संकोच। ३ दिखावत।

मुलेठी-सज्ञा स्त्री० पुंषची नाम की लता

की जड़, जो औषध के काम में जाती है।

जठी मधु। मुलट्टी।

मुल्क-सज्ञा पु० [अ०] [वि० मुल्की] १

देश। २ प्रांत। प्रदेश। ३ सप्ताह।

मुल्की-वि० [अ०] मुल्क या देश-सम्बन्धी।

देश-का।

मुल्ला-सज्ञा पु० दे० "मोलवी"।

मुलविकल-सज्ञा पु० [अ०] अपने किसी

काम के लिए वकील नियुक्त करनेवाला।

मुबना\*†-क्रि० अ० (भाजपुरी-मुअना)।

मरना। मर जाना।

मुबाना\*†-क्रि० स० [मुबना का स० रूप]

मार डालना। हत्या करना।

मुशायरा-सज्ञा पु० [अ० मुशायरा] वह

सभा या समाज, जिसमें बहुत से लोग मिलकर

उर्दू की कविताएँ पढ़ते हैं। उर्दू कवि-सम्मेलन।

मुशाहरा-सज्ञा पु० [फा०] तंगस्वाह। बेतन।

मुस्क-सज्ञा पु० [फा०] १ कस्तूरी। मृग-

मद। २ मध। घृ।

सज्ञा स्त्री० कपे और कोहली के बीच का

भाग। भुजा। वह।

मुहा०—मुस्क कसना या बाँधना=(अप-

राधी आदि की) दोनों नुमाआ की पीठ की

ओर करके बांध देना।

मुस्कदाना-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार की

लता या बीज, जिसमें से कस्तूरी की सुगंध

निकलती है।

मुस्कनाफा-सज्ञा पु० [फा०] कस्तूरी का नाफा

जिसके अंदर कस्तूरी रहती है।

मुस्किल-वि० [अ०] कठिन।

सज्ञा स्त्री० कठिनाई। दिक्कत। मुसीबत।

सकट।

मुस्वी-वि० [फा०] १ कस्तूरी के रंग का।

काला। श्याम। २ जिसमें मुस्क या कस्तूरी

पड़ी हो।

सज्ञा पु० काले रंग का घोड़ा।

मुश्त-सज्ञा पु० [फा०] मुट्ठी।

यो०—एकमुश्त=एक साथ। एक ही बार

(स्पर्श के लेन-देन में)।

मुश्तरका-वि० [अ०] संयुक्त। साझे का।

जिसमें कई व्यक्ति मारीक या सम्मि-

लित हों।

मुस्ताक-वि० [अ०] इच्छुक। इशियाक

या इच्छा रखनेवाला।

मुष्टि-सज्ञा स्त्री० १ मुट्ठी। २ मुक्का।

पूँसा।

मुष्टिक-सज्ञा पु० १ मुक्का। पूँसा। २ चार

अंगुल की नाप। मुट्ठी। ३ राजा कस के

पहलवाना में से एक, जिसे बलदेवजी ने

मारा था।

मुष्टिका-सज्ञा स्त्री० १ मुक्का। पूँसा।

२ मुट्ठी।

मुष्टियुद्ध-सज्ञा पु० वह लड़ाई, जिसमें मुक्कों

से प्रहार हो। घूसेबाजी।

मुष्टियोग-सज्ञा पु० १ हठ-योग की कुछ

नियामें, जो शरीर की रक्षा करने, बल

बढ़ाने और रोग दूर करनेवाली मानी जाती

है। २ छोटा और सहज उपाय।

मुस्तकान\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'मुस्तकान'। मुस्क-

राहट।

मुस्तकाना-क्रि० अ० दे० "मुस्काना"।

मुसजर-सज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का

बूटेदार वपड़ा।

मुमना-कि० अ० मुसना का अकर्मक रूप।  
मुसा जाना। चुराया जाना (धन आदि)।  
मुसना-सज्ञा पु० [अ०] १. असल कागज  
की दूसरी नकल। २. रसीद आदि का वह  
दूसरा भाग, जो रसीद देनेवाले के पास रह  
जाता है। दे० "प्रतिपत्र"।  
मुसना-सज्ञा पु० [अ०] जमाया हुआ  
घोड़ों का रस, जिसका व्यवहार औषध  
के रूप में होता है।  
मुसमात-वि० [अ०] १. औरत। २  
मुसमा शब्द का स्त्रीलिंग रूप। ३  
नामवाली। नामधारिणी। स्त्रियों के नाम  
के आगे इसे जोड़ देते हैं।  
मुसमो-वि० [अ०] नामवाला। नामक।  
सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़िया मीठा नीबू,  
जिसका रस बीमारी में लोगों को पिलाते हैं।  
मुसना-सज्ञा पु० दे० "मुसना"। पेड़ की  
जड़, जिसमें एक ही मोटा पिंड हो, इधर-  
उधर शाखाएँ न हों।  
मुसलमान-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री०  
मुसलमानिन] मुहम्मद साहब के चलाए हुए  
धर्म को माननेवाला। मुहम्मदी।  
मुसलमानी-वि० [फा०] मुसलमान-संबंधी।  
मुसलमान का।  
सज्ञा स्त्री० मुसलमानों की एक रसम, जिसमें  
छोटे बालक की पुष्पेन्द्रिय पर का कुछ  
चमड़ा काट डाला जाता है। सुन्नत। खतना।  
मुसलम-वि० [फा०] जिसके खंड न किए  
गए हों। पूरा। अखंड।  
मुसल-सज्ञा पु० [अ०] १ नमाज पढ़ने  
की दरी या चटाई। २ दे० "मुसलमान"।  
मुसल-सज्ञा पु० जंगली जड़ी बूटी तथा  
सर्पों की मारकर बेचनेवाली एक जाति।  
दे आगे पत्तों जोर रंधन का व्यवसाय  
करने वाला जंगली मूख आदि का जाते हैं।  
मुसल-सज्ञा पु० [अ०] पानी। पक्का।  
मुसल-सज्ञा पु० [अ०] १. यात्रिया  
के, विशेषतः रेल के यात्रियों के ठहरने का  
स्थान। २ धर्मस्थान। बरग।  
मुसल-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. मुसल  
होने की रजा। २. यात्रा। प्रयाण।

मुसाहब-सज्ञा पु० [अ०] धनवान् या राजा  
आदि के पोछे-पोछे साथ रहनेवाला।  
मुसाहबी-सज्ञा स्त्री० [अ०] मुसाहब का  
पद या काम।  
मुसीबत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. तकलीफ।  
कष्ट। २. विपत्ति। तैकट।  
मुस्कराना-कि० अ० बहुत धीमे या धीरे से  
हँसना।  
मुस्कराहट-सज्ञा स्त्री० मुस्कराने की क्रिया  
या भाव। बहुत धीमी हँसी। मद हास।  
मुस्करा-कि० अ० दे० "मुस्कराना"।  
मुस्की-सज्ञा स्त्री० दे० "मुस्कराहट"।  
मुस्मान-सज्ञा स्त्री० दे० "मुस्कराहट"।  
मुस्मान-वि० १ मोटा-साजा। हट्ट-मुष्ट।  
२ बढमास। गुडा।  
मुस्तकिल-वि० [अ०] १. स्थायी। स्थिर।  
२ पक्का। मजबूत। दृढ़।  
मुस्तफेस-सज्ञा पु० [अ०] अभियोग उपस्थित  
करनेवाला। दावेदार। मुद्दी। फौजदारी  
मुकदमे में शिकायत या आरोप लगाने-  
वाला।  
मुस्तद-वि० [अ०] १ तत्पर। सज्ज। पूरी  
मेहनत से काम करनेवाला। २ चालाक।  
तेज।  
मुस्तदी-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. तत्परता।  
सज्जता। २. फूर्ति।  
मुस्लिम-सज्ञा पु० मुसलमान।  
मुहकम-वि० [अ०] दृढ़। पक्का।  
मुहकमा-सज्ञा पु० [अ०] विभाग। सरिता।  
मुहकम-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. प्रेम। प्रीति।  
प्यार। चाह। २ दोस्ती। मित्रता। ३.  
दरक। लगन। लो।  
मुहम्मद-सज्ञा पु० [अ०] इस्लाम या मुसल-  
मानी धर्म के प्रवर्तक।  
मुहम्मदी-सज्ञा पु० मुसलमान।  
मुहर-सज्ञा स्त्री० दे० "मोहर"।  
मुहरा-सज्ञा पु० १. तामने या मांग। आगा।  
गामना। २. निराशा। ३. मुंह की अड़ति।  
४. शहरज की कोई गोटी। ५. थोड़े रा  
एक यात्र, जो उनके मुंह पर रखा है।  
मुहा-मुहरा-सज्ञा पु० मुहावना करना।

मुहरंम-सज्ञा पु० [ अ० ] अरबी वर्ष का पहला महीना जिसमें इमाम हुसैन शहीद हुए थे। इसमें मुसलमान लोग शोक मनाते हुए जुलूस आदि निवासते हैं।

मुहरंमो-वि० [ अ० ] १. मुहरंम सबंधी। मुहरंम का। २. शोक-व्यजक। ३. मनहूस।

मुहरिर-सज्ञा पु० [ अ० ] लेखक। मुसी। अदालत में बकील के साथ लिखापढ़ी का काम करनेवाला।

मुहरिरी-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] मुहरिर का काम। लिखने का काम।

मुहल्ला-सज्ञा पु० शहर का कोई विभाग, जिसमें मकान और आवादी हो।

मुहसिल-वि० [ अ० ] तहसील वसूल करनेवाला। उगाहनेवाला।

सज्ञा पु० १ प्यादा। २ फेरीदार।

मुहाफिज-वि० [ अ० ] हिफाजत या रक्षा करनेवाला। रक्षक। रखवाला।

मुहाल-वि० [ अ० ] १. असमभव। नामुमकिन। २ कठिन। दुष्कर। दुसाध्य।

सज्ञा पु० १ दे० "महाल"। २ दे० "महल्ला"।

मुहाला-सज्ञा पु० पीतल की चूड़ी, जो हाथी के दाँत में शोभा के लिए बढ़ाई जाती है।

मुहावरा-सज्ञा पु० [ अ० ] १ लक्षणा या व्यंजना-द्वारा सिद्ध वाक्य, जो किसी भाषा में प्रचलित हो और जिसका अर्थ प्रत्यक्ष अर्थ से विक्षेप हो। रोजमर्रा। योलचाल। २ आदत। अभ्यास।

मुहासिब-सज्ञा पु० [ अ० ] १ जांचने या हिसाब लेनेवाला। २. गणितज्ञ।

मुहासिबा-सज्ञा पु० [ अ० ] १ हिसाब। लेखा। २ पूछ-ताछ।

मुहासिरा-सज्ञा पु० [ अ० ] किले या शमू-सेना को चारों ओर से घेरना। घेरा।

मुहासिल-सज्ञा पु० [ अ० ] १. आय। आम-दनी। २ लाभ। मुनाफा। नफा।

मुहि-सर्व० दे० "मोहि"।

मुहिम-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ कठिन या बड़ा काम। २ लड़ाई। मुझ। ३ फौज की चढ़ाई। आक्रमण।

मुहु-अव्य० बार-बार।

मुहूर्त-सज्ञा पु० १. दिन-रात का जीतवाँ भाग। २. निश्चित समय। ३. फलित ज्योतिष के अनुसार गणना करके निकाला हुआ कोई समय, जिस पर कोई शुभ काम किया जाय।

मुह्य-वि० १ मोह में पड़ा हुआ। मोहित। २ मूर्च्छित। बेगुध। बेहोश।

मुह्यता-सज्ञा स्त्री० मोह में पड़े रहने का भाव। मूर्च्छित होने की अवस्था, प्रवृत्ति या भाव। बेहोशी। जड़ता।

मुह्यमान-वि० १ मूर्च्छित। बेगुध। बेहोश। २ बहुत अधिक मोहित। दे० "मुह्य"।

मूंग-सज्ञा स्त्री०, पु० एक अन्न, जिसकी दाल बनती है।

मूंगफली-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पीया और उसका फल, जो बादाम की तरह होता है। चिनिया बादाम।

मूंगा-सज्ञा पु० समुद्र में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का रत्न। प्रवाल। बिडूम।

मूंगिया-वि० मूंग के रंग का। हरा।

सज्ञा पु० हरा रंग।

मूँछ-सज्ञा स्त्री० ऊपरी आँठ के ऊपर के बाल, जो केवल पुरुषों के होते हैं।

मूहा-—मूँछ उखाड़ना=घमंड चूर करना।

मूँछा पर ताव देना=अभिमान से मूँछ मरोड़ना। मूँछें नीची होना=घमंड टूट जाना। अप्रतिष्ठा होना। बेइज्जती होना।

मूँछी-सज्ञा स्त्री० घेसन की बनी हुई एक प्रकार की कढ़ी।

मूँज-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का तृण, जिसमें टहनियाँ नहीं होती और बहुत पतली, लची पत्तियाँ चारों ओर रहती हैं।

मूँड़ी-सज्ञा पु० दे० "मूँड"। सिर।

मूहा-—मूँड मारना=बहुत हैरान होना। कोसिस करना। मूँड मूँडाना=सत्यासौ होना।

मूँडन-सज्ञा पु० चूड़ावरण सस्कार। मूँडन।

मूँडना-कि० सं० १ सिर के बाल बनाना। हजामत करना। २ घोवा देकर माल उठाना। ठगना। ३ चेतना बनाना।

मूँरी-सज्ञा स्त्री० १. सिर। २. किनी वस्तु वा मूँडे के आकार का भाग।

मूँना-क्रि० सं० ढाँकना। बन्द करना। शर, मुँह आदि पर कोईवस्तु रखकर उसे बन्द करना।

मूँ-वि० १. गूंगा। २. अवाक्। ३. विचल। वाचर।

मूँता-सज्ञा स्त्री० गूंगापद।

मूँना\*†-क्रि० सं० १ दूर करना। छोड़ना। त्यागना। २. वधन से छुड़ाना।

मूँना†-सज्ञा पु० छोटा गोल क्षरोष्ठा। मोखा। सज्ञा पु० दे० "मूँका"।

मूँना\*-क्रि० सं० दे० "मूसना"।

मूँना\*-क्रि० सं० दे० "मौचना"।

मूँरी-सज्ञा पु० [अ०] कण्ट पहुँचानेवाला। दुष्ट। खल।

मूँ-सज्ञा स्त्री० १. मुष्टि। मुट्ठी। २ किसी औजार या हथियार का वह भाग, जो हाथ में रहता है। मुठिया। दस्ता। कब्जा। ३ उतनी वस्तु, जितनी मुट्ठी में आ सके। ४ एक प्रकार का जूआ। ५ जादू। टोना। मुहा०—मूँ चलाता या मारना=जादू करना। मूँ लगना=जादू का असर होना।

मूँना\*-क्रि० अ० नष्ट होना।

मूँरी\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "मुट्ठी"।

मूँ-वि० १ मूँख। जड़बुद्धि। बेवक्फ। २ स्तब्ध। जिसे आगा-पीछा न सूझता हो। मूँगर्भ-सज्ञा पु० गर्भ का विगड़ना, जिससे गर्भ-मात आदि होता है।

मूँता-सज्ञा स्त्री० मूँखता। बेवक्फी।

मूँदाग्रह-सज्ञा पु० मूँदता या मूँखता से किफा जानेवाला आग्रह। अनुचित हठ। दुराग्रह।

मूँदाग्रही-वि० अनुचित हठ करनेवाला। दुराग्रही।

मूँ-सज्ञा पु० दे० "मून"।

मूँना-क्रि० अ० पेशाब करना।

मूँ-सज्ञा पु० शरीर के विपरीत पदार्थ को लेकर उपस्थ मार्ग से निकलनेवाला पानी। पेशाब। मूत।

मूँकण्ड-सज्ञा पु० एक रोग, जिसमें पेशाब बहुत कष्ट से या रक-रककर होता है।

मूनाघात-सज्ञा पु० पेशाब बंद होने का रोग। मून का रूक जाना।

मूनाशय-सज्ञा पु० नाभिके नीचे का वह स्थान, जिसमें मूत्र संचित रहता है। मसाला।

मूना†-क्रि० अ० दे० "मुवना"। मरना।

मूर\*†-सज्ञा पु० १. मूल। जड़। जडी। २. मूल धन। ३ मूल नक्षत्र।

मूरख\*†-वि० दे० "मूख"।

मूरखताई\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "मूखता"।

मूरचा-सज्ञा पु० दे० "मोरचा या मोर्चा"।

मूरछा†-सज्ञा स्त्री० दे० "मूर्च्छा"।

मूरत\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "मूर्ति"।

मूरतिवत\*-वि० मूर्तिमान्। देहधारी।

मूरि, मूरी\*-सज्ञा स्त्री० १ मूल। जड़। २. जडी। बूटी।

मूँ-वि० बेवक्फ। मूढ़। अज्ञान। नासमझ। मूँता-सज्ञा स्त्री० मूँदता। नासमझी। बेवक्फी।

मूँखत्व-सज्ञा पु० दे० "मूँखता"।

मूँखिनी\*-सज्ञा स्त्री० बेवक्फ स्त्री। मूढ़ स्त्री।

मूँछन-सज्ञा पु० १. बेहोश करना, या बेहोश होना। २ मूँछित करने का मन या प्रयोग। ३ पारे का तीसरा रास्कार। ४ कामदेव का एक वाण।

मूँछना-सज्ञा स्त्री० संगीत में स्वरो का आरोह-अवरोह।

मूँछा-सज्ञा स्त्री० अचेत अवस्था। बेहोशी। वह अवस्था, जिसमें प्राणी निश्चेष्ट पड़ा रहता है। सज्ञा का लोप।

मूँछित-वि० १ जिसे मूँछा आई हो। बेसुध। बेहोश। अचेत। २ मारा हुआ (पारा आदि धातुओं के लिए)।

मूर्त-वि० १ जिसका कुछ रूप या आकार हो। साकार। २. ठोस।

मूर्ति-सज्ञा स्त्री० १. प्रतिमा के किसी रूप या आकृति के सदृश गढ़ी हुई वस्तु। २. शरीर। देह। ३ आकृति। शकल। मूरत। ४. चित्र।

मूर्ति-वि० मूर्ति के रूप में बनाया हुआ। दे० "मूर्त"।

भूतिंकार-सज्ञा पु० भूति बनानेवाला। तस-  
वीर बनानेवाला।

भूतिपूजक-सज्ञा पु० भूति या प्रतिमा की पूजा  
करनेवाला।

भूतिपूजा-सज्ञा स्त्री० ईश्वर या देवता की  
भूति की पूजा या उपासना। भूति में ईश्वर  
या देवता की भावना करके उसकी पूजा  
करना।

भूतिभजक-सज्ञा पु० भूति तोड़नेवाला।  
वृत्तशिकन। मूलमान।

भूतिमन्त-वि० दे० 'भूतिमान'।

भूतिमान-वि० [स्त्री० भूतिमती] जो भूति  
या शरीर के रूप में हो। साकार। साक्षात्।  
प्रत्यक्ष।

भूद-सज्ञा पु० सिर।

भूदकर्णी-सज्ञा स्त्री० छाया आदि के लिए  
सिर पर रखी हुई वस्तु।

भूदकपासी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "भूदकर्णी"।

भूदय-वि० १ भूदों से संबध रखनेवाला।  
२ भूदा स्थान से उच्चरित होनेवाले  
वण। ३ भूदक में स्थित।

भूदन्य वण-सज्ञा पु० वे वण, जिनका उच्चारण  
भूदा से होता है। यथा—ऋ, ऌ, ए, ऊ, ङ,  
ड, ण, र और य।

भूदा-सज्ञा पु० १ सिर। भूदक। २ उच्च।  
थण्ड। ३ तनुवे के पीछ का भाग।

भूदाभिषक-सज्ञा पु० [वि० भूदाभिषिक्त]  
सिर पर अभिषेक या जल सिंचन।

भूदा-सज्ञा स्त्री० भूदोडफली। पट की भूदोड  
द्वार करनेवाली एक ओपधि।

भूद-सज्ञा पु० १ पडों का वह भाग जो पृथ्वी के  
नोचे रहता है। जड। २ खाने के योग्य  
मोटी जड। ३ वद। ४ आदि। आरभ। शुरू।

आदिवारण। उत्पत्ति का हनु। ५ असल  
जमा ता घन। पूजा। ६ आरभ का भा।

नोव। युनियद। ७ प्रथवार वा निज का  
वाक्य या लख जिस पर टोका आदि की  
जाय। ८ उन्नीसवीं शता।

वि० भूद्व। प्रधान।

भूदक-सज्ञा पु० १ भूती। २ भूद-स्वरूप।

वि० उत्पन्न करनेवाला। जिसके भूत में

कुछ हो या जो भूत में हो। जैसे, विवादभूतक  
वात।

भूदब्रह्म-सज्ञा पु० असली पदार्थ।

भूदद्वार-सज्ञा पु० मुख्य फाटक। सदर दर-  
वाजा।

भूदघन-सज्ञा पु० पूंजी। किसी व्यापार या  
काम में लगाया जानेवाला असल धन।

भूदपुरुष-सज्ञा पु० किसी वध का आदि-पुरुष  
जिससे वध चला हो।

भूदभूत-सज्ञा पु० असल। मुख्य आधार।  
किसी वस्तु के भूत तत्त्व या असल वात से  
सम्बन्ध रखनेवाला।

भूदस्थान-सज्ञा पु० १ वाप-बादो के रहने की  
जाह। पूवजा का निवास-स्थान। २ प्रधान  
स्थान। ३ मुलतान नगर का प्राचीन नाम।

भूदधार-सज्ञा पु० मानव शरीर के भीतर  
के छ चनों में से एक चक्र। (योग)

भूदिका-सज्ञा स्त्री० जडी।

भूदी-सज्ञा स्त्री० १ एक पाधा, जिसकी जड  
मोटा, चरपरी और तीक्ष्ण होती है। २.

भूलिका। जडी-भूटी।

भूहा—(किसी को) भूती गाजर सम-  
झना=जति कुछ समझना।

भूत-सज्ञा पु० १ किसी वस्तु को खरीदने पर  
उसके यदन म दिया जानेवाला धन। दाम।

कीमत। २ किसी वस्तु का महत्त्व या मान।  
जैसे—इस बात का कोई मूल्य नहीं या इस बात

का बहुत मूल्य है।

भूतयान-वि० जिसका दाम अधिक हो।  
बहुत दाम का। कीमती।

भूतमान-सज्ञा पु० किसी वस्तु का मूल्य  
आकना या अनुमान नयान। किसी वस्तु

क महत्त्व की समझना। (अत्र०—वैल्युएशन)

भूतमानुसार-वि० वि० दाम के मुताबिक।  
वस्तुजा पर उतने मूल्य क विचार या अनु-

पात से लगनेवाला कर।

भूत, भूतक-सज्ञा पु० चूहा।

भूत-सज्ञा पु० चूहा।

भूतदानो-सज्ञा स्त्री० चूहा फेंकाने का  
विजडा।

भूतना-क्रि० स० घुसकर ले जाना।

सूत्र, मूसल-सज्ञा पु० धान आदि अन्न कूटने का लंबा मोटा डंडा। एक अस्त्र, जिसे बल-राम धारण करते थे।  
 सूत्रचद, मूसलचद-सज्ञा पु० देखने में खूब लम्बा, पर निकम्मा व्यक्ति।  
 मूसलधार-क्रि० वि० ऐसी वर्षा, जिसमें मूसल के समान मोटी धार से पानी गिरे। बहुत जोर की वर्षा।  
 मूसला-सज्ञा पु० मोटी और सीधी जड़ जिसमें हथर-उधर शाखाएँ न फूटी हो। शस्त्र का उलटा।  
 मूसली-सज्ञा स्त्री० एक पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है।  
 मूसा-सज्ञा पु० १ चूहा। २ यहूदियों के एक पंगव्वर।  
 मूसाकानी-सज्ञा स्त्री० एक लता, जो औषधि के काम में आती है।  
 मूग-सज्ञा पु० [ स्त्री० मूगी ] १ हिरन। २ वन्य पक्ष। जंगली जानवर। ३ हाथियों की एक जाति। ४ मार्गशीर्ष। अगहन का महीना। ५ मृगशिरा नक्षत्र। ६ भकर राशि। ७ कस्तूरी का नाफा। ८ पुष्प के चार भेदों में से एक (कामशास्त्र)।  
 मृगचम-सज्ञा पु० हिरन का चमड़ा, जो पवित्र माना जाता है।  
 मृगछाला-सज्ञा स्त्री० दे० "मृगचर्म"।  
 मृगजल-सज्ञा पु० ऊसर रेगिस्तान में जल की मिथ्या भ्रान्ति। मृगतृष्णा।  
 मृगतृष्णा, मृगतृष्णा-सज्ञा स्त्री० १ ऊसर रेगिस्तान में जल की मिथ्या भ्रान्ति। २ अतन्मय इच्छा। व्यर्थता। ३ मिथ्या माहमाया।  
 मृगवात-सज्ञा पु० वह स्थान जहाँ गोनमयुद्ध न प्रथम बार अपने उपदेश दिये थे। काशी व पाठ 'सारनाथ' नामक स्थान का प्राचीन नाम।  
 मृगपर-सज्ञा पु० चद्रमा।  
 मृगनाथ-सज्ञा पु० सिंह। शेर। मृगा(जंगली जानवर) का राजा।  
 मृगनाभि-सज्ञा स्त्री० कस्तूरी।  
 मृगनेत्री-सज्ञा स्त्री० हरिण व नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रवाली (स्त्री)। दे० "मृगनाम्नी"।

मृगभद्र-सज्ञा पु० हाथियों की एक जाति।  
 मृगमद-सज्ञा पु० कस्तूरी।  
 मृगमरोचिका-सज्ञा स्त्री० दे० "मृगतृष्णा"।  
 मृगमित्र-सज्ञा पु० चद्रमा।  
 मृगमेढ-सज्ञा पु० कस्तूरी।  
 मृगया-सज्ञा पु० शिकार। आखेट।  
 मृगरोचन-सज्ञा पु० कस्तूरी।  
 मृगलाछन-सज्ञा पु० चद्रमा।  
 मृगलोचना-वि० दे० "मृगलोचनी"।  
 मृगलोचनी-वि० हिरन की आँखों के समान सुन्दर आँखवाली (स्त्री)।  
 मृगवारि-सज्ञा पु० १ मृगतृष्णा का जल। ऊसर रेगिस्तान में भ्रान्ति से उत्पन्न मिथ्या जल। २. झूठी आशा दिलानेवाली चीज।  
 मृगशिरा-सज्ञा पु० सत्ताईस नक्षत्रों में से पाँचवाँ नक्षत्र।  
 मृगशीर्ष-सज्ञा पु० दे० "मृगशिरा"।  
 मृगाक-सज्ञा पु० १. चद्रमा। २. वैद्यक में एक प्रकार का रस।  
 मृगाक्षी-वि० हिरन को सी आँखवाली।  
 मृगाशन-सज्ञा पु० सिंह।  
 मृगिनी\*†-सज्ञा स्त्री० हरिणी।  
 मृगी-सज्ञा स्त्री० १. हिरन की मादा। हरिणी। हिरनी। २ अपस्मार नामक रोग। ३. निर्गौर रोग। ४ कस्तूरी। ५ एक वर्ण-वृत्त। ६ वक्ष्य ऋषि की दस कन्याओं में से एक, जिससे मृगों की उत्पत्ति हुई है।  
 मृगद-सज्ञा पु० सिंह। मृगों का राजा।  
 मृग-वि० १ अनुसन्धान या खोज करने योग्य। अन्यपणीय। २ दर्शन।  
 मृद-सज्ञा पु० शिव। महादेव। शम्भु।  
 मृश, मृशानी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा।  
 मृगाल-सज्ञा पु० १ कमल का उडल। कमल-नाल। २ कमल की जड़। मुरार। भसींड।  
 मृगालिका-सज्ञा स्त्री० दे० "मृगाल"।  
 मृगालिनी-सज्ञा स्त्री० १ कमलिनी। २. वह स्थान, जहाँ कमल हा।  
 मृगाली-सज्ञा स्त्री० दे० "मृगाल"।  
 मृगमय-वि० [ स्त्री० मृगमयी ] १ मिट्टी का बना हुआ। २ मिट्टी व मृत्त।

मृमूति-संज्ञा स्त्री० मिट्टी की बनी हुई मृत्ति।  
मृत्-वि० मरा हुआ। मुर्दा।

मृत्क-संज्ञा पु० मरा हुआ प्राणी।

मृत्क-कर्म-संज्ञा पुं० मृत् व्यक्ति की शुद्ध गति के लिए किया जानेवाला कृत्य। प्रेत-कर्म। अत्येष्टि।

मृत्कधूम-संज्ञा पु० राख। भस्म।

मृत्जीवनी-संज्ञा स्त्री० वह विद्या, जिससे मर्दों को जिलाया जाता है।

मृत्संतोषिणी-संज्ञा स्त्री० एक वृद्धी, जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके खिलाने से मृदा भी जी उठता है।

मृताशौच-संज्ञा पु० वह अशौच, जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है।

मृत्तिका-संज्ञा स्त्री० मिट्टी। छाक।

मृत्युंजय-संज्ञा पु० १. मृत्यु पर विजय पाने-वाला। वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो।  
२. शिव का एक नाम।

मृत्यु-संज्ञा स्त्री० १. प्राण या जीव का अन्त। मौत। मरण। जीवित शरीर का अन्त। देहान्त। २. यमराज।

मृत्युलोक-संज्ञा पु० १. यमलोक। २. मर्त्य-लोक। संसार।

मृत्तन-संज्ञा स्त्री० १. बहुत अच्छी जमीन।  
२. गीली मिट्टी, जिससे बरतन बनाते हैं।

३. एक प्रकार का गंधद्रव्य।

मृया \* -क्रि० वि० १. दे० "वृया"। २. दे० "मृया"।

मृवंग-संज्ञा पु० एक प्रकार का बाजा, जो डोलक से कुछ लंबा होता है।

मृव्य-संज्ञा पु० गुण के साथ दोष के वैपम्य का प्रदर्शन (नाट्यशास्त्र)।

मृदु-वि० [स्त्री० मृदु] १. कोमल। मुलायम। नरम। २. सुकुमार। नाजुक। ३. घीमा-मृद। ४. सुनने में प्रिय या मधुर।

मृदुता-संज्ञा स्त्री० १. कोमलता। मुलायमियत। घीमापन। २. मृदता।

मृदुत्यल-संज्ञा पु० नीलकमल।

मृदुल-वि० [संज्ञा स्त्री० मृदुला, भाव० मृदुलता] १. कोमल। नरम। नाजुक। सुकुमार।  
२. कोमल-हृदय। दयालु।

मृदुलता-संज्ञा स्त्री० कोमलता। कोमल या सुकुमार होने का भाव।

मृदुलाई\*-संज्ञा स्त्री० दे० "मृदुलता"।

मृषा-अव्य० झूठ-मूठ। व्यर्थ।

वि० असत्य। झूठ।

मृषात्व-संज्ञा पु० झूठापन। असत्यता।

मृषाभाषी-वि० झूठ बोलनेवाला। झूठा।

मृष्ट-वि० घोषित।

मृष्टि-संज्ञा स्त्री० शोधन।

मै-अव्य० अधिकरण कारक का चिह्न, जो किसी शब्द के आगे लगकर उसके भीतर या चारों ओर होना सूचित करता है। आधार या अवस्थान-सूचक शब्द।

मेगनी-संज्ञा स्त्री० छोटी गोलियों के आकार की विष्ठा। लेंडो।

मेकल-संज्ञा पु० विध्य पर्वत का एक भाग, जिसमें अमरकंटक है।

मेख-संज्ञा पु० दे० "मेघ"।

संज्ञा स्त्री० १. गाड़ने के लिए एक ओर नुकीली गड़ी हुई कील। खूंटी। कील।  
कांटा। २. लकड़ी का पच्चाड़।

मेखल-संज्ञा स्त्री० दे० "मेखला"।

मेखला-संज्ञा स्त्री० १. करधनी। तागड़ी।

किकिणी। २. मडल। मंडरा। वह वस्तु, जो किसी दूसरी वस्तु के मध्य भाग में चारों ओर घेरे हुए हो। ३. डंडे आदि के छोर पर लगा हुआ लोहे आदि का घेरदार बंद। ४. सामी। सान। ५. पर्वत का मध्य भाग। ६. कपड़े का वह टुकड़ा, जो साधु लोग गले में डाले रहते हैं। कफनी। अलकी।

मेखली-संज्ञा स्त्री० १. करधनी। कटिवंध।  
२. एक पहनावा, जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और दोनों हाथ खुले रहते हैं।

मेघ-संज्ञा पु० १. बादल। आकाश में घनीभूत जलवाष्प, जिससे वर्षा होती है। २. संगीत में छः रागों में से एक।

मेघज्वर-संज्ञा पु० १. मेघज्वर। दल-बादल।  
२. बड़ा शामियाणा।

मेघनाद-संज्ञा पु० १. मेघ का गर्जन। २. वर्षण। ३. रावण का पुत्र द्रमजित्। ४. मयूर। मोर।

मेघपुष्प-संज्ञा पु० १. इंद्र के घोड़े का नाम ।  
 २. श्रीकृष्ण के रथ के एक घोड़े का नाम ।  
 मेघमाला-संज्ञा स्त्री० बादलों का समूह या झुंड । मेघों की माला । बादलों की घटा ।  
 कादविवी ।  
 मेघराज-संज्ञा पु० इंद्र । बादलों के राजा ।  
 मेघवर्त-संज्ञा पु० प्रलय-काल के मेघों में से एक का नाम ।  
 मेघवाह\*†-संज्ञा स्त्री० बादलों की घटा ।  
 मेघा†-संज्ञा पु० मेढक ।  
 मेघागम-संज्ञा पु० बरसात का शुरु होना । वर्षा ऋतु का प्रारम्भ ।  
 मेघाच्छन्न, मेघाच्छादित-वि० बादलों से ढका या छाया हुआ ।  
 मेघाध्वा-संज्ञा पु० मेघपथ । आकाश । अन्तरिक्ष ।  
 मेघावारि\*†-संज्ञा स्त्री० दे० "मेघावति" ।  
 मेघावलि-संज्ञा स्त्री० बादलों की घटा ।  
 मेघकृता-संज्ञा स्त्री० कालापन ।  
 मेघकृताई\*-संज्ञा स्त्री० दे० "मिचकृता" ।  
 मेघ-संज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह की चौड़ी और ऊँची चौकी, जो खाना खाने या लिखने-पढ़ने के लिए रखी जाती है ।  
 [अग्ने०-टेबल] ।  
 मेघवान-संज्ञा पु० [फा०] वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई अतिथि या मेहमान आकर रहे । अपने यहाँ निमंत्रित करनेवाला । अतिथि-सत्कार करनेवाला । मेहमानदार ।  
 मेघवानो-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. मेघवान का भाव या धर्म । अतिथि सत्कार । मेहमान-दारी । खातिरदारी । २. बारात जाने पर पहले-पहले घन्यापन की ओर से धारातियों को भेजे जानेवाले साथ पदार्थ ।  
 मेघा†-संज्ञा पु० मेढक ।  
 मेढ-संज्ञा पु० [अ०] मजदूरों का सरदार । जमादार । टंडल ।  
 मेढक\*†-संज्ञा पु० नाचक । मिटानेवाला ।  
 मेढनहार\*†-संज्ञा पु० मिटानेवाला । दूर करनेवाला ।  
 मेढना†-वि० सं० १. दे० "मिटाना" । २. धो राना । दूर करना । ३. नाच करना । सरान करना ।

मेढिया†-संज्ञा स्त्री० दे० "मटकी" ।  
 मेड़-संज्ञा पु० १. मिट्टी से बनाया हुआ घेरा । छोटा बाँध । २. दो खेतों के बीच में सीमा के रूप में बना हुआ बाँध ।  
 मेड़रा†-संज्ञा पु० [स्त्री० मेड़री] किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा या ढाँचा ।  
 मेड़िया-संज्ञा स्त्री० मढ़ी ।  
 मेड़क-संज्ञा पु० एक जल-स्थलचारी जंतु, जो एक बालिशत तक लंबा होता है । मड़क । दादुर ।  
 मेड़ा-संज्ञा पु० [स्त्री० मेड़] सींगोंवाला एक चीपाया, जो घने रोपों से ढका होता है । मेड़ा ।  
 मेड़ासिन्धी-संज्ञा स्त्री० एक झाड़ीदार लता, जिसकी जड़ ओषधि के काम आती है ।  
 मेड़ी†-संज्ञा स्त्री० तीन लड़ियों में गुँथी हुई चीटी ।  
 मेयो-संज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा, जिसकी पत्तियों का साग बनाया जाता है और इसके बीज मसाले के काम आते हैं ।  
 मेयोरी-संज्ञा स्त्री० मेयी का साग मिलाकर बनाई हुई वरी ।  
 मेव-संज्ञा पु० १. धारी के अंदर की वसा नामक फल । २. चरबी । मोटाई या चरबी बढ़ना । ३. कस्तूरी ।  
 मेवा-संज्ञा पु० पेट ।  
 संज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध ओषधि ।  
 मेदिनी-संज्ञा स्त्री० पृथ्वी । धरती ।  
 मेदुर-वि० १. चिकना जोर मुलायम । स्निग्ध । २. मोटा या गाढ़ा ।  
 मेध-संज्ञा पु० यज्ञ ।  
 मेधा-संज्ञा स्त्री० १. स्मरण रखने की मानसिक शक्ति । बुद्धि । धारणा-शक्ति । २. पौष्टिक माणिकार्थों में से एक । ३. छप्पय छतु का एक भेद ।  
 मेधाधी-वि० [स्त्री० मेधाधिनी] १. बुद्धि-मान् । चतुर । २. पंडित । विद्वान् । ३. जिसकी धारणाशक्ति तीव्र हो ।  
 मेघ्य-वि० १. यज्ञ-सम्बन्धी । २. पवित्र ।  
 संज्ञा पु० १. यज्ञ । २. जो । ३. धर ।

मेनका-सज्ञा स्त्री० १ स्वर्ग की एक अप्सरा।

२ उमा या पार्वती की माता।

मेना-वि० स० पकवान में मोयन डालना।  
मिलाना।

मेम-सज्ञा स्त्री० [अप्र० मंडम का सक्षिप्त रूप] १ अंग्रेज स्त्री। युरोप या अमरिका आदि पश्चिमी देशों की स्त्री। २ पत्नी।  
कीर्ती। रानी। ३ ताश का एक पत्ता।  
कीर्ती।

मेमता-सज्ञा पु० १ भेद का बच्चा। २ भेद की एक जाति।

मेमार-सज्ञा पु० [अ०] इमारत बनानेवाला।  
धवई। राजगीर।

मेय-वि० जो नापा जा सके। नापने योग्य।

मेरवना-वि० स० मिलाना। मिश्रित करना।  
समाग करना।

मेरा-सर्व० [स्त्री० मेरी] 'म' के सबब-  
कारक का रूप। मम। अपना।

मेराड, मेराडी-सज्ञा पु० मल। मिलाप।  
समागम।

सज्ञा स्त्री० अहंकार।

मेरु-सज्ञा पु० १ पुराणा में वर्णित एक पर्वत  
जो सोने का कहा गया है। मुमेरु। हेमाद्रि।  
२ जपमाला के बीच का सबसे बड़ा दाना।  
मुमरु। ३. छंद शास्त्र की एक गणना, जिससे  
यह पता लगता है कि कितने किनारे सधु  
गुरु के कितने छंद हो सकते हैं।

मेरुबड-सज्ञा पु० १. रीड। पीठ के बीचो-  
बीच की एक हड्डी। २ पृथ्वी के दोनों  
ध्रुवों से बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा।

मेरुपृष्ठ-सज्ञा पु० आकाश। स्वर्ग।

मेरे-सर्व० १ 'मेरा' का बहुवचन। २  
'मेरा' का बहुल्लाप, जो उस सबबवान् शब्द  
के आगे विभक्ति लगने के कारण प्राप्त  
होता है।

मेरु-सज्ञा पु० १ मिलन की क्रिया या भाव।  
मिश्रण। २ संयोग। समागम। मिलाप। ३  
एकता। तुल्यता। मैत्री। मिश्रता। दोस्ती। ४  
उपयुक्तता। सगति। जाड़। बराबरी। ५  
दण्ड। ६ बात। तरह।

मेरु-सज्ञा पु० १. राग। राय। मल जौल।

जान-पहचान। २ मिलान। समूह। मला।

पि० मल कराने या मिलानेवाला।

मेल-जोल-सज्ञा पु० आपस में मल का या  
मिलते रहने का सम्बन्ध। संग साथ।

मल मिलाप। घनिष्ठता।

मेलना-वि० स० १ मिलाना। २ डालना।  
रखना। ३ पहनाना।

वि० अ० इकट्ठा होना। एकत्र होना।

मेल मिलाप-सज्ञा पु० दे० 'मल-जाल'।

मैला-सज्ञा पु० १ बहुत-से लोगों का जमावड़ा।

भीड़। २ दब-दबान, उत्साह या तमाशो आदि

के समय एकत्र बहुत से लोगों का समूह।

३ बहुत सी दूकानों तथा प्रदर्शनी आदि से

सजा हुआ, चीपाचो की बिक्री आदि के लिए

किसी विशेष स्थान पर आयोजन, जिसमें

लोगों को भीड़ रहा करती है।

मेली-सज्ञा पु० मूलानाती। परिचित।

वि० जल्दी हिस मिल जानेवाला।

मेलहना-वि० स० अ० १ छटपटाना। बेचैन

होना। २. आनाकानी करके समय बिताना।

मेघ-सज्ञा पु० राजपूतान की ओर बसनेवाली

एक लुटरी जाति। मेवाती।

मेवा-सज्ञा पु० [फा०] किशनस, बादाम,

अखरोट आदि सुखाए हुए फल।

मेवाटी-सज्ञा स्त्री० एक पकवान, जिसके

अंदर भवे भरे रहते हैं।

मेवाड-सज्ञा पु० राजपूतान का एक प्रांत,

जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौर थी।

मेवात-सज्ञा पु० राजपूतान और सिंध के

बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

मेवाली-सज्ञा पु० मेवात का रहनवाता।

मेवाफरोद-सज्ञा पु० [फा०] भव बेचन-

वाला।

मेवासा-वि० स० १ बिला। गढ़। २ रक्षा

का स्थान। ३ घर।

मेवासी-सज्ञा पु० १ घरवा मालिक। २ किल

में रहनवाला। ३ सुरक्षित और प्रबल।

मेघ-सज्ञा पु० नद। बारह राशिया में से एक।

मुह०-मीनमय करना=जागा-पीछा करना।

मेघसंक्रांति-सज्ञा स्त्री० मघ राशि पर

सूय के आन का योग या समय (पंच)।

मेहरी-सज्ञा स्त्री० एक झाड़ी। इसकी पत्तियों को पीसकर लगाने पर लगाने का स्थान ताल रंग का हो जाता है। स्त्रियाँ इसे हाथ-पैरों में लगाती हैं।

मेह-सज्ञा पु० १. मेघ। बादल। २. वर्षा। तबी। मेह। ३. प्रस्राव। मूत्र। ४. प्रमेह रोग।

मेहतर-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० मेहतरानी] भयी।

मेहनत-सज्ञा स्त्री० [अ०] परिश्रम। प्रयास। श्रम।

मेहनताना-सज्ञा पु० किसी काम का पारिव्ययिक या भजदूरी।

मेहनती-वि० मेहनत करनेवाला। परिश्रमी।

मेहमान-सज्ञा पु० [फा०] अतिथि। पाहुना।

मेहमानवारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] अतिथि-सत्कार। खातिरदारी।

मेहमानी-सज्ञा स्त्री० आतिथ्य। अतिथि-सत्कार। पहुनाई। मेहमान बनकर रहने का भाव।

मुहा०—मेहमानी करना=खुब गत बनाना। मारना-पीटना। दड देना (व्यग्य)।

मेहर-सज्ञा स्त्री० [फा०] कृपा। दया। सज्ञा स्त्री० दे० "मेहरी"।

मेहरबान-वि० कृपालु। दयालु।

मेहरबानी-सज्ञा स्त्री० [फा०] दया। कृपा।

मेहरो-सज्ञा पु० जनखा। स्त्रियों की-सी चेट्टावाला। नामदं।

मेहराब-सज्ञा स्त्री० [अ०] अदम्यलाकार बनाया हुआ द्वार के ऊपर का भाग।

मेहरी-सज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत। पत्नी। जोरू।

मं-सर्व० सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्ता का रूप। स्वयं। खुद।

\*अव्य० दे० "मय"। सहित।

मंका-सज्ञा पु० दे० "मायका"।

मंगल-सज्ञा पु० मस्त हाथी। वि० मस्त। (हाथी के लिए)

मंज-सज्ञा पु० [अये०] खेल की प्रतिभोगिता।

मंजल\*—सज्ञा स्त्री० १ दे० "मजिल"। २ पटाव। ३ सफर। यात्रा।

मंड़-सज्ञा स्त्री० दे० "मंड"।

मंनषणि-सज्ञा पु० एक उपनिषद्।

मंनावरुणि-सज्ञा पु० मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य।

मंन्त्री-सज्ञा स्त्री० मित्रता। दोस्ती।

मंनेय-सज्ञा पु० १. सूर्य। २. भागवत के अनुसार एक ऋषि।

मंन्त्रेयो-सज्ञा स्त्री० १. याज्ञवल्क्य की स्त्री। २. अहल्या।

मंन्थिल-वि० मिथिला देश का। मिथिला-सबवी

सज्ञा पु० मिथिला देश का निवासी।

मंन्थिली-सज्ञा स्त्री० जानकी। सीता।

मंन्थुन-सज्ञा पु० स्त्री के साथ पुरुष का समागम।

सभोग। रति-झोडा।

मंन्दा-सज्ञा पु० [फा०] बहुत महीन आटा।

मंन्दान-सज्ञा पु० [फा०] १ लदा-चौड़ा समतल स्थान। सपाट भूमि। २ लची-चौड़ी भूमि, जिसमें कोई खेल खेला जाय। ३. रणभूमि। युद्धक्षेत्र। ४. विस्तार।

मुहा०—मंन्दान में आना=मुकाबले पर आना। मंन्दान साफ होना=मार्ग में कोई बाधा आदि न होना। मंन्दान मारना=खेस, बाजी आदि में जीतना। विजय प्राप्त करना। मंन्दान करना=लड़ना। युद्ध करना।

मंन्त-सज्ञा पु० १. कामदेव। मदन। २. मोम।

मंन्तकामिनी-सज्ञा स्त्री० कामदेव की स्त्री। रति।

मंन्तफल-सज्ञा पु० मसाले आकार का एक कटौला वृक्ष। इस वृक्ष का फल जखरोट की तरह होता है और नीयव के काम में आता है। मदनफल।

मंन्तमय\*—वि० कामवासना से युक्त या व्याकुल। कामासक्त।

मंन्तिल-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीली धातु।

मंन्त-सज्ञा स्त्री० काले रंग का एक प्रसिद्ध पथरी, जो सिखाने से मनुष्य की-सी बोली बोलन लगता है। सारिका। दे० "मंन्तन"।

सज्ञा पु० राजपूताने की एक जाति, जो 'मोना' कहलाती है।

मंनार-सज्ञा पु० १ एक पर्वत, जो हिमालय का पुत्र माना जाता है। २ हिमालय की एक ऊँची चोटी।

मंमत्+वि० १ मदोन्मत्त। मतवाना। २ जहूकारी। अभिमान।

मंमत्-सज्ञा स्त्री० माता। माँ।

मंमत्-सज्ञा स्त्री० साँप के विष की लहर।

मंमत्-सज्ञा स्त्री० १. गर्द, धूल आदि जिसमें किसी वस्तु की चमक-दमक नष्ट हो जाती है। २ मल। गंदगी। दाप। विचार।

मंमत्-सज्ञा पु० हाथ-पैर की मंमत्=तुच्छ वस्तु।

मंमत्-सज्ञा-वि० जिस पर जमी हुई, मंमत् जल्दी दिखाई न दे।

मंमत्-वि० १ जिस पर मंमत् जमी हो। मलिन। गदा। २ विचार-युक्त। कृपित। ३ दुर्गंध-युक्त।

सज्ञा पु० १ गलीज। मू। विष्टा। २ कूड़ा-कर्मट।

मंमत्-सज्ञा-वि० १ बहुत मंमत्। गदा। २ जो बहुत गदा कपड़ा पहन हुए हो।

मंमत्-सज्ञा पु० गदापन। मलिनता।

मो०+वि० १. 'म'। २. 'मो'। ३. 'मो'।

मो०+सज्ञा पु० १ दे० "मो०"। २ दे० "मो०"।

मो०-सज्ञा-स्त्री० दे० "मो०"।

मो०-सज्ञा पु० १ बाँस आदि का बना हुआ एक प्रकार का ऊँचा मोलाकार आसन। २ कथा।

मो०-सर्व० मरा। अबकी और वज्रभाषा में 'म' का बहु रूप, जो उसे वर्तनीकारक के अतिरिक्त और किसी प्रकार के चिह्न लगन के पहले प्राप्त होता है।

मो०+वि०-वि० १ छोड़ना। परित्याग करना। २ फेंकना। धिष्ट करना।

मो०+वि०-वि० छोटा हुआ। मुक्त। जो बंधा न हो। आजाद। स्वच्छ।

मो०+वि०-वि० १ अधिक चौड़ा। कुसादा। २ छोटा हुआ। स्वच्छ।

मो०-सज्ञा पु० १ वधन से छूट जाना। छूट-

जाना। जन्म मरण के बंधन से छूट जाना। मुक्ति। २ मृत्यु। मोत।

मो०+सज्ञा पु० माँस देनवाला।

मो०+वि०-सज्ञा पु० दे० "माँस"।

मो०-सज्ञा पु० बहुत छोटी खिटका। झरना।

मो०+सज्ञा पु० बना फूल की एक बड़िया किम्ब।

मो०+सज्ञा पु० दे० "मो०"।

मो०+सज्ञा पु० १ एक तरह का रसम। २ इस रसम का बना हुआ कपड़ा।

मो०+वि० निष्कृत। चूकनेवाला।

मो०+सज्ञा स्त्री० शरीर के किसी अंग के जाड़ की नस का अपने स्थान से हटकर ऊपर पिसक जाना।

मो०+सज्ञा पु० १ यथन आदि से छुड़ाना। मुक्त करना। २ दूर करना। हटाना।

मो०+वि०-वि० १ छोड़ना। २ गिराना। बहाना। ३ छुड़ाना।

सज्ञा पु० हज्जामो का एक औजार, जिससे वे बाल उखाड़ते हैं।

मो०+सज्ञा पु० समल का गोद।

मो०+सज्ञा पु० जूता बनानेवाला। जूता और चमड़े की सिलाई आदि का व्यवसाय करनेवाला।

वि० [स्त्री० मोचिनी] १. छुड़ानेवाला। २ दूर करनेवाला।

मो०+सज्ञा स्त्री० दे० "मो०"। \* -सज्ञा पु० दे० "मो०"।

मो०+सज्ञा पु० [फा०] पैरा में पहनने का एक प्रकार का बना हुआ कपड़ा। पायतावा।

जुआँवा। पैर में पिंडली के नीचे का भाग। मो०-सज्ञा स्त्री० पतला का उल्टा। गठरी। मोटरी। मोस।

सज्ञा पु० चमड़े का बड़ा बैला, जिससे सत सींचने के लिए कूँ से पानी निकालते हैं। चरता। पुर।

\* वि० दे० "मो०"। कम दाम का। साधारण।

मो०+सज्ञा पु० [अ०] जमीन पर पड़ाव से चलनेवाला एक प्रसिद्ध गाड़ी। बिजली

का इज्जत, जो दूसरे यत्रो का संचालन करता है।

मोटरी-सज्ञा स्त्री० गठरी।

मोटा-वि० [स्त्री० मोटी] १ दुबला या पतला का उल्टा। चरयो आदि के कारण जिसका शरीर फूल गया हो। २ जिसके कण महीन न हो। दरदरा। ३ घटिया। खराब। ४ भारी। ५ कठिन। ६ घनवी। अहकारी। ७, दबीज। दबदार। ८. गाढा। ९ जिसका घेरा या मान आदि साधारण से अधिक हो।

मुहा०—मोटा असाही=अमीर। जिससे अधिक धन वसूल हो सके। मोटी बात=साधारण बात। मामूली बात। मोटे हिसाब से=अंदाज से या अनुमान से। अटकल से। मोटा दिखाई देना=अंश की ज्योति में कमी होना। कम दिखाई देना।

मोटाई-सज्ञा स्त्री० १ मोटा होने का भाव। स्थूलता। मोटापन। २ शरारत। पाजीपन। मुहा०—मोटाई चढ़ना=वदमाश या घमडी होना।

मोटाना-क्रि० अ० मोटा होना। स्थूलकाय हो जाना। अभिमानी होना। घनवान् होना।

क्रि० स० दूसरे को मोटा करना। मोटापन-सज्ञा पु० शरीर के मोटे होने का भाव। दे० "मोटाई"।

मोटापा-सज्ञा पु० दे० "मोटाई"। मोटा मोटी-क्रि० वि० मोटे हिसाब से। अनुमान या अंदाज से।

मोटिया-सज्ञा पु० १ मोटा और खुरखुरा देखी कण्डा। गाढा कपड़ा। २ बोझ दोनवाला।

मोट्यापित-सज्ञा पु० माहित्य में बहु हाव, जिसमें नायिका अपने आन्तरिक प्रेम को कटु भाषण आदि-द्वारा छिपाते की चेष्टा करने पर भी छिपा नहीं सकती।

मोट-सज्ञा स्त्री० मूंग की तरह का एक मोटा अन्न। मोष १. मोषी। वनमूष।

मोड़-सज्ञा पु० १ रास्ते में घुमाव का स्थान। २ घुमाव में मुड़ने की क्रिया।

मोड़ना-क्रि० स० १ फेरना। लोटाना। टेका करना। २. किसी फैली हुई

सतह का कुछ अंश समेटकर एक तह के ऊपर दूसरी तह करना। ३. धार भुंथरी करना। कुठित करना। जैसे—धार मोड़ना।

मुहा०—मुँह मोड़ना=विमुख होना।

मोतिया-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का वेल (फूल)। २ एक प्रकार का रत्न।

वि० १. हलका गुलाबी या पीले और गुलाबी रंग के मेल का 'रंग'। २ मोती-सम्बन्धी। छोटे गोल दानो का।

मोतियाबिन्द-सज्ञा पु० एक रोग, जिसमें आँख के एक 'परदे' में गोल सिल्ली सी पड़ जाती है।

मोती-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न, जो समुद्रों में होनेवाली सीपी में से निकलता है।

सज्ञा स्त्री० बाली, जिसमें मोती पड़े रहते हैं।

मुहा०—मोतियों की-सी आव उतरना=अप्रतिष्ठा होना। अपमान होना। मोती

गरजना=मोती चटकना या कड़क जाना।

मोती पिरोना=माला गुंथना। मोती

रोसना=विना परिश्रम अथवा थोड़े परिश्रम से बहुत अधिक धन कमाना या प्राप्त करना। मोतियों से मुँह भरना=बहुत

अधिक धन-संपत्ति देना।

मोतीचूर-सज्ञा पु० छोटी बूंदियों का लड्डू।

मोतीशरा या मोतीशिरा-सज्ञा पु० १ एक

प्रकार का मियादी बुझार। २. जाड़ा

देकर आनेवाला बुझार। मलेरिया। ३

छोटी शीतला का रोग। ४ मधुर-ज्वर।

मोती-बेल-सज्ञा स्त्री० मातिया वेल (फूल)।

मोती-भात-सज्ञा पु० एक विशेष प्रकार का

भात।

मोतीसिरे-सज्ञा स्त्री० मोतियों की कड़ी।

मोतिया की माला।

मोथा-सज्ञा पु० नागरमोथा नामक पौस-या

उसकी जड़।

मोव-सज्ञा पु० १ आनद। हर्ष। प्रसन्नता।

सुखी। २ एक वर्णवृत्त। ३ सुगंध। गन्ध।

मुखाव।

मोवक-सज्ञा पु० १ लड्डू। मिठाई। २



मोरखी-वि० १. मोर के पख या बना हुआ। २. मोर के पख के रंग का।

सजा स्त्री० एक प्रकार की नाव, जिसका एक सिरा मोर के पर की तरह बना और रंगा हुआ हो।

सजा पु० मोर के पर से मिलता-जुलता गहरा चमकीला नीला रंग।

मोरमुकुट-सजा पु० मोर के पखा का बना हुआ मुकुट।

मोरवा\*†-सजा पु० दे० "मोर"।

मोरशिखा-सजा स्त्री० १ एक प्रकार की जडी। २ मोरपत।

मोरा\*†-वि० दे० 'मेरा'।

मोराना\*†-वि० स० चारों ओर घुमाना। फिराना।

मोरी-सजा स्त्री० १ नाली, जिसमें गदा और मेला पानी बहता हो। पनाली। २ मोर की मादा।

मोल-सजा पु० मूल्य। कीमत। दाम।

यो-मोल-तोल=किसी चीज का दाम षटा-बटाकर तय करना।

मोलना\*†-क्रि० स० दाम पूछना। मूल्य तय करना।

मोबना\*†-क्रि० स० दे० "मोना"।

मोवण-सजा पु० १ सूटना। २ चोरी करना। ३ बध करना।

मोह-सजा पु० १ अज्ञान। भ्रम। भ्रंति। २ शरीर और सासारिक पदार्थों को अपना या सत्य समझाने को दुःख देनेवाली बुद्धि। ३ प्रेम। मुहब्बत। प्यार। ४ साहित्य में ३३ सचारी भावों में से एक। ५. भय, दुःख, चिंता आदि से उत्पन्न चित्त की विकलता। ६ दुःख। कष्ट। ७ मूर्च्छा। बेहोशी। गश।

मोहक-वि० लुभानेवाला। मनोहर। मन मोहनवाला। मोह उत्पन्न करनेवाला।

मोहल-सजा पु० १ दस अक्षरों का एक वर्णवृत्त। २ बाला।

मोहडा-सजा पु० किसी पाय का मुँह या खुला भाग। किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग।

मोहताज-वि० दूसरे पर आश्रित। परमुला-पेक्षी।

मोहन-सजा पु० १ मन को लुभानेवाला। मोह लनेवाला। २ धीरुष्ण। ३ एक वर्णवृत्त। ४ एक प्रकार का तादृश प्रयोग, जिससे किसी को बेहोश या मूर्च्छित करते हैं। ५ मूर्च्छित करने का एक प्राचीन अस्त्र (मोहनास्त्र)। ६ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।

वि० [स्त्री० मोहनी] मन मोहनेवाला। मोह उत्पन्न करनेवाला।

मोहनभोग-सजा पु० १. एक प्रकार का हलुआ। २ एक प्रकार का आम।

मोहनमाला-सजा स्त्री० सोने की गुरियों या दाना की बनी हुई माला।

मोहना-वि० अ० १ मोहित होना। रीझना। २ मूर्च्छित होना।

वि० स० १ मोहित करना। लुभा लेना। २ भ्रम में डालना। धोखा देना।

मोहनास्त्र-सजा पु० एक प्राचीन अस्त्र, जिसे फककर शत्रु या शत्रु की सेना को मूर्च्छित किया जाता था।

मोहनिशा-सजा स्त्री० दे० 'मोहरानि'।

मोहनी-सजा स्त्री० १ मन मोहनेवाली या सुन्दर स्त्री। २ भगवान् का वह स्त्री-रूप, जो उन्होंने समुद्र-मंथन के उपरान्त अमृत बाँटते समय धारण किया था। ३ वशीकरण का मन्त्र। ४ एक वर्णवृत्त। ५ माया।

वि० मोहित करनेवाली। अत्यंत सुन्दरी।

मुहा०—मोहनी डालना या लाना=माया के बश करना। जादू करना। मोहनी लगाना=

मोहित होना। लुभाना।

मोहर-सजा स्त्री० [फा०] १ अक्षर, चिह्न आदि द्वारा अंकित करने का ठप्पा। २

इस ठप्पे की कागज आदि पर लगी छाप। ३ अक्षरफौ।

मोहरबन्द-वि० बन्द करके ऊपर से मोहर लगाई गई वस्तु।

मोहरा-सजा पु० [स्त्री० मोहरी] १ किसी वस्त्र का मुँह या खुला भाग। २ किसी

पदार्थ का ऊपरी या अगला भाग। ३

सात री अगली पन्ति। ४ रीज की पढ़ाई वा रूप। ५ बाई छद या द्वार, जिसस काई वस्तु बाहर निमल। ६ चाली आदि की तनी। ७ दतरज री काई मोटी। ८ मिट्टी का साँचा, जिसमें चीजें ढालत हैं। ९ रेसमी वस्त्र घाटन वा धोटना। १० सिगिया चिप। ११ जहर-माहर।

मुहा०—मोहरा लना=१ सना वा मुकाबला करना। २ भिड़ जाना। प्रतिद्वन्द्विता करना।

मोहरात्रि—सज्ञा स्त्री० १ प्रलय की वह रात, जो ब्रह्मा के पचास वष बीतने पर होती है। २ कृष्ण-जन्माष्टमी।

मोहरी—सज्ञा स्त्री० १ वरतन आदि का छोटा मुह। २ पाजाम का बहु भाग जिसमें टाँगें रहती हैं। ३ दे० “मोरी”।

मोहरीर—सज्ञा पु० अदालत में लिखन का काम करनेवाला। बकीला के साथ लिखन पढ़ने का काम करनेवाला। सख्त। मुशी।

मोहलत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ अवकाश। छुट्टी। फुसत। २ अवधि।

मोहारुं—सज्ञा पु० १ द्वार। दरवाजा। २ मुँहडा।

मोहि\*—सव० मुक्तका। मुक्त। (बज और अवधी) २०

मोहित—वि० १ मोह या भ्रम में पड़ा हुआ। मूग्ध। २ मोह्रा हुआ। आसक्त।

मोहिनी—वि० स्त्री० मोहनवासी। सज्ञा स्त्री० १ विष्णु के एक अवतार का नाम। २ माया। जादू। ३ टोना। ४ एक अवसम वृत्ति। ५ पद्म अक्षरा का एक वर्णिक छद।

मोही—वि० १ मोहित करनेवाला। मोह करनेवाला। प्रम करनेवाला। २ लोभी। सालगी। ३ अज्ञानी।

मोहोपमा—सज्ञा स्त्री० एक अलंकार जो केशवदास के अनुसार उपमा का एक भेद है पर और आचार्य जिसे ग्राति जलकार कहते हैं।

मोगा, मोगी\*—सज्ञा स्त्री० मोन। चुप।

मोका\*†—सज्ञा पु० [स्त्री० मौडी] उड़वा वाला।

मोका—सज्ञा पु० [अ०] १ घटनास्थल। २ दफा। स्थान। जगह। ३ अवसर। समय।

मोक्रूफ—वि० [अ०] [सज्ञा मोक्रूफी] १ नोकरी से अलग किया गया। बरखास्त। २ रद्द किया गया। ३ राखा हुआ। बद किया हुआ।

मोक्तिक—सज्ञा पु० मुक्ता। मात्त।

वि० १ मात्तिया का। २ मोती-सम्बन्धी।

मोक्तिरुदाम—सज्ञा पु० बाग़ह अक्षरा का एक वर्णिक छद।

मोक्तिकमाला—सज्ञा स्त्री० १ मोत्तिया की माला। २ ग्यारह अक्षरा की एक वर्णिक वृत्ति।

मोख—सज्ञा पु० एक प्रकार का मसाना।

मोखरो—सज्ञा पु० भारत का एक प्राचीन राजवंश।

मोखय—सज्ञा पु० मुखर होत का भाव। मुखरता।

मोखिक—वि० १ जयानी। मुँह सकहा हुआ। मुख का। २ मुख-सम्बन्धी।

मोज—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मजा। आनन्द। मुख। धुन। २ मन की उमंग। उछल। जोरा। गहर। तरंग।

मुहा०—किसी की मोज पाना=मरजी या दच्छा जानना।

मोबा—सज्ञा पु० [अ०] गाँव।

मोजी—वि० १ जो जी में आवे, वही करने वाला। २ सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनंदी।

मोजूँ—वि० [अ०] उपयुक्त। उचित। ठीक।

मोजूव—वि० [फा०] [सज्ञा स्त्री० मोजूवगी] १ उपस्थित। हाजिर। विद्यमान। २ प्रस्तुत। तैयार।

मोजूवगी—सज्ञा स्त्री० [फा०] उपस्थित या होने का भाव। उपस्थिति। हाजिरी।

मोजूदा—वि० [अ०] वत्तमान काल का। प्रस्तुत।

मोडा\*†—सज्ञा पु० दे० मौडा।

मोत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ मृत्यु। देहान्त। २ मरने का समय। काव। ३ अत्यन्त कष्ट या विपत्ति।

मूहा०—मौत का सिर पर खेलना=१. मरने को होना। २. आपत्ति समीप होना।

मौन-सज्ञा पु० १ चुप्पी। चुप रहना। न बोलना। २ मुनियों का व्रत। मौन या चुप रहने का व्रत।

वि० चुप। न बोलनेवाला।

मूहा०—मौन ग्रहण या धारण करना= चुप रहना। न बोलना। मौन खोलना=चुप रहने के उपरांत बोलना। मौन तजना= चुप्पी छोड़ना। बोलने लगना। मौन बाँधना=चुप हो जाना। मौन लेना या साधना=चुप होना। न बोलना। मौन संभारना\*=मौन साधना। चुप होना। मौनव्रत-सज्ञा पु० मौन धारण करने का व्रत। चुप रहने की प्रतिज्ञा या व्रत।

मौनों-वि० १ चुप रहनेवाला। मौन धारण करनेवाला। २ मुनि।

मौर-सज्ञा पु० [स्त्री० मीरी] १. विवाह के समय का एक शिरोभूषण। २ शिरोमणि। प्रधान। ३ मजरी। बीर। ४ गरदन।

मौरना-क्रि० सं० वृक्षों पर मजरी लगना। बीर लगना।

मौरसिरो\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मौलसिरी"।

मौहसी-वि० [अ०] १ पैतृक। पूर्वजों का। २ बाप-दादा के समय से चला आया हुआ।

मौय्य-सज्ञा पु० क्षत्रियों के एक वंश का नाम। सम्राट् चंद्रगुप्त और अशोक इसी वंश में हुए थे।

मौवी-सज्ञा स्त्री० धनुष की डोरी।

मौलवी-सज्ञा पु० [अ०] मुसलमान धर्म का आचार्य, जो अरबी, फारसी आदि का पढ़ित होता है।

मौलसिरी-सज्ञा स्त्री० एक बड़ा सदाबहार पेड़, जिसमें छोटे-छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। किसी किसी में फल भी लगते हैं। वकुल।

मौला-सज्ञा पु० [अ०] १ ईश्वर। २ स्वामी। मालिक। ३ सहायक। मददगार। ४ मित्र। दोस्त।

मौलाना-सज्ञा पु० दे० "मौलवी"।

मौलि-सज्ञा पु० १. चोटी। सिर। २ चूड़ा।

मस्तक। सिर। ३ किरौट। ४ जूड़ा। जटाजूट। ५ प्रधान व्यक्ति। सरदार।

मौलिक-वि० [संज्ञा मौलिकता] असल। मूल से सम्बन्ध रखनेवाला। अपनी उद्भावना से निकला हुआ विचार या रचित ग्रंथ, जो किसी का अनुवाद, नकल या आधार पर न हो।

मौलिकता-सज्ञा स्त्री० मौलिक होने का भाव। अपनी उद्भावना से कुछ सोचने-समझने, कहने या लिखने की शक्ति। (अग्ने०—ओरिजनैलिटी)

मौली-वि० मौलि धारण करनेवाला। सज्ञा स्त्री० पूजा आदि के लिए रंगा हुआ सूत। नारा।

मौसम सज्ञा पु० दे० "मौसिम"। ऋतु।

मौसा-सज्ञा पु० [स्त्री० मौसी] माता की बहिन का पति।

मौसिम-सज्ञा पु० [अ०] [वि० मौसिमी] १ उपयुक्त समय। २ ऋतु। दिन और रात की प्राकृतिक अवस्था। ३ प्राकृतिक अवस्था के अनुसार वर्ष के ६ विभाग। ४ ऋतु।

मौसिया-सज्ञा पु० १ मौसा। २ दे० "मौसेरा"।

मौसी-सज्ञा स्त्री० [वि० मौसेरा] माता की बहन।

मौसेरा-वि० मौसी के द्वारा सबद्ध। मौसी के संबंध का।

म्याँवे-सज्ञा स्त्री० बिल्ली की बोली।

मूहा०—म्याँवे म्याँवे करना=भयभीत होकर धीमी आवाज से बोलना।

म्यान-सज्ञा पु० [फा०] तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना।

म्याना\*-क्रि० सं० म्यान में रखना।

\*सज्ञा पु० दे० "मिपाना"।

म्यूजियम-सज्ञा पु० [अग्ने०] अजायबघर। संग्रहालय। अद्भुत पदार्थों का संग्रहालय।

म्यो-सज्ञा स्त्री० [अनु०] बिल्ली की बोली।

म्योड़ी-सज्ञा स्त्री० एक सदाबहार झाड़, जिसमें पीले छोटे फूलों की मजरीयाँ लगती हैं।

म्युनिसिपलटी-सज्ञा स्त्री० [अर्थ०] नगर-पालिका। नगर की सफाई, स्वास्थ्य, सड़क आदि का प्रबन्ध करनेवाली संस्था, जिसके सदस्य जनता-द्वारा चुने जाते हैं।  
 म्लान-वि० [भाव०] सज्ञा म्लानता।  
 १. मलिन। कुम्हलाया हुआ। २. दुबला।  
 ३. मेला। मलिन।  
 म्लानता-सज्ञा स्त्री० १ म्लान या उदाम होने

का भाव। मलिनता। उदासीनता। २. दुर्बलता। कमजोरी।  
 म्लानि-सज्ञा स्त्री० दे० "म्लानता"।  
 म्लेच्छ-सज्ञा पु० मनुष्यों की वे जातियाँ जिनमें वर्णाश्रम धर्म न हो। धनार्थ।  
 वि० १. तीव्र। २. पापी।  
 म्हा\*†-सर्व० दे० "म्ह"।  
 म्हारा\*†-सर्व० दे० "हमारा"।

य

य-हिंदी.वर्णमाला का २६वाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्वान ताल्लु-है-।  
 सज्ञा पु० १ यज्ञ। २ योग। ३ सवारी। ४. ५ समय। ६ छंद-शास्त्र में ध्वन्य का सक्षिप्त रूप।  
 यता-संज्ञा पु० सारथी। यत् हाँकनेवाला।  
 यति-सज्ञा स्त्री० दमन।  
 यंत्र-सज्ञा पु० १ औजार। किसी खास काम के लिए बनाई हुई कल या औजार। (अर्थ०-मशीन) २. किसी वस्तु को बनाने के लिए विशेष उपकरण। ३ बाजा। वाद्य। ४ ताल। ५ तांत्रिकों के अनुसार कुछ विशेष प्रकार से बने हुए कोष्ठक आदि। जतर।  
 यन्त्र-सज्ञा पु० १. यंत्र की सहायता से वस्तुएँ तैयार करनेवाला। २. वशीकरण करनेवाला। ३ धाव आदि बाँधने की पट्टी।  
 यंत्ररङ्गिका-सज्ञा स्त्री० वाद्योपकरण की पेट्टी।  
 यंत्रगृह-सज्ञा पु० १ वह स्थान, जहाँ यंत्रों की सहायता से कोई कार्य होता है। वेधशाला।  
 २ प्राचीन काल में जगदधिया की यंत्रणा देने का स्थान।  
 यंत्रण-सज्ञा पु० १. रक्षा करना। २ रक्षिता।  
 ३ नियम में रखना। ४ नियंत्रण।  
 यंत्रणा-सज्ञा स्त्री० पीडा। कष्ट। तकलीफ। दर्द।  
 यंत्र-यंत्र-सज्ञा पु० जाड़-टोना।  
 यंत्र-युक्त-वि० १ यंत्र या कलपुर्जोंवाला। यंत्रा के साथ। २. दे० "यंत्रसज्ज"।

यंत्रविद्या-सज्ञा स्त्री० कलों के चलाने और बनाने की विद्या।  
 यंत्रशाला-सज्ञा स्त्री० १. वेधशाला। २ वह स्थान, जहाँ यंत्र बनाए जाते हैं और उनसे काम लिया जाता हो।  
 यंत्रसज्ज-वि० मशीनगनो और टंको आदि से युक्त और सजी हुई (सेना)।  
 यंत्रालय-सज्ञा पु० १. वह स्थान, जहाँ यंत्र (कल) आदि से काम होता हो। २ छापा-खाना। प्रेस।  
 यंत्रिका-सज्ञा स्त्री० १. छोटा ताला। २ छोटी साली।  
 यन्त्रित-वि० १. यंत्र आदि की सहायता से बंद किया हुआ। २ ताले में बंद।  
 यंत्री-सज्ञा पु० १. यंत्र-मन करनेवाला। तांत्रिक। २ बाजा बजानेवाला।  
 यन्त्र-यन्त्र, यन्त्रधारणी-कि० वि० [क्रा०] अचानक। एकाएक। सहसा।  
 यन्त्रा-वि० [क्रा०] एक समान। बराबर। एक-सा।  
 यन्त्रा-कि० वि० [क्रा०] एकाएक। अचानक। एकबारगी। सहसा।  
 यन्त्रोन्न-सज्ञा पु० [अ०] विश्वास। एतबार।  
 यन्त्रोन्न-वि० [अ०] नि सन्देह। अवश्य।  
 यकृत-सज्ञा पु० १ घट में दाहिनी ओर की एक धैली, जिसकी किन्ना से भोजन पचना है। जिगर। २ वह रोग जिसमें यह अंग दूषित

हाकर बड़ जाता है। तापतिल्ली नामक रोग। वर्म-जिगर।

यक्ष-मज्ञा पुं० १ एक प्रकार के देवता, जो कुबेर की निधियों के रक्षक माने जाते हैं। २ कुबेर।

यक्षकंदम-सज्ञा पुं० एक प्रकार का अग-लेप। यक्षग्रह-सज्ञा पुं० पुराणों में वर्णित एक तरह के कल्पित ग्रह।

यक्षतरु-सज्ञा पुं० बड़ का पेड़।

यक्षता, यक्षत्व-सज्ञा पुं० यक्ष होने का भाव।

यक्षनायक-सज्ञा पुं० कुबेर।

यक्षप-सज्ञा पुं० कुबेर।

यक्षपति-सज्ञा पुं० कुबेर।

यक्षपुर-सज्ञा पुं० अलकापुरी।

यक्षरस-सज्ञा पुं० फूला की शराब।

यक्षराज-सज्ञा पुं० कुबेर।

यक्षलोक-सज्ञा पुं० यक्षा का निवास स्थान।

यक्षवित्त-सज्ञा पुं० बहुत धनी होने पर भी धन में से कुछ खर्च न करनेवाला व्यक्ति।

यक्षाधिप या यक्षाधिपति-सज्ञा पुं० कुबेर।

यक्षिणी-सज्ञा स्त्री० १ यक्ष की पत्नी। २ कुबेर की पत्नी।

सज्ञा पुं० यक्ष की उपासना करनेवाला।

यक्षी-सज्ञा स्त्री० दे० "यक्षिणी"।

सज्ञा पुं० यक्ष की उपासना करनेवाला।

यक्षेन्द्र-सज्ञा पुं० कुबेर।

यक्षेश्वर-सज्ञा पुं० कुबेर।

यक्षग्रह-सज्ञा पुं० क्षय रोग।

यक्षघ्नी-सज्ञा स्त्री० अमूर। दाख।

यक्ष्मा-सज्ञा पुं० क्षय रोग। तपदिक।

यखनी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बकरे के ठँहूने से पैर तक के हिस्से को उबालकर निकाला हुआ रसा।

यगण-सज्ञा पुं० छंदशास्त्र में एक गण, जो एक लघु और दो गुरु मात्राओं का होता है (ISS)। सक्षिप्त रूप 'य'।

यगताना-सज्ञा पुं० [फा०] आत्मीय। नातेदार। वि० अनुपम। अकेला।

यगूर-सज्ञा पुं० एक ऊँचा वृक्ष।

यच्छ\*—सज्ञा पुं० दे० "यक्ष"।

यज्ञत-सज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।

यज्ञत-सज्ञा पुं० ऋत्विक्। यज्ञ करनेवाला। पुरोहित।

यज्ञति-सज्ञा पुं० यज्ञ।

यज्ञन-सज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला। अग्नि-होत्री।

यजन-सज्ञा-भू० यज्ञ करना।

यजनकर्त्ता-सज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।

यजना\*—वि० सं० १ यज्ञ करना। २ पूजा करना।

यजमान-सज्ञा पुं० १ ब्राह्मणों को दान देनेवाला। २ यज्ञ करनेवाला। यष्टा।

यजमानी-सज्ञा स्त्री० १ यजमान का भाव या धर्म। २ यजमान के प्रति पुरोहित की वृत्ति।

यजी-सज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।

यजु-सज्ञा पुं० दे० "यजुर्वेद"।

यजुर्वेद-सज्ञा पुं० चार प्रसिद्ध वेदों में से एक वेद, जिसमें विशेषतः यज्ञ-कर्मों का विस्तृत विवरण है।

यजुर्वेदी-सज्ञा पुं० यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेद के अनुसार कार्य करनेवाला।

यजुष्वति-सज्ञा पुं० श्री विष्णु।

यजुष्यात्र-सज्ञा पुं० एक प्रकार का यज्ञपात्र।

यज्ञ-सज्ञा पुं० १ प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य जिसमें प्रायः हवन और पूजन होता था। होम। हवन। २ श्रीविष्णु।

यज्ञक-सज्ञा पुं० १ यज्ञ करनेवाला। २ यज्ञ।

यज्ञकर्त्ता-सज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला। यज्ञक्। यजमान।

यज्ञकर्म-सज्ञा पुं० यज्ञ का काम।

यज्ञकल्प-सज्ञा पुं० विष्णु।

यज्ञकारी-सज्ञा पुं० यज्ञ करनेवाला।

यज्ञकाल-सज्ञा पुं० १ यज्ञ के लिए निश्चित समय। २ पूर्णमासी।

यज्ञकीलक-सज्ञा पुं० यज्ञ के लिए बलि दिये जानेवाले पशु की बांधने का बूँटा।

यज्ञकुंड-सज्ञा पुं० हवन करने की वेदी या कुंड।

यज्ञकिया-सज्ञा स्त्री० यज्ञ का काम। कर्मकांड।

यज्ञघ्न-सज्ञा पुं० राक्षस।

यज्ञ-सज्ञा पु० यज्ञ का विधान जाननेवाला ।  
 यज्ञप्राता-सज्ञा पु० १. श्रीविष्णु । २. वह,  
 जो यज्ञ की रक्षा करता हो ।  
 यज्ञद्वह-सज्ञा पु० राक्षस ।  
 यज्ञदेव-सज्ञा पु० १. यज्ञ के देवता । २.  
 विष्णु । नारायण ।  
 यज्ञधर-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञनेमि-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।  
 यज्ञपति-सज्ञा पु० १. विष्णु । २. यज्ञ  
 करनेवाला । यजमान ।  
 यज्ञपत्नी-सज्ञा स्त्री० १. यज्ञ की स्त्री,  
 दक्षिणा । २. मापूर चतुर्वेदी ब्राह्मणों की वे  
 स्त्रियाँ, जो अपने पतिपौ के मना करने पर  
 भी श्रीकृष्ण के लिए भोजन लेकर गई थी  
 (भागवत में प्रयुक्त शब्द) ।  
 यज्ञपशु-सज्ञा पु० यज्ञ में बलिदान किया  
 जानेवाला पशु (बकरा, घोड़ा) ।  
 यज्ञपात्र-सज्ञा पु० यज्ञ में काम आनेवाले  
 काष्ठ के पात्रों का वस्तु ।  
 यज्ञपाल-सज्ञा पु० यज्ञ की रक्षा करनेवाला ।  
 यज्ञपुरष-सज्ञा पु० विष्णु ।  
 यज्ञफलद-सज्ञा पु० यज्ञ का फल देनेवाला ।  
 विष्णु ।  
 यज्ञवाह-सज्ञा पु० अग्नि ।  
 यज्ञभाग-सज्ञा पु० १. यज्ञ का वह अंश जो  
 देवताओं को मिलता है । २. वह देवता  
 जिन्हें यज्ञ का भाग मिलता है ।  
 यज्ञभाजन-सज्ञा पु० दे० "यज्ञपात्र" ।  
 यज्ञभूमि-सज्ञा स्त्री० यज्ञ का स्थान । वह  
 स्थान, जहाँ यज्ञ होता हो । यज्ञक्षेत्र ।  
 यज्ञभूषण-सज्ञा पु० कुस ।  
 यज्ञभोक्ता-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञमण्डप-सज्ञा पु० यज्ञ करने के लिए बनाया  
 हुआ मण्डप ।  
 यज्ञमंडल-सज्ञा पु० यज्ञ करने के लिए बनाया  
 हुआ स्थान ।  
 यज्ञमंदिर-सज्ञा पु० दे० "यज्ञशाला" ।  
 यज्ञमय-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञमुख-सज्ञा पु० यज्ञ का प्रारंभ ।  
 यज्ञयूप-सज्ञा पु० यज्ञ के बलिपशु बांधने  
 का खंभा ।

यज्ञरस-सज्ञा पु० सोमरस ।  
 यज्ञराज-सज्ञा पु० चन्द्रमा ।  
 यज्ञलिङ्ग-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण का एक नाम ।  
 यज्ञवराह-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञवल्ली-सज्ञा स्त्री० सोमलता ।  
 यज्ञवाह-सज्ञा पु० यज्ञ करनेवाला ।  
 यज्ञवाहन-सज्ञा पु० १. यज्ञ करनेवाला । २.  
 ब्राह्मण । ३. श्री विष्णु । ४. श्री शिव ।  
 यज्ञवीर्य-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।  
 यज्ञवेदी-सज्ञा स्त्री० यज्ञ के लिए साफ की  
 हुई भूमि ।  
 यज्ञशत्रु-सज्ञा पु० राक्षस ।  
 यज्ञशाला-सज्ञा स्त्री० यज्ञमंडप । यज्ञ करने  
 का स्थान ।  
 यज्ञशास्त्र-सज्ञा पु० यज्ञ तथा उनके कृत्यों  
 की करने का विधान ।  
 यज्ञशील-सज्ञा पु० यज्ञ करनेवाला ब्राह्मण ।  
 यज्ञसदन-सज्ञा पु० दे० "यज्ञशाला" ।  
 यज्ञसाधन-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञसूत्र-सज्ञा पु० यज्ञोपवीत । जनेऊ ।  
 यज्ञसेन-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञस्त्रम्भ-सज्ञा पु० वह स्त्रम्भ, जिसमें बलि  
 चढाया जानेवाला पशु बाँधा जाता था ।  
 यज्ञस्थान-सज्ञा पु० दे० "यज्ञस्त्रम्भ" ।  
 यज्ञहृदय-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञहीता-सज्ञा पु० यज्ञ में देवताओं को आवा-  
 हन करनेवाला ।  
 यज्ञाग-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञान्त-सज्ञा पु० यज्ञ का अन्त । यज्ञ समाप्त  
 होने के बाद का स्थान ।  
 यज्ञात्मा-सज्ञा पु० श्रीविष्णु ।  
 यज्ञारि-सज्ञा पु० श्रीशिव ।  
 यज्ञाशन-सज्ञा पु० देवता ।  
 यज्ञिक-सज्ञा पु० यज्ञ के प्रसादस्वरूप  
 मिला हुआ पुत्र ।  
 यज्ञीय-वि० यज्ञ-सम्बन्धी ।  
 यज्ञेश्वर-सज्ञा पु० विष्णु ।  
 यज्ञोपवीत-सज्ञा पु० १. जनेऊ । यज्ञसूत्र ।  
 २. हिंदुओं में द्विजों का एक संस्कार ।  
 प्रतबन्ध । उपनयन ।  
 यज्ञर-सज्ञा पु० एक पत्नी ।

यत्-अव्य० १. जितना। जहाँ तक। २. जो।  
जिसका।  
यत्-वि० १. नियमित। पावद। २. दासित।  
प्रतिबद्ध।  
यत्नीय-वि० यत्न करने योग्य।  
यत्प्रत-सज्ञा पु० समय से रहनेवाला।  
यत्ति-सज्ञा पु० १ इन्द्रियो पर विजय प्राप्त  
करनेवाला। २ सन्यासी। त्यागी। योगी। ३  
ब्रह्मचारी। ४. छप्प के ६६वें भेद का नाम।  
सज्ञा स्त्री० छंदों के चरणों में वह स्थान,  
जहाँ पड़ते समय, लय ठीक रखने के लिए,  
थोड़ा विश्राम हो। विरति। विराम।  
यत्तिधर्म-सज्ञा पु० सन्यास।  
यत्तिनी-सज्ञा स्त्री० १ सन्यासिनी। २  
विधवा।  
यत्तिभग-सज्ञा पु० छंद-रचना का वह दोष,  
जिसमें यत्ति अपने उचित स्थान पर न  
पड़कर कुछ आगे या पीछे पड़ती है।  
यत्तिभ्रष्ट-सज्ञा पु० वह छन्द, जिसमें यत्ति-  
भग का दोष हो।  
यत्ती-सज्ञा पु० दे० "यत्ति"। जितेन्द्रिय।  
सन्यासी।  
सज्ञा स्त्री० १. स्कावट। २ छंदों का विराम-  
स्थान। ३ मनोविकार। ४ विधवा।  
५ संधि।  
यत्तीम-सज्ञा पु० [ अ० ] जिसके माता-पिता  
न हों। अनाथ।  
यत्तीमल्लाना-सज्ञा पु० अनाथालय।  
यत्तिकित्-क्रि० वि० थोड़ा-सा। कुछ।  
यत्न-सज्ञा पु० १ प्रयत्न। उद्योग। कोशिश।  
२ उपाय। तदवीर। ३. रक्षा का प्रबन्ध।  
हिफाजत।  
यत्नवान्-वि० प्रयत्नशील। यत्न करनेवाला।  
यत्न-क्रि० वि० जिस जगह। जहाँ।  
यत्नत्रय-क्रि० वि० जहाँ-तहाँ। इधर-उधर।  
जगह-जगह। कई स्थानों में।  
यत्न-सज्ञा स्त्री० हँसली।  
यथा-अव्य० जिस प्रकार। जैसे। ज्या।  
यथाकामी-सज्ञा पु० स्वेच्छाचारी। मनमौजी।  
यथाकारी-सज्ञा पु० स्वेच्छाचारी। मन-  
मौजी।

यथाक्रम-क्रि० वि० क्रमशः। क्रमानुसार।  
तत्तोरवार।  
यथातथ्य-अव्य० ज्यों का त्यों। ठीक-ठीक।  
हू-व-हू। जैसा हो, वैसा ही।  
यथानियम-अव्य० नियमानुसार।  
यथानुक्रम-वि० दे० "यथाक्रम"।  
यथापूर्व-अव्य० जैसा पहले था, वैसा ही।  
ज्यों का त्यों। पूर्ववत्।  
यथाभाग-अव्य० जितना चाहिए उतना।  
यथामति-अव्य० युद्धि के अनुसार। समझ  
के मुताबिक।  
यथायोग्य-अव्य० जैसा चाहिए, वैसा। यथो-  
चित। उपयुक्त। मुनासिब।  
यथारथ-अव्य० दे० "यथार्थ"।  
यथारुचि-अव्य० रुचि के अनुसार। इच्छा-  
नुकूल।  
यथार्थ-अव्य०, वि० [ सज्ञा स्त्री० यथा-  
यंता ] १. ठीक। उचित। वाजिब। २.  
जैसा होना चाहिए, वैसा।  
यथार्थ-अव्य० यथार्थ में। सचमुच। वस्तुतः।  
यथार्थता-सज्ञा स्त्री० सत्यता। वास्तविकता।  
असलियत।  
यथार्थवाद-सज्ञा पु० यथार्थ या सत्य वर्णन का  
सिद्धान्त। एक पश्चिमी साहित्यिक सिद्धान्त,  
जिसके अनुसार किसी वस्तु का यथार्थ  
अर्थात् ज्यों का त्यों वर्णन किया जाता है।  
(अग्रे-रियलिज्म)।  
यथार्थवादी-सज्ञा पु० यथार्थ या सत्य कहने-  
वाला। साहित्य में यथार्थवाद के सिद्धान्त  
का अनुयायी। (अग्रे-रियलिस्ट)।  
यथालब्ध-वि० जितना मिल सके।  
यथालाभ-वि० जो कुछ प्राप्त हो, उसी पर  
निर्भर। जो मिले, उसी के अनुसार।  
यथावत्-अव्य० ज्यों का त्यों। जैसा था,  
वैसा ही। जैसा चाहिए, वैसा।, अच्छी  
तरह।  
यथावस्थित-अव्य०, वि० अचल। जैसा  
था वैसा।  
यथाविधि-अव्य० विधि या नियम और  
तरीके के अनुसार ठीक। विधिवत्। विधि-  
पूर्वक।

यथाविहित-अव्य० जैसा नियम हो, उसी के अनुसार ।

यथाशक्य-अव्य० जहाँ तक हो सके । भरसक ।

यथाशक्ति-अव्य० जहाँ तक हो सके । भरसक ।

शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार ।

यथासम्भव-अव्य० जहाँ तक हो सके । जितना हो सके । जितना होना सम्भव या मुमकिन हो ।

यथासमय-अव्य० समय के अनुसार । ठीक समय पर । जैसा समय हो वैसा ।

यथासाध्य-अव्य० दे० "यथाशक्ति" ।

यथास्थान-अव्य० उचित स्थान पर । ठीक ।

यथेच्छ-अव्य० इच्छा के अनुसार । मनमाना ।

यथेच्छाचार-सज्ञा पु० जो जी में आवे, वही करना । स्वेच्छाचार ।

यथेच्छाचारी-सज्ञा पु० मनमौजी ।

यथेच्छित-वि० इच्छानुसार । यथेच्छ ।

यथेष्ट-वि० जितने की इच्छा हो, उतना ।

जितना चाहिए, उतना । काफी । पूरा ।

यथेष्टाचरण-सज्ञा पु० स्वेच्छाचार ।

यथोक्त-अव्य० जैसा कहा गया हो ।

यथोक्तकारी-वि० शास्त्र के नियमों के अनुसार चलनेवाला । आज्ञाकारी ।

यथोचित-वि० जैसा चाहिए, वैसा । ठीक ।

यदपि\*-अव्य० दे० "यद्यपि" ।

यदा-अव्य० जिस समय । जब । जहाँ ।

यदा कदा-अव्य० कभी-कभी । जब-तब ।

यदि-अव्य० अगर । जो ।

यदु-सज्ञा पु० देवयानी के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा का बड़ा पुत्र जिसके बस में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था ।

यदुनवन-सज्ञा पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।

यदुनाय-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

यदुपति-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

यदुराई-सज्ञा पु० दे० "यदुराज" ।

यदुराज-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

यदुवश-सज्ञा पु० राजा यदु का पुत्र । यदु का ज्ञानदान ।

यदुवशमणि-सज्ञा पु० श्रीकृष्णचन्द्र ।

यदुवशी-सज्ञा पु० यदुकुल में उत्पन्न । यदुकुल के लोग । योद्धा ।

यदुवर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

यदुवीर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

यदुच्छया-वि० वि० अकस्मात् । अचानक ।

दैवतयोग स । मनमाने तौर पर ।

यदुच्छा-सज्ञा स्त्री० १ स्वेच्छाचार । २ आकस्मिक संयोग ।

यद्यपि-अव्य० ऐसा होने पर भी । यदि ऐसा

हूँ तो भी । अगरचे । गो कि ।

यम-सज्ञा पु० १ हिन्दुओं के अनुसार मृत्यु के

देवता धर्मराज । २ एक साथ उत्पन्न होने-

वाले वच्चे । यमज । ३ मन, इन्द्रिय आदि

को बंध में रखना । निग्रह । ४ चित्त की

धर्म में स्थिर रखनेवाले कर्मों का साधन । ५

दो की सत्या । ६ शक्ति । ७ कीर्ति ।

यमक-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का शब्दा-

लकार (अनुप्रास) जिसमें एक ही शब्द कई

बार आता है, पर हर बार उसके अर्थ भिन्न-

भिन्न होते हैं । २ एक वृत्त । ३ सेना का

एक व्यूह । ४ एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो

वालक । यमज । समय । इन्द्रिय-निग्रह ।

यमकातर-सज्ञा पु० यम का छुरा या खाँड़ा ।

एक प्रकार की तलवार ।

यमघट-सज्ञा पु० एक कुण्ड योग, जो कुछ

विशिष्ट दिनों में कुछ विशेष नक्षत्र पड़ने

पर होता है । दीपावली का दूसरा दिन ।

यमचक्र-सज्ञा पु० यमराज का रासन ।

यमज-सज्ञा पु० १ एक साथ जन्मनेवाले दो

बच्चा का जोड़ा । जोड़ी । जुड़वाँ । २

अश्विनीकुमार । ३ ऐसा घोड़ा, जिसका एक

आँठ और एक दुबल हो ।

यमजात-सज्ञा पु० जुड़वाँ । एक साथ जन्मने

वाले दो बच्चे । यमज ।

यमजित्-सज्ञा पु० यम या मृत्यु का जीतने-

वाला । मृत्युञ्जय ।

यमवड-सज्ञा पु० कालदंड । यमराज का दंड ।

यमदग्नि-सज्ञा पु० दे० "जमदग्नि" ।

यम-द्वितीया-मज्ञा स्त्री० नास्तिक शुकला

द्वितीया । भैयादूज ।

यमधार-मज्ञा पु० बोनो और धारवाली

तलवार या बटार । दुधारी तलवार ।

यमन-सज्ञा पु० १ प्रतिबन्ध करना । नियम से

बांधना। विराम देना। ठहराना। बंद करना। यम।

यमनकल्याण-सज्ञा पु० एक राग।

यमनाह\*-सज्ञा पु० धर्मराज।

यमनी-सज्ञा स्त्री० एक बहुमूल्य पत्थर।

यमपुर-सज्ञा पु० दे० "यमलोक"।

यमपुरी-सज्ञा स्त्री० यमलोक।

यमपुरुष-सज्ञा पु० १ यमराज। २ यम के दूत।

यमभगिनी-सज्ञा स्त्री० यमुना नदी।

यमपन-सज्ञा पु० श्रीशिव।

यम-यातना-सज्ञा स्त्री० १. नरक की पीड़ा।

२ मृत्यु के समय की पीड़ा।

यमरथ-सज्ञा पु० यम की सवारी। भैसा।

यमराज-सज्ञा पु० यमो के राजा धर्मराज, जो मरने पर प्राणी के कर्मों के अनुसार उसे फल देते हैं।

यमल-सज्ञा पु० १ युग्म। जोड़। २ यमज।

यमलार्जुन-सज्ञा पु० कुबेर के पुत्र नलकूबर और मणिश्रीव, जो नारद के शाप से पैदा हो गए थे। श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया था।

यमली-सज्ञा स्त्री० १ एक में मिली हुई दो चीजे। २ स्त्रियों का धाँधरा और चोली।

यमलोक-सज्ञा पु० हिन्दुओं के अनुसार वह लोक, जहाँ मरने पर आत्माएँ जाती हैं।

यमपुरी।

यमवाहन-सज्ञा पु० यम की सवारी। भैसा।

यमस्-सज्ञा पु० सूर्य।

सज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसके एक ही गर्भ से दो सन्तानें हों।

यमातका-सज्ञा पु० श्रीशिव।

यमानुजा-सज्ञा स्त्री० यमुना।

यमारि-सज्ञा पु० श्रीविष्णु।

यमालय-सज्ञा पु० यमपुरी।

यमो-सज्ञा पु० सयम करनेवाला। सगमी।

सज्ञा स्त्री० यम की बहन, जो यमुना नदी होकर बहती।

यमुना-सज्ञा स्त्री० १ उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध बड़ी नदी। २ दुर्गा। ३ यम की बहन यमी।

यमुनाभिद्-सज्ञा पु० बलराम।

यमनोत्तरो-सज्ञा पु० हिमालय की एक श्रेणी, जहाँ से यमुना नदी निकली है।

यमेस्वना-सज्ञा स्त्री० प्राचीन काल में घड़ी

(समय की अवधि) पूरा होने पर बजाया जानेवाला घड़ियाल।

यमेस्वर-सज्ञा पु० श्रीशिव।

ययाति-सज्ञा पु० राजा नहुष के पुत्र

एक प्राचीन राजा, जिनका विवाह शुक्रा-

चार्य की कन्या देवयानी के साथ हुआ था।

ययावर-सज्ञा पु० १ सानि ब्राह्मण। २

याचना। ३ सन्यासी। ४ अश्वमेध

का घोड़ा।

ययो-सज्ञा पु० १ श्रीशिव। २ घोड़ा।

३ मार्ग।

ययु-सज्ञा पु० घोड़ा। अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा।

यलनाथ-सज्ञा पु० राजा।

यला-सज्ञा स्त्री० पूछी।

यव-सज्ञा पु० १ जी (अन्न)। २ १२

सरसो या एक जी की तौल। ३ एक नाप,

जो एक इंच की एक तिहाई होती है। ४

सामुद्रिक के अनुसार जी के आकार की

एक प्रकार की रस्ता, जो डँगली में होती

है (शुभ)।

यवक-सज्ञा पु० दे० "यव"।

यवकलश-सज्ञा पु० इन्द्रजौ।

यवक्षार-सज्ञा पु० पौधों से निकला हुआ

क्षार।

यवज-सज्ञा पु० १ यवक्षार। २ गेहूँ का

पौधा। ३ अजवाइन।

यवदोष-सज्ञा पु० रत्नों में पड़ी हुई जी के

आकार की रस्ता।

यवद्वीप-सज्ञा पु० जावा द्वीप का प्राचीन

नाम, जो प्रशान्त महासागर में मलय

प्रायद्वीप के दक्षिण-पूर्व स्थित है।

यवन-सज्ञा पु० [स्त्री० यवनी] १ यूनान देश

का निवासी। यूनानी। २ अनाथ। ३.

मुसलमान। ४ कालयवन, नामक राजा।

यवतानी-वि० यवन देश-संबंधी।

यवनारि-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

यवनाल-सज्ञा स्त्री० ज्वार।

यवनिका-सज्ञा स्त्री० नाटक का परदा।

यवनी-सज्ञा स्त्री० यवन की स्त्री। यवन जाति की स्त्री।

यवबिन्दु-सज्ञा पु० ऐसा हीरा, जिसमें बिन्दु के साथ यव रेखा हो।

यवमद्य-सज्ञा पु० जो स बनाई गई शराब।

यवमती-सज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्त।

यवलक-सज्ञा पु० एक पक्षी।

यवस-सज्ञा पु० भूसा।

यवसुरा-सज्ञा स्त्री० जौ की शराब।

यवागू-सज्ञा पु० १ ऐसा जौ या चावल का भांड, जिसमें खमीर उठाया गया हो। २ भांड की काँजी।

यवान-वि० तेज।

यविष्ठ-सज्ञा पु० १ अग्नि। २ छोटा भाई। वि० कनिष्ठ।

यश-सज्ञा पु० कीर्ति। सुख्याति। नेकनानी। बढ़ाई। प्रशंसा।

यशो-यश गाना=१ प्रशंसा करना। २ एहसान मानना। यश मानना=कृतज्ञ होना।

यशव, यशम-सज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का हरा पत्थर, जिसकी तादली बनती है।

यशस्वान्-वि० [स्त्री० यशस्विनी] यश - प्राप्त। कीर्तिमान्। सुप्रसिद्ध। प्रतिष्ठान्।

यशस्वी-वि० [स्त्री० यशस्विनी] जिसका खूब यश हो। कीर्तिमान्।

यशो-वि० द० 'यशस्वी'।

यशोल-वि० दे० "यशस्वी"।

यशुमति-सज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

यशोद-सज्ञा पु० पारा।

यशोदा-सज्ञा स्त्री० नद की स्त्री, जिन्हान श्रीकृष्ण को पाला था।

यशोधरा-सज्ञा स्त्री० गौतम बुद्ध की पत्नी और राहुल की माता।

यशोमति, यशोमती-सज्ञा स्त्री० दे० "यशोदा"।

यशोमापय-सज्ञा पु० श्रीविष्णु।

यष्टि-सज्ञा स्त्री० १ ताठी। छड़ी। २ लकड़ी। ३ टहनी। शाखा। डाल। ४ जड़ी मधु। मुलेठी।

यष्टिका-सज्ञा स्त्री० १ छड़ी। २ लकड़ी। ३ गले में पहनन का हार।

यष्टिपत्र-सज्ञा पु० एक तरह की धूपघड़ी।

यष्टी-सज्ञा स्त्री० १ मुलेठी। २ गले में पहनने का एक प्रकार का का हार।

यह-सर्व० सभीप को वस्तु को सूचित करने-वाला एक सर्वनाम।

यहो-क्रि० वि० इस स्थान पर। इस जगह।

यहि-सर्व०, वि० 'यह' का एक रूप, जो उस कोई विभक्ति लगन के पहल प्राप्त होता है। 'ए' का विभक्ति-युक्त रूप। इसका।

यहो-अव्य० निश्चित रूप से यह। यह ही। यहूद-सज्ञा पु० एशिया की पश्चिमी सीमा पर स्थित एक देश, जहाँ हज़रत ईसा पैदा हुए थे। यरूशलम।

यहूदी-सज्ञा पु० [स्त्री० यहूदिनी] यहूद देश का निवासी। यहूद देश में रहनवाली एक जाति।

या-क्रि० वि० दे० "यहाँ"।

याचना-क्रि० स० याचना करना। माँगना।

याचा-सज्ञा स्त्री० विनयपूर्वक माँगना।

यात्रिक-वि० यत्र सम्बन्धी। यत्र या यत्रा का। सज्ञा पु० यत्रो को बनाने, चलाने या सुधारने वाला। यत्र विद्या का ज्ञाता। (अये-मैके-निक)

यत्रोकरण-सज्ञा पु० १ यत्रा आदि से युक्त करना। २ कल कारखाने आदि स्थापित करना।

या-अव्य० [का०] अथवा। वा। विकल्प-सूचक अव्यय।

सर्व, वि० 'यह' का यह रूप, जो उस प्रज-भाषा में कारक बिह्व लगने के पहले प्राप्त होता है।

सज्ञा स्त्री० १ गति। चाल। २ गाड़ी।

३ राक। ४ ध्यान। ५ प्राप्ति।

याक-सज्ञा पु० पर्वतप्रदेश का एक पशु, जिसका उपयोग बैल की तरह किया जाता है।

याकूत-सज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर। तात।

याच-सज्ञा पु० यज्ञ।

याचक-सज्ञा पु० याचना करनेवाला। माँग-वाला। भिक्षुक। भिक्षुमगा।

याचना-क्रि० सं० [वि० याच्य, याचक]  
पाने के लिए विनती करना। माँगना।

सज्ञा स्त्री० माँगने की क्रिया।

याचित-वि० माँगा हुआ।

याजक-सज्ञा पु० १ यज्ञ करनेवाला।

पुरोहित। ऋत्विक्। याज्ञिक। २ मस्त  
हाथी। ३ राजा का हाथी।

याजन-सज्ञा पु० यज्ञ की क्रिया।

याजी-सज्ञा पु० यज्ञ करनेवाला, याजक।

याजुष्य-वि० यजुर्वेद सम्बन्धी।

याज्य-वि० १ यज्ञ कराने लायक। २ यज्ञ  
में चढ़ाया हुआ। ३ यज्ञ कराने से प्राप्त।

याज्ञ-वि० यज्ञ सम्बन्धी।

याज्ञवल्कि-सज्ञा पु० कुवेर।

याज्ञवल्क्य-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध ऋषि,  
जो वंशपायन के शिष्य थे। वाजसनेय। २  
एक ऋषि। योगीश्वर याज्ञवल्क्य। ३ योगी-  
श्वर याज्ञवल्क्य के वंशज एक स्मृतिकार।

याज्ञिक-सज्ञा पु० १ यज्ञ करने या कराने  
वाला। २ गुजराती ब्राह्मणों की एक  
शाखा।

यातन-सज्ञा पु० बदला। पारितोषिक।

यातना-सज्ञा स्त्री० १ तकलीफ़। अधिक  
कष्ट। पीडा। दुख। २ दण्ड। ३ वह  
पीडा जो यमलोक में भोगनी पड़ती है।

यातव्य-वि० समीप होने के कारण चढ़ाई  
करने योग्य (शत्रु)।

याता-सज्ञा स्त्री० पति के भाई की स्त्री।  
जेठानी या देवरानी।

सज्ञा पु० १ जानेवाला। २ सारथी। ३  
हत्या करनेवाला।

यातायात-सज्ञा पु० आना-जाना। आमद-  
रफ्त। एक स्थान से दूसरे स्थान को व्यक्ति  
तथा माल आदि के आन-जाने की क्रिया या  
उनके आन-जान का साधन। (अग्र०-  
ट्रांसपोर्ट या कम्युनिकेशन)।

यातायात विभाग-सज्ञा पु० यातायात के  
साधन का प्रबन्ध और उन पर नियन्त्रण  
रखनेवाला सरकारी महकमा।

यात्रु-सज्ञा पु० १ आनवाला। २ रास्त्रा  
चलनवाला। पथिक। ३ काल। ४ राक्षस।

५ वायु। ६ कण्ट। यातना। ७ हिंसा।  
८ अस्त्र।

यातुधान-सज्ञा पु० राक्षस।

यात्रा-सज्ञा स्त्री० १ एक स्थान से दूसरे  
स्थान पर जान की क्रिया। सफर। २  
प्रयाण। प्रस्थान। ३ दर्शन के लिए तीर्थ-  
स्थानों को जाना। तीर्यटन।

यात्रावाल-सज्ञा पु० वह पंडा, जो यात्रियों  
को देव-दर्शन कराता हो।

यात्री-सज्ञा पु० १ यात्रा करनेवाला। मुसा-  
फिर। २ तीर्थ आदि स्थानों का भ्रमण  
करनेवाला।

यायातव्य-सज्ञा पु० यायातव्य होने का भाव।  
ज्यो का ल्यो होना।

याद-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ स्मरणशक्ति।  
स्मृति। २ स्मरण करने की क्रिया।

यादगार-सज्ञा स्त्री० [फा०] याद दिलानेवाली  
या याद रखन की निशानी। स्मृति चिह्न।  
स्मारक।

याददास्त-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ स्मरण-  
शक्ति। स्मृति। २ स्मरण रखने के लिए  
लिली हुई कोई बात।

यादव-सज्ञा पु० [स्त्री० यादवी] १ यदु के  
वंशज। २ श्रीकृष्ण।

वि० यदु सम्बन्धी।

यादूश-वि० जिस तरह का। जैसा।

यान-सज्ञा पु० १ गाड़ी, रथ आदि सवारी।  
वाहन। २ विमान। हवाई जहाज। ३ शत्रु  
पर चढ़ाई। ४ अभियान। गति।

यानभत्ता-सज्ञा पु० कच्ची आन-जाने का  
सवारी के खर्च के लिए दिया जानवाला  
भत्ता। (अग्र०-कनवेएन्स एलाउन्स)

यानी, याने-अव्य० अर्थात्। मतलब यह कि।

यापन-सज्ञा पु० [वि० यापित, याप्य]  
१ चलाना। २ व्यतीत करना। बिताना।  
समय काटना।

यापित-वि० व्यतीत किया हुआ। बितया  
हुआ (समय)।

यात्रु-सज्ञा पु० [फा०] छाटा पीडा। यद्दू।

यात्रूक-सज्ञा पु० लाल रंग। महावर।

याम-सज्ञा पु० १ तीन घंटे का समय।

पहर। २ एक प्रकार के देवगण। ३ बाल। समय।

सज्ञा स्त्री० दे० "यामि"। रात। यामल-सज्ञा पु० १ यमज सतान। जोड़ा।

२ एक प्रकार का तन्त्र-ग्रन्थ।

यामा-सज्ञा स्त्री० दे० "यामि"। रात। याम वा स्त्रीलिंग।

यामि-सज्ञा स्त्री० १ रात। २ कुलबधू। ३ वहन। ४ कन्या।

यामिका-सज्ञा स्त्री० रात।

यामिन, यामिनि-सज्ञा स्त्री० दे० "यामिनी"।

यामिनी-सज्ञा स्त्री० रात।

याम्य-वि० १ यम-संबन्धी। यम वा। २ दक्षिण वा।

याम्योत्तर दिग्ग-सज्ञा पु० तबारा। दिग्ग (भूगोल, समुद्र)।

याम्योत्तर रेखा-सज्ञा स्त्री० वह कल्पित रेखा, जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर मानी गई है।

यायावर-सज्ञा पु० १ एक स्थान पर रुककर न रहनेवाला। सन्ध्यासी। २ ब्राह्मण। ३ अश्वमेध का घोड़ा।

यार-सज्ञा पु० [फा०] १ मित्र। दोस्त। २ उपपत्ति। जार।

याराना-सज्ञा पु० [फा०] मित्रता। मैत्री। दोस्ती।

वि० मित्र का सा। मित्रता का।

यारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. मित्रता। २ स्त्री और पुरुष का अनुचित प्रेम या संबंध।

याल-सज्ञा पु० दे० 'अयाल'। पहाड़ी पशुधा की गरदन पर के बाल।

यावज्जीवन-अव्य० जीवन पर्यन्त। जब तक जीवित रहे। जीवन भर।

यावत्-वि० १ जितना। २ सत्र। कुल।

क्रि० वि० जब तक। जिस समय तक। यावन्ती-वि० यवन-संबन्धी।

यातु\*-सर्व० दे० "जानु"।

यात्क-सज्ञा पु० वैदिक निरुक्त के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

याहि\*-सर्व० इसकी। इसे।

युजान-सज्ञा पु० अभ्यास करनेवाला योगी। युक्त-वि० १ जुड़ा हुआ। मिला हुआ। सम्मिलित। २ नियुक्त। मुकर्रर। ३ समुक्त।

साय। ४ उचित। ठीक। मुनासिब।

युक्ता-सज्ञा स्त्री० दो गण और एक गण का एक युत।

युविन-सज्ञा स्त्री० १ उपाय। ढग। तरकीब। २ कीदाल। चातुरी। ३ चाल। रीति। प्रथा।

४ नेल। ५ न्याय। ६ नीति। ७ तर्क। दलील। ८ योग। मिलन। ९ एक अलवार,

जिसमें अपने मन को छिपाने के लिए दूसरे को किसी चिन्ता या युक्ति द्वारा बचित करने का वर्णन होता है। केसव के अनुसार स्वभावोक्ति।

युक्तियुक्त-वि० तर्क के अनुकूल। युक्ति-सगत। ठीक। वाजिव।

युग-सज्ञा पु० १ काल। समय। २ जोड़। युग्म। ३ बारह वर्ष का काल। ४ पुराणानुसार काल का एक दीर्घ परिमाण। ये

नव्या में चार भागों में गण्य हैं-सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग। ५ जुड़ा। जुड़ावा।

पक्ष के खेल की गोल गोठियाँ [६ पाँच के खेल की वे दो गोठियाँ, जो एक-दूसरे में साध-साध एक-आ-वैठती हैं।

मुहा०—युग युग=बहुत दिनों तक। युग-यम=समय के अनुसार चाल या व्यवहार।

युगति\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "युक्ति"। युगपत्-अव्य० साथ-साथ।

युगम\*-सज्ञा पु० दे० "युग्म"। युगल-सज्ञा पु० जोड़ा। युग्म।

युगान्त-सज्ञा पु० १ युग का अन्तिम समय। २ युग का अन्त यानी प्रलय।

युगान्तक-सज्ञा पु० प्रलयवाला। युगान्तर-सज्ञा पु० १ युगपरिवर्तन। २ दो

युग के बीच का संधिकाल। ३ दूसरा युग। दूसरा समय या जमाना।

मुहा०—युगांतर उपस्थित करना=विपरीत पुरानी प्रथा को हटाकर उसके स्थान पर नई प्रथा चलायाना।

युगादि-सज्ञा पु० मुष्टि का आरम्भ। वि० प्राचीन। युग के आरम्भ का।

युगाद्या-सज्ञा स्त्री० वह.तिथि, जिससे किसी युग का आरम्भ हुआ हो।  
 युग्म-सज्ञा पु० १ जोड़ा। २ युगल। द्वंद्व।  
 ३. मिथुन राशि।  
 युग्मक-सज्ञा पु० [ भा० सज्ञा स्त्री० युग्मता ] युग्म। जोड़ा।  
 युग्मज-सज्ञा पु० जुड़वाँ। यमज। एक गर्भ से उत्पन्न हुए दो बच्चे।  
 युत-वि० युक्त। सहित। मिला हुआ। मिलित।  
 युति-सज्ञा स्त्री० योग। मिलन। मिलाप।  
 युद्ध-सज्ञा पु० विपक्षी सैनिकों की लड़ाई।  
 सग्राम। रण। लड़ाई।  
 युद्धपोत-सज्ञा पु० लड़ाई का जहाज, जिस पर तोपे आदि लगी रहती हैं।  
 युद्धमंत्री-सज्ञा पु० राज्य का वह मंत्री जिसके अधीन युद्ध-विभाग हो।  
 युद्धमान-वि० युद्ध करनेवाला।  
 युधान-सज्ञा पु० १ क्षत्रिय। २ शत्रु। दुश्मन।  
 युधिष्ठिर-सज्ञा पु० पाँचों पांडवों में सबसे बड़े और बहुत धर्मपरायण।  
 युष्म-सज्ञा पु० १ युद्ध। सग्राम। लड़ाई।  
 २. धनुष। ३ अस्त्रशस्त्र। ४ बाण। ५ योद्धा।  
 युयु-सज्ञा पु० घोड़ा।  
 युयुस्ता-सज्ञा स्त्री० युद्ध करने की इच्छा।  
 शत्रुता। विरोध।  
 युयुस्तु-वि० १ लड़ने की इच्छा रखनेवाला।  
 २. जो लड़ना चाहता हो।  
 युयुवान-सज्ञा पु० १ इन्द्र। २ क्षत्रिय। ३ योद्धा।  
 यूरोप, योरुप, योरोप-सज्ञा पु० एक महाद्वीप, जो एशिया के पश्चिम में है।  
 यूरोपीय, योरुपीय, योरोपीय-वि० यूरोप का। यूरोप सम्बन्धी।  
 सज्ञा पु० यूरोप का निवासी।  
 युवक-सज्ञा पु० जवान। सोलह वर्ष से पंतीस वर्ष तक की अवस्था का मनुष्य। युवा।  
 युवति, युवती-सज्ञा स्त्री० जवान स्त्री। तरुणी।  
 युवन-सज्ञा पु० तरुण।  
 युवन्म-वि० जवान।

युवराई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "युवराजी"।  
 युवराज-सज्ञा पु० [ स्त्री० युवराज्ञी ] राजा का सबसे बड़ा लड़का जिसे भविष्य में राज्य मिलनेवाला हो।  
 युवराजी-सज्ञा स्त्री० १ युवराज का पद।  
 २ युवराज का राज्य।  
 युवराज्ञी-सज्ञा स्त्री० युवराज की पत्नी। युवराणी।  
 युवरानी-सज्ञा स्त्री० युवराज की पत्नी।  
 युवा-वि० [ स्त्री० युवती ] जवान। युवक।  
 यू-अव्य० दे० "यो"।  
 यू-सज्ञा स्त्री० पकी हुई दाल का पानी। जूस।  
 यूत-सज्ञा पु० मिलावट। मिश्रण। मेल।  
 यूति-सज्ञा स्त्री० मिश्रण।  
 यूथ-सज्ञा पु० १ समूह। झुण्ड। गिरोह। दल। २ सेना। फौज।  
 यूथप, यूथपति-सज्ञा पु० १ सेनापति। २ समुदाय का मालिक।  
 यूथिका-सज्ञा स्त्री० जूही का फूल।  
 यूतान-सज्ञा पु० यूरोप का एक देश (ग्रीस), जो प्राचीन काल में अपनी सभ्यता, साहित्य आदि के लिए प्रसिद्ध था।  
 यूतानी-वि० यूतान देश-सम्बन्धी। यूतान का।  
 सज्ञा स्त्री० १ यूतान देश की भाषा। २. यूतान देश का निवासी। ३. यूतान देश की चिकित्सा प्रणाली। हकीमी।  
 यूनिवर्सिटी-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] विश्व-विद्यालय।  
 यूय-सज्ञा पु० १ यज्ञ में वह खभा, जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है। २. विजय-स्तम्भ।  
 यूथ-सज्ञा पु० जूआ। शूतकर्म।  
 यह\*-सज्ञा पु० दे० "यूथ"।  
 ये-सर्व० 'यह' सर्वनाम का बहुवचन। यह सब।  
 येई\*-सर्व० यही।  
 येऊ\*-सर्व० यह भी।  
 येतो\*-वि० दे० "इतना"।  
 येन केन प्रकारेण-कि० वि० जैसे-तैसे। जिन तरह से भी हो। किसी तरह से।

येह\*†-अव्य० यह भी।

यो०-अव्य० ऐसे। इस तरह पर। इस भाँति।

योही-अव्य० १ इसी प्रकार से। ऐसे ही।

२ बिना काम। व्यर्थ ही। बिना विशेष प्रयोजन या उद्देश्य के।

योग-सज्ञा पु० १ तप और ध्यान। वैराग्य।

मुक्ति या मोक्ष का उपाय। २ चित्त की

वृत्तियों की चञ्चल होने से रोकने का सिद्धान्त।

(दर्शन) ३ छ दर्शनों में से एक जिसमें चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन होने का

विधान है। चित्तवृत्ति निरोध। ४ सयोग।

५ सम्बन्ध। मेल। ६ उपाय। तरकीब।

७ ध्यान। ८ सगति। ९ प्रेम। १० छल।

धोखा। दगाबाजी। ११ प्रयोग। १२

औषध। दवा। १३ धन। दोलत। १४

लाभ। फायदा। १५ दुःख अवसर। मौका।

१६ नियम। १७ कायदा। साम, दाम, दंड

और भेद ये चार उपाय। १८ धन और

संपत्ति प्राप्त करना तथा बढ़ाना। १९

गणित से हो या अधिक राशियों का जोड़।

२० एक प्रकार का छद्म। २१ सुभीता।

न्युयोग। २२ कलित ज्योतिष में कुछ

विशिष्ट काल या अवसर।

योगक्षेम-सज्ञा पु० १ कुशल-भगल। खरिपत।

२ जो अपने पास न हो उसे प्राप्त करने का

उद्योग और मिले हुए पदार्थ की रक्षा करना।

३ जीवन निर्वाह। गुजारा। ४ दूसरे के धन

की रक्षा। ५ मुनाफा। लाभ। ६ राष्ट्र की

सुव्यवस्था। मुल्क का अच्छा इन्तजाम।

योगतत्त्व-सज्ञा पु० एक उपनिषद्।

योगत्व-सज्ञा पु० योग का भाव।

योगदर्शन-सज्ञा पु० १ छ दर्शनों में एक जिसमें

चित्त को एकाग्र करके ईश्वर में लीन करने

का विधान है। २ पतञ्जलि द्वारा रचित

चित्तवृत्तियों को चञ्चल होने से रोकने के

सिद्धान्त का ग्रन्थ। दे० "योगशास्त्र"।

योग-दान-सज्ञा पु० सहयोग देना। किसी

काम में साथ देना या सहायक होना।

योगनिद्रा-सज्ञा स्त्री० १ योग की समाधि।

२ भुग के अंत में होनेवाली विष्णु की निद्रा,

जो दुर्गा मानी जाती है।

योगफल-सज्ञा पु० दो या अधिक सख्याओं

को जोड़ने से प्राप्त सख्या।

योगचल-सज्ञा पु० वह शक्ति जो, योग की

साधना से प्राप्त हो। तपोबल।

योगमाया-सज्ञा स्त्री० १ श्रीविष्णु की माया।

भगवती। २ वह कन्या, जो यशोदा के

गर्भ से उत्पन्न हुई थी और जिस कस ने मार

डाला था।

योगरूढ़ि-सज्ञा स्त्री० दो शब्दों के योग से

बना हुआ वह शब्द, जो अपना सामान्य अर्थ

छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे।

योगवाशिष्ठ-सज्ञा पु० वेदांत शास्त्र का

वाशिष्ठ-कृत एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

योगशास्त्र-सज्ञा पु० पतञ्जलि ऋषिकृत योग-

साधन पर एक दर्शन, जिसमें चित्तवृत्ति को

रोकने के उपाय बतलाए गए हैं।

योगसूत्र-सज्ञा पु० महर्षि पतञ्जलि के द्वारा

हुए योग-सूत्रों का संग्रह।

योगजान-सज्ञा पु० दे० 'सिद्धान्त'।

योगा मा-सज्ञा पु० योगी।

योगाभ्यास-सज्ञा पु० योगशास्त्र के अनुसार

योग के आठ अंगों का अनुष्ठान।

योगाभ्यासी-सज्ञा पु० योगी।

योगासन-सज्ञा पु० योग-साधन के आसन,

अर्थात् बैठने के ढंग।

योगिनी-सज्ञा स्त्री० १ रण-पिशाची।

२ योगाभ्यासिनी। तपस्विनी। ३ आठ-

विशिष्ट देवियाँ-शैलपुत्री, चन्द्रपदा, स्कन्द-

माता, कालरात्रि, वडिका, कृष्णाडी, कात्या-

यनी और महागोरी। ४ देवी। योगमाया।

योगिराज, योगेश्वर-सज्ञा पु० बहुत बड़ा योगी।

योगी-सज्ञा पु० १ आत्मज्ञानी, जिसने योगा-

भ्यास करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो। २

महादेव। शिव।

योगेश, योगेश्वर-सज्ञा पु० १ बहुत बड़ा

योगेश्वरी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा।

योगेश्वर-सज्ञा पु० बहुत बड़ा योगी।

योगी। २ याज्ञवल्क्य।

योगेश-सज्ञा पु० बहुत बड़ा योगी।

योगेश्वर-सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण। २ शिव।

३ बहुत बड़ा योगी। सिद्ध।

योग्य-वि० १. काविल। लायक। बुद्धिमान और कुशल। २. अधिकारी। ३. श्रेष्ठ। अच्छा। युक्त। उचित। मुनासिब। ठीक। ४. उपाय करनेवाला। ५. आदरणीय। ६. माननीय।

योग्यता-सज्ञा स्त्री० १. क्षमता। किसी काम को करने या समझने की शक्ति या गुण। सामर्थ्य। २. बुद्धिमानी। लियाकत। ३. अनुकूलता। गुण। ४. उपयुक्तता।

योजक-वि० मिलाने या जोड़नेवाला। योजना बनानेवाला या योजना करनेवाला।

योजन-सज्ञा पु० १. दूरी की एक नाप, जो दो कोस, चार कोस या आठ कोस की होती है। २. योग। संयोग। ३. मिलाना। ४. किसी काम में लगाना। ५. धन-सम्पत्ति काम में ले आना या अपना लेना।

योजनगधा-सज्ञा स्त्री० व्यास की माता और शातनु की पत्नी, सत्यवती।

योजना-सज्ञा स्त्री० [ वि० योजनीय, योजित ] १. भावी कार्यों की व्यवस्था। आयोजन। २. नियुक्त करने की क्रिया। नियुक्ति। ३. प्रयोग। व्यवहार। ४. जोड़। मिलान। मेल। ५. बनावट। रचना।

योजनीय-वि० १. मिलाने योग्य। वह वस्तु जिसे मिलाना हो। २. योजना करने योग्य। जिसकी योजना बनाई जाय।

योजित-वि० १. जिसकी योजना की गई हो। २. नियमबद्ध। नियमित। ३. रचित।

योग्य-वि० १. दे० "योजनीय"। २. व्यवहार करने योग्य। ३. जोड़ने या मिलाने योग्य।

योद्धव्य-वि० जिससे युद्ध करना हो।

योद्धा-सज्ञा पु० युद्ध करनेवाला। शूरवीर। सैनिक।

योनि-सज्ञा स्त्री० १. उत्पत्ति-स्थान। उद्गम। त्रिषो की जननेन्द्रिय। भ्रा। २. प्राणियों के विभाग या वर्ग, जिसकी संख्या ८४ लाख कही गई है। ३. देह। शरीर। ४. आकर। सानि।

योनिज-सज्ञा पु० योनि से उत्पन्न। वह जीव, जिसकी उत्पत्ति योनि से हुई हो।

योम-सज्ञा पु० [ फा० ] १. दिन। २. रोज। ३. तिथि। तारीख।

योरोप-सज्ञा पु० दे० "युरोप"।

योषणा-सज्ञा स्त्री० दुराचारिणी। बदचलन स्त्री।

योषा-सज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।

योषिता-सज्ञा स्त्री० नारी। औरत।

यो\*†-अर्थ० दे० "यो"।

यो\*†-सर्व० यह।

यौक्तिक-वि० युक्ति-सम्बन्धी। युक्ति के अनुकूल। ठीक।

यौगिक-सज्ञा पु० १. मिला हुआ। २. प्रकृति और प्रत्यय से बना हुआ शब्द। ३. दो शब्दों से मिलाकर बना हुआ शब्द। ४. २८ मात्राओं के छंदों की सज्ञा।

यौजनिक-वि० एक योजन तक जानेवाला।

यौतुक-सज्ञा पु० १. वह धन जो विवाह के समय वर और कन्या को मिलता हो। दायजा। दहेज। २. विवाह के अवसर पर कन्यापक्ष की ओर से वरपक्ष को दिया जानेवाला धन। ३. अन्नप्राशन आदि संस्कारों के समय जिसका संस्कार हो, उसे मिलनेवाला धन।

यौधिक-वि० १. यूय सम्बन्धी २. शुद्ध बांधकर रहनेवाला।

योध-सज्ञा पु० योद्धा।

योद्धिक-वि० युद्ध-सम्बन्धी। युद्ध का।

योध्य-सज्ञा पु० १. योद्धा। २. एक प्राचीन देश का नाम। प्राचीन काल की एक योद्धा जाति।

यौवन-सज्ञा पु० १. जवानी। बाल्यावस्था के उपरान्त और बृद्धावस्था के बीच की अवस्था। २. युवा होने का भाव। ३. दे० "जौवन"।

यौवनकटक-सज्ञा पु० मुंहासा।

यौवनलक्षण-सज्ञा पु० १. जवानी आने या फूटने का चिह्न। २. लावण्य। ३. स्त्रिया की छाती।

यौवनापिण्ड-वि० युवती।

यौवनिक-वि० यौवन-सम्बन्धी।

यौवराजिक-वि० युवराज-सम्बन्धी।

श्रीवराज्य-सज्ञा पु० १ राजा का ज्येष्ठ पुत्र । २. युवराज होने का भाव । ३. युवराज का पद ।

श्रीवराज्याभिषेक-सज्ञा पु० युवराज बनाए जाने के समय का अभिषेक (पद-ग्रहण का उत्सव)

र

र-हिंदी वर्णमाला का सत्ताइसवाँ व्यंजन, जिसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्द्धा के साथ कुछ स्पश कराने से होता है। सज्ञा पु० १ पावक। अग्नि। २ कामाग्नि। ३ सितार, का एक बोल।

रक-वि० १ गरीब। कगाल। दरिद्र। धनहीन। २ कृपण। कजूस। ३ सुस्त। काहिल।

रग-सज्ञा पु० १ वह वस्तु जिससे कोई वस्तु रंगी जाय। २ वर्ण। जैसे-लाल, काला।

३ बदन और चेहरे की रंगत। ४ शोभा, रौनक। छवि। सौन्दर्य। ५ प्रभाव। असर।

६ धाक। ७ जवानी। युवावस्था। ८ मन की उमंग। आनन्द। मीज। ९ क्रीडा-क्रीतुक।

१० नृत्य-गीत आदि। नाचना-गाना। १० नृत्य या अभिनय का स्थान। ११ युद्ध।

लड़ाई। १२ युद्ध-स्थान। रणक्षेत्र। १३ दशा।

हालत। अद्भुत व्यापार। काण्ड। १४ दृश्य।

१५ कृपा। दया। १६ अनुराग। १७ दण।

बाल। तर्ज। १८ भक्ति। प्रकार। तरह।

१९ ताश के पत्तों या चोपड़ की गोटियों

आदि के खेल के विभाग में एक।

मुहा०—(चेहरे का) रग उड़ना या उतरना=

भय या लज्जा से चेहरा पीका पड़ना।

रग काटना=१. बाल चलना। २ दण

अस्तिधार करना। रग चूना या टपटना=

युवावस्था का पूर्ण विकास होना। रोगन

उमड़ना। रग जमना=१ प्रभाव या असर

पड़ना। २ खूब मजा होना। आनन्द का

पूर्णता पर आना। रग जमाना या बाँधना

= प्रभाव डालना। रग लाना=प्रभाव

या गुण दिलाना। रग निखरना=चेहरा

साफ और चमकदार होना। रग बदलना=

रूढ़ होना। नाराज होना।

शौ०—रगरतियाँ=आमोद प्रमोद। मीज।

रग रलना=आमोद-प्रमोद करना। रग

में भग पड़ना=आनन्द में विघ्न पड़ना।

रग मचाना=१ रग में खूब युद्ध करना।

२ धूम मचाना। रग रवाना=

उत्सव करना। रग मारना=बाजी जीतना।

विजय पाना। रग-दण=१ दशा। हालत।

२ चाल ढाल। तीर-तरीका। ३ व्यपहार।

बरताना। ४ लक्षण।

रगसेव-सज्ञा पु० दे० "रगभूमि"।

रगचर-सज्ञा पु० नाटक में अभिनय करने

वाला। नट।

रगत-सज्ञा स्त्री० १ हालत। दशा। अवस्था

२ रग का भाव। ३ मजा। आनन्द।

रगतरा-सज्ञा पु० एक प्रकार की बड़ी और

मीठी नाखी। सतरा।

रगन-सज्ञा पु० एक प्रकार का वृक्ष।

रंगना-क्रि० स० १ रग में डुबाकर किसी चीज

को रंगीन करना। रग चढ़ाना। २ किसी

को अपने प्रेम में फँसाना। ३ अपने अनुपल

करना। अपना-सा बनाना।

क्रि० अ० किसी पर आसक्त होना।

रगबाती-सज्ञा स्त्री० शरीर पर लगाने के

लिए सुगन्धित या खुशबूदार द्रव्य की बत्ती।

रंगबिरंग-वि० १ अनेक रंगों का। २ तरह-

तरह का।

रगबिरंग-वि० १ अनेक रंग का। २

तरह-तरह का।

रगभवन-सज्ञा पु० रगमहल। आमोद प्रमोद

का स्थान। मोग-बिलास करने का स्थान।

रगभूमि-सज्ञा स्त्री० १ जलसा या उत्सव का

स्थान। २ खेलकूद या तमाशे का स्थान।

३ नाटक करने का स्थान। नाट्यशाला।

४ लड़ाई का मैदान। युद्धक्षेत्र। रणभूमि।

रगमहल-सज्ञा पु० वह महल या बड़ा भवन,

जिसमें भोगविलास या आमोद-प्रमोद किया जाय।

रंगमार्ग-सज्ञा पु० तास का एक खेल, जिसमें रंग ने पत्तों को मारते हैं।

रंग-रली-सज्ञा स्त्री० ऐश-आराम। आनन्द-शोड़ा। आमोद-प्रमोद। मोज।

रंगरस-सज्ञा पु० दे० "रंगरली"।

रंगरसिया-सज्ञा पु० भोग-विलास या आमोद-प्रमोद में लिप्त रहनेवाला। विलासी व्यक्ति।

रंगराता-वि० १. अनुराग या प्रेम में डूबा हुआ। २. भोग-विलास या ऐश-आराम में मस्त रहनेवाला।

रंगरूट-सज्ञा पु० [अंग्रे० रिक्रूट] १. फौज और पुलिस आदि में नया भर्ती होनेवाला व्यक्ति।

२. किसी काम को पहले पहल सोखने-वाला। नोसिखिया।

रंगरेज-सज्ञा पु० [स्त्री० रंगरेजिन] कपड़े रंगने का काम या पेशा करनेवाला। रंगराज।

रंगरेली-सज्ञा स्त्री० दे० "रंगरली"।

रंगवाई-सज्ञा स्त्री० १. रंगने का काम या इसकी मजदूरी। २. रंगाई।

रंगवाना-क्रि० स० रंगने का काम दूसरे से कराना।

रंगशाला-सज्ञा स्त्री० नाट्यशाला। नाटक करने का स्थान। रंगभूमि।

रंगसाज-सज्ञा पु० रंग चढ़ाने या बनाने-वाला।

रंगाई-सज्ञा स्त्री० रंगने का कार्य या मजदूरी।

रंगाना-क्रि० स० रंगने का काम दूसरे से कराना। दे० "रंगवाना"।

रंगालय-सज्ञा पु० दे० "रंगशाला"।

रंगबट-सज्ञा स्त्री० रंगने का भाव या रंगने की क्रिया।

रंगबतर-सज्ञा पु० अभिनय करनेवाला।

रंगिया-सज्ञा स्त्री० रंगरेज। कपड़ा रंगने का काम करनेवाला।

रंगी-वि० दे० "रंगीला"। मोजी। विनोदी।

आनन्द में मस्त रहनेवाला।

रंगीन-वि० [फा०] [भाव० सज्ञा रंगीनी] १.

रंगा हुआ। रंगदार। २. चमकीला। ३. मजेदार। ४. रंगीला। मोजी। ५. विलासी।

रंगीला-वि० [स्त्री० रंगीली] १. रमिक। मोजी। २. नुस्तर। ३. प्रेमी।

रंगपा-सज्ञा पु० रंगनेवाला।

रंच, रंचक\*-वि० थोड़ा। अल्प। जग-ना। किवित्।

रंज-सज्ञा पु० [फा०] [वि० रंजीदा] दुःख। खेद। शोक।

रंजक-वि० सज्ञा पु० १. रंगनेवाला। रंग-साज। रंगने का रोजगार करनेवाला। २. प्रसन्न करनेवाला।

सज्ञा स्त्री० १. थोड़ी-सी बालू, जो बत्ती लगाने के लिए बहूक की प्याली पर रखी जाती है। २. किसी को भड़कानेवाली बात।

रंजन-सज्ञा पु० १. चित्त प्रसन्न करने की क्रिया। २. रंगने की क्रिया। ३. रंग बनाने का पदार्थ। ४. लाल चदन।

रंजना\*-क्रि० स० १ प्रसन्न करना। आनन्दित करना। २. भजना। स्मरण करना। ३. रंगना।

रंजनीय-वि० १. आनन्ददायक। २. रंगने योग्य।

रंजित-वि० १. रंगा हुआ। २. प्रसन्न। आनन्दित। ३. अनुरक्त।

रंजिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] रंज होने का भाव। वैर। मन-मुटाव।

रंजीदा-वि० [फा०] [सज्ञा रंजीदनी] १. जिसे रंज हो। दुखी। शोकपूर्ण। उदास। २. नाराज।

रण्ड-वि० १. धूर्त। २. बेचैन।

रण्डा-वि० रांडा। विधवा।

रंझपा-सज्ञा पु० रांड या विधवा होने की दशा। वैधव्य।

रंड़ी-सज्ञा स्त्री० वेश्या।

रंड़ीबाज-सज्ञा पु० वेश्यागामी। वेश्या से सम्भोग आदि करनेवाला।

रंड़ीबाजी-सज्ञा पु० वेश्यागमन। वेश्या से सम्भोग आदि करने की आदत।

रंझुआ, रंझुआ-सज्ञा पु० वह पुरुष, जिसकी स्त्री मर गई हो। विधुर।

रत्ता\*†-वि० अनुस्वन ।  
 रति-सज्ञा स्त्री० केलि। श्रीङ्ग। आमोद-  
 प्रमोद ।  
 रतु-सज्ञा स्त्री० १ नदी। २ सङ्क।  
 रद-सज्ञा पु० १ रोचनदान। २ किले  
 की दीवारा का वह छद जिसमें से बहूक  
 या तोप चलाई जाती है।  
 रदेना-क्रि० उ० रदे से छीलकर लकड़ी  
 चिकनी करना। रदा फेरना।  
 रखा-सज्ञा पु० एक औजार जिससे लकड़ी  
 छीलकर चिकनी की जाती है।  
 रथक-सज्ञा पु० १ रसोइया। रसोई बनाने-  
 धाला। २ नष्ट करनेवाला नाशक।  
 रथन-सज्ञा पु० १ पकाना। भोजन बनाना।  
 २ नष्ट करना।  
 रथित-वि० १ पकाया हुआ। २ नष्ट।  
 रघ-सज्ञा पु० १ छद। सूतछद। २ दोष।  
 रम-सज्ञा पु० १ हलचल। २ बांस। ३ एक  
 प्रकार का वाण।  
 रभज-वि० स० १ आलिंगन। मले से लिप-  
 डाना। २ रेंगना। गाय का बोलना।  
 रभा-सज्ञा स्त्री० १ बस्या। २ पुराण  
 नुसार एक प्रसिद्ध अस्तर। ३ कुला। ४  
 गौरी। ५ उत्तर दिशा। ६ गाय का रेंगना।  
 सज्ञा पु० लोहे का मोटा भारी डडा, जिससे  
 दीपारो आदि खोदते हैं।  
 रेंगना-क्रि० अ० गाय का बोलना।  
 रभापति-सज्ञा पु० इन्द्र।  
 रभाफल-सज्ञा पु० कुला।  
 रभी-सज्ञा पु० १ दण्डधारी। द्वारपाल। २  
 बूझ। बूझा।  
 रभी-वि० केल के वृष की तरह जीभा-  
 वाली (स्त्री)। सुन्दर।  
 रंह-सज्ञा पु० वग।  
 रंहपटा-सज्ञा पु० १ लालच। २ शस्का।  
 मनोरथ पूरा करने की साधना।  
 रभ्यत-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा। रियाया।  
 रङ्गि\*†-सज्ञा स्त्री० रंग। रात।  
 रङ्ग-सज्ञा स्त्री० १ मयानी। बही मयने की  
 लकड़ी। खैलर। २ बरबरा आवा। सूजी।  
 ३. चूर्णमाष।

वि० १ डूबी हुई। पगी हुई। २ अनुस्वत।  
 ३ सहित। समुक्त। मिली हुई।  
 रईस-सज्ञा पु० [अ०] जिसके पास रियासत  
 या इसका हो। तबल्लुकेदार। बड़ा आदमी।  
 अमीर। धनी।  
 रजतई\*†-सज्ञा स्त्री० मालिक होने का  
 भाव। स्वामित्व। प्रभुत्व।  
 रजरी-सर्व० मध्यम पुरुष के लिए बादर  
 सूचक शब्द। आप। जनाव।  
 रक्त\*-सज्ञा पु० दे० "रक्त"। लहू। खून।  
 वि० लाल। सुख।  
 रक्या-सज्ञा पु० [अ०] धौन-फल। किस  
 स्थान की लम्बाई चौड़ाई का वर्गफल।  
 रकम-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ धन। रुपया-पैसा  
 संपत्ति। दौलत। २ गहना। जेवर। ३  
 लिखने की किया या भाव। ४ रुपया या  
 बीस बिस्वा आदि लिखने के सारही के  
 विशिष्ट अंक। ५ सख्या। ६ परिमाण।  
 ७ लगान की दर। ८ छाप। मोहर। ९  
 चालाक। १० धूर्त। ११ प्रकार। तरह।  
 रकाब-सज्ञा स्त्री० [फा०] घोड़ों की काठी  
 का पावदान।  
 मुहो-रकाब पर या रकाब में पैर  
 रखना=चलने के लिए बिलकुल तैयार  
 होना।  
 रकाबदार-सज्ञा पु० [फा०] १ साईत। रकाब  
 पकड़ कर घोड़े पर चढ़ानेवाला। २ बाद-  
 घाही के साथ खाना लेकर चलनेवाला।  
 खानसामा। ३ हलवाई।  
 रकाश-सज्ञा पु० [फा०] बड़ी धाली।  
 रकाबी-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक प्रकार की  
 छिछनी तस्वरी।  
 रकीब-सज्ञा पु० [अ०] प्रमिका का दूसरा  
 प्रेमी।  
 रकेबी-सज्ञा स्त्री० दे० "रकाबी"।  
 रक्त-सज्ञा पु० १ लाल रंग का वह तरल  
 पदार्थ, जो शरीर की नसों आदि में स होकर  
 बहाकरता है। खून। रधिर। २ कुकुम।  
 ३ बैसर। ४ तविया। ५ कमल। ६ सिंदूर।  
 ७ शिगरफ। ८ ईमुर। ९ साल बन।  
 १० साल रंग। ११. कुसुम।

वि० १ अनुरक्त। लीन। २ रंगा हुआ।  
३ लाल। ४ सुखं। साफ किया हुआ।  
रक्त आमातिसार-सज्ञा पु० एक प्रकार की  
पेट की बीमारी जिसमें लाल दस्त होते हैं।  
रक्तकठ-सज्ञा पु० १ कोयल। २ भाँडा।  
बंगन।

रक्तक-सज्ञा पु० १ गुल दुपहरिया। २ लाल  
सहजन। ३ लाल कपड़ा। ४ लाल रंग का  
घोड़ा। केसर। कुकुम।

वि० १ लाल रंग का। २ प्रेमी। ३ मस-  
खरा। विनोदी।

रक्तकदली-सज्ञा स्त्री० चपाकली।

रक्तकमल-सज्ञा पु० लाल कमल।

रक्तकुमुद-सज्ञा पु० कुई। नीलोफर।

रक्तकुसुम-सज्ञा पु० १ कचनार। २ आक।

३ घामिन का पेड़। ४ फरहद का पेड़।

रक्तकेशी-वि० लाल बालोवाला।

रक्तकैरव-सज्ञा पु० लाल कुमुद।

रक्तकौकनद-सज्ञा पु० लाल कमल।

रक्तगन्ध-सज्ञा स्त्री० असगंध।

रक्तगैरिक-सज्ञा पु० गेरू।

रक्तग्रीव-सज्ञा पु० १ राक्षस। २ कबूतर।

रक्तग्न-सज्ञा पु० लोध वृक्ष।

रक्तचक्षु-सज्ञा पु० तोता। जिसकी चाच  
लाल हो।

रक्तचदन-सज्ञा पु० लाल चदन।

रक्तज-वि० खून से उत्पन्न। रक्त के पिकार  
से उत्पन्न होनेवाली एक बीमारी।

रक्ततर-सज्ञा पु० गेरू।

रक्तता-सज्ञा स्त्री० लाली। सुखी।

रक्ततुंड-सज्ञा पु० तोता।

रक्तनयन, रक्तनेत्र-सज्ञा पु० १ चकोर। २

कबूतर। ३ सारस। ४ लाल आँखोवाला।

रक्तप-वि० खून पीनेवाला। राक्षस।

रक्तपात-सज्ञा पु० ऐसा लड़ाई-झगडा जिसमें  
चोट से लोगों के खून बहने लगे। खून-  
खराबी। मारकाट।

रक्तपायो-वि० [स्त्री० रक्तपायिनी] खून  
पीनेवाला।

रक्तपित्त-सज्ञा पु० एक प्रकार की बीमारी,  
जिसमें मूँह, नाक आदि इद्रिया से

खून गिरता है। नाक से खून बहना।  
नकसीर।

रक्तपुच्छ-सज्ञा पु० गरुड।

रक्तपुष्प-सज्ञा पु० १ कनेर। २ गुल दुपह-  
रिया। ३ अनार का पेड़। ४ पुनाग।

रक्तपुष्पक-सज्ञा पु० १ पलास। २ सेमर।

रक्तप्रवर-सज्ञा पु० स्त्रियों की एक  
बीमारी, जिसमें गर्भाशय से लाल लसोला  
पानी रसता है।

रक्तबिन्दु-सज्ञा पु० खून की बूँद।

रक्तबीज-सज्ञा पु० १ अनार। बीदना। २.

एक राक्षस जो शुभ और निशुभ का सेनापति  
था। कहते हैं कि युद्ध के समय इसके शरीर  
से रक्त की जितनी बूँदें गिरती थी, उतने  
ही नए राक्षस उत्पन्न हो जाते थे।

रक्तलोचन-सज्ञा पु० दे० "रक्तनयन"।

रक्तवसन-सज्ञा पु० [स्त्री० रक्तवरणा] लाल  
या गेरू रंग के कपड़े पहननेवाला।  
सन्यासी।

रक्तवृष्टि-सज्ञा स्त्री० आकाश से खून या  
लाल रंग के पानी की वर्षा (कल्पित)।

रक्तवर्ण-सज्ञा पु० ऐसा फोड़ा, जिसमें मवाद  
न निकलकर केवल खून निकले।

रक्तशासन-सज्ञा पु० सिद्धर।

रक्त श्रुगिक-सज्ञा पु० जहर।

रक्तशेखर-सज्ञा पु० दे० "पुनाग"।

रक्तस्त्राव-सज्ञा पु० किसी अंग से खून बहना।

रक्ताग-सज्ञा पु० १ भगल ग्रह। २ मूँगा।

३ केसर। ४ लाल चदन।

रक्ता-सज्ञा स्त्री० १ गुंजा। घुंघची। २

पञ्चम स्वर की चार श्रुतियों में से एक।

रक्तातिसार-सज्ञा पु० एक प्रकार का रोग,  
जिसमें खून के दस्त आते हैं।

रक्तापार-सज्ञा पु० चमड़ा।

रक्ताभ-वि० लाल रंग की शलक लिये हुए  
लकीरें। लाली लिये हुए।

रक्तादा-सज्ञा पु० वह बवासीर, जिसमें  
मसा में से खून भी निकलता है। खूनी  
बवासीर।

रक्ताशय-मना पु० हृदय। दिल।

रक्तिका-सज्ञा स्त्री० घुंघची। रत्ती।

रक्षितम-वि० रूख के रंग का । लाल  
रंग का । लाली लिये हुए । लखौई ।  
रक्षितमा-सभा स्त्री० सलामी । सुखी ।  
रक्षितोत्पल-सजा पु० लाल कमल । शात्मलि ।  
रक्षितोपदेश-सजा पु० रूख के बिस्तार से  
पंदा हानेवाली गर्मी, गुजारा या पेट की  
बीमारी ।  
रक्षितोपल-सजा पु० गेरू ।  
रक्ष-सजा पु० १ रक्षण । बचानेवाला ।  
रखवाला । पहरेदार । २ रक्षा । हिफाजत ।  
३ राक्षस । ४ छप्पय-उन्द का एक भेद ।  
रक्षक-सजा पु० १ रक्षा करनेवाला । बचाने-  
वाला । २ पालन करनेवाला । पहरेदार ।  
रक्षण-सजा पु० १ रक्षा करना । हिफाजत  
करना । २ पालन-पोषण । ३ रक्षक । रख-  
वाला । ४ पहरेदार । ५ पालन-पोषण करने-  
वाला ।  
रक्षणकर्त्ता-सजा पु० बचानेवाला । रक्षा  
करनेवाला । रक्षक ।  
रक्षणीय-वि० रक्षा करने योग्य । बचाने  
लायक ।  
रक्षणा\*-क्रि० स० रक्षा करना । बचाना ।  
रक्षपाल-सजा पु० रखवाला । रक्षा करने-  
वाला । रक्षक ।  
रक्षमाण-वि० १ जिसकी रक्षा हो सके । २  
जिसकी रक्षा की जा रही हो ।  
रक्षस\*-सजा पु० दे० "राक्षस" ।  
रक्षा-सजा स्त्री० १- बचाव । आपत्ति,  
कष्ट या नाश आदि से बचाना । रक्षण । २-  
वालको को मृतप्रेत, नजर आदि से बचाने के  
लिए दवाइ जानेवाला यंत्र या मंत्र । ३  
भरम । ४ राक्ष ।  
रक्षाद्व-सजा स्त्री० राक्षसपन ।  
रक्षागृह-सजा पु० प्रसव करने का स्थान ।  
सूतिकागृह । जन्मास्थान ।  
रक्षाधिकृत-सजा पु० प्राचीन काल का किसी  
नगर का अधिकारी ।  
रक्षापति-सजा पु० प्राचीन काल में नगर की  
रक्षा करनेवाला एक कर्मचारी ।  
रक्षापुद्गल-सजा पु० पहरेदार । रखवाला ।  
रक्षापेक्षक-सजा पु० १ पहरेदार । २ नाटक

में पर्दा गिरानेवाला । ३ अभिनय करने-  
वाला । नट ।  
रक्षाभयन-सजा पु० हिन्दू का एक त्योहार,  
जो धायण मन्त्रा पूर्णिमा या हुआ है ।  
दे० "राक्षी" ।  
रक्षामगल-सजा पु० मृत-प्रेत आदि को  
बाधा से बचाने के लिए की जानेवाली क्रिया ।  
रक्षिका-सजा स्त्री० १ रक्षा करनेवाली ।  
२ रक्षा । हिफाजत ।  
रक्षित-वि० १ जिसकी रक्षा या हिफाजत  
की गई हो । बचाया हुआ । सुरक्षित । २  
पाला पोसा । ३ किसी काम या व्यक्ति के  
लिए अलग निकालकर रखा हुआ ।  
रक्षित राज्य-सजा पु० किसी बड़े राज्य या  
साम्राज्य के संरक्षण में रहनेवाला कोई  
छोटा राज्य, जिसे स्वराज्य के परिमित  
अधिकार प्राप्त हों (जैसे-ग्राटेस्टेट) ।  
रक्षिता-सजा स्त्री० रखली । बिना व्याह के  
पत्नी की तरह रखी गई स्त्री ।  
रक्षी-सजा पु० पहरेदार । दे० "रक्षक" ।  
रक्ष्य-वि० दे० "रक्ष्यमाण" ।  
रक्ष्यमाण-वि० १ रक्षा करने योग्य । जिसकी  
रक्षा हो सके । २ जिसकी रक्षा हो रही हो ।  
रखना-क्रि० स० १ धरना । २ ठहराना । ३  
टिकाना । ४ रक्षा करना । बचाना । ५ गूँथ न  
होने देना । बिगड़ने न देना । ६ संग्रह करना ।  
जोड़ना । ७ सुपुर्द करना । सोपना । ८. रहन  
करना । बंधक में देना । ९. अपने अधिकार में  
लेना । १०. निपुस्त करना । मुकरर करना ।  
११. व्यवहार करना । धारण करना । १२.  
जिम्मा लगाना । सँभालना । १३. ऋणी होना । ऋण  
दार होना । १४. मन में अनुभव करना । १५.  
स्त्री (या पुरुष) से संबंध करना । उपपत्ती  
(या उपपत्ति) बनाना । १६. निवार  
करना । अभिभूत करना ।  
रखी-सजा दे० "रखेली" । हिफाजत ।  
रखनी-सजा दे० "रखेली" । बिना व्याह किए  
हुए पत्नी का भाँति रखी हुई स्त्री ।  
रखवाई-सजा स्त्री० १ रखवाली करने का  
काम, मजदूरी या दण । २ खेतों की रख-  
वाली । चौकीदारी ।

रखवाना-क्रि० स० रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखाना।

रखवार\*†-सज्ञा पु० दे० "रखवाला"।

रखवाला-सज्ञा पु० रखवाली करनेवाला।

रक्षक। पहरेदार। चौकीदार।

रखवाली-सज्ञा स्त्री० रक्षा करने की क्रिया या भाव। हिफाजत।

रखाई-मज्ञा स्त्री० रक्षा करने का भाव, क्रिया या मजदूरी। रखवाली। हिफाजत।

रखान-मज्ञा स्त्री० १. चरी। २. चराई की भूमि।

रखाना-क्रि० स० रखने की क्रिया दूसरे से कराना।

क्रि० अ० रखवाली करना। रक्षा करना।

रखिया\*†-सज्ञा पु० रक्षक। रखनेवाला।

रखेली-मज्ञा स्त्री० बिना व्याह किए हुए

पत्नी की भाँति रखी हुई स्त्री। उपपत्नी।

रखवाई-सज्ञा पु० रक्षा करनेवाला। रखवाली करनेवाला। दे० "रक्षक"।

रग-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ शरीर की नस या नाडी। २ पत्तों की नसे।

महा०-रग दबना=दबाव मानना। किसी के प्रभाव या अधिकार में होना। रग रग फड़कना=शरीर में बहुत अधिक उत्साह या आवेश के लक्षण प्रकट होना। रग-रग में=सारे शरीर में।

रगड़-सज्ञा स्त्री० १ रगड़ने की क्रिया या भाव। २. घर्पण। रगड़ने से उत्पन्न चिह्न।

हुज्जत। झगडा। तकरार। ३ कड़ी मेहनत।

रगड़ना-क्रि० स० १. घिसना। पोसना। किसी काम की जल्दी जल्दी और बहुत परिश्रमपूर्वक करना। २ तग करना।

क्रि० अ० बहुत मेहनत करना।

रगड़वाना-क्रि० स० रगड़ने का काम दूसरे से कराना।

रगड़ा-सज्ञा पु० १. रगड़ने की क्रिया या भाव। घर्पण। रगड़। २. वह झगडा, जो बराबर होता रहे। ३. बहुत अधिक मेहनत।

रगड़ी-वि० झगडावा।

रगण-सज्ञा पु० छंद शास्त्र में एक गण या तीन वर्णों का समूह, जिसका पहला वर्ण गुरु,

दूसरा लघु और तीसरा फिर गुरु होता है। (SIS)।

रगत\*-सज्ञा पु० दे० "रक्त"।

रग-मट्ठा-सज्ञा पु० शरीर के भीतरी भिन्न-भिन्न अंग।

रगर\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "रगड़"।

रग-रेशा-सज्ञा पु० १. नस। २. वारीक से वारीक बात। पतियों की नसे।

रगवाना\*†-क्रि० स० लुप्त कराना। शान्त कराना।

रगाना†-क्रि० अ० चुप होना।

क्रि० स० चुप कराना। शान्त करना।

रगीला-सज्ञा पु० १. पाजी। २. हठी।

रगेद-मज्ञा स्त्री० दौड़ाने की क्रिया या भाव।

रगेदना-क्रि० स० दौड़ाना। खदेड़ना।

रग्गा-सज्ञा पु० १ एक तरह का मोटा अन्न।

२ अधिक वर्षा के बाद होनेवाली धूप।

रघु-सज्ञा पु० सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र, जो अयोध्या के बहुत प्रतापी राजा और श्रीरामचन्द्र के परदादा थे।

रघुकुल-सज्ञा पु० राजा रघु का वंश।

रघुनन्द, रघुनन्दन-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र।

रघुनाथ-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र। रघुवंश के स्वामी या सर्वश्रेष्ठ।

रघुनायक-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र।

रघुपति-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र।

रघुराई\*-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र।

रघुराज-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र।

रघुरेया\*-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र।

रघुवंश-सज्ञा पु० १ महाराज रघु का वंश या खानदान। २ महाकवि कालिदास का रचा हुआ एक प्रसिद्ध महाकाव्य।

रघुवंशकुमार-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र।

रघुवंशी-सज्ञा पु० रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

रघुवर-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र। रघुवंश में सर्वश्रेष्ठ।

रघुवीर-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्रजी।

रचक-सज्ञा पु० रचना करनेवाला। रचयिता।

• वि० दे० "रचक"।

रचना-सज्ञा स्त्री० १ बनाने की क्रिया। बनाने

का ढग या कोराल। बनावट। २ बनाई हुई वस्तु। निर्मित वस्तु। ३ निर्माण।  
 क्रि० स० १ हुआ से बनाकर तैयार करना।  
 बनाना। निर्माण करना। २ बिधान करना।  
 ३ निश्चित करना। ४ प्रथ आदि तिरना।  
 ५ रूप सदा करना। ६ शृंगार करना।  
 रंगारना। सजाना। ७ तरतीब या क्रम से रखना। ८ रेंगना। रजित करना।  
 क्रि० अ० १ अनुरक्त होना। २ रंग बढ़ना।  
 रंगा जाना।

मुहा०—\*रचि रचि=बहुत होशियारी और  
 कारीगरी के साथ (कोई काम करना)।  
 रचनात्मक-वि० १ रचना या निर्माण से  
 सम्बन्ध रखनेवाला या उसमें सहायक। २  
 समाज या देश की उन्नति में सहायक। ३.  
 ऐसी बात, जिसे अमल में लाने में कल्याण हो।  
 रचयिता-सज्ञा पु० बनानेवाला। रचना करने-  
 वाला।

रचवाना-क्रि० स० १ बनवाना। दूसरे से  
 बनाने का काम कराना। २ मेहंदी या  
 महावर लगवाना।

रचना+\*—क्रि० स० १ आयोजन कराना।  
 अनुष्ठान करना या कराना। २ बनाना।  
 ३ दे० “रचवाना”।

क्रि० अ० मेहंदी, महावर आदि से हाथ-  
 पंर रंगाना।

रचित-वि० बनाया हुआ। रचा हुआ।

रचोही\*—वि० १ रचा या बनाया हुआ। २  
 रंगा हुआ। ३ तीन या अनुरक्त।

रज-सज्ञा पु० १ स्त्रिया की जननेन्द्रिय से  
 प्रतिमास तीन-चार दिन तक निकलनेवाला  
 रस। ऋतु। २ साह्य के अनुसार तीन गुणों  
 में दूसरा। दे० “रजोगुण”। ३ पाप। ४  
 आकाश। ५ फूसों का पराग। ६ एक तोल  
 या परिमाण ७ चाँदी। ८ रजक। घोवी।  
 सज्ञा स्त्री० १ भूल। गई। २ रात। ३  
 ज्योति। प्रकाश।

रजक-सज्ञा पु० [स्त्री० रजकी] घोवी।  
 कपड़ा धोनेवाली एक जाति।

रजत-सज्ञा स्त्री० दे० “रजतरव”। वीरता।

रजत-सज्ञा स्त्री० चाँदी।

वि० १ सफेद। धवल। २ ताल।

रजतपट-सज्ञा पु० वह पदार्थ, जिस पर सिनेमा  
 के चित्र आदि दिखाए जाते हैं (अथे०—  
 सिलवर स्कीन)।

रजतजपती-सज्ञा स्त्री० निष्ठी व्यक्ति, सत्वा  
 या महत्त्वपूर्ण कार्य आदि के जन्म या आरम्भ  
 से २५वें वर्ष होनेवाला उत्सव। (अथे०—  
 सिलवर जुवली)

रजधानी\*—सज्ञा स्त्री० दे० “राजधानी”।

रजत-सज्ञा स्त्री० दे० “राल”।

रजना\*—क्रि० अ० रंगा जाना।

क्रि० स० रंग में डवाना। रंगना।

सज्ञा स्त्री० संगीत की एक मूच्छना।

रजनी-सज्ञा स्त्री० रात।

रजनीकर-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

रजनीगंधा-सज्ञा स्त्री० रात में फूलने और  
 खूब महकनेवाला एक प्रसिद्ध फूल।

रजनीचर-सज्ञा पु० राक्षस।

रजनीपति-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

रजनीमुख-सज्ञा पु० सध्या।

रजनीश-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

रजपूत+\*—सज्ञा पु० १ दे० “राजपूत”।

२ वीर पुरुष। योद्धा।

रजपूती+—सज्ञा स्त्री० राजपूत होने का भाव।

क्षत्रियत्व। वीरता। बहादुरी।

रजबहा-सज्ञा पु० वह बड़ा तल, जिससे ओर  
 भी अनेक छोट छोट तल निकलते हैं।

रजवती, रजवती-वि० दे० “रजस्वला”।

रजबाड़ा-सज्ञा पु० १ रियासत। २ राज्य।

३. राजाओं का धराना।

रजवार+\*—सज्ञा पु० १ राजा का दरबार।

दरबार। २ राजद्वार।

रजस्वला-वि० वह स्त्री, जिसका मासिक  
 धर्म हो रहा हो। ऋतुमती।

रजा-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ इच्छा। २

छुट्टी। ३ अनुमति। स्वीकृति।

रजाइ, रजाइय\*—सज्ञा स्त्री० १ दे० “रजा”।

२ आज्ञा। हुनम।

रजाई-सज्ञा स्त्री० १ रुई भरा हुआ एक

प्रकार का जोड़ना। निहाफ। मोटी दुलाई।

२ दे० “रजाइ”। आज्ञा।

रजाना-क्रि० स० राज्य-सुख का भोग करना। बहुत अधिक सुख देना।

रजामद-वि० [फा०] [सज्ञा रजामदी] राजी। सहमत।

रजापु\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "रजा।" आज्ञा। इच्छा।

रजापस, रजापसु\*†-सज्ञा पुं० राजा की आज्ञा।

रजिस्टर-सज्ञा पुं० [अंग्रे०] १ हिसाब किताब की पुस्तक। २ उपस्थिति-पुस्तिका।

रजिस्ट्री, रजिस्ट्री-सज्ञा पुं० [अंग्रे०] १ चिट्ठी, पारसल आदि डाक से भेजी जानेवाली चीजों को डाक-रजिस्टर में लिखाने का काम। २ किसी लिखित प्रतिज्ञापत्र को कानून के अनुसार सरकारी रजिस्ट्रो में दर्ज कराना।

रजील-वि० [अ०] नीच। छोटी जाति का।

रजोकुल\*-सज्ञा पुं० राजवंश।

रजोगुण-सज्ञा पुं० प्रकृति के तीन गुणों में से यह गुण जिससे जीवधारियों में भोग-विलास तथा दिखावे की रुचि होती है। राजस।

रजोदशन-सज्ञा पुं० स्त्रियों का मासिक धर्म। रजस्वला होना।

रजोधम-सज्ञा पुं० स्त्रियों का मासिक धर्म।

रजोरस-सज्ञा पुं० अधिकार।

रजोवती†-सज्ञा स्त्री० रजस्वला। जिस स्त्री को मासिक धर्म हो रहा हो।

रज्जु-सज्ञा स्त्री० १ रस्ती। डोरी। जेबरी। २ लगाम की डोरी। वाग-डोर।

रटत-सज्ञा स्त्री० रटना। रटने की क्रिया या भाव।

रट-सज्ञा स्त्री० बार-बार उच्चारण करने की क्रिया।

रटन-सज्ञा स्त्री० दे० "रट।"

रटना-क्रि० स० १ बार-बार उच्चारण करना। बार-बार कहना। २ जपानी याद करने के लिए बार-बार उच्चारण करना। बार-बार शब्द करना। ३ बजना।

रटु†-वि० रुखा। गुणक।

रटना\*-क्रि० स० दे० "रटना"।

रण-सज्ञा पुं० १ लड़ाई। २. युद्ध। जंग। ३ शब्द। गति। ४ रमण।

रणक्षेत्र-सज्ञा पुं० लड़ाई का मैदान। युद्ध-स्थल।

रणछोड-सज्ञा पुं० श्रीकृष्ण का एक नाम।

रणन-सज्ञा पुं० [वि० रणित] झनकार या गुजार करना। बजना। शब्द करना।

रणभूमि-सज्ञा स्त्री० लड़ाई का मैदान। रणक्षेत्र।

रणरथ-सज्ञा पुं० १ लड़ाई का जोर या उत्साह। २ लड़ाई। युद्ध। ३ युद्धक्षेत्र।

रणलक्ष्मी-सज्ञा स्त्री० युद्ध की देवी। दे० "विजय लक्ष्मी"।

रणसिंहा-सज्ञा पुं० बुरही। नरसिंहा।

रणस्तम्भ-सज्ञा पुं० युद्ध में विजय प्राप्त करने के स्मारक रूप में बनवाया हुआ स्तम्भ या बड़ा तन्ना।

रणस्वच्छ-सज्ञा पुं० लड़ाई का मैदान। रणभूमि।

रणस्वामी-सज्ञा पुं० १ शिवजी। २ सेनापति।

रणगण-सज्ञा पुं० लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

रणित-वि० झनकार या गुजार करता हुआ। बजता हुआ।

रत-वि० १ अनुरक्त। आसक्त। २ (कार्य आदि में) लगा हुआ। लिप्त।

\*सज्ञा पुं० १ मंथन। २ प्रीति। दे० "रत।"

रतगुह-सज्ञा पुं० पति। शोहर।

रतजगा-सज्ञा पुं० किसी उत्सव आदि में सारी रात जागना।

रतताली-सज्ञा स्त्री० कुटनी।

रतन-सज्ञा पुं० दे० "रत्न"।

रतनजोत-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की मणि। २ एक प्रकार का बहुत छोटा पौधा, जिसकी जड़ से लाल रंग, हिकाला जाता है।

रतनागर\*-सज्ञा पुं० दे० "रत्नाकर"।

रतनार, रतनारा-वि० कुछ लाल। लतामी लिये हुए।

रतनारी-सज्ञा पुं० एक प्रकार का धान।

† स्त्री० चाली। सात्तिमा। गुर्सी।

रतमुंह\*—वि० [स्त्री० रतमुंह] लाल मुंह-  
वाला।

रता—सत्ता स्त्री० वरमात के दिनों में सीड  
की जगह बीजा में लगनेवाली एक  
मेल।

रताना\*†—वि० अ० रत होना। सीन होना।  
वि० स० किसी को अपनी ओर रत करना  
या अनुरक्त करना।

रतायनी—सत्ता स्त्री० वेदया।

रतालू—सत्ता पु० १ पिंडालू नामक एक  
कद। २ बाराही कद। गेंडा।

रति—सत्ता स्त्री० १ कामदेव की पत्नी, जो दक्ष  
प्रजापति की कन्या और मोन्दर्य की साधात  
मूर्ति मानी जाती है। २ काम-प्रीडा।  
संभोग। मैथुन। ३ प्रेम। मुख्यतः ४  
शाभा। छवि। ५ साहित्य में शृंगार रस  
का स्थायी भाव। ६ नामक और नायिका  
की परस्पर प्रीति या प्रेम।

रतिक\*†—क्रि० वि० रती नर। बहुत थोडा।  
जरा-सा।

रतिकर—सत्ता पु० १ कामी। अधिक भोग  
करनेवाला। २ एक तरह की समाधि।  
वि० जिसमें आनन्द की वृद्धि हो।

रतिकलह—सत्ता पु० काम-प्रीडा। सम्भोग।

रतिकात—सत्ता पु० कामदेव।

रतिका—सत्ता स्त्री० ऋषभ स्वर की तीन  
श्रुतिमा में से एक।

रतिकेलि—सत्ता पु० काम-प्रीडा। भाग विलास।

रतिज्ञ—सत्ता पु० रतिज्ञान में प्रवीण।

रतिनाथ—सत्ता पु० कामदेव।

रतिनाथक—सत्ता पु० कामदेव।

रतिनाह\*—सत्ता पु० कामदेव।

रतिपति—सत्ता पु० कामदेव।

रतिप्रिय—सत्ता पु० कामदेव।

वि० कामुक।

रतिप्रीता—सत्ता स्त्री० कामिनी। अधिक भोग-  
विलास चाहनेवाली स्त्री या नायिका।

रतिवध—सत्ता पु० मैथुन या संभोग करने  
का प्रवार, जिसमें आसन भी बहुते हैं।

रत—सत्ता पु० प्रेमी और प्रेमिया के  
प्रीडा करने का स्थान।

रतिभोन\*—सत्ता पु० दे० "रतिभवन"।

रतिभाव—सत्ता पु० दाम्पत्य-भाव। कामेच्छा।

रतिमदिर—सत्ता पु० प्रेमी-प्रेमिका के  
रति-प्रीडा करने का स्थान। रतिभवन।  
केलिंगूह।

रतिपाना\*†—वि० अ० प्रेम करना। अनुरक्त  
होना।

रतिरमण—सत्ता पु० १ कामदेव। २ मैथुन।

रतिराई\*—सत्ता पु० कामदेव।

रतिराज—सत्ता पु० कामदेव।

रतिवत—वि० सुन्दर। खूबसूरत।

रतिवर—सत्ता पु० १ कामदेव। २ किसी स्त्री  
का उसमें रति करने के अभिप्राय से दो  
बुई भेट।

रतिवल्ली—सत्ता स्त्री० प्रीति।

रतिशास्त्र—सत्ता पु० काम-शास्त्र।

रती\*†—सत्ता स्त्री० १ दे० "रति"। कामदेव  
की पत्नी। रति। २ सोदर्य। दोना। ३.  
मैथुन। ४ काति। ५ चुम्बनी। दे०  
"रती"।

क्रि० वि० जरा ना। रती भर। किंचित्।

रतीक\*—क्रि० वि० दे० "रतिक"।

रतोपल\*†—सत्ता पु० १ दे० "रक्तोपल"।  
लाल कमल। २ गेरू।

रतीषी—सत्ता स्त्री० आँसु की एक प्रकार  
की बीमारी, जिसमें रोगी को रात के समय  
दिखाई नहीं देता।

रत्तल—सत्ता पु० आग सेर के लगभग  
को एक तौल।

रती—सत्ता स्त्री० १ आठ चावल का मान  
या बाट। २ भुंभची का दाना। गुजा।

वि० बहुत थोडा। किंचित्।

\*सत्ता स्त्री० शोभा। छवि।

मुहा०—रती नर=बहुत थोडा-सा। जरा-सा।

रखी—सत्ता स्त्री० शव को रखकर अंतिम  
संस्कार के लिए ले जानेवाली वस्तु।  
अरपी।

रत—सत्ता पु० १ छोटे, चमकीले, बहुमूल्य  
पत्थर। मणि। जवाहिर। नगीना। मार्निक।  
लाल। २ सर्वश्रेष्ठ। अपन वर्ग का सबसे  
उत्तम पदार्थ।

रत्नकर-सज्ञा पु० कुबेर।  
 रत्नगर्भ-सज्ञा पु० १ कुबेर। २ समुद्र।  
 रत्नगर्भा-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।  
 रत्नद्रुम-सज्ञा पु० मूंगा।  
 रत्ननिधि-सज्ञा पु० समुद्र।  
 रत्नपारखी-सज्ञा पु० जवाहरात का गुण-  
 अवगुण पहचाननेवाला। जोहरी।  
 रत्नप्रभा-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।  
 रत्नबाहु-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।  
 रत्नमाला-सज्ञा स्त्री० रत्ना या जवाहरात  
 की माला।  
 रत्नवती-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।  
 रत्नसू, रत्नसूति-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।  
 रत्नाकर-सज्ञा पु० १ समुद्र। २ खान।  
 ३ रत्ना का समूह।  
 रत्नावली-सज्ञा स्त्री० १ मणियाँ की श्रेणी या  
 माला। २ एक अर्थालंकार जिसमें प्रस्तुत अर्थ  
 निकलने के अतिरिक्त ठीक क्रम से कुछ  
 और वस्तु-समूह के नाम भी निकलते हैं।  
 रथ-सज्ञा पु० १ प्राचीन काल की एक प्रकार  
 की सवारी, जिसमें दो या चार पहिए होते  
 और घोड़े जोड़े जाते थे। गाड़ी। २  
 शरीर। ३ चरण। पैर। ४ कीड़ा-स्थल।  
 रथकार-सज्ञा पु० रथ बनानेवाला।  
 रथगुप्ति-सज्ञा स्त्री० रथ के किनारे लगा  
 हुआ लकड़ी या लोहे का ढाँचा (यह  
 बचाव के लिए लगाया जाता था)।  
 रथचरण-सज्ञा पु० चक्रवा।  
 रथमहोत्सव-सज्ञा पु० रथयात्रा उत्सव।  
 रथयात्रा-सज्ञा स्त्री० हिंदुओं का एक पर्व,  
 जो आपाद शुक्ल द्वितीया को होता है।  
 पुरी (उड़ीसा) में यह उत्सव बड़ी धूम से  
 मनाया जाता है।  
 रथवान-सज्ञा पु० रथ हाँकनवाला। सारथी।  
 रथबाहु-सज्ञा पु० १ रथ चलानवाला।  
 सारथी। २ घोड़ा।  
 रथबाहुक-सज्ञा पु० सारथी।  
 रथशाला-सज्ञा स्त्री० रथों के रखने का स्थान।  
 रथाग-सज्ञा पु० १ रथ का पहिया। २ चक्र  
 नाम का एक अस्त्र। ३ चक्रवा पक्षी।  
 रथागपर-सज्ञा पु० १ श्रीविष्णु। २ श्रीकृष्ण।

रथागपाणि-सज्ञा पु० विष्णु।  
 रथागवर्त्ती-सज्ञा पु० चक्रवर्त्ती सम्राट्।  
 रथाक्ष-सज्ञा पु० रथ का पहिया या धुरा।  
 रथाग्र-सज्ञा पु० बहुत बड़ा घोड़ा।  
 रथिक-सज्ञा पु० रथी।  
 रथी-सज्ञा पु० १ रथ पर चढ़नेवाला।  
 २ रथ पर चढ़कर लड़नेवाला घोड़ा। ३  
 एक हजार घोड़ाओं से अकेला युद्ध करने-  
 वाला घोड़ा। ४ शव को रखकर ले जाने  
 की टिकड़ी। अरथी।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "रथी"।  
 वि० रथ पर चढ़ा हुआ।  
 रथोत्सव-सज्ञा पु० रथ-यात्रा का उत्सव।  
 रथ्य-सज्ञा पु० १ पहिया। २ रथ में जोता  
 जानेवाला घोड़ा। ३ रथ चलानेवाला।  
 रथ्या-सज्ञा स्त्री० १ रास्ता। सड़क। २.  
 आंगन। ३ नाली। नावदान। रथों का  
 समूह। ४ मार्ग में रथ की लकीर।  
 रव-सज्ञा पु० दाँत।  
 वि [अ०] दे० 'रद'। रद्दी। "रद"। खराब।  
 रदच्छद-सज्ञा पु० १ ओठ। ओष्ठ। २.  
 रति के समय दाँतों के लगने का चिह्न।  
 रदछद\*-सज्ञा पु० दे० "रदच्छद"।  
 रददान-सज्ञा पु० रति के समय दाँतों से ऐसा  
 दबाना कि चिह्न पड़ जाय।  
 रदन-सज्ञा पु० दाँत।  
 रदनी-वि० दाँतावाला।  
 रदपद, रदपद\*-सज्ञा पु० ओष्ठ। ओठ।  
 रद्द-वि० [अ०] १ काट छाँट किया हुआ। २  
 खारिज किया हुआ। ३ खराब। बकार।  
 सज्ञा स्त्री० कै। घमन।  
 यौ०—रद्द बदल=परिवर्तन। फेरफार।  
 रद्दा-सज्ञा पु० १ दीवार की पूरी लम्बाई में  
 एक बार रखी हुई ईंट की जुड़ाई। २ थाली  
 में स्तरो के रूप में मिठाइयों का चुनाव।  
 ३ नीचे-ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह।  
 रद्दी-वि० बकार। खराब।  
 रन\*-सज्ञा पु० १ युद्ध। लड़ाई। २ जंगल।  
 वन। ३ शील। ताल।  
 रत्नकला\*†-क्रि० अ० धुंघरु आदि का मद्द  
 शब्द होना।

रत्ना\*—वि० अ० दे० "रत्न"। बजना।  
शब्द करना। शास्त्र होना।

रत्नका, रत्नबाजुरा—सज्ञा पु० धूलखोर।  
योद्धा।

रत्नबाजी\*—सज्ञा पु० योद्धा।

रत्नबास—सज्ञा पु० रत्नियों के रहने का महल।  
अत पुर। जनानसाला।

रत्नित\*—वि० दे० "रत्नित"। शनूवार करता  
हुआ। वज्रता हुआ।

रत्नवास—सज्ञा पु० दे० "रत्नवास"।

रत्नी\*—सज्ञा पु० योद्धा।

रपट\*—सज्ञा स्त्री० १ रपटने की क्रिया या  
भाव। दोड़। २ फिसलाहट। ३ जमीन  
की ढाल। दे० [अंग्रे०] "रिपोर्ट"।  
देहाता में पुलिस थाना पर लिखाई गई रिपोर्ट  
को रपट कहते हैं।

रपटना\*—क्रि० अ० १ फिसलना। २  
झपटना। बहुत तेजी से चलना।

रपटाना—क्रि० स० रपटने का काम दूसरे से  
कराना।

रपट्टा\*—सज्ञा पु० १ फिसलने की क्रिया।  
फिसलाव। २ दोड़ धूप। झपट्टा। ३ झपट।

रफा—वि० [अ०] १ दूर किया हुआ। निवृत्त।  
निवारण किया गया। २ दबाया हुआ।

रफा रफा—वि० दे० "रफा"।

रफू—सज्ञा पु० [अ०] फटे हुए कपड़े के छेद  
में तांगे भरकर उसे बराबर करना।

रफूगर—सज्ञा पु० [फा०] रफू करने का  
व्यवसाय करनेवाला। रफू बनानेवाला।

रफूचकर—वि० चपल। गायब।

रफ्तार—सज्ञा स्त्री० [फा०] चाल। गति।

रफता रफता—वि० वि० [फा०] धीरे धीरे।  
थम थम से।

रथ—सज्ञा पु० [अ०] ईश्वर।

रथड—सज्ञा पु० [अंग्रे० 'रथर'] १ एक लचीला  
पदार्थ, जो एक वृक्ष के गाद से बनता है  
और जिससे बहुत सी चीजें बनती हैं।  
२ एक वृक्ष, जिसकी गोद से उपर्युक्त  
लचीला पदार्थ बनता है।

रथकुण्ड—सज्ञा पु० ऐसी नमिता, जिसमें  
मायाजी की गिनती आदि का कुछ विचार

न हो। म्याम में अनुष्ठान्त नमिता के लिए  
प्रयुक्त शब्द।

रथकुना—वि० स० भुगाना। कटना।

रथडी—सज्ञा स्त्री० औटकार गाड़ी और लच्छे-  
दार किया हुआ दूध। बसोधी।

रथदा—सज्ञा पु० १ बार-बार आने-जाने की  
मेहनत। २ कीचड़।

मुहा०—रथदा पटना=खूब पानी बरसना।

रथर—सज्ञा पु० दे० "रथर"।

रथाना—सज्ञा पु० एक प्रकार का ढक।

रथाव—सज्ञा पु० [अ०] सारंगी की तरह का  
एक प्रकार का बाजा।

रथाविया, रथावी—वि० [अ०] रथाव बजाने  
वाला।

रथी—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वस्त्र ऋतु। २  
पह पहन, जो वस्त्र ऋतु में काटी जाती है।

रथोल—सज्ञा स्त्री० एक पक्षी।

रथ—सज्ञा पु० [अ०] १ अम्यास। मक्क।  
महावरा। २ सब। भेल।

यौ०—रथ-जव्व=भेलजोल। धनिष्ठता।

रथ-वि० आरम्भ किया हुआ।

रथ-सज्ञा पु० दे० "रथ"।

रथी—सज्ञा पु० तोप लादने की गाड़ी। एक  
तरह की बैलगाड़ी।

रथस—सज्ञा पु० १ हर्ष। आनन्द। २. वेग।  
तेजी। ३ प्रमोत्साह। उमंग। ४ पूर्वपर  
का विचार। ५ पछताया। रज। ६

अस्थो का एक सहार।

रथ-सज्ञा पु० १ कामदेव। २ लाव अघोर्क।  
३ प्रेमी।

वि० प्रिय। सुन्दर। आनन्ददायक।

रथक—सज्ञा स्त्री० १. धूल की पग। २  
तरंग। ३ झकोरा।

सज्ञा पु० १ प्रेमी। २ उपपत्ति। ३ जार।

वि० मोटा सा, बहुत अल्प।

रथकना—क्रि० अ० १ हिंडोले पर झूलना। २  
झूमते या इतराते हुए चलना।

रथचा\*—सज्ञा पु० छोटा चम्मच।

रथजात—सज्ञा पु० [अ०] एक अरबी महीना,  
जिसमें मुसलमान रोजा रखते हैं।

रथण—सज्ञा पु० १ भोग विलास। केलि।

क्रीडा। मयुन। २ धूमता। विचरण। ३ पति। ४ कामदेव। ५ एक वर्णिक छद। वि० १. मनोहर। सुंदर। २ प्रिय। ३ रमनेवाला। विलास या क्रीडा करनेवाला। रमणगमना-सज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो यह समझकर दुखी होती है कि संकेत-स्थान पर नायक आया होगा, और मैं वहाँ उपस्थित न थी। रमणी-सज्ञा स्त्री० स्त्री। युवती। रमणीक-वि० मनोहर। सुंदर। रमणीय-वि० सुंदर। मनोहर। रमणीयता-सज्ञा स्त्री० १ सुंदरता। मनोहरता। माधुर्य। २ साहित्य-दर्पण के अनुसार वह माधुर्य, जो सब अवस्थाओं में बना रहे। रमता-वि० एक जगह जमकर न रहनेवाला। धूमता-फिरता। जैसे, रमता जोगी। रमति-सज्ञा पु० १ रमनेवाला। २ क्रीडा। ३ स्वर्ग। ४ नायक। ५ कामदेव। ६ काल। रमन\*-सज्ञा पु० वि० दे० "रमण"। रमना-क्रि० अ० १ भोग विलास करना। २ भोग विलास के लिए कहीं रहना या ठहरना। ३ आनंद करना। मजा उड़ाना। ४ व्याप्त होना। ५ भीनना। अनुरक्त होना। लभ जाना। ६ धूमना फिरना। चलता होना। सज्ञा पु० १ चरणगह। वह सुरक्षित स्थान या घेरा, जहाँ पशु शिकार के लिए या पालने के लिए छोड़ दिए जाते हैं। हाता। बाग। २ कोई रमणीक स्थान। रमनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"। रमणीक\*-वि० दे० "रमणीक"। रमल-सज्ञा पु० [फा०] [वि० रमली] एक प्रकार का फलित ज्योतिष, जिसमें पासे फककर शुभाशुभ फल जाना जाता है। रमा-सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी। रमाकात-सज्ञा पु० विष्णु। लक्ष्मी के पति। रमानरेश\*-सज्ञा पु० दे० "रमाकात"। रमाना-क्रि० स० १ मोहित करना। लुभाना। अपने अनुकूल बनाना। २ ठहराना। रोक रखना। संगाना। ३ जोड़ना।

मुहा०-रास रमाना=रास रचना। रमानिवात-सज्ञा पु० विष्णु। रमारमण-सज्ञा पु० विष्णु। रमित\*-वि० लुभाया हुआ। मुग्ध। रमनी-सज्ञा स्त्री० कवीरदास के बीजक का एक भाग। रमपाङ्ग\*-सज्ञा पु० राम। ईश्वर। रम्माल-सज्ञा पु० [अ०] रमल फेंकनेवाला। रमल की सहायता से भविष्य बतानेवाला। रम्य-वि० [स्त्री० रम्या] मनोहर। सुंदर। रम्यसानु-सज्ञा पु० पहाड़ के शिखर पर की समतल भूमि। रम्या-सज्ञा स्त्री १ गंगा नदी। २ रात। रम्हल-क्रि० अ० दे० "रमाना"। रय\*-सज्ञा पु० १ दे० "रज"। धूल। गर्द। २ वेग। तेजी। ३ प्रवाह। रयन\*†-सज्ञा स्त्री० रात। रात्रि। रयना\*†-क्रि० स० रय से भिगोना। तरा-बोर करना। मिलाना। क्रि० अ० १ अनुरक्त होना। २ सयुक्त होना। मिलना। रयिष्ठ-सज्ञा पु० अग्नि। रय्यत†-सज्ञा स्त्री० [अ०] रियाया। प्रजा। ररकार-सज्ञा पु० रकार की ध्वनि। रर\*†-सज्ञा स्त्री० रटन। रट। ररक-सज्ञा स्त्री० कसक। ररकना†-क्रि० अ० [सज्ञा ररक] कसकना। सालना। पीडा देना। ररना†-क्रि० अ० लगातार एक ही बात कहना। रटना। बारबार कहना। ररिहा\*†-सज्ञा पु० १ ररनेवाला। गिडगिडाने-वाला। २ रटुआ या रुश्आ नामक पक्षी। ३ भारी मगन। ४ लड़ाई-झगडा करनेवाला। ररी-सज्ञा पु० १ बहुत गिडगिडाकर मांगने-वाला। २ गिडगिडानेवाला। ३ लड़ाई करनेवाला। रलना\*†-क्रि० अ० एक में मिलना। सम्मिलित होना। रलना\*†-क्रि० स० एक में मिलाना। सम्मिलित करना। रलिका\*-सज्ञा स्त्री० दे० "रली"।

रली-सज्ञा स्त्री० प्रीति। विहार। आनन्द।  
घो० रगरली=मोज उड़ाना। आनन्द के साथ  
विहार करना।

रल्ल\*†-गज्ञा पु० १. रला। २. हल्ला।

रब-सज्ञा पु० १ आवाज। ध्वनि। शब्द। नाद।  
गुजार। सौर। हल्ला। \* २ सूर्य।

रबताई\*-सज्ञा स्त्री० १ राजा या रावत होने  
का भाव। २ प्रभुत्व। स्वामित्व।

रवन\*-वि० दे० "रमण"।

रवना\*-क्रि० अ० १ रमण करना। २ शब्द  
करना।

रसज्ञा पु० दे० "राषण"।

रसनि, रसनो\*-सज्ञा स्त्री० १ दे० "रमणी"।  
स्त्री। २ पत्नी। ३. सुदरी।

रवना-सज्ञा पु० [फा०] १ एक तरह  
का कागज, जिस पर रवाना किए हुए माल का  
ब्योरा होता है। चुगी की रसीद। २ नहीं  
जाने का परवाना, या वह पत्र, जिससे  
किसी रास्ते से जाने का अधिकार मिलता है।

३ मुसलमानों के यहाँ स्त्रिया का काम-काज  
करनेवाला अथवा सोदा लानेवाला नौकर।

रवा-वि० [फा०] १ बहता हुआ। प्रवाहित।  
२ चलता हुआ या जारी। ३ अन्धा या  
मन्दक किया हुआ। ४ पैना। तेज।

रवा-सज्ञा पु० १ किसी चीज का अत्यन्त छोटा  
टुकड़ा। कण। दाना। सूजी। २ बाख़्द का  
दाना।

वि० १ ठीक। उचित। २ प्रचलित।

रवान-सज्ञा स्त्री० [फा०] रस्म। रीति।  
परिपाटी। प्रथा।

रवारार-वि० १ जिसमें कण या दाने हों।  
दानेदार। रवे वाला। २ सम्बन्ध या लगाव  
रखनेवाला।

रवानगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] प्रस्थान। रवाना  
होने की क्रिया या भाव।

रवाना-वि० [फा०] १ जो कहीं के लिए चल  
पड़ा हो। प्रस्थान किया हुआ। २ भेजा  
हुआ।

रवानो-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ बहाव। प्रवाह।  
२ तेजी।

रा पु० सूर्य।

रविकर-गज्ञा पु० सूर्य की किरण।

रविकुल-गज्ञा पु० सूर्यकुल।

रविचक्र-गज्ञा पु० १ सूर्य का मंडल। २ सूर्य  
के रथ का पहिया।

रविज्ञा-गज्ञा स्त्री० सूर्य की पुत्री। यमुना।

रविजात-सज्ञा पु० सूर्य की किरण।

रवितनय-सज्ञा पु० १ यम। २ शनि।

३ वैवस्वत मनु। ४ सुधीव। ५ वण।

६ अश्विनीपुमार।

रवितनया-सज्ञा स्त्री० यमुना।

रविदिन-गज्ञा पु० रविवार।

रविन्द, रविनदन-सज्ञा पु० दे० "रवितनय"।

रविनदिनी-सज्ञा स्त्री० यमुना।

रविचिह्न-गज्ञा पु० दे० "रविमंडल"।

रविमणि-सज्ञा पु० सूर्यपान्थमणि।

रविवश-सज्ञा पु० सूर्यवश।

रविवशी-सज्ञा पु० सूर्यवशी। सूर्यवश में  
उत्पन्न।

रविमंडल-सज्ञा पु० सूर्य के चारों ओर  
दिखाई देनेवाला लाल मंडल या मोला।

रविवार-सज्ञा पु० इतवार। शनिवार के  
बाद तथा सोमवार के पहले पड़नेवाला  
दिन।

रविग-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ जाली गति।

२ ढंग। तरीका। ३ बयारिया के बीच का  
छोटा मार्ग।

रविसारवि-सज्ञा पु० सूर्य का रथ हाँकने-  
वाला, जिसका नाम अश्व है।

रवोला-वि० रवे या कणवाला। दानेदार।

रवोद-सज्ञा पु० कामदेव।

रवोपा-सज्ञा पु० उत्तवि या उत्तवि करने का  
ढंग। व्यवहार। चाल-चलन। ढंग। तरीका।

रसना-गज्ञा स्त्री० १ दे० "रसना"। जीभ।

२ रस्ती। ३ करधनी।

रसानाकलाप-सज्ञा पु० धागे की बनी हुई  
एक प्रकार की करधनी।

रसन-गज्ञा पु० [फा०] ईर्ष्या। बाह।

रसिम-सज्ञा पु० १ किरण। २ पलक के

रोएँ। ३ घोड़े की लगाम। बाग।

रस-सज्ञा पु० १ खान की चीज का स्वाद या  
जोष द्वारा किया गया अनुभव। रसनेन्द्रिय

या विषय। चंद्रक में मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय, ये छः रस माने गए हैं। २. छः की संख्या। ३. चंद्रक के अनुसार शरीर के अंदर की सात धातुओं में से पहली धातु। ४. किसी पदार्थ का सार। तत्त्व। ५. मन में उत्पन्न होनेवाला यह भाव या आनंद, जो काव्य पढ़ने अथवा अभिनय देखने आदि से उत्पन्न होता है। ६. साहित्य में अनुभाव, विभाव और संचारी भावों से युक्त स्थायी भाव, जिससे चित्त में आनन्द उत्पन्न हो। ७. काम-श्रीड़ा। केलि। विहार। ८. प्रेम। मुहव्यत। ९. उमंग। जोश। १०. गुण। कोई तरल पदार्थ। पानी। ११. शरवत। फलों का निचोड़। १२. साठा या चूको का निर्मास। १३. जहर। १४. गंधरस। १५. दिसारस। १६. पारा। १७. धातुओं को फूँककर तैयार किया हुआ भस्म। १८. नाति। तरह। १९. मन की तरल। मौज। इच्छा।  
 यौ०—रस-रग=प्रेम-श्रीड़ा। केलि। रस-रीति=प्रेम का व्यवहार।  
 मुहा०—रस भीजना या भीतना=यौवन का आरंभ या संचार होना।  
 रसकपूर-सज्ञा पु० औषध के काम आनेवाली सफेद रंग की एक उपधातु।  
 रसकेलि-सज्ञा स्त्री० १. रतिक्रीड़ा। २. आगोद-प्रमोद। विहार। ३. हँसी। दिल्लगी।  
 रसगुल्ला-सज्ञा पु० एक प्रकार की छेने की बगाली मिठाई।  
 रसग्रह-सज्ञा पु० जीभ।  
 रसज्ञ-सज्ञा पु० १. गुड। २. रसोत। ३. शराब की तलछट।  
 रसज्ञ-वि० [सज्ञा रसज्ञता] १. अच्छे जागकार। निपुण। २. रस का ज्ञाता। काव्य-भर्माज।  
 रसज्ञता-सज्ञा स्त्री० रसज्ञ होने का भाव।  
 रसना-सज्ञा स्त्री० जीभ।  
 रसता या रसत्व-सज्ञा स्त्री० रस का भाव या रस होने का गुण। रसत्व।  
 रसद-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. कच्चा अनाज। २. सेना के लिए साध पदार्थ।

वि० १. रस देनेवाला। स्वादिष्ट। २. मजेदार। आनन्ददायक।  
 रसदार-वि० १. रसवाला। जिसमें रस हो। २. स्वादिष्ट। मजेदार।  
 रसधातु-सज्ञा पु० शरीर की सात धातुओं में से एक। पारा।  
 रसत-सज्ञा पु० १. चक्षुषा। २. ध्वनि। ३. जीभ।  
 रसना-सज्ञा स्त्री० १. जीभ। जिह्वा। २. जीभ से अनुभव किया जानेवाला स्वाद। ३. रस्सी। ४. लगाम। ५. करधनी।  
 क्रि० अ० १. धीरे-धीरे बहना या टपकना। धीरे-धीरे टपकाना। २. किसी चीज के ढीला होने पर उसमें से पानी या रस छोड़ना या टपकाना। ३. रस से पूर्ण होना। रस में भग्न होना। ४. प्रफुल्लित होना। तन्मय होना। ५. रस लेना। स्वाद लेना। ६. प्रेम में अनुरक्त होना।  
 मुहा०—रसना खोलना=बोलना आरंभ करना। रसना तालू से लगाना=बोलना बंद करना। रस-रस या रसे-रसे=धीरे-धीरे।  
 रसनीय-वि० स्वाद लेने योग्य। मजेदार।  
 रसनेद्रिय-सज्ञा स्त्री० जीभ।  
 रसपति-सज्ञा पु० १. शृंगार रस। २. चंद्रमा। ३. राजा। ४. पारा।  
 रस-प्रबन्ध-सज्ञा पु० १. नाटक। २. वह कविता, जिसमें एक ही विषय अनेक सबद्ध पद्यों में वर्णित हो।  
 रसभरी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का स्वादिष्ट फल। मकोइया नामक फल।  
 रसभीना-वि० [स्त्री० रसभीनी] १. रस से युक्त। २. आनंद में भग्न। अनुरक्त। ३. तर। गीला।  
 रसभ-सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० “रस्म”।  
 रसरज-सज्ञा पु० १. शृंगार रस। २. पारा।  
 रसराय\*-सज्ञा पु० दे० “रसरज”।  
 रसरी-सज्ञा स्त्री० दे० “रस्सी”।  
 रसल-वि० दे० “रसीला”।  
 रसवत-सज्ञा पु० [स्त्री० रसवन्ती] रसिक। प्रेमी।  
 वि० रसीला। रसयुक्त।

रसवाद-सज्ञा पु० १ प्रेम की बात-चीत। प्रेम या आनन्द का सिद्धान्त। २ प्रेमपूर्ण वार्ता-मुनी। छेड़छाड़। ३ वफावाद।  
 रसविरोध-सज्ञा पु० एक ही पथ में परस्पर विरोधी रसों का वर्णन। जैसे-गुहार और रोद का। परस्पर-विरोधी रस—जैसे आहार में मीठा और नमकीन।  
 रससागर-सज्ञा पु० पुराणा के अनुसार सात समुद्रों में से एक।  
 रससिद्ध-सज्ञा पु० वैद्यक के अनुसार एा प्रकार का रस।  
 रसा-वि० [फा०] पहुँचानेवाला—जैसे चिट्ठीरसा।  
 रसानन-सज्ञा पु० १ सुरमा। २ रसोत।  
 रसा-सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। जमीन। २ जीव। रसना।  
 सज्ञा पु० पकी हुई तरकारी आदि का पतला हिस्सा या झोल। शोरवा।  
 रसाइनी\*-सज्ञा पु० दे० "रासायनिक"।  
 रसाई-सज्ञा स्त्री० [फा०] पहुँच। किसी तक पहुँचने की क्रिया या भाव।  
 रसातल-सज्ञा पु० पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में छठा लोक।  
 मुहा०—रसातल में पहुँचाना=मिट्टी में मिला देना। बरबाद कर देना।  
 रसादार-वि० १ रस से युक्त। २ रसयुक्त या शोरबेदार तरकारी।  
 रसाना\*-क्रि० सं० १ रसयुक्त करना। २ प्रसन्न करना।  
 क्रि० अ० १ रसमग्न होना। २ मजा लूटना। जानन्द करना।  
 रसाभास-सज्ञा पु० साहित्य में किसी रस का अनुचित विषय में अथवा अनुपयुक्त स्थान पर वर्णन। एक प्रकार का अलंकार, जिसमें उक्त ङग का वर्णन होता है।  
 रसायन-वि० दे० 'रसायन-शास्त्र'।  
 सज्ञा पु० १ पदार्थों के तत्त्वा का ज्ञान। २ एष कल्पित योग, जिसमें द्वारा तबे से सोना बनना माना जाता है। ३ धातु विद्या। ४ वैद्यक के अनुसार वह औषध, जिससे आदमी त्वस्थ और पुष्ट बना रहता है।

रसायनज्ञ-सज्ञा पु० रसायन-शास्त्र का ज्ञाता।  
 रसायन विद्या-सज्ञा स्त्री० दे० "रसायन-शास्त्र"। धातुओं के मिलाने और अलग करने आदि का ज्ञान करनेवाली विद्या।  
 रसायन शास्त्र-सज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसमें पदार्थों में कौन-कौन से तत्त्व होते हैं और उनके परमाणुओं में परिवर्तन होने पर पदार्थों में क्या परिवर्तन होता है, आदि का विवेचन है।  
 रसायनी-सज्ञा स्त्री० रोग का दूर करनेवाली तथा स्वस्थ और पुष्ट रखनेवाली औषधि।  
 रसाल-सज्ञा पु० १ आम। २ गन्ना।  
 वि० १ स्वादिष्ट। २ रसीला। ३ सुदर। मनाहर।  
 रसाली-सज्ञा पु० रसिक। भाग विलास करनेवाला। आनन्द लेनेवाला।  
 रसाव-सज्ञा पु० रसने की क्रिया या भाव।  
 रसावर, रसावल-सज्ञा पु० ईख के रस में पकाए हुए चावल। दे० "रसीर"।  
 रसात्वादन-सज्ञा पु० स्वाद लेना। पचना।  
 रसिक-सज्ञा पु० १ मजा उड़ानेवाला। आनन्दी। २ रस लेनेवाला। स्वाद लेनेवाला।  
 ३ रसिया। ४ अच्छा ज्ञाता। मर्मज्ञ।  
 ५ भानुक। सहृदय। ६ काव्य-मर्मज्ञ।  
 रसिकता-सज्ञा स्त्री० १ रसिक होने का भाव या धर्म। २ हँसी-ठट्ठा।  
 रसिकजिहारी-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।  
 रसिकाई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "रसिकता"।  
 रसित-सज्ञा पु० १ ध्वनि। शब्द। २ अगूर की शराब। ३ रसयुक्त।  
 वि० १ बोलता हुआ। बजता हुआ २ रसा, छना या टपका हुआ। ३ रसयुक्त। ४ जिस पर भुलम्भा चढ़ा हुआ हो।  
 रसिया-सज्ञा पु० १ दे० 'रसिक'। रस लेनेवाला। २ एक प्रकार का गाना, जो फागुन में ब्रज आदि में गाया जाता है।  
 रसियाव-सज्ञा पु० दे० 'रसीर'।  
 रसी-सज्ञा पु० दे० "रसिक"।  
 रसीव-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ किसी चीज के

पहुँचने या मिलने के प्रमाण रूप में लिखा हुआ पत्र । २ किसी चीज के पहुँचने या प्राप्त होने की स्वीकृति । प्राप्ति ।

रसोल-वि० दे० "रसीला" ।

रसीला-वि० [स्त्री० रसीली] १ रस में भरा हुआ । रस-युक्त । २ स्वादिष्ट । मजेदार । ३ रस या आनंद लेनेवाला । ४ छवीला । बाँका । सुंदर ।

रसोलापन-सज्ञा पु० रसीला होने का भाव ।

रसूम-सज्ञा पु० [अ०] १ रसम का बहुवचन ।

सरकारी नियमों के अनुसार किसी कार्य के लिए दिया जानेवाला धन, विशेषकर न्यायालय में । २ नियम । कानून । ३ वह धन जो किसी को किसी प्रचलित प्रथा के अनुसार दिया जाता हो । नंग । लाग ।

रसूल-सज्ञा पु० [अ०] ईश्वर का दूत ।

पंगवर (मुसलमान धर्म के अनुसार) ।

रसेन्द्र-सज्ञा पु० १ पारा । २ पारस पत्थर

जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है ।

रसेश्वर-सज्ञा पु० पारा ।

रसेश्वर दर्शन-सज्ञा पु० पारा का प्रयोग करने की विद्या या विज्ञान ।

रसोइया-सज्ञा पु० रसोई बनानेवाला । रसोई-दार ।

रसोई, रसोई-सज्ञा स्त्री० १ पका हुआ खाद्य पदार्थ या भोजन । २ चौका । पाकशाला ।

रसोईघर-सज्ञा पु० भोजन बनाने का कमरा ।

चौका । पाकशाला ।

रसोईदार-सज्ञा पु० दे० "रसोइया" ।

रसोईदारी-सज्ञा स्त्री० भोजन बनाने का काम या पेशा ।

रसोईघरदार-सज्ञा पु० भोजन लानेवाला ।

रसोत, रसोत-सज्ञा स्त्री० दासहल्दी की जड़ और लकड़ी को पानी में ओटाकर तैयार की जानेवाली एक प्रसिद्ध औषध ।

रसौर-सज्ञा पु० ऊँच के रस में पके हुए चामल । रसावर ।

रसीली-सज्ञा स्त्री० एक राग, जिसमें शरीर में गिलटी निकल आती है ।

रस्ता-सज्ञा पु० दे० "रास्ता" ।

रस्तोगी-सज्ञा पु० वैद्यों की एक शाखा ।

का० ७८

रसम-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ रीति-रवाज ।

परिपाटी । २ चाल-व्यवहार । ३. मेल-जोल ।

मुहा०—राह-रसम=मेल-जोल । व्यवहार ।

रस्य-सज्ञा पु० १ खून । २ शरीर का मांस ।

रस्ता-सज्ञा पु० [स्त्री० रस्ती] बहुत मोटी रस्ती ।

रस्ती-सज्ञा स्त्री० सन या सूत आदि को बटकर बनाई हुई लम्बी चीज । डोरी ।

रहकला-सज्ञा पु० १ एक प्रकार की हलकी

गाड़ी । २ तोप लादने की गाड़ी । ३ रहकल

पर लदी हुई छोटी तोप ।

रहचटा-सज्ञा पु० चसका । लिप्ता । लालसा

या उत्कठा ।

रहंट-सज्ञा पु० कुएँ से पानी निकालने का

एक प्रकार का यंत्र ।

रहटा-सज्ञा पु० सूत कातने का चर्खा ।

रहटी-सज्ञा पु० कपास ओटने की चर्खी ।

रहचह-सज्ञा स्त्री० बिडिया का बोलना ।

चहचहाहट ।

रहटा-सज्ञा पु० अरहर का सूखा डठल ।

रहन-सज्ञा स्त्री० १ रहने की क्रिया या

भाव । २ चाल-चलन । आचरण । व्यवहार ।

रहन-सहन-सज्ञा स्त्री० १ रहने का तरीका ।

जीवन बिताने का ढंग । २ चाल-ढाल ।

आचरण ।

रहना-क्रि० अ० १ ठहरना । रुकना । स्थित

होना । चलना बंद करना । २ निवास

करना । बसना या टिकना । ३ कोई काम

बंद करना । थमना । ४ विद्यमान होना ।

उपस्थित होना । ५. समय बिताना । ६.

नोकरी करना । काम-काज करना । ७.

स्थापित होना । ८. मंथन करना । ९.

जीवित रहना । १०. बचना । पीछ छूट

जाना । ११. शपथ करना । खर्च या प्रयोग

होन के बाद बच जाना ।

मुहा०—रह चलना या जाना=रुक जाना ।

रह जाना=१ कुछ करने न बनना ।

२ शफल न होना । ३ नष्ट रह जाना ।

(अग आदि का) रह जाना=रह

जाना । शिथिल हो जाना । रह जाना ।

यो०—रहा-सहा=बचा-जाना ।

रहनि\*-सज्ञा स्त्री० १ दे० "रहन"। २ चालढाल। आचरण। ३. प्रीति। प्रेम।  
रहम-सज्ञा पु० [अ०] १ दया। वरुणा। २ कृपा।

यो०—रहमदिल=दयालु। कृपालु।  
रहमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] दया। कृपा।  
रहमार-सज्ञा पु० बटमार। डाकू।  
रहर-सज्ञा स्त्री० दे० "अरहर"।

रहस्यभाव-सज्ञा पु० १ ससार से विरक्त होकर एवान्त स्थान में रहना। २ एवान्त स्थान-वासी।

रहल-सज्ञा स्त्री० [अ०] एक प्रकार की छोटी चोकी, जिस पर पढ़ने के समय पुस्तक रखी जाती है।

रहस-सज्ञा पु० दे० "रहस्य"। १ गुप्त भेद। छिपी बात। मर्म। २ लीला। भीड़ा। ३ आनंद। मुख। ४ एकांत स्थान।

रहसना-क्रि० अ० प्रसन्न होना। आनंदित होना।

रहसवधावा-सज्ञा पु० हिन्दुओं में विवाह की एक रीति।

रहसि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "रहस"। गुप्त स्थान। एकांत स्थान।

रहस्य-सज्ञा पु० १ गुप्त भेद। छिपी हुई बात। २ मर्म। गूढ़ तत्त्व, जो सहज में समझ में न आ सके।

वि० गोपनीय। गुप्त भेद। सहज में समझ में न आनेवाली बात।

रहस्यवाद-सज्ञा पु० निराकार ब्रह्म या अज्ञात के प्रति श्रद्धा के शब्दों में हृदय की अनुभूति प्रकट करने का सिद्धान्त।

रहस्यवादी-वि० १ रहस्यवाद के सिद्धान्त को माननेवाला। २ रहस्यवाद-सम्बन्धी।

राहई-सज्ञा स्त्री० १ रहने की क्रिया। दे० "रहन"। २ आराम। मुख।

रहना\*-क्रि० अ० १ होना। २ रहना।  
रहा सहा-वि० वचा-बुचा। जो कुछ वचा हो, वह भी।

रहिल-वि० वगैर। बिना। हीन।

रहिल-सज्ञा पु० चना।

रहोम-वि० [अ०] दयालु। कृपालु।

सज्ञा पु० १ ईश्वर। २. अकबर के वजीर रहीम खां यानखाना का उपनाम, जो हिंदी के प्रसिद्ध कवि भी थे।

रहुआ-सज्ञा पु० दूसरे के यहाँ राटियों के लिए रहनेवाला व्यक्ति। रोटी-तौड़। दुक-दहा।

रांक-वि० दे० "रक"।

राकव-सज्ञा पु० मृगों के रोया से बना हुआ कपड़ा।

रांगा-सज्ञा पु० बहुत नरम और सफेद रंग की एक प्रसिद्ध धातु, जिससे बर्तन आदि जोड़े जाते हैं।

रांच-वि० अर्थ० दे० "रच"।

रांचना-वि० अर्थ० दे० "रचना"। चाहना। प्रेम करना। अनुरक्त होना।

क्रि० स० रंगना। रंग चढ़ाना।

रांजना-क्रि० अ० काजल लगाना।

क्रि० स० १ रजित करना। रंगना। २ फूटे हुए बर्तन को रंग से जोड़ना।

रांडा-सज्ञा पु० टिटिहरी चिड़िया।

रांड-वि० स्त्री० विधवा। बेवा।

रांडना-क्रि० अ० स० राना। विलाप करना।

रांध-सज्ञा पु० पास। निकट। बगल। पड़ोस।

रांधना-क्रि० स० पकाना। भोजन पकाना।

रापी-सज्ञा स्त्री० पतली शूरपी के आकार का मोचियों का एक औजार।

राभना-क्रि० अ० गाय का बोलना या चिल्लाना। बेंबाना।

राभा-वि० सज्ञा पु० दे० "राजा"।

राब्-सज्ञा पु० छोटा राजा। डाय। सरदार। वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

राइता, रायता-सज्ञा पु० दही में कुम्हड़ा, लोकी, बूंदिया या पौदोना आदि डालकर मसालों से बनाया हुआ एक खाद्य पदार्थ।

राइफल-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] एक प्रकार की बन्दूक, जिसका निशाना बहुत दूर तक जाता है।

राई-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों। २ बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।

३. राजापन। राजसी।

सज्ञा पु० १. राजा। २. सर्वश्रेष्ठ।  
 मुहा०—राई-नोन उतारना=नजर लगे हुए  
 बच्चे पर उतार करके राई और तमक को  
 आग में डालना। राई से पर्वत करना=थोड़ी  
 बात को बहुत बड़ा देना। राई-राई करना=  
 टुकड़े-टुकड़े कर डालना।  
 राज\*—सज्ञा पु० दे० “राव”।  
 राजत†—सज्ञा पु० १. दे० “राजपूत”। क्षत्रिय।  
 ठाकुर। २. अहीरो की एक उपाधि। २.  
 वीर। बहादुर।  
 राजर\*†—वि० श्रीमान् का। आपका।  
 सज्ञा पु० अत.पुर। रनवास। जनानखाना।  
 राजल\*†—सज्ञा पु० १. दे० “राजकुल”। २.  
 राजकुल में उत्पन्न पुरुष। राजा।  
 राकस\*†—सज्ञा पु० [स्त्री० राकसिन] दे०  
 “राक्षस”।  
 राका—सज्ञा स्त्री० पूर्णमासी। पूर्णिमा की रात।  
 राकेज—सज्ञा पु० चंद्रमा।  
 राक्षस—सज्ञा पु० [स्त्री० राक्षसी] १. दैत्य।  
 असुर। दुष्ट और पापी। २. एक प्रकार का  
 विवाह, जिसमें कन्या प्राप्त करने के लिए  
 युद्ध करना पड़ता है।  
 राख—सज्ञा स्त्री० किसी चीज के बिलकुल  
 जल जाने के बाद बचा हुआ काला अश्म।  
 भस्म। साक।  
 राखना\*†—क्रि० स० १. बचाना। रक्षा  
 करना। रखवाली करना। २. छिपाना।  
 रोक रखना। जानें न देना। ३. आरोप  
 करना। ४. दे० “रखना”।  
 राखी—सज्ञा स्त्री० रक्षाबंधन का डोरा, जिसे  
 कलाई पर बांधते हैं। मंगलमूत्र। रक्षा।  
 सज्ञा स्त्री० दे० “राख”।  
 राग—सज्ञा पु० १. तासारिक सुखों की चाह।  
 प्रिय वस्तु के प्रति मन का झुकाव। २. कष्ट।  
 तकलीफ। ३. ईर्ष्या। द्वेष। ४. अनुराग।  
 प्रेम। ५. शरीर के अंगों में लगाने का सुगंधित  
 लेप। अगरराग। ६. रंग, विशेषतः लाल  
 रंग। पैर में लगाने का आलता। ७. किसी  
 खास धुन में बँटाए हुए स्वर, जिनके  
 उच्चारण से गान होता हो। भारतीय  
 संगीत में ६ राग माने गए हैं। लय।

मुहा०—अपना राग अलापना=अपनी ही  
 बात कहना।  
 रागना\*†—क्रि० अ० १. प्रेम या अनुराग  
 करना। अनुरक्त होना। २. रेंगा जाना।  
 ३. लीन या मग्न होना।  
 \*क्रि० स० गाना। अलापना।  
 रागमाला—सज्ञा स्त्री० एक ही गीत में एक  
 साथ मिले हुए अनेक रागों या उनके कुछ  
 अंशों का समूह।  
 रागरज्जु—सज्ञा पु० कामदेव।  
 रागलता—सज्ञा स्त्री० रति।  
 रागान्वित—वि० १. जिसे प्रेम हो। प्रेमासक्त।  
 २. जिसे क्रोध हो।  
 रागिनी—सज्ञा स्त्री० संगीत में किसी एक  
 राग का भेद। विशेष रागिनियाँ छत्तीस  
 हैं (प्रत्येक राग की प्रायः ६ रागिनियाँ  
 मानी गई हैं)।  
 रागी—सज्ञा पु० [स्त्री० रागिनी] १.  
 अनुरागी। प्रेमी। २. छ. मानावाले छदों  
 का नाम।  
 †\*सज्ञा स्त्री० राज्ञी। रानी।  
 वि० १. रेंगा हुआ। २. लाल। सुर्ख।  
 ३. विषय-वासना में फँसा हुआ। विरागी  
 का उलटा। ४. रेंगेवाला।  
 राघव—सज्ञा पु० १. रघु के वंश में उत्पन्न  
 व्यक्ति। श्रीरामचंद्र। २. एक बड़ी  
 समुद्रो मछली।।  
 राघना\*—क्रि० स० दे० “रचना”। बनाना।  
 क्रि० अ० १. रचा जाना। बनना। २.  
 रजित होना। रेंगा जाना। ३. अनुरक्त  
 होना। प्रेम करना। ४. मग्न होना। लीन  
 होना ५. प्रसन्न होना। ६. भला जान  
 पड़ना। शोभा देना। ७. सोच या  
 चिन्ता में पड़ना।  
 राछ—सज्ञा पु० १. कारीगरों का औजार।  
 २. जुलाहों के करघे में एक औजार, जिससे  
 ताने का तागा ऊपर-नीचे उठता और  
 गिरता है। बरात। ३. जुलूस।  
 राछत†\*—सज्ञा पु० दे० “राक्षस”।  
 राज—सज्ञा पु० १. राज्य। शासन। हुकूमत।  
 २. राजा। ३. एक राजा-द्वारा शासित

देश । ४. जनपद । ५. पूरा अधिकार । ६. अधिकार-काल । समय । ७. देश । ८. दे० "राजगीर" । मकान बनानेवाला कारीगर । मुहा०—राज-काज=राज्य का प्रबंध । राज पर बैठना=राज-सिंहासन पर बैठना । राज रजना=राज्य करना । बहुत सुख से रहना ।

यो०—राजपाट=राज-सिंहासन । शासन । राज-संज्ञा पु० [ फा० ] रहस्य । भेद ।

राज-ऋण-संज्ञा पु० १. सरकार-द्वारा राष्ट्र या राज्य के नाम पर उसके कार्यों के लिए लिया जानेवाला कर्जा । २. इस प्रकार का ऋण देनेवाले व्यक्तियों को प्रमाण-स्वरूप दिया जानेवाला पत्र ।

राजक-संज्ञा पु० राजा ।

वि० प्रकाश करनेवाला ।

राजकन्या-संज्ञा स्त्री० राजा की पुत्री ।

राजकर-संज्ञा पु० राजा या, राज्य-द्वारा प्रजा से लिया जानेवाला कर । राजस्व । खिराज ।

राजकीय-वि० राजा या राज्य से संबंध रखनेवाला ।

राजकुंजर\*†-संज्ञा पु० दे० "राजकुमार" ।

राजकुमार-संज्ञा पु० [ स्त्री० राजकुमारी ] राजा का पुत्र ।

राजकुल-संज्ञा पु० दे० "राजवंश" ।

राजकोश-संज्ञा पु० सरकारी खजाना । राजा या राज्य का वह खजाना, जो प्रजा के लाभ के लिए जमा हो और प्रजा की भलाई के लिए खर्च हो ।

राज्य-संज्ञा पु० नजूल । शहर की वह जमीन, जो सरकार के कब्जे में हो और जिसका इन्तजाम राज्य की ओर से होता हो ।

राजगद्दी-संज्ञा स्त्री० १. राजसिंहासन । २. राज्याभिषेक ।

राजगिरि-संज्ञा पु० १. मगध देश के एक पर्वत का नाम । २. दे० "राजगृह" ।

राजगीर-संज्ञा पु० मकान बनानेवाला कारीगर । राज । धवाई ।

राजगृह-संज्ञा पु० राजा का महल । बिहार

में पठने के पास एक प्राचीन स्थान । मगध की प्राचीन राजधानी ।

राजत-वि० चांदी का ।

मज्ञा पु० चांदी ।

क्रि० वि० सुगोमिष्ठ ।

राजतरंगिणी-संज्ञा स्त्री० कल्हण-कृत संस्कृत में कश्मीर सम्बन्धी एक प्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ ।

राजतिलक-संज्ञा पु० नए राजा के गद्दी पर बैठने के समय होनेवाला कर्मकाण्ड या उत्सव । दे० "राज्याभिषेक" ।

राजत्व-संज्ञा पु० राजा का भाव या कर्म । राजा का पद ।

राजदंड-संज्ञा पु० १. राजा की आज्ञा से दिया जानेवाला दंड । वह दंड, जिसका विधान राजशासन के अनुसार हो । २. राजशासन । राजदत्त-संज्ञा पु० बीच का वह दाँत, जो ओर दाँतों से बड़ा ओर छोड़ा होता है ।

राजदूत-संज्ञा पु० राज्य की ओर से किसी अन्य राज्य में प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त व्यक्ति ।

राजद्रोह-संज्ञा पु० [ वि० राजद्रोही ] राजा या राज्य के प्रति द्रोह या विद्रोह । बगावत ।

राजद्रोही-वि० जागी । राजा या राज्य के प्रति विद्रोह करनेवाला ।

राजद्वार-संज्ञा पु० राजा के महल की ड्योड़ी । न्यायालय ।

राजधर्म-संज्ञा पु० राजा का कर्त्तव्य या धर्म ।

राजधानी-संज्ञा स्त्री० किसी प्रदेश का वह नगर, जहाँ उस प्रदेश के शासन का केंद्र हो ।

राजनय-संज्ञा पु० राजनीति ।

राजना\*-क्रि० अ० १. उपस्थित होना । रहना । २. शोभित होना ।

राजनीति-संज्ञा स्त्री० देश के शासन में सम्बन्ध रखनेवाली नीति । वह नीति, जिससे अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों का संचालन किया जाय ।

राजनीतिक-वि० राजनीति-संबन्धी ।

राजनील-संज्ञा पु० पन्ना । मरकत मणि ।

राजन्य-संज्ञा पु० १. क्षत्रिय । २. राजा । ३. राजपुत्र । ४. जगि ।

राजपथ\*—सज्ञा पु० दे० "राजपथ"।  
 राजपथ—सज्ञा पु० आम सड़क। राजमार्ग।  
 बड़ी सड़क।  
 राजपद्धति—सज्ञा स्त्री० राजनीति। राज-धर्म।  
 राजपाल—सज्ञा पु० राज्य का रक्षक। दे०  
 "राज्यपाल"। भारत में राज्यों के शासकों  
 की उपाधि। (अग्रे० गवर्नर)।  
 राजपुत्र—सज्ञा पु० १ राजा का पुत्र। राज-  
 कुमार। २ एक वर्णसंकर जाति।  
 राजपुत्रक—सज्ञा पु० राजकुमार।  
 राजपुत्रिका—सज्ञा स्त्री० राजकुमारी।  
 राजपुत्री।  
 राजपुरुष—सज्ञा पु० सरकारी अधिकारी।  
 राजकर्मचारी। शासन की नीति और  
 व्यवहार का ज्ञाता राजनीतिज्ञ।  
 राजपूत—सज्ञा पु० १ दे० "राजपुत्र"। २  
 राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ  
 विशिष्ट वंश।  
 राजपूताना—सज्ञा पु० भारत के पश्चिमी  
 भाग में एक प्रदेश, जिसका वर्तमान नाम  
 राजस्थान है।  
 राजप्रासाद—सज्ञा पु० राजमहल। राजा के  
 रहने का महल।  
 राजवदी—सज्ञा पु० राजा या राज्य-द्वारा  
 बिना मुकदमा चलाए किसी आरोप के  
 सदेह में गिरफ्तार व्यक्ति।  
 राजबाह—सज्ञा पु० वह बड़ी नहर, जिससे  
 अनेक छोटी-छोटी नहरें निकाली जाती हैं।  
 राजभण्डार—सज्ञा पु० सरकारी खजाना।  
 राजा या राज्य का खजाना।  
 राजभक्त—वि० [सज्ञा राजभक्ति] राजा  
 या राज्य के प्रति भक्ति रखनेवाला।  
 राज्य के प्रति ईमानदार या वफादार।  
 राजभक्ति—सज्ञा स्त्री० राजा या राज्य के  
 प्रति निष्ठा। राज्य के प्रति वफादारी या  
 ईमानदारी।  
 राजभवन—सज्ञा पु० राजमहल।  
 राजभाषा—सज्ञा स्त्री० किसी देश या राज्य  
 के सरकारी कार्यों और न्यायालयों आदि  
 में प्रयोग की जानेवाली वहाँ की प्रचलित  
 भाषा।

राजभूय—सज्ञा पु० राज्य। राजत्व।  
 राजभोग—सज्ञा पु० १. एक प्रकार का महीन  
 धान। २. मन्दिर में दोपहर को लगनेवाला  
 बड़ा भोग या नैवेद्य।  
 राजमराल—सज्ञा पु० राजहस।  
 राजमहल—सज्ञा पु० राजभवन। राजा का  
 महल। राजप्रासाद।  
 राजमहिषी—सज्ञा स्त्री० महारानी। पटरानी।  
 राजमाता—सज्ञा स्त्री० शासन करनेवाले राजा  
 की माता।  
 राजमाण—सज्ञा पु० आम सड़क।  
 राजमुद्रा—सज्ञा स्त्री० राजा या राज्य की  
 वह मोहर, जो सरकारी कामजो आदि पर  
 लगाई जाती है।  
 राजयक्ष्मा—सज्ञा पु० यक्ष्मा या क्षयरोग।  
 तपेदिक।  
 राजयोग—सज्ञा पु० १ वह प्राचीन योग,  
 जिसका उपदेश पतञ्जलि ने योगशास्त्र में  
 किया है। २ फलित ज्योतिष के अनुसार  
 ग्रहों का ऐसा योग, जिसके जन्मकुण्डली में  
 पडने से मनुष्य राजा होता है।  
 राजराजेश्वर—सज्ञा पु० [स्त्री० राज-  
 राजेश्वरी] अनेक राजाओं का राजा।  
 सम्राट्। राजाधिराज।  
 राजरोग—सज्ञा पु० १ अच्छी न होनेवाली  
 बीमारी। असाध्य रोग। २ क्षय रोग।  
 राजर्षि—सज्ञा पु० १ ऋषियों में श्रेष्ठ। २  
 राजर्षण या क्षत्रिय-कुल में उत्पन्न ऋषि।  
 राजलक्ष्मी—सज्ञा स्त्री० राजवैभव। राज्य  
 का ऐश्वर्य। राजश्री। राजा की शोभा।  
 राजलिपि—सज्ञा स्त्री० राज-कार्यों में काम  
 आनेवाली लिपि।  
 राजवन—वि० राजा के गुणों या कर्म से  
 युक्त।  
 राजवंश—सज्ञा पु० राजा का कुल या खानदान।  
 राजकुल।  
 राजवर्त्म—सज्ञा पु० राजमार्ग।  
 राजवार—सज्ञा पु० दे० "राजद्वार"।  
 राजवाह—सज्ञा पु० घोड़ा।  
 राजश्री—सज्ञा स्त्री० राजलक्ष्मी। राजवैभव।  
 राजा का ऐश्वर्य।

राजस-वि० [स्त्री० राजसी] १. रजोगुण से उत्पन्न। २. रजोगुणी।  
 सज्ञा पु० आवेश। शोध।  
 राजसत्ता-सज्ञा स्त्री० १. राज्याधिकार।  
 २. राज्य की सत्ता। देश के शासन के लिए स्थापित की हुई सत्ता।  
 राजसत्तात्मक-वि० बहुशासन-प्रणाली, जिसमें केवल राजा की सत्ता ही प्रधान हो। प्रजा-सत्तात्मक का उलटा।  
 राजसभा-सज्ञा स्त्री० १. राजाओं की मंभा।  
 २. दरबार।  
 राजसमाज-सज्ञा पु० राजाओं का दरबार या समाज। राजमंडली।  
 राजसिंहासन-सज्ञा पु० राजा के बैठने का सिंहासन। राजगद्दी।  
 राजसिक्क-वि० दे० "राजत" और "राजती"।  
 राजसी-वि० राजा के योग्य। बहुमुख्य या भडकीला। जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। रजोगुणमयी।  
 राजसूय-सज्ञा पु० एक बड़ा यज्ञ, जिसे प्राचीन काल में सम्राट् पद के अधिकारी राजा करते थे।  
 राजस्व-सज्ञा पु० घोडा।  
 राजस्थान-सज्ञा पु० उत्तर-प्रदेश के पश्चिम और पूर्वी पंजाब के दक्षिण का प्रदेश, जिसे पहले राजपूताना कहते थे।  
 राजस्थानी-सज्ञा स्त्री० राजस्थान या राजपूताने की भाषा।  
 वि० राजस्थान या राजपूताने का।  
 राजस्व-सज्ञा पु० १. राज्य को कर या मुल्क आदि से होनेवाली आमदनी। २. राज्य-द्वारा लिया जानेवाला भूमि आदि का कर।  
 राजहस-सज्ञा पु० [स्त्री० राजहसी] एक प्रकार का हंस।  
 राजा-सज्ञा पु० [स्त्री० राजी, रानी] १. किसी देश या जाति का प्रधान शासक। बादशाह। नरेश। भूप। अधिपति। स्वामी। मालिक। २. एक उपाधि, जो अंगरेजी सरकार बड़े रईसों को प्रदान करती थी।  
 राजाना-सज्ञा स्त्री० राजा की आज्ञा।

राजाधिराज-सज्ञा पु० राजाओं का राजा। शाहशाह। सम्राट्।  
 राजावर्त-सज्ञा पु० लाजवर्द नामक उप-रत्न।  
 राजि-सज्ञा स्त्री० १. पक्ति। कतार। रेखा। लकीर। २. राई।  
 राजिका-सज्ञा स्त्री० १. राई। २. राजि। पक्ति। ३. लकीर। रेखा।  
 राजित-वि० १. सुसोभित। २. विराजा हुआ। उपस्थित। मौजूद।  
 राजिव\*-सज्ञा पु० दे० "राजीव"।  
 राजी-सज्ञा स्त्री० पक्ति। श्रेणी। कतार।  
 राजी-वि० [अ०] १. कही हुई बात मानने की तैयार। सममत। राजामन्दी। अनुकूलता। २. नीरोग। चंगा। ३. खुश। प्रसन्न। मुसी।  
 यौ०—राजी-खुशी=सही-सलामत।  
 राजीनामा-सज्ञा पु० [फा०] वह लेख, जिसके द्वारा वादी और प्रतिवादी परस्पर मेल कर लें।  
 राजीव-सज्ञा पु० कमल।  
 राजीवगण-सज्ञा पु० १८ मानाओं का एक मात्रि छंद।  
 राजक-सज्ञा पु० मोर्य-काल का एक राज-कर्मचारी या सूबेदार।  
 राजेंद्र, राजेश्वर-सज्ञा पु० [स्त्री० राजेश्वरी] अनेक राजाओं का राजा। महाराज।  
 रानी-सज्ञा स्त्री० १. रानी। राजा की पत्नी।  
 २. मूर्त्य की पत्नी, सत्ता।  
 राज्य-सज्ञा पु० १. राजा का काम। शासन। बादशाहत। २. शासन के अन्तर्गत देश का विशेष भूभाग।  
 राज्यभूत-वि० राजगद्दी से उतरा हुआ।  
 राज्यतंत्र-सज्ञा पु० राज्य की शासन-प्रणाली।  
 राज्य-व्यवस्था-सज्ञा स्त्री० १. राज-नियम। कानून। २. शासन-व्यवस्था। ३. नीति।  
 राज्याभिषेक-सज्ञा पु० राजसिंहासन पर बैठने के समय या राजमूस गद्द में राजा का अभिषेक। राजगद्दी पर बैठने की रीति। राज्यारोहण।  
 राट-सज्ञा पु० १. राजा। बादशाह। २. श्रेष्ठ व्यक्ति। ३. सरदार।  
 राट\*-सज्ञा पु० १. राज्य। २. राजा।

राठोर-सज्ञा पु० दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश। राष्ट्रकूट।  
राइ-वि० १. नीच। २. निकम्मा। ३. कायर।  
४ भगोडा।

राइ-सज्ञा स्त्री० १. झगडा। राइ। २. निकम्मा। ३ कायर।

राइ-सज्ञा स्त्री० १ कान्ति। २ शोभा।

राइ-सज्ञा पु० वग देश के उत्तरी भाग का नाम।

राणा-सज्ञा पु० महाराणा। राजा।

रात-सज्ञा स्त्री० संध्या के बाद से प्रातः काल तक का समय। निशा। रजनी।

मुहा०—रात-दिन=सदा। हमेशा।

रातडी, रातरी-सज्ञा स्त्री० दे० "रात"।

रातना\*-क्रि० अ० १ लाल रंग से रँग जाना।  
२ रँग जाना। ३ अनुरक्त होना। आश्रित होना।

राता\*-वि० [स्त्री० राती] १ लाल।  
सुखे। २ रँग हुआ। ३ अनुरक्त।

राति\*-सज्ञा स्त्री० रात। रजनी।

रातिचर\*-सज्ञा पु० दे० "राक्षस"। रात के समय चलनेवाला।

रातिब-सज्ञा पु० [अ०] पशुओं का भोजन।  
घोड़े या हाथी की खुराक।

रातुल-वि० लाल। सुखे।

रात्रि-सज्ञा स्त्री० रात। निशा।

रात्रिकर-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

रात्रिचर, रात्रिचारी-सज्ञा पु० राक्षस।

वि० रात के समय विचरनेवाला।

रात्रिज-सज्ञा पु० नक्षत्र।

रात्रिपुष्प-सज्ञा पु० कमल।

रात्रिबल-सज्ञा पु० राक्षस।

रात्रिमणि-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

रात्रिहास-सज्ञा पु० कुमुद।

राइ-वि० १ पका हुआ। २ ठीक किया हुआ। ३ पूरा किया हुआ।

राइत-सज्ञा पु० सिद्धान्त। उसूल।

राइ-सज्ञा स्त्री० सिद्धि। सफलता।

राध-सज्ञा पु० धन। सम्पत्ति।

सज्ञा स्त्री० मवाद।

राधन-सज्ञा पु० १. साधने की क्रिया।

साधना। २. मिसना। प्राप्ति। ३. सतोष।  
तुष्टि। ४. साधन।

राधना\*†-क्रि० सं० १. आराधना करना।  
पूजा करना। २. सिद्ध करना। पूरा करना।  
३ काम निकालना।

राधा-सज्ञा स्त्री० १ वैशाख की पूर्णिमा।  
२ प्रीति। ३ वृषभानु गोप की कन्या  
और श्रीकृष्ण की प्रेयसी। ४ विजली।  
५ एक वर्णवृत्त।

राधाकान्त-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

राधारमण-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

राधावल्लभ-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

राधावल्लभी-सज्ञा पु० वैष्णवा का एक प्रसिद्ध  
संप्रदाय।

राधिका-सज्ञा स्त्री० १ वृषभानु गोप की  
कन्या, राधा। २ वाइस मायाओं का एक  
छंद।

राधेय-सज्ञा पु० कर्ण। (धृतराष्ट्र के सारथि  
अधिरथ की पत्नी राधा ने कर्ण का अपने  
पुत्र की तरह पालन किया था, इसलिए कर्ण  
को 'राधेय' कहते हैं।)

रान-सज्ञा स्त्री० [फा०] जघा। जांघ।

राना-सज्ञा पु० दे० "राणा"।

\*क्रि० अ० अनुरक्त होना।

रानी-सज्ञा स्त्री० १ राजा की स्त्री। २.  
स्वामिनी। मालकिन। स्त्रियों के लिए  
आदर-सूचक शब्द। ३ मधुमक्खियों की  
प्रधान।

रानी-काजर-सज्ञा पु० एक प्रकार का धान।

रापी-सज्ञा स्त्री० चमारों का एक औजार।  
रापी।

राब-सज्ञा स्त्री० आँच पर औठाकर खूब  
गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस।

राम-सज्ञा पु० १. सूर्यवंशी महाराज दशरथ  
के पुत्र, जो दस अवतारों में से एक माने जाते  
हैं। रामचंद्र। २ परशुराम। ३ बलराम।  
बलदेव। ४ तीन की सख्या। ५ ईश्वर।  
भगवान्। ६ एक प्रकार का मायिक छंद।

मुहा०—राम शरण होना=१. साधु होना।  
विरक्त होना। २. मर जाना। राम-राम  
करना=अभिवादन करना। प्रणाम करना।

भगवान् का नाम जपना । राम-राम= प्रणामसूचक शब्द । राम-राम करके=बड़ी कठिनाई से । राम-राम हो जाना=भर जाना ।

रामगिरि-सज्ञा पु० दे० "रामदेक" ।

रामगोप्ती-सज्ञा पु० ३६ भावाओ का एक भाषिक छंद ।

रामचंद्र-सज्ञा पु० अयोध्या के राजा महाराज दशरथ के बड़े पुत्र, जो विष्णु के अवतार हैं । दे० "राम" ।

रामजननी-सज्ञा स्त्री० श्री रामचन्द्र की माता, कौसल्याजी ।

रामजना-सज्ञा पु० [स्त्री० रामजनी] १. एक सकर जाति, जिसकी कन्याएँ वेश्या-वृत्ति करती हैं । २. वर्णसकर ।

रामजनी-सज्ञा स्त्री० वेश्या ।

रामशोल-सज्ञा स्त्री० पाजैब ।

रामदेक-सज्ञा पु० नागपुर जिले की एक प्रसिद्ध पहाड़ी ।

रामजीयक-वि० मनोहर ।

सज्ञा पु० मनोहरता ।

रामतरोई-सज्ञा स्त्री० दे० "मिडी" । एक तरकारी ।

रामता-सज्ञा स्त्री० राम का गुण । रामपन । रामतारक-सज्ञा पु० रामजी का मंत्र, जो इस प्रकार है—रा रामाय नमः ।

रामति\*†-सज्ञा स्त्री० भिक्षा के लिए द्वापर-उपर धूमना । बिंधुओं की फेरी ।

रामतुलसी-सज्ञा पु० एक प्रकार की तुलसी । रामा तुलसी ।

रामतत्त्व-सज्ञा पु० राम का भाव । राम होने का गुण । रामपन ।

रामदल-सज्ञा पु० १. रामचंद्रजी की बदरवाली सेना । २. कोई बड़ी और प्रबल सेना, जिसका मुकाबला करना कठिन हो ।

रामदानी-सज्ञा पु० एक तरह का धान । चौराई की जाति का एक पोषा और उमका दाना, जिसे जन के दिनु खाते हैं ।

रामदास-सज्ञा पु० १. हनुमान् । २. दक्षिण भारत के एक प्रसिद्ध महारमा, जो छत्रपति महाराज शिवाजी के गुरु थे ।

रामदूत-सज्ञा पु० हनुमान्जी ।

रामधनुष-सज्ञा पु० १. इन्द्रधनुष । २. रामचंद्रजी का धनुष ।

रामधाम-सज्ञा पु० १. साकेत लोक । स्वर्ग । २. अयोध्या ।

रामनवमी-सज्ञा स्त्री० चैत्र शुक्ल पक्ष की ९वीं तिथि, जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था । चैत सुदी नवमी ।

रामना\*†-वि० अ० दे० "रमना" ।

रामनामी-सज्ञा पु० १. चहर या दुपट्टा, जिस पर "राम-राम" छपा रहता है । २. एक प्रकार का हार, जिसके बीच में 'राम' नाम अंकित पान लगा रहता है ।

रामफल-सज्ञा पु० एक फल ।

राम-फटाका-सज्ञा पु० वह लम्बा तिलक, जो रामानुज आदि सम्प्रदायों के अनुयायी मस्तक पर लगाते हैं ।

रामबाण-वि० १. अच्छा । अमोघ । २. तुरन्त लाभ करनेवाली या तुरन्त प्रभाव दिखाने-वाली (ओषध) ।

सज्ञा पु० वैद्यक में एक प्रकार की ओषध ।

रामबांस-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का मोटा बांस । २. केबड़े की जाति का एक पोषा, जिसके पत्तों के रसों से रसो बनते हैं ।

रामभक्त-सज्ञा पु० १. रामचन्द्र के उपासक । २. हनुमानजी ।

रामचंद्र-सज्ञा पु० श्रीरामचंद्रजी ।

रामभोग-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का चावल । २. एक प्रकार का आम ।

रामरज-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की पीसी मिट्टी ।

रामरत्न-सज्ञा पु० नमक ।

रामराज्य-सज्ञा पु० १. श्री रामचंद्रजी का शासन । २. अत्यंत सुखदायक शासन, जिसमें जनता को निमी प्रकार का नष्ट न हो ।

रामलोला-सज्ञा स्त्री० १. रामचंद्रजी की जीवन-लोला । २. अभिनय ।

रामशर-सज्ञा पु० एक प्रकार का नरकट या तरकश ।

रामसखा-सज्ञा पु० सुग्रीव ।

रामसनेही-वि० राम से स्नेह रखनेवाला ।

रामभक्त ।

सज्ञा पु० वंष्णवों का एक संप्रदाय ।

रामसुवर-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नाव ।

रामसेतु-सज्ञा पु० दक्षिण भारत में रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह, जिसके सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि रामचन्द्रजी ने बन्दरा की सहायता से सका पर आक्रमण करने के लिए समुद्र पर पुल बनाया था ।

रामा-सज्ञा स्त्री० १. सुंदर स्त्री । २. नदी । ३. लक्ष्मी । ४. सीता । ५. रुक्मिणी । ६. राधा । ७. इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बना हुआ एक छद्म । ८. आर्या छद्म का १७वाँ भेद ।

रामा तुलसी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का तुलसी का पौधा ।

रामानंद-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध वंष्णव आचार्य, जिनका चलाया हुआ रामावत नामक संप्रदाय अब तक प्रचलित है । ये विक्रमीय १४वीं शताब्दी में हुए थे ।

रामानंदी-वि० रामानंद के संप्रदाय का अनुयायी ।

रामानुज-सज्ञा पु० वंष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध दक्षिणी आचार्य । वेदांत में इनका सिद्धांत विशिष्टाद्वैत कहलाता है ।

रामायण-सज्ञा पु० रामचन्द्र के चरित्र से संबंध रखनेवाला ग्रंथ । संस्कृत में रामायण नाम के बहुत-से ग्रंथ हैं, जिनमें से वाल्मीकि-कृत रामायण सबसे प्राचीन और अधिक प्रसिद्ध है । यह आदिकाव्य है । हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास-कृत प्रसिद्ध ग्रंथ, जो हिन्दुओं का धर्मग्रन्थ जैसा है (राम-चरित-मानस) ।

रामायणी-वि० रामायण का । रामायण-सम्बन्धी ।

सज्ञा पु० १ रामायण की कथा कहनेवाला ।

२. रामायण का विशेषज्ञ ।

रामायुध-सज्ञा पु० धनुष ।

रामावत-सज्ञा पु० वंष्णव आचार्य रामानंद का चलाया हुआ एक संप्रदाय ।

रामिल-सज्ञा पु० १. कामदेव । २. पनि ।

३. प्रेमपात्र । ४. रमण ।

रामेश्वर-सज्ञा पु० दक्षिण भारत के समुद्र-तट का एक तीर्थस्थान ।

राम्या-सज्ञा स्त्री० रात ।

राय-सज्ञा पु० १ राजा । २. सरदार ।

३. सामंत । ४. भाट । बदीजन ।

सज्ञा स्त्री० सम्मति । मत । सलाह ।

रायज-वि० [अ०] जिसका स्वाज हो । प्रचलित । चलनसार ।

रायता-सज्ञा पु० यही में कुम्हड़ा, लोकी या बुंदिया आदि डालकर मसालों के साथ बनाया हुआ एक खाद्य पदार्थ ।

रायभोग-सज्ञा पु० दे० "राजभोग" ।

रायबहादुर-सज्ञा पु० अंगरेजी शासन-काल में सरकार की ओर से हिन्दुओं को दी जानेवाली एक उपाधि ।

रायमुनी-सज्ञा स्त्री० साले नामक पंखी की भादा ।

रायरसि\*-सज्ञा स्त्री० राजराशि । राजा का कोप । शाही खजाना ।

रायल्टी-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] किसी प्रय-कर्त्ता या आविष्कारक आदि को उसकी रचना या आविष्कार से होनेवाले लाभ का वह अंश, जो उसे बराबर मिलता रहता है । दे० "स्वामित्व" ।

रायसा-सज्ञा पु० दे० "रासो" । वह काव्य जिसमें किसी राजा का जीवनचरित्र छंदों में वर्णित हो ।

रायसाहब-सज्ञा पु० अंगरेजी शासन-काल में सरकार की ओर से हिन्दुओं को दी जानेवाली एक उपाधि ।

रार-सज्ञा पु० शगड़ा । टटा । हृज्जत ।

राल-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का बड़ा पेड़ और उसका निर्यास । धूना । धूप । २. पतला लतादार धुक । लार ।

मुहा०-राल गिरना, चूना या टपकना=किसी पदार्थ को देखकर उसे पाने की बहुत इच्छा होना ।

राज-संज्ञा पु० १ दे० "राज" । २ सरदार ।  
३ राजा । ४ भाट । ५ राजपूताने के  
राजाओं की एक उपाधि ।

राजबाब-संज्ञा पु० साड-प्यार । राग-रग ।

राजद\*—संज्ञा पु० राजमहल । महल ।

राजदो—संज्ञा स्त्री० १ कपड़ का बना हुआ  
एक प्रकार का छोटा पर या डेरा । तम्बू ।  
२ बारहदरी ।

राजण-संज्ञा पु० लका का प्रसिद्ध राजा, जो  
राक्षसों का नायक था और जिस युद्ध में  
भगवान् रामचन्द्र ने मारा था । दशकधर ।

राजगारि-संज्ञा पु० श्रीरामचन्द्रजी ।

राजत-संज्ञा पु० १ मुर । बहादुर । २ सामंत ।  
सरदार । ३ छोटा राजा ।

राजन-संज्ञा पु० दे० "राजण" ।

राजनगढ़\*—संज्ञा पु० दे० "लका" ।

राजना\*—क्रि० सं० रलाना ।

राजबहादुर-संज्ञा पु० अग्रजी शासन-काल में  
सरकार-द्वारा हिन्दुओं को दी जानेवाली  
एक उपाधि ।

राजर\*—संज्ञा पु०, वि० [ स्त्री० राजरी ]  
दे० "राउर" । आपका ।

राजल-संज्ञा पु० [ स्त्री० राजलि, राजली ]  
१ राजा । २ राजपूताने के कुछ राजाओं  
की उपाधि । ३ प्रधान । सरदार । ४ आवर-  
सूचक सुन्नीधन । ५ अतःपुर । रनिवास ।

राशन-संज्ञा पु० [ अग्र० ] खान की सामग्री ।  
सरकार-द्वारा निर्धारित प्रत्येक व्यक्ति के  
लिए खाद्यान्न का परिमाण, जो सरकारी  
दुकानों से बाड पर मिलता है ।

राशनिय-संज्ञा पु० [ अग्र० ] राशन देन की  
सरकारी व्यवस्था । वह सरकारी प्रबन्ध  
जिसमें लोगो को खाने-पीन की, या अन्य  
आवश्यक वस्तुएं निश्चित मात्रा में और  
निश्चित समय पर दी जाती हैं ।

राशि-संज्ञा स्त्री० १ समूह । डर । २ किसी  
का उत्तराधिकार । जानसीनी । ३ रातिवृत्त  
में पड़नेवाले विविष्टि तारा-समूह, जो बारह  
ह—मेघ, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या,  
तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन ।  
घो०—राशि मिलना । विवाह के लिए लडक

और लडकी की राशियों में उचित मेल  
होना । २ पटरी बैठना । मेल मिलना ।

राशिचक्र-संज्ञा पु० राशियों का चक्र या  
मंडल । जैसे मघ, वृष, मिथुन आदि राशियों  
का मंडल ।

राशिनाम-संज्ञा पु० किसी व्यक्ति का वह  
नाम, जो उसके जन्म समय की राशि के  
अनुसार और पुकारने के नाम से भिन्न  
होता है ।

राशी-संज्ञा स्त्री० दे० "राशि" ।

राष्ट्र-संज्ञा पु० १ राज्य । देश । मुल्क । २  
राज्य की जनता । प्रजा । एक देश या  
राज्य में बसनेवाला जन-समुदाय ।

राष्ट्रक-संज्ञा पु० देश । राज्य ।

वि० राष्ट्रसम्बन्धी ।

राष्ट्रकूट-संज्ञा पु० दक्षिण भारत का एक  
प्रसिद्ध प्राचीन राजवंश । राठौर ।

राष्ट्रतंत्र-संज्ञा पु० राज्य का शासन करने  
की प्रणाली ।

राष्ट्रपति-संज्ञा पु० आधुनिक प्रजातंत्र शासन-  
प्रणाली में वह सर्व-प्रधान शासक, जो शासन  
करने के लिए चुना जाता है । जैसे, भारत  
और अमेरिका आदि देशों में ।

राष्ट्रपरिषद्-संज्ञा स्त्री० देश या राष्ट्र के  
निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा ।

राष्ट्रपाल-संज्ञा पु० राजा ।

राष्ट्रभाषा-संज्ञा स्त्री० किसी देश में प्रचलित  
वह प्रधान भाषा, जिसका व्यवहार उस  
देश के रहनेवाले अन्य भाषाभाषी  
भी सावजनिक पारस्परिक कार्यों में  
करते हैं ।

राष्ट्रभूत-संज्ञा पु० राजा । किसी राष्ट्र का  
स्वामी ।

राष्ट्रमंडल-संज्ञा पु० [ वि० राष्ट्रमंडलीय ]  
कुछ राष्ट्रों का ऐसा समूह, जिसमें प्रत्येक  
सदस्य राष्ट्र के कुछ निश्चित वक्तव्य और  
उत्तरदायित्व हैं और सबको समान अधिकार  
प्राप्त हो ।

राष्ट्रमुद्रा-संज्ञा स्त्री० राज्य की मुहर । किसी  
देश के सरकारी कागज-पत्रों पर अंकित  
की जानेवाली मुहर ।

राष्ट्रलिपि—सज्ञा स्त्री० किसी देश की राष्ट्र-भाषा की लिपि ।

राष्ट्रवाद—सज्ञा पु० [ वि० राष्ट्रवादी ] अपने राष्ट्र के हिता को सबसे अधिक प्रधानता देने का सिद्धान्त ।

राष्ट्रवादी—वि० अपने देश या राष्ट्र की महता, एकता और कल्याण का पक्षपाती ।  
राष्ट्रवाद के सिद्धान्त का अनुयायी ।

राष्ट्रसंघ या संयुक्त राष्ट्रसंघ—सज्ञा पु०  
द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व-शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से संघटित संसार के अनेक राष्ट्रों का एक संघ ।  
(अंग्रे०—यूनाइटेड नेशन्स आर्गनाइजेशन—  
पु० एन० ओ०)

राष्ट्रिक—वि० राष्ट्र-सम्बन्धी । राष्ट्र का ।  
राष्ट्रीय ।

सज्ञा पु० [ वि० राष्ट्रीयता ] राष्ट्र या देश का निवासी । नागरिक । किसी राष्ट्र का अंग या सदस्य । प्रजा ।

राष्ट्रीयता—सज्ञा स्त्री० राष्ट्रिक होने का भाव या अवस्था । दे० “राष्ट्रियता” ।

राष्ट्रिय—वि० राष्ट्र या देश का । राष्ट्र-सम्बन्धी । अपने राष्ट्र या देश की एकता या उन्नति आदि से सम्बन्ध रखनेवाला ।

राष्ट्रियकरण, राष्ट्रियकरण—सज्ञा पु० देश के उद्योग आदि पर सरकारी कब्जा और सरकार द्वारा उसका संचालन ।

राष्ट्रियता, राष्ट्रीयता—सज्ञा स्त्री० १ अपन राष्ट्र या देश के प्रति प्रेम-विशय । किसी राष्ट्र के नागरिक होने का भाव या अवस्था । राष्ट्र से सम्बन्ध रखन का भाव । २ किसी राष्ट्र के गुण-विशेष ।

राष्ट्रीय—वि० [ सज्ञा स्त्री० राष्ट्रीयता ] दे० “राष्ट्रिय” ।

रास—सज्ञा स्त्री० १ गोपा की प्राचीन-काल की एक क्रीडा, जिसमें ये सब परा बांधकर नाचने थे । श्रीकृष्ण का गोपिया के साथ नृत्य । २ एक प्रकार का नाटक, जिनमें श्रीकृष्ण की इस क्रीडा का अभिनय होता है । ३ एक प्रकार का चत्ता गाना । ४ लगाम । ५ बागडोर । जजीर । शृंगार । ६

ढेर । समूह । दे० “राशि” । ७ एक प्रकार का छद्म । ८ जोड़ । ९ चौपायो का झुंड । १० गोद । दत्तक । ११ सूद । व्याज ।  
वि० अनुकूल । ठीक ।

रासक—सज्ञा पु० हास्य-रस के नाटक का एक भेद, जो केवल एक अंक का होता है ।

रासधारी—सज्ञा पु० श्रीकृष्ण की रासक्रीडा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करनेवाला व्यक्ति या समुदाय ।

रासन—वि० स्वादिष्ट ।

सज्ञा पु० चसना । स्वाद लेना ।

रासभ—सज्ञा पु० [ स्त्री० रासभी ] १ गद्दा । गधा । २ खच्चर ।

रासमडल—सज्ञा पु० श्रीकृष्ण का गोपियों के साथ क्रीडा करने का स्थान या समूह ।  
रास-क्रीडा करनेवाला का समूह या मंडली ।  
रास करनेवाला का अभिनय ।

रासमंडली—सज्ञा स्त्री० रासधारिया का समाज या टोली ।

रासलीला—सज्ञा स्त्री० १ वह लीला, जो श्रीकृष्ण न गोपिया के साथ शरत्पूर्णिमा को की थी । २ रासधारियों का कृष्णलीला-संबंधी अभिनय ।

रासविलास—सज्ञा पु० रासक्रीडा ।

रासविहारी—सज्ञा पु० श्रीकृष्ण ।

रासायन—वि० रसायन-सम्बन्धी ।

रासायनिक—वि० रसायन-संबंधी । रसायन-शास्त्र का ज्ञाता ।

रासायनिक परीक्षक—सज्ञा पु० रासायनिक तत्वों की जांच करनेवाला या उनका विश्लेषण करनेवाला ।

रासु\*—वि० १ सीधा । २ सरल । ३ ठीक ।

रासो—सज्ञा पु० १ वह काव्य, जिसमें किसी राजा का जीवनचरित, उसकी वीरता और युद्ध आदि का वर्णन हो । २ हिन्दी का प्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ पृथ्वीराज-रासो ।

रास्त—वि० [ फा० ] १ उचित । वाजिब ।

२ सीधा । सरल । ३ दुस्त । ठीक ।

रास्ता—सज्ञा पु० [ फा० ] १. मार्ग । राह । २ प्रथा । चाल । ३. उपाय । तरीका ।

मुहा०—रास्ता देखना=प्रतीक्षा करना ।

आसरा देखना । रास्ता पकड़ना = चल देना । चले जाना । रास्ता बताना = १. चलता करना । टालना । २. सिखाना । तरकीब बताना ।

रास्ता-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का कद । घोड़ासतन ।

राह-संज्ञा स्त्री० १. मार्ग । रास्ता । २. प्रथा । चाल । ३. नियम । कायदा । ४. दे० "रोह" ।

संज्ञा पु० दे० "राहु" ।

मुहा०—राह देखना या ताकना = प्रतीक्षा करना । राह पड़ना = डाका पड़ना । लूट पड़ना ।

राहखर्च-संज्ञा पु० रास्ते में होनेवाला खर्च । मार्ग-व्यय ।

राहगीर-संज्ञा पु० [ फा० ] पथिक । मुसाफिर ।

राहचलता-संज्ञा पु० १ पथिक । राहगीर । २. अपरिचित । ३. गैर । जिसका प्रस्तुत विषय से कोई सम्बन्ध न हो ।

राहचौरंगी-संज्ञा स्त्री० दे० "चौमुहानी" ।

राहजन-संज्ञा पु० [ फा० ] लुटेरा । चटमार । डाकू ।

राहजनों-संज्ञा स्त्री० [ फ० ] रास्ते में लूटमार । चटमारी ।

राहत-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] आराम । चैन । मुखा ।

राहदारी-संज्ञा स्त्री० [ फा० ] राह पर चलने का महमूल । सड़क का कर । जुगी । महमूल । यौ०—नरवाना राहदारी = वह आगपन, जिसके अनुसार किसी मार्ग से होकर जाने या माल ले जाने का अधिकार प्राप्त होता है ।

राहना-संज्ञा पु० दे० "रहना" ।  
कि० सं० रेली आदि को मरदरा करके रेतने धीम बनाना ।

राहस्म, राहरीति-संज्ञा पु० १. रीति-व्यवहार । रिवाज । प्रथा । परिपाटी । २. जान-बूझना ।

राहित्य-संज्ञा पु० 'रहित' होने का भाव । किसी चीज के न होने का भाव । खालीपन ।

राहिन-वि० [ अ० ] रेहन या बंधक रखने-वाला ।

राही-संज्ञा पु० [ फा० ] पथिक । यात्री । राहु-संज्ञा पु० नौ ग्रहों में से एक ।

राहुल-संज्ञा पु० गौतम बुद्ध के पुत्र का नाम ।

रिगन-संज्ञा स्त्री० पृष्ठों के चल चलना । रेंगना ।

रिगना-संज्ञा पु० दे० "रेंगना" ।

रिगाना-संज्ञा पु० दे० "रेंगना" ।  
रिगाना-संज्ञा पु० दे० "रेंगना" ।  
बच्चों को चलाना ।

रिव-संज्ञा पु० [ फा० ] १. मंमोजी । स्वेच्छा-चारी । २. धर्म के विषय में उदार विचार रखनेवाला या धार्मिक ग्रन्थों को न माननेवाला ।

वि० १. मस्त । २. मतवाला ।

रिवा-वि० निरक्षुण्ण । उड़्ड ।

रिवायत-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] छुट । कमी । कृपा । दयापूर्ण व्यवहार । नरमी ।

रिवाया-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] प्रजा ।

रिक्क-संज्ञा स्त्री० अरई के पत्तों की बनाई गई खाने की एक चीज ।

रिकाव-संज्ञा स्त्री० दे० "रकाव" ।

रिक्त-वि० १. खाली । शून्य । २. निर्धन ।

रिक्तता-संज्ञा स्त्री० खाली होने का भाव ।

रिक्त-संज्ञा स्त्री० १. रिक्त या खाली होने का भाव या क्रिया । खाली होना । खालीपन । २. खाली जगह । किसी कर्म-चारी का पद या स्थान खाली होना ।

रिक्क-संज्ञा पु० उत्तराधिकार में मिली हुई सम्पत्ति ।

रिक्का-संज्ञा स्त्री० [ अ० ] एक प्रकार की साइकिल या बिना साइकिल की छोटी गाड़ी जिसे आदमी खींचते या चलाते हैं और इसके चलाने का रोजगार करते हैं ।

रिक्क-संज्ञा पु० दे० "रिक्क" ।

रिजक-संज्ञा पु० [ अ० रिजक ] रोजी । जीविका ।

रिजाली-संज्ञा स्त्री० १. रज्जितपन । नीचता । बेहयाई ।

रिज्-वि० दे० "ऋजु" ।  
 रिक्तवार, रिक्तवारि-सज्ञा पु० १ रीझने-  
 वाला । किसी बात पर प्रसन्न होनेवाला ।  
 मोहित होनेवाला । प्रेमी । २ कदरदान ।  
 गुणग्रहक ।  
 रिक्तान-क्रि० स० १ मोहित करना । किसी  
 को अपने ऊपर खुश कर लेना । अपना  
 प्रेमी बनाना । २ अनुरक्त करना ।  
 रिक्तायल\*†-वि० रीझनेवाला ।  
 रिक्ताय-सज्ञा पु० रीझने का भाव या क्रिया ।  
 प्रसन्न या मोहित होने की क्रिया या भाव ।  
 रिक्तायना\*†-क्रि० स० दे० "रिक्ताना" ।  
 रिङ्ना-क्रि० अ० १ धिसटते हुए चलना ।  
 स्तिबना\*-क्रि० स० खाली करना ।  
 रिङ्गि-सज्ञा स्त्री० दे० "ऋङ्गि" ।  
 रिधम-सज्ञा पु० कामदेव ।  
 रिल-सज्ञा पु० दे० "ऋण" ।  
 रिन्बन्धी-सज्ञा पु० कर्जदार ।  
 रिनिबौ, रिनी†-वि० जिसने ऋण लिया  
 हो । कर्जदार ।  
 रिप-सज्ञा पु० १ पृथ्वी । २ शत्रु । ३  
 हिंसा ।  
 रिपु-सज्ञा पु० शत्रु । दुश्मन ।  
 रिपुता-सज्ञा स्त्री० शत्रुता । बंद । दुश्मनी ।  
 रिपोट-सज्ञा स्त्री० [ अंग्रे० ] किसी घटना,  
 सत्था या बँडक आदि के सम्बन्ध में  
 विस्तारपूर्वक विवरण । जाँच का विवरण ।  
 कार्य विवरण ।  
 रिपोर्टर-सज्ञा पु० [ अंग्रे० ] समाचार पत्र का  
 सवाददाता ।  
 रिप्र-सज्ञा पु० पातक ।  
 रिप्रसिम-सज्ञा स्त्री० वर्षा की छोटी-छोटी  
 बूंदों का लगातार गिरना ।  
 क्रि० वि० वर्षा की छोटी-छोटी बूंदों से हलकी  
 फुहार ।  
 रिपासल-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ देशी राज्य ।  
 २ अमलदारी । ३ अमीरी । बँभव । ऐश्वर्य ।  
 रिप†-सज्ञा स्त्री० १ रात । २ हठ । जिद ।  
 रिपना†-क्रि० अ० गिड़गिड़ाना ।  
 रिपिहा†-वि० बहुत गिड़गिड़ाकर और  
 दीनतापूर्वक भाँगनेवाला ।

रिलना\*†-क्रि० अ० १. पंठना । घुसना ।  
 २ मिल जाना ।  
 रिलमिल-सज्ञा स्त्री० मेल-मिलाप । मेलजोल ।  
 रिवाज-सज्ञा पु० [ अ० ] रस्म । रीति । प्रथा ।  
 रिस्ता-सज्ञा पु० [ फा० ] नाता । संबंध ।  
 रिस्तेदार-सज्ञा पु० [ फा० ] नातेदार । संबंधी ।  
 रिश्य-सज्ञा पु० हिरन ।  
 रिश्वत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] घूस\* । अपना  
 मतलब हल करने के लिए किसी को अवंध  
 रूप से दिया जानेवाला धन या सामग्री आदि ।  
 रिश्वतखोर-सज्ञा पु० घूस लेनेवाला । रिश्वत  
 खाने या लेनेवाला ।  
 रिश्वती-वि० रिश्वत या घूस लेनेवाला ।  
 घूसखोर ।  
 रिपोक-सज्ञा पु० शिव ।  
 रिष्ट\*-वि० हूँट-गुँट । प्रसन्न । मोटा-ताजा ।  
 सज्ञा पु० १ अमंगल । २ अभाव ।  
 ३ पाप । ४ नाश । ५ खडग ।  
 रिष्टि-सज्ञा पु० १ खडग । २-अमंगल ।  
 रिश्यमूक-सज्ञा पु० दक्षिण भारत का एक  
 पर्वत ।  
 रिस-सज्ञा स्त्री० खीझ । क्रोध । गुस्सा  
 (हठ के साथ क्रोध) ।  
 मुहा०-रिस मारना=क्रोध को रोकना ।  
 रिसना†-क्रि० स० छन छनकर बाहर निकल  
 जाना । रसना ।  
 रिसवाना†-क्रि० स० दे० "रिसाना" ।  
 रिसहा†-वि० क्रोधी ।  
 रिसहाया†-वि० [ स्त्री० रिसहाई ] क्रुद्ध ।  
 कुपित । नाराज ।  
 रिसान-सज्ञा पु० ताने के सूत को फँसाकर  
 उनको साफ करने की क्रिया ।  
 रिसाना†-क्रि० अ० क्रुद्ध होना ।  
 क्रि० स० किसी पर क्रोध या गुस्सा करना ।  
 रिसानी\*-सज्ञा स्त्री० द० "रिस" ।  
 रिताल†-सज्ञा पु० [ अ० इरताल ] राज्य-  
 कर । मुफस्सिल से राजधानी को भेजा  
 जानेवाला कर ।  
 रितालवार-सज्ञा पु० [ फा० ] पाइसवार  
 सेना का एक अधिकारी । कर ले जानेवाला  
 का जमादार ।

रिसाला-सज्ञा पु० [फा०] घोड़सवारों की सेना। अश्वारोही सेना।

रिसि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "रिस"।

रिसिमाना, रिसिमाना †-क्रि० अ० प्रोष करना। गुस्सा हाना।

क्रि० स० रिसाना। किसी पर प्रोष करना। बिगड़ना।

रिसिक\*-सज्ञा स्त्री० तलवार।

रिसोहा-वि० १ क्रुद्ध-सा। थोड़ा नाराज। २ क्रोध से नरा। कोपमूचक।

रिहल-सज्ञा स्त्री० [अ०] काठ की कंचिनुमा चौकी, जिस पर रखकर पुस्तक पढ़ते हैं।

रिहा-वि० [फा०] [सज्ञा रिहाई] (वधन या बाधा आदि से) मुक्त। छूटा हुआ। जेल से छोड़ा गया।

रिहाई-सज्ञा स्त्री० [फा०] छुटकारा। जेल से छुटकारा या कैद की सजा रद्द होना। मुक्ति।

रोंधना-क्रि० स० दे० "रांधना"।

री-अव्य० सलियों के लिए सबोधन। अरी। एरी।

रोछ-सज्ञा पु० भालू नामक जंगली जानवर।

रोछराज\*-सज्ञा पु० जामबत। भालुआ का राजा।

रोख्या-सज्ञा स्त्री० पूणा।

रोझ-सज्ञा स्त्री० प्रसन्न होने का भाव। मुग्ध होने का भाव।

रोझना-क्रि० अ० मोहित होना। प्रसन्न होना।

रोठ\*-सज्ञा स्त्री० तलवार। युद्ध। (डि०) वि० अनुभ। खराब।

रोठा-सज्ञा पु० एक बड़ा जंगली वृक्ष और उसका फल, जो बेर के बराबर होता है।

रोड़-सज्ञा स्त्री० पीठ के बीचोबीच की लंबी खड़ी हड्डी, जिससे पसलियाँ मिली रहती हैं। मरिदड़।

रोत-सज्ञा स्त्री० दे० "रोति"।

रोतना\*-†क्रि० अ० खाली होना। रिक्त होना। क्रि० स० खाली करना। रिक्त करना।

रोता-वि० खाली। रिक्त। शून्य।

रोति-सज्ञा स्त्री० १. वग। प्रवार। तरह।

डव। २ रस्मरिवाज। परिपाटी। ३. कायदा। नियम। ४. साहित्य में किसी विषय का वर्णन करने में वर्णों की वह मात्रा, जिससे ओज, प्रसाद या नाभुष्य आता है। रोम-सज्ञा स्त्री० [अप्र०] वीस दस्त। बागज की एक गड्डी।

रीर-सज्ञा पु० शीशिव।

सज्ञा स्त्री० दे० "रीड़"।

रीरी-सज्ञा स्त्री० पीतल नामक धातु।

रोधमूक\*-सज्ञा पु० दे० "ऋष्यमूक"।

रीस-सज्ञा स्त्री० १. दे० 'रिस'। खीझ। २. आह। स्पर्द्धा। बराबरी करने की इच्छा।

रीसना-क्रि० अ० खीझना। रोष करना।

रज-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाजा।

रड़-सज्ञा पु० बिना सिर का धड़। कवच। वह धारीर, जिसके सिर या हाथ-पंर कटे हो।

रवेवाना-क्रि० स० पंरो से कुचलवाना।

रोदवाना।

रुधती\*-सज्ञा स्त्री० दे० "अरुधती"।

रंधना-क्रि० अ० १ रुकना। २ उलझना।

फँस जाना। किसी काम में लगना। ३ घरा जाना। ४ मर्छों में अटकना।

र\*-अव्य० दे० "अरु" तथा "और"।

रुआना\*†-क्रि० स० दे० "रुआना"।

रुआब-सज्ञा पु० दे० "रोव"।

रुई-सज्ञा स्त्री० दे० "रुई"।

रुकना-क्रि० अ० १ ठहर जाना। आगे न बढ़ना। अवधक होना। अटकना। २ किसी कार्य का बीच में ही बंद हो जाना। किसी चलते क्रम का बंद होना।

रुकमिनी-सज्ञा स्त्री० दे० "रुक्मिणी"।

रुकवाना-क्रि० स० रोकने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को रोकन में प्रवृत्त करना।

रुकाव-सज्ञा पु० दे० 'रुकावट'।

रुकावट-सज्ञा स्त्री० रोकने की श्रिया या भाव। रोक। रोकनेवाली बाध या चीज। बाधा। विघ्न।

रुका-सज्ञा पु० [अ०] १ छोटा पत्र या चिट्ठी। २ पुरजा। परचा। ३ बर्ब

लेनेवालों के द्वारा महाजन को लिसकर दिया जानेवाला पुर्जा या हुडी।

रुख\*†-सज्ञा पु० दे० "रुख"। पेड़।

रुक्म-सज्ञा पु० १ स्वर्ण। सोना। २ नागकेसर। ३ धतूरा। ४ रुक्मिणी के एक भाई का नाम।

रुक्मिणी-सज्ञा स्त्री० श्रीकृष्ण की बड़ी रानी, जो विदर्भ के राजा भीष्मक की कन्या थी।

रुक्मी-सज्ञा पु० राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र और रुक्मिणी का भाई।

रुक्म-वि० [सज्ञा स्त्री० रुक्मता] १ रुखा। जिसमें चिकनाहट न हो। खुरदरा। नीरस। शुष्क। सूखा। २ शील-रहित। सज्ञा पु० दे० "रुक्म"। 'पेड़'।

रुक्मता-सज्ञा स्त्री० रुक्मापन। रुखाई।

रुक्म-सज्ञा पु० [फा०] १ गाल। २ मुख। मुँह। आकृति। ३ चेष्टा। मन का भाव, जो आकृति से प्रकट हो। ४ कृपादृष्टि। मेहरबानी की नजर। ५ सामने या आगे का भाग।

क्रि० वि० तरफ। ओर। सामने।

रुक्मसत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ कूच। विदाई। प्रस्थान। रवानगी। २ आज्ञा। ३ छुट्टी। अवकाश।

वि० जो कही से चल पड़ा हो।

रुक्मसताना-सज्ञा पु० [फा०] विदा होने के समय दिया जानेवाला धन आदि। विदाई।

रुक्मसती-सज्ञा स्त्री० [अ०] विदाई। विधेपत दुलहिन की विदाई।

रुखाई-सज्ञा स्त्री० १ रुखे होने की क्रिया या भाव। रुखापन। नीरसता। शुष्कता। खुरकी। २ रुखा व्यवहार। शील का अभाव। बमुर्दबत्ती।

रुखाना\*†-क्रि० अ० रुखा होना। नीरस होना। सूखना।

रुखानी-सज्ञा स्त्री० बढइयो का लोहे का एक औजार।

रुक्मिता\*†-सज्ञा स्त्री० कोप करनेवाली नायिका। मानवती नायिका।

रुखौही-वि० [स्त्री० रुखौही] रुखाई लिये हुए। रुखा-सा।

रुगिया†-वि० दे० "रोगी"।

रुग्ण-वि० रोगी। बीमार। अस्वस्थ। शुका हुआ। बिगड़ा हुआ।

रुग्णता-सज्ञा स्त्री० बीमारी। रोग।

रुक्\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "रुक्"।

रुक्म-क्रि० अ० रुक् के अनुकूल होना। भला लगना। खाने में अच्छा लगना।

मुहा०—रुक्-रुक्=बहुत रुक् से।

रुक्म-सज्ञा स्त्री० १ प्रकाश। २ शोभा। ३ इच्छा।

रुक्मि-सज्ञा स्त्री० १ प्रवृत्ति। तबीअत।

२ मन को अच्छा लगने का भाव। अनुराग।

प्रेम। चाह। ३ खाने की इच्छा। भूख। ४

स्वाद। जायका। ५ एक अप्सरा का नाम।

६ किरण। ७ शोभा। सुंदरता।

वि० फबता हुआ। योग्य।

रुक्मि-वि० १ अच्छा लगनेवाला। रुक्मि उत्पन्न करनेवाला। मनोहर। २ पाचक।

रुक्मिकारक-वि० दे० "रुक्मिकर"।

रुक्मिकारी-वि० दे० "रुक्मिकर"। मनोहर।

रुक्मिता-सज्ञा स्त्री० रोचकता। सुंदरता।

सौन्दर्य।

रुक्मिमान-वि० १ प्रकाशमान। २ सुन्दर। मनोहर।

रुक्मि-वि० १ मनोहर। सुंदर। अच्छा।

भला। २ मीठा।

रुक्मि-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छद। एक वृत्त।

रुक्मिराई\*†-सज्ञा स्त्री० मनोहरता। सुंदरता।

रुक्मिबद्धक-वि० रुक्मि बढ़ानेवाला या उत्पन्न करनेवाला। भूख बढ़ानेवाला।

रुक्मि-वि० दे० "रुक्मि"।

सज्ञा पु० दे० "रुक्मि"।

रुक्मि-वि० रुक्मिकर। सुन्दर।

रुक्म-सज्ञा पु० १ रोग। २ वेदना। ३ कष्ट।

क्षत। घाव। ४ भग। भाग। ५ एक प्राचीन राजा।

रुक्मप्रस्त-वि० रोगप्रस्त। रोगी। बीमार।

रुक्मकर-सज्ञा पु० १ रोग उत्पन्न करनेवाला।

रोग। २ कमरुख नामक फल।

रुक्मली-सज्ञा स्त्री० रोग का कारण का समान।

रुजो-वि० अस्वस्थ । बीमार ।  
 रुजू-वि० जिसकी तबीयत किसी ओर लगी हो । प्रवृत्त ।  
 रुसना\*†-क्रि० अ० मन लगना । मोहित होना । उलझना । घाव आदि का भरना ।  
 रुठ-सज्ञा पु० क्राध । गुस्ता ।  
 रुठना-क्रि० अ० दे० "रुठना" ।  
 रुठाना-क्रि० स० नाराज करना ।  
 रुणित-वि० शनकारता या बजता हुआ ।  
 रुत-सज्ञा स्त्री० दे० "ऋतु" ।  
 रुत पु० १ पक्षिया का शब्द । कलरव । २ शब्द । ध्वनि ।  
 रुतबा-सज्ञा पु० [अ०] १ पद । ओहदा । २ प्रतिष्ठा । इज्जत ।  
 रुदय-सज्ञा पु० १ छोटा बच्चा । २ कुत्ता ।  
 रुदन-सज्ञा पु० रोना । कदन ।  
 रुदित-वि० जो रो रहा हो । रोता हुआ ।  
 रुद्ध-वि० १ घरा हुआ । बंधा हुआ ।  
 वेष्टित २ आवृत । मुदा हुआ । बंद । ३ जिसकी गति रोक दी गई हो ।  
 यो०—रुद्धकठ=प्रम आदि के कारण जो बोलन में असमर्थ हो गया हो ।  
 रुद्र-सज्ञा पु० १ एक प्रकार के गणदेवता, जो कुल भित्ताकर ग्यारह हैं । ग्यारह की सत्त्वा । २ शिव का एक रूप । रौद्र रस ।  
 वि० भयकर । डरावना ।  
 रुद्रकर्त्र-सज्ञा पु० रुद्राक्ष ।  
 रुद्रगण-सज्ञा पु० पुराणानुसार शिव के बहुत स अनुचर ।  
 रुद्रगभ-सज्ञा पु० अग्नि ।  
 रुद्रजटा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पौधा ।  
 रुद्र-सज्ञा पु० साहित्य के एक प्रसिद्ध आचार्य जिनका बनाया हुआ 'काव्यालकार' ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध है ।  
 रुद्रैज-सज्ञा पु० कार्तिकेय ।  
 रुद्रपति-सज्ञा पु० शिव । महादेव ।  
 रुद्रपत्नी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा ।  
 रुद्रयज्ञ-सज्ञा पु० एक तरह का यज्ञ ।  
 रुद्रयामल-सज्ञा पु० ताविका वा एक प्रसिद्ध ग्रंथ, जिसमें भैरव और भैरवी का वधाद है ।

रुद्रलोक-सज्ञा पु० वह लोक, जिसमें शिव और रुद्र का निवास माना जाता है ।  
 रुद्रवती-सज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध जंगली ओषध ।  
 रुद्रविशति-सज्ञा स्त्री० माठ सवत्सरा या वर्षों में स अंतिम बीस वर्षों का समूह ।  
 रुद्रवीथी ।  
 रुद्राक्ष-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध वृक्ष । २ इस वृक्ष के गाल बीज, जिन्हें गुंथकर माला बनाई जाती है और जिसे शंख लोग पहनते हैं ।  
 रुद्राणी-सज्ञा स्त्री० १ पावती । भवानी । २ रुद्रजटा नाम की सत्ता ।  
 रुद्रारि-सज्ञा पु० कामदेव ।  
 रुद्रो-सज्ञा स्त्री० वेद के रुद्रानुवाक् या अथ मरण सूक्त की ग्यारह आवृत्तिर्गा ।  
 रुधिर-सज्ञा पु० शरीर का रक्त । खून ।  
 लहू ।  
 रुधिरपायी-सज्ञा पु० खून पीनेवाला । राक्षस ।  
 रुधिराशन-सज्ञा पु० खून चूसन या पीनेवाला । राक्षस ।  
 रुधिराशी-वि० लहू पीनेवाला ।  
 रुद्रमुन-सज्ञा स्त्री० नूपुर, किंकिणी आदि का शब्द । शनकार ।  
 रुनाई\*-सज्ञा स्त्री० अरुणता । अदगई । लाली ।  
 रुनित\*-वि० दे० रुणित । बजता हुआ ।  
 रुनी-सज्ञा पु० घोड़े की एक जाति ।  
 रुनुकद्रनुक-सज्ञा स्त्री० दे० रुनुजुन ।  
 रुपना-क्रि० अ० रोपा जाना । जमीन में गाड़ या लगाया जाना । डटना । अडना ।  
 रुपमनी\*-सज्ञा स्त्री० रुपवती । सुन्दर स्त्री ।  
 रुपया-सज्ञा पु० भारत में प्रचलित चाँदी का सबसे बड़ा सोलह आने का सिक्का । धन । संपत्ति ।  
 रुपहरा-वि० चाँदी के रंग का । रुपहला ।  
 रुपहला-वि० [स्त्री० रुपहली] चाँदी के रंग का । चाँदी की तरह ।  
 रुपैया-सज्ञा पु० दे० "रुपया" ।  
 रुवाई-सज्ञा स्त्री० [अ०] उर्दू या फारसी का चार पन्तिया का एक छद, जिसमें

प्रथम, द्वितीय और चतुर्थ पंक्ति की तुलना  
एक होती है। २. उमर खानान की  
बवाइयाँ।

भाली-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का लेंगोट।  
राई\*-संज्ञा स्त्री० सुंदरता।

र-संज्ञा पु० १. काला हिरन। कस्तूरी-भृगु।  
२. पुराणानुसार एक देव्य, जिसे दुर्गा ने  
मारा था। ३. एक भैरव का नाम। ४.  
एक प्रकार का पेड़।

रखा-संज्ञा पु० बड़ा उल्लू पक्षी।  
लना-क्रि० अ० इधर-उधर मारा फिरना।  
लाई-संज्ञा स्त्री० रोने की क्रिया। रोने  
की प्रवृत्ति।

लाना-क्रि० स० दूसरे को रोने में प्रवृत्त  
करना। इधर-उधर फिराना। खराब  
करना। नष्ट करना।

खा-संज्ञा पु० सेमल के फूल में का घूँसा।  
भूषा।

ख-संज्ञा पु० क्रोध। गुस्सा।

खा-संज्ञा स्त्री० क्रोध।

खित-वि० १. क्रुद्ध। नाराज। २. उदास।

खट-वि० क्रुद्ध। नाराज। अप्रसन्न।

खटा-संज्ञा स्त्री० नाराजगी। अप्रसन्नता।

खटपुट-वि० हूटपुट। स्वस्थ। तन्दुरुस्त।

खटि-संज्ञा स्त्री० क्रोध।

खसना\*-क्रि० अ० दे० "खसना"।

खसित\*-वि० खट। नाराज।

खसम-संज्ञा पु० [अ०] फारस का एक  
प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान। महान् शक्ति-  
शाली।

मुहा०—छिपा खसम=जो देखने में सीधा-  
सादा पर वास्तव में बहुत वीर या  
गुणी हो।

खडि\*-संज्ञा स्त्री० खटने की क्रिया या  
भाव।

खहिर\*-संज्ञा पु० दे० "खधिर"।

खहेलखंड-संज्ञा पु० अवध के उत्तर-पश्चिम  
स्थित एक प्रदेश, जहाँ खहेला नाम की  
पठानों की एक शाखा के बस जाने के कारण  
इस प्रदेश का नाम खहेल-खंड पड़ा।

खहेला-संज्ञा पु० खहेला नाम की पठानों की

एक शाखा, जो प्रायः खहेलखंड में बस गई  
थी। इससे उस प्रदेश का नाम खहेलखंड  
पड़ा।

खेगटाली-संज्ञा स्त्री० भेड़।

खेगा-संज्ञा पु० घाल। घलुआ।

खेवना-क्रि० स० रौंदना।

खेध-वि० रुका हुआ। अवरोध।

खेधना-क्रि० स० १. कंटीले शाड़ू आदि से  
धेरना। बाड़ लगाना। २. चारों ओर से  
धेरना। रोकना। छेकना। आने-जाने का  
रास्ता बन्द करना।

खई-संज्ञा स्त्री० कपास के डोडे या कोष के  
अन्दर का घूँसा, जिसका सूत कातकर  
कपड़ा बनाते हैं, या कपड़ों में भरते हैं।  
बीजों के ऊपर का रोआँ।

खईवार-वि० जिसमें खई भरी गई हो।

खध-वि० खटा।

खल-संज्ञा पु० पेड़।

वि० दे० "खला"।

खलड़ा-संज्ञा पु० पेड़।

खलना\*-क्रि० अ० खटना।

खला-वि० [संज्ञा स्त्री० खलाई, खलापन]

१. जिसमें चिकनाहट न हो। खुरदरा।

२. जिसमें घी, तेल आदि चिकने पदार्थ  
न पड़े हो। ३. जो खाने में स्वादिष्ट न हो।

नीरस। ४. सूखा। शुष्क। ५. उदासीन।

विरक्त। ६. कठोर।

मुहा०—खला-खला=जिसमें चिकना और  
चरपरा पदार्थ न हो। बहुत साधारण भोजन।

खला पड़ना या होना=१. वैभूषणीयता  
करना। २. क्रुद्ध होना। नाराज होना। ३.  
उपेक्षा करना। उदासीनता प्रकट करना।

खज-संज्ञा पु० एक प्रकार की बुकनी।

खजना\*-क्रि० अ० दे० "खजना"।

खठ, खठन-संज्ञा स्त्री० खटने की क्रिया या  
भाव। नाराजगी।

खठना-क्रि० अ० १. अप्रसन्न होकर हठ  
करना। नाराज होकर चुप या अलग होना।

खसना। २. मचलना। कोई चीज छेने के  
लिए हठ करना (घण्टों का)।

खड़-वि० [स्त्री० खड़ा] १. जिसका कोई

भाग न हा सके। जविभाग्य। २ चढ़ा हुआ।  
आरुढ़। ३ उताप। ४ प्रसिद्ध। ५ गेवार।  
उजड़। ६ चठार। ७ जवेला।  
सज्ञा पु० अर्थात्नुसार शब्द का वह भेद, जो  
दो शब्दों या शब्द और प्रत्यय के योग से  
बना हो। योगिक या उलटा। रुढ़ि।  
रूपयोवना—सज्ञा स्त्री० दे० “जावू-  
योवना”।

रुढ़ा—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लक्षणा, जो  
प्रचलित हो और जिसका व्यवहार प्रसिद्ध से  
भिन्न अर्थ के लिए न हो।

रुढ़ि—सज्ञा स्त्री० १ रुढ़ होने का भाव।  
प्राचीन काल से चली आई हुई प्रथा या  
परम्परा। २ चढ़ाव। उभार। उठान। ३  
वृद्धि। बढ़ती। ४ उत्पत्ति। ५ प्रसिद्धि।  
६ विचार। ७ निश्चय। ८ रुढ़। शब्द की  
वह शक्ति, जिससे वह योगिक न होने पर  
भी अपने अर्थ का बोध कराता है।

रूप—सज्ञा पु० १ आकार। मूरत। शक्ल।  
२ स्वभाव। प्रकृति। ३ सौंदर्य।  
खूबसूरती। ४ शरीर। देह। ५ वेप।  
६ दशा। अवस्था। ७ समान। तुल्य।  
सदृश। ८ चिह्न। लक्षण। ९ आकार।  
१० रूपक। \*११ चाँदी। रूपा।

वि० रूपवान्—खूबसूरत।

मुहा०—रूप हरना=लज्जित करना। रूप  
लेना=रूप धारण करना। रूप भरना=  
भेस बनाना।

यो०—रूपरेखा=१ आकार। चित्र। २  
पता।

रूपक—सज्ञा पु० १ मूर्ति। प्रतिकृति। २  
अभिनय किया जातवाला काव्य। दृश्यकाव्य।  
इसके दस भेद हैं—नाटक, प्रकरण, भाण,  
व्यायोग, समवकार, डिम, ईहागुण, अक,  
वीथी और प्रहसन। ३ एक अर्थालंकार,  
जिसमें उपमान का आरोप उपमय में करके  
उसका वर्णन उपमान के रूप से या अभेद  
रूप से किया जाता है। ४ दिखाने के लिए  
बनाया हुआ रूप। बनावटी रूप या मुद्रा।  
५ संगीत की एक ताल [रूपक ताल]।  
६ एक परिमाण। रूपया।

रूपकार—सज्ञा पु० मूर्ति बनानेवाला। मिल्-  
कार।

रूपकता—सज्ञा स्त्री० सत्रह अक्षरों की एक  
वर्णवृत्ति।

रूपगंधिता—सज्ञा स्त्री० अपने रूप का अभिमान  
करनेवाली नायिका।

रूपधनाक्षरी—सज्ञा स्त्री० ३२ वर्णों का एक  
प्रकार का बटन छद्म।

रूपजोवनी—सज्ञा स्त्री० वेदया। अपना गीन्दव  
बैलवर्ग जोविका चलानेवाली।

रूपजोवी—सज्ञा पु० बहुरूपिया।

रूपण—सज्ञा पु० १ आरोपण। २ परीक्षा।  
३ प्रमाण।

रूपधर—वि० सुन्दर। खूबसूरत।

सज्ञा पु० धारण करनेवाला। दे० “रूपधारी”

रूपधारी—सज्ञा पु० दूसरे का रूप धारण  
करनेवाला। बहुरूपिया।

रूपभेद—सज्ञा पु० चित्रकला में हर प्रकार की  
आकृति और उसकी विशेषताओं का विभेद।  
भारतीय चित्रकला के ६ अंगों में से  
एक।

रूपमती\*—वि० रूपवती। सुन्दरी स्त्री।

रूपमय—वि० [स्त्री० रूपमयी] अति सुन्दर।  
बहुत खूबसूरत।

रूपमान\*—वि० दे० “रूपवान्”।

रूपमाला—सज्ञा स्त्री० २४ मानाओं का एक  
मात्रिक छद्म।

रूपमाली—सज्ञा स्त्री० नौ दीर्घ वर्णों का एक  
छद्म।

रूपरेखा—सज्ञा स्त्री० १ साका। किसी कार्य  
या योजना का स्पष्ट अनुमान, जिससे उसका  
परिचय मिल जाय। २ बनाए जानेवाले  
रूप या चित्र का प्रारम्भिक आकार-प्रकार।  
चित्र का साका।

रूपवत—वि० [स्त्री० रूपवती] खूबसूरत।  
रूपवान्। सुन्दर।

रूपवती—वि० सुन्दरी। खूबसूरत।

सज्ञा स्त्री० १ गौरी नामक छद्म। २ चपक-  
माला वृत्ति का एक नाम। खूबसूरत स्त्री।

रूपवान्—वि० [स्त्री० रूपवती] सुन्दर।  
खूबसूरत। रूपवाला।

रूपशाली-वि० दे० "रूपवान् ।"  
 रूपती-सज्ञा स्त्री० रूपवती । सुदरी स्त्री ।  
 रूपस्थी-वि० सुन्दर ।  
 रूपा-सज्ञा पु० १. चाँदी । पटिया चाँदी ।  
 २. सफेद रंग या घोड़ा ।  
 रूपी-वि० [स्त्री० रूपिणी] १. जिसका कोई रूप हो । रूपधारी । रूपवाला ।  
 २. समान । सदृश ।  
 रूपोदा-वि० [फा०] [सज्ञा रूपोमी] १. छिपा हुआ । गुप्त । २. दड के भय से भागा हुआ । फरार ।  
 रूपोशी-सज्ञा स्त्री० मुँह छिपाने की क्रिया ।  
 रूप्य-वि० सुंदर । खूबसूरत ।  
 सज्ञा पु० रूपा । चाँदी ।  
 रूप्यक-सज्ञा पु० रुपया ।  
 रु-वह-क्रि० वि० [फा०] सम्मुख । सामने ।  
 रुम-सज्ञा पु० [अंग्रे०] कमरा ।  
 [फा०] तुर्किस्तान या टर्की देश ।  
 रुमना\*-क्रि० सं० झूमना । झूलना ।  
 रुमाड-सज्ञा पु० [फा०] १ कपड़े का छोटा चौकोर टुकड़ा, जिससे हाथ-मुँह पोछते हैं ।  
 २. चौकोना शाल या दुपट्टा ।  
 रुमाली-सज्ञा स्त्री० दे० "रुमाली" ।  
 रुमी-वि० [फा०] १ रुम देश का निवासी ।  
 २ रुम देश-सवधी । रुम का ।  
 रुर-वि० जला हुआ । तप्त ।  
 रुरना\*-क्रि० अ० चिल्लाना ।  
 रुरा-वि० [स्त्री० रुरी] श्रेष्ठ । उत्तम ।  
 अच्छा । सुंदर । बहुत बड़ा ।  
 रुल-सज्ञा पु० [अंग्रे०] १ कायदा । नियम ।  
 २. लकीर खींचने का छोटा गोल डंडा ।  
 रुलर । ३ सीधी रेखा ।  
 रुलर-सज्ञा पु० [अंग्रे०] १ लकीर खींचने का छोटा गोल डंडा । २ मशीन आदि में लगनेवाला डंडा । ३ शासक ।  
 रुलना-क्रि० सं० दवाना ।  
 रुषण-सज्ञा पु० १. राजाना । भूपति करना ।  
 २ अनुलेपन । ३. आच्छादन ।  
 रुषित-वि० दूदा हुआ ।  
 रुस-सज्ञा पु० १. यूरोप तथा एशिया महाद्वीपों के बीच फैला हुआ एक बड़ा देश

जहाँ साम्यवादी शासन - व्यवस्था है ।  
 २. एक प्रकार का जंगली पोषा, जिसकी जड़, पत्तियाँ, छाल तथा पुष्प औषध के काम में आते हैं ।  
 रुसना-क्रि० अ० दे० "रुटना" । मचलना ।  
 कोई चीज लेने के लिए हठ करना (वच्चों का) ।  
 रुसा-सज्ञा पु० अड़सा । एक सुगंधित पौधा, जिसका तेल निकाला जाता है ।  
 रुसी-वि० रुस देश का निवासी । रुस देश का ।  
 सज्ञा स्त्री० १ रुस देश की भाषा ।  
 २. तिर के चमड़े पर की पतली झिल्ली, जो कट या फटकर निकलती है ।  
 रुह-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ आत्मा । जीव ।  
 २ सार । सत् ।  
 रुहना\*-क्रि० अ० १ चढ़ना । २. उमड़ना ।  
 ३ चारों ओर से घेरना या घिरना ।  
 क्रि० सं० दे० "रुहना" ।  
 रुहानी-वि० [अ०] रुह या आत्मा-सम्बन्धी ।  
 आध्यात्मिक ।  
 रेकना-क्रि० अ० १. गदहे का बोलना ।  
 २ गदहे की तरह चिल्लाना । ३. भड़े तरीके से गाना ।  
 रेंगटा-सज्ञा पु० गदहे का वच्चा ।  
 रेंगना-क्रि० अ० १ चूँटी आदि कीड़ों का चलना । २. धीरे-धीरे चलना । ३. पेट के बल चलना ।  
 रेंगनी-सज्ञा स्त्री० १. भटकटैया । २. कपड़ा आदि टांगने के लिए फैलाकर बांधी गई डोरी ।  
 रेंट-सज्ञा पु० नाक से निकलनेवाला मल ।  
 रेंड-सज्ञा पु० एक पोषा, जिसके बीजों का तेल निकलता है और वह दस्तावर होता है ।  
 रेंडना-क्रि० अ० फसल के पौधों का बटना ।  
 रेंडी-सज्ञा स्त्री० रेंड के बीज ।  
 रेंरें-अव्य० वच्चों के रोने का शब्द ।  
 रे-अव्य० छोटे आवमियों के लिए एक सम्बोधन ।  
 सज्ञा पु० संगीत में कृपभ स्वर का सूचक सन्धिपद रूप-जैसे सा, रे, ग, म आदि ।  
 रेख-सज्ञा स्त्री० १. रेखा । लकीर । २. चिह्न ।

नियान। ३. गिनती। गणना। शुमार। ४. नहीं निकलती हुई मूँछें।

मुहा०—रेख काढ़ना, खीचना या खींचना= १. लकीर बनाना। २. जोर देकर कहना। ३. प्रतिज्ञा करना। रेख भीजना या भीनना= मूँछें निकलना शुरू होना। निकलती हुई मूँछें दिखाई देना।

यो०—रूप-रेखा=स्वरूप। सूरत।

रेखता-संज्ञा [फा०] एक प्रकार की गजल।  
रेखना\*-क्रि० स० १. रेखा या लकीर खींचना। २. चिह्न या नियान बनाना। ३. खींचना।

रेखांकण, रेखांकन-संज्ञा पु० १. रेखाओं से चिह्न बनाना। चित्र बनाने के लिए रेखाएँ अंकित करना। २. दे० “रेखाचित्र”।  
रेखांकित-वि० जिस पर रेखाओं से चिह्न बनाया गया हो। जिस पर रेखा या लकीर पड़ी हो।

रेखांश-संज्ञा पुं० १. वृत्त का एक अंश।  
२. रेखा का एक भाग।

रेखा-संज्ञा स्त्री० १. पतला लम्बा चिह्न। डाँड़ी। लकीर। २. किसी वस्तु का सूचक चिह्न। ३. गणना। शुमार। गिनती। आकृति। आकार। ४. हथेली, तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें, जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का पता चलता है।

यो०—कर्मरेखा=भाग्य का लेख।

रेखाकर्म-संज्ञा पुं० दे० “रेखांकण”।  
रेखागणित-संज्ञा पुं० ज्यामिति। ज्योमित्री (अंग्रे०) गणित का वह विभाग, जिसमें रेखाओं-द्वारा कुछ सिद्धांत निर्धारित किए जाते हैं।

रेखाचित्र-संज्ञा पुं० खाका। केवल रेखाओं से बनाया हुआ चित्र।

रेखाचित्रण-संज्ञा पुं० रेखा-चित्र बनाने का काम।

रेखित-वि० १. रेखांकित। जिस पर रेखा या लकीर पड़ी हो। २. फटा हुआ।

रेग-संज्ञा स्त्री० बालू।

रेगमाल-संज्ञा पुं० एक तरह का मागज, जिसके ऊपर रेत जमाई हुई होती है और जिसे

रगड़कर लकड़ियाँ या घातुएँ, जैसे सोहे आदि की चीजें साफ की जाती हैं।

रेगिस्तान-संज्ञा पुं० [फा०] बालू का मैदान। मरुस्थल।

रेचक-वि० वह चीज, जिसके खाने से दस्त हों। दस्तावर।

संज्ञा पुं० प्राणायाम की तीसरी क्रिया, जिसमें खींचे हुए साँस को विधिपूर्वक बाहर निकालना होता है।

रेचन-संज्ञा पुं० १. दस्त लाना। २. जुल्माब। कब्ज दूर करना या कोष्ठशुद्धि करना।

रेचना\*-क्रि० स० बामु या मल को बाहर निकालना।

रेजगारी या रेजगी-संज्ञा स्त्री० [फा०] दुअग्री-चपग्री आदि छोटे सिकके।

महा०—रेजगारी भुनाना=बड़े सिककों को छोटे सिककों में बदलना।

रेजा-संज्ञा पुं० [फा०] १. बहुत छोटा टुकड़ा। सूक्ष्म खंड। २. नग। ३. पान। ४. अदद।

रेजीमेंट-संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] सेना का एक भाग।

रेडियम-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] एक बहुमूल्य सफेद द्रव-धातु, जिसमें बहुत अधिक शक्ति संचित रहती है।

रेडियो-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] यिजली का एक प्रसिद्ध यंत्र, जिसके बिना तार के सम्बन्ध के बहुत दूर की कही हुई बातें सुनाई पड़ती हैं। आकाशवाणी।

रेडियो ब्राडकास्ट-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] रेडियो से भाषण या गाने आदि का प्रसार।

रेडनार्ज-क्रि० स० लुढ़कना। धसीटते हुए चलना।

रेणु-संज्ञा स्त्री० १. धूल। २. बालू। अत्यंत लघु परिमाण। कणिका।

रेणुका-संज्ञा स्त्री० १. बालू। रेत। २. रज। धूल। ३. पृथ्वी। ४. परशुराम की माता का नाम।

रेणुवात-संज्ञा पुं० भौर।

रेत-संज्ञा स्त्री० १. बालू। २. बालू का मैदान।

रेतना-क्रि० स० १. रेतों से रगड़कर किसी

वस्तु को चिकनी या महीन करना । २. औजार से रगड़कर काटना ।

रेतस्-सज्ञा पु० १. शुक्र । वीर्य । २. वीर्य का निकलना । ३. जल-धारा । ४. वर्षा की धारा । ५. पारा ।

रेता-सज्ञा पु० १. बालू । २. बालू का मंदान । मिट्टी ।

रेतिषा-सज्ञा पु० रेतनेवाला ।

रेतो-सज्ञा स्त्री० १. लोहे का एक औजार, जिसे किसी वस्तु पर रगड़कर उसे चिकना या महीन किया जाता है । २. नदी या समुद्र के तट पर पड़ी हुई बलुई जमीन । बलुआ किनारा ।

रेतीला-वि० [स्त्री० रेतीली] बलुआ । बालू-वाला ।

रेता-क्रि० स० किसी वस्तु में डालकर लटकाना ।

रेनु\*-सज्ञा पु० दे० "रेणु" ।

रेप-वि० १. क्रूर । २. कृपण । कजूस । ३. निंदित । बदनाम ।

रेफ-सज्ञा पु० हलत रकार का यह रूप, जो अन्य अक्षर के पहले आने पर उसके ऊपर लगता है । जैसे, सर्प, दर्प, हर्ष में । रकार (र) ।

रेल-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १. लोहे की पट्टी पर भाप के जोर से चलनेवाली गाड़ी । रेलगाड़ी । २. बहाव । ३. धारा । ४. अधिक्य । भरमार ।

रेलठेल-सज्ञा स्त्री० दे० "रेलपेल" ।

रेलना-क्रि० स० धक्का देकर आगे बढ़ाना । आगे ढकेलना । धक्का देना ।

क्रि० अ० ठसाठस भरा होना ।

रेलपेल-सज्ञा स्त्री० १. भारी भीड़ । २. भरमार । अधिकता ।

रेलवे-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १. दे० "रेल" । रेलगाड़ी । २. रेल-सम्बन्धी विभाग या कार्यालय ।

रेला-सज्ञा पु० १. भीड़ में जोर का धक्का । भीड़ का जोर से आगे बढ़ना । दे० "रेलपेल" । धक्कनधक्का । २. तीव्र बहाव । चोट । ३. धावा । सनूह-द्वारा चढ़ाई । ४. अधिकता । बहुतायत ।

रेवद-सज्ञा पु० [फा०] एक पहाड़ी पेड़, जिसकी जड़ और लकड़ी रेवद चीनी के नाम से बिकती और औषध के काम में आती है ।

रेवड़-सज्ञा पु० भेड़ों या वकरियों आदि का झुंड ।

रेवड़ी-सज्ञा स्त्री० तिल और चीनी की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई ।

रेवती-सज्ञा स्त्री० १. सत्ताइसवाँ नक्षत्र, जो ३२ तारों से मिलकर बना है । २. दुर्गा । ३. गाय । ४. बलराम की पत्नी, जो राजा रेवत की कन्या थी ।

रेवतीरमण-सज्ञा पु० १. बलराम । २. श्रीविष्णु ।

रेवा-सज्ञा स्त्री० १. नर्मदा नदी । २. कामदेव की पत्नी रति । ३. दुर्गा । ४. वघेलखंड । रीवाँ राज्य । ५. एक मछली ।

रेशम-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का महीन, चिकना और चमकीला रेशा, जिससे कपड़े बने जाते हैं । कोश में रहनेवाले एक प्रकार के कीड़े इसे तैयार करते हैं । कोशेय ।

रेशमी-वि० रेशम का । रेशम का बना हुआ ।

रेशा-सज्ञा पु० [फा०] तलु । महीन सूत ।

रेह-सज्ञा स्त्री० स्तार मिली हुई मिट्टी ।

रेहन-सज्ञा पु० [फा०] वधक । गिरवी । किसी के पास माल या जायदाद इस शर्त पर रखना कि जब उसे ऋण चुका दिया जाय, तब वह माल या जायदाद वापस कर दे ।

रेहनदार-सज्ञा पु० [फा०] वह, जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी गई हो ।

रेहननामा-सज्ञा पु० [फा०] वह कागज, जिस पर रेहन की शर्त लिखी हो ।

रेहल-सज्ञा स्त्री० दे० "रिहल" ।

रेहुआ-वि० अधिक रेहवाला ।

रेहू-सज्ञा पु० रोहू मछली ।

रेदास-सज्ञा पु० १. एक प्रसिद्ध चमार रंभत, जो रामानंद के शिष्य और कबीर के समकालीन थे । २. चमार ।

रैन, रंनि\*-सज्ञा स्त्री० रत ।

रंमुनिया-सज्ञा स्त्री० एक तरह की अरहर ।

रेयत-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रजा । रियाया ।

रमाराम-सज्ञा पु० छाटा राजा।  
 रयत-गता पु० १ श्रीगतर। २ भय।  
 यादन। ३ वतमान जान त पायें मनु।  
 रयतक-गता पु० गुरात वा एत पवन जा  
 अत्र गिर्यार बहताता है।  
 रयत-गता पु० धन। सम्पत्ति।  
 रसा-गता पु० ज्ञान। कन्ह।  
 रोगटा-सज्ञा पु० राजा। राम।  
 मुहा०-राष्ट्र राट हाता=विना नयानक  
 बाड ना देख या मुनकर बहुत नय या  
 क्षाम हाता। रामाच हाना=६० राएँ राट  
 हाना।  
 रोगटी-सज्ञा स्त्री० सन म बुरा मानना या  
 चईमानो करना।  
 रोटि-सज्ञा पु० बच्च आम का मुखाइ हुई  
 फाँक।  
 राव-सज्ञा पु० दे० राम। रोआँ।  
 रोसा-सज्ञा पु० लाबिया की फली।  
 रोआँ-सज्ञा पु० रोम। शरीर पर क बहुत  
 छोट और पतले बाल।  
 मुहा०-राएँ खड हाना=कोई भयानक  
 बाड देख या मुनकर इतना भय या क्षोभ  
 हाना कि राएँ खड हो जायें। रामाच होना।  
 रोआबाँ-सज्ञा पु० १ [अ०] राब।  
 आतक। २ असर। प्रभाव।  
 रोएँ-सज्ञा पु० राजा।  
 रोएदार-वि० जिसके शरीर पर बहुत रोए हो।  
 जिस पर रोएँ की तरह भूत देग आदि ह।  
 रोक-सज्ञा स्त्री० १ रुकावट। बाधा। प्रति  
 बध। मनाही। निषध। काम म बाधा। २  
 रोकनवाली वस्तु।  
 सना पु० नकद। रुपए पम आदि के रूप में।  
 रोकड।  
 रोक-डोक-सज्ञा स्त्री० मनाही। निषध।  
 बाधा।  
 रोकड-सज्ञा स्त्री० १ नकद रुपया-मंसा  
 आदि। २ जमा। धन। पूजी।  
 रोकडवही-सज्ञा स्त्री० प्रतिदिन की आय और  
 व्यय लिखन की बही। रोकड लेन-देन के  
 हिसाब की बही।  
 रोकडवाकी-सज्ञा स्त्री० व्यय आदि निबल

जान व पाद बाकी वचा हुइ रसम (अग्र-  
 ३३अग्र वस्तु)।  
 रोकडिमी-गता स्था० नकद प्रिया।  
 रोकडिया-गता पु० नजानवा। मुनाम।  
 राउड रखनवाता।  
 रोकयाम-गता स्था० रावन वा उपाय वा  
 प्रयत्न। बीमारा रावन वा उपाय। अनुचिन  
 वा हानिनाशक वाय रावन वा प्रयत्न।  
 रोकता-वि० स० १ आग बडन न दना।  
 रावन न दना। गति राव दना। २ बगी  
 जान त मना करना। उद करना। दबाव  
 खाना। अडचन या बाधा डालना। ३  
 ऊपर रना। आडना। ४ जग या कानू म  
 रखना। ५ सामना करना।  
 रोग-गता पु० [वि० रोगा] बीमारी।  
 रोगप्रस्त-वि० बीमार। राव स पास्त।  
 रोगन-सज्ञा पु० [फा०] १ तल। २ वह  
 पतला लेप जिस किमी वस्तु पर पातन स  
 चमक आवे। पालिग। चारनिग। ३  
 लाख स बना हुआ मसाला जिन मिट्टी  
 या काठ क बरतना आदि पर चडात है।  
 ४ चमडा मुनायम करन क लिए बनाया  
 हुआ एक मसाला।  
 रोगनाशक-वि० बीमारी दूर करनेवाला।  
 रोगनी-वि० [फा०] रोगन किया हुआ।  
 रोगातुर-वि० रोग स घबराया हुआ।  
 रोगात-वि० रोग से दुखी।  
 रोगिनी-वि० रोगी स्त्री।  
 रोगिया-सज्ञा पु० दे० रोगी।  
 रोगी-वि० [स्त्री० रोगिनी] बीमार। अस्वस्थ।  
 रोचक-वि० [सज्ञा रोचकता] रुचिकारक।  
 प्रिय। मनोरंजक। दिलचस्प।  
 रोचकता-सज्ञा स्त्री० अच्छा नाम का भाव।  
 मनोरंजता। दिलचस्पी।  
 रोचन-वि० १ अच्छा लगनवाला। राचक।  
 २ गोभा देनवाला। दाप्तिमान। ३ प्रिय  
 लानवाला। ४ जान।  
 सना पु० १ काना सेमर। २ प्याज। ३  
 स्वाराविप मन्वतर क रद। ४ कामदेव के  
 पांच बाणा म से एक। ५ मोरोचन। ६  
 रोकी।

रोचना-सज्ञा स्त्री० १. रस्त-कमल। २. गोरोचन। ३ वसन्तोत्पन्न। ४. वसुदेव की स्त्री। ५ श्रेष्ठ स्त्री। ६ आकाश।

रोचि-सज्ञा स्त्री० १. प्रभा। दीप्ति। २ प्रकट होती हुई शोभा। ३ किरण। रश्मि।

रोचित-वि० शोभित मुन्दर।

रोचिष्णु-वि० १ चमकदार। २ आभूषणों आदि से जगमगाता हुआ।

रोचस्-सज्ञा पु० प्रभा।

रोज-सज्ञा पु० [फा०] दिन। दिवस। -  
अव्य० प्रतिदिन। नित्य।

रोजगार-सज्ञा पु० [फा०] जीविका के लिए किया जानेवाला काम। व्यवसाय। धपा। पेशा। कारबार। व्यापार।

रोजगारी-सज्ञा पु० [फा०] व्यापारी।

रोजनामचा-सज्ञा पु० [फा०] दैनिकी। दिन-चर्या लिखने की पुस्तक। वह किताब, जिस पर रोज का किया हुआ काम लिखा जाता है।

रोजमर्रा-अव्य० [फा०] प्रतिदिन। नित्य। सज्ञा पु० नित्य के व्यवहार में आनेवाली भाषा। बोलचाल। चलती बोली।

रोज़ा-सज्ञा पु० [फा०] व्रत। उपवास। वह उपवास, जिसे मुसलमान रमजान के महीने में ३० दिन तक रखते हैं।

रोज़ाना-क्रि० वि० [फा०] प्रतिदिन। हर रोज।

रोज़ी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ नित्य का भोजन। २ जीवन-निर्वाह का अवलंब। जीविका। रोजगार।

रोज़ोना-क्रि० [फा०] नित्य का। सज्ञा पु० रोज की मजदूरी। नित्य का वेतन।

रोज़-सज्ञा स्त्री० नील गाय।

रोट-सज्ञा पु० मोठी रोटी। बहुत मोटी रोटी। लिट्टी।

रोटाना-वि० पिसा हुआ।

सज्ञा पु० पतली बड़ी रोटी।

रोटिका-सज्ञा स्त्री० छोटी रोटी।

रोटिहाना-सज्ञा पु० केवल भोजन पर रहने-वाला नौकर।

रोटी-सज्ञा स्त्री० १. गुंघे हुए आटे की आँच

पर सेकी हुई टिकिया। चपाती। फुलका। २. भोजन। रसोई।

मुहा०-रोटी-कपडा=भोजन-वस्त्र। जीवन-निर्वाह की सामग्री। किसी बात की रोटी पाना=किसी बात से जीविका कमाना। किसी के यहाँ रोटीयाँ तोड़ना=किसी के घर पडा रहकर पेट पालना। रोटी-बाल चलना=जीवन-निर्वाह होना।

रोटीफल-सज्ञा पु० एक वृक्ष का फल, जो खाने में अच्छा होता है।

रोड़ा-सज्ञा पु० ईंट या पत्थर का टुकड़ा। बड़ा ककड़।

मुहा०-राडा अटकाना या डालना=विघ्न या बाधा डालना।

रोदन-सज्ञा पु० रोना। रुदन। रुदन।

रोदसी-सज्ञा स्त्री० १ स्वर्ग। २ भूमि।

रोदा-सज्ञा पु० कुमान की डोरी। चिल्ला।

रोध-सज्ञा पु० १ रुकावट। २. तट। ३ बारी।

रोधक-सज्ञा पु० रोकनेवाला। रुकावट डालनेवाला।

रोधन-सज्ञा पु० १. रोक। रुकावट। अवरोध। २ दमन।

रोधना-क्रि० स० रोकना।

रोध-सज्ञा पु० अपराध।

रोना-क्रि० अ० १. आँसू बहाना। २. रुदन करना। निल्लाना। ३ बुरा मानना। ४ चिड़ना। पछताना।

सज्ञा पु० दुःख। रज। खेद।

वि० १ थोड़ी-सी बात पर भी रोने-वाला। चिड़चिड़ा। २. रोनेवाले का-सा। मुहरंमो। रोवांसा।

मुहा०-रोना-पीटना=बहुत विलाप करना। रो-रोकर=ज्यो-त्यो करके। कठिनता से। बहुत धीरे धीरे। रोना-गाना=चिन्तित करना। गिडगिडाना।

रोनीधोनी-वि० रोने-धोनेवाली।

रोप-सज्ञा पु० १. ठहराव। २. मोहने की क्रिया या भाव। ३. रुकावट। ४. घुराव। ५. बाण।

रोपक-वि० १ राफने या बोनेवाला। २. स्थापित करनेवाला।

रोपण-सज्ञा पु० [वि० रोपित, रोप्य] १ जमाना। बँडाना। (बीज या पौधा) २ बोना। ३. ऊपर से लाकर लगाना, स्थापित करना। ४ मोहित करना। मोहना। बुद्धि फेरना। ५ पाव का सूचना।

रोपना-क्रि० स० १ बोना। बीज डालना। २ जमाना। लगाना। बँडाना। पौधे को एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर जमाना। ३ लेने के लिए हथेली या कोई वस्तु सामने करना। ४ बँडाना। ठहराना। रोकना। रोपनी-सज्ञा स्त्री० घान आदि के पौधों को गाड़ने का काम। रोपाई।

रोपित-वि० १ बोया हुआ। लगाया हुआ। जमाया हुआ। २ स्थापित। ३ मोहित। ४ भ्रात।

रोब-सज्ञा पु० [अ०] [वि० रोबीला] बढप्पन की धाक। प्रताप। आतक। दबदबा।

मुहा०-रोबजमाना=आतक उत्पन्न करना। रोब में आना=आतक के कारण कोई ऐसी बात कर डालना, जो यौन की जाती हो। भय मानना। आतकित होना।

रोबरार-वि० [अ०] १. प्रभावशाली। रोबदाबवाला। २ भडकीला। घमकदार।

रोमय-सज्ञा पु० जुगाली। पागुर।

रोम-सज्ञा पु० १ शरीर के बहुत छोटे बाल। रोया। रोम। २ छेद। गुराज। ३ जल। ४ ऊन। ५ इटली की राजधानी प्रसिद्ध रोम नगर।

मुहा०-रोम-रोम में=शरीर भर में। रोम-रोम से=सन-भन से। जी-जान से। पूरे दिल से।

रोमकूप-सज्ञा पु० शरीर के वे छिद्र, जिनमें से रोएँ निकले हुए होते हैं।

रोमटार-सज्ञा पु० दे० "रोमकूप"।

रोमन-वि० [अप्र०] रोम का रहनेवाला। बह लिपि, जिसमें धंगरेजी-आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं।

रोमन कैथलिक-सज्ञा पु० [अप्र०] ईसाइया का एक सम्प्रदाय।

रोमपाठ-सज्ञा पु० ऊनी कपड़ा।

रोमराजी-सज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"। नाभि से ऊपर की रोमा की पक्ति।

रोमलता-सज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"।

रोमहर्ष-सज्ञा पु० रोमाच।

रोमहर्षण-सज्ञा पु० रोमाच। (सहसा अधिक प्रसन्नता या भय से रोमों का खड़ा होना।)

वि० भयकर। भीषण। जिससे रोएँ खड़े हों। रोमाच-सज्ञा पु० हर्ष या भय से खड़े होना। पुलक। सिहरन।

रोमाचित-वि० पुलकित। जिसके रोएँ आनन्द या भय से खड़े हो गए हों।

रोमाप-सज्ञा पु० रोएँ की नोक या अगला हिस्सा।

रोमाली-सज्ञा स्त्री० दे० "रोमावली"। रोमा की पक्ति।

रोमावली, रोमावली-सज्ञा स्त्री० रोमों की पक्ति, जो पेट के बीचोबीच नाभि से ऊपर की ओर गई होती है। रोमाली। रोमराजी।

रोमिल-वि० रोएँदार।

रोमोद्गम-सज्ञा पु० हर्ष या भय से रोएँ खड़े होना।

रोमी-सज्ञा पु० शरीर पर उभरनेवाले बाल। लोम। रोम।

मुहा०-रोयाँ खड़ा होना=हर्ष या भय से रोमाच होना। पुलकित होना। रोयाँ पसीजना=हृदय में दया उत्पन्न होना। तरस आना।

रोर-सज्ञा स्त्री० १ हल्ला। कोलाहल। शोर-गुल। बहुत से लोगों के रोने-बिल्लाने का शब्द। २. उपद्रव। हलचल।

वि० १. प्रचंड। तेज। दुर्दमनीय। २ उपद्रवी। उद्वत। दुष्ट।

रोरी-सज्ञा स्त्री० १ रोली। हल्दी और चूने से बनी हुई लाल रंग की चुन्नी। २ चहल-महल। भूम।

वि० सुंदर। कमिर।

सज्ञा पु० एक प्रकार का नय।

रोहवा-सज्ञा स्त्री० अत्यन्त चदन और विलाप ।  
 रोल\*-सज्ञा स्त्री० १. रोल। हल्ला। बोला-  
 हल। २ शब्द। ध्वनि ।  
 सज्ञा पु० पानी का तोड़। रेला। बहाव ।  
 रोलर-सज्ञा पु० [अंग्रे०] जमीन बराबर करने  
 का बड़ा बेलन ।  
 रोला-सज्ञा पु० १ रोल। शोरगुल। काला-  
 हल। २ घमासान युद्ध। ३ २४ मात्राओं  
 का एक छंद ।  
 रोलो-सज्ञा स्त्री० चूने और हल्दी से बनी  
 लाल बुकनी, जिसका तिलक लगाते हैं। धा।  
 रोवनहार-सज्ञा पु० १ रोनवाला। २ किसी  
 के मर जाने पर उसका शोक करनेवाला  
 कुटुंबी ।  
 रोवना-क्रि० अ०, वि० दे० 'रोना' ।  
 रोवनिहारा\*-वि० दे० 'रोवनहार' ।  
 रोनवाला ।  
 रोवनी धोवनी-सज्ञा स्त्री० रोंने धोने की  
 आदत। मनहूसी ।  
 रोवासा-वि० [ स्त्री० रोवासी ] जो रो देना  
 चाहता हो ।  
 रोशन-वि० [ फा० ] १ जलता हुआ ।  
 प्रदीप्त। प्रकाशित। प्रकाशमान। चमकदार ।  
 २ प्रसिद्ध। सचहूर। ३ प्रकट। जाहिर ।  
 रोशन धोकी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] सहनाई  
 का बाजा। नफीरी ।  
 रोशनदान-सज्ञा पु० [ फा० ] प्रकाश आने का  
 छिद्र। गवाक्ष ।  
 रोशनाई-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ लिखन  
 की स्थाही। ससि। २ रोशनी। प्रकाश ।  
 रोशनी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ उजाला ।  
 प्रकाश। २ दीप-माला का प्रकाश। ३  
 दीपक। चिराग। ४ ज्ञान का प्रकाश ।  
 रोप-सज्ञा पु० [ वि० रुष्ट ] १ क्रोध। कोप ।  
 गुस्सा। २ वैर। विरोध। ३ चिढ़। कुठन ।  
 ४ लड़ाई की उमंग। जोश। आवेश ।  
 रोषाभित-वि० नुद्ध ।  
 रोषित-वि० नुद्ध ।  
 रोषी-वि० क्रोधी। गुस्तावर। रोपयुक्त ।  
 रोस-सज्ञा पु० दे० 'रोप' ।  
 रोसा-सज्ञा पु० एक सुगंधित घास

रोह-सज्ञा पु० १ ऊपर की चढ़ाई। २.  
 कली। ३ अकुर। ४ नील गाय ।  
 रोहक-सज्ञा पु० चढ़नेवाला ।  
 रोहज\*-सज्ञा पु० नेत्र ।  
 रोहण-सज्ञा पु० १ चढ़ना। चढ़ाई। ऊपर  
 की बढ़ना। २ पोष का उगना। जमना ।  
 ३ प्रोद्योग्य ।  
 रोहना\*-क्रि० अ० १ चढ़ना। ऊपर की  
 ओर जाना। २ सवार होना ।  
 क्रि० स० १ चढ़ाना। ऊपर करना। २.  
 सवार करना। ३-धारण करना ।  
 रोहि-सज्ञा पु० १ वृक्ष। २ बीज। ३ ब्रती ।  
 ४ तपस्वी ।  
 रोहिणी-सज्ञा स्त्री० १ गाय। २ बिजली ।  
 ३ वसुदेव की स्त्री, जो बलराम की माता  
 थी। ४ नौ वष की कन्या की सज्ञा  
 (स्मृति) । ५ सत्ताइस नक्षत्रों में से  
 चौथा नक्षत्र ।  
 रोहिणीपति-सज्ञा पु० १ श्रीवसुदेव। २  
 चन्द्रमा । रोहिणीश ।  
 रोहित-सज्ञा पु० रूय ।  
 रोहित-वि० लाल रंग का। लोहित ।  
 सज्ञा पु० १ लाल रंग। २ रोहू मछली ।  
 ३ एक प्रकार का मृग। ४ इन्द्र धनुष ।  
 ५ केसर। ६ कुकुम। ७ रक्त ।  
 लहू। लून । ८ रोहित नामक वृक्ष ।  
 रोहितक-सज्ञा पु० रोहित का पंख ।  
 रोहिताश्व-सज्ञा पु० १ अग्नि। २ राजा  
 हरिश्चंद्र के पुत्र का नाम ।  
 रोहिश-सज्ञा पु० एक घास। रोसा ।  
 रोहिष-सज्ञा पु० १ एक घास रोसा ।  
 २ रोहू मछली। ३ एक तरह का मृग ।  
 रोही-वि० [ स्त्री० रोहिणी ] चढ़नवाला ।  
 सज्ञा पु० १ एक तरह का मृग। २ रोहिष  
 घास। ३ रोहू मछली। ४ एक हथि-  
 यार ।  
 रोहू-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली ।  
 रौट-सज्ञा स्त्री० १ सल म बुरा मानना ।  
 २ चिढ़कर बर्झमानी करना ।  
 रौ-सज्ञा स्त्री० १ रौदन का भाव या क्रिया ।  
 २ गन्त । (अंग्रे०—राउण्ड)

रौवन-सज्ञा स्त्री० दे० "रोद"। रोदने की प्रिया या भाव। मर्दन।

रौवना-क्रि० सं० पैरा से कुचलना। मर्दन करना।

रौवो-सज्ञा स्त्री० चीपाया वे रहने का घर।

रौ-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १ गति। चाल। २ वग। स्पतार। ३ पानी का चहाव। नाड। ४ किसी बात की धुन। ज्ञाप। ५ डग। चाल।

\* १ सज्ञा पु० दे० "रव"।

रौष्य-सज्ञा पु० रूखापन।

रौगन-सज्ञा पु० दे० "रोगन"।

रौजा-सज्ञा पु० [ अ० ] कब्र। समाधि। बड़े पीर या वादशाह की कब्र की इमारत।

रौताइन-सज्ञा स्त्री० १ राव या रावत की स्त्री। ठकुराइन। २ स्त्रियों के लिए एक आदर सूचक शब्द।

रौताई-सज्ञा स्त्री० १ राव या रावत होने का भाव। २ ठकुराई। सरदारी।

रौद्र-वि० १ खद-सदधी। २ प्रचंड। उग्र। भयकर। डरावना। ३ क्रोधपूर्ण।

सज्ञा पु० १ काव्य के नौ रसों में से एक, जिसमें क्रोधसूचक शब्दों और चेष्टाओं का वर्णन होता है। २ ग्यारह मात्राओं के छंदों की सज्ञा। ३ एक प्रकार का अस्त्र। ४ यमराज। ५ धृष्ट।

रौद्रता-सज्ञा स्त्री० डरावनापन। प्रचंडता।

रौद्रवशन-वि० देखने में भयानक।

रौद्रक-सज्ञा पु० २३ मात्राओं के छंदों की सज्ञा।

रौद्री-सज्ञा स्त्री० गौरी देवी।

रौन\*-सज्ञा पु० दे० "रमण"।

रौनक-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ वर्ण और आकृति। रूप। २ चमक-दमक। शक्ति। काति। ३ प्रकुल्लता। विनोद। ४ धाना। छटा।

रौनी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "रमणी"।

रौप्य-सज्ञा पु० चांदी। रूपा।

वि० चांदी का बना हुआ।

रौरव-वि० १ भयकर। डरावना। २ शूत। ३ नवल।

सज्ञा पु० एक भीषण नरक का नाम।

रौरा-सज्ञा पु० दे० "रोला"।

रौरव-वि० स्त्री० रौरी} आपका।

रौराना-वि० सं० प्रलाप करना। बकना।

रौरे-वि० सर्व० आप। (सवीधन)

रौला-सज्ञा पु० १ शोरगुल। २ हुल्लाह। धूम।

रौशन-वि० दे० "रोशन"।

रौशनदान-सज्ञा पु० [ फा० ] दे० "रोशनदान"।

रौस-सज्ञा स्त्री० [ फा० रविश ] १ गति। चाल। रग-दग। तौर-तरीका। २ वाग की अपारिधा के बीच का माग।

रौसा-सज्ञा पु० लोबिया। केवण।

रौहास-सज्ञा स्त्री० १ धोड़े की एक चाल। २ धोड़े की एक जाति।

रौहिण-सज्ञा पु० चन्दन।

रौहिण्य-सज्ञा पु० १ रौहिणी के पुत्र, बल-राम। २ पत्नी। ३ बुधग्रह। ४ नाय का वछडा।

## ल

ल-व्यञ्जन वग का जड़ठाईसवाँ वजन, जिसका उच्चारण-स्थान दंत होता है। यह अल्प-प्राण है।

लक-सज्ञा स्त्री० १ वमर। गटि। २ लड़ा नामक द्वीप।

लकनाथ, लकनाथक-सज्ञा पु० १ रावण। २ पिभीगण।

लकनोट-सज्ञा पु० [ पय० ] एक प्रकार का सफेद मोटा पियना पपडा।

लका-सज्ञा स्त्री० १ भारत के दक्षिण का

एक टापू, जहाँ रावण का राज्य था। २. एक योगिनी का नाम। ३. एक पिशाचिनी। ४ टाली। साम्बा। ५. दुर्वाचारिणी स्त्री। तकाकाड-सज्ञा पु० रामायण का एक अध्याय, जिसमें राम-रावण युद्ध का वर्णन है। लकाबाही-सज्ञा पु० श्रीहनुमान। लकापति-सज्ञा पु० १ रावण। २ विमोक्षण। लकापति-सज्ञा पु० रावण। लकारि-सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र। लकेन, लकेश्वर-सज्ञा पु० रावण। लंग-सज्ञा स्त्री० दे० 'लंग'। काछ। मजा पु० [फा०] १ लंगडापन। २ उपपति। लक-सज्ञा पु० उपपति। लंग-वि० दे० 'लंगडा'। सज्ञा पु० दे० 'लंगर'। लंगड़ा-वि० [स्त्री० लंगड़ी] एक पैर का। जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हुआ हो। सज्ञा पु० एक तरह का बहुत बढ़िया कलमी आम। लंगड़ाना-क्रि० अ० लंगड़ाकर चलना। लंगड़े होकर चलना। चलने में पैरों का ठीक न बैठना। लंगर-सज्ञा पु० [फा०] १ लोहे का एक प्रकार का बहुत बड़ा कांटा, जिसे जमीन में गाड़कर बड़ी-बड़ी नावों या जहाजों को एक ही स्थान पर ठहराते हैं। २ लकड़ी का वह कुंदा, जो किसी हरहाई (शरास्ती) गाय के गले में बाँधा जाता है। ठंगुर। ३. लटकती हुई कोई भारी चीज। लोहे की मोटी और भारी जखीर। ४ किसी पदार्थ के नीचे का मोटा और भारी थप। ५ चाँदी का तोड़ा, जो पैर में पहना जाता है। ६ पहलवानों का लंगोट। ७ कपड़े में के बें टाँके, जो दूर-दूर पर डाले जाते हैं। कच्ची सिलाई। ८. यह भोजन, जो प्रायः नित्य दरिद्रों को बाँटा जाता है। ९ यह स्थान, जहाँ दरिद्रों-आदि को भोजन बाँटा जाता है।

वि० १. भारी। चजनी। २. शरास्ती। नटराट। ३. डीठ। मुहा०—उगार करना=शरास्ती करना। लंगरई, लंगराई\*†-सज्ञा स्त्री० दिठारै। शरास्ती। लंगूर-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का चन्दर, जिसका मुँह काला और पूँछ बहुत लम्बी होती है। २. बदर। ३. पूँछ। दुम (बदर की)। लंगूल-सज्ञा पु० पूँछ। दुम। लंगोट, लंगोटा-सज्ञा पु० [स्त्री० लंगोटी] कमर पर बाँधने का एक प्रकार का वस्त्र हुआ वस्त्र, जिसमें केवल उपस्थ ढका जाता है। रुमाली। यो०—लंगोटबंद=ब्रह्मचारी। लंगोटी-सज्ञा स्त्री० कौरीन। कछनी। भंगई। मुहा०—लंगोटिया यार=वचन का मिन। लंगोटी पर फाग खेलना=कम सामर्थ्य होने पर भी बहुत अधिक व्यय करना। लंघक-वि० लाँघनेवाला। लंघन-सज्ञा पु० १ उपवास। अनाहार। फाका। २ लाँघने की क्रिया। डाँकना। ३ अतिक्रमण। ४ वह उपाय, जिससे किसी काम में सुभीता हो। लंघनक-सज्ञा पु० जिसके द्वारा लाँघा जाय। लंघना-क्रि० सं० दे० 'लाँघना'। किसी वस्तु के ऊपर से होकर जाना। डाँकना। लंघनीय-वि० लाँघने योग्य। उल्लंघन करने योग्य। लंघ-सज्ञा पु० [अग्रे०] १ दोपहर का जलपान। २ इस जलपान के लिए होनेवाली छुट्टी। लंज-सज्ञा पु० १ पैर। पाँव। २ काछ। ३ पूँछ। ४ लपटता। सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी। लज्जिका-सज्ञा स्त्री० वेश्या। लठ-वि० मूर्ख। उजड़ट। लंठरा-वि० जिसकी सब पूँछ बट गई हो। (पक्षी) बिना पूँछ का। लंतरानी-सज्ञा स्त्री० [ज०] व्यर्थ की बड़ी-बड़ी बातें। शोषी।

लप या लैम्प-सज्ञा पु० [अप्र०] १ लाल-  
टन। २ गैसवत्ती। ३ चिराग।

लपट-वि० बदमाश। ध्वनिचारी। विपयी।  
नामी। पाम्प।

लपटता-सज्ञा स्त्री० दुराचार। बदमाशी।  
लपाक-सज्ञा पु० दुराचारी।

लप-सज्ञा पु० १ वह रेखा, जो किसी दूसरी  
रेखा पर इस भाँति गिरे कि उसका साथ  
मार्गकोण बनावे। २ अंग। ३ पति। ४  
एक राक्षस, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।  
५ ज्योतिष की एक रेखा।

सज्ञा स्त्री० दे० 'बिलब'।

वि० लवा।

लपक-सज्ञा पु० किसी पुस्तक का एक अव्याय।

लपकण-वि० जिसके बान लपे हा।

सज्ञा पु० १ हाथी। २ चररा। गदहा। ३  
४ खरगोश। ५ राक्षस।

लपपीर-सज्ञा पु० ऊँट।

लपतङ्ग-वि० ताड़ के समान बहुत लवा।

लपन-सज्ञा पु० १ झूलने की क्रिया। २  
गले का हार। ३ आभूषण।

लपरदार-सज्ञा पु० एक प्रकार का जमींदार।  
नबरदार।

लबा-वि० [स्त्री० लबी] १ जो किसी एक  
ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो।  
चोड़ा का उलटा। जिसने दोना छार एक  
दूसरे से दूरी पर हा। २ जिसकी उचाई  
अधिक हो। ३ (समय) जिसका विस्तार  
अधिक हो। ४ विशाल। दीप। बड़ा।

मुहा०—लबा करना=१ खाना करना।  
चलता करना। २ जमीन पर पटन या  
लेटा देना।

लबाई-सज्ञा स्त्री० लबा होन का भाव।  
लबापन।

लबान-सज्ञा स्त्री० लम्बाई।

लबायमान-वि० जो सीधा और लडा गिरा  
हो। बहुत लम्बा। टेटा हुआ।

लबित-वि० लवा।

मुहा०—लबी तानना=लेटकर सो जाना।

लबोतरा-वि० उबे आकारवाला। जो कुछ  
लवा हो।

लबोदर-सज्ञा पु० १ गणश। २ बड़ पट  
वाला। बहुत शानेवाला। पेट।

लम्बोष्ठ-सज्ञा पु० १ एक तरह के धेनपाल।  
२ दण्ड। ३ ऊँट।

लमन-सज्ञा पु० १ कलक। २ ध्वनि।

लज्जी-सज्ञा स्त्री० दे० 'लकुडी'।

लकड़गप्पा-सज्ञा पु० एक माताहारी जाला  
जतु, जो नदिए से कुछ बड़ा हाता है।  
लाघड।

लकड़हारा-सज्ञा पु० १ जंगल से लकड़ी तोड़  
कर बचनेवाला। २ लकड़ी काटनेवाला।

लकड़ी-सज्ञा स्त्री० १ पेड़ का कोई ठोस या  
स्पूल अंग, जो उससे अलग हो गया हा।  
काठ। २ इधन। जलावन। ३ छड़ी।  
लाठी।

मुहा०—लकड़ी होना=१ बहुत दुबला-पतला  
होना। २ सूखकर बहुत कड़ा हो जाना।

लकलक-सज्ञा पु० [अ०] सारस।

वि० लचीला। बहुत दुबला पतला।

लकवा-सज्ञा पु० [अ०] एक बात-रोग।  
जिस अंग में यह रोग होता है, वह  
बकाम हो जाता है।

लकादी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बिल्ली।  
(इस जाति की बिल्ली के नर के अङ्गकोसा  
से एक तरह का मुँक निकलता है।)

लकीर-सज्ञा स्त्री० १ रेखा। सत। लोक।  
२ घारी। ३ पत्ति। सतर।

मुहा०—लकीर का फकीर=आख बंद करके  
पुराने ढंग पर चलनेवाला। लकीर पीटना=  
बिना समय-बूझ पुरानी प्रथा पर चले चलना।

लकुच-सज्ञा पु० जड़हर। दे० 'लकुट'।

लकुट-सज्ञा स्त्री० लाठी। छड़ी।

सज्ञा पु० एक प्रकार का वृक्ष और उसका  
फल। 'कुवाट'। लखोट।

लकुटी-सज्ञा स्त्री० लाठी। छड़ी।

लकोटा-सज्ञा पु० एक तरह का पहाड़ी बकरा।

लकड़-सज्ञा पु० काठ का बड़ा कुंदा।

लकड़ा-सज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का

पूतल। जब यह बँटता है, तो इसके पीछे  
के पक्ष जबी पक्ष की तरह खुले रहते हैं।

लकसी-वि० लास से रंग वा। लासी।

सज्ञा पु० १. लखपती। २. घोड़े की एक जाति।

लक्ष-वि० लाख। सुत्रं।

लक्षक-सज्ञा पु० १. स्त्रियों के पैरों में लगाने का अलता। २. फटा हुआ कपड़ा। लता। चीपड़ा।

लक्ष-वि० एक लाख। सौ हजार।

सज्ञा पु० १. एक लाख की सख्या, १०००००। २. अस्त्र का एक प्रकार का संहार। ३. दे० "लक्ष्य"।

लक्षक-सज्ञा पु० १. जतानेवाला। लक्ष्य करानेवाला। २. प्रयोजन से अपना अर्थ सूचित करनेवाला शब्द।

लक्षण-सज्ञा पु० १. किसी पदार्थ की वह विशेषता जिसके द्वारा वह पहचाना जाय। चिह्न। निदान। २. आसार। ३. नाम। परिभाषा। ४. स्वभाव। प्रकृति। ५. चाल-ढाल। तीर-तरीका। ६. शरीर में दिखाई पड़नेवाले वे चिह्न आदि, जो किसी रोग के सूचक हो। ७. सामुद्रिक के अनुसार शरीर के अंगों में होनेवाले कुछ चिह्न-विशेष, जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं। शरीर में होनेवाला एक विशेष प्रकार का काला दाग। लच्छन।

लक्षणा-सज्ञा स्त्री० शब्द की वह शक्ति, जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है।

लक्षणो-वि० लक्षणसहित।

लक्षना\*-क्रि० सं० दे० "लखना"।

लक्षा-सज्ञा स्त्री० एक लाख की सख्या। १०००००।

लक्षि-सज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

\*सज्ञा पु० दे० "लक्ष्य"।

लक्षित-वि० १. बतलाया हुआ। निर्दिष्ट। २. देखा हुआ। अनुमान से समझा या जाना हुआ।

सज्ञा पु० वह अर्थ, जो शब्द की लक्षणा-शक्ति के द्वारा आता-होता है।

लक्षित-लक्षणा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लक्षणा।

लक्षिता-सज्ञा स्त्री० वह परकीया नायिका, जिसका परपुरुष-अर्थ दूसरों को ज्ञात हो।

लक्षी-सज्ञा स्त्री० १. एक वर्णयुक्त, जिसके प्रत्येक चरण में आठ रंग होते हैं। गंगाधर। २. खजन।

लक्ष्मण-सज्ञा पु० १. राजा दशरथ के एक पुत्र, जो सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और रामचन्द्र के साथ वन में गए थे। ये शेषनाग के अवतार माने जाते हैं। २. चिह्न। लक्षण।

वि० शोभायुक्त।

लक्ष्मी-सज्ञा स्त्री० १. धन की अधिष्ठात्री देवी, जो विष्णु की पत्नी मानी जाती है। कमला। २. धन-सम्पत्ति। दौलत। ३. शोभा। छवि। सोदय्यं ४ दुर्गा का एक नाम। ५ घर की मालकिन। गृहस्वामिनी। ६. कन्या।

लक्ष्मीक-सज्ञा पु० धनी। अमीर। भाग्यवान्।

लक्ष्मीकान्त-सज्ञा पु० नारायण। विष्णु।

लक्ष्मीधर-सज्ञा पु० विष्णु।

लक्ष्मीनारायण-सज्ञा पु० विष्णु और लक्ष्मी की युगल मूर्ति।

लक्ष्मीनिवास-सज्ञा पु० विष्णु। नारायण।

लक्ष्मीपति-सज्ञा पु० विष्णु।

लक्ष्मीरमण-सज्ञा स्त्री० विष्णु। नारायण।

लक्ष्य-सज्ञा पु० १. वह वस्तु, जिस पर किसी प्रकार का निशाना लगाया जाय। निशाना।

२. वह, जिस पर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय। ३. अभिलषित पदार्थ। ४. उद्देश्य। ५. अस्त्रों का एक, प्रकार का संहार। ६. वह अर्थ, जो किसी शब्द की लक्षणा-शक्ति के द्वारा निकलता हो। ७. वह जिसका अनुमान किया जाय।

वि० देखने योग्य।

लक्ष्यभेद-सज्ञा पु० दे० "लक्ष्यवेध"।

लक्ष्यवेध-सज्ञा पु० एक प्रकारका निशाना, जो चलते या उड़ते हुए जीव या पदार्थ पर लगाया जाता है।

लक्ष्यवेधी-सज्ञा पु० लक्ष्यवेध करनेवाला।

लक्ष्यार्थ-सज्ञा पु० वह अर्थ, जो लक्षणा से निकले।

लक्षधर-सज्ञा पु० दे० "लाक्षागृह"।

लखन\*-सज्ञा पु० दे० "लक्ष्मण"।

गजा स्त्री० लगने या देगने की प्रिया या भाव ।

लखना\*†-क्रि० सं० १. लक्षण देवकर अनुमान कर देना । ताडना । २. देगना । लखपतो-सजा पु० लाखों रुपए का मालिक । जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो । लाखों रुपयोंवाला ।

लखराय-सजा पु० लाख पेड़ोंवाला बाग । बहुत बड़ा बाग ।

लखलखा-सजा पु० [का०] कोई सुगन्धित द्रव्य । मूर्च्छा दूर करने का एक सुगन्धित द्रव्य ।

लखलुट-वि० बहुत अधिक बेकार खर्च करने-वाला । बहुत बड़ा अव्ययी ।

लखाउ\*-सजा पु० १ लक्षण । पहचान । चिह्न । २. चिह्न के रूप में दी गई कोई वस्तु ।

लखाना\*†-क्रि० ज० दिखाई पड़ना । क्रि० सं० १ दिखलाना । २ अनुमान करा देना । समझा देना ।

लखाव\*-सजा पु० दे० "लखाउ" । लखिमी\*†-सजा स्त्री० दे० "लक्ष्मी" ।

लखिया\*†-सजा पु० लखनेवाला । देखने या ताडनेवाला । जो लखता हो ।

लखी-सजा पु० लाखी । लाख के रंग का घोड़ा ।

लखेरा-सजा पु० लाख की चूड़ी बनाने-वाला ।

लखीदा†-सजा स्त्री० लाख की चूड़ी, जो स्त्रियाँ हाथों में पहनती हैं ।

लखोटा-सजा स्त्री० १ चदन, केसर आदि से बना हुआ अंगराग । २. एक प्रकार का छोटा दिव्या, जिसमें स्त्रियाँ प्रायः सिद्धर आदि रखती हैं । ३. लिखावट । लिखने का दग ।

लखोरी-सजा स्त्री० १ एक प्रकार की भ्रमरी या भूगी के रहने की जगह । २. एक प्रकार की छोटी पतली ईंट । नौ-तेरही ईंट । नर्किया ईंट । ३. किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाव पतियाँ या फल आदि चढ़ाना ।

लग-क्रि० वि० १. तक । पर्यंत । ताई । निचट । समीप । पास ।

गजा स्त्री० लगन । लग । प्रेम ।

अव्य० १. वास्ते । लिए । २. साथ । लगन-सजा स्त्री० १. किसी ओर ध्यान लग की क्रिया । प्रवृत्ति का किसी ओर लगना । २. प्रेम । स्नेह । ३. लगाव । सख सजा पु० दे० "लग्न" । विवाह का मूल्य वे दिन, जिनमें विवाह आदि होते हैं सहालग ।

लगनपत्री-सजा स्त्री० दे० "लग्नपत्रिका" विवाह-समय के निर्णय तथा विवाह सम्बन्धी अन्य कार्यों के विषय की चिदर्थ जो कन्या का पिता घर के पिता क भेजता है ।

लगनवट-सजा स्त्री० लगन । प्रेम । गृहव्रत लगन-क्रि० अ० १. दो पदार्थों का आपस में मिलना । सटना । मिलना । जुड़ना । २ एक चीज का दूसरी चीज पर जडा, या चिपकाया जाना । ३. सम्मिलित होना शामिल होना । मिलना । ४. किनारे पर पहुँचकर टिकना या रुकना । ठिकाने पर पहुँचना । टिकना । रुकना । ५. कम से रखा या सजाया जाना । ६. व्यय होना । ७. जान पड़ना । ८. स्थापित होना । ९. पोथे आदि का जमोत में लग जाना । १०. फल-फूल निकलना । ११. सवध या रिस्ते में कुछ होना । १२. आघात पड़ना । चोट पहुँचना । १३ किसी पदार्थ का किसी प्रकार की जलन या चुनचुनाहट आदि उत्पन्न करना । १४. घाव पदार्थ का बरतन के तल में जम जाना । १५. जारम होना । जारी होना । चलना । १६. खटना । गलना । १७. प्रभाव पड़ना । अक्षर होना । १८. आरोप होना । १९. हिसाब होना । २०. गणित की क्रिया होना । २१ पीछे-पीछे चलना । २२. साथ होना । २३. साथ न छोड़ना । विमटना । किसी काम में लग जाना । २४. दुध देनेवाले पशुओं का दुध देना । २५.

पडना। चुभना। धँसना। २६. छेड़खानी करना। छेड़छाड़ करना। २७. बद होना। पुँदना। २८. दाँव पर रखा जाना। बदना। २९. घात या ताक में रहना। होना। मुहा०—लगती बात कहना=मर्मभेदी या चुभनेवाली बात कहना। चुटकी लेना।

लगनि\*—सज्ञा स्त्री० दे० "लगन"। लगभग—क्रि० वि० [अनु०] प्रायः। करीब-करीब। आस-पास।

लगमात—सज्ञा स्त्री० व्यंजनो में लगनेवाली स्वरा की मानाएँ या उनके सूचक चिह्न। लगवाना—क्रि० स० दूसरे से लगाने का काम कराना।

लगहर्—सज्ञा पु० १. पासग का काँटा या तराजू। २. दूध देनेवाली गाय।

लगतार—क्रि० वि० एक के बाद एक। बराबर। निरंतर। बिना रुक टूटे हुए।

लगान—सज्ञा पु० १. लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २. भूमि पर लगनेवाला कर। राजस्व। मालगुजारी। जमावदी। पोत। ३. वह स्थान, जहाँ मजदूर आदि मुस्ताने के लिए अपने शिर का बोझ उतार कर रखते हैं। ४. नावों के ठहरने का स्थान।

लगाना—क्रि० स० १. मिलाना। जोड़ना। सटाना। २. किसी वस्तु पर कोई चीज चिपकाना या सटाना। ३. मिलाना। शामिल करना। ४. वृक्ष आदि आरोपित करना। जमाना। ५. एक ओर या किसी उपयुक्त स्थान पर पहुँचाना। ६. रुक से रचना। सजाना। चुनना। ७. खर्च करना। ८. किसी व्यवसाय में पूँजी देना। ९. अनुभव कराना। मालूम कराना। १०. चाट पहुँचाना। ११. किसी में कोई नई प्रवृत्ति आदि उत्पन्न करना। १२. काम में लाना। १३. आरोप करना। अनियोग लगाना। १४. जलाना। जने आग लगाना। १५. ठीक-स्थान पर बँठाना। जडना। १६. गणित करना। हिसाब करना। १७. कान भरना। चुगली खाना। १८. झगडा कराना। १९. निपुण बनाना।

२०. गी, भंस, चकरी आदि दूध देनेवाले पशुधा को दुहना। २१. गाड़ना। धँसाना। २२. ठोकना। २३. स्पर्श कराना। छुआना। २४. जूए की बाजी पर रखना। दाव पर रखना। २५. किसी बात का अभिमान करना। २६. जग पर पहनना, ओढ़ना या रखना। २७. करना। २८. दास आँकना। २९. सधाना। ३०. परचना। ३१. फैलाना। ३२. बिछाना।

मुहा०—किसी को लगाकर कुछ कहना या गाली देना=वीथ में किसी का संबंध स्थापित करके किसी प्रकार का आरोप करना। मन लगाना=ध्यान देना।

घो०—लगाना-बुझाना=लड़ाई-झगडा कराना। दो आदमियों में वैमनस्य उत्पन्न करना।

लगाम—सज्ञा स्त्री० [का०] १. रास। बाग। बागडोर। वह ढाँचा, जो घोड़े के मुँह में रखा जाता है और जिसके दोनों ओर रस्सी या चमड़े का तस्मा बँधा रहता है। २. इस ढाँचे के दोनों ओर बँधा हुआ रस्सी या चमड़े का तस्मा, जो सवार या हाँकनेवाले के हाथ में रहता है।

लगार\*—सज्ञा स्त्री० १. नियमित रूप में कोई काम करना या कोई चीज देना। बधी। बधेज। २. लगाव। सबध। ३. रुक। सिलसिला। ४. लगन। प्रीति। मुहब्बत। ५. किसी की ओर से भेद लेने के लिए भेजा जानेवाला। ६. मेली। सबधी।

लगालगो—सज्ञा स्त्री० १. लगन। प्रेम। स्नेह। प्रीति। २. सबध। मेल-जोल। ३. लाग। लाग-डाँट। बाजी। ४. ईर्ष्या। द्वेष। लगाव—सज्ञा पु० लगे होने या मिले रहने का भाव। सबध।

लगावट—सज्ञा स्त्री० १. लगाव। मेल-प. वास्ता। २. प्रेम। मुहब्बत।

लगानना—क्रि० स० दे० "लगाना"।

लगि\*—अव्य० दे० "लग"।

लगो\*—सज्ञा स्त्री० दे० "लगनी"।

लगु\*—अव्य० दे० "लग"।

लघुप-सज्ञा पु० उडा। लाठी।

लघुपा-वि० पिछला।

लघुर\*-सज्ञा स्त्री० पूँछ।

लघुल\*-सज्ञा स्त्री० पूँछ।

लगी-जव्य० द० "लगा"।

लगेलेगे-सज्ञा पु० १ लड़ने के लिए प्रार्थनाहित करने का शब्द। २ बदरा आदि का भगाने का शब्द।

अव्य०=पास-पास। समीप। करीब।

लगे-वि० [अ०] १ झूठ। २ व्यर्थ।

लगीही\*-वि० जिस लगन लगाने का कामना हो। रिलवार।

लगा-सज्ञा पु० १ लवा बाँस। लगी। वृक्षा स फल आदि ताड़ने का लवा बाँस। लवसी। २ नाव चलाने का बाँस। ३ बाव्य आरम्भ करना। काम में हाथ लगाना। ४ जुआ में दाँव खेलनेवाला के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों द्वारा दाँव पर रखी गई वस्तु।

मुहा०—लगा लगाना=साथ देना। जुआ में दाँव खेलनेवाला के साथ दाँव पर कुछ रखना।

लगी-सज्ञा स्त्री० लम्बा बाँस। "लगा" का स्त्रीलिंग रूप।

लगपड-सज्ञा पु० १ बाज। २ लकड़-बाधा।

लगा-सज्ञा पु० दे० "लगा"।

लगी-सज्ञा स्त्री० दे० "लगी"।

लगन-सज्ञा पु० १ ज्योतिष में दिन का उतना अंश, जितने में किसी एक राशि का उदय रहता है। कोई धूम कार्य करने का मुहूर्त। २ विवाह का समय। ३ विवाह। शादी। विवाह के दिन। ४ राजाओं की स्तुति करनेवाला।

वि० १ लगा हुआ। मिला हुआ। २ लज्जित। ३ आसक्त।

सज्ञा पु० स्त्री० दे० "लगन"।

लगनकरण-सज्ञा पु० विवाह के पूर्व कन्या और वर के हाथ में बाँधा जानेवाला मंगल-सूत्र।

लगनकुली-सज्ञा स्त्री० फलित ज्योतिष में यह चक्र, जिससे किसी के जन्म के समय

का ग्रहा का पता लगाया जाता है। जन्मकुली।

लगनविन-सज्ञा पु० विवाह के लिए निश्चित दिन।

लगनवश-सज्ञा पु० जमावत करनेवाला। प्रतिभू।

लगनपत्र-सज्ञा पु० दे० "लगनपत्रिका"।

लगनपत्रिका-सज्ञा स्त्री० विवाह-सम्बन्धी बायीं कंधारे में ग्यारहवार रखी गई चिट्ठी, जो कन्यापक्ष की ओर सप्त-पक्ष को नजी जाती है।

लगनेश-सज्ञा पु० जन्मकुली में लगन का स्वामी ग्रह।

लघिमा-सज्ञा स्त्री० लघु होने का भाव। संघृता। आठ सिद्धियों में स एव कल्पित सिद्धि, जिस प्राप्त कर लेने पर मनुष्य बहुत छोटा या हल्का बन सकता है।

लघु-वि० १ छोटा। कनिष्ठ। २ बाजा। कम। ३ हल्का। ४ पतला। दुबला। ५ सुंदर। बढ़िया। ६ नि सार।

सज्ञा पु० १ व्याकरण में वह स्वर, जो एक ही मात्रा का होता है। जैसे—अ, इ। २ छन्दशास्त्र में वह अक्षर, जिसमें एक ही मात्रा हो। इसका चिह्न '।' है। ३ तीन प्रकार के प्राणायामों में से एक।

लघुकर्म-सज्ञा पु० जल्दी-जल्दी चलने की क्रिया। लघुचित्त-सज्ञा पु० १ दुबल चित्तवाला। जो अधिक साहसी न हो। २ छोटा दिग्बाला। सकीर्ण विचारवाला।

लघुचेता-सज्ञा पु० सुच्छ और बुरे विचार-वाला। नीच।

लघुजल-सज्ञा पु० लघा पक्षी।

लघुजागल-सज्ञा पु० लघा पक्षी।

लघुता-सज्ञा स्त्री० लघु होने का भाव। छोटापन। हल्कापन। तुच्छता।

लघुतमापवत्य-गणित में वह सबसे छोटी संख्या जो, दो या अधिक संख्याओं में से प्रत्येक को पूरा-पूरा भाग दे सके।

लघुत्व-सज्ञा पु० दे० "लघुता"।

लघुपाक-सज्ञा पु० वह साध पदार्थ, जो सहज में पच जाय।

लघुमति-वि० कम-समस्त। छोटी बुद्धि-वाला। मूल।

लघुमान-सज्ञा पु० नायिका का वह मान, जो नायक को किसी दूसरी स्त्री से बातचीत करते देखकर उत्पन्न होता है।

लघुशंका-सज्ञा स्त्री० पेशाव करना।

लच-सज्ञा पु० लचकने की क्रिया। लचक।

लचक-सज्ञा स्त्री० लचकने की क्रिया या भाव। लचन। झुकाव। बहुगुण, जिसके रहने से कोई वस्तु झुकती या दबती हो।

लचकना-क्रि० अ० [अनु०] झुकना।

लचना। स्त्रियों की कमर का कोमलता आदि के कारण झुकना।

लचकनी\*-सज्ञा स्त्री० १. लचीलापन। २. लचक।

लचका-सज्ञा पु० एक प्रकार का गोटा।

लचकाला-क्रि० स० लचाना। झुकाना।

लचकीला-वि० लचकनेवाला। लचीला।

लचकीला-वि० लचकनेवाला। लचीला।

लचन-सज्ञा स्त्री० दे० "लचक"।

लचना-क्रि० अ० दे० "लचकना"।

लचर-सज्ञा स्त्री० १. रूढ़ी। व्यवसाय। निकुण्ट।

२. शक्तिहीन।

लचलचा-वि० लचीला।

लचाना-क्रि० म० झुकाना।

लचार\*-वि० दे० "लचार"।

लचारो-सज्ञा स्त्री० १. दे० "लचारी"।

२. भेंट। नजर। ३. एक प्रकार का गोव।

लचाव-सज्ञा पु० दे० "लचक"।

लघोल-वि० [सज्ञा लचीलापन] लचकदार। आसानी से झुकने या लचकनेवाला।

लघुई-सज्ञा स्त्री० मैदे की बनी हुई एक प्रकार की पतली मुलायम पूरी।

लघु\*-सज्ञा पु० १. दे० "लघु"। निराना।

तक। २. ब्राज। बहाना। मित्र। ३. दे० "लघु"। गो हज़ार की गुल्फ। लघु।

गज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लक्षन\*-सज्ञा पु० दे० "लक्षण"।

लक्ष्मी-सज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छा-सज्ञा पु० १. मुच्छे के रूप में लटके हुए

तार। २. सूत, रेशम, ऊन आदि का लपेटा हुआ गुच्छा। ३. किसी चीज के सूत की तरह लंबे धीरे पतले कटे हुए टुकड़े। ४. मैदे की एक प्रकार की मिठाई। ५. हाथ या पैर का एक प्रकार का गहना।

लच्छि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लच्छित\*-वि० दे० "लक्षित"।

लच्छी-सज्ञा स्त्री० सूत, रेशम तथा ऊन आदि की लपेटा हुई गुच्छी। छोटा लच्छा।

लच्छेदार-वि० १. लच्छो से युक्त। जिसमें लच्छे हों। २. मजेदार बातचीत।

लछमन-सज्ञा पु० दे० "लक्ष्मण"।

लछमन झूला-सज्ञा पु० रस्सों या तारों आदि से बना पुल। बरीनाथ तीर्थ-स्थान जाने के मार्ग में एक प्रसिद्ध स्थान।

लछमना-सज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मणा"।

लछमी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "लक्ष्मी"।

लज\*-सज्ञा स्त्री० दे० "लज्जा"। लज्जा।

लजना-क्रि० अ० दे० "लजाना"। लज्जित होना।

लजवाना-क्रि० स० दूसरे को लज्जित करना।

शमिन्दा करना।

लज्जाधुरी-वि० जो बहुत लज्जा करनेवाला हो। शर्मीला।

सज्ञा पु० लजालू नाम का गोधा। छुई-मुई।

लजाना-क्रि० अ० लज्जा करना। लज्जित

या शमिन्दा होना। संकोच करना।

क्रि० स० लज्जित करना। लजवाना।

लजालू-वि० लज्जाशील। लजानेवाला या

संकोच करनेवाला।

सज्ञा पु० एक काटेदार छोटा गोधा, जिसकी

पत्तियाँ छूने से निकुड़ जाती हैं। छुई-मुई।

लज्जान\*-क्रि० स० दे० "लजाना"।

लज्जान-वि० [अ०] स्वादिष्ट। गाने में

अच्छा लगनेवाला।

लज्जाल-वि० बहुत लजानेवाला। दे० "लज्जा-

शील"।

लजुरी-सज्ञा स्त्री० दुर्ग में पानी पीने की

गोदी। रस्सी।

लजोहा, लजोही-वि० [स्त्री लजोही] बहुत लजानेवाला। लजीला। शर्मीला।

लजबत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] स्वाद। जायवा।

लजबतदार-वि० स्वादिष्ट। मजेदार।

लज्जा-सज्ञा स्त्री० [ वि० लज्जित ] १ लज। शर्म। हुवा। २ नान-मर्यादा। इज्जत। ३ मनाब या दोष आदि के कारण दूसरा के सामने न बोलने या सिर न उठाने का मनाव्रज।

लज्जाप्रद-वि० जिससे लज्जा या शर्म उत्पन्न हो।

लज्जाप्राया-सज्ञा स्त्री० मृत्वा नायिका के चार भदा म से एक (कंचन)।

लज्जालू-वि० शर्मीला। लजीला।

सज्ञा पु० लज्जालू पीधा। छुई मुई।

लज्जावत-वि० लज्जायुक्त। लज्जाला।

लज्जावती-वि० लज्जानेवाली। शर्मीली।

सज्ञा स्त्री० लज्जालू पीधा। छुई मुई।

लज्जावान्-वि० [ स्त्री० लज्जावती ] लजीला। दे० 'लज्जाशील'।

लज्जाशील-वि० लजीला। लज्जानेवाला।

लज्जाशून्य-वि० जिसमें लज्जा न हो। निर्लज्ज। बशर्म। बहवा।

लज्जाहीन-वि० जिसमें लज्जा न हो। निर्लज्ज। बेहया। बशर्म।

लज्जित-वि० लज्जाया हुआ। शर्माया हुआ।

लट-सज्ञा स्त्री० १ सिर के बालों का समूह। कंधापास। अलन। उलझा हुआ बालों का गुच्छा। २ लपट। लौ। ३ मूत के समान एक तरह के बहुत गहिल नींडे जो आँता म पड़ जाते हैं।

मुहा०-लट छिटकाना=सिर के बाड़ा का लोखर दफर उधर बिखराना।

लटकू-सज्ञा स्त्री० १ लटवने की प्रिया या नाच। पुनार। लचन। २ धागा का मनोहर गति। धप गगा।

लटकन-सज्ञा पु० १ द० लटक। २ लटवनेवाली बाज। लटन। ३ नाच में पहनने का एक गहना। ४ बलगा या सिरपेन में लगाने का गुच्छा।

५ एक पेड़, जिसका बीजा स बढिया गेरुआ रंग निकलता है।

लटकना-क्रि० अ० १ ऊँचे स्थान से गिर नीचे की ओर कुछ दूर तक मुका खना। झूलना। २ किसी ऊँच आधार पर इस प्रकार टिकना कि सब भाग नीचे की ओर हो जायगा। ३ किसी खड़ी वस्तु का किसी ओर झुकना। ४ लचकना। बल पाना। ५ किसी काम का बिना हुए पडा रहना। ६ डेर होना।

मुहा०-लटवनी चाल=बल खानी हुई मनोहर चाल।

लटकवाना-क्रि० स० लटवने का काम दूसर से कराना।

लटकहुरी-सज्ञा पु० तेली।

लटका-सज्ञा पु० १ गति। चाल। २ डब। ३ धनावटा पेष्टा। हाव भाव। ४ वातवीत का जनावटा डग। ५ मज-तब या उपचार आदि की छोटी युक्ति। टोटका। ६ सक्षिप्त उपचार। ७ एक तरह का चलता घाना।

लटकना-क्रि० स० १ टाँगना। किसी वस्तु को ऊँचे स्थान पर टिकाने भाग की ओर गूँथना। लचकाना। २ दुबिधा में डालना। ३ प्रतीक्षा या इंतजार कराना। ४ किसी काम को पूरा न कर या ही छोड़ रखना।

लटकीला-वि० [ स्त्री० लटकाला ] लचकदार। लटवता या घूमता हुआ।

लटकीली-वि० लटकनवाला। जो लटकता हो।

लटजीरा-सज्ञा पु० १ अपामाग। चिचडा। २ एक प्रकार का जड़हन धान।

लटना-वि० अ० १ लचकन गिर जाना। लज्जित होना। २ अशक्त होना। दुबला और कमजोर होना। ३ महनुत या घोमारी से थिथिल होना। शक्ति और उत्साह से रहित। ४ निष्क्रिया होना। ५ व्याकुल या थिथिल होना।

क्रि० अ० १ ललचाना। लुभाना। २ प्रमथन करार होना। खीन होना।

लटपटा-वि० [स्त्री० लटपटी] १. गिरता-पड़ता। लड़खड़ाता हुआ। २. ढीला-ढाला। जो चुस्त और दुरुस्त न हो। अस्त-व्यस्त। ३. ऐसी वस्तु, जो न बहुत पतली और न बहुत गाढ़ी हो। लुटपुटा। ४. (शब्द) जो स्पष्ट या ठीक कम से न निकले। टूटा-फूटा। ५. अव्यवस्थित। भड़वड़। ६. थक-कर गिरा हुआ। अशस्त। मलादला हुआ।  
लटपटान-सज्ञा स्त्री० लड़खड़ाहट। लटक। लचक। मनीहुर चाल।

लटपटाना-कि० अ० १. गिरता-पड़ना। लड़खड़ाता। २. ज़िना। चूक जाना। ३. ठीक तरह से न चलना। ४. लुभाना। मोहित होना। ५. लीन होना। अनुरक्त होना।

लटा-वि० [स्त्री० लटी] १. लोलुप। लालची। २. लपट। लुच्चा ३. नीच। गुच्छ। हीन। बुरा।

लटापटी-सज्ञा स्त्री० लटपटाने की क्रिया या भाव। लड़ाई-संगड़ा।

लटापोट-वि० मोहित। मुग्ध।

लटिया-सज्ञा स्त्री० सूत की लच्छी। बाँटी।

लटी-सज्ञा स्त्री० १. गुरी बात। २. झूठी बात। गप्प। ३. साधुदेवी। भगतिन। ४. बेइया।

लट्ठा-सज्ञा पु० दे० "लट्टू"।

लट्ठ-सज्ञा पु० ० "लकुट"।

लट्टी-सज्ञा स्त्री० दे० "लट्टू"।

लट्टी-सज्ञा स्त्री० सिर के बालों का लटवता हुआ गुच्छ। केस। अलक।

लट्टी-सज्ञा पु० एक प्रकार का छोटा पेड़, जिसके फलों में बहुत-सा लसदार गूदा होता है।

लट्टपट्टी-वि० दे० "लपट"। दे० "लटपटा"।

लट्ट-सज्ञा पु० एक गोत्र स्थितना, जिसे सूत से ड्राग अमीन पर फतवर नचाते हैं।

कि० स० मोहित होना। लुभाना।

महा- (हिमा पर)-लट्टू हाना=मोहित होना। पान के लिए चैन होना।

लट्ट-सज्ञा पु० बड़ी लाठी।

लट्टबाज-वि० लाठी चलाने में कुशल या अभ्यस्त। लठैत। लाठी चलानेवाला।  
लट्टबाजी-सज्ञा स्त्री० लाठी की लड़ाई या मारपीट।

लट्टमार-वि० १. लट्ट मारनेवाला। २. अश्रिय और कठोर। कर्कश। कड़वा।

लट्टा-सज्ञा पु० १. लकड़ी का बहुत लंबा टुकड़ा। २. जमीन नापने का एक बाँग।

३. बल्ला। शहतीर। लूकड़ी का बल्ला। धेरत। कड़ी। ४. एक प्रकार का गाढ़ा मोटा कपड़ा।

लट्ट-सज्ञा पु० १. षोडा। २. एक राग।

लट्टा-सज्ञा स्त्री० १. एक ज्ञाता। २. चित्र बनाने की कूँची। ३. व्यभिचारिणी स्त्री।

४. सिर के बाल के गुच्छे। अलक।

लट्टिया-वि० लठैत। लट्टबाज।

लट्टिया-सज्ञा स्त्री० दे० "लाठी"।

लठैत-सज्ञा पु० दे० "लट्टबाज"।

लड़त-सज्ञा स्त्री० १. लड़ाई। भिड़त।

२. सामना। मुकाबला।

लड़-सज्ञा स्त्री० १. एक ही प्रकार की वस्तुओं की पविन। माला। मोतियों की माला या सोने का हार आदि। फूला की माला।

२. रस्मी का एक तार। ३. पान।

लड़कई-सज्ञा स्त्री० दे० "लड़कन"।

नादानों। चंचलता।

लड़कल-सज्ञा पु० १. बालकों या लोच।

२. सहज काम।

लड़कपन-सज्ञा पु० १. बाल्यावस्था। कन-पन। नादानों। २. चंचलता। चंचलता।

लड़कपट्टि-सज्ञा स्त्री० बालकों को-गोरे समक्ष। नाममञ्जी। नादानों।

लड़का-सज्ञा पु० [स्त्री० लड़की] १. पुत्र।

बेटा। २. बालक।

मुहा०—लड़का या भेल=बहुत बागान नाम। मामूली बात।

लड़कई-सज्ञा स्त्री० दे० "लड़कन"।

लड़का-बाला-सज्ञा पु० मना। जोश।

बाल-बच्चे। पशुपति।

लड़की-सज्ञा स्त्री० पुत्री। बालिका।

लड़कीरी-वि० पत्नीसारी।

लङ्घयन्ना-क्रि० अ० १ उगमाना। उग-  
मगकर गिरना। विचलित होना। ठीक  
से न चलना। २ इष्ट-उग गुरु पडना।  
३ खाना खाना। चूना।

मुह्य-गोम लङ्घयन्ना=मुह्य ग यत् यत्  
कर सध्व निचलना।

लङ्घना-वि० अ० १ एवं दूसरे को चाट पट्टे,  
गाना। मुद्ध करना। भिडना। म-ल मुद्ध  
करना। २ धाश करना। हुम्मत  
करना। तकरार करना। बह्य करना।  
३ टक्कर खाना। भिडना। ४ व्यवहार  
आदि में सकलता के लिए एक दूसरे के  
विषय प्रयत्न करना। ५ पूरा हो स धटित  
होना। सटीक बैठना। ६ विच्छेद, भिड  
आदि का डक माना। ७ लक्ष्य पर  
पहुँचना।

लङ्घयन्ना-क्रि० अ० दे० लङ्घयन्ना।  
लङ्घावर या लङ्घावला-वि० [स्त्री० लङ्घ-  
यावरी] १ जितमें बहुत लङ्घन हो।  
अल्हड। मूर्ख। नामसम। २ गेंवार।  
अनाडी। ३ जिसमें मूलता प्रवृत्त हो।

लङ्घाई-पञ्चा स्त्री० १ एवं दूसरे पर बार।  
भिडत। लक्ष्मी। जा। युद्ध। २ म-ल्लुद्ध।  
कुशी। ३ लगडा। तकरार। हुम्मत।  
४ आपस की कहा-मुनी। विवाद।  
बहस। ५ टक्कर। ६ व्यवहार या मामले  
में सकलता के लिए एक दूसरे के विषय  
प्रयत्न या चाल। ७ अनुबन। विरोध।

लङ्घाका-वि० [स्त्री० लङ्घाकी] १ यादा।  
लङ्घने में यहादुर। मिताही। २ लगडा  
करवाला। लङ्घालू।

लङ्घाक-वि० १ लङ्घाई में काम आनेवाला।  
२ लङ्घनेवाला। योद्धा।

लङ्घाना-क्रि० स० १ दूसरे को लङ्घन में  
प्रवृत्त करना। लगड में प्रवृत्त करना।  
२ टक्कर खिलाना। भिडाना। ३ लक्ष्य  
पर पहुँचाना। ४ परस्पर उल्लंघना।  
५ सकलता के लिए व्यवहार में लाना।  
६ लक्ष्य-पार करना। दुलार करना।  
पुष्कारना।

लङ्घयन्ता-वि० दे० 'लङ्घा'।

लङ्घो-पुञ्जा स्त्री० १ पति। यतार। २ फूटा  
पी माला। हार। ३ दे० 'लङ्घ'।

लङ्घोला-वि० दे० 'लङ्घला'।

लङ्घला-पञ्चा पु० दे० 'लङ्घ'।

लङ्घता-वि० [स्त्री० लङ्घनी] १ लङ्घनवाला।  
यादा। २ लङ्घना। दुलारा। ३ जा लङ्घ-  
प्यार के कारण बहुत झगलाया हा। ४ धृष्ट।  
शोष। ५ प्यारा। प्रिय।

लङ्घ-पञ्चा पु० गोल बनी हुई मिटाई।  
मार्दिक।

मुह्य-डा के लङ्घ खाना=नासमदी  
करना। हास-लक्ष्य में न रहना। पगल  
हाना। मन के लङ्घ खाना=व्यर्थ किसी  
लक्ष्य को करना करना।

लङ्घाना-क्रि० स० लङ्घ-पार करना।  
दुलार करना।

लङ्घ-पञ्चा पु० कुत्ती का एक पेंच।

लङ्घा-पञ्चा पु० बलगाडी। दे० 'लङ्घिया'।

लङ्घिया-पञ्चा स्त्री० बलगाडी।

लत-सज्ञा स्त्री० बुरी आदत। दुर्गन्ध। बुरी  
देव।

लतखोर लतखोरा-वि० [स्त्री० लतखोरिन]  
१ लत खानेवाला। २ नीच। कमीना।  
३ दरवाजे पर पडा हुआ पैर पोछने का  
कपडा। पायदाज।

लतमदन-सज्ञा स्त्री० १ पैर ने कुटाई। लत  
से दवाना या कुचलना। २ पदापात।

लत-सज्ञा स्त्री० बल। बल्लू।

लतरा-पञ्चा पु० एक तरह का मोटा अना।

लतरी-सज्ञा स्त्री० १ एवं पीपा, जिसकी  
शक्ति से सब निकलती है। २ एक तरह  
की पात।

लतहा-वि० लत मारनेवाला।

लता-सज्ञा स्त्री० १ वह पीपा, जो दोरी  
के रूप में जमीन पर फैल जयवा किसी  
बस्तु से लिपटकर ऊपर चड। बल्ली। बल।  
२ बीर। ३ कोमल शाखा। ४ सुदरी स्त्री।  
लताकुज, लतागुह-पञ्चा पु० छाई हुई लताओं  
से मध्य की तरह छाया हुआ स्थान।

लताड-सज्ञा स्त्री० लताडन की धिया या  
भाव। दे० 'लताड'।

लताइना-क्रि० सं० १. रोदना। पैरो से कुचलना। लेटे हुए आदमी पर खड़े, होकर पैर से उसका शरीर दबाना। २. डाँटना-फटकारना। ३. परेशान करना।

लता-पता-सज्ञा पु० १. लता और पत्ते। २. पेड़-पौधों का समूह। पेड़-पत्ते। ३. पौधों की हरियाली। ४. जड़ी-बूटी।

लताभयन-सज्ञा पु० दे० "लतागृह"।

लतामंडप-सज्ञा पु० दे० "लतागृह"।

लतिका-सज्ञा स्त्री० छोटी लता। वेल।

लतियर, लतियल-वि० लात खानेवाला। दे० "लतखोर"।

लतियाना-क्रि० सं० खूब लाते मारना।

पैरो से दबाना या रोदना।

लतिहर, लतिहल-वि० दे० "लतियर"।

लतीफ-वि० [अ०] स्वादिष्ट। जायकेदार। मजेदार। बड़िया।

लतीफा-सज्ञा पु० [अ०] १. चुटकला।

हास्यरस की छोटी कहानी। २. हँसी की बात। अन्ठरी बात।

लता-सज्ञा पु० फटा-पुराना कपड़ा। चीयडा।

कपड़े का टुकड़ा। कपडा।

यो०—कपडा-लता=पहनने के वस्त्र।

लत्ती-सज्ञा स्त्री० १ पशुओं का लात मारना।

२ लात। ३ कपड़े की लम्बी धज्जी। ४ पतंग के नीचे रैकी हुई कपड़े की लम्बी धज्जी।

लपप-वि० १ [अनु०] भीगा हुआ। तरा-वोर। २ (कीचड़ आदि में) सना हुआ।

लपाड-सज्ञा स्त्री० १ जमीन पर पटकने या घसीटने की क्रिया। २ हार। ३ चपेट। ४ जिझ्नी। फटवार।

लपाइना-क्रि० सं० दे० "लपेटना"।

लपेटना-क्रि० म० १ कीचड़ आदि से लपेटकर गंदा करना। २ पटककर दूर-दूर, लोटाना या घसीटना। ३ हँसाना। मसाना। ४ डाँटना। डपटना। ५ कुश्ती में पटकना। बुरी तरह हराना। ६ लताइना।

लदना-क्रि० अ० १. बोझ उतार लेना। भार उतारना। अञ्छादित होना। पूर्ण होना।

२. मामान होनेवाली सवारी पर बोझ भर

जाना। २ बोझ का डाला या रखा जाना।

३. जेलखाने जाना। कैद होना। ४. मर जाना। परलोक जाना। ५. समाप्त होना।

लदवाना-क्रि० सं० १. लदने का काम दूसरे से कराना। २. किसी गाड़ी पर सामान रखवाना।

लदाऊ\*+वि० दे० "लदाव"। लदनेवाला।

लदाना-क्रि० सं० लदने का काम दूसरे से कराना।

लदाफँदा-वि० लदा हुआ। बोझ से दबा या थका हुआ।

लदाव-सज्ञा पु० १ लदने की क्रिया का भाव। २ भार। बोझ। ३. छत आदि का पटाव। ईंटों की जुड़ाई, जो बिना धरन या कड़ी के अवर में ठहरी हो। ४. इस प्रकार की जुड़ाई की छत।

लदुवा, लद्दू-वि० बोझ होनेवाला। जिस पर बोझ लादा जाय।

लद्धड-वि० मोटा-ताजा होने से आलसी। मुस्त।

लद्धडपन-सज्ञा पु० मुस्ती। आलस। ढिलाई।

लदना\*—क्रि० सं० प्राप्त करना।

लप-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १. बेट या पतली छड़ी आदि लकीरी चीज को हिलाने से उत्पन्न शब्द। २ लपलपाने की क्रिया या भाव। ३ कटार, तलवार आदि की चमक की गति।

सज्ञा पु० अँजरी।

लपक-सज्ञा स्त्री० १ आग की लौ। ज्वाला। लपट। २ चमक। ३ लपट निकलने की तेजी। लपलपाहट। ४ तेजी। वेग। ५ चलने की तेजी।

लपकना-क्रि० अ० १ किसी चीज को लेने के लिए तेजी से हाथ बढ़ाना। झपटना। तेजी से जाना। २ आश्चर्य करने या लेने के लिए झपटना।

मुहा०—लपलप=१. तुरत तेजी से जाकर। २ तुरत। झट से।

लपलप-वि० १. चंचल। २ फूर्तिला। तेज।

लपट-सज्ञा स्त्री० १. आग की लौ। ज्वाला। २ गरम हवा। ३. जीव। ४. गंध से भरा वायु का घना।

लपटना-क्रि० अ० १ लपटना। चिमटना।  
२ अंकित करना। गले लगाना। ३  
बाँधना। धरना। ४ उलझना। ५ सटना।  
संलग्न होना।

लपटा-पञ्चा पु० १ बोटा-बहुत लगाव या  
उत्पन्ध। २ गाढ़ी गौली वस्तु। मञ्जी।  
लपनी।

लपटाना-क्रि० स० १ दे० 'लपटाना'।  
२ दे० 'लपेटना'।

क्रि० अ० १ द० 'लपटना'। सटना।  
२ उलझना। फेना।

लपना-क्रि० अ० [अनु०] १ लपना।  
इधर उधर झुकना। लपना। २ ललचना।  
हैरान होना।

लपलपाना-क्रि० अ० [अनु०] १ लपना।  
लकीली वस्तु का इधर-उधर हिलना टुलना।  
जग या लकीली छडी का इधर-उधर झुटना।  
२ झुकना। छुरी, तलवार आदि का  
चमकना।

क्रि० स० द० १ लपाना। २ लकीली  
वस्तु का इधर-उधर झुकना। ३ छुरी,  
तलवार आदि को हिलाकर चमकाना।

लपलपाहट-पञ्चा स्त्री० १ लपलपाने की  
क्रिया या भाव। २ चल्क। चमक।

लपसी-पञ्चा स्त्री० १ गौली गाढ़ी वस्तु। २  
पगल। हुनुआ। ३ लपटा।

लपाटिया-पञ्चा पु० १ बात बनानेवाला।  
लवार। २ गर हाँकनेवाला। मञ्जी।

लपाटी-पञ्चा पु० गर हाँकनेवाला। मञ्जी।

लपाना-क्रि० स० १ लकीली वस्तु का इधर-  
उधर लगाना। २ फन्पारना। ३ आगे  
बढ़ना।

लपेट-पञ्चा स्त्री० १ लपटने की क्रिया या  
भाव। बन्धन। २ घुनाप। फरा। ऐंझ।  
चल। मगोड़। ३ धरा। परिधि। ४ उल-  
झान। जल या चक्कर।

लपेटन-पञ्चा स्त्री० दे० 'लपेट'।

समा पु० १ लपेटनेवाली वस्तु। बाँधने का  
गुच्छ। बन्धन। ऐंझ। किसी वस्तु के चारो  
ओर घुमाकर बाँधने की वस्तु। २ पैरा में  
उलझनेवाली वस्तु।

लपेटना-क्रि० स० १. फँसी हुई वस्तु को  
समेटना। मोड़कर सिमटना या बाँधना।

२ पपड़े आदि के छदर बाँधना। ३ किसी  
वस्तु को घुमाकर बाँधना। ४ पकड़ लेना।  
गतिविधि बदलना। ५ उलझन में  
डालना। झट में फँसाना।

लपेटवा-वि० १ जो लपेटकर बनाया गया  
हो। जो लपेटा हो। २ जिसमें साने-बाँदी  
के तार लपेटे गए हों। ३ गूढ़। ४ अम।  
५ चक्करदार।

लपेटा-पञ्चा पु० दे० 'लपेट'।

लपड़-पञ्चा पु०-वण्ड।

लप्पा-सञ्चा पु० एक तरह का गोटा।

लफा-वि० लपट। बदमाश। लुच्चा।  
आवारा।

लफ्फ-पञ्चा पु० [अ०] शब्द।

लव-सञ्चा पु० [फा०] १ होठ। २ किनारा।

लवझना-क्रि० अ० उलझना। फँसना।

लवड-धोपी-पञ्चा स्त्री० १ गडबडी।

अश्ववस्था। २ अंग्रे। धाँधली। ३ बईमारी  
की चाल। बूढ़मूढ़ का हल्का।

लवझना-क्रि० अ० १ झट बाजना। २  
गड हकना।

लवडसवड-पञ्चा पु० १ झट सन। इधर-  
उधर की बातें। गप। २ बकनव।

लवदा-पञ्चा पु० [स्त्री० लवदी] मोटा  
बेड़ा ज डडा।

लवनी-पञ्चा स्त्री० ताड़ी चुआन या पात्र  
या पडा।

लवारी-वि० १ द० 'लवार'। झट  
बोलनेवाला। गर हाँकनेवाला। २  
चुगुलखोर।

लवारी-पञ्चा पु० [फा०] लुईदार या ऊनी  
चारा। दगम। चोगा।

लवारी-वि० १ गर हाँकनेवाला। मञ्जी।

नूडा। २ चुगुलखोर।

लवारी-सञ्चा स्त्री० बूढ़ बोलने का काम।

वि० १ बूढ़। २ चुगुलखोर।

लवालव-क्रि० वि० [फा०] मुँह तब भरा  
हुआ। छरकता हुआ।

लवद-पञ्चा पु० [वद या जनु०] १ वेद

विरुद्ध कथन। २. दत्तकथा। ३. लोकाचार-  
की नदी या भोडी बात।

लवेदा-सज्ञा पु० [स्त्री० लवेदी] मोटा  
बड़ा डडा।

लव्य-वि० १ प्राप्त। कमाया हुआ। २  
भाग करने से आया हुआ फल (गणित)।  
लव्यकाम-वि० जिसकी इच्छाएँ पूरी हो  
गई हों।

लव्यकीर्ति-वि० प्रसिद्ध। प्रतिष्ठित। नामवर।

लव्यनाम-वि० प्रतिष्ठित। प्रसिद्ध।

लव्यप्रतिष्ठ-वि० प्रतिष्ठित। प्रसिद्ध।

लव्याक-सज्ञा पु० गुणा, भाग आदि करने पर  
प्राप्त होनेवाला शक-विशेष (गणित)।

लव्या-पज्ञा स्त्री० एक प्रकार की नायिका  
(विप्रलम्भा नायिका)।

लव्य-पज्ञा स्त्री० १ भाग देने से प्राप्त अंक  
(गणित)। हिमाव का उत्तर। २ लम्ब।  
प्राप्ति।

लभन-पज्ञा पु० प्राप्त करना।

लभत-पज्ञा पु० १ घोड़ा बांधने की रस्सी।  
२ नांगनेवाला। ३ धन।

लम्प-वि० १ पाने योग्य। जो मिल सके।  
२ उचित। मुनासिब।

लम्प-पज्ञा पु० १ जरा। उपपत्ति। २  
लट। ३ चूले की पेंग।

लम्पकना-वि० अ० १ लम्पकना। २ उत्कण्ठित  
होना।

लम्पोडा-वि० लम्बी टांगवाला।

मज्ञा पु० कायस्था की एक शाखा।

लम्पिन्ना-वि० लम्बी गईनवाला।

लम्पड-पज्ञा पु० १. बरछा। २ पुरानी  
चाल की लम्बी बन्दूक। ३ लम्बी।

वि० पतला और एकदम लम्बा।

लम्पडग-वि० [स्त्री० लम्पडगी] बहुत लंबा  
या ऊँचा।

लम्पना-वि० अ० १ लम्पना। २  
दूर तक आगे बढ़ना।

वि० अ० दूर निकल जाना।

लम्प-पज्ञा पु० १ एक पदार्थ का दूसरे में मिल  
जाना। बिगड़ना। २ जग का नाम।  
प्रजा। बिनाश। ३. लक्ष। ४. मन्त्र।

ध्यान में डूबना। ५ लगन। एकाग्रता।  
६ कार्य का फिरकारण के रूप में परिणत  
हो जाना। ७ सन्तुष्ट। ८ संगीत में नृत्य,  
गीत और वाद्य का मेल। ९ विद्या। १०.  
मुच्छा। ११ वह समय, जो किसी स्वर  
को निकालने में लगता है। १२ गाने  
का स्वर।

सज्ञा स्त्री० १ गीत गाने का ङग या उर्व।  
धुन। २ संगीत में सम।

लर\*+सज्ञा स्त्री० दे० "लड"।

लरकई\*-सज्ञा स्त्री० दे० लडकई।  
लडकपन।

लरकना\*+वि० अ० दे० "लटकना"।

लरखरना, लरखराना\*+वि० अ० [सज्ञा  
स्त्री० लरखरानि] दे० "लडखडाना"।

लरजना-वि० अ० १ कांपना। हिलना।  
२ डरना। दहल जाना।

लरसर\*+वि० १ बहुत अधिक। प्रचुर।  
२ बरसता हुआ।

लरनि\*-सज्ञा स्त्री० १ लडाई। २ लडने  
का तरीका।

लरकई\*+वि०-सज्ञा स्त्री० दे० "लडकपन"।

लरिक-सलोरी\*+सज्ञा स्त्री० लडका का  
खेल। खेलवाड।

लरिका\*-सज्ञा पु० दे० "लडका"।

लरकई\*+वि०-सज्ञा स्त्री० दे० "लडकपन"।

लरी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "लडी"।

लर्ज-पज्ञा पु० सितार में एक तार का  
नाम।

ललक-पज्ञा स्त्री० बहुत अधिक चाह।  
उमंग। लालसा। उत्कण्ठा। प्रबल इच्छा।

ललकना-वि० अ० १ पाने की बहुत इच्छा  
करना। लालसा करना। २ ललचना। चाह  
की उमंग से भरना।

ललकार-पज्ञा स्त्री० १ ललकारने की क्रिया  
या भाव। मुद्र के लिए आह्वान। २ लडने के  
लिए प्रोत्साहन। चुनौती। ३ लडाई के लिए  
उच्च स्वर से नियंत्रण।

ललकारना-वि० अ० १. मुद्र के लिए उच्च  
स्वर से आह्वान करना। २ लडने के लिए  
बढ़ावा देना। चुनौती देना।

सलकित\*-वि० उलट से मरा हुआ।  
प्रवल इच्छा से आतुर। उत्कण्ठित।

ललचना-क्रि० अ० १ लालच करना। २ पाने के लिए अधीर होना। मोहित होना।  
ललचना-वि० स० १. किसी के मन में लालच उत्पन्न करना। २ मोहित करना।  
लुभाना। ३ कोई वस्तु दिखाकर उसका पाने के लिए अधीर करना।

\*† क्रि० अ० दे० 'ललचना'।

मुहा०—जी या मन ललवाना=मन मोहित करना। मूग्ध करना। लुभाना।

ललबोही-वि० [स्त्री० ललबोही] ललचाया हुआ। लालच से मरा।

ललन-सज्ञा पु० १ प्यारा बालक। २ लड़के के लिए प्यार का शब्द। दे० लला।  
३ प्रिय नायक या पति। ४ केलि। नीडा।

ललना-सज्ञा स्त्री० १ स्त्री। महिला।  
बामिनी। २ जिह्वा। जीभ। ३ एक वण-वृत्त।

ललनिका-सज्ञा स्त्री० स्त्री। ललना।

लला-सज्ञा पु० [स्त्री० लली] १ लड़का। २ लड़के के लिए प्यार का शब्द। ३ प्यारा या दुलारा लड़का। ४ प्रिय नायक या पति।  
५ बहुत प्यारा।

ललाई-सज्ञा स्त्री० लाली। सुर्खी। लाल होने का भाव।

ललाट-सज्ञा पु० १ भाल। मस्तक। माथा।  
२ भाग्य। विस्मय का लिखा।

ललाट-पटल-सज्ञा पु० भाल। ललाट का तल या सतह।

ललाट-रेखा-सज्ञा स्त्री० भाग्य का रेखा।  
प्रारम्भ। किस्मत का लिखा।

ललाटाक्ष-सज्ञा पु० शिब।

ललाटाक्षी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा।

ललाना\*†-क्रि० अ० ललचना। ललचायित होना।

ललाम-वि० १ सुंदर। मनोहर। २ लाल।  
सुर्ख। ३ श्रेष्ठ। प्रधान।

लला पु० १ अलंकार। गहना। २ रत्न।  
३ निराश। चिड़।

ललामो-सज्ञा स्त्री० लाली। सुन्दरता।

सलित-वि० १ सुंदर। मनोहर। मनवाहा।  
प्यारा। २ हिलता-डोलता। चलता हुआ।  
सज्ञा पु० शृंगार-रस में एक हाव या भा-  
वैष्ट्या, जिसमें मुकुभास्ता (मनकावत) के साथ अंग हिलाए जाते हैं। २ एक विषम वर्ण-वृत्त। ३ साहित्य में एक अलंकार, जिसमें वर्ण-वस्तु (वात) का स्थान पर उसके प्रतिश्रव का वर्णन किया जाता है।

सलितई\*†-सज्ञा स्त्री० दे० 'ललितई'।

सलित कला-सज्ञा स्त्री० ये कहाँ जिनके व्यस्त करने में किसी प्रकार के मादय को अवस्था हो। जैसे—मंगल, चित्रकला, वास्तु-कला आदि।

सलिता-सज्ञा स्त्री० १ एक वणवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण म ठ, न, ज, र होता है। २ राधिका की प्रवान आठ सलिया में से एक।

सलितई\*-सज्ञा स्त्री० सुंदरता।

सलियाना\*†-क्रि० स० १ कुसलाना। बह-  
काना। बहलाना। २ बस में करना।

सली-सज्ञा स्त्री० १. लड़की के लिए प्यार का शब्द। २ नायिका। ३ प्रयसी।

सलीही-वि० [स्त्री० ललीही] ललाई लिये हुए। लाल रंग का।

लल्ला-सज्ञा पु० १ दे० लला। लड़के के लिए प्यार का शब्द। २ दुलारा लड़का।  
लल्लो-सज्ञा स्त्री० जीभ। जवान।

लल्लो चप्पो-सज्ञा स्त्री० चिकनी चूपड़ी बातें।  
सुखानंद की बातें। ठकुरसुहावी।

लल्लो-पत्तो\*†-सज्ञा स्त्री० दे० लल्लो चप्पो।

लवण-सज्ञा पु० लवण (मसाला)।

लव-सज्ञा पु० १ बहुत थोड़ी मात्रा। २ दो काष्ठा अर्थात् छत्तीस निमर का अल्प नमय।

३ चाह। पुन। लगन। ४ विनाश। लय।

५ काटना। छटना। ६ ऊन, बाल या पर, जो पशु-पक्षियों से पतलकर निकाल जाते हैं। ७ लपट नाम की बिड़िया। ८ लवण।

९ श्रीरामचंद्र के दो पुत्रों में से एक का नाम।

लवण-सज्ञा पु० नमक।

वि० नमकीन। लवणा।

लवन-सज्ञा पुं० १. काटना। छेदना। २. खेत की कटाई। लुनाई। लीनी।  
 लवना-क्रि० स० दे० "लुनना"। पके हुए अन्न के पीसों को एकत्र करना।  
 लवनाई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।  
 लवनि, लवनी-सज्ञा स्त्री० १. खेत में अनाज की पकी फसल की कटाई। लुनाई। २. मन्थन। नवनीत।  
 लवरी-सज्ञा स्त्री० आग की लपट। ज्वाला।  
 लवलासी\*—सज्ञा स्त्री० प्रेम का लगाव। तन्मयता। लगन।  
 लवली-सज्ञा स्त्री० १. हरफारेवरी नाम का पेड़ और उसका फल। २. एक विषम वर्णवृत्त।  
 लवली-वि० मग्न। तन्मय। तल्लीन।  
 लवलेह-सज्ञा पुं० १. बहुत ही कम। अत्यन्त अल्प मात्रा। २. बहुत थोड़ा-सा मसर्ग या मर्कट।  
 लवहरा-सज्ञा पुं० जुड़वाँ। यमज।  
 लवा-सज्ञा पुं० १. सुनें हुए धान या ज्वार का दाना। लावा। २. सीतर की जाति का एक पक्षी।  
 लवाई-वि० वह गाय, जिसका बच्चा अभी बहुत ही छोटा हो।  
 सज्ञा स्त्री० खेत की फसल की कटाई। लुनाई।  
 लवाजमा-सज्ञा पुं० [ज०] १. किसी के साथ रहनेवाला दल-बल और साज-सामान। २. आवश्यक सामग्री।  
 लवारा-सज्ञा पुं० गी का बच्चा।  
 लवासी\*—वि० १. गणी। बचवादी। २. लपट।  
 लदाकर-सज्ञा पुं० [फा०] १. फौज। सेना। २. सेना का पड़ाव। छावनी। ३. जहाज में काम करनेवालों का दल। ४. भीड़। दल।  
 लशकरी-वि० १. फौज का। सेना-सम्बन्धी। २. जहाज पर काम करनेवाला। मलासी। जहाजी।  
 सजाकारना-क्रि० स० १. लहकारना या ललकारना। २. गिराई कुत्तों को गिराव के लिए बढ़ावा देना।

लशून, लशून-सज्ञा पुं० लहसुन।  
 लसत\*-सज्ञा पुं० दे० "लसन"। लक्ष्मण।  
 लस-सज्ञा पुं० १. चिपकने या चिपकाने का गुण। चिपचिपाहट। २. वह वस्तु, जिसके लगाने से एक वस्तु दूसरी वस्तु से चिपक जाय। लासा। ३. चित्त लगने की बात। ४. आकर्षण।  
 लसदार-वि० जिसमें लस हो। लमीला। लसलसा। चिपचिपा।  
 लसना-क्रि० स० एक वस्तु को दूसरी वस्तु के साथ सटाना। चिपकाना।  
 \*क्रि० अ० १. शोभित होना। छजना। सुन्दर लगना। फवना। २. विराजना। विद्यमान या मौजूद होना।  
 लसनि\*-सज्ञा स्त्री० १. शोभा। छटा। २. स्थिति। विद्यमानता। मौजूदगी। ३. शोभित होने की दशा।  
 लसम-वि० दूषित। खोटा। जो खरा न हो। लसलसना-क्रि० अ० चिपचिपाना। लगदार होना।  
 लसलसा-वि० दे० "चिपचिपा", "लसदार"।  
 लसिका-सज्ञा स्त्री० लार। थूक।  
 लसित-वि० १. शोभायुक्त। शोभित। सुन्दर लगता हुआ या फवता हुआ। २. विद्यमान। विराजित। प्रत्यक्ष। आँख के सामने।  
 लसियाना-क्रि० स०, अ० लसलस होना। चिपकना। लसदार होना। चिपचिप होना।  
 लसी-सज्ञा स्त्री० १. लस। चिपचिपाहट। २. दिल लगने की वस्तु। ३. आकर्षण। ४. लाभ होने का अवसर। ५. मन्थ। लगाव। ६. दही का शरबत, लस्सी।  
 लसीका-सज्ञा स्त्री० लार। मांस और चमड़े के बीच में रहनेवाला रस।  
 लसीला-वि० [स्त्री० लसीली] लमदार। सुन्दर। शोभायुक्त।  
 लसीझा-सज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़, जिसके फल और पत्र के पार्श्व में जलित हैं।  
 लसीटा-सज्ञा पुं० बहेलियों या चिट्ठियों को फँसाने का बग या चोगा।  
 लस्य-मस्य-क्रि० वि० निचो तरह से। ज्यों-ज्यों। जैसे-जैसे।

सलकित\*-वि० ललच से भरा हुआ।  
 प्रबल इच्छा से आतुर। उत्कण्ठित।  
 ललचना-क्रि० अ० १ लालच करना। २  
 पाने के लिए अधीर होना। मोहित होना।  
 ललचाना-क्रि० स० १ किसी के मन में  
 लालच उत्पन्न करना। २ मोहित करना।  
 लुभाना। ३ कोई वस्तु दिखाकर उसके  
 पाने के लिए अधीर करना।  
 \*† क्रि० अ० दे० ललचना।  
 मुहा०—जो या मन ललचाना=मन मोहित  
 करना। मग्न करना। लुभाना।  
 ललचोही-वि० [स्त्री० ललचोही] ललचाया  
 हुआ। लालच से भरा।  
 ललन-सज्ञा पु० १ प्यार वाला। २ लड़के  
 के लिए प्यार का शब्द। दे० लला।  
 ३ प्रिय नायक या पति। ४ केलि। नीडा।  
 ललना-सज्ञा स्त्री० १ स्त्री। महिला।  
 कामिनी। २ जिह्वा। जीभ। ३ एक  
 वण-वृत्त।  
 ललनिका-सज्ञा स्त्री० स्त्री। ललना।  
 लला-सज्ञा पु० [स्त्री० लली] १ लड़का। २  
 लड़के के लिए प्यार का शब्द। ३ प्यार या  
 पुलारा लड़का। ४ प्रिय नायक या पति।  
 ५ बहुत प्यारा।  
 ललाई-सज्ञा स्त्री० लाठी। सुर्खी। लाँठ होना  
 का भाव।  
 ललाट-सज्ञा पु० १ भाल। मस्तक। माथा।  
 २ भाग्य। किस्मत का लिखा।  
 ललाट-पटल-सज्ञा पु० भाल। ललाट का तल  
 या सतह।  
 ललाट रेखा-सज्ञा स्त्री० भाग्य का ललाट  
 प्रारम्भ। किस्मत का लिखा।  
 ललाटाक्ष-सज्ञा पु० शिब।  
 ललाटाक्षी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा।  
 ललाना\*†-क्रि० अ० ललचना। लालायित  
 होना।  
 ललाम-वि० १ सुंदर। मनोहर। २ लाल।  
 सुख। ३ थण्ड। प्रशान्त।  
 सज्ञा पु० १ अलंकार। गहना। २ रत्न।  
 ३ निशान। चिह्न।  
 ललाची-सज्ञा स्त्री० लाठी। सुन्दरता।

ललित-वि० १ सुंदर। मनोहर। मनोवाह।  
 प्यारा। २ हिलता-डोलता। चलता हुआ।  
 सज्ञा पु० शृंगार-रस में एक हाव या अंग-  
 चेष्टा, जिसमें सुकुमारता (नजाकत) से  
 सारा अंग हिलाए जाते हैं। २ एक विषम  
 वण-वृत्त। ३ साहित्य में एक अलंकार, जिसमें  
 वण-वस्तु (वात) के म्यान पर उससे  
 प्रतिविम्ब का वणन किया जाता है।  
 ललितई\*†-पज्ञा स्त्री० दे० ललित।  
 ललित कला-पज्ञा स्त्री० वे कलाएँ जिनके  
 व्यवहार करने में किसी प्रकार के सौंदर्य की  
 अवेधा हो। जैसे—मगीत चित्रकला, वास्तु  
 कला आदि।  
 ललित-सज्ञा स्त्री० १ एक वणवृत्त, जिससे  
 प्रत्येक चरण म त, न, ज २ होता है। २  
 राधिका की प्रधान आठ सखियाँ में से एक।  
 ललितई\*-सज्ञा स्त्री० सुंदरता।  
 ललियाना-क्रि० स० १ फुलाना। बह  
 काना। बहुलाना। २ बस म करना।  
 लली-सज्ञा स्त्री० १. लड़की के लिए प्यार  
 का शब्द। २ नायिका। ३ प्रयत्नी।  
 ललीहो-वि० [स्त्री० ललीहो] ललाई जैसे  
 हुए। लाल रंग का।  
 लल्ला-सज्ञा पु० १ दे० लला। लड़के के  
 लिए प्यार का शब्द। २ पुलारा लड़का।  
 लल्लो-सज्ञा स्त्री० जीभ। जवान।  
 लल्लो चप्पो-सज्ञा स्त्री० चिमनी चुपड़ा बात।  
 सुशामन की बातें। ठकुरसुहाती।  
 लल्लो पत्तो-सज्ञा स्त्री० दे० लल्लो-  
 चप्पो।  
 ललग-सज्ञा पु० लोग (मसाग)।  
 लग-सज्ञा पु० १ बहुत थोड़ी मात्रा। २ दो  
 काष्ठ अर्थात् छत्तीस निमर या अल्प समय।  
 ३ चाह। धुन। लगन। ४ विनाश। लग।  
 ५ वाटन। छड़ना। ६ ऊन पाल या पर,  
 जो पशु-पक्षियों से बतरकर निवाला जात  
 है। ७ लवा नाम की बिड़िया। ८ लगन।  
 ९ श्रीरामचंद्र के दो पुत्रों में से एक  
 का नाम।  
 लवण-सज्ञा पु० नमक।  
 वि० नमकीन। खलोना।

लदन-सज्ञा पु० १ कटना। छेदना। २-  
 खेत की कटाई। लुनाई। लोनी।  
 लवना-क्रि० सं० दे० "लुनना"। पके हुए अन्न  
 के पीछे को एकत्र करना।  
 लवनाई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "लवण्य"।  
 लवनि, लवनो-सज्ञा स्त्री० १. खेत में अनाज  
 की पकी फसल को कटाई। लुनाई। २  
 मक्खन। नवनीत।  
 लवरा-सज्ञा स्त्री० आग की लपट। ज्वाला।  
 लवलसी\*-सज्ञा स्त्री० प्रेम का लगाव।  
 तन्मयता। लगन।  
 लवलो-सज्ञा स्त्री० १ हरकारेवरी नाम का  
 पेड़ और उसका फल। २ एक विषम  
 वर्णवृत्त।  
 लवलीन-वि० मग्न। तन्मय। तल्लीन।  
 लवलेन-सज्ञा पु० १ बहुत ही कम। अत्यन्त  
 अल्प माना। २ बहुत थोड़ा-सा ससर्ग या  
 मरकट।  
 लवहरा-सज्ञा पु० जुड़वाँ। यमज।  
 लवरा-सज्ञा पु० १ भुने हुए धान या ज्वार  
 का दाना। लावा। २. चूँचर की जाति  
 का एक पक्षी।  
 लवाई-वि० वह गाय, जिसका पच्चा अभी  
 बहुत ही छोटा हो।  
 लवा स्त्री० खेत की फसल की कटाई।  
 दुनाई।  
 लवाबधा-सज्ञा पु० [अ०] १ किसी के माथे  
 गहोरेला दल-दल और माज-माजान।  
 २ आवश्यक सामग्री।  
 लवारा-सज्ञा पु० गी का बच्चा।  
 लवामी-वि० १ गर्वी। बरनादी। २  
 लपट।  
 लवकर-सज्ञा पु० [पा०] १ पौज। मेना। २  
 मेना का पशु। छावनी। ३ जहाज में ताम  
 करनेवाला या दल। ४ बीटा। दन्त।  
 लवकरी-वि० १ पौज का। मेना-गवधी।  
 २ जहाज पर ताम करनेवाला। मजदूरी।  
 जहाज।  
 लवदारना-क्रि० मु० १ लहवारना या लह-  
 कारना। २. गिराई दुआ की गिरार के  
 लिए बसाया दना।

लक्षुन, लक्षून-सज्ञा पु० लहसुन।  
 लपन\*-सज्ञा पु० दे० "लखन"। लक्ष्मण।  
 लस-सज्ञा पु० १. चिपकने या चिपकाने का  
 गुण। चिपचिपाहट। २. वह वस्तु, जिसके  
 लगाने से एक वस्तु दूसरी वस्तु से चिपक  
 जाय। लासा। ३. चित्त लगने की बात।  
 ४ आकर्षण।  
 लसदार-वि० जिसमें लस हो। लसीला।  
 लसलसा। चिपचिपा।  
 लसना-क्रि० सं० एक वस्तु को दूसरी वस्तु  
 के साथ सटाना। चिपकाना।  
 \*क्रि० अ० १ शोभित होता। छजना।  
 सुन्दर लगना। फवना। २ विराजना।  
 विद्यमान या मौजूद होना।  
 लसनि\*-सज्ञा स्त्री० १ शोभा। छटा। २.  
 स्थिति। विद्यमानता। मौजूदगी। ३.  
 शोभित होने की दशा।  
 लसम-वि० दुपित। खोटा। जो खरा न हो।  
 लसलसाना-क्रि० अ० चिपचिपाना। लसदार  
 होना।  
 लसलसा-वि० दे० "चिपचिपा", "लसदार"।  
 लसिका-सज्ञा स्त्री० लार। धूँव।  
 लसित-वि० १ शोभायुक्त। शोभित। सुन्दर  
 लगता हुआ या फवता हुआ। २ विद्यमान।  
 विराजित। प्रत्यक्ष। आँख के सामने।  
 लसियाना-क्रि० सं०, अ० लसलस होना।  
 चिपकना। लसदार होना। चिपचिप होना।  
 लसी-सज्ञा स्त्री० १ लग। चिपचिपाहट।  
 २ दिल लगने की वस्तु। ३ आकर्षण। ४.  
 लाभ होने का अवसर। ५ तय। लगाव।  
 ६ दहाँ का घरबत, लसी।  
 लसीका-सज्ञा स्त्री० लार। माँस और चमड़े  
 के बीच में रहनेवाला रस।  
 लसीला-वि० [स्त्री० लसीली] लसदार।  
 सुंदर। शोभायुक्त।  
 लसीझा-सज्ञा पु० एक प्रकार का पेड़, जिन्हे  
 फल औषध के काम में आते हैं।  
 लसीठा-सज्ञा पु० वहेंन्द्रिया का चिपचिपों की  
 फवनि का बोग का चोमा।  
 लस्टम-पस्टम-क्रि० वि० किसी तरह से।  
 ज्यान्पा। देखने से।

सस्त-वि० १ धका हुआ । दिथिल । २ अशक्त ।

लस्तक-सज्ञा पु० चतुष का मध्यभाग ।

लस्ती-सज्ञा स्त्री० १ चिपचिपाहट । लसी ।

२ दही का दारवट । ३, छाछ । मठा ।

लहंगा-पज्ञा पु० कमर के नीचे का सारा अंग ढाँकने के लिए स्त्रिया का एक पेटेदार पहनावा ।

लहक-सज्ञा स्त्री० १ लहने की क्रिया या भाव । २ आग की लपट । ३ शोभा । छवि । ४ चमक । द्युति ।

लहकना-क्रि० अ० [अनु०] १ आग का इधर-उधर लपट छोड़ना । दहकना । लपकना । २ झरि खाना । लहराना । ३ हवा का बहना । ४ उत्कटित होना । चाह या उमग उ भरना ।

लहकाना लहकारना-क्रि० स० १ आगे बढ़ाना । २ उत्साह दिलाना । ३ प्रेरित करना । ४ ताव दिलाना । ५ लपकाना । लहकौर लहकौरि-सज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति जिसमें वर का दही-घोनी खिलाते हैं ।

लहजा-सज्ञा पु० [अ०] झोलने या गाने का ढंग । लय । स्वर ।

लहनदार-सज्ञा पु० ऋण देनेवाला । महाजन ।

लहना-क्रि० स० १ प्राप्त करना । पाना । २ लहलहाना । ३ काटना । ४ छेदना । ५ छीलना । तराशना ।

सज्ञा पु० १ उपार दिया हुआ धन । २ किता कारण से किसी से मिलनवाला धन । ३ भाग्य । ४ जलाने का लकड़ी । ईंधन ।

लहनी-सज्ञा स्त्री० १ प्रवृत्ति । २ फड़मोड़ । लहवर-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का लबा पहनावा । लबादा । चागा । २ झडा । त्रिशूल ।

लहमा-सज्ञा पु० [अ०] पल । क्षण । बहुत थोड़ा समय । अल्पकाल ।

लहर-सज्ञा स्त्री० १ जनी उठनी हुई जल की राशि । तरंग । यथा हिलोरा । २ मोज । उमग । जोर । मन का मोज । ३ बहोसी, पोडा आदि का वेग, जो कुछ अंतर पर रह-

रहर उत्पन्न हो । ४ शाना । ५ इधर-उधर मुड़ती हुई टेढ़ी चाल । ६ चलने हुए तरंग का-सी कुदिल रेखा । ७ हवा का झोका । ८ महल । ९ लपट ।

मुहा०—साँप काटने की लहर=साँप से काट गए आदमी की वह अवस्था, जिसमें बेहोशी से पीच-पीच में वह जाग उठता है । यौ०—लहर-लहर=आनंद धीर मुख ।

लहरदार-वि० १ जो, सींचा न जाकर बल खाता हुआ गया हो । लहर की तरह टेढ़ा भेडा । २ चटकीला । भडकादार । ३ उमग उत्पन्न करनेवाला ।

लहरना-क्रि० अ० दे० "लहराना ।

लहर-पटोर-सज्ञा पु० एक प्रकार का धारीदार रेशमी वपडा ।

लहरा-सज्ञा पु० १ लहर । तरंग । २ मोज । आनंद । मजा । ३ वाजा की वह गति, जो गाने के पहले समी बाँधने के लिए बजाई जाती है । ४ एक झोक या एक बार में जितनी दृष्टि हो ।

लहराना-क्रि० अ० १ हवा के चोक से इधर-उधर हिलना डोलना । २ पानी या हवा के झोके से उठना धीर गिरना । बहना या हिलोरा मारना । ३ हवा को चाल । ४ इधर उधर मुड़ने या जाया खाते हुए चलना । मन का उमग में होना । ५ उत्कटित होना । ६ लपकना । आग का लपट का हिलना । दहकना । ७ नडकना । ८ दौड़ित होना । लसना । धिराजना ।

क्रि० स० १ हवा के झोके में इधर-उधर हिलाना । २ इधर-उधर मुड़ने हुए चलाना । लहरिया-सज्ञा पु० १ लहरवाण चिह्न । टेढ़ी भरी गई हुई लकीर की श्रेणी । २ एक प्रकार का कपडा, जिसमें रंग धिररी टट्टी-भरी लकीरें बनी होती है । ३ उपर्युक्त प्रकार के कान्ठे की साडी या धोती ।

सज्ञा स्त्री० दे० "लहर" ।

लहरी-सज्ञा स्त्री० लहर । तरंग ।

वि० मनमोजी । मन की तरंग के अनुसार काम करनेवाला ।

लह-लह-वि० दे० "लहलहा" ।

लहलहा-वि० [स्त्री० लहलही] १. लह-  
लहाता हुआ। हरा-भरा। २. आनन्द से पूर्ण।  
प्रकृत। ३. हट्ट-पुट्ट।

लहलहाना-क्रि० अ० १. हरा-भरा होना।  
सूखे पेड़ या पौधे में फिर से पत्तियाँ  
निकलना। पनपना। २. प्रकलित होना।  
लहमुन-पञ्चापु० लम्बी पत्तियाँ का एक पौधा,  
जिसकी जड़ गोल गाँठ के रूप में होती और  
मसाले के काम में जाती है।

लहमुनिया-पञ्चापु० धूमिल रंग का एक रत्न।  
रम्य।

लहा\*-सज्ञापु० दे० "लाह"।

लहाछेह-सज्ञापु० १. वह छद्म-जिसके प्रत्येक  
चरण में ३२ मानाएँ हैं। २. लक्षण जानने-  
वाला। ३. नाच की एक रीति।

लहालहा\*-वि० दे० "लहलहा"।

लहालोट-वि० १. हँसी से लोटता हुआ।  
हँसी से लोट-पोट। २. खुशी से भरा हुआ।  
३. प्रेम मग्न। मोहित। लट्टू। ४. तयार  
लेकर वापस देने वाला।

लहासी-पञ्चापु० मोटी रस्सी। नाव बांधने  
की डोरी।

लहि-अव्य० पर्यंत। तक।

लहिषत\*-क्रि० स० पाता है।

लहिला-पञ्चापु० दे० "रहिला"। चना।

लहू\*-अव्य० द० "ली"।

लहुरा-वि० [स्त्री० लहुरी] छोटा। कनिष्ठ।

लहू-सज्ञापु० रक्त। खून।

मुहा०-लहू सुहान होना=खून से भर जाना।  
अत्यन्त लहू बहाना।

लहेरा-पञ्चापु० लाह का पक्का रंग चढ़ाने-  
वाला।

लोक-सज्ञापु० १. जागी कटी हुई  
फल। २. परिमाण। ३. कमर। कटि।

लौंग-सज्ञापु० १. धोती का वह भाग,  
जो पीछे की ओर कमर में खोस लिया  
जाता है। काछ। २. छलौंग।

लगल-सज्ञापु० खेत जोतने का हल। अर्द्ध  
चन्द्रमा का सिरछा कोण।

लगली-सज्ञापु० १. बलराम। २. नारियल।  
३. साँप।

सज्ञापु० १. पुराणानुसार एक नदी का  
नाम। २. बलियारी। ३. मजीठ।

सांगुली-सज्ञापु० बदर।

सागूल-सज्ञापु० दुम। पूछ।

सागुली-सज्ञापु० बदर।

सांधना-क्रि० स०-१. इस पार से उस  
पार जाना। २. डाँकना। नाथना। किसी  
वस्तु का उछलकर पार करना।

सांच-सज्ञापु० घूस। रियावत।

साछन-सज्ञापु० १. दोप। २. बलक।  
३. दाग। धब्बा।

साछना-सज्ञापु० दे० "साछन"।

साछनित-वि० कलित। दे० "साछित"।

साछित-वि० जिस पर दोप या कलक  
लगा हो।

सांबा-वि० दे० "लवा"।

साई-सज्ञापु० अग्नि।

साइक-वि० दे० "सायक"।

साइची-सज्ञापु० इलायची।

साइन-सज्ञापु० [अव्य०] १. रेखा।  
लकीर। पक्ति। कतार। २. रेल की पटरी।

३. सिपाहियों के रहने का स्थान, बंख।

साई-सज्ञापु० १. धान का लावा। धान  
की गूनी हुई खील। २. चुगली। निंदा।

३. चुगलखोर (स्त्री)।

यो०-साई लुतरी=चुगली। शिकायत।

साकडी-सज्ञापु० दे० "लकडी"।

साक्षा-सज्ञापु० लाल। लाह।

साक्षधिक-वि० १. जिससे लक्षण प्रवृत्त हो।  
२. लक्षण-संबन्धी। लक्षण के रूप में होने-  
वाला (वाम)।

साक्षामह-पञ्चापु० छात्र का वह घर, जिसे  
दुर्वाधन ने पाठवो को जला देने की इच्छा  
से बनवाया था।

साधारत-सज्ञापु० सहावर।

साक्षिक-वि० साक्ष-सम्बन्धी। साक्ष का  
बना हुआ।

साख-सज्ञापु० सौ हजार की सख्या १०००००  
वि० १. सौ हजार। २. बहुत अधिक।

क्रि० वि० बहुत। अधिक।

सज्ञापु० १. प्रसिद्ध लाल पदार्थ, जो कुछ

पेठा की टहुनिया पर कई प्रकार के सोडा से बनता है। लाहू। ३ वे छोटे लाल बोडे, जिनसे उत्त इन्ध निरलता है।

मुहा०—लाख से लाख होना=सब कुछ से कुछ न रह जाना। लाख रूप की बात=बहुत उपयोगी बात।

साधना-क्रि० अ० लाय लगाकर कोई छेद बंद करना।

\*+क्रि० सं० दे० "रचना"। जानना। परतना।

लाक्षागृह-पञ्चा पु० दे० 'लाक्षागृह'।

लाक्षामदिर-सज्ञा पु० दे० "लाक्षागृह"।

लाखिराज-वि० गांधी जनों। वह जमीन, जिसका खिराज या लगान न देना पड़े।

लाखी-वि० लाख के रंग का। मटमैला लाल। सज्ञा पु० लाख के रंग का घाटा।

लाय-सज्ञा स्त्री० १ सपक। सपक। लगाव।

२ प्रेम। प्रीति। मुहब्बत। ३ लगन।

मन की तत्परता। ४ युक्ति। तरकीब।

उपाय। ५ वह स्वांग आदि, जिसमें कोई कौशल विशेष हो। ६ प्रतियोगिता। चडा-ऊपर। ७. वैर। सयुता। दुस्मनी।

८ खादू। मर। टोता। ९ नुब अवसर पर ब्राह्मणा, भाटा आदि को दिया जानेवाला निश्चित धन। १० भूमि-कर। लगान।

११. एक प्रकार का नृत्य। १२ दैनिक भोजन का सामान।

क्रि० वि० पर्यंत। तक। लों।

लाय-डॉट-सज्ञा स्त्री० १ सपदा। प्रति-द्विद्धता। चडा-ऊपर। २ सयुता। वैर।

लायत-सज्ञा स्त्री० किसी चीज की तैयारी या बनाने में लगनेवाला धन।

लायना\*-क्रि० अ० दे० "लगना"।

लायन\*+अव्य० १ कारण। २ हेतु।

निमित्त। लिए। ३ द्वारा।

क्रि० वि० तब। पर्यंत।

लायन\*+वि० १ जो लगने योग्य हो। प्रयुक्त होनेवाला। २ चरितार्थ होनेवाला।

लायन\*+अव्य० लिए। वास्ते।

लायव-सज्ञा पु० १ छोटापन। लघु होने का भाव। लघुता। २ कमी। अल्पता। ३.

हाथ की मछाई। कुर्नी। तेजी। ४. आरोग्य। सद्गुस्ती।

अव्य० कुर्नी से। संज्ञा म।

लायवी\*-सज्ञा स्त्री० मीघना। कुर्नी।

लाचार-वि० जिसका कुछ धन न चलता हो।

विषय। मजबूर। २.

वि० वि० विवश या मजबूर होकर।

लाचारी-सज्ञा स्त्री० मजबूरी। विवशता।

लाज-सज्ञा स्त्री० दे० "लज्जा"।

लाजना\*+क्रि० अ० लजाना। लजित होना।

लाजवत-वि० [स्त्री० लाजवती] जिसे लज्जा हो। धर्मदार।

लाजवती-सज्ञा स्त्री० १. लजाव नाम का पाँधा। छुई-मुई। २ लजावुर।

लाजवाव-वि० [फा०] १ जिनका कोई जवाब न हो। निश्चर। २. अनुपम। बेजोड़।

लाजा-सज्ञा स्त्री० भूनकर फुलाया हुआ धान। लावा।

लाडिम-वि० [अ०] १ अवश्य करने योग्य।

२ उचित। बाजिव। मुनासिब।

लाडिमो-वि० [अ०] आवश्यक। जरूरी।

लाड-सज्ञा स्त्री० मोटा धीर जैवा लभा।

सज्ञा पु० १ एक प्राचीन देश, जहाँ अब अहमदाबाद आदि नगर हैं। २ इस देश के निवासी। ३ दे० "लाटानुप्रास"।

४ अंगरेजी शासन-काल में किसी प्रान्त का शासक, लाड [अये०] का अवधन।

मुहा०—बड़ लाल सहेय बने हैं=अपने का बहुत बड़ा नमस्ते है।

लाटरी-सज्ञा स्त्री० [अये०] गाड़ी उठाने की किसी बात का निगय करना या धन आदि बांटना।

लाटानुप्रास-सज्ञा पु० वह शब्दालंकार, जिसमें शब्दों की पुनरुक्ति तो होती है, परन्तु जन्वय के हेर-फेर ने अर्थ निम्न हो जाता है।

लाटिका-सज्ञा स्त्री० साहिल में एक प्रकार की रचना या रीति। इसमें छोटे-छोटे पद धीर समास होते हैं।

लाटी\*+सज्ञा स्त्री० मुँह का धूव और हाठ मूख जाने की दवा।

सज्ञा स्त्री० लाटिका रीति।

लाड-पशा स्त्री० दे० "लाट" ।  
 लाठी-सज्ञा स्त्री० डंडा । लट्ट । एकडी ।  
 मुह०-लाठी चलना=लाडिया को मार-  
 पिट होना ।  
 लाठी चार्ज-पशा पु० भीड़ या प्रदर्शन  
 करनेवाला को हड़ाने के लिए पुलिस-द्वारा  
 उन पर लाठियों का प्रहार ।  
 लाड-पशा पु० दुलार । बच्चा का प्यार ।  
 लालन ।  
 लाडलइता-वि० दे० "लाडला" । बहुत  
 प्यार । दुलारा ।  
 लाडला-वि० [ स्त्री० लाडली ] दुलारा ।  
 जिसको बहुत लाड या प्यार किया जाय ।  
 प्यार ।  
 लात-सज्ञा स्त्री० १ पैर । पांव । पैदा । २.  
 पैर से किया हुआ आघात या पाद-प्रहार ।  
 मुह०-लात खाना=पैरो की ठोकर या  
 मार सहना । लात मारना=तुच्छ समझकर  
 छोड़ देना । त्याग देना ।  
 लाद-सज्ञा स्त्री० १ लादने की क्रिया । २  
 पेट । अंत । भेंटडी । ३ लदा हुआ सामान ।  
 ४ ढेंकी पर लगा हुआ मिट्टी का ढाका ।  
 लादना-क्रि० सं० १ किसी चीज पर बहुत-  
 सी वस्तुएं रखना । २ ढोने या ले जाने के  
 लिए वस्तुओं को रखना । एक पर एक  
 वस्तुएं रखना । ३ किसी बात का भार  
 रखना । बोझ डालना ।  
 लादिया-सज्ञा पु० किसी चीज पर बोझ  
 लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाने-  
 वाला ।  
 लादी-सज्ञा स्त्री० १ वह गद्दर, जिसे धोबी  
 गद्दे पर ले जाते हैं । २ किसी पशु पर  
 लादी जानेवाली गठनी ।  
 लाधना\*†-क्रि० सं० प्राप्त करना । पाना ।  
 लात-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] बिक्कार ।  
 फटकार । भर्त्सना ।  
 लातसी-सज्ञा पु० सदा फटकार सुननेवाला ।  
 लाना-क्रि० अ० १ ले आना । कोई चीज  
 उठाकर या अपने साथ लेकर आना । २  
 उपस्थित करना । सामने रखना । ३  
 उत्पन्न करना । कही से पैदा करना ।

क्रि० सं० लगाना । अग लगाना । जलाना ।  
 लाने\*†-अव्य० वास्ते । लिए ।  
 लापता-वि० [ अ० ] १. जिसका पता न  
 लगे । बिना पता के । २. गुप्त । गायब ।  
 लापरवा, लापरवाह-वि० १. जिसे किसी  
 बात की परवा या चिन्ता न हो । बेफिक्र ।  
 २ असावधान ।  
 लापरवाही-सज्ञा स्त्री० १ बेफिक्री । २.  
 असावधानी ।  
 लायो-सज्ञा स्त्री० [ अग्रे० ] विधान सभाओं  
 आदि में वह बाहरी कमरा, जिसमें उसके  
 सदस्य बैठकर आपस में बातचीत करते  
 और बाहरी लोगों से मिलते-जुलते हैं ।  
 लाभ-सज्ञा पु० १ फायदा । मुनाफा । नफा ।  
 प्राप्ति । २ उपकार । भलाई ।  
 लाभकारक, लाभकारी, लाभदायक-वि०  
 जिससे लाभ हो । फायदा करनेवाला ।  
 फायदेमंद । स्वास्थ्यप्रद । गुणकारक ।  
 लाभश-सज्ञा पु० किसी व्यापार से होनेवाले  
 अधिक लाभ का वह वश, जो उस व्यापार  
 में रुपए लगानेवाले सब हिस्सेदारों को  
 उनके हिस्से के अनुसार मिलता है । (अग्रे०-  
 डिविडेण्ड) ।  
 लाभालाभ-सज्ञा पु० लाभ और हानि ।  
 फायदा और नुकसान ।  
 लाभ-सज्ञा पु० [ फा० ] १. सेना । फौज ।  
 २ बहुत से लोगों का समूह ।  
 \*क्रि० वि० दूर पर । फासले पर ।  
 लाभज-सज्ञा पु० खस की तरह का एक  
 तृण ।  
 लाभजक-सज्ञा पु० लाभज तृण ।  
 लाभन\*†-सज्ञा पु० लहंगा ।  
 लाभ-सज्ञा पु० १ तिब्बत के बौद्धों का  
 धर्माचार्य । २ पास खानेवाला ऊँट की तरह  
 का एक जन्तु, जो दक्षिणी अमेरिका में पाया  
 जाता है ।  
 \*वि० दे० "लवा" । बहुत दूर ।  
 लाभे\*†-क्रि० वि० दूर । भतर पर ।  
 लय\*†-सज्ञा स्त्री० १. लपट । ज्वाला ।  
 २. आग ।  
 लायक-वि० [ अ० ] १. योग्य । गुणवान् ।

- सामर्थ। २. उचित। ठीक। बाजिव।  
 उपयुक्त।  
 लायकी-सत्ता स्त्री० लायक होने का भाव  
 या धर्म। योग्यता।  
 लायकी-सत्ता स्त्री० दे० "इलायकी"।  
 लार-सत्ता स्त्री० १. मुँह से निकलनेवाला  
 पतला लसदार धूक। लाया। लुनाव।  
 २. बतार। पतित।  
 कि० वि० साथ। पोछे।  
 मुसा-मुँह से लार टपकना=किसी  
 चीज को देखकर उसके पाने की बहुत  
 इच्छा होना। लार लगाना=कंसाना।  
 बुझाना।  
 लारी-सत्ता स्त्री० [अग्ने०] यह लम्बी बड़ी  
 मोटर, जिस पर बहुत से आदमी यात्रा करते  
 हैं या माल बोया जाता है।  
 लाल-सत्ता पु० १. छाटा प्यारा बच्चा।  
 बेटा। २. प्रिय व्यक्ति। ३. श्रीकृष्णचंद्र।  
 ४. दुलार। प्यार। ५. दे० "लार"।  
 ६. दे० "मानिक"। ७. एक प्रसिद्ध छाटी  
 चिड़िया। इसकी मादा को "मुनिया"  
 कहते हैं।  
 \*† सत्ता स्त्री० लालसा। इच्छा। चाह।  
 वि० १. लाल रंग का। मुस। २. बहुत अधिक  
 क्रोध। क्रोध से तमतमाया हुआ।  
 मुहा०—लाल पड़ना या होना=क्रुद्ध होना।  
 माराज होना। लाल पाले होना=गुस्सा  
 होना। क्रोध करना। लाल होना=बहुत  
 अधिक सपत्ति पाकर संपन्न होना।  
 लाल चंदन-सत्ता पु० एक प्रकार का चंदन,

- तेल भरकर बत्ती जलाते हैं और जिसके  
 चारों ओर शीशा लगा रहता है।  
 कडील।  
 लालड़ी-सत्ता पु० एक प्रकार का लाल  
 नगीना।  
 लालन-सत्ता पु० १. बच्चों का प्यार या  
 दुलार। लाड। प्यार। २. प्रिय पुत्र। प्यारा  
 बच्चा। ३. कुमार। बालक।  
 कि० अ० लाड करना। प्यार करना।  
 लालना-कि० म० दुलार करना। लाड  
 करना। प्यार करना।  
 लालनीय-वि० लाल या प्यार करने योग्य।  
 लाल पानी-सत्ता पु० शराब।  
 लाल-मुसकड़-सत्ता पु० बाता का अटकल-  
 पन्ना मतलब लगानेवाला। न जानने पर भी  
 अदमि लगानेवाला।  
 लालमन-सत्ता पु० १. श्रीकृष्ण। २. एक  
 प्रकार का तोता।  
 लालमिर्च-सत्ता स्त्री० दे० "मिर्च"। एक  
 तरह की मिर्च।  
 लालमुह-सत्ता पु० मुँह का एक रोग।  
 लालरी-सत्ता स्त्री० दे० "लालड़ी"।  
 लाल समुद्र-सत्ता पु० दे० "लाल सागर"।  
 लालसा-सत्ता स्त्री० १. बहुत अधिक इच्छा  
 या चाह। लिप्सा। किसी वस्तु को प्राप्त  
 करने की बहुत इच्छा। २. उत्प्रेक्षा। उमय।  
 वि० बचल। लोल।  
 लाल सागर-सत्ता पु० भारतीय, महासागर  
 का वह भाग, जो अरब और अफ्रीका के  
 मध्य में पड़ता है।

यज्ञा स्त्री० मुँह से निकलनेवाली लार।  
वि० लाल रंग का।

लालाजी-सज्ञा पु० कायस्थ या बनिया के लिए प्रयुक्त शब्द या सम्बोधन।

लालावित-वि० ललचाया हुआ।

लालाविष-सज्ञा पु० ऐसा जन्तु, जिसके मुँह की लार में विष हो।

लालावा-सज्ञा पु० १. मुँह से लार गिरना।  
२. सड़क का जाला।

ललित-वि० [स्त्री०-ललित] १. दुलारा।  
प्यारा। २. जो पाला-पोसा गया हो।

ललित्य-सज्ञा पु० ललित का भाव। सौंदर्य।  
मरसता।

ललिमा-सज्ञा स्त्री० लाली। ललाई। मुखी।  
काली-मज्ञा स्त्री० १. लाल होने का भाव।

ललाई। मुखी। २. इज्जत। प्रतिष्ठा।  
लालील-मज्ञा पु० अग्नि।

लले-मज्ञा पु० लालता। अभिलाषा।  
मुहा०-किसी चीज के लाले पड़ना=

किसी चीज के लिए बहुत तरंगना।  
ललहा-मज्ञा पु० दे० "ललहा" (साग)।

लल-मज्ञा स्त्री० आग। मोटा रस्ता।  
ललक-मज्ञा पु० लवा पक्षी।

ललणिक-वि० नमक-सम्बन्धी।  
ललण्य-सज्ञा पु० बहुत अधिक मुदरता।

लोनाई।  
ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।

ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।  
ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।

ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।  
ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।

ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।  
ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।

ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।  
ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।

ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।  
ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।

ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।  
ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।

ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।  
ललण्य-मज्ञा स्त्री० दे० "ललण्य"।

भूना हुआ धान, या रामदाना आदि, जो  
भूने के कारण फूटकर फूल जाता है।

खोल। लाई। फुल्ला। ३. [अग्ने०]  
ज्वालामुखी पहाड़ों के विस्फोट से निकलने-

वाला द्रव पदार्थ।  
लावा-परछन-सज्ञा पु० विवाह के समय की

एक रीति।  
लावारिस-सज्ञा पु० [अ०] [वि० लावा-

रिती] वह, जिसका कोई उत्तराधिकारी  
या वारिस न हो। ऐसी सम्पत्ति, जिसका

कोई मालिक या अधिकारी न हो।  
लावारिसी-वि० बिना उत्तराधिकारी या

वारिस का।  
लाश-सज्ञा स्त्री० [फा०] मृत देह। मुर्दा।

शव। लोथ।  
लास-सज्ञा पु० दे० "लास्य"। नृत्य के भेदों

में एक।  
लासक-सज्ञा पु० १. नाचनेवाला। मटकने-

वाला। २. मोर।  
वि० चमकानेवाला।

लासकी-सज्ञा स्त्री० नाचनेवाली।  
लासा-सज्ञा पु० १. कोई लसदार चीज।

वेग। लुआव। २. एक प्रकार का चिप-  
चिपा पदार्थ, जिसे बहेलिये बिड़ियों को

फँसाने के लिए बनाते हैं।  
लासावी-वि० [अ०] अडितीय। बेजोड़।

लासि-सज्ञा पु० दे० "लास्य"।  
लास्य-सज्ञा पु० १. नृत्य। नाच। २. वह

नृत्य, जो कामल अंगों के द्वारा हाँ और  
जिससे शृङ्गार आदि कामल रसों का

उद्दीपन होता हो।  
लाह-सज्ञा स्त्री० १. लाल। चपड़ा। २.

चमक। आभा। काँति।  
सज्ञा पु० लाभ। नफा।

लाहनी-मज्ञा पु० १. मद निकलने के बाद  
बचा हुआ महुआ। २. महुए और जूरे को

मिलाकर बनाया गया खमीर। किसी  
प्रकार का खमीर।

लाहो-सज्ञा स्त्री० १. दे० "लाह"। २.  
लाह में मिलाना-जुलाना एक कौड़ा, जो

फल को प्रायः हानि पहुँचाता है।

समय । २. उचित । ठीक । पाजिव ।  
उपयुक्त ।

लायकी-सज्ञा स्त्री० लायक होने का भाव  
या धर्म । योग्यता ।

लायकी-सज्ञा स्त्री० दे० "दुःखी" ।

लार-सज्ञा स्त्री० १ मुँह से निकलनेवाला  
पतला रसदार धूल । लाया । लुआ ।  
२ कतार । पक्ति ।

क्रि० वि० साथ । पीछे ।

मुहा०-मुँह से लार टपकना=किसी  
जीव का देखकर उमने पाने की बहुत  
इच्छा होना । लार लगाना=फँसाना ।  
बुझाना ।

लारी-सज्ञा स्त्री० [ अग्र० ] वह लम्बी बड़ी  
मोटर, जिस पर बहुत से आदमा यात्रा करते  
हैं या माल डोया जाता है ।

लाल-सज्ञा पु० १ छाटा प्यारा बच्चा ।  
बटा । २. प्रिय व्यक्ति । ३ आकुण्णचद्र ।  
४ दुलार । प्यार । ५ दे० 'लार' ।  
६ दे० 'मानिक' । ७ एक प्रसिद्ध छोटी  
चिड़िया । इसकी मादा को 'मुनिया'  
बहुते हैं ।

\* सज्ञा स्त्री० लालसा । इच्छा । चाह ।  
वि० १ लाल रंग का । मुख । २ बहुत अधिक  
धृद । क्रोध से समतामाया हुआ ।

मुहा०-लाल पड़ना या होना=कुद होना ।  
नाराज होना । लाल पीले होना=गुस्सा  
होना । क्रोध करना । लाल होना=बहुत

अधिक संपत्ति पाकर संपन्न होना ।

लाल चबन-सज्ञा पु० एक प्रकार का चदन,  
जिसे धिसने से लाल रंग और अच्छी सुगंध  
निकलती है । रक्त-चदन । देवी-चदन ।

लालच-सज्ञा पु० [ वि० लालची ] १ कोई  
जीव पान की बहुत अधिक इच्छा करना ।  
२ लोलपता । लोभ ।

लालचुहारा-वि० दे० 'लालची' ।

लालची-वि० जिसे लालच हो । लोभी ।  
जिस कोई जीव पाने के लिए बहुत अधिक  
इच्छा हो ।

लालदेन-सज्ञा स्त्री० [ अग्र०-लैटन ] एक  
प्रकार का प्रकार-मान, जिसमें मिट्टी का

तेल गरम कर बत्ती जलाते हैं धार जिनक  
चारा धोर मोचा लगा रहता है ।  
कडोल ।

लालडी-सज्ञा पु० एक प्रकार का लाल  
नगीना ।

लालन-सज्ञा पु० १ बच्चा का प्यार या  
दुलार । लाट । प्यार । २ प्रिय पुत्र । प्यारा  
बच्चा । ३ कुमार । बालक ।

क्रि० ज० लाट करना । प्यार करना ।  
लालना-वि० स० दुलार करना । लाट  
करना । प्यार करना ।

लालनीय-वि० लालन या प्यार करने योग्य ।  
लाल पानी-सज्ञा पु० शराब ।

लाल-मुश्ककड-सज्ञा पु० बाता का अटनल-  
पन्चू मतलब लगानेवाला । न जानने पर भी  
अद्विज लगानेवाला ।

लालमन-सज्ञा पु० १ शोकगुण । २ एक  
प्रकार का तोता ।

लालमिर्च-सज्ञा स्त्री० दे० 'मिर्च' । एक  
तरह की मिर्च ।

लालमुहूर्त-सज्ञा पु० मुँह का एक रोग ।

लालरी-सज्ञा स्त्री० दे० 'लालडी' ।

लाल समुद्र-सज्ञा पु० दे० 'लाल सागर' ।

लालसा-सज्ञा स्त्री० १ बहुत अधिक इच्छा  
या चाह । लिप्सा । किसी वस्तु को प्राप्त  
करने की बहुत इच्छा । २ उत्सुकता । उमा ।  
वि० बचल । लोल ।

लाल सागर-सज्ञा पु० भारतीय महामागर  
का वह अंश, जो अरब और अफ्रीका के  
मध्य में पड़ता है ।

लालसिखी-सज्ञा पु० मुर्गा । लाल दिखाने-  
वाला (अवगणित) ।

लालसो-वि० अनिलाया या इच्छा करने-  
वाला । उत्सुक ।

लाला-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का सवोधन ।  
साहाय्य । साहब । २ कामस्थ जाति का  
मूलक शब्द । ३ वायस्व और बतिया जाति  
के व्यक्तियों के नाम के आगे लगानेवाला  
एक शब्द । ४ छोट प्रिय बच्चे के लिए  
सवोधन । ५ [ फा० ] पोस्ट का लाल रंग  
या फूज ।

सत्ता स्त्री० मुंह से निकलनेवाली लार।  
वि० लाल रंग का।

शालाजी-सत्ता पु० कायस्थ या बनिया के  
लिए प्रयुक्त शब्द या सम्बोधन।

शालापित-वि० ललचाया हुआ।

शालाविष-संज्ञा पु० ऐसा जन्तु, जिसके मुंह  
की लार में विष हो।

शालाश्व-सत्ता पु० १. मुंह से लार गिरना।  
२. मकड़ी का जाल।

शालित-वि० [स्त्री०-शालिता] १. दुलारा।  
प्यारा। २. जो पाला-पोसा गया हो।

शालित्य-सत्ता पु० ललित का भाव। सौंदर्य।  
सरसता।

शालिमा-सत्ता स्त्री० लाली। ललाई। सुर्खी।  
शाली-सत्ता स्त्री० १ लाल होने का भाव।  
ललाई। सुर्खी। २. इज्जन। प्रतिष्ठा।

शालील-सत्ता पु० जग्न।

शाले-सत्ता पु० लालसा। अभिलाषा।  
मुहा०-बिरी चीज के लाले पडना=

किन्नी चीज के लिए बहुत तरसना।  
शालहार्-सत्ता पु० दे० "सरसा" (साग)।

शाल-सत्ता स्त्री० आग। मोटा रस्ता।  
शालक-सत्ता पु० लवा पत्थी।

शालाणिक-वि० नमक-सम्बन्धी।  
शालव्य-सत्ता पु० बहुत अधिक मुदरता।

लोनाई।  
शालमत्ता\*-सत्ता स्त्री० दे० "लावव्य"।

शालना\*-वि० क्रि० म० १. लाना। लगाना।  
स्थान करना। २. जलाना। आग लगाना।

शालनि\*-सत्ता स्त्री० दे० "लावव्य"।  
शालनी-सत्ता स्त्री० १ एक प्रकार का छद।

२-इस छद का एक भेद, जो प्रायः चण  
पकाकर गाया जाता है (स्पष्ट)।

शालबाली-सत्ता पु० १. लापरवाह। २.  
आपारा। ३. उच्छृङ्खल। ४. निकम्मा।

शाला स्त्री० लापरवाही। उपेक्षा।  
शाल-लदकर-सत्ता पु० मेला और उसके साथ

गूँथेवाले लोग तथा मामरी।  
शालस्त्र-वि० [फा०] निगलान। जिनके

कोई बच्चा न हो।  
शाला-सत्ता पु० १. लवा नामक पत्थी। २.

भूना हुआ धान, या रामदाना आदि, जो  
भूतने के कारण फूटकर फूल जाता है।

शाल। लाई। फुल्ला। ३. [अप्रे०]

ज्वालामुखी पहाड़ों के विस्फोट से निकलने-  
वाला द्रव पदार्थ।

लावा-परछन-सत्ता पु० विवाह के समय की  
एक रीति।

लावारिस-सत्ता पु० [अ०] [वि० लावा-  
रिसी] वह, जिसका कोई उत्तराधिकारी

या वारिस न हो। ऐसी सम्पत्ति, जिसका  
कोई मालिक या अधिकारी न हो।

लावारिसी-वि० बिना उत्तराधिकारी या  
वारिस का।

लाश-सत्ता स्त्री० [फा०] मृत देह। मुर्दा।  
शव। लोथ।

लास-सत्ता पु० दे० "लास्य"। नृत्य के भेदों  
में एक।

लासक-सत्ता पु० १. नाचनेवाला। गटकने-  
वाला। २. मोर।

वि० चमकानेवाला।  
लासकी-सत्ता स्त्री० नाचनेवाली।

लासा-सत्ता पु० १ कोई लसदार चीज।  
चेप। लुआव। २. एक प्रकार का चिप-  
चिपा पदार्थ, जिसे बहेलिये चिड़ियों को

फँसाने के लिए बनाते हैं।  
लासानी-वि० [अ०] अद्वितीय। बेजोड़।

लासि-सत्ता पु० दे० "लास्य"।  
लास्य-सत्ता पु० १ नृत्य। नाच। २. वह

नृत्य, जो कासल अंग के द्वारा हो और  
जिससे शृङ्गार आदि कामल रसा का

उदीपन होता हो।  
लाह\*-सत्ता स्त्री० १ लान। नपडा। २.

चमक। अभा। काति।  
सत्ता पु० लाभ। नफा।

लाहना\*-सत्ता पु० १. मद निकालने के बाद  
बचा हुआ महुआ। २. महुए और जूनेको

मिलाकर बनाया गया खमीर। किसी  
प्रकार का खमीर।

लाहो\*-सत्ता स्त्री० १. दे० "लास"। २.  
लाभ ने मिलता-जुलता एक कौडा, जो

फल को प्रायः हानि पहुँचाना है।

वि० मटमेलापन लिखे लाल रंग।

लाट्ट\*-सज्ञा पु० नका। लान।

लाहिल-सज्ञा पु० [अ०] एवं जखी वाक्य का पहला शब्द, जिसका व्यवहार प्रायः मृणा प्रकट करने के लिए किया जाता है।

लिंग-सज्ञा पु० १ चिह्न। लक्षण।

निशान। २ पुरुष की मूर्त्यद्वय। शिश्न।

३ शिव की एक विशेष प्रकार की मूर्ति।

४ व्याकरण में वह भेद, जिससे पुरुष और

स्त्री का पता लगता है। जैसे, पुल्लिंग,

स्त्रीलिंग। ५ वह, जिससे किसी वस्तु का

अनुमान हो। ६ साध्य के अनुसार मूल

प्रकृति।

लिंगदेह-सज्ञा पु० वह, सुक्ष्म शरीर, जो इस

स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी बर्तों का

फल भोगने के लिए जीवात्मा के साथ लगा

रहता है। (अव्यात्म)

लिंगपुराण-सज्ञा पु० अठारह पुराणा में से

एक, जिसमें शिव का माहात्म्य वर्णित है।

लिंगशरीर-सज्ञा पु० दे० "लिंगदेह"।

लिगापत-सज्ञा पु० एक शैव संप्रदाय, जिसका

प्रचार दक्षिण में बहुत है।

लिगो-सज्ञा पु० १ धिल्लवाला। मिशान-

वाला। २ आडबरी। धम वा ढाग रचने-

वाला। पमध्वजी।

लिगेन्द्रिय-सज्ञा पु० पुरुष की मूर्त्यद्वय।

लिपारु-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का नीम।

२ नदहा।

लिप-हिंदी का एक चारक चिह्न, जो सप्रदान

में आता है, और जिस शब्द के आग लगता

है, उसके निमित्त या वास्ते का अर्थ सूचित

करता है। जैसे—उसके लिए।

लिङ्गुच-सज्ञा पु० बड़हर का मुक्ष। लङ्गुच।

लिखखट-सज्ञा पु० बहुत लिखनेवाला। बडा

भारी लेख (ग्रन्थ)।

लिखा-सज्ञा स्त्री० १ जू का अंश। छांव।

२ एक परिमाण।

लिखत-सज्ञा स्त्री० १ लिखी हुई बात।

लेख। २ दस्तावेज।

लिखवार\*+सज्ञा पु० लिखनेवाला। मुयी

वा मुहरिर।

लिखन-सज्ञा स्त्री० १. लिखावट। लेख।

२. बर्तों की रचना।

लिखना-कि० सं० १ स्याही में डूबी हुई

कलम से अक्षरों की आकृति बनाना।

लिखिबद्ध करना। २ अक्षर अवित्त करना।

३ चिह्नित करना। चित्र बनाना। ४ पुस्तक,

लेख या काव्य आदि की रचना करना।

लिखनी-सज्ञा स्त्री० लेखनी।

लिखवाई-सज्ञा स्त्री० दे० "लिखाई"।

लिखवाना-कि० सं० दे० "लिखाना"।

लिखवार-सज्ञा पु० लिखनेवाला। मुयी।

मुहरिर।

लिखाई-सज्ञा स्त्री० १ लेख। लिपि। २

लिखने का कार्य। ३ लिखने का ढग।

लिखावट। ४ लिखने की मजदूरी।

लिखाना-कि० सं० दूसरे के द्वारा लिखने

का काम कराना।

लिखापटो-सज्ञा स्त्री० १ पत्र-व्यवहार।

चिट्ठिया का आना-जाना। २ किसी

विषय को कागज पर लिखकर निदिधन

या पक्का करना।

लिखावट-सज्ञा स्त्री० १ लेख। लिपि। २

लिखने का ढग।

लिखित-वि० लिखा हुआ। अंकित।

सज्ञा पु० लिखा हुआ प्रमाणपत्र। लेख।

लिखितक-सज्ञा पु० एक प्रकार के प्राचीन

चौखूँडे अक्षर।

लिखेरा-सज्ञा पु० लिखनेवाला।

लिखा-सज्ञा स्त्री० दे० "लिखा"।

लिगु-सज्ञा पु० १. मूंग। २. भूखदस। ३

मूल। ४ मन।

लिच्छवि-सज्ञा पु० इतिहास प्रसिद्ध एक

राजवंश, जिसका राज्य मगध और काशी

में था।

लिधाना-कि० सं० दूसरे को लेटने में प्रवृत्त

कराना। दूसरे से लेटने का विना कराना।

गुलाना। पीड़ाना। मुला देना।

लिद्ध-सज्ञा पु० [स्त्री० लिद्धा] माटी

राटी। अगानेडी। बाटी।

लिङ्गोर-सज्ञा पु० एक नमकीन पद-

धान।

लिङ्गार, लिङ्गोर्-संज्ञा पु० शृंगाल। गोदड़।  
 वि० डरपोक। कायर। बूजदिल।  
 लिपटना-क्रि० अ० १. एक वस्तु का दूसरी  
 वस्तु से सट जाना। चिमटना। २. गले  
 लगना। अलिंगन करना। ३. किसी काम  
 में जी-जान से लग जाना।  
 लिपटाना-क्रि० स० १. एक वस्तु को दूसरी  
 से सटाना। सलमन करना। चिमटाना।  
 २. गले लगाना। अलिंगन करना।  
 लिपड़ा-संज्ञा पु० कपड़ा।  
 वि० गोला और चिपचिपा।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "लिवड़ी"।  
 लिपना-क्रि० अ० १. लीपा या पोता जाना।  
 २. रंग या गोली वस्तु का फैल जाना।  
 लिपयाना-क्रि० स० लीपने का काम दूसरे से  
 कराना।  
 लिपाई-सज्ञा स्त्री० लीपने की क्रिया, भाव या  
 मजदूरी।  
 लिपाना-क्रि० स० १. रंग या किसी गोली  
 वस्तु को तह चढवाना। पुताना। २. चूने,  
 मिट्टी, गोबर आदि से लेप कराना।  
 लिपि-सज्ञा स्त्री० १. लिखावट। २. अक्षर  
 लिखने की प्रणाली। जैसे—ब्राह्मी लिपि,  
 देवनागरी लिपि। ३. लेख। लिखे हुए  
 अक्षर या बात।  
 लिपिका-सज्ञा स्त्री० लिपि। लिखावट।  
 लिपिकार-सज्ञा पु० लेखक। लिखनेवाला।  
 लिपिबद्ध-वि० लिखा हुआ। लिखित।  
 लिप्त-वि० १. लीन। अनुरक्त। तत्पर।  
 २. लिपा हुआ। पुत हुआ। ३. जिसकी  
 पतली तह चढ़ी हो।  
 लिप्ता-सज्ञा स्त्री० लालच। लोभ। ग्राह।  
 लिप्ता-सज्ञा पु० लोलुप। लालची। इच्छुक।  
 लिफाफा-सज्ञा पु० [अ०] १. कागज की पत्ती  
 हुई वह चौकोर थैली, जिसके अंदर कागज-पत्र  
 रखकर भेजे जाते हैं। २. दिखावटी कण्डे-  
 लतें। ३. ऊपरी आडवर। मुलम्मा। कलई।  
 जल्दी नष्ट हो जानेवाली वस्तु।  
 लिबड़ना-क्रि० अ० कीचड़ आदि में लयपथ  
 होना।  
 लि० स० कीचड़ आदि में लयपथ करना।

लिवड़ी-सज्ञा स्त्री० कपड़ा-लता।  
 यौ०-लिवड़ी वरतना या वारदाना=  
 निर्वाह करने का मामूली सामान। असबाब।  
 लिबरल-वि० [अंग्रे०] उदार।  
 सज्ञा पु० १. इंग्लैंड के एक राजनीतिक दल  
 का नाम। २. भारत के एक राजनीतिक  
 दल का नाम। ३. उदार या नरम नीति  
 का अनुयायी।  
 लिबास-सज्ञा पु० [अ०] पहनने का कपड़ा।  
 पहनावा। पोशाक।  
 लियाकत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. योग्यता।  
 काबिलियत। २. गुण। हुनर। ३. सामर्थ्य।  
 ४. शील। शिष्टता।  
 लिलाट, लिलार\*†-सज्ञा पु० दे० "ललाट"।  
 लिलोही†-वि० लालची।  
 लिबाना-क्रि० स० लेने या लाने का काम  
 दूसरे से कराना।  
 लिबाल-सज्ञा पु० खरीदने या लेनेवाला।  
 लिबेया†-सज्ञा पु० लेनेवाला। लाने या  
 लिवा ले जानेवाला।  
 लिसोड़ा-सज्ञा पु० एक मँझोला पेड़, जिसके  
 फल छोटे बैर के बराबर होते हैं।  
 लिहाज-सज्ञा पु० [अ०] १. शील-सकोच।  
 मुरब्बत। व्यवहार या बरताव में किसी  
 बात का ध्यान। २. मेहरबानी का खयाल।  
 कृपा-दृष्टि। ३. पक्षपात। ४. सम्मान  
 या मर्यादा का ध्यान। ५. लज्जा।  
 शर्म।  
 लिहाड़ा-वि० १. नोच। गिरा हुआ। २.  
 खराब। बाहियात। ३. निरुम्मा।  
 लिहाड़ी†-सज्ञा स्त्री० उपहास। निंदा।  
 लिहाफ-सज्ञा पु० [अ०] आँधने का रुईदार  
 कपड़ा। बड़ी रजई।  
 लिहित-वि० चाटता हुआ।  
 लीक-सज्ञा स्त्री० १. लकीर। रेखा। गहरी  
 पड़ी हुई लकीर। गाड़ी के पहिए से  
 पड़ी हुई लकीर। २. मर्यादा। नाम।  
 यश। ३. बँधी हुई मर्यादा। लोक-  
 नियम। ४. रीति। प्रथा। चाल। ५.  
 हद। ६. प्रतिबंध। ७. बदनामी। साछन।  
 ८. गिनती। गणना। ९. एक चिड़िया।

लीख

मुहा०—लोक बरवे=दे० 'लीक खीचकर'।  
लोक विचन=किसी बात का अटल और  
बृह हाना। मर्यादा बंधना। प्रतिष्ठा स्थिर  
होना। लोक खीचकर=निश्चयपूर्वक। जार  
द्वार। लोक पीटना=चली आई हुई प्रथा  
का ही अनुसरण करना।

लीख-सज्ञा स्त्री० १ जूँ का अडा। २ लिखा  
नामक परिमाण।

लीग-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १ सघ या संस्था।  
जैसे मुस्लिम लीग। कुछ खास दलों या  
व्यक्तियों का किसी उद्देश्य से आपस में  
मिलना। राष्ट्रो का सघ। जैसे, लीग आफ  
नेशन। २ लम्बाई की एक नाप, जो स्पल  
के लिए ३ मील की और समुद्र के लिए  
३॥ मील की होती है।

लीगी-सज्ञा पु० [अग्रे० लीग] लीग का  
सदस्य।

वि० लीग-सम्बन्धी। लीग का।

लीचड-वि० १ मुस्त। काहिल। निवन्मा।  
२ जल्दी न छोड़नेवाला। छिपटनेवाला।

३ जिसका लेन-देन ठीक न-हो।

लीची-सज्ञा स्त्री० एक बड़ा पड़ और उसका  
फल, जो भीटा होता है।

लीझी-वि० १ नीरस। निस्सार। २ नि-  
कम्मा।

सज्ञा स्त्री० लीझी। १ रस बिछोड़ा हुआ  
गूदा। २ देह में लगे हुए उबटन के साथ  
छूटी हुई मेल की बत्ती।

लीडर-सज्ञा पु० [अग्रे०] नेता। अनुयायी।  
लीडो-सज्ञा पु० [अग्रे०] पत्थर का छापा,  
जिस पर हस्तलिखित अक्षर या चित्र  
छपते हैं।

लीड-सज्ञा स्त्री० पीड, गधे, हाथी आदि  
पशुओं की बिण्डा।

लीन-वि० [सज्ञा लीनता] १ जा किसी  
वस्तु में समा गया हो। २ तन्मय। मग्न।  
३ बिल्कुल खाली हुआ। ४ अनुरक्त।  
तत्पर।

लीपना-प्रि० सं० १ किसी गीली वस्तु की  
पतली तह नटना। पोतना। २ जमीन  
पर गोबर

मुहा०—लीप-पोतकर बराबर करना=  
१ चाँपट कर देना। २ चीका लाना।  
लीलना-क्रि० सं० गले के नीचे पेट में उतारना।  
निगलना।

लीलया-क्रि० वि० खेल में। सहज में ही।

लीला-सज्ञा स्त्री० १ मनोरंजन के लिए किया  
गया नाय। केलि। फ्रीडा। खेल। २ प्रेम का  
खेलवाड। प्रेम विनोद। ३ नायिकाओं का

एक हाव, जिसमें वे प्रायः वेश, गति, बाधा  
आदि का अनुकरण करती हैं। ४ विचित्र  
काम। ५ मनुष्यों के मनोरंजन के लिए किए  
हुए ईश्वरावतारा का अभिनय। नाट्य।

६ बारह मानाओं का एक छंद। एक वष-  
वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में भगण, नाण  
और एक गुरु होता है। ७ एक छंद, जिसमें  
२४ मानाएँ और अंत में संगण होता है।

सज्ञा पु० स्याह रंग का पीडा।

वि० नीला।

लीलापुत्रपोतम-सज्ञा पु० धोकरूण।

लीलामय-वि० पीडायुक्त। लीला से भरा  
हुआ या लीला करनेवाला। भगवान्।

लीलावती-सज्ञा स्त्री० १ प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्  
भास्कराचार्य की पुत्री, जिसने लीलावती

नाम की गणित की एक पुस्तक बनाई थी।  
२ विलासवती या विलासयुक्ता स्त्री। ३

३२ मात्राओं का एक छंद।

लीलास्पल-सज्ञा पु० केलि या पीडा दल  
का स्थान।

लीलाडा-सज्ञा पु० लोहवा। लज्वा। लज्वा।  
लुगी-सज्ञा स्त्री० १ धोती के स्थान पर

कमर में लपटन या छोटा टुकड़ा। तहका।  
२ लाल रंग का एक मोटा वपडा। ३

एक चिड़िया।

लुचन-सज्ञा पु० चुटकी से उसाइना।  
नोचना। भग्न करना। जैसे, केश लुचन-

सिर के बालों का उखाड़ना (जैन मत)।  
लुचित-वि० १ उखाड़ा हुआ। २ निबना  
हुआ।

लुज-वि० १ बिना हाथ-पंर का। २  
दूरा। २ बिना पत्त का। ठूठ (पड़)।  
लुठक-सज्ञा पु० लुठका।

लुठन-कि० सं० [ वि० लुठित ] १. लुठकना ।  
 २. लूटना । चुराना ।  
 लुठित-वि० १. जमीन पर गिरा हुआ या लुटका हुआ । २. जिसका सब कुछ लूट लिया गया हो ।  
 लुंडी-सत्ता स्त्री० घोड़े का लोटना ।  
 लुंड-सत्ता पु० बिना सिर का घड़ । कवच । लुंड ।  
 लुंड-मुंड-वि० १. जिसका सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों; केवल घड़ का लोथड़ा रह गया हो । २. बिना पत्ते का । ठंड ।  
 लुंडा-वि० [ स्त्री० लुंडी ] ऐसी चिड़िया, जिसकी पूँछ और पर लुंड गए हों ।  
 लुबिनी-सत्ता स्त्री० कपिलवस्तु के पास का एक वन, जहाँ गौतम बुद्ध स्वप्न हुए थे ।  
 लुभाठा-सत्ता पु० [ स्त्री० लुभाठी ] जलती हुई लकड़ी ।  
 लुभाव-सत्ता पु० [ अ० ] लसदार मूदा ।  
 लुपचिपा मूदा । लासा ।  
 लुभावदार-वि० लसदार ।  
 लुभार-सत्ता स्त्री० लू । तेज गरम हवा ।  
 लुभजन\*†-सत्ता पु० दे० "लोपाजन" ।  
 लुभर-वि० छिपनेवाला ।  
 लुभ-सत्ता पु० १. चमकदार रोगन । वानिश । २. आग की लपट । लौ । ज्वाला ।  
 लुब्धी-सत्ता स्त्री० जलती हुई लकड़ी ।  
 लुभना-कि० अ० आँध में होना । छिपना ।  
 लुभी जगह रहना, जहाँ कोई-देख न सके ।  
 लुभना-सत्ता पु० [ अ० ] घाग । कोर ।  
 लुभट-सत्ता पु० एक तरह का पेड़ और उमके पत्त ।  
 लुभना-कि० ग० आँध में पड़ना । छिपना ।  
 कि० अ० लुभना । छिपना ।  
 लुभार-सत्ता स्त्री० दे० "लुभ" ।  
 लुभटा-सत्ता पु० दे० "लुभाठा" । जलती हुई लकड़ी ।  
 लुभना-सत्ता पु० दे० "लुभ" ।  
 लुभरी-सत्ता स्त्री० मोती वस्तु का बिट या भाग । पाटा भाग ।  
 लुभरा-सत्ता पु० १. तराश । पसर ।

२. खोदनी । छोटी चादर । ३. फटा-पुराना कपड़ा । लुत्ता ।  
 लुभरी-सत्ता स्त्री० फटी-पुरानी धोती ।  
 लुगाई-सत्ता स्त्री० स्त्री । बीरत ।  
 लुगी-सत्ता स्त्री० १. पुराना कपड़ा । २. लहंगे का सजाक या फटा चौड़ा कितारा ।  
 लुचकना-कि० सं० झटके से छीनना ।  
 लुचवाना-कि० सं० लोचवाना । खडवाना ।  
 लुचुई-सत्ता स्त्री० मँदे की पतली पूरी ।  
 लुच्चा-वि० [ स्त्री० लुच्ची ] १. दूसरे के हाथ से कोई वस्तु छीन या शपटकर भागने-वाला । २. दुराचारी । कुमार्गी । खोटा ।  
 ३. सोहवा । बदमाश । लफगा ।  
 लुट\*†-सत्ता स्त्री० लुट ।  
 लुटकना-कि० अ० दे० "लुटकना" ।  
 लुटना-कि० अ० १. दूसरे के द्वारा लुटा जाना । किसी वस्तु का छीना जाना । २. तबाह होना । बरबाद होना ।  
 \*दे० "लुठना" ।  
 लुटरना-कि० अ० लोटना । लुठाना ।  
 लुठाना-कि० सं० १. दूसरे की लुटने देना । २. मुफ्त में या बिना पूरा मूल्य लिये देना । ३. व्यर्थ फेंकना या ध्वंस करना । बर्बाद करना । ४. बहुत अधिक बटाना । अघायुध दान करना ।  
 लुठावना\*†-कि० सं० दे "लुठाना" ।  
 लुटिया-सत्ता स्त्री० छोटा लाटा ।  
 लुटेरा-सत्ता पु० लुटनेवाला । डाकू । दस्यु ।  
 लुठना\*†-कि० अ० १. भूमि पर मड़ना । लोटना । २. लुझना ।  
 लुठाना\*†-कि० सं० १. भूमि पर डालना । मीटाना । २. लुझाना ।  
 लुझफना-कि० अ० किसी गोल वस्तु की भाँति नीचे-ऊपर चक्कर घाने हुए चलना । बुल-कना । जसर ने मोने की ओर चक्कर घाने हुए गिरना ।  
 लुझाना-कि० ग० दम प्रहार पड़ना या छाटना कि चादर घाने हुए कुछ दम पड़ना । डल्लाना ।  
 लुझना\*†-कि० अ० दे० "लुझना" ।  
 लुझाना\*†-वि० पु० दे० "लुझाना" ।

लुडियाना-कि० स० गोल तुलपना या सिलाई करना।

लुतरा-वि० [स्त्री० लुतरी] १ चुगलखोर। २ नटखट। शरारती।

लुत्व\*-सज्ञा स्त्री० द० "लोथ"।

लुत्फ-सज्ञा पु० [अ०] १ मजा। आनन्द।

२ स्वाद। जायका। ३ रोचकता।

४ कृपा। महरबानी। ५ भलाई।

६ खूबी। उत्तमता।

लुनना-कि० स० १ खेत की तैयार फसल काटना। २ नष्ट करना। दूर हटाना।

लुनाई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

सुन्दरता।

लुनरा-सज्ञा पु० खेत की फसल काटनेवाला।

लूननेवाला।

लुपना\*-कि० अ० छिपना।

लुप्त-वि० १ छिपा हुआ। गुप्त। अतहित।

गायब। अदृश्य। २ नष्ट।

लुप्तोपमा-सज्ञा स्त्री० यह उपमा अलंकार जिसमें उसका कोई अंग लुप्त हो, अर्थात् न कहा गया हो।

लुब्धना\*-कि० अ० लुब्ध होना। लालच में

माना। लोभित होना। मोहित होना।

सज्ञा पु० बहरी। यहलिया। लुब्धक।

लुब्धा\*-वि० १ लोभी। लालची। २

बाहनेवाला। इच्छुक। ३ प्रेमी।

लुब्ध-वि० १ लुभाया या ललचाया हुआ।

लोभी। २ मोहित। सुषुब्ध भूला हुआ।

लुब्धक-सज्ञा पु० १ व्याध। बहलिया।

सिंघारी। २ उत्तरी गोलार्द्ध का एक तारा।

लुत्पना\*-कि० अ० दे० 'लुत्पना'।

लुत्पापति-सज्ञा स्त्री० वह प्रौढ नायिका, जो

पति और कुल के लाना को लज्जा

करे।

लुभाना-वि० अ० १ लुब्ध होना। मोहित

होना। रीसना। मोह में पड़ना। २ लालसा

करना। ३ सुषुब्ध भूखना।

कि० स० १ लुब्ध करना। मोहित करना।

रिखाना। २ ललचाना। ३ सुषुब्ध

भुलाना। मोह में डालना।

लुत्कना\*-वि० अ० लुत्पना। झूलना।

लुत्की-सज्ञा स्त्री० पान में पहनने की वाली।

झुमका।

लुत्ना\*†-कि० अ० १ लटकना। झूलना।

२ ढल पड़ना। झुक पड़ना। ३ टूट

पड़ना। कहीं से एकाएक आ जाना। ४

काम कराने के लिए पीछे लगे रहना।

५ आकर्षित होना। ६ प्रवृत्त होना।

लुत्रियाना†-कि० अ० १ प्यार करना।

२ विसा की प्रेम से छूना या उसके किसी

अंग पर अपना कोई अंग रखना।

लुत्रो-सज्ञा स्त्री० वह गाय, जिस वज्र

दिये थोड़े ही दिन हुए हों।

लुत्त-सज्ञा पु० झूलना। लटपट हुए इधर

उधर डालना। आन्दोलित होना।

लुत्ना\*-कि० अ० १ दे० 'लुत्ना'। २

झूलना। लहराना।

लुत्ति-वि० १ झूलता हुआ। २ आन्दोलित।

लुत्तार-सज्ञा स्त्री० द० "लू"। तप्त वायु।

लुत्तौ-सज्ञा स्त्री० लोहा जड़ी हुई लाठी।

लुत्ता\*-कि० अ० दे० १ 'लुभाना'।

ललचाना। २ मोहित होना।

लुत्तार-सज्ञा पु० [स्त्री० लुत्तारिन, लुत्तारी]

लोहे का चीजे बनानेवाला। वह जाति, जो

लोहे को चीज बनाती है।

लुत्तारी-सज्ञा स्त्री० १ लुत्तार का स्त्री।

२ लोहे की वस्तु बनाने का नाम।

लुत्तरी-सज्ञा स्त्री० दे० "लामडा"।

लु-सज्ञा स्त्री० गरमी के दिनों में चलनेवाली

गरम तज हवा।

मुहा०-लु सरना या लगना=धारी :

गरम हुआ प्रवेश कर जान सँवरहा जाना

लूक-सज्ञा स्त्री० १ आग की लपट। २

जलनी हुई लूड़ी। तुत्ती। ३ गरमी व

दिना की तज वायु। ४ टूटा हुआ तारा।

उत्का।

मुहा०-लूक लगाना=जलती लूड़ी या

बत्ती छलाना। आग लगाना।

लूक\*-सज्ञा पु० दे० 'लूका'।

लूकना\*-कि० स० आग लगाना। जलाना

\*†कि० अ० दे० 'लूकना'।

लूका-सज्ञा पु० [स्त्री० लूकी] १ आ

की लो या लपट। २. लुआठा। पतली लकड़ी, जिसका छोर दहकता हो।

लूकी-सज्ञा स्त्री० १ आग की चिनगारी। स्फुलिंग। २. लूका।

लूका\*-वि० रुखा।

लूगा-सज्ञा पु० १. भोड़नी। चादर। २. वस्त्र।

लूगा-सज्ञा पु० १. वस्त्र। कपड़ा। २. धोती।

लूट-सज्ञा स्त्री० १. किसी के माल का जबरदस्ती छीना जाना। डकैती। २. लूटने से मिला हुआ माल।

लूट-लूटमार, लूटपाट=लोगों को मारना-पीटना और उनका धन छीनना।

लूटक-सज्ञा पु० १ लूटनेवाला। लुटेरा। २. काति हर्नेवाला।

लूटना-क्रि०, स० १ मार-पीटकर या, छीन-झपटकर ले लेना। जबरदस्ती माल हड़-पना। २. बर्बाद करना। ३ अनुचित रीति से किसी का माल लेना। ४ बाजब, से बहुत ज्यादा दाम लेना। ठगना। ५ मोहित करना। मुग्ध करना।

लूटि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "लूट"।

लूत-सज्ञा स्त्री० मकड़ी।

लूता-सज्ञा पु० लूका। लुआठा।

सज्ञा स्त्री० मकड़ी।

लूती-सज्ञा स्त्री० लुआठी।

लून-सज्ञा पु० लोन। नमक।

वि० कटा हुआ।

लूनना\*†-क्रि० अ० दे० "लूनना"।

लूम-सज्ञा पु० पूछ।

सज्ञा पु० [अग्र०] कपड़ा बुनने का करघा। जैसे हंडलूम=हाथ का करघा। पावर लूम=विजली का करघा।

लूमना\*-क्रि० अ० लटकना। झूलना।

लूमर-वि० सयाना। जवान।

लूरना\*-क्रि० अ० दे० "लूरना"।

लूना-वि० [स्त्री० लूनी] १ जिसका हाथ बट गया हो। लुजा। टुड़ा। २. बेकाम।

लूल-वि० बेवकूफ। मूर्ख।

लूही-सज्ञा स्त्री० दे० "लू"।

लड़-सज्ञा पु० दे० "लेंडो"।

लेंडो-सज्ञा स्त्री० १. मल की बत्ती। चंधा हुआ मल। २. बकरी या ऊँट की मँगनी। लेंहड़, लेंहड़ा-सज्ञा पु० झुंड। दल। समूह। (चोपायो के लिए)।

ले-अव्य० १. लेकर। आरम्भ होकर। ‡२. तक। पर्यंत।

लेई-सज्ञा स्त्री० १. किसी चूर्ण को गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ। अवलेह। लपसी। २. धुला हुआ आटा, जिसे आग पर पकाकर कागज आदि चिपकाने के काम में लाते हैं। सुखी मिला हुआ गोला चूना, जो ईंटों की जोड़ाई में काम आता है।

यो०-लेई-पूँजी=सारी जमा। सर्वस्व।

लेखर-सज्ञा पु० [अग्र०] व्याख्यान। भाषण। वचनूता।

लेखरवाजी-सज्ञा स्त्री० सूब व्याख्यान देने की क्रिया।

लेख-सज्ञा पु० १ लिखे हुए अक्षर। लिपि। २ लिखावट। लिखाई। ३. निबन्ध। प्रबन्ध। ४ लेखा। हिसाब-किताब।

\*वि० १. लेख्य। लिखने योग्य। २. हिसाब के लायक।

सज्ञा स्त्री० १. पक्की बात। २ लकीर।

लेखक-सज्ञा पु० [स्त्री० लेखिका] १. लिखने-वाला। २. ग्रंथकार। लिपिकार।

लेखन-सज्ञा पु० [वि० लेखनीय, लेख्य] १ लिखने का कार्य। अक्षर बनाना।

लिखने की कला या विद्या। २. चित्र बनाना। ३. हिसाब करना। लेखा लगाना।

लेखनहार\*-वि० लेखक। लिखनेवाला।

लेखना\*-क्रि०, स० १ अक्षर या चित्र बनाना। २ लिखना। ३. गिनना। हिसाब करना। ४ समझना। सोचना। विचारना।

यो०-लेखना-जोखना=१. ठीक-ठीक अंदाज करना। हिसाब करना। २ परीक्षा करना।

लेखनी-सज्ञा स्त्री० कलम। वह वस्तु, जिससे लिखा जाय।

लेखनीय-वि० लिखने योग्य।

लेखपत्र-सज्ञा पु० १ लिखा हुआ कागज। २ दस्तावेज।

लेखा-सज्ञा पु० १. गणना। गिनती। २.

हिसाब-किताब। आय-व्यय का विवरण।  
३. ठोसदोक अंदाज। अनुमान। ४.  
विचार। समत।

मुहा०—लेखा डेबड़ करना=१. हिसाब  
चुपता करना। २. चौपट करना। नाश  
करना। किसी के लेखे=किसी की ससज्ञ  
में। किसी के विचार के अनुसार।

लेखा-कर्म-सज्ञा पु० आमदनी और खर्च आदि  
का हिसाब लिखने या रखने का कार्य।  
(अंग्रे०—एकाउन्टेन्सी)

लेखा-परीक्षक-सज्ञा पु० आय-व्यय के हिसाब  
की जाँच करनेवाला। (अंग्रे०—आडिटर)

लेखा-परीक्षा-सज्ञा स्त्री० आय-व्यय के  
हिसाब की जाँच। (अंग्रे०—आडिटिंग)

लेखाबही-सज्ञा स्त्री० आय-व्यय लिखने की  
बही या कारी। (अंग्रे०—एकाउण्ट बुक)

लेखिका-सज्ञा स्त्री० १. लिखनेवाली। २.  
ग्रथ या पुस्तक बनानेवाली।

लेख्य-वि० १. लिखने योग्य। २. जो लिखा  
जाने को हो।

सज्ञा पु० १. लेख। लिखी हुई बात।  
२. दस्तावेज।

लेख-सज्ञा स्त्री० रस्सी।

लेख-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. एक तरह की  
कमान, जिसमें लोहे की जमीर लगी रहती  
है और जिससे कसरत करते हैं। २. एक  
प्रकार की नरम और लचकदार कमान,  
जिससे वनस्पतिलेख का अभ्यास किया  
जाता है।

लेजिस्लेटिव असेम्बली-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०]  
विधान-सभा। जनता-द्वारा नियोजित  
प्रतिनिधियों की व्यवस्थापिका सभा, जो  
किसी प्रदेश के शासन के लिए कानून  
बनाती है।

लेजिमुलेटिव कोसिल-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०]  
विधान-परिषद्। जनता-द्वारा चुने गए  
प्रतिनिधियों की बड़ी व्यवस्थापिका सभा।

लेनर, लेनुरी-सज्ञा स्त्री० १. रस्सी। डोरी।  
लेज। २. कुएँ से पानी खींचने की रस्सी।

लेट-सज्ञा स्त्री० १. चुने-मुरखी या सीमेंट  
से बनाई हुई पक्की सतह। गथ।

चूना-मुरखी। २. [अंग्रे०] देर। निश्चित  
समय के बाद।

लेटना-कि० अ० १. पीड़ना। सताना। आराम  
करना। विश्राम करना। २. मर जाना।

३. किसी चीज का बगल की ओर मुककर  
जमीन पर गिर जाना।

लेटर-सज्ञा पु० [अंग्रे०] पत्र। चिट्ठी।

लेटरवेक्स-सज्ञा पु० [अंग्रे०] १. चिट्ठियाँ  
डालने का लम्बा सन्दूक। डाक-विभाग की  
ओर से नगर-या गाँव के प्रमुख स्थानों  
पर लगा हुआ लाल रंग का लम्बा-सा  
सन्दूक, जिसमें चिट्ठियाँ डालते हैं। २. घर  
के दरवाजे पर लगा हुआ छोटा डब्बा,  
जिसमें घरवालों के नाम आई चिट्ठियाँ  
छोड़ दी जाती हैं।

लेटाना-कि० स० दूसरे को लेटने में  
प्रवृत्त करना।

लेटी-सज्ञा स्त्री० एक छोटी चिट्ठी।

लेन-सज्ञा पु० लेने की क्रिया या भाव। लहना  
पावना।

लेनदार-सज्ञा पु० जिसका ऋण चुकाना हो।  
जिसका कुछ वाकी हो। महाजन। लहनेदार।

लेन-देन-सज्ञा पु० लेन-देन का व्यापार।

लेने और देने का व्यवहार। आदान-  
प्रदान। ऋण देने और लेने का व्यवहार।  
महाजनी।

मुहा०—लेन-देन=सरोवार। सबध।

लेनहार-वि० लेनेवाला।

लेना-कि० स० १. अपने हाथ में करना।

ग्रहण करना। प्राप्त करना। २. धामना।  
पकड़ना। धरना। भागतै हुए को पकड़ना।

३. मोल लेना। खरीदना। ४. अपने अधिकार  
में करना। ५. जीतना। अभावनी करना।

अभ्यर्चना करना। ६. भार ग्रहण करना।

७. सेवन करना। पीना। ८. स्वीकार  
करना। ९. किसी को उपहास-द्वारा लजित

करना। १०. अलग करना। ११. एकत्र  
करना।

मुहा०—आले हाथी लेना=गूढ़ व्यंग्य-द्वारा  
लजित करना। लेने के देने पड़ना=लेने के  
स्थान पर उल्टे देना पड़ना। (किसी मामले

में) लाभ के बदले हानि होना। ले डालना—  
१ खराब करना। चौपट करना। २. परा-  
जित करना। हराना। ३ पूरा करना।  
समाप्त करना। ले-दे करना=हुज्जत  
करना। तकरार करना। लेना एक, न  
देना दो=कुछ मतलब नहीं। ले मरना=  
अपने साथ नष्ट या बरबाद करना।  
कान म लेना=सुनना।

लेप-सज्ञा पु० १ कही पर लगाने के लिए  
गोली वस्तु। पोतने की चीज। गाढ़ी गोली  
वस्तु की वह तह, जो किसी वस्तु के ऊपर  
फैलाई जाय। २ लगाव। सम्बन्ध। ३  
मलहम। ४ उबटन।

लेपना-क्रि० सं० गोली वस्तु लगाना। गाढ़ी  
गोली वस्तु की तह चढ़ाना। पोतना।  
ले-पालक-सज्ञा पु० पाला-भोसा हुआ पुत्र।  
पोप्यपुत्र। गोद लिया हुआ पुत्र। दत्तक।  
लेफ्टनेंट-सज्ञा पु० [अंग्रे०] १ सहायक  
कर्मचारी। २ सेना में कप्तान के नीचे  
का पद।

लेमनेड-सज्ञा पु० [अंग्रे०] नीबू का शरबत।  
लेक्या-सज्ञा पु० बछड़ा।

लेलिह-सज्ञा पु० १ जू। लीस। २ साँप।

लेव-सज्ञा पु० १ लेप। २ गाली ओषधि या  
घुली हुई मिट्टी का लेप। मिट्टी का लेप, जो  
वर्तनों की पैदों पर उन्हें आग पर चढ़ाने से  
पहले इसलिए लगाया जाता है कि उनका  
बालापन जल्दी छूट सके। लेवा।

लेवा-सज्ञा पु० मिट्टी का गिलावा। लेप।  
वि० लेनेवाला।

यो०—लेवा-देई=लेन-देन।

लेवाल-सज्ञा पु० लेने या खरीदनेवाला।  
लेव-वि० अल्प। थोड़ा।

सज्ञा पु० १ अंगु। २ छोटाई। नूकमता।  
३ चिह्न। निशान। ४ नसग। लगाव।  
सम्बन्ध। ५ एव अलंकार, जिसमें किसी वस्तु  
के वर्णन के केवल एक ही भाग या अंश में  
रोचकता आती है।

लेइया-सज्ञा स्त्री० १ जंनिदा के अनुसार जीव  
का वह अवस्था, जिसने कारण बर्म जीव  
का बाधता है। २ जीव।

लेस+सज्ञा पु० [अंग्रे०] कलावस्तु की  
पटरी या गोटा। बेल।

लेसना-क्रि० सं० १ जलाना। किसी चीज  
पर लेस लगाना। २ पोतना। लेप लगाना।  
३ दीवार पर मिट्टी का गिलावा पोतना।  
कहगिल करना। ४ सटाना। चिपकाना।  
५ चुगली खाना। ६ दो आदमियों को  
लड़ने के लिए उत्तेजित करना।

लेह-सज्ञा पु० अवलेह। चाटने की ओषधि।

लेहन-सज्ञा पु० चाटना। चखना।

लेहना-सज्ञा पु० १ दे० "लहना"। खेत  
काटने की मजदूरी में दी जानेवाली फसल।  
२ नाई, धोबी आदि की दी जानेवाली

फसल। ३ आग में जलाने की लकड़ी।  
लेहाजा-क्रि० वि० [अ०] इसलिए। इस  
वास्ते। इस कारण।

लेहाडी-सज्ञा स्त्री० बदनामी। बेइज्जती।  
अप्रतिष्ठा।

लेहा-वि० चाटने के योग्य।

सज्ञा पु० चाटने का पदार्थ। अवलेह।

लंगिक-वि० लिंग-सम्बन्धी। यौन। पुरुष और  
स्त्री की जननेन्द्रिय से सम्बन्ध रखनेवाला।

सज्ञा पु० वैशेषिक-दर्शन के अनुसार वह  
ज्ञान, जो लिंग या स्वरूप के वर्णन-द्वारा  
प्राप्त हो।

लंप-सज्ञा पु० बड़ी लालटेन। गंस बत्ती।

लं\*—अव्य० तक। पर्यंत।

लंन+सज्ञा स्त्री० दे० "लान्"।

लंया+सज्ञा स्त्री० दे० "लाई"।

लंवा+सज्ञा पु० बछड़ा। बच्चा।

लंस-वि० १ चर्दी और हथियारों से सज्जा  
हुआ। २ पटिवद्ध। तैयार।

सज्ञा पु० १ कपड़े पर चढ़ाने का फीता।

लेस। २. एक प्रकार का बाण।

लो-अव्य० दे० "लो"।

लोद-सज्ञा पु० अधिक मांस। पुरुषोत्तम मांस।

लौबा-सज्ञा पु० पिंड। मिट्टी का पिंड।

डले की तरह बँधा हुआ गोला पदार्थ।

लोइ\*—सज्ञा पु० लोण।

सज्ञा स्त्री० १ लो। शिवा। २. प्रभा।

दीप्ति।

लोइन\*-सज्ञा पु० १. दे० "लोइन" । २. दे० "लावण्य" ।

लोई-सज्ञा स्त्री० १. गुंथे हुए आटे का उतना बरा, जिसे बेलकर रोटी बनाते हैं । २. एक प्रकार का कम्बल ।

लोकजन\*-सज्ञा पु० दे० "लोपाजन" ।

लोकवा-सज्ञा पु० [स्त्री० लोकदी] विवाह होने पर कन्या के डोले के साथ दासी को भेजना ।

लोकदी-सज्ञा स्त्री० विवाह के बाद कन्या के समुराल जाते समय उसके साथ भेजी जानेवाली दासी ।

लोक-सज्ञा पु० १. मनुष्यों का वासस्थान ।

ससार । २. स्थान । निवास-स्थान । ३. प्रदेश । ४. दिशा । ५. लोग । जनता । सारा संसार । ६. प्राणी । ७. यश । कीर्ति ।

विशेष-उपनिषदों में दो लोक माने गए हैं—इहलोक और परलोक । निरुक्त में तीन लोकों का उल्लेख है—पृथ्वी, अतरिक्ष और द्युलोक । पौराणिक काल में सात लोकों की कल्पना हुई—भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनलोक, तपोलोक और सत्यलोक । फिर पीछे इनके साथ सात पाताल—अतल, नितल, पितल, गमस्तिमान्, तल, सुतल और पाताल मिलाकर चौदह लोक किए गए ।

लोककटक-सज्ञा पु० सवसाधारण को कष्ट देनेवाला कार्य । जैसे, सड़क पर कूड़े का ढेर लगाना । (अर्थ०—पब्लिक क्यूरेन्स)

लोकगीत-सज्ञा पु० ग्राम्य गीत । गाँवा या देहाती में गाए जानेवाले प्रचलित गीत ।

(अर्थ०—फोकलोर)

लोकनी-सज्ञा स्त्री० विवाह के बाद कन्या के समुराल जाते समय उसके साथ भेजी जानेवाली दासी । लोकदी ।

लोकधूमि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "लोपध्वनि" ।

लोकध्वनि-सज्ञा स्त्री० अकवाह । जनश्रुति ।

लोकना-क्रि० स० ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हावा से पकड़ लेना । बीच में से ही उड़ा लेना ।

सज्ञा पु० विवाह होने पर कन्या को समुराल

भेजते समय डोले के साथ दासी भेजना या दासी भेजने की परिपाटी ।

लोकनृत्य-सज्ञा पु० पाँचों में प्रचलित नाच । (अर्थ०—फोकडान्स)

लोकप, लोकपति-सज्ञा पु० १. रत्ना । २. लोकपाल । ३. राजा ।

लोकपद-सज्ञा पु० जनता की सेवा से सबम

रखनेवाला पद । (अर्थ०—पब्लिक ऑफिस)

लोकपाल-सज्ञा पु० १. किसी दिशा का

स्वामी । दिक्पाल । २. राजा ।

लोकमत-सज्ञा पु० जनता की राय । किसी

विषय पर समाज का बहुमत । (अर्थ०—

पब्लिक ओपीनियन)

लोकप्रवाद-सज्ञा पु० अकवाह । किसी के

विषय में चर्चा । जनश्रुति ।

लोकस्व-सज्ञा पु० अकवाह । जनश्रुति ।

लोकल-वि० [अर्थ०] स्थानीय । अपने नगर

या स्थान का । उसी स्थान से सम्बन्ध

रखनेवाली, जहाँ की वह चीज हो ।

लोकल बोर्ड-सज्ञा पु० [अर्थ०] किसी स्थान

की सभिति या सभा, जिसके सदस्यों का

चुनाव उसी स्थान के रहनेवाले नागरिका

द्वारा होता है ।

लोकलीक\*-सज्ञा स्त्री० लोक की मर्यादा ।

लोकविधुत-वि० ससार में प्रसिद्ध । जगत्-

विख्यात ।

लोकसप्रह-सज्ञा पु० १. सबकी भलाई ।

२. ससार के लोगों को प्रसन्न करना ।

लोकसत्ता-सज्ञा स्त्री० राज्य की बहु शासन-

प्रणाली, जिसमें सब अधिकार जनता के

हाथ में हो ।

लोकसभा-सज्ञा स्त्री० जनता के चुने हुए

प्रतिनिधियों की सभा, जो विधान आदि

बनाती है । भारतीय संविधान में उच्च

प्रकार की सभा । (अर्थ०—हाउस ऑफ

पीपुल)

लोक-सेवक-सज्ञा पु० १. जनता या सब-

साधारण की भलाई के काम करनेवाला

या जनता की सेवा करनेवाला । २. राज्य

का कर्मचारी । (अर्थ०—पब्लिक सर्वेंट)

लोक सेवा-सज्ञा स्त्री० १. जनता या सब-

साधारण की भलाई के लिए किए जाने-  
वाले कार्य। २. राज्य की नौकरी।

लोक-स्वास्थ्य-सज्ञा पु० सर्वसाधारण के  
स्वस्थ और नोरोग रहने की व्यवस्था या  
व्यवस्था।

लोकांतर-सज्ञा पु० वह लोक, जहाँ मरने  
पर जीव जाता है।

लोकांतरित-वि० मृत। मरा हुआ। दूसरे  
लोक की गया हुआ।

लोकाचार-सज्ञा पु० प्रचलित व्यवहार।  
रीति-रवाज। संसार में किया जानेवाला  
व्यवहार। लोक-व्यवहार।

लोकाट-सज्ञा पु० एक पीछा और उसका  
फल। इसके फल घेर से कुछ बड़े और  
स्वाद्विष्ट होते हैं।

लोकाना-क्रि० स० उछालना। ऊपर  
फेंकना।

लोकापवाद-सज्ञा पु० १. जनता में फैली  
हुई बदनामी। बदनामी। निन्दा। अप-  
कीर्ति। २. शिकायत।

लोकायत-सज्ञा पु० १. इस लोक के अति-  
रिक्त दूसरे लोक की न माननेवाला  
व्यक्ति। भौतिकवादी। २. चार्वाक-दर्शन।  
३. दुर्मिल-नामक छंद।

लोकेश, लोकेश्वर-सज्ञा पु० ईश्वर। ससार  
का स्वामी।

लोकपणा-सज्ञा स्त्री० १. सासारिक उन्नति  
की इच्छा। २. स्वर्गसुख की इच्छा।

लोकोक्ति-सज्ञा स्त्री० १. कहावत। मसल।  
२. काव्य में वह अलंकार, जिसमें किसी  
लोकोक्ति का प्रयोग करके कुछ रोचकता  
या चमत्कार लाया जाय।

लोकोत्तर-वि० इस ससार में होनेवाली  
वस्तुओं से थोड़ा। बहुत ही अद्भुत और  
विलक्षण। अलौकिक।

लोहार-सज्ञा स्त्री० १. लोहारों या बड़इयों  
आदि के औजार। २. नाई के औजार।

लोग-सज्ञा पु० मनुष्य। आदमी। मनुष्य-  
समुदाय। जन-समूह।

लोच-सज्ञा पु० १. लचक। लचलचाहट। २.  
गोमलता। ३. मुन्दर ढंग। ४. अभिलाषा।

लोचन-सज्ञा पु० आँख।

लोचना-क्रि० स० तथा ज० १. प्रकाशित  
करना। २. रचि उत्तम करना। इच्छा  
करना। अभिलाषा करना। ३. ललचना।  
तरसना। ४. सोभित होना।

सज्ञा पु० मुन्दर नेत्रवाली।

लोद-सज्ञा स्त्री० लोटने का भाव। लड़कना।  
सज्ञा पु० १. उतार। घाट। \*२. ध्रुवली।

लोदन-सज्ञा पु० एक प्रकार का कबूतर।  
रास्ते में पड़ी हुई छोटी कंकड़ियाँ।

लोटना-क्रि० अ० १. सीधे और उलटे लेटते  
हुए एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना।

२. लुक्कना। ३. कण्ट से करबट बदलना।  
तडपना। ४. विधाम करना। लेटना। ५.  
मुग्य होना। चकित होना।

मुहा०—लोट जाना=१. बेसुध होना।  
बेहोश हो जाना। २. मर जाना।

लोदपट्टा-सज्ञा पु० १. विवाह के समय पीछा  
या स्थान बदलने की रीति। २. दाँव का  
उलट-फेर।

लोद-पीद-सज्ञा स्त्री० १. लेटना। आराम  
करना। २. हँसते-हँसते लेट जाना।

वि० हँसते-हँसते लेट जानेवाला। बहुत ही  
खुश।

लोटा-सज्ञा पु० [स्त्री० लोटिया] धातु का  
एक गोल पात्र, जो पानी रखने के काम  
में आता है।

लोटिया-सज्ञा स्त्री० छोटा लोटा।

लोटी-सज्ञा स्त्री० छोटा लोटा।

लोड़ना\*†-क्रि० स० आवश्यकता होना।  
दरकार होना।

लोड़ना-क्रि० स० १. चुनना। तोड़ना। २.  
छोटना।

लोड़ा-सज्ञा पु० [स्त्री० लोड़िया] सिल पर  
पीसने का छोटा पत्थर। बट्टा।

मुहा०—लोड़ा ढालना=बराबर करना।  
लोड़ाढाल=चौपट। सत्यानाश।

लोड़िया-सज्ञा स्त्री० छोटा लोड़ा।

लोष-सज्ञा पु० लवण। नमक।  
लोय, लोधि-सज्ञा स्त्री० मृत शरीर।  
लाश।

मुहा०—लाय गिरना=मारा जाना। लोय डालना=मार गिराना। हत्या करना।

लोयडा-सज्ञा पु० मासपिंड। बिना हड्डी का मांस का टुकड़ा।

लोवी-सज्ञा पु० १ पठानों की एक शाखा। २. इस शाखा के लोग कुछ वर्षों तक भारत में घामन कर चुके हैं।

लोघ-सज्ञा स्त्री० दे० "लोघ्र"।

लोघ्र-सज्ञा पु० एक तरह का पेड़। वैद्यक में इसकी छाल और लकड़ी दोनों का प्रयोग होता है।

लोघ्रतिलक-सज्ञा पु० एक प्रकार का अलंकार, जो उपमा का एक भेद है।

लोन\*†-सज्ञा पु० दे० "लवण"। नमक।

लोनहरामी†-वि० दे० "नमकहराम"। कुत्तण्ण।

लोना-वि० [भाव० लोनाई] १ नमकीन।

खारा। लवण-युक्त। २. सलोना। सुंदर।

मज्ञा पु० १ दीवारों में लगनेवाली एक सराही, जिससे वह झडने लगती और कमजोर हो जाती है। २ लोना लगने पर दीवार से झडकर गिरनेवाली मिट्टी।

३ नमकीन मिट्टी, जिससे शोरा बनाया जाता है। ४. अमलोनी।

कि० स० फसल काटना।

लोनाई-सज्ञा स्त्री० दे० "लावण्य"।

लोनार†-सज्ञा पु० खारी मृत्ति। खार। वह स्थान, जहाँ नमक होता है।

लोनिघा-सज्ञा पु० एक जाति, जो लोन या नमक पताने का व्यवसाय करती है। लोनिघा।

लोनी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की मिट्टी जिससे शोरा और नमक बनता है। २. एक प्रकार का साग।

लोप-सज्ञा पु० [सज्ञा लोपन] [वि० लुप्त, लोपफ, लोप्य] १. गायब होना। छिपना। अंतर्धान होना। २. नाश। लय। ३. विच्छेद। अभाव। ४. व्याकरण में वह नियम, जिसके अनुसार शब्द के साधन, में किसी वर्ण को उड़ा देते हैं।

लोपन-सज्ञा पु० १. लुप्त करना। तिरोहित

करना। २. अंतर्धान होने का भाव। ३. नष्ट करना।

लोपना\*†-कि० स० १. लुप्त करना। मिटाना। २ छिपाना।

कि० अ० लुप्त होना। मिटना।

लोपाजन-सज्ञा पु० वह कल्पित भजन, जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है।

लोपामुखा-सज्ञा स्त्री० १ जगत्पथ ऋषि की स्त्री का नाम। २. एक तारा, जो जगत्पथ-मंडल के पास उदय होता है।

लोपी-सज्ञा पु० लोप करनेवाला। नाश करनेवाला।

लोपा-सज्ञा स्त्री० लामड़ी।

लोवान-सज्ञा पु० [अ०] एक वृक्ष का सुगंधित गोद, जो जलाने और दवा के काम में लाया जाता है।

लोबिया-सज्ञा पु० एक प्रकार का बड़ा बोड़ा (तरकारी)।

लोभ-सज्ञा पु० [वि० लोभी] लालच। लिप्ता।

लोभना-कि० स० १. ललचाना। २. मोहित करना।

कि० अ० १. मोहित होना। मुग्ध होना। २ लालच में पडना। चाहना।

लोभाना\*†-कि० स० मोहित करना।

कि० अ० मोहित होना।

लोभनीय-वि० १. लालच करने योग्य। ललचाने योग्य। २. मोहने योग्य। मनोहर।

लोभार\*†-वि० लुभानेवाला। मोहित करनेवाला।

लोभित-वि० मुग्ध। मोहित। लुब्ध।

लोभी-वि० लालची। जिसे किसी बात का लाभ या लालच हो। लोलुप। लुब्ध।

लोम-सज्ञा पु० १ शरीर पर के छोटे-छोटे बाल। रोवें। रोम। बाल। २. लामड़ी।

लोमकूप-सज्ञा पु० रोएँ की जड़ का छिद्र।

लोमड़ी-सज्ञा स्त्री० गीदड़ की जाति का एक प्रसिद्ध जंतु।

लोमपाद-सज्ञा पु० अंग देश के एक राजा, जो दशरथ के मित्र थे।

लोमश-सज्ञा पु० १ एक ऋषि, जिनको

पूराणों में अमर माना गया है। २. मेघ।  
मंडा।

वि० जिसके शरीर में बहुत बाल हो।  
बहुत अधिक धीर बड़े-बड़े रोएवाला।

लोमहर्षण-वि० ऐसा भीषण जिससे रोए  
खड़े हो जायें। बहुत भयानक।

लोय\*—सज्ञा पु० १. लोण। २. आँख। नेत्र।  
सज्ञा स्त्री० ली। लपट।

अव्य० दे० "ली"।

लोयन\*—सज्ञा पु० आँख।

लोरा—वि० दे० "लोल"। चंचल।

सज्ञा पु० १. आँख। २. कान का कुडल।

लोरेना\*—क्रि० अ० १. चंचल होना। २.  
ललकना। ३. लिपटना। ४. झुकना।  
लोटना।

लोरी—सज्ञा पु० आँख।

लोरी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का गीत, जो  
स्त्रियाँ बच्चों को सुलाने के लिए गाती हैं।

लोल-वि० १. चंचल। २. लालायित।  
लालची। ३. सुन्दर। ४. मनोहर। हिलता-  
डोलता। ५. परिवर्तनशील। ६. क्षणभंगुर।  
क्षणिक।

लोलक-सज्ञा पु० १. लटकन, जो बालियों  
में पहना जाता है। २. कान की लव।  
लोलकी।

लोलना\*—क्रि० अ० हिलना।

लोला-सज्ञा स्त्री० १ जिह्वा। जीभ। २.  
लक्ष्मी। ३. एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक  
चरण में मगण, सगण, यगण, भगण और  
अत में दो गुरु होते हैं।

लोलिनी-वि० चंचल स्वभाववाली।

लोलुप-वि० १ लोभी। लालची। २ चटोरा।  
चट्टू। ३ अत्यन्त उत्सुक। बहुत इच्छुक।

लोघा-सज्ञा स्त्री० लोमड़ी।  
नज्ञा पु० लघा।

लोघ-सज्ञा पु० १ पत्थर। २ डेला। मिट्टी।

लोहंश-सज्ञा पु० [स्त्री० लोहंड़ी] १. लोह  
का एक प्रकार का पात्र। २ तसला।

लोह-सज्ञा पु० १. लोह नामक धातु।  
२. रक्त। ३. लोहे का बना हुआ एक  
पत्थर।

लोहकार-सज्ञा पु० लोहार।

लोहवान-सज्ञा पु० दे० "लोवान"।

लोहसार-सज्ञा पु० १. फीलाद। २. फीलाद  
की वनी हुई जमीर।

लोहा-सज्ञा पु० १. एक प्रसिद्ध धातु, जिसके  
वरतन, शस्त्र और लोह मशीने आदि बनती  
हैं। २. अस्त्र। हथियार। ३. लोहे की  
बनाई हुई कोई चीज या उपकरण।

मुहा०-लोहे के चने=अत्यंत कठिन काम।

लोहा गहना=हथियार लठाना। युद्ध करना।

लोहा बजना=युद्ध होना। किसी का लोहा  
मानना=१ किसी विषय में किसी का  
प्रभुत्व स्वीकार करना। २ पराजित होना।  
हार जाना। लोहा लेना=लड़ना। युद्ध  
करना।

लोहान-सज्ञा पु० खून से भरा हुआ। रक्त-  
मय।

यौ०-लू लोहान=खून से लथपथ।

लोहाना-क्रि० अ० लोहे के वर्तन में रखे  
रहने से किसी वस्तु में लोहे का स्वाद आ  
जाना।

लोहार-सज्ञा पु० [स्त्री० लोहारिन, लोहा-  
इन] लोहे का काम करनेवाली एक जाति।

लोहारी-सज्ञा स्त्री० लोहार का काम।

लोहित-वि० रक्त। लाल।

सज्ञा पु० १ मंगल ग्रह। २. आँख की एक  
बीसरी। ३. एक बहुमूल्य पत्थर। ४. एक  
प्रकार का चावल। ५. एक हिरन। ६. एक  
प्रकार का साँप।

लोहित्य-सज्ञा पु० १ ब्रह्मपुत्र नदी। २. एक  
समुद्र का नाम।

लोहिया-सज्ञा पु० १ लोहे की चीजों का  
व्यापार करनेवाला। २ बनियों और मार-  
वाड़ियों की एक जल्ल। ३. लाल रंग का  
बल।

लोही-सज्ञा स्त्री० उपा-काल की लाली।

लोह-सज्ञा पु० खून। रक्त। लू।

लौ\*—अव्य० १. तक। पर्यंत। २. तुल्य।  
समान। बराबर।

लौघ-सज्ञा पु० १. लवण। एक झाड़ की कली,  
→ लौघ के पहले ही तोड़कर सुखा ली

जाती है। यह मसाल और दवा के काम में आती है। २ लोग के आकार का एक आभूषण, जिसे स्त्रियाँ नाक या कान में पहनती हैं।

लौगलता-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की बेंगला मिठाई।

लौंडा-सज्ञा पु० [स्त्री० लौंडी, लौंडिया]

१. बालक। लड़का। २. खूबसूरत लड़का।

३. नाचनेवाला लड़का। ४. नाचरी करनेवाला लड़का। ५. छोकरा।

वि० बंदोब।

लौंडी-सज्ञा स्त्री० दासी। दाई।

लौंद-सज्ञा पु० अधिक मांस। मलमांस। पुरुषोत्तम मांस।

लौंदा\*-सज्ञा पु० दे० "लादा"।

लौ-सज्ञा स्त्री० १. आग की लपट। ज्वाला।

२. जलती हुई बत्ती की लपट। ३. लगन।

चाह। ४. चित्त की वृत्ति। ५. आशा।

कामना।

यो०-लोलन=किसी के ध्यान में डूबा हुआ।

लौबा-सज्ञा पु० कद्दू।

लौकना-वि० अ० दूर से दिखाई पड़ना।

लौका-सज्ञा पु० [स्त्री० लौकी] खड़ी लौकी।

लौकिक-वि० १. लोक सम्बन्धी। सासारिक। सासारक। इस समार में होनेवाला। २. व्यावहारिक।

मज्ञा पु० सात मात्रावा के छंदों का नाम।

लौकी-सज्ञा स्त्री० एक तरह की तरकारी। पूर्वी जिला में इसे कद्दू भी कहा जाता है।

लौजोरा\*†-सज्ञा पु० धातु गलानेवाला कारीगर।

लौटना-क्रि० अ० वापस आना। पलटना।

पीछ की ओर मुड़ना।

क्रि० स० पलटना। उलटना।

लौटे-फेर-सज्ञा पु० उलट-फेर। हल-फेर। भारी परिवर्तन।

लौटाना-क्रि० स० १. फेरना। पलटाना।

२. वापस करना। ३. ऊपर-नीच करना।

लौटानी-क्रि० वि० लौटती समय।

लौन\*-सज्ञा पु० नमक।

लौनहार-सज्ञा पु० खेत काटनेवाला।

लौनी-सज्ञा पु० १. दे० "लौनी"। वरत समय पशुओं के पैरों में बांधने की रस्ती, जिससे वे अधिक दूर तक न जा सकें। २. इंधन। ३. जलाने की लकड़ी। फसल काटने का काम। कटाई।

\*वि० [स्त्री० लौनी] सुंदर। लावण्य-युक्त।

लौनी-सज्ञा स्त्री० १. फसल की बटनी।

कटाई। २. अंकवार (बगल) में जाने लायक फसल का डठल। धेंकोरा। लहना।

\*३. भवजन। नैनू। नपनीत।

लौमनी-सज्ञा स्त्री० दे० "लौना। लौनी"।

लौह-सज्ञा पु० १. लोहा। २. लोहे का बना हुआ। किसी धातु का बना हुआ।

लौहकार-सज्ञा पु० लोहार।

लौहपुंग-सज्ञा पु० इतिहास में वह युग, जब अस्त्र-शस्त्र और औजार आदि लोहे के बनते थे।

लौहसार-सज्ञा पु० लोहे से बनाया हुआ, एक प्रकार का नमक।

लौहाचार्य-सज्ञा पु० धातुओं के तत्त्व को जाननेवाला।

लौहासव-सज्ञा पु० लोहे के योग से बनाया हुआ एक तरह का आसव।

लौहित-सज्ञा पु० महादेव का त्रिशूल।

लौहित्य-वि० १. लोहे का। २. लोहे के रंग का। ३. लाल रंग का।

सज्ञा पु० १. प्रहस्पति नदी। २. लाल सागर।

ल्योना\*-वि० स० दे० "लाना"।

ल्योरी-सज्ञा पु० मोड़िया।

ल्योबना\*-क्रि० स० दे० "लाना"।

ल्योरि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "लहू"।

ल्लासा-सज्ञा पु० १. दे० "लासा"। २. तिब्बत की राजधानी।

ल्लोक-सज्ञा स्त्री० दे० "लीख"।

## य

य-हिंदी या संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ  
व्यंजन वर्ण, जिसका उच्चारण दाँत और  
धोत से होता है। इसे दन्त्योष्ठ्य कहते हैं।  
अव्यं [ फा० ] और। तथा।  
सज्ञा पु० १. वायु। २. धाण। ३. वरुण।  
४ बाहु। ५ कन्याण। ६. समुद्र। ७. वस्त्र।  
८. वदन।

यक-वि० टेढ़ा। बक।

यकट-वि० १. टेढ़ा। याका। कुटिल। २.  
विकट। दुर्गम।

यकनाली-सज्ञा स्त्री० गुपुम्ना नामक नदी।  
यकिम-वि० टेढ़ा। झुका हुआ। बाँका।  
यकिल-सज्ञा पु० काँटा।

यक्ष-सज्ञा स्त्री० आनसस नदी, जो हिंदूकुश  
पर्वत से निकलकर आरल समुद्र में गिरती है।

यग-सज्ञा पु० १. यगल-प्रवेश। २. राँगा  
नाम की धातु। ३. राँगे का भस्म।

यगज-सज्ञा पु० १. सिंहूर। २. पीतल।  
वि० यगल में उत्पन्न होनेवाला।

यचक-वि० १. धूर्त। धोखेवाज। ठग। २. खल।  
सज्ञा पु० ठग। धूर्त।

यचन-गशा पु० धूर्तता। दे० "यचना"।  
यचना-सज्ञा स्त्री० धोखा। छल। धूर्तता।

\* क्रि० सं० १. धोखा देना। ठगना। २.  
बाँचना। पटना।

यचित-वि० १. जो ठगा गया हो। २. अलग  
किया हुआ। अलग। हीन। रहित।

यजुल-सज्ञा पु० १. स्थल-पथ। २. अशोक वृक्ष।  
३. एक पक्षी। ४. तिनिक वृक्ष। ५. बेंत।

यट-सज्ञा पु० १. हँसिया आदि की मूठ।  
बेट। २. भाग। हिस्सा। बाँट। ३. लँडूरा।

४. विवाहित पुरुष।  
यटक-सज्ञा पु० हिस्सा। भाग।

वि० विभाजक। बाँटनेवाला।  
यठ-वि० खडित। अग का लँडूरा।

यज्ञा पु० १. दास। २. अविवाहित पुरुष।  
३. वामन। बीता। ४. माला।

यडर-सज्ञा पु० १. कजूत। मखीचूत। २.  
अन्त पुर का रक्षक। ३. सोजा। नपुंसक।

यडा-सज्ञा स्त्री० दुराचारिणी। बदचलन  
स्त्री।

यदन-सज्ञा पु० १. स्तुति। विनती। २. पूजन।  
३. अभिवादन। प्रणाम।

यदनमाला-यज्ञा स्त्री० यदनवार।  
यदनवार-सज्ञा स्त्री० विवाह या अन्य उत्सवों

पर घर के दरवाजों पर बाँधी जानेवाली  
फूलों या पत्तों की मालाएँ।

यवना-सज्ञा स्त्री० [ वि० वदित, यदनीय ]  
१. स्तुति। विनती। २. प्रणाम। यदन।

यदनीय-वि० यदना करने योग्य। आदर  
करने योग्य। पूजनीय।

यदित-वि० पूज्य। आदरणीय।  
यदी-सज्ञा पु० दे० "यदी"।

यदीक-सज्ञा पु० इन्द्र।  
यदीजन-सज्ञा पु० राजाओं आदि का यज्ञ

व्रणन करनेवाली एक प्राचीन जाति।  
भाट। मागध।

यद्य-वि० यदना करने योग्य। यदनीय।  
पूजनीय।

यश-सज्ञा पु० १. सन्तान। सन्तति। २. कुल।  
खानदान। परिवार। कुटुम्ब। ३. वाँस। ४.

पीठ की हड्डी। ५. नाक के ऊपर की  
हड्डी। वाँसा। ६. बाँसुरी। ७. बाहु आदि

की लकड़ी हड्डियाँ।  
यशकार-सज्ञा पु० १. वाँसफोडा। २. डोम।

भगी।  
यशज-सज्ञा पु० १. सतान। सतति। औलाद।

२. वाँस का चावल।  
यशतिलक-सज्ञा पु० एक छद।

यशधर-सज्ञा पु० १. कुल में उत्पन्न।  
यशज। सतति। सतान। २. यश की

मर्यादा रखनेवाला।  
यशलोचन-सज्ञा पु० दे० "यशलोचन"। वाँस

से निकलनेवाला एक पदार्थ।  
यशस्य-सज्ञा पु० बाह्य वर्णों का एक वर्णवृत्त।

यशहीन-वि० जिसके यश में कोई न हो।  
जिसके कोई सन्तान न हो। नि सन्तान।

यशमाली-सज्ञा स्त्री० १. यश में उत्पन्न

व्यक्तियों की कालक्रम के अनुसार सूची ।

२. वंश-परम्परा । पीढ़ी । पुस्त ।

वंशी-सज्ञा स्त्री० मुँह से फूँककर वजाया जानेवाला वाँस की नली का वाजा ।  
मुरली । वांसुरी ।

वंशीधर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण । वंशी वजाने  
धीर रत्ननेवाला ।

वंशीय-वि० कुल में उत्पन्न ।

वंशीघट-सज्ञा पु० वृन्दावन में वह वरगद  
का पेड़, जिसके नीचे श्रीकृष्ण वंशी वजाया  
करते थे ।

वंशोद्भव-वि० कुल में उत्पन्न ।

वंश्य-वि० कुलीन । श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न ।

वक्-सज्ञा पु० १ वगला पक्षी । २. अगस्त का  
वृक्ष या फूल । ३. एक देश, जिसे श्रीकृष्ण  
ने मारा था । ४. एक राक्षस, जिसे भीमसेन  
ने मारा था ।

वक्त-सज्ञा स्त्री० [अ० वक्जत] १. सामर्थ्य ।  
शक्ति । २. एतवार । विश्वास । साह । ३.  
प्रभाव । ४. इज्जत ।

वक्वृत्ति-सज्ञा स्त्री० १. पाखण्ड । २. धूर्तता ।  
चालवाजी । धोखा देकर काम निकालने  
की भात में रहना ।

वकास्त-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. दूसरे की  
ओर से उसके अनुकूल बातचीत करना ।  
२. वकील का कार्य या पेशा । कानून के  
ज्ञानकार व्यक्ति द्वारा अदालत में वादी या  
प्रतिवादी की ओर से मुकदमे की पैरवी  
करने का कार्य । ३. दूत का कार्य ।

वकालतनामा-सज्ञा पु० वकील को न्यायालय  
में मुकदमे की पैरवी करने के लिए नियुक्त  
करने का अधिकार-पत्र ।

वकासुर-सज्ञा पु० एक राक्षस, जिसे श्रीकृष्ण  
ने बाल्यावस्था में मारा था ।

वकील-सज्ञा पु० १. वह व्यक्ति जिसने वका-  
लत की परीक्षा पास की हो और सरकार से  
वकालत करने की सनद पाकर अदालत में  
वकालत करे । २. दूसरे की ओर से उसके  
पक्ष का समर्थन करनेवाला । ३. दूत । ४.  
राजदूत । एलची । प्रतिनिधि ।

वकुल-सज्ञा पु० अगस्त का वृक्ष या फूल ।

वक्क-सज्ञा पु० [अ०] बुद्धि । समझ । गूँजर ।

वी०-वेवकूत=मूर्ख ।

वक्कत-सज्ञा पु० [अ०] १. समय । २. अवसर ।

मोका । ३. अवकाश । फुरतत ।

वक्कतन कवक्कतन-क्रि० वि० [ज०] कभी  
कभी । यदासमय ।

वक्कतव्य-वि० कहने योग्य । वाच्य ।

सज्ञा पु० कथन । किसी विषय में बोलकर  
या लिखकर अपने विचार प्रकट करना ।  
(अंग्रे०-स्टेटमेंट)

वक्कता-वि० १. बोलनेवाला । बोलने में तेज ।

२. भाषण करनेवाला । भाषण-पटु ।

सज्ञा पु० १. व्याख्यान देनेवाला । बोलने-  
वाला । कथा कहनेवाला । २. व्यास ।

वक्कता-सज्ञा स्त्री० १. व्याख्यान । २.

कथन । भाषण । ३. वाक्पटुता । बोलने

की चतुरता ।

वक्कतव्य-सज्ञा पु० १. वक्कता । २. व्याख्यान ।

३. कथन । ४. वाक्पटुता ।

वक्क-सज्ञा पु० १. मुख । २. कार्य का

आरम्भ । ३. एक प्रकार का छद ।

वक्क-सज्ञा पु० [अ०] १. वह सपत्ति, जो

धर्माध्य दान कर दी गई हो । २. किसी के

लिए कोई चीज छोड़ देना ।

वक्क-वि० टेढ़ा । १. तिरछा । २. कुटिल ।

दाँव-पेंचवाला ।

वक्कामी-वि० १. टेढ़ी चाल चलनेवाला ।

२. राठ । कुटिल ।

वक्कतुंड-सज्ञा पु० गणेश ।

वक्कवट्ट-सज्ञा पु० मूँजर ।

वक्कवृष्टि-सज्ञा स्त्री० १. टेढ़ी दृष्टि । २.

क्रोध की दृष्टि ।

वक्कधर-सज्ञा पु० शिष्यी ।

वक्कित-वि० जो टेढ़ा हो ।

वक्कित-वि० १. टेढ़ा । २. कुटिल ।

वक्की-सज्ञा पु० १. वह प्राणी, जिसके धग

जन्म से टेढ़े हों । २. बुद्धदेव । (इन्होंने

टेढ़ी युक्तियों से वेद का विरोध किया था,

इसलिए यह नाम पड़ा ।)

वि० अपने-मार्ग को छोड़कर पीछे

छोटनेवाला ।

रक्षोक्ति-सज्ञा स्त्री० १. एक काव्या-  
लकार, जिसमें कानु या श्लेष से वाक्य  
का कुछ का कुछ अर्थ किया जाता है।  
काकुक्ति। २. बड़िया उक्ति।  
रक्ष-पज्ञा पु० छाती। उर। सीना। उरस्थल।  
रक्ष स्थल-सज्ञा पु० छाती। उर।  
रक्ष-सज्ञा पु० दे० "वक्षु"।  
रक्षोज-मज्ञा पु० स्तन।  
रक्षोह-यज्ञा पु० स्तन।  
रक्षरह-अव्य० [फा०] आदि। इत्यादि।  
रक्षन-यज्ञा पु० १. मनुष्य के मुँह से निकला  
हुआ सार्यक शब्द। वाणी। वाक्य। कथन।  
उक्ति। २. व्याकरण में शब्द के रूप में वह  
विधान, जिससे एक या एक से अधिक का  
बोध होता है। हिंदी में दो वचन होते हैं—  
एकवचन और बहुवचन।  
रक्षनीय-वि० कहने योग्य। कथनीय।  
सज्ञा पु० निंदा। शिकायत।  
रक्षनलक्षिता-सज्ञा स्त्री० वह परकीया  
नायिका, जिसकी बातचीत से उसके उपपत्ति  
से प्रेम प्रकट होता हो।  
रक्षनविदग्धा-सज्ञा स्त्री० वह परकीया  
नायिका, जो अपने वचन की चतुराई से  
नायक-को आकर्षित करने का प्रयत्न  
करती हो।  
रक्षा-सज्ञा स्त्री० रक्ष नाम की औपधि।  
रक्षन-सज्ञा पु० [ज०] १. भार। बोझ।  
२. तौल। ३. मान। मर्यादा। गौरव।  
रक्षनी-वि० जिसका बहुत बोझ हो। भारी।  
रक्षह-सज्ञा स्त्री० [ज०] कारण। हेतु।  
रक्षा-सज्ञा स्त्री० [ज०] १. बनावट। रचना।  
२. राज-धन। ३. चाल-डाल। ४. दशा।  
अवस्था। ५. रीति। पणाली। ६. मुजर।  
मिनहा। कटौती।  
रक्षावार-वि० जिसकी बनावट आदि बहुत  
अच्छी हो। तरहदार।  
रक्षारत-सज्ञा पु० [ज०] मन्त्रित्व। मन्त्री का  
पद या कार्य।  
रक्षोपा-सज्ञा पु० [ज०] १. वृत्ति। विद्वानों,  
छानों, सन्यासियों आदि को दी जानेवाली  
आर्थिक सहायता या वृत्ति। २. नियमपूर्वक

नित्य किया जानेवाला जप या पाठ  
(मुसलमान)।

रक्षीर-सज्ञा पु० [अ०] १. मन्त्री। दीवान।  
२. शतरंज की एक गोटी।

रक्षू-सज्ञा पु० [ज०] रक्षू। नमाज पढ़ने से  
पहले हाथ-पाँव आदि धोना।

रक्षूद-सज्ञा पु० [ज०] १. अस्तित्व। सत्ता।  
२. पटित होना।

रक्ष-सज्ञा पु० १. पुराणों में कहा गया भाले  
के फल के समान एक शस्त्र, जो इन्द्र का  
प्रधान शस्त्र कहा गया है। कुलिश। पवि।  
२. विद्युत्। विजली। ३. हीरा। ४.  
फोलाद। ५. भाला। बरछा।

रक्षि० १. बहुत कड़ा या मजबूत। २. घोर।  
दारुण। भोषण। ३. रक्ष के समान कठिन।

रक्षवंती-सज्ञा स्त्री० मौलसिरी।

रक्षपाणि-सज्ञा पु० इन्द्र।

रक्षमणि-सज्ञा पु० हीरा।

रक्षलेप-सज्ञा पु० एक तरह का पलस्तर।  
एक मसाला, जिसका लेप करने से दीवार,  
मूर्ति आदि मजबूत हो जाती है।

रक्षसार-सज्ञा पु० हीरा।

रक्षग-सज्ञा पु० १. हनुमानजी। २. रक्ष  
के समान मजबूत अंगवाला। ३. साँप।

रक्षामृध-सज्ञा पु० इन्द्र।

रक्षारान-सज्ञा पु० हठयोग के चौरासी  
आसनों में से एक।

रक्षोली-सज्ञा स्त्री० हठयोग की एक मुद्रा।

रक्ष-सज्ञा पु० बरगद का वृक्ष।

रक्षक-सज्ञा पु० १. बड़ी टिकिया। २.  
गोला। ३. बट्टा। ४. बड़ा। पकाड़ा।

रक्षवित्री-सज्ञा स्त्री० एक व्रत, जिसमें  
स्त्रियाँ बरगद के पेड़ की पूजा करती हैं।

रक्षिका-सज्ञा स्त्री० गोली या टिकिया।  
बट्टी।

रक्षी-सज्ञा स्त्री० दे० "रक्षिका"।

रक्ष, वटुक-सज्ञा पु० १. बालक। २. ब्रह्म-  
चारी। ३. भैरव। ४. शिवजी का एक  
रूप। (शाक्तों-द्वारा किए जानेवाले कर्म-  
काण्ड में बालक को शिव का रूप धारण  
कराते हैं। इसी से उसे वटुक कहते हैं।)

पञ्च-सजा पु० एक तरह का घाडा, या देवने में घोड़ी जान पड़ता है।

पणिक-सजा पु० १ राजगार करनेवाला। २ वैश्य। बानिया।

पतस-सजा पु० दे० "अवतम"।

पतन-सजा पु० [ ज० ] जन्मभूमि।

पत्-प्रत्यय समान। तुल्य।

पत्त-सजा पु० १ चालक। लडका। २ गाय का बच्चा। बछड़ा।

पत्ततर-वि० बहुत छोटा बच्चा। अत्यन्त छोटा।

पत्तनाभ-सजा पु० एक पिय, जिसे 'वच्छनाभ' या 'वच्छनाभ' भी कहते हैं। यह एक पोथे की जड़ है। मीठा-जहर।

पत्तर-सजा पु० १ पत्। साल। २ जवान बछड़ा, या हल में जोता न गया हो।

पत्तल-वि० [ स्त्री० पत्तला ] १ बच्चा स अधिक स्नेह करनेवाला। २ अपने स छोटा के प्रति बहुत स्नेह या कृपा करनेवाला। दयालु।

सजा पु० साहित्य न कुछ लोग के द्वारा माना हुआ दसवाँ रस, जिसमें माता पिता का सतान के प्रति प्रेम प्रदर्शित होता है।

पत्तामुर-सजा पु० कस का एक अनुवर, जिसे कस न श्रोकण की मारन के लिए गोकुल भेजा था। लेकिन श्रोकण न ही इस मार डाला।

पदती-सजा स्त्री० जात। पथा।

पदक-सजा पु० पक्ता।

पदन-सजा पु० १ मुँह। चेहरा। २ अगला भाग। ३ कवन। बात कहना।

पदाम्य-वि० १ बहुत बड़ा बानी। अत्यन्त उदार। २ मनुष्यापी।

पदि-सजा पु० कृष्ण पक्ष। जैसे—जठ पदि ४।

पदुसना\*—कि० स० दोष लगाना। भला-दुरा कहना।

पप-सजा पु० जान से मार डालना। हत्या।

पपक-सजा पु० १ बध करने या जाग से मारनेवाला। हिसक। २ व्याप। शिकारी। ३ मृत्यु।

पपत्र-सजा पु० बध करने का हथियार।

पपागक-सजा पु० कंदसाना।

पपू-सजा स्त्री० १. दुलहन। २ पत्नी। ३ वह। पुत्र की पत्नी। पताह।

पपूटी-सजा स्त्री० द० "पपू"।

पपूत\*—सजा पु० दे० "जयपूत"।

पप्य-वि० मार डालने योग्य।

पप-सजा पु० १ जगल। वाग। २ जल। ३ पर। ४ सकरानाय के अनुयायि सन्यासिणी की एक उपाधि।

पपचर-वि० १ वन में रहनेवाला या भ्रम करनेवाला। जगली जानवर। २ जात मनुष्य।

पपचारी-वि० द० "वनचर"।

पपन-सजा पु० १ वन, जगल या पार्श्व में उत्पन्न होनेवाला। २ कमल।

पपन-सजा पु० बादल।

पपनदेव-सजा पु० [ स्त्री० पपनदेवी ] वन की अधिष्ठाता देवता।

पपनदेवी-सजा स्त्री० वन की अधिष्ठात्री देवी।

पपमाला-सजा स्त्री० १ वन के फूलों का माला। २ एक विसय प्रकार की माला, जो घुटने तक लम्बी होती थी और जिस श्रोकण पहनते थे।

पपमाली-सजा पु० श्रोकण।

वि० वनमाला धारण करनेवाला।

पपराज-सजा पु० सिंह। शर।

पपराजि, पपराजी-सजा स्त्री० १ वन-समूह। वन की श्रेणी। २ पड़ो का समूह। ३ जगल व बीच की पगडंडी।

पपराह-सजा पु० कमल।

पपराहपी-सजा स्त्री० वन या जगल का शोभा। वनशी।

पपराह-सजा पु० १ जगल में रहना। २ बस्ती छोड़कर जगल में रहने का नियम या बंध।

पपराह-वि० [ स्त्री० पपराहिकी ] परिवार छोड़कर जगल में निवास करनेवाला।

पपराह-सजा पु० १ वन में रहने की अवस्था। वनप्रस्थ। २ वन का निवासी। ३ हिरन।

पपराह-सजा स्त्री० १ वनभूमि। २ छोटा वन।

नस्पति-सज्ञा स्त्री० १. वह वृक्ष या पीधा, जिसमें बिना फूल के ही फल लगे। २. पेड़-झींघे।

नस्पति घी-सज्ञा पु० वनस्पतिओं से तैयार किया हुआ घी। डालडा।

नस्पति-विज्ञान-सज्ञा पु० वह विद्या, जिसमें पीधा और वृक्षा आदि के रूपों, जातियों और निम्न-निम्न अंगों का विवेचन होता है। नस्पति-शास्त्र-सज्ञा पु० दे० "वनस्पति-विज्ञान"।

नित्त-सज्ञा स्त्री० १. स्त्री। ओरत। २. प्रियतमा।

नोपप-सज्ञा स्त्री० वन की ओपधियाँ। जंगली जड़ी-बूटी।

न्य-वि० १. वन में उत्पन्न होनेवाला। २. जंगली।

न्य-सज्ञा पु० १. बीज बोना। २. मुडन। बाल मुडाना।

न्यु-सज्ञा पु० शरीर। देह।

नुमान-सज्ञा पु० मुदर और हृष्ट-पुष्ट शरीरवाला।

नफा-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. वादा पूरा करना। वात निवाहना। २. धोल। मुरीबत।

नफादार-वि० [सज्ञा वफादारी] १. वचन या कर्तव्य का पालन करनेवाला। २. सच्चा। ३. ईमानदारी से काम करनेवाला।

नफा-सज्ञा स्त्री० [अ०] मृत्यु।

नवा-सज्ञा स्त्री० [अ०] महामारी। फैलने-वाले भयंकर रोग, जैसे—प्लेग, हैजा।

नवाल-सज्ञा पु० [अ०] १. आपत्ति। कठिनाई। २. देवी या ईश्वरीय कोप। पाप का फल। ३. बीज। भार।

नमन-सज्ञा पु० १. कै करना। उलटी करना। २. कै की हुई चीज।

नमि-सज्ञा स्त्री० चमन का रोग।

नयःक्रम-सज्ञा पु० आयु। उम्र।

नय सधि-सज्ञा स्त्री० लडकपन और जवानी के प्रीति का समय।

नय-सज्ञा स्त्री० उम्र। आयु।

नयस्-सज्ञा पु० उम्र। आयु।

नयस्क-वि० [स्त्री० नयस्का] १. उम्र या फा० ८२

आयुवाला। २. जो पूरी आयु का हो चुका हो। वालिग। कानून के अनुसार १८ वर्ष के पुरुष और २१ वर्ष की स्त्री को नयस्क (वालिग) माना जाता है। इससे कम की अवस्थावालों को नावालिग (अल्पवयस्क) माना जाता है।

नयस्कता-सज्ञा स्त्री० नयस्क होने का भाव। कानून के अनुसार नयस्क या वालिग होना।

नयस्क भत्ताधिकार-सज्ञा पु० चुनाव में सभी नयस्क (वालिग) व्यक्तियों को अपना मत देने का अधिकार।

नयस्थ-वि० १. नयस्क अवस्था को प्राप्त। वालिग। युवा। २. बराबर की उम्र का। समवयस्क।

सज्ञा पु० समवयस्क पुरुष।

नयस्य-सज्ञा पु० बराबर की उम्रवाला। मित्र। दोस्त।

नयस्या-सज्ञा स्त्री० सखी। सहेली।

नयोवृद्ध-वि० आदरणीय वृद्ध। बड़ा-बूढ़ा।

नयच-अव्य० १. जपितु। ऐसा न होकर ऐसा। बल्कि। २. परंतु। लेकिन।

नयडा-सज्ञा स्त्री० कटारी। बत्ती।

सज्ञा पु० [अपे०] दे० "नयामदा"।

नय-सज्ञा पु० १. आशीर्वाद। आशीष। २. मनोरथ-सिद्धि। किसी देवता से माँगा हुआ मनोरथ। ३. किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। ४. पति या दूल्हा।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम। जैसे—प्रियवर।

नयक-सज्ञा पु० [अ०] १. पुस्तकों का पन्ना। पन्ना। पन्ना। २. सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर।

नयण-सज्ञा पु० १. चुनना। अपनाना। २. लपेटना। ३. निमग्न करना। ४. किसी काम के लिए चुनना या मुकदर करना।

५. कन्या के विवाह में नय को शर्तिका करने की रीति। ६. पूजा। अर्चना। स्तकार।

७. मंगल-कार्य में पूजा करानेवाले या अन्य आह्वानों को दी हुई वस्तु या दान।

नयणी-सज्ञा स्त्री० मंगल-कार्य में पूजा कराने-

वाले ब्राह्मणा को दी जानेवाली वस्तु या दान।

परणीय-वि० परण करने योग्य। पूजनीय।

वरव-वि० [स्त्री० वरदा] वर देनेवाला।

वरदाता-वि० वर देनेवाला।

वरदान-सज्ञा पु० दे० "वर"। आशीर्वाद देने की क्रिया। किसी देवता का प्रसन्न होकर कोई अभिलषित वस्तु या सिद्धि देना। किसी की कृपा से होनेवाला लाभ।

वरदानो-सज्ञा पु० वर देनेवाला।

वरदी-सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "वर्दी"।

वरन्-अव्य० प्रत्युत। ऐसा नहीं। वल्कि।

वरना\*-अव्य० [अ०] नहीं तो। यदि ऐसा न होगा तो। वरन्।

सज्ञा पु० ऊँट।

वरपतिक-सज्ञा पु० अबरल। अभ्रक।

वरप्रद-वि० १ वर देनेवाला। २ प्रसन्न।

वरप्रदान-सज्ञा पु० वर देना। वर देने की क्रिया।

वरम-सज्ञा पु० [फा०] सूजन। शरीर के किसी अंग का फूलना।

वरयात्रा-सज्ञा स्त्री० वाराणसी। दूल्हे का अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों के साथ दुल्हिन के घर विवाह के लिए जाना।

वररुचि-सज्ञा पु० एक अत्यंत प्रसिद्ध प्राचीन पंडित नैयाकरण और ध्वनि। इन्होंने पाणिनि ने सूत्रों पर वार्तिक बनाए थे।

वरल-सज्ञा पु० १ विरनी। २ हड्डा।

वरही\*-सज्ञा पु० दे० 'वर्ही'।

वरागता-सज्ञा स्त्री० मुन्दरी स्त्री।

वराक-सज्ञा पु० १ शिव। २ मुंड।

वि० १ बेचारा। २ घाबरीय।

वराड-सज्ञा पु० १ रस्सी। २ कौडी।

वराटिका-सज्ञा स्त्री० १ कौडी। २ तुच्छ रत्न।

वराण-सज्ञा पु० इन्द्र।

वरानना-सज्ञा स्त्री० मुंदर स्त्री।

वराप्र-सज्ञा पु० दत्ता हुआ उत्तम अन्न।

वरारणि-सज्ञा स्त्री० माता।

वरारोह-सज्ञा पु० १ विष्णु। २ एक परी।

वि० थोड़ा सवारीवाला।

वराल-सज्ञा पु० लोम।

वरासत-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'विरासत'।

वारिस होने का भाव। उत्तराधिकार। २.

उत्तराधिकार में मिली हुई वस्तु। ३.

वपौती। ४ तरका।

वरासन-सज्ञा पु० जैचा आसन। थोड़ा आसन।

वराह-सज्ञा पु० १ सूअर। २ नावान् के एक अवतार। विष्णु।

वराहमिहिर-सज्ञा पु० ज्योतिष के एक प्रधान आचार्य, जिनके बनाए बृहत्संहिता आदि ग्रन्थ प्रचलित हैं।

वरिष्ठ-वि० पूजनीय। श्रेष्ठ।

वरुण-सज्ञा पु० १ जल के अधिपति एक देवता। २ जल। ३ एक ग्रह, जिसे चारेजी में "नेपच्यून" कहते हैं।

वरुणपाश-सज्ञा पु० वरुण का बदन पाश या फंदा।

वरुणानी-सज्ञा स्त्री० वरुण की स्त्री।

वरुणालय-सज्ञा पु० समुद्र।

वरुण-सज्ञा पु० १ समूह। झुण्ड। २ मेला।

३ रथ के ऊपर डाला जानेवाला लोह या तीकड़ा का बना एक आवरण।

वरुणिनी-सज्ञा स्त्री० सेना।

वरुणी-सज्ञा पु० हाथी की नाड़ी।

वरेंद्र-सज्ञा पु० १ इन्द्र। २ राजा।

वरैण्य-वि० १ मुख्य। प्रधान। २ पूजनीय।

वग-सज्ञा पु० १ एक ही प्रकार की जनव

वस्तुओं का समूह। २ कोटि। धना। ३

एक सामान्य धर्म रखनेवाले पदार्थों का

समूह। ४ राद नास्त्र में एव स्थान स

उल्लिखित होनेवाले स्वप्न अजन-वर्णों का

समूह। ५ घर का विभाग। अध्याय।

परिच्छेद। ६ दो सनान अर्थात् या गणिया

का पात या गुणन-फल। ७ बहु लोकोर

क्षेत्र, जिसकी लंबाई-चौड़ाई बराबर और

भाग कोण समकोण हों (रेखा-नियत)।

वगफल-सज्ञा पु० वह गुणन-फल, जो दो

समान राशियों के पात से प्राप्त हो।

वगमूल-सज्ञा पु० किसी बाक का वह अंश,

जिस उड़ी अन्तःसमूहा वरेंद्रों गुणन नहीं

वर्णिक हो। जन्म—२५ का वर्णमूल ५ होगा।

वर्णिक—सज्ञा पु० किसी सख्या को उसी सख्या से गुणा करने पर प्राप्त होनेवाला गुणनफल।

वर्णिकरण—बहुत-सी वस्तुओं या व्यक्तियों को उनके अलग-अलग वर्ग के अनुसार छाँटकर बलग करना।

वर्णस्—सज्ञा पु० १. रूप। २. तेज। काति। ३. अन्त। ४. पिछ्ठा।

वर्णस्य—वि० तेजवर्द्धक।

वर्णस्व—सज्ञा पु० १. तेज। दीप्ति। काति। २. थोछ्ठा।

वर्णस्वी—वि० तेजस्वी।

वर्णन—सज्ञा पु० [ वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित ] १ छोड़ देना। त्याग देना। २ कोई काम करने से रोकना। निषेध। मनाही।

वर्जनीय—वि० १. छोड़ने योग्य। २. निषेध के योग्य। मना करने योग्य।

वर्जित—वि० १. मना किया हुआ। ग्रहण के अनयोग्य ठहराया गया। निषिद्ध। २. त्यक्त।

वर्जित—सज्ञा पु० [ का० ] व्यापार। कसरत।

वर्ज्य—वि० १ छोड़ने योग्य। त्याज्य।

२. जो मना हो। निषिद्ध।

वर्ण—सज्ञा पु० १ रंग। २ रूप। मूर्त।

३. अक्षर। अक्षरों के चि। ४ हिन्दुओं के धर्मानुसार ये चार विभाग—ब्राह्मण,

क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, जो प्राचीन आर्यों ने किए थे। ५ जाति। ६. रंग के आधार पर मनुष्य जाति के विभाग,

जैसे लाल, गोरें, काले। ७. भेद।

प्रकार। किस्म।

वर्णक—वि० १. वर्णन करनेवाला। २. प्रशंसा करनेवाला।

सज्ञा पु० १. रंग। चित्रों में भरा जानेवाला रंग। २. असली रूप छिपाने के लिए धारण किया हुआ रूप या आवरण।

वर्णचित्र—सज्ञा पु० रंग से बनाया गया चित्र। रंगा गया चित्र।

वर्णमूलिका—सज्ञा स्त्री० चित्रों जादि में रंग भरने की कुँची या ब्रुश।

वर्णन—सज्ञा पु० [ वि० वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित ] सविस्तर कहना। कथन। वयान। प्रशंसा। तारीफ। बखान।

वर्णनातीत—वि० जिसका वर्णन या वयान न हो सके। वर्णन के बाहर।

वर्जनीय—वि० वर्णन करने योग्य। बहने योग्य।

वर्णपताका—सज्ञा स्त्री० छद्मशास्त्र में एक क्रिया, जिसके द्वारा लघु और गुरु के हिसाब से वर्णवृत्तों के भेद का ज्ञान होता है।

वर्णप्रस्तार—सज्ञा पु० छद्मशास्त्र में वह क्रिया, जिसके द्वारा वृत्तों के भेद और उन भेदों के स्वरूप का ज्ञान होता है।

वर्णमाला—सज्ञा स्त्री० अक्षरों के रूपों की क्रमानुसार लिखित सूची। अक्षरमाला। ककहरा।

वर्णविचार—सज्ञा पु० आधुनिक व्याकरण का वह अंग, जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का वर्णन हो। प्राचीन वेदांग में यह विषय 'शिक्षा' कहलाता था।

वर्णवृत्त—सज्ञा पु० वह छन्द, जिसके प्रत्येक वर्ण में वर्णों की सख्या और लघु-गुरु के क्रमों में समानता हो।

वर्णसंकर—सज्ञा पु० रोगला। दो भिन्न वर्णों के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न व्यक्ति या जाति।

वर्ण-सूची—सज्ञा स्त्री० छद्मशास्त्र या पिंगल में एक क्रिया, जिसके द्वारा वर्णवृत्तों की सख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि अत लघु और आदि अत गुरु की सख्या जानी जाती है।

वर्णात्मक—वि० अक्षर-सम्बन्धी। वर्ण-सम्बन्धी।

वर्णाश्रम—सज्ञा पु० ब्राह्मण आदि हिन्दुओं के चार वर्ण और ब्रह्मचर्य आदि चार आश्रम।

वर्णिक वृत्त—सज्ञा पु० दे० "वर्णवृत्त"।

वर्णित—वि० १. कथित। बह्ना हुआ। २.

जिसका वर्णन हो चुका हो।

वर्ज्य—वि० १. वर्णन के योग्य। २. जो वर्णन का विषय हो। जिसका वर्णन हो रहा हो।

वर्तन—सज्ञा पु० [ वि० वर्तित ] १. बरताव। व्यवहार। २. व्यवसाय। जीविका।

वृत्ति। रात्री। ३ फेरना। पुमाना।  
४ परिवर्तन। बटना। फेर-फार। ५.  
स्थापन। रचना। ६ सिल-बट्टे से पीसना।  
७ पान। वरतन। ८. विष्णु।

वर्तना-कि० अ० और स० १ बटना।  
२. वरतना।

वर्तन-सज्ञा १ पु० पूर्व दिशा। २ रास्ता।  
वर्तनी-सज्ञा स्त्री० १ बटने की त्रिया।  
पिसाई। २ रास्ता। वाट।

वर्तमान-वि० १ उपस्थित। मौजूद। विद्य-  
मान। २ आधुनिक। "हल का। चलता  
हुआ। जो जारी हो।

सज्ञा पु० १ व्याकरण में क्रिया के तीन  
कालों में एक, जिससे सूचित होता है कि  
क्रिया अभी चली चलती है, समाप्त नहीं  
हुई है। २ वृत्त। समाचार। ३ बलता  
व्यवहार।

वर्त्ता-सज्ञा स्त्री० काठ की कलम, जिससे  
पट्टे पर लिखा जाता है।

वर्त्ति-सज्ञा स्त्री० १ बत्ती। दीपक में जलान  
की बत्ती। २ अजम। ३. आँख में सुरमा  
लगाने की सलाई। ४ गोली। बंदी। ५ धाव  
में लगाने की बत्ती। ६ उबटन।

वर्त्तिका-सज्ञा स्त्री० १ बत्ती। २ सलाका।  
सलाई। ३. बटर पक्षी।

वर्त्तित-वि० १ जारी किया हुआ। चलाया  
हुआ। २ सम्पादित किया हुआ।

वर्त्ती-वि० [स्त्री० वर्त्तिनी] १ वर्त्तनील।  
बरतनेवाला। २. स्थित रहनेवाला।

सज्ञा स्त्री० १. बंदी। २ सलाई।

वर्त्तुल-वि० गोल। गोलाकार। वृत्ताकार।

वर्त्त-सज्ञा पु० १ मार्ग। पथ। २ गाड़ी के  
पहिए का मार्ग। लीक। ३ बिनास। ओंठ।  
बारी। ४ आँख की पलक। ५ आधार।

वर्त्ती-सज्ञा स्त्री० किसी विभाग के कमचारियों  
के लिए निश्चित पहनावा। परिच्छद।

वर्द्धक-वि० १. बढ़ानेवाला। २ पूरक। ३  
काटनेवाला।

वर्द्धन-सज्ञा पु० [वि० वर्द्धित] १ बढ़ाना।  
२. वृद्धि। बड़ती। उन्नति। ३. काटना।  
तराशना।

वर्द्धमान-वि० जा बढ़ता जा रहा हो। बढ़ने-  
वाला। वर्द्धनशील।

सज्ञा पु० १. एक वर्णवृत्त, जिसके चारों  
चरणों में वर्णों की संख्या भिन्न, अर्थात्  
१४, १३, १८ और १५ होती है। २  
जिनिया क २४वें जिन महावीर।

वर्द्धित-वि० १ बड़ा हुआ। २ पूर्ण। ३  
छिन्न। कटा हुआ।

वर्म-सज्ञा पु० १ कपड़। वस्त्र। २.  
घर।

वर्मा-सज्ञा पु० क्षत्रिया और कायस्था आदि  
की उपाधि, जो उनके नाम के अंत में लगाई  
जाती है।

वर्म्य-वि० श्रेष्ठ। प्रधान। शिरोमणि। यह  
शब्द जिस सज्ञा शब्द के अन्त में आता है,  
उसकी श्रेष्ठता बतलाता है।

सज्ञा पु० कामदेव।

वर्म-सज्ञा पु० १ काल का एक मान, जिसमें  
बारह महीने होते हैं। साल। सबत्तर।  
यह चार प्रकार के होते हैं—सौर, चाद्र,  
सावन और नाक्षत्र। २ वर्षा। वृष्टि। ३  
मेघ। बादल। ४ पुराणा में माने हुए सात  
द्वीपों का एक विभाग। ५ किसी द्वीप का  
प्रधान भाग।

वर्मक-वि० वर्षा करनेवाला। (जल) बर-  
सानेवाला (कोई चीज)।

वर्मगण्ड-सज्ञा स्त्री० जन्मदिन। साल गिरह।  
प्रतिवर्ष जन्म के दिन मनाया जानवाला  
उत्सव।

वर्मण-सज्ञा पु० [वि० वर्मित] वर्षा।  
वृष्टि। बरसना।

वर्मधर-सज्ञा पु० १ बादल। २ अन्तःपुर-  
रक्षक। लोहा।

वर्मफल-सज्ञा पु० ज्यादा-गणना के अनुसार  
वर्म भर के बड़ा वे शुभाशुभ फलों का  
विवरण।

वर्मोद्ग-सज्ञा पु० वर्ष का कोई भाग।

वर्मो-सज्ञा स्त्री० १ पानी बरसना। पानी  
बरसने की प्रिया या भाव। २ वह ऋतु,  
जिसमें पानी बरसता है। बरसात।

मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना=

१ बहुत अधिक परिमाण में ऊपर से  
 गिरना। २. बहुत अधिक सख्या में मिलना।  
 वर्षाकाल-सज्ञा पु० बरसात। वर्षाश्रुतु।  
 वर्षागम-सज्ञा पु० वर्षा ऋतु का आगमन।  
 वर्षाबीज-सज्ञा पु० बादल।  
 वर्षाभू-सज्ञा पु० दादुर।  
 वर्षामद-सज्ञा पु० मयूर। मोर।  
 वर्षा-सज्ञा पु० १ शरीर। २ प्रमाण। ३  
 इयत्ता। ४ जल रोकने का बाध।  
 वह-सज्ञा पु० १ मोर का पंख। २ पत्ता।  
 वहीं-सज्ञा पु० मोर।  
 वल-सज्ञा पु० १ मेघ। २ एक असुर, जो  
 बृहस्पति के हाथ से मारा गया।  
 चलन-सज्ञा पु० १ ज्योतिष-शास्त्रानुसार  
 ग्रह-नक्षत्रादि का सायनाश से हटकर  
 चलना। २ चिचलन।  
 चलनो-सज्ञा स्त्री० १ घर के ऊपर बना  
 हुआ मडप। २. बारखा। ३ बरामदा।  
 ४ वेष्टन। ५ काठियावाड़ में स्थित  
 एक प्राचीन नगरी।  
 चलप-सज्ञा पु० १ ककण। २ चूड़ी। ३.  
 हाथ में पहनने का कड़ा। ४ वेष्टन।  
 ५ मडल। घरा।  
 चलयित-वि० लपेटा या घिरा हुआ। वेष्टित।  
 परिवृत्त।  
 चलवला-सज्ञा पु० [अ०] १ हलचल।  
 उथल-पुथल। २ जोश। आवेश।  
 चलहत्ता-सज्ञा पु० इन्द्र।  
 चला-सज्ञा स्त्री० १ सेना। २ लक्ष्मी।  
 ३ धरणी। ४ औषधि विज्ञाप। ५ चलवान्।  
 चलाक-सज्ञा पु० [स्त्री० चलाकी] बाला।  
 बचपवित।  
 चलाहक-सज्ञा पु० १ बादल। २ पहाड़।  
 चलि-सज्ञा पु० १ रेखा। लकीर। चदन  
 आदि स बनाई हुई रेखा। २ पट के दोनों  
 ओर पंटा के सिकुड़ने से पड़ी हुई रेखा।  
 घुरी। बल। ३ दबता वा चढ़ाने की वस्तु।  
 ४ एक दैत्य, जिस विष्णु ने बामन अव-  
 तार लेकर छलाया। ५ राजकर। ६  
 धारा।  
 चलित-वि० १. बल साया हुआ। झुकाया

या मोड़ा हुआ। २. घेरा हुआ। ३. जिसमें  
 झुरियाँ पड़ी हो। ४ लिपटा हुआ। लया  
 हुआ। ५. ढका हुआ। ६ युक्त। सहित।  
 सज्ञा पु० नाच में हाथ मोड़ने की एक मुद्रा।  
 वलिमुख-सज्ञा पु० बन्दर।  
 बली-सज्ञा स्त्री० १ झुरी। शिकन। २ श्रेणी।  
 अवली। पक्ति। ३ रेखा। लकीर। पट में  
 सिकुड़ने पर बनी हुई लकीर।  
 सज्ञा पु० [अ०] १ मालिक। स्वामी। २  
 शासक। हाकिम। ३ साधु। फकीर।  
 चलीक-सज्ञा पु० घर की छत या छाजन की  
 ओलती।  
 चल्क-सज्ञा पु० छाल। चल्कल।  
 चल्कल-सज्ञा पु० १ पेंड की छाल। त्वक्।  
 २ पड़ की छाल का वस्त्र, जिसे तपस्वी  
 पहना करते थे।  
 चल्कली-वि० पेंड की छाल पहननेवाला।  
 चल्किल-सज्ञा पु० काटा।  
 चला-सज्ञा स्त्री० लगाम।  
 चलाल-सज्ञा पु० गौदड़।  
 चल्द-सज्ञा पु० [अ०] औरस पुत्र। बटा।  
 जैसे 'गोकुल चल्द बल्देव' अर्थात् 'गोकुल,  
 बटा बल्देव का'।  
 चल्दियत-सज्ञा स्त्री० [अ०] पिता के नाम  
 का परिचय।  
 चल्मीकि-सज्ञा पु० १ दीमका का लगाया  
 हुआ मिट्टी का डेर। बावी। बिमोटा। २  
 एक रोग।  
 चल्मभ-वि० प्यारा। प्रियतम।  
 सज्ञा पु० १ अत्यन्त प्यारा। २ पति।  
 स्वामी। मालिक। ३ दण्डवत्प्रणाम के  
 प्रवक्तृ एक प्रसिद्ध आचार्य।  
 चल्मभा-सज्ञा स्त्री० प्रियतमा। प्रिया।  
 चल्मभाचाप्य-सज्ञा पु० वैष्णवों में चल्मभ-  
 सम्प्रदाय के प्रवक्तृ एक प्रसिद्ध आचार्य।  
 चल्मरि, चल्मरी-सज्ञा स्त्री० लता। धिल।  
 मजरी।  
 चल्मय-सज्ञा पु० १ गाप। अहीर। ग्याला।  
 २ रगोश्वा।  
 चल्माह-अन्त्य० [अ०] १ दस्वर की नसम।  
 २. सचमुच। वास्तव में। ३ क्या मूय।

वल्हिका-सज्ञा स्त्री० लता। वेल।  
 वल्हो-सज्ञा स्त्री० लता। वेल।  
 वश-सज्ञा पु० १. इच्छा। चाह। २. शक्ति की पहुँच। काबू। ३. अधिकार। कब्जा।  
 मुहा०—वश वा=जिस पर अधिकार हो।  
 वश चलना=शक्ति काम करना।  
 वशवर्त्ती-वि० अधीन। किसी के वश या अधिकार में रहनेवाला।  
 वशा-सज्ञा स्त्री० १. वध्या स्त्री। वाँस। २. स्त्री। ३. पत्नी। ४. गाय। ५. हयिनी। ६. वध्या गायी ७ ननद।  
 वशानुग-सज्ञा पु० दास।  
 वि० वशोभूत।  
 वशिता-सज्ञा स्त्री० १. अधीनता। ताबेदारी। २. वश में करने या मोहने की क्रिया या भाव।  
 वशित्व-सज्ञा पु० १. वशता। २. योग की आठ सिद्धियों में से एक।  
 वशिष्ठ-सज्ञा पु० दे० "वसिष्ठ"।  
 वशिष्ठा-सज्ञा स्त्री० योग की आठ सिद्धियों में से एक।  
 वशी-वि० [स्त्री० वशित्व] १. अपने को वश में रखनेवाला। २. अधीन।  
 वशीकरण-सज्ञा पु० [वि० वशीकृत] १. वश में लाने की क्रिया। २. मणि, मन्त्र आदि के द्वारा किसी को वश में करना।  
 वशीकृत-वि० वश में किया हुआ। मोहित।  
 वशीभूत-वि० १. अधीन। ताबे। दूसरे की इच्छा के अधीन। २. मोहित।  
 वश्य-वि० १. वश में आनेवाला। २. किसी की इच्छा के अधीन।  
 सज्ञा पु० मातहत। दास।  
 वश्यता-सज्ञा स्त्री० अधीनता। मातहता।  
 वसत-सज्ञा पु० [वि० वासत, वासतक, वासुतिक, वसती] १. वर्ष की छ ऋतुओं में से प्रथम और प्रथम ऋतु, जिसके अंतर्गत वसंत और वसंत के महोत्सव माने गए हैं।  
 बहार का मौसम। २. शीतला रोग। चेचक। ३. छ रोगों में से दूसरा रोग।  
 वसंत-पंचमी-सज्ञा स्त्री० माघ महीने के सुक्ल पक्ष की पंचमी। शीतपंचमी।

वसंतो-सज्ञा पु० हलका पीला रंग। वसन्ती।  
 वि० हलके पीले रंग का। वसन्ती रंग का।  
 वसन्तोत्सव-सज्ञा पु० वसन्त पंचमी के दिन होनेवाला उत्सव। मदनोत्सव।  
 वसन-सज्ञा पु० १. वस्त्र। कपड़ा। २. ढवने की वस्तु। आवरण। ३. निवास।  
 वसनाणवा-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।  
 वसवास-सज्ञा पु० [वि० वसवासी] १. भ्रम। सदेह। २. प्रलोभन। मोह।  
 वसवासी-वि० शक्ती। सदेह करनेवाला।  
 वसह\*—सज्ञा पु० वेल। वृषभ।  
 वसा-सज्ञा स्त्री० १. चरबी। २. मज्जा।  
 वसार-सज्ञा पु० १. वसु। २. इच्छा।  
 वसिष्ठ-सज्ञा पु० १. एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि, जिनका उल्लेख ऋग्वेद और पुराणों में है। ये ब्रह्मा के मानस पुत्र थे। इन्होंने ही राजा दशरथ से पुत्रेष्टि यज्ञ कराया था।  
 इनमें और विश्वाभिन में बर वा। २. सप्तविमडल का एक तारा।  
 वसीका-सज्ञा पु० [अ०] वृत्ति। पेशन।  
 वसीयत-सज्ञा स्त्री० [अ०] अपनी संपत्ति के विभाग और प्रबंध आदि के सत्र में की हुई व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है।  
 वसीयतनामा-सज्ञा पु० वह लेख, जिसके द्वारा कोई मनुष्य यह व्यवस्था करता है कि उसके मरने के बाद उसकी संपत्ति का विभाग और प्रबंध किस प्रकार हो।  
 वसीया-सज्ञा पु० [अ०] १. गृहस्थ। लगान। २. जरिया।  
 वसुधरा-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।  
 वसु-सज्ञा पु० १. रत्न। धन। २. आग। ३. जल। ४. किरण। ५. संज्ञा। ६. शिव। ७. कुंजर। ८. सूर्य। ९. विष्णु। १०. साधु पुरुष। ११. सरोवर। १२. देवताओं का एक गण, जिसके अंतर्गत आठ देवता हैं। १३. आठ की संख्या।  
 वसुध-सज्ञा पु० १. कुंजर। २. विष्णु।  
 वसुधा-सज्ञा स्त्री० १. धन-सम्पत्ति देनेवाला। २. उदार। ३. दानी। ४. पृथ्वी। ५. माछी

राक्षस की पत्नी। इसके अनल, निल, हर और सपाति नामक चार पुत्र थे।

वसुदेव-सज्ञा पु० एक यदुवंशी राजा, जो श्रीकृष्ण के पिता थे।

वसुधा-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी। धरणी।  
वि० धन देनेवाला।

वसुधाधर-सज्ञा पु० १. विष्णु। २. पहाड़।

वसुधापति-सज्ञा पु० राजा। पृथ्वी का मालिक।

वसुधान-सज्ञा पु० पृथ्वी।

वसुधारा-सज्ञा स्त्री० १. जैनों की एक देवी।

२. कुंवर की पुरी, अलका।

वसुधोय-सज्ञा पु० अग्नि।

वसुप्रद-सज्ञा पु० १. शिवजी। २. कुंवर।

वसुमती-सज्ञा स्त्री० १. पृथ्वी। २. छ. वर्णों का एक वृत्त।

वसुरूप-सज्ञा पु० शिवजी।

वसुरेता-सज्ञा पु० १. शिव। २. अग्नि।

वसुल-सज्ञा पु० देवता।

वसुविद्-सज्ञा पु० अग्नि।

वसुहस-सज्ञा पु० वसुदेव के पुत्र एक यादव का नाम।

वसुल-वि० [अ०] मिला हुआ। प्राप्त।  
लब्ध। जो चुका लिया गया हो।

वसुली-सज्ञा स्त्री० १. दूसरे से रुपया-पैसा या वस्तु लेने का काम। चुकता कराने की क्रिया। २. प्राप्ति।

वस्ति-सज्ञा स्त्री० १. पेड़। नाभि के नीचे का भाग। २. मूत्राशय। ३. पिचकारी।  
४. हठयोग की एक क्रिया।

वस्तिकर्म-सज्ञा पु० लिङ्गद्रिय, गुदद्रिय आदि भागों में पिचकारी देने की क्रिया।

वस्तु-सज्ञा स्त्री० [वि० वास्तव, वास्तविक]  
१ वह, जिसका अस्तित्व या सत्ता हो। वह जो सचमुच हो। २ सत्य, पदार्थ। चीज। दिखाई देनेवाली चीज। ३ वृत्तान्त। ४ नाटक का आख्यान। वधावस्तु।

वस्तुत-अव्य० सचमुच। ठीक। यथार्थ।

वस्तुनिर्देश-सज्ञा पु० मंगलाचरण का एक भेद, जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है।

वस्तुवाद-सज्ञा पु० एक दार्शनिक सिद्धांत, जिसमें जगत् जैसा दृश्य है, उसी रूप में उसकी सत्ता मानी जाती है। जैसे-न्याय और वैज्ञानिक।

वस्तुस्थिति-सज्ञा स्त्री० वास्तविक परिस्थिति। असली हालत।

वस्त्र-सज्ञा पु० कपड़ा। पोशाक।

वस्त्र-सज्ञा पु० १. वेतन। २. मूल्य। ३. द्रव्य। धन। ४. वस्तु। ५. वसन।

६. छाल।

वस्त्र-सज्ञा पु० [अ०] १ प्रशंसा। स्तुति।

२. गुण। ३. विशेषता।

वस्त्र-सज्ञा पु० [अ०] १ मिलन। २. संयोग। मिलाप।

वहत-सज्ञा पु० वायु।

वह-सर्व० १ एक शब्द, जिसके द्वारा किसी तीसरे मनुष्य का संकेत किया जाता है। कर्तृकारक प्रथम पुरुष सर्वनाम। २. एक निवेशकारक शब्द, जिससे दूर की या परोक्ष वस्तुओं का संकेत करते हैं।

वि० वाहक। बोझ ले जानेवाला। (समाप्त में)

सज्ञा पु० १. घोड़ा। २. वायु। ३. मार्ग। ४. नदी।

वहन-सज्ञा पु० [वि० वहनीय, वहमान, वहित] १ खींचकर अथवा सिर या कंधे पर लादकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। २ ऊपर लेना। उठाना। ३ भार उठाना। ४ बेड़ा-तरेड़ा।

वहनीय-वि० १. खींचकर या लादकर ले जाने योग्य। भार उठाने योग्य। २. ऊपर लेने योग्य।

वहम-सज्ञा पु० [अ०] मिथ्या धारणा। झूठा खगाल। भ्रम। व्यर्थ की शका। मिथ्या सदेह।

वहमी-वि० वहम करनेवाला। व्यर्थ सदेह करनेवाला। झूठा शक करनेवाला।

वहमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ असम्भ्यता। उजड़पन। जगलीपन। पागलपन। २ डरावनापन। ३. धवराहट। अधीरता।

वहू-वि० [ अ० ] १. जगल में रहनेवाला। जगली। जो पालतू न हो। २. असम्य। उजड़। ३. भड़कनेवाला।

वहू-अव्य० उस जगह।

वहावी-सज्ञा पु० [ अ० ] अबुल वहाव नज्दी का चलाया हुआ मुसलमाना का एक संप्रदाय। इस संप्रदाय का अनुयायी।

वहि-अव्य० जो अन्दर न हो। बाहर।

वहिन-सज्ञा पु० जहाज।

वहिनी-सज्ञा स्त्री० १. डोनेवाली। २. नौका।

वहिरग-सज्ञा पु० १. गरीर का बाहरी भाग। बाहरी भाग। अंतरग का उलटा। २. कही बाहर से आया हुआ आदमी। आगतुक।

वि० १. ऊपर-ऊपर का। बाहरी। २. फालतू। 'अनावश्यक'।

वहिर्गत-वि० दे० "वहिर्गत"।

वहिर्मुख-वि० दे० "विमुख"।

वहिलीपिका-सज्ञा स्त्री० पहिली।

वहू-अव्य० उसी स्थान पर। उसी जगह।

वहू-सर्व० १. जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा जा चुका हो, उसकी ओर निश्चित रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम। पूर्वोक्त व्यक्ति या विषय। २. निदिष्ट वस्तु, अत्यन्त नही।

वहू-सज्ञा पु० १. रक्तवाहिनी नाडियों का एक वर्ग। शिरा। २. स्नायु। मांस-पेशी।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वहू-सज्ञा पु० १. अग्नि। आग। २. वृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३. तीन की संख्या।

वा-अव्य० या। अथवा। विलम्ब वाक्य या सदेहवाचक शब्द।

\*सर्व० ब्रज भाषा में प्रथम पुरुष का वह एकपुचन रूप जो कारकचिह्न लगने के पहले उसे प्राप्त होता है। जैसे—वाका, वाता।

वाइ\*सर्व० दे० "वाहि"। उमे। उत्तरो। वाइस चान्सलर-सज्ञा पु० [अंग्रे०] विश्व-विद्यालय का उपकुलपति।

वाइसराय-सज्ञा पु० [अंग्रे०] सम्राट् का प्रतिनिधि। भारतवर्ष में अंग्रेजी शासन-काल में सर्वप्रधान शासक। बड़ा छोट।

वाक्-सज्ञा पु० १. वाणी। सरस्वती। २. बोलने की शक्ति।

वाक्-वि० [अ०] सच। वास्तव। यथार्थ। अव्य० सचमुच। ठीक-ठीक। यथार्थ में। वास्तव में।

वाक्फियत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. जानकारी। ज्ञान। २. परिचय। जान-पहुचान।

वाक्या-सज्ञा पु० [अ०] घटना। वृत्त। समाचार।

वाका-वि० [अ०] १. होने या घटनेवाला। २. स्थित। खड़ा।

वाकफ-वि० [अ०] १. जानकार। ज्ञाता। जानकारी रखनेवाला। २. अनुभवी।

वाकफकार-वि० जानकार। काम की समझनेवाला। अनुभवी।

वाक्-सज्ञा स्त्री० दे० "वाणी"।

वाक्-चपल-वि० बहुत बातें बनानेवाला। मुँहजोर।

वाक्-चातुरी या वाक्चातुर्य-सज्ञा स्त्री० बात करने में चतुराई। बात करने का कौशल।

वाक्छल-सज्ञा पु० कहने में कपट। न्याय-शास्त्र के अनुसार छल ने तीन भेदों में से एक।

वाक्पटु-वि० बात करने में चतुर।

वाक्पति-सज्ञा पु० १. बृहस्पति। २. विष्णु।

वाक्फियत-सज्ञा स्त्री० [अ०] जानकारी।

वाक्य-सज्ञा पु० वह शब्दसमूह, जिसमें मुनने

या पढ़नेवाला कहने या लिखनेवाले का मतलब समझे।

वाक्यार्थ-सज्ञा पु० वाक्य का अर्थ या मतलब।

वाक्पुद्ग-सज्ञा पु० जबानी लड़ाई-झगडा।

मौखिक संधर्ष।

वाक्संयम-सज्ञा पु० वाणी पर रोक। व्यर्थ बातें न कहना।

वाक्सिद्धि-सज्ञा स्त्री० इस प्रकार की सिद्धि या शक्ति कि जो बात मुँह से निकले, वह ठीक घटे।

वाक्चो-सज्ञा स्त्री० धीपध-विशेष।

वाग्-सज्ञा पु० १ साज। २ निर्णय।

३ पंडित। ४ मुमुक्षु। ५. भेडिया।

वागा-सज्ञा स्त्री० लगाम।

वागीश-सज्ञा पु० १-ब्रह्मा। २. बृहस्पति।

३ कवि।

वि० अच्छा वक्ता।

वागीश-सज्ञा स्त्री० सरस्वती।

वागीश्वरी-सज्ञा स्त्री० सरस्वती।

वाग्जाल-सज्ञा पु० वाता का बवडर। लच्छे-दार वाते। वातो की भरमार।

वाग्दंड-सज्ञा पु० डाँट-डपट। भला-बुरा कहने का दंड। लिबाड।

वाग्दत्त-वि० वचन-द्वारा प्रदान किया हुआ। दूसरे को देने के लिए कहा हुआ। एक प्रकार का विवाह।

वाग्दत्ता-सज्ञा स्त्री० वह कन्या, जिसके विवाह की बात किसी के साथ ठहराई जा चुकी हो।

वाग्दान-सज्ञा पु० स्मार्ग। कन्या के पिता का किसी से जाकर यह कहना कि मैं अपनी कन्या तुम्हें व्याहूँगा।

वाग्देवी-सज्ञा स्त्री० सरस्वती। वाणी।

वाग्दोष-सज्ञा पु० १ बोलने की गलती। व्याकरण-सम्बन्धी त्रुटि। २ निन्दा या गाली।

वाग्भट्ट-सज्ञा पु० १ भावप्रकाश, वास्न-दण आदि के रचयिता। २ वैद्यक निघटु का रचयिता। ३ अष्टांगहृदय-मंहिता नामक वैद्यक ग्रंथ के रचयिता।

वाग्मी-सज्ञा पु० १ अच्छा वक्ता। २ पंडित। ३ बृहस्पति।

वाग्वादिनी-सज्ञा स्त्री० सरस्वती।

वाग्विदग्ध-वि० बात करने में चतुर। पंडित।

वाग्बिलास-सज्ञा पु० परस्पर प्रेम या आनन्द-पूर्वक बातचीत।

वाग्मय-सज्ञा पु० साहित्य।

वि० १ वचन-संबन्धी। २ वचन-द्वारा किया हुआ। ३ वाक्य-संबन्धी जो पठन-पाठन का विषय हो।

वाग्मयी-सज्ञा स्त्री० सरस्वती।

वाक्-सज्ञा स्त्री० वाणी। वाक्।

वाचक-वि० बोलनेवाला। पढ़कर सुनाने-वाला। सूचक।

सज्ञा पु० व्यक्ति या वस्तु का निर्देश या परिचय देनेवाला शब्द। नाम। सज्ञा। सकेत। दे० "वाची"। पढ़कर सुनानेवाला। जैसे-कथावाचक।

वाचकधर्मलुप्ता-सज्ञा स्त्री० वह उपमा, जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो।

वाचकलुप्ता-सज्ञा स्त्री० वह उपमालकार, जिसमें उपमावाचक शब्द का लोप हो।

वाचन-सज्ञा पु० १ पढ़ना। पठन। वाचना। २ कहना। उच्चारण करना। ३ प्रति-पादन।

वाचनालय-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ बैठकर लोग समाचार-पत्र या पुस्तक आदि पढ़त हैं।

वाचनिक-वि० वचन-सम्बन्धी। कथित। जबानी।

वाचयिता-वि० दे० "वाचक"।

वाचस्पति-सज्ञा पु० १ बहुत बड़ा विद्वान्। २ वाणी। वचन। ३ बृहस्पति।

वाचा-सज्ञा स्त्री० १ वाणी। २ वचन। शब्द। वाक्य।

वाचापत्र-सज्ञा पु० प्रतिज्ञा-पत्र।

वाचावध\* -वि० वचनवद्ध। प्रतिज्ञावद्ध।

वाचावधन-सज्ञा पु० प्रतिज्ञावद्ध होना। वचनवद्ध होना।

वाचावद्ध-सज्ञा पु० वचनवद्ध। वादे में बंधा

वाचाल-वि० [सज्ञा, वाचालता] १ वालने म तेज। वाक्पटु। २ वचवादी। व्यर्थ बकनेवाला।

वाचालता-सज्ञा स्त्री० १ बात करने में निपुणता। २ बहुत बोलना।

वाचिक-वि० १ वक्ता-सम्बन्धी। २ वाणी-सम्बन्धी। वाणी से किया हुआ। ३ सवेत से कहा हुआ।

मज्ञा पु० अभिनय का एक भेद, जिसमें केवल वाक्य विन्यास-द्वारा अभिनय का काव्य सपन होता है।

वाची-वि० प्रकट करनेवाला। सूचक। जैसे भाववाचक।

वाच्य-वि० १ कहने योग्य। २ शब्द-संकेत द्वारा जिसका बोध हो।

सज्ञा पु० दे० 'वाच्यार्थ'।

वाच्यार्थ-सज्ञा पु० वह अभिप्राय, जो शब्दों के नियत अर्थ द्वारा ही प्रकट हो। मूल सन्देश।

वाच्यार्थ-मज्ञा पु० कहने और न कहने योग्य बातें। भली-बुरी बातें।

वाज-सज्ञा पु० १ घो। २ अन्न। ३ यज्ञ का अन्न। ४ श्राद्ध का चावल। ५, यज्ञ। ६ सप्राण। ७ घोडा। ८ युद्ध का घोडा। ९ जला। १० बल। शक्ति। ११ वेग। १२ पलक। १३ युद्ध में लूट की सामग्री। १४ पुरस्कार। इनाम। १५ शब्द। आवाज। १६ मुनि।

वाजपति-सज्ञा पु० १ अग्नि। २ पुरस्कार या लूट के सामान का स्वामी (अग्नि के लिए प्रयुक्त)।

वाजपेय-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध यज्ञ, जो सात श्रोत यज्ञों में पंचमो है।

वाजपेयी-पज्ञा पु० यह पुरुष, जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। कान्वकुब्ज ब्राह्मणों की एक शाखा। अत्यंत कुलीन पुरुष।

वाजधवा-सज्ञा पु० अग्नि।

वाजसनि-पज्ञा पु० सूर्य।

वाजसनेय-सज्ञा पु० १ यजुर्वेद का एक शाखा।

२ वाजवल्क्य ऋषि।

वाजिव-वि० [अ०] उचित। ठीक।

वाजिवी-वि० [अ०] उचित। ठीक।

वाजी-मज्ञा पु० १ घोडा। २ चार। बहादुर।

३ यादो। ४ इन्द्र, बृहस्पति के नाम। ५

वाण। ६ फटे हुए दूध का पानी।

वाजीकर-वि० काम-भावना को जगाने-वाला।

वाजीकरण-सज्ञा पु० मनुष्य के वीर्य और पुस्त्व को बढ़ानेवाली औषध।

वाट-सज्ञा पु० मार्ग। रास्ता।

वाटरवर्क्स, वाटरवर्क्स डिपार्टमेंट-सज्ञा पु०

[अंग्रे०] १ जलकल। २ जलकल विभाग।

नगर में घर-घर नल-द्वारा पानी पहुँचाने की व्यवस्था करनेवाला विभाग।

वाटिका-सज्ञा-स्त्री० १ बगीचा। बाग।

२ फुलवाडी।

वाडव-सज्ञा स्त्री० समुद्र के भीतर की अग।

वाडवाग्नि-सज्ञा स्त्री० समुद्र के अंदर की अग। समुद्री अग।

वाडवानल-सज्ञा स्त्री० दे० "वाडवाग्नि"।

वाणिज्य-सज्ञा पु० व्यापार। वणिज शब्द से

बना हुआ। रोजगार। व्यवसाय। कर्म-

विषय।

वाणी-पज्ञा स्त्री० १ सरस्वती। २ बोली।

मुँह से निकले हुए सार्थक शब्द। वचन।

३ वाक्शक्ति। ४ जाभ। रसना।

मुहाना—वाणी फुरना=मुँह से शब्द

निकलना।

वात-सज्ञा पु० १ वायु। हवा। २ धैर्य

के अनुसार शरीर के अंदर पचवाय में

रहनेवाली वह वायु, जिसके कुपित होने से

अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातज-वि० वायु-द्वारा उत्पन्न।

वातजात-सज्ञा पु० हनुमान्।

वात-प्रकोप-सज्ञा पु० वायु का बढ़ जाना,

जिसे अनेक प्रकार के रोग होते हैं।

वातापि-सज्ञा पु० एक अमुर का नाम, जो

आगों का भाई या और जिसे जास्व

ऋषि ने खा डाला था।

वातायन-पज्ञा पु० झरोखा। छोटी मिट्टी।

वातावरण-सज्ञा पु० १. चारों ओर की हवा।

वायुमण्डल। २. वास्तु-मात्र की परिस्थिति,

जिसका जीवन या अन्य बातों पर प्रभाव पड़ता है।

वातुल-सज्ञा पु० वायल। पागल।

वि० १. जिसकी बुद्धि वायु के प्रकोप से ठिकाने न हो। २. वायु-प्रधान। जिसमें वायु अधिक हो।

वात्या-सज्ञा स्त्री० चबडर। अन्यउ।

वात्सरिक-वि० वार्षिक। सालाना।

वात्सल्य-सज्ञा पु० १ प्रेम। स्नेह। २. माता-पिता का अपनी सन्तान के प्रति प्रेम।

वात्स्यायन-सज्ञा पु० १. न्यायशास्त्र के प्रसिद्ध भाष्यकार। २. कामरूप-ग्रन्थ के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाद-सज्ञा पु० १. विवाद। तर्क। दलील। २. झगडा। ३. मुकदमा। ४. सिद्धांत।

वादक-सज्ञा पु० १. बाजा बजानेवाला। २. वक्ता। ३. तर्क या शास्त्रार्थ करनेवाला।

वाद्यप्रस्त-वि० जिसके बारे में विवाद या मतभेद हो।

वादन-सज्ञा पु० बाजा बजाना।

वादनक-सज्ञा पु० बाजा।

वाद-प्रतिवाद-सज्ञा पु० वहस। वाद-विवाद। तर्क-वितर्क।

वादरायण-सज्ञा पु० वेदव्यास।

वाद-विवाद-सज्ञा पु० वहस। तर्क-वितर्क।

वादा-सज्ञा पु० प्रतिज्ञा। वचन। इकरार।

मुहा०—वादायिलाफी करना=कथन के विरुद्ध कार्य करना। वादा पूरा करना=वचन या प्रतिज्ञा का पालन करना। वादा रखना=वचन लेना। प्रतिज्ञा कराना।

वादानुवाद-सज्ञा पु० वहस। वाद विवाद। तर्क-वितर्क।

वादिक-सज्ञा पु० वहस करनेवाला। तात्त्विक।

वावित-वि० वजाया हुआ।

वावित-सज्ञा पु० वाजा। वाद्य।

वादी-सज्ञा पु० १ मुकदमा दायर करनेवाला। फौरियादी। मुद्दी। २. वक्ता। ३ पक्ष या प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला।

वाद्य-सज्ञा पु० बाजा।

वाद्यकर-सज्ञा पु० वजानेवाला।

वानप्रस्थ-सज्ञा पु० प्राचीन भारतीय आर्यों

के अनुसार मनुष्य-जीवन के चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम।

वानर-सज्ञा पु० [स्त्री० वानरी] बदर।

वानवासिका-सज्ञा स्त्री० सोलह मात्राओं के छंदा या चीपाई का एक भेद।

वानस्पत्य-सज्ञा पु० १. वनस्पति का समूह। २ वे वृक्ष, जिनमें पहले फूल और पीछे फल लगते हैं।

वि० वनस्पति-सम्बन्धी।

वापस-वि० [फा०] लौटा हुआ। लौटकर आया हुआ। फिरता। फिरा हुआ।

वापसी-सज्ञा स्त्री० लौटने की क्रिया या भाव।

वि० लौटा हुआ। फेरा हुआ। वापस होने के समय का।

वापिका-सज्ञा स्त्री० वापली। छोटा जल-शय। सरोवर।

वापी-सज्ञा स्त्री० दे० "वापिका।"

वाम-वि० १. बायाँ। दाहिने का उलटा।

२. विरुद्ध। विरोधी। ३. टेढ़ा।

४ कुटिल। दुष्ट।

वामकी-सज्ञा स्त्री० एक देवी, जिनकी पूजा जादूगर करते हैं।

वामदेव-सज्ञा पु० १ शिव। महादेव। २. एक वैदिक ऋषि। ३ राजा दशरथ के एक मंत्री का नाम।

वामन-वि० १ नाटा। वोता। छोटे डील का। २. खर्व। ह्रस्व।

सज्ञा पु० १ विष्णु। २. शिव। ३ एक दिग्गज का नाम। ४. विष्णु भगवान् का पाँचवाँ अवतार, जो बलि को छलने के लिए हुआ था। ५ अठारह पुराणों में से एक।

वामपथ-सज्ञा पु० [वि० वामपथी] किसी विषय में बहुत उग्र मत रखनेवाली का सिद्धान्त या जर्ग।

वाम-भाग-सज्ञा पु० [वि० वाममूर्ति] तानिक मत, जिसमें मय, मास आदि के उपयोग का विधान है।

वामलोचना-सज्ञा स्त्री० सुंदरी स्त्री।

वामाग्निनी, वामाग्नी-सज्ञा स्त्री० पत्नी।

वामा-सज्ञा स्त्री० १ सुन्दर स्त्री। महिला।

२. पत्नी। ३. दुर्गा। ४. दस अक्षरों का एक वृत्त।

वामाचार-सज्ञा पु० तांत्रिक मत का एक भेद।

वामाचर्य-वि० १. दक्षिणाचर्य का उलटा। (वह फेरी) जो किसी वस्तु की बाईं ओर से आरम्भ की जाय। २. जिसमें बाईं ओर का घुमाव या भ्रम हो।

वाय\*—सर्व० दे० “वाहि। वही”।

वायविक-वि० वायु-सम्बन्धी। वायु का।

वायव्य-वि० वायु-सम्बन्धी।

सज्ञा पु० १. उत्तर-पश्चिम का कोना। पश्चिमोत्तर दिशा। २. एक अश्व का नाम।

वायस-सज्ञा पु० कोआ। काक।

वायु-सज्ञा स्त्री० हवा। वात।

वायुकोण-सज्ञा पु० पश्चिमोत्तर दिशा।

वायुप्रस्त-वि० १. उन्मत्त। २. वायु के पुत्र हनुमानजी।

वायुग्लम-सज्ञा पु० १. बबडर। वातचक्र।

२. पेट का एक रोग। वायुगोला।

वायुभक्ष्य-सज्ञा पु० साँप। सर्प।

वायुमदल-सज्ञा पु० आकाश। दे० “वातावरण”।

वायुयान-सज्ञा पु० हवाई जहाज। हवा में चलनेवाली सवारी।

वायुलोक-सज्ञा पु० १. आकाश। २. पुराणानुसार एक लोक का नाम।

वारक-सज्ञा पु० पत्नी।

वारग-सज्ञा पु० मलबार की मूठड़ी।

वारह-सज्ञा पु० [ अग्र० ] अदालत का एक आज्ञापत्र, जिसके अनुसार मूकदम में सबधित भाग्य हुए व्यक्तियों को पकड़कर अदालत में हाजिर किया जाता है।

वार-सज्ञा पु० १. रोक। रुकावट। २. आवरण। ३. अवसर। ४. वार। दफा।

५. क्षय। ६. द्वार। दरवाजा। ७. सप्ताह का दिन। जैसे—सोमवार। ८. दांव।

दारी। ९. चोट। अपात। अपसरा। १०. नदी आदि का किनारा।

वारक-सज्ञा पु० निषेध या मना करनेवाला। प्रतिवन्धक।

वारवन्धा-सज्ञा स्त्री० वेश्या।

वारण-सज्ञा पु० [ वि० वारक ] १. किसी बात को न करने की आज्ञा। निषेध। मनाही।

२. अकुश। ३. खावट। बाधा। विघ्न।

वारणावत-सज्ञा पु० महाभारत के अनुसार एक जनपद, जो गंगा के किनारे था।

वारणीय-वि० निषेध के योग्य।

वारतिय\*-सज्ञा स्त्री० रडी। वेश्या।

वारव\*-सज्ञा पु० दे० “वारिद”। बदल।

वारदात-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १. घटना।

भोषण कांड। हुगंडना। २. मार-पीट।

बग-फसाव। ३. घटना-सम्बन्धी हाल या समाचार।

वारन\*-सज्ञा स्त्री० १. निछावर। भेंट चढ़ाना। बलि। २. रोक। रुकावट।

सज्ञा पु० बदनवार। बदनमाला।

वारना-क्रि० स० निछावर करना। अंग करना। भेंट चढ़ाना।

सज्ञा पु० निछावर। अंगण। भेंट।

मुहा०—वारने जाना=निछावर होना।

वारनारी-सज्ञा स्त्री० रडी। वेश्या।

वारनिश-सज्ञा स्त्री० [ अग्र० ] लकड़ी आदि की बीजों पर पालित करने और उनके चमकाने के लिए लगाई जानेवाली तरल वस्तु या रोगन।

वार-वार-सज्ञा पु० १. आर-पार। एक किनारे से दूसरा किनारा। (नदी आदि के)

दोनों किनारों का पूरा विस्तार। २. अन्त। अन्त्य० इस किनारे से उस किनारे तक।

वारकर-सज्ञा पु० निछावर। बलि।

वारमूखी-सज्ञा स्त्री० वेश्या।

वारवधू-सज्ञा स्त्री० वेश्या।

वारस्त्री-सज्ञा स्त्री० वेश्या।

वारागना-सज्ञा स्त्री० १. वेश्या। २. विद्यागना।

वारनिधि-सज्ञा पु० समुद्र। सागर।

वार-सज्ञा पु० १. जो निछावर हुआ हो।

२. सर्व का वृत्त। किमानत। ३. लाभ।

वि० १. विक्रायत। २. सस्ता।

वाराणसी-सज्ञा स्त्री० बनारस। वरुणा और

अवी नदिया का संगम-स्थान होने के कारण वाराणसी नाम पड़ा।

बारा-न्यारा-सज्ञा पु० १. निबटारा। फैसला।  
 २. झगड़ या झगड़े का निबटारा।  
 बाराह-सज्ञा पु० दे० "बराह"।  
 बाराहो-सज्ञा स्त्री० १. आठ मातृकाओं में से एक। २. एक योगिनी।  
 बाराहोकिंद-सज्ञा पु० एक प्रकार का बड़ा कद, जो गेठी कहलाता है।  
 बारि-सज्ञा पु० पानी। जल।  
 बारिचर-सज्ञा पु० पानी में रहनेवाला जंतु।  
 बारिज-सज्ञा पु० १. कमल। २. मछली। ३. साँ। ४. घोड़ा। ५. कौड़ी। ६. खरा सोना।  
 बारित-वि० जो मना किया गया हो। निषिद्ध। निवारित।  
 बारिद-सज्ञा पु० मेघ। बादल।  
 बारिधर-सज्ञा पु० बादल। बारिद।  
 बारिधि-सज्ञा पु० समुद्र।  
 बारिनिधि-सज्ञा पु० समुद्र।  
 बारियाँ-सज्ञा स्त्री० निछावर। बलि।  
 बारिह-सज्ञा पु० कमल।  
 बारिबत\*-सज्ञा पु० मेघ। बादल।  
 बारिबाह-सज्ञा पु० बादल। मेघ।  
 बारिस-सज्ञा पु० [अ०] उत्तराधिकारी। किसी के मरने के पीछे उसकी संपत्ति आदि का स्वामी होनेवाला व्यक्ति।  
 बारोद-सज्ञा पु० समुद्र।  
 बारोट-सज्ञा पु० हथौड़ा।  
 बारो-फेरो-सज्ञा स्त्री० किसी प्रिय व्यक्ति पर कोई वस्तु निछावर करके देना। स्त्रियों का एक ढोंक। दे० "बारफेरो"।  
 बारोश-सज्ञा पु० समुद्र।  
 बारण-सज्ञा स्त्री० १. पवित्र। २. पर्वण की स्त्री। ३. उपनिषद्-विद्या। ४. पवित्र दिना। ५. एक पर्व, जिसमें गंगा-स्नान का विशेष माहात्म्य है।  
 बारु-सज्ञा पु० अग्नि। आग।  
 बारुद-सज्ञा पु० एक प्राचीन जनपद, जहाँ आजकल का राजगढ़ाही जिला है।  
 बाड-सज्ञा पु० [अ०] १. किसी उद्देश्य-विशेष से धरकर चलाया या निश्चित किया हुआ स्थान। २. अस्पताल के विशेष कमरे। ३. मुहल्ले का विभाग-विशेष।

बाडर-सज्ञा पु० [अ०] जेल के अंदर का पहरेदार।  
 वार्ता-सज्ञा स्त्री० १. कथोपकथन। बातचीत। सवाद। २. वृत्तांत। हाल। ३. विप्लव। मामला। ४. वैश्यवृत्ति।  
 वार्तालाप-सज्ञा पु० बात-चीत। कथोपकथन।  
 वार्तावह-सज्ञा पु० दूत। सवाद ले जानेवाला।  
 वार्तावहन-सज्ञा पु० सवाद (पत्र-व्यवहार आदि) ले आने और ले जाने का कार्य।  
 वार्तावहन-विभाग-सज्ञा पु० वह सरकारी विभाग, जो डाक, तार, टेलीफोन आदि की व्यवस्था करता है।  
 वार्तिक-सज्ञा पु० १. किसी ग्रंथ की आलोचनात्मक टीका। २. सूत्रों की टीका। ३. किसी ग्रंथ में कहे गए, न कहे गए या दो-बार बार कहे गए विषयों को स्पष्ट व्याख्या। ४. पाणिनि के व्याकरण का कात्यायन-द्वारा प्रसिद्ध भाष्य।  
 वाद्व्य-सज्ञा पु० १. बुढ़ापा। २. वृद्धि।  
 वाद्धि-सज्ञा पु० समुद्र।  
 वार्मच-सज्ञा पु० बादल।  
 वार्य-वि० वारण या निवारण करने योग्य।  
 वावट-सज्ञा पु० नौका।  
 वार्धिक-वि० वर्ष-संबंधी। प्रतिवर्ष होनेवाला। सालाना।  
 वाविला-सज्ञा स्त्री० धोला।  
 वाष्ण-सज्ञा पु० कुष्णचन्द्र।  
 वाष्ण्य-सज्ञा पु० कुष्णचंद्र।  
 वालंटियर-सज्ञा पु० [अ०] स्वयंसेवक।  
 वाला-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का उपजाति वृक्ष।  
 प्रत्य० [स्त्री० वाली] एक सवध-सूचक प्रत्यय। जैसे-मकानवाला।  
 वालिद-सज्ञा पु० [अ०] पिता। बाप।  
 वालिवा-सज्ञा स्त्री० [अ०] माता। माँ।  
 वालिय-सज्ञा पु० १. पुत्र। २. नदहर्।  
 वालक-वि० छाल या बत्तल का बना हुआ।  
 वाल्डन-सज्ञा पु० [अ० वाल्डन] माता-पिता।  
 वाल्मीकि-सज्ञा पु० एक भृगुवंशी मुनि, जो

रामायण के रचयिता धीर सस्कृत के आदि-  
कवि कहे जाते हैं ।

वाल्मीकीय-वि० १ वाल्मीकि-सबधी । २  
वाल्मीकि का बनाया हुआ ।

वायव्य-सज्ञा पु० खूब बोलनेवाला । विख्यात  
वक्ता ।

वावेल-सज्ञा पु० [ अ० ] १- विलाप । राना-  
पीटना । २ चोरगुल । हल्ला ।

वाशन-सज्ञा पु० १ पक्षिया का बोलना ।  
२ सखिया का भिनभिनाना ।

वि० चिल्लाववाला । रोनेवाला । भिन-  
भिनाववाला ।

वाशि-सज्ञा पु० अग्नि ।

वाशिष्ठ-सज्ञा पु० एक उपपुराण ।

वि० वाशिष्ठ-सबधी । वाशिष्ठ का ।

वाष्प-सज्ञा पु० ३ भाप । २ आँसू ।  
३ लोहा ।

वासत-वि० १ वसत का । वसत-सम्बन्धी ।  
२ वसत ऋतु में होनेवाला ।

वास्तक-वि० वसत-सम्बन्धी ।

वास्तिक-सज्ञा पु० १ भाँड़ । विदूषक ।  
२ नाचनवाला । नर्तकी ।

वि० वसत-सम्बन्धी ।

वास्तवी-सज्ञा स्त्री० १ माधवी-लता । २-  
जूही । ३ मदनीसक । ४ दुर्गा । ५ चौदह  
वर्ष का एक वृत्त ।

वास्त-सज्ञा पु० १ रहने का स्थान । निवास ।  
गृह । घर । मकान । २ सुगंध । बू ।

वास्त-सज्ञा पु० १ अद्वैता नामक एक  
पीढ़ा । २ महानवाली । मुग़ल-  
बाग़ ।

वास्तक-सज्ञा-सज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो  
नायक से मिलने को तयार । किए हुए घर  
आदि सजावर और स्वयं सज्जकर बंटी  
हो ।

वास्तैय-वि० रहने लायक । निवास करने  
योग्य । रहने या धरण देने योग्य ।

वास्तैयी-सज्ञा स्त्री० रात ।

वास्तन-सज्ञा पु० [ वि० वास्तित ] १ वस्त्र ।

२ वास । ३ सुगंधित सजा । ज्ञान ।

वास्तना-सज्ञा स्त्री० १ इच्छा । कामना ।

२ भोग-विलास की इच्छा । ३ प्रत्याशा ।  
४ भावना । बुद्धिजन्य संस्कार । ५ स्मृति-  
ज्ञान ।

वासर-सज्ञा पु० दिवस । दिन ।

वासरमणि-सज्ञा पु० सूर्य ।

वासव-सज्ञा पु० इन्द्र । देवताओं का  
राजा ।

वास्तवि-सज्ञा पु० इन्द्र के पुत्र अर्जुन ।

वास्तित-वि० १ सुगंधित किया हुआ । २  
कपड़ से ढका हुआ । ३ वासी ।

वासिल-वि० [ अ० ] १ पहुँचाया हुआ ।  
२ प्राप्त । मिला हुआ । ३ जो बसूल  
हुआ हो ।

यो०-वामिलबाकी = बसूल धार बाकी  
रकम ।

वासिष्ठ-वि० १ वासिष्ठ-सबधी । २ वासिष्ठ-  
द्वारा रचा हुआ (ऋग्वेद का सातवाँ  
मण्डल) ।

वासी-सज्ञा पु० रहनेवाला ।

वास्तु-सज्ञा पु० विष्णु । परमात्मा ।

वासुकी-सज्ञा पु० १ सर्पों के राजा का नाव ।

२ आठ नागा में से दूसरा नागराज । पुराणा  
के अनुसार देवताओं ने मंदिर-वपत में  
वासुकी को रस्सी की तरह बांधकर समुद्र-  
मंथन किया था ।

वासुदेव-सज्ञा पु० समुद्र के पुत्र श्रीकृष्ण ।

वासुरा-सज्ञा स्त्री० १ हजिरी । २ राशि ।  
३ स्त्री । ४ जमीन । भूमि ।

वास्तक-सज्ञा स्त्री० [ अ०-वास्तकोट ] बिना  
वाहने के बल कमर तक का एक ओम्बेजी  
पहुँचावा ।

वास्तव-वि० सच । यथार्थ । आग्री ।

वास्तविक-वि० मयमुक्त । मय । यथाथ ।

वास्तव्य-वि० रहने या बसने योग्य ।  
सजा पु० वस्ती । आवादी ।

वास्ता-सज्ञा पु० [ अ० ] १ नरोत्तम ।

गवय । उगाध । २ स्वा-मुक्त या अनुचित  
गन्ध ।

वास्तु-सज्ञा पु० १ निवास योग्य स्थान ।

२ वह स्थान, जिसे घर घर उठाना  
जाय । ३ घर । मकान । इमारत ।

वास्तुकर्म-सज्ञा पु० मकान आदि बनाने का काम । भवन-निर्माण-कार्य ।

वास्तुकला-सज्ञा स्त्री० इमारत आदि बनाने की कला या हुनर । भवन-निर्माण-कला । वास्तुविद्या ।

वास्तुकाष्ठ-सज्ञा पु० मकान, कुर्सी, अलमारि, मेज आदि बनाने के काम में आनेवाली लकड़ी ।

वास्तुदेव-सज्ञा पु० घर के देवता । गृहदेव ।

वास्तु-पूजा-सज्ञा स्त्री० गृहदेव की पूजा, जो नवौंश घर में गृह-प्रवेश के आरम्भ में की जाती है ।

वास्तु-विद्या-सज्ञा स्त्री० भवन-निर्माण-कला । वह विद्या, जिससे इमारत के सबध की सारी बातों का ज्ञान होता है । वास्तु-कला ।

वास्तुशास्त्र-सज्ञा पु० दे० "वास्तुविद्या" । वास्ते-अव्य० [ अ० ] लिए । निमित्त । कारण । हेतु ।

वाह-अव्य० [ फा० ] १ प्रयास या आश्चर्य-सूचक शब्द । २ आनन्द मग धृणामूचक शब्द ।

मत्ता पु० १. सवारी । बाहन । २. लाइवर के जानेवाला । डोनेवाला । ३. वायु । ४. घोड़ा । ५. भैंसा । ६. बेल ।

वाहक-सज्ञा पु० १. वास देने या खींचने-वाला । २. सारथी ।

वाहन-सज्ञा पु० नवारी ।

वाहना-वि० स० १. वहन करना । डोना । २. लाइना । ३. हाँकना (गाड़ी आदि) । ४. हथियार चलाना ।

वाहरिपु-सज्ञा पु० भैंसा ।

वाह-वाही-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] १. लोगो का प्रयास । स्तुति । २. सामुदाय ।

वाहि\* -सर्व० उन्न । उन्न ।

वाहित-वि० १. वहन किया हुआ । डाना हुआ । २. स्तुतिपा हुआ ।

वाहिनी-सज्ञा स्त्री० सेना । फौज । (प्राचीन समय में सेना का एक भेद, जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल होते थे ।)

वाहिनीपति-सज्ञा पु० सेनापति ।

वाहियात-वि० १. बँकार । रद्दी । व्यर्थ । २. बुरा । खराब ।

वाही-वि० [ अ० ] १. वहन करनेवाला । डोने या खींचनेवाला । २. ऊपर लेने-वाला । उठानेवाला ।

वाही-तवाही-वि० [ अ० ] १. वेहूदा । २. आवारा । ३. छड़वड । वे सिर-पर का । वाहियात ।

सज्ञा स्त्री० छड़वड बातें । गाली-नलीज । वाह्यातर-वि० भीतर और बाहर का ।

वाह्यद्विष-सज्ञा स्त्री० पाँचो ज्ञानेन्द्रियाँ, जिनका काम बाह्य विषयो को ग्रहण करना है । आँख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा ।

वाहीक-सज्ञा पु० १. गाधार के पास का एक प्रदेश । २. बाहलीक देश का घोड़ा ।

विमेश-सज्ञा पु० अग्नि ।

विजन्त-सज्ञा पु० दे० "व्यजन" ।

विजाली-सज्ञा स्त्री० श्रेणी ।

विद-सज्ञा पु० १. दे० "विदु" । २. दिन का एक विभाग । ३. लाभ ।

विदक\*-सज्ञा पु० १. प्राप्त करनेवाला । २. जाननेवाला । ज्ञाता ।

विदु-सज्ञा पु० १. बुद्ध । जलकण । २. बुद्धकी । विद्वी । ३. अनुस्वार । ४. शुन्य । ५. एक बुद्ध परिमाण । ६. देवा-नगित के अनुस्वार पर, जिसको स्थान निश्चय है, पर विभाग न हो सके । ७. बहुत छोटा टुकड़ा ।

वि० १. जाता । जानकार । २. जानने योग्य ।

विदुमाधव-सज्ञा पु० काशी की एक प्रतिष्ठा विष्णुमूर्ति का नाम ।

विदुर-सज्ञा पु० बुराई ।

विदुराजि-सज्ञा पु० एक तरह का नाग ।

विदुल-सज्ञा पु० एक जाति ।

विदुत्तार-सज्ञा पु० चन्द्रमा के एक पुत्र, जो सम्राट अशोक के पिता थे ।

विष\*-सज्ञा पु० विषय ।

विध्य-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी, जो भारत के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक फैली है ।

विध्यकूट-सज्ञा पु० १. विध्य पर्वत। २. अगस्त्य मुनि।

विध्यचूलक-सज्ञा पु० विन्ध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश।

विध्यवासिनी-सज्ञा स्त्री० देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति, जा मिर्जापुर जिले में विन्ध्याचल ताल में है।

विध्याचल-सज्ञा पु० विध्य पर्वत। मिर्जापुर जिले में इस नाम का तीर्थ।

विद्य-वि० बीसवीं।

विद्यत-वि० बाँस। [ समासान्त में ]

विद्यति-सज्ञा स्त्री० बीस की रक्खा।

विद्यतिवाहु-सज्ञा पु० रावण। बीस बाहुवाला।

विद्योत्तरो-सज्ञा स्त्री० फलित ज्योतिष में मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति।

वि-उप० एक उपसर्ग, जो शब्द के पहले लगकर विशेष प्रकार के अव देता है—अनकल्पता जैसे—विविध। प्रतिकूल भाव, जैसे—विनय, विपक्ष। विशेष अव, जैसे—विकराल।

विकपन-सज्ञा पु० द० कापना।

विकपित-वि० द० कपित।

विकच-वि० १ खिला हुआ। विपक्षित।

२ बिना वस्त्र या आभूषण का।

सज्ञा पु० वस्त्रों का समूह या लट।

विकट-वि० १ भयंकर। विनराल। भीषण।

२ कठिन। मुश्किल। दुस्ताध्य। दुर्गम।

विकर-सज्ञा पु० १ रोग। व्याधि। २ तन्त्रकार के ३२ हाथों में से एक।

विकराल-वि० भयंकर। भीषण। डरावना।

विकसन-सज्ञा पु० १ सूख। २ मरना।

विकम-सज्ञा पु० बुरा काम। मना किया हुआ कार्य। अपाय का विकट।

वि० कमभण्ड। खाने केतव्य से च्युत।

विकम-सज्ञा पु० तीर। वाण।

विकपण-सज्ञा पु० १ आवरण। सिक्का।

२ हिस्सा। विभाग। ३ न रहने देना। रद्द करना। ४ दूर करना जैसे—रीति, प्रथा या पद्धति का विपण। ५ विपान आदि का अन्त करना। ६ प्राचीन काल का एक

शास्त्र, जिसमें मिनी का बपनी जार अंकित करने की विद्या का वर्णन है।

विकल-वि० १. वर्धन। विह्वल। व्याकुल।

२ कलाहीन। ३ सङ्घित। अपूर्ण। ४

अस्वाभाविक। ५. असमय।

विकलाग-वि० जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो। अंगहीन।

विकला-सज्ञा स्त्री० १ समय का एक बहुत छोटा भाग। २ कला का साठवाँ भाग।

विकलाना\*—क्रि० अ० व्याकुल होना। पवनाना। वर्धन होना।

विकलास-सज्ञा पु० एक प्राचीन राजा।

विकलित-वि० वर्धन। दुखी। दे० विकल।

विकलेंद्रिय-वि० १ जिसका इन्द्रिय बल में न हो। २ जिसकी कोई इन्द्रिय खराब हो।

विकल्प-सज्ञा पु० १ भ्रम। धोखा। २ एक

वात मन में बँटाकर फिर उसका विपक्ष साथ

विचार। विपरीत कल्पना। सकल्प या बुद्ध-

निश्चय का उल्टा। ३ विषय रूप से कल्पना।

बहु अवस्था, जिसमें कई विपक्ष या बातों में किसी एक को चयन का अधिकार रहता है। ४ किसी विषय में कई प्रकार का

विधियों का मिलना। ५ योगशास्त्रानुसार

पाँच विषयों में एक। ६ अवातन

कल्प। ७ एक काव्यालंकार, जिसमें दो

विपक्ष बातों को लेकर कहा जाता है कि

या तो यही होगा या वही। ८ समाधि का

एक भेद। ९ व्याकरण में एक ही विषय

के कई नियमों में से किसी एक को इच्छा

बुझाने का साधन।

विकल्पित-वि० १ सदिग्ध। २ अनियमित।

विकल्प-वि० पापरहित।

विकसन-सज्ञा पु० [ वि० विकसित ] खिलना।

फूलना।

विकसना-क्रि० अ० १ विकसित होना।

खिलना (किसी आदि का) प्रकट होना।

२ मन प्रसन्न होना। प्रकटित होना।

विकसाना-क्रि० अ० विकसना का सक्रमक

रूप।

विकसित-वि० खिलना हुआ। जिसका विकस

हुआ हो।

विकस्वर—मज्ञा पु० एक काव्यालंकार, जिसमें पहले कोई विशेष बात कहकर उसकी पुष्टि साधारण बात से की जाती है।

विकार—सज्ञा पु० १ किसी वस्तु का रूप, रंग आदि बदल जाना। बिगड़ना। खराबी। २. दोष। अवगुण। ३ मनोवेग या प्रवृत्ति। ४ मनोविकार। वाचना। ५ उपद्रव। ६ किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। ७ परिणाम। ८. निरुक्त के प्रधान चार नियमों में से एक।

विकारो—वि० १ जिसमें विकार (दोष या खराबी) हुआ हो। विकारयुक्त। जिसमें कोई हेर-हेर हुआ हो। २ क्रोध आदि मनोविकारों से युक्त।

विकाल—सज्ञा पु० १ अतिकाल। २ समय-काल।

विकाश—सज्ञा पु० १ प्रकाश। रोशनी। २ प्रसार। फैलाव। ३ आकाश। ४. खिलना। प्रस्फुटित होना। ५. उत्तरोत्तर वृद्धि। दे० "विकास"।

विकास—सज्ञा पु० १ प्रसार। फैलाव। २ खिलना। प्रस्फुटित होना। ३ किसी पदार्थ का उत्तरोत्तर बढ़ना। क्रमशः उन्नत होना। विज्ञान में वह प्रक्रिया, जिसके अनुसार कोई वस्तु अपनी प्रारम्भिक अवस्था से धीरे-धीरे बढ़ती हुई उन्नत और पूर्ण अवस्था को प्राप्त होती है। विकासवाद। (अर्थ—इवा-नूशन।)

विकासना\*—क्रि० स० विकसित करना। प्रवृत्त करना।

क्रि० अ० खिलना। प्रकट होना। दे० "विकसना"।

विकासवाद—मज्ञा पु० एक प्रसिद्ध पारश्चात्य सिद्धान्त, जिसमें यह माना जाता है कि समस्त सृष्टि, जीव-जन्तु तथा वनस्पतियाँ आदि एक ही मूल तत्त्व से निकले और विकसित हुए हैं।

विकिर—मज्ञा पु० १. चिड़िया। २ कृजो।

विकिरण—सज्ञा पु० बहुत-सी किरणों का एक केंद्र में इकट्ठा किया जाना या होना, जहाँ जातना चाहे से।

विकीर्ण—वि० १. चारों ओर फैला या बिखरा हुआ। छितराया हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर। सज्ञा पु० स्वर के उच्चारण का एक दोष।

विकुठ—वि० जो कुठित न हो।

\*सज्ञा पु० दे० "बकुठ"।

विकृणिका—सज्ञा स्त्री० नासिका।

विकृत—वि० १. जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। बिगड़ा हुआ। २. जो बढ़ा या कुरुप हो गया हो। ३. अपूर्ण या अव्यय। असाधारण। ४. अस्वाभाविक। ५. विद्रोही। रोगी।

विकृतचित्त—वि० मानसिक विकार या मद्य आदि के कारण जिसका चित्त ठिकाने न हो।

विकृतस्वर—सज्ञा पु० अपने नियत स्थान से हटकर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरने वाले स्वर, जो सध्या में १२ हैं (संगीत-शास्त्र)।

विकृति—मज्ञा स्त्री० १ विकार। खराबी। बिगड़ा हुआ रूप। २ रोग। बीमारी। ३ साध्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप, जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। ४ परिणाम। ५ परिवर्तन। ६. मन में होनेवाला क्षोभ। ७ मूल धातु से बिगड़कर बना हुआ शब्द का रूप।

विकृष्ट—वि० खींचा हुआ। आकुष्ट।

विकेश—पि० १. जिसके बाल खुले हों। २. गिना वाला का। गजा।

विक्रम—सज्ञा पु० १ बहादुरी। पराक्रम। २. बल। ताकत। ३ गति। ४. दे० "विक्रमादित्य"। ५ साठ सवत्सरा में से चौदहवाँ। ६. विष्णु।

वि० श्रेष्ठ। उत्तम।

विक्रमण—मज्ञा पु० चलना। बढ़ना। रटना। विक्रमाजित—सज्ञा पु० दे० "विक्रमादित्य"। विक्रमादित्य—मज्ञा पु० उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा। विक्रमी सवत् इन्हीं का चलाया हुआ माना जाता है।

विक्रमाब्द—मज्ञा पु० विक्रमादित्य का चलाया हुआ सवत्। विक्रम सवत्।

विभक्त-सज्ञा पु० दे० "विभक्तित्व"।

विभक्ती-सज्ञा पु० १ पराप्रभो। प्रतापी।

२ धातुगाली। बलवान्। बली। ३. विष्णु। ४. सेर।

वि० विभक्त वा। विभक्त-सम्बन्धो।

विभक्ती संज्ञा-सज्ञा पु० भारत में प्रचलित एक प्रसिद्ध संज्ञा, जिसे उज्जयिनी के राजा विभक्तित्व ने चलाया था। ईसवी सन् से ५७ वर्ष पूर्व यह चलाया गया था।

विभक्त-सज्ञा पु० बेचना। विक्री। मूल्य लेकर कोई पदार्थ देना।

विभक्त-सज्ञा पु० बेचनेवाला।

विभक्तकर-सज्ञा पु० दे० "विभक्तकर"।

विभक्त-सज्ञा पु० बेचने की क्रिया।

विभक्तपत्र-सज्ञा पु० वह कागज, जिस पर विभक्त-सम्बन्धी बातें लिखी गई हों। बेनामा।

विभक्तिक-सज्ञा पु० दे० "विभक्ती"।

विभक्तिका-सज्ञा स्त्री० वह रखीद, जो खरीदनेवाले को बेचनेवाला देता है। नकद। विक्री वा पुरजा (अग्ने-कर्ममेव)।

विभक्त-सज्ञा पु० १ नूर। वीर। बहादुर। २ सेजस्वी। प्रतापी। ३ साहस। हिम्मत। ४. व्याकरण में एक प्रकार की संधि, जिसमें विसर्ग ज्वा का स्वी रहता है। ५ अकाल मणि।

विभक्त-सज्ञा पु० बेचनेवाला। विक्रेता।

विभक्त-सज्ञा स्त्री० विक्री। किसी क्रिया के विरुद्ध होनेवाली क्रिया।

विभक्तोपमा-सज्ञा स्त्री० एक उपमालकार, जिसमें किसी विविष्ट क्रिया या उपाय के अवलंबन का वर्णन होता है।

विभक्त-वि० जो बेच दिया गया हो।

विभक्त-सज्ञा पु० निष्ठुर। कठोर। निर्दय।

विभक्त-सज्ञा पु० बेचनेवाला। विक्री।

विभक्त-वि० बेची जानेवाली वस्तु। विक्री।

विभक्त-वि० विह्वल। बेचन।

विभक्त-वि० धायल। जल्मी।

विभक्त-वि० १ फँस या छितराया हुआ।

२. जिसका दिमाग ठिपाने न हो। पागल।

३. व्याकुल। विह्वल।

सज्ञा पु० योग में चित्त को एक अवस्था, जिसमें चित्त कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहता है।

विभक्त-सज्ञा स्त्री० पागलपन।

विभक्त-वि० जिसका मन चंचल या परेशान हो। धुंध। जिसमें धान उत्पन्न हुआ हो।

विभक्त-सज्ञा पु० १ फँसना। डालना। २.

इधर-उधर हिलाना। झटका देना। ३.

(धनुष की डोरी) खींचना। चित्ला चढाना।

४ मन को इधर-उधर भटकाना। तयन

वा उलटाना। ५. बाधा। विघ्न। ६ एक

प्रकार का अस्थ, जो फँसकर चलाया

जाता था।

विभक्त-सज्ञा पु० १. इधर-उधर फँसना वा

कार्य। २. विघ्न। बाधा।

विभक्त-सज्ञा पु० मन की चंचलता या

उद्विग्नता। क्षोभ।

विभक्त-सज्ञा पु० विषाण। सींग।

विभक्त-वि० प्रसिद्ध। मशहूर।

विभक्त-सज्ञा स्त्री० प्रसिद्धि। शोहरत।

नामवरी।

विभक्त-सज्ञा पु० प्रसिद्ध करना। मशहूर

करना।

विभक्त-वि० १. बदबूदार। २. गंधरहित।

विगत-वि० १. बोता हुआ। जो बीत चुका

हो। विशेष रूप से गत। जो अभी तुरन्त

बोता है, उसके ठीक पहलेवाला, जैसे-विगत

रविबार यानी बीते हुए रविबार से पहले-

वाला रविबार। २. रहित। विहीन।

विगत-वि० १. पर पुरुष से प्रेम करनेवाली

स्त्री०। २. बहु स्त्री, जो विवाह के योग्य

न रह गई हो।

विगति-सज्ञा स्त्री० बुरी दशा। दुर्गति।

विगम-सज्ञा पु० १. प्रस्थान। २. समाप्ति।

नाश। ३. मोक्ष।

विगहण-सज्ञा पु० उट-फटकार। ध्वकार।

भर्त्सना। तिरस्कार।

विगहणा-सज्ञा स्त्री० ध्वकार। भर्त्सना।

निन्दा। तिरस्कार। उट-फटकार।

विग्रहित-वि० १. बुरा। खराब। २. जिसकी भर्त्सना या निन्दा की गई हो। निषिद्ध। त्याज्य।

विग्रही-वि० निन्दा करने योग्य।

विगलित-वि० १. जो गल या गिर गया हो। २. ढीला पड़ा हुआ। शिथिल। ३. विगड़ा हुआ।

विगाथा-सज्ञा स्त्री० आर्या छंद का एक भेद। विगाथा। उद्गीति।

विगुण-वि० बिना गुण का। निर्गुण।

विग्रह-सज्ञा पु० १ विरोध। कलह। लड़ाई-झगडा। २. युद्ध। समर। ३. विपक्षियों में फूट या कलह उत्पन्न करना। ४. आकृति। फल। ५. शरीर। ६. मूर्ति। ७. दूर या अलग करना। ८ विभाग। ९. योगिक शब्दों अथवा समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना (व्याकरण)। १० शिव। ११ मूर्ति। १२ शृंगार। सजावट। १३ साध्य के अनुसार कोई तत्त्व।

विग्रही-सज्ञा पु० १ लड़ाई झगडा करने वाला। २ युद्ध करने वाला।

विघटन-सज्ञा पु० १ अलग-अलग करना। तोड़ना। २ समाप्त करना (जैसे किसी सस्या या रात्र का विघटन) ३ नष्ट करना। तोड़ना-फोड़ना।

विघटिका-सज्ञा स्त्री० समय का एक छोटा सान। घड़ी का २३वां भाग।

विघटित-वि० जो तोड़ दिया गया हो। तोड़ा-फोड़ा हुआ। नष्ट।

विघट्टन-सज्ञा पु० १. तोड़ना। २. पटकना। ३. रगड़ना।

विघट्टित-वि० १ खुला हुआ। २. तोड़ा फोड़ा हुआ। ३. समाप्त किया गया। ४ नष्ट किया हुआ।

विघन-सज्ञा पु० १. हथौडा। घन। २. चोट पहुँचाना। ३. इन्द्र। ४. दे० "विघ्न"।

विघर्षण-सज्ञा पु० अच्छी तरह रगड़ने की क्रिया।

विघात-सज्ञा पु० १. चोट। प्रहार। २.

हत्या। नाश। ३. बाधा। रूकावट। ४. असफलता।

विघातक-सज्ञा पु० विघ्न या बाधा डालने वाला। हत्या करने वाला।

विघातन-सज्ञा पु० विघात करने की क्रिया। हत्या करना।

विघाती-सज्ञा पु० हत्यारा। घातक।

विघर्षिका-सज्ञा स्त्री० नाक। नासिका।

विघर्षण-सज्ञा पु० चक्कर देना। चारों ओर घुमाना।

विघ्न-सज्ञा पु० अड़चन। बाधा। रूकावट।

विघ्नकारी-सज्ञा पु० विघ्न या बाधा डालने वाला।

विघ्नजित्-सज्ञा पु० १ गणेश। २. बाधाभा पर विजय पाने वाला।

विघ्नविनाशक-सज्ञा पु० १. गणेश। २ विघ्नों को दूर या नाश करने वाला।

विघ्नविनायक-सज्ञा पु० गणेश।

विघ्नेश-सज्ञा पु० गणेश।

वित्तकित-वि० घबराया हुआ।

वित्तक्षण-वि० १ चमकता हुआ। २. निपुण। पारदर्शी। ३ पंडित। विद्वान्। ४. बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान।

वित्तच्छन-सज्ञा पु० दे० "वित्तक्षण"।

विचय-सज्ञा पु० १ एकत्र या इकट्ठा करना। २ परीक्षा करना। ३. चुनना।

विचयन-सज्ञा पु० १ इकट्ठा करना। २ परीक्षा करना। ३. चुनना।

विचरण-सज्ञा पु० घूमना-फिरना। भ्रमण करना। पय्यटन करना।

विचरन\*-सज्ञा पु० दे० "विचरण"।

विचरना-क्रि० अ० घूमना-फिरना। भ्रमण करना।

विचल-वि० १. जो स्थिर न हो। अस्थिर। २. चंचल। अधीर। ३ प्रतिज्ञा या सकल्प से टूटा हुआ। स्थान से हटा हुआ।

विचलता-सज्ञा स्त्री० १. चंचलता। २. घबराहट। अस्थिरता।

विचलना\*†-क्रि० अ० १ अपने स्थान से हट जाना। २. अधीर होना। घबराना। ३. प्रतिज्ञा या सकल्प पर दृढ़ न रहना।

विचलाना\*—**वि०** स० विचलित करना।  
विचलित—**वि०** १. अस्थिर। घबल। धुंध्य।

२. प्रतिज्ञा या संकल्प से हटा हुआ।

विचार—**सज्ञा** पु० १. वह ज्ञा मन में सोचा जाय अथवा साचकर निश्चित किया जाय।  
२. मन में उठनेवाली कोई बात। भावना।  
सवाल। इरादा। ३. मुसदमें की सुनवाई और फँसला।

विचारक—**सज्ञा** पु० [ स्त्री० विचारिका ]  
१. विचार करनेवाला। २. फँसला करनेवाला। न्यायकर्त्ता। न्यायाधीश। ३. नेता।  
४. गुप्तचर।

—विचारकर्त्ता—**सज्ञा** पु० विचार करनेवाला।  
निर्णय करनेवाला। दे० “विचारक”।

विचारणा—**सज्ञा** स्त्री० विचार करने की क्रिया या भाव।

विचारणीय—**वि०** १. विचार करने योग्य।  
चित्य। जिस पर कुछ विचार करने की आवश्यकता हो। २. जिसे प्रमाणित करने की आवश्यकता हो। ३. सदिग्ध।

विचारना—**क्रि०** अ० १. विचार करना।  
सोचना। समझना। २. पूछना। ३. दूढ़ना।  
पता लगाना।

विचारपति—**सज्ञा** पु० न्यायाधीश। विचारक।  
विचारवान्—**सज्ञा** पु० दे० “विचारशील”।  
अच्छी तरह से सोचने-समझनेवाला।  
बुद्धिमान्।

विचारशक्ति—**सज्ञा** स्त्री० सोचने या भला-बुरा पहचानने की शक्ति।

विचारशील—**सज्ञा** पु० जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो। विचारवान्।

विचारशीलता—**सज्ञा** स्त्री० बुद्धिमत्ता। भली भाँति सोचना-समझना।

विचारालय—**सज्ञा** पु० न्यायालय। कचहरी।  
अदालत।

विचारित—**वि०** १. विचार किया हुआ। २.  
जिस पर विचार हो चुका हो। निर्णय  
किया हुआ। निर्णित।

विचारो—**सज्ञा** पु० १. विचार करनेवाला।  
२. छुनछास माननेवाला।

विचार्य—**वि०** दे० “विचारणीय”।

विचालन—**सज्ञा** पु० १. हटाना। २. नष्ट करना।

विचितन—**सज्ञा** पु० चिन्ता करना।

विचितनीय—**वि०** चिन्ता करने या नीचने योग्य।

विचित्य—**वि०** १. चिन्तन करने योग्य।  
२. सदिग्ध।

विचिकित्सा—**सज्ञा** स्त्री० सदेह। शक। किसी विषय में कुछ निश्चय करने के पहले उत्पन्न सदेह।

विचित—**वि०** जिसका अन्वेषण किया जाय।  
विचिति—**सज्ञा** स्त्री० १. सोचना। विचारना।

२. अनुसन्धान।

विचित—**वि०** १. बेहोश। अचेत। २. जिसका चित ठिकाने न हो।

विचित्र—**वि०** १. अद्भुत। विलक्षण। अजीब।  
२. कई रंगों या वर्णोंवाला। ३. विस्मित या चकित करनेवाला।

सज्ञा पु० साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उल्टा प्रयत्न करने का उल्लेख हो।

विचित्रता—**सज्ञा** स्त्री० १. विलक्षण या अजीब होने का भाव। २. रंग-विरंग होने का भाव।

विचित्रवेह—**सज्ञा** पु० १. रंग हुआ शरीर।  
२. विचित्र ढंग से सजाया हुआ शरीर।  
३. बादल।

विचित्रबोम्बे—**सज्ञा** पु० चंद्रवशी राजा शातनु के पुत्र का नाम।

विचेतन—**वि०** बेहोश। अचेत। सज्ञाहीन।  
विचेता—**सज्ञा** पु० १. धबराया हुआ।

२. बेहोश। ३. मूर्ख।

विचेष्ट—**वि०** १. चेष्टारहित। प्रयत्न न करनेवाला। निश्चेष्ट। २. इच्छा-रहित। निस्पृह।

विचेष्टा—**सज्ञा** स्त्री० बुरी चेष्टा करना।  
विच्छेदक—**सज्ञा** पु० १. देवमंदिर। २. प्रासाद। महल।

विच्छल—**सज्ञा** पु० बँत को लता।

विच्छाद्य—**वि०** जिसकी छाया न पड़ती हो।  
श्रीहीन।

विच्छिन्ति-सज्ञा स्त्री० १. विच्छेद। अलगाय।  
२. काटकर अलग करना। ३. कमी। नुटि।  
४. वेढगापन। ५. रंग आदि में धरीर को  
चित्रित करना। ६. कविता में यति।  
७ साहित्य में एक हाव, जिसमें स्त्री बोडे  
शू शर से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा  
करती है।

विच्छिन्न-वि० १ जो काट या छेदकर अलग  
कर दिया गया हो। विभक्त। २ जुदा।  
अलग। छिन्न-भिन्न। जिसका विच्छेद हो  
गया हो। जिसका अन्त हो गया हो।  
३ कुटिल।

सज्ञा पु० योग में चारो वलेशो की वह  
अवस्था, जिसमें बीच में उनका विच्छेद  
हो जाता है।

विच्छेद-सज्ञा पु० [वि० विच्छेदक] १  
विभोग। विरह। काट या छेदकर अलग  
करने की क्रिया। २ कम का बीच से टूट  
जाना। ३ टुकड़े-टुकड़े करना। ४ नाश।  
५ अवकाश। ६. कविता में यति। ७  
पुस्तक का परिच्छेद।

विच्छेदन-सज्ञा पु० १ काट या छेदकर  
अलग करना। २ नष्ट करना।

विच्युत-वि० अपने स्थान से गिरा हुआ।  
च्युत।

विच्युति-सज्ञा स्त्री० १ गिर पडना।  
च्युत होना। २ गर्भपात।

विछलना\*†-क्रि० अ० दे० "फिसलना"।

विछेद\*-सज्ञा पु० दे० "विच्छेद"।

विछोई\*†-सज्ञा पु० दे० "वियोग"।

विछोह\*†-सज्ञा पु० १. वियोग। अपने  
प्रिय जनों से अलग होना। २. अलग होने  
का मोह।

विजल-वि० एकांत। निर्जन। ऐसा स्थान,  
जहाँ कोई आदमी न हो। एशान्त स्थान।  
विजलता-सज्ञा स्त्री० एकान्त होने का भाव।  
निर्जनता।

विजलन-सज्ञा पु० जनना। प्रसव। बच्चा  
पंदा करना।

विजना\*†-सज्ञा पु० पखा।

विजन्मा-सज्ञा पु० दोगला। जारज।

विजय-सज्ञा स्त्री० जीत। जय। फतह।  
युद्ध या विवाद आदि में होनेवाली जीत।

विजयक-सज्ञा पु० सदा जीतनेवाला।

विजयदशमी-सज्ञा स्त्री० दे० "विजया  
दशमी"।

विजयपताका-सज्ञा स्त्री० जीत के समय  
फहराया जानेवाला झंडा या ध्वजा।

विजय-यात्रा-सज्ञा स्त्री० किसी पर विजय  
प्राप्त करने के उद्देश्य से की जानेवाली  
यात्रा।

विजयलक्ष्मी, विजयश्री-सज्ञा स्त्री० विजय  
की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय  
निर्भर मानी जाती है।

विजयशोल-वि० सदा जीतनेवाला।

विजया-सज्ञा स्त्री० १. भाँग। सिद्धि। २.  
दुर्गा। ३. श्रीकृष्ण की माला का नाम।

४. दस मात्राओं का एक मात्रिक छंद।

५ आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त।

६ दे० "विजयादशमी"। बशहरा।

विजयादशमी-सज्ञा स्त्री० दशहरा। आश्विन  
मास के शुक्ल पक्ष की दशमी, जिस दिन राम  
ने रावण को मारकर लका पर विजय प्राप्त  
की थी और जो हिंदुओं का बहुत बड़ा  
त्योहार है।

विजयी-सज्ञा पु० [स्त्री० विजयिनी] विजय  
प्राप्त करनेवाला। जीतनेवाला। विजेता।

विजयीत्तव-सज्ञा पु० १ विजयी दशमी का  
उत्सव। २ वह उत्सव, जो विजय प्राप्त  
करने पर होता है।

विजर-वि० जिसे बुझाना आता हो। नवीन।

विजल-वि० बिना जल का। जलरहित।

सज्ञा पु० सूखा। अनावृष्टि।

विजल्प-सज्ञा पु० ध्वय की बकवाद।

विजोग\*-सज्ञा पु० दे० "वियोग"।

विजात-सज्ञा पु० दोगला। दूसरे से उत्पन्न।

विजाता-सज्ञा स्त्री० १ दोगली मन्तान।

२ नवजात शिशु की माता। जच्चा।

विजाति-वि० दूसरा या निम्न जाति।

विजातीय-वि० दूसरी जाति का।

विजान्-सज्ञा पु० तलवार चलाने के ३२  
हाथों में से एक हाथ।

विशारत-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] वजीर का पद। मन्त्रिव।

विजिगीषा-सज्ञा स्त्री० १. विजय की अभिलाषा। जीतने की इच्छा। २. वह इच्छा, जिससे मनुष्य यह चाहता है कि उसे कोई पेट पालने में असमर्थ न कहे। ३. उत्कर्ष।

विजिगीषु-वि० १. विजय की इच्छा करनेवाला। उत्साही। २. योद्धा। प्रतिद्वन्द्वी।

विजिगिष्य कार्ड-सज्ञा पु० [ अग्रे० ] सज्ञापत्र। एक छोटा कार्ड, जिस पर लोग अपना नाम और पता छपा लेते हैं और किसी विशिष्ट व्यक्ति से मेल करने के लिए जब वे जाते हैं, तब अपने जाने की सूचना के रूप में उसे उसके पास भेज देते हैं।

विजित-सज्ञा पु० १. जो जीत लिया गया हो। २. जीता हुआ (देश)।

विजु भग-सज्ञा पु० १. जैभाई लेना। २. घनुष की डोरी खींचना। ३. (नीं) सिकोड़ना।

विजु भा-सज्ञा स्त्री० जैभाई।

विजिता-सज्ञा पु० जीतनेवाला। जिसने विजय पाई हो।

विज्येय-वि० जीता जाने योग्य।

विज्ये\*<sup>१</sup>-सज्ञा स्त्री० दे० 'विजय'।

विज्यसार-सज्ञा पु० साल की तरह का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। विजयसार।

विजोर-वि० कमजोर।

विजोहा-सज्ञा पु० एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में दो रंग होते हैं। विमोहा। विजोहा।

विजयव-सज्ञा पु० एक तरह का वाण।

विजु, विजुलता\*-सज्ञा स्त्री० दे० "विजु"। विजली।

विजुल-सज्ञा पु० १. डालचीनी। २. छिलका।

विजोहा-सज्ञा पु० दे० 'विजोहा'।

विजु-वि० [ सज्ञा विजिता ] १. जानकारी।

२. बुद्धिमान। ३. विद्वान्। पंडित।

विजता-सज्ञा स्त्री० १. जानकारी। २. बुद्धिमत्ता। ३. बुद्धिमान। चतुराई।

विजत्व-सज्ञा पु० दे० "विजता"।

विज्यत-वि० यतलाया हुआ। सूचित।

विज्यति-सज्ञा स्त्री० सूचित करने की क्रिया।

प्रकाशित सूचना। किसी कार्यालय या विभाग की प्रकाशित सूचना। विज्ञापन दस्तहार।

विज्ञात-वि० १. जाना हुआ। २. प्रसिद्ध विज्ञातव्य-वि० जानने योग्य।

विज्ञाता-सज्ञा पु० १. जाननेवाला। २. विज्ञान जाननेवाला। ३. आत्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी।

विज्ञान-सज्ञा पु० १. विशेष ज्ञान। किसी विषय के सिद्धान्त का विशेष रूप से ज्ञान। किसी विषय का शास्त्रीय ज्ञान। शास्त्र। २. भाषा या अविद्या नाम की वृत्ति। ३. ब्रह्म। ४. आत्मा। ५. निश्चयात्मिक। बुद्धि। ६. मोक्ष।

विज्ञानमय कोष-सज्ञा पु० ज्ञानेंद्रिया और बुद्धि का समूह (वेदात)।

विज्ञानवाद-सज्ञा पु० १. ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित करनेवाला सिद्धान्त। २. आधुनिक विज्ञान की बातों को प्रतिपादित करनेवाला सिद्धान्त।

विज्ञानवादी-सज्ञा पु० १. आधुनिक विज्ञान-शास्त्र का पक्षपाती। २. योग का अनुसरण करनेवाला। योगी।

विज्ञानी-सज्ञा पु० १. बहुत बड़ा ज्ञानी। पंडित। चतुर। किसी विषय का अण्डा ज्ञान रखनेवाला। २. वैज्ञानिक।

विज्ञापक-सज्ञा पु० विज्ञापन करनेवाला। सूचना प्रकाशित करनेवाला।

विज्ञापन-सज्ञा पु० [ वि० विज्ञापक, विज्ञापनीय ] १. जानकारी कराना। सूचना देना। २. वह पत्र, जिसके द्वारा लोगों को कोई सूचना दी जाय। दस्तहार।

विज्ञापना-सज्ञा स्त्री० जतलाना। सूचना देना। दे० 'विज्ञापन'।

विज्ञापनीय-सज्ञा पु० विज्ञापन करने योग्य। सूचित करने योग्य।

विज्ञाप्यो-वि० सूचना देनेवाला।

विज्ञेय-वि० समझने योग्य।

विज्यर-वि० १. जिसका ज्वर या दूधार छूट गया हो। २. निश्चित। बकिक।

विदक-वि १. सुदर।

विट-सज्ञा पु० १ कामुक। लपट। २ वेश्या-  
गामी। ३ धूर्त। चालाक। ४ साहित्य में  
धूर्त और स्वार्थी नायक। ५ विष्ठा। मल।  
विटप-सज्ञा पु० १ वृक्ष। पेड़। २ वृक्ष की  
शाखा।

विटपी-सज्ञा पु० जिसमें नई शाखाएँ निकली  
हैं। पेड़।

विटपीमृग-सज्ञा पु० वन्दर।

विट-लवण-सज्ञा पु० साँवर नामक।

विटठल-सज्ञा पु० दक्षिण भारत में विष्णु  
की एक मूर्ति का नाम।

विडवना-सज्ञा स्त्री० [ वि० विडवनीय, विड-  
वित ] १ किसी को चिढ़ाने या बनाने के  
लिए उसकी नकल उतारना। २ हँसी  
उड़ाना। उपहास करना।

विडरना\*†-क्रि० अ० १ तितर-वितर होना।  
२ भागना। दौड़ना।

विडराना\*†-क्रि० स० दे० "विडारना"।

विडारक-सज्ञा पु० विल्ली।

विडारना-क्रि० स० १ तितर वितर करना।  
छितराना। २ नष्ट करना। ३ भागना।  
दौड़ाना।

विडाल-सज्ञा पु० विल्ली।

विडालक-सज्ञा पु० विल्ली।

विडाली-सज्ञा स्त्री० विल्ली।

विडीजा-सज्ञा पु० इद्र का एक नाम।

वितडा-सज्ञा स्त्री १ व्यर्थ का झगडा या  
कहा-मुर्ती। २ शास्त्रार्थ में दूसरे के पक्ष  
को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना।

वितत\*-सज्ञा पु० वह वाजा, जिसमें तार न  
रुने हों।

वितस-सज्ञा पु० छोटे जानवरों और चिड़िया  
को फँसाने का जाल।

वित\*-वि० १. जानने लगा। ज्ञाता। २  
चतुर। निपुण।

वित्त-वि० विस्तृत। फैला हुआ।

वितताना\*†-क्रि० अ० व्याकुल होना। बेचैन  
होना।

वितति-सज्ञा स्त्री० फैलाव। विस्तार।

वितय-वि० १ झूठ। जिसमें कोई तथ्य  
न हो। २ व्यर्थ।

वितय्य-वि० मिथ्या। झूठ।

वितद्-सज्ञा पु० झेलम नदी।

वितनु-सज्ञा पु० कामदेव।

वि० बहुत सूक्ष्म। बहुत छोटा।

वितपत्र\*-सज्ञा पु० किसी काम में कुशल।  
दक्ष। प्रवीण।

वि० घबराया हुआ। व्याकुल।

वितरक-सज्ञा पु० बाँटनेवाला।

वितरण-सज्ञा पु० बाँटना। देना।

वितरन\*-सज्ञा पु० दे० "वितरण"।

वितरना\*-क्रि० स० बाँटना।

वितरित-वि० बाँटा हुआ।

वितर्क-सज्ञा पु० १ एक तर्क के बाद दूसरा  
तर्क। २ सदेह। शक। अनुमान। ३ एक  
अर्थालंकार, जिसमें सदेह या वितर्क का  
उल्लेख होता है।

वितर्क्य-वि० १ जिसमें सदेह न हो। २  
देखने में विरक्षण।

वितर्हि, वितर्हिका-सज्ञा स्त्री० वेदी।  
मंच।

विनल-सज्ञा पु० पुराणानुसार सात पातालों  
में से तीसरा पाताल।

वितस्ता-सज्ञा स्त्री० झेलम नदी।

वितस्ति-सज्ञा पु० घालिश। वित्ता।

विताडन-सज्ञा पु० दे० "ताडना"।

वितान-सज्ञा पु० १ विस्तार। फैलाव।

२ तबू। बड़ा बँदोबा या खेमा। ३ समूह।

सप। जमाव। ४ अवसर। अवकाश। ५

पूणा। ६ घाव पर बाँधने का एक बंधन।

७ शून्य। खाली स्थान। ८ एक प्रकार

का छद। एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में

सगण, भगण और दो गुरु होते हैं। ९ यत्न।

वितानक-सज्ञा पु० १ खमा। तबू। २  
समूह। ३ घन।

वितानना\*†-क्रि० स० १ तानना। फैलाना।

२ सामान आदि तानना।

वितामस-सज्ञा पु० उजाला।

वितोत\*†-वि० दे० "व्यतीत"।

वितुड-सज्ञा पु० हाथी।

वितुव-सज्ञा पु० एक भूतयोनि।

वितुष्ट-वि० असंतुष्ट।

वित्त-सत्ता पु० वह स्थान, जहाँ धन या  
तृण न हो।

वित्त-वि० १. असंतुष्ट। २ जिसकी प्यास  
न बुझी हो।

वित्त-सत्ता पु० तृष्णा से रहित।

वित्त-सत्ता पु० दृष्टारहित। निस्पृह।

वित्त-सत्ता पु० धन। संपत्ति।

वि० १. सोचा हुआ। समझा हुआ।

२ पाया हुआ। ३ प्रसिद्ध।

वित्त-वि०, वित्त-सत्ता पु० कुबेर।

वित्तमन्त्री-सत्ता पु० राज्य का वह मन्त्री, जिसके

अधीन सरकारी अर्थविभाग हो। अर्थ-मन्त्री।

वित्तविधेयक-सत्ता पु० राज्य का वह विधेयक,

(प्रस्तावित विधान) जो आगामी वर्ष के

आय-व्यय आदि से सम्बन्ध रखता है और

जो विधान-सभा में स्वीकृति के लिए पेश

किया जाता है। (अंग्रे०-फाइनेन्स बिल)

वित्तहीन-सत्ता पु० दरिद्र। गरीब।

वित्त-सत्ता पु० १ विचार। ज्ञान। २

सम्भावना।

वित्त-वि० १ लाभ। २ वित्त-सम्बन्धी।

वित्त का। अर्थ-सम्बन्धी। आर्थिक।

वित्त-वि० बेहया।

वित्त-सत्ता पु० डर।

वित्त-सत्ता पु० १ न थकनेवाला। २ हवा।

वित्त-सत्ता पु०-वि० १ थकना। शिथिल

होना। २ मोहित या चकित होकर चुप

हो जाना।

वित्त-वि०-वि० १ थका हुआ। शिथिल।

२ आश्चर्य या मोह आदि के कारण चुप।

वित्त-सत्ता पु०-वि० १ फलाना। २ इधर-

उधर करना।

वित्त-सत्ता पु०-वि० १ "व्यय"।

वित्त-सत्ता पु०-वि० १ फलाना।

वित्त-सत्ता पु०-वि० १ "व्यय"। दुखी।

वित्त-सत्ता पु० १. चोर। २ राक्षस।

३ शय। ४ दे० "विभूर"।

वि० १ थोड़ा। अल्प। २. दुःखित।

वित्त-वि० जला हुआ।

सत्ता पु० १. पड़ित। विद्वान्। २ चतुर।

चालाक। ३. रसिक पुरुष।

विदग्ध-सत्ता पु० १. पाडित्य। विद्वता।

२. जलना।

विदग्ध-सत्ता पु० वह परकीया नायिका

जो चतुराई से पर-पुरुष को अपनी ओर

अनुरक्त करे।

विदग्ध-सत्ता पु० १ यज्ञ। २ योगी।

विदग्ध-वि०-अव्य० दे० "विद्यमान"।

विदग्ध-सत्ता पु० फाटना। विदारण करना।

विदग्ध-सत्ता पु० फाटना।

विदग्ध-वि०-वि० १ फटना।

वि० स० विदीर्ण करना। फाटना।

विदग्ध-सत्ता पु० आधुनिक बरार-प्रदेश का

प्राचीन नाम।

विदग्ध-सत्ता पु० दमयंती के पिता राजा

भीष्मक, जो विदग्ध के राजा थे।

विदग्ध-वि० १ विना दल का। २ बिगड़

हुआ।

विदग्ध-सत्ता पु० १ मलने-दलने या ढबाने

की क्रिया। २ फाटना। टुकड़े-टुकड़े

करना।

विदग्ध-वि०-वि० स० १. नष्ट करना। २.

कुचलना या मसलना। रौंदना।

विदग्ध-वि० १ अच्छी तरह दला हुआ।

मला हुआ। २. फाटा हुआ। विदीर्ण या

टुकड़े टुकड़े करना।

विदा-सत्ता पु० १ प्रस्थान। रवाना होना।

२ कही से चलने की अनुमति।

विदाई-सत्ता पु० १ विदा होने की क्रिया

या भाव। दक्षसती। प्रस्थान। २ विदा

होने की आज्ञा या अनुमति। ३ विदा

होने के समय दिया जानेवाला धन

आदि।

विदार-सत्ता पु० दे० "विदारण"।

विदारक-वि० १ फाट डालनेवाला। २ नष्ट

करनेवाला।

विदारण-सत्ता पु० १ फाटना। २ मार

डालना।

विदारण-वि०-वि० स० फाटना।

विदार-वि० फाटनेवाला।

विदारक-सत्ता पु० भुई-बूझड़ा।

विदार-सत्ता पु० जलना।

विदाहो-सज्ञा पु० जलन पैदा करनेवाला।  
बहु पदार्थ, जिससे जलन पैदा हो।

विदित-वि० जाना हुआ। ज्ञात।

विदिग्-सज्ञा स्त्री० दो दिशाओं के बीच का कोण। कोण।

विदीर्ण-वि० १ बीच से फाड़ा हुआ। २ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। नष्ट। ३ मार डाला हुआ। निहत।

विदु-सज्ञा पु० १ हाथों के मस्तक के नीचे का भाग। २ घाड़े के कान के नीचे का भाग।

विदुर-सज्ञा पु० १ जानकार। ज्ञाता। २ पंडित। ज्ञानी। ३ धृतराष्ट्र के छोटे भाई और कौरवों के सुप्रसिद्ध मंत्री, जो राजनीति तथा धर्मनीति में बहुत निपुण थे।

विदुष-सज्ञा पु० विद्वान्। पंडित।

विदुषी-सज्ञा स्त्री० पढो-लिखी स्त्री।

विदूर-वि० जो बहुत दूर हो।

सज्ञा पु० दे० "विदूर्य" (मणि)।

विदूषक-सज्ञा पु० १ तरह-तरह की नकल अथवा बातचीत करके दूसरा को हँसानेवाला। मसखरा। २ एक प्रकार का नायक, जो अपने परिहास आदि के कारण काम-केल में सहायक होता है। ३ नाट्य। ४ दूसरों की निन्दा करनेवाला। ५ पिषयी। कामुक।

विदूषण-सज्ञा पु० दोष लगाना। ऐव बताना।

विदूषणा-क्रि० स० १ दोष लगाना। २ सताना। दुःख देना।

क्रि० अ० दुःखी होना।

विदेश-सज्ञा पु० अपने देश को छोड़कर दूसरा देश। परदेश।

विदेशी-वि० १ दूसरे देश का। दूसरे देश स सम्बन्ध रखनेवाला। २ दूसर देश ना निवासी। परदेशी।

विदेह-सज्ञा पु० १ बिना शरीर का। २ राजा जनक। ३ मिथिला का प्राचीन नाम।

वि० सज्ञा-रहित। बिना शरीर का। वेनुष।

विदेहना-सज्ञा स्त्री० सीता।

विदेही-सज्ञा पु० दे० 'विदेह'।

विदोष-वि० बिना दोष का। निर्दोष।

विद्-सज्ञा पु० किसी विषय को अच्छी तरह जाननेवाला। जानकार। पंडित। विद्वान्।

विद्ध-वि० १ बीच में से छेद किया हुआ।

२ फेंका हुआ। ३ जिसको चीट लगी हो।

४ टेढ़ा। ५ सटा हुआ। आवद्ध। बंधा हुआ। ६ तुल्य। समान।

विद्यमान-वि० उपस्थित। मौजूद।

विद्यमानता-सज्ञा स्त्री० विद्यमान होने का भाव। उपस्थिति। मौजूदगी।

विद्या-सज्ञा स्त्री० १ ज्ञान। शिक्षा आदि द्वारा प्राप्त ज्ञान। इल्म। २ शास्त्र ज्ञान। वे शास्त्र आदि, जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। यथा—चारों वेद, छह अंग, मोमासा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गायत्र्यवेद और अय-शास्त्र। ३ दुर्गा।

विद्यागुरु-सज्ञा पु० १ शिक्षक। २ विद्वान्।

विद्यादान-सज्ञा पु० शिक्षा देना। विद्या पढ़ाना।

विद्याधर-सज्ञा पु० [स्वा० विद्याधरी] १ विद्वान्। पंडित। २ एक प्रकार की देवयोनि, जिसके अतर्गत खेचर, गवर्ग, किन्नर आदि माने जाते हैं। ३ एक प्रकार का अस्त्र।

विद्यापीठ-सज्ञा पु० शिक्षा का बड़ा केन्द्र। महाविद्यालय।

विद्यारम्भ-सज्ञा पु० वह सस्कार, जिसमें विद्या की पढ़ाई आरम्भ होती है।

विद्यार्थी-सज्ञा पु० विद्या पढ़नेवाला। छात्र। शिष्य। शिक्षार्थी।

विद्यालय-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ विद्या पढ़ाई जाती हो। पाठशाला।

विद्यावान्-सज्ञा पु० दे० 'विद्वान्'।

विद्युत्-सज्ञा स्त्री० विजली।

विद्युत् चालक-वि० [स० स्त्री० विद्युत्-चालकता] वह पदार्थ, जिसके लगने से विजली चलने लगे। वह पदार्थ, जिसके एक सिरे पर विजली लगते ही दूसरे सिरे तक पहुँच जाय, जैसे पालतु।

विद्युत्नापक-सज्ञा पु० वह यंत्र या धातु, जिससे विद्युत् का प्रवाह रुक जाय, जैसे पालतु।

जिसस विजय की शक्ति और गति  
मालूम की जाय।

विद्युःमाला-सज्ञा स्त्री० विजयी का समूह  
या सिलसिला।

विद्युल्लता-सज्ञा स्त्री० विजली।

विद्योत्-सज्ञा स्त्री० विजली। प्रभा।

विद्य-सज्ञा पु० छद्म।

विद्य-वि० १ दुःख। मज्जत। २ माटा-नाजा।

विद्य-सज्ञा पु०, स्वा० पेट के अंदर का  
एक प्रकार का घातक फाड़ा।

विद्य-सज्ञा पु० १ बुद्धि। २ गणना।

३ डर। ४ लड़ाई। ५ वहना। ६

पिघलना। ७ निंदा। शिकायत।

विद्य-सज्ञा पु० १ चूना। २ पिघलना।

गलना। ३ क्षरण।

विद्य-सज्ञा पु० १ भागना। २ पिघलना।

गलना। ३ उड़ना। ४ फाटना। ५ नाश

करनेवाला।

विद्य-सज्ञा पु० मूंगा।

विद्योह-सज्ञा पु० राज्य की सरकार को

उलटने के लिए या राज्य को हानि पहुँचाने

के लिए किया जानेवाला भारी उपद्रव।

यत्न। बग़ावत। विप्लव।

विद्योही-सज्ञा पु० १ बागी। विद्रोह करने-

वाला। २ सरकार को उपद्रव द्वारा उलटने

वाला। राज्य का अनिष्ट करनेवाला।

विद्योता-सज्ञा स्त्री० बहुत बड़ा विद्वान् हान

का भाव। पांडित्य।

विद्योता-सज्ञा पु० बहुत अधिक विद्या जानने

वाला। पंडित।

विद्यो-सज्ञा पु० शत्रु। द्वेष रखनेवाला।

विद्यो-वि० द्वेष का पात्र। शत्रुता या वैर

करने योग्य।

विद्यो-सज्ञा स्त्री० शत्रुता।

वि० १ विद्रोह से उत्पन्न। २ विद्रोह

पटनेवाला।

विद्यो-सज्ञा पु० वैर। शत्रुता।

विद्यो-सज्ञा पु० वैरी। शत्रु।

विद्यो-सज्ञा पु० वैरी। विद्रोही।

विद्यो-सज्ञा पु० द्वेष का पात्र। वैर करने

योग्य।

विद्य-सज्ञा पु० दे० 'विध्यस'।

विद्य-सज्ञा पु०-वि० पु० विध्यस करना। नष्ट

करना। बरखाद करना।

विद्य-सज्ञा पु०, म्हा० दे० 'विधि'।

विपना-सज्ञा पु० विधि। प्रह्ला।

वि० म० १ प्राप्त करना। २ अपने साथ

लाना। ३ ऊपर लाना।

सज्ञा स्त्री० हानहार। नवितव्य।

विपरण-सज्ञा पु० १ पनडना। २ रोचना।

विपरम-सज्ञा पु० दूसरे दिशा का धर्म।

पराया धर्म।

वि० १ धर्म के विपरीत। धर्मशास्त्र में

जिससे निन्दा की गई हो। २ गुणहीन।

विपार्मिक-सज्ञा पु० दे० 'विपर्मि'।

विपर्मि-सज्ञा पु० १ धर्म के विपरीत

आचरण करनेवाला। धर्म भ्रष्ट। २

दूसरे धर्म का अनुयायी।

विपवा-सज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसका पति

मर गया हो। देवा।

विधवाधर्म-सज्ञा पु० वह स्वान, जहाँ विध-

वाजा के पालन-पोषण आदि का प्रयत्न

किया जाता है।

विधातना\*+वि० स० दे० 'विधसना'।

विधाता-सज्ञा पु० [ स्त्री० विधात्री ] १

विधान करनेवाला। व्यवस्था करनेवाला।

२ प्रयत्न करनेवाला। ३ बनानेवाला।

सृष्टि बनानेवाला। ब्रह्मा या ईश्वर।

विधात्री-सज्ञा स्त्री० बनानेवाली। रचनेवाली।

विधान-सज्ञा पु० १ किसी कार्य की व्यवस्था

या अर्थोपपन्न। अनुष्ठान। प्रबंध। इत्यादि।

२ विधि। प्रणाली। पद्धति। ३ आज्ञा

करना। ४ कानून। नियम। शास्त्रीय

विधान या कृतव्य निर्देश। ५ रचना।

निर्माण। ६ ढंग। उपाय। युक्ति।

७ धन। सम्पत्ति। ८ पूजा। ९ नाटक

में वह स्थान, जहाँ किसी वाक्य द्वारा

एक साथ सुख और दुःख दोनों प्रकट

किए जाते हैं।

विधान परिचय-सज्ञा स्त्री० वह सभा, जो किसी

देश के शासन की नियमावली बनाने के

लिए सघटित हो। सविधान परिचय।

**विधान-मंडल-सज्ञा पु०** दे० "विधान-सभा"। दो सदनोंवाली विधान-सभाओं को संयुक्त रूप में विधान-मंडल कहते हैं।

**विधानवाद-सज्ञा पु०** वह सिद्धान्त, जिसके अनुसार विधान या कानून ही सर्वप्रधान माना जाता हो और उसके बिना कुछ न किया जाता हो।

**विधानवादो-सज्ञा पु०** विधानवाद के सिद्धान्त का अनुयायी। विधान या कानून के अनुसार ही सब काम करनेवाला।

**विधान-सभा-सज्ञा स्त्री०** लोकतांत्रिक-शासन में जनता के प्रतिनिधियों की वह सभा, जो कानून बनाती है और पुराने कानूनों में आवश्यकतानुसार संशोधन आदि करती है।

**विधायक-सज्ञा पु०** [स्त्री० विधायिका]

१. विधान या कानून बनानेवाला। रचनेवाला। २. प्रबंध करनेवाला। ३. पत्र या आज्ञा आदि, जिसके द्वारा कोई नियम लागू किया जाय।

**विधायन-सज्ञा पु०** विधान करना या बनाना। राज्य-सरकार या विधान-सभा का कोई नया कानून बनाना।

**विधायिक-सभा-सज्ञा स्त्री०** दे० "विधान सभा"।

**विधायित-वि०** जिसका विधान किया गया हो। कानून के रूप में लाया गया। (अंग्रे०-इन्क्टेड)

**विधायी-वि०** दे० "विधायक"।

**विधारण-सज्ञा पु०** [वि० विधारित] विपरीत धारणा। किसी विवादग्रस्त विषय या प्रमाणित की जानेवाली बात के सम्बन्ध में पहले से निश्चित पक्षपातपूर्ण विचार। (अंग्रे०-प्रिजुडिस)।

**विधारा-सज्ञा स्त्री०** एक लता, जिसकी जड़ कई रोगों में औषध के काम आती है।

**विधारित-वि०** १. जिसने अपने मन में कोई विकृत या पक्षपातपूर्ण धारणा बना ली हो। २. जिसके सबंध में उक्त प्रकार की धारणा बनी या हुई हो (अंग्रे०-प्रिजुडिस्ड)।

**विधि-सज्ञा पु०** ब्रह्मा।

**सज्ञा स्त्री०** १. कार्य करने की रीति।

प्रणाली। व्यवस्था। २. सरकार-द्वारा निर्धारित नियम। विधान। कानून।

३. शास्त्रों में वर्णित आचरण-सम्बन्धी नियम। ४. भाँति। प्रकार। तरह।

५. प्रकृति या नियति। ६. व्याकरण में क्रिया का वह रूप, जिसके द्वारा किसी को कोई काम करने का आदेश किया जाता है। ७. साहित्य में एक अर्थालंकार, जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। ८. आचार-व्यवहार। चाल-ढाल।

**यो०-गतिविधि=चपटा और कार्रवाई।**

**विधिक-वि०** कानूनी। विधि या कानून से सम्बन्ध रखनेवाला। विधि के अनुकूल। वैध।

**विधिकर्ता-सज्ञा पु०** कानून बनानेवाला।

**विधिक व्यवहार-सज्ञा पु०** कानूनी कार्रवाई।

किसी व्यवहार या मुकदमे में कानून के अनुसार कार्य।

**विधिज्ञ-सज्ञा पु०** विधान या कानून जाननेवाला। कानून का अच्छा जानकार और अदालत में दूसरों की परखी करनेवाला। बकील। बैरिस्टर।

**विधित-वि०** वि० कानून के अनुसार।

**विधिना-सज्ञा पु०** ब्रह्मा।

**विधिभंग-सज्ञा पु०** विधान या कानून का उल्लंघन। कानून तोड़ने का कोई काम।

**विधिबद्ध-वि०** वि० १. नियम के अनुसार।

विधिपूर्वक। कायदे के मुताबिक। २. उचित रूप से।

**विधु-सज्ञा पु०** १. चंद्रमा। २. ब्रह्मा। ३. विष्णु। ४. वायु।

**विधुप्रिया-सज्ञा स्त्री०** १. चंद्रमा की प्रियतमा। रोहिणी। २. कुमुदिनी।

**विधुवनी\*-सज्ञा स्त्री०** दे० "विधुवदनी"।

**विधुर-सज्ञा पु०** [स्त्री० विधुरा] १. दुःखी। पबराया हुआ। व्याकुल। २. परित्यक्त। जिसकी स्त्री मर गई हो या छोड़ चुकी हो। स्त्री-हीन पुरुष। रंडुआ। ३. असमर्थ। अशक्त। ४. विमूढ़। ५. दुःख। ६. वियोग। ७. मोक्ष।

**विधुवदनी-सज्ञा स्त्री०** बहुत सुन्दर स्त्री।

चन्द्रमा की तरह मुखवाली। चन्द्र-  
मुखी।

विधूत-वि० १. कांपता या हिलता हुआ।  
त्यक्त। २. छोड़ा हुआ। निकाला हुआ।  
हटाया या दूर किया हुआ।

विधूनन-सज्ञा पु० कम्पन। कांपना।

विधूम-वि० विना धुएँ का। धूम-रहित।

विधूय-वि० १. विना धुएँ का। २. मटमैले  
रंग का। धूसर वर्ण का।

विधेय-वि० १ जिसका विधान या कानून  
बनाना उचित हो। विधान के योग्य।

जिसके करने का नियम हो। वर्तव्य।

२ वशीभूत। अधीन। ३ वह (शब्द या

वाक्य), जिसके द्वारा किसी के संबंध में  
कुछ कहा जाय (व्या०)।

विधेयक-सज्ञा पु० किसी विधान या कानून

का वह पूर्व या प्रस्तावित रूप, जो विधान-  
सभा में स्वीकृत होने के लिए पेश किया

जाता है। (अंग्रे०-बिल)

विध्वंस-सज्ञा पु० नाश। बरबादी।

विध्वंसक-सज्ञा पु० १. नाश करनेवाला।

२. एक प्रकार का जंगी जहाज।

विध्वंसित-वि० नष्ट या बर्बाद किया हुआ।

विध्वंसी-सज्ञा पु० [ स्त्री० विध्वंसिनी ] नाश  
या बरबाद करनेवाला।

विध्वस्त-वि० नष्ट या बर्बाद किया हुआ।

विनी-सर्व० एक सर्वनाम। "उस" का बहु-

वचन। उन।

अव्य० विना।

विनीत-वि० १. झुका हुआ। २. दे० "विनीत"।  
नम्र। शिष्ट।

विनीता-सज्ञा स्त्री० १. कुबड़ी। २. दध

प्रजापति की एक कन्या, जो कश्यप की स्त्री  
धीर मण्ड की माता थी।

विनीतो-सज्ञा स्त्री० १. प्रार्थना। निवेदन।

२. झुकाव। ३. नम्रता। विनय। शिष्टता।  
मुताल्लता।

विनमन-सज्ञा पु० झुकाव। रुचाना।

विनम्र-वि० १. झुका हुआ। २. विनीत। मुताल्ल।

विनय-सज्ञा स्त्री० १. नम्रता। २. शिक्षा।

३. प्रार्थना। विनती। ४. मति।

विनय-पिटक-सज्ञा पु० बौद्ध-शास्त्री में एक  
शास्त्र।

विनयन-सज्ञा पु० १. विनय। नम्रता। २.

निर्णय। ३. निराकरण। दूर करना। ४.

शिक्षा।

विनयवान्-वि० नम्र। मुताल्ल। शिष्ट। विनयी।

विनयी-वि० नम्र। मुताल्ल। विनययुक्त।

विनयन-सज्ञा पु० [ वि० विनय, विनयन ]

विनाश। बरबादी।

विनश्य-वि० नष्ट होने योग्य वा नष्ट किए

जाने लायक।

विनश्यद-वि० नाश होनेवाला। अनित्य।

विनष्ट-वि० १. जो नष्ट या बरबाद हो गया

हो। ध्वस्त। मृत। मरा हुआ। २. विगड़ा

हुआ। शिष्ट। पतित।

विनसना\*-क्रि० प्र० नष्ट होना।

विनसाना\*-क्रि० स० [ विनसना वा स०

रूप ] नष्ट करना। बिगाड़ना।

क्रि० अ० दे० "विनसना"।

विना-अव्य० विना। बगैर। छोड़कर। बहि-

रिक्त। सिवा। अभाव में। न रहने की

व्यवस्था में।

विनाय-वि० दे० "अनाय"।

विनायक-सज्ञा पु० गणेश। विघ्नों के मालिक

या नाश करनेवाले।

विनायक-केतु-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

विनाश-सज्ञा पु० [ वि० विनाशक ] १. नाश।

बरबादी। ध्वंस। बुरी दशा। २. लोप।

३. विगड़ जाने का नाश। बरबादी।

विनाशक-सज्ञा पु० [ स्त्री० विनाशिका ]

नाश करनेवाला। बर्बाद करनेवाला।

विनाशन-सज्ञा पु० [ वि० विनाशी, विनाश्य ]

१. नष्ट करना। बरबाद करना। २. सहार

करना। बल करना। ३. सहाय करना।

विनाश\*+सज्ञा पु० दे० "विनाश"।

विनासन\*-सज्ञा पु० दे० "विनाशन"।

विनासना\*-क्रि० स० १. नष्ट करना।

बरबाद करना। २. सहार करना। ३.

बिगाड़ना।

क्रि० अ० नष्ट होना। बरबाद होना।

विनिगमना-सज्ञा स्त्री० १. दो विशद पक्षों में

से एक का प्रमाण - द्वारा निश्चय । २. सिद्धान्त । ३. नतीजा ।

विनिग्रह-सज्ञा पु० १. नियम । २. वधेज । ३. अवरोध । ४. व्याघात ।

विनिपात-सज्ञा पु० १. नाश । वधादि । ध्वस्त । पतन । २. हत्या । ३. अनादर । ४. विपाद ।

विनिमय-सज्ञा पु० १. एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी वस्तु देना । बदल-बदल । लेनदेन ।

२. वह व्यवस्था या प्रणाली, जिसके अनुसार भिन्न पक्षों या देशों में वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है । ३. वह व्यवस्था या प्रणाली,

जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य निर्धारित होते हैं और

जिसके अनुसार आपस में लेनदेन चुकाए जाते हैं । (अंग्रे०-एक्सचेंज ।)

यो०-विनिमय की दर-वह दर, जिससे एक देश के सिक्के दूसरे देश के सिक्कों से

बदले जाते हैं ।

विनिमय-पत्र-पज्ञा पु० वह पत्र, जिसके द्वारा आपस में लेन-देन का भाव तय होता है या

जो किसी आर्थिक देन या प्राप्य का सूचक होता है ।

विनियंत्रण-सज्ञा पु० [ वि० विनियंत्रित ] नियंत्रण का हटाया जाना । (अंग्रे०-डिकन्ट्रोल ।)

विनियोग-सज्ञा पु० १. किसी वस्तु का उपयोग । प्रयोग । २. वैदिक कृत्य में मन का प्रयोग । ३. भोजना । ४. पुसना ।

५. व्यापार में पूँजी लगाना ।

विनियोजित-वि० १. प्रयुक्त । २. अर्पित । ३. प्रेरित ।

विनिर्गत-वि० १. निकला हुआ । २. अगीत । विनिवेश-सज्ञा पु० प्रवेश । पुसना ।

विनिहत-वि० १. चोट खाया हुआ । अहत । २. मरा हुआ । लुप्त ।

विनीत-वि० विनयी । नम्र । विनययुक्त । मुसील । शिष्ट ।

विनु \*†-अव्य० दे० "विना" । विनुठा-वि० अनुठा । सुदर ।

विनोद-सज्ञा पु० १. मनोरंजन । हँसी-दिल्लगी । २. कुतूहल । तमाशा । ३. खेल-

कूद । आमोद-प्रमोद । ४. परिहास । ५. हर्ष । आनंद । प्रसन्नता ।

विनोदी-वि० [ स्त्री० विनोदिनी ] १. आमोद-प्रमोद करनेवाला । बहुत हँसी-मजाक करने-

वाला । मसखरा । हँसी । २. कुहल-वाज । आनन्दी । मोंजी ।

विन्यस्त-वि० १. स्थापित । क्रम से रखा हुआ । २. डाला हुआ । ३. लगा हुआ । ४. फैला हुआ ।

विन्यास-सज्ञा पु० [ वि० विन्यस्त ] १. स्थापन । रखना । धरना । २. यथास्थान स्थापन । सजाना । ३. जड़ना ।

विपची-सज्ञा स्त्री० १. बोणा । तंत्री । एक बाजा । २. कोड़ा । खेल ।

विपश्य-वि० खूब पका हुआ ।

विपक्ष-सज्ञा पु० १. विरोधा पक्ष । २. विरोधी । प्रतिद्वंद्वी । प्रतिवादी या शत्रु । ३. विरोध ।

४. खडन । ५. अपवाद ।

वि० १. विरोध । उल्टा । खिलाफ । २. पक्षहीन । जिसके पक्ष में कोई न हो ।

विपक्षी-सज्ञा पु० १. विरोधी पक्ष का । दूसरी तरफ का । २. शत्रु । प्रतिद्वंद्वी । प्रतिवादी ।

वि० पक्षहीन । वगैर उने का ।

विपत्ति-सज्ञा स्त्री० १. सकट । आफत । कष्ट । दुःख । शोक । २. सकट की अवस्था । बुरे दिन । ३. कठिनाई । झंझट । बखेड़ा ।

विपत्तिजनक-वि० खतरनाक । जिससे विपत्ति या सकट उत्पन्न हो ।

विपथ-सज्ञा पु० १. बुरा रास्ता । कुमार्ग । २. गलत या बुरा आचरण ।

विपथगा-सज्ञा स्त्री० १. उल्टे या बुरे रास्ते से चलनेवाली । २. दुराचारिणी । बदचलन स्त्री ।

विपथगामी-सज्ञा पु० [ स्त्री० विपथगामिनी ] १. बुरे रास्ते पर चलनेवाला । कुमार्गी । २. दुराचारी । बदचलन ।

विपद्-सज्ञा स्त्री० विपत्ति । आफत ।

विपदा-सज्ञा स्त्री० सकट । विपत्ति । आफत ।

विपन्न-वि० १. जिस पर विपत्ति पड़ी हो । दुःखी । अर्त । २. भूला हुआ ।

विपरीत-वि० १ उल्टा। विरुद्ध। गिलाफ।  
प्रतिबल। २ रफ्ट। ३ विरोधी। हिन वे  
विरुद्ध।

विपणक-वि० बिना पत्ता का।

विषम्य-सज्ञा पु० १ पारस्परिक विरोध।  
२ गड़बड़ा। अव्यवस्था। भ्रिगसिद्धम उलट-  
पर। ३ धर का उधर या नागे-पाछ होना।  
व्यतिराम। ३ कुछ का कुछ गमयना।  
४ भ्रम।

विषम्यस्त-वि० जिसका विषम्य (उलटपर)  
हुआ हो। अस्त-व्यस्त। जिस उलट या रद्द  
कर दिया गया हो।

विषम्यसि-सज्ञा पु० दे० 'विषम्य'।

विपल-सज्ञा पु० एक पल (२४ तक्क) का  
साठवां भाग। समय का एक बहुत ही छोटा  
विभाग।

विपाक-सज्ञा पु० १ कर्म का फल। पूव  
जन्म में किए हुए कामों का फल इस जन्म में  
और इस जन्म में किए हुए कामों का फल  
अगले जन्म में। २ परिणाम। नतीजा। ३  
अच्छी तरह से पचना। ४. पचना। ५ पूरा  
अवस्था को पहुँचना। चरम उत्पत्ति।

विपादन-सज्ञा पु० १ उल्लासना। २ दो भागों  
में फाटना। ३ नष्ट करना। ४ दूर  
करना।

विपाठ-सज्ञा पु० एक तरह का लम्बा बाण।

विपात-सज्ञा पु० नाश।

विपातन-सज्ञा पु० नाश करना। गलाना।

विपासा-सज्ञा स्त्री० व्यास नदी।

विपिन-सज्ञा पु० १ जंगल। बाग। २ उप  
वन। बगीचा।

विपिनपति-सज्ञा पु० सिंह।

विपिनविहारी-सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण। २ वन  
में विहार करनेवाला।

विपुल-वि० [स्त्री० विपुला] १ बहुत  
अधिक। २ बहुत। बड़ा। ३ अगाध।

विपुलता-सज्ञा स्त्री० अधिकता। बहुतायत।

विपुला-सज्ञा स्त्री० १ पृथ्वी। पशुपरा।

२ एक प्रकार का छद, जिसके प्रत्येक चरण  
में भाग, रग और दो लघु होते हैं। ३  
आर्या छद के तीन भेदों में से एक।

विपुलाई\*-गज्ञा स्त्री० दे० 'विपुला'।

विपोहना\*-वि० म० १ पोतना। रीपना।  
२ ताना मरना। ३ द० 'पोहना'।

विप्र-गज्ञा पु० १ ब्राह्मण। २ पुराहित।  
यज्ञ करनेवाला।

वि० बुद्धिमान्।

विप्रचरण-सज्ञा पु० नृग मुनि का लाव का  
चित्त, जो विष्णु के हृदय पर माना  
जाता है।

विप्रचिति-सज्ञा पु० एक दानव, जिसकी  
पत्नी सिंहवा के गम से राहु उत्पन्न हुआ था।

विप्रत्व-सज्ञा पु० ब्राह्मणत्व।

विप्रधित-वि० मसहर। प्रसिद्ध।

विप्रपद-सज्ञा पु० द० 'विप्रपरण'।

विप्रराम-सज्ञा पु० परमुराम।

विप्रलभ-सज्ञा पु० १ चाहा हुई वस्तु का न

मिलना। २ प्रिय का न मिलना। ३

विपोग। विरह। अन्ध होना। विच्छेद।

४ निराशा। ५ धाखा। छल। धूर्तता।

६ साहित्य में शृंगार का विभाग-पक्ष।

विप्रलभक या विप्रलभो-सज्ञा पु० धोखबाज।

विप्रलब्ध-वि० १ विपगा। २ विपोग-दगा

को प्राप्त। ३ जिस चीज़ी हुई वस्तु न प्राप्त

हुई हो। रहित। वचित।

विप्रलब्धा-सज्ञा स्त्री० वह नायिका, जो

सकेतस्थान में प्रिय को न पाकर दुःखी हो।

विप्रलाप-सज्ञा पु० वक्तावद। व्यर्थ विवाद।

विप्लव-सज्ञा पु० १ विद्रोह। बलवा। २

उपद्रव। अशांति और हलचल। उपल-

पुचल। अव्यवस्था। ३ आफत। विपत्ति।

४ विनाश। ५ जल का बाढ़।

विप्लवो-वि० विप्लव या विद्रोह करनेवाला।

वगावत करनेवाला।

विप्लव-वि० १ छितराया हुआ। २ ध्वस्त

हुआ। व्यर्थ। ३ भ्रष्ट।

विफल-वि० [सज्ञा विफल्ता] १ निष्फल।

असफल। व्यर्थ। २ जिसका प्रयत्न का कुछ

परिणाम न हुआ हो। नाकासपाव।

विबुध-सज्ञा पु० १ पंडित। बुद्धिमान्।

२ देवता। ३ चंद्रमा। ४ शिव।

विबुधपति-सज्ञा पु० द्रव।

विद्युत्पुर-सज्ञा पु० स्वर्ग ।

विद्युत्धवन-सज्ञा पु० नन्दन कानन ।

देवता की स्त्री । २. अप्सरा ।

विद्युत्ध्वेलि-सज्ञा स्त्री० कल्पलता ।

विद्युत्ध्विल्लसिनी-सज्ञा स्त्री० १. देवागना ।

विद्युत्धाधिप-सज्ञा पु० इन्द्र ।

विद्युत्धान-सज्ञा पु० १. देवता । २. पंडित ।

३. आचार्य ।

विद्युत्पेश-सज्ञा पु० इन्द्र ।

विद्युत्-सज्ञा पु० १. सम्यक् बोध । अच्छा ज्ञान । २. जागरण । जागना । ३. सचेत होना । सावधान होना । ४. विकास । प्रकुल्लता ।

विभज-वि० टूटना । नाश ।

क्रि० सं० १ तोड़ना । टुकड़े करना । नाश करना । २. निराश करना ।

विभक्त-वि० बँटा हुआ । विभाजित । अलग किया हुआ ।

विभक्ति-सज्ञा स्त्री० १ विभक्त होने की क्रिया या भाव । विभाग । बाँट । २ अलग । पार्यन्त । ३. शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न, जिससे यह पता लगता है कि उस शब्द का क्रिया-पद से क्या संबंध है (व्याकरण) ।

विभव-सज्ञा पु० १ ऐश्वर्य्य । २. धन । संपत्ति । ३ बहुतायत । ४ मोक्ष ।

विभववान्, विभवशाली-वि० १. दे० "विभव-शाली" । ऐश्वर्य्यवाला । प्रतापी । २. शक्तिशाली ।

विभोति-सज्ञा स्त्री० प्रकार । हिस्सा ।

वि० अनेक प्रकार का ।

अव्य० जनेक प्रकार से ।

विभा-सज्ञा स्त्री० १. भागा । २. कान्ति । चमक । ३. किरण । ४. प्रकाश । रोशनी ।

विभाकर-सज्ञा पु० १. सूर्य । प्रकाश करने-वाला या प्रकाशवाला । राजा । २. अग्नि ।

विभाज-सज्ञा पु० १. भाग । अंश । हिस्सा । बाँटने की क्रिया या भाव । बाँटवारा । तकसीम । २. प्रकरण । अप्पारा । ३. पार्यन्त-बोध । ४. मुहकमा । दफ्तर । कार्यालय ।

विभाजक-वि० बाँटनेवाला । विभाग या

टुकड़े करनेवाला । भाग या तकसीम करने-वाला ।

विभाजन-सज्ञा पु० १. बाँटवारा । विभाग करना या बाँटना । २. विभाग । तकसीम ।

विभाजित-वि० बाँटा हुआ । जिसका विभाग किया गया हो । विभक्त ।

विभाज्य-वि० १. विभाग करने योग्य । २. जिसका विभाग करना हो ।

विभात-सज्ञा पु० प्रभात । विभा या चमक से युक्त (उषा के लिए प्रयुक्त शब्द) ।

विभाति-सज्ञा स्त्री० चोभा । सुन्दरता ।

विभाना\*—क्रि० अ० १ चमकना । झलकना । २ शोभित होना ।

विभारना\*—क्रि० अ० दे० "विभाना" ।

विभाव-सज्ञा पु० साहित्य में वह वस्तु, जो रति आदि भावों को उत्पन्न करनेवाली या उदीप्त करनेवाली हो ।

विभावना-सज्ञा स्त्री० एक अवलंकार, जिसमें कारण के बिना कार्य को उत्पत्ति, अथवा विरुद्ध कारण से किसी कार्य को उत्पत्ति दिखाई जाती है ।

विभावनीय-वि० चिन्ता करने योग्य ।

विभावरो-सज्ञा स्त्री० १. राति । रात ।

२. वह रात, जिसमें ठारे चमकते हैं ।

विभावरोत-सज्ञा पु० चन्द्रमा ।

विभावसु-सज्ञा पु० १. वसुओं के एक पुत्र ।

२. सूर्य । ३. चन्द्रमा । ४. अग्नि ।

विभास-सज्ञा पु० १. तेज । चमक । २. एक राग ।

विभासना\*—क्रि० अ० चमकना । झलकना ।

विभिन्न-वि० १. बिल्कुल अलग । पृथक् ।

जुदा । २. अनेक प्रकार का । कई तरह का ।

३. उल्टा ।

विभोत-सज्ञा स्त्री० डरा हुआ । भयभीत ।

विभोति-सज्ञा स्त्री० १. डर । भय । २. मरना ।

विभोषण-सज्ञा पु० राखन या भाई । एक राखन बर्गी, जो राखन के भारे जाने पर उसका या राजा बनाया गया था ।

वि० बहुत भयानक ।

विभीषिका-सज्ञा स्त्री० १. भयानक काट या दंष्ट्र । २. डराना । भयभीत करना ।

विभु-वि० १. जो सर्वत्र वर्तमान है । सर्व-

व्यापन। २ जो सब जाह जा सरता ह।  
 नैन, मन। ३ बहुत बड़ा। महान्। ४, नित्य।  
 ५ दृढ़। अवल। ६ यकिनमान्।  
 सजा पु० १ यहा। २ जोवात्मा। ३ प्रभु।  
 स्वामा। ईश्वर। ४ शिव। ५ विष्णु।  
 विभूता-सजा स्त्री० दे० 'विभूति'।

विभूति-सजा स्त्री० १ ऐश्वर्य। २ बहुतायत।  
 ३ वृद्धि। बडना। ४ शिव के जग में चढ़ाने  
 का राख या नैसर्ग। ५ पूजा का वाद किए  
 गए हवन को राख, जिसे सत्त्विक आदि अंगों में  
 लगात हें। ६ संपत्ति। धन। ७ अर्वाचिक  
 शक्ति, जिसके अंतर्गत अणिमा, महिमा  
 गरिमा, लविमा प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व  
 धीर बसित्व ये आठ सिद्धियाँ ह। ८  
 लक्ष्मी। ९ एव दिव्यास्त्र, जो विश्वामित्र ने  
 राम को दिया था। १० सृष्टि।

विभूषण-सजा पु० १ गहना। २ गहना  
 आदि स सजाना। अलंकृत या सुशोभित  
 करने की क्रिया।

विभूषण-क्रि० स० गहने आदि स सजाना।  
 सुशोभित करना।

विभूषित-वि० १, गहना आदि से सजाया  
 हुआ। अलंकृत। शोभित। २ अच्छे वस्तु  
 गुण आदि स युक्त।

विभेदन\*-पना पु० भेदना। गुंठे मिलना।  
 विभेद-सजा पु० १ विभिन्नता। फरक। अंतर।  
 अंतर। गद। कई प्रवाद। २ छद्मकर प्रवृत्ति।  
 धटना। ३ भेद या अलगाप। ४ भेदन  
 करना।

विभेदना\*-क्रि० स० १ भेदन करना। छेदना।  
 २ घुमना। ३ नद या कक डालना।

विभोर-वि० १ मग्न। लान। २ व्याकुल।  
 बिह्वल। ३ अस्त। मत्त।

विभी-सजा पु० दे० 'विभव'।  
 विभ्र-श-पना पु० नाश। पतन।

विभ्रम-सजा पु० १ भ्रम। भ्रांति। धोखा।  
 २ सवह। समय। ३ पवराहट। ४  
 जमण। चक्कर। ५ स्त्रिया का एक हाथ,  
 जिसमें ये भ्रम स उन्ट-पन्ट भूषण-यस्त्र  
 पहनकर कभा शीष, कभी हथ आदि भाव  
 प्रकट करता है।

विभ्रान्त-वि० १ भ्रम में पड़ा हुआ। २  
 घुमना हुआ या चक्कर खाटता हुआ।

विभ्राट्-पना पु० १ आपत्ति। विपत्ति।  
 गलट। २ उपद्रव। बलैडा।

विमडन-पना पु० [वि० विमडित] १  
 सजाना। शृंगार करना। सवारना। २  
 अहंकार।

विमडित-वि० १ अहंकर। सजा हुआ। नुगा  
 भित। २ सहित। अ०डा वस्तु स युक्त।

विमत विमति-पना पु० १ विरुद्ध मत।  
 विपरीत सम्मति। प्रतिकूल विचार या

सिद्धान्त। २ बुरा विचार। ३ अस्थाकृति।  
 विमत्सर-सजा पु० अधिक अहंकार।

विमद-वि० विना धमड के। अहंकार-रहित।  
 मद रहित।

विमन-वि० जिसका मन या तवीकृत न  
 लगती हो। अनमना। उदास।

विमनस्क-वि० अनमना। उदास। जिसका  
 ध्यान किसी धीर तरफ हो। अन्यमनस्क।

विमदन-सजा पु० [वि० विमदनाय विम  
 दित] १ अ०डा तरह मलना-दलना।

\*कुचलना। २ नष्ट करना। ३ मार डालना।  
 विमर्श-सजा पु० १ किसी बात का विवेचन  
 या विचार। २ परामर्श। ३ आलोचना।

समाधान। ४ परीक्षा।

विमर्श-पना पु० १ दे० 'विमर्श'। २  
 नाटक का एक अंग, जिसके अंतर्गत अनवाद,  
 व्यवसाय, सन्ति, प्रणय, खद, विराय और  
 आदान आदि का बणन होता ह।

विमल-वि० [पना विमलता] [स्त्री०  
 विमला] १ स्वच्छ। साफ। निमल। बिना  
 मेल का। २ निर्दोष। शुद्ध। ३ सुंदर।

नमोहर।

विमला-पना स्त्री० सरस्वती।  
 वि० स्वच्छ। दे० 'विमल'।

विमलासति-पना पु० यहा।  
 विमला-सजा स्त्री० चित्त की मो।

विमान-सजा पु० १ हवाई जहाज। वायु  
 यान। हवा में चलनवाला गाड़ा। देवताओं

का रथ, जो आकाश-मय स चला था।  
 २ भेदे हुए बृहत् सन्तुष की अरसी, जो

सजबज के साथ निकाली जाती है। ३. रथ। गाड़ी।

विमान-चालक-संज्ञा पुं० हवाई जहाज चलावेवाला।

विमान-वाहक-संज्ञा पुं० एक प्रकार का समुद्री जहाज, जिसकी छत बहुत लम्बी-चौड़ी होती है और उस पर बहुत से हवाई जहाज रके जाते हैं।

विमानवेधो-संज्ञा पुं० एक प्रकार की तोप, जो उड़ने हुए हवाई जहाजों पर गोले चलाती है।

विमार्ग-संज्ञा पुं० १. बुरा रास्ता। कुमार्ग। २. दुरा वाचरण।

विमुक्त-वि० १. अच्छी तरह मुक्त। छूटा हुआ। २. स्वतन्त्र। स्वच्छन्द। ३. हानि या दंड आदि से बचा हुआ। ४. जलन किया हुआ। बरों। ५. फका हुआ। छोड़ा हुआ।

विमुक्ति-संज्ञा स्त्री० १. छुटकारा। रिहाई। २. मुक्ति। मोक्ष।

विमुख-वि० [सं० विमुक्ता] १. मुख-रहित। जिसके मुँह न हो। २. जिसने किसी बात से मुँह फेर लिया हो। उदासीन। विरत। निरत। ३. जिसे परवाह न हो। ४. विरुद्ध। विलाक। ५. असन्न। ६. निराश। जिसका मनोरथ पूरा न हुआ हो।

विमुख-वि० बहुत अधिक मोहित। बेमुग्ध।

विमूढ़-वि० उदात्त। विद्वान्।

विमूढ़-वि० [स्त्री० विमूढा] १. ज्ञान-रहित। मूर्ख। नास्तमत्त। २. भ्रम में पड़ा हुआ। ३. बेमुग्ध। अचेत।

विमूढ़गर्भ-संज्ञा पुं० वह गर्भ, जिसमें बच्चा मरा या बेहाल हो।

विमूल-वि० १. मूल या जड़ से रहित। निर्जड़। २. बरान।

विमूलन-संज्ञा पुं० जड़ से उखाड़ना। विनाश।

विमूल्यन-संज्ञा पुं० दे० "अवमूल्यन"।

विमोक्ष-संज्ञा पुं० छुटकारा। रिहाई।

विमोक्ष-वि० दे० "मोक्ष"।

विमोचन-संज्ञा पुं० [वि० विमोचन, विमोचि, विमोच्य] १. रत्न, गोड आदि नालना। २. धन न उठाना। मुक्त करना। ३. निकालना। ४. छोड़ना। फेंकना।

विमोचना\*-वि० सं० १. बंधन आदि खोलना। मुक्त करना। छोड़ना। २. निकालना। बाहर करना।

विमोह-संज्ञा पुं० [वि० विमोहक] १. मोह। अज्ञान। भ्रम। २. बेमुग्ध होना। बेहोशी। ३. मोहित होना। आमक्ति।

विमोहक-संज्ञा पुं० [स्त्री० विमोहिनी] मोहनवाला।

विमोहन-संज्ञा पुं० [वि० विमोहित, विमोही] १. मोहित करना। मन लुभाना। २. बुध-बुध भुलाना। ३. कामदेव के पाँच वाणा में से एक।

विमोहना\*-वि० अ० १. मोहित होना। लुभा जाना। २. बेमुग्ध होना। ३. धोखे में जा जाना।

विमोहित-वि० १. अत्यन्त मोहित। लुभाया हुआ। मुग्ध। २. तन-मन को मुग्ध भूला हुआ। ३. मूर्च्छित।

विमोही-वि० [स्त्री० विमोहिनी] १. मोहित करनेवाला। जो लुभानेवाला। २. बुध-बुध भुलानेवाला। मूर्च्छित या बेहोश करनेवाला। ३. भ्रम में डालनेवाला। ४. बिना मोह का। निष्ठुर। निर्दय।

विमोह-संज्ञा पुं० दीमकों का उठाया हुआ मिट्टी का इह। बाँधी।

विमो\*-संज्ञा पुं० महादेव।

विमो\*-वि० १. दो। युग्म। जोड़ा। २. अन्य। दूसरा।

विपत-संज्ञा पुं० आकाश। वायुमंडल।

विपुक्त-वि० १. बिछड़ा हुआ। २. जुदा। अलग। ३. रहित। हान।

विमो\*-वि० जन्म। दूसरा।

विमोक्ष-संज्ञा पुं० १. बिरह। जुदाई। विच्छेद। २. अलगाव। ३. मिश्रण या मेलन न होना।

विमोक्षा-वि० (नाटक या उक्त्यात आदि) जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो।

विमोघिनी-वि० [स्त्री० विमोघिनी] निरुद्ध।

विमोघी-वि० [स्त्री० विमोघिनी] निरुद्ध। अना मेमिना से निरुद्ध हुआ पुत्र।

वियोजक-सज्ञा पु० १. दो मिली हुई वस्तुओं को पृथक् करनेवाला। २. गणित में वह मन्त्रा, जिसे किसी दूसरी घड़ी मन्त्रा में से पढ़ाना हो।

विरग-वि० १. बुरे रस का। बदरग। फाँफा। २. अनेक रंगों का।

विरच, विरचि-सज्ञा-पु० ब्रह्मा। विधाता। विरचिमुत्त-संज्ञा पु० नारद।

विरक्त-वि० १. विरागी। जो अनुरक्त न हो। ससार या मोहसाया से अलग रहनेवाला। विमुख। २. उदासीन। ३. वासना-रहित।

विरक्ति-सज्ञा स्त्री० १. उदासीनता। विमु-सता। वैराग्य। २. अनुराग का अभाव।

विरचन-सज्ञा पु० ब्रह्मा। निर्माण।

विरचना\*-क्रि० स० १. रचना। बनाना। निर्माण करना। २. सजाना।

क्रि० अ० विरक्त होना।

विरचित-वि० १. बनाया हुआ। निमित्त। २. रचा हुआ। लिखित।

विरज-वि० १. बिना रज या धूल का। निर्मल। स्वच्छ। २. निर्दोष। ३. रजोगुण-रहित। ४. वासना-रहित।

विरत-वि० १. दे० "विरक्त"। विमुख। जो अनुरक्त न हो। २. जो लीन या तरपर न हो। निवृत्त। ३. वैरागी। ४. बहुत लीन। विशेष रूप से रत।

विरति-सज्ञा स्त्री० १. दे० "विरक्ति"। चाह का न होना। २. उदासीनता। ३. वैराग्य।

विरथ-वि० जिसके पास रथ या सवारी न हो। पैदल।

विरव-सज्ञा पु० १. बड़ा नाम। प्रसिद्धि। ख्याति। २. यश। कीर्ति। दे० "विरल"।

विरवायली-सज्ञा स्त्री० दे० "विरवाली"। १. प्रशंसा के गीत। २. यश की कथा। कीर्ति की गाथा।

विरवत\*-वि० बड़े विरवाला। कीर्ति या यशवाला। बड़े नामवाला।

विरमण-सज्ञा पु० १. रमना। रमण करना। २. रचना। ठहरना। ३. निवृत्त होना।

विरमना\*-क्रि० अ० १. दे० "विरमण"।

देर करना। बिलम्ब करना। २. कहीं एक जाना। विराम करना। ठहरना। रम जाना। ३. किसी भया कहीं मन लगाना। अनुरक्त हो जाना। ४. वेग आदि का धमना या कम होना।

विरमाना\*-क्रि० स० विरमना का मय्यक रूप। दूसरे को विरमने में प्रवृत्त करना।

विरल-वि० १. जो घना न हो। 'समन' का उलटा। २. जो दूर-दूर पर हो। ३. दुर्लभ। ४. अल्प। थोड़ा। ५. पतला। ६. मूल्य। निर्जन।

विरस-वि० [सज्ञा विरसता] १. नोरन। फाँफा। २. जो अच्छा न लगे। अशुचिकर। ३. (काव्य) जिसमें रस का निर्वह न हो सका हो।

विरह-सज्ञा पु० १. वियोग। जुदाई। किसी वस्तु से जलग या रहित होने का भाव। २. प्रिय व्यक्ति का पास से अलग होना। ३. वियोग का दुःख।

विरहा-सज्ञा पु० एक प्रकार का ग्राम्य गीत, जिसे विशेषकर अहोर आदि गाते हैं।

विरहिणी-वि० दे० "वियोगिनी"।

विरहित-वि० रहित। मूल्य। बिना।

विरही-वि० [स्त्री० विरहिणी] प्रियतमा से अलग होने के कारण दुःखी। वियोगी। विरहोलकठिता-सज्ञा स्त्री० वह दुःखी नायिका, जिसके मन में पूरा विद्वान्म हो कि पति या नायक आवेगा, पर हो सकता है, वह किसी कारणवश न आवे।

विराग-सज्ञा पु० [वि० विरागी] १. वैराग्य। अनुराग का अभाव। चाह का न होना। २. विषय-भोग आदि से अलग रहने का भाव। उदासीनता।

विरागी-वि० १. विषयवासना से अलग रहनेवाला। वैरागी। ससार-त्यागी। २. उदासीन। ३. विमुख।

विराजना-क्रि० अ० १. दीप्तिमान होना। २. मौजूद रहना। उपस्थित होना। ३. बैठना।

विराजमान-वि० १. उपस्थित। मौजूद। बैठा हुआ। 'उपस्थिति' के लिए प्रयुक्त बहुवचन

आवर-सूचक शब्द। २. चमकता हुआ।  
शोभायमान।

विराजित-वि० दे० "विराजमान"।

विराट्-वि० १. बहुत बड़ा। विशाल।  
२. विकराल।

सज्ञा पु० परमात्मा का वह स्थूल स्वरूप,  
जिसका शरीर संपूर्ण विश्व है।

विराट्-सज्ञा पु० १. मत्स्य-देश। २. मत्स्य  
देश का राजा जिसके यहाँ अज्ञातवास के  
समय पांडव नीकर थे।

विराध-सज्ञा पु० १. पीड़ा। तकलीफ।  
२. सतानेवाला। ३. एक राक्षस, जिसे  
दंडकारण्य ने लक्ष्मण ने मारा था।

विराधन-सज्ञा पु० १. कष्ट या पीड़ा  
पहुँचाना। २. हाँसि करना।

विराम-सज्ञा पु० १. रुकना या थमना।  
ठहरना। २. मुस्ताना। विश्राम। ३. वाक्य के  
अंतर्गत वह स्थान, जहाँ बोलते समय रुकना  
पड़ता है। ४. छंद के चरण में यति।

विरामकाल-सज्ञा पु० विराम करने या  
मुस्ताने के लिए मिलनेवाली छुट्टी का समय।

विराम-विज्ञ-सज्ञा पु० वाक्य में विराम के  
समय लगाया जानेवाला चिह्न।

विराम-सन्धि-सज्ञा स्त्री० वह सन्धि, जो अंतिम  
या पक्का सन्धि होने के पहले उसकी शर्तों  
तय करने के लिए होनी है।

विराव-सज्ञा पु० १. शब्द। बोली। कलरव।  
२. हल्ला-गुल्ला। शोर-गुल।

वि० शब्द-रहित।

विरासो\* -वि० दे० "विलासो"।

विरिच, विरिचन-सज्ञा पु० दे० "विरचि"।  
द्रव्य।

विदज-वि० नारोग। स्वस्थ।

विदक्षता\* -वि० अ० दे० "उलक्षता"।

विरुत-वि० गुँजता हुआ।

विरुत-सज्ञा पु० १. राजाओं की स्तुति या  
प्रशंसा। यशोकीर्तन। प्रशस्ति। २. यश या  
प्रशंसासूचक पद्यों, जो राजा लोग प्राचीन  
काल में धारण करते थे। ३. यश।

विश्ववाली-सज्ञा स्त्री० किसी के गुण, परा-  
क्रम आदि का विस्तार से वर्णन। यश-वर्णन।

विरुद्ध-वि० [सज्ञा स्त्री० विरुद्धता]। १.  
प्रतिकूल। खिलाफ। विपरीत। उल्टा। २.  
अनुचित। ३. अप्रसन्न।

विरुद्ध-वि० १. चढ़ा हुआ। आरुढ़। २.  
उत्पन्न। ३. खूब जमा हुआ।

विरुप-वि० [स्त्री० विरुपा, विरूपता]  
१. कई रंग-रूप का। २. कुलूप। बदसूरत।  
भद्दा। ३. परिवर्तित। बदला हुआ। ४.  
शोभाहीन। ५. विरुद्ध। उलटा।

विरुपाक्ष-सज्ञा पु० १. शिव। महादेव।  
२. शिव के एक गण का नाम। ३. एक  
राक्षस, जो रावण का एक सेनानायक था।  
४. एक दिग्गज।

विरेचक-वि० दस्त लानेवाला। दस्तावर।  
विरेचन-सज्ञा पु० १. दस्त लानेवाली दवा।  
जुलाव। २. दस्त लाना।

विरोचन-सज्ञा पु० १. चमकना। प्रकाशित  
होना। २. प्रकाशमान। ३. सूर्य की किरण।  
४. सूर्य। ५. चंद्रमा। ६. अग्नि। किरण।  
७. विष्णु। ८. प्रह्लाद के पुत्र और बलि के  
पिता।

विरोध-पज्ञा पु० [वि० विरोधक] १.  
विपरीत या उल्टा भाव। प्रतिकूलता। २.  
विगाड। अगवन्। वेर। शत्रुता। ३. दो  
वार्तों का एक साथ न हो सकना। व्याघात।  
उलटा स्थिति। ४. किसी कार्य के विपरीत  
प्रयत्न। ५. भिन्न-भिन्न विचारों या तथ्यों  
में पारस्परिक विपरीत भाव।

विरोधक-सज्ञा पु० विरोध करनेवाला।  
विरोध-पीठ-सज्ञा पु० विपक्ष-सभा आदि में  
नरकारी पक्ष या बहुमत दल के विरोधी  
गट्टरों के बैठने का स्थान।

विरोधाभास-पज्ञा पु० एक अवलंकार, जिसमें  
जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य का विरोध  
दिलवाई पड़ता है।

विरोधी-वि० [स्त्री० विरोधिनी] १. विरोध  
करनेवाला। बाधा डालनेवाला। २. विपक्षी।  
प्रतिद्वन्दी। शत्रु। वैरी।

विरोपना-पज्ञा पु० रोपना। रोने या  
रोपने का कार्य।

विलंब-वि० देर। आवश्यक्ता या अनु-

मान से अधिक मध्य, जो किसी कार्य में लगे।

विलयना-क्रि० प्र० १. देर करना। बिजब करना। २. लटाना। ३. गहारा लेना।

विलयित-वि० १. जिसमें देर हुई हो। २. लटाना हुआ। मृन्मता हुआ।

विलय-वि० १. लज्जित। २. आश्चर्यचरित।

यवरागा हुआ।

विलक्षण-वि० [सज्ञा विलक्षणता] अनोखा।

अनूठा। असाधारण।

विलयना-क्रि० अ० दे० "विलयना"।

\*क्रि० अ० लाना। पता पाना।

विलयाना-क्रि० स० जलग होना। जलग करना। पघल होना।

विलपना\*-क्रि० अ० रोना।

विलपना\*-क्रि० स० [विलपना का स०]

घलाना।

विलम\*-सज्ञा पु० दे० "विलम्ब"। देर। अवैर।

विलमना\*-क्रि० अ० दे० "विलयना"।

विलम या विलयन-सज्ञा पु० १. विलीन

होने का भाव। नाश। एक वस्तु का दूसरे में मिल जाना। घुलकर मिल जाना। २.

किसी देशी रियासत या राज्य का आस-

पास के दूसरे बड़े राज्य में मिलकर एक

हो जाना। विघटित होना। (अप्रे०-

मन्तर)

विलयीकरण-सज्ञा पु० १. विलय करना।

२. छोटे-छोटे राज्यों का एक में विला-

कर एक राज्य में करना। ३. राज्य-द्वारा

किसी छोटे राज्य को अपने में मिला

लेना।

विलयन-सज्ञा पु० १. चमकने की क्रिया।

२. आयोद-प्रमोद। कीड़ा।

विलसना\*-क्रि० अ० १. शोभा पाना।

२. विलास करना। ३. आनन्द भगाना।

विलास-सज्ञा पु० १. विलास-विलासकर

राना। २. रोककर दुख प्रकट करने की

क्रिया। ३. खेद। कदम।

विलासना\*-क्रि० अ० १. रोककर दुख प्रकट

करना। विलास करना।

विलास्यत-सज्ञा पु० [अ०] १. विदेश। पराना

देश। २. दूर का देश। [चंद्रबाल में प्रायः दृग्ग्रा प्रयाग प्रिदेन या दृग्गर्ह के लिए होता है।]

विलास्यती-वि० [अ०] १. विलास्यत गा।

विदग्धा। २. दूगरे रंग में रंगा हुआ।

विलास्यती वेगन-गज्ञा पु० टमाटर। एक

तरह का वेगन, जिमका रंग कच्चा होने पर

हरा और पकने पर लाल होता है।

विलास-सज्ञा पु० १. बहुत मुख भोग। आनन्द।

२. मनोरंजन। ३. स्त्रियों का हास्य-भाव।

नाज-नस्तर। ४. किसी अंग की मनोहर

चेष्टा।

विलासिका-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का

रूपक (नाटक), जिसमें एक ही अंक होता

है। २. दे० "विलासिनो"।

विलासिनी-सज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री।

वामिनी। २. बेरुया।

विलासी-सज्ञा पु० [स्त्री० विलासिनी]

१. सुख-भोग में अनुरक्त पुरुष। भोगी।

कामा। २. आराम-लालच। ३. जामोद-

प्रमोद करनेवाला। ४. विनोदी। हँसो।

कीतुकशोल।

विलोक\*-वि० अनुचित।

विलीन-वि० १. अदृश्य। लुप्त। २. जो किसी

दुगरे में मिल गया हो। ३. छिपा हुआ।

४. मरु।

विलेप-सज्ञा पु० १. लेप। २. परस्तर।

विलेपन-सज्ञा पु० लेप करने का पदार्थ।

विलेप्य-सज्ञा पु० १. विल या दरार में

रहनेवाले जीव। २. सर्प। साप।

विलोकना-क्रि० स० देखना।

विलोकन\*-सज्ञा स्त्री० चितवन। दृष्टि।

विलोचन-सज्ञा पु० आँख। नेत्र। नयन।

विलोइन-सज्ञा पु० मयना। हिलोला। बालो-

इन।

विलोइना-क्रि० स० १. मयना। हिलोला।

२. लुप्त या गायब होना।

विलोप-सज्ञा पु० १. लुप्त या गायब होना।

किसी वस्तु की लेकर भाग जान की क्रिया।

२. नाश। ३. रक्षावट। बाधा। ४. आपात।

५. नुकसान।

लोपन-सज्ञा पु० लुप्त या गायब करना।  
लेकर भाग जाना। दे० "विलोप"।

लोपना\*-क्रि० सं० लुप्त या गायब करना।  
नष्ट करना।

लोभ-सज्ञा पु० लालच। प्रलोभन। मोह।  
वि० विना लालच के।

लोभ-वि० १ विपरीत। उल्टा। क्रम के  
विपरीत। २ उचित या प्रचलित रीति के  
विपक्ष।

मज्ञा पु० ऊँचे से नीचे की ओर आने का क्रम।  
संगीत में स्वर का उतार-चढ़ाव।

बेलोमक-वि० विपरीत।

बेलोमजा, बिलोमजात-सज्ञा स्त्री० पिता  
से उच्च जातिवाली माँ से उत्पन्न  
सन्तान।

विलो-वि० १ सुंदर। २ चंचल।

वेल्व-सज्ञा पु० बेल का पेड़।

वेल्वपत्र-सज्ञा पु० बेल का पत्ता, जो शिव  
पर चढ़ाते हैं। बेलपत्र।

वि०-वि० दो। दूसरा। दे० "विवि"।

विवक्षा-पज्ञा स्त्री० १ कहने या बोलने की  
इच्छा। विचार प्रकट करने का इच्छा।

२ अर्थ। मतलब। ३ प्रसंगवश हो जान-  
वाली बात। ४ संदेह। शक।

विवक्षित-वि० जिसकी आवश्यकता या इच्छा  
है। अपेक्षित।

विवदना\*-क्रि० अ० विवाद करना। शास्त्रार्थ  
करना।

विवर-पज्ञा पु० १ छिद्र। बिल। २ दरार।  
गर्त। ३ कदरा। गुफा।

विवरण-सज्ञा पु० १ सविस्तर वृत्त।  
व्याख्या। २ वृत्तांत। वयान। हाल। ३  
विवेचन। व्याख्या। भाष्य। टीका।

विवरणिका-वृत्ताओं या सभा सस्थाओं का  
वह विवरण, जो सूचना के लिए किसी के  
पास भेजा जाय (अर्थ-रिपोर्ट)।

विवर्जन-सज्ञा पु० १ निषेध। मनाही।  
२ दे० "वर्जन"। ३ परित्याग। अनादर।

विद्वान-वि० १ शोध। कमीना। २ कुजाति।  
३ बदरंग। बुरे रंग का। ४ जिसके चेहरे  
का रंग उतरा हुआ हो। कांतिहीन।

सज्ञा पु० साहित्य में एक भाव, जिसमें भय,  
मोह, क्रोध आदि के वारण मुख का रंग  
बदल जाता है।

विवर्तन-सज्ञा पु० १ समुदाय। समूह। २.  
आकाश। ३ भ्राति। भ्रम। ४ रूपान्तर।  
५ नृत्य।

विवर्तन-पज्ञा पु० १ घूमना। फिरना।  
चक्कर काटना। २ चारा और घूमना।  
नाच।

विवर्तवाद-सज्ञा पु० वेदांत में एक सिद्धांत,  
जिसके अनुसार ब्रह्मा को सृष्टि का मुख्य  
उत्पत्ति-स्थान और सत्ता को माया मानते  
हैं। परिणामवाद।

विवर्तित-वि० १ बदला हुआ। २ भ्रमित।  
३ उलझा हुआ।

विवर्द्धन-सज्ञा पु० वृद्धि। १ विशेष रूप से  
वढ़ाना। २ किसी छोटी वस्तु के प्रतिविम्ब  
आदि की कुछ विशेष प्रतियाध्या-द्वारा बड़ा  
करना।

विवश-वि० १ जिसका कुछ वश न चले।  
लाचार। बेबस। २ पराधीन।

विवसत-वि० [स्त्री० विवसना] बिना बरन  
का। नगा।

विवस्त्र-वि० बिना कपड़े का। नगा।

विवस्वत्-सज्ञा पु० १ सूर्य। २ सूर्य का  
सारधा। अहण।

विवाद-सज्ञा पु० १ किसी बात पर जवानी  
झगडा। झगडा। २ मुकदमा। मुकदम-  
वाजी।

विवादक-सज्ञा पु० १ विवाद करनेवाला।  
झगडा। २ मुकदमेवाज।

विवादास्पद-वि० जिस पर विवाद या झगडा  
हो। विवाद-योग्य। विवादयुक्त।

विवादी-सज्ञा पु० १ कहा-मुनी या झगडा  
करनेवाला। २ मुकदमा उठनेवाला में से  
कोई एक पक्ष। वादा। मुद्दी।

विवाह-सज्ञा पु० एक धार्मिक और सामाजिक  
कृत्य, जिसके अनुसार पुरुष और स्त्री आपस  
में पति और पत्नी का सम्बन्ध स्थापित  
करते हैं। शादी। व्याह। परिणय। पाणि-  
ग्रहण। हिन्दू-धर्म के अनुसार विवाह आठ

प्रकार के माने गए हैं—ब्राह्म, वैश्य, आप, प्राजापत्य, आसुर, गायर्व, राक्षस और पैशाच। आजकल केवल ब्राह्म विवाह प्रचलित है।

विवाह-विच्छेद—सजा पु० तलाक। पति और पत्नी का अपना विवाह-सम्बन्ध तोड़ना।

[अंग्रे०—डाइवोर्स]

विवाहित—वि० [स्त्री० विवाहिता] जिसका विवाह हो गया हो। व्याहृत हुआ।

विवाही—वि० विवाहित। जिसका विवाह हो चुका हो।

विवाह—वि० विवाह करने योग्य। शादी करने लायक।

विधि\*—वि० १ दो। २ दूसरा।

विविक्त—वि० १ पृथक् या अलग किया हुआ। २ निर्जन। ३ पवित्र।

विविचार—वि० १ विचार-रहित। २ विवक रहित। ३ आचार-रहित।

विविधिया—सजा स्था० ज्ञान प्राप्त करने या जानने की इच्छा।

विविध—वि० बहुत प्रकार का। अनेक तरह का।

विविर—सजा पु० १ खोह। गुफा। २ बिल। ३ दरार।

विवृत—वि० १ विस्तृत। फैला हुआ। २ खुला हुआ।

मन्त्रा पु० ऊप्य स्वरों का उच्चारण करने का एक प्रयत्न (व्या०)।

जिपुति—सजा स्त्री० १ व्याख्या। टीका। विवरण। २ गतिविधि। धरा। ३ चाल और धूमना। परिभ्रमण। ४ अपने किसी कार्य के अनुचित समझे जाने पर उसके सफाकरण के लिए दिया गया यत्नव्य या यत्न। कैफियत।

विपुत्त—वि० [सजा विपुत्ति] १ चारा और घरा हुआ। २ धूमना हुआ। ३ लौटा हुआ। दे० पगवृत्त।

विवेक—सजा पु० १ भले २ रेमान भावना मन की वह शक्ति, जिससे मनुष्य का ज्ञान होता है। ३ बुद्धि। समझ। विचार। निगमन। बुद्धि।

विवेकी—सजा पु० १ भले-बुर का ज्ञान रखने वाला। २ बुद्धिमान्। समतदार। ज्ञानी। विचारक। ३ न्यायशील। निर्णय-कर्ता।

विवेचक—सजा पु० विवेचना करनेवाला विवेचन—सजा पु० १ व्याख्या। मीमांसा। २ सली भाँति परीक्षा करना। जाँचना। यह देखना कि कौन-सी बात ठीक है और कौन नहीं। निर्णय। ३ तर्क वितर्क। सन्-जसन् का विचार।

विवेचनीय—वि० विवेचन करने योग्य। विचार करने लायक।

विवेचित—वि० १ जिसकी विवेचना को जा चुकी हो। विचारा हुआ। २ निश्चित।

विष्योक—सजा पु० साहित्य में एक हाव, जिसमें स्त्रियाँ सयोग के समय प्रिय वा अनावर करता है।

विशद—वि० १ बड़ा। बृहत्। विशाल। २ स्वच्छ। विमल। साफ। ३ व्यक्त। स्पष्ट। ४ सन्देश। ५ भव्य। समशील। ६ मुदर। खूबसूरत।

विशय—सजा पु० १ सपह। २ आश्रय।

विशयकरणी—सजा स्था० दारों के भाव आदि में स विषय का प्रभाव दूर करने-वाली प्रक्रिया या दवा।

विशापति—सजा पु० राजा।

विशाख—सजा पु० १ वात्सल्य। २ एक देवता, जिनका जन्म वात्सल्य के वज्र चलाने से हुआ था। ३ विष।

विशाखवत—सजा पु० संस्कृत का प्रसिद्ध कवि और नाटककार जिहान, 'मुबारकनाम' नामक नाटक बनाया है।

विशाखा—सजा स्त्री० सत्ताईस नक्षत्रों में से मोहवा नक्षत्र, जिस राशियाँ ना रहती हैं।

विशारद—सजा पु० १ निगी विषय का अच्छा पंडित या विद्वान्। २ कुशल। चतुर।

वि० १ महादूर। २ श्रेष्ठ।

विशाल—वि० [सजा विशालता] १ बहुत बड़ा और विस्तृत। व्या-बोहा। २ मुदर और भव्य। ३ प्रसिद्ध। महादूर।

विशालाक्ष-सज्ञा पु० १ महादेव। शिव।  
२ विष्णु। ३ गरुड।

विशालाक्षी-सज्ञा स्त्री० १ बड़ी-बड़ी सुन्दर  
जोनावाली स्त्री। २ पार्वती। ३ देवी  
का एक मूर्ति।

विशाल-सज्ञा पु० वाण।

विशिष्ट-वि० [सज्ञा विशिष्टता] १ जिसमें  
किसी प्रकार की विशेषता हो। विशेष।  
खास। प्रमुख। २ विलक्षण। ३ श्रेष्ठ।  
४ प्रतिष्ठ। मशहूर।

विशिष्टता-सज्ञा स्त्री० विशेषता।

विशिष्टाद्वैत-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध दार्शनिक  
सिद्धांत, जिसके अनुसार जीवात्मा और  
जगत् दोनों ब्रह्म से भिन्न होन पर भी वास्तव  
में भिन्न नहीं मान जाते।

विशीर्ण-वि० १ दुबला-पतला। २ सूखा।  
३ जाण।

विशुद्ध-वि० [भाव० सज्ञा विशुद्धता] १  
शुद्ध। जिसमें किसी प्रकार की मिलावट  
आदि न हो। २ सच्चा। खालिस।

विशुद्धता-सज्ञा स्त्री० विशुद्ध होने का भाव।  
शुद्धता। पवित्रता।

विशुद्धि-सज्ञा स्त्री० शुद्धता। पवित्रता।

विशुचिका-सज्ञा स्त्री० हेजा।

विश्व सल-वि० १ बिना जजार के। बन्धन-  
रहित। २ जो रोक या दबाया न जा  
सके। ३ जिसमें कोई कम न हो।

विशेष-वि० १ खास। प्रधान। साधारण के  
अतिरिक्त। मुख्य। २ भेद। जाति। ३  
अधिक।

सज्ञा पु० १ साधारण के अतिरिक्त।  
२ अधिकता। ज्यादागी। ३ भेद। अंतर।  
४ वस्तु। पदार्थ। ५ साहित्य में एक प्रकार  
का अङ्कार, जिसमें (क) बिना आधार के  
आशय (ख) थोड़ा काम करने पर बहुत-  
सी प्राप्ति या (ग) एक ही चीज का अनक  
न्याना में होना वर्णित होता है। ६ सात  
प्रकार के पदार्थों में एक। (वैशेषिक)

विशेषज्ञ-सज्ञा पु० जिस किसी विषय का  
बहुत अधिक या खास तौर का ज्ञान हो।

विशेषण-सज्ञा पु० १ वह, जो किसी प्रकार

की विशेषता उत्पन्न करे या बतलावे।  
२ व्याकरण में वह शब्द, जो किसी सज्ञा  
की कोई विशेषता सूचित करे।

विशेषता-सज्ञा स्त्री० १ विशेष का भाव।  
औरों से भिन्न गुण। २ प्रधानता। मुख्यता।  
खासियत। समुच्चयित।

विशेषना-क्रि० अ० १ निश्चय या निर्णय  
करना। २ विशेष रूप देना।

विशेष्य-सज्ञा पु० व्याकरण में वह सज्ञा,  
जिसके साथ कोई विशेषण लगा हो।

विश्रम-सज्ञा पु० १ विश्वास। एतवार। २  
प्रेमा और प्रेमिका में रति के समय होने-  
वाला झगडा। ३ प्रेम।

विश्रब्ध-वि० १ शांत। २ विश्वसनीय। ३  
निभय। निडर।

विश्रब्धनबोडा-सज्ञा स्त्री० साहित्य में वह  
नबोडा नायिका, जिसकी आगे पति पर  
कुछ कुछ अनुराग और कुछ-कुछ विश्वास  
होन लगा हो।

विश्रवा-सज्ञा पु० एक प्राचीन ऋषि, जो कुंवर  
के पिता थे।

विश्रान्त-वि० १ जिसने विश्राम कर लिया  
हो। २ जो विश्राम कर रहा हो। ३ थका  
हुआ। ४ ठहरा या रुका हुआ।

विश्रान्ति-सज्ञा स्त्री० १ दे० 'विश्राम'।

विश्राम-सज्ञा पु० १ श्रम दूर करना।  
थकावट मिटाना। आराम करना। २  
ठहरने का स्थान। ३ आराम। चैन। सुख।  
विश्रामालय-सज्ञा पु० यात्रियों के आराम  
करने की जगह (स्टेशन पर)। [अग्र-  
रेस्टलूम]

विश्री-वि० १ श्रीविहीन। कान्ति से हान।  
२ बिना धन या ऐश्वर्य का। ३ कुत्सप।  
भेदा।

विभृत-वि० १ प्रतिष्ठ। मशहूर। २. जो  
सुना गया हो।

विभृतात्मा-सज्ञा पु० विष्णु।

विभृति-सज्ञा स्त्री० १ प्रतिष्ठि। ख्याति।  
मशहूर होने का भाव। २ किसी बात  
की सबकी बतान या प्रसिद्ध करने की  
श्रिया या भाव।

विश्लिष्ट-वि० १ जिसका विश्लेषण हो चुका हो। अलग किया हुआ। २ विस्तृत। फैला हुआ। ३ प्रस्ट। प्रकाशित।

विश्लेष-सज्ञा पु० दे० "विश्लेषण"। अलग होना। विभाग।

विश्लेषक-सज्ञा पु० १ विश्लेषण करनेवाला। २ रासायनिक या अन्य किसी विषय का विश्लेषण।

विश्लेषण-सज्ञा पु० १ किसी बात के सब तथ्या की परीक्षा के लिए उसका अलग-अलग निरूपण। २ किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को अलग-अलग करना।

विश्वभर-सज्ञा पु० सारे ससार का पालन करनेवाला। परमेश्वर। विष्णु।

विश्वभर-सज्ञा स्त्री० पृथ्वी।

विश्व-सज्ञा पु० १ ससार। दुनिया। चौदहा भुजों का समूह। समस्त ब्रह्मांड। २ देवताओं का एक गण, जिसमें चार दस देवता हैं—यमु सत्य, ऋतु दक्ष काल, काम, धृति, क्रुह, पुरुषा और माद्रवा। ३ विष्णु। ४ शरीर।

वि० १ समस्त। सब। २ बहुत।

विश्वकर्मा-सज्ञा पु० १ ससार का रचयिता। ईश्वर। ब्रह्मा। २ एक देवता, जो शिल्प-शास्त्र के आविष्कर्ता माने जाते हैं। ३ बड़ई। ४ लोहार।

विश्वकोश-सज्ञा पु० वह ग्रन्थ, जिसमें सब प्रकार के विषयों का विस्तृत वर्णन हो (अग्र०-एन्साइक्लोपीडिया)।

विश्वगंधा-सज्ञा पु० पृथ्वी।

विश्वधर-सज्ञा पु० विष्णु।

विश्वनाथ-सज्ञा पु० १ ससार का स्वामी। २ शिव। महादेव।

विश्वनाभ-सज्ञा पु० विष्णु।

विश्वपति-सज्ञा पु० ईश्वर।

विश्ववधू-सज्ञा पु० शिव। महादेव।

विश्वरूप-सज्ञा पु० १ विष्णु। २ शिव। ३ श्रीकृष्ण का यह स्वरूप, जो उग्रान गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था।

विश्वविद्यालय-सज्ञा पु० वह सत्त्वा, जिसमें

सभी विषयों की उच्च वांछनी शिक्षा दी जाती हो और परीक्षाएँ ली जाती हो। (अग्र०-यूनिवर्सिटी)।

विश्वव्यापी-सज्ञा पु० ईश्वर।

वि० जो सार ससार में व्याप्त या फैला हो। जो सब जगह विद्यमान या मौजूद हो। सर्वव्यापी।

विश्वश्रवा-सज्ञा पु० एक मुनि, जो कुवर और रावण आदि के पिता थे।

विश्वसनीय-वि० [सज्ञा विश्वसनीयता] विश्वास करने योग्य। एतबार करने लायक। जिसका विश्वास किया जा सके। विश्वस्त।

विश्वात्मा-सज्ञा पु० १ विष्णु। २ शिव। ३ ब्रह्मा।

विश्वाधार-सज्ञा पु० ईश्वर।

विश्वाभिन्न-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध ब्रह्मर्षि, जो गायत्रि, गायत्री और कौटिलिक नाम कहे जाते हैं। कहा जाता है कि वे बहुत ही उग्र स्वभाव के थे और प्रायः लोगों को शाप दे दिया करते थे।

विश्वास-सज्ञा पु० १ विष्णु। २ एक सवत्सर। ३ एक गंधर्व।

सज्ञा स्त्री० रात।

विश्वास-सज्ञा पु० एतबार। यकीन। प्रतीति। भरोसा।

विश्वासघात-सज्ञा पु० [वि० विश्वास-घातक] धोखा। अनन पर विश्वास करने-वाले के साथ उसके विश्वास के विरुद्ध विपरीत कार्य करना।

विश्वासघातक-सज्ञा पु० १ धोखेबाज। विश्वासघात करनेवाला। २ भूत। ढग।

विश्वास्तपात्र-सज्ञा पु० विश्वसनीय। वह व्यक्ति, जिसका विश्वास या एतबार किया जा सके।

विश्वास्तभाजन-सज्ञा पु० दे० 'विश्वानपान'। विश्वासी-सज्ञा पु० [स्त्री० विश्वानिना] १ विश्वास करनेवाला। २ विश्वसनीय। जिस पर विश्वास हो।

विश्वेदेव-सज्ञा पु० १ अग्नि। २ देवताओं

का एक गण, जिसमें इंद्र, अग्नि आदि नौ देवता माने जाते हैं।

विश्वेदेव-सज्ञा पु० अग्नि।

विश्वेश-सज्ञा पु० १. शिव। २. विष्णु।

विश्वेश्वर-सज्ञा पु० ईश्वर। शिव की एक मूर्ति का नाम।

विष-सज्ञा पु० जहर।

मृत्ता०—विष की गाँठ=अनेक प्रकार की बरसई या खराबी पैदा करनेवाला।

विषकंठ-सज्ञा पु० शिव। महादेव।

विषकन्या-सज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसके शरीर में इस आशय से कुछ विष प्रविष्ट कर दिए गए हों कि जो उसके साथ सभोग करे, वह मर जाय।

विषण्ण-वि० जिसका मन बहुत दुखी हो।

खिन्न। बहुत उदास। विपादयुक्त।

विषण्णवदन-वि० उदास चेहरेवाला।

विषदंड-सज्ञा पु० कमल की नाल।

विषधर-सज्ञा पु० साँप।

विषमत्र-सज्ञा पु० १ विष उतारने का मंत्र जाननेवाला। २ संपेरा।

विषम-वि० १ जो सम या समान न हो। असमान। २ वह सख्या, जिसमें दो से भाग देने पर एक बचे। ताक। ३ बहुत कठिन। ४ बहुत तीव्र। बहुत तेज।

५ भीषण। भयंकर।

गज्ञा पु० १ सक्कट। आफन। २ वह छंद, जिसके चारा चरणा में बराबर-बराबर अक्षर न हों, बल्कि कम और ज्यादा अक्षर हों। ३ एक अर्थालंकार, जिसमें दो विराधी वस्तुओं का संबंध वर्णन किया जाता है या यथायोग्य का जभाव कहा जाता है। ४ ताल का एक प्रकार। (संगीत)

विषमचतुर्भुज या विषमचतुष्कोण-चतुर्भुज क्षेत्र, जिसकी कोई भी दो भुजाएँ समानान्तर न हों।

विषमन्वर-सज्ञा पु० १ जाड़ा देकर आनेवाला नुसार। मलेरिया। २ एक तरह का पुराना नुसार, जो नित्य होता है, पर जिसके आने का समय नियत नहीं रहता।

विषमता-सज्ञा स्त्री० १. विषम या असमान होने का भाव। २. विरोध। वैर।

विषमपद-सज्ञा पु० असमान पदोंवाला छंद।

विषमवृत्त-पज्ञा पु० वह छंद, जिसके पद समान न हों। असमान पदोंवाला छंद।

विषय-पज्ञा पु० १ वह, जिस पर विचार किया जाय। मजमून। २. वस्तु। ३. स्त्री-सभोग। ४ संपत्ति।

विषयक-अव्य० किसी विषय से सम्बन्ध रखनेवाला। संबंधी।

विषयप्रवेश-सज्ञा पु० किसी विषय के सम्बन्ध में दिया जानेवाला परिचय या भूमिका। ग्रंथ की भूमिका या ग्रंथ के विषय का परिचयात्मक कथन।

विषय-समिति-सज्ञा स्त्री० कुछ खास सदस्यों की वह समिति, जो किसी सम्मेलन में उपस्थित किए जानेवाले विषय या प्रस्ताव आदि निश्चित करता है। [अंग्रे०—सब-जेक्ट्स कमेटी]।

विषयानुक्रमणिका-सज्ञा स्त्री० विषय-सूची। विषयों के आधार पर बनी हुई अनुक्रमणिका या सूची।

विषयो-सज्ञा पु० १ भाग-विलास में बहुत आसक्त रहनेवाला। विलासी। वामी। २ नामदेव।

विषविद्या-सज्ञा स्त्री० मंत्र आदिकी सहायता से विष उतारने की विद्या।

विषवेध-सज्ञा पु० १ मंत्र-मन्त्र आदि की सहायता से विष उतारनेवाला वेध। २. विष का प्रभाव दूर करने की दवा करनेवाला।

विषागना-सज्ञा स्त्री० दे० "विषयन्या"। विषाक्त-वि० जहरीला। विषैला। विष में भरा हुआ।

विषाण-सज्ञा पु० १. सींग। २. सूँवर का दाँत। ३. खींग।

विषाद-सज्ञा पु० [वि० विषादी] १. वेद। दुःख। रज। २ निश्चेष्ट होने का भाव। जड़ता।

विषानन-सज्ञा पु० साँप।

विष्णु-सज्ञा पु० वह समय, जब वि मूष्य विपुस्त रेखा पर पहुँचता है और दिन तथा रात दोनों बराबर होते हैं। ऐसा समय वर्ष में दो बार जाता है।

विपुस्त रेखा-गङ्गा स्त्री० एक कल्पित रेखा, जो पृथ्वी-तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व-पश्चिम पृथ्वी के चारों ओर मानी जाती है।

विपेला-वि० जहरीला। विष से भरा हुआ।

विष्कम्भ-सज्ञा पु० १ नाटक का एक प्रकार का अंक। जो कथा पहले हो चुकी हो अथवा जा अभी होनेवाली हो, उसकी सूचना इसमें मध्यम पात्रों-द्वारा दी जाती है। २ ज्योतिष में एक प्रकार का योग। ३ विस्तार। ४ राधा। विघ्न।

विष्कम्भक-सज्ञा पु० दे० 'विष्कम्भ'।

विधिकर-सज्ञा पु० बिडिया।

विष्टम्भ-सज्ञा पु० १ बाधा। स्नायु। २ पट फूलने का रोग।

विष्टम्भन-सज्ञा पु० रोकने या सिकोड़ने की क्रिया।

विष्टिभद्रा-सज्ञा स्त्री० ज्योतिष में एक प्रकार का योग, जो याना और शुभ कार्यों के लिए निश्चित माना जाता है। भद्रा।

विष्टा-सज्ञा स्त्री० मल। मूला। गृह। पापाना।

विष्णु-सज्ञा पु० १ ईश्वर। हिंदुओं के एक प्रधान देवता, जो सृष्टि का भरण-पोषण और पालन करनेवाले माने जाते हैं। रहस्य सृष्टि की रचना करनेवाला और शिव सृष्टि का नष्ट करनेवाला माना जाते हैं। २ विष्णु का १० अवतार मान जाते हैं। ३ बारह जातियों में से एक।

विष्णुकाता-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की लता।

विष्णुपुस्त-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध ऋषि और ध्याकर, जो कौटिल्य नाम से प्रसिद्ध थे। २ प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चाणक्य का असली नाम।

विष्णुपदी-सज्ञा स्त्री० गंगा नदी।

विष्णुलोक-सज्ञा पु० वैकुण्ठ।

विष्णुकुसेन-सज्ञा पु० १ विष्णु। २ एक मनु का नाम। ३ शिव।

विस्तद्वन-वि० १ विपरीत। विरुद्ध। उलटा। २ विवक्षण। जटुत।

विसर्ग-सज्ञा पु० १ व्याकरण में एक वर्ण, जिसमें ऊपर-नीचे दो बिंदु होते हैं और जिसका उच्चारण आध ह के समान होता है। २ वान। ३ त्याग। ४ मोक्ष। ५ मृत्यु। ६ प्रलय।

वित्तजन-सज्ञा पु० १ छाटना। परित्याग। २ विहा होना या चला जाना। ३ समा की समाप्ति। समाप्ति। ४ पोडोपचार पूजन में अंतिम उपचार। ५ आवाहन किए हुए देवता से अपने स्थान पर वापस आने की प्रार्थना करना।

वित्तप-सज्ञा पु० एक तरह की बीमारी, जिसमें बुद्धि के साथ फुसियाँ हो जाती हैं।

विस्तार-सज्ञा पु० १ फैलाव। २ प्रवाह। ३ उत्पत्ति। ४ बोलने के लिए अलग रखा गया अन्न। बोज।

विस्तारिका-सज्ञा स्त्री० दे० 'विस्तारिका'। विस्तार-वि० बहुत अधिक। विस्तृत। बड़ा और लम्बा चौड़ा।

सज्ञा पु०\* दे० 'विस्तार'।

विस्तारण-सज्ञा पु० विस्तार करने या बढ़ाने की क्रिया या भाव।

विस्तार-सज्ञा पु० १ फैलाव। लम्बे या चौड़े होने का भाव। २ लम्बाई और चौड़ाई।

विस्तारण-सज्ञा पु० फैलाना। बढ़ाना।

विस्तार करना।

विस्तारण\*—क्रि० सं० फैलाना। बढ़ाना।

विस्तार करना।

विस्तारण-वि० फैला हुआ। विस्तृत।

विस्तृत-वि० [सज्ञा विस्तार, विस्तृति] १ फैला हुआ। विस्तारवाला। २ यथार्थ विवरणवाला। ३ बहुत बड़ा या लम्बा चौड़ा। विशाल।

विस्तार-सज्ञा पु० १ विस्तार। फैलाव।

२ धनुष को टोकार और डोरी। ३ तेजी।

४ पिकास। ५ कोपना।

विस्फारण-सज्ञा पु० [वि० विस्फारित] १. फैलना। खोलना। २. झाड़ना।  
 विस्फारित-वि० १. अच्छी तरह से खोला या फैलाया हुआ, जैसे विस्फारित नेत्र। २. फोड़ा हुआ।  
 विस्फोट-सज्ञा स्त्री० १. "स्फोट" का उल्टा। फूले या बड़े हुए पदार्थ को पूर्व स्थिति में लाना। २. बड़े हुए मुद्दा के प्रचलन को फिर से पूर्व स्थिति में लाना।  
 विस्फोट-सज्ञा पु० १. अन्दर की गरमी आदि के कारण फूटना। २. बम का फूटना। ३. ज्वालामुखी का फूटना। ४. जहरीला और खराब फोड़ा।  
 विस्फोटक-सज्ञा पु० १. भभककर फूटनेवाला पदार्थ, जैसे बम आदि। २. जहरीला फोड़ा।  
 विस्मय-सज्ञा पु० १. आश्चर्य। ताज्जुब। २. साहित्य में अद्भुत रस का एक स्थायी भाव।  
 विस्मरण-सज्ञा पु० भूल जाना। याद न रखना।  
 विस्मित-वि० चकित। जिसे विस्मय या आश्चर्य हुआ हो।  
 विस्मृत-वि० भूला हुआ। जो स्मरण या याद न हो।  
 विस्मृति-सज्ञा स्त्री० भूल जाना। विस्मरण।  
 विहंग-सज्ञा पु० १. चिड़िया। २. बाण। ३. बादल।  
 विहंगम-सज्ञा पु० चिड़िया।  
 विहंगना-कि० अ० १. मुगहरना। हंगना। २. गिलना।  
 विहंग-सज्ञा पु० दे० "विहग"।  
 विहरना-कि० अ० विहार करना। आनन्द करना। घूमना-फिरना।  
 विहरण-सज्ञा पु० १. विहार करना। घूमना। आनन्द करना। २. कैलिथोडा।  
 विहार-सज्ञा पु० मकर। प्रातः सात।  
 विहार-सज्ञा पु० १. मनबहताव के लिए घूमना। आनन्द करना। २. रति-थोड़ा। मभाग। ३. थोड़ा करने का स्थान। ४. थोड़ा भिक्षु या गन्यानिया के रहने का स्थान। ५. भाग्य गणना का एक रज्य।

विहारो-सज्ञा पु० [स्त्री० विहारिणी] थोड़ा का एक नाम। विहार करनेवाला।  
 विहित-वि० १. जिसका विधान किया गया हो। नियमों के अनुसार उचित। २. किया हुआ। ३. दिया हुआ।  
 विहीन-वि० [सज्ञा विहीनता] १. छोड़ा हुआ। त्यक्त। २. वगैर। विना। रहित।  
 विह्वल-वि० [सज्ञा विह्वलता] वचन। व्याकुल। घबराया हुआ।  
 वीक्ष-सज्ञा पु० दृष्टि।  
 वीक्षण-सज्ञा पु० देखना।  
 वीचि-सज्ञा स्त्री० पानी की लहर।  
 वीचिमाली-सज्ञा पु० समुद्र।  
 वीटक, वीटक-सज्ञा पु० पान का बीड़ा।  
 वीगा-सज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध बाजा। वीन।  
 वीगापाणि-सज्ञा स्त्री० सरस्वती। हाथ में वीगा धारण करनेवाली देवी।  
 वीत-वि० १. जो छोड़ दिया गया हो। २. जो छूट गया हो। ३. व्यतीत। समाप्त।  
 वीता हुआ। ४. मुक्त। निवृत्त। ५. सुन्दर।  
 वीतराग-सज्ञा पु० जिनमें मोह-माया या आसक्ति छोड़ दी हो। जिनमें मासारिक वस्तुओं और मुला की चाह निवृत्त हो गई हो। नतार में निवृत्त।  
 वीतिहोत्र-सज्ञा पु० १. अग्नि। २. सूर्य।  
 वीथि-सज्ञा स्त्री० दे० "वीथी"।  
 वीथिका-सज्ञा स्त्री० दे० "वीथी"।  
 वीथी-सज्ञा स्त्री० १. गली। मार्ग। रास्ता। २. दृश्यवाच्य या रुक रुक एक भेद, जो एक ही जगह का होता है और जिसमें एक ही नाम रहता है। ३. आवागमन में मथावा के रहने के कुछ विनिष्ट स्थान।  
 वीथ्यग-सज्ञा पु० रूपक में वीथी के अंग, जो १३ माने गए हैं।  
 वीसा-सज्ञा स्त्री० १. व्याज होने की दृष्टि। २. द्विगुण। एक प्रकार का गणनाकार।  
 वीर-सज्ञा पु० १. यहादुर। माइसी योद्धा यन्वान्। दूर। २. पांडा। मीन। ३. जो किसी काम में जीर काया में बहुत बड़का हो। ४. पुत्र। ५. पति या भाई के लिए सम्मान। (स्त्री०) ६. साहित्य

म एव रम्य, जिसमें उत्साह और वाग्ता  
आदि का उणा होता है। ७ तापिका  
य अनुसार साधना त जीव भावा में न एव  
भाव।

वीरकेशरी-मज्ञा पु० वीरा में सिंह का समान  
श्रेष्ठ।

वीरवति-मज्ञा स्त्री० १ नगई के मंदान  
म मृदु। २ वीरा का रणक्षेत्र में सरने  
म प्राप्त हृत्तवाता गति। रम्य।

वीरता-मज्ञा स्त्री० दूरता। वृहानुरी।

वीरप्रभू-मज्ञा स्त्री० वीर सम्मान उत्पन्न  
करनवाली स्त्री। वीर जननी।

वीरबाहु-मज्ञा पु० विष्णु।

वीरभद्र-मज्ञा पु० १ अश्वमेध यज्ञ का घोडा।  
२ शिव के एक प्रसिद्ध गण, जो उनक पुत्र  
और अवतार मान जात है।

वीरभूमि-मज्ञा स्त्री० यद्धभूमि। पश्चिमा  
जंगल का एक नगर।

वीरमाता-मज्ञा स्त्री० वीर पुत्र की माँ। वीर  
पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्री। वीरप्रभू।

वीरललित-मज्ञा पु० वीरा की तरह, पर साथ  
ही कोमल स्वभाववाला।

वीरवती-मज्ञा पु० बहुत बड़ा वीर। वीरता  
का प्रत र्णवाला। परम वीर।

वीरवधन-मज्ञा स्त्री० रणभूमि।

वीरधर्म-मज्ञा स्त्री० रणभूमि।

वीरशेख-मज्ञा पु० शेखा का एक भद्र।

वीरसू-मज्ञा स्त्री० दे० "वीरप्रभू"। वीर  
पुत्र उत्पन्न करनेवाली स्त्री।

वीरा-मज्ञा स्त्री० १ मदिरा। शराब।  
२ वह स्त्री, जिसके पति और पुत्र  
हो।

वीराचारी-मज्ञा पु० एक प्रकार के वाममार्गी,  
जो देयताओं को उपासना वीर भाव से  
करत हैं।

वीरान-वि० [ फा० ] मुत्तसान। उजड़ा हुआ  
स्थान। उजाड़। वह जगह, जहाँ बस्ती न  
रह गयी है। निजब।

वीरासन-मज्ञा पु० बैठन का एक प्रकार का  
आसन या मुद्रा।

वीरध-मज्ञा स्त्री० १ लता। २ पोधा।

३ एक लता, जो वाटन पर फिर बढ़ जाय।  
८ माला।

वीरेश, वीरेश्वर-मज्ञा पु० शिव।

वीर्य, वीर्य-मज्ञा पु० १ शरीर का मात  
प्राप्ता में मरण प्राप्त, जिससे वाग्म्य गन्ध  
में प्रकृति रक्षाति जाता है। मुक्त। २ विसी  
वस्तु का मग भाग। ३ पराक्रम। प्रह।  
शक्ति। ८ नर। ५ वीर। बाधा।

वृत्त-मज्ञा पु० १ स्तन का जगल भाग।  
२ बौडा। डंडा।

वृद्ध-मज्ञा पु० नमूह। झुंड।

वृद्धा-मज्ञा स्त्री० १ तुलसी। २ रायिका  
का एक नाम।

वृद्धारक-मज्ञा पु० देवता। अमर। द्रव।

वृद्धारण्य-मज्ञा पु० वृन्दावन।

वृद्धाग्र-मज्ञा पु० मयूरा के निकट एक  
प्रसिद्ध तीर्थस्थान, जहाँ नगवान् आरुण्य  
न वाल-कालाएँ का पी।

वृद्ध-मज्ञा पु० १ भडिया। २ धृगल।

गोदद। ३ जीवा। ४ क्षत्रिय। ५ वज्र।

६ हल। ७ चन्द्रमा। ८ सूर्य। ९ एक

पीथा। १० एक अमुर का नाम।

११ आरुण्य के पुत्र का नाम।

वृद्धार-मज्ञा पु० भीमसेन।

वृद्धा-मज्ञा पु० गुरदा। मूलाशय।

वृद्धक-मज्ञा पु० मूलाशय। गुरदा।

वृद्ध-मज्ञा पु० १ पड़। दरस्त। २ वृक्ष से

मिलने-जुलता आकृति, जिसमें किसी चीज  
का मूल अथवा उदाम धार उसका अनेक  
धासएँ आदि दो गई हैं। जैसे—वृक्षवृक्ष।

वृक्षवृद्ध-मज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसमें वृक्षा  
के रागा आदि की चिकित्सा का वर्णन  
हो।

वृजन-मज्ञा पु० १ अवाध। २ बुरा काम।

३ लड़ाई। ४ निराकरण। ५ बल।

६ शत्रु।

वि० टंडा। कुटिल।

वृजिन-मज्ञा पु० १ पाप। गुनाह। २ दुख।

कष्ट। तकलीफ। ३ खाल। ४ लोह।

५ बाल।

वि० टंडा।

वृत्त-संज्ञा पु० १. चरित्र। २. आचार। चाल-चलन। ३. समाचार। वृत्तांत। हाल। ४. जीविका का साधन। ५. वह छंद, जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम का नियम हो। वर्णिक छंद। ६. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में तीन वर्ण होने हैं। दठका। दठिका। ७. वह ध्वनि, जिसका घेरा या परिधि गोल हो। मंडल। गोल घेरा। वि० १ दृढ़। २. वृत्तुल। गोल। काग। ३ मृत। ४ उत्पन्न। ५ ढका हुआ। आच्छादित।

वृत्तक-संज्ञा पु० छंद।

वृत्तखंड-संज्ञा पु० १ किसी वृत्त या गोलाई का कोई अंश। २ मेहराब।

वृत्तांत-संज्ञा पु० घटना का विवरण। समा-चार। हाल।

वृत्ति-संज्ञा स्त्री० १ वह कार्य, जिसके द्वारा जीविका का निर्वाह होता है। जीविका। रोजी। २ सहायता के रूप में दिया गया धन। वह धन, जो किसी असहाय व्यक्ति या छान आदि की सहायता के दिया जाय। ३ सूत्रों आदि की व्याख्या, जो उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए की जाती है। ४ नाटकों में विषय के विचार से वर्णन करने की शैली, जो चार प्रकार की कही गई है। ५ इन्द्रिय-निग्रह की धीर प्रवृत्ति। ६. राग के अनुसार चित्त की अवस्था, जो पांच प्रकार की मानी गई है—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र और निश्चिद। ७ व्या-पार। कार्य। ८ स्वभाव। प्रकृति। ९ सहार करने का एक प्रकार का शस्त्र।

वृत्र-संज्ञा पु० १ अंधेरा। २ भेष। बादल। ३ शत्रु। दुश्मन। ४ पुराणानुसार त्वष्टा का पुत्र एक अशुभ, जिसे इंद्र ने मारा था। इसी को मारने के लिए वधाचि अग्नि की हुई उपाय का यज्ञ बना था।

वृत्रघ्न-संज्ञा पु० इंद्र।

वृत्रारि-संज्ञा पु० इंद्र।

वृत्रामुह-संज्ञा पु० १० "वृत्र"।

वृषा-अव्य० विना मतलब का। व्यर्थ। फतूल। निष्प्रयोजन।

कि० वि० विना मतलब के। बेफायदा। संज्ञा पु० व्यासत्व।

वृद्ध-संज्ञा पु० १. वृद्ध। बुढ़ापा। प्रायः

६० वर्ष या इससे अधिक आयुवाला।

२ पंडित। विद्वान्।

वृद्धता-संज्ञा स्त्री० बुढ़ापा। वृद्ध होने का भाव।

वृद्धश्रवा-संज्ञा पु० ३३।

वृद्धा-संज्ञा स्त्री० वृद्ध स्त्री। बुढ़ी।

वृद्धि-संज्ञा स्त्री० १ बढने की क्रिया या भाव।

वढनी। अधिकता। २ उत्पत्ति। ३. समृद्धि।

४ लाभ। मुनाफा। ५. व्याज। सुद।

वृश्चिक-संज्ञा पु० १ विच्छू। २ वृश्चिकाली या विच्छू नाम की लता। ३ मय आदि बारह राशियों में से आठवीं राशि, जिसके सब तारों से विच्छू का आकार बनता है।

वृश्चिकाली-संज्ञा स्त्री० विच्छू नाम की लता, जिसके रोएँ शरीर में लगने से बहुत तेज जलन होती है।

वृष-संज्ञा पु० १ सांड। बेल। २. काम-शास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषों में से एक। ३ बारह राशियों में से दूसरी राशि।

वृषकेतन-संज्ञा पु० शिव। महादेव।

वृषकेतु-संज्ञा पु० शिव। महादेव।

वृषण-संज्ञा पु० १ सांड। २ अडकाश। पीता।

वृषध्वज-संज्ञा पु० १ शिव। महादेव।

२ गणेश। ३ पुराणानुसार एक पर्वत।

वृषभ-संज्ञा पु० बैल। सांड।

वृषभकेतु-संज्ञा पु० शिव। जिसके हाडों पर बैल का चित्र है।

वृषभध्वज-संज्ञा पु० दे० "वृषभध्वज"।

वृषभध्वज-संज्ञा पु० १. शिव। महादेव।

२ जिसके हाडों पर बैल का चित्र है।

वृषभाक्ष-संज्ञा पु० विष्णु।

वृषभानु-संज्ञा पु० राधिकान्त के पिता, नृसिं-भानु राजा के पुत्र।

वृषभानुद्विनी-संज्ञा स्त्री० राधिका।

वृषल-संज्ञा पु० १. नृद। २. पापी और

दुराचारी। ३. घोड़ा। ४. सम्राट् चंद्रगुप्त का एक नाम।

वृषली-संज्ञा स्त्री० १. स्मृतियों के अनुसार वह कुंआरी कन्या, जो रजस्वला हो गई हो।

रजस्वला स्त्री। २. कुलटा। दुराचारिणी।

३. नीच जाति की स्त्री।

वृषाह्न-संज्ञा पुं० शिव। जिसकी सवारी बेल हो।

वृषवासी-संज्ञा पुं० शिवजी।

वृषाणक-संज्ञा पुं० १. शिव। २. शिव का एक अनुचर।

वृषावण-संज्ञा पुं० शिव।

वृषामुर-संज्ञा पुं० दे० "अस्मामुर"।

वृषोत्सर्ग-संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जिसमें लोग अपने मृत पिता आदिके नाम पर साँड़ पर चक्र दागकर उसे छोड़ देते हैं।

वृष्टि-संज्ञा स्त्री० १. वर्षा। बारिश। वरसात। २. ऊपर से बहुत-सी चीजों का एक साथ गिरना।

वृष्टिमान-संज्ञा पुं० वर्षाभाषक ग्रंथ, जिससे यह नापा जाता है कि कितनी वर्षा हुई।

वृष्णि-संज्ञा पुं० १. बादल। २. यादववंश। ३. थोकृष्ण। ४. द्रव। ५. अग्नि। ६. वायु।

वि० प्रसन्न। वलवान्। शक्तिशाली।

वृष्य-संज्ञा पुं० वीर्य, बल और आनंद बढ़ाने-वाली चीज।

वेंकटगिरि-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के एक पर्वत का नाम।

वेंकटेश-संज्ञा पुं० दक्षिण भारत के वेंकट पर्वत पर भगवान् विष्णु की मूर्ति का नाम। इसे बालाजी भी कहते हैं। यह हिन्दुओं का एक प्रधान तीर्थ है।

वे-सर्व० 'वह' का बहुवचन रूप।

वेक्षण-संज्ञा पुं० अच्छी तरह से देखना या बूझना।

वेग-संज्ञा पुं० १. तेजी के साथ बढ़ना। प्रवाह। बहाव। २. जोर। तेजी। ३. जांच। ४. जल्दी। ५. दारीर में से मल-मूत्र आदि बाहर निकलने की प्रवृत्ति।

वेगधारण-संज्ञा पुं० मल-मूत्र आदि का वेग रोकना।

वेगवती-संज्ञा स्त्री० नदी।

वि० बहुत तेज चलनेवाली।

वेगवान्-वि० तेज चलनेवाला।

वेगि\*-क्रि० वि० शीघ्र। जल्दी।

वेगी-संज्ञा पुं० वेगवाला। वेगवान्। शीघ्र-गामी।

वेणी-संज्ञा स्त्री० स्त्रियों के बालों को गुँथो हुई चोटो। नदियों का संगम। जैसे त्रिवेणी।

वेणु-संज्ञा पुं० १. वाँस। २. वाँस की बनी हुई वशी।

वेतन-संज्ञा पुं० १. कोई काम करने के बदले में दिया जानेवाला धन। पारिश्रमिक। २. तनसाह। दर-माह। महोना।

वेतनभोगी-संज्ञा पुं० वेतन या तनसाह लेकर काम करनेवाला।

वेताल-संज्ञा पुं० १. द्वाखाल। गतरो। २. शिव के एक गणधर्षि। ३. भूतों की एक प्रकार की योनि। ४. वह शव, जिस पर भूतों ने अधिकार कर लिया हो। ५. छप्पर का छटा भेद।

वेत्ता-वि० जाननेवाला। ज्ञाता।

वेत्र-संज्ञा पुं० १. बेंत। २. अधिकारी या द्वाखाल का दंड। ३. बौंसुरों की नली।

वेत्रकार-संज्ञा पुं० बेंत से चीजें बनाने का काम करनेवाला।

वेत्रधर-संज्ञा पुं० द्वाखाल। गतरो।

वेत्रवती-संज्ञा स्त्री० मध्य भारत की वेतवा नदी।

वेत्रास्तन-संज्ञा पुं० बेंत से बना हुआ आगन या बंठने का जगह। जैसे-कुर्सी, कीच आदि।

वेत्रामुर-संज्ञा पुं० पुराणानुसार एक प्रसिद्ध अमुर।

वेद-संज्ञा पुं० १. हिन्दुओं के सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ, जिनकी संख्या चार है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। श्रुति। २. किसी विषय का, विशेषतः धार्मिक या आध्यात्मिक विषय का बख्शा और वास्तविक ज्ञान। ३. वृत्त। ४. वित्त। ५. यज्ञाय

वेदकार-मन्त्रा पु० वेदा का रचयिता।  
 वेदगर्भ-मन्त्रा पु० ग्रन्था। ग्रन्थग।  
 वेदगुह्य-सन्त्रा पु० १. विष्णु। २. वेदो  
 में छिपा हुआ।  
 वेदज्ञ-सन्त्रा पु० १. वेदों का जाननेवाला।  
 वेदा का पंडित। २. ब्रह्मजानि।  
 वेदन-मन्त्रा पु० दे० "वेदना"।  
 वेदना-सन्त्रा स्त्री० मानसिक कष्ट। पीड़ा।  
 दुःख। व्याघा।  
 वेदनिदक-मन्त्रा पु० १. वेदों की दुराई करने-  
 वाला। २. नास्तिक।  
 वेदनीय-वि० १. कष्टदायक। २. जानने योग्य।  
 वेदबीज-सन्त्रा पु० १. वेदों का मूल बीज।  
 २. आकृष्ण।  
 वेदमंत्र-सन्त्रा पु० वेदों के मंत्र।  
 वेदमाता-सन्त्रा स्त्री० १. गायत्री। सावित्री।  
 २. दुर्गा। ३. सरस्वती।  
 वेदवाक्य-सन्त्रा पु० १. वेदों ~ कहा हुआ  
 वाक्य। २. पूज्य रूप से प्राप्ताधिक वात,  
 जिसका खडन न हो सके।  
 वेदव्यास-सन्त्रा पु० वेदों का समग्र और  
 सम्पादन करनेवाले तथा पुराणों, महा-  
 भारत और भागवत आदि के रचयिता  
 कहे जानेवाले कृष्ण द्वैपायन।  
 वेदाग-सन्त्रा पु० वेदा के अंग या शास्त्र, जा  
 छ है—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त,  
 ज्योतिष और छंद।  
 वेदात-मन्त्रा पु० १. ब्रह्म-विद्या। अध्यात्म।  
 ज्ञानकाण्ड। २. छ दर्शनों में से प्रधान दर्शन,  
 जिसमें चैतन्य या ब्रह्म ही को एकमात्र  
 पारमार्थिक सत्ता स्वीकार किया गया है।  
 ३. उत्तर-मीमांसा। ४. अद्वैतवाद। ५.  
 उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के  
 अतिम भाग, जिनमें आत्मा, परमात्मा,  
 जगत् आदि के संबंध में निरूपण है।  
 वेदातसूत्र-सन्त्रा पु० महर्षि वादरायण-कृत  
 सूत्र, जो वेदात-शास्त्र के मूल माने जाते हैं।  
 वेदाती-सन्त्रा पु० वेदात का ज्ञाता। वेदात  
 का पंडित। ब्रह्मवादी।  
 वेदिका-सन्त्रा स्त्री० वह चतुर्तरा, जिसके  
 ऊपर इमारत बनती है। कुरसी। दे० "वेदी"।

वेदी-मन्त्रा स्त्री० यज्ञ, पूजा, अनुष्ठान बलि  
 आदि के लिए तयार किया गया कुछ ऊँचा  
 स्थान।  
 वि० वेद जाननेवाला। पंडित।  
 वेध-मन्त्रा पु० १. छेदना। वेधना। २. यज्ञ  
 आदिकों सहायता से नक्षत्रों और तारों आदि  
 को देखना। ३. ज्योतिष के अनुसार एक  
 ग्रह पर दूसरे ग्रह को छाया।  
 वेधक-सन्त्रा पु० वेधने या छेदनेवाला।  
 वेधशाला-मन्त्रा स्त्री० वह स्थान, जहाँ ग्रहा  
 और नक्षत्रों आदि के वेध करने के यंत्र आदि  
 रखे हैं।  
 वेधा-मन्त्रा पु० १. ग्रन्था। २. विष्णु। ३.  
 गिव। ४. सूर्य। ५. पंडित। विद्वान्।  
 वेधालय-सन्त्रा पु० दे० "वेधशाला"।  
 वेधी-सन्त्रा पु० [ स्त्री० वेधिनी ] वेध करने-  
 वाला। वेधनेवाला।  
 वेधयु-सन्त्रा पु० कैंपकरी।  
 वेधन-सन्त्रा पु० कपिना। कप।  
 वेत्ति, वेत्ती-सन्त्रा स्त्री० वेत्त। रत्ना।  
 वेश-सन्त्रा पु० १. कपड़ा पहन लेने के बाद  
 का रूप। २. पहनावा। पोशाक।  
 मुहा०—किसी का वेश धारण करना—  
 किसी के रूप-रंग और पहनावे की नकल  
 करना।  
 यौ०—वेशभूषा—पहनने के कपड़े आदि।  
 पहनावा।  
 वेशधारी-मन्त्रा पु० वेश या रूप धारण करने  
 वाला।  
 वेशन-सन्त्रा पु० प्रवेश करता।  
 वेश्म-सन्त्रा पु० रहने का स्थान। घर।  
 वेश्या-सन्त्रा स्त्री० रडो। नाचने-गाने और  
 सभींग कराने का व्यवसाय या पेशा करने-  
 वाली स्त्री।  
 वेश्यालय-सन्त्रा पु० वह घर, जिसमें रडियाँ  
 अपना पेशा करती हैं। (अग्रे—आश्रय)  
 वेप-सन्त्रा पु० १. वे० "वेश"। २. रंगमंच  
 में नेपथ्य।  
 वेष्ट-सन्त्रा पु० १. पेड़ का रस। २. पगड़ी।  
 ३. परकोटा। चहारदीवारी।  
 वेष्टन-सन्त्रा पु० [ वि० वेष्टित ] १. कपड़ा

आदि जिनमें कोई चीज लपेटो जाय। घंठन।  
२ घेरने या लपेटने की क्रिया या भाव।

वेष्टित-वि० किसी चीज से लपेटा या घिरा हुआ।

वं०-वि० १. दे० "वे"। २. दे० "दा"।

वंकल्प-मज्ञा पु० विकल्प का भाव।

वंकल्पक-वि० १ जो अपनी इच्छा से ग्रहण किया जा सके। २ जो किसी एक पक्ष में हो। एकांगी। ३ सदिग्ध।

वंकुठ-मज्ञा पु० १ स्वर्ग। २ विष्णु भगवान् के रहने का स्थान। ३. विष्णु का नाम।

वंकृत-सज्ञा पु० १ विचार। सरावी। २ वीभत्स रस। ३ वीभत्स रस का आलम्बन, जैसे—मांस, रक्त आदि।

वि० १ विचार से उत्पन्न। २. जल्दी ठीक न होनेवाला। दुःसाध्य।

वंकभीय-वि० चिन्ता का। चिन्तन-सम्बन्धी।

वंकत-मज्ञा पु० चुन्नी नामक रणि।

वंकरी-मज्ञा स्त्री० १ उच्च और गभीर स्वर, जो बहुत स्पष्ट सुनाई पड़े। २ वाक्चाकित। ३ बाखेवी।

वंकानस-सज्ञा पु० वह जो वानप्रस्थ आश्रम में हो। वानप्रस्थाश्रमी साधु। तपस्वी।

वंकन-सज्ञा पु० [ वंश० ] मालगोड़ी का डब्बा, जिसमें माल भरकर बाहर भेजा जाता है।

वंचारिक-वि० १ विचार-सम्बन्धी। न्याय-विचार-सम्बन्धी। २ न्यायालय में विचारणीय विषय-सम्बन्धी।

वंचिन्त्य-सज्ञा पु० द० "विचिन्त्यता"।

वंजयंत-सज्ञा पु० १ उरु की पुरी का नाम। २ उरु।

वंजयती-सज्ञा स्त्री० १ पाँच रंगों को घुटनी तक लटकायी हुई एक प्रकार की माला, जिसे श्रीकृष्ण पहनत थे। २. पतावा।

वंज्ञानिक-सज्ञा पु० १. विज्ञान का अच्छा ज्ञाता। २. निपुण। दक्ष।

वि० विज्ञान-सम्बन्धी। विज्ञान का।

वंतनिक-मज्ञा पु० बतन या तनसाह लेकर गाय करनेवाला। नौकर।

वंतरणी-मज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध पौराणिक नदी, जो यमराज के द्वार पर है।

वंताल-मज्ञा पु० स्तुति पाठ करनेवाला।

वंतालिक-मज्ञा पु० स्तुति पाठ करनेवाला।

राजाजी को स्तुति सुना करके बगाने-वाला।

वंतालीय-मज्ञा पु० एक वर्णवृत्त।

वि० वेंताल-सम्बन्धी। वेंताल का।

वंदय-मज्ञा पु० विदग्धता। विदग्ध होने का भाव।

वंदर्भी-सज्ञा पु० १ विदर्भ देश का राजा या शासक। २ दम्भगी के पिता भोजसेन। ३ रविमर्गों के पिता नोष्मक।

वि० विदर्भ देश का।

वंदर्भ-सज्ञा स्त्री० १ काव्य की वह रीति या शैली, जिसमें मयूर वर्णा के द्वारा मयूर रचना होती है। २ राजा वंदर्भ को पुत्रा, दम्भना। ३ रविमर्गों।

वंदिक-वि० वेद-सम्बन्धी। वेद का।

सज्ञा पु० १ वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २ वेदों का पंडित।

वंदुर्प-सज्ञा पु० भूमिल रंग का रणि। 'लह-सुनिया' नामक रत्न।

वंदेशिक-वि० विदेश-सम्बन्धी। दूसरे देशों से संबंध रखनेवाला।

वंदेशिक नीति-सज्ञा पु० दूसरे देशों से सम्बन्धित नीति। परराष्ट्र नीति।

वंदेही-सज्ञा स्त्री० विदेह राजा जनक की कन्या, सीता।

वंद-सज्ञा पु० १ पंडित। विद्वान्। २ आयु-वंद के अनुसार विविधा करनेवाला। आयुर्वेद का ज्ञाता। चिकित्सक।

वंदक-सज्ञा पु० वह वास्तव, जिसमें रोगों के भिन्नान और चिकित्सा आदि का विवेचन हो। चिकित्सा-साक्ष। आयुर्वेद।

वंद्युत-वि० विद्युत् (विजली) सम्बन्धी।

वंध-वि० विधान या संधिधान व अनुकूल। कानून के मुताबिक। विधि के अनुसार। न्यायसंगत। निदम या कामदे के मुताबिक।

वंधम्य-सज्ञा पु० १. धर्म के विरुद्ध होने का भाव। २ नास्तिकता।

वैषय-सज्ञा पु० विधवा 'होने का भाव।  
रक्षा।

वैधानिक-वि० विधान से सम्बन्ध रखनेवाला।  
विधि-सम्बन्धी। कानूनी।

वैधेय-वि० विधान-सम्बन्धी। कानूनी। विधि-  
सम्बन्धी। विधि का।

वैभवेय-सज्ञा पु० १ यिन्ता (कुवडी स्त्री)  
की सतान। २ गहड़। पक्षियों का राजा।  
३ अरुण।

वैपरीत्य-सज्ञा पु० विपरीत या उल्टा होने  
का भाव। विपरीतता।

वैफल्य-सज्ञा पु० विकलता। असफलता।  
निष्फल या निरर्थक होने का भाव।

वैभव-सज्ञा पु० १ धन-संपत्ति। दौलत।  
विभव। ऐश्वर्य। २ महत्त्व। बढप्पन।

वैभवशाली-सज्ञा पु० जिसके पास बहुत  
धन-संपत्ति हो। मालदार। गौरवशाली।

वैभनस्य-सज्ञा पु० वैर। द्वेष। दुश्मनी।  
वैमल्य-सज्ञा पु० विमलता। स्वच्छता।

वैमात्र या वैमात्रेय-वि० [स्त्री० वैमात्रेयी]  
विमात्रा से उत्पन्न। सौतेला।

वैमानिक-वि० विमान या हवाई जहाज से  
सम्बन्ध रखनेवाला। विमान-सम्बन्धी।

वैमृध-सज्ञा पु० इन्द्र।  
वैयक्तिक-वि० केवल एक व्यक्ति से सम्बन्ध  
रखनेवाला। 'सामूहिक' का उल्टा। व्यक्ति-  
गत।

वैयाकरण-सज्ञा पु० व्याकरण का पंडित।  
व्याकरण का ज्ञाता।

वि० व्याकरण-सम्बन्धी।  
वैर-सज्ञा पु० [भाव० वैरता] शत्रुता।  
दुश्मनी। द्वेष। विरोध।

वैरुद्धि-सज्ञा स्त्री० वैर का बदला चुकाना।  
वैराग्य-सज्ञा पु० वह व्यक्ति, जिसे राग या  
अत्यन्त न हो। जिसने वैराग्य ले लिया हो।  
विरक्त। मोहमाया से अलग रहनेवाला।  
उदात्तों वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वैराग्य-सज्ञा पु० 'मन की वह वृत्ति, जिससे  
आग ससार की झड़के छोड़कर एकाग्र में  
ईश्वर का भजन करते हैं। विरक्ति।

वैराग्य-सज्ञा पु० १ एक ही देश में दो

राजाओं या शासकों का शासन। २ वह  
देश, जहाँ इस प्रकार की शासन-प्रणाली हो।

वैराट-वि० १. विराट-सम्बन्धी। २ लम्बा-  
चोड़ा।

वैरी-सज्ञा पु० शत्रु। दुश्मन। विरोधी।  
वैरूप्य-सज्ञा पु० विरूप और विकृत होने का  
भाव। 'विरूपता' या 'कुरूपता'। भद्दापन।  
वदमूरत होने का भाव।

वैलक्षण्य-सज्ञा पु० १ विलक्षणता। अनोखा-  
पन। २ विभिन्न होने का भाव। विभिन्नता।

वैवर्ण्य-सज्ञा पु० चेहरे का रंग उतरने की  
हालत। विवर्ण होने का भाव। मलिनता।  
उदासीनता।

वैवस्वत-सज्ञा पु० १ सूर्य के एक पुत्र का  
नाम। २ एक रूढ़। ३ एक मनु। वर्तमान  
मन्वन्तर का नाम। ४ सूर्य, यम या मनु-  
सम्बन्धी।

वैवाह-वि० विवाह-सम्बन्धी।  
वैवाहिक-वि० विवाह-सम्बन्धी। विवाह का।  
सज्ञा पु० कन्या अथवा वर का स्वशुर।  
सम्पत्ति।

वैशपायन-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध ऋषि, जो  
वेदव्यास के शिष्य थे।

वैशाख-सज्ञा पु० चैत के बाद का और जेठ  
के पहले का महीना।

वैशाखी-सज्ञा स्त्री० वैशाख मास की पूर्णिमा।  
वैशाली-सज्ञा स्त्री० विहार की एक प्राचीन  
प्रसिद्ध नगरी। विशाला नगरी। विशाला पुरी।

वैशिक-सज्ञा पु० साहित्य के अनुसार वैश्या-  
गामी नायक।

वैशेषिक-सज्ञा पु० १ छ दर्शनों में से एक,  
जो महर्षि कणाद-कृत है और जिसमें पदार्थों  
का विचार तथा द्रव्य का निरूपण है।  
पदार्थ-विद्या। २ न्यायदर्शन का एक  
भाग। ३ वैशेषिक दर्शन का माननेवाला।  
वि० १ विशेष। खास। अत्यन्त महत्त्वपूर्ण।  
२ विचित्र।

वैश्य-सज्ञा पु० भारतीय आर्यों के चार वर्णों  
में से तीसरा वर्ण, जिसका वृत्ति कृषि और  
वाणिज्य है। आजकल इसका प्रयोग वित्तप-  
कर बनिया और महाजनों के लिए होता है।

वैश्यता-सज्ञा स्त्री० वैश्य का भाव या धर्म ।  
वैश्यत्व ।

वैश्या-सज्ञा स्त्री० वैश्य-जाति की स्त्री ।  
वैश्वजनीन-वि० विश्व भर के लोग से

संबंध रखनेवाला । सब लोग का ।  
सज्ञा पु० जो समस्त ससार के लोग का

कल्याण करता हो ।  
वैश्वदेव-सज्ञा पु० वह होम या यज्ञ आदि,

जो विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाय ।  
वैश्वानर-सज्ञा पु० १ अग्नि । २

परमात्मा । ३ चेतन ।  
वैषम्य-सज्ञा पु० १ विषमता । विषम होने

का भाव । असमानता । २ विरोध ।  
वैषयिक-वि० विषय-संबंधी । विषय का ।

सज्ञा पु० विषयी । विषय वासना में रहने-  
वाला । लपट ।

वैष्णव-सज्ञा पु० [ स्त्री० वैष्णवी ] विष्णु

की उपासना करनेवाला । हिंदुओं का एक

प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय । इस संप्रदाय के

लोग विष्णु की उपासना करते और विनाश

आचार विचार से रहते हैं ।  
वि० विष्णु-संबंधी । विष्णु का ।

वैष्णवी-सज्ञा स्त्री० १ विष्णु की शक्ति ।  
२ दुर्गा । ३ गंगा । ४ तुलसी । ५ पृथ्वी ।

वैसागिक-वि० त्यागने योग्य । त्याग्य ।  
वैसा-वि० उस तरह का ।

वैसे-वि० उस तरह ।  
वैहासिक-सज्ञा पु० विद्वत्पक्ष । हंसनेवाला ।

मतभेद ।  
वोक\*-सज्ञा पु० ओर । तरफ ।

वोट-सज्ञा पु० [ अर्थ० ] चुनाव या निर्वाचन

में दिया जानेवाला मत ।  
वोटर-सज्ञा पु० [ अर्थ० ] वह व्यक्ति, जिसे

चुनाव में मतदान (अपना मत देने) का

अधिकार हो । मतदाता ।  
वोटस रिस्ट-सज्ञा स्त्री० [ अर्थ० ] मतदाताओं

की सूची । मतदाता-सूची ।  
वोटिंग-सज्ञा स्त्री० [ अर्थ० ] मतदान । किसी

चुनाव में वोट या मत देना । किसी विषय

पर मतदान । जैसे-समिति आदि में

प्रस्तावित विषय पर मत देना ।

बोल्लाह-सज्ञा पु० वह घोड़ा, जिसका दुग

और अगल के बाल पीले रंग के हों ।  
बोहित्य-सज्ञा पु० बड़ी नाव । जहाज ।

व्यय-सज्ञा पु० ताना । बोलो । चुटकी ।

व्यजना-द्वारा प्रकट होनेवाला शब्द का

गूढ़ अर्थ ।  
वि० अगहीन । विकलाग ।

व्ययचित्र-सज्ञा पु० किसी व्यक्ति या पटना

की हसी उड़ान के लिए बनाया गया व्यय-

पूर्ण चित्र या तस्वीर । (अर्थ०-नाट्य)

व्ययपूर्ण-वि० व्यय या उपहास से भरा

हुआ ।  
व्ययक-वि० व्यक्त या प्रकट करनेवाला ।

सूचित करनेवाला ।  
व्यजन-सज्ञा पु० १ प्रकट करने की क्रिया ।

व्यक्त होने की क्रिया । २ अवयव ।

अंग । ३ स्त्री-पुरुष के चिह्न । ४ किसी

प्रकार का चिह्न । ५ व्यय । ६ पका

हुआ भोजन । ७ पके हुए भोजन के साथ

खान की तरकारी या सान । ८ यगमात्र

में का वह वण, जो बिना स्वर की सहायता

के न बोला जा सकता हो । स्वरहीन वण ।

हिंदी वणमाला में 'क' से 'ह' तक के

सब वण ।  
व्यजना-सज्ञा स्त्री० १ प्रकट करने की

क्रिया । २ शब्द की वह शक्ति, जिसके

द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई

विशेष अर्थ प्रकट होता हो ।  
व्यक्त-वि० [ सज्ञा व्यक्तता ] प्रकट ।

स्पष्ट । जाहिर । जो प्रकट किया गया हो ।

व्यक्ति-सज्ञा पु० मनुष्य । आत्मी । जिमी ।

शरीरधारी वा शरीर ।

सज्ञा स्त्री० व्यक्त या प्रकट होने का भाव ।

व्यक्तिगत-वि० निजी । अपना । किसी

व्यक्ति से सम्बंध रखनेवाला ।

व्यक्तित्व-सज्ञा पु० किसी व्यक्ति का और

से अपना अलग अस्तित्व प्रकट करने का

गुण या भाव । वे विनाश गुण, जिनके द्वारा

किसी व्यक्ति की स्पष्ट और स्वतंत्र सज्ञा

प्रकट होती है । व्यक्ति का गुण या भाव ।

व्यय-वि० [ सज्ञा व्ययता ] १ पहराया

हुआ। व्याकुल। उद्विग्न। २. डरा हुआ। भयभीत। ३. काम में फँसा हुआ।

व्यजन-सज्ञा पु० पखा।

व्यतिक्रम-सज्ञा पु० १ क्रम या सिलसिले में उलट-फेर। २ विघ्न। बाधा।

व्यतिरिक्त-क्रि० वि० अतिरिक्त। सिवा। अलावा।

व्यतिरेक-सज्ञा पु० १. अभाव। २. भेद। अंतर। अलगाव। विभिन्नता। ३. अतिक्रम।

४ एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय में कुछ और भी विशेषता या अधिकता का वर्णन होता है।

व्यतिरेकी-सज्ञा पु० १. पदार्थों में विभिन्नता उत्पन्न करनेवाला। २ क्रम भंग करनेवाला।

३ किसी को अतिक्रमण करके जानेवाला। अतिक्रमण करनेवाला।

व्यतीत-वि० बीता हुआ।

व्यतीपात-सज्ञा पु० १ भारी उपद्रव। अपमान। २ ज्योतिष में एक योग, जिसमें यात्रा अथवा शुभकाम करने का निषेध है।

व्यत्यय-सज्ञा पु० दे० "व्यतिक्रम"।

व्यथा-सज्ञा स्त्री० १ पीडा। वेदना। तकलीफ। २ क्लेश। दुःख।

व्यथित-वि० दुःखित। जिसे कोई कष्ट या तकलीफ हो।

व्यपगत-वि० १. असावधानी या लापरवाही से छूटा हुआ। २. वह अधिकार या सुविधा, जो नियत समय पर उपयोग न किए जाने के कारण हाथ से निकल गई हो। जो तमादी हो चुकी हो।

व्यपगति-सज्ञा स्त्री० १ असावधानी या लापरवाही से होनेवाली मामूली भूल। २. किसी अधिकार या सुविधा का नियत समय पर उपयोग न किए जाने के कारण उससे वंचित हो जाना। तमादी।

व्यभिचार-सज्ञा पु० १. दुराचार। बदचलनी। २ स्त्री का पर-पुरुष से अथवा पुत्र का पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध। छिनाला।

व्यभिचारी-सज्ञा पु० [स्त्री० व्यभिचारिणी] १. बदचलन। परस्त्रीगामी। ३. दुराचारी। दे० "सचारी" (भाव)।

व्यय-सज्ञा पु० १. खर्च। स्रष्टा। २. खपत। चला जाना। ३. नाश। बरबादी।

व्ययी-सज्ञा पु० बहुत खर्च करनेवाला। व्यर्थ-वि० १. बिना माने का। २. निरर्थक।

बेमतलब। फजूल। जिसमें कोई लाभ न हो। ३. क्रि० वि० फजूल। योही। बिना कारण के।

व्यर्थन-सज्ञा पु० रद्द किया जाना। किसी आदेश या निर्णय (फैसले) का रद्द किया जाना।

व्यर्थीकरण-सज्ञा पु० व्यर्थ या रद्द करने की क्रिया। दे० "व्यर्थन"।

व्यलीक-सज्ञा पु० १. अपराध। कसूर। २. डाँट-डपट। ३. दुःख। ४. अनुचित या न करने योग्य।

वि० १ झूठा। अविश्वासी। २. ढोंगी। ३. अप्रिय। ४. दुःख देनेवाला।

व्यवकलन-सज्ञा पु० १. घटाना। बाकी निकालना। २. अलगाव।

व्यघच्छेद-सज्ञा पु० १ अलगाव। पार्थक्य। भिन्नता। २ विभाग। हिस्सा। खंड। ३ विराम। ठहराव। ४. निवृत्ति।

व्यवधान-सज्ञा पु० १ रुकावट। अड़चन। विघ्न। २. अन्तर। भेद। दो पदार्थों के बीच का अन्तर। ३. परदा। ४. विभाग। खंड।

५ विच्छेद। अलग होना।

व्यवसाय-सज्ञा पु० १. व्यापार। जीविका। २ रोजगार। ३ काम-पधा।

व्यवसायी-सज्ञा पु० १ व्यवसाय करनेवाला। २ रोजगारी। व्यापारी।

व्यवस्था-सज्ञा स्त्री० १. प्रवन्ध। इन्तजाम। २ निर्धारित कार्य-प्रणाली। शासन या कानून आदि के द्वारा निर्धारित कोई कार्य करने का तरीका।

मुहा०-व्यवस्था देना=शासन, विधान या कानून-द्वारा किसी विषय के बारे में विचार प्रकट करना।

व्यवस्थान-सज्ञा पु० १. आपस में समझौता। २ सघटित सभ या सभा।

व्यवस्थापक-सज्ञा पु० १ व्यवस्था करनेवाला। शास्त्रीय या वैधानिक व्यवस्था देनेवाला। किसी कार्य आदि को नियम-

पूरा चलानेवाला । २ प्रयत्नकर्ता ।  
(अर्थ—मनेजर)

व्यवस्थापत्र—सज्ञा पु० वह पत्र, जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय या वैधानिक व्यवस्था हो ।

व्यवस्थापन—सज्ञा पु० व्यवस्था देने का कार्य या भाव । प्रत्यक्ष या इन्तजान करने का काम या भाव ।

व्यवस्थापिका—सज्ञा स्त्री० विधान बनानेवाली । व्यवस्था स्थापित करनेवाली ।

व्यवस्थापिका सभा—सज्ञा स्त्री० राज्य में विधान (कानून) बनानेवाली सभा, जिसके सदस्यों का चुनाव राज्य की जनता करती है ।

व्यवस्थित—वि० १. जिसकी व्यवस्था की गई हो । नियम-युक्त । कायदे का । २ जिसका अच्छी तरह से प्रबन्ध किया गया हो ।

व्यवहार—सज्ञा पु० १ आपस में एक दूसरे के साथ बरतना । बरताव । २ चालचलन । साधारण रीति-रिवाज । ३ व्यापार । रोजगार । ४ लेन-देन का काम । महाजनी । ५ दीवानी का मुकदमा या विवाद । (फौजदारी के मुकदमे को अभिवोग कहते हैं ।)

व्यवहार—क्रि० वि० व्यवहार के विचार-से । प्रयोग की दृष्टि से ।

व्यवहार-दर्शन—सज्ञा पु० १ व्यवहार (वाद) या मुकदमे का विचार और सुनवाई । (अर्थ—ट्रायल) २ न्यायिक निरीक्षण या अदालती जांच (अर्थ—जुडिसियल इन्वेस्टिगेशन) ।

व्यवहार-शास्त्र—सज्ञा पु० यह शास्त्र, जिसमें यह बतलाया गया हो कि विवाद का किस प्रकार निपटारा करना चाहिए और किस अपराध के लिए कितना दंड देना चाहिए आदि । धर्मशास्त्र ।

व्यवहारी—सज्ञा पु० व्यवहार करनेवाला ।

व्यवहार—वि० दे० "व्यवहारिक"

व्यवहृत—वि० [सज्ञा व्यवहृति] १ जो काम में लाया गया हो । २ जिसका आचरण या अनुष्ठान किया गया हो ।

व्यवहृति—सज्ञा स्त्री० १. व्यवहार या काम में लाया जाना । व्यवहार । २ हाथियारी । कुशलता । ३ व्यापार । ४ व्यापार में होनेवाला मुनाफा ।

व्यवाम—सज्ञा पु० १ वेज । २ सम्भाग । स्त्री-प्रसव । ३ परिणाम । ४ शुद्धि । ५ गर्दा । ६ विघ्न ।

व्यष्टि—सज्ञा स्त्री० एक व्यक्ति-सम्बन्धा । इपाई । समष्टि का एक पृथक् अंग । समष्टि का उलटा ।

व्यसन—सज्ञा पु० १ किसी तरह का शौक । २ दूरी आदत । विषय के प्रति आसक्ति । ३ विपत्ति । आफत । ४ कोई बमाल की या दूरी बात । ५ काम या क्रोध आदि बिकारों से उत्पन्न दोष ।

व्यसनी—सज्ञा पु० १ जिस किसी प्रकार का व्यसन या शौक हो । २ विषय-भोग करनेवाला । ३ वेस्यागामी ।

व्यस्त—वि० १ काम में लगा या फंसा हुआ । २ व्याप्त । ३ घबराया हुआ । व्याकुल ।

व्याकरण—सज्ञा पु० यह विद्या या शास्त्र, जिसमें किसी भाषा के शुद्ध रूप के नियमों आदि का निरूपण होता है ।

व्याकुल—वि० [सज्ञा व्याकुलता] घबराया हुआ । विकल । व्यग्र । बेचैन ।

व्याकुलता—सज्ञा स्त्री० घबराहट । व्यग्रता । बेचनी ।

व्याकोश—सज्ञा पु० १ तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना । २ चित्तलाना ।

व्याख्या—सज्ञा स्त्री० १ अर्थ का स्पष्टीकरण । टाका । व्याख्यान । २ कहना । बतलाना ।

व्याख्याता—सज्ञा पु० १ व्याख्या करनेवाला । २ भाषण करनेवाला ।

व्याख्यान—सज्ञा पु० १ भाषण । वक्तृता । २ किसी विषय का व्याख्या या टाका करने अथवा विवरण देने का काम ।

व्याघात—सज्ञा पु० १ विघ्न । बाधा । २ आपात । प्रहार । मार । ३ ज्योतिष में एक जगुभ योग । ४ एक प्रकार का अङ्कार, जिसमें एक ही उपाय या साधन के द्वारा

दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है।

व्याघ्र-सज्ञा पु० बाघ। शेर।

व्याघ्रचर्म-सज्ञा पु० शेर की साल।

व्याघ्रनास-सज्ञा पु० १. शेर का नाखून। जो प्राय वृक्षों के गले में, उन्हें नजर से बचाने के लिए, पहनाया जाता है। २. नास-नामक गंध-द्रव्य।

व्याज-सज्ञा पु० १. दे० "व्याज"। सूद। २. कपट। छल। बहाना। ३. बाधा। विघ्न। ४. देर। विलव।

व्याजनिदा-सज्ञा स्त्री० १. ऐसी निदा, जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निदा न जान पड़े। २. एक प्रकार का शब्दालंकार, जिसमें इस प्रकार की निदा की जाती है।

व्याजस्तुति-सज्ञा स्त्री० १. व्याज या किसी बहाने से की गई स्तुति, जो ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े। २. एक प्रकार का शब्दालंकार, जिसमें उक्त प्रकार से स्तुति की जाती है।

व्याजोपित-सज्ञा स्त्री० १. कपट-भरी बात। २. एक प्रकार का अलंकार, जिसमें किसी स्पष्ट या प्रकट बात को छिपाने के लिए किसी प्रकार का बहाना किया जाता है।

व्याड-सज्ञा पु० १. द्वेष करनेवाला। २. शरारती। ३. धोखेबाज। कुटिल।

व्याघ-सज्ञा पु० बहेलिया। धिकारी। पशुओं को मारकर निर्वाह करनेवाला।

व्याधि-सज्ञा स्त्री० १. रोग। बीमारी। २. झंझट। आफत।

व्यान-सज्ञा पु० शरीर की पाँच वायुओं में से एक, जो सारे शरीर में संचार करनेवाली मानी गई है।

व्यापक-वि० १. चारों ओर फैला हुआ। सर्वत्र विद्यमान। २. जो चारों ओर घेरे हुए हो।

व्यापकता-सज्ञा स्त्री० विस्तार। फैलाव।

व्यापन-सज्ञा पु० व्याप्त होना। सब जगह मौजूद होने या फैलने का भाव। फैलना।

व्यापना-क्रि० अ० १. किसी चीज के अंदर

फैलना। व्याप्त होना। २. सर्वत्र विद्यमान या मौजूद होना।

व्यापार-सज्ञा पु० १. रोजगार। व्यवसाय। वाणिज्य। क्रय-विक्रय का कार्य। २. काम-काज।

व्यापार-चिह्न-सज्ञा पु० वह निशान, जो व्यापारी अपने माल पर दूसरों के माल से अलग पहचान करने के लिए लगावे। (अंग्रे०-ट्रेड-मार्क)।

व्यापारिक-वि० व्यापार-सम्बन्धी। व्यवसाय या रोजगार-सम्बन्धी।

व्यापारी-सज्ञा पु० व्यापार करनेवाला। व्यवसाय या रोजगार करनेवाला।

वि० व्यापार-सम्बन्धी।

व्याप्त-वि० १. विस्तृत। फैला हुआ। २. सर्वत्र विद्यमान। सब जगह मौजूद। ३. पूर्ण रूप से भरा हुआ।

व्याप्ति-सज्ञा स्त्री० १. व्याप्त होने की क्रिया या भाव। सर्वत्र विद्यमान या सब जगह मौजूद होने की अवस्था। २. व्यापक अनुसार किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना।

व्यामोह-सज्ञा पु० [वि० व्यामोहक, व्यामोही] अज्ञान। मोह।

व्यायाम-सज्ञा पु० करात। मेहनत। शारीरिक बल बढ़ाने के उद्देश्य से किया जानेवाला श्रम।

व्यायोग-सज्ञा पु० एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य, जो एक एक का होता है और जिसमें पौराणिक या ऐतिहासिक कथा का आधार होता है।

व्याल-सज्ञा पु० १. साँप। २. दुष्ट हाथी। ३. (काव्य में) दृढ़क छंद का एक भेद।

व्याली-सज्ञा स्त्री० साँप की मादा। साँपिन।

व्यालूनी-सज्ञा स्त्री० रात का भोजन।

व्यापहारिक-वि० व्यवहार या काम में बाने योग्य। व्यवहार-सम्बन्धी। व्यवहार या वस्तु का व्यवहार के अनुकूल।

व्यासंग-सज्ञा पु० बहुत अधिक जासक्ति या मनोयोग।

व्यास-सज्ञा पु० १. वेदों का संग्रह, विभाग और

सम्पादन करनेवाले तथा पुराणा, महाभारत, भागवत और वेदान्त आदि के रचयिता कहे जानेवाले, जिसका नाम कृष्ण-द्वैपायन और वादरायण भी था। २ वेदव्यास। ३. कथा-वाचक। रामायण, महाभारत या पुराणों आदि की कथा सुनानेवाला। ४. वह रेखा, जो किसी गोल मटल या वृत्त के किसी एक स्थान से बिलकुल सीधी चलकर दूसरे सिरे तक पहुँची हो। ५ विस्तार। फैलाव।

व्यासवर्त-वि० बहुत आसन्न। एक ही वर्ग या प्रकार के होने के कारण परस्पर सम्बन्ध या समान।

व्यासक्ति-सज्ञा स्त्री० अनेक वस्तुओं में उनके एक ही प्रकार या वर्ग के अन्तर्गत होनेवाली समानता या एकरूपता।

व्यासार्द्ध-सज्ञा पु० किसी वृत्त या गोलकाकार मटल के व्यास का आधा भाग।

व्याहृत-वि० १ मना किया हुआ। निषिद्ध। बज्रित। बुरा। २ व्यर्थ।

व्याहार-सज्ञा पु० वाक्य। जुमला।

व्याहृति-सज्ञा स्त्री० १ कथन। उक्ति। २ वैदिक-मन्त्र-विशेष, जिससे प्राणायाम किया जाता है। (भू, भुव, स्व इन तीनों का मन्त्र।)

व्युत्पत्ति-सज्ञा स्त्री० १ किसी वस्तु का मूल उद्गम या उत्पत्ति-स्थान। २ शब्द का मूल रूप, जिससे वह शब्द बना हो। ३ किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अन्तः ज्ञान।

व्युत्पन्न-वि० १. जिसका सस्कार हुआ हो। २ निकला हुआ (व्याकरण)। जिस शब्द की व्युत्पत्ति नहीं गई हो। ३ किसी विज्ञान या शास्त्र आदि का अन्तः ज्ञान। विद्वान्। ४ प्रवीण। कुशल। ५ अनुभवी।

व्युत्पन्न-सज्ञा पु० १ सेना। फौज। २ युद्ध के समय की जानेवाली सेना की स्थापना। सेना का विन्यास। ३ किसी विपत्ति से बचने के लिए का जानवाली योजनाएँ। ४. समूह। जमघट। ५ निर्माण। ६ शरीर।

व्योम-सज्ञा पु० आकाश। आसमान।

व्योमकेत-सज्ञा पु० शिव।

व्योमगंगा-सज्ञा स्त्री० आकाशगंगा।

व्योमचारी-सज्ञा पु० १. आकाश में चलने या विचरण करनेवाला। २. पक्षी। ३. देवता।

व्योमपाद-सज्ञा पु० विष्णु।

व्योमयान-सज्ञा पु० आकाश की सवारी। विमान। हवाई जहाज।

व्रज-सज्ञा पु० १ जाना या चलना। गमन।

२ समूह। झुट। ३ मयूरा और बृन्दावन के आस-पास का प्रांत, जो श्रीकृष्ण की लीला-भूमि है।

व्रजकिशोर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

व्रजभाषा-सज्ञा स्त्री० मयूरा, जामरा और इसके आस-पास के क्षेत्र में बोली जानेवाली एक प्रसिद्ध भाषा, जिसमें लगभग पाँच सौ वर्षों तक हिन्दी के अधिकांश कवियों ने काव्यताएँ की हैं। इनमें से मूर, तुलसी, बिहारी आदि बहुत अधिक प्रसिद्ध हैं। व्रजमंडल-सज्ञा पु० व्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।

व्रजराज-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

व्रजागना-सज्ञा स्त्री० गोपी। व्रज-क्षेत्र की स्त्री।

व्रजेश, व्रजेश्वर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

वर्ग्या-सज्ञा स्त्री० १ पूसता। फिलान।

पश्यटन। २. गमन। जाना। ३ आप्रमण।

वर्ण-सज्ञा पु० घाव। फोड़ा। जलम।

वर्णी-वि० जिस कोश हुआ हो। पायल।

व्रत-सज्ञा पु० १ भोजन न करना। २

किसी पुण्य तिथि की या पुण्य-प्राप्ति के लिए नियम-पूर्वक उपवास करना। अनुष्ठान। ३ प्रतिज्ञा। सक्ता।

व्रती-सज्ञा पु० १. व्रत करनेवाला। २ ब्रह्म-चारी। ३ व्रजमान।

व्राचर-सज्ञा स्त्री० १ अग्रज नाग का एक नेद, जिसका व्यवहार आठवीं म ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रांत में था। २ पंशा-चिह्न भाषा का एक नेद।

वात्य-सज्ञा पु० १. सम्कारहीन। पतित। २

वह व्यक्ति, जिसने दम सस्कार न द्रष्टा है।

३ वह, जिसका यमोपवीत-सस्कार समय पर

न हुआ हो। ऐसा मनुष्य पतित या अनाथ्य समझा जाता है। ४. दोगला। वर्ण-सकर।

ब्रीडा-सज्ञा स्त्री० लज्जा। धर्म।  
ब्रीहि-सज्ञा पु० धान। चावल।

## श

श-हिवो वर्णमाला में व्यंजन का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण-स्थान तालु है, इससे इसे तालव्य कहते हैं।

सज्ञा पु० १ भगल। कल्याण। २. सुख। ३. शांति। ४. वैराग्य। शस्त्र। वि० शुभ।

शक-सज्ञा पु० १ शका। सन्देश। २ भय। डर।

शकनीय-वि० भय या शका करने योग्य। शंकर-वि० १ भगल करनेवाला। २ शुभ। ३ लाभदायक।

सज्ञा पु० १ शिव। महादेव। २ दे० "शकराचार्य"।

शंकर-शैल-सज्ञा पु० कंलास-पर्यंत। कंलास। शंकरस्वामी-सज्ञा पु० दे० "शकराचार्य"। शंकराचार्य-सज्ञा पु० अद्वैत मत के प्रवर्तक एक प्रसिद्ध शैव आचार्य, जिनका जन्म सन् ७८८ ई० में केरल-प्रदेश में हुआ था और स्वर्गवास ३२ वर्ष की आयु में ही हो गया।

शंकरा-सज्ञा स्त्री० पार्वती।

शका-सज्ञा स्त्री० १ सदेह। शक। २ अनिष्ट का भय। ३ डर। खीफ। ४ काव्य का एक संचारी भाव।

शक्ति-वि० [स्त्री० शक्ति] १ डरा हुआ भयभीत। २ जिसे सदेह हुआ हो। ३ सदेहमुक्त। अनिश्चित।

शंकु-सज्ञा पु० १ कोई मुकीली वस्तु। २ मेख। फील। खूँटी। ३. बाण का अगला भाग। ४. भाला। बरछा। ५ नाखी। फल। ६. दस लाख करोड़ की एक सख्या। शख। ७ कामदेव। ८. शिव। ९ राक्षस।

शंख-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का बड़ा घोषा, जो समुद्र के किनारे पाया जाता है

और जिसका कोप बहुत पवित्र समझा जाता है। वह पूजा, हवन आदि के समय बजाया जाता है। प्राचीन काल में युद्ध में भी इसे बजाया जाता था। एक प्रकार की प्राचीन रणभेरी। कबु। २. दस खर्व या एक लाख करोड़ की एक सख्या। ३ हाथी का गडस्थल। ४ एक दंत्य। शलासुर। ५ एक प्रकार का छन्द। ६ कुबेर की एक तिथि और उसके अधिपति का नाम।

शंखचक्र-सज्ञा पु० १ एक राक्षस, जिसे कृष्ण ने मारा था। २ कुबेर के दूत और सखा का नाम।

शंखद्राव-सज्ञा पु० बंदक में एक प्रकार का अर्क, जिसमें शंख भी मल जाता है।

शंखधर-सज्ञा पु० १ विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

शंखनारी-सज्ञा स्त्री० छ वर्णों का एक वृत्त। सोमराजी।

शंखपाणि-सज्ञा पु० विष्णु (जिनके हाथ में शंख हैं)।

शलासुर-सज्ञा पु० एक दंत्य, जो प्रह्लाद के पास से वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था। इसी को मारने के लिए विष्णु ने भत्स्यावतार लिया था।

शशिनी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की वनोपधि। २ स्त्रियों के पद्मिनी आदि चार भेदों में से एक भेद।

शजरफ-सज्ञा पु० दे० "शिगरफ"।

शठ-सज्ञा पु० १ नपुंसक। होजडा। २ अविवाहित। ३ मूर्ख। वेकूफ।

शड-सज्ञा पु० दे० "पड"।

शङ्कामर्क-सज्ञा पु० शङ्क और मर्क नाम के दो दंत्य।

शतनु-सज्ञा पु० दे० "शातनु"।

शतनु-सुत-सज्ञा पु० दे० "भौष्य पितामह"।

शंपा-सज्ञा स्त्री० १. विजली। २. कमर।  
 शंभ-सज्ञा पु० इन्द्र का वज्र।  
 शंबर-सज्ञा पु० १. एक दैत्य, जो इन्द्र के बाण से मारा गया था। २. प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र। ३. युद्ध। लड़ाई।  
 ४. एक तरह का मृग। ५. मछली।  
 वि० बहुत बढ़िया।  
 शंबर-सूवन-सज्ञा पु० कामदेव।  
 शंबरारि-सज्ञा पु० १. शंबर का शत्रु, कामदेव। मदन। २. प्रद्युम्न।  
 शंब-सज्ञा पु० सीप। घोषा।  
 शंबुक-सज्ञा पु० घोषा। छोटा शस्त्र।  
 शंबूक-सज्ञा पु० १. घोषा। २. शस्त्र। ३. एक तपस्वी शूद्र, जिसकी तपस्या के कारण राम-राज्य में एक ब्राह्मण का पुत्र अकाल-मृत्यु से मरा था। इसे राम ने सारकर मृत ब्राह्मण-मुत्र को जिलाया था।  
 शंभु-सज्ञा पु० १. शिव। २. ग्यारह छन्दों में से एक। ३. दैत्यों का एक राजा। ४. उन्नोत्त वर्णों का एक वृत्त। ५. दे० "स्नायभुव"।  
 वि० १. सुख देनेवाला। २. दानी। उदार। ३. शुभ करनेवाला।  
 शंभुगिरि-सज्ञा पु० कैलास-पर्वत। कैलास।  
 शंभुलोक-सज्ञा पु० कैलास।  
 शंस-सज्ञा पु० १. बढ़ाई करना। प्रशंसा। २. समर्थन। ३. प्रतिज्ञा। शपथ। ४. शुभ-कामना। ५. भापलूसी। ६. जाह्न। ७. घोषणा। ८. भाषण। वक्तृता।  
 शंस्य-वि० प्रशंसा के योग्य।  
 सज्ञा स्त्री० अग्नि।  
 शंकर-सज्ञा पु० [अ०] १. समीज। काय करने का ढंग। २. शिष्टता। ३. बुद्धि।  
 शंकरवार-सज्ञा पु० १. जिसमें शंकर हो। २. समस्तदार। ३. शिष्ट। सम्य। ४. हृन्मरमद।  
 शक-सज्ञा पु० १. गौरवर्ण की एक प्राचीन जाति, जिसने भारत पर आक्रमण किया था और जिसे राजा विजयनादित्य ने हराया था। २. राजा शालिवाहन का चलाया हुआ सवत्, जो ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् आरम्भ हुआ था। ३. [अ०] शका। सदेह।

शकट-सज्ञा पु० १. घोस लादने की गाड़ी। छत्रवा। बेलगाड़ी। २. एक असुर का नाम, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था। (शकटापुर)  
 शकटारि-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण, जिन्होंने शकटामुर को मारा था।  
 शकटामुर-सज्ञा पु० एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।  
 शकठ-सज्ञा पु० मवान।  
 शकर-सज्ञा स्त्री० चीनी।  
 शकरकंद-सज्ञा पु० एक प्रकार का प्रसिद्ध कंद।  
 शकरपारा-सज्ञा पु० [फा०] १. एक प्रकार का फल, जो नींबू से कुछ बड़ा होता है। २. एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान। ३. शकरपारे के आकार की चौकीर सिलाई।  
 शकल-सज्ञा स्त्री० दे० "शकल"।  
 शकान्द-सज्ञा पु० राजा शालिवाहन का चलाया हुआ शक सवत्। (ईसवी सवत् में से ७८ घटाने से शकान्द निकल आता है।)  
 शकार-सज्ञा पु० शक जाति का व्यक्ति।  
 शकारि-सज्ञा पु० शक जाति का शत्रु। विजयनादित्य।  
 शकुंत-सज्ञा पु० १. पक्षी। चिड़िया। २. विद्वामित्र के लड़के का नाम।  
 शकुंतला-सज्ञा स्त्री० राजा दुष्यंत की स्त्री, जो भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध राजा भरत की माता और मेनका की कन्या थी। कल्प ऋषि के आश्रम में राजा दुष्यन्त ने इससे शाश्वत-विवाह किया था।  
 शकुन-सज्ञा पु० १. किसी काम के समय दिखाई देनेवाले लक्षण, जो उस काम के सफल में शुभ या अशुभ माने जाते हैं। २. समुद्र। शुभमूचक चिह्न। ३. शुभ मुहूर्त या उसमें होनेवाला कार्य। ४. एक पक्षी, जिसे देखने से शुभ या अशुभ शकुन हो।  
 मुहूर्त-शकुन विचारना या देखना = कोई वाक्य करने से पहले लक्षण आदि देखकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं।  
 शकुनशास्त्र-सज्ञा पु० यह शास्त्र, जिसमें

शकुनो के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो।

शकुनि-सज्ञा पु० १. पक्षी। गिद्ध पक्षी।

२. एक दैत्य, जो हिरण्याक्ष का पुत्र था।

३. कौरवों का मामा, जो दुर्योधन का मनी और कौरवों के नाश का मुख्य कारण था।

शक्कर-सज्ञा स्त्री० १. चीनी। २. शकर।

शक्करी-सज्ञा स्त्री० वर्ण-वृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरोंवाले छंदों की सज्ञा।

शक्की-वि० जिसे हर बात में सदेह हो। शक करनेवाला।

शक्त-सज्ञा पु० बलवान्। शक्तिसंपन्न।

शक्ति-सज्ञा स्त्री० १. बल। ताकत। जोर।

सामर्थ्य। पराक्रम। २. वंश। अधिकार।

३. कार्य करने की क्षमता रखनेवाले साधन।

४. वह सम्बन्ध, जो शब्द और अर्थ में होता है।

५. सेना और धन आदि से सम्पन्न बलवान् देश या राष्ट्र।

६. तन के अनुसार एक देवी, जिसकी उपासना करनेवाले शक्ति

कहे जाते हैं। दुर्गा। लक्ष्मी। ७. एक प्रकार का शस्त्र। साँग। ८. प्रकृति। माया। ईश्वर

की वह भाया, जिससे सृष्टि की रचना मानी जाती है।

शक्तिपूजक-सज्ञा पु० १. देवी की उपासना करनेवाला। शक्ति। २. सात्रिक। वाम-

मार्गी।

शक्तिपूजा-सज्ञा स्त्री० शक्ति का पूजन, जिसे शक्ति करते हैं।

शक्तिमत्ता-सज्ञा स्त्री० शक्तिशाली या ताकत-वर होने का भाव।

शक्तिमान्-वि० [स्त्री० शक्तिमती] बलवान्। ताकतवर।

शक्तिशाली-वि० [स्त्री० शक्तिशालिनी] बलवान्। ताकतवर।

यो०-शक्तिशाली राष्ट्र=सेना और धन आदि से सम्पन्न बलवान् देश।

शक्तिसम्पन्न-वि० १. बलवान्। २. समर्थ। ३. प्रभावशाली।

शक्तिहीन-वि० १. बलहीन। निर्बल। असमर्थ। २. नागदं। नपुंसक।

शक्नु-सज्ञा पु० शक्त।

शक्य-वि० १. जो किया जा सके। करने योग्य। सम्भव। २. जिसमें शक्ति हो।

शक्-सज्ञा पु० १. इन्द्र। २. रगण का चौथा भेद, जिसमें छ मानाएँ होती हैं।

वि० समर्थ।

शक्चाप-सज्ञा पु० इन्द्रधनुष।

शक्ल-सज्ञा स्त्री० १. मुख की बनावट।

आकृति। चेहरा। २. मुँह का भाव। चेष्टा।

३. गठन। बनावट। ४. स्वरूप। उपाय।

शक्ल-सज्ञा पु० [अ०] आदमी। व्यक्ति।

शक्ल-सज्ञा पु० [अ०] १. मनोरंजन।

मनबहलाव। २. व्यापार। काम-धंधा।

शकुन-सज्ञा पु० १. दे० "शकुनि"। २. एक प्रकार की रस्म, जो विवाह की बात-चीत

पक्की होने पर होती है। तिलक। टीका।

शकुनिया-सज्ञा पु० शकुन निकालनेवाला।

ज्योतिषी। साधारण ज्योतिषी।

शकुफा-सज्ञा पु० [फा०] १. बिना खिला हुआ फूल। कली। २. गुप्प। फूल। ३.

कोई अदभुत बात या घटना।

शक्ती-सज्ञा स्त्री० इन्द्र की पत्नी। इन्द्राणी।

शक्तीपति-सज्ञा पु० इन्द्र।

शक्तीश-सज्ञा पु० इन्द्र।

शक्ती-सज्ञा पु० [अ०] १. वशावली।

कुर्सीनामा। २. पटवारी का तैयार किया हुआ खेता का नक्शा।

शठ-वि० १. पाजी। बदमाश। २. धोखेबाज।

३. चालाक।

सज्ञा पु० साहित्य में वह नायक, जो छल-पूर्वक अपना अपराध छिपाने में चतुर

हो।

शठता-सज्ञा स्त्री० १. शठ का भाव। दुष्टता।

पूँर्चता। २. बदमाशी।

शठ-वि० ती।

सज्ञा पु० ती को सख्या—१००।

शतक-सज्ञा पु० [स्त्री० शतिका] १. सो का समूह। एक ही तरह की सो चीजों का

समूह। २. शताब्दी।

शतकोटि-सज्ञा पु० १. गौ करोड़ की सख्या।

२. इन्द्र का मंत्र। ३. होरा।

शतक्रतु-संज्ञा पुं० दन्द्र । जिसने सी यज्ञ किए हों ।

शतगुण-वि० सौ गुना ।

शतधनी-संज्ञा स्त्री० प्राचीन काल का एक धातु ।

शतदल-संज्ञा पुं० कमल ।

शतधा-अव्य० १. सैकड़ों धार । २. सैकड़ों तरीके के । ३. सैकड़ों टुकड़ों में ।

शतधार-संज्ञा पुं० वज्र ।

शतद्रु-संज्ञा स्त्री० सतलज नदी ।

शतपत्र-संज्ञा पुं० १. कमल । २. सेवती । ३.

४. शतपत्नी । मोर नामक पक्षी ।

शतपथ-वि० १. असंख्य मार्गोंवाला । २. बहुत-सी शाखाओं या भागोंवाला ।

शतपथ ब्राह्मण-संज्ञा पुं० यजुर्वेद का एक भाग, जिसके रचयिता महर्षि याज्ञवल्क्य माने जाते हैं ।

शतपद-संज्ञा पुं० १. कन-खजूरा । २. गोजर ।

शतभिषा-संज्ञा स्त्री० सत्ताइस नक्षत्रों में से चौबीसवाँ नक्षत्र ।

शत योजन-संज्ञा पुं० सौ योजन की दूरी ।

शतरंज-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल, जो चौंसठ यानों की बिसात पर खेला जाता है ।

शतरंजी-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. शतरंज खेलने की बिसात । २. शतरंज का अच्छा खिलाड़ी । ३. रंग-विरंग सूतों से बनी हुई धरी ।

शतरूपा-संज्ञा स्त्री० स्वायम्भुव मनु की स्त्री ।

शतरुष-संज्ञा पुं० सौ लाख की संख्या ।

शतशः-वि० सौगुना ।

शतानुद-संज्ञा पुं० १. ब्रह्मा । २. विष्णु । ३. कृष्ण । ४. गौतम मुनि । ५. राजा जनक के एक पुरोहित ।

शतार्ध-संज्ञा पुं० सौवाँ भाग ।

शतानीक-संज्ञा पुं० १. सौ सिपाहियों का नायक । २. पुराणानुसार चद्रवश का द्वितीय राजा । इसका पिता जनमेजय और पुत्र महेश्वानीक था ।

शताब्दी-संज्ञा स्त्री० १. सौ वर्षों का समय ।

यती । सदी । २. किसी संवत् या सन् के अनुसार सौ वर्ष तक का समय ।

शतायु-संज्ञा पुं० सौ वर्ष की उम्रवाला ।

शतायुध-संज्ञा पुं० सौ अस्त्र धारण करने-वाला । सौ अस्त्रोंवाला ।

शतावधान-संज्ञा पुं० १. वह मनुष्य, जो एक साथ बहुत-सी बातें सुनकर उन्हें सिल-सिलेवार याद रख सके । २. बहुत से काम एक साथ कर सकनेवाला व्यक्ति । ३.

श्रुतिधर ।

शतावर-संज्ञा स्त्री० -१. सतावर नाम की औषध । २. सफेद मूसली ।

शतावरी-संज्ञा स्त्री० सतावर ।

शती-संज्ञा स्त्री० १. सौ का समूह । सैकड़ा । जैसे—दुर्गा सप्तशती । २. शताब्दी । सौ वर्षों का समय ।

शतोदर-संज्ञा पुं० शिव ।

शत्रु-संज्ञा पुं० दुश्मन । बैरी ।

शत्रुघ्न-संज्ञा पुं० राजा, दशरथ के पुत्र और राम के सबसे छोटे भाई, जो मुनिप्रा के गर्भ में उत्पन्न हुए थे ।

वि० शत्रुओं या दुश्मनों का नाश करने-वाला ।

शत्रुजित-संज्ञा पुं० शिव ।

वि० शत्रु या दुश्मन को जीतनेवाला ।

शत्रुघ्न-संज्ञा स्त्री० शत्रु का नाव । दुश्मनी । बैर ।

शत्रुदमन-वि० शत्रुओं या दुश्मनों को वश में करनेवाला या उनका नाश करनेवाला ।

शत्रुमर्दन-संज्ञा पुं० वि० दुश्मनों का दमन या उनका नाश करनेवाला ।

शत्रुहा-वि० दुश्मन को दुःख देनेवाला ।

शत्रुहन्त-संज्ञा स्त्री० [फा०] पहचानने की क्रिया । न्यायालय में प्रमाण-पुष्टि के लिए किसी व्यक्ति या वस्तु को पहचनवाने की क्रिया । पुलिस-द्वारा की जानेवाली कार्यवाई में पहचनवाने की क्रिया ।

शनि-संज्ञा पुं० १. सौर जगत् का सातवाँ ग्रह । २. फलित ज्योतिष के अनुसार एक ग्रह । गनिधर । ३. दुर्भाग । बदकिस्मती ।

४. दे० "शनिवार" ।

शनिवार—संज्ञा पु० रविवार से पहले और मंगलवार के बाद का दिन ।

शनिश्चर—संज्ञा पु० दे० “शनि” ।

शनं—अव्य० धीरे । आहिस्ता ।

शनः—अव्य० धीरे-धीरे ।

शपथ—संज्ञा स्त्री० १. कसम । सीगन्ध । २. प्रतिज्ञा । कौल ।

शपथ—शपथ ग्रहण करना—उच्चतम अधि-कारियों, जैसे—मंत्रियों, राज्यपालों आदि-द्वारा कार्यभार संभालते समय शपथ लेना और देशभक्ति तथा शासन विधान के उद्देश्य अनुकूल आचरण करने की प्रतिज्ञा करना ।

शपथ पत्र—संज्ञा पु० न्यायालय में किसी बात की सत्यता प्रमाणित करने के लिए शपथपूर्वक लिखकर दिया जानेवाला पत्र ।

हलकनामा । (अये०—एफिडेविट)

शफाल—संज्ञा पु० [फा०] सतलू ।

शफा—संज्ञा स्त्री० [अ०] शरीर का स्वस्थ होना । आरोम्यता । तदुत्थी ।

शफाखाना—संज्ञा पु० अस्पताल । चिकित्सालय ।

शब—संज्ञा स्त्री० [फा०] रात ।

शबनम—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. ओष । २. एक प्रकार का बहुत महोत्सव नरडा ।

शबनमी—संज्ञा स्त्री० सप्तहरी । मच्छर रोकने के लिए चारपाई के चारों ओर लगाए जानेवाले जालीदार परदे ।

शबबरात—संज्ञा स्त्री० [फा०] मुसलमानों का एक त्योहार जिसमें मिठाई बाँटी जाती और आतिशबाजा छोड़ी जाती है ।

शब्द—संज्ञा पु० १. आवाज । ध्वनि । २. यह सर्वत्र ध्वनि, जिसमें किसी पदार्थ या भाव आदि का बोध हो । ३. अक्षर ।

शब्दमूल—संज्ञा पु० शब्द की अपनी विशेषता, जैसे तात्त्व्य आदि में । इस प्रकार के शब्द-मूलालंकार हैं—श्रीर, प्रसाद, स्तुति, मन्त्रा, मन्त्राधि, माधुर्य, गौरवार्थ, उदात्तता, अर्थ-शक्ति और शक्ति ।

शब्दचतुष्टय—संज्ञा पु० वाच्यता की प्रयोग-प्रकार । १. शब्दचतुष्टय ।

शब्दचित्र—संज्ञा पु० १. शब्दों-द्वारा चित्र के समान वर्णन । २. शब्दों में किसी विषय या घटना का ऐसा स्पष्ट और विशद वर्णन, जो चित्र या तस्वीर की तरह मालूम हो ।

शब्दचोर—संज्ञा पु० दूसरे के लेखों आदि से चोरी करनेवाला ।

शब्दजाल—संज्ञा पु० साधारण-सी बात कहने के लिए बड़े-बड़े शब्दों और कठिन वाक्यों का प्रयोग । शब्दाडम्बर ।

शब्द-प्रमाण—संज्ञा पु० किसी के केवल कथन के आधार पर प्रमाण या सबूत । जवानी सबूत ।

शब्दब्रह्म—संज्ञा पु० वेद ।

शब्दभेद—संज्ञा पु० १. शब्दों का अन्तर या विषयता । २. ध्वनि का अन्तर ।

शब्द-योजना—संज्ञा स्त्री० १. किसी वाक्य या कथन के लिए ढूँढकर उपयुक्त शब्दों को बँटाना । २. इस प्रकार बँटाने हुए शब्दों का क्रम और रूप ।

शब्दवारिधि—संज्ञा पु० १. शब्दों का समुद्र ।

शब्द-भण्डार । २. शब्दकोश ।

शब्द-विरोध—संज्ञा पु० १. केवल शब्दों में दिखाई देनेवाला विरोध, पर जिसके अर्थ में कोई विरोध न हो । शब्दगत विरोध । २. भासित होनेवाला विरोध ।

शब्दवेष—संज्ञा पु० [वि० शब्दवेषी] बिना देने हुए केवल शब्द या आवाज सुनकर किसी वस्तु का निगाना लगाना ।

शब्दवेषी—संज्ञा पु० बिना देखे हुए केवल आवाज सुनकर किसी वस्तु का निगाना लगानेवाला । जर्जुन और दण्ड्य की शब्दवेषी विशेषण में सम्बोधित किया गया है ।

शब्दशक्ति—संज्ञा स्त्री० शब्द की वह शक्ति, जिसमें उसका अर्थ या भाव प्रकट होता है । यह तीन प्रकार का है—अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना ।

शब्दशास्त्र—संज्ञा पु० व्याकरण ।

शब्दशास्त्रविद—संज्ञा पु० व्याकरण का पंडित या ज्ञाता ।

शब्दशास्त्र—संज्ञा पु० व्याकरण ।

शब्दसागर-सज्ञा पु० १. शब्दों का समुद्र।  
शब्द-भांडार। २. शब्द-कोश।

शब्दसाधन-सज्ञा पु० १. शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद और रूपांतर आदि के विवेचन से सम्बन्ध रखनेवाला व्याकरण का एक अंग।  
२. बिना देते हुए केवल आवाज सुनकर निशाना लगाना।

शब्दावंबर-सज्ञा पु० बड़े-बड़े शब्दों का और कठिन वाक्यों का प्रयोग, जिसमें भाव की बहुत कमी हो। शब्दजाल।

शब्दातीत-सज्ञा पु० जो शब्द से परे हो। ईश्वर।

शब्दालंकार-सज्ञा पु० काव्य में वह अलंकार, जिसमें केवल शब्दों के बिन्यास से लालित्य उत्पन्न किया जाय। जैसे—यमक, अनुप्रास आदि।

शम-सज्ञा पु० [स्त्री० शमता] १ शांति।  
२ मोक्ष। ३ उपचार। ४. अंत करण तथा द्रवियों को बरत में करना। ५ क्षमा।

शमन-सज्ञा पु० १. शांति। दमन। २ दोष, विकार आदि को दवाना। जैसे, रोग का शमन। ३. यज्ञ में पशुआ का बलिदान।  
४. यम। ५. हिता।

शमशेर-सज्ञा स्त्री० [फा०] तलवार।

शमा-सज्ञा स्त्री० [ज०] १ यत्नी। २. चिराय की ली। ३. मौमवरी।

शमादान-सज्ञा पु० [फा०] एक तरह का पात्र या आधार, जिसमें मौमवरी या चिराय रखकर उसे जलाते हैं। प्रकाश-स्तम्भ। दीपक की तरह का एक पात्र।  
शमित-वि० १ शान्त। २. जिसका शमन किया गया हो।

शमी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा वृक्ष, जिसकी पूजा विजयादशमी के दिन की जाती है।  
वि० शांत।

शमीक-सज्ञा पु० एक प्रतिष्ठित क्षमाशील ऋषि, जिनके गले में परीक्षित ने एक घार मरा हुआ साँप डाल दिया था, परन्तु ये कुछ न बोलें।

शमी पु० जमि।

शयन-सज्ञा पु० १. सोना। लेटना। २. बिछोना। शय्या।

शयन-आरती-सज्ञा स्त्री० देवताओं की वह आरती, जो रात को सोने के समय होती है।  
शयनगृह-सज्ञा पु० शयनागार। सोने के लिए कमरा या घर।

शयनबोधिनी-सज्ञा स्त्री० अगहन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी।

शयनागार, शयनालय-सज्ञा पु० सोने का कमरा या घर।

शय्या-सज्ञा स्त्री० बिछोना। विस्तर। पलंग या भूमि आदि पर बिछा हुआ विस्तर।

शय्यादान-सज्ञा पु० किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसके परिवारवालों-द्वारा उसके उद्देश्य से महाब्राह्मण को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जा-दान।

शर-सज्ञा पु० १. बाण। तीर। २. भाले का फल। ३. सरकड़ा। ४. पाँच की तस्पा (कामदेव के पाँच बाणों के अनुसार)।  
५. दूध या दही की-मलाई। ६. बिता। ७. एक अक्षुर का नाम।

शरद-सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शरदी] १ मुसलमानों का धर्म-शास्त्र। कुरान में की हुई आजात। २ ईश्वर-द्वारा भक्तों को बताया हुआ सीधा मार्ग। मजहब। ३ देस्तूर। परिपाटी। तरीका।

शरदचन्द्र-सज्ञा पु० शरद ऋतु का चन्द्रमा।  
शरण-सज्ञा स्त्री० १ बचाव की जगह। २. रक्षा। आश्रय। पनाह। ३. मकान। घर।  
निवास-स्थान। ४. अबोध। मजहब।

शरणगृह-सज्ञा पु० १. पनाहघर। २. हवाई जहाजों के हमले से बचने के लिए जमीन के अन्दर बनाया गया स्थान।

शरण-वि० शरण देनेवाला।  
शरणागत-सज्ञा पु० अपनी जगह बचाने के लिए शरण में आया हुआ। शरणार्थी।  
आश्रित।

शरणापन्न-वि० दे० "शरणागत"।

शरणार्थी-सज्ञा पु० १. शरण में आया हुआ व्यक्ति। २ किसी देश या स्थान से जबरदस्ती हटाया गया। जो दूसरी जगह शरण

पाकर रहना चाहता हो। (अग्ने०-रिम्यूजो)  
पाकिस्तान से आनी जान बचाकर भारत  
में आये हुए हिन्दुओं के लिए प्रयुक्त शब्द।  
शरणो-वि० शरण देनेवाला।

शरण्य-वि० १. शरण देने योग्य। २. शरण में  
बाए हुए को रखा करनेवाला।

शरत् या शरद-मज्ञा स्त्री० १. एक ऋतु, जो  
आश्विन और कार्तिक मास में होती है  
(अगस्त से नवम्बर तक का समय)। २.  
वर्ष (काव्य में)।

शरत्काल-सज्ञा पु० शरद ऋतु।

शरदंड-सज्ञा पु० चावक।

शरद-मज्ञा स्त्री० दे० "शरत्"।

शरद-पूर्णिमा-सज्ञा स्त्री० शरद पूर्नी। नवरा  
रहोने की पूर्णमासी।

शरदत्-सज्ञा पु० १. शरद-ऋतु। २. एक  
प्राचीन ऋषि।

शरपट्टा-सज्ञा पु० एक प्रकार का शस्त्र।

शरपुख-सज्ञा पु० १. तीर में लगा हुआ  
पक्ष।

शरवत-सज्ञा पु० [अ०] १. पीने की पीटी  
वस्तु। रस। पानी में शक्कर और कुछ अन्य  
वस्तुओं को घोलकर पीने की वस्तु। २. चीनी  
आदि में पका हुआ किसी औषधि का रस।

शरवती-वि० रसोला। रसदार।

सज्ञा पु० १. एक तरह का हल्का पीला रंग।  
२. एक प्रकार का नींबू। ३. एक प्रकार का  
बड़िया कपड़ा।

शरभंग-सज्ञा पु० एक प्राचीन सहर्षि। वन-  
वास के समय रामचन्द्र इनका दर्शन करने  
गए थे।

शरभ-सज्ञा पु० १. हाथी का बच्चा। २.  
विष्णु। ३. टिड्डी। ४. एक पक्षी।  
५. एक प्रकार छन्द। ६. एक तरह का मृग।  
७. दन्तकथाओं में वर्णित आठ पैरा का एक  
जानवर, जो शेर और हाथी से भी बलवान्  
माना गया है। ८. शशिकला नामक एक  
वृत्त। ९. राम की सेना का एक बन्दर।

शरभा-सज्ञा स्त्री० वह बालिका जिसके  
हाथ-पैर टूटे हुए हों और जो इस कारण  
विवाह के लिए अयोग्य हो। अपग बालिका।

शरभ-सज्ञा स्त्री० [फा०] 'शर्म'। १. लज्जा।  
हुया। २. सकोच। लिहाज।

मुहा०-शरभ से गड जाना या शरभ से  
पानी-पानी होना=बहुत लज्जित होना।

शरमाना-क्रि० अ० लजाना। लज्जित होना।  
शर्मिन्दा होना।

क्रि० स० शर्मिदा करना। लज्जित करना।

शरमिदगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] शरमिदा या  
लज्जित होने का भाव। शर्म। लाज।

शरमिदा-वि० [फा०] लज्जित।

शरमीला-वि० [स्त्री० शरमीली] बहुत  
लज्जा या शर्म करनेवाला। लज्जालु।

शरह-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ व्याख्या। किसी  
बात या कथन को स्पष्ट करने के लिए किया  
हुआ वर्णन। टीका। २. दर। भाव।

शरहबन्दी-सज्ञा स्त्री० दरबन्दी। दर या  
भाव निश्चित करना।

शराकत-सज्ञा स्त्री० [फा०] शरीफ या  
शामिल होने का भाव। हिस्सेदारी। साझा।

शराकतनामा-सज्ञा पु० [फा०] वह पत्र,  
जिस पर साझे या हिस्सेदारी की शर्त लिखी  
हो।

शराफत-सज्ञा स्त्री० [अ०] शरीफ या  
सज्जन होने का भाव। सज्जनता। भल-  
मनसी।

शराब-सज्ञा स्त्री० [अ०] मद्य। सकिरा।  
विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ कुछ  
लाल रंग का तरल पदार्थ, जिसके पीने से  
नशा हो।

शराबखाना-सज्ञा पु० शराब बेचने का स्थान।

शराबखोर-सज्ञा पु० [फा०] बहुत शराब  
पानेवाला।

शराबखोरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बहुत शराब  
पाने को लत या आदत।

शराबी-सज्ञा पु० शराब पीनेवाला।

शराबीर-वि० [फा०] बिलकुल भोगा हुआ।  
तर-बतर।

शरास्त-सज्ञा स्त्री० [अ०] बदमाशी।  
नटखटपन। दुष्टता। पाजोपज।

शरास्ती-वि० पाजी। दुष्ट।

शरासन-सज्ञा पु० घनुष।

शम्भसागर—मन्त्रा पु० १. शम्भ का समुद्र।  
शब्द-भादार। २. शब्द-मोना।

शम्भसाधन—मन्त्रा पु० १. शम्भ की व्युत्पत्ति,  
भेद धीर स्थावर आदि के विवेचन से  
शम्भय शब्दनेवाला व्याकरण का एक धर्म।  
२. किता देगे हुए देवल जयजय गुनकर  
निगाना लगाना।

शम्भारंवर—मन्त्रा पु० बड़े-बड़े शब्दों का धीर  
कठिन वाक्यों का प्रयोग, जिसमें भाव की  
बहुत कमी है। शब्दजाल।

शम्भारोत्त—मन्त्रा पु० जो शब्द में परे हो।  
ईश्वर।

शम्भारंकार—मन्त्रा पु० शब्द में यह अकार,  
जिसमें देवल शब्दों के निर्यास से लालित्य  
उत्पन्न किया जाय। जैसे—यमक, अनुप्रास  
आदि।

शम—मन्त्रा पु० [स्त्री० शमता] १ शांति।  
२ शांति। ३ उपचार। ४. अतः प्रण तथा  
प्रिया को वश में करना। ५ शमा।

शमन—मन्त्रा पु० १. शांति। दमन। २. दोष,  
विकार आदि को दवाना। जैसे, रोग का  
शमन। ३. यज्ञ में पशुओं का बलिदान।  
४ यम। ५. हिता।

शमनोर—मन्त्रा स्त्री० [पा०] तलवार।

शमा—मन्त्रा स्त्री० [अ०] १ बत्ती। २. चिराग  
की ली। ३. मोमबत्ती।

शमादान—मन्त्रा पु० [पा०] एक तरह का  
पात्र या आपार, जिसमें मोमबत्ती, या  
चिराग रखकर उसे जलाते हैं। प्रकाश-  
स्तम्भ। दीपक की तरह का एक पात्र।  
शमित—वि० १ शान्त। २. जिसका शमन  
किया गया हो।

शमी—मन्त्रा स्त्री० एक प्रकार का बड़ा वृक्ष,  
जिसकी पूजा विजयादशमी के दिन की  
जानी है।

वि० शांत।

शमीक—मन्त्रा पु० एक प्रसिद्ध क्षमाशील  
क्षुद्रि, जिनके गले में परीक्षित ने एक बार  
मरा हुआ साँप डाल दिया था, परन्तु ये  
कुछ न बोले।

शमीगर्भ—मन्त्रा पु० अग्नि।

शयन—मन्त्रा पु० १. सोना। बैठना। २.  
बिछोना। शय्या।

शयन-आरती—मन्त्रा स्त्री० देवताओं की यह  
आरती, जो रात को सोने के कमरा हावी है।  
शयनगृह—मन्त्रा पु० शयनागार। सोने के  
लिए कमरा या पर।

शयनबोधिनी—मन्त्रा स्त्री० जगहन भाग के  
कृष्णपक्ष की एकादशी।

शयनागार, शयनालय—मन्त्रा पु० सोने का  
कमरा या पर।

शय्या—मन्त्रा स्त्री० बिछोना। बिस्तर। पलंग  
या भूमि आदि पर बिछा हुआ बिस्तर।

शय्यादान—मन्त्रा पु० किसी व्यक्ति की मृत्यु  
के बाद उसके परिवारवालों-द्वारा उसके  
उद्देश्य से महाप्राज्ञ का चारपाई, बिछावन  
आदि दान देना। सज्जा-दान।

शर—मन्त्रा पु० १. बाण। तीर। २. नाले का  
फल। ३. सरकड़ा। ४. पाँच को सख्या  
(कामदेव के पाँच राणा के अनुसार)।  
५ दूध या दही को मलाई। ६. चिता। ७  
एक असुर का नाम।

शरद—मन्त्रा स्त्री० [अ०] [वि० शरदी]  
१ मुसलमानों का धर्म-शास्त्र। कुरान में  
दी हुई आज्ञा। २. ईश्वर-द्वारा भक्तों को  
बताया हुआ सीधा मार्ग। सजहबा। ३  
दस्तूर। परिपाटी। तरीका।

शरद्वन्द—मन्त्रा पु० शरद ऋतु का चन्द्रमा।  
शरण—मन्त्रा स्त्री० १. श्वाव की जगह। २.  
रक्षा। आश्रय। पनाह। ३. सफाई। पर।  
निवास-स्थान। ४. अबीन। मातहत।

शरणगृह—मन्त्रा पु० १. पनाहपर। २. हवाई  
जहाजों के हमले से बचने के लिए जमीन  
के अन्दर बनाया गया स्थान।

शरणद—वि० शरण देनेवाला।

शरणागत—मन्त्रा पु० अपनी जान बचाने के  
लिए शरण में आया हुआ। शरणाधी।  
आश्रित।

शरणापन्न—वि० दे० "शरणागत"।

शरणाधी—मन्त्रा पु० १ शरण में आया हुआ  
व्यक्ति। २. किसी देश या स्थान से जबरदस्ती  
हटाया गया व्यक्ति, जो दूसरी जगह शरण

पाकर रहना चाहता हो। (अप्रे०-रिफ्यूजी)  
पाकिस्तान से अपनी जान बचाकर भारत  
में आये हुए हिन्दुओं के लिए प्रयुक्त शब्द।

शरणो-वि० शरण देनेवाली।

शरण्य-वि० १. शरण देने योग्य। २. शरण में  
लाए हुए को रक्षा करनेवाला।

शरत् या शरद-मज्ञा स्त्री० १ एक ऋतु, जो  
वाश्चर्य और कात्तिक मास में होती है  
(अगस्त से नवम्बर तक का समय)। २  
वर्ष (काव्य में)।

शरत्काल-सज्ञा पु० शरद ऋतु।

शरद-सज्ञा पु० चाबुक।

शरद-मज्ञा स्त्री० दे० "शरत्"।

शरद-पूर्णमा-सज्ञा स्त्री० शरद पूतो। पवार  
महीने को पूर्णमासी।

शरद-सज्ञा पु० १. शरद-ऋतु। २. एक  
प्राचीन ऋषि।

शरद-सज्ञा पु० एक प्रकार का शस्त्र।

शरपुल-सज्ञा पु० १. तीर में लगा हुआ  
पल।

शरबत-सज्ञा पु० [अ०] १. पीने की मीठी  
वस्तु। रस। पानी में शक्कर और कुछ अन्य  
वस्तुओं को घोलकर पीने की वस्तु। २. चीनी  
आदि म पका हुआ किसी औषधि का रस।

शरबती-वि० रसीला। रसदार।

सज्ञा पु० १ एक तरह का हल्का पोला रंग।  
२ एक प्रकार का नील। ३ एक प्रकार का  
बड़िया कपड़ा।

शरभंग-सज्ञा पु० एक प्राचीन सहर्षि। वन-  
वास के समय रामचन्द्र इनका दर्शन करते  
गए थे।

शरभ-सज्ञा पु० १ हाथी का बच्चा। २  
विलुप्त। ३. टिड्डी। ४. एक पक्षी।

५. एक प्रकार छन्द। ६. एक तरह का मृग।

७. दन्तकमात्रा में वर्णित आठ पंरा का एक  
जानवर, जो घेर और हाथी से भी बलवान्  
माना गया है। ८. शशिवला नामक एक  
वृत्त। ९. राम की सेना का एक बन्दर।

शरभा-मज्ञा स्त्री० यह बालिका जिसके  
हाथ-पैर टूटे हुए हों और जो इस कारण  
बाह के लिए अग्रगण्य हो। जपन बालिका।

शरम-सज्ञा स्त्री० [फा०] 'शर्म'। १. लज्जा।  
हुया। २. सकोच। लिहाज।

मुहा०-शरम से गड जाता या शरम से  
पानी-पानी होना=बहुत लज्जित होना।

शरमाना-क्रि० अ० लजाना। लज्जित होना।  
शर्गिन्दा होना।

क्रि० स० शर्मिदा करना। लज्जित करना।

शरमिदगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] शरमिदा या  
लज्जित होने का भाव। श्रेय। लाज।

शरमिदा-वि० [फा०] लज्जित।

शरमीला-वि० [स्त्री० शरमीली] बहुत  
लज्जा या शर्म करनेवाला। लज्जालु।

शरह-मज्ञा स्त्री० [अ०] १ व्याख्या। किसी  
बात या कथन को स्पष्ट करने के लिए किया  
हुआ वर्णन। टीका। २ दर। भाव।

शरहबन्दी-सज्ञा स्त्री० दरबन्दी। दर या  
भाव निश्चित करना।

शराकत-सज्ञा स्त्री० [फा०] शरीक या  
शामिल होने का भाव। हिस्सेदारी। साझा।

शराकतनामा-सज्ञा पु० [फा०] वह पत्र,  
जिस पर साझे या हिस्सेदारी की बात लिखी  
हो।

शराफत-सज्ञा स्त्री० [अ०] शरीफ या  
सज्जन होने का भाव। सज्जनता। भल-  
मनषी।

शराय-सज्ञा स्त्री० [अ०] मद्य। मदिरा।  
विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ कुछ  
लाल रंग का तरल पदार्थ, जिसके पीने से  
नशा हो।

शरायबलाना-सज्ञा पु० शराय बेचने का स्थान।

शरायखोर-सज्ञा पु० [फा०] बहुत शराय  
पानेवाला।

शरायखोरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बहुत शराय  
पाने की लत या आदत।

शरायी-मज्ञा पु० शराय पीनेवाला।

शरायोर-वि० [फा०] बिलगुल भोगा हुआ।  
तर-बतर।

शरायत-मज्ञा स्त्री० [अ०] बदमाशी।  
नटखटपन। दुष्टता। पाजापन।

शरायती-वि० पाजी। दुष्ट।

शरासन-सज्ञा पु० धनुष।

शरीरभत-सज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का धम्म-शास्त्र। मुसलमानों के अनुसार वह मार्ग, जो परमात्मा ने अपने नक्तों के लिए निश्चित कर दिया है।

शरीर-वि० [अ०] मिला हुआ। शामिल। सम्मिलित।

सज्ञा पु० साक्षी। रिस्तेदार। सहायक। शरीर-सज्ञा पु० [अ०] सज्जन। सभ्य या भला व्यक्ति।

शरीर-सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध वृक्ष और उसका फल, जो गोल होता है। २ धौफल। सीताफल।

शरीर-सज्ञा पु० देह। बदन।

वि० [अ०] [सज्ञा शरीर] पाजी। नट-खट। दुष्ट।

शरीररक्षण-सज्ञा पु० मृत्यु। प्राण-द्वारा शरीर को छोड़ देना अर्थात् मृत्यु।

शरीरपात-सज्ञा पु० मृत्यु।

शरीररक्षक-सज्ञा पु० राजाओं, शासकों या बहुत बड़े पदाधिकारियों के साथ साथ उनकी रक्षा के लिए रहनेवाले व्यक्ति। शरीर-शास्त्र-सज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसमें शरीर के अंगों का विवेचन हो। शरीर-विज्ञान।

शरीरस्थ-वि० १ शरीर में रहनेवाला। २ शरीर में।

शरीरात-सज्ञा पु० मृत्यु।

शरीरापण-सज्ञा पु० बलिदान करना। किसी वस्तु को पूरा करने के लिए अपने शरीर को पूर्ण रूप से लगा देना।

शरीरस्थि-सज्ञा पु० 'कफाल', 'केल्क', 'हृत्स्थि'—वाला शरीर।

शरीरी-सज्ञा पु० १ शरीरवाला। २ प्राणी। ३ आत्मा। जीव।

वि० शरीरवाला। शरीर से युक्त।

शरीर-सज्ञा स्त्री० १ शक्कर। चीनी। खंड। २ बालू का ढण।

शरीर-सज्ञा स्त्री० चादह अक्षरों की एक वृत्ति।

शरीर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी तत्व की शिष्ट के लिए अप्रसिद्ध गत। करार।

इकरार। २ बाजा। दाव। ३ दा दला या, व्यक्तियों में परस्पर हानेबली प्रतिज्ञा।

शर्तिपा-वि० वि० [अ०] १ अवश्य। २ बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक। गर्त बदकर।

वि० विलगुल ठोका। निश्चित।

शर्म-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ लज्जा। हया। २ लिहाज। सकोच।

शर्म-सज्ञा पु० १ मुख। आनंद। २ घर। सुखी।

शर्मद-वि० [स्त्री० शर्मदा] आनंद देने-वाला। सुखदायक।

शर्म-सज्ञा पु० ब्राह्मणों की एक उपाधि। शर्मिष्ठा-सज्ञा स्त्री० देवों के राजा वृषभ की कन्या, जो देवयानी की सखी थी।

शर्मणावत-सज्ञा पु० शर्मण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन शरीर।

शर्म-सज्ञा स्त्री० १ रात। २ मन्त्र। ३ स्त्री।

शर्मरूपि-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

शर्मरूप-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

शल-सज्ञा पु० १ बरछा। भाग। २ कस के एक मल्ल का नाम। ३ ब्रह्मा।

शलजम-सज्ञा पु० दे० 'शलजम'।

शलजम-सज्ञा पु० [फा०] गाजर की तरह का एक वृक्ष।

शलभ-सज्ञा पु० फलिया (जो रोशनी पर भेड़ता है)। शरभ।

शलवार-सज्ञा स्त्री० [फा०] पायजाम के सीते, 'कहने का अर्थ है, एक प्रकार का बहुत ढीला पायजामा, जो विशेष रूप से पंजाब आदि पश्चिमोत्तर भाग में पहना जाता है।

शलका-सज्ञा स्त्री० १ लाहे आदि की लकी सलाही। सलाख। भूईं। २ चोर-फा करने का औजार। ३ वाण।

शलस-सज्ञा स्त्री० दे० 'शलका'।

शलतुर-सज्ञा पु० पाणिनि के पूर्वजों का निवास-स्थान एवं प्राचीन जनपद। इसमें पाणिनि की 'शलतुरीय' भी रहते हैं।

शलूका-सज्ञा पु० [फा०] आधी, बाँहूँ की एक प्रकार की कुरती ।

शल्य-सज्ञा पु० १. चौर-फाड़ नश्वर । २. अस्त्र-चिकित्सा । ३. बाण । ४. साँग नामक अस्त्र । ५. माला । ६. बाण या माले का मुकीला हिस्सा । ७. मद्र देश के एक राजा, जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय मल्ल-युद्ध में भीमसेन से हार गए थे । ८. दर्द पैदा करनेवाला शरीर में जमा हुआ कोई पदार्थ, जैसे वायुगोला ।

शल्यक्रिया-सज्ञा पु० चौर-फाड़ करना । शस्त्र-चिकित्सा । नश्वर लगाना ।

शल्लकी-सज्ञा स्त्री० साही (जुतु) ।

शल्व-सज्ञा पु० दे० "शाल्व" ।

शव-सज्ञा पु० लाश । मुर्दा ।

शवदाह-सज्ञा पु० आदमी की लाश को जलाने की क्रिया । अन्त्योष्टि क्रिया ।

शव-परीक्षा-सज्ञा स्त्री० मृत्यु का कारण जानने के लिए मृत व्यक्ति की लाश की जाँच । सरकारी डाक्टर लाश की चौर-फाटकर यह जाँच करते हैं कि किस कारण मृत व्यक्ति की मृत्यु हुई है (अग्रे-पोस्ट-मार्टम) ।

शवभस्म-सज्ञा पु० लाश को जलाने के बाद बची हुई राख ।

शवर-सज्ञा पु० १. प्राचीन काल में दक्षिण भारत की एक जंगली जाति । २. शिव ।

शवरो-सज्ञा स्त्री० १. शवर जाति की एक तपस्विनी, जिसके जाश्रम में श्रीरामचन्द्रजी नीता को दूँध ले समय गए थे । वहाँ उन्होंने उसके जूँठे डेर खाए थे । २. शवर जाति की स्त्री ।

शस्त्र-सज्ञा पु० १. तरंगोश । २. काम-शस्त्र के अनुसार पुण्य के चार भेदों में से एक । ३. चन्द्रमा में का दाग या बलक (जो तरंगान या बाले हिरण की तरह दिखाई पड़ता है) ।

शशाक-सज्ञा पु० तरंगान । दे० "शन" ।

शशापर-सज्ञा पु० चन्द्रमा ।

शशाभूष-सज्ञा पु० १. कोई अतममय बात ।

२. तरंगान के भाग की तरह अतममय बात ।

शशाक-सज्ञा पु० चन्द्रमा । (चन्द्रमा के दाग को तरंगोश समझा जाता है, इसलिए चन्द्रमा को शशाक कहते हैं) ।

शशा-सज्ञा पु० दे० "शश" ।

शशि-सज्ञा पु० चन्द्रमा ।

शशिकर-सज्ञा पु० चन्द्रमा की किरण ।

शशिकला-सज्ञा स्त्री० १. चन्द्रमा की कला । चन्द्रमा की किरण । चन्द्रमा । २. एक प्रकार का छन्द ।

शशिकान्त-सज्ञा पु० १. कुमुद । २. चन्द्रकान्त मणि ।

वि० चन्द्रमा को प्यारा ।

शशिकुल-सज्ञा पु० चन्द्रवश ।

शशिकेतु-सज्ञा पु० गौतम बुद्ध का एक नाम ।

शशिग्रह-सज्ञा पु० दे० "चन्द्रग्रहण" ।

शशिज-सज्ञा पु० बुध ग्रह (चन्द्रमा का पुत्र) ।

शशिधर-सज्ञा पु० । शिवजी । चन्द्रमा को मस्तक पर धारण करनेवाले शिव ।

शशिप्रभा-सज्ञा पु० चाँदी । ज्योत्स्ना ।

शशिभाल-सज्ञा पु० मस्तक पर चन्द्रमा धारण करनेवाले । शिव ।

शशिभूषण-सज्ञा पु० शिव ।

शशिमण्डल-सज्ञा पु० चन्द्रमण्डल । चन्द्रमा का घेरा या मण्डल ।

शशिमुख-वि० [स्त्री० शशिमुखी] १. 'चन्द्रमा' के समान सुन्दर मुखवाला । २. अत्यन्त सुन्दर ।

शशिमौलि-वि० शिव ।

शशिवदन-वि० चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाली । शशिमूर्ती ।

शशिशेखर-सज्ञा पु० शिव ।

शशिहीरा-सज्ञा पु० चन्द्रकांत मणि ।

शशीश-सज्ञा पु० महादेव ।

शश, शसा \* -सज्ञा पु० दे० "शन, शसा" । तरंगोश ।

शस्त-सज्ञा पु० [फा०] विज्ञान । अध्ययन ।

शस्त्र-सज्ञा पु० १. हथियार । ५. उपकरण, जिनमें किसी चीज़ काटा या मारा जाय । २. शयन में बिना कपड़े हुए बचाने का हथियार । अंग्रेज-दूर । विमोक्ष (अग्रे-)

आम्स ) । (हाथ से पककर चलाए जानेवाले हथियारों को अस्त्र कहते हैं—जैसे, बाण ।)  
 शस्त्रकर्म, शस्त्रक्रिया—सज्ञा स्त्री० फोड़े आदि की चौर पाठ करने का काम ।  
 शस्त्रघारी—वि० [ स्त्री० शस्त्रधारिणी ] हथियारबद्ध । जिसके हाथ में शस्त्र या हथियार हो ।  
 शस्त्रविद्या—सज्ञा स्त्री० १ हथियार चलाने की विद्या । २ धनुर्वेद, जिसमें युद्ध करने और अस्त्र चलाने की विधियाँ हैं (यह धनुर्वेद का एक उपवेद है) ।  
 शस्त्रशाला—सज्ञा स्त्री० दे० 'शस्त्रागार' ।  
 शस्त्रागार—सज्ञा पु० शस्त्रों के रखने का स्थान । सिलहखाना ।  
 शस्त्रास्त्र—सज्ञा पु० शस्त्र और अस्त्र । हर तरह के हथियार । हाथ से फेंककर या बिना फेंके हुए चलाए जानेवाले दोनों प्रकार के हथियार ।  
 शस्त्रीकरण—सज्ञा पु० देश की सेना या जनता को शस्त्रों आदि से सज्जित करना ।  
 शस्य—सज्ञा पु० १ अन्न । २ नई धास । ३ खेती । फसल ।  
 शि० उत्तम । श्रेष्ठ ।  
 शहाहाह—सज्ञा पु० दे० 'शाहशाह' । बादशाह का बादशाह । महाराजाधिराज ।  
 'शह—सज्ञा पु० [ फा० शाह या सक्षिप्त रूप ] १ बादशाह । २ हुल्हा ।  
 सज्ञा स्त्री० १ शतरंज के खेल में कोई मुहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना, जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो । विस्त । २ छिपे तौर पर किसी को नटकाने की क्रिया या भाव ।  
 वि० श्रेष्ठतर । बढ़ा-बढ़ा ।  
 शहबाबा—सज्ञा पु० दे० 'शाहबादा' । राजकुमार ।  
 शहजोर—वि० [ फा० ] बखानू । तानतबर ।  
 शहतोर—सज्ञा पु० [ फा० ] लम्बी का बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा, जो मकान आदि बनाने के काम आता है ।  
 शहतूत—सज्ञा पु० एक वृक्ष और उसका फल । नूत ।

शहब—सज्ञा पु० [ अ० ] सधु । मधुमक्खियो के छत्ता से निकाल हुआ माठा तरल पदार्थ ।  
 मुहा०—शहद लगाकर चाटना=किसी प्रकार चीज को लेकर रखे रहना (व्यंग्य) ।  
 शहनार्द—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] बाँसुनी या अलगोजे के आकार का मुँह से फूँकर चलाया जानेवाला एक बाजा । रौशन चौकी ।  
 शहवाला—सज्ञा पु० [ फा० ] विवाह के समय दूल्हे के साथ-साथ जानेवाला छोटा बालक ।  
 शहभात—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] शतरंज के खेल में एक प्रकार की भात, जिसमें बादशाह पर बार करके हराया जाय ।  
 शहर—सज्ञा पु० [ फा० ] नगर । बड़ी बस्ती ।  
 शहरपनाह—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] शहर की चारदीवारी । नगर-कोटा ।  
 शहराती—वि० दे० 'शहरी' ।  
 शहरियत—सज्ञा स्त्री० [ फा० ] शहरीपन । नागरिकता ।  
 शहरी—वि० [ फा० ] १ शहर का । शहर वा रहनेवाला । नगरनिवासी । २ शहर से सम्बन्धित ।  
 शहयत—सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ काम-बासना । सम्भोग की इच्छा । २ सम्भोग ।  
 शहावत—सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ गवाही । सबूत । २ शहीद होना । बलिदान ।  
 शहाना—सज्ञा पु० दे० 'शाहना' । बादशाहों या राजाओं से सम्बन्ध रखनेवाली बातें ।  
 वि० १ शाही । राजसी । २ बहुत ही अच्छा ।  
 शहीद—सज्ञा पु० [ अ० ] १ निरी अर्च्छ काय को पूरा करने के लिए अपना बालदान करनेवाला व्यक्ति । २ मुसलमानों का अनुगार या के लिए प्राण देनेवाला व्यक्ति ।  
 शकर—वि० १ शिव-सम्बन्धी । शकर-सम्बन्धी । २ शकराचाय का । ३ शकराचाय का अनुयायी ।  
 शाब्दिक—सज्ञा पु० १ एक प्रसिद्ध मुनि, जिसे भक्तिसूत्र की रचना की थी । २ शाब्दिक के मुल्लम उत्पन्न व्यक्ति । ३ शाब्दिक की रचनाएँ—जैसे शाब्दिक सूत्र, शाब्दिकोपनिषद् । ४ अग्नि । ५ बज्र ।

शास्त्र-वि० १. स्थिर। सका हुआ। वेगहीन। निश्चल। २. चप। मौन। खामोश। ३. धीर। गम्भीर। ४. स्वस्थचित्त। क्रोधहीन। जिसके मन में शोक, चिन्ता या दुःख न हो। ५. जितेन्द्रिय। ६. बिना झगड़े-बहड़े या उपद्रव के (घर, समाज या देश)। विघ्न-बाधा-रहित। ७. मरा हुआ। (जैसे—वह शान्त हो गए)।

संज्ञा पुं० काव्य के नौ रंगों में से एक, जिसका स्थायी भाव निर्वेद है और जिसमें शान्त-भाव या सासारिक मोह-माया की असारता तथा वासनाओं से छुटकारा पाने अर्थात् विराग का वर्णन होता है।

शान्ता-संज्ञा स्त्री० राजा दशरथ की कन्या और महर्षि ऋष्यशृंग की पत्नी—रेणुका। शान्ति-संज्ञा स्त्री० १. समाज या देश में झगड़े-बहड़े या उपद्रव का न होना। अमन-चैन। २. स्थिरता। सदाता। खामोशी। ३. चित्त की स्वस्थता। ४. रोग आदि का दूर होना। ५. मृत्यु। ६. वेग या गति का न होना। निश्चलता। ७. धीरता। गम्भीरता। ८. वासनाओं से छुटकारा। विराग। ९. दुर्गा। १०. अमंगल दूर करने का उपाय या धार्मिक कृत्य।

शान्तिकर्म-संज्ञा पुं० घुरे घर आदि से होने-वाले अमंगल के निवारण का उपाय।

शान्तिभंग-संज्ञा पुं० जनसाधारण के सुख और शान्तिपूर्वक रहने में बाधा उत्पन्न करनेवाला कोई उपद्रव या अनुचित कार्य। अमन-चैन में खलल डालनेवाला काम।

शान्तिवाद-संज्ञा पुं० शान्ति-स्थपना का सिद्धान्त, जिसका अर्थ यह है कि सब लोग शान्तिपूर्वक रहे और ससार से लड़ाई-झगड़े तथा युद्ध आदि का जन्म हो जाय। (अर्थ—पैसिफिज्म)

शान्तिवादी-संज्ञा पुं० शान्तिवाद के सिद्धान्त को माननेवाला।

शास्त्राग्नी-संज्ञा स्त्री० [फा०] सज्जनता। भज-भक्तियों। शिष्टता।

शास्त्रा-वि० [फा०] सम्य। शिष्ट। नम्र। शास्त्र-संज्ञा पुं० उपाय। उपाय।

वि० शक जाति-संबंधी।

शाकद्वीप-संज्ञा पुं० १. पुराणों में वर्णित सात द्वीपों में से एक। २. ईरान और तुर्की के बीच का एक प्राचीन प्रदेश, जिसमें पहले शक बसते थे।

शाकद्वीपीय-वि० शाकद्वीप का।

संज्ञा पुं० ब्राह्मणों का एक भेद।

शाकल-संज्ञा पुं० १. खड। टुकड़ा। २. ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३. हवन की सामग्री। ४. प्राचीन मद्र देश का एक नगर।

शाकाहार-संज्ञा पुं० [वि० शाकाहारी] मांस-मछली आदि को छोड़कर केवल अनाज या वनस्पति (तरकारी, फल आदि) का भोजन। शाकाहार का उलटा।

शाकाहारी-वि० मांस-मछली आदि न खाने-वाला।

शाकिनी-संज्ञा स्त्री० चुड़ैल। डाइन।

शाकुन, शाकुनि-संज्ञा पुं० बहेलिया।

शक्ति-वि० शक्ति-संबंधी।

संज्ञा पुं० १. शक्ति या देवी का उपासक। २. तन्त्र-मन्त्र से देवी की पूजा करनेवाला।

शाक्य-संज्ञा पुं० एक प्राचीन क्षत्रिय जाति, जो नेपाल की तराई में बसती है।

शाक्य मुनि-संज्ञा पुं० गौतम बुद्ध।

शास्त्र-संज्ञा स्त्री० [फा०] १. टहनी। डाल।

शाखा। २. लगा हुआ टुकड़ा। ३. रास्ता।

फाँक। ४. नदी की धारा से निकली हुई छोटी धारा।

मुहा०—शास्त्र निकालना=दोष निकालना।

शास्त्रा-संज्ञा स्त्री० १. पेड़ की डाल। २.

किसी मूल वस्तु से निकले हुए उसके भेद।

विभाग। हिस्सा। ३. अंग। किसी मस्सा या

तप का वह अंग, जो दूर रहकर उसके

अधीन कार्य करे—जैसे बक, दूकान या

किसी राजनीतिक पार्टी की विभिन्न

स्थानों में स्थित शाखाएँ। ४. वेद की

संहिताओं के पाठ और प्रमोद।

शास्त्रामृत-संज्ञा पुं० १. मरर। २. गिरहरी।

३. पंदाँ पर रहनेवाला वस्तु।

शाशोच्चार—सज्ञा पु० विवाह के समय बसा-  
वली का रचना।

शागिर्द—सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री०]  
शागिर्द। शाय्द। जला। बिनी से ताई  
बिया साखनेवाला।

शाहप—सज्ञा पु० शहना। दुष्टता। छल-नपट।  
शाण—सज्ञा पु० [वि० शणित] एक प्रकार  
का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किए  
जते हैं। सान।

शातवाहन—सज्ञा पु० दे० "शालिवाहन"।  
शातिर—सज्ञा पु० [अ०] १ धूर्त। २  
चालाक। ३. सतरज का खेलाडी।

शाव—वि० [फा०] १ प्रसन्न। खुश।  
२ भरपूर।

शावियाना—सज्ञा पु० [फा०] १ बघावा।  
२ सूखी का बाजा।

शाबो—सज्ञा स्त्री० [फा०] १ विवाह। २  
खुशी या आनन्द का उत्सव।

शाइल—वि० १ हरा-भरा। २ हरी-हरी  
घास से ढका हुआ।

सज्ञा पु० १ हरी घास। २ दूब। ३ सड।  
४ रेगिस्तान के बीच की हरियाली और  
बस्ती।

शान—सज्ञा स्त्री० [अ०] [वि० शानदार]  
१ रोब। २ घमंड। ३ तडक भडक।  
ठाट-बाट। ४ प्रभुत्व। ५ शक्ति। ६  
प्रतिष्ठा। इज्जत।

मुहा०—शान बघारना=रोब खिलाना।

शान-शौकत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ रोबदाब।  
२ तडक भडक। सजधज। ठाट-बाट।

शाप—सज्ञा पु० किसी के अहित या हानि की  
इच्छा से कही हुई बात। अहित-कामना।  
बदबुजा।

शापप्रस्त—वि० जिस शाप दिया गया हो या  
जिस पर शाप पड़ा हो। शापित।

शापित—वि० जिस शाप दिया गया हो।

शापोद्धार—सज्ञा पु० शाप से छुटकारा पाना।

शाबरी—सज्ञा स्त्री० सबरा की भाषा। एक  
प्रकार की प्राकृत भाषा।

शाबाश—अव्य० [फा०] [सज्ञा शाबाशी]  
१ बधाई। सायुवाद। कोई अच्छा काम

करनेवाले की प्रशंसा व तब प्रयुक्त शब्द  
२ बहुत अच्छे। बाल-बाह। भन्स हा  
३ गुप्त रहा (रक्षा व लिए)।

शाब्द—वि० [स्त्री० शाब्दी] १ शब्द वा  
शब्दा का। शब्द-सम्बन्धी। २ "शाब्दिक"।  
२ केवल शब्द पर निर्भर रहनेवाला  
(अर्थ पर नहीं)।

शाब्दिक—वि० १ शब्द-सम्बन्धी। २ शब्दा  
में बड़ा हुआ।

शाब्दी—वि० १ शब्द-सम्बन्धी। २ केवल  
शब्द-विशेष पर निर्भर रहनेवाली। जैसे  
शाब्दी व्यञ्जना।

शाब्दी व्यञ्जना—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
व्यञ्जना, जो शब्द विषय के प्रयोग पर ही  
निर्भर हो, अर्थात् उसका पर्यायवाची  
शब्द रखने पर वह व्यञ्जना न रह जाय।  
आर्यी व्यञ्जना का उलटा।

शाम—सज्ञा स्त्री० [फा०] सन्ध्या। साय।

\*वि० सज्ञा पु० दे० 'श्याम'।

सज्ञा पु० अरब के उत्तर का एक देश, जिस  
सौरिया कहते हैं।

शामकण—सज्ञा पु० दे० "श्यामकण"।

शामत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दुर्भाग्य। बद-  
किस्मती। २ आफत। बिपत्ति। दुदशा।

मुहा०—शामत का सारा=जिसकी दुदशा  
का समय आया हुआ हो। शामत सवार  
होना या सिर पर खलना=दुदशा का  
समय आना।

शामियाना—सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार  
का बड़ा तबू।

शामिल—वि० [फा०] मिला हुआ। सम्मि-  
लित।

शामी—सज्ञा स्त्री० धातु का वह छल्ला, जो  
लकड़ियों या धोखारों के दस्तों के सिरे पर  
उसकी रक्षा के लिए लगाया जाता है।  
शाम।

सज्ञा पु० अरब, मिस्र आदि जातियां  
का वग (अग्र०—तेमेटिक)।

वि० शाम (सौरिया) देश का। शाम देश  
का निवासी। शाम देश में होत-  
वाला।

शाम्य-संज्ञा पुं० शान्ति। सम (शान्ति)  
का भाव।

शायक-संज्ञा पुं० १. बाण। शर। २. खड्ग।  
तलवार।

शायक-वि० [अ०] १. झलक। २. शौकीन।

शायद-अव्य० [फा०] ऐसा हो सकता है।  
कदाचित्। सम्भव है। सम्भवतः।

शायर-संज्ञा पुं० [अ०] [स्त्री० शायरा]  
कवि।

शायरी-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. काव्य। २.  
कविता। ३. कविताएँ बनाना।

शायी-वि० १. सोया हुआ। लेटा हुआ। २.  
सोनेवाला। (इसे अन्त में जोड़कर योगिक  
शब्द बनते हैं, जैसे शेषशायी=शेषभाग पर  
सोए हुए विष्णु)।

शारंग-संज्ञा पुं० दे० "शरण"।

शारंगपाणि-संज्ञा पुं० दे० "शार्ङ्गपाणि"।

शारद-वि० १. शरद-काल-सम्बन्धी। २.  
शरद-ऋतु में पैदा होनेवाला। ३. शरद-  
काल का।

शारदा-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २. दुर्गा।  
३. प्राचीन काल की एक लिपि।

शारदीय-वि० १. शरद-काल-सम्बन्धी।  
२. शरद-ऋतु में होनेवाला। ३. शरद-  
काल का।

शारदीय महापूजा-संज्ञा स्त्री० शरत्काल में  
होनेवाली नवरात्र की दुर्गापूजा।

शारिका, सारिका-संज्ञा स्त्री० मंजा  
(चिड़िया)।

शारिया, सारिया-संज्ञा स्त्री० १. जवाब।  
मालमा। २. अनन्तमूल।

शारीर-वि० १. शारीरिक। शरीर-सम्बन्धी।  
२. शरीर में या शरीर से होनेवाला।

शारीर-विज्ञान (शास्त्र)-संज्ञा पुं० १. यह  
शास्त्र, जिसमें जीव की उत्पत्ति, विकास  
और शरीर-सम्बन्धी ज्ञान का विवेचन हो।  
२. दे० "शरीर-शास्त्र"।

शारीरिक भाष्य-संज्ञा पुं० शरराचार्य का  
लिखा हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

शारीरिक मूत्र-संज्ञा पुं० वेसन-मूत्र।

शारीरिक-वि० १. शरीर-सम्बन्धी। २. शरीर

में या शरीर से होनेवाला, जैसे शारीरिक  
कष्ट या शारीरिक परिश्रम।

शार्ङ्ग-संज्ञा पुं० १. सींग का बना हुआ  
धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ में  
रहनेवाला धनुष। ३. पक्षी-विशेष।

शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि-संज्ञा पुं० १. विष्णु।  
२. श्रीकृष्ण। हाथ में शरणा नामक धनुष  
धारण करनेवाले।

शार्दूल-संज्ञा पुं० १. बाघ। सिंह। २. राक्षस।  
३. एक चिड़िया। ४. दोहे का एक भेद।  
वि० सर्वश्रेष्ठ। बहुत नामी या प्रसिद्ध।

शार्दूलललित-संज्ञा पुं० अठारह अक्षरों का  
एक प्रकार का छन्द।

शार्दूलबिभोदित-संज्ञा पुं० उन्नीस अक्षरों  
का एक प्रकार का वर्णवृत्त।

शार्वरी-संज्ञा स्त्री० १. रात-सम्बन्धी। २.  
रात।

शालंकि-संज्ञा पुं० पाणिनि ऋषि।

शाल-संज्ञा पुं० एक प्रकार का बहुत बड़ा  
पेड़। साल।

संज्ञा स्त्री० ऊनी या रेशमी चादर। दुसाला।

शालग्राम-संज्ञा पुं० विष्णु की एक प्रकार  
की पत्थर की गोल मूर्ति।

शालपर्णी-संज्ञा स्त्री० एक तरह का पौधा,  
जिसे आजकल "सरिवन" कहते हैं।

शाला-संज्ञा स्त्री० १. घर। मकान। २. बड़ा  
भारी कमरा। ३. कोई चीज रखने या कोई  
कार्य करने का स्थान। जैसे—गाठशाला।

४. एक प्रकार का छन्द, जो इन्द्रवज्रा  
और उपेन्द्रवज्रा के योग से बनता है।

शालातुरीय-संज्ञा पुं० पाणिनि ऋषि।

शालि-संज्ञा पुं० जड़हन धान।

शालिका-वि० पान से निकाला या बनाया  
हुआ।

शालिधान, शालिधान्य-संज्ञा पुं० बान्द्रनी  
चावल।

शालिनी-संज्ञा स्त्री० ग्यारह अक्षरों का एक  
वृत्त।

वि० १. छेदनेवाला। २. दुष्ट देनेवाला।  
शालिवाहन-संज्ञा पुं० एक प्रसिद्ध मक राजा,  
जिसने "शह" नामक यन्त्र बनाया था।

शास्त्रोद्य-सज्ञा पु० १. पोडा। २. पशु-चिकित्सा की विद्या। (अग्ने०-वेदरितरी साधन)

शास्त्रोद्यो-सज्ञा पु० पशुआ की चिकित्सा करनेवाला (अग्ने०-वेदरितरी डाक्टर)।

शास्त्रोद्योय-वि० पशु-चिकित्सा से सम्बन्ध रखनेवाला (अग्ने०-वेदरितरी)।

शालीन-वि० [सज्ञा स्त्री० शालीनता] १ नम्र। २ लज्जाशाल। ३ समान। तुल्य। ४ आचार विचारवाला। ५ धनी। ६ नियुक्त। चतुर।

शालीनता-सज्ञा स्त्री० शालीन होने का भाव। नम्रता। शाल-सकोच।

शाल्मलि-सज्ञा पु० १ सेमल का पेड़। २ पुराणानुसार एक द्वीप का नाम। ३ एक नरक का नाम।

शाल्मली-सज्ञा स्त्री० सेमल का पेड़।

शाय, शायक-सज्ञा पु० पशु या पक्षी का वच्चा।

शायक-वि० जो सदा बना रहे। चिरन्तन। कभी नष्ट न होनेवाला।

शायली-सज्ञा स्त्री० पुरखी।

शासक-सज्ञा पु० [स्त्री० शासिका] १ शासन करनेवाला। २ हाकिम।

शासन-सज्ञा पु० १ आज्ञा। हुक्म। २ राज्यकार्य का प्रबन्ध या सञ्चालन। हुकूमत। ३ अधिकार या वश या रचना। नियन्त्रण। ४ सरकारी अधिकारियों का समूह या मण्डल। ५ दंड। सजा।

शासनीय-वि० १ शासन करने योग्य। २ दंड देने योग्य।

शासित-वि० [स्त्री० शासिका] १ जिस पर शासन हो रहा हो। २ दंडित। जिसे दंड दिया जाय।

शास्ता-सज्ञा पु० १ शासक। २ राजा। ३ पिता। ४ गुरु।

शास्ति-सज्ञा स्त्री० १ शासन। २ दंड। सजा। ३ जुर्माने में लिया जानेवाला धन या काम।

शास्त्र-सज्ञा पु० १ हिन्दुआ के अनुसार वेदग्रन्थ, जो जनसाधारण की भलाई के लिए बनाए

गए हैं और जिनमें उनके लिए कर्त्तव्य बनाए गये हैं। इनकी संख्या १८ कही गई है-यिज्ञा, गन्ध, व्याकरण, निवस्त, ज्योतिष, छंद, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, वन्यवेद, गार्ग्यवेद, और अथर्वशास्त्र। २ किसी विषय का क्रम से संग्रह किया हुआ पुरा ज्ञान।

३ विज्ञान। विद्या।

शास्त्रकार-सज्ञा पु० शास्त्र का रचना करनेवाला।

शास्त्रज्ञ-सज्ञा पु० शास्त्रों का ज्ञानकार या पंडित।

शास्त्री-सज्ञा पु० १ शास्त्र ज्ञाननेवाला। शास्त्रज्ञ। धर्मशास्त्र का पंडित। २ संस्कृत-विद्यालय और काशी-विद्यापीठ की एक उपाधि।

शास्त्रीकरण-सज्ञा पु० किसी विषय को शास्त्र का रूप देना।

शास्त्रीय-वि० १ शास्त्र-संबन्धी। २ शास्त्र के अनुसार।

शास्त्रीवत्-वि० शास्त्री में कहा हुआ। शास्त्री में कहा हुई बातों के अनुसार।

शाहशाह-सज्ञा पु० [फा०] बादशाह का बादशाह। महाराजाधिराज।

शाहशाही-सज्ञा स्त्री० [फा०] शाहशाह (बादशाह) का काम या भाव। राजसी।

शाह-सज्ञा पु० [फा०] १ बादशाह। महाराज। २ मुसलमान फकीरों की उपाधि। वि० बड़ा। महान्।

शाहसर्च-वि० [फा०] [सज्ञा शाहसर्ची] बड़ा खर्च करनेवाला।

शाहबादा-सज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० शाहबादी] राजकुमार। बादशाह का पुत्र।

शाहाना-वि० [फा०] शाही। राजसी।

सज्ञा पु० विवाह का जोड़ा, जो दूल्हे को पहनाया जाता है। जामा।

शाही-वि० [फा०] १ राजसी। २ बादशाह-संबन्धी।

शिरफ-सज्ञा पु० दे० 'ईगुर'।

विज्ञान-सज्ञा पु० १ ज्ञानकार। २ गहन

की शनकार। ३. मधुर ध्वनि। सुरीली या मीठी आवाज।

वि० मधुर ध्वनि करनेवाला।

शिकनी-सज्ञा स्त्री० १. धनुष को डोरी। २.

जंगठा। ३. नपुस्र। ४. पैजनी।

शिकी-सज्ञा स्त्री० १. सेम की फली। २.

छोमी। फली। बौड़ी।

शिक्षपा-सज्ञा स्त्री० १. शीशम का पेड़।

२. अशोक वृक्ष।

शिक्षुप\*-सज्ञा स्त्री० दे० "शिक्षपा"।

शिक्षुमार-सज्ञा पु० सूँस। (पानी का एक जानवर।)

शिकंजा-सज्ञा पु० [फा०] १. दवाने, कसने

या निचोड़ने का यंत्र। २ एक यंत्र, जिससे

जिल्दबद बितावेँ दवाते और उसके पत्रे

काटते हैं। ३. प्राचीन काल में अपराधियों

को कठोर दंड देने का यंत्र, जिसमें उनकी

टांगें कस दी जाती थी।

शिकन-सज्ञा स्त्री० [फा०] सिकुड़न। सिकुड़ने

से पड़ी हुई धारी।

शिकम-सज्ञा पु० [फा०] पेट।

शिकमी-वि० [फा०] १. किसी के अधीन

या अन्तर्गत रहनेवाला। २. पेट-

सम्बन्धी।

शिकमी काश्तकार-सज्ञा पु० [फा०] यह

काश्तकार, जिसे जोतने के लिए खेत किसी

दूसरे काश्तकार से मिला हो।

शिकरा-सज्ञा पु० [फा०] एक तरह का बाज

पक्षी।

शिकवा-सज्ञा पु० [अ०] शिनायत।

उग्रहता।

शिकस्त-सज्ञा स्त्री० [फा०] हार। पराजय।

शिकायत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ बुराई

करना। निन्दा। २ उलाहना। ३ राग।

बोमारी-जैसे, पेट की शिकायत।

शिकार-सज्ञा पु० [फा०] १ जंगली पशु-

पक्षिया का मारने का कार्य। आखेट।

२. मारा हुआ जानवर। ३. मांस। ४.

खाने की वस्तु। ५. कोई ऐसा आदमी,

जिम्हें फँसने से बचने का लाल हो।

मूहा०-बिस्वी का शिकार होना=१. बिस्वी

के द्वारा मारा जाना। २. किसी के जाल

में फँसना।

शिकारगाह-सज्ञा स्त्री० [फा०] शिकार

खेलने का स्थान।

शिकारी-सज्ञा पु०, वि० [फा०] १. शिकार

करनेवाला। २. शिकार से सम्बन्ध रखने-

वाला।

शिक्षक-सज्ञा पु० १. शिक्षा देनेवाला।

सिखानेवाला। २. विद्यालयों में छात्रों को

पढ़ानेवाला व्यक्ति। गुरु।

शिक्षण-सज्ञा पु० १. शिक्षा देने का काम।

२ शिक्षा। तालीम।

शिक्षणालय-सज्ञा पु० विद्यालय। वह स्थान,

जहाँ विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाय।

शिक्षा-सज्ञा स्त्री० १ किसी विद्या को सीखने

या सिखाने की क्रिया। तालीम। ज्ञान।

२ उपदेश। सीख। नसीहत। पाठ। सबक।

३ छ वेदानों में से एक, जिसमें वेदों के

वर्ण, स्वर, मात्रा आदि का निरूपण है।

शिक्षार्थी-सज्ञा पु० शिक्षा प्राप्त करनेवाला।

विद्यार्थी।

शिक्षालय-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ विद्या-

यियों को शिक्षा दी जाय। विद्यालय।

शिक्षाविभाग-सज्ञा पु० वह सरकारी विभाग,

जिसके द्वारा शिक्षा का प्रवर्ध होता है।

शिक्षा-संचालक का कार्यालय।

शिक्षित-वि० [स्त्री० शिक्षिता] पढ़ा-लिखा।

जिसने शिक्षा पाई हो।

शिक्षंड-सज्ञा पु० १ मोर की पूँछ। २.

शिला। चोटी।

शिक्षिनी-सज्ञा स्त्री० १ मोरनी या मयूरी।

२ द्रुपदराज की एक कन्या, जो पीछे पुत्र

के रूप में होकर कुरुक्षेत्र के युद्ध में लड़ी

थी।

शिक्षंडी-सज्ञा पु० १. मोर। २. मूर्ति। ३.

बाण। ४. शिक्षा। ५. दे० "शिक्षिनी"।

शिक्ष\*-सज्ञा स्त्री० दे० "शिक्षा"।

शिक्षर-सज्ञा पु० १. गहूँड़ की चोटी।

सिरा। २. पेड़ का ऊँचा अगला हिस्सा।

३. मकान के ऊपर का निकला हुआ

तुलीला सिरा। कँगुरा। गुबद।

शिशिरन-सज्ञा स्त्री० दही और चीनी का बनाया हुआ एक तरह का शरबत।

शिशिरिणी-सज्ञा स्त्री० १. रसाल। २. रामावली। ३. स्त्रिया में श्रेष्ठ। ४. दही और चीनी का रस। शिशिरन। ५. सद्यह ज्वारा की एक वृत्ति।

शिखा-सज्ञा स्त्री० १. सिर के बीच में सबसे लम्बे बालों का गुच्छा। चोटी। बुटिया। २. नुकीला छोर या सिर। नोक। ३. शिपर। ऊपरी भाग। ४. मोर, मुर्गा आदि पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी। कलगी। ५. दीपक की लो। ६. आग की लपट। ७. प्रकाश की किरण।

शिखाधर-वि० नुकीला घिरा या नोकवाला। सज्ञा पु० मोर।

शिखावन्धन-सज्ञा पु० चाटी बांधना।

शिखासून-सज्ञा पु० चाटी और जनेऊ।

शिखि-सज्ञा पु० १. मोर। २. कामदेव। ३. तीन की संख्या (तीन प्रकार की अग्नि)।

शिखिध्वज-सज्ञा पु० १. ध्वजा। २. कासिक्य। ३. मार के चिह्नवाला शब्द (मयूरध्वज)।

शिखी-वि० [स्त्री० शिखिनी] चोटीवाला।

सज्ञा पु० १. मोर। २. मुर्गा। ३. अग्नि।

४. तीन की संख्या (तीन प्रकार की अग्नि)।

५. पुच्छल तारा। ६. केतु। वाण। ७. तीर। ८. सौंड। ९. घोड़ा।

शिखाफ-सज्ञा पु० [फा०] १. चीरा। नस्तर।

२. दरार। ३. छद।

शितद्रु, शतद्रु-सज्ञा स्त्री० सतलज नदी।

शिति-वि० १. सफेद। २. काला।

शितिकठ-सज्ञा पु० १. सफेद या काली गदन-वाला। २. मोर। ३. शिव। ४. मुर्गा।

जलकाक। ५. पपीहा।

शिविल-वि० (सज्ञा शिविलता) १. बका हुआ। श्रुति। २. सुस्त। धीमा। ३. जो पूरा मुस्तैद न हो। ४. ढीला। जो मत्ता या जकड़ा न हो। ५. शब्द-योजना का ठीक न होना या प्रवाह न होना (वाक्य या वाक्य में)। ६. आभा या नियम आदि, जिसका ठीक पालन न हुआ हो।

शिविलता-सज्ञा स्त्री० १. शिविल होने का भाव। थकावट। जलस्य। २. ढीलापन।

मुस्तैदी का न होना। नियम-पालन में ढीलापन। ३. शक्ति की कमी। ४. वाक्या में शब्दों का परस्पर गठन हुआ अर्थ-संबंध न होना।

शिविलित-वि० द० "शिविल"। थका-मोटा।

शिद्व-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. तेजी। जार।

२. अपिकता। ज्यादाती। जैस, शिद्व की

गर्मी=बहुत अधिक गर्मी।

शिनासत-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी

व्यक्ति या वस्तु की ड़ेखकर उगे पहचानने

का कार्य। पहचान। २. परख। ३.

फौजदारी के मुकदमा या पुलिस की

कार्रवाइया में अभियुक्त आदि की पहचान।

शिरक\*—सज्ञा पु० ढाल। शिपर (फा०)।

शिया-सज्ञा पु० दे० "शिया"।

शिर-सज्ञा पु० १. सिर। २. मस्तिष्क। ३.

सिरा। चाटी।

शिरकत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. किसी काम

में शामिल होना। २. किसी वस्तु के अधिकार

में भाग। साझा। हिस्सा।

शिरज-सज्ञा पु० केश। सिर के बाल।

शिरान-सज्ञा पु० दे० 'शिरस्त्राण'।

शिरफूस-सज्ञा पु० दे० 'सीसफूस'।

शिरमोर-सज्ञा पु० १. मुकुट। २. सिर का

गहना। ३. प्रधान। श्रेष्ठ अधिपति।

शिरस्त्राण-सज्ञा पु० लड़ाई के समय बचाव

के लिए सिर पर पहना जानवाली छोटी कौ

टोपी।

शिरा-सज्ञा स्त्री० शरीर में खून की छोटी

नाडी या नस।

शिरीष-सज्ञा पु० सिरिस का पेड़, जो शीशम

की तरह लम्बा होता है और जिसमें फूल

लगते हैं।

शिरोधार्य-वि० सिर पर धारण करने योग्य।

आवरणपूर्वक मानने योग्य, जैसे वडा की

आजा।

शिशिरभूषण\*—सज्ञा पु० १. मुकुट। २. सिर पर

पहनने का गहना। शिशिरमणि। ३. श्रेष्ठ

व्यक्ति।

शिरोमणि-सज्ञा पु० १ सिर पर पहनने का रत्न। चूड़ामणि। २ सिरताज। श्रेष्ठ व्यक्ति।

शिरोरुह-सज्ञा पु० केश। सिर के बाल।  
शिल-सज्ञा पु० १ अत की वालियाँ।  
२ खेत में गिरे हुए दाने चुनना।  
सज्ञा स्त्री० दे० "शिला"।

शिला-सज्ञा स्त्री० १ पत्थर। २ चट्टान।  
३ पत्थर का बड़ा चौड़ा टुकड़ा।

शिलाजतु-सज्ञा पु० दे० "शिलाजीत"।  
शिलाजीत-सज्ञा पु० पर्वत पर उत्पन्न होने-  
वाली काले रंग की एक प्रसिद्ध पौष्टिक  
औषध, जो शिलाजा का रस मानी जाती  
है। मोमियाई।

शिलावित्य-सज्ञा पु० दे० 'हर्षयज्ञं'।  
शिलान्यास-सज्ञा पु० नींव का पत्थर रखने  
का कार्य।

शिलापट्ट-सज्ञा पु० १ पत्थर का टुकड़ा या  
पटिया (बैठने या पीसने के लिए)।  
२ सिलवट।

शिलारस-सज्ञा पु० लोहवान की तरह का  
एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।

शिलारोपण-सज्ञा पु० [शिला+आरोपण]  
नींव का पत्थर रखना। शिलान्यास।

शिलालेख-सज्ञा पु० पत्थर पर लिखा या  
सोदा हुआ, प्राचीन लेख।

शिलासृष्टि-सज्ञा स्त्री० ओला की वर्षा।  
जाले गिरना।

शिलाहरि-सज्ञा पु० शालग्राम।

शिली-सज्ञा स्त्री० १ बाण। २ भाला।

शिलीमुख-सज्ञा पु० १ बाण। २ भौरा।  
३ मूत्र।

शिल्प-सज्ञा पु० १ दस्तकारी। हाथ से  
बनकर चीज तैयार करने का काम या  
कला। कारीगरी। २ गृहनिर्माण-कला,  
मूर्तिकला आदि। ३ कला-संबन्धी व्यव-  
साय।

शिल्पकला-सज्ञा स्त्री० १ दस्तकारी। हाथ से  
बाज बनाने की कला या हुनर। कारीगरी।  
२ मूर्तिकला। ३ गृहनिर्माण-कला या  
विद्या।

शिल्पकार-सज्ञा पु० १ कारीगर। हाथ से  
कारीगरी का काम करनेवाला। २. शिल्पी।  
मूर्तिकार। चित्रकार।

शिल्पजीवी-सज्ञा पु० कारीगर। हाथ से कारी-  
गरी करके जीविका उपार्जन करनेवाला।  
शिल्पविद्या-सज्ञा स्त्री० १ हाथ से अच्छी  
चीज बनाने की विद्या। २ गृहनिर्माण-कला।  
३ दे० "शिल्पकला"।

शिल्पशाला-सज्ञा स्त्री० कारखाना।

शिल्पशास्त्र-सज्ञा पु० १ शिल्पकला-सम्बन्धी  
शास्त्र। शिल्पविद्या। २ गृह-निर्माण या  
वास्तुशास्त्र।

शिल्पिक-वि० शिल्प-सम्बन्धी। शिल्प-कला  
या उसकी शिक्षा से सम्बन्ध रखनेवाला।

शिल्पी-सज्ञा पु० १ शिल्पकार। कारीगर।  
मूर्तिकार। २ किसी शिल्प का अच्छा  
ज्ञाता।

शिव-सज्ञा पु० १ शंकर या महादेव।  
२ हिंदुओं के एक प्रसिद्ध देवता, जो सृष्टि  
का मंथन करनेवाले और निर्मूर्ति के  
अंतिम देवता हैं। ब्रह्मा सृष्टि करनेवाले  
आर विष्णु सृष्टि का पालन-पोषण करने-  
वाले देवता हैं। ३ मंगल। कल्याण।  
४ पारा। ५ मोक्ष। ६ पानी। ७ वसु।  
८ लिंग। ९ ग्यारह मात्राओं का एक छंद।  
वि० कल्याण करनेवाला। मंगलप्रद।

शिवनंदन-सज्ञा पु० शिवजी के पुत्र गणेशजी।

शिवनामी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का  
कपड़ा या चादर, जिस पर चारों ओर  
'शिव' शब्द छपा रहता है।

शिव-निर्मल्य-सज्ञा पु० १ शिवजी को अर्पित  
की गई वस्तु। (ऐसी चीजों के ग्रहण करने  
का निषेध है।) २ सर्वथा छोड़ देने  
योग्य वस्तु।

शिवपुराण-सज्ञा पु० अठारह पुराणों में से  
एक। जिसमें शिव के माहात्म्य का वर्णन है।

शिवपुरी-सज्ञा स्त्री० बनारस। काशी।

शिवरात्रि-सज्ञा स्त्री० फाल्गुन बंदी अनुदश्या।  
(इस दिन लोग शिवजी का व्रत रखते हैं)  
शिव-चतुदशी।

शिवरानी-सज्ञा स्त्री० पार्वती।

शिवलिंग—सज्ञा पु० शिव का लिंग या पिंडी, जिसकी पूजा होती है।

शिवलिंगी—सज्ञा स्त्री० एक प्रसिद्ध लता, जिसका व्यवहार औषध के रूप में होता है।

शिवलोक—सज्ञा पु० कैलाश।

शिवव्यूह—सज्ञा पु० शिव की सवारी का वृक्ष।

शिवा—सज्ञा स्त्री० १. पार्वती। २. दुर्गा। ३. शिव की शक्ति, जो उनकी पत्नी के रूप में सकार दिखाई पड़ती है। ४. मोक्ष।

शिवालय—सज्ञा पु० शिव का मन्दिर। वह मन्दिर, जिसमें शिव की मूर्ति स्थापित हो। शिवाला।

शिवाला—सज्ञा पु० दे० "शिवालय"। शिवजी का मन्दिर।

शिवि—सज्ञा पु० राजा उशीनर के पुत्र तथा गयाति के दोहित्र एक राजा, जो अपनी वानशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं।

शिविका—सज्ञा स्त्री० पालकी। डोली।

शिविर—सज्ञा पु० १. डेरा। खेमा। (अग्ने०—कृष्ण) २. पड़ाव। फौज ठहरने का स्थान। छावनी। ३. वह स्थान, जहाँ कुछ लोग किसी विशेष कार्य या उद्देश्य से थोड़े दिनों तक रहे, जैसे शिक्षा-शिविर।

शिवोरथ—सज्ञा पु० पालकी।

शिशिर—सज्ञा पु० १. जाड़ा। शीतकाल। २. एक ऋतु, जो माघ और फाल्गुन के महीने में होती है।

वि० ठंडा। शीतल।

शिशिकर, शिशिरमयूष—सज्ञा पु० चन्द्रमा।

शिशु—सज्ञा पु० छोटा बच्चा।

शिशुता—सज्ञा स्त्री० बचपन।

शिशुत्व—सज्ञा स्त्री० दे० "शिशुता"। बचपन।

शिशुपाल—सज्ञा पु० वेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा, जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

शिशुमार—सज्ञा पु० १. बच्चों को जान से मारनेवाला। २. सूँस (पानी का जानवर)। ३. नक्षत्र-मंडल। आकाश में तारों का समूह-विशेष। ४. कृष्ण (शिशुपाल को मारनेवाले)।

शिशुमार-चक्र—सज्ञा पु० शीर जगत्। सब यहाँ सहित मृत्यु का मंडल।

शिशुन—सज्ञा पु० पुरुष का लिंग।

शिव\*—सज्ञा पु० दे० "शिष्य"।

सज्ञा स्त्री० १. दे० "शिक्षा"। सीख।

२. दे० "शिक्षा"।

शिष्ट-वि० [सज्ञा स्त्री० शिष्टता] १.

सम्भ। सज्जन। २. अच्छे स्वभाववाला।

नुशील। ३. धीर। शान्त। ४. आचार-

व्यवहार में निपुण। ५. सुशिक्षित। ६.

परामर्श या सलाह देनेवाला। ७. प्रति-

निमित्त करनेवाला (जैसे शिष्ट-मंडल)।

वि० भला। अच्छा। उत्तम।

शिष्टता—सज्ञा स्त्री० १. शिष्ट या सम्भ होने

का भाव या गुण। सज्जनता। भद्रता।

भलमनसाहत। २. श्रेष्ठता। उत्तमता।

शिष्टमंडल—सज्ञा पु० किसी कार्य-विशेष के

लिए कही भेजा जानेवाला प्रतिनिधियों

का दल। (अग्ने०—उपदेशन या डेलीवेशन)

शिष्टाचार—सज्ञा पु० १. सम्भ्यता-गुणों व्यवहार।

सम्भ पुरुषों के योग्य आचरण। २. आच-

भगत। खातिरदारी। ३. विनय। नम्रता।

शिष्य—सज्ञा पु० [स्त्री० शिष्या] १.

विद्यार्थी। जिसे शिक्षा या उपदेश दिया

जाय। शिक्षा ग्रहण करनेवाला। २.

शागिर्द। चेला।

शिष्यता—सज्ञा स्त्री० १. शिष्य होने का

भाव। २. शिक्षा या उपदेश देने का भाव।

शिष्या—सज्ञा स्त्री० शिक्षा या उपदेश ग्रहण

करनेवाली स्त्री।

शिस्त—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. निशाना।

लक्ष्य। २. मछली पकड़ने का काटा।

शीकर, शीकर—सज्ञा पु० १. पानी की बूँद।

जलकण। २. पानी की फुहार। वर्षा की

फुहार। ३. तुषार। ४. शीत।

शीघ्र—क्रि० वि० जल्द। तुरत। जितना देर के।

शीघ्रपामी—वि० जल्दी या तेज चलनेवाला।

शीघ्रता—सज्ञा स्त्री० जल्दी। फुरती।

शीत—वि० ठंडा। शीतल। सर्द।

सज्ञा पु० १. जाड़ा। सर्दी। २. जाड़े का

मोसिम। शीतकाल। ओस। तुषार।

शोत कटिबंध-सज्ञा पु० पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमि-खंड के वे कल्पित विभाग, जो भूमध्य-रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद माने गए हैं और जिनमें बहुत अधिक जाड़ा पड़ता है।

शोतकर-सज्ञा पु० चन्द्रमा। (शीतल या ठंडी किरणोंवाला।)

वि० ठंडा करनेवाला।

शोतकाल-सज्ञा पु० १ जाड़े का मौसिम।

हेमन्त-ऋतु। २ अगहन और पूस के महीने।

शोतज्वर-सज्ञा पु० जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। जूही (मलेरिया)।

शोततरण-सज्ञा स्त्री० जाड़े के दिना में किसी स्थान पर बहुत अधिक सर्दी पड़ने से बहनेवाली ठंडी हवा, जिससे सर्दी बहुत बढ़ जाती है। (अंग्रे०-‘कोल्ड वेव’)

शीतल-वि० [सज्ञा शीतलता] १ ठंडा। सर्द। २ शांत। श्रोम या उद्वेग से रहित।

शीतल चीनी-सज्ञा स्त्री० कवाब चीनी।

शीतलता-सज्ञा स्त्री० ठंडक। ठंडापन।

शीतला-सज्ञा स्त्री० १ चेचक। माता।

२ एक देवी, जो चेचक की अधिष्ठात्री मानी जाती है।

शीतलाष्टमी-सज्ञा स्त्री० चंद्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी।

शीताशु-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

शीताप-सज्ञा पु० एक रोग, जिसमें आधा-सरीर शून्य हो जाता है। लकवा। पक्षाघात।

शीतासं-वि० शीत या ठंड से पीड़ित।

शीताद्रि-सज्ञा पु० हिमालय पहाड़।

शीतोष्ण-वि० १ सर्द-गर्म। ठंडा-गरम। २ सुख-दुख।

शीया-सज्ञा पु० [अ०] १ मुसलमानों का एक संप्रदाय, जो हजरत अली का अनुयायी है और उन्हें पैगंबर का ठोका उत्तराधिकारी मानता है। २ सहायक। मददगार। ३ अनुयायी।

शीरा-सज्ञा पु० [फा०] चीनी या गुठ को पनाकर गाढ़ा किया हुआ रस। चासनी।

शीरी-वि० [फा०] १. प्रिय। प्यारा। २. मीठा। मधुर।

शीरीनी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. मीठापन। मिठास। २ मिठाई।

शीर्ण-वि० १ टूटा-फूटा। २ फटा-पुराना। जीर्ण। ३ मुरझाया हुआ। ४ दुबला-पतला।

शीर्ष-सज्ञा पु० १ सिर। चोटी। आगे का भाग। २. सिर। मस्तक। ३ खाते आदि की मद का नाम।

शीर्षक-सज्ञा पु० १ विषय के परिचय के लिए किसी लेख के ऊपर लिखा जानेवाला, शब्द या वाक्य (अंग्रे०-हेडिंग)। २. दे० “शीर्ष”।

शीर्षनाम-सज्ञा पु० १ शीर्षक। विषय के परिचय के लिए लेख आदि के ऊपर लिखा जानेवाला नाम। २ सबसे ऊपर नाम।

शीर्षविंदु-सज्ञा पु० सिर के ऊपर या ऊँचाई में सबसे ऊपर का स्थान।

शील-सज्ञा पु० १ स्वभाव। चाल। व्यवहार। आचरण। चरित्र। २. बहुत अच्छा स्वभाव या आचरण। अच्छा मिजाज। ३ सकोच। मुरीबत।

वि० तत्पर। प्रवृत्त या लगा हुआ। (वी० में) जैसे प्रयत्नशील।

शीलवान्-वि० [स्त्री० शीलवती] १ सुशील। सज्जन। २ अच्छे आचरण का। मिलनसार।

शीश\*<sup>१</sup>-सज्ञा पु० दे० “शीर्ष”।

शीशम-सज्ञा पु० [फा०] एक पेड़, जिसकी लकड़ी भारी और मजबूत होती है।

शीशमहल-सज्ञा पु० वह महल, मकान या कमरा, जिसकी दीवारों में बहुत से शीशे जड़े हों।

शीशा-सज्ञा पु० [फा०] १ एक पारदर्शी मिश्र धातु, जो बालू, रेह या सारी सिट्टी की आग में गलाने में बनती है। काँच। २ आज्ञा। दर्पण। ३. झाड़-फानूस आदि काँच के बने सामान।

शीशी-सज्ञा स्त्री० शीशे का छोटा लम्बा पात्र, जिसमें तेल, दवा आदि रखते हैं।

मुहा०—शोशी सुंधाना=दवा सुंधाकर  
वहोश करना।

शुग-सज्ञा पु० एक क्षत्रियवश, जा मोर्या  
क बाद मगध के सिंहासन पर बैठा था।

शुठि, शुठी-सज्ञा स्त्री० सोठ। सुसाया हुआ  
अदरक।

शुड-सज्ञा पु० हाथी की सूंड।

शुडा-सज्ञा स्त्री० १ हाथी की सूंड।  
२ शराब। ३ शराब पीने का स्थान।  
४ वेष्टा।

शुडिक-सज्ञा पु० शराब बनानेवाला।

शुडी-सज्ञा पु० १ सूडवाला। हाथी। २  
शराब बनाने या बचनेवाला। ३ गले  
का कौआ। घांटी।

शुभ-सज्ञा पु० एक असुर, जिस दुर्गा न मारा  
था।

शुक-सज्ञा पु० १ सोता। २ शुकदेव। ३  
कपडा। ४ पगड़ी। ५ एक पौराणिक  
अस्त्र।

शुकदेव-सज्ञा पु० कृष्णहृष्याय व्यास के  
पुत्र, जो पुराणों के रक्षक और ज्ञाना थे।

शुकराना-सज्ञा पु० १ वह वन, जो काय्य हो  
जान पर धन्यवाद के रूप में दिया जाय।  
२ शुकिया। धन्यवाद। कृतज्ञता।

शुकी-सज्ञा स्त्री० सोता की मादा। सुगी।

शुषत-वि० १ स्वच्छ। शुद्ध। २ चमकदार।

३ खट्टा। ४ कड़ा। कठोर। ५ समुक्त।

६ अभिय। नापसंद। ७ उजाड़। सूनसान।

शुषित-सज्ञा स्त्री० १ सीपी। २ रत्न।

शुषितका-सज्ञा स्त्री० सीपी। दे० शुषित।

शुक्र-सज्ञा पु० १ स्वच्छ। २ चमकदार।

ददीप्यमान। ३ वदाम। ४ अग्नि। ५

एक बहुत चमकीला ग्रह, जिसे पुराणानुसार

देया का गुरु और भूगु मुनिका पुत्र कहा

गया है। गुवाचाम्य। ६ वीर्य। ७

साधम्य। बल। शक्ति। ८ सप्ताह का

छठा दिन, जो बृहस्पतिवार के बाद और

शनिवार से पहले पड़ता है।

सज्ञा पु० [ ज० ] धन्यवाद। कृतज्ञता।

शुकगुजार-वि० अभासी। कृत्तन। एहसान

माननेवाला।

शुक्राचाम्य-सज्ञा पु० एक ऋषि, जो दैत्य  
के गुरु थे।

शुकिया-सज्ञा पु० [ फा० ] धन्यवाद। कृत  
ज्ञता प्रकट करने का शब्द।

शुक्ल-वि० १ सफेद। उजला। श्वेत। २  
वदाम। ३ स्वच्छ।

सज्ञा पु० ब्राह्मण की एक उपाधि।

शुक्ल पक्ष-सज्ञा पु० अमावस के बाद पूर्णिमा  
तक के १५ दिन।

शुक्ला-सज्ञा स्त्री० सरस्वती।

शुक्लाभिसारिका-सज्ञा स्त्री० शुक्ल पक्ष में  
शृंगार करनेवाली नायिका।

शुचि-सज्ञा स्त्री० [ सज्ञा शुचिता ] १

पवित्रता। शुद्धता। २ स्वच्छता।

वि० १ पवित्र। शुद्ध। २ स्वच्छ। साफ।

३ निर्दोष। ४ साफ दिलवाला। निष्कपट।

शुचिकर्मा-वि० पवित्र काय्य करनेवाला।

सदाचारी।

शुचिता-सज्ञा स्त्री० १ शुद्धता। पवित्रता।

२ स्वच्छता। सफाई।

सज्ञा-वि० [ फा० ] बहादुर। वीर।

शुतुर-सज्ञा पु० [ अ० ] ऊँट।

शुतुरनाल-सज्ञा स्त्री० ऊँट पर रखकर चलाई

जानवाला तोप।

शुतुरमुग-सज्ञा पु० [ फा० ] एक बड़ा पक्षी,

जिसका गदन ऊँट की तरह बहुत लम्बी

होती है।

शुडनी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] होनहार। भागी।

नियति।

शुद्ध-वि० [ सज्ञा शुद्धता ] १ पवित्र। साफ।

स्वच्छ। २ जिसमें गल्ती न हो। ठीक।

सही। ३ जिसमें मिलावट न हो। साक्षित।

४ निर्दोष।

शुद्ध पक्ष-सज्ञा पु० शुक्ल पक्ष।

शुद्धि-सज्ञा स्त्री० १ शुद्ध होने का नाम्य।

२ पवित्रता। सफाई। स्वच्छता। ३ धम-

च्युत, विधर्मी या किसी कारण अगद व्यक्ति

का शुद्ध करने तथा अपन धर्म में शामिल

करने का द्रव्य या साधन।

शुद्धिपत्र-सज्ञा पु० यह पत्र, जिसमें यह सूचित

किया जाय कि वहाँ क्या गल्तियाँ हैं।

इसे पुस्तकों में छपाई की गलतियाँ बताने के लिए दिया गया कागज।

शुद्धोदन-सज्ञा पु० गौतम बुद्ध के पिता। एक सुप्रसिद्ध शाक्य राजा।

शुभ शेष-सज्ञा पु० वैदिक काल के एक प्रसिद्ध ऋषि, जो महर्षि ऋचीक के पुत्र थे।

शुभ-सज्ञा पु० [स्त्री० शुभी] कुत्ता।

शुभासीर-सज्ञा पु० १. इन्द्र। २. खेती बढ़ाने वाले दो देवता: इन्द्र और वायु या इन्द्र और सूर्य।

शुक्ल-सज्ञा पु० [अ०] १. सदेह। शक। २. भ्रम। वहम।

शुभकर-वि० कल्याण या भगल करनेवाला।

शुभकरी-सज्ञा स्त्री० पार्वती।

शुभ-वि० १. कल्याणकारी। भगलप्रद। भलाई करनेवाला। २. सुन्दर। अच्छा लगनेवाला। अच्छा। भला। उत्तम।

सज्ञा पु० भलाई। कल्याण।

शुभकर-वि० भगल करनेवाला।

शुभचित्तक-वि० शुभ या भला चाहनेवाला। हिर्षी। खेरूवाह।

शुभदर्शन-वि० १ जिसका मुँह देखने से भगलजनक बात हो। २ सुन्दर। खूबसूरत।

शुभा-सज्ञा स्त्री० १ शोभा। २ चमक। ३. सुन्दरी। ४. अच्छा।

शुभाकाक्षी-वि० [स्त्री० शुभाकाक्षिणी] दे० 'शुभचित्तक'।

शुभाशय-सज्ञा पु० वह जिसका आशय या विचार अच्छा हो। जिसकी मशा या उद्देश्य अच्छा हो।

शुभे-सज्ञा स्त्री० १ हे सुन्दरी। २ सुन्दर स्त्री के लिए सम्बोधन।

शुभ-वि० सफेद। स्वेत। उज्ज्वल।

शुभता-सज्ञा स्त्री० सफेदी। उज्ज्वलता।

शुभा-सज्ञा पु० १. गिनती। सङ्ख्या। २. हिमाच। लगा।

शुभ-सज्ञा पु० [अ० शुभ] आरम्भ। प्रारम्भ।

शुभ-सज्ञा पु० १. राज्य की ओर से वसूल किया जानेवाला महसूल। २. फौज। किसी कार्य के बदले में दिया

जानेवाला- धन। ३. किराया। भाड़ा। ४. बाजी। शर्त। ५. दहेज। दायजा। ६. घाटो या रास्तो आदि पर वसूल की जानेवाली चुगी। ७. मेहनताना।

शुश्रूषा-सज्ञा स्त्री० [वि० शुश्रूष्य] १. सेवा। २. परिचर्या। तीमारदारी। रोगी या घायल आदि की सेवा।

शुष्क-वि० १ सूखा। खुश्क। नीरस। २. जिसमें मन न लगता हो। ३. निरर्थक। व्यर्थ। ४. कठोर। ५. निर्मोही। विरक्त। उदासीन।

शुष्कता-सज्ञा स्त्री० सूखापन। नीरसता।

शूक-सज्ञा पु० १ अन्न की बाल। जौ। यक्ष। २ एक प्रकार का कीड़ा। ३. कागज नत्थी करने का काँटा। अलपीन।

शूकदानी-सज्ञा स्त्री० वह डिविया जिसमें अलपीने जोसकर रखी जाती है।

शूकर-सज्ञा पु० [स्त्री० शूकरी] १. सूअर। बाराह। २ विष्णु का तीसरा अवतार। बाराह अवतार।

शूकरक्षेत्र-सज्ञा पु० एक तीर्थ, जो नैमिषारण्य के पास है (आजकल का सीरो)।

शूची-सज्ञा स्त्री० सूई।

शूद्र-सज्ञा पु० [स्त्री० शूद्रा] १ आर्यों के चार वर्गों में से चौथा और अन्तिम वर्ग। इनका कार्य अन्य तीन वर्गों की सेवा करना माना गया है। शूद्र जाति का पुत्र। २ सरण्य। निरुद्ध।

शूद्रक-सज्ञा पु० १ शूद्र जाति का एक राजा। शङ्क। २ विदिशा नगरी का एक राजा और 'मृच्छकटिक' नाटक का रचयिता।

शूद्रता-सज्ञा स्त्री० शूद्र होने का भाव। शूद्र का धर्म। शूद्रत्व।

शूद्रभूति-सज्ञा पु० नीला रंग।

शूद्रा-सज्ञा स्त्री० शूद्र जाति की स्त्री।

शूद्राणी-सज्ञा स्त्री० शूद्र की स्त्री।

शूद्री-सज्ञा स्त्री० शूद्र की स्त्री।

शून्य-सज्ञा पु० १. माली स्थान। एकांत स्थान। २. बिंदु। विदी। सिकर (अर्थ- 'जोरी')। ३. जनाय। कुछ न होना। ४. आकाश। ५. स्थान। ६. विष्णु। ७. ईश्वर।

पशु। बाघ। २ उर्दू-नविता गजल क दा चरण।

मुहा०—शेर होना=निभय और साहस।  
हाना। जल्यत वीर और साहसी पुरुष।  
शरे बगाल, शरे-वशमीर=बगाल या  
वशमीर का सबसे बड़ा शेर बहादुर नता।  
शेर-बहा-वि० [पा०] १ ज़िमा मुह गर  
की तरह हो। २ ज़िमक छोरा पर शर का  
मुँह बना हो।

सज्ञा पु० वह जिसकी घुड़ी शर के मुँह व  
आकार की बनी हो। वह सकान, जो आग  
घाटा और पीछ संकरा हो।

शेर-मजा-सज्ञा पु० गर क पज के आकार  
का एक अस्त्र। वधनहा।

शेर-बच्चा-सज्ञा पु० १ शर का बच्चा।  
२ वीर-पुत्र। ३ एक तरह की छोटी  
बन्दक।

शेर-बबुर-सज्ञा पु० [पा०] निह। सबसे  
बड़ा बाघ। केसरी।

शेरबानी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का अग।  
शेरिफ-सज्ञा पु० [अग्र०] १ बहुत बड़े-बड़े  
नगरी (जैसे कलकता, बम्बई, मद्रास) में  
शान्ति रक्षा आदि कार्यों के लिए निर्वाचित  
अवैतनिक अधिकारी—जैसे अन्य शहरों  
में म्युनिसिपैलिटी के अध्यक्ष होते हैं। २  
विशेष रूप से सम्मानित तथा प्रतिष्ठित  
व्यक्ति।

शेय-सज्ञा पु० १ बाकी। बची हुई  
वस्तु। घटान से बची हुई सख्या।  
२ समाप्ति। अंत। ३ स्मृति। ४  
मृत्यु। ५ पुराणानुसार सहस्र कला क  
सपराज जिनके पना पर पृथ्वी स्थित  
है। ६ लम्बण (जो शप के अवतार  
मड़े जाते हैं)। ७ बलराम। ८ दिग्गजा  
में से एक। ९ परमेश्वर। १० पिण्ड  
मंडान के पावने नद का नाम। ११  
छप्पन-छद के पचीसव नद का नाम।  
वि० १ बाकी। बचा हुआ। २ ससाप्त।

शेयपर-सज्ञा पु० निज। शीघ्र धारण करा  
या पहनवाते (निज)।

शयनाग-सज्ञा पु० पुराणानुसार सहस्र कला

क सपराज, जिनके पना पर पृथ्वी बहरी  
हुई मानी जाती है।

शेयवत-मज्ञा पु० न्याय म काय्य की दबकर  
कारण का निश्चय।

शेयशाही-सज्ञा पु० विष्णु (सप पर जाने-  
वाले)।

शेषाश-सज्ञा पु० १ बचा हुआ अंश या भाग।  
२ अंतिम अंश।

शेषाचल-सज्ञा पु० दक्षिण भारत का एक  
पहाड़।

शेयवत-वि० अंत में कहा हुआ।

शैतान-मज्ञा पु० [ज०] १ मनुष्या का  
बहकाकर धर्म-भाग स भ्रष्ट करनेवाला  
दुष्ट देवता। २ धर्म-काय में बाधा  
डालनेवाला। ३ दुष्ट देवयोगि। भूत।

प्रत। ४ शरास्ती। दुष्ट।

मुहा०—शैतान की अंत=बहुत लंबी वस्तु।

शैतानी-सज्ञा स्त्री० बदमाशी। दुष्टता।  
गरास्ती। पाजीपन।

वि० १ शैतान-संबंधी। शैतान का। २  
दुष्टतापूर्ण। शरास्ती से भरा।

शैत्य-सज्ञा पु० 'शीत' का भाव। दे०  
शीतता। सर्दी। ठंडक।

शैथिल्य-सज्ञा पु० गिरिल होने का भाव।  
दे० 'गिरिलता'। सुस्ती। ढिलाई।

शल-सज्ञा पु० पहाड़। चट्टान।

वि० १ पर्वत या चट्टान सम्बंधी। २  
पथरीला। ३ पत्थर का बना हुआ। ४  
बड़ा। फोहर।

शैलकुमारी-सज्ञा स्त्री० पावती।

शैलगंगा-सज्ञा स्त्री० गोवर्द्धन पर्वत की एक  
नदी।

शैलजा-सज्ञा स्त्री० १ पावती। २ दुर्गा।  
शैलतटी-सज्ञा स्त्री० पहाड़ की तराई।

शैलद्विनी-सज्ञा स्त्री० पावती।

शैलपुत्री-सज्ञा स्त्री० १ पावती। २ ना  
दुर्गावर्धन से एक। ३ गंगा नदी।

शैलपुत्र-सज्ञा स्त्री० पावती।

शैली-सज्ञा स्त्री० १ दग। प्रगाढ़ी। तराई।  
२ राति। प्रया। स्तम्भ। ३ वाक्य रचना का  
वह रूप जिसमें श्लोक की भागा-सम्बंधी

निजी विशेषताएँ प्रकट होती हैं (अग्रे-  
म्माइल)। ४. हाथ से बनाई जानेवाली  
बीजों में ऐसी खास बातें, जिनसे बनाने-  
वाले की मनोवृत्ति और उसके समय की  
विशेषताएँ प्रकट होती हो (मुगल-कालीन  
शैली, आदि)।

शैल्य-सज्ञा पु० [ स्त्री० शैल्यपी ] १. नाटक  
संलग्नवाला। अभिनय। नट। २. नर्तक।  
३. धूर्त। पाखंडी।

शैल्य-सज्ञा पु० हिमालय (पहाड़ों का राजा)।

शैल्य-वि० १. पथरीला। पत्थर का। २.  
पहाड़ी। ३. पहाड़ों पर पैदा होनेवाला।

शैल्य-वि० पत्थर का। पथरीला।

शैव-वि० शिव-सम्बन्धी। शिव का।

शैव पु० १. शिवभक्त। शिव का अनन्य  
उपासक। हिन्दुओं में शिव के उपासकों का  
एक सम्प्रदाय। अन्य दो सम्प्रदाय वैष्णव  
और शाक्त हैं। २. पारम्युत अस्त्र। ३. एक  
तन का नाम। ४. एक पुराण का नाम।

शैवल-सज्ञा पु० दे० "शैवाल"।

शैवलिनी-सज्ञा स्त्री० नदी।

शैवाल-सज्ञा पु० पानी में होनेवाली एक  
तरह की लम्बी घास। सियार या सेवार।

शैव्य-वि० शिव-सम्बन्धी।

शैव्या-सज्ञा स्त्री० अयोध्या के सत्यवती राजा  
हरिष्यधर की रानी का नाम।

शैव्य-वि० १. शिव-सम्बन्धी। बच्चा का।  
२. बाल्यकाल-सम्बन्धी।

शैव्य पु० १. बचपन। २. बच्चों का-सा  
व्यवहार। लडकपन।

शैव्य-सज्ञा पु० भगवत् के प्राचीन राजा  
विष्णुनाभ का पुत्र।

शैव्य-सज्ञा पु० किसी प्रिय व्यक्ति के  
विशेष या भगवत् के कारण मन में होने  
वाला दुःख। अस्वस्थता। रजः। शम।

शैव्यकुल-वि० शैव में ध्याकुल। शीत  
पारि।

शैव्य-वि० शैव के ध्याकुल। शैव्यकुल।

शैव्य-वि० शैव में ध्याकुल। शैव्यकुल।

शैव्य-वि० शैव में ध्याकुल। शैव्यकुल।

शैव्य-वि० शैव में ध्याकुल। शैव्यकुल।

शैव्य-वि० शैव में ध्याकुल। शैव्यकुल।

शैव्य-वि० [ फा० ] [ सज्ञा शैव्यी ] १. ढीठ।  
पृष्ठ। २. नटखट। चंचल। ३. गहरा और  
चमकदार (रंग)।

शैव्य-सज्ञा पु० १. चिन्ता। फिर। २. दुःख।  
अफसोस।

शैव्य-वि० १. चिन्ता करने योग्य।  
जिसकी दशा देखकर दुःख हो। २. जिसकी  
हालत बहुत खराब हो।

शैव्य-वि० दे० "शैव्यनीय"। चिन्ता करने  
योग्य। सोचने-विचारने लायक।

शैव्य-सज्ञा पु० १. लाल रंग। २. लाली।  
३. आग। ४. खून। ५. सोन नामक नदी।

वि० लाल रंग का। सुर्ख।

शैव्य-वि० लाल। खून के रंग का।

सज्ञा पु० खून।

शैव्य-सज्ञा पु० किसी अंग का फूलना।  
सूजन।

शैव्य-सज्ञा पु० १. ठीक किया जाना।  
दुस्ती। २. शुद्ध करने का कार्य। शुद्धि-  
संस्कार। ३. सौज। अनुसन्धान; जैसे किसी  
साहित्यिक या वैज्ञानिक विषय-सम्बन्धी  
सोज। ४. जांच। परीक्षा। ५. चुकता या  
अदा होना (ऋण आदि)। सफाई।

शैव्य-सज्ञा पु० १. शोधनेवाला या शोध-  
कार्य करनेवाला। सुधार करनेवाला। २.  
सोज करनेवाला। अनुसन्धान करनेवाला।

शैव्य-सज्ञा पु० [ वि० शोधित, शोधनीय,  
शोध्य ] १. शुद्ध करना। ठीक या दुस्तर  
करना। सुधारना। २. धातुओं का शोध-  
रूप में व्यवहार करने के लिए संस्कार।

३. छान-बीन। जांच। ईज्जत। ४.  
ऋण चुकाना। ५. प्राप्तचित्त। नाफ  
करना। ६. दस्त की दवा से पेट साफ  
करना। बिरचन।

शैव्य-वि० म० १. शुद्ध करना। ठीक या  
दुस्तर करना। सुधारना। नाफ करना।  
२. शोध के लिए धातु का संस्कार करना।  
३. ईज्जत। नाफ करना।

शैव्य-वि० म० १. शुद्ध करना।  
२. नाफ करना।

शैव्य-वि० १. शुद्ध या नाफ किया हुआ।

वि० १ जिसके अंदर कुछ न हो। खाली। २ निराकार। ३ विहीन। रहित।

शून्यगर्भ-वि० १ जिसके अन्दर कुछ न हो। खाली। २ मुख। बेवकूफ।

शून्यबाध-सज्ञा पु० बीड़ा का एक सिद्धांत, जिसके अनुसार ईश्वर और जाव किसी को कुछ भी नहीं माना जाता।

शून्यवादी-सज्ञा पु० १ वह व्यक्ति, जो ईश्वर और जीव के अस्तित्व में विश्वास न करता हो। २ योद्धा। ३ नास्तिक।

शूर-सज्ञा पु० १ वीर। बहादुर। मूरमा। २ योद्धा। सिपाही।

शूरण-सज्ञा पु० मूरमा। जिमीकन्द।

शूरता-सज्ञा स्त्री० बहादुरी। वीरता।

शूरताई\*-सज्ञा स्त्री० दे० 'मूरता'।

शूरवीर-सज्ञा पु० वीरा और योद्धाओं में श्रेष्ठ। अच्छा वीर और योद्धा। मूरमा। बहादुर।

शूरवीरता-सज्ञा स्त्री० बहादुरी। पराक्रम।

शूरसेन-सज्ञा पु० १ मयूरा के एक प्रसिद्ध राजा, जो कृष्ण के पितामह थे। २ मयूरा प्रदेश का प्राचीन नाम।

शूरा\*†-सज्ञा पु० सामंत। वीर। बहादुर। पराक्रमी योद्धा।

शूप-सज्ञा पु० सूप। जिसमें अन्न आदि फटकाकर साफ किया जाता है। फट कनी।

शूपणखा-सज्ञा स्त्री० रावण की बहिन। एक प्रसिद्ध राक्षसी, जिसकी नाक और कान कशष्पण न अल में दृष्ट थे।

शूल-सज्ञा पु० १ बड़ा रूखा और नुकीला कांटा। २ बरतके के आकार का एक प्राचीन अस्त्र। ३ मूली जिससे प्राचीन काल में प्राण दंड दिया जाता था। ४ दे० 'त्रिशूल'। ५ पाद के प्रक्षोभ से होनेवाला एक प्रकार का बहुत तेज दद। ६ पीड़ा। टीस। दुःख। दद। ७ ज्योतिष में एक जन्म योग। ८ छड़। सलाख। सीक। ९ मृत्यु। १० शडा।

वि० कटि की तरह नोकवाला। नुकीला।

शूलधर, शूलधारी-सज्ञा पु० शिव। त्रिशूल धारण करने के कारण शिव का नाम। शूलना\*-क्रि० अ० १ शूल के समान गडना। २ दृष्ट देना।

शूलपाणि-सज्ञा पु० शिव। हाथ में शूल या त्रिशूल धारण करने के कारण शिव का यह नाम है।

शूलहस्त-सज्ञा पु० दे० "शूलपाणि"। शिव।

शूलि-सज्ञा पु० शिव।

सज्ञा स्त्री० दे० 'सूला'।

शूलिक-सज्ञा पु० मूली या फांसी देनेवाला। जल्लाद।

शूली-सज्ञा स्त्री० १ दे० "मूली"। २ पीड़ा। शूल।

सज्ञा पु० १ शिव। महादेव। २ शूल रोग में पीड़ित। ३ एक नरक का नाम।

शूलल-सज्ञा पु० [सज्ञा स्त्री० शूलला] १ जजीर (विषयकर जानवरों के लिए)। सांकल। सिक्कड़। २ हाथी आदि के बांधने की लोहे की जजीर।

शूललक-सज्ञा पु० १ जजीर। शूलला। २ ऐसा जानवर, जिसके पंखों में जजीर पड़ी हो, जिससे कि वह भाग न सके।

शूललता, शूललत्व-सज्ञा स्त्री० १ जजीर में बँध होने का भाव। २ सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव। व्यवस्थित।

शूलला-सज्ञा स्त्री० १ जजीर। हथकड़ी। बनी। सांकल। सिक्कड़। २ करधनी। मेखला। तागड़ी। ३ क्रम। सिलसिला। ४ धणी। कतार। ५ काष्ठ में एक अक्षर, जिसमें पदार्थों का घुलन सिल सिलेवार होता है।

शूललबद्ध-वि० १ जजीर में जकड़ा हुआ। जो शूलला में बंधा हुआ हो। २ सिलसिलेवार। क्रमबद्ध।

शूल-सज्ञा पु० १ पहाड़ की चोटी। शिखर। २ कंगुरा। ३ गाय बेल आदि पशुओं के शिर के नीग। ४ सिंगी बाज। ५ कपल।

वि० तेज धारवाला। तीक्ष्ण।

शृगज-सज्ञा पु० १ सींग से बनाया हुआ। २ तीर। बाण।

पंगपुर-संज्ञा पु० दे० "शृंगवेरपुर"।  
 पंगवेरपुर-संज्ञा पु० एक प्राचीन नगर, जो रामचंद्र के समय में निपाद राजा गुह की राजधानी था।  
 पंगार-संज्ञा पु० १. सजधज। वनाव-ठनाव। सजावट। २. शोभा बढ़ानेवाली वस्तु। वह जिसमें किसी चीज की शोभा हो। ३. स्त्रियों का गहने-कपड़े से अपने को सजाना। ४. नाहित्य के नौ रसों में से एक रस, जो सबसे अधिक प्रसिद्ध और प्रधान है। इसमें नायक-नायिका के परस्पर मिलन या वियोग का वर्णन किया जाता है। यह दो प्रकार का होता है—एक सयोग और दूसरा वियोग या विप्रलम्भ। ५. भक्ति का एक भाव या प्रकार, जिसमें भक्त अपने आपको पत्नी और अपने इष्टदेव को पति के रूप में मानते हैं।  
 पंगारना\*—क्रि० सं० शृङ्गार करना। सजाना। सँवारना।  
 पंगारहाट-संज्ञा स्त्री० वह बाजार, जहाँ बेव्याप रहती है। वह बाजार, जहाँ सौन्दर्य बेचा जाता हो—अर्थात्, जहाँ बेव्याप रहती हो। चकला।  
 पंगारिक-वि० शृंगार-सम्बन्धी।  
 पंगारिणी-संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद (सन्धिगी छंद)।  
 पंगारित-वि० जिसका शृंगार किया गया हो। सजाया हुआ।  
 पंगारिया-संज्ञा पु० देवमूर्तियों का शृंगार करनेवाला। सजानेवाला।  
 पंगि-संज्ञा पु० १. सींगवाला जानवर। २. सिंगी सछली।  
 पंगी-संज्ञा पु० १. पहाड़। २. हाथी। ३. पैठ। ४. सींगवाला पशु। ५. सींग का बना हुआ एक प्रकार का वाजा। ६. महादेव। ७. एक ऋषि, जो शमीक के पुत्र थे। इन्हीं के शाप से अभिमन्यु के पुत्र परीक्षित की तपश्चक्र ने डसा था। ८. ऋष-भक्त नामक अष्टवर्गीय औषध।  
 पंगीगिरि-संज्ञा पु० एक प्राचीन पहाड़, जिस पर शृंगी ऋषि तप करते थे।

शृंग\*-संज्ञा पु० दे० "शृंगाल"।  
 शृंगाल-संज्ञा पु० गीदड़। सियार। वि० लाक्षणिक अर्थ में डरपोक।  
 शृष्टि-संज्ञा पु० कस का एक भाई।  
 शेख-संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० शेखानी] १. मुसलमानों के चार वर्गों में से सबसे पहला और श्रेष्ठ वर्ग। २. मुसलमानों के पंगवर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। ३. इस्लाम धर्म का आचार्य। ४. बड़ा-बूढ़ा। ५. मुसलमानों के लिए आदर-सूचक शब्द।  
 शेखचिल्ली-संज्ञा पु० १. बड़े-बड़े मसूबे बाँधनेवाला। २. बड़ी-बड़ी बातें बनाने-वाला। ३. एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति। ४. मूर्ख। ५. मसखरा।  
 शेखर-संज्ञा पु० १. शिखर। मुकुट। पहाड़ की चोटी। २. शीर्ष। सिर। ३. श्रेष्ठता-सूचक शब्द। जैसे—सब से ऊँचा या सब से अच्छा। ४. सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति या उत्तम वस्तु। ५. टगण के पाँचवें भेद की संज्ञा (IIJI)।  
 शेखावत-संज्ञा पु० कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।  
 शेखी-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. घमंड। गर्व। शान। २. ऐंठ। अकड़। ३. डींग। बढ़-बढ़-कर बातें करना।  
 मुहा०—शेखी बघारना, हाँकना या भारना=बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग मारना।  
 शेखीबाज-वि० डींग हाँकनेवाला व्यक्ति। घमंडी।  
 शेफालिका, शेफाली-संज्ञा स्त्री० एक तरह का पीधा—निगुंडी। नील सिंधुवार का पीधा। (काव्य में इसका बहुत वर्णन होता है)  
 शेयर-संज्ञा पु० [अर्थ०] १. नीला। हस्ता। २. किसी कारवार या कम्पनी आदि में लगी हुई पूँजी का एक हिस्सा।  
 शेर-संज्ञा पु० [फा०] [स्त्री० शेरनी] १. चिल्ली की जाति का एक भयंकर हिंसक

२. जिसके सम्बन्ध में शोष (खोज आदि) हो चुका हो।

शोषपा-सज्ञा पु० दे० "शोषक"।

शोफ-सज्ञा पु० दे० "शोय"। सृजन।

शोबरा-सज्ञा पु० [अ०] जादू। इशजाल।

शोबदेवाद्य-सज्ञा पु० १. घोखेवाज। धूर्त।

२. चालाक।

शोभन-वि० १. शोभायुक्त। सुंदर। सुहावना। भव्य। २. उत्तम। शुभ।

सज्ञा पु० १. सौंदर्य। २. दीप्ति। ३.

गहना। आभूषण। ४. मंगल। कल्याण।

शिव। ५. शुभ फल के लिए एक यज्ञ।

६. २४ मात्राओं का एक छन्द, जिसे विहिता भी कहते हैं।

शोभना-सज्ञा स्त्री० १. सुंदरी स्त्री। २. हल्दी (अप्रयुक्त अर्थ)।

\*कि० अ० शोभा देना। भला लगना।

शोभनीय-वि० शोभा देनेवाला। सुन्दर। सुभावना। दे० "शोभन"।

शोभाजन-सज्ञा पु० सहिजन।

शोभा-सज्ञा स्त्री० १. सुंदरता। २. काति। चमक। ३. छवि। ४. सजावट। ५. वर्ण।

रंग। ६. शीत अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

शोभायमान-वि० १. शोभा देता हुआ। सुन्दर। मनोहर। शोभित। २. शोभा बढ़ानेवाला।

शोभित-वि० शोभा देता हुआ या अच्छा लगता हुआ। सुंदर।

शोर-सज्ञा पु० [फा०] १. हल्ला। जोर की आवाज। गीलाहल। २. धूम। प्रसिद्धि।

शोरपा, शोरपा-सज्ञा पु० [फा०] रसा। उबाली हुई तरकारी आदि-का पानी।

जूस। पके मांस का रस।

शोरा-सज्ञा पु० [फा०] मिट्टी से निकलने-वाला एक प्रकार का शार।

शोला-सज्ञा पु० [अ०] जगारा। आग की लपट।

शोशा-सज्ञा पु० [फा०] १. निचली हुई नाक। दोष। २. अनोखी बात।

शोष-सज्ञा पु० १. सुखनै का भाव। सुख

होना। २. शरीर का घुलना या क्षीण होना।

३. बच्चों का मुखड़ी रोग। ४. राज्यहता का एक भेद। क्षयो।

शोषक-सज्ञा पु० [स्त्री० शोषिका] १.

शोषण करने या सोखनेवाला। २. चूसकर

सुखा देनेवाला। ३. कम मजदूरी देकर अधिक काम लेनेवाला और इस तरह से दूसरा का

धन हरण करनेवाला। ४. जल, रस या तेली खींचनेवाला।

शोषण-सज्ञा पु० [वि० शोषी, शोषित,

शोषनीय] १. सोखना। चूसना। २. जल या

रस खींचना। ३. घुलाना। ४. क्षीण करना।

५. नाश करना। ६. कमजोर और अपने

अर्थों व्यक्तियों को मेहनत और जानमनी से लाल उठाना। ७. साम्यवादी और

समाजवादी सिद्धान्त के अनुसार पूँजीपतियों द्वारा श्रमिकवर्ग की कम मजदूरी देना

और उनसे अधिक काम लेना (अर्थ—एक्सप्लायटेसन)। ८. कामदेव के एक प्राण

का नाम।

शोषणीय-वि० शोषण करने योग्य। जिसका शोषण हो सके।

शोषित-वि० जिसका शोषण किया गया हो।

सोखा हुआ।

शोषी-वि० दे० "शोषक"।

शोहवा-सज्ञा पु० [अ०] १. बदमाश।

अभिचारी। लुट। २. गुहा। छेला।

शोहरत-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रसिद्धि।

ख्याति। धूम।

शोहरा-सज्ञा पु० दे० "शोहरत"।

शोर-सज्ञा पु० १. शराबी। २. शराब में

मस्त।

शौडिक-सज्ञा पु० शराब बनाने या बेचने-

वाला। कलवार।

शौर-सज्ञा पु० [अ०] १. ललसा। होसला।

चाह। २. व्यसन। चस्का। ३. प्रवृत्ति।

शुकाव। ४. किसी चीज के पाने या सुख

भोगने की अभिलाषा। ठट्ठाट से रहने की इच्छा।

मुहा०—शोक करना=मिठी वस्तु या पदार्थ का भोग करना। शोक से=प्रसन्नतापूर्वक।

शोकृत-सज्ञा स्त्री० [अ०] दे० "ज्ञान"।  
ठटवाट।

शोकिया-क्रि० वि० शोक रो।

शोकीन-सज्ञा पु० [अ०] १. जिसे किसी बात का बहुत शोक हो। शोक करनेवाला।

२. बनठनकर रहनेवाला। ऐषाश।

शोकीनी-सज्ञा स्त्री० शोकीन होने का भाव।

शोवितक-सज्ञा पु० मोती।

शोच-सज्ञा पु० १. शुचिता। पवित्रता।  
गुद्धता। २. प्रातःकाल उठकर सबसे पहले  
किए जानेवाले काम (मल-त्याग, कुत्सा-  
दानुन आदि)। पाखाने जाना। ३. किसी के  
मरने से उसके घर में होनेवाली अपवित्रता।  
दे० "अशौच"।

शोध\*-वि० शुद्ध। निर्मल। पवित्र।

शोनक-सज्ञा पु० एक प्राचीन ऋषि। इन्होंने  
नैमिषारण्य में १२ वर्ष में समाप्त होनेवाला  
एक यज्ञ किया था।

शोरसेन-सज्ञा पु० आधुनिक ब्रज-मण्डल का  
प्राचीन नाम।

शोरसेनी-सज्ञा स्त्री० १ प्राचीन काल की  
एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा, जो शोरसेन प्रदेश  
(आधुनिक ब्रजमण्डल) में बोली जाती थी।  
२ एक प्रसिद्ध प्राचीन अवभृश भाषा, जो  
नागपुर भी कहलाती थी।

शौर्म्य-सज्ञा पु० १. शूरता। बहादुरी। वीरता।  
सामुर्म्य। २ नाटक में आरभटी नाम की  
वृत्ति।

शौहर-सज्ञा पु० [फा०] स्त्री का पति।

श्मशान-सज्ञा पु० सरपट। मुर्दे जलाने का  
स्थान। मसान।

श्मशानपति-सज्ञा पु० शिव।

श्मशू-सज्ञा पु० १. मूँछ। २. मुँह पर के  
बाल। दाढ़ी-मूँछ।

श्याम-सज्ञा पु० १. श्रीकृष्ण का एक नाम।  
साँवले रंग का। २. बादल।

वि० साँवला। १. काला और नीला मिला  
हुआ (रंग)। २. काला।

श्यामकण-सज्ञा पु० वह षोड़ा, जिसका सारा  
शरीर सफेद और काला वाला हो।

श्याम-टीका-सज्ञा पु० वह पाला टीका, जो

बच्चों को नजर से बचाने के लिए लगाया  
जाता है।

श्यामता-सज्ञा स्त्री० साँवलापन। कालापन।  
मलिनता। उदासी।

श्यामल-वि० [भाव० श्यामलता] श्याम रंग  
का। काला। साँवला।

श्यामसुंदर-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

श्यामा-सज्ञा स्त्री० १. स्त्री। २. सोलह वर्ष  
की नवयुवनी। ३. राधा। एक गोपी का  
नाम। ४. काले रंग की गाय। ५. तुलसी। ६.  
कोयल। ७. यमुना। रात।

वि० श्याम रंगवाली। काली। साँवली।

श्याल, श्यालक-सज्ञा पु० साला। पत्नी  
का भाई।

श्येन-सज्ञा पु० बाज (चिडिया)।

श्येनिका-सज्ञा स्त्री० १. बाज (पक्षी) की  
मादा। २. ११ अक्षरों का एक प्रकार का  
वृत्त। श्येनी।

श्येनी-सज्ञा स्त्री० १. दे० "श्येनिका"। २.  
माकंडेय पुराण के अनुसार कश्यप की एक  
कन्या, जो पक्षियों की जननी थी।

श्येनाक-सज्ञा पु० १. सोनापाड़ा पेंड। २.  
लोघ। लोघ।

थदा-सज्ञा स्त्री० १. भक्तिपूर्वक विश्वास।  
२ आदर और पूज्य भाव। ३ वैवस्वत मनु की  
पत्नी ('कामायनी')। भक्ति। ४. आस्था।  
विश्वास। ५. प्रजापति की पुत्री। (तैत्तिरीय  
ब्राह्मण में)। ६. कईन मुनि की कन्या, जो  
अथि ऋषि की पत्नी थी (भागवत-पुराण  
में)। ७. काम की माता (माकण्डेय-  
पुराण में)। ८. दक्ष की कन्या और परम  
की स्त्री (महाभारत में)।

थदादेय-सज्ञा पु० थदा के पति वैवस्वत  
मनु।

थदालु-वि० थदा करनेवाला। थदामुक्त।

थदावानु-सज्ञा पु० १. थदा करनेवाला।

थदायुक्त। थदालु। २. धम्मनिष्ठ।

थदास्व-वि० थदेय। पूज्य। जिसके प्रति  
थदा हो जा सके।

थदेय-वि० पूज्य। थदा करने योग्य। मान्य।

थम-सज्ञा पु० १. मेहनत। पकावट। परि-

श्रम। २ व्यायाम। बसरत। शरीर वा  
मचानेवाला काय। ३ शिथिलता। ४  
उद्योग। धन कमाने या जीविका के लिए  
को जानवाली मेहनत या कार्य। ५  
बौद्ध धूप। परेशानी। ६ पसीना।

श्रमकण-सज्ञा पु० पसीने की बूँदें।

श्रमजल-सज्ञा पु० पसीना।

श्रमजित-वि० जो बहुत परिश्रम करने पर  
भी न थके।

श्रमजीवी-सज्ञा पु० मजदूर।

वि० मेहनत करके जीविका चरानवाला।

श्रमण-सज्ञा पु० १ बौद्ध भिक्षु या सन्यासी।

२ यति। सन्यासी। ३ मुनि।

श्रमविद्व-सज्ञा पु० पसीना।

श्रमवारि-सज्ञा पु० पसीना।

श्रम विभाग-सज्ञा पु० सरकार या किसी  
कम्पनी या कारखाने का वह विभाग या  
व्यक्ति जो श्रम सम्बन्धी शर्तों की व्यवस्था  
करे।

श्रम विभाजन-सज्ञा पु० किसी काम के अलग  
अलग धर्मों के सम्पादन के लिए अलग-अलग  
व्यक्ति नियुक्त करना।

श्रमसीकर-सज्ञा पु० पसीना।

श्रमिक-सज्ञा पु० मजदूर। शारीरिक मेहनत  
करके अपनी जीविका चरानवाला। श्रम  
जीवी।

वि० श्रम या मेहनत-सम्बन्धी। शारीरिक  
श्रम या मेहनत का।

श्रमिकसभ-सज्ञा पु० (धर्म-लेबरयूनियन)।

मजदूर सभ। कल-कारखाने आदि में काम  
करवाये मजदूरों की संस्था, जिसका  
उद्देश्य उनके हितों की रक्षा करना है।

श्रमित-वि० थका हुआ। थका। जो मेहनत  
करने से थक गया हो।

श्रमी-सज्ञा पु० १ श्रम या मेहनत करने  
वाला। श्रमिक। मजदूर। २ मेहनती।

श्रवण-सज्ञा पु० १ कान। २ सुनना। सुनने

की शक्ति। ३ शास्त्रों में लिखी हुई बातें  
अथवा देवताओं आदि के चरित्र या धार्मिक  
कथाएँ सुनना। ४ एक प्रकार की भक्ति जो  
भगवान का गुणगान सुनकर की जाय।

५ अथक मुनि के पुत्र का नाम, जो माता-  
पिता के आदेश-सेवक पुत्र माने जाते हैं।

६ सत्ताईस नक्षत्रों में स बाईसवाँ नक्षत्र,  
जिसका आकार तीर का-सा है।

श्रवणपथ-सज्ञा पु० कान। कान के द्वारा  
का रास्ता, जिसमें से आवाज जाकर सुनाई  
देती है।

श्रवणीय-वि० सुनने लायक। श्रव्य।

श्रवण-सज्ञा पु० २० 'श्रवण'। कान।

श्रवता-सज्ञा पु० स० बहता। चूना। बहाना।

श्रवित-वि० बहा हुआ।

श्रव्य-वि० सुनने योग्य। जो सुनाई दे सके,  
जैसे-संगीत।

श्रव्य काव्य-सज्ञा पु० वह काव्य, जो कवलय  
सुना जा सके, नाटक आदि के रूप में  
देखा न जा सके।

श्रव-वि० १ मेहनत से थका हुआ। थका  
हुआ। शिथिल। २ उदास। दुःख। ३  
जिनप्रिय। ४ शांत।

श्राति-सज्ञा स्त्री० १ विश्राम। जाराम।

२ थकावट। शिथिलता। ३ परिश्रम।  
मेहनत।

श्राद्ध-सज्ञा पु० १ श्राद्ध से किया जानवाला  
काम। २ पितरों के सम्मान और उनकी  
तृप्ति के लिए दास्य के अनुसार किया  
जानवाला काम। जन्म-तपण पिंडदान  
तथा ब्राह्मणों को भोजन कराना। ३ गिन्  
पक्ष।

श्रावक-वि० सुननेवाला। श्रोता।

श्राव पु० [स्त्री० श्राविका] १ बौद्ध  
भिक्षु या सन्यासी। २ शीतल बुद्ध के शिष्य,  
जिन्होंने उनके गुरु से उपदेश सुना था।  
सारिपुत्र और मोग्गल्लान अथवा श्राव  
(प्रमुख शिष्य) तथा अन्य ८० शिष्य महा-  
श्रावक (महाशिष्य) कह जाते थे। ३ जैन  
जम्मे का अनुयायी। जनी। ४ नास्तिक।

श्रावण-सज्ञा पु० २० 'श्रावण'।

श्रावणी-सज्ञा पु० जनी। सरायना।

श्रावण-सज्ञा पु० वर्ष का पौर्णिमा महाना, जो  
आषाढ के बाद और भाद्रपद के पहले पड़ता  
है। सावन।

शायणी-सज्ञा स्त्री० सावन मास की पूर्णिमा। इस दिन प्रसिद्ध त्योहार 'रक्षा-वधन' तथा पूजन आदि होते हैं।

शायस्ती-सज्ञा स्त्री० कोशल में गंगा के तट की एक प्राचीन नगरी, जो अब सहेत-महेत कहलाती है और अयोध्या से ५८ मील उत्तर की ओर है। यह बौद्धों का तीर्थ-स्थान है। प्राचीन समय में यहाँ बौद्धों का प्रसिद्ध जेतवन विहार था। कहते हैं कि यहाँ गौतम बुद्ध चौमासा बिताया करते थे।

शाय्य-वि० सुनने लायक। जो सुनाई दे सके।

श्री-सज्ञा स्त्री० १ आदर-सूचक शब्द, जो नाम के शुरु में रखा जाता है। अधिक सम्मान सूचित करने के लिए इसे दो, तीन या चार बार तक नाम के शुरु में रखते हैं। २ विष्णु की परनी, लक्ष्मी। ३ सरस्वती। ४ कमल। ५ सकेत चंदन। सदल। ६ धर्म, अर्थ और काम। त्रिवर्ग। ७ सपत्ति। धन। ८ विमूर्ति। ऐश्वर्य। ९ कीर्ति। १० प्रभा। शोभा। ११ कांति। १२ एक प्रकार का पद-चिह्न। १३ स्त्रिया का एक आभूषण बंदी। मज्ञा पु० १ वंष्णवा का एक संप्रदाय। २ एक एकाक्षरा वृत्त। ३ सपूर्ण जाति का एक राग।

श्रीकंठ-सज्ञा पु० शिप। एक पक्षी। (सुन्दर कंठवाला शाब्दिक अर्थ)

श्रीकांत-सज्ञा पु० विष्णु।

श्रीकृष्ण-सज्ञा पु० भगवान् कृष्णचंद्र। यदुवशी वसुदेव के पुत्र, जो ईश्वर के एक अवतार माने जाते हैं।

श्रीक्षेत्र-सज्ञा पु० जगन्नाथपुरी तथा उसके आस-पास का क्षेत्र।

श्रीखंड-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का चंदन। मलयगिरि चंदन। सदल। २ दही और चीनी का बनाया हुआ एक खाद्य पदार्थ। दे० "शिवरत्न"।

श्रीखंड शल-सज्ञा पु० मलय पर्वत।

श्रीगणेश-सज्ञा पु० गणेश देवता।

मुहूर्त-श्रीगणेश करना=प्रारम्भ करना। शुरू करना।

श्रीगवित्त-सज्ञा पु० उपरूपक का एक भेद,

जिसमें एक ही धन ही और जो किसी प्रसिद्ध कथा के आधार पर रचकर किसी देवी को समर्पित हो। श्रीरासिका।

श्रीगर्भ-सज्ञा पु० विष्णु।

वि० १. जिसके अन्दर का स्वभाव कल्याण करने का हो। २. दंड और तलवार के लिए प्रयुक्त शब्द।

श्रीवृष्ण-सज्ञा स्त्री० रौली। कुकुम।

श्रीज-सज्ञा पु० कामदेव। श्री से उत्पन्न।

श्रीदत्त-सज्ञा पु० धन-ऐश्वर्य आदि देनेवाला।

श्रीधाम-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण के एक बाल-सखा का नाग। सुदामा।

श्रीधर-सज्ञा पु० विष्णु। लक्ष्मी को धारण करनेवाला अर्थात् लक्ष्मी के पति विष्णु।

श्रीधाम-सज्ञा पु० म्वर्ग।

श्रीनाथ-सज्ञा पु० विष्णु (लक्ष्मी के स्वामी या पति)।

श्रीनिकेतन-सज्ञा पु० विष्णु। वैकुण्ठ।

श्रीनिवास-सज्ञा पु० १ विष्णु। जिसके यहाँ या जहाँ लक्ष्मी निवास करती हो। २ वैकुण्ठ।

श्रीपद्म-सज्ञा स्त्री० वसंत पद्मी।

श्रीपति-सज्ञा पु० १ लक्ष्मी के पति। विष्णु। हरि। २ रामचंद्र। ३ कृष्ण। ४ कुबेर। ५ राजा।

श्रीपद्म-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण।

श्रीपाद-सज्ञा पु० पूज्य। श्रेष्ठ।

श्रीफल-सज्ञा पु० १ बेल। २ मारियल। ३ आँवला। ४ खिरनी।

श्रीमत-वि० श्रीमान्। सम्पन्न। धनी।

सज्ञा पु० १. एक प्रकार का शिरोभूषण। २. स्त्रियों के सिर के बीच की मणि।

श्रीमत्-वि० १. श्रीमान्। आदरणीय। २. धनी। अमीर। सम्पन्न। भाग्यवान्। ३. जिसमें श्री या शोभा हो। ४. सुंदर।

श्रीमती-सज्ञा स्त्री० १. "श्रीमान्" का स्त्री-लिङ्ग। स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जानेवाला आदर-सूचक शब्द। २. पत्नी-सूचक शब्द। ३. लक्ष्मी ४. राधा।

श्रीमान्-सज्ञा पु० पुरुषों के नाम के पहले लगाया जानेवाला आदर-सूचक शब्द।

श्रीमत्-वि० १. श्रीमान्। आदरणीय। २. धनी। अमीर। सम्पन्न। भाग्यवान्। ३. जिसमें श्री या शोभा हो। ४. सुंदर।

श्रीमती-सज्ञा स्त्री० १. "श्रीमान्" का स्त्री-लिङ्ग। स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जानेवाला आदर-सूचक शब्द। २. पत्नी-सूचक शब्द। ३. लक्ष्मी ४. राधा।

श्रीमान्-सज्ञा पु० पुरुषों के नाम के पहले लगाया जानेवाला आदर-सूचक शब्द। श्रीमत्।

वि० १. सम्प्रभ। बमीर। धनी। भाग्यवान्।  
 २. यशस्वी।  
 श्रीमाल-सज्ञा स्त्री० गले का एक गहना।  
 कठ शी।  
 श्रीमुख-सज्ञा पु० १. सुंदर मुख। २. वेद।  
 ३. सूर्य।  
 श्रीमुखी-सज्ञा स्त्री० सुन्दर मुखवाली स्त्री।  
 श्रीयुक्त-वि० १ जिसमें श्री या शोभा हो।  
 २ बड़े आदमियों के लिए एक आदरसूचक  
 विशेषण। श्रीमान्। ३. यशस्वी। कीर्तिमान्।  
 श्रीयुत-वि० दे० "श्रीयुक्त"। पुष्पा के नाम  
 के पहले लगाया जानेवाला आदर-सूचक  
 शब्द। श्रीमान्।  
 श्रीरग-सज्ञा पु० विष्णु।  
 श्रीरमण-सज्ञा पु० विष्णु।  
 श्रीवत्स-सज्ञा पु० १ विष्णु। २ विष्णु के  
 वक्षस्वले परका एक चिह्न, जो भृगु के  
 चरण-प्रहार का चिह्न माना जाता है।  
 श्रीवास, श्रीवासक-सज्ञा पु० १ गवा-  
 विरोजा। २ देवदारु। ३. पवन। ४  
 कमल। ५ शिव। ६ विष्णु।  
 श्रीश-सज्ञा पु० विष्णु (श्री क ईश अर्थात्  
 लक्ष्मी के स्वामी)।  
 श्रीहत-वि० जिसकी श्री या शोभा हर लो  
 गई हो या जिसमें शोभा न रह गई हो।  
 शोभा-रहित। कातिहीन। निस्तज।  
 श्रीहर्ष-सज्ञा पु० १ नैषध काव्य के रचयिता  
 समुद्र के प्रसिद्ध कवि और पंडित। २  
 रत्नावली, नामानंद और श्रियदशिका नाटका  
 के रचयिता, जो समयत प्रसिद्ध सम्राट्  
 हर्षवर्धन थे।  
 श्रुत-वि० १ जो सुना जा चुका हो।  
 २ जिसे परंपरा से सुनने आते हो। ३  
 प्रसिद्ध। मशहूर।  
 श्रुतकीर्ति-सज्ञा स्त्री० राजा जनक के भाई  
 कुषाघ्वज की कन्या, जो शत्रुघ्न की ब्याही  
 थी।  
 श्रुतपूर्व-वि० जो पहले सुना जा चुका हो।  
 श्रुति-सज्ञा स्त्री० १. कान। २. सुनना। सुनने  
 की क्रिया या इन्द्रिय। ३. सुनी हुई बात।  
 ४. शब्द। ध्वनि। आवाज। ५. अकवाह।

कियदती। ६ वह पवित्र ज्ञान, जा सृष्टि के  
 आदि में ब्रह्मा या कुछ महर्षिया-द्वारा सुना  
 गया और जिसे परंपरा से श्रुति सुनते आए।  
 ७. वेद। निगम। चार की मत्स्या  
 (वेद चार होने से)। ८ अनुप्रास का एक  
 भेद। श्रुत्यनुप्रास। ९. त्रिभुज के समकांग  
 के सामने की भुजा। १०. नाम। प्रसिद्धि।  
 ११. विद्या।  
 श्रुतिकटु-सज्ञा पु० काव्य में कठोर और  
 कर्कश वर्णों का व्यवहार। (दोष)।  
 वि० सुनने में कठोर और कर्कश। अश्रिय।  
 श्रुतिपथ-सज्ञा पु० १ वेद-विहित मार्ग।  
 संनार्ग। २ कान के द्वारा का रास्ता,  
 जिसमें आवाज जाकर सुनाई देती है।  
 श्रवण-मार्ग। ३ कान।  
 श्रुवा-सज्ञा पु० दे० "सुवा"।  
 श्रेणी-सज्ञा स्त्री० १ पक्ति। कतार। २ धर्म।  
 सिलसिला। ३ परम्परा। ४ श्रृंखला। ५.  
 विभाग। ६ दर्जा। (द्वितीय या तृतीय  
 प्रथम, द्वितीय, तृतीय, श्रेणी)। ७ बग।  
 ८ समूह। मंडली। ९ एक ही प्रकार  
 का कारवार करनेवाले व्यापारियों आदि  
 का सघ। (अश्रे०—कारखोरेखन) १०  
 सीढ़ी। ११ किसी वस्तु का अगला या  
 ऊपरी भाग।  
 श्रेणीबद्ध-वि० १ सिलसिलेवार। क्रमबद्ध  
 या क्रमानुसार। २ पक्ति या कतार में  
 रखा हुआ या लगा हुआ।  
 श्रेय-वि० [स्त्री० श्रेयसी] १ यश या बड़ाई  
 के योग्य। २ कीर्ति या यश देनेवाला।  
 ३ श्रेष्ठ। उत्तम। ४ भगवदायक।  
 सज्ञा पु० १ किसी अच्छे काम के लिए  
 मिलनेवाला यश। २ भलाई। कल्याण।  
 ३ कीर्ति। ४ धर्म। पुण्य। ५  
 सदाचार।  
 श्रेयस्कर-वि० १ श्रेय देनेवाला। २ यश  
 देनेवाला। ३. कल्याण करनेवाला।  
 पुनदायक।  
 श्रेष्ठ-वि० [स्त्री० श्रेष्ठा] १ सबसे अच्छा।  
 सर्वोत्तम। २ मुख्य। प्रधान। ३ पूज्य।  
 ४ आयु में बड़ा।

श्लेषता-सज्ञा स्त्री० अच्छाई। उत्तमता। प्रधानता। वटुप्यन।

श्लेडी-सज्ञा पु० १. सैठ। महाजन। २. व्यापारियों या वणिकों का मुंसिया।

श्लेध-वि० १. मुनने योग्य। जो सुनाई दे सके। २. जिसका सुनना आवश्यक हो।

श्लेता-सज्ञा पु० सुननेवाला।

श्लेन-सज्ञा पु० १. कान। सुनने की इन्द्रिय। २. वेदज्ञान।

श्लेनिय-सज्ञा पु० १. वेद-वेदागो का ज्ञाता। वेदज्ञ। २. वेदपाठी। ३. ब्राह्मणों का एक भेद।

श्लेसूत्र-सज्ञा पु० कल्प-ग्रन्थ का वह अंश, जिसमें यज्ञों का विधान है।

श्लेय-वि० १. शिथिल। ढीला। २. धीमा। ३. अशक्त। दुर्बल। कमजोर।

श्लेघनीय-वि० १. सराहने या प्रशंसा के योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. उत्तम। बहुत अच्छा। इन्नाध्य।

श्लेघा-सज्ञा स्त्री० १. प्रशंसा। स्तुति। तारीफ। बड़ाई। २. खुशामद। चापलूसी। ३. इच्छा या चाह (अप्रयुक्त अर्थ)।

श्लेघ्य-वि० १. सराहने योग्य। प्रशंसनीय। तारीफ के लायक। २. उत्तम।

श्लिष्ट-वि० १. मिला हुआ। एक में जुटा हुआ। २. खूब बैठा या लिपका हुआ। ३. (साहित्य में) श्लेष-युक्त। जिसके दो अर्थ हो।

श्लेष-वि० १. जो दो अर्थोंवाले शब्दों या पदों से युक्त हो। दो अर्थोंवाले शब्दों या पदों से युक्त। श्लेषपद-सज्ञा पु० फोलापत्र। पंर फूलने का रोग।

श्लील-वि० [सज्ञा श्लीलता] १. शिष्टता या सम्भ्यता के अनुकूल। २. जो भद्दा या फुहड़ न हो। इसके विपरीत दे० "अश्लील"। ३. उत्तम। नफीस। ४. शुभ।

श्लेष-सज्ञा पु० १. मिलना। जुड़ना। मिलान। संयोग। २. साहित्य में एक अलंकार, जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ लिपे जाते हैं।

श्लेषक-वि० जाड़नेवाला।

सज्ञा पु० दे० "श्लेष"।

श्लेषण-सज्ञा पु० [वि० श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट] १. मिलाना। जोड़ना। २. आलिंगन।

श्लेषोपमा-सज्ञा स्त्री० एक अलंकार, जिसमें ऐसे श्लिष्ट (दो अर्थोंवाले) शब्दों का प्रयोग होता है, जिनके अर्थ उपमेय और उपमान दोनों में लग जाते हैं।

श्लेष्मा-सज्ञा पु० १. कफ। बलगम। २. बंचक के अनुसार शरीर की तीन धातुओं में से एक।

श्लोक-सज्ञा पु० १. संस्कृत का कोई पद। २. संस्कृत का सबसे अधिक प्रयुक्त छंद। अनुष्टुप् छंद। ३. शब्द। आवाज। ४. जाहान। पुकार। ५. स्तुति। प्रशंसा। ६. यश। बड़ाई। नाम।

श्वन्-सज्ञा पु० [स्त्री० श्वनी] कुत्ता।

श्वपच-सज्ञा पु० बाढाल। डोम।

श्वफलक-सज्ञा पु० यादव वृष्णि के पुत्र और अकूर के पिता।

श्वशुर-सज्ञा पु० समुर। पत्नी या पति का पिता।

श्वधू-सज्ञा स्त्री० सास। पति या पत्नी की माता।

श्वसन-सज्ञा पु० १. श्वास। सांस। २. जीवन। ३. हवा। ४. हाँफना। ५. फूँकना। ६. लम्बी सांस लेना।

श्वसित-वि० १. जो श्वास (सांस) ले रहा हो। जिसमें सांस हो। जीवित। २. सांस लिया हुआ।

सज्ञा पु० १. सांस लेने की क्रिया। २. निःश्वास या ठंडी सांस।

श्वान-सज्ञा पु० कुत्ता। कुक्कुर।

श्वाननिद्रा-सज्ञा स्त्री० हल्की नींद। कुत्ते की तरह नींद, जो जरा सी जाहट पाकर टूट जाय।

श्वापद-सज्ञा पु० हिंसक पशु। खूंघार जानवर।

श्वस-सज्ञा पु० १. सांस। दम। २. जल्दी-जल्दी सांस लेना। हाँफना। ३. दम फूलने का रोग। दमा।

श्वसकास-सज्ञा पु० दमा और खाँसी।

श्वसा-सज्ञा स्त्री० १० "श्वस"। सीस।  
श्वसोच्छ्वास-सज्ञा पु० तेजो या जोर से  
सीस चीखना और निशाना।

श्वेत-वि० १ सफेद। पवल। उज्ज्वल। २  
साफ। ३ गोरा।

सज्ञा पु० १ सफेद रंग। २ चांदी। ३. गार  
वण के व्यक्ति (जैसे—इंग्लैंड, जमरिका  
और दक्षिण अफ्रीका की गारी जाति का  
व्यक्ति)। इसके विपरीत—श्वेत होते वण  
के व्यक्ति। ४ पुराणानुसार एक द्वीप  
(श्वेतद्वीप)। ५ शिव का एक अवतार।  
६ रत्न बराह।

श्वेत-कुण्ड-सज्ञा पु० सफेद और काला।  
जिसा विषय के दोना पक्ष।

श्वेतकेतु-सज्ञा पु० १ महर्षि उटालव के  
पुत्र का नाम। २ केतु ग्रह।

श्वेतगज-सज्ञा पु० एरावत हाथी।

श्वेतद्युति-सज्ञा पु० चंद्रमा।

श्वेतद्वीप-सज्ञा पु० पुराणानुसार एक उज्ज्वल  
द्वीप, जहाँ विष्णु रहते हैं।

श्वेतपत्र-सज्ञा पु० विषय सरकारी वित्तित्त,  
जिसमें किसी विषय का उज्ज्वल पक्ष प्रति  
पादित किया जाता है। [अर्थ—ह्वाइट  
पेपर]

श्वेतपद्म-सज्ञा पु० सफेद कमल।

श्वेतप्रवर-सज्ञा पु० एक प्रकार का प्रवर  
राग, जिसमें स्त्रिया का सफेद रंग की धातु  
मिश्रित है।

श्वेतयाराह-सज्ञा १ पु० बाराह भगवान् की  
एक मूर्ति। २ एक कल्प का नाम, जो पहला  
७ मास का प्रथम दिन माना गया है।

श्वेतसार-सज्ञा पु० गाँडा। कलक। चावल  
आदि अन्न का वह सफेद सत, जो कण्डा पर  
फटक लगाने या दवाआ के काम आता है।

श्वेतावर-सज्ञा पु० १ जैनियों के दो प्रधान  
सम्प्रदायों में से एक। २ शिव का एक रूप।  
वि० सफेद वस्त्र धारण करनेवाला व्यक्ति।

श्वेताग-वि० सफेद वण या रा के गरीर  
वाला।

सज्ञा पु० गारी जाति—(इंग्लैंड, यूरोप,  
अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका आदि के निवासी)

श्वेताशु-सज्ञा पु० चंद्रमा।

श्वेता-सज्ञा स्त्री० १ दूबा वाता। कुम्ह।  
२ अग्नि का सात जिह्वावा में से एक।  
३ कोडी। ४ शक्तिनी। ५ सफेद चीना।  
६ शकर। ६ आँस का सफेदी। ७ बाल की  
सफेदी।

श्वेताश्वतर-सज्ञा स्त्री० कुण्ड यजुर्वेद का  
एक शाखा। कुण्ड यजुर्वेद का एक उप-  
निषद्।

ष-हिंदी वणमाला का ३१वाँ व्यंजन अक्षर।  
इसका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है, अतः यह  
मूर्द्धन्य गह्वारा है। इसका उच्चारण दो  
प्रकार से होता है—'ष' के समान और  
'ख' के समान।

पड, पड-सज्ञा पु० १ रुँड। २ नपुंसक।  
हीजडा। नामद। ३ शिव का एक नाम।  
४ समूह। झुंड। ५ पाठी (शब्द के अन्त  
में जोड़ने पर)। ६ धृतराष्ट्र के एक पुत्र  
का नाम (महाभारत)।

पडत्व-सज्ञा पु० नामदी। हीजडापन।

पट्-वि० छ। गिनती में ६।

सज्ञा पु० ६ की सख्या।

पट्क-सज्ञा पु० ६ की सख्या। ६ वस्तुओं का  
समूह।

वि० ६ सम्बन्धी या ६ चीजों से सम्बन्ध  
रखनेवाला।

षट्कम्म-सज्ञा पु० १ ब्राह्मणों के छ कम-यज्ञ  
करना, यज्ञ कराना, पढ़ना, पढ़ाना, दान  
देना और दान लेना। २ शश्ट। समेला।

षट्कोण-वि० छ कोनोवाला। छ कोना।  
छ पहला।

षट्चक्र-सज्ञा पु० १ हठयोग के अनुसार शरीर के अन्दर छ चक्र, जिनके नाम हैं— मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनहत, विशुद्धि, प्रज्ञा। २ भीतरी चाल। पट्टयन।

षट्चरण-सज्ञा पु० भीरा। जिसके छ पैर होते हैं।

षट्तिता-सज्ञा स्त्री० माघ महीने के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

षट्पद-वि० [स्त्री० षट्पदी] छ पैरावाला। सज्ञा पु० १ भीरा। २ छ पदावाजा छन्द।

षट्पदी-सज्ञा स्त्री० १ भीरे की मादा। भ्रमरी। २ छप्पय (छ पदों का छन्द)।

षट्प्रयोग-सज्ञा पु० तन सम्बन्धी छ प्रयोग— शान्ति, वशीकरण, स्तम्भन, विप्रेषण, उच्चा टन और मारण।

षट्मुख-सज्ञा पु० कात्तिकेय। पंडानन।

वि० जिसके छ, मुँह हा।

षट् राग-सज्ञा पु० १ संगीत के छ राग— भरव, मलार, श्रीराग, हिंडोल, मालकोस और दीपक। २ वखेडा। शकट।

षट् रास-सज्ञा पु० १ दे० "षट् रास"। षट् रास-भोज, छ रसों से युक्त भोजन। २ विभिन्न प्रकार का स्वादिष्ट भोजन।

षट् रिपु-सज्ञा पु० दे० "षट् रिपु"।

षट् शास्त्र-सज्ञा पु० हिंदुओं के छ दर्शन। न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, सांख्य और पातञ्जल। पट्टदर्शन।

षट् वाग-सज्ञा पु० षट् वाग नामक राजपति, जिन्हें केवल दो पड़ो की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

षडग-सज्ञा पु० वेद के छ अंग—निष्ठा, वल्य, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष। शरीर छ छ अंग—दो पैर, दो हाथ, सिर और घडा।

वि० जिसके छ अंग या अवयव हा।

षडानन-सज्ञा पु० कात्तिकेय।

वि० छ मुँहवाला।

षट्शतु-सज्ञा स्त्री० वष की ६ शतुएँ— वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर।

षडगुण-सज्ञा पु० छ गुणों का समूह। राजनीति के सन्धि, विग्रह, यान (चढाई), आसन (विराम), द्वेषोभाय और सश्रय, ये छ गुण हैं।

षडज-सज्ञा पु० संगीत के सात स्वरों में से पहला स्वर, जिसका संकेत "स" है।

षट्दर्शन-सज्ञा पु० न्याय, मीमांसा आदि हिंदुओं के छ दर्शन। दे० "षट्शास्त्र"।

षट्दर्शनी-सज्ञा पु० छ दर्शना को जानने-वाला। ज्ञानी।

षट्पत्र-सज्ञा पु० किसी के विरुद्ध गुप्त रीति से की गई कारवाई। भीतरी चाल। कुचक्र।

षट् रास-सज्ञा पु० छ प्रकार के रस या स्वाद— मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

षट् रिपु-सज्ञा पु० काम, क्रोध आदि मनुष्य के छ विकार।

षट् मुख-सज्ञा पु० दे० "पंडानन"। कात्तिकेय। छ मुँहवाला।

षट्-वि० छठा। जिसका स्थान पाँचवे के उपरांत हो।

षट्ठी-सज्ञा स्त्री० १. शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। २ सवधकारक (व्याकरण)। ३ बालक उत्पन्न होने से छठा दिन तथा इस दिन का उत्सव। ४ षोडश मातृकाओं में से एक। ५ कात्यायिनी। दुर्गा।

षाडव-सज्ञा पु० एक प्रकार का राग, जिसमें केवल छ स्वर लाते हैं। मनोविकार।

षाण्मातुर-सज्ञा पु० कात्तिकेय। पंडानन। (छ मुंडों या सिरोंवाला)।

षाण्मासिक-वि० १ छ महीने का। २ छठे महीने में पड़नेवाला।

षोडश-सज्ञा पु० सोलह को सख्या।

वि० सोलहवाँ।

षोडश-कला-सज्ञा स्त्री० चंदना के 'सोलह भाग, जो क्रम से एक-एक करके निपकते और क्षीण होते हैं।

षोडशपूजन-सज्ञा पु० दे० 'षोडशापचार'।

षोडश-मातृका-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का दैवियाँ, जो सोलह मानी गई हैं—गौरी,

पद्मा, शशी, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शक्ति, पुष्टि, धृति, सुष्टि, मातरः धीर आत्म-देवता।

**घोड़श-शृंगार-सज्ञा** पु० १६ तरह का शृंगार या सजापट। पूर्ण शृंगार, जो १६ प्रकार का होता है।

**घोड़श संस्कार-सज्ञा** पु० गर्भाधान से लेकर मरने तक हिन्दुओं में १६ संस्कार—गर्भाधान, पुसपन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, ब्रूडाकर्म, कर्णनैद, यशोपवीत, वेदारम्भ, समावर्त्तन, विवाह, विरागमन, मृतक, और्ध्वदेहिक।

**घोड़शी-वि०** १. सोलहवीं। २. सोलह वर्ष की युवती।

**सज्ञा स्त्री०** १० महाविद्याओं में से एक। हिन्दुओं में किसी की मृत्यु के दसवें या ग्यारहवें दिन बाद किया जानेवाला एक धार्मिक कर्म।

**घोड़शोषचार-सज्ञा** पु० पूजा के पूर्ण अंग, जो सोलह माने गए हैं—आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यशोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्का और वस्त्रा।

**छीवन-सज्ञा** पु० धूकना।

## स

**स-१** हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन। इसका उच्चारण-स्वान दत्त है, इसलिए इसे दत्ती या दत्त 'स' कहते हैं। २. एक उपसर्ग, जो शब्दों के प्रारम्भ में लगने पर कुछ विशेष अर्थ देता है—जैसे सहित या साथ के अर्थ में—सजीव। एक में ही—सगोत्र।

**सज्ञा** पु० १ छंदशास्त्र में 'सगण' का सक्षिप्त रूप। २. सगीत-शास्त्र में पङ्क्त्यस्वर का सूचक अक्षर। ३ ईश्वर। ४ शिव। ५ सांगु। ६ पशु। ७ हवा। ८ जीव। ९ चन्द्रमा। १० ज्ञान।

**स-अव्य०** १. एक अव्यय, जिसका प्रयोग वाक्य के आरम्भ में शोभा, समानता, सगति, उत्कृष्टता, निरंतरता आदि सूचित करने के लिए होता है। जैसे—सयाग, सताप, सगुष्ट आदि। २ से।

**संक** \*—सज्ञा स्त्री० दे० "शका"।

**संकट-सज्ञा** पु० १. विपत्ति। आपत्त। मुसीबत। दुःख। कष्ट। तेंकलीक। २. दो पह्लाई के बीच का तंग रास्ता। दर्रा। ३. पानी या जमीन के दो बड़े विभागों को जोड़नेवाला तंग रास्ता। जैसे, जल-संकट = जलसमन्वय। गिरि-संकट = पहाड़ का दर्रा।

**वि०** १. तंग। सैकीर्ण या संकरा। २. कष्टप्रद। ३. भयानक।

**संकटा-सज्ञा** स्त्री० १ एक प्रसिद्ध देवी। २. ज्योतिष में एक योगिनी दशा।

**संकना** \*—वि० अ० १. शका करना। सबह करना। २ डरना।

**संकर-सज्ञा** पु० [ स्त्री० संकरता] १. दो चीजों का आपस में मिलना या मिलकर एक होना। २ भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से उत्पन्न। बोगला। बर्णसकर। **संकर-सनात-सज्ञा** पु० दो भिन्न भाषाओं के शब्दों का समास, अर्थात् एक शब्द किसी भाषा का हो और दूसरा किसी दूसरी भाषा का—जैसे अङ्ग्रेजी-संकर।

**संकर-धरती** \*—सज्ञा स्त्री० संकर की पत्नी, पार्वती।

**संकरता-सज्ञा** स्त्री० संकर होने का भाव या क्रिया। मिलावट। घाल-मेल।

**संकरा** \*—वि० [ स्त्री० संकरी] तंग। कम चौड़ा। सकीर्ण।

**सज्ञा** पु० संकट। विपत्ति। कष्ट।

**संकर्यण-सज्ञा** पु० १. खोचने की क्रिया। २. हल से जोतने की क्रिया। ३. वृष्ण के भाई बलराम का एक नाम। ४. वेणवो का एक सप्रदाय। ५. वानून में अधिकार या

प्राथमिकता आदि के अनुसार किसी व्यक्ति या वस्तु के स्थान पर दूसरे व्यक्ति या वस्तु को रखा जाना या उसका नाम बदला जाना। (अर्थ—सर्व-रोगेशन)

संकलन—सज्ञा स्त्री १. दे० "संकल"। सिकड़ी। जजोर। २. पशुओं को बांधने का सिककड़।

संकलन—सज्ञा पु० [वि० संकलित] १. संग्रह करना। चुनकर इकट्ठा करना। २. संग्रह। ३. ढेर। ४. अनेक प्रथों से अच्छे-अच्छे विषय चुनने की क्रिया। ५. वह प्रथ, जिसमें ऐसे चुने हुए विषय हों। ६. गणित की योग नाम की क्रिया। जोड़।

संकल्प—सज्ञा पु० दे० "सकल्प"।

संकल्पना\*—क्रि० सं० १. सकल्प करना। दृढ़ निश्चय करना। २. कुछ दान देने या धार्मिक कार्य करने का निश्चय करना। ३. सकल्प का मंत्र पढ़कर दान देने का वचन देना।

क्रि० अ० दृढ़ निश्चय करना। विचार करना।

संकलित—वि० चुनकर इकट्ठा किया हुआ। चुना हुआ। संगृहीत।

संकल्प—सज्ञा पु० १. दृढ़ निश्चय। परका इरादा। २. कार्य करने की इच्छा। विचार। ३. एक विशेष मंत्र पढ़ते हुए दान-पुण्य करने का निश्चय करना या वचन देना। ४. वह मंत्र, जिसे पढ़कर ऐसा निश्चय किया जाय।

संकल्पित—वि० १. जिसका सकल्प या निश्चय हो चुका हो। २. जिसे दान देने का निश्चय किया जा चुका हो।

संकष्ट—सज्ञा पु० संकट। विपत्ति। आफत।

संकराना\*—क्रि० सं० संकेत करना। इशारा करना।

संकाश—सज्ञा पु० प्रकाश। चमक।

अव्य० १. समान। एक-सा। २. निकट। पास।

संकीर्ण—वि० [सज्ञा संकीर्णता] १. जो चौड़ा या फैला न हो। संकरा। तग। संकुचित। २. मिथिन। ३. अनुदार (उदार का उल्टा)। संकीर्ण विचारवाला। ओछा। तुच्छ। ४. छोटा।

सज्ञा पु० १. दो या अधिक रागों से मिलकर बना हुआ राग। संकर-राग। २. मिश्रित जाति का। वर्णसंकर।

संकीर्तन—सज्ञा पु० भजन या वंदना आदि।

गा-बजाकर उपासना करना। दे० "कीर्तन"।

किसी की कीर्ति का भली भाँति वर्णन।

संकुचन—सज्ञा पु० दे० "संकोच"।

संकुचित—वि० १. सिकुड़ा हुआ। २. संकरा।

तग। ३. संकोच-मुक्त। लज्जित। ४.

उदार का उल्टा। संकीर्ण विचारवाला।

क्षुद्र।

संकुमित—वि० दे० "कुपित"। क्रोधित।

संकुल—वि० [सज्ञा संकुलता] १. संकुलित।

भरा हुआ। परिपूर्ण। २. समस्त। ३.

संकीर्ण। तग।

सज्ञा पु० १. लड़ाई। युद्ध। २. शूड। समूह।

भीड़। ३. परस्पर-विरोधी वाक्य।

संकुलित—वि० भरा हुआ। व्याप्त।

संकेत—सज्ञा पु० १. इशारा। इंगित। भाव

प्रकट करने की कोई शारीरिक चेष्टा।

२. चिह्न। निशान। ३. वह स्थान, जहाँ

प्रेमी-प्रेमिका मिलना निश्चित करें।

†वि० संकरा। तग। बैठने या लेटने आदि

के लिए बहुत कम जगह। (भोजपुरी में संकेता=विपत्ति, मुसीबत)।

संकेत-चिह्न—सज्ञा पु० नाम, पद या वाक्य

आदि के सूचक उनके सुक्षिप्त रूप या

चिह्न, जो संकेत के रूप में प्रयुक्त किए

जायें। जैसे—उत्तर-प्रदेश का उ० प्र०।

संकेत-लिपि—सज्ञा स्त्री० बहुत जटिल और

थोड़े स्थान में लिखने के लिए किसी

लिपि के अक्षरों तथा पदों के छोटे और

सुक्षिप्त चिह्नों में बनाई गई लेख-प्रणाली।

(अर्थ—शार्ट हैंड)।

संकोच—सज्ञा पु० १. पीछी लज्जा या शर्म।

लेहज २. आगा-पीछा। हिचकिचाहट। ३.

मिकुड़ने की क्रिया या भाव। त्रिचाप।

४. काव्य का एक जलकार, जिसमें निर्गो

वस्तु के बहुत संकोच का वर्णन होता

है (विकास-अकार के विपरीत)।

संकोचना\*—क्रि० सं० १. संकोच करना।

लजाना या शर्माना। २. संकुचित करना।  
सिकोइना।

संकोची-मज्ञा पु० १. संकोच या लज्जा करने  
वाला। धर्म करनेवाला। २. थोड़े में ही  
गन्तव्य करनेवाला। ३. सिद्धि देनेवाला।

संकोचना\*—क्रि० अ० कोच करना।

संकोचन-मज्ञा पु० इत्र।

संक्रमण-मज्ञा पु० १. जाना। चलना। २.  
परिवर्तन की दशा। एक अवस्था से धीरे-धीरे  
दूसरी अवस्था में बदलना। अवस्थान्तर।  
३. सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी  
राशि में प्रवेश करना। दे० "संक्राति"।

संक्रमण-काल-मज्ञा पु० वह समय, जब एक  
अवस्था से दूसरी अवस्था में धीरे-धीरे  
परिवर्तन हो रहा हो।

संक्राति-मज्ञा स्त्री० १. सूर्य का एक राशि से  
दूसरी राशि में जाना या जानें का समय  
(यह हिन्दुओं का एक पर्व है)। २. एक  
अवस्था से दूसरी अवस्था में जाना। ३.  
परिवर्तन-काल।

संक्रामक-वि० छूत के कारण फैलनेवाली  
बीमारी। ससर्प से फैलनेवाला।

संक्षोभ\*—मज्ञा स्त्री० दे० "संक्राति"।

संक्षमण-मज्ञा पु० १. किसी के दोष या  
अपराध आदि पर ध्यान न देकर उसे क्षमा  
करना। २. सहन करना। बर्दाश्त करना।

संक्षिप्त-वि० १. संक्षेप किया हुआ। २.  
चुलासा। ३. सार रूप। बड़े का छोटा

४. किया हुआ रूप। कम किया हुआ। ४.  
थोड़ा। अल्प। ५. थोड़े में कहा गया  
या लिखा हुआ। ६. फेंका हुआ (केवल  
संस्कृत में)।

संक्षिप्त अलिख-मज्ञा पु० बड़े लेख, वक्तव्य  
या भाषण आदि का थोड़े में तैयार किया  
हुआ रूप। संक्षिप्त या छोटा रूप।

संक्षिप्तक-मज्ञा पु० किसी शब्द या नाम  
के दो आरम्भिक अक्षर, जो उस शब्द या नाम  
के सूचक बन जाते हैं।

संक्षिप्त-लिपि-मज्ञा स्त्री० दे० "संकेत-  
लिपि"।

संक्षिप्ति-मज्ञा स्त्री० नाटक में एक आरम्भटी,

जिसमें क्रोध आदि उग्र भावों की निवृत्ति  
होती है।

संक्षिप्तीकरण-मज्ञा पु० किसी विषय,  
कथन आदि को संक्षिप्त (छोटा) करने  
की क्रिया या भाव।

संक्षेप-मज्ञा पु० १. थोड़े में कोई बात कहना।  
सारसार। सार। २. पटना। कम  
करना।

संक्षेपण-मज्ञा पु० संक्षेप करना। थोड़े में  
करना। [अग्रे० एप्रिजमेण्ट]

संक्षेपतः-अव्य० संक्षेप में। थोड़े में।

संक्षोभ-मज्ञा पु० १. दे० "क्षोभ"। २.  
उद्विग्नता। ३. नचलता। व्याकुलता। ४.  
उत्तेजना। ५. जोर का कंपन। ६. उकट-  
पुलट।

संक्षिप्ता-मज्ञा पु० १. एक बहुत जहरीला  
संकेद पत्थर या उपधातु। २. इस धातु का  
तैयार किया हुआ भस्म, जो दवा के काम  
में आता है।

संक्षेपक-वि० संक्षेपावाला। जैसे अल्पसंक्षेपक=  
कम संक्षेपावाला। बहुसंक्षेपक=बहुत  
संक्षेपावाला।

संक्षेपा-मज्ञा स्त्री० १. गिनती। गणना।  
तादाब। २. गिनती में, परिमाण बतानेवाला  
अंक।

संक्षेपाता-मज्ञा पु० किसी तरह का हिसाब  
लिखनेवाला, विशेषकर आय-व्यय का हिसाब  
लिखनेवाला।

संक्षेपान-मज्ञा पु० आय-व्यय या लेन-देन आदि  
का लिखा हुआ हिसाब।

संक्षेपानकर्म-मज्ञा पु० लेन-देन या आमदनी-  
खर्च आदि के हिसाब लिखने का काम।

संग-मज्ञा पु० १. साथ। मिलन। सहबाव।  
२. विषयों के प्रति होनेवाला अनुराग।  
वासना। आमन्त्रित। [फा०] पत्थर। जैसे  
"संगमरमर"।

वि० पत्थर की तरह कठोर। बहुत कठोर।

क्रि० वि० साथ। हमसाह। सहित।

मूहा०—(किसी के) संग लगना=साथ  
हो लेना। पीछे लगना।

संग जहरात-मज्ञा पु० एक संकेद चिह्न

पत्थर, जो घाव भरने के लिए बहुत लाभ-  
दायक होता है।

संगठन-सज्ञा पु० १. दे० "सघटन"। रचना।  
बनावट। २. बिखरी हुई शक्तियों की एक  
में मिलाना। सुव्यवस्थित करना। ३.  
सघ या सस्था।

संगठित-वि० १. संग्रहित। सघटित। न्यिका  
संगठन हो चुका है। २. सुव्यवस्थित।

संगत-सज्ञा स्त्री० १. दे० "सगति"। संग  
रहना। साथ। २. मित्रता। ३. संग  
रहनेवाला। साथी। ४. सवध। समर्थ। ५.  
मठ। साधुओं का समाज। ६. सिक्खों का  
धर्म-समाज।

संग-सरास-सज्ञा पु० [फा०] पत्थर काटने  
या गढ़नेवाला भजद्वार।

सगति-सज्ञा स्त्री० १. संग। साथ। २. मेल।  
मिलाप। संगत। ३. सवध। ताल्लुक।  
४. प्रसंग। आगे-पीछे कहे जानेवाले वाक्यों  
आदि का मिलान।

संगतिया, संगती-वि० १. साथी। २. गवैए  
के साथ बाजा बजानेवाला।

संगदिल-वि० [फा०] [सज्ञा संगदिली]  
कठोर-हृदय। निर्दय।

संगम-सज्ञा पु० १. मिलाप। संयोग। मेल।  
२. दो नदियों के मिलने का स्थान। दो  
या अधिक वस्तुओं का एक जगह मिलने  
का भाव।

संग-भरत-सज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत  
बड़िया, चिकना, मुलायम और सफेद पत्थर।

संगमूसा-सज्ञा पु० [फा०] एक तरह का  
काला, चिकना पत्थर।

संग-प्रशव-सज्ञा पु० [फा०] १. एक प्रकार  
का हरा पत्थर। २. होल-दिली।

संगर-सज्ञा पु० १. संग्राम। युद्ध। २. विपत्ति।  
३. निवम।

[फा०] मोरचा। सेना की रक्षा के लिए,  
चारों ओर की खाई या घुस।

संगती-सज्ञा पु० १. संगी। साथी। २.  
दोस्त।

संगिनी-सज्ञा स्त्री० १. पत्नी। २. साथ  
रहनेवाली स्त्री। ३. सखी। सहेली।

संगी-सज्ञा पु० १. संग रहनेवाला। साथी।

२. मित्र। दोस्त। ३. बन्धु।

वि० [फा० संग=पत्थर] पत्थर का।  
संगीन।

संगीत-सज्ञा पु० १. नाचना, गाना और  
बजाना तीनों का मेल। २. लय, ताल के  
अनुसार गाना। गायन। ३. एक साथ  
मिलकर गाना।

संगीत-शास्त्र-सज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसमें  
संगीत अर्थात् गाने, बजाने और नाचने  
की शला का विवेचन है।

संगीतज्ञ-सज्ञा पु० संगीत-विद्या का पंडित  
या अच्छा जानकार। संगीत में निपुण।  
अच्छा गवैया।

संगीन-सज्ञा पु० [फा०] बन्धूक के सिर  
पर लगाया जानेवाला लोहे का एक  
नुकीला अग्न।

वि० १. खतरनाक। २. चिकट। बहुत  
पेचीदा या गम्भीर मानला। ३. पत्थर का  
बना हुआ। ४. मोटा। ५. टिकाऊ।  
मजबूत।

संगोपन-सज्ञा पु० छिपाना।

संगृहीत-वि० साह या इकट्ठा किया हुआ।  
संकलित।

संग्रह-सज्ञा पु० १. इकट्ठा करना। जमा  
करना। संचय। २. रक्षा। ३. ग्रहण करने की  
क्रिया। ४. यह पुस्तक, जिसमें अनेक विषयों  
की बातें एकत्र की गई हों। संकलन।

संग्रहकर्ता-सज्ञा पु० संग्रह या इकट्ठा करने-  
वाला। संग्रहक।

संग्रहणी-सज्ञा पु० पैट की एक बीमारी,  
जिसमें साना नहीं पचता और दस्त  
होते हैं।

संग्रहणीय-वि० संग्रह या इकट्ठा करने योग्य।  
दे० "संग्राह्य"।

संग्रहना\*-कि० सं० इकट्ठा या जमा करना।

संग्रहाध्यक्ष-सज्ञा पु० किसी संग्रहालय का  
प्रधान अधिकारी (अब्रेन्-स्यूरेंटर)।

संग्रहालय-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ प्राचीन  
या दुर्लभ वस्तुओं का संग्रह हो (अब्रेन्-  
म्यजियम)।

सग्रही-वि० सग्रह या इकट्ठा करनेवाला।  
दे० 'सग्राहक'।

सग्राम-सजा पु० लड़ाई। युद्ध।

सग्राहक-सजा पु० सग्रह या इकट्ठा करने  
वाला। सग्रहकर्ता।

सग्राह्य-वि० सग्रह या इकट्ठा करने योग्य।  
जमा करने लायक।

सघ-सजा पु० १ समुदाय। समूह। २ किसी  
विशेष उद्देश्य से कई व्यक्तियों का सघटित  
समाज, संस्था, सभा समिति दल। ३  
कानून के विचार से एक व्यक्ति क रूप में  
काय करनेवाला व्यापारिक या अन्य प्रकार  
की समिति या सभा (अग्र०-कारपोरेशन  
या कम्पनी)। ४ ऐसे राज्यों का समूह जो  
अपन धर्म में स्वतन्त्र हों पर कुछ विशेष  
कार्यों के लिए किसी केन्द्रीय शासन के  
अधीन हों (अग्र०-यूनियन या फडरेशन)।  
५ भारत का एक तरह का प्राचीन  
प्रजातन्त्र राज्य। ६ बौद्ध भिक्षुओं के  
रहने का स्थान या उनका धार्मिक समाज।  
७ साधुओं आदि के रहने का मठ।

सघट-सजा पु० १ सघटन। २ मज। ३  
सयोग। ४ एकत्र होना। ५ समूह। ढर।

सघटन-[वि० सघटित] १ रचना। बनावट।  
निर्माण। २ मज। सयोग। मिलाप। ३  
किसी कार्य के लिए विचरते हुई शक्तियों  
को एक में मिलाना। ४ सुव्यवस्थित  
करना। किसी उद्देश्य से कई व्यक्तियों को  
एक साथ करके कोई सघ या संस्था  
बनाना। सघ। संस्था। संगठन।

सघटन, सघटन-सजा पु० १ दे० सघटन।  
२ मज। सयोग। ३ रचना। बनावट।  
रगड़। ४ सघन। ५ मूठभड़। ६ स्पर्धा।  
होड़।

सघटित वि० १ जिसका सघटन हो चुका  
हो। सघटित। २ जो सघ या संस्था के रूप  
में बने चुका हो। सुव्यवस्थित।

सघटि-सजा स्त्री० कई दलों संस्थाओं या  
गज्या आदि का इस प्रकार मिश्रण एक  
हा जाना कि सब एक दल संस्था या राज्य  
के रूप में काय करे।

सघती-सजा पु० ६० सघाती।

सघरना\*-कि० सं० १ सहार करना। नाश  
करना। २ मार डालना।

सघपति-सजा पु० सघ का प्रधान या दल का  
नायक।

सघय-सजा पु० १ रगड़ खाना। रगड़। २  
लड़ाई। मूठभड़। मारपीट। ३ प्रति-  
योगिता। होड़। ४ विरोध। स्पर्धा।

सघयण-सजा पु० ६० 'मघय'।

सघस्थविर-सजा पु० वीरों के सघ या मठ  
का प्रधान भिक्षु। सघाराम का प्रधान।

सघात-सजा पु० १ झुड़। समूह। कई  
विशेष कार्य करने के उद्देश्य से बनाया गया  
कुछ व्यक्तियों का समूह। २ हया। जान  
से मार डालना। ३ आघात। गहरी चोट।  
४ नाटक में एक प्रकार की गति। ५  
शरीर। ६ रहने की जगह। निवासस्थान।  
वि० घना।

सघाती-सजा पु० साथी। मित्र। दोस्त।  
वि० प्राणनाशक। सघात करनेवाला।

सघारना\*-सजा पु० दे० 'सहार'।

सघारना\*-वि० सं० सहार करना। नाश  
करना। मार डालना।

सघाराम-सजा पु० बौद्ध भिक्षुओं के रहने  
का मठ। विहार।

सघोष-सजा पु० बहुत जोर का ग०।

सच\*†-सजा पु० १ दे० सचय'। सग्रह  
या इकट्ठा करना। २ रक्षा। देखभाल।

सचकर\*-सजा पु० १ सचय करनेवाला।  
इजाजत या जमा करनेवाला। २ वजस।

सचना\*†-वि० सं० सचय करना। इकट्ठा  
या जमा करना। बचाकर रखना।

सचय-सजा पु० जमा करना। सग्रह या  
इकट्ठा करना।

सचरण-सजा पु० सचार। सचार करने की  
नियत। चरना।

सचरना\*†-वि० ज० १ चरना। घूमना-  
फिरना। २ चरना। प्रसारित या प्रचलित  
होना।

सचरित-वि० १ जिसका चरित हुआ हो।  
२ जिसमें सचार हुआ हो।

संचार-सज्ञा पु० वाज चिह्निया।  
 संचार-सज्ञा पु० [वि० संचारित] १. चलना।  
 गमन। २. फैलना। जैसे खून का संचार।  
 ३. चलाने की क्रिया। प्रसारित या प्रचलित  
 होना।  
 संचारक-वि० [स्त्री० संचारिणी] संचार  
 करनेवाला। फैलानेवाला। चलाने-  
 वाला।  
 संचारना\*†-क्रि० सं० १. संचार करना।  
 २. जन्म देना। ३. चलाना। ४. फैलाना।  
 प्रचार करना।  
 संचारिका-सज्ञा स्त्री० दूती। कुदनी।  
 संचारी-सज्ञा पु० १. साहित्य में वे भाव, जो  
 मुख्य भाव की पुष्टि या नहायता करते हैं।  
 २. व्यभिचारी भाव। ३. हवा।  
 वि० संचरण करनेवाला। गतिशील।  
 संचालक-सज्ञा पु० [स्त्री० संचालिका,  
 संचालिनी] १. चलानेवाला। चालक।  
 संचालन करनेवाला। २. किसी कार्य या  
 कार्यालय आदि का काम चलाने या  
 व्यवस्था करनेवाला। नियंत्रण करनेवाला।  
 (अंग्रे०-डाइरेक्टर)  
 संचालन-सज्ञा पु० १. चलाना। चलाने की  
 क्रिया। २. नियंत्रण। देख-रेख। ३. काम  
 जारी रखना। ऐसी व्यवस्था करना जिसमें,  
 कोई काम होता रहे।  
 संचालित-वि० जो चलाया गया हो। जिसका  
 संचालन किया गया हो।  
 संचित-वि० सचय या जमा किया हुआ।  
 बचाकर रखा हुआ।  
 संज्ञम\*-सज्ञा पु० दे० "सयम"।  
 संज्ञय-सज्ञा पु० धृतराष्ट्र के मंत्री, जो महा-  
 भारत के युद्ध के समय उन्हें युद्ध का विवरण  
 सुनाया करते थे।  
 संज्ञात-वि० १. उत्पन्न। २. प्राप्त।  
 संज्ञाफ-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. झालर।  
 २. गोट। मगजी। शोभा के लिए लगाया  
 हुआ किनारा।  
 सज्ञा पु० एक प्रकार का घोड़ा, जिसका रंग  
 आधा लाल और आधा सफेद या आधा  
 हरा होता है।

संज्ञाफो-वि० जिसमें सज्ञाफ या झालर  
 लगी हो।  
 संज्ञाव-सज्ञा पु० दे० "सज्ञाफ"।  
 संज्ञीदा-वि० [फा०] [सज्ञा सज्ञीदगी] १.  
 गभार। शात। २. समझदार। बुद्धिमान्।  
 संज्ञीवन-सज्ञा पु० १. जीवन देनेवाला। २.  
 भलों भाँति जीवन व्यतीत करने की  
 क्रिया।  
 संज्ञीवनी-वि० जीवन देनेवाली। मरे हुए को  
 जिलानेवाली।  
 सज्ञा स्त्री० मरे हुए व्यक्ति को जिलानेवाली  
 एक प्रकार की कल्पित धोपधि (बूटी-विशेष)  
 या विद्या। (रामायण की कथा के अनुसार  
 लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर करने के लिए हनुमान  
 जी इस बूटी को धवलागिरि के साथ चूठा  
 लाए थे।)  
 संज्ञीवनी विद्या-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
 कल्पित विद्या, जिससे मृत व्यक्ति को  
 जीवित किया जा सकता है।  
 संज्ञुग\*-सज्ञा पु० सग्राम। लड़ाई।  
 संज्ञुत\*-वि० दे० "सयुक्त"।  
 संज्ञुता-सज्ञा स्त्री० दे० "सयुक्त"। (छद्)  
 संज्ञोड\*-क्रि० वि० सग में। साथ में।  
 संज्ञोडल\*-वि० १. गुराजित। अच्छी तरह  
 सजाया हुआ। २. एकत्र। जमा किया हुआ।  
 संज्ञोग-सज्ञा पु० दे० "सयोग"।  
 संज्ञोगी-सज्ञा पु० दे० "सयोगी"।  
 संज्ञोना†-क्रि० सं० सजाना।  
 संज्ञोवल\*†-वि० १. सजा हुआ। मूसज्जित।  
 २. सेना-सहित। ३. सचेत। होशियार।  
 संज्ञोवना\*-क्रि० सं० सजाना।  
 संज्ञक-वि० सज्ञावाला। जिसकी सज्ञा हो  
 (योगिक में)।  
 सज्ञा-सज्ञा स्त्री० १. ज्ञान या चेतना-शक्ति।  
 ज्ञान। बुद्धि। अकल। २. चेतना। होश। ३.  
 नाम। ४. व्याकरण में वह शब्द, जिससे  
 किसी वस्तु का बोध होता है। जैसे—राम,  
 नदी, घोड़ा। ५. सूर्य की पत्नी, जो  
 विष्वक्कर्मा की कन्या थी।  
 संज्ञाहीन-वि० बेगुश। बेहोश।  
 संज्ञाला†-वि० १. सध्या या शाम का।

२. गंधाला से छोटा और सख्त छोटे से बड़ा।

संज्ञावाची-संज्ञा स्त्री० १. नाम की जगह या जानेवाला बोधा। २. संध्या-समय गाया जानेवाला गीत।

संज्ञा-संज्ञा स्त्री० संध्या। धाम।

संज्ञोक्त-संज्ञा स्त्री० संध्या का समय। धाम का पक्ष।

संज्ञ-संज्ञा पुं० सोड़।

संज्ञमुसंज्ञ-वि० खूब मोटा-नाजा। हट्टा-फट्टा। मूय तगड़ा।

संज्ञा-संज्ञा पुं० [ स्त्री० संज्ञी ] लोहे का एक औजार, जिससे गरम या कसी हुई चीजें पकड़ते हैं।

संज्ञा-वि० हट्टा-फट्टा। मोटा-नाजा।

संज्ञा-संज्ञा पुं० एक प्रकार का पाखाना, जो गहरा-गहड़ा खोदकर बनाया जाता है। गोच-कूप।

संत-संज्ञा पुं० १. साधु-सन्യാसी। महात्मा।

२. ईश्वर-भक्त। धार्मिक पुरुष।

संतत-अव्य० १. सदा। हमेशा। २. लगातार।

संतति-संज्ञा स्त्री० लड़के-लड़कियाँ या बाल-बच्चे। संतान। जीलाद।

संतपन-संज्ञा पुं० १. अच्छी तरह तपने की क्रिया। २. बहुत संताप या दुःख देना।

३. संत होने का भाव। साधुता।

संतप्त-वि० खूब तपा हुआ। दुखी। पीड़ित।

संतरण-संज्ञा पुं० अच्छी तरह से तरने या पार होने की क्रिया।

संतरा-संज्ञा पुं० [ पुं० संगतरा ] एक तरह की नारंगी।

संतरी-संज्ञा पुं० [ अंग्रे०-सैंडरी ] १. पहरा देनेवाला सिपाही। २. पहरेदार। द्वारपाल।

संतान-संज्ञा पुं० और स्त्री० बाल-बच्चे। किसी के लड़के-लड़कियाँ। जीलाद।

संदति।

संताप-संज्ञा पुं० १. ताप। जलन। आँच। २. दुःख। मानसिक कष्ट।

संतापन-संज्ञा पुं० १. संताप देना। सताना।

बहुत दुःख या कष्ट देना। २. कामदेव के पाँच पाणों में से एक।

संतापना\*†-क्रि० स० संताप देना। सताना। दुःख देना।

संतापित-वि० २० "संतप्त"। पीड़ित। सताया गया। दुखी।

संतापी-संज्ञा पुं० संताप देनेवाला। सताने-वाला। दुःख या पीड़ा देनेवाला।

संतोष-अव्य० बदले में। एवज में।

संतुलन-संज्ञा पुं० १. तोल या भार बराबर-बराबर ठीक करना। २. दो पक्षों का बराबर होना या बराबर रहना।

संतुष्ट-वि० जिसे संतोष हुआ गया हो। जिसकी इच्छा पूर्ण या शान्त हो चुकी हो। जिसका जो भर गया हो। तृप्त।

संतुष्टि-संज्ञा पुं० संतोष। सत्र।

संतुष्टीकरण-संज्ञा पुं० २० "सुष्टीकरण"। किसी को संतुष्ट या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।

संतोष-संज्ञा पुं० २० "संतोष"।

संतोष-संज्ञा पुं० १. सत्र। किसी बात की इच्छा न करना और जो कुछ उसके पास है, उसी से प्रसन्न रहना। मन की शान्ति।

किसी बात की चिन्ता न होना। २. जो भर जाना। तृप्ति।

संतोषना\*†-क्रि० स० संतोष दिलाना। संतुष्ट करना।

क्रि० अ० संतुष्ट होना।

संतोषित-वि० २० "संतुष्ट"।

संतोषी-संज्ञा पुं० संतोष-करनेवाला। सत्र करनेवाला। संतुष्ट।

संस्त-वि० १. डरा हुआ। भयभीत। २. पीड़ित। सताया गया। जिसे कष्ट पहुँचा हो। ३. घबराया हुआ। व्याकुल।

संसा-संज्ञा स्त्री० एक बार में पड़ाया हुआ पाठ। सबक।

संब-संज्ञा पुं० १. दरार। छेद। २. दबाव। चंद्रमा।

संबंध-संज्ञा पुं० १. चिमटी। सैंडरी। २. चोर-फाड़ के समय काम आनेवाली एक विशेष प्रकार की छोटी चिमटी।

संबंध-संज्ञा पुं० १. दर्प। घमंड। २. रोखी।

संबंध-संज्ञा पुं० १. रचना। २. विस्तार।

३ तरतीब। विन्यास। ४. सुसंगत या सम्बद्ध। ५. वह पुस्तक, जिसमें अनेक प्रकार की बातों का संग्रह हो। ६. वह ग्रंथ, जिसमें अन्य ग्रंथ के गूढ़ वाक्यों का स्पष्टीकरण या व्याख्या की गई हो। ७. निबंध। लेख।

संज्ञान-संज्ञा पु० १. टकटकी लगाकर देखना। २. अच्छी तरह से देखना।

सदल-संज्ञा पु० चंदन।

सल्ली-वि० चंदन का। सदल के रंग का। हलका पीला (रंग)।

संज्ञा पु० १. एक प्रकार का हलका पीला रंग। २. घोड़े की एक जाति। ३. एक प्रकार का हाथी।

सदिग्ध-वि० [संज्ञा सदिग्धता] १ जिसमें सदेह हो। सदेहपूर्ण। अनिश्चित। २ जिस पर सदेह हो।

सदिग्धता-संज्ञा स्त्री० १ सदिग्ध होने का भाव। सदेह। अनिश्चय। २ अलकार-शास्त्रानुसार एक दोष। किसी उक्ति का ठीक-ठीक अर्थ प्रकट न होना।

सदीपन-संज्ञा पु० [वि० सदीपक] १ उद्दीप्त या उत्तेजित करने की क्रिया। उद्दीपन। २ कामदेव के पांच बाणा में से एक। ३. कृष्ण के गुरु का नाम।

वि० उद्दीपन या उत्तेजना करनेवाला।

सदूक-संज्ञा पु० [अ०] वक्ता। लकड़ी, लोहे आदि की बनी हुई चौकोर पेटी।

सदूकचा-संज्ञा पु० छोटा सदूक।

सदूकड़ी-संज्ञा स्त्री० छाटा सदूक।

सदेह-संज्ञा पु० १ समाचार। खबर। हाल। २. किसी का नाम वही गई विशेष बात। किसी के पास कहलाया या लिखकर भेजा हुआ समाचार। ३. एक प्रकार की बंगला मिठाई।

सदेहा-संज्ञा पु० १ दे० "सदेह"। २ जवानी कहलाया हुआ समाचार। खबर। हाल। सदेहा-संज्ञा पु० सदेहा ले जानेवाला। दूत।

सदेह-संज्ञा पु० १. सदा। शब। समय। किसी के प्रति अविश्वास। २. एक प्रकार का

अर्थालंकार, जिसमें किसी चीज को देखकर सदेह बना रहता है।

संदोह-संज्ञा पु० झूठ। समूह।

संयता\*-क्रि० अ० संयुक्त होना।

संघाता-संज्ञा पु० १ शिव। २ विष्णु।

संधान-संज्ञा पु० १. निशाना लगाना।

२. धनुष पर बाण चढ़ाकर निशाना लगाने की क्रिया। ३. खोज। अन्वेषण। ४.

मिलाना। दो चीजों को मिलाना। ५.

सन्धि। ६. किसी उद्देश्य से किसी ओर

मिलना। मेल मिलाना। ७. लेन-देन का

हिसाब ठीक और पूरा करना। जमा-खर्च

करना। ८. आसानी से न होनेवाले काम

को ठीक तरह से करना।

संधानना\*-क्रि० स० १ निशाना लगाना।

धनुष पर बाण चढ़ाना या बाण छोड़ना।

२ किसी अस्त्र का प्रयोग करने के लिए

उसे ठीक करना।

संघि-संज्ञा स्त्री० १ मेल। संयोग। २.

मिलने की जगह। जोड़। ३. शरीर में का

जोड़, जहाँ दो या अधिक हड्डियाँ आपस में

मिलती हैं। गाँठ। ४. मैत्री। दोस्तों या

राज्या में होनेवाली वह प्रतिज्ञा, जिसके

अनुसार युद्ध बंद किया जाता है अथवा

मिश्रता या व्यापार-संबंध स्थापित किया

जाता है। ५. व्याकरण में शब्दों का रूप-

परिवर्तन, जो दो अक्षरों के पास-पास आने

के कारण उनके मेल से होता है। ६. एक

अवस्था के अंत और दूसरी अवस्था के

आरंभ के बीच का समय। ७. एक युग

की समाप्ति और दूसरे युग के आरंभ का

समय। ८. चौरी आदि करने के लिए

दोबार में किया हुआ छेद। संघ। ९. दो

चीजों के बीच की खाली जगह। १०.

अवसान। ११. सोना। १२. सीमा-रेखा

या पक्ति।

संध्या-संज्ञा स्त्री० १ शाम। सायंवात। दिन

और रात, दोनों के मिलने का समय।

संधिकाल। २. एक विशेष प्रकार की

उपासना, जो प्रतिदिन प्रातःकाल, मध्याह्न

और संध्या के समय होती है।

संध्यावधू-संज्ञा स्त्री० रात।

संध्याराग-संज्ञा पु० १. श्याम-कल्याण राग।

२. सिद्धर।

सन्निकट-संज्ञा पु० पास। समीप।

संन्यास-संज्ञा पु० हिन्दुओं के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम, जिसमें श्यामी और बिरागी होकर किसी फल की इच्छा किए बिना सब काम किए जाते हैं।

संन्यासी-संज्ञा पु० वैरागी। जिसने संन्यास ले लिया हो। संन्यास-आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करने वाला।

संपत्ति-संज्ञा स्त्री० १. धन। दोलत। जाय-दाद। २. ऐश्वर्य्य। वैभव।

संपद-संज्ञा स्त्री० १. ऐश्वर्य्य। वैभव। गौरव। २. सोभाग्य। ३. सिद्धि-प्राप्ति। पूर्णता। ४. अधिकता। ५. किसी व्यापारिक संस्था (कम्पनी) जादि में अपने हिस्से के रूप में लगाई गई पूँजी। ६. ऐसी पूँजी (अंग्रे०-'स्टॉक') का प्रमाणपत्र।

संपदा-संज्ञा स्त्री० १. धन। दोलत। संपत्ति। २. ऐश्वर्य्य। वैभव।

संपन्न-वि० १. भरा-पूरा। २. धनी। ३. पूरा किया हुआ। पूर्ण। ४. सहित। युक्त।

संपरीक्षक-संज्ञा पु० संपरीक्षण या अच्छी तरह जाँच करनेवाला। (अंग्रे०-'स्कूटि-नाइजर')।

संपरीक्षण-संज्ञा पु० [अंग्रे०-'स्कूटिनी'] अच्छी तरह जाँचना। किसी चीज को अच्छी तरह जाँचकर यह देखना कि वह नियम-नुसार है या नहीं।

संपर्क-संज्ञा पु० [वि० संपृक्त] १. संबंध। लगाव। संसर्ग। वास्ता। २. मेल। आपस में अधिक जान-पहचान। संयोग। ३. स्पर्श। ४. मिश्रण।

संपृक्त-वि० दे० "संपृक्त"।

संपा-संज्ञा स्त्री० विजली।

संपात-संज्ञा पु० १. एक साथ गिरना या पड़ना। २. मेल। संसर्ग। ३. समागम। संगम। ४. वह स्थान, जहाँ एक रेखा दूसरी

पर पड़े या उसे काटती हुई आगे बढ़े।

५. कुदान। ६. पहुँच। ७. घटित होना।

८. शेष। बचा हुआ अंश।

संपाति-वि० एक साथ झपटनेवाला।

संज्ञा पु० १. एक गीत, जो गड़ड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नामक राक्षस का एक पुत्र।

संपातो-दे० "संपाति"।

संपादक-संज्ञा पु० १. कोई काम संपन्न या पूरा करनेवाला। २. तैयार करनेवाला।

३. किसी समाचारपत्र, मासिक पत्रिका या पुस्तक का क्रम तथा पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करनेवाला। (अंग्रे०-एडिटर)

संपादकत्व-संज्ञा पु० संपादन करने का भाव या अवस्था।

संपादकीय-संज्ञा पु० संपादक-द्वारा लिखित किसी समाचारपत्र या मासिक पत्रिका आदि का अंशलेख।

वि० १. संपादक का। २. संपादक-संबंधी।

संपादन-संज्ञा पु० १. काम को पूरा करना।

२. ठीक करना। ३. किसी पत्र-पत्रिका या पुस्तक आदि का क्रम, पाठ आदि ठीक करके उसे प्रकाशित करना।

संपादित-वि० १. पूरा किया हुआ। २. क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ। (पत्र-पत्रिका, पुस्तक आदि)

संपुट-संज्ञा पु० १. फूल के दलों का ऐसा समूह, जिसके बीच में खाली जगह हो। कोश। २. पात्र के आवारकी कोई वस्तु। ३. धरति। ४. दोन्त। ५. दिव्य। ६. कपड़े और गीली मिट्टी से तैयार हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या ओषधि भुँकते हैं।

संपुटी-संज्ञा स्त्री० प्याली। कटोरी।

संपूर्ण-वि० १. खूब भरा हुआ। सब। पूरा।

समस्त। २. समाप्त। खतम।

संज्ञा पु० वह राग, जिसमें सातों स्वर संगते हैं (सम्पूर्ण राग)।

संपूर्णतः-वि० वि० पूरी तरह से।

संपूर्णतया-क्रि० वि० पूरी तरह से।  
 संपूर्णता-संज्ञा स्त्री० १. संपूर्ण या पूरा होने का भाव। २. समाप्ति।  
 संपुक्त-वि०-सम्बद्ध। जिससे सम्पर्क या सम्बन्ध हो। जिसका सम्पर्क हो।  
 संपेरा-संज्ञा पु० [स्त्री० संपेरिन] १. साँप पालनेवाला। २. साँप का तमाशा दिखानेवाला। भदारी।  
 संपोला-संज्ञा पु० साँप का बच्चा।  
 संपज्ञा-संज्ञा पु० पूर्ण रूप से जानना। विवेक या विवेचन करना।  
 संप्रज्ञात-संज्ञा पु० योग में समाधि के दो प्रधान भेदों में से एक, जिसमें आत्मा अपने स्वरूप के बोध तक न पहुँची हो।  
 संप्रति-अव्य० १. इस समय। अभी। आजकल। २. मुकाबले में। ३. ठीक तीर पर।  
 संप्रदान-संज्ञा पु० १. पूरी तरह से दे देना। दान देने की क्रिया या भाव। दान। २. भेंट। उपहार। ३. किसी की वस्तु उसे देना या उसके पास तक पहुँचाना। ४. दीक्षा। भरोषादेश। ५. व्याकरण में एक कारक, जिसमें शब्द 'देना' क्रिया का लक्ष्य होता है। इसका चिह्न 'को' है।  
 संप्रदाय-संज्ञा पु० [वि० साम्प्रदायिक] १. कोई विशेष धर्म-संवर्ग। मत। २. किसी मत के अनुयायियों की मंडली। पथ। फिरका। ३. परिपाटी। रीति। चाल।  
 संप्राप्त-वि० [संज्ञा संप्राप्ति] १. पाया हुआ। प्राप्त। २. घटित। जो हुआ हो। ३. पहुँचा हुआ। उपस्थित।  
 संप्राप्ति-संज्ञा स्त्री० १. प्राप्ति। प्राप्त होने या पाने का भाव। २. उपस्थिति। ३. घटित होना।  
 संप्रेक्षक-संज्ञा पु० १. संप्रेक्षण या जाँच करनेवाला। २. आय-व्यय के हिसाब की जाँच करनेवाला।  
 संप्रेक्षण-संज्ञा पु० १. जाँच। खूब ज़रूरी तरह देखना। २. आय-व्यय आदि के हिसाब की जाँच करने का काम। आय-व्यय-निरीक्षण।  
 संप्रेक्षा-संज्ञा स्त्री० दे० "संप्रेक्षण"।

संपोषण-संज्ञा पु० [वि० संपोषित] अच्छी तरह पालन-पोषण करना।  
 संबंध-संज्ञा पु० १. एक साथ बंधना, जुड़ना या मिलना। लगाव। संपर्क। वास्ता। २. नाता। रिश्ता। ३. मेल। संयोग। ४. विवाह। विवाह का निश्चय या सगाई। ५. व्याकरण में एक कारक, जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का संबंध सूचित होता है। इसका चिह्न पुल्लिंग शब्दों से सम्बन्ध होने पर 'का' और स्त्रीलिंग शब्दों से 'की' है। जैसे मोहन का घोड़ा, मोहन की किताब।  
 यौ०-सम्बन्ध में-कारे में। विषय में।  
 संबंधी-वि० [स्त्री० संबंधिनी] १. संबंध या लगाव रखनेवाला। २. चिपयक।  
 सज्ञा पु० वह, जिससे सम्बन्ध या नाता हो। रिश्तेदार। नातेदार।  
 संबद्ध-वि० १. जुड़ा या बंधा हुआ। मिला हुआ। संयुक्त। २. जिससे सम्बन्ध हो या जिससे सम्बद्ध हुआ हो। जिसका किसी के साथ सम्बन्ध लगा हो।  
 सवल-संज्ञा पु० १. रास्ते का भोजन। पायेय। २. सफर-खर्च। ३. वह साधन या सामान आदि, जिसके सहारे कोई काम किया जाय। ४. यात्रा की सामग्री और व्यय के लिए धन।  
 संबुद्ध-संज्ञा पु० १. ज्ञानी। जाग्रत। २. जाना हुआ। ज्ञात।  
 संबोधन-संज्ञा पु० [वि० संबोधित, संबोध्य] १. पुकारना। २. जगाना। ३. जताना। विदित कराना। ४. समझाना-बुझाना। ५. किसी के नाम कोई बात कहना। (अपे०-"एड्रेस")। ६. व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द का प्रयोग किसी को पुकारने या बुलाने के लिए सूचित होता है। जैसे-हूँ राम!  
 संबोधना-क्रि० सं० समझाना-बुझाना। सात्वना देना।  
 संभरण-संज्ञा पु० भरण-पोषण या परवरिश का सामान या उसके लिए इन्तजाम।  
 संभरणविधि-संज्ञा स्त्री० १. भरण-पोषण या

परवरिषा के लिए जमा धन । २. नौकरी से अवकाश ग्रहण करने या बुढ़ापे के समय किसी के भरण-पोषण के लिए जमा किया जानेवाला धन । ३. वह कोष, जिसमें वह धन जमा किया जाय । (अर्थ०—प्राविडेण्ट-फंड)।

संभरना\*—क्रि० अ० दे० "संभलना"।

संभलना—क्रि० अ० १. किसी सहारे पर टिका रह सकना । २. किसी बोझ आदि को धाम रह सकना । ३. कार्य का भार उठाना जाना । ४. सामर्थ्य या होशियार होना । ५. चोट या हानि से बचाव करना । ६. स्वस्थ होना । चंगा होना ।

संभव—वि० हो सकने योग्य । जो हो सके । मुमकिन ।

संज्ञा पु० १. होना । हो सकने योग्य होना । २. उत्पत्ति । जन्म । ३. भेल । संयोग ।

संभवतः—अव्य० हो सकता है । शायद ।

संभवना\*—क्रि० अ० १. संभव होना । २. हो सकना । ३. संभव होना । ४. उत्पन्न या पैदा होना ।

क्रि० सं० उत्पन्न करना ।

संभवनीय—वि० दे० "संभव" ।

संभार—संज्ञा पु० १. तयारी । साज-सामान । २. संचय । इकट्ठा करना । ३. भंडार । वह स्थान, जहाँ एक ही तरह की बहुत-सी चीज इकट्ठी की गई हों या बेचने के लिए रखी गई हों । ४. धन । संपत्ति । ५. पालन । पोषण । ६. समूह । ७. अधिकता ।

संभार\*—संज्ञा पु० दे० "संभाल" । १. देख-रेख । खबरदारी । २. पालन-पोषण । ३. वश या काबू में रखने का भाव । ४. रोक । निरोध । ५. तन-बदन की सुध ।

संभारना\*—क्रि० सं० दे० "संभालना" ।

संभाल—संज्ञा स्त्री० १. मार । देखरेख । २. रखा । हिफाजत । निगरानी । ३. सुधि । ४. तन-बदन की सुध । ५. पालन-पोषण या देख-रेख का भार । प्रबन्ध ।

संभालना—क्रि० सं० १. मार ऊपर ले सकना ।

२. रोके रहना । वश या काबू में रखना ।

३. गिरने न देना । बामना । ४. बचाना । रक्षा या हिफाजत करना । ५. बुरे रास्ते या बुरी दशा में जाने से रोकना । ६. निर्वाह करना । चलावा । ७. पालन-पोषण या परवरिषा करना । ८. देखरेख करना । निगरानी करना । ९. सुदेखना । ठीक तरह से रखना । प्रबन्ध करना । १०. कोई चीज ठीक है या नहीं, इसका इतमीनान कर लेना ।

संभाला—संज्ञा पु० मूरने से पहले कुछ होश-सा जाना ।

संभालू—संज्ञा पु० सफेद सिंधवार पेड़ । मेवड़ी ।

संभावना—संज्ञा स्त्री० १. हो सकना । मुमकिन होना । हो सकने की उम्मीद । २. कल्पना । अनुमान । ३. एक अलंकार, जिसमें किसी एक वाक्य के होने पर दूसरी का होना निर्भर होता है ।

संभावित—वि० १. जिसके होने की संभावना हो । संभव । मुमकिन । २. कल्पित । मन में माना हुआ । जुटाया हुआ ।

संभाव्य—वि० हो सकने योग्य । संभव । मुमकिन ।

संभाव्यतः—क्रि० वि०—जिसके हो सकने की आशा की जा सकती हो । सम्भवतः ।

संभाषण—संज्ञा पु० [ वि० संभाषणीय, संभाषित, संभाष्य ] बातचीत । कंसोपकथन ।

संभाषित—वि० अच्छी तरह कहा हुआ ।

संभाषी—वि० [ स्त्री० संभाषिणी ] कहने-वाला । बातनेवाला ।

संभाष्य—वि० बातचीत करने योग्य । जिससे बातचीत करना उचित हो ।

संभूत—वि० [ संज्ञा संभूति ] १. एक साथ पैदा होनेवाले । २. उत्पन्न । पैदा । ३. सहित ।

संभूय—अव्य० एक साथ । साथ में ।

संभूय-समुत्पात—संज्ञा पु० साथ का कारवार ।

संभोग—संज्ञा पु० १. सुखपूर्वक उपभोग । अच्छी तरह भोग या व्यवहार । २. मेलन । ३. मिलन । संयोग । ४. प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप । ५. पुरुष-स्त्री का समागम ।

संभोगी—वि० संभोग करनेवाला ।

संभ्रम—संज्ञा पु० १. भ्रम । मतिभ्रम । २.

पवराहट। व्याकुलता। ३. सहम। सित-  
पिटाना। ४. आदर। सम्मान। ५. उत्कटा।  
६. शोक। होसता। ७. पूमना। चकर।  
संभ्रांत-वि० १. धूमाया हुआ। २. पवराया  
हुआ। व्याकुल। घेरेन। उद्विग्न। ३. भ्रम  
में पड़ा हुआ। मतिभ्रम। ४. सम्मानित।  
संभ्राजना\*—कि० अ० अच्छी तरह शोभा  
देना। पूरी तरह से सुशोभित होना।

संमत-वि० दे० "सम्मत"।  
संयत-वि० १. दबाव में रखा हुआ। यधीभूत।  
२. रोक। रोक। बंद किया हुआ। -बद्ध।  
बंधा हुआ। जकड़ा हुआ। ३. प्रसन्न।  
व्यवस्थित। ४. जिसने इन्द्रियों और मन को  
बश में किया हो। निग्रही। ५. उचित  
सोमा के भीतर।

संयम-सज्ञा पु० [वि० संयमी, संयमित,  
संयत] १. रोक। किसी वस्तु को बश में  
रखना या बंधना। बंद करना या रोक  
रखना। २. इन्द्रियों को बश में रखना।  
इन्द्रिय-निग्रह। ३. मन को वासनाओं को  
रोकना। चित्तवृत्ति का निरोध। ४  
हानिकारक या बुरी वस्तुओं से बचने की  
क्रिया। परहेज। ५ योग में ध्यान, धारणा  
और समाधि का साधन।

संयमन-सज्ञा पु० दे० "संयम"।  
संयमनी-सज्ञा स्त्री० यमपुरी।  
संयमी-वि० १ संयम करनेवाला। २ मन  
और इन्द्रियों को बश में रखनेवाला। आत्म-  
निग्रही। योगी। ३ हानिकारक वस्तुओं से  
परहेज रखनेवाला।

संयुक्त-वि० १ साथ जुड़ा हुआ। मिला  
हुआ। संबद्ध। २ सहित। साथ। पूर्ण। ३.  
साथ रहकर या मिलकर काम करनेवाला।  
जैसे—संयुक्त राशि (अग्र०—ज्वाइण्ट  
सेन्टेदरी)।

संयुक्तक-सज्ञा पु० किसी पत्र आदि के साथ  
जुड़ा हुआ दूसरा पत्र या कोई कागज  
आदि।

संयुक्तराष्ट्र-संघ-सज्ञा पु० राष्ट्रों का संघ।  
द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्वशान्ति के  
उद्देश्य से संघटित राष्ट्रों का संघ, जिसकी

अनेक शाखाएँ हैं। (अंग्रे०—यूनाइटेड नेशन्स  
ऑर्गनाइजेशन=यू० एन० ओ०।)

संयुक्ता-सज्ञा स्त्री० १. कन्नौज के राजा  
जयचन्द की ब्रह्मा, जिसका अपहरण पृथ्वी-  
राज ने स्वयंवर में से किया था। २. एक  
छंद का नाम।

संयुग-सज्ञा पु० १. संयोग। मेल। मिलाप।  
२. युद्ध। तड़ाई (संस्कृत में)।

संयुत-वि० १. जुड़ा हुआ। मिला हुआ।  
संयुक्त। सम्बद्ध। एक साथ लगा हुआ।  
२ सहित। साथ।

सज्ञा पु० एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में एक  
सगण, दो जगण और एक गुरु होता है।  
संयोग-सज्ञा पु० १ मिलन। प्रेमो और प्रेमिका  
का एक साथ रहना। वियोग का उल्टा। २.  
लगाव। सम्बन्ध। ३. समागम। सहवास।  
४ विवाह-संबंध। ५. योग। जोड़। मीजान।  
६ दो या कई बातों का इकट्ठा होना। ७.  
इत्तफाक। दैवयोग। आकस्मिक घटना।  
अकस्मात्। ८ अवसर। मौका।

संयोग-संयोग से=इत्तफाक से। अकस्मात्।  
संयोगी-सज्ञा पु० [स्त्री० संयोगिनी] १.  
अपनी प्रेमिका के साथ रहनेवाला पुरुष।  
२. मिलनेवाला। मिला हुआ। ३. संयोग  
करनेवाला। ४ विवाहित व्यक्ति।

संयोजक-सज्ञा पु० १. जोड़नेवाला। मिलाने-  
वाला। २. व्याकरण में वह शब्द, जो दो  
शब्दों या वाक्यों के बीच में केवल जोड़ने के  
लिए आता है। योजना करनेवाला। आयो-  
जन या व्यवस्था करनेवाला। सभा-समिति  
का वह मुख्य सदस्य, जो उसकी बैठक बुलाने  
और उसके अध्यक्ष की तरह उसका काम  
चलाने आदि के लिए नियुक्त होता है।

संयोजन-सज्ञा पु० [वि० संयोगी, संयोजनीय,  
संयोज्य, संयोजित] जोड़ने या मिलाने की  
क्रिया। आयोजन। व्यवस्था। सहवास।  
संयोजना-सज्ञा स्त्री० व्यवस्था। इत्तजाम।  
मेल। मिलान।

संयोजित-वि० मिलाया या जोड़ा हुआ।  
संयोजन\*—कि० सं० दे० "संयोजन"।

संरक्षक-सज्ञा पु० [स्त्री० संरक्षिका] १.

रक्षा करनेवाला। रक्षक। २ देख-रेख और पालन-पोषण करनेवाला। अभिभावक। आश्रय देनेवाला। (अग्र०—'पेट्रन')  
**सरक्षण-सज्ञा** पु० [वि० सरक्षी, सरक्षित, सरक्ष्य, सरक्षणीय] १ रक्षा। बचाव। हिफाजत। हानि या नाश आदि से बचाने का काम। २ आश्रय। देखरेख और भरण-पोषण। ३ अधिकार। कब्जा। ४ रोक। ५ किसी बड़ राज्य का किसी छोटे राज्य पर उसकी रक्षा आदि के विषय अधिकार या नियंत्रण। ६ उद्योग व्यापार आदि का रक्षा।  
**सरक्षित-वि०** १ जिसकी रक्षा अच्छी तरह की गई हो। रक्षित। बचाया हुआ। २ अपने सरक्षण या देखरेख में लिया हुआ। अच्छी तरह बचाकर रखा हुआ। भौतिकलकर या हिफाजत से रखा हुआ।  
**संरम्भ-सज्ञा** पु० १ मानसिक आवश्यकता। २ उत्कटा। ३ तालसा। ४ जोस। क्रोध।  
**सराधन-सज्ञा** पु० १ पूजा करके प्रदान करना। २ सेवा करना। सब प्रकार की सेवा करना। ३ चिन्तन करना। एकाग्र चिन्तन। ४ मन का मूण एकाग्र होना।  
**सराय-सज्ञा** पु० १ ध्वनि। शब्द। २ पक्षिया का शब्द।  
**सरोदन-सज्ञा** पु० १ बहुत अधिक शोक करना। २ एक साथ विलाप करना।  
**सलक्ष्य-वि०** १ अच्छी तरह दिखाई पड़नेवाला। २ निशाना लगान योग्य।  
**सलम्न-वि०** १ साथ जुड़ा हुआ। सम्बद्ध। २ गुथा हुआ। मिला हुआ।  
**सलाप-सज्ञा** पु० १ बातचीत। कथापकथन। २ नाटक में एक प्रकार का कथापकथन, जिसमें धीरे-धीरे होती है।  
**सलापक-सज्ञा** पु० १ सलाप या बातचीत करनेवाला। २ एक प्रकार का उपरूपक।  
**सलेख-सज्ञा** पु० नियमानुसार लिखा हुआ। ठीक और प्रामाणिक लेख।  
**सलोभन-सज्ञा** पु० १ 'प्रलाभन'।  
**सपत्-सज्ञा** पु० (सवत्सर का छोटा रूप) वष। साल। सन्। महाराज विक्रमादित्य

के काल से चनी हुई वर्षगणना (विक्रम सवत्)। इस वर्षगणना को हिन्दू मानते हैं, इसलिए इसे हिन्दुआ की वर्षगणना या हिन्दवी सन् कह सकते हैं। जैसे ईसाईयों का ईसवी सन्। यह गणना ईसवी सन् से ५८ वर्ष पहले प्रारम्भ की गई थी। ईसवी सन् में ५७ जोड़ देने से सवत् और बीते हुए सवत् में से ५७ घटा देने पर इसका सन् मालूम हो जाता है।  
**सवत्सर-सज्ञा** पु० १ वर्ष। साल। २ विक्रम-सवत् का एक वर्ष। सवत्।  
**संवर-सज्ञा** स्त्री० १ स्मरण। याद। २ हाल। खबर।  
**सज्ञा** पु० १ राक। परिहार। २ इन्द्रिय-निग्रह ३ बांध। ४ मुल। ५ चुनना।  
**सवरण-सज्ञा** पु० [वि० सवरणीय, सवृत] १ विचार या सूझ को दवाना या रोकना। निग्रह। जैसे, लोभ का सवरण। २ हडाना। दूर रखना। ३ बंद करना। ४ ढाकना। ५ छिपाना। ६ परदा या ढक्कन। ७ पसंद करना। चुनना। ८ कन्या का अपन विवाह के लिए पति चुनना। ९ अन्त करना। जैसे, जीवन-वीला का सवरण।  
**संवरना-फि०** अ० १ सजना। वनना ठनना। अलङ्कृत होना। २ दुस्त या ठीक होना। \*फि० सं० स्मरण करना।  
**सर्वरिया-वि०** दे० 'सर्विला'।  
**सवद्धक-सज्ञा** पु० बढानवाला।  
**सवद्धन-सज्ञा** पु० [वि० सवद्धनीय सवद्धित, सवृद्ध] १ बढना। २ बढाना। ३ पालना। पोसना।  
**सवाद-सज्ञा** पु० १ समाचार। खबर। हाल। २ बातचीत। वयोपकथन। ३ प्रसंग। चर्चा। ४ सहमति। रवा मन्दी। ५ नियुक्ति। ६ मुकदमा। विवाद।  
**सवाबदाता-सज्ञा** पु० १ सवाद या समाचार देनेवाला। खबर देनेवाला। २ समाचार-पत्र में छपने के लिए किसी विषय स्थान या शन के समाचार भेजनेवाला। (अग्र०—'करेगण्डण्ड')  
**सवाबदाता-सज्ञा** पु० १ सवाद या समाचार देनेवाला। खबर देनेवाला। २ समाचार-पत्र में छपने के लिए किसी विषय स्थान या शन के समाचार भेजनेवाला। (अग्र०—'करेगण्डण्ड')

सवादी-वि० [स्त्री० सवादिनी] १ सवाद या बातचीत करनेवाला। २ सहमत या अनुमत्त होनेवाला। भेत म होनेवाला। जैसे, सवादी-स्वर।

सजा पु० समीत में वह स्वर, जो सब स्वरों के साथ मिसता और सहायक होता है।

संवार-सज्ञा पु० शब्दों के उच्चारण में वह बाह्य प्रयत्न, जिसमें कठ कुछ सिकुडता है। सज्ञा स्त्री० १ संवारने की क्रिया या भाव। २ खबर। हाल। ३ एक तरह की गाली या गप-जैसे तुम पर खूदा की संवार।

संवारण-सज्ञा पु० १ हटाना। दूर करना। २ रोकना। निषेध करना। ३ छिपाना। संवारना-क्रि० सं० १ सजाना। २ दुबस्त करना। गलतियाँ को ठीक करना। काम ठीक करना। ३ कम से रखना।

सवास-सज्ञा पु० [वि० सवासित] १ सुगन्ध। खुशबू। महक। २ मुँह से साँस के साथ निकलनेवाली दुर्गन्ध। ३ वास्तव्य या पर। ४ सार्वजनिक निवासस्थान।

सवाहन-सज्ञा पु० [वि० सवाहनीय, सवाहित, सवाही, सवाहा] १ उठाकर ले चलना। डोना। ले जाना। २ पहुँचाना। ३ चलाना। परिचालन।

सविद्-सज्ञा स्त्री० १ ज्ञानशक्ति। चेतना। बोध। २ समझ। बुद्धि। ज्ञान। अच्छी तरह जानना। ३ सवेदन। ४ अनुभव करना। अनुभूति। ५ सवाद। वृत्त। हाल। ६ सज्ञा। नाम। ७ सपत्ति। जायदाद। ८ आपस में समझौता। दे० "सविदा"। ९ युद्ध।

सविद-वि० जिसमें चेतना या ज्ञान हो। चेतन। सज्ञान।

सविदा-सज्ञा स्त्री० कुछ निश्चित शर्तों पर दो या दो से अधिक पक्षों के बीच होनेवाला समझौता। (अप्रे०-काण्ट्रेक्ट)

सविदा-यन्त्र-सज्ञा पु० बहुत पत्र या कागज, जिस पर सविदा की शर्तें लिखी गई हो। ठेकानामा।

सविदा प्रविधि-सज्ञा स्त्री० सविदा (ठेके या

लेन देन) से सम्बन्ध रखनेवाली नियमावली या कानून।

सविदा-विधान-वह कानून, जिसमें सविदा (ठेके, लेन-देन या समझौते आदि) करने के नियमों की व्यवस्था हो (अप्रे०-ला आफ काण्ट्रेक्ट)।

सविधा-सज्ञा स्त्री० १ प्रबन्ध या व्यवस्था करना। २ निश्चय करना। ३ नियम बनाना। ४ निर्देश या आदेश देना। ५ रहन-सहन का तरीका।

सविधान-सज्ञा पु० १ किसी देश, राज्य या सत्ता के संपटन और संचालन की व्यवस्था के लिए बनाया गया विधान या कानून। (अप्रे०-कान्स्टिट्यूशन)। २ प्रबन्ध। व्यवस्था। ३ नियम। ४ रीति।

सविधान-परिषद्-सज्ञा स्त्री० किसी देश या राज्य के शासन की नियमावली आदि बनाने के लिए सचिव परिषद् या सभा। (अप्रे०-कान्स्टिट्यूट एसेम्बली)।

सविधान-सभा-सज्ञा स्त्री० दे० "सविधान-परिषद्"।

सद्वृत्त-वि० १ ठका हुआ। २ छिपा या छिपाया हुआ। ३ घिरा या घेरा हुआ। ४ अलग किया हुआ। रक्षित।

सद्वृद्धि-सज्ञा स्त्री० १ पूर्ण रूप से वृद्धि। पूरा विकास। २ शक्ति। उन्नति। समृद्धि।

सवेद-सज्ञा पु० १ ज्ञान। बोध। समझ। २ अनुभव। वेदना।

सवेदन-सज्ञा पु० [वि० सवेदनीय, सवेदित, सवेद्य] १ अनुभव करना। २ सुख दुःख आदि का अनुभव करना। ३ जानना। ४ ज्ञान। जताना। प्रकट करना।

सवेदनमूत्र-सज्ञा पु० पुरे शरीर में तन्तुओं का वह जाल, जिससे कण्ठ, पीडा, सुख, गर्मी, सर्दी का अनुभव होता है।

सवेदना-सज्ञा स्त्री० १ सहानुभूति। किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुःख। २ मन में होनेवाला बोध। अनुभव। ३ दे० "सवेदन"।

सवेदनीय, सवेद्य-वि० १ अनुभव करने योग्य। समझने लायक। २ बोध करने

या कराने योग्य । अमाने योग्य । अमाने लायक ।

संशय-संज्ञा पु० १. संदेह । अनिश्चय । २. आशंका । डर ।

संशयामक-वि० जिगमें संदेह हो । यदिग्य ।

संशयामा-संज्ञा पु० किसी बात पर विश्वास न करनेवाला । शक करनेवाला । पात्रों ।

संशयात्-वि० संदेह या शक करनेवाला । दे० "संशयी" ।

संशयो-वि० १. संशय या संदेह करनेवाला । २. शंकी ।

संशुद्ध-वि० पूरी तरह से शुद्ध किया हुआ । जिसका सनाधन हो चुका हो । संशोधित ।

संशोधक-संज्ञा पु० १. संशोधन करनेवाला । सुधारनेवाला । दुस्स या ठीक करनेवाला ।

पूरी तरह से शुद्ध करनेवाला । २. चुकता या अदा करनेवाला (संस्कृत में) ।

संशोधन-संज्ञा पु० [ वि० संशोधनीय, संशोधित, संशुद्ध, संशोध्य ] १. शुद्ध करना । साफ करना । २. सुधारना । दुस्स या ठीक करना । ३. प्रस्ताव आदि में कुछ घटाने-जमाने या सुधार करने का सुभाव । (अंग्रे०—एम्प्लोमेंट) ४. चुकता करना । अदा करना (गण आदि) ।

संशोधित-वि० १. शुद्ध किया हुआ । २. सुधार हुआ ।

संश्रय-संज्ञा पु० १. भेल । संयोग । २. लगाव । ३. चरण । आश्रय । ४. सहारा । ५. पर ।

संश्रयण-संज्ञा पु० [ वि० संश्रयणीय, संश्रयी, संश्रित ] १. चरण लेना । २. सहारा लेना ।

संश्रित-वि० १. चरण में आया हुआ । चरणायत । २. दूसरे के सहारे रहनेवाला । आश्रित । ३. लगा या सटा हुआ ।

संश्लिष्ट-वि० १. एक साथ सटा या जुड़ा हुआ । मिला हुआ । सम्मिलित । २. मिश्रित । गड़बड़ ।

संश्लेषण-संज्ञा पु० [ वि० संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लिष्ट ] १. एकन मिलाना । सटाना ।

२. मिलान करना । विश्लेषण का उल्टा । ३. कार्य के कारण, नियम या सिद्धान्त आदि

से उनके फल का विचार करना ।

संस, संसाह—संज्ञा पु० दे० "संशय" ।

संसाहत-वि० १. लग्न । सीन । जनुरस्त । प्रवृत्त । २. सम्बद्ध । किसी सीमा के साथ

सटा या जुड़ा हुआ ।

संसाहित-संज्ञा स्त्री० १. लग्न । सीन । प्रवृत्ति । २. सम्बद्ध । लगाव । ३. एक ही तरह के पदार्थ या वस्त्र का आपस में

मिलकर एक हो जाना । ४. किसी चीज के साथ सटे या जुड़े होने का भाव ।

संसाद्-संज्ञा स्त्री० रस या राग के शासन के लिए मानून बनानेवाली मन्त्रा, जिसके

वस्त्र प्रजा के चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं ।

संसारण-संज्ञा पु० [ वि० संसारणीय, संसारित, संसार ] १. सरलता । चरना । २. एक जन्म से

दूसरे जन्म में जाने की परम्परा । ३. सवार । ४. रास्ता । ५. मुद्र का आरम्भ (संस्कृत में) ।

संसर्ग-संज्ञा पु० १. संग । साथ । २. संबंध । लगाव । ३. भेल । मिलाप । ४. स्त्री-पुरुष

की सहवास ।

संसर्ग-संज्ञा पु० किसी के साथ रहने से पैदा होनेवाली बुराई या दोष ।

संसर्ग-संज्ञा पु० १. संश्रमक रोगों आदि से बचाने के लिए बाहर से आनेवाले लोगों को कुछ दिन तक कहीं अलग रखने का नियम

या व्यवस्था (अंग्रे०—क्वारेण्टाइन) । २. इस काम के लिए अलग किया हुआ स्थान ।

संसर्ग-वि० [ स्त्री० संसर्गिणी ] १. संसर्ग या लगाव रखनेवाला । २. सम्बन्ध या साथ रखनेवाला ।

संसा—संज्ञा पु० दे० "संशय" ।

संसार-संज्ञा पु० १. दुनिया । जगत् । २. दुनिया भर के लोग । ३. गृहस्थी । माया-जाल । ४. बार-बार जन्म लेने की परम्परा ।

आवागमन । ५. लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाते रहना ।

संसार-यात्रा-संज्ञा स्त्री० १. जीवन । जिन्दगी । २. जीवन का निर्वाह । जिन्दगी बिताना ।

संसारो-वि० [ स्त्री० संसारिणी ] १. संसार से सम्बन्ध रखनेवाला । लौकिक । २. दुनियावादी । ३. बार-बार जन्म लेनेवाला । ४.

दुनिया के जाल में फंसा हुआ। ५. लोक-व्यवहार में कुशल। चतुर।

संतिष्ठ-वि० १. अच्छी तरह सीखा हुआ। २. खूब तर। बहुत गीला।

संज्ञा-संज्ञा स्त्री० १. जन्म पर जन्म लेने की परंपरा। आवागमन। २. संसार। दुनिया।

संश्लिष्ट-वि० १. एक साथ-उत्पन्न। २. एक में मिला-जुला। मिश्रित। शामिल। ३. संयुक्त। परस्पर लगा हुआ। ४. संगृहीत।

संश्लिष्ट-संज्ञा स्त्री० १. एक साथ उत्पत्ति। २. मिलावट। मिश्रण। ३. लगाव। संबंध। ४. हेतुमेल। घनिष्ठता। ५. संग्रह। इकट्ठा करना। ६. शामिल। ७. काव्य में दो या अधिक अलंकारों का ऐसा मेल, जिसमें सब चलन-अलग हों।

संस्करण-संज्ञा पुं० १. दोष दूर करके ठीक करना। शुद्ध करना। २. सुधारना। ३. नियमित, संस्कार करना। ४. पुस्तकों को एक बार की छपाई। आवृत्ति (अंग्रे-एडिशन)।

संस्कर्ता-संज्ञा पुं० संस्कार करनेवाला।

संस्कार-संज्ञा पुं० १. ठीक करना। सुधार। दुरुस्ती। २. साफ करना। परिष्कार। ३. शिक्षा, उपदेश, संग - साथ, खानदान या पिछले जन्म आदि का मन पर पड़ा हुआ प्रभाव। ४. धर्म की दृष्टि से शुद्ध करना। शुद्धि। ५. हिन्दुओं के १६ कृत्य या संस्कार, जो जन्म से लेकर मरण-काल तक के सवध में आवश्यक होते हैं। जैसे, यज्ञोपवीत-विवाह आदि। ६. मृतक की क्रिया। अन्त्येष्टि-क्रिया। ७. वचि, आचार-विचार आदि को उन्नत या सुधार करने का कार्य।

संस्कारहीन-वि० जिसका संस्कार न हुआ हो।

संस्कृत-वि० १. शुद्ध किया हुआ। २. संवारा हुआ। ३. परिष्कृत। साफ किया हुआ। ४. सुधारा हुआ। ५. जिसके यज्ञोपवीत आदि संस्कार हो चुके हों।

संज्ञा स्त्री० भारतीय भाषों की प्राचीन साहित्यिक भाषा। देववाणी।

संस्कृति-संज्ञा स्त्री० १. सम्प्रदाय। २. रहन-सहन का तरीका। ३. संस्कार। ४. शुद्धि। सफाई। ५. सुधार। संजावट।

संस्था-संज्ञा स्त्री० १. किसी विशेष कार्य या उद्देश्य के लिए संघटित समाज। मंडल। २. सभा। ३. जत्था। ४. व्यवस्था। ५. विधि। ६. मर्यादा। ७. व्यवसाय। ८. राजनीतिक या सामाजिक जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली कोई प्रथा, नियम या विधान।

संस्थान-संज्ञा पुं० १. साहित्य, कला, विज्ञान आदि की उन्नति के लिए स्थापित समाज। २. ठहराव। स्थिति। ३. स्थापन। बैठाना। ४. सडा या डटा रहना। जमा रहना। ५. सम्यक् गालन। ६. जीवन। अस्तित्व। ७. वस्ती। ८. जनपद। ९. डेरा। घर। १०. आयोजन। ११. ढाँचा। १२. विन्यास। १३. प्रवन्ध। व्यवस्था। १४. दगा। १५. योग। जोड़। १६. समष्टि। १७. लोगों के इकट्ठे होने की जगह। सार्वजनिक स्थान।

संस्थापक-संज्ञा पुं० १. स्थापित करनेवाला। २. नई बात जारी करनेवाला। प्रवर्तक। संस्थापन-संज्ञा पुं० १. स्थापित करना। २. नई बात चलाना। ३. भवन आदि खडा करना। ४. जमाना। बैठाना।

संस्मरण-संज्ञा पुं० १. ऐसा लेख, जिसमें कोई याददाश्त लिखी गई हो। किसी व्यक्ति के बारे में स्मरण या याद करनेवाली घटनाओं का उल्लेख। २. पूर्ण स्मरण। अच्छी तरह स्मरण करना या नाम लेना।

संस्मारक-संज्ञा पुं० स्मरण करानेवाला। संहत-वि० १. खूब मिला हुआ। जुड़ा या सटा हुआ। समुक्त। २. कडा। सक्त। ३. गड़ा हुआ। ४. घना। ५. मजबूत। ६. एकन। इकट्ठा। ७. आहत। घायल।

संहति-संज्ञा स्त्री० १. मेल। इकट्ठा होने की क्रिया या भाव। २. राशि। डेर। समूह। सुड। ३. ठोसपन। घनत्व। ४. सधि। जोड़।

संहनन-सजा पु० पूरा हनन या नाश कर देना।

संहारना-क्रि० अ० नष्ट होना। संहार होना।  
क्रि० स० संहार करना।

संहार-सजा पु० १. नाश। ध्वस्त। २. समाप्ति। अन्त। ३. निवारण। परिहार। ४. कल्पान्त। प्रलय। ५. इकट्ठा करना। घटोत्तना। ६. शूयना। ७. समेटकर बाँधना (चोटी)। ८. छोड़े हुए बाण को फिर बापस लेना।

संहारक-सजा पु० संहार करनेवाला। नाशक।

संहार-काल-सजा पु० प्रलय-काल।

संहारना-क्रि० स० १. मार डालना। २. नाश करना। ध्वस्त करना।

सहित-वि० १. एकत्र किया हुआ। मिलाया हुआ। २. जुड़ा हुआ।

सहिता-सजा स्त्री० १. मेल। २. मिलापट। ३. व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का मिलकर एक हो जाना। संधि। ४. वह श्रव्य, जिसमें पद, पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला जाता हो। जैसे, धर्म-सहिताएँ या स्मृतिपर। ५. बेबी का मन्त्र-भाग।

सह-अव्य० १. से। २. साथ। ३. एक विभक्ति, जो करण और अपादान कारक का चिह्न है।

सकट-सजा पु० दे० "शकट"। गाड़ी। छकड़ा।

सकता-सजा स्त्री० १. शक्ति। बल। २. सामर्थ्य। ३. वैभव। संपत्ति।

क्रि० वि० जहाँ तक हो सके। भरसक।

सकता-सजा स्त्री० शक्ति। तावत। बल। सामर्थ्य।

सजा पु० १. घेहोमी की बीमारी। २. विराम। यति। ३. यति-भग्न शोष (कविता में)।

मुहा०—सकता पड़ना—छद में यति-भग्न दाप होना।

सकती-सजा स्त्री० दे० "शक्ति"।

सकपकाना-क्रि० अ० १. चक्कना। २. हिचकना। ३. डर और आश्चर्य से उत्पन्न हिचक।

सकरना-क्रि० अ० सकारा जाना। स्वीकार या मजूर होना। माना जाना।

सकरपाला-सजा पु० दे० "सकरपाग"।

सकरा-वि० दे० "सकरा"।

सकर्मक-वि० १. कर्म से युक्त (व्याकरण में)। २. काम में लगा हुआ। क्रियाशील।

सकर्मक क्रिया-सजा स्त्री० व्याकरण में वह क्रिया, जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त हो। जैसे—लेना। देना। खाना।

सकल-वि० सब। समस्त। कुल।

सकलात-सजा पु० १. सीगात। भेंट। २. रजाई। दुलाई। ३. मखमल (कपड़ा)।

सकलाती-वि० १. भेंट में देने लायक। २. बहुत बढ़िया। ३. मखमल का। मखमली।

सकसकाना, सकसाना\*†-क्रि० अ० डर के मारे काँपना। जुबान में तबोअत भारी होना। अस्वस्थ होना।

सकाना\*†-क्रि० अ० १. शपथ या सदेह करना। हिचकना। २. डर आदि के कारण सकोच करना। ३. दुखी होना।

सकाम-सजा पु० १. वह व्यक्ति, जिसे कोई कामना या इच्छा हो। २. फल मिलने की इच्छा से कोई काम करनेवाला। ३. जिसे कामवासना हो। कामी।

सकामी-सजा पु० वासनायुक्त। कामी। शिपरी।

सकारना-क्रि० अ० १. स्वीकार करना। मजूर करना। २. महाजनों का हुओं की निनी पूरी होने के एक दिन पहले उस पर हुस्ताशर करना।

सकारे†-क्रि० वि० सवेरे। जल्दी।

सकिलना†-क्रि० अ० १. फिसलना। सरचना। २. सिमटना।

सकुच\*†-सजा स्त्री० दे० "सकोच"। लाज। शर्म।

सकुचना-क्रि० अ० १. सकोच करना। लज्जा करना। घरमाना। २. पूला या बन्द होना। सिमटना। सिकुटना।

सकुचाई\*-सजा स्त्री० दे० "सकोच"। लज्जा।

सकुचाना-क्रि० अ० सकोच करना। लज्जा करना।

क्रि० स० १. सिकोडना। २. लज्जित करना।  
सकुचो-सज्ञा स्त्री० कटुण के जाकार की एक प्रकार की सछली।

सकुचोला-वि० सकोच करनेवाला। शर्मिला। लज्जीला।

सकुचोली-वि० लजानेवाली। लाजवती। लज्जीली।

सकुचोर्हा-वि० सकोच करनेवाला। लज्जीला।  
सकुन\*-सज्ञा पु० १. दे० "शकुन"। २. दे० "शकुत" (चिड़िया)।

सकुनी\*†-सज्ञा स्त्री० चिड़िया।

सकुपना\*-क्रि० अ० दे० "सकोपना"।

सकुल्य-सज्ञा पु० एक ही कुल या वंश का। सघोन।

सकूनत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ रहने की जगह। निवासस्थान। २ पता।

सकृत्-अव्य० १ एकवार। २ सदा। ३ साथ।  
सकैत\*†-सज्ञा पु० १ दे० "संगेत"। इशारा।

२ प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का निश्चित स्थान। ३ विपत्ति। दुख। कष्ट। ४ तग। कम जगह।

वि० तग। सकुचित।

सकैतना\*†-क्रि० अ० दे० "सिकुडना"।

सकेलना\*†-क्रि० स० इकट्ठा करना। जमा करना।

सकोच-सज्ञा पु० दे० "सकोच"।

सकोचना-क्रि० स० दे० "सिकोडना"।

सकोपना\*†-क्रि० अ० कोप या कोथ करना। गुस्सा करना।

सकोरा-सज्ञा पु० दे० "कसोरा"। मिट्टी का एक प्रकार का कटोरा या प्याला।

सक्का-सज्ञा पु० [अ०] भिखरी।

सक्ति-सज्ञा स्त्री० दे० "शक्ति"।

सक्कु, सक्कु-सज्ञा पु० भुने हुए अनाज का आटा। सत्तु।

सक्क\*-सज्ञा पु० दे० "शक्"। इद्र।

सक्कारि\*-सज्ञा पु० दे० "शक्कारि"। मेघनाद (इन्द्र का शयु)।

सक्किय-वि० [सज्ञा सन्नियता] जो कार्य के

रूप में हो रहा हो। क्रियाशील। जिसमें कुछ करके दिखलाया जाय। जिसमें क्रिया भी हो। क्रिया के साथ।

सक्षम-वि० [सज्ञा सक्षमता] १. समर्थ। २.

जिसमें क्षमता या सामर्थ्य हो। किसी काम को पूरी तरह करने योग्य या उसका अधिकारी।

सख-सज्ञा पु० दे० "सखा"।

सखरस-सज्ञा पु० मक्खन।

सखरा-सज्ञा पु० १. दे० "सखरी"। कच्ची रसीई। २. निखरा का उल्टा।

वि० खारा।

सखरी-सज्ञा स्त्री० कच्ची रसीई। जैसे-  
दाल-भात।

सखा-सज्ञा पु० १ साथी। २ मित्र। दोस्त।  
३ साहित्य में 'नायक' का सहचर। ये चार प्रकार के होते हैं—पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

सखावत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ उदारता।  
२ दानशीलता।

सखो-सज्ञा स्त्री० १ सहेली। सहचरी। २. साहित्य में नायिका के साथ रहनेवाली स्त्री, जिससे वह अपनी कोई बात न छिपाये।

३ १४ मात्राओं का एक छंद।

सखीभाव-सज्ञा पु० एक प्रकार की भक्ति, जिसमें भक्त अपने को इष्टदेवता की पत्नी या सखी मानकर उसकी उपासना करते हैं।

सख्खा-सज्ञा पु० दे० "शाल"। सागौन। एक प्रकार का पेड़ और उसकी लकड़ी।

सखुन-सज्ञा पु० [फा०] १ बातचीत। बात-लाप। २ वचन। कथन। उक्ति। ३. कविता। ४ काव्य।

सखुन-तकिया-सज्ञा पु० [फा०] ऐसे शब्द, जो किसी के मुँह से बातचीत में बेजल्दत बार-बार निकलें। तकिया कलाम।

सखत-वि० [फा०] १ कडा। कठोर। कठिन। मुश्किल। २ कठोर व्यवहार। ३ कडाई करनेवाला।

क्रि० वि० बहुत अधिक।

सस्ती-सज्ञा स्त्री० माडापन। कडाई। कठोरता (व्यवहार आदि के अर्थ में)।

संख्य-सज्ञा पु० १. सखा का भाव। मित्रता। दोस्ती। २. एक प्रकार की भक्ति, जिसमें भक्त इष्टदेव को अपना सखा मानकर उनकी उपासना करता है।

संगण-सज्ञा पु० छंदशास्त्र में एक गण, जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होते हैं। इसका रूप ॥३॥ है।

संग-ग्रहणी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की दाल जो संग मिलाकर बनाई जाती है।

संगवध-सज्ञा पु० चहल-पहल। हिलना-डलना।

वि० १ सजग। चौकता। २. सराबोर। तर-वतर। लयपथ। ३ भरा हुआ। परिपूर्ण। क्रि० वि० चटपट। तेजी से। जल्दी से। संगमगाना-क्रि० अ० १ सकलकाना। शक्ति होना। २ हिलने-डुलने लगना। ३ सजग होना। चौकता होना। ४ तरवतर होना। सराबोर होना। लयपथ होना।

सगर-सज्ञा पु० अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा, जो बड़े धर्मात्मा और प्रजापालक थे। पुराण के अनुसार इनके ६० हजार पुत्र थे। राजा भगीरथ इन्हीं के वंश के थे।

सगरा-वि० [स्त्री० सगरी] सकल। सब। समस्त। सारा।

सज्ञा पु० तालाब।

सगल-वि० दे० "सकल"।

सगा-वि० [स्त्री० सगी] १. एक ही माता से उत्पन्न। सहोदर। २ जो संरध में अपने ही मूल या खानदान का हो।

सगाई-सज्ञा स्त्री० १. विवाह का निश्चय। मंगनी। २. संबंध। नाता। रिश्ता। ३ छोटी जातियों में स्त्री-पुरुष का वह सम्बन्ध, जो विवाह न होने पर भी विवाह के मानानुमाना जाता है।

सगापन-सज्ञा पु० सगा होने का भाव। अनापन। अलमियता।

सगारत-वि०-सज्ञा स्त्री० दे० "सगापन"।

सगुण-सज्ञा पु० १. ईश्वर का साकार रूप। मूर्त, रज और तम, तीनों गुणों से युक्त ईश्वर का रूप। साकार ब्रह्म। २. वह

संप्रदाय, जिसमें ईश्वर का सगुण रूप मानकर अवतारों की पूजा होती है।

सगुण-सज्ञा पु० १. दे० "शकुन"। २. दे० "मयुण"।

सगुनाना-क्रि० स० १. शकुन बतलाना।

२. शकुन निकालना या देखना।

सगुनिया-सज्ञा पु० शकुन विचारने और बतलानेवाला।

सगुनी-सज्ञा स्त्री० शकुन विचारने की क्रिया या भाव।

सगोती-सज्ञा पु० १. दे० "सगोन"। एक गोन के लोग। २. भाई-बंधु।

सगोन-सज्ञा पु० एक ही गोन के लोग। सजातीय।

सगड-सज्ञा पु० १. शकट। २. बोझ ढोने की एक प्रकार की गाड़ी। ठेला। (बिहार में बोड़े जूती गाड़ियों को सगड कहते हैं।)

सघन-वि० [सज्ञा सघनता] १. घना। गहिरा। २. ठोस। ठस।

सघनता-सज्ञा स्त्री० सघन या घना होने का भाव।

सच-सज्ञा पु० दे० "सत्य"।

वि० १ जो यथार्थ हो। २ जैसा हो वैसा ही कहा हुआ। वास्तविक या बिल्कुल सही।

सचना-वि०-क्रि० स० १. सच करना। बचा-कर रखना। २. इकट्ठा करना। पूरा करना।

क्रि० अ०, स० दे० "सजना"।

सचमुच-अव्य० १. सच में ही। नि सन्देह। ठीक-ठीक। वास्तव में। २. अवश्य। निश्चय।

सचरता-वि०-क्रि० अ० १. सचरित होना। फैलना। २. संचार करना। ३. किसी पदार्थ का बहुत अधिक व्यवहार में आना। ४. बहुत प्रचलित होना।

सचरावर-सज्ञा पु० ससार के चर (चेतन) और अचर (जड़) सभी जीव तथा पदार्थ। समस्त ससार।

सचल-वि० [सज्ञा सचलता] चलने-फिरने-वाला। चलता हुआ। जो स्थल न हो।

सचाई-सजा स्त्री० १. सच होने का भाव । सत्यता । २. यथार्थता । वास्तविकता ।  
 सचान-गजा पु० वाज चिड़िया ।  
 सचारना\*†-क्रि० स० सचरना का सकर्मक रूप । फँसाना ।  
 संचित-वि० चित्तित । जिससे चित्ता हो ।  
 सचिवकण-वि० बहुत अधिक चित्ता ।  
 सचिव-सजा पु० १ मंत्री । वजीर । २ मित्र । दोस्त । ३. सहायक । ४. किसी विभाग का प्रधान, जो मंत्री के अगुआ हो ।  
 सचिवालय-गजा पु० किसी सरकार या बड़ी संस्था के मंत्रियों, सचिवों तथा विभागीय अधिकारियों के प्रधान कार्यालय ।  
 (अंग्रे०-सेक्रेटेरियट)  
 सची-सजा स्त्री० दे० "सची" ।  
 सच्चा\*†-गजा पु० १. सूर । आनंद । २. प्रसन्नता । खुशी ।  
 सचेत-वि० १ चेतनायुक्त । चेतन । २. सावधान । होशियार ।  
 सचेतक-सजा पु० १ सावधान करनेवाला । २ विधान-मंडली में किसी पार्टी या दल का वह नेता, जो मतदान के विषय में सदस्यों को निर्देश देता है (अंग्रे०-क्लियर) ।  
 सचेतन-सजा पु० १ जिसमें चेतना या ज्ञान हो । विवेकयुक्त । २. चेतन । जीवपारो । वि० १ चेतनायुक्त । जो जड़ न हो । २. सचेत । सावधान । चतुर । ३. समझदार ।  
 सचेष्ट-वि० १ जिसमें चेष्टा हो । चेष्टा करनेवाला । २. प्रयत्नशील । सजग । जो चेष्टा या प्रयत्न कर रहा हो ।  
 सच्चरित, सच्चरित्र-वि० अच्छे चरित्र या चाल-चलनवाला । सदाचारी ।  
 सच्चा-वि० [ स्त्री० सच्ची ] १ सच बोलनेवाला । सत्यवादी । २ यथार्थ । विलकुल ठीक । वास्तविक । ३. असली । विशुद्ध ।  
 सच्चाई-सजा स्त्री० सच्चा होने का भाव । सत्यता ।  
 सच्चापन-सजा पु० दे० "सच्चाई" ।  
 सच्चिदानन्द-सजा पु० (सत्, चित् और आनंद से युक्त) परमात्मा । ईश्वर ।  
 सच्छद\*-वि० दे० "सच्छद" ।

सज-सजा स्त्री० १. सजावट । २. सजने की क्रिया । ३. रूप । ४. बनावट । गढ़न । ५. शोभा । सौन्दर्य ।  
 सजग-वि० सावधान । सचेत । होशियार ।  
 सज-यज-गजा स्त्री० [ अनु० ] सजावट । बनाव-संगार । ठाट-बाट ।  
 सजन-गजा पु० [ स्त्री० सजनी ] १. सज्जन । भला आदमी । शरीफ । २. पति । ३. प्रियतम ।  
 सजना-वि० अ० १ मुमज्जिद होना । २. श्रृंगार करना ।  
 क्रि० स० १ सजाया जाना । २ अलंकृत करना ।  
 सजल-वि० [ स्त्री० सजला ] १ जल से युक्त । पानी से भरा हुआ । २ आँसुओं से भरे हुए (नेत्र) ।  
 सजवाई-सजा स्त्री० सजवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।  
 सजवाना-क्रि० स० दूसरे से सजाने का काम कराना ।  
 सजा-गजा स्त्री० [ फा० ] दंड । जेल में रखने का दंड ।  
 सजाई\*†-सजा स्त्री० दे० "सजा" ।  
 सजाई-गजा स्त्री० सजाने की क्रिया, भाव या मजदूरी ।  
 सजागर-वि० १ जागता हुआ । २ दे० "सजग" । होशियार ।  
 सजाति, सजातीय-वि० एक ही जाति का । एक ही गोत्र का ।  
 सजान\*-सजा पु० १ जानकार । समान । २ चतुर । होशियार ।  
 सजाना-क्रि० स० १ वस्तुओं को यथास्थान ऐसा रखना, जिससे सुन्दरता बढ़े । २ तरतीब लगाना । यथाक्रम रखना । ३ श्रृंगार करना । संवारना ।  
 सजाव\*†-सजा स्त्री० दे० "सजा" ।  
 सजायाफ़्त, सजाया-सजा पु० [ फा० ] जो कैद की सजा भोग चुका हो ।  
 सजाव-सजा पु० एक प्रकार का बही, जो अच्छी तरह जम गया हो और जिस पर छाँकी पड़ी हो ।

सजावट-सजा स्त्री० १. सज्जित होने या सजाने का भाव। तैयारी। २. शोभा।

सजावन\*†-सजा पु० सजाने या तैयार करने की क्रिया। सजावट।

सजावल-सजा पु० लगान या कर वसूलने-वाला कर्मचारी। जमादार। सिपाही।

सजावार-वि० [फा०] दंड पाने योग्य। दण्डनीय। उचित। जाजिय।

सजीउ\*†-वि० दे० "सजीव"।

सजीला-वि० [स्त्री० सजीली] १ सजा हुआ। सुंदर। मनोहर। २ सजधज के साथ रहनेवाला। छेला।

सजीव-वि० १ चेतन। प्राण-युक्त। जिन्दा। जीवित। २ जिसमें उत्साह या स्फूर्ति हो। जिसमें तेज या धीज हो।

सजीवता-सजा स्त्री० सजीव होने का भाव।

सजीवन-सजा पु० दे० "सजीवनी"।

सजीवन मूर, सजीवन मूल\*-सजा पु० दे० "सजीवनी"।

सजीवनी मन-सजा पु० बहू कल्पित मन, जिसके सबध में लोग का विश्वास है कि यह मरे हुए को जिलाने की शक्ति रखता है।

सज्जुग\*†-वि० दे० "सज्ज"। सचेत।-

सज्जुरी-सजा स्त्री० एप तरह की मिठाई।

सज्जाना†-वि० स० दे० "सजाना"।

सज्ज\*-सजा पु० दे० "साज"। सजा हुआ। सुसज्जित।

सज्जन-सजा पु० १ नला जादमी। शराफ। २ अच्छे स्वभाववाला। सम्म व्यक्ति।

सज्जनता-सजा स्त्री० सज्जन होने का भाव। भलमसाहत। सौजन्य। शराफत।

सज्जनताई\*-सजा स्त्री० दे० "सज्जनता"।

सज्जा-सजा स्त्री० १ दे० "शय्या"। २ दे० "शय्यादान"। ३ सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। ४ वेप भूषा।

सज्जित-वि० १ सजा हुआ। सुशोभित। अलंकृत। २ आवश्यक वस्तुओं से युक्त।

सज्जी-सजा स्त्री० भूरे रंग का एक प्रसिद्ध धार (धारी मिट्टी), जिससे कपड़े, गहने आदि चीजें साफ की जाती हैं।

सज्जीधार-सजा पु० दे० "सज्जी"।

सज्ञान-वि० १. जिस ज्ञान हो। ज्ञानयुक्त। २ चतुर। बुद्धिमान।

सटप-सजा स्त्री० [अनु०] १. मटकने की क्रिया या भाव। धीरे से गिराया जाता। चुचाप चल देना। २ हुकना पीने की दबी लकीली नली। नैचा। ३ पतली लचनेवाली छड़ी।

सटकना-क्रि० अ० धीरे से गिराया जाता। चुपचाप चल देना। चपत होना।

क्रि० स० वाला में से अनाज निकालना। सटकाना-वि० स० छड़ी, कोड़े आदि से मारना।

सटकार-सजा स्त्री० [अनु०] सटकाने की क्रिया या भाव। गाय, बेल आदि को हौकने की क्रिया। हटकार।

सटकारना-वि० स० [अनु०] छड़ी या कोड़े से मारना। सट-सट मारना। गाय, बेल आदि हौकना।

सटकारा-वि० चिबना धीरे लया (वाल)।

सटकारी-सजा स्त्री० लचनेवाली छड़ी।

सटना-क्रि० अ० १ चिपकना। जुड़ना। दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना, जिसमें दोनों एक दूसरे से लग जायें। २ मारपीट होना।

सटपटाना-क्रि० अ० दे० "सिटपिटाना"।

सटरपटर-सजा स्त्री० १ बसेड़े या उत्पन्न का कास। २ किसी तरह काम में फँसा रहना।

३ कोई काम किसी तरह खत्म करना। वि० छोटा-मोटा। तुच्छ। मामूली।

सटसट-क्रि० वि० [अनु०] १ सीध। जल्दी। २ सट-सट शब्द के साथ। सटासट। ३ लगातार।

सटाना-क्रि० स० १ मिलाना। २ दो चीजों को एक साथ जोड़ना।

सटीक-वि० १ बिल्कुल ठीक। २ जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। व्याख्या सहित। सटीपिया-सजा पु० दे० "सट्टबाज"।

सट्टक-सजा पु० प्राकृत भाषा में रचा गया छोटा रूप।

सट्टा-सजा पु० १ वास्तकारा में सत के

साक्षे के बारे में होनेवाला समझौता।  
इकरारनामा। २. एक प्रकार का व्यापारिक  
जुआ, जिसमें वस्तुओं के बाजार-भाव को  
पहले से ही तेजी-मंदी के विचार से तय  
करके उन्हें खरीदा और बेचा जाता है।  
(अर्थ-स्पेशलेशन)।

सट्टा-बट्टा-सज्ञा पु० १. मेल-मिलाप। हेल-  
मेल। २. चालवाजी। ३ अनुचित सम्बन्ध।

सट्टी-सज्ञा स्त्री० बहु बाजार, जिसमें एक ही  
मेल की चीजें निश्चित समय पर विकती  
हैं। हाट।

सट्टेबाज-सज्ञा पु० [स्त्री० सट्टेबाजी]  
१ बाजार-भाव की तेजी-मंदी के विचार  
से खरीद और विक्री करनेवाला। २ इस  
प्रकार का व्यापारिक जुआ खेलनेवाला।  
सट्टियाना-क्रि० अ० १ साठ वर्ष का होना।  
२ बुढ़ा होना। ३ बुढ़ापे के कारण बुढ़ि  
का मन्द हो जाना।

सठोरा-सज्ञा पु० दे० "सोठीरा"।

सड़क-सज्ञा स्त्री० १ चौड़ा रास्ता। मार्ग।  
आम रास्ता। २ राजमार्ग।

सड़न-सज्ञा पु० १ सड़ने की क्रिया या भाव।  
२ सड़न से पैदा होनेवाली बदबू।

सड़ना-क्रि० अ० १ गलना। किसी चीज में  
ऐसी खराबी पैदा होना, जिससे उसके धग  
गलने लगे और उसमें बदबू आने लगे। २  
पानी मिली हुई चीज में खमीर उठना या  
आना। ३ बुरी हालत में पड़ा रहना।

सड़सड़-सज्ञा पु० साठ और सात की  
संख्या। ६७।

सड़सी-सज्ञा स्त्री दे० "सैंडसी"। पतले लोहे  
के छड़ों का एक बाजार, जो नूले पर से  
गन जटली हुई आदि उतारने के काम में  
आता है।

सड़ाना-क्रि० स० किसी चीज को सड़ने  
देना।

सड़ाप्य-सज्ञा स्त्री० सड़ी हुई चीज की  
दुर्गन्ध या बदबू।

सड़ाव-सज्ञा स्त्री० सड़ने की क्रिया या भाव।  
सड़ासड़-अव्य० १ सड़सड़ शब्द के साथ।  
जिसमें सड़ शब्द हो। २ जल्दी जल्दी।

सड़ियल-वि० १. सड़ा हुआ। गला हुआ। २.  
रही। ३ निकम्मा। ४. नीच। तुच्छ।  
सतत\*-अव्य० दे० "सतत"।

सत-सज्ञा पु० १. सत्यता। सच्चाई। २.  
सदाचार। ३ सार। मूल तत्त्व। निचोड़।  
४ जीवन-शक्ति। ५ ताकत।

वि० १ दे० "सत्"। २. दे० "सत"। ३.  
'सात' की संख्या का संक्षिप्त रूप—योगिक  
में, जैसे—सतमासा, सतलडा हार।

मुहा०—सत चटना\*—किसी काम को  
पूरा करने की जिद होना। झक या धुन  
सवार होना। सत पर चटना—अपने पति  
के शव के साथ चिता पर जलकर सती  
होना। सत पर रहना—पतिव्रता रहना।  
अपने वचन या प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहना।

सतकार-सज्ञा पु० दे० "सत्कार"।

सतकारना\*-क्रि० स० आदर करना।

सतगुरु-सज्ञा पु० १ अच्छा गुरु। २ पर-  
मात्मा। ईश्वर।

सतजुग-सज्ञा पु० दे० "सत्ययुग"।

सतत-अव्य० सदा। लगातार। निरन्तर।

सतनजा-सज्ञा पु० सात तरह के अनों का  
मेल। . . .

सतपदी-सज्ञा पु० दे० "सप्तपदी"।

सतपुतिया-सज्ञा स्त्री० एक तरह की तरौई,  
जिसको तरकारी बनती है।

सतफेरा-सज्ञा पु० दे० "सप्तपदी"। विवाह  
क समय आग की सात परिक्रमा करना।

सतभाव, सतभाव-सज्ञा पु० दे० "सद्भाव"।

सतमासा-सज्ञा पु० १ गर्भ के सातवें महीने  
वाद ही उत्पन्न होनेवाला बच्चा। २ गर्भ  
के सातवें महीने में किया जानेवाला एक  
विशेष संस्कार या कृत्य।

सतमूली-सज्ञा स्त्री० सतावर।

सतयुग-सज्ञा पु० दे० "सत्ययुग"।

सतरगा-वि० सात रंगोवाला।

सज्ञा पु० इन्द्रधनुष।

सतर-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. लकीर। रेखा।

२ पक्ति। कतार। ३ मनुष्य की गुप्त  
इंद्रिय। ४ ओढ़। आड़।

वि० १ टेढ़ा। चक्र। २. कुढ़। नाराज।

सतराना-क्रि० अ० १. शोध करना। २ चिढ़ना।

सतराहट-सज्ञा स्त्री० १ शोध। चिढ़ने का भाव। २ चिढ़ना।

सतरौही-वि० १ क्रुद्ध। नाराज। २ चिढ़ने-वाला। ३ शोधसूचक।

सतरक-वि० [सज्ञा सतरकता] १ सावधान। सजग। होशियार। २ तर्कयुक्त। युक्ति से पुष्ट।

सतरपना-क्रि० स० अच्छी तरह सतुष्ट या तुष्ट करना।

सतलज-सज्ञा स्त्री० पंजाब की पाँच नदियों में से एक, जिसका प्राचीन नाम शतद्रु था।

सतलडा-सज्ञा पु० सात लडो का हार।

सतलडो-सज्ञा स्त्री० सात लडो की माता।

सतयती-वि० सती। पतिव्रता।

सतसई-सज्ञा स्त्री० १ दे० "सप्तशती"। २ वह ग्रन्थ, जिसमें सात सौ पद्या का संग्रह हो। जैसे, बिहारी सतसई।

सतह-सज्ञा स्त्री० १ किसी वस्तु का ऊपरी भाग। तल। २ वह विस्तार, जिसमें केवल सबाई और चौडाई हो, लेकिन मोटाई न हो।

सतानब-सज्ञा पु० गीतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना-क्रि० स० १ दुःख देना। कष्ट देना। २ परेशान करना।

सतारू-सज्ञा पु० शकृतारू। आड़।

सतायना\*†-क्रि० स० दे० "सताना"।

सतावर-सज्ञा स्त्री० एक श्रावदार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम में आते हैं। सतमूली।

सति\*-सज्ञा पु० दे० "सत्य"।

सतिवन-सज्ञा पु० सदा हरा भरा रहनेवाला एक पेड़। छतिवन।

सती-वि० १ पतिव्रता। साध्वी। २ सती होनेवाली स्त्री।

सज्ञा स्त्री० १ पतिव्रता स्त्री। २ अपने पति के शय के साथ चिता पर जल जानवाली या पति के मरने पर किसी और तरह से अपना प्राण दे देनेवाली स्त्री। ३ दक्ष प्रजा-

पति की कन्या, जो शिव को व्याही थी। पार्वती।

सतीत्व-सज्ञा पु० १ सती रहने का भाव।

२ विवाहित स्त्री का पतिव्रत्य।

सतीत्व-हरण-सज्ञा पु० स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। परस्त्री के साथ बलात्कार।

सतुआ†-सज्ञा पु० दे० "सत्तू"।

सनुआ-सक्राति-सज्ञा स्त्री० मय की सक्रति, जिस दिन लोग सत्तू खाते हैं।

सतृष्ण-वि० १ तृष्णा से युक्त। तृष्णापूर्ण। बहुत इच्छुक। २ व्यास।

सतोषना\*†-क्रि० स० १ दे० "सतोषन"। सतुष्ट करना। सान्त्वना देना। २ ढाँस देना।

सतोगुण-सज्ञा पु० दे० "सत्त्वगुण"।

सतोगुणी-सज्ञा पु० १ सत्त्वगुणवाला। सात्त्विक। २ पवित्र।

सत्-सज्ञा पु० १ सत्य। २ ब्रह्म।

वि० १ सत्य। २ स्थायी। अविनाशी। सदा

ज्या का त्याग बना रहनेवाला। ३ सच्चा।

साधु। ४ राजजन। ५ धीर। ६ विद्वान्।

७ मान्य। ८ शुद्ध। ९ पवित्र। १०

उत्तम। श्रेष्ठ। अच्छा।

सत्कर्म-सज्ञा पु० १ अच्छा काम। २ धर्म का काम। पुण्य।

सत्कार-सज्ञा पु० १ आदर-सम्मान। सातिर-बारी। २ आतिथ्य।

सत्कार्य-सज्ञा पु० उत्तम कार्य। सत्कर्म। वि० सत्कार करने योग्य।

सत्कीर्ति-सज्ञा स्त्री० यश। नेकनामी।

सत्कुल-सज्ञा पु० उत्तम कुल। अच्छा खान-दान।

सत्कृत-वि० १ जिसका सत्कार या आदर किया जाय। २ जिसका अच्छी तरह से आदर या सातिरदारी की गई हो।

सत्कृति-सज्ञा स्त्री० उत्तम कृति या नाय। सज्ञा पु० अच्छा कार्य करनेवाला। सत्कर्मी।

सत्त-सज्ञा पु० १ सार भाग। असली जुड़।

तत्त्व। २ काम की वस्तु। ३ †\* दे०

"सत्त"। सत्य। सच बात। ४ सतीत्व।

पतिव्रत्य।

सत्तम-वि० १ सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ। सबसे बड़कर। २ परमपूज्य। ३ सर्वश्रेष्ठ साधु।

सत्ता-सत्ता स्त्री० १ होने का भाव। २ अस्तित्व। ३ हस्ती। ४ सामर्थ्य। शक्ति। ५ अधिकार। प्रभुत्व। हुकूमत। सत्ता पु० ताश या गजीफे का वह पत्ता, जिसमें सात बूटियाँ हों।

सत्ताईस-सत्ता पु० २७ की संख्या। बीस और सात।

सत्ताधारी-सत्ता पु० शासन करनेवाला। हुकूमत करनेवाला। अधिकारी।

सत्तू-सत्ता पु० भुने हुए चने या जौ आदि का आटा। सतुआ।

सत्य-सत्ता पु० १ उत्तम मार्ग। २ सदाचार। अच्छा चाल-चलन।

सत्यान-सत्ता पु० १ दान आदि देने के योग्य उत्तम व्यक्ति। २ श्रेष्ठ और सदाचारी।

सत्युष-सत्ता पु० १ सदाचारी व्यक्ति। २ सज्जन। भला आदमी।

सत्य-वि० १ सच। २ सच्चा। ३ वास्तविक। असल। ४ ठीक-ठीक।

सत्ता पु० १ ठीक बात। यथार्थ तत्त्व। २. न्याय-संगत बात। धर्म की बात। ३ वह वस्तु जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो (वेदात)। ४ ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक। ५ विष्णु। ६ चार युगों में से पहला युग। सत्ययुग।

सत्यकाम-वि० सत्य का प्रेमी।

सत्यत-अव्य० सचमुच। वास्तव में।

सत्यता-सत्ता स्त्री० १ सत्य होने का भाव। सच्चाई। २ वास्तविकता। अरातिपत।

सत्यनारायण-सत्ता पु० विष्णु का एक नाम। (सत्यनारायण की कथा—हिन्दुओं में प्रचलित एक प्रसिद्ध कथा, जिसे लोग शुभ फल की इच्छा से सुनते हैं।)

सत्यनिष्ठ-वि० [सत्ता सत्यनिष्ठा] सदा सत्य पर दृढ़ रहनेवाला। सत्य में अटल विश्वास करनेवाला। सत्यव्रत।

सत्यप्रतिज्ञ-वि० १ सच्ची प्रतिज्ञा करनेवाला।

अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। २ बात का सच्चा या बात का पक्का।

सत्यभामा-सत्ता स्त्री० श्रीकृष्ण की आठ महारानियों में से एक।

सत्ययुग-सत्ता पु० चार युगों में से पहला, जो सबसे उत्तम माना जाता है।

सत्यलोक-सत्ता पु० पुराण के अनुसार सबसे ऊपर का संसार, जहाँ ब्रह्मा रहते हैं।

सत्यवती-सत्ता स्त्री० १ कृष्ण द्वेपायन या व्यास की माता और वसुराज की कन्या (मत्स्यगण-नामक धीवर-कन्या)। २. गांधी की पुत्री और नटकी की पत्नी। सत्यवादी-वि० [स्त्री० सत्यवादिनी] १. सच बोलनेवाला। २ अपने वचन को पूरा करनेवाला।

सत्यवान्-वि० अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। सच बोलनेवाला।

सत्ता पु० शाहू देश के राजा युमत्सेन का पुत्र, जिसकी पत्नी सावित्री के पातिव्रत्य की कथा प्रसिद्ध है।

सत्यव्रत-सत्ता पु० १ सत्यवादी। जिसने सत्य बोलने की प्रतिज्ञा की हो। २ सत्य बोलने की प्रतिज्ञा या नियम।

सत्यशेखर-वि० १ सच्चा। सत्यवान्। २ धर्म का पालन करनेवाला।

सत्यसध-वि० [स्त्री० सत्यसधा] सत्य-प्रतिज्ञ। अपने वचन को पूरा करनेवाला। सत्ता पु० १ रामचन्द्र। २ जनमजय।

सत्या-सत्ता स्त्री० १ दे० "सत्ता"। २ दे० "सत्यता"। ३ दे० "सत्यभामा"।

सत्याग्रह-सत्ता पु० [वि० सत्याग्रही] किसी सत्य या न्यायपूर्ण पक्ष की स्थापना के लिए शांतिपूर्वक हठ करना।

सत्याग्रही-वि० सत्याग्रह करनेवाला। सत्यानाश-सत्ता पु० सवनाश। पूरी बर्बादी। बिल्कुल नष्ट हो जाना।

सत्यानाशी-वि० १ सत्यानाश करनेवाला। पूरी तरह बर्बाद करनेवाला। चौपट कर देनेवाला। २ अभामा।

सत्ता स्त्री० एक बँटीला पीधा। नटभांड। सत्यानृत-वि० सच और झूठ। जिसमें सच

और झूठ देता है। बाहर स सच दिखाई देनेवाला, पर वास्तव में झूठ।

सज्ञा पु० १ सच पूछ। जिसमें सच-झूठ का व्यवहार हो। २ व्यापार। वाणिज्य।

सत्पापन-सज्ञा पु० १ सत्य की स्थापना। सत्य सिद्ध करना। २ जाँच करके यह देखना कि यह ठीक या ज्यों का त्यों है। लट्ट आदि पर उसके ठीक हान की बात लिखकर उसके सही होत के प्रमाण के लिए अपना हस्ताक्षर करना (अग्र०-वेराफिकेशन)।

सन-सज्ञा पु० १ अधिवेशन। २ अधिवेशन-काल। वह निश्चित समय जिसमें कोई कार्य एक बार शुरू होकर कुछ समय तक बराबर होता रहता है। (अग्र०-सेशन) ३ किसी प्रतिनिधि या कार्यकर्ता के काम करने की निश्चित अवधि। ४ घन। ५ एक सोमयाग। ६ घर। मकान। ७ कपड़ा। ८ घन। ९ वह स्थान जहाँ असहायों को भोजन बाँटा जाता है। १० सदायत।

सन-न्यायालय-सज्ञा पु० [अग्र०-सेशनकोर्ट] किसी जिले के न्यायाधीश का वह न्यायालय, जिसमें बड़े अपराधों का विचार होता है और विचार आरम्भ होने पर तब तक चलता रहता है जब तक उसका निर्णय नहीं हो जाता। दोरा अदा लत।

सत्रावसान-सज्ञा पु० विधान सभाओं आदि के किसी अधिवेशन को कुछ समय के लिए आधिकारिक रूप से बन्द किया जाना या अगले अधिवेशन तक के लिए स्थगित किया जाना। (अग्र०-प्रोरोगेशन)।

सत्रिक-वि० १ सत्र-सम्बन्धी। २ सत्र का। ३ किसी सत्र या निश्चित समय तक लगा सार होता रहनेवाला। ४ किसी सत्र या निश्चित समय पर होता रहनेवाला।

सनुहन-सज्ञा पु० १ सत्ता। अस्तित्व। २ हस्ती।

सत्त्व-सज्ञा पु० १ सत्ता। अस्तित्व। २ हस्ती। ३ सार। सत्त्व। ४ विरायत। ५ चित्त की प्रवृत्ति। ६ आत्म-तत्त्व। ७ चेतन्य। ८ प्राण। जीव। ९ तत्त्व। १० सत्य-दशान

के अनुसार प्रकृतिक तान गुण में एक। दे० 'सत्त्वगुण'।

सत्त्वगुण-सज्ञा पु० अच्छे कर्मों का और प्रवृत्त करनेवाला गुण।

सत्त्व-अव्य० १ शीघ्र। जल्द। २ तुरन्त।

सत्सग-सज्ञा पु० साधुओं या सज्जनों का संग साथ। अच्छी संगत। वह समाज जिसमें भक्ति, ज्ञान या धर्म की चर्चा होती हो। सत्संगति-सज्ञा स्त्री० दे० 'सत्सग'।

सत्संगी-वि० [स्त्री० सत्संगिनी] १ अच्छे व्यक्तियों के साथ रहनेवाला। नली संगति में रहनेवाला। २ मल-जोत रखनेवाला। राधास्वामी मत का अनुयायी।

सयर-सज्ञा स्त्री० दे० 'स्यत'। भूमि। सयिया-सज्ञा पु० १ एक प्रकार की मंगल सूचक चिह्न। स्वस्तिक चिह्न (卐)। २ फाँड़ आदि को चौरफाँड़ करनेवाला। बराह। अस्व चिकित्सक।

सब-सज्ञा स्त्री० प्रकृति। आदत। वि० ताजा।

अव्य०-तत्काल। तुरन्त।

सबई-अव्य० दे० 'सबैब'।

सबका-सज्ञा पु० [अ० सब्क] १ दान। खरात। २ निछावर। उतारा।

सदन-सज्ञा पु० १ घर। मकान। २ विराम। ३ विधान-सभा की बैठक का स्थान। ४ विधान-सभा में उपस्थित सदस्यों का समूह।

५ किसी विषय पर विचार या नियम आदि बनानेवाली सभा की बैठक होते समय का स्थान या उसमें उपस्थित व्यक्तियों का समूह। वह स्थान या भवन जिसमें बहुत से दर्शन उपस्थित हो। ऐसे उपस्थित व्यक्तियों का समूह। (अग्र०-ह्राउस)। ६ एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाई।

सदमा-सज्ञा पु० (अ० सदम) १ अफसोस। दुःख। २ यत्मानसिक कष्ट। ३ आघात।

सदय-वि० दयालु। दयावान।

सदर-वि० [अ० सदर सज्ञा सदायत] प्रभा। मुख्य।

सज्ञा पु० १ वह स्थान, जहाँ कोई बड़ा

हाकिम रहता हो। केंद्र-स्थान। २ अध्यक्ष। सभापति।

सदर-आज्ञा-सज्ञा पु० [अ०] अदालत का वह हाकिम, जो जज से छोटा और मुस्लिम से बड़ा हो। जज। (अंग्रे०-सिविल जज)। सदरो-सज्ञा स्त्री० [अ०] बिना बाँह की एक प्रकार की बड़ी। जवाहर जैकेट।

सदयंता\*-क्रि० स० समयन करना। पुष्टि करना।

सदसद्विवेक-सज्ञा पु० अच्छे और बुरे की पहचान। भले-बुरे का ज्ञान।

सदस्य-सज्ञा पु० किसी सघ, सभा या समाज में सम्मिलित व्यक्ति। सभासद। (संस्कृत में यज्ञ करनेवाला) (अंग्रे०-मेम्बर)

सदस्यता-सज्ञा स्त्री० सदस्य होने का भाव या पद।

सदा-अव्य० १ नित्य। हमेशा। २ निरन्तर। लगातार।

सज्ञा स्त्री० [अ०] १ आवाज। शब्द। २ पुकार। ३ गुंज। प्रतिध्वनि।

सदाचरण, सदाचार-सज्ञा पु० अच्छा चाल-चलन। सदाव्यवहार। उत्तम आचरण।

सदाचारिता-सज्ञा स्त्री० दे० "सदाचार"।

सदाचारी-सज्ञा पु० [स्त्री० सदाचारिणी] १ अच्छा चाल चलनवाला। उत्तम आचरणवाला। २ धर्मात्मा।

सदाफल-वि० सदा फलनेवाला।

सज्ञा पु० १ गूलर। २ बल। ३ नारियल। ४ एक प्रकार का नींबू।

सदास्त-सज्ञा स्त्री० [अ०] सदर या प्रधान होने का भाव या काम। सभापतित्व। अध्यक्षता।

सदावर्त-सज्ञा पु० १ नित्य भूखे और गरीबों को भोजन वांटना। २ नित्य गरीबों को वाँटा जानवाला भोजन। खैरान।

सदाबहार-वि० सदा फूलने-फलनेवाला। सदा हरा-भरा रहनेवाला (एक पद)।

सदाशय-वि० [सज्ञा सदाशयता] जिसके मन के भाव अच्छे और उदार हों। सज्जन। भला-मानस।

सदाशिव-सज्ञा पु० शिव।

सदामुहागिन-वि० जो कभी पतिहीन न हो।

सज्ञा स्त्री० वेश्या। रडी। (व्यंग में प्रयुक्त)

सदिया-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ 'लाल' नाम की चिड़िया, जिसका शरीर भूरे रंग का होता है। २ लाल-पक्षी की मादा।

सदी-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. सौ वर्षों का समय। शती। शताब्दी। २ सैकड़ा।

सदुपदेश-सज्ञा पु० १ उत्तम उपदेश। २ अच्छी सलाह। ३ अच्छी शिक्षा।

सदुपयोग-सज्ञा पु० १ अच्छा उपयोग। अच्छी तरह इस्तेमाल। २ अच्छे काम में लाना या अच्छी तरह काम में लाना।

सदृश-वि० १ समान। एक ही तरह। २ तुल्य।

सदेह-क्रि० वि० १ शरीर के साथ। सशरीर। इसी शरीर से। बिना शरीर-त्याग किए।

२ प्रत्यक्ष। मूर्तिमान्।

सदेव-अव्य० सदा। हमेशा।

सदोष-वि० १ दोषयुक्त। जिसमें गलती हो। २ अपराधी।

सदगति-सज्ञा स्त्री० १ मरने के बाद अच्छी दशा को पाना या अच्छे लोक में जाना। २ उत्तम गति।

सद्गुण-सज्ञा पु० [वि० सद्गुणी] अच्छा गुण। अच्छी सिफत।

सद्गुरु-सज्ञा पु० १ अच्छा गुरु। वह धर्म-शिक्षक, जिसके उपदेश से ससार के बंधनों से छुटकारा या मुक्ति प्राप्त हो।

२ परमात्मा। ईश्वर।

सद्ग्रन्थ-सज्ञा पु० १ सन्माग बतानेवाली पुस्तक। २ बहुत अच्छी पुस्तक।

सद्\*†-सज्ञा पु० शब्द। ध्वनि। अव्य० तुरत। तत्काल।

सद्भाव-सज्ञा पु० १ अच्छा भाव। अच्छी नीयत। २ प्रेम और भलाई की भावना। ३ मेल-जोल। मैत्री।

सद्य-सज्ञा पु० १ घर। मकान। २ गुद। लड़ाई। ३ पृथ्वी और आकाश।

सद्य-अव्य० १ इसी समय। अभी। २. आज ही। ३ दीघ ४ तुरत।

सद्य-अव्य० दे० "सद्य"।

सद्यः प्रसूत-वि० गुरन्त का उत्पन्न।  
सद्यः स्नाता-वि० स्नी० गुरन्त नहाई हुई।  
सद्रूप-वि० [सज्ञा सद्रूपता] सुन्दर। अच्छे  
रूपवाला।

सद्व्यत-वि०- [स्त्री० सद्व्यता] १ अच्छा  
घत धारण करनेवाला। २ सदाचारी।  
अच्छे आचरण-चलनवाला।

सधना-क्रि० अ० १ अभ्यस्त होना। २  
मंजना। ३ सिद्ध होना। काम पूरा होना।  
४ मतलब निकलना। ५ मतलब हल होने  
साथक। ६ उद्देश्य पूरा होने के अनुकूल  
होना। ७ निशाना ठीक होना। ८ ठीक  
नापा जाना।

सधर-सज्ञा पु० ऊपर का हाठ। (नीचे के  
हाठ को अधर कहते हैं।)

सधवा-सज्ञा स्त्री० [विधवा का अनु०]  
वह स्त्री, जिसका पति जीवित हो।  
सुहागिन।

सधाना-क्रि० स० १ साधने का काम दूसरे  
से कराना। २ समाप्त करना। कोई चीज  
खान्सीकर खत्म करना। ३ प्रयोग करना।  
इस्तेमाल करना।

सधुक्कड़ी-सज्ञा स्त्री० साधु होने का भाव।  
साधुता।

वि० १ साधुओं की तरह का। २ साधुआ  
का। जैसे सधुक्कड़ी भाषा-नाथ-ययियों की  
बोली।

सनदन-सज्ञा पु० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रा  
में से एक।

सन्-सज्ञा पु० [अ०] वर्ष। साल। सबत्।  
सन-सज्ञा पु० एक प्रतिदिन प्रयोग, जिससे  
देश से रस्सियाँ और टाट आदि बनते हैं।  
सज्ञा स्त्री० धेग से निखलन या चलन का  
शब्द। जैसे हवा का सन सन शब्द।

वि० १ द० 'सन'। स्तब्ध। २ मोन।  
प्रत्यय अवधी में करण-नाटक का  
चिह्न। स। साय।

सनई-सज्ञा स्त्री० छोटी जाति का सन।  
सनक-सज्ञा स्त्री० १ धुन। नक। खवत। २  
पागल। वा-सी धुन। पागल की तरह बात  
या काम करना।

सज्ञा पु० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रा में से  
एक।

मुहा०-सनव सवार होना=धुन हाना।  
नक में आना। खवत चढ़ना।

सनकना-क्रि० अ० पागल होना। पगलाना।  
पागल की तरह बातें या काम करना।  
सनकारना\*†-क्रि० स० संकेत करना।  
इशारा करना।

सनकियाना-क्रि० स० १ इशारा करना। २  
सनक पैदा करना। सनकी या पागल बना  
देना।

सनकी-वि० १ धुन में मस्त। खवती। २  
पागल की तरह।

सनत्-सज्ञा पु० ब्रह्मा।

सनत्कुमार-सज्ञा पु० ब्रह्मा के चार मानस  
पुत्रा में से एक।

सनद-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ प्रमाणपत्र।  
(अग्ने०-सर्टीफिकेट) २ प्रमाण। सबूत।  
सनदयापता-वि० जिसे कोई सनद मिली  
हो।

सनना-क्रि० अ० १ गोला होकर लेई के रूप  
में मिलना। २ एक में मिलना। लीन होना।  
सनन्दन-सज्ञा पु० ब्रह्मा के चार मानस पुत्रा  
में से एक। सप्त ऋषियों में से एक।

सनन-सज्ञा पु० [अ०] प्रियतम। प्यारा।

सनमान-सज्ञा पु० दे० 'सम्मान'।

सनमानना\*-क्रि० स० सम्मान करना। आदर-  
सत्कार करना। सातिरे करना।

सनमुख\*-अव्य० दे० 'सन्मुख'।

सनसनाना-क्रि० अ० १ सन-सन शब्द करते  
हुए, बहना, गम, चलना, (चल, गम), २ खूब  
तंजी से जाना। ३ हवा की तरह तन  
दीटना। ४ हवा में शक्ति से निकलन या  
जान का शब्द होना।

सनसनानाहट-सज्ञा स्त्री० सन-सन शब्द होना।

सन-सन शब्द हान का भाव या क्रिया।

सनसनी-सज्ञा स्त्री० १ भय आश्चर्य आदि  
के कारण उत्पन्न उत्तंजना या सन्नदा।  
२ उद्वेग। मचराहट। ३ सन-सनाहट।  
धुनधुनी।

सनसनीसज या सनसनीदार-वि० भय, पच-

राहट और आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला काम या घटना ।

सनाद्य-संज्ञा पु० पञ्च गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा ।

सनातन-संज्ञा पु० १. अनादिकाल । २. अत्यन्त प्राचीन समय । ३. बहुत दिनों से चली आती हुई परम्परा या व्यवहार । प्राचीन परम्परा । ४. ब्रह्मा । ५. विष्णु ।

वि० १. अत्यन्त प्राचीन । बहुत ही पुराना । जो बहुत दिनों से चला आता हो । परंपरागत । २. हमेशा बना रहनेवाला । चिरन्तन । शाश्वत ।

सनातन धर्म-संज्ञा पु० १. प्राचीन या परंपरागत धर्म । २. प्राचीन काल से चला आता हुआ वर्तमान हिन्दू-धर्म, जिसमें मूर्तिपूजन, अवतारों की उपासना और पूराण आदि माननीय हैं ।

सनातन पुरुष-संज्ञा पु० विष्णु भगवान् । सनातनी-संज्ञा पु० १. सनातन धर्म का अनुयायी । २. जो बहुत दिनों से चला आता हो । सनाय-वि० [ स्त्री० सनाथा ] जिसका कोई मालिक और सहायक हो । जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो ।

सनाय-संज्ञा स्त्री० एक पीया, जिसकी पत्तियाँ दस्तावर होती हैं । सोनामुखी ।

सनीचर-संज्ञा पु० दे० "शनिचर" ।

सनीचरी-संज्ञा पु० शनि की दशा, जिसमें अधिक दुःख होता है ।

सनेह\*†-संज्ञा पु० दे० "स्नेह" ।

सनेहिय\*†-संज्ञा पु० दे० "स्नेही" ।

सनेही-वि० १. दे० "स्नेही" । स्नेह या प्रेम करनेवाला । प्रभी । २. हितधी ।

सना पु० प्रियतम ।

सनीचर-संज्ञा पु० [ अ० ] चीड़ का पेड़ ।

सन्न-वि० १. डर या आश्चर्य के कारण एकदम चुप । स्तब्ध । सन्नान्य । २. स्तब्ध । भीचक ।

समझ-वि० १. उद्यत । २. तत्पर । ३. तैयार । ४. जामाया । ५. काम में पूरी तरफ लगा या जुटा हुआ । ६. मुस्तैद । ७. बँधा या जुड़ा हुआ । ८. पास का ।

समयन-संज्ञा पु० १. ले जाना । ले जाने की क्रिया या भाव । २. सम्पत्ति या अधिकार आदि देना । सम्पत्ति-समर्पण । ३. किसी सम्पत्ति, विशेषकर अचल सम्पत्ति का लेख-द्वारा एक व्यक्ति से दूसरे के कब्जे में जाना या दिया जाना । ४. समर्पण-पत्र या ऋण-लेख ।

समादा-संज्ञा पु० १. कही कुछ भी आवाज न होने की अवस्था या भाव । निःशब्दता । नीरवता । २. निर्जन्तता । एकात्मता । सुनसान । ३. ठक रह जाने का भाव । स्तब्धता । ४. एकदम खामोशी । चुप्पी । ५. चहल-पहल का अभाव । उदासी । ६. गुलजार न रहना । ७. हवा के जोर से चलने की आवाज । ८. हवा को चीरते हुए नेजी से निकल जाने का शब्द ।

वि० १. नीरव । स्तब्ध । २. निर्जन । मुहा०-सन्नाटे में आना=ठक रह जाना । कुछ कहते-मुगते न बनना । सन्नाटा खीचना या मारना=एकदम चुप हो जाना ।

सन्नाह-संज्ञा पु० कवच । बकतर ।

सन्निकट-अव्य० समीप । पास ।

सन्निकर्ष-संज्ञा पु० [ वि० सन्निकृष्ट ] १. समीपता । निकटता । पड़ोस । २. सवध । लगाव ।

सन्निधान-संज्ञा पु०, १. स्थापित करना । रखना । २. किसी वस्तु के रखने का स्थान ।

३. निधि । सजाना । ४. निकटता । समीपता ।

सन्निधि-संज्ञा स्त्री० १. समीपता । निकटता । पड़ोस । २. आमने-सामने की स्थिति ।

सन्निपात-संज्ञा पु० १. एक बीमारी, जिसमें कफ, वात और पित्त, तीनों एक साथ विगड़ जाते हैं । निदोष । सरसाम । २. एक साथ गिरना । एक साथ जुटना । ३. संयोग । मेल । ४. इकट्ठा होना । ५. एक साथ कई बातों का घटना । समाहार ।

सन्निविष्ट-वि० १. एक साथ बैठा हुआ । जमा हुआ । रखा हुआ । २. किसी में नामित किया गया या मिलाया हुआ । ३. स्थापित । ४. पास का ।

सन्निवेश-संज्ञा पु० १. स्थिति । २. आधार । ३. जानन । ४. निवास । घर । ५. एक

साथ बैठना । ६. रखना । ७. लगाना ।  
८. जुड़ना । ९. जमाकर या सजाकर रखना ।  
१०. अटना । समाना । ११. इकट्ठा होना ।  
जुटना । १२. समूह । १३. योजना । १४.  
गढ़न । बनावट ।

सन्निवेशन-संज्ञा पुं० [वि० सन्निविष्ट]  
१. मिलाना । २. जमाकर या लगाकर  
रखना । ३. सजा कर रखना । ४. किसी  
को किसी दूसरी चीज या बात में शामिल  
करना ।

सन्निहित-वि० १. रखा हुआ । २. एक साथ  
या पास रखा हुआ । ३. ठहराया हुआ ।  
टिकाया हुआ । ४. निकट । समीपस्थ ।  
५. तैयार ।

सम्मान-संज्ञा पुं० दे० "सम्मान" ।

सन्मुख-अव्य० दे० "सन्मुख" । सामने ।

सपक्ष-संज्ञा पुं० १. न्याय में वह वाद, जो  
साध्य हो । २. अनुकूल पक्ष । ३. समर्थक ।  
४. तरफदार । ५. मित्र । ६. सहायक ।

वि० जो अपने पक्ष में हो । समर्थक ।  
सपत्नी-संज्ञा स्त्री० एक ही पति की दूसरी  
स्त्री । सीत ।

सपत्नीक-वि० पत्नी के साथ ।

सपदि-अव्य० सुरुत । उसी समय ।

सपना-संज्ञा पुं० दे० 'स्वप्न' । नींद की  
अवस्था में दिखाई देनेवाली बात या  
घटनाएँ ।

सपदवाई-संज्ञा पुं० १. वैश्या के साथ संबंध,  
सारंगी आदि बजानेवाला । भँडूआ । २.  
समाधी ।

सपरना-क्रि० अ० १. काम का किया जा  
सकना । २. हो सकना । तैयार होना । ३.  
काम का पूरा होना । समाप्त होना । ४.†  
स्नान करना ।

सपराना-क्रि० स० पूरा करना । 'सपरना'  
का सकर्मक रूप ।

सपरिकर-वि० १. अपने दलबल के साथ ।  
अपने अनुचरों के साथ । २. ठाठ-बाट के  
साथ ।

\*†सपरि कर=तैयार होकर (भोजपुरी में) ।

सपाट-वि० १. समतल । बराबर । जिसकी

सतह पर कोई उभरी हुई वस्तु न हो ।

२. चिकना । (मंदान या भूमि)  
सपाटा-संज्ञा पुं० १. चलने या दौड़ने की  
तेजी । तीव्र गति । २. दौड़ ।

यो०—सँर-सपाटा=पूमना-फिरना ।

सपाव-वि० १. पैर के साथ । चरण-सहित ।  
२. सचाया । जिसमें एक का चौलाई और  
मिला हो ।

सपिंड-संज्ञा पुं० एक ही कुल या खानदान के  
लोग, जो एक ही पितरों को पिंडदान  
करते हैं ।

सपिंडो-संज्ञा स्त्री० मृतक के लिए किया  
जाने का एक कर्म, जिसमें वह और पितरों  
के साथ मिलाया जाता है ।

सपुर्व, सुपुर्व-संज्ञा स्त्री० [का० सिपुर्व]  
धरोहर । अमानत ।

वि० किसी के जिम्मे किया हुआ । सौंपा  
हुआ ।

सपुर्वगी, सुपुर्वगी-संज्ञा स्त्री० [का०] सपुर्व  
करने या होने की क्रिया अथवा भाव ।

सपूत-संज्ञा पुं० सपुत्र । अच्छा और योग्य  
बेटा । अपने कर्त्तव्य का पालन करनेवाला  
पुत्र । सुपुत्र ।

सपूती-संज्ञा स्त्री० १. योग्य पुत्र उत्पन्न  
करनेवाली माता । २. सपुत्र होने का भाव ।

सपेरा-संज्ञा पुं० दे० "सपेरा" ।

सपोला-संज्ञा पुं० साँप का छोटा बच्चा ।

सप्त-वि० सात । गिनती में सात ।

सप्तवि-संज्ञा पुं० दे० "सप्तवि" ।

सप्तक-संज्ञा पुं० सात वस्तुओं का समूह ।

संगीत में सात स्वरों का समूह ।

सप्ताक्षी-संज्ञा पुं० पुराणानुसार पृथ्वी के  
सात बड़े और मुख्य विभाग—जम्बू, कुश,  
प्लक्ष, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर  
क्षीप ।

सप्तधातु-संज्ञा पुं० आयुर्वेद के अनुसार शरीर  
में की सात धातुएँ—रक्त, पित्त, मास,  
वस, मज्जा, अस्थि और शुक्र ।

सप्तपदी-संज्ञा स्त्री० विवाह की एक रीति  
जिसमें ऋषि और यजु अग्नि के चारों ओर  
७ परिक्रमाएँ करते हैं । भावर । भँवरी ।

सप्तपर्ण—सज्ञा पु० श्रुतिवन (पेड़)।

सप्तपर्णी—सज्ञा स्त्री० लज्जावती सता।

सप्तपाताल—सज्ञा पु० पृथ्वी के नीचे के सातों लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल।

सप्तपुरी—सज्ञा स्त्री० सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्षदायक कहे गए हैं—अयोध्या, मथुरा, माया (हरिद्वार), काशी, काशी, अवतिका (उज्जयिनी) और द्वारका।

सप्तभुज—सज्ञा पु० सात भुजाओंवाला क्षेण [अग्ने०—हेष्टेगन]

सप्तम—वि० [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

सप्तमी—वि० स्त्री० सातवीं।

सज्ञा स्त्री० १. किसी पक्ष की सातवीं तिथि।

२. व्याकरण में अधिकरण कारक का चिह्न।

सप्तषि—सज्ञा पु० १. सात ऋषियों का समूह या मंडल। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि। २. महाभारत के अनुसार—मरीचि, अनि, अगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ। ३. उत्तर दिशा के सात तारे जो ध्रुव के चारों ओर फिरते हुए दिखाई पड़ते हैं।

सप्तशती—सज्ञा स्त्री० १. सात सौ का समूह। सात सौ पद्यों का समूह। २. सतसई।

सप्ताह—सज्ञा पु० १. सात दिनों का समय। हफ्ता। २. भागवत तथा रामायण आदि की पूरी कथा को सात दिनों में पढ़ना या सुनना। ३. कोई पुण्य कार्य, जो सात दिनों में समाप्त हो।

सप्ताई—सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] १. जिन चीजों की माँग हो, उन्हें देना। पूर्ति करना। मुहय्या करना। २. लाछ पदार्थ। रसद। ३. सचय। भण्डार।

सप्ताई अफसेर—सज्ञा पु० [अग्ने०] पूति-अधिकारी। यह अधिकारी, जो रसद आदि आवश्यक वस्तु-सम्बन्धी प्रबंध करे।

सफर—सज्ञा पु० [अ०] १. यात्रा। २. रास्ते में चलने का समय या दशा।

सफरनेना—सज्ञा स्त्री० सेना के वे सिपाही, जो खाई आदि खोदने, या रास्ता साफ करने के

लिए उसके आगे चलते हैं। [अग्ने०—संपर माइनर]

सफरी—वि० सफर में काम आनेवाला (छोटा और हल्का सामान)।

सज्ञा पु० १. राह-सर्घ। २. रास्ते का सामान।

संज्ञा स्त्री० १. दे० “शफरी”। सौरी मछली। २. धातु की बनी हुई एक तरह की पन्नी या पीला वरक।

सफल—वि० १. कामयाब। २. जो प्रयत्न करके अपना उद्देश्य या कार्य सिद्ध कर चुका हो। ३. जिसका कुछ नतीजा निकले। ४. सार्थक। ५. जिसमें फल लगा हो। ६. फल देनेवाला।

सफलता—सज्ञा स्त्री० १. सफल होने का भाव। कामयाबी। २. उद्देश्य की पूर्ति। कार्य की सिद्धि। ३. पूर्णता।

सफलीभूत—वि० जो सफल हुआ हो। जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।

सफा—सज्ञा पु० वि० [अ० सफह] १. पृष्ठ। पन्ना। २. साफ। स्वच्छ। ३. पवित्र। ४. चिकना। ५. बराबर।

सफाई—सज्ञा स्त्री० १. साफ होने का भाव या साफ करने की क्रिया। स्वच्छता। निर्मलता। २. कूड़ा-करकट आदि हटाने की क्रिया। ३. स्पष्टता। कपट का न होना। ४. आरोप का खंडन। ५. अभियुक्त-द्वारा अपने को निर्दोष सिद्ध करना। निर्दोषिता। ६. कंफियत। ७. मामले का निपटारा। निर्णय।

सफाचट—वि० बिलकुल साफ या चिकना किया हुआ। एकदम साफ या चिकना।

सफाया—सज्ञा पु० १. बाकी दाम पूरा-पूरा चुकता कर देना। कुछ भी बाकी न रहना। २. एकदम साफ करना। पूरी सफाई। ३. पूरी तरह नाश करना।

सफोना—सज्ञा पु० [अ० सफीन] १. बदालती परवाना। समन। २. इतलाना। ३. बही।

सफोर—सज्ञा पु० [अ०] एलची। राजदूत। सफफ—सज्ञा पु० [अ०] चर्च। वकती।

सफेद-वि० [ फा० सुफेद ] १ उजला । श्वेत ।  
२ साफ ।

मुहा०—सफा-गफेद=भला-दुरा ।

सफेद दाग-सजा पु० कोड़ का बीमारी में  
शरीर पर होनवाला सफेद बच्चे । श्वेत-  
कुण्ट ।

सफेदपोश-गजा पु० [ फा० ] १ साफ कपड़े  
पहननवाला । २ भलामानस । सिष्ट ।

सफेद-गजा पु० १ एक प्रकार का उदिया  
आम । २ एक तरह का सरसूजा । ३  
जस्त का भस्म, जो दवा तथा रोगाई के  
काम में जाता है ।

सफेदी-सजा स्त्री० १ सफेद होन का भाव ।  
उजलापन । श्वेतता । २ दीवार आदि पर  
चून की सफेद रंग की प्रोनाई । चूनाकारी ।  
मुहा०—सफेदी आना—बुढ़ापा आना ।

सव-वि० पूरा । सारा । समस्त । कुल ।

सबक-गजा पु० [ फा० ] १ पाठ । २ शिक्षा ।

सबद-सजा पु० १ दे० सबद । २ किसी  
माधु महात्मा के उपदेश ।

सवव-सजा पु० [ ज० ] १ कारण । वजह ।  
२ द्वारा । जरिए ( जमे उनके सवव से ) ।

सव-मेरीन-सजा स्त्री० [ अंग० ] पानी के  
नीचे डूबर चलनवाला एक प्रकार का  
जहाज । पनडुब्बी जहाज ।

सवर-सजा पु० दे० 'सब्र' ।

सबल-वि० ( सजा सबलता ) १ बलवान ।  
ताकतवर । २ शक्तिशाली । ३ निमके  
साथ सेना हो ।

सज्जर\*-क्रि० वि० जल्दी ।

सथील-सजा स्त्री० [ अ० ] १ रास्ता ।  
सड़क । २ उपाय । तरकीब । ३ पीमला ।  
प्याऊ ।

सबूत-सजा पु० [ अ० ] प्रमाण । वह, जिससे  
कई बात सिद्ध या नाबित की जाय ।  
सबूत-वि० [ फा० ] १ हुरा मरा । लहनुहावा  
हुआ । २ बच्चा और ताजा ( फल फूल  
आदि ) ।

मुहा०—सबूत बाग दिखताना=बाम निवा-  
सन व लिए झूठी आसारे दिसाना ।

सबूत-गजा पु० १ हरियाली । २ भाग ।

३ पन्ना-नामक रत्न । ४ घाटे का एक रंग,  
जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन हो ।

सबूत-गजा स्त्री० [ फा० ] १ हरी तरकारी ।  
२ हरियाली । ३ हरापन । ४ भाग ।

सब-गजा पु० [ अ० ]-सताप । धैर्य ।

सभा-सजा स्त्री० १ किसी वाय-विषय या  
उद्देश्य के लिए बनाई गई मस्था । परिषद् ।

समिति । मजलिस । २ वह बैठक जिसमें  
अनेक लोग किसी का भाषण सुनन या किसी  
विषय पर विचार करने के लिए इकट्ठा हों ।

सभागा-वि० १\* भाग्यवान । २ सुदर ।

सभाग्रह-सजा पु० सभा का स्थान या भवन ।  
मजलिस की जगह ।

सभापति-सजा पु० सभा का प्रधान । सदर ।  
अध्यक्ष । ( निश्चित समय के लिए स्थायी  
रूप से चुन गए प्रधान का अध्यक्ष कहते हैं ।  
पर आजकल 'अध्यक्ष' का प्रयोग सभापति  
के जय में होने लगा है । )

सभासद-गजा पु० किसी सभा में सम्मिलित  
होनेवाला । सभा में बैठने या उपस्थित  
हानवाला । सदस्य ।

समिक-सजा पु० अपन यहाँ लोगो को बैठा  
कर जुआ खेलान और उसके बदल में उनसे  
कुछ धन लेनवाला । फडवाज ।

समीत-वि० दे० नीत ।

सम्य-वि० सिष्ट । भला । सज्जन । अच्छे  
आचार व्यवहारवाला ।

सजा पु० १ सभा के योग्य । २ सभासद ।

सभा का सदस्य । ३ भला आदमी ।

सज्जन ।

सम्यता-सजा स्त्री० १ सम्य होने का भाव ।  
सज्जन हान की अवस्था या भाव । भल-  
मनसाहूत । मरफत । २ सभा के सदस्य  
होन का भाव । सदस्यता । ३ किसी राष्ट्र  
या जाति का वे सब बाने, जो उससे  
रहने सहने, सौजन्य तथा शिक्षित और  
उन्नत हान की दसा प्राप्त करती ह ।

( अर्थ—सिविलिजेशन ) ।

समजन-सजा पु० ( वि० सगजित ) १ मन  
मिलाना या मन ठीक बैठाना । २ ठीक  
करना या ठीक बैठाना । ३ हन-देन का

हिसाब ठीक और पूरा करना । [ अश्रे-  
एडजेस्टमेंट ]

समंजस-वि० १ उचित । ठीक । २. अभ्यस्त ।

३. मेन खानेवाला । पहले कही हुई बातों के प्रमग के विचार से ठीक बैठनेवाला ।

समत-सज्ञा पु० १ सीमा । २ सिरा ।

समद-सज्ञा पु० [ फा० ] घोडा ।

समदर-सज्ञा पु० १ दे० "समुद्र" । २

[ फा० ] एक प्रकार का कल्पित चूहा, जिसकी उत्पत्ति आग से मानी गई है ।

सम-वि० १ समान । बराबर । तुल्य । २ चोरस । जिसका तल ऊबड़-खाबड़ न हो ।

३ (सख्या) जिसे दो से भाग देन पर शेष कुछ न बचे । जूस । ४ जिसमें परिवर्तन न हो । ५ निष्पक्ष । तटस्थ । न अधिक प्रेम या मोह करनेवाला और न एकदम विराग रखनेवाला । ६ सब ।

सज्ञा पु० १ सगीत शास्त्र के अनुसार गाने-बजाने में निश्चित क्रम । २ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें योग्य वस्तुओं के संयोग या संवध का वर्णन होता है ।

समक्ष-वि० बराबर । समान । तुल्य ।

समकालीन-वि० १ एक ही समय में होनेवाला । २ एक ही समय का ।

समकोण-वि० जिसके आसने सामने के दो कोण समान हों । त्रिभुज या चतुर्भुज । सज्ञा पु० बड़ी रेखा पर बिलकुल खड़ी रेखा के आकर मिलने से बननेवाला ९० अंश का कोण (ज्यामिति) ।

समक्ष-अव्य० सामन । सम्मुख ।

समग्र-वि० सब । पूरा ।

समचतुर्भुज-सज्ञा पु० वह चतुर्भुज, जिसकी चारों भुजाएँ समान हों ।

समचर-वि० समान आचरण करनेवाला ।

समज्ञ-सज्ञा स्त्री० १ बुद्धि । २ विचार ।

समज्ञदार-वि० १ सोच-समझकर काम करनेवाला । बुद्धिमान् । अवलम्ब । २ होशियार ।

समज्ञाना-क्रि० अ० किसी बात का अच्छी तरह ध्यान में लाना ।

समज्ञाना-क्रि० स० दूसरे को बतलाना या

सिखाना । दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना ।

समज्ञावा-सज्ञा पु० समझाने या समझने की क्रिया या भाव ।

समझौता-सज्ञा पु० आपस का निपटारा । शमटे, विवाद या लेन-देन का तय होना । किसी बात पर दो या अधिक पक्षों का एकमत होना ।

समतल-वि० जिसकी सतह बराबर हो । सपाट ।

समता-सज्ञा स्त्री० सम या समान होने का भाव । बराबरी । समानता ।

समत्रिभुज-सज्ञा पु० वह त्रिभुज, जिसकी तीनों भुजाएँ समान हों ।

समतोल-वि० १ एक ही तौल के बराबर ।

२ महत्त्व आदि के विचार से एक समान ।

समत्व-सज्ञा पु० दे० "समता" ।

समदन-सज्ञा स्त्री० भट । नजर ।

सज्ञा पु० मुद्र (संस्कृत में) ।

समदना-क्रि० अ० प्रसपूर्वक मिलना ।

समदर्शी-सज्ञा पु० १ सबके साथ एक समान व्यवहार करनेवाला । २ सबको एक-सा समझनेवाला । ३ सबको समान दृष्टि या बराबर की नजर से देखनेवाला ।

समधिक-वि० बहुत । अधिक ।

समधियाना-सज्ञा पु० समझी का घर ।

समधी-सज्ञा पु० वेडा या वेटी का सफुर ।

समन\*-सज्ञा पु० १ दे० "धामन" । २ (अग्र-समन) द० "सम्मन" । किसी को न्यायालय या अदालत में उपस्थित होने के लिए उस न्यायालय-द्वारा जारी किया गया आज्ञा-पत्र ।

समनामे-सज्ञा पु० १ एन ही नाम के दो व्यक्ति या वस्तुएँ । २ समान नामवाला ।

नामरामी । हमनाम । पर्याय ।

समनुज्ञा-सज्ञा स्त्री० किसी विषय का सम-र्थन या उसकी पुष्टि करत हुए उसके लिए अपनी स्वीकृति देना ।

समन्वय-सज्ञा पु० (वि० समन्वित) १ मेल ।

मिलाप । संयोग । २ विरोध का न होना ।

काव्य जीव कारण का निर्वाह या संगति ।

समन्यित-वि० मिला हुआ। संयुक्त। समन्यय किया हुआ।

समपाद-संज्ञा पु० वह छंद या कविता, जिसके चारो चरण समान हों।

समबल-वि० समान बल या ताकतवाला।

समभाव-संज्ञा पु० एक समान भाव। समता। साम्य। बराबरी।

समय-संज्ञा पु० १. वक्त। काल। २. अवसर। मौका। अवकाश। फुरसत। ३. अंतिम काल।

समय-सारिणी-संज्ञा स्त्री० भिन्न-भिन्न समयों पर होनेवाले कार्यों की विवरण-सूची या तालिका। (अग्रे-टाइमटेबिल-जैसे रेल का टाइमटेबिल)

समर-संज्ञा पु० युद्ध। लड़ाई।

समरथ-वि० दे० "समर्थ"।

समरभूमि-संज्ञा स्त्री० लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

समरागण-संज्ञा पु० दे० "समरभूमि"।

समरस-वि० [ भाव० संज्ञा स्त्री० समरसता ] १ सदा एक-सा रहनेवाला। २. एक ही तरह के रसवाले (पदार्थ)। ३ एक ही तरह के। एक ही विचार के।

समराना\*-क्रि० सं० सँवारना। सजाना या सजवाना।

समर्चना-संज्ञा स्त्री० बहुत अच्छी तरह से की जानेवाली अर्चना या पुजा।

समर्थ-वि० १ कोई काम करने की शक्ति या क्षमता रखनेवाला। २ योग्य। काबिल।

३. शक्तिमान्। ४ दूसरी चीजों या कार्यों आदि पर अपना असर डालने की शक्ति रखनेवाला। ५ प्रयुक्त होने योग्य। काम में आने लायक।

समर्थक-वि० समर्थन करनेवाला। किसी के मत का अनुमोदन करनेवाला।

समर्थक-संज्ञा स्त्री० सामर्थ्य। शक्ति।

समर्थन-संज्ञा पु० [ वि० समर्थनीय, समर्थक, सामर्थ्य ] १ अनुमोदन। तार्ईद। किसी के विचार, मुद्दा या प्रस्ताव की सही कहकर उसके पक्ष में अपना मत प्रकट करना। किसी के मत का पोषण। २. विवेचन।

समर्थित-वि० समर्थन किया हुआ।

समर्पक-वि० १. समर्पण करनेवाला। दान या भेंट करनेवाला। २. कही पहुँचाने के लिए कोई माल देनेवाला। (अग्रे-कन्साइनर)

समर्पण-संज्ञा पु० १ पूरी तरह से देना। २. आदर के साथ भेंट करना। आदरपूर्वक दान देना। ३. स्वामित्व, अधिकार या भार आदि देना। ४. बचाकर रखने या जमा करने के लिए या कही पहुँचाने के लिए किसी को देना (संस्कृत में)। (अग्रे-कन्साइन्मेंट)

समर्पित-वि०, १. दान या भेंट किया गया। समर्पण किया हुआ। २. कही भेजने या पहुँचाने के लिए दिया गया (माल)।

समवयस्क-वि० समान वयसवाला। बराबर की उम्रवाला। हमउम्र।

समल-वि० १. मैला। गदा। मलयुक्त। २. दाग या धब्बेवाला। ३. अपवित्र (संस्कृत में)।

समवकार-संज्ञा पु० एक प्रकार का वीर-रस-प्रधान नाटक, जिसमें किसी देवता या असुर आदि के जीवन की कोई घटना होती है।

समवर्ती-वि० १ जो पास में स्थित हो। समीपस्थ। २. जो समान रूप से स्थित हो। ३. किसी के साथ समान रूप या समान भाव से रहने या चलनेवाला।

समवाय-संज्ञा पु० १. समूह। झुंड। २. व्याव-शास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के सम्बन्धों में से एक संबंध, जो अवयवों के साथ अवयव का या गुणों के साथ गुण का होता है। ३. व्यापार करने के लिए नियमानुसार बनी हुई वह संस्था, जिसके हिस्सेदारों की अपनी लगाई हुई पूँजी के हिसाब से उस व्यापार से होनेवाले लाभ का हिस्सा मिलता है (अग्रे-कम्पनी)।

समवायी-वि० जिसमें समवाय या नित्य संबंध हो।

समयुक्त-संज्ञा पु० यह छंद, जिसके चारो चरण समान हों।

समवेत-वि० १. इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २. जमा किया हुआ। संचित। ३. किसी

के साथ एक श्रेणी में आया हुआ। ४ नित्य सम्बन्ध से बंधा हुआ।

समशीतोष्ण कटिबंध-सज्ञा पु० पृथ्वी के वे भाग, जो उष्ण कटिबंध के उत्तर में कर्क-रेखा से उत्तरवृत्त तक और दक्षिण में मकर-रेखा से दक्षिण वृत्त तक हैं।

समष्टि-सज्ञा स्त्री० सबका समूह। सब एक में मिलकर। कुल एक साथ। व्यष्टि का उलटा।

समष्टिवाद-सज्ञा पु० साम्यवाद राज्य-शासन का वह सिद्धान्त, जिसमें सब वस्तुओं पर राष्ट्र के सब लोगों का समान अधिकार हो और सम्पत्ति पर व्यक्तियों का अधिकार न हो। समाजवाद का यह अत्यन्त विकसित रूप है। (अंग्रे०-कम्युनिज्म)

समष्टिवादो-सज्ञा पु० समष्टिवाद या साम्य-वाद का सिद्धान्त माननेवाला। (अंग्रे०-कम्युनिस्ट)

समस्त-वि० १ सब। कुल। सम्पूर्ण। २ एक में मिलाया हुआ। संयुक्त। (संस्कृत में) '३ जो समास द्वारा मिलाया गया हो। समाससंयुक्त।

समस्थली-सज्ञा स्त्री० अतर्वेद। गंगा और यमुना के बीच का देश।

समस्या-सज्ञा स्त्री० १ कठिन प्रश्न। २ कठिनाई। संकट। आत्मात्मी से हल न होनेवाली दिक्कत। ३ किसी श्लोक या छंद आदि का वह अंतिम पद, जो पूरा श्लोक या छंद बनाने के लिए तैयार करके दूसरे को दिया जाता है। ४ मिश्रण। मिलाने की क्रिया। एक साथ मिलाने का भाव। सघटन।

समस्यापूर्ति-सज्ञा स्त्री० किसी छंद के अन्तिम पद को लेकर या किसी समस्या के आधार पर छंद आदि बनाना।

सम्रा-सज्ञा पु० १ समय। वक्त। २ दृश्य। मुहा०-सम्रा बंधना=संगीत या दृश्य आदि का इतना अच्छा प्रदर्शन होना कि लोग मुग्ध हो जायें।

समातक-सज्ञा पु० कामदेव।  
समातर-वि० दो या दो से अधिक रेखाएँ, जो

धुरु से अन्त तक बराबर समान अन्तर पर रहे। समानान्तर।

समा-सज्ञा स्त्री० वर्ष। साल।

सज्ञा पु० दे० "समा"।

समाई-सज्ञा स्त्री० १ सामर्थ्य। शक्ति। २ औकात। ३ फैलाव। चौड़ाई। ५ समाने की क्रिया या भाव। ६ विसात। गुंजाइश।

समाकुल-वि० १ व्याप्त। घिरा हुआ। २ दुखी। परेशान।

समास्थान-सज्ञा पु० किसी घटना की मुख्य बातें क्रम से बणन करना।

समागत-वि० जिसका आगमन हुआ हो। आया हुआ।

समागम-सज्ञा पु० १ आगमन। आना। २ मिलना। भट। ३ मैथुन।

समाचार-सज्ञा पु० संवाद। खबर। हाल।

समाचारपत्र-सज्ञा पु० अखबार। वह पत्र, जिसमें अनेक प्रकार के समाचार रहते हो।

समाज-सज्ञा पु० १ समूह। व्यक्तियों का समूह। समुदाय। २ एक ही स्थान पर रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का व्यवसाय आदि करनेवाले लोगों का समूह। ३ विशेष उद्देश्य से स्थापित की गई संस्था। ४ सभा।

समाजवाद-सज्ञा पु० वह सिद्धान्त, जिसमें सारी सम्पत्ति समाज की मानी जाती है और सबके लाभ के लिए सब लोग कार्य करते हैं। (अंग्रे०-सोशलिज्म)

समाजवादो-सज्ञा पु० समाजवाद के सिद्धान्त को माननेवाला। (अंग्रे०-सोशलिस्ट)

समाजशास्त्र-सज्ञा पु० वह शास्त्र, जो मनुष्य को सामाजिक प्राणी मानकर उसके समाज और संस्कृति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन करता है। (अंग्रे०-सोशियलाजी)

समाजशास्त्री-सज्ञा पु० समाज-शास्त्र का जाननेवाला या समाज-शास्त्र का पंडित।

समाजी-सज्ञा पु० १ मानने-बजानेवाली वेदया के साथ तबलची या सारणी बजानेवाला।

२ आय-समाजी (गोलबाल में आय-समाजी का संक्षिप्त रूप) । ३ समासद । समावर-सना पु० [ वि० समादृत, समावर-णीय ] आदर । सम्मान । यातिर ।

समादृत-वि० जिसका बहुत अच्छी तरह से आदर मत्कार हुआ हो । बहुत अधिक सम्मानित ।

समादेश-सना पु० १ अधिकारपूर्वक आदेश या आज्ञा । २ निर्देश । ३ परामर्श । सनाह । ४ किसी को काम करने का आदेश देना । (अग्र०-समाह) ।

समादेशक-सना पु० आदेश देनेवाला । वह प्रधान ननिव अधिकारी, जिसने आदेश सना देने का काम हाते है । (अग्र०-समाह) ।

समाधान-सना पु० १ गंभीर करना । किसी व मन का सदेह दूर करनेवाली बात या काम । २ किसी प्रकार का विरोध दूर करना । ३ निष्पत्ति । ४ निराकरण । ५ मत की पुष्टि । समर्थन ।

वि० १ समाधानाय । चित्त को सब ओर से हटाने के लिये की ओर लगाना । समाधि । २ गीज को ऐसे रूप में पुनः प्रदर्शित करना, जिससे नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रकट हो (नाटक) ।

समाधानना-कि० स० समाधान करना । गतोय या सत्त्विना देना ।

समाधि-सना स्त्री० १ योग की त्रिपाद-विधि । २ योग द्वारा प्राण शरीर की वह अवस्था जिसमें सना या चेतना नष्ट हो जाती है और कोई शारीरिक क्रिया नहीं होती । ३ साधु महात्माओं का योग-द्वारा जादित दगा में जमीन के अंदर बँटकर अपना प्राण-त्याग करना (समाधि लेना) । ४ किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या जब जमीन में गाड़ना । ५ वह स्थान, जहाँ इन प्रकार शय या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हैं । ६ योग । ७ योग का चरण फल । इस अवस्था में मनुष्य सब प्रकार के कष्टों से मुक्त हो जाता है और उसे अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं । ८ गन्धन । ९ ग्रहण करना । अंगीकार । १० प्रतिभा ।

११ निद्रा । नाद । १२ नाभ्य का एक गुण, जिसके द्वारा वायु तथा पृथ्वी का दब-संयोग से एक ही समय में होना प्रकट होता है । १३ एक प्रकार का अन्धकार, जिसमें किसी अस्मिक कारण से कोई वायु बहुत ही नुगमतापूर्वक होना प्रकट होता है ।

समाधि भ्रम-सना पु० वह स्थान जहाँ यागिया आदि न समाधि की हूँ या उनके मृत शरीर गाड़ जाते हैं ।

समाधित-वि० जिसने समाधि लगाई या की हो ।

समाधित्य-वि० जो समाधि लगाए हुए है ।

समान-वि० १ बराबर । तुल्य । २ जो रूप, गण मान मूल्य, महत्त्व आदि में एक स है ।

समानता-सना स्त्री० समान होने का भाव । बराबरी । तुल्यता ।

समानांतर-वि० दो या अधिक रेखाएँ जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक बराबर समान अन्तर पर रहें । (अग्र०-परेल) समाना-कि० ५० अंदर आना । अटना । भरना ।

कि० स० अंदर करना । भरना ।

समानाधिकरण-सना पु० व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश, जो वाक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए आता है ।

समानाथ-सना पु० व शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो । पर्याय ।

समानिका-सना स्त्री० एक वन-वृक्ष, जिसके प्रत्येक चरण में रंगण जगण और एक गुह होता है । समानी ।

समापक-सना पु० समाप्त या पूरा करने-वाला । पूरा करनेवाला ।

समापन-सना पु० [ वि० समाप्य समाप-नाय ] १ समाप्त करना । पूरा करना । २ मार डालना । वध ।

समापत-सना पु० उपयोग से दो वादों या बातों का साथ या पट हो समय में चित्त होना ।

समापिका-सज्ञा स्त्री० व्याकरण में वह क्रिया, जिससे-किसी कार्य का समाप्त हो जाना सूचित होता है।

।मापित-वि० समाप्त किया हुआ। खत्म। पूरा किया हुआ।

।माप्त-वि० जो खत्म या पूरा हो चुका हो। अन्त। खत्म। पूरा।

।मान्ति-सज्ञा स्त्री० खत्म होना। पूरा होना। अन्त।

।माप्य-वि० समाप्त करने योग्य। खत्म करने लायक।

।माप्यक्त-वि० जरूरत पड़ने पर दिया गया या पास पहुँचाया हुआ।

।माप्यक्त-सज्ञा पु० १ प्रबन्ध करनेवाला। २ ऐसा प्रबन्ध करनेवाला कि जरूरत की चीजें लोगों को मिल जायें या उनके पास पहुँच जायें। समायोजक।

।मायोग-सज्ञा पु० १ संयोग। लोग का एकत्र होना। २ समारोह। ३ ऐसा प्रबन्ध या इन्तजाम, जिसमें लोगों की जरूरत की चीजें उन्हें मिल जायें, या उनके पास पहुँच जायें।

।मायोजन-सज्ञा पु० [वि० समायोजक] अच्छी तरह आयोजन। ऐसा प्रबन्ध जिसमें लोगों की जरूरत की चीजें मिल जायें या उनके पास पहुँच जायें। समायोग।

।मारम्भ-सज्ञा पु० १ अच्छी तरह आरम्भ होना। २ समारोह।

।मारोह-सज्ञा पु० १ बहुत धूमधाम से होने वाला कोई उत्सव या बड़ा काम। भारी आयोजन। धूमधाम। २ तड़क-भड़क।

।मालोचक-सज्ञा पु० समालोचना करने वाला। किसी चीज को अच्छी तरह देख-भाल करके उसके गुण और दोष को प्रकट करनेवाला।

।मालोचन-सज्ञा पु० दे० "समालोचना"।

।मालोचना-सज्ञा स्त्री० १ अच्छी तरह देखना-भालना। २. किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना। ३ गुण-दोष का उचित विवेचन। यह कथन

या लेख आदि, जिसमें इस प्रकार गुण और दोषों की विवेचना हो। आलोचना।

समावर्त्तन-सज्ञा पु० [वि० समावर्त्तनीय] १.

वापस आना। २ लौटना। ३ वैदिक काल का एक संस्कार, जो गुरुकुल में ब्रह्मचारी के अध्ययन समाप्त कर लेने पर उसके स्नातक बनकर घर लौटने के समय होता था। ४ विश्वविद्यालयों में प्रतिवर्ष होनेवाला वह समारोह, जिसमें परीक्षाओं में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को पदवियाँ दी जाती हैं। पदवीदान-समारोह। (अंग्रे०-कनवोकेशन)

समावास-सज्ञा पु० १ रहने का स्थान। २ एक देश से दूसरे देश में जाकर इस तरह बस जाना, जिसमें उस देश की नागरिकता के अधिकार मिल जायें। (अंग्रे०-डोमिसाइल)

समाविष्ट-वि० जिसका समावेश हुआ हो। समाया हुआ।

समावृत्त-वि० अच्छी तरह ढका हुआ।

सज्ञा पु० १ वापस आया हुआ। २ जो अध्ययन समाप्त करके घर लौट आया हो।

समावेश-सज्ञा पु० १ एक का दूसरे में मिलना। २ एक साथ या एक जगह रहना। ३ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना। ४ मनोनिवेश। चित्त को एक ओर लगाना।

समाश्रय-सज्ञा पु० आश्रय। शरण।

समाश्रित-वि० आश्रय या शरण में रहने वाला।

समास-सज्ञा पु० १ पदार्थों का एक में मिलना। सम्मिलन। २ सङ्घेप। ३ समर्थन। ४ सप्रह। ५ व्याकरण में शब्दों का कुछ नियमों के अनुसार मिलकर एक होना। यह चार प्रकार का होता है-अव्ययीभाव, समानाधिकरण, तत्पुष्प और द्वन्द्व।

समासीन-वि० भस्ती भाँति आसीन, खुर अच्छी तरह में बँटा हुआ। दे० "जरीन"।

समाहरण-सज्ञा पु० दे० "समाहार"।

समाहर्त्ता-सज्ञा पु० १ समोहार करनेवाला। मगह करनेवाला। मिलानेवाला। २. प्रार्थन काल का राज-नर वमूल करनेवाला एक कर्मचारी (अंग्रे०-कलेक्टर)।

समाहार-सज्ञा पु० १ बहुत-सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। सग्रह। २ समूह। राशि। ढेर। ३ मिलना। मिलाप। ४ षर, चन्दा, या प्राप्त पण आदि की समुत्ती। ५ दम, नियम आदि के अनुसार ठीक ढंग से इकट्ठा होना।

समाहार-द्वय-सज्ञा पु० वह द्वय-समास, जिससे उसके पदा के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता है। जैसे—सेठ-साहू-कार।

समाहित-वि० १ समाया हुआ। २ समुक्त। मिला हुआ। ३ एक जगह इकट्ठा किया हुआ। एकन। केंद्रित। ४ ठीक किया हुआ। ५ पूरा किया हुआ। समाप्त। ६ दबाया हुआ। शांत। ७ स्वीकृत। ८ समाधिस्थ।

समिति-सज्ञा स्त्री० १ सभा। २ समाज। ३ किसी विशेष कार्य के लिए नियुक्त की हुई छोटी सभा। (अग्ने०-कमटी)। ४ वैदिक काल की वह सभा या सत्सभा, जिसमें राजनीतिक विषयों पर विचार होता था।

समिद्ध-वि० १ जलता हुआ। प्रज्वलित। २ उत्तेजित। भडका, या भडकाया हुआ। समिध-सज्ञा पु० अग्नि।

समिधा-सज्ञा स्त्री० हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी।

समीकरण-सज्ञा पु० १ समान या बराबर करना। २ गणित में एक त्रिया, जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से अज्ञात राशि का पता लगाते हैं। ३ बीजगणित की एक क्रिया जिसके द्वारा दो राशियाँ बराबर की जाती हैं।

समीक्षक-वि० समीक्षा करनेवाला। अच्छी तरह से देखने-भालनेवाला। छान-बीन और जाँच-पड़ताल करनेवाला। आलोचना करनेवाला। समालोचक।

समीक्षा-सज्ञा स्त्री० [वि० समीक्षित, समीक्ष्य] १ अच्छी तरह देखना। २. छान-बीन या जाँच। समालोचना। गुण-दोष का विवेचन। ३ बुद्धि। ४ यत्न। कोशिश। ५ भीमासा-शास्त्र।

समीचीन-वि० [सज्ञा स्त्री० समीचीनता]

१. उचित। याजिव। न्यायसंगत। २. यथायं। ठीक।

समीप-वि० [सज्ञा समीपता] पास। नजदीक। निकट।

समीपवर्ती-वि० समीप का। पास का। समीपस्थ-वि० जो समीप या पास में स्थित हो। नजदीक।

समीपी-वि० १ पड़ोसी। २ नजदीकी। ३. स्वजन। आत्मीय।

समीर-सज्ञा पु० हवा। वायु।

समीरण-सज्ञा पु० हवा। वायु।

समुदर-सज्ञा पु० दे० "समुद्र"।

समुचित-वि० १ उचित। जैसा चाहिए, वैसा। २ उपयुक्त। ठीक। याजिव।

समुच्चय-सज्ञा पु० [वि० समुचित] १ बहुत-सी वस्तुओं का एक में मिलना।

मितान। सग्रह। २ समूह। राशि। ढेर।

३ साहित्य में एक अलंकार, जिसके दो नव हैं। एक तो जहाँ आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि बहुत-से भावों के एक साथ उदित होने का वर्णन हो और दूसरा, जहाँ किसी एक ही कार्य के लिए बहुत से कारणों का वर्णन हो।

समुज्ज्वल-वि० [सज्ञा समुज्ज्वलता] १ विशेष रूप से या बहुत उज्ज्वल या सफेद।

२ चमकता हुआ। प्रकाशमान।

समुत्त-सज्ञा स्त्री० दे० "समस्त"।

समुत्थान-सज्ञा पु० १ उठने की क्रिया। उत्थति। २ उदात्ति। ३ आरन।

समुत्पुङ्ग-वि० [सज्ञा समुत्पुङ्गता] विशेष रूप से उत्पुङ्ग। बहुत इच्छुक।

समुदय-सज्ञा पु० दे० "उदय"।

वि० समस्त। दे० "समुदाय"।

समुदाय-सज्ञा पु० १ समूह। २ झुंड।

समुदाय-सज्ञा पु० दे० "समुदाय"।

समुदित-वि० १ उठा हुआ। उन्नत। २ उत्पन्न।

समुद्यत-वि० भली भाँति उद्यत। अच्छी तरह से तैयार।

समुद्र-सज्ञा पु० १ सागर। जलनिधि। सारे पानी का विशाल आगार, जो पृथ्वी को चारों

ओर से घेरे हुए हैं। २. नदियों के राजा, स्वामी या पति के रूप में मान्य (साहित्य)। पुराणों में सात समुद्रों का वर्णन है—जवण, इक्षु, सुरा, मृत, दधि, दुग्ध और जल। ३. किसी विषय या गुण का बहुत बड़ा आगार या खजाना।

समुद्रफल—संज्ञा पु० एक औषध।

समुद्रफेन—संज्ञा पु० समुद्र के पानी का फेन या झाग।

समुद्रयात्रा—संज्ञा स्त्री० समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की यात्रा।

समुद्रयान—संज्ञा पु० जहाज।

समुद्रलवण—संज्ञा पु० करकच नमक, जो समुद्र के जल से बनता है।

समुद्री—वि० समुद्र-सम्बन्धी। दे० "समुद्रीय"।

समुद्रीय—वि० १. समुद्र-सम्बन्धी। २. समुद्र का। ३. समुद्र में उत्पन्न होनेवाला या समुद्र में रहनेवाला।

समुन्नत—वि० १. खूब बढ़ा-बढ़ा हुआ। भली भाँति उन्नत। जिसकी विशेष उन्नति हुई हो। २. बहुत ऊँचा।

समुन्नति—संज्ञा स्त्री० [वि० समुन्नत] - १. विशेष या पर्याप्त उन्नति। काफी तरक्की। २. महत्त्व। बढ़ाई। ३. उन्नता।

समुपस्थित—वि० दे० "उपस्थित"।

समुत्लास—संज्ञा पु० [वि० समुत्लसित] १. उत्लास। आनंद। खुशी। २. प्रय आदि का अध्याय।

समुहा—वि० सामने का।

क्रि० वि० सामने। आगे।

समुहाना—क्रि० अ० सामने आना।

समुचा—वि० सारा। पूरा। समस्त।

समुद्र, समुह—संज्ञा पु० शबर या साबर नामक द्वीप।

समुल—वि० जिसमें मूल या जड़ हो। जिसका कोई कारण हो। कारण-सहित।

क्रि० वि० जड़ से। जड़ के साथ। मूल-सहित।

समुह—संज्ञा पु० १. बहुत-सी चीजों का ढेर। राशि। २. समुदाय। दूढ़।

समुद्र—वि० १. सागर। बहुत धनी। भरा-पूरा। २. भाग्यवान्।

समुद्धि—संज्ञा स्त्री० १. बहुत धन, ऐश्वर्य आदि से युक्त होने की अवस्था। सम्पन्नता। बहुत अमीरी। ऐश्वर्य। धन। सम्पत्ति। २. उन्नति। बढ़ती। ३. सफलता। ४. प्रभाव।

समेटना—क्रि० स० १. सिकोड़ना। बटोरना। सकोच करना। २. बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। ३. अपने ऊपर लेना।

समेत—वि० संयुक्त। मिला हुआ।

अव्य० सहित। साथ।

समै, समैया\*—संज्ञा पु० दे० "समय"।

समोना\*—क्रि० स० मिलाना।

समोसा—संज्ञा पु० एक प्रकार का नमकीन पकवान। (आलू, मसाला आदि भरकर बनाई हुई गंदे की खाने की नमकीन चीज) लिकोना।

समोरिया—वि० बराबर की उमरवाला। समवयस्क।

सम्मत—संज्ञा पु० १. दे० "सम्मति"। राय। सलाह। २. अनुमति।

वि० सहमत। जिसकी राय मिलती हो। सम्मति—संज्ञा स्त्री० १. सलाह। राय। मत। २. विचार। ३. अभिप्राय। ४. अनुमति।

आदेश। ५. किसी विषय पर कुछ लोगों की एक राय होना। ६. एकमत होना। ७. किसी के प्रस्ताव या विचार के समर्थन में दो जानेवाली अनुमति।

सम्मत—संज्ञा पु० [अप्रे० समन] किसी को न्यायालय में उपस्थित होने के लिए उस न्यायालय-द्वारा जारी किया गया आज्ञापत्र।

सम्मान—संज्ञा पु० [वि० सम्मानित] प्रतिष्ठा। इज्जत। सम्मान या आदर करना।

सम्मानना—संज्ञा स्त्री० दे० "सम्मान"।

\*क्रि० स० आदर या मान करना। सम्मानित—जिसका सम्मान हुआ\* हो। प्रतिष्ठित। इज्जतदार।

सम्माननी—संज्ञा स्त्री० दाढ़ू। सम्मिलन—संज्ञा पु० मिलान। मिलन। मेल।

सम्मिलित—वि० मिला हुआ। सामिल। मिश्रित। संयुक्त।

सम्मिश्रण-सज्ञा पु० सम्मिश्रण करनेवाला।  
मिलानेवाला। विभिन्न दवाओं को मिलाकर  
के दवा तैयार करनेवाला। (अग्ने-  
कम्पाउण्डर)

सम्मिश्रण-सज्ञा पु० १ मिलने की क्रिया।  
मेल। मिलावट। कई चीजों का एक में  
मेल। २ कई तरह की दवाओं को एक  
में मिलाना।

सम्मुख-अव्य० सामने। आगे। समक्ष।  
सम्मेलन-सज्ञा पु० १ किसी विशेष कार्य के  
लिए या किसी विषय पर विचार करने  
के लिए एकत्र मनुष्यों का समाज। सभा।  
समाज। परिषद्। जमघट। २ मिलाप।  
संगम।

सम्मोहन-सज्ञा पु० [वि० सम्मोहक] १  
मोहित या मुग्ध करना। २. मोह उत्पन्न  
करनेवाला। ३ एक प्राचीन अस्त्र, जिससे  
घन को मोहित कर लेते थे। ४ कामदेव  
के पाँच वाणों में से एक।

सम्यक्-क्रि० वि० १ सब प्रकार से। २  
अच्छी तरह। भली भाँति। ठीक-ठीक।  
वि० पूरा। सब।

सम्राज्ञी-सज्ञा स्त्री० सम्राट की पत्नी।  
साम्राज्य की स्वामिनी या अधीश्वरी।  
मलका।

सम्राट्-सज्ञा पु० बहुत बड़ा राजा, जिसके  
अधीन अनेक राजा या राज्य हों। चक्रवर्ती  
राजा। महाराजाधिराज। शाहशाह।  
सम्प्लुता-क्रि० अ० दे० "सम्प्लुत"।  
सपन\*-सज्ञा पु० १ दे० "शयन"। २  
यघन।

सपानपत-सज्ञा स्त्री० दे० "सपानपन"।  
सपानपन-सज्ञा पु० सपाना या चालाक होने  
का भाव। चालाकी।

सपाना-सज्ञा पु० १ काफी उम्रवाला। बड़ा।  
बयस्क। २ चतुर। होशियार। चालाक।  
३ पूर्य। ४ निपुण। ५ बुद्धिमान्।

सपानि-वि० एक ही यानि से उत्पन्न। एक  
ही जाति या वंश का।  
सर-सज्ञा पु० ताता। तात।  
२ \*१० "सर"।

[फा०] १ सिर। २ सिर। चोटी।  
सज्ञा स्त्री० १ दे० "सर"। २ चिता।  
वि० १ दमन किया हुआ। २ जीता हुआ।  
पराजित।

सरअंजाम-सज्ञा पु० [फा०] सामान।  
सामग्री।

सरकड़ा-सज्ञा पु० नरकट। सरपन की जाति  
का एक पीप।

सरक-सज्ञा स्त्री० १ सरकने की क्रिया या  
भाव। २ शराब की खुमारी।

सरकना-क्रि० अ० १ जमीन से सटकर धीरे  
से उठना। खिसकना। २ टलना। हटना।  
३ आगे बढ़ना।

सरकदा-वि० [फा०] [सज्ञा सरकशी] १.  
उड़त। उड़ड़। शरारती। २ विरोध में  
सिर उठानेवाला।

सरकस-सज्ञा पु० [अर्ध०] १ शारीरिक व्या-  
याम के खेल और जगती जानबरा की  
पालतू बनाकर उनसे खेल दिखाने का  
तमाशा। २ ऐसे खेल दिखाने का  
दल।

सरकाना-क्रि० स० खिसकाना। टालना।  
हटाना।

सरकार-सज्ञा स्त्री० [फा०] [वि० सर-  
कारी] १ राज्य-शासन करनेवाली संस्था।  
राज्य-संस्था। शासन-सत्ता। २ मालिक।  
प्रभु। ३ (अग्ने-तयनमेट)।

सरकारी-वि० [फा०] १ सरकार का। २  
सरकार-सम्बन्धी। राज्य का। राजकीय।  
३ मालिक का।

यौ०-सरकारी वागज=राज्य के वपतर  
वा वागज।

सरखत-सज्ञा पु० [फा०] १ वह दस्तावेज या  
वागज, जिस पर नर्जा लेनबा के के हस्ता-  
क्षर के साथ नर्जा दिए जाने और उसके  
चुकों आदि का व्योरा लिखा रहता है।  
२ वह इस्तामेज (हस्तलिखित पत्र), जिस  
पर मुकान आदिके विगए या और तरह के  
लेन-देन का व्योरा लिखा रहता है।

सरग\*-सज्ञा पु० दे० "म्वग"।

सरगतिव\*-सज्ञा स्त्री० अवस्था। परी।

सरगना-सज्ञा पु० [फा०] सरदार। अगुवा।  
 क्रि० अ० डंगि हांकना।  
 सरगम-सज्ञा पु० [सा, रे, ग, म] संगीत  
 में सात स्वरों के चढ़ाव-उतार का क्रम।  
 (स्वरग्राम)  
 सर-गरदा-वि० [फा०] [सज्ञा स्त्री०] सर-  
 गरदानी। १. धवराया हुआ। २. चक्कर में  
 पड़ा हुआ।  
 सर-गर्म-वि० [सज्ञा सरगर्मी] [फा०] १.  
 जोशाला। आवेशपूर्ण। २. उमंग से भरा  
 हुआ। उत्साही।  
 सरगर्मी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. जोश।  
 आवेश। उमंग। २. जोर-शोर। चहल-  
 पहल।  
 सर-घर सज्ञा पु० नीर रखने का खाना।  
 तरकश।  
 सरघा-सज्ञा स्त्री० मधुमक्खी। शहद की  
 मक्खी।  
 सरजना-क्रि० स० १. दे० "सरिजना।" सृष्टि  
 करना। २. रचना। बनाना।  
 सरजा-सज्ञा पु० [फा० सरजाह] १. श्रेष्ठ  
 व्यक्ति। २. सरदार। ३. सिंह। शेर।  
 सरजीवन-वि० १. जिलानेवाला। २. हरा-  
 भरा। ३. उपजाऊ।  
 सरजोर-वि० [फा०] (सज्ञा सर-  
 जोरी) १. बहुत बलवान् या ताकतवर।  
 २. जबरदस्त। प्रबल। ३. दबंग। जिसका  
 बहुत रोवदाव हो। प्रभावशाली। ४.  
 विद्रोही। ५. उड़्ड।  
 सरणी-सज्ञा स्त्री० १. पगडंडी। मार्ग।  
 रास्ता। २. लकीर। रेखा। ३.  
 दंग।  
 सरताज-सज्ञा पु० दे० "सरिताज"।  
 सरतार-वि० जो अपना काम खत्म करके  
 निश्चित हो गया हो।  
 सरद-वि० दे० 'सर्द'।  
 सरदई-वि० सरदे के रंग का। हरापन लिये  
 हुए पीला।  
 सर-दर-क्रि० वि० १. एक सिरे में। २. सब  
 एक साथ मिला करके उसके पिचार में या  
 उमंग अनुपात में। औनद म।

सरदा-सज्ञा पु० [फा०] काबुल का बड़िया  
 खरबूजा।  
 सरदार-सज्ञा पु० [फा०] १. नायक।  
 अगुवा। नेता। प्रधान। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।  
 ३. शासक। ४. अमीर। रईस।  
 यो-सरदारजी-किसी सिख को सम्बोधित  
 करने के लिए आदरसूचक शब्द। [स्त्री०  
 सरदारणी]  
 सरदारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] सरदार का  
 पद या भाव।  
 सरदी-सज्ञा स्त्री० दे० "सर्दी"।  
 सरधन-वि० धनी। अमीर।  
 सरपर-सज्ञा पु० तीर रखने का खाना।  
 तरकश।  
 सरघा-सज्ञा स्त्री० दे० "शरघा"।  
 सज्ञा पु० दे० 'सरदा'।  
 सरन-सज्ञा स्त्री० दे० "शरण"।  
 सरनदीप-सज्ञा पु० दे० "सिंहल-दीप"।  
 सरना-क्रि० अ० १. सरकना। खिसकना।  
 २. हिलना। डोलना। ३. काम चलना।  
 काम निकलना। ४. किया जाना। निघटना।  
 निर्वाह होना। पूरा होना।  
 सरनाम-वि० [फा०] बहुत नामवाला।  
 प्रसिद्ध। मशहूर।  
 सरनामा-सज्ञा पु० [फा०] १. दीपक।  
 २. पत्र प्रारम्भ करते समय लिखा जानेवाला  
 सम्बोधन। ३. पत्र के ऊपर लिखा जानेवाला  
 पता।  
 सरपंच-सज्ञा पु० पंचों का प्रधान। पञ्चायत  
 का सभापति।  
 सरपजर-सज्ञा पु० बाणों का बना हुआ  
 पिंजड़ा या घेरा।  
 सरपट-क्रि० वि० १. धोड़े की एक प्रकार की  
 बहुत तेज चाल या दौड़, जिसमें बड़े दोनों  
 अंगों पर साथ-साथ जागे करता है। २.  
 बहुत तेज दौड़ के साथ।  
 सरपत-सज्ञा पु० कुत्तों की तरह की एक प्राण,  
 जो छप्पर आदि छाने के काम में जाती है।  
 सर-परस्त-सज्ञा पु० [फा०] पातन-सोपान-  
 करनेवाला। अभिभावक। सरदाक। रस्ता  
 करनेवाला।

सरपेच-संज्ञा पुं० [फा०] १. पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना। २. दो डार्ड अंगुल चौड़ा गोटा।

सरपौंस-संज्ञा पुं० [फा०] घाल या तस्तरी ढकने का कपड़ा।

सरफराज-वि० [फा०] [संज्ञा सरफराजी] ऊँचे पद पर पहुँचा हुआ। सम्मानित।

सरफराना-क्रि० अ० घबराना। व्याकुल होना। परेशान या बेचैन होना।

सरफोका-संज्ञा पुं० दे० "सरकंडा"।

सरबंधी\*-संज्ञा पुं० तीरदाज। धनुर्धर।

सरब\*†-वि० दे० "सर्व"।

सर-बराह-संज्ञा पुं० [फा०] १. कारिदा। प्रबंधकर्त्ता। इन्तजाम करनेवाला। २. मजदूरों आदि का सरदार। ३. रास्ते में ठहरने और खाने-पीने आदि का प्रयत्न करनेवाला।

सरबराहकार-संज्ञा पुं० किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला। कारिदा। इन्तजाम करनेवाला।

सरवरि\*-संज्ञा स्त्री० १. दे० "सरवरि"। बराबरी। मुकाबला। २. छिटाई। गुस्ताखी। ३. झगड़ा। तकरार।

सरबस\*†-संज्ञा पुं० दे० "सर्वस्व"।

सरमा-संज्ञा स्त्री० इन्द्र तथा अन्य देवताओं की एक प्रसिद्ध कुतिया (वैदिक)।

सरयू-संज्ञा स्त्री० उत्तर-भारत की एक प्रसिद्ध नदी। घाघरा नदी।

सरराना†-क्रि० अ० [अनु०] हवा में किसी चीज के बहुत तेजी से चलने का शब्द होना।

सरल-वि० [स्त्री० सरला] १. सहज। आसान। २. जो टेढ़ा न हो। सीधा। ३. निष्कपट।

संज्ञा पुं० १. चीड़ का पेड़। २. सरल का गोंद। गंधा-विरोजा।

सरलता-संज्ञा स्त्री० १. सुगमता। आसानी। २. टेढ़ा न होने का भाव। सीधापन। ३. निष्कपटता। सिपाई। ४. सादगी। भोलापन।

सरल-निर्म्यास-संज्ञा पुं० १. गंधा-विरोजा। २. बाइपीन का तेल।

सरलीकरण-संज्ञा पुं० किसी कठिन विषय

को सरल या आसान करने की क्रिया या भाव। (अंग्रे०-सिम्प्लीफिकेशन)

सरवन\*-संज्ञा पुं० दे० "ध्रुवण या ध्रुवण-कुमार"।

सरवर-संज्ञा पुं० दे० "सरवर"।

सरवरि\*†-संज्ञा स्त्री० बराबरी। तुलना।

सरवरिया-संज्ञा पुं० सरयूपारीप।

वि० सरवार या सरयू-पार का। सरयू पार का रहनेवाला।

सरवाक-संज्ञा पुं० १. शरावक। संपुट।

२. प्याला। कसोरा। ३. दीया।

सरवान-संज्ञा पुं० तंबू। खेमा।

सरवार-संज्ञा पुं० सरयू नदी के उस पार का प्रदेश, जिसमें गोरखपुर और बस्ती आदि जिले हैं।

सरविस-संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] दे० "सर्विस"।

सरस-वि० [संज्ञा स्त्री० सरसता] १.

रसीला। रसयुक्त। गीला। तर। २. हरा।

ताजा। ३. सुंदर। मनोहर। ४. मधुर। मीठा।

५. रस या कोमल भाव उत्पन्न करनेवाला।

६. उत्तम। ७. रसिक। ८. सहृदय। भावपूर्ण।

सरसई\*-संज्ञा स्त्री० १. सरस्वती। २.

सरसता। ३. रसपूर्णता। रसिकता।

हरापन। ताजापन। ४. फल के छोटे अंडुर या दाने, जो पहले दिखाई पड़ते हैं।

सरसता-संज्ञा स्त्री० १. सरस होने का भाव।

२. रसीलापन। रसिकता। ३. भावपूर्णता।

४. सुंदरता। ५. मधुरता। मीठापन। ६.

गीलापन। आर्द्रता। तरी।

सरसना-क्रि० अ० १. हरा होना। पनपना।

बढ़ना। २. शोभा देना। सोहाना। ३. रसपूर्ण

होना। ४. भाव की उमंग से भरना।

सरसग्द-वि० [फा०] १. हरा-भरा।

लहलहाता हुआ। २. वह जगह, जहाँ

हरियाली हो।

सर-सर-संज्ञा पुं० १. जमीन पर रेंगने का

शब्द। २. वायु चलने से उत्पन्न ध्वनि, जैसे साँप आदि के जमीन पर तेजी से रेंगने से

पैदा होनेवाली आवाज।

सरसराना-क्रि० अ० [संज्ञा स्त्री०

सरसराहट] १. हवा का सर-सर की आवाज

करते हुए बहना। सनसनाना। २. साँप आदि का रेंगना। ३. जल्दी-जल्दी लिखना या कोई काम करना।

सरसराहट—सज्ञा स्त्री० १. सर-सर की आवाज उत्पन्न होने का भाव। सर-सर की आहट या आवाज। २. साँप आदि के रेंगने से पैदा होनेवाली आवाज। ३. हवा बहने की आवाज। ४. खुजली। मुरमुराहट।

सरस्वती—वि० बिना ध्यान लगाए। जल्दी से। मोटे तौर पर।

सरसाई—सज्ञा स्त्री० १. सरसता। २. सुदरता। शोभा। ३. अधिकता।

सरसाना—क्रि० सं० १. रसपूर्ण करना। २. हँसा-भरा करना।

\*क्रि० अ० दोभा देना। सजना। सरसना। सरसाम—सज्ञा पु० [फा०] सन्निपात। एक बीमारी, जिसमें तेज बुखार में आदमी अकथक बोचने लगता है।

सरसार—वि० [फा०] सरघार १. डूबा हुआ। मग्न। २. नशे में चूर। मदमस्त।

सरसिज—सज्ञा पु० कमल। वि० तालाब में पैदा होनेवाला (शाब्दिक अर्थ)।

सरसिरह—सज्ञा पु० कमल।

सरसी—सज्ञा स्त्री० १. छोटा सरोवर। छोटा ताल। वावली। २. एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में न, ज, भ, ज, ज, ज, ज और र होते हैं।

सरसीरह—सज्ञा पु० कमल।

सरसेटना—क्रि० सं० [अनु०] फटकारना। सरसी-खोटी सुनाना।

सरसी—सज्ञा स्त्री० १. तेलहन। २. राई। एक पौधा, जिसके छोटे गोल बीजा से तेल निकलता है।

सरसीहो—वि० सरस बनाया हुआ।

सरस्वती—सज्ञा स्त्री० १. विद्या और वाणी की देवी (इनका लक्ष्मी से विराध माना जाता है)। वाग्देवी। पुराणा के अनुसार ब्रह्मा की स्त्री और उनकी पुत्री। ब्रह्मा के मुँह से उत्पन्न हान के कारण “वाणी” उनकी पुत्री और सर्वदेव उनके साथ रहने के कारण

उनकी स्त्री कही जाती है। सरसदा। २. विद्या। इलम। ३. ग्राह्णी वृष्टि। ४. एक प्राचीन नदी। कहा जाता है कि पृथ्वी के नीचे-नीचे बहकर यह नदी प्रयाग में गंगा और यमुना से मिल गई है, जिससे त्रिवेणी (सगम) नाम पड़ा। ५. पंजाब की एक प्राचीन नदी, जिसका उल्लेख ऋग्वेद में है। ६. सोमलता। ७. एक छंद का नाम।

सरस्वती-पूजा—सज्ञा स्त्री० सरस्वती का उत्सव, जो कही वसंतपंचमी को और कही कही आश्विन महीने में होता है।

सरहग—सज्ञा पु० [फा०] १. सेनापति। २. कोत-वाल। ३. सैनिक। सिपाही। ४. पहलवान।

सरह—सज्ञा पु० १. फतिगा। २. टिड्डी।

सरहज—सज्ञा स्त्री० साले की स्त्री। पत्नी के भाई की स्त्री।

सरहदी—सज्ञा स्त्री० सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुलकंद।

सरहद—सज्ञा स्त्री० १. सीमा। २. किसी भूमि की चौहद्दी निर्धारित करनेवाली रेखा या चिह्न। सीमान्त।

सरहदी—वि० सरहद-संबंधी। सीमा-संबंधी।

सरहरी—सज्ञा स्त्री० भूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।

सराई—सज्ञा स्त्री० १. झलाका। सलाई। २. सरकड़े की पतली छड़ी। ३. सकोरा। दीया।

सराग—सज्ञा पु० लोहे की सीख। सीखचा। छड़।

सराध—सज्ञा पु० दे० “श्राद्ध”।

सराना—सज्ञा पु० दे० “सारना”। पूरा कराना। काम पूरा कराना।

सराप—सज्ञा पु० दे० “श्राप”।

सरापना—सज्ञा पु० दे० “श्राप”। स० श्राप देना। बददुआ देना।

सरापा—सज्ञा पु० सिर से पैर तक। नय-शिख तक।

सराफ—सज्ञा पु० [अ० सराफ़] १. साने-चांदी का व्यापारी। २. रुपए-नोट आदि भुनान के लिए रुपए-नोट रखकर बैठनेवाला। भूतानसार।

सराफा—सज्ञा पु० [अ०] १. सराफ़ का काम या

पेशा। सोने-चांदी का व्यापार। २ रुपए के लन-देन का काम। ३ सोने-चांदी का बाजार। सराफा का बाजार। ४ कोठी।

सराफो-सजा स्त्री० १. सोने-चांदी या रुपए-पैसे के लन-देन का रोजगार। २ नोट, रुपए आदि भुनाने का बढ़ा। ३ महाजनी लिपि। मुंडिया।

सराबोर-वि० बिलकुल भीगा हुआ। आप्ला-वित। तरबतर।

सराय-सजा स्त्री० [फा०] यात्रिया के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना। धर्मशाळा।

सराय\*†-सजा पु० १ शराब पीने का प्याला। मद्यपात्र। २ बस्तोरा। ३ कटोरा। ४ दीया।

सरायगी, सरायगी-सजा पु० ध्रावक। जैन-धर्म माननेवाला। जैन।

सरासन\*-सजा पु० दे० "शरासन"।

सरासर-अव्य० [फा०] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक। २ बिलकुल। पूरा पूरा। एकदम। ३ प्रत्यक्ष। साक्षात्।

सरासरी-क्रि० वि० १ जल्दी में। हड़बड़ी में। २ मोटे तौर पर।

सजा स्त्री० [फा०] १ आसानी। २ जल्दी। ३ साधारण अनुमान। मोटा अंदाज।

सराह\*-सजा स्त्री० बड़ाई। प्रशंसा। इलाफा। सराहना-क्रि० स० तारीफ करना। प्रशंसा करना। बड़ाई करना।

सजा स्त्री० तारीफ। प्रशंसा।

सराहनीय\*-वि० १ तारीफ या बड़ाई करने लायक। प्रशंसा के योग्य। २ अच्छा। बढ़िया।

सरि\*-सजा स्त्री० १ नदी। २ झरना। वि० सदृश। समान। बराबर।

सरिता-सजा स्त्री० १ नदी। २ धारा।

सरित्पति-सजा पु० समुद्र।

सरियाना†-क्रि० स० तरतीब से लगाना। क्रम से ठीक करके रखना।

सरिवन-सजा पु० शालपर्ण नामक पौधा। त्रिपर्णी।

सरिवरि\*-सजा स्त्री० १ बराबरी। समता। २ आपस में झगडा। तकरार। ३ पड़ा-ऊपरी।

सरिस्ता-सजा पु० [फा०] १ अदालत। बचहरी। विभाग। महकमा। २ कार्यालय। बफतर।

सरिस्तेवार-सजा पु० [फा०] १ जिसो विभाग का प्रधान कर्मचारी। २ अदालत में मुकदमा की मिसलें रखनेवाला यमंचारी।

सरिस\*-वि० दे० "सदृश" समान।

सरो-सजा स्त्री० १ छाटा तालाब। २ झरना। साता।

सरोक्ता\*-सजा स्त्री० [अ० शरीक] शिर-कत। शामिल होने का भाव। साझा।

सरोका, सरोला-वि० समान। तुल्य।

सरोमुष-सजा पु० रेंगकर चलनेवाले जंतु। साप, गिरगिट, वनसज्जरा आदि।

सरोज-वि० रोगी। बीमार।

सरूप-वि० क्रोधमुक्त। क्रुद्ध। नाराज।

सरूप-वि० १ जिसका कोई रूप या आकार हो। रूपमुक्त। आकारवाला। २ सदृश। समान। ३ रूपवान्। सुंदर।

†सजा पु० दे० "स्वरूप"।

सरूप-सजा पु० [फा० मुहर] १ हलका नशा। २ खुशी। प्रसन्नता।

सरेख, सरेखा†-वि० [स्त्री० सरेखी] १ बड़ा और समझदार। २ सयाना। चालाक।

सरेखना-क्रि० स० दे० "सहेजना"।

सरे-बस्त-क्रि० वि० [फा०] १ इसी समय। अभी। २ इस समय के लिए।

सरे-बाजार-क्रि० वि० [फा०] खुले आग। बाजार में। सबके सामने।

सरेस-सजा पु० [फा० सरेस] एव तसदार वस्तु जो ऊँट, भैंस आदि के चमड़े या तीग और मछली के पोटों आदि को पकाकर निकालते हैं। सहरेस।

सरोह\*†-सजा पु० सिलवट। कपडा में पड़ी हुई सिलवट। सिकन।

सरो-सजा पु० [फा०] एक तरह का सीधा पद, जिसे दगीचो में शोभा के लिए लगाते हैं। वनसाऊ।

सरोकार-सजा पु० [फा०] १ आपस के व्यवहार का संबंध। २ लगाव। नास्ता।

सरोज-सजा पु० कमल।

सरोजना—क्रि० स० पाता ।

सरोजभव—सज्ञा पु० ब्रह्मा । विधाता । प्रजा-पति ।

सरोजिनी—सज्ञा स्त्री० १ कमलों से भरा हुआ तालाब । २. कमलों का समूह । ३. कमल का फूल ।

सरोद—सज्ञा पु० [फा०] बीणा जैसा एक बाजा ।

सरोह—सज्ञा पु० कमल ।

सरोवर—सज्ञा पु० १ तालाब । २. झील ।

सरोय—वि० क्रुद्ध । नाराज ।

सरो-सामान—सज्ञा पु० [फा०] १. सारा सामान । पूरी सामग्री । २ उपकरण । क्रि० वि० सामान के साथ । सब सामान लिये-दिये ।

सरोता—सज्ञा पु० [स्त्री० सरोती] सुपारी आदि काटने का एक औजार ।

सरकित हाउस—सज्ञा पु० [अंग्रे०] सरकारी कोठी, जिसमें दौरा करनेवाले बड़े अधिकारी ठहरते हैं ।

सरकुलर—सज्ञा पु० [अंग्रे०] १ परिपत्र । गश्ती चिट्ठी । २ दफ्तरो में घुमाया जानेवाला आज्ञापत्र ।

सर्प—सज्ञा पु० १. चलना । आगे बढ़ना । गमन । गति । २. सृष्टि । ३. ससार । ४. बहाव । छोड़ना । चलाना । फेंकना । ५. उद्गमन । उत्पत्ति-स्वान । ६ प्राणी । जीव । ७. सतान । ओताड़ । ८ स्वभाव । प्रवृत्ति ।

१. किसी ग्रन्थ (विशेषतः नाट्य) का अध्याय । १०. जीवा या प्राकृतिक वस्तुआ आदि का कोई अलग पूरा समूह या वर्ग—जैसे, वनस्पति-सर्ग, जीव-सर्ग ।

सर्गवध—वि० जो बड़े अध्यायों में बँटा हो जैसे—सर्गवध नाट्य ।

सर्गनर्त—वि० दे० “सर्गन” ।

सर्प—सज्ञा पु० १. बड़ी जाति का घात कुश । घतई वा पेड़ । २ रात । ३ भूत ।

सर्प स्त्री० [अंग्रे०] एक तरह का बड़िया जमी कपड़ा ।

सर्पेन—सज्ञा पु० [वि० सर्पेनीय, सर्पिण] १. छोड़ना । फटना । निहालना । २.

रचना । बनाकर तैयार करना । ३. सृष्टि । [अंग्रे०] चोर-फाड़ करनेवाला डाकटर । शल्य-चिकित्सक ।

सर्टीफिकेट—सज्ञा पु० [अंग्रे०] १ प्रमाणपत्र । सनद । २ परीक्षा में उत्तीर्ण होने या किसी अधिकार का प्रमाणपत्र । ३ किसी प्रतिष्ठित परिचित-द्वारा अपनी योग्यता आदि के विषय में लिखाया गया प्रमाणपत्र ।

सर्व—वि० [फा०] १ ठड़ा । क्षीतल । २. मद । सुस्त । काहिल । ३. ढीला । धीमा । ४. नपुंसक । नामर्द ।

सर्द—सज्ञा पु० काबुल में होनेवाला बढ़िया खरबूजा ।

सर्दी—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. सर्द होने का भाव । ठंड । २. जाड़ा । शीत । ३ जुकाम । नजला ।

सर्प—सज्ञा पु० [स्त्री० सर्पिणी] १. साँप । २ रेंगना । रेंगकर चलने की क्रिया । ३. प्राचीन समय की एक म्लेच्छ जाति (पुराण) ।

सर्पकाल—सज्ञा पु० १ गड़ड़ । २ जो साँप के लिए काल के समान हो । (गड़ड़ पक्षी साँप खाता है) ।

सर्पयज्ञ, सर्पयाग—सज्ञा पु० एक यज्ञ, जिसे जनमेजय ने साँपों का नाश करने के लिए किया था ।

सर्पराज—सज्ञा पु० साँपों के राजा, शेषनाग । वासुकि ।

सर्पविद्या—सज्ञा स्त्री० साँप को पकड़ने और उसे घर में करने की विद्या ।

सर्पिणी—सज्ञा स्त्री० १. सर्पिण । मादा साँप । २. भुजगी लता ।

सर्पिल—वि० १ साँप की तरह । २ साँप के आकार या शक्ल का । ३ साँप की तरह कुड़ती मारे हुए । ४. साँप की चाल की तरह का टेढ़ा-तिरछा ।

सर्प—वि० [अ०] १ सर्प जैसा हुआ । जो सर्पों से घिरा हो । २ जो तप घरा हो ।

सर्पा—सज्ञा पु० [अ० सर्पः] सर्प । व्याघ्र ।

सरटा—सज्ञा पु० [अ०] हुवा के जोर से चलने पर हानवाला सर-सर आवाज ।

ऐसी तेजी से भागना, जिससे सर- सर आवाज हो।

मुहा०—सर्गटा भरना=बहुत तेजी से सर-सर आवाज करते हुए इधर से उधर दौटना।

सर्वाफ-सज्ञा पु० [अ०] सोने-चाँदी का व्यापारी या रुपए-पैसे का लेनदेन करनेवाला। सराफ। सर्व-वि० सब। सारा। समस्त।

सज्ञा पु० १. शिव। २. विष्णु ३. पारा। सर्वकाम-सज्ञा पु० १. शिव। २. सब दृष्टाएँ रखनेवाला। ३. सब दृष्टाएँ पूरी करनेवाला।

सर्वकाल-सज्ञा पु० नित्य। सदा। हमेशा।

सर्वक्षमा-सज्ञा स्त्री० सबको क्षमा करनेवाली क्षमा या माफी। किसी अवसर विशेष पर या किसी खास कारण से सब बन्धियों को क्षमा करके छोड़ देना।

सर्वग-वि० सब जगह जानेवाला। सर्वगामी। सब जगह फैलनेवाला।

सर्वगत-वि० १. सबमें मौजूद रहनेवाला। २. सर्वव्यापी। सब जगह मौजूद।

सर्वप्राप्त-सज्ञा पु० चंद्रमा या सूर्य का पूर्ण ग्रहण, जिसमें उनका मंडल पूरी तरह छिप जाता है। अप्राप्त ग्रहण।

सर्वजनिक-वि० दे० सार्वजनिक।

सर्वजित्-वि० सबको जीतनेवाला।

सर्वज्ञ-वि० [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला।

सज्ञा पु० १. ईश्वर। २. शिव। ३. मुद्ग। जैतियों के अर्हत।

सर्वज्ञता-सज्ञा स्त्री० 'सर्वज्ञ' होने का भाव। सब कुछ जानने का भाव।

सर्वज्ञा-सज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. एक योगिनी का नाम।

सर्वज्ञानी-सज्ञा पु० दे० 'सर्वज्ञ'।

सर्वज्ञेय-सज्ञा पु० सब प्रकार के धार्मिक सिद्धान्त।

वि० जिसे सब शास्त्र मानते हैं।

सर्वज्ञ-अव्य० १. सब ओर। चारों तरफ।

२. सब प्रकार से। हर तरह से।

सर्वतोभ्र-वि० १. सब ओर से मगल। २.

जिसके सिर, दाढ़ी, मूँछ आदि सबके वाँ मुड़े हों।

सज्ञा पु० १. वह चौखूँटा मंदिर, जिसके चारों ओर दरवाजे हों। २. यज्ञ की प्रधान वेदी, जिस पर प्रधान देवता की स्थापना होती है। ३. एक प्रकार का मांगलिक चिह्न, जो पूजा पर चढ़ाए जानेवाले वस्त्र पर बनाया जाता है। ४. एक प्रकार की पहेली, जिसमें शब्द के सटाक्षरा के भा अलग-अलग अर्थ लिये जाते हैं। ५. एक प्रकार का चित्र काव्य। ६. विष्णु का रत्न।

सर्वतोभाव-अव्य० सब प्रकार से। खूब अच्छी तरह। भली भाँति।

सर्वतोमुख-वि० १. जिसका मुँह चारों ओर हो। चतुर्मुख ब्रह्मा। २. व्यापक। सब दिशाओं में प्रवृत्त। ३. जीवात्मा। ४. जल। ५. अग्नि। ६. आकाश। ७. शिव।

सर्वत्र-अव्य० सब जगह। चारों ओर।

सर्वथा-अव्य० १. सब तरह से। पूर्णतया।

२. बिल्कुल। सब।

सर्वदर्शी-सज्ञा पु० [स्त्री० सर्वदर्शिणी] सब

कुछ देखनेवाला। ईश्वर।

सर्वदा-अव्य० हमेशा। सदा।

सर्वनाम-सज्ञा पु० व्याकरण में वह शब्द जिसका प्रयोग सज्ञा के स्थान पर किया जाता है, जैसे—मैं, तू, वह।

सर्वनाश-सज्ञा पु० सत्यानाश। पूरी बरबादी।

सर्वप्रिय-वि० सबको प्यारा। सबको अच्छा लगनेवाला।

सर्वभक्षी-वि० [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला।

सज्ञा पु० अग्नि।

सर्वभोगी-वि० [स्त्री० सर्वभोगिनी] १. सब कुछ खानेवाला। २. सबका आनंद लेनेवाला।

सर्वभूत-सज्ञा पु० सारा ससार। ब्रह्मचर।

सर्वममता-सज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।

सर्वयोगी-सज्ञा पु० शिवजी।

सर्वरी-सज्ञा स्त्री० दे० "सर्वरी"।

सर्वज्ञेय-वि० सब कुछ जाननेवाला। सर्वज्ञ।

सर्वव्यापक-सज्ञा पु० दे० "सर्वव्यापी"।

सर्वव्यापी-वि० [स्त्री० सर्वव्यापिनी] सब में रहनेवाला। सब जगह मौजूद।

सज्ञा पु० ईश्वर।

सर्वशक्तिमान्-वि० [स्त्री० सर्वशक्तिमती] सब कुछ करने की शक्ति या सामर्थ्य रखनेवाला जो सब कुछ कर सके। जिसमें सब शक्तियाँ हो।

सर्वश्री-वि० जितने नामों का उल्लेख हो, उन सबके आगे अलग-अलग 'श्री' न लगाकर सबके आरम्भ में ही लगाया जानेवाला एक आदरसूचक शब्द।

सर्वश्रेष्ठ-वि० १. सबसे अच्छा। सर्वोत्तम। २. सबसे अधिक आदरणीय या पूज्य।

सर्वसाधारण-सज्ञा पु० सब लोग। जनता। साधारण या आम जनता। आम लोग।

वि० सामान्य। आम। जो सबम आम तौर पर पाया जाय।

सर्वसामान्य-वि० साधारण। मामूली। जो सबमें एक-सा पाया जाय।

सर्वस्व-सज्ञा पु० जितना पास में हो, वह सब। सारी सम्पत्ति। सब कुछ। कुल पूंजी।

सर्वहर-सज्ञा पु० १. सब कुछ छीन लेनेवाला। २. शिवजी। ३. यमराज। ४. काल।

सर्वांग-सज्ञा पु० पूरा शरीर। सारा बदन। सब अंग। सब अंश।

सर्वांगीण-वि० १. सब अंग से युक्त। सम्पूर्ण। २. सब अंगों से सम्बन्ध रखनेवाला। ३. हर तरह से, जैसे सर्वांगीण उन्नति।

सर्वात्मा-सज्ञा पु० १. सारे ससार की आत्मा। ब्रह्म। २. शिव।

सर्वाधिकार-सज्ञा पु० सब कुछ करने का अधिकार। पूरा अधिकार या इस्तिमारे।

सर्वाधिकारी-सज्ञा पु० १. जिसके हाथ में पूरा अधिकार या हो। सब कुछ करने का अधिकारी। २. सबसे बड़ा हाकिम।

सर्वाप्ती-वि० [स्त्री० सर्वाप्तिनी] सब कुछ सनेवाला। सर्वभक्षी।

सर्वास्तिवाद-सज्ञा पु० एक दार्शनिक सिद्धांत, जिसमें यह माना जाता है कि सब वस्तुओं की वास्तव में सत्ता है और वे अस्त नहीं हैं।

सर्विस-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १. नौकरी। २. सेवा। ३. सेवा या नौकरी करने का भाव।

सर्वेश, सर्वेश्वर-सज्ञा पु० १. ईश्वर। २. सबका मालिक ३. चक्रवर्ती राजा।

सर्वेश्वरवाद-सज्ञा पु० एक सिद्धान्त, जिसमें माना जाता है कि ईश्वर एक है और वह ससार के सभी जीवों और तत्वों में एक समान व्याप्त है।

सर्वैश्वर्य-वि० पूरा मालिक। सब कुछ करने-धरनेवाला। किसी काम में सब कुछ करने का अधिकार रखनेवाला।

सर्वोच्च-वि० [सज्ञा सर्वोच्चता] सबसे ऊँचा। सबसे बड़ा।

सर्वोत्तम-वि० सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोच्च न्यायालय-सज्ञा पु० किसी देश की सबसे ऊँची अदालत। [अग्रे०-सुप्रीम कोर्ट]

सर्वोपरि-वि० सबसे ऊपर। सबसे बढकर।

सर्वो उत्तम या बड़ा। सर्वश्रेष्ठ।

सर्वोपधि-सज्ञा स्त्री० आयुर्वेद में ओषधियों का एक वर्ग, जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं।

सर्प-सज्ञा पु० १. सरसों। २. सरसों भर की तौल।

सलई-सज्ञा स्त्री० १. दे० "शल्लकी"। २. चीड़ का पेड़। ३. चीड़ का गाद। ४. कुंदुर।

सलगम-सज्ञा पु० दे० "शल्लजम"।

सलज्ज-वि० धर्मवाला। सज्जाशील।

फि० वि० सज्जा के साथ। सरमाते हुए।

सलना-फि० अ० १. साला जाना। २. छिदना। चुभना। गड़ना। ३. साठ या तल्ल को पट्टों के सिरे या पावों के छेद में डाला जाना।

सल्य-वि० [अ०] नष्ट। बरबाद।

सलमा-सज्ञा पु० [अ०] सोने या चांदी या गोल लपेटा हुआ तार, जो बेल-बूटे, धनाने के काम में आता है। बारता।

सल्यट-नमा स्त्री० दे० "गिल्यट"।

सल्यार-सज्ञा स्त्री० दे० "शल्ल्यार"।

सलहज-सज्ञा स्त्री० सरहज। काले की पत्नी।

सलार्ई-सना स्त्री० १. शलाका। धातु या काष्ठ आदि की बनी हुई कोई पतली छोटी छड़।

२. दियासलार्ई। ३. गुरमा लगाने की सलार्ई।

४. सालने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

मुहा०—सलार्ई फेरना=सलार्ई गरम करके

अपा करने के लिए आँखों में लगाना।

सलाक-सना पु० १. शलाका। २. तीर।

सलाख-सना स्त्री० १. धातु वा घना हुआ छड़। २. सलार्ई। शलाका।

सलाब-सना पु० [अग्रे० 'सेलाब'] १. मूली, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेजी ढग से ढाला हुआ अचार। २. एक प्रकार के कद के पत्ते, जो प्रायः कच्चे खाए जाते हैं।

सलाम-सना पु० [ज०] प्रणाम। उदगी। आदाब।

मुहा०—दूर से सलाम करना=किनी घुरी चीज के पास न जाना। अलग रहना।

सलाम लेना=सलाम का जवाब देना।

सलाम देना=सलाम करना।

सलामत-वि० [अ०] १. सकुशल। २. सब

प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। रक्षित।

३. कायम। बरफरार। ४. जोयित और

स्वस्थ। तदुस्त और जिंदा।

कि० वि० कुशलपूर्वक। खेरियत से।

सलामती-सना स्त्री० १. कुशल-श्रेम। २. स्वस्थता।

सलामी-सना स्त्री० १. प्रणाम करने की

क्रिया। सलाम करना। २. सैनिकों-द्वारा

घस्रो से अभिवादन (सलाम) करने

की प्रणाली (अग्रे० 'गार्ड आफ

आनर')। ३. किसी बड़े अधिकारी या

माननीय व्यक्ति के आने पर उसके सम्मान

के लिए तोषों या बड़कों का दागना।

४. वह धन, जो मकान या जमीन के

मालिक किराएदारों से उसे किराए पर

देने में पहले किराए के असावा लेते हैं।

पगड़ी।

मुहा०—सलामी लेना=किसी बड़े अधि-

कारी या माननीय व्यक्ति का खड़े होकर

सैनिकों का अभिवादन स्वीकार करना।

सलार-सना पु० एक तरह की चिड़िया।

सलाह-सना स्त्री० [अ०] १. सम्मति। राय।

२. परामर्श। मशवरा।

सलाहकार-सना पु० परामर्श देनेवाला।

राय देनेवाला।

सलाही-सना पु० दे० "सलाहकार"।

सलिल-सना पु० पानी।

सलिलपति-सना पु० समुद्र। वरुण (जल के देवता)।

सलोका-सना पु० [अ०] १. काम करने का

ठीक-ठीक ढग। योग्यता। लियार्कत। २. हुनर।

३. शिष्टता। शऊर। तमीज। ४. चाव-

चलन। वरताव। ५. सम्यता। तहजीब।

सलोकामंड-वि० सम्य। शऊरदार। तमीज-

दार। हुनरमंद।

सलोता-सना पु० एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा।

सलोल-वि० १. तीला या कीड़ा से युक्त।

कीतुकी। सेलाडी। कुतूहल-त्रिप। २. किसी

प्रकार की भावभंगी से युक्त।

सलोत-वि० [अ०] १. आसान। सुगम।

२. मुहाबरेदार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक-सना पु० [अ०] बर्ताव। व्यवहार।

आचरण। मेल। भलाई। नेकी।

सलेमगाही-सना पु० एक प्रकार का जूता,

जिसमें फीता नहीं रहता और जो मोनदार

होता है।

सलोतर-सना पु० दे० "शालिहोत्र"।

सलोतरी-सना पु० दे० "शालिहोत्री"।

सलोना-वि० [स्त्री० सलोनी] १. नमकीन।

जिसमें नमक पड़ा हो। २. गुन्दर। ३.

रसीला। ४. मनोहर।

सलोनापन-सना पु० सलोना होने का भाव।

सलोनो-सना पु० हिंदुओं का रक्षाबन्धन

नामक त्योहार, जो श्रावण-मास में पूर्णिमा

को पड़ता है। राखी पूनो।

सल्लनत-सना स्त्री० [अ०] १. राज्य।

बादशाहत। २. साम्राज्य। ३. प्रबध।

इतनाम। ४. शुभीता। आराम।

सल्लम-सना स्त्री० एक प्रकार का मोटा

कपड़ा। गाढ़ा। गजी।

सल्लू-सना पु० जूता सीने का चमड़ा।

सुवत-सज्ञा स्त्री० दे० "सीत"।  
 सुवन-सज्ञा पु० १. वच्चा जनना। प्रसव। २. मुशस्तान। ३. यज्ञ। ४. चन्द्रमा। ५. अग्नि।  
 सुवर्ण-वि० १. समान वर्ण या जाति का। एक जातिवाला। २. समान। सदृश।  
 सवा-सज्ञा स्त्री० पूरा और उसका चौथाई। एक और उसका चौथाई। १ १/४।  
 वि० पूरे से उसका एक चौथाई अधिक।  
 सवाई-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का ऋण, जिसमें मूलधन का चौथाई सूद में देना पड़ता है। २. राजपूतों की एक उपाधि। ३. जयपुर के महाराजाओं की एक उपाधि।  
 वि० सवा। एक और चौथाई।  
 सवाब-सज्ञा पु० [अ०] १. अच्छे काम का फल, जो स्वर्ग में मिलेगा। २. पुण्य। भलाई।  
 सवाया-वि० चौथाई अधिक। सवा गुना।  
 सवार-सज्ञा पु० [फा०] १. वह, जो घोड़े पर चढ़ा हो। अश्वारोही। २. अश्वारोही सैनिक या सिपाही। ३. वह, जो किसी सवारी या चीज पर चढ़ा हो।  
 वि० किसी चीज पर चढ़ा या बैठा हुआ।  
 सवारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. ऐसी चीज, जिस पर चढ़कर चला जाय। वाहन। गाड़ी। जैसे रेल, मोटर, तांगा, एक्का आदि। २. किसी चीज पर चलने के लिए चढ़ने की क्रिया। ३. वह व्यक्ति, जो सवार हो। ४. किसी देवमूर्ति आदि को रख या किसी सवारी पर रखकर या किसी बड़े आदमी के साथ चलनेवाला जुलूस।  
 सवाल-सज्ञा पु० [अ०] १. प्रश्न। २. पूछने की क्रिया। ३. किसी वस्तु की माँग। ४. निवेदन। प्रार्थना। ५. गणित का प्रश्न, जो उत्तर निकालने के लिए दिया जाता है।  
 सवाल-जवाब-सज्ञा पु० [अ०] १. जहल। वादविवाद। २. तकरार। झुझत। ३. झगडा।  
 सविकल्प-वि० १. विकल्प-रहित। सदेह-युक्त। सद्विध। २. जो किसी पिण्ड के राना पक्षा या मत्तों आदि को, कुछ निर्णय न कर मरने के कारण, मानता हो।  
 गता पु० दो प्रकार की समाधिमा में से

एक समाधि, जो किसी आत्मन् की सहायता से होती है।  
 सविता-सज्ञा पु० १. सूर्य। २. बारह की सख्या। ३. आक। मंदार।  
 सवितापुत्र-सज्ञा पु० सूर्य के पुत्र, हिरण्यपाणि।  
 सवितासुत-संज्ञा पु० शनैश्चर।  
 सविनय अवज्ञा-संज्ञा स्त्री० राज्य की किसी आज्ञा या कानून को न मानकर उसका उल्लंघन करना।  
 सवेरा-सज्ञा पु० १. प्रातःकाल। सुबह। २. निश्चित समय के पूर्व का समय।  
 सवेरा-सज्ञा पु० १. एक छंद, जिसके प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु होता है। मालिनी। २. वह पहाड, जिसमें एक, दो, तीन आदि सख्याओं का सवाया रहता है। ३. सवा सेर। तोलने का सवा सेर का वाट।  
 सव्य-वि० १. दायीं। वाम। ३. प्रतिकूल।  
 सज्ञा पु० १. यज्ञोपवीत। २. विष्णु।  
 सव्यसाची-सज्ञा पु० अर्जुन।  
 सव्रण-वि० जिसे व्रण या पाव हो। जिसे पाव लगे हो। घायल।  
 सशंक-वि० १. जिसे शका हो। २. जिसे सन्देह या डर हो। शकित। भयभीत। ३. भयानक।  
 सशंकना-क्रि० अ० शका करना। सन्देह करना। डरना।  
 सप्त\*-सज्ञा पु० दे० "शप्ति"। चन्द्रमा। दे० "शस्य"। सेती-नारी।  
 सप्तर्षि-सज्ञा पु० दे० "शप्तर्षि" सप्तर्षि।  
 सप्तहर\*-सज्ञा पु० दे० "शप्तिहर"।  
 सप्ता-सज्ञा पु० दे० "सप्तक"।  
 सप्ताना\*-क्रि० अ० १. पर्वराना। २. कापना।  
 सप्ति\*-सज्ञा पु० दे० "शप्ति"। चन्द्रमा।  
 सप्तिपर\*-सज्ञा पु० शप्तिपर। चन्द्रमा।  
 सप्तिहर\*-सज्ञा पु० दे० "शप्तिपर"।  
 सप्ती\*-सज्ञा पु० दे० "शप्ति"।  
 समुद्र-सज्ञा पु० पति या पत्नी का पिता।  
 समुद्र।  
 समुद्रा-सज्ञा पु० १. दे० 'समुद्र'। २. समुद्र। समुद्र। ३. एक प्रकार की माली।

समुद्राल-सज्ञा स्त्री० श्वशुरालय। श्वशुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर।  
सस्ता-वि० [स्त्री० सस्ती] १ कम दाम का। जो महंगा न हो। २ जिसका भाव बहुत उतर गया हो। ३ साधारण। मामूली। पटिया। मुहा०—सस्ते छूटना=१ कम खर्च या मेहनत में कोई काम हो जाना। २ आसानी से किसी बड़े काम या सकट से छुटकारा पाना।

सस्तागाना—क्रि० अ०, किसी चीज का कम दाम पर बिकना।

क्रि० स० सस्ते दामा पर बेचना।

सस्ती-सज्ञा स्त्री० १ सस्ता होन का भाव। सस्तापन। २ वह समय, जब कि सब चीजें सस्ती मिलें।

सस्तीक-वि० जिसके साथ स्त्री हो। स्त्री या पत्नी के साथ। सपत्नीक।

सस्य-सज्ञा पु० दे० सस्य।

सस्मित-वि० मुसकराता या हँसता हुआ।

क्रि० वि० मुसकराते हुए। मुसकराकर। हँसकर।

सह-अव्य० साथ। सहित। युक्त।

वि० १ मौजूद। उपस्थित। २ सनथ। योग्य। ३ सहनशील।

सहकार-सज्ञा पु० १ सहयोग। दूसरा के साथ मिलकर काम करने का भाव या प्रवृत्ति। २ सहायता। ३ सहायक। ४ मुगधित वस्तु। ५ आम का पद।

सहकारिता-सज्ञा स्त्री० १ दे० सहकारिता। २ सहयोग। सहायता।

सहकार-सम्मिलित, सहकारी-सम्मिलित-वह सम्मिलित या सस्या, जिसे उपभोक्ता या व्यवसायी आदि आपस में मिलकर सबके हित के लिए बनाते हैं और जिसके द्वारा वे कुछ चीजें बेचने या बनाने आदि का प्रबन्ध करते हैं। [अंग्रे०—कोऑपरेटिव सोसाइटी] सहकारिता-सज्ञा स्त्री० १ एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना या ऐसे काम करने का भाव। परस्पर सहयोग देना या देने का भाव। सहकारी या सहायक होम का भाव। २ सहयोग। आपस की सहायता।

सहकारी-सज्ञा पु० [स्त्री० सहकारिणी] १ एक साथ काम करनेवाला। साथी। सहयोगी। २ सहायक। मददगार। (अंग्रे०—असिस्टेंट)। जैसे, सहकारी सम्पादक।

सहगतक-सज्ञा पु० १ साथ जानेवाला। २ वह कागज-पत्र, जो किसी पत्र के साथ नली करके लिफाफे में भेजे जाते हैं। (अंग्रे०—एन्क्लोजर)

सहगमन-सज्ञा पु० १ पति के शव के साथ पत्नी का सती होना। स्त्री का अपने पति के साथ ही सत्तार से चला जाना। २ साथ जाना।

सहगान-सज्ञा पु० १ कई आदमिया का एक साथ मिलकर गाना। २ इस प्रकार गाना जानवाला गीत। (अंग्रे०—कोरस)

सहगामिनी-सज्ञा स्त्री० १ स्त्री। पत्नी। २ पति के शव के साथ सती होनेवाली स्त्री। सहगमन करनेवाली स्त्री। ३ सहचरी। सगिनी। सखी।

सहगामी-सज्ञा पु० [स्त्री० सहगामिनी] साथ चलनवाला। साथी। अनुयायी।

सहगोन\*—सज्ञा पु० दे० 'सहगमन'।

सहचर-सज्ञा पु० [स्त्री० सहचरी] १ साथ चलनवाला। साथी। २ दोस्त। मित्र। ३ सेवक। नौकर।

सहचरी-सज्ञा स्त्री० १ पत्नी। बीबी। २ सखी।

सहचार-सज्ञा पु० साथ। सग। सोहवत। दे० 'सहचर'।

सहचारिणी-सज्ञा स्त्री० १ साथ में रहनेवाली पत्नी। २ सखी।

सहचारिता-सज्ञा स्त्री० सहचर होन का भाव। साथ में रहन का भाव।

सहचारी-सज्ञा पु० [स्त्री० सहचारिणी] १ दे० 'सहचर'। सगी। साथी। २ सेवक।

सहज-वि० १ आसान। सरल। सुगम। २ स्वाभाविक। प्राकृतिक। ३ साधारण। ४ साथ उत्पन्न होनेवाला।

सज्ञा पु० [स्त्री० सहजा] १ सगा भाई। २ स्वभाव।

सहजधारी-सज्ञा पु० गुरु मानव का वह

अनुयायी जो सिर और दाढ़ी आदि के बाल न बढ़ाता हो, बल्कि हिन्दुओं की तरह कटवाता या मुँडवाता हो।

सहजपथ—सज्ञा पु० गौडीय वैष्णव सम्प्रदाय का एक निम्नवर्ग।

सहजबुद्धि—सज्ञा स्त्री० जीव-जन्तुओं में वह स्वाभाविक ज्ञान या शक्ति, जो उन्हें कोई काम करने या न करने की प्रेरणा देती है।

सहजात—वि० १. एक साथ या एक ही समय उत्पन्न होनेवाला। यमज। २. सहोदर।

सहजिया—सज्ञा पु० सहज सम्प्रदाय या पथ का अनुयायी।

सहत-महत, सहेत-महेत—सज्ञा पु० दे० "श्रावस्ती।"

सहस्रा—सज्ञा पु० १. पित्तपापडा। २. पर्यटक।

सहस्राना\*†—कि० अ० दे० "सुस्ताना"।

सहस्व—सज्ञा पु० १. "सह" का भाव। २. एकता। ३. मेल-जोल।

सहस्रानो\*—सज्ञा स्त्री० निशानी। पहचान। चिह्न।

सहदेई—सज्ञा स्त्री० एक पहाड़ी और जंगली ओषधि। एक तरह का पोषा।

सहदेव—सज्ञा पु० राजा पांडु के सबसे छोटे पुत्र। माद्री के गर्भ और अश्विनीकुमारों के औरस से इनका जन्म हुआ था।

सहधर्मचारिणी—सज्ञा स्त्री० पत्नी। समान धर्म का पालन करनेवाली या धर्म-पालन करने में सहयोग देनेवाली स्त्री।

सहधर्मिणी—सज्ञा स्त्री० पत्नी। समान धर्म पालन करनेवाली।

सहधर्म्यो—वि० समान धर्म का पालन करनेवाला। समान धर्मवाला।

सज्ञा पु० पति। (स्त्री० सहधर्मिणी)

सहन—सज्ञा पु० १. सहन की क्रिया। बरदाश्त करना। २. क्षमा। सहिष्णुता। ३. आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। सज्ञा पु० [अ०] १. मवान के बीच में या सामने का खुला छाँटा हुआ भाग। आंगन। चौक। २. एक प्रकार का बड़िया देगमी कपडा।

सहनभंडार—सज्ञा पु० कोष। खजाना। धन-राशि। दौलत।

सहनशील—वि० [सज्ञा सहनशीलता] १. बरदाश्त करनेवाला। सहिष्णु। २. सलोपी।

सहनशीलता—सज्ञा स्त्री० सहनशील होने का भाव। सहिष्णुता। बरदाश्त करने का भाव।

सहना—कि० स० १. बरदाश्त करना। झेलना। २. फल भोगना। ३. अपने ऊपर भार लेना। बोझ बर्दाश्त करना।

सहनीय—वि० सहन करने योग्य। बर्दाश्त करने लायक।

सहपाठी—सज्ञा पु० साथ पढ़नेवाला। जो साथ में पढ़ा हो। सहाध्यायी।

सहप्रतिवादी—सज्ञा पु० किसी मुकदमे में मुख्य प्रतिवादी के साथ गौण रूप में प्रतिवादी बतलाया गया व्यक्ति। (अर्थे—को-डिफेंडेंट)।

सहयाला—सज्ञा पु० दे० "शहवाला।"

सहभावी—वि० १. साथ-साथ होनेवाला। २. साथ-साथ चलने या रहनेवाला।

सहभोज—सज्ञा पु० १. बहुत से लोगों का एक साथ बैठकर खाना। २. एक साथ खाना।

सहभोजन—सज्ञा पु० एक साथ बैठकर खाना।

सहभोजी—सज्ञा पु० एक साथ बैठकर खानेवाला।

सहम—सज्ञा पु० [फा०] १. सकोच। तिहाज। २. डर। भय।

सहमत—वि० १. एक मत का। जिसके विचार या राय दूसरे की राय से मिलती हो। २. राजी।

सहमना—कि० अ० [फा०] १. डरना। २. सकोच या तिहाज करना। हिचकना।

सहमरण—सज्ञा पु० १. एक साथ मरना। २. सती होना। ३. सहगमन।

सहमाना—कि० स० डराना।

सहमृता—सज्ञा स्त्री० सहमरण करणवाली स्त्री। सती।

सहयोग—सज्ञा पु० १. साथ मिलकर काम करने का भाव। २. सहायता। ३. मदद। साथ। संग। ४. बहुत से लोगों का साथ मिलकर कोई काम करने का भाव।

सहयोगी—संज्ञा पुं० साथ मिलकर काम करने-वाला। सहयोग देनेवाला। सहायक।

सहर—संज्ञा पुं० [अ०] १. प्रभात। तड़का। प्रातःकाल। सबेरा। २. जादू। टोना। ३. दे० “शहर”।

कि० बि० १. धीरे-धीरे। २. धीमी चाल से। ३. रक-रककर।

सहरगही—संज्ञा स्त्री० वह भोजन, जो निजल व्रत करने के पहले बहुत तडके किया जाता है। सहरी।

सहरा—संज्ञा पुं० [अ०] १. सात्ती मंदान। २. जगल। ३. बन। बन-बिलाव।

सहराना\*†—कि० स० दे० “सहलाना”।

\*†कि० अ० दे० “सिहरना”।

सहरी—संज्ञा स्त्री० १. दे० “शफरी”। मछली। २. दे० “सहरगही”।

सहल—वि० आसान। सरल। सहज।

सहलाना—कि० स० १. धीरे-धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना। सहराना। सुहराना।

२. मलना। ३. धीरे-धीरे खूजलाना।

सहवास—संज्ञा पुं० १. एक साथ रहना। संग। साथ। २. मैथुन। संभोग।

सहवासो—संज्ञा पुं० एक साथ रहनेवाला। संगी। साथी।

सहप्रता—संज्ञा स्त्री० धर्मपत्नी। सहधर्मिणी।

सहस—वि० दे० “सहस”।

सहसकिरण—संज्ञा पुं० दे० “सहसकिरण”। सूर्य।

सहसगी\*—संज्ञा पुं० दे० “सहसगु”। सूर्य।

सहसा—अव्य० एकाएक। अचानक।

सहसाक्षि\*—संज्ञा पुं० दे० “सहसाक्ष”। इद्र।

सहसाक्षी\*—संज्ञा पुं० दे० “सहसाक्ष”। इद्र।

सहसानन\*—संज्ञा पुं० दे० “सहसानन”। शोषनाग।

सहस्र—संज्ञा पुं० दस सौ की संख्या। एक हजार। १०००।

वि० जो गिनती में एक हजार हो।

सहस्रकर—संज्ञा पुं० सूर्य। जिसकी हजार किरणें हो।

सहस्रकिरण—संज्ञा पुं० सूर्य। हजार किरणों वाला।

सहस्रचक्र—संज्ञा पुं० इंद्र। हजार आंखोंवाला। सहस्रदल—संज्ञा पुं० कमल। जिसकी हजार पंगुड़ियाँ हों।

सहस्रपारा—संज्ञा स्त्री० देवतानों को स्नान कराने का एक प्रकार का छेददार पात्र।

सहस्रनाम—संज्ञा पुं० वह स्तोत्र, जिसमें किसी देवता के हजार नाम हों।

सहस्रनेत्र—संज्ञा पुं० इद्र।

सहस्रपाद—संज्ञा पुं० १. सूर्य। २. विष्णु।

३. सारस पक्षी।

सहस्रबाहु—संज्ञा पुं० १. शिव। २. कात्तंबोर्या-जुन, जो क्षत्रिय राजा कुतवीर्य का पुत्र था।

इसका दूसरा नाम हैहय था। ३. राजा बलि के सबसे बड़े पुत्र।

सहस्रभुजा—संज्ञा स्त्री० देवी का एक रूप।

सहस्ररश्मि—संज्ञा पुं० सूर्य।

सहस्रलोचन—संज्ञा पुं० इन्द्र।

सहस्रशायं—संज्ञा पुं० विष्णु।

सहस्राक्ष—संज्ञा पुं० १. इद्र। २. विष्णु।

सहस्राब्दी—संज्ञा स्त्री० १. एक हजार वर्षों का समय। २. किसी संवत् या सन् के एक हजार वर्षों का समूह। सहस्रा।

सहस्रार—संज्ञा पुं० हठ-योग के अनुसार शरीर के अन्दर के ६ चक्रों में से एक चक्र, जो मस्तिष्क के ऊपरी भाग में माना गया है, और जो विशान के अनुसार मन तथा उन गितटियों का केंद्र है, जिनसे शरीर का विकास होता है।

सहाशिक—संज्ञा पुं० अपने हिस्से के रूप में किसी को कुछ देनेवाला।

वि० सहाय के रूप में।

सहाइ, सहाई\*†—संज्ञा पुं० सहायक। मददगार।

संज्ञा स्त्री० सहायता। मदद।

सहाउ\*—संज्ञा पुं० दे० “सहाय”।

सहाध्यायी—संज्ञा पुं० दे० “सहापाठी”।

सहाना—संज्ञा पुं० कुर्क की हुई चीज की ख-वाली करने के लिए नियुक्त व्यक्ति।

(मुकदमों में अदालत की आज्ञा से बिबाद-ग्रस्त वस्तु कुर्क की जाती है। उसकी हिफा-जत के लिए जो आवसी नियुक्त किया जाता है, उसे सहाना कहते हैं।)

\*वि० दे० "सहाना"। (स्त्री० सहानी)।

सहानुगमन—संज्ञा पु० दे० "सहगमन"।

सहानुभूति—संज्ञा स्त्री० दूसरे के दुख से दुखी होना। दूसरे को दुखी देखकर स्वयं दुखी होना।  
हमदर्दी।

सहाय—संज्ञा पु० १. सहायता। मदद। सहारा।  
२. आश्रय। भरोसा। ३. सहायक। मददगार।

सहायक—वि० (स्त्री० सहायिका) १. सहायता करनेवाला। मददगार। २. किसी के अधीन या मातहत रहकर काम में उसकी सहायता करनेवाला। सहकारी। (अग्रे०—असिस्टेण्ट)  
३. किसी बड़ी नदी में मिलनेवाली छोटी नदी।

सहायता—संज्ञा स्त्री० १. मदद। किसी के कार्य में योग देना। सहाय। किसी के कार्य में शारीरिक परिश्रम या धन आदि से मदद देना। २. किसी काम को आगे बढ़ाने या जारी रखने के लिए दिया जानेवाला धन।

सहायी—संज्ञा पु० १. सहायक। मददगार।  
२. सहायता। मदद।

सहार—संज्ञा पु० १. सहना। २. वर्दास्त। सहनशीलता।

सहारना†—क्रि० स० १. दे० "सहना"। सहन करना। वर्दास्त करना। २. अपने ऊपर भार लेना।

सहारा—संज्ञा पु० १. भरोसा। इतमीनान।  
२. आश्रय। आसरा। ३. मदद। सहायता।  
४. अफीका का मरुस्थल।

सहाय्य—संज्ञा पु० १. व्याह-शादी के दिन। लग्न। २. वे महीने या दिन जिनमें विवाह के मुहूर्त हो।

सहाय्य—संज्ञा पु० दे० "साहल"।

सहिजन—संज्ञा पु० योमाजन। एक बड़ा पेड़, जिसकी लंबी फलियों की तरकारी होती है। मून्गा।

सहिजानी†—संज्ञा स्त्री० निगानी। चिह्न। पहचान।

सहित—अव्य० साथ। समेत। युक्त।

सहिदान†—संज्ञा पु० दे० "सहिदानी"।

सहिदानी†—संज्ञा स्त्री० १. निगानी। किन्तो की अपनी स्मृति या यादगार के लिए दी

गई कोई चीज। २. चिह्न। ३. पहचान।  
४. लक्षण। ५. निशान।

सहिष्णु—वि० [संज्ञा सहिष्णुता] सहन करनेवाला। सहनशील। वर्दास्त करनेवाला।

संज्ञा स्त्री० सहनशीलता। वर्दास्त करने का भाव।

सही—वि० १. शुद्ध। ठीक। २. सत्य। सच।  
प्रामाणिक। यथार्थ। ३. हस्ताक्षर। दस्तखत।  
मुहा०—सही भरना=मान लेना। 'हाँ' कहना।

सही-सलामत—वि० १. सकुशल। २. स्वस्थ।  
तन्दुरुस्त। आरोग्य। ३. अच्छी तरह।  
४. जिसमें कोई दोष या कमी न आई हो।

सह\*—अव्य० १. सम्मुख। सामने। २. ओर।  
तरफ।

सहलियत—संज्ञा स्त्री० [फा०] १. आसानी।  
सुभीता। सुगमता। २. अदब। ३. गऊर।

सहृदय—वि० [संज्ञा सहृदयता] १. दूसरे के दुख-सुख आदि को समझनेवाला। दयालु।  
२. भावुक। ३. रसिक। ४. सज्जन।

सहेजना—क्रि० स० १. सोपना। २. सुपुर्द करना। ३. भली भाँति जानना।  
४. संभालना।

सहेजवाना—क्रि० स० सहेजने का काम दूसरे से कराना।

सहेत\*†—संज्ञा पु० प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का पहले से निश्चित स्थान।

सहेलुक—वि० जिसमें कोई उद्देश्य या मतलब हो।

सहेली—संज्ञा स्त्री० १. किसी स्त्री के भाव में रहनेवाली दूसरी स्त्री। सखी। तगिनी।  
२. परिचारिका। दानी।

सहैया\*†—संज्ञा पु० सहायक।

वि० सहन करनेवाला।

सहोदर—संज्ञा पु० [स्त्री० सहोदरा] सगा भाई। एक ही माता के पेट में उत्पन्न।  
वि० सगा। अपना। सास।

सहोदरा—संज्ञा स्त्री० यनी बहन। एक ही माता के पेट में उत्पन्न।

सह्य—वि० सहने या वर्दास्त करने लायक।

ह्य त्रि-सज्ञा पु० यवई प्राप्त का एक प्रसिद्ध पर्वत ।

साई-सज्ञा पु० १ स्वामी । मालिक । २ पति । ३ सोहर । ईश्वर । ४ मुसलमान फकीरा की एक उपाधि या सम्बोधन ।

साँकड़ा-सज्ञा पु० गैरा में पहनने का एक गहना ।

साँकरा†-सज्ञा स्त्री० दे० "शृ खला" । जजीर । सीकड़ । सिकड़ी ।

सज्ञा पु० सकट । कष्ट ।

वि० १ सकीर्ण । मँकरा । तग । २ दुःखमय । कष्टमय ।

साँकरा†-वि० दे० "सँकरा" ।

साँकल-सज्ञा स्त्री० १ शृ खला । साँकर । २ दरवाजे की सिकड़ी । ३ गत में पहनने का एक गहना ।

साकेतिक-वि० १ जो सकेत या इशारे के रूप में हो । २ सकेत या इशारे से सम्बन्ध रखने वाला । इशारे का ।

साख्य-सज्ञा पु० हिन्दुआ के ६ दर्शनों में एक, जिसे महर्षि कपिल ने रचा था । इसमें प्रकृति को ही जगत् का मूल माना गया है और कहा गया है कि सत्त्व, रज और तम के योग से सृष्टि और उसके सब पदार्थों का विकास हुआ है ।

साग-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की वरछी जो फेंककर मारी जाती है । शक्ति । भारी बोझ उठाने का ढङ्ग ।

वि० १ संपूर्ण । पूरा । २ सब अंगों-सहित ।

सांगी-सज्ञा स्त्री० वरछी । सांग ।

सागोपाग-अव्य० संपूर्ण । समस्त । सब अंगों और उपागों सहित ।

सापातिक-वि० १ सघात सम्बन्धी । २ घातक । जिससे मर जाने का डर हो । ३ जान से मार डालनेवाला । ४ ऐसी चोट, जिससे आदमी मर सके । ५ बहुत खतरनाक । ६ हकदंडा करनेवाला ।

साधिक-वि० १ किसी राय से सम्बन्ध रखनेवाला । २ सध-सम्बन्धी । ३ सध का ।

साँच†-वि० [स्त्री० साँची] १ सत्य । सच । २ यथार्थ । ठीक ।

साँचला†-वि० [स्त्री० साँचली] सच्चा सत्यवादी ।

साँचा-सज्ञा पु० १ वह उपकरण, जिसमें कोई गीली चीज रखकर किसी विशय आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है । फरमा । २ वह छोटी आकृति, या बड़ी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर बनाई जाती है । ३ कपड़े पर बेल-बूटा छापने का ठप्पा । ४ छापा । ५ ढाँचा ।

मुहा०-साँचे में ढला हुआ-अंग प्रत्या से बहुत ही सुन्दर ।

साँचो-सज्ञा पु० १. मध्य भारत में एक प्रसिद्ध स्थान, जहाँ प्राचीन स्तूप है । २ एक प्रकार का पान, जो खाने में ठंडा होता है । ३ पुस्तका की एक प्रकार की छपाई जिसमें पक्षियाँ बेड़े बल में होती हैं ।

साँस†-सज्ञा स्त्री० दे० "सच्चा" । धाम ।

साँसा-सज्ञा पु० दे० "साया" ।

साँसी-सज्ञा स्त्री० मदिरो में जमीन पर बनाए गए फून-पत्तों आदि की सजावट, जो प्रायः सावन में होती है ।

साँट-सज्ञा स्त्री० १ कोड़ा । २ छड़ी । ३ पतली कमची । ४ शरीर पर कोड़े आदि की मार से पड़ा हुआ दाग ।

साँटा-सज्ञा पु० १ कोड़ा । २ गन्ना । ईख ।

साँटिया-सज्ञा पु० ठोड़ी या दुग्गी पोतनेवाला ।

साँटी-सज्ञा स्त्री० १ पतली छोटी छड़ी । २ पतली कमची । ३ मेल मिलाप । ४ बदला ।

प्रतिकार । ५ प्रतिहिंसा ।

साँठ-सज्ञा पु० १ दे० "साँचड़ा" । २ ईख ।

गन्ना । ३ सरकड़ा ।

यो०-साँठ-गाँठ-१ मेल मिलाप । २ गुप्त या अनुचित संबंध । घनिष्ठ सम्बन्ध ।

साँठना-क्रि० सं० १ सड़ाना । २ लगाना । ३ जोड़ना । ४ पकड़े रहना ।

साँठी-सज्ञा स्त्री० पूंजी । धन ।

साँड-सज्ञा पु० १ वह बेल (या पोड़ा), जो बधिया न हो और जो केवल जोड़ खिलाने के लिए पाला जाय । २ वह साँड़ बेल, जिसे हिंदू लोग मृतक की स्मृति में दागकर छोड़ देते हैं ।

सांडनी-सज्ञा स्त्री० ऊँटनी। ऊँट की मादा।  
सांडा-सज्ञा पु० एक जंगली जानवर, जिसकी  
बुरखी दशा के काम में आती है।

साँझिया-सज्ञा पु० १ साँझनी पर सवारी  
करनेवाला। २ बहुत तेज चलनेवाला एक  
प्रकार का ऊँट।

साँत-वि० १ अन्त होनेवाला। २ जिसका  
अन्त अवश्य हो। ३. दे० "शान्त"।

साँतना-सज्ञा स्त्री० १-दूसरे का दुख या कष्ट  
हम करने के लिए उसे धैर्य और शान्ति  
देना। तसल्ली। डाइस। २. आश्वासन।  
दिलावा।

साँदीपनि-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध मुनि, जिन्होंने  
श्रीकृष्ण तथा बलराम को धनुर्वेद की शिक्षा  
दी थी।

साँध-सज्ञा पु० १. दे० "संधान"। २ लक्ष्य।

साँधना-क्रि० सं० १ संधान करना। निशाना  
ठीक करना। लक्ष्य करना। २ साधना। ३  
पूरा करना। ४ दे० "सानना"। मिलाना।  
५ मिश्रण।

साध्य-वि० सध्या-सवधी। सायकाल का या  
राम के वक्त का।

साँप-सज्ञा पु० [स्त्री० साँपिन] रेंगनेवाला  
जहरीला लवा जन्तु, जिसके काटने से प्रायः  
मृत्यु हो जाती है। सर्प। भुजग। विषधर।  
मुहा०—कलेजे पर साँप लोटना=ईर्ष्या भाव  
के कारण बहुत दुख होना। साँप सूँघ जाना=  
मर जाना। निर्जीव हो जाना। साँप-छटुंवर  
की दशा=भारी असमंजस की दशा। बड़ी  
द्विविधा।

सापत्तिक-वि० सम्पत्ति-सम्बन्धी। आर्थिक।  
मासी।

साँपपरन\*-सज्ञा पु० साँप। साँप धारण  
करनेवाला।

सापिन-सज्ञा स्त्री० साँप की मादा।

साँपिया-सज्ञा पु० बाले साँप के रंग में  
मिलता-जुलता एक तरह का रंग।

वि० साँप के रंग का।

साप्रत-अव्य० [वि० साप्रतिक] १ इसी  
समय। मग्नप्रति। अभी। तत्काल। २  
आजकल।

साप्रतिक-वि० जो इस समय हो रहा हो।  
चालू।

साप्रदायिक-वि० किसी संप्रदाय से संबध  
रखनेवाला। संप्रदाय का। जाति-सम्बन्धी।  
कौमी।

साम्प्रदायिकता-सज्ञा स्त्री० १. केवल अपने  
सम्प्रदाय (जाति या कौम) की भलाई और  
वडप्पन का बहुत अधिक ध्यान रखना। २  
साम्प्रदायिक होने का भाव। फिरका-परस्ती।  
साँव-सज्ञा पु० जाववती के गर्भ से उत्पन्न  
श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ये बहुत सुंदर थे,  
पर दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी  
हो गए थे।

साँभर-सज्ञा पु० १. राजपूताने की एक झील  
जिसके पानी से साँभर नामक बनता है। २  
इस झील के जल से बना हुआ नमक। ३  
एक जंगली जानवर, जिसका शिकार खेता  
जाता है और जिसके चमड़े का जूता, छोटे  
सन्दूक आदि बनाए जाते हैं।

साँमुहर्-अव्य० सामने।

साँवर्त-सज्ञा पु० दे० "सामत"।

सावत्सरिक-वि० सवत्सर-सम्बन्धी। सवत्सर  
का।

साँवर्त-वि० दे० "साँवला"।

साँवला-सज्ञा स्त्री० श्यामता। साँवला होने  
का भाव।

साँवला-वि० [स्त्री० साँवली] जिसका रंग  
कुछ कालापन लिये हुए हो। साँवले रंग  
का। श्याम वर्ण का।

सज्ञा पु० १ श्रीकृष्ण का एक नाम। २  
पति या प्रेमी (गीता में)।

साँवलापन-सज्ञा पु० १ साँवला होने का  
भाव। २ साँवला रंग। श्यामता।

साँवर्त-सज्ञा पु० एक प्रकार का अन्न।

साँत-सज्ञा पु० १ श्वास। नाक या मुँह में  
भीतर खोचकर फिर बाहर निराला गई  
हवा। २ दम। श्वाण। ३ ज्वकाश। फुर-  
सत। ४ दमा। साँत फूलने का रोग।  
५. गुजारना। सन्धि या शरण, जिसमें ने  
हवा जा-जा सके।

मुहा०—साँत उखड़ना=मरने के समय रोगी

का बड़े कष्ट से सांस लेना। सांस टूटना। सांस ऊपर-नीचे होना=सांस का ठीक तरह से ऊपर-नीचे न आना। सांस रुकना। दम घुटना। सांस चढ़ना=बहुत मेहनत आदि के कारण सांस का जल्दी-जल्दी चलना। सांस टूटना=दे० "सांस उलड़ना"। सांस तक न लेना=गिरकूल चुपचाप रहना। सांस फूलना=बार-बार सांस आना और जाना। दमे का रोग होना। सांस रहते=जीते जी। जिन्दा रहते समय तक। उलटी सांस लेना=१ दे० "गहरी सांस लेना"। २ मरने के समय रोगी का बड़े कष्ट से अंतिम सांस लेना। गहरी, ठंडी या सर्दी सांस लेना=१. बहुत अधिक दुःख आदि के कारण देर तक अंदर की ओर वायु खींचते रहना और उसे कुछ देर तक रोककर बाहर निकालना। २ बहुत दुःख या अफसोस होना। सांस लेना=विश्राम करना। सुस्ताना। दम लेना। अवकाश या फुत्सत पाना। सांस भरना=१ उत्साह बढ़ाना। २. किसी चीज के अन्दर हवा भरना।

सांसत-सज्ञा स्त्री० १ दम घुटने का-साकष्ट। दम घुटने की तरह तकलीफ। २ बहुत अधिक कष्ट या पीडा। यातना। ३ ससत। सांसत-घर-सज्ञा पु० काल-बोडरी। वह तग और अंधेरी कोंठरी, जिसमें अपराधियों को दंड विरोध देने के लिए रखा जाता है। सांसद-वि० १ ससद-सम्बन्धी। २ ससद की भर्षा के अनुकूल। ससद के सदस्या की भर्षा के अनुकूल कथन, व्यवहार या आचरण आदि।

सांसदी-वि० ससद-सम्बन्धी। सज्ञा पु० ससद-सम्बन्धी कार्यों (रीति व्यवहार आदि) का अच्छा जानकारी और नसद में वाद विवाद करने में निपुण (अग्र०-पासमिण्टेरियन)।

—सज्ञा पु० १ ससि। प्राण। जीवन। जिंदगी। २ घोर कष्ट। ३ समय। सदेह। शन। ४ भय। डर। बहुशत।

सासगिक-वि० १ ससग-सम्बन्धी। साथ या सहवास में सम्बन्ध रखनेवाला। ससर्ग-

विषयक। २. ससर्ग (साथ या सहवास) से उत्पन्न होनेवाला।

सासारिक-वि० ससार-सम्बन्धी। इस ससार का। लौकिक। ऐहिक।

सांस्कृतिक-वि० संस्कृति से सम्बन्ध रखनेवाला। सस्कृति-सम्बन्धी।

सा-अव्य० १ समान। बराबर। तुल्य। २ एक मानमूचक शब्द। जैसे—थोड़ा-सा, बहुत-सा।

सज्ञा पु० पट्ट। संगीत में स्वर का सूचक शब्द—जैसे—सा, रे, ग, म।

साइक\*—सज्ञा पु० दे० "सायक"।

साइकिल—सज्ञा स्त्री० [अग्र०] दो पहिया-वाली एक प्रसिद्ध गाड़ी, जिसके दोनों पहिए आगे-पीछे होते हैं और जिस पर बैठकर उसे पैर से चलाते हैं। पैरगाड़ी।

साइक्लोपीडिया—सज्ञा स्त्री० [अग्र०] १ वह बड़ा ग्रन्थ, जिसमें किसी विषय के सब अंगों का वर्णन हो। २ विद्वकोश ('इनसाइक्लोपीडिया') ३ वृहत् कोश।

साइज—सज्ञा पु० [अग्र०] १ नाप। २ परिमाण।

साइत—सज्ञा स्त्री० १ शुभ लग्न। मुहूर्त। शुभ समय। २. पल। अण। ३ समय। अवसर।

४ एक घंटे या षाई घड़ी का समय।

साइनबोर्ड—सज्ञा पु० [अग्र०] वह तख्ता या टोन आदि का टुकड़ा, जिस पर किसी व्यक्ति, दुकान या सस्य का नाम या विवरण आदि लिखा रहता है। नामपट। सज्ञापट। सकेतपट।

साइयो—सज्ञा पु० दे० "साई"।

साइर\*—सज्ञा पु० दे० "सायर"।

साई—सज्ञा पु० १ साईं। स्वामी। २. पति।

३ ईश्वर। ४ मुसलमान फकीर।

साई—सज्ञा स्त्री० पेशगी। ब्याना। किसी तरह का पेशा करनेवाला को उनसे काम कराने की बात पक्की करने के लिए दिया जानवाला धन।

साइन्स—सज्ञा स्त्री० [अग्र०] विज्ञान।

साईस—सज्ञा पु० पोडे की देख-रेख और सेवा करनेवाला नौकर।

सांसी—सज्ञा स्त्री० साईस का काम, भाव या पद।  
 सांज\*—सज्ञा पुं० “सावज”।  
 सांभरी—सज्ञा पुं० सांभर झील या उसके  
 अस-मास का प्रातः।  
 सांभरि†—सज्ञा स्त्री० मेहेंदी।  
 सांभरि—सज्ञा पुं० १. शाक्त मत का अनुयायी।  
 २. जिसने किसी गुरु से दीक्षा ली हो। ३.  
 दुष्ट। पाजी।  
 सांभर†—वि० दे० “सैंकरा”।  
 सांभर—सज्ञा पुं० १. सकल या समस्त होने  
 का भाव। २. समूह। समुदाय। ३. हवन की  
 सामग्री।  
 सांभर—सज्ञा पुं० १. संबत्। शाका। २.  
 स्याति। नाम। कीर्ति। यश। ३. धाक। रोब।  
 ४. कीर्ति का स्मारक। कोई ऐसा बड़ा काम,  
 जिसके करनेवाले की कीर्ति हो। ५.  
 बृवसर। मौका।  
 सांभर—सांका चलाना=रोब जमाना।  
 सांका बांधना=दे० “सांका चलाना”।  
 सांकार—वि० १ जिसका कोई आकार या रूप  
 हो। २ मूर्तिमान्। ३ स्थूल। ४. साक्षात्।  
 सांका पुं० ईश्वर का सांकार रूप।  
 सांकारोपासना—सज्ञा स्त्री० ईश्वर की मूर्ति  
 बनाकर उसकी पूजा करना। सगुण भक्ति।  
 सांकिन—वि० [अ०] रहनेवाला। निवासी।  
 सांकी—सज्ञा पुं० [अ०] १ शराब पिलाने-  
 वाला। २ माशूक।  
 सांकेत—सज्ञा पुं० अयोध्या नगरी।  
 सांकर—वि० जो पढ़ना-लिखना जानता हो।  
 पढ़ा-लिखा। शिक्षित।  
 सांक्षात्—वि० मूर्तिमान्। सांकार।  
 व्यर्थ० सामने। सम्मुख।  
 सज्ञा पुं० भेंट। मुलाकात। देखा-देखी।  
 साक्षात्कार—सज्ञा पुं० १ भेंट। मुलाकात।  
 २ पदार्थों का इन्द्रियों-द्वारा होनेवाला ज्ञान।  
 साक्षी—सज्ञा पुं० [स्त्री० साक्षिणी] १ वह  
 व्यक्ति, जिसने किसी घटना को अपनी आंखों  
 से देखा हो। घमदीह गवाह। साखी।  
 २. देखनेवाला। दर्शक।  
 सज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित  
 करने की क्रिया। गवाही। साखी। शहादत।

साक्ष्य—सज्ञा पुं० गवाही। शहादत।  
 साक्ष्य-प्रविधि—सज्ञा स्त्री० वह प्रविधि (कानून  
 या नियमावली), जिसके अनुसार साक्षी या  
 गवाही देने की व्यवस्था हो।  
 साक्ष्य-विधान—सज्ञा पुं० वह कानून, जिसमें  
 साक्षी या गवाही देने के नियमों आदि की  
 व्यवस्था हो। (अंग्रे०—ला आफ एविडेन्स)।  
 साक्ष—सज्ञा पुं० १. दे० “साक्षी”। गवाह।  
 २ गवाही। प्रमाण। शहादत। ३. धाक।  
 रोब। ४. मर्यादा। ५. किसी व्यक्ति की वह  
 प्रतिष्ठा, जिससे वह लेन-देन कर सकता हो।  
 ६ लेन-देन या व्यवहार की मान्यता।  
 (अंग्रे०—क्रेडिट)  
 साक्षना\*—क्रि० स० साक्षी देना। गवाही देना।  
 शहादत देना।  
 साक्षर\*†—वि० दे० “साक्षर”।  
 साखा\*†—सज्ञा स्त्री० दे० “शाखा”।  
 साखी—सज्ञा पुं० साक्षी। गवाह।  
 सज्ञा स्त्री० १. गवाही। २. ज्ञान-सम्बन्धी  
 दोहे या पद।  
 साखी—साखी पुकारना=गवाही देना।  
 साखू—सज्ञा पुं० साल वृक्ष। सागौन।  
 साखीचारन\*†—सज्ञा पुं० साखीञ्चारण।  
 विवाह के अवसर पर वर और वधू के वश-  
 गोत्र आदि का जोर से कहकर परिचय देने  
 की क्रिया। गोत्रोच्चार।  
 साग—सज्ञा पुं० १ कुछ विशेष पौधों की खाने  
 योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। २. पकाई हुई  
 भाजी। तरकारी। ३. तुच्छ और निकम्मी  
 चीज। नाचीज (बोल-चाल में)।  
 यो०—साग-पात=रूखा-सूखा भोजन।  
 सागर—सज्ञा पुं० १ समुद्र। २ बहुत बड़ा  
 जलाशय। जैसे, बड़ी झील। ३ सन्यासियों का  
 एक भेद। ४ आगार। खजाना।  
 सागर—सज्ञा पुं० [अ०] शराब पीने का प्याला।  
 सागू—सज्ञा पुं० १. ताड़ की जाति का एक  
 पेड़। २. दे० “सागूदाना”। (अंग्रे० संगो)  
 सागूदाना—सज्ञा पुं० सागू नामक पेड़ के तने  
 का गूदा, जो कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया  
 जाता है। यह बहुत जल्दी पच जाता है।  
 सागूदाना।

का बड़ कण्ट से सांस लेना। सांस टूटना। सांस ऊपर-नीचे हाना=सांस का ठीक तरह से ऊपर-नीचे न आना। सांस रुकना। दम घुटना। सांस चटना=बहुत महनुत आदि के कारण सांस का जल्दी-जल्दी चलना। सांस टूटना=दे० सांस उसडना। सांस तक न लेना=बिलकुल चुपचाप रहना। सांस फूलना=बार-बार सांस आना और जाना। दमे का रोग होना। सांस रहत=जीते जी। जिन्दा रहते समय तक। उलटी सांस लेना=१ दे० 'गहरी सांस लेना'। २ मरने के समय रोगी का बड़ कण्ट से अंतिम सांस लेना। गहरी, ठडी या लबी सांस लेना=१ बहुत अधिक दुःख आदि के कारण देर तक अंदर की ओर वायु खींचते रहना और उस कुछ देर तक रोककर बाहर निकालना। २ बहुत दुःख या अफसोस होना। सांस लेना=विश्राम करना। सुस्ताना। दम लेना। अवकाश या फुरसत पाना। सांस भरना=१ उत्साह बढ़ाना। २ किसी चीज के अन्दर हवा भरना।

सांसत-सज्ञा स्त्री० १ दम घुटने का-सांकण्ट। दम घुटन की तरह तकलीफ। २ बहुत अधिक कण्ट या पीडा। यातना। ३ झपट। सांसत घर-सज्ञा पु० काल-नोठरी। बहु तग और अधरी कोठरी जिसमें अपराधियों को बड़ विषय देने के लिए रखा जाता है। सांसद-वि० १ ससद-सम्बन्धी। २ ससद की मर्यादा के अनुकूल। ससद के सदस्या की मर्यादा के अनुकूल कथन व्यवहार या आचरण आदि।

सांसदी-वि० ससद-सम्बन्धी।

सज्ञा पु० ससद-सम्बन्धी कार्यों (रीति व्यवहार आदि) का अच्छा जानकार और ससद में वाद विवाद करने में निपुण (अग्र० पार्लिमेण्टियन)।

साँ-सज्ञा पु० १ सांस। प्राण। जीवन। जिंदगी। २ घोर कण्ट। ३ सशय। सदेह। शक। ४ भय। डर। दहशत।

सांसलिक-वि० १ ससग-सम्बन्धी। साथ या सहवास से सम्बन्ध रखनवाला। ससग-

विषयक। २ ससग (साथ या सहवास) से उत्पन्न हानवाला।

सांसारिक-वि० ससार-सम्बन्धी। इस ससार का। लौकिक। एहिक।

सांस्कृतिक-वि० संस्कृति से सम्बन्ध रखनवाला। संस्कृति-सम्बन्धी।

सा-अव्य० १ समान। बराबर। तुल्य। २ एकमानमूचक शब्द। जैसे—घाडा-सा, बहुत-सा।

सज्ञा पु० पढज। संगीत में स्वर का मूचक शब्द—जैसे—सा, रे ग, म।

साइक\*—सज्ञा पु० दे० सायक\*।

साइकिल-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] दो पहियों वाली एक प्रसिद्ध गाड़ी जिसके दोनों पहिए आगे-पीछे होते हैं और जिस पर पैठकर उसे पैरा से चलाते हैं। पैरगाड़ी।

साइक्लोपीडिया-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] १ वह बड़ा ग्रन्थ, जिसमें किसी विषय के सब आँ का वर्णन हो। २ विश्वकोश (इन्साइक्लोपीडिया) ३ बहुल कोश।

साइज-सज्ञा पु० [अग्र०] १ नाप। २ परिमाण।

साइत-सज्ञा स्त्री० १ शुभ लग्न। मुहूर्त। शुभ समय। २ पल। क्षण। ३ समय। अवसर। ४ एक घट या ढाढ़ घड़ी का समय।

साइनबोर्ड-सज्ञा पु० [अग्र०] वह तस्मा या टोन आदि का टुकड़ा जिस पर किसी व्यक्ति, दूकान या संस्था का नाम या विवरण आदि लिखा रहता है। नामपट। सनापट। सकेतपट।

साइयी-सज्ञा पु० दे० साइ।

साइरी-सज्ञा पु० दे० सायर।

साई-सज्ञा पु० १ साई। स्वामी। २ पति।

३ ईश्वर। ४ मुसलमान फकीर।

साई-सज्ञा स्त्री० पद्मिणी। वयाना। किसी तरह का पत्रा चलवालों को उनसे काम-करान की बात पक्की करने के लिए दिया जानवाला धन।

साइन्स-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] विज्ञान।

साईस-सज्ञा पु० पीडा की देख रेख और सजा करनवाला नोकर।

साईसी—सज्ञा स्त्री० साईस का काम, भाव या पद।  
 साईज\*—सज्ञा पुं० "सावज"।  
 साईभरी—सज्ञा पुं० साँभर झील या उसके  
 अस्-भास का प्रात।  
 साईचेरि—सज्ञा स्त्री० मेहेदी।  
 साईट—सज्ञा पुं० १. शाक्त मत का अनुयायी।  
 २. जिसने किसी गुरु से दीक्षा न ली हो। ३.  
 दुष्ट। पापी।  
 साईर—वि० दे० "सँकर"।  
 साईत्य—सज्ञा पुं० १. सकल या समस्त होने  
 का भाव। २. समूह। समुदाय। ३. हवन की  
 सामग्री।  
 साज्ञा—सज्ञा पुं० १. संवत्। शका। २.  
 क्षाति। नरम। कीर्ति। यश। ३. धाक। रोब।  
 ४. कीर्ति का स्मारक। कोई ऐसा बड़ा काम,  
 जिसके करनेवाले की कीर्ति हो। ५.  
 वस्तर। मोका।  
 साहा—सज्ञा पुं० चलाता=रोब जमाना।  
 साका बापना=दे० "साका चलाता"।  
 साकार—वि० १. जिसका कोई आकार या रूप  
 हो। २. मूर्तिमान्। ३. स्थूल। ४. साक्षात्।  
 साज्ञा पुं० ईश्वर का साकार रूप।  
 साकारोपासना—सज्ञा स्त्री० ईश्वर की मूर्ति  
 स्थापित कर उसकी पूजा करना। सगुण भक्ति।  
 साकित—वि० [अ०] रहनेवाला। निवासो।  
 साको—सज्ञा पुं० [अ०] १. शराब पिलाने-  
 वाला। २. माशुक।  
 साकेत—सज्ञा पुं० अयोध्या नगरी।  
 साक्षर—वि० जो पढ़ना-लिखना जानता हो।  
 पढ़ा-लिखा। शिक्षित।  
 साक्षात्—वि० मूर्तिमान्। साकार।  
 अद्भ्य० सामने। सम्मुख।  
 साज्ञा पुं० भेट। मुलाकात। देखा-देखी।  
 साक्षात्कार—सज्ञा पुं० १. भेट। मुलाकात।  
 २. पदार्थों का इन्द्रियों-द्वारा होनेवाला ज्ञान।  
 साक्षी—सज्ञा पुं० [स्त्री० साक्षिणी] १. वह  
 व्यक्ति, जिसने किसी घटना को अपनी आँखों  
 से देखा हो। चरमदीय गवाह। साखी।  
 २. देखनेवाला। दर्शक।  
 साज्ञा स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित  
 करने की क्रिया। गवाही। साखी। शहादत।

साक्ष्य—सज्ञा पुं० गवाही। शहादत।  
 साक्ष्य-प्रविधि—सज्ञा स्त्री० वह प्रविधि (कानून  
 या नियमावली), जिसके अनुसार साक्षी या  
 गवाही देने की व्यवस्था हो।  
 साक्ष्य-विधान—सज्ञा पुं० वह कानून, जिसमें  
 साक्षी या गवाही देने के नियमों आदि की  
 व्यवस्था हो। (अंग्रे०—ला आफ एविडेन्स)।  
 साख—सज्ञा पुं० १. दे० "साक्षी"। गवाह।  
 २. गवाही। प्रमाण। शहादत। ३. धाक।  
 रोब। ४. मर्यादा। ५. किसी व्यक्ति की वह  
 प्रतिष्ठा, जिससे वह लेन-देन कर सकता हो।  
 ६. लेन-देन या व्यवहार की मान्यता।  
 (अंग्रे०—क्रेडिट)  
 साखना\*—क्रि० स० साक्षी देना। गवाही देना।  
 शहादत देना।  
 साखर\*—वि० दे० "साक्षर"।  
 साखा\*—सज्ञा स्त्री० दे० "साखा"।  
 साखी—सज्ञा पुं० साक्षी। गवाह।  
 सज्ञा स्त्री० १. गवाही। २. ज्ञान-सम्बन्धी  
 दोहे या पद।  
 मुहा०—साखी पुकारना=गवाही देना।  
 साख—सज्ञा पुं० शाल वृक्ष। सागौन।  
 साखोच्चारण\*—सज्ञा पुं० साखोच्चारण।  
 -विवाह के अवसर पर घर और वधू के वश-  
 गोत्र आदि का जोर से कहकर परिचय देने  
 की क्रिया। गोत्रोच्चार।  
 साग—सज्ञा पुं० १. कुछ विशेष पीधों को खाने  
 योग्य पत्तियाँ। शाक। भाजी। २. पकाई हुई  
 भाजी। तरकारी। ३. तुच्छ और निकम्मी  
 चीज। नाचीज (बोल-चाल में)।  
 साग—सज्ञा पुं० साग-पात=रूखा-सूखा भोजन।  
 सागर—सज्ञा पुं० १. समुद्र। २. बहुत बड़ा  
 जलाशय। जैसे, बड़ी झील। ३. सन्ध्यासियों का  
 एक भेद। ४. आगार। खजाना।  
 सागर—सज्ञा पुं० [अ०] शराब पीने का प्याला।  
 सागू—सज्ञा पुं० १. ताड़ की जाति का मूक  
 पेड़। २. दे० "सागूदाना"। (अंग्रे०—सैगो)  
 सागूदाना—सज्ञा पुं० सागू नामक पेड़ के तने  
 का गूदा, जो कूटकर दाना के रूप में गुसा लिया  
 जाता है। यह बहुत जल्दी पच जाता है।  
 सागूदाना।

सागौन-सज्ञा पु० दे० "वाल" वृक्ष। साग।  
(एक प्रसिद्ध पेड़ और उसकी मजबूत लकड़ी)।

साग्निक-सज्ञा पु० बराबर अग्निहोत्र (यज्ञ, होम) आदि करनेवाला।

साग्र-वि० समस्त। सब।-कुल।

साग्रह-कि० बि० आग्रह या अनुरोध के साथ।  
आग्रहपूर्वक। जोर देकर।

साज-सज्ञा पु० १. सजाव। ठाठ-बाट। २.  
नजाबत का सामान। ३. सामग्री। उपकरण।  
जैसे—घोड़े का साज। नाव का साज। ४.  
बाजा। ५. लड़ाई में काम आनेवाले हथियार।  
दमेल-जोल।

वि० १. मरम्मत या तैयार करनेवाला। २.  
बनानेवाला। (नीतिक के अर्थ में) जैसे  
धडीमूज।

साजन-सज्ञा पु० १. प्रेमी। प्यारा। २. पति।  
स्वामी। ३. ईश्वर। ४. सज्जन।

साजना\*†-कि० सं० दे० "सजाना"।  
कि० अ० दे० "सजना"। सजधज कर  
तैयार होना।

सजा पु० दे० "साजन"।

साज-बान-सज्ञा पु० १. तैयारी। २. ठाठ-  
बाट। ३. धर्म-धाम के साथ। ४. गाने-बजाने  
के सामान के साथ। ५. मेल-जोल।

साज-सामान-सज्ञा पु० [फा०] १. सामग्री।  
उपकरण। २. गाने-बजाने के सामान के  
साथ। ठाठ-बाट।

साजिबा-सज्ञा पु० [फा०] १. साज  
या बाजा बजानेवाला। २. समाजी। ३.  
वेदवादा के यहाँ सबका बगैरह बजानेवाला।  
साबिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. पड़यत्र। भीतरी  
वाल। कुमनवा। दुरभिसंधि। २. किसी के  
विरुद्ध कोई काम करने में किसी का साथ।  
देना।

साज्य\*†-सज्ञा पु० दे० "सामुज्य"।  
साही-सज्ञा पु० १. हिस्सेदारी। बराकत।  
२. हिस्सा। भाग। बाँट।

साही-सज्ञा पु० दे० "साहेंदार"।

साहेंदार-सज्ञा पु० हिस्सेदार। साही। किसी  
रोजगार या व्यापार की पूँजी में हिस्सा देने-  
वाला।

साठक-सज्ञा पु० १. भूसी। छिन्नका। २. तुड़ठ  
और निकम्मा चीज। ३. एक प्रकार का  
छद।

साठन-सज्ञा पु० [अग्रे०-संदिन] एक वंश  
का बढिया रेसमी कपड़ा।

साठना\*†-कि० सं० दे० "सूठना"। किसी को  
गुप्त रूप से अपनी ओर मिलाना।

साठिका, शाठिका-सज्ञा स्त्री० साठी।

साठ-सज्ञा पु० पचास और दस के जोड़ की  
संख्या, जो इस तरह लिखी जाती है—६०  
बि० पचास और दस।

साठ-नाठ-वि० १. इधर-उधर। तितर-बितर।  
२. नोरस। रूखा। ३. निर्धन। गरीब।

साठसाती-सज्ञा स्त्री० दे० "साठे साठी"।

साठा-सज्ञा पु० १. गन्ना। ईख। २. साड़ी  
धान।

वि० साठ वर्ष की उम्रवाला। साठ साल का।

साठी-सज्ञा पु० एक प्रकार का धान।

साठी-सज्ञा स्त्री० स्त्रियों के पहनने की धोती।  
साठी।

साठी-सज्ञा स्त्री० १. असाठ में बौड़ी जानेवाली  
फसल। असाठी। २. दूध के ऊपर जमनेवाली  
बाताई। मजई।

साठे-सज्ञा पु० साठी का पति। पत्नी की बहन  
का पति।

साठे-अव्य० एक अव्यय, जो पूरे के साथ सग-  
कर आधा अधिक का सूचक होता है। जैसे  
साठे तीन, अर्धति-तीन, और आधा।

साठेसाठी-सज्ञा स्त्री० शनिग्रह की वह अनुभ  
दशा या प्रभाव, जो साठे सात दिन, साठे सात  
महीना या साठे सात वर्ष तक रहता है।

सातक-कि० बि० १. आतक या भय के  
साथ। आतकपूर्वक। २. आतक या भय  
दिवसाकर।

सात्-वि० एक प्रत्यय जो शब्दों के अन्त में  
जुड़ने पर "मिला हुआ" या "रूप में जाया  
हुआ" का अर्थ देता है। जैसे—भूमिसात्,  
नस्नसात्।

सात-सज्ञा पु० पाँच और दो के जोड़ की संख्या,  
जो इस तरह लिखी जाती है—७।

वि० पाँच और दो।

मुहा०—सात-पाँच=चालाकी। मक्कारी। धूर्तता। सात समुद्र पार=बहुत दूर। सात राजाओं की साक्षी देना=किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। सात सीकें बनाना=शिशु के जन्म के छठे दिन की एक रीति, जिसमें सात सीकें रखी जाती हैं।

सातत्य-सज्ञा पु० 'सतत' का भाव। सदा या हमेशा होता रहना।

सात-फेरी-सज्ञा स्त्री० विवाह की भाँवर नामक रीति, जिसमें बार-बार अग्नि की सात बार परिक्लमा करते हैं।

सातला-सज्ञा पु० एक प्रकार का कंटीला पोधा। सप्तला। स्वर्णपुष्पी।

सातिक\*-वि० दे० "सात्विक"।

सातिग\*-वि० दे० "सात्त्विक"।

सात्मक-वि० आत्मा के साथ।

सात्म्य-सज्ञा पु० सारूप्य। सरूपता। एकरूपता।

सात्यकि-सज्ञा पु० एक यादव, जिसने श्रीकृष्ण और अर्जुन से युद्ध-विद्या सीखी थी और महाभारत के युद्ध में पांडवों का पक्ष लिया था। युयुधान।

सात्यत-सज्ञा पु० १ विष्णु। २. बलराम। ३. श्रीकृष्ण। मधुवरी।

सात्यती-सज्ञा स्त्री० १ शिशुपाल की माता का नाम। २. सुभद्रा।

सात्यती वृत्ति-सज्ञा स्त्री० नाटक में एक प्रकार की वृत्ति, जिसमें विशेष रूप से दान, दया, शौच आदि वीरचित्त कार्यों का वर्णन किया जाता है। इसका व्यवहार वीर, शौर्य, अद्भुत और सात रमा न होता है।

सात्विक-वि० १ सत्त्वगुणवाला। सतोगुणी। २ सत्त्वगुण से उत्पन्न।

सज्ञा पु० १ साहित्य में सत्त्वगुण से उत्पन्न होनेवाले अग्न-विचार। यथा—स्तन, मन्द, रामान, स्वरमग, कप, वैषम्य, अशु और प्रलय। २ सात्यती वृत्ति। (साहित्य)

साय-सज्ञा पु० १ संग। संगत। मिलकर या संगरहने का भाव। २. मेल-मिलाप। पनियठा

मित्रता। दोस्ती। ३. बराबर पात रहने-वाला। साथी। सगी।

अव्य० १. संवधसूचक अव्यय, जिससे संग या मिले रहने का बोध होता है। सहित। से। ३. विरुद्ध। ४. प्रति। २. द्वारा।

मुहा०—साय ही=सिवा। अलावा। अतिरिक्त। साथ ही साथ=एक साथ। एक सिलसिले में। एक साथ=एक सिलसिले में।

सायरा†-सज्ञा पु० [स्त्री० साथरी] १ कुश की बनी चटाई। पतों का बिछीना। चटाई। २ बिछीना। विस्तर।

सायो-सज्ञा पु० [स्त्री० सायिन] १. साथ रहनेवाला। सगी। २. मित्र। दोस्त।

सादगी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ सादापन। आढम्बर या दिखावा न होना। सरलता। २ सीधापन। निष्कपटता।

साबर-वि० आदर-सहित। सम्मानपूर्वक।

साबरा-सज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत बड़िया गाना।

सादा-वि० [स्त्री० सादी] १ बिना आढम्बर या दिखावे का। जिसकी बनावट आदि बहुत सरल है। २ जिसके ऊपर कोई सजावट का काम न बना हो। ३ बिना भिलावट का। खालिस। ४ जिसके ऊपर कुछ भी अंकित या लिखा न हो। ५ सीधा। सरल। निष्कपट। ६ मूल।

सादापन-सज्ञा पु० सादा होने का भाव। सादगी। सरलता।

सादिर-वि० [अ०] निकलने या जारी होने-वाला आदेश या हुक्म आदि। जैसे, सादिर फरमान।

सादी-सज्ञा स्त्री० १ लाल की जानि की एक प्रकार की छोटी चिड़िया। सदिवा। २ बड़ पूरी, जिसमें पीछी आदि नहीं भरी होती। सज्ञा पु० १. सिनारी। २. पांजा।

सादूर-सज्ञा पु० १ द० "शार्दूल"। सिंह। २. कोई हिमक पशु।

सावृश्य-सज्ञा पु० १. समानता। एकरूपता। २ बराबरी। तुलना।

साध-सज्ञा स्त्री० १. इच्छा। क्याहिम्मा। कामना। २. उत्साह। ३. किसी स्त्री के गर्भ पारण करने के सातवें मास में होनेवाला एक प्रकार का उत्सव।

सज्ञा पु० १ साधु। महात्मा। २ योगी। ३ सज्जन। ४. फरिश्तावाद और कन्नोज के आस-पास पाई जानेवाली एक जाति। वि० उत्तम। अच्छा।

साधक-सज्ञा पु० [स्त्री० साधिका] १ साधना करनेवाला। साधनेवाला। २ योगी। तपस्वी। ३. साधन। वह वस्तु, जिसके द्वारा कोई कार्य किया जाय। जरिया। ४ जो किसी दूसरे के स्वार्थ की पूर्ति में सहायक हो। जो दूसरे का मतलब हल होने या काम पूरा होने में मददगार हो। जो अनुकूल और सहायक हो।

साधन-सज्ञा पु० १ काम पूरा करने की क्रिया। सिद्धि। विधान। २ सामग्री। उपकरण। सामान। ३ उपाय। युक्ति। हिकमत। ४ यत्न। उद्योग। ५ उपासना। साधना। ६ जन्मास। ७ अनुष्ठान। ८ धातुओं की शोधने की क्रिया। शोधन। ९ कारण। हेतु। १० निर्णय। आज्ञा आदि के अनुसार कार्य करना। पालन करना। बतलाए हुए काम पूरा करना।

साधनता-सज्ञा स्त्री० साधन का भाव या धर्म। साधना।

साधनपत्र-सज्ञा पु० १ वह लेख्य, जिसके द्वारा कार्य आदि की व्यवस्था की गई हो। जिसके द्वारा किसी अधिकार, दायित्व आदि के बारे में किसी तरह की व्यवस्था की गई हो। २ वह लख या पत्र, जिसपर किसी प्रकार के देन-पावने का ठीक-ठीक हिसाब हो, या भेजे हुए माल का पूरा ब्योरा लिखा हो।

साधनहार-सज्ञा पु० साधनेवाला।

वि० सिद्ध होन योग्य। जो साधा जा सके। साधना-सज्ञा स्त्री० १ कोई वाय्यं सिद्ध या पूरा करने की क्रिया। सिद्धि। २ देवता आदि को सिद्ध करने के लिए उसकी उपासना। ३. दे० "साधन"।

क्रि० सं० १ कोई वाय्यं सिद्ध करना। पूरा करना। २. निशाना लगाना। तथान करना। ३ आदत डालना। अभ्यास करना। ४. नाचना। पैमाइश करना। ५ शोधना। गूढ़ करना। ६ बनावटी को असल की तरह दिखाना। ७ पक्का करना। ठहराना। ८ एकत्र करना। इकट्ठा करना। ९ बश में करना।

साधनिक-वि० १ कार्य-साधन से सम्बन्ध रखनेवाला। २. शासन या प्रबन्ध से सम्बन्ध रखनेवाला।

साधनिक अधिकारी-सज्ञा पु० प्रबन्ध आदि का साधन या संचालन करनेवाला अधिकारी। किसी सस्था का ऐसा अधिकारी, जो उसके प्रबन्ध आदि का साधन या संचालन करे।

साधनिकी-सज्ञा स्त्री० १ वह सरकारी विभाग, जो कानून और नियमों आदि का पालन कराता और स्वयं करता है। २ इस विभाग के अधिकारियों का समूह या वर्ग। (अर्थ०-एकजिन्सपुटिव)

साधनीय-वि० १ साधन करने योग्य। २. जिसका साधन करना उपयोगी हो। अच्छा कर्म।

साधम्य-सज्ञा पु० समान धर्म या समान गुण होने का भाव। एक-धर्मता।

साधार-वि० १ आधार के साथ। जिसका कुछ आधार हो। जिसकी कोई बुनियाद हो। २ जिसका कोई प्रमाण या सबूत हो। (इसका उल्टा-निराधार।)

साधारण-वि० १ मामूली। जिसमें कोई विशेषता न हो। सामान्य। औसत दर्जे का। औसत। २ आम तौर पर होनेवाला या पाया जानेवाला। ३ सीधा। ४ सरल। आसान। सहज। ५ सार्वजनिक। आम। सबसे सम्बन्ध रखनेवाला।

साधारणतः-अव्य० १ अक्सर। २ बहुधा। प्रायः। आम तौर पर। मामूली तौर पर। साधारणोकरण-सज्ञा पु० १ गुणा आदि के आधार पर समानता स्थिर करना। किसी समान गुण के आधार पर अनेक वस्तुओं को एक वर्ग

१ एक तल पर लाना। २ एक ही तरह के कई तत्वों के आधार पर कोई ऐसा साधारण नियम या सिद्धान्त निश्चित करना, ता उन सब तत्वों पर एक समान लागू हो सके।

धिका-सज्ञा स्त्री० भेजे हुए भाल या देने-पाने का पूरा विवरण लिखा हुआ लेख या पत्र।

धिकार-क्रि० वि० अधिकार के साथ। अधिकारपूर्वक। अधिकार से।

वि० जिसे अधिकार मिला हो। अधिकार सिता हुआ।

धित-वि० १ सिद्ध किया हुआ। जो साधाया हो। २ पूरा किया हुआ। निष्पादित। गो-वि० १ शुद्ध की गई। शोधित। २ अनुभव या आजमाइश की हुई। ३ सिद्ध की हुई। ४ ठहराई या थमी हुई।

गु-सज्ञा पु० १ सत। महात्मा। २ धर्मिक पुष्ट। परोपकारी व्यक्ति। परमार्थी। ३ सज्जन। भला आदमी। ४ कुलीन। अर्थ।

वि० १ अच्छा। उत्तम। भला। २ सच्चा।

३ प्रशंसनीय। बड़ाई के लायक। ४ उचित। निष्ठ और शुद्ध (भाषा)।

अर्थ० अच्छी बात है। ठीक है।

गुहा०—साधु-साधु कहना=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करना।

गुहा-सज्ञा स्त्री० १ साधु होने का भाव। २ सज्जनता। भलमनसाह्व। नेकी। ३ साधारण। सिपाई।

गुहाद-सज्ञा पु० बधाई देना। किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी प्रशंसा करना। 'साधु-साधु' कहना।

गुहा-अर्थ० धन्य-धन्य, बाह-बाह। बहुत खूब।

गुहा-सज्ञा पु० दे० "साधु"।

गुहा-वि० [गुहा साध्यत्व] १. सिद्ध करने योग्य। जो सिद्ध हो सके। २ जिसे सिद्ध या स्थापित करना हो। सापत्नीय। करने योग्य। ३ जा हो सके। ४ जिस करना उपयोगी

हो। ५ जो अच्छा किया जा सके (रोग)। सज्ञा पु० १. देवता। २. न्याय में वह विषय, जिसे सिद्ध करना हो। ३ शक्ति। सामर्थ्य।

साध्यता, साध्यत्व-सज्ञा स्त्री० साध्य होने का भाव। सिद्ध हो सकने का भाव। कर सकने या हो सकने का भाव।

साध्यतम-सज्ञा पु० न्याय में वह हेतु, जिसका साधन साध्य की भांति करना पड़े।

साध्या-सज्ञा स्त्री० १ सिद्ध की जानेवाली बातें। २ विचारणीय विषय। ३ दीवानी मुकदमे में विवादग्रस्त विषय (अर्थ०—इश्यु)। दो प्रकार की होती है—१ 'तथ्य सम्बन्धी'। २ कानून-सम्बन्धी।

साध्वी-वि० १ पतिव्रता स्त्री। २ शुद्ध चरित्रवाली स्त्री।

सानद-वि० आनंद के साथ। आनंदपूर्वक। सान-सज्ञा पु० वह पत्थर, जिस पर कंची, चाकू तथा अस्त्रादि रगड़कर तेज किए जाते हैं। कुरड।

मुहा०—सान देना या धरना=धार तेज करना।

सानना-क्रि० सं० १ गूँधना। २ आटे को पानी के साथ गूँधना। ३ मॉडना। ४ लपेटना। ५ सम्मिलित करना। मिलाना। ६ अपराध या बुरे काम आदि में किसी को सम्मिलित करना या उसे उत्तरदायी बनाना।

सानी-सज्ञा स्त्री० पानी में सानकर पशुआ को सिलाया जानेवाला चारा।

वि० [अ०] १ बराबरी का। मुकाबले का। २ दूसरा। द्वितीय।

यो०—लासानी=अद्वितीय। बे-जोड़।

सानु-सज्ञा पु० १ पहाड़ की चोटी। शिखर। २ सिर। अंत। छार। ३ चौरस जमीन। जगल। वन।

वि० चोरस। सम्या-चोड़।

साक्षिप्य-सज्ञा पु० १ सानिप्य। बहुत नजदीक होने का भाव। निवृत्ता। २ एक प्रकार की मुक्ति। मोक्ष।

साक्षिपातिक-वि० साक्षिपात-सम्बन्धी।

सापत्य-समा पु० १. गपली या भाव या धर्म। मौल्यन। २. मोड़ या लड़ना।  
सापत्य\*†-क्रि० सं० साप देना। बद्धुना देना। कौशला।

सापेक्ष-वि० [समा सापेक्षता] १. एक दूसरे की अपेक्षा रखनेवाले। एक दूसरे पर निर्भर रहनेवाले। एक दूसरे में तामे-तारण रहनेवाले या एक दूसरे की आवश्यकता रखनेवाले। जिन बिंदुओं की अपेक्षा (आवश्यकता) हो। २. विचार, निर्णय या आदेश की अपेक्षा में क्या हुआ।

सापेक्षवाद-समा पु० वह सिद्धान्त, जिसमें दो वस्तुओं या बातों को एक दूसरे का अपेक्षक या एक दूसरे पर निर्भर माना जाता है।

साप्ताहिक-वि० १. प्रति सप्ताह होनेवाला। हफ्तावार। २. सप्ताह से सम्बन्ध रखनेवाला। सप्ताह-सम्बन्धी।

सप्ता पु० सप्ताह में एक बार प्रकाशित होनेवाला पत्र या पत्रिका।

साफ-वि० १. जिसमें कोई मेल न हो। स्वच्छ। निर्मल। २. चमकीला। ३. सादा। कोरा। ४. निर्दोष। ५. बे-ऐव। जिसमें कोई लोखंडा या लसट न हो। ६. स्पष्ट। ७. उज्ज्वल। ८. पुरा। सात्वित। जिसमें छल-नपट न हो। ९. निष्कपट। १०. जिसमें से अनावश्यक या रही अश निकाल दिया गया हो। ११. जिसमें कुछ तत्त्व न रह गया हो। साती। १२. छेन-देन आदि का निषेधन।  
क्रि० वि० १. बिना किसी दोष, कलक या अपवाद आदि के। निष्कलक। निर्दोष। २. बिना किसी प्रकार की हानि या कष्ट उठाए हुए। ३. बिल्कुल। एकदम। जिताता। ४. इस तरह से, जिसमें किसी को पता न लगे।

'मुहा०—साफ करना=१ मार डालना। हत्या करना। २ नष्ट करना।

साफल्य-समा पु० दे० "सफलता"।

साफा-समा पु० १. पगड़ी। २. मुरेडा। ३. निले के पहनने के बस्तुओं को सावुन लगाकर साफ करना। कपड़े धोना।

साफी-समा स्त्री० १. काना। दस्ती। २. गाँजे की चित्तम में नीचे लगाने का छटा। पगड़ा। ३. नांग छानने का उपकरण। छाना।

साबर-समा पु० १. दे० "गान्धरी"। २. गान्धरी का चमका। ३. मिट्टी याद का एक औजार। खुरी। ४. दे० "शब्द"। शिर-टूट एत प्रकार का सिद्ध मंत्र।

साविक-वि० [ज०] पहले का। पुण्या यो०—साविक दस्तूर=वेसा पहले का, वन ही। पहले की ही तरह। यथापूर्व।

साविका-समा पु० [ज०] १. मुलाकात भेंट। २. मन्थ। सरानार। ३. मुलाकात

सावित-वि० [फा०] १. सिद्ध। जिसका सबूत दिया गया हो। २. प्रमाणित। वि० १. साबूत। पूरा। २. दुस्त। ठीक। ३. इङ्क।

साबुत, साबूत-वि० [फा०] १. पूरा। समुचा। २. बिना दूटा-फूटा। दुस्त।

सावुन-समा पु० [अ०] रासायनिक क्रिया से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ, जिसमें घरीर और तपड़े आदि साफ किए जाते हैं। इसमें मज्जी, घुना, सोडा तथा तल आदि चीजें डाली जाती हैं।

सावुदाना-समा पु० दे० "सागुदाना"। साभार-वि० भार से युक्त। भार या बोझ के साथ।

क्रि० वि० १. आभार या एहसान मानते हुए। कृतज्ञतापूर्वक। २. भार या बोझ के साथ।

सामजस्य-समा पु० १. मेल। विरोधी विचारों का वस्तुओं का परस्पर मेल। २. अनुकूलता। ३. ओचित्य। उपयुक्तता।

सामत-समा पु० १. वीर। २. योद्धा। ३. जागीरदार। ४. सरदार। ५. बड़ा जमींदार।

सामत-समा पु० किसी राज्य की ऐसी शासन-व्यवस्था या प्रणाली, जिसमें सरदारी और जमींदारों को जमीन और खेतीबारी आदि के सम्बन्ध में बहुत अधिक स्वायत्त अधिकार होते हैं।

सामतवाद-समा पु० ऐसी शासन-व्यवस्था या सिद्धान्त, जिसमें जनता पर राजा-जाना

भाराजाओं या बड़े-बड़े जमींदारों का अधिकार हो।

सज्ञा पु० १. वेद-मंत्र, जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाए जाते थे।

दे० "सामवेद"। ३. मधुर भाषण। राजनीति में अपने वैरी या विरोधी को भीठी वाते कहकर अपनी ओर मिलाना। ५. सामान। ६. दे० "शाम" और "साम" (दो देश)।

स्त्री० दे० "शाम" (संध्या)

सज्ञा पु० [स्त्री० सामग्री] सामवेद का अच्छा ज्ञाता।

सामग्री-सज्ञा स्त्री० १. सामान। २. किसी काम में आनेवाली जरूरी चीजें। ३. उपकरण। ४. साधन। ५. माल। असबाब। सामा-सज्ञा पु० १. किसी के सामने होने की विधा या भाव। मुकाबला। विरोध। २. मो। मुलाकात। ३. किसी पदार्थ का अंश भाग।

मुहा०—सामने होना=(स्त्रियों का) पक्ष न करके सामने आना। सामना करना=१ मुकाबला करना। विरोध करना। २. सामने होकर जवाब देना।

सामने-क्रि० वि० १. सम्मुख। समक्ष। आगे। २. सीधे। ३. उपस्थिति में। ४. मुकाबले में।

सामयिक-वि० [सज्ञा स्त्री० सामयिकता] १. समय के अनुसार। समय को देखते हुए उचित। समयानुकूल। २. वर्तमान समय से संबंध रखनेवाला। समय-संबंधी।

सामयिक पत्र-सज्ञा पु० १. निश्चित समय पर प्रकाशित होनेवाला पत्र। (अग्रे०—पीरियाडिकल) २. अखबार। समाचार-पत्र।

सामय्य-सज्ञा स्त्री० दे० "सामय्य"।

सामयिक-वि० समर-संबंधी। युद्ध या लड़ाई से सम्बन्ध रखनेवाला।

सामय्य-सज्ञा स्त्री० दे० "सामय्य"।

सामय्य-सज्ञा पु० १. सामय्य रखनेवाला।

२. पराक्रमी। ३. शक्तिशाली। बलवान्।

सामय्य-सज्ञा पु०, स्त्री० १. समय हान का भाव। कर सकने की शक्ति या ताकत। २.

प्राप्तता ३. शक्ति। बल। ४. पराक्रम। ५.

शब्द की वह शक्ति, जिससे उसका अर्थ या भाव प्रकट होता है।

सामवायिक-वि० १. समवाय 'सम्बन्धी'। दे० "समवाय" २. समूह या झुंड-संबंधी।

सामवेद-सज्ञा पु० भारतीय आर्यों के चार वेदों में से तीसरा, जिसमें यज्ञों के समय गाए जानेवाले स्तोत्रों का संग्रह है।

सामवेदीय-वि० सामवेद-संबंधी।

सज्ञा पु० सामवेद का ज्ञाता या अनुयायी।

सामहि\*—अव्य० सम्मुख। सामने।

सामाजिक-वि० १. समाज का। २. समाज से संबंध रखनेवाला।

सामाजिकता-सज्ञा स्त्री० लौकिकता। सामाजिक होने का भाव।

सामान-सज्ञा पु० १. किसी काम में आनेवाली जरूरी चीजें। सामग्री। २. उपकरण। ३. माल। असबाब। ४. आयोजन। इतजाम। बन्दोबस्त।

सामान्य-वि० साधारण। मामूली। जिसमें कोई विशेषता न हो।

सज्ञा पु० १. समानता। बराबरी। २. औसत।

३. किसी जाति की सब चीजों में समान रूप से पाया जानेवाला गुण या विशेषता। ४. साहित्य में एक अक्षर (एक ही आकार की दो या अधिक ऐसी वस्तुओं का वर्णन, जिनमें देखने में तनिक भी अंतर नहीं जान पड़ता)।

सामान्यत, सामान्यतया—अव्य० सामान्य रूप से। आम तौर पर। साधारणतः।

सामान्य-लक्षणा-सज्ञा स्त्री० किसी पदार्थ को देखकर उस जाति के और सब पदार्थों को बोध करानेवाली शक्ति।

सामान्य विधि-सज्ञा स्त्री० १. साधारण विधि या आज्ञा। आम हुक्म। जैसे—हिंसा मत करो, झूठ मत बोलो। २. किसी देश के निवासियों के आचरण या व्यवहार-सम्बन्धी प्राचीन काल से प्रचलित नियम, कानून या सिद्धान्त।

सामान्या-सज्ञा स्त्री० साहित्य में वह नायिका, जो धन लेकर प्रेम करती है। गणिका।

सामासिक-वि० १. समास से संबंध रखनेवाला। २. समास का।

सामिप-वि० साय, मछली आदि के साथ ।  
निरामिप का उलटा ।

सामीप्य-संज्ञा पु० समीप या नजदीक होने का भाव । निकटता । वह मुक्ति, जिसमें जीव का भगवान् के समीप पहुँचना भावा जाता है ।

सामुक्ति\*†-संज्ञा स्त्री० दे० "समत" ।

सामुदायिक-वि० १. समुदाय या समूह से सम्बन्ध रखनेवाला । २. समुदाय का । ३. मनुष्यों या जीवों के समुदाय से सम्बन्ध रखनेवाला ।

सामुद्र-वि० १. समुद्र से उत्पन्न । २. समुद्र का । समुद्र-संबंधी ।

संज्ञा पु० १. समुद्र से निकला हुआ नमक । २. समुद्रफेन । ३. दे० "सामुद्रिक" ।

सामुद्रिक-वि० १. समुद्र या सागर सम्बन्धी । २. समुद्र का ।

संज्ञा पु० १. एक विशेष विद्या, जो फलित ज्योतिष का एक भाग है और जिसमें मनुष्य की हृषेली की रेखाओं और शरीर पर के तिलों आदि लक्षणों को देखकर उसके जीवन की घटनाएँ तथा शुभाशुभ फल बतलाए जाते हैं । २. इस विद्या का जाननेवाला व्यक्ति ।

सामुहो\*†-अव्य० सामने ।

संज्ञा पु० आगे का ।

सामुहे\*†-अव्य० सामने ।

सामूहिक-वि० [संज्ञा स्त्री० सामूहिकता] समूह-सम्बन्धी । समूह का । मनुष्यों या जीवों के समुदाय से सम्बन्ध रखनेवाला ।

साम्य-संज्ञा पु० समान होने का भाव । समानता । बराबरी ।

साम्यवाद-संज्ञा पु० सबको समान समझने का सिद्धान्त । एक प्रकार का पश्चिमी सिद्धान्त, जिसके अनुसार समाज के सब व्यक्तियों को एक समान समझा जाता है और समाज के वर्ग-भेद आदि अन्य प्रकार की असमानताएँ दूर करके भजदूरी और किसानों आदि साधारण जनता का राज्य स्थापित किया जाता है । इसमें किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं होती और सब

सम्पत्ति पर राष्ट्र का अधिकार होता है ।  
(अंग्रे०-कम्युनिज्म)

साम्यवादी-संज्ञा पु० साम्यवाद के सिद्ध को माननेवाला । (अंग्रे०-कम्युनिस्ट)

साम्या-संज्ञा स्त्री० १. सबके साथ साथ व्यवहार । समदशिता । २. न्यायपूर्ण निष्पक्ष व्यवहार । सब लोगों के साथ साथ न्याय के अनुसार निष्पक्ष और समान भाव किया जानेवाला व्यवहार । (अंग्रे०-ईक्विटी)

साम्यामूलक-वि० १. जिसमें साम्या या सन्तुलन का पूर्ण ध्यान रखा गया है । २. पक्षपातरहित । न्यायसंगत ।

साम्यावस्था-संज्ञा स्त्री० १. एक समान की अवस्था । २. वह अवस्था या दशा जिसमें सब, रज और तम तीनों गुण बराबर हों । ३. प्रकृति । ४. ऐसी दशा या स्थिति जिसमें परस्पर-विरोधी शक्तियाँ इतनी संतुलित हो कि कोई विकार उत्पन्न न हो ।

साम्राज्य-संज्ञा पु० १. वह राज्य, जिसमें अधीन बहुत से देश हों और जिसमें किसी एक सम्राट का शासन हो । सार्वभौम । राज्य सत्तान्त । २. आधिपत्य । पूर्ण अधिकार ।

साम्राज्यवाद-संज्ञा पु० दूसरे देशों पर अपना कब्जा रखने और राज्य-विस्तार करने का सिद्धान्त । साम्राज्य को कायम रखने और उसे बढ़ाते रहने का सिद्धान्त । (अंग्रे०-इम्पीरियलिज्म)

साम्राज्यवादी-संज्ञा पु० साम्राज्यवाद के सिद्धान्त का समर्थक या अनुयायी ।

सार्य-संज्ञा पु० संध्या । शाम ।

वि० संध्या-संबंधी ।

सार्यकाल-संज्ञा पु० [वि० सायकालीन] संध्या । संध्या समय । शाम के वक्त । शाम ।

सार्यसंध्या-संज्ञा स्त्री० सार्यकाल के समय को जानेवाली उपासना ।

सायक-संज्ञा पु० १. बाण । तीर । २. खड्ग । ३. दाय की संख्या ४. एक प्रकार का वृक्ष, जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है ।

शायण-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध आचार्य, जिन्होंने वेदा के प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।

सपत्त-सज्ञा स्त्री० १ सादत। शुभ मुहूर्त। अच्छा समय। २ एक घंटे या ठाई घड़ी का समय। ३. दंड। पल।

अप्य० दे० "शायद"।

शायन-सज्ञा पु० १. सूर्य की एक प्रकार की गति। २ वर्ष में दो बार आनेवाला वह समय जब सूर्य के भूमध्यरेखा पर पहुँचने पर दिन और रात दोनों बराबर हो जाते हैं। (२० मार्च और २३ सितम्बर)

वि० अयन के साथ या अयन-युक्त। दे० "अयन"। जिसमें अयन (ग्रह आदि) हो।

सपयान-सज्ञा पु० मकान के आने की छाजन या छप्पर आदि जो छाया के लिए बनाया गया हो।

सयर-सज्ञा पु० १ दे० "सागर"। समुद्र। २ ऊपरी भाग। शीर्ष। ३ [अ०] वह भूमि, जिसकी आय पर कर नहीं लगता। ४ अतिरिक्त आय।

सवाल-सज्ञा पु० [अ०] १ सवाल करनेवाला। प्रश्नकर्त्ता। २. मार्गनेवाला। याचक। ३. मिछारी। फकीर। ४ प्रार्थी।

साया-सज्ञा पु० १. छाया। परछाई। २. असर। प्रभाव। ३ मूल, प्रेत आदि। (अ० शेमीज) ४ घाँघरे की तरह का एक जताना पहनावा।

मुहा०—साये में रहना=शरण में रहना।

सायास-क्रि० वि० आयास या प्रयत्न से।

सायाह्न-सज्ञा पु० संध्या। शाम।

सामुज्य-सज्ञा पु० [स्त्री० सामुज्यता] १. ऐसा मिलना कि कोई भेद न रह जाय। २. योग। ३. मिलन। ४. एक प्रकार की मुक्ति, जिसमें जीवात्मा परमात्मा में लीन हो जाता है।

सारग-सज्ञा पु० १. हिरन। एक घास तरह का हिरन। २ हंस। ३ मोर। ४. चातक। ५. पोहा। ५ बाकिल। ६. बाज। ७. मूय्य। ८. चद्रमा। ९. सिंह। १० साँप। ११. हाथी। १२. घोडा। १३. छाता। छात्र। १४. सार। १५. कमल। १६. स्वर्ण। सोना। १७.

आभूषण। गहना। १८. सर। तालाब। १९. भ्रमर। भौरा। २०. एक प्रकार की मधुमक्खी। २१. विष्णु का धनुष। २२ कपूर। २३. श्रीकृष्ण। २४. शम्भु। शिव। ईश्वर। २५ कामदेव। २६. समुद्र। २७. पानी। २८. बाण। तीर। २९. दीपक। ३०. चंदन। ३१ भूमि। जमीन। ३२. शोभा। सुन्दरता। ३३. स्त्री। नारी। ३४. रात। ३५. दिन। ३६ तलवार। खड्ग। (डि०) ३७ बादल। ३८ हाथ। ३९ ग्रह। नक्षत्र। ४० खजान-पक्षी। सोनचिड़ी। ४१ मँडक। ४२ बाकाश। ४३. चिड़िया। ४४ सारंगी नामक बाजा। ४५ विद्युत्। बिजली। ४६ पुष्प। फूल। ४७. एक प्रकार का राग। ४८. एक प्रकार का छंद, जिसमें चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ४९ छप्पय के २६वें भेद का नाम। ५०. केश। बाल। वि० १ रँग हुआ। रंगीन। २ सुन्दर। सुहावना। ३ सरस।

सारगपाणि-सज्ञा पु० विष्णु।

सारग-लोचन-वि० [स्त्री० सारगलोचना] जिसकी आँखें हिरन की आँखों की तरह हों।

सारगिक-सज्ञा पु० १ बहेलिया। चिड़ीमार। २ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक पद में न, य, स होते हैं।

सारगिया-सज्ञा पु० सारंगी बजानेवाला। सारिजा।

सारंगो-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का प्रसिद्ध तारवाला बाजा।

सार-सज्ञा पु० १ किसी वस्तु का असली भाग। तत्त्व। सत्। २ मुख्य अनिप्राय। ३ साराश। ४ परिणाम। फल। नतीजा। ५ निष्कर्ष। ६ निर्यास या अर्क आदि। रस। ७ पानी। ८. सूदा। मज्ज। ९ मज्जा। १० दूध पर की साड़ी। मलाई। ११ नक्कीत। १२ लकड़ी का हीर। १३ धन। दोलत। १४ अमृत। १५ वल। मणि। ताकत। १६ जूजा खेलने का पासा। १७ सारिका। मैना। १८ शय्या। पतंग। खाट। १९ पालन-पोषण। २० देख-रेख।

दे० "ताला।" पत्नी का भाई।

१ वि० उत्तम। थोष्ट। २ दृढ़। मजबूत।

३ दे० "त्वाल"। ४. उदार। ५. एक प्रकार का अर्थात्तवार, जिसमें उत्तरोत्तर वस्तुओं की उप्रति या अपनति का वर्णन होता है।

सारगर्भ-सज्ञा पु० तत्त्वपूर्ण। अर्चयुक्त। गम्भीर अर्थवाला।

सारगर्भित-वि० जिसमें सार या तत्व भरा हो। मतलब से भरा हुआ। सार-युक्त। तत्त्वपूर्ण।

सारग्राही-वि० [ स्त्री० सारग्राहिणी ] [ सज्ञा स्त्री० सारग्राहिता ] सार या तत्व ग्रहण करनेवाला। विषयो या वस्तुओं का सार ले लेनेवाला।

सारणी-सज्ञा स्त्री० १ तालिका। अलग-अलग स्थानों में दिये हुए शब्दों, पदों या अक्षरों का वह विन्यास, जिससे उनके पारस्परिक सम्बन्ध या कुछ विशेष तथ्य सूचित होते हैं। २ छोटी नदी या नाला।

सारथी-सज्ञा पु० १. रथ चला देनेवाला। सवारी हूँकनेवाला। २. सागर।

सारथ्य-सज्ञा स्त्री० सारथी का कार्य, पद या भाव।

सारव\*-सज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"। सरस्वती। वि० दे० "शारद"। शरद-सम्बन्धी।

सज्ञा पु० शरद ऋतु।

शारदा-सज्ञा स्त्री० दे० "शारदा"।

शारदी-वि० दे० "शारदीय"।

शारदूल-सज्ञा पु० दे० "शार्दूल"।

शारदा-क्रि० सं० १ समाप्त करना। पूरा करना। २. सुयोधित करना। सुन्दर बनाना।

३ साधना। बनाना। दुस्त करना। ४. रक्षा करना। संभालना। ५. देख-रेख करना। ६. आँखों में अजन या सुरमा आदि लगाना।

७. अस्त्र चलाना। प्रहार या वार करना।

शारदा-सज्ञा पु० समुद्र की वह वाह, जिसमें पानी पहले समुद्र के तट से आगे निकल जाता है और फिर कुछ देर बाद पीछे लौटता है। (ज्वारभाटा का उलटा।)

शारमेय-सज्ञा पु० [ स्त्री० शारमेयी ] कुत्ता।

सरमा की सतान।

सारख्य-सज्ञा पु० सरलता। सीधापन।

सारखती-सज्ञा स्त्री० तीन भगण और एक गुरु का एक छंद।

सारवत्ता-सज्ञा स्त्री० १ सार ग्रहण करने का भाव। सारग्राहिता। २ सारयुक्त होने का भाव।

सारवान्-वि० सारयुक्त। जिसमें सार या तत्व हो।

सारस-सज्ञा पु० [ स्त्री० सारसी ] १. एक प्रकार का बड़ा श्वेत पक्षी। २. हंस। ३. चक्रमा। ४. कमल। ५. छण्य का ३७वाँ भेद।

सारसी-सज्ञा स्त्री० १ मादा सारस। २ आर्या छंद का २३वाँ भेद।

सारमुता-सज्ञा स्त्री० यमुना।

सारमुती\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।

सारस्वती-सज्ञा पु० १ दिल्ली के उत्तर-पश्चिम सरस्वती नदी के तट पर का एक प्राचीन प्रदेश, जिसमें पंजाब का कुछ भाग सम्मिलित था। २. इस देश के शाह्यण। ३ एक प्रसिद्ध व्याकरण।

वि० १. सारस्वत देश का। २. सरस्वती-सम्बन्धी। ३ विद्वाना का।

सारास-सज्ञा पु० १ सार। संधेप। २. तात्पर्य। मतलब। निचोड़। ३. परिणाम।

सारा-वि० [ सज्ञा स्त्री० सारी ] तथ। समस्त। सज्ञा पु० दे० "साता"।

सारावती-सज्ञा स्त्री० सारावती छंद।

सारि-सज्ञा पु० १ पासा या चौपड़ खेलने-वाला। २ जूबा खेलने का पासा।

सारिक-सज्ञा पु० दे० "सारिका"।

सारिका-सज्ञा स्त्री० मैना पक्षी।

सारिणी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार का जंगली पीछा। २ सहदेई। ३. नागवला। ४ कपाय। ५ गंधप्रसारिणी। ६ रक्त पुननवा।

सारिया-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का पोधा। अनतमूल।

सारी-सज्ञा स्त्री० १ दे० "साडी"। २ सारिका पक्षी। मैना। ३ पासा। सीटी। ४ धुहर।

सज्ञा पु० अनुकरण या नकल करनेवाला।

वि० सब। समस्त। पूरा।

सज्ञा\*†-सज्ञा पु० दे० "सार"।

सल्लस्य-सज्ञा पु० १. समान रूप होने का भाव। एकलपता। सल्लपता। समानता।

२. एक प्रकार की मुक्ति, जिसमें उपासक अपने उपास्य देव का रूप प्राप्त कर लेता है।

सरो\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "सारिका"।

सारोपा-सज्ञा स्त्री० साहित्य में एक लक्षणा, जिसके अनुसार एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर कुछ विशेष अर्थ निकलता है।

सार्य-वि० अर्थ-साहित।

सार्यक-वि० [ भाव० संज्ञा स्त्री० सार्यकता ]

१. अर्थ-साहित। जिसका कुछ अर्थ या मतलब हो। इसका उल्टा 'निरर्थक'। २. सफल। कामयाब। ३. फलदायक ४. लाभदायक।

शार्द-वि० डचोटा। जिसमें पूरे के साथ आधा और मिला हो।

शार्द्र-वि० गोला। आर्द्र।

सार्ध-वि० सबसे सब रखनेवाला।

सार्धकालिक-वि० सदैव होनेवाला। जो सब कालों में होता हो। सब समयों का।

सार्धजनिक, सार्धजनोन-वि० सब लोगों में सब रखनेवाला। सार्ध-साधारण-सबधी। जनता-सम्बन्धी। (अर्थ-सर्वजनिक)।

सार्धप्रिक-वि० हर जगह मौजूद रहनेवाला। सर्वव्यापी।

सार्धवेष्टिक-वि० सब देगों में सम्बन्ध रखनेवाला। सब देगों का। सब देगों में होनेवाला।

सार्धभौतिक-वि० सब तत्त्वों में सम्बन्ध रखनेवाला। सब तत्त्वों में होनेवाला।

सार्धभोग-सज्ञा पु० १. शासन करने का पूर्ण अधिकार। सम्पूर्ण प्रभुता या स्वामित्व। २. चक्रवर्ती राजा। ३. हाथी।

वि० समस्त भूमि-सम्बन्धी।

सार्धभौमिक-वि० सार्धभोग-सम्बन्धी। दे० "सार्धभोग"।

सार्धराष्ट्रीय-वि० जिसका सब धन या अनेक राष्ट्रों में हो। अन्तराष्ट्रीय।

सालक-सज्ञा पु० वह राग, जिसमें किसी और राग का मेल न हो, पर फिर भी किसी राग का आभास जान पड़ता हो।

साल-सज्ञा पु० १. जड़। २. राल। ३. वृक्ष। ४. \*दे० "शालि" और "शाल"। ५.

\*दे० "शाला।" (जैसे घुड़शाल) ६. [ फा० ] वर्ष।

सज्ञा स्त्री० १. सालने या सलने की क्रिया या भाव। २. छेद। सूराल। ३. दुख। पीडा। वेदना। ४. घाव। जलम। ५. चारपाई के पायों में किया हुआ चौकोर छेद।

सालक-वि० सालनेवाला। दुख देनेवाला।

सालगिरह-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] \*वर्षगाँठ। जन्म-दिवस।

सालन-सज्ञा पु० १. मसालेदार तरकारी।

२. पका हुआ भात या मछली।

सालना-क्रि० अ० १. दुख देना। २. दुख मिलना। ३. खटवना। ४. कसवना। चुभना।

क्रि० स० १. दुख पहुँचाना। २. चुभाना। छेद करना। ३. लकड़ी आदि में छेद करके उसमें दूसरी लकड़ी का सिरा घुमाना।

सालनिर्वास-सज्ञा पु० १. राल। २. पना।

सालम मिसरी-सज्ञा स्त्री० [ अ० सालव मिश्री ] एक प्रकार का पोसा, जिसकी जड़ पौष्टिक होती है। मुषामूली। योरकदा।

सालरस-सज्ञा पु० १. राल। २. घना।

सालस-सज्ञा पु० दे० "शालिस"।

सालसा-सज्ञा पु० [ अर्थ० नारसा-पेरिल्ला ]

खून साफ करने की एक प्रसिद्ध दवा।

साला-सज्ञा पु० [ स्त्री० साली ] १. पत्नी का भाई। २. एक प्रकार की गाती, जो यह सम्बन्ध प्रकट करने के लिए दी जाती है। ३. सारिका। मैना।

सज्ञा स्त्री० २० "शाला"।

सालाना-वि० [ फा० ] १. साल भर भर रहनेवाला। वार्षिक। हर साल होनेवाला। २. पूरे साल भर का। प्रशिक्षण का।

सालार-सज्ञा पु० प्रधान नेता। अनुयायी।

पथ-प्रदर्शक। रास्ता बनानेवाला।

सालिग्राम-सज्ञा पु० दे० "शालिग्राम"।

सालिब मिसरी-सज्ञा स्त्री० दे० "सालम मिसरी"।

सालिम-वि० [अ०] सपूर्ण। पूरा।

सालियाना-वि० दे० "सालाना"।

सालिस-सज्ञा पु० [अ०] दो पक्षाक्षगड का निपटारा करनेवाला या उनमें समझौता करानेवाला। पंच।

वि० तीसरा। तृतीय।

सालिसनामा-सज्ञा पु० पचनामा। वह लक्ष्य जिस पर समझौता का शर्तों के साथ पंचा के हस्ताक्षर हैं।

सालिसी-सज्ञा स्त्री० १ सालिस होने की क्रिया या भाव। २ पचायत।

साली-सज्ञा स्त्री० पत्नी की बहन।

सालु\*†-सज्ञा पु० १ दे० 'साल'। दुस।

२ कण्ट। ३ ईर्ष्या।

सालू-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का बाल कपड़ा (मायलिक)। २ सारी।

सालोबय-सज्ञा पु० एक प्रकार की मुक्ति, जिसमें मुक्त जीव भगवान के साथ एक लोक में वास करता है। सलोकता।

सावत-सज्ञा पु० दे० 'सामत'।

साव-सज्ञा पु० १ दे० 'साहु'। २ पुन।

सावकाश-सज्ञा पु० १ अवकाश। 'कुसत'।

गुडी। २ मौका। अवसर।

क्रि० वि० मौके से। अवकाश या छुट्टी के समय।

सावचेत\*†-वि० दे० 'सावधान'।

सावज-सज्ञा पु० वह जंगली जानवर जिसका शिकार किया जाय या जो शिकार में भिन्न हो। शिकार।

सावत-सज्ञा पु० १ सीतिया डाह। सीता का आपस में द्वेष। २ ईर्ष्या। डाह।

सावधान-वि० होशियार। खबरदार। [सज्ञा स्त्री० सावधानता, सावधानी] सचत। सजर। सतक।

सावधानी-सज्ञा स्त्री० सावधान रहने की क्रिया या भाव। सतकता। होशियारी।

सावधि-वि० १ जिसकी कुछ अवधि या निश्चित समय हो। २ जिसमें अभी कुछ अवधि या समय बाकी हो। अवधि के साथ।

सावन-सज्ञा पु० १ हिन्दुओं के वर्ष का पाँचवाँ महीना, जो आषाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले पड़ता है। श्रावण। २ एक प्रकार का मास, जो श्रावण महीने में गना जाता है (पूर्व)। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंड।

सावनी-वि० १ सावन-सम्बन्धी। २ सावन का।

सज्ञा पु० दे० १ 'श्रावणी'। सावन महीने की पूषमासी, जिस दिन 'रक्षा बंधन' तथा पूजन आदि होते हैं। २ वह वायन या उपहार, जो सावन के महीने में वरपक्ष से वधू के यहाँ भेजा जाता है।

सावर-सज्ञा पु० १ दे० 'श्रावर'। शिव-कृत एक प्रसिद्ध तन। २ एक प्रकार का लोह का लवा औजार। ३ एक प्रकार का हिरन।

सावणि-सज्ञा पु० १ आठवें तनु जो सूर्य के पुत्र थे। २ एक मन्वन्तर का नाम।

सावित्र-सज्ञा पु० १ सूर्य। २ शिव। ३ वसु। ४ राक्षस। ५ यज्ञोपवीत। ६ एक प्रकार का अस्त्र।

वि० १ सविता या सूर्य-सम्बन्धी। सूर्य का। २ सूर्यवशी।

सावित्री-सज्ञा स्त्री० १ सरस्वती। ब्रह्मा की पत्नी। २ वेदमाता गायत्री। ३ धर्म की पत्नी और वरुण की कन्या। ४ मद्र देश के राजा अश्वपति की कन्या और तत्त्ववान् की सती पत्नी। ५ यमुना नदी। ६ सरस्वती नदी। ७ सधवा स्त्री। ८ उपनयन के समय होनेवाला एक संस्कार।

साधू-वि० आसुआ से भरा हुआ। जिसमें आसू भरे हो। अश्रुयुक्त।

क्रि० वि० आँसू में आसू भरकर। आसू के साथ।

साष्टांग-वि० आठ अंग सज्जित।

क्रि० वि० आठ अंग से।

शो-साष्टांग प्रणाम=मस्तक, हाथ पैर, हृदय आदि जाँघ बचन और मन से भूमि पर लटकर किया जानवाला प्रणाम। दंडवत प्रणाम।

मुहा०—साष्टांग प्रणाम करना=बहुत बचना। दूर रहना। (व्यंग्य)

मास-सजा स्त्री० पति या पत्नी को माँ।

मासनलेट-सजा स्त्री० एक प्रकार का सफेद जालीदार कपड़ा।

मासना-सजा स्त्री० १. दे० "मासना"। कष्ट या दुख देना। २. दंड देना। ३. शासन।

मासराज-सजा पु० दे० "समुराल"।

मासा\*†-सजा स्त्री० १. दे० "सदाय"। सदेह। शुद्ध। २. दे० "स्वास्" या "सास्"।

मासुरा†-सजा पु० १. समुर। २. समुराल।

साह-सजा पु० १. दे० "साहु"। २. व्यापारी। ३. सेठ। महाजन। धनी। ४. सम्जन। भला आदमी। ५. दे० "साह"।

साहचर्य-सजा पु० १. संग। साथ। २. सहचर होने का भाव।

साहजिक-वि० सहज में होनेवाला। स्वाभाविक। सहज बुद्धि या स्वभाव से होनेवाला।

साहनी-सजा स्त्री० सेना। फौज।

सजा पु० १. साथी। संगी। २. पारिपद। मध्यकालीन भारत के एक प्रकार के राज-कर्मचारी।

साहय-सजा पु० [अ० साहिव] [स्त्री० साहिया] १. स्वामी। मालिक। २. प्रभु। परमेश्वर। ३. एक सम्मानमूचक शब्द। ४. मित्र। दोस्त। ५. गौरी जाति का व्यक्ति। जैसे, अग्नेज जादि।

साहयजादा-सजा पु० [स्त्री० साहयजादी] १. भले या बड़े आदमी का लड़का। २. पुत्र। बेटा।

साहय-सलामत-सजा स्त्री० [अ०] १. परस्पर अभिवादन। आपस में अभिवादन या सलाम-यदनी का सम्बन्ध। सलाम। यदनी। २. जान-बूझान। भेल-जोत।

साहयो-वि० साहय का। साहया या अग्नेजों की तरह।

सजा स्त्री० १. साहय होने का भाव। २. प्रभुता। मालिकपन। अधिसार। ३. यदपन। टाट-टाट या रोवराव का दिग्भावा। अग्नेजियत।

साहस-सजा पु० १. हिम्मत। हियाव। २.

वीरता। वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य दृढ़तापूर्वक विपत्तियों आदि का सामना करता है। ३. कोई बुरा काम। ४. लूटना। दूसरे का धन जबरदस्ती लेना। ५. दंड। सजा। ६. जुमाना।

साहसिक-सजा पु० १. जिसमें साहस हो। पराक्रमी। हिम्मतवर। बहादुर। २. निर्भय। निडर। ३. क्रूर। ४. लूटेरा। डाकू। ५. चोर।

साहसो-वि० १. हिम्मती। दिलेर। निडर। २. वीर। बहादुर।

साहस, साहसिक-वि० सहस-सवधी। हजार का।

साहलो-सजा स्त्री० किसी सन्ध्या संचत् के हजार हजार वर्षों का समूह। सहस्राब्दी।

साहा-सजा पु० विवाह आदि शुभ कार्यों के लिए निश्चित लग्न या मुहूर्त।

साहाय्य-सजा पु० सहायता। मदद।

साहि\*—सजा पु० [का० साह] १. राजा। २. दे० "साहु"।

साहित्य-सजा पु० १. 'सहित' या साथ होने का भाव। एक साथ रहना या मिलना। २. एकत्र होना। मिलना। ३. किसी भाषा के गद्य और पद्य तब प्रकार के ग्रंथों का समूह। वाङ्मय (अग्ने०-लिटरचर)। ४. लिपि-बद्ध ज्ञान। ५. गद्य और पद्य की शैली काव्यों के गुण-दोष, भेद-अभेद, मोन्द्य या अलंकार और नामिकाभेद आदि से सम्बन्ध रखनेवाले प्रया का समूह। ६. किसी विषय, कवि या लेखक से सम्बन्ध रखनेवाले सभी प्रया और लेखों आदि का समूह, जैसे तुलसी का साहित्य। ७. किसी विषय या वस्तु में सम्बन्ध रखनेवाली सभी बातों का विस्तृत विवरण, जो प्रायः उनकी जानकारी कराने या विज्ञापन के रूप में बँटा है, जैसे किसी सस्या या वन, आदि का साहित्य।

साहित्यिक-वि० साहित्य-सम्बन्धी।

सजा पु० १. साहित्य की सेवा या रचना करनेवाला। साहित्यगर्वी। साहित्यकार। २. साहित्य का भावा। ३. साहित्य में रुचि रखनेवाला।

साहियों\*†-सज्ञा पु० द० "साईं"।  
साही-सज्ञा स्त्री० एक जंगली जानवर,  
जिसकी पीठ पर नुकील काँट होते हैं।  
इन काँटों से लिखने की यन्त्र बनती  
है।

साहु-सज्ञा पु० १ सज्जन। भला आदमी।  
२ महाजन। सेठ। साहूकार। ३ व्यापारी।  
बनिया। ४ ईमानदार।

साहुल-सज्ञा पु० दीवारें आदि बनाते समय  
उनकी सीध नापने के लिए एक प्रकार का  
यन्त्र या डोरदार लट्टू।

साहू-सज्ञा पु० दे० 'साहु'।

साहूकार-सज्ञा पु० बड़ा व्यापारी या महाजन।  
काठीवाल।

साहूकारा-सज्ञा पु० १ रुपयों का लन-देन।  
महाजनी। २ वह बाजार जहाँ बहुत से साहू-  
कार कारबार करते हों।

वि० साहूकारा का।

साहूकारी-सज्ञा स्त्री० साहूकार होने का भाव।  
साहूकारपन।

साह\*†-सज्ञा स्त्री० बाँह। भुजवट। बाजू।  
अव्य० सामुह्ये। सामन। सम्मुख।

सिर्ज\*†-प्रत्य० द० 'स्या'।

सिकना-क्रि० अ० सेंका जाना। जींच पर  
गरम होना या पकना।

सिंगा-सज्ञा पु० फूँकर बजाया जानवाला  
सींग या लोहे का एक बाजा। तुरही।  
रणसिंगा।

सिंगार-सज्ञा पु० १ दे० "शृंगार"। सजा  
वट। यनाव। शोभा। २ दे० "हरसिंगार"।

सिंगारदार-सज्ञा पु० वह छोटा लहूक या  
मेज जिसमें शीशा, कपड़े आदि शृंगार की  
सामग्री रखी जाती है।

सिंगारना-क्रि० स० १ शृंगार करना। सँवा-  
रना। २ सजाना। सुसज्जित करना।

सिंगारहोद-सज्ञा स्त्री० वेश्याओं के रहने का  
स्थान। चकला।

सिंगारहार-सज्ञा पु० हरसिंगार नामक फूल।  
पारिजात।

१ शृंगारिया। २ देवमूर्ति  
सिंगार करनेवाला पुजारी।

सिंगारो-वि० १ शृंगार करनेवाला। सजाने-  
वाला। २ दे० "सिंगारिया"।

सिंगिया-सज्ञा पु० शृंगिक। एक तरह का जहर।

सिंगी-सज्ञा पु० फूँकर बजाया जानेवाला  
एक बाजा, जो सींग का बना होता है।

सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली। सींग की  
नली, जिससे देहाती जहाँही गरीर का खराब  
खून या मवाद चूसकर निकालते हैं।

सिंगोटी-सज्ञा स्त्री० १ सिद्धर, कभी आदि  
रखने की स्त्रिया की पिटाई। २ येल के  
सींग पर पहनान का एक तरह का गहना।

सिप\*†-सज्ञा पु० दे० "सिह"।

सिपल-सज्ञा पु० दे० "सिहल"।

सिपाडा-सज्ञा पु० १ पानी में पँदा होनेवाला  
एक तिकोना फल। पानीफल। २ इस फल  
के आकार की तरह सिलाई या बेस-बूटा।  
३ समोसा नाम का तमकीन पकवान।

सिपासन-सज्ञा पु० दे० "सिहासन"।

सिपी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार की छोटी  
मछली। २ साठ। शूठी।

सिपेला-सज्ञा पु० शर का बच्चा।

सिचन-सज्ञा पु० [वि० सिचित] १ जल  
छिड़कना। २ सीचना।

सिचना-क्रि० अ० सीचा जाना।

सिचाई-सज्ञा स्त्री० १ पानी छिड़कने का  
काम। २ सीचने का काम। ३ सीचन की  
मजदूरी या कर।

सिचाना-क्रि० स० सीचन का काम दूसरे  
से कराना।

सिचित-वि० सीचा हुआ। जो सीचा गया हो।  
श्रीण हुआ। सीछा।

सिजित-सज्ञा स्त्री० १ शब्द। ध्वनि। २  
जनक। शकार।

सिदन\*†-सज्ञा पु० दे० "स्यदन"।

सिदुवार-सज्ञा पु० तैमातू नाम का पेड़।  
निगुंडी।

सिद्धर-सज्ञा पु० ईगुर को पीसकर बनाया  
हुआ एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिस  
सोभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ मुहाम के चिह्न-  
स्वरूप माँग में भरती हैं।

सिद्धरयान-सज्ञा पु० विवाह के समय बर के

द्वारा कन्या की मांग में सिद्धर भरना।

सिद्धरपुष्पी-राज्ञा स्त्री० एक पौधा, जिसमें लाल फूल लगते हैं। वीरपुष्पी।

सिद्धरवंदन-सज्ञा पु० दे० "सिद्धरदान"।

सिद्धरिया-वि० सिद्धर के रंग का खूब लाल।

सिद्धरी-वि० सिद्धर के रंग का। पीला मिला लाल रंग का।

सिंदोरा-सज्ञा पु० दे० "सिंधोरा"।

सिंध-सज्ञा पु० भारत के पश्चिम का एक प्रदेश, जो अब पाकिस्तान में है।

सज्ञा स्त्री० १ पंजाब की एक प्रधान नदी (सिंधु)। २ भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव-सज्ञा पु० दे० "सैधव"।

सिंधिया-सज्ञा पु० ग्वालियर के प्रसिद्ध मराठा राजाओं के वंश की उपाधि।

सिंधी-सज्ञा पु० १ सिंध-प्रदेश का निवासी। २. सिंध-प्रदेश का घोड़ा।

सज्ञा स्त्री० सिंध-प्रदेश की बोली।

वि० सिंध-प्रदेश का।

सिंधु-सज्ञा पु० १ नदी। बड़ी नदी। २. पंजाब की एक प्रसिद्ध नदी। ३. सिंध-प्रदेश।

४ समुद्र। ५ चार की संख्या। ६. सात की संख्या। ७ एक राग।

सिंधुज-सज्ञा पु० संधा नामक।

सिंधुजा-सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

सिंधुपुत्र-सज्ञा पु० चंद्रमा।

सिंधुमाता-सज्ञा स्त्री० सरस्वती।

सिंधुर-सज्ञा पु० [स्त्री० सिंधुरा] १. हाथी। २ आठ की संख्या।

सिंधुरमणि-सज्ञा पु० गजमुक्ता। हाथी की मणि।

सिंधुरवदन-सज्ञा पु० गणेश।

सिंधुरगामिनी-वि० हाथी की-सी चालवाली। गजगामिनी।

सिंधुविष-सज्ञा पु० समुद्र से निकला दुआ जहर। हलाहल विष।

सिंधुमुत-सज्ञा पु० जलधर राक्षस।

सिंधुमुता-सज्ञा स्त्री० लक्ष्मी।

सिंधुमुतामुत-सज्ञा पु० मोती।

सिंधुरा-सज्ञा पु० संपूर्ण जाति का एक राग।

सिंधोरा-सज्ञा पु० सिद्धर रखने की काठ का डिव्डी।

सिंह-सज्ञा पु० [स्त्री० सिंहनी] १. बिल्ली की जाति का सबसे बलवान और हिंसक जंगली जानवर, जिसकी गरदन पर बड़े-बड़े चाल होते हैं। शेर वंश। केसरी। २. बहुत बड़ा वीर या पराक्रमी। ३. वीरता या श्रेष्ठता-वाचक शब्द। जैसे—पुरुष-सिंह। ४. ज्योतिष में बारह राशियों में से पाँचवी राशि।

५. लाल सहिजन। ६ एक प्रकार के जैन साधु। ७ एक राग। ८. छप्पय छंद का सोलहवाँ भेद।

सिंहद्वार-सज्ञा पु० किले या महल का मुख्य दरवाजा। सदर फाटक।

सिंहनाब-सज्ञा पु० १ सिंह की दहाड़। २ युद्ध में वीरों की ललकार। ललकारकर कहना। ३ शेर की तरह चिपाड़कर कहना। बहुत जोर देकर निश्चयपूर्वक कहना। ४. एक प्रकार का वर्णवृत्त। ५ शिव का नाम। (महाभारत) ६ रावण के एक पुत्र का नाम।

सिंहनी-सज्ञा स्त्री० १ सिंह की मादा। शेरनी। २ एक छंद, जिसके चारों पदों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं।

सिंहपौर-सज्ञा पु० दे० "सिंहद्वार"।

सिंहल-सज्ञा पु० भारत के दक्षिण का एक द्वीप, लका।

सिंहलद्वीप-सज्ञा पु० दे० "सिंहल"।

सिंहलद्वीपी-वि० दे० "सिंहली"।

सिंहली-वि० सिंहल-द्वीप का।

सज्ञा पु० सिंहल देश का निवासी।

सज्ञा स्त्री० सिंहल देश की भाषा।

सिंहवाहिनी-सज्ञा स्त्री० दुर्गा देवी। सिंह की सवारी करने के कारण दुर्गा को सिंह-वाहिनी कहते हैं।

सिंहस्थ-वि० सिंह राशि में स्थित (सुस्थिति)।

सिंहावलोकन-सज्ञा पु० १. सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में बयान। ३. पहले कही हुई बातों का अन्त में बहुत संक्षेप में फिर से बयान। ४. पद्य-रचना की एक

पदति, जिसमें पिछले चरण के अन्त के कुछ शब्द लेकर अगला चरण चलता है।

सिहासन-सज्ञा पु० १. राजा या देवता के बैठने का आसन (विशेष प्रकार की चौकी)।

२. राजगद्दी।

सिहिका-सज्ञा स्त्री० १. एक राक्षसी जो राहु की माता थी। इसको लका जाते समय हनुमान ने मारा था। २. घोभन छद का एक नाम।

सिहिकाधनु-सज्ञा पु० राहु।

सिहिनी-सज्ञा स्त्री० सिंह या बाघ की मादा। शेरनी।

सिहो-सज्ञा स्त्री० १. सिंह की मादा। शेरनी।

२. आप्या छद का पचीसवाँ भेद। इसमें

तीन गुह और ५१ तधु होत हैं।

सिहोदरी-वि० स्त्री० सिंह के समान पतली कमरवाली।

सिअन-सज्ञा स्त्री० दे० "स्योन"।

सिअरा\*-वि० ठंडा।

सज्ञा पु० छाया। छाहूँ।

सिआना-क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिआर-सज्ञा पु० [स्त्री० सिजारी] भृगाव। गीदड़।

सिकजबीन-सज्ञा स्त्री० [फा०] सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

सिकन्दरा-सज्ञा पु० [फा०] रेल की पटरों के किनारे ऊँचे खम्भों पर लगा हुआ डंडा, जो झुककर रेलगाड़ी के आगे बड़ने का संकेत करता है। [अश्र० सिगनल]। (सिकन्दर ने ऐसा एक निशाना लगाया था, जिसमें जहाज आपस में टकराने जायें। इसी से इसका नाम सिकन्दर पड़ गया।)

सिकटी-सज्ञा पु० [स्त्री० सिकटी]

मिट्टी के बरतन का छोटा टुकड़ा। ककड़।

सिकड़ी-सज्ञा स्त्री० १. भूखला। कियाड़ की कुड़ी। साँकल। २. जजोर। गले में पहनन की सोने की जजोर। ३. करधनी।

सिकता-सज्ञा स्त्री० १. बाल। रेत। २. बनुई जमीन।

सिकतिल-वि० [सज्ञा सिकता] रेतिला।

।-सज्ञा पु० शत्रुओं की एक शाखा।

सिकली-सज्ञा स्त्री० धारदार हथियार का भाँजने और उन पर सान चढ़ाने की क्रिया।

सिकलीगर-सज्ञा पु० तलवार आदि हथियार पर सान रखनेवाला।

सिकहर-सज्ञा पु० सीका। छीका। रस्सी या तार क बने हुए जालीदार घंसे, जिनमें बिल्ली आदि से बचाने के लिए खाने की चीजें बँध-रह रखकर टाँग दी जाती हैं।

सिकुइन-सज्ञा स्त्री० १. सिमटन। २. बल। शिकन। चुपट।

सिकुइना-क्रि० अ० १. सिमटना। सन्कुचित होना। २. बल पड़ना। शिकन पड़ना। ३. सकीणें होना।

सिकोइना-क्रि० त० समटना। सन्कुचित करना।

सिकीरा-सज्ञा पु० दे० "ससारा"।

सिकोली-सज्ञा स्त्री० भूँज, बँह आदि की बनी डलिया।

सिकोही-वि० १. गवौला। २. बीर। बहा-दुर। ३. आन-बानवाला।

सिककड़-सज्ञा पु० दे० "सोकड़"।

सिक्का-सज्ञा पु० [ब०] १. मुद्रा। टकसाल में डला हुआ धातु का टुकड़ा, जो सरकार द्वारा निश्चित मूल्य का धन माना जाता है। जैसे, रुपया-पैसा आदि। २. मुहर। छाप। ३. रूपए-पैसे आदि पर की राजकीय छाप। ४. मुद्रित चिह्न। ५. पत्रक। तमाग। ६. मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा। ७. अधिकार। प्रभुत्व। ८. आतक। रोब। ९. असर।

मुहा०—सिक्का बँडना या जमना=१. अधिकार स्थापित होना। प्रभुत्व होना। २. आतक छाना। रोब जमना।

सिक्ख-सज्ञा पु० दे० 'सिख'।

सिक्ख-वि० १. साया हुआ। २. नीया हुआ। तर। मोला।

सिखड़-सज्ञा पु० दे० 'सिखड़'।

सिख-सज्ञा पु० १. गुरु नामक आदि दस गुरुओं का अनुयायी। गुरुपुत्री। २. सिप्य। सज्ञा स्त्री० १. सील। \*२. सिला। पोटी।

सिखरन—सज्ञा स्त्री० दे० “सिखरन”। श्री-  
खड। दही-चीनी का मिश्रण।  
सिखलाना—क्रि० स० दे० “सिखाना”।  
सिखाना—क्रि० स० १ पढाना। २. शिक्षा देना।  
उपदेश देना।  
सो०—सिखाना-पढाना=चाताकी सिखाना।  
सिखावन—सज्ञा पु० शिक्षा। उपदेश।  
सिखावना\*†—क्रि० स० दे० “सिखाना”।  
सिखिर\*—सज्ञा पु० दे० “सिखर”।  
सिखो—सज्ञा पु० दे० “सिखी”।  
सिगनल—सज्ञा पु० [अंग्रे०] स्टेशनो के पास  
रेल को पटरी के किनारे ऊँचे खम्भे पर लगा  
हुआ डंडा, जो झुककर गाड़ी के आगे बढ़ने  
का संकेत करता है। इसके झुकने बिना गाड़ी  
आगे नहीं बढ़ती।  
सिगरा, सिगरो\*†—वि० [स्त्री० सिगरी]।  
सपूर्ण। सब। सारा।  
सिगरेट—सज्ञा पु० [अंग्रे०] कागज में लपेटा  
हुआ तम्बाकू का चूरा, जिसे जलाकर पीते हैं।  
सिचान\*—सज्ञा पु० दाज पक्षी।  
सिजदा—सज्ञा पु० [अ०] दंडवत्। प्रणाम।  
जमीन पर सिर रखकर या बहुत झुककर  
क्रिया गया प्रणाम।  
सिज्ञाना—क्रि० अ० दे० “सोझना”। सिज्ञाया  
जाना। आँख पर पकना।  
सिज्ञाना—क्रि० स० १. आँख पर पकाना। २.  
कष्ट देना। सताना। ३. तपस्या करना।  
सिटकिनी—सज्ञा स्त्री० किवाड़ बंद करने के  
लिए लोहे या पीतल का छोटा छड़। चट-  
कनी। अगरी।  
सिटपिटाना—क्रि० अ० [अनु०] डर या  
संकोच से एकदम चुप हो जाना। दब जाना।  
सकुचाना।  
सिट्टी—सज्ञा स्त्री० १. बहुत बड़-बड़कर बोलना।  
डोंग हँकना। २. बाकपट्टा।  
मुहा०—सिट्टी भूलना=सिटपिटा जाना।  
सिट्टी—सज्ञा स्त्री० दे० “सोटी”।  
सिठनी—सज्ञा स्त्री० सोढना। विवाह के अपसर  
पर गाई जानेवाली गाली।  
मिठाई—सज्ञा स्त्री० १. मदता। २. फीकापन।  
नीरसता।

सिड़—सज्ञा स्त्री० १. सनक। झक। २.  
पागलपन। उन्माद।  
सिड़बारा\*—वि० दे० “सिड़ी”।  
सिड़ी—वि० [स्त्री० सिड़िन] १. सनकी।  
पागल। बावला। २. धुनी। धुन का पक्का।  
सित—वि० [स्त्री० सिता, सज्ञा सितता]  
१ सफेद। उज्ज्वल। २. साफ। ३.  
चमकीला।  
सज्ञा पु० १. शुक्लपक्ष। २. चीनी।  
३ चाँदी।  
सितकंठ—सज्ञा पु० महादेव।  
वि० सफेद गर्दनवाला।  
सितकर—सज्ञा पु० चंद्रमा।  
सितता—सज्ञा स्त्री० श्वेतता। सफेदी।  
सितपक्ष—सज्ञा पु० हंस।  
सितभानु—सज्ञा पु० चंद्रमा।  
सितम—सज्ञा पु० [फा०] १ जुलम। अत्या-  
चार। २ गजब। अनर्थ।  
सितमगर—सज्ञा पु० [फा०] अन्यायी। दुख-  
दायी। जालिम।  
सितपराह—सज्ञा पु० सफेद सूअर। श्वेत वराह।  
सितवरहपत्नी—सज्ञा स्त्री० पत्नी।  
सितसागर—सज्ञा पु० क्षीर-सागर।  
सिता—सज्ञा स्त्री० १ ज्योत्स्ना। चाँदी।  
२ शुक्ल पक्ष। ३. मल्लिका। ४. मोतिया  
(फूल)। ५ चीनी। ६ चाँदी। ७. शराब।  
सिताखंड—सज्ञा पु० १ मिसरी। २. शहद से  
बनाई हुई शक्कर।  
सिताव\*—क्रि० वि० [फा०] १. तुरत।  
झटपट। २. जल्दी।  
सितार—सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध बाजा, जिसके  
तार पदों पर दबाकर, उँगली से बजाए  
जाते हैं।  
सितारा—सज्ञा पु० [फा०] १. भाग्य।  
नसीब। २ तारा। नक्षत्र। ३. चाँदी या सोने  
के पत्तर की बनी हुई छोटी गाल बिंदी, जो  
शोभा के लिए चीजों पर लगाई जाती है।  
चमकी।  
मुहा०—सितारा चमकना या बलद होना=  
भाग्योदय होना। अच्छी किस्मत होना।  
सितारिया—सज्ञा पु० सितार बजानेवाला।

सितारेंद्व-संज्ञा पु० [ फा० ] अथेजी शासन  
काल में मरहट्टर की ओर से दी जानेवाली  
एक उपाधि।

सितासित-संज्ञा पु० १. सफेद और लाल।  
द्वैत और स्वाम। २. पलदेव।

सितिकंद-संज्ञा पु० महादेव।

सिपिलाई-संज्ञा स्त्री० सिधिलता।

सिदरी-संज्ञा स्त्री० [ फा० ] तीन दरवाजों-  
वाला कमरा या बरामदा।

सिप्रिक-वि० [ अ० ] सच्चा। सत्य।

सिबोतो-क्रि० वि० भीष्म। जल्दी।

सिद्ध-वि० [ ना० संज्ञा स्त्री० सिद्धि, ]

१. तर्क या प्रमाण-द्वारा निश्चित।

प्रमाणित। निरूपित। २. जिसका साधन हो

चुका हो। ३. सम्पन्न। संपादित। ४. प्राप्त।

५. प्रयत्न में सफल। कृतकार्य। ६. जिनने

योग या तप-द्वारा अलौकिक लाभ या सिद्धि

प्राप्त की हो। ७. योग की विभूतियाँ

दिखानेवाला। ८. मोक्ष का अधिकारी।

९. जिस पयन के अनुसार कोई बात हुई

हो। १०. अनुकूल विना गया। ११. कार्य-

साधन के उपयुक्त बनाया हुआ। १२.

अंश पर पका या उबला हुआ।

संज्ञा पु० १. वह, जिसने योग या तप में

सिद्धि प्राप्त की हो। २. ज्ञानी। ३. योगी।

महार्त्मा। ४. एक प्रकार के देवता। ५.

ज्योतिष में एक योग।

सिद्धकाम-वि० १ जिसकी इच्छा पूरी हो  
गई हो। २. सफल। कृतार्थ।

सिद्धगुटिका-संज्ञा स्त्री० वह मंत्र-सिद्ध गोली,  
जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे मुँह  
में रख लेने से अक्षुब्ध होने आदि की अद्भुत  
शक्ति आ जाती है।

सिद्धत्व-संज्ञा पु० दे० "सिद्धि"।

सिद्धपीठ-संज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ योग,  
तंत्र या तांत्रिक प्रयोग करने से शीघ्र सिद्धि  
प्राप्त हो।

सिद्धरस-संज्ञा पु० पारा।

सिद्ध-रसायन-संज्ञा पु० दीर्घ जीवन और  
बहुत शक्ति देनेवाला 'रस'। औषध।

सिद्धहस्त-वि० १. निपुण। २. जिसका

हाथ किसी काम में मँजा हो। बरयन्त  
मुगल।

सिद्धाजन-संज्ञा पु० एक प्रकार का अंजन,  
जिसके बारे में कहते हैं कि उसे आँध में  
तपा देने से जमीन में गड़ी हुई चीजें नीचे  
दिखाई देती हैं।

सिद्धात-संज्ञा पु० १. मुख्य उद्देश्य या अनि-  
प्राय। २. भली भाँति सोच-विचारकर  
स्थिर किया हुआ मत। ३. विज्ञान या किसी  
वर्ग या संप्रदाय द्वारा प्रतिपादित या निश्चित  
मत। वाद। ४. निर्णयित विषय। ५. तत्त्व  
की बात। ६. पूर्व-पक्ष के खंड के उपरांत  
स्थिर मत। ७. श्रुतियाँ या महात्माओं के  
मान्य उपदेश। ८. शास्त्र-द्वारा निश्चित मत।

९. किसी शास्त्र (ज्योतिष, गणित आदि)  
पर लिखी हुई कोई पुस्तक-विशेष।

सिद्धान्तो-वि० अपने सिद्धान्त पर दृढ़ रहने-  
वाला। शास्त्री आदि के सिद्धान्त जानने-  
वाला।

सिद्धा-संज्ञा स्त्री० १. देवायना। २. सिद्ध की  
स्त्री। ३. आर्या छंद का १५वाँ भेद, जिसमें  
१३ गुरु और ११ लघु होते हैं।

सिद्धार्थ-वि० जिसकी इच्छाएं पूरी हो गई  
हो। पूर्णकाम।

संज्ञा पु० १. गौतम बुद्ध। २. जनों के २४वें  
तीर्थंकर महावीर के पिता का नाम।

सिद्धासन-संज्ञा पु० १. योग का एक आसन।  
२. सिद्ध-पीठ।

सिद्धि-संज्ञा स्त्री० १. काम का पूर्ण होना।  
सफलता। २. कौशल। निपुणता। ३.

प्रमाणित होना। ४. किसी बात का  
ठहराया जाना। निश्चय। निर्णय। ५.

पकना। सीझना। ६. योग के पूरे होने का  
अलौकिक फल। ७. विभूति। ८. तप या

योग की आठ सिद्धियाँ—अणिमा, महिमा,  
गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व

और वशित्व। ९. मुक्ति। मोक्ष। १०. दश  
प्रजापति की एक कन्या, जो धर्म की पत्नी

थी। गणेश की दो स्त्रियों में से एक। ११.

छप्पय छंद के ४१वें भेद का नाम, जिसमें

३० गुरु और १२ लघु वर्ण होते हैं।

सिद्धि-गुटिका-सज्ञा स्त्री० रसायन आदि वानां की गुटिका।

सिद्धिदाता-सज्ञा पु० १. गणेश। २. सिद्धि देनेवाला।

सिद्धेश्वर-सज्ञा पु० [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १ शिव। २ बहुत बड़ा सिद्ध महात्मा। महायोगी।

सिधार्ई-सज्ञा स्त्री० सीधापन।

सिधाना\*—क्रि० अ० दे० "सिधारना"।

सिधारना—क्रि० अ० १. जाना। गमन या प्रस्थान करना। २. मरना। स्वर्गवास होना।

‡क्रि० स० दे० "सुधारना"।

सिन-सज्ञा पु० [अ०] उम्र। आयु।

सिनक-सज्ञा स्त्री० नाक से निकला हुआ कफ या मल।

सिनकना—क्रि० अ० जोर से हवा निकालकर नाक का मल बाहर निकालना।

सिनोवाली-सज्ञा स्त्री० १. शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या पहली तिथि। २ एक वैदिक देवी।

सिनेमा-सज्ञा पु० [अंग्रे०] चल-चित्र। पर्दे पर विजली-यंत्रों से दिखलाया जानेवाला चित्र।

सिन्नी†—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. मिठाई। २ सिरनी। ३ किसी पीर या देवता को बड़ाकर प्रसाद की तरह बाँटी जानेवाली मिठाई।

सिपर-सज्ञा स्त्री० [फा०] डाल।

सिपहगरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] सिपाही का काम या पेशा।

सिपहसालार-सज्ञा पु० [फा०] सेनापति।

सिपाह-सज्ञा स्त्री० [फा०] फौज। सेना।

सिपाहगिरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] दे० "सिपहगरी"।

सिपाहियाना-वि० सिपाहियों या सैनिकों की तरह। फौजी।

सिपाही-सज्ञा पु० [फा०] १. सैनिक। योद्धा।

२. कास्टेबल। पुलिस का छोटा कर्मचारी।

सिपुर्द†—सज्ञा पु० दे० "सुपुर्द"।

सिप्पर-सज्ञा स्त्री० दे० "सिपर"।

सिप्पा-सज्ञा पु० १. निदाने पर किया हुआ वार। २ काम हल करने का उपाय या

तरकीब। तदवीर। ३. रंग। प्रभाव। धाक। मुहा०—सिप्पा जमाना=१ किसी कार्य के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करना। भूमिका बोधना। २. रंग जमाना। धाक जमाना।

सिप्रा-सज्ञा स्त्री० १ मालवा की एक नदी, जिसके किनारे उज्जैन नगर बसा है। २ भंस (संस्कृत में अप्रयुक्त अर्थ)।

सिफत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. विशेषता। गुण। २ लक्षण। ३. स्वभाव।

सिफर-सज्ञा पु० [अ०] शून्य। मुन्ना।

सिफला-वि० [अ०] [सज्ञा सिफलापन] १ नीच। २ छिछोरा। कमीना।

सिफारिश-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. किसी के पक्ष में कुछ कहना-मुनना। कृपा करने के लिए अनुरोध। २ नौकरी दिलाने के लिए कोशिश या तारीफ। ३ सुझाव पेश करना।

सिफारिशी-वि० [फा०] १. जिसमें सिफारिश हो। २. जिसकी सिफारिश की गई हो। ३ सिफारिश करनेवाला। सुशामदी।

सिफारिशो टट्टू-सज्ञा पु० जो केवल सिफारिश से ही किसी पद पर पहुँचा हो या अपना काम निकालता हो।

सिविका\*—सज्ञा स्त्री० दे० "शिविका"।

सिमंत-सज्ञा पु० दे० "सीमत"।

सिमटना—क्रि० अ० १. संकुचित होना।

सिकुटना। २ शिकन या बल पड़ना। ३.

इकट्ठा होना। ४ व्ययस्थित होना। ५ तर-

तीय से लगना। ६ पूरा होना। निबटना।

७ सहमना। ८ सकोच करना।

सिमरना†—क्रि० स० दे० "सुमिरना"।

सिमाना†—सज्ञा पु० सिवाना। हृद।

\*†—क्रि० स० दे० "सिलाना"।

सिमिटना\*†—क्रि० अ० दे० "सिमटना"।

सिमेटना\*†—क्रि० स० दे० "समेटना"।

सिय\*—सज्ञा स्त्री० सीता। जानकी।

सियना\*—क्रि० अ० १. उत्पन्न करना। २ रचना।

क्रि० स० दे० "सीना"।

सियरा\*—वि० [स्त्री० सियरी] [सज्ञा सिय-राई] १. शीतल। ठंडा। २. कच्चा।

सियराई\*—सज्ञा स्त्री० शीतलता ।

सियराना\*—क्रि० अ० जुड़ाना । ठंडा होना ।

सिया—सज्ञा स्त्री० सीता । जानकी ।

सियापा—सज्ञा पु० [फा०] मरे हुए व्यक्ति के शोक में स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति ।

सियारा—सज्ञा पु० [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड़ ।

सियाल—सज्ञा पु० गीदड़ ।

सियाला—सज्ञा पु० जाड़े का मौसिम । शीतकाल ।

सियासत—सज्ञा स्त्री० [अ०] (वि० सियासी)

१ राजनीति । २ देश की रक्षा और शासन ।

सियाह—वि० दे० "स्याह" ।

सियाहगोश—सज्ञा पु० [फा०] बन-बिलाव ।

विल्ली की जाति का एक जंगली जानवर ।

सियाहा—सज्ञा पु० (फा०) रोजनामचा । १

आय-व्यय के हिसाब की वही । २ सरकारी

खजाने का वह रजिस्टर, जिसमें जमींदारी

से बतूल हुई मात्तगुजारी लिखी जाती

है ।

सियाहानवोस—सज्ञा पु० [फा०] सरकारी

खजाने में सियाहा लिखनेवाला ।

सियाही—सज्ञा स्त्री० दे० "स्याही" ।

सिर—सज्ञा पु० १ शरीर का सब से ऊपरी भाग ।

शिर । मस्तक । कपाल । खोपड़ी । शरीर में

नर्दन के ऊपर का भाग । २. ऊपर का छोर ।

सिरा । चोटी ।

मुहा०—सिर-आँखा पर होना—सहर्ष स्वी-

कार होना । सिरोधार्य होना । सादर मान्य

होना । सिर-आँखों पर बैठना—बहुत आदर-

सत्कार करना । सिर उठाना—विरोध में

खड़ा होना । सामने मुँह करना ।

गर्व या प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना ।

(अपना) सिर ऊँचा करना—प्रतिष्ठा के साथ

सामो के बीच में खड़ा होना । सिर के बल

जागू—बहुत नम्रतापूर्वक किसी के पास

जाना । सिर सार्ना—वकवाद करना ।

माथा-गञ्ची करना । सोच विचार में डूबा

होना । सिर खाना—वकवाद करके जी

उबाना । सिर खपाना—सोच-विचार में डूबा

होना । बहुत मेहनत करना । सिर चकसाना—

दे० "सिर घूमना" । सिर बढ़ाना—१. माथे

से लगाना । पूज्य भाव दिखाना । २. दुतार से

उड़्ड बना देना । मुँह लगाना । सिर घूमना—

१. सिर में दर्द होना । २. पबरहट होना ।

बेहाशी होना । सिर झुकाना—सिर

नवाना । नमस्कार करना । लज्जा से गर्दन

नीची करना । सिर देना—प्राण निष्काश

करना । सिर धरना—सादर स्वीकार करना ।

अगीकार करना । सिर धुनना—शोक या पछ-

तावे से सिर पीटना । सिर नीचा करना—

लज्जा से सिर झुकाना । शर्माना । सिर पट-

कना—१. सिर धुनना । २. बहुत परिश्रम

करना । ३. अफसोस करना । सिर पर पाँव

रखना या सिर पर पाँव रख कर भागना—

बहुत जल्द भाग जाना । हवा होना । सिर

पर पडना—अपने ऊपर आना या बीतना ।

१. गुजरना । २. हिस्से में आना । सिर पर

झून्ध डाल या सवार होना—१. जान लेने पर

उताऊ होना । २. हत्या करने के बाद आपे

में न रहना । सिर पर सवार होना—कोई

काम कराने के लिए किसी की हमेशा

परेशान करना या हमेशा उस पर ताकौद

रखना । सिर पर होना—घोड़े ही दिन रह

जाना । बहुत निकट होना । सिर फिरना—

१. सिर घूमना । सिर चकराना २. पागल हो

जाना । सिर मारना—समझावे-समझावे डेरान

होना । सोचने विचारने में डूबा होना ।

सिर खपाना । सिर मूडत ही ओले पडना—

शुरू में ही काम बिगड़ना । कार्य प्रारम्भ

होते ही बिघ्न पडना या सकट आना ।

सिर पर सेहरा होना—विसी कार्य का श्रेय

प्राप्त होना । बाहुवाही मिलना । सिर से पैर

तक—१. आरम्भ से अंत तक । २. सब अंगों में ।

पूर्ण रूप से । सिर से पैर तक आग लगना—

अत्यंत श्रेय चढ़ना । सिर से कफन बाँधना—

मरने के लिए तैयार होना । सिर से खेल

जाना—प्राण दे देना । सिर पर सींग होना—

कोई विशेषता होना । खसुसियत होना ।

(किसी का किसी के) सिर होना—१. पीछे

पडना । पीछा न छोडना । २. बार बार किसी

बात का आग्रह करके तंग करना । ३. उत्स

पडना। झगडा करना। (किसी बात के)  
सिर होना=ताड़ लेना। समझ लेना।

सिरकटा-वि० [स्त्री० सिरकटी] १ जिस  
का सिर कट गया हो। २. दूसरा का अहित  
करनेवाला।

सिरका-सज्ञा पु० [फा०] धूप में पकाकर  
बट्टा किया हुआ ईख या किसी फल आदिक का  
रस।

सिरकी-सज्ञा स्त्री० १ सरकडा। सरई। २.  
सरकडे की बनी हुई टट्टी, जो प्रायः दीवार या  
गाडियों पर धूप और वर्षा से बचाव के  
लिए डालते हैं।

सिरचंद-सज्ञा पु० हाथी का एक प्रकार का  
अर्द्ध-चंद्राकार गहना।

सिरजक\*-सज्ञा पु० १. बनानेवाला। रचने-  
वाला। २. सृष्टिकर्ता। ईश्वर।

सिरजनहार\*-सज्ञा पु० १ बनानेवाला। रचने-  
वाला। २. सृष्टिकर्ता। ईश्वर।

सिरजना\*-क्रि० स० १ रचना। बनाना।  
२. उत्पन्न करना। ३. सृष्टि करना। ४.  
संचय करना।

सिरजित\*-वि० रचा हुआ। बनाया हुआ।

सिरताज-सज्ञा पु० १ सरदार। २ शिरोमणि।  
३. मुकुट।

सिर-तापा-क्रि० वि० १ आदि से अंत तक।  
२ सिर से पाँव तक।

सिरस्त्राण-सज्ञा पु० दे० "सिरस्त्राण"।

सिरदार\*†-सज्ञा पु० दे० "सरदार"।

सिर-धरा, सिर-धरू-सज्ञा पु० [स्त्री० सिर-  
धरी] १ सिर पर रहनेवाला। सरक्षक।  
२ सहायक। मददगार।

सिरनामा-सज्ञा पु० [फा०] १. तिफाके पर  
लिखा जानेवाला पता। २. किसी लेख का  
शीर्षक। सुर्खी।

सिरनेत-सज्ञा पु० १ पगड़ी। २. पटा। ३.  
धोती।

सिरपाव-सज्ञा पु० दे० "सिरोपाव"।

सिरपेच-सज्ञा पु० [फा०] १. पगड़ी। २.  
पगड़ी पर बाँधने का एक गहना। कलंगी।

सिरफूल-सज्ञा पु० सिर पर पहनने का एक  
गहना।

सिरकेंदा-सज्ञा पु० साफा। पगड़ी।

सिरबंद-सज्ञा पु० साफा। पगड़ी।

सिरबंदी-सज्ञा स्त्री० माथे पर पहनने का  
एक गहना।

सिरमनि\*-सज्ञा पु० दे० "शिरोमणि"।

सिरमौर-सज्ञा पु० १ मुकुट। २. सिरताज।  
शिरोमणि।

सिरस्थ-सज्ञा पु० दे० "शिरोस्थ"।

सिरस-सज्ञा पु० दे० "शिरोप"। सिरिस का  
पेड़।

सिरहाना-सज्ञा पु० चारपाई में या कहीं सोने  
की जगह पर सिर की ओर का भाग।

सिरा-सज्ञा पु० १ लवाई का अंत। छोर। २.  
ऊपर का भाग। ३. नोक। अंतिम भाग।  
४. आरंभ का भाग। ५. शीर्ष।

मुहा०-सिरे का=अव्यक्त दर्जे का। सबसे  
अच्छा।

सिराना\*†-क्रि० स० ठंडा करना। समाप्त  
करना। विताना।

क्रि० अ० १ ठंडा होना। २. मंद पडना।  
३. हतोत्साह होना। ४. समाप्त होना। बीत  
जाना। ५. मिटना। दूर होना। ६. काम  
से फुरसत पाना।

सिरावना\*†-क्रि० स० दे० "सिराना"।

सिरिस्ता-सज्ञा पु० [फा०] विभाग।

सिरिस्तेबार-सज्ञा पु० [फा०] अदालत का वह  
कर्मचारी, जो मुकदमे के कागज-पत्र अपने  
अधिकार में रखता है।

सिरिस-सज्ञा पु० दे० "शिरोप"। शीशम की  
तरह लम्बा एक ऊँचा पेड़, जिससे फूल होते हैं।

सिरी\*†-सज्ञा स्त्री० १ दे० "श्री"। लक्ष्मी।  
२ शोभा। कांति। ३. रौली। रोचना।

४ माथे पर का एक गहना। ५ खाने के  
लिए मारे हुए पशु या पक्षी का सिर।

सिरोपाव-सज्ञा पु० सिर से पैर तक का  
पहनावा, जो राज-दरबार से सम्मान के रूप  
में दिया जाता है। खिलवत।

सिरोमनि-सज्ञा पु० दे० "शिरोमणि"।

सिरोरुह-सज्ञा पु० दे० "शिरोरुह"।

सिरोही-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की कात्ती  
चिड़िया।

सजा पु० १. राजपूताने में एक स्थान, जहाँ की तलवार बहुत बढिया होती है। २ तलवार।

सिफ-फि० वि० [अ०] केवल। मात्र। वि० १ अकेला। एकमान। २ शुद्ध। विना मिलावट के।

सिल-सजा स्त्री० १ पत्थर। २ चट्टान। शिला। पत्थर का चौकोर पटिया, जिस पर बट्ट स मसावा आदि पोसत ह। ३ पत्थर का लम्बा और बड़ा टुकड़ा।

सजा पु० दे० १ 'सित'। "उछ"। २ [अ०] क्षययोग। (अग्र०-वाइसित)

सिलको-सजा पु० वल।

सिलखडी-सजा स्त्री० १ एक प्रकार का चिकना मुलायम पत्थर। २ खरिया मिट्टी। दुडी।

सिलगना-फि० अ० दे० 'मुलगना'।

सिलपट-वि० १ बराबर। चौरस। २ साफ़ ३ पिसा हुआ। चौपट। सत्तानाश।

सिलपोहनी-सजा स्त्री० मातृपूजा की एक रीति विशेष, जो बियाह तथा यज्ञोपवीत आदि संस्कार के अवसर पर होता है।

सिलयट-सजा स्त्री० सिकुड़न। बल। सिकन।

सिलवाना-फि० स० दे० 'सिलाना'।

सिलसिला-सजा पु० [अ०] १ क्रम। २ तरतीब। ३ परम्परा। ४ व्यवस्था। ५ श्रणी। ६ पक्ति। ६ श्रृंखला।

वि० १ गीला। २ चिकना।

सिलसिलेवार-वि० सिलसिले से। क्रम के अनुसार। तरतीबवार।

सिलह-सजा पु० दे० 'सिलाह'।

सिलहजाना-सजा पु [अ०] हथियार रखने का स्थान। सस्त्रागार।

सिलहारा-सजा पु० शत में गिरा हुआ अनाज बीजनवाता।

सिलहिला-वि० [स्त्री सिलहिली] १ चिकना। कीचड़ जमने से चिकना। २ ऐसा चिकना जिस पर पैर फिसले।

सिला-सजा स्त्री० दे० 'शिला'।

सिलाई-सजा स्त्री० १ सीने का नाम या मजदूरी। २ सीने का ढग। ३ ढाँका।

सिलाजोत-सजा पु० दे० 'सिलाजोत'।

सिलाना-फि० स० सीने का काम दूसरे से कराना। सिलवाना।

सिलारस-सजा पु० १ सिल्हक नाम का पेड़, जववा उसका रस या गाद। २ दनायकी का तल।

सिलावट-सजा पु० पत्थर काटने और गड़न-वाला। संगतरोश।

सिलाह-सजा पु० [अ०] १ हथियार। २ कवच। जिरह बकतर।

सिलाहयद-वि० हथियारयद। सज्जन। सस्त्र। स सज्जित।

सिलाहर-सजा पु० दे० 'सिलहार'।

सिलाही-सजा पु० [अ०] सैनिक।

सिलिका-सजा पु० दे० 'सिल्क'।

सिलीमुख-सजा पु० दे० 'सिलीमुख'।

सिलोट, सिलोटा-सजा पु० [स्त्री सिलोटी] १ सिल। २ सिल और बट्टा।

सिल्क-सजा पु० [अग्र०] १ रेशम। २ रेशमी कपड़ा।

सिल्ला-सजा पु० अनाज की बालियाँ या दाने, जो फसल कट जान पर खेत में पड़ रहे जाते हैं।

सिल्ली-सजा स्त्री० १ हथियार की धार तेज करन का पत्थर। सान। २, पत्थर का छोटी पत्तली पटिया। ३ लकड़ी का बड़ा कुदा। ४ कट पड़ के तन का बड़ा टुकड़ा।

सिलहक-सजा पु० दे० 'सिलारस'।

सिवई-सजा स्त्री० गुध हुए आठ के सूत की तरह के पतले भूख लच्छ जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं। सिबई।

सिवा-अव्य० [अ०] अतिरिक्त। अलावा। वि० अधिक। ज्यादा।

सिबाइ-अव्य० दे० 'सिबाय', 'सिवा'।

सिबाई-सजा स्त्री० एक प्रकार की मिट्टी।

सिबान-सजा पु० सीमा। हद्द।

सिबाम-अव्य० दे० 'सिवा'। अलावा। अतिरिक्त। छोड़कर। बाद देकर।

वि० १ अधिक। ज्यादा। २ ऊपरी।

सिबार-सजा स्त्री० पानी में होनवाली एक तरह की लम्बी पास।

सिवाल-सज्ञा स्त्री० दे० "सिवार"।  
 सिवाला-सज्ञा पु० दे० "सिवालय"।  
 सिसकना-क्रि० अ० [अनु०] १. सिसकी भरते हुए या रुक रुककर साँस छोड़ते हुए रोना। खुलकर नहीं, बल्कि धीरे-धीरे रोना। २ तरसना।  
 सिसकारना-क्रि० अ० १. मुँह से सीटी की तरह आवाज निकालना। सुसकारना। २. अत्यंत पीडा या आनंद के कारण मुँह में साँस खींचना। सीत्कार करना।  
 सिसकारी-सज्ञा स्त्री० १. सिसकारने का शब्द। २ सीटी की तरह की आवाज। ३ पीडा या आनंद के कारण मुँह से निकला हुआ 'सी-सी' शब्द। सीत्कार।  
 सिसकी-सज्ञा स्त्री० १. खुलकर नहीं, बल्कि धीरे-धीरे रोने का शब्द। २ सिसकारी। सीत्कार।  
 सिसोदिया-सज्ञा पु० गहलीत राजपूतो की एक शाखा।  
 सिहड़ा-सज्ञा पु० वह स्थान, जहाँ तीन सोमाएँ मिलती हो।  
 सिहरन-सज्ञा स्त्री० १ सिहरने की क्रिया या भाव। कंपकंपी। २ रोमांच। रोंगटे खड़े होना।  
 सिहरना†-क्रि० अ० [सज्ञा स्त्री० सिहरन] रोमांच होना। रोंगटे खड़े होना। ठंड से काँपना। डरना या डर से काँपना। किसी दर्दनाक घटना को देखकर रोमांचित होना।  
 सिहरा-सज्ञा पु० [अ०] दे० "सेहरा"।  
 सिहराना†-क्रि० स० सर्दी से काँपना। डराना।  
 सिहरावन†-सज्ञा पु० दे० "सिहरन"।  
 सिहरी-सज्ञा स्त्री० १ सिहरन। ठंड या डर से काँपना। कंपकंपी। २ जुड़ी। दुखार। ३ रोंगटे खड़े होना। लोमहर्ष।  
 सिहाना†-क्रि० अ० १ ईर्ष्या करना। डाह करना। २. ललचना। लुपाना। ३. मुग्ध होना। मोहित होना।  
 क्रि० स० १. ईर्ष्या की दृष्टि से देखना। २. ललचना। ललचाना।  
 सिहारना\*†-क्रि० स० १. दूँटना। खोजना। २. जुटाना। इकट्ठा करना।

सिहोड़, सिहोर†-सज्ञा पु० दे० "सेहूँड"।  
 सौंक-सज्ञा स्त्री० १. मूँज आदि की पतली तीली। २. महीन डठल। ३. तिन्का। ४. नाक का एक गहना। कील।  
 सौंका-सज्ञा पु० १. छोका। सिकहर। २. पेड़-पौधों की डाल में निकली हुई छोटी डाल। उपशाखा। डाँडी।  
 सौंकिया-वि० सौंक की तरह पतला।  
 सज्ञा पु० एक प्रकार का रंगीन धारीदार कपड़ा।  
 सींग-सज्ञा पु० खुरवाले पशुओं के सिर के दोनों ओर निकले हुए कड़े नुकीले अंग।  
 मुहा०-(किसी के सिर पर) सींग होना= कोई विशेषता होना। (व्यंग्य) सींग कटा-कर बछड़ों में मिलना=बड़े होकर भी बच्चों में मिलना। बड़े होकर भी बच्चों की तरह का व्यवहार करना। कहीं सींग समाना= कहीं ठिकाना मिलना।  
 सींगदाना-सज्ञा पु० दे० "मूँगफली"।  
 सींगरी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का लोविया या फली। २. मोगरे की फली।  
 सींगी-सज्ञा स्त्री० १. सींग का बना एक तरह का बीजा, जो फूँककर बजाया जाता है। २. वह सींग की नली, जिससे जराई शरीर का खराब खून या मवाद चूसकर निकालते हैं। ३. एक प्रकार की मछली।  
 सींचना-क्रि० स० १. पानी छिड़ककर तर करना। २. खेतों तथा बगीचों आदि में पानी देना। सिंचाई करना।  
 सीवै\*—सज्ञा पु० दे० "सीमा"।  
 सी-वि० समान। सदृश। की तरह।  
 सज्ञा स्त्री० सिसकारी। सीत्कार।  
 मुहा०—अपनी सी=१. भरसक। जहाँ तक अपने से हो सके, वहाँ तक। २. अपने मन मुताबिक।  
 सीउ\*—सज्ञा पु० शीत। ठंड।  
 सीकर-सज्ञा पु० १. पानी की बूँद। जल-कण। २. पसीना।  
 \*†-सज्ञा स्त्री० सिकड़। जजीर।  
 सीकल-सज्ञा स्त्री० हथियारों का मोरचा

सोफस\*—सज्ञा पु० ऊपर।  
 सोकुर—सज्ञा पु० गेहूँ, जो आदि की बाल के  
 ऊपर के फड़े सूत।  
 सोख—सज्ञा स्त्री० १. सिलाई जानेवाली  
 बात। २. सलाह। परामर्श। ३. उपदेश।  
 सोख—सज्ञा स्त्री० [फा०] लोहे की लची  
 पतली छड़। तीखी। शलाका।  
 सोखचा—सज्ञा पु० [फा०] लोहे की पतली  
 छड़। लोहे की तीक।  
 सोखना—क्रि० स० १ काम करने का ढग  
 आदि जानना। २ ज्ञान प्राप्त करना।  
 किसी से कोई विषय समझना या कोई काम  
 करने का ढग जानना।  
 सोसा—सज्ञा पु० [अ०] १ साँचा। २. ढाँचा।  
 ३ व्यापार। पेसा। ४ विभाग। महकमा।  
 सोसना—क्रि० अ० १. आँच पर पकना।  
 चुरना। २. आँच या गरमी से मुलायम  
 पड़ना या गलना। ३ दुख सहना। कष्ट  
 झेलना। ४ मिलने के योग्य होना। ५ सूखे  
 हुए चमड़े का मसाले आदि में भीगकर  
 मुलायम होना।  
 सोट—सज्ञा स्त्री० [अपे०] १. बैठने का स्थान।  
 आसन। २ पद। ३ विधान सभा या  
 सदन की सदस्यता का स्थान।  
 सोटना—क्रि० स० [अनु०] बड़-बड़कर दाँतें  
 करता। डींग हाँकना। शेसी बघारना।  
 सोटी—सज्ञा स्त्री० १. ओठों को गोल सिकोड़-  
 कर नीचे की ओर जोर के साथ हवा निकाल-  
 ने से उत्पन्न महीन शब्द। २ एक तरह की  
 छोटी चीज, जिसमें से ऐसी महीन पर तेज  
 आवाज निकलती है, जिसका प्रयोग खेल  
 आदि में या पुलिस-द्वारा किया जाता है।  
 ३ वह बाजा या खिलोभा, जिसे फूँकने से  
 उक्त प्रकार का शब्द निकले। ३ इसी  
 प्रकार का शब्द, जो किसी बाजे या यंत्र  
 आदि से होता है।  
 सोठना—सज्ञा पु० विवाह आदि शुभ अवसर  
 पर गाए जाने वाले परिहासपूर्ण गीत।  
 सोठनी—सज्ञा स्त्री० दे० "सोठना"।  
 सोठा—वि० नीरस। फीका।  
 सोठो—सज्ञा स्त्री० १. किसी फल-फूल, पत्ते

आदि का रस निकल जाने पर बचा हुआ  
 बेकार अंश। २. सारहीन पदार्थ। ३. फीकी  
 चीज।

सोड—सज्ञा स्त्री० नमी। तरी। घुप न मिलने  
 के कारण या भीगी होने से जमीन के अन्दर  
 की ठंडक।

सोडन—सज्ञा स्त्री० दे० "सोड"।

सोडो—सज्ञा स्त्री० १. ऊँचे स्थान पर बहने के  
 लिए ऐसा साधन या मार्ग, जिसमें एक के  
 बाद एक पैर रखने के स्थान बने हों।  
 जीना। सोपान। निसेनी। २. ऐसे मार्ग या  
 साधन में पैर रखने का प्रत्येक स्थान या  
 डंडा आदि। ३ क्रम से आगे बढ़ने की  
 परम्परा।

सोतलपगटी—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
 बड़िया बटाई, जो बगाल में बनती है।

सोता—सज्ञा स्त्री० १. मिथिला के राजा  
 जनक की बन्धा, जो श्रीरामचन्द्र की पत्नी  
 थी। जानकी। २. जमीन जोतते समय हल  
 की फाँस के धँसने से जमीन में पड़ जानेवाली  
 रेखा। कुँड। ३ एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक  
 चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और  
 रगण होते हैं।

सोताध्यक्ष—सज्ञा पु० राजा की निज की भूमि  
 में खेती-बारी आदि का प्रबंध करनेवाला  
 राजकर्मचारी।

सोतापति—सज्ञा पु० श्रीरामचन्द्र।

सोताकल—सज्ञा पु० १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

सोत्कार—सज्ञा पु० पीडा या आनन्द के समय  
 मुँह से निकलनेवाला 'सी-सी' शब्द। सिस-  
 कारी।

सोच—सज्ञा पु० पके हुए अन्न का दाना।  
 भात का दाना।

सोवना—वि० अ० दुःख पाना।

सोघ—सज्ञा स्त्री० १ ठीक सामने की दिशा।

२ वह लवाई, जो बिना इधर-उधर  
 मूड़े एक-तार चली गई हो। ३ लक्ष्य।  
 निशाना।

सोषा—वि० [स्त्री० सीपी] १ जो टेढ़ा न हो।  
 जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। २ सरल  
 स्वभाव का। मोला-माला। निष्पट। ३.

शान्त और सुशील। ४. आसान। सहज।  
 ५. दहिना।  
 कि० वि० ठीक सामने की ओर। सम्मुख।  
 मज्ञा पु० भोजन बनाने की सामग्री, आटा-  
 दाल, चावल अदि।  
 यो०—सोधा-सादा=भोला-भाला।  
 मुहा०—(किसी को) सोधा करना=दंड  
 देकर ठीक करना।  
 शौचापन—सज्ञा पु० १. सोधा होने का भाव।  
 सिधार्थ। २. सरलता। निष्कपटता।  
 सोपे—कि० वि० १. सामने की ओर। सम्मुख।  
 २. बिना कहीं मुड़े या रुके हुए। बिना टेंडा  
 हुए। ३. नरमी से। शिष्टता के साथ।  
 सोन—सज्ञा पु० [अग्ने०] १. दृश्य। नजार।  
 २. रम्यत्व का दृश्य।  
 सोनरी—सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] प्राकृतिक दृश्य।  
 सोना—सज्ञा पु० [फा०] छाती। वक्ष स्थल।  
 कि० स० १. कपडे आदि की सूई-तागे से  
 जोड़ना। २. टाँका मारना।  
 सोना-बंद—सज्ञा पु० [फा०] अँगिया। चोली।  
 सोप—सज्ञा पु० १. शब, घोघे आदि की जाति  
 का एक जलजंतु। सीपी। सितुही। २. समुद्री  
 सीप (जलजंतु) का सफेद, कड़ा, चमकीला  
 आवरण, जिसके बटन आदि बनते हैं।  
 ताल के सीप का आवरण, जो काम में लाया  
 जाता है।  
 सोपर\*—सज्ञा पु० [फा०] दे० “सिपर”  
 डाल।  
 सोपसुत—सज्ञा पु० मोती।  
 सोपिज—सज्ञा पु० मोती।  
 सोपी—सज्ञा स्त्री० दे० “सोप”। सीप नामक  
 जल-जंतु का आवरण या सपुट।  
 सीबी—सज्ञा स्त्री० सी-सी शब्द। सितकारी।  
 सीत्कार।  
 सीमत—सज्ञा पु० १-स्त्रियों के सिर की  
 मांग। २. हुड्डियों का सधि-स्थान। सीमा;  
 हृद। दे० “सीमतोन्नयन” (गर्भवती स्त्री  
 का एक संस्कार)।  
 सीमंतिनी—सज्ञा स्त्री० स्त्री। औरत।  
 सीमन्ती—सज्ञा स्त्री० दे० “सीमतिनी”।  
 सीमंतोन्नयन—सज्ञा पु० हिन्दुओं में गर्भवती

स्त्री का एक संस्कार, जो प्रथम गर्भ के  
 चोदे, छठें या आठवें महीने में होता है।  
 सीम—सज्ञा पु० सीमा। हृद।  
 मुहा०—सीम करना या काटना=दूसरे के  
 क्षेत्र में अधिकार जताना। जबरदस्ती  
 करना। दवाना।  
 सीमांत—सज्ञा पु० सरहद। वह स्थान, जहाँ  
 सीमा का अंत होता हो।  
 सीमातिक—वि० सीमान्त या सरहद से सम्बन्ध  
 रखनेवाला। सीमान्त-सम्बन्धी।  
 सीमा—सज्ञा स्त्री० १. किसी क्षेत्र, प्रदेश  
 या वस्तु के विस्तार का अंतिम स्थान।  
 हृद। सरहद। २. वह अंतिम स्थान, जहाँ  
 तक कोई काम या बात हो सकती हो या  
 होना उचित हो। ३. मर्यादा। ४. मांग।  
 मुहा०—सीमा से बाहर जाना=उचित से  
 अधिक बढ़ जाना। अपने अधिकार से  
 बाहर जाना या काम करना।  
 सीमाबद्ध—सज्ञा पु० सीमा के अन्दर घिरा  
 हुआ। हृद के भीतर किया हुआ। परिमित।  
 सीमा-शुल्क—सज्ञा पु० चुगी। देश की सीमा  
 पर विदेश से आनेवाली और देश से बाहर  
 जानेवाली चीजों पर लगानेवाली चुगी।  
 (अग्ने०—कस्टम्स ड्यूटी)  
 सीमोल्लंघन—सज्ञा पु० १ सीमा पार करना।  
 सीमा का उल्लंघन करना। २ एक देश-द्वारा  
 किसी दूसरे देश के क्षेत्र में अनधिकार  
 प्रवेश। ३ मर्यादा या नियम के विरुद्ध  
 कार्य करना।  
 सीय\*—सज्ञा स्त्री० सीता। जानकी।  
 सीयन\*—सज्ञा स्त्री० दे० “सीवन”।  
 सीर—सज्ञा पु० १ हल। २. हल जोतनेवाले  
 बेल। ३. सूर्य।  
 सज्ञा स्त्री० १ वह जमीन, जिसे उसका  
 मालिक या जमींदार स्वयं जोतता आ रहा  
 हो। २ वह जमीन, जिसकी उपज कई  
 हिस्सेदारों में बँटती हो। ३. साक्षात् शिर-  
 कत।  
 \*वि० उडा। शीतल।  
 सीरक\*—सज्ञा पु० उडा करनेवाला।  
 सीरख\*—सज्ञा पु० दे० “शीर्ष”।

वि० वि० मुख स। मुखपूर्वक।  
 मुहा०—मुख भी नाँद साया=निश्चिन्त  
 होकर रहना। बेफिक्र होना।  
 मुखकद-वि० मुख देनेवाला। मुखद।  
 मुखकदन-वि० दे० "मुखकद"।  
 मुखकर-वि० १ मुख देनेवाला। मुखद।  
 आनन्ददायक। २ सहज में होनेवाला।  
 आसान।  
 मुखकर्ण-वि० मुख देनेवाला। मुखद।  
 मुखकारक-वि० मुख देनेवाला। मुखद।  
 मुखकारी-वि० दे० "मुखकारक"।  
 मुखजननी-वि० मुख देनेवाली।  
 मुखजीवी-वि० मेहनत न करके आराम से  
 जीवन व्यतीत करनेवाला। जो झसटो से  
 दूर रहकर धीरे बिना मेहनत किए मुख  
 में जीवन बिताना चाहता हो।  
 मुखज्ञ-वि० मुख का ज्ञान रखनेवाला।  
 मुखडरन-वि० दे० "मुखद"।  
 मुखतला-सज्ञा पु० जूत का तल्ला।  
 मुखद-वि० [स्त्री० मुखदा] मुख या आनन्द  
 देनेवाला। मुखदायी।  
 मुखदानियाँ\*-वि० दे० "मुखदानी"।  
 मुखदा-वि० मुख देनेवाली। आनन्द देनेवाली।  
 आराम पहुँचानेवाली।  
 सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छद।  
 मुखदाइन\*-वि० दे० "मुखदायिनी"।  
 मुखदाता-वि० मुख देनेवाला। मुखद।  
 मुखदान-वि० दे० "मुखदाता"।  
 मुखदानी-वि० मुख देनेवाली। आनन्द देने-  
 वाली। मुखदा।  
 मुखदायक-वि० मुख देनेवाला। मुखद।  
 मुखदायी-वि० [स्त्री० मुखदायिनी] मुख  
 देनेवाला।  
 मुखदास-सज्ञा पु० एक प्रकार का अगहनी  
 बड़िया धान।  
 मुखदत्त-वि० दे० "मुखदायी"।  
 मुखदनी-वि० मुखदायिनी। मुख देनेवाली।  
 मुखधाम-सज्ञा पु० १ मुख का घर या  
 स्थान। २ स्वर्ग। बेंगुठ।  
 मुखना\*-क्रि० अ० दे० "मुखना"।  
 मुखपाल-सज्ञा पु० एक प्रकार की पालकी।

मुखपूर्वक-वि० मुख से। आनन्द से।  
 आराम के साथ।  
 मुखप्रद-वि० मुख देनेवाला। मुखद।  
 मुखमन\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "मुपम्ना"।  
 मुखमा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "मुपमा"।  
 मुखराशि-वि० मुख का मदार। जो सर्वथा  
 मुखमय हो।  
 मुखरास, मुखरासी\*-वि० दे० "मुखराशि"।  
 मुखलाना-क्रि० स० दे० "मुखाना"।  
 मुखपत-वि० १ मुत्तो। प्रसन्न। मुख देने-  
 वाला। २ सुखदायक।  
 मुखवन† सज्ञा पु० १ किसी चीज में मुखने  
 के कारण होनेवाली बमो। २ वह बालू,  
 जिससे लिखे हुए अक्षरा आदि पर की  
 स्माही मुखाते हैं।  
 मुखवार-वि० [स्त्री० मुखवारी] मुत्तो।  
 प्रसन्न। लक्ष।  
 मुखसाध्य-वि० आसानी से हो सकनेवाला।  
 मुगम। सहज।  
 मुखसार-सज्ञा पु० मुख का सार। मोक्ष।  
 मुखात-सज्ञा पु० १ वह जिसका भत मुखमय  
 हो। २ वह नाटक तथा नाट्य आदि जिसके  
 अंत में कोई मुखपूर्ण घटना हो। (जैसे  
 सयोग)  
 मुखाना-क्रि० स० १ गीली या नम चीज का  
 धूप आदि में रखना, जिससे उसकी  
 नमी दूर हो। २ नमी या गीलापन दूर  
 करना। ३ कमजोर करना।  
 क्रि० अ० दे० "मुखना"।  
 मुखारा, मुखारी\*†-वि० १ मुत्तो। प्रसन्न।  
 २ मुखद।  
 मुखाली-वि० [स्त्री० मुखाली] १ मुख-  
 दायक। आनन्ददायक। २ सहज। आसान।  
 मुखावह-वि० मुख देनेवाला।  
 मुखासन-सज्ञा पु० १ मुख देनेवाला धासन  
 या बैठने का स्थान। २ पालकी। डोली।  
 मुखित-वि० मुखा हुआ। मुत्तो। प्रसन्न।  
 मुखिता-सज्ञा स्त्री० मुख। आनन्द।  
 मुखिया-वि० दे० "मुत्तो"।  
 मुखिर-सज्ञा पु० सप का बिल।  
 मुत्तो-वि० १ जो मुख भोग रहा हो। जिसे

सब प्रकार का सुख प्राप्त हो। २  
आनन्दित। प्रसन्न। खुश।  
मुत्तेन-सज्ञा पु० दे० "मुत्तेन"।  
मुत्तेलक-सज्ञा पु० एक वृक्ष, जिसके प्रत्येक  
चरण में न, ज, भ, ज, र आता है। प्रभद्रक।  
प्रभद्रिका।  
मुत्तेना\*†-वि० सुख देनेवाला।  
मुत्तेयति-सज्ञा स्त्री० कीर्ति। यश। बड़ाई।  
प्रसिद्धि।  
मुत्त-सज्ञा स्त्री० १ सुख। अच्छी महक।  
२ वह चीज, जिससे अच्छी महक निकलती  
हो। ३ चदन।  
वि० सुगन्धित। सुशबूदार।  
मुत्तवाला-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
सुगन्धित वनीषध।  
मुत्ति-सज्ञा स्त्री० १ सुगन्ध। अच्छी महक।  
सुशबू। २ परमात्मा।  
मुत्तित-वि० जिसमें अच्छी महक हो।  
सुशबूदार। सुगन्धयुक्त।  
मुत्त-सज्ञा पु० १ बुद्धदेव। २ बौद्ध।  
मुत्ति-सज्ञा स्त्री० १ मरने के बाद होनेवाली  
उत्तम गति। २ मोक्ष।  
मुत्ताना†-सज्ञा पु० मुत्तान। तोता।  
मुत्त-वि० आसान। सरल। सहज। जिसमें  
जाना या जहाँ पहुँचना कठिन न हो।  
मुत्तता-सज्ञा स्त्री० मुत्तम होने का भाव।  
सरलता। आसानी।  
मुत्तम्य-वि० १ जिसमें आसानी से प्रवेश  
हो सके। आसानी से जाने योग्य। २  
सहज। आसान।  
मुत्तर\*†-वि० १ दे० "मुत्त"। २ दे०  
"मुत्तल"। ३ शिरस्य।  
मुत्तल-वि० अच्छे गलेवाला। दे० "मुत्तल"।  
सज्ञा पु० सुशोब। बालि का भाई।  
मुत्ताना\*†-क्रि० अ० १ सदेह करना। शक  
करना। २ दुखी होना। ३ बिगड़ना।  
नाराज होना।  
मुत्तैतिका-सज्ञा स्त्री० एक छद, जिसके  
प्रत्येक चरण में २५ मात्राएँ और आदि में  
लपु और अत म गुरुलपु होते हैं।  
मुत्तरा-सज्ञा पु० वह, जिसमें अच्छा गुह

से मद्य लिया हो। जिसे अच्छा-गुह मिला  
हो।  
मुत्ताना†-सज्ञा स्त्री० चोली। स्त्रिया का एक  
पहनावा।  
मुत्ताना†-सज्ञा पु० तोता।  
मुत्तैव-सज्ञा पु० १ बालि का भाई, जो  
बानरो का राजा और श्रीरामचन्द्र का मित्र  
था। २ इद्र। ३ शस्य।  
वि० जिसकी गर्दन सुन्दर हो।  
मुत्त-वि० १ सुन्दर। २ सुडील। ३ सहज  
में बन सकनवाला। आसानी से हो  
सकनेवाला।  
मुत्तित-वि० अच्छी तरह से बना या गढ़ा  
हुआ।  
मुत्त-वि० १ सुन्दर। सुडील। २ निपुण।  
कुशल (विशेषकर हाथ के काम करने में)।  
मुत्तई-सज्ञा स्त्री० १ सुन्दरता। सुडीलपन।  
२ कौशल। निपुणता। चतुरता।  
मुत्तता-सज्ञा स्त्री० मुत्त होने का भाव।  
दे० "मुत्तपन"।  
मुत्तपन-सज्ञा पु० १ सुन्दरता। सुडीलपन।  
२ निपुणता। कौशल।  
मुत्तई-सज्ञा स्त्री० दे० "मुत्तई"।  
मुत्तता-सज्ञा पु० दे० "मुत्तपन"।  
मुत्त-वि० दे० "मुत्त"।  
मुत्तरी-सज्ञा स्त्री० शुभ घड़ी या समय।  
अच्छा समय। अच्छी साइट।  
वि० [मुत्तरी का स्त्री०] सुन्दर। सुडील।  
मुत्त\*†-वि० दे० "मुत्ति"।  
मुत्तना-क्रि० स० सचय करना। इकट्ठा  
करना। बहुत बचाकर या हिफाजत से  
रखना।  
क्रि० अ० इकट्ठा होना। जमा होना।  
मुत्तरित, मुत्तरित-सज्ञा पु० [स्त्री० मुत्तरिता]  
अच्छ चाल-चलनवाला। सदाचारी।  
मुत्तरिता-सज्ञा स्त्री० अच्छे चाल-चलनवाली  
स्त्री। पतिव्रता।  
मुत्ता-वि० दे० "मुत्ति"।  
सज्ञा स्त्री० ज्ञान। चेतना।  
मुत्ताना-क्रि० स० १ किसी को सोचने या  
समझने में प्रवृत्त करना। २ याद दिलाना।

सीरध्वज-सज्ञा पु० राजा जनक। इनको ध्वजा पर सीर (हल) का चिह्न था। इसलिए इन्हें सीरध्वज कहते हैं।

सीरनी-सज्ञा स्त्री० [फा०] मिठाई।

सीरा-सज्ञा पु० पकाकर गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस। चाशनी।

\*१-वि० [स्त्री० सीरी] १. ठंडा। २. शांत। मौन। चुपचाप।

सील-सज्ञा स्त्री० सीड। नमी। तरी।

\*३-सज्ञा पु० दे० "शील"।

सीला-सज्ञा पु० १ अनाज के वे दाने, जो फसल कट जाने पर वहीं पड़े रह जाते हैं। सिल्लम। २ संत में गिरे दानों से निर्वाह करने की मुनियों की वृत्ति या जीविका।

वि० [स्त्री० सीली] गीला। आर्द्र।

सीय\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सीमा"।

सीवन-सज्ञा पु० स्त्री० १ सीने का काम। सिलाई। सिलाई के ढाँके। २ सीने में पड़ी हुई लकीर। ३. बरार।

सीवना-सज्ञा पु० दे० "सिवाना"।

कि० सं० दे० "सीना"।

सीस-सज्ञा पु० सिर। माथा।

सीसक-सज्ञा पु० सीसा (एक धातु)।

सीसताज-सज्ञा पु० कुलाह। शिकारा जानवरी के सिर पर रखने की एक प्रकार की टोपी, जो शिकार के समय हटा ली जाती है।

सीसवान-सज्ञा पु० दे० "सिरवान"।

सीसफूल-सज्ञा पु० सिर पर पहनने का एक गहना।

सीसा-सज्ञा पु० नीलापन लिये काले रंग की एक मूल धातु।

\*३-सज्ञा पु० दे० "सीसा"।

सीसी-सज्ञा स्त्री० बहुत ठंड, पीडा या खपों के समय मुँह से निकला हुआ शब्द। सिसकार।

सीसीबिया-सज्ञा पु० दे० "सिसादिया"।

सीह-सज्ञा स्त्री० सहक। गध।

\*सज्ञा पु० दे० "सिंह"।

सीहगोस-सज्ञा पु० एक प्रकार का जानवर मान बाल होते हैं।

\*१-प्रत्य० दे० "सी"।

सुंधनी-सज्ञा स्त्री० तबाबू के पत्ते की सूख वारीक वृक्ष की जो सूंधी जाती है। हुलास।

सुंधाना-कि० सं० सुंधने की प्रिया करना।

सुड-भुसुड-सज्ञा पु० हाथी, जिसका अस्त्र सूड है।

सुडा-सज्ञा स्त्री० सुंड।

सुडाल-सज्ञा पु० सुंघ।

सुदर-वि० [स्त्री० सुदरी] १. खूबसूरत।

जो देखने में अच्छा लगे। रूपवान्। मनोहर।

२ अच्छा। बढ़िया।

सुदरता-सज्ञा स्त्री० सुदर होने का भाव।

खूबसूरती। सौंदर्य।

सुदरताई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सुदरता"।

सुदराई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सुदरता"।

सुदरापा\*-सज्ञा स्त्री० दे० सुदरता।

सुदरी-वि० अच्छी लगनेवाली। रूपवती।

सज्ञा स्त्री० १ सुदर स्त्री। खूबसूरत औरत।

२ किसी भी स्त्री के लिए सम्बोधन। ३

त्रिपुर-सुदरी देवी। ४ एक पाणिनी का नाम। ५ सर्वथा-नामक छंद का एक

भेद, जिसमें आठ सगण और एक गुरु होते

हैं। ६ बारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त।

द्रुतविलपित। ७ तेईस अक्षरों की एक

वर्णवृत्ति।

सुपावट-सज्ञा स्त्री० सोपाफन।

सुबा-सज्ञा पु० १ इस्पज। २. लोह का एक

ओजार। ३ पुचारा। तीप या बंदूक का

गरम नली की ठंडा करने के लिए गोला

कपडा।

सु-उप० एक उपसर्ग, जो सज्ञा के साथ लगकर

ध्रुव, सुदर, सज्जिया आदि का अर्थ देता है।

जैसे-सुनाम, सुगोल आदि।

वि० १ सुदर। अच्छा २ उत्तम। ध्रुव।

३ सुभ। मला।

सर्व० सो। वह।

\*अव्य० तृतीया, पञ्चमी और षष्ठी विभक्ति

का चिह्न।

सुभठा-सज्ञा पु० मुग्धा। ताता।

सुभन\*-सज्ञा पु० पुष। बेटा।

सुभनजद-सज्ञा पु० दे० "सुभनजद"।

शुभना\*—कि० अ० उत्पन्न होना। उगना।

\*नञा पु० गुणा। तोता।

गुभर-सज्ञा पु० दे० "सूअर"।

गुभा-सज्ञा पु० दे० "सूअर"।

गुभाउ\*—वि० बड़ी उम्रवाला। दीर्घायु।

गुभान\*—सज्ञा पु० दे० "स्वान"।

गुभाना†—कि० स० उत्पन्न कराना। पैदा कराना।

गुभाभी\*—सज्ञा पु० दे० "स्वामी"।

गुभार†—सज्ञा पु० रसोदया।

गुभारय-वि० मोठे स्वर से बोलने या बजाने-वाला।

गुभासिनो\*†—सज्ञा स्त्री० पास रहनेवाली स्त्री। सहचरी। मुहागिन। सवैया।

गुहंठ-वि० १ सुन्दर गर्दनवाला। २ मधुर स्वरवाला। सुरीला।

सज्ञा पु० सुग्रीव। (वालिका का भाई)।

गुनारा\*—वि० जिसकी नाक झुका (मुग्गे) की नाक के समान सुन्दर हो। सुन्दर नाक-वाला।

गुकर-वि० [सज्ञा स्त्री० भाव० सुकरना, नीकर] सहज। आसान।

गुकरित\*—वि० दे० "सुकृति"।

गुकम-सज्ञा पु० [वि० सुकम्भी] अच्छा काम। (इमका उल्टा-कुकम)।

गुकम्भी-वि० १ अच्छा काम करनेवाला। २ सदाचारी। ३ धार्मिक।

गुकल-सज्ञा पु० दे० "शुक्ल"।

गुकवाना-वि० अ० अवध में आना।

गुकवि-सज्ञा पु० अच्छा कवि।

गुसाज-सज्ञा पु० अच्छा काम।

काना\*—कि० स० दे० "सुखाना"।

गुकाल-सज्ञा पु० १ अच्छा समय। २ यह समय, जिसमें अन्न आदि की उपज अच्छी हो। ३ सत्वी का समय। अकाल का उल्टा।

गुकावना\*—कि० स० दे० "सुखाना"।

गुकिज\*—सज्ञा पु० शुभ कर्म।

गुकिया\*—सज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"।

गुकीउ\*—सज्ञा स्त्री० दे० "स्वकीया"।

गुकुआर-वि० दे० "सुकुमार"।

सुकृति\*†—सज्ञा स्त्री० दे० "सुक्ति"।

सुकुमार-वि० [स्त्री० सुकुमारी] कोमल। नाजुक। कामल अंगवाला।

सज्ञा पु० १ कोमल अंगवाला बालक। २ काव्य में कोमल भाव (काव्य का एक गुण)।

३ काव्य का कोमल अक्षरों या शब्दों से युक्त होना।

सुकुमारता-सज्ञा स्त्री० सुकुमार होने का भाव। कोमलता। नजकत।

सुकुमारी-वि० कोमल अंगवाली। कोमलांगी।

सज्ञा स्त्री० १ कन्या। २ पुत्री। ३ कोमल अंगवाली स्त्री।

सुकुरना\*†—कि० अ० दे० "सिकुडना"।

सुकुल-सज्ञा पु० १ उत्तम कुल। २ उत्तम कुल में उत्पन्न। कुलीन। ३ दे० "शुक्ल"।

सुकुबौर, सुकुबार-वि० दे० "सुकुमार"।

सुकृत-वि० १ उत्तम और शुभ कार्य करने वाला। २ धार्मिक। भाग्यशाली।

सज्ञा पु० १ अच्छा काम। सत्कर्म। २ पुण्य। ३ दान।

सुकृतात्मा-वि० पुण्य करनेवाला। धर्मात्मा।

सुकृति-सज्ञा स्त्री० १. अच्छी कृति। सत्कर्म। २ पुण्य।

सुकृती-वि० १ अच्छे काम करनेवाला व्यक्ति। २ धार्मिक। ३ पुण्यवान्। ४ भाग्यवान्। ५ बुद्धिमान्।

सुकृत्य-सज्ञा पु० अच्छा कार्य। पुण्य। धर्म-कार्य।

सुकेवी-सज्ञा स्त्री० सुन्दर बालोंवाली स्त्री। सज्ञा पु० [स्त्री० सुकेशिनी] वह, जिसके बाल बहुत सुन्दर हों।

सुखंडी-वि० बहुत दुबला-पतला।

सज्ञा स्त्री० एक रोग, जिसमें शरीर सूख जाता है और जो प्रायः अच्छों को होता है।

सुखंद-वि० दे० "सुखद"।

सुख-सज्ञा पु० १ आनन्द। २ आराम। ३ शान्ति। ४ आरोग्य। ५ स्वस्थता। 'दुख' का उल्टा। ६ इन्द्रियो की तृप्ति। ७ मन के अनुकूल प्रिय अनुभव, जिसे प्राप्त करने की इच्छा बनो रहती है। ८ स्वर्ग।

३ सुझाना। ४ दिखलाना। ५ ध्यान  
आकृष्ट करना।

सुधार\*-वि० दे० "सुचार।"

सजा स्त्री० दे० "सुचाल।"

सुचार-वि० बहुत अधिक सुन्दर।

सुचाल-मज्ञा स्त्री० अच्छी चाल। अच्छा  
आचरण। सदाचार।

सुचाली-वि० अच्छे चाल-चलनवाला। सदा-  
चारी।

सुचाव-सज्ञा पु० १ सुनाने अर्थात् सुझाने  
की प्रिया या भाव। सुझाव। २ सूचना।

सुचित-वि० १ सुचित जिसका चित्त या मन  
स्थिर हो २ जो किसी कार्य से निवृत्त  
हो गया हो। निश्चित। वै फिक। ३ एकाग्र।  
शान्त। ४ सावधान।

सुचितई-सज्ञा स्त्री० १ निश्चितता। बे-  
फिकरी। २ एकाग्रता। ३ शान्ति। ४  
छटटी। पुरंत।

सुचितो-वि० दे० "सुचित।"

सुचित-वि० १ सुचित का तत्सम रूप।  
जिसका चित्त स्थिर हो। शान्त। एकाग्र। २  
जो (किसी काम से) निवृत्त हो गया हो।  
सुस्थित-वि० अच्छे चाल-चलनवाला। सदा-  
चारी।

सुधिर-वि० १ बहुत दिना तक चलनेवाला।  
२ स्थायी। ३ पुराना।

सुधे-वि० चौकन्ना। सावधान। हाशियार।

सुच्छइ\*-वि० दे० "स्वच्छद।"

सुच्छ-वि० दे० "स्वच्छ।"

सुच्छम\*-वि० दे० "सूधम।"

सुजन-सज्ञा पु० १ सज्जन। भला आदमी।  
गरीब। २ स्वजन। परिवार के लोग।

सुजनता-सज्ञा स्त्री० सज्जनता। सौजन्य।  
भलमनसाहूत।

सुजनी-मज्ञा स्त्री० [फा०] एक तरह की  
बड़ी चादर।

सुजन्मा-वि० १ अच्छे कुल में उत्पन्न।  
कुलीन। २, विवाहित स्त्री-पुरुष से उत्पन्न।

सुजस-मज्ञा पु० दे० "सुयस।"

सुजायर-वि० १ प्रकाशित। २ देखने में  
बहुत सुन्दर। सुयोनित।

सुजात-वि० [स्त्री० सुजाता] १ विवाहित  
स्त्री-पुरुष से उत्पन्न। २ अच्छे कुल में  
उत्पन्न। ३ सुन्दर।

सुजाति-सज्ञा स्त्री० उत्तम जाति।

वि० १ उत्तम जाति का। २ अच्छे कुल  
का।

सुज्ञान-वि० १ मज्ञान। बुद्धिमान्। चतुर।  
होशियार। २ निपुण। कुशल। अच्छी तरह  
जाननेवाला। ३ सज्जन।

सज्ञा पु० १ पति। प्रेमी। २ ईश्वर।

सुजानी-वि० जानी। पंडित। निपुण।

सुजोय\*-सज्ञा पु० दे० "सुयोय।" अच्छा  
अवसर। अच्छा समय।

सुजोधन\*-सज्ञा पु० दे० "सुयोधन।"

सुजोर-वि० १ मजबूत। बलवान्। २ दृढ़।

सुज-वि० १ अच्छी तरह जाननेवाला।

सुविज्ञ। २ विद्वान्।

सुझाना-क्रि० सं० १ दूसरे के ध्यान में

लाना। २ दिखाना। ३ बतलाना। ४

बोई गई बात बतलाना या राय देना।

सुझाव-सज्ञा पु० १ सुझाने की क्रिया या

भाव। २ सुझाई गई बात। प्रस्ताव। ३

सलाह। सूचना।

सुडकना-क्रि० अ० १ दे० "सुडकना।"

चुसकी लेना। २ दे० "सिडकना।" सँभटना।

क्रि० सं० चाबुक लगाना। पतली छडा से

पीटना।

सुड-वि० दे० "सुडि।"

सुडहरा-सज्ञा पु० अच्छा स्थान। बढ़िया

जगह।

सुडार\*-वि० सुडील। सुन्दर।

सुडि\*-वि० १ सुष्टु। सुन्दर। उत्तम। २

बहुत।

अव्य० पूरा पूरा। बिल्कुल।

सुडोता\*-वि० दे० "सुडि।"

सुडकना, सुडकना-क्रि० अ० मुरकना।

गुड-गुड पण्ड करते हुए पीना। नाव

या मूह से धीरे-धीरे गुडगुड पण्ड के साथ

पीचना।

सुडसुझाना-क्रि० सं० सुडसुड पण्ड उत्पन्न

करना।

सुडोल-वि० सुन्दर डोल या आकार का ।  
सुन्दर या अच्छी बनावट वाला ।

सुडग-सज्ञा पु० १. अच्छा ढग । अच्छी  
रोति । २. सुधड ।

सुदर-वि० १ जल्दी दया करनेवाला ।  
दयालू । जल्दी उलनेवाला ।

वि० सुधड । सुडोल । सुन्दर ।

सुदार, सुदाव\*†-वि० [स्त्री० सुदारी]  
सुडोल । सुन्दर ।

सुतन\*-वि० दे० "स्वतन" ।

सुत-सज्ञा पु० पुत्र । बेटा ।

वि० १. जो पैदा हुआ हो । २. उत्पन्न ।

सुतधार\*-सज्ञा पु० सूतधार ।

सुतनु-वि० सुन्दर शरीरवाला ।

सज्ञा स्त्री० सुन्दर शरीरवाली स्त्री ।

सुतरा-अव्य० १. अतः । इसलिए । २  
और भी । किंवहुना ।

सुतरी†-सज्ञा स्त्री० सुतही । दे० "सुतली" ।

सुतल-सज्ञा पु० सात पाताल लोकों में एक  
लोक ।

सुतली-सज्ञा स्त्री० सूत या सन को बनी हुई  
डोरी । पतली रस्सी ।

सुतवाना†-क्रि० स० दे० "सुलवाना" ।

सुतहर, सुतहारा†-सज्ञा पु० दे० "सुतार" ।

सुता-सज्ञा स्त्री० पुत्री । बेटो ।

सुतार-सज्ञा पु० १ बढई । २ शिल्पकार ।  
कारीगर । ३ दे० "सुमीता" ।

वि० अच्छा । उत्तम ।

सुतारी-सज्ञा स्त्री० १ मोचिया का सूता,  
जिससे वे जूता सीते हैं । २ सुतार या  
बढई का काम ।

सज्ञा पु० शिल्पकार । कारीगर ।

सुतिन\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सुतनु" ।

सुतिहारा†-सज्ञा पु० दे० "सुतार" ।

सुती-वि० जिसे सुत या बेटा हो । पुत्रवान् ।

सुतीक्ष्ण-सज्ञा पु० अगस्त्य मुनि के भाई जो,  
वनवास में श्रीरामचन्द्र से मिले थे ।

सुतीक्ष्ण\*-सज्ञा पु० दे० "सुतीक्ष्ण" ।

सुतुही†-सज्ञा स्त्री० दे० "सीपी" । वह सीपी,  
जिससे छोटे बच्चा को दूध पिलाते हैं ।

सुनामा-सज्ञा पु० इद्र ।

सुयना-सज्ञा पु० दे० "सूयन" । पायजामा ।

सुयनी-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार का कद ।  
पिडालू । रतालू । २. स्त्रियों के पहनने का  
एक प्रकार का डीला पायजामा । सूयन ।

सुयरा-वि० [स्त्री० सुयरी] साफ । स्वच्छ ।

सुयराई-सज्ञा स्त्री० दे० "सुयरापन" ।

सुयरापन-सज्ञा पु० सफाई । स्वच्छता ।

सुयरेशाही-सज्ञा पु० १. गुरु नानक के शिष्य  
सुयराशाह का चलाया संप्रदाय । २. इस  
संप्रदाय के अनुयायी ।

सुदती-वि० सुदर दाँतोवाली स्त्री ।

सुदर्शन-सज्ञा पु० १ विष्णु भगवान् के चक्र  
का नाम । २ शिव । ३ सुमेरु ।

वि० जो देखने में सुदर हो । मनोहर ।

सुदामा-सज्ञा पु० श्रीकृष्ण का सहपाठी  
और मित्र एवं दरिद्र ग्राहण, जिसे बाद में  
श्रीकृष्ण ने धनी बना दिया था ।

सुदावन-सज्ञा पु० दे० "सुवामा" ।

सुदास-सज्ञा पु० १ दिवोदास का पुत्र । २  
एक प्राचीन जनपद ।

सुदि-सज्ञा स्त्री० दे० "सुदी" ।

सुदिन-सज्ञा पु० शुभ दिन ।

सुदी-सज्ञा स्त्री० किसी महीने का उजाला  
पक्ष । सुकल पक्ष ।

सुदीपति\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सुदीप्ति" ।

सुदीप्ति-सज्ञा स्त्री० बहुत अधिक प्रकाश ।  
खूब उजाला ।

सुदूर-वि० बहुत दूर ।

सुदृढ़-वि० बहुत दृढ़ । खूब मजबूत ।

सुदेव-सज्ञा पु० अच्छे देवता ।

सुदेश-सज्ञा पु० उपयुक्त स्थान । सुन्दर या  
उत्तम देश ।

वि० सुदूर । खूबसूरत ।

सुदेह-वि० सुन्दर शरीरवाला । खूबसूरत ।

सुही-सज्ञा स्त्री० पेट का जमा हुआ मूखा  
मल ।

सुद्दी†-अव्य० सहित । समेत ।

सुधंग-सज्ञा पु० दे० "सुधग" ।

सुध-सज्ञा स्त्री० १. स्मृति । स्मरण । याद ।  
२ चेतना । होश । ३ खबर । पता । दे०  
"सुधा" ।

वि० दे० "सुद्ध"।

मुहा०—मुध दिलाना=याद दिलाना। मुध न रहना=भूल जाना। याद न रहना। मुध विसरना=१. भूल जाना। २. होश में न रहना। मुध विसराना या विसारना=किमी को भूल जाना। मुध विसारना=अचेत करना।

यो०—सुध-सुध=होश-हवास।

सुधन्वा—सज्ञा पु० १ धनुष चलाने में निपुण। अच्छा धनुर्धर। २ विष्णु। ३ विश्वकर्मा। ४. आगिरस। ५ एक राजा।

सुधमना\*—वि० [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।

सुधरना—क्रि० अ० १ बिगड़े हुए का बनना। ठीक या दुस्त होना। २ संशोधन होना।

सुधराई—सज्ञा स्त्री० १ सुधरने की क्रिया। सुधार। २ सुधारने की सज्जरी।

सुधर्म—सज्ञा पु० १ उत्तम धर्म। पुण्य। २ कर्तव्य। ३ न्याय। ४. अच्छे कानून।

सुधर्मी—वि० धर्मात्मा। धर्म के अच्छे कार्य करनेवाला। धर्मेनिष्ठ।

सुधवाना—क्रि० स० शोधन करना। दोष दूर करना। दुस्त करना।

सुधा—अव्य० दे० "सुद्धा"।

सुधाग—सज्ञा पु० चंद्रमा।

सुधाक्षु—सज्ञा पु० चंद्रमा।

सुधा—सज्ञा स्त्री० १ अमृत। २ जल। ३. मधु। ४ भकरद। ५ दूध। ६ रस। ७. अर्क। ८ गंगा। ९ पृथ्वी। धरती। १० एक प्रकार का छद।

सुधाई—सज्ञा स्त्री० सीधापन। सरलता।

सुधाकर—सज्ञा पु० चंद्रमा।

सुधागोह—सज्ञा पु० चंद्रमा।

सुधाघट—सज्ञा पु० चंद्रमा।

सुधाधर—सज्ञा पु० चंद्रमा।

वि० जिसके अधरों में अमृत हो।

सुधाधान—सज्ञा पु० चंद्रमा।

सुधाधार—सज्ञा पु० चंद्रमा।

सुधाधी—वि० सुधा के समान।

सुधानर\*—क्रि० स० १. सुध वराना। याद दिलाना। २. शोधने का काम दूसरे से

कराना। दुस्त कराना। (लग्न या कुंडली आदि) ठीक कराना।

सुधानिधि—सज्ञा पु० १ चंद्रमा। २. समुद्र।

३. दबक छद का एक भेद, जिसमें १६ बार

क्रम से गुण-लघु आते हैं।

सुधापाणि—सज्ञा पु० धन्वनरि।

वि० जो हाथ में अमृत लिये हो। सकल चिकित्सक।

सुधार—सज्ञा पु० सुधरने की क्रिया या भाव।

ठीक या दुस्त होना। संशोधन। संस्कार।

सुधारक—सज्ञा पु० १. सुधार करनेवाला।

दोषों या गलतियों को दूर करनेवाला।

संशोधक। २ धार्मिक, या सामाजिक सुधार

के लिए प्रयत्न करनेवाला।

सुधारना—क्रि० स० दोष, बुराई या गलती

दूर करना। संशोधन करना।

वि० सुधारनेवाला।

सुधार—वि० सीधा। निष्कपट।

सुधारालय—सज्ञा पु० वह कारागार (जेल)

जहाँ अपराधी वालों को सुधार करने के

लिए रखा जाता है। (अधो०—रिफार्मेटरी)

सुधासदन—सज्ञा पु० चंद्रमा।

सुधास्रवा—सज्ञा पु० अमृत बरसानेवाला।

सुधि—सज्ञा स्त्री० दे० "सुध"।

सुधियाना\*—क्रि० स० १. ठीक करना। उलझी

हुई चीज को सुलझा देना। २. सुधि दिलाना।

क्रि० अ० सुध आना। याद पड़ना।

सुधी—वि० १ बुद्धिमान्। चतुर। २ धार्मिक।

सज्ञा पु० विद्वान्। पंडित।

सुनविनी—सज्ञा स्त्री० १. एक वृत्त, जिसके

प्रत्येक चरण में सज सज ग रहते हैं। २

प्रबोधिनी। ३ मजुभाषिणी।

सुनकिरया—सज्ञा पु० एक तरह का कोड़ा,

जिसके पर चमकोले हरे रंग के होते हैं।

जुगनू।

सुन-गुन—सज्ञा स्त्री० १. कानापूरी। २. दूधर-

उपर गुनने या आहट पाने से पता

लगनेवाला भेद। ३ टोह। गुताग।

सुनत, सुनति\*—सज्ञा स्त्री० दे० "सुनत"।

सुनना—क्रि० स० १ कानों के द्वारा ध्वनि का

ज्ञान प्राप्त करना। श्रवण करना। २. किसी

के कयन या प्रार्थना पर ध्यान देना। ३. दोनों पक्षों की बातों पर विचार करना। ४. विचार करने के लिए दोनों पक्षों को अपनी बातें सामने पेश करने देना। भत्ते-चुरी बातें सुनना।

सुनय-सज्ञा पु० सुनीति। उत्तम नीति।

सुनयना-सज्ञा स्त्री० सुन्दर आँखोंवाली। सुन्दरा स्त्री।

सुनरो\*सज्ञा स्त्री० दे० "सुन्दरी"।

सुनवाई-सज्ञा स्त्री० १ सुनन की क्रिया या भाव। २. मुकदमा या शिकायतों आदि का सुना जाना या उन पर विचार होना।

सुनवाई-वि० १ सुननेवाला। २. सुनानेवाला।

सुनसान-वि० १. जहाँ कोई न हो। निर्जन। एकान्त। २ उजाड़। वीरान।

सज्ञा पु० सज्ञाटा।

सुनहला-वि० दे० "सुनहला"।

सुनहला-वि० [स्त्री० सुनहली] सोने के रंग का।

सुनाई-सज्ञा स्त्री० दे० "सुनवाई"।

सुनाना-क्रि० स० १ दूसरे का सुनने में प्रवृत्त करना। श्रवण कराना। २ खरा-खोटी कहना।

सुनाम-सज्ञा पु० यश। कीर्ति। बड़ाई।

सुनार-सज्ञा पु० स्वर्णकार [स्त्री० सुनारिन, सुनारी] सोने-चाँदी के गहने आदि बनानेवाला। यह पेशा करनेवाली जाति।

सुनारी-सज्ञा स्त्री० १ सुनार का काम। २. सुनार की स्त्री।

सुनावनी-सज्ञा स्त्री० १ बाहर से किसी सबंधी आदि की मृत्यु का समाचार आना। २ ऐसा समाचार आने पर किया जानेवाला स्नान आदि कार्य।

सुनाहक\*-क्रि० वि० दे० "नाहक"।

सुनीति-सज्ञा स्त्री० १ अच्छी नीति। २ अच्छा आचार-व्यवहार। शिष्टाचार। ३ राष्ट्र की रक्षा और हित के लिए अच्छी नीति। ४ उत्तमपद्धति की पत्नी और ध्रुव की माता।

सुनेपा-वि० सुननेवाला।

सुनोची\*—सज्ञा पु० एक प्रकार का घोड़ा। सुप्त-वि० १. निर्जिव। निःस्तब्ध। २. निश्चेष्ट। ३. चेतनारहित होने की अवस्था। किसी अंग का हिलना-डुलना बन्द हो जाना। सज्ञा पु० शून्य। सिकर।

सुप्त-सज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों की एक रस्म, जिसमें लडके को लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काट दिया जाता है। खतना। मुसलमानी।

सुप्ता-सज्ञा पु० शून्य की सूचक गोल बिन्दु। बिंदी। सिकर।

सुप्ती-सज्ञा पु० [अ०] मुसलमानों का एक सम्प्रदाय, जो चारों खलीफाओं को प्रधान मानता है। चारसारी।

सुपक्व-वि० अच्छी तरह पका हुआ।

सुपच-सज्ञा पु० चाडाल। डोम।

सुपत-वि० प्रतिष्ठा या इज्जतवाला।

सुपय-सज्ञा पु० १ अच्छा रास्ता। २ सदा-चरण। ३. एक वणिक् छंद, जो एक रगण, एक नगण, एक भगण और दो गुरु का होता है।

वि० समतल। हमवार।

सुपन, सुपना-सज्ञा पु० दे० "स्वप्न"।

सुपनाना\*-क्रि० स० स्वप्न दिखाना।

सुपरस\*-सज्ञा पु० दे० "स्पर्स"।

सुपर्ण-सज्ञा पु० १. विष्णु। २ गण्ड। ३. पक्षी। ४. किरण। ५ घोड़ा।

सुपर्णा-सज्ञा स्त्री० १. गण्ड की माता। सुपर्णा। २ कमलिनी। ३ रात।

सुपात्र-सज्ञा पु० योग्य। कोई काम करने या कुछ पाने के लिए योग्य या उपयुक्त व्यक्ति।

सुपारी-सज्ञा स्त्री० मारियल की जाति का एक पेड़, जिसके बहुत छोटे फल टुकड़े करके पान के साथ खाए जाते हैं।

सुपाश्व-सज्ञा पु० जैनियों के सातवें तीर्थंकर।

सुपास-सज्ञा पु० [वि० सुपासी] १. सुख। आराम। २. सुयोग। सुभीता।

सुपासी-वि० सुख देनेवाला। आराम पहुँचानेवाला।

सुपुत्र-सज्ञा पु० [स्त्री० सुपुत्री] अच्छा और योग्य बेटा।

सुपुं-सज्ञा पु० सोपने का भाव या काम।

मुहा०—सुपुं करना=सोपना।

सुपुत-सज्ञा पु० दे० "सपूत"।

सुपुती-सज्ञा स्त्री० सुपुत होने का भाव।

सुपेती\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "सफेदी"।

सुपेवी\*†-सज्ञा स्त्री० १ सफेदी। उज्ज्वलता। २ आढ़नेकी रजई। ३ बिछानेकी नोशक। ४ बिछौना।

सुपेली-सज्ञा स्त्री० छोटा सूप।

सुप्त-वि० १ सोया हुआ। जिसकी क्रिया या चैष्टा रुकी हुई हो। २. बंद। मुँदा हुआ।

सुप्ति-सज्ञा स्त्री० निद्रा। नींद।

सुप्रज्ञ-वि० बहुत बुद्धिमान्। यज्ञ ज्ञानी।

सुप्रतिष्ठ-वि० अच्छा प्रतिष्ठा या इज्जत-वाला। बहुत प्रसिद्ध। मशहूर।

सुप्रतिष्ठा-सज्ञा स्त्री० [वि० सुप्रतिष्ठित], १ अच्छी प्रतिष्ठा या इज्जत। २ प्रसिद्धि। शोहरत।

सुप्रसिद्ध-वि० नामी। बहुत प्रसिद्ध।

सुप्रिया-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की चौपाई, जिसमें अतिम वण के अतिगन्त और सब वण लघु होते हैं।

सुकल-सज्ञा पु० अच्छा कल या नतीज। अच्छा परिणाम।

वि० [स्त्री० सुकला] १ सकल। कामयाब। २ सुंदर फलवाला। (अस्त्र आदि)।

सुवत्त-वि० अत्यन्त बलवान्। बहुत मजबूत। गन्ना पु० १ शिव। २ गंधार देश का एक राजा और शकुनि का पिता।

सुबह-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। ध्वरा।

सुबहान-सज्ञा पु० [अ०] १ पवित्र। मुद्ध। २ (हिन्दी में) सुभा। 'साह' वृह। धन्य।

सुबहान अस्त्र-अभ्य० [अ०] अरबी का एक पद, जिसका अर्थ है—ईश्वर धन्य है। इसका प्रयोग किसी बात पर हर्ष या आश्चर्य होने पर होता है।

सुबास-सज्ञा स्त्री० सुगंध। अच्छी महन।

सज्ञा पु० एक प्रकार का घास।

सुवासना-सज्ञा स्त्री० सुगंध। सुबह।

वि० स० सुगंधित करना। सहकाना।

सुवाहु-वि० पुष्ट या मजबूत बाँहावाला।

सुन्दर बाँहावाला।

सज्ञा पु० १ सेना। फौज। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। चेदि का राजा।

सुवीता-सज्ञा पु० दे० "सुभाता"।

सुवुक-वि० १ हल्का। २ सुन्दर। खूबसूरत।

नज्ञा पु० घोड़े की एक जाति।

सुबुद्धि-सज्ञा स्त्री० अच्छी बुद्धि या बूढ़। वि० बुद्धिमान्।

सुबु-सज्ञा पु० दे० "सुबह"।

सुवृत्त-सज्ञा पु० [अ०] प्रमाण। वह, जिसमें कोई बात सिद्ध हो।

सुबोध-वि० १ आसानी से समझ में आने वाला। सहज। सुगम। २ अच्छी बुद्धिवाला। समझदार।

सुवृहस्प-सज्ञा पु० १ शिव। २ विष्णु।

३ दक्षिण भारत का एक प्राचीन ग्रन्थ।

सुभग-वि० [स्त्री० सुभगता] १ भाग्यवान्।

खुशकिस्मत। २ सुंदर। मनाहर। ३ प्रिय। प्रियनम। ४ सुखद।

सुभगा-वि० १ सौभाग्यवती। सुहागिन।

२ सुंदरी। खूबसूरत स्त्री।

सज्ञा स्त्री० १ वह स्त्री, जो अपने पति का प्रिय हो। २ पति वर्ष की दुमारी।

सुभग-वि० दे० सुभग"।

सुभट-सज्ञा पु० बड़ा योद्धा। यूरवीर।

सुभटवत्-वि० दे० "सुभट"।

सुभट-वि० १ सज्जन। २ भाग्यवान्।

सेना पु० १ विष्णु। २ सत्सुभार।

३ श्रीकृष्ण के एक पुत्र। ४ सौभाग्य। ५ कल्याण। मंगल।

सुभेद्रा-सज्ञा स्त्री० १ श्रीकृष्ण की बहन और

अर्जुन की पत्नी। २ दुर्गा।

सुभेद्रिका-सज्ञा स्त्री० एक छंद, जिसमें

पंचक चरण में न न र ल ग होता है।

सुभर\*-वि० दे० "सुभ"।

सुभाह, सुभाह\*†-सज्ञा पु० दे० "स्वभाप"।

वि० वि० सहज भाव न। स्वभाविक।

सुभग\*†-सज्ञा पु० दे० "सौभाग्य"।

सुभागी-वि० भाग्यवान्। सुश-किस्मत।  
सुभान-अन्व० दे० "सुबहान"। बाह! बाह!!  
घन्ध।

सुभाना\*†-कि० अ० शोभित होना। देवने  
में भला जान पड़ना।

सुभाय\*†-तज्ञा पु० दे० "स्वभाव"।

सुभायक\*-वि० दे० "स्वाभायिक"।

सुभाव\*†-तज्ञा पु० दे० "स्वभाव"।

वि० अच्छा भाव। इसका उल्टा कुभाव।

सुभाषित-वि० १ अच्छी तरह कहा हुआ।

सुन्दर रूप या अच्छे ढंग से कहा हुआ। २.

उपदेश। ३. सलाह।

सुभाषी-वि० [स्त्री० सुभाषिणी] प्रिय बोलने-  
वाला या अच्छी तरह बोलनेवाला।

सुभिक्ष-संज्ञा पु० ऐसा समय, जिसमें अन्न खूब  
हो। सुकाल।

सुभो-वि० शुभदायक। मंगलप्रद।

सुभोता-संज्ञा पु० १ आसानी। सुगमता।

सहूलियत। २. सुअवसर। सुयोग।

सुमंगली-संज्ञा स्त्री० विवाह में मस्तपदी पूजा

के बाद पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा।

सुमंत-संज्ञा पु० दे० "सुमंत्र"।

सुमंत्र-संज्ञा पु० राजा दशरथ का मंत्री और  
सारथी।

सुमंथन-संज्ञा पु० दे० "मंदर" (पर्वत)।

सुमंद्र-संज्ञा पु० २७ मानाओं का एक वृत्त,

जिसके अंत में मूढ-लघु होते हैं। सरसो।

सुम-संज्ञा पु० [ फा० ] घोंडे या दूसरे चौपायों  
के खुर। टाय।

सुमत्-संज्ञा स्त्री० दे० "सुमति"।

सुमति-संज्ञा स्त्री० १ अच्छी बुद्धि। सुबुद्धि।

२ मेल-जोल। ३ भक्ति। ४ प्रार्थना। ५

सगर की पत्नी।

वि० अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

सुमन-संज्ञा पु० १ फूल। २ विद्वान्। ३  
देवता।

वि० १. अच्छे तन या हृदयवाला। सहृदय।

दयालु। २. सुंदर।

सुमनचाप-संज्ञा पु० कामदेव। (फूलों का  
पतुप रखने के कारण कामदेव को सुमनचाप  
कहते हैं।)

सुमनस्-संज्ञा पु० १. फूल। २. देवता। ३.  
विद्वान्।

वि० प्रसन्न-चित्त।

सुमन्ति-वि० बहुत अच्छी मणियों से जड़ा  
हुआ।

सुमरन\*-संज्ञा पु० दे० "स्मरण"।

सुमरना\*†-कि० सं० स्मरण करना। ध्यान-  
करना। अपना।

सुमरनी-संज्ञा स्त्री० जप करने की सत्तादस  
दाना की छोटी माला।

सुमान्य-वि० विशेष रूप से या बहुत अच्छी  
तरह मान्य।

सुमानिका-संज्ञा स्त्री० सात अक्षरों का एक  
वर्णिक छंद।

सुमार्ग-संज्ञा पु० सुपथ। सन्मार्ग।

सुमालिनी-संज्ञा स्त्री० एक वर्णवृत्त, जिसके  
प्रत्येक चरण में छ वर्ण होते हैं।

सुमाली-संज्ञा पु० एक राक्षस, जिसकी कन्या  
कंकसों के गम से रावण, कुम्भकर्ण, शूर्पणखा  
और विभीषण उत्पन्न हुए थे।

सुमित्रा-संज्ञा स्त्री० राजा दशरथ की एक  
पत्नी, जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता थी।

सुमित्रार्जुन-संज्ञा पु० सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण  
और शत्रुघ्न।

सुमिष्ट-वि० बहुत मीठा।

सुमुख-संज्ञा पु० १. सुन्दर मुख। २. हंसमुख  
बेहरा। प्रसन्न-वदन। ३. शिव। ४. गणेश।

५. विद्वान्। ६. आचार्य।

वि० १. सुंदर मुखवाला। २. सुंदर। मनोहर।

३. प्रसन्न। ४. कृपालु। ५. जिसमें प्रवेश द्वार

अच्छा हो। ६. जिसके आगे का हिस्सा  
नुकीला हो—जैसे तीर।

सुमुखी-संज्ञा स्त्री० १ सुंदर मुखवाली स्त्री।

२ सुंदरी। (स्त्री के लिए एक सम्बोधन।)

३ दर्पण। आइना। ४. एक छन्द, जिसके  
प्रत्येक चरण में ११ अक्षर होते हैं।

सुमेध-वि० दे० "सुमेधा"।

सुमेधा-वि० १. अच्छी बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

२ विद्वान्।

सुमेर-संज्ञा पु० सुमेरु पर्वत।

सुमेर-संज्ञा पु० १. पुराणों में वर्णित एक

पहाड़, जो पर्वतों का राजा कहा गया है।  
२. धिक्। ३. जब करने की माला के बीच का घड़ा धीरे ऊपरवाला दाना।  
४. मध्यस्थान। केन्द्र। ५. उत्तरी ध्रुव। ६. एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में १७ भागएँ होती हैं।

वि० १. बहुत ऊँचा। २. सुंदर।

मुनेश्वर-सज्ञा पु० वह देखा, जो उत्तरी ध्रुव से २३½ अक्षांश पर स्थित है।

मुयश-सज्ञा पु० कीर्ति। सुख्याति। बहुत बड़ाई।

वि० जिसे बहुत यश मिला हो। यशस्वी।

मुयोग-सज्ञा पु० सुन्दर या अच्छा योग। सुयवसर। योग।

मुयोग-वि० बहुत योग्य या लायक।

मुयोगन-सज्ञा पु० दे० "दुर्योगन"।

मुरंग-सज्ञा स्त्री० १ जमीन या पहाड़ के नीचे खोदकर या बारूद से उड़ाकर बनाया हुआ रास्ता। २ किले या दीवार आदि के नीचे खोदकर बनाया हुआ वह रास्ता, जिसमें बारूद भरकर और आग लगाकर किला या दीवार उड़ाते हैं। ३ एक प्रकार का आधुनिक यंत्र (टारपीडो), जिससे शत्रुओं के जहाज नष्ट किए जाते हैं। ४ सेंध।

सज्ञा पु० १ दिगंरक। २ नारंगी। ३ रंग के अनुसार घोड़ों का एक भेद।

वि० १. सुंदर रंग का। २. सुंदर। सुड़ील। ३. रसपूर्ण। ४. लाल रंग का। ५. निर्मल। स्वच्छ। साफ।

मुर-सज्ञा पु० १ देवता। २ सूर्य। ३ विद्वान्। ४ मुनि। ऋषि। ५ स्वर। ध्वनि।

मुह-सज्ञा पु० मुर में मुर मिलाना=हँ में हँ मिलाना। चापलूसी करना।

मुकंत\*-सज्ञा पु० इद्र। देवताओं का मालिक।

मुक-सज्ञा पु० नाक पर का वह तिलक, जो भाले की आकृति का होता है।

मुकना-क्रि० सं० नाक या मुँह से पीरे-पीरे ऊपर खींचना, जिससे मुड़-मुड़ की आवाज होती है। मुड़कना।

मुरकरी-सज्ञा पु० देवताओं का हाथी। दिगंज। मुर-कुवाह\*-सज्ञा पु० घोड़ा देने के लिए स्वर बदलकर योजना।

मुकेतु-सज्ञा पु० १ देवताओं या इद्र की ध्वजा। २ इद्र।

मुरक्षण-सज्ञा पु० अच्छी तरह से रक्षा करना। रक्षवाली।

मुरक्षा-सज्ञा पु० बहुत अच्छी तरह से बचाव या हिफाजत। सैनिक रक्षा।

मुरक्षा-परिषद्-सज्ञा पु० समुक्त राष्ट्र-गण की वह शाखा या अंग, जिसका उद्देश्य सशस्त्र भद्र-युद्ध या आक्रमण रोकना है। पाँच राष्ट्र (अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस और चीन) इसके स्थायी सदस्य हैं और ६ सदस्य दो साल के लिए चुने जाते हैं। (अर्थ-सिक्वोरिटी काउंसिल)।

मुरक्षित-वि० जिसकी रक्षा की भली भाँति गई हो।

मुरख, मुरखा-वि० दे० "मुर्ख"।

मुरखाव-सज्ञा पु० [फा०] चक्का पथी की एक जाति, जिसके पर बहुत बलसूरत और कोमती होते हैं।

मुहा-सज्ञा पु० मुरखाव का पर लगना=कोई विशेषता या अनोखापन होना (ब्यंग)।

मुरखी-सज्ञा स्त्री० १ ईंटों का महीन बुरा, जो इमारत बनाने के काम में आता है। २ दे० "मुर्खी"।

मुरख-वि० दे० "मुर्ख"।

मुरग\*-सज्ञा पु० दे० "स्वर्ग"।

मुरगज-सज्ञा पु० इन्द्र का हाथी। ऐरावत।

मुरगीर-सज्ञा पु० मुनेह।

मुरग-सज्ञा पु० पुरुषपति।

मुरग्या-सज्ञा स्त्री० दे० "कामधेनु"।

मुरबा-सज्ञा पु० इद्रधनुष।

मुरजन-सज्ञा पु० देवतागण। देव-समूह।

वि० १ सज्जन। २ चतुर।

मुरसना-क्रि० अ० दे० "सुलसना"।

मुरसाना-क्रि० सं० दे० "सुलसाना"।

मुरत-सज्ञा पु० शमीग। मयून।

सज्ञा स्त्री० १ स्मृति। याद। २ मुख। ध्यान।

मृदा०—सुरत विसारना=भूल जाना।  
 सुरतरंगिणी—सज्ञा स्त्री० गंगा।  
 सुरतरु—सज्ञा पु० कल्पवृक्ष।  
 सुरति—सज्ञा स्त्री० १ सभोग। काम-कीड़ा।  
 भोग विलास। २ स्मृति। स्मरण। सुधि।  
 ३ दे० “सुरत”। रूप।  
 सुरतिगोपना—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की  
 नायिका, जो रति-क्रीड़ा करके अपनी सखियों  
 आदि से छिपाती हो।  
 सुरतिवत—वि० अधिक सम्भोग के लिए  
 लालायित। कामातुर। कामी।  
 सुरतिविचित्रा—सज्ञा स्त्री० वह मध्या नायिका  
 जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।  
 सुरती—सज्ञा स्त्री० १. सुरत नगर की। २ तवाकू  
 के पत्तों का चुरा, जो चूना मिलाकर खाया  
 जाता है। खैना।  
 सुरतन \*—सज्ञा स्त्री० दे० “सुरतितन”। रत्नल  
 स्त्री।  
 सुरत्राण, सुरनाता—सज्ञा पु० १ देवताओं के  
 रत्नक। विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३ इन्द्र।  
 सुरथ—सज्ञा पु० १ एक पहाड़। २. इन्द्र।  
 ३. पुराणों में वर्णित एक चंद्रवशी राजा  
 जिन्होंने पहले-पहल दुर्गा की आराधना की  
 थी। ४ जयद्रथ के एक पुत्र का नाम।  
 सुरवार—वि० जिसके गले का स्वर सुंदर हो।  
 सुरीला।  
 सुरवीधिका—सज्ञा स्त्री० आकाश-गंगा।  
 सुरवुभि—सज्ञा स्त्री० देवताओं का नगाड़ा।  
 मुखम—सज्ञा पु० कल्पवृक्ष।  
 मुखनु—सज्ञा पु० इन्द्र-पत्नी।  
 मुख्याम—सज्ञा पु० स्वर्ग।  
 मुख्यानी \*—वि० स्वर्ग में रहनेवाला। स्वर्गीय।  
 मुखुनी—सज्ञा स्त्री० गंगा।  
 मुखेनु—सज्ञा स्त्री० कामधेनु।  
 मुखी—सज्ञा स्त्री० १ गंगा। २ आकाश-  
 गंगा।  
 मुख्याम—सज्ञा पु० इन्द्र। (देवताओं का  
 त्यागो।)  
 मुखारी—सज्ञा स्त्री० देवता की पत्नी।  
 श्ववधू।  
 मुखह—सज्ञा पु० दे० “सुरनाथ”।

सुरनिलय—सज्ञा पु० सुमेरु पर्वत।  
 सुरप \*—सज्ञा पु० दे० “सुरपति”। इन्द्र।  
 सुरपति—सज्ञा पु० इन्द्र।  
 सुरपथ—सज्ञा पु० आकाश।  
 सुरपावप—सज्ञा पु० कल्प-वृक्ष।  
 सुरपाल, सुरपालक—सज्ञा पु० इन्द्र।  
 सुरपुर—सज्ञा पु० [स्त्री० सुरपुरी] स्वर्ग।  
 देवताओं का नगर। अमरावती।  
 सुरबहार—सज्ञा पु० सितार की तरह का एक  
 वाजा।  
 सुरवाला—सज्ञा स्त्री० देवता की पत्नी या  
 कन्या। देवागता। अप्सरा।  
 सुरबेल—सज्ञा स्त्री० कल्पलता।  
 सुरभवन—सज्ञा पु० १ देवता के रहने का  
 स्थान। मंदिर। २ स्वर्ग।  
 सुरभान—सज्ञा पु० १ सूर्य। २ इन्द्र।  
 सुरभि—सज्ञा स्त्री० १ सुगंध। सुगंध।  
 २ मध्वी। ३ गाय। ४ गायों की अधि-  
 ष्ठात्री देवी तथा गो जाति की आवि जननी।  
 (पुराणों के अनुसार दश की कन्या क्षीर  
 करूप का पत्नी।) ५ सुरा। शराव।  
 ६ तुलसी।  
 सज्ञा पु० १ वसंत-काल। २ चैत्र मास।  
 ३ स्वर्ण। सोना।  
 वि० १ सुगंधित। २ सुंदर। ३ उत्तम।  
 सुरभित—वि० सुगंधित। सुश्रवदार।  
 सुरजी—सज्ञा स्त्री० १ चंदन। २ गाय।  
 ३ सुगंध। सुगंध।  
 सुरभीपुर—सज्ञा पु० गोलोक। स्वर्ग। वंकुठ।  
 सुरभूप—सज्ञा पु० १ देवताओं के राजा।  
 इन्द्र। २. विष्णु।  
 सुरभोग—सज्ञा पु० अमृत।  
 सुरभीन \*—सज्ञा पु० दे० “सुरभवन”। स्वर्ग।  
 सुरमङ्गल—सज्ञा पु० १ देवताओं का मङ्गल।  
 २ एक प्रकार का वाजा।  
 सुरमई—वि० [फा०] सुरमे के रंग का। हल्का  
 नीला।  
 सज्ञा पु० १ हल्का नीला रंग। २ इन रंग  
 में रंगा हुआ वस्त्र। ३. इस रंग का  
 धागा।  
 सुरमन्त्र—सज्ञा पु० सुरमा लगाने की छलाई।

सुरमा-सज्ञा पुं० [का०] नीले रंग का एक प्रसिद्ध खनिज पदार्थ, जिसकी महीन बुकनी आँखों में लगाई जाती है।

सुरमादात्री-सज्ञा स्त्री० सुरमा रखने का शीशी की तरह का एक लम्बा बरतन।

सुरमे\*-वि० दे० "सुरमई"। सुरमे के रंग का।

सुरम्भ-वि० अत्यन्त मनोहर या रमणीक।

सुरराई\*-सज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।

सुरराज-सज्ञा पुं० इद्र।

सुरराय\*-सज्ञा पुं० दे० "सुरराज"।

सुररिपु-सज्ञा पुं० देवताओं का शत्रु। राक्षस।

सुरली-सज्ञा स्त्री० सुंदर प्रौढ़।

सुरलीक-सज्ञा पुं० स्वर्ग।

सुरबभू-सज्ञा स्त्री० देवता की पत्नी। देवा-गना। अप्सरा।

सुरबंध-सज्ञा पुं० देवताओं के वैद्य, अधिवनी-कुमार।

सुरबुध-सज्ञा पुं० कल्पवृक्ष।

सुरध्वज-सज्ञा पुं० १. देवताओं में ध्वज। २. विष्णु। ३. शिव। ४. इद्र।

सुरस-वि० १. सरस। रसीला। २. स्वा-दिष्ट। मधुर। ३. सुंदर।

सुरसती\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सरस्वती"।

सुरसवन-सज्ञा पुं० स्वर्ग।

सुरसर-सज्ञा पुं० मानसरोवर।

सज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरि"।

सुरसरमुता-सज्ञा स्त्री० सरयू नदी।

सुरसरि, सुरसरी-सज्ञा स्त्री० गंगा।

सुरसरिता-सज्ञा स्त्री० दे० "गंगा"।

सुरसा-सज्ञा स्त्री० १. तुलसी। २. ब्राह्मी।

३. दुर्गा। ४. एक वृक्ष का नाम। ५. एक प्रसिद्ध राक्षसी, जिसने हनुमानजी को समुद्र पार करने के समय रोका था। ६. एक जप्तरा।

सुरसारी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सुरसरी"।

सुरसाभू\*-वि० देवताओं को सतानेवाला।

सुरसुंदरी-सज्ञा स्त्री० १. अप्सरा। २. देव-कन्या। ३. दुर्गा। ४. एक योगिनी।

सुरसुत्थी-सज्ञा स्त्री० कामधेनु।

सुरसुराना-कि० ज० [सज्ञा स्त्री० सुर-सुराह, सुरसुरी] १. सुरसुर की आवाज

होना। २. कीड़ी आदि का रेंगना। कुल-बुलाना। ३. हल्की खुजली होना।

सुरस्वामी-सज्ञा पुं० इद्र।

सुरहरा-वि० जिसमें सुरसुर शब्द हो। सुर-सुर शब्द से युक्त।

सुरहो\*-सज्ञा स्त्री० १. एक प्रकार की गोलद चित्ती कीड़ियाँ, जिनसे जूआ खेलते हैं।

२. इन कीड़ियों से होनेवाला जूआ।

सुरांगना-सज्ञा स्त्री० १. देवता की पत्नी। देवागना। २. अप्सरा।

सुरा-सज्ञा स्त्री० शराब। मदिरा।

सुराई\*-सज्ञा स्त्री० सुरता। बहादुरी।

सुरास-सज्ञा पुं० १. दे० "सुराब"। २. "सुराय"।

सुराय-सज्ञा पुं० [ज०] १. दोह।

अवराध या पड़व्य आदि का गुप्त रूप से लगाया हुआ पता। २. अत्यंत अनुराग या प्रेम। ३. बहुत अच्छा राग।

सुरागाय-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की दो नली गाय, जिसकी पूँछ से पेंचर बनता है।

सुराज-सज्ञा पुं० १. दे० "सुराज्य"। २. दे० "स्वराज्य"।

सुराज्य-सज्ञा पुं० १. वह राज्य या शासन, जिसमें सुख और शान्ति हो। २. दे० "स्वराज्य"।

सुराधिप-सज्ञा पुं० देवताओं के स्वामी या राजा। इद्र।

सुरानीक-सज्ञा पुं० देवताओं की सेना।

सुरापना-सज्ञा स्त्री० गंगा।

सुरा-गान-सज्ञा पुं० शराब पीना।

सुरापान-सज्ञा पुं० शराब पीने या रखने का काम।

सुरापी-वि० शराब पीनेवाला। शराबी।

सुरारि-सज्ञा पुं० देवताओं का शत्रु या शत्रु। राक्षस। असुर।

सुरालय-सज्ञा पुं० १. स्वर्ग। २. मंदिर।

३. मुक्कद। ४. शराबखाना।

सुरावती-सज्ञा स्त्री० बश्मप की पत्नी और देवताओं की माता, अदिति।

सुरामुर-सज्ञा पुं० देवता और राक्षस।

सुरामुख-सज्ञा पुं० १. शिव। २. कल्पवृक्ष।

सुराही-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. पानी रखने का एक तरह का प्रसिद्ध बरतन। २. बाजू, जोशम आदि गहनों में घुंड़ी के ऊपर लगनेवाला सुराही के आकार का छोटा टुकड़ा।

सुराहीदार-वि० सुराही की तरह का गोल और लम्बी गर्दन के आकार का।

सुरी-सज्ञा स्त्री० देवता की पत्नी। देवांगना। सुरीला-वि० [स्त्री० सुरीली] जिसकी आवाज पतली और मधुर हो। मीठे सुरवाला। सुमधुर।

सुरचि-सज्ञा स्त्री० १. उत्तम रुचि। अच्छी पसन्द। २. राजा उत्तानपाद की एक पत्नी, जो उत्तम की साता और ध्रुव की विमाता थीं।

चि० उत्तम रुचिवाला। अच्छी पसंदवाला। सुरवा-सज्ञा पुं० दे० "शोरवा।"

सुरूप-वि० [सज्ञा सुरूपता] अच्छे रूपवाला। सुंदर। खूबसूरत। सुडील। \*सज्ञा पुं० दे० "स्वरूप"।

सुरूपा-वि० सुंदरी।

सुरेद्र-सज्ञा पुं० इद्र।

सुरेद्रचाप-सज्ञा पुं० इन्द्रधनुष।

सुरेद्रवज्रा-सज्ञा स्त्री० एक षण्णिक छन्द, जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं। इन्द्रवज्रा।

सुरेय-सज्ञा पुं० सूस। शिशुमार।

सुरेश-सज्ञा पुं० १. इद्र। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कृष्ण। ५. लोकपाल।

सुरेश्वर-सज्ञा पुं० १. इद्र। २. ब्रह्मा। ३. शिव। इद्र।

सुरेश्वरी-सज्ञा स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. स्वर्ग-गया।

सुरेत-सज्ञा स्त्री० रखी हुई स्त्री। उपपत्नी। रखेली। सुरेतिन।

सुरेतिन-सज्ञा स्त्री० दे० "सुरेत"।

सुरोचि-वि० सुन्दर।

मुख-सज्ञा पुं० [फा०] गहरा लाल रंग। चि० लाल रंग का। लाल।

मुख-वि० १. लाली लिये हुए। २. फान्तिमान। तेजस्वी। ३. प्रतिष्ठित। ४. सचलता

प्राप्त करने के कारण जिसके मुँह पर लाली रह गई हो।

मुखी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १. लाली। अरुणता। २. लेख आदि का शीर्षक। ३. इमारत बनाने के काम में आनेवाला एक तरह का लाल मसाला, जो प्रायः ईंट आदि पीस कर बनाया जाता है। ४. दे० "मुखी"।

मुलक-वि० अच्छी कमरवाला।

मुलक्षण-वि० १. शुभ या मंगल लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्। सुशक्तिस्मत्। ३. अच्छे गुणोंवाला।

सज्ञा पुं० १. शुभ या मंगल लक्षण। अच्छे चिह्न। २. अच्छे गुण। ३. १४ मात्राओं का एक छंद जिसमें ७ मात्राओं के बाद एक गुरु, एक लघु, और तब विराम होता है।

मुलक्षणा-वि० १. शुभ लक्षणवाली। २. भाग्यवती। ३. मंगलदायिनी। अच्छे गुणोंवाली।

मुलक्षणी-वि० दे० "मुलक्षणा"।

मुलग-अव्य० पास। तजदीक।

मुलगना-क्रि० अ० १. जलना। दहकना।

२. बहुत सताप या दुख होना।

मुलगाना-क्रि० स० १. जलाना। दहकाना।

२. दुखी करना।

मुलच्छन-वि० दे० "मुलक्षण"।

मुलच्छनी-वि० दे० "मुलक्षणा"।

मुलजन-सज्ञा स्त्री० मुलजने की क्रिया या भाव। मुलजाव।

मुलजना-क्रि० अ० १. उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर होना या खुलना। २. कठिनाई दूर होना। आसान होना। ३. कोई समस्या हल होना।

मुलमाना-क्रि० स० १. उलझन या गुत्थी खोलना। २. कठिनाई दूर करना। समस्या हल करना।

मुलजाव-सज्ञा पुं० दे० "मुलजन"।

मुलटा-वि० [स्त्री० मुलटी] सीपा। 'उलटा' का विपरीत।

मुलतान-सज्ञा पुं० [फा०] बादशाह।

मुलताना चंपा-सज्ञा पुं० एक प्रकार का पेड़। पुत्राग।

मुलतानी-सज्ञा स्त्री० १. वादशाही। वाद-  
साहस। राज्य। २. एक प्रकार का रेशमी  
कपड़ा।

वि० लाल रंग का।

मुलप\*-वि० दे० "स्वल्प"।

सज्ञा पु० अन्धा आलाप।

मुलफ-वि० १. लचीला। २. कोमल। नाजुक।

मुलफ्ता-सज्ञा पु० [फा०] १. वह तम्बाकू जो  
चिलम में बिना तवा रखे भर कर पिया जाता  
है। २. चरस।

मुलफेबाज-वि० गंजा या चरस पीनेवाला।

मुलभ-वि० [सज्ञा मुलमत्ता] १. सहज  
में मिलनेवाला। सहज। आसान। २.  
साधारण। मामूली।

मुलह-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. मेल। मिलप।  
२. सधि। समझौता। किसी तरह का वैर-  
विरोध या लड़ाई खत्म होने पर होनेवाला  
मेल।

मुलहनामा-सज्ञा पु० १. वह कागज, जिस पर  
मुलह या मेल की शर्तें लिखी हो। २. वह  
कागज, जिस पर मुकदमा आदि लड़नेवाले  
व्यक्तियों या दलों की ओर से समझौते  
की शर्तें लिखी रहती हैं। ३. वह कागज,  
जिस पर परस्पर लड़नेवाले राजाओं या  
राष्ट्रों की ओर से मेल की शर्तें लिखी  
रहती हैं। सधिपत्र।

मुलाना-क्रि० स० १. सोने में प्रवृत्त करना।

शयन कराना। २. लिटाना। ३. डाल देना।

मुलिपि-सज्ञा स्त्री० उत्तम लिपि। अच्छी  
लिखावट।

मुलेमान-सज्ञा पु० [फा०] १. यहूदियों का एक  
प्रतिष्ठित बावशाही, जो पैगम्बर माना जाता  
है। २. एक पहाड़, जो बलोचिस्तान और  
पंजाब के बीच में है।

मुलेमानो-वि० [फा०] मुलेमान का।

मुलेमान-सबधी।

सज्ञा पु० १. सफेद आँखोंवाला घोड़ा।

२. एक प्रकार का घोरंगा पत्थर।

मुलोचन-वि० [स्त्री० मुलोचना] सुंदर  
आँखोंवाला। सुनयन।

मुलोचना-सज्ञा स्त्री० १. सुंदर आँखोंवाली

स्त्री। २. एक अम्परा। ३. मेवनाद की  
पत्नी।

मुलोचनी-वि० सुंदर आँखोंवाली।

मुव-सज्ञा पु० दे० "मुअन"।

मुवक्ता-वि० जन्ठा बोलनेवाला। जन्ठा  
भाषण करनेवाला। ब्राह्मण या वामी।

मुवन-सज्ञा पु० १. सूर्य। २. अग्नि। ३.  
चंद्रमा। ४. दे० "मुअन"। ५. दे० "मुअन"।

मुवनारा-सज्ञा पु० दे० "मुअन"।

मुवण-सज्ञा पु० १. स्वर्ण। सोना। २. धन।  
संपत्ति। ३. एक प्राचीन स्वर्णमुद्रा, जो दस  
मासों की होती थी। ४. सोलह मासों का  
एक मान। ५. धतूरा। ६. एक प्रकार  
का छन्द।

वि० १. सुंदर वर्ण या रंग का। २. उज्ज्वल।  
३. अच्छे वर्ण या जाति का। कुलीन। ४.  
सोने के रंग का। पीला।

मुवणकरणी-सज्ञा स्त्री० शरीर के वर्ण या  
रंग को सुंदर करनेवाली एक प्रकार की  
जड़ी।

मुवस\*-वि० जो अपने वंश या अधिकार में हो।

मुवाना\*-क्रि० स० दे० "मुलाना"।

मुवार-सज्ञा पु० अच्छा दिन।

\*सुपकार। रसोइया।

मुवास-सज्ञा पु० १. सुगंध। खुशबू। २.  
रहने का अच्छा स्थान। सुन्दर या अच्छा  
घर। ३. एक प्रकार का छन्द।

मुवासिका-वि० सुवास या सुगंध करनेवाली।  
खुशबू देनेवाली।

मुवासित-वि० सुगन्धित। खुशबूदार।

मुवासिनी-सज्ञा स्त्री० १. पिता के यहाँ  
रहनेवाली विवाहित या अविवाहित स्त्री।

२. सवया स्त्री के लिए सम्मान प्रदर्शित  
करने का शब्द। ३. सवया स्त्री।

वि० आराम देनेवाले या प्रतिष्ठा बढ़ाने-  
वाले घर में रहनेवाली।

मुविचार-सज्ञा पु० १. अच्छे विचार या  
स्थान। २. अच्छी तरह से सोचना-समझना।

३. किसी जापत्ति या मुकदमे पर अच्छी  
तरह से विचार या मुनवाई। उचित न्याय।  
अच्छा निर्णय या फैसला।

सुविज्ञ-वि० बहुत अच्छा जानकार या ज्ञाता ।  
बहुत बुद्धिमान् या चतुर ।

सुविद्या-सज्ञा स्त्री० आसानी । सुभीता ।  
सहूलियत ।

सुवृत्ता-सज्ञा स्त्री० एक अक्षर । १९ अक्षरों  
का एक छंद ।

सुवेल-सज्ञा पुं० त्रिकूट पर्वत, जो रामायण  
के अनुसार लंका में था ।

सुवेश-वि० १. अच्छा वेश या रूप धारण  
किए हुए । २. सुन्दर पोशाक पहने हुए  
या सजे हुए । सुदर ।

सुवेष्टित-वि० दे० "सुवेश" ।

सुव्रत-वि० दृढ़ता से अथ पालन करनेवाला ।

गुणिक्षित-वि० १. अच्छी तरह शिक्षा पाया  
हुआ । २. जिसे यथेष्ट शिक्षा मिली हो ।

सुशील-वि० [ स्त्री० सुशीला ] [ सज्ञा स्त्री०  
सुशीलता ] १. अच्छे स्वभाव या आचरण-  
वाला । अच्छा व्यवहार या बर्ताव करने-  
वाला । २. विनीत । नम्र । सच्चरित्र ।

सुशृंग-सज्ञा पुं० शृंगी ऋषि ।

सुशोभन-वि० १. अत्यंत शोभायुक्त ।  
दिव्य । २. बहुत सुंदर ।

सुशोभित-वि० अत्यन्त शोभायमान ।

सुधाध्य-वि० सुनने में अच्छा लगनेवाला ।

सुधी-सज्ञा स्त्री० एक आदरसूचक शब्द,  
जो स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जाता  
है, जैसे—सुधी निर्मला देवी ।

वि० बहुत सुंदर । शोभायुक्त ।

सुधुत-सज्ञा पुं० आयुर्वेदीय चिकित्सा-शास्त्र  
के एक प्रसिद्ध आचार्य, जिनका रचा हुआ  
"सुधुत-संहिता" ग्रंथ बहुत मान्य है ।

सुपमा-सज्ञा स्त्री० १. बहुत अधिक  
सुन्दरता । अत्यन्त शोभा । २. दस अक्षरों  
का एक वृत्त ।

सुषिर-सज्ञा पुं० १. वांस । २. बेंत । ३.  
अग्नि । ४. वह यंत्र, जो वायु के जोर से  
चलता हो । ५. संगीत ।

वि० १. छेदेवाला । २. खोखला । पोला ।

सुपुप्त-वि० गहरी नींद में सोया हुआ ।  
सज्ञा स्त्री० दे० "सुपुप्ति" ।

सुपुप्ति-सज्ञा स्त्री० १. गहरी नींद । २.

अज्ञान (वेदांत) । ३. पातंजल दस  
अनुसार योग-साधन की वह अवस्था  
चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति, जिससे  
जीव को ब्रह्म की प्राप्ति करने पर भी  
उसका बोध नहीं होता ।

सुपुष्पा-सज्ञा स्त्री० १. हठयोग में शरीर  
की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक, जो

नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में  
स्थित है । २. वैद्यक में चौदह प्रधान नाड़ियों  
में से एक, जो नाभि के मध्य में है ।

सुपेण-सज्ञा पुं० १. विष्णु । २. परीक्षित के  
एक पुत्र का नाम । ३. एक वानर, जो वरुण

का पुत्र, बालि का समुर और सुषीव का  
बैद्य था । ४. राक्षसों का वैद्य, जो लक्ष्मण

की चिकित्सा के लिए लंका से रामचन्द्र की  
छावनी में लाया गया था ।

सुषोपति\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सुपुप्ति" ।

सुष्ट-वि०, अच्छा । सज्जन । भला ।

सुष्टु-क्रि० वि० अच्छी तरह ।

वि० सुंदर । उत्तम ।

सुष्टुता-सज्ञा स्त्री० १. सुष्टु होने का भाव ।

सुंदरता । २. शोभाय ।

सुसंग-सज्ञा पुं० दे० "सुसंगति" ।

सुसंगति-सज्ञा स्त्री० अच्छा संग । साथ ।

सत्संग । अच्छी सोहबत ।

सुसकना-क्रि० अ० दे० "सिसकना" ।

सुसज्जित-वि० भली भांति सजाया या सजा

हुआ ।

सुसताना-क्रि० अ० १. धकावट दूर करना ।

विश्राम करना । मेहनत करने के बाद कुछ

आराम करना ।

सुसमय-सज्ञा पुं० अच्छा समय या वक्त । अच्छे

दिन । सुकाल । वे दिन, जिनमें अकाल न हो ।

सुसर, सुसरा-सज्ञा पुं० दे० "ससुर" ।

सुसराल-सज्ञा स्त्री० दे० "ससुराल" ।

सुसरित्-सज्ञा स्त्री० गंगा ।

सुता\*†-सज्ञा स्त्री० बहन ।

सज्ञा पुं० एक पक्षी ।

सुताध्य-वि० [ सज्ञा सुसाधन ] जो आसानी

से किया जा सके । सहज ।

सुताना-क्रि० अ० सिसकना ।

मुसीतलई\*—सज्ञा स्त्री० दे० "मुसीतलता"।  
 मुमुकना—कि० अ० दे० "सिसकना"।  
 मुसेन—सज्ञा पु० दे० "मुषेण"।  
 मुस्त—वि० [सज्ञा मुस्ती] १ जिसमें फुर्ती न हो। योगी चालवाला। २ मद। ३ बीजा। ४ जिसका उत्साह कम हो गया हो। उदास। ५ दुर्लभ। कमजोर।  
 मुस्ती—सज्ञा स्त्री० १ मुस्त होने का भाव। २ शिथिलता। आलस्य।  
 मुस्तेन—मज्ञा पु० दे० "स्वस्थयन"।  
 मुस्थ—वि० [सज्ञा मुस्थिता, मुस्थित्व] १ स्वस्थ। भला चंगा। नोरीम। तदुपस्त। २ प्रसन्न। खुश।  
 मुस्विर—वि० अच्छी तरह बैठा या जमा हुआ। अटल। अत्यंत स्विर या दृढ़।  
 मुस्वर—वि० [स्त्री० मुस्वरा] अच्छे या सुनसुर स्वर वाला। सुरीला। सुकठ।  
 मुस्वाहु—वि० बहुत अच्छे स्वादवाला। अत्यंत स्वादिष्ट। बहुत जायकेदार।  
 मुहम\*—वि० [अनु०] सत्ता।  
 मुहम्म\*—वि० सुगम। आसान।  
 मुहदा\*—वि० [स्त्री० मुहदी] मुहावना। सुदर।  
 मुहनी\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'सोहनी'।  
 मुहुराना†—कि० सं० दे० 'सहलाना'।  
 मुहेल\*—सज्ञा पु० दे० 'मुहेल'।  
 मुहब—सज्ञा पु० दे० 'मुहा' (राग)।  
 मुहबा\*—सज्ञा स्त्री० दे० "मुहा"। (राग)  
 मुहाय—सज्ञा पु० १ सौभाग्य, सघवा वन रहन की अवस्था। स्त्री की वह अवस्था, जिसमें उसका पति जीवित हो। अहिवात। २ वह बन्ध, जो बरविवाह के समय पहनता है। जाया। विवाह के अवसर पर स्त्रियाँ द्वारा गाया जानवाला गीत।  
 मुहागा—सज्ञा पु० एक प्रकार का धार, जो गरम गंधकी सोतो से निकलता है।  
 मुहागिन, मुहागिनी—सज्ञा स्त्री० वह स्त्री, जिसका पति जीवित हो। सघवा स्त्री। सौभाग्यवती।  
 मुहागिल—सज्ञा स्त्री० दे० "मुहागिन"।  
 मुहाता—वि० सहन योग्य।

मुहाना—वि० अ० शोभा देना। सुन्दर लाना। अच्छा लगना। भला मालूम होना।  
 वि० दे० "मुहावना"।  
 मुहाया\*—वि० दे० "मुहायना"।  
 मुहारी†—मज्ञा स्त्री० पूरी नामक पक्वान।  
 मुहाल—सज्ञा पु० एक प्रकार का नमकीन पक्वान।  
 मुहाव\*—वि० दे० "मुहावना"।  
 सज्ञा पु० सुदर हाथ। अच्छे हाथ भाव।  
 मुहावता, मुहावन\*—वि० दे० 'मुहावना'।  
 मुहावना—वि० [स्त्री० मुहावनी] बहुत अच्छा लगनेवाला। सुदर।  
 कि० अ० दे० "मुहाना"।  
 मुहास—वि० [स्त्री० मुहासा] सुदर या मनुर मुनकानवाला।  
 मुहासी—वि० [स्त्री० मुहासिनी] मनुर मुनकानवाला।  
 मुहल, मुहल—सज्ञा पु० [भाव० मुहल] १ अच्छे हृदयवाला। २ मिन। दोस्त।  
 मुहेल—सज्ञा पु० [अ०] एक चमकीला तारा, जिसका उदय शुभ माना जाता है।  
 मुहेलरा\*†—वि० दे० "मुहेल"।  
 मुहेला—वि० १ मुहावना। सुदर। २ सुख दावन।  
 मज्ञा पु० १ मंगल गीत। २ स्तुति।  
 सू\*†—अव्य० करण और अपादान कारका का चिह्न। सा। से। (वचनापा)  
 सूपना—कि० सं० १ नाच से गंध या महक का अनुभव करना। बास लेना। २ बहुत कम भोजन करना। (अव्य०) ३ (संयका) काटना।  
 मुहा—सिर सूपना=बड़ों का मंगल कामना के लिए छोटे का मस्तक सूपना।  
 सूपा—मज्ञा पु० १ केवल सूपक यह बतलाने वाला कि अनुक स्थान पर जमीन के अंदर पानी या खजाना है। २ जासूस। भेदिना।  
 सूड—सज्ञा स्त्री० हाथी की लंबी नाक, जो लाना जमान तक लटवती है। घुड़।  
 सूडी—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का सकर फोडा, जो पोथी की हाति पहनाता है।

सूक्ष्म-सज्ञा स्त्री० शिशुमार। पानी का एक प्रसिद्ध जन्तु।

सूक्ष्म\*—अव्य० सम्मुख। सामने।

सूक्ष्म-सज्ञा पु० [स्त्री० सूक्ष्मी] १. सूकर।

२. एक प्रसिद्ध जानवर, जो दो प्रकार का होता है—जंगली और पालतू। ३. एक प्रकार की गाली (डाँट-कटकार के समय)।

सूक्ष्मा—सज्ञा पु० १. बड़ी सूई। सूजा। २. सुगा। तोता।

सूई—सज्ञा स्त्री० १. कपड़े सीने का एक बहुत छोटा पतला उपकरण जिसके छेद में धागा डालकर सीते हैं। २. वह तार या काँटा, जिससे अक, दिशा, समय या परिमाण आदि कोई बात सूचित हो। जंने-बड़ी की सूई। ३. छोटा पतला अंकुर।

सूक्ष्म—सज्ञा पु० १. दे० "शुक्"। २. दे० "शुक्" (नक्षत्र)।

सूक्ष्मा—क्रि० अ० दे० "सूक्ष्म"।

सूकर—सज्ञा पु० सूजर।

सूकरक्षेत्र—सज्ञा पु० उत्तर-प्रदेश के एटा जिले में सोर्गे-नामक स्थान।

सूकर-खेत—सज्ञा पु० दे० "सूकरक्षेत्र"।

सूकरी—सज्ञा स्त्री० सूजर की मादा।

सूकार्—सज्ञा पु० चवन्नी। चार आने के मूल्य का सिक्का।

सूक्त—सज्ञा पु० वेद-मन्त्रों या ऋचाओं का समूह। उत्तम कथन।

वि० भली भाँति कहा हुआ।

सूक्ति—सज्ञा स्त्री० उत्तम उक्ति या कथन। सुंदर पद या वाक्य आदि।

सूक्ष्म-वि० [स्त्री० सूक्ष्मा, सज्ञा सूक्ष्मता]

१. बहुत ही छोटा। २. बारीक। महीन। ३. पतला। ४. दुर्बल।

मज्ञा पु० परमाणु। परब्रह्म। लिंग-शरीर। एक काव्यात्मक र, जिसमें मनोवृत्ति को सूक्ष्म चेतना से प्रकट करने का वर्णन होता है।

सूक्ष्मदर्शक-यंत्र—सज्ञा पु० एक यंत्र, जिससे देखने पर छोटी से छोटी चीजें भी बड़ी दिखाई देती हैं। सूक्ष्मीन।

सूक्ष्मवर्तित—सज्ञा स्त्री० सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।

सूक्ष्मदर्शी—वि० बारीक बात-का समझनेवाला। कुशाग्रबुद्धि।

सूक्ष्मबुद्धि—सज्ञा स्त्री० बहुत ही आसानी से समझ या देख लेनेवाला।

सज्ञा पु० दे० "सूक्ष्मदर्शी"।

सूक्ष्म शरीर—सज्ञा पु० पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, और मन तथा बुद्धि, इन सनह तत्वों का समूह या इनके योग से बना हुआ कल्पित शरीर, जो मृत्यु के बाद भी बना रहनेवाला माना जाता है।

लिंग-शरीर।

सूक्ष्म\*—वि० दे० "सूक्ष्मा"।

सूक्ष्मा—क्रि० अ० १. जल का न रहना या कम हो जाना। २. नमी या तरी का निकल जाना। रसहीन होना। ३. उदास होना।

तेज नष्ट होना। ४. नष्ट या बरबाद होना। ५. डरना। सन्न होना। ६. दुबला होना।

सूक्ष्मा—वि० [स्त्री० सूक्ष्मी] १. जितने पानी न हो। जिसकी नमी दूर हो गई हो। २. उदास। तेजरहित। ३. हृदयहीन। कठोर।

४. कोरा। ५. केवल। निरा।

सज्ञा पु० १. पानी न भरना। अनावृष्टि। २. नदी का किनारा, जहाँ पानी न हो।

३. ऐसा स्थान, जहाँ जल न हो। ४. सूखा हुआ तवाकू का पत्ता। ५. एक प्रकार की खाँसी। हड्डा-डड्डा। ६. दे० "सूखड़ा"।

मुहा०—सूखा जवाब देना—साफ़ इनकार करना।

सूक्ष्म\*—वि० दे० "सूक्ष्म"।

सूक्ष्म-वि० [स्त्री० सूक्ष्मा] सूक्ष्मा देने-वाला। बतानेवाला। बोधक। प्रकट करने-वाला।

सज्ञा पु० १ सूची। सूई। २. सीनेवाला। दर्जी। ३. नाटककार। ४. सूत्रधार। ५. चुंगलखोर।

सूक्ष्मा—सज्ञा स्त्री० १. सूजर। सवादा। वह बात, जो किसी को बताने या सावधान करने के लिए कही जाय। विनम्रि। (अत्रे०—नाटिक)। २. किसी के विषय कोई कार्यवाई करने से पहले उसे दी गई सूचना। ३. अदालत-द्वारा कोई कार्यवाई करने से पहले किसी



किसी की मृत्यु या जन्म होने के कारण सूतक (अशौच) लगा हो।

सूतधार-सज्ञा पु० दे० "सूतधार।"

सूतना-नि० अ० दे० "सोना।" शयन करना।

सूतपुत्र-सज्ञा पु० १ सारथि। सूर्य-पुत्र। २ कर्ण।

सूता-सज्ञा पु० तंतु। सूत।

सज्ञा स्त्री० प्रसूता।

सूति-सज्ञा स्त्री० १ जन्म। २ प्रसव।

३ उद्गम। उत्पत्ति का स्थान।

सूतिका-सज्ञा स्त्री० जन्मा। वह स्त्री, जिस अभी हाल में बच्चा हुआ हो।

सूतिकागार, सूतिकागृह-सज्ञा पु० वह कमरा या घर, जिसमें स्त्री के बच्चा उत्पन्न हुआ हो।

सूतो-वि० सूत का बना हुआ।

\*सज्ञा स्त्री० सोपी।

सूतोघर-सज्ञा पु० दे० 'सूतिकागार'।

सूत-सज्ञा पु० १ तारा। सूत। डोरा। २ यज्ञोपवीत। जनक। ३ नियम। व्यवस्था। ४ थोड़े शब्दा में कहा हुआ ऐसा पद या वचन, जो बहुत अर्थ प्रकट करे। ५ पता। सुराग। ६ रेखा। तकीर। ७ कश्मीरी।

सूतकार-सज्ञा पु० १ सूत्रो (गूढ़ अर्थवाले थोड़े से शब्दा में कहे हुए पदों) की रचना करनेवाला। सूत्र-रचयिता। २ बड़ई। ३ जुलाहा।

सूतकर्म-सज्ञा पु० बड़ई या राजगीर का काम।

सूतप्रश्न-सज्ञा पु० वह प्रश्न, जो सूत्रों में हो। जैसे—सांख्यनूय।

सूतघर, सूतघार-सज्ञा पु० १ नाट्यशाला का व्यवस्थापन या प्रशान नट। २ बड़ई। तर्कशील पर नक्काशी करनेवाला। ३ पुराणानुसार एक प्राचीन वंश-संकर जाति।

सूतपात-सज्ञा पु० प्रारंभ होना। नींव पड़ना।

सूतपिटक-सज्ञा पु० थोड़े सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह।

सूतात्मा-सज्ञा पु० आत्मा।

सूतन-सज्ञा स्त्री० पायजामा। मुथना।

सूतनी-सज्ञा स्त्री० १ एक प्रकार २ पायजामा। मुथना।

सूत-सज्ञा पु० [फा०] १ उधार।

बदले में मिलनेवाला मूल से भिन्न धन

२ व्याज। वृद्धि। ३ लाभ। फायदा।

मुहा०—सूद दर सूद=व्याज का भी व्याज चक्रवृद्धि।

सूदखोर-वि० [सज्ञा सूदखोरी] बहुत सूद लेनेवाला।

सूदन-वि० नाश करनेवाला।

सज्ञा पु० १ जान से मार डालना। हत्या। बध। २ धमीकरण। ३ फटने की क्रिया।

सूदना-कि० सं० नाश करना।

सूदी-वि० व्याज पर दिया गया धन या रकम।

सूध\*-वि० १ दे० "सीधा"। २ दे० "शुद्ध"।

सूधना\*-वि० अ० सिद्ध होना। सत्य होना।

सूधरा-वि० दे० 'सूधा'।

सूधर्ष-कि० वि० सीध से।

सून-सज्ञा पु० १ प्रसव। जनन। २ पुत्र। बेटा। ३ कली। ४ फूल। ५ फल।

\*सज्ञा पु० वि० दे० 'शून्य'।

सूना-वि० [स्त्री० सूना] जहाँ कोई न हो। निजन। सुनसान।

सज्ञा पु० एकांत। निजन स्थान।

सज्ञा स्त्री० १ पुत्री। बटी। २ गृहस्थ के पहाँ ऐसा स्थान या बूल्हा, कक्की आदि चीज, जिनसे जीव-हिता की सभावना रहती है। ३ हत्या। ४ कसाईखाना।

सूनापन-सज्ञा पु० १ नूना होने का भाव। २ सघटा।

सूनु-सज्ञा पु० १ भूय। २ पुत्र। सतान। ३ छाटा भाई। ४ नाती। दाहिन।

सूप-सज्ञा पु० १ रसोइया। २ पकी हुई दाल या उसका रस। ३ रसदार तरकारी। ४ बाण। ५ अनाज फटने का एक उपकरण, जो तिरकी या बीस का बनता है। छाज।

सूपक-सज्ञा पु० रसाइया।

सूपकार-सज्ञा पु० रसाइया।

सूपनसा-सज्ञा स्त्री० दे० 'सूपनसा'।



रोशनी मिलती है। भानु। आफ-ताव। २. बारह की सख्या।

सूर्यकांत-सज्ञा पु० १. एक मणि। २. एक प्रकार का बिल्लौर। ३. सूरजमुखी शीशा। बातशी शीशा।

सूर्यग्रहण-मज्ञा पु० सूर्य का ग्रहण या चंद्रमा की छाया में जाना। (पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के आ जाने और उसकी छाया पड़ने से सूर्य-ग्रहण होता है।)

सूर्यतनय-मज्ञा पु० दे० "सूर्यपुत्र"।

सूर्यतनया-सज्ञा स्त्री० यमुना।

सूर्यतापिनी-सज्ञा स्त्री० एक उपनिषद्।

सूर्यपुत्र-सज्ञा पु० १. शनि। २. यम। ३. वरुण।

४. सूर्योव। ५. कर्ण। ६. अश्विनो कुमार।

सूर्यपुत्री-सज्ञा स्त्री० १. यमुना। २. विद्युत्। बिजली। (व०)

सूर्यप्रभ-वि० सूर्य के समान प्रकाशमान।

सूर्यमणि-मज्ञा पु० "सूर्यकांत मणि"।

सूर्यमुखी-सज्ञा पु० दे० सूरजमुखी।

सूर्यलोक-सज्ञा पु० सूर्य का लोक। कहते हैं कि यद्दम भरनेवाले इसी लोक में जाते हैं।

सूर्यवंश-सज्ञा पु० शत्रियों के दो भावि और प्रधान कुलों में से एक, जिसका आरम्भ इक्बाकु से माना जाता है।

सूर्यवंशी-वि० जो सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ। सूर्यवंश का।

सूर्यसंक्रांति-मज्ञा स्त्री० सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश।

सूर्यसुत-सज्ञा पु० दे० "सूर्यपुत्र"।

सूर्या-मज्ञा स्त्री० सूर्य की पत्नी सज्ञा।

सूर्यवृत्त-सज्ञा पु० १. इलहूल का पोषा। २. एक प्रकार की सिर की पीड़ा। आभा-सीसी।

सूर्यास्त-सज्ञा पु० १. सूर्य का छिपना या डूबना। २. सायंका। शाम।

सूर्योदय-सज्ञा पु० १. सूर्य का उदय या निकलना। २. प्रातराल। सुबेरा।

सूर्योपासक-सज्ञा पु० सूर्यपूजक। सौर। सूर्य की उपासना करनेवाला।

सूर्योपासना-सज्ञा स्त्री० सूर्य की आराधना या पूजा।

सूलना-क्रि० सं० १. भाले या किसी नुकीली चीज से छेदना। २. पीड़ा देना। बष्ट या दुख पहुँचाना।

क्रि० अ० १. भाले या किसी नुकीली चीज से छेदना। २. पीड़ित होना। दुखी होना।

सूली-सज्ञा स्त्री० १. फाँसी। २. प्राणदण्ड देने की एक प्राचीन प्रथा, जिसमें दंडित मनुष्य लोहे के एक नुकीले डंडे पर बैठा या लटका दिया जाता था और उसे मृगरे से पीटा जाता था। ३. प्राणदण्ड देने का नुकीला डंडा या इसी प्रकार का कोई और उपकरण।

\*सज्ञा पु० महादेव। शिव।

सूचना \*†-क्रि० अ० बहना।

सूत-सज्ञा पु० सूँत, एक बड़ा जलजन्तु।

सूति \*†-सज्ञा पु० दे० "सूँत"।

सूहा-सज्ञा पु० १. एक प्रकार का लाल रंग। २. एक सकर रंग।

वि० लाल रंग का। लाल।

सूही-वि० स्त्री० दे० "सूहा"।

सूजय-सज्ञा पु० १. मनु के एक पुत्र का नाम। २. एक वंश, जिसमें धृष्टद्युम्न हुए थे।

सूक्ष्-सज्ञा पु० १. सूल। भाला। २. हवा। ३. वाण। \*४. माला। हार।

सूक्ष्-सज्ञा पु० दे० "सूक्ष्"।

सूक्ष्मिनी \*†-सज्ञा स्त्री० दे० "सूक्ष्मिणी"।

सूजक \*-सज्ञा पु० सृष्टि करनेवाला। रचने या बनानेवाला। सजक।

सूजन \*-सज्ञा पु० सृष्टि करने की क्रिया।

रचना या बनाना। निर्माण। सृष्टि।

सूजनहार \*-सज्ञा पु० सृष्टि या ससार की रचना करनेवाला। सृष्टिकर्ता। रत्ना।

सूजना \*-क्रि० सं० सृष्टि करना। रचना या निर्माण करना। बनाना।

सूत-वि० चला हुआ। चिमटा हुआ।

सूति-सज्ञा स्त्री० १. चलना। २. सरचना। चिमटना। ३. पथ। रास्ता।

सूष्ट-वि० १. रचा हुआ। बनाया हुआ। जिसकी सृष्टि हा गई है। २. छोटा हुआ। रचस्व। ३. मुक्त।

सृष्टि-सज्ञा स्त्री० १. रचना। निर्माण।

बनावट। २. उत्पत्ति। जन्म। ३. ससार की उत्पत्ति। दुनिया की पैदाइश। ४. मसार। दुनिया। निमग्न। प्रकृति।  
**सृष्टिकर्ता-सज्ञा पु०** १. ससार की रचना करनेवाला। दुनिया बनानेवाला। ब्रह्मा। २. ईश्वर।  
**सृष्टिविज्ञान-मज्ञा पु०** यह शास्त्र, जिसमें सृष्टि की उत्पत्ति, रचना और विकास आदि पर विचार हो।  
**सैंक-सज्ञा स्त्री०** सैंकने की क्रिया या भाव। ताप या गर्मी।  
**सैंकना-क्रि० स०** १. आंच के द्वारा गरमी पहुंचाना। २. आंच के पास या बाग पर रखकर गरम करना या भूना।  
**मुहा०-आँख सैंकना=सुंदर रूप देखना। धूप सैंकना=धूप में रहकर शरीर में गरमी पहुंचाना।**  
**सैगर-सज्ञा पु०** १. क्षत्रियों की एक शाख। २. एक पोधा, जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। ३. एक प्रकार का अगहनी घान।  
**सैट-सज्ञा पु० [अप्रे०]** सुगंध। खुशबू। इत्र। पश्चिमी डग से बनाया हुआ सुगंधित द्रव्य।  
**सैटर-सज्ञा पु० [अप्रे०]** केन्द्र। मध्यबिन्दु।  
**सैटल-वि० [अप्रे०]** १. केन्द्रीय। मध्य का। २. मुख्य। जैसे सैटल गवर्नमेंट=केन्द्रीय सरकार (भारत-सरकार)।  
**सैत-सज्ञा स्त्री०** १. मुपत। बिना दाम का। २. पास का कुछ न लगना। कुछ खर्च न होना। \*१३ बहुत। ढेर का ढेर। व्यर्थ। फजूल।  
**मुहा०-सैत का=जिसमें कुछ दाम न लगा हो। मुपत का।**  
**सैतना-क्रि० स०** दे० "सैतना"।  
**सैत-भैत-क्रि० वि०** १. बिना दाम दिये। मुफ्त में। २. व्यर्थ। झूठ-झूठ में।  
**सैति, सैती-क्रि० स०** दे० "सैत"।  
**प्रत्य०** पुरानी हिंदी की करण और अपादान की विभक्ति।  
**सैथी-सज्ञा स्त्री०** बरछी। भाला।  
**सैडुर-क्रि० स०** दे० "सिन्दूर"।  
**मुहा०-सैडुर बगना=स्त्री का विवाह**

होना। सैडुर देना=विवाह के समय पति या पत्नी की माँग भरना।  
**सैडुरिया-सज्ञा पु०** एक सदाबहार पोधा, जिसमें लाल फूल लगते हैं।  
**वि०** मिट्टर के रंग का। खूब लाल।  
**सैडुरी-सज्ञा स्त्री०** लाल गाय।  
**सैडुरि-वि०** जिसमें सैडुरिया हो। इन्द्रियोवाला। जीव।  
**सैध-सज्ञा स्त्री०** चोरी करने के लिए दीवार में किया हुआ बड़ा छेद। नकद। गुरज।  
**सैधना-क्रि० स०** सैध या नकद लगाना।  
**सैधा-सज्ञा पु०** एक प्रकार का खनिज नमक।  
**सैधव। लाहरी नमक।**  
**सैधिया-वि०** दीवार में सैध लगाकर चोरी करनेवाला।  
**सज्ञा पु०** दे० "सिधिया"।  
**सैवई-सज्ञा स्त्री०** मंदे के सुलाए हुए, मूत की तरह पतले लड्डे, जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं।  
**सैबर-क्रि० स०** दे० "सेमल"।  
**सैसर-सज्ञा पु० [अप्रे०]** १. समाचार-पत्र, पुस्तकें आदि प्रकाशित होने या सिनेमा आदि दिखाए जाने के पहले सरकार-द्वारा उनकी जाँच या जाँच करने का अधिकार। २. इस तरह की जाँच करनेवाला अधिकारी।  
**सैड्ड-सज्ञा पु०** एक छोटा पेड़, जिसकी गाँठों पर से डंडे की तरह डठल निकलते हैं। इसका दूध जहरीला होता है और दवा के काम में आता है। "शूहर"।  
**से-प्रत्य०** करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पचमी की विभक्ति।  
**वि०** [सा का बहुवचन] समान। समान।  
**\*सर्व०** 'सो' (वह) का बहुवचन। वे।  
**सेड-क्रि० स०** दे० "सेव"।  
**सेकंड-सज्ञा पु० [अप्रे०]** १. द्वितीय। दूसरा। २. एक निमिट का साठवाँ भाग। ३. किसी बात का समयन।  
**सेकंडरी-वि० [अप्रे०]** १. माध्यमिक। २. दूसरे क्रम का। ३. अप्रधान।  
**सेकंडरी एज्युकेशन-सज्ञा स्त्री० [अप्रे०]** माध्यमिक शिक्षा।

सेकेंड हंड-वि० [अग्रे०] १ दूसरे की इस्तेमाल की हुई। पुरानी। २ घड़ी की छोटी सुई।

सेक्रेटरी-सज्ञा पु० [अग्रे०] मंत्री। सचिव।  
सेक-सज्ञा पु० १ सिचाई। २ पानी छिड़कना। छिड़काव।

सेगा-सज्ञा पु० [अ०] १ विषय। २ विभाग। महकमा।

सेचक-वि० सोचनेवाला।

सेचन-सज्ञा पु० [वि० सेचनीय, सेचित, नेच्य] १ पानी से सीचना। सिचाई। २ छिड़काव। ३. दे० अभिषेक।

सेज-सज्ञा स्त्री० शय्या। पलंग।

सेनपाल-सज्ञा पु० राजा की सेज पर पहरा देनेवाला। शयनागार-रक्षक।

सेजरिया\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'सेज'

सेव्या\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'शय्या'।

सेतना-कि० अ० दूर होना।

सेदना\*—कि० अ० १ समझना। मानना। २ अपने को बड़ा समझना। महत्व स्वीकार करना।

सेठ-सज्ञा पु० [म्त्री० सेठानी] १ बड़ा साहू-कार। महाजन। धनी। २ बड़ा या थोका व्यापारी। ३ खनियों की एक अल्ल।

सेत\*—सज्ञा पु० १ दे० 'सेतु'। २ दे० 'स्वेत'।

सेतुवृत्ति\*—सज्ञा पु० दे० 'स्वेतवृत्ति'।

सेतवाह\*—सज्ञा पु० १ चंद्रमा। २ अर्जुन।

सेतिका-सज्ञा स्त्री० अयाध्या।

सेतु-सज्ञा पु० १ नदी आदि पार करने का पुल। २ पानी रोकने का बांध। घुस्स। ३ बंध। डौड। ४ सीमा। हृद-अक्षर। ५. निषम या व्यवस्था। ६ मर्यादा। ७. व्याख्या। अर्थ स्पष्ट करनेवाली टीका। ८ प्रणव। आकार (आम्)। -

सेतुक-सज्ञा पु० पुल। बांध

सेतुबन्ध-सज्ञा पु० १ पुल की बंधाई या बांध बनाने का काम। २ वह पुल, जालका पर पड़ाई के समय रामचंद्रजी ने समुद्र पर बंधवाया था।

सेर\*—सज्ञा पु० दे० 'स्वेद'।

सेरज\*—वि० दे० 'स्वेदज'।

सेन-पज्ञा पु० १ शरीर। २ जीव। ३. श्वेत। वाज पक्षी।

\*सज्ञा स्त्री० दे० 'सेना'।

सेनजित्-वि० सेना को जीतनेवाला।

सज्ञा पु० श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम।

सेनप, सेनपति\*—सज्ञा पु० दे० 'सेनापति'।

सेन-वंश-सज्ञा पु० बंगाल-प्रदेश का एक हिंदू राजवंश, जिसने ११वीं शताब्दी से १४वीं शताब्दी तक शासन किया था।

सेना-सज्ञा स्त्री० १. फौज। २ युद्ध की शिक्षा पाए हुए और अस्त्र शस्त्र से सजे हुए सिपाहियों का बड़ा समूह। ३ भाला। बरछी। ४ इद्र का वज्र। ५ इद्राणी।

कि० सं० १ सेवा करना। खिदमत करना।

२ पूजना। आराधना करना। ३ नियम-

पूर्वक व्यवहार करना। ४ पडा रहना।

निरंतर वास करना। ५ लिये बैठे रहना।

दूर न करना। (व्यग में—वेकार लिये बैठे रहना।) ६ पालना-पोसना। अडा

पोसना। ७ मादा विडियों का गरमी

पहुँचाने के लिए अपने अडा पर बैठना।

सेनाग्र-सज्ञा पु० सेना-का अग्र भाग या फौज का अगला हिस्सा।

सेनाजीवी-सज्ञा पु० १ सेना में काम करके निर्वाह करनेवाला। २ सैनिक या सिपाही।

सेनावार-सज्ञा पु० दे० 'सेनानायक'।

सेनाध्यक्ष-सज्ञा पु० सेनापति।

सेनानायक-सज्ञा पु० सेनापति। सेना का एक - अधिकारी। फौजदार।

सेनानी-सज्ञा पु० १ सेनापति। २ कात्तिकेय। ३ एक रत्न का नाम।

सेना-न्यायालय-सज्ञा पु० फौजी अदालत। दे० 'सैनिक न्यायालय'।

सेनापति-सज्ञा पु० १ सेना का प्रधान अधि-कारी। फौज का सबसे बड़ा अफसर।

मिपहसालार। २ हिन्दो के रीतिनाल के एक प्रसिद्ध कवि। ३ कात्तिकेय। ४ पिय।

सेनापतित्व, सेनापत्य-सज्ञा पु० सेनापति का कार्य, पद या अधिकार।

सेनापाल-सज्ञा पु० दे० 'सेनापति'।

सेनामुख-सज्ञा पु० १. सेना का अगला भाग

३ फोज में सबसे आगे रहनेवाली टुकड़ी। प्राचीन समय में सेना का एक खंड, जिसमें ३ या ९ हाथी, ३ या ९ रथ, ९ या २७ घोड़े और १५ या ४५ पैदल होते थे।

सेनावास-सज्ञा पु० फोज के रहने की जगह। छावनी।

सेना-बाहुक-सज्ञा पु० सैनिकों को एक जगह से दूसरी जगह पर पहुँचानेवाला हवाई जहाज या समुद्री जहाज।

सेनाग्रह-सज्ञा पु० युद्ध में विभिन्न स्वानों पर सेना के भिन्न-भिन्न अंगों की नियुक्ति।

सेना\*-सज्ञा स्त्री० दे० "श्रेणो"।

सेनिका-सज्ञा स्त्री० दे० "श्वेनिका"।

सेनी-सज्ञा स्त्री०\* १ मादा बाज-पक्षी। २ पक्षि। कतार। ३ सीढ़ी। जीना। ४ [फ्रा० सोनी] तश्तरी।

सेकूटो पिन-सज्ञा स्त्री० [अधे०] बन्द नोक-वाली जालघोन।

सेब-सज्ञा पु० नाशपाती की तरह का एक फल और मझोले आकार का उसका पेड़।

सेब-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की फलों जिसकी तरकारी बनाने हैं।

सेमई\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सेमई"।

सेमल-सज्ञा पु० एक बहुत बड़ा पेड़, जिसमें बड़े लाल फूल लगते हैं और जिसके फलों में रस होती है।

सेमा-सज्ञा पु० एक तरह की बड़ी सेम।

सेमिटिक-सज्ञा पु० [अधे०] मनुष्यों का वह भाग या विभाग जिसमें यहूदी, अरब, शामी (सीरियन) और मिलो आदि जातियाँ हैं।

सेमीकोलन-[अधे०] अर्ध विराम चिह्न (,)।

सेर-सज्ञा पु० एक बोल उठाने या अस्सो बोलने की एक ताल।

सेरा-सज्ञा पु० १ चारपाई की वेपाटियाँ, जो मिट्टहाने की धार रहती हैं। २ दे० "सेरास" (सीरी हुई जनीन)।

सेराता\*-सज्ञा पु० १ ठंडा होना। २ तुष्ट होना। मन भर जाना। ३ मर जाना। ४ समाप्त होना। चुकना। ५ तय होना।

क्रि० ख० १ ठंडा करना। २ मूर्ति आदि को जल में प्रवाहित करना।

सेराव-वि० [फ्रा०] १ सिंचा हुआ। तरावर।

२ पानी से भरा हुआ।

सेल-सज्ञा पु० [स्त्री० सेली] १

बरछा। भाला। २ नित्री (अधे०)।

सेल्सदेवस-सज्ञा पु० [अधे०] विक्री-कर।

सेली जानेवाली चीजा पर लगनेवाला

सरकारी कर।

सेलखंडी-सज्ञा स्त्री० दे० "सलिया"।

सेलवा-क्रि० अ० मर जाना।

सेला-सज्ञा पु० [स्त्री० "सेली"] रेशमी

चादर। एक तरह का दुपट्टा।

सेलिपा-सज्ञा पु० घोड़े की एक जाति।

सेली-सज्ञा स्त्री० १ बछी। छोटा भाला।

२ छोटा दुपट्टा। ३ गाँती। ४ वह बछी

या भाला जिसे योगी सन्यासी आदि तिर में

लपेटते हैं। ५ एक गहना।

सेल्ला-सज्ञा पु० भाला। सेल।

सेल्ह-सज्ञा पु० दे० "सेल"।

सेल्हा\*-सज्ञा पु० दे० "सेला"।

सेवई-सज्ञा स्त्री० गुधे हुए मँदे के सूत के

तरह पतले लच्छे, जो दूध में पकाकर खा

जाते हैं।

सेवईर\*-सज्ञा पु० दे० "सेमल"।

सेब-सज्ञा पु० १ सूत की तरह पतला बेसन

का बना हुआ एक पकवान। २ दे० "सेब"।

\*सज्ञा स्त्री० दे० "सेवा"।

सेवक-सज्ञा पु० [स्त्री० सेविका, सेवकी,

सेवकनी सेवकिन, सेवकिनी] १ सेवा करने-

वाला। नौकर। दास। २ भक्त। उपासक।

३ सेवन करनेवाला। काम में लगानेवाला।

इस्तेमाल करनेवाला। ४ छोड़कर वही न

जानेवाला। पास करनेवाला।

सेवकाई-सज्ञा स्त्री० सेवा। सिद्धमल।

सेवक\*-सज्ञा पु० दे० "सेवक"।

सेवडा-सज्ञा पु० १ मँदे का एक प्रकार का

मोटा सेब या पकवान। २ जैन-साधुओं का

एक भेद।

सेवति\*-सज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

सेवती-सज्ञा स्त्री० सफेद गुलाब।

सेवन-सज्ञा पु० [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य,

सेवी] १. उपयोग। इस्तेमाल (विशेषकर

नियमित रूप से उपयोग) जैसे औषध का सेवन। २. सेवा। ३. पूजा। उपासना। ४. छोड़कर न जाना। किसी अच्छे स्थान पर लगातार रहना। जैसे—काशी-सेवन।

सेवनी—सत्ता स्त्री० दासी।

सेवनीय—वि० १. सेवन करने योग्य। काम में लाने लायक। उपयोग करने योग्य। २. पूजा के योग्य।

सेवर—सत्ता पु० दे० “शवर”।

सेवरा\*†—सत्ता पु० दे० “सेवडा”।

सेवरी\*†—सत्ता स्त्री० दे० “शवरी”।

सेवल—सत्ता पु० विवाह को एक रस्स।

सेवा—सत्ता स्त्री० १. खिदमत। टहल। दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया। परिचर्या। नौकरी। २. पूजा। ३. आश्रय। रक्षा। शरण। ४. किसी उपयोगी वस्तु, विषय, शरण, आदि में रुचि होने के कारण उसकी उत्पत्ति आदि के लिए किया जानेवाला कार्य—जैसे देश-सेवा, साहित्य-सेवा।

सेवा—टहल—सत्ता स्त्री० सेवा-शुभूषा। खिदमत। परिचर्या।

सेवाती\*—सत्ता स्त्री० दे० “स्याति”।

सेवाधारी—सत्ता पु० १. पुजारी। २. सिखों के गुरुद्वारे में रहकर वहाँ का प्रबंध करनेवाला अधिकारी।

सेवार, सेवाल—सत्ता स्त्री० पानी में फँलनेवाली एक तरह की घास।

सेवावृत्ति—सत्ता स्त्री० नौकरी। दासत्व। नौकरी की जोबिका।

सेवि—सत्ता पु० “सेवी” का वह रूप, जो समास में होता है।

\*वि० दे० “सेव्य”, “सेविन”।

सेविका—सत्ता स्त्री० दासी। नौकरानी। सेवा करनेवाली।

सेवित—वि० १. जिसकी सेवा की गई हो। २. पूजित। जिसकी पूजा की गई हो। ३. जिसका उपयोग या इस्तेमाल किया गया हो। उपयोग किया हुआ।

सेवी—वि० १. सेवा करनेवाला। पूजा करनेवाला। २. सेवन करनेवाला।

सेव्य—वि० [स्त्री० सेव्या] १ जो सेवा

करने के योग्य हो। २. जिसकी सेवा करनी हो या जिसकी सेवा की जाय। ३. पूजा के योग्य। सेवन करने योग्य। ४. काम में लाने लायक। रक्षा करने योग्य।

सत्ता पु० १. स्वामी। मालिक। २. पीपल का पेड़।

सेव्य-सेवक—सत्ता पु० मालिक और नौकर। स्वामी और सेवक।

यौ०—सेव्य-सेवक भाव=उपास्य देव को स्वामी या मालिक के रूप में और अपने को उनका दास समझना (भक्तिमार्ग में उपासना का एक भाव)।

सेशन—सत्ता पु० [शब्द] १ दौरा अदालत जिसमें फौजदारी के मुकदमों पर विचार होता है। २ कार्यशाला। ३ अधिवेशन। ४. न्यायालय या विधान-सभा की कुछ दिनों तक लगातार होनेवाली बैठक।

सेश्वर—वि० १ ईश्वर-सहित। २ जिनमें ईश्वर को सत्ता मानी गई हो। ३. अस्तिकता-सम्बन्धी।

सेष, सेस\*—सत्ता पु० दे० “सेप”।

सेस रंग\*—सत्ता पु० धुंफे रंग।

सेसर—सत्ता पु० १ ताम का एक खेल। २. जाल। ३. जालसाजी।

सेसरिया—वि० चालवाजी से दूसरी का माल मारनेवाला। जालिया।

सेहत—सत्ता स्त्री० [शब्द] १ स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती। २ सुख। चैन। ३ रोग से छुटकारा।

सेहतशान्ना—सत्ता पु० [शब्द] पालाने-पेयाव आदि की कोठरी।

सेहरा—सत्ता पु० १. मोर। २. विवाह के अवसर पर दूल्हे के यहाँ गए जानेवाले भागलिक गोब। ३. फूला की या तार और गाँठों की बनी मालाओं की पंक्ति, जो दूल्हे के मोर के नीचे रहती है। ४. विवाह का मुकुट।

मुहार—किसी के मिर सेहरा बंधना= किसी को श्रेय या दया मिलना।

सेही—सत्ता स्त्री० दे० “माही”।

सेहूँड\*†—सत्ता पु० पहर। एक छोटा बँटोला पेड़।

सेना-सना पु० एक प्रकार का चर्म-रोग।  
शरीर में गाल या अन्य स्थान पर सफेद,  
हाला या सविला दाग।

संडल-सना पु० [ अ० ] एक तरह का जूता  
या चप्पल। ऊंची एड़ी का चप्पल, जिसे  
प्रायः स्त्रियाँ पहनती हैं।

संज्ञा-वि० सं० १. सचित करना। बचाने  
रखना। इकट्ठा करना। २. सहेजना। संभाल-  
कर रखना। ३. समेटना। बटारना।

संज्ञा-सना स्त्री० बछी। छोटा भाला।

संघ-सना पु० १. संधा नमक। २. सिंध  
प्रदेश का निवासी। ३. सिंध का घोडा।  
वि० १. सिंध देश का। २. सिंधु या समुद्र-  
संघी।

संघ-सना स्त्री० सपूण जाति की एक  
रागिनी।

संघ-सना स्त्री० दे० "संघ"।

संघ-सना पु० दे० "संघ"।

संघ-सना-वि० वि० दे० "संघ"।

संघ-वि०, सना पु० सौ।

सना स्त्री० १. उत्तव। सार। २. बीज।  
शक्ति। ३. युद्ध।

संकडा-सना पु० सौ का समूह। एक सौ।

संकडा-वि० वि० प्रतिशत। फी सदी। प्रति  
सौ के हिसाब से।

संकडों-वि० बहु संख्यक। गिनती में बहुत।  
कई सौ।

संकट-वि० [ स्त्री० संकटी ] १. बलुआ।  
रेतीला। २. बालू का बना हुआ।

संकटा-सना पु० [ अ० ] हथियारों को साफ  
करने और उन पर सान चढ़ाने का काम।

संकटा-सना पु० [ अ० ] तलवार, छुरी  
अदि पर सान चढ़ानेवाला।

संघी-सना स्त्री० बरछी। छोटा भाला।

संघ-सना पु० दे० "संघ"।

संघातिक-वि० सिद्धांत-संघी। उत्तव-  
संघी।

सना पु० सिद्धांत जाननेवाला। विद्वान्।  
ताम्रिन्।

सैन-सना स्त्री० १. इशारा। संकेत। २.  
चिह्न। निशान। ३. दे० "सेना"।

\*सैन्य पु० १. दे० "सैन्य"। २. दे०  
"सैन्य"।

सैनभोग-सना पु० मदिरा में रात को भावान्  
के सोने के समय चढ़ाया जानेवाला नीम।

सेनापत्य-सना पु० सेनापति का पद या  
कार्य। सेनापतित्व।

वि० सेनापति-संबंधी।

सैनिक-सना पु० [ स्त्री० सैनिकी ] १.  
सिपाही। सेना या फौज का आदमी। २.  
सतरी।

वि० फौजी। सना-संबंधी।

सैनिक-न्यायालय-सना पु० फौजी अदालत।

सेना में होनेवाले अपराधों पर विचार  
और निगम करनेवाला विषय न्यायालय  
या अदालत। [ अ०-कोट माशुल ]।

सैनिका-सना स्त्री० एक छद्म।

सैनिकीकरण-सना पु० लोगो को सैनिक बनाने  
सैनिक सामग्री से सज्जित करने या सेना  
का बहुत विस्तार करने का काम।

सैनिकोपनिषद्-सना पु० [ अ० ] वह स्याम  
जहाँ लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए जाकर  
रहते हैं (विशेषकर शय के रोगियों के  
लिए)। स्वास्थ्य निवास।

सैनी-सना पु० हज्जाम।

\*सना स्त्री० दे० "सेन"।

सैन-सना पु० एक प्रकार का बूटेदार कपडा।  
नून।

सैन्य-वि० सना के योग्य। सेना में रहकर  
लड़ने योग्य।

सैन्य-सना पु० सेनापति।

सैन्य-वि० १. सेना-संबंधी। २. फौज का।

सना पु० १. सेना। फौज। २. सैनिक।  
सिपाही। ३. सेना का पड़ाव। सिविर।  
छावनी।

सैन्य-सना-सना पु० फौज को जरूरी हथि-  
यारों से तैयार करना।

सैन्याध्यक्ष-सना पु० सेनापति।

सैन्य-सना स्त्री० [ अ० ] तलवार।

सैनी-वि० [ अ० ] तिरछा। तलवार की तरफ  
तिरछा।

सैनिक-सना पु० सिद्धर।

संयद-सज्ञा पु० [अ०] १ मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश की उपाधि। इस वंश का आदमी। २. मुसलमानों के चार वर्गों में से एक वर्ग।

संयमी-सज्ञा पु० दे० "स्वामी"। पति।

संरंघ-सज्ञा पु० [स्त्री० संरंघी] १ घर का नोकर। सेवक। २ एक प्राचीन सकर जाति।

संरंघी-सज्ञा स्त्री० १ संरंघ नामक सकर जाति की स्त्री। २ अतपुर या जनाने में रहनेवाली दासी। ३ द्रौपदी (अज्ञातवास के समय का द्रौपदी का नाम)।

संर-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ मन बहलाने के लिए घूमना-फिरना। २ मोज। वहार। आनंद। ३ मित्र-मडली का कड़ी घगीचे आदि में खान-पान और आमोद प्रमोद। ४. मनोरंजन। तमाशा।

संर-सज्ञा स्त्री० दे० "संर"। [फा० संलाब] पानी की बाढ।

सज्ञा पु० दे० "शैल"।

संलानी-वि० [फा०] १ संर करनेवाला। मनमाना घूमनेवाला। २ मम्मोजी। जानदी

संलाब-सज्ञा पु० [फा०] बाढ बहिया।

संलाबी-वि० [फा०] १ बाढ आने पर बह जानेवाला। २ बाढवाला।

सज्ञा स्त्री० तगी। सील। सीड।

संहयो-सज्ञा स्त्री० छोटा भाला।

सो-प्रत्य० करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।

वि० दे० "सा"।

क्रि० वि० सग। साथ।

सर्व० दे० "सो"।

सज्ञा स्त्री० दे० "सोह"।

अव्य० दे० "सोह"।

सोचर नमक-सज्ञा पु० दे० "काला नमक"।

सोटा-सज्ञा पु० १ मोटा डडा। मोटी छड़ी। २ भौंग घोटने का उडा।

सोटा घरदार-सज्ञा पु० बल्लमदार। आसा-घरदार।

सोठ-सज्ञा स्त्री० सुखाया हुआ अदरक।

सोठोरा-सज्ञा पु० एक प्रकार का लड्डू,

जिसमें मेवों के सिवा सोठ भी पड़ती है। (प्रसूता स्त्री या जच्चा के लिए)

सोथ\*-अव्य० दे० "सोह"।

सोधा-वि० [स्त्री० सोधी] १ महकनेवाला।

सुगंधित। खुशबूदार। २ मिटटी के नए बरतन में पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध के समान।

सज्ञा पु० सुगंध। १ एक प्रकार का सुगंधित मसाला, जिससे स्त्रियाँ सिर के बाल धोती-हैं। २ एक सुगंधित मसाला, जो नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिए मिलाते हैं।

सोचनिया-सज्ञा पु० नाक में पहनने का एक गहना।

सोह\*-सज्ञा स्त्री० अव्य० दे० "सोह"।

सोही\*-अव्य० दे० "सोह"।

सो-सर्व० वह।

\*वि० दे० "सा"।

अव्य० अत। इसलिए।

सोहम्-वह अर्थात् ब्रह्म मैं ही हूँ (वेदान्त का सिद्धन्त)। उपनिषदों में यह वात "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" रूप में कही गई है।

सोअता\*-क्रि० अ० दे० "सोना"।

सोआ-सज्ञा पु० एक प्रकार का साग।

सोई-सर्व० दे० "वही"।

अव्य० दे० "सो"।

सोऊ\*-सर्व० वह भी।

वि० सोनेवाला।

सोकन-सज्ञा पु० दे० "सोखन"।

सोकना\*-क्रि० स० अकसोस करना। शोक करना।

सोफित\*-वि० शोकमुक्त।

सोषकन-सज्ञा पु० दे० "सोपान"।

सोखता-वि०, सज्ञा पु० दे० "सोस्ता"।

सोखनु-सज्ञा पु० एक प्रकार का जंगली धान।

सोपाना-क्रि० स० १. मुखा डालना। २.

शापण करना। चूस लेना।

सोस्ता-सज्ञा पु० [फा०] एक प्रकार का

खुरदुरा बागव, जो स्वाही सोन लेता है।

वि० जला हुआ।

सोप\*—सज्ञा पु० १ दे० "शोक"। २ किसी के मरने पर होनेवाला शोक या दुःख। मातम। सोगिनी\*—वि०, स्त्री० शोक या अकसोस करनेवाली।

सोगी—वि० [स्त्री० सोगिनी] शोक मनाने-वाला। शोक से दुखी, व्याकुल।

सोच—सज्ञा पु० १ सोचने की क्रिया या भाव। २ शोक। दुःख। ३ चिन्ता। फिक्र।

रज। अकसोस। ४ पछतावा।

सोचना—नि० अ० १ गौर करना। मन में विचार करना। २ चिन्ता करना। फिक्र करना। ३ खेद करना। दुःख करना।

सोच-विचार—सज्ञा पु० सोचने समझने की क्रिया या भाव। समझ-बूझ। गौर।

सोचाना—क्रि० स० किसी को सोचने या समझने में प्रवृत्त करना। दे० "सुचाना"।

सोज—सज्ञा स्त्री० १ सृजन। सौथ। २ दे० "सौज"।

सोखिश—सज्ञा स्त्री० [फा०] सृजन। शोध।

सोझ, सोझा—वि० [स्त्री० सोझी] १ सामने की ओर गया हुआ। २ सीधा। सरल स्वभाव का।

सोटा—सज्ञा पु० १ दे० "सोटा"। २ दे० "सुअटा"।

सोडर—वि० बेवकूफ। मूर्ख। भोड़।

सोत—सज्ञा पु० दे० "सोत" या "सोता"।

सोता—सज्ञा पु० १ कहीं से निकलकर बराबर बहनेवाली जल की छोटी धारा। २ क्षरणा। चश्मा।

सोति—सज्ञा स्त्री० १ दे० "सोता"। २ धारा। ३ दे० "स्वाति"।

सज्ञा पु० दे० "शोधिय"।

सोदर—सज्ञा पु० और वि० [स्त्री० सोदरा, सोदरी] दे० "सहोदर"।

सोप\*—सज्ञा पु० १ दे० "शोध"। खोज। सर्धोधन। २ दे० "सोप"। महल। प्रासाद।

सोपाना—क्रि० स० १ सोपान करना। धुंध करना। साफ करना। २ गलती या दोष दूर करना। ठीक या दुरुस्त करना। ३ खोजना। दूढ़ना। ४ निश्चित करना। निगम करना। ५ धातुओं का औपध रूप में

व्यवहार करने के लिए संस्कार। ६ ऋण चुकाना। अदा करना।

सोपाना—क्रि० स० सोपाने का नाम दूसरे से कराना।

सोन—सज्ञा पु० १ बिहार प्रान्त का एक प्रसिद्ध नदी, जो गंगा में मिला है। २ एक प्रकार का जलपक्षी।

वि० लाल। अरुण।

सोनकिरवा—सज्ञा पु० चमकील पखवाला एक कीड़ा।

सोनकीकर—सज्ञा पु० एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।

सोनकेला—सज्ञा पु० चपा केला। पीला केला।

सोनचिरी—सज्ञा स्त्री० नट-जाति की स्त्री। नटी।

सोनजब, सोनजूही—सज्ञा स्त्री० वह जूही, जिसके फूल पाले होते हैं। पीली जूही।

सोनभद्र—सज्ञा पु० दे० "सोन" (नदी)।

सोनहा—सज्ञा पु० कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जानवर।

सोनेहार—सज्ञा पु० एक प्रकार का समुद्री पक्षी।

सोना—सज्ञा पु० १ बढ़िया पीले रंग की एक प्रसिद्ध कीमती धातु, जिसके सिक्के और गहने बनते हैं। कचन। स्वर्ण। २ कोई बहुत सुन्दर और बहुमूल्य वस्तु।

नि० अ० १ नींद लेना। शयन करना। आँख लगना। २ शरीर के किसी अंग का सुप्त होना। ३ किसी बात पर ध्यान न देना या उदासीन होकर चुप रह जाना।

मुहा०—सोन का घर मिट्टी होना—सब कुछ नष्ट होना। सोने में सुगंध—किसी बहुत बढ़िया चीज में और अधिक विशेषता होना। सोते-जागते—हर समय।

सोनासेक—सज्ञा पु० गरु का एक भेद।

सोनापाठा—सज्ञा पु० एक ऊँचा पेड़, जिसकी छाल, फल और बीज औषध के काम में आते हैं।

सोनामवली—सज्ञा स्त्री० दे० "स्वणमाक्षिक"।

सोनी—सज्ञा पु० सुनार।

सोपत—सज्ञा पु० सुयीता। आराम।

सोपाधिक-वि० १. किसी प्रतिबन्ध या शर्त के साथ। २. किसी विशेष सोमा, मर्यादा आदि से बँधा हुआ।

पान-सज्ञा पु० सीडी। जीना।

पि-वि० १. वही। २. वह भी।

फिता-सज्ञा पु० १. रोग आदि में कुछ कमी होना। २. एकांत स्थान। सुनसान जगह।

फा-सज्ञा पु० [ शप्रे० ] एक तरह का गद्दे-दाग आसन (लम्बी गद्देदार कुर्सी)। कोच।  
बौ०-सोफासेट=गद्देदार कुर्सियों का समूह, जिसमें साधारणतः तीन कुर्तियाँ होती हैं। बीच में एक लम्बा सोफा और बगल में दो गद्देदार कुर्तियाँ।

फेफियाना-वि० १. सुफियों का। सूफी सबधी। २. देखने में सादा, पर बहुत भला लगनेवाला।

फोफी-सज्ञा पु० दे० "सूफी"।

फोन\*-सज्ञा स्त्री० दे० "शोभा"।

शोभना-क्रि० ज० शोभा देना। सोहना।

शोभाकारी-वि० सुंदर।

शोभार-क्रि० वि० उभार के साथ। उभार कर।

वि० जिसमें उभार हो। उभारदार।

सोम-सज्ञा पु० १. पुराने जमाने की एक लता, जिसका रस मादक होता था और वह वैदिककाल में पिया जाता था। २. चन्द्रमा। ३. सोमवार। ४. एक प्रकार की लता, जो वैदिक-काल के सोम से भिन्न है।

सोमयज्ञ। ५. वैदिक-काल के एक देवता।

६. कुवेर। ७. यम। ८. वायु। ९. अमृत।

१०. जल। ११. स्वर्ग। आकाश।

सोमकर-सज्ञा पु० चन्द्रमा की किरण।

सोमन-सज्ञा पु० दे० "सोमन"। एक प्रकार का पुराना हथियार।

सोमनाथ-सज्ञा पु० १. बारह ज्योतिर्लिंग म के एक शिवलिंग। चन्द्रमा के स्वामी शिवजी। २. काठियावाड़ के पश्चिमी तट पर स्थित एक प्रसिद्ध मन्दिर, जिसमें उक्त ज्योतिर्लिंग स्थापित है। सहभूद गजनवी आदि मुसलमान आक्रामकों ने इस मन्दिर पर कई बार

हमले किए। देश के स्वतंत्र होने के बाद इस मन्दिर का पुनर्निर्माण हुआ और ११ मई सन् १९५१ को राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने नवीन रूप में उसकी प्रतिष्ठा की।

सोमपान-सज्ञा पु० सोम-रस पीना।

सोमपायी-वि० [ स्त्री० सोमपायिनी ] सोम-रस पीनेवाला।

सोमप्रदोष-सज्ञा पु० सोमवार को किया जानेवाला एक व्रत।

सोमयाग-सज्ञा पु० तीन वर्ष पर किया जानेवाला एक प्राचीन यज्ञ, जिसमें सोम-रस पिया जाता था।

सोमयात्री-सज्ञा पु० सोमयाग (एक विशेष यज्ञ) करनेवाला।

सोमरस-सज्ञा पु० सोमलता का रस।

सोमराज-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

सोमराज्ञी-सज्ञा स्त्री० १. एक लता। बकुची। २. दो यमण का एक छन्द।

सोमवंश-सज्ञा पु० चन्द्रवंश (क्षत्रियों का)।

सोमवंशीय-वि० १. चन्द्रवंश में उत्पन्न। २. चन्द्रवंश-सबधी।

सोमवती अमावस्या-सज्ञा स्त्री० सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या, जो पुराणानुसार पुण्य-तिथि मानी जाती है।

सोमवल्लरी-सज्ञा स्त्री० १. सोमलता। ब्राह्मी। २. एक वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में रण, जगण, रण, जगण और रण होते हैं।

सोमवल्लो-सज्ञा स्त्री० दे० "मास" (सोम-लता)।

सोमवार-सज्ञा पु० जप्ताह में रविवार के बाद पड़नेवाला दिन, जो सोम अर्थात् चन्द्रमा का माना जाता है।

सोमवारी-सज्ञा स्त्री० दे० "सोमवती अमावस्या"।

वि० सोमवार-सबधी।

सोमसुत-सज्ञा पु० बृष (चन्द्रमा का पुत्र)।

सोमापती-सज्ञा स्त्री० चन्द्रमा की माता।

सोमास्त्र-सज्ञा पु० एक जन्म, जो चन्द्रमा का बना जाता है।

सोमेश्वर-सज्ञा पु० १ दे० "सोमनाथ"।

२ सगोत्र शास्त्र के एक आचार्य।

सोम\*-सर्व० यही। दे० 'स'।

सोर\*-सज्ञा स्त्री० पेड़ आदि की जड़। मूल।

सज्ञा पु० १ दे० "शोर"। हल्ला। २ प्रसिद्धि। नाम।

सोरठ-सज्ञा पु० १ सोराष्ट्र। २ गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम।

३ सोरठ देश की राजधानी, मूरत। ४ पाँच स्वरावाला एक राग।

सोरठा-सज्ञा पु० एक छन्द, जिसमें कुल ४८ मात्राएँ होती हैं—पहले और तीसरे चरण में, ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह तेरह मात्राएँ। दोहे को उलट देने से सोरठा हो जाता है।

सोरती-सज्ञा स्त्री० १ साड़। बुहारो। २ किसी के मरने से कुछ समय बाद किया जानेवाला मृतक-कर्म, जिसे 'निरावि' निया कहते हैं।

सोरह\*+वि०, सज्ञा पु० दे० "सोलह"।

सोरही-सज्ञा स्त्री० १ जूआ खेलने के लिए सोलह चिन्नी कोड़ियाँ। २ इन सोलह कोड़ियों से खेला जानवाला जूआ।

सोलकी-सज्ञा पु० क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश, जिसने गुजरात में बहुत दिना तक शासन किया था।

सोलह-वि० गिनती में दस से छः अधिक। सज्ञा पु० दस और छ की संख्या या अंक, जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।

मुहा०—सोलहो आन=पूरा पूरा। सम्पूर्ण। सब।

सोलह सिंगार-सज्ञा पु० दे० 'षोडश शृंगार'।

सोला-सज्ञा पु० एक प्रकार का ऊँचा झाड़, जिसकी डालियों के छिलके से अंगरेजी ढग के टोप बनते हैं।

सोल्लास-वि० वि० उल्लास, के साथ। आनन्द और उत्साह से। उत्साहपूर्वक

सोवज-सज्ञा पु० दे० 'सावज'।

सोयन\*+सज्ञा पु० सोने की क्रिया या नाव।

सोवना\*+वि० अ० दे० 'सोना'।

सोवरी-सज्ञा स्त्री० दे० "सीरी"।

सोवानी-वि० स० दे० "मुलाना"।

सोवियट, सोवियत-सज्ञा पु० [रूसी] १ रूस में मजदूरों या सैनिकों के प्रतिनिधियों की मभा। २ आधुनिक रूसी प्रजातन्त्र, जिसका संचालन इन सभाओं के प्रतिनिधियों करते हैं।

सोवेया\*+सज्ञा पु० सोनेवाला।

सोशलिज्म-सज्ञा पु० [अंग्रे०] दे० "समाजवाद"।

सोशलिस्ट-सज्ञा पु० [अंग्रे०] समाजवादी। समाजवाद के सिद्धान्त का अनुयायी।

सोय सोयु\*+वि० सोखनेवाला।

सोसन-सज्ञा पु० [फा० सोसन] १ फारस का पीर का एक प्रसिद्ध फूल का पौधा।

२ इस पौधे का फल।

सोसनी-वि० सासन के फूल के रंग का। लाली लिये नीला।

सोसाइटी, सोसायटी-सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] १ समाज। २ संमिति। सभा। ३ सग। साथ

सोस्मि\*+दे० "सोश्म"।

सोह, सोहग\*+दे० "सोश्म"।

सोह\*+वि० वि० दे० 'सोह'।

सोहगी-सज्ञा स्त्री० १ तिलक चढ़न के बाद की एक रस्म, जिसमें लड़कों के लिए कपड़, गहने आदि जाते हैं। २ सिद्ध, मेहदी आदि गुहाग की वस्तुएँ।

सोहन-वि० [स्त्री० सोहा] अच्छा लगनेवाला। सुहावना। सुंदर।

सज्ञा पु० १ सुंदर पुरुष। २ नायक।

सज्ञा स्त्री० एक तरह की बड़ी चिड़िया।

सोहन पपड़ी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मिठाई।

सोहन हलवा-सज्ञा पु० एक प्रकार की मिठाई।

सोहना-वि० अ० १ सोभा देना। सजना।

२ अच्छा लगना।

+वि० सुंदर। मनोहर।

सोहनी-वि० बहुत अच्छी लगनेवाली। सुंदर। सुहावनी।

सज्ञा स्त्री० झाड़।

सोहवत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ सग-साथ।

संगति। २ सगो।

सोहमस्मि-दे० "सोहम्"।  
 सोहर-सज्ञा पु० दे० "सोहला"।  
 सज्ञा स्त्री० सूतिकाग्रह। सोरी।  
 सोहराना-क्रि० स० दे० "सहलाना"।  
 सोहला-सज्ञा पु० १ घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियो द्वारा गाए जानेवाले गीत।  
 सोहर। २ मांगलिक गीत।  
 सोहाइन\*†-वि० दे० "सुहावना"।  
 सोहाय†-सज्ञा पु० दे० "सुहाय"।  
 सोहागिन, सोहागिल-सज्ञा स्त्री० दे० "सुहागिन"।  
 सोहाता-वि० [स्त्री० सोहाती] अच्छा लगने-वाला। सुहावना। शोभित। सुदर।  
 सोहाना-क्रि० अ० सुहाना। अच्छा लगना। शोभा देना। सुन्दर लगना।  
 सोहाया-वि० [स्त्री० सोहाई] शोभित। सुदर।  
 सोहारी-सज्ञा स्त्री० पूरी (पकवान)।  
 सोहावना-वि० दे० "सुहावना"।  
 क्रि० अ० दे० "सोहाना"।  
 सोहासित\*†-वि० १ अच्छा लगनेवाला। सुन्दर। शुभ। २ ठकुर-सोहाती। खुशामद।  
 सोहो†-क्रि० वि० दे० "सोह"।  
 सोहिनी-वि० सुहावनी।  
 सज्ञा स्त्री० कश्मिर रस की एक रागिनी।  
 सोहिल-सज्ञा पु० १ दे० "सुहेल"। २ अगस्त्य द्वारा।  
 सोहिला-सज्ञा पु० दे० "सोहला"।  
 सोही\*†-क्रि० वि० सम्मुख। सामने।  
 सोह\*†-वि० सम्मुख। सामने।  
 आगे।  
 सो\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सोह"।  
 अव्य०, प्रत्य०, दे० "सा" या "सा"।  
 सोकारा, सोकिरा-सज्ञा पु० सवेरा। सुबह।  
 सोगत-सज्ञा पु० १ 'सुगत' का अनुयायी। बौद्ध। २ ईश्वर को न माननेवाला। नास्तिक।  
 सोघा-वि० [सज्ञा स्त्री० सोघाई] १ महुंगा का उलटा। २ उचित। ठीक। ३ अच्छा।  
 ४. उत्तम।

सौचना†-क्रि० स० शौच करना। मल त्याग करना मलत्याग करने के बाद मल-द्वार में लगे हुए मल को जल से धोना।  
 सौचर-सज्ञा पु० दे० "सौचर नमक"।  
 सौचाना†-क्रि० स० १ शौच कराना। मल त्याग कराना। हगाना।  
 २ मल-त्याग के बाद किसी के मल-द्वार में लगे हुए मल को धोना।  
 सौज\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सौज"।  
 सौड़, सौड़ा†-सज्ञा पु० ओढ़ने का भारी कपड़ा।  
 सौतुल\*-सज्ञा पु० सम्मुख। सामने।  
 क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।  
 सौदन-सज्ञा स्त्री० १ आपस में मिलाने का काम। २ सौदने का काम। घोवियों का कपड़ों को धोने से पहले देह-मिले पानी में भिगोना।  
 सौदना-क्रि० स० १ आपस में मिलाना। सानना। २ मिट्टी आदि मिलाकर गून्दा करना।  
 सौदज, सौदज्य-सज्ञा पु० सुदस्ता। खूबसूरती। सुन्दर होने का भाव या गुण।  
 सौध\*-सज्ञा पु० दे० "सौध"।  
 सज्ञा स्त्री० सुगंध। सुशब्द।  
 सौधना-क्रि० स० सुगंधित करना।  
 सौधा-वि० १. दे० "साधा"। अच्छा लगने-वाला २ सचिकर। अच्छा।  
 सौनमक्खी-सज्ञा स्त्री० दे० "सोना मक्खी"।  
 सौपना-क्रि० स० सहेजना। सुपुर्द करना। हवाले करना।  
 सौफ-सज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा, जिसके बीज भसावे और दवा के काम में आते हैं।  
 सौफिया, सौफी-सज्ञा स्त्री० सौफ की बनी हुई सराव।  
 सौनरि-सज्ञा पु० दे० "सोनरि"।  
 सौर-सज्ञा स्त्री० दे० "सोरी"।  
 सौरई†-सज्ञा स्त्री० संध्यापन। ढाँवर।  
 सौरना\*-क्रि० स० स्मरण करना। याद करना।  
 क्रि० अ० दे० "सौनारना"।

सौह\*—सज्ञा स्त्री० सौगन्ध। शपथ। कसम।  
 सज्ञा पु० कि० वि० सम्मुख। सामने।  
 सौही—सज्ञा स्त्री० एक तरह का हथियार।  
 सी-वि० पचास का दूना। नब्बे और दस।  
 \*वि० दे० "सा"।

सज्ञा पु० सी की सम्या या श्व जो इस प्रकार  
 लिखा जाता है—१००।

मुहा०—सो बात की एक बात=साराश।  
 तात्पर्य। निबाड़।

सीक-सज्ञा स्त्री० सीत।

वि० एक सी।

सीकन—सज्ञा स्त्री० दे० "सीत"।

सौकर्य-सज्ञा पु० १ "सुकर" होने का भाव।

२ आसानी। ३ सुगमता। सुभीता।

सौकुमार्य-सज्ञा पु० १ सुकुमारता। काम  
 लता। नाजूकपन। २ यौवन। जवानी। ३  
 काव्य का एक गुण, जो साम्य और श्रुति-कटु  
 शब्दों का त्याग करने और सुंदर तथा कोमल  
 शब्दों का प्रयोग करने से उत्पन्न होता है।

सौख\*—सज्ञा पु० दे० "शौक"।

सौख्य-सज्ञा पु० १ सुख। आराम। २ सुख  
 का भाव।

सौगन्ध-सज्ञा स्त्री० सौगन्ध। कसम। शपथ।

सौगन्ध-सज्ञा स्त्री० शपथ। कसम। सौगन्ध।

सज्ञा पु० १ सुगन्ध। खुशबू। २ सुगन्धित तेल।

इन आदि का व्यापार करनेवाला। गधी।

सौगन्धिक-सज्ञा पु० १ सुगन्ध का अनुयायी।

बोद्ध। २ इसपर को न माननेवाला।

नास्तिक।

सौगात-सज्ञा स्त्री० [ तु० 'नोहफा' भेंट।

उपहार। किसी को उपहार देने के लिए

कही से लाई गई वस्तु।

सौगाती-वि० १ सौगातवाला। सौगात

संबंधी। २ सौगात या भेंट देने योग्य।

बहुत बढ़िया।

सौघाई-वि० कम दाम का। सस्ता।

सौज-सज्ञा स्त्री० सामग्री। साज-सामान।

उपकरण।

सौजना-कि० अ० दे० 'सजना'।

सौजन्य-सज्ञा पु० सज्जनता का भाव।

सुजनता। भलमनसाहूत।

सोजा-सज्ञा पु० वह पशु या पक्षी, जिसका  
 शिकार किया जाय।

सोत-सज्ञा स्त्री० किसी स्त्री के पति की

दूसरी स्त्रिया या प्रेमिका। सबन। सपत्नी।

मुहा०—मोतिया डह=दा सीता में डहने-

वाली डह या ईर्ष्या। द्वेष। जलन।

सोतन, सोतिन-सज्ञा स्त्री० दे० 'सोत'।

सोतुक, सोतुख\*-सज्ञा पु० दे० 'सोतुख'।

सोतेला-वि० [ स्त्री० सोतली ] १ सोत

से उत्पन्न। सोत का। २ जिसका स्वयं

सोत के रिश्ते से हो।

सौनामणी-सज्ञा स्त्री० इद्र को प्रसन्न करने

के लिए किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

सोदा-सज्ञा पु० [ अ० ] १ बचन या तरीके

का चीज। माल। २ ऐन देन। व्यवहार।

३ त्रय विनय। व्यापार। ४ [ फा० ] पाल

पन। उन्माद।

सोदाई-सज्ञा पु० दोबाना। पागल। बाबल।

सोदागर-सज्ञा पु० [ फा० ] ब्यापार या

तिजारत करनेवाला। व्यापारी। व्यवसायी।

सोदागरी-सज्ञा स्त्री० [ फा० ] व्यापार।

व्यवसाय। तिजारत। रोजगार।

सोदामनी, सोदामिनी-सज्ञा स्त्री० विद्युत्-  
 बिजली।

सौध-सज्ञा पु० १ ऊँचा और बड़ा मकान।

महल। २ चांदी। ३ दूधिया पत्थर।

सौधना-वि० स० दे० 'साधना'।

सौन\*-वि० वि० सम्मुख। सामने।

सौनन—सज्ञा स्त्री० दे० 'सौदन'।

सौबल-सज्ञा पु० गांधार देश के राजा सुबल

का पुत्र, समुद्रि।

सौभ-सज्ञा पु० १ कामचारिपुर। राजा

हरिश्चंद्र की वह कल्पित नगरी, जो आकाश

में माड़ी गई है। २ एक प्राचीन जनपद।

३ उत्तम जनपद के राजा।

सौभग-सज्ञा पु० १ सुवर्णरसती। सौभाग्य।

२ सुख। आनंद। ३ एश्वर्य। धन-बोलत।

४ सौंदर्य। सुवसुस्ती।

सौभद्र-सज्ञा पु० १ सुभद्रा का पुत्र, अभि-

मन्यु। २ सुभद्रा-हरण का युद्ध।

वि० सुभद्रा-संबंधी।

सौमित्रेय-सज्ञा पु० सुमित्रा का पुत्र अभिमन्यु।  
 सौभागिनी-सज्ञा स्त्री० सुहागिन। वह स्त्री जिसका पति जीवित हो।  
 सौभाग्य-सज्ञा पु० १. अच्छा भाग्य। खुश-किस्मती। २. कल्याण। कुशल। धर्म। ३. भुख। आनंद। ४. ऐश्वर्य। वैभव। ५. स्त्री के सधवा रहने की अवस्था। सुहाग। अहिवात। ६. सुदरता। सौंदर्य।  
 सौभाग्ययुक्ती-वि० सुहागिन। "वह स्त्री जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो (जिसका पति जीवित हो)। सधवा।  
 सौभाग्यवान्-वि० १. अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मती। २. सुखी और संपन्न।  
 सौमिश्र-सज्ञा पु० दे० "सुमिश्र"।  
 सोम\*-वि० दे० "सौम्य"।  
 सोमन-सज्ञा पु० एक तरह का बहुत पुराना हथियार।  
 सोमनस-वि० १. सुमनो का अर्थात् फूलों का। मनोहर। प्रिय। आनन्ददायक।  
 सज्ञा पु० १. प्रसन्नता। आनंद। २. पश्चिम दिशा का हाथी (पुराण)। ३. हथियारों को निष्फल कर देनेवाला एक बहुत पुराना हथियार।  
 सोमनस्य-सज्ञा पु० १. प्रसन्नता। प्रफुल्लता। २. प्रेम। ३. सौजन्य। भलमनसाहत। ४. सन्तोष।  
 सौमित्र-सज्ञा पु० १. सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २. मित्रता। दोस्ती।  
 सौमित्रा\*-सज्ञा स्त्री० दे० "सुमित्रा"।  
 सौम्य-वि० [स्त्री० सौम्या] १. शीतल और स्निग्ध। २. सुशील। शांत। ३. मार्गलिक। शुभ। ४. मनोहर। सुंदर। ५. सोमलता-संबंधी। ६. चंद्रमा-संबंधी।  
 सज्ञा पु० १. भलमनसत। सौजन्य। २. सोम यज्ञ। ३. चंद्रमा के पुत्र, बुध। ४. ब्राह्मण। ५. मार्गशीर्ष मास। अग्रहन। ६. साठ सब्जियों में से एक। ७. खन का वह रूप, जब वह लाल रंग का होन से पहले रहता है (सौरस)। ८. एक दिव्यास्त्र। (देव-ताओं का दिया या मन्त्रा-द्वारा चलनेवाला एक बहुत पुराना हथियार)।

सौम्यकृच्छ्र-सज्ञा पु० एक प्रकार का व्रत।  
 सौम्यदर्शन-वि० सुंदर। प्रियदर्शन (देखने में सुंदर)।  
 सौम्यविज्ञान-सज्ञा पु० वह विज्ञान, जिसमें धीपथ के काम के लिए जीवों के खून से सौम्य बनाने का विवेचन होता है।  
 सौम्या-सज्ञा स्त्री० आर्या-छंद का एक भेद।  
 सौर-वि० १. सूर्य-संबंधी। सूर्य का। २. सूर्य से उत्पन्न।  
 सज्ञा पु० १. शनि। २. सूर्य का उपासक। \*सज्ञा स्त्री० चादर। ओढना।  
 सौरजगत्-सज्ञा पु० सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले ग्रहों का समूह या वर्ग। पृथ्वी, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, यूरेनस आदि ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। इनके समूह को सौरजगत् कहते हैं। (अग्रे-सोलर सिस्टम)।  
 सौर दिवस-सज्ञा पु० एक मूषोदय से दूसरे मूषोदय तक का समय।  
 सौरभ-सज्ञा पु० [वि० सौरभित] १. सुगंध। खुशबू। महक। २. केसर।  
 सौरभक-सज्ञा पु० एक प्रकार का छन्द।  
 सौरभित-वि० जिसमें सौरभ हो। सुगंधित।  
 सौरभास-सज्ञा पु० एक सनाति से दूसरी सनाति तक का समय।  
 सौर वर्ष-सज्ञा पु० एक मेघ-सनाति से दूसरी मेघ सनाति तक का समय।  
 सौरस्य-सज्ञा पु० 'सुरस' या 'सरस' होने का भाव। सुरसता। सरसता।  
 सौराष्ट्र-सज्ञा पु० १. भारत का एक वर्तमान राज्य जिसे काठियावाड़ की छोटी बड़ी रियासतों को मिलाकर बनाया गया है और इसमें नवानगर, भावनगर, जूनागढ़, पौरवन्दर, मोरवी, गाडाल, राजकोट आदि ३० बड़ी और बहुत सी छोटी रियासतें सम्मिलित हैं। इसकी राजधानी राजकोट है। २. गुजरात काठियावाड़ का प्राचीन नाम। सौर देश। ३. इस प्रदेश का निवासी। ४. एक प्रकार का

सौराष्ट्र-मृत्तिका-मन्त्रा स्त्री० १ गोपी-चदन ।  
२ पीले रंग की मिट्टी, जो पवित्र मानी जाती है ।

सौराष्ट्र-सन्नापु० देवताशा का दिया हुआ या मन्त्रों-द्वारा चलाया जानेवाला एक प्राचीन अस्त्र । एक दिव्यास्त्र ।

सौरी-सन्ना स्त्री० १ वह कोठरी या कमरा, जिसमें स्त्री वच्चा प्रसव करती है । मृत्तिका, गृह । जन्माधान । २ एक प्रकार की मछली ।

सौर्य-वि० सूर्य-सवधी । सूर्य वा ।

सौवचल-सन्ना पु० साचर नमक ।

सौवर्ण-सन्ना पु० स्वर्ण । सोना ।

वि० स्वर्ण का । सोने का ।

सौवीर-सन्ना पु० १ सिन्धु नदी के आस-पास का प्राचीन प्रदेश । २ उक्त प्रदेश का निवासी या राजा ।

सौवीराजन-सन्ना पु० सुरमा ।

सौष्ठव-सन्ना पु० १ 'सुष्ठु' हान का भाव । सुडीलपन । २ उपयुक्तता । ३ सौंदर्य । ४ नाट्य का एक अंग ।

सौह-सन्ना स्त्री० बसम । सपय ।

क्रि० वि० सामने । आगे । सम्मुख ।

सौहाव-सन्ना पु० १ 'मुहूद' होने का भाव । सहानुभात । २ सज्जनता । ३ मित्रता ।

सौही-क्रि० वि० आगे । सामने ।

सौहृद-सन्ना पु० [स्त्री० सौहृद] १ मित्रता ।

दोस्ती । २ मित्र । दोस्त ।

स्कध-सन्ना पु० [वि० स्कधित] १ निकलना ।

बहना । २ गिरना । ३ नाश । ४ शरीर । देह ।

५ बालकों के नी प्राणघातक ग्रहा या रोगों में से एक । ६ कार्तिकेय, जो शिव के पुत्र, देवताजा के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं । ७ शिव ।

स्कधन-सन्ना पु० १ निकलना । बहना ।

गिरना । २ पैट साफ होना । रेचन ।

स्कधपुराण-सन्ना पु० अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण ।

स्कध-सन्ना पु० १ मोड़ा । कथा । २ पैट के लने का वह भाग, जहाँ से डालिया निकलती है । दड । कांड । ३ डाल । ४ समूह ।

जुड । ५ ग्रय का विभाग, जिसमें कोई पूरा

प्रसंग हो । खंड । ६ शरीर । देह । ७ मुनि ।

८ आचार्य । ९ राजा । १० सेना वा धग ।

व्यूह । ११ युद्ध । सयाम । १२ आर्या-छंद

का एक भेद । १३ गोदाम । भंडार । वह

स्थान, जहाँ देखने या इस्तेमाल की जाने-

वाली बहुत-सी चीजें जमा हा । १४

बोझों के अनुसार रूप, वेदना, विज्ञान,

सन्ना और सरकार, ये पाँचा पदार्थ । १५

दशन शास्त्र के अनुसार शब्द, स्पर्श, रूप,

रस और गंध ।

स्कधक-सन्ना पु० बेचने आदि के लिए बहुत-

सा चीजें अपने पास रखनेवाला । (अग्र०-

स्टाकिस्ट)

स्कधवारी-सन्ना पु० अपने पास बेचने

आदि के लिए बहुत-सी चीजें रखने-

वाला या उनका स्कध (स्टाक) रखने-

वाला ।

स्कधपजी-सन्ना स्त्री० वह बही या पुस्तक,

जिसमें स्कध या भंडार में रखी हुई चीजों

का हिसाब हो ।

स्काधार-सन्ना पु० १ राजा का शिविर ।

बप् । २ सेना का पड़ाव । छावनी । ३

सेना । फौज ।

स्कभ-सन्ना पु० १ स्तम्भ । खम्भा । २ ईदघर ।

स्काउट-सन्ना पु० [अग्र०] बालचर । वह

बालक, जिसे अनेक प्रकार की सामाजिक

सेवा करने की शिक्षा मिली हो ।

स्काउटिंग-सन्ना पु० [अग्र०] स्काउट या

बालचर को दी जानेवाली सामाजिक

सेवा की शिक्षा ।

स्कीर-सन्ना पु० [अग्र०] १ गणना । खेला

में होनेवाली गणना । क्रिकेट के खेल की दौड़

की गणना । २ दौड़ शुरू करने का स्थान ।

३ कोडी ।

स्कूल-सन्ना पु० [अग्र०] [वि० स्कूली]

१ विद्यालय । पाठशाला । २ सम्प्रदाय वा

शाखा ।

स्वलन-सन्ना पु० १ गिरना । पतन । २

चीरना । फाटना । ३ हल्ला ।

स्वलित-वि० १ गिरा हुआ । पतित ।

भूत। २ लड़खड़ाया हुआ। विचलित।  
फिसला हुआ। ३. चका हुआ।  
स्टलिंग-सज्ञा पु० [अग्र०] सोने का २०  
शिलिंग का अंगरेजी सिक्का।  
वि० शुद्ध। खरा।

स्टाप-सज्ञा पु० [अग्र०] १. डाक या अदालत  
का टिकट। २ मोहर। छाप। ३ वह  
सरकारी कागज, जिस पर किसी तरह की  
लिखा-पढ़ी होनी है और जिसके दाम उस पर  
लिखे जानेवाले विषय के अनुसार अलग-  
अलग होते हैं। अक-पत्र।

स्टाक-सज्ञा पु० [अग्र०] [वि० स्टाकिस्ट]  
गोदाम। भंडार। वेचने के लिए जमा किया  
हुआ माल।

स्ट्राइक-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] हड़ताल।

स्टीमर-सज्ञा पु० जहाज। [भाप से चलनेवाला  
जहाज] साधारणतः नदी में चलनेवाले छोटे  
जहाज को अंगरेजी में स्टीमर और समुद्री  
जहाज को "शिप" कहते हैं।

स्टील-सज्ञा पु० [अग्र०] इस्पात। फोलाद।

स्टूल-सज्ञा पु० [अग्र०] १ तिपाई। तीन  
पैरों का काठ का छोटा ऊँचा आसन।  
२ सल। पाखाना।

स्टेज-सज्ञा पु० [अग्र०] रंग-मंच। रंग-  
भूमि। मंच।

स्टेट-सज्ञा पु० [अग्र०] १ राष्ट्र। राज्य।  
शासन करनेवाली शक्ति। २ देशों  
रियासत। ३ बड़ी जमींदारी। ४  
जायदाद। बल और अचल सम्पत्ति।

स्टेनोग्राफर-सज्ञा पु० [अग्र०] शीघ्र-  
लिपिक बड़े अधिकारियों के साथ रहनेवाला  
वह कर्मचारी, जो उनके आदेशों को  
सकेत-लिपि में लिखकर टाइप करता है।

स्टेशन-सज्ञा पु० [अग्र०] १ रेलगाड़ी के  
रुकने का वह स्थान, जहाँ यात्री चढ़ते-  
उतरते हो या सामान लादा उतारा जाता  
हो। २ किसी विशेष कार्य के लिए  
निश्चित स्थान (जैसे पोलिंग स्टेशन)।

स्टेशनरी-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] लेखन-  
सामग्री। लिखने का सामान कागज, कलम,  
स्याही आदि।

स्टैंडर्ड-सज्ञा पु० [अग्र०] १ स्तर। मानदंड।  
२ कसौटी। ३ माप। ४. प्रामाणिक  
वस्तु। ५ आदर्श। नमूना। ६ श्रेणी।  
कक्षा। ७ ध्वजा। झंडा।

स्टोर-सज्ञा पु० [अग्र०] १ गोदाम। भंडार।  
२. सामान। ३ सचय। ४ अधिकता।

स्तम्भ-सज्ञा पु० [वि० स्तम्भित] १ खम्भा।  
२ धूनी। ३ पेड़ का तना। ४ किसी कारण  
से शरीर के सब अंगों की गति का रुकना।  
जड़ता। अवलता। ५ साहित्य में एक  
प्रकार का सात्त्विक भाव, जब किसी कारण  
या घटना से सब अंगों की गति रुक जाने  
का घणन हो। ६ प्रतिबन्ध। रुकावट। ७  
एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग, जिससे किसी  
शक्ति को रोकते हैं।

स्तम्भक-वि० १ रोकनेवाला। रोधक। २  
वीर्य को जल्दी गिरने से रोकनेवाला  
(औषध)। ३ कब्ज करनेवाला।

स्तम्भन-सज्ञा पु० १ रुकावट। अवरोध।  
निवारण। २ वीर्य आदिके स्थलन में बाधा  
या विलंब। सम्भोग को एक विशय क्रिया।  
३ धीर्यपात रोकन की दवा। ४ जड़ या  
निश्चेष्ट करना। जड़ोकरण। ५ कब्ज।  
मल बाहर निकलने से रुक जाना। ६  
एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग, जिससे किसी  
की चेष्टा या शक्ति को रोकते हैं। ७  
कामदेव के पाँच वाणी में से एक।

स्तम्भित-वि० १ जो जड़ या निश्चेष्ट हो  
गया हो। निश्चल। मुन्न। २ चकित।  
हक्का-बक्का। ३ रुका या रोक  
हुआ।

स्तन-सज्ञा पु० स्त्रिया या मादा पशुआ की  
छाती, जिसमें दूध रहता है। चूँची।  
धन।

स्तनपान-सज्ञा पु० स्तन में मूँह लगाकर  
उसमें का दूध पीना। स्तन्यपान।

स्तनपायी-वि० माता के स्तन से दूध पीने-  
वाला। वे जीव या जन्तु, जो जन्म लेने पर  
अपनी माता का दूध पीकर पलते  
हैं।

स्तब्ध-वि० १ रुकावटका। स्तम्भित। २

मुद्र। जड़ीभूत। ३. कुठित। ४. निश्चेष्ट।  
 ५. दृढ। स्थिर। ६. मद। धीमा।  
 स्तम्भता-सज्ञा स्त्री० १ स्तम्भ या मुग्न  
 होने का भाव। जड़ता। निश्चयता। सुन-  
 सान। २ स्थिरता। दृढ़ता।  
 स्तनित-सज्ञा पु० १ बिजली की कड़क। २  
 वादल की गरज। ३ ताली बजाने का शब्द।  
 वि० शब्द करता हुआ। गरजता हुआ।  
 स्तन्य-वि० स्तन-सम्बन्धी।  
 सज्ञा पु० दूध। (स्तन से निकला हुआ)  
 स्तर-सज्ञा पु० १ सतह। घरातल। तह। परत।  
 २ जल, भूमि आदि की ऊपरी सतह। ३  
 मानदण्ड (योग्यता का मानदण्ड)।  
 स्तरण-सज्ञा पु० फैलाने या बिखेरने की  
 क्रिया।  
 स्तरोभूत-वि० जो जमकर स्तर के रूप में  
 हो गया हो।  
 स्तव-सज्ञा पु० किसी देवता का छंदोबद्ध गुण  
 गान या स्वरूप-वर्णन। स्तोत्र। स्तुति।  
 प्रशंसा।  
 स्तवक-सज्ञा पु० १ फूला का गुच्छ।  
 गुलदस्ता। २ स्तुति करनेवाला। गुणगान करने  
 वाला। ३ समूह। देर। ३ पुस्तक का कोई  
 अन्वय या परिच्छेद।  
 स्तवन-सज्ञा पु० स्तुति करने की क्रिया।  
 गुणगान। स्तव या स्तुति।  
 स्तिमित-वि० १ भीषा हुआ। गीला। तर।  
 २ ठहरा हुआ। निश्चल।  
 स्तोर्ण-वि० फैलाया, बिखेरा या छितराया  
 हुआ। विस्तृत। विकीर्ण।  
 स्तुत-वि० जिसकी स्तुति या प्रशंसा की गई  
 हो। प्रशंसित।  
 स्तुति-सज्ञा स्त्री० गुणगान। प्रशंसा। तारीफ।  
 स्तुतिपाठक-सज्ञा पु० १ गुणगान करनेवाला।  
 २. चारण। भाट।  
 स्तुतिपाचक-सज्ञा पु० १ स्तुति या प्रशंसा  
 करनेवाला। २ सुरामदी।  
 स्तुतिपाचक-सज्ञा पु० स्तुति करनेवाला।  
 प्रशंसा करनेवाला। दे० "स्तुति-पाठक"।  
 स्तुत्य-वि० स्तुति या प्रशंसा के योग्य।  
 प्रशंसनीय।

स्तूप-सज्ञा पु० १ ऊँचा बूढ़ या टीला।  
 २ बूढ़ ऊँचा टीला या बूढ़, जिसके नीचे  
 भगवान् बद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की  
 जस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति चिह्न  
 संरक्षित हैं।  
 स्तेन-सज्ञा पु० १ चोर।  
 स्तेय-सज्ञा पु० चोरी।  
 स्तन्य-सज्ञा पु० चोरी।  
 स्तोत्र-सज्ञा पु० १ वंद। विदु। २ परोहा।  
 चातक।  
 स्तोता-वि० स्तुति करनेवाला।  
 स्तोत्र-सज्ञा पु० किसी देवता का छंदोबद्ध  
 गुणकोत्तन। स्तुति।  
 स्तोम-सज्ञा पु० १ प्रार्थना। स्तुति। २  
 यज्ञ। ३ एक विशेष प्रकार का यज्ञ। ४  
 समूह।  
 स्त्री-सज्ञा स्त्री० १ औरत। नारी। २  
 पत्नी। बीबी। ३ मादा।  
 स्त्रीजित्-वि० जिसे स्त्री ने जीत लिया हो।  
 स्त्री के पक्ष में रहनेवाला। बीबी का  
 गुलाम।  
 स्त्रीत्व-सज्ञा पु० १ स्त्री होने का भाव या  
 धर्म। जनानापन। २ व्याकरण में वह  
 प्रत्यय, जो स्त्री लिंग का सूचक होता है।  
 स्त्रीधन-सज्ञा पु० वह धन, जिस पर स्त्रियाँ का  
 विदप रूप से पूरा अधिकार हो।  
 स्त्रीधन-सज्ञा पु० मासिक धर्म। स्त्री का  
 रजस्वला होना।  
 स्त्रीप्रसंग-सज्ञा पु० मेहन। सयोग।  
 स्त्रीलिंग-सज्ञा पु० १ हिंदी, व्याकरण के अनुसार  
 सार दो लिंगों में से एक जो स्त्री-जाति का  
 या किसी शब्द का अल्पाधिक रूप सूचित  
 करता है। जैसे—'घोड़ा' का स्त्रीलिंग  
 'घोड़ी' या 'छुरा' का 'छुरी'। २ स्त्री की  
 जगनेद्वय। भा। योनि।  
 स्त्रीवत्-सज्ञा पु० अपनी स्त्री के बराबर  
 दूसरी स्त्री की इच्छा न करना। पत्नीवत्।  
 स्त्रेण-वि० १ स्त्री-सम्बन्धी। २ स्त्रियों का।  
 ३ स्त्री के पक्ष में रहनेवाला। ४ स्त्रीवत्।  
 स्त्रियाँ के समान चेष्टा करनेवाला। मेहरा।  
 स्थ-प्रत्य० एक प्रत्यय, जो शब्दों के जन्म में

लगकर नीचे लिखे अर्थ देता हूँ—(क) स्थित। कायम। (ख) रहनेवाला। निवासी। (ग) उपस्थित। हाजिर। वर्तमान। (घ) रत। लीन।

स्थान-संज्ञा पु० १. छिपाना। गोपन। २. सभा की बैठक, बाद की सुनवाई अथवा अन्य कोई चलता हुआ काम कुछ समय के लिए रोक देना। (अर्थ०—एडजर्नमेण्ट)

स्थानक—संज्ञा पु० काम रोकने के प्रस्ताव। विधान-सभा आदि में पेश किया जानेवाला वह प्रस्ताव, जिसमें वह मांग की जाती है कि अन्य काम रोककर पहले उस पर विचार होना चाहिए। (अर्थ०—एडजर्नमेण्ट-मोशन)।

स्थगित-वि० रोका हुआ। अवरोध। जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो। मुलतवी। स्थल-संज्ञा पु० १ भूमि। २ जलहीन भूमि। सुखी। ३. स्थान। जगह। ४. अवसर। मौका।

स्थलकमल-संज्ञा पु० कमल के आकार का एक फूल, जो जमीन पर होता है।

स्थलचर, स्थलचारी-वि० जमीन पर रहनेवाला या विचरण करनेवाला।

स्थलज-वि० स्थल या जमीन में पैदा होनेवाला। जो जमीन में पैदा हुआ हो।

स्थलपद्म-संज्ञा पु० दे० "स्थलकमल"।

स्थलपृष्ठ-संज्ञा पु० जमीन पर होनेवाली लड़ाई।

स्थलसेना-संज्ञा स्त्री० जमीन पर लड़नेवाली फौज। पैदल सिपाही, घुड़सवार, तोप आदि चलानेवाले।

स्थललेख्य-संज्ञा पु० किसी स्थल का रेखा-चित्र। किसी जमीन का नक्शा।

स्थली-संज्ञा स्त्री० १ सुख जमीन। भूमि। २. स्थान। जगह।

स्थलीय-वि० १ स्थल या भूमि-सम्बन्धी। स्थल का। २. किसी स्थान का। स्थानीय।

स्थविर-संज्ञा पु० १. बुढ़ा। २. पुर और पूज्य बौद्ध भिक्षु। ३. गृहा।

स्थानु-संज्ञा पु० १. पत्नी। स्त्री। २. पैर का वह घड, जिसके ऊपर को डालियाँ और पत्ते बाँधे जाते हैं। टूँड। ३. शिब।

वि० स्थिर। अचल।

स्थान-संज्ञा पु० १. जगह। भूमि। जमीन। २. मैदान। ३. स्थिति। ठहराव। टिकाव। ४. डेरा। घर। आवास। ५. काम करने की जगह। पद। ओहदा। ६. मंदिर। देवालय। ७. अवसर। मौका।

स्थानच्युत-वि० जो अपने स्थान से गिर गया हो। जो अपने पद से हट गया हो या हटाया गया हो।

स्थानग्रष्ट-वि० दे० "स्थानच्युत"।

स्थानांतर-संज्ञा पु० वर्तमान स्थान से भिन्न स्थान। एक जगह से दूसरी जगह। एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। तबादला।

स्थानांतरण-संज्ञा पु० एक जगह से दूसरी जगह पर पहुँचाना, भेजना या रखना।

स्थानांतरित-वि० जो एक स्थान से हटकर दूसरे स्थान पर गया हो। जिसका तबादला हुआ हो।

स्थानापन्न-वि० दूसरे की जगह पर अस्थायी रूप से काम करने वाला। एवजी। कायम-मुकाम।

स्थानिक-वि० १ उस जगह का, जहाँ से कोई बात कही जाय। २ उस स्थान का, जिसके विषय में कुछ कहा गया हो। दे० "स्थानीय"।

स्थानिक-कर-संज्ञा पु० किसी जगह पर लगानेवाला कर। (अर्थ०—लोकल टैक्स)।

स्थानीय-वि० १. उस जगह का, जहाँ से कोई बात कही जाय। २. जिस जगह के बारे में कुछ कहा गया हो, वहाँ से सम्बन्ध रखनेवाला। ३. स्थान-विशेष से सम्बन्ध रखनेवाला। स्थानिक।

स्थापक-वि० १. स्थापना करनेवाला। कायम करनेवाला। २. मूर्ति बनानेवाला। ३. मूल-धार का सहकारी (नाटक)। ४. कोई अस्था स्थापित करनेवाला। सत्स्थापक।

स्थापत्य-संज्ञा पु० १ वह विद्या, जिसमें भवन-निर्माण-सम्बन्धी सिद्धान्तों आदि का विवेचन होता है। २. भवन-निर्माण। राजगोरी। मेमारो। वास्तुविद्या।

स्थापत्यकला-संज्ञा पु० भवन-निर्माण-

कला या विद्या। वास्तु कला। दे०  
"स्थापत्य"।

स्थापत्य वेद-सज्ञा पु० वह उपवेद, जिसमें  
वास्तुशिल्प या भवन-निर्माण का विषय  
वर्णित है।

स्थापन-सज्ञा पु० [वि० स्थापनीय] ?  
स्थापित करने का काम। २ रखा करना।  
उठाना। ३ रखना। जमाना। ४ नया  
काम जारी करना। ५ (प्रमाणपूर्वक किता,  
विषय को) सिद्ध करना। प्रतिपादन।  
साबित करना। ६ निरूपण।

स्थापना-सज्ञा स्त्री० १ स्थित करना।  
बैठाना। थापना। २ स्थापित करना।  
प्रतिष्ठित करना। देवमूर्ति आदि की  
प्रतिष्ठा या स्थापना। ३ सिद्ध करना।  
साबित करना। प्रतिपादन करना। ४  
जमा कर रखना।

स्थापित-वि० १ प्रतिष्ठित। जिसकी स्था-  
पना की गई हो। जिसे कायम किया गया  
हो। रखा हुआ। २ व्यवस्थित। ३ निर्दिष्ट।

स्थापित्व-सज्ञा पु० १ स्थिरता। दृढ़ता।  
मजबूती। २ स्थायी होने का भाव।

स्थायी-वि० १ स्थिर रहनेवाला। २ ठहरने  
वाला। ३ बहुत समय तक कायम रहने-  
वाला। ४ भूस्तकिल। ५ बहुत दिन चलने-  
वाला। ६ टिकाऊ।

स्थायी कोष-सज्ञा पु० किसी सत्त्वा आदि को  
वह धन राशि, जो उसे स्थायी बनाए रखने  
के लिए संचित होती है और जिसका केवल  
सूद खर्च किया जा सकता है। (अर्थ-  
परमनेट फण्ड)

स्थायी भाव-सज्ञा पु० साहित्य में तीन प्रकार  
के भावों में से एक, जो सदा राम में स्थित  
रहता है और विभाव आदि में अभिव्यक्त  
होकर रस की उत्पत्ति करता है। यह ९  
प्रकार का होता है—रति, हास्य, शोक,  
क्रोध, उदसाह भय, निंदा, विस्मय और  
निर्वेद।

स्थायी समिति-सज्ञा स्त्री० १ वह समिति, जो  
सम्मेलन या सभा के दो अधिवेशन के  
मध्य के काल में उसके कार्यों का निर्वह

करती है। २ वह समिति, जो स्थायी रूप से  
किसी सत्त्वा के कार्यों का संचालन करती है।  
(अर्थ-स्टेडिंग कमिटी)।

स्थाली-सज्ञा स्त्री० १ हड्डियां। हड्डो। २  
मिट्टी की रिकामो।

स्थालीगुलाकन्याय-सज्ञा पु० (हड्डियां में  
पकते हुए चावला में का एक चावल टटोकर  
कर समझ लेना कि सब चावल एक गए हैं)  
"एक बात को देखकर उस सच की ओर  
सब बात का मालूम होना।

स्थावर-वि० [सज्ञा स्थावर्त्ता] अपने  
स्थान से न हट सकनेवाला। स्थिर।  
अचल। जगम का उत्पटा। गैर-मनकूला।  
सज्ञा पु० १ अचल सम्पत्ति। गैर मनकूला  
जायदाद। २ पहाड़।

स्थावर सम्पत्ति-सज्ञा स्त्री० ऐसी सम्पत्ति  
या जायदाद, जो अपनी जगह से हटाई न  
जा सके। अचल सम्पत्ति।

स्थावर विषय-सज्ञा पु० स्थावर पदार्थों में  
होनेवाला जहर।

स्थित-वि० १ अपने स्थान पर ठहरा हुआ।  
अवस्थित। जमा हुआ। २ बैठा हुआ।  
विद्यमान। मौजूद। ३ अपनी प्रतिज्ञा पर  
अटल।

स्थितप्रज्ञ-वि० १ समस्त मनोविकारों से  
रहित। आत्म-ततोपी। २ जिसकी विवेक-  
बुद्धि स्थिर हो।

स्थिति-सज्ञा स्त्री० १ निवास। अवस्थान।  
अवस्था। २ रहना। ठहरना। टिकाव।  
ठहराव। ३ दशा। हालत। ४ पद। दर्जा।

५ एक स्थान या अवस्था में रहना। ६  
निरंतर बना रहना। अस्तित्व। ७ पालन।

स्थितिस्थापक-सज्ञा पु० वह गुण, जिससे  
कोई वस्तु नई स्थिति में आने पर फिर  
अपनी पूर्व अवस्था को प्राप्त हो जाय।

वि० १ लचीला। २ किसी वस्तु को उसकी  
पूर्व अवस्था प्राप्त करानेवाला।

स्थितिस्थापकता-सज्ञा स्त्री० लचीलापन।

स्थिर-वि० १ अटल। स्थायी। सदा या  
रहनेवाला। २ नियत। ३ निश्चल। ४  
निश्चित। ५ शांत।

स्फिरचित्त-वि० दृढचित्त। जिसका मन स्फिर या दृढ हो।

स्फिरता-सज्ञा स्त्री० स्थायित्व। स्फिर होने का भाव। ठहराव। निश्चलता। दृढ़ता। मजबूती। धैर्य।

स्फिरबुद्धि-वि० जिसकी बुद्धि चंचल न हो। दृढचित्त।

स्फिरीकरण-सज्ञा पु० १. स्फिर करना। निश्चित करना। २. स्थायी करना। दृढ़ करना। ३. घटती-बढ़ती रहनेवाली चीजों का स्वीरूप या मान स्फिर करना। ४. मूल्य या। भाव आदि स्थायी रूप से निश्चित करना।

स्पूल-वि० १. मोटा। २. आसानी से दिखाई देने या समझ में आनेवाला। ३. 'मूकम' का उलटा। मोटे हिसाब से अनुमान किया हुआ या ध्यान में आया हुआ।

सज्ञा पु० इन्द्रियोद्धार ग्रहण हो सकनेवाली वस्तु, जैसे—आँख, कान, नाक, मुँह आदि इन्द्रियो से ग्रहण हो सकनेवाली चीजें।

स्पूलता-सज्ञा स्त्री० १. मोटाई। २. भारी-पन। ३. स्पूल होने का भाव।

स्पृश्य-सज्ञा पु० १. दृढ़ता। २. स्फिरता।

लान-वि० जो लान कर चुका हो। नहाया हुआ।

लानक-सज्ञा पु० १. जो बिना अव्ययन तथा ब्रह्मचर्यव्रत समाप्त कर गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करनेवाला। २. जो विश्वविद्यालय की कितनी परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुका हो।

लान-सज्ञा पु० १. शरीर को साफ करने के लिए पानी से धोना। नहाना। शरीर आदि में नहाना। २. शरीर के अंगों को धूप या हवा के सामने करना कि उनके ऊपर उनका पूरा अंतर पड़े। जैसे—वायु-लान।

लानागर-सज्ञा पु० नहाने का कनरा।

लानधिक-वि० लान्य-संबंधी। नसा से संबंध रखनेवाला।

लान्य-सज्ञा स्त्री० शरीर के भीतर की नसें, जिनसे गर्मी, ठंडक और कष्ट आदि का ज्ञान होता है।

लान्य-वि० [सज्ञा स्त्री० स्निग्धता] १. जिसमें

स्नेह या प्रेम हो। कोमल। दयालु। २. जिसमें स्नेह या तेल हो। चिकना।

स्निग्धता-सज्ञा स्त्री० १. स्निग्ध या स्नेहपूर्ण होने का भाव। प्रिय होने का भाव। कोमलता। २. चिकनाहट। स्निग्ध या चिकना होने का भाव।

स्नेह-सज्ञा पु० १. प्यार। प्रेम। मुहब्बत। (माता पिता का अपनी सन्तान पर या बड़े का छोटे पर प्रेम)। २. चिकना पदार्थ। तेल। ३. कोमलता।

स्नेहपात्र-सज्ञा पु० प्यारा। प्रेमपात्र। स्नेहपात्र-सज्ञा पु० बंदूक की एक क्रिया, जिसमें खास-खास रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीते हैं।

स्नेही-सज्ञा पु० स्नेह करनेवाला। प्रेमी।

स्फंदन-सज्ञा पु० १. कांपना। धीरे-धीरे हिलना। २. (अंग आदि का) फड़कना।

स्फंदित-वि० फड़कता हुआ। हिलता या कांपता हुआ।

स्पर्द्धा-सज्ञा स्त्री० किसी के मुकाबले में आगे बढ़ने की इच्छा। होड़। २. जलन।

डाह। दूसरे की उन्नति देखकर दुखी होना।

स्पर्द्धा-वि० स्पर्द्धा करनेवाला।

स्पर्श-सज्ञा पु० १. छूने का भाव या क्रिया। २. छूना। ३. व्याकरण के अनुसार "क" से लेकर "म" तक के २५ व्यंजन, जिनके उच्चारण में वागिन्द्रिय का द्वार बन्द रहता है। ४. ग्रहण के समय सूर्य या चंद्रमा पर छाया पड़ने का आरंभ।

स्पर्शजन्म-वि० १. स्पर्श या छूने से उत्पन्न। छूत से पैदा होनेवाला। २. सनामक। स्पर्शनैन्द्रिय-सज्ञा स्त्री० छूने की इन्द्रिय। त्वचा। चमड़ा।

स्पर्शमणि-सज्ञा पु० पारस पत्थर।

स्पर्शास्पर्श-सज्ञा पु० छूत-अछूत का विचार। छूने या न छूने का भाव या विचार।

स्पर्शी-वि० छूनेवाला।

स्पर्शेन्द्रिय-सज्ञा स्त्री० वह इन्द्रिय, जिससे स्पर्श या छूने का ज्ञान होता है। त्वचा।

स्पष्ट-वि० साफ। साफ-दिखाई देने या

समझ में आनेवाला। जिसे देखने या समझने में कठिनाई, सन्देह या धाखा न हो।

क्रि० वि० स्पष्ट रूप से। साफ-साफ।

स्पष्ट कथन-सज्ञा पु० साफ-साफ कहना। बिना डर या सकोच के कहना। किसी भी कही हुई बात का ठीक उसी रूप में कहना, जिस रूप में वह उसके मुँह से निकली हो।

स्पष्टतया-क्रि० वि० स्पष्ट रूप से। साफ-साफ।

स्पष्टता-सज्ञा स्त्री० स्पष्ट होने का भाव। सफाई।

स्पष्टवक्ता, स्पष्टवादी-सज्ञा पु० साफ-साफ कहनेवाला। बिना किसी डर, सकोच या डराव के साफ बात कहनेवाला।

स्पष्टीकरण-सज्ञा पु० १ स्पष्ट या साफ करने की क्रिया। २ किसी कठिन बात को उस तरह कहना कि वह आसानी से समझ में आ जाय। ३ किसी बात के बारे में सन्देह दूर करना। ४ किसी बात की सफाई देना।

स्पिनग-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] कटाई का काम।

स्पिरिट-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १ आत्मा। २ सूक्ष्म शरीर। ३ जीवन शक्ति। ४ एक प्रसिद्ध तरल मद्यार्थ, जो जलाने और दवा के काम में आता है। ५ बहुत तेज मादक द्रव्य। शराब। सत्त्व।

स्पीकर-सज्ञा पु० [अग्रे०] १ बोलनेवाला। वक्ता। भाषण करनेवाला। व्याख्यान देनेवाला। २ विधान-सभा, विधान-परिषद् या संसद् का अध्यक्ष।

स्पीच-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] व्याख्यान। भाषण।

स्पीड-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १. गति। चाल। २ तेज चाल।

स्पृष्टा-सज्ञा स्त्री० १ लजालु। लाजवती। २ असवरण। ३ ब्रह्मा वृद्धी।

स्पृश-वि० छूनेवाला।

स्पृश्य-वि० स्पर्श करने के योग्य। छूने लायक।

स्पृष्ट-वि० स्पर्श किया हुआ। छूना हुआ। सज्ञा पु० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण

का एक प्रकार का प्रयत्न, जिसमें दाना हाड एक दूसरे को पूरी तरह छू लें हैं। जैसे 'प', 'म'।

स्पृहणीय-वि० १ जिसके लिए इच्छा या वामना की जा सक। २ जिस पाने की इच्छा करना उचित हो। वाछनीय।

स्पृहा-सज्ञा स्त्री० वामना। इच्छा। चाह।

स्पृही-वि० इच्छा करनेवाला।

स्पेलिंग-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] अक्षर विन्यास। हिज्जे।

स्पेशल-वि० [अग्रे०] विशेष। खास। दूसरी की अपेक्षा विशेषता रखनेवाला।

सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] किसी विशेष व्यक्ति अधिकारी या विशेष कार्य के लिए चलाने वाली रेलगाड़ी।

स्पोर्ट-सज्ञा पु० [अग्रे०] १ खेलकूद। क्रीडा लीला। विहार। २ हँसी।

स्त्रिप-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १ कमानी। लचोला तार। २ वसत ऋतु। ३ जल का सोता। झरना।

स्ट्रिक-सज्ञा पु० १ एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पत्थर, जो काँच के समान पारदर्शी होता है। २ भाषा। काँच। ३ सूक्ष्मवात मणि। ४ फिटफिटो।

स्फार-वि० १ फैला हुआ। लम्बा चौड़ा। २ बहुत। ३ प्रवल। ४ विकट। घना, जैसे कुहरा।

स्फाल-सज्ञा पु० स्फूर्ति। स्फुरण। हिलना। फड़कना।

स्फोत-वि० १ फूला हुआ। २ फैला हुआ। ३ बड़ा हुआ। समृद्ध।

स्फोति-सज्ञा स्त्री० १ फैलना। फूलना। २ वृद्धि। बढ़ती। जैसे—मुद्रा-स्फोति।

स्फुट-वि० १ छिला हुआ। विकसित। २ सामने दिखाई देनेवाला। व्यक्त। प्रकाशित। ३ स्पष्ट। साफ। ४ फुटनर। अलग-अलग।

स्फुटन-सज्ञा पु० १ फूटना। २ सिलना। फूलना (फूल का)। ३ सामने आना।

स्फुटित-वि० १ छिला हुआ। २ विकसित। जो स्पष्ट किया गया हो। ३. हँसता हुआ।

स्फुरण-सज्ञा पु० धीरे-धीरे हिलना। अग का फडकना। दे० "स्फूर्ति"।  
 स्फुरित-वि० जिसमें स्फुरण हो। हिलता हुआ। फडकता हुआ।  
 स्फुरित-सज्ञा पु० चिनगारी।  
 स्फूर्ति-सज्ञा स्त्री० १. फुरती। तेजी। २. कोई काम करने के लिए मन में उत्पन्न होनेवाली हलकी उत्तेजना। ३. फडकना। स्फुरण।  
 फोड़-सज्ञा पु० १ फूटना। किसी पदार्थ का बने ऊपरी आवरण को भेदकर बाहर निकलना। फोड़ा, फुसी आदि। २ दे० "विस्फोट"।  
 फोटक-सज्ञा पु० १ फूटकर निकलनेवाला पदार्थ। फोड़ा। फुसी। २ दे० "विस्फोटक"।  
 फोटन-सज्ञा पु० १ भीतर से फोड़ना। २ विदारण। फाड़ना।  
 मर-सज्ञा पु० १ कामदेव। २ स्मरण। याद।  
 मरण-सज्ञा पु० १ याद। किमी देखी, सुनी या अनुभव में आई हुई बात का फिर से मन में जाना। स्मृति। २ नौ प्रकार की भक्ति में से एक, जिसमें उपासक अपने उपास्य देव का याद करना रहता है। ३ काव्य में एक अलंकार, जिसमें कोई बात या पदार्थ देखकर किसी विशेष पदार्थ या बात की याद आने का वर्णन होता है।  
 मरणपत्र-सज्ञा पु० किसी को कोई बात याद दिलाने के लिए लिखा गया पत्र। याद दिलाने का चिट्ठी। [अग्ने०-रिमाण्डर]  
 मरणशक्ति-सज्ञा स्त्री० याददास्त। याद रखने की शक्ति। वह मानसिक शक्ति, जो अपने सम्मने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातों को ग्रहण करके रख छाड़ती है।  
 मरणोप-वि० याद रखने लायक। स्मरण रखने योग्य।  
 मरना-सज्ञा पु० याद करना। स्मरण करना।  
 मरारि-सज्ञा पु० महादेव (नामदेव के शत्रु)।  
 मारक-वि० स्मरण करानेवाला। याद दिलानेवाला।

सज्ञा पु० १. वह कार्य या वस्तु, जो किसी की स्मृति या याद बनाए रखने के लिए हो। यादगार। २ अपनी याद दिलाने के लिए किसी को दी गई चीज।  
 स्मारिका-सज्ञा स्त्री० याद दिलाने की चिट्ठी। स्मरण-पत्र।  
 स्मात्-सज्ञा पु० १ स्मृतियों में लिखे हुए कार्य। २. स्मृतियों में लिखे अनुसार जब काम करनेवाला। वेदान्त-सिद्धान्त का अनुयायी। ३ स्मृतिशास्त्र का विद्वान्। वि० स्मृति-संबंधी। स्मृति का।  
 स्मार्तिक-वि० १. स्मृति का। २ स्मृति-सम्बन्धी।  
 स्मालपास्त-सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] शीतला। चैचक।  
 स्मित-सज्ञा पु० मुस्कान। धीमी हँसी। वि० खिला हुआ। विकसित।  
 स्मिति-सज्ञा स्त्री० दे० "स्मित"।  
 स्मृत-वि० याद किया हुआ। जो स्मरण में आया हो।  
 स्मृति-सज्ञा स्त्री० १ स्मरण। याद। स्मरण-शक्ति के द्वारा संचित होनेवाला ज्ञान। २ हिंदुओं के धर्मशास्त्र, जिनमें धर्म, दर्शन, जाचार-व्यवहार, शासननैति आदि का विवेचन है और जिनकी रचना मुनिवा ने वेदों का स्मरण करके की थी। ३ १८ की संख्या। ४ एक प्रकार का छंद।  
 स्मृतिकार-सज्ञा पु० स्मृति या धर्म-शास्त्र बनानेवाला।  
 स्मृतिपत्र-सज्ञा पु० १. वह पत्र या पुस्तिका आदि, जिसमें किसी विषय की सात बातें याद रखने या कराने के लिए लिखी गईं हैं। २ अपनी माँग पूरी कराने और उनकी याद दिलाने के लिए दिया जानेवाला पत्र। किसी सस्या आदि के मुख्य नियमों आदि की पुस्तिका। (अग्ने०-मेमोरण्डम)।  
 स्पंद-सज्ञा पु० १ टपकना। चूना। २. गलना। ३ पसीना निकलना। ४ चट्टना।  
 स्पदन-सज्ञा पु० १ टपकना। चूना। रगना। २ गलना। ३ जाना। चरना। ४ रप, विशेषतः मुड़ में काम आनेवाला रप। ५.

हवा। १. घोड़ा। ७. वृक्ष। ८. चित्र।  
स्यमंतक—सज्ञा पु० पुराणों में कहा गया एक  
प्रसिद्ध मणि, जिसकी चोरी का आरोप श्री-  
कृष्णचंद्र पर किया गया था।

स्यात्—अव्य० शायद। कदाचित्।

स्याद्वाद—सज्ञा पु० अनेकातवाद। जैन-दर्शन,  
जिसमें किसी वस्तु के सबध में कहा जाता  
है कि स्यात् यह भी है, स्यात् यह भी है, आदि।

स्यान्—वि० दे० "स्याना"।

स्यानप—सज्ञा पु० दे० "स्यानपन"।

स्यानपन—सज्ञा पु० १. चालाकी। २. चतुरता।  
बुद्धिमान्।

स्याना—वि० [स्त्री० स्यानी] १. चालाक।

पूत। वयस्क। वालिग। २. चतुर।

सज्ञा पु० १. वयस्क। अधिक उम्रवाला।

बड़ा-पूढ़ा। २. ओढ़ा। ३. चिकित्सक।

हकीम।

स्यानापन—सज्ञा पु० १. युवावस्था। सयाना  
होने की अवस्था। २. होशियारी। ३.  
चालाकी। धूर्तता।

स्यापा—सज्ञा पु० मरे हुए व्यक्ति के शोक  
में कुछ काल तक स्त्रियों के प्रतिदिन  
एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।  
मुहा०—स्यापा पढ़ना=१. रोना-धोना  
शुरू होना। २. बिलकुल उगाड़ या मुनसान  
होना।

स्यामलिया—सज्ञा पु० दे० "साँवला"।

स्यार—सज्ञा पु० [स्त्री० स्यारिनी, स्यारी]  
गोदड़। सियार।

स्यारपन—सज्ञा पु० सियार या गोदड़ का-  
सा स्वभाव।

स्यारी—सज्ञा स्त्री० सियार की मादा। गोदड़ी।

स्याल—सज्ञा पु० [स्त्री० स्याली] साला।  
पत्नी का भाई।

सज्ञा पु० दे० "सियार" या "स्यार"।

स्यालिया—सज्ञा पु० सियार। गोदड़।

स्याली—सज्ञा स्त्री० साली। पत्नी की बहन।

स्याह—वि० [फा०] काला। काले रंग का।

सज्ञा पु० घोड़े की मूक जाति।

स्याहा—सज्ञा पु० दे० "सियाहा"।

स्याही—सज्ञा स्त्री० [फा०] १. रोशनाई।

२. कालापन। कालिमा। कालिल। ३.  
साही (जतु)।

मुहा०—स्याही जाना=१. बालों का कालापन  
जाना। २. जवानों का बीत जाना।

स्यौं, स्यो\*—अव्य० १. सह। साथ। सहित।

२. पास। निकट।

संसन—सज्ञा पु० गर्भपात। नाश। पतन।

सक—सज्ञा स्त्री०, पु० १. फूलों की माला।

२. एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में चार  
नगण और एक सगण होता है।

सप\*—सज्ञा स्त्री०, पु० दे० "सक"।

सम्परा—सज्ञा स्त्री० एक वृत्त, जिसके प्रत्येक  
चरण में म र न न य म य होते हैं।

समिष्णी—सज्ञा स्त्री० एक वृत्त, जिसके  
प्रत्येक चरण में चार सगण होते हैं।

सज—सज्ञा स्त्री० माला।

सखन—सज्ञा पु० १. बहना। बहाव। प्रवाह।

२. पसीना। ३. गर्भ का गिरना। गर्भपात।

४. मृत्र। पेशाब।

सखना\*—क्रि० अ० १. बहना। २. चूना।

टपकना। ३. गिरना।

क्रि० सं० १. बहाना। २. टपकाना। ३.  
गिरना।

सष्टा—सज्ञा पु० १. सृष्टि या तसार की  
रचना करनेवाले, ब्रह्मा। २. विष्णु। ३.  
शिव।

वि० सृष्टि रचनेवाला। जगत् का रचयिता।

सस्त—वि० १. अपने स्थान से गिरा हुआ।

च्युत। २. थका हुआ। क्षिपिल।

साब—सज्ञा पु० १. बहना। गिरना। टपकना।

रस-रसकर चूना। क्षरण। २. गर्भपात।

३. निरास। रस।

सावक—वि० साव करानेवाला। चुनाने या  
टपकानेवाला। बहानेवाला।

सावित—वि० बहाया या चुआया हुआ।

सावी—वि० बहानेवाला। टपकाने या चुनाने-  
वाला।

साव्य—वि० बहाने योग्य। चुनाने या टपकाने  
लायक।

सूत—वि० १. बहा हुआ। २. चुआ हुआ।

\* ३. दे० "श्रुत"।

इतिमाय\*—सज्ञा पु० विष्णु।  
 दूध—सज्ञा स्त्री० हवन आदि में धो को  
 आहुति देने के लिए लकड़ी की एक प्रकार  
 की छोटी कलछी। सुरवा।  
 मोत—सज्ञा पु० १. पानी का सोता। सरना।  
 २. पानी का बहाव। धारा। ३. नदी। ४.  
 वह आधार या साधन, जिससे कोई चीज  
 बराबर निकलती या मिलती रहे।  
 मोतस्विनी—सज्ञा स्त्री० नदी।  
 म्लिप—सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १. कागज की  
 पत्ती। २. फिसलना। ३. भूल।  
 म्लोपर—सज्ञा पु० [अग्रे०] चट्टो। जूती।  
 एक तरह का बिना फोते का जूता।  
 म्रि—सज्ञा पु० स्वर्ग।  
 म्रिपथ—सज्ञा पु० स्वर्ग का मार्ग। मृन्पु।  
 म्रिसत्ता—सज्ञा स्त्री० गंगा।  
 म्रि-वि० १. अपना। निज का। २. प्रत्यय—  
 एक प्रत्यय, जो कुछ शब्दों के अन्त में लगकर  
 भाववाचक होने का अर्थ देता है—जैसे  
 राजस्व।  
 म्रिहीय—वि० अपना। निजी।  
 म्रिहीया—सज्ञा स्त्री० अपने ही पति से प्रेम  
 करनेवाली स्त्री या नायिका। (साहित्य  
 में स्वकीया नायिका।)  
 म्रिस्थापन—सज्ञा पु० खुद अपनी बड़ाई  
 करके अपने को महत्तर करना। आत्म-  
 प्रतिष्ठि।  
 म्रिगत—सज्ञा पु० दे० “स्वगत-कथन”।  
 कि० वि० आप ही आप। अपने आपसे  
 (कहना या बोलना)। स्वय।  
 वि० मन में आया हुआ। मनोगत। अपने  
 में आया या लाया हुआ। आत्मगत।  
 म्रिगत-कथन—सज्ञा पु० आत्मगत। अश्राव्य।  
 नाटक में पात्र का आप ही आप इस प्रकार  
 बोलना, मानो वह किसी की सुनाना नहीं  
 चाहता और न कोई उसकी बात सुनता है।  
 म्रिचालित—वि० अपने आप चलनेवाला।  
 (अग्रे०-अ टोमेटिक।)  
 म्रिच्छंद्—वि० इच्छानुसार काम करनेवाला।  
 स्वाधीन। स्वत\*। आजाद। मनमाना  
 करनेवाला। निरकुश।

म्रि० वि० मनमाना। बंधक। बिना किसी  
 नकोच या विचार के। निर्द्वंद्व।  
 म्रिच्छंद्वारी—सज्ञा पु० मनमौजी। स्वेच्छा-  
 चारी। निरकुश।  
 म्रिच्छन्वता—सज्ञा स्त्री० स्वतन्त्रता। आजादी।  
 म्रिच्छं-वि० १. साफ। जिसमें कोई गंदगी न  
 हो। निर्मल। २. स्पष्ट। ३. उजला। सफेद।  
 ४. शुद्ध। पवित्र।  
 म्रिच्छता—सज्ञा स्त्री० स्वच्छ होने का भाव।  
 सफाई। निर्मलता। शुद्धता।  
 म्रिज-वि० अपने में उत्पन्न।  
 सज्ञा पु० १. पुत्र। बेटा। २. खून। पसीना।  
 म्रिजन—सज्ञा पु० १. अपने परिवार का।  
 सगा। २. सम्बन्धी। रिश्तेदार।  
 म्रिजनता—सज्ञा स्त्री० १. आत्मोपता। अपना  
 पन। २. नातेदारी।  
 म्रिजनि, म्रिजनी\*—सज्ञा स्त्री० १. अपने  
 परिवार की स्त्री। सजनी। २. सहचरी।  
 सखी।\* महेली।  
 म्रिजन्मा—वि० अपने आपसे उत्पन्न। ईश्वर।  
 म्रिजात—वि० अपने से उत्पन्न।  
 मज्ञा पु० पुत्र। बेटा।  
 म्रिजाति—सज्ञा स्त्री० अपनी जाति।  
 वि० अपनी जाति या कौम का।  
 म्रिजातिद्विप—सज्ञा पु० १. अपनी ही जाति  
 से द्वेष या बैर करनेवाला। २. कुत्ता।  
 म्रिजातीय—वि० अपनी जाति का। अपने वर्ग  
 का।  
 म्रिजन्त्र—वि० १. स्वाधीन। आजाद। जो किसी  
 दूसरे के अधीन न हो, केवल अपने अधीन हो।  
 मुक्त। स्वेच्छाचारी। २. अलग। जुदा।  
 पृथक्। ३. बंधन से रहित।  
 म्रिजन्त्रता—सज्ञा स्त्री० स्वाधीनता। आजादी।  
 स्वतन्त्र होने का भाव।  
 म्रिजन्त्र-अव्य० अपने आप। आप ही।  
 म्रिजन्त्रविरोधी—सज्ञा पु० अपना ही विरोध या  
 खडग करनेवाला।  
 म्रिजन्त्र—सज्ञा पु० १. हक। “स्व” या, अपना  
 होने का भाव। २. किसी वस्तु की अपने  
 अधिकार में रखने या लेने का अधिकार।  
 स्वत्वाधिकारी—सज्ञा पु० १. किसी विषय

का पूरा स्वत्व या अधिकार रखनेवाला।

२. स्वामी। मालिक।

स्ववृष्ट-वि० अपना देखा हुआ।

स्वदेश-सज्ञा पु० अपना देश। मातृ-भूमि।  
जन्म-भूमि। वतन।

स्वदेशी-वि० अपने देश का। अपने देश से सम्बन्ध रखनेवाला। अपने देश का बना हुआ।

स्वदोषज-वि० अपने दोष से उत्पन्न होनेवाला पाप।

स्वधर्म-सज्ञा पु० अपना धर्म। अपना कर्तव्य।

स्वपा-अव्य० एक शब्द, जिसका उच्चारण देवताओं या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है।

सज्ञा स्त्री० १. पितरों को दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृ-अन्न। २. दक्ष की एक कन्या।

स्वधाकर, स्वधाकार-वि० श्राद्ध करनेवाला।

स्वधाधिप-सज्ञा पु० अग्नि।

स्पन-सज्ञा पु० शब्द। आवाज।

स्वनामधन्य-वि० जो अपने नाम के कारण प्रसिद्ध हो। मह्यपुण्य।

स्वनामा-वि० अपने नाम से प्रसिद्ध होनेवाला।

स्वप्न-सज्ञा पु० १. नींद। सोने की निया।

२. सोते समय पूरी नींद न आने के कारण कुछ घटनाएँ दिखाई देना। नींद में के विचार या दिखाई देनेवाली घटनाएँ।  
स्वाह। सपना। ३. सहज में पूर्ण न होनेवाली या असम्भव कल्पना।

स्वप्नक-वि० सोनेवाला।

स्वप्नगृह-सज्ञा पु० सोने का कमरा। दायना-गृह।

स्वप्नदर्शी-वि० स्वप्न देखनेवाला। बड़ी-बड़ी कल्पनाएँ करनेवाला।

स्वप्नदोष-सज्ञा पु० १. नींद में सपना देखते हुए धार्य गिर जाना। २. इस तरह की घटनाएँ करने की बीमारी।

स्वप्नाना-क्रि० स० स्वप्न देखना। स्वप्न दिखाना।

स्वप्नित-वि० १. स्वप्न देखा हुआ। सोया हुआ। २. गुलानेवाला। ३. स्वप्न-सम्बन्धी।

४. स्वप्न का।

स्वभाव-सज्ञा पु० १. अपने आप पैदा होनेवाला। २. सदा बना रहनेवाला मूलगुण।

३. गन की प्रवृत्ति। प्रकृति। ४. मित्राज। आदत्त।

स्वभावज-वि० स्वाभाविक। प्राकृतिक। सहज स्वभायतः-अव्य० सहज ही। स्वभाव से। प्राकृतिक रूप से।

स्वभावसिद्ध-वि० स्वाभाविक। प्राकृतिक।

स्वभू-सज्ञा पु० १. ब्रह्मा। २. विष्णु।

वि० अपने आप उत्पन्न होनेवाला।

स्वयं-अव्य० १. आप। खुद। अपने से। २. आप से आप। खुद व खुद।

स्वयंदत्त-सज्ञा पु० माता-पिता की मृत्यु होने पर या उनके द्वारा परित्यक्त होने पर जो पुत्र अपने आप की किसी दूसरे को देकर उसका पुत्र बन जाय।

स्वयंदूत-सज्ञा पु० [स्त्री० स्वयदूती] नायिका पर अपना प्रेम या कामवासना स्वयं ही प्रकट करनेवाला नायक। अपना दूत आप बननेवाला नायक।

स्वयंदूती-सज्ञा स्त्री० नायक पर स्वयं ही वासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।

स्वयंपाक-सज्ञा पु० [स्त्री० स्वयंपाकी] १.

अपने हाथ से अपना भोजन बनाना।

२. अपने हाथ का बना हुआ खाना।

स्वयंप्रकाश-सज्ञा पु० अपने आप प्रकाशित होनेवाला। परमात्मा।

स्वयंभव-वि० दे० "स्वयंभू"।

स्वयंभू-सज्ञा पु० १. ब्रह्मा। २. विष्णु।

३. शिव। काल। ४. कामदेव।

वि० जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो।

स्वयंभूत-वि० दे० "स्वयंभू"।

स्वयंवर-सज्ञा पु० १. भारत की एक प्राचीन विवाह-प्रथा, जिसमें कन्या उपस्थित व्यक्तियों में से अपने लिए आप वर चुनती थी।

स्वयंवरण। २. वह रगभूमि, जहाँ उपस्थित व्यक्तियों में से कन्या अपने लिए वर चुने।

स्वयंवरण-सज्ञा पु० कन्या का इच्छानुसार अपना वर चुनना। दे० "स्वयंवर"।

स्वयंवरा-सज्ञा स्त्री० अपने इच्छानुसार अपना पति चुननेवाली अविवाहिता कन्या।

स्वयसिद्ध-वि० जो अपने आप सिद्ध हो चुका हो। जिसकी सिद्धि के लिए किसी तक या प्रमाण की आवश्यकता न हो।  
स्वयसेवक-सज्ञा पु० [स्त्री० स्वयसेविका]  
विना किसी वेतन या पुरस्कार के अपनी इच्छा से काम करनेवाला। स्वेच्छासेवक।  
स्वयमेव-नि० वि० अपने आप ही।  
स्वर-सज्ञा पु० १. आकाश। स्वर्ग। २. परलोक।

स्वर-सज्ञा पु० १ शब्द। आवाज। ध्वनि।  
२ संगीत में वह शब्द, जिसके उतार-चढ़ाव आदि का कोई निश्चित रूप हो।  
नुर। स्वर सात होते हैं, जिनके नाम क्रम से पञ्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम-पंचत और निषाद है। इनके सक्षिप्त रूप सा, रे, ग, म, प, ध और नि हैं। ३. व्याकरण में वह वर्णात्मक शब्द, जिसका उच्चारण बिना किसी सहायता के होता है और जो किसी व्यंजन के उच्चारण में सहायक होता है। हिंदी वर्णमाला में ११ स्वर हैं—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ। ४. वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढ़ाव। दे० 'स्वर'।  
५. आकाश।

महा०—स्वर उतारना=स्वर नीचा या पीमा करना। स्वर चढ़ाना=स्वर ऊँचा करना।

स्वरग्राम-सज्ञा पु० संगीत में 'सा' से 'नि' तक के सात स्वरों का समूह। सप्तक।

स्वर्पात-सज्ञा पु० १ किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ रुक जाना। २ उचित स्वरों का वेग आदि का ध्यान रखते हुए शब्दों का उच्चारण।

स्वरभंग-सज्ञा पु० आवाज का बैठना। गला बैठने का रोग।

स्वरमंडल-सज्ञा पु० एक प्रकार का वाजा, जिसमें तार लग होते हैं।

स्वरलासिका-सज्ञा स्त्री० बशी। बाँसुरी।

स्वर-लिपि-सज्ञा स्त्री० संगीत में किसी गीत या तान आदि में लगनेवाले स्वरों का क्रमानुसार लेख।

स्वरवेधी-सज्ञा पु० दे० "शब्दवेधी"।  
स्वरशास्त्र-सज्ञा पु० वह शास्त्र, जिसमें स्वर-संघी वादों का विवेचन हो। स्वर-विज्ञान।

स्वरसंक्रम-सज्ञा पु० स्वरों का उतार-चढ़ाव।  
स्वरस-सज्ञा पु० पतियों आदि धोपधियों को कूट, पोस और छानकर निकाला हुआ रस (वंचक)।

स्वरात-वि० वह शब्द, जिसके अंत में कोई स्वर हो। जैसे—गाला।

स्वराज्य-सज्ञा पु० अपना राज्य, अपना शासन। वह राज्य या शासन-प्रणाली, जिसमें किसी देश के निवासी अपने देश का सब शासन और प्रबंध बिना किसी विदेशी शक्ति के दबाव के स्वयं करते हैं।

स्वराट्-सज्ञा पु० १ ब्रह्मा। २ ईश्वर।  
३ स्वराज्य शासन-प्रणालीवाले देश का प्रधान या राजा। ४. एक वैदिक छंद।

वि० जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

स्वरापगा-सज्ञा स्त्री० आकाशगंगा। मदा-किनी।

स्वराष्टक-सज्ञा पु० संगीत में एक प्रकार का सकर राग।

स्वराष्ट-सज्ञा पु० अपना देश, राज्य।

स्वराष्ट-मन्त्री, स्वराष्ट-सचिव-सज्ञा पु० किसी राज्य का वह मन्त्री, जिसके अधीन पुलिस, जेल आदि जैसे राज्य के आन्तरिक विषयों का शासन-प्रबन्ध हो। गृहमन्त्री।  
(अंग्रे०—होम मिनिस्टर)

स्वरित-सज्ञा पु० वह स्वर, जिसका उच्चारण न बहुत जोर में हो और न बहुत धीरे से हो।

वि० १ स्वर से युक्त। २. गूँजता हुआ।

स्वरूप-सज्ञा पु० १. आकार। आकृति। मूर्ति। शक्ति। २. आत्मा ३. स्वभाव। ४. मूर्ति या चित्र आदि। ५. देवताओं आदि का धारण किया हुआ रूप। ६. किसी देवता का रूप धारण करनेवाला।

वि० १ सुन्दर। खूबसूरत। २. तुल्य। समान।

अव्य० तीर पर। रूप में।  
स्वरूपपत्र-सज्ञा पु० परमात्मा और आत्मा के  
स्वरूप को पहचाननेवाला। तत्त्वज्ञ।  
स्वरूपपता-सज्ञा स्त्री० स्वरूप का भाव या  
धर्म।

स्वरूपवान्-वि० [स्त्री० स्वरूपवती] अण्डे  
स्वरूपवाला। सुंदर।

स्वरूपो-वि० १. वरूपवाला। स्वरूपयुक्त।  
२. जो किसी के रूप से मिलता हो। जिसने  
किसी का रूप धारण किया हो।

\*सज्ञा पु० दे० "सारूप्य"।

स्वरोचिस्-सज्ञा पु० स्वरोचिष् मनु के पिता,  
जो कलि-नामक गधर्व के पुत्र थे।

स्वरोद-सज्ञा पु० एक प्रकार का बाजा, जिसमें  
तार लगे होते हैं।

स्वरोदय-सज्ञा पु० यह शास्त्र, जिसमें द्वातां  
के द्वारा सब प्रकार के शुभ और अशुभ  
फल जाने जाते हैं।

स्वर्गगा-सज्ञा स्त्री० स्वर्ग में बहुनेवाली नदी।  
'आकाशगंगा'। मदाकिनी।

स्वर्ग-सज्ञा पु० १. हिंदुओं के अनुसार सात  
लोकों में से तीसरा लोक, जिसके बारे में  
कहा गया है कि जो लोग पुण्य और सत्कर्म  
करके मरते हैं, उनकी आत्माएँ इसी लोक  
में जाकर रहती हैं। देवलोक। २. अन्य  
धर्मों में इस प्रकार का स्थान। विहिस्त।

३. वह स्थान, जहाँ स्वर्ग का-सा सुख  
मिले। बहुत अधिक आनन्द का स्थान।

४. सुख। ५. ईश्वर। ६. आकाश।

मुहा०—स्वर्ग जाना या सिंघारना=मरना।  
देहात होना।

यौ०—स्वर्ग-मुख=बहुत अधिक और उत्तम-  
कोटि का सुख। स्वर्ग की धार=आकाश-  
गंगा।

स्वर्गकाम-सज्ञा पु० स्वर्ग की कामना करने-  
वाला। स्वर्ग-प्राप्ति का इच्छुक।

स्वर्गमग्न-सज्ञा पु० स्वर्ग जाना। मरना।

स्वर्गगामी-वि० १. स्वर्ग जानेवाला। २.  
मरा हुआ। स्वर्गीय।

स्वर्गंत-वि० जो स्वर्ग चला गया हो। जो  
मर गया हो। मृत।

स्वर्गतरंग-सज्ञा पु० कल्पतरु।

स्वर्गद-वि० स्वर्ग देनेवाला।

स्वर्गपेन-सज्ञा स्त्री० कामपेन।

स्वर्गनदी-सज्ञा स्त्री० आकाशगंगा।

स्वर्गपति-सज्ञा पु० इन्द्र।

स्वर्गपुरी-सज्ञा स्त्री० इन्द्रपुरी। अमरावती।  
स्वर्ग।

स्वर्गलाभ-सज्ञा पु० मरना। मृत्यु। स्वर्ग  
प्राप्त करना।

स्वर्गलोक-सज्ञा पु० दे० "स्वर्ग"।

स्वर्गवधू-सज्ञा स्त्री० देवागता। अम्बरा।

स्वर्गवाणी-सज्ञा स्त्री० दे० "आकाशवाणी"।

स्वर्गवास-सज्ञा पु० मरना। मृत्यु। स्वर्ग में  
रहना।

स्वर्गवासी-वि० [स्त्री० स्वर्गवासीनी]  
स्वर्ग में रहनेवाला। जो मर गया हो।  
स्वर्गीय।

स्वर्गस्थ-वि० स्वर्ग में स्थित। जो स्वर्ग में  
हो। जो मर गया हो।

स्वर्गारोहण-सज्ञा पु० स्वर्ग की ओर पैर  
बढ़ाना। मरना। मृत्यु।

स्वर्गिक-वि० स्वर्ग का। स्वर्ग-सम्बन्धी।  
स्वर्गीय।

स्वर्गी-वि० स्वर्ग में रहनेवाला। जो मर  
गया हो।

स्वर्गीय-वि० [स्त्री० स्वर्गीया] स्वर्ग का।  
स्वर्ग-सम्बन्धी। जो मर गया हो।

स्पर्ण-सज्ञा पु० १. सोना-नामक बहुमूल्य  
धातु। कचरा। २. धतूरा। ३. हाथकेसर।

स्पर्णकबली-सज्ञा स्त्री० सोनाकेला।

स्पर्णकमल-सज्ञा पु० लाल कमल।

स्पर्णकार-सज्ञा पु० सुनार।

स्पर्णकीट-सज्ञा पु० जुगनू। सोनकिम्बा।  
एक तरह का चमकीला कीड़ा, जो अँधेरे में

उड़ने पर प्रकाश करता है।

स्पर्णगिरि-सज्ञा पु० सुमेरु पर्वत।

स्पर्णज्योती-सज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति या  
सत्वा आदि के ५० वें वर्ष मनाई जानेवाली  
वर्षगांठ। (अग्ने-गोलेन जुवली)।

स्पर्णविषय-सज्ञा पु० अत्यन्त शुभ दिन या  
सहस्वपूर्ण दिन।

वर्णपत्र-सज्ञा पु० सोने का पत्तर। सोने का तवक।

वर्णपंपदी-सज्ञा स्त्री० वैद्यक में सग्रहणी (दस्तों की बीमारी) के लिए बहुत लाभदायक माने जानेवाली एक औषध।

वर्णपुरी-सज्ञा स्त्री० लका।

वर्णफल-सज्ञा पु० धतूरा।

वर्णभाक्, स्वर्णभान्-सज्ञा पु० सूर्य।

वर्णभूमि-सज्ञा स्त्री० वह स्थान, जहाँ सब प्रकार के सुख हो।

वर्णमय-वि० जो सोने का हो। सुनहला।

वर्णमाशिक-सज्ञा पु० एक खनिज पदार्थ, जो औषध के काम में आता है और जिसकी गणना उपधातुओं में है।

वर्णमुद्रा-सज्ञा स्त्री० सोने का सिक्का। मोहर। अक्षरपत्री।

वर्णयुग-सज्ञा पु० ऐसा समय, जब सब प्रकार की समृद्धि और उन्नति हो। श्रेष्ठ युग। सबसे अच्छा समय।

वर्णयुक्ता-सज्ञा स्त्री० पीली जूही।

वर्णम-वि० सुनहला। सोने के रंग का।

वर्धनी-सज्ञा स्त्री० गया।

वर्तगरी-सज्ञा स्त्री० अमरावती। स्वर्ग।

वर्तदी-सज्ञा स्त्री० स्वर्गा। आकाशगंगा।

वर्त्तिक-सज्ञा पु० स्वर्ग।

वर्त्तेश्या-सज्ञा स्त्री० अम्तरा।

वर्त्त-सज्ञा पु० स्वर्ग के वृक्ष। अश्विनी-कुमार।

वर्त्त-वि० बहुत पीड़ा। जरा-सा।

वर्त्त-वि० जो अपने वश में हो। स्वतन्त्र। स्वाधीन। जिनेन्द्रिय।

वर्त्त-वि० जो केवल अपने ही में हो। अपने पर अधिकार रखनेवाला।

वर्त्तानि-सज्ञा स्त्री० अपने पिता के घर पर रहनेवाली स्त्री।

वर्त्तवैक-सज्ञा पु० भला-बुरा सोचने की शक्ति।

वर्त्त-सज्ञा स्त्री० बहिन।

वर्त्त-अव्य० कल्याण हो। मंगल हो। (आशीर्वाद-वचन)।

सज्ञा स्त्री० १. कल्याण। मंगल। २. ब्रह्मा की तीन स्त्रियों में से एक। ३. सुख।

वर्त्तिक-सज्ञा पु० १. एक मंगल-चिह्न। इसका रूप यह है ॥ २. शरीर के खास अंगों में होनेवाला उन्नत आकार का चिह्न जो शुभ माना जाता है। ३. हठयोग में एक आसन। ४. चौराहा। ५. एक यन्त्र। ६. साँप के फन की रेखा। ७. चावल पीसकर और पानी में मिलाकर बनाया हुआ एक मंगल-द्रव्य, जिसमें देवताओं का निवास मानते हैं।

वर्त्तवाचन-सज्ञा पु० [वि० वर्त्तवाचक] शुभ कार्यों के आरम्भ में किया जानेवाला एक धार्मिक कृत्य, जिसमें मन-पाठ किया जाता है।

वर्त्तवाद-वि० आशीर्वाद।

वर्त्तयन-सज्ञा पु० किसी खास कार्य में शुभ के विचार से किया जानेवाला धार्मिक कृत्य।

वर्त्त-वि० [सज्ञा स्त्री० वर्त्तता] १. नीरोग। तन्दुरुस्त। २. भला-चपा। ३. जिसका चित्त ठिकाने हो। सावधान।

वर्त्तचित्त-वि० जिसकी तबीयत ठीक हो। जिसका चित्त ठिकाने हो। शांतचित्त।

वर्त्तता-सज्ञा स्त्री० १. स्वस्थ या तन्दुरुस्त होने का भाव। नीरोगता। आरोग्य। स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती। २. सावधानी।

वर्त्त-सज्ञा पु० १. दूसरे का रूप धारण करने के लिए बनावटी वेप। नकल। रूप। २. मजाक का खेल या तमाशा। ३. धोखा देने के लिए बनाया हुआ कोई रूप। ढोंग। आडम्बर।

वर्त्तना\*-क्रि० रा० बनावटी वेप धारण करना। वर्त्त रचना।

वर्त्त-सज्ञा पु० बनावटी वेप धारण करके अननी जीविका चलानेवाला। बहुरूपिया। ढोंगी।

वि० बनावटी रूप धारण करनेवाला।

वर्त्तानकरण-सज्ञा पु० किसी चीज को अपने शरीर पर इस तरह धारण करना कि वह शरीर में मिलकर एक हो जाय। आत्मसात् करना।

वर्त्त-सज्ञा पु० १. मन। अतःकरण। २. अपना अन्त। मृत्यु।

स्वाक्षर-सज्ञा पु० हस्ताक्षर। दस्तखत। अपने लिखे हुए अक्षर।

स्वाक्षरित-वि० अपने हस्ताक्षर से युक्त। अपना दस्तखत किया हुआ।

स्वागत-सज्ञा पु० आदर-सत्कार। अतिथि या किसी बड़े व्यक्ति के आने पर उसका अभिनन्दन करना। अगवानों। अम्बरना।

स्वागतकारिणी-समिति या सभा-सज्ञा स्त्री० किसी सभा या सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों के स्वागत आदि की व्यवस्था करने के लिए संप्रदित समिति।

स्वागतपत्रिका-सज्ञा स्त्री० पत्र के परदेश से लौटने से प्रसन्न होनेवाली नायिका। आगत-पत्रिका।

स्वागतप्रिया-सज्ञा पु० अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न होनेवाला नायक।

स्वागता-सज्ञा स्त्री० एक वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में (र, न, भ, य, ग) ५५ + ॥ + ५॥ + ५५ होता है।

स्वाच्छद\*-सज्ञा पु० दे० "स्वच्छन्दता"। वि० वि० स्वच्छन्दतापूर्वक। स्वतन्त्रता या आजादी के साथ। सुख से। सहज से।

स्वातन्त्र्य-सज्ञा पु० दे० "स्वतन्त्रता"।

स्वाति-सज्ञा स्त्री० पद्महवा नक्षत्र, जो कलित ज्योतिष में धूम माना गया है। कहते हैं कि चातक इसी नक्षत्र की वर्षा का पानी पाता है और इसी वर्षा के जल से मोती उत्पन्न होता है।

स्वातिपथ-सज्ञा पु० आकाशमार्ग।

स्वातियोग-सज्ञा पु० आपाद शुक्लपक्ष में स्वाति-नक्षत्र का चन्द्रमा के साथ योग।

स्वातिसुत-सज्ञा पु० मोती।

स्वातिमुवन-सज्ञा पु० दे० "स्वातिसुत"।

स्वाती-सज्ञा स्त्री० दे० "स्वाति"।

स्वात्म-वि० अपना।

स्वात्मवध-सज्ञा पु० आत्महत्या। अपनी आत्मा को मारना।

स्वाद-सज्ञा पु० १ रसनेद्रिय (जीभ, मुँह) द्वारा होनेवाला अनुभव। जायका। मजा। २ किसी बात में होनेवाली रुचि या उसमें मिलने

वाला आनन्द। ३ चाह। इच्छा। कानना।

४ मोठा रस। ५ रसानुभूति।

मुहा०—स्वाद चखाना=किसी को उसके लिए हुए अपराध का दण्ड देना।

स्वावक-सज्ञा पु० १ स्वाद लेनेवाला। २

स्वाद जाननेवाला। ३ खाने को चीरे

चरानेवाला। ४ स्वाद परखनेवाला।

स्वादन-सज्ञा पु० स्वाद लेना। चखना। मज

लेना।

स्वादनीय-वि० स्वाद लेने योग्य। जायकेदार

स्वादपिष्ट।

स्वाबित-वि० चखा हुआ। स्वाद लिया हुआ।

स्वादपिष्ट-वि० अच्छे स्वादवाला। खाने

में अच्छा लगानेवाला। जायकेदार।

सुस्वादु।

स्वाबी-वि० स्वाद लेनेवाला। मजा लेनेवाला।

रसिक।

स्वादु-सज्ञा पु० १. मोठा रस। मधुरता। २

गुड। ३ दूध। ४ महुआ। ५ नींबू।

वि० १ माठा। मजेदार। २ जायकेदार।

स्वादपिष्ट। ३ सुंदर।

स्वाबुखंड-सज्ञा पु० गुड।

स्वाबुखित-सज्ञा पु० पीछूकत।

स्वाडुमूल-सज्ञा पु० गाजर।

स्वाद्य-वि० स्वाद लेने योग्य।

स्वाधिकार-सज्ञा पु० अपना अधिकार।

स्वतन्त्रता। स्वाधीनता।

स्वाधिष्ठान-सज्ञा पु० हठयोग के अनुसार

शरीर के छ चक्रों में से एक, जिसका स्थान

शिखर का मूल माना गया है। (वैज्ञानिका

के अनुसार इसी केन्द्र से जीवन और शरीर

की प्रजननशक्ति बढ़ती है।)

स्वाधीन-वि० जो केवल अपने अधीन हो, दूसरे

के अधीन न हो। स्वतन्त्र। आजाद। निरंकुश।

स्वाधीनता-सज्ञा स्त्री० स्वाधीन होने का भाव।

स्वतन्त्रता। आजादी।

स्वाधीनपत्रिका-सज्ञा स्त्री० वह नायिका,

जिसका पति उसके वश में हो। पति को

अपने वश में करनेवाली नायिका।

स्वाधीनभर्तृका-सज्ञा स्त्री० पति को वश में

रखनेवाली नायिका। स्वाधीनपत्रिका।

स्वाध्याय-सज्ञा पु० १ नियमानुसार वेदों का अध्ययन। २ अनुशीलन। अध्ययन।  
स्वाध्यायी-सज्ञा पु० स्वाध्याय करनेवाला। वेदपाठी।

त्वाना\*†-क्रि० सं० दे० "सुलाना"।

त्वानुभव-सज्ञा पु० अपना अनुभव। अपना तजुर्बा।

त्वानुरूप-वि० अपने रूप का। अपने रूप की तरह। अपने सदृश।

स्वाप-सज्ञा पु० १ नींद। २ स्वप्न। ३ अज्ञान।  
स्वापन-सज्ञा पु० नींद लानेवाली दवा। प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र, जिसके प्रभाव से शत्रु को नींद आ जाती थी।

वि० नींद लानेवाला।

स्वाभाविक-वि० स्वभाव से होनेवाला। अपने आप होनेवाला। प्राकृतिक। नैसर्गिक। कुदरती।

स्वाभाविकी-वि० दे० "स्वाभाविक"।

स्वाभाव्य-वि० अपने आप पैदा होनेवाला।

सज्ञा पु० स्वभाव का भाव। स्वाभाविकता।

स्वाभिमान-सज्ञा पु० [वि० स्वाभिमानी] अपने प्रतिष्ठा या इज्जत का अभिमान। अपनी मान-मर्यादा का ध्यान।

स्वामिक-वि० १ स्वामी या मालिक का। २ स्वामी-सम्बन्धी। ३ जिसका कोई स्वामी या मालिक हो।

स्वानिकात्मिक-सज्ञा पु० शिव के पुत्र कार्तिकेय। स्कंद।

स्वामिता-सज्ञा स्त्री० दे० "स्वामित्व"।

स्वामित्व-सज्ञा पु० प्रभुत्व। स्वामी होने का भाव।

स्वामिनी-सज्ञा स्त्री० १ मालकिन। २ घर की मालकिन। गृहिणी। ३ धीराधिका।

स्वामित्व-सज्ञा पु० जमीन के मालिक को निश्चित रूप से मिलनेवाला धन बादि। आविष्कारक या प्रयत्न-सेवक को उसके कार्य से होनेवाले लाभ से, निश्चित रूप से, मिलनेवाला धन [अप्रे०-रायस्टा]।

स्वामी-सज्ञा पु० [स्त्री० स्वामिनी] १ मालिक। २ किसी वस्तु पर सब प्रकार के अधिकार रखनेवाला। ३ अन्नदाता।

जीविका देनेवाला। प्रभु। भगवान्। ४. घर का प्रधान पुरुष। ५ पति। ६. राजा। ७. सेनानायक। ८. कार्तिकेय। ९. शिव। १०. विष्णु। ११ साधु, सन्यासी और धर्माचार्यों की उपाधि या सम्बोधन।

स्वाम्य-सज्ञा पु० स्वामित्व। प्रभुत्व।

स्वार्थभूव-सज्ञा पु० चौदह मनुष्यों में पहले मनु, जो स्वयंभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने जाते हैं।

स्वार्थभू-सज्ञा पु० दे० "स्वार्थभूव"।

स्वायत्त-वि० जो अपने अधीन हो। जिस पर अपना अधिकार हो। जो अपने कार्यों का संचालन अपने आप करता हो और किसी दूसरे के अधीन न हो।

स्वायत्त शासन-सज्ञा पु० वह शासन, जो अपने अधिकार में हो। स्वराज्य। स्वानिक स्वराज्य। किसी राज्य के भिन्न-भिन्न नगरी आदि को अपना शासन आप करने की स्वतन्त्रता और ऐसी शासन-प्रणाली। (अप्रे०-लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट)।

स्वार्थ\*†-सज्ञा पु० दे० "स्वार्थ"।

वि० सफल। सार्थक। सिद्ध।

स्वार्थ-वि० १ सरसता। रसीलापन। २ स्वाभाविकता।

स्वारोचिष-सज्ञा पु० [स्वारोचिष के पुत्र] दूसरे मनु का नाम।

स्वार्थ-सज्ञा पु० १ अपना मतलब। गरज। अपना प्रयोजन। २ अपना लाभ। अपनी भलाई। ऐसी बात, जिसमें अपना लाभ हो।

३. अना धन।

वि० सार्थक। सफल। कामयाब।

स्वार्थता-सज्ञा स्त्री० स्वार्थ का भाव। सुदुर्गति।

स्वार्थत्याग-सज्ञा पु० किसी अच्छे काम के लिए अपने हित या लाभ को छोड़ना।

स्वार्थत्यागी-वि० दूसरे की भलाई के लिए अपने लाभ को छोड़ देनेवाला।

स्वार्थपर-वि० स्वार्थी। सुदुर्गज।

स्वार्थपरता-सज्ञा स्त्री० स्वार्थपर या स्वार्थी होने का भाव। सुदुर्गज।

स्वार्थपरायण-वि० [सज्ञा स्वार्थ-परायणता] स्वार्थी। सुदुर्गज।

**स्वार्थसाधन-सज्ञा पु०** [वि० स्वार्थ-साधक]  
अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम  
निकालना। अपना मतलब हल करना।  
**स्वार्थाप-वि०** जो अपने स्वार्थ के वश होकर  
धधा हा। अपना काम निकालने के लिए  
भले-बुरे या विचार न करनेवाला।  
**स्वार्थी-वि०** सुदगरज। अपना हा मतलब  
निकालनेवाला। मतलबी।  
**स्वावलंब-सज्ञा पु०** दे० 'स्वावलम्बन'।  
**स्वावलम्बन-सज्ञा पु०** अपने सहारे या भरोसे  
पर रहना। अपने भरोसे रहकर  
काम करना। अपने बल पर काम करना।  
**स्वावलंबी-वि०** अपने सहारे या भरोसे पर  
रहनेवाला। अपने बल पर काम करनेवाला।  
**स्वाश्रय-सज्ञा पु०** केवल अपना सहारा  
रखना, दूसरे का भरोसा न करना।  
वह, जिसे केवल अपना ही सहारा हा  
दूसरा का सहारा न हो।  
**स्वाश्रयी-वि०** दूसरे का भरोसा न करके  
अपने बल पर काम करनेवाला।  
**स्वाधित-वि०** केवल अपन सहारे पर रहने  
वाला। स्वावलंबी।  
**स्वास्थ्य-सज्ञा पु०** स्वस्थ या नीरोग होने  
की अवस्था। तंदुरुस्ती। आरोग्य।  
**स्वास्थ्यकर-वि०** १ स्वस्थ या तंदुरुस्त  
करनेवाला। २ स्वास्थ्य के लिए लाभदायक।  
आरोग्यवर्द्धक।  
**स्वाहा-अव्य०** एक शब्द, जिसका प्रयोग  
हुयन करने के समय किया जाता है।  
सज्ञा स्त्री० अग्नि की पत्नी का नाम।  
**मुहा०**—स्वाहा करना=नष्ट करना।  
**स्वीकरण-सज्ञा पु०** १ अपनाना। अंगीकार  
करना। २ मानना। राजी होना।  
**स्वीकार-सज्ञा पु०** १ मान लेना। कबूल कर  
लेना। २ अपनाने की क्रिया। अंगीकार।  
**स्वीकारोचित-सज्ञा स्त्री०** अपने कथन की  
स्वीकार करना। वह वयान, जिसमें अभि-  
युक्त अपना अपराध स्वीकार कर ले।  
अपराध की स्वीकृति।  
**स्वीकार्य-वि०** स्वीकार करने योग्य। मानव  
लायक। अपनाने या लेने लायक।

**स्वीकृत-वि०** माना हुआ। मजूर। स्वीकार  
किया हुआ।  
**स्वीकृति-सज्ञा स्त्री०** मजदूरी। सम्मति। रजा-  
मद। स्वीकार का नाम।  
**स्वीय-वि०** निज का। अपना।  
सज्ञा पु० स्वजन। आत्मीय। सबंधी।  
**स्वीयत्व-सज्ञा पु०** अपनापन। आत्मीयता।  
**स्वेच्छा-सज्ञा स्त्री०** अपनी इच्छा।  
**स्वेच्छाचार-सज्ञा पु०** [स्त्री० स्वेच्छा-  
चारिणी] इच्छानुसार काम करना। जो  
जो में चाय, वही करना। मनमाना।  
**स्वेच्छाचार्य-वि०** [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] मन  
माना काम करनेवाला। स्वच्छद। निरकुश।  
**स्वेच्छासेवक-सज्ञा पु०** दे० 'स्वयसेवक'।  
**स्वेटर-सज्ञा पु०** [अंग्रे०] ऊनी बनियान।  
**स्वेद-सज्ञा पु०** १ पसीना। २ नाप। ३ ताप। ४ गर्मी।  
**स्वेदक-वि०** पसीना लानेवाला।  
**स्वेदकण-सज्ञा पु०** पसीने की बूद।  
**स्वेदचूषक-सज्ञा पु०** पसीना गुलानेवाला।  
ठंडी हुआ।  
**स्वेदज-वि०** पसीने से उत्पन्न होनेवाला।  
(जू, खटमल, मच्छर आदि)।  
**स्वेदजल-सज्ञा पु०** पसीना।  
**स्वेदन-सज्ञा पु०** पसीना निकलना।  
**स्वेदित-वि०** पसाने से युक्त। भफारा दिया  
हुआ। सेवा हुआ।  
**स्व\*-वि०** अपना। निज का।  
सब० दे० 'सा'।  
**स्वैर-वि०** १ मनमाना काम करनेवाला।  
स्वच्छद। स्वतंत्र। २ धीमा। मद।  
**स्वैरधारी-वि०** [स्त्री० स्वैरधारिणी] १  
मनमाना काम करनेवाला। निरकुश। २  
व्यभिचारा। लम्पट।  
**स्वैरता-सज्ञा स्त्री०** स्वेच्छाचार। स्वच्छदता।  
मनमाना काम करना। निरकुशता।  
**स्वैराचार-सज्ञा पु०** स्वेच्छाचार। मनमानी।  
इच्छानुसार काम करना।  
**स्वैरिणी-सज्ञा स्त्री०** व्यभिचारिणी स्त्री।  
**स्वैरित-सज्ञा स्त्री०** दे० 'स्वैरता'।  
**स्वोपाजित-वि०** १ अपना उपाजित किया  
हुआ। २ अपना कमाया हुआ।

ह

ह-हिन्दी वर्णमाला का नैतीसवाँ और अन्तिम व्यंजन, जो उच्चारण के अनुसार ऊष्म पर्ण कहलाता है। इसका उच्चारण कठ से होता है, इसलिए इसे कण्ठ्य भी कहते हैं। संज्ञा पुं० १. हंसी। हास। २. महादेव। शिव। ३. जल। पानी। ४. शून्य। ५. शुभ। मंगल। ६. आकाश। ७. ज्ञान। ८. घोड़ा। अश्व।

हँक-संज्ञा स्त्री० दे० "हाँक"।

हँकड़ना-क्रि० अ० १. घमड़ के साथ बोलना। २. ललकारना।

हँकरना-क्रि० अ० दे० "हँकड़ना"।

हँकवा-संज्ञा पुं० शिकार के समय बहुत से लोगों का शोर करके शेर आदि जंगली जानवरों को घेर कर शिकारी के सामने लाना।

हँकवाना-क्रि० स० १. हाँक लगवाना। बुलवाना। २. हाँकने का काम दूसरे से कराना।

हँकवाया\*†-संज्ञा पुं० हाँकनेवाला।

हँका-संज्ञा स्त्री० ललकार। जोर की पुकार। डपट।

हँकाई-संज्ञा स्त्री० हाँकने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

हँकाना-क्रि० स० १. दे० "हाँकना"। २. पुकारना। ३. हँकवाना।

हँकार-संज्ञा स्त्री० १. चिल्लाकर बुलाना। आवाज देकर बुलाना। २. पुकार। बुलाने की ऊँची आवाज।

हँकार\*†-संज्ञा पुं० १. दे० "हँकार"। २. "अहकार"।

हँकारना\*†-क्रि० स० १. जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २. नाम लेकर पुकारना। पास बुलाना। ३. युद्ध के लिए बुलाना। ललकारना।

क्रि० अ० हुकार करना। डपटना।

हँकारा-संज्ञा पुं० १. पुकार। बुलाहट। बुलोवा। २. निमन्त्रण।

हँकारी-संज्ञा स्त्री० १. लोगों की बुलाकर लाने वाला। २. दूत।

हंगर-स्ट्राइक-संज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] भूख हड़ताल। अनशन।

हंगामा-संज्ञा पुं० [फा०] १. शोरगुल। हल्ला। २. भीड़-भाड़। ३. उपद्रव। दंगा। लड़ाई-झगडा। मारपीट।

हँटर-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] कोड़ा। चाबुक।

हंडना-क्रि० अ० १. घूमना-फिरना। २. इधर-उधर बेकार घूमना। ३. इधर-उधर दूकान। वस्त्र-आदि का पहना या ओढ़ा जाना।

हंडरवेड-संज्ञा पुं० [अंग्रे०] ११२ पाँड की एक अंग्रेजी तौल।

हंडा-संज्ञा पुं० तंबी या पीतल का बहुत बड़ा बरतन, जो बहुत से आदमियों के लिए खाना बनाने या पानी रखने आदि के काम आता है।

हंडाना-क्रि० स० १. घुमाना। फिराना। २. काम में लाना।

हंडिया-संज्ञा स्त्री० बटुलीई के आकार का मिट्टी का बरतन। हाँडी। हंडी।

हंत-अव्य० शोक या खेद-सूचक शब्द।

हंता-संज्ञा पुं० [स्त्री० हन्ती] मारनेवाला। बध करनेवाला। हत्यारा।

हँफनि-संज्ञा स्त्री० हाँफने की क्रिया या भाव।

मुहा०—हँफनि मिटाना=सुस्ताना।

हंभाना\*†-क्रि० अ० दे० "हँभाना"।

हस-संज्ञा पुं० १. बड़ी शीलो में रहनेवाला वस्त्र की तरह का एक जलपक्षी। २. माया से निर्लिप्त आत्मा। ३. सूर्य। ४. ब्रह्म। परमात्मा। ५. जीवात्मा। जीव। ६. प्राण वायु। ७. विष्णु। ८. सन्यासियों का एक भेद। ९. घोड़ा। १०. शिव। महादेव। ११. दोहरे के नवें भेद का नाम, जिसमें १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं (पिंगल)। १२. एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में एक भगण और दो गुरु होते हैं। पक्ति।

हंसक-सज्ञा पु० १. हंस-पत्नी। २. पैर की उँग-लियों में पहनने का बिछुरा।

हंसगति-सज्ञा स्त्री० १. हंस की तरह सुंदर धीमी चाल। २. सायुज्य मुक्ति। ३. बीस मानाओं का एक छंद।

हंसगवनि-वि० दे० "हंसगामिनी"।

हंसगामिनी-वि० हंस की तरह सुन्दर धीमी चाल चलनेवाली।

हंसजा-सज्ञा स्त्री० सूर्य की कन्या, यमुना।

हंसता-मुष्ठी-सज्ञा पु० हंसमुख। हंसते चेहरे-वाला। प्रसन्नवदन।

हंसन-सज्ञा स्त्री० हंसने की क्रिया, भाव या उग्रा। हसी।

हंसना-क्रि० अ० १. प्रसन्नता या खुशी के कारण मुँह से एक तरह की आवाज निकलना। खिलखिलाना। कहकहा लगाना। २. अच्छा लगना। ऐसा सुंदर लगना कि हंसता हुआ-सा जान पड़े। ३. दिल्गी करना। हँसी करना। ४. प्रसन्न या मुग्ध होना। खुशी मनाना।

क्रि० स० किसी को मूर्ख बनाना। किसी का उपहास करना। अनादर करना। हँसी उड़ाना। मुहा०—किसी पर हंसना=विनीत की बात कहकर मूर्ख बनाना। उपहास करना। हंसने=हंसने=प्रसन्नता से। पक्षी से। आदमी से। ठाढ़कर हंसना=गौरव से हंसना। अदृष्टमान करना। बात हँसकर उड़ाना=काई बात तुच्छ समझकर हँसी में डाल देना।

यो०—हंसना-खेलना=आनंद की बात-चीत करना। हंसना-खेलना=आनंद करना।

हंसनि\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "हंसन"।

हंसपक्षी-सज्ञा स्त्री० एक पक्षी।

हंसपाद-सज्ञा पु० इंगुर। हिंगुल।

हंसमुख-वि० १. हंसते चेहरेवाला। जिसके चेहरे पर सदा खुशी जाहिर हो। प्रसन्न-वदन। सदा हँसते रहनेवाला। २. पुष्पभिजाज। विनोद-प्रिय। मस्तुरा।

२. पु० हंस की सवारी करनेवाले ब्रह्मा।

हंसराज-सज्ञा पु० एक प्रकार की पहाड़ी नदी। एक प्रकार की अगहनी धान।

हंसली-सज्ञा स्त्री० १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की हड्डी, जो घनुष की तरह टेढ़ी होती है। २. गले में पहनने का सिन्धा का एक मंडलाकार गहना।

हंसवंश-सज्ञा पु० सूर्यवंश।

हंसवाहन-सज्ञा पु० हंस की सवारी करनेवाले ब्रह्मा।

हंसवाहिनी-सज्ञा स्त्री० सरस्वती (जो हंस की सवारी करती है)।

हंससुता-सज्ञा स्त्री० यमुना-नदी।

हंसाई-सज्ञा स्त्री० १. हंसने की क्रिया या भाव। २. निंदा। बदनामी।

हंसाना-क्रि० स० दूसरे को हंसने में प्रवृत्त करना।

हंसाय\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "हंसाई"।

हंताल-सज्ञा स्त्री० ३७ मानाओं का एक छंद।

हंतिनी-सज्ञा स्त्री० हंस की मादा। दे० "हंसी"।

हंसिया-सज्ञा स्त्री० एक धोजार, जिससे सेत को फसल या तरकारी जाद काटी जाती है।

हंसी-सज्ञा स्त्री० १. हंसने की क्रिया या भाव। हास। २. मजाक। दिल्गी।

विनोद। ३. अनादर-सूचक हास। उपहास।

४. लोक-निंदा। बदनामी। ५. अनादर।

मुहा०—हंसी छटना=हंसी आना। हंसी

समझना या हंसी-खेल समझना=साधारण

बात समझना। आसान बात समझना।

हंसी में उड़ाना=परिहास की बात कहकर

डाल देना। हंसी में ले जाना=किसी बात

को मजाक समझना। हंसी उड़ाना=

व्यंगपूर्ण निंदा करना। उपहास करना।

यो०—हंसी-खुशी=प्रसन्नता। हंसते हुए।

हंसी-उठठा=आनंद-प्रीति। मजाक। हंसी-

खेल=विनोद और प्रीति। साधारण या

सहज बात।

हंसी-सज्ञा स्त्री० १. हंस की मादा। हसिनी।

२. ब्राह्म अक्षरी की एक वर्णवृत्ति।

हंशुजा, हंशुवा†-सज्ञा पु० दे० "हंसिया"।

हंसोड़-वि० मजाक करनेवाला। दिल्गी-

बाज। मस्तुरा।

हंसोही\*†-वि० [स्त्री० हंसोही] १. कुछ हंसी

लिये। २. हंसने का स्वभाव रखनेवाला।  
३. दिल्ली का। मजाक से भरा। ४.  
मद हास-सहित। ईशतहास्य-युक्त। ५.  
हंसमुख।

हई-सज्ञा पु० घुड़सवार।

सज्ञा स्त्री० ह॥ आश्चर्य।

हुई\*—क्रि० अ० सर्व० दे० "हो"।

हूक-वि० \* [अ०] १. सच। सत्य।

२. वाजिव। ठीक। उचित। न्याय्य।

सज्ञा पु० १. अधिकार। स्वामित्व। किसी  
वस्तु को अपने कब्जे में रखने, काम में  
लाने या पाने का अधिकार। स्वत्व। २.  
कोई काम करने या किसी से कराने का  
अधिकार। ३. वह वस्तु, जिसे पाने या रखने  
का न्याय में अधिकार प्राप्त हो। दस्तूरी।  
किसी मामले में दस्तूर के मुताबिक मिलने  
वाली कुछ रकम। ४. ठीक या वाजिव  
वात। उचित पक्ष। न्याय्य पक्ष। ५. कर्तव्य।  
फर्ज। ६. खुदा। ईश्वर। (मुसलमान)।

मुहा०—हूक में—विषय में। पक्ष में। हूक  
अदा करना—कर्तव्य पालन करना। हूक पर  
होना—उचित बात का आग्रह करना।

हूकतलफ़ी-सज्ञा स्त्री० किसी का हूक मारना।  
लग्नाय।

हूकदक-वि० भोचका। चकित।

हूकदार-सज्ञा पु० १. हिस्सा पानेवाला।

२. अधिकार रखनेवाला। अधिकारी।

हूक-नाहूक-अव्य० [अ०] जबरदस्ती। बिना  
कारण या प्रयोजन। व्यर्थ। फज़ूल।

हूकबक-वि० दे० "हूक-वक्का"।

हूकबकाना-क्रि० अ० हूक-वक्का हो जाना।  
घबरा जाना।

हूकला-वि० हूकलानेवाला। रुक-रुककर  
बोलनेवाला।

हूकलाना-क्रि० अ० बोलने में अटकना।  
रुक रुककर बोलना।

हूकशफ़ा-सज्ञा पु० [अ०] पटोसियो या  
हिस्तेदारों को जमान, मकान आदि  
खरीदने का बीरो से पहले मिलनेवाला  
हूक या अधिकार।

हूकीकत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. वास्तविकता।

सचाई। असलियत। २. तथ्य। ठीक बात।

३. असल हाल। सच्चा वृत्तान्त।

मुहा०—हूकीकत में—वास्तव में। सचमुच।

हूकीकत खुलना—असल बात का पता लगाना।

हूकीकी-वि० [अ०] असली। सच्चा। सगा।  
आत्मीय।

हूकीम-सज्ञा पु० [अ०] यूनानी रीति से  
दवा करनेवाला। चिकित्सक।

हूकीमी-सज्ञा स्त्री० १. यूनानी चिकित्सा-

शास्त्र। २. हूकीम का पेशा या काम।

हूकीपत-सज्ञा पु० [अ०] अधिकार। हूक-  
दार या अधिकारी होने का भाव।

हूक्काक-सज्ञा पु० तग को काटने और जड़ने  
आदि-का काम करनेवाला।

हूक्का-वक्का-वि० ऐसा चकित या घबराया  
हुआ कि मुंह से बोली न निकले। भोचक।  
बहुत घबराया हुआ।

हूगना-क्रि० अ० १. मल त्याग करना। पाखाना  
फिरना। २. झल मारकर अदा कर देना।

हूगाना-क्रि० स० हूगने की क्रिया कराना।

हूगास-सज्ञा स्त्री० मल त्याग करने की हाजत।

हूचकोला-सज्ञा पु० गाड़ी, चारपाई आदि के  
हिलने-डोलने से लगनेवाला घक्का। धक्का।

हूचना\*—क्रि० अ० दे० "हूचकना"।

हूज-सज्ञा पु० [अ०] मुसलमानों का काबे  
के दर्शन के लिए मक्के (अरब) जाना।

मुसलमानों की काबे तक की यात्रा।

हूजम-हूजम-सज्ञा पु० [अ०] पेट में पचने  
की क्रिया या भाव। पाचन।

पि० १. पेट में पचा हुआ। २. बैईमानी या  
अनुचित ढंग से अधिकार किया हुआ।

हूडपा हुआ।

हूबरत-सज्ञा पु० [अ०] १. महाशय। महारमा।

महापुरुष। २. नटखट या घृत (व्यंग्य)।

हूजामत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. बाल काटने  
और दाढ़ी बनाने का काम या इसकी  
मजदूरी। क्षीर। २. सिर या दाढ़ी के बड़े  
हुए बाल कटाना या मुंडाना।

मुहा०—हूजामत बनाना—१. दाढ़ी या  
सिर के बाल साफ करना या काटना।

२. ठगना। लूटना। ३. मारना-पीटना।

हजार-वि० [फा०] १ जो गिनती में दस सौ हो। सहस्र। २ बहुत से। अनेक। सज्ञा पु० दस सौ की संख्या या अंक, जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०००।

क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक।

हजारहा-वि० [फा०] हजारा। बहुत-से।

हजारा-वि० [फा०] हजार या बहुत अधिक पत्तड़ियों का फूल। सहस्रदल।

सज्ञा पु० फुहारा। फव्वारा।

हजारी-सज्ञा पु० [फा०] १ एक हजार सिपाहियों का सरदार। २ दोगजा। वर्ण-संकर।

हजूम-सज्ञा पु० दे० "हूजूम"।

हजुरा†-सज्ञा पु० [स्त्री० हजुरी] दे० "हजुरी"।

हजुरी-सज्ञा पु० [अ० हजूर] बादशाह या राजा के पास भेदा रहनेवाला सेवक। मालिक की खुशामद में लगा रहनेवाला नौकर। हजो-सज्ञा स्त्री० [अ०] चुराई। निवा। बदनामी।

हज्ज-सज्ञा पु० दे० "हज"।

हज्जाम-सज्ञा पु० हजामत धनानेवाला। नाई। हडक\*†-सज्ञा स्त्री० १ हटकने या मना करने की क्रिया या भाव। रोक। निषेध। २ पशुओं की हाँकने का काम।

हटकन-सज्ञा स्त्री० १ दे० "हटक"। २ पशुओं को हाँकने की छड़ी या लाठी।

हटकना-क्रि० सं० १ रोकना। मना करना। निषेध करना। २ पशुओं को किसी ओर जाने से रोककर दूसरी तरफ हाँकना।

हटतार†-सज्ञा पु० दे० "हटताल"।

सज्ञा स्त्री० भाला का सूत।

हटना-क्रि० अ० १ एक जगह से दूसरी जगह पर जाना। खिसकना। सरकना। टलना। २ घी चुराना। भागना। ३ सामने से दूर होना। ४ न रह जाना। ५ बात पर दृढ़ न रहना। ६ \*† दे० "हटकना"। मना करना।

हटबा-सज्ञा पु० दूकानदार।

हटवाई\*†-सज्ञा स्त्री० खींच लेना या बेचना। प्रत्य विक्रय।

हटवाना-क्रि० सं० हटाने का काम दूसरे से कराना।

हटवार\*†-सज्ञा पु० दूकानदार। हाट में सोदा बेचनेवाला।

हटाना-क्रि० सं० १ एक जगह से दूसरी जगह करना। पिसकाना। सरकाना। किसी स्थान पर न रहने देना। २ दूर करना। भगाना। ३ जाने देना।

हट्ट-सज्ञा पु० १ बाजार। २ दूकान।

यो०—चीहट्ट=बाजार का चोक।

हट्टा-कट्टा-वि० [स्त्री० हट्टी-कट्टी] मोटा-ताजा। हट्ट-मुष्ट। बलवान्।

हट्टी-सज्ञा स्त्री० दूकान।

हठ-सज्ञा पु० [वि० हठी, हठीला] १ किसी बात के लिए अडना। जिद। आप्रह (दुराग्रह)। २ दृढ़ प्रतिज्ञा। पक्का इरादा। जबरदस्ती।

हठधर्म-सज्ञा पु० उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। कट्टरपन। दुराग्रह।

हठधर्म-सज्ञा स्त्री० १ दुराग्रह। उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। २ अपने मत की बात लेकर अडने की प्रवृत्ति। कट्टरपन। जिद्दी।

हठना-क्रि० अ० १ जिद पकड़ना। हठ करना। २ दुराग्रह करना। ३ प्रतिज्ञा करना। दृढ़ संकल्प करना।

मुहा०—हठ कर=बलात्। जबरदस्ती।

हठयोग-सज्ञा पु० यह योग, जिसमें शरीर को साधने के लिए बड़ी कठिन-कठिन मुद्राओं और आसनो आदि का विधान है। जैसे—नेती, धोती आदि क्रियाएँ।

हठविद्या-सज्ञा स्त्री० हठयोग।

हठात्-प्रत्य० १ हठ या जिद के साथ। हठ-पूर्वक। २ जबरदस्ती। बलात्। ३ अवश्य। अव्य०—अचानक। सहसा। एकाएक।

हठाहठ, हठाहठी\*-क्रि० वि० दे० "हठात्"।

हठी-वि० हठ करनेवाला। जिद्दी।

हठीला-वि० [स्त्री० हठीली] १ हठ करनेवाला। जिद्दी। हठी। २ बात का पक्का। दृढ़प्रतिज्ञ। ३ खगाई में बड़ा रहनेवाला। धीर।

हृद-सज्ञा स्त्री० १ एक बड़ा पेट, जिसका फल दवा के काम में लाया जाता है। हर। २ हृद के आकार का एक प्रकार का गहना। लटकन। हृदकप-सज्ञा पु० सहलका। भारी हलचल। हृदक-सज्ञा स्त्री० १ उत्कट इच्छा। रट। धुन। झक। किसी वस्तु के पाने के लिए व्याकुलता २ पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए गहरी आकुलता।

हृदकना-क्रि० अ० किसी वस्तु के अभाव से दुखी होना। तरसना।

हृदकाना-क्रि० स० १ बढावा देना। सह कारना। आक्रमण करने या तग करने आदि के लिए पीछे लगा देना। २ किसी वस्तु के अभाव का दुःख देना। तरसाना। ३ कोई वस्तु माँगनेवाले को न देकर भगाना।

हृदकाया-वि० पागल (कुत्ता)।

हृदगीला-सज्ञा पु० बगल की जाति का एक पक्षी।

हृदजोड-सज्ञा पु० एक प्रकार की लता। कहते हैं, इससे दूटी हुई हृदडी भी जुड जाती है।

हृदताल-सज्ञा स्त्री० किसी बात से असन्तोष या विरोध प्रकट करने या अपनी नाँग पूरी कराने के लिए काम बन्द कर देना—जैसे बाजारा दुकानों को बन्द करना। कल-कारखानों आदि के मजदूरों और मर्मचारियों का अपना काम बन्द कर देना।

यो०—भूज-हृदताल=विरोध प्रकट करना या माँग पूरी कराने के लिए भोजन का त्याग। अनशन। (अग्र०—हगर स्ट्राइक)। किसी विषय पर विरोध प्रकट करने के लिए होनेवाली क्षमिक हृदताल को 'प्रतीक हृदताल' कहते हैं। (अग्र०—टोकम स्ट्राइक)।

हृदना-क्रि० अ० तोल में जांचा जाना।

हृदप-वि० १ निगला हुआ। पेट में डाला हुआ। २ गायब किया हुआ।

हृदपना-क्रि० स० १ मुँह में डाल लेना। खा जाना। २ अगुपित रीति से ले लेना। उड़ा लेना।

हृदबड-सज्ञा स्त्री० जल्दी होने या जल्दबाजी की दशा। जल्दबाजी। पीछता।

हृदबडाना-क्रि० अ० १ जल्दी करना। उतावलापन करना। २ आतुर होना। ३ धवराना। व्याकुल होना।

क्रि० स० किसी को जल्दी करने के लिए कहना। जल्दी करने के लिए कहकर किसी को धवरा देना।

हृदबडिया-वि० उतावला। हृदबडी करनेवाला। जल्दबाज।

हृदबडी-सज्ञा स्त्री० १ उतावली। जल्दी। २ जल्दी के कारण धवराहट।

हृदबडाना-क्रि० स० [अनु०] जल्दी मचाकर दूसरे को धवराना।

हृदवरि, हृदवल-सज्ञा स्त्री० १ ठठरी।

हृदडियों का ढाचा। २ हृदडिया की माला।

हृदडीला-वि० १ हृदडियावाला। २ वह, जिसमें केवल हृदडियाँ बच गई हैं। बहुत दुबला-पतला।

हृदडी-सज्ञा पु० भिड। घरे।

हृदडी-सज्ञा स्त्री० १ शरीर के भीतर की वह बड़ी सफेद चीज, जो भीतरी ढाँचे के रूप में होती है। अस्थि। २ कुल। वंश।

मुहा०—हृदडियाँ गडना या तोडना=खूब मारना। खून, पीटना। हृदडियाँ गिफल आना=शरीर बहुत दुबला होना। पुरानी हृदडी=पुराने आदमी का दृढ़ शरीर।

हत-वि० १ मारा हुआ। बध किया हुआ।

२ पोटा हुआ। ३ खोया हुआ। भवाया हुआ। ४ जिसमें या जिस पर ठोकर लगी हो।

५ नष्ट किया हुआ। बिगाड़ा हुआ।

६ पीड़ित। ७ गुना किया हुआ। गुणित (गणित)।

हतक-सज्ञा स्त्री० [अ०] हठी। बेइज्जती।

अप्रतिष्ठा।

हतक-इज्जती-सज्ञा स्त्री० [अ०] बड़-ज्जती। अप्रतिष्ठा। मानहानि।

हतचेत-वि० जिसकी तना नष्ट हो गई है। तना रहित। जानहीन। बगुप।

बहोप।

हततान-वि० बिगड़ा जात नष्ट हो गया है।

बगुप। बहाय।

हृत्वेव-वि० अभागा ।

हृतना-क्रि० स० १ वध करना । मार डालना । २ मारना । पीटना । ३ पालन न करना । न मानना ।

हृतप्रभ-वि० प्रभाहीन । तेज रहित । जिसकी प्रभा या कान्ति नष्ट हो गई हो ।

हृतप्रभाव-वि० प्रभावहीन । बेअसर । अधि-कारहीन ।

हृतवृद्धि-वि० १. मूलों की वृद्धिहीन । २ अकचकाया हुआ । किकर्तव्य विमूढ़ ।

हृतबोध-वि० दे० "हृतवृद्धि" ।

हृतभागा, हृतभागो-वि० [ स्त्री० हृतभागिनी, हृतभागिन ] भाग्यहीन । अभागा । बदकिरमत ।

हृतभाग्य-वि० अभागा । भाग्यहीन ।

हृतवाना-क्रि० स० जान से मरवाना । वध कराना ।

हृतधी-वि० १. जिसकी कात्ति नष्ट हो गई हो । प्रभाहीन । उदास । २. मूर्खाया हुआ ।

हृता\*†-क्रि० स० [ होना का भूतकाल ] या ।

हृताना-क्रि० स० दे० "हृतवाना" ।

हृताश-वि० नाउम्मीद । जिसे आशा न रह गई हो । निराश ।

हृताहत-वि० मारे गए और धायल ।

हृतोत्साह-वि० जिते कुछ करने का उत्साह न रह गया हो । उत्साहहीन ।

हृत्थ\*-सज्ञा पु० दे० "हाथ" ।

हृत्था-सज्ञा पु० १ हाथियार या औजार का वह भाग, जो हाथ से पकड़ा जाता है । बस्ता । मूठ । २ लकड़ी का वह बल्ला, जिससे खेत की नालियों का पानी धारों और उलीचा जाता है । हाया । हुंरा । ३ केजे के फलों का घोंद ।

हृत्थी-सज्ञा स्त्री० दस्ता । मूठ । औजार या हाथियार का वह भाग, जो हाथ से पकड़ा जाता है ।

हृत्थे-क्रि० वि० हाथ में ।

मुहा०-हृत्थे चढ़ना=१ हाथ में आना । प्राप्त होना । २ वश में होना ।

हृत्था-सज्ञा स्त्री० १ जान से मारना । वध । खून । २. ससट । बखेडा ।

मुहा०-हृत्था लगना=हृत्था का पाप लगना । किसी के वध का दोष ऊपर आना ।

हृत्थारा-सज्ञा पु० [ स्त्री० हृत्थारिन, हृत्थारी ] हृत्था करनेवाला । जान से मारनेवाला ।

हृत्थारी-सज्ञा स्त्री० १ हृत्था करनेवाली ।

२ हृत्था करने का पाप । प्राण-वध का दोष ।

हृथ-सज्ञा पु० 'हाथ' का सशिष्ट रूप (समस्त पदों में) ।

हृथउधार-सज्ञा पु० बिना लिखा-पत्री के कुछ समय के लिए लिया हुआ कर्ज । हथफेर । दस्तगर्दा ।

हृथकडा-सज्ञा पु० १ हाथ की सफाई । २ गुप्त चाल । ३ चालबाजी । चालाकी का ढंग ।

हृथकडी-सज्ञा स्त्री० लोहे का कडा, जो कंरी के हाथ में पहनाया जाता है ।

हृथगोला-सज्ञा पु० हाथ से फेंका जानेवाला गोला, जो तोप के गोली की तरह होता है ।

हृथछुट-वि० मारने के लिए जल्दी हाथ चला देनेवाला । जरा-सी बात, पर मारज होकर मार बैठनेवाला ।

हृथनाल-सज्ञा पु० हाथियों पर ले जाई जानेवाली तोप । गजनाल ।

हृथनी-सज्ञा स्त्री० हाथों की मादा ।

हृथकूल-सज्ञा पु० १ हृथेली की पीठ पर पहनने का एक जडाऊ गहना । हृथसकिर ।

२ हाथी का पहनान का एक गहना । ३ एक प्रकार की आतिशबाजी ।

हृथफेर-सज्ञा पु० १ बिना लिखा पत्री के धोडे दिनों के लिए लिया या दिया हुआ कर्ज ।

२ हृथ-उधार । एक हाथ से लेना और दूसरे हाथ से लौटाना । ३ प्यार करते हुए धरोर पर हाथ फेरने की क्रिया । ४ दूसरे के माल को सफाई से उड़ा देना । ५. हाथ की सफाई ।

हृथलेवा-सज्ञा पु० विवाह में घर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेने की रीति । पाणिग्रहण ।

हृथवास-सज्ञा पु० नाव चलाने का सामान । जैसे-पतवार, डोंडा ।

हृथवसना†-क्रि० स० हाथ में लेना । पकड़ना । काम में लाना ।

हृथसकिर-सज्ञा पु० दे० "हृथकूल" ।

हृथसार-सज्ञा स्त्री० वह घर, जिसमें हाथी रखे जाते हैं । फौतखाना । गजशाला ।

हृथा†-सज्ञा पु० १. हथकड़ा । २ बेंटा । ३ एक

प्रकार की वस्तु, जिससे पानी फेंकते हैं। ४ हाथ का छापा, जो शुभ अवसरों पर दीवारों पर लगाया जाता है।

हयाहयो\*†-अव्य० १ हायोहाय। २ बहुत जल्दी। अटपट। तुरंत।

हयिनी-सज्ञा स्त्री० दे० "हथनी"।

हयिया-सज्ञा पु० हस्त नक्षत्र।

हयिनाना-क्रि० स० १ अपने हाथ में ले लेना। २ धोखा देकर ले लेना। हड़प लेना। ३ हाथ में पकड़ना।

हयियार-सज्ञा पु० हाथ में लेकर काम करने या मारने का साधन। औजार। अस्त्र-शस्त्र। उपकरण।

मुहा०—हयियार रख देना=हार मान लेना। हयियारबंद-वि० सशस्त्र। जा हयियार बांधे या लिये हो।

हयेली-सज्ञा स्त्री० करतल। हाथ की कलाई के आगे का चौड़ा हिस्सा, जिसमें उँगलियाँ होती हैं।

मुहा०—हयेली में आना=१ मिलना। प्राप्त होना। २ वश में होना। हयेली पर ग्राह्य होना=ऐसी हालत में होना, जिसमें जान जाने का भय हो। हयेली पर जान लेकर वाम करना=मरने का डर छोड़कर काम करना। हयेली पर सरसा जमाना=१ अजीबता काम करना। २ जल्दबाजी करना।

हयैव-सज्ञा पु० हयोडा।

हयोडी-सज्ञा स्त्री० १ हाथ से वाम करने का ठोकर डग। हस्त-कोशल। २ किसी काम में हाथ लगाना। ३ लिखावट।

हयोडा-सज्ञा पु० [स्त्री० हयोडी] एक औजार जिसमें काशीगर किसी चीज को तोड़ते-तोड़ते या गड़ते हैं। पन। मारतल।

हयोडी-सज्ञा स्त्री० छोटा हयोडा।

हव-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ नीमा। २ मर्षा। ३ अन्तिम स्थिति। ४ उचित मोमा।

मुहा०—हव बाधना=धीमा निपारित करना। हव से ज्यादा=बहुत अधिक। अत्यंत। हव हिमाव नहा=बहुत ही ज्यादा। अत्यंत।

हवका-सज्ञा पु० पक्का। बाढ़।

हवस-सज्ञा स्त्री० डर। आसका।

हवसना-क्रि० अ० डरना। हवस या डर पैदा होना।

हवसाना-क्रि० स० डरवाना।

हवोस-सज्ञा स्त्री० [अ०] मुसलमानों का वह धर्मग्रन्थ, जिसमें मुहम्मद साहब के वचनों का संग्रह है।

हन-क्रि० अ० १ जान से मारना। २ पीटना। मारना। ३ नष्ट करना।

हनन-सज्ञा पु० [वि० हननीय, हनित] १ मार डालना। वध करना। २ प्रहार करना। पीटना। ३ नष्ट करना। ४ गुणा करना (गणित)।

हनना†-क्रि० स० १ मार डालना। वध करना। २ प्रहार करना। ३ पीटना। ठोकना। ४ लकड़ी से पीट या ठाककर बजाना। ५ शस्त्र चलाना।

हनवाना-क्रि० स० हनने का कार्य दूसरे से कराना।

हनिवत्†-सज्ञा पु० दे० "हनुमान्"।

हनुब-सज्ञा पु० दे० "हनुमान्"।

हनु-सज्ञा स्त्री० १ दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। \*२ ठुड्डी। चिपुक।

हनुब-वि० पुष्ट या दृढ़ दाढ़वाला। मजबूत जबड़ेवाला।

हनुमत-सज्ञा पु० दे० "हनुमान्"।

हनुमान्-सज्ञा पु० एक वानर वीर, जिन्होंने सीता हरण के बाद रामचन्द्र की बड़ी सेवा और सहायता की थी और जो हिन्दुओं के पूज्य देवता हैं। महावीरजा।

वि० १ दाढ़ या जबड़ेवाला। २ भारी दाढ़ या जबड़ेवाला। ३ बहुत बड़ा वीर।

हनुफास-सज्ञा पु० एक प्रकार का मायिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में बारह मात्राएँ और अन्त में गुरु-रघु हान हैं।

हनोब-अव्य० [पा०] अनी। अनी संक।

हप-सज्ञा पु० मुह में थट ने लेकर आठ बंद करने का शब्द।

मुहा०—हप नर जाना=घाट से मुह में डालकर सा जाना।

जो बड़े भातृभवत थे। इन्हें 'हरदिया दय' भी कहते हैं।

हरद्वान-सज्ञा पु० एक प्राचीन स्थान, जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरद्वानी-वि० हरद्वान का बना हुआ।

हरद्वार-सज्ञा पु० दे० 'हरिद्वार'।

हरना-क्रि० स० १ लूटना। चुराना या छीनना। २ दूर करना। हटाना। ३ मिटाना। नष्ट करना। ४ उठाकर ल जाना।

\*क्रि० अ० दे० 'हारना'।

\*†-सज्ञा पु० दे० 'हिरन'।

मुहा०—मन हरना=मन को आकर्षित करना। लुभाना। प्राण हरना=१ मार डालना। २ बहुत सताप या दुःख देना।

हरनाकस\*†-सज्ञा पु० दे० हिरण्यकशिपु।

हरनाच्छ†-सज्ञा पु० दे० हिरण्याक्ष।

हरनी-सज्ञा स्त्री० हिरन की माँ। मृगी।

हरनीडा-सज्ञा पु० हिरन का बच्चा।

हरफ-सज्ञा पु० [अ०] अक्षर। वर्ण।

हरफा रेवड़ी-सज्ञा स्त्री० १ कमरख की जाति का एक पेड़। २ उक्त पेड़ का फल।

हरखराना\*†-क्रि० अ० दे० हड़बड़ाना।

हरखा-सज्ञा पु० हृषियार।

हरखौन-वि० १ गैवार। लटकभार। अक्खड़। २ भूख। जड़।

सज्ञा पु० १ अपर। कुसासन। २ उपद्रव।

हरम-सज्ञा पु० [अ०] अतपुर। जनान खाना।

सज्ञा स्त्री० १ मुताही। रखली स्त्री। २ दासी। ३ पत्नी।

यो०—हरमखरा=अतपुर। जनानखाना।

हरमखरगी-सज्ञा स्त्री० बदमाशी। शरास्त्र। कुटिलता।

हरयाल\*-सज्ञा स्त्री० हरियाली।

हररि\*-अव्य० दे० हररें।

हरवल\*-सज्ञा पु० दे० 'हरावल'।

हरवली-सज्ञा स्त्री० [तु०] सेना की अग्र शक्ति। फौज की अफसरी।

हरवा†-सज्ञा पु० दे० 'हार'।

वि० दे० 'हरवा'।

हरवाना-क्रि० अ० जल्दी करना। शीघ्रता करना। उतावरी करना।

क्रि०-स० 'हारना' का प्रत्ययार्थक रूप।

हरवाहा-सज्ञा पु० दे० 'हलवाहा'।

हरषना\*-क्रि० अ० १ हृषित होना। प्रसन्न होना। २ पुनर्कृत होना। रोमांच से प्रफुल्ल होना।

हरषाना\*-क्रि० अ० १ हृषित होना। प्रसन्न होना। २ रोमांच से प्रफुल्ल होना।

क्रि० स० हृषित करना। प्रसन्न करना।

हरसिगार-सज्ञा पु० एक पड़ जिसके फूल में पाँच दल और नारंगी रंग की डंढी होती है। परजाता।

हरहाया-वि० [स्त्री० हरहाई] नटखट। चंचल।

हरहाई-वि० १ नटखट। चंचल। २ या

अलू। ३ मारन या तग करनेवाली (गाय)।

हरहार-सज्ञा पु० १ शिवजी के गल का हार। २ साप। ३ शपनाग।

हरसि-सज्ञा स्त्री० १ हरास्त्र। २ धकावट।

३ चिन्ता। ४ दुःख। ५ नय। डर।

हरा-वि० [स्त्री० हरी] १ हरे रंग का।

घास या पत्ती के रंग का। सज्ज। २

ताजा। जो मुरझाया न हो। ३ प्रफुल्ल।

प्रसन्न। ४ (घाव) जो सूखा या भरा न हो। ५ कच्चा फल या दाना।

\*†दे० 'हार'। माला।

मुहा०—हरा भरा=१ जो सूखा या मुरझाया न हो। २ जो हरे पेड़-पौधों से भरा हो।

हराई-सज्ञा स्त्री० हारने की क्रिया या भाव। हार।

हराना-क्रि० स० १ पराजित करना।

परास्त करना। २ यकाना।

हरापन-सज्ञा पु० हरे-होन का भाव। हरियाली। सज्जी।

हराम-वि० [अ०] १ धमद्वारा वर्जित। २ निषिद्ध।

सना पु० १ वह वस्तु या बात जिसका धर्म शास्त्र में निषेध हो। २ खूबर (मुसल)।

बुरा। अनुचित। ३ दूषित। ४ बेईमानी।

५ अपन। पाप। ६ व्यभिचार।

पुहा०—हराम का=१. बेईमानी से प्राप्त ।  
२. मुप्त का । ३. अधर्म से उत्पन्न या प्राप्त ।

हरामखोर—संज्ञा पु० १. थाप की कमाई बानेवाला । मुप्तखोर । २. काम से जी बुरानेवाला । आलसी । निकम्मा ।

हरामजादा—संज्ञा पु० [अ०] [स्त्री० हराम-मादी] १. व्यभिचार से उत्पन्न । दोगला । वर्णसंकर । २. नीच । दुष्ट । बदमाश । पाजी ।

हरामी—वि० दे० "हरामजादा ।" दोगला । नीच । २. दुष्ट । पाजी ।

हरामीपन—संज्ञा पु० 'हरामी' होने का भाव । नीचता । दुष्टता । बदमाशी ।

हारत—संज्ञा स्त्री० [अ०] १. हल्का ज्वर । ज्वराश । २. गर्मी । ताप ।

हारवरि\*—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़ावरि" ।

संज्ञा पु० दे० "हरावल" ।

हारावल—संज्ञा पु० सैनिकों का वह दल, जो मोरचे पर सबसे आगे रहता है ।

हारस—संज्ञा पु० [फा०] १. डर । २. आशका । खटका । ३. दुःख । रज । ४. निराशा । नाउम्मेदी ।

हारहर\*—संज्ञा पु० दे० "हलाहल" ।

हरि—वि० १ पीला । २ हरा । हरित । ३. नीला या बादामी ।

संज्ञा पु० १. विष्णु । २. विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण । श्रीराम । ३. शिव । ४. इन्द्र । ५. घोड़ा । ६. बदर । ७. सिंह । ८. सूर्य । ९. चंद्रमा । १०. मोर । ११. साँप । १२. अग्नि ।

१३. वायु । १४. एक पर्वत का नाम । १५. एक वर्ष या भू-भाग का नाम । १६. अठारह वर्षों का एक छंद ।

अव्य० घीरे । आहिस्ते ।

हरिहर\*—वि० हरा । सव्य ।

हरिहरी\*—संज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली" ।

हरिमाना—क्रि० अ० हरा होना । पल्लवित होना । डहड़हना ।

हरिकपा—संज्ञा स्त्री० भगवान् या उनके अवतारों का चरित्र-वर्णन ।

हरिकीर्तन—संज्ञा पु० भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान ।

हरिगीतिका—संज्ञा स्त्री० अठ्ठाईस मात्राओं का एक छंद, जिसकी पाँचवी, बारहवी, उन्नीसवी और छब्बीसवी मात्रा लघु और अंत में लघु-नुह होता है ।

हरिचंदन—संज्ञा पु० एक प्रकार का चंदन ।

हरिजन—संज्ञा पु० १. भगवान् का भक्त । २. अछूत जाति के व्यक्ति ।

हरिजान\*—संज्ञा पु० दे० "हरियान" ।

हरिण—संज्ञा पु० [स्त्री० हरिणी] १. मृग । हिरन । २. हंस । ३. सूर्य ।

हरिणप्लुता—संज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद, जिसके विषम चरणों में तीन सगण, दो भगण और एक रगण होता है ।

हरिणाक्षी—वि० हिरन की आँखों के समान सुंदर आँखों वाली । सुंदरी ।

हरिणी—संज्ञा स्त्री० १ हिरन की मादा । २. काम-शास्त्र के अनुसार स्त्रियों के चार भेदों में से एक, जिसे विनिषी भी कहते हैं ।

३ एक वर्षिक छंद, जिसमें सत्रह पंक्तियाँ होती हैं । ४ दस वर्णों का एक छंद । ५. पीली चमेली ।

६ मजीठ ।

हरित्—वि० १. हरा । सव्य । २. भूरे या बादामी रंग का ।

संज्ञा पु० १. सूर्य के घोड़े का नाम । २. घोड़ा । ३. मरकत । ४. पन्ना । ५. सिंह । ६. सूर्य ।

हरित—वि० १. पीला । जर्द । २. हरा । सव्य । ३. भूरे या बादामी रंग का ।

हरितमणि—संज्ञा पु० १. मरकत । २. पन्ना ।

हरिताम—वि० हरे रंग की चमकवाला । हरा-पन लिये हुए ।

हरितालिका—संज्ञा स्त्री० १. भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया । २. तीज । ३. तीज का स्त्रियों का व्रत ।

हरिद्रा—संज्ञा स्त्री० १. हलदी । २. मगन । ३. नीला । ४. वन । ५. एक नदी । (इस पद्व के अनेक अर्थ हैं, पर यह विशेषकर हन्दी के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।)

हरिद्राराग—संज्ञा पु० साहित्य में वह पूर्वराग जो स्यासी न हो ।

हरिद्वार—संज्ञा पु० एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ वे

हस्ता-सज्ञा पु० [फा०] सप्ताह। सात दिन या समय।

हयकना†-क्रि० अ० माने या दाँत काटने के लिए सट मं मुँह खोलना।

हि० स० दाँत काटना।

हवर-हवर-क्रि० वि० १ जल्दी-जल्दी। उतावली से। २ जल्दी के कारण ठीक तोर से नहा। हड़बड़ी से।

हयराना†-क्रि० अ० दे० "हड़बड़ाना"।

हयशी-सज्ञा पु० [फा०] हयश देश का निवासी, जो बहुत काला होता है।

हयोव-सज्ञा पु० १ प्रिय। प्यारा। २ मित्र। दोस्त।

हव्य-सज्ञा पु० १ पानी का बूला। बुल्ला। २ झुठ-मूठ की बात।

हवा डबा-सज्ञा पु० जोर-जोर से साँस या पसली चलन की बीमारी, जो प्रायः बच्चा को होती है।

हवस-सज्ञा पु० [अ०] १ हवा न पहुँचने के कारण, दम घुटना। २ दम घुटने की जगह। ३ कैंद। कारावास। जेल।

हम-सर्व० उत्तम पुरुष, बहुवचन-सूचक सर्व नाम शब्द। 'मैं' का बहुवचन।

सज्ञा पु० अहकार। 'हम' का भाव।

अव्य० [फा०] १ साथ। सग। २ सगान। तुल्य।

हमजोली-सज्ञा पु० साथी। सहयोगी।

हमता\*-सज्ञा स्त्री० अहभाव। अहकार।

हमदव-सज्ञा पु० [फा०] १ दुख में सहानुभूति रखनेवाला। २ कष्ट में साथ देनेवाला।

हमदवी-सज्ञा स्त्री० [फा०] दूसरे के दुख से दुखी होना। सहानुभूति।

हमराह-अव्य० [फा०] रास्ते का साथ। साथ में। सग।

हमराही-वि० रास्ते का साथी। एक ही रास्ते पर चलनेवाला।

हमर-सज्ञा पु० [अ०] गर्भ। स्त्री के पेट में बच्चा रहना।

मुहा०-हमत बिरना=गमपात होना।

हमला-सज्ञा पु० [अ०] १ पावा। चढ़ाई।

आक्रमण। २ मारने के लिए झपटना। ३ प्रहार। बार। ४ विराय में पड़ी हुई बात।

हमबतन-वि० एक ही जगह का रहनेवाला।

एक ही देश का रहनेवाला। स्वदेशवासी।

हमवार-वि० [फा०] बराबर सतहवाला।

समतल। सपाट।

हमसर-सज्ञा पु० [फा०] गुण, बात या पद में समान व्यक्ति।

हमसरी-सज्ञा स्त्री० [फा०] बराबरी।

हमहमी-सज्ञा स्त्री० दे० "हमाहमी"।

हमाम-सज्ञा पु० दे० "हम्माम"।

हमारा-सर्व० [स्त्री०] हमारी 'हम' का संबोधकारक रूप।

हमाल-सज्ञा पु० [अ०] १ बोझ उठानेवाला।

२ रक्षक। रखवाला। ३ मजदूर। कुली।

हमागुमा-वि० [फा०] हमारे-नुम्हारे जैसे।

सामान्य लोग।

हमाहमी-सज्ञा स्त्री० १ अपने-अपन लाभ के लिए प्रयत्न। स्वार्थपरता। २ अहकार।

हमीर-सज्ञा पु० दे० "हम्मीर"।

हमें-सर्व० 'हम' का कम और सप्रदान कारक का रूप। हमको।

हमेल-सज्ञा स्त्री० गले में पहनने की चिन्की आदि की माला।

हमेव\*†-सज्ञा पु० अहकार। यमड। 'हम है' यह भापना।

हमेशा-अव्य० [फा०] सब दिन या हर समय। सदा। सर्वदा।

हमें\*-अव्य० दे० "हमें"।

हम्माम-सज्ञा पु० [अ०] नहाने की कोठरी (जिसमें गरम पानी रखा रहता है)। स्नानागार।

हम्मीर-सज्ञा पु० १ रणशम्भोर गढ़ का एक अत्यंत वीर चौहान राजा, जो सन् १३०० ई० में अलाउद्दीन खिलजी के साथ लड़कर मरा था। २ एक मिथित राज।

हयव\*-सज्ञा पु० हयेंद्र। बड़ा या अच्छा थोड़ा।

य-संज्ञा पु० [स्त्री० हया, हयी] १. घोड़ा।  
अश्व। २. कविता में सात की मात्रा सूचित  
करने का शब्द। ३. चार मात्राओं का एक  
छंद। ४. इन्द्र।

हृगृह-संज्ञा पु० घुड़साल। अस्तबल।  
हृग्रीव-संज्ञा पु० १. विष्णु के चौबीस  
अवतारों में से एक अवतार। २. एक  
राक्षस, जो कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रा  
के समय वेद उठा ले गया था।

हृपना\*-क्रि० सं० १. वध करना। मार  
डालना। २. मारना-पीटना। ३. ठीककर  
बचाना। ४. नष्ट करना। न रहने  
देना।

हृपनाल-संज्ञा स्त्री० वह तोप, जिसे घोड़े  
चोचते हैं।

हृपमेघ-संज्ञा पु० अश्वमेघ यज्ञ।

हृपशाला-संज्ञा स्त्री० घुड़साल। अस्तबल।

हृपा-संज्ञा स्त्री० [अ०] लज्जा। शर्म।

हृपात-संज्ञा स्त्री० [अ०] जिदगी। जीवन।

हृपी-हीन हृपात में=जीवन-काल में।  
जिन्दगी में।

हृपादार-वि० [संज्ञा स्त्री० हृपादारी] जिसे  
हृपा हो। लज्जाशील। शर्मदार।

हृप-वि० [फा०] १. प्रत्येक। एक एक। २.  
हरण करनेवाला। छीनने या लूटनेवाला।  
३. दूर करनेवाला। मिटानेवाला। ४. वध  
या नाश करनेवाला। ५. ले जानेवाला।  
बाहक।

संज्ञा पु०\*१. खेत जोतने का हल। २. शिव।  
महादेव। ३. एक राक्षस, जो विभीषण का  
मित्र था। ४. वह सख्या, जिससे भाग दें।  
भाजक (गणित)। ५. अग्नि। आप।  
६. गवहा। ७. छप्पय के दसवें भेद का  
नाम। ८. टगण के पहले भेद का  
नाम।

मुहा०—हर एक=प्रत्येक। एकएक। हर  
रौज=प्रतिदिन। हर दम=सदा।

हरउब-संज्ञा पु० लोरी। बच्चों का सुलाने  
का गीत।

हरए-अव्य० धीरे-धीरे। चुपके से।

हरकत-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. क्रिया। २.

गति। चल। हिलना-डोलना। ३. चेष्टा।  
४. चाल-चलन। ५. बुरा व्यवहार। बुरी  
चाल।

हरकना\*†-क्रि० सं० दे० "हटकना"।

हरकार-संज्ञा पु० [फा०] १. चिद्दो-  
पत्री ले जानेवाला। २. चिद्दोरी।  
डाकिया।

हरखना\*-क्रि० अ० हर्षित होना। प्रसन्न  
होना। खुश होना।

हरखाना-क्रि० अ० हर्षित होना। दे०  
"हरखाना"।

क्रि० सं० प्रसन्न करना। खुश करना।

हरगिज, हरगिज-अव्य० [फा०] कभी।  
कदापि। किसी भी हालत में।

हरचंद-अव्य० [फा०] १. कितने ही बार।  
बारबार। २. यद्यपि। अगरचे।

हरजाई-संज्ञा स्त्री० [फा०] बदचलन औरत।  
दुरुचारिणी। कुलटा।

संज्ञा पु० [फा०] १. हर जगह घूमनेवाला।  
२. आबारा।

हरजाना-संज्ञा पु० [फा०] हानि का बदला।  
क्षतिपूर्ति।

हरट्ट\*-वि० हृष्ट-मुष्ट। मजबूत।

हरण-संज्ञा पु० १. छीनना, लूटना या चुराना।  
२. दूर करना। हटाना। मिटाना। ३.  
नाश। सहार। ४. ल जाना। ५. भाग  
देना। तकसीम करना (गणित)।

हरता-संज्ञा पु० दे० "हर्ता"।

हरता-धरता-संज्ञा पु० सब बातों का अधि-  
कार रखनेवाला। पूर्ण अधिकारी। नाश  
करनेवाला और भरण-पोषण करनेवाला।  
हरताल-संज्ञा स्त्री० पीले रंग का एक खनिज  
पदार्थ।

मुहा०—(किसी बात पर) हरताल लगाना=  
नष्ट करना। रद्द करना।

हरब\*-संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

हरबिया-वि० हल्दी के रंग का। पीला।  
संज्ञा पु० पीले रंग का घोड़ा।

हरबी\*-संज्ञा स्त्री० दे० "हल्दी"।

हरबोल-संज्ञा पु० औरछा के राजा जुमार-  
सिंह (सन् १६२६-३५ ई०) के छोटे भाई,

जो वडे भ्रातृभक्त थे। इन्हे 'हरदिया देव' भी कहते हैं।

हरदान-सज्ञा पु० एक प्राचीन स्थान, जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

हरदानी-वि० हरदान का बना हुआ।

हरद्वार-सज्ञा पु० दे० "हरिद्वार"।

हरना-क्रि० स० १ लूटना। चुराना या छीनना। २ दूर करना। हटाना। ३ मिटाना। नष्ट करना। ४ उठाकर ले जाना।

\*क्रि० अ० दे० "हारना"।

\*†-सज्ञा पु० दे० "हिरन"।

मुहा०—मन हरना=मन को आकर्षित करना। लुभाना। प्राण हरना=१ मार डालना। २ बहुत सताप या दुःख देना।

हरनाफस\*†-सज्ञा पु० दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हरनाच्छ†-सज्ञा पु० दे० "हिरण्यक"।

हरनी-सज्ञा स्त्री० हिरन की मादा। मृगी।

हरनीटा-सज्ञा पु० हिरन का बच्चा।

हरफ-सज्ञा पु० [अ०] अक्षर। वर्ण।

हरफा देवडी-सज्ञा स्त्री० १ कमरख की जाति का एक पेड़। २ उक्त पेड़ का फल।

हरबराना\*†-क्रि० अ० दे० "हड़बडाना"।

हरबा-सज्ञा पु० हथियार।

हरबोग-वि० १ गंवार। लट्ठमार। अवलंब।

२ मुख। जड़।

सज्ञा पु० १ अघेर। कुशासन। २ उपद्रव।

हरम-सज्ञा पु० [अ०] अत पुर। जनान-खाना।

सज्ञा स्त्री० १. मुताही। रखेली स्त्री। २ दासी। ३ पत्नी।

घो०—हरमसरा=अत पुर। जनानखाना।

हरमजबानो-सज्ञा स्त्री० बढमाशी। शरारत।

कुटिलता।

हरयाल\*-सज्ञा स्त्री० हरियाली।

हरयि\*-अव्य० दे० "हरए"।

हरवल\*-सज्ञा पु० दे० "हरावल"।

हरवली-सज्ञा स्त्री० [तु०] सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

हरवा†-सज्ञा पु० दे० "हार"।

वि० दे० "हख्वा"।

हरवाना-क्रि० अ० जल्दी करना। शीघ्रता-करना। उतावली करना।

क्रि०-स० 'हारना' का प्रेरणार्थक रूप।

हरवाहा-सज्ञा पु० दे० "हलवाही"।

हरषना\*-क्रि० अ० १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २ पुलकित होना। रोमाच से प्रफुल्ल होना।

हरषाना\*-क्रि० अ० १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २ रोमाच से प्रफुल्ल होना।

क्रि० स० हर्षित करना। प्रसन्न करना।

हरसिंगार-सज्ञा पु० एक पेड़, जिसके फूल में पाँच दल और नारंगी रंग की डंडी होती है। परजाता।

हरहाया-वि० [स्त्री० हरहाई] नटखट। चंचल

हरहाई-वि० १ नटखट। चंचल। २ शग-डालू। ३ मारने या तग करनेवाली (गाय)।

हरहार-सज्ञा पु० १ शिवजी के गत का हार। २. सप। ३ शेषनाग।

हरसि-सज्ञा स्त्री० १ हुरारत। २ घकावट।

३ चित्ता। ४ दुःख। ५ भय। डर।

हरा-वि० [स्त्री० हरी] १ हरे रंग का।

घास या पत्ती के रंग का। सज्ज। २ ताजा। ३ जो मुरझाया न हो। ३ प्रफुल्ल।

प्रसन्न। ४ (घाव) जो सूखा या भरा न हो। ५ कच्चा फल या बाना।

\*†दे० "हार"। माला।

मुहा०—हरा-भरा=१ जो सूखा या मुरझाया न हो। २ जो हरे पेड़-नीधो से भरा हो।

हराई-सज्ञा स्त्री० हारने की क्रिया या भाव।

हार।

हराना-क्रि० स० १ पराजित करना।

परास्त करना। २ यकाना।

हरापन-सज्ञा पु० हरे होने का भाव। हरियाली।

सन्जी।

हराम-वि० [अ०] १ धर्मद्वारा वर्जित।

निषिद्ध।

सज्ञा पु० १ वह वस्तु या बात, जिसका धर्म

शास्त्र में निषेध हो। २ सूअर (मुसल०)

बुरा। अनुचित। ३ दूषित। ४ वैद्विमानि

५ अधर्म। पाप। ६ ब्यभिचार।

मूढ०—हराम का=१ बेईमानी से प्राप्त ।  
२ मुफ्त का । ३ अधर्म से उत्पन्न या प्राप्त ।

रामखोर-सज्ञा पु० १ पाप की कमाई खानेवाला । मुफ्तखोर । २ काम से जी बुरानेवाला । आलसी । निकम्मा ।

रामजादा-सज्ञा पु० [ अ० ] [ स्त्री० हराम-जादी ] १ व्यभिचार से उत्पन्न । दोगला । वर्णसकर । २ नीच । दुष्ट । बदमाश । पाजी ।

रामी-वि० दे० "हरामजादा ।" दोगला । नीच । २ दुष्ट । पाजी ।

रामीपन-सज्ञा पु० 'हरामी' होने का भाव । नीचता । दुष्टता । बदमाशी ।

रामर-सज्ञा स्त्री० [ अ० ] १ हल्का ज्वर । ज्वराश । २ गर्मी । ताप ।

रामरि\*-सज्ञा स्त्री० दे० "हजवरि" ।  
सज्ञा पु० दे० "हरावल" ।

रामर-सज्ञा पु० सैनिकों का वह दल, जो मोरचे पर सबसे आगे रहता है ।

राम-सज्ञा पु० [ का० ] १ डर । २ आशका । लटका । ३ दुख । रज । ४ निराशा । नाउम्मेदी ।

रामर\*-सज्ञा पु० दे० "हलाहल" ।

रामि-वि० १ पीला । २ हरा । हरित । ३ भूरा या बादामी ।

सज्ञा पु० १ विष्णु । २ विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण । श्रीराम । ३ शिव । ४ इन्द्र । ५ घोड़ा । ६ बदर । ७ सिंह । ८ सूर्य । ९ चन्द्रमा । १० मोर । ११ साँप । १२ अग्नि ।

१३ वायु । १४ एक पर्वत का नाम । १५ एक वर्ष या नू नाग का नाम । १६ अठारह वर्षों का एक छद ।

अव्य० घीरे । आहिस्ते ।

हरिअर\*-वि० हरा । सब्ज ।

हरिअरी\*-सज्ञा स्त्री० दे० "हरियाली" हरिआना-क्रि० अ० हरा होना । पल्लवित होना । इह्रहाना ।

हरिकया-सज्ञा स्त्री० नगवान् या उनके अवतारा का चरित्र-वर्णन ।

हरिकीतन-सज्ञा पु० भगवान् या उनके अवतारा की स्तुति का गान ।

हरिगीतिका-सज्ञा स्त्री० अट्ठाईस मात्राओं का एक छंद, जिसकी पाँचवी, बारहवी, उन्नीसवी और छब्बीसवी मात्रा लघु और अंत में लघु-गुह होता है ।

हरिचदन-सज्ञा पु० एक प्रकार का चदन । हरिजन-सज्ञा पु० १ भगवान् का भक्त । २ अछूत जाति के व्यक्ति ।

हरिजान\*-सज्ञा पु० दे० "हरियान" ।

हरिण-सज्ञा पु० [ स्त्री० हरिणी ] १ मृग । हिरन । २ हंस । ३ सूर्य ।

हरिणप्लुता-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का छंद, जिसके विषम चरणों में तीन रागण, दो भगण और एक रागण होता है ।

हरिणाक्षी-वि० हिरन की आँखा के समान सुंदर आँखें वाली । सुंदरी ।

हरिणी-सज्ञा स्त्री० १ हिरन की मादा । २ काम-शास्त्र के अनुसार स्त्रिया के चार भेदा में से एक, जिसे चित्रिणी भी कहते हैं । ३ एक वर्णिक छंद, जिसमें सत्रह वर्ण होते हैं । ४ दस वर्णों का एक छन्द । ५ पीली चमेली । ६ मजीठ ।

हरित-वि० १ हरा । सब्ज । २ भूरे या बादामी रंग का ।

सज्ञा पु० १ सूर्य के घोड़े का नाम । २ घोड़ा । ३ मरकत । ४ पन्ना । ५. सिंह । ६ सूर्य ।

हरित-वि० १ पीला । जद । २ हरा । सब्ज । ३ भूरे या बादामी रंग का ।

हरितमणि-सज्ञा पु० १ मरकत । २ पन्ना ।

हरिताम-वि० हरे रंग की चमकवाला । हरा-पन लिये हुए ।

हरितालिका-सज्ञा स्त्री० १ नादा के शुक्ल पथ की तृतीया । २ तीज । ३ तीज का स्त्रिया का व्रत ।

हरिद्रा-सज्ञा स्त्री० १ हलदी । २ भगल । ३ मोता । ४ बन । ५ एक नदी । ( इस शब्द के अनेक अर्थ हैं, पर यह विशेषकर हन्दी के अर्थ में प्रयुक्त होता है । )

हरिद्वारा-सज्ञा पु० साहित्य में वह पूर्वराग जो स्वायी न हो ।

हरिद्वार-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ ने

गंगा पहाडा को छोड़कर मैदान में आती है।

इस स्थान के निकट बसा हुआ नगर।

हरियाम—सज्ञा पु० बँकुठ।

हरिन—सज्ञा पु० [स्त्री० हरिनी] दे० 'हिरन'।

हरिणग\*—सज्ञा पु० साँप की मणि।

हरिनाकुस\*—सज्ञा पु० दे० 'हिरण्यकशिपु'।

हरिणाक्ष—सज्ञा पु० दे० 'हिरण्याक्ष'।

हरिनाथ—सज्ञा पु० बन्दरो में श्रेष्ठ, हनुमान्।

हरिनी—सज्ञा स्त्री० हिरन की मादा। मृगी।

हरिपद—सज्ञा पु० १ विष्णु-लोक। बँकुठ। २

एक छंद जिसके विषम चरणों में १६ तथा

सम चरणों में ११ मात्राएँ तथा अंत में गुह-

लघु होता है।

हरिपुर—सज्ञा पु० विष्णुलोक। बँकुठ।

हरिप्रिया—सज्ञा स्त्री० १ लक्ष्मी। २ तलसी।

३ लाल चंदन। ४ एक मात्रिक छंद, जिसके

प्रत्येक चरण में ४६ मात्राएँ और अंत में

गुह होता है।

हरिप्रीता—सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का शुभ

मूर्त (ज्योतिष)।

हरिबोधिनी—सज्ञा स्त्री० देवोत्पान एकादशी।

कात्तिक शुक्ल एकादशी।

हरिभक्त—सज्ञा पु० ईश्वर का प्रेमी। ईश्वर

का भजन करनेवाला।

हरिभक्ति—सज्ञा स्त्री० ईश्वर प्रेम। भगवान्

की भक्ति।

हरिपंरु—वि० दे० "हरा"।

हरियाना—सज्ञा पु० हिसार और रोहतक

तक के आस पास का प्रांत।

हरियाई\*—सज्ञा स्त्री० दे० 'हरियाली'।

हरियाली—सज्ञा स्त्री० १ हरे-हरे पेड़-पौधों का

समूह या विस्तार। २ द्रव। ३ हरे रंग का

फँलाप।

मृहा०—हरियाली मूसना=धारा और

आनंद ही आनंद दिखाई पड़ना।

हरियाली तीज—सज्ञा स्त्री० सावन बड़ी तीज।

हरिलीला—सज्ञा स्त्री० चौदह अक्षरों का एक

वर्णवृत्त।

हरिलोक—सज्ञा पु० बँकुठ। विष्णुलोक।

हरिवश—सज्ञा पु० १ कृष्ण का कुल। २ एक

ह

हलका\*—वि० दे० "हलका"।

हलकाई—सज्ञा स्त्री० १. हलकापन। २. फुर्ती।

हलकाना†—क्रि० अ० १. हलका होना। लघु होना। २. फुर्ती करना।

हलप†—क्रि० वि० धीरे-धीरे। आहिस्ता से। इस प्रकार, जिसमें आहट न मिले। चुपचाप।

हलफ—सज्ञा पु० (अ० 'हरफ' का बहुवचन) अक्षर।

हरे\*—सज्ञा पु० 'हरि' शब्द के सवोधन का का रूप। जैसे—हरे राम।

क्रि० वि० १ धीरे से। आहिस्ते से। मंद। २ जो ऊँचा या जोर का न हो (शब्द)। ३. हलका। कोमल।

हरेव—सज्ञा पु० [देश०] मंगोल जाति। मंगोलो का देश।

हरेवा—सज्ञा पु० हरे रंग की एक चिड़िया।

हरे\*—क्रि० वि० दे० "हरे"।

हरेपा†—सज्ञा पु० हरनेवाला। दूर करनेवाला।

हरील—सज्ञा पु० दे० "हरावल"।

हर्ज—सज्ञा पु० [अ०] १. काम में स्कावट। अट्ठन। बाधा। २. नुकसान। हानि।

हर्ता—सज्ञा पु० [स्त्री० हर्ती] १. हरण करनेवाला। २. नाश करनेवाला।

हर्तारि—सज्ञा पु० दे० "हर्ता"।

हर्क—सज्ञा पु० दे० "हरफ"।

हर्म्प—सज्ञा पु० १ महल। प्रासाद। राजभवन। नरक।

हरे—सज्ञा स्त्री० दे० "हड"।

हरी—सज्ञा पु० बड़ी जाति की हड।

हरे—सज्ञा स्त्री० दे० "हड"।

हरे—सज्ञा पु० १. आनंद। सुखी। प्रसन्नता। २ सुखी या भय के कारण रागटा का सडा होना। ३ एक सचारी भाव।

हर्षण—सज्ञा पु० १ सुखी या भय से रोगटो का सडा होना। २ प्रफुल्लित होना या करना। ३. वामदेव के पाँच बाणा में से एक। ४ वाम का पैर। ५. अक्ष का एक रोग। ६. एक विशेष प्रकार का धातु।

हर्षना—क्रि० अ० सुहा होना। प्रसन्न होना।

हर्षना\*—क्रि० अ० हर्षित होना। प्रसन्न होना। खुश होना।

क्रि० स० हर्षित करना। खुश या प्रसन्न करना।

हर्षित—वि० प्रसन्न। खुश। प्रफुल्ल।

हर्षल—वि० हर्षित रहनेवाला। प्रसन्न रहनेवाला। खुश-मिजाज।

सज्ञा पु० १ प्रियतम। २. नायक। ३ हिरन।

हर्षाङ्गुल—वि० खुशी में फूला हुआ। अत्यन्त प्रसन्न।

हल, हलत—सज्ञा पु० स्वरहीन व्यंजन। व्यंजन का वह शुद्ध रूप, जिसके अन्त में स्वर न लगा हो। इसका चिह्न (.) है, जो अक्षर के नीचे लगाया जाता है। जैसे—

कदाचित्।

हल—सज्ञा पु० १ जमीन जोतने का एक औजार। सीर। लागल। २ भूमि नापने का लट्ठा। ३ एक प्राचीन अस्त्र का नाम।

सज्ञा पु० [अ०] १ हिसाब लगाना। उत्तर निकालना। २ किसी समस्या का समाधान।

मुहा०—हल जोतना=१. खेत में हल चलायाना। २ खेती करना।

हलकप—सज्ञा पु० पवराहट। हलचल। उथल-पुथल। तहलका।

हलक—सज्ञा पु० [अ०] गले की नली। कण्ठ।

मुहा०—हलक के नीचे उतरना=१. पेट में जाना। २ (किसी बात का) मन में बैठना।

हलकई†—सज्ञा स्त्री० १ हलवापन। २. ओछापन। बेइज्जती। ३ हठी।

हलकन—सज्ञा स्त्री० हलकने की क्रिया या भाव। हिलना।

हलकना†—क्रि० अ० १ किसी चीज में भरे हुए जल वा हिलने में शब्द करना। २ हिलना। डालना। हिलोटे लेना। तहराना। ३ यत्ती की लो वा मितमित्रता।

हलका—वि० [स्त्री० हलकी] १. जो भारी न हो। २ जागड़ा न हो। पतला। महीन। ३ कम अच्छा। ४ घासी। हूँछा। ५ जो पटकीला न हो। ६. जो गहरा न हो। ७ कम। थोड़ा। ८. जो जोर का

उपल। ७ कम। थोड़ा। ८. जो जोर का

उपल। ७ कम। थोड़ा। ८. जो जोर का

उपल। ७ कम। थोड़ा। ८. जो जोर का

न हो। म० १ ओछा। तुच्छ। १२  
जासान। ११ बेफिक। निश्चित। १२  
प्रफुल्ल। १३ हरा। १४ ताबा।  
[यज्ञा पु० १ लहर। तरंग। अ० हल्क]  
२ कई गाँवा या कस्बा का समूह जो  
किसी काम के लिए नियत हो। ३ वृत्त।  
मडल। गोलाई। ४ घरा। परिधि। ५  
मडली। झड़। दल। ६ गले का पट्टा। ७  
पहिए की लोहे की हाल। ५ हाथिया का  
पुड।

मुहा०—हलका करना=अवमानित करना।

तुच्छ ठहराना। हलके-हलके=धीरे धीरे।

हलकाई—सज्ञा स्त्री० दे० हलकापन”।

हलकाना—वि० दे० ‘हरान’।

हलकाना—कि० अ० हलका होना। बोझ  
कम होना।

कि० स० १ हिलोर देना। २ दे०  
‘हिलगाना’।

हलकापन—सज्ञा पु० १ हलका होन का भाव।  
भारी न होने का भाव। लघुता। २ ओछा  
पन। नीचता। ३ तुच्छ बुद्धि। ४ यहज्जती।  
अप्रतिष्ठा। हेठी।

हलकारा—सज्ञा पु० दे० हरकारा १

हलकोरा—सज्ञा पु० [अनु०] लहर।

हलचल—सज्ञा स्त्री० १ हिलना डोलना।

२ पवराहट। ३ पवराहट के कारण जोड़  
भूय भगदड़, शोरगुल। खलबली। तहलका।

धूम। ४ उपद्रव। दगा।

वि० हिलता हुआ। अगमगता हुआ।  
कपित।

हलच हात—सज्ञा स्त्री० विवाह में हल्दी चढ़ान  
की रस्म।

हलवी—सज्ञा स्त्री० हरिद्रा। एक प्रसिद्ध  
पीया और उसकी जड़, जो मसाल और  
रंगाई के काम में भी आती है।

मुहा०—हलदी उठना या चढ़ना=विवाह  
के पहले ब्रूहे और दुलहिन के शरीर में  
हल्दी और तेल लगाते की रस्म होना।

हलदी लगना=विवाह होना। हलदी लगे  
न फिटकिरी=बिना कुछ खर्च किए।

मुफ्त में।

हलदू—सज्ञा पु० एक बहुत बड़ा और ऊँचा  
पेड़। करन।

हलधर—सज्ञा पु० १ बलराम (हल क  
धारण करनेवाला)। २ किसान।

हलना—\*—कि० अ० १ हिलना डोलना। २  
घुसना। पैठना।

हलफ—सज्ञा पु० [अ०] ईश्वर को साक्षी  
देकर कहना। कसम। शपथ।

मुहा०—हलफ उठाना=कसम खाना।

हलफनामा—सज्ञा पु० शपथपत्र। (अदालत  
में पेश किया जानवाला) वह कागज जिस  
पर कोई बात ईश्वर को साक्षी मानकर  
शपथपूर्वक लिखी गई हो।

हलबल—\*—सज्ञा पु० खलबली। धूम।  
हलचल।

हलबलाना—\*—कि० अ० १ हड़बड़ाना। जल्दी  
करना। २ जल्दी में धक्काना।

कि० स० १ दूसरे को जल्दी करन को,  
कहना। २ दूसरे को पवराहट में आना।

हलबी, हलबी—वि० १ हलव देश का  
(शीशा)। २ बड़िया (शीशा)।

हलनुबी—सज्ञा पु० एक वनवृत्त, जिसके प्रत्येक  
चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण  
आते हैं।

हलराना—कि० स० (बच्चा को) हाथ पर  
लकर इधर उधर हिलाना। प्यार से बोझ  
में झुलाना।

हलबा—सज्ञा पु० [अ०] एक प्रकार का  
प्रसिद्ध भोजी साध-पदार्थ। मोहनभोज।  
हलुआ।

मुहा०—हलवे-माँड से काम=केवल स्वाध  
साधन से प्रयोजन। अपने लाभ ही से  
मत बन।

हलवाई—सज्ञा पु० [स्त्री० हलवाईन] मिठाई  
बनान और बचनवाला।

हलबाह, हलबाहा—सज्ञा पु० १ हल चलाने  
वाला। २ दूसरे के यहाँ हल जोतने का नाम  
करनेवाला।

हलहलाना—\*—कि० स० सूख जोर से हिलाना  
डोलना। झकझोरना।

कि० अ० काँपना। परंपराना।

हलाक-वि० [अ०] मरा या मारा हुआ।

हलाकानि-वि० [सज्ञा हलाकानी] परेशान।  
हरान। तग।

हलाकी-वि० मार डालनेवाला। मारू।  
पातक।

हलाकू-वि० हलाक करनेवाला।  
सज्ञा पु० एक तुर्क सरदार, जो चंगेज  
खाँ का भाती और उसी के समान अत्याचारी  
था।

हला-भला-सज्ञा पु० १ निर्णय। निबटारा।  
२ परिणाम।

हलाय्य-सज्ञा पु० बलराम (जिनका अस्त्र  
हल है)।

हलाल-वि० [ज०] धारण या मुसलमानी  
धर्मपुस्तक के अनुकूल। जायज।

सज्ञा पु० वह पशु, जिसका मांस खाने की  
मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो।

मुहा०—हलाल करना=खाने के लिए  
पशु आ की मुसलमानी धारण के मुताबिक  
(धीरे धीरे गला रेतकर) मारना। जवह  
करना। हलाल था=ईमानदारी से पाया  
हुआ।

हलालखोर-सज्ञा पु० [स्त्री० हलालखोरी,  
हलालखोरिन] १ हलाल की कमाई खाने-  
वाला। मिहमत करके जोबिका कमानेवाला।  
२ महतर। भगी।

हलाल-सज्ञा पु० १ समुद्र-मयन से निराला  
हुआ प्रचंड विष। २ महाविष। बहुत नेत्र  
जहर। ३ एक जहरिया पोषा।

हली-सज्ञा पु० १ हल का धारण करनेवाले,  
बलराम। २ विद्या।

हलीम-वि० [अ०] मीठा। शांत।

हलुकी-वि० द० "हलका"।

हलक-सज्ञा स्त्री० कै। पमन।

हलोर-सज्ञा पु० द० "हिलारा"।

हलोरना-क्रि० म० १ पाना में हाथ डालकर  
उम हिलाना-डुलाना। २ मपना। ३

अनाज फटाना। ४ दाना हाथ में मगटना।

५ बाँह पीछे बहुत अधिक दकड़ना करना।

मगह करना (पन आदि)।

हलोरा-सज्ञा पु० द० "हिलारा"।

हल्दी-सज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।

हल्ला-सज्ञा पु० १ चिल्लाहट। शोर-मुत।  
कोलाहल। २ लड़ाई के समय की ललकार  
या शोर। ३ आक्रमण। हमला।

हल्लीश-सज्ञा पु० एक प्रकार का उपरूपक  
(नाटक), जिसमें एक ही अंक होता है और  
नृत्य की प्रधानता रहती है।

हव-सज्ञा पु० १ आग में धी हुई आहुति। २  
अग्नि।

हवन-सज्ञा पु० १ यज्ञ पढ़कर धी, जो, तिल  
आदि अग्नि में डालना। होम। यज्ञ। २

आग। ३ अग्निकुंड। ४ हवन करने का  
चमचा। सुवा।

हवनीय-वि० हवन के योग्य।

सज्ञा पु० हवन के समय आग में डालने  
की वस्तु।

हवलवार-सज्ञा पु० १ फौज में सबसे छोटा  
अफसर, २ बादशाही जमाने का वह

अफसर, जो राजदर की चौक-डींग बमूली  
और फसल की निगरानी के लिए तैनात

रहता था।

हवत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ चाह। तात्समा।  
यामना। २ तुष्णा।

हवा-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वायु। पवन।  
२ भूत। प्रेत। ३ अच्छा नाम। प्रसिद्धि।

ख्याति। ४ वड्डणल या उत्तम व्यवहार का  
विराम। शांत। ५ तिनो बातों में ननुक।

मुहा०—हवा उठना=गुमर फटना। हवा  
करना=पने में हवा आ छोटा लाना। पया

होरना। हवा ५ घंटे पर खार=बहुत  
जतावनी म। बहुत जन्दी में। हवा गाता=

१ गुज वायु के पवन के लिए सहूर  
दहनना। २ अमकन हाना। हवा पीकर

रहना=बिना आहार के रहना। (ज्याय)  
हवा बजाना=बहुत रात को रोई गीत में

दना। दान दना। हवा घोषना=१ गरी  
गोरी बारे बहना। तथा होरना। २ ग

होना। हवा पडना, किरना या बरना=

१ सूखी बार का हवा पना लगना। २  
हाना बरना। हवा बिडना=१ गवामक  
राग पटना। २ खडि ल बाँध बिडना। नुर

न हो। मद। १. ओछा। तुच्छ। १२. आसान। ११. बेफिक्र। निश्चित। १२. प्रफुल्ल। १३. हस। १४. ताजा।

†सजा पु० १. लहर। तरंग। [अ० हल्कः]  
२ कई गाँवों या कसबों का समूह जो किसी काम के लिए नियत हो। ३. वृत्त। मडल। गोलाई। ४. घेरा। परिधि। ५. मडली। झुड़। दल। ६. गले का पट्टा। ७. पहिए की खोहे की हाल। ५. हाथियों का झुड़।

मुहा०—हलका करना=अपमानित करना।  
तुच्छ ठहराना। हलके-हलके=धीरे-धीरे।

हलकाई†—सजा स्त्री० दे० “हलकापन”।

हलकाना†—वि० दे० “हिरान”।

हलकाना†—क्रि० अ० हलका होना। योश कम होना।

क्रि० स० १. हिलोर देना। २. दे० “हिलाना”।

हलकापन—सजा पु० १. हलका होने का भाव। भारी न होने का भाव। लघुता। २. ओछापन। नीचता। ३. तुच्छ बुद्धि। ४. बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। हेठ।

हलकारा†—सजा पु० दे० “हरकारा”।

हलकोरा†—सजा पु० [अनु०] लहर।

हलचल—सजा स्त्री० १. हिलना-डोलना।

२. पबराहट। ३. पबराहट के कारण दीड-धूप, भगदड़, शोरगुल। खलबली। तहलका।

धूम। ४. उपद्रव। दगा।

वि० हिलता हुआ। डगमगाता हुआ।

कपित।

हलद-हात—सजा स्त्री० विवाह में हल्दी चढ़ाने की रस्म।

हलदी-सजा स्त्री० हरिद्रा। एक प्रसिद्ध

पौधा और उसकी जड़, जो मसाले और

रंगाई के काम में भी आती है।

मुहा०—हलदी उठना या चढ़ना=विवाह

के पहले दूल्हे और दुल्हिन के शरीर में

हल्दी और तेल लगाने की रस्म होना।

हलदी लगना=विवाह होना। हलदी लगे

न फिटकिरी=बिना कुछ खर्चे किए।

मुफ्त में।

हलदू—सजा पु० एक बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़। करना।

हलधर—सजा पु० १. बलराम (हल के धारण करनेवाले)। २. विज्ञान।

हलना†—क्रि० अ० १. हिलना-डोलना। २. पुसना। पैठना।

हलक—सजा पु० [अ०] ईश्वर को साक्ष देकर कहना। कसम। शपथ।

मुहा०—हलफ उठाना=कसम खाना।

हलफनामा—सजा पु० शपथपत्र। (अदालत में पेश किया जानेवाला) वह कागज, जिस

पर कोई बात ईश्वर को साक्षी मानकर

शपथपूर्वक लिखी गई हो।

हलबली†—सजा पु० खलबली। धूम

हलचल।

हलबलाना†—क्रि० अ० १. हड़बड़ाना। जल्दी

करना। २. जल्दी में पबराना।

क्रि० स० १. दूसरे को जल्दी करने को

कहना। २. दूसरे को पबराहट में डालना।

हलबी, हलबी—वि० १. हलव देश का

(शीशा)। २. बड़िया (शीशा)।

हलमुखी—सजा पु० एक वर्षवृत्त, जिसके प्रत्येक

चरण में क्रम से रगण, नगण और सगण

आते हैं।

हलराना—क्रि० स० (बच्चों को) हाथ पर

लेकर दधर-उधर हिलाना। प्यार से गोद

में झुलाना।

हलवा—सजा पु० [अ०] एक प्रकार का

प्रसिद्ध मीठा साद्य-मदार्थ। मोहननी।

हलुआ।

मुहा०—हलये-भांडे से काम=केवल स्वार्थ-

साधन से प्रयोजन। अपने लाभ ही से

मतलब।

हलवाई—सजा पु० [स्त्री० हलवाई] मिठाई

बनाने और बेचनेवाला।

हलवाह, हलवाहा—सजा पु० १. हल चताने-

वाला। २. दूसरे के यहाँ हल जीतने का नाम

करनेवाला।

हलहसाना†—क्रि० स० खूब जोर से हिलाना-

डलाना। शकलोरना।

क्रि० अ० काँपना। धरथराना।

हलाक-वि० [अ०] मरा या मारा हुआ।  
हलाकानु-वि० [संज्ञा हलाकानी] परेशान।  
हैरान। तंग।

हलाकी-वि० मार डालनेवाला। मारू।  
पातक।

हलाकू-वि० हलाक करनेवाला।  
संज्ञा पु० एक तुर्क सरदार, जो चंगेज  
खां का नाती और उसी के समान अत्याचारी  
था।

हला-भला-संज्ञा पु० १. निर्णय। निबटारा।  
२. परिणाम।

हलामुष-संज्ञा पु० बलराम (जितका अरुन  
हल है)।

हलाल-वि० [अ०] शरअ या मुसलमानी  
धर्मपुस्तक के अनुकूल। जायज।  
संज्ञा पु० वह पशु, जिसका मांस खाने की  
मुसलमानी धर्म-पुस्तक में आज्ञा हो।  
मुहा०—हलाल करना=खाने के लिए  
पशुओं को मुसलमानी शरअ के मुताबिक  
(धीरे धीरे गला रेतकर) मारना। जबह  
करना। हलाल का=ईमानदारी से पाया  
हुआ।

हलालखोर-संज्ञा पु० [स्त्री० हलालखोरी,  
हलालखोरिन] १. हलाल की कमाई खाने-  
वाला। मिहनत करके जीविका कमानेवाला।  
२. मेहतर। भगी।

हलाहल-संज्ञा पु० १. समुद्र-मयन से निकला  
हुआ प्रबल विष। २. महाविष। बहुत तेज  
जहर। ३. एक जहरीला पोषा।

हली-संज्ञा पु० १. हल की धारण करनेवाले,  
बलराम। २. किसान।

हलोम-वि० [अ०] सीधा। सात।

हलुक+वि० दे० "हलवा"।

हलक-संज्ञा स्त्री० कं। चमन।

हलोरा+वि० दे० "हिलोरा"।

हलोरा-क्रि० ग० १. पानी में हाथ डालकर  
उसे हिलाना-डुनाना। २. मथना। ३.  
अनाम फटकरना। ४. दोनों हाथों में समेटना।

५. कोई चीज बहुत अधिक दृष्ट्य करना।  
मग्न करना (धन आदि)।

हलोरा+वि० दे० "हिलोरा"।

हलदी-संज्ञा स्त्री० दे० "हलदी"।

हल्ला-संज्ञा पु० १. चिल्लाहट। शोर-गुल।  
कोलाहल। २. लड़ाई के समय की ललकार  
या शोर। ३. आक्रमण। हमला।

हल्लीश-संज्ञा पु० एक प्रकार का उपरूपक  
(नाटक), जिसमें एक ही अंक होता है और  
नृत्य की प्रधानता रहती है।

हव-संज्ञा पु० १. आग में दी हुई आहुति। २.  
अग्नि।

हवन-संज्ञा पु० १. यन पढ़कर घी, जौ, तिल  
आदि अग्नि में डालना। होम। यज्ञ। २.  
आग। ३. अग्निकुंड। ४. हवन करने का  
चमचा। खुवा।

हवनीय-वि० हवन के योग्य।

संज्ञा पु० हवन के समय आग में डालने  
की वस्तु।

हवलवार-संज्ञा पु० १. फौज में सबसे छोटा  
अफसर, २. बादशाही जमाने का वह  
अफसर, जो राजकर की ठीक-ठीक वसूली  
और फसल की निगरानी के लिए तैनात  
रहता था।

हवस-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. चाह। तालिया।  
कामना। २. तृष्णा।

हवा-संज्ञा स्त्री० [अ०] १. वायु। पवन।  
२. भूत। प्रेत। ३. अच्छा नाम। प्रगति।  
स्वाति। ४. बड़प्पन या उत्तम व्यवहार का

विद्वान। साह। ५. किसी बात की सनक।

मुहा०—हवा उड़ना=गबर फैलना। हवा  
करना=पैसे में हवा का झांझ लाना। पना  
होकरना। हवा के घोड़े पर सवार=युक्त  
उदात्तों में। बहुत जल्दी में। हवा माना=

१. गुप्त वायु के सेवन के लिए बाहर  
बहना। २. अमकल होना। हवा पीकर

रहना=बिना आहार के रहना। (व्यर्थ)

हवा बताना=बताना करके कोई चीज न  
देना। राज देना। हवा मीपना=१. लोचो

चोड़ी बाने बहना। घेरी होना। २. गर  
होना। हवा पलटना, फिरना या बदलना=

१. दूसरी ओर की हवा चलने लगना। २.  
हानत बदलना। हवा बिगड़ना=१. सम्प्रामक  
रोग फैलना। २. घेति या जाल बिगड़ना। घुरे

विचार फैलना। ३ डर के कारण तनीशत खराब होना। हवा सा=विलकुल महीन या हलका। हवा से लडना=किसी से अकारण लडना। हवा से बातें करना=१ बहुत तेज बोलना या चलना। २ आप. ही आप या ध्वयं बहुत बोलना। किसी की हवा लगना=किसी की रागत का प्रभाव पडना। हवा हो जाना=१ झपटकर चल देना। भाग जाना। २ न रह जाना। एक बारगी गायब हो जाना। हवा बंधना=१ अच्छा नाम हो जाना। २ बाजार में साध होना।

हवाई-वि० १ हवा का। वायु-संबधी। २ हवा में चलनवाला। ३ कल्पित या नूठ। सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की आतिशबाजी। बान। आसमानी।

मुहा०—(मूह पर) हवाइयाँ उडना=चेहरे का रंग फीका पड जाना। बिबगता होना। मुंह पर हवाइयाँ उडना=चेहरे का रंग फीका पडना या मलिन हो जाना।

हवाई अड्डा-सज्ञा पु० हवाई जहाजों के उतरन और उहरन का स्थान। [अग्ने० एरोडम]

हवाई जहाज-सज्ञा पु० हवा में उडनवाली सवारी। विमान। वायुयान।

हवाई हमला-सज्ञा पु० विमान से आक्रमण करना या बम आदि गिराना।

हवापत्तरी-सज्ञा स्त्री० मोटर गाड़ी।

हवाचक्की-सज्ञा स्त्री० हवा के जोर से चलन वाली आटा पीसन की चक्की।

हवाबार-वि० [फा०] १ जिसमें हवा आती-जाती हो। २ जिसमें हवा आन-जाने के लिए छिड़कियाँ या दरवाजे हो। सज्ञा पु० बादशाहों की सवारी का एक प्रकार का हल्का तख्त।

हवापुत्र-सज्ञा पु० हवाई जहाज चलानवाला। उडका। विमान-चालक।

हवाल-सज्ञा पु० १ हाज। दशा। अवस्था। २ परिणाम। ३ समानार। खबर। पतान्त।

हवालदार-सज्ञा पु० दे० 'हवलदार'।

हवाला-सज्ञा पु० [अ०] १ प्रमाण का

उल्लेख। २ उदाहरण। दृष्टांत। मित्राल।

३ सुपुर्दगी। जिम्मेदारी।

मुहा०—(किसी के) हवाले करना=किसी के सुपुर्द करना। सौंपना।

हवालात-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ पहरे के मोहर रत्ता जाना। २ नजरबंदी। मुकदमे के फैसले के पहले अभियुक्त को भागने से रोकने के लिए दी जानेवाली कैद। हाबत। ३ विचाराधीन अभियुक्तों को रवन का स्थान।

हवास-सज्ञा पु० [अ०] १ इद्रियों। २ सवे-दन। ३ चेतना। सज्ञा। होश।

मुहा०—हवास गुम होना=होश ठिकान न रहना। मय आदि से स्तमित होना।

हवि-सज्ञा पु० हवन की सामग्री। आहुति दी जानेवाली वस्तु।

हविष्य-वि० हवन करने योग्य।

सज्ञा पु० वह वस्तु, जो किसी देवता के निमित्त अग्नि में डाली जाय। बलि। हवि।

हविष्याघ्न-सज्ञा पु० यज्ञ के समय का भोजन। पवित्र खाद्य पदार्थ।

हवेली-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ कोठी। पक्का बड़ा मकान। २ पत्नी। स्त्री।

हव्य-सज्ञा पु० हवन की सामग्री। आहुति दी जानेवाली वस्तु।

हशमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ वैभव। ऐश्वर्य। २ गौरव। बड़ाई।

हसब-सज्ञा पु० [अ०] डाह। ईर्ष्या।

हसान-सज्ञा पु० १ हँसना। २ परिहास। दिल्लगी। ३ विनोद।

हसब-अव्य० [अ०] अनुसार। मुता-विक।

हसरत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ रज। अक सोख। २ हादिक इच्छा। अभिलाषा। अरमान।

हसित-वि० १ जिस पर लोग हँसते हो। २ जो हँसा हो।

सज्ञा पु० १ हँसना। २ हँसी-उड्डा। ३ चामदेव का धनुष।

हसीन-वि० सुबसूरत। सुंदर।

हस्त-सज्ञा पु० १ हाथ। २ हाथी की सूंड।

३. २४ अंगुल की एक नाप। हाथ कुहनी से उंगली के छोर तक की सम्बाई। ४. हाथ का लिखा हुआ लेख। लिखावट। ५. छद का एक चरण। ६. समूह। ७. गुच्छा। ८. नाच में हाथों द्वारा भाव बताना। ९. एक नक्षत्र, जिसमें पाँच तारे होने हैं और जिसका आकार हाथ का-सा माना गया है।

हस्तक-सज्ञा पु० १. हाथ। २. करताल नामक बाजा। ३. हाथ से दजाई हुई ताली। ४. नाच के समय की एक मुद्रा (हाथों से भाव प्रकट करने की मुद्रा)। ५. संगीत का ताल। हस्तकीशल-सज्ञा पु० किसी काम में हाथ की निपुणता। हाथ की कारीगरी। हाथ की सफाई।

हस्तक्रिया-सज्ञा स्त्री० १ हाथ का काम। दस्तकारी। २ हाथ से इन्द्रिय-संचालन। सरका कूटना।

हस्तक्षेप-सज्ञा पु० बाधा डालना। दस्तदाजी। किसी के काम में हेरफेर करने के लिए हाथ डालना या अनावश्यक रूप से पड़ना।

हस्तागत-वि० हाथ में आया हुआ। प्राप्त। हस्ताबापल्य-सज्ञा पु० हाथ की फुर्ती या सफाई।

हस्तग्रहण-सज्ञा पु० अस्त्र की चाट या ठडक से बचने के लिए हाथ में पहना जानेवाला आवरण। दस्ताना।

हस्तधारण-सज्ञा पु० १ हाथ पकड़ना। २ पाणिग्रहण। विवाह। ३ हाथ का सहारा देना। ४ दूसरे के भार को हाथ पर डोकर।

हस्तपुष्प-सज्ञा पु० हथेली की पीठ। हथेली का उलटा भाग।

हस्तनैपुन-सज्ञा पु० हाथ के द्वारा इन्द्रिय-संचालन। सरका कूटना।

हस्तरेखा-सज्ञा स्त्री० हथेली में पड़ी हुई लकीरें, जिनके अनुसार सामुद्रिक में गुणा-धर्म का विचार किया जाता है।

हस्तसंघय-सज्ञा पु० हाथ की फुर्ती। हाथ की सफाई।

हस्तलिखित-वि० हाथ का लिखा हुआ (संज्ञा, प्रय आदि)।

हस्तलिपि-सज्ञा स्त्री० १. हाथ की लिखावट। २ लेख, प्रय आदि।

हस्तवारण-सज्ञा पु० शत्रु की चोट को हाथ पर रोकना।

हस्तसूत्र-सज्ञा पु० विवाह के समय पहनाया जानेवाला सूत का कनक।

हस्तांतरण-सज्ञा पु० एक हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना (सम्पत्ति, अधिकार आदि)।

हस्ताक्षर-सज्ञा पु० अपने हाथ से लिखा गया अपना नाम। दस्तखत।

हस्ताक्षरित-वि० जिस पर हस्ताक्षर किए गए हैं। दस्तखत किया हुआ।

हस्तामलक-सज्ञा पु० १ हाथ में आया हुआ बाँवला—अर्थात् किसी विषय के प्रत्येक अंग का ज्ञान। भले प्रकार समझी हुई बात। २ यह चीज या बात जिसका हर एक पहलू साफ-साफ जाहिर हो गया हो।

हस्तिकंद-सज्ञा पु० एक पौधा, जिसका कंद खाया जाता है। हाथीकंद।

हस्तिकर्णिका-सज्ञा स्त्री० हठयोग का एक आसन।

हस्तिकृत्वा-सज्ञा स्त्री० १. हाथी की जोम। २ दाहिनी बाँस की नल।

हस्तिदंत-सज्ञा पु० १ हाथी का दाँत। २. कपड़ा टाँगने की सूँटी। ३. मूर्ती।

हस्तिनापुर-सज्ञा पु० कोरवा की राजधानी, जो वर्तमान दिल्ली नगर से कुछ दूर पर थी।

हस्तिनी-सज्ञा स्त्री० १ मादा हाथी। हथिनी। २ काम-आम्र के जन्मदात्री के चार भेदा में से सबसे निम्न भेद। ३ एक मुनिप्रियत द्रव्य।

हस्ती-सज्ञा पु० [स्त्री० हस्तिनी] हाथी। सज्ञा स्त्री० [फा०] अस्तित्व। होने वा भाव।

हस्ते-अव्य० हाथ से। द्वारा। मारफ्त।

हहर-सज्ञा स्त्री० १ घराहट। फेरफंती। २. दर। बर।

हहरता-अव्य० अन० [अन०] १ बाँपना। घर-पराटना। २. दर के बारे में उठना। रहलना। पराना। ३ पसित रह जाना। पकपकाना।

हहराना—क्रि० अ० १ हहराना। कांपना।  
परखराना। २ डरना। ३ दे० “हृहहराना”।

क्रि० स० दहलाना। भयभीत करना।  
हहा—सज्ञा स्त्री० १ हँसने का शब्द। ठट्ठा।  
२. दीनतासूचक शब्द। गिडगिडाने का  
शब्द। ३ हाहाकार।

मुहा०—हहा खाना=बहुत गिडगिडाना।

ह्री—अव्य० १ स्वीकृति, सम्मति आदि प्रकट  
करनेवाला शब्द। २ एक शब्द, जिसके द्वारा  
यह प्रकट किया जाता है कि जो बात पूछी  
जा रही है, वह ठीक है। ३ वह शब्द, जिसके  
द्वारा किसी बात का दूसरे रूप में, या अशत,  
माना जाना प्रकट किया जाता है। \*४  
दे० “यहूँ”।

मुहा०—ह्री करना=सम्मति होना। राजी  
होना। ह्री जी ह्री जी करना=सुशामद करना।

हाँक—सज्ञा स्त्री० १ किसी को बुलाने के  
लिए जोर का शब्द। पुकार। २ ललकार।  
हुकार। गर्जन। ३ उत्साह दिलाने का  
शब्द। यहावा। ४ सहायता के लिए की  
हुई पुकार। दुहाई।

मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना=जोर  
से पुकारना। हाँक मारना=दे० “हाँक  
लगाना”। हाँक-पुकारकर कहना=सबके  
सामने निर्भय और निस्सकोच कहना।

हाँकना—क्रि० स० १ पहले से हवा पहुँचाना।  
जोर से पुकारना। चिल्लाकर बुलाना। २.  
ललकारना। हुकार करना। ३ बड़-बड़कर  
बोलना। सीटना। ४ मुँह से बोलकर या  
चाबुक आदि मारकर जानवरों को आगे  
बढ़ाना। जानवरों को चलाना। भगाना।

५ गाड़ी, रथ आदि चलाना।  
मुहा०—हून की हाँकना=बड़-बड़कर बातें  
करना।

हाँका—सज्ञा पु० १ हाँक। पुकार। ललकार।  
२ गर्ज। ३ दे० “हुकवा”।

हाँगी—सज्ञा स्त्री० हागी। स्वीकृति।

मुहा०—हाँगी भरना=स्वीकार करना।

हाँइना+—क्रि० स० बेकार इधर-उधर घूमना।

हाँइ—सज्ञा स्त्री० १ बटलोई के आकार का  
मिट्टी का बरतन। हँडिया। २ इसी आकार

का शीशे का वह पात्र, जो सजावट के लिए  
कमरे में टांगा जाता है। ३ चिराग का बड़ा  
गोल शीशा।

मुहा०—हाँडी पकना=१ हाँडी में पकाई  
जानेवाली बीज का पकना। २ भीतर हों  
भीतर कोई व्यक्ति रचा जाना। कोई पइ-  
यत्र रचा जाना। हाँडी चढ़ना=कोई बीज  
पकाने के लिए हाँडी का आग पर रखा  
जाना।

हाँता+—वि० [स्त्री० हाँती] अलग किया  
हुआ। छोड़ा हुआ। दूर किया हुआ।

हापना, हाँकना—क्रि० अ० जोर-जोर से और  
जल्दी जल्दी साँस लेना।

हाँफा—सज्ञा पु० जोर-जोर से साँस लेना।  
बच्चों का एक रोग।

हाँसना+—क्रि० अ० दे० “हँसना”।

हाँसल—सज्ञा पु० वह घोड़ा, जिसका रंग  
मेहँदी-सा लाल और चारों पंर कुछ काले  
हो। कुम्भित हिराई।

हाँसी—सज्ञा स्त्री० १ हँसी। दिल्लगी। मजाक।

२. उपहास। ३ निंदा।

हाँ हाँ—अव्य० मना करने का शब्द। नियेष-  
सूचक शब्द। जैसे—अगर कोई किसी को  
मार रहा हो, उस समय “हाँ हाँ”  
करना।

हा—अव्य० १ शोक या दुःख-सूचक शब्द।  
२ आश्चर्य या हर्ष-सूचक शब्द। ३ भय  
सूचक शब्द।

सज्ञा पु० मारनेवाला। वध करनेवाला।

हाइ+—अव्य० दे० “हाय”।

सज्ञा स्त्री० १. दशा। हालत। २ पाव। ३  
ढग। तीर।

हाइजीन—सज्ञा स्त्री० [अंग्रे०] स्वास्थ्य-  
विज्ञान।

हाइड्रोएलेक्ट्रिक—वि० [अंग्रे०] जलधारा से  
उत्पन्न बिजली की शक्ति।

हाइड्रोजन—सज्ञा पु० [अंग्रे०] सबसे हल्का  
वायुरूप तत्त्व। उद्भजन।

हाइड्रोसील—सज्ञा पु० [अंग्रे०] अङ्गकोप बर्ध  
जाने का रोग। फोते का बढ़ना।

हाइफन—सज्ञा पु० [अंग्रे०] दो या अधिक

शब्दा के बीच में लगाया जानेवाला संयोजक चिह्न (-) जैसे—पत्र-व्यवहार।  
 हाईकोर्ट—सजा पु० [अ०] उच्च न्यायालय। किसी राज्य की सबसे ऊँची अदालत।  
 हाऊस—सजा पु० [अ०] १ घर। मकान। कोठी। २ सभा। मंडली। ३ विधान सभा की बैठक, सदन।  
 हाऊ—सजा पु० भकाऊँ। होवा।  
 हाकल—सजा पु० एक छद, जिसके प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है।  
 हाकलिका—सजा स्त्री० पदह अक्षरो का एक वर्णवृत्त।  
 हाकली—सजा स्त्री० दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त।  
 हाकिम—सजा पु० [अ०] [वि० हाकिमी] १ हुकूमत करनेवाला। शासक। २ बड़ा अधिकारी या अफसर।  
 हाजत—सजा स्त्री० [अ०] १ जरूरत। आवश्यकता। २ चाह। ३ पहरे के भीतर रखा जाना। हिरासत।  
 मुहा०—हाजत में देना या रखना=पहरे के भीतर देना। हवालात में डालना।  
 हासना—सजा पु० [अ०] १ भोजन पचने की क्रिया। पाचन क्रिया। २ भोजन पचाने की शक्ति। पाचन-शक्ति।  
 हाजिम—वि० [अ०] हजम करनेवाला। भोजन पचानेवाला। पाचक।  
 हाजिर—वि० [अ०] उपस्थित। मौजूद। विद्यमान।  
 हाजिर-जवाब—वि० [अ०] [सजा हाजिर-जवाबी] १ बातों का तुरन्त और अच्छा जवाब देनेवाला। २ इस तरह जवाब देने में होशियार। प्रत्युत्पन्न-मति।  
 हाजिरबाश—वि० [अ०] १ हाजिर रहनेवाला। उपस्थित रहनेवाला। २ लोगों से मिलने-जुलनेवाला।  
 हाजिरात—सजा स्त्री० [अ०] वदना आदि के द्वारा किसी के ऊपर कोई आत्मा बुलाना, जिससे वह अनेक प्रकार की बातें कहने लगता है।

हाजी—सजा पु० [अ०] वह मुसलमान, जो हज (मक्का की यात्रा) कर आया हो।  
 हाट—सजा स्त्री० १ बाजार। २ दूकान। ३ बाजार लगने का दिन।  
 मुहा०—हाट करना=१ दूकान लगाकर बैठना। २ बाजार में चीजें खरीदना। हाट लगना=बाजार में दूकानें लगना। हाट चटना=बाजार में विकने के लिए आना।  
 हाटक—सजा पु० स्वर्ण। सोना।  
 हाटकपुर—सजा पु० लका।  
 हाटकलोचन—सजा पु० हिरण्यक्ष-नामक राक्षस।  
 हाड\*—सजा पु० १ हड्डी। २ वंश या जाति की मर्यादा। कुलीनता।  
 हाता—सजा पु० १ अहाता। घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। २ सीमा। हद्द। ३. हता। मारनेवाला। ४ देश-विभाग। हलका या सूचा। प्रात।  
 वि० [स्त्री० हाती] १ अलग। दूर किया हुआ। २ नष्ट। बरबाद।  
 हातिम—सजा पु० [अ०] १ निपुण। चतुर। २ उस्ताद। ३ एक प्राचीन अरब सरदार, जो बड़ा दानी, परोपकारी और उदार था। ४ अत्यंत दानी और उदार मनुष्य।  
 मुहा०—हातिम की कबर पर लात मारना=बहुत अधिक उदारता या परोपकार करना (व्यय)।  
 हाथ—सजा पु० १ कन्वे से लेकर पजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली या पजा। कर। २ -कोहनी से पजे के सिरे तक की लम्बाई की नाप। दो हाथ का एक गज होता है। ३ ताश्, जूए आदि के खेल में एक-एक आदमी के खेलने की बारी। दांव।  
 मुहा०—हाथ कगन को आरसी क्या=प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं। हाथ में आना या पड़ना=अधिकार या वंश में आना। मिलना। (किसी को) हाथ उठाना=सलाम करना। प्रणाम करना। (किसी पर) हाथ उठाना=मारना। मारने को तैयार होना। हाथ ऊँचा होना=१. दान

देने में प्रवृत्त होना । २. संपन्न होना । हाथ कट जाना=१. कुछ करने लायक न रह जाना । २. जवानी या तिस्रकर बचन देने के कारण कुछ करने योग्य न रहना । हाथ का मेल=तुच्छ वस्तु । हाथ खाली होना=पास में कुछ द्रव्य न रह जाना । हाथ सुजलाना=१. मारने को जी करना । २. कुछ मिलने की उम्मीद दिखाई देना । हाथ खोचना=किसी काम से अलग हो जाना । सहयोग न देना । हाथ चलाना=मारना । हाथ चूमना=किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम से देखना । हाथ छोड़ना=मारना । प्रहार करना । हाथ जोड़ना=१. प्रणाम करना । नमस्कार करना । २. विनती करना । (दूर से) हाथ जोड़ना=सवध न रखना । दूर से अलग रहना । हाथ डालना=किसी काम में हाथ लगाना । योग देना । हाथ तग होना=खर्चे के लिए खपा-पैसा न रहना । हाथ धोना=खो देना । नष्ट करना । हाथ धोकर पीछ पड़ना=किसी काम में जी-जान से लग जाना । किसी काम को पूरा करने पर तुल जाना । हाथ पकड़ना=१. (किसी को) कोई काम करने से रोकना । २. आश्रय देना । धरण में लेना । ३. पाणिग्रहण करना । विवाह करना । हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना=खाली बैठे रहना । कुछ काम-धपा न करना । हाथ पसारना या फैलाना=कुछ मांगना । हाथ-याँच चलना=काम करने की शक्ति होना । हाथ-याँच ठड़े होना=१. मरणासन्न होना । २. भय या आशंका से स्तब्ध हो जाना । हाथ-याँच फूलना=डर या शोक से पंखर जाना । हाथ-याँच पटकना=छटपटाना । हाथ-याँच मारना या हिलाना=१. प्रयत्न करना । २. बहुत परिश्रम करना । हाथ-भर जोड़ना=विनती करना । अनुनय-विनय करना । (किसी वस्तु पर) हाथ फेरना=किसी वस्तु को उड़ा लेना । ले लेना । (किसी काम में) हाथ बँटाना=शामिल होना । शरीक होना । हाथ बँटना=रहना=सेवा में बराबर उप-

स्थित रहना । हाथ मलना=१. बहुत पछ-ताना । २. निराश और दुःखी होना । (किसी वस्तु पर) हाथ मारना=उड़ा लेना । गायब कर लेना । हाथ में करना=वश में करना । ले लेना । हाथ में होना=अधिकार या वश में होना । हाथ रेंगना=धूस लेना । हाथ रोपना या ओड़ना=हाथ फँताना । माँगना । हाथ लगना=हाथ में आना । प्राप्त होना । (किसी काम में) हाथ लगना=१. आरम्भ होना । २. किसी के द्वारा किया जाना । (किसी वस्तु में) हाथ लगना=छ जाना । स्पर्श होना । किसी काम में हाथ लगाना=१. आरम्भ करना । २. योग देना । हाथ लगाना=छूना । स्पर्श करना । हाथ लगे मंला होना=इतना स्पष्ट और पवित्र होना कि हाथ से छूने से मंला होना । हाथों हाथ=एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए । तुरन्त । हाथों हाथ लेना=बहुत आदर और सम्मान से स्वागत करना ।

हाथपाग=संज्ञा पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना ।

हाथफूल=संज्ञा पुं० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना ।

हाथा=संज्ञा पुं० १. मुठिया । दस्ता । २. पजे की छाप या चिह्न । छपा ।

हाथाजोड़ी=संज्ञा स्त्री० एक पीया, जो दवा के काम में आता है ।

हाथापाई, हाथाबाही=संज्ञा स्त्री० मारपीट । बह लड़ाई, जिसमें हाथ-भर चलाए जायें । भिड़त । मुठभेड़ ।

हाथी=संज्ञा पुं० [स्त्री० हथिनो] एक बहुत बड़ा चीपाया, जिसकी लम्बी सूँड़ होती है ।

मुहा०=हाथी बाँधना=बहुत अमीर होना । हाथों के संग गाँडे खाना=बहुत बड़े बलवान् को बराबरी करना ।

हाथीखाना=संज्ञा पुं० फौलखाना । गजखाना । हाथों बाँधने का स्थान ।

हाथीदांत=संज्ञा पुं० हाथी के मुँह के दोनों ओर बाहर निकले हुए दो लम्बे और सफेद दाँत, जो केवल दिमागदी होते हैं । इनसे कई तरह की चीजें बनती हैं ।

नाल-सज्ञा स्त्री० हाथी पर चलनेवाली।  
 १। हथनाल। गजनाल।  
 पिपाय-सज्ञा पुं० दे० "फीलपांव"। फील-  
 वि रोग, जिससे पैर बहुत फूल जाते हैं।  
 विवान-सज्ञा पुं० हाथी को चलातेवाला  
 दमी। महावत। फीलवान।  
 सा-सज्ञा पुं० [अ०] १ दुपेटना। २  
 तरी सकट। आपत्ति। आशका।  
 \*३-सज्ञा स्त्री० दे० "हानि"।  
 ने-सज्ञा स्त्री० १ नुकसान। क्षति। लाम  
 उलटा। घाटा। २ नाश। ३ अभाव।  
 अनिष्ट। बुराई। ५ स्वास्थ्य में  
 नेवाली खराबी।  
 नेकर-वि० १ हानि करनेवाला। नुकसान  
 हुंकारनेवाला। २ बुरा फल देनेवाला।  
 तदुद्धृष्टी खराब करनेवाला।  
 नेकारक-वि० दे० "हानिकर"।  
 नेकारी-वि० दे० "हानिकर"।  
 फिज-वि० हिफाजत करनेवाला। रक्षा  
 करनेवाला। रजक।  
 ज्ञा पुं० [अ०] वह मुसलमान, जिसे कुरान  
 स्थ हो।  
 मी-सज्ञा स्त्री० 'है' करने की क्रिया या  
 गाव। स्वीकृति। स्वीकार।  
 ज्ञा पुं० हिमायत या समर्थन करनेवाला।  
 मद करनेवाला। सहायक।  
 गृह-हामी भरना = मजूर करना।  
 य-अव्य० अफसोस, दुःख या पीडा आदि  
 रकट करनेवाला शब्द। आह।  
 ज्ञा स्त्री० कष्ट। पीडा। दुःख।  
 यन-सज्ञा पुं० वर्ष। साव।  
 यल-वि० १ धायल। मूर्च्छित। २  
 क्षिप्त।  
 वि० [अ०] दो वस्तुओं के बीच में पड़ने-  
 वाला। बीच में आड़ करनेवाला। रोकने  
 वाला। अंतरवर्ती।  
 हाय-हाय-अव्य० शोक, दुःख, धवराहट या  
 पीडा-सूचक शब्द। दे० "हाय"।  
 सज्ञा स्त्री० १ शोक। दुःख। पीडा। २ धव-  
 राहट। परेशानी।  
 हार-सज्ञा स्त्री० १ पराजय। शिकस्त।

लडाई, खेल या बाजी आदि की प्रतिद्वंद्वी  
 से न जीतने का भाव। 'जीत' का उल्टा।  
 २ हानि। ३ जर्नी। राज्य-द्वारा हरण।  
 ४ विरह। विधेय। धकावट।  
 सज्ञा पुं० १ गले की माला। २ ले जानेवाला।  
 बहन करनेवाला। ३ नाश करनेवाला।  
 नाशक। ४ मनोहर। सुंदर। ५ अकण्ठित  
 में भाजक। ६ विगड या छद्म शास्त्र में गुरु  
 मात्रा।  
 प्रत्य० दे० 'हारा'।  
 मुहा०—हार खाना=हारना।  
 हारक-सज्ञा पुं० १ हरण करनेवाला। २ मनो-  
 हर। सुंदर। ३ हार। माला। ४ चोर।  
 लुटेरा। ५ गणित में भाजक।  
 हारना-क्रि० अ० १ पराजित होना। शिकस्त  
 खाना। 'जीतना' का उल्टा। २ असफल होना।  
 ३ थक जाना। प्रयत्न में निराश होना।  
 ४ असमर्थ होना।  
 क्रि० स० १ गँवाना। खोना। २ छोड़  
 देना। न रख सकना। दे देना।  
 मुहा०—हारे दर्जे=लाचार होकर। विवश  
 होकर। हारकर=१ असमर्थ होकर। २  
 लाचार होकर।  
 हारवध-सज्ञा पुं० एक चित्र-काव्य, जिसमें पद्य  
 हार के आकार में रखे जाते हैं।  
 हारवार-सज्ञा स्त्री० दे० "हडबडी"।  
 हारसिंघार-सज्ञा पुं० हारसिंघार। (सुगंधित  
 फूलवाला एक पेड़) पारिजात।  
 हारा-प्रत्य० [स्त्री० हारी] एक प्रत्यय, जो  
 किसी शब्द के आगे लगकर कर्तव्य, धारण  
 या समीप आदि सूचित करता है। वाला।  
 जैसे, लकड़हारा।  
 हारित-वि० १ हारा हुआ। खोया या गँवाया  
 हुआ। २ हरण कराया हुआ। छीना हुआ।  
 ३ मोहित। ४ वंचित।  
 सज्ञा पुं० १ वर्णिक छन्द। २ तोता। सुग्गा।  
 हारित-सज्ञा पुं० एक निडिया, जो प्रायः अपने  
 चंगुल में चित्तवा लिये रहती है।  
 हारी-वि० [स्त्री० हारिणी] १. हरण करने-  
 वाला। २ ले जानेवाला। पहुँचानेवाला।  
 ३ चुरानेवाला। ४ दूर करनेवाला। ५

देने में प्रवृत्त होना । २ सपना होना । हाय कड जाना=१. कुछ करने लायक न रह जाना । २. जवानी धा लितकर वचन देने के कारण कुछ करने योग्य न रहना । हाय का मेल=तुच्छ वस्तु । हाय खाली होना=पास में कुछ द्रव्य न रह जाना । हाय लुजलाना=१-भारने की जी करना । २ कुछ मिलने की उम्मीद दिखाई देना । हाय खोचना=किसी काम से अलग हो जाना । सहयोग न देना । हाय चलाना=मारना । हाय चूमना=किसी की कारीगरी पर इतना खुश होना कि उसके हाथों को प्रेम से देखना । हाय छोड़ना=मारना । प्रहार करना । हाय जोड़ना=१ प्रणाम करना । नमस्कार करना । २ विनती करना । (दूर से) हाय जोड़ना=सबध न रखना । दूर या अलग रहना । हाय डालना=किसी काम में हाथ लगाना । योग देना । हाय लग होना=खर्च के लिए रुपया-पैसा न रहना । हाय घोना=खो देना । नष्ट करना । हाय धोकर पीछ पडना=किसी काम में जी-जान से लग जाना । किसी काम को पूरा करने पर तुल जाना । हाय पकड़ना=१ (किसी को) कोई काम करने से रोकना । २ आशय देना । शरण में लेना । ३ पाणिग्रहण करना । विवाह करना । हाय पर हाय धरे बैठे रहना=खाली बैठे रहना । कुछ काम-बधा न करना । हाय पसारना या फैलाना=कुछ माँगना । हाय-पाँव चलना=काम करने की शक्ति होना । हाय-पाँव ठड़े होना=१ मरणासन्न होना । २ भय या आशका से स्तब्ध हो जाना । हाय-पाँव फूलना=डर या शोक से घबरा जाना । हाय-पाँव पटकना=छटपटाना । हाय-पाँव मारना या हिलाना=१. प्रयत्न करना । २ बहुत परिश्रम करना । हाय-पैर जोड़ना=विनती करना । अनुनय-विनय करना । (किसी वस्तु पर) हाय फेरना=किसी वस्तु को उड़ा लेना । ले लेना । (किसी काम में) हाय बँटाना=शामिल होना । शरीक होना । हाय बाँधे खड़ा रहना=थेना में बराबर उप-

स्थित रहना । हाय मलना=१ बहुत पछताना । २. निराश और दुःखी होना । (किसी वस्तु पर) हाय मारना=उड़ा लेना । नाश कर लेना । हाथ में करना=बश में करना । ले लेना । हाथ में होना=अधिकार या बश में होना । हाथ रेंगना=पूँस लेना । हाथ रोपना या ओड़ना=हाथ फँसाना । माँगना । हाथ लगना=हाथ में आना । प्राप्त होना । (किसी काम में) हाथ लगना=१ आरम्भ होना । २ किसी के द्वारा किया जाना । (किसी वस्तु में) हाथ लगना=छ जाना । स्पर्श होना । किसी काम में हाथ लगाना=१ आरम्भ करना । २ योग देना । हाथ लगाना=छूना । स्पर्श करना । हाथ लगे मँसा होना=इतना स्पर्श और प्रिय होना कि हाथ से चूने से मँसा होना । हाथों हाथ=एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुए । तुरन्त । हाथों हाथ लेना=बहुत आदर और सम्मान से स्वागत करना । हाथपान=सज्जा पु० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना । हाथकूल=सज्जा पु० हथेली की पीठ पर पहनने का एक गहना । हाथा=सज्जा पु० १. मुठिया । दस्ता । २ पजे की छाप या चिह्न । छाप । हाथाजोड़ी=सज्जा स्त्री० एक पोधा, जो दवा के काम में आता है । हाथापाई, हाथाबाँही=सज्जा स्त्री० भास्पोद । वह लड़ाई, जिसमें हाथ-पैर चलाए जायें । भिड़त । मुठभेड़ । हाथी=सज्जा पु० [ स्त्री० हथिनी ] एक बहुत बड़ा पीपाया, जिसकी लम्बी सूँड होती है । मुहा०=हाथी बांधना = बहुत जमीर होना । हाथा के सग गाँडे खाना=बहुत बड़े बलवान् की बराबरी करना । हाथीखाना=सज्जा पु० फौलखाना । गजघाला । हाथी बाँधने वा स्थान । हाथीदाँत=सज्जा पु० हाथी के मुँह के दोना ओर बाहर निकले हुए दो लम्बे और राफेद दाँत, जो केवल दिखावटी होते हैं । इनसे कई तरह की चीजें बनती हैं ।

हाथीनाल-संज्ञा स्त्री० हाथी पर चलनेवाली तोप। हथनाल। गजनाल।

हाथीपांव-संज्ञा पुं० दे० "फीलपांव"। फीलपांव रोग, जिससे पैर बहुत फूल जाते हैं।

हाथीवान-संज्ञा पुं० हाथी को चलावेवाला आदमी। महावत। फीलवान।

हादसा-संज्ञा पुं० [अ०] १. दुर्घटना। २. भारी संकट। आपत्ति। आशका।

हान\*—संज्ञा स्त्री० दे० "हानि"।

हानि-संज्ञा स्त्री० १. नुकसान। क्षति। लाभ का उलटा। घाटा। २. नाश। ३. अभाव।

४. अनिष्ट। बुराई। ५. स्वास्थ्य में होनेवाली खराबी।

हानिकर-वि० १. हानि करनेवाला। नुकसान पहुँचानेवाला। २. बुरा फल देनेवाला।

३. तदुपस्ती खराब करनेवाला।

हानिकारक-वि० दे० "हानिकर"।

हानिकारी-वि० दे० "हानिकर"।

हाफिज-वि० हिफाजत करनेवाला। रक्षा करनेवाला। रक्षक।

सज्ञा पुं० [अ०] वह मुसलमान, जिसे कुरान कठस्थ हो।

हामी-संज्ञा स्त्री० 'है' करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। स्वीकार।

सज्ञा पुं० हितामत या समर्थन करनेवाला। मदद करनेवाला। सहायक।

मुहा०—हामी भरना = मजूर करना।

हाय-अव्य० अफसोस, दुःख या पीडा आदि प्रकट करनेवाला शब्द। आह।

सज्ञा स्त्री० कण्ट। पीडा। दुःख।

हायन-संज्ञा पुं० वर्ष। साल।

हायल\*—वि० १. भागल। मूर्च्छित। २. क्षिपित।

वि० [अ०] दो वस्तुओं के बीच में पड़नेवाला। बीच में आड करनेवाला। रोकनेवाला। अतरवर्ती।

हाय-हाय-अव्य० शोक, दुःख, घबराहट या पीडा-सूचक शब्द। दे० "हाय"।

सज्ञा स्त्री० १. शोक। दुःख। पीडा। २. घबराहट। परेशानी।

हार-संज्ञा स्त्री० १. पराजय। शिकस्त।

लड़ाई, खेल या बाजी आदि को प्रतिद्वंद्वी से न जीतने का भाव। 'जीत' का उल्टा।

२. हानि। ३. जम्नी। राज्य-द्वारा हरण।

४. विरह। वियोग। थकावट।

सज्ञा पुं० १. गले की माला। २. ले जानेवाला।

बहन करनेवाला। ३. नाश करनेवाला।

नाशक। ४. मनोहर। सुंदर। ५. अकण्ठित में भाजक। ६. विगल या छंदःशास्त्र में-गुरु

मात्रा।

प्रत्य० दे० "हारा"।

मुहा०—हार खाना = हारना।

हारक-संज्ञा पुं० १. हरण करनेवाला। २. मनो-

हर। सुंदर। ३. हार। माला। ४. चोर।

लुटेरा। ५. गणित में भाजक।

हारना-क्रि० अ० १. पराजित होना। शिकस्त खाना। 'जीतना' का उल्टा। २. असफल होना।

३. थक जाना। प्रयत्न में निराश होना।

४. असमर्थ होना।

क्रि० स० १. गंवाना। खोना। २. छोड़ देना। न रख सकना। दे देना।

मुहा०—हारे दर्जे = लाचार होकर। विवश होकर। हारकर = १. असमर्थ होकर। २. लाचार होकर।

हारबंध-संज्ञा पुं० एक चित्र-काव्य, जिसमें पद्य

हार के आकार में रखे जाते हैं।

हारवार\*—संज्ञा स्त्री० दे० "हड़बडी"।

हारसिगार-संज्ञा पुं० हर्तसिगार। (मुद्रित फलवाला एक पेड़) पारिजात।

हारो\*—प्रत्य० [स्त्री० हारी] एक प्रत्यय, जो किसी शब्द के आगे लगकर कर्तव्य, धारण या संयोग आदि सूचित करता है। याता। जैसे, लकड़हारा।

हारित-वि० १. हारा हुआ। खोया या गंवया हुआ। २. हरण कराया हुआ। छीना हुआ।

३. मोहित। ४. वंचित।

सज्ञा पुं० १. वणिज छन्द। २. तोता। मुग्धा।

हारिल-संज्ञा पुं० एक चिड़िया, जो प्रायः अपने चंगुल में तिनका लिये रहती है।

हारो-वि० [स्त्री० हारिणी] १. हरण करनेवाला। २. ले जानेवाला। पहुँचानेवाला।

३. चुरानेवाला। ४. दूर करनेवाला। ५.

नाश करनेवाला। ६ मोहित करनेवाला।  
 सज्ञा पु० एक वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण  
 में एक तगण और दो गुरु होते हैं।  
 हारीत-सज्ञा पु० १ चोर। लुटारा। २ चोरी।  
 लटरापन। ३ कण्व ऋषि के एक शिष्य।  
 हारीत-सज्ञा पु० दे० 'हरावल'।  
 हाट-सज्ञा पु० [अग्रे०] १ हृदय। दिल। २  
 चित्त। मन। आत्मा। ३ साहस। ४ मव्य  
 भाग। ५ सत्त्व।  
 हाटफेल-सज्ञा पु० [अग्रे०] हृदय की गति एक  
 जाना। दिल की धडकन बन्द हो जाना।  
 एकाएक मृत्यु हो जाना।  
 हादिक-वि० १ हृदय का। हृदय-सम्बन्धी। २  
 हृदय से निकला हुआ। ३ दिली। सच्चा।  
 हासपावर-पज्ञा पु० [अग्रे०] बिजली या  
 भाप की शक्ति, जो घोड़ों की शक्ति के  
 रूप में आंकी जाती है।  
 हाल-सज्ञा पु० [अ०] १ दशा। अवस्था।  
 २ परिस्थिति। ३ समाचार। वृत्तांत। ४  
 ज्योरा। विवरण। संक्षिप्त। ५ कथा।  
 ६ ईश्वर में सम्यता। लीनता। (मुसल०)  
 वि० वत्तमान। उपस्थित। मौजूद।  
 अव्य० १ इस समय। अभी। २ तुरंत।  
 सज्ञा स्त्री० १ हिनना-डोलना। २ धक्का।  
 ३ झटका। ४ पहिए के चारों ओर का  
 लोहे का घरा।  
 मुहा०—हाल में=पोड ही दिन हुए। हाल  
 का=नया। ताजा।  
 हालमोहाल-सज्ञा पु० मंद।  
 हालडोल-सज्ञा पु० १ हिलना डोलना।  
 गति। २ कपन। ३ हलचल। हलकप।  
 हालत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ दशा। अवस्था।  
 २ आर्थिक स्थिति। ३ परिस्थिति।  
 हालना+\*—कि० अ० १ हिलना। डोलना।  
 हलक करना। २ कांपना। झुनना।  
 हालड़ा-सज्ञा पु० १. बच्चा को लेकर हिलाना-  
 डोलाना। २ झोका। ३ तहर। हिलोरी।  
 हालसाकि-अव्य० [फा०] यद्यपि। ना कि।  
 ऐसी बात है, फिर भी।  
 हालसा-सज्ञा स्त्री० घराब। मदिरा।  
 हालाहल-सज्ञा पु० दे० 'हलाहल'।

हालिम-सज्ञा पु० एक पोधा, जिसके बीज दवा  
 के काम में आते हैं। चमुर।  
 हाली-अव्य० जल्दी। शीघ्र।  
 हालो-सज्ञा पु० दे० 'हालिम'।  
 हाव-सज्ञा पु० संयोग के समय नायिका के  
 स्वाभाविक चेष्टाएँ। इनकी संख्या ११ हैं-  
 लीला मिलास, विच्छिन्ति, विभ्रम क्लिक्कित,  
 मोट्टायित विव्शोक, विहृत, कुट्टमित, ललित  
 और हेला।  
 हावन्दस्ता-सज्ञा पु० [फा०] खरन और  
 बड़ा। लस और लोडा।  
 हावभाव-सज्ञा पु० रिजया की मगोहर चेष्टाएँ।  
 नाज-मखरा।  
 हाशिया-सज्ञा पु० १ किनारा। २ गोटा। भाजी  
 ३ हाशिए या किनारे पर का लख या नोट।  
 मुहा०—हाशिए का गवाह=वहवाह, जिसका  
 नाम किसी दस्तावेज के किनारे दज हो।  
 हाशिया चडाना=किसी बात में मनोरंजन  
 आदि के लिए कुछ और बात जोड़ना।  
 हास-सज्ञा पु० १ हँसन की क्रिया या भाव।  
 २ दिलगी। मजाक। ३ उपहास।  
 वि० उज्ज्वल। सफेद रंग।  
 हासक-सज्ञा पु० [स्त्री० हासिका] हँसने-  
 वाला। मसखरा। हँसोड।  
 हासिल-वि० [अ०] प्राप्त। पाया हुआ।  
 सज्ञा पु० १ गुणा करन में किसी सस्या का  
 वह भाग या अंक, जो शेष भाग के कहीं रखे  
 जाने पर बच रहे। २ लाभ। नफा। ३  
 उज्ज्वल। सैदावार। ४ गणित की क्रिया का  
 फल। ५ जमा। लगान।  
 हासो-वि० [स्त्री० हासिनी] हँसनवाला।  
 हास्य-सज्ञा पु० १ हँसने की क्रिया या भाव।  
 हँसी। २ नी स्वायी भावा और रसों में  
 से एक। ३ विनोद। हिलगी। मजाक। ४  
 उपहास। निदापूण हँसी।  
 वि० १ हँसन के योग्य। २ उपहास के  
 योग्य। ३ वह जिस पर लोग हँसे।  
 हास्यास्पद-सज्ञा पु० १ हँसी उत्पन्न करने  
 वाला। २ वह, जिसकी लोग हँसी उड़ावें। ३  
 हँसी उड़ाए जाने लायक। उपहास का  
 विषय।

हास्योत्पादक-वि० हँसी उत्पन्न करनेवाला। वह बात, जिससे लोगों को हँसी आए। उप-हास के योग्य।

हा हत-अव्य० हाय। अत्यन्त शोक या कष्ट।

हाहा-सज्ञा पु० १. जोर से हँसने का शब्द।

२. गिड़गिड़ाने का शब्द। ३. बहुत विनती या दीनता की पुकार। दुहाई।

पो०-हाहा हीही, हाहा ठीठी=हँसी-ठट्ठा।

मुहा०-हाहा करना या खाना=गिड़गिड़ाना। बहुत विनती करना।

हाहाकार-सज्ञा पु० पवराहट या दुख की चिल्लाहट। बहुत से आदमियों के मुँह से निकला हुआ "हाहा" शब्द। कुहराम।

हाहाहत\*-सज्ञा पु० दे० "हाहाकार"। कुहराम।

हाहाहू-सज्ञा पु० १. हाहा करके हँसना। २. हँसी-ठट्ठा।

हाही-सज्ञा स्त्री० कुछ पाने के लिए 'हाय हाय' करते रहना।

हाहू-†\*-सज्ञा पु० १. शोरगुल। कोलाहल। २. हलचल। धूम।

हाहूयेर-सज्ञा पु० जंगली येर। सड़बेड़ी।

हिकरना-क्रि० ज० दे० "हिनहिनाना"।

हिकार-सज्ञा पु० माय के रँभाने का शब्द।

हिलाना-सज्ञा स्त्री० दुर्गा या देवी की एक मूर्ति, जो सिप में है।

हियोष्टक चूर्ण-सज्ञा पु० एक प्रसिद्ध पाचक चूर्ण, जिसमें हींग आदि आठ औषधियाँ पड़ती हैं।

हिपू-सज्ञा पु० हींग।

हिपूपत्र-सज्ञा पु० दे० "हिगोट"। इगुदी पेड़।

हिपुस-सज्ञा पु० इंगुर।

हिगोट-सज्ञा पु० हिपूपत्र। इगुदी पेड़। एक शाइदार कँटीला जंगली पेड़, जिसके गाल छोटे फल में तेल निकलता है।

हिपा\*†-सज्ञा स्त्री० दे० "दिष्टा"।

हिमन-सज्ञा पु० भूमना। फिरना।

हिरोस-सज्ञा पु० दे० "हिरोना"।

हिरोल-सज्ञा पु० १. हिन्दान। हिरोना। मूला। पालना। २. एक प्रकार का रोग।

हिरोल्ला†-सज्ञा पु० दे० "हिरोना"।

हिडोला-सज्ञा पु० १. पालना। झूला। २. चर्खी। ऊपर-नीचे घूमनेवाला चक्करदार झूला, जिसमें बैठने के लिए चौखटे बने रहते हैं।

हिताल-सज्ञा पु० एक प्रकार का खजूर।

हिव-सज्ञा पु० [फा०] भारतवर्ष। हिन्दुस्तान।

हिववाना\*†-सज्ञा पु० [फा०] कलीदा। तरबूज।

हिववी-सज्ञा स्त्री० हिंदी भाषा।

हिदो-सज्ञा पु० हिन्दी भाषा। भारत की राष्ट्र-भाषा, जो नागरी लिपि में लिखी जाती है।

वि० हिन्द का। हिन्दुस्तान का। भारतीय।

सज्ञा पु० हिंद का रहनेवाला। भारतवासी। भारतीय।

हिन्दुस्तान-सज्ञा पु० [फा० हिन्दोस्तान] भारतवर्ष।

हिन्दुस्तानी-सज्ञा स्त्री० १. हिन्दुस्तान की भाषा। २. बोल-चाल या व्यवहार की वह हिंदी, जिसमें न तो बहुत अरबी-फारसी के शब्द हों, न संस्कृत के।

वि० [फा०] हिन्दुस्तान का।

सज्ञा पु० हिन्दुस्तान का निवासी। भारतवासी।

हिन्दुस्थान-सज्ञा पु० दे० "हिन्दुस्तान"।

हिदू-सज्ञा पु० [फा०] भारतवर्ष में बसने-वाली बार्म्य जाति के ब्राह्मण। हिदू धर्म का अनुयायी।

हिबोस्तान-सज्ञा पु० [फा०] दे० "हिन्दुस्तान"।

हिपा†\*-अव्य० द० "यही"।

हिव-सज्ञा पु० दे० "हिम"।

हिवार†-सज्ञा पु० बर्फ। पाला।

हित-सज्ञा स्त्री० पोछा के बोलने का शब्द।

हिनहिनाहट।

हिताक-सज्ञा पु० १. हिता करनेवाला। मार डालनेवाला। पातक। २. हानि या नुस्खान करनेवाला। बुराई करनेवाला। ३. शत्रु।

वि० जोश को मारकर उनका मांस खाने-वाला (जानवर)।

हितन-सज्ञा पु० [हिमनोच. हिमिन, हिम्य]

१. हिता करना। जान मारना। बर्ष करना।

२. बट्ट पट्टवाना। मारना। मुराई करना या चाहना।

हिंसा-सज्ञा स्त्री० १ जीवा को मारना या कष्ट देना। २ हानि पहुँचाना।

हिंसात्मक-वि० जिसमें हिंसा हो। हिंसा से युक्त।

हिंसालु-वि० १ हिंसा करनेवाला। मारने-वाला। २ हिंसा करने का स्वभाव रखने-वाला।

हिंस-वि० हिंसा करनेवाला। मारनेवाला। लुत्तार।

हिंसक-वि० १ हिंसा करनेवाला। मार डालनेवाला। २ जीवा को मारकर मांस खानेवाला (जानवर)।

हि-एक पुरानी विभक्ति, जिसका प्रयोग पहल तो सब कारकों में होता था, पर बाद में कर्म और उपप्रदान में ही (को) के अर्थ में) रह गया।

‡अव्य० दे० "ही"।

हिअ, हिआ-सज्ञा पु० दे० "हृदय"।

हिकमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १, युक्ति। तर्क। २ उपाय चतुराई का ढंग। चाल। ३ कोई नई बात या उपाय बूढ़ निकालने की बुद्धि। ४ दिया। कला-कौशल। ५ हुकीम का काम या पेशा। हुकीमी।

हिकमती-वि० १ हिकमत जाननेवाला। काम हल करने की तरकीब निकालनेवाला। २ चतुर। चालाक। ३ किकायतो।

हिक्का-सज्ञा स्त्री० १ हिक्की। २ बहुत हिक्की आने का रोग।

हिक्क-सज्ञा स्त्री० आगा-पीछा। कोई काम करने की इच्छा करते समय मन में होनवाली रुकावट। शिश्क।

हिक्कना-क्रि० अ० १ आगा-पीछा करना। शिश्कना। २ नय या तकोच आदि के कारण कोई काम करने में रुकना। ३ \*हिक्की लेना।

हिक्किचाना-क्रि० अ० हिक्कना। आगा-पीछा सोचना। शिश्कना।

हिक्किचाहट-सज्ञा स्त्री० हिक्क। आगा-पीछा।

हिक्की-सज्ञा स्त्री० [अनु०] १ पेट की वायु का शोक के साथ ऊपर चढ़कर फट

में धक्का देते हुए निकलना। २ रह-रहकर सिसकने का शब्द।

हिचर मिचर-सज्ञा पु० हिचकिचाहट।

हिजडा-सज्ञा पु० नपुंसक। जन्ता। बहु व्यक्ति, जिसे पुद्ग या स्त्री का तित न हो।

हिजरी-सज्ञा पु० [अ०] मुसलमानों से, जहाँ मुहम्मद साहब के मरने से मदीने भागने की तारीख (१५ जुलाई से ६२२ ई०) से चला है।

हिज्जे-सज्ञा पु० [अ०] किसी शब्द के अक्षर और मात्राओं का क्रम। अक्षर विन्यास।

हिज्ज-सज्ञा पु० [अ०] वियोग। जुदाई।

हिंदिय-सज्ञा पु० रंसा। एक राक्षस, जिसे भीम ने पांडवा के वनवास के समय मारा था।

हिंदिया-सज्ञा स्त्री० हिंदिव राक्षस की बहिन, जिसके साथ भीम ने विवाह किया था।

हित-सज्ञा पु० १, भलाई। २ कल्याण। उपकार। लाभ। फायदा। ३ स्वास्थ्य के लिए लाभ। ४ प्रेम। स्नेह। ५ मित्रता। ६ भलाई चाहने या कलवाला आदमी। मित्र। ७ सबधी। रिश्तेदार।

वि० १ भलाई करने या चाहनेवाला। खैर-छाह। २ लाभकारी। अनुकूल।

अव्य० १ (किसी के) लाभ के लिए। प्रसन्न के लिए। २ हेतु। लिए। बाले।

हितकर, हितकारक-सज्ञा पु० [सज्ञा हित-कारिता] १ भलाई करनेवाला। २ लाभ पहुँचानेवाला। फायदेमंद। ३ स्वास्थ्यकर।

हितकारी-वि० दे० 'हितकर'।

हितचितक-सज्ञा पु० भलाई चाहनेवाला। खैरछाह। शुभचिन्तक।

हितचितन-सज्ञा पु० किसी की भलाई सोचना भलाई की इच्छा। खैरछाह।

हितवचन-सज्ञा पु० भलाई की बात या उपदेश।

हितवना\*†-क्रि० अ० दे० 'हिताना'।

हितवादी-वि० [स्त्री० हितवादिनी] भलाई की बात कहनेवाला।

हिताई-सज्ञा स्त्री० १ 'हित' होने का भाव। भलाई २ सम्बन्ध। नाता। रिश्ता।

हिलाना\*—कि० अ० १ भलाई करना। हित-  
कर होना। लाभदायक होना। अनुकूल  
होना। २ प्यारा या अच्छा लगना। ३  
प्रेम करना। प्रेम-युक्त होना।

हितावह—वि० दे० "हितकारी"।

हिताहित—सज्ञा पु० भलाई-बुराई। लाभ-  
हानि। नफ-नुकसान।

हितो, हित्—सज्ञा पु० १ भलाई चाहने या  
करनेवाला। शुभचिन्तक। खेरलवाह। २  
मवधी। नातेदार। ३ सुहृद्। स्नेही।

हितेच्छा—सज्ञा पु० हित या भलाई की इच्छा।

हितेच्छु—वि० हित चाहनेवाला। भलाई चाहने  
वाला। हितेंपी। खेरलवाह।

हितं पिता—सज्ञा स्त्री० भलाई चाहने की  
इच्छा। खेरलवाही।

हितेंपी—वि० [स्त्री० हितेंपिणी] भलाई  
चाहनेवाला। शुभचिन्तक। खेरलवाह।

हिदायत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ आदेश।  
निर्देश। २ मार्ग दिखाना। बड़े का छोटे को

कोई कार्य करने का तरीका बताना।

हिनती\*—सज्ञा स्त्री० दे० "हीनता"।

हिनहिनाना—कि० अ० [सज्ञा स्त्री० हिन  
हिनाहट] षोडे का रोलना (हिन हिन  
शब्द करना)। हीसना।

हिना—सज्ञा स्त्री० [अ०] गेहूँदी।

हिफाजत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ किसी चीज  
को इस तरह रखना कि वह नष्ट न हो।  
रक्षा। बचाव। २ देख रक्ष। रखवाली।

हिब्बा—सज्ञा पु० [अ० हिब्ब] १ वान। २  
दो जी के बराबर तोल। ३ दाना। ४ फौडी।

हिब्बानामा—सज्ञा पु० दानपत्र।

हिमचल\*—सज्ञा पु० दे० "हिमाचल"।

हिमत\*—सज्ञा पु० दे० "हेमत"।

हिम—सज्ञा पु० १ बर्फ। तुषार। पाला।  
२ ठंड। जाड़ा। जाड़े का मौसम। ३

चंद्रमा। ४ कमल। ५ चंदन। ६ कपूर।  
मक्खन। ७ मोती। ८ रांगा।

वि० ठंडा। सदै।

हिम-उपल—सज्ञा पु० बोला।

हिमकण—सज्ञा पु० बर्फ या पाले के छोटे-छोटे  
दुकड़े।

हिमकर—सज्ञा पु० १. चंद्रमा। २ कपूर।  
हिमकिरण—सज्ञा पु० [ठंडी किरणोवाला]  
चंद्रमा।

हिमतैल—सज्ञा पु० कपूर और ठंडक गड़ुचाने-  
वनी अ पधिया डालकर बनाया गया तेल।

हिमपात—सज्ञा पु० बर्फ गिरना। पाला  
पड़ना।

हिमभानु—सज्ञा पु० चंद्रमा।

हिमयानो—सज्ञा स्त्री० [फा०] रुपया-पैसा  
रखने की जालीदार तंत्री पैली जो कमर  
में बांधी जाती है। डोडा।

हिमरश्मि—सज्ञा पु० चंद्रमा।

हिमवत्—सज्ञा पु० दे० "हिमवान्"।

हिमवान्—वि० [स्त्री० हिमवती] बर्फ-  
वाला। जिसमें बर्फ या पाला हो।

सज्ञा पु० १ हिमालय। २ कैलाश पर्वत।  
३ चंद्रमा।

हिमशैल—सज्ञा पु० हिमालय।

हिमाक—सज्ञा पु० कपूर।

हिमाशु—सज्ञा पु० चंद्रमा।

हिमाकत—सज्ञा स्त्री० [अ०] बेवकूफी।  
मूर्खता।

हिमाचल—सज्ञा पु० हिमालय।

हिमाद्रि—सज्ञा पु० हिमालय पहाड़।

हिमानी—सज्ञा स्त्री० १ बर्फ। तुषार। पाला।  
२ बर्फ का ढेर। हिमखंड। [अग्ने०—  
भ्लोतिपर]।

हिमायत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १ पक्षपात।  
२ समर्थन।

हिमायती—वि० [फा०] १ समर्थन करने-  
वाला। २ पक्षपाती। तरफदार। ३  
सहायक। मददगार।

हिमालय—सज्ञा पु० भारत की उत्तरी सीमा  
पर का पहाड़, जो संसार के सब पर्वतों से  
बड़ा और ऊँचा है।

हिमि\*—सज्ञा पु० दे० "हिम"।

हिम्मत—सज्ञा स्त्री० [अ०] १. कठिन काम  
करने की मानसिक दृढ़ता। साहस। २.  
बहादुरी। पराक्रम।

हिम्मती—वि० [फा०] १ साहसी। दृढ़।  
बहादुर। २. पराक्रमी।

हिप्प-सज्ञा पु० १. हृदय। मन। २. वक्ष-  
स्पर्श। छाती।

हियरा-सज्ञा पु० १. हृदय। २. मन। ३. वक्ष-  
स्पर्श। छाती।

हिया-अव्य० दे० "यहाँ"।

हिया-सज्ञा पु० दे० "हृदय"।

हियाय-सज्ञा पु० हिम्मत। साहस।

हिरकना-†-क्रि० अ० १. पास जाना। नज-  
दीप जाना। २. सटना। ३. हिलना-मिलना।

हिरकाना-†-क्रि० अ० १. पास ले जाना।

नजदीक लाना। २. सटाना। मिटाना।

हिरण-†-सज्ञा पु० दे० "हिरण"।

हिरण्य-वि० सोने का। सुनहला।

सज्ञा पु० हिरण्यगर्भ। ब्रह्मा। जवूदीप का  
एक खड। एक ऋषि।

हिरण्य-सज्ञा पु० १. स्वर्ण। सोना। २.

वीर्य। ३. धतूरा। ४. अमृत। ५. कोडी।

हिरण्यकशिपु-सज्ञा पु० प्रह्लाद का पिता  
एक दैत्य राजा, जो ईश्वर का वध विरोधी  
था। भगवान् ने नृसिंहावतार धारण करके  
उसे मारा था।

वि० सोने की गद्दीवाला।

हिरण्यकश्यप-सज्ञा पु० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हिरण्यगर्भ-सज्ञा पु० १. ब्रह्मा। वह ज्योतिर्मय  
वृक्ष, जिससे सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है।

२. सूक्ष्म शरीर सहित आत्मा। ३. विष्णु।

• • एक ऋषि।

हिरण्यनाभ-सज्ञा पु० १. विष्णु। २. मैनाक

पर्वत।

हिरण्यरेता-सज्ञा पु० १. सूर्य। २. अग्नि।

३. शिव।

हिरण्यय-सज्ञा पु० देवता पर चढ़ाई हुई  
सम्पत्ति। देवीत्तर धन।

हिरन-सज्ञा पु० हरिण। मृग। घुर और सींगों  
वाला एक चौपाया, जो प्रायः सुनसान  
भूदानों और जंगलों में रहता है।

हिरनाकुसु-†-सज्ञा पु० दे० "हिरण्यकशिपु"।

हिरनीदा-सज्ञा पु० हिरन का बच्चा। मृग-  
छोटा।

हिरकत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. हाथ की  
• कारीगरी। दस्तकारी। कला-नीशल। २.

हुनर। ३. पैदा। व्यापार। ४. चालाकी। ५.  
पूँतता। चालबाजी।

हिरकतवाज-वि० चालवाज। धूर्त।

हिरमञ्जी-सज्ञा स्त्री० [अ०] ताल रंग की  
एक प्रकार की मिट्टी।

हिराती-सज्ञा पु० अफ़ग़ानिस्तान के उत्तर  
हिरात प्रदेश का घोडा।

हिराना-†-क्रि० अ० १. दे० "हराना"। २.

साद के लिए भेड़-बकरी का खेत में बंधना।

हिरावल-सज्ञा पु० दे० "हरावल"।

हिरास-सज्ञा स्त्री० [फ़ा०] १. हिरास। उर  
भय। २. निरासा। ३. उदासी। रज। विता

दुख।

वि० निरास। हताश। उदासीन।

हिरासत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. पहार।

चीकी। २. कंद। नजरबंदी।

हिरोजी-†-सज्ञा स्त्री० दे० "हिरमञ्जी"।

हिरोल-†-सज्ञा पु० दे० "हरावल"।

हिस-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. लोभ। लालच।

२. देखा-देखी किसी बात की इच्छा। सङ्गति।

३. इच्छा का वेग। वासना।

हिलकना-क्रि० अ० [अनु०] १. हिलकियाँ

लेना। सिरकना। २. दे० "हिलगना"।

क्रि० स० सिकोडना। ँठना।

हिलको-†-सज्ञा स्त्री० १. हिलकी। २.

सिसकने का शब्द। सिसक।

हिलकोर, हिलकोरा-सज्ञा पु० हिलोर।

सहर।

हिलग-सज्ञा स्त्री० १. लगाव। सद्बन्ध। प्रेम।

२. लगन। ३. परिचय।

हिलगना-क्रि० अ० १. हिल-मिल जाना।

परचना। २. पास होना। सटना। मिटना।

हिरकना। ३. अटकना। टँगना। ४. फँसना।

बसना।

हिलगाना-क्रि० स० १. मेल-जोल करना। पर-

वाना। हिल-मिला लेना। २. सटाना। ३.

अटकना। टँगना। ४. फँसना। बसना।

हिलना-क्रि० अ० १. स्थिर न होना। जमकर

बैठा न रहना। हलकत करना। चलना।

सरकना। २. काँपना। ३. डीला होना। ४.

श्रमना। ५. लहराना। ँठना। घुसना (पानी

में)। ६ (मन) चंचल होना। ७ अनुरक्त होना। ८ हेल मेल में आना। परचना।  
 हिलसा-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार की मछली।  
 हिलना-क्रि० सं० १ झुलाना। चलायमान करना। हुरकन देना। २ स्थान से उठना। टालना। हटाना। ३ कंपाना। ४ नीचे ऊपर या इधर-उधर झुलाना। झुलाना।  
 ५ परिचित और अनुरक्त करना। परचाना।  
 ६ [ देश० ] घुसाना। पंठाना।

हिलाल-सज्ञा पु० [ अ० ] सच्चाई। धर्म।  
 हिलोर, हिलोरा-सज्ञा पु० तरंग। लहर। मोज।

हिलोरना-क्रि० सं० १ पानी को इस प्रकार हिलाना कि उसमें लहरें उठें। २ लहराना।  
 हिलोल-सज्ञा पु० दे० 'हिल्लोल'।  
 हिल्लोल-सज्ञा पु० १ हिलोर। तरंग। लहर। २ आनंद की तरंग। मोज।

हिवचल-सज्ञा पु० बर्फ। पाला।  
 हिवर-सज्ञा पु० बर्फ। पाला।  
 हिसका-सज्ञा पु० १ ईर्ष्या। डाह। बराबरी को इच्छा। २ स्वर्दा। देखादेखी किसी बात की इच्छा।

हिंसाव-सज्ञा पु० [ अ० ] १ गिनती। गणित। जन-देन या आमदनी-खर्च आदि का व्योरा। आय व्यय का विवरण। लेखा। २ वह विद्या, जिसके द्वारा सख्या, मान आदि निर्धारित हों। गणित विद्या। ३ गणित विद्या का प्रश्न। ४ भाव। दर। ५ नियम। कायदा। व्यवस्था। ६ धारणा। समझ। ७ मत। विचार। ८ हाल। दशा। अवस्था। ९ चाल। व्यवहार। १० रहन। ढग। तरीका। ११ कम खर्च। कफायत। मितव्यय।

गूसा-हिंसाव चुकाना या चुकता करना= जो कुछ बाकी हो, उसे दे देना। हिंसाव करना=जो जिम्मे आता हो, उसे दे देना। हिंसाव देना=जमा खर्च का व्योरा बताना। हिंसाव लेना या समझना=यह पूछना कि कहीं कितना खर्च हुआ। बेहिंसाव=बहुत अधिक। अत्यंत। हिंसाव रखना=आमदनी-खर्च आदि का व्योरा लिखकर रखना। हिंसाव बैठना=१ ठोक जैसा चाहिए, बैसा

प्रबध होना। युक्ति या तरीका ठीक होना २ सुभीता होना। हिंसाव से=समय से। लिखे हुए व्योरे के मुताबिक क्रम से। बैठा या टेढ़ा हिंसाव=१ कठिन कार्य। मुश्किल। काम। २ अवयव। गडबड।

हिंसाव-किताब-सज्ञा पु० [ अ० ] आय व्यय का व्योरा। आमदनी-खर्च आदि का लिखा हुआ व्योरा। लेखा जोखा। ढग। रीति। तरीका। हिंसावी-सज्ञा पु० हिंसाव या गणित का जानकार। मितव्ययी। हिंसाव से खर्च करने वाला।

वि०—हिंसाव सम्बन्धी।

हिंसिया\*†-सज्ञा स्त्री० ईर्ष्या। बराबरी करने का भाव या होड़। स्पर्धा। समता।  
 हिंसीरिया-सज्ञा स्त्री० [ अये० ] मूर्च्छा का रोग। स्निघो का विशेष रोग, जिसमें मूर्च्छा या उन्माद की स्थिति होती है।

हिस्ता-सज्ञा पु० १ भाग। अंश। २ टुकड़ा। खंड। ३ अंग। अवयव। ४ किसी चीज के बटने पर प्रत्येक को मिलनेवाला अंश। बखरा। ५ किसी व्यापार या रोजगार में साक्षात्।

हिस्तेदार-सज्ञा पु० १ हिस्ता पानेवाला जिसे कुछ हिस्ता मिला हो। २ रोजगार में शरीक। साझेदार। किसी अंश या हिस्से का मालिक (जायदाद आदि)।

हिंहीनाना-क्रि० अ० दे० 'हिनहिनाना'।

हींग-सज्ञा स्त्री० एक छोटा पौधा और उसका जमाया हुआ गाढ़। इसमें बड़ी तीक्ष्ण गंध होती है और इसे दवा और मसाले के काम में साते हैं। यह अफगानिस्तान और फारस में बहुत होता है।

हींचना†-क्रि० रा० खींचना।

होस-सज्ञा स्त्री० १ घोड़े के बोलने का शब्द। हिनहिनाहट। २ गधे के बोलने का शब्द। रेक।

होसना-क्रि० अ० १ दे० 'हिनहिनाना'। २ गदहे का बोलना। रेंकना।

होहो-सज्ञा स्त्री० हंसने का शब्द।

हो-अव्य० एक अव्यय, जो किसी बात पर जोर देने के लिए या निश्चय, अल्पता, परि-

मिति तथा स्वीकृति आदि सूचित करने के लिए आता है।

सज्ञा पु० दे० "हिय", "हृदय"।

क्रि० अ० थी (अज्ञ भाषा में 'हो' (या) का स्त्री०)।

होह-सज्ञा स्त्री० १. हिचकी। २. हलना अथवा चकराव या गले में जलन।

हीचना\*†-क्रि० अ० दे० 'हिचकना'।

हीजका-सज्ञा पु० हिजड़ा। नपुंसक। जनसा।

हीठना-क्रि० अ० १ पास जाना। समीप होना। फटकना। २ जाना।

हीन-वि० [सज्ञा हीनता] १ रहित। बिना।

२ खाली। शून्य। ३ छोटा हुआ। त्यक्त। वंचित। ४. ओछा। नीच। बुरा। ५

निम्नकोटि का। घटिया। ६ तुच्छ। नाचीज। नगण्य ७ मुख, धन आदि से रहित। दीन। दुखी। ८ नम्र। ९ अल्प। कम। थोड़ा।

हीनक्रम-सज्ञा पु० जिस क्रम से गुण गिनाए गए हों, उसी क्रम से गुणी न गिनाए जाने का काव्य में एक दोष।

हीनचरित, हीनचरित्र-बुरे चाल चलनवाला। चरित्रहीन।

हीनता-सज्ञा स्त्री० १ हीन होने का भाव। कमी। भुक्ति। अभाव। २ छोटा या तुच्छ समझने का भाव। ओछापन। तुच्छता। ३ बुराई। निरुपेक्षा।

हीनत्व-सज्ञा पु० हीनता।

हीनबल-वि० कमजोर।

हीनबुद्धि-वि० मूर्ख। दुर्बुद्धि।

हीनयान-सज्ञा पु० बौद्ध धर्म की दो शाखाओं में से मूल और प्राचीन शाखा।

हीनरस-सज्ञा पु० काव्य में एक दोष, जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विशद बतला के वर्णन से होना है। रस-विरोध।

हीनवीर्य-सज्ञा पु० कमजोर। निर्बल। अशक्त।

हीन हयात-सज्ञा स्त्री० [अ०] जीवन-काल। जीते रहने का समय।

अव्य० अव्यय तक बिना रहे, तब तक।

हीनाग-वि० १ जिसका बार्द अंग न हो। अंगरहित। खंडित अंगवाला २ अधूरा।

हीनोपमा-सज्ञा स्त्री० [उपमा की हीनता] बड़े की छोटे से उपमा। काव्य में ऐसी उपमा, जिसमें बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लिया जाता है।

हीय, हीया\*-सज्ञा पु० दे० 'हिय'।

हीर-सज्ञा पु० १ हीरा। २ रत्न। ३ मातियों की माला। ४ वस्त्र। बिजली। ५ सौ।

६ किसी वस्तु के भीतर का सार भाग। गुदा या सत। तत्त्व। ७ लकड़ी के भीतर का भाग। ८ शरीर की सार वस्तु। धातु।

वीर्य्यं। ९ शक्ति। बल। १० छप्पय के ६२वें मंड का नाम। ११ एक वपुस्त, जिसके प्रत्येक चरण में मान, सगण, नगण, जगण और रगण होते हैं। १२ एक मात्रिक छंद, जिसमें ६, ६ और ११, के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं।

हीरक-सज्ञा पु० हीरा। रत्न। एक छंद।

हीरक-जयती-सज्ञा स्त्री० किसी व्यक्ति या तत्त्वा आदि के ६०वें वर्ष मनाई जानेवाली वर्षगांठ।

हीरा-सज्ञा पु० एक बहुमूल्य पत्थर या रत्न जो अपनी चमक और सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। वज्रमणि।

हीराकट-वि० हीरे की भाँति कटा हुआ।

हीरा कसीस-सज्ञा पु० सोह का हरापन लिये मटमंठे रंग का विकार।

हीरामन-सज्ञा पु० सोने के रंग का कल्पित रंग।

हीरो-सज्ञा पु० [अग्र०] नाटक, कहानी, उपन्यास, सिनेमा आदि का प्रमुख पात्र। नायक।

हीरोइन-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] नाटक, कहानी, उपन्यास, सिनेमा आदि की प्रमुख पात्री। नायिका।

हीलना\*†-क्रि० अ० दे० 'हिलना'।

हीला-सज्ञा पु० १ बहाना। मिस। २ जर्जिया। बसोझा। साधन।

यो०-हीला हवाला=बहाना।

हीरका, हीसा†-सज्ञा स्त्री० हिसका। ईर्ष्या।

झह। होइ। बराबरी की इच्छा। देखा-  
देखो किसी बात की इच्छा।

हुं-अव्य० दे० "हु"। स्वीकृति-सूचक शब्द।  
हुकरना-क्रि० अ० दे० "हुकारना"।

हुकार-सज्ञा पु० १ ललकार। २ गर्जना।  
गरज। डराने के लिए बहुत जोर का शब्द।  
शोर की बोली।

हुकारना-क्रि० अ० ललकारना। २ गरजना।  
३ चिगाड़ना। चिल्लाना। दपटना।

हुकारी-सज्ञा स्त्री० १ 'हुं' करने की क्रिया।  
२ स्वीकृति-सूचक शब्द। हामी। दे०  
'बिकारी' रकम सूचित करने की लकीर।

हुडार-सज्ञा पुं० दे० "भडिया"।

हुडावन-सज्ञा स्त्री० हुडी की दर। हुडी की  
दस्तूरी, जो हुडी से रुपया भेजने पर लगती  
है।

हुडी-सज्ञा स्त्री० १ वह कागज, जिस पर एक  
महाजन दूसरे महाजन को कुछ रुपया देने के  
लिए, लिखकर किसी को बदले में रुपए  
देता है। निधि-पत्र। तोटपत्र (एक  
प्रकार का हेडनोट)। २ अपना धन पाने  
के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र  
जिसमें यह लिखा होता है कि इतने रुपए  
अमुक व्यक्ति को दे दिये जायें। (अग्रे-  
ड्राफ्ट बिल आफ एक्सचेंज)। ३ धन उधार  
 देने की एक रीति, जिसमें लेनेवाले को  
एक निश्चित समय में सूद सहित, कुछ  
किस्तों में, सब कर्ज चुका देना पड़ता है।  
मुहा०-हुडी सकारना=हुडी के रुपए का  
देना स्वीकार करना। दर्शनी हुडी=वह हुडी,  
जिसको दिखाते ही रुपए चुकता कर देने का  
नियम हो।

हुत-प्रत्य० १ पुरानी हिंदी की पंचमी और  
तृतीया की विभक्ति। से। २ लिए। वास्ते।  
खातिर। ३ द्वारा। जरिए से।

हुं-अव्य० कहीं हुई बात के अलावा और भी।  
'भी'। अतिरेक-सूचक शब्द, जिससे 'भी'  
का अर्थ प्रकट होता हो।

हुआना-क्रि० अ० [अनु०] 'हुआ' 'हुआ'  
करना। गीदड़ो का बोलना।

हुक-सज्ञा स्त्री० [अग्रे०] १ पीठ में सहसा

हानवाला दर्द। २ टेढ़ी कील। अकुसी।  
अकुडी।

हुकुम-सज्ञा पु० दे० "हुकूम"।

हुकूमत-सज्ञा स्त्री० [अ०] शासन। अधिकार।  
प्रभुत्व। आधिपत्य।

मुहा०-हुकूमत चलाना=प्रभुत्व या अधि-  
कार से काम लेना। हुकूमत जताना=अधि-  
कार प्रकट करना। रोब दिखाना।

हुक्का-सज्ञा पु० [अ०] तबाकू पीने के लिए  
विशेष रूप से बना एक नलयंत्र। गडगडा।  
फरशी।

हुक्का-पानी-सज्ञा पु० एक विरादरी के लोगो  
का आपस में एक दूसरे के हाथ से हुक्का-  
तबाकू, जल आदि पीने और पिलाने का व्य-  
वहार। विरादरी का व्यवहार। सामाजिक  
व्यवहार।

मुहा०-हुक्का पानी बंद करना=विरादरी से  
अलग करना।

हुक्काम-सज्ञा पु० [अ० 'हाकिम' का बहुवचन  
रूप] हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग।

हुक्म-सज्ञा पु० [अ०] १ आज्ञा। आदेश।  
अनुमति। २ अधिकार। प्रभुत्व। शासन।  
३ विधि। नियम। ४ उपदेश। ५ ताश  
का एक काला रंग।

मुहा०-हुक्म की तामील=आज्ञा का पालन।  
हुक्म चलाना या जारी करना=आज्ञा  
देना। हुक्म तोड़ना=आज्ञा भंग करना।  
हुक्म बजाना या बजा लाना=आज्ञा पालन  
करना।

हुक्मनामा-सज्ञा पु० वह कागज, जिस पर  
हुक्म लिखा हो। आज्ञा-पत्र।

हुक्मबरदार-सज्ञा पु० हुक्म माननेवाला।  
आज्ञाकारी। सेवक।

हुक्मो-वि० [अ०] १ हुक्म दिया हुआ।  
अवश्य किया जानेवाला। लाजिमी।

जल्दरी। २ दूसरे की आज्ञा के अनुसार काम  
करनेवाला। पराधीन। ३ जल्द असर  
करनेवाला। अचूक।

हुजूम-सज्ञा पु० [अ०] भीड़। जमाव।

हुजूर-सज्ञा पु० [अ०] १ बड़े लोगो को  
संयोजित करने का शब्द। आदर-सूचक शब्द।

२ सामने। दृष्टि या नजर का सामना। ३ किसी वडे की समीपता। ४ बादशाह या हाकिम का दरबार। बचहुरी।

हुजुरी-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. नजर का सामना। २ वडे की समीपता। वडे आदमी, बादशाह या राजा आदि की सेवा में सदा रहनेवाला नौकर। ३ दरबारी। मुसाहब। वि० हुजूर का। सरकारी।

हुज्जत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ व्यर्थ का तर्क। बेकार की बहस। २ झगडा। तकरार। हुज्जती-वि० हुज्जत करनेवाला।

हुकना-क्रि० अ० १ वियोग में बहुत दुखी होना (विरोधकर बच्चा का)। बच्चा जिससे बहुत हिंमिल गया हो, उसके लिए उसका चेंचन होना। २ तरसना। ३ भयभीत और चिंतित होना।

हुकना-क्रि० स० १ भयभीत और दुखी करना। २ तरसाना।

हुडग, हुडग-सज्ञा पु० ऊधम। उल्लूक।

उपद्रव। उलाव। हुलड। शोर-गुल।

हुडक-सज्ञा पु० एक तरह का छोटा डोल।

हुडकी-वि० उजड्ड। गंवार। जगती। उड्ड।

हुडक\*†-सज्ञा पु० दे० "हुडक"।

हुत-क्रि० अ० 'होना' क्रिया का पुराना भूत कालिक रूप—'या'।

वि० हवन किया हुआ। हवन के समय आग में डाला हुआ। आहुति के रूप में दिया हुआ।

सज्ञा पु० हवन की वस्तु।

हुतभक्ष-सज्ञा पु० अग्नि। आग।

हुतगोव-सज्ञा पु० हवन से प्रची सामग्री।

हुता\*—क्रि० अ० 'होना' क्रिया का पुराना भूतकालिक रूप—'या'।

हुताग्नि-सज्ञा पु० १ यज्ञ की आग। २ हवन करनेवाला। अग्निहोत्री।

हुतर्द्धन-सज्ञा पु० अग्नि।

हुति\*—अव्य० करण और अपादान वारक का चिह्न—द्वारा, से। ओर से। तरफ से।

हुते\*—अव्य० से। द्वारा। ओर से। तरफ से।

हुती\*—क्रि० अ० यज्ञ-नामा में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। या।

हुवकाना†\*—क्रि० स० [दश०] उन्नताना। उभाडना। उत्तेजित करना।

हुवता†\*—क्रि० अ० छिडकना। स्तब्ध होना। चक्कना जाना।

हुवदुव-सज्ञा पु० [अ०] एक दाविरगी चिड़िया।

हुन-सज्ञा पु० १ स्वर्ण। साना। २ स्वर्ण-मुद्रा। मोहर। अशरफी।

मुसा—हुन परमना=बिस्ती के पास बहुत अधिक धन होना। बहुत आमदनी होना।

हुनना\*—क्रि० स० हवन करना। आहुति देना।

हुनर-सज्ञा पु० [फा०] १ कला। हाथीरी। २ गुण। ३ कौशल। काम करने की निपुणता। चतुराई।

हुनरमद-वि० [फा०] हुनर जाननेवाला। कलाकार। निपुण। कुशल।

हुमकना—क्रि० अ० [जनु०] १ किसी चीज पर चढ़कर उठे जोर से नीचे दवाना।

हुमचना। २ उछलना। कूदना। ३ पैरों से जोर लगाना। ४ कतकर पैर तानना।

५ चलने की काशिय करना (बच्चा का)। ६ दवान के लिए जोर लगाना।

हुमगना—क्रि० अ० दे० 'हुमकना'।

हुमचना—क्रि० अ० १ दवान के लिए जोर लगाना। किसी चीज पर चढ़कर उठे भारदार जोर से नीचे दवाना। २ उछलना।

कूदना। ३ दे० 'हुमकना'।

हुमसना—क्रि० अ० १ उछलना। कूदना। २ दवान के लिए जोर लगाना। हुमचना।

३ दे० 'उमसना'। हुवा न चलने के कारण गरमी होना।

हुमसाना—क्रि० स० ('हुमसना' क्रिया का सकर्मक रूप) उछालना। जोर से ऊपर की ओर उठाना। बसाना।

हुसा-सज्ञा स्त्री० [फा०] एक कल्पित पक्षी।

कहते हैं कि जिस व्यक्ति के ऊपर इसका छाया पड़ जाय, वह रक्ता हो जाता है।

हुमेल-सज्ञा स्त्री० [अ० हृगायल] अनाकिमो, रपमा आदि को गूँथकर बनाई हुई एक प्रकार की माला।

हृस्मत्-सज्ञा स्त्री० [अ०] प्रतिष्ठा। इज्जत। मान। मर्यादा। शान।

हृमयी-सज्ञा स्त्री० एक प्रकार का नृत्य।

हृत्सना-क्रि० अ० १ बहुत खुश होना।

उल्लास से भरना। प्रकुलित होना। २

उभरना। उमंगना। ३ उमड़ना। बढ़ना।

\*क्रि० स० प्रसन्न करना। आनन्दित

करना।

हृत्सना-क्रि० स० प्रसन्न करना। आनन्दित

करना।

क्रि० अ० दे० "हृत्सना"।

हृत्सित\*-वि० अत्यन्त प्रसन्न। बहुत ही

खुश। उल्लास से भरा। आनन्दयुक्त।

हृत्सी-सज्ञा स्त्री० १ हुलास। उल्लास।

आनन्द की उमंग। २ तुलसीदास की

माता का नाम।

हृत्तुल-सज्ञा पु० एक छोटा पौधा।

हुला-सज्ञा पु० लाठी या छड़ी की नोक।

हुलाना-क्रि० स० लाठी आदि को जोर से

ठेलना। दे० "हुलाना"।

हुला-सज्ञा स्त्री० लहर।

हुलास-सज्ञा पु० [वि० हुलासी] १ उल्लास।

आनन्द। आहुलाद। हर्ष। २ उत्साह।

हौसला। ३ उमंगना। बढ़ना।

सज्ञा स्त्री० सुंपनी। मग्नरोशन।

हुलिया-सज्ञा पु० [अ०] १ शक्ति। आकृति।

२ पहचान के लिए किसी के रूप-रंग

आदि का विवरण।

हुलारना-क्रि० स० कुत्ते को भगाना या

किसी को काटने के लिए उसे वड़ावा देना।

हुल्लाड-सज्ञा पु० १ शोरगुल। हो हल्ला।

ऊधम। २ उपद्रव। हुडदग।

हुल्लडबाजी-सज्ञा स्त्री० शोरगुल मचाना।

उपद्रव करना।

हुल्लास-सज्ञा पु० चौपाई और त्रिभगी के

मेल से बना एक छद।

हुश-अव्य० [अनु०] अनुचित बात बोलने पर

रोकने का शब्द। निषेध-सूचक शब्द।

हुशियार, हुत्तियार\*†-वि० दे० "होशियार"।

हुसन-सज्ञा पु० [अ०] मुहम्मद साहब के

दामाद अली के बेटे, जो करबला के मेदान

में मारे गए थे। इन्हो के शोक में मुहर्रम

मनाया जाता है।

हुस्त-सज्ञा पु० [अ०] १ खूबसूरती। सौंदर्य।

लावण्य। २ तारीफ की बात। खूबी।

हुस्तपरस्त-वि० रूप का पूजक। सौंदर्यो-

पासक। रूप का लोभी।

हुस्तपरस्ती-सज्ञा स्त्री० सौन्दर्योपासना। रूप

की पूजा। रूप का लोभ।

हूँ-अव्य० १ स्वीकृति या समर्थन प्रकट करने

का शब्द। २ किसी बात को ध्यान से सुनने

की स्वीकृति।

अव्य० दे० "हूँ"।

सर्व० "हूँ" किया उत्तम पुरुष, एकवचन का

रूप।

हूँकना-क्रि० अ० कण्ठ या दुख प्रकट करने

के लिए धीरे धीरे बोलना (विशेषकर

गाय का किसी कण्ठ के कारण धीरे-धीरे

बोलना)। हुडकना। हुकार शब्द करना।

ललकारना। डपटना।

हूँ-वि० साडे तीन, ३॥।

हूँ-सज्ञा पु० साडे तीन का पहड़ा।

हूँ-सज्ञा स्त्री० १ बुरी नजर। टोक। २

ईर्ष्या। डाह। ३ कोसना। फटकार।

हूँ-क्रि० स० १ नजर लगाना। २

बराबर डाँटते रहना।

क्रि० अ० १ ईर्ष्या से लजाना २ लल-

चाना। ३ कोसना।

हूँ-अव्य० एक अतिरेक-बोधक शब्द। भी।

हूँ-सज्ञा स्त्री० १ हृदय की पीड़ा। कसक।

२ पीड़ा। दर्द। ३ दुख ४ आशका।

खटका।

हूँ-क्रि० अ० १ दद करना। पुखना।

कसकना। २ पीड़ा से चौंक उठना।

हूँ-क्रि० अ० १ हटना। टलना। २

मुड़ना। पीठ फेरना।

हूँ-सज्ञा पु० १ अँगूठा दिखाने की मुद्रा।

ठंगा। २ भद्दा या गंवारु चेष्टा।

हूँ-सज्ञा पु० १ एक प्राचीन मंगोल जाति,

जिसने एशिया और योरोप के देसा पर

आक्रमण और बत्याचार किया था। २

निर्दय या कठोर मनूष्य।

दिल की धड़कन बन्द हो जाता। (अग्ने०—  
'हृदकैल')।  
हृषाङ्ग—सज्ञा पु० चन्द्रमा।  
हृषि—सज्ञा स्त्री० १ प्रसन्नता। हर्ष। आनन्द।  
२ चमक दमक। ३ झूठा आवर्ण।  
हृषीक—सज्ञा पु० इन्द्रिय।  
हृषीकेश—सज्ञा पु० १ विष्णु। २ श्रीकृष्ण।  
३ पूस का महीना। ४ हरिद्वार के पास  
का एक तीर्थ।  
हृष्ट—वि० १ हर्षित। अत्यन्त प्रसन्न। बहुत  
सुख। २ उठा हुआ। सड़ा। ३ कड़ा।  
हृष्ट-पुष्ट—वि० मोटा-ताजा। तगड़ा। स्वस्थ।  
हृष्टयोनि—सज्ञा पु० नपुंसक। हिजड़ा।  
हृष्टरोम—वि० जिसे हर्ष से रोमांच हो गया हो।  
रोमांचित। पुलकित।  
हृष्टि—सज्ञा स्त्री० हर्ष। प्रसन्नता।  
हँहँ—सज्ञा पु० [अनु०] १ धीर से हँसने का  
शब्द। दीनतापूर्वक हँसने का शब्द। २  
मिडगिडाने का शब्द।  
हँगा—सज्ञा पु० एक प्रकार की मोटी लकड़ी,  
जिससे जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर की  
जाती है। पाटा। मैडा। पट्टा।  
हे—अव्य० सर्वोपन का शब्द।  
ह्रिं० अ० वज्रभाषा के 'हो' (=था)  
क्रिया का बहुवचन। थे।  
ह्रैड—वि० १ अक्खड़। २ उद्धत। ३ कड़े  
दिल का। ४ हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।  
५ जवरदस्त। प्रबल। प्रचंड।  
ह्रैडी—सज्ञा स्त्री० १ अक्खड़पन। २  
डींग। ३ जवरदस्ती।  
ह्रैच—वि० [फा०] १ तुच्छ। नाचीज। २ जो  
किसी गिनती में न हो।  
ह्रैच—वि० नीचे। कम। पटकर।  
सज्ञा पु० १ चोट। २ हानि। ३ बाधा।  
ह्रैठा—वि० १ नीचा। २ पटकर। कम।  
कमजोर। ३ तुच्छ। नीच।  
ह्रैठपन—सज्ञा पु० नीचता। तुच्छता। क्षुब्धता।  
ह्रैठी—सज्ञा स्त्री० नीचा दखने का भाव।  
अप्रतिष्ठा। बेदुज्जती।  
ह्रैड—सज्ञा पु० [अग्ने०] १ प्रधान। उच्च अधि-  
कारी। बड़ा अफसर। २ सिर। मस्तक।

ह्रैडवार्टर—सज्ञा पु० [अग्ने०] १. प्रधान स्थान।  
सदर मुकाम। केन्द्र। २ किसी अधिकारी का  
प्रधान स्थान। ३ सेना के प्रधान का स्थान।  
ह्रैडिग—सज्ञा स्त्री० [अग्ने०] शीपंक। लेख  
आदि के ऊपर दिया जानेवाला शब्द या  
वाक्य।  
ह्रैडी—सज्ञा पु० शिकारी। व्याध।  
सज्ञा स्त्री० चौपायी का झुंड, जिसे बनगारे  
बेचने के लिए घूमते फिरते हैं।  
हेतु\*—सज्ञा पु० दै० "हेतु"।  
हेति—सज्ञा स्त्री० १ भाला। बर्छी। २  
हथियार। औजार। ३ आधात। चोट।  
४ आग की लपट। लौ। ५ सूर्य की  
किरण। ६ वज्र। अकुर।  
हेतु—सज्ञा पु० १ कारण। वजह। निमित्त।  
२ अभिप्राय। उद्देश्य। ३ उत्पादक। ४  
वह बात, जिसके होने से कोई दूसरी बात  
सिद्ध हो। ५ तर्क। दलील। ६ एक अर्था-  
लकार, जिसमें कारण ही कार्य बताया  
जाता है।  
अव्य० लिए। वास्ते।  
हेतुवाद—सज्ञा पु० १ सब बातों के कारण दूढ़ने  
का सिद्धान्त। तर्कविद्या। तर्कशास्त्र।  
२ नास्तिकता। ३ कुतर्क।  
हेतुशास्त्र—सज्ञा पु० तर्कशास्त्र।  
हेतुहेतुमदभाव—सज्ञा पु० कार्य-कारण भाव।  
कारण और कार्य का संबंध।  
हेत्वाभास—सज्ञा पु० किसी बात को सिद्ध  
करने के लिए ऐसा कारण बताना, जो कारण-  
सा जान पड़ते हुए भी सचान हो। असत् हेतु।  
हेमत—सज्ञा पु० जाड़े का मौसम। अगहन  
और पूस में होनेवाली ऋतु। शीतकाल।  
हेम—सज्ञा पु० १ स्वर्ण। सोना। २ हिम।  
बर्फ। पाला। ३ वादामी रण का घोड़ा।  
४ नागकेसर।  
हेमकूट—सज्ञा पु० पुराणों में कहा गया हिमालय  
के उत्तर का एक पहाड़।  
हेमगिरि—सज्ञा पु० भुमेश पर्वत।  
हेमपर्वत—सज्ञा पु० भुमेश पर्वत।  
हेममन्त्र—सज्ञा स्त्री० सोने का मिकका।  
मोहर। अशरफी।

हृन्ना—कि० स० १ आग में डालना । २ हवन करना । ३ आपत में डालना । ४ मारना ।

हृन्वह—वि० [अ०] ज्या का त्यो । जंसा हो, ठीक वैसा ही । बिलकुल एक ही तरह का ।

हृन्-सज्ञा स्त्री० [अ०] इस्लाम धर्म के अनुसार स्वर्ग की अप्सरा ।

सज्ञा पु० सिन्ध में रहनेवाले मुसलमानों का एक लड़ाकू फिरका ।

हृन्ना—कि० स० १ मारना । २ हलना । ३ बहुत अधिक भोजन करना ।

हृन्-सज्ञा स्त्री० १ किसी नोकदार चीज से भाकने की क्रिया । भाले, लाठी आदि की नोक को जोर से ठेलना या भाकना । २ घूल । हक । ३ टीस । पीडा । ४ ललकार । ५ कोलाहल । हल्ला । ६ घूम । खुशी । हर्ष-व्ययि ।

हृन्ना—कि० स० १ लाठी, भाले या किसी हथियार आदि की नोक को जोर से ठेलना या धुसाना । गडाना । भाकना । २ ठेलना । बकेलना । धक्का देना । ३ पीडा देना ।

हृन्-वि० उजड़ । अस्थ । अशिष्ट ।

हृन्-सज्ञा स्त्री० १ हुकार । २ कोलाहल । ३ युद्ध की ललकार ।

हृन्-सज्ञा पु० आग के जोर से जलने का शब्द । धार्य धार्य करके जलना ।

हृन्-वि० १ हरण किया हुआ । छीना हुआ । २ पहुँचाया हुआ ।

हृन्-सज्ञा स्त्री० १ हरण । ले जाना । २ नाश । ३ लूट ।

हृन्कष-सज्ञा पु० १ दिल की धड़कन । हृदय का कपन । २ जो का दहलना । दहलत । इतना अधिक डर कि हृदय काँप जाय ।

हृन्त्रो-सज्ञा स्त्री० हृदय स्त्री कीणा ।

हृन्तल-सज्ञा पु० कलेजा । हृदय । दिल ।

हृन्पिट-सज्ञा पु० कलेजा । हृदय का जोष ।

हृन्-सज्ञा पु० हृदय । दिल ।

हृदयगम-वि० मन में बैठना हुआ । अच्छी तरह समझ में आया हुआ ।

हृदय-सज्ञा पु० १ शरीर का एक प्रधान अंग, जो छाती के भीतर बाईं ओर होता है और

जिसमें से होकर शुद्ध रक्त नाड़ियों के द्वारा शरीर में संचार करता है । दिल । कलेजा ।

२ मन । अंतःकरण । विवेकबुद्धि । ३ प्रेम, हर्ष, शोक आदि भावा का माना जानेवाला उद्गम-स्थान ।

हृदयप्राप्ति-सज्ञा पु० [स्त्री० हृदयप्राप्ति] मन को आकृष्ट करनेवाला । दिल को सुना लेनेवाला । मन को मोहनेवाला ।

हृदयनिकेत-सज्ञा पु० कामदेव ।

हृदय प्रमायो-वि० मन को क्षुब्ध या चंचल करनेवाला । मन मोहनेवाला ।

हृदयवान्-वि० कोमल हृदयवाला । सहृदय । भावुक । रसिक ।

हृदय विदारक-वि० दिल को टुकड़े-टुकड़े कर देनेवाला अर्थात् मन को बहुत अधिक कष्ट पहुँचानेवाला । अत्यंत शोक या दया उत्पन्न करनेवाला ।

हृदयवेधी-वि० [स्त्री० हृदयवेधिनी] १ दिल को चीरने वाला । मर्मस्पर्शी । अत्यंत दुःख उत्पन्न करनेवाला । २ मन को अत्यंत प्रसन्न करनेवाला ।

हृदयस्पर्शी-वि० [हृदयस्पर्शिनी] १ हृदय पर प्रभाव डालनेवाला । दया उत्पन्न करनेवाला । मर्मस्पर्शी । मार्मिक ।

हृदयहारी-वि० [स्त्री० हृदयहारिणी] १ हृदय हरण करनेवाला अर्थात् दिल लुप्त करनेवाला । मन मोहनेवाला । मनोहर ।

हृदयान्त-वि० १ उदार । सहृदय । २ भावुक । सुशील ।

हृदयेश, हृदयेश्वर-सज्ञा पु० [स्त्री० हृदयेश्वरी] १ प्रियतम । २ पति । स्वामी ।

हृन्-वि० [अ०] हृदय में । मन में । दिल में ।

हृद्गत-वि० १ हृदय का । आंतरिक । भीतरी । २ मन में बैठा हुआ । अच्छी तरह ध्यान में आया हुआ । ३ प्रिय । रसिक ।

हृद्-वि० १ हृदय का । आन्तरिक । भीतरी । २ मन को अच्छा लगनेवाला । ३ सुंदर । सुभावना । ४ स्वादिष्ट । जायकेदार ।

हृद्गी-सज्ञा पु० हृदय में होनेवाला रोग । दिल की बीमारी—जैसे, धड़कन आदि ।

हृद्भी-सज्ञा पु० हृदय की गति रुक जाना ।

दिल की धडकन बन्द हो जाता। (अग्रे-  
'हार्टफेल')।

ह्याशु-सज्ञा पु० चन्द्रमा।

हृषि-सज्ञा स्त्री० १ प्रसन्नता। हर्ष। आनन्द।  
२ चमक दमक। ३ झूठा आदमी।

हृषीक-सज्ञा पु० इन्द्रिय।

हृषीकेश-सज्ञा पु० १ विष्णु। २. श्रीकृष्ण।  
३ पूस का महीना। ४. हरिद्वार के पास  
का एक तीर्थ।

हृष्ट-वि० १ हर्षित। अत्यन्त प्रसन्न। बहुत  
खुश। २ उठा हुआ। सड़ा। ३ कड़ा।

हृष्ट-पुष्ट-वि० मोटा-ताजा। तगड़ा। स्वस्थ।

हृष्टपोनि-सज्ञा पु० नपुंसक। हूँड़ा।

हृष्टरोम-वि० जिसे हर्ष से रोमाच हो गया हो।  
रोमाचित। पुलकित।

हृष्टि-सज्ञा स्त्री० हर्ष। प्रसन्नता।

हूँ-सज्ञा पु० [अनु०] १ धीरे से हँसने का  
शब्द। दीनतापूर्वक हँसने का शब्द। २  
गिड़गिड़ाने का शब्द।

हूँपा-सज्ञा पु० एक प्रकार की मोटी लकड़ी,  
जिससे जूते हुए खेत की मिट्टी बराबर की  
जाती है। पाटा। मंडा। पहाटा।

हे-अव्य० संबोधन का शब्द।

हुं-अ० ब्रजभाषा के 'हो' (=था)  
त्रिया का बहुवचन। थे।

हूँक-वि० १ अस्त्रड। २ उड़ता। ३ कडे  
दिल का। ४ हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

५ जबरदस्त। प्रबल। प्रचंड।

हूँकी-सज्ञा स्त्री० १ अस्त्रडपन। २  
डोग। ३ जबरदस्ती।

हूँ-वि० [फा०] १ तुच्छ। नाचीज। २ जो  
किसी गिनती में न हो।

हूँ-वि० नीचे। कम। घटकर।

सज्ञा पु० १ चोट। २ हानि। ३ बाधा।

हूँ-वि० १ नीचा। २ घटकर। कम।  
कमजोर। ३ तुच्छ। नीच।

हूँपन-सज्ञा पु० नीचता। तुच्छता। धुद्रता।

हूँ-सज्ञा स्त्री० नीचा देखने का भाव।  
अप्रतिष्ठा। बेइज्जती।

हूँ-सज्ञा पु० [अध०] १ प्रधान। उच्च अधि-  
कारी। बड़ा अफसर। २ सिर। मस्तक।

हूँबादर-सज्ञा पु० [अध०] १ प्रधान स्थान।  
सदर मुकाम। केन्द्र। २ किसी अधिकारी का  
प्रधान स्थान। ३ सेना के प्रधान का स्थान।  
हूँडिग-सज्ञा स्त्री० [अध०] शीर्षक। लेख  
आदि के ऊपर दिया जानेवाला शब्द या  
वाक्य।

हूँ-सज्ञा पु० शिकारी। व्याध।  
सज्ञा स्त्री० चौपायी का झुंड, जिसे बनजारे  
बैचने के लिए घूमते फिरते हैं।

हेतु-सज्ञा पु० दे० 'हेतु'।

हेति-सज्ञा स्त्री० १ भाला। बर्छी। २  
हथियार। औजार। ३ आघात। चोट।  
४ आग की लपट। लौ। ५ सूर्य की  
किरण। ६ वज्र। अकुर।

हेतु-सज्ञा पु० १ कारण। वजह। निमित्त।  
२ अभिप्राय। उद्देश्य। ३ उत्पादक। ४  
वह बात, जिसके होने से कोई दूसरी बात  
सिद्ध हो। ५ तर्क। दलील। ६ एक अर्था-  
लकार, जिसमें कारण ही कार्य्य बताया  
जाता है।

अव्य० लिए। वास्ते।

हेतुवाद-सज्ञा पु० १ सब बातों के कारण ढूँढ़ने  
का सिद्धान्त। तकविद्या। तर्कशास्त्र।  
२ नास्तिकता। ३ कुतर्क।

हेतुशास्त्र-सज्ञा पु० तकशास्त्र।

हेतुहेतुमदभाव-सज्ञा पु० कार्य्य-कारण भाव।  
कारण और कार्य्य का संबंध।

हेत्वाभास-सज्ञा पु० किसी बात को सिद्ध  
करने के लिए ऐसा कारण बताया, जो कारण-  
सा जान पड़ते हुए भी सचान हो। असत् हेतु।

हेमत-सज्ञा पु० जाड़े का मौसम। अगहन  
और पूष में होनवाली ऋतु। शीतकाल।

हेम-सज्ञा पु० १ स्वर्ण। सोना। २ हिम।  
वर्ष। पाला। ३ बादामी रंग का पीड़ा।  
४ नागकेसर।

हेमकूट-सज्ञा पु० पुराणा में कहा गया हिमालय  
के उत्तर का एक पहाड़।

हेमगिरि-सज्ञा पु० सुमेरु पर्वत।

हेमपर्वत-सज्ञा पु० सुमेरु पर्वत।

हेममुद्रा-सज्ञा स्त्री० सोने का सिक्का।  
मोहर। अक्षरफो।

हेमयूषिका-सज्ञा स्त्री० सोनजूही।  
 हेमयल-सज्ञा पु० भीती।  
 हेमसुता-सज्ञा स्त्री० पारंगती। दुर्गा।  
 हेमाग-सज्ञा पु० १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३  
 सिंह। ४ गरुड। ५ चम्पा।  
 वि० जिसका शरीर सोने के रंग का हो।  
 हेमाद्रि-सज्ञा पु० सुमेरु पर्वत।  
 हेमाभ-वि० सोने की-सी चमकवाला। सुन-  
 हला।  
 हेय-वि० १ त्याज्य। निकृष्ट। छोड़ने योग्य।  
 २ बुरा। खराब।  
 हेरव-सज्ञा पु० १ गणेश। २ भैरव। ३  
 धीरोद्घात नायक।  
 हेर\*—सज्ञा स्त्री० खोज। तलाश।  
 सज्ञा पु० दे० "अहेर"।  
 हेरना\*—क्रि० स० १ ढूँढ़ना। खोजना। २  
 देखना। जाँचना। परखना।  
 हेरना-फेरना—क्रि० स० १ इधर का उधर  
 करना। २ उलटना-पलटना। बदलना।  
 परिवर्तन करना।  
 हेर फेर-सज्ञा पु० १ परिवर्तन। बदल बदल।  
 उलट फेर। २ अंतर। फर्क। ३ घुमाव।  
 चक्कर। ४ दाव पच। चालवाजी।  
 ५ अदल-बदल। विनिमय।  
 हेरवाना\*—क्रि० स० १ खो देना। गँवाना।  
 ढुँढ़वाना। तलाश कराना।  
 हेराना\*—क्रि० अ० १ खो जाना। गुम हो  
 जाना। २ रास्ता भूल जाना। भटकना। ३  
 चुप हो जाना। नष्ट हो जाना। न रह जाना।  
 ४ पीकाया मर पड़ जाना। ५ सुष-बुध  
 भूलना। दग रह जाना।  
 क्रि० स० १ ढूँढ़वाना। तलाश कराना।  
 २ खोना। गँवाना। ३ भूल जाना।  
 हेरफेरी-सज्ञा स्त्री० १ हेर-फेर। अदल-  
 बदल। २ बार-बार जाना-जाना।  
 हेरिफेर-सज्ञा पु० दूत। गुप्तचर।  
 मद्दिया।  
 हेरी\*—सज्ञा स्त्री० पुकार। आवाज देकर  
 बुलाना।  
 हेर-सज्ञा पु० १ कीचड़, गोबर इत्यादि।  
 २ गोबर का खप।

हेलना\*—क्रि० अ० १ क्रीडा करना। मन  
 चहलाना। २ हँसी-भजाक करना। ३ खेल  
 समझना। परवाह न करना। ४ बुलना।  
 पैठना। ५ लहरना।  
 क्रि० स० तिरस्कार करना। तुच्छ समझना।  
 हेलमेल-सज्ञा पु० १ मेल-जोल। घनिष्ठता।  
 मित्रता। २ संग। साथ।  
 हेल-सज्ञा स्त्री० १ अनादर का भाव।  
 तिरस्कार। तुच्छ समझना। २ खेलवाड़।  
 क्रीडा। केति। प्रेमक्रीडा। ३ नायक से  
 मिलने के समय नायिका का विविध बिनास  
 या विनोद-सूचक मुद्रा। (साहित्य)  
 सज्ञा पु० १ पुकार। हाँक। २ धावा।  
 आक्रमण। चढ़ाई।  
 सज्ञा पु० १ रेलना। डेलना। धक्का।  
 रेल। २ [स्त्री० हेलिन] मला उठानवाला।  
 भगी। महतर। ३ खप। बारी। ४ गायी  
 न एक बार जानेवाला वोन।  
 हेली\*—अव्य० हे अती। हे सखी।  
 सज्ञा स्त्री० सहेली। सखी।  
 हेल्य-सज्ञा पु० [अग्र०] स्वास्थ्य। तन्दुस्ती।  
 हेचत\*—सज्ञा पु० दे० "हेमत"।  
 ह-क्रि० अ० होना। क्रिया के वत्तमान कालिक  
 रूप "है" का बहुवचन।  
 अव्य० १ आश्चर्य, अस्ममति या निवचन प्रकट  
 करनेवाला शब्द।  
 हंड-सज्ञा पु० [अग्र०] १ हाथ। २ अधिकार।  
 ३ कारखाने में काम करनेवाला व्यक्ति।  
 ४ हाथ का व्यापार। ५ लिपि। ६  
 पक्षी की मुद्रा। ७ ताश का दब।  
 हंडबिल-सज्ञा पु० [अग्र०] बहुकायज, जिस पर  
 कोई विज्ञापन या सूचना छरी हो। विज्ञापन-  
 पत्र।  
 हंडबैग-सज्ञा पु० [अग्र०] हाथ में लटवाने  
 का छोटा बत्ता।  
 हडिल-सज्ञा पु० [अग्र०] मुठिया। दस्ता। बेंद।  
 हडलूम-सज्ञा पु० [अग्र०] हाथ का बरपा।  
 हडराइटिग-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] हस्तलिपि,  
 लिखावट।  
 हेडिकैण्ड-सज्ञा पु० [अग्र०] शिल्प। दस्त-  
 बारी।

है-क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एकवचन-रूप।

हंल-सज्ञा स्त्री० १ गले में का एक गहना।

हुमेल। २ हाथी घोड़े के गले का एक गहना।

हंवा-सज्ञा पु० एक बीमारी जिसमें दस्त और कं होते हैं। कालरा। विशुचिका।

हंट-सज्ञा पु० [अग्रे०] घूष बचानेवाली एक तरह की अग्रेजी टोपी।

हंतुक-सज्ञा पु० १ तर्कशास्त्र की माननेवाला। मीमांसा का अनुयायी। तर्क करनेवाला। कुतर्की। ३. नास्तिक।

हंफ-अव्य० [अ०] अफसोस। हाय।

हंबत-सज्ञा स्त्री० [अ०] डर। भय। दहशत।

हंबतनाक-वि० डरावना। भयानक।

हंवर\*-सज्ञा पु० अच्छा घोड़ा।

हंम-वि० [स्त्री० हंमी] १ सोने का बना हुआ। २ सुनहरे रंग का। सुनहला। हिम-सबधी। बर्फ का। जाड़े का। जोड़ में होने वाला।

सज्ञा पु० १ पाला। ओस। २ शिव।

हंमयत-वि० [स्त्री० हंमयती] हिमालय का। हिमालय-सबधी। हिमालय से उत्पन्न।

सज्ञा पु० १ हिमालय का निवासी। २ एक संप्रदाय का नाम। ३ एक राक्षस।

४ एक विष। ५ मोती।

हंभवती-सज्ञा स्त्री० १ पार्वती। २ गंगा।

हंमी-वि०, स्त्री० सोने की बनी हुई। सुनहरे रंग की।

सज्ञा स्त्री० सोनझूही। केतकी।

हंरव-वि० गणेश सबधी।

सज्ञा पु० गणेश का उपासक संप्रदाय।

हंरत-सज्ञा स्त्री० [अ०] आनन्द्यं। अचभा।

हंरान-वि० [अ०] [सज्ञा हंरानी] १ परे-छान। बेचन। २ नवित। भोचका। ३ दग।

हंरान-सज्ञा पु० [अ०] [वि० हंरानी] १ पगु। जानवर। २ बेवकूफ या गँवार आदमी।

हंतिपत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. सामर्थ्य।

नवित। विस्तार। २ अधिक दत्ता या योग्यता।

३ प्रतिष्ठा। ४ श्रेणी। दर्जा। ५ धन।

दौलत। सम्पत्ति।

हंरय-सज्ञा पु० १ एक क्षत्रिय-वत्त जो मनु से

उत्पन्न कहा गया है। २ हंरयवशी कात्तवीर्य सहस्रार्जुन।

हंरयराज, हंरयाधिराज-सज्ञा पु० हंरयवशी कात्तवीर्य सहस्रार्जुन।

हं हं-अव्य० शोक या दुःख-सूचक शब्द। हाय। अफसोस।

हो-क्रि० अ० 'होना' क्रिया का बहुवचन, सभाव्य काल का रूप।

होठ-सज्ञा पु० ओठ। अधर।

हो-सज्ञा पु० पुकारने का शब्द या संबोधन।

क्रि० अ० 'होना' क्रिया के अन्य पुरुष, सभाव्य काल का या मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप।

\* -त्रज भाषा की वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत का रूप। था।

होई-सज्ञा स्त्री० होली के आठ दिन पहले होने वाला एक त्योहार, जिस दिन स्त्रियाँ सन्तान-प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए एक विशेष प्रकार की पूजा करती हैं।

होटल-सज्ञा पु० [अग्रे०] भोजनालय। वह स्थान, जहाँ मूल्य देने पर भोजन और ठहरने का प्रबन्ध हो।

होड़-सज्ञा स्त्री० १ शर्त। बाजी। २ एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न। स्पर्धा। ३ बराबरी। ४ हठ। जिद।

होड़ाबादी-सज्ञा स्त्री० दे० "होड़ाहोड़ी"।

होड़ाहोड़ी-सज्ञा स्त्री० १ चढ़ा-ऊपरी। लग-डोट। २ बाजी। शर्त।

होत\*-सज्ञा स्त्री० १ सामर्थ्य। पश। शक्ति। २ पास में धन होने की दशा। संपन्नता।

होतय, होतव्य-सज्ञा पु० जो होनेवाला हो। दे० "होन्हार"।

होतव्यता-सज्ञा स्त्री० दे० "होन्हार"।

होता-सज्ञा पु० [स्त्री० होती] हुन कलने-वाला। यज्ञ में जाहुति देनेवाला।

क्रि० अ० 'हाना' क्रिया या भूतकालिक सभाव्य रूप।

होन्हार-वि० १ जा अवश्य होनेवाला हो। भावा। हानी। २ जिसके मुराग्य हान की आशा हो। अच्छे लक्षणावाला।

सज्ञा पु० अवश्य होनेवाली बात। नवितव्यता।

हेमयूयिका-सज्ञा स्त्री० सोनजूही।  
 हेमबल-सज्ञा पु० मोती।  
 हेमसुता-सज्ञा स्त्री० पार्वती। दुर्गा।  
 हेमाग-सज्ञा पु० १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३  
 सिंह। ४ गरुड। ५ चम्पा।  
 वि० जिसका शरीर सोने के रंग का हो।  
 हेमाद्रि-सज्ञा पु० सुमेरु पर्वत।  
 हेमाभ-वि० सोने की-सी चमकवाला। सुन  
 हला।  
 हेय-वि० १ त्याज्य। निकृष्ट। छोड़न योग्य।  
 २ बुरा। खराब।  
 हेर-सज्ञा पु० १ गणेश। २ भैरव। ३  
 धीरोदात्त नायक।  
 हेर\*—सज्ञा स्त्री० खोज। तलाश।  
 सज्ञा पु० दे० अहेर।  
 हेरना\*—कि० स० १ ढूँढना। खोजना। २  
 देखना। जाचना। परखना।  
 हेरना-फेरना—कि० स० १ इधर वा उधर  
 करना। २ उलटना-पलटना। बदलना।  
 परिवर्तन करना।  
 हेर फेर-सज्ञा पु० १ परिवर्तन। बदल बदल।  
 उलट फर। २ अंतर। फर। ३ घुमाव।  
 चक्कर। ४ दाव पच। चालबाजी।  
 ५ बदल-बदल। विनिमय।  
 हेरबाना\*—कि० स० १ खो देना। गँवाना।  
 ढुंढवाना। तलाश कराना।  
 हेराना\*—वि० ज० १ खो जाना। गुम हो  
 जाना। २ रास्ता भूल जाना। भटकना। ३  
 लुप्त हो जाना। नष्ट हो जाना। न रह जाना।  
 ४ फीका या मंद पड़ जाना। ५ सुध-बुध  
 भूलना। बग रह जाना।  
 कि० स० १ ढुंढवाना। तलाश कराना।  
 २ खोना। गँवाना। ३ भूल जाना।  
 हेराफेरी-सज्ञा स्त्री० १ हेर-फेर। बदल-  
 बदल। २ बार-बार आना-जाना।  
 हेरिफेर-सज्ञा पु० दूत। गुप्तचर।  
 भदिया।  
 हेरी\*—सज्ञा स्त्री० पुकार। आवाज देकर  
 बुलाना।  
 हेल-सज्ञा पु० १ बीचड़, गोबर इत्यादि।  
 २ गोबर का सप।

हेलना\*—कि० अ० १ क्रीड़ा करना। मन  
 वहलाना। २ हँसी-मजाक करना। ३ खल  
 समझना। परवाह न करना। ४ धुसना।  
 पठना। ५ तरना।  
 कि० स० तिरस्कार करना। तुच्छ समझना।  
 हेलमेल-सज्ञा पु० १ मेल-जोल। पतिष्ठता।  
 मित्रता। २ सग। साथ।  
 हेल-सज्ञा स्त्री० १ अनादर का भाव।  
 तिरस्कार। तुच्छ समझना। २ खलवाह।  
 क्रीडा। कैलि। प्रमश्रीडा। ३ नायक से  
 मिलन के समय नायिका का विविध विनाश  
 या पिनोद-सूचक मुद्रा। (साहित्य)  
 सज्ञा पु० १ पुकार। हाँक। २ धारा।  
 आक्रमण। चढ़ाई।  
 सज्ञा पु० १ रेलना। ठलना। धक्का।  
 रेल। २ [स्त्री० हेलिन] मला उठानवाला।  
 भगी। मेहतर। ३ खप। बारी। ४ गाँवी  
 म एक बार जानवाला वीस।  
 हेली\*—अव्य० हे अली। हे सखी।  
 सज्ञा स्त्री० सहेली। सखी।  
 हेल्य-सज्ञा पु० [अग्र०] स्वास्थ्य। तन्दुस्ती।  
 हेवत\*—सज्ञा पु० दे० 'हेमत'।  
 ह-कि० अ० 'होना' क्रिया के वत्तमान कालिक  
 रूप 'है' का बहुपचन।  
 अव्य० १ आश्चर्य, असम्भति या निश्चय प्रकट  
 करनेवाला शब्द।  
 हड-सज्ञा पु० [अग्र०] १ हाथ। २ बधिकार।  
 ३ कारखान में काम करनेवाले व्यक्ति।  
 ४ हाथ का व्यापार। ५ विपि। ६  
 घड़ी की सुई। ७ तास का दाँव।  
 हडबिल-सज्ञा पु० [अग्र०] वह कागज, जित पर  
 कोई विज्ञापन या सूचना छपी हो। विज्ञापन  
 पत्र।  
 हडबैग-सज्ञा पु० [अग्र०] हाथ में लटवाने  
 का छोटा बक्सा।  
 हडबिल-सज्ञा पु० [अग्र०] मुठिया। दस्ता। बेंद।  
 हडबूम-सज्ञा पु० [अग्र०] हाथ का करपा।  
 हडराइदिग-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] हस्तत्रिपि,  
 तिसाबट।  
 हंडिकैफट-सज्ञा पु० [अग्र०] तिलप। इस्त-  
 कारी।

हं-क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एकवचन-रूप।

हंकल-सज्ञा स्त्री० १. गले में का एक गहना।

हुमेल। २ हाथी घोड़े के गले का एक गहना।

हंजा-सज्ञा पु० एक बीमारी जिसमें दस्त और कं होते हैं। कालरा। विशूचिका।

हंट-सज्ञा पु० [अग्रे०] धूप बचानेवाली एक तरह की अग्रेजी टोपी।

हुंफ-सज्ञा पु० १ तर्कशास्त्र को माननेवाला।

मीमांसा का अनुयायी। तर्क करनेवाला।

हुतकी। ३. नास्तिक।

हुं-अव्य० [अ०] अफसोस। हाय।

हुयत-सज्ञा स्त्री० [अ०] डर। भय। दहशत।

हुवतनाक-वि० डरावना। भयानक।

हुवर\*-सज्ञा पु० अच्छा घोड़ा।

हुम-वि० [स्त्री० हुंमी] १ सोने का बना हुआ। २ सुनहरे रंग का। सुनहला। हिम-सवधी। वफा का। जाड़े का। जोड़ में होने वाला।

सज्ञा पु० १ पाला। ओस। २ शिव।

हुमवत-वि० [स्त्री० हुमवती] हिमालय का।

हिमालय-सवधी। हिमालय से उत्पन्न।

सज्ञा पु० १ हिमालय का निवासी। २

एक संप्रदाय का नाम। ३ एक राक्षस।

४ एक विष। ५ मोती।

हुमवती-सज्ञा स्त्री० १ पार्वती। २ गंगा।

हुमौ-वि०, स्त्री० सोने की बनी हुई। सुनहरे रंग की।

सज्ञा स्त्री० सोनजूही। केतकी।

हेरब-वि० गणेश सवधी।

सज्ञा पु० गणेश का उपासक संप्रदाय।

हेरत-सज्ञा स्त्री० [अ०] आश्चर्य्य। अचभा।

हेरान-वि० [अ०] [सज्ञा हेरानी] १ परे-

पान। बेचैन। २ चकित। भौचक्का। ३ दग।

हंवान-सज्ञा पु० [अ०] [वि० हंवानी] १

पशु। जानवर। २ वेवकूफ या गँवार आदमी।

हंतिवत-सज्ञा स्त्री० [अ०] १. सामर्थ्य।

शक्ति। विसात। २ आर्थिक दशा या योग्यता।

३ प्रतिष्ठा। ४ श्रेणी। दर्जा। ६ धन।

दौलत। सम्पत्ति।

हंहुय-सज्ञा पु० १ एक क्षत्रिय-वंश जो यदु से

उत्पन्न कहा गया है। २. हंहुयवंशी कार्तवीर्य्य सहस्रार्जुन।

हंहुयराज, हंहुयाधिराज-सज्ञा पु० हंहुयवंशी कार्तवीर्य्य सहस्रार्जुन।

हं हं-अव्य० शोक या दुःख-सूचक शब्द। हाय। अफसोस।

हो-क्रि० अ० 'होना' क्रिया का बहुवचन, सभाव्य काल का रूप।

होठ-सज्ञा पु० ओठ। अधर।

हो-सज्ञा पु० पुकारने का शब्द या संबोधन।

क्रि० अ० 'होना' क्रिया के अन्य पुरुष, सभाव्य काल का या मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप।

\* -त्रज भाषा की वर्तमानकालिक क्रिया 'हुं' का सामान्य भूत का रूप। धा।

होई-सज्ञा स्त्री० होली के आठ दिन पहले होने वाला एक त्योहार, जिस दिन स्त्रियाँ सन्तान-प्राप्ति और उसकी रक्षा के लिए एक विशेष प्रकार की पूजा करती हैं।

होइल-सज्ञा पु० [अग्रे०] भोजनालय। वह स्थान, जहाँ मूल्य देने पर भोजन और ठहरने का प्रबन्ध हो।

होड-सज्ञा स्त्री० १ शर्त। वाजी। २ एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न। स्पर्धा। ३ बराबरी। ४ हठ। जिद।

होड़ाबादी-सज्ञा स्त्री० दे० "होड़ाहोड़ी"।

होड़ाहोड़ी-सज्ञा स्त्री० १ चढा-ऊपरी। ताग-डाँट। २ वाजी। शर्त।

होत-सज्ञा स्त्री० १ सामर्थ्य। बल। शक्ति। २ पास में धन होने की दशा। संपत्ति।

होतब, होतव्य-सज्ञा पु० जो होनेवाला हो। दे० "होनहार"।

होतव्यता-सज्ञा स्त्री० दे० "होनहार"।

होता-सज्ञा पु० [स्त्री० होत्री] हवन करने-वाला। यज्ञ में आहुति देनेवाला।

क्रि० अ० 'होना' क्रिया का भूतकालिक सभाव्य रूप।

होनहार-वि० १ जो अवश्य होनेवाला हो। भावी। होनी। २ जिसके सुयोग्य होने की आशा हो। अच्छे लक्षणवाला।

सज्ञा पु० अवश्य होनेवाली बात। नवितव्यता।

होना—कि० अ० १. सत्ता और उपस्थिति आदि प्रकट करने की क्रिया। रहना। २. एक रूप से दूसरे रूप में आना। ३. कार्य किया जाना। भुगतना। ४. बनना। निर्माण किया जाना। ५. किसी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में आना। पटित किया जाना। ६. किसी रोग या बाधा आदि का आना। ७. बीतना। गुजरना। ८. परिणाम निकलना। फल देखने में आना। ९. प्रभाव या गुण दिखाई पड़ना। १०. जन्म लेना। ११. काम निकलना। १२. काम दिगड़ना। हानि पहुँचना। १३. अस्तित्व रखना। मौजूद रहना।

होनी—संज्ञा स्त्री० १. अवश्य होनेवाली बात या घटना। २. भावी। भवितव्यता। होनहार। ३. जिसका होना सम्भव हो। ४. उत्पत्ति। पैदाइश। ५. हाल। वृत्त।

होम—संज्ञा पु० देवताओं के निमित्त मंत्र पढ़कर अग्नि में जो आदि डालन का कार्य-विशेष। हवन। यज्ञ। आहुति देने का कार्य।

मुहा०—होम कर देना=१. जला डालना। मसम कर देना। २. नष्ट करना। बरबाद करना। ३. बलिदान करना। ४. छोड़ देना। ५. अर्पण करना।

होमकुंड—संज्ञा पु० हवन करने का कुंड। वह गड्ढा, जिसमें होम करने के लिए आग रखी जाती है।

होमना—कि० स० १. हवन करना। आहुति देना। २. बलिदान करना। ३. छोड़ देना। नष्ट करना। बरबाद करना।

होमियोपैथी—संज्ञा पु० [अप्रे०] होमियोपैथी चिकित्सा-प्रणाली के अनुसार दवा करनेवाला।

होमियोपैथी—संज्ञा स्त्री० [वि० होमियोपैथिक] जर्मन डाक्टर हेनिमन-द्वारा आविष्कार की हुई चिकित्सा-प्रणाली, जिसमें विष को विष से दूर करने का सिद्धान्त माना जाता है।

होमियोपैथी—वि० १. होम या हवन-सम्बन्धी। २. होम का।

होम्य—वि० १. होम या हवन-सम्बन्धी। २. होम का।

संज्ञा पु० पी।

होरता—संज्ञा पु० पत्थर की गोल छोटी चीज़ी, जिस पर चंदन चिखा जाता है। चीका।

होरहा—संज्ञा पु० १. आग में भूनी हुई चने या मटर आदि की फलियाँ। होला। २. चने का पीया। बूट।

होरा—संज्ञा पु० दे० "होला"।

संज्ञा स्त्री० १. दिन-रात का २४वाँ भाग। घंटा। ढाई घड़ी का समय। एक राति या लग्न का आधा भाग। २. जन्मकुंडली।

होरिल, होरिला—संज्ञा पु० नवजात शिशु। बहुत छोटा बच्चा।

होरिहार\*—संज्ञा पु० होली खेलनेवाला।

होरी—संज्ञा स्त्री दे० "होली"।

होलक—संज्ञा पु० आग में भूनी हुई चने या मटर की फलियाँ—होला। होरहा।

होलडाल—संज्ञा पु० [अप्रे०] बिस्तरबंद।

होला—संज्ञा पु० १. आग में भूनी हुई हरे चने या मटर की फलियाँ। २. चने का हरा दाल। होल्हा। सिखा की होली, जो होली खेलने के दूसरे दिन होती है।

संज्ञा स्त्री० होली का त्योहार।

होलाष्टक—संज्ञा पु० होली के पहले के आठ दिन, जिनमें विवाह आदि शुभ कार्य नहीं किए जाते। बरता-बरता।

होलिका—संज्ञा स्त्री० १. होली का त्योहार। २. लकड़ी, पास-फूस आदि का ढेर, जो होली के दिन से पहली रात में जलाया जाता है। ३. एक राक्षसी का नाम।

होली—संज्ञा स्त्री० १. हिंदुओं का एक बड़ा त्योहार, जो फाल्गुन की पूर्णमासी को मनाया जाता है और जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग-अबीर आदि डालते हैं। २. लकड़ी, पास-फूस आदि का ढेर, जो होली में जलाया जाता है। ३. होली के उत्सव के गीत, जो माघ-फाल्गुन में गाए जाते हैं।

मुहा०—होली खेलना=एक दूसरे पर रंग, अबीर आदि डालना।

होम—संज्ञा पु० [फा०] १. स्मरण। तुष। याद।

२. बुद्धि। समझ। ज्ञान। ३. बोध या ज्ञान।

उमा। चेतना।

यो—होष य हवास=चेतना और बुद्धि।

मुह।—होश उड़ना या जाता रहना=भूल जाना। डर से बहुत घबरा जाना। होश दग होना=चकित होना। आश्चर्य से स्तब्ध होना। होश सँभालना=उम्र बड़ने पर सब बातें समझने बूझने लगना। सयाना होना। होश में आना=चेतना प्राप्त करना। होश की दवा करो=समझ-बूझकर बोलो। होश ठिकाने होना=१ बुद्धि ठीक होना। भ्रांति या मोह दूर होना। २ मन की घबराहट दूर होना। ३ दब मिलने पर भूल के लिए पछतावा होना। होश दिलाना=याद दिलाना।  
 होशियार-वि० [फा०] १ चतुर। बुद्धिमान्। समझदार। २ निपुण। कुशल। ३ सचेत। सावधान। ४ जिसकी उम्र समझने-बूझने योग्य होगई हो। सयाना। ५ चालाक। धूर्त।  
 होशियारी-सज्ञा स्त्री० [फा०] १ समझ-दारी। बुद्धिमानी। २ चालाकी। निपुणता। ३ सावधानी।  
 होस्टल-सज्ञा पु० [अंग्रे०] छात्रावास। विद्या-पियों के रहने का स्थान, जिसका प्रबन्ध उनकी शिक्षा-संस्था के अधीन हो।  
 होहल्ला-सज्ञा पु० हुल्लाड। शोरगुल।  
 हो\*†-सर्व० प्रजनापा में उत्तम पुरुष एकवचन तदन्याम। में।  
 क्रि० अ० 'होना' क्रिया का वर्तमान-कालिक, उत्तम पुरुष, एकवचन रूप है।  
 होकना\*†-क्रि० अ० १ गरजना। हुकार करना। २ हाँफना। ३ दे० "हौकना"। दे० "धौकना"।  
 होस-सज्ञा स्त्री० दे० "होत"।  
 हो-हो-सज्ञा पु० १ कुत्ते का भूकना। २ शोर करना।  
 हो-क्रि० अ० १ 'होना' क्रिया के मध्यम पुरुष, एक-वचन का वर्तमान-कालिक रूप। हो। २ होना का भूतकाल—था।  
 \*अव्य० स्वीकृत-सूचक शब्द—हूँ।  
 होआ-सज्ञा पु० [अनु०] बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम। हाऊ। भकाऊ।  
 सज्ञा स्त्री० दे० "होवा"।  
 होका-सज्ञा पु० प्रबल इच्छा। सम्वी सांस।

होज-सज्ञा पु० [अ०] १ पानी जमा रखने का स्थान या चहवच्चा। २ छोटा कुंड। ३ पानी रखने का बड़ा बरतन। नाँद। टकी।  
 होइ-सज्ञा पु० दे० "होज"।  
 होवा-सज्ञा पु० १ हाथों की पीठ पर सवारियों के बैठने का आसन, जिसके चारों ओर रोक रहती है। २ पशुओं को चारा खिलाने की बड़ी नाँद।  
 होवी-सज्ञा स्त्री० १ छोटा हीदा। छोटा होज। २ नाँद। पशुओं को चारा खिलाने का मिट्टी का बरतन। ३ वह छोटा गड्ढा जिसमें मकान का खराब पानी, कोचड़ आदि जमा होता है।  
 होरा†-सज्ञा पु० हल्ला। शोरगुल।  
 होरे\*-क्रि० वि० दे० "हीरे"।  
 होल-सज्ञा पु० [अ०] डर। भय।  
 होलखोल, होलगील-सज्ञा पु० डर या बहुत जल्दी के कारण होनेवाली घबराहट।  
 होलदिल-सज्ञा पु० [फा०] १ दिल की धडकन। २ दिल धडकने की बीमारी।  
 वि० १ जिसका दिल धडकता हो। २ भयभीत। डरा हुआ। व्याकुल। घबराया हुआ।  
 होलदिला-वि० डरपोक। घबरानेवाला।  
 होलदिली-सज्ञा स्त्री० [फा०] दिल की बीमारी दूर करने के लिए गले में पहना जानेवाला सगयशब (पत्थर) का टुकड़ा।  
 होलनाक-वि० भयानक।  
 होली-सज्ञा स्त्री० देशी शराब बनाने और बेचने की जगह। शराबखाना। भट्ठी। आवकारी। कलबरिया।  
 होलू-वि० जिसके मन में जल्दी होल या डर पैदा हो। डरपोक। घबरानेवाला।  
 होले-क्रि० वि० १ धीरे। आहिस्ता। धीमे चाल से। २ हलके हाथ से। जोर से नहीं।  
 होवा-सज्ञा स्त्री० [अ०] सगर को सबसे पहली स्त्री, जो आदम की पत्नी और मनुष्य-जाति की आदि-माता मानी जाती है (पैगवरी मत)।  
 सज्ञा पु० दे० "होआ"।

होस-सज्ञा स्त्री० [अ०] १ हवस । चाह । लालसा । कामना । २ होसला । उमंग । उत्साह ।

होसला-सज्ञा पु० [अ०] कोई काम करने का बहुत उत्साह । उमंग । लालसा । उत्कण्ठा । मुहा०—होसला मिटाना=अरमान पूरा करना । इच्छा पूरी करना । होसला पस्त होना=निरुत्साह होना ।

होसलामद-वि० [फा०] १ उत्साही । २ लालसा रखनेवाला ।

ह्यो†\*—अव्य० दे० 'यहाँ' ।

ह्यो†\*—सज्ञा पु० दे० "हियो", "हिया" ।

हृद-सज्ञा पु० १ तालाब । झील । सरोवर । २ ध्वनि । आवाज । ३ किरण ।

हृदिनी-सज्ञा स्त्री० नदी ।

हृसित-वि० जिसका ह्रास हुआ हो । घटा हुआ । कम किया हुआ ।

ह्रस्व-वि० [सज्ञा स्त्री० ह्रस्वता] १ छोटा । लघु । 'दीर्घ' का उल्टा । छोटे आकार का । २ नाटा । ३ कम । थोड़ा । ४ नीचा । ५ तुच्छ ।

सज्ञा पु०, १ दीर्घ की अपेक्षा कम स्वीचकर बोला जानवाला लघु स्वर । जैसे—अ, इ, उ । २ बामन । बीना ।

ह्रस्वता-सज्ञा स्त्री० लघुता । अल्पता । छोटाई ।

ह्रास-सज्ञा पु० १ कमी । घटती । अपनक्ति । पतन । २ ध्वनि । आवाज ।

ह्रासन-सज्ञा पु० ह्रासे करना । घटाना । कम करना ।

ह्री-सज्ञा स्त्री० १ लज्जा । शर्म । २ दक्ष प्रजापति की कन्या, जो धर्म की पत्नी मानी जाती है ।

ह्रीका-सज्ञा स्त्री० लज्जा । शर्म ।

ह्रीकु-वि० लज्जाशील । शर्माता ।

सज्ञा पु० १ बिल्ली । २ लाखा । ३ रांता ।

ह्रीति-सज्ञा स्त्री० [वि० ह्रीत] लज्जा । सकोच । शर्म । हया ।

ह्राद-सज्ञा पु० आनन्द । प्रसन्नता । हर्ष ।

ह्रावन-सज्ञा पु० प्रसन करना । आनन्दित करना ।

ह्वा†\*—अव्य० दे० "वहाँ" ।

ह्विप-सज्ञा पु० [अग्र०] १ सपेतक । विधान-सभा में किसी पार्टी या दल का वह नेता, जो मतदान के विषय में सदस्यों को निर्देश देता है । २ चाबुक । कोड़ा । ३ कोष घान ।

ह्विस्की-सज्ञा स्त्री० [अग्र०] एक तरह की अग्रंजी शराब ।

ह्वेस-सज्ञा पु० [अग्र०] एक विशालकाय समुद्री मछली, जिसका तेल बहुत उपयोगी होता है । इसका आकार इतना बड़ा होता है कि यह छोटे-छोटे जहाजों को भी मष्ट कर देती है ।

# संविधान-शब्दावली

## भारतीय संविधान-परिषद्-द्वारा स्वीकृत

### हिन्दी शब्दों के अंग्रेजी पर्याय

अ

अक्षय—Incompetent  
अक्षमता—Incompetency  
अग्रिम धन—Advance  
अतिक्रमण—Violation  
अतिरिक्त न्यायाधीश—Judge, extra  
अतिरिक्त लाभ—Excess profit  
अधिकरण—Tribunal  
अधिकार—Right  
अधिकार-अभिलेख—Record of rights  
अधिकार-पृच्छा—Quo warranto  
अधिग्रहण—Requisition  
अधिनियमन—(n) Act  
अधिनियम—(v) Enact  
अधिपत्र—Warrant  
अधिभार—Surcharge  
अधिमान—Preference  
अधिवक्ता—Advocate  
अधिवास—Domicile  
अधिवासी—Domiciled  
अधिष्ठाता—Presiding officer  
अविसूचना—Notification  
अधीक्षक—Superintendent  
अधीक्ष—Superintendence  
अधीन—Subject  
अधीन अधिकारी—Subordinate officer  
अधीन न्यायालय—Subordinate court  
अध्यक्ष—Speaker  
अध्यादेश—Ordinance  
अध्यासीन होना—Preside

अनन्य क्षेत्राधिकार—Exclusive Jurisdiction

अनहता—Disqualification

अनर्हीकरण—Disqualify

अनियमिता—Irregularity

अनुकूलन—Adaptation

अनुच्छेद—Article

अनुज्ञप्ति—Licence

अनुज्ञा—(v) Permit,

अनुज्ञा (n) Permission

अनुदान—Grant

अनुदेश—Instruction

अनुन्मुक्त—Undischarged

अनुपाती प्रतिनिधित्व—Proportional representation

अनुपूरक—Supplementary

अनुपूरक अनुदान—Supplementary grant

अनुमति—Assent

अनुमोदन—(v) Approve

अनुमोदन—(n) Approval

अनुशासन—Discipline

अनुशासन-सम्बन्धी—Disciplinary

अनुपत्ति—Adherence

अनुष्ठान—Exercise

अनुसमर्थन—(n) Ratification

अनुसमर्थन—(v) Ratify

अनुसंधान—(v) Investigate

अनुसंधान—(n) Investigation

अनुस्मारक—Reminder

अनुसूचित क्षेत्र—Scheduled area  
 अनुसूचित जनजाति—Scheduled tribe  
 अनुसूचित जाति—Scheduled caste  
 अनुसूची—Schedule  
 अन्तर्ग्रसन—Involve  
 अन्तर्ग्रस्त—Involved  
 अन्तर्देशीय जलमार्ग—Inland waterway  
 अन्तर्राष्ट्रीय—International  
 अन्तःकरण—Conscience  
 अन्य-देशीय—Aliens  
 अन्य-सक्रामण—(v) Alienate  
 अन्य-सक्रामण—(n) Alienation  
 अपमान लेख—Libel  
 अपमान-वक्तव्य—Slander  
 अपमिश्रण—Adulteration  
 अपर न्यायायोग—Additional Judge  
 अपराध—Crime  
 अपराध—Offence  
 अपराधी—Criminal  
 अपवर्जन—(v) Exclude  
 अपवर्जन—(n) Exclusion  
 अपात्र—Ineligible  
 अपात्रता—Ineligibility  
 अपील—Appeal  
 अपील न्यायालय—Court of Appeal  
 अप्रवृत्त—Inoperative  
 अभिव्यक्त—Allegation  
 अभिव्यक्त—Agency  
 अभिव्यक्ता—Agent  
 अभिप्राय—Opinion  
 अभिमात्रता—Demand  
 अभियुक्त—Accused  
 अभिव्यक्ति—Charge  
 अभिव्यक्ति—Prosecution  
 अभिमात्र—Accusation  
 अभिमात्र—Prosecution  
 अभिरोप्य दाव—Actionable wrong  
 अभिरक्ष—Custody  
 अभिलेख—Record  
 अभिलेख न्यायालय—Court of record  
 अभिव्यक्त—Convicted

अभिव्यक्ति—Conviction  
 अभिव्यक्त—Convention  
 अभ्यर्थी—Candidate  
 अमान्य—Invalid  
 अव्यक्त प्रभाव—Undue influence  
 अग्रण—Acquisition  
 अर्जी—Petition  
 अर्थ करना—Construe  
 अर्थ-दण्ड—Fine  
 अर्हता—Qualification  
 अल्पसंख्यक वर्ग—Minority  
 अन्नीकरण—Derogation  
 अवधिदान—Adjourn  
 अपमान—Contempt  
 अवयव—Minor  
 अविवक्त कुटुम्ब—Joint family  
 अविवक्त परिवार—Joint family  
 अविव्याप्त-वस्तुत्व—Motion of no confidence  
 अवैध—Illegal  
 अवैधप्रवृत्ति—Illegal practice  
 अक्षमता—Incapacity  
 अक्षमता - निवृत्त वेतन—Invalidity pension  
 अद्वैत—Civil  
 अद्वैतिक शक्ति—Civil Power  
 अहितकार—Detrimental  
 अङ्कन—Endorse  
 अङ्कित—Endorsed  
 अणु—Unit  
 अंश—Share  
 अंशदान—Contribution

आ

आकलन—(v) Credit  
 आकलनकाल निधि—Contingency Fund  
 आचर—Custom  
 आजाद—Freedom  
 आवागमन—Callings  
 आवागमन-कर—Callings tax

वाञ्छाप्ति—Decree  
 वादेस—Order  
 वादेशिका—Process  
 वाधुपगिक—Consequential  
 वाधराधिक—Criminal  
 वापात—Emergency  
 वापाती—Emergent  
 वापात की उद्घोषणा—Proclamation  
 of emergency  
 वाभार—Obligation  
 वाय-कर—Income-tax  
 वायात-शुल्क—Import duty  
 वाधुक्ते—Commissioner  
 वायोग—Commission  
 वाधरक्षक—Police  
 वाधरक्षक बल—Police Force  
 वाधरोप—Allegation  
 वाधरोपण करना—Impose  
 वाधरोपण—Levy  
 वाधिक—Economic  
 वाधिक क्षेत्राधिकार—Pecuniary  
 jurisdiction  
 वाधतंक—Recurring  
 वाधारागरदो—Vagrancy  
 वाधेदन-पत्र—Application  
 वाधति—Property  
 वाधिहन—Vagrancy  
 वाधान—Summon  
 वाधक—Estimate

इ

इच्छा-पत्र—Will  
 इच्छा-पत्रहीन—Intestate

उ

इच्छा-पत्रहीनत्व—Intestacy  
 उगाहना—Levy (v)  
 उच्चतम न्यायालय—Supreme Court  
 उच्च न्यायालय—High Court  
 उत्तराधिकार—Succession  
 उत्तराधिकार-शुल्क—Succession duty  
 उत्तराधिकारी—Successor

उत्तरवादिता—Liability  
 उत्पादन—Production  
 उत्पादन-शुल्क—Excise duty  
 उत्प्रवास—Emigration  
 उत्प्रेषण-लेस—Certiorari  
 उद्ग्रहण—Levy (n)  
 उद्घोषणा—Proclamation  
 उद्भव—Descent  
 उद्यम—Enterprise  
 उद्योग—Industry  
 उधार—Loan  
 उधार-ग्रहण—Borrowing  
 उन्मत्त—Lunatic  
 उन्माद—Lunacy  
 उन्मुक्ति—Immunity  
 उपकर—Cess  
 उपक्रमण—Initiate  
 उपचार—Remedy  
 उपजोविका—Occupation  
 उपदान—Gratu ty  
 उपदेश—Advisory  
 उपनिर्वाचन—By-election  
 उपनिवेशन—Colonization  
 उपबन्ध—Provision  
 उपभोग—Consumption  
 उपराज्यपाल—Lieutenant Gover-  
 nor  
 उपराष्ट्रपति—Deputy President  
 उपराष्ट्रपति—Vice-President  
 उपलब्धि—Emolument  
 उपविभाग—Sub-division  
 उपवेशन—Sitting  
 उपविधि—Bye-law  
 उपसभापति—Deputy Chairman  
 उपस्थित होना—Appear  
 उपाध्यक्ष—Deputy Speaker  
 उपायुक्त—Deputy Commissioner  
 उपायोजन—Employment  
 उपाजित—Accrued.  
 उम्मेदवार—Candidate  
 उल्लघन—Contravention

ऋण—Debt  
 ऋणग्रस्तता—Indebtedness  
 ऋण-पत्र—Debenture  
 ए  
 एकक—Unit  
 एकल निगम—Corporation, Sole  
 एकल सक्रमणीय मत—Single trans-  
 ferable vote  
 एकत्व—Patent  
 क  
 कटक—Contonment  
 वणकु—Account  
 कदाचार—Misbehaviour  
 कब्जा—Possession  
 कम्पनी—Company  
 कर—Tax  
 करार—Agreement  
 कर्तव्य—Duty  
 कर्तुंननिघेत—Putporting to be  
 done  
 कर्मचारी-वृन्द—Staff  
 कानून-सम्बन्धी—Legal  
 कारखाना—Fctory  
 कारखाना—Business  
 कारागार—Prison  
 कारावादी—Prisoner  
 कारावास—Imprisonment  
 कार्मिक संघ—Trade Union  
 वायं—Business  
 कार्यकारी—Acting  
 कार्यपालिका शक्ति—Executive power  
 कार्यपालिका—Executive  
 बालदान—Adjourn.  
 कायल—Custody  
 गायीहोस—Cattle-pound  
 किराया—Fare  
 किसान—Tenant  
 डुकी—Attach

कृति स्वाम्य—Copyright  
 कृत्य—Function  
 केन्द्रीय गुप्त-बातों-विभाग—Central In-  
 telligence Bureau  
 कैद—Imprisonment  
 कैदी—Prisoner  
 क्षति—Injury  
 क्षतिपूर्ति बिल—Bill of indemnity  
 क्षमताशाली—Competent  
 क्षमा—Pardon  
 क्षेत्र—Area  
 क्षेत्राधिकार—Jurisdiction

ख

खनिज—Mineral  
 खनिज-वसति—Mining settlement  
 खनिज-सम्पत्ति—Mineral resources  
 खर्च—Cost  
 खंड—Clause

ग

गजट—Gazette  
 गणना—Account  
 गणनानुदान—Vote on account  
 गणना-परिष्ठा—Audit  
 गणपूर्ति—Quorum  
 गवेषणा—Research  
 गूढ पत्र—Ballot  
 ग्राम-परिषद्—Village Council  
 ग्रह्य—Admissible

घ

घोषणा—Declaration

च

चट्टन—Act (n)  
 चर्चा—Discussion  
 चल अर्प—Currency  
 चलाना—Currency  
 निषेधित—Unsoundness of mind  
 चिह्न—Mark

चुकी—Agreement

चुने हुए—Elected

चुगी—Octori

चेक—Cheque

छ

छावनी—Cantonment

ज

जगह—Post

जनगणना—Census

जन-जाति—Tribe

जनजाति-क्षेत्र—Tribal Area

जनजाति-परिषद्—Tribal Council

जल-दस्युता—Piracy

जल प्रागण—Territorial waters

जामिन—Bail

जांच करना—Inquire

जिला—District

जिला-मण—District Board

जिला निधि—District Fund

जिला-न्यायालय—District Court

जिला-परिषद्—District Council

जिला-मंडली—District Board

जीविका—Livelihood

जुआ—Gambling

जुर्माना किया—Fined

जेल—Prison

ज्वार-खल—Tidal waters

ज्ञाप—Memo

ज्ञापन—Memorandum

ट

टंकण—Coinage

टँच—Attach

ट्राम—Tramway

ट्रामगाडी—Tramcar

ड

डिक्ती—Decree

त

तत्काल—For the time being

तत्स्थानी—Corresponding

तदर्थ—Ad hoc

तीर्ण—Passed

तीर्ष—Assessment

तृतीय पठन—Third reading

त्रैवार्षिक—Triennial

थ

थाना—Police Station

द

दत्तक-ग्रहण—Adoption

दत्तक-स्वीकरण—Adoption

दस्तकारी—Handicraft

दस्तावेज—Document

दंड देना—Punish

दंड-न्यायालय—Criminal Court

दंड विधि—Criminal law

दंड-सम्बन्धी—Criminal

दंडादेश—Sentence

दंडाधिकारी-न्यायालय—Magistrate's

Court

दाखिला—Entry

दातव्य—Charities

दाय—Inheritance

दायित्व—Liability

दावा—Claim

दिवाल—Bankruptcy

दिवाला—Insolvency

दीवानी—Civil

दीवानी-अदालत—Civil Court

दृष्टाक—Visas

दण्ड—Fec

देशीकरण—Naturalisation

दोषी—Bi-cameral

दोष प्रमाणित—Convicted

दोष सिद्धि—Conviction

दोषारोप—Charge (cr)

बूत—Gambling

द्विगुहा—Bicameral  
द्वितीय-पठन—Second reading

ध

धन—Money  
धन विधेयक—Money-bill  
धर्म—Faith  
धर्मस्व—Endowments  
व्यवसाय—Occupation

न

नक्ष—Design  
नगर-क्षेत्र—Municipal area  
नगर-ट्रामवे—Municipal Tramway  
नगर-निगम—Municipal Corporation  
नगर-पालिका—Municipality  
नगर रज्ज्यायान—Municipal Tram-  
way  
नगर समिति—Municipal Committee  
नागरिकता—Citizenship  
नाम निवृत्तन—Nominate  
नारविक ज—Admiralty  
निर्वाह—Body  
निक्षय निधि—Sinking Fund  
निखाल निधि—Treasure trove  
निगम—Corporation  
निगम-कर—Corporation tax  
निगमन—Incorporation  
निगम निकाय—Body, Corporate  
निदेश—Direction  
निधि—Fund  
निबद्ध—Registered  
निबधन—Registration  
निबधन—Term  
नियन्त्रक महालेख पराक्षक—Comptroller  
and Auditor General  
नियन्त्रण—Control  
नियम—Rule  
नियुक्ति—Appointment  
नियोजक उत्तरदायी—Employer's  
liability

नियोजक दायित्व—Employer's liability  
निराकरण—Repeal  
निराकरण करण—Abrogate  
निरोध—Custody  
निरोध—Quarantine  
निर्णय—Judgment  
निर्णायक मत—Casting vote  
निर्देश—Reference  
निर्धारण—Assessment  
निबधन—Restriction  
निर्माण—Manufacture  
निर्यात—Export  
निर्यात-कर—Export tax  
निर्यात-शुल्क—Export duty  
निर्वाह्यता—Disability  
निबधन—Interpretation  
निबधन—Intestate  
निर्वसीयता—Intestacy  
निबहण—Discharge  
निर्वाचक-मण—Electoral college  
निर्वाचक-नामावली—Electoral rolls  
निर्वाचन—(v.) Elect  
निर्वाचन—Election  
निर्वाचन अधिकरण—Election Tribunal  
निर्वाचन-आयुक्त—Election Com-  
missioner  
निर्वाचन क्षेत्र—Constituency  
निर्वाचित—Elected  
निर्वाहन—Transportation  
निर्वाह मजदूरी—Living wage  
निलम्बन—(v.) Suspend  
निलम्बन—(n.) Suspension  
निवारक-निरोध—Preventive deten-  
tion  
निवृत्त होना—Retire  
निवृत्ति—Retirement  
निवृत्ति-वेतन—Pension  
निषेध—Forbid  
निषिद्ध—Forbidden  
निष्ठा—Allegiance  
नौदता—Register (v.)

नौकरी-कर—Employment  
 नौकरी—Employment-tax  
 नौकाधिकरण—Admiralty  
 नौ-परिवहन—Navigation  
 नौ-सेना-सम्बन्धी—Naval  
 न्यस्त करना—Entrust  
 न्यायपालिका—Judiciary  
 न्यायाधिकरण—Tribunal  
 न्यायाधिपति—Justice  
 न्यायाधीश—Judge  
 न्यायालय—Court  
 न्यायालय-अवमान—Contempt of  
 Court  
 न्यायिक-कार्यरीति—Judicial proceed-  
 ing  
 न्यायिक-कार्यवाही—Judicial proceed-  
 ing  
 न्यायिक मुद्रांक—Judicial stamps  
 न्यायिक शक्ति—Judicial power  
 न्यास—Trust  
 न्यूनन—Abridge

प

पक्ष—Party.  
 पण लगाना—Bet  
 पण-क्रिया—Betting  
 पण्य-चिह्न—Merchandise mark  
 पत—Credit (n)  
 पत्तन-निरोध—Port quarantine  
 पथ-कर—Toll  
 पथ-नियम—Rule of the road  
 पद—Post  
 पद—Office  
 पदव्युत्तर करना—Dismiss  
 पदत्याग—Resignation  
 पदधारी—Incumbent of an office  
 पदाधिकाारी—Officer  
 पदावधि—Tenure  
 पदावास—Official residence  
 पदेन—Ex-officio  
 परकीकरण—Alienation

परमादेश—Mandamus  
 परन्तु—Provided  
 परमिट—Permit (n.)  
 परामर्श—Consultation  
 परित्यजन—Abandonment  
 प्रित्याग—Abandonment  
 परिनाण—Safeguard  
 परिपालन—Implement  
 परिप्रश्न—Inquiry  
 परिलब्धि—Perquisite  
 परिवहन—Transport  
 परिवहन—Carriage  
 परिव्यय—Cost  
 परिषद्—Council  
 परिषद्-आदेश—Order in Council  
 परिसीमन—Delimitation  
 परिसीमा—Limitation  
 परिहार—Remission  
 परिहार विधेयक—Bill of Indemnity  
 परोक्ष निर्वाचन—Indirect election  
 पर्यवेक्षण—Inspection  
 पर्यालोचन—Deliberate  
 पशु-अवरोध—Cattle-pounds  
 पचाट—Award  
 पजी—Register  
 पजी—Registered  
 पजीबन्धन—Registration  
 पजीयन—Registration  
 पात्र—Eligible  
 पात्रता—Eligibility  
 पार-पत्र—Passport  
 पारण—Pass  
 पारित—Passed  
 पारितोषिक—Reward  
 पारिश्रमिक—Remuneration  
 पावती—Receipt (paper)  
 पीठासीन होना—Preside  
 पीठासीन-पदाधिकारी—Presiding Officer  
 पुनरीक्षण—Revision  
 पुनर्विचार-न्यायालय—Court of Appeal  
 पुनर्विलोकन—Review

पुर स्थापन—Introduce  
 पुर स्थापना—Introduction  
 पूर्त—Charity  
 पूत धार्मिक धर्मस्व—Charitable and religious endowment  
 पूर्त सत्था—Charitable institution  
 पूर्व मजूरी—Previous sanction  
 पूर्व सम्मति—Previous consent  
 पूँजो—Capital  
 पृष्ठांकन—Endorse  
 पृष्ठांकित—Endorsed  
 पेशगी—Advance  
 पेशा—Profession  
 पोषण—Maintenance  
 पोषण करना—Maintain  
 पौरत्व—Citizenship  
 प्रकट करना—Discovery  
 प्रकाशन—Publication  
 प्रक्रिया—Procedure  
 प्रख्यापन—Promulgate  
 प्रग्रहण—Arrest  
 प्रचलित—Current  
 प्रचार करना—Propagate  
 प्रतिकर—Compensation  
 प्रतिकूल असर डालना—Affect prejudicially  
 प्रतिकूलता—Contravention  
 प्रतिकूल प्रभाव—Prejudice  
 प्रतिकूल प्रभाव डालना—Affect prejudicially  
 प्रतिकृति—Copy  
 प्रतिज्ञान—Affirmation  
 प्रतिनिधि—Representative  
 प्रतिनिधित्व—Representation  
 प्रतिपक्षी—Proxy  
 प्रतिपक्षक अधिकरण—Court of wards  
 प्रतिभूति—Security  
 प्रतिरक्षा—Defence  
 प्रतिलिपि—Copy  
 प्रतिलिप्यधिकार—Copyright  
 प्रतिवेदन—Report

प्रतिव्यवित्त-कर—Capitation tax  
 प्रतिषिद्ध—Prohibited  
 प्रतिषेध—Prohibition  
 प्रतिशुल्क—Countervailing duties  
 प्रतिषेध लेख—Writ of prohibition  
 प्रतिस्हरण—Revoke  
 प्रत्यक्ष निर्वाचन—Direct election  
 प्रत्यय—Credit  
 प्रत्यय-पत्र—Letters of credit  
 प्रत्ययानुदान—Votes of credit  
 प्रत्यपण—Extradition  
 प्रत्याभूति—Guarantee  
 प्रथम पठन—First reading  
 प्रथम सदन—Lower House  
 प्रधान-मन्त्री—Prime Minister  
 प्रपत्र—Form  
 प्रभाव—Influence  
 प्रभु—Sovereign  
 प्रभुता—Sovereignty  
 प्रमाण-पत्र—Certificate  
 प्रमाणीकरण—Authentication  
 प्रमोद-कर—Entertainment tax  
 प्रयुक्ति—App ication  
 प्रयोग—Application  
 प्रयोग—Exercise  
 प्रविलम्बन—Reprieve  
 प्रवर-समिति—Select Committee  
 प्रविष्टि—Entry  
 प्रवेश—Access  
 प्रवेशन—Accession  
 प्रवजन—Migration  
 प्रशान्ति—Tranquility  
 प्रशासन—Administration  
 प्रशासन—Administer  
 प्रशासन कार्यक्षमता—Efficiency of administration  
 प्रशासन कार्यपद्धति—Efficiency of administration  
 प्रशासनीय—Administrative  
 प्रशासनीय कृत्य—Administrative functions

प्रशासित—Administered  
 प्रशिक्षण—Training  
 प्रसंग—Context  
 प्रसारण—Broadcasting  
 प्रसूति-सहाय्य—Maternity relief  
 प्रसूति-सहायता—Maternity relief  
 प्रस्ताव—Motion  
 प्रस्तावना—preamble  
 प्रस्तापना—Proposal  
 प्राक्कलन—Estimate  
 प्रादेशिक आयुक्त—Regional Com-  
 missioner  
 प्रादेशिक क्षेत्राधिकार—Territorial  
 jurisdiction  
 प्रादेशिक निधि—Regional Fund  
 प्रादेशिक निर्वाचन-क्षेत्र—Territorial  
 constituency  
 प्रादेशिक परिषद्—Regional Council  
 प्रादेशिक भार—Territorial charges  
 प्राधिकार—Authority (ab.)  
 प्राधिकारी—Authority (con.)  
 प्राधिकृत—Authorised  
 प्रान्त—Province  
 प्रापण—Accrue  
 प्राप्त होना—Accrue  
 प्राप्ति—Receipt  
 प्रामित्यरी नोट—Promissory note  
 प्रासंगिक—Incidental  
 प्रोद्भव—Accrue  
 प्रोद्भूत—Accrued

फ

फरियाद—Complaint  
 फारम—Form  
 फीस—Fees  
 फेडरल न्यायालय—Federal Court

ब

बंटवारा—Allocation  
 बनाए रखना—Maintain (v.)  
 बनाए रखना—Maintenance (n.)

बन्दी करना—Arrest  
 बन्दी प्रत्यक्षीकरण—Habeas Corpus  
 बन्धक—Mortgage  
 बल—Forces  
 बहिःशुल्क—Custom duty  
 बहुमत—Majority  
 बाँट—Allotment  
 बाँटन—Allot  
 बिल—Bill  
 बीमा—Insurance  
 बीमा-पत्र—Policy of insurance  
 बेकारी—Unemployment  
 बैठक—Sitting  
 बैंक—Bank  
 बोर्ड—Board

भ

भत्ता—Allowance  
 भविष्य-निधि—Provident Fund  
 भर्ती—Recruitment  
 भागितर—Partnership  
 भाटक—Rent  
 भाड़ा—Fare  
 भार—charge  
 भारग्रस्त सम्पदा—Encumbered  
 estates  
 भारत-सरकार—Government of  
 India  
 भारित करना—Charge  
 भू-अभिलेख—Land Records  
 भू-धृति—Land tenures  
 भू-राजस्व—Land Revenue  
 भ्रष्ट—Corrupt

म

मजदूरी—Wage  
 मण्डल—District  
 मंडल-न्यायालय—Court, District  
 मण्डलाधीश—Deputy Commissione  
 मण्डलायुक्त—Deputy Commissione  
 मण्डली—Board

मत—Vote  
 मतदाता—Voter  
 मतदान—Voting  
 मताधिकार—Suffrage  
 मतिमान्य—Dulness  
 मध्यस्थ-न्यायाधिकरण—Arbitral tri-  
 bunal  
 मध्यस्थ—Arbitrator  
 मध्यस्थ-निर्णय—Arbitration  
 मनोदीर्घत्व—Mental weakness  
 मनोनयन—Nominate  
 मनोवेकत्व—Mental deficiency  
 मन्त्रणा—Advice  
 मन्त्रणा देना—Advise  
 मन्त्रणा-परिषद्—Advisory Council  
 मन्त्री-परिषद्—Council of Ministers  
 मन्त्री—Minister  
 मरण-शुल्क—Death duty  
 महाजनै—Banking  
 महाधिपक्ता—Advocate-General  
 महाध्यायवादी—Attorney-General  
 महाप्रसासक—Administrator General  
 महालेखापरीक्षक—Auditor-General  
 महाभियोग—Impeachment  
 मजूरो—Sanction  
 मानदेय—Honorarium  
 मानव-गुण—Traffic in human beings  
 मान-हानि—Defamation  
 मान्यता—Validity  
 मार्ग-प्रदर्शन—Guidance  
 माँग—Demand  
 मीन-क्षेत्र—Fishery  
 मीन-पट्ट—Fishery  
 मुक्त—Exempt  
 मुखिया—Headman  
 मुख्य—Chief  
 मुख्य-आयुक्त—Chief Commissioner  
 मुख्य-निर्वाचन-आयुक्त—Chief Election  
 Commissioner  
 मुख्य न्यायाधिपति—Chief Justice  
 न्यायाधीश—Chief Judge

मुख्य मन्त्री—Chief Minister  
 मुद्रा—Seal  
 मुद्राक-शुल्क—Stamp duty  
 मूलधन—Capital  
 मूलधन-मूल्य—Capital value

य

यथास्त्विति—As the case may be  
 यन्त्र-शास्त्र—Engineering  
 याचिका—Petition  
 यातायात—Traffic  
 योगकाल—Joining time

र

रक्षण—Reservation  
 रक्षा-कवच—Safeguard  
 रक्षित वन—Reserved forest  
 रथ्यायान—Tramcar  
 रद्द करना—Annulment  
 रसीद—Receipt  
 राजगामी—Escheat  
 राजनय—Diplomacy  
 राजस्व—Revenue  
 राजस्व-न्यायालय—Revenue Court  
 राज्य—State  
 राज्य की सरकार—Government of  
 a State  
 राज्य-क्षेत्र—Territory  
 राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन—Extra territorial  
 operation  
 राज्य-निधि—State Fund  
 राज्य-परिषद्—Council of States  
 राज्यपाल—Governor  
 राज्य-सूची—State list  
 राय—Opinion  
 राशि—Amount  
 राष्ट्र—Nation  
 राष्ट्र-ऋण—Public debt  
 राष्ट्रपति—President  
 राष्ट्रपति-प्रसाद पर्यन्त—During the  
 pleasure of the President

राष्ट्रीय राजपथ—National highways  
 राष्ट्रों की विधि—Laws of Nations  
 रिक्तता—Vacancy  
 रिक्त स्थान—Vacancy  
 रिक्ति—Vacancy  
 रिकथ—Property  
 रूकावट—Bar  
 रूढ़ि—Custom  
 रूप—Form  
 रूपभेद—Modification  
 रूपांकन—Design  
 रेल—Railway

ल

लगान—Rent  
 लगाना—Impose  
 लघुकरण—Commute  
 लम्बगान—Pending  
 लम्बित—Pending  
 लाइसेंस—Licence  
 लागत—Cost  
 लागू होना—Application (n.)  
 लाभ—Profit  
 लाभदा—Dividend  
 लिखत—Instrument  
 लिखित सूचना—Notice in writing  
 लेख—Writ  
 लेखा—Account  
 लेखा-परीक्षा—Audit  
 लेखानुदान—Votes on accounts  
 लेख्य—Document  
 लेना-देना—Dealings  
 लोक—People  
 लोक-अधिसूचना—Public notification  
 लोकसभा—House of the People  
 लोक-समाज—Community  
 लोक-सेवाएँ—Public Services  
 लोक-सेवायोग—Public Service  
 Commission  
 लोक-स्वास्थ्य—Public health

व

वकालत करना—Plead  
 वकील—Pleader  
 वचन-पत्र—Promissory note  
 वचन-बन्ध—Engagement  
 वणिक्-पोत—Merchant marine  
 वयस्क—Major  
 वयस्क-मतदाधिकार—Adult suffrage  
 वरी—Duty  
 वसीयत—Will  
 वस्तु-भाड़ा—Freight  
 वहन-पत्र—Bill of lading  
 वाक्-स्वातन्त्र्य—Freedom of speech  
 वाणिज्य—Commerce  
 वाणिज्य-दूत—Consul  
 वाणिज्य-सम्बन्धी—Commercial  
 वाद—Cause  
 वाद-पद—Issue  
 वाद-प्रतिवाद—Controversy  
 वाद-मूल—Cause of action  
 वाद-विवाद—Debate  
 वाद-विषय—Subject matter  
 वायदा बाजार—Future market  
 वायु-मार्ग—Airways  
 वार्षिक—Annual  
 वार्षिक-वित्त-विवरण—Annual financial  
 statement  
 वार्षिकी—Annuities  
 विकलन—Debit (v.)  
 विकृत-चित्त—Unsound mind  
 विनय—Sale  
 विनय-कर—Sales Tax  
 विघटन—Dissolution  
 विचार—Consideration  
 विचारार्थ प्रस्ताव—Motion for con-  
 sideration  
 वितरण—Distribution  
 वित्त—Finance  
 वित्त-विधेयक—Finance bill  
 वित्तायोग—Finance Commission

सघ—Union	साहूकार—Money-lending
सघटन—Organization	सासिग—Contagious
सघ-सूची—Union List	सामयिक—Infectious
संचार—Communication	सिद्ध-दाग—Convicted
संचार करना—Communicate	सिफारिस—Recommendation
संचार-साधन—Means of communication	सिफारिस करना—Recommend
संचित निधि—Consolidated fund	सीमा—Boundary
संदर्भ—Context	सीमा-कर—Terminal tax
सदेश—Message	सीमान्त—Frontiers
संबोधित—Addressed	सीमा शुल्क—Custom duty
सम्पत्ति—Property	सीमाकन—Demarcation
सम्पत्ति-हस्तान्तरण-पत्र—Assurances of property	सुधार प्रयत्न—Improvement Trust
सम्पर्क—Contact	सुधारालय—Reformatory
सम्मति—Consent	सुसंगति—Relevancy
सरक्षक—Guardian	सूचना—Notice
सङ्ग—Append	सूचना-पत्र—Gazette
सविदा—Contract	सूचना-पत्र—Notice
सविधान—Constitution	सूची—List
सविधान-सभा—Constituent Assembly	सूद—Interest
संशोधन—Amendment	सूत्र—Formula
संसद—Parliament	सूत्रित—Formulated
संस्था—Institution	सेना—Military
संस्थापन—Establishment	सेना-न्यायालय—Court Martial
संहिता—Code	सेवा—Service
साक्ष्य—Evidence	सेवा की शर्त—Condition of Service
साख—credit	सेवा नियोजन—Employment
साधारण निर्वाचन—General Election	सेवा भार—Service charges
सामर्थ्य—Capacity	सैनिक—Military
सामाजिक बीमा—Social insurance	सैन्य वियोजन—Demobilization
सामाजिक रूढ़ि—Social custom	सौंपना—Assign
सामाजिक सेवा—Social service	सौंपना—Entrust
सामान्य मुद्रा—Common seal	स्वगत—Adjourn
सामान्य मुहर—Common seal	स्वगित करना—Adjourn
सार्वजनिक अधिसूचना—Public Notification	स्वान—Post
सार्वजनिक अभियाचना—Public demand	स्वान—Seat
सार्वजनिक कल्याण—Common good	स्वानांतरण—Transfer (n)
सार्वजनिक व्यवस्था—Public order	स्थानीय क्षेत्र—Local area
साहूकार—Money-lender	स्थानीय वृण—Local Board
	स्थानीय निकाय—Local body
	स्थानीय प्राधिकारी—Local authority
	स्थानीय मंडली—Local Board

भारतीय शासन—Local Government  
 भारतीय स्वशासन—Local Self-Government  
 स्थापना—Establishment  
 स्थापित करना—Establish  
 स्थायी आदेश—Standing Orders  
 स्थायी समिति—Standing Committee  
 स्पष्टीकरण—Clarification  
 स्पष्टीकरण—Explanation  
 स्मारक—Memorial  
 स्वतन्त्रता—Freedom  
 स्ववश—Possession  
 स्वविवेक—Discretion  
 स्वातन्त्र्य—Freedom  
 स्वाधीनता—Liberty  
 स्वामित्व—Ownership

स्वामित्व—Royalties  
 स्वामित्व—Royalties  
 स्वामी—Owner  
 स्वामिहीनत्व—Bona vacancia  
 स्वामी होना—Own  
 स्वायत्तता—Autonomy  
 स्वीय विधि—Personal law

ह

हक—Title  
 हक होना—Entitled  
 हटाना—Removal  
 हस्तशिल्प—Handicraft  
 हस्तान्तरण—Conveyance  
 हस्तान्तरण—Transfer (n)  
 हिदायतें—Instructions

वित्तीय—Financial  
 वित्तीय भार—Financial obligation  
 वित्तीय विवरण—Financial statement  
 विदेशीय कार्य—Foreign Affairs  
 विदेशीय विनिमय—Foreign exchange  
 विधान—Legislation  
 विधान-परिषद्—Legislative Council  
 विधान-मंडल—Legislature  
 विधान-सभा—Legislative Assembly  
 विधायिनी शक्ति—Legislative power  
 विधि—Law  
 विधि-प्रश्न—Question of law  
 विधि मान्य—Legal tender  
 विधियों का समान संरक्षण—Equal protection of law  
 विधि-सम्बन्धी—Legal  
 विधेयक—Bill  
 विनियम—Regulation  
 विनियमन—Regulate  
 विनिमय-पत्र—Bill of exchange  
 विनियोग—Appropriation  
 विनियोग-विधेयक—Appropriation bill  
 विनिश्चय—Decision  
 विभाग—Section  
 विभाजन—Distribution  
 विभेद—Discrimination  
 विमति—Dissent  
 विमान-परिवहन—Air navigation  
 विमान-यातायात—Air traffic  
 विमान-बल—Air Forces  
 विमोचन—Redemption  
 विमोचन-भार—Redemption charges  
 विवृत्त—Deprive  
 विराम—Respite  
 विरुद्ध—Repugnant  
 विरोध—Repugnance  
 विरोध—Repugnancy  
 विल—Will  
 विलेख—Deed  
 विवरण—Return  
 विवाद—Dispute

विवाह-विच्छेद—Divorce  
 विशेषाधिकार—Privilege  
 विश्वास-प्रस्ताव—Motion of confidence  
 विश्वास का अभाव—Want of confidence  
 विषय—Subject  
 विसर्जन—Disperse  
 विसंगत—Relevant  
 विस्तार—Extend  
 विस्फोटक—Explosive  
 वीसा—Visas  
 वृत्ति—Profession  
 वृत्ति-कर—Profession tax  
 वृद्धि—Interest  
 वेतन—Pay  
 वेतन—Salary  
 वेल्ड—Employment  
 वेला-जल—Tidal waters  
 वैदेशिक-कार्य—External Affairs  
 वोटदाता—Voter  
 वंचित करना—Deprive  
 व्यक्ति—Person  
 व्यपगत होना—Lapse  
 व्यय—Expenditure  
 व्यवसाय—Vocation  
 व्यवस्था—Order  
 व्यवहार—Civil  
 व्यवहार—Dealings  
 व्यवहार अदालत—Civil Court  
 व्यवहारालय—Civil Court  
 व्यवहार न्यायालय—Civil Court  
 व्यवहार-प्रक्रिया—Civil procedure  
 व्यवहार - प्रक्रिया - संहिता—Civil Procedure Code  
 व्यवहार लागू—Sue  
 व्यवहार-वाद—Civil suit  
 व्यवहार-विषयक अपराध—Civil wrongs  
 व्यवहार-विषयक दोष—Civil wrongs  
 व्यवहार-दायित्व—Civil power  
 व्याख्या—Explanation

भाषा—Trade  
भाषाकर—Trades tax  
भाषाचिह्न—Trade mark  
भाषासंघ—Trade Union  
बावृत्ति—Savings

श

शक्ति—Power  
शर्त—Condition  
शलाका—Ballot  
शलाका-पद्धति—Ballot  
शान्ति—Peace  
शाश्वत-उत्तराधिकार—Perpetual  
succession  
शासक—Ruler  
शासन—Governance  
शासन—Govern  
शासन—Government  
शासी निकाय—Governing body  
शस्ति—Penalty  
शिक्षा—Education  
शिक्षा—Instruction  
शिल्पी-प्रशिक्षण—Technical training  
शिविर—Camp  
शिशु—Infant  
शिस्त—Disciplinary  
शुल्क—Duty  
शुल्क सीमान्त—Custom Frontiers  
शून्य—Void  
शेरिफ—Sheriff  
शोधना—Research  
यथा—Faith  
श्रम—Labour  
श्रमिक-संघ—Labour Union  
श्रेष्ठ-चक्र—Stock Exchange

स

सक्षम—Competent  
सत्र—Session  
सत्र-न्यायालय—Session Court  
समावसान—Prorogue

सदन—House  
सदस्य—Member  
सदाचरण-पर्यन्त—During good  
behaviour  
सदाचार—Morality  
संस्था—Association  
सन्धि—Treaty  
सभा—Assembly  
सभापति—Chairman  
समता—Equality  
समर्पण—Dedicate  
समवर्ती सूची—Concurrent list  
समवाय—Company  
समवाय-संस्था—Co-operative society  
समवेत होना—Assemble  
समागम—Intercourse  
समाचार-पत्र—Newspaper  
समापन—Winding up  
समिति—Committee  
समुदाय—Community  
समुद्र-नौवहन—Maritime shipping  
सम्पदा—Estate  
सम्पदा-शुल्क—Estate duty  
सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज  
Sovereign Democratic  
Republic  
सम्मेलन—Conference  
सरकार—Government  
सरकारी अभियाचना—Public demand  
सर्वक्षमा—Amnesty  
सर्वोच्च समादेश—Supreme Command  
सलाह—Advice  
सशस्त्र-बल—Armed force  
सहकारी संस्था—Co-operative society  
सहमति—Concurrence  
सहायक—Ancillary  
सहायक अनुदान—Grants-in-aid  
संघटनमय—Hazardous  
संकल्प—Resolution  
संक्रमण—Transition  
संगणना—Compute

सघ—Union	साहूकारी—Money-lending
सघटन—Organization	साधारणिक—Contagious
सघ-सूची—Union List	सामाजिक—Infectious
संचार—Communication	सिद्ध-दोष—Convicted
संचार करना—Communicate	सिफारिश—Recommendation
संचार-साधन—Means of communication	सिफारिश करना—Recommend
संचित निधि—Consolidated fund	सीमा—Boundary
संदर्भ—Context	सीमा-कर—Terminal tax
सदेश—Message	सीमान्त—Frontiers
संबोधित—Addressed	सीमा-शुल्क—Custom duty
सम्पत्ति—Property	सीमाकन—Demarcation
सम्पत्ति-हस्तान्तरण-पत्र—Assurances of property	सुधार-प्रन्यास—Improvement Trust
सम्पर्क—Contact	सुधारालय—Reformatory
सम्मति—Consent	सुसंगति—Relevancy
सरक्षक—Guardian	सूचना—Notice
सलग्न—Append	सूचना-पत्र—Gazette
सविदा—Contract	सूचना-पत्र—Notice
संविधान—Constitution	सूची—list
संविधान-सभा—Constituent Assembly	सूद—Interest
संशोधन—Amendment	सूत्र—Formula
संसद—Parliament	सूत्रित—Formulated
संस्था—Institution	सेना—Military
संस्थापन—Establishment	सेना-न्यायालय—Court Martial
संहिता—Code	सेवा—Service
साक्ष्य—Evidence	सेवा की शर्त—Condition of Service
साख—credit	सेवा-नियोजन—Employment
साधारण निर्वाचन—General Election	सेवा-भार—Service charges
सामर्थ्य—Capacity	सैनिक—Military
सामाजिक बीमा—Social insurance	सैन्य-वियोजन—Demobilization
सामाजिक रूढ़ि—Social custom	सौंपना—Assign
सामाजिक सेवा—Social service	सौंपना—Entrust
सामान्य मुद्रा—Common seal	स्वगत—Adjourn
सामान्य मुहर—Common seal	स्वगित करना—Adjourn
सार्वजनिक अधिसूचना—Public Notification	स्थान—Post
सार्वजनिक अभियोगना—Public demand	स्थान—Seat
सार्वजनिक कल्याण—Common good	स्थानांतरण—Transfer (n)
सार्वजनिक व्यवस्था—Public order	स्थानीय-क्षेत्र—Local area
साहूकार—Money-lender	स्थानीय मण—Local Board
	स्थानीय निकाय—Local body
	स्थानीय प्राधिकारी—Local authority
	स्थानीय मङ्गली—Local Board

स्थानीय शासन—Local Government

स्थानीय स्वशासन—Local Self-Government

ठापना—Establishment

स्थापित करना—Establish

स्थायी आदेश—Standing Orders

स्थायी समिति—Standing Committee

स्पष्टीकरण—Clarification

स्पष्टीकरण—Explanation

स्मारक—Memorial

स्वतन्त्रता—Freedom

स्वयस—Possession

स्वविवेक—Discretion

स्वातन्त्र्य—Freedom

स्वाधीनता—Liberty

स्वामित्व—Ownership

स्वामिभूत—Royalties

स्वामित्व—Royalties

स्वामी—Owner

स्वामिहीनत्व—Bona vacancia

स्वामी होना—Own

स्वायत्तता—Autonomy

स्वयं विधि—Personal law

ह

हक—Title

हक होना—Entitled

हटाना—Removal

हस्तशिल्प—Handicraft

हस्तान्तरण—Conveyance

हस्तान्तरण—Transfer (n)

हिदायतें—Instructions

## अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी पर्याय

### A

Abandonment—परित्यजन, परित्याग  
 Abridge—च्यवन  
 Abrogate—निराकरण  
 Access—प्रवेश  
 Account—लेखा, गणना, कणकु  
 Accrue—प्रापण, प्रोद्भवन  
 Accrued—प्राप्त, प्रोद्भूत, उपाजित  
 Accusation—अभियोग  
 Accused—अभियुक्त  
 Acquisition—अर्जन  
 Act (n)—अधिनियम, चट्टम  
 Acting (e.g. Chairman)—कार्यकारी  
 Actionable wrong—अभियोग्य दोष  
 Adaptation—अनुकूलन  
 Addressed—सम्बोधित  
 Adherence—अनुपत्ति  
 Ad hoc—तदर्थ  
 Adjourn—स्थगन, स्थगित करना, अवधि-  
 दान, कालदान  
 Administer—प्रशासन  
 Administered—प्रशासित  
 Administration—प्रशासन  
 Administrative—प्रशासनीय  
 Administrative functions—प्रशास-  
 नीय कार्य  
 Administrator - General—महा-  
 प्रशासक  
 Admiralty—नौकाधिकरण, नावधिकरण  
 Admissible—ग्राह्य  
 Adoption—इत्तन-ग्रहण, दत्तक-स्वीकरण  
 Adulteration—अपमिश्रण  
 Adult Suffrage—वयस्क मताधिकार  
 Advance—अग्रिम धन, पेशगी  
 Advice—मन्त्रणा, उपदेश, सलाह  
 Advise—मन्त्रणा देना  
 Advisory Council—मन्त्रणा-परिषद्

Advocate.—अधिवक्ता  
 Advocate-General.—महाअधिवक्ता  
 Affect prejudicially.—प्रतिकूल प्रभा  
 डालना, प्रतिकूल असर डालना  
 Affirmation—प्रतिज्ञान  
 Agency.—अभिकरण  
 Agent.—अनिकर्ता  
 Agreement.—करार, चुकती  
 Air force.—विमान-बल  
 Air navigation.—विमान-परिवहन  
 Air traffic.—विमान यातायात  
 Airways.—वायु-मार्ग  
 Alien.—अन्यदेशीय  
 Alienate.—अन्य-सम्प्राप्त  
 Alienation.—अन्य-सम्प्राप्त, परस्त्रीकरण  
 Allegation.—अभिकथन, आरोप  
 Allegiance.—निष्ठा  
 Allocation.—वटवारा  
 Allot—वटन  
 Allotment.—वोट  
 Allowantes.—भत्ता  
 Amendment.—संशोधन  
 Amnesty.—सर्वक्षमा  
 Amount.—राशि  
 Ancillary.—सहायक  
 Annual.—वार्षिक  
 Annual Financial Statement.—  
 वार्षिक वित्त-विवरण  
 Annuities.—वार्षिकी  
 Annulment.—रद्द करना  
 Appeal.—अपील  
 Appear.—उपस्थित होना  
 Appended.—संलग्न  
 Application.—प्रयुक्ति, लागू होना,  
 आवेदन-पत्र  
 Appointment.—निवृत्ति  
 Appropriation.—वित्तियोग

Appropriation bill.—विनियोग-विधेयक

Approve.—अनुमोदन करना

Approval.—अनुमोदन

Arbitral tribunal.—मध्यस्थ-न्यायाधि-करण

Arbitration.—मध्यस्थ निर्णय

Arbitrator.—मध्यस्थ

Armies.—सेना

Armed Forces.—सशस्त्र बल

Arrest.—बन्दी करना, प्रग्रहण

Article.—अनुच्छेद

Assemble.—समवेत होना, सम्मिलित होना

Assembly.—सभा

Assent.—अनुमति

Assessment.—निर्धारण, तीर्थ

Assignment.—सौंपना

Association.—संस्था

Assurance of property.—संपत्ति हस्तान्तरण-पत्र

As the case may be.—यन्ना-स्थिति, यथाप्रसंग

Attach.—कली, टाँप

Attorney-General.—महान्यायवादी

Audit.—लेखा-परीक्षा, गणना-परीक्षा

Auditor-General.—महा-लेखा-परीक्षक

Authentication.—प्रमाणीकरण

Authorise.—प्राधिकृत

Authority.—प्राधिकारी

Autonomous.—स्वायत्त

Autonomy.—स्वायत्तता

Award.—पचाट

B

Bail.—जामिन

Ballot.—शलाका, शलाका-पद्धति, गढ़-पत्र

Bank.—बैंक

Banking.—बैंक

Bankruptcy.—दिवाला

Bar.—दकाबट

Benefit.—हित

Betting.—पण लगाना, पणक्रिया

Bi-cameral.—दोघरा, द्विगृही

Bill.—विधेयक, बिल

Bill of exchange.—विनिमय-पत्र

Bill of indemnity.—परिहार-विधेयक, क्षति-पूर्ति बिल

Bill of lading.—बहन-पत्र

Board.—मंडली, बोर्ड

Body.—निकाय

Body, corporate.—निगमनिकाय

Body, governing.—शासीनिकाय

Bona vacancia.—स्वामिहीनत्व

Borrowing.—उधार-ग्रहण

Boundary.—सीमा

Broadcasting.—प्रसारण

Business.—कारबार

By-election.—उपनिर्वाचन

By-law.—उपविधि

C

Calling.—आजीविका

Camp.—शिविर

Candidates.—अन्वर्थी, उम्मेदवार

Cantonment.—कटक, छावनी

Capacity.—सामर्थ्य

Capital.—मूलधन, पूजी

Capital value.—मूलधन-मूल्य

Capitation tax.—प्रतिव्यक्तिकर

Carriage.—परिवहन

Casting vote.—निर्णायक मत

Cattle pound.—पशु-अवरोध, कर्जीहाउस

Cause.—वाद

Cause of action.—वाद-मूल

Census.—जन-गणना

Central Intelligence Bureau.—

केन्द्रीय गुप्त वार्ता विभाग

Certificate.—प्रमाण-पत्र

Certiorari.—उत्प्रेषण-लेख

Cess.—उपकर

Chairman.—सभापति

Charge.—भार, भारित करना

Charge (Cr.)—दोषारोप, अभियुक्ति

Charity.—भूतं, दत्तव्य  
 Charitable and religious endow-  
 ments.—भूत-धार्मिक धर्मस्व  
 Charitable institutions.—भूतं संस्था  
 Cheque.—चेक  
 Chief.—मुख्य  
 Chief Commissioner.—मुख्य आयुक्त  
 Chief Election Commissioner—  
 मुख्य निर्वाचन आयुक्त  
 Chief Judge.—मुख्य न्यायाधीश  
 Chief Justice.—मुख्य न्यायाधिपति  
 Chief Minister.—मुख्य मन्त्री  
 Citizenship.—नागरिकता, पौरत्व  
 Civil.—व्यवहार, अर्त्तनिक  
 Civil court.—व्यवहार-न्यायालय,  
 दीवानी, व्यवहारालय व्यवहार अदालत  
 Civil power.—व्यवहार-शक्ति,  
 अर्त्तनिक-शक्ति  
 Civil wrong.—व्यवहार-विषयक अपकृत्य,  
 व्यवहार-विषयक दोष  
 Claim.—दावा  
 Clarification.—स्पष्टीकरण  
 Clause.—खण्ड  
 Code.—संहिता  
 Coinage.—टंकण  
 Colonization.—उपनिवेशन  
 Commerce.—वाणिज्य  
 Commercial.—वाणिज्य-सम्बन्धी  
 Commission.—आयोग  
 Commissioner.—आयुक्त  
 Committee.—समिति  
 Committee, Select.—प्रवर-समिति  
 Committee, Standing.—स्थायी  
 समिति  
 Common good.—सार्वजनिक कल्याण  
 Common Seal.—सामान्य मुद्रा, सामान्य  
 मुहर  
 Communicate.—संचार करना  
 Communication, means of  
 संचार-साधन  
 Community.—लोक-समाज, समुदाय

Commute.—लघुकरण  
 Company.—समवाय, कम्पनी  
 Compensation.—प्रतिकर  
 Competent.—सक्षम, क्षमताशील  
 Complaint.—करियाद  
 Comptroller and Auditor  
 General.—नियन्त्रक-सहायक-परी  
 Compute.—संगणना  
 Concurrence.—सहमति  
 Concurrent list.—समवर्ती सूची  
 Condition.—शर्त  
 Conditions of service सेवा की  
 Conference.—सम्मेलन  
 Confidence, want of.—विश्वास  
 अभाव  
 Conscience.—अन्तःकरण  
 Consent.—सम्मति  
 Consent, previous.—पूर्व सम्मति  
 Consequential.—आनुपगतिक  
 Consideration.—विचार  
 Consolidated Fund.—संचित निधि  
 Constituency.—निर्वाचन-क्षेत्र  
 Constituency territorial.—प्रदेशी  
 निर्वाचन-क्षेत्र  
 Constituent Assembly.—सविधा  
 सभा  
 Constitution.—सविधान  
 Consul.—वाणिज्य-दूत  
 Consultation.—परामर्श  
 Construe.—अर्थ करना  
 Consumption.—उपभोग  
 Contact.—संपर्क  
 Contagious.—सासर्गिक  
 Contempt.—अवमान  
 Contempt of court.—न्यायालय-  
 अवमान  
 Context.—संदर्भ, प्रसंग  
 Contingency Fund.—आकस्मिकता  
 निधि  
 Contract.—सविधा  
 Contravention.—प्रतिकूलता, उल्लंघन

Contribution.—अशदान  
 Control.—नियंत्रण  
 Controversy.—प्रतिवाद  
 Convention.—अभिसमय  
 Conveyance.—हस्तान्तर-पत्र  
 Convicted.—सिद्ध-दोष, दोष प्रमाणित,  
 अभिशस्त  
 Conviction.—दोषसिद्धि, अभिशक्ति  
 Co-Operative society.—सहकारी  
 संस्था, ससंवाय-संस्था  
 Copy.—प्रतिलिपि, प्रतिकृति  
 Copyright.—प्रतिलिप्यधिकार, कृति-  
 स्वाम्य  
 Corporation.—निगम  
 Corporation, Sole.—एकल निगम  
 Corporation, tax.—निगम-कर  
 Corresponding.—वत्सयानी  
 Corrupt.—भ्रष्ट  
 Cost.—परिचय, खर्च, लागत  
 Council.—परिषद्  
 Council of Ministers.—मन्त्रि-  
 परिषद्  
 Council of States.—राज्य-परिषद्  
 Council, Regional.—प्रादेशिक-परिषद्  
 Council, Tribal.—जनजाति-परिषद्  
 Countervailing duty.—प्रति-शुल्क  
 Court.—न्यायालय  
 Court of Appeal.—अनुविचार-  
 न्यायालय, अपील न्यायालय  
 Court, Civil.—व्यवहार-न्यायालय  
 Court, Criminal.—दंड न्यायालय  
 Court, District.—ज़िला न्यायालय,  
 मण्डल-न्यायालय  
 Court, Federal.—फ़ेडरल-न्यायालय  
 Court, High.—उच्च न्यायालय  
 Court, Magistrate.—दंडाधिकारी-  
 न्यायालय  
 Court Martial.—सेना-न्यायालय  
 Court of Wards.—प्रतिपालक-  
 अधिकरण  
 Court, Revenue.—राजस्व-न्यायालय

Court, Session.—सत्र-न्यायालय  
 Court, Subordinate.—अधीन-  
 न्यायालय  
 Court, Supreme.—उच्चतम-न्यायालय  
 Credit.—प्रत्यय, साख, पत  
 Credit.—आकलन  
 Crime.—अपराध  
 Criminal.—अपराधी, दंड-सम्बन्धी,  
 आपराधिक  
 Criminal law.—दंड-विधि  
 Currency.—चल अर्थ, चलावणी  
 Custody.—अभिरक्षा, निरोध, काबुल  
 Custom duty.—बहिःशुल्क, सीमा-शुल्क  
 Custom, frontier.—शुल्क सीमान्त  
 Custom.—रूढि, आचार

## D

Dealings.—व्यवहार, लेना-देना  
 Debate.—वाद-विवाद  
 Debentures.—ऋण-पत्र  
 Debit.—विकलन  
 Debt.—ऋण  
 Decision.—विनिश्चय  
 Declaration.—घोषणा  
 Decree.—आज्ञप्ति, डिक्री  
 Dedicate.—समर्पण  
 Deed.—विलेख  
 Defamation.—मानहानि  
 Defence.—प्रतिरक्षा  
 Deliberate.—पर्यालोचन  
 Delimitation.—परिसीमन  
 Demand.—मांग, अभिमाचना  
 Demarcation.—सीमांकन  
 Demobilisation.—सैन्य-विघोजन  
 Deprived.—रहित करना वियुक्त करना  
 Deputy Chairman.—उपसभापति  
 Deputy Commissioner.—उपायुक्त  
 मंडलायुक्त  
 Deputy President.—उपराष्ट्रपति  
 Deputy Speaker.—उपाध्यक्ष  
 Descent.—उद्भव  
 Derogation.—जल्दीकरण

Design.—रूपाङ्ग, नक्शा  
 Detrimental.—अहितकारी  
 Diplomacy.—राजनय  
 Direction.—निर्देश  
 Disability.—निर्वोप्यता  
 Discharge.—निर्वहन  
 Discipline.—अनुशासन  
 Disciplinary.—अनुशासन-सम्बन्धी, शिस्त  
 Discovery.—प्रकट करना  
 Discretion.—स्वविवेक  
 Discrimination.—विभेद  
 Discussion.—चर्चा  
 Dismiss.—पदच्युत करना  
 Disperse.—विमर्जन  
 Dispute.—विवाद  
 Disqualification.—अनर्हता  
 Disqualify.—अनर्हीकरण  
 Dissent.—विमति  
 Dissolution.—विघटन  
 Distribution.—वितरण, विभाजन  
 District.—जिला, मंडल  
 District Board.—जिला-मंडली  
 District Council.—जिला-परिषद्  
 District Fund.—जिला-निधि  
 Dividend.—लाभान्श  
 Divorce.—विवाह-विच्छेद  
 Documents.—लेख्य, दस्तावेज  
 Domicile.—अधिवास  
 Domiciled.—अधिवासी  
 Dullness.—मतिमान्द्य  
 During good behaviour.—सदाचार  
 पर्यन्त  
 During the pleasure of the  
 President.—राष्ट्रपति-प्रसाद-पर्यन्त  
 Duty.—शुल्क, कर्तव्य, दाय  
 Duty, custom.—सीमा-शुल्क  
 Duty, death.—मरण-शुल्क  
 Duty, estate.—सम्पत्ति-शुल्क  
 Duty, excise.—उत्पादन-शुल्क  
 Duty, export.—निर्वात-शुल्क  
 Duty, import.—आयात-शुल्क

Duty, stamp.—मुद्रांक-शुल्क  
 Duty, succession.—उत्तराधिकार  
 शुल्क

## E

Economic.—आर्थिक  
 Education.—शिक्षा  
 Efficiency of administration.—  
 प्रशासन-कार्यक्षमता, प्रशासन-कार्य-प्रदुता  
 Elect. (v)—निर्वाचन  
 Elected.—निर्वाचित, चुने हुए  
 Election.—निर्वाचन  
 Election-Commissioner.—निर्वाच  
 आयुक्त  
 Election, direct.—प्रत्यक्ष निर्वाचन  
 Election, general.—साधारण निर्वाच  
 Election, indirect.—परोक्ष निर्वाचन  
 Election tribunal.—निर्वाचन-अधि  
 करण  
 Electoral roll.—निर्वाचक-नामावली  
 Electoral rolls.—निर्वाचक-ग्रन्थ  
 Eligibility.—पात्रता  
 Eligible.—पात्र होना  
 Emergency.—आपात  
 Emergent.—आपाती  
 Emigration.—उत्प्रवास  
 Emoluments.—उपलब्धियाँ  
 Employer's liability.—निर्वाच  
 दातव्य, नियोजक-उत्तरादायिता  
 Enact.—अधिनियम  
 Encumbered estate.—भारण  
 सम्पदा  
 Endorse.—पृष्ठांकन, भवन  
 Endorsed.—पृष्ठांकित, अविश  
 Endowment.—धर्मस्व  
 Engagements.—वचन-बन्ध  
 Engineering.—यन्त्र-शास्त्र  
 Enterprise.—उद्यम  
 Entitled.—हक होना  
 Entrust.—व्यस्त, गोपना  
 Entry.—प्रविष्टि, दाखला  
 Equality.—समता

Equal protection of laws.—

विविधों का समान संरक्षण

Escheat.—राजगामी

Establishment.—स्थापना, संस्थापन,  
स्थापन करना

Estates.—संपदा

Estimates.—आक, प्राक्कलन

Evidence.—साक्ष्य

Excess profit.—अतिरिक्त लाभ

Exclude.—अपवर्जन करना

Exclusion.—अपवर्जन

Exclusive jurisdiction.—अनन्य  
क्षेत्राधिकार

Executive.—कार्यपालिका

Executive power.—कार्यपालिका-  
शक्ति

Exempt.—मुक्त

Exercise.—प्रयोग, अनुष्ठान

Ex-officio.—पदेन

Expenditure.—व्यय

Explanation.—व्याख्या, स्पष्टीकरण

Explosives.—विस्फोटक

Export.—निर्यात

Extend.—विस्तार

External Affairs.—वैदेशिक कार्य

Extradition.—प्रत्यर्पण, राज्यक्षेत्रातीत  
वर्तन

Extra territorial operations.—  
राज्यक्षेत्रातीत प्रवर्तन

F

Factory.—फ़ैक्टरी

Faith.—पवित्र, श्रद्धा

Fare.—भाड़ा, किराया

Federal Court.—फ़ेडरल न्यायालय

Fees.—शेय, फीस

Finance.—वित्त

Finance bill.—वित्त-विधेयक

Finance Commission.—वित्तयोग

Financial.—वित्तीय

Financial obligation.—वित्तीय भार

Financial statement.—वित्तीय विवरण

Fine.—जर्ब-दण्ड, जुर्माना

Fishery.—मीन-क्षेत्र, मीन-पण्ण

Forbid.—निषेध

Forbidden.—निषिद्ध

Forces.—बल

Foreign Affairs.—विदेशीय कार्य

Foreign exchange.—विदेशीय विनिमय

Form.—रूप, प्रपत्र, फारम

Formula.—सूत्र

Formulated.—सूत्रित

For the time being.—तत्समय

Freedom.—स्वतन्त्रता, आजादी, स्वातन्त्र्य

Freights.—वस्तु भाड़ा

Frontiers.—सीमान्त

Function.—कृत्य

Function, administrative.—  
प्रशासनीय कृत्य

Fund.—निधि

Fund, sinking.—निक्षेप-निधि

Future market.—बायदा बाजार

G

Gambling.—यूत, जुआ

Gazette.—सूचना-पत्र, गजट

General election.—साधारण निर्वाचन

Govern.—शासन करना

Governance.—शासन

Government.—सरकार, शासन

Government of a State.—राज्य  
की सरकार

Government of India.—भारत-  
सरकार

Governor.—राज्यपाल

Grant.—अनुदान

Grant-in-aid.—सहायक अनुदान

Gratuity.—उपदान

Guarantee.—प्रत्याभूति

Guardian.—तत्क्षक

Guidance.—मार्ग-प्रदर्शन

H

Habeas Corpus.—बन्दी प्रत्यक्षीकरण

Handicrafts.—हस्तशिल्प, हस्तकारी

Hazardous.—सखटमय  
Headman.—मुखिया  
High Court.—उच्च-न्यायालय  
Honorarium.—मानदेय  
House.—घर  
House of People.—लोक-सभा

## I

Illegal.—अवैध  
Illegal practice.—अवैधाचरण  
Immunity.—उन्मुक्ति  
Impeachment.—महाभियोग  
Implementing.—अतिपालन  
Impose.—आरोपण, लगाना  
Imprisonment.—कारावास, कैद  
Improvement trust.—पुर्धार प्रत्यास्त  
Incapacity.—अक्षम्यता  
Incidental.—आसन्निक  
Incompetency.—अक्षमता  
Incompetent.—अक्षम  
Incorporation.—निगमन  
Incumbent of an office.—तदधारी  
Indebtedness.—ऋण्यस्तता  
Industry.—उद्योग  
Ineligible.—अपात्र  
Ineligibility.—अपात्रता  
Infants.—शिशु  
Infectious.—साक्रामिक  
Influence.—प्रभाव  
Influence undue.—अयुक्त प्रभाव  
Inheritance.—राय  
Initiate.—उपक्रमण  
Injury.—क्षति  
Inland waterways.—अन्तर्देशीय जलयम

Inoperative.—अप्रवृत्त  
Inquiry.—परिप्रेक्ष्य, जांच  
Insolvency.—दिवाल  
Inspection.—पर्यवेक्षण  
Institution.—संस्था  
Instruction.—विद्या, अनुदेश, हिदायतें  
I.—लिखत

Insurance.—बीमा  
Intercourse.—समागम, वृद्धि  
Interest.—व्याज, सूद  
International.—अन्तर्राष्ट्रीय  
Interpretation.—निबचन  
Intestacy.—इच्छाप्राप्तीनत्व, निर्वंसीयता  
Intestate.—इच्छाप्राप्तीन, निर्वंसीयता  
Introduce.—पुष्टस्थापन  
Introduction.—पुरस्थापना  
Invalid.—अमान्य  
Invalidity pensions.—असमर्थता-निवृत्ति-वेतन  
Investigation.—अनुसंधान  
Involve.—अन्तर्गहन  
Involved.—अन्तर्गहन  
Irregularity.—अनियमिता  
Issue.—पाद-पद

## J

Joining time.—यागवाल  
Joint family.—अभिमत कुटुम्ब, अभिमत परिवार  
Judge.—न्यायाधीश  
Judge, Additional.—अन्य न्यायाधीश  
Judge, extra.—अतिरिक्त न्यायाधीश  
Judgment.—निर्णय  
Judicial power.—न्यायिक शक्ति  
Judicial proceeding.—न्यायिक कायवाही, न्यायिक कायरीति  
Judicial stamp.—न्यायिक मुद्रांक  
Judiciary.—न्यायपालिका  
Jurisdiction.—अक्रान्तिकार  
Justice, Chief.—मुख्य न्यायाधिवर्ति

## L

Labour.—श्रम  
Labour Union.—श्रमिक-संघ  
Land records.—भू-अभिलेख  
Land revenue.—भू-राजस्व  
Land tenures.—भू-धृति  
Law.—विधि  
Law of Nations.—राष्ट्री की विधि  
Legal.—विधि-सम्बन्धी, कानून-सम्बन्धी

egislation.—विधान  
 egislative power.—विधायिनी शक्ति  
 egislative Assembly.—विधान-सभा  
 egislative Council.—विधान-परिषद्  
 egislature.—विधान-मंडल  
 etters of credit.—प्रत्यय-पत्र  
 Levy.—आरोपण, उगाहना, उद्ग्रहण  
 Liability.—दायित्व  
 Libel.—अपमान-लेख  
 Liberty.—स्वाधीनता  
 Licences.—अनुज्ञप्ति, लाइसेंस  
 Lieutenant Governor.—उप राज्यपाल  
 Limitation.—परिसीमा  
 List.—सूची  
 List, concurrent.—समवर्ती सूची  
 List, State.—राज्य-सूची  
 List, Union.—संघ-सूची  
 Livelihood.—जीविका  
 Loans.—उधार  
 Local area.—स्थानीय क्षेत्र  
 Local authorities.—स्थानीय प्राधिकारी  
 Local board.—स्थानीय मंडली,  
 स्थानीय गण  
 Local body.—स्थानीय निकाय  
 Local Government.—स्थानीय शासन  
 Local Self-Government.—स्थानीय  
 स्वशासन  
 Lock up.—बन्दीखाना  
 Lower House.—प्रथम सदन  
 Lunacy.—उन्माद  
 Lunatic.—उन्मत्त  
 M  
 Maintain.—पोषण, बनाए रखना  
 Maintenance.—पोषण  
 Major.—बयस्क  
 Majority.—अधुमत  
 Mandamus.—परमादेश  
 Manufacture.—निर्माण  
 Maritime shipping.—समुद्र-नीवहन  
 Maternity relief.—प्रसूति-सहायता,  
 प्रसूति-साहाय्य

Member.—सदस्य  
 Memo.—ज्ञाप  
 Memorandum.—ज्ञापन  
 Memorial.—स्मारक  
 Mental deficiency.—मनोवैकल्य  
 Mental weakness.—मनोदोर्बल्य  
 Merchandise marks.—वस्तु-चिह्न  
 Merchandise marine.—वणिक्-पोत  
 Message.—संदेश  
 Migration.—प्रवाजन  
 Military.—सेना, सैनिक  
 Mind, unsound.—विकृत-चित्त  
 Mineral.—तन्निज  
 Mineral resources.—तन्निज-सम्पत्  
 Mining settlement.—खनिवसति  
 Minister.—मन्त्री  
 Minor.—अवयस्क  
 Minority.—अल्पसंख्यक-वर्ग  
 Misbehaviour.—कदाचार  
 Modification.—रूप-भेद  
 Money.—धन  
 Money bill.—धन-विधेयक  
 Money-lender.—साहूकार  
 Money-lending.—साहूकारी  
 Morality.—सुव्यवहार  
 Mortgage.—वन्धक  
 Motion.—प्रस्ताव  
 Motion for consideration.—  
 विचारार्थ प्रस्ताव  
 Motion of confidence.—  
 विश्वास-प्रस्ताव  
 Motion of no-confidence.—  
 अविश्वास-प्रस्ताव  
 Municipal area.—नगर-क्षेत्र  
 Municipal Committee.—नगर-  
 समिति  
 Municipal Corporation.—नगर-  
 निगम  
 Municipality.—नगर-शासन  
 Municipal tramways.—नगर-  
 रथयात्रा, नगर ट्राम्वे

## N

Nation.—राष्ट्र  
 National highways.—राष्ट्रीय राजपथ  
 Naturalisation.—देशीकरण  
 Naval.—नौसेना-सम्बन्धी  
 Navigation.—नौ-परिवहन  
 Newspapers.—समाचारपत्र  
 Nominate.—नामनिर्देशन, मनोनयन  
 Notice — सूचना, सूचनापत्र  
 Notice in writing.—लिखित सूचना  
 Notification.—अधिसूचना

## O

Obligation.—आभार  
 Occupation — उपजीविका, धन्धा  
 Octroi.—चुगी  
 Offence.—अपराध  
 Office — पद  
 Officer.—पदाधिकारी  
 Official residence — गदावास  
 Opinion.—अभिप्राय, राय  
 Order.—आदेश, व्यवस्था  
 Order in council.—परिषद्-आदेश  
 Order, standing.—स्थायी आदेश  
 Ordinance — अह्मदादेश  
 Organization.—संघटन  
 Own — स्वामी होता  
 Owner.—स्वामी  
 Ownership.—स्वामित्व

## P

Pardon.—क्षमा  
 Parliament.—संसद्  
 Party.—पक्ष  
 Partnership.—भागीदारी  
 Pass — पारण  
 Passed — पारित, तीर्ण  
 Passport — पारपत्र  
 Patents — एकस्व

Pay.—वेतन  
 Peace — शान्ति  
 Pecuniary jurisdiction.—आर्थिक  
 क्षेत्राधिकार  
 Penalty.—शक्ति  
 Pending.—अन्वित, लम्बमान  
 Pension.—निवृत्ति-वेतन  
 People.—लोक, जनता  
 Permission.—अनुज्ञा  
 Permit — अनुज्ञा, परमिट  
 Perpetual succession.—शाश्वत  
 उत्तराधिकार  
 Perquisite.—परिलब्धि  
 Person.—व्यक्ति  
 Personal law — स्वीय विधि  
 Petition.—याचिका, अर्जी  
 Piracy.—बल-दस्मुता  
 Plead.—बकालत करना  
 Pleader.—रकील  
 Police — आरक्षक  
 Police force — आरक्षक-बल  
 Police station — थाना  
 Policy of insurance.—बीमा-यत्र  
 Port quarantine.—पत्तन-निरोध  
 Possession — स्ववश, कब्जा  
 Posts — पद, स्थान, जगह  
 Power.—शक्ति  
 Preamble.—प्रस्तावना  
 Preference.—अभिमान  
 Prejudice.—प्रतिकूल प्रभाव  
 Preside.—प्रीतसीन, अध्यक्षीन  
 President.—राष्ट्रपति  
 Presiding officer.—अधिष्ठाता  
 Preventive detention.—निवारक  
 निरोध  
 Prime Minister.—प्रधान मंत्री  
 Prison.—कारावास, जेल  
 Prisoner.—कारावन्दी, कैदी  
 Privileges.—विशेषाधिकार  
 Procedure.—प्रक्रिया  
 Process.—आदेशिका

उद्घोषणा  
 Proclamation of Emergency.—  
 आपात की उद्घोषणा  
 Production.—उत्पादन  
 Profession.—वृत्ति, पेशा  
 Profit.—लाभ  
 Prohibited.—प्रतिषिद्ध  
 Prohibition.—प्रतिषेध  
 Prohibition writ of.—प्रतिषेध-लेख  
 Promissory note.—प्रामिसरी नोट,  
 वचन-पत्र  
 Promulgate.—प्रख्यापन  
 Propagate.—प्रचार करना  
 Property.—सम्पत्ति, आस्ति, रियल  
 Proportional representation.—  
 अनुपाती प्रतिनिधित्व  
 Proposal.—प्रस्थापना  
 Prorogue.—समावसान  
 Prosecution.—अभियोजना, अभियुक्ति  
 Provided.—परन्तु  
 Provident fund.—भविष्य निधि  
 Province.—प्रान्त  
 Provision.—उपबन्ध  
 Proxy.—प्रतिपक्षी  
 Publication.—प्रकाशन  
 Public debt.—राष्ट्र-शुण  
 Public demands.—सार्वजनिक अभि-  
 याचना, सरकारी अभियाचना  
 Public health.—लोक-स्वास्थ्य  
 Public notification.—सार्वजनिक  
 अधिसूचना, लोक अधिसूचना  
 Public Order.—सार्वजनिक व्यवस्था  
 Public Service Commission.—  
 लोक-सेवायोग  
 Public Services.—लोक-सेवाएँ  
 Punish.—दंड देना  
 Purporting to be done.—कतु-  
 अभिप्रेत

Q

Qualification.—अर्हता

Quarantine.—निरोध  
 Question of law.—विधि-प्रश्न  
 Quorum.—गण-सूति  
 Quo warranto.—अधिकार-पृच्छा

R

Railway.—रेल  
 Ratification.—अनुसमर्थन  
 Ratify.—अनुसमर्थन  
 Reading, first.—प्रथम पठन  
 Reading, second.—द्वितीय पठन  
 Reading, third.—तृतीय पठन  
 Receipt.—प्राप्ति  
 Receipt (paper).—पावती, रसीद  
 Recommend.—सिफारिश करना  
 Recommendation.—सिफारिश  
 Record.—अभिलेख  
 Record, court of.—अभिलेख-न्यायालय  
 Record of rights.—अधिकार अभिलेख  
 Recruitment.—भर्ती  
 Recurring.—आवर्तक  
 Redemption.—विमोचन  
 Redemption charges.—विमोचन-  
 भार  
 Reference.—निर्देश  
 Reformatory.—शुधारणालय  
 Refundable to.—जोटाई जानेवाली  
 Regional Commissioners.—प्रादे-  
 शिक अनुवृत्त  
 Regional Councils.—प्रादेशिक-परिषद्  
 Regional fund.—प्रादेशिक निधि  
 Register.—पत्री  
 Registered.—पञ्जीकृत, नोंदना, निबद्ध  
 Registration.—पञ्जीकरण, पञ्जीकरण,  
 निकषण  
 Regulate.—विनियमन  
 Regulation.—विनियम  
 Relevancy.—सुगमति  
 Relevant.—सुगम  
 Remedy.—उपाय

Vice President — उपराष्ट्रपति  
 Village Councils — ग्राम-परिषद्  
 Violation — अतिक्रमण  
 Visas — वृष्टांक, बीसा  
 Vocation — व्यवसाय  
 Void — शून्य  
 Vote — मत  
 Vote, casting — निर्णायक मत  
 Voter — मतदाता, वोट-दाता  
 Votes on account — लेखानुदान  
 गणनानुदान

Votes of credit — प्रत्ययानुदान

## W

Wage — मजूरी  
 Wage, living — निवहि-मजूरी  
 Warrant — अधिपत्र  
 Will — इच्छा-पत्र, विल, वसीयत  
 Winding up — समापन  
 Writ — लेख

Succession.—उत्तराधिकार  
 Successor.—उत्तराधिकारी  
 Sue.—व्यवहार लाना  
 Suffrage.—मतधिकार  
 Suit, Civil.—व्यवहार-वाद  
 Summon.—आह्वान  
 Superintendence.—अधीक्षण  
 Superintendent.—अधीक्षक  
 Supplementary.—अनुपूरक  
 Supplementary grant.—अनुपूरक  
 अनुदान  
 Supreme Command.—सर्वोच्च  
 समादेश  
 Supreme Court.—उच्चतम न्यायालय  
 Suspend.—निलम्बन  
 Suspension.—निलम्बन

T

Taxes.—कर  
 Tax, calling.—आजीविका-कर  
 Tax, capitation.—प्रतिव्यक्ति कर  
 Tax, corporation.—निगम-कर  
 Tax, employment.—नौकरी-कर  
 Tax, entertainment.—प्रमोद-कर  
 Tax, export.—निर्यात-कर  
 Tax, profession.—वृत्ति-कर  
 Tax, income.—आय-कर  
 Tax, sales.—विक्रय-कर  
 Tax, terminal.—सीमा-कर  
 Tax, trades.—व्यापार-कर  
 Technical training.—शिल्पी प्रशिक्षण  
 Tenant.—किसान  
 Tender, legal.—विधि-मान्य  
 Tenure.—पदावधि  
 Term.—निबन्धन  
 Territorial charges.—प्रादेशिक भार  
 Territorial jurisdiction.—प्रादेशिक  
 क्षेत्राधिकार  
 Territorial waters.—जल-प्राप्त  
 Territory.—राज्य-क्षेत्र

Tidal waters.—वेला-जल, ज्वार-जल  
 Title.—हक  
 Tolls.—पथ-कर  
 Trade.—व्यापार  
 Trade-marks.—व्यापार-चिह्न  
 Trade Union.—कार्मिक-संघ, व्यापार  
 संघ  
 Traffic.—यातायात  
 Traffic in human beings.—मानव-  
 पणन  
 Training.—प्रशिक्षण  
 Tram-car.—रथयात्रान  
 Tramway.—ट्राम, ट्रामगाड़ी  
 Tranquillity.—प्रशान्ति  
 Transfer.—स्थानांतरण, हस्तान्तरण  
 Transition.—संक्रमण  
 Transport.—परिवहन  
 Transportation.—निर्वासन  
 Treasure-troves.—निष्पात-निधि  
 Treaty.—सन्धि  
 Tribal area.—जनजाति-क्षेत्र  
 Tribe.—जन-जाति  
 Tribunal.—न्यायाधिकरण  
 Triennial.—त्रैवार्षिक  
 Trust.—न्यास

U

Undischarged.—अनुत्पुक्त  
 Unemployment.—बेकारी  
 Union.—संघ  
 Unit.—एकक  
 Unsoundness of mind.—चित्त-  
 विकृति

V

Vacancies.—रिक्ति स्थान  
 Vacancy.—रिक्ति, रिक्तता  
 Vagrancy.—आहिङन, आबारागदी  
 Validity.—मान्यता

Reminder.—अनुस्मारक  
 Remission.—परिहार  
 Removal.—हटाना  
 Remuneration.—पारिश्रमिक  
 Rent.—भाटक, लगान  
 Repeal.—निरस्तन  
 Report.—प्रतिवेदन  
 Representation.—प्रतिनिधित्व  
 Representative.—प्रतिनिधि  
 Reprieve.—प्रविलम्बन  
 Repugnance.—विरोध  
 Repugnancy.—विरोध  
 Repugnant.—विद्वद्  
 Requisition.—अविग्रहण  
 Research.—अन्वेषण, शोधन  
 Reservation.—रक्षण  
 Reserved forest.—रक्षित वन  
 Resignation.—पदत्याग  
 Resolution.—समल्प  
 Respite.—विराम  
 Restriction.—निर्वन्धन  
 Retire.—निवृत्त होना  
 Retirement.—निपुत्ति  
 Revenue.—राजस्व, आगम  
 Review.—पुनर्विलोकन  
 Revision.—पुनरीक्षण  
 Revoke.—प्रतिसहरण  
 Reward.—पारितोषिक  
 Rights.—अधिकार  
 Rule.—नियम  
 Rule of the road.—पथ-नियम  
 Ruler.—शासक

## S

Safeguard.—रक्षा-वचन, परिचाय  
 Salary.—वेतन  
 —विषय  
 —पूर्व  
 previous.—पूर्व मञ्जुरी  
 —आवृत्ति

Schedule.—अनुसूची  
 Scheduled area.—अनुसूचित क्षेत्र  
 Scheduled caste.—अनुसूचित जाति  
 Scheduled tribes.—अनुसूचित जाति, अनुसूचित जातिम जाति  
 Seal.—मुद्रा  
 Seats.—स्थान  
 Sections.—विभाग  
 Security.—सुरतिभूति  
 Sentence.—दण्डादेश  
 Service.—सेवा  
 Service charges.—सेवा-भार  
 Session.—सत्र  
 Share.—अंश  
 Sheriff.—शेरिफ  
 Single transferable vote.—एक सक्रमणीय मत  
 Sinking fund.—निकोप-निधि  
 Sitting.—उपवेसन, बैठक  
 Slander.—अपमान-वचन  
 Social custom.—सामाजिक रुढ़ि  
 Social insurance.—सामाजिक बीमा  
 Social service.—सामाजिक सेवा  
 Sovereign.—प्रभु  
 Sovereign Democratic Republic.—संपूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य  
 Sovereignty.—प्रभुता  
 Speaker.—अध्यक्ष  
 Speech, freedom of.—वाक् स्वातन्त्र्य  
 Staff.—कर्मचारीवृन्द  
 Stamp duties.—मुद्रांक-शुल्क  
 Standing orders.—स्थायी आदेश  
 State.—राज्य  
 State funds.—राज्य-निधि  
 Stock exchange.—क्षेत्रि-बत्तर  
 Sub-division.—उपविभाग  
 Subject.—अधीन, विषय  
 Subject matter.—वाद-विषय  
 Subordinate officer.—अधीन अधिकारी

... —उत्तराधिकार  
 Successor.—उत्तराधिकारी  
 Sue.—व्यवहार करना  
 Suffrage.—मतदाधिकार  
 Suit, Civil.—व्यवहार-वाद  
 Summon.—आह्वान  
 Superintendence.—अधीक्षण  
 Superintendent.—अधीक्षक  
 Supplementary.—अनुपूरक  
 Supplementary grant.—अनुपूरक  
 अनुदान  
 Supreme Command.—सर्वोच्च  
 समादेश  
 Supreme Court.—उच्चतम न्यायालय  
 Suspend.—निलम्बन  
 Suspension.—निलम्बन

T

Taxes.—कर  
 Tax, calling.—आजीविका-कर  
 Tax, capitation.—प्रतिव्यक्ति कर  
 Tax, corporation.—निगम-कर  
 Tax, employment.—नौकरी-कर  
 Tax, entertainment.—प्रमोद-कर  
 Tax, export.—निर्यात-कर  
 Tax, profession.—वृत्ति-कर  
 Tax, income.—आय-कर  
 Tax, sales.—विक्रय-कर  
 Tax, terminal.—सीमा-कर  
 Tax, trades.—व्यापार-कर  
 Technical training.—शिल्पी प्रशिक्षण  
 Tenant.—किसान  
 Tender, legal.—विधि-मान्य  
 Tenure.—पदावधि  
 Term.—निरूपण  
 Territorial charges.—प्रादेशिक भार  
 Territorial jurisdiction.—प्रादेशिक  
 क्षेत्राधिकार  
 Territorial waters.—जल-प्राप्त्य  
 Territory.—राज्य-क्षेत्र

Tidal waters.—वेला-जल, ज्वार-जल  
 Title.—हक  
 Tolls.—पथ-कर  
 Trade.—व्यापार  
 Trade-marks.—व्यापार-चिह्न  
 Trade Union.—कामिक-संघ, व्यापार  
 संघ  
 Traffic.—यातायात  
 Traffic in human beings.—मानव-  
 पणन  
 Training.—प्रशिक्षण  
 Tram-car.—रम्प्यायान  
 Tramway.—ट्राम, ट्रामगाडी  
 Tranquillity.—प्रशान्ति  
 Transfer.—स्थानांतरण, हस्तान्तरण  
 Transition.—संक्रमण  
 Transport.—परिवहन  
 Transportation.—निर्वासन  
 Treasure-troves.—खिलात-निधि  
 Treaty.—सन्धि  
 Tribal area.—जनजाति-क्षेत्र  
 Tribe.—जन-जाति  
 tribunal.—न्यायाधिकरण  
 Triennial.—त्रैवार्षिक  
 Trust.—व्यास

U

Undischarged.—अनुम्वृत  
 Unemployment.—बेकारी  
 Union.—संघ  
 Unit.—एकक  
 Unsoundness of mind.—चित्त-  
 विकृति

V

Vacancies.—रिक्ति स्थान  
 Vacancy.—रिक्ति, रिक्तता  
 Vagrancy.—आहिदन, आचारागर्द  
 Validity.—मान्यता

Vice President.—उपराष्ट्रपति  
 Village Councils.—ग्राम-परिषद्  
 Violation.—अतिक्रमण  
 Visas.—वृष्टांक, बीसा  
 Vocation.—व्यवसाय  
 Void.—शून्य  
 Vote.—मत  
 Vote, casting.—निर्णायक मत  
 Voter.—मतदाता, वोट-दाता  
 Votes on account.—लेखानुदान,  
 गणनानुदान

Votes of credit.—प्रत्ययानुदान

## W

Wage.—मजूरी  
 Wage, living.—निर्वाह-मजूरी  
 Warrant.—अधिपत्र  
 Will.—इच्छा-पत्र, विल, वक्षीयत  
 Winding up.—समापन  
 Writ.—लेख